केनेथ एंडरसन

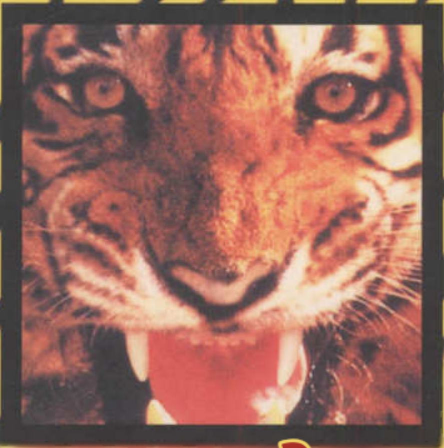

सब लोग

खंड 2

सिवानीपल्ली का काला पैंथर,
बहुत पहले जंगलों
में बाघ दहाड़ता था

THE KENNETH ANDERSON

OMNIBUS

VOLUME2

THE BLACK PANTHER OF SIVANIPALLI
THE TIGER ROARS
JUNGLES LONG AGO

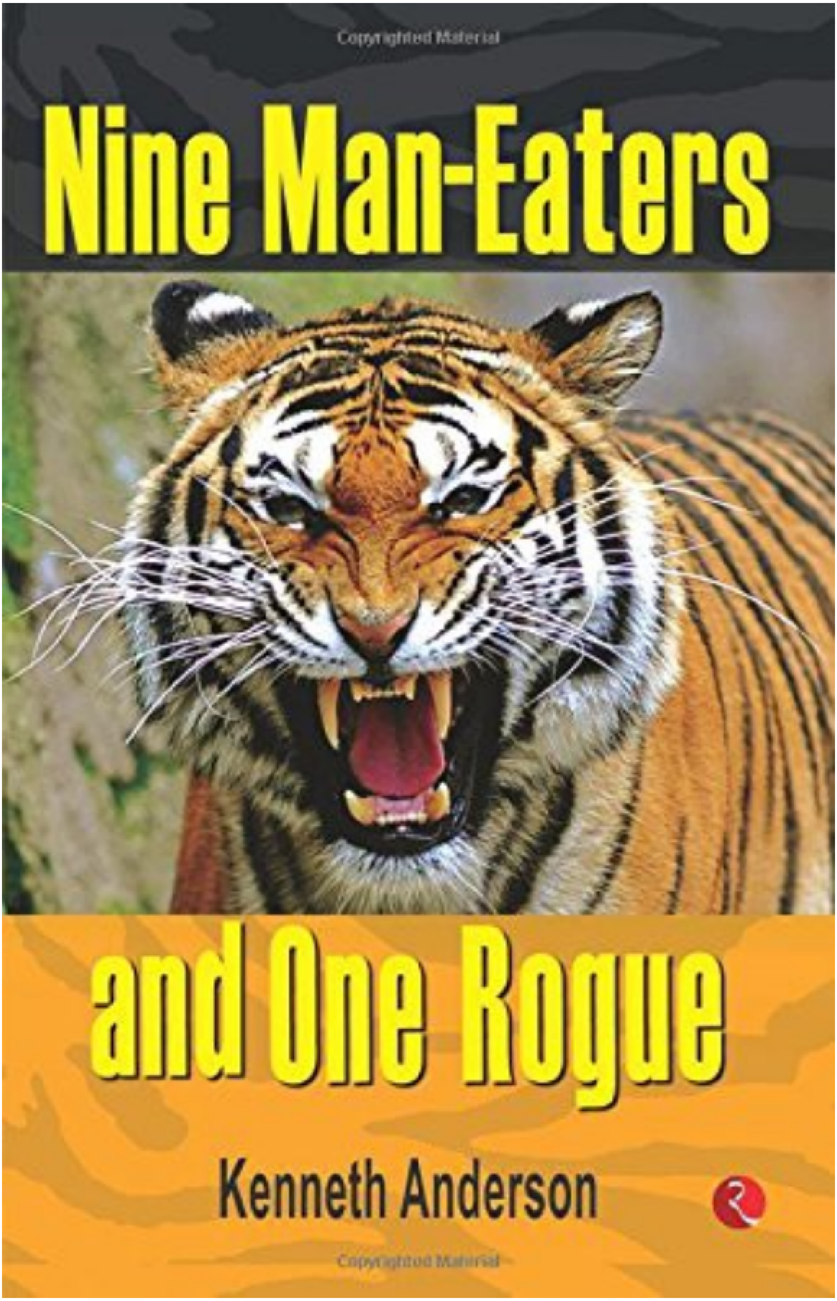

नौ आदमखोर और एक बदमाश

केनेथ एंडरसन द्वारा

ई.पी.डटन एंड कंपनी इंक.

न्यूयॉर्क

1955

कॉपीराइट जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड के पास सुरक्षित है।

सभी अधिकार सुरक्षित। संयुक्त राज्य अमेरिका में मुद्रित।

प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है, सिवाय उस समीक्षक के जो किसी पत्रिका, समाचार पत्र या रेडियो प्रसारण में शामिल करने के लिए लिखी गई समीक्षा के संबंध में संक्षिप्त अंश उद्धृत करना चाहता हो।

प्रथम संस्करण

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉग कार्ड नंबर: 55-8318

मरे प्रिंटिंग कंपनी द्वारा लिथोग्राफ किया गया

दक्षिण भारत के जंगलों की स्मृति में,

उनके पक्षी और जानवर, विशेषकर हाथी,

बाघ और तेंदुआ, और उनके वनवासी, चेनसू,

शोलागास, करुम्बास और पूजारीज़, मुझे गर्व है

और कृतज्ञतापूर्वक इस पुस्तक को समर्पित करते हैं, इसके बदले में

उनके द्वारा बिताए गए पच्चीस साल की अपार खुशी

उन्होंने मुझे अपने उत्पादों को बनाने और बनाए रखने में मदद की है।

जान-पहचान।

बाघ द्वारा बैल को मार डालना (एक मचान से लिया गया)

परिचय

आदमखोर बाघ एक असामान्य घटना है, क्योंकि सामान्य परिस्थितियों में भारतीय जंगलों का राजा एक शांत और नेक स्वभाव का होता है। वह केवल भोजन के लिए ही शिकार करता है, कभी भी अंधाधुंध नहीं, और उसका शिकार जंगल के जंगली जानवर होते हैं, या जब प्रलोभन मिलता है, तो सरकारी अभ्यारण्यों में चराने के लिए भेजे गए गाँव के मवेशी भी होते हैं।

कभी-कभी एक बाघिन अपने अधेड़ शावक या शावकों को शिकार को मारने का तरीका सिखाती है, जैसे बाघ गर्दन की रीढ़ तोड़कर शिकार करते हैं। ऐसी विशेष

परिस्थितियों में, शावकों को अभ्यास कराने के लिए एक साथ तीन या चार मवेशियों को मारा जा सकता है, लेकिन ऐसा वध कोई भी बाघ केवल मारने के आनंद के लिए जानबूझकर नहीं करता। एक बाघिन आमतौर पर एक समय में दो शावकों का पालन-पोषण करती है, हालांकि मैंने व्यक्तिगत रूप से चार शावकों को भी देखा है, और ऐसा कहा जाता है कि नर बाघ अपने शावकों में से आधे को खाकर प्रजाति को नियंत्रित करता है।

जन्म के कुछ ही समय बाद बाघ अपने बच्चों को जन्म देते हैं। शिकारियों के बीच अक्सर इस बात पर बहस होती रही है कि बाघ अपने शिकार की गर्दन तोड़ने में कितना कुशल है, जबकि तेंदुए और पैंथर अपने शिकार का गला घोंटकर मारते हैं। दरअसल, हमला करते समय बाघ अपने शिकार के बगल में खड़ा हो जाता है, आमतौर पर अपना एक पंजा उसके कंधे पर रखता है और जानवर के आकार के अनुसार उसकी गर्दन या गले के पिछले हिस्से को पकड़कर उसके सिर को ज़मीन पर दबा देता है। फिर पंजे का इस्तेमाल एक लीवर की तरह किया जाता है जिससे शिकार खुद ही गिर जाता है, जबकि बाघ उसका सिर नीचे दबाए रखता है। इस प्रकार, जानवर के शरीर का वजन ही गर्दन तोड़ने का कारण बनता है, न कि बाघ द्वारा किसी तरह का मरोड़ना, हालांकि मेरा व्यक्तिगत मत है कि मरोड़ने की क्रिया भी काफी हद तक इसमें भूमिका निभाती है। बाघ के जबड़े बहुत चौड़े खोलने की क्षमता के कारण, कभी-कभी यह तय करना मुश्किल होता है कि शिकार को उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़ा गया था या गले से, क्योंकि दांतों के निशान इस तरह से स्थित होते हैं कि दोनों में से कोई भी हो सकता है।

पैंथर और तेंदुआ व्यावहारिक रूप से एक ही जानवर हैं, हालांकि यहाँ भी आकार में भारी अंतर को लेकर काफी विवाद हुआ है। इनमें से एक है 'थेंदू' या जंगली पैंथर, जो बाघ की तरह गर्दन तोड़कर अपने शिकार को मारता है, जिसके कारण इसे कभी-कभी बाघ समझ लिया जाता है। वहीं दूसरी ओर, गांवों के बाहरी इलाकों में रहने वाला छोटा तेंदुआ, बकरियों और कुत्तों को गला घोंटकर मारता है, और यहाँ तक कि चूहों और घरेलू मुर्गियों का भी शिकार करता है। पैंथर बाघ की तुलना में काफी कम शक्तिशाली जानवर है, आमतौर पर डरपोक स्वभाव का होता है, फिर भी यह भारतीय प्रायद्वीप, एशिया और अफ्रीका के जंगलों के सबसे आकर्षक निवासियों में से

एक है।

दोनों प्रकार के आदमखोर जीव आम तौर पर मानव हस्तक्षेप के कारण ही पैदा हुए हैं। कभी-कभी कोई बाघ या तेंदुआ राइफल या गोली लगने से इतना घायल हो जाता है कि वह जंगल के जंगली जानवरों या यहाँ तक कि मवेशियों का शिकार करने में असमर्थ हो जाता है, जो आमतौर पर उसका शिकार होते हैं। इसलिए, मजबूरीवश वह मनुष्य को मारने पर उतर आता है, जो सबसे कमजोर और दुर्बल प्राणी है और निहत्था होने पर अपना बचाव करने में पूरी तरह असमर्थ है। यही असमर्थता कभी-कभी आकस्मिक चोट के कारण भी हो सकती है, जैसे कि पैर में साही का कांटा चुभ जाना; और कभी-कभी नरभक्षी बनने की आदत बाघिन अपने शावकों को दे देती है। कभी-कभी जंगल में फेंके गए शवों को खाने से तेंदुओं में मानव मांस का स्वाद विकसित हो जाता है, जैसा कि उन क्षेत्रों के गांवों में महामारी फैलने पर होता है, हालांकि यह बहुत ही दुर्लभ है। ऐसे उदाहरण भी उतने ही दुर्लभ हैं जहाँ इनमें से कोई भी परिस्थिति इस प्रवृत्ति का कारण नहीं बनती।

आदमखोर बाघ या तेंदुआ, जब भी मौजूद होता है, तो पूरे इलाके के लिए आतंक और दहशत का कारण बन जाता है। ग्रामीण असहाय हैं और मानो अपनी किस्मत को स्वीकार कर चुके हैं। नियमित रूप से शिकार होते रहते हैं, अगर हत्यारा बाघ हो तो दिन और रात दोनों समय, और अगर तेंदुआ हो तो केवल रात में। बाघ अक्सर एक ही इलाके में बार-बार चक्कर लगाता है। मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन अंधविश्वास और मनोबल में कमी ग्रामीणों को अपने दुश्मन के खिलाफ कोई संगठित और सुनियोजित कार्रवाई करने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सड़कें सुनसान हैं, गांवों में यातायात ठप हो गया है, वन कार्य, लकड़ी काटना और पशु चराना पूरी तरह बंद हो गया है, खेत बिना खेती के पड़े हैं, और कभी-कभी तो पूरे गांव ही सुरक्षित क्षेत्रों में चले जाते हैं।

ऐसे जानवरों का शिकार करने के प्रयास में सबसे बड़ी कठिनाई आसपास के ग्रामीणों द्वारा प्रदर्शित असाधारण असहयोग है, जो आदमखोर द्वारा प्रतिशोध के अंधविश्वासी भय से प्रेरित हैं, उनका मानना है कि वह रहस्यमय तरीके से उस भूमिका के बारे में जान जाएगा जो उन्होंने उसके खिलाफ निभाने का प्रयास किया है।

एक 'हिंसक' हाथी आमतौर पर 'मस्त' नामक आवधिक बीमारी का परिणाम होता है, जिससे सभी नर हाथी लगभग 90 दिनों तक पीड़ित रहते हैं। आँख के पीछे के छिद्र से तैलीय स्राव इसका बाहरी लक्षण है। इस दौरान वे बेहद आक्रामक और खतरनाक हो जाते हैं, लेकिन बाद में वे आमतौर पर अपने सामान्य, हानिरहित स्वभाव में लौट आते हैं। कभी-कभी यह किसी महत्वाकांक्षी युवा हाथी के झुंड के बड़े हाथियों से मादा हाथी को पाने के लिए लड़ाई करने का परिणाम होता है, जिसमें वह बुरी तरह पिट जाता है और बड़े जानवर उसे भगा देते हैं। इसके बाद वह बहुत उदास और चिड़चिड़ा हो जाता है, और जो भी उसके सामने आता है, उससे बदला लेता है, जिसमें मनुष्य सबसे आसान होता है।

हालांकि, यह नहीं सोचना चाहिए कि भारत के जंगलों में हमेशा आदमखोर बाघ, तेंदुए या हिंसक हाथी मौजूद रहते हैं। आमतौर पर ऐसा नहीं होता, और इसलिए जंगल किसी भी राजधानी शहर की व्यस्त सड़क की तुलना में घूमने के लिए अधिक सुरक्षित हैं, जहां किसी भी क्षण मोटर वाहन से कुचल जाने का खतरा बना रहता है।

इसके अलावा, प्रकृति की सुंदरता, फूलों, कीड़ों, पक्षियों और जानवरों की भव्यता, भारतीय जंगल की सुबह की महिमा, और चमकते लाल सूर्यास्त की सुंदरता, और पंखुड़ीदार बांसों की लहराती चोटियों को नहलाती चांदी जैसी चांदनी वाली रात की सुंदरता, अंधेरी रातों का रहस्य, अनगिनत तारों से जड़ा आकाश, और इन सबसे ऊपर शांतिपूर्ण एकांत और प्रकृति और ईश्वर के निकट होने का अहसास, घुमक्कड़ को इस आश्वासन से भर देता है कि उसने अंततः एक घर पा लिया है, जिससे वह स्वेच्छा से अलग नहीं होना चाहेगा।

मुझे उम्मीद है कि अगर मैंने अपनी कुछ कहानियों में भौगोलिक और प्राकृतिक वर्णनों और परिस्थितियों पर काफी ध्यान दिया है, और जंगल के पक्षियों और जानवरों की आवाज़ों को अपने लेखन में उतारने की कोशिश की है, तो मुझे क्षमा कर दिया जाएगा। मैंने ऐसा जानबूझकर किया है, ताकि भारत में रह चुके और यहाँ के शानदार जंगलों का भ्रमण कर चुके अपने कुछ पाठकों के लिए उन दिनों और उन जंगलों की यादें ताज़ा कर सकूँ, जिनसे बिछड़ने का उन्हें निश्चित रूप से दुख है। मुझे उस दिन का डर है जब मुझे भी उनसे बिछड़ना पड़ेगा।

अंत में, मैं अपने दिवंगत पिता का हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने सात वर्ष की आयु में मुझे बंदूक चलाना सिखाया था; हालाँकि वे स्वयं जंगल प्रेमी नहीं थे, फिर भी उन्हें बत्तख, तीतर और छोटे जानवरों का शिकार करने में आनंद आता था। मैं बायरा का भी आभारी हूँ, जो एक जंगली पुजारी थे और जिन्हें मैंने सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे एक बिल में रहते हुए पाया था; पच्चीस वर्ष से भी अधिक समय पहले, उन्होंने मुझे जंगल और उसके जीव-जंतुओं के बारे में वह सब कुछ सिखाया जो मैं आज जानता हूँ, और मेरे भीतर जंगल में स्थित अपने घर के प्रति गहरा प्रेम जगाया। मैं सलेम जिले के ही अपने वफादार पुराने शिकारी रंगा का भी आभारी हूँ, जिन्होंने कई यात्राओं में मेरा साथ दिया, धैर्यपूर्वक मेरी देखभाल की, मेरा मार्गदर्शन किया, मेरी मदद की और खतरे के सामने दृढ़ता से वफादार और निडर रहे; उनके सहायक और शिकार में लगभग उनके बराबर माने जाने वाले सौरी का; और मेरे पुराने शिकारी मित्रों, डिक बर्ड और पैट वॉटसन का, जिन्होंने मिलकर मेरे जानने वाले किसी भी व्यक्ति से अधिक बाघ मारे हैं, जिन्होंने मेरे शुरुआती दिनों में मुझे कई सुझाव और निर्देश दिए।

केनेथ
एंडरसन

अंतर्वस्तु

परिचय 7

1. जोवलागिरी का नरभक्षी 15

2. गुम्मलापुर का चित्तीदार शैतान 36

3. चमाला घाटी का धारीदार आतंक 52

4. होसदुर्गा होलालकेरे नरभक्षी 80

5. पनापत्ती का दुष्ट हाथी 111

6. सेगुर का नरभक्षी 121

7. यम्मैदोद्दी का नरभक्षी 148

8. जलाहल्ली का हत्यारा 173

9. देवरायनदुर्गा का साधु 185

10. बायरा, पुजारी 197

11. द टाइमर्स ऑफ़ टैगार्थी 234

रेखांकन

1. लेखक निप्पर के साथ पृष्ठ 32 की ओर मुख किए हुए।

2. जोवलागिरी का नरभक्षी 33

3. बाघ द्वारा बैल को मारते हुए (एक मचान से लिया गया)

64

4. जलाहल्ली का हत्यारा 65

5. सोवरी द्वारा गोली मारा गया हाथी 160

6. अनाइकुट्टी नदी का कलकल करता जल 161

7. होगेनैकल जलप्रपात, कावेरी नदी में आई बाढ़ के साथ, 192

8. होगेनैकल में कावेरी नदी पार करने के लिए शिकार दल तैयारी कर रहा है (193)

9. शाम राव बापट और वह बाघ जिसे उन्होंने अपने ही बगीचे में गोली मारी थी 193

एमएपीएस

1. जोवलागिरी क्षेत्र 17

2. चमाला घाटी 53

3. होसदुर्गा-होलालकेरे क्षेत्र 81

4 सेगुर क्षेत्र 123

जोवलागिरी का नरभक्षी

जो लोग उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों और जंगलों में जा चुके हैं, उन्हें पहाड़ियों और घाटियों पर चांदनी की सुंदरता के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं होगी, जो जंगल की

घासों और विशाल पेड़ों के प्रत्येक पत्ते को जीवंत रूप से उजागर करती है, और नीचे की गहरी छायाओं को और भी रहस्यमय बना देती है, जहां चंद्रमा की किरणें नहीं पहुंच पाती हैं, शायद किसी शिकारी जानवर, चौकस हिरण या घात लगाए बैठे सरीसृप को, सभी व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से भोजन की तलाश में।

जोवलागिरी वन क्षेत्र में सब कुछ शांत प्रतीत हो रहा था, लेकिन फिर भी हर तरफ खतरा मंडरा रहा था और हत्याएं होने वाली थीं। तीन शिकारी, जिनके पास दो पुरानी बंदूकें थीं, मांस प्राप्त करने के लिए निकले थे। उन्होंने एक जलकुंड के ढलान वाले किनारे पर चतुराई से एक छिपने की जगह बनाई थी और सूर्यास्त से ही उसमें बैठे हिरणों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, जो देर-सवेर अपनी प्यास बुझाने के लिए जरूर आएंगे।

समय बीतता गया। पूर्णिमा का चाँद आसमान के मध्य तक पहुँच चुका था और चारों ओर दिन के उजाले जैसा उजाला था। अचानक, बाईं ओर सदाबहार पेड़ों की घनी झाड़ियों से पत्तों के ज़ोर से सरसराने और गहरी आवाज़ में गुर्राने की आवाज़ सुनाई दी। वहाँ क्या हो सकता है? निश्चित रूप से जंगली सूअर! एक स्वादिष्ट भोजन, और साथ ही मांस जिसे बेचा जा सकता है! शिकारी इंतज़ार करते रहे, लेकिन जानवर, चाहे जो भी हों, बाहर नहीं निकले। अधीर होकर, तीनों में से कुशल निशानेबाज़ मुनियाप्पा ने गोली चलाने का जोखिम उठाने का फैसला किया। अपनी बंदूक उठाकर, उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि आसपास के वातावरण से भी गहरी एक काली छाया स्पष्ट न हो जाए, और फिर गोली चला दी। एक गुर्राहट और झाड़ियों के फड़फड़ाने की आवाज़ आई, उसके बाद खाँसी की कई आवाज़ें आईं और फिर सन्नाटा छा गया।

सूअर नहीं, बाघ! तीनों शिकारी डरते-डरते चुपचाप अपने गाँव की ओर भागे और पूरी रात अपने इस कृत्य के परिणाम की चिंता में बिताई। लेकिन सुबह सब ठीक निकला, क्योंकि एक जवान नर बाघ मरा पड़ा था, पुरानी बंदूक से निकली गोली सीधे उसके दिल में जा लगी थी। इस तरह मुनियाप्पा और उसके दोस्त उस दिन गाँव के गुमनाम और दबी आवाज़ में चर्चित नायक बन गए।

लेकिन अगली रात कहानी कुछ और ही थी। सूर्यास्त के साथ ही एक बाघिन की तीव्र,

क्रोधित पुकार सुनाई दी, जो अपने मृत साथी को खोज रही थी। क्योंकि यह प्रजनन का मौसम था, और यह बाघिन, जो पिछली रात ही अपने साथी को ढूंढने में सफल हुई थी, उसकी अचानक अनुपस्थिति से बेहद नाराज थी, जिसका कारण उसने बिल्कुल सही ही मनुष्यों के हस्तक्षेप को बताया।

एक सप्ताह तक, रात-दर-रात, वह बेचैन होकर इधर-उधर घूमती रही, दिन में जंगल की गहराई से पुकारती और रात में गाँव के ठीक बाहरी इलाके में दहाड़ती। युवा जैक लियोनार्ड, जो एक ट्रॉफी हासिल करने के लिए उत्सुक था और जिसे एक ज़रूरी पत्र द्वारा गाँव बुलाया गया था, आठवें दिन सुबह पहुँचा और स्थिति का जायज़ा लिया। उसे बताया गया था कि बाघिन हर जगह घूमती है, और जंगल के बंगले की ओर जाने वाले सुनसान रास्ते पर उसके कई पदचिह्न देखकर, उसने उसी शाम अपनी किस्मत आज़माने का फैसला किया और शाम पाँच बजे तक रास्ते के किनारे बने एक चींटी के टीले के पीछे छिप गया।

मिनट बीतते गए और शाम के 6:15 बजते-बीतते अंधेरा छाने लगा। अचानक पत्तों की हल्की सरसराहट सुनाई दी और एक ढीला पत्थर उसके दाहिनी ओर किनारे से लुढ़क गया। लियोनार्ड ने बाघिन को देखने के लिए अपनी आँखें गड़ा दीं, लेकिन कुछ नहीं दिखा। फिर मिनट बीत गए। और फिर, सड़क के किनारे-किनारे तेज़ी से उसकी ओर, उसी तरफ़, बढ़ती हुई बाघिन की आकृति उसे मुश्किल से दिखाई दी। उसने जल्दी से अपनी राइफ़ल का बट बाएँ कंधे पर रखा और झाड़ी से जितना हो सके बाहर झुक गया ताकि वह जानवर को और अच्छे से देख सके। लियोनार्ड ने बाघिन की छाती पर गोली चलाई, जो अगर थोड़ी सी भी दाहिनी ओर लगती तो जानलेवा साबित होती।

हुआ यूं कि लियोनार्ड की गोली सीधे दाहिने कंधे में जा लगी, जिससे जानवर ज़ोर से दहाड़ा और फिर जंगल में भाग गया। बेहद निराश होकर लियोनार्ड ने सुबह तक उसके निशान का पीछा करने का इंतज़ार किया। चारों ओर खून ही खून था, लेकिन पथरीले और दुर्गम इलाके, घने जंगलों वाली खाइयों और घनी झाड़ियों के कारण वह अपने शिकार को पकड़ नहीं पाया।

कई महीने बीत गए, और दृश्य बदल गया। अब हम सुलेकुंटा गाँव की ओर मुड़े, जो

जंगल के भीतर बसा हुआ था और जोवलागिरी से लगभग सात मील दूर था। वहाँ एक छोटा सा मंदिर था, जहाँ आसपास के इलाकों से तीर्थयात्री कभी-कभार दर्शन करने आते थे। इनमें से तीन लोग अपनी पूजा-अर्चना पूरी करके घर लौट रहे थे: एक पुरुष, उसकी पत्नी और सोलह वर्षीय पुत्र। मंदिर से लगभग एक चौथाई मील दूर एक जंगली इमली के पेड़ के नीचे से गुजरते हुए, लड़का कुछ अधपके खट्टे इमली के फल तोड़ने के लिए रुका। माता-पिता ने एक धीमी सी गुर्राहट सुनी, जिसके बाद एक तीखी, दर्द भरी चीख सुनाई दी। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उनका बेटा बाघ के जबड़ों में जकड़ा हुआ था, और बाघ सुनसान रास्ते के किनारे बह रहे एक नाले में कूद गया। बूढ़े दंपति ने हिम्मत जुटाकर पीछे मुड़कर बाघ को जितना हो सके गालियाँ दीं, लेकिन उनके इकलौते बेटे की दो और चीखों ने उनका जवाब दिया, और फिर सब कुछ शांत हो गया।

इसके बाद, उत्तर में स्थित जोलागिरी से लेकर दक्षिण में तीस मील दूर स्थित गुंडालम के पशु बाड़े तक, और पश्चिम में बीस मील दूर स्थित मैसूर राज्य की सीमाओं से लेकर डेनकाफ्लिकोटा जाने वाली मुख्य सड़क तक, लगभग पैंतालीस मील की दूरी तक फैले एक विस्तृत क्षेत्र में लगातार मौतें होती रहीं। इस भयानक बीमारी का शिकार लगभग पंद्रह लोग हो चुके थे, जिनमें तीन लड़कियां भी शामिल थीं, जिनमें से एक की अभी-अभी शादी हुई थी। तभी मुझे मेरे मित्र, होसुर के सब-कलेक्टर से इस क्षेत्र को इस विपत्ति से मुक्त करने का तत्काल बुलावा आया।

जोलागिरी की यात्रा करते हुए, जहाँ उप-कलेक्टर ने मुझे बताया था कि समस्या शुरू हुई थी, मैंने कहानी के तथ्यों को जोड़कर यह निष्कर्ष निकाला कि यह बाघ नहीं बल्कि एक बाघिन थी, जिसे शिकारियों ने उसके साथी से छीन लिया था और बाद में लियोनार्ड के साहसी लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण निशाने से घायल हो गई थी। जोलागिरी से मैं सुलेकुंटा की ओर पैदल चला, इस उम्मीद में कि मुझे उस हमलावर के ताज़े पदचिह्न मिल जाएँगे, लेकिन मैं बदकिस्मत रहा, क्योंकि हाल के दिनों में उस स्थान पर कोई शिकार नहीं हुआ था, और जो भी पदचिह्न थे, वे मवेशियों के झुंडों के गुजरने से मिट गए थे। प्रभावित क्षेत्र की दक्षिणी सीमा पर स्थित तेईस मील दूर गुंडालम की ओर बढ़ते हुए, मैंने वहाँ डेरा डालने का फैसला किया, क्योंकि इसी मवेशी बाड़े में अधिकांश शिकारों की सूचना मिली थी, पिछले चार महीनों में सात चरवाहों की हत्या

हुई थी।

मेरे मित्र, उप-कलेक्टर ने बड़ी समझदारी से तीन मोटे भैंस के बछड़ों को चारे के रूप में उपलब्ध कराया था; मैंने उन्हें शिकार की उम्मीद में संभावित स्थानों पर बांधना शुरू कर दिया। पहले बछड़े को मैंने गुंडालम की सीमा से लगे नदी के किनारे एक मील नीचे बांधा, जहाँ उस समय नदी में पानी की एक पतली धारा बहती थी और जहाँ सिगे हाल्ला नामक एक सहायक नदी मिलती थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि बाघिन वहीं अपना शिकार करती है; दूसरे बछड़े को मैंने चार मील दूर स्थित पड़ोसी गाँव एंचेटी के रास्ते पर बांधा; शेष बछड़े को मैंने जलविभाजक के पास बांधा, जहाँ से चरवाहे और मवेशी दोनों ही प्रतिदिन पीने का पानी प्राप्त करते थे।

इन तीनों चारे को सुरक्षित और आरामदेह स्थिति में रखने के बाद, मैंने अगले दो दिन जंगल में हर दिशा में भटकते हुए बिताए, अपने .405 विंचेस्टर से लैस होकर, इस उम्मीद में कि मुझे ताजा पदचिह्न मिल जाएं, या शायद खुद आदमखोर को देख सकूं।

दूसरे दिन सुबह-सुबह मैंने गुंडालम नदी की नरम रेत में बाघिन के पदचिह्न देखे। वह रात में नदी में उतरी थी, नदी के किनारे-किनारे जलविभाजक और मेरे भैंस के चारे के पास से गुजरी, जिसे उसके पदचिह्नों से स्पष्ट था कि वह रुककर देखती रही थी, लेकिन उसे छुआ तक नहीं था, और पास की एक पहाड़ी पर चढ़कर अंचेटी की ओर चली गई। यहाँ ज़मीन इतनी सख्त हो गई कि आगे उसका पीछा करना मुश्किल हो गया। तीसरी सुबह मैं फिर से खोजबीन कर रहा था, और अभी शिविर में लौटा ही था कि गर्म पानी से नहाने और जल्दी दोपहर का भोजन करने की तैयारी कर रहा था, तभी अंचेटी के मुखिया के साथ कुछ लोग आए और मुझे बताया कि बाघिन ने उसी सुबह अंचेटी से मुश्किल से एक मील दक्षिण में स्थित एक छोटे से गाँव में एक आदमी को मार डाला था। जाहिर है, एक ग्रामीण ने अपने बाड़े में बंद मवेशियों की बेचैनी भरी आवाज़ें सुनकर भोर में जाँच करने के लिए बाहर गया था और वापस नहीं लौटा था। इसके बाद उसका भाई और बेटा उसकी अनुपस्थिति का कारण जानने के लिए उसके पीछे गए और मवेशी बाड़े के बाहरी इलाके में उन्हें उस आदमी का कंबल और लाठी मिली, और कठोर मिट्टी में बाघिन के पिछले पैरों के अस्पष्ट निशान मिले, जब वह अपने शिकार पर हमला करने के लिए खड़ी हुई थी। डर के मारे वे उसका पीछा नहीं

कर सके और गाँव की ओर भाग गए, और वहाँ से एंचेटी पहुँच गए, जहाँ संख्या में वृद्धि करके और मुखिया के साथ, वे मुझे खोजने के लिए जल्दी से आए।

स्नान को छोड़कर और जल्दी से दोपहर का भोजन करके, हम एंचेटी और उसके गाँव की ओर चल पड़े। जिस स्थान पर बाघिन ने हमला किया था और जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट था कि दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति द्वारा मारे गए शिकार ने कोई आवाज नहीं की थी, वहाँ से पीछा करना कठिन और धीमा हो गया, क्योंकि ज़मीन कठोर और पथरीली थी। इस मामले में, झाड़ियों के बीच घनी कंटीली झाड़ियों ने हमारी मदद की; क्योंकि चारों ओर खोज करने पर, हमें उस व्यक्ति की धोती के टुकड़े कंटीली झाड़ियों में फंसे हुए मिले, जिन्हें बाघिन ले जा रही थी। यदि परिस्थितियाँ इतनी दुखद न होतीं, तो यह जानना शिक्षाप्रद होता कि उस बुद्धिमान जानवर ने कंटीली झाड़ियों और उनसे उत्पन्न होने वाली बाधाओं से बचने का प्रयास कैसे किया था।

लगभग 300 गज दूर, उसने एक छोटे अंजीर के पेड़ के नीचे झाड़ियों में अपना बोझ गिरा दिया, शायद भोजन शुरू करने के इरादे से। फिर उसने अपना इरादा बदल दिया, या शायद विचलित हो गई, क्योंकि उसने अपने शिकार को फिर से उठा लिया और लगभग तीस मील दूर मुख्य कावेरी नदी की ओर दक्षिण की ओर बहने वाले एक गहरे नाले की ओर पीछे हट गई। इसके बाद, पीछा करना आसान हो गया, क्योंकि बाघिन ने आदमी की गर्दन और गले से अपनी पकड़ बदल ली थी; इसी वजह से खून के निशान नहीं मिले। अब उसने उसे उसकी पीठ के निचले हिस्से से पकड़ रखा था। खून की बूंदों और झाड़ियों और घनी पत्तियों पर लगे धब्बों ने अब हमारे लिए निशान का पीछा करना अपेक्षाकृत आसान बना दिया, और कुछ सौ गज आगे हमें आदमी की धोती मिल गई, जो पूरी तरह से खुल गई थी और एक उभरी हुई कांटेदार झाड़ी से लटक रही थी।

आगे बढ़ते हुए हम नाले पर पहुँचे, जहाँ नरम सूखी रेत में बाघिन के पैरों के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे, साथ ही एक तरफ़ हल्का सा घिसटने का निशान भी था, जो शायद उस आदमी के पैर के घिसटने से बना था जब उसे ले जाया जा रहा था। क्योंकि किसी खोजी की ज़रूरत नहीं थी, और भीड़ होने से गड़बड़ी और बेवजह का खतरा भी था, इसलिए मैंने बाकी लोगों को वहीं रुकने का इशारा करके अकेले ही

धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया। मेरी गति बहुत धीमी थी, क्योंकि मुझे नाले के दोनों किनारों पर घनी झाड़ियों को ध्यान से देखना था, जहाँ बाघिन घात लगाकर बैठी हो सकती थी और अपने पीछा करने वाले को मार डालने का इंतज़ार कर रही हो सकती थी। इस तरह मैंने नाले के दो मोड़ पार किए, तभी मुझे नाले के तल में निकली हुई एक छोटी सी चट्टान दिखाई दी। चट्टान के दूसरी तरफ़ जितना हो सके रहते हुए, मैंने अपनी गति और भी तेज़ कर दी। ध्यान से देखने पर चट्टान के दूसरी तरफ़ एक काली वस्तु दिखाई दी, और यह दुर्भाग्यशाली शिकार का शव निकला।

बाघिन पहले ही अच्छा-खासा भोजन कर चुकी थी, उसने अपने शिकार का लगभग आधा हिस्सा खा लिया था, एक टांग जांघ से अलग कर दी थी और एक हाथ काट दिया था। यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह आसपास कहीं नहीं है, मैं अपने आदमियों के पास लौट आया, जिन्हें मैंने मौके पर बुलाया ताकि वे मेरे लिए बैठने की कोई जगह बनाने में मदद करें, जहाँ मैं बैठकर उस शिकारी के अपने भयानक भोजन के लिए लौटने का इंतज़ार कर सकूँ, जिसके बारे में मुझे पूरा विश्वास था कि वह उस दिन सूर्यास्त से पहले लौट आएगी। बैठने के लिए इससे अनुपयुक्त जगह की कल्पना करना मुश्किल था। वहाँ एक भी पेड़ नहीं था जिस पर छिपने की जगह या मचान बनाया जा सके, और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि केवल दो ही विकल्प थे। एक था नाले के दूसरी ओर वाले किनारे के पास बैठना, जहाँ से मानव शिकार स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। दूसरा था ढलान वाली चट्टान पर चढ़कर नाले के तल से लगभग दस फीट ऊपर एक बिंदु तक जाना, जहाँ उसके ऊपरी किनारे से लगभग चार फीट की दूरी पर एक प्राकृतिक कगार बना हुआ था। मैंने पहली योजना को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि आदमखोर सांप के मामले में यह बहुत खतरनाक थी, और इससे मेरे पास रॉकलेज पर बैठने का विकल्प बचा, जहाँ से मैं न केवल शव को देख सकता था, बल्कि उस नाले की पूरी लंबाई को भी देख सकता था, जहाँ से हम आए थे, और दूसरी दिशा में लगभग बीस गज तक, जहाँ वह अचानक दाईं ओर मुड़ जाता था।

कुछ दूरी पर नाले के ऊपर एक ऐसी जगह पर, जहाँ से काटने की आवाज़ सुनाई न दे, चुपचाप और तेज़ी से काम करते हुए, आदमियों ने चट्टान के ठीक पास उगने वाली उसी किस्म की कुछ कांटेदार शाखाएँ काटीं, ताकि कोई अलग पृष्ठभूमि न बने। उन्होंने इन्हें बड़ी कुशलता और चतुराई से चट्टान के नीचे इस तरह से लगाया कि नाले से मुझे

किसी भी दिशा में देखा न जा सके। सौभाग्य से मैं अपना कंबल, पानी की बोतल और टॉर्च पहले से ही साथ लाया था, हालाँकि रात के अधिकांश भाग में इनकी ज़्यादा ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि चाँद लगभग पूरा होने वाला था और अपेक्षाकृत जल्दी निकलेगा। दोपहर 3 बजे तक मैं अपनी जगह पर पहुँच गया और आदमी मुझे छोड़कर चले गए। उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे अगली सुबह गर्म चाय की थर्मस और नाश्ते के लिए सैंडविच लेकर लौटें। दोपहर धीरे-धीरे बीतती गई, चिलचिलाती धूप की गर्मी सीधे खुली चट्टान पर पड़ रही थी और मुझे पसीने से तर कर रही थी। नाले में दोनों दिशाओं में नीचे देखने पर, सब कुछ शांत था और तपती धरती से उठने वाली झिलमिलाती गर्मी की किरणों को कोई भी चीज़ विचलित नहीं कर रही थी। गिद्धों की अनुपस्थिति का कारण यह हो सकता है कि बाघिन ने जिस तरह से शव को खड़ी ढलान वाली चट्टान के नीचे छोड़ा था, वह आसमान से छिपा हुआ था। शाम लगभग 5 बजे, एक कौवे ने उसे देखा और लगातार कांव-कांव करके जल्द ही अपने साथी को आकर्षित किया। लेकिन दोनों पक्षी इंसानी गंध से इतने डरे हुए थे कि उन्होंने शिकार को नोचना शुरू नहीं किया। समय बीतता गया और दूर स्थित घने जंगलों से ढकी पहाड़ियों के किनारे सूरज एक आग के गोले की तरह डूब गया।

कौवे एक के बाद एक उड़ गए, दूर किसी पेड़ पर बैठने के लिए तैयार, कल के इंतज़ार में, जब भूख से बेहाल होकर वे इंसानों की भयानक गंध का सामना करने के लिए ज़्यादा सक्षम होंगे। जंगली मुर्गे की बुलंद आवाज़ चारों दिशाओं में गूंज उठी, मानो ढलते दिन को विदाई दे रही हो, और नदी के सूखे तल से मोर की तेज़ 'माऊ' की आवाज़ सुनाई दी। मैंने उस आवाज़ का स्वागत किया, क्योंकि मैं जानता था कि पूरे जंगल में मोर से ज़्यादा चौकस रखवाला कोई नहीं हो सकता और अगर वह बाघिन को देख ले तो मुझे तुरंत आगाह कर देगा। अब अपेक्षित समय आ गया था, और अपनी हर इंद्रिय को पूरी तरह सतर्क रखते हुए, मैं उस आदमखोर के लौटने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन कुछ नहीं हुआ, मोर भारी पंखों के साथ उड़ गया और ढलते दिन के बाद तेज़ी से शाम हो गई।

सौभाग्य से, सुबह का चाँद निकल चुका था और उसकी चाँदी जैसी चमक से मेरी दृष्टि थोड़ी-बहुत वापस आ गई। दिन के पक्षी अब अपने घोंसलों में जा चुके थे और उनकी जगह रात के पक्षियों ने ले ली थी। नाले में नाइटजार पक्षियों की लगातार 'चक-चक-

चक' की आवाज़ गूँज रही थी, क्योंकि रात के ये शुरुआती संदेशवाहक ठंडे किनारों पर अपने कीड़े-मकोड़े का शिकार खोज रहे थे। समय फिर से बीत गया और फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। एक झींगुर की आवाज़ भी सन्नाटे को नहीं तोड़ रही थी और मेरे दोस्त, नाइटजार पक्षी, भोजन की तलाश में कहीं और चले गए थे। नीचे मानव अवशेषों पर नज़र डालते हुए, ऐसा लगा जैसे एक हाथ मुझसे विनती कर रहा हो या शायद बदला लेने के लिए पुकार रहा हो। सौभाग्य से, सिर दूसरी तरफ मुड़ा हुआ था, इसलिए मैं चेहरे की उस भयानक विकृति को नहीं देख सका, जिसे मैंने उस दोपहर पहले देखा था।

अचानक, एक भयभीत सांभर की तीखी आवाज ने सन्नाटा तोड़ दिया और उसके बाद लगभग आधा मील दूर से लगातार वैसी ही आवाजें आती रहीं। फिर चित्तीदार हिरण की तीखी आवाज सुनाई दी, और नाले में बेचैन 'ब्रेन-फीवर, ब्रेन-फीवर' पक्षी की अजीबोगरीब आवाज गूंज उठी, जो बढ़ती हुई तीव्रता में बार-बार सुनाई दे रही थी। मैंने राहत की सांस ली और अंतिम कार्रवाई के लिए अपनी नसों और मांसपेशियों को तैयार किया। मेरे साथी, जंगल के रात्रि रक्षकों ने अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाया था और मैं जानता था कि बाघिन पास आ रही थी और उसे देख लिया गया था।

फिर धीरे-धीरे आवाजें धीमी पड़ गईं। इसका मतलब था कि बाघिन आवाज लगाने वालों की पहुंच से बाहर निकल चुकी थी और अब आस-पास ही थी। मैंने अपनी निगाहें दाईं ओर मुड़े हुए नाले पर टिका दीं, जो बीस गज दूर था, जहाँ किसी भी क्षण मुझे आदमखोर बाघिन के प्रकट होने की उम्मीद थी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। तीस मिनट बीत गए, फिर मेरी घड़ी की सुइयाँ चाँदनी में साफ दिखाई दे रही थीं, जिनमें पैंतालीस मिनट हो गए थे। अजीब बात है, मैंने सोचा; बाघिन को तो बहुत पहले ही प्रकट हो जाना चाहिए था। आधा मील की दूरी तय करने में उसे पैंतालीस मिनट तो नहीं लगेंगे।

और फिर अचानक मुझ पर आसन्न खतरे का भयानक आभास छा गया। इससे पहले भी कई बार, भारत और बर्मा के जंगलों और अफ़्रीकी मैदानों में अपनी यात्राओं के दौरान, वह रहस्यमयी छठी इंद्री, जो हम सभी में होती है लेकिन कुछ ही लोग विकसित कर पाते हैं, मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हुई थी। मुझे ज़रा भी संदेह नहीं

था कि किसी तरह, मेरी तमाम सावधानियों, पूर्ण निरोध और पूर्ण शांति के बावजूद, बाघिन को मेरी उपस्थिति का पता चल गया था और वह उस समय शायद मेरा पीछा कर रही थी, अंतिम हमले की तैयारी में।

खतरे के क्षणों में, हम जो जंगल को जानते हैं, तुरंत सोचते हैं। यह बहादुरी नहीं है जो मन को इतनी तेज़ी से सोचने के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि मैं स्वीकार करता हूँ कि उस समय मैं बहुत डरा हुआ था और मेरे चेहरे से ठंडे पसीने की बूँदें टपक रही थीं। मैं जानता था कि बाघिन नाले पर या मेरे नीचे नहीं हो सकती, वरना मैं उसे बहुत पहले देख लेता। हो सकता है वह सामने वाले किनारे पर घनी झाड़ियों में छिपी हो और मेरी स्थिति पर नज़र रख रही हो, लेकिन किसी तरह मुझे लगा कि वहाँ उसकी उपस्थिति उस बढ़ते खतरे के एहसास का कारण नहीं हो सकती जो मुझे लगातार घेर रहा था। वह केवल मेरे ऊपर और पीछे ही हो सकती थी। अचानक मुझे एहसास हुआ कि मेरे पीछे चार फुट ऊँची चट्टान की दीवार मुझे पीछे देखने से रोक रही थी जब तक कि मैं खुद को आधा झुककर, आधा घुटने टेककर न बैठ जाऊँ, जिससे स्थिर निशाना लगाना लगभग असंभव हो जाता, साथ ही सामने वाले किनारे पर या नाले के तल पर मौजूद किसी भी देखने वाले को मेरी स्थिति का पूरी तरह पता चल जाता। क्षण भर के लिए, मैंने अपनी इस दूरदर्शिता की कमी के लिए खुद को कोसा, जो अब मेरे लिए घातक साबित होने वाली थी। जैसे ही मैं एक पल के लिए हिचकिचाया, ऊपर से रेत की एक पतली सी धारा नीचे सरक गई, शायद उस शिकारी ने उसे गिरा दिया था, जो अब निस्संदेह मेरे बहुत करीब थी और आखिरी छलांग लगाने के लिए खुद को तैयार कर रही थी। मैं अब और नहीं हिचकिचाया; मैंने अपने सुन्न पैरों को ज़बरदस्ती उठाकर खुद को आधा झुकी हुई स्थिति में लाया, और साथ ही साथ भरी हुई .405 पिस्तौल को घुमाकर तब तक निशाना साधा जब तक कि उसका सिरा मेरे चेहरे के सीध में न आ गया। फिर मैंने खुद को थोड़ा और ऊपर उठाया, जब तक कि मेरी आँखें और पिस्तौल दोनों चट्टान के ऊपर न आ गईं। एक भयानक दृश्य सामने आया। बाघिन, मुझसे मुश्किल से आठ फीट दूर, पेट के बल लेटी हुई, ढलान वाली चट्टान से मेरी ओर रेंग रही थी। जैसे ही हमारी आँखें आश्चर्य से मिलीं, हमने एक साथ कार्रवाई की, बाघिन ने दिल दहला देने वाली दहाड़ के साथ छलांग लगाई, जबकि मैं फिर से नीचे झुक गया, और उसी क्षण अपनी उंगली ट्रिगर पर कस ली।

राइफल की भारी आवाज़, जो मेरे कानों के ठीक सामने और कुछ ही इंच की दूरी पर हुई थी, उस भयानक दहाड़ के साथ मिलकर एक ऐसी ध्वनि उत्पन्न कर गई जो आज भी अक्सर मेरे सपनों में मुझे सताती है और मुझे डर से कांपते हुए जगा देती है। उस दरिंदे ने उस चट्टान की मौजूदगी का अनुमान नहीं लगाया था जिसके पीछे मैं छिपा था, जबकि राइफल की तेज़ आवाज़ और चकाचौंध भरी चमक उसके चेहरे पर पड़ते ही स्पष्ट रूप से उसे विचलित कर गई, जिससे उसका निशाना भटक गया और उसका इरादा मारने के बजाय भागने का हो गया। वह मेरे सिर के ऊपर से छलांग लगा गई, और गुजरते समय उसके पिछले पैर ने राइफल के मुंह पर ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे राइफल मेरे हाथ से छूट गई और ढलान वाली चट्टान से नीचे लुढ़कती हुई, बट के बल, नीचे नरम रेत पर जा गिरी, जहाँ वह अधखाए हुए शव के पास पड़ी थी। राइफल से भी तेज़ी से, बाघिन नाले के तल तक पहुँच गई, और दो छलांगों और एक और खाँसी भरी दहाड़ के साथ विपरीत किनारे की झाड़ियों में ओझल हो गई। सदमे में डूबा हुआ और जो कुछ हुआ था, उससे लगभग बेखबर, मुझे एहसास हुआ कि मैं निहत्था और असहाय था, और अगर बाघिन अपने रास्ते पर वापस लौटी, तो मैं कुछ भी नहीं कर सकता था। साथ ही, राइफल लेने के लिए नीचे उतरने से निस्संदेह मुझ पर हमला हो जाता, अगर जानवर सामने वाले किनारे की झाड़ियों में घायल पड़ा होता। लेकिन अनिर्णय और असहायता से कुछ भी बेहतर लग रहा था, और मैं राइफल लेने के लिए ढलान से नीचे कूदा और वापस चढ़ने की कोशिश करने लगा, हर पल हमलावर बाघिन की भयानक दहाड़ सुनने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन कुछ नहीं हुआ, और पलक झपकते ही मैं वापस चट्टान पर पहुँच गया।

जल्दी से जांच करने पर पता चला कि गिरने से हथियार को कोई नुकसान नहीं हुआ था, बट ने झटके को सोख लिया था। खाली कारतूस वापस रखते हुए, मैं सोचने लगा कि क्या मैंने बाघिन को सच में मारा था, या फिर बहुत करीब से गोली चलाने पर निशाना चूक गया था। तभी मेरी नज़र अपने पीछे, लगभग दो फीट की दूरी पर, एक काली-सफेद चीज़ पर पड़ी। उसे उठाकर देखा तो पाया कि वह बाघिन के कान का बड़ा हिस्सा था, जो मेरी गोली से इतनी करीब से टकराकर अलग हो गया था। छूने पर वह अभी भी गर्म था, और ज़्यादातर चमड़ी और बालों का होने के कारण, फटे हुए किनारे से मुश्किल से ही खून बह रहा था।

मेरी निराशा और हताशा को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। मैं आदमखोर बाघिन को बिल्कुल करीब से निशाना बनाकर मारने में नाकाम रहा, यहाँ तक कि उसे सचमुच में घायल भी नहीं कर पाया। उसका कान कट जाना उसे कुछ दिनों तक मामूली दर्द से ज़्यादा कुछ नहीं कर पाएगा। दूसरी ओर, मेरी मूर्ख साथी उसे सिखाएगी कि शिकार के बाद दोबारा शिकार पर न लौटना चाहिए। इससे वह और भी चालाक, और भी खतरनाक और और भी विनाशकारी हो जाएगी, क्योंकि अब उसे शिकार करने के बाद खाना होगा और भूख लगने पर दोबारा शिकार करना होगा, जिससे उसकी हत्याओं की संख्या सामान्य से कहीं अधिक बढ़ जाएगी। वह शायद अपना कार्यक्षेत्र भी बदल ले और देश के किसी दूसरे हिस्से में चली जाए, जहाँ के लोगों को आदमखोर बाघिन के आने की जानकारी न हो और वे आसानी से उसका शिकार बन जाएँ। मैंने पूरी रात खुद को कोसता रहा, इस उम्मीद में कि शायद बाघिन फिर से दिखाई दे, लेकिन सब व्यर्थ रहा। सुबह, और मेरे आदमियों के लौटने पर, मैं अंदर तक कांप रहा था, बेहद निराश और हताश था। पिछली सुबह से चले आ रहे मेरे लंबे उपवास के बाद, जो गरमा गरम चाय और सैंडविच वे लाए, और फिर एक पाइप भर तेज़ तंबाकू पीने से, मेरा मनोबल कुछ हद तक बढ़ गया और मैंने स्थिति को थोड़ा कम गंभीरता से लिया, जो कि इससे कहीं ज़्यादा बुरी हो सकती थी। अगर मेरी छठी इंद्री काम न करती, तो मैं निस्संदेह कल के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार के बगल में एक अधपका शव पड़ा होता। मेरे पास वास्तव में शुक्रगुज़ार होने के लिए कुछ था।

जिस जगह बाघिन कूदी थी, उसके पास पहुँचकर हमने खून के निशान ढूँढे, लेकिन जैसा कि मुझे उम्मीद थी, कुछ नहीं मिला। बस कभी-कभार उसके घायल कान के निशान झाड़ियों की पत्तियों पर लगे थे, क्योंकि बाघिन उस जगह से पीछे हट गई थी जो उसके लिए बहुत ही चौंकाने वाली साबित हुई थी। कुछ दूरी पर जाकर ये निशान भी गायब हो गए, इसलिए निराश होकर हम सब गाँव एंचेटी और फिर गुंडालम लौट आए और पूरी तरह से असफल होने की खबर दी।

मैं दस दिन और गुंडालम में ही रहा, लगातार हर दिन भैंसों को चारा डालता रहा, हालाँकि सफलता की उम्मीद बहुत कम थी। सुबह और दोपहर का पूरा समय मैं जंगल में उनके पदचिह्नों की तलाश में बिताता था, और रातें पानी के गड्ढों, जानवरों के रास्तों और गुंडालम नदी के किनारे बैठकर बाघिन के दिखने की उम्मीद में गुजारता था,

लेकिन सब व्यर्थ रहा। दिन के समय कई दल शिकार के बारे में जानकारी लेने के लिए हर दिशा में जाते थे, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। जाहिर तौर पर, बाघिन ने अपना ठिकाना छोड़ दिया था और बेहतर जगहों की ओर चली गई थी।

ग्यारहवें दिन, मैं गुंडालम से निकलकर पैदल चलकर अंचेटी और डेनकनिकोटा पहुँचा। वहाँ से मैं होसुर गया, जहाँ मैंने अपने मित्र, उप-कलेक्टर को सारी घटना बताई और उनसे वादा लिया कि यदि आगे कोई हत्या होती है, तो वे मुझे तुरंत सूचित करेंगे, क्योंकि अब मैं इस इलाके के लोगों के कल्याण के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानता था। फिर, होसुर छोड़कर मैं बैंगलोर स्थित अपने घर लौट आया।

पांच महीने बीत गए, इस दौरान मुझे सब-कलेक्टर से तीन पत्र मिले, जिनमें दूर-दराज के स्थानों से बाघों द्वारा मानव वध की अस्पष्ट अफवाहों का जिक्र था, जिनमें से दो कावेरी नदी के पार कोयंबटूर जिले से, एक मैसूर राज्य क्षेत्र से और चौथा उससे भी दूर किसी स्थान से था।

फिर अचानक वह बुरी खबर आई जिसका मुझे डर था, लेकिन उम्मीद थी कि ऐसा नहीं होगा। गुंडालम में एक बाघ ने फिर से हमला किया था, वहाँ उसने अपना आठवाँ शिकार मार डाला था, और अगली शाम सुलेकुंता के छोटे से मंदिर के द्वार से ही उस बूढ़े पुजारी को अगवा कर लिया था जो पिछले चालीस वर्षों से वहाँ सेवा कर रहा था। पत्र के अंत में तुरंत आने का अनुरोध था।

इतनी जल्दी बुलावे की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि मैं सबसे बुरे हालात के लिए तैयार था; दो घंटे के भीतर मैं जोवलागिरी के लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँचकर मुझे सौभाग्य से उन तीर्थयात्रियों में से एक से बात करने का मौका मिला, जो सुलेकुंता के मंदिर के बूढ़े पुजारी की मृत्यु के लगभग चश्मदीद गवाह थे। बताया गया कि पुरुषों का एक समूह तीर्थयात्रा पर था और जैसे ही वे मंदिर के पास पहुँचे, उन्हें एक बाघ की दहाड़ सुनाई दी, जो लगभग तीस गज दूर उगे एक विशाल पीपल के पेड़ की जड़ों से जंगल में कूद गया। मंदिर में शरण लेने के लिए भागते हुए, वे उसे खाली पाकर हैरान रह गए, और बाहर देखने पर बूढ़े पुजारी का शव उनके ठीक सामने पुराने पीपल के पेड़ की टेढ़ी-मेढ़ी जड़ों के बीच पड़ा देखकर दंग रह गए। कुछ समय बाद, बहुत डरते हुए, वे एक समूह में पास गए, तो पता चला कि बूढ़े व्यक्ति पर मंदिर के अंदर या

उसके बहुत पास हमला किया गया था, और फिर उसे इस स्थान पर लाकर खा लिया गया था। बाघ ने अपना भोजन शुरू कर दिया था और वह दुबली-पतली छाती का कुछ हिस्सा खा रहा था, तभी तीर्थयात्रियों के दल ने उसे परेशान कर दिया।

मैंने खास तौर पर अपने सूचनादाता या उसके साथियों से पूछा कि क्या उन्होंने बाघ के कानों में कुछ गड़बड़ी देखी थी, लेकिन जाहिर है, वे सब इतने डरे हुए थे कि कोई भी खामी देख ही नहीं पाए। मैं अपने तीन साथियों के साथ जल्दी से सुलेकुंटा के लिए रवाना हुआ और शाम ढलने के करीब पहुंचा; मुझे मानना पड़ेगा कि यात्रा के आखिरी दो मील बहुत असुविधाजनक रहे, क्योंकि हमें दो खड़ी ढलान वाली पहाड़ियों के बीच की घाटी से गुजरना पड़ा जो घने बांसों से ढकी हुई थी। लेकिन हमें अचानक एक अकेले हाथी की चिंघाड़ के अलावा कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं दिया, जो कुछ समय से इन इलाकों में रह रहा था और तीर्थयात्रियों के लिए काफी परेशानी का सबब बना हुआ था, जिन्हें वह छोटे समूहों में होने पर दौड़ाना पसंद करता था। लेकिन यह एक अलग कहानी है।

ठीक से शिविर लगाने का समय नहीं था, इसलिए हमने मंदिर के सुनसान सामने वाले हिस्से में ही सोने का फैसला किया। सामान्य परिस्थितियों में तो मैं और मेरे साथी ऐसा बिल्कुल नहीं करते। लेकिन रात होने और आदमखोर भालू के पास होने से सारे संशय और सिद्धांत धराशायी हो जाते हैं। मैं भरी हुई राइफल लेकर पहरा दे रहा था, जबकि मेरे तीनों साथी पास में पड़ी झाड़ियाँ और सड़ी हुई लकड़ियाँ तेज़ी से इकट्ठा कर रहे थे ताकि आग जला सकें, जिससे हमें गर्मी और सुरक्षा मिल सके, क्योंकि उस समय चाँद नहीं था और जल्द ही अंधेरा होने वाला था। ऐसी स्थिति में, आदमखोर भालू के मंदिर के पास से गुजरने की उम्मीद में जागते रहना बेहद खतरनाक और व्यर्थ होता। जल्द ही हमारे पास एक तेज़ आग जल रही थी, जिसके अंदर की तरफ हम बैठे थे, घने जंगल की रात से दूर, जहाँ हमारे बिना जाने ही, दो फीट की दूरी पर हत्यारा आसानी से छिपा हो सकता था। ध्यान से सुनते हुए, हमें कभी-कभी सांभर की गहरी गड़गड़ाहट सुनाई देती थी, और मैं हिरण की कर्कश आवाज भी पहचान सकता था, लेकिन ये आवाजें लगातार नहीं आती थीं, जिससे पता चलता था कि भारतीय जंगल के राजा जैसे किसी बड़े दुश्मन से जानवर ज्यादा भयभीत नहीं हुए थे। आधी रात के बाद, हमने दो-दो के समूह में तीन-तीन घंटे के लिए पहरा देने का इंतजाम किया, और

मैंने अपने एक साथी के साथ पहली बारी ली। बाकी दोनों जल्द ही सो गए। हालांकि, कुछ भी अप्रिय नहीं हुआ, सिवाय इसके कि अकेला हाथी, जो आग की अचानक झलक पाने के लिए काफी करीब आ गया था, एक बार फिर चिंघाड़ा और भाग गया।

रात करीब 2 बजे एक ककुर (भोंकने वाला हिरण) ने तीखी आवाज निकाली, लेकिन चूंकि यह आवाज जारी नहीं रही, इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि किसी भटकते हुए तेंदुए ने उसे परेशान किया होगा। तीन बजते ही मैंने सो रहे दोनों आदमियों को जगाया और खुद भी गहरी नींद में सो गया। मेरी नींद एक भूरे रंग के जंगली मुर्गे की तेज आवाज से खुली, जो उगते सूरज को प्रणाम कर रहा था।

पास के कुएँ के पानी से बनी गर्म चाय और कुछ भोजन ने हमें नई ऊर्जा और हिम्मत दी, जिसके बाद मैं विशाल पीपल के पेड़ के पास गया और पुराने पुजारी के अवशेषों का निरीक्षण किया। दिन में गिद्धों और रात में लकड़बग्घों और सियार ने उनका बुरा हाल कर दिया था, क्योंकि अब केवल कुछ साफ-सुथरी हड्डियाँ ही बची थीं। उन्हें देखकर मैं उस बूढ़े व्यक्ति को याद करने लगा जिसने पिछले 40 वर्षों से इस मंदिर की देखभाल की थी, जो प्रतिदिन उसी दृश्य को देखता था जिसे मैं अब देख रहा था, वही सांभर, ककुर और हाथी की रात की आवाज़ें सुनता था जो मैंने उस रात सुनी थीं, और अब वह केवल कुछ हड्डियाँ बनकर उस पुराने पीपल के पेड़ की दरारों में सिमट कर रह गया था।

अगले एक घंटे तक हम पगचिह्नों की तलाश में इधर-उधर देखते रहे, शायद हत्यारे की पहचान कर सकें, लेकिन कुछ पुराने निशान तो दिखे, पर मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता था कि वे मेरी बाघिन के ही हैं। सुबह 9 बजे हम गुंडालम के लिए 23 मील की लंबी यात्रा पर निकल पड़े, जहाँ हम शाम 5 बजे के कुछ देर बाद पहुँचे। यहाँ, हाल ही में हुई हत्या के बारे में पूछताछ करने पर, मुझे हत्यारे के बारे में पहली पुख्ता जानकारी एक चरवाहे से मिली, जो उसी जलसंभर पर अपने मवेशियों की देखभाल कर रहा था जहाँ मैंने अपनी पिछली यात्रा में भैंस का चारा बाँधा था। उस आदमी ने बताया कि उसका एक साथी था जिससे वह बात कर रहा था, और फिर वह शौच के लिए पास की एक झाड़ी में चला गया। वह अभी बैठा ही था कि झाड़ी के पीछे से एक बाघ का भयानक सिर उठा, जिसका केवल एक कान था, और उसके

तुरंत बाद एक धारीदार, खूंखार शरीर दिखाई दिया। जब बाघ के दांत चेहरे और गले में धंसे तो वह आदमी एक बार चीखा, और अगले ही पल बाघ और शिकार जंगल में गायब हो गए। आखिरकार मुझे वह जानकारी मिल गई जिसका मुझे डर था, लेकिन किसी न किसी तरह मैं उसे सुनना चाहता था। तो, आखिरकार, यह पुष्टि हो गई कि हत्यारा कोई और नहीं बल्कि मेरी पुरानी दुश्मन, बाघिन थी, जो अंततः अपने पुराने उत्पातों के स्थान पर लौट आई थी, और जिसकी वापसी और अब अत्यधिक बढ़ी हुई चालाकी के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार था।

मैंने हर जगह यही सुना था कि इस जानवर ने किसी गाय या भैंस को नहीं मारा है, इसलिए पिछली बार की तरह मैंने इस बार भी जीवित जानवरों को चारा डालने में समय बर्बाद नहीं किया। मुझे पता था कि मेरा सामना एक ऐसे दुश्मन से है जिसे मैं केवल आमने-सामने की मुठभेड़ में ही हरा सकता हूँ। अगले दो दिनों तक मैंने आसपास के जंगल में फिर से खोजबीन की, इस उम्मीद में कि शायद किस्मत से मुझे वह खूंखार जानवर मिल जाए, लेकिन साथ ही पीछे से किसी भी क्षण हमला होने का डर भी सता रहा था। मुझे बहुत सारे पदचिह्न मिले, खासकर गुंडालम नदी की नरम रेत पर, जहाँ जोलागिरी बाघिन के जाने-पहचाने पदचिह्न साफ दिखाई दे रहे थे। इससे यह बात और पुख्ता हो गई कि लगभग पाँच महीने पहले मेरे एक गलत निशाने की वजह से कई और जानवरों की मौत हुई थी।

तीसरे दिन दोपहर के समय, पुरुषों का एक दल गुस्से में धुत होकर पहुंचा, जो जोवलागिरी से तीस मील की दूरी तय करके मुझे एक और हत्या के बारे में बताने आया था - इस बार जोवलागिरी वन बंगले का चौकीदार, जिसे पिछली दोपहर बंगले से सौ गज के भीतर ही मार डाला गया था और आधा खा लिया गया था।

इस उम्मीद में कि बाघिन सुलेकुंटा और गुंडालम की ओर वापस लौट सकती है, क्योंकि ऐसी अफवाह थी कि वह किसी इंसान का शिकार करने के बाद एक ही जगह पर एक दिन से ज्यादा नहीं रुकती, मैं अपने आदमियों के साथ तुरंत निकल पड़ा। जोवलागिरी से आए दल ने भी मेरा साथ दिया, जो हालांकि लगभग तीस मील दौड़कर गुंडालम पहुंचे थे, लेकिन उन्होंने अकेले लौटने के बजाय मेरी राइफल की सुरक्षा में पच्चीस मील पैदल चलकर सुलेकुंटा वापस जाना बेहतर समझा।

फिर से, जैसे-जैसे दिन ढल रहा था, हम सुलेकुंता मंदिर पहुँचे और रात अभी भी अंधेरी थी, हमने मंदिर के अंदर ही अलाव जलाने की रस्म दोहराई। अब हमारे दल में मेरे समेत बारह लोग हो गए थे, जिससे हमें सुरक्षा का एहसास तो हुआ, लेकिन मेरी व्यक्तिगत सुविधा के लिए यह संख्या बहुत ज़्यादा थी। हालाँकि, इस बार हमारी रात चैन से नहीं गुज़री। सांभर और काकुर रात होते ही बेचैन हो गए थे, और रात 8:30 बजे हमें एक बाघ की आवाज़ सुनाई दी, जो मुझे लगभग आधा मील दूर लग रही थी। एक घंटे बाद, यह आवाज़ फिर से सुनाई दी, और तब मैं आसानी से एक बाघिन की साथी को पुकारने की आवाज़ पहचान सका। बाघिन ने भी अलाव देखा था और इंसानों की मौजूदगी का एहसास कर लिया था, और ज़ाहिर तौर पर भोजन की उम्मीद में, उसने दो बार मंदिर का चक्कर लगाया, उसकी बार-बार की पुकारों के बीच उसकी उत्सुकता भरी गुर्राहटें भी सुनाई दे रही थीं। इन सब बातों से मुझे एक विचार आया जिससे शायद मैं उसे सुबह होने तक आस-पास रोक सकूँ, और तभी मैं कुछ कर पाऊँगा। मैंने दो बार नर बाघ की पुकार सुनी, और तुरंत ही उस दबंग मादा बाघिन का ज़ोरदार आह्वान प्राप्त हुआ। दरअसल, वह खुले मैदान के किनारे तक आई और इतनी ज़ोर से पुकारी कि हम सब लगभग सुन्न पड़ गए। हालाँकि, मैंने सावधानी बरती कि जब वह आस-पास हो तो मैं पुकार न दूँ, क्योंकि इससे उसे शक हो सकता था। साथ ही, मैंने आदमियों को निर्देश दिया कि वे ज़ोर से बात करें और पहले से ही भड़क रही आग को और न भड़काएँ, ये निर्देश निस्संदेह उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं आए। मुझे उम्मीद थी कि इन तरीकों से, संभोग की इच्छा और भूख के बीच, मैं बाघिन को सुबह होने तक आस-पास रोक सकूँगा। भोर होने से कुछ ही देर पहले उसने फिर फोन किया और अपनी इस चाल पर खुद को बधाई देते हुए, जैसे ही उजाला हुआ, मैं तेजी से जोवलागिरी की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा, जहाँ से मात्र एक चौथाई मील की दूरी पर वह इमली का पेड़ खड़ा था जिसके नीचे एक साल पहले उस लड़के की हत्या कर दी गई थी, और जिसे मैंने पहले ही मन ही मन बैठने के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में याद कर लिया था, जिसके लिए किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं थी।

पेड़ तक सुरक्षित पहुँचकर, मैं लगभग बारह फीट ऊपर एक शाखा पर चढ़ गया, जो काफी आरामदायक थी और दोनों सिरों पर रास्ते का स्पष्ट दृश्य प्रदान करती थी। फिर, मैंने अपने फेफड़ों को फुलाकर नर बाघ की नकल करते हुए ज़ोर से आवाज़

लगाई। मुझे केवल सन्नाटा ही सुनाई दिया, और मैं सोचने लगा कि क्या बाघिन भोर में कहीं चली गई थी। एक नई चिंता ने मुझे जकड़ लिया। शायद वह मंदिर के पास ही हो, रात में जिन पुरुषों को उसने चिह्नित किया था, उनमें से किसी के बाहर आने का इंतज़ार कर रही हो। जाने से पहले मैंने अपने साथियों को बहुत सख्ती से हिदायत दी थी कि वे किसी भी हालत में मंदिर न छोड़ें, लेकिन मुझे चिंता सता रही थी कि कहीं उनमें से कोई मेरी बात न माने, शायद शौच के लिए या पास ही मौजूद कुएँ से पानी लेने के लिए।

मैंने दूसरी बार पुकारा। फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। कुछ देर बाद, अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए, मैंने फिर पुकारा। इस बार मैं कामयाब रहा, क्योंकि मेरी आवाज़ घने जंगल को पार कर गई और बाघिन ने उसे सुन लिया। उसने तुरंत मंदिर की तरफ से जवाब दिया। मेरा अनुमान सही निकला; चालाक जानवर भोजन की तलाश में वहाँ गया था। कुछ मिनट बाद मैंने चौथी बार पुकारा और बाघिन ने फिर जवाब दिया; मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि वह अपने साथी की तलाश में मेरी तरफ आ रही थी, जिसे वह अपना इंतज़ार समझ रही थी।

मैंने दो बार और पुकारा, मेरी आखिरी पुकार का जवाब मुश्किल से सौ गज की दूरी से मिला। राइफल को सीधा करके, मैंने लगभग पच्चीस गज दूर रास्ते पर एक जगह पर निशाना साधा। मैंने अनुमान लगाया कि वह बीच की दूरी तय करने में तीस सेकंड से भी कम समय लेगी। मैंने गिनना शुरू किया, और जैसे ही मैं सत्ताईस पर पहुँचा, बाघिन पूरी तरह से मेरे सामने आ गई, अपने साथी को उत्सुकता से खोज रही थी। पेड़ पर अपनी ऊँची स्थिति से, उसका कटा हुआ कान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, और मैं जानता था कि आखिरकार, कई थका देने वाले प्रयासों के बाद, शिकारी मेरे हाथ में आ गया था। इस बार कोई चूक नहीं होगी। उसकी आगे बढ़ने की गति को रोकने के लिए, मैंने धीमी आवाज़ में कराह की। वह अचानक रुक गई और आश्चर्य से ऊपर की ओर देखा। अगले ही पल .405 की गोली ठीक उसकी आँखों के बीच जा लगी, और वह लड़खड़ाते हुए आगे की ओर गिर पड़ी और धूल में तड़पने लगी। मैंने उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में दूसरी गोली मारी, हालाँकि ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी; दरअसल, इस दूसरे शॉट से सिर को काफी नुकसान पहुंचा और इससे टैक्सिडर्मिस्ट को अनावश्यक रूप से बहुत अधिक अतिरिक्त काम करना पड़ा।

जोवलागिरी की खूंखार हत्यारी का अंत एक शांत और अपमानजनक तरीके से हुआ, जो उसके करियर के लायक नहीं था। हालांकि वह एक हत्यारी थी, खामोश, क्रूर और निर्दयी, फिर भी मुझे अपने उस घिनौने कृत्य पर पछतावा हो रहा था जिसमें मैंने उसकी मौत को अपने साये में अंजाम दिया था। इससे ज्यादा बताने को कुछ नहीं है। मेरे ग्यारह साथी उस मृत लुटेरी को देखकर बहुत खुश हुए। जल्द ही एक मजबूत पौधा काटा गया, जिस पर उसकी टांगों को मजबूत लताओं से बांध दिया गया, और हम बोझ के नीचे लड़खड़ाते हुए जोवलागिरी के लिए सात मील की पैदल यात्रा शुरू की। उस आदमखोर की मौजूदगी के कारण, जब तक हम लगभग गांव में प्रवेश नहीं कर गए, तब तक कोई भी इंसान पैदल नहीं चल रहा था। फिर खबर फैल गई और भीड़ ने हमें घेर लिया। मैंने लोगों को अपने एक समय के दुश्मन को देखने के लिए एक घंटे का समय दिया, जबकि मैं कुछ दूरी पर एक पेड़ के नीचे चला गया, जहां गर्म चाय ने मुझे तरोताजा कर दिया, उसके बाद कुछ खाना खाया और तंबाकू के दो पाइप पीकर सुकून पाया। फिर मैं गांव लौट आया, जहां मददगार लोगों ने मेरी दो सीटों वाली स्टडबेकर कार की पिछली सीट पर बाघिन को बांधने में मेरी मदद की, और इस सुकून भरे विचार के साथ मैंने अपनी घर वापसी की यात्रा शुरू की कि मैंने अपनी गलती को सुधार लिया है और कई इंसानों की मौत का बदला ले लिया है।

जोवलागिरी का आदमखोर

गुम्मलपुर का चित्तीदार शैतान

तेंदुआ लगभग सभी उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाया जाता है, और बाघ के विपरीत, यह भारत के जंगलों का मूल निवासी है; जबकि यह स्थापित हो चुका है कि बाघ ठंडे उत्तरी क्षेत्रों से अपेक्षाकृत हाल ही में आया है, वहीं अभिलेखों और अवशेषों से पता चलता है कि तेंदुआ या पैंथर, जैसा कि इसे भारत में बेहतर जाना जाता है, प्राचीन काल से ही प्रायद्वीप में रहता आया है।

अपने छोटे आकार और अपेक्षाकृत कमज़ोर ताकत के साथ-साथ मनुष्यों के प्रति जन्मजात भय के कारण, पैंथर को अक्सर उपहास का पात्र माना जाता है, और कभी-कभी तो इसके प्रति आश्चर्यजनक लापरवाही भी दिखाई जाती है। इन्हीं दो

कारणों से साहसी लेकिन सतर्क बाघ शिकारियों पर हमले हुए हैं और कभी-कभी उनकी मौत भी हो गई है। यहां तक कि किसी इंसान पर हमला करते समय भी पैंथर शायद ही कभी मारता है, बल्कि अपने छोटे लेकिन नुकीले पंजों से तेज़ी से काटने और खरोंचने तक ही सीमित रहता है; दूसरी ओर, बाघ के हमले का शिकार होने के बाद शायद ही कोई जीवित बचता है।

इस सामान्य नियम का एक भयावह अपवाद है, और वह है आदमखोर पैंथर। हालांकि ऐसे जानवरों के उदाहरण अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं, लेकिन जब भी वे दिखाई देते हैं, तो पैंथर अपने कहीं बड़े चचेरे भाई, बाघ के बराबर ही विनाशकारी शक्ति के रूप में सामने आता है। अपने छोटे आकार के कारण, वह ऐसी जगहों पर छिप सकता है जहाँ बाघ नहीं छिप सकता, उसे पानी की आवश्यकता बहुत कम होती है, और अपनी शैतानी चालाकी और साहस के साथ-साथ आत्मरक्षा की अद्भुत क्षमता और खतरे के समय चुपके से गायब हो जाने की क्षमता में उसका कोई सानी नहीं है।

ऐसा ही एक जानवर था गुम्मलपुर का आदमखोर तेंदुआ। इस तेंदुए ने कई इंसानों की हत्याएं की थीं और अपनी असाधारण चालाकी के लिए ख्याति अर्जित की थी, जो लगभग मानवीय बुद्धि से भी परे थी। उससे जुड़ी कुछ भयानक कहानियाँ प्रचलित थीं, लेकिन यह निश्चित था कि लगभग 250 वर्ग मील के उस क्षेत्र में, जिस पर उसका निर्विवाद वर्चस्व था, उस तेंदुए का खौफ बना रहता था।

सूर्यास्त से पहले, इस क्षेत्र के प्रत्येक गाँव की हर झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया जाता था, कुछ दरवाजों को बक्सों या बड़े पत्थरों के ढेर से मजबूत किया जाता था, जिन्हें इसी उद्देश्य से रखा जाता था। अगली सुबह जब सूरज आसमान में अच्छी तरह से चढ़ जाता था, तभी डरपोक निवासी बाहर निकलने की हिम्मत करते थे। इस स्थिति का असर घरों की स्वच्छता पर तेजी से दिखने लगा, जिनमें से अधिकांश में किसी भी प्रकार के शौचालय नहीं थे, इसके लिए पास की बंजर भूमि का उपयोग किया जाता था।

जब पैंथर को पता चला कि उसका मानव भोजन मिलना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है, तो वह और भी साहसी हो गया। दो बार उसने छोटी झोपड़ियों की छप्पर की दीवारों में छेद करके अपना रास्ता बनाया और अपने चीखते हुए शिकार को उसी

रास्ते से बाहर खींच लाया, जबकि पूरा गाँव बंद दरवाजों के पीछे काँपते हुए जागता रहा और शिकार की चीखें सुनता रहा। एक बार, खुरदुरे तख्तों से बनी दीवारों में छेद करके अंदर आने में असफल होने पर, पैंथर ने छप्पर की छत से अंदर घुसने का अनोखा तरीका अपनाया। इस बार वह अपने शिकार को बनाए गए छेद से वापस नहीं ले जा सका, इसलिए क्रोध में आकर उसने झोपड़ी के चारों निवासियों - एक आदमी, उसकी पत्नी और दो बच्चों - को मार डाला और फिर अपने पंजों से खरोंचते हुए बाहर अंधेरे में भाग गया और सुरक्षित हो गया।

दिन के समय ही ग्रामीणों को कुछ राहत मिलती थी। तब भी वे बड़े-बड़े सशस्त्र समूहों में घूमते थे, लेकिन अभी तक दिन के उजाले में तेंदुए के हमले की कोई घटना नहीं हुई थी, हालांकि उसे अक्सर भोर में गांव की सीमा के भीतर देखा गया था। जब मैं जिला मजिस्ट्रेट जेप्सन के निमंत्रण पर गुम्मलापुर पहुंचा, तो यही स्थिति थी, क्योंकि मुझे उनके क्षेत्र को इस विपत्ति से मुक्त कराना था। कुछ निवासियों से प्रारंभिक बातचीत से पता चला कि वे बेहद निराश थे और पूर्वी नियतिवाद के अनुरूप उन्होंने यह मान लिया था कि यह शैतान, जिससे उन्हें मुक्ति असंभव लगती थी, तब तक यहीं रहेगा जब तक कि उनमें से प्रत्येक को खा न लिया जाए या उनके पास जिले से भागने के अलावा कोई विकल्प न बचे।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि मुझे ग्रामीणों से न के बराबर सहयोग मिलेगा, क्योंकि उनमें से कई खुलेआम कहते थे कि अगर उन्होंने मेरी मदद करने की हिम्मत की तो शैतान को पता चल जाएगा और वह उनका अंत कर देगा। दरअसल, वे दबी आवाज़ में बात करते थे, मानो उन्हें डर हो कि ज़ोर से बोलने पर पैंथर उन्हें चुनकर बदला ले लेगा।

उस रात, मैं गाँव के बीचोंबीच एक कुर्सी पर बैठा था, मेरी पीठ उस इकलौते घर की ओर थी जिसकी दीवार बारह फुट ऊँची थी। मैंने एहतियात के तौर पर छत को काँटों और झाड़ियों की मोटी परत से ढक दिया था, ताकि अगर कोई तेंदुआ पीछे से मुझ पर कूद पड़े तो मैं उसे देख सकूँ। वह चाँद रहित रात थी, लेकिन साफ आसमान में अनगिनत तारे थे जिनसे मुझे तेंदुए के पास आने पर उसे देखने की पर्याप्त रोशनी मिलने की उम्मीद थी।

शाम छह बजे, गाँव के सभी निवासी अपने दरवाज़े बंद करके अंदर चले गए थे, जबकि मैं अपनी कुर्सी पर अकेला बैठा था, मेरी राइफल मेरी गोद में रखी थी, भरी हुई और तैयार, पास में गर्म चाय की एक थर्मस, एक कंबल, एक पानी की बोतल, कुछ बिस्कुट, एक टॉर्च, और ज़ाहिर है, मेरी पाइप, तंबाकू और माचिस ही मेरा एकमात्र सहारा थे, जब तक कि सुबह नहीं हो जाती। सूरज डूबते ही तीव्र चिंता का दौर शुरू हो गया, क्योंकि तारे अभी तक इतने चमकीले नहीं थे कि दृश्य को हल्का सा भी रोशन कर सकें। इसके अलावा, गाँव के ठीक पश्चिम में दो खड़ी पहाड़ियाँ थीं, जिन्होंने उस धुंधली अनिश्चितता को और बढ़ा दिया जो शायद हाल ही में डूबे सूरज की कुछ रोशनी से कम हो सकती थी। मैंने अपनी राइफल को कसकर पकड़ा और अपने चारों ओर देखा, मेरी आँखें हर दिशा में और सुनसान गाँव की गली के एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ रही थीं। उस क्षण, मैं जंगल में जाना चाहता था, जहाँ जानवरों और पक्षियों की चेतावनी भरी आवाज़ों से मैं पैंथर के आने की सूचना पा सकता था। यहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था, और ऐसा लग रहा था मानो पूरा गाँव वीरान हो गया हो, क्योंकि गाँव के कई निवासियों से एक भी आवाज़ नहीं आ रही थी। मुझे पता था कि वे सब बंद दरवाजों के पीछे छिपे हुए थे, और उस चीख का इंतज़ार कर रहे थे जो मेरी मौत और तेंदुए के एक और शिकार का संकेत देगी। समय बीतता गया, और एक-एक करके तारे दिखने लगे, यहाँ तक कि शाम 7:15 बजे तक उनकी हल्की रोशनी इतनी फैल गई कि मैं पूरे गाँव की सड़क को देख पा रहा था, हालाँकि कुछ धुंधला ही दिख रहा था। मेरा आत्मविश्वास लौट आया, और मैं तेंदुए को अपनी ओर आकर्षित करने का कोई तरीका सोचने लगा, अगर वह आस-पास हो। मैंने बीच-बीच में ज़ोर से खांसने की कोशिश की और फिर खुद से बातें करने लगा, इस उम्मीद में कि मेरी आवाज़ तेंदुए तक पहुँच जाएगी और वह जल्दी से मेरे पास आ जाएगा।

मुझे नहीं पता कि मेरे पाठकों में से किसी ने कभी किसी कारण से, चाहे किसी आदमखोर तेंदुए को आकर्षित करने के लिए ही क्यों न हो, खुद से ज़ोर-ज़ोर से बात करने की कोशिश की है या नहीं। मुझे लगता है कि ऐसे लोग बहुत कम होंगे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि खुद से बात करने वाले व्यक्ति की क्या छवि होती है। मुझे यकीन है कि गाँव वालों के बीच मेरी भी यही छवि बन गई थी, जो उस रात अपने बंद दरवाजों के पीछे से मुझे खुद से बात करते हुए सुन रहे थे। लेकिन यकीन मानिए, घंटों तक ज़ोर-ज़ोर से खुद से बात करना और साथ ही किसी खूंखार शिकारी के चुपके से आने

पर नज़र रखना आसान काम नहीं है। रात 9 बजे तक मैं थक गया था और गाँव की गलियों में टहलने का सोचा। कुछ देर सोचने के बाद, मैंने ऐसा ही किया, खुद से बात करते हुए मैं सावधानी से एक गली से दूसरी गली में जाता रहा और बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हो गया कि मैं खुद को बहुत बड़े खतरे में डाल रहा हूँ, क्योंकि तेंदुआ किसी भी कोने से, कूड़े के ढेर के पीछे से या किसी भी झोपड़ी की छत से मुझ पर झपट सकता था। अचानक बोलना बंद करके, मैं अपनी कुर्सी पर लौट आया, जिंदा वापस आने के लिए आभारी था।

समय बहुत धीरे-धीरे और नीरसता से बीत रहा था, मानो घंटे भारी पहियों पर चल रहे हों। आधी रात हो गई और मुझे ठंड लगने लगी, क्योंकि पास के जंगल से, जो दो छोटी पहाड़ियों के पार शुरू होता था, एक तेज़ हवा चलने लगी थी। मैंने कंबल को अपने चारों ओर कसकर लपेट लिया और ज़रूरत से ज़्यादा तंबाकू का सेवन करने लगा। रात के 2 बजे तक मुझे नींद आने लगी। गर्म चाय और बिस्कुट खाने के बाद, बोतल से ठंडा पानी मुंह पर छिड़का और कुर्सी से आधा दर्जन बार जल्दी-जल्दी उठने-बैठने से थोड़ी राहत मिली, और फिर जागते रहने के लिए मैं खुद से बातें करने लगा।

सुबह 3:30 बजे एक ऐसी घटना घटी, जिसने मुझे अगले दो घंटों तक असहनीय परेशानी दी। तेज़ हवा के साथ घने बादल उड़ने लगे और जल्द ही उन्होंने आसमान को ढक लिया, तारों को भी ढक लिया, जिससे अंधेरा घना हो गया और एक गज की दूरी पर खड़े पैंथर को देखना लगभग नामुमकिन हो गया था। मैंने खुद को निस्संदेह एक मुश्किल स्थिति में डाल दिया था और अगर वह मुझ पर हमला करने का फैसला करता, तो मैं पूरी तरह से उसके रहमो-करम पर था। मैं हर आधे मिनट में गली के एक छोर से दूसरे छोर तक टॉर्च की रोशनी चमकाने लगा, जो बहुत ज़रूरी था अगर मैं पैंथर के आस-पास होने पर अपनी जान बचाना चाहता था, हालाँकि मुझे लग रहा था कि मैं उस जानवर को गोली मारने का मौका गँवा रहा हूँ, क्योंकि टॉर्च की तेज़ रोशनी से वह शायद डरकर भाग जाएगा। फिर भी, एक संभावना थी कि वह रोशनी से न डरे, अगर मैं उसे देख पाता और एक भाग्यशाली निशाना लगा पाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि सुबह होने पर भी मैं रात भर की व्यर्थ कोशिश के बाद टॉर्च की रोशनी चमका रहा था।

मैंने कुछ घंटों की नींद ली और दोपहर होते ही गाँव वालों से फिर पूछताछ करने लगा। उस सुबह मुझे ज़िंदा पाकर, जो उनकी उम्मीदों के बिल्कुल उलट था, और शायद मुझे आत्माओं से बात करने की शक्ति देने का श्रेय देते हुए, क्योंकि उन्होंने मुझे अपने गाँव में घूमते हुए बातें करते सुना था, वे मुझसे ज़्यादा बात करने लगे और मुझे उस जानवर के बारे में कुछ और जानकारी दी। ज़ाहिर है, तेंदुआ अपने इलाके में बहुत घूमता था, अनियमित रूप से और एक-दूसरे से काफ़ी दूर जगहों पर शिकार करता था, और जैसा कि मुझे पहले ही पता चल चुका था, कभी भी एक ही गाँव में लगातार शिकार नहीं करता था। पिछले तीन हफ़्तों में गुम्मलपुर में किसी इंसान की हत्या नहीं हुई थी, इसलिए इधर-उधर भटकने और तेंदुए को ढूंढने की उम्मीद करने के बजाय, जहाँ मैं था वहीं रहना ज़्यादा फ़ायदेमंद लग रहा था। भटकने के खिलाफ़ एक और कारण यह था कि यह जानवर दिन में बहुत कम दिखाई देता था, और इसलिए उससे मिलने की कोई संभावना नहीं थी, जैसा कि आदमखोर बाघ के मामले में हो सकता था। यह बताया गया था कि जानवर के दाहिने अगले पैर में चोट लगी थी, क्योंकि उसे अपने पंजे को बगल की ओर रखने की आदत थी, इस तथ्य की पुष्टि मैं बाद में तब कर पाया जब मुझे वास्तव में जानवर के पदचिह्न मिले।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने उस रात के लिए एक नई योजना बनाई, जिससे मुझे पिछली रात हुई भारी असुविधाओं से निश्चित रूप से मुक्ति मिल जाती। योजना यह थी कि मैं एक झोपड़ी का दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ दूँ और उसके अंदर एक इंसान की हूबहू दिखने वाली पुतली रख दूँ; इस बीच, मैं उसी झोपड़ी के एक कोने में बक्सों की आड़ में छिपा रहूँगा। इससे मुझे उस दरवाज़े से जानवर के दिखाई देने पर या पुतली पर हमला करने पर भी उसे मारने का मौका मिल जाएगा, जबकि मैं अपनी आड़ में अपेक्षाकृत सुरक्षित और गर्म रहूँगा।

मैंने ग्रामीणों को योजना समझाई, और मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया। एक झोपड़ी मुझे उस झोपड़ी के ठीक बगल में दी गई, जिसकी छत से तेंदुआ घुसकर चारों लोगों को मार डाला था। पुआल, एक पुराने तकिए, एक जैकेट और एक साड़ी से एक बहुत ही सजीव दिखने वाला पुतला तैयार किया गया। इसे झोपड़ी के दरवाजे के अंदर बैठने की मुद्रा में रखा गया, और दरवाजा आधा खुला रखा गया। मैं बक्सों की एक नीची दीवार के पीछे बैठ गया, जिसे झोपड़ी के दूसरे छोर पर

तिरछे रखा गया था। झोपड़ी का फर्श लगभग 12 फीट लंबा और 10 फीट चौड़ा था। इतनी कम दूरी से, मुझे पूरा भरोसा था कि जैसे ही तेंदुआ दरवाजे पर दिखाई देगा, मैं उसे मार गिराऊंगा। इसके अलावा, अगर वह छत से या छप्पर की दीवारों से अंदर आने की कोशिश करता, तो मेरे पास उससे निपटने के लिए पर्याप्त समय होता। मामले को और भी यथार्थवादी बनाने के लिए, मैंने आस-पास की दोनों झोपड़ियों के निवासियों, विशेष रूप से महिलाओं को निर्देश दिया कि वे रात में जितना संभव हो सके धीमी आवाज़ में बात करने का प्रयास करें, ताकि हत्यारे को उस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जा सके।

तुरंत आपत्ति उठाई गई कि कहीं तेंदुआ मेरी झोपड़ी के दरवाजे पर रखे पुतले पर हमला करने के बजाय उनकी किसी झोपड़ी में न घुस जाए। यह डर तभी दूर हुआ जब मैंने उनसे वादा किया कि अगर उन्हें जानवर के अंदर आने की कोशिश की आवाज सुनाई दे तो हम उनकी मदद के लिए आएंगे। संकेत के तौर पर मदद के लिए एक सामान्य पुकार लगानी थी, जिससे तेंदुआ अच्छी तरह वाकिफ था और जिस पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। इस योजना से मुझे यह भी भरोसा हो गया कि गांव वाले जागते रहेंगे और मेरे निर्देशों के अनुसार अपनी धीमी बातचीत जारी रखेंगे। शाम 6 बजे तक सब कुछ तैयार था, उस समय गांव के सभी दरवाजे बंद कर दिए गए थे, सिवाय उस झोपड़ी के दरवाजे के जहां मैं बैठा था। धुंधली सी शाम के बाद तेज तारों की रोशनी निकली जिससे खुला दरवाजा और कपड़े से ढके पुतले की झुकी हुई आकृति साफ दिखाई दे रही थी। बीच-बीच में मुझे पास की दो झोपड़ियों से धीमी बातचीत की आवाज सुनाई दे रही थी।

घंटे भयानक नीरसता में धीरे-धीरे बीतते गए। अचानक छप्पर की छत में सरसराहट से सन्नाटा टूट गया, जिससे मैं पूरी तरह सतर्क हो गया। लेकिन वह केवल एक चूहा था, जो सरपट भागा और पास ही ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़ा। वहाँ से वह मेरे सामने रखे बक्सों के ऊपर से भागता हुआ, खुले दरवाजे के अपेक्षाकृत कम रोशनी वाले हिस्से से गुजरते हुए साफ दिखाई देने लगा।

जैसे-जैसे सुबह के शुरुआती घंटे नजदीक आने लगे, मैंने देखा कि मेरे पड़ोसियों की बातचीत धीमी पड़ गई और अंततः बंद हो गई, जिससे पता चलता है कि वे सो गए थे,

उन्हें आदमखोर पैंथर या किसी भी अन्य खतरे की परवाह नहीं थी।

मैं जागता रहा, कभी-कभी अपनी पाइप पीता या फ्लास्क से गर्म चाय की चुस्की लेता रहा, लेकिन अथक चूहों के शोर के अलावा कुछ नहीं हुआ, जो कमरे में इधर-उधर एक-दूसरे का पीछा करते रहे, और यहां तक कि मेरे ऊपर से भी गुजरे, जब तक कि आखिरकार दिन का उजाला नहीं हो गया, और एक और थका देने वाली निगरानी के बाद मैं सोने के लिए लेट गया।

अगली रात, कोई बेहतर योजना न होने के कारण, और यह महसूस करते हुए कि आदमखोर सांप कभी न कभी प्रकट होगा, मैंने नकली पुतले के साथ वही प्रदर्शन दोहराने का फैसला किया, और मेरा सामना एक ऐसे रोमांच से हुआ जो मेरी यादों में हमेशा के लिए अंकित रहेगा। मैं शाम छह बजे तक फिर से अपनी जगह पर था, और रात का पहला हिस्सा पिछली रात जैसा ही था। चूहों के भागने की सामान्य आवाज़, जो बीच-बीच में पास की झोपड़ियों में लगे धीमी आवाज़ वाले लाउडस्पीकरों से टूटती थी, रात की खामोशी को भंग करने वाली एकमात्र आवाज़ थी। रात के 1 बजे के कुछ ही देर बाद, तेज़ हवा चलने लगी, और मैं छप्पर की छत से हवा की सरसराहट सुन सकता था। यह तेज़ी से बढ़ती गई, यहाँ तक कि यह एक भयंकर आंधी में बदल गई। आंशिक रूप से खुले द्वार से आती रोशनी का आयताकार धब्बा लगभग गायब हो गया क्योंकि आसमान तूफानी बादलों से घिर गया। जल्द ही बारिश की बूंदों की लगातार लयबद्ध आवाज तेज होती चली गई, जिससे मुझे लगा कि तेंदुआ, जो अपने परिवार के अन्य सदस्यों की तरह पानी का शौकीन नहीं है, इस तूफानी रात में बाहर नहीं निकलेगा, और मैं एक बार फिर खाली हाथ लौटूँगा। अब तक, पड़ोसी झोपड़ियों से आती फुसफुसाहट की आवाजें बंद हो चुकी थीं या सुनाई नहीं दे रही थीं, बारिश की सरसराहट में दब गई थीं। मैंने अपनी आँखें गड़ाकर मुश्किल से दिखाई देने वाले द्वार को देखने की कोशिश की, जबकि पुतले की झुकी हुई आकृति बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रही थी, और देखते-देखते मैं स्पष्ट रूप से सो गया, पिछली दो रातों की जागने की थकान से चूर।

मैं कितनी देर सोया, यह मैं बता नहीं सकता, लेकिन काफी देर तक सोया होगा। मैं अचानक चौंककर जागा और मुझे लगा कि कुछ ठीक नहीं है। आम तौर पर जागने पर

व्यक्ति को होश में आने में थोड़ा समय लगता है, लेकिन जंगल में बिताए मेरे प्रशिक्षण और खतरनाक जगहों पर बिताए लंबे वर्षों ने मुझे जागते ही यह याद रखने में सक्षम बना दिया कि मैं कहाँ हूँ और किस परिस्थिति में हूँ। बारिश रुक गई थी और आसमान थोड़ा साफ हो गया था, क्योंकि खुला हुआ आयताकार दरवाजा अब अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, जिसके आधार पर पुतला बैठा हुआ था। तभी, मेरी नज़र के सामने, एक अजीब घटना घटी। पुतला हिलता हुआ प्रतीत हुआ, और जब मैंने और ध्यान से देखा, तो वह अचानक एक गुर्राहट के साथ गायब हो गया। मुझे एहसास हुआ कि पैंथर आ चुका था, उसने दरवाजे पर झुकी हुई पुतली को देखा जिसे उसने गलती से इंसान समझ लिया था, और फिर उसका पीछा करते हुए पेट के बल रेंगता हुआ दरवाजे के छेद से अंदर घुस गया, और इतना नीचे ज़मीन पर आ गया कि धुंधली रोशनी में उसकी आकृति ठीक से दिखाई नहीं दी, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी। मैंने जो गुर्राहट सुनी वह पैंथर के इस अहसास की थी कि जिस पर उसने हमला किया था वह असल में इंसान नहीं था।

मैंने टॉर्च जलाई और झट से खड़ा होकर बक्सों की बाड़ को पार किया और खुले दरवाजे की ओर भागा, बाहर निकलने के लिए दौड़ा और लगभग रास्ते में पड़े पुतले से टकराकर गिरते-गिरते बचा। मैंने टॉर्च की रोशनी दोनों दिशाओं में डाली, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। यह सोचकर कि शायद पैंथर अभी भी आसपास ही कहीं छिपा हो, मैंने टॉर्च की रोशनी हर कोने में डाली और धीरे-धीरे गांव की गली में चला, उसके मोड़ को सावधानी से पार किया और अचानक हमले के डर से कांपते हुए अगली गली में वापस मुड़ गया। लेकिन हालांकि रोशनी ने गली के हर कोने, हर छत और हर संभावित छिपने की जगह को रोशन कर दिया था, मेरे दुश्मन का कहीं कोई निशान नहीं था। तभी मुझे इस जानवर की शैतानी चालाकी की प्रतिष्ठा का असली महत्व समझ में आया। जैसे मेरी छठी इंद्री ने खतरे के समय मुझे नींद से जगाया था, वैसे ही एक छठी इंद्री ने तेंदुए को चेतावनी दी थी कि यह कोई साधारण इंसान नहीं है, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जो उसे नष्ट करने पर तुला हुआ है। शायद टॉर्च की तेज रोशनी ने ही उसे आखिरी क्षण में विचलित कर दिया था; लेकिन, कारण चाहे जो भी हो, आदमखोर जानवर चुपचाप, पूरी तरह से और प्रभावी ढंग से गायब हो गया था, क्योंकि हालांकि मैंने उस रात गुम्मलपुर की सभी गलियों में उसकी तलाश की, लेकिन वह उतनी ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था जितनी रहस्यमय तरीके से

वह आया था।

नींद में सो जाने की निराशा और खुद पर झुंझलाहट के बावजूद, मैंने किसी भी कीमत पर इस दरिंदे से बदला लेने का पक्का इरादा कर लिया। अगली सुबह, जिस जगह से तेंदुए ने गाँव में प्रवेश किया था और एक कीचड़ भरे नाले को पार किया था, वहाँ उसके पदचिह्न साफ़ दिखाई दे रहे थे। वहीं मैंने पहली बार शिकारी के पदचिह्न और उसके दाहिने अगले पैर का अजीब सा निशान देखा, जिसका पंजा पदचिह्न के रूप में स्पष्ट नहीं था, बल्कि धुंधला सा दिख रहा था, क्योंकि वह जानवर हमेशा अपने पंजे को किनारे पर रखता था। इस प्रकार, मुझे यह स्पष्ट हो गया कि तेंदुए के पैर में कभी चोट लगी थी, जिसके कारण वह आदमखोर बन गया था। बाद में, मैं खुद उस घायल पैर को देख सका, और शायद आदमखोर बनने की उसकी प्रवृत्ति के कारण के बारे में मेरा अनुमान गलत था; क्योंकि मुझे पता चला कि उस जानवर को उन शवों को खाने की आदत पड़ गई थी जिन्हें उस इलाके के लोग पिछले साल हैजा की महामारी के बाद रीति-रिवाज के अनुसार जंगल में ले जाकर गिद्धों के लिए छोड़ देते थे। आसानी से मिलने वाले इन भोजनों ने पैंथर को मानव मांस का स्वाद चखा दिया था, और उसके पैर में लगी चोट, जिसने सामान्य शिकार और तेज गति से चलने में कठिनाई पैदा कर दी थी, उसे भारतीय गांवों के लिए सबसे खतरनाक खतरे - आदमखोर पैंथर में बदलने का निर्णायक कारक बन गई थी।

मुझे यह भी एहसास हुआ कि, भले ही पैंथर में लगभग इंसानों जैसी अनुमान लगाने की क्षमता हो, लेकिन पिछली रात टॉर्च की रोशनी में उसका पीछा करते हुए मैंने उसे जो डराया था, उसके बाद वह लंबे समय तक गुम्मलपुर में दोबारा नहीं दिखेगा। इसलिए यह स्पष्ट था कि मुझे अपना कार्यक्षेत्र बदलना होगा, और इसलिए, काफी सोच-विचार के बाद, मैंने देवराबेट्टा गाँव की ओर बढ़ने का फैसला किया, जो बीच में स्थित वन पहाड़ियों की एक श्रृंखला के पार तिरछे में लगभग अठारह मील दूर था, जहाँ पैंथर पहले ही पाँच शिकार कर चुका था, हालाँकि वहाँ एक महीने से कोई नहीं गया था।

इसलिए, मैंने उसी दिन सुबह जल्दी दोपहर का भोजन करने के बाद, सुबह के समय से पहले ही प्रस्थान कर दिया। रास्ता कठिन था, क्योंकि पगडंडी दो पहाड़ियों से

होकर गुजरती थी। उनके बीच स्थित घाटी में एक छोटी सी जंगली धारा बह रही थी, और उसके किनारे मैंने एक बड़े नर बाघ के ताज़े पदचिह्न देखे, जो लगभग 200 गज तक जलधारा का अनुसरण करने के बाद दूसरी ओर चला गया था। यह स्पष्ट था कि वह उस सुबह जल्दी ही वहाँ से गुजरा था, क्योंकि नदी की रेत से रिसकर पदचिह्नों में नमी की कुछ बूँदें आ गई थीं, जो सुबह की धूप में वाष्पित नहीं हो पाई थीं। हालाँकि, अपने काम पर दृढ़ रहते हुए, मैंने बाघ का पीछा नहीं किया और शाम 5 बजे के ठीक बाद देवराबेट्टा पहुँच गया।

जब मैं वहाँ पहुँचा, तब निवासी अपनी झोपड़ियों में बंद होने की तैयारी कर रहे थे, और उनके पास मुझसे बात करने का समय या इच्छा नहीं थी। हालाँकि, मुझे यह समझ में आया कि वे इस बात से सहमत थे कि आदमखोर का आना किसी भी दिन संभव है, क्योंकि उसके आखिरी बार आने के बाद से पूरा एक महीना बीत चुका था और वह इतने लंबे समय तक कभी दूर नहीं रहा था।

समय कम होने के कारण, मैंने जल्दी से सबसे ऊँची दीवार वाली झोपड़ी की तलाश की, जिसके सामने मैं उसी तरह बैठ गया जैसे गुम्मलापुर में अपनी पहली रात बैठा था। मैंने छत पर कुछ सूखी कांटेदार झाड़ियाँ जल्दी से बिछा दीं ताकि पीछे और ऊपर से होने वाले हमले से बचाव हो सके। ये कांटे गाँव से सटे एक खेत की बाड़ से लाए गए थे, और मुझे उन्हें लाने वाले आदमखोर सांप के जल्दी प्रकट होने के डर से अपनी राइफल के साथ उनके साथ जाना पड़ा था।

देवराबेट्टा, गुम्मलापुर की तुलना में काफी छोटा गाँव था और जंगल के बहुत करीब स्थित था, यह एक ऐसा तथ्य था जिसका मैंने स्वागत किया क्योंकि इससे मुझे जंगल के जानवरों और पक्षियों द्वारा दी जाने वाली चेतावनी भरी आवाजों से मांसाहारी जानवरों की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलेगी, बशर्ते मैं उन्हें सुन सकूँ।

रात बड़ी तेज़ी से छा गई, हालाँकि इस बार आकाश में अमावस्या का पतला सा चाँद दिखाई दे रहा था। पास के जंगल से आती हुई मुर्गे की कभी-कभार सुनाई देने वाली आवाज़ और मोर की धीमी, दर्द भरी पुकार से मुझे पता चला कि सब ठीक है। और फिर रात हो गई, धुंधली तारों की रोशनी में देवराबेट्टा की मुख्य सड़क, टेढ़ी-मेढ़ी और

गंदी गली, मुश्किल से दिखाई दे रही थी, मानो किसी सपने में हो। रात 8:30 बजे, जंगल से एक सांभर हिरणी की आवाज़ आई, और अपनी तेज़ आवाज़ के बाद लगातार कई चेतावनी भरी चीखें मारीं। निस्संदेह, कोई शिकारी जानवर आसपास था और उसे चौकस हिरणी ने देख लिया था, जो जंगल के बाकी लोगों को अपनी जान बचाने के लिए आगाह कर रही थी। क्या वह तेंदुआ था या कोई बड़ा मांसाहारी जानवर? समय ही बताएगा, लेकिन कम से कम मुझे चेतावनी तो मिल गई थी।

हिरनी ने घंटी बजाना बंद कर दिया, और लगभग पंद्रह मिनट बाद, जिस दिशा में उसने पहली बार खतरे का संकेत दिया था, उसी दिशा से मुझे एक बाघ की धीमी कराह सुनाई दी, जो लगातार दो बार दोहराई गई, फिर सब कुछ शांत हो गया। यह मिलन की पुकार नहीं थी, बल्कि जंगल के राजा की भोजन की तलाश में की गई सामान्य पुकार थी, जो जंगल के निवासियों को याद दिला रही थी कि उनका स्वामी शिकार की तलाश में निकला है, और उस रात उसकी प्रचंड भूख को शांत करने के लिए उनमें से किसी एक को मरना होगा।

समय बीतता गया, और फिर गली में मुझे कुछ हलचल दिखाई दी। मैंने अपनी राइफल उठाकर उस वस्तु पर निशाना साधा, जो धीरे-धीरे मेरे पास आ रही थी, गली के बीचोंबीच चलती हुई। क्या यह वही पैंथर था, और क्या वह इस तरह खुलेआम, गली के बीचोंबीच, बिना छुपने की कोशिश किए चल रहा था? वह अब लगभग तीस गज दूर था और फिर भी निडरता से आगे बढ़ रहा था, बिना किसी आड़ लेने या किसी वस्तु के किनारों पर रेंगने की कोशिश किए, जैसा कि तेंदुआ अपने शिकार का पीछा करते समय करता है। इसके अलावा, वह एक कमजोर और दुबला-पतला जानवर लग रहा था, क्योंकि अब मैं उसे काफी स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। बीस गज की दूरी पर मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया, जिसे मैंने उस रात अपनी राइफल से बांध रखा था। जैसे ही तेज रोशनी बीच के खालीपन में फैली, उसने एक देहाती कुत्ते को रोशन किया, जिसे भारत में आमतौर पर 'आवारा कुत्ता' कहा जाता है। भूखा और अकेला, वह इंसानी संगति की तलाश में आया था; वह तेज रोशनी में खाली निगाहों से घूर रहा था, और दोस्ती के स्पष्ट संकेत देते हुए अपनी पतली पूंछ को धीरे से हिला रहा था।

एक साथी का स्वागत करते हुए, भले ही वह अकेला कुत्ता ही क्यों न हो, मैंने बत्ती

बंद कर दी और अंगूठे और उंगली के इशारों से उसे अपने पास बुलाया। वह दबे पांव, अपनी अजीब सी पूंछ हिलाते हुए मेरे पास आया। मैंने उसे कुछ बिस्कुट और एक सैंडविच खिलाया, और तारों से जगमगाते धुंधले आसमान में उसकी आंखें मुझे उस थोड़े से भोजन के लिए कृतज्ञता से देख रही थीं जो मैंने उसे दिया था, शायद पिछले दो दिनों में उसके पेट में पहली बार कुछ गया था। फिर वह मेरे पैरों के पास सिकुड़कर सो गया।

समय बीतता गया और आधी रात हो गई। जंगल के किनारे से एक विशाल सींग वाले उल्लू ने उदास स्वर में 'हू-हू' की लंबी, रहस्यमयी आवाज निकाली, मानो यह किसी मृत्यु की घंटी हो, या रात के उस भयावह हिस्से का पूर्वाभास हो जब अशांत आत्माओं को उनके सांसारिक कर्मों के स्थल पर वापस बुलाया जाता है, ताकि वे उन कर्मों को बार-बार दोहरा सकें जो उन्हें धरती से बांधते हैं।

एक, दो और फिर तीन बजे का समय नीरसता से बीत गया, जबकि मैं अपनी थकी और दर्द करती आँखों और कानों से हलचल या आवाज़ सुनने की कोशिश करता रहा। सौभाग्य से, रात साफ थी और आसमान में जगमगाते अनगिनत तारों की चमक से दृश्यता अपेक्षाकृत अच्छी थी, ऐसा नज़ारा हमारे धूल भरे कस्बों या शहरों में नहीं देखा जा सकता। और फिर, अचानक, गाँव के ठीक बाहरी इलाके में स्थित पास के कीचड़ भरे तालाब से एक प्लोवर पक्षी, जिसे भारत में 'क्या तुमने किया' पक्षी के नाम से जाना जाता है, की घबराहट भरी आवाज़ सुनाई दी। 'क्या तुमने किया, क्या तुमने किया, क्या तुमने किया, क्या तुमने किया', वह लगातार तेज़ आवाज़ में पुकार रहा था। निस्संदेह पक्षी उत्तेजित और विचलित हो गया था, या उसने कुछ देख लिया था। मेरे पैरों के पास बैठा कुत्ता हिला, अपना सिर उठाया और फिर नीचे बैठ गया, मानो उसे दुनिया की कोई परवाह ही न हो।

कुछ मिनट बीत गए, और फिर अचानक कुत्ता पूरी तरह जाग गया। उसके कान जो निराशा से लटके हुए थे, खड़े हो गए; वह मेरे पैरों से बुरी तरह कांपने लगा, और उसके गले से एक धीमी, लंबी गुर्राहट निकली।

मैंने देखा कि वह तालाब के पास से गाँव की ओर जाने वाली गली में देख रहा था। मैंने उस दिशा में ध्यान से देखा। काफी देर तक मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया, और फिर

कुछ दूरी पर, गली के उसी तरफ एक इमारत के कोने पर एक परछाई हिलती हुई दिखी। मैंने अपनी नज़रें उस जगह पर टिका दीं, और कुछ सेकंड बाद फिर से एक हल्की सी हलचल देखी, लेकिन इस बार थोड़ी और करीब।

टॉर्च जलाने वाले बटन पर अपना बायां अंगूठा रखकर मैं सांस रोककर चुपचाप इंतजार करने लगा। कुछ मिनट बीते, ज़्यादा से ज़्यादा पांच या दस मिनट, और फिर मैंने देखा कि एक लंबा-सा शरीर तेज़ी से और चुपचाप लगभग बीस गज दूर एक झोपड़ी की छत पर कूद गया। संयोग से, सारी झोपड़ियाँ इस जगह पर एक-दूसरे से सटी हुई थीं, और मैंने अनुमान लगाया कि पैंथर ने खुलेआम मेरा पीछा करने के बजाय, इन सटी हुई झोपड़ियों की छतों पर चलकर पीछे से मुझ पर हमला करने का फैसला किया होगा।

मैं झट से खड़ा हो गया और दीवार से पीठ टिका ली। इस स्थिति में, मेरे सिर के ऊपर छत का किनारा लगभग अठारह इंच तक मेरे ऊपर से गुज़रते हुए उस सड़क पर जा रहा था जहाँ मैं बैठा था। मैंने राइफल तैयार रखी, उंगली ट्रिगर पर थी, और बाएँ अंगूठे से टॉर्च का स्विच मेरी बगल में दबा हुआ था और ऊपर की ओर इशारा कर रहा था।

कुछ ही सेकंड बाद, मुझे हल्की सरसराहट सुनाई दी, जैसे तेंदुआ छत पर बिछाई गई कंटीली झाड़ियों को पार करने की कोशिश कर रहा हो। ज़ाहिर है, वह इसमें नाकाम रहा, क्योंकि फिर से सन्नाटा छा गया। अब मुझे पता नहीं था कि वह कहाँ है। अगले पंद्रह मिनट भयानक चिंता में गुज़रे, मैं तेंदुए के हमला करने से पहले उसे ढूंढने की कोशिश में हर दिशा में देखता रहा, और ईश्वर का शुक्र अदा करता रहा कि रात साफ़ थी। और फिर वह कुतिया, जो मेरे पैरों के पास बेचैनी से रो रही थी, अचानक गली के बीचोंबीच आ गई, उस झोपड़ी के कोने की ओर मुँह करके खड़ी हो गई जिसके सहारे मैं छिपा हुआ था और ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगी।

इस चेतावनी ने मेरी जान बचा ली, क्योंकि पाँच सेकंड के भीतर ही पैंथर कोने से निकलकर मुझ पर झपटा। मेरे पास टॉर्च का स्विच दबाने और कमर से गोली चलाने का ही समय था, जो उसके चौड़े खुले, गुर्राते मुँह के ऊपर चमकती आँखों में लगी। .405 की गोली सीधे निशाने पर लगी, लेकिन हमले की वजह से जानवर मेरी ओर दौड़ पड़ा। मैं फुर्ती से एक तरफ कूद गया, और जैसे ही पैंथर झोपड़ी की दीवार से

टकराया, मैंने मैगज़ीन से दो और गोलियाँ उसके भयानक, धब्बेदार शरीर पर दाग दीं। वह गिर पड़ा और स्थिर हो गया, सिवाय उसके अभी भी खुले हुए जबड़ों और लंबी, फैली हुई पूंछ के रुक-रुक कर हिलने के। और फिर मेरा दोस्त, कुतिया, अपने नए मालिक के प्रति अटूट वफादारी दिखाते हुए, दौड़ा और अपने कमजोर दाँतों को उस मरे हुए राक्षस के गले में गाड़ दिया।

और इस तरह 'गुम्मलपुर का चित्तीदार शैतान' गुजर गया, एक ऐसा पैंथर जिसकी घातक चालाकी के बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था और उम्मीद करता हूँ कि मुझे उससे दोबारा कभी सामना न करना पड़े। अगली सुबह जब मैंने जानवर की खाल उतारी, तो पाया कि दाहिने पंजे पर लगी चोट, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, किसी पिछली गोली के घाव से नहीं, बल्कि साही के दो कांटों से लगी थी जो एक-दूसरे से एक इंच की दूरी पर उंगलियों के बीच घुस गए थे और फिर टूट गए थे। यह काफी समय पहले हुआ होगा, क्योंकि पैर के अंदर हड्डियों के बीच बनी एक उपास्थि ने कांटों को ढक लिया था। निस्संदेह, जानवर को सामान्य तरीके से अपना पंजा जमीन पर रखने में दर्द होता था, और उसने उसके किनारे पर चलने की आदत डाल ली थी।

मैं उस कुत्ते को घर ले आया, उसे नहलाया-धुलाया और उसका नाम 'निपर' रख दिया। निपर तब से कई सालों से मेरे साथ है, और मुझे कभी भी उसे कुछ बिस्कुट और सैंडविच देने का पछतावा नहीं हुआ, जिसने उसका दिल जीत लिया और कुछ ही घंटों में मेरी जान बचाकर उस छोटे से एहसान का बदला चुका दिया।

लेखक निपर के साथ

चामाला घाटी का धारीदार आतंक

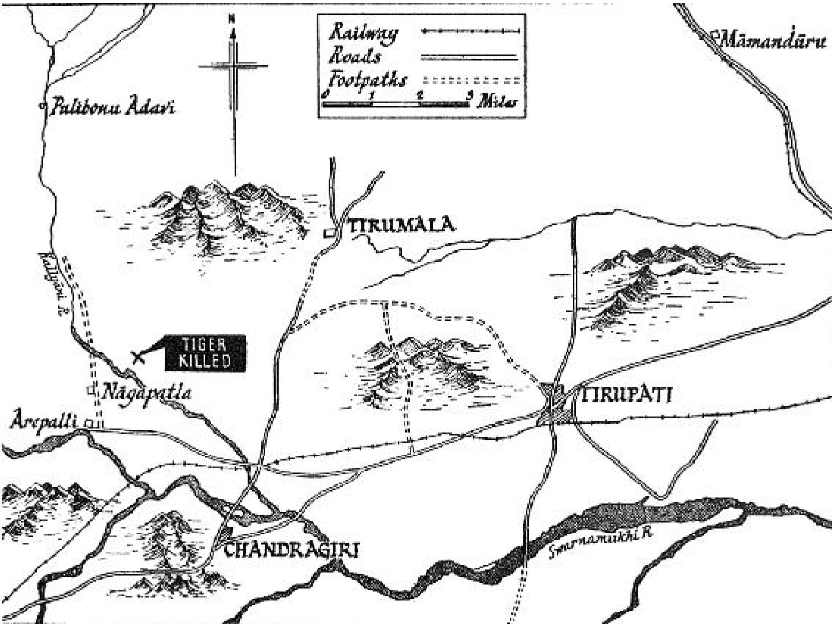

चामाला घाटी मद्रास प्रेसीडेंसी के चित्तूर जिले के उत्तर-पूर्वी छोर का हिस्सा है, जहाँ यह उत्तर में कडप्पा जिले से सटी हुई है। यह अपेक्षाकृत छोटी घाटी है, जिसका मुख्य भाग उत्तर की ओर लगभग सात मील लंबा और पाँच मील चौड़ा है, और इसके अंत में 'Y' अक्षर के आकार की दो शाखाएँ हैं, जो क्रमशः उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की ओर जाती हैं। ये शाखाएँ मुख्य घाटी से कुछ संकरी हैं और प्रत्येक लगभग चार मील लंबी हैं। ये शाखाएँ कडप्पा की दक्षिणी सीमा बनाने वाली एक विशाल चट्टानी ढलान के नीचे समाप्त होती हैं।

कल्याणी नदी उत्तर-पूर्वी घाटी से होकर बहती है, जिसके दो स्रोत ढलान के ठीक नीचे, घने जंगलों से घिरी हुई हैं। ये घाटियाँ गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु हैं, जहाँ गर्मियों के सबसे गर्म महीनों में भी पारदर्शी, बर्फीले ठंडे पानी के कुंड हमेशा मौजूद रहते हैं। कल्याणी नदी फिर मुख्य घाटी से होते हुए दक्षिण की ओर बहती है और अंततः नागपतला गाँव में एक कृषि क्षेत्र में प्रवेश करती है। यहाँ एक प्राचीन झील है, जिस

पर चंद्रगिरि के राजाओं और बाद में सर्वविजयी मुस्लिम नायक टीपू सुल्तान ने भीषण गर्मी के महीनों में सूखे ग्रामीण इलाकों को पानी पहुँचाने के लिए एक बांध बनाने का प्रयास किया था। वन विभाग ने झील के दक्षिणी किनारे पर, प्राचीन जलसेतु के पास, एक मजबूत लेकिन आरामदायक वन बंगला बनाया है। अरेपल्ली रंगमपेट गाँव लगभग डेढ़ मील दूर स्थित है और यह लगभग हाल ही में बसा है। चमाला घाटी पूरी तरह से वनों से आच्छादित है और ब्रिटिश शासन के दौरान यह एक वन्यजीव अभ्यारण्य था। पश्चिम की ओर बखरपेट वन क्षेत्र और पूर्व की ओर तिरुपति वन श्रृंखला स्थित है, जो भारत भर में प्रसिद्ध तिरुपति के महान तीर्थस्थलों में समाप्त होती है। दक्षिण की ओर प्राचीन शहर चंद्रगिरि है, जिसमें सदियों पुराना किला है, जो अपने पूर्व राजाओं की महिमा का मूक प्रमाण है।

चंद्रगिरी के पास से एक मीटर गेज रेलवे लाइन तिरुपति और रेनिगुंटा की ओर जाती है, जहाँ यह मद्रास से बॉम्बे जाने वाली मुख्य ब्रॉड गेज लाइन से जुड़ जाती है। चंद्रगिरी रेलवे स्टेशन से लगभग साढ़े तीन मील तक रंगमपेट तक एक बैलगाड़ी का रास्ता जाता है; फिर यह डेढ़ मील उत्तर की ओर नागपतला की ओर मुड़ता है, जहाँ से यह और उत्तर की ओर बढ़ता है और चमाला घाटी के पूरे सात मील तक वन विभाग का मार्ग बन जाता है, जब तक कि यह पुलिबोनु नामक स्थान पर नहीं पहुँच जाता, जिसका अर्थ है 'बाघ का पिंजरा', जहाँ यह अचानक समाप्त हो जाता है। वन विभाग द्वारा इस स्थान पर दो समतल, वर्गाकार, सीमेंटेड शिविर स्थल और पीने के पानी की निरंतर आपूर्ति के लिए एक कुआँ बनाया गया है। घाटी और इसकी शाखाएँ सुंदर हैं, और जब मैंने अठारह साल पहले पहली बार यहाँ का दौरा किया था, तब यह वन्यजीवों का स्वर्ग था। चीतलों के बड़े-बड़े झुंड मुख्य घाटी में घूमते थे, जिनमें से कुछ नर चीतलों के सिर इतने विशाल थे कि मैंने दक्षिण भारत में कहीं और नहीं देखे। पश्चिम में बखरपेट पर्वतमाला और पूर्व में तिरुपति पर्वतमाला की तलहटी, साथ ही पूरे उत्तरी ढलान के निचले हिस्से में शानदार आकार और सींगों वाले सांभर पाए जाते थे। काला भालू या सुस्त भालू हर जगह मौजूद था, लेकिन ढलान के नीचे घने जंगलों में इनकी संख्या विशेष रूप से अधिक और खतरनाक थी। काकर, जिसे 'मंटजैक' या भौंकने वाला हिरण भी कहा जाता है, बहुतायत में पाया जाता था। मुख्य घाटी और इसका उत्तर-पूर्वी भाग बाघों का नियमित मार्ग था, जो बखरपेट पर्वतमाला से आते, घाटियों से होते हुए ढलान को पार करके कडप्पा के जंगलों में जाते, फिर मामंदुर

पर्वतमाला और आगे सेट्टीगुंटा तक जाते। पैंथर हर जगह मौजूद थे, और इस क्षेत्र में मोर, स्पर फाउल और ग्रे जंगली फाउल बहुतायत में पाए जाते थे, जिनमें से ग्रे जंगली फाउल विशेष रूप से बड़ी संख्या में थे। दक्षिण भारत का यह एकमात्र ऐसा जंगल था जहाँ मैंने जंगली मुर्गों को दोपहर में भी, और नियमित रूप से रात 2 बजे और लगभग 4.30 बजे बांग देते हुए पाया, बेशक, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उनके सामान्य गायन के अलावा।

सन् 1937 की शुरुआत में, एक दिन इस शांत क्षेत्र में एक खूंखार धारीदार बाघ आया, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। वह सामान्य आकार का बाघ था, और उसके पदचिह्नों से ऐसी कोई विकृति नहीं दिखती थी जिससे मानव मांस खाने की उसकी प्रवृत्ति का पता चलता। वह अचानक प्रकट हुआ, किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ से आया, और न ही आस-पास के किसी भी वन क्षेत्र में, चाहे वह दूर हो या पास, किसी आदमखोर बाघ की गतिविधियों की कोई अफवाह फैली थी। उसका अचानक और अप्रत्याशित आगमन जितना विचित्र था, जल्द ही यह बात सबको पता चल गई कि एक आदमखोर बाघ घाटी में घुस आया है, क्योंकि उसने गुंडलपेंटा के तालाबों के पास एक बांस काटने वाले को मार डाला और पूरा खा लिया। इसके तीन दिन बाद, उसने नागपतला-पुलिबोनू वन मार्ग पर, चौथे मील के पत्थर के पास, एक यात्री को लगभग पूरी तरह से खा लिया। इसके बाद उसकी हत्याएँ छिटपुट और अनियमित हो गईं, जो तीनों घाटियों में फैल गईं, जहाँ उसने लगभग छह महीनों में कुल सात लोगों को मार डाला और खा लिया, या आंशिक रूप से खा लिया।

एक दिन बखरपेट के वन रेंज अधिकारी, जिनके क्षेत्र में चमाला घाटी शामिल है, अपने निरीक्षण दौरों के दौरान नागपतला स्थित वन बंगले में रहने के लिए जा रहे थे। वे बैलगाड़ी से यात्रा कर रहे थे, जिसमें वे नागपतला में दो सप्ताह के प्रवास के लिए राशन, निजी सामान और अन्य आवश्यक वस्तुएं भी ले जा रहे थे।

शाम के पाँच बज रहे थे और बैलगाड़ी अपनी मंज़िल से मुश्किल से दो मील ही दूर थी कि एक बाघ गाड़ी के सामने सड़क पर आ गया। आपको बता दूं कि बखरपेट से नागपतला जाने वाली यह सड़क लगभग पूरी लंबाई में आरक्षित वन से होकर गुज़रती है, और आखिरी दो मील चमाला घाटी की शुरुआत से होकर जाते हैं। सड़क पर बाघ

को देखकर बैलगाड़ी चालक ने गाड़ी रोक दी और अपने साथ मौजूद रेंज ऑफिसर और वन रक्षक को आवाज़ लगाई। चूंकि बैलगाड़ी ढकी हुई थी और वे अंदर थे, इसलिए उनमें से किसी ने भी सड़क पर बाघ को नहीं देखा था।

तीनों आदमी चिल्लाने लगे, तभी सड़क के किनारे बने खुले मैदान में चलता हुआ बाघ गाड़ी के पास से गुजरा और अंदर बैठे दोनों आदमियों को दिखाई दिया। इसी क्षण, बिना किसी स्पष्ट कारण के, वन रक्षक गाड़ी से कूद गया और जानवर को डराने के लिए हाथ हिलाने और चिल्लाने लगा। हालांकि, उसने अपनी ही किस्मत खराब कर ली, क्योंकि बाघ ने लगातार दहाड़ते हुए उस पर हमला किया, उसे अपने जबड़ों में जकड़ लिया और छिपने के लिए जंगल में वापस भाग गया। यह घटना इतनी अप्रत्याशित और अचानक हुई कि रेंज ऑफिसर को कुछ भी करने का मौका नहीं मिला, हालांकि वह जो कुछ कर सकता था वह भी मुश्किल था, क्योंकि वह खुद निहत्था था।

फिर गाड़ी को बड़ी जल्दबाजी में नागपटला ले जाया गया, लेकिन अगली सुबह तक ही बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो सके, जो बंदूकें, कुल्हाड़ियाँ और लाठियाँ लिए हुए थे, ताकि उस दुर्भाग्यपूर्ण वन रक्षक को, या यूँ कहें कि उसके बचे हुए अवशेषों को, ढूँढ़ा जा सके। अंततः उसके अवशेष सड़क से एक फर्लांग से भी कम दूरी पर एक खाई में मिले; केवल सिर, हाथ और पैर, और उसकी खून से सनी और क्षत-विक्षत खाकी वर्दी और हरी पगड़ी ही कहानी बयां कर रही थी, पगड़ी वहीं पड़ी थी जहाँ बाघ अपने शिकार को लेकर सड़क के किनारे वाले खुले मैदान को पार करते समय गिरा था।

इस त्रासदी को सरकार की ओर से काफी तवज्जो मिली और देशभर के अखबारों में इसकी खबर छपी। सरकार ने आदमखोर को मारने के लिए इनाम की घोषणा की और मद्रास और स्थानीय इलाकों से कई साहसी शिकारी उस जानवर को मारने के लिए घाटी में पहुंचे। लेकिन आखिरी शिकार के बाद, मानो उसे एहसास हो गया हो कि उसने बहुत ज्यादा ध्यान आकर्षित कर लिया है, कुछ समय के लिए उसका आतंक पूरी तरह गायब हो गया और घाटी में कहीं भी उसका कोई सुराग नहीं मिला। अनुमान लगाया गया कि वह या तो ढलान पार करके उत्तर की ओर कडप्पा जिले में चला गया

होगा, या फिर बखरपेट या तिरुपति ब्लॉक में भटक गया होगा। पूरा इलाका सतर्क हो गया था, लेकिन अगले दो महीनों तक उस जानवर के बारे में कोई खबर नहीं मिली।

फिर एक दिन, मद्रास-मुंबई मुख्य मार्ग पर स्थित मामंदुर स्टेशन के पास ब्रॉड गेज रेलवे ट्रैक पर गश्त कर रहा एक रेलवे गैंगर, जो चमाला घाटी से लगभग अठारह मील उत्तर-पूर्व में पहाड़ियों से घिरे एक विस्तृत, घने जंगलों वाले पठार में स्थित है, अपनी गश्त के अंतिम बिंदु पर नहीं पहुंचा। एक-दो दिन तक उसकी अनुपस्थिति पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि पूर्वी क्षेत्र में मामूली कारणों से अचानक अनुपस्थिति आम बात है; लेकिन जब उसके बाद भी वह व्यक्ति नहीं आया, तो मामले को गंभीरता से लिया गया और उसे खोजने के लिए एक दल भेजा गया। रेलवे ट्रैक के किनारे चलते हुए, लापता व्यक्ति के भाग्य का पहला सुराग वह बड़ा हथौड़ा था जिसका वह उपयोग कर रहा था, जो ट्रैक के किनारे पड़ा मिला। गैंगरों को ऐसे हथौड़े इसलिए दिए जाते हैं ताकि वे रेल की पटरियों को उनके सपोर्ट (जिन्हें चेयर कहा जाता है) से टिकाए रखने के लिए इस्तेमाल होने वाले लकड़ी के ब्लॉकों को अपनी जगह पर रख सकें। कठोर, धूप से तपती ज़मीन पर संघर्ष के कोई निशान नहीं थे, लेकिन थोड़ी ही दूर पर खून की कुछ बूँदें थीं जो एक ढलान से नीचे उतरकर पास के जंगल की ओर जा रही थीं। इस निशान का पीछा करते हुए दल को लापता गैंगर की पहनी हुई एक अजीब सी चप्पल मिली, साथ ही झाड़ियों की पत्तियों पर खून के धब्बे भी मिले। थोड़ा आगे बढ़ने पर उन्होंने सूखी, मुलायम रेत की एक पट्टी पार की, जिस पर चलते हुए उन्हें स्पष्ट रूप से बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए।

इससे यह साबित हो गया कि लापता व्यक्ति को बाघ ले गया था। पिछले कुछ महीनों में चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल चुकी थी, और स्वाभाविक रूप से, यह निष्कर्ष निकाला गया कि इस जानवर ने ही इस ताज़ा त्रासदी को अंजाम दिया है। संयोगवश, बाघ के अवशेष कभी नहीं मिले। इसके बाद, अगले कुछ महीनों में दो और शिकार हुए। पहला मामंदुर से n मील उत्तर-पश्चिम में स्थित सेट्टिगुंटा में और दूसरा उंबलमेरु में, जो कि, जैसा कि आपको याद होगा, कल्याणी नदी के चमाला घाटी में प्रवेश करने से पहले उसके दो मुख्य स्रोतों में से एक था। उस समय मैं मद्रास के व्यावसायिक दौरे पर था और सलेम जिले में स्थानीय शिकारियों की गतिविधियों के खिलाफ़ मैंने जो शिकायत दर्ज कराई थी, उसके संबंध में मुख्य वन

संरक्षक से मिलने का अवसर मिला था। मुख्य वन संरक्षक से बात करते समय, उन्होंने उस बाघ की गतिविधियों का ज़िक्र किया जिसके बारे में मैंने प्रेस में काफ़ी पढ़ा था और मुझे उस जानवर को पकड़ने का प्रयास करने का सुझाव दिया।

सौभाग्य से, मैंने पिछले वर्ष विशेषाधिकार अवकाश का लाभ नहीं उठाया था, और चूंकि मेरे पास कुछ महीने शेष थे, इसलिए मैंने उनमें से एक महीने का उपयोग इस कार्य में करने का निर्णय लिया। बैंगलोर लौटकर, मैंने अगले कुछ दिन इस कार्य के लिए आवश्यक सभी चीज़ें जुटाने में बिताए और दस दिन बाद, मैं नागपतला वन बंगले में था, जिसे मैंने चमाला नामक आदमखोर सांप के खिलाफ अभियान चलाने के लिए अपना मुख्यालय बनाने का निर्णय लिया था।

सबसे पहले, स्थानीय स्तर पर व्यापक पूछताछ करना, चमाला घाटी में उन स्थानों का दौरा करना जहाँ शिकार हुए थे, और विभिन्न घटनाओं के घटित होने के स्थानों में एक क्रम स्थापित करने का प्रयास करना आवश्यक था, ताकि संभव हो तो बाघ के नियमित मार्ग का पता लगाया जा सके। मैं इसमें पूरी तरह असफल रहा; यह स्पष्ट हो गया कि यह विशेष जानवर एक घुमंतू था, जो कुछ समय के लिए घाटी में आता था, जहाँ भी अवसर मिलता था, किसी मानव को अपना शिकार बना लेता था, और मामंदुर या कडप्पा जिले की ओर ढलान पर चढ़ जाता था।

काफी मुश्किलों के बाद, मैंने चार भैंसें खरीदीं। मैंने इन्हें अलग-अलग जगहों पर बांध दिया; एक गुंडलपेंटा में, दूसरी उम्बालमेरु में, तीसरी नागपटला-पुलिबोनू वन मार्ग के चौथे मील के पत्थर के पास नरसिम्हा चेरुवु नामक एक जलकुंड पर, और तीसरी रागिमनकोनार नामक एक पथरीली धारा पर, जो कल्याणी नदी की एक सहायक नदी है और सड़क से लगभग दो मील पूर्व तिरुपति ब्लॉक की पथरीली पहाड़ियों से निकलती है। दूसरे दिन नरसिम्हा चेरुवु में रखे गए भैंस को मार दिया गया, लेकिन जांच से पता चला कि यह एक बड़े तेंदू (जंगली तेंदुआ) का काम था, न कि बाघ का, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी। चूंकि चारा महंगा होता है और मैं उसे तेंदुओं के हाथों खोने का जोखिम नहीं उठा सकता था, इसलिए मैं जलकुंड के पास इस जानवर का इंतजार करता रहा, और सौभाग्य से शाम 6:45 बजे तक, जब वह शिकार पर लौटा, तो मैंने उसे पकड़ लिया।

फिर मैंने एक और चारा खरीदा, जो उस चारे की जगह था जिसे पैंथर ने मार डाला था, और उसे नरसिम्हा चेरुवु में उसी जगह पर बांध दिया। अगला सप्ताह जंगल के बंगले में आलस में बीता, सिवाय हर सुबह और शाम जंगल में चारों दिशाओं में लंबी सैर करने के, इस उम्मीद में कि शायद संयोग से बाघ दिख जाए। नौवें दिन की सुबह, जब मैं अपनी स्टडबेकर कार में पुलिबोनू की ओर जा रहा था, जहाँ से मैं जंगलों में एक और सैर शुरू करने वाला था, तो मुझे एक बाघ के पदचिह्न मिले जो छठे मील के पत्थर पर सड़क पर आया था और पुलिबोनू से आगे तक सड़क के बीचोंबीच चला गया था। आदमखोर बाघ के पदचिह्नों में अब तक कोई खास बात नहीं देखी गई थी, इसलिए यह बताना असंभव था कि इन ताजा पदचिह्नों को बनाने वाला जानवर वही शिकारी था जिसकी मैं तलाश कर रहा था, या सिर्फ एक भटकता हुआ बाघ। ये पदचिह्न, कुछ जगहों पर, सड़क के किनारे की नरम रेत में बहुत स्पष्ट थे, और मैं उन्हें बारीकी से देख सका; लेकिन मैं यह तो कह ही सकता था कि ये निशान औसत आकार के नर बाघ ने बनाए थे, इसके अलावा कोई और खास निशान या पहचान नहीं दिखी। पुलिबोनू में गाड़ी छोड़कर मैं उत्तर-पूर्वी घाटी की ओर पैदल चला। जंगल का रास्ता कल्याणी नदी को बार-बार पार करता था, जहाँ मैंने देखा कि बाघ मुझसे कुछ दूरी तक आगे निकल चुका था। उस दिन मैंने गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु दोनों जगह जाकर देखा, इस उम्मीद में कि मेरे चारे में से कोई एक बाघ खा गया होगा, लेकिन दोनों बाघ जीवित थे और शांति से भूसे के बड़े-बड़े ढेर चबा रहे थे जो मैंने उनके लिए आराम और संतुष्टि के लिए रखे थे। दोपहर के भोजन के बाद मैं वापस लौटा और उस जगह से बाघ के पदचिह्नों का पीछा करने की कोशिश की जहाँ मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था। लेकिन मैं पूरी तरह सफल नहीं हो पाया, क्योंकि नदी के ऊपरी हिस्सों में दोनों किनारों पर उगे घने बांस में पदचिह्न खो गए। उस शाम काफी देर हो चुकी थी जब मैं पुलिबोनू की ओर वापस मुड़ा। आधा मील आगे बढ़ते हुए, घने बाँस के जंगल में ही, मुझे एक सुस्त भालू दिखाई दिया जो असामान्य रूप से जल्दी प्रकट हुआ था, क्योंकि ये जीव सूर्यास्त के बाद ही घूमना शुरू करते हैं। वह एक बड़े दीमक के टीले के पास खड़ा था, उसकी नाक और सिर का कुछ हिस्सा उसके द्वारा बनाए गए छेद के अंदर था, और वह ज़ोरदार साँसों से दीमकों को अपने मुँह में खींच रहा था। वह देखने में बिल्कुल काले, बालों वाले आदमी जैसा लग रहा था, जो दीमक के टीले के पास खड़ा था, और उसकी आवाज़ें असाधारण थीं, लाखों मधुमक्खियों की भिनभिनाहट

जैसी, जिसमें बीच-बीच में तेज़, बेचैन सूंघने और सरसराहट की आवाज़ें भी आ रही थीं, जैसे कोई विशालकाय शिकारी कुत्ता शिकार की तलाश में हो।

मैं भालू के काफी करीब पहुँच गया, फिर भी उसने मुझे नहीं देखा, वह अपने काम में इतना मग्न था। मैं और भी करीब जा सकता था, लेकिन इसका मतलब यह होता कि जब उसे मेरी मौजूदगी का एहसास होता, तो वह शायद हमला कर देता और मुझे उसे गोली मारनी पड़ती। मैं ऐसा नहीं करना चाहता था, क्योंकि व्यक्तिगत रूप से मुझे भालुओं से कोई दुश्मनी नहीं है, और दूसरी बात, मेरी गोली की आवाज़ से जंगल में हलचल मच जाती और शायद बाघ भाग जाता। इसलिए मैं लगभग चालीस गज की दूरी पर रुक गया और ज़ोर से खाँसा। भालू ने मेरी आवाज़ सुनी, उसकी भिनभिनाहट और सूंघना बंद हो गया, और वह अपने पिछले पैरों पर घूमकर मेरी ओर मुड़ा, उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जो कम से कम हास्यास्पद तो था ही। उसके मिट्टी से सने चेहरे पर झुंझलाहट, डर, नाराज़गी और आक्रोश साफ झलक रहा था। एक पल के लिए, वह मुझे देखता रहा, अपने पिछले पैरों पर और ऊँचा उठता रहा, और पहले तो मुझे लगा कि वह अंधाधुंध हमला कर देगा, जो सुस्त भालू की आदत होती है जब उसे पास से परेशान किया जाता है। लेकिन बेहतर निर्णय ने मुझे रोक लिया; वह चारों पैरों पर बैठ गया और अपनी पूरी ताकत से भागने लगा, एक काले बालों वाले गोले की तरह उछलता हुआ, बुदबुदाते हुए, 'औफ्ल औफ्ल औफ्ल'

अगली सुबह तड़के मैं पुलिबोनू वापस पहुँच गया। सड़क पर बाघ के लौटने का कोई निशान नहीं था, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वह उत्तर-पूर्वी घाटी में कहीं था, या फिर वह ढलान पार करके चला गया था। गाड़ी छोड़कर मैं गुंडलपेंटा की ओर चल पड़ा, लेकिन वहाँ मैंने अपने शिकार को ज़िंदा पाया, वह अभी भी घास चबा रहा था मानो दुनिया में और कुछ मायने ही न रखता हो। फिर मैं उम्बालमेरु गया, और जहाँ मैंने अपना दूसरा शिकार बाँधा था, वहाँ पहुँचकर देखा कि वह गायब था। जाँच करने पर पता चला कि उसे एक बाघ ने मार डाला था, और फिर उसे घसीटकर ले गया था, इससे पहले उसने उस मज़बूत रस्सी को तोड़ दिया था जिससे मैंने उसे बाँधा था। घसीटने के निशान का पीछा करना आसान था, और लगभग 100 गज आगे बढ़ने पर मेरा ध्यान एक अकेले कौए पर गया, जो एक पेड़ की नीची शाखा पर बैठा था, उम्मीद भरी निगाहों से नीचे देख रहा था।

इसका केवल एक ही अर्थ हो सकता था कि बाघ वहीं था और अपने शिकार पर कब्ज़ा जमाए हुए था। यदि वह वहाँ नहीं होता, तो कौआ नीचे पेड़ की डाल पर उदास होकर नीचे देखने के बजाय, शव को खाने के लिए नीचे उतर जाता। जिस पेड़ पर कौआ बैठा था, वह भाला घास के एक ढलान वाले किनारे के ठीक सामने था, जिसके तल पर घनी झाड़ियों से ढका एक छोटा सा गड्ढा था। बाघ और उसका शिकार इसी झाड़ी में कहीं छिपे हुए थे। सीधे इस झाड़ी के पास जाना उचित नहीं था। पहली बात तो यह कि बाघ शायद मेरी आवाज़ सुन लेता और भाग जाता। दूसरी ओर, और विशेष रूप से यदि वह आदमखोर होता, तो वह निस्संदेह हमला कर देता, और आसपास की घनी झाड़ियों और भाला घास की लंबाई के कारण मेरे पास उसे रोकने का मौका बहुत कम था।

इसलिए मैं लगभग पचास गज पीछे हट गया और एक वैकल्पिक मार्ग खोजने लगा जिससे मैं उस स्थान पर किसी अन्य कोण से, या शायद विपरीत दिशा से पहुँच सकूँ, जहाँ से मैं बाघ को अधिक अनुकूल स्थिति से देख सकूँ।

सौभाग्य से, एक उथला नाला उत्तर-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर तिरछे बहता हुआ कल्याणी नदी के शुरुआती हिस्से में जाकर मिल रहा था। दबे पांव उस नाले पर चढ़ते हुए, मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मैं उस झाड़ी के पास पहुँच गया हूँ जिसमें बाघ छिपा हुआ था। लगभग पच्चीस गज और आगे बढ़ते हुए, मैं सावधानी से दाहिनी ओर के किनारे पर चढ़ गया और जैसा मैंने अनुमान लगाया था, मैं अब उस झाड़ी से कुछ दूरी पर था। मेरे सामने कुछ गज की दूरी पर एक अधविकसित इमली का पेड़ था, और रेंगते हुए उसके पास जाकर, मैं उसकी छायादार शाखाओं में छिप गया, और फिर झाड़ी में नीचे देखने की उम्मीद में और ऊपर चढ़ गया। लेकिन मुझे निराशा हुई, क्योंकि मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इस स्थिति से कौआ भी दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि जिस नीची शाखा पर वह बैठा था, वह बीच की झाड़ी के कारण मेरी दृष्टि से ओझल हो गई थी। इसलिए, मेरे पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि बाघ अभी भी वहीं है या आगे बढ़ गया है।

मैं लगभग आधे घंटे तक इसी स्थिति में बैठा रहा, इस उम्मीद में कि अगर बाघ झाड़ियों से बाहर निकले तो जंगल या उसके जीव-जंतु उसकी गतिविधियों का संकेत

दे देंगे। सूरज काफी ऊपर आ चुका था, और मुझे पता था कि बाघ जल्द ही उम्बालमेरु के किसी जलकुंड की ओर जाएगा, ताकि भारी भोजन के बाद अपनी प्यास बुझा सके।

तभी मुझे बाईं ओर सौ गज की दूरी से एक भूरे लंगूर बंदर की विचित्र चेतावनी भरी आवाज सुनाई दी, 'हा-आहल हार्ल हार्ल'। वह लगातार यही आवाज दोहरा रहा था, साथ ही साथ मादा लंगूर भी 'चीक! चीक!' की आवाज निकाल रही थी।

अंततः बाघ हिल गया और लंगूर रखवाले ने उसे देख लिया। भारतीय जंगलों से परिचित मेरे पाठकों को लंगूर बंदरों के व्यवहार के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग परिचित नहीं हैं, उन्हें यह जानकर रुचि होगी कि काले चेहरे और बहुत लंबी पूंछ वाले ये विशालकाय भूरे वृक्षवासी जंगल में समूहों में रहते हैं, जहाँ वे पूरी तरह से जंगली फलों, कुछ पत्तियों और निश्चित रूप से विभिन्न प्रकार के इल्लियों और कीड़ों पर निर्भर रहते हैं, जो उनका विशेष भोजन है। लंगूर का मांस बाघों, तेंदुओं और कुछ जंगली जनजातियों के भोजन का एक प्रमुख आकर्षण है, इसलिए पीढ़ियों के कठिन अनुभव ने उन्हें एक रखवाला तैनात करना सिखाया है, जो हमेशा सबसे ऊंचे पेड़ पर अपनी जगह लेता है और शिकार की तलाश में घूम रहे लंगूरों पर पैनी नजर रखता है। कुछ मनुष्यों को लंगूर रखवाले से कुछ सीख लेनी चाहिए, क्योंकि जब वह ड्यूटी पर होता है तो यह लंगूर न तो भोजन करता है और न ही उसका ध्यान किसी भी तरह से अपने काम से भटकने देता है। उसे इस बात का एहसास है कि उसके कबीले के बच्चों, महिलाओं और अन्य सदस्यों की सुरक्षा और जान पूरी तरह उसकी सतर्कता पर निर्भर करती है। आप उसे सबसे ऊंचे पेड़ की चोटी पर बैठे, चौकन्ना और चारों ओर देखते हुए पाएंगे। उसकी पैनी, काली आँखों से दिखाई देने वाली हर हलचल पर उसकी नज़र रहती है। अंततः, और केवल तभी जब कोई दूसरा पहरेदार उसकी जगह ले लेता है, वह अपने भोजन के बारे में सोचेगा।

खेलते समय लंगूरों की सामान्य आवाजें गूंजती हुई 'वूम्प वूम्प' की एक श्रृंखला होती हैं, जो पहाड़ियों और घने जंगलों की घाटियों में गूंजती हैं। लेकिन जब पहरेदार को खतरा दिखाई देता है, तो वह लगातार 'हा-आहल हार आई हार्ल' की आवाज निकालता है, और पूरा झुंड सबसे ऊंचे पेड़ों पर शरण लेता है। अफसोस की बात है

कि चतुर लंगूरों की बुद्धिमत्ता के बावजूद, बाघ और तेंदुओं ने भी इन बंदरों की चालाकी को मात देने की एक सहज तकनीक विकसित कर ली है, क्योंकि उन्हें भी भोजन चाहिए। पहरेदार की आवाज सुनते ही, झुंड का पीछा कर रहे बाघ और तेंदुओं को पता चल जाता है कि उनका पता चल गया है, और बंदर सबसे ऊंचे पेड़ों पर चले जाएंगे। इसलिए वे अब अपनी रणनीति बदलते हैं, और एक ऐसे पेड़ का पता लगाने के बाद जिस पर कई बंदर बैठे हों, वे रोंगटे खड़े कर देने वाली दहाड़ों के साथ उसकी ओर दौड़ते हैं और संभवतः सबसे निचली शाखा पर छलांग लगाते हैं, मानो खुद पेड़ पर चढ़ने के लिए। सबसे ऊँची शाखाओं पर बैठे लंगूर पूरी तरह सुरक्षित होते अगर वे वहीं बैठे रहते। लेकिन भयानक गुर्राहट और दहाड़ें, साथ ही खुले जबड़ों के साथ उनकी ओर दौड़ता हुआ भयानक धारीदार या चित्तीदार रूप, बेचारे जानवरों को डरा देता है, और वे अपनी सुरक्षित जगह से बेतहाशा कूद पड़ते हैं, या तो पास के पेड़ों तक पहुँचने की कोशिश में, या फिर ऊँचाई से सीधे ज़मीन पर, जहाँ उनमें से एक हमेशा बाघ या तेंदुआ का आसान शिकार बन जाता है जो उनकी इस मूर्खतापूर्ण हरकत का अनुमान लगा लेता है। लेकिन मैं विषय से भटक गया हूँ, और मुझे उस घटना पर वापस लौटना होगा जो लंगूर रखवाले की 'हा-आह! हार! हार!' की आवाज़ सुनने के बाद हुई।

पेड़ से नीचे उतरकर, मैं अपनी राइफल तैयार रखते हुए धीरे-धीरे उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ से लंगूर चौकीदार चेतावनी दे रहा था। मुझे पता था कि बाघ ने भरपेट भोजन किया है, इसलिए मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह इस बार बंदरों को परेशान करने की कोशिश करेगा, लेकिन चौकीदार की नज़र पड़ते ही वह किसी तालाब की ओर जा रहा था। इस इलाके में भाला घास और कांटेदार झाड़ियाँ बहुतायत में उगी थीं, इसलिए आगे बढ़ना धीमा और मुश्किल था। लगभग आधा फर्लांग बहुत सावधानी से आगे बढ़ते हुए, मैंने जंगली कपास के पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा पर लंगूर चौकीदार को देखा, ठीक उसी क्षण जब उसने मुझे देखा। अब उसे दो संभावित दुश्मनों पर नज़र रखनी थी, और मैं जानता था कि अगर मैं ध्यान से देखूँ तो लंगूर किस दिशा में देख रहा है, यह देखकर बाघ के ठिकाने का अंदाज़ा लगा सकता हूँ। इसलिए मैं लंबी घास में अपने घुटनों के बल बैठ गया और वहीं जम गया। चौकीदार ने कुछ सेकंड के लिए मेरी ओर देखा, फिर अपनी बाईं ओर देखा, फिर वापस मेरी ओर देखा, फिर वापस बाईं ओर देखा, और अभी भी अपनी चेतावनी दोहरा रहा था।

उसकी निगाहों से मैं समझ गया कि वह बाघ और मुझे दोनों को देख रहा है और उसने अनुमान लगाया कि बाघ मुझसे कम से कम सौ गज आगे है। मैं उठ खड़ा हुआ और कमर झुकाकर जितनी तेज़ी से हो सके, उस दिशा में बढ़ा जहाँ मुझे बाघ के होने का अनुमान था। इससे पहले से ही उत्तेजित लंगूर चौकीदार और भी घबरा गया, क्योंकि वह समझ नहीं पा रहा था कि मैं लंगूरों के समूह पर हमला करने की सोच रहा हूँ या बाघ पर। उसकी चेतावनी भरी आवाज़ और तेज़ हो गई, जिससे मुझे चिंता होने लगी क्योंकि मैं जानता था कि बाघ भी उसे सुन रहा है और इस बढ़ी हुई उत्तेजना से उसे बंदरों के लिए और शायद खुद के लिए भी कोई नया खतरा महसूस हो जाएगा।

और मैं सही था। मैंने सौ गज की दूरी तेज़ी से तय की, और पच्चीस गज और चलने के बाद, मुझे लगा कि मैं अब बाघ के काफी करीब हूँ और अब मुझे और भी सतर्क हो जाना चाहिए। एक पल के लिए मैंने लंगूर चौकीदार की ओर देखा। वह मेरी ओर ध्यान से देख रहा था, जिससे यह पुष्टि हो गई कि बाघ और मैं दोनों अब उसकी दृष्टि के दायरे में थे। एक बार फिर 'स्थिर' होकर, मैंने अपने सामने और दोनों ओर के क्षेत्र को ध्यान से सुना और देखा। वहाँ काँटेदार झाड़ियों के सामान्य झुंड थे, जिनके बीच लगभग चार फुट ऊँची भाला घास की छोटी-छोटी घासें थीं। देखते हुए, मैंने अपने बाईं ओर लगभग तीस गज की दूरी पर घास में हल्की हलचल देखी। बेहतर दृश्य पाने के लिए मैं उठा, और बाघ ने मुझे देख लिया। एक धीमी गुर्राहट के बाद दो छलांगें लगीं, और वह गायब हो गया। मैं जानता था कि अब उसका पीछा करना व्यर्थ और खतरनाक था, क्योंकि मैंने उसे अपनी उपस्थिति और पीछा किए जाने के तथ्य से अवगत करा दिया था। अचानक हमले से बचने के लिए सावधानी बरतते हुए, मैं उस झाड़ी की ओर रेंगता हुआ गया जहाँ मुझे पता था कि शिकार पड़ा है, और जल्द ही मुझे वह मिल गया। बछड़ा आधा खाया हुआ था; वह अपनी बाईं ओर लेटा हुआ था, गिद्धों से बचने के लिए घास और झाड़ियों की आड़ में था, और सौभाग्य से एक जंगली आम के पेड़ की निगरानी में था। अब मुझे तुरंत फैसला लेना था। संभावना थी कि बाघ मुझे देखने के बावजूद अपने शिकार के पास लौट आए, और अगर मैं उसके लिए जागते रहने का यह मौका गंवा देता तो मैं वह मौका खो देता। साथ ही, मैं रात भर जागने के लिए तैयार होकर नहीं आया था, और मेरे पास टॉर्च, कंबल या खाना भी नहीं था। अगर मैंने जागते रहने का फैसला किया, तो मुझे सुबह तक पेड़ पर ही रहना होगा, क्योंकि उस समय रातें अंधेरी होती थीं और चाँद नहीं होता था। घने अंधेरे

जंगल से होते हुए पुलिबोनू में अपनी कार तक वापस लौटना लगभग असंभव था, इसके अलावा मैं पूरी तरह से आदमखोर बाघ की दया पर निर्भर होता। अगर मैं वहीं रुका रहता, तो मुझे उस बर्फीली ठंडी हवा में असहनीय पीड़ा झेलनी पड़ती, जो ढलान से नीचे आती और जिससे मैं खुद को बचा नहीं पाता। मैंने गाड़ी में वापस जाकर ज़रूरी सामान लाने का सोचा। दूरी लगभग चार मील थी, और मुझे डर था कि मेरी अनुपस्थिति में बाघ वापस आकर मेरे शिकार को पूरी तरह से नष्ट कर सकता है।

अंततः, मैंने व्यक्तिगत असुविधा की परवाह न करते हुए वहीं बैठे रहने का फैसला किया। आम के पेड़ पर चढ़कर, मैं उसकी दूसरी शाखा पर बैठ गया, जहाँ मैं एक डाल से पीठ टिकाकर आराम से लेट सका। जूते उतारकर मैंने भारतीय रीति से अपने पैर क्रॉस करके रख लिए और राइफल को सामने वाली शाखा पर टिका दिया। इस स्थिति से मुझे बाईं ओर शिकार साफ़ दिखाई दे रहा था, फिर सामने वाली शाखा से दृश्य बाधित हुआ, फिर दूसरा दृश्य, फिर एक शाखा, फिर मेरे दाहिने कंधे के ऊपर से एक ऐसे कोण से दृश्य दिखाई दिया जहाँ से गोली चलाना असंभव था, और अंत में वह शाखा जिस पर मेरी पीठ टिकी थी। इससे पीछे का दृश्य बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रहा था। साथ ही, मैं ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर था और बाघ के हमले से सुरक्षित था। मुझ तक पहुँचने के लिए उसे पेड़ की पहली शाखा को पार करना पड़ता, जहाँ वह लगभग बिल्कुल नज़दीकी सीमा पर होता। दोपहर के 12:50 बज रहे थे, और मैं उस रात के लिए तैयार हो गया जो मुझे अपने पूरे शिकारी जीवन की सबसे ठंडी और असहनीय रातों में से एक लग रही थी। मैं अपने पाठकों को यह बताकर बोर नहीं करूंगा कि कैसे शाम 6:30 बजे तक घंटे धीरे-धीरे बीतते गए, जब जंगल के पक्षी और दिन के पक्षी अपने घोंसलों में जा चुके थे, और लंगूर अपने दो दुश्मनों, बाघ और मनुष्य की घृणास्पद उपस्थिति से बहुत पहले ही दूर जा चुके थे। मैं अकेला था, सिवाय कभी-कभार चहचहाते हुए मेरे पेड़ के आसपास उड़ने वाले एक चिड़िया के। शाम 6:45 बजे, लगभग अंधेरा हो चुका था। चिड़िया अब मेरे नीचे बैठ गई थी, और 'चुकू-चुकू-चुकू' की अपनी चहचहाहट शुरू कर दी, तभी मुझे उन अजीब अनुभवों में से एक का सामना करना पड़ा जो कभी-कभी, लेकिन बहुत कम ही, भारतीय जंगलों में घूमने वाले किसी व्यक्ति के साथ होते हैं।

मैंने जंगल में रहने वाले लोगों से कहानियां सुनी थीं और पढ़ा भी था कि बाघ, कुछ

खास इलाकों में ही, सांभर की नकल करते हैं और हिरण की आवाज निकालते हैं, शायद अपनी ही प्रजाति के दूसरे जानवरों, खासकर मादा हिरणों को लुभाने के लिए। मैंने इस कहानी पर कभी ज्यादा भरोसा नहीं किया था और न ही मैंने खुद कभी ऐसा अनुभव किया था। उस शाम, 6.45 के कुछ ही देर बाद, ढलते सूरज की रोशनी में, झाड़ियों के बीच से अचानक एक सांभर हिरण की अकेली 'धंक' की आवाज गूंजी। यह आवाज उस जगह से आई जो अभी भी उस डाल के बीच दिखाई दे रही थी जिस पर मेरी राइफल टिकी हुई थी और ठीक दाईं ओर वाली डाल से। और लगभग उसी समय, उसी झाड़ी से बाघ बाहर निकला।

उस झाड़ी में बाघ के साथ या ठीक आगे कोई सांभर नर नहीं हो सकता था, क्योंकि भागते समय मुझे उसके खुरों की आहट सुनाई दी थी। कोई सांभर वहाँ खड़ा होकर बाघ को अपने पास से गुजरने नहीं देता। उस एक 'धंक' की आवाज़ के अलावा कोई और आवाज़ नहीं थी, और जैसा कि मैंने कहा, बाघ खुले में आ गया, और इसमें कोई संदेह नहीं कि बाघ ने ही वह आवाज़ निकाली थी। उसने ऐसा क्यों किया, यह एक रहस्य है, क्योंकि वह शिकार नहीं कर रहा था। उसने उस सुबह भरपेट भोजन किया था और अब दूसरे भोजन के लिए लौट रहा था, इसलिए उसके मन में सांभर की आवाज़ की नकल करके उसे लुभाने का विचार नहीं आ सकता था। मैं केवल वही बता सकता हूँ जो वास्तव में हुआ, जो मैंने अनुभव किया, और यह तथ्य कि जब बाघ बाहर आया, तब उस झाड़ी में कोई सांभर नहीं था। बाकी मैं आपके अनुमान और निष्कर्ष पर छोड़ता हूँ। मैंने इसे स्वयं सुना है, इसलिए मेरे पास बाघ की नकल करने की क्षमता के बारे में पढ़ी और सुनी पुरानी कहानियों पर विश्वास करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

यह ध्वनि।

जानवर शिकार की ओर बढ़ा और मेरे सामने वाली शाखा के पीछे ओझल हो गया। मैंने इस मौके का फायदा उठाकर अपनी राइफल को निशाना साध लिया। फिर वह मेरे बाईं ओर दोबारा दिखाई दिया और देखते ही देखते उसने शिकार को अपने जबड़ों में जकड़ लिया और उठा लिया। मेरी गोली ठीक उसके बाएं कंधे के पीछे लगी। वह घूमकर मेरी अगली गोली गर्दन में खाने के लिए तैयार हो गया, फिर गिर पड़ा, एक

मिनट तक लात मारता और छटपटाता रहा, और अंत में शांत हो गया।

बाघ के मर जाने के बाद, मुझे लगा कि अब गाड़ी तक पैदल जाना सुरक्षित है, बशर्ते मैं अंधेरे में रास्ता ढूंढ सकूँ। तमाम मुश्किलों के बावजूद, मुझे लगा कि पेड़ पर रात भर ठिठुरते और कांपते हुए, ठंड से बेहाल होकर खाली पेट बैठे रहने से बेहतर यही होगा। अचानक मन बना कर, मैं बाघ के पास जाए बिना पेड़ से नीचे उतरा और अंधेरा होने से पहले कल्याणी नदी का किनारा ढूंढने के लिए तेज़ी से चल पड़ा, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि अंधेरे में भी सूखी नदी के किनारे-किनारे चलते हुए पुलिबोनू और गाड़ी तक पहुंचना मुमकिन होगा, हालांकि नदी के मोड़ों से होते हुए दूरी लगभग छह मील होगी। अंधेरे में मैं संकरे रास्ते, जो एकमात्र दूसरा विकल्प था, को लगभग निश्चित रूप से खो दूंगा और मुझे रात जंगल में ही बितानी पड़ेगी।

अंधेरे में कल्याणी नदी के पथरीले तल को पार करने की कोशिश करना किसी बुरे सपने से कम नहीं था। कई बार मैं नदी के तल में बिखरे हुए गोल पत्थरों पर फिसल गया, या छिपे हुए पेड़ों के ठूंठों और चट्टानों से टकराकर अपनी पिंडलियों को चोट पहुँचा ली। एक से अधिक बार एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदते समय मेरा टखना मुड़ने या शायद पैर टूटने का खतरा मंडरा रहा था, और दो बार तो मैं अपनी कीमती राइफल को चट्टानों से टकराने से बचाने के लिए हवा में उठाए हुए ही गिर पड़ा। इस यात्रा के लिए पूर्ण एकाग्रता की आवश्यकता थी, और पुलिबोनू पहुँचने में मुझे चार घंटे लग गए, रात के 11 बजकर 10 मिनट पर मैं गाड़ी में बैठा।

आप शायद सोच रहे होंगे कि नागपतला लौटते समय मैं आदमखोर बाघ को मार गिराने पर खुद को बधाई दे रहा था। लेकिन असल में ऐसा नहीं था, क्योंकि कई बातें मेरे दिमाग में कौंध गईं और मुझे अपनी सफलता पर संदेह होने लगा। पहली बात, बाघ ने भैंसा मारकर अपना शिकार बनाया था; दूसरी बात, जब मैंने उसे देखा तो वह वहीं पड़ा रहा और फिर आराम से पीछे हट गया, मैं उसके पीछे गया; तीसरी बात, मेरी मौजूदगी का एहसास होते ही वह दुम दबाकर भाग गया; चौथी बात, वह भैंसे के पास लौट आया; और आखिर में, उसने सांभर की आवाज की हूबहू नकल की। ये सभी बातें, चाहे अलग-अलग हों या सामूहिक रूप से, किसी आदमखोर बाघ के व्यवहार या हरकत का संकेत नहीं देतीं, बल्कि एक साधारण बाघ, खासकर एक शिकारी बाघ की

ओर इशारा करती हैं। जितना ज्यादा मैं इसके बारे में सोचता गया, उतना ही मुझे शक होता गया कि मैंने आदमखोर बाघ को गोली मारी है या नहीं। यह मेरे मन की शांति के लिए अच्छा था कि कल्याणी नदी के किनारे अंधेरे में अपने संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करते समय, मेरे पास इन चीजों के बारे में सोचने का समय नहीं था, या इस बारे में सोचने का समय नहीं था कि अगर वह मुझे उन परिस्थितियों में मिलता तो मैंने खुद को पूरी तरह से असली आदमखोर के हवाले कर दिया होता।

अगली सुबह मैं कुछ आदमियों के साथ लौटा, बाघ को गाड़ी में रखा और नागपतला ले आया, जहाँ आदमखोर बाघ की मौत पर सबने खुशी मनाई। जानवर की खाल उतारने से पहले, मैंने उसकी बहुत बारीकी से जाँच की और पाया कि वह एक बेदाग वयस्क नर बाघ था, जिसकी खाल सुंदर थी और शारीरिक रूप से वह एकदम स्वस्थ था। इससे मेरा संदेह और भी बढ़ गया कि मैंने सचमुच एक असली आदमखोर बाघ को ही मारा है।

उसी शाम मैं बैंगलोर के लिए रवाना हो गया और चित्तूर में कलेक्टर के यहाँ रात बिताई। मैंने उन्हें अपनी आशंकाएँ बताईं और उनसे यह वादा लिया कि यदि भविष्य में कभी कोई मानव वध होता है तो वे मुझे टेलीग्राम द्वारा सूचित करेंगे। उस तारीख से ग्यारहवें दिन दोपहर को मुझे उनका तार मिला, जिसमें बताया गया था कि चामाला घाटी बनाने वाले आरक्षित वन की सीमा के ठीक भीतर, नागपटला से एक मील की दूरी पर घास काट रही एक महिला को आदमखोर बाघ उठा ले गया था। मैं असफल हो गया था। मैंने गलत बाघ को गोली मार दी थी, ठीक वैसा ही जैसा मुझे डर था।

अगली सुबह मैं नागपतला के लिए वापस रवाना हुआ और दोपहर बाद उस छोटे से वन बंगले पर पहुँचा। अगली सुबह मुझे वह जगह दिखाई गई जहाँ बाघ ने अपने सबसे हालिया शिकार पर हमला किया था। वह महिला घास काट रही थी, जिसे उसने गठ्ठे में बाँधकर अपने सिर पर लादकर ले जाने की तैयारी की थी। उसने उस गठ्ठे को एक पेड़ की छाया के नीचे रखा था और जाहिर तौर पर उसे बाँध ही रही थी कि पास के जंगल से उसका पीछा करते हुए आए बाघ ने उस पर हमला कर दिया। एक अन्य महिला, जो उस समय लगभग सौ गज दूर घास काट रही थी, ने एक तीखी चीख सुनी और ऊपर देखते ही उसने बाघ को अपने साथी को जबड़ों में लिए जंगल में गायब होते

देखा। वह नागपतला भाग गई और उसने सारी कहानी सुनाई, जहाँ से यह खबर रंगमपेट और फिर चंद्रगिरी तक पहुँची, जहाँ तहसीलदार ने तुरंत चित्तूर के कलेक्टर को सूचित करने के लिए कदम उठाए, जिन्होंने बदले में मुझे तार भेजा। बाघ का पीछा करने या महिला को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। घटना को तीन दिन बीत चुके थे और ज़मीन इतनी सूख चुकी थी कि कोई निशान नज़र नहीं आ रहे थे। चारों ओर बड़े अर्धवृत्त में खोजबीन करने पर हमें महिला की साड़ी मिली, जो उसके नग्न शरीर से खुल कर लगभग एक चौथाई मील दूर ज़मीन पर पड़ी थी। खून के निशान नहीं मिले, जिससे पता चलता है कि बाघ ने महिला का गला नहीं छोड़ा था, क्योंकि मदद के लिए उसकी पहली चीख के बाद उस दुर्भाग्यपूर्ण पीड़िता की कोई और चीख सुनाई नहीं दी थी। हम उस महिला के अवशेषों का पता लगाने में कभी सफल नहीं हुए।

गांव लौटकर, मैंने बचे हुए तीन भैंस के बछड़ों को इकट्ठा किया, जो पिछली बार मेरे चारे थे और पीछे छूट गए थे; मैंने एक को चौथे मील के पत्थर के पास सड़क किनारे बांध दिया, दूसरे को पुलिबोनू में, और इस बार मैंने तीसरे को नागपतला से केवल दो मील दूर, कल्याणी नदी के तल में, खेती वाले क्षेत्रों में प्रवेश करने से पहले बांध दिया।

अगली सुबह तीनों चारे जीवित थे, लेकिन पुलिबोनू वन मार्ग पर बाघ के पंजों के निशान भी थे। बाघ तीसरे मील से ठीक पहले रास्ते में आ गया था, चौथे मील पर मेरे चारे को बिना छुए आगे बढ़ गया, और छठे मील पर, पुलिबोनू पहुँचने से कुछ ही समय पहले, सड़क छोड़कर पूर्व दिशा में तिरुपति ब्लॉक से निकले एक बड़े, पथरीले पहाड़ की ओर चला गया, जिसे 'बंदर-पहाड़ी' के नाम से जाना जाता है।

पदचिह्न स्पष्ट थे और जानवर में किसी प्रकार की विकृति नहीं दर्शा रहे थे। फिर भी, यह मेरे द्वारा चौथे मील पर सड़क किनारे बांधे गए जीवित चारे के कुछ ही फीट के भीतर से गुजरा, बिना रुके उसे देखे, जैसा कि पदचिह्नों से स्पष्ट रूप से पता चलता है। यह निश्चित रूप से किसी आदमखोर जानवर के व्यवहार जैसा लग रहा था, और मुझे इस बात की खुशी हुई कि आखिरकार मैं असली जानवर से रूबरू हो गया हूँ।

जैसा कि मैंने बताया, बाघ 'बंदर पहाड़ी' की ओर चला गया था। या तो वह उसकी

घनी झाड़ियों वाली ढलानों पर शरण लिए बैठा था, या शायद पहाड़ी के निचले हिस्से से होते हुए गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु की ओर जाने वाले रास्ते पर लौट आया था, और फिर आगे बढ़ते हुए खड़ी ढलान की ओर चला गया था। किसी भी हालत में, इस बात की थोड़ी सी संभावना थी कि वह उस रात सड़क से वापस आ जाए, और अब चूंकि पूर्णिमा के करीब चांद निकला हुआ था, इसलिए मैंने इस रास्ते पर जानवर को गोली मारने का प्रयास करने का निश्चय किया। चौथे मील के पत्थर पर मेरे शिकार स्थल से लगभग 150 गज की दूरी पर सड़क के किनारे एक विशाल सागौन का पेड़ खड़ा था। अपनी तरह के अधिकांश पेड़ों की तरह, इस पेड़ का तना सीधा था जिस पर चढ़ना लगभग असंभव था, लेकिन तने की ओर पीठ करके उसके आधार पर बैठने से मुझे अपने शिकार स्थल, दोनों दिशाओं में सड़क और चारों ओर सौ गज से अधिक का दृश्य दिखाई दे रहा था, क्योंकि जंगल के उस हिस्से में लगभग एक साल पहले आग लगी थी और इसलिए वहां झाड़ियाँ नहीं थीं।

मैंने शाम 5 बजे तक अपनी जगह ले ली। जैसे ही अंधेरा छाने लगा, पूर्व दिशा में पेड़ों के ऊपर से निकल रहे चाँद ने अपनी हल्की, चाँदी जैसी रोशनी से शांत जंगल में रोशनी बिखेर दी। हालाँकि दिन के उजाले में मुझे अपनी चुनी हुई जगह काफी सुरक्षित लग रही थी, पर रात का अपना ही असर होता है, और मैं सोचने लगा कि कहीं बाघ पीछे से मेरा पीछा न कर रहा हो। लेकिन मेरी सूझबूझ ने मेरा साथ दिया और मुझे बताया कि ऐसा होना नामुमकिन है, जब तक कि बाघ मुझे पहले देख न ले या मेरी आवाज़ न सुन ले, क्योंकि बाघों में सूंघने की शक्ति न के बराबर होती है। लेकिन दिखने या सुनाई देने के लिए मुझे पहले हिलना-डुलना पड़ता, इसलिए आप यकीन मानिए कि मैं बिल्कुल शांत और बिना आवाज़ किए उस बड़े पेड़ से पीठ टिकाकर बैठा रहा। मैं न तो सिगरेट पी सकता था और न ही खाना खा सकता था, लेकिन अगले दिन सुबह होने वाली ठंड से बचने के लिए मैंने गर्म कपड़े पहन लिए थे। मुझे याद है कि उस रात जंगल में असाधारण सन्नाटा था, जिससे मुझे लगा कि बाघ आसपास नहीं है। जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, तड़के ही तापमान में अचानक गिरावट आई और परिणामस्वरूप उतनी ही तेजी से ओस गिरने लगी, जिससे मेरे कपड़े पूरी तरह भीग गए और राइफल की बर्फीली ठंडी नली से नमी टपकने लगी।

मैंने कई बार अपने भैंस के बच्चे की ओर देखा, यह देखने के लिए कि वह कैसी

प्रतिक्रिया दे रहा है। रात के पहले हिस्से में, वह शांति से मेरे द्वारा दी गई कटी हुई घास को चबाता रहा, लेकिन सुबह होते ही वह जमीन पर लेट गया, जाहिर तौर पर आराम करने और ठंड से बचने के लिए जितनी हो सके उतनी गर्मी पाने के लिए।

अंततः भोर हुई और एक बेहद निराश शिकारी को राहत मिली, और मैं चार मील का सफर तय करके नागपतला वापस आ गया। यहाँ नहाने के बाद गरमागरम चाय, बेकन और अंडे खाए और दो घंटे की झपकी ली, जिससे मुझे फिर से नई ऊर्जा मिली और मैं किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार हो गया। मैं पुलिबोनू की ओर गाड़ी चला रहा था, दोनों तरफ दो-दो ट्रैकर बैठे थे और मैं बहुत धीमी गति से गाड़ी चला रहा था, वे सड़क पर नज़र रख रहे थे। लेकिन उस रात बाघ कहीं भी उस रास्ते से नहीं गुजरा था। पुलिबोनू पहुँचकर, हमने कल्याणी नदी के आसपास दोनों दिशाओं में चक्कर लगाया, साथ ही उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की ओर जाने वाले रास्तों पर एक-एक मील तक आगे बढ़े, लेकिन फिर भी हमें बाघ के हाल ही में वहाँ से गुजरने का कोई सबूत नहीं मिला।

दोपहर के करीब, हम पुलिबोनू लौट आए, जहाँ मैं जंगल के कुएँ के किनारे बैठकर सिगरेट पीने लगा और उस रात की अपनी योजना पर विचार करने लगा। कल्याणी नदी के उस पार, और जहाँ मैं बैठा था, वहाँ से दो फर्लांग की दूरी पर एक इमली का पेड़ था, जहाँ से जंगल के रास्तों के दो भागों में बँटने का दृश्य दिखाई देता था। एक रास्ता पुलिबोनू की ओर जाता था, और दूसरा उत्तर-पूर्व की ओर उम्बालमेरु और ढलान की ओर मुड़ता था। मैंने सुना था कि हाल के वर्षों में इस पेड़ से कई बाघों का शिकार किया गया है; वास्तव में, लगभग अठारह महीने पहले जब मैं उसी पेड़ पर बैठा था, तब मैंने खुद एक छोटे तेंदुए को अपने नीचे से गुजरते हुए मार गिराया था। इसलिए मैंने अंततः अगले कुछ रातों के लिए, कम से कम जब तक चाँद निकला रहे, इस पेड़ की छायादार शाखाओं में ही सोने का फैसला किया, क्योंकि ज़मीन पर बैठने का खतरा हमेशा बना रहता था।

निर्णय लेने के बाद, मैंने अपने दोनों आदमियों को उन्हीं शाखाओं पर मचान बनाने का निर्देश दिया जिन पर मैं पहले बैठा था, और जब वे ऐसा कर रहे थे, मैं पेड़ के नीचे गहरी नींद में सो गया। आदमियों को पता था कि वे क्या कर रहे हैं, और लगभग तीस

मिनट बाद उन्होंने मुझे जगाकर अपने काम की जाँच की और कुछ ज़रूरी अंतिम काम किए। मैं हमेशा स्टडबेकर की पिछली सीट पर दो आधे हिस्सों से बनी चारपाई का ढाँचा रखता हूँ। अनुभव ने मुझे सिखाया है कि इससे सबसे अच्छा मचान बनता है। यह हल्का लेकिन मज़बूत होता है, इस पर हिलने-डुलने पर भी कोई आवाज़ नहीं करता, बहुत आरामदायक होता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे किसी भी पेड़ पर मचान के रूप में आसानी से खड़ा किया जा सकता है, पत्तियों की आड़ में आसानी से छिपाया जा सकता है, और घर जाने का समय आने पर आसानी से हटाया जा सकता है। इसके अलावा, यह सस्ता और पोर्टेबल भी है।

यह चारपाई दो शाखाओं पर टंगी हुई थी, जिन्हें सूती रस्सी से मज़बूती से बांधा गया था, जिसे मैं ऐसे ही कामों के लिए अपने साथ रखता हूँ। पूरी चारपाई को टहनियों से अच्छी तरह छिपाया गया था, जिन्हें किनारों पर इकट्ठा करके मुझे और अधिक छुपने का इंतज़ाम किया गया था। एक छेद बनाया गया था जिससे मैं ठीक अपने नीचे शाखा के निकलने वाली दरार को देख सकता था, और साथ ही पुलिबोनू और उम्बालमेरु दोनों दिशाओं में लगभग 100 गज तक देख सकता था। मेरे पीछे पत्तों की ओट में बने एक ऐसे ही छेद से मैं नागपतला जाने वाली सड़क को लगभग 200 गज तक देख सकता था।

सब कुछ मेरी संतुष्टि के अनुसार होने पर, मैंने आदमियों को नागपतला वापस पहुँचाया, भरपेट दोपहर का भोजन किया और शाम 4 बजे तक थोड़ी देर और आराम किया। फिर मैंने ज़रूरी कंबल, पानी की बोतल, टॉर्च, सैंडविच और चाय इकट्ठा की और अकेले पुलिबोनू लौट आया, जहाँ मैंने कुएँ के पास एक जंगल के खुले मैदान में स्टुडेबेकर कार छिपा दी। पेड़ के पास वापस चलते हुए, मैं शाम 6 बजे से पहले ही रात के लिए आराम से लेट गया। रात के 11 बजे तक जंगल की आवाज़ों से लगभग अछूते घंटे बीतते रहे, तभी उम्बालमेरु मार्ग की दिशा से एक पैंथर ने आरी चलाने जैसी आवाज़ निकाली। 'आह-हाह आह-हाह!' की आवाज़ लकड़ी काटने की लगभग सटीक नकल थी, हर दोहरी आवाज़ पर साँस लेना और छोड़ना आरी के आगे-पीछे चलने की गति से हूबहू मेल खाता था। फिर वह मोड़ से घूमकर आया, 'थेंदू' या बड़े जंगली पैंथर का एक सुंदर नमूना, उसकी खाल पर बने धब्बे चमकदार चाँदनी में साफ़ दिखाई दे रहे थे। वह उस पेड़ की ओर बढ़ा जिस पर मैं बैठा था, उसके नीचे सड़क

पार की और दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया। मैं उस सुंदर दृश्य को प्रशंसा से भर गया, लेकिन जानवर को जाने दिया, इस डर से कि कहीं बाघ को मेरी गोली की आवाज सुनाई न दे, अगर वह आसपास कहीं भी हो।

उस रात कुछ और पता नहीं चला, और अगली रात तो बिल्कुल ही नीरस रही, क्योंकि मुझे कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं दिया। अगली सुबह नागपटला लौटकर मैं सो गया, लेकिन सुबह करीब 10 बजे मुझे यह खबर मिली कि लगभग आधे घंटे पहले ही एक चरवाहे को बाघ ने मार डाला है। जल्दी से कपड़े पहनकर और अपनी राइफल लेकर मैं लापता व्यक्ति के दुखी भाई और कुछ अन्य लोगों के साथ पुलिबोनू सड़क पर लगभग तीन-चौथाई मील तक गया, जहाँ से हम दाहिनी ओर मुड़े और जल्द ही कल्याणी नदी के किनारे पहुँच गए। वह व्यक्ति इस इलाके में अपनी भैंसें चरा रहा था, तभी नदी के किनारे फैली झाड़ियों से बाघ उस पर झपटा। वह व्यक्ति चीख उठा, और उसका भाई, जो उसी झुंड की देखभाल कर रहा था और पीछे छूटे हुए जानवरों को आगे बढ़ा रहा था, उसने पूरी घटना देखी। इस मामले में, बाघ ने अपने शिकार को कंधे से पकड़ रखा था, जिससे वह चीखता रहा और उसी सरकंडों के किनारे घसीटा गया जहाँ से बाघ कूदा था। उसका भाई खबर फैलाने के लिए गाँव वापस भागा और फिर उस वन बंगले में पहुँचा जहाँ मैं सो रहा था। उस जगह पहुँचकर जहाँ से उस आदमी को ले जाया गया था, हम सरकंडों के बीच गए, जहाँ हल्के झुके हुए सरकंडों से पता चल रहा था कि बाघ किस दिशा से आया था, जबकि एक स्पष्ट रास्ता दिखा रहा था कि वह अपने शिकार को मुँह में लेकर कैसे गया था। पीड़ित की पगड़ी सरकंडों के बीच पड़ी थी, जिसे पार करने के बाद हम नदी के सूखे तल पर पहुँचे। संभवतः वह आदमी संघर्ष कर रहा था, या उसकी चीखों से बाघ चिढ़ गया होगा, क्योंकि यहाँ उसने आदमी के कंधे से अपनी पकड़ छोड़ दी और शायद उसका गला पकड़ लिया। इस स्थान से ताजा खून के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे, साथ ही घसीटने के निशान भी, जहां बाघ अपने शिकार को लेकर नदी के तल पर बिछी रेतीली ज़मीन को पार करते हुए, नदी के दूसरे किनारे पर फैले जंगल की ओर तेजी से भागा था, उस दौरान उस आदमी के पैर जमीन पर घिसटते हुए दिखाई दिए थे।

सावधानी से आगे बढ़ते हुए, हम नदी के दूसरे किनारे पर स्थित घनी झाड़ियों को पार करते हुए एक घास के मैदान में पहुँचे। बाघ अपने बोझ के साथ मैदान पार करते

समय भाला घास की पत्तियों को झुका चुका था और उन्हें अभी तक संभलने का समय नहीं मिला था। थोड़ी ऊपर की ओर ढलान वाली ज़मीन पर चलते हुए, मैं एक लंबी पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, जिसके आगे ज़मीन तेज़ी से एक छोटी सी धारा में गिरती थी जो आगे चलकर कल्याणी नदी में मिल जाती थी। मुझे लगा कि बाघ उस धारा के छिपे हुए कोनों में अपना भयानक भोजन शुरू करने का फैसला करेगा, और संभवतः इस समय वह इसी काम में लगा हुआ था।

सीधे नदी में पगडंडी का पीछा करना व्यर्थ होगा, क्योंकि चाहे मैं कितनी भी सावधानी से चलूँ, कंटीली झाड़ियों में हल्की सी आवाज़ ज़रूर होगी जिससे बाघ सतर्क हो जाएगा और उसे पता चल जाएगा कि उसका पीछा किया जा रहा है। ऐसे हालात में आदमखोर बाघ से निपटना बेहद खतरनाक होता है, और मैं जानता था कि उसे छिपने और आड़ लेने का पूरा फायदा मिलेगा। वह अपने शिकार को छोड़कर भाग सकता है, या उसे अपने साथ ले जा सकता है; वह अपने शिकार के पास रुककर उससे लड़ सकता है; सबसे खतरनाक बात यह है कि वह घनी झाड़ियों में घात लगाकर पीछे से या बगल से हमला कर सकता है। स्थिति का तुरंत जायजा लेते हुए, मैंने फैसला किया कि मैं दाईं ओर तिरछे होकर नदी में लगभग एक चौथाई मील नीचे उतरूँगा, और फिर नरम रेत पर ऊपर की ओर बढ़ूँगा, जिस पर अगर मैं पंजों के बल चलूँ तो कम से कम कोई आवाज़ नहीं आएगी। इस तरह, मुझे उम्मीद थी कि मैं बाघ को उसके शिकार पर चौंका दूँगा।

जिस छोटी पहाड़ी की चोटी पर मैं अभी पहुँचा था, उसे पार करते हुए, मैं उसके दूसरी ओर झुक गया, जहाँ मुझे पता था कि नाले के तल से मैं नज़रों से ओझल हो जाऊँगा। इस स्थिति में, मैं लगभग एक फर्लांग तक जितनी तेज़ी से हो सके, आगे बढ़ा। फिर पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर, मैंने उसके किनारों पर उगी झाड़ियों से नाले की दिशा का अंदाज़ा लगाया और एक फर्लांग आगे जाकर उससे मिलने के लिए आधे दाहिनी ओर झुककर नीचे उतरा। अंततः रेतीले तल पर पहुँचकर, मैं एक मिनट के लिए रुका ताकि साँस ले सकूँ। फिर, राइफल को कंधे पर रखकर, मैं नरम रेत पर दबे पांव चलने लगा। मैं जितना हो सके नाले के तल के बीचोंबीच रहने की कोशिश कर रहा था और उसके किनारों पर उगी झाड़ियों और घनी वनस्पतियों से बचता रहा। मुझे वह भयानक सफ़र हमेशा याद रहेगा। नाला कुछ जगहों पर दस गज तक संकरा हो जाता था;

अपने सबसे चौड़े बिंदु पर भी यह तीस गज से ज़्यादा चौड़ा नहीं था। मैं दबे पांव धीरे-धीरे आगे बढ़ा, हर इंद्रिय सतर्क थी, दोनों किनारों पर हर झाड़ी और पौधे को ध्यान से देख रहा था, उनके नीचे और चारों ओर, और जहाँ तक मेरी नज़र जा सकती थी। बीच-बीच में मैं रुककर ध्यान से सुनता, लेकिन कोई आवाज़ उस गहरी खामोशी को भंग नहीं कर रही थी, मानो वह मुर्दों की दुनिया हो। मुझे किसी भी जीवित ध्वनि की कितनी तीव्र इच्छा थी, किसी कीड़े की चहचाहट या किसी पक्षी की पुकार! चारों ओर पूर्ण सन्नाटा छाया हुआ था, जो केवल मेरे कदमों की बहुत धीमी, कर्कश आवाज़ से टूट रहा था, जब मैं सावधानी से रेत पर दबे पांव आगे बढ़ रहा था।

मैं इस तरह लगभग आधा फर्लांग ही आगे बढ़ा था कि नदी ने बाईं ओर हल्का सा मोड़ ले लिया। इस मोड़ पर पहुँचने से पहले ही मैं रुक गया और ध्यान से सुनने लगा, और यह अच्छा ही हुआ कि मैंने ऐसा किया, क्योंकि अगले ही पल, बिना किसी आवाज़ के और बिना किसी आहट के, बाघ अपने शिकार को पीठ पर उठाए हुए, मात्र 25 गज की दूरी पर प्रकट हो गया।

आश्चर्य दोनों पक्षों का था। ज़ाहिर है, बाघ ने अपने पीछे किसी के आने का आभास या एहसास कर लिया था, और अपने भोजन पर ठीक से ध्यान दिए बिना ही उसने उसे नदी के किनारे किसी दूरदराज स्थान पर ले जाने का फैसला किया था। मेरी ओर से, हालांकि मैं हर कदम पर बहुत सावधानी से चल रहा था, मैंने वास्तव में बाघ से इतनी जल्दी मिलने की उम्मीद नहीं की थी। हालांकि, हम दोनों की निष्क्रियता क्षणिक ही थी। अपने शिकार को छोड़कर, बाघ ने अपना सिर अपने अगले पैरों के बीच दबा लिया, उसके पिछले पैर उसके नीचे सिमट गए, पूंछ सीधी खड़ी थी, छलांग लगाने के लिए तनी हुई। उसी समय राइफल चली, गोली जानवर को लगी, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, आँखों के बीच की सीधी रेखा के केंद्र से ठीक आधा इंच नीचे। लेकिन यह मामूली चूक उस महत्वपूर्ण मस्तिष्क-गोली को चूकने के लिए पर्याप्त थी जो उसे तुरंत वहीं गिरा देती, और एक गड़गड़ाती दहाड़ के साथ, वह आगे बढ़ा, अपने शिकार के ऊपर से लड़खड़ाता हुआ और मुझे पकड़ने के अपने अचेतन प्रयासों में आगे बढ़ता गया। एक तरफ कूदकर, मैंने धारीदार आकृति पर लगातार गोलियां चलाईं, जब तक कि मैं अपने पैरों के पास तड़पते हुए राक्षस के सामने खाली मैगज़ीन के साथ खड़ा नहीं हो गया, जिसकी चकनाचूर और क्षत-विक्षत खोपड़ी से खून की

एक भारी लाल धारा बह रही थी।

अगले ही पल मुझे घबराहट और कमजोरी महसूस होने लगी। मैं नदी के किनारे पहुँचा, जहाँ एक पल के लिए मैं लगभग बेहोश हो गया। लेकिन मेरे मजबूत शरीर ने मेरा साथ दिया और मैं कल्याणी नदी की मुख्य धारा पर जिन लोगों को छोड़कर गया था, उनके पास वापस लौट सका; उन्होंने मेरी पाँच गोलियों की आवाज सुनी थी, जिससे उन्हें पता चल गया था कि आदमखोर सांप सचमुच मर चुका है।

आपको यह जानकर शायद दिलचस्पी होगी कि हमने उस बाघ की खाल उतारने से पहले और बाद में बारीकी से जांच की, और शव का पोस्टमार्टम भी किया, फिर भी हमें उसमें कोई भी ऐसी शारीरिक या कार्यात्मक गड़बड़ी या विकार नहीं मिला जिससे वह आदमखोर बन गया हो। वास्तव में, वह एक सुगठित वयस्क जानवर था, जो बाहरी जांच से मिले सभी सबूतों के आधार पर, जंगल के जानवरों का शिकार करके अपना प्राकृतिक भोजन प्राप्त करने में सक्षम था, या फिर गांव के मवेशियों को खाकर भी अपना भोजन बना सकता था। लेकिन उसने जानबूझकर इन दोनों प्रकार के भोजन को त्याग दिया और मानव मांस के प्रति अपनी विकृत लालसा को पूरा किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसकी मृत्यु हुई, और संयोगवश, मेरी भी मृत्यु होते-होते बची। वह मूल रूप से कहां से आया था, यह कोई नहीं जानता था, लेकिन सभी इस बात से खुश थे कि अब वह उन जंगलों में चला गया है जहां से वापसी का कोई रास्ता नहीं है।

होसदुर्गा-होलालकेरे नरभक्षी

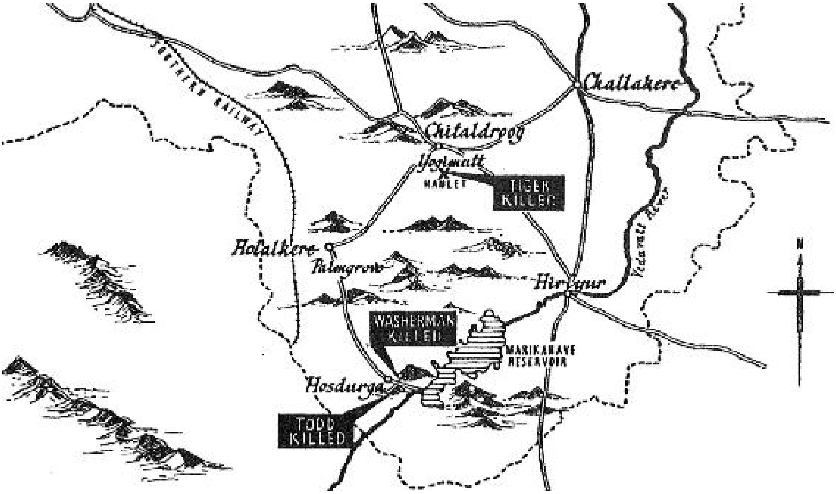

होलालकेरे, चित्तलद्रूग जिले का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। चित्तलद्रूग जिला स्वयं मैसूर राज्य का सबसे उत्तरी जिला है और उत्तर-पूर्व में मद्रास प्रांत के पड़ोसी बेल्लारी डिवीजन और उत्तर-पश्चिम में बंबई प्रांत से सटा हुआ है। यह लंबे समय से बाघों द्वारा आदमखोरी की छिटपुट घटनाओं का केंद्र रहा है, और इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि यह इलाका बाघों का निवास स्थान है, जिन्हें मानव मांस खाने की आदत विरासत में मिली है।

लगभग दस साल पहले, इस क्षेत्र में कई बार बाघों द्वारा इंसानों की हत्या की घटनाएँ सामने आईं थीं। मैसूर गजट में विज्ञापन प्रकाशित करके इस क्षेत्र को बाघों के शिकार के लिए खोल दिया गया था, जिसके लिए बड़े शिकार लाइसेंस की आवश्यकता नहीं थी। उस समय, बैंगलोर में एंगस मैकटेविश और उनकी पत्नी नाम का एक उत्साही दंपति रहता था, जो बाघ, विशेषकर आदमखोर बाघ का शिकार करने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि हम तीन लोगों का एक समूह बनाएँ और लगभग चार सप्ताह तक इस प्रयास में बिताएँ।

तदनुसार, हम मैकटेविश की कार में बैंगलोर से चितलद्रूग गए, जो उसी नाम के जिले की राजधानी है। वहाँ हमने जिला वन अधिकारी से मिलकर हाल ही में हुई हत्याओं और उनके स्थान के बारे में सभी संभावित जानकारी प्राप्त की। अधिकारी ने अत्यंत

सहयोग किया और हमें बताया कि आदमखोरों का मौजूदा इलाका चितलद्रूग शहर के बाहरी इलाके से लेकर दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगभग दस मील दूर स्थित होलालकेरे कस्बे तक फैला हुआ है, और वहाँ से नौ मील दक्षिण में होसदुर्गा नामक छोटे से गाँव तक जाता है, जहाँ हाल ही में दो आदमखोरों को मारा गया था।

होसदुर्गा से बाघ की गतिविधियों का मार्ग पूर्व दिशा में पांच मील दूर स्थित विशाल जलाशय मारिकनावे या वाणी विलास (जैसा कि इसे कभी-कभी कहा जाता है) की सीमा तक जाने की सूचना मिली थी। यह एक विशाल झील है जिसमें बड़ी मछलियाँ और मगरमच्छ रहते हैं। इसके बाद बाघ का मार्ग इस झील के किनारे-किनारे उत्तर की ओर लगभग चितलद्रूग कस्बे तक जाता है। उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि बाघ को एक पुराने किले के खंडहरों के बीच देखा गया था, जो योगी मठ नामक एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर स्थित था, जो कस्बे के दक्षिण में अचानक ऊपर उठती है। मुझे पता था कि इस पुराने किले के आसपास के क्षेत्र में लंबे समय से भटकते हुए भालू और तेंदुओं का आना-जाना लगा रहता था, और कभी-कभार बाघ भी दिख जाते थे। लेकिन आगे विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि हम होलालकेरे और होसदुर्गा की ओर बढ़ेंगे, जहाँ स्थानीय रिपोर्टों को सुनने के बाद, परिस्थितियों के अनुसार हम अपना अभियान केंद्र स्थापित करेंगे।

अगली सुबह जल्दी निकलकर हम एक घंटे के भीतर होलालकेरे पहुँच गए, जहाँ आदमखोर जानवर के दिखने की आशंका से हमेशा की तरह घबराहट और डर का माहौल था। हमें तरह-तरह की कहानियाँ सुनाई गईं, जिनमें से कुछ तो पूरी तरह विरोधाभासी थीं, और इन सभी बातों से हम बस इतना ही समझ पाए कि आदमखोर जानवर बहुत चालाक था, हर जगह घूमता था और अप्रत्याशित रूप से सबसे अप्रत्याशित जगहों पर प्रकट होने में माहिर था। एक प्रचलित अफवाह यह थी कि वह अक्सर खजूर के विशाल बागान में आता-जाता था, जिसके बीच-बीच में लैंटाना की घनी झाड़ियाँ थीं और जो होलालकेरे से होसदुर्गा जाने वाली सड़क के दोनों किनारों पर फैला हुआ था। यह बागान होलालकेरे के बाहरी इलाके से थोड़ा आगे शुरू होता था। हमें बताया गया कि उसके पदचिह्न लगभग हर दिन सड़क पर देखे जा सकते हैं, और हमें सलाह दी गई कि दोनों जगहों को जोड़ने वाले नौ मील के रास्ते पर पूरी रात गाड़ी चलाते रहें, क्योंकि हम निश्चित रूप से आदमखोर जानवर से मिलेंगे, खासकर

खजूर के बागान से गुजरते समय। तदनुसार, हम शाम 7 बजे निकल पड़े। उस रात, होलालकेरे को एक मील पीछे छोड़ते हुए, ताड़ के पेड़ों के ऊंचे, फैले हुए पत्ते दिखाई देने लगे, जिनके कांटेदार तनों की घनी पंक्ति आधार पर लैंटाना की घनी और निरंतर झाड़ियों से पूरी तरह से छिपी हुई थी।

इस बिंदु से, हम कछुए की गति से आगे बढ़े, चारों दिशाओं में स्पॉटलाइट चमकाते हुए, जबकि चमकती हुई हेडलाइटें हमारे सामने सड़क को चीर रही थीं। इस तरह आधा मील चलने के बाद, हमें एक काले, घने बालों वाले आदमी के पास पहुँचे जो हमारे दाहिनी ओर लगभग 15 फीट ऊँचे ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया था और कांटेदार पत्तियों के बीच लटके हुए छोटे, पीले अधपके खजूर के गुच्छों को गटकने में व्यस्त था।

हम पास पहुँचे और गाड़ी रोक दी, तभी एक अजनबी नीचे उतरने लगा। आधा उतरकर वह रुक गया और हमारी तरफ देखने लगा। मेरे साथियों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनका 'अजनबी' खजूर की दावत में खलल पड़ा एक सुस्त भालू था। मुझे शुरू से ही पता था कि यह एक भालू है, लेकिन मैं चाहता था कि मेरे साथी खुद इसे देखें। श्रीमती मैकटेविश ने अपनी .3005 स्प्रिंगफील्ड राइफल से गाड़ी से ही सटीक निशाना लगाया और वह जानवर ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा।

फिर हम बिना कुछ देखे होसदुर्गा की ओर चल पड़े, होलालकेरे लौट आए, और फिर दो बार आगे-पीछे दोनों दिशाओं में चक्कर लगाए, लेकिन अपनी अंतिम वापसी यात्रा में भालू के शव के पास एक लकड़बग्घे के अलावा कुछ नहीं दिखा। इसलिए, हमें डर था कि अगर हमने शव को वहाँ और अधिक देर तक छोड़ दिया तो वह नष्ट हो जाएगा, इसलिए हम तीनों ने बड़ी मुश्किल से उस भारी शरीर को मैक की कार के इंजन और आगे के मडगार्ड के बीच की जगह पर उठाया। भालू के बाल लंबे होते हैं, लेकिन चिकने होते हैं, और जानवर के किसी भी हिस्से को मजबूती से पकड़ना बहुत मुश्किल था, क्योंकि जैसे ही उसका वजन उठाया जाता था, वह उंगलियों से फिसलने लगता था।

अगली सुबह हमने होलालकेरे स्थित ट्रैवलर्स बंगलो में चाय पी, साथ ही गरमागरम दलिया, बेकन और अंडे भी खाए, जिन्हें श्रीमती मैकटेविश ने बेहतरीन तरीके से तैयार

किया था। भालू की खाल उतारने के बाद, हमने हाल ही में हुई दो मानव हत्याओं के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के लिए होसदुर्गा जाने का फैसला किया।

दिन के उजाले में खजूर के बागान से गुजरते हुए हमें चारों ओर फैली घनी झाड़ियों, लताना की घनी छाया का पूरा एहसास हुआ, जिसकी कल्पना पिछली रात करना असंभव था, और यह भी कि ऐसी जगह पर बाघ को देखने या उसका शिकार करने की उम्मीद कितनी कम थी। होसदुर्गा में हमें पिछली दो त्रासदियों की कहानी सुनाई गई। पहली घटना लगभग तीन सप्ताह पहले घटी थी। ग्यारह साल की एक लड़की, जो संयोगवश तालुक के अमिलदार की दूर की रिश्तेदार थी, अपने माता-पिता के साथ गाँव के बाहरी इलाके में एक घर में रहती थी। रात 8 बजे वह शायद शौच के लिए बाहर गई थी, और फिर कभी नहीं दिखी, न ही उसकी कोई चीख या आवाज सुनाई दी जिससे उसके भाग्य का पता चल सके। उसके न लौटने से चिंतित होकर उसके माता-पिता लालटेन लेकर उसके पीछे गए, लेकिन वह कहीं नहीं दिखी, न ही जमीन पर उसके कोई निशान मिले। बढ़ती घबराहट के साथ, उन्होंने गाँव वालों को जगाया और लगभग दो घंटे में लगभग पचास लोगों का एक दल, लालटेन, लाठी, कुल्हाड़ी और दो बंदूकों से लैस होकर, लड़की की तलाश में निकल पड़ा। हालाँकि, उस रात के घने अंधेरे में उन्हें कुछ भी नहीं मिला। अगले दिन और प्रयास किए गए, और आधा मील दूर काँटों में फँसे हुए फटे हुए अंडरवियर के कुछ टुकड़े मिले। उस छोटी लड़की के अवशेषों का कभी कोई पता नहीं चला।

दूसरी हत्या बारह दिन पहले घटी थी। मारिकनावे जलाशय पूर्व दिशा में लगभग पाँच मील दूर स्थित था। जलाशय के किनारे तक पहुँचने के लगभग आधे रास्ते में, और वहाँ जाने वाले रास्ते को पार करते हुए, एक छोटी सी धारा थी जो रास्ते के किनारे एक छोटा लेकिन काफी गहरा तालाब बनाती थी। इस तालाब का उपयोग गाँव के दो भाई करते थे, जो पेशेवर धोबी थे और कपड़े धोने का काम करते थे। उनके पास तीन गधे थे, जिनका उपयोग वे कपड़े धोने के लिए तालाब तक लाने-ले जाने के लिए करते थे। उस शाम लगभग 5 बजे उन्होंने अपना काम समाप्त कर लिया, गधों पर कपड़े लाद दिए और घर लौट रहे थे। ये जानवर, एक तरह से, उनका एकमात्र सामान थे, इसलिए वे विशेष ध्यान रखते थे। एक भाई आगे चल रहा था, उसके पीछे तीन गधे कतार में थे, और दूसरा भाई सबसे पीछे था। वे होसदुर्गा से एक मील दूर थे जब एक

बाघ छिपकर निकला, आगे चल रहे व्यक्ति को पकड़ लिया और उसके कुछ कहने से पहले ही उसे लेकर गायब हो गया। पीछे खड़ा उसका भाई, जो कुछ हुआ उसे देखकर बौखला गया और वापस उस पूल की ओर भागा, जिसे वे अभी-अभी छोड़कर आए थे।

जब रात के 8 बज गए और न तो गधे और न ही भाई होसदुर्गा पहुंचे, तो दोनों पत्नियां घबरा गईं और पूरे गांव में हलचल मचा दी। रात 10 बजे तक लगभग 36 लोगों का एक दूसरा तलाशी दल, लालटेन, लाठियों और दो बंदूकों से लैस होकर, खोज में जुट गया।

कुछ देर बाद, उन्हें लापता हुए तीन गधों में से एक गधा रास्ते के बीचोंबीच आराम से बैठा मिला, उसकी पीठ पर कपड़ों का गट्ठा अभी भी बंधा हुआ था। आगे चलकर, तालाब से एक फर्लांग पहले, उन्हें वह आदमी मिला जो दुम दबाकर भाग गया था। अपने भाई के साथ जो हुआ था उसे देखकर जंगल में अकेला पाकर वह डर के मारे बेहोश हो गया था और बुरी तरह गिर पड़ा था। उसके मुँह से झाग निकल रहा था और उसकी आँखें ऊपर की ओर उठी हुई थीं। लगभग एक घंटे बाद वह इतनी धीमी आवाज़ में भयानक खबर सुनाने की हालत में आया। उसके साथ, दल उस जगह पर वापस लौटा जहाँ हमला हुआ था, और लापता आदमी को खोजने का आधा-अधूरा प्रयास किया गया। स्वाभाविक रूप से, यह असफल रहा और अगले दिन लौटने का निर्णय लिया गया। सुबह होते ही दल फिर से वापस आ गया, जहाँ व्यापक खोज के बाद फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़े, खून का निशान और अंत में उस दुर्भाग्यपूर्ण आदमी के अवशेष मिले, जिसे रात के दौरान तीन-चौथाई खा लिया गया था। उसका केवल सिर, दो भुजाएँ, एक पूरा पैर और बचा हुआ एक पंजा ही रह गया था, जिन्हें विधिवत इकट्ठा करके अंतिम संस्कार के लिए होसदुर्गा वापस लाया गया। ट्रैक से एक फर्लांग की दूरी पर बचे हुए दो गधे आराम से चर रहे थे।

अब एक और खबर सामने आई कि चार दिन पहले दोपहर करीब 3 बजे होसलकेरे जा रही बैलगाड़ी पर, जिसमें दो बैल जुते हुए थे, होसदुर्गा से तीन मील दूर एक बाघ ने हमला कर दिया था। इस घटना में, बैलगाड़ी चालक गाड़ी से कूदकर भाग निकला और जंगल से होते हुए घुमावदार रास्ते से गांव लौट आया। अगली सुबह एक दल

गाड़ी को सड़क किनारे खड़ा देखने गया, जिसमें एक बैल अभी भी जुता हुआ था। उससे लगभग 50 गज की दूरी पर दूसरे बैल का बचा हुआ हिस्सा पड़ा था, जिसे बाघ ने मार डाला था, जुए से छुड़ाकर यहाँ तक लाया था और फिर अपने दुर्भाग्यपूर्ण साथी के सामने ही खा गया था।

इन सभी खबरों के साथ-साथ हमें यह भी बताया गया कि होसदुर्गा गाँव के एक छोटे से एक कमरे वाले ट्रैवलर्स बंगले पर दो शिकारियों का एक प्रतिद्वंद्वी दल कब्जा जमाए हुए था, जो लगभग पाँच दिन पहले कार से वहाँ पहुँचा था। इससे हमारी योजनाएँ वाकई मुश्किल हो गईं, क्योंकि अन्य शिकारियों के हमसे पहले पहुँचने के बाद आदमखोर जानवर का शिकार शुरू करना उचित नहीं होता। इसके अलावा, जैसा कि कहावत है, 'ज्यादा लोग मिलकर काम बिगाड़ देते हैं', वैसे ही बहुत सारे शिकारी आमतौर पर अपने शिकार को डराकर भगाने के अलावा कुछ हासिल नहीं कर पाते, बशर्ते कि वे इस बीच गलती से एक-दूसरे को गोली न मार दें।

जब तक हमने यह सारी जानकारी जुटाई, तब तक लगभग दस बज चुके थे और हम होलालकेरे लौटने की सलाह पर चर्चा कर ही रहे थे कि तभी वे दोनों शिकारी वहाँ आ गए। वे दोनों युवा थे और अनुभवहीन होने के बावजूद शिकार के प्रति बेहद उत्सुक थे। अपना परिचय देते हुए उन्होंने वही सारी खबरें दोहराईं जो हम पहले ही सुन चुके थे, और बताया कि उन्होंने पिछले दो रातों से उस जगह के आसपास भैंस का चारा बाँध रखा था जहाँ धोबी को भैंस ने खा लिया था। पहली रात कुछ नहीं हुआ था और उनके कुलियों का दल उस सुबह यह पता लगाने के लिए निकला था कि पिछली रात चारे का क्या हाल रहा।

हमने उन सज्जनों को शुभकामनाएँ दीं और उनसे कहा कि हम होलालकेरे लौट जाएँगे ताकि उनके रास्ते में बाधा न बनें। लेकिन वे हमारी बात मानने को तैयार नहीं थे, उन्होंने हमारे इस काम को व्यक्तिगत अपमान समझा और हमसे अगली सुबह तक बंगले में उनके साथ रहने की विनती की, क्योंकि उन्होंने बताया कि उन्हें बेल्लारी लौटना है, जहाँ से वे आए थे। इस दोस्ताना बातचीत के बीच ही, उनके कुछ मजदूर वहाँ पहुँचे और बताया कि पिछली रात को ही उनका शिकार किया गया था और आधा खाया जा चुका था। वे दोनों लड़के बड़े ही मेहमाननवाज थे और उन्होंने हमें अपने

शिकार पर बैठने का प्रस्ताव दिया। बेशक, हमने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

दोपहर का भोजन करने के बाद, हम उनके साथ शिकार देखने और हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए निकल पड़े। हमने पाया कि लड़कों ने पत्थरों से भरे क्षेत्र में अपना चारा बाँधकर नासमझी की थी। इसके अलावा, उन्होंने जानवर को ठीक से नहीं बाँधा था, जिसके परिणामस्वरूप बाघ ने रस्सी तोड़ दी और अपने शिकार को एक चट्टान के पीछे घसीटकर ले गया, और उस पेड़ से पूरी तरह ओझल कर दिया जहाँ उन्होंने अपना मचान बनाने का इरादा किया था। जिस स्थान पर शिकार को घसीटा गया था, वहाँ आदमखोर बाघ के आने के दो संभावित रास्ते थे, यदि वास्तव में किसी आदमखोर बाघ ने ही चारा मारा था; पहला उस रास्ते की दिशा से जहाँ धोबी मारा गया था, और दूसरा शिकार से लगभग एक चौथाई मील दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित एक छोटी पहाड़ी से। आसपास पड़े कई पत्थरों में से दो अलग-अलग पत्थर इस प्रकार स्थित थे कि दोनों से आने के इन संभावित रास्तों के साथ-साथ शिकार और एक-दूसरे को भी देखा जा सकता था।

इसलिए दोनों खिलाड़ियों ने इन पत्थरों के पीछे-पीछे बैठने का फैसला किया। मैंने सुझाव दिया कि चूंकि उनका दुश्मन आदमखोर भी हो सकता है, इसलिए बेहतर होगा कि वे कांटों की आड़ में पत्थरों के ऊपर बैठें। हालांकि, वे इस बात से सहमत नहीं हुए और उन्होंने पत्थरों की ओर पीठ करके जमीन पर बैठने का फैसला किया।

कुछ कंटीली झाड़ियों के पीछे उन्हें छुपाकर, हम शाम चार बजे तक इन बहादुर बाघों को वहीं छोड़कर बंगले की ओर लौट गए। मैं उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित था और जरूरत पड़ने पर मदद करने के लिए कुछ देर उनके पास रुकना चाहता था, लेकिन अंत में मैंने सोचा कि मेरी मौजूदगी से बाघ डरकर भाग सकता है और मेरा इरादा गलत समझा जा सकता है।

उस दोपहर हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि शुभ रात्रि की हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ उन लड़कों के लिए हमारे दल के अंतिम शब्द होंगे। हमने शाम बंगले में चाय पीते, सिगरेट पीते और बातें करते हुए बिताई, साथ ही अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए यथासंभव ग्रामीणों से बातचीत भी की। दक्षिण-पश्चिम से तेज हवा चल रही थी, इसलिए एक मील से अधिक दूर मौजूद उन दोनों लड़कों द्वारा चलाई गई राइफल की

गोली की आवाज सुनना असंभव था। हमने जल्दी खाना खा लिया और मैकटेविश और उनकी पत्नी सो गए। हालांकि, मैंने बरामदे में बैठकर जंगल की कोई भी आवाज सुनने का फैसला किया।

लगभग ग्यारह बज रहे थे, गाँव पिछले एक घंटे से शांत था और मैं सोने की सोच ही रहा था कि तभी मुझे एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, जिसे मैंने तुरंत पहचान लिया। दूर से आती हुई दौड़ती-लड़खड़ाती कदमों की आहट सुनाई दी। मुझे एहसास हुआ कि आने वाली मुसीबत का मेरा सहज डर, जो उस शाम पहले बहुत ज़ोर से महसूस हुआ था, गलत नहीं था। मैंने जल्दी से अपनी राइफल और टॉर्च उठाई और दौड़ने वाले से मिलने के लिए बाहर भागा। वह निकला इन्स, दोनों खिलाड़ियों में से बड़ा। उसके कपड़े फटे हुए थे, वह पसीने से तरबतर था और एक शराबी की तरह लड़खड़ा रहा था, आगे बढ़ते हुए लगातार पीछे देख रहा था। मैंने उसे कंधे से सहारा देकर पूछा कि उसके साथी का क्या हुआ। बेचारा लड़का इतना थका हुआ था कि मुश्किल से बोल पा रहा था, लेकिन आखिरकार उसने हांफते हुए भयानक शब्द कहे, "बाघ उसे ले गया, ऊह! ऊह!" और एक बच्चे की तरह मेरे कंधे पर रोने लगा।

मैं उसे जल्दी से बंगले में ले गया, जहाँ मैंने मैकटेविश और उसकी पत्नी को जगाया। हमने इन्स को ब्रांडी की एक तेज़ खुराक दी, उसे लिटाया और दो कंबल ओढ़ा दिए, क्योंकि वह प्रतिक्रिया के कारण एक पेड़ की तरह कांप रहा था। फिर, श्रीमती मैकटेविश उसके हाथों को सहला रही थीं, और हम बेसब्री से उसकी कहानी सुनने का इंतज़ार कर रहे थे, और यह सचमुच एक असाधारण कहानी थी। वह पगडंडी से आने वाले रास्ते पर नज़र रखने वाली चट्टान के नीचे बैठा था, जबकि उसका साथी टॉड, दूसरी चट्टान के पीछे, छोटी पहाड़ी से आने वाले रास्ते पर नज़र रख रहा था। अंधेरा होने से कुछ देर पहले, इन्स को लगा कि उसने टॉड से काफी दूर झाड़ियों में एक लंबी, लाल रंग की वस्तु को हिलते हुए देखा है, जहाँ पहाड़ी से ज़मीन धीरे-धीरे नीचे की ओर ढलान पर थी। ज़ाहिर है, उसके पास टॉड को यह बताने का कोई साधन नहीं था कि उसने क्या देखा था, और वह जानता था कि टॉड को इसके बारे में पता नहीं था, क्योंकि वह क्षेत्र उसी चट्टान के नीचे छिपा हुआ था जिसके नीचे टॉड बैठा था। इन्स झाड़ियों को देखता रहा, लेकिन उसके बाद उसे वहाँ कुछ भी नहीं दिखा।

फिर अंधेरा छा गया और रात के लगभग 10 बजे तक घंटे थका देने वाले ढंग से बीतते गए। छाया में शिकार दिखाई नहीं दे रहा था, हालांकि तारों की हल्की रोशनी से इन्स अपने आस-पास देख पा रहा था। अचानक इन्स को एक हल्की सी धमक, घसीटने की हल्की सी आवाज और फिर हड्डियों के टूटने की स्पष्ट आवाज सुनाई दी। यह अनुमान लगाते हुए कि बाघ लौट आया है और अपने शिकार को खा रहा है, इन्स ने अपने साथी को गोली चलाने का मौका देने के लिए कुछ देर इंतजार किया, क्योंकि वह जानता था कि शिकार टॉड से लगभग बराबर दूरी पर था, बल्कि शायद थोड़ा पास ही था, क्योंकि टॉड भी बाघ के खाने की आवाज सुन रहा होगा।

कुछ नहीं हुआ, और किसी को पता नहीं चलेगा कि टॉड निष्क्रिय क्यों रहा। तभी इन्स के मन में ख्याल आया कि शायद उसका साथी सो गया है, और इसी सोच के साथ उसने खुद गोली चलाने का फैसला किया। उसने राइफल को शिकार की दिशा में निशाना साधा और राइफल-टॉर्च का बटन दबाया, जिससे तेज रोशनी में एक विशाल बाघ भैंस के अवशेषों को खाते हुए दिखाई दिया।

उसी समय, टॉड की चीख सुनाई दी, उस दिशा से एक भयानक गुर्राहट आई, हल्की सी खड़खड़ाहट हुई, एक और दबी हुई चीख सुनाई दी, और फिर सन्नाटा छा गया। इस बीच, इन्स ने अपनी राइफल की टॉर्च की रोशनी बाघ और उसके शिकार से हटाकर उस चट्टान पर डाल दी, जिसके नीचे टॉड उस शाम पहले बैठा था। बाघ की आखिरी झलक उसे तब मिली जब वह भैंस के अवशेषों से दूर झाड़ियों में छिप गया।

टॉड का कोई अता-पता नहीं था। अपने दोस्त को बार-बार पुकारते हुए, इन्स अंधाधुंध उस जगह की ओर भागा जहाँ वह बैठा था। टॉड की राइफल, पानी की बोतल और आधा खाली सैंडविच का पैकेट ज़मीन पर पड़ा था, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आया। यह जानकर कि उसके दोस्त को आदमखोर बाघ ले गया है, इन्स बुरी तरह घबरा गया और उसे खोजने के लिए जंगल में इधर-उधर भटकने लगा, लेकिन वह खुद ही रास्ता भटक गया। शोक से पागल और हर मिनट और ज़्यादा बेचैन होता जा रहा, वह इधर-उधर भटकता रहा, तभी किस्मत से वह होसदुर्गा जाने वाले रास्ते पर पहुँच गया, जिस पर वह पूरी तेज़ी से दौड़ा था। इन्स की कहानी से अब यह साफ़ हो गया था कि हमें दो बाघों का सामना करना था: एक कुख्यात मवेशी चोर और दूसरा उससे भी ज़्यादा

खूंखार आदमखोर। वे शायद नर और मादा बाघों का जोड़ा थे, हालाँकि ऐसा ज़रूरी नहीं था। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा असामान्य संयोजन नहीं देखा था। इस संभावना को खारिज कर दिया गया कि वे एक ही झुंड के दो वयस्क शावक थे, जिनमें से एक में आदमखोर प्रवृत्ति विकसित हो गई थी। यह संभावना इन्स के उस शावक के वर्णन से स्पष्ट थी, जिसमें उसने मवेशी चुराने वाले को 'विशाल बाघ' बताया था और कहा था कि वह बिल्कुल भी अधेड़ नहीं था। आदमखोर को किसी ने नहीं देखा था। पंद्रह मिनट के भीतर हमने गाँव को जगाया और लगभग बीस अनिच्छुक सहायकों को इकट्ठा किया, हालाँकि दोनों बंदूकधारियों के मालिक लालटेन, लाठी, डंडे और कुल्हाड़ी लेकर फिर से आगे आ गए थे। श्रीमती मैकटेविश ने भी आने की ज़िद की, और इन्स भी, हालाँकि वह लगभग थक चुका था। खोज दल, मैकटेविश और मैं, जल्द ही उस चट्टान पर पहुँच गए जहाँ से टॉड को ले जाया गया था।

चारों ओर खोजबीन करते हुए, थोड़ी ही देर में हमें उसके बाएं पैर से गिरा हुआ एक अजीब सा रबर के तले वाला जूता मिला। जहाँ से वह जूता मिला, वहाँ से हमने अनुमान लगाया कि बाघ अपने शिकार को लेकर उस छोटी पहाड़ी की ओर जा रहा था जहाँ से वह आया था। पूरी तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, हम आखिरकार उस जगह पहुँचे जहाँ जानवर ने सबसे पहले अपने शिकार को लिटाया था। वहाँ से, शायद इन्स के चिल्लाने और छटपटाने से मचे शोर से घबराकर, वह आगे बढ़ गया था। हमेशा की तरह, खून के निशान दिखने लगे, जो हमें पहाड़ी की तलहटी तक ले गए, और फिर दाहिनी ओर बढ़ते गए। मैकटेविश और मैं आगे-आगे चल रहे थे, और अप्रत्याशित हमले के डर से एक-दूसरे के करीब रहते हुए, हमने अपनी खोज जारी रखी, लेकिन सुबह 3:30 बजे तक हमें बेचारे फ्रेड टॉड का बचा हुआ शरीर मिला। बाघ उसका लगभग आधा हिस्सा खा चुका था, और यह एक भयानक दृश्य था। इन्स को अचानक तेज़ झटका लगा, उसे उल्टी आने लगी, वह रोने लगा और अंत में गिर पड़ा। उस भयानक दिन सुबह 6 बजे से भी अधिक समय बीत चुका था, जब हम किसी तरह अवशेषों को होसदुर्गा तक ले जाने में कामयाब हुए, साथ में पूरी तरह से अक्षम हो चुकी इंसे भी थी।

हमने फ्रेड टॉड के बचे हुए हिस्से को मैकटेविश की कार में रखा, जबकि मैं इन्स को उसके बेचारे दोस्त की पुरानी कार में बिठाकर ले गया और हम सुबह 9 बजे तक

चिटलड्रूग पहुँच गए। यहाँ इन्स को स्थानीय निधि अस्पताल में भर्ती कराया गया और हमने दिन का अधिकांश समय इस तरह की घटना के बाद होने वाली उबाऊ आधिकारिक जाँच-पड़ताल में बिताया, जिसके चलते सूर्यास्त होने से पहले हम होसदुर्गा और एक सुनसान, वीरान ट्रैवलर्स बंगले में नहीं पहुँच पाए। उस रात हम दुखी और निराश होकर सो गए, लेकिन बदला लेने के पक्के इरादे के साथ। श्रीमती मैकटेविश ने विशेष रूप से पिछले बीस घंटों के मानसिक तनाव को वीरतापूर्वक सहन किया था और पूरे समय हमारी बहुत मदद की। अगली सुबह हम त्रासदी स्थल पर वापस पहुँच गए, जहाँ हमने अगले तीन-चार घंटे सबूतों को इकट्ठा करने में बिताए। ज़मीन सख्त थी, क्योंकि कई हफ्तों से बारिश नहीं हुई थी, और आदमखोर के पैरों के निशान ढूँढना असंभव था जिससे हम उसके आकार और लिंग का पता लगा सकें। इन्स द्वारा पशु-हत्यारे के वर्णन से हमें लगा कि वह नर था। अतः, संभवतः वह आदमखोर मादा थी, हालाँकि, जैसा कि मैंने पहले कहा है, यह आवश्यक नहीं था। आसपास कुछ भी न मिलने पर, हमने एक बार फिर उस स्थान की ओर निशान का पीछा किया जहाँ हमें टॉड का शव मिला था, लेकिन हमें कहीं भी हत्यारे के पदचिह्न नहीं मिले। हमने और आगे देखने का भी प्रयास किया, लेकिन कठोर ज़मीन ने अपना रहस्य छिपाए रखा, और हमारे सभी प्रयासों के बावजूद, आदमखोर का आकार और लिंग रहस्य बना रहा।

चितलद्रूग में हमारी अनुपस्थिति के दौरान, गिद्धों ने भैंस के शिकार के बचे-खुचे हिस्से को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था। अब हमें अपने अभियान को नए सिरे से शुरू करना था। उचित विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि धोबी की हत्या के स्थान के पास ही भैंस का एक नया चारा रखा जाए। मैकटेविश उस पर बैठ सकता था, जबकि मैंने टॉड के शिकार स्थल के पास एक चट्टान पर लेटने का निश्चय किया। हमारी योजना कुछ इस प्रकार थी। यदि दोनों बाघ एक साथ चलते, तो भैंसा चुराने वाला बाघ चारे को मार डालता, और संभवतः, हालांकि दूसरा बाघ आदमखोर था, वह भी दावत के लालच का विरोध नहीं कर पाता और उसमें शामिल हो जाता। इससे मैक को निशाना लगाने का मौका मिल जाता। दूसरी ओर, यदि वह शामिल नहीं भी होता, तो भी आदमखोर बाघ संभवतः आसपास ही होता; और चूंकि जिस चट्टान पर मैं लेटने वाला था वह टीले के ठीक सामने थी, और उसी दिशा में थी जिस दिशा में वह पिछले दिन आया था, इसलिए मुझे उम्मीद थी कि यदि वह मेरे पास से गुजरे तो मैं उसे सुन

और देख सकूंगा।

मैक को जिस रास्ते पर बैठना था, वहाँ कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए हमने ज़मीन में एक उथला गड्ढा खोदकर सुरक्षा की समस्या का समाधान किया। हमने उस गड्ढे के ऊपर एक उल्टा गन्ने का तवा रखने का फैसला किया। ये तवे विशाल तश्तरियों जैसे दिखते हैं, जिनका व्यास लगभग छह से आठ फीट और गहराई अठारह इंच होती है। ये लगभग एक-आठवें इंच मोटे लोहे की चादर से बने होते हैं। इनका उपयोग पूरे भारत में गन्ने की डंडियों से निकले रस को पिघलाने के लिए किया जाता है। पहले गन्ने को प्रेस से कुचलकर इकट्ठा किया जाता है। इस रस को तवे में उबाला जाता है और यह सुनहरे भूरे रंग का तरल बन जाता है। फिर इसे ठंडा होने और जमने दिया जाता है, जिसके बाद इसे चार इंच के चौकोर टुकड़ों में काटकर गुड़ या भूरी चीनी बनाई जाती है। दक्षिण भारतीय गाँवों में गुड़ ही चीनी का एकमात्र रूप है, क्योंकि वहाँ सफेद चीनी का कोई नामोनिशान नहीं है। लगभग हर उपजाऊ क्षेत्र के गाँव में गन्ने के बागान होते हैं, जिनमें गन्ने के तवे भी लगे होते हैं। हमने होसदुर्गा में इनमें से कुछ तवे पहले ही देख लिए थे।

कुछ ही देर में हम गाँव से एक तख़्ता लेकर लौट आए, जिसे आधा दर्जन आदमियों ने उठाया हुआ था। साथ में छलावरण वाली तिरपाल का एक टुकड़ा भी था, जिसे मैक अपनी कार में लाया था, और रात भर रुकने के लिए ज़रूरी बाकी सामान भी था। हमने इस तख़्ते को खोदे गए उथले गड्ढे के ऊपर उल्टा करके रख दिया और इसे चार जगहों से पत्थरों से ज़मीन से ऊपर उठा दिया, ताकि देखने और हवा आने-जाने के लिए छह इंच का गैप रहे और गोली चलाने के लिए जगह मिल सके। तख़्ते के ऊपर हमने छलावरण वाली तिरपाल बिछा दी, फिर उसे उथले गड्ढे से खोदी गई रेत की कुछ बूंदों से ढक दिया, और कुछ कांटे, कटी हुई झाड़ियाँ, पत्ते आदि भी डाल दिए, ताकि यह असली लगे। हमने सारा काम अच्छे से किया, ताकि दूर से देखने पर तख़्ता ज़मीन पर एक छोटे से टीले से ज़्यादा कुछ न लगे।

अब एक और पेचीदगी खड़ी हो गई जब मैक अंदर जाने ही वाला था कि उसकी पत्नी ने उसके साथ बैठने की ज़िद की। हम दोनों ने उसे समझाने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। नतीजा यह हुआ कि आखिरकार मैंने और बाकी

आदमियों ने एक तरफ से तवा उठा दिया, मैक परिवार को अंदर घुसने दिया और फिर सारा इंतज़ाम ठीक कर दिया। असल में, मुझे अंदर काफी सुरक्षित महसूस हो रहा था, उल्टा तवा एक तरह से कवच का काम कर रहा था। फिर चारा बांध दिया गया और जिस चट्टान पर मुझे लेटना था, वहाँ जाने से पहले यह तय हुआ कि ज़रूरत पड़ने पर हम एक-दूसरे को तीन तेज़ सीटी बजाकर संकेत देंगे। मैं शाम 5 बजे तक अपनी चट्टान पर चढ़ गया, आराम से बैठ गया और आगे की घटनाओं का इंतज़ार करने लगा। मुझे याद है कि दिन भर सीधी धूप में रहने के कारण पत्थर बहुत गर्म हो गया था। जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी और जंगल में किसी भी तरह का जीवन नहीं दिखाई दिया। यहाँ तक कि जानी-पहचानी चिड़िया, जिसका अब स्वागत होता है, भी गायब थी। सन्नाटा गहरा और पूर्ण था, और तारे अजीब सी खामोशी में टिमटिमा रहे थे। मैं बेचारे फ्रेड टॉड और उसके साथ जो कुछ हुआ था, उसके बारे में सोचने लगा।

आधी रात बीत गई, तभी अचानक मुझे एक तेज़ सीटी की आवाज़ सुनाई दी, जो दो बार दोहराई गई। यह मैक का तय किया हुआ संकेत था, और यह सोचकर कि उसे क्या हुआ है, मैं चट्टान से नीचे उतरा, टॉर्च जलाई और सावधानी से उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ वह और उसकी पत्नी मौजूद थे। मैंने उन्हें भैंस के चारे के पास खड़े पाया, जो ज़िंदा था और उसे छुआ भी नहीं गया था। एक तरफ वह बर्तन पड़ा था जो बाहर निकलते समय पलट गया था, और उन्होंने मुझे यह बताया। आधी रात तक उन्होंने कुछ भी देखा या सुना नहीं था, तभी श्रीमती मैक, जो भैंस की ओर मुंह करके अपने पति के ठीक पीछे बैठी थीं, ने अपने पीछे एक हल्की सी आह या कराहने की आवाज़ सुनी। धीरे-धीरे चारों ओर देखते हुए और बर्तन और ज़मीन के बीच की जगह से देखने की कोशिश करते हुए, उन्होंने पहले तो कुछ भी नहीं देखा। फिर उन्होंने छह फीट की दूरी पर एक चट्टान देखी, जो बाथटब जितनी बड़ी लग रही थी। शाम को वहाँ कोई पत्थर नहीं था, यह याद करके उसने अपना सिर छेद के पास किया और एक बाघ को ज़मीन पर पेट के बल लेटे हुए, आगे के पैर फैलाए हुए, अपनी निगाहें उसकी ओर गड़ाए हुए देखकर भयभीत हो गई। हैरानी और डर से उसकी सांस अटक गई, लेकिन उसने उसे दबाते हुए अपने पति का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। मैक ने अपनी जगह से कुछ नहीं देखा था और उसके लिए मुड़ना लगभग नामुमकिन था, क्योंकि एक व्यक्ति के लिए खोदा गया गड्ढा दो लोगों के लिए बहुत छोटा था। उसके

लगातार धक्कों से कुछ असामान्य होने का आभास पाकर मैक ने खुद को मोड़ने की पूरी कोशिश की, जिसके परिणामस्वरूप उसकी राइफल का मुंह बर्तन के किनारे से टकराया और हल्की सी धातु की आवाज़ आई। एक ज़ोरदार 'वूफ़' की आवाज़ आई और धड़ाम से बाघ उस उपकरण के ऊपर से कूद गया। यह जानते हुए कि वे पकड़े जा चुके हैं और अब वहाँ रुकने का कोई फायदा नहीं है, उन्होंने तय किए गए संकेत से मुझे बुलाया।

वहाँ और अधिक समय तक रुकना व्यर्थ था, इसलिए हमने होसदुर्गा स्थित बंगले में लौटने का निर्णय लिया और चारा वहीं रात के लिए छोड़ दिया, ताकि किसी अन्य योजना पर निर्णय लिया जा सके। अगली सुबह मैंने कुछ लोगों को चारा लाने के लिए भेजा। वे यह चौंकाने वाली खबर लेकर लौटे कि जानवर को मार दिया गया था और उसे पूरी तरह से खा लिया गया था। तुरंत मौके पर पहुँचकर हमने पाया कि उनकी बात सच थी। हमारे चारे का लगभग कुछ भी नहीं बचा था, सिवाय उसके सिर और खुरों के। ज़मीन की बारीकी से जाँच करने पर पता चला कि दो बाघों ने भोजन किया था, और वे पास ही पड़े हुए गन्ने के उलटे हुए बर्तन और तिरपाल के ढेर के बहुत करीब थे, जो दोनों ही जानवरों को डराने में विफल रहे थे।

इस ताज़ा घटनाक्रम से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि हमारा आदमखोर बाघ मौका मिलते ही मवेशियों का भी शिकार करता था। या फिर यह भी संभव था कि आस-पास तीन बाघ सक्रिय हों; एक आदमखोर और दो मवेशी-शिकारी। अगली रात हमने उसी योजना पर काम करने का फैसला किया, उसी रास्ते पर एक चौथाई मील आगे एक नया चारा बांधा और पहले की तरह उसके बगल में गन्ने का गड्ढा बनाया, इस बार हमने गड्ढा इतना बड़ा बनाया कि उसमें मैक और मैं दोनों समा सकें। श्रीमती मैक बड़ी अनिच्छा से बंगले में रहने के लिए राज़ी हुईं। गड्ढे के ऊपर छलावरण वाली तिरपाल बिछाई गई, उसके नीचे ढीली रेत और कंकड़ की एक परत, घास, कांटे और छोटी कटी हुई झाड़ियाँ डाली गईं, ताकि पूरा गड्ढा ज़मीन में एक छोटे से उभार जैसा असली लगे। मैक और मैं पीठ से पीठ मिलाकर बैठे, राइफलें तैयार थीं, मैक का मुंह चारे की ओर था। इस बार हमने गड्ढे के चारों विपरीत सिरों पर बड़े पत्थर रखकर थोड़ा बड़ा छेद भी बनाया ताकि गोली चलाने के लिए ज़्यादा जगह मिल सके।

मैक और मैं लगातार तीन रातों तक इसी तरह बैठे रहे, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया। लेकिन चौथी सुबह लगभग दस बजे, जब हम बंगले में झपकी ले रहे थे, तब खबर आई कि होलालकेरे से एक मील दूर, उसी खजूर के बाग में, जहाँ हमने कुछ दिन पहले भालू को गोली मारी थी, लगभग उसी जगह पर एक आदमी की हत्या कर दी गई है। कार से जल्दी से वहाँ पहुँचकर, हम दोनों यह देखकर निराश और नाराज़ हुए कि इस बीच मृतक के परिजनों ने उसके शव को दाह संस्कार के लिए ले जाया था, जिससे हमें उस मानव शिकार को देखने का मौका नहीं मिला, जहाँ बाघ शायद वापस लौट सकता था।

फिर हमने होलालकेरे से भैंसों के लिए एक और चारा लिया और उसे उस जगह से पचास गज की दूरी पर बांध दिया जहाँ उस आदमी की हत्या हुई थी। इस जगह पर सड़क के किनारे एक सुविधाजनक पेड़ था, और मैंने उस पेड़ पर एक मचान खड़ा किया। मैक थोड़ा अस्वस्थ महसूस कर रहा था और लगातार चार रातों तक जागने के बाद थका हुआ था, इसलिए उसने उस दिन आराम करने का फैसला किया और मैं अकेला जागता रहा।

फिर भी कुछ नहीं हुआ, और सुबह 6 बजे मैं थकावट, निराशा और घृणा की मिली-जुली भावनाओं के साथ होलालकेरे की ओर एक मील का सफर तय कर रहा था। वहाँ पहुँचकर मैंने कुछ आदमियों को चारा लाने के लिए भेजा। वे आधे घंटे में दौड़ते हुए वापस आए और खबर दी कि जैसे ही वे जानवर को खोलने वाले थे, जंगल में कुछ ही गज की दूरी पर एक बाघ ने दहाड़ मारी। फिर वे भैंस को वहीं छोड़कर तेजी से होलालकेरे वापस भाग गए।

गाड़ी में बैठकर हम तुरंत उस जगह पहुंचे और यह देखकर सचमुच हैरान रह गए कि हमारा चारा अभी भी ज़िंदा था। यह बहुत ही अप्रत्याशित था, क्योंकि हमें पूरा यकीन था कि भागते हुए आदमियों के नज़र से ओझल होते ही बाघ या बाघ भैंस को मार डालेंगे। मैंने जोखिम उठाते हुए तुरंत मचान पर चढ़कर मैक को होलालकेरे लौटने का निर्देश दिया। मुझे लगा कि शायद बाघ आ जाए।

कुछ नहीं हुआ, और दोपहर 1 बजे मुझे भूख और नींद दोनों आने लगी, तो मैं नीचे उतरा, चारा खोला और उसे लेकर होलालकेरे चला गया। उस रात, हमने उसी जगह

पर चारा दोबारा बांधा और मैं फिर से बैठ गया। मैक और उसकी पत्नी कार से होसदुर्गा गए और गन्ने के खेत के नीचे, हमारे छोड़े हुए चारे के पास, उसी जगह पर बैठ गए जहाँ हम दोनों लगातार तीन रात बैठे थे।

फिर कुछ नहीं हुआ, और सुबह 6:30 बजे वे होसदुर्गा से कार में आए, मुझे लिया और होलालकेरे के बंगले की ओर चल दिए, जहाँ हम सब दोपहर के भोजन के बाद सो गए। शाम 4 बजे हम सब शोरगुल से जाग गए। बरामदे में जमा भीड़ को थोड़ा शांत करते हुए हमें पता चला कि बारह आदमियों का एक दल दोपहर से पहले होलालकेरे से मवेशियों के झुंड को बाजार के लिए चितलद्रूग ले जाने के लिए निकला था, और उनका इरादा सूर्यास्त से काफी पहले यह दूरी तय करने का था। होलालकेरे से लगभग तीन मील दूर, एक मवेशी मुख्य सड़क से लगभग पच्चीस गज की दूरी पर भटक गया था। उसे वापस लाने गया एक आदमी पर एक बाघ ने हमला कर दिया, जो जाहिर तौर पर दल के साथ-साथ चल रहा था और सड़क के किनारे की झाड़ियों में छिपा हुआ था। सड़क पर अपने दोस्तों से संपर्क न होने के कारण, वह पास ही मौजूद एक चट्टान पर चढ़ गया। यह सारा दृश्य दल के सभी सदस्यों के सामने घटित हुआ, जो सभी एक साथ huddled होकर खड़े थे और भय से इतने भयभीत थे कि किसी भी प्रकार की सहायता करने में असमर्थ रहे।

बाघ चट्टान पर चढ़ गया और अपने अगले पंजे से आदमी की जांघ को जकड़कर उसे नीचे खींचने की कोशिश करने लगा। आदमी लगातार मदद के लिए चिल्लाता रहा और खुद को नीचे गिरने से बचाने के लिए चट्टान के ऊपर लटकी एक पेड़ की शाखा को दोनों हाथों से पकड़ लिया। पहला हमला नाकाम रहा और बाघ पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके पंजों ने आदमी की जांघ की खाल को लगभग छील दिया, जिससे वह अधछूते केले के छिलके की तरह लटकने लगी। खून देखकर शायद और भी उग्र होकर बाघ ने दूसरा प्रयास किया। इस बार उसने अपने दोनों अगले पंजे आदमी के शरीर में कसकर जकड़ लिए और उसकी कमजोर पकड़ से उसे खींच लिया। चट्टान से नीचे लाते ही बाघ ने उसकी गर्दन पकड़ ली और जंगल की ओर भाग गया।

गाड़ी से घटनास्थल तक पहुँचने में कुछ ही मिनट लगे। ताज़ा त्रासदी के सबूत प्रचुर

मात्रा में मौजूद थे; टूटी हुई शाखा में धँसी मानव त्वचा और नाखूनों के टुकड़े उस आखिरी हताश प्रयास की तीव्रता की गवाही दे रहे थे। चारों ओर खून बिखरा हुआ था, और पीड़ित को घसीटकर ले जाने के स्पष्ट निशान थे।

हम पूरी तेज़ी से उस रास्ते पर चल पड़े, जो घने जंगल की घाटी की ओर नीचे जा रहा था। शाम के 5 बज चुके थे और अंधेरा होने से पहले शव को ढूंढने के लिए हमारे पास ठीक एक घंटा था। जल्द ही हमें फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़े मिले, फिर खून का एक गहरा तालाब जहाँ बाघ ने अपने शिकार को फेंका था, और फिर हम अंधेरी घाटी में नीचे की ओर चले गए। इस तरह लगभग छह फर्लांग की दूरी तय करने के बाद हम झाड़ियों से घिरी एक छोटी चट्टान पर पहुँचे। मुझे आश्चर्य हुआ कि बाघ अभी तक अपना भोजन शुरू करने के लिए नहीं रुका था, क्योंकि यह एक शांत और एकांत जगह थी; लेकिन यह विचार मेरे मन में आया ही था कि एक बड़ी चट्टान के पीछे से एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी, उसके बाद एक छोटे पत्थर के खिसकने की आवाज़ आई और बाघ हमारे देखने से पहले ही भाग गया। मोड़ पर पहुँचते ही हमें शव मिला, जो अपने ही खून में लथपथ था और लगभग एक तिहाई खाया जा चुका था। समय बीत रहा था, आस-पास कोई उपयुक्त पेड़ नहीं था, और बैठने के लिए एकमात्र संभव जगह पास की चट्टानों में से सबसे बड़ी चट्टान की चोटी थी, जो लगभग बारह फीट ऊँची थी। यह चट्टान तीन तरफ से खड़ी ढलान वाली थी और बाघ की छलांग से काफी हद तक सुरक्षित थी, लेकिन दुर्भाग्य से चौथी तरफ ढलान थी, और उससे भी ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण बात यह थी कि यह ढलान वाली तरफ मृत व्यक्ति की ओर नहीं थी, बल्कि शव की स्थिति से लगभग समकोण पर थी। इसका मतलब यह था कि अगर मैं चट्टान की चोटी पर लेट जाता, तो मुझे दो दिशाओं में सतर्क रहना पड़ता, यानी बाईं ओर नीचे पड़े शव पर और दाईं ओर चट्टान की ढलान वाली तरफ, इस डर से कि बाघ अचानक ऊपर चढ़कर मुझ तक न पहुँच जाए। जैसा कि मैंने कहा, मैंने अपनी पीठ को, जो चट्टान की खड़ी ढलान वाली तरफ थी, अचानक छलांग से काफी हद तक सुरक्षित माना, जिसके लिए बाघ को चट्टान की चोटी तक पूरे बारह फीट की छलांग लगानी पड़ती। अगर वह एक ही छलांग में इतनी ऊंचाई पार नहीं कर पाता, तो उसका कोई सहारा नहीं बचता और वह पीछे की ओर फिसल जाता, जिससे मुझे गोली चलाने का पर्याप्त समय मिल जाता। मेरे विचार से कोई भी बाघ इतनी जोखिम भरी छलांग नहीं लगाएगा।

ढलान वाली चट्टान की चोटी को कुछ छोटे पत्थरों और झाड़ियों से ढककर, मैं ऊपर चढ़ गया। मैंने मैक को रात का कुछ हिस्सा होलालकेरे और होसदुर्गा के बीच गाड़ी चलाते हुए बिताने को कहा था, इस उम्मीद में कि शायद बाघ रास्ते में मिल जाए, अगर उसने शिकार छोड़ दिया हो। मेरे दोस्तों और ग्रामीणों के चले जाने के बाद, मैं अब नीचे ज़मीन पर बिखरे हुए क्षत-विक्षत अवशेषों के साथ अकेला था। घंटे बीतते गए, और मैं अपनी दाहिनी ओर ढलान वाली चट्टान पर टकटकी लगाए देखता रहा। दूर का जंगल अंधेरे में छिपा हुआ था, और धुंधली पृष्ठभूमि में बस एक धुंधला सा दिखाई दे रहा था, जिसके सामने हाथी से छोटे किसी भी जानवर को पहचानना असंभव था। अंधकार में मेरे बाईं ओर पड़ा शव अब दिखाई नहीं दे रहा था।

लगभग दस बजे, एक मील दूर जंगल में एक सांभर ने रंभाया। इसके तुरंत बाद एक बाघ की आवाज़ सुनाई दी, जिसका जवाब कुछ ही देर में उसी दिशा से एक और बाघ ने दिया जहाँ से हम आए थे। उन शांत घंटों में जब मैं इस मामले पर विचार कर रहा था, तब स्थिति की जटिलता पूरी तरह स्पष्ट हो गई थी। हमारे इलाके में कम से कम दो बाघ सक्रिय थे, संभवतः तीन। इनमें से एक आदमखोर था, साहसी, क्रूर और निर्दयी। दूसरा मवेशी चोर था, स्वभाव से उतना ही साहसी और चालाक। लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि मौका मिलने पर दोनों बाघ अपनी दोनों आदतों से परहेज करते हों। फिर जिले में एक तीसरे बाघ के सक्रिय होने की संभावना भी थी, जो स्वयं आदमखोर, मवेशी चोर या दोनों हो सकता था। अब तक, शुष्क मौसम और कठोर ज़मीन के कारण, हम इन विभिन्न जानवरों की पहचान करने के लिए कोई विशिष्ट पदचिह्न नहीं देख पाए थे। अब बाघों की आवाजें बंद हो चुकी थीं, और आसपास के जंगल में सन्नाटा पसरा हुआ था। केवल पेड़ पर रहने वाले झींगुरों की चहचाहट, कभी-कभार उल्लू की आवाज और विशाल पेड़ों की चोटियों को झुकाती हवा के झोंके की रुक-रुक कर आने वाली आवाज सुनाई दे रही थी, जो दूर समुद्र की गर्जना जैसी लग रही थी। तभी अचानक, बिना किसी चेतावनी या पूर्वसूचना के, यह घटित हुआ! मेरे पीछे चट्टान पर एक जोरदार धमाका हुआ, पत्थर पर ज़ोरदार खरोंच और रगड़ की आवाज, साथ ही एक गुर्राहट, और फिर एक और धमाका हुआ जब बाघ पीछे की ओर जमीन पर गिर पड़ा। इससे पहले कि मैं मुड़कर चट्टान के किनारे से झांक पाता, वह गायब हो चुका था। उस आदमखोर ने अप्रत्याशित काम कर दिया था! किसी तरह मेरी उपस्थिति का आभास पाकर, वह मेरे पीछे से आया और उस

चट्टान की चोटी पर बारह फीट की छलांग लगाने की कोशिश की जहाँ मैं लेटा हुआ था। सौभाग्य से वह कुछ इंच से चूक गया।

मैंने पूरी रात जागते हुए और पूरी तरह सतर्क रहते हुए बिताई, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। अगली सुबह सूरज के काफी ऊपर चढ़ने तक मैंने इंतजार किया, फिर नीचे उतरकर सड़क पर वापस जाने की हिम्मत की, क्योंकि मुझे डर था कि बाघ को मेरी मौजूदगी का पता चल गया होगा और वह मुझ पर हमला करने के लिए घात लगाए बैठा होगा। लेकिन एक बार फिर मेरी किस्मत ने मेरा साथ दिया और मैं सुरक्षित सड़क पर पहुँच गया, जहाँ कुछ ही मिनटों में मैक कार से मुझे लेने आ गया। उसने भी होलालकेरे और होसदुर्गा के बीच इधर-उधर गाड़ी चलाते हुए पूरी रात व्यर्थ बिताई थी।

बंगले पर पहुँचते ही मैंने कुछ लोगों को शव के पास वापस जाकर उसे गिद्धों से बचाने के लिए डालियों से ढकने का आदेश दिया, क्योंकि मेरा इरादा उस रात चट्टान पर फिर से बैठने का था। ये लोग अभी निकले ही थे कि मृतक के रिश्तेदार उसके गाँव से आ गए और शव को दाह संस्कार के लिए माँगने लगे। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि शव को एक और दिन वहीं रहने दिया जाए। वे अपनी बात पर अड़े रहे, और इस तरह उस रात उस बेचारे आदमी की मौत का बदला लेने का जो भी मौका हमें मिला था, वह उसके रिश्तेदारों की हठधर्मिता के कारण हमसे छिन गया।

दो घंटे बाद, होसदुर्गा से कुछ लोग आए और हमें बताया कि हमारा चारा, जिसे पिछले एक हफ्ते से गन्ने के खेत के पास बांधकर रखा गया था, आखिरकार मर गया है। शाम को मैक और मैं खेत के नीचे बैठे थे, और लगभग आधी रात को हमें आसपास एक बाघ के घूमने की आवाज सुनाई दी, जो बीच-बीच में धीमी गुर्राहट कर रहा था। हम बेसब्री से उसके शिकार के पास आने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन वह नहीं आया और लगभग पौने घंटे तक उस इलाके के चक्कर लगाता रहा। साफ था कि उसे शिकार के पास हमारी मौजूदगी का पता चल गया था। अब मैक के मन में एक साहसी लेकिन मूर्खतापूर्ण विचार आया, कि उसे उठकर चले जाना चाहिए ताकि बाघ को लगे कि हम जा चुके हैं और उसका शिकार अकेला है। उसे उम्मीद थी कि तब वह पास आएगा और मैं उससे निपट लूंगा।

यह योजना सफल होने की पूरी संभावना थी, जैसा कि आपको याद होगा कि पिछली

बार जब हमने चारा और मछली पकड़ने का बर्तन छोड़ा था, तब ठीक यही हुआ था। साथ ही, मैक के लिए यह करना बहुत खतरनाक था, क्योंकि पास में मंडरा रहा बाघ खुद आदमखोर हो सकता था, या पहले की तरह उसके साथ आदमखोर भी हो सकता था। उस जिद्दी लेकिन बेहद बहादुर स्कॉटिश व्यक्ति के दिमाग से यह बात निकालने में मुझे पूरे तीस मिनट लग गए कि आदमखोर के आसपास घने अंधेरे जंगल में निकलना अपनी मौत को दावत देने जैसा होगा।

इसी बीच बाघ इधर-उधर घूमता रहा, लेकिन सुबह तड़के वह चला गया, और निराशा भरी एक और रात के बाद हम होसदुर्गा स्थित छोटे बंगले में लौट आए।

अगले दो दिनों तक कुछ नहीं हुआ। इन दिनों की रातें हमने होसदुर्गा, होलालकेरे और चितलद्रूग के बीच गाड़ी चलाते हुए बिताईं, और सड़क पर बाघों में से किसी एक से मिलने की उम्मीद में स्पॉटलाइट चमकाते रहे। तीसरे दिन सुबह-सुबह लुंबानी लकड़हारों के एक दल ने सूचना दी कि पिछली रात वे चार मील दूर जंगल में एक विशाल अलाव की आड़ में डेरा डाले हुए थे। उन्होंने अपने पाँच बैलों को अलाव के चारों ओर एक घेरा बनाकर खड़ा किया था, और वे अपने पाँच बैलों के साथ उसी घेरे में छिपे हुए थे। आधी रात को जब आग धीमी हो गई, तो एक बाघ चुपके से बैलों के पास से गुजरा और एक बैल पर हमला कर दिया। बाकी बैल इधर-उधर भागने लगे, जिससे वे लोग जाग गए। उन्होंने चिल्लाकर बाघ पर जलती हुई लकड़ियाँ फेंकीं। इसके बाद बाघ भाग गया। बैल की गर्दन पर गहरा घाव था और उसे कई जगह खरोंचें भी आई थीं, लेकिन वह जीवित था। भोर होते ही वे चार गाड़ियों और घायल बैल के साथ होसदुर्गा पहुंचे, पांचवीं गाड़ी को वहीं छोड़ दिया, क्योंकि बैल उसे खींचने में बहुत बुरी तरह घायल था।

इन लुंबानी लोगों में से एक, जो बचपन से ही इस इलाके में रहता था और जंगल को अपनी हथेली की तरह जानता था, ने बताया कि छह मील दूर, जंगल के बीचोंबीच, एक छोटी सी धारा बहती है जो ढलानदार चट्टानों से घिरे एक साफ पानी के कुंड में जाकर मिलती है, जिसके नीचे विशाल पेड़ हैं। उसने दावा किया कि बाघों का स्थायी निवास इसी स्थान पर है। अब चूंकि गर्मी का मौसम है, इसलिए वे दोपहर की तेज धूप से बचने के लिए इस ठंडी जगह पर आराम करते हैं, और हर शाम शिकार पर

निकलने से पहले या शिकार से लौटने के बाद सुबह तड़के, उनमें से कोई न कोई इस कुंड से पानी जरूर पीता है।

यह आदमी ज़ाहिर तौर पर अपने विषय का जानकार था, क्योंकि उससे हुई बातचीत से पता चला कि वह एक शिकारी और अवैध शराब विक्रेता था, जो बबूल के पेड़ की छाल से 'अराक' नामक एक बहुत ही तेज़ शराब को जंगल के भीतर अवैध रूप से बनाकर काफी पैसा कमाता था। ज़ाहिर है, इस जगह के बारे में बहुत कम लोग जानते थे, और जो जानते भी थे, वे बाघों के डर से वहाँ जाने की हिम्मत नहीं करते थे। बातचीत का नतीजा यह निकला कि मैक और मैं उस दिन दोपहर के भोजन के बाद उसके साथ निकलेंगे और शाम, रात और अगली सुबह इसी तालाब पर बिताएंगे।

दोपहर तीन बजे हम उस स्थान पर पहुँचे, और बाघों के लिए इससे अधिक उपयुक्त स्थान मैंने शायद ही कभी देखा हो। तालाब छोटा था, चारों ओर ढलानदार चट्टानों से घिरा हुआ था, लेकिन उसमें गिरने वाली छोटी सी धारा के किनारे बाघ की उपस्थिति का स्पष्ट संकेत दे रहे थे, क्योंकि बार-बार बने पदचिह्न तालाब तक जाते और उसे पार करते हुए जा रहे थे। इन पदचिह्नों के मोटे तौर पर निरीक्षण से दो अलग-अलग जानवरों के पदचिह्नों का पता चला - एक बड़ा नर और एक वयस्क मादा। उसके बड़े आकार की बार-बार मिली रिपोर्टों के आधार पर, यह पूरी संभावना थी कि पहला बाघ ही मवेशियों को चुराने वाला था, जिससे अब यह संदेह करने का पुख्ता कारण बन गया था कि उसकी साथी, मादा बाघ, आदमखोर हो सकती है, जब तक कि दल में कोई तीसरा बाघ न हो।

एक जंगली आम का पेड़ तालाब के ठीक ऊपर, जहाँ से धारा आकर मिलती थी, झुका हुआ था। इस पेड़ की निचली शाखाओं पर, लगभग पंद्रह फीट की ऊँचाई पर, हमने अपनी पोर्टेबल चारपाई मचान लगाई, जिसे हम लुंबानी द्वारा लाए गए ऐसे ही किसी मौके के लिए साथ लाए थे। शाम 4:30 बजे हम तीनों इस मचान पर बैठे थे, क्योंकि आदमखोर के डर से लुंबानी को अकेले भेजना खतरनाक था। झुके हुए बड़े पेड़ों के कारण, शाम सात बजे तक घना अंधेरा हो जाता था, और कोई भी जानवर आसपास नहीं आता था; निस्संदेह वे जंगल के राजाओं की आदत के कारण वहाँ आने से बचते थे। घंटे गंभीर सन्नाटे में धीरे-धीरे बीतते गए, कभी-कभार दूर से सांभर और

काकुर (या भौंकने वाले हिरण) की आवाजें सुनाई दीं।

सुबह के 4 बज चुके होंगे जब हमें हल्की सी आह भरने और कराहने की आवाज़ सुनाई दी, और फिर हमारे सामने ढलान वाले किनारे पर गिरे हुए बांस के पत्तों के कालीन पर बाघ के भारी लेकिन धीमी, दबी हुई कदमों की आहट साफ सुनाई दी। मिनट बीतते गए, लेकिन उस घोर अंधेरे में हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर हमें अंधेरे में, दाईं ओर, नीचे तालाब के किनारे से पानी की लहरों की दूर से आती आवाज़ सुनाई दी।

समय आ गया था, और पहले से तय समझौते के अनुसार, मैंने मैक को गोली चलाने के लिए धीरे से इशारा किया। मैक ने अपनी राइफल आवाज़ की दिशा में तान दी, जबकि मैं ज़रूरत पड़ने पर कवर शॉट के लिए तैयार था। मैक ने टॉर्च का स्विच दबाया और तेज़ रोशनी पानी के किनारे दुबके एक विशाल बाघ पर पड़ी। जानवर ने ऊपर देखा, उसकी बड़ी-बड़ी, चमकती लाल-सफेद आँखों में रोशनी चमक रही थी, और फिर मैक ने गोली चला दी। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ बाघ हवा में उछला और पूरी तरह पलटकर पीछे की ओर गिर गया, ज़मीन को दांतों से काटते हुए और भयंकर गुर्राहट के साथ ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। बाघ के लुढ़कने से पहले मैक ने दो और गोलियां चलाईं, आधा पानी में, मौत के करीब पहुँचते हुए तड़पने के लिए, फिर शांत पड़ा रहा।

भोर होते ही हम नीचे उतरे तो देखा कि मैक ने दल के नर बाघ को मार गिराया था। वह सचमुच एक शानदार कद-काठी वाला बाघ था और एक अद्भुत शिकार था, लेकिन हम सभी यह जानकर निराश हुए कि आदमखोर बाघ अभी भी फरार था। मैक की पहली गोली जानवर की नाक के ऊपरी हिस्से पर लगी, जिससे उसका ऊपरी जबड़ा और तालू टूट गया और गोली गले में जा घुसी, जिसके कारण हमें उसकी गुर्राहट के साथ वह भिनभिनाहट की आवाज सुनाई दी थी। उसकी दूसरी गोली दाहिने कंधे से होकर पेट में जा लगी। तीसरी गोली चूक गई।

अगले चार दिनों की घटनाओं का मैं संक्षेप में वर्णन करूँगा, इस दौरान कोई सूचना नहीं मिली और स्थानीय लोग आदमखोर बाघ को मारने पर हमें बधाई देने लगे। कुछ लोगों का मानना था कि यही बाघ था जिसने मनुष्य और मवेशी दोनों को मारा था।

लेकिन हम बेहतर जानते थे और वहीं रुके रहे, इस विश्वास के साथ कि देर-सवेर हमें किसी और मानव हत्या की खबर जरूर मिलेगी, सिवाय इसके कि अगर आदमखोर बाघ अपने साथी की मृत्यु के बाद इलाका छोड़कर चला गया हो। उन चार दिनों की रातें हमने चितलद्रूग जाने वाली सड़क पर और जंगल के सभी सुगम रास्तों पर घूमते हुए बिताईं, इस उम्मीद में कि शायद हमें आदमखोर बाघ मिल जाए, लेकिन सफलता नहीं मिली।

पाँचवें दिन दोपहर से कुछ ही समय पहले वह खबर आई जिसका हमें डर तो था लेकिन जिसकी हमें पहले से ही उम्मीद थी। चितलद्रूग के अमिलदार द्वारा भेजे गए तीन दूतों ने हमें सूचना दी कि पिछली शाम को, चौदह वर्षीय एक लड़के को तोगी-मठ की दक्षिणी ढलानों पर स्थित एक छोटे से गाँव से बाघ उठाकर ले गया था। यह गाँव चितलद्रूग शहर के दक्षिण में स्थित है, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, और इसके शिखर पर एक प्राचीन, परित्यक्त किला है। कार से वहाँ पहुँचकर, हमने उस गाँव का दौरा किया और हमें उसके बाहरी इलाके में स्थित वह छोटी सी झोपड़ी दिखाई गई, जिसके ठीक दरवाजे से पिछली शाम सूर्यास्त के समय लड़के को उठा ले गया था। गाँव के दक्षिण का इलाका लगभग बंजर होने के कारण, गाँव के निवासियों के साथ-साथ हमें भी यह मानने का पर्याप्त कारण था कि बाघ अपने शिकार को पहाड़ी पर ले गया होगा, और संभवतः उस समय किले के खंडहरों में छिपा होगा। शव की तलाश के लिए कोई संगठित प्रयास नहीं किया गया था और जब हमने आधा दर्जन लोगों का एक दल इकट्ठा किया और पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया, तब तक हमारे पास केवल चार घंटे का दिन का उजाला बचा था।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बाघ अपने शिकार को पहाड़ी की चोटी तक जाने वाले मुख्य रास्ते से नहीं ले गया था। हम आधे से ज़्यादा पहाड़ी चढ़ चुके थे, लेकिन हमें शिकार का कोई निशान नहीं मिला। आगे बढ़ते हुए हम आस-पास की चट्टानों पर चढ़ते गए और मैंने अपने साथियों को निर्देश दिया कि वे हर दिशा में दिखाई देने वाली किसी भी चीज़ की तलाश करें। जब हम लगभग तीन-चौथाई चढ़ाई कर चुके थे, तो उनमें से एक ने बताया कि हमारे बाईं ओर लगभग एक चौथाई मील दूर एक पेड़ पर गिद्ध बैठे हैं। बीच में मौजूद चट्टानों और कंटीली झाड़ियों को पार करते हुए, हम अंततः लड़के के अवशेषों तक पहुँचे, जिन्हें गिद्ध पूरी तरह से खा चुके थे।

हड्डियों के ऊपर बैठे रहने का कोई खास फायदा या उम्मीद नहीं थी, खासकर इसलिए कि हमें अनुभव से पता था कि हत्यारा ऐसे भोजन के लिए शायद ही कभी लौटता था। फिर भी, मैक और दो आदमियों ने मेरी मचान को उस पेड़ पर रख दिया जिस पर गिद्ध बैठे थे और वहीं रहने का फैसला किया, जबकि मुझे लगा कि मेरे पास पहाड़ी के बाकी हिस्से पर चढ़कर खंडहरों को देखने के लिए बस थोड़ा सा समय है। रास्ता पाकर मैं जल्दी से ऊपर की ओर बढ़ा और शाम 5 बजे के ठीक बाद खंडहरों पर पहुँच गया। किले की दीवारें बहुत पहले ही ढह कर जर्जर हो चुकी थीं, और लैंटाना और कंटीली झाड़ियों का एक समुद्र पूरे क्षेत्र के साथ-साथ बाहर स्थित पुरानी खाई को भी ढके हुए था। इस बिंदु पर, दल के शेष चार आदमियों ने बाहर ही रहने का फैसला किया; मेरे लौटने की प्रतीक्षा में वे एक ऊँचे अंजीर के पेड़ की सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ गए, जिसकी टेढ़ी-मेढ़ी जड़ें किले की दीवार के मलबे में गहराई तक धंसी हुई थीं।

सावधानी से आगे बढ़ते हुए, मैंने गिरी हुई दीवार के ऊपर जितना संभव हो सका, उतना चढ़ने का प्रयास किया, ताकि आसपास की घनी झाड़ियों से कुछ ऊंचाई बनाए रख सकूं। ये झाड़ियां न केवल पार करना असंभव था, बल्कि उनमें प्रवेश करना भी खतरनाक था, क्योंकि अगर बाघ मुझसे एक गज की दूरी पर भी होता, तो भी मैं उसे देख नहीं पाता। आगे बढ़ना बेहद कठिन और थका देने वाला था, और जब तक मैं किले के दूसरे छोर पर पहुंचा, तब तक मेरी सांस फूल रही थी और मैं पसीने से भीग चुका था। यहां मैंने पश्चिम क्षितिज के निकट आते हुए सुनहरे सूर्य का सामना किया।

कई साल पहले मैं इसी किले से गुज़रा था, और मुझे पता था कि इस जगह के आसपास दीवारों से घिरे लगभग पूरी तरह से दबे हुए अवशेष और बहुत पुराने समय में कालकोठरियाँ थीं। इन संरचनाओं के कारण इस बिंदु पर दीवार का अनुसरण करना असंभव हो गया था। मैं लैंटाना में उतरने से हिचकिचा रहा था, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि या तो मुझे ऐसा करना होगा और लगभग सौ गज की दूरी तय करके उस जगह तक जाना होगा जहाँ से दीवार फिर से शुरू होती थी, या फिर वापस लौटना होगा। समय भी मेरे खिलाफ था; इसलिए देरी से बचने के लिए मैंने अंततः लैंटाना में उतरने का जोखिम उठाने का फैसला किया, और जितना हो सके चुपचाप लैंटाना को हटाते हुए आगे बढ़ने लगा। लेकिन यह जल्द ही असंभव साबित हुआ,

क्योंकि कांटों से ढकी लैंटाना की टहनियाँ हर कदम पर मेरे कपड़ों से चिपक जाती थीं और जैसे ही मैं आगे बढ़ता, काफी शोर होता था।

मुझे पता था कि अब मैं कालकोठरियों और बाड़ों के अवशेषों के ठीक सामने था, और इस वीरान खंडहर में, अगर कहीं और नहीं, तो बाघ के सबसे अधिक छिपे होने की संभावना थी। उसी समय, मेरी प्रतिकूल स्थिति के कारण मैं निश्चित रूप से सतर्क हो गया था, और मेरी नसों और इंद्रियों में तनाव ने खतरे की निकटता का संकेत दिया। मेरी छठी इंद्री ने मुझे बताया कि बाघ पास ही है और मेरा पीछा कर रहा है, हमले के क्षण की प्रतीक्षा कर रहा है, जो बहुत जल्द हो जाएगा यदि मैं लैंटाना से नहीं बच निकला। मैंने इन चेतावनियों को इतनी बार महसूस किया था कि मैं उन्हें अनदेखा नहीं कर सकता था, इसलिए अपनी सतर्कता को तीन गुना बढ़ाते हुए और सभी दिशाओं में देखते हुए, मैं ऊँची जगह की ओर आगे बढ़ा। तीस गज और, बीस गज और, पंद्रह गज।

तभी बाईं ओर लंतना की झाड़ियों से एक दहाड़ता हुआ बाघ का सिर उठा, उसके कान छलांग लगाने की तैयारी में पीछे की ओर झुके हुए थे, उसके जबड़े चौड़े खुले हुए थे जिससे उसके चमकीले नुकीले दांत दिखाई दे रहे थे। मेरी गोली उसके खुले हुए मुंह में जा लगी, और जानवर ने खुद को आगे की ओर उछाल दिया। ऊँची जगह पर पहुँचने के लिए अंधाधुंध भागते हुए, लंतना की झाड़ियों में मेरी आँखें लगभग बंद हो गईं, कांटों ने मेरे शरीर और कपड़ों को चीर दिया, जबकि मेरे पीछे अफरा-तफरी मच गई।

सिर का पिछला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका था, फिर भी वह बाघ मुझ पर हमला करने के लिए दौड़ा। जब मैंने बचे हुए पंद्रह गज की दूरी तय की और घूमकर देखा, तो वह मुझसे मात्र दो गज दूर था, उसकी खोपड़ी के आधे हिस्से में एक बड़ा सा लाल छेद था। भय से लगभग बेहाल होकर, मैंने उस जानवर पर दूसरी, तीसरी और चौथी गोली दागी। जैसे ही वह चकनाचूर होकर एक तरफ गिरा, मैं मलबे के एक टुकड़े पर कांपता हुआ, बीमार और बेहोश सा बैठा रहा।

दस मिनट बाद मैं किसी तरह उठ खड़ा हुआ, और अपने सामने पड़े खून से लथपथ ढेर से बचते हुए, किले की बची हुई दीवार का चक्कर पूरा करके उस पेड़ के पास लौट

आया जहाँ मैंने उन चार आदमियों को छोड़ा था।

चार गोलियों की आवाज़ और बाघ की गुर्राहट सुनकर उन्होंने मान लिया था कि मैं मर चुका हूँ, और वे आपस में बहस कर रहे थे कि क्या वे अपने पेड़ से नीचे उतरकर अपने गाँव की ओर जल्दी लौटें या बाकी रात उसकी शाखाओं में ही बिताएँ। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उन्होंने मुझे फिर से जीवित देखने की उम्मीद नहीं की थी। उन्हें इकट्ठा करते हुए, हम मुश्किल से एक फर्लांग ही चले थे कि मैक और बाकी दो आदमी हमसे मिले। जहाँ वह बैठा था, उसने भी मेरी चार गोलियों की आवाज़ सुनी थी और एक सच्चे दोस्त की तरह, मेरी मदद करने के लिए तुरंत आगे बढ़ा। लेकिन जब उसने मुझे लंतना की झाड़ियों से भागते हुए बुरी तरह घायल, खरोंचों से लथपथ और खून से सना हुआ देखा, तो उसका लाल चेहरा पीला पड़ गया और वह मुझे पकड़ने के लिए दौड़ा, यह सोचकर कि मुझ पर किसी ने हमला कर दिया है। वहीं बैठकर मैंने उसे सब कुछ बताया, और अपनी प्यारी लंतना से धुएँ के बादल उड़ाते हुए उसकी हार्दिक शुभकामनाएँ सुनीं। वास्तव में, जब मैं तंबाकू से भरे उस सुकून भरे पाइप का कश ले रहा था, जिसे मैंने दोबारा पीने की कभी उम्मीद नहीं की थी, तो मैं टिप्पणी करने से खुद को रोक नहीं सका, जब मैंने कुछ ही फीट की दूरी पर हत्या करने की लालसा से विकृत उस भयानक चेहरे को देखा।

उसी रात हमने बाघ को नीचे उतारा, गाड़ी पर लादा और चितलद्रूग कस्बे ले गए। जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, वह मादा निकली और निस्संदेह वही आदमखोर बाघिन थी जिसने लड़के की हत्या की थी। मेरे प्रति उसकी आक्रामकता ने भी इस निष्कर्ष को पुष्ट किया। अगली सुबह, जब हम जानवर की खाल उतार रहे थे, तभी अमिलदार हमसे मिलने आया, जो उस शैतान को देखना चाहता था जिसने होसदुर्गा में उसके रिश्तेदार, उस छोटी बच्ची की हत्या की थी। उसके अलावा केवल जिला वन अधिकारी और सैकड़ों स्थानीय निवासी भी वहाँ मौजूद थे। उस शाम काफी देर हो चुकी थी जब हम दो बाघों की खाल लेकर बैंगलोर के लिए रवाना हुए, जिन्होंने एक साथ शिकार करते हुए मवेशियों का वध करने वाले और आदमखोर बाघों का एक अनोखा और अभूतपूर्व संयोजन बनाया था।

संयोगवश, बाघिन की खाल उतारने पर भी उसके आदमखोर बनने का कोई कारण

पता नहीं चला। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, इस जिले का आदमखोर बाघों का लंबा इतिहास रहा है, जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा है, और मेरा मानना है कि यह बाघिन भी आदमखोरों की ही वंशज थी। इस व्याख्या से उसके साथी, उस बड़े नर बाघ के बारे में भी पता चलता है जिसे मैक ने गोली मारी थी, जो एक सामान्य पशु-चोर था और जिसने कभी मानव मांस नहीं खाया था। बाघिन शायद इस नर बाघ से केवल प्रजनन काल के दौरान ही मिली थी, जो नवंबर से जनवरी तक चलता है, और उसके साथ इतना समय नहीं बिताया था कि उसे अपनी आदमखोर आदतें सिखा सके। यदि उसने बच्चे पैदा किए होते, तो निस्संदेह वह अपने बच्चों को भी मानव मांस का स्वाद सिखा देती, ठीक वैसे ही जैसे उसे सिखाया गया था, और इस तरह उस जिले में आदमखोर बाघों की पीढ़ियों को आगे बढ़ा देती।

जिस तीसरे बाघ के अस्तित्व का हमें संदेह था, वह कभी सामने नहीं आया, क्योंकि जाने से पहले हमने सभी अधिकारियों और लोगों को यह संदेश दे दिया था कि यदि किसी तीसरे बाघ के बारे में कोई सूचना मिले तो हमें तुरंत सूचित करें। ऐसा इसलिए था क्योंकि हमें हमेशा यह आशंका थी कि तीसरा बाघ भी आदमखोर हो सकता है। लेकिन कई महीने बीत गए और हमें यह खुशखबरी मिली कि तोगी-मठ की चोटी पर उस बाघिन के मारे जाने के बाद पूरे जिले में आदमखोर बाघों की सभी घटनाएं बंद हो गई थीं।

फ्रेड टॉड और उसके बाकी पीड़ितों का बदला ले लिया गया था।

पनापत्ती का बागी हाथी

होगेनैकल जलप्रपात, और कावेरी नदी में आई बाढ़।

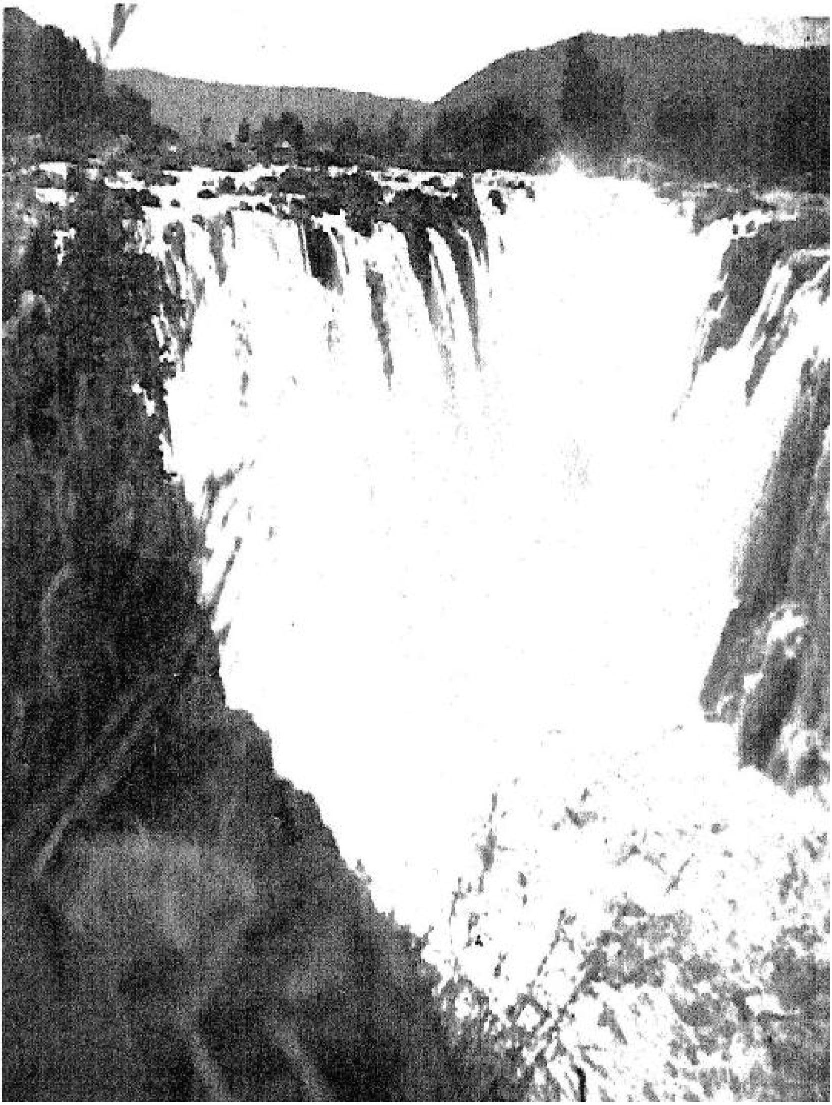

सूर्यास्त के समय शिकारियों का एक दल कावेरी नदी पार करने की तैयारी कर रहा है।

वह एक छोटा जानवर था, जैसा कि शरारती हाथियों के मामले में होता है, मोज़े पहने हुए लगभग साढ़े सात फुट लंबा। इसका अंदाज़ा उसके अगले पैर के निशानों से लगाया जा सकता था, जिनकी परिधि दोगुनी होने पर भारतीय हाथी की ऊँचाई से कुछ इंच का ही अंतर आता था। लेकिन कद में छोटा होने के बावजूद उसने साहस, ठंडे दिमाग से की गई चालाकी और मानव जाति के प्रति अटूट घृणा से इसकी भरपाई कर दी, जिसे उसने स्पष्ट रूप से अपना लक्ष्य बना लिया था, जब भी उसे मौका मिलता।

उसके एक दांत की लंबाई लगभग 18 इंच थी, जबकि दूसरा दांत टूटकर छोटा हो गया था। ऐसा कहा जाता था कि यह टूटा था कावेरी नदी के किनारे और सलेम जिले के वोडापत्ती वन क्षेत्र में रहने वाले झुंड के बड़े सरदार ने तोड़ा था। इसी क्षेत्र में पनापत्ती का पशुशाला स्थित था। यह नौजवान, बदमाश बनने से पहले, जाहिर तौर पर महत्वाकांक्षी और सामान्य से अधिक उत्साही था, क्योंकि उसने झुंड के सरदार की आंखों के सामने ही मादाओं पर अपना अवांछित ध्यान केंद्रित किया था। सरदार की गुस्से और आक्रोश भरी चेतावनी भरी चीख का उस पर कोई असर नहीं हुआ और जब उस हाथी ने उसे भगाने की कोशिश की तो नौजवान ने उससे लड़ाई करने का

प्रस्ताव रखा।

इसके परिणामस्वरूप एक भीषण संघर्ष हुआ, जिसमें वर्षों के अनुभव और अधिक वजन ने नेता के पक्ष में भारी जीत दर्ज की। अंततः युवा योद्धा बुरी तरह घायल होकर भाग निकला, उसके शरीर के किनारों पर बड़े नर के शक्तिशाली दांतों से गहरे घाव हो गए थे, जबकि उसका अपना एक दांत लड़ाई में टूटकर अलग हो गया था, जिससे उसे आने वाले कई दिनों तक दांत में तेज दर्द होता रहेगा।

वह उदास और चिड़चिड़ा होकर झुंड के आसपास भटकता रहता था, लेकिन कभी उसमें प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करता था। एक दिन, जब वह जंगल के बैलगाड़ी मार्ग पर चल रहा था, तो एक मोड़ पर उसका सामना अचानक एक भैंसगाड़ी से हुआ, जो ठेकेदार के लिए काटे गए बांसों से लदी हुई थी। उस क्षण उसे अंधाधुंध क्रोध आ गया, साथ ही किसी बात का बदला लेने की तीव्र इच्छा भी। वह पागलों की तरह बैलगाड़ी पर झपटा, और चालक किसी तरह कूदकर अपनी जान बचाकर भाग गया। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण भैंसें भारी भरकम बैलगाड़ी से जुती हुई थीं और हमले के सामने असहाय खड़ी रहीं। अब वह एक दुष्ट बन चुका था और उसने बैलगाड़ी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, फिर भैंसों पर हमला किया। उसने एक भैंस को उसके लंबे, घुमावदार सींग से पकड़ा और उसे रास्ते के किनारे बने टीले से नीचे फेंक दिया, जहाँ अगले दिन वह जड़ से उखड़ा हुआ सींग लेकर मिली। उसके अगले पैरों में से एक में गंभीर फ्रैक्चर हो गया था, और गिरने के बल से टूटी हुई, उजागर हड्डी नरम मिट्टी में धंस गई थी, जिससे जानवर के वजन ने उसे वहीं जकड़ लिया था। उसने अपने एक दांत से दूसरे भैंसे को घायल कर दिया था, लेकिन यह जानवर टूटे हुए गाड़ी के जुए को घसीटते हुए रास्ते पर भाग गया और इस तरह अपने कम भाग्यशाली साथी के भाग्य से बच गया।

इसके बाद हाथी की प्रतिष्ठा लगातार बिगड़ती चली गई, और नदी की ओर जाने वाले कई दुर्भाग्यशाली राहगीर या तो उसके विशाल पैरों के नीचे दबकर मर गए या फिर उस भयानक सूंड की चपेट में आकर जंगल के पेड़ के तने से टकराकर चूर-चूर हो गए।

इस जानवर से मेरा पहला सामना संयोगवश हुआ था। मैं सप्ताहांत में महसीर मछली

पकड़ने और मौका मिलने पर मगरमच्छ पकड़ने के इरादे से कावेरी नदी के किनारे बसे होगेनैकल गया था, जो पानापत्ती से लगभग चार मील दूर है। अफवाहों के अनुसार, उस समय वह मगरमच्छ उस इलाके में नहीं था, क्योंकि वह हाथियों के झुंड के पीछे-पीछे नदी पार करके कोयंबटूर की ओर चला गया था। हाथी चरागाह की तलाश में वहाँ भटक रहे थे।

दूसरे दिन शाम को, मछली पकड़ने में निराशाजनक सफलता मिलने के बाद, मैं चाय के लिए वन लॉज में लौटा था, तभी पास ही एक मोर की आवाज़ ने मुझे उसका पीछा करने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि मुझे उम्मीद थी कि वह रात के खाने के लिए एक स्वादिष्ट रोस्ट बनेगा। अपनी शॉटगन में नंबर 1 के दो गोले डालकर, मैं जंगल के उस पार तिरछे उस घाटी की ओर बढ़ा जहाँ मोर बोल रहा था। वहाँ पहुँचकर, मैं अपने शिकार को खोजने के प्रयास में सावधानी से आगे बढ़ा, और अंततः चिनार धारा के सूखे तल पर पहुँचा, जो कावेरी नदी की एक सहायक नदी है, और एक मील आगे जाकर उसमें मिल जाती है।

मेरे रबर के तले वाले बूट नरम रेत पर बिल्कुल भी आवाज़ नहीं कर रहे थे। मुझे सामने वाले किनारे पर झाड़ियों के पीछे कहीं मोर के पंखों की सरसराहट सुनाई दे रही थी, जब वह अपनी पूंछ संवार रहा था। मैं अभी नाले को दबे पांव पार ही कर रहा था कि एक तीखी, चिंघाड़ जैसी आवाज़ ने सन्नाटे को तोड़ दिया। उसके बाद पचास गज दूर झाड़ियों से निकलते हुए उस विशालकाय हाथी के भारी-भरकम शरीर की गड़गड़ाहट सुनाई दी और वह तेज़ी से मेरी ओर बढ़ा। हाथियों की अविश्वसनीय गति को देखते हुए भागने की कोशिश व्यर्थ थी और नरम रेत और आसपास के जंगल की कांटेदार झाड़ियों के कारण मेरे पास उससे आगे निकलने का कोई मौका नहीं था। इसलिए मैंने अपनी बंदूक की दोनों नालों से लगभग तीस गज की दूरी से उसकी मुड़ी हुई सूंड पर निशाना साधा और गोली चला दी।

धमाके की आवाज़ और गोलियों की चुभन ने उसे क्षण भर के लिए रोक दिया और जब वह क्रोध और चुनौती से चीख रहा था, मैं अपनी खाली बंदूक लिए उसी रास्ते से भाग निकला जिससे मैं आया था, इतनी तेज़ गति से जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वन बंगले पर पहुँचकर मैंने अपनी राइफल उठाई और वापस भागा।

लेकिन चिनार नदी के सुनसान रेगिस्तान में कुछ भी दिखाई नहीं दिया, और जब मैं उस जगह के पास पहुँचा तो देखा कि वह बदमाश दूसरी तरफ जंगल में चला गया था, जहाँ रात होने वाली थी इसलिए मैंने उसका पीछा करने की ज़हमत नहीं उठाई। अगले दिन मुझे काम के सिलसिले में बैंगलोर लौटना था और मेरे पास वहाँ रुकने का कोई रास्ता नहीं था, इसलिए मैंने पहले दौर का सारा श्रेय पानापत्ती के उस बदमाश को ही दे दिया।

अपनी कुख्याति के कारण इस हाथी को सरकार द्वारा अवांछित या 'बदमाश' हाथी घोषित कर दिया गया था। वन विभाग ने आधिकारिक सूचना प्रकाशित की थी, जिसमें मुद्रित माध्यमों और स्थानीय स्तर पर ढोल बजाकर (जिसे आधिकारिक रूप से 'टॉम-टॉम' कहा जाता है) हाथी को मारने पर सरकार द्वारा 34 पाउंड (लगभग 300 रुपये) का इनाम घोषित किया गया था। तब इलाके के एक भारतीय सज्जन ने बड़ी बहादुरी से हाथी को मारने और इनाम पाने का निश्चय किया। बाद में मैंने जो जानकारी जुटाई, उसके अनुसार उनके प्रयास का विवरण इस प्रकार है।

एक जर्जर हालत में मौजूद .500 डबल बैरल वाली ब्लैक-पाउडर एक्सप्रेस राइफल से लैस होकर वह पानापत्ती पहुंचा और उसे बताया गया कि हाथी पास के वोडापत्ती वन ब्लॉक में घूम रहा है। वही चिनार नदी, जिसके तल पर होगेनैकल के पास मैं उस विशालकाय हाथी के पैरों तले लगभग मरते-मरते बचा था, पानापत्ती से होकर खूबसूरती से मुड़ती है और जंगल से होकर बहती है, जिसका उत्तर-पश्चिमी किनारा वोडापत्ती रिजर्व की सीमा बनाता है, और उसका विपरीत किनारा पेन्नाग्राम ब्लॉक की सीमा बनाता है।

जिस भारतीय सज्जन की मैं बात कर रहा हूँ, उन्होंने दो दिन तक उस हाथी से मिलने की असफल कोशिश की, इसलिए तीसरे दिन की रात उन्होंने पेन्नाग्राम ब्लॉक में लगभग दो मील दूर स्थित अपने तंबू में बिताई। यह तंबू चिनार नदी और वोडापत्ती पर्वतमाला से काफी दूर था, जहाँ से हाथी कभी बाहर नहीं निकलता था। लेकिन एहतियात के तौर पर उन्होंने अपने साथियों से अपने दोनों तंबुओं के चारों ओर आग का घेरा बनवाया और उन्हें निर्देश दिया गया कि रात की पहरेदारी के दौरान आग को जलाने और हवा देने के लिए पर्याप्त मात्रा में लकड़ी बचाकर रखें।

सब कुछ शांत होने पर वह गहरी नींद में सो गया; जाहिर है, उसके साथी भी सो गए। सुबह तड़के वह दुष्ट हाथी इस शांत दृश्य पर पहुंचा। आग शायद धीमी पड़ चुकी थी, बस अंगारे ही सुलग रहे थे। आम तौर पर कोई हाथी या कोई अन्य जानवर आग के पास नहीं जाता। लेकिन सफेद तंबू को देखकर और उसे नष्ट करने की तीव्र इच्छा ने उस जानवर को इतना उत्तेजित कर दिया कि वह सावधानी से उस जगह से गुजरा जहां आग नहीं थी और गुस्से में चीखते हुए तंबू पर टूट पड़ा।

शिविर में मौजूद लोग शोर-शराबे से जाग उठे और जब उन्हें एहसास हुआ कि कोई राक्षस उन पर टूट पड़ा है, तो वे इधर-उधर भागने लगे। सफेद तंबू में रहने वाले उस बदकिस्मत व्यक्ति को अपने पुराने एक्सप्रेस का इस्तेमाल करने का मौका ही नहीं मिला। तंबू उसके सिर के पास गिर पड़ा और हाथी के भारी-भरकम शरीर के नीचे कुचलकर चूर-चूर हो गया। फिर हाथी ने उसे नोंच-चूर कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इसी दौरान हाथी की नज़र उस शिकारी पर पड़ी, जो उस समय ज़िंदा था या मरा हुआ, यह कोई नहीं जानता। अपनी भयानक सूंड से उसे जकड़कर हाथी उसे विजय के साथ पास ही से गुज़रने वाली जंगल की सीमा रेखा के खुले मैदान में ले गया। वहाँ उसने उसे अपने विशाल पैरों से तब तक रगड़ा जब तक कि मानव शरीर का केवल खून से लथपथ मांस और कुचली हुई हड्डियों का एक गूदेदार ढेर ही नहीं बचा, जो जंगल की सीमा रेखा की रेत से मिला हुआ था। अंत में, खून की गंध पसंद न आने पर हाथी ने उस खून से लथपथ ढेर को दूर फेंक दिया और वोडापत्ती ब्लॉक के दुर्गों में लौट गया।

इस घटना के परिणामस्वरूप, सरकारी इनाम दोगुना होकर 1000 रुपये हो गया, और मैंने हाथी के खिलाफ अपना दूसरा प्रयास शुरू करने का निश्चय किया। पनापत्ती पहुँचकर, मैंने हाल ही में हुई त्रासदी के स्थल का दौरा किया, जहाँ मैं उस रक्तपिपासु हाथी की धृष्टता पर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका, जिसने वास्तव में आग के घेरे को पार कर लिया था। पास ही वह स्थान भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था जहाँ उसने अपने शिकार को ज़मीन पर रगड़ा था, हालाँकि उसके अवशेषों को गिद्धों ने बहुत पहले ही नष्ट कर दिया था। पनापत्ती लौटकर, मैंने पास के गौशाला के एक पशुपालक की मदद ली, जो एक कुशल निशानेबाज भी था, ताकि वह मुझे जानवर को खोजने में मदद कर सके। चिनार नदी के किनारे रेत पर बहुत सारे पदचिह्न थे, लेकिन समस्या यह थी कि हाल ही में बने पदचिह्न को ढूँढ़कर उसका पीछा कैसे किया

जाए। ऐसा करना असंभव था, क्योंकि हाथी स्पष्ट रूप से उस इलाके से भाग गया था, और या तो वोडापत्ती ब्लॉक के भीतर कहीं था, या फिर निचली पहाड़ियों को पार करके मुख्य कावेरी नदी की ओर चला गया था, जो कि जैसा कि मैंने बताया है, लगभग चार मील दूर बहती है।

वोडापत्ती नदी का किनारा, चिनार नदी के किनारे कुछ मील तक, एक प्रकार की लंबी फूलों वाली घास से ढका हुआ था। इस घास की जड़ें मिट्टी की नमी से पोषित होती थीं और कुछ जगहों पर यह दस फीट तक ऊंची हो जाती थी। इसके ऊपर सुंदर फूलों के गुच्छे होते थे जो गन्ने के फूलों के गुच्छों से मिलते-जुलते थे, लेकिन लंबाई में बड़े और बनावट में कहीं अधिक महीन थे। सुबह-सुबह, इन फूलों के गुच्छों पर रात भर जमा हुई ओस की बूंदें उगते सूरज की किरणों में चमकती थीं, जिससे सुंदर पत्तों को एक जादुई रूप मिलता था और सुंदरता और शांति का ऐसा नजारा दिखाई देता था जो घास के मैदान में प्रवेश करने पर मंडरा रहे खतरे को पूरी तरह से झुठला देता था। तने इतने ऊंचे और घने हो गए थे कि एक गज से ज्यादा आगे देखना मुश्किल था, और घास में चलने के लिए एक हाथ से तनों को हटाना पड़ता था और दूसरे हाथ में राइफल पकड़नी पड़ती थी। हाथियों का एक झुंड शायद अंदर छिपा हो सकता था, और जब तक वे लगभग छूने की दूरी पर न आ जाएं, तब तक उनका कुछ भी दिखाई नहीं देता था। उस बदमाश द्वारा अपनी पिछली यात्राओं में बनाए गए पदचिह्न कुचले और मुड़े हुए तनों से चिह्नित थे, और ये भी तेजी से अपनी सीधी स्थिति में वापस आ रहे थे। घास की पट्टी की चौड़ाई 100 से 200 गज तक भिन्न थी।

इस बिंदु पर पहाड़ियाँ चिनार नदी से सटी हुई थीं, और जंगल विशाल बांसों से भरा हुआ था, जिन्हें पार करना लगभग उतना ही खतरनाक था जितना कि फूलों वाली घास को पार करना। गिरे हुए बांस हर जगह बहुतायत में पड़े थे, उनके नुकीले सिरे आगे बढ़ने और पीछे हटने दोनों में बाधा डाल रहे थे। पंखनुमा पत्तियों से ढकी लंबी शाखाएँ ऊपर की ओर सुंदर ढंग से झुकी हुई थीं, जंगल की हवाओं के साथ झुकती और चरमराती हुई। हमने हाथी की तलाश में पूरे चार दिन बिताए, घास के मैदान और बांसों को मेहनत से पार किया, पहाड़ियों की श्रृंखला को पार किया और उनकी ढलानों से नीचे उतरे, जब तक कि कावेरी नदी का कलकल करता पानी हमारे पैरों के पास से बहता हुआ होगेनैकल के झरनों और जलप्रपातों की ओर, लगभग 35 मील

नीचे स्थित विशाल मेट्टूर बांध की ओर, फिर इरोड के पूर्वी मैदान और त्रिचिनोपोली शहर की ओर, और अंत में दूर बंगाल की खाड़ी की ओर तेज़ी से नहीं बढ़ गया। इस पूरे समय में, हमें उस दुष्ट हाथी का कोई ताजा निशान नहीं मिला। पाँचवें दिन की दोपहर को मैं और मेरा मार्गदर्शक एक बार फिर कावेरी नदी के किनारे थे। मैंने अपने लक्ष्य का पता लगाने की उम्मीद में नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर जाने का फैसला किया। हम बड़ी मुश्किल से लगभग तीन मील आगे बढ़े, नदी के किनारे उगे ऊँचे 'मुठी' पेड़ों की विशाल जड़ों को पार करते हुए, जो पानी में उतरकर अपना पेट भरती थीं और जिनके बीच-बीच में ऊँची-ऊँची फूलों वाली घास उगी थी। तभी हमें एक हाथी के ताज़े पदचिह्न दिखाई दिए, जो स्पष्ट रूप से उसी सुबह कोयंबटूर जिले के दूसरे किनारे से नदी पार करके आया था। मोटे तौर पर नापने पर पता चला कि वे पदचिह्न उस हाथी के पदचिह्नों से मेल खाते थे।

अब पीछा करना आसान हो गया था, क्योंकि हमारे पास अनुसरण करने के लिए एक निश्चित निशान था, और हाथी के पदचिह्न और भारी शरीर ने घास, बांस और झाड़ियों के बीच एक स्पष्ट रास्ता बना दिया था।

पदचिह्न एक छोटी पहाड़ी की ओर बढ़ते हुए आगे बढ़े, जिसके शिखर के पास हमें गोबर का ढेर मिला। यद्यपि यह काफी ताजा था, फिर भी छूने पर उसमें वह गर्माहट नहीं थी जिससे पता चलता कि इसे अभी हाल ही में निकाला गया था। इसलिए हम आगे बढ़ते हुए एक गहरी घाटी में उतर गए। यहाँ हमें और भी ताजा गोबर मिला, लेकिन छूने पर गर्म नहीं था, जिससे पता चला कि हमारा लक्ष्य अभी कुछ दूरी पर ही था। हम पास की ढलान पर चढ़े और दो और पहाड़ियों को पार किया, और फिर देखा कि पदचिह्न अचानक मुड़कर कावेरी नदी की दिशा में वापस चले गए।

हमें डर सताने लगा कि कहीं वह जानवर कावेरी नदी पार करके हमसे बच न निकला हो। हम तेज़ी से आगे बढ़ते हुए गोबर के एक और ढेर के पास पहुँचे, जिस पर पेशाब के निशान थे जो ज़मीन में समा गए थे। लेकिन इस बार रेत में झाग के बारीक निशान दिखाई दे रहे थे और गोबर छूने पर गर्म था। आखिरकार हमारा शिकार ज़्यादा दूर नहीं था, और न ही कावेरी नदी! हमारी आगे की यात्रा लगभग एक दौड़ में बदल गई ताकि हम हाथी के साथ ही नदी तक पहुँच सकें, और उसके राइफल की रेंज से बाहर

निकलने से पहले ही पहुँच जाएँ। गिरी हुई शाखाओं से, जिन पर ताज़ा रस बह रहा था, हम देख सकते थे कि हाथी नदी के पास आते हुए आराम से चर रहा था।

अंत में, ज़मीन में एक तेज़ ढलान और हल्की सी आवाज़ ने हमें बताया कि हम नदी के किनारे के लगभग पास पहुँच गए हैं, और जल्द ही पेड़ों के बीच से पानी की चमक ने हमें पुष्टि कर दी कि हम वहाँ पहुँच गए हैं। चुपचाप और सावधानी से हम आगे बढ़े। रेत नरम हो गई। तभी हमने देखा कि हाथी, जैसा कि हमें डर था, नदी पार करने के बजाय अपना इरादा बदल चुका था और नदी के विपरीत दिशा में घास के किनारे पर चला गया था। यहाँ यह स्पष्ट था कि उसके पदचिह्न अभी हाल ही के थे, क्योंकि घास की कोमल पत्तियाँ नम कीचड़ में मजबूती से धँसी हुई थीं, जिससे हवा के बुलबुले हमारी आँखों के सामने फूट रहे थे। हम लगभग 150 गज और आगे बढ़े थे कि हमने देखा कि आगे एक छोटी नदी बह रही है, और जैसे ही हम उसके पास पहुँचे, हमें पानी के छपछपाने की आवाज़ और हाथी की सूंड से हवा निकलने की खोखली आवाज़ सुनाई दी। हमारा शिकार नहा रहा था।

सौभाग्य से, जो हल्की हवा चल रही थी, वह हमारी दिशा में थी, और जैसे ही हमने बीच में मौजूद घास की टहनियों और तनों को हटाया, हमें पानी में एक हाथी लेटा हुआ दिखाई दिया, जिसका चेहरा हमारी तरफ नहीं था। इस स्थिति में, यह बताना असंभव था कि वह हाथी हमारा ही था या नदी के दोनों किनारों पर रहने वाले कई झुंडों में से भटककर आया हुआ हाथी। इसलिए हम उसे देखने के लिए बैठ गए। लगभग पाँच मिनट तक फुफकारने, फुफकारने और पानी उछालने के बाद, वह अचानक उठा और आराम से नाले के पार चलने लगा। इस पूरे समय में उसने अपना सिर नहीं दिखाया था, और न ही हम यह देख पाए थे कि उसके दो दांत थे या एक तरफ का टूटा हुआ हिस्सा। अब स्थिति में तुरंत निर्णय लेना आवश्यक था, क्योंकि एक बार हाथी नाले के दूसरी तरफ के घने हरे-भरे किनारे तक पहुँच जाता, तो वह नज़र से ओझल हो जाता। इसलिए मैंने जल्दी से दो बार अपने अंगूठे और उंगली को चटकाया। वह आवाज़, चाहे कितनी भी धीमी रही हो, हाथी की तेज़ सुनने की शक्ति में पहुँच गई। पानी की एक तेज़ आवाज़ और भंवर के साथ वह घूम गया, और हमारे सामने 'पनापत्ती का बदमाश' खड़ा था, उसके टूटे हुए बाएं दांत का ठूंठ साफ दिखाई दे रहा था, जबकि दाहिना दांत, छोटा होने के बावजूद, क्रूरता से ऊपर की ओर मुड़ा

हुआ था। एक पल में उसकी छोटी-छोटी आँखों ने हमें ढूंढ लिया, उसकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और सिर ऊपर उठाकर और अपनी छोटी पूंछ को बेतुके ढंग से बाहर निकालकर, जीत और नफरत से चीखते हुए, वह बीच के पानी को पार करते हुए, एक और वासनापूर्ण हत्या के लिए दौड़ पड़ा।

मेरी .405 राइफल से एक ही गोली चली, भारी ठोस गोली सीधे अपने लक्ष्य पर जा लगी, मुड़ी हुई सूंड के नीचे से होते हुए गले में जा लगी। जानवर वहीं रुक गया, कटी हुई गर्दन की नस से खून की एक धार फूट पड़ी। भागने की कोशिश में वह एक तरफ मुड़ा, तभी दो और गोलियां लगीं, दोनों ही महत्वपूर्ण अंगों पर, एक कनपटी के कोमल गड्ढे में और दूसरी उसके बड़े कान के पीछे, जब वह आगे की ओर फड़फड़ाया।

वह विशालकाय शरीर स्थिर खड़ा रहा, फिर भयंकर बुखार से व्याकुल होकर कांपने लगा, और अंत में किसी कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह खाड़ी के उथले पानी में गिर पड़ा, जो तेजी से खून से लाल हो गया, क्योंकि दोपहर ढलते सूरज की किरणें कोयंबटूर तट पर स्थित माउंट पोनाची मलाई की विशाल चोटी के नीचे गायब हो गईं, जिससे नारंगी आकाश में लाल रंग की लकीरें फैल गईं।

सेगुर का नरभक्षी

दक्षिण भारत में प्रसिद्ध नीलगिरी पर्वतमाला (नीलगिरी शब्द का शाब्दिक अर्थ 'नीली पर्वतमाला' है) की उत्तरपूर्वी ढलानों की तलहटी में सेगुर गांव बसा हुआ है। इस खूबसूरत पर्वतमाला के शिखर पर, समुद्र तल से लगभग 7,506 फीट की ऊंचाई पर, ऊटाकामंड का सुंदर स्वास्थ्य रिसॉर्ट स्थित है। 'पहाड़ी स्टेशनों की रानी' के नाम से मशहूर यह स्थान भारत के कोने-कोने से आने वाले पर्यटकों का मुख्य आकर्षण है। ऊटाकामंड की अपनी एक अलग ही खूबसूरती है, जहां की जलवायु सभी प्रकार के अंग्रेजी फूलों और सब्जियों के उत्तम विकास के लिए अनुकूल है। आस-पास के बागानों से स्टेशन तक फैली ऊंचे नीलगिरी के पेड़ों की सर्वव्यापी सुगंध, देवदार और चीड़ के पेड़ों की सुगंध के साथ मिलकर, ऊटी की यादों को अविस्मरणीय बना देती है, और इसकी ठंडी जलवायु आगंतुकों को नीचे स्थित उमस भरे मैदानी इलाकों की गर्मी और थका देने वाले तापमान से एक सुखद बदलाव प्रदान करती है।

ऊटाकामंड से एक खड़ी ढलान वाली सड़क निकलती है, जिसकी लंबाई 12 मील है। यह सड़क सुंदर, घुमावदार पहाड़ियों से होकर गुजरती है, जहाँ कभी अंग्रेज निवासियों का शौक लोमड़ी का शिकार करना हुआ करता था (अब यहाँ लोमड़ी की जगह सियार दिखाई देते हैं)। सड़क सेगुर तक तेज़ी से नीचे उतरती है, जो पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है और जहाँ घने उष्णकटिबंधीय वन फैले हुए हैं। कुछ जगहों पर यह सड़क इतनी खड़ी है कि लगभग अनुपयोगी है, केवल उच्च शक्ति वाली मोटर कारों के लिए ही उपयुक्त है। सेगुर में सड़क दो भागों में बँट जाती है। एक शाखा उत्तर-

पश्चिम की ओर घने जंगल से होकर, महवनहल्ला और मासिनीगुडी गाँव से गुजरती हुई, तिप्पकाडु की वन चौकी पर मुख्य सड़क से मिलती है, जो बैंगलोर और मैसूर शहरों को ऊटाकामंड से जोड़ती है। दूसरी शाखा पूर्व की ओर, उतने ही घने जंगल से होकर, नीले पहाड़ों की तलहटी के साथ-साथ, नौ मील दूर स्थित अनाइकुट्टी के वन बंगले तक जाती है। इस क्षेत्र में दो बारहमासी नदियाँ बहती हैं: सेगुर नदी और अनाइकुट्टी नदी। दोनों ही नीलगिरी पर्वतमाला से चांदी जैसे जलप्रपातों के रूप में नीचे उतरती हैं। यहाँ इनका जल विशाल उष्णकटिबंधीय जंगलों से होकर बहता है और लगभग पंद्रह मील दूर स्थित मोयार नदी में मिल जाता है। मोयार नदी, जिसे 'मैसूर खाई' के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर में मैसूर राज्य, उत्तर-पूर्व में कोयंबटूर जिले और दक्षिण में नीलगिरी पर्वतमाला और उसकी तलहटी के बीच सीमा बनाती है। कोयंबटूर और नीलगिरी दोनों मद्रास प्रांत का हिस्सा हैं। पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में मालाबार-वायनाद के सदाबहार वन फैले हुए हैं।

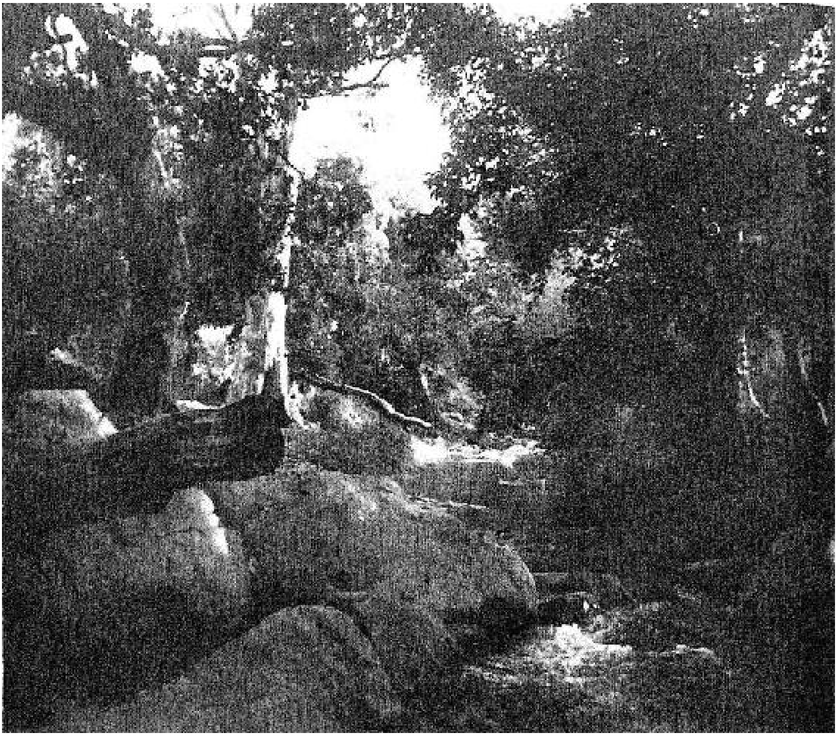

अनाइकुट्टी नदी का कलकल करता जल

ऊपर बताए गए सभी क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित हैं, मैसूर, मालाबार और नीलगिरी की ओर वन्यजीव अभ्यारण्य हैं, और यहाँ बड़ी संख्या में जंगली हाथी, बाइसन, बाघ, तेंदुआ, सांभर, चित्तीदार हिरण और अन्य जानवर पाए जाते हैं। अनाइकुट्टी का वन-बंगला एक पहाड़ी पर बना है, जिसके किनारे से अनाइकुट्टी नदी का उफान निकलता है। गर्मियों में यह स्थान मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों से भरा होने के कारण अस्वस्थ होता है और यहाँ से कई घातक 'काले पानी' के बुखार के मामले सामने आते हैं। सर्दियों में यह स्वर्ग जैसा लगता है। सुबह ताज़ी और धूप से भरी होती है, जो जंगल में लंबी पैदल यात्रा के लिए आदर्श है। दोपहर हल्की ठंडी होती है। शामें सर्द होती हैं, और रात होते ही पहाड़ों की चोटियों से बर्फीली ठंडी हवा चलने लगती है, जो आसपास के जंगलों से उठने वाली गर्म हवा की जगह ले लेती है। रातें इतनी कड़ाके की ठंड से भरी होती हैं कि व्यक्ति को बंगले में ही रहना पड़ता है, जिसके सभी कमरों में चिमनी की व्यवस्था की गई है। यहां क्रिसमस का साक्षात माहौल छाया रहता है, जंगल की लकड़ियों की धधकती आग के सामने, लोग 'भयानक हिममानव' की ताज़ा कहानियों पर चर्चा करते हैं, या भूत-प्रेतों की रोंगटे खड़े कर देने वाली कहानियाँ सुनाते हैं। इस बंगले के परिसर में भी हाथी, बाघ और तेंदुआ घूमते रहते हैं, उनकी चीखें, दहाड़ें और गुर्राहटें नींद में डूबे साथी को, जो दोहरी चादर ओढ़े आराम से लेटा है और जिसके बिस्तर के पास आग की रोशनी है, यह एहसास दिलाती हैं कि वह अभी भी एक उष्णकटिबंधीय जंगल के बीच में है।

ये जंगल मेरी पसंदीदा जगह हैं, और इनमें मुझे कई छोटे-छोटे रोमांचक अनुभव हुए हैं जो इतने वर्षों बाद भी मुझे याद हैं। उनमें से एक का जिक्र करूं तो, भारत में तीन से तीस तक की संख्या में झुंड बनाकर शिकार करने वाले जंगली कुत्ते कभी-कभी मैसूर और कोयंबटूर की सीमाओं से इन जंगलों में घुस आते हैं, जहां उनकी संख्या बहुत अधिक है, खासकर कोयंबटूर में। ये झुंड सभी प्रकार के हिरणों, विशेष रूप से सांभर और चित्तीदार हिरणों के लिए बहुत घातक होते हैं, जिनका वे बेरहमी से शिकार करते हैं और जिंदा रहते हुए ही उनके टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। कई बार, इन और अन्य जंगलों में, मैंने सांभर को इन कुत्तों द्वारा पीछा करते हुए देखा है। उनका तरीका यह है

कि कुछ कुत्ते जानवर का पीछा करते हैं, जबकि अन्य कुत्ते किनारे से निकलकर अपने शिकार से आगे दौड़ते हैं और जैसे ही वह उनके पास से गुजरता है, उस पर घात लगाकर हमला करते हैं। शिकार करते समय, वे बहुत तेज आवाज में लगातार भौंकते हैं, जो कुत्ते की आवाज की बजाय पक्षी की सीटी जैसी लगती है। इन हमलावरों के हमले के बाद शिकार ज़मीन पर गिर पड़ता है। ये शिकारी उसकी आँखें नोच लेते हैं, उसके पेट को चीर देते हैं, उसकी टांगें तोड़ देते हैं या उसे नपुंसक बना देते हैं। एक बार मैंने एक सांभर को जंगली कुत्तों से पीछा छुड़ाते हुए देखा, जो खुद को बचाने के लिए पानी के एक कुंड में कूद गया। उसके पेट को चीर दिया गया था और उसकी आँतें बीस फीट तक उसके पीछे घिसटती रहीं। सांभर असाधारण रूप से सहनशील होते हैं, और कभी-कभी तो ये कुत्ते उन्हें मारने से पहले सचमुच जिंदा ही खा जाते हैं।

एक शाम, लगभग 5 बजे, मैं बंगले से एक मील दूर था और ज़मीन पर उगने वाले एक अनोखे प्रकार के ऑर्किड को देख रहा था, जो छोटे-छोटे तारे के आकार के फूलों के गुच्छे के रूप में ज़मीन से निकल रहा था। अचानक मुझे कई तरह की आवाज़ें सुनाई दीं, जिनका स्रोत मैं पहले समझ नहीं पाया। चीखें, भौंकना और लंबी-लंबी आवाज़ें थीं, जिनके बीच-बीच में गुर्राहट और खुरों की आवाज़ें आ रही थीं, जो मुझे हैरान कर रही थीं। फिर मुझे पता चला कि ये जंगली कुत्तों की आवाज़ थी, जो शायद किसी सूअर या भालू पर हमला कर रहे थे। मैंने अपनी राइफल उठाई और शोर की दिशा में दौड़ पड़ा। शायद एक फर्लांग ही चला होगा कि कोने से एक बाघिन निकली, जिसके चारों ओर आधा दर्जन जंगली कुत्ते थे।

एक पेड़ के तने के पीछे छिपकर, मैं उस अनोखे दृश्य को देख रहा था। कुत्ते बाघिन के चारों ओर फैल गए थे, जो भयंकर रूप से गुर्रा रही थी। बीच-बीच में कोई कुत्ता पीछे से आकर उसे काटने की कोशिश करता। फिर वह उस छोटे से हमलावर को चीर-फाड़ करने की कोशिश करती, तभी कुछ और कुत्ते दूसरी दिशा से उस पर टूट पड़ते। इस तरह वह लगातार लड़ती रही, और मैं देख सकता था कि वह बहुत थक चुकी थी।

इस पूरे समय कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से शोर मचा रहे थे, जिसका कारण मुझे जल्द ही पता चल गया, जब लड़ाई में थोड़ी देर की शांति के दौरान मैंने मुख्य झुंड की सीटी जैसी आवाज़ सुनी, जो अपने अग्रिम दल की सहायता के लिए सरपट दौड़ रहा था। बाघिन

ने भी वह आवाज़ सुनी होगी, क्योंकि अचानक और नए गुस्से में आकर उसने दो कुत्तों पर हमला कर दिया, जिनमें से एक की पीठ पर उसने अपने पंजे से ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी टूटी हुई टहनी की तरह चटक गई। दूसरा किसी तरह खतरे से बच निकला। बाघिन ने अपने क्षणिक लाभ का फायदा उठाते हुए छलांग लगाई और तुरंत ही बाकी पाँच कुत्ते उसके पीछे-पीछे भाग गए। वे अभी नज़रों से ओझल ही हुए थे कि मुख्य झुंड, जिसमें मैंने तेईस कुत्ते गिने, मेरे सामने से सरपट दौड़ते हुए निकल गए, मानो मेरी उपस्थिति में कोई दिलचस्पी न दिखा रहे हों। जल्द ही पीछा करने की आवाज़ें शांत हो गईं, और वहाँ केवल एक मरा हुआ कुत्ता ही रह गया।

उस घटना के दौरान मैं इतना मग्न था और कुत्तों के साहस की प्रशंसा में इतना खो गया था कि न तो बाघिन पर और न ही उसके हमलावरों पर गोली चला पाया। अगली सुबह मैंने घटना का पता लगाने के लिए कुछ जासूस भेजे। वे दोपहर के आसपास लौटे और बाघ की खाल के कुछ टुकड़े लेकर आए। उन्होंने बताया कि कुत्तों ने अंततः लगभग पाँच मील दूर अपने थके हुए शिकार को घेर लिया था और बाघिन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे। जहाँ तक उन्हें पता चला, अंतिम लड़ाई में पाँच कुत्ते मारे गए थे, जिसके बाद विजयी कुत्तों ने बाघिन को खा लिया था, और यहाँ तक कि अपने मरे हुए साथियों के भी बड़े हिस्से खा लिए थे। इन क्षेत्रों में तीन अलग-अलग जनजातियाँ निवास करती हैं। इनमें बडागा जनजाति है, जो मैसूर राज्य से आए प्राचीन आक्रमणकारियों के वंशज हैं, जो स्वयं उत्तर से आए मोहम्मदियों से भागकर आए थे। ये बडागा अब समृद्ध हो गए हैं; उनके पास ज़मीनें, मवेशियों के विशाल झुंड और अर्ध-जंगली भैंसें हैं, जिनके सींग बहुत लंबे और घुमावदार होते हैं। इसके बाद आते हैं केशव जनजाति के लोग, जो संख्या में सबसे अधिक हैं लेकिन स्वभाव से सबसे आलसी हैं। ये लोग बडागा जनजाति के अधीन चरवाहों और किसानों के रूप में काम करते हैं। अंत में आते हैं करुम्बा जनजाति के लोग, जिनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है। ये इस भूमि के मूल निवासी हैं और अब पूरी तरह से वनवासी हैं; इनका जीवन जंगली शहद, जड़ों, शिकार और छोटे जानवरों और पक्षियों को फंसाकर व्यतीत होता है। ये करुम्बा जनजाति के लोग उत्कृष्ट शिकारी होते हैं और कोयंबटूर जिले के शोलागा और सलेम के पुजारियों की तरह, प्रकृति के सच्चे बच्चे हैं, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक जंगलों में ही रहते हैं। पाठक को उस क्षेत्र का थोड़ा सा परिचय देने के बाद, जहां यह

साहसिक घटना घटी, मैं अब 'सेगुर के आदमखोर' की कहानी सुनाने में और समय नहीं लगाऊंगा।

बताया जाता है कि यह बाघ मूल रूप से मालाबार-वायनाद जिले के साइलेंट वैली वन ब्लॉक के जंगलों से आया था, जो नीलगिरी पर्वतमाला के बिल्कुल विपरीत या दक्षिण-पश्चिमी हिस्से के नीचे स्थित है। यह क्षेत्र हाथियों से भरा हुआ है, जिनमें से यहाँ सबसे अधिक हिंसक बाघ पाए जाते हैं, और यहाँ बाइसन भी बहुतायत में हैं। आमतौर पर यहाँ बाघों की संख्या कम ही होती है। साइलेंट वैली में कुछ बाघों ने इंसानों को मारा था, लेकिन फिर यह सिलसिला पूरी तरह से बंद हो गया। इसके बाद यह सिलसिला गुडालूर (टिप्पकाडु से लगभग बीस मील दूर), मासिनीगुडी और अंत में सेगुर और अनाइकुट्टी के बीच के सभी क्षेत्रों में फिर से शुरू हो गया। बाघ अपने मूल स्थान से इतनी दूर कैसे और क्यों आया, और ऐसा करने में उसने नीलगिरी पर्वतमाला के अधिकांश हिस्से का चक्कर कैसे लगाया, यह कोई नहीं जानता।

ग्रीष्म ऋतु का मध्य था और बाघ विशेष रूप से सक्रिय था, उसने सेगुर में और एक सप्ताह के भीतर अनाइकुट्टी में शिकार किया था, जब मैं वहाँ पहुँचा। अंतिम शिकार एक केशव चरवाहा था, जो अनाइकुट्टी से लगभग दो मील दूर नदी के निचले हिस्से में, मोयार की ओर बहने वाली नदी के किनारे, अपने अर्ध-जंगली भैंसों के झुंड की देखभाल कर रहा था। इस घटना में, आदमखोर बाघ ने आसपास चर रही भैंसों की बिल्कुल अनदेखी करते हुए उस व्यक्ति का पीछा किया और उस पर हमला कर दिया। उसने उसे मार डाला था और शायद उसे ले जा रहा था, तभी भैंसों को उसकी उपस्थिति का आभास हो गया।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, ये जानवर केवल अर्ध-पालतू हैं और किसी अजनबी के लिए बेहद खतरनाक होते हैं, खासकर अगर वह यूरोपीय लोगों की तरह असामान्य पोशाक में हो, क्योंकि ऐसे में वे अक्सर देखते ही हमला कर देते हैं। बाघ को देखकर, उन्होंने उस पर सामूहिक रूप से हमला किया और उसे भगाने में सफल रहे, वहीं मृत व्यक्ति को छोड़ दिया। उस रात न तो भैंसें और न ही चरवाहा बाड़े में लौटे, इसलिए अगली सुबह जल्दी ही एक खोज दल उनकी अनुपस्थिति का कारण पता लगाने के लिए निकला। उन्हें मृत चरवाहे को ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा, जो शांति से चर

रही भैंसों के झुंड से घिरा हुआ था, जिसने बाघ को अपने शिकार तक वापस जाने से रोक दिया था। शव की जांच, बाघ के पदचिह्नों और हमला करने वाली भैंसों के खुरों के निशानों से घटनाक्रम का पता चला, जैसा कि मैंने बताया है।

एक सप्ताह पहले सेगुर में जो शिकार हुआ था, वह एक महिला का था, जो अपने परिवार के लिए पानी लाने के लिए पानी का घड़ा लेकर सेगुर नदी गई थी। इस मामले में बाघ अपने शिकार को ले जाने में सफल रहा था। घटना के एकमात्र सबूत टूटे हुए पानी के घड़े, नदी के किनारे की नरम मिट्टी में बाघ के पैरों के निशान, खून की कुछ बूँदें, फटी हुई साड़ी और झाड़ियों में उलझे हुए कुछ बाल थे, जो बाघ के शिकार को ले जाते समय वहीं फंस गए थे।

मैंने दोनों स्थानों का दौरा किया और सेगुर में नदी किनारे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे पगों का सावधानीपूर्वक माप और परीक्षण करके यह निर्धारित किया कि बाघ एक छोटे आकार का नर था, जिसकी उम्र वयस्क से काफी कम थी। रिपोर्टों के अनुसार, बाघ सेगुर और अनाइकुट्टी के बीच दस मील लंबी वन सड़क पर अक्सर आता-जाता था, और उसके पगों को इस रास्ते पर, विशेष रूप से दोनों स्थानों के आसपास देखा गया था। इसलिए, प्रारंभिक चरण के रूप में, मैंने इस सड़क के किनारे अलग-अलग चयनित स्थानों पर बैठने का निर्णय लिया, और पाठक को विवरणों से ऊबाए बिना, इस योजना को अमल में लाया। इस प्रकार मैंने पूरा एक सप्ताह सेगुर और अनाइकुट्टी के आसपास बारी-बारी से बिताया, लेकिन बाघ का कोई संकेत नहीं मिला।

सातवीं रात मैंने सेगुर से डेढ़ मील दूर एक पेड़ पर बिताई। अगली सुबह अनाइकुट्टी वन बंगले में लौटने पर, जहाँ मैंने अपना मुख्यालय स्थापित किया था, मुझे सूचित किया गया कि करुम्बा नाम का एक व्यक्ति, जो पिछली सुबह नीलगिरी की निचली पहाड़ियों से लगभग चार मील दूर 'हनी रॉक' नामक स्थान के आसपास सैकड़ों की संख्या में पाई जाने वाली विशाल चट्टानी मधुमक्खियों के छत्तों से जंगली शहद इकट्ठा करने के लिए निकला था, अभी तक नहीं लौटा था।

बीस लोगों का एक खोज दल बनाकर, मैं उनके साथ इस जंगली और घने जंगल वाले इलाके में गया। आदमखोर सांप के संभावित हमले से बचाव के लिए दल को पाँच-पाँच लोगों के चार समूहों में बाँटकर, हमने दोपहर तक खोजबीन की। तभी एक

व्यक्ति ने नाले में मृत करुम्बा का शव देखा और मुझे यह सूचना दी। मैं वहाँ गया और पाया कि उस व्यक्ति को गले पर काटकर मारा गया था। उसके पास ही उसकी खाली मिट्टी के तेल की डिब्बी पड़ी थी, जिसमें वह शहद इकट्ठा कर रहा था। सारा शहद ज़मीन पर फैल गया था, जिससे काली चींटियों का एक झुंड दावत बन गया था और डिब्बी काली होकर एक ढेर में बदल गई थी।

पहले तो हमें लगा कि बाघ ने उसे मार डाला है, और हम यह सोचकर हैरान थे कि बाघ ने उसे उस शांत, एकांत जगह पर क्यों नहीं खा लिया। हमने चारों ओर पैरों के निशान ढूंढे, लेकिन जल्द ही पता चला कि हत्यारा एक मादा सुस्त भालू थी, जो अपने बच्चे के साथ थी। नाले की तलहटी में बिछी नरम रेत पर माँ के पैरों के मानव जैसे निशान और बच्चे के छोटे निशान साफ दिखाई दे रहे थे। जाहिर है, मादा भालू अपने बच्चे के साथ सो रही थी, या शायद नाला पार करने ही वाली थी, जब शहद की तलाश में निकला करुंबा अचानक उसके सामने आ गया। सुस्त भालू का स्वभाव वैसे भी बहुत अनिश्चित होता है, क्योंकि उसकी देखने और सुनने की क्षमता कमजोर होती है। इसलिए, इंसान अक्सर पकड़े जाने से पहले उसके बहुत करीब पहुँच जाते हैं, क्योंकि उस समय डर और उत्तेजना में वे बिना किसी उकसावे के हमला कर देते हैं। निःसंदेह यही हुआ होगा, जब मादा भालू, आश्चर्यचकित, भयभीत और चिढ़कर, और अपने बच्चे की रक्षा में, जिसे वह खतरे में समझ रही थी, करुंबा पर झपटी, उसके गले को काट डाला, उसकी जुगुलर नस को अलग कर दिया, और फिर जितनी तेजी से हो सके भाग गई।

मैं उस भालू का शिकार करने में समय बर्बाद नहीं करना चाहता था, जिसने अपने बच्चे की रक्षा में ही मारा था। मैं अनाइकुट्टी स्थित बंगले पर वापस लौट रहा था, तभी दल में शामिल चार करुम्बा लोगों ने मुझसे उस जानवर का पीछा करके उसे गोली मारने का आग्रह किया। उनका मानना था कि जब वे शहद लेने उसी स्थान पर आएंगे, तो वह जानवर उनके लिए खतरा बन सकता है। इसलिए, मैंने उन्हें खुश करने के लिए, न कि अपनी इच्छा से, बाकी दल को वापस भेज दिया और उन चार आदमियों के पीछे-पीछे मादा भालू के निशान की ओर चल पड़ा।

पगडंडियाँ नाले के किनारे-किनारे जाती थीं और फिर एक धारा में मिल जाती थीं,

जिसके किनारे श्रीमती ब्रुइन और उनका बच्चा कुछ दूर तक टहलते हुए जंगल में वापस चले गए थे। वहाँ से वे ऊपर की ओर उन कई चट्टानों और गुफाओं की ओर चढ़ गईं जहाँ उन्हें आश्रय मिला था, और जहाँ सैकड़ों चट्टानी मधुमक्खी के छत्ते हर संभव चट्टानी उभार से लंबे, काले गुच्छों में लटके हुए थे, कभी-कभी पाँच फीट से अधिक लंबे, एक गज चौड़े और एक फुट से अधिक मोटे हो जाते थे। जिस ज़मीन पर हम अब चल रहे थे वह कठोर और पथरीली थी, और मेरी अनुभवहीन आँखों को उस पर भालुओं के गुजरने का कोई निशान नहीं दिखाई दिया। लेकिन करुम्बा लोग शायद ही कभी गलती करते थे, और उनके निशान ढूंढने की क्षमता वास्तव में लंबी और थका देने वाली पैदल यात्रा के दौरान देखने लायक थी। दो घंटे से अधिक समय तक वे मुझे पहाड़ी पर और घाटी में, और गहरी घाटियों और पथरीली चोटियों के पार ले गए। एक उलटी हुई चट्टान या पत्थर, एक हटा हुआ पत्ता, या खरोंचने या खोदने के मामूली निशान भी उन्हें बता देते थे कि भालू कहाँ-कहाँ गए थे। अंततः हम एक गुफा के प्रवेश द्वार के पास पहुँचे, जो एक उभरी हुई चट्टान के ऊपर स्थित थी, जिससे तेईस अलग-अलग चट्टानी मधुमक्खी के छत्ते लटके हुए थे। उन्होंने बताया कि यह गुफा मादा भालू और उसके बच्चे का घर थी।

प्रवेश द्वार से दस गज की दूरी पर, एक तरफ खड़े होकर, मैंने आदमियों को अंदर की ओर पत्थर फेंकने का निर्देश दिया, जिसे उन्होंने लगभग बीस मिनट तक बिना रुके पूरे जोश के साथ किया। लेकिन हमें कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। फिर करुम्बा लोगों ने घास की मशाल बनाई, जिसे हमने जलाकर गुफा में फेंक दिया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ। अंत में उन्होंने पाँच ऐसी ही मशालें बनाईं। इनमें से एक को जलाकर, मैं उस करुम्बा के पीछे गुफा में चला गया जो उसे ले जा रहा था, जबकि बाकी तीन करुम्बा हमारे पीछे-पीछे घास की चार अतिरिक्त मशालें लेकर आए। गुफा अंदर से अपेक्षाकृत छोटी थी और स्पष्ट रूप से खाली थी, शायद हमारे आने की आहट सुनकर ही गुफा में रहने वाली महिला और उसका बच्चा वहाँ से चले गए थे। लेकिन मुझे इस बात की खुशी थी, क्योंकि जैसा कि मैंने कहा, मेरा उस जानवर से कोई झगड़ा नहीं था, और मुझे उसे गोली मारकर बच्चे को अनाथ छोड़ना पड़ता तो मुझे बहुत दुख होता।

हमने अपनी तीसरी मशाल जला ली थी और निकलने ही वाले थे कि करुम्बा समुदाय

के एक व्यक्ति को भारतीय जंगल की एक रोचक अनोखी चीज दिखाई दी, जिसके बारे में मैंने सुना तो था लेकिन कभी देखा नहीं था, और इसलिए मुझे उसके अस्तित्व पर कभी विश्वास नहीं था।

उसे एक कोने में वह चीज़ मिली जिसे स्थानीय लोग 'भालू की रोटी' या तमिल में 'कराडी रोटी' कहते हैं। यह लगभग गोलाकार, दस इंच चौड़ी और एक इंच मोटी थी, जिसका रंग गंदा काला-पीला और चिपचिपा था। मादा भालू 'कटहल' के फल, जो एक बड़ा और खुरदुरा, कांटेदार बाहरी आवरण वाला फल होता है; जंगली 'लौह-सेब', जो बड़ी टेनिस गेंदों के आकार का और सख्त छिलके वाला होता है; और मधुमक्खी के छत्ते के टुकड़े, जिनमें मधुमक्खियाँ, छत्ता और शहद शामिल होते हैं, की तलाश करती हैं। इन सभी चीजों को पहले मादा भालू बारी-बारी से खाती है, फिर पूरे मिश्रण को गुफा में एक ढेर के रूप में उल्टी कर देती है, जिसे मादा भालू अपने बच्चों के लिए आरक्षित भोजन के रूप में सख्त होने देती है।

संभवतः अपने लंबे बालों के कारण, भालू चट्टानी मधुमक्खी के डंक से आश्चर्यजनक रूप से अप्रभावित रहता है, जो मनुष्यों के लिए बड़ी संख्या में होने पर घातक साबित हो सकता है। यह जंगली फलों और शहद के छत्तों की तलाश में आश्चर्यजनक कुशलता से पेड़ों और चट्टानों पर चढ़ सकता है। एक गुफा, जिसमें एक मादा भालू अपने बच्चों के साथ रहती है, में कभी-कभी ऐसे एक दर्जन केक मिलने की बात कही जाती है। इस मामले में हमें केवल एक ही मिला, लेकिन चूंकि मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था, इसलिए मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी थी। इस 'रोटी' की पौष्टिकता के प्रमाण के रूप में, चारों करुम्बाओं ने इसे मुझे तुरंत खाने के लिए दिया, लेकिन मैंने धन्यवाद के साथ मना कर दिया। फिर उन्होंने इसे आपस में बराबर बाँट लिया और बड़े चाव से खाया।

हम अब गुफा के प्रवेश द्वार पर बैठे थे। पता नहीं मशाल की लौ, धुआँ या इंसानों की आवाज़ ने उन्हें विचलित किया या नहीं, लेकिन अचानक कुछ काली वस्तुएँ हमारे चारों ओर भिनभिनाने लगीं, और जैसे ही हम भागने के लिए उछले, ठीक ऊपर स्थित छत्ते से चट्टानी मधुमक्खियाँ, बेहद घबराई हुई और क्रोधित होकर, हम पर टूट पड़ीं।

वहाँ हर कोई अपनी जान बचाने में लगा था, और जैसे ही मैंने अपनी राइफल उठाई

और पहाड़ी से नीचे भागा, फुर्तीले करुम्बा मुझसे बहुत जल्दी आगे निकल गए। गति में जो कमी थी, वह कपड़ों से पूरी हो गई, क्योंकि मधुमक्खियाँ मेरी गर्दन, हाथों और शरीर के अन्य खुले हिस्सों पर लगभग बीस डंक मार चुकी थीं, जबकि करुम्बाओं की नंगी त्वचा पर मैंने लगभग चालीस डंक गिने, जब हम आधा मील दूर जाकर धीमे हुए। यह वास्तव में एक दुखद लेकिन दिलचस्प सुबह का एक हास्यास्पद अंत था, और हम अनाइकुट्टी लौट आए, पहले से कहीं अधिक समझदार, लेकिन बहुत दर्द और तकलीफ से जूझते हुए। उस रात 8 बजे मैं अपनी स्टडबेकर कार में धीरे-धीरे सेगुर के लिए निकला, एक करुम्बा मेरे सहायक के रूप में मेरे साथ था और मेरी 'सील्ड-बीम' स्पॉटलाइट की रोशनी दोनों ओर जंगल पर चमका रहा था। कुछ भी न मिलने पर, हम उत्तर-पश्चिमी सड़क पर छह मील तक महवनहल्ला और मासिनीगुडी से आगे बढ़ते रहे और अंत में तिप्पाकाडु स्थित वन चौकी तक चार मील का सफर तय किया। यहाँ हमने एक घंटा रुकने के बाद वापसी की, और इस बार तिप्पाकाडु से तीन मील दूर सड़क किनारे हमें बाइसन का एक झुंड दिखाई दिया। जैसे ही कार पास पहुँची, ये जानवर भाग गए। मासिनीगुडी और सेगुर के बीच हमें कई चित्तीदार हिरण दिखाई दिए, और अनाइकुट्टी की ओर मुड़ने के तुरंत बाद सड़क के बीचोंबीच एक विशाल नर हाथी दिखाई दिया, जिसके दांत स्पॉटलाइट की तेज रोशनी में चमक रहे थे। सींग की हल्की सी आवाज ही उसे भगाने के लिए काफी थी, और अंत में हम आदमखोर हाथी का कोई निशान देखे बिना अनाइकुट्टी बंगले पर पहुँच गए।

अगली सुबह मौसम सुहाना और चमकदार था, और मैं अपने करुम्बा गाइड के साथ जंगल पार करते हुए मोयार नदी की ओर चल पड़ा, जो उत्तर दिशा में नौ मील दूर थी। एक बार फिर हमें बाघ का कोई निशान नहीं मिला, लेकिन जैसे ही ज़मीन मोयार नदी के बेसिन की ओर ढलान पर जाने लगी, हमें एक असाधारण रूप से बड़े जंगली तेंदुआ के पैरों के निशान दिखाई दिए। उसके पैरों के निशान देखकर लग रहा था कि वह वाकई एक बड़ा जानवर था, लगभग एक छोटी बाघिन के आकार का, और अगर मेरे पास उसका पीछा करने का समय होता तो वह एक शानदार ट्रॉफी बन सकता था। हम दोपहर बाद बंगले पर वापस लौटे, थके हुए और कुछ निराश, अपनी लंबी और निष्फल सैर के बाद।

उस रात हम फिर से तिप्पाकाडु गए और वापस आए। लौटते समय अनाइकुट्टी वन

बंगले से पहले नदी पार करते समय हमें केवल एक सांभर दिखाई दिया। भोर होते ही मैंने अपने करुम्बा (एक प्रकार की साइकिल) के साथ एक और पैदल यात्रा शुरू की, इस बार दक्षिण-पूर्व दिशा में नीलगिरि की ओर। हमें चार मील दूर झाड़ियों में एक मृत मादा बाइसन मिली। शव की जांच करने पर पता चला कि जानवर की मृत्यु रिंडरपेस्ट रोग से हुई थी। वन विभाग ने लगभग दो महीने पहले बताया था कि यह महामारी बडागा जनजाति के मवेशियों से फैली थी, जिनके झुंडों में यह संक्रामक और महामारी के रूप में फैल गई थी, और जंगली जानवरों, विशेष रूप से बाइसन में फैल गई थी। यहाँ इस कथन का प्रमाण मिला।

उस दोपहर महावनहल्ला से खबर आई कि बाघ ने उस पुल के पास एक महिला को अपना शिकार बना लिया है, जहाँ से तिप्पाकाडु जाने वाली मुख्य सड़क महावनहल्ला नाले को पार करती है और फिर सेगुर नदी में मिल जाती है। गाड़ी से घटनास्थल की ओर जाते हुए मुझे वह जगह दिखाई गई जहाँ पिछली शाम को नाले के किनारे घात लगाए बैठे बाघ ने उस महिला पर हमला किया था। वह महिला महावनहल्ला में बाड़े में बंद बड़ी संख्या में मिश्रित गायों और भैंसों को पानी पिलाने वाले चरवाहों में शामिल थी। जाहिर तौर पर किसी ने भी घटना को अपनी आँखों से नहीं देखा था, क्योंकि वह महिला पुल के पास जमा हुए बाकी लोगों से थोड़ी अलग थी और नाले के मोड़ के पीछे छिपी हुई थी, जहाँ नाला सड़क के नीचे से गुजरने से ठीक पहले मुड़ता है। उसने जोर से चीख मारी और फिर सन्नाटा छा गया। बचे हुए पाँच चरवाहे महावनहल्ला पहुँचे, वहाँ से छह और लोगों को इकट्ठा किया, जिनमें उस दुर्भाग्यपूर्ण महिला का पति भी शामिल था, और उसकी तलाश में वापस घटनास्थल पर गए। उन्हें वह टोकरी मिली जो वह ले जा रही थी, और पास ही नरम मिट्टी में बाघ के पदचिह्न मिले; फिर पूरा दल महवनहल्ला लौट आया। अगले दिन भोर होते ही, जिन चार लोगों ने अब अपनी पहचान बताई थी, वे पैदल मार्ग से अनाइकुट्टी तक दस मील की दूरी तय करने और मुझे घटना की सूचना देने के लिए निकल पड़े, क्योंकि उन्हें पता चल गया था कि मैं बाघ का शिकार करने के लिए उस क्षेत्र में था।

हम उस जगह गए जहाँ महिला पर हमला हुआ था, और मेरे करुम्बा विशेषज्ञ की मदद से हम जल्द ही बाघ और उसके शिकार के पदचिह्नों का पता लगाने में कामयाब हो गए। पीछा करने से पहले मैंने महावनहल्ला से दल को विदा कर दिया, साथ ही मृतक

के पति को भी, जिसने मुझसे वादा लिया कि मैं उसकी प्रिय पत्नी की कुछ हड्डियाँ ज़रूर लाऊँगा ताकि अंतिम संस्कार की रस्में पूरी हो सकें। लगभग बिना रुके, मेरे करुम्बा गाइड ने बाघ द्वारा छोड़े गए उस पदचिह्न का पीछा किया जो मुझे बिल्कुल अदृश्य लग रहा था। आदमखोर बाघ स्पष्ट रूप से एक ऊँची पहाड़ी की ओर बढ़ रहा था, जो नीलगिरी पर्वतमाला की एक शाखा थी और पश्चिम में सड़क के समानांतर लगभग दो मील की दूरी पर स्थित थी। वर्षों पहले मैं एक अच्छे बाइसन के सिर की तलाश में इसी पहाड़ी पर आंशिक रूप से चढ़ा था, और जानता था कि इसकी मध्य ढलानें लंबी भाला घास के समुद्र से ढकी हुई थीं, जो ऊँचे और अधिक पथरीले स्तरों तक पहुँचने पर धीरे-धीरे कम होती जाती थीं। उस क्षेत्र में, मुझे लगा कि बाघ या उसके शिकार को खोजने की हमारी संभावना बहुत कम थी।

फिर भी, मेरा छोटा सा साहसी मार्गदर्शक बिना किसी गलती के आगे बढ़ता रहा, और पहाड़ी की तलहटी से एक मील की दूरी पर झाड़ियों में फंसी महिला की साड़ी मिली। कुछ ही देर बाद बाघ ने अपना इरादा बदल लिया, क्योंकि उसका रास्ता दाहिनी ओर, पहाड़ी के समानांतर मुड़ गया, जो अब काफी पास थी, और फिर से महावनहल्ला नदी के तल की ओर वापस चला गया। उसका पीछा करते हुए, हम अंततः नदी तक पहुँच गए, जो यहाँ एक गहरी घाटी से होकर बह रही थी। इस ढलान पर बिखरे हुए बांस के झुंडों की संख्या बढ़ती जा रही थी, और गिद्धों की तीखी चीख और उनके पंखों की भारी फड़फड़ाहट ने जल्द ही हमारी खोज के अंत की घोषणा कर दी। महिला के अवशेष बांस के एक झुंड के नीचे पड़े थे, जिन्हें बाघ खा गया था, और गिद्धों ने उसके भोज से बचा हुआ हिस्सा चट कर लिया था। हमें सिर अलग पड़ा मिला, बड़ी चिड़ियों ने उसकी आँखें निकाल ली थीं, और चेहरे का अधिकांश मांस भी खा लिया था। उसके हाथों और पैरों समेत, कांच की चूड़ियों और चांदी की पायल सहित, इस भयावह अवशेष को हमने इकट्ठा किया और घास में लपेट दिया। अपने वादे के मुताबिक, करुंबा ने बड़ी अनिच्छा से उस गठ्ठे को अपने पति के पास पहुंचाया। वहीं बैठे रहना समय की बर्बादी लग रहा था, क्योंकि बाघ ऐसे बिखरे हुए अवशेषों के पास वापस नहीं आएगा।

उस रात मैंने गाड़ी से शिकार जारी रखा, लेकिन सफलता नहीं मिली। अगले दिन मुझे एक जवान भैंस मिली, जिसे मैंने महवनहल्ला में नदी के मोड़ के पास बांध दिया, जहाँ

उस महिला पर हमला हुआ था। बाघ के उसी जगह आने की संभावना बहुत कम थी, इसलिए मैंने जीवित भैंस के पास बैठकर शिकार होने का इंतज़ार करने का फैसला किया। मेरा यह अनुमान गलत निकला, क्योंकि अगले दिन दोपहर से पहले ही अनाइकुट्टी में संदेशवाहक आए और बताया कि भैंस को बाघ ने मार डाला है और उसका कुछ हिस्सा खा लिया है। दोपहर 3 बजे तक मेरा मचान तैयार था और मैं लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई से मृत भैंस के ऊपर बैठकर उसे देख रहा था।

नीलगिरी की निचली ढलानों पर रहने वाली नेवले की एक बड़ी प्रजाति, एक विशाल लाल मार्टिन, शिकार के पास सबसे पहले दिखाई दी। वह शाम लगभग 5:30 बजे आई, पहले तो उसने सावधानी से थोड़ा-थोड़ा खाया, और फिर कच्चे मांस के टुकड़े-टुकड़े निगलने लगी। 6 बजे तक उसका पेट पूरी तरह भर चुका था, और वह रात को या तो बिना सपने देखे संतुष्टि से गुजारने के लिए या फिर बदहजमी के साथ चला गया। जैसे ही शाम ढली, तीन सियार दबे पांव आगे बढ़े। उन्होंने बड़ी हिम्मत से मरे हुए जानवर के पास जाकर उसे सूंघा, चारों ओर आशंका से देखते हुए, और फिर डर के मारे भाग गए, लेकिन हर बार भूख और बेतहाशा भूख के कारण वापस लौट आते थे। लगभग चौथी कोशिश में वे आखिरकार खाने के लिए बैठे, लेकिन कुछ ही निवाले खाए थे कि तभी एक हलचल मच गई और वे गायब हो गए। मुझे लगा कि यह निश्चित रूप से बाघ का आगमन है, और सचमुच एक रेंगता हुआ, धूसर आकार खुले में प्रकट हुआ और सावधानी से शिकार की ओर बढ़ा। हालाँकि, कोई बाघ इतनी शर्मिंदगी से अपने ही शिकार के पास नहीं जाता, और लकड़बग्घे ने अपने छोटे चचेरे भाइयों, सियार की तरह ही सतर्क और भयभीत होकर आगे बढ़ना शुरू कर दिया। उसने कई बार मांस को सूंघा, और इस दौरान उसने इधर-उधर चुपके से देखा। कई बार वह लड़खड़ाते हुए दूर चला गया, एक बड़े घेरे में चक्कर लगाकर यह देखने के लिए कि आसपास कोई है या नहीं, फिर सावधानी से रेंगकर वापस आया और जल्दी से एक निवाला लिया। फिर वह एक और बड़े घेरे में चला गया ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि शिकार का असली मालिक उसे रंगे हाथों पकड़ने के लिए आसपास तो नहीं है। यह सिलसिला लगभग आधे घंटे तक चलता रहा, फिर लकड़बग्घा गंभीरता से भोजन करने बैठ गया।

दस मिनट तक खाना खाते-खाते पास ही एक बाघ की आवाज़ गूंजी। 'आ-ऊंग,

आउंग-हा, उघा-ऊघ, ओ-ओ-ओ-न-ओ-ओ-न', ये आवाज़ सन्नाटे भरी रात में चार बार गूंजी और लकड़बग्घा मानो जादू से गायब हो गया और फिर कभी नहीं लौटा। मैं तल्लीन बैठा रहा, जंगल के राजा के आने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन घंटे बीतते गए और वह नहीं आया। चाहे जो भी कारण रहा हो, उस रात बाघ ने शिकार से दूरी बनाए रखी, और सुबह होते ही मैं भीषण ठंड से कांपने लगा, जो गर्मी के मौसम के बावजूद शुरू हो चुकी थी। मैं सुबह होने तक वहीं बैठा रहा, फिर अपनी मचान से नीचे उतरा, जकड़ा हुआ और अकड़ा हुआ, दुनिया से और खासकर बाघ से पूरी तरह निराश और हताश। उस रात वह अपने शिकार के इतने करीब आ गया, लेकिन दिखाई नहीं दिया, यह बात हमेशा एक रहस्य ही रहेगी।

अगले दिन मैंने आराम किया और अपनी रोज़ की रात की दिनचर्या के अनुसार तिप्पाकडु जाने और वापस आने के लिए गाड़ी चलाई, लेकिन बाघ का कोई निशान नहीं दिखा। इस बार अनाइकुट्टी जाने वाली सड़क पर ठीक मोड़ पर एक छोटा सा पैंथर सड़क किनारे बने पुलिया से कूद गया और खाई में दुबक गया। गाड़ी के गुजरते समय उसकी चमकदार आँखें स्पॉटलाइट की ओर देख रही थीं। मैंने उस छोटे से जानवर को अकेला छोड़ दिया, ताकि वह अपने दिन उन खूबसूरत जंगलों में खुशी से बिता सके जहाँ वह सही मायने में रहता था। अगला सप्ताह बिना किसी घटना के बीता और मैं खोज छोड़ कर बैंगलोर लौटने के बारे में सोचने लगा, लेकिन आखिरकार मैंने जाने से पहले तीन दिन और रुकने का फैसला किया। इन तीन दिनों में से एक दिन बिना किसी घटना के बीता, जब दूसरे दिन दोपहर में, सेगुर के एक अमीर पशुपालक के बेटे, बडागा लड़के को बाघ उठाकर ले गया, जब वह अपने पिता के लिए दोपहर का भोजन लेकर जा रहा था, जो मवेशियों और अन्य केशव चरवाहों के साथ थे। मैं जल्द ही अपने करुम्बा साथियों के साथ घटनास्थल पर पहुँच गया, ताकि बाघ के निशान का पीछा कर सकूँ। बाघ लड़के को सेगुर नदी के पार उत्तर की ओर जंगल में ले गया था। हम तुरंत उसके पीछे गए और इस बार हमें नाले में छिपा हुआ शव मिला, जो आधा खाया हुआ था। दुर्भाग्य से, पिता वहाँ पहुँच गया और शव को हटाना चाहता था। उसे शव वहीं रहने देने और मुझे थोड़ा आराम करने का मौका देने के लिए मनाने में एक घंटा लग गया।

शव के आसपास कोई उपयुक्त पेड़ या चट्टान नहीं थी जिसमें मैं छिप सकूँ, अंततः

शव को लगभग पचास फीट दूर बाँस के झुंड की ओर ले जाने का निर्णय लिया गया, जिसके ऊपर एक अस्थिर मचान खड़ा था। वहाँ पहुँचने के लिए मुझे कटे हुए बाँस के तने की दरारों पर चढ़ना पड़ा, और मैंने पाया कि वह मचान मेरे जीवन में अब तक के सबसे खराब मचानों में से एक था। हवा के हर झोंके से वह खतरनाक रूप से हिल रहा था, और मेरे जरा से हिलने पर भी बाँस नीचे से कर्कश आवाज करते थे। इसके अलावा, मुझे शव ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, जो तीस गज से अधिक दूर था। मेरे चारों ओर उगे बाँस के तनों ने पास से देखने में पूरी तरह से बाधा उत्पन्न कर दी थी। मेरी निगरानी की शुरुआत बेहद नीरस थी, और शव जहाँ पड़ा था, उससे कुछ ऊपर नाले के किनारे पर एक मोर के अलावा कोई भी जीवित प्राणी दिखाई नहीं दिया। वहां से वह धीरे-धीरे नीचे की ओर चलने लगा, जब तक कि अचानक उसकी नज़र उस नाले में पड़े हुए मानव शरीर पर नहीं पड़ी, जहां हमने उसे छोड़ा था। तभी वह अपने पंखों को ज़ोर से फड़फड़ाते हुए मेरे सिर के ऊपर से उड़ गया, डूबते सूरज की किरणों में उसकी लहराती पूंछ हरे-लाल रंग में चमक रही थी, मानो वह जंगल में से गुज़रता हुआ कोई धूमकेतु हो।

रात के 9 बजे, मुझे बाघ की मौजूदगी का एहसास हुआ, जब उसने उस जगह के पास से एक धीमी सी कराह निकाली जहाँ उसने पहले शव छोड़ा था। मैंने शव को हटाने के लिए खुद को कोसा, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि ऐसा करना ज़रूरी था, क्योंकि उस जगह पर मेरे लिए छिपने की कोई जगह नहीं थी। अपने शिकार को हटा हुआ देखकर बाघ कई बार गुर्राया। आखिरकार, हमने उसे केवल पचास फीट ही खिसकाया था, और जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से बाघ निश्चित रूप से उसे उसकी नई जगह पर देख लेगा और उसकी ओर आएगा; कम से कम मुझे यही उम्मीद थी। लेकिन शिकार को हटाना घातक साबित हुआ, जिससे बाघ के मन में गहरा संदेह पैदा हो गया कि जिस आदमी को उसने मरा हुआ छोड़ा था और जिसका कुछ हिस्सा खा लिया था, वह अब वहाँ से क्यों चला गया है।

यह देखकर आश्चर्य होता है कि हर आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, अभ्यास से कितना सतर्क और डरपोक हो जाता है। वह हमेशा अकेले व्यक्ति पर ही हमला करता है, और वह भी लंबे समय तक सावधानीपूर्वक घात लगाकर पीछा करने के बाद, यह सुनिश्चित करने के बाद कि आस-पास कोई और इंसान नहीं है। मेरा

मानना है कि ऐसा शायद ही कोई मामला दर्ज है जहाँ किसी आदमखोर जानवर ने लोगों के समूह पर हमला किया हो, जबकि ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ समय पर हस्तक्षेप या किसी दृढ़ मित्र या रिश्तेदार की सहायता से आदमखोर जानवर अपने शिकार को छोड़कर डर के मारे भाग गया। ऐसा लगता है कि इन जानवरों में एक तीक्ष्ण छठी इंद्री होती है और वे निहत्थे इंसान और जानबूझकर उनका पीछा कर रहे हथियारबंद आदमी के बीच अंतर कर सकते हैं, क्योंकि अधिकतर मामलों में, वे केवल घिर जाने पर ही हथियारबंद आदमी पर हमला करने का साहस करते हैं, जबकि वे निहत्थे आदमी का पीछा करने और उस पर हमला करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

इस बाघ में वाकई असाधारण बुद्धि थी, क्योंकि उसे कुछ गड़बड़ का आभास हो गया था। जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, वह अपने शिकार के पास खुलेआम जाने के बजाय, पूरे इलाके में चक्कर लगाने लगा और बीच-बीच में कराहता रहा, मानो भाग्य की क्रूरता पर शिकायत कर रहा हो कि उसने शिकार को वहाँ से हटा दिया है। वह लगभग एक घंटे तक चक्कर लगाता रहा, जब तक कि उसने आखिरकार यह तय नहीं कर लिया कि शिकार अब उसके लिए वर्जित है, और आखिरी बार मैंने उसकी कराहने की आवाज़ सुनी जो दक्षिण की ओर दूर जाती हुई पहाड़ियों की ओर बढ़ रही थी।

इस आखिरी घटना और उससे मिली असफलता ने मुझे इस सबसे चतुर जानवर को पकड़ने का अपना दृढ़ संकल्प और भी मजबूत कर दिया, और जरूरत पड़ने पर मैंने अपनी यात्रा को दो सप्ताह के लिए टालने का भी फैसला किया, ताकि मैं ऐसा कर सकूँ। करुम्बा समुदाय में फैली अफवाहों से पता चला कि बाघ मुख्य सड़कों के बजाय, जिन पर मैं कई रातों से गाड़ी चला रहा था, अनाइकुट्टी, सेगुर और महवनहल्ला से जंगल में जाने वाले कई बैलगाड़ी के रास्तों पर रात में मिल सकता है। चूंकि ये बैलगाड़ी के रास्ते चलने लायक नहीं थे, इसलिए मैंने अगले सप्ताह के लिए एक बैलगाड़ी किराए पर ली और तीनों स्थानों के आसपास के हर संभव रास्ते पर हर रात उसी में घूमने का निश्चय किया। इस बैलगाड़ी का चालक, एक केशव, असाधारण रूप से साहसी था, और मेरे दो करुम्बा जासूस सबसे संभावित रास्तों का सुझाव देने के लिए मेरे साथ जाने वाले थे।

अगली तीन रातें हमने इसी तरह बिताईं, इस दौरान हमें केवल सांभर और चित्तीदार हिरण ही दिखाई दिए, और तीसरी रात एक हाथी दिखा, जिससे हमें कुछ पल के लिए चिंता भी हुई। गाँव से दो मील दूर, जहाँ पगडंडी अनाइकुट्टी नदी को पार करती थी, वहीं हमारी उससे पहली मुलाकात हुई। वह एक विशाल 'मुठी' पेड़ के नीचे पत्थर की तरह स्थिर खड़ा था, और हमारी नज़र उस पर बिल्कुल नहीं पड़ी। गाड़ी में हमने कार की बैटरी रखी हुई थी, जिसे मैंने 'सील्ड बीम' स्पॉटलाइट के साथ अलग कर दिया था, ताकि इसे केवल आपात स्थिति में ही इस्तेमाल किया जा सके। सामान्य रोशनी के लिए, और जंगल में किसी की नज़र पड़ने पर, हम दो टॉर्च का इस्तेमाल कर रहे थे, एक सात सेल वाली और एक पांच सेल वाली।

जैसा कि मैं बता रहा था, हम नदी पार कर रहे थे और गाड़ी नदी के बीचोंबीच थी। बैल नरम रेत में से विशाल पहियों को खींचने के लिए बड़ी ताकत से संघर्ष कर रहे थे, तभी मशालों की रोशनी से घबराकर हाथी ने प्रलय की अंतिम घंटी की तरह चीख मारी और पानी में से छपछपाते हुए हमारी ओर दौड़ा। सीलबंद बीम चालू करके मैंने लगभग तीस गज की दूरी से उसे उसकी तेज रोशनी में देखा। तेज रोशनी ने उसे रोक दिया, फिर वह पानी में अपने पैर पटकने लगा और अपने भारी शरीर और सूंड को इधर-उधर हिलाने लगा, यह तय नहीं कर पा रहा था कि हमला करे या भाग जाए। तब हम सब एक साथ चिल्लाए और सारी बत्तियाँ उस पर केंद्रित कर दीं। गुस्से में चीखते हुए वह घूमा और घने जंगल में चला गया, सचमुच एक बहुत ही क्रोधित और नाराज हाथी।

अगले तीन रातों तक हमने बैलगाड़ी से तलाशी जारी रखी, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। सातवें दिन सुबह, बाघ ने अनाइकुट्टी में तैनात वन रक्षक के अठारह वर्षीय बेटे को मार डाला। सुबह 9 बजे, तेज धूप में, वह गाँव में अपनी झोपड़ी से निकला और नदी की ओर जाने वाले रास्ते पर थोड़ी दूर उस बंगले की ओर गया जहाँ मैं बैलगाड़ी में रातें बिताने के बाद सो रहा था। वह अपने कुत्ते को बुलाने गया था, जो गाँव और बंगले के बीच, जो एक मील से भी कम दूरी पर था, अक्सर भटकता रहता था, क्योंकि मैं उसे हर भोजन के बाद कुछ जूठा दाना देता था। उस लड़के को फिर कभी जीवित नहीं देखा गया। उसके पिता, वन रक्षक, यह सोचकर कि वह मेरे साथ बंगले पर है, उसकी अनुपस्थिति को स्वाभाविक मान लिया। जब दोपहर हुई और दोपहर के भोजन का

समय हुआ, तो वह लड़का अभी तक नहीं आया था और रक्षक ने बंगले पर आकर उसे लाने का फैसला किया। नदी से एक फर्लांग की दूरी पर, सड़क के किनारे, उसे अपने बेटे की टोपी मिली। इससे वह घबरा गया और उसने लड़के को जोर से पुकारा। कोई जवाब न मिलने पर, वह बाकी की दूरी दौड़कर बंगले तक गया और मुझे जगाकर बताया कि उसे क्या मिला था।

मुझे लगा कि लड़के के साथ कुछ बुरा हुआ है, इसलिए मैंने राइफल उठाई और चिंतित पिता के साथ उस जगह गया जहाँ टोपी अभी भी पड़ी थी। चारों ओर देखने पर हमें उसकी चप्पल दस गज दूर एक झाड़ी के नीचे मिली और हम समझ गए कि सबसे बुरा हो चुका है। वहीं रुककर मैंने रोते हुए गार्ड से कहा कि वह जल्दी से गाँव वापस जाए और करुम्बा के खोजकर्ताओं को बुलाए। पंद्रह मिनट के भीतर वे लोग मेरे पास आ गए और हम

हमने पगडंडी पर चलना शुरू किया। लड़का संघर्ष करता हुआ प्रतीत हुआ और शायद जोर से रोया भी होगा, हालांकि उसे सुनने वाला कोई नहीं था, क्योंकि जहाँ हमें चप्पल मिली थी, उससे कुछ ही गज की दूरी पर बाघ ने उसे नीचे गिरा दिया और बेरहमी से काट लिया। यह बात खून की अचानक तेज धार से स्पष्ट हो गई, जो लगभग एक वर्ग गज के क्षेत्र में सूखी घास पर फैल गई थी। बाघ फिर अपने शिकार के साथ आगे बढ़ गया, जमीन पर खून के निशान छोड़ता हुआ, जो धीरे-धीरे मिटते चले गए क्योंकि खून जमने लगा था।

यहां नदी उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ गई और हमने देखा कि बाघ उसी दिशा में जा रहा था। आगे बढ़ते हुए, हम जल्द ही नदी के किनारों को ढकने वाले घने जंगल में पहुँच गए, जहाँ बाघ द्वारा अपने शिकार को मुँह में दबाए हुए झाड़ियों के पत्तों पर बिखरे हुए लाल धब्बों के रूप में खून के निशान एक बार फिर स्पष्ट हो गए।

नदी किनारे की नरम मिट्टी में हमें हत्यारे के ताज़े पदचिह्न दिखाई दिए, जो उथले पानी को पार करके दूसरे किनारे पर चले गए थे। यहाँ से वे ढलान पर चढ़कर जंगली बेर की झाड़ियों के झुंड की ओट में पहुँच गए, जिसके सामने हमें लड़के के अवशेष मिले। उसे लगभग आधा खा लिया गया था और वह एक भयानक दृश्य था। जिस रास्ते पर हम चले थे, उस पर अचानक खून के फव्वारे दिखने का कारण अब स्पष्ट हो गया।

जैसा कि हमने पहले ही अनुमान लगाया था, बाघ द्वारा ले जाते समय लड़का स्पष्ट रूप से जीवित था और उसने खुद को छुड़ाने के लिए चीख-पुकार मचाई होगी। क्रोधित होकर बाघ ने उसे नीचे गिरा दिया और अपने अगले पंजे से उसके सिर पर ज़ोरदार प्रहार किया। उसका माथा अंदर की ओर पिचक गया था, जैसे कोई अंडा छिलका कुचल दिया गया हो, जबकि उसके नुकीले पंजों ने खोपड़ी की आधी परत फाड़ दी थी, जिससे खोपड़ी की हड्डियाँ दिखाई देने लगी थीं। एक आँख भी पंजे से बाहर निकल गई थी और सॉकेट से लटक रही थी।

उस बेचारे पिता का दुःख देखना सचमुच दिल दहला देने वाला था। वह अपने इकलौते बेटे के पैरों में गिर पड़ा, उसके क्षत-विक्षत शरीर को चूमने लगा और ज़मीन-आसमान से बदला लेने की गुहार लगाने लगा, साथ ही सूखी ज़मीन से धूल खुरचकर अपने सिर पर मलने लगा। उसे होश में लाने के लिए हमने उसे ज़ोर से हिलाया और समझाया कि जितना ज़्यादा शोर मचाएगा और जितना ज़्यादा समय बर्बाद करेगा, बाघ को गोली मारने की हमारी संभावना उतनी ही कम होती जाएगी। आखिरकार, हम उसकी चीखों को सिसकियों में बदलने में कामयाब हो गए।

एक मध्यम आकार का जुमलम का पेड़ उस बेर की झाड़ी पर छाया कर रहा था जिसके नीचे लड़का लेटा हुआ था, और मैंने इसी पेड़ पर अपना मचान लगाने का निश्चय किया। मैंने पिता और दोनों करुम्बाओं को बंगले पर वापस भेज दिया और करुम्बा को मेरा पोर्टेबल चारपाई मचान लाने का निर्देश दिया। उनके लौटने तक मैं जुमलम के पेड़ पर चढ़ गया, अपनी सुरक्षा के लिए भी और अगर बाघ अचानक प्रकट हो जाए तो गोली चलाने के लिए भी।

दोनों करुम्बा एक घंटे से भी कम समय में मचान लेकर वापस आ गए, जिसे उन्होंने जुमलुम पेड़ की निचली शाखाओं में हमेशा की तरह सुरक्षित और कुशलतापूर्वक बांध दिया।

पंद्रह फीट से थोड़ा अधिक। निर्देशानुसार वे मेरी पानी की बोतल, गन-टॉर्च और कंबल भी लाए थे, और दोपहर के कुछ ही समय बाद मैं एक अच्छा शॉट लेने की उम्मीद में मचान पर चढ़ गया।

शाम ढल गई और रात हो गई, बाघ का कोई अता-पता नहीं था। फिर अचानक तेज़ बारिश शुरू हो गई, जैसी कभी-कभी भारत में शुष्क गर्मी के मौसम में होती है। बिजली की कड़क से जंगल दिन के उजाले की तरह जगमगा उठा, जिससे नीचे बेर के पेड़ के नीचे पड़ा शव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा; गरज की आवाज़ आसपास की पहाड़ियों में गूंज उठी; और बारिश मूसलाधार बरसने लगी, उससे पहले ओलों की तेज़ बौछार हुई थी।

एक मिनट के भीतर मैं पूरी तरह भीग गया, और मूसलाधार बारिश जारी रही। मेरी आँखों के सामने ही आसपास की पहाड़ियों से बहकर आने वाले पानी से नदी का जलस्तर इतना बढ़ गया कि मुझे लगा जैसे उसे पार करना असंभव है। यह भयानक स्थिति आधी रात के बाद तक बनी रही, जब तक कि बारिश हल्की, ठंडी बूंदा-बांदी में बदल गई। फिर नीलगिरि से भीगे जंगल की ओर एक भयानक ठंडी हवा चलने लगी। बूंदा-बांदी आखिरकार रुक गई, हवा चलती रही और जैसे ही मेरे भीगे कपड़ों और कंबलों में वाष्पीकरण शुरू हुआ, ठंड असहनीय और तीव्र हो गई।

मैं खुशी-खुशी एक दर्जन आदमखोर बाघों का सामना करके बंगले में लौट आता, लेकिन उफनती नदी के कारण यह नामुमकिन था, जो अभी भी पार करने लायक नहीं थी। पानी उफनता हुआ बह रहा था, अपने साथ उखड़े हुए पेड़ों के तने, सूखी डालियाँ और हर तरह का मलबा बहाकर ला रहा था, जिनमें नदी किनारे सालों से पड़े सूखे लट्ठे भी शामिल थे। घोर अंधेरे में उस उफनती धारा को पार करने की कोशिश करना डूबने से मौत को दावत देने जैसा था, या फिर किसी बहते पेड़ के तने से सिर पर चोट लगने से। मेरी मुश्किलों को और बढ़ाने के लिए, कड़ाके की ठंड, खुले में रहना, पर्याप्त नींद न मिलना और मेरी पहले से ही थकी हुई हालत ने मलेरिया का एक गंभीर दौरा ला दिया। शुरुआत में मुझे सामान्य बुखार हुआ, जिससे मेरे दांत बजने लगे, और एक घंटे के भीतर ही मुझे तेज बुखार आ गया, जिससे मैं बेहोश होने की कगार पर पहुँच गया। बाघ का शिकार करने में मेरी सारी दिलचस्पी खत्म हो गई, और उस अविस्मरणीय रात का बाकी समय मैंने मचान से गिरे बिना कैसे बिताया, यह मैं कभी नहीं जान पाऊंगा। अगली सुबह आठ बजे से भी ज़्यादा देर हो चुकी थी जब मेरी करुम्बा (दादी) वापस लौटीं और उन्होंने मुझे लगभग बेहोश और तेज़ बुखार में पाया। किसी तरह वे मुझे नदी पार कराकर बंगले तक ले गईं, जहाँ मैंने अगले अड़तालीस घंटे मलेरिया के

कारण होने वाली ठंड और बुखार के लगातार दौरों से जूझते हुए बिस्तर पर बिताए, जो तीसरे दिन पैलुड्रिन के लगातार इस्तेमाल से ही कम हुए।

मुझे निमोनिया कैसे नहीं हुआ?

यह भयानक अनुभव एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर केवल ईश्वर ही जानता है। तीसरे दिन, जब मैंने जीवन में थोड़ी रुचि लेना शुरू किया, तो मेरे साथियों ने मुझे बताया कि बाघ वापस आ गया था, या तो भयंकर तूफान के दौरान या उसके बाद, और जब मैं बीमार अवस्था में उसके ऊपर पेड़ पर दुबका हुआ था, तब उसने अपने शिकार को मार डाला। इससे मुझे ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का एक और कारण मिला, क्योंकि यदि मैं बेहोशी की हालत में उस पेड़ से गिर जाता, तो मैं आसानी से उसका एक और शिकार बन सकता था। मैंने अगले दो दिन आराम किया ताकि मुझे बुखार से पूरी तरह ठीक होने का मौका मिले, और साथ ही एक नए शिकार की खबर का इंतजार कर सकूं, जो देर-सवेर होना ही था। तीसरा दिन मैंने तीन भैंसों के लिए चारा जुटाने में बिताया, अनाइकुट्टी, सेगुर और महवनहल्ला में एक-एक बांधा। अगली सुबह वे सभी जीवित थे, इसलिए अगले दिन मैंने अपनी यात्रा फिर से शुरू की, सुबह अनाइकुट्टी के आसपास के जंगल में बाघ से अचानक मिलने की उम्मीद में घूमता रहा, और फिर कार से तिप्पाकाडु गया और रात तक वापस आ गया।

दो दिन बाद, पिछले तीन हफ्तों से चल रही मेरी बदकिस्मती अचानक बदल गई। उस सुबह, मैंने कुछ बदलाव लाने के लिए सेगुर नदी के किनारे-किनारे कुछ मील नीचे की ओर जाने का फैसला किया; अपने करुम्बा (एक तरह का खिलौना) के साथ सेगुर गाँव तक गाड़ी चलाते हुए, मैंने एक बड़े केले के बागान में गाड़ी खड़ी की और अपनी योजना पर अमल करना शुरू किया। नदी के किनारे से मुश्किल से एक मील नीचे दलदली इलाका है, जहाँ सालों पहले बाइसन (जंगली बैल) बहुत रहते थे, और जिसे आज भी स्थानीय लोग 'बाइसन दलदल' के नाम से जानते हैं। इससे आधा मील आगे, नदी के दोनों किनारों पर घने बांस के जंगल का एक बड़ा हिस्सा फैला हुआ है। ये बांस हमेशा से हाथी और सांभर का पसंदीदा ठिकाना रहे हैं, और बाघ कभी-कभी पहाड़ियों से नीचे आते समय यहाँ से गुजरते हैं।

सुबह के 8:30 बज रहे थे और हम अभी-अभी बांस के जंगल में दाखिल ही हुए थे

कि सामने वाले किनारे से एक सांभर हिरनी ने ज़ोर से आवाज़ लगाई, और उसके तुरंत बाद एक नर सांभर की कर्कश आवाज़ सुनाई दी। करुम्बा परिवार और मैं नदी के किनारे उगी हुई घनी सरकंडों के बीच ज़मीन पर बैठ गए। दोनों सांभरों ने जल्दी-जल्दी आवाज़ें लगाईं, और यह स्पष्ट था कि किसी बात ने उन्हें चौंका दिया था। पहले तो मुझे लगा कि उन्होंने हमें देख लिया है या हमारी गंध सूंघ ली है, लेकिन यह सोचकर मैंने यह विचार छोड़ दिया कि जो भी हवा चल रही थी वह सांभर की तरफ से हमारी ओर बह रही थी। साथ ही, वे हमें देख भी नहीं सकते थे, क्योंकि वे बांस के जंगल में काफी अंदर थे, जहाँ से हम बिल्कुल ओझल थे। हमारी यात्रा बहुत ही शांत और सतर्कतापूर्ण रही थी, इसलिए सांभर की लगातार तेज आवाजों से केवल यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि उन्होंने किसी बाघ या तेंदुआ को देखा या उसकी गंध महसूस की थी, क्योंकि आदमखोर जानवर के कारण फैली दहशत के चलते इतने सुनसान स्थान पर कोई अन्य इंसान मौजूद नहीं होगा।

हम लगभग दस मिनट तक सरकंडों में छिपे रहे, तभी नदी के तल में बिखरे पत्थरों पर ज़ोरदार आवाज़ के साथ एक सांभर हिरण, जिसके पीछे एक हिरणी भी थी, तेज़ी से नदी पार करके उसी किनारे पर मौजूद बाँसों के बीच गायब हो गया, जहाँ हम छिपे हुए थे। चिंता भरे पल बीतते रहे और हममें से कोई भी हिला तक नहीं। फिर चुपचाप, बड़े सलीके से और निडरता से, एक बाघ बाँसों के बीच से निकला और तेज़ी से ढलान वाले किनारे से नदी के तट तक सरक गया। बिना किसी झिझक के वह नदी में चला गया, पत्थरों की परवाह किए बिना, और जब पानी उसके सीने तक पहुँच गया, तो वह रुक गया और पानी पीने लगा।

मैंने सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए उसके बाएं कंधे के पीछे गोली चलाई। वह खांसते हुए पीछे की ओर उछला और फिर करवट लेकर एक तरफ लेट गया, उसका चेहरा मुझसे दूर उस किनारे की ओर था जहाँ से वह अभी आया था। छिपने की जगह से बाहर निकलकर मैं लगभग चालीस गज आगे बढ़ा, जहाँ से मुझे उसके चेहरे का एक हिस्सा ही दिखाई दे रहा था, बाकी का हिस्सा पानी में डूब चुका था। यहाँ मैं पूरे पंद्रह मिनट तक रुका रहा, ज़रूरत पड़ने पर एक और गोली चलाने के लिए, लेकिन इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि बाघ मर चुका था।

मैंने पहले भी बताया है कि मैंने आदमखोर सांप के पंजों का सावधानीपूर्वक माप लिया था, जिसकी तुलना मैंने अपने सामने मौजूद सांप के पंजों से की और पाया कि वे बिल्कुल मेल खाते हैं। इस प्रकार मुझे पता चला कि अंततः, कई थका देने वाले प्रयासों और निराशाजनक असफलताओं के बाद, मैंने सेगुर के आदमखोर सांप को मार गिराया था।

उसके आदमखोर बनने की प्रवृत्ति का कारण भी स्पष्ट हो गया, क्योंकि उस जानवर की केवल एक ही आँख थी। बची हुई आँख की पुतली सिकुड़कर लगभग गायब हो चुकी थी। इस बाघ की खाल उतारते समय मैंने उस आँख के खोने के कारण की जाँच करने में विशेष ध्यान दिया, और चाकू से आँख के बचे हुए हिस्से को खोदकर निकालते समय मुझे सॉकेट में एक गोली का छर्रा फंसा हुआ मिला। यहाँ उस जानवर के आदमखोर बनने का स्पष्ट कारण था। संभवतः किसी शिकारी ने, मालाबार-वायनाद की सुदूर साइलेंट वैली में, उस जानवर के चेहरे पर गोली चलाई थी। एक छर्रा उसकी आँख में घुस गया और उसे अंधा कर दिया। दर्द से कराहते हुए और आँख खोने से लाचार होकर, बाघ को अपने सामान्य शिकार का शिकार करने में कठिनाई हो रही थी, और इसलिए उसने उस प्रजाति से बदला लिया जो उसकी आँख के लिए जिम्मेदार थी।

येम्मैदोड्डी का नरभक्षी

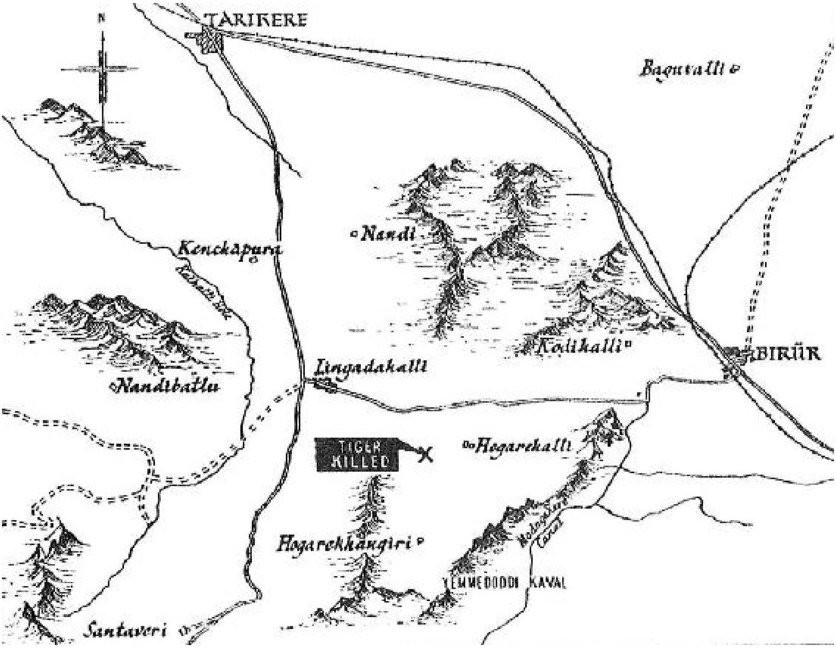

येम्मायडोड्डी दक्षिण भारत के मैसूर जिले के कादुर में स्थित एक वन क्षेत्र है। यह पहाड़ियों की एक श्रृंखला से घिरा हुआ है, जिनमें से सबसे ऊँची पहाड़ी का नाम होगर खान है। ये पहाड़ियाँ बाबा बुदंस नामक विशाल पर्वत श्रृंखला की पूर्वी शाखा का निर्माण करती हैं, जिसकी ऊँचाई 6,500 फीट तक है। 'मडक' नामक एक भव्य झील, जो पूरी तरह से वन से ढकी पहाड़ियों से घिरी हुई है, इस क्षेत्र की दक्षिणी सीमा बनाती है। इस झील से एक संकरी जलधारा, जिसके समानांतर एक संकरी वन सड़क है, उत्तर-पूर्व दिशा में दस मील तक बहती है, और बिरूर नामक छोटे कस्बे से लगभग तीन मील उत्तर में स्थित एक छोटी झील में मिल जाती है।

यह इलाका वन्यजीवों से समृद्ध है, और उससे भी अधिक मवेशियों के विशाल झुंडों से समृद्ध है जिन्हें दिन में चरने के लिए जंगल में ले जाया जाता है और हर शाम बिरूर वापस लाया जाता है। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आसपास के क्षेत्र बाघों की भरमार है, जो पहले तो शिकार करने के लिए आते हैं, प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले सांभर, चित्तीदार हिरण और जंगली सूअर का शिकार करने के लिए, लेकिन जल्द ही मवेशी चोर बन जाते हैं, क्योंकि मवेशियों को मारना बहुत आसान

होता है और स्थानीय चरवाहे अपने पशुओं की देखभाल में पूरी तरह से लापरवाह और उदासीन रहते हैं। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब किसी बाघ के जबड़ों में कोई अच्छी गाय या बैल न मारा जाए, जबकि बिरूर के बाहरी इलाकों में पैंथर द्वारा बछड़ों, बकरियों और गांव के कुत्तों का शिकार करना लगभग उतना ही आम है। दरअसल, ये छोटे मांसाहारी जानवर अपने बड़े चचेरे भाइयों की तुलना में संख्या में कम हैं, और खुद को शहर के बाहरी इलाकों तक ही सीमित रखते हैं, बाघों के क्षेत्र से काफी दूर, क्योंकि वे उस बड़े जानवर से डरते हैं जिसके वे कभी-कभी शिकार बन जाते हैं।

सन् 1946 की शुरुआत में, इस इलाके में एक छोटा नर बाघ प्रकट हुआ, जिसकी आदतें बिल्कुल अलग थीं। उसने बिरूर के बाहरी इलाके के पास, शाम के समय लौट रहे झुंडों से बछड़ों और बकरियों को छीनकर मारना शुरू किया। उसके शिकार को पहले तो किसी तेंदुआ का शिकार समझा गया, सिवाय इसके कि वह बड़े बछड़ों की गर्दन तोड़ देता था। शिकार करने का यह तरीका लगभग हमेशा बाघों द्वारा ही अपनाया जाता है, और कभी-कभी जंगल के बड़े तेंदुओं द्वारा भी, जिन्हें हिंदुस्तानी में 'थेंदू' कहा जाता है। इसलिए, हमलावर को तेंदुआ समझने की काफी संभावना थी, जब तक कि एक बार एक डरे हुए चरवाहे ने सचमुच एक छोटी गाय को मरते हुए नहीं देखा, जिसके बाद संदेह दूर हो गया।

यह युवा जानवर इलाके में तेजी से वयस्क हो गया, चमत्कारिक रूप से विभिन्न शिकारी जानवरों, चाहे वे स्थानीय हों या विदेशी, के हमलों से बचता रहा, और चालाक और साहसी भी होता चला गया, यहाँ तक कि अठारह महीनों में यह मवेशी चराने वालों के लिए एक बड़ा खतरा बन गया, सप्ताह में दो बार, और कभी-कभी तीन बार भी शिकार करता था, और हमेशा हर बार एक विशेष रूप से बढ़िया नमूने का चयन करता था।

1948 के अंत में, मैं अपने कुछ मित्रों के साथ येम्मैदोड्डी गया, ताकि उनमें से एक, अल्फी रॉबर्टसन के लिए एक ट्रॉफी प्राप्त कर सकूँ, जो जल्द ही इंग्लैंड लौटने वाले थे। मुझे बाघ के बारे में कई बार खबरें मिली थीं और मुझे पूरा विश्वास था कि मेरे साथी के लिए जानवर का शिकार करना काफी आसान होगा, बशर्ते हम शिकार की

खबर मिलने तक कुछ दिनों के लिए बिरूर में डेरा डालें। हम बैंगलोर से कार से रवाना हुए, दूरी 134 मील थी। दुर्भाग्य से मैं अपने कार्यालय में रुका रहा और हम देर शाम को निकले। सड़कें बेहद खराब थीं, और बैंगलोर से 86 मील दूर टिपटूर नामक स्थान के पास हमारा एक्सीडेंट हो गया। हम अपने मित्र की कार का उपयोग कर रहे थे और वही गाड़ी चला रहे थे। पिछला पहिया एक दिखने में सपाट पत्थर पर चढ़ गया, जो पहिया के ऊपर से गुजरते ही अपने किनारे पर खड़ा हो गया, और दूसरे किनारे ने कार के पीछे स्थित पेट्रोल टैंक में नौ इंच का चीरा लगा दिया। इसके बाद आठ गैलन पेट्रोल सड़क पर गिर गया और वाहन रुक गया।

हमारे पास अतिरिक्त पेट्रोल नहीं था, लेकिन हमारे पास प्राइमस स्टोव था, जिसके लिए हम पैराफिन तेल की दो बोतलें लाए थे। फुट पंप के रबर लीड के एक सिरे को पैराफिन की बोतल में डालकर, हमने साइफन फीड शुरू करने के बाद दूसरे सिरे को कार्बोरेटर में जाने वाले पाइप से जोड़ दिया। इस तरह हम टिपटूर तक की बची हुई थोड़ी दूरी तय करने में कामयाब रहे। वहाँ हमने कस्बे के इकलौते मैकेनिक को जगाया, ईंधन टैंक खोला और किसी सोए हुए निवासी के घर के बाहर मिले पैराफिन के डिब्बे के एक हिस्से से छेद को किसी तरह ठीक कर दिया।

इसके बाद आगे की यात्रा के लिए ईंधन की बड़ी समस्या सामने आई। हम गाड़ी को कस्बे के इकलौते पेट्रोल पंप तक धकेलते हुए ले गए, लेकिन हमें बताया गया कि पेट्रोल का स्टॉक कल ही खत्म हो गया था और अगले दिन दोपहर तक, या उससे भी कम से कम, दोबारा नहीं आएगा। ऐसा लग रहा था कि हमें टिपटूर में लंबे समय तक रुकना ही पड़ेगा। कस्बे में एक-दो ट्रक थे। हमने सो रहे ड्राइवरों को जगाया और उन्हें एक गैलन पेट्रोल के लिए बहुत कम दाम की पेशकश की ताकि हम सोलह मील दूर अगले कस्बे अरसिकेरे तक पहुँच सकें, जहाँ बर्मा शेल का पेट्रोल पंप था और हमें पूरा भरोसा था कि वहाँ से हमें ताज़ा पेट्रोल मिल जाएगा। लेकिन सभी ड्राइवरों ने यही कहा कि उनका भी पेट्रोल खत्म हो गया है और वे अगले दिन दोपहर तक आने वाले नए स्टॉक का इंतज़ार कर रहे हैं। स्थिति निराशाजनक थी, जब तक कि मैंने कुछ सख्त कदम उठाने का फैसला नहीं किया। सुबह के करीब 3:30 बज रहे थे और टिपटूर कस्बे की तरह ही, नैतिकता और अंतरात्मा भी बहुत पहले सो चुकी थी। हमने अल्फी को पैराफिन का डिब्बा लाने के लिए कहा, जिसमें से हमने अपने ईंधन टैंक के

लिए पैच काटा था, और खुद फुट-पंप का रबर-सीसा लेकर, हमने टिपटूर की शांत गलियों में चुपके से आगे बढ़ना शुरू किया।

एक गली में हमें एक जर्जर 'ए' मॉडल फोर्ड कार दिखाई दी। मैंने अल्फी को मालिक के जागने से बचने के लिए सतर्क रहने का निर्देश दिया और गाड़ी के दूसरी तरफ से धीरे-धीरे आगे बढ़ा। बोनट तक पहुँचकर मैंने इंजन के पीछे ईंधन टैंक का ढक्कन हटाया, रबर की नली का एक सिरा टैंक में डाला और एक चौथाई लीटर से थोड़ा अधिक ईंधन एक टिन में निकाल लिया, जिसे मैंने अपने घुटनों के बीच संतुलित कर रखा था। दूसरी बार जाकर हमें एक और चौथाई लीटर ईंधन मिल गया। बचे हुए पैराफिन तेल की बोतल में ईंधन मिलाकर हम जल्दी से अरसिकेरे की ओर चल पड़े, जहाँ से हमें नया ईंधन मिल गया।

नतीजतन, हम सुबह करीब 7:30 बजे तक अपने गंतव्य, बिरूर नामक छोटे कस्बे में नहीं पहुँच पाए। हम कस्बे से गुज़रे और जंगल की ओर लगभग दो मील आगे बढ़े ही थे कि हमें एक खुला मैदान दिखाई दिया जहाँ कई गिद्ध जमा थे। मेरे दोस्त ने एक तस्वीर खींची, जबकि मैं इस जमावड़े का कारण जानने के लिए नीचे उतरा और यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि जिस सड़क से हम अभी गुज़रे थे, उसके किनारे लगी बाड़ के ठीक पास एक अधेड़ बैल पड़ा था, जिसे एक तेंदुआ ने मार डाला था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि शिकार एक तेंदुआ ने ही किया था, क्योंकि मृत जानवर के गले पर दांतों के निशान से पता चलता था कि उसे गला घोंटकर मारा गया था। गर्दन की हड्डियाँ साबुत थीं और टूटी नहीं थीं, जबकि अगर हत्यारा बाघ होता तो ऐसा नहीं होता। इसके अलावा, जानवर का निचला हिस्सा खाया हुआ था, जबकि सींगों के निशान अभी भी शव के अंदर थे, जिससे यह स्पष्ट रूप से साबित होता है कि यह हत्यारा एक तेंदुआ ही था। क्योंकि बाघ एक स्वच्छ शिकारी होता है, और भोजन शुरू करने से पहले वह अपने शिकार के पिछले हिस्से में एक छेद बनाता है, जिसके माध्यम से वह उसकी आंतों और पेट को दस फीट की दूरी तक निकाल देता है, ताकि उसका भोजन मल से दूषित न हो।

हमें शुरुआती सफलता से बेहद खुशी हुई, और शिकार को गिद्धों से बचाने के लिए हमने झाड़ी से कुछ दूरी पर शाखाएँ तोड़ दीं। फिर मैंने झाड़ी में ही एक छिपने की

जगह बनाई, जहाँ से शिकार पर सीधी नज़र रखी जा सकती थी। हमने यह छिपने की जगह बहुत अच्छी तरह बनाई, और अल्फी को लगा कि पिछली रात उसकी कार के साथ हुई परेशानी का उसे पूरा मुआवज़ा मिल गया है, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि शाम को जब पैंथर अपने शिकार के पास लौटेगा तो हम उसे मार गिराएँगे।

फिर हम कुछ दूर चले गए, खाना खाया और रात के रोमांच के लिए तैयार होने के लिए सो गए। शाम 5 बजे तक, हम शिकार और अपने छिपने की जगह पर लौट आए, उस आवरण को हटा दिया जिसने प्रभावी रूप से गिद्धों को मृत जानवर से दूर रखा था। अल्फी राइफल, टॉर्च, कंबल और पानी की बोतल के साथ छिपने की जगह पर बैठ गया, और मैं कार से बिरूर वापस जाने की तैयारी कर रहा था, तभी एक हांफता हुआ चरवाहा दौड़कर आया और हमें बताया कि उसकी एक बड़ी दुधारू गाय को अभी-अभी एक बाघ ने मार डाला है, लगभग आधा घंटा पहले और एक मील से भी कम दूरी पर। मैंने फैसला अल्फी पर छोड़ दिया। क्या वह एक पैंथर को निश्चित शिकार के रूप में पसंद करेगा, या एक बाघ को संभावित शिकार के रूप में? मेरे अपने फैसले के अनुरूप, उसने बाघ पर हमला करने का विकल्प चुना। तदनुसार हमने सामान को चमड़े से बाहर निकालकर कार में रखा, आधा मील तक तेजी से सड़क पर गाड़ी चलाई जब तक कि चरवाहे ने हमें रुकने के लिए नहीं कहा, फिर हमने सामान को बाहर निकाला और उसके पीछे जंगल में शिकार की ओर दौड़ पड़े।

हमें ज्यादा दूर नहीं चलना था, और तीन फर्लांग चलने के भीतर ही हमें एक मृत जानवर दिखाई दिया, जो एक सुंदर काली दुधारू गाय थी। उसकी गर्दन स्पष्ट रूप से टूटी हुई थी और नाक से अभी भी झाग निकल रहा था। लेकिन बाघ ने एक निवाला भी नहीं खाया था, जाहिर तौर पर चरवाहे या शायद भैंसों ने उसे परेशान किया था, जो मवेशियों के साथ चर रही थीं। अब शाम के 6 बज रहे थे और अंधेरा तेजी से बढ़ रहा था। दुर्भाग्य से, उस जगह पर कोई पेड़ नहीं था, और कुछ मिनटों की खोज के बाद यह स्पष्ट हो गया कि हमें या तो शिकार छोड़ना होगा या बाघ के लौटने पर उस पर गोली चलाने का जोखिम उठाना होगा। अल्फी शिकार छोड़ने की बात सुनने को भी तैयार नहीं था, इसलिए चरवाहे की मदद से मैंने पास की झाड़ियों से कुछ शाखाएँ तोड़ीं और एक कच्चा सा छिपने का स्थान बनाया, जिसमें हम सभी शाम 6:30 बजे के कुछ ही देर बाद घुस गए। अब लगभग अंधेरा हो चुका था, और पंद्रह मिनट के

भीतर पच्चीस गज दूर मृत गाय की आकृति धुंधली हो गई। चाँद न होने के बावजूद, तारों की रोशनी इतनी थी कि हम आस-पास देख पा रहे थे, लेकिन शिकार हमारी पहुँच से थोड़ा बाहर था। एक घंटा बीत गया, और फिर लगभग आधा मील दूर से मुझे अकेले सियार की अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। जंगलों में अकेले सियार के इस विचित्र व्यवहार के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है और कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। सियार आमतौर पर कस्बों और गांवों के बाहरी इलाकों के पास झुंड में घूमते हैं, जिनके इलाकों में वे रात में जानवरों के अवशेषों की तलाश में घुस जाते हैं। उनका सामूहिक स्वर, जिसका नेतृत्व एक नेता करता है, विशिष्ट होता है, भारत के लोगों के लिए जाना-पहचाना है, और कुछ इस तरह सुनाई देता है: 'ऊऊऊऊह! ऊऊ-कहाँ? ऊऊ-कहाँ-कहाँ-कहाँ? यहाँ! ...

हालांकि, अकेला सियार, शब्द के हर मायने में उसी प्रजाति का सियार होने के बावजूद, एक बहुत ही अलग आवाज निकालता है। उसकी अकेली, लंबी और कर्कश आवाज़ "बा-इओ-आह" ने उसे एक खास पहचान दिलाई थी, साथ ही अनगिनत अंधविश्वास, लोककथाएँ और जंगल से जुड़े मिथक भी। लेकिन अटकलों के इस जाल से दो सिद्धांत प्रमुखता से सामने आते हैं। पहला यह कि यह सियार आमतौर पर बाघ या तेंदुआ के साथ रहता है, जिसे वह अपनी विचित्र आवाज़ से शिकार तक ले जाता है, और अपने अजीबोगरीब रिश्ते के तहत शिकार के बचे हुए हिस्से में से एक टुकड़ा मांगता है, जब असली मालिक पेट भर खा चुका होता है। दूसरा सिद्धांत यह है कि अकेला सियार किसी खास मांसाहारी जानवर से जुड़ा रहता है, जिसका वह बहुत सुरक्षित दूरी से, पूरी दृढ़ता से पीछा करता है, ताकि हर बार जब उसका मालिक शिकार करे, तो उसे बचे हुए हिस्से से नियमित भोजन मिल सके। इन दोनों सिद्धांतों में से जो भी सही हो, अकेले सियार की उपस्थिति और उसकी आवाज़ बाघ या तेंदुआ की निकटता का निश्चित संकेत है, इस तथ्य की मैंने भारत के कई वन क्षेत्रों में व्यक्तिगत रूप से पुष्टि की है।

इसलिए, उस रात अकेले सियार की आवाज़ ने हमें इतनी निश्चितता से बता दिया, मानो हमने खुद बाघ को देख लिया हो, कि मवेशियों को मारने वाला बाघ पास आ रहा है। लगभग दस मिनट बीत गए और फिर हमें शिकार की दिशा में और उससे आगे एक स्पष्ट 'उघा-उगल उगल' की आवाज़ सुनाई दी। बाघ आ गया था! मैंने धीरे से

अल्फी के पैर को धक्का दिया, लेकिन वह पूरी तरह चौकन्ना था। समय बीतता गया, और हमें झाड़ियों में हल्की सी चटकने की आवाज़ सुनाई दी, उसके बाद एक हल्की सी धमक और घसीटने की आवाज़ आई। अल्फी ने टॉर्च का स्विच दबाया और तेज़ रोशनी निकली। दुर्भाग्य से, धुंधले बैकग्राउंड के कारण, उसने शिकार के स्थान का गलत अनुमान लगाया और रोशनी थोड़ा बाईं ओर ज़्यादा चली गई। यह चेतावनी बाघ के लिए काफी थी, और एक कर्कश 'व्र-ऊफ! व्रूफ!' की आवाज़ के साथ वह झाड़ियों की ओट में वापस भाग गया। हम एक घंटा और रुके रहे, लेकिन मुझे पता था कि यह समय व्यर्थ था, और बाघ वापस नहीं आएगा। इस समय के अंत में हमने एक धीमी सी 'आ-ऊंघ\ आउंघ-हल ओ-ओ-ऑन-ओ-ओ-ऑन!' की आवाज सुनी, जब बाघ एक मील से अधिक दूर एक पहाड़ी को पार कर गया, और हमें अकेला छोड़ गया।

अफसोस के साथ हमने अपना सामान समेटा और कार में वापस लौटे, तभी पता चला कि अल्फी चाबी कहीं खो बैठा था। चाबी ढूंढते-ढूंढते, लिंगधल्ली कस्बे से बिरूर जा रही एक रात की बस हमारे पास से गुजरी। तभी अल्फी को चाबी मिल गई और हम बस के पीछे-पीछे चल दिए। उस जगह पहुँचकर जहाँ हमने पैंथर के लिए अपना छिपने का ठिकाना बनाया था, हम यह देखकर हैरान रह गए कि हमारे आगे चल रही बस की हेडलाइट्स की रोशनी में तेंदुए की आँखें चमक रही थीं, जो अब लौट आया था और अपने शिकार को खा रहा था। उसी समय बस के ड्राइवर ने भी आँखें देखीं और भारी भरकम गाड़ी को ब्रेक की तेज आवाज के साथ रोक दिया, जिससे दम घोंटने वाली धूल का एक बादल उठा और हम सब घिर गए।

मैं और अल्फी नीचे उतरे, बस के साथ-साथ चलने लगे और बीच के खेत के आधे हिस्से में छिपकर भागते हुए पैंथर को देखा। उसने गोली चलाई और जानवर 'अर्र-अर्रह!' की तेज़ आवाज़ के साथ हवा में उछला और फिर बिजली की तरह खेत में दौड़ पड़ा।

बहुत देर बाद हमें एहसास हुआ कि हमने गलती की थी। अल्फी को वापस हमारे छिपने की जगह पर चले जाना चाहिए था और मुझे बस के पीछे-पीछे गाड़ी चलाकर निकल जाना चाहिए था। दोनों गाड़ियों के जाने के कुछ ही मिनटों में तेंदुआ निस्संदेह अपने शिकार के पास लौट आता और अल्फी को आसानी से निशाना लगाने का

मौका मिल जाता। हालात ऐसे थे कि मैंने सही सलाह नहीं दी थी और अब हमारे हाथ में एक घायल तेंदुआ था। लेकिन अब पछताने का कोई फायदा नहीं था, इसलिए हम बिरूर लौट आए और रात यात्रियों के बंगले में बिताई।

अगली सुबह हम उसी जगह पर वापस पहुँच गए, और चारों ओर छानबीन करने पर हमें खून का एक हल्का निशान मिला, जो खेत के बिल्कुल आखिरी छोर पर जाकर ही स्पष्ट होने लगा और घनी झाड़ियों में घुसते ही बढ़ता गया। यहाँ हमारे सामने एक कठिन चुनौती खड़ी हो गई। तेंदुए को स्पष्ट रूप से उसके पार्श्व भाग में चोट लगी थी, और खून को जानवर के शरीर से बहकर ज़मीन तक पहुँचने में समय लगा था, इसीलिए वह निशान खेत के आखिरी छोर पर ही दिखाई दिया। उसके बाद खून लगातार टपकता रहा, जबकि जानवर घनी झाड़ियों में रेंगता हुआ चला गया, जिनमें लैंटाना और 'वेट-ए-बिट' झाड़ियाँ थीं, जहाँ घुटनों के बल रेंगने के अलावा उसका पीछा करना असंभव था। एक पुराना जंगली सूअर का रास्ता इसी झाड़ियों से होकर गुज़रता था, और तेंदुआ उसी रास्ते से गुज़रा था, जैसा कि उसके द्वारा छोड़े गए खून के निशानों से स्पष्ट था।

हाथों और घुटनों के बल रेंगते हुए, और आगे बढ़ते हुए अपनी भरी हुई .405 विंचेस्टर पिस्तौल को आगे धकेलते हुए, मैं घायल जानवर के पीछे-पीछे चल रहा था। अल्फी पीछे-पीछे चल रहा था, ताकि बगल से या पीछे से होने वाले हमले से बचाव हो सके। इस तरह हम लगभग पचहत्तर गज आगे बढ़े ही थे कि अचानक, रास्ते के अगले मोड़ पर घात लगाए बैठे तेंदुए ने हमला कर दिया।

चूक की गुंजाइश लगभग न के बराबर थी, और मैंने लगभग बंदूक की नोक से उसे गोली मारी। नरम नोक वाली गोली ने उसकी खोपड़ी को चकनाचूर कर दिया और मस्तिष्क के पिछले हिस्से को पूरी तरह से अलग कर दिया। वह मेरी आँखों के सामने मर गया, उसके मस्तिष्क का तरल पदार्थ उसकी चकनाचूर खोपड़ी से रिस रहा था।

हम बिरूर में पूरे दस दिन रहे, लेकिन इस पूरे समय में केवल एक और शिकार हुआ, और वह सातवें दिन सुबह यम्मैदोड्डी नहर से छह मील नीचे एक जगह पर हुआ। जब तक हमें घटना की सूचना मिली और हम घटनास्थल पर पहुँचे, तब तक काफी शाम हो चुकी थी और हमने देखा कि गिद्धों ने शिकार को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था,

उसे पत्तों से ढकने का कोई उपाय नहीं किया गया था। लगभग चालीस गज की दूरी पर एक पेड़ अवशेषों पर नज़र रख रहा था, और अल्फी आधी रात तक एक पेड़ की शाखाओं में बैठा रहा, लेकिन बाघ दिखाई नहीं दिया।

उसके बाद कुछ नहीं हुआ, जैसा कि मैंने कहा, और ग्यारहवें दिन की सुबह हम बैंगलोर के लिए रवाना हो गए। समय बीतता गया। फिर एक अंधेरी रात को लिंगधल्ली से बिरूर जाने वाली सड़क पर चार 'कार-शिकारी' (कार-शिकारी) अपनी कार से जा रहे थे। ये लोग स्पॉटलाइट की मदद से अपनी कार से ही शिकार करते हैं और जंगलों से गुजरते समय कभी भी ज़मीन पर पैर नहीं रखते। उन्हें ट्रैकिंग, बड़े शिकार के विज्ञान, जंगल और प्रकृति की सुंदरता के बारे में कुछ भी नहीं पता और न ही उन्हें इसकी परवाह है। उनके लिए, खेल का सबसे ऊँचा रूप सीलबंद स्पॉटलाइट से जंगल में तेज़ रोशनी डालना और फिर राइफल और बंदूक की गोलियों की बौछार करना है, जो भी आँखें उनकी रोशनी की चमक को पकड़ सकें और प्रतिबिंबित कर सकें।

वे किस जानवर पर गोली चलाते हैं, नर, मादा या बच्चा, उन्हें इसकी परवाह नहीं होती, क्योंकि वे केवल मारने या घायल करने की लालसा से भरे होते हैं। कहने की जरूरत नहीं है कि ऐसी गतिविधियाँ सभी मौजूदा नियमों के खिलाफ हैं, लेकिन फिर भी अक्सर होती रहती हैं। और ऐसा ही हुआ कि बिरूर से लगभग चार मील दूर, सड़क के किनारे एक टीले पर चढ़ते हुए उन्होंने एक बाघ की बड़ी-बड़ी धधकती सफेद आँखें देखीं। दो गोलियाँ चलीं और बाघ उछल पड़ा, राइफल की एक गोली से उसका निचला जबड़ा चकनाचूर हो गया, जबकि दूसरी गोली चूक गई। कहने की जरूरत नहीं है कि 'कार शिकारी' न तो जाँच के लिए रुके और न ही अगली सुबह घायल जानवर का पीछा करके उसे उसकी पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए वापस आए। वे बस अपने रास्ते पर चलते रहे, गोली चलाने के लिए अन्य आँखों की तलाश में।

अगले दो महीनों तक घायल बाघ को असहनीय पीड़ा सहनी पड़ी होगी, और वह ठीक से खा भी नहीं पा रहा था। बुरी तरह टूटे जबड़े के कारण वह अपने शिकार को पकड़ नहीं पा रहा था, और शिकार या मवेशी जैसे अपने सामान्य भोजन का भी लाभ नहीं उठा पा रहा था। लगभग तीन महीने बाद, एक दिन उसने जंगल में चरने के लिए गए

बकरियों के झुंड से एक बकरी को पकड़ने की कोशिश की। अत्यंत सावधानी से वह झुंड का पीछा करते हुए एक मोटी बकरी पर झपटा और जबड़े से गर्दन तोड़ने की बजाय अपने पंजों से जोरदार प्रहार करके उसे मारने ही वाला था कि पास खड़े साहसी चरवाहे ने अपनी लाठी फेंक दी। इस बार उसका निशाना सटीक निकला और लाठी बाघ के बगल से लगी। क्रोधित होकर उसने चरवाहे पर हमला कर दिया, और पंजे से किया गया प्रहार एक बार फिर बेहद कारगर साबित हुआ, जिससे दुर्भाग्यपूर्ण चरवाहे की खोपड़ी लगभग पूरी तरह से उखड़ गई। आतंक और पीड़ा से भरी उसकी चीख एक और जोरदार प्रहार से रुक गई, जिसने इस बार उस आदमी की खोपड़ी को ऐसे कुचल दिया जैसे वह कोई अंडा हो।

वह आदमी गिर पड़ा, जिससे बाघ के पास खाने के लिए दो शिकार बचे - बकरी या इंसान। बाघ कुछ देर तक इंसान के शव के पास रुका और उसकी कुचली हुई खोपड़ी से रिसते खून को चाटा। मानो तुलना करने के लिए, वह फिर बकरी के पास गया, उसकी गर्दन पकड़ ली और कुछ देर बाद उसे घने जंगल में ले जाने लगा। लेकिन कुछ ही कदमों पर, बिना किसी स्पष्ट कारण के, वह रुक गया, बकरी को छोड़ दिया, मरे हुए चरवाहे के पास गया और उसका कंधा पकड़कर आसपास के घने जंगल में गायब हो गया।

इस प्रकार येम्मैदोड्डी के खूंखार आदमखोर बाघ का जन्म हुआ और उसके आतंक का राज शुरू हो गया। इसके बाद, इस जानवर के कारण होने वाली मौतें लगभग 250 वर्ग मील के क्षेत्र में घटित हुईं, जो उत्तर में बिरूर, लिंगधल्ली और भगवदकट्टे से लेकर पश्चिम में बाबा बुदन पर्वतमाला पर स्थित संतावेरी तक और दक्षिण में आयरनकेरे झील से होते हुए सक्रेपटना और फिर बिरूर तक फैला हुआ था। हालांकि मानव हत्याएं लगातार बढ़ती नियमितता के साथ घट रही थीं, लेकिन वे एक निश्चित अंतराल पर घट रही थीं और उनमें यह विशिष्ट चिह्न था कि प्रत्येक शिकार को पंजे के जोरदार प्रहार से मारा गया था, न कि जबड़े की सामान्य घातक पकड़ से। इसके अलावा, विभिन्न शवों की जांच से यह स्पष्ट हो गया कि बाघ अपने निचले जबड़े का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में असमर्थ था, और किसी भी शव पर आदमखोर बाघ का दोबारा भोजन करने का चलन नहीं था। उन पर से मांस को एक विचित्र तरीके से खुरच कर निकाला गया था, जाहिर तौर पर ऊपरी जबड़े द्वारा अकेले ही मानव मांस

की पट्टियों पर काम करके, जिसे यह जानवर खाने के कठिन कार्य को आसान बनाने के लिए अपने शक्तिशाली पंजों से नंगा कर देता था।

आदमखोर बाघ के आगमन के साथ ही, यम्मयदोड्डी और लिंगाधल्ली मार्गों पर सक्रिय, पहले बेहद फुर्तीले और मवेशी-शिकारी बाघ की गतिविधियाँ अचानक बंद हो गईं। इससे यह निष्कर्ष निकला कि यही मवेशी-शिकारी बाघ अब आदमखोर बन गया था। 'कार-शिकारियों' की कहानी कुछ समय तक अज्ञात रही, जब तक कि उनमें से एक ने शेखी बघारते हुए यह खुलासा नहीं कर दिया कि उन्होंने बिरूर-लिंगाधल्ली मार्ग पर एक बाघ पर गोली चलाई और उसे घायल कर दिया। बाद में इन तथ्यों को जोड़कर कहानी का खुलासा हुआ, जैसा कि हम आज जानते हैं। जैसा कि मैंने कहा है, आदमखोर बाघ एक निश्चित क्षेत्र में घूमता था, और नियमित रूप से उन स्थानों के बाहरी इलाकों में शिकार करता था जो मैंने बताए हैं। ये तथ्य मैंने बाघ की गतिविधियों के बारे में प्रेस में छपी रिपोर्टों को पढ़कर और अपने वन मानचित्र पर इन स्थानों के नाम और लोगों के मारे जाने की तारीखों को अंकित करके जुटाए।

इस क्षेत्र का केंद्र, जिसे बाघ ने नियमित गश्ती क्षेत्र के रूप में चुना था, पर्वत श्रृंखला की तलहटी की पथरीली और घने जंगलों से ढकी ढलानों से बना था, जिसकी चोटी पर लगभग 4,500 फीट ऊँची होगर खान नामक पहाड़ी थी। मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि ये दुर्गम क्षेत्र, जहाँ आबादी लगभग न के बराबर थी, बाघ को आश्रय देते थे, और यहीं से वह नियमित रूप से अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में घुसपैठ करता था। पिछले शिकारों की तारीखों के अध्ययन से पता चला कि जानवर लगभग हर तीसरे या चौथे महीने अपने गश्ती मार्ग पर लौट आता था। इस समय तक शिकारों की कुल संख्या सत्ताईस तक पहुँच चुकी थी। इस जानवर का शिकार करने के अपने प्रयास में, मैंने होगरेहल्ली गाँव को चुना, जो बिरूर और लिंगधल्ली के लगभग मध्य में स्थित था, और होगर खान पर्वत के आधार से नीचे की ओर ढलान वाले झाड़ीदार जंगल से होकर केवल साढ़े तीन मील दूर था। मैंने इस क्षेत्र को मुख्य रूप से इसलिए चुना क्योंकि मैं आसपास के जंगल के भूगोल से अच्छी तरह परिचित था, और निवासियों से भी अच्छी तरह परिचित था, जिनसे मुझे उचित सहयोग की उम्मीद थी। इसके अलावा, जैसा कि मैंने बताया, होगारेहल्ली गाँव होगार खान की तलहटी के पास था, जहाँ मुझे पूरा यकीन था कि बाघ का मुख्यालय था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि

जब भी बाघ अपने चक्कर लगाता था, इस गाँव से होकर कोई न कोई जान जरूर जाती थी। दूसरे शब्दों में, यह गाँव उसके लिए लगभग एक निश्चित बुलावा था।

मैं तीन महीने के चक्र की समाप्ति से पूरे दो सप्ताह पहले होगारेहल्ली पहुँच गया, जो अगली प्रस्तावित यात्रा से दो से छह सप्ताह के भीतर होता है। इस प्रकार, मुझे विभिन्न हत्याओं के विवरण और प्रकृति की जाँच-पड़ताल करने और यदि संभव हो तो इस क्रूर अपराधी से बचने की योजना बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल गया।

यह गाँव काफी बड़ा है और यद्यपि यहाँ जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक नहीं है, फिर भी यहाँ लाल रंग के पत्थरों से बने स्थायी मकान हैं। ये पत्थर आसपास बहुतायत में पाए जाते हैं, जो टुकड़ों के रूप में होते हैं और इनका आकार हथेली से लेकर कई वर्ग फुट तक भिन्न होता है। होगारेहल्ली भी प्राचीन है; यह प्राचीन काल से अस्तित्व में है और इसमें दो प्राचीन और सुदृढ़ मंदिर हैं। यह पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में घनी झाड़ियों से घिरा है जो होगार खान की ओर जाती हैं, और दक्षिण में एक बड़ी और सुंदर झील है जो सर्दियों के महीनों में हंसों, जंगली बत्तखों और टील पक्षियों से भरी रहती है। इसके दक्षिण में एक पगडंडी लगभग तीन मील दूर येम्मैदोड्डी जलमार्ग की ओर जाती है। दक्षिण-पूर्व में नारियल और केले के पेड़ों के घने बागान हैं, जिनके बीच सुपारी के लंबे पतले तने दिखाई देते हैं, और नीचे का पूरा क्षेत्र पान के लट्ठों से घनी तरह ढका हुआ है, जिसके पत्ते प्रायद्वीप भर के भारतीयों द्वारा बड़े चाव से चबाए जाते हैं। यह क्षेत्र अत्यधिक नम भूमि से बना है, जो प्राकृतिक रूप से नीचा है और गाँव के दक्षिण में स्थित झील से आने वाली एक नहर द्वारा सिंचित है। होगारेहल्ली के दक्षिण में कुछ बिखरे हुए धान के खेत हैं, और फिर दक्षिण-पूर्व, पूर्व और उत्तर की ओर मानसून की बारिश से सिंचित शुष्क फसलों के खेत हैं, जो लगभग 1 मील दूर बिरूर-लिंगाधल्ली सड़क तक फैले हुए हैं।

जैसा कि आप अब तक समझ गए होंगे, अधिकांश शिकार पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम के झाड़ीदार इलाकों में हुए, जबकि दो शिकार नारियल के बागान के बीचोंबीच हुए, जिनमें से एक मालिक का चचेरा भाई था। आदमखोर बाघ ने बाकी खुले इलाकों से दूरी बनाए रखी थी। इसके अलावा, अधिकांश मामलों में शिकार दोपहर बाद हुए थे, क्योंकि हत्याएं शुरू होने के बाद से निवासियों ने सूर्यास्त से पहले

घर के अंदर रहने की अच्छी आदत विकसित कर ली थी। बाघ के पदचिह्नों से कई बार पता चला था कि वह सुबह-सुबह गांव के बाहरी इलाके में घुस गया था, लेकिन मजबूत बने घर और ठोस

लकड़ी के दरवाजों ने उसे, कम से कम अभी तक, रात में अंदर आने से रोक रखा था। इन परिस्थितियों में आगे की योजना बनाना मुश्किल था। मुझे पता था कि बाघ के मारे जाने के बाद वह आगे बढ़ जाएगा और अगले तीन-चार महीनों तक दोबारा होगारेहल्ली नहीं आएगा। साथ ही, मेरे लिए यह अनुमान लगाना भी असंभव था कि अगला आदमी कहाँ हमला करेगा और मारा जाएगा। इसलिए, मेरे पास एकमात्र स्पष्ट रास्ता यही बचा था कि मैं बाघ को चारा बनकर अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश करूँ, एक ऐसी प्रक्रिया जिसे अपनाने में मुझे बहुत हिचकिचाहट हो रही थी। फिर भी, यही एकमात्र रास्ता प्रतीत हो रहा था।

होगारेहल्ली पहुंचने के बाद से एक सप्ताह इन सभी जानकारियों को जुटाने, विभिन्न हत्याओं की परिस्थितियों का अध्ययन करने और उन स्थानों का दौरा करने में बीत गया था जहाँ ये घटनाएँ घटी थीं। अब आदमखोर बाघ के अगले हमले का समय तेज़ी से नज़दीक आ रहा था। मैंने पाया कि पश्चिम की ओर झाड़ीदार इलाके में मारे गए लोग या तो लकड़हारे थे या मवेशी चराने वाले चरवाहे। आदमखोर बाघ ने किसी भी मवेशी को नुकसान नहीं पहुँचाया था, हालाँकि कभी-कभार भटकते हुए तेंदुए ने कुछ जानवरों को मार गिराया था। तभी मेरे मन में एक विचार आया, जो मुझे अपने आप पर बहुत गर्व महसूस करा रहा था। इस झाड़ीदार इलाके के अंदर लगभग आधा मील दूर एक पेड़ चुनकर, मैंने उसकी शाखाओं में ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर एक कुर्सी बाँधने की व्यवस्था की, ताकि बाघ की छलांग उस तक न पहुँच सके। फिर मैंने लगभग छह फीट लंबा और तीन इंच व्यास का एक मोटा लकड़ी का टुकड़ा लिया, जिसका एक सिरा मैंने एक मोटी रस्सी से एक शाखा से लटका दिया, जबकि दूसरा सिरा मेरे नीचे पेड़ की एक शाखा से तिरछा टिका दिया। इसके लिए मैंने एक और डोरी बाँधी, जिसे मैंने अपने जूते के अगले हिस्से पर बने एक लूप से गुजार दिया। इस तरह मैं आराम से कुर्सी पर बैठा रह सकता था, पूरी तरह तैयार। बस अपने पैर की एड़ी को ऊपर-नीचे हिलाने से ही नीचे लटकी लकड़ी का टुकड़ा उस डाल से टकराता था जिस पर वह टिका होता था, जिससे लकड़ी काटने वाले की आवाज़ जैसी ध्वनि

निकलती थी, हालाँकि, ज़ाहिर है, आवाज़ काफ़ी कम होती थी। जब एक पैर थक जाता, तो मैं डोरी को दूसरे पैर पर बाँध लेता। मैंने इस डोरी को इतना लंबा भी रखा कि मैं इसे हाथ से चला सकूँ, और फिर खींचकर लंबाई बढ़ाकर लकड़ी के टुकड़े की गति और परिणामस्वरूप प्रहारों की आवाज़ को बढ़ा सकूँ। धूप से बचने के लिए मैंने पेड़ के पत्तों की ही छतरी बना ली, बिना उन्हें काटे। यह जानकर भी सुकून मिलता था कि मैं बिना किसी तंग आवरण के अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे धूम्रपान कर सकता था, खा सकता था, पी सकता था, खाँस सकता था और इधर-उधर घूम सकता था।

दरअसल, चूंकि मैं खुद चारा बना हुआ था, इसलिए मेरी मौजूदगी जितनी ज़्यादा ज़ाहिर होती, बाघ के मुझ पर हमला करने या मेरा पीछा करने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती। होगारेहल्ली गाँव के मुखिया मूडलागिरी गौड़ा ने मुझे पूरा सहयोग दिया। मैंने उन्हें अपनी योजना समझाई और ज़ोर देकर कहा कि जिस पल से मैं अपनी जगह से काम करना शुरू करूँगा, तब से यह उनकी ज़िम्मेदारी होगी कि कोई भी झाड़ीदार जंगल या नारियल के बागान में न जाए, ताकि बाघ को मुझ पर हमला करने के अलावा कोई चारा न मिले। उन्होंने ऐसा करने का वादा किया और तुरंत गाँव और आसपास के इलाकों में चेतावनी जारी कर दी कि दोपहर के बाद कोई भी बाहर न निकले, खासकर झाड़ीदार जंगल और बागान की तरफ। गाँव के आसपास मवेशियों को खिलाने के लिए पखवाड़े भर से तीन हफ़्ते तक पर्याप्त घास और सूखी घास थी, तब तक मुझे उम्मीद थी कि बाघ दिखाई देगा। पटेल के निर्देश इसलिए भी अधिक लोकप्रिय थे क्योंकि कोई भी बाघ के पंजों के नीचे मरना नहीं चाहता था, और क्योंकि इससे ग्रामीणों को अगले तीन हफ्तों तक पूरी तरह से खाली बैठने का आकर्षक अवसर मिल रहा था।

होगारेहल्ली पहुँचने के ठीक दसवें दिन, मैंने अपनी योजना को परखना शुरू किया। दोपहर का भोजन करने के बाद, मैं सुबह कुछ ही देर पहले पानी की बोतल, सैंडविच, पाइप और अपनी .405 पिस्तौल लेकर पेड़ के पास पहुँचा और पहले दिन की निगरानी शुरू की। पैर हिलाकर टैपिंग की आवाज़ निकालना, मुझे जल्द ही पता चला, एक नीरस और थका देने वाला काम था। दोपहर की धूप की परावर्तित किरणें मुझे बहुत असहज कर रही थीं और आँखों को बेहद थका रही थीं, क्योंकि मुझे चिलचिलाती गर्मी की धुंध के बीच से अपने चारों ओर झाड़ियों वाले जंगल को देखना

पड़ रहा था। मैं सूर्यास्त तक वहीं बैठा रहा और अगले एक हफ्ते तक वहीं बैठा रहा, लेकिन बाघ के लौटने का कोई संकेत न तो सुनाई दिया और न ही दिखाई दिया। इस समय तक मैं अपनी दृष्टि सीमा के भीतर प्रत्येक बड़ी झाड़ी की स्थिति से पूरी तरह परिचित हो चुका था, और मैंने अपने आदमियों से उपलब्ध आवरण के अनुरूप, बाघ द्वारा मेरे पेड़ पर मेरा पीछा करने के लिए संभावित विभिन्न मार्ग निर्धारित करवा लिए थे, यानी, जब और यदि वह वापस आता है।

पहले सप्ताह के निरर्थक बीतने के बाद, और उस भयानक नीरसता से राहत पाने के लिए, मैंने बिरूर रेलवे स्टेशन के छोटे से पुस्तक स्टॉल से कुछ सस्ते उपन्यास खरीदे, जिन्हें मैं अपनी जगह पर बैठकर पढ़ता था। मैं लकड़ी को हिलाने वाली रस्सी को अपने आप चलाता रहता था, और पढ़ते समय आसपास होने वाली किसी भी घटना को सुनने के लिए अपनी सुनने की शक्ति पर निर्भर रहता था। इस तरह मैं दूसरे सप्ताह के अंत तक पहुँच गया, और बाघ के लौटने का कोई संकेत नहीं मिला।

यह समझना आसान है कि इस समय तक मैं अधीर हो रहा था; वास्तव में, मैं अपनी इस जबरन की गतिविधि से बहुत तंग आ चुका था। मैंने बेहतर योजना बनाने के लिए बहुत दिमाग लगाया, लेकिन कोई ऐसा निष्कर्ष नहीं निकाल पाया जो मेरे मौजूदा तरीके से अधिक कारगर साबित हो। अब चौथा महीना शुरू हो चुका था, और बाघ की वापसी किसी भी समय हो सकती थी, बशर्ते कि वह अपने क्षेत्र में ही घूम रहा हो। मैंने जिले के मुख्यालय चिकमगलूर के उपायुक्त से यह व्यवस्था की थी कि वे अपने अधीनस्थ, कादुर के अमिलदार (जो बिरूर से केवल चार मील दूर था) के माध्यम से मुझे क्षेत्र में होने वाली सभी मानव हत्याओं की सूचना देते रहें। जैसे ही किसी शिकार की खबर मिलती, एक संदेशवाहक को मेरे पास भेजा जाना था, और वास्तव में, दो दिन बाद अमिलदार का संदेशवाहक आया और उसने मुझे बताया कि बाघ ने चार दिन पहले चिकमगलूर-सक्रेपटना मार्ग पर एक छोटे से गाँव में शिकार किया था। अगले ही दिन संदेशवाहक फिर आया और उसने मुझे आयरनकेरे झील के उत्तरी तट पर एक चरवाहे की हत्या की सूचना दी। यह मदक झील से पाँच मील दूर था, जो कि होगारेहल्ली से लगभग नौ मील दूर थी। अब तक की रिपोर्टें संतोषजनक थीं, क्योंकि उनसे स्पष्ट रूप से संकेत मिल रहा था कि बाघ अभी भी अपने नियमित क्षेत्र में ही है और अंतिम शिकार के समय, यानी खबर मेरे पास पहुँचने से दो दिन पहले, वह

लगभग चौदह मील दूर था। इसलिए मैं उम्मीद कर सकता था कि इस समय तक बाघ होगारेहल्ली के बाहरी इलाके के बहुत करीब पहुँच गया होगा, या शायद पहले से ही वहाँ पहुँच चुका होगा, और चूंकि कल उसके भोजन किए हुए तीसरा दिन होगा, इसलिए पूरी उम्मीद थी कि वह नए शिकार की तलाश में होगा।

उस शाम मैंने मूडलागिरी गौड़ा को होगारेहल्ली और आसपास के निवासियों को चेतावनी देने को कहा कि हत्यारा आसपास ही है, और झाड़ियों वाले इलाके और बागान से हर कीमत पर दूर रहें। अगली सुबह मैं हमेशा की तरह जल्दी अपनी जगह पर बैठा था। इस बार मैं कोई उपन्यास नहीं लाया था, बल्कि लकड़ी के टुकड़े को जितना हो सके जोर से पीटने, खांसने और पेड़ की शाखा पर इधर-उधर हिलने-डुलने पर ध्यान केंद्रित कर रहा था ताकि खुद को जितना हो सके दिखा सकूं। उस शाम गांव लौटते समय मैंने अचानक हमले से बचने के लिए पूरी सावधानी बरती, लेकिन दो दिन और बीत गए और कुछ नहीं हुआ। न ही मुझे आगे किसी शिकार के बारे में कोई खबर मिली। अब मुझे लगा कि बाघ होगर खान की पहाड़ी पर अपने सुरक्षित ठिकानों पर लौट गया होगा, या शायद होगारेहल्ली को छोड़कर उत्तर-पश्चिम दिशा में लिंगधल्ली और बागवडकट्टे की ओर चला गया होगा, या फिर पश्चिम की ओर संतावेरी की ओर।

मौसम अपेक्षाकृत गर्म था और आधा चाँद निकल आया था, इसलिए मैंने अगले दो दिनों की पूरी दोपहर और रात पेड़ पर बिताने का निश्चय किया, इस उम्मीद में कि शायद मुझे बाघ को आकर्षित करने का मौका मिल जाए, जो निस्संदेह अंधेरा होने के बाद घूम रहा होगा। पंद्रह दिनों तक व्यर्थ बैठे रहने से मैं पहले ही थक चुका था, इसलिए इससे मुझ पर और भी अधिक दबाव पड़ेगा। फिर भी, मैंने सफलता की एक हताश कोशिश में इस कठिन परीक्षा को सहने का निश्चय किया। अगली सुबह मैं फिर से वापस आ गया, इस बार मेरे साथ एक टोकरी थी जिसमें मेरा रात का खाना, गर्म चाय की एक थर्मस, एक कंबल, पानी की बोतल, टॉर्च और अन्य सामान थे जो रात में पेड़ पर लंबे, तंग घंटों बिताने वाले पहरेदार के पास होते हैं। मैं नींद न आने के लिए बेंजेड्रिन की तीन गोलियां भी लाया था। मैंने पूरी दोपहर पेड़ पर पैर पटकने की वही कठिन परीक्षा दोहराई और देर रात तक इसे जारी रखा। जंगल में सींग वाले उल्लू की आवाज और दूर से आती काकर या जंगली भेड़ के भौंकने के अलावा असामान्य रूप से सन्नाटा था। रात के 1:30 बजे तक चाँद डूब गया और चारों तरफ़ घना अंधेरा छा

गया और बहुत ठंड भी हो गई। लगभग 3 बजे मुझे नींद आने लगी और मैंने बेन्ज़ेड्रिन की तीन गोलियों में से दो निगल लीं। आधे घंटे बाद मुझे सरसराहट सुनाई दी, और फिर एक लकड़बग्घे की उत्तेजित हंसी सुनाई दी, जैसे उसने मुझे सूंघा हो या देखा हो। 'हा हा हा हा हा, ये क्या है यहाँ? हा हा' उसने कहा और फिर अंधेरे में अपने रास्ते चला गया।

फिर सन्नाटा छा गया, जब तक कि झूठी सुबह की हल्की रोशनी ने सूर्योदय से एक घंटा पहले का संकेत नहीं दिया। वह घंटा बीत गया, और फिर, 'व्ही-ई-ई-ईव आई कुक-काया-काया-खुक्कम', भूरे रंग के जंगली मुर्गे ने उगते सूरज का अभिवादन करते हुए बांग दी, और मैं थका हुआ अपने ठिकाने से नीचे उतरा, होगारेहल्ली वापस जाने के लिए संघर्ष कर रहा था ताकि चार घंटे की नींद ले सकूँ। सुबह ग्यारह बजे मैं फिर से पेड़ पर वापस आ गया और थका देने वाली पहरेदारी जारी रखी। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता। गर्म दोपहर हमेशा की तरह गुज़री, हरे बारबेट की 'टोक-टोक-टोक-टोक' और कोयल परिवार से संबंधित भारतीय क्वील की 'को-एल! को-येल' की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी। शाम होने लगी, और पास की एक झाड़ी के नीचे सूखे पत्तों में से कुछ चुनता हुआ एक स्पूर फाउल 'कुकुर्रुका-वैक. कुकुर्रुका-वैक.' चिल्लाया। पक्षियों का एक समूह, जिसे बोलचाल में 'सात बहनें' कहा जाता है, रात के लिए अपने ठिकाने पर जाने की तैयारी कर रहा था और उनकी चहचहाहट सुनाई दे रही थी। जैसे ही सूरज होगर खान की ढलानों के नीचे डूबा, एक मोर ने अपनी विदाई की आवाज़ निकाली, 'मिया-आ-ऊ- आह-ऊ-आओ-आ-ह-ओ-ओ-तार-ह-ऊ।' फिर रात के पक्षियों ने भी यही आवाज़ निकाली। रात के पक्षी ऊपर उड़ते हुए 'चीसे-चीसे' चहचहाए, और पास के पेड़ों की शाखाओं या ज़मीन पर बैठते ही उनकी आवाज़ बदलकर 'चुकू-चुकू-चुकू' हो गई।

दस बज गए, और कुछ ही देर बाद चित्तीदार हिरणों के झुंड से 'आओ! आओ! आओ!' की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। वे लगातार 'आओ! आओ!' की चेतावनी दे रहे थे। निस्संदेह कोई मांसाहारी जानवर हरकत में था, और चौकस हिरणियों ने उसे देख लिया था या उसकी गंध महसूस कर ली थी, लेकिन क्या वह पैंथर था, साधारण बाघ था या खुद आदमखोर था, यह सवाल अनसुलझा था। मैंने लकड़ी को और ज़ोर से थपथपाया, इस उम्मीद में कि बाघ यह न सोचे कि यह रहस्यमय लकड़हारा रात में

काम करने कैसे आया।

मिनट धीरे-धीरे बीतते गए, और फिर अचानक आधे मील से भी कम दूरी पर एक भयभीत सांभर हिरण की तीखी आवाज सुनाई दी: 'पोंक-व्ही-ओंक-व्ही-ओंक' वह बार-बार दोहराता हुआ होगर खान की ओर बढ़ रहा था। फिर सन्नाटा छा गया! मैं लगातार थपथपाता रहा और अर्धचंद्र में दिखाई देने वाली हर झाड़ी को ध्यान से देखता रहा, मन ही मन उन विभिन्न आड़ियों का अनुमान लगाता रहा जहाँ बाघ पेड़ का पीछा करते हुए छिप सकता था। इनमें से किसी भी आड़ में कुछ भी नहीं हिला, और सब कुछ शांत था, सिवाय सांभर की एक आखिरी 'पोंक!' की आवाज के, जो दूर से आ रही थी।

मुझे अजीब सा एहसास होने लगा कि किसी भी पल कुछ हो सकता है, और मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे देख रहा हो, फिर भी सन्नाटे में कोई आवाज़ या खड़खड़ाहट नहीं हुई। मैं धीरे-धीरे पैर थपथपाते हुए खाँसा, फिर हिला और आखिर में अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ, बिल्कुल भारतीय अंदाज़ में खाँसते और थूकते हुए। फिर भी कोई आवाज़ नहीं हुई, और फिर, जैसे आसमान से बिजली गिरी हो, वह आ गया!

'वूफ़! वूफ़!' वह दहाड़ा, और एक विशालकाय भूरा जीव, पंखों वाले शेटलैंड टट्टू जितना बड़ा, मानो जादू से दस गज दूर एक झाड़ी के पीछे से प्रकट हुआ, और पेड़ के तने पर झपटा और मेरे नीचे तक पहुँच गया। एक बड़ा भूरा सिर मेरे ठीक नीचे, केवल तीन गज की दूरी पर दिखाई दिया; मैंने टॉर्च का स्विच दबाया और उसकी चमकती आँखों के बीचोंबीच गोली चलाई। राइफल की धमाके के साथ ही बाघ एक दिल दहला देने वाली दहाड़ के साथ पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने दूसरी गोली चलाई। उसने एक और दहाड़ के साथ इसका भी जवाब दिया, और अगला ही पल बीत गया। सौ गज दूर झाड़ियों से मुझे एक आखिरी 'व्र्-उफ़!' सुनाई दी और फिर सन्नाटा छा गया।

मुझे पता था कि मेरे दोनों निशाने चूके नहीं थे, फिर भी मैंने खुद को कोसते हुए कहा कि कम से कम दूसरे निशाने से ही जानवर को न गिरा पाया। फिर भी मुझे पूरा यकीन था कि वह बुरी तरह घायल हो गया था और ज्यादा दूर नहीं जा सकता था। मैंने रात भर झपकी ली और सूरज उगते ही सावधानी से होगारेहल्ली लौट आया,

ताकि घायल जानवर का पीछा करने की योजना बना सकूँ।

मूडलागिरी गौड़ा ने शानदार तरीके से खुद को संभाला, और जब मैंने थोड़ी देर आराम किया, जिसके बाद गर्म चाय, टोस्ट और बेकन का आनंद लिया, तो उन्होंने भैंसों के झुंड के मालिक के साथ व्यवस्था की कि वह घायल बाघ के पीछे झाड़ियों के बीच से अपने जानवरों को ले जाए, इस उम्मीद में कि जब भैंसें पास आएंगी तो वह अपना ठिकाना बता देगा।

सुबह 9 बजे तक मैं मूडलागिरी, दो स्काउट, पंद्रह भैंसें और उनके मालिक के साथ अपने पेड़ पर वापस आ गया था। सबसे पहले मैं पेड़ की चोटी पर चढ़ा और बाघ को खोजने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पेड़ के नीचे, छाल पर, उसके चेहरे या सिर से खून के छींटे पड़े थे, क्योंकि मेरी पहली गोली उसे लगी थी। झाड़ी के पीछे, जहाँ वह पीछे हटा था, हमें खून के कई निशान मिले, जिससे पता चला कि मेरी दूसरी गोली भी असर कर गई थी। इसके बाद हमने भैंसों को धीरे-धीरे उस दिशा में भगाया जिधर बाघ भागा था, और उन्हें यथासंभव एक सीधी रेखा में फैला दिया। मैं भैंसों के पीछे-पीछे चला, दोनों स्काउट मेरे ठीक पीछे रहे। मूडलागिरी और भैंसों का मालिक उसी पेड़ पर बैठे रहे जहाँ मैं बैठा था।

हम लगभग 200 गज ही आगे बढ़े थे कि हमें एक गहरी गुर्राहट सुनाई दी। उसी समय भैंसों का झुंड रुक गया और उन्होंने अपने सिर नीचे कर लिए, सींग फैला लिए, उसी दिशा में जहाँ से गुर्राहट आई थी। मेरे बाईं ओर थोड़ी दूर पर एक पेड़ उगा हुआ था, और मैंने एक स्काउट से फुसफुसाकर कहा कि वह उस पर चढ़कर देखे कि क्या उसे बाघ दिखाई देता है। उसने ऐसा किया, लेकिन मुझे इशारा करके बताया कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। इस बीच भैंसें उस जगह से पीछे हट गई थीं, और हम उन्हें आगे नहीं बढ़ा पाए। उन्हें वहीं छोड़कर, और स्काउट को अभी भी पेड़ पर ही छोड़कर, मैं और बाकी स्काउट दबे पांव मूडलागिरी वापस गए और उसे निर्देश दिया कि वह गाँव लौटकर कुछ गाँव के कुत्तों को हमारे लिए लाने की कोशिश करे। वह इसके लिए राजी हो गया, लेकिन डेढ़ घंटे बाद वह लौटा, और अपने साथ केवल दो आवारा कुत्ते लेकर आया, और कहा कि वह केवल इतने ही कुत्ते ला पाया है। अब हमने कुत्तों को भैंसों पर छोड़ दिया ताकि वे आगे बढ़ें, और इस तरह हम पच्चीस गज ही आगे बढ़े,

तभी बाघ ने भयानक गुर्राहट शुरू कर दी। भैंसें तुरंत रुक गईं, जबकि कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे। आगे चल रही दो भैंसों के पीछे छिपने के लिए मैं रेंगता हुआ आगे बढ़ा और झाड़ियों के बीच से झाँककर बाघ की एक झलक पाने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर मैंने जानवरों को आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन उनमें से एक अचानक मेरी ओर मुड़ गया और मैं बाल-बाल उसके लंबे सींगों के वार से बच गया।

मेरी स्थिति बेहद नाजुक थी, मेरे सामने एक घायल बाघ था जो किसी भी क्षण हमला कर सकता था, और चारों ओर घबराई हुई भैंसें थीं जो बाघ या मुझ पर, जो भी उन्हें पहले उकसाता, अपने सींगों से हमला करके अपना बचाव करतीं। कुछ कदम पीछे हटकर, मैंने पेड़ पर मौजूद स्काउट को नीचे उतरने का इशारा किया। उसकी और अन्य स्काउटों की मदद से, मैंने भैंसों के ऊपर से झाड़ियों में उस जगह पर पत्थर फेंकना शुरू किया जहाँ से गुर्राहट आ रही थी। इस पर बाघ ने फिर से गुर्राहट की, लेकिन हम कुछ भी कर लें, वह बाहर नहीं निकला और न ही पीछे हटा, जिससे पता चलता था कि उसकी हालत खराब थी। और पत्थर फेंकना बेकार साबित हुआ, इसलिए मैंने दोनों स्काउटों को वापस बुला लिया, भैंसों को वहीं छोड़ दिया, और उनकी मदद से, और अपने दो कुत्तों के साथ, जंगल का लंबा चक्कर लगाकर बाघ के पीछे, लगभग 300 गज की दूरी पर पहुँच गया। यहां से हम बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़े। मेरे निर्देशों पर तैनात जासूस हर पेड़ और ऊंचे स्थान पर चढ़कर बाघ को देखने की कोशिश में रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे। इस तरह हमने लगभग 200 गज की दूरी तय की, तभी एक जासूस ने इशारा किया कि जिस डाल पर वह चढ़ा था, वहां से उसे कुछ दिखाई दिया। नीचे उतरते हुए उसने फुसफुसाकर बताया कि उसने लगभग पचास गज दूर एक झाड़ी के नीचे एक सफेद और भूरे रंग की वस्तु देखी थी, जो भैंसों के खड़े होने के स्थान से लगभग आधे रास्ते पर थी।

उसके साथ शाखा पर चढ़ते हुए, उसने झाड़ियों के एक झुंड की ओर इशारा किया, जिसे मैंने पहले व्यर्थ ही घूर कर देखा, फिर मुझे उस झुंड के ठीक पीछे एक धुंधला भूरा और सफेद धब्बा दिखाई दिया। उस वस्तु पर निशाना साधते हुए, मैंने गोली चलाई, और बाघ ने हमारे आने की दिशा को गलत समझकर, छोटी-छोटी दहाड़ों के साथ भैंसों पर हमला कर दिया। सबसे नज़दीकी भैंसा बाघ के अचानक उस पर कूदने

से चौंक गया। बाकी भैंसें एक साथ आईं और सींग नीचे करके आगे बढ़ीं। इस बीच, जिस भैंसे पर हमला हुआ था, वह दर्द और डर से दहाड़ रही थी और अपने दुश्मन को झटकने की कोशिश कर रही थी। बाघ भैंसे पर बैठा रहा, ज़ोर-ज़ोर से गुर्राता और दहाड़ता रहा।

पेड़ पर अपनी ऊँची जगह से मुझे सारा दृश्य साफ़ दिखाई दे रहा था, लेकिन भैंस को या तेज़ी से पास आ रहे झुंड के किसी सदस्य को मारने के डर से मैंने गोली चलाने का जोखिम नहीं उठाया। तभी बची हुई भैंसें भी वहाँ पहुँच गईं और चारों ओर सींगों के उछाल और संघर्ष करते भूरे शरीरों का अफरा-तफरी मच गई। अपनी स्थिति को असुरक्षित पाकर बाघ भैंस से कूद गया और पच्चीस गज दूर एक झाड़ी के पीछे छिप गया। मैं उसे साफ़ देख सकता था, वह दुबका हुआ भैंसों को देख रहा था। उसके बाएँ कंधे के पीछे एक गोली ने उसे मार डाला। बाद में, बाघ की जाँच करने पर मैंने पाया कि पिछली रात चलाई गई मेरी पहली गोली उसके दाहिने गाल पर, आँख से लगभग दो इंच नीचे और दाहिनी ओर लगी थी, जो उसके मांस को भेदते हुए उसकी गाल की हड्डी को चकनाचूर कर गई थी। मेरी दूसरी गोली उसके पेट को चीरते हुए निकली थी और बाहर निकलते समय एक बड़ा छेद बना दिया था जिससे उसकी आँतें बाहर लटक रही थीं। मेरी तीसरी और हाल ही में चलाई गई गोली उसके दिल में जा लगी थी। कुछ महीने पहले 'कार शिकारियों' द्वारा तोड़ा गया जबड़ा ठीक से ठीक नहीं हुआ था, इसलिए जानवर ठीक से काट नहीं पा रहा था और परिणामस्वरूप आदमखोर बन गया था।

हमला की गई भैंसा अपने शक्तिशाली पंजों से बुरी तरह घायल हो गई थी, लेकिन उसने काटा नहीं था। मुआवज़े से मालिक संतुष्ट हो गया; मुझे पूरा यकीन है कि जानवर घाव से उबर गया होगा, क्योंकि भैंसा आम तौर पर गायों से कहीं अधिक मजबूत होती हैं और गंभीर शारीरिक चोटों को भी सहन कर सकती हैं। इस तरह 'येम्मैदोड्डी नरभक्षी' का अंत हो गया, और हालांकि ज़िला एक खूंखार और निर्दयी हत्यारे से छुटकारा पा गया, यह याद रखना चाहिए कि 'कार शिकारियों' द्वारा की गई गैर-जिम्मेदाराना और अनुचित गोलीबारी ही सारी परेशानी की जड़ थी, और इसके लिए उन 29 निर्दोष लोगों की जान को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।

जलाहल्ली का हत्यारा

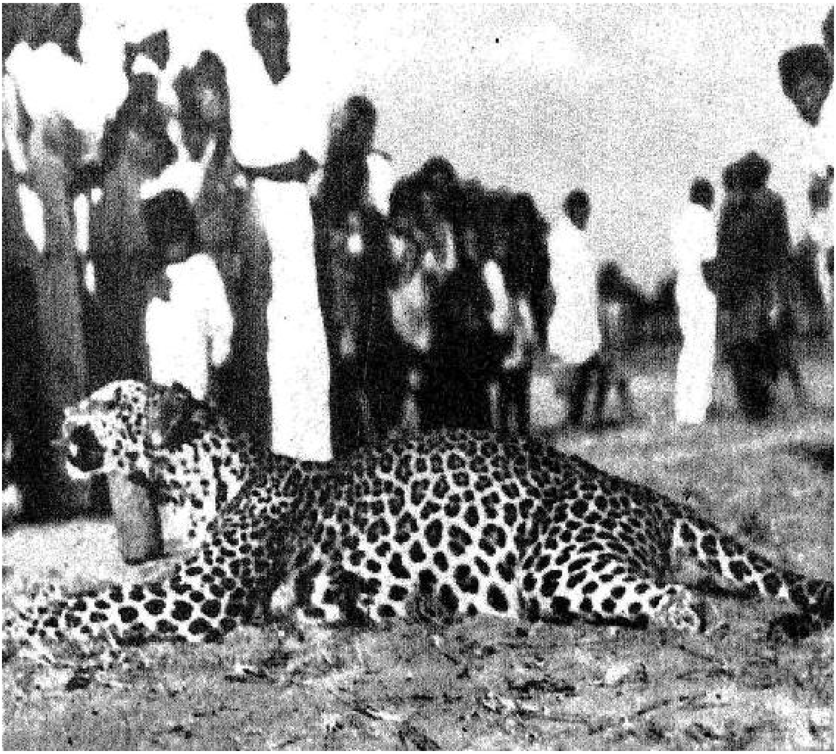

यह कहानी न तो आदमखोर बाघ की है, न ही आदमखोर तेंदुआ की, बल्कि एक साधारण, औसत आकार के तेंदुए की है, जिसने अपने जीवन की रक्षा में बहादुरी से लड़ाई लड़ी, चतुराई और प्रभावी ढंग से लड़ते हुए तीन लोगों को मार डाला और ग्यारह अन्य को बुरी तरह घायल कर दिया, और अंत में कई दिनों की पीड़ा के बाद, अजेय रहते हुए, साहसपूर्वक अपनी जान दे दी।

सन् 1938 में, द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले, बैंगलोर से लगभग सात मील उत्तर-पश्चिम में, तुमकुर जाने वाली सड़क के पास स्थित जलाहल्ली गाँव एक छोटा सा कस्बा था, जिसमें शायद 150 घर थे, जिनमें से कुछ ईंटों के और कुछ फूस के बने

थे। बैंगलोर शहर मैसूर सरकार का मुख्यालय होने के कारण, उस राज्य का वन विभाग, जो सदाबहार और मानसूनी दोनों प्रकार के वनों से समृद्ध है, का मुख्यालय बैंगलोर में था। कीटों और अन्य कीटों द्वारा विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक वनों के व्यवस्थित विनाश और नुकसान पर सरकार का विशेष ध्यान था। जलाहल्ली से एक मील के दायरे में लगभग चार वर्ग मील भूमि पर वन वृक्षारोपण किया गया था, जिसमें चंदन, गुलाब की लकड़ी, लाल गुलाब की लकड़ी और अन्य वृक्षों को प्राकृतिक क्रम में उगाया गया था, ताकि बैंगलोर की प्रयोगशालाओं के निकट विभिन्न कीटों (जिन्हें वहाँ लाया गया था) की क्रिया का अध्ययन किया जा सके। ये पौधे औसतन दस फीट की ऊंचाई तक बढ़ गए थे, जबकि भाला घास, लैंटाना और कभी-कभार वेट-ए-बिट कांटेदार झाड़ियों की सामान्य निचली वनस्पति ने जमीन को घनी तरह से ढक लिया था, जिससे घनी झाड़ियाँ बन गई थीं जो अनगिनत साँपों, काफी संख्या में खरगोशों, कभी-कभार दिखने वाले मोर और निश्चित रूप से काफी मात्रा में तीतर और बटेरों का घर बन गई थीं।

एक दिन भटकता हुआ तेंदुआ बीस मील दूर स्थित मगदी की पथरीली पहाड़ियों से इस इलाके में आ आया। उसने अपना जीवन वन वृक्षारोपण में पाए जाने वाले खरगोशों, चूहों और अन्य छोटे जीवों को खाकर शुरू किया, लेकिन जल्द ही उसे पता चल गया कि पास के जलाहल्ली गांव में बकरियों और गांव के कुत्तों के रूप में उसका भरपूर भोजन उपलब्ध है, जिन्हें वह लगातार और कष्टदायक तरीके से खाने लगा।

सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि एक दिन तेंदुए ने जलाहल्ली के मोटे पुलिस-दफ्फेदार (या सार्जेंट) की बकरी को मार डाला। इस कृत्य को उस अधिकारी ने अपने मान-सम्मान और पद का अपमान समझा और तेंदुए को मारकर बदला लेने की कसम खाई। स्थानीय पुलिस बल को सेवा राइफलें दी गई थीं, जिनमें से बारूदी सुरंगें हटा दी गई थीं, ताकि एक बार में केवल एक ही गोली चलाई जा सके। यह एहतियाती उपाय के तौर पर किया गया था ताकि अति उत्साही पुलिसकर्मी स्थानीय दंगों के दौरान भीड़ पर अंधाधुंध गोलियां न चला दें, जो कभी-कभी मामूली उकसावे पर भी आम बात हो जाती है।

तो दाफेदार अपनी मरी हुई बकरी के ऊपर एक पेड़ पर बैठा था, उसके पास एक

सिंगल-शॉट .303 पिस्तौल थी। सूर्यास्त के समय, एक तेंदुआ बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से आया और दाफेदार के कांपते हाथों के कारण उसका निशाना अजीब तरह से डगमगा गया, जिससे तेंदुआ के बाएं अगले पैर में चोट लगी। तेंदुआ गुर्राते हुए भाग गया, मोटा दाफेदार पूरी रात पेड़ पर कांपता रहा, अगली सुबह नीचे उतरा, जमीन पर खून के निशान देखे लेकिन कुछ नहीं मिला, और उसने निष्कर्ष निकाला कि वह बड़े सौभाग्य से तेंदुए को निशाना बनाने से चूक गया था। खैर, उसने सोचा कि तेंदुए को सबक मिल गया है और वह भविष्य में उसकी बकरियों से दूर रहेगा। यह घटना शुक्रवार की रात को हुई। अगला दिन, शनिवार, बिना किसी घटना के बीत गया, और उस शाम ग्रामीणों ने अगली सुबह बड़े पैमाने पर खरगोश पकड़ने का अभियान चलाने का फैसला किया। वन विभाग के बागान के किनारे और उससे सटे लगभग तीन एकड़ में फैले कैसुआरिना पेड़ों के चारों ओर दो फुट ऊंचे खरगोश पकड़ने के जाल बिछाए गए। अगली सुबह लगभग सौ ग्रामीणों द्वारा कुत्तों के साथ और लकड़ी के छोटे डंडों से लैस होकर खरगोशों को पकड़ने का काम किया जाना था। खरगोश जालों में फंस जाते और खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष करते, तो उन्हें डंडों से पीट-पीटकर मार डाला जाता। सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा था जब तक कि वे कैसुआरिना के झुंड तक नहीं पहुँच गए, जहाँ आसपास के सभी लोगों के आश्चर्य और भय के बीच, एक हानिरहित खरगोश के बजाय एक तेंदुआ कूद पड़ा। वह पास में मौजूद शिकारियों के घेरे पर टूट पड़ा, और लिखने में लगने वाले समय से भी कम समय में उसने उनमें से छह को अलग-अलग तीव्रता से घायल कर दिया, कुछ को खरोंचें आईं, कुछ को दांतों से काटा गया, और कुछ को अपने तेज पंजों से गहरे घाव दिए गए। शिकारी इधर-उधर भाग गए और तेंदुआ कैसुआरिना के पेड़ों की ओर लौट गया।

पास ही में ह्यूगी प्लंकेट और उनकी मां रहते थे। अपने समय में वे एक प्रसिद्ध शिकारी थे, जिन्होंने मद्रास प्रेसीडेंसी के कुरनूल जिले के दिगुवामेटा के वन क्षेत्रों में लगभग एक दर्जन बाघ और शायद उससे दोगुने तेंदुओं का शिकार किया था। इधर-उधर भटक रहे शिकारी तेंदुए की खबर लेकर उनके पास पहुंचे और मदद की गुहार लगाई। ह्यूगी सुबह देर तक बिस्तर पर थे और पजामा पहने हुए थे। उन्होंने पुलिस दफ्फेदार द्वारा तेंदुए को घायल करने की घटना के बारे में नहीं सुना था और उन्हें यह विश्वास करना मुश्किल था कि ऐसा कोई जानवर बैंगलोर शहर से सात मील की दूरी तक भटक सकता है। खैर, चिंतित ग्रामीणों को शांत करने के लिए उन्होंने अपनी .12 बोर की

शॉटगन में एक एल.जी. कारतूस और एक गोली डाली और उनके साथ कैसुरिना बेल्ट की ओर चल दिए।

यहाँ उसने घायल जानवरों को देखा और पहली बार उसे एहसास हुआ कि वास्तव में एक पैंथर आसपास मौजूद है। उसने सावधानी से कैसुरिना झाड़ियों के बीच से होते हुए आगे बढ़ना शुरू किया, उसके पीछे लगभग आधा दर्जन आदमियों का एक छोटा समूह झुंड बनाकर चल रहा था। ह्यूगी पेड़ों के बीच से आधे से ज़्यादा रास्ता पार कर चुका था कि पैंथर ने एक जगह से दूसरी जगह छिपकर अचानक खुद को दिखाने की गलती कर दी। ह्यूगी के तेज़ी से बाएँ और दाएँ मुड़ने से वह गिर पड़ा और जानवर करवट लेकर तड़पने लगा।

ह्यूगी अपने साथियों के साथ तेज़ी से आगे बढ़ा, और फिर उसने एक ऐसी गलती कर दी जिसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। उसने अपने पैर से उस बेजान शरीर को छू लिया। जानवर हरकत में आ उठा, हरकत में आ गया। उसने प्लंकेट पर झपट्टा मारा, अपने नुकीले दांत उसकी दाहिनी बांह में गड़ा दिए, जिससे वह अपने हथियार का इस्तेमाल नहीं कर सका, जबकि उसके पिछले पंजों ने उसे बुरी तरह नोंच डाला और खून से लथपथ कर दिया। आसपास के लोग इधर-उधर भाग गए, उनमें से केवल एक ने अपने बेतुके खरगोश के डंडे से जानवर को भगाने की कोशिश की। फिर पैंथर ने ह्यूगी को छोड़कर उस आदमी पर झपट्टा मारा, जिसे और चार अन्य लोगों को उसने अपने पंजों से नोंच डाला और काट डाला, फिर अपने खून के निशान छोड़ते हुए वापस कैसुआरिना के पेड़ों की ओर भाग गया।

प्लंकट को केंद्र मानकर उस भयावह मंजर की कल्पना करना आसान है। बेहोश पड़े ह्यूगी, जिसका दाहिना हाथ सिर्फ एक पतली सी नस के सहारे लटका हुआ था, को उसके फार्महाउस तक ले जाने में लोगों को लगभग साठ मिनट लग गए। इस यात्रा के दौरान उसका बहुत खून बह गया, और दो दिन बाद जब मैं उस रास्ते पर चल रहा था, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि कोई इंसान इतना खून बहाकर भी कैसे जीवित रह सकता है।

श्रीमती प्लंकेट ने बड़ी सूझबूझ से ह्यूगी को, साथ ही चार अन्य गंभीर रूप से घायल पुरुषों को, कार में बिठाया और बैंगलोर के बोरिंग अस्पताल के लिए रवाना हो गईं।

शेष सात घायल ग्रामीणों को भी बैंगलोर के विक्टोरिया अस्पताल ले जाया गया। ह्यूगी को रक्त चढ़ाया गया और उनकी बांह बचाने का प्रयास किया गया, लेकिन अगले दिन गैंग्रीन के लक्षण दिखने पर बांह काटनी पड़ी। सदमे और रक्त की कमी ने उनकी सहनशीलता को खत्म कर दिया और अगले दिन बुखार से बेहाल होकर उनकी मृत्यु हो गई।

यह सब रविवार की सुबह हुआ था। उसी दोपहर एक चरवाहे ने वन विभाग के बागान के बाहरी इलाके में कैसुआरिना के पेड़ों को छोड़कर तेंदुए के खून के निशान देखे और जलाहल्ली गांव में रहने वाले दो भाइयों, कलाइया और पापाइया की सूचना दी। अगले सोमवार की सुबह, इन दोनों भाइयों ने बड़ी हिम्मत से, हालांकि थोड़ी नासमझी से, तेंदुए का पीछा करने का निश्चय किया। बड़े भाई कलाइया के पास पुराने डिज़ाइन की .12 बोर की पिस्तौल थी। छोटे भाई पापाइया के पास एक बैरल वाली पिस्तौल थी। पिस्तौल लोड करके, ये दोनों बहादुर आदमी कंधे से कंधा मिलाकर, खून के निशानों का पीछा करते हुए बागान की झाड़ियों में घुस गए।

इस तरह भटकते-भटकते वे अलग हो गए, और पलक झपकते ही तेंदुए ने कलाइया पर झपट्टा मारा, उसे ज़मीन पर पटक दिया और बेरहमी से उसके मूत्राशय और अंडकोष को नोंच डाला। हमले की ज़ोर से उसकी .12 बैरल की पिस्तौल उसके हाथों से गिर गई, और जब वह जानवर के ऊपर पड़ा चीख रहा था, तभी उसका छोटा भाई मदद के लिए दौड़ा और कलाइया के ऊपर पड़े तेंदुए पर अपनी पिस्तौल से गोलियां चला दीं। यह एक रहस्य ही है कि उसने अपने भाई को गोली क्यों नहीं मारी।

और भी बुरी तरह घायल तेंदुआ, कलाइयाह को छोड़कर पापाइयाह पर झपटा। पापाइयाह मुंह के बल गिर पड़ा, उसके दांत उसकी पीठ को चीरते हुए फेफड़े तक पहुंच गए, जबकि पिछले पैरों के पंजे उस बेचारे आदमी के नितंबों और जांघों के पिछले हिस्से को खरोंचते रहे। फिर जानवर भाग गया। उस दिन मैं दोपहर का खाना खा रहा था जब पसीने से लथपथ एक आदमी मेरे दरवाजे पर खबर देने आया। मैंने जल्दी से राइफल, शॉटगन और टॉर्च उठाई और कार में बैठ गया। मेरी पत्नी भी आखिरी क्षण में पीछे न रहने के लिए मेरे साथ आने को तैयार थी। जैसे ही मैं अपने बंगले के गेट से निकलकर मुख्य सड़क पर आया, मेरी मुलाकात स्थानीय पुलिस बल

के एरिक न्यूकोम्ब से हुई, जो मुझसे मिलने आ रहे थे। मैंने उन्हें पूरी घटना बताई और माफी मांगते हुए वहां से निकलने की कोशिश की, लेकिन एरिक भी पीछे नहीं रहना चाहते थे और कार में बैठ गए। हमें जलाहल्ली पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा, और वहां का नजारा बेहद भयावह था। सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, हर निवासी बाहर आ गया था। तेंदुए की एक झलक पाने की उम्मीद में लोगों की भारी भीड़ बागान के किनारे तक पहुँच गई थी। ये सभी अपनी सुरक्षा के लिए पेड़ों की शाखाओं पर चढ़ गए थे, यहाँ तक कि आसपास के पेड़ इतनी भीड़ के भार से लगभग टूट ही गए थे। लेकिन कोई भी कलाइया और पापाइया को बचाने के लिए आगे नहीं आया, जो चार घंटे पहले जहाँ गिरे थे, वहीं बागान में पड़े हुए थे और मदद के लिए धीमी आवाज़ में चिल्ला रहे थे।

सबसे पहला काम तो ज़ाहिर तौर पर इन लोगों की मदद करना था, इसलिए हमने एक दर्जन सामान ढोने वालों को भर्ती किया और जंगल में घुस गए। कलाइयाह बहुत बुरी हालत में और असहनीय पीड़ा में मिला। पापायाह के फटे फेफड़े से खून के फफोले रिस रहे थे। हमने उन्हें गाड़ी तक पहुँचाया और मैंने उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए इंजन चालू ही किया था कि तभी एक ग्रामीण दौड़ता हुआ आया, जिसके हाथ में अब तक का सबसे लंबा भाला था (लगभग बारह फीट लंबा होने के कारण इसका व्यावहारिक उपयोग कहना असंभव है) और उसने बताया कि उसने अभी-अभी 300 गज दूर एक बड़ी झाड़ी में पैंथर को छिपते हुए देखा है, जहाँ हम उसके साथ चलकर उसे आसानी से मार सकते हैं।

मुझे पता है कि इसके बाद जो कुछ भी हुआ, वह मेरी ही गलती थी, क्योंकि मैं घायलों को अस्पताल पहुंचाने के अपने कर्तव्य में विफल रहा। हालांकि, मैं यह स्वीकार करता हूं कि उस समय की उत्तेजना और पैंथर को आसानी से पकड़ने के इस अवसर के लालच ने मेरे विवेक पर हावी होकर मुझे जानवर के पीछे जाने के लिए मजबूर कर दिया। एरिक न्यूकोम्ब ने मेरे साथ चलने की जिद की, इसलिए मैंने उसे अपनी .12 बोर की शॉटगन दे दी, जिसके बाएं बैरल में एल.जी. और दाएं में घातक कारतूस भरे थे, साथ ही कुछ अतिरिक्त कारतूस भी दे दिए, जबकि .405 राइफल मैंने अपने इस्तेमाल के लिए रख ली। यह भी एक और गलती थी, जैसा कि आगे की घटनाओं से साबित हुआ। मुझे शॉटगन से लैस होना चाहिए था। हमारे साथ केवल वह

व्यक्ति था जिसके पास एक बड़ा सा भाला था, बाकी सभी लोग गायब हो गए थे। मेरी पत्नी एक दर्शक के रूप में कुछ दूरी पर पीछे-पीछे चल रही थी।

हम झाड़ियों के उस बड़े हिस्से से पच्चीस गज की दूरी तक पहुँच गए, न कि उस खास झाड़ी तक जैसा कि भालाधारी ने बताया था, जिसमें पैंथर को रेंगते हुए देखा गया था। मैंने एरिक को अपने दाहिनी ओर लगभग तीस गज आगे बढ़ने को कहा, ताकि हम एक-दूसरे की गोलीबारी की चपेट में न आएं और जानवर के भागने के हर संभव रास्ते को पूरी तरह से बंद कर सकें। फिर मैंने भालाधारी को झाड़ियों पर पत्थर फेंकने का निर्देश दिया, जिसे उसने लगभग बीस मिनट तक बहुत अच्छी तरह से किया। हालाँकि, हमें कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं दिया। मैं स्वीकार करता हूँ कि तब मुझे बहुत संदेह होने लगा कि क्या पैंथर वास्तव में आस-पास कहीं था भी या नहीं। थोड़ी देर बाद एरिक ने चिल्लाकर कहा कि वह झाड़ियों के अंदर तक देख सकता है और पैंथर वहाँ नहीं है।

इस समय तक भीड़ में से कुछ साहसी लोग हमारे साथ आ गए थे। उनमें से एक के साथ एक कुत्ता भी था, जिसे हमने झाड़ियों में भेजने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि उसकी सूंघने की शक्ति से तेंदुए का पता चल जाएगा। लेकिन कुत्ते ने हमारी बात मानने से इनकार कर दिया और किनारे पर ही झाड़ियों पर भौंकता रहा। इससे पैंथर के न होने के बारे में मेरा विचार बदल गया। हालांकि, इस समय तक एरिक अधीर हो चुका था और झाड़ियों के कुछ ही गज पास पहुँच गया, जहाँ उसने अपने दम पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। उसके पहले कुछ पत्थर गिरने पर कुछ नहीं हुआ। फिर उसने एक बड़ा पत्थर फेंका, जो स्पष्ट रूप से सीधे पैंथर पर या उसके बहुत पास जाकर लगा। एक ज़ोरदार 'आउच! आउच!' की आवाज़ आई और पीले प्रकाश की एक लकीर की तरह जानवर झाड़ियों से बाहर निकल आया। उसके पास शॉटगन उठाने का समय नहीं था, लेकिन घबराहट के मारे उसने ट्रिगर दबा दिया और शायद अपनी जान बचा ली। बंदूक चल गई, जिससे उसके सामने ज़मीन में एक छेद हो गया और निस्संदेह पैंथर बुरी तरह डर गया। अगले ही पल वह उस पर आ गिरा और उसके हाथ से बंदूक छीन ली, जबकि एरिक और पैंथर, एक दूसरे को कसकर गले लगाते हुए, खुद के एक छोटे से ढलानदार किनारे से लुढ़कते हुए पास के एक छोटे नाले को ढकने वाली लंबी भाला घास में जा गिरे।

इस पूरे समय एरिक मुझे गोली चलाने के लिए चिल्ला रहा था और तेंदुआ भयानक रूप से गुर्रा रहा था। मुझे केवल भाला घास की तेज़ हलचल दिखाई दे रही थी। मैं आगे बढ़ा, मुझे डर था कि इतनी नज़दीक से अपनी भारी राइफल से गोली चलाने का जोखिम न हो, क्योंकि गोली तेंदुए और एरिक दोनों को लग सकती थी, जो आपस में उलझे हुए थे। तभी पैंथर न्यूकोम्बे से निकलकर खुद के किनारे लगी लैंटाना झाड़ियों में कूद गया। मैंने गोली चलाई, और जैसा कि बाद की घटनाओं से साबित हुआ, गोली जानवर की गर्दन के ऊपरी हिस्से पर एक गहरी लकीर जैसी चोट ही पहुँचा पाई।

मुझे उम्मीद थी कि उस मुठभेड़ के बाद एरिक ज़मीन पर लेट जाएगा, लेकिन उसे फुर्ती से उठकर मैराथन की रफ्तार से विपरीत दिशा में भागते देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। उस दिन के बाद से मैं अक्सर उसकी दौड़ने की क्षमता पर उसे ताना मारता रहा हूँ, और यह बात उसे बहुत चुभती है। उसके पेट में गहरा घाव हो गया था, एक पसली दांत से टूट गई थी, जबकि उसकी जांघें और बाहें नुकीले और ताकतवर पंजों से बुरी तरह घायल हो गई थीं।

हमने वहीं अपना काम रोक दिया और बोवरिंग अस्पताल के लिए निकल पड़े। जब तक हम तीनों घायलों को वहाँ पहुँचाए, तब तक कार की सीटें खून से लथपथ हो चुकी थीं। उस शाम का बाकी समय हमने पुलिस के लिए बयान लिखने और अनगिनत सवालों के जवाब देने में बिताया, जिनमें से कुछ बेतुके थे।

बेचारे कलाइया की उसी रात असहनीय पीड़ा से मृत्यु हो गई। उनके भाई पापाइया एक महीने बाद स्वस्थ हो गए, फेफड़े में लगी चोट से बाल-बाल बचे। एरिक न्यूकोम्बे, ईश्वर की कृपा और अच्छे स्वास्थ्य के कारण, जरा भी बुखार नहीं आया और दो सप्ताह में पूरी तरह से ठीक हो गए। अगले दिन, मंगलवार को, कई शिकारी घायल जानवर की तलाश में निकले। इनमें तंबाकू कारखाने के लॉयड्सवर्थ भी थे, जो एक प्रसिद्ध शिकारी थे और कई बाघों और तेंदुओं का शिकार कर चुके थे, और बेक, जो उतने ही प्रसिद्ध निशानेबाज और बड़े जानवरों के शिकारी थे। लेकिन हमें उसका कोई सुराग नहीं मिला। खून के सभी निशान मिट गए थे, और तेंदुआ मानो हवा में गायब हो गया था। उस शाम उसने लगभग बारह साल के एक चरवाहे लड़के को मार डाला, जो उस जगह के बहुत करीब चला गया था जहाँ उसे पता नहीं था कि जानवर पड़ा हुआ

है। संयोग से, यह जगह उस इलाके से एक मील से अधिक दूर थी जहाँ पहले की घटनाएँ हुई थीं। लड़के की मौके पर ही मौत हो गई; तेंदुआ ने उसका गला पकड़ लिया था और उसकी गर्दन की नस और श्वासनली को काट डाला था।

पाँचवें दिन, बुधवार की सुबह, मैं उस जगह पर था जहाँ चरवाहे लड़के की हत्या हुई थी। हमने घायल जानवर का पीछा करने की पूरी कोशिश की, जो बुरी तरह घायल होने के बावजूद, खून जमने के कारण, कम से कम बाहरी तौर पर, अब तक बहना बंद हो चुका था। मैं घनी घास और लैंटाना में भटक रहा था, जो ढलान पर उतरते ही और घनी हो गई थी। ढलान के आधे रास्ते में ही तेंदुए ने मुझे आते हुए सुन लिया या देख लिया और आगे न बढ़ने की चेतावनी देते हुए गुर्राने लगा। यह सौभाग्य की बात थी, वरना शायद मैं आज आपको उसकी कहानी सुनाने के लिए यहाँ नहीं होता। घनी झाड़ियाँ लगभग अभेद्य होने के कारण, मैंने आगे बढ़ना रोक दिया, जो आत्मघाती होता, और आगे बढ़ने का इंतज़ार करने का फैसला किया, जिसके बारे में मुझे लगभग यकीन था कि एक-दो दिन में तेंदुए की उसके कई गंभीर घावों से मौत हो जाएगी।

उसी दिन बाद में एक रोचक घटना घटी। बेंगलुरु से भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था। लगभग तीस पुलिसकर्मी, सिंगल-शॉट सर्विस राइफलों से लैस, एक पुलिस वैन में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे। वैन को चारों ओर से धातु की जाली से सुरक्षित किया गया था ताकि दंगे के समय भीड़ द्वारा पत्थरबाजी से बचाव हो सके। इस अस्थायी बख्तरबंद गाड़ी के चालक को निर्देश दिया गया था कि वह बागान में तब तक खोजबीन करे जब तक कि राइफलधारियों द्वारा दुश्मन का पता लगाकर उसे पकड़ न लिया जाए। उसने अपनी पूरी क्षमता से ऐसा करने का प्रयास किया, लेकिन घनी झाड़ियों और उलझी हुई घास में रास्ता न जानते हुए, अंततः उसने गाड़ी को एक छिपी हुई, झाड़ियों से भरी खाई में आधा पलट दिया। चालक और उसके साथी अंदर फंस गए और मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगे। उनमें से कोई भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं कर रहा था, क्योंकि क्या वहाँ कोई खूंखार तेंदुआ खुला नहीं घूम रहा था जो सबसे पहले उतरने वाले को मार कर खा जाता?

दूर से चीखने की आवाज़ सुनकर हम उस जगह पहुँचे और कानून के बंधक

प्रतिनिधियों को रिहा कर दिया। वे किसी तरह अपनी गाड़ी को सीधा खड़ा करके अपने बैरक लौट गए, और उन्हें ज़रा भी चोट नहीं आई थी। जाने से पहले उन्होंने बताया कि उन्होंने झाड़ियों में गुर्राहट सुनी थी, लेकिन मैंने इसे घबराहट का नतीजा समझा। मैंने रोज़ सुबह 7 बजे से सूर्यास्त तक बागान में रहने का नियम बना लिया था, और छठे दिन, जो गुरुवार था, दोपहर करीब 12 बजे मैंने आकाश में गिद्धों को इकट्ठा होते देखा। दूरबीन से उन्हें देखते हुए मैंने उन्हें बागान को दो भागों में बाँटने वाली छोटी घाटी के बीचोंबीच उतरते देखा, दरअसल वही घाटी जिसमें मैंने पिछले दिन जबरदस्ती घुसने की कोशिश की थी।

मुझे पता था कि इन समझदार पक्षियों को कोई मृत वस्तु मिली है। या तो वह खुद पैंथर था, या फिर पैंथर द्वारा मारा गया कोई जीव। सावधानी से मैं घनी लैंटाना और काँटेदार झाड़ियों से होते हुए आगे बढ़ा, इस उम्मीद में कि किसी भी क्षण तेंदुए की कर्कश खाँसी सुनाई देगी और वह मुझ पर हमला कर देगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ, और आखिरकार, काँटों से घायल होकर मैं घाटी में पहुँचा। मैं लगभग पचास गज ही चला था कि चार गिद्ध अपने पंख फड़फड़ाते हुए ज़मीन से उड़ उठे। आगे बढ़ते हुए, मैं एक छोटे से पानी के कुंड के पास पहुँचा, जिसके किनारे पैंथर मृत पड़ा था और पानी पी रहा था।

उस बेचारे जानवर के शरीर में बहुत खून बह गया था और वह प्यास और बुखार से तड़प रहा था। पानी तक रेंगने और पीने की कोशिश में खून बहना और बढ़ गया होगा, क्योंकि मरने से पहले उसने पानी में गाढ़ा खून उगल दिया था, जिससे तालाब का आधा हिस्सा गहरे लाल रंग का हो गया था। मेरे पहुँचने पर गिद्ध वहाँ बैठ ही गए थे और सौभाग्य से उन्हें उसकी खाल को नष्ट करने का समय नहीं मिला था।

जलाहल्ली लौटकर, मुझे जल्द ही कुछ लोग मिल गए जो मृत जानवर को एक खंभे से बांधकर मेरी कार तक ले गए। मैंने उसे यशवंतपुर पुलिस स्टेशन ले जाकर एक औपचारिक रिपोर्ट दर्ज कराई। यहाँ मुझे आवश्यक अधिकारियों के आने का तीन घंटे तक इंतज़ार करना पड़ा, जिससे मुझे बहुत झुंझलाहट हुई, क्योंकि मुझे डर था कि शव से खाल न उतारे जाने के कारण वह खराब हो सकती है।

अंततः मुझे मृत जानवर को ले जाने की अनुमति मिल गई, और आप निश्चिंत रहें कि

मैंने ऐसा करने में जरा भी देर नहीं की। खाल उतारते समय, मुझे उन तथ्यों को समझने का भरपूर अवसर मिला जिनके कारण तीन व्यक्तियों की मृत्यु हुई और कई लोगों पर हमले हुए। तेंदुए के बाएं अगले पैर में, मोटे पुलिस अधिकारी की .303 कैलिबर की गोली से लगा घाव, कीड़ों से भरा हुआ था और पूरी तरह से गैंग्रीन से ग्रस्त था। ह्यूगी प्लंकेट की शॉटगन की गोली जानवर के आर-पार निकल गई थी, पेट को चीरते हुए, लेकिन तुरंत जानलेवा घाव नहीं किया। दूसरे बैरल से निकली एक एल.जी. गोली माथे की हड्डी में धंस गई थी और जाहिर तौर पर जानवर को पूरी तरह से अचेत कर दिया था, जिससे प्लंकेट को पास जाकर उसे छूने का मौका मिल गया। पापायाह की मस्कट से निकली पांच गोलियां उसकी बगल में धंस गई थीं, लेकिन इतनी पीछे थीं कि तुरंत कोई असर नहीं हुआ। अंत में, जब जानवर न्यूकॉम्ब से दूर भाग रहा था, तब मेरी राइफल की गोली पूरी तरह से बेअसर रही और उसने जानवर की गर्दन के पिछले हिस्से पर केवल एक गहरी लकीर बनाई।

मैंने कलैया के परिवार द्वारा अपने परिवार के मुखिया की मृत्यु के मुआवजे और जीवनयापन के लिए एक भूखंड के सरकारी अनुदान के दावे के समर्थन में अदालत में यह खाल पेश की थी। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि समय के साथ, उस मृत व्यक्ति के साहस को मान्यता मिली। द्वितीय विश्व युद्ध के आगमन के साथ, जलाहल्ली में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ। वन विभाग के वृक्षारोपण और कैसुरिना के पेड़ काट दिए गए और हजारों इमारतें खड़ी हो गईं, पहले इतालवी युद्धबंदियों को रखने के लिए, फिर बर्मा और मलेशिया पर संभावित आक्रमण के लिए सबसे बड़े अस्पताल केंद्रों में से एक के रूप में, और बाद में वायु सेना कर्मियों को रखने के लिए, जो भारत की तेजी से बढ़ती वायु सेना के लिए प्रमुख प्रशिक्षण केंद्रों में से एक था। इस पैंथर की खाल अब मेरे बंगले के हॉल की शोभा बढ़ा रही है। मैं इस जानवर के प्रति अपने गहरे आदर और सम्मान को व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। क्योंकि जहाँ अन्य तेंदुए छुपकर, अपने शिकार को अचानक पकड़कर मारते हैं, वहीं इस तेंदुए ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, विपरीत परिस्थितियों में भी, अपने जीवन की रक्षा के लिए बहादुरी और साहस से लड़ाई लड़ी।

देवरायंदुर्गा के संन्यासी

उन्हें 'सन्यासी' कहा जाता था, क्योंकि वे कई मायनों में एक साधु जैसे थे, चाहे वह उनके निवास स्थान का चुनाव हो या उनकी विलक्षण आदतें। वे एक असाधारण बाघ थे। हालाँकि वे आदमखोर नहीं थे और उन्होंने कभी भी मानव मांस नहीं खाया था, फिर भी उनका स्वभाव बेहद क्रूर और मानव जाति के प्रति अत्यंत शत्रुतापूर्ण था। उन्होंने पाँच दिनों के भीतर तीन लोगों - दो पुरुषों और एक महिला - को मार डाला, और यह सब उन्होंने क्षणिक आवेश और घोर आक्रामकता में किया। इसके अलावा, उनकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग थीं, क्योंकि वे बकरियों और गाँव के कुत्तों को खाते थे, जो बाघ शायद ही कभी करते हैं, खासकर कुत्ते। फिर अचानक वे तुमकुर शहर से छह मील दूर और बैंगलोर शहर से पचास मील की दूरी पर स्थित देवरायंदुर्गा पहाड़ी के घने जंगलों में प्रकट हुए। देवरायंदुर्गा में कई दशकों से कोई बाघ नहीं था, वहाँ केवल कुछ जंगली सूअर और मोर ही रहते थे। इस इलाके में कोई घना जंगल नहीं था, बल्कि लैंटाना और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों का साधारण सा जंगल था। इसके अलावा, पहाड़ी की चोटी बहुत पथरीली थी और उसमें कुछ छोटी गुफाएँ थीं। इनमें कभी-कभार कोई छोटा पैंथर अपना डेरा जमा लेता था और पहले रहने वाले जानवर, आमतौर पर साही, को खाकर भगा देता था। लेकिन ये गुफाएँ बाघ जैसे बड़े जानवर के लिए पर्याप्त आश्रय तो दूर, छिपने की जगह भी नहीं देती थीं। पूरा इलाका समतल, खेती वाले खेतों के बीच बसा एक झाड़ीनुमा द्वीप था, जिसे कोई भी सामान्य बाघ दिन हो या रात, पार करने का जोखिम नहीं उठाता था।

लेकिन 'सन्यासी' ने ठीक यही किया, क्योंकि उसे इन खेतों को पार करके देवरायंदुर्गा पहाड़ी पर बने संदिग्ध और सीमित आश्रय तक पहुँचना पड़ा होगा। पहले तो किसी को पता ही नहीं चला कि कोई बाघ प्रकट हुआ है। आसपास बिखरे हुए कुछ गाँवों में बकरियों और कुत्तों की असामान्य रूप से बड़ी संख्या में कमी आने लगी, और इसका कारण एक तेंदुआ माना जाने लगा, जब तक कि एक सुबह इन्हीं गाँवों में से एक के पास एक जोते हुए खेत में बाघ के पदचिह्न नहीं मिले। अगले दो दिनों के भीतर एक बड़ी गाय मारी गई, जिसे गाँव के अब तक सुरक्षित बाहरी इलाके में रात भर चरने के लिए छोड़ दिया गया था। इस गाय की मालकिन, एक बूढ़ी औरत, अपने जानवर से

बहुत लगाव रखती थी। अगली सुबह जब उसे पता चला कि गाय मर गई है, तो वह तुरंत वहाँ पहुँची, जो एक चौथाई मील दूर थी। वहाँ वह अपनी मरी हुई गाय के पास बैठ गई और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। वह ईश्वर को अपने गहरे दुख और अपनी प्यारी गाय की मृत्यु से हुए गहरे नुकसान का साक्षी बना रही थी। परिवार के बाकी सदस्य भी उस बूढ़ी औरत के साथ वहाँ आए थे और कुछ देर चुपचाप बैठकर उसका रोना-धोना सुनते रहे। लेकिन जल्द ही वे थक गए, और उनके पास करने के लिए और भी काम थे, इसलिए वे एक-एक करके गाँव लौट गए। बूढ़ी औरत अपनी मरी हुई गाय के पास अकेली रह गई, जो अब भी पूरे जोश से रो रही थी।

सुबह के 11 बज रहे थे और तेज़ धूप पड़ रही थी। कोई भी साधारण बाघ इतनी तेज़ धूप और गर्मी में, और इतनी ज़ोरदार चीख-पुकार से परेशान जगह पर अपने शिकार के पास वापस नहीं आता, लेकिन 'सन्यासी' बाघ साधारण नहीं था। यह बाघ वापस आया और उसने बूढ़ी औरत को शिकार के पास देखा, जो ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए अपने आप को हिला रही थी। जानवर ने सोचा कि यह शोर असहनीय है और इसे रोकना होगा। इसलिए वह बूढ़ी औरत पर झपटा और अपने पंजे के एक ही वार से उसकी जान ले ली।

फिर वह गाय को कुछ गज दूर घसीटकर ले गया और भरपेट खाया। बूढ़ी औरत का शरीर अछूता था, और बाघ मानो उसे भूल ही गया था। जब वह शाम चार बजे तक नहीं लौटी, तो उसके परिवार ने यह सोचकर कि वह रोते-रोते थक गई होगी और सो गई होगी, उसे घर ले जाने के लिए वहाँ आए। वहाँ पहुँचकर उन्हें यह देखकर गहरा सदमा और भय हुआ कि बूढ़ी औरत मर चुकी थी, जबकि बाघ मरी हुई गाय को खाकर झाड़ियों में वापस चला गया था। वे हड़बड़ी में गाँव की ओर भागे और सबको यह दुखद खबर सुनाई। जल्द ही मुखिया, एक भारी बंदूक से लैस और अपने साथ लगभग दो दर्जन बहादुर सैनिकों को लेकर, जो तरह-तरह के हथियार लिए हुए थे, वहाँ पहुँचा। उन्होंने बाघ के पदचिह्नों का पीछा करने की कोशिश की, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं, क्योंकि जानवर पास ही घनी झाड़ियों में घुस गया था। झाड़ियों में जाने से डरकर, वे जोर-जोर से चिल्लाने और पत्थर फेंकने लगे, और मुखिया ने हवा में दो गोलियाँ चलाईं। कुछ नहीं हुआ और वे शव को गाँव ले जाने के लिए वापस मुड़ गए, तभी बाघ अचानक बाहर निकला और दल के आखिरी आदमी, दुर्भाग्यपूर्ण मुखिया पर

झपटा, जो संयोग से समूह का एकमात्र सदस्य था जिसके पास बंदूक थी। उसे कुछ पता चलने से पहले ही उसकी मौत हो गई। दल तितर-बितर हो गया और गाँव की ओर भाग गया, और अगली सुबह देर से ही वे भारी संख्या में वापस लौटे और दोनों शवों को ले गए, जो रात भर अछूते रहे थे। हालाँकि, बाघ ने गाय को खा लिया था।

अगले दो दिनों तक चारों ओर दहशत का माहौल छाया रहा। तीसरी सुबह, एक यात्री तुमकुर से दो गधों पर लदे सामान को आगे-आगे ले जाते हुए गाँव की ओर बढ़ा। गाँव से एक मील आगे सड़क पर बाघ ने पहले गधे पर झपट्टा मारा, जो हमलावर के नीचे गिर पड़ा। दूसरा गधा वहीं खड़ा रहा, जबकि यात्री डर के मारे चीखता हुआ उसी सड़क पर भाग गया जहाँ से वह आया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी इस हरकत ने उस असाधारण बाघ को उकसा दिया, क्योंकि उसने उसका पीछा किया और उसे मार डाला, फिर मरे हुए गधे के पास लौट आया, जिसे वह उठाकर ले गया और खा गया। आदमी का पीछा करते हुए और लौटते हुए, वह दूसरे गधे के पास से गुजरा, जिसे उसने छुआ तक नहीं। आदमी का शरीर बिना खाए पड़ा रहा। बैंगलोर के इतने करीब घटी इन घटनाओं को स्थानीय अखबारों में सुर्खियाँ मिलीं; अगली सुबह मैं कार से देवरायंदुर्गा के लिए रवाना हुआ और दो घंटे से कुछ अधिक समय में घटनास्थल पर पहुँच गया।

भयभीत ग्रामीणों से पूछताछ करने पर मुझे वही कहानी बताई गई जो मैंने अभी बताई है। मौसम शुष्क और सड़कें धूल भरी होने के कारण, अब तक सभी पदचिह्न गायब हो चुके थे, और कुछ समय के लिए मुझे यह मानने में संदेह हुआ कि हमलावर बाघ था, मुझे लगा कि यह कोई बड़ा और अजीब तरह से आक्रामक पैंथर हो सकता है। हालाँकि, मुखिया के साथ आए और उसके हमले और मृत्यु के प्रत्यक्षदर्शी लोगों ने मुझे आश्वस्त किया कि यह वास्तव में एक बाघ ही था। फिर भी, ग्रामीणों की बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की आदत को जानते हुए, मुझे अभी भी संदेह था।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने दोपहर का समय अपने एक घबराए हुए गाइड के साथ आसपास के इलाके की छानबीन करने, गुफाओं में छानबीन करने और 'सन्यासी' की तलाश में पूरी तरह थक जाने में बिताया; लेकिन मुझे उसका कोई सुराग या पदचिह्न नहीं मिला। शाम 4 बजे मैं गाँव लौटा और बड़ी मुश्किल से एक अधेड़ बैल को चारे के

रूप में जुटाया, क्योंकि इस इलाके में भैंसें उपलब्ध नहीं थीं। मैंने इस चारे को गाँव से लगभग तीन-चौथाई मील दूर, एक ऐसी जगह पर बाँध दिया जहाँ सड़क एक बेहद पथरीले और कंटीले नाले से मिलती थी। अब लगभग 6 बज चुके थे और मचान लगाने का समय नहीं था, इसलिए मैंने छह मील दूर तुमकुर स्थित ट्रैवलर्स बंगले में रात बिताने और अगली सुबह लौटने का फैसला किया, तब तक मुझे उम्मीद थी कि बाघ चारे को मार चुका होगा।

मैंने ऐसा ही किया, सुबह 5 बजे उठकर लगभग 5:30 बजे उस जगह पहुँच गया जहाँ मैंने चारा बाँधा था। जब हल्की रोशनी होने लगी, तो मैंने सड़क पर आधा मील आगे जाकर गाड़ी रोक दी, ताकि अगर 'सन्यासी' ने शिकार किया हो तो उसे परेशान न करूँ। सावधानी से उस जगह के पास पहुँचकर मैंने देखा कि मेरा चारा गायब था। करीब से देखने पर पता चला कि जानवर को मार दिया गया था और बाँधने वाली रस्सी काट दी गई थी, जाहिर तौर पर मारने वाले ने जानबूझकर और बहुत ज़ोर से खींचकर उसे मारा था। पैरों के निशान भी दिखाई दे रहे थे, जिनसे पहली बात तो यह पता चला कि मारने वाला बाघ नहीं बल्कि एक बाघिन थी, और दूसरी बात यह कि यह एक वयस्क जानवर था और एक बाघिन के हिसाब से काफी बड़ा था। इस जानवर के विचित्र स्वभाव और अचानक हमला करने की प्रवृत्ति के बारे में मुझे जो कहानियाँ सुनाई गई थीं, उन्हें याद करते हुए, मैं बहुत सावधानी से निशानों का पीछा करता रहा, हर कदम पर आगे और चारों ओर के क्षेत्र को बहुत ध्यान से देखता रहा, और थोड़ी-थोड़ी देर में पीछे भी देखता रहा। प्रगति बहुत धीमी थी, फिर भी शिकार का घसीटना स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, और 150 गज की दूरी पर मुझे मेरा मरा हुआ शिकार मिल गया। बाघिन वहाँ से जा चुकी थी। युवा नर बाघ को बाघों के सामान्य तरीके से मारा गया था, उसकी गर्दन तोड़ दी गई थी। बाघिन उसे उठाकर उस जगह ले गई जहाँ वह अब पड़ा था, और उसकी गर्दन की नस से खून चूस लिया था, जैसा कि गले में गहरे दाँतों के निशान और सतह पर सूखे खून से स्पष्ट था। हो सकता है कि वह शिकार को वहीं छोड़कर रात में वापस आई हो, या तुरंत ही भोजन करने बैठ गई हो। शिकार की पूंछ शरीर से जुड़ने वाली जगह से काट दी गई थी और लगभग दस फीट की दूरी पर छोड़ दी गई थी; यह अधिकांश बाघों और आमतौर पर बड़े तेंदुओं की भी आदत होती है। अंत में, पेट और आंतें भी लगभग दस फीट की दूरी पर बड़े करीने से हटा दी गई थीं, लेकिन उस जगह के पास नहीं जहाँ पूंछ छोड़ी गई थी। बाघिन ने

फिर बाघों के सामान्य तरीके से पिछले हिस्से से अपना भोजन शुरू किया और लगभग आधा शिकार खा लिया। इन सभी तथ्यों से यह स्पष्ट था कि बाघिन वास्तव में उतनी विचित्र और सनकी नहीं थी जितनी उसके बारे में बताया जा रहा था। वह बस कुछ ज्यादा ही गुस्सैल स्वभाव की प्रतीत होती थी।

इस उम्मीद में कि वह वापस आ सकती है, मैं लगभग बीस गज दूर उगे एक पतले से पेड़ पर चढ़ गया, जो मेरे उद्देश्य के लिए एकमात्र आश्रय उपलब्ध था। मैं सुबह 9:30 बजे तक वहीं रुका रहा। कोई बाघिन नहीं दिखी, बल्कि इसके विपरीत, ऊपर उड़ते हुए तेज निगाहों वाले गिद्धों ने शिकार को देख लिया, और मैंने जल्द ही उनके पंखों से टकराती हवा की सरसराहट सुनी, क्योंकि वे दावत के लिए धरती पर झपटे। शिकार को खाने से बचाने के लिए, मुझे नीचे उतरना पड़ा और उसे पास की झाड़ियों से तोड़ी गई शाखाओं से ढकना पड़ा, फिर गाड़ी में वापस आकर गाँव की ओर चल दिया। वहाँ मैंने चार आदमियों की मदद ली और वापस पेड़ पर आ गया, जहाँ मैंने उन्हें मेरी पोर्टेबल चारपाई-मचान लगाने का निर्देश दिया, जिसे मैं गाड़ी में अपने साथ लाया था। दोपहर तक सब कुछ तैयार था। फिर उनमें से एक आदमी ने सुझाव दिया कि, चूंकि 'सन्यासी' को बकरियों का विशेष शौक था, इसलिए अगर मैं आसपास एक जीवित बकरी बांध दूं तो उसे पकड़ने की मेरी संभावना काफी बढ़ जाएगी। उसने कहा कि बकरी की मिमियाहट उसे उस जगह पर जरूर खींच लाएगी, भले ही उसने अधखाए बैल को छोड़ने का फैसला कर लिया हो। मुझे लगा कि उसकी बात में कुछ सच्चाई है, इसलिए मैं गाड़ी से वापस गांव गया और जल्द ही एक अधविकसित बकरी लेकर लौटा, जो आमतौर पर जोर-जोर से मिमियाती है।

कुछ बिस्कुट और चाय के बाद, मैंने चारपाई मचान पर चढ़ गया। मैंने आदमियों को हिदायत दी थी कि बकरी को तभी बाँधें जब मैं अपनी जगह पर बैठ जाऊँ; इससे बकरी को लगेगा कि वह अकेली है और उनके जाते ही ज़ोर से मिमियाएगी। दोपहर करीब 2 बजे आदमियों ने आखिरकार विदा ली, और उसके तुरंत बाद बकरी ज़ोर-ज़ोर से मिमियाने लगी। यह सिलसिला शाम करीब 5:45 बजे तक रुक-रुक कर चलता रहा, जब मैंने बाघिन की धीमी, कराहने जैसी आवाज़ से उसके पास आने का आभास किया। बकरी ने भी यह आवाज़ सुनी, मिमियाना बंद कर दिया और आवाज़ की दिशा में मुँह कर लिया। उसका भयानक डर साफ दिख रहा था, क्योंकि वह सिर से पैर तक

बुरी तरह काँप रही थी। बदकिस्मती से, बाघिन मेरे पीछे से आ रही थी। हालाँकि मेरी चारपाई मचान पर मुझे मुड़ने के लिए काफी जगह थी, लेकिन पेड़ का तना और पास में उगी जंगली बेर की झाड़ियों का एक बड़ा झुंड मेरी दृष्टि को पूरी तरह से अवरुद्ध कर रहा था। इसके अलावा, जिस दिशा से बाघिन आ रही थी, उस दिशा से ज़मीन लगातार नीचे की ओर ढलान वाली थी, और शायद इसी वजह से उसने मेरी बकरी को दूर से ही देख लिया होगा, क्योंकि वह ऊँची ज़मीन से नीचे की ओर आते हुए मेरी बकरी को देख पा रही थी। या फिर हो सकता है कि उसकी असाधारण छठी इंद्री ने, जो मैंने कुछ मांसाहारी जानवरों में देखी है, उसे सतर्क कर दिया हो। जो भी हो, बाघिन ने आसपास कुछ संदिग्ध महसूस किया और उसे लगा कि खतरा पास ही मंडरा रहा है, क्योंकि उसने एक ज़ोरदार दहाड़ लगाई और पूरे इलाके का चक्कर लगाने लगी, हर थोड़ी देर में दहाड़ और गुर्राहट करती हुई। बेचारी बकरी डर के मारे लगभग मर ही गई, और अंधेरा होने पर मैंने उसे आखिरी बार ज़मीन के पास दुबकी हुई, कांपती हुई हालत में देखा।

उस असाधारण बाघिन ने रात को 9 बजे तक अपनी दहाड़ों से भयानक बना दिया, फिर एक आखिरी गुर्राहट के साथ वह चली गई। उसके बाद कुछ नहीं हुआ, सिवाय सुबह के शुरुआती घंटों में तापमान में अचानक गिरावट के, जब कड़ाके की ठंड पड़नी शुरू हो गई। पेड़ पर मेरे दांत किटकिटा रहे थे, जबकि मेरे नीचे बकरी के दांत धीमी गति से, लेकिन अधिक स्पष्ट रूप से किटकिटा रहे थे, ऐसा मुझे लगा।

कड़ाके की ठंड में बिना सोए रात बिताने के बाद सुबह होते-होते हम दोनों थक चुके थे। इसके अलावा, पिछली रात लगातार मिमियाने और ठंड में ठिठुरने के कारण बकरी की आवाज इतनी बैठ गई थी कि मुंह खोलने की कोशिश करने पर भी कोई आवाज नहीं निकली।

दोपहर के समय मैंने दो घंटे बाघिन को ढूंढने में बिताए, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। फिर मैंने एक और पेड़ चुना, इस बार पत्तों वाला और ऊपर से दिखाई न देने वाला। वहाँ मैंने अपना मचान लगाया और शाम चार बजे तक उस पर चढ़ गया, मेरे नीचे एक और बकरी बंधी हुई थी। लेकिन यह बकरी भी उतनी ही बेपरवाह या कठोर थी जितनी पिछली रात वाली बकरी थी; क्योंकि उसे बांधने वाले ग्रामीण के

जाते ही वह शांति से जमीन पर बैठ गई और न जाने क्या चबाने लगी, जो वह अंधेरा होने तक करती रही।

इस बार मैंने खुद को और भी गर्म कपड़ों से ढक लिया था, और आधी रात तक, अपने कंबल में अच्छी तरह लिपटा हुआ, मैं गहरी और स्वप्नहीन नींद में सो गया, और भोर होते ही जाग कर देखा कि वह सबसे शांत बकरी अभी भी कुछ चबा रही थी, पता नहीं क्या, मानो पूरी दुनिया में एक भी मांसाहारी जानवर न हो।

दोपहर होते ही मैंने फिर बाघिन को ढूँढा, और फिर नाकाम रहा; और फिर दोपहर 3 बजे तक मैं अपनी मचान पर सवार हो गया, इस बार नीचे एक जवान बैल को चारे के रूप में रखा था। शाम के 7 बज रहे थे और लगभग अंधेरा हो चुका था, तभी अचानक गाँव से कुछ लोग जलती हुई लालटेन लिए हुए आए और मुझे बताया कि बाघिन ने आधे घंटे पहले ही गाँव से एक फर्लांग दूर, विपरीत दिशा में स्थित एक छोटे तालाब के तटबंध के पास एक और गाय को मार डाला था और उस समय उसे खा रही थी।

वहाँ रुकना समय की बर्बादी समझते हुए, मैं नीचे उतर गया और आदमियों को निर्देश दिया कि वे चारा वहीं छोड़ दें, इस उम्मीद में कि शायद रात में बाघिन उस दिशा से गुजरे, और मैं उनके पीछे गाँव और तालाब की ओर तेजी से चल पड़ा।

गाँव पहुँचते ही मैंने उन्हें लालटेन बुझाने का निर्देश दिया। फिर मैंने उनमें से केवल एक को मार्गदर्शक बनाकर तालाब की ओर बढ़ना शुरू किया। मेरे साथी ने फुसफुसाते हुए बताया कि गाय सड़क के बाईं ओर, किनारे से मुश्किल से पचास गज की दूरी पर और गाँव से मात्र एक फर्लांग की दूरी पर मारी गई थी।

अब तक घना अंधेरा हो चुका था, और ग्रामीण मेरे ठीक पीछे सड़क के बीचोंबीच चल रहा था। मैंने अपनी राइफल पर लगी टॉर्च जलाई और उसे बाईं ओर घुमाना शुरू किया। एक गुर्राहट और भौंकने की आवाज़ आई, और फिर दो बड़े, लाल-सफेद गोले मेरी ओर चमके। मेरी समझ से वे लगभग 200 गज की दूरी पर, थोड़ी ऊँचाई पर थे। मैं इस आखिरी बात से हैरान था, तभी ग्रामीण ने फुसफुसाकर बताया कि बाघिन छोटे तालाब के बांध के ऊपर खड़ी है।

मैं अपने रबर के जूतों में चुपचाप चल रहा था, और गाँववाला नंगे पैर मेरे पीछे-पीछे

आ रहा था, हम ज़रा भी शोर नहीं कर रहे थे। इस बीच बाघिन रोशनी की ओर घूर रही थी। इस तरह मैं सड़क पर 100 गज से ज़्यादा आगे बढ़ा, जब तक कि मैं उस जगह नहीं पहुँच गया जहाँ तालाब का बांध सड़क से मिलता था। फिर हम बाईं ओर मुड़े और बांध के ऊपर की ओर हल्की चढ़ाई शुरू की। बाघिन अब लगभग 100 गज दूर थी और गुर्राने लगी। मैं रुका और गोली चलाने के लिए राइफल कंधे पर उठाने ही वाला था कि उसका साहस टूट गया और वह पीछे मुड़कर तीन-चार छलांगों में बांध के ऊपर से भाग गई, जिसके बाद वह तालाब के दूसरी ओर दाईं ओर उतर गई और नज़र से ओझल हो गई। फिर हम तटबंध के ऊपर से चलते हुए टॉर्च की रोशनी झाड़ियों में नीचे की ओर डालते रहे। वहाँ एक विशाल, अकेला बरगद का पेड़ था, और हमें उस समय बहुत आश्चर्य हुआ जब बाघिन की आँखें पेड़ की एक शाखा पर फिर से दिखाई दीं, जो जमीन से लगभग पंद्रह फीट या उससे अधिक ऊपर और उस तालाब के तटबंध के बराबर थी जिस पर मैं खड़ा था। यह आश्चर्यजनक था, क्योंकि बाघ आमतौर पर इतनी ऊँचाई तक पेड़ों पर नहीं चढ़ते, खासकर जब टॉर्च की रोशनी उनका पीछा कर रही हो।

अब मैं उसका रूप स्पष्ट रूप से देख पा रहा था, वह पेड़ की शाखाओं के बीच कुत्ते की तरह बैठी थी। चमकती हुई आँखों के बीच सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए मैंने गोली चलाई। बाघिन के ज़मीन पर गिरने से ज़ोरदार आवाज़ हुई, फिर खाँसी की गुर्राहट सुनाई दी और सन्नाटा छा गया।

हम कुछ दूर तक तालाब के किनारे-किनारे चलते रहे, टॉर्च की रोशनी बांध के नीचे दाईं ओर घनी झाड़ियों में डालते रहे, लेकिन कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। यह जानते हुए कि मेरी गोली 'सन्यासी' को लगी है, मैंने थोड़ी देर सोने और अगली सुबह लौटने का फैसला किया। तदनुसार, हम वापस गाँव की ओर और उस जगह पर गए जहाँ मैंने कार छोड़ी थी, जो मेरे चारे से एक मील दूर थी। तुमकुर में मैंने हल्का भोजन किया, कड़क चाय पी और खूब सारा तंबाकू पिया, जिसके बाद मैं इस उम्मीद के साथ सो गया कि सुबह बाघिन को ढूंढ लूंगा।

मैं भोर होते ही गाँव लौट आया और पिछली रात के अपने सहायक को साथ लेकर हम जल्द ही तालाब के किनारे पहुँच गए। वहाँ से हम बड़ी सावधानी से ढलान वाली

ज़मीन से नीचे उतरकर उस अकेले बरगद के पेड़ के पास पहुँचे, जहाँ बाघिन बैठी थी जब मैंने गोली चलाई थी। हमारा ध्यान तुरंत उस खून की ओर गया जो पेड़ से गिरने पर जानवर के ज़मीन पर गिरने से फैले एक बड़े क्षेत्र में बिखरा हुआ था। चारों ओर देखने पर हमें लगभग एक वर्ग इंच क्षेत्रफल का हड्डी का एक टुकड़ा मिला, जिसमें मेरी .405 गोली का एक हिस्सा धंसा हुआ था। पेड़ के तने पर बने नुकीले पंजों के निशानों से हमें पता चला कि इस असाधारण बाघिन ने अपने भारी वजन को खींचकर पेड़ पर चढ़कर शाखा तक कैसे पहुँची थी। मेरा साथी भी फुर्ती से उसी जगह पर चढ़ गया और शाखा में खून की कुछ बूँदें पाईं। फिर हम बड़ी सावधानी से बरगद के पेड़ से खून के निशान का पीछा करने लगे और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बाघिन के सिर में गोली लगी थी और वह बुरी तरह घायल थी। खून के निशान इधर-उधर बेतरतीब ढंग से एक संकरे घेरे में घूम रहे थे और कई बार उसी रास्ते को पार कर रहे थे। वह स्पष्ट रूप से सदमे में थी, या शायद अंधी हो गई थी, और उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रही है या कहाँ जा रही है। हमें अक्सर जमे हुए खून के बड़े-बड़े गड्ढे दिखाई देते थे, और अंत में हम उस जगह पर पहुँचे जहाँ बाघिन गिरी थी, या शायद रात के कुछ हिस्से तक ज़मीन पर पड़ी रही थी। लगभग दस फुट व्यास का पूरा घेरा खून से लाल था। जब वह वहाँ से चली गई, जाहिर तौर पर सुबह के शुरुआती घंटों में, खून बहना लगभग बंद हो गया था, और उसके बाद केवल इक्का-दुक्का बूँदें ही किनारे पर फैली घनी झाड़ियों, लैंटाना, घास और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों में एक टेढ़े-मेढ़े रास्ते का निशान छोड़ रही थीं।

सबसे पहले, हमने घनी झाड़ियों के इस घेरे को चारों ओर से घेर लिया, लगभग 200 गज दूर स्थित लंबे तटबंध के अंत तक गए, और फिर उसके ऊपरी सिरे से वापस आए, लेकिन किसी भी दिशा में खून का कोई निशान नहीं मिला, न ही बाघिन के इस आवरण से बाहर निकलने का कोई संकेत मिला। इसलिए, वह स्पष्ट रूप से घनी झाड़ियों के इस घेरे में कहीं थी, जो, जैसा कि मैंने अभी कहा, लगभग 200 गज लंबी थी और जिसकी चौड़ाई लगभग पचहत्तर गज से लेकर मुश्किल से दस गज तक भिन्न थी। लेकिन क्या वह जीवित थी या मृत? यही सवाल था, और इसके जवाब पर मेरे साथी और मेरी जान और शरीर का संतुलन टिका हुआ था।

जिस स्थान पर खून की आखिरी बूंद से संकेत मिला था कि बाघिन झाड़ियों में कहाँ

गई थी, वहाँ लौटकर हमने व्यवस्थित रूप से उस क्षेत्र की छानबीन शुरू की। मैं और मेरा साथी एक-दूसरे के करीब खड़े होकर घनी झाड़ियों में पत्थर फेंकते रहे, लेकिन हमारे प्रयासों का फल केवल पूर्ण सन्नाटा और खामोशी के रूप में मिला। हम इसी तरह झाड़ियों की पट्टी के किनारे-किनारे आगे बढ़ते रहे। बाघिन को प्रकट करने की उम्मीद में, मैंने लैंटाना पर कुल पाँच गोलियाँ चलाईं, लेकिन बाघिन की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इस पट्टी के लगभग तीन-चौथाई हिस्से में, बारह फीट ऊँचा एक छोटा पेड़ आसपास की झाड़ियों से अलग दिखाई दे रहा था। मेरा साथी उसकी ओर बढ़ा और बेहतर दृश्य प्राप्त करने के उद्देश्य से उस पर चढ़ने लगा, तभी अचानक, बाघिन एक दहाड़ के साथ बाहर निकली और उसके पीछे से उस पर चढ़ गई।

वह आदमी डर से चीख उठा, और मैं वहाँ से, जो उससे लगभग बीस गज दूर था, उस भूरे रंग के जीव पर तीन गोलियाँ चला दीं, जिसके बाद वह लैंटाना झाड़ियों में पीछे की ओर गिर पड़ा। 'सन्यासी' आखिरकार मर गया। मेरी समझ से, वह बाघिन बूढ़ी थी, जिसके दाँत कुंद हो चुके थे। शायद उसकी उम्र ने उसे मनुष्य के पास आसान जीवन की तलाश करने के लिए मजबूर किया था, जहाँ बकरियाँ, कुत्ते और मवेशी आसानी से शिकार करने के लिए मौजूद थे। भूख और बुढ़ापा शायद उसके उग्र और हिंसक स्वभाव का कारण थे, लेकिन साहस की कमी और मनुष्य के प्रति जन्मजात घृणा ने उसे वास्तव में आदमखोर बनने से रोक दिया था, हालाँकि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर उसे बिना रोक-टोक के अपना जीवन जीने दिया जाता, तो वह अंततः आदमखोर बन ही जाती। संयोग से, पिछली रात मेरी चलाई गोली उसकी नाक की हड्डी पर लगी थी, लेकिन थोड़ा ऊपर, जिससे हड्डी का वह टुकड़ा निकल गया जो हमें मिला था, लेकिन साथ ही वह जानवर के सिर में इतनी गहराई तक नहीं घुसी थी कि उसे मार सके। दरअसल, वह टुकड़ा उछलकर दूर जा गिरा था और अपने साथ हड्डी का टुकड़ा भी ले गया था, इसलिए यह संभव था कि बूढ़ी 'सन्यासी' भारी मात्रा में खून बहने के बावजूद ठीक हो जाती, अगर उसने पेड़ पर चढ़ते समय मेरे साथी पर हमला करके खुद को उजागर न किया होता।

बायरा, पुजारी

जब मैं उनसे मिला, तब उन्होंने केवल एक लुंगोटी पहन रखी थी, जो लगभग तीन इंच चौड़ी कपड़े की एक पट्टी होती है जो जांघों के बीच से गुजरती है और आगे-पीछे एक गंदी गांठदार डोरी से जुड़ी होती है जो कमर के चारों ओर लिपटी होती है; लेकिन वे दिल से एक सज्जन व्यक्ति थे, और वे मेरे मित्र थे, और हैं। बायरा से मेरी पहली मुलाकात को पच्चीस साल बीत चुके हैं, और यह मुलाकात इस प्रकार हुई थी।

मुथुरमलाई की ऊँची पहाड़ी की तलहटी में बसे मुथुर के छोटे से वन बंगले को घेरने वाली पहाड़ियों के ऊपर पूर्वी आकाश में भोर की हल्की रोशनी फैल रही थी। इस रोशनी के कारण चिनार नदी नामक घुमावदार वनधारा घने जंगल से होकर धीरे-धीरे बहती हुई अपना रास्ता बदलकर दक्षिण की ओर एक तीखा मोड़ ले लेती है और होगेनैकल में चट्टानी जलप्रपात में कावेरी नदी से मिलने से पहले अपने अंतिम सात मील का सफर निर्जन क्षेत्र से पूरा करती है। ग्रीष्म ऋतु का मध्य था और उस समय चिनार नदी पूरी तरह सूखी थी।

मैं सुबह जल्दी निकल आया था और चिनार की सुनहरी रेत पर चुपचाप दबे पांव चल रहा था, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कोई भालू दिख जाए। उस समय बड़ी संख्या में भालू नदी के किनारे आते थे और जुमलम के रसीले, बैंगनी, लेकिन थोड़े कसैले फल खाते थे, जो उस इलाके में बहुतायत में उगते थे। अगर भालू नहीं मिला, तो मुझे उम्मीद थी कि रात भर शिकार करने के बाद घर लौटते हुए कोई पैंथर मिल जाएगा। मैं जानता था कि ये जानवर नदी के किनारे झाड़ियों में छिपकर शिकार की तलाश में रहते हैं, जो नदी पार कर सकता है। उन दिनों में हिरण, जैसे सांभर, जंगली भेड़ और सुंदर चीतल काफी संख्या में पाए जाते थे, लेकिन उस सुबह मेरा लक्ष्य ऐसे सुंदर शिकार करना नहीं था।

मैं बंगले से लगभग एक मील दूर चला गया था, और भोर की झूठी रोशनी तेजी से अंधेरे के उस नए दौर में फीकी पड़ रही थी, इससे पहले कि असली भोर जंगली मुर्गे की आवाज और मोर की कर्कश आवाज से घोषित हो, तभी अचानक मुझे अपने बाईं ओर धारा के किनारे उगी मेहंदी की झाड़ियों के एक झुंड से एक दबी हुई लेकिन स्पष्ट सरसराहट सुनाई दी।

उस दिन मेरे पास टॉर्च नहीं थी, इसलिए मैं सावधानी से मेहंदी के पास लगभग दस

फीट की दूरी तक गया और रुक गया। तभी मैंने देखा कि मेरे ठीक सामने लगभग तीन फीट व्यास और उतनी ही गहराई का एक बड़ा गड्ढा खोदा गया था, जिसमें लगभग एक फीट पानी सूखी रेत से रिसकर नीचे की मिट्टी से बह रहा था। मैं समझ गया कि यह किसी शिकारी का काम था, प्यासे हिरणों को अपनी प्यास बुझाने के लिए आकर्षित करने का, ताकि सटीक निशाना लगाकर चलाई गई गोली या बंदूक से दागी गई गोलियों की बौछार से उनकी जान जा सके। और जो आवाज़ मैंने सुनी थी, वह निस्संदेह उसी शिकारी की थी, शायद मुझे देखकर, या शायद रात भर जागने के बाद नींद में करवट बदलते हुए।

मैंने तमिल में उस आदमी को बाहर आने के लिए पुकारा, वरना मैं गोली मार दूंगा, लेकिन पहले तो मुझे कोई जवाब नहीं मिला। कुछ कदम आगे बढ़ने पर, झाड़ियों से एक छोटा सा व्यक्ति उठा और नदी की रेत पर कदम रखते हुए मेरे सामने लेट गया, और तीन अलग-अलग तरह से प्रणाम करते हुए अपना माथा ज़मीन से छुआ।

उसे खड़े होने के लिए कहकर मैंने पूछा कि वह कौन है। 'बायरा, एक पुजारी', उसने सीधा-सादा जवाब दिया। 'तुम्हारी बंदूक कहाँ है?' मैंने पूछा। 'बंदूक, कैसी बंदूक? मुझ जैसे गरीब, सीधे-सादे आदमी के पास बंदूक कैसे हो सकती है? मैं तो गोली चलाना भी नहीं जानता, मालिक। मैं एक मुसाफिर हूँ और कल रात रास्ता भटक गया था, और बहुत थका हुआ होने के कारण इन झाड़ियों में सो गया था। महाराज, अभी आपने मुझे आवाज़ देकर जगाया, और आप मेरी बंदूक माँग रहे हैं! मैंने तो ऐसी चीज़ कभी देखी भी नहीं।'

‘इसे उठाओ और यहाँ लाओ,’ मैंने आदेश दिया। वह कुछ सेकंड के लिए झिझका, फिर नीचे झुका और एक प्राचीन माचिस की तीली ले आया, जो कुछ गज लंबी थी और जिसका बट सबसे चौड़े बिंदु पर मुश्किल से तीन इंच चौड़ा था।

और इसी तरह मेरी मुलाकात बायरा से हुई, जो पुजारी थे और पच्चीस वर्षों से मेरे मित्र हैं। उन्होंने ही मुझे जंगल और उसके जंगली, बेफिक्र, उग्र, लेकिन प्यारे और अद्भुत जीव-जंतुओं के बारे में वह सब कुछ सिखाया है जो मैं आज जानता हूँ। मैंने उनसे पूछा, 'आपने क्या शिकार किया?' उन्होंने उत्तर दिया, 'कुछ नहीं। कल रात कोई जानवर पानी के पास नहीं आया।'

'तुमने किसे गोली मारी?' मैंने और सख्त स्वर में पूछा। मुझे अपने पीछे आने का इशारा करते हुए, वह नदी के विपरीत किनारे की ओर तिरछे चलने लगा। मैंने नदी की रेत पर एक काला ढेर देखा, जो पास जाने पर एक सांभर हिरणी निकली, जिसकी गर्दन में एक बड़ा सा छेद था, जिससे बहकर साफ सफेद रेत पर फैल गया था।

मैंने बायरा को गुस्से और आक्रोश भरी निगाहों से देखा। उसने सरल शब्दों में कहा, 'मालिक, हमें भूख लगी है, और अगर मैं शिकार नहीं करूंगा तो हम खा नहीं पाएंगे, और अगर हम नहीं खाएंगे तो...'

मर जाएगा।

कुछ गज की दूरी पर रेत पर बैठकर, मैंने बायरा को अपने पास बैठने के लिए आमंत्रित किया और अपनी थैली से कुछ पाइप-तंबाकू निकालकर उसे दे दिया। उसने हथेली पर मुझसे तंबाकू लेकर उसे संदेह भरी नजरों से सूंघा और फिर, खुशी और संतुष्टि से झूमते हुए, अपना सिर पीछे झुकाकर उसे मुंह में डाल लिया। अगले कुछ मिनट खामोशी में बीते, बायरा मेरी तंबाकू चबाने में इतना मग्न था!

फिर उसने घबराते हुए कहा, 'मालिक वन रक्षक को मेरी बंदूक के बारे में नहीं बताएंगे। यही मेरी आजीविका का एकमात्र साधन है, और अगर रक्षक को पता चल गया तो वह आकर इसे छीन लेगा। साथ ही मुझे जेल भेज दिया जाएगा, और मेरी पत्नी और चार बच्चे भूखे मरेंगे।'

मेरे सामने एक जटिल समस्या खड़ी हो गई। वन लाइसेंस धारक होने के नाते मेरा कर्तव्य था कि मैं शिकारियों को अधिकारियों के हवाले कर दूं। दरअसल, लाइसेंस की शर्तों के अनुसार मुझे ऐसे व्यक्तियों की गिरफ्तारी में सहायता करने का अधिकार भी था। इसके अलावा, मेरा अंतरात्मा मुझे इस बदमाश के प्रति कोई सहानुभूति न रखने के लिए कह रही थी, जो गर्मी के महीनों में प्यास बुझाने के लिए आने वाली मादा हिरणों को बेरहमी से, सबसे अमानवीय तरीके से मार रहा था। फिर भी, उस छोटे से जीव में कुछ तो अच्छा था, और हमारी संक्षिप्त जान-पहचान के बाद वह मुझ पर जो भरोसा दिखाने लगा था, वह भी सराहनीय था। या शायद मेरे तेज तंबाकू के सेवन ने ही यह भरोसा जगाया था। सीधे सवाल और जवाब से बचते हुए, मैंने उससे पूछा कि

वह कहाँ रहता है। उसने जवाब दिया, 'हमारे पास न घर है, न झोपड़ी, न खेत। हम सारा दिन मधुमक्खी के छत्ते की तलाश में जंगल में भटकते रहते हैं। अगर हमें एक भी मिल जाए, तो हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं, क्योंकि हम उससे कीमती शहद इकट्ठा करते हैं, जिसे हम सात मील दूर पेन्नाग्राम गाँव के बाजार में ले जाते हैं। शहद के एक छोटे बर्तन के लिए हमें एक रुपया मिलता है।' इससे हम रागी (एक अनाज) खरीदेंगे, जिससे शायद हमारा चार दिन का पेट भर जाएगा। अगर हमें शहद नहीं मिला, तो शायद हम एक "ओडुम्बु" (एक बड़ी सांप-छिपकली) पकड़ सकें। यह और भी बड़ी खुशनसीबी होगी, क्योंकि न केवल हम "ओडुम्बु" खाएंगे, जिसका मांस हमारी ताकत के लिए बहुत अच्छा होता है, बल्कि हम उसकी पूंछ पेन्नाग्राम के स्थानीय वैद्य को बेच देंगे। वह वैद्य बहुत ही अद्भुत व्यक्ति है। वह पूंछ को पकाकर उसमें कोई अद्भुत औषधि मिलाता है। फिर वह पूरे मिश्रण को पीसकर बारीक पाउडर बना लेता है, जिसे वह कागज के पैकेटों में बांटकर आठ आना प्रति पैकेट के हिसाब से बेचता है। ये पैकेट प्रेमियों को बेचे जाते हैं और बहुत असरदार होते हैं। अगर कोई पुरुष अपनी प्रेमिका के बाएं कंधे पर इस पाउडर की एक चुटकी छिड़क दे, तो वह उसका विरोध नहीं कर पाएगी।

यहाँ उसने तिरछी नज़र से मेरी ओर देखा। 'यदि महाराज अपनी प्रेमिका का दिल नहीं जीत सकते,' उसने विश्वासपूर्वक कहा, 'तो मैं इस देसी वैद्य से आपके लिए यह पाउडर निःशुल्क मंगवा दूँगा, क्योंकि वह मेरा घनिष्ठ मित्र है और साथ ही, वह मुझे ओडुम्बु की पूंछें लगातार उपलब्ध कराता रहता है। आपको बस इतना करना है कि अपनी प्रेमिका के बाएँ कंधे पर थोड़ा सा पाउडर छिड़क दें, और वह हमेशा के लिए आपकी हो जाएगी।'

मैंने जल्दी से उसे बताया कि मैं उस समय इतना प्यार में नहीं थी कि मुझे ओडुम्बु की पूंछों का सहारा लेना पड़े, और मैंने उसे अपने बारे में बात जारी रखने के लिए कहा।

कभी-कभी, जब हमें बहुत भूख लगती है, तो हम जंगली शकरकंद की जड़ें खोदते हैं, जो इन इलाकों में तीन शाखाओं वाले पत्तों वाली लता के रूप में उगती है। ये शकरकंद, या जड़ें, आग में भूनने पर या नमक-पानी और करी पाउडर के साथ उबालने पर बहुत स्वादिष्ट और खाने में अच्छी लगती हैं। रात में मेरी पत्नी, बच्चे और

मैं अन्नाइबिद्दाहल्ला नदी के किनारे खोदे गए एक गड्ढे में सोते हैं, जो चिनार नदी की एक छोटी सहायक नदी है, जैसा कि आप जानते होंगे, महोदय। गर्मी के मौसम में मैं शिकार करने जाता हूँ, जैसा कि मैंने आज रात किया है। ऐसे समय में मेरी पत्नी या बच्चों में से कोई एक बारी-बारी से पूरी रात जागता रहता है, ताकि हाथियों के आने पर चेतावनी दे सके, जिससे वे गड्ढे से निकलकर किनारे या हमारे आश्रय के पास उगने वाले बड़े पेड़ पर चढ़ जाते हैं। क्योंकि ये हाथी बहुत खतरनाक होते हैं और कभी-कभी हम पर हमला कर देते हैं। एक साल पहले ही एक हाथी ने एक पुजारी महिला को सोते हुए इसी तरह के आश्रय से खींचकर बाहर निकाला और उसे कुचल कर रख दिया था। अगर हम कुछ शिकार करते हैं, तो हम कुछ मांस खा लेते हैं और कुछ को धुएँ में सुखा लेते हैं। बाकी को हम पेन्नाग्राम में बेच देते हैं और शायद पंद्रह रुपये मिल जाते हैं। उस पैसे से हम परिवार के लिए पूरे महीने का अनाज खरीद सकते हैं। यह जानते हुए,' उसने शरमाते हुए कहा, 'मुझे यकीन है, महाराज, आप वन रक्षक को मेरे पास मौजूद बंदूक के बारे में नहीं बताएंगे। वैसे, यह मेरे पिता की थी, और उनसे पहले उनके पिता की, जिन्होंने, जैसा कि हमें बताया गया है, इसे उन दिनों तीस रुपये में खरीदा था।' फिर उस बदमाश ने मुझे लुभावनी नज़रों से देखा, उसके होंठों के कोनों पर एक खुश मुस्कान थी, हालाँकि उसकी आँखों में चिंता झलक रही थी। लाइसेंस धारक के रूप में मेरा कर्तव्यबोध गायब हो गया; मैंने उसी क्षण अपने अंतरात्मा को दबा लिया और एक ऐसी आवाज़ में जवाब दिया जिसे मैंने टालमटोल करने की असफल कोशिश की, लेकिन वह स्पष्ट रूप से शर्मिंदा करने वाली थी, 'नहीं, बायरा, मैं नहीं बताऊंगा, मैं आपसे वादा करता हूँ।'

वह उछलकर खड़ा हो गया और मेरे सामने झुक गया, उसने अपना माथा तीन बार ज़मीन से छुआ, जो पुजारियों द्वारा अभिवादन का एकमात्र तरीका है। उसने सरल शब्दों में कहा, 'हे स्वामी, मैं आपको हृदय से और अपने परिवार की ओर से धन्यवाद देता हूँ। अब से हम आपके आदेश का पालन करेंगे।' बायरा से उसी दिन बाद में वन आश्रम में आने का वादा लेने के बाद, क्योंकि मैं उससे इलाके में मांसाहारी जानवरों की उपस्थिति और गतिविधि के बारे में पूछताछ करना चाहता था, मैं अपने रास्ते चला गया, मृत सांभर हिरणी पर दोबारा नज़र डालने से बचता रहा, इस डर से कि कहीं मेरा अंतरात्मा फिर से जाग न जाए और मुझे इस भोले-भाले साहसी व्यक्ति से किए गए अपने जल्दबाजी वाले वादे पर पछतावा न हो।

बायरा अपने वादे के मुताबिक उस सुबह करीब दस बजे वहाँ पहुँच गया, और गहन पूछताछ से पता चला कि महज दो रात पहले, जब वह चिनार नदी से लगभग दो मील नीचे की ओर स्थित अरेमनवोड्डू नामक स्थान पर सांभर खाने बैठा था, जहाँ एक अन्य सहायक नदी चिनार नदी से मिलती है, तब एक बाघ उसके पाँच फीट के भीतर से गुजरा था। उसने बताया कि यह जानवर उसी इलाके में रहता था, एक बूढ़ा बाघ था, और उसकी उम्र के कारण उसका इलाका बहुत सीमित था।

फिर उसने एक अनोखी कहानी सुनाई, कि एक महीने पहले वह इसी जगह के पास छिपा हुआ था, तभी एक चीतल प्रकट हुआ, जिसे उसने अपनी बंदूक से एक ही गोली में मार गिराया। वह चांदनी रात थी, और चीतल वहीं गिर पड़ा था। बायरा ने अपनी बंदूक में गोलियां भर ली थीं और बाकी रात सोने की तैयारी कर रहा था, तभी एक बड़ा बाघ झाड़ियों से निकला, मरे हुए चीतल के पास से गुजरा, रुका, उसे सूंघा, और अंत में शांति से उसे उठाकर ले गया। बायरा ने बाघ से उस पर अधिकार जताने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि उसके पास एक ऐसी बंदूक थी जिसे भरने में काफी समय लगता था।

उस समय मेरे पास कोई जीवित चारा नहीं था, और बछिया लाने का मतलब था पेन्नाग्राम भेजना, और शायद अगले दिन तक का इंतज़ार करना। इसलिए मैंने उस रात बायरा के साथ अरेमनवोड्डू नदी के किनारे बैठने का फैसला किया, और उसे साफ-साफ कह दिया कि कम से कम जब तक वह मेरे साथ है, किसी भी तरह का हिरण का शिकार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। शाम 6 बजे तक हम एक बेहतरीन और आरामदायक जगह पर बैठ गए थे, जिसे बायरा ने जंगल की दो धाराओं के संगम पर उगी सरकंडों के बीच बनाया था। रातें गर्म थीं और बायरा ने अपने लंगोटी के अलावा कुछ नहीं पहना था। उस दिन मैंने धैर्य का सबक सीखा, क्योंकि बायरा के सरकंडों में बैठने के बाद से, वह पूरी रात अपनी बांह तक भी नहीं हिला। उस रात कुछ नहीं मिला, और रात 2 बजे तक मैं अधीर हो गया और आखिरकार सो गया, और भोर होते ही बायरा मेरे बगल में स्थिर बैठा हुआ मिला।

मेरी निराशा देखकर उसने सुबह बाद में मेरे साथ शिकार के लिए चलने का प्रस्ताव रखा। स्नान और नाश्ते के लिए बंगले में लौटने के बाद, हम सुबह 9 बजे से कुछ ही

पहले फिर से अरेमनवोड्डू पहुँच गए। बायरा के आगे-आगे चलने के साथ हम नदी के ऊपर की ओर चले, और लगभग आधा मील ही चले थे कि हमें एक बड़े नर बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए, जो रात के दौरान रेत पार करके पनापत्ती रिज की पथरीली ढलान पर चढ़ रहा था, जो लगभग एक मील दूर थी। ज़मीन इतनी सूखी थी कि शिकार के निशान ढूँढना मुश्किल था, लेकिन बायरा ने कहा कि उसे कुछ संभावित स्थान पता हैं जहाँ बाघ छिपा हो सकता है।

तो हम एक के बाद एक पहाड़ियों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहे, उनके बीच फैली झाड़ियों और घने बांसों की छोटी-छोटी घाटियों का अन्वेषण करते रहे। एक बार हमें हाथी के विशाल पेट में पाचन क्रिया से उत्पन्न गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी। जहाँ वह आराम कर रहा था, उस जगह से दूर हटकर, हम अपनी यात्रा जारी रखते हुए लगातार ऊपर की ओर पनापत्ती रिज की ओर चढ़ते रहे।

अब हम झाड़ियों वाले जंगल के स्तर पर पहुँच चुके थे, और चारों ओर चट्टानी टीले दिखाई दे रहे थे। बायरा ने बताया कि बाघ उन विशाल चट्टानों के बीच बनी कई गुफाओं में से एक में रहता है, और भालू भी वहीं रहते हैं। पथरीली, धूप से तपती ज़मीन पर किसी भी तरह के पदचिह्न न होने के कारण मैं वापस लौटने को तैयार था, लेकिन मेरे साथी को अब वास्तव में दिलचस्पी हो गई थी, और उसने आगे बढ़ने, पहाड़ी की चोटी को पार करने की वकालत की।

तेज़ धूप में पसीने से तरबतर होकर हम आखिरकार शिखर पर पहुँचे और विपरीत ढलान से नीचे उतरने लगे। इस ढलान पर चट्टानें उससे भी ज़्यादा बिखरी हुई थीं, जिस पर हम अभी चढ़े थे। अंत में हम विशाल चट्टानों की एक श्रृंखला के पास पहुँचे, जिनसे कई गुफाएँ बनी हुई थीं। बायरा ने सुझाव दिया कि मैं एक लटकती हुई चट्टान की थोड़ी सी छाया में बैठ जाऊँ, जबकि वह आसपास का नज़ारा देखे। मैं खुशी-खुशी मान गया और सिगरेट पीते हुए ठंडक पाने के लिए बैठ गया, जबकि मेरा साथी चट्टानों के समुद्र में चला गया। दस मिनट के भीतर वह वापस आ गया और उत्तेजित होकर कहने लगा कि उसने बाघ की गंध महसूस की है और उसे यकीन है कि वह पास की ही किसी गुफा में छिपा हुआ है। इस समय तक मैं स्पष्ट रूप से नाराज़ और अविश्वास में था, और मैंने बायरा को कुछ कड़े शब्दों में कहा कि वह झूठ बोलना बंद करे। उसने

मुझे हैरानी से देखा, और फिर मैं उसके मोटे चेहरे पर स्पष्ट रूप से दया भाव देख सका। 'आओ और खुद देख लो,' उसने संक्षेप में कहा और मेरे जवाब का इंतजार किए बिना, जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से चला गया।

अपनी राइफल लिए हम पत्थरों के ढेर के बीच बनी कई गुफाओं के पास पहुँचे। सबसे नज़दीकी गुफा से बीस गज की दूरी पर रेंगते हुए, बायरा रुका और मुझे चुपचाप पास आने का इशारा किया। 'क्या तुम्हें इसकी गंध आ रही है?' उसने फुसफुसाते हुए कहा। मैंने ध्यान से सूंघा, लेकिन कुछ भी गंध नहीं आई। चिड़ियाघर या सर्कस जैसी कोई गंध तो थी ही नहीं। मैंने सिर हिलाकर मना किया। थोड़ा और पास आकर बायरा फिर रुका। 'अब तो तुम्हें गंध आ ही रही होगी?' मैंने अपनी सूंघने की शक्ति का पूरा इस्तेमाल किया और मुझे एक अजीब सी गंध महसूस हुई, जिसे बेहतर शब्द न मिलने के कारण मैं 'हरी' कह सकता हूँ - हल्की सड़ी हुई वनस्पति की वह अस्पष्ट सी गंध। कई वर्षों बाद अब मुझे समझ आया है कि यह गंध किसी बाघ के गुजरने की होती है।

बायरा ने ऊपर की ओर देखा, विशाल चट्टानों के बीच दिखाई देने वाले पाँच अलग-अलग छेदों का जायज़ा लिया। उसने कुछ देर चुपचाप उनका अध्ययन किया, और फिर हममें से चौथे छेद की ओर इशारा करते हुए, जो मेरी राय में लगभग सबसे कम संभावित था, फुसफुसाया, 'मुझे लगता है कि बाघ वहीं है।' मैंने अविश्वास भरी नज़रों से उसकी ओर देखा, लेकिन मेरे अविश्वास को नज़रअंदाज़ करते हुए, उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। आखिरकार, हम चुपचाप और अत्यंत सावधानी से आगे बढ़ते हुए, उस छेद के ठीक नीचे एक पथरीली चट्टान पर पहुँच गए, जिसका उसने इशारा किया था, जो हमारे सिर के ठीक ऊपर थी। अंदर झाँकने के लिए मैं अपने पंजों पर खड़ा हुआ, मुझे कुछ नहीं दिखा, और फिर अगले ही पल, बिना किसी आवाज़ के और मानो जादू से, एक बाघ का विशाल सिर प्रकट हुआ, जिसके चेहरे पर हल्का आश्चर्य झलक रहा था।

मेरी गोली लगभग आठ फीट की दूरी से ठीक उसकी आँखों के बीचोंबीच लगी। बाघ एक अजीबोगरीब फिसलती हुई गति से आगे बढ़ा और हमारे चेहरों के सामने आकर रुक गया, उसका विशाल सिर उसके अगले पंजों के बीच आराम से टिका हुआ था, उसकी पीली-हरी आँखें मृत्यु के निकट होने के कारण आधी बंद थीं, और उसके माथे

पर बने छेद से गहरे लाल रंग के खून की एक पतली, टपकती हुई धारा बह रही थी।

यह बायरा के जंगल संबंधी ज्ञान के मेरे अनेक अनुभवों में से पहला अनुभव था। यह कहना कि मुझे उसे पाकर बेहद खुशी हुई, बहुत कम होगा, और जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए और एक-दूसरे पर हमारा विश्वास बढ़ता गया, मुझे अतीत के उस क्षण का कभी पछतावा नहीं हुआ जब मैंने अपने अंतरात्मा को शांत कर दिया था।

अब मैं उन कई रोमांचक घटनाओं में से केवल दो के बारे में बताऊंगा जो हमने साथ मिलकर अनुभव की हैं, अर्थात् तलवाड़ी के भालुओं की कहानी, जिसमें बायरा ने मेरे लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी, और मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ की कहानी।

तलवादी उस चौड़ी घाटी का नाम है, जिसके बीचोंबीच से उसी नाम की पहाड़ी धारा बहती है। यह उस जगह से लगभग ग्यारह मील उत्तर में स्थित है जहाँ मेरी पहली मुलाकात बायरा से हुई थी, और यह सलेम नॉर्थ फॉरेस्ट डिवीजन के सबसे जंगली इलाकों में से एक है। तलवादी नदी अयूर के वन पठार से निकलती है, जहाँ से यह एक पहाड़ी दर्रे में उतरती है, जिसे स्थानीय रूप से तोलुवाबेट्टा दर्रे के नाम से जाना जाता है, लेकिन मैंने इसका नाम बदलकर 'मकड़ी घाटी' रख दिया है, क्योंकि यहाँ लाल और पीले रंग की विशाल मकड़ियाँ संकरे जंगल के रास्ते पर अपने बड़े-बड़े जाले बुनती हैं। ये जाले कुछ अंडाकार होते हैं और कभी-कभी बीस फीट से भी अधिक चौड़े होते हैं। मकड़ी खुद बीच में लटकी रहती है, जिसकी लंबाई अक्सर एक पैर से दूसरे पैर के सिरे तक नौ इंच होती है। अपने आकार के बावजूद, यह बहुत फुर्तीली और बेहद खूंखार जीव है, और इसके शिकार, बड़े रात के पतंगे और जंगल की खूबसूरत तितलियाँ और कीड़े, एक बार इस विशाल जाले में फंस जाने पर बच नहीं पाते। ये मकड़ियां एक-दूसरे को खा जाती हैं और अपने जाले में अपने ही कबीले के किसी दूसरे सदस्य की मौजूदगी बर्दाश्त नहीं करतीं। कई बार मैंने एक छड़ी के सिरे पर इनमें से एक खूंखार जीव को दूसरे के जाले तक ले जाकर अपना मनोरंजन किया है, जिसके बाद तुरंत ही एक भयंकर लड़ाई शुरू हो जाती है, जो अक्सर आधे घंटे तक चलती है, लेकिन हमेशा किसी न किसी जीव की मौत के साथ खत्म होती है। फिर विजेता उस जीव का खून तब तक चूसता है जब तक कि वह घिनौना कीड़ा इतना भर न जाए कि वह मुश्किल से रेंगकर अपने जाले के केंद्र तक वापस आ सके। तलवाड़ी

धारा इस घाटी से नीचे बहती है और फिर दो भागों में बंट जाती है, जिसका छोटा हिस्सा दक्षिण की ओर बहता है, जिसके किनारे पर गुथेरैन पर्वत की विशाल चोटी और केम्पेकराई का छोटा सा गांव है, और अंत में अन्नाइबिद्दाहल्ला की धारा में चिनार नदी से मिल जाता है। यह इलाका कभी केम्पेकराई के कुख्यात हाथी का अड्डा हुआ करता था, जिसने सात इंसानों, दो-तीन मवेशियों को मार डाला था, आधा दर्जन बैलगाड़ियों को चकनाचूर कर दिया था और कटे हुए बांस से लदे तीन टन के ट्रक को पलट दिया था। खैर, यह एक अलग कहानी है।

धारा का मुख्य भाग कुछ मील तक पश्चिम की ओर बहता है और मांची के वन क्षेत्र की सीमा से लगते हुए दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ जाता है, और तलवाड़ी की उपर्युक्त घाटी में एंचेटी से मुथुर और पेन्नाग्राम की ओर जाने वाली वन सड़क को पार करता है।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह पूरा इलाका घने जंगलों से आच्छादित है। इसके ऊंचे इलाकों में मीलों तक फैले ऊंचे-ऊंचे बांस के पेड़ हैं, जबकि निचले इलाकों में प्राचीन जंगल हैं, जिनके बीच-बीच में चट्टानी इलाके आते हैं, और अंत में यह बिलिगुंडलू के मछली पकड़ने वाले गांव के पास कावेरी नदी में मिल जाती है। उद्गम से लेकर मुहाने तक का पूरा इलाका जंगली हाथियों के झुंडों, कुछ बाइसन और अक्सर एक-दो बाघों का घर है, जो नदी के किनारे नियमित रूप से शिकार करते हैं। तलवाड़ी घाटी, जो चट्टानों और बहुत लंबी घास से भरी है, बड़े तेंदुओं, कई भालुओं, जंगली सूअर, सांभर, हिरण और इतने मोरों का निवास स्थान है जितने मैंने कहीं और नहीं देखे। मेरी कहानी उस समय से शुरू होती है जब बायरा ने मुझे पेन्नाग्राम के पोस्टमास्टर द्वारा लिखे एक पत्र में बताया कि घाटी में एक असाधारण आकार के पैंथर ने अपना डेरा जमा लिया है और वह मुथुर-अंचेट्टी सड़क पर nवें से iवें मील के पत्थर तक लगातार मवेशियों को मार रहा है। पत्र में दावा किया गया था कि पैंथर का आकार बहुत बड़ा था, 'सामान्य बाघ से कहीं अधिक बड़ा।'

लगभग पाँच दिन का समय बचा था, इसलिए मैं डेनकनिकोटा से एंचेटी और तलवाड़ी घाटी से होते हुए मुथुर तक जंगल के शॉर्टकट रास्ते से गाड़ी चलाकर गया, जहाँ मेरी मुलाकात बायरा से हुई। वहाँ से हम 15वें मील के पत्थर पर वापस लौटे, जो घाटी में

ही था। सड़क बहुत ही खराब थी, कई छोटी-छोटी नदियाँ पार करनी पड़ती थीं, बैलगाड़ियों के पहियों से बने गड्ढे थे और जगह-जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे हुए थे, जिससे गाड़ी और उसके स्प्रिंग पर बहुत दबाव पड़ रहा था। कैंप लगाने के बाद, हम पास के मवेशी बाड़े में गए, जो लगभग तीन-चौथाई मील दूर था, जहाँ मुझे इस पैंथर के हमलों के बारे में खुद सुनने का मौका मिला। बताया जाता था कि यह आम तौर पर शाम लगभग 5:30 बजे बाड़ों की ओर लौट रही गायों पर हमला करता है और शिकार के लिए पीछे छूट गई गायों में से सबसे बड़ी गाय को चुनता है। कई चरवाहों ने वास्तव में उस जानवर को देखा था और उसे उसके शिकार से दूर भगाने की कोशिश की थी, लेकिन उन्हें पैंथर के गुर्राने और असाधारण क्रूरता का सामना करना पड़ा। यह जानवर किसी विशेष स्थान पर नहीं रहता था, लेकिन जैसा कि मैंने बताया, वह सड़क के किनारे लगभग चार मील तक घूमता रहता था।

इन चरवाहों को जीवित शिकार बेचने के लिए मनाना मुश्किल था, क्योंकि हालांकि वे जानते थे कि पैंथर को मारने से उन्हें सीधा लाभ होगा, लेकिन उनकी जाति और धार्मिक कट्टरता ऐसी थी कि वे जानबूझकर इस तरह किसी जीव की बलि देने के घोर विरोधी थे। फिर भी, विभिन्न तरीकों से अंततः मैं दो लगभग वयस्क पैंथर खरीदने में सफल रहा, जिनमें से एक को मैंने सड़क से लगभग एक मील नीचे नदी के किनारे से प्राप्त किया, और दूसरे को 14वें मील के पत्थर से कुछ ही दूरी पर पाया।

अब इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था, और चूंकि मुझे वहां बहुतायत में मौजूद मोर और जंगली मुर्गों का शिकार करके ग्रामीण इलाकों को परेशान करना बुद्धिमानी नहीं लगी, इसलिए मैंने सुबह और शाम दोनों समय जंगल में अलग-अलग दिशाओं में टहलकर ही संतोष कर लिया, इस उम्मीद में कि शायद संयोग से मुझे कोई पैंथर या कावेरी से भटकता हुआ कोई बाघ मिल जाए।

संयोगवश, तीसरे दिन शाम लगभग 7 बजे मुझे खबर मिली कि उसी शाम तीन मील दूर एक अन्य पशुपालनशाला की एक गाय को पैंथर ने मार डाला था, जब झुंड घर लौट रहा था। जैसे ही नुकसान का पता चला, मुझे सूचित करने के लिए एक संदेशवाहक भेजा गया था, जिसके कारण समय बीत गया। राइफल, टॉर्च और ओवरकोट लेकर, बायरा और मैं घटनास्थल की ओर दौड़े, और जब अभी कुछ ही दूरी

बची थी, तो मैंने अपनी टॉर्च बुझा दी और खबर लाने वाले चरवाहे के पीछे रेंगते हुए आगे बढ़ा, बायरा मेरे पीछे-पीछे चल रही थी। पूर्वी क्षितिज पर फैली जंगल की पहाड़ियों की उबड़-खाबड़ रेखा के ऊपर अर्धचंद्र अभी-अभी उग रहा था, तभी हमने पशु-मार्ग के एक तीखे मोड़ पर मुड़ा और रास्ते में पड़े मृत बैल के पीछे दुबके हुए एक पैंथर को देखा। मैंने नज़दीकी लड़ाई के लिए अपनी .12 शॉटगन से खुद को लैस कर लिया था, जबकि मेरे पीछे बायरा ने विनचेस्टर राइफल ले रखी थी, लेकिन इससे पहले कि मैं बंदूक उठा पाता, पैंथर शव से उछलकर दूर झाड़ियों में गायब हो गया।

मैंने जल्दी से बायरा और चरवाहे से फुसफुसाकर कहा कि वे धीरे-धीरे उसी रास्ते से लौट जाएँ जिससे हम आए थे। मैंने आपस में सामान्य स्वर में बात की ताकि पैंथर को लगे कि हम जा चुके हैं। फिर मैं लगभग बीस कदम दूर उगी एक जंगली बेर की झाड़ी के पीछे छिप गया, इस उम्मीद में कि जानवर वापस आ जाएगा। पैंथर ने अपनी उपस्थिति का संकेत देने में देर नहीं लगाई, क्योंकि कुछ ही मिनटों में मुझे अपने सामने जंगल से उसकी चीख सुनाई दी। आवाज़ धीरे-धीरे उस दिशा में दूर होती गई जिधर बायरा और चरवाहा गए थे। इससे मैंने यह समझा कि वह कुछ दूरी पर उनका पीछा कर रहा था, शायद यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे सचमुच चले गए हैं। उसके बाद लगभग एक घंटे तक तनावपूर्ण सन्नाटा छाया रहा, कोई आवाज़ नहीं आई। और फिर, मानो कहीं से अचानक, और सूखे पत्तों की हल्की सरसराहट या टूटी हुई टहनी की चटकने की आवाज़ के बिना, एक विशाल पैंथर प्रकट हुआ, अपने शिकार के ऊपर खड़ा था, लेकिन फिर भी उस रास्ते पर संदेह भरी नज़रों से देख रहा था जिससे हम अभी-अभी गुज़रे थे। धुंधले प्रकाश में यथासंभव सटीक निशाना लगाते हुए, बंदूक की गर्जना के बाद पैंथर लगभग एक गज की ऊंचाई तक उछला। बिना ज़मीन पर पैर रखे ही वह उछल पड़ा और दूसरी गोली चलने से पहले ही गायब हो गया। उसके जाने की सूचना एक घायल पैंथर की धीमी, कर्कश गुर्राहट से मिली। कुछ मिनटों तक आवाज़ शांत होने का इंतज़ार करने के बाद, और यह समझते हुए कि उस रात और कुछ नहीं किया जा सकता, मैं वापस मवेशी बाड़े और शिविर की ओर चल पड़ा।

अगली सुबह भोर होते-होते, बायरा और मैं उस जगह पहुँच गए जहाँ मेरा सामना हुआ था। जानवर जहाँ से गायब हुआ था, वहाँ चारों ओर खोजते हुए, बायरा को झाड़ियों

के पत्तों पर खून के निशान ढूंढने में ज़्यादा समय नहीं लगा, जहाँ से जानवर भागा था। यह देखकर हौसला बढ़ा कि कम से कम मेरी कुछ एल.जी. गोलियाँ निशाने पर लगी थीं, मैंने राइफल लेकर आगे बढ़ना शुरू किया, बायरा मेरे ठीक पीछे चल रहा था और मुझे निशान पर रास्ता दिखा रहा था। इस स्थिति में, मेरा काम जानवर पर पैनी नज़र रखना और हमला होने पर उससे निपटना था, जबकि बायरा, जो मेरे पीछे थोड़ी सुरक्षित स्थिति में था, अपने पीछा करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता था। पहले 100 गज के भीतर ही हम एक ऐसी जगह पर पहुँच गए जहाँ जानवर लेट गया था, जैसा कि घास पर फैले खून के धब्बे और शरीर की स्पष्ट आकृति से पता चला। यहाँ से जानवर एक संकरे नाले के किनारे रेंगता हुआ चला गया, जिसके दोनों ओर घनी झाड़ियाँ उगी हुई थीं, जहाँ उसका पीछा करना बेहद मुश्किल और खतरनाक हो गया।

हम दबे पांव आगे बढ़ते रहे, बीच-बीच में रुककर सुनते रहे। मैंने अपने सामने की हर झाड़ी को गौर से देखा, उसकी गहराई में धब्बेदार खाल की झलक पाने की कोशिश की, जो अब ज़िंदा थी या मर चुकी, यह हमें पता नहीं था। मैंने झाड़ियों के बीच उगी घनी जंगली घास को भेदने की कोशिश की, और पेड़ों और चट्टानों के तनों के पीछे देखने का प्रयास किया, जो सौभाग्य से वहाँ संख्या में कम थे। इस तरह हम कुछ ही कदम आगे बढ़े थे कि अचानक, मेरे सामने ज़मीन में बने एक छेद से एक काली, घनी आकृति उठी, और उसके बगल में एक छोटी सी वैसी ही आकृति लुढ़कती हुई दिखाई दी। हम एक मादा भालू और उसके बच्चे के सामने आ गए, जो रात भर में नाले के तल में खोदे गए छेद में सो रही थी, जड़ों की तलाश में!

जैसे ही वह आधी उठी, मुझे उसकी छाती पर बना सफेद V का निशान साफ दिखाई दिया। उसकी छोटी-छोटी काली आँखों में हैरानी और फिर गुस्सा झलक रहा था। वह फिर से चारों पैरों पर नीचे झुक गई और सीधे हमारी ओर बढ़ने लगी। मैंने विंचेस्टर राइफल का मुंह लगभग उसके मुंह के पास लाकर ट्रिगर दबा दिया। तभी वह निर्णायक क्षण आया, जो शिकारी के जीवन और अपमानजनक मृत्यु का फैसला करता है: गोली नहीं चली!

मादा भालू ने अपने जबड़े मेरे मुंह पर कसकर बंद कर लिए और अपने लंबे पंजों से एक ही झटके में मेरे हाथ से हथियार छीन लिया, जिससे वह एक पल के लिए उसके

मुंह से हास्यास्पद रूप से लटका रहा, फिर उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया। अनजाने में ही मैं पीछे की ओर लड़खड़ा गया, और जैसे ही भालू मेरे चेहरे पर हमला करने के लिए उठी, जो कि मानव शरीर का वह हिस्सा है जिसे ये जानवर हमेशा सबसे पहले काटते हैं, बायरा ने सर्वोच्च बलिदान देने का प्रयास किया। फुर्ती से खुद को मेरे और क्रोधित जानवर के बीच में डालते हुए, उसने आखिरी क्षण में उसके हमले को रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया। वह केवल इतना ही सफल हुआ कि भालू ने अपना ध्यान उसकी ओर मोड़ लिया, मानो उस क्षण के लिए वह मेरे अस्तित्व को भूल गई हो।

जैसे ही उसने आखिरी समय में अपना सिर झुकाया, भालू ने अपने नुकीले दांत बायरा के दाहिने कंधे में गाड़ दिए, जबकि उसके अगले पैरों के लंबे पंजे उसकी छाती, बगल और पीठ पर बुरी तरह से घायल हो गए। बायरा भालू के साथ नीचे गिर पड़ा। मैं गिरी हुई राइफल की ओर दौड़ा। मिसफायर कारतूस को निकालने के लिए नीचे वाले लीवर को चलाते हुए, मैंने देखा कि गिरने की वजह से राइफल का एक्शन जाम हो गया था। यह सब कुछ ही सेकंड में हो गया। बायरा दर्द से चीख रहा था, जबकि भालू बेरहमी से गुर्रा रहा था। लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ते हुए और राइफल को लाठी की तरह इस्तेमाल करते हुए, मैंने पूरी ताकत से जानवर के सिर के पिछले हिस्से पर वार किया। सौभाग्य से मेरा निशाना सही लगा, क्योंकि भालू ने बायरा को छोड़ दिया और बिजली की गति से राइफल को अपने मुंह में पकड़ लिया, इस बार बट से, और फिर से मेरे हाथ से हथियार छीन लिया। फिर वह बेरहमी से राइफल के बट को काटने लगा। ईश्वर की कृपा से, वह शावक, जो इतने समय तक पृष्ठभूमि में एक आश्चर्यचकित और स्पष्ट रूप से भयभीत गवाह के रूप में मौजूद था, अचानक डर के मारे सिसकियाँ और चीखें निकालने लगा। मानो जादू से, गुस्सैल माँ का ध्यान अपने बच्चे पर केंद्रित हो गया, क्योंकि उसने राइफल छोड़ दी और उसके पास दौड़ पड़ी। वहाँ उसने उसे सूंघकर यह सुनिश्चित किया कि सब ठीक है, और जिस अचानक से यह अवांछित जोड़ा वहाँ प्रकट हुआ था, उसी अचानक से वे गायब हो गए। अब आश्वस्त हो चुके उस शावक की कुछ अंतिम सिसकियाँ उस भयावह दृश्य की अंतिम ध्वनि बन गईं, जिससे उबरने में मुझे कई दिन लग गए।

बायरा घुटनों के बल ज़मीन पर पड़ा था, उसके शरीर से खून बह रहा था और वह

ज़ाहिर तौर पर बहुत दर्द में था। मैं उसके पास गया, अपना कोट और कमीज़ उतारी, कमीज़ को फाड़कर उसके ज़्यादा गंभीर ज़ख्मों पर पट्टी बाँधने और खून बहना रोकने की कोशिश की। फिर, उसे अपनी पीठ पर लादकर और अपनी क्षतिग्रस्त राइफल को साथ लेकर मैं लड़खड़ाते हुए मवेशी बाड़े तक पहुँचा, जहाँ मैंने उसे एक चारपाई पर लिटा दिया। चार चरवाहे उसे उठाकर मेरे शिविर तक लाए, जहाँ मैंने उसके ज़ख्मों पर कच्ची आयोडीन डाली। शिविर में पहुँचकर कुछ ही पलों में मेरी गाड़ी 15 मील का सफ़र तय करके पेन्नाग्राम गाँव की ओर चल पड़ी, जहाँ औषधालय में उसे प्राथमिक उपचार दिया गया।

तब तक खून की कमी से वह बेचारा आदमी बेहोश हो चुका था। उसे कार में बिठाकर, मैंने लगभग रिकॉर्ड समय में 61 मील की दूरी तय कर ली, जहाँ एक बेहतरीन अस्पताल था।

उन पुराने दिनों में पेनिसिलिन के बारे में कोई नहीं जानता था, और बायरा ने अस्पताल में जीवन और मृत्यु के बीच जूझते हुए जो पहला सप्ताह बिताया, जिसमें मैं उसके साथ था, वह बहुत चिंताजनक समय था। लेकिन उसके मजबूत स्वास्थ्य ने उसकी रक्षा की और पहले कुछ दिनों के बाद डॉक्टरों ने उसे निश्चित रूप से खतरे से बाहर घोषित कर दिया।

मैं पेन्नाग्राम लौट आया, जहाँ बायरा की पत्नी और बच्चे आए हुए थे और बेसब्री से खबर का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें कुछ आर्थिक सहायता देने के साथ ही मुझे एक आश्चर्य भी हुआ जब मुझे उस पैंथर की कीड़े लगी खाल भेंट की गई, जिसे मैं बाद की घटनाओं के उत्साह और दबाव में पूरी तरह से भूल गया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि एक मृत जानवर पर गिद्धों को देखकर तलवाड़ी के मवेशी बाड़े के कुछ चरवाहे आकर्षित हुए थे, जिन्होंने भालू के साथ हुई घटना स्थल से 200 गज की दूरी पर जानवर का शव पाया था। बताया गया कि वह एक विशाल जानवर था, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, खाल कीड़े से खराब हो चुकी थी और उसे संरक्षित करना संभव नहीं था।

सलेम लौटते समय, मैंने बायरा के इलाज, खर्चों और मुथुर में उसके पैतृक स्थानों पर अंतिम वापसी के लिए पर्याप्त धन छोड़ दिया था, लेकिन क्षतिग्रस्त मांसपेशी के सिकुड़ने के कारण उसके दाहिने पैर में एक हल्का स्थायी लंगड़ापन रह जाने और

घटना की याद दिलाने वाले कई स्थायी निशानों के साथ, उसे अपने परिवार के पास वापस जाने में दो महीने से अधिक समय लग गया।

मेरी राइफल को एक नए बट की ज़रूरत थी, और आज भी, उसके मुंह से छह इंच की दूरी पर, उस पर मादा भालू के दांतों के निशान मौजूद हैं। इस प्रकार उस साहसिक कार्य का अंत हुआ जिसने बायरा और मेरे बीच रक्त-भाईचारे का बंधन स्थापित किया, जो उसके द्वारा किए गए प्रसन्नतापूर्ण बलिदान और 'इससे बड़ा प्रेम किसी के पास नहीं हो सकता कि वह किसी दूसरे के लिए अपना प्राण न्योछावर कर दे' शब्दों की लगभग शाब्दिक पूर्ति पर आधारित था।

इस घटना के कई वर्षों बाद मेरी अगली कहानी, मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ की कहानी, लिखने का अवसर आया। मुंडाचिपल्लम, या इसका शाब्दिक तमिल अनुवाद, मुंडाची की घाटी या धारा, घाट खंड के निचले हिस्से से होकर बहने वाली एक छोटी सी नदी मात्र है, जो पेन्नाग्राम गांव द्वारा आच्छादित 2,000 फुट ऊंचे पठार और कावेरी नदी के तल के बीचोंबीच स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 700 फुट ऊपर है। यह धारा घाट रोड को पार करती है, जो पेन्नाग्राम से कावेरी नदी तक लगभग चार मील की दूरी पर स्थित है, जहां होगेनैकल के प्रसिद्ध जलप्रपात के ऊपर ऊताईमलाई का मछली पकड़ने वाला गांव बसा है। वन विभाग ने सड़क के किनारे, मुंडाचिपल्लम के तट पर एक कुआं बनवाया है, ताकि मवेशियों, विशेष रूप से भैंसों और बैलों को पानी पिलाया जा सके, जो लकड़ी और बांस से लदे भारी डिब्बे खींचते हैं, इससे पहले कि वे पेन्नाग्राम तक शेष छह मील की खड़ी चढ़ाई शुरू करें। यह छोटा सा कुआँ, जो घने जंगल से घिरा हुआ है, सिवाय सड़क की संकरी पट्टी और मुंडाचिपल्लम की छोटी चौड़ाई के, जो समकोण पर एक दूसरे को काटते हैं, वह स्थान है जहाँ मेरी कहानी शुरू होती है और, अजीब बात है, समाप्त भी होती है, हालांकि कई मौतों के बाद, और मेरे शिकारी रंगा के बाल-बाल बचने के बाद।

सुबह के लगभग 7:30 बजे थे, और ओस की बूँदें घास पर ऐसे टिमटिमा रही थीं मानो दूर-दूर तक बिखरे अनगिनत हीरे हों। वे आपस में टकराकर चमक रही थीं और नवउदित सूर्य की किरणों को प्रतिबिंबित कर रही थीं, जो विशाल 'मुठी' वृक्षों की घनी शाखाओं और मुंडाचिपल्लम के उथले किनारों पर उगे जंगली कपास के लंबे सीधे तनों

से छनकर आ रही थीं। एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, कावेरी नदी में रात भर पकड़ी गई मछलियों से भरी गोल बाँह की टोकरियाँ लिए कुएँ के पास पहुँचे और अपना भारी बोझ कुएँ के चारों ओर बनी नीची दीवार पर रख दिया। पुरुष ने अपनी कमर के चारों ओर लिपटी एक पतली रस्सी खोली और उसका एक सिरा एक महिला द्वारा पकड़े गए गोल पीतल के लोटे के संकरे गले में डालकर उसे कुएँ में डाल दिया। थोड़ी ही देर में उसने कुएँ से ठंडा, ताज़ा पानी निकाल लिया। गाँव की सामान्य प्रथा के अनुसार, जहाँ पुरुष स्त्री से पहले आता है, उसने बर्तन का पानी धीरे-धीरे, चांदी जैसी धार में पीना शुरू किया, और अपने होंठों को बर्तन के मुँह से छूने नहीं दिया, क्योंकि ऐसा करना अस्वच्छ माना जाता था। मछलियों को पेन्नाग्राम के बाज़ार ले जाया जा रहा था, और गंतव्य तक की कठिन चढ़ाई से पहले यही आखिरी पानी उपलब्ध था। जी भरकर पीने के बाद, उस व्यक्ति ने लोटे को कुएँ में लौटा दिया और अपने साथ आई दो युवतियों के लिए उसे दो बार फिर से भर दिया। वे बीस वर्ष की थीं और कमर के ऊपर उन्होंने अपनी सुंदर साड़ियों की आखिरी तह के अलावा कुछ नहीं पहना था, जो एक कंधे पर तिरछी पड़ी हुई थीं। सुबह की ठंडक के बावजूद, उनकी चिकनी, सांवली त्वचा पसीने से चमक रही थी, क्योंकि वे बड़ी नदी से चार मील तक मछलियों का भारी बोझ ढोकर लाई थीं।

शराब पीने के बाद, सभी लोग कुछ मिनटों के लिए बैठ गए। हर सदस्य ने एक छोटा सा कपड़े का थैला निकाला, जिसमें से कुछ पान के पत्ते, सुपारी के टूटे हुए टुकड़े और गाढ़ा चूने का पेस्ट निकाला गया। सुपारी के कुछ टुकड़े एक खुले पत्ते में रखे गए, जिस पर चूने को अच्छी तरह से मल दिया गया था, और फिर बड़े चाव से चबाए गए। कुछ ही मिनटों में सभी सदस्यों के मुंह से खून जैसे लाल रंग की लार निकलने लगी, जिसे उन्होंने चारों ओर थूक दिया। तभी कुएं के किनारे की झाड़ियों से सरसराहट और चटकने की आवाज सुनाई दी। ये आवाजें रुक-रुक कर आती रहीं। इसके अलावा कोई और आवाज नहीं थी। तीनों ने आपस में इन आवाजों के कारण का अनुमान लगाया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह हिरण परिवार का कोई सदस्य था, जो शायद बंदूक की गोली या जंगली कुत्तों या किसी अन्य जानवर से घायल हो गया था और उठने के लिए संघर्ष कर रहा था। आसान शिकार पाने की उम्मीद में, और शायद दल की महिलाओं को प्रभावित करने के इरादे से, वह आदमी उठा और हाथ में पत्थर लेकर जंगल में चला गया। शोर कुछ देर के लिए शांत हुआ, और वह गड़बड़ी का

कारण जानने के लिए और अंदर चला गया। झाड़ियों के बीच उगे एक बबूल के पेड़ के पास पहुँचते ही वह डर के मारे स्तब्ध रह गया जब वह लगभग दो बाघों के सामने आ गया, जो शायद मैथुन कर रहे थे। वैसे तो बाघ एक ऐसा जानवर है जिसके साथ मनमानी की जा सकती है। एक बार जब मैं मछली पकड़ने गया था, तो एक बाघ ने मुझे चौंका दिया जो मुश्किल से पंद्रह कदम दूर झाड़ियों से बाहर निकला था; उस समय यह कहना मुश्किल था कि हम दोनों में से कौन दूसरे की मौजूदगी से ज़्यादा डरा हुआ था। खैर, वह बाघ बस उसी रास्ते से भाग गया जिससे वह आया था, और हालाँकि उस समय मेरे पास कोई हथियार नहीं था, जिज्ञासा और स्वाभाविक उत्तेजना ने मुझे उसका पीछा करने के लिए प्रेरित किया, ताकि पता चल सके कि क्या उसने कोई शिकार किया है। लेकिन वह किसी गाँव के कुत्ते की तरह मेरे सामने भागता रहा, जब तक कि आखिरकार वह आसपास उगी झाड़ियों में खो नहीं गया। लेकिन बाघों के साथ भी कुछ ऐसे पल आते हैं जब वे भी निजता चाहते हैं। या शायद यह प्रजाति की मादा को प्रभावित करने की इच्छा रही हो, एक ऐसी इच्छा जो मैंने शांत स्वभाव के पुरुषों को भी बड़े आश्चर्यजनक तरीके से प्रभावित करते देखा है। खैर, इस बाघ को दखलंदाजी बिल्कुल पसंद नहीं आई और एक छोटी सी दहाड़ के साथ वह उस बेचारे मछली बेचने वाले पर टूट पड़ा, अपने दांत उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में गाड़ दिए और लगभग रीढ़ की हड्डी को ही काट डाला। आदमी के मुंह से एक भी आवाज नहीं निकली जब वह जमीन पर गिरा, बाघ अभी भी उस पर गुर्रा रहा था। दोनों महिलाओं ने वह छोटी सी दहाड़ सुनी और बाघ की आवाज पहचानकर उसी रास्ते से ऊतैमलाई की ओर भाग गईं जिससे वे आई थीं। इस बार शिकार को खाया नहीं गया, यह प्रयास केवल गलत समय पर परेशान किए जाने पर नाराजगी का एक संकेत था, लेकिन इसने उस बाघ को मनुष्य की स्पष्ट लाचारी का सबक सिखा दिया।

कुछ सप्ताह बाद, जंगल से अपना बोझ लेकर लौट रहे एक लकड़हारे का रास्ते के मोड़ पर उसी बाघ से सामना हुआ। फिर वही छोटी सी दहाड़, उसके बाद जानलेवा छलांग, और एक और आदमी बेवजह मरा पड़ा था। बाघ ने फिर भी कुछ नहीं खाया। दो महीने बीत गए, और कुछ औरतें घाटी में बहुतायत में उगने वाले जंगली इमली के पेड़ों के फल इकट्ठा करने जंगल में गईं। उनमें से एक बाकी लोगों से थोड़ा अलग हो गई। वह टोकरी को सिर पर उठाने के लिए झुकी ही थी कि ऊपर देखते ही उसकी नज़र उस विशालकाय बाघ की घूरती आँखों से मिली। तीसरी बार वही छोटी सी दहाड़

सुनाई देने से पहले ही उसके मुँह से एक तीखी चीख निकल गई और उसके क्रूर दाँत उसके गले में धंस गए।

इस बार गर्दन की नस काट दी गई और खारा खून बाघ के मुंह में बह गया; इस प्रकार मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ का जन्म हुआ। महिला को झाड़ियों में घसीटकर ले जाया गया और वहाँ उसके सिर, हथेलियों और पैरों के तलवों को छोड़कर बाकी सब कुछ खा लिया गया। इसके बाद तीन और सुनियोजित हत्याएं हुईं, एक सड़क के सातवें मील के पत्थर पर, दूसरी चिनार नदी के किनारे, कावेरी नदी के संगम के पास, और तीसरी ऊतैमलाई गांव से मात्र एक मील दूर। तीनों ही मामलों में पीड़ितों को खा लिया गया, या आंशिक रूप से खा लिया गया।

यह आखिरी हत्या ही थी जिसने सबसे ज्यादा दहशत फैला दी, जिसके चलते ऊतैमलाई गांव के लोग प्रतिनिधिमंडल बनाकर पेन्नाग्राम आए और अधिकारियों से गुहार लगाई कि वे उनके गांव को खतरे में डालने वाले इस खतरे से छुटकारा दिलाने के लिए कोई कार्रवाई करें। उस समय मेरा शिकारी रंगा भी वहीं था और उसने उनसे वादा किया कि वह मुझे मदद के लिए मना लेगा। वादा करने के बाद वह बस से लगभग सौ मील की दूरी तय करके बैंगलोर पहुंचा और देर शाम अपनी रिपोर्ट पेश की। अब इस मौके पर रंगा के बारे में कुछ कहना उचित होगा। संयोग से, मेरी मुलाकात उससे मुथुर में भी हुई थी, जहां कुछ साल पहले मेरी मुलाकात बायरा से हुई थी। रंगा भैंसगाड़ी का किराए का चालक था, जिसका इस्तेमाल जंगल से कटा हुआ बांस पेन्नाग्राम तक ले जाने के लिए किया जाता था। वह बहुत ही उत्साही था और अपने खाली समय में बायरा की तरह ही शिकार करता था, जिसके लिए वह खास तौर पर बंदूक किराए पर लेता था। हालांकि, शारीरिक और व्यक्तिगत रूप से वह बायरा से बिल्कुल अलग था। बायरा के दुबले-पतले शरीर की तुलना में वह लंबा और बलवान था, और अपने सभी कार्यों में दृढ़ और सकारात्मक स्वभाव का परिचय देता था। उसने अपनी पहली पत्नी की हत्या के प्रयास के लिए एक साल जेल में बिताया था, जिसे उसने ईर्ष्या के झगड़े में गर्दन में चाकू मार दिया था। जेल से लौटने के बाद उसने दोबारा शादी कर ली थी, और जब मैं उससे पहली बार मिला था, तब उसके तीन बच्चे थे। संतुष्ट न होकर उसने बाद में एक और पत्नी से शादी कर ली और अब उसके कुल बारह बच्चे थे, और वह दादा भी बन चुका था। बायरा की तुलना में उसकी

संगठनात्मक क्षमता कहीं बेहतर थी और जरूरत पड़ने पर वह काम करवा लेता था। मैंने उसे निर्देश न मानने वाले एक जिद्दी आदिवासी की जमकर पिटाई करते देखा है। उसके चरित्र का एक लाभदायक पहलू भी है - जंगल में बबूल की छाल और अन्य सामग्रियों से अवैध रूप से शराब बनाना। मैंने उसकी बनाई शराब का स्वाद चखा है और मैं आपको बता सकता हूँ कि यह मेरे अनुभव में सबसे खतरनाक शराब है। अंत में, वह बायरा से कहीं अधिक बेईमान है और छोटी-मोटी चोरियों, खासकर .12 बोर कारतूसों की चोरी का आदी है। वह बायरा से घृणा करता है, जिसे वह अर्ध-जंगली समझकर नीचा देखता है। मुझे लगता है कि वह चुपके से छोटी पुजारी के प्रति मेरे स्नेह से जलता है। लेकिन रंगा एक बहादुर आदमी है, खतरे के सामने दृढ़ और भरोसेमंद, जो निश्चित रूप से किसी जंगली जानवर या भूत से नहीं डरता, जैसा कि अधिकांश अन्य देशी शिकारी डरते हैं। दुर्भाग्य से, रंगा ऐसे समय आया जब मैं बहुत व्यस्त था और अगले पखवाड़े तक स्टेशन से बाहर नहीं जा सकता था। इसलिए मैंने उसे कई पते लिखे लिफाफे और निर्देश देकर पेन्नाग्राम वापस भेज दिया कि वह हर दूसरे दिन मुझे पत्र लिखे, चाहे कुछ भी हो जाए।

रंगा के पहले बुलावे का जवाब न दे पाने की मेरी असमर्थता शायद दो नई त्रासदियों के लिए अप्रत्यक्ष रूप से ज़िम्मेदार थी, जो अंततः पेन्नाग्राम में अपनी कार से रंगा को लेने, मुथुर होते हुए बायरा जाने और ऊतैमलाई पहुँचने से पहले घटीं। ऊतैमलाई में मेरा तीसरा साथी, सोवरी, मुझसे मिला। यह सोवरी, रंगा की तरह ही काफी बहुमुखी प्रतिभा का धनी था, और खुद भी शिकार के दौरान अपनी बंदूक से एक जंगली हाथी को गोली मारकर हत्या करने के आरोप में तीन महीने जेल में बिता चुका था।

हाथी अधेड़ मादा थी और उस जगह के पास आ गई थी जहाँ सौरी छिपा हुआ था। सौरी को डर था कि कहीं वह सचमुच उसे कुचल न दे, इसलिए उसने अपनी बंदूक हाथी के बाएँ कान के पीछे तान दी। गोली ने अपना काम बखूबी कर दिया और हाथी वहीं गिर पड़ा। दुर्भाग्य से, वह रंगे हाथों पकड़ा गया। मैं उस समय कोयंबटूर नदी के किनारे शिकार कर रहा था और मैंने हाथी को देखा और उसकी तस्वीर खींची थी, और संयोग से इसी तरह मेरी सौरी से मुलाकात हुई।

मुझे इन तीनों व्यक्तियों की सेवाएं प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, क्योंकि अपने विविध क्षेत्रों और क्षमताओं में वे जंगल के अनुभव और कौशल का विशाल भंडार प्रस्तुत करते थे। बायरा ने तुरंत पड़ोसी जंगल और कोयंबटूर तट के किनारे बाघ के तत्काल ठिकाने का पता लगाने के प्रयास में छानबीन करने की पेशकश की। मैंने उसे

ऐसा करने से स्पष्ट रूप से मना कर दिया, क्योंकि यह आत्मघाती था। अंततः हमने समझौता किया और तय किया कि उसके साथ सोवरी, मेरी .12 बोर बंदूक के साथ, और एक अन्य व्यक्ति, जिसका नाम आश्चर्यजनक रूप से लुकास था और जो सरकारी मत्स्य विभाग में 'वॉचर' के रूप में कार्यरत था, को भेजा जाए। रंगा को तीन चारे लाने और उन्हें संभावित स्थानों पर बांधने का काम सौंपा गया। जानवरों को पकड़ने में हमेशा की तरह कठिनाई आई, लेकिन चतुर रंगा ने धमकियों और अन्य युक्तियों से जल्दी ही इस पर काबू पा लिया, जिनके बारे में मुझे पता नहीं होना चाहिए था।

तीनों चारे में से पहला चिनार नदी में उस स्थान से एक मील ऊपर बांधा गया था जहाँ वह कावेरी में मिलती है, और दूसरा उससे लगभग तीन मील आगे, जहाँ मुंडाचिपल्लम चिनार नदी से मिलता है। तीसरा उस कुएँ से 100 गज की दूरी पर बांधा गया था जहाँ पहली त्रासदी हुई थी। एक दिन छोड़कर, बायरा और उनके साथी कावेरी के एक किनारे के जंगलों की छानबीन करते थे, जबकि मैं, एक स्थानीय गाइड के साथ, दूसरे किनारे की छानबीन करता था। जैसा कि मैंने बताया, रंगा चारे को खिलाने-पिलाने का काम करता था।

इस तरह हमने चार दिन बिताए, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। कई जगहों पर बाघ के पंजे मिले, लेकिन वे ताजे नहीं थे, और कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सका कि वे आदमखोर बाघ के थे या किसी अन्य जानवर के।

ग्रामीणों को जंगलों में प्रवेश करने या पेन्नाग्राम जाने वाली सड़क का उपयोग करने से रोककर उस खूंखार बाघ को भुखमरी से बचने के लिए मवेशियों को मारने पर मजबूर करना संभव नहीं था। वैसे भी, इस सड़क पर काफी यातायात रहता था, क्योंकि यह कावेरी नदी के दूसरी ओर बसे कई छोटे गांवों के लिए मुख्य मार्ग थी। इसके अलावा, जंगलों में, विशेष रूप से कोयंबटूर की तरफ, भरपूर मात्रा में जंगली जानवर थे, जिनका बाघ आवश्यकता पड़ने पर सहारा ले सकता था।

इस बीच मैंने हर संभव प्रयास किया कि मेरी उपस्थिति और उद्देश्य की खबर आसपास के सभी गांवों तक पहुंच जाए, ताकि मुझे किसी भी ताजा शिकार की सूचना जल्द से जल्द मिल सके। बायरा की कुशल सहायता से, उस जानवर का पता

लगाने की कुछ उम्मीद जगी थी कि वह कहां छिपा है, या शायद उसकी मांद तक भी पहुंच सकता है। उसे पीटना तो नामुमकिन था, भले ही इसके लिए कोई स्वयंसेवक होता, लेकिन कोई नहीं था, क्योंकि हम एक बहुत ही साहसी और चालाक जानवर से निपट रहे थे, जो पीटने वालों में से ही किसी एक को अपना शिकार बना सकता था।

पाँचवें दिन सुबह-सुबह मुझे खबर मिली कि पिछली शाम को लगभग चार मील दूर पानापत्ती के पशु बाड़े में एक आदमी की हत्या कर दी गई थी। वह अपने कुत्ते को बुलाने के लिए अपनी झोपड़ी से 100 गज बाहर गया था, जो लापता था, और उसके बाद उसका कोई पता नहीं चला। हम तुरंत घटनास्थल पर पहुँचे और बायरा उस जगह का पता लगाने में सफल रही जहाँ उस आदमी पर हमला हुआ था: चिनार नदी के रेतीले तल पर बाघ के फैले हुए बड़े-बड़े पंजे साफ दिखाई दे रहे थे, क्योंकि वह अपने शिकार को घसीटते हुए बीच में उगी झाड़ियों के बीच से होते हुए ढलान वाले बाँस के जंगल की सीमा तक ले गया था। यहाँ हमें लगभग पूरी तरह से खाए हुए शव के अवशेष मिले।

वहाँ कोई पेड़ नहीं था, सिवाय एक विशाल बांस के झुंड के जो अवशेषों से लगभग तीस फीट दूर उगा हुआ था। मैंने बायरा को निर्देश दिया कि वह मेरे लिए एक उपयुक्त छिपने की जगह बनाए। इसके लिए उसे बांस के लगभग आठ-नौ मजबूत तने निकालने थे, उन्हें जमीन से लगभग चार फीट ऊपर से और फिर जमीन के स्तर पर काटकर बीच के चार-चार फीट के हिस्से निकाल लेने थे। बांस के तनों के ऊपरी हिस्से झुंड के बीच में होने के कारण जमीन पर नहीं गिर रहे थे, क्योंकि उनके ऊपरी सिरे आस-पास के तनों और अन्य झुंडों की पत्तियों से बुरी तरह उलझे हुए थे।

अपना काम पूरा करने के बाद, बायरा ने झाड़ियों के बीचोंबीच मेरे लिए एक खोखली गुफा जैसी जगह बना दी थी। इसके बीच में बैठकर मुझे पता था कि बाघ के हमले से मैं पूरी तरह सुरक्षित रहूंगा, चाहे वो पीछे से हमला करे या अगल-बगल से, क्योंकि बीच में मौजूद कई टहनियों के कारण वह मुझ तक नहीं पहुंच सकता था। वह मुझ तक सिर्फ सामने से ही पहुंच सकता था, और मुझे पूरा भरोसा था कि अगर मैं रात भर जागता रहूं तो मैं उसका सामना कर सकता हूं।

वह निष्ठावान पुजारी मेरे साथ बैठने की ज़िद पर अड़ा रहा, जब तक कि मुझे उसे

सख्ती से जाने का आदेश देने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ा। वास्तव में, मुझे उसकी संगति से खुशी होती, लेकिन बांस के झुंड के बीच हमने जो जगह साफ़ की थी, उसमें केवल एक व्यक्ति के बैठने की जगह सीमित थी। उस जगह को बढ़ाने के लिए और अधिक बांस काटने का मतलब था कि हम झुंड के बाहरी किनारे तक पहुँच रहे थे और बिना सहारे के बांस के तने ज़मीन पर गिर जाते, जिससे न केवल गिरने की आवाज़ से काफ़ी शोर होता, बल्कि आसपास मलबा भी बिखर जाता, जो शायद बाघ को डराकर भगा देता।

रात अंधेरी होगी, चाँद नहीं होगा, इसलिए मैंने एहतियात के तौर पर अपनी अतिरिक्त शूटिंग लाइट को अपनी शॉटगन पर लगा लिया, जिसे मैं अपने साथ छिपने की जगह पर ले गया था, साथ ही विनचेस्टर राइफल भी, जिसमें रोशनी की व्यवस्था थी। बाँस के घने जंगल में होने के कारण, मुझे पता था कि मैं ओस और जंगल की ठंडी हवा से लगभग पूरी तरह सुरक्षित हूँ, और साँपों से भी काफी हद तक सुरक्षित हूँ, या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा। मैं दोपहर 1 बजे तक अपनी जगह पर पहुँच गया, और अपने साथियों को विदा कर दिया। बायरा अभी भी विरोध कर रहा था, और मैंने उसे हिदायत दी कि अगली सुबह चिनार के बिस्तर से मुझे पुकारे, तभी पास आना। उनके जाने के बाद, अगले सत्रह घंटों के लिए मैं अकेला रह गया।

आप समझ सकते हैं कि बांस के घने झुरमुट के बीच मेरी स्थिति से मेरा दृश्य चारों ओर से पूरी तरह से सीमित था, सिवाय मेरे ठीक सामने जंगल की संकरी गली के, जिसके अग्रभाग में मानव शव था। हालाँकि मैं चाहता था कि दृश्य का दायरा अधिक हो, मुझे पता था कि अंधेरा होने पर मैं राहत महसूस करूँगा, क्योंकि दिन में जितना अधिक मैं देख पाऊँगा, अंधेरा होने पर उतना ही अधिक मैं आदमखोर के सामने आ जाऊँगा, जब स्थिति उलट जाएगी और वह देख पाएगा जबकि मैं नहीं देख पाऊँगा। मानव अवशेष, ऊपर लटकते बांसों की घनी छाया से आसमान से छिपा हुआ था, इसलिए गिद्धों ने उसे परेशान नहीं किया। हालाँकि, मक्खियाँ झुंड में उस पर मंडरा रही थीं और दुर्गंध जल्द ही असहनीय रूप से असहनीय होने लगी। मैं आपको जंगल की शाम और जंगल के दिन के अंत की आवाज़ों का वर्णन करके बोझिल नहीं करूँगा, बस इतना कहूँगा कि वे लगभग सभी उस समय मौजूद थीं और मेरे जंगल-प्रेमी कानों को मधुरता प्रदान कर रही थीं। अंधेरा छाने से पहले कुछ नहीं हुआ, और अंधेरा तेज़ी

से छा गया, यहाँ तक कि मैं घोर अंधकार में डूब गया, जो मेरे ऊपर खड़े ऊँचे-ऊँचे बांस के तनों की अतिरिक्त छायाओं से और भी गहरा हो गया था। इतना अँधेरा था कि मेरी गोद में रखे मेरे हाथ भी दिखाई नहीं दे रहे थे; मुझे ट्रिगर और टॉर्च का स्विच, और वास्तव में, सब कुछ महसूस करना पड़ रहा था। बस मेरी घड़ी का चमकता हुआ डायल दिखाई दे रहा था, जिसमें पौने आठ बज रहे थे। सुबह होने में अभी दस लंबे घंटे बाकी थे।

मैं जानता था कि इस दौरान मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी होगी, अपनी साधारण, मानवीय और शहरी कौशल का इस्तेमाल जंगल के राजा के कौशल के खिलाफ करना होगा, जिसमें वह माहिर था, जिसके पीछे दशकों से कुशल पूर्वज थे; यानी, सुनने और समझने का कौशल। क्योंकि मैं अपने सामने एक इंच भी नहीं देख सकता था, जबकि वह साफ-साफ देख सकता था। न ही मैं उसे सूंघ सकता था, और न ही वह मुझे सूंघ सकता था। सफलता के लिए मुझे पूरी तरह से उसकी धीमी आहट सुनने पर निर्भर रहना होगा, और मैं अपने लंबे अनुभव से अच्छी तरह जानता था कि एक सतर्क बाघ कितनी खामोशी से आ सकता है। मुझे खुद भी बिल्कुल चुप रहना होगा; इससे भी बुरा, मेरी जरा सी भी हरकत या आवाज उसकी तेज कानों को मेरी मौजूदगी का पता दे देगी, और एक बार जब उसे पता चल गया कि मैं वहां हूं, तो केवल दो ही बातें हो सकती थीं। या तो उसका साहस जवाब दे देगा और वह शिकार छोड़ देगा, या वह मेरे आने से पहले ही मेरे सामने के खुले रास्ते से अचानक मुझ पर हमला कर देगा। मैं निश्चित रूप से उसके भोजन का अगला शिकार नहीं बनना चाहता था।

इसलिए, मैं बिल्कुल स्थिर बैठने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था। मच्छर उस झाड़ी के अंदर भी घुस आए और मुझे बुरी तरह परेशान किया। एक बार कोई ठंडी, रेंगने वाली चीज़ मेरी गोद से गुजरी। वह लंबी तो थी लेकिन उसके पैर नहीं थे और निस्संदेह एक साँप था। उस समय हिलना मतलब काटना और अगर वह ज़हरीला साँप होता, तो शायद मौत भी हो सकती थी। बड़ी मुश्किल से मैंने अपनी कांपती नसों को काबू किया और साँप सरक कर चला गया। मैं बस उसकी सरसराहट महसूस कर सका जब वह बीच में मौजूद बाँस के तनों के बीच से फिसलकर गायब हो गया।

धीरे-धीरे मेरे गले में खुजली होने लगी और मुझे ज़ोर से खांसी आने लगी। मैंने भेड़ें

गिनना शुरू कर दिया ताकि मेरा ध्यान इस इच्छा से हट जाए, जब तक कि यह इच्छा धीरे-धीरे शांत नहीं हो गई। रात 10:25 बजे, मुझे अपने पीछे जंगल में एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। हल्की सी सरसराहट, फिर सब शांत हो गया। मिनट धीरे-धीरे बीत रहे थे। फिर वही आवाज़ आई, मेरे दाहिनी ओर, ठीक उसी जगह जहाँ मैं बैठा था। भारी साँसें साफ़ सुनाई दे रही थीं। एक बहुत हल्की सी गुर्राहट, सन्नाटा, फिर एक और गुर्राहट, और फिर मेरे सामने एक भारी, कोमल शरीर तेज़ी से आया। क्या वह शिकार करने आया था, या फिर वह घने अंधेरे में मुझे घूर रहा था, शायद उसी क्षण अपने शक्तिशाली पिछले पैरों को अपने लचीले पेट के नीचे खींचकर मुझ पर झपटने की तैयारी कर रहा था? और मुझे अपनी नाक का सिरा भी दिखाई नहीं दे रहा था।

मैंने अपनी राइफल को पहले ही लोड कर लिया था और ट्रिगर पर उंगली रखकर धीरे-धीरे उसका मुंह ऊपर उठा लिया था, ताकि सामने से आ रहे हमले का सामना कर सकूं। घोर भय से मेरे चेहरे से पसीना बह रहा था और घबराहट के मारे मेरा पूरा शरीर कांप रहा था।

मैंने टॉर्च का बटन दबाया और तेज़ रोशनी एक बड़े लकड़बग्घे पर पड़ी, जो शिकार के ऊपर खड़ा था और यह जानकर गुर्रा रहा था कि वहाँ एक मरा हुआ आदमी पड़ा है। उसने कुछ सेकंड तक रोशनी को घूरा और फिर गायब हो गया। राहत की साँस लेते हुए और यह सोचकर कि कम से कम अभी के लिए मैं फिर से सुरक्षित हूँ, मैं ज़ोर से हँस सकता था।

खैर, मेरी स्थिति अस्थायी रूप से उजागर हो गई थी और मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि आदमखोर बाघ आस-पास न हो और उसे इसका पता न चल जाए। मैंने जल्दी से इस गड़बड़ी का फायदा उठाते हुए अपने साथ लाए थर्मस से गर्म, ताज़ा चाय का एक घूंट पिया और अपने जकड़े हुए अंगों को जल्दी से हिलाया, फिर अपनी निगरानी के बाकी समय के लिए खुद को फिर से तैयार किया। मैं फिर से घोर अंधेरे में था, लेकिन काफी तरोताज़ा और उस भयानक घबराहट से राहत महसूस कर रहा था जो कुछ मिनट पहले मुझ पर हावी होने की धमकी दे रही थी। बारह बजने में दस मिनट पहले मैंने दूर से एक बाघ के गुर्राने की आवाज़ सुनी। यह आवाज़ पाँच से दस

मिनट के अंतराल पर फिर से सुनाई दी, आखिरी बार बारह बजने में बीस मिनट पर, और एक ऐसी जगह से जो मुझे लगभग एक चौथाई मील दूर लग रही थी। इस घने जंगल वाले इलाके में आवाज़ की सही दूरी का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, लेकिन मैंने ईश्वर और अपने भाग्य को धन्यवाद दिया कि बाघ ने चुपचाप आने के बजाय शोर मचाते हुए आने का फैसला किया, जैसा कि मुझे डर था।

पंद्रह मिनट बीत गए और कोई हलचल नहीं हुई। इसी बीच आधी रात की सामान्य जंगल की हवा चलने लगी, जिससे बांस के तने आपस में अजीब तरह से टकराकर चरमराने लगे। इससे मेरे मन में एक नया और अशुभ विचार आया। मान लीजिए कि मेरे सिर के ऊपर सीधा खड़ा हुआ कई कटे हुए बांस के तनों में से एक अपनी जगह से हटकर अपने ही वजन से नीचे गिर जाए। उसका कटा हुआ सिरा मुझे जमीन पर गाड़ देगा, जैसे किसी संग्रहकर्ता के डिब्बे में कोई दुर्लभ कीड़ा। यह विचार बहुत अप्रिय था और एक पल के लिए इसने आदमखोर सांप और उसकी निकटता के विचार को भी ढक लिया।

तभी मुझे अपने सामने अंधेरे में पड़े शव की हड्डी टूटने की आवाज़ सुनाई दी। धीरे से मैंने राइफल को कंधे तक उठाया, उसे स्थिर किया और उस रात दूसरी बार टॉर्च का स्विच दबाया। लेकिन कुछ नहीं हुआ। मैंने स्विच को बार-बार दबाया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ। शायद बल्ब फ्यूज हो गया था या कोई कनेक्शन ढीला हो गया था। अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो बाघ के खाकर चले जाने तक चुपचाप बैठा रहूँ, या अपनी राइफल को स्मूथ बोर से बदलकर निशाना लगाऊँ। मैंने तुरंत बंदूक चलाने का फैसला किया। मैंने राइफल को बहुत धीरे से ज़मीन पर उतारा और फिर अंधेरे में चुपचाप .12 बोर की बंदूक ढूँढी। उसे पाकर मैंने उसे अपनी ओर खींचा और फिर हथियार को कंधे तक लाने लगा। मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि बाघ मुझसे दूर देख रहा हो, या अपने भोजन में इतना मग्न हो कि बाँस के झुंड के बीच हो रही हलचल पर ध्यान ही न दे। और तभी दुर्भाग्य मुझ पर आ पड़ा। बंदूक की नली हल्के से, लेकिन काफी स्पष्ट रूप से, बांस के तने के संपर्क में आई और एक सुनाई देने वाली खटखटाहट हुई।

खाने की आवाज़ अचानक बंद हो गई, उसके बाद एक गहरी और गड़गड़ाहट भरी

दहाड़ सुनाई दी। मैंने जल्दी से बंदूक को सही जगह पर रखा और नई टॉर्च का स्विच दबाया। सौभाग्य से टॉर्च खराब नहीं हुई, और रोशनी से एक विशाल धारीदार आकृति साफ दिखाई दी, जो लाश से उछलकर मेरे बगल वाले बांस के झुंड के पीछे चली गई। वहाँ से धरती को हिला देने वाली दहाड़ों की एक श्रृंखला ने सन्नाटे को चीर दिया, क्योंकि आदमखोर ने स्पष्ट रूप से यह दिखाया कि उसे परेशान किए जाने पर कितनी नाराजगी है, और उसने अपने आस-पास एक इंसान को देख लिया है।

टॉर्च को जलाए रखते हुए और उसके अचानक हमले पर पैनी नज़र रखते हुए, मैंने एक हाथ से अपनी जेब में हमेशा रखे रहने वाले अतिरिक्त बल्ब को टटोला। मैंने उसे निकाला और अपनी गोद में रख लिया। एक हाथ से काम करते हुए, मैंने अपनी राइफल की टॉर्च का ढक्कन खोला, खराब बल्ब निकाला और नया बल्ब लगा दिया। सौभाग्य से, टॉर्च आगे से नहीं बल्कि पीछे से फोकस एडजस्ट करने वाली थी, और चूंकि राइफल की टॉर्च अब फिर से काम कर रही थी, मैंने उसे स्मूथ बोर पर बुझा दिया, हालांकि मैंने किसी भी आपात स्थिति के लिए बंदूक को अपने घुटनों पर तैयार रखा।

बाघ अभी भी अपना प्रदर्शन कर रहा था, लेकिन मेरे पीछे आ गया था। मुझे पता था कि सामने से हमले को छोड़कर मैं काफी हद तक सुरक्षित हूँ। इससे बचने के लिए मुझे टॉर्च लगातार जलाए रखनी पड़ती, लेकिन चूंकि सुबह होने में अभी भी पाँच घंटे से अधिक का समय था, इसलिए यह निश्चित था कि लगातार जलाने पर दोनों टॉर्च की बैटरी भी खत्म हो जाएँगी। इसलिए मैंने रोशनी बंद कर दी और अपनी सुनने की शक्ति पर भरोसा किया। जब काफी देर तक सन्नाटा छा जाता, तो मैं रोशनी की बीम चालू कर देता, इस उम्मीद में कि बाघ रेंगता हुआ मेरी ओर आ रहा होगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और वह मुझसे दूर ही रहा, सुबह 2:30 बजे तक लगातार प्रदर्शन करता रहा, जब मुझे दूर से उसकी गुर्राहट सुनाई दी। निस्संदेह वह नाराज़ था, लेकिन इस समय तक मैं उसकी नाराज़गी का स्वागत कर रहा था।

आप यकीन मानिए, मैंने पूरी रात बाघ के लौटने के डर से चौकन्ना होकर निगरानी रखी, क्योंकि आदमखोर बाघ का व्यवहार अक्सर अप्रत्याशित होता है; लेकिन सुबह के ठंडे घंटे बिना किसी घटना के बीतते चले गए, जब तक कि अंत में चांदी जैसे पंखों

वाले जंगली मुर्गे की मधुर आवाज ने मुझे भोर और एक नए दिन के उजाले के लिए आभारी नहीं बना दिया, जिसे मैंने उन भयानक घंटों के दौरान कई बार देखने की कल्पना भी नहीं की थी। चिनार नदी के किनारे से मेरे अनुयायियों की आवाज मेरे थके हुए कानों में संगीत की तरह पड़ी, और मैंने उन्हें आगे बढ़ने के लिए चिल्लाकर कहा, क्योंकि रास्ता साफ था। उनके आने पर मैं रात भर की अपनी तंग जगह से लड़खड़ाते हुए बाहर निकला, अपनी फ्लास्क में बची हुई चाय खत्म करने और काफी समय से प्रतीक्षित पाइप पीने के लिए, साथ ही रात की घटनाओं को बताने लगा।

वे तीनों आदमी मुझे बहुत अच्छी तरह जानते थे, लेकिन हालांकि उन्होंने खुलकर ऐसा नहीं कहा, यह स्पष्ट था कि वे मुझे जीवित देखकर आश्चर्यचकित थे, क्योंकि हताश आदमखोर की दहाड़ें और प्रदर्शन उन्हें स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहे थे, जहां उन्होंने पनापत्ती के कांपते चरवाहों के साथ रात बिताई थी।

बायरा ने अब कहा कि वह चिनार नदी के किनारे-किनारे मुथुर तक, जो मात्र चार मील दूर था, थोड़ी देर पैदल चलकर जाना चाहता है और वहाँ से अपने शिकारी कुत्ते को लाना चाहता है, जिसे वह बाघ के निशान का पीछा करने में काफी मददगार मानता था। यह कुत्ता एक साधारण सा सफेद और भूरे रंग का गाँव का कुढ़काऊ कुत्ता था, जिसका नाम कुश-कुश-कारिया था। मुझे आज तक समझ नहीं आया था कि उसे यह अजीब नाम कैसे मिला। कुत्ते को पुकारते समय, बायरा पहले दो अक्षरों को सामान्य स्वर में बोलता था, लेकिन तीसरे अक्षर को एक अजीब सी ऊँची आवाज़ में बदल देता था, जो रात के बगुले की आवाज़ जैसी लगती थी। मैं कभी भी उसकी नकल नहीं कर पाया था, और पहले मैं केवल कुश-कुश कहकर ही संतुष्ट हो जाता था, जिसे कुत्ता बिना किसी झिझक के मान लेता था। यह कहते हुए कि वह कम से कम सौरी को साथ ले जाए, मैं रंगा के साथ ऊतैमलाई लौट आया और गरमागरम नाश्ता किया, कावेरी नदी में स्नान किया और फिर बहुत देर बाद सो गया। मैं दोपहर 2 बजे उठा। बायरा, सोवरी और बहुमूल्य कुश-कुश-कारिया की वापसी के साथ, जिसने खुशी से मुझे पहचानते हुए अपनी पूंछ हिलाई और अपनी ठंडी थूथन मेरे कंधे से सटा दी।

जल्दी-जल्दी दोपहर का भोजन और ढेर सारी गर्म चाय पीकर, हम उस जगह लौट आए जहाँ रात भर हमारा रोमांच हुआ था। हमारे साथ मृतक के रिश्तेदार भी थे, जो

उसके अवशेषों को ले जाना चाहते थे, लेकिन बिना सुरक्षा के उस जगह पर जाने से बहुत डर रहे थे। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, उस समय तक शव से बहुत दुर्गंध आ रही थी, इसलिए उन्होंने उसे केवल चिनार नदी तक ले जाने और किनारे पर दफनाने का फैसला किया।

उनके चले जाने के बाद, बेचारे कुश-कुश ने बाघ के ठंडे पदचिह्नों का पीछा करने की बहादुरी भरी कोशिश की, लेकिन वह सौ गज भी आगे नहीं बढ़ पाया। शायद वातावरण में फैली दुर्गंध और शांत शाम की हवा में घुली गंध ने बाघ के पदचिह्नों की हल्की सी भी गंध को दबा दिया था। हम सूर्यास्त से ठीक पहले शिविर लौट आए, बेहद निराश होकर।

अगले दिन कुछ नहीं हुआ, लेकिन उसके अगले दिन सुबह रंगा बाल-बाल बच गया। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, बायरा, सौरी और मैं हर दिन बाघ को ढूंढने की उम्मीद में जंगल में अलग-अलग दिशाओं में खोजबीन करते थे, जबकि रंगा का काम हमारे तीन शिकारों को खाना-पानी देना था, जिनमें से किसी को भी उस समय तक मारा नहीं गया था। उस सुबह वह एक और ग्रामीण के साथ जल्दी निकल पड़ा था और मुंडाचिपल्लम के कुएं पर रखे शिकार को देखने गया था, जो उम्मीद के मुताबिक सही-सलामत था। अपने साथी द्वारा लाए गए कुछ भूसे को रखने के बाद, रंगा ने जानवर को पानी पिलाया और फिर दोनों मुंडाचिपल्लम की ओर बढ़े, ताकि चिनार नदी के संगम पर बंधे दूसरे शिकार को देख सकें। ग्रामीण आगे चल रहा था और रंगा पीछे-पीछे। वे सड़क से लगभग एक मील दूर ही आए थे कि सूखी नदी के बीचोंबीच, उनसे पचास गज की दूरी पर बाघ खड़ा था।

ग्रामीण ने भूसे का गट्ठा गिरा दिया और सामने मौजूद इकलौते पेड़ पर चढ़ गया। कुछ ही सेकंड में वह ठीक-ठाक ऊंचाई तक चढ़ पाया, इस दौरान उसने रंगा का रास्ता रोक दिया। कुछ ही सेकंड में आदमखोर बाघ पेड़ के आधार तक पहुँच गया, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और अपने अगले पंजे से एक झटके में रंगा की कमर पर बंधी धोती को खींच लिया, जिसका सिरा चढ़ते समय नीचे लटक रहा था। बाघ थोड़ी देर के लिए रुका और धोती को खींचने लगा, जबकि रंगा, बिना धोती के, पूरी ताकत से चढ़ता रहा और अपने साथी को पेड़ से लगभग गिरा ही दिया, ताकि वह ऊपर की

ओर सुरक्षित जगह पर पहुँच सके। निराश बाघ नीचे ही रहा, ऊपर की ओर देखता रहा और भयानक गुर्राता रहा, जबकि रंगा और उसका साथी मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाते रहे, और सबको बताते रहे कि उन्हें मारा जा रहा है और खाया जा रहा है। सौभाग्य से, सुरक्षा के लिए बड़ी संख्या में यात्रा कर रहे लोगों का एक समूह पेन्नाग्राम से आ रहा था और उस समय वे कुएँ के पास ही थे।

जहां से उन्हें चीखें सुनाई दीं और उन्होंने संदेश पहचान लिया। पूरा समूह, जिसमें सभी उम्र के पुरुष, महिलाएं और बच्चे शामिल थे, पूरी रफ्तार से शेष चार मील की दूरी तय करके ऊटामलाई में मेरे पास खबर लेकर पहुंचे। मुझे नहीं पता था कि रंगा पर हमला हुआ है, और बायरा और सौरी अभी तक नहीं लौटे थे, इसलिए मैं अकेले ही दौड़ता हुआ कुएं तक पहुंचा और रिकॉर्ड समय में वहां पहुंच गया। यहां से मुझे चीखें साफ सुनाई दे रही थीं। तब तक बाघ पेड़ की तलहटी छोड़कर जंगल में गायब हो चुका था, लेकिन दोनों आदमी नीचे उतरने से डर रहे थे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं वह कहीं छिपा न हो और उन पर हमला न कर दे। आदमखोर बाघ को अचानक पकड़ने की उम्मीद में, मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया और सावधानी बरतते हुए तेजी से आगे बढ़ा। जब मैं पेड़ के पास पहुंचा, तो मुझे देखकर केवल रंगा और उसका साथी ही हैरान हुए, जब तक कि मैंने उन्हें सारी बात नहीं समझाई। फिर हमने बाघ का पीछा करने की कोशिश की, लेकिन पक्की जमीन पर उसका कोई निशान नहीं दिखा; इसलिए हमने कोशिश छोड़ दी और बाकी चारागाहों की तलाश में वापस लौट गए। मैं उन आदमियों के साथ गया और हमें दोनों जानवर बिल्कुल सही-सलामत मिले। दोपहर ढल चुकी थी जब हम ऊतैमलाई लौटे, इस निराशाजनक जानकारी के साथ कि जिस चालाक बाघ का हम पीछा कर रहे थे, वह हमारे किसी भी शिकार को नहीं मारने वाला था। और मेरे अनुभव के आधार पर, उसके दोबारा शिकार पर लौटने की भी कोई संभावना नहीं थी। यह कहना कि मैं बेहद निराश और हताश था, बहुत कम होगा। मुंडाचिपल्लम का वह धूर्त आदमखोर बाघ उन बाघों में से एक लग रहा था जो लंबे समय तक यहीं टिके रहेंगे, अगर वह अपनी मर्जी से कहीं और जाकर अपना आतंक न फैलाए। और फिर, दो दिन बाद, सुबह लगभग 7 बजे, वह घटना घटी जिससे यह कहानी समाप्त होती है। जैसा कि मैंने बताया है, संयोग से यह घटना उन घटनाओं से काफी मिलती-जुलती थी जिनसे कहानी शुरू हुई थी।

सुरक्षा कारणों से दस लोगों का एक समूह फिर से पेन्नाग्राम के लिए मछलियों से भरी अपनी टोकरियाँ ज़मीन पर रखकर मुंडाचिपल्लम के पास वाले कुएँ पर पानी भरने और थोड़ी देर आराम करने के लिए रुका था। दल में महिलाएँ भी थीं, इसलिए एक आदमी शौच करने के लिए पास के पेड़ के पीछे चला गया। तभी एक तेज़ गर्जना हुई, काले धारियों वाला एक लंबा सुनहरा शरीर मानो कहीं से प्रकट हुआ और वह आदमी गायब हो गया। सौभाग्य से, बायरा, रंगा, सौरी और मैं अपने-अपने शिकार के लिए निकले थे और दस लोगों के दल से मुश्किल से एक मील पीछे थे। जल्द ही हमारी मुलाक़ात उन नौ लोगों से हुई जो एक व्यक्ति के लापता होने की दुखद खबर लेकर लौट रहे थे। हम जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे, दौड़े और कुएँ पर पहुँचे, जहाँ मैंने रंगा और सौरी से फुसफुसाकर कहा कि वे पास के पेड़ों पर चढ़ जाएँ और मेरी अगली ज़रूरत का इंतज़ार करें। बायरा और मैं दबे पांव आगे बढ़े और उस पेड़ के पीछे, जिसे उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति ने शौच के लिए चुना था, हमने उसके खून के निशान का पता लगाया जो बाघ के जबड़ों में रिसकर गायब हो गया था।

बायरा उसका पीछा कर रहा था, और राइफल कंधे पर रखे, हर झाड़ी को ध्यान से देखते हुए, हम अभी कुछ सौ गज ही आगे बढ़े थे कि हमें भोजन कर रहे बाघ के मुँह में हड्डी के टूटने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ हमारे आगे बाईं ओर से आ रही थी। मैंने बायरा को रोकने के लिए हाथ रखा और उसे वहीं रुकने का इशारा किया, जबकि मैं सावधानी से आगे बढ़ा, यह जानते हुए कि ऐसी परिस्थितियों में एक साथी एक अतिरिक्त जीवन बन जाता है जिसकी देखभाल करनी होती है।

जंगल एकदम शांत और स्थिर था, और कुतरने और चबाने की आवाज़ अब और भी स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बहुत सावधानी से और चुपचाप, झुकी हुई निगाहों से हर कदम को देखते हुए, इस डर से कि कहीं कोई पत्ता न हिल जाए, कोई टहनी न टूट जाए या कोई ढीला पत्थर न गिर जाए, मैं धीरे-धीरे पास बढ़ा। मुझे केवल पंद्रह गज आगे बढ़ने में काफी समय लग गया। वहाँ से मुझे लगा कि मैं हत्यारे को देख सकता हूँ, जो ज़मीन पर दुबका हुआ था। कुछ कदम और पास आते ही, वह अचानक उठा और मेरे सामने आ गया, उसके कंधे से कटा हुआ एक टपकता हुआ मानव हाथ उसके मुँह पर था। उसकी दुष्ट आँखें मुझे खाली आश्चर्य से घूर रही थीं, फिर एक गुर्राहट उस विशाल चेहरे पर फैलने लगी, जो उसके शरीर पर पड़े भयानक अवशेषों के कारण और भी

भयावह लग रहा था।

नरम नोक वाली विंचेस्टर बुलेट के पीछे 300 ग्रेन कॉर्डाइट ने मिसाइल को 35 टन प्रति वर्ग इंच से अधिक की ताकत से विशाल गर्दन के ठीक नीचे जा गिराया। इंसान का हाथ धड़ाम से घास में गिर गया। जानवर घुरघुराहट के साथ आगे की ओर लड़खड़ाया। पुरानी, भरोसेमंद राइफल के निचले लीवर को तेजी से चलाते हुए, दूसरी मिसाइल उस क्रूर हृदय में जा लगी। उसका दिल धड़कना बंद हो गया। मुंडाचिपल्लम का आदमखोर बाघ लगभग उसी जगह पर अपनी मौत की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ा, जहाँ से उसने कुछ महीने पहले अपने क्रूर जीवन की शुरुआत की थी। एक विशाल नर, वह बेदाग था।

निःसंदेह स्वभाव से वह एक क्रूर बाघ था, लेकिन दुर्भाग्यवश ही वह आदमखोर बन गया था। भाग्य का धागा अक्सर ऐसी ही छोटी-छोटी घटनाओं पर टिका होता है। मेरी भलाई को लेकर चिंतित मेरी पत्नी उसी दोपहर बैंगलोर से अपनी कार में आकर मुझे आश्चर्यचकित कर दिया और मुझसे पूछा कि क्या मुझे कभी याद भी आता है कि मेरा एक घर और परिवार है, और क्या अब समय नहीं आ गया है कि मैं वापस लौटने के बारे में सोचूं।

हम बायरा को पेन्नाग्राम होते हुए वापस मुथुर के पास स्थित उनके डोंगीनुमा घर तक ले गए, जहाँ हम ठीक समय पर उनके पाँचवें बच्चे के जन्म के शुभ अवसर पर उपस्थित हुए। जन्म इस प्रकार हुआ: चिनार नदी की रेत में एक उथला गड्ढा, झूले के आकार का और लगभग उसी आयाम का, खोदा गया था, और फिर उसे ताजे तोड़े गए मुलायम हरे पत्तों से भर दिया गया था। इसी झूले में प्रसव पीड़ा से व्याकुल माँ लेटी हुई थी। पति ने दाई की भूमिका निभाई। न कोई दवा, न कोई मरहम, न गर्म पानी, न रुई! केवल कोमल हरे पत्ते, और एक तेज चकमक पत्थर, जिससे नाभि नाल को काटा गया, जिसके खून बहते हुए ठूंठ को साधारण लकड़ी की आग की राख से बुझाया गया। जन्म के कुछ घंटों बाद माँ अपने बच्चे के साथ उठी और अन्नाइबिद्दाहल्ला के किनारे स्थित उस गड्ढे में गई जहाँ वे रहते थे। पति ने झूले जैसे गड्ढे को भर दिया; चिनार नदी की ढीली रेत में पत्तियां, नाल समेत सब कुछ बिखरा पड़ा है। जंगल के बायरा लोग इसी सरल और दृढ़ तरीके से जन्म लेते हैं। वे इसी तरह

जीते हैं और इसी तरह मरते हैं, प्रकृति और जंगल के सच्चे बच्चे।

वे अनंत काल तक अस्तित्व में रहें, सभ्यता के बंधनों से मुक्त और बेदाग, पहाड़ों, दलदलों और वन घाटियों में अपनी इच्छा अनुसार प्रसन्न और स्वतंत्र रूप से विचरण करते रहें, जब तक कि मृत्यु उन्हें अपने पास न बुला ले और वे सादगी से धरती माता में विलीन न हो जाएं, जहां से वे इतनी सादगी से उत्पन्न हुए हैं। उस दिन सुबह मैंने एक मोर का शिकार किया था, और हमने उसे जंगल के पारंपरिक तरीके से तैयार करके रात के खाने में खाया। सारे पंख, आंतें, सिर और गर्दन निकाल दिए जाते हैं। पक्षी के मांस में चाकू से चीरे लगाए जाते हैं, जिनमें स्वादानुसार नमक, मसाले, लौंग और करी पाउडर डाला जाता है। फिर पूरे पर नदी के किनारे से लाई गई ताज़ी, साफ मिट्टी की एक इंच से अधिक मोटी परत चढ़ा दी जाती है, जिससे वह अंत में गीली मिट्टी के गोले जैसा दिखता है। अंगारों की आग जलाई जाती है, उस पर गोला रखा जाता है, और चारों ओर और ऊपर से और भी अंगारों से घेर दिया जाता है। लकड़ी डालकर आग को लगातार जलता रखा जाता है, लेकिन लक्ष्य होता है कि अंगारे सुलगते रहें, न कि आग भड़क उठती रहे। कुछ समय बाद मिट्टी चटकने लगती है और अंत में टुकड़ों में गिरने लगती है। तब पक्षी को जलने से पहले निकाल लेने का समय होता है। मिट्टी में भूनने की कला में थोड़ा अभ्यास करने से, रात के खाने के लिए एक बेहतरीन भुना हुआ मोर या जंगली मुर्गा तैयार किया जा सकता है, जो कई गृहिणियों को शर्मिंदा कर देगा।

टैगार्थी के बाघ

शाम राव बापट और वह बाघ जिसे उन्होंने अपने ही बगीचे में गोली मारकर मार डाला था

यदि आप मैसूर राज्य के शिमोगा जिले की पश्चिमी सीमा की यात्रा करते हैं, तो

आपको बैंगलोर और राज्य के पूर्वी हिस्सों के आसपास के दृश्यों से बिल्कुल अलग दृश्य देखने को मिलेगा। यहाँ आप सदाबहार जंगलों के क्षेत्र में हैं, जो मूसलाधार मानसूनी बारिश से पोषित होते हैं। शिमोगा शहर के पश्चिम में औसतन 120 इंच से अधिक वार्षिक वर्षा होती है और पश्चिमी घाट पर स्थित मैसूर राज्य की अंतिम सीमा, अगुम्बे गाँव में यह वर्षा 250 इंच से भी अधिक हो जाती है। विशाल वृक्ष, जिनकी पत्तियाँ आसमान छूती हैं, और बड़े-बड़े वृक्ष फर्न, जंगलों और घाटियों से निकलने वाली असंख्य धाराओं के किनारे उगते हैं, जो सड़क के किनारे ताजे पानी की बारहमासी आपूर्ति प्रदान करते हैं।

यहां हर जगह घनी वनस्पति दिखाई देती है, जिनमें मध्य और पूर्वी दक्षिण भारत के जंगलों की कंटीली वनस्पतियां न के बराबर हैं। इन जंगलों में घूमना-फिरना मुश्किल है, क्योंकि यहां पगडंडियां नहीं हैं। घनी झाड़ियां हर खुली जगह को ढक लेती हैं और सूरज की किरण पाने के लिए ऊपर की ओर बढ़ती रहती हैं। ऊंचे पेड़ों के नीचे हर तरफ नमी और अंधेरा रहता है; आपको सिर्फ जंगली झींगुर की चहचाहट और मेंढक की टर्राहट ही सुनाई देगी। पत्तियों के नीचे चिपकी हुई जोंकें लचीली होकर फैल जाती हैं और आसपास से गुजरने वाले किसी भी जीव को जकड़ लेती हैं। वे आपके कपड़ों में घुस जाएंगी, आपके जूतों, मोजों या मोजों के बीच से अपना रास्ता बना लेंगी और आपको पता भी नहीं चलेगा कि वे आपको दर्द दे रही हैं। जब आप नीचे देखेंगे, तो आपको अपने शरीर के किसी हिस्से से खून रिसता हुआ दिखाई देगा। अगर आप उन्हें हटाने की कोशिश करेंगे, तो वे एक भयंकर घाव छोड़ जाएंगी जो आमतौर पर मवाद बनकर गहरा घाव बन जाता है। इन इलाकों में हमेशा अपने पास रखने वाले साधारण नमक की थोड़ी मात्रा या तंबाकू के रस की थोड़ी मात्रा लगाने से, वे अपने आप मुड़कर गिर जाएंगे। फिर घाव बिना किसी देखभाल के ठीक हो जाएगा।

यह हमद्र्याद या किंग कोबरा का घर है, जिसे 'नाया हन्ना' के नाम से जाना जाता है। यह कोबरा परिवार का एक विशालकाय सांप है जिसकी लंबाई पंद्रह फीट या उससे भी अधिक होती है। गहरे जैतून हरे रंग का, जिसके शरीर पर हल्के पीले-सफेद घेरे होते हैं, उसके काले, अंडाकार फन पर कोई स्पष्ट निशान नहीं होता। अपनी विशाल लंबाई के बावजूद, यह अविश्वसनीय गति से चलता है और अन्य सांपों का शिकार करता है। यह आक्रामक होता है और कहा जाता है कि देखते ही हमला कर देता है।

अपने बच्चों की रक्षा करने वाली मादा कोबरा विशेष रूप से गुस्सैल स्वभाव की मानी जाती है। मैं दो बार किंग कोबरा से उसके इलाके में मिला हूँ, एक बार जब मैं अगंबे के बाहर जंगल की धाराओं में रहने वाली सुंदर लाल और हरे रंग की चित्तीदार मछलियों के नमूने एकत्र कर रहा था; और दूसरी बार जब मैं ऑर्किड इकट्ठा कर रहा था। लेकिन दोनों ही बार उन्होंने आक्रामक व्यवहार नहीं किया। दोनों ही सांप मुझे देखकर रुक गए, अपना सिर जमीन से लगभग चार फीट ऊपर उठाया और अपने अंडाकार फन को थोड़ा फैलाकर अपनी चमकीली काली आँखों से मुझे ध्यान से और जिज्ञासा से देखते रहे। फिर वे बिना किसी नुकसान के अपने रास्ते चले गए।

ऊंचे वृक्षों की चोटियाँ सुंदर ऑर्किडों का घर हैं, जिनमें डेंड्रोबियम परिवार की छड़ी के आकार की शाखाएँ विशेष रूप से पाई जाती हैं। गर्मियों में उनके गुलाबी, पीले, सफेद या बैंगनी रंग के फूलों के गुच्छे ऊपरी छतों को रंग-बिरंगे फूलों से सजा देते हैं।

यह जिला शिरावती नदी से घिरा हुआ है, जिसका जल चार अलग-अलग धाराओं में भव्यतापूर्वक बहता है, और गेरसप्पा या जोग जलप्रपात में 950 फीट की सीधी ऊंचाई से गिरता है। यहां, चांदनी रात में, जल की भाप के बीच चांदनी में इंद्रधनुष का दुर्लभ नजारा देखा जा सकता है।

सागर नामक छोटे कस्बे से ग्यारह मील दक्षिण-पूर्व में स्थित टैगार्थी गाँव सदाबहार वनों की पूर्वी सीमा पर बसा है, जहाँ वनों की कटाई करके खेती की जाती है। भारी वर्षा और उपजाऊ मिट्टी के कारण इस क्षेत्र में कृषि कार्य अत्यंत लाभदायक है। खुले मैदानों में घास भी खूब उगती है और प्रचुर चराई के कारण आसपास के गाँवों और बस्तियों में मवेशियों के विशाल झुंड पाले जाते हैं।

बाइसन के अलावा, सदाबहार जंगलों में जंगली जानवरों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, क्योंकि वहां घनी झाड़ियाँ होती हैं और जोंक व कीड़े-मकोड़े पाए जाते हैं, जो उन्हें परेशान करते हैं। इसी कारण और शिकार की कमी के चलते, उन घने जंगलों में मांसाहारी जानवर कम ही दिखाई देते हैं। लेकिन जैसे-जैसे इलाका खुलता है और मवेशियों के विशाल झुंड दिखाई देने लगते हैं, मांसाहारी जानवर बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर उन पर भोजन करते हैं और मोटे हो जाते हैं। टैगार्थी भी ऐसा ही एक इलाका था, और मेरी कई यात्राओं में मैंने पाया कि वहां एक ही दिन में चार से कम बाघ

स्थायी रूप से नहीं रहते थे। फरवरी 1939 में, मेरे अनुभव का चरम आंकड़ा तब आया जब टैगार्थी के आसपास विभिन्न स्थानों पर एक ही दिन में आठ मवेशियों को मार डाला गया। इससे संकेत मिलता है कि आठ अलग-अलग बाघ सक्रिय थे, क्योंकि शिकार की सूचना दूर-दूर के स्थानों से मिली थी।

इस इलाके में बाघों की अधिकता के कारण, पैंथर बहुत कम ही दिखाई देते हैं। एक-दो पैंथर तो गांवों के आस-पास ही अपना जीवन गुजारते हैं और कुत्तों, बकरियों और कभी-कभी घरेलू मुर्गियों को खाकर अपना पेट भरते हैं। बाघ अपने छोटे चचेरे भाई को बर्दाश्त नहीं करता और अगर पैंथर उसके करीब आ जाए तो बिना किसी संकोच के उसे मार डालता है और कभी-कभी खा भी जाता है। टैगार्थी के आसपास चित्तीदार हिरणों को छोड़कर, शिकार अपेक्षाकृत कम ही मिलता है, और उस क्षेत्र के बाघ मुख्य रूप से मवेशी चुराने वाले होते हैं। उनमें से अधिकांश भारी-भरकम और मोटे होते हैं, और असली शिकारी की तरह चुस्त-दुरुस्त नहीं दिखते।

आइए, मैं आपको टैगार्थी के शाम राव बापट की कहानी सुनाता हूँ, और उस बाघ की कहानी जिसे उन्होंने अपने घर के पास ही अपने बगीचे में मार गिराया था। शाम राव उस समय लगभग बाईस वर्ष के थे; लेकिन एकमात्र पुरुष वारिस होने के नाते, उन्होंने अपने घर के चारों ओर फैली जागीर का कुशलतापूर्वक और एक सच्चे किसान के प्रेम से प्रबंधन किया। निचले, कीचड़ भरे इलाकों में धान की खेती होती थी, जबकि ऊपरी इलाकों में रागी की सूखी फसल उगाई जाती थी। उनके पास सुपारी और नारियल के पेड़ों का एक बाग भी था, जिनकी शाखाओं पर पान की बेल चढ़ी हुई थी। इसके अलावा, शाम राव के पास मवेशी और अन्य पशुधन थे, और वास्तव में वे एक समृद्ध जमींदार थे। एक दिन एक मोटे बाघ ने उनकी समृद्धि में हिस्सा लेने का फैसला किया और शाम राव के झुंड को एक-एक करके मारना शुरू कर दिया। शाम राव के पास केवल एक साधारण बोर वाली बंदूक थी, और उन्होंने उसमें गोलियां भरकर बाघ के लौटने का इंतजार करते हुए शिकार के पास बैठ गए। लेकिन किसी न किसी कारणवश, ऐसा कभी नहीं हुआ, जब तक कि यह अनुमान नहीं लगाया जाने लगा कि यह विशेष बाघ एक अनुभवी शिकारी था, जिस पर शायद पहले भी गोली चलाई जा चुकी थी और इसलिए वह अपने शिकार पर दूसरी बार वापस नहीं लौटेगा।

फिर बाघ और भी निडर हो गया। एक अंधेरी रात को वह शाम राव के बगीचे की बाड़ फांदकर अंदर घुस गया और मवेशी बाड़े के प्रवेश द्वार पर कसकर लगी बांस की मजबूत जाली को हटाने की कोशिश करने लगा। शाम राव अपने मवेशियों के बेचैन होकर गुर्राने और पैर पटकने की आवाज सुनकर जाग गए थे। तभी उन्हें खरोंचने की आवाज सुनाई दी और बाहर जाकर उन्होंने देखा कि बाघ जबरदस्ती अंदर घुसने की कोशिश करने के बाद कूदकर भाग रहा था।

अगली रात शाम राव ने अपने मवेशी बाड़े की छत पर छोटी-छोटी कटी हुई टहनियाँ रखीं और बाड़े के प्रवेश द्वार पर ज़मीन से छह फीट ऊपर पेट के बल लेट गए। यह प्रवेश द्वार बंद था। रात दस बजे बाघ प्रकट हुआ और दरवाज़ा खरोंचने लगा। शाम राव ने अपनी पिस्तौल की दोनों नालें बिल्कुल नज़दीक से चलाईं और बाघ लगभग खामोशी से ज़मीन पर गिर पड़ा। वह मवेशियों को मारने वाले भारी-भरकम बाघों का एक उत्कृष्ट उदाहरण था।

दृश्य बदल गया। सुबह के 11:30 बज रहे थे और टैगार्थी से लगभग ढाई मील दूर स्थित छोटे से जंगल बंगले पर सूरज की तेज रोशनी पड़ रही थी। दोपहर का खाना लगभग तैयार था और मेरी पत्नी कुछ आखिरी काम निपटा रही थी। तभी बंगले की बाड़ से सटे जंगल से एक काकर ने कर्कश आवाज निकाली। बार-बार आवाज आ रही थी, छोटे हिरण की उत्तेजित आवाज उसके तीव्र खतरे को दर्शा रही थी। रबर के जूते पहनकर और राइफल लेकर, मैं जंगल की आग से बचाव वाली रेखा पार करके घने जंगल में घुस गया। काकर अभी भी आवाज निकाल रहा था और मैं कम से कम शोर करते हुए जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़ा। मैं एक खुले मैदान में पहुँचा, जिसके बीच में छोटा काकर मुझसे मुंह फेरकर खड़ा था और रुक-रुक कर भौंक रहा था। वापस जंगल में घुसकर, मैं चुपके से उस खुले मैदान के चारों ओर घूमा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मैं उस डरे हुए हिरण की सीधी नजर में न आ जाऊं। यहां कुछ सागौन के पेड़ लगाए गए थे और उनके विशाल पत्ते, जो इस मौसम में सूखे और कुरकुरे हो चुके थे, वहीं गिरे पड़े थे, मानो जंगल की ज़मीन पर कालीन बिछा रहे हों। मैं जानता था कि उन्हें पार करने की कोशिश करना खुद को प्रकट कर देना होगा। इसलिए मैं सागौन के किनारे उग रहे एक मजबूत अंजीर के पेड़ के तने के पीछे छिप गया और उनकी छाया में देखने की कोशिश करने लगा। मैंने जितना हो सके घूरा, लेकिन कुछ

देर तक मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। फिर थोड़ी दूरी पर कुछ हलचल हुई, और ऐसा करते ही मेरी मौजूदगी का पता चल गया। मैंने अपनी नज़रें उस जगह पर टिका दीं और वहां मुझे एक बाघ दिखाई दिया, जो बेफिक्र होकर अपनी पीठ के बल लेटा हुआ था, उसके चारों पैर हवा में थे और वह गहरी नींद में सो रहा था। समय-समय पर उसकी पूंछ का सिरा फड़कता था, और यही हरकत मेरी नज़र में आई और उसकी मौजूदगी का पता चल गया।

सोते हुए जानवर को गोली मारना खेल भावना के विरुद्ध होता। इसके अलावा, वह अपने जायज़ भोजन को मारने के अलावा कोई नुकसान नहीं कर रहा था, इसलिए मैं उसे कोई चोट पहुँचाना नहीं चाहता था। मैंने अपनी राइफल और खुद को पेड़ से टिका दिया, और लगभग बीस मिनट तक उस बाघ को पीठ के बल गहरी नींद में सोते हुए देखता रहा। तभी जंगल में बने लॉज से मेरी पत्नी की आवाज़ आई, जो मुझे दोपहर के भोजन के लिए बुला रही थी। बाघ ने आवाज़ सुनी और उठ बैठा, अपना सिर आवाज़ की ओर घुमाया, उसकी आँखें अभी भी नींद से आधी बंद थीं।

मैं चुपचाप छिपने की जगह से बाहर निकला, राइफल हर स्थिति के लिए तैयार थी। बाघ ने मेरी आवाज सुनी, उछल पड़ा और घूमकर उस इंसान को हैरानी से देखने लगा जो उसके इतने करीब बिना किसी को पता चले आ गया था। फिर एक धीमी सी गुर्राहट के साथ वह आराम से चलने लगा। मैंने उसे शांति से जाने दिया और जल्द ही वह मेरी नजरों से ओझल हो गया। एक और मौके पर, मेरी पत्नी और मैंने एक बैलगाड़ी किराए पर ली और रात में टॉर्च जलाकर यह देखने निकले कि हमें क्या दिखाई देता है। हम एक मील चल चुके थे और एक गहरी ढलान के आधे रास्ते में थे, जहाँ बैलगाड़ी का रास्ता एक नाले को पार करता था, तभी मेरी पत्नी को जंगल में दाईं ओर टॉर्च की रोशनी में चमकती हुई दो आँखें दिखाई दीं। हमने बैलगाड़ी रोकी और नीचे उतरे, वह टॉर्च लेकर आगे-आगे चल रही थी और मैं राइफल लेकर उसके पीछे। आँखें गायब हो चुकी थीं, इसलिए हम एक संकरे रास्ते पर चल पड़े जो उस जगह की ओर तिरछे कोण पर जाता था जहाँ आँखें थीं। कुछ ही देर में हमें वे फिर से दिखाई दिए, बड़े-बड़े लाल-सफेद गोले, रात के अंधेरे में स्पष्ट रूप से चमक रहे थे। सौभाग्य से वहाँ झाड़ियाँ कम थीं और हम सीधे आँखों की ओर बढ़ सके। कुछ कदम आगे बढ़ने पर एक बाघ बाहर निकला, जिसने हमारी ओर देखा और फिर उसी जगह

की ओर देखा जहाँ से वह अभी निकला था। इस विचित्र व्यवहार का रहस्य जल्द ही सुलझ गया, क्योंकि रिट्रीवर के आकार के दो शावक झाड़ियों से बाहर निकले और उछलते-कूदते अपनी माँ के पास चले गए।

कुछ क्षणों तक वह हमें टकटकी लगाकर देखती रही और फिर धीमी सी म्याऊं की आवाज निकालते हुए जंगल में चली गई, मानो शावकों को अपने पीछे आने का संकेत दे रही हो। शावकों ने भी वैसा ही किया और तीनों जंगल में खो गए, सिवाय झाड़ियों की सरसराहट के जो कभी-कभार झाड़ियों के बीच से उनके आगे बढ़ने का संकेत दे रही थी।

मेरी पत्नी ने टॉर्च की रोशनी उस दिशा में डाली जहाँ से हमें उनके चलने की आवाज़ आ रही थी, इस डर से कि कहीं बाघिन हमारी मौजूदगी से नाराज़ होकर अपना इरादा न बदल ले और हम पर हमला न कर दे। तभी हमें अपने सामने एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी। रोशनी उस नई आवाज़ की ओर घुमाते ही हम चौंक गए जब हमने एक और बाघ को देखा, इस बार एक बड़ा नर बाघ, लगभग उसी जगह पर जहाँ कुछ सेकंड पहले बाघिन खड़ी थी। ज़ाहिर है, हम एक परिवार के पास आ गए थे जो नदी में प्यास बुझाकर लौट रहा था। मैं यह कहना चाहूँगा कि यह बहुत असामान्य बात है कि एक नर बाघ, इतने बड़े शावकों वाली बाघिन के साथ हो। आम तौर पर, बाघिन अपने बच्चों को तब तक अपने साथी के पास नहीं आने देती जब तक वे अच्छे से बड़े न हो जाएँ।

हालात बेहद तनावपूर्ण हो गए थे, क्योंकि किसी न किसी वयस्क जानवर के हम पर हमला करने की पूरी संभावना थी। हालांकि, मेरी पत्नी ने सराहनीय धैर्य बनाए रखा और बाघ धीमी आवाज में गुर्राते हुए अपने परिवार के पीछे झाड़ियों में चला गया।

उसी समय कहानी का एक मनोरंजक अगला भाग घटित हुआ, जिसका अंत अप्रिय हो सकता था, लेकिन सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ। अँधेरे में अकेला रह गया बेचारा बैलगाड़ी चालक, बाघिन की म्याऊँ और उसके साथी की दहाड़ सुनकर चौंक गया। शायद उसके बैलों ने उनकी गंध पहचान ली या उन्हें देख भी लिया, क्योंकि अचानक वे बैलगाड़ी लेकर भागे और नदी के किनारे की ओर दौड़ पड़े, जहाँ पहिए नरम रेत और पानी में फंस गए। बैलगाड़ी चालक की चीखें सुनकर और यह सोचकर कि उस

पर या उसके बैलों पर हमला हुआ है, हम मौके पर दौड़े और पाया कि सब ठीक था, सिवाय इसके कि वह बुरी तरह डर गया था। हम दोनों इस बात से खुश थे कि परिस्थितियों ने हमें उस खुशहाल परिवार के किसी भी सदस्य को नुकसान पहुँचाने के लिए मजबूर नहीं किया।

कुछ समय के लिए मेरे मित्र, मैसूर चिकित्सा सेवा के डॉ. स्टेनली, अपने विभाग द्वारा टैगार्थी में तैनात थे, मुख्य रूप से मलेरिया के प्रकोप को रोकने के प्रयास में, जो वहां व्यापक रूप से फैला हुआ था और लगभग हर निवासी को प्रभावित कर रहा था। डॉक्टर एक उत्साही व्यक्ति थे जिन्हें शिकार का बहुत शौक था, और उन्होंने अपनी सेवा के दौरान कई बाघों का शिकार किया था।

एक रात देर से उन्हें बेलंदुर नामक एक छोटे से गाँव से प्रसूति संबंधी सूचना मिली, जो लगभग छह मील दूर था। अपने पेशे के अनुरूप, वे बैलगाड़ी से निकल पड़े, अपने साथ दवाइयों, इंजेक्शनों और पट्टियों से भरा थैला लिए हुए; उनकी 'गेको' स्मूथ बोर राइफल और एक पाँच सेल वाली टॉर्च ने उनके कर्तव्य में शिकार का स्पर्श जोड़ दिया।

वे एक घाटी से गुजर रहे थे तभी एक बाघ अचानक रास्ते के पार कूद पड़ा और किनारे पर अपने पिछले पैरों पर बैठकर गुजरती हुई गाड़ी को देखने लगा। स्टैनली ने जानवर पर गोली चलाई, जिसने जोर से दहाड़ मारी और गायब हो गया।

वह शांत भाव से अपने गंतव्य की ओर बढ़ा, माँ को उसके बच्चे से अलग किया और बाकी रात रोगी के साथ बिताई। अगली सुबह वह अपने एक परिचित छोटे लड़के को साथ लेकर लौटा ताकि वह और बैलगाड़ी वाला उस बाघ का पीछा कर सकें जिसे उसने पिछली रात घायल किया था। घटनास्थल पर पहुँचकर उन्हें जल्द ही खून के निशान मिले, जिनका पीछा करते हुए वे आगे बढ़े। बैलगाड़ी वाला यह कहकर अपनी बैलगाड़ी की ओर लौट गया कि वह अपने बैलों को अकेला नहीं छोड़ सकता।

स्टैनली और लड़का कुछ दूर जाकर एक खोखले स्थान में प्रवेश कर गए, तभी अचानक उन्हें अपने सामने एक बाघ लेटा हुआ दिखाई दिया। उन्हें लगा कि बाघ मर गया है, लेकिन निश्चित होने के लिए स्टैनली ने उसकी पीठ पर एक एल.जी. (लॉन्ग-

ग्रेड) गोली चलाई। इससे बाघ उछल पड़ा, पलटकर उन पर हमला कर दिया। जैसे ही वह कूदा, स्टैनली ने अपनी बची हुई गोली, इस बार एक और गोली, बाघ के मुंह में दाग दी। तभी बाघ उस पर टूट पड़ा, उसे गिरा दिया और उसकी खोपड़ी का पिछला हिस्सा क्षतिग्रस्त कर दिया। उसी क्षण लड़का चीखता हुआ भाग गया, जिससे निस्संदेह स्टैनली की जान बच गई, क्योंकि बाघ ने उसे छोड़कर लड़के का पीछा किया और उस पर झपटा, उसकी बगल में काट लिया।

सिर में लगी चोट से स्तब्ध स्टेनली किसी तरह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपनी बंदूक को फिर से लोड करने की कोशिश करने लगा, तभी अचानक बाघ लड़के को छोड़कर जंगल में कूद गया।

उस युवक की पीठ और बगल में गंभीर चोटें आई थीं, और बाघ के दो बड़े दांतों से बने गहरे घावों से खून बह रहा था। इसके अलावा, उसकी तीन पसलियां भी टूट गई थीं। स्टेनली ने अपनी फटी हुई कमीज को पट्टी बांधने के लिए इस्तेमाल किया और उसे बैलगाड़ी तक ले गया। फिर सत्रह मील की लंबी यात्रा सागर कस्बे के लिए शुरू हुई, और डॉक्टर की हालत लगातार खराब होती जा रही थी। वहां से वे शिमोगा के लिए ट्रेन में सवार हुए, जो लगभग पैंतीस मील दूर था, जहां एक जिला अस्पताल था। इतना कहना ही काफी है कि दोनों अपने इस भयानक अनुभव से उबर गए, लेकिन स्टेनली को अपने वरिष्ठ डॉक्टर से कड़ी फटकार मिली, जिन्होंने उसे याद दिलाया कि उसे टैगार्थी में डॉक्टर के रूप में तैनात किया गया था, न कि बाघों का शिकार करने के लिए। उनकी जान बच जाना निस्संदेह इस तथ्य के कारण था कि बाघ बुरी तरह घायल था। स्टेनली की आखिरी गोली ने संभवतः उसके निचले जबड़े को चकनाचूर कर दिया था, क्योंकि यह ध्यान देने योग्य था कि उसके बाद दोनों हमलों में उसने केवल अपने ऊपरी नुकीले दांतों का इस्तेमाल किया था। यदि निचला जबड़ा ठीक होता, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्टेनली और वह लड़का दोनों ही अगली सुबह का सूरज देखने के लिए जीवित नहीं रहते।

हुआ यूं कि उसके बाद एक सप्ताह तक कई ग्रामीणों ने घायल जानवर की दिन-रात दर्द भरी दहाड़ें सुनीं। फिर सन्नाटा छा गया, और पूरी संभावना है कि वह रेंगकर जंगल की गहराई में जाकर मर गया होगा, क्योंकि उसका शव कभी नहीं मिला।

स्टैनली ने मुझे टैगार्थी में हुए दो अन्य अनुभवों के बारे में भी बताया। एक बार, सूर्यास्त के समय, जब वह शिकार के ऊपर मचान पर बैठा था, तभी एक हमाद्र्याद (सांप) उस पेड़ पर चढ़ गया जिस पर वह बैठा था। उसने उसे डराकर भगा दिया; लेकिन जैसे ही अंधेरा छाने लगा, उसे लगा कि वह बड़ा सांप वापस आ सकता है और वह बहुत बेचैन महसूस कर रहा था, इसलिए वह गाँव लौट आया। एक अन्य अवसर पर, जब वह शिकार के ऊपर पूरी तरह से छिपा हुआ नहीं था, तभी बाघ ने उसे देख लिया और पूरी रात, सुबह के शुरुआती घंटों तक, पेड़ के चारों ओर चक्कर लगाता रहा और लगातार दहाड़ता रहा। हल्की बारिश शुरू होने से यह परेशानी का कारण बन गया था, लेकिन भले डॉक्टर ने बड़ी समझदारी से काम लेते हुए, इतने आक्रामक बाघ से निपटने के लिए अंधेरे में अकेले वापस जाने का जोखिम नहीं उठाया।

टैगार्थी के आसपास के उन कुछ इलाकों में घूमते हुए, जहाँ जंगल में कुछ हद तक प्रवेश किया जा सकता है, मैंने खुद एक अधेड़ बाघिन को एक खुले मैदान में मृत पाया, जिसके चेहरे और छाती में तेईस साही के कांटे धंसे हुए थे। उनमें से एक कांटा उसकी दाहिनी आँख में पूरी तरह घुस गया था और उसे मंद कर दिया था। बाघिन बेहद कमजोर हालत में थी। कुछ ही फीट की दूरी पर एक पैंथर का आधा खाया हुआ शव पड़ा था। इस त्रासदी को समझना मुश्किल नहीं था। जाहिर है, बाघिन ने एक साही को खाने की कोशिश की थी, जिसने पीछे की ओर हमला करते हुए उसके चेहरे पर वार किया, जैसा कि ये जानवर करते हैं, जिससे उसके कांटे उसके सिर और छाती में धंस गए और उसकी एक आँख मंद हो गई। अंधी, भूखी और पिछली मुठभेड़ के कांटों से लदी बाघिन भोजन की तलाश में बेताब भटक रही थी। फिर उसका सामना पैंथर से हुआ, जिस पर उसने हमला किया, उससे लड़ाई की, उसे मार डाला और खाना शुरू कर दिया, तभी किसी अज्ञात कारण से उसकी मृत्यु हो गई, संभवतः पैंथर द्वारा पेट या अन्य चोटों के कारण, जो मुझे उसके सड़े हुए शव से स्पष्ट रूप से पता नहीं चल पाई।

बेलंदूर गाँव में बुद्धि नाम का एक रहस्यमय व्यक्ति रहता था, जिसे स्थानीय लोग जादू-टोने और काला जादू में माहिर मानते थे। कहा जाता था कि वह लोगों पर जादू करके उनकी मृत्यु करवा देता था। वह मेरा बहुत अच्छा दोस्त था और एक रात देर से हुई हमारी कई अंतरंग बातचीत के बाद उसने मुझे चार इंच व्यास का एक घेरा भेंट

किया, जो रहस्यमय पौधों से बना था, जो उसके अनुसार जंगल के भीतर गहराई में उगते हैं। उसने मुझसे कहा कि मैं इसे हमेशा अपने साथ शिकार यात्राओं पर रखूँ और अगर कभी मैं किसी ऐसे इलाके में जाऊँ जहाँ शिकार न मिले, तो सूर्यास्त होने तक प्रतीक्षा करूँ और फिर उस घेरे को अपनी बंदूक की नली पर तीन बार घुमाऊँ। उसने गारंटी दी कि चौबीस घंटे के भीतर मैं उस हथियार से किसी न किसी जानवर को मार गिराऊँगा। वह घेरा आज भी मेरे पास है और मुझे यह स्वीकार करते हुए शर्म आती है कि मैंने इसे कई बार तब इस्तेमाल किया है जब शिकार कम मिला है, इसके देने वाले के निर्देशों के अनुसार। इसे संयोग कहो या भाग्य, जैसा चाहो, लेकिन इसने हमेशा परिणाम दिए हैं। अफसोस, बूढ़े बुद्धिया अब इस दुनिया में नहीं रहे, मलेरिया की भयानक बीमारी के शिकार हो गए, जिससे उनकी जादुई शक्तियां भी उनकी रक्षा नहीं कर सकीं।

अब मैं आपको गौजा के बाघ के बारे में बताता हूँ। गौजा एक छोटा सा गाँव है, जो टैगार्थी से छह मील से अधिक दूर है और आमलीगोला की वन चौकी के आधे रास्ते में पड़ता है। यह करादिबेट्टा के विशाल बाघ अभ्यारण्य की सीमा पर स्थित है, जिसे मैसूर के महाराजा ने अपने शिकार के लिए बड़ी सावधानी से संरक्षित किया है। बाघ इतने चतुर नहीं होते कि वे यह जान सकें कि उन्हें कुछ सीमाओं के भीतर ही रहना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि करादिबेट्टा अभ्यारण्य में मवेशियों को प्रवेश की अनुमति नहीं है और बाघ मवेशियों को खाना बहुत पसंद करते हैं। इस पवित्र परिसर के ठीक बाहर सैकड़ों मवेशी हैं, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि अभ्यारण्य के अंदर की तुलना में बाहर अधिक बाघ हों।

लगभग सन् 1938 में एक बेहद साहसी बाघ अभयारण्य से बाहर निकल गया और अमलिगोला के आसपास मवेशियों को मारने लगा। बाद में वह वापस अभयारण्य लौट आया, जहाँ वह सुरक्षित था और उसे कोई परेशान नहीं कर रहा था। इस तरह वह खूब मोटा हो गया और सुंदर गायों को खाने वाले बाघ के रूप में उसकी प्रसिद्धि पूरे इलाके में फैल गई।

फिर, जैसा कि मनुष्यों के साथ होता है, निरंतर सफलता ने अधिक दुस्साहस, परिणामों की अवहेलना और अंततः उस घोर लापरवाही और अति आत्मविश्वास को

जन्म दिया जो बाघों और मनुष्यों दोनों के लिए विनाशकारी साबित होता है। हमारा बाघ अभी तक इस अंतिम चरण तक नहीं पहुँचा था, हालाँकि वह उस ओर अग्रसर था, क्योंकि वह करादिबेट्टा के सुरक्षित किलों से दूर भटकता चला गया और दिन के समय वहाँ लौटने से इनकार कर दिया, जैसा कि वह अब तक करता आया था। इस तरह वह गौजा पहुँचा, जहाँ उसने गाँव से लगभग डेढ़ मील दूर स्थित एक गहरे नाले के किनारे अपना अस्थायी ठिकाना बनाया। इस आश्रय से वह मवेशियों के झुंडों पर हमला करता, उन्हें सुबह-शाम परेशान करता और हर सप्ताह कम से कम दो मोटे मवेशियों को मारना नहीं भूलता था।

मुझे इस शिकारी के बारे में चिट्ठियाँ लिखी गई थीं, लेकिन मैंने उसकी गतिविधियों पर कभी ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि आख़िरकार बाघों को जीने के लिए खाना तो चाहिए ही और यह बूढ़ा बाघ इंसानों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहा था। कुछ कम मवेशियों से उन विशाल झुंडों को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था।

समय बीतने के साथ-साथ उसकी हिम्मत और भी बढ़ती गई, और आखिरी रिपोर्टों से पता चला कि वह अपने शिकार को छोड़ने को तैयार नहीं था। जब चरवाहे उसे भगाने की कोशिश करते, तो वह जोर-जोर से दहाड़ता और उन पर झपट्टा मारता। यह सच था कि अब तक उसने किसी को चोट नहीं पहुंचाई थी, लेकिन शुरुआती संकेतों से मुझे पता चल गया था कि ऐसा किसी भी दिन हो सकता है। देर-सवेर एक और आदमखोर प्रकट होगा।

एक सुबह 9:30 बजे, मैं बैंगलोर से आने वाली मालगाड़ी से अदेरी के रेलवे स्टेशन पर उतरा। यहाँ से साढ़े तीन मील पैदल चलकर मैं टैगार्थी पहुँचा। वहाँ पुराने मित्रों ने मेरा स्वागत किया और मुझे बड़े सत्कार के साथ कॉफ़ी पिलाई गई, जबकि मेरे लिए गरमागरम भोजन तैयार किया जा रहा था। मैंने जितना हो सके उतनी खबरें इकट्ठा करने में समय बिताया, लेकिन इससे मुझे सामान्य जानकारी के अलावा कुछ खास पता नहीं चला कि हर दिशा में बाघ दिखाई दे रहे हैं, खासकर गौजा के साहसी बूढ़े बाघ ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। भोजन के बाद मैं गाड़ी से गौजा के लिए लगभग छह मील की दूरी तय करने के लिए निकला, लेकिन खराब रास्ते के कारण हम शाम 6 बजे तक वहाँ नहीं पहुँच पाए। निवासियों से बातचीत करते हुए, मैंने

अपना तम्बू लगभग तीन फर्लांग दूर, मुख्य धारा में मिलने वाले एक छोटे नाले के किनारे लगाया। बाघ वहाँ से लगभग एक मील आगे रहता था।

मुझे बताया गया था कि बाघ ने दो दिन पहले शिकार किया था। उसके बाद से कुछ नहीं हुआ था, लेकिन अगले अड़तालीस घंटों के भीतर अगला शिकार निश्चित था। अगले दिन दोपहर 1 बजे खबर आई कि बाघ ने एक और शिकार कर लिया है। मौके पर पहुँचकर मैंने देखा कि बाघ ने खुले मैदान के बीचोंबीच, सबसे नज़दीकी आश्रय से लगभग 300 गज दूर, एक गाय पर हमला किया, उसे मार डाला और अपने छिपने की जगह पर ले गया, जो वही नाला निकला जिसमें मेरा तंबू लगा था। नाले की नरम रेत में बाघ के रेंगने के निशान थे, जहाँ से वह किनारे से कूदकर गाय की ओर भागा था। गाय भागने की कोशिश में थोड़ी दूर दौड़ी, लेकिन बाघ ने उसे पकड़ लिया और मार डाला। फिर बाघ ने गाय को अपनी पीठ पर उठाया और नाले में लौट गया, जैसा कि किसी भी घसीटने के निशान की अनुपस्थिति से स्पष्ट था, हालाँकि वजन के कारण बाघ के पंजे मजबूत हो गए थे और जुते हुए खेत की खुरदरी मिट्टी में गहरे धंस गए थे। मैंने जानवर या उसके शिकार को देखने की उम्मीद में सावधानीपूर्वक पदचिह्नों का पीछा किया। आखिरकार मुझे वह मिल भी गया, लेकिन उसने मेरी उम्मीद के मुताबिक खुद को प्रकट नहीं किया। जंगल के जीवों को ऐन समय पर चेतावनी देने वाली उस अवर्णनीय छठी इंद्री ने स्पष्ट रूप से इस बाघ को यह एहसास दिलाया कि यहाँ एक इंसान है जिसे उसे खुद को नहीं दिखाना चाहिए। जब वह अभी भी कुछ गज की दूरी पर झाड़ियों में छिपा हुआ था और मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, तभी उसे मेरी उपस्थिति का एहसास हुआ, उसने धीमी आवाज में गुर्राया और खिसक गया।

पास ही एक उपयुक्त पेड़ था और मैंने अपनी चारपाई मचान लगा ली। मैं शाम चार बजे तक वहाँ पहुँच गया था। बाघ आठ बजे आया, लेकिन सीधे मेरी मचान के नीचे और उस पेड़ के पास खड़ा हो गया जिस पर मैं बैठा था। मुझे उसके कदमों की हल्की आहट से उसके आने का आभास हो गया। सूखे पत्तों की सरसराहट से उसके आने का पता नहीं चला, लेकिन खामोश रात की शांति में उसके कोमल, भारी कदमों की आहट साफ सुनाई दे रही थी। वह खुद को चाटने लगा, उसकी खुरदरी जीभ उसके चमकदार फर पर फिर रही थी, जिससे हल्की सी खरखराहट की आवाज आ रही थी। फिर वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और पेड़ के तने पर अपने अगले पंजों के

पंजों को साफ और तेज करने लगा। ऐसा करते हुए, उसने ऊपर मचान देखी। एक धीमी सी गुर्राहट के साथ वह चला गया, और उस रात फिर कभी नहीं लौटा।

अगले दिन कुछ नहीं हुआ, इसलिए दोपहर में मैंने एक बछिया को मुख्य नाले के तल में बाँध दिया, जहाँ माना जाता था कि वह रहता है, और नाले के ऊपर 60 डिग्री के कोण पर झुके हुए एक पेड़ पर बने मचान पर बैठ गया। मैं दोपहर 3 बजे वहाँ पहुँच गया। शाम 5:30 बजे मुझे घसीटने की आवाज़ सुनाई दी और वहाँ बाघ एक और गाय को खींचकर नाले के किनारे ला रहा था, जिसे उसने झुंड से चुरा लिया था। वह लगभग 80 गज दूर था। उसकी गर्दन पर निशाना साधकर मैंने गोली चलाई, लेकिन जैसे ही मैंने गोली चलाई, बाघ आगे बढ़ गया और गोली उसे जानलेवा चोट के लिए ज़रूरी दूरी से काफी पीछे लगी। गोली लगने पर उसने खाँसी भरी गुर्राहट की, नाले की तलहटी में जा गिरा और गायब हो गया। मैं पेड़ से नीचे उतरा, अपना चारा डाला और विपरीत दिशा में गौजा लौट गया, मुझे पूरा भरोसा था कि मैं अगली सुबह बिना किसी परेशानी के उसे ढूँढ़कर मार डालूँगा। लेकिन मैं बहुत गलत था, जैसा कि आगे होने वाली घटनाओं से पता चला।

भोर होते ही मैं गाँव के दो भरोसेमंद स्थानीय लोगों के साथ घटनास्थल पर वापस पहुँच गया। हमने नाले के तल पर बाघ के खून के निशान देखे, जो नाले के तल पर काफी दूर तक फैले हुए थे और फिर दूसरी तरफ चढ़ गए थे। हमने पूरी सावधानी से उनका पीछा किया, लेकिन जल्द ही पता चला कि जानवर आगे बढ़ता रहा, क्योंकि इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वह अपने घाव से आराम करने के लिए बैठा था। लगभग दो मील चलने के बाद वह पहली बार रुका, गोली का असर महसूस करते हुए। फिर वह उठा और आगे बढ़ गया, और मैंने अनुमान लगाया कि वह अमलीगोला और उसके आगे बाघ अभ्यारण्य की ओर जा रहा था। वहाँ पहुँचते ही मुझे पता चल गया कि वह रास्ता भटक गया है, क्योंकि अभ्यारण्य में हथियार ले जाना, यहाँ तक कि घायल बाघ का पीछा करते समय भी, सख्त मना था। वह हमसे पूरी रात आगे निकल चुका था, और अपने घाव के बावजूद ऐसा लग रहा था कि वह आखिरकार अभ्यारण्य की शरण में पहुँच जाएगा।

आगे बढ़ते हुए, हमें दो और स्थान मिले जहाँ उसने विश्राम किया था। इनमें से पहले

स्थान पर काफी खून था, और जहाँ वह लेटा था वहाँ घास दबी हुई थी। दूसरे स्थान पर खून बहुत कम था, और उसके बाद निशान का पीछा करना कठिन हो गया। स्पष्ट रूप से खून का बहाव रुक रहा था; शायद बाहरी त्वचा के नीचे वसा की परत गोली के छेद में समा गई थी और अत्यधिक रक्तस्राव को रोक दिया था। हम जल्द ही अमलिगोला के परिसर में पहुँच गए और मुझे पता था कि बाघ को अब अभयारण्य की पश्चिमी सीमा को चिह्नित करने वाली वन-आग रेखा तक पहुँचने से पहले केवल एक मील की दूरी तय करनी थी। यहाँ हमारा भाग्य हमारे साथ था, क्योंकि हमें एक धारा मिली, जिसमें उस समय पानी के कुंड थे। नरम रेत पर बाघ के पैरों के निशान से पता चलता था कि उसने अब अभयारण्य की ओर जाने का इरादा बदल दिया था और पानी की तलाश में धारा के विपरीत दिशा में चला गया था। हमने उसका पीछा किया और पहले कुंड पर पहुँचे, जहाँ उसने पानी पिया था और उसके बाद काफी देर तक लेटा रहा था, क्योंकि इस स्थान से निकलने वाले निशान अपेक्षाकृत ताजे थे और एक घंटे के भीतर ही बने थे। इस तथ्य ने हमारी धूमिल होती आशाओं को फिर से जगा दिया और हम एक फर्लांग आगे बढ़े, जहाँ हमें एक दूसरा तालाब मिला, जहाँ बाघ भी रुका हुआ था। पगडंडियों के गड्ढों से अभी भी पानी रिस रहा था, और अब यह स्पष्ट था कि वह बस थोड़ी ही दूरी पर आगे था। हो सकता है उसने हमारे आने की आहट भी सुन ली हो और बस आगे बढ़ गया हो। मैंने उसके पीछे चलने के बजाय रणनीति अपनाने का निश्चय किया, क्योंकि मुझे बहुत डर था कि वह दुम दबाकर पास ही स्थित अभयारण्य की ओर भाग जाएगा। मैंने अपने दोनों साथियों को एक पेड़ पर चढ़ने का इशारा किया और चुपचाप नाले के किनारे पर चढ़ गया, और नाले की रेखा के समानांतर, जितनी तेज़ी से हो सकता था, उतनी तेज़ी से आगे बढ़ा। नाले के आधे मील नीचे जाकर मैं फिर से नाले में पहुँच गया और बाघ को चौंकाने की उम्मीद में दबे पांव पीछे की ओर चलने लगा।

लेकिन मेरी निराशा ही हाथ लगी, क्योंकि उसने मुझे देख या सुन लिया और मेरी आशंका के मुताबिक ही किनारे पर चढ़कर अभयारण्य की ओर भाग गया। मैंने उसके खून के निशान का पीछा करते हुए उस जगह तक पहुँचा जहाँ वह घनी झाड़ियों के एक हिस्से में घुस गया था। मैंने उस जगह का चक्कर लगाया और एक छोर पर एक पेड़ के तने के पीछे रुक गया। मैं वहाँ इंतज़ार करता रहा, लेकिन कुछ भी नहीं निकला। अगर मैं अपने आदमियों को बुलाने की कोशिश करता तो बाघ सतर्क हो

जाता, और मैं असमंजस में था कि आगे क्या करूँ। तभी उसने बड़ी मेहरबानी से हिलकर रास्ता दिखाया, क्योंकि मैंने देखा कि उसके आगे बढ़ने पर मेरे सामने की घास लहरा रही थी, हालाँकि उसका शरीर ज़रा भी दिखाई नहीं दिया। जैसे-जैसे वह एक कोण पर रेंगता हुआ आगे बढ़ा, घास लहराती रही, इसलिए मैंने अपने सुरक्षात्मक पेड़ को छोड़ दिया और खुद भी आगे बढ़ गया। फिर घास कम होने लगी, और आखिरकार मैंने उसे देख लिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझे देखा।

मैंने उसकी बगल में गोली चलाई और वह दहाड़ते हुए आगे बढ़ा। लेकिन पाँच कदम के भीतर ही उसका साहस टूट गया और वह तीसरी गोली खाने के लिए मुड़ा, जिससे वह उसी झाड़ी में जा गिरा जहाँ से वह अभी निकला था। मैंने अपने साथियों को सीटी बजाकर बुलाया, जिन्होंने गोलियों की आवाज़ सुनी थी और वे भी बहादुरी से आगे आ रहे थे। जब वे मेरे पास पहुँचे तो मैंने उन्हें स्थिति समझाई और उन्हें बाघ का पता लगाने के लिए आस-पास के पेड़ों की चोटियों पर चढ़ने को कहा। उन्होंने ऐसा किया, लेकिन इशारा किया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। फिर मैंने उन्हें लगभग पचास गज की दूरी पर दो अलग-अलग पेड़ों पर तैनात कर दिया और उनसे कहा कि अगर उन्हें हमारा शिकार दिखाई दे तो सीटी बजाएँ, और मैं खुद नाले में लौट आया, इस उम्मीद में कि कहीं बाघ वापस न चला गया हो।

उस संकरी खाई को पार करना बेहद जोखिम भरा काम था, क्योंकि पता नहीं कब बाघ ऊपर किनारे से या रास्ते में बिखरे पत्थरों के पीछे से मुझ पर हमला कर दे। किसी घायल बाघ का पीछा करते समय एक बुनियादी नियम यह है कि नदी के तल पर कभी अकेले न चलें, क्योंकि घायल जानवर ऊपर घात लगाए बैठा हो सकता है। लेकिन मैं हताश था, क्योंकि मैंने पूरा दिन इस घायल जानवर का पीछा करने में बिताया था, और मुझे डर था कि कहीं आखिरी क्षण में वह मुझसे बचकर करादिबेट्टा में जाकर मर न जाए।

तो सांस रोककर, राइफल तैयार करके, ट्रिगर पर उंगली रखे हुए, मैं उस नाले को पार करने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन पाया कि बाघ ने नाला पार नहीं किया था और अभी भी उसी झाड़ी में छिपा हुआ था जिसमें वह कूदा था। अब समस्या यह थी कि उसे बाहर कैसे निकाला जाए।

वापस आकर हमने अपने साथियों को बुलाया और युद्ध की योजना बनाई। बाघ का लगभग स्थान जाने बिना उसका पीछा करते हुए घने जंगल में जाना आत्मघाती होता। तभी मुझे एक विचार आया। नदी के पास लौटकर मैंने अपनी कमीज़ उतारी, आस्तीनों को आपस में बांधा और गले को भी बांध दिया। उसे थैली की तरह इस्तेमाल करते हुए हमने उसमें कंकड़ भर दिए, लगभग फटने ही वाले थे। फिर एक साथी उसे उठाकर उस जगह ले गया जहाँ मैंने आखिरी बार बाघ पर गोली चलाई थी। इस गोला-बारूद के भंडार से हमने चारों ओर घने जंगल पर पत्थर बरसाना शुरू कर दिया, जब तक कि अंत में हमें उस जगह से लगभग तीस गज दूर दाईं ओर की झाड़ियों से एक चेतावनी भरी गुर्राहट सुनाई नहीं दी।

ज़ाहिर है, बाघ बुरी तरह घायल था और हिल नहीं पा रहा था, क्योंकि वह हम पर झपटा नहीं, बल्कि अपने पास गिरते हर पत्थर का जवाब गुर्राहट से देता रहा। मैंने अपने साथियों को बीच-बीच में पत्थर फेंकने का निर्देश दिया ताकि उसका ध्यान भटकाया जा सके। फिर मैं झाड़ियों के बीच से घूमकर नाले की तरफ से अंदर जाने लगा। मुझे अपने सामने बाघ की गुर्राहट सुनाई दे रही थी, और मेरे साथियों द्वारा फेंके गए नदी के पत्थरों के गिरने की आवाज़ भी। जब तक मुझे बाघ की गुर्राहट सुनाई देती रही, मैं आगे बढ़ता रहा, हालांकि झाड़ियाँ घनी थीं, क्योंकि मुझे पता था कि उसका ध्यान कहीं और लगा हुआ है। लेकिन फिर, जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, उसने मुझे सुन लिया, क्योंकि उसकी गुर्राहट बंद हो गई। मेरे साथियों ने भी यह देखा और अंदाज़ा लगाया कि उसने पीछे से मेरे आने की आहट सुन ली है या महसूस कर ली है। उसका ध्यान भटकाने के लिए उन्होंने पत्थर ऊँचे, दूर और तेज़ी से फेंके, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ, क्योंकि बाघ ने खुद को ज़ाहिर नहीं होने दिया।

मुझे पता था कि मुझे बेहद सावधान रहना होगा, क्योंकि वह किसी भी क्षण मुझ पर हमला कर सकता था। मैं रुक गया, मेरी सारी इंद्रियां सतर्क थीं, मैं अपने कान लगाकर उसके आखिरी जोरदार हमले से पहले की हल्की सी सरसराहट भी सुनने की कोशिश कर रहा था। कुछ नहीं हुआ, और जैसे-जैसे सेकंड खामोशी में बीतते गए, केवल गिरते पत्थरों की आवाज ही सुनाई दे रही थी, मेरा तनाव बढ़ता गया और मुझ पर आने वाले खतरे का गहरा आभास हावी हो गया। मैंने चारों ओर देखा, लेकिन कोई हलचल नहीं दिखी। मैंने अपने कान लगाए, लेकिन कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर भी

आने वाले खतरे का वह आभास और भी गहरा होता गया, यहाँ तक कि मैं उस अस्वाभाविक सन्नाटे को तोड़ने के लिए जोर से चिल्ला सकता था, या फिर दुम दबाकर भाग सकता था।

फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा। दो झाड़ियों के बीच घायल बाघ था, अपने ही खून से लथपथ, पेट के बल रेंगता हुआ, अपनी आखिरी छलांग से मुझे चौंकाने के लिए। हमारी नज़रें मिलीं, वह दहाड़ा और हवा में उछल पड़ा, तभी विंचेस्टर राइफल से दो बार गोलियां चलीं और उसकी शक्तिशाली गोलियां सीधे उस भयंकर बाघ के चेहरे पर जा लगीं। भारी शरीर मेरे सामने गिरते ही मैं एक तरफ हट गया, उसने हवा में बेतहाशा लात मारी और फिर शांत हो गया, तभी मैंने एक और गोली बिल्कुल करीब से उसके दिल में दाग दी। गौजा का वह खूंखार बूढ़ा बाघ करादिबेट्टा अभयारण्य तक पहुंचने में नाकाम रहा और अब वह मर चुका था।

लेखक के बारे में

केनेथ एंडरसन (1910-1974) एक भारतीय लेखक और शिकारी थे जिन्होंने दक्षिण भारत के जंगलों में अपने कारनामों के बारे में कई किताबें लिखीं।

केनेथ एंडरसन एक स्कॉटिश परिवार से थे जो छह पीढ़ियों से भारत में बसा हुआ था। उनके पिता पुणे स्थित एफ.सी.एम.ए. के अधीक्षक थे और सैन्य कर्मियों के वेतन का प्रबंधन करते थे। उन्हें कैप्टन का मानद पद प्राप्त था। उनके पिता के पास राइफल भी थी और वे अक्सर जलपक्षियों का शिकार करते थे। हालांकि उनके पिता आदमखोर मांसाहारी जानवरों का शिकार नहीं करते थे, फिर भी एंडरसन के पेशेवर शिकारी बनने के निर्णय पर उनका सबसे अधिक प्रभाव था।

केनेथ एंडरसन ने अपनी स्कूली शिक्षा बैंगलोर के बिशप कॉटन स्कूल और फिर सेंट जोसेफ कॉलेज से प्राप्त की। उन्होंने कई वर्षों तक डाकघर में और युद्ध के दौरान हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट फैक्ट्री में ब्लूप्रिंट और योजना विभाग में अधीक्षक के रूप में काम किया। वे दक्षिण सैरगाह (जिसे आज महात्मा गांधी रोड कहा जाता है) के

शीर्ष पर स्थित महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा से कुछ ही दूरी पर एक बंगले में रहते थे और बैंगलोर के उपनगर बन्नेरघट्टा के पास उनकी कुछ जमीन भी थी।

भारतीय जंगलों के निवासियों के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें बड़े जानवरों के शिकार की ओर प्रेरित किया और अंततः उन्होंने वास्तविक जीवन पर आधारित साहसिक कहानियाँ लिखना शुरू किया। वे अक्सर अकेले और निहत्थे जंगल में ध्यान लगाने और प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने के लिए जाते थे। एक पेशेवर शिकारी के रूप में, उन्होंने आदमखोर बड़े जानवरों का शिकार किया ताकि गांवों के लिए उनके खतरे को खत्म किया जा सके। उनके द्वारा मारे गए कुछ सबसे उल्लेखनीय जानवरों में मैसूर का स्लॉथ बियर, गुम्मलपुर का तेंदुआ, येल्लागिरी पहाड़ियों का तेंदुआ, जोलागिरी की बाघिन, सेगुर का बाघ और मुंडाचिपल्लम का बाघ शामिल हैं।

उनकी पुस्तकें वन विद्या की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में जानी जाती हैं। उनकी लेखन शैली सरल, वर्णनात्मक और आकर्षक है, जिसमें वे कई जंगली जानवरों के साथ अपने रोमांचक अनुभवों का वर्णन करते हैं। अधिकतर कहानियाँ बाघों और तेंदुओं (या तेंदुओं) के शिकार के बारे में हैं - विशेष रूप से आदमखोर बाघों के बारे में - लेकिन उन्होंने खतरनाक हाथियों, बाइसन और भालुओं के साथ अपने प्रत्यक्ष अनुभवों पर भी अध्याय शामिल किए हैं। भारतीय जंगली कुत्तों, लकड़बग्घों और साँपों जैसे कम प्रसिद्ध जीवों के बारे में भी कहानियाँ हैं। वे इन जानवरों की आदतों और व्यक्तित्व को विस्तार से समझाने का प्रयास करते हैं।

एंडरसन अपने समय के भारतीय जंगलों में रहने वाले लोगों के बारे में भी बहुमूल्य जानकारी देते हैं, जिनमें वन्यजीवों से भरे हरे-भरे जंगल और खराब सड़कों, संचार और स्वास्थ्य सुविधाओं से जूझ रहे स्थानीय निवासी शामिल हैं। उनकी पुस्तकें जंगल में रहने वाली जनजातियों की आदतों, उनके जीवनयापन के तरीकों और उनके दैनिक जीवन का गहन विश्लेषण करती हैं।

भारतीय वन्यजीवों पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा, वे तंत्र-मंत्र के विषय में भी अध्ययन करते थे और असामान्य घटनाओं (जिनका उनके पास कोई स्पष्टीकरण नहीं था) के अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के बारे में लिखते थे। उन्होंने दक्षिण भारतीय राज्यों के कई गांवों में आदमखोर जानवरों के आतंक से जंगली जनजातियों को बचाने में

मदद की। वे अपने गृहनगर बैंगलोर की भाषा कन्नड़ में पारंगत थे और पड़ोसी राज्यों में बोली जाने वाली तमिल भाषा भी कुछ हद तक जानते थे। उनके पास एक स्टडबेकर कार थी और वे आमतौर पर शिकार के लिए .405 विंचेस्टर राइफल का इस्तेमाल करते थे। एक कुशल शिकारी के रूप में अपनी ख्याति के बावजूद, वे दक्षिण भारत में वन्यजीव संरक्षण के अग्रदूत थे और उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष कैमरे से तस्वीरें खींचने में बिताए।

बैंगलोर के होसुर रोड स्थित सेंट पैट्रिक कब्रिस्तान में केनेथ एंडरसन की कब्र।

किताबें

एंडरसन की पुस्तकें काफी लोकप्रिय हैं, और हाल ही में उनके कार्यों के दो संकलन

प्रकाशित हुए हैं। उनके द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है:

- नौ नरभक्षी और एक बदमाश (1954)
- शिवानीपल्ली का काला पैंथर और भारतीय जंगल के अन्य साहसिक कारनामे (1959)
- बहुत समय पहले के जंगल
- आदमखोर और जंगल के हत्यारे
- बाघ की दहाड़
- भारतीय जंगल की कहानियाँ
- यह जंगल है
- नरभक्षी की पुकार

साहसिकता और जीवन रक्षा के विषयों के अलावा, एंडरसन भारत, यहाँ के लोगों और यहाँ के जंगलों के प्रति अपने प्रेम को भी बयां करते हैं। वे वैकल्पिक चिकित्सा की शक्ति में दृढ़ विश्वास रखते थे और हमेशा अपने साथ जंगल से प्राप्त विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से भरा एक डिब्बा रखते थे। एंडरसन का 64 वर्ष की आयु में कैंसर से निधन हो गया। उन्हें बैंगलोर के सेंट पैट्रिक कब्रिस्तान में दफनाया गया है।

समाप्त

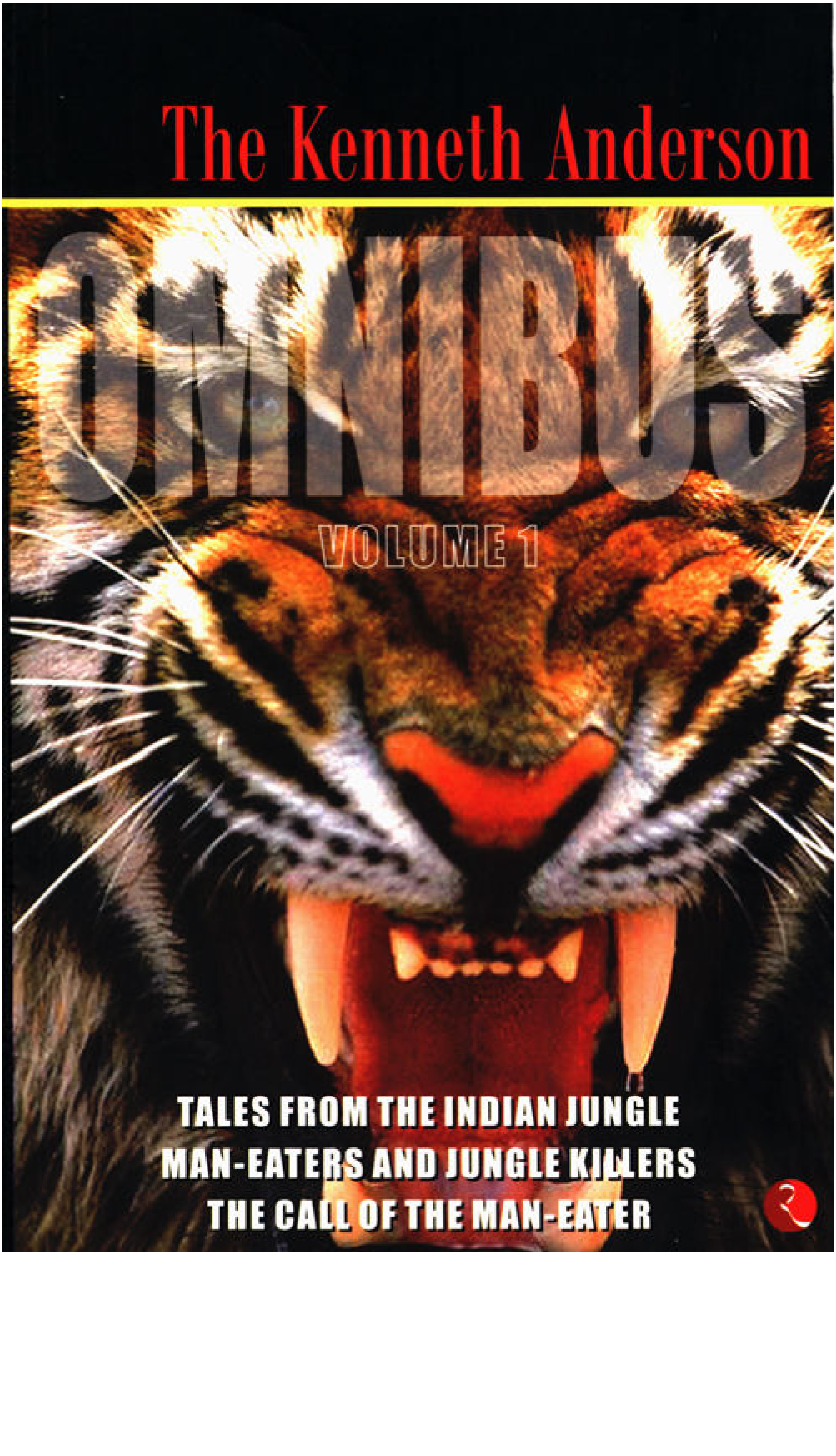
The Kenneth Anderson
OMNIBUS
VOLUME 1
TALES FROM THE INDIAN JUNGLE
MAN-EATERS AND JUNGLE KILLERS
THE CALL OF THE MAN-EATER

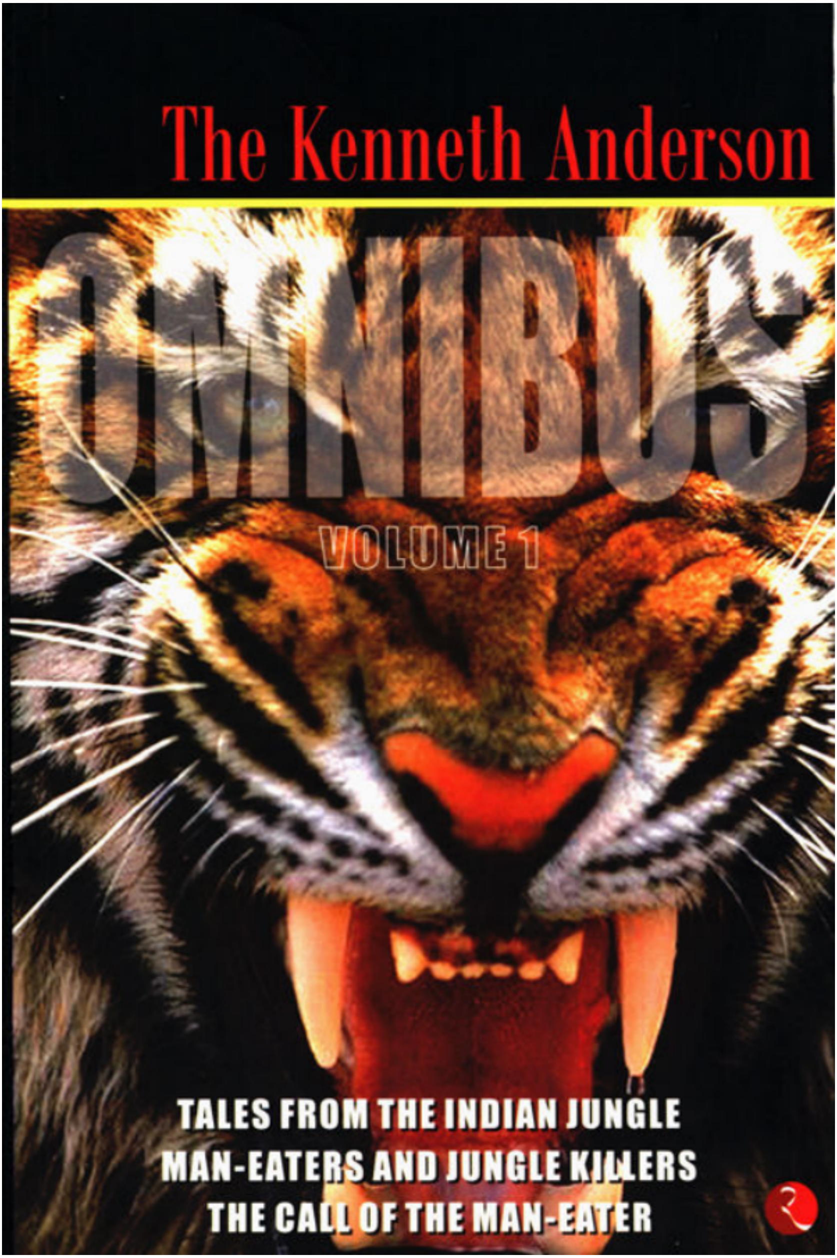
The Kenneth Anderson
OMNIBUS
VOLUME 1
TALES FROM THE INDIAN JUNGLE
MAN-EATERS AND JUNGLE KILLERS
THE CALL OF THE MAN-EATER

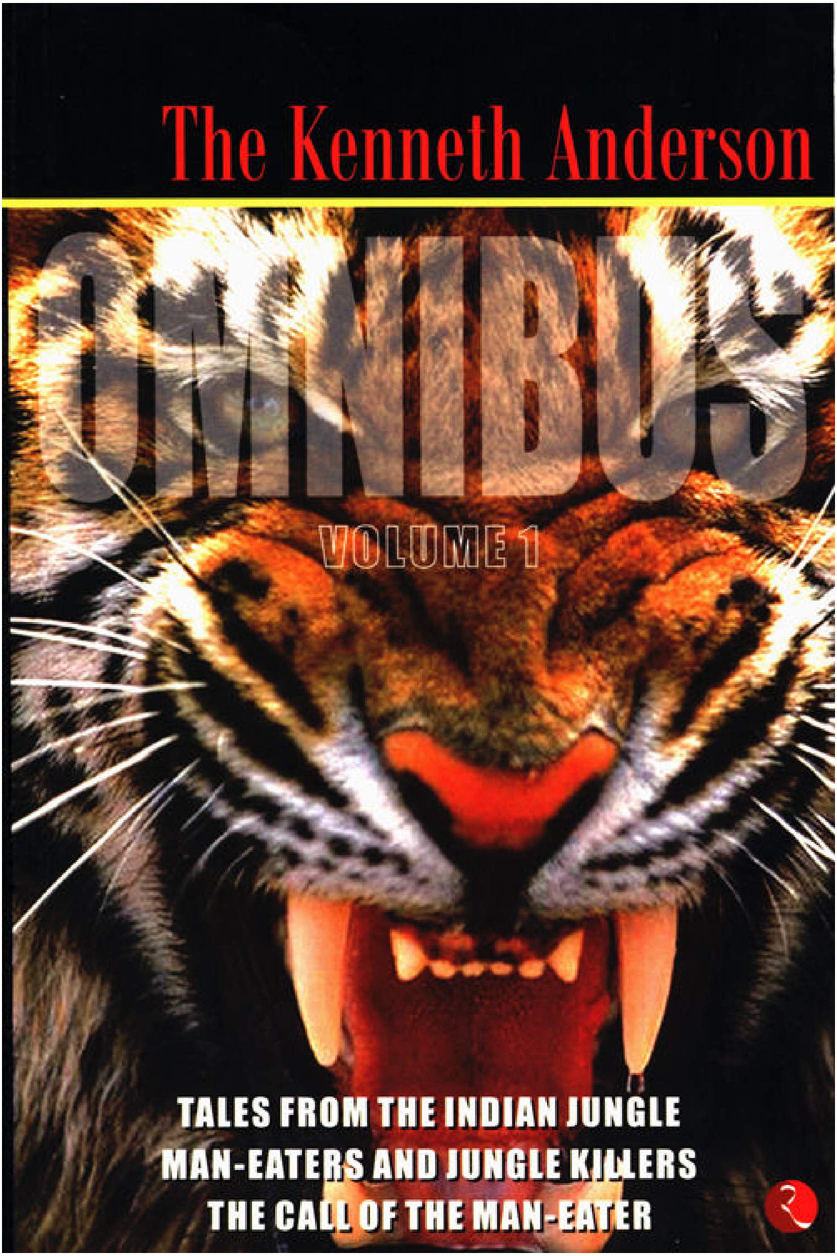
The Kenneth Anderson
OMNIBUS
VOLUME 1
TALES FROM THE INDIAN JUNGLE
MAN-EATERS AND JUNGLE KILLERS
THE CALL OF THE MAN-EATER

केनेथ एंडरसन ओमनीबस

केनेथ एंडरसन ओमनीबस

केनेथ एंडरसन

खंड -I

RUPA

यह रूपा पेपरबैक 2000 में पुनर्मुद्रित किया गया था।
तेरहवाँ संस्करण, 2012

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
7/16, Ansari Road, Daryaganj,
नई दिल्ली 110 002

बिक्री केंद्र:
इलाहाबाद बेंगलुरु चेन्नई
Hyderabad Jaipur Kathmandu
Kolkata Mumbai

ई-आईएसबीएन:

सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

क्लासगारामोंड द्वारा टाइपसेट किया गया
माइंडवेज़ डिज़ाइन
1410, चिरंजीव टावर
43, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली-110 019

भारत में मुद्रित
गोप्सन्स पेपर्स लिमिटेड
ए-14, सेक्टर 60

नोएडा-201 301

अंतर्वस्तु

भारतीय जंगलों की कहानियाँ

परिचय

भोर में घूमना

बेलुंडुर ओग्रे

अमलिगोला का अभिजात

दिगुवामेटा का हत्यारा

अलौकिक कहानियाँ

गेरहेट्टी तेंदुए का विचित्र मामला

लक्कावल्ली नरभक्षी

आंधी-तूफान अपने साथ क्या लेकर आया

आदमखोर और जंगल के हत्यारे

परिचय

केम्पेकराई का लुटेरा

आलम बक्स और बड़ा काला भालू

मामंदुर नरभक्षी

गेरहेट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर

संगम पैंथर

The Ramapuram Tiger

मुदियानूर का महान पैंथर

राजनगर का हमलावर

नरभक्षी की पुकार
परिचय
नरभक्षी की पुकार
उम्बलमेरु का दुष्ट
कैंप फायर के पास एक रात
मोयार घाटी का काला बदमाश
जंगल के दिन और रात
जंगल के जीव
सुलेकुंटा पैंथर
हमलावर से लेकर नरभक्षी तक

भारतीय जंगलों की कहानियाँ

परिचय

वह आदमी पेड़ से पीठ टिकाकर बैठा है और अलाव की रोशनी कभी कम तो कभी ज़्यादा होती है, जिससे वह और जिस पेड़ के तने से वह टिका है, दोनों ही स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, और अगले ही पल धुंधलेपन और अंधकार में गायब हो जाते हैं। उसके

बगल में पेड़ से टिकी हुई एक पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल है।

किसी ने आग में एक नई लकड़ी डाली और अनगिनत चिंगारियाँ ऊपर उठीं, जिससे शिविर पर छाए विशाल वृक्ष की घनी शाखाएँ जगमगा उठीं। एक पल के लिए उस आदमी का चेहरा भी चमक उठा और हमने देखा कि उसकी दाढ़ी और मूंछें हैं, और उसके मुँह के कोने में एक पुरानी सूखी हुई झाड़ी फंसी हुई है। उसके सिर पर एक जर्जर 'गोरखा' टोपी, जिसका किनारा बाईं ओर मुड़ा हुआ है, तिरछे ढंग से दाईं ओर झुकी हुई है।

वह आदमी बोल रहा है। ऐसा लगता है कि वह कोई कहानी सुना रहा है और यह स्पष्ट है कि वह उसमें इतना मग्न है, इतना मग्न है कि वह अपनी पाइप और अपने आसपास की हर चीज को भूल गया है।

आग की लपटें धीमी पड़ जाती हैं, फिर भड़क उठती हैं, उनकी क्षणिक चमक उस व्यक्ति की आँखों में बसी हुई उदासीनता को उजागर करती है, मानो वह अपने द्वारा वर्णित घटनाओं को फिर से जी रहा हो। अतीत इतना वास्तविक हो गया है कि वह अपने श्रोताओं से बेखबर है, जो आग के किनारे जमीन पर उसके चारों ओर बैठे उसकी बातें सुन रहे हैं।

चिंगारियां ऊपर की ओर उड़ती हैं, आपस में मिल जाती हैं, फीकी पड़ जाती हैं और धुएं के एक घने सर्पिल में गायब हो जाती हैं जो और ऊपर की ओर घूमता हुआ तब तक जाता है जब तक कि वह शिविर को घेरने वाले पेड़ों के घने पत्तों के अंधेरे में खो नहीं जाता और जंगल की रात को और भी भयावह बना देता है।

आग की लपटों की चटक और उस आदमी की धीमी आवाज़ के अलावा, जंगल सन्नाटे में डूबा हुआ है, एक भारी, दमनकारी, अजीब सी खामोशी छाई हुई है जो हमें लगता है कि ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगी। और हम सही हैं। अचानक एक बाघ की दहाड़ अंधेरे को चीरती हुई सुनाई देती है, जिसका जवाब एक उत्तेजित हाथी की चीख से मिलता है। 'आउंग-हा! ऊंग! आउंग-ऊंग!' वह भयानक आवाज़ आती है जब बाघ निडरता से जंगल की गलियों में आगे बढ़ता है, जबकि दूर से आती हाथी की चिंघाड़ 'त्रि-आ-आ-अंक! त्रि-आ-आ-अंक!' यह घोषणा करती है कि चुनौती स्वीकार कर ली गई है।

लेकिन वह व्यक्ति इन आवाज़ों को अनसुना सा कर देता है, क्योंकि वह अपनी कहानी में इतना मग्न हो गया है। ऐसा लगता है मानो वह स्वयं जंगल का ही हिस्सा

हो, और हमें भी यही आभास होता है कि वह वहीं का है। यही उसका घर है और यही वह स्थान है जहाँ वह मरना चाहेगा; जंगल ही उसकी जन्मभूमि है, उसका आश्रय है और अंत में उसका विश्राम स्थल भी।

तो चलिए, उसकी बातों पर ध्यान दें। जंगल में रहने वालों की कहानियाँ; घटनाओं के किस्से, खुद के भयावह और भूतिया चित्रण। जैसे-जैसे हम सुनते हैं, वह व्यक्ति खुश प्रतीत होता है और अपने विषय में मग्न हो जाता है।

क्योंकि उन्हें जंगल और वहां के लोगों के बारे में बात करना बहुत पसंद है, और मुझसे बेहतर यह बात कौन जान सकता है।

क्योंकि मैं ही वह आदमी हूँ!

एक

भोर में घूमना

पुजारी हमें लगातार कोमल आवाज़ों से जगाता है, 'दोराई, दोराई; येंचेको, नार्ल मुन्नी अगाधो!;' जिसका अर्थ है, 'स्वामी, स्वामी; उठो, चार बज गए हैं!'

वह हमारे कानों में फुसफुसाते हैं, पहले मेरे और फिर तुम्हारे; क्योंकि अपने हाथों से हम में से किसी को भी छूना अपमानजनक माना जाता है। क्या पूजकों को, जहाँ तक मनुष्य को याद है, बहिष्कृत नहीं माना जाता, जिनके किसी भी आम इंसान के पास होना—स्पर्श करना तो दूर की बात है—अत्यंत घृणित है?

हम अचानक उठ बैठते हैं, क्योंकि जंगल में देर से जागना जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकता है। हम आग के सुलगते अंगारों को देखते हैं जिनकी रोशनी

तीन तरफ से घिरे विशाल पेड़ों के तनों तक मुश्किल से पहुँच रही है। चौथी तरफ हमें तारों से जगमगाता पानी का एक विशाल विस्तार दिखाई देता है, जो कावेरी नदी है, और हम बाढ़ की धीमी गड़गड़ाहट सुनते हैं जो हमारे पास से गुजरती है, जंगल की रात के अंधेरे से प्रकट होती है और उतनी ही तेजी से गायब हो जाती है।

हम नदी किनारे खुले में डेरा डाले हुए हैं, जंगल के छोर से कुछ ही गज की दूरी पर और पानी के किनारे से थोड़ी ही दूर। पुजारी रात भर जागता रहा, ताकि आग को जलाए रख सके, जो सोते समय हमें किसी अनचाहे हाथी के हमले से बचाए रखे, जो शायद पानी पीने आ गया हो, या शायद किसी असाधारण रूप से साहसी मगरमच्छ से। नदी किनारे की रेत, जिस पर हम सो रहे हैं, हमारे छोटे लेकिन उतने ही अप्रिय दुश्मनों जैसे सांपों और बिच्छुओं को दूर रखती है, क्योंकि वे ऐसी सतह पर रेंगना पसंद नहीं करते।

मौसम अपेक्षाकृत गर्म होने के कारण हमने अपने हल्के वस्त्र उतार दिए। अंगारों की गर्मी ने हमें ओस से बचाए रखा। मैंने चाय बनाने के लिए आग पर पानी की एक छोटी केतली रखी, यह एक ऐसा ताज़गी भरा पेय है जिसका जंगली इलाकों में रहने वाले लोग हमेशा स्वागत करते हैं। जब तक पानी उबल रहा था, मैं आपके साथ कुछ कदम चलकर पानी के किनारे तक गई ताकि आप अपने दांत, चेहरा और हाथ धो सकें।

जब तक हम वापस लौटे, केतली में पानी उबल रहा था, और जल्द ही हम हाथ में गर्म मग लिए बैठ गए, साथ में ठंडी मक्खन लगी चपातियाँ और कुछ पके केले (जिन्हें भारत में प्लांटैन कहा जाता है) थे - एक संपूर्ण नाश्ता, शायद राजाओं के लिए अनुपयुक्त, लेकिन अच्छे स्वास्थ्य के लिए इसका कोई सानी नहीं है।

यह संक्षिप्त भोजन जल्द ही समाप्त हो जाता है, और अब हम उन राइफलों पर ध्यान देते हैं जिन्हें हम सुबह-सुबह पहाड़ियों की इस 'घूम' यात्रा पर ले जाने वाले हैं, जो एक चौथाई मील से भी कम दूरी से शुरू होती है और लगातार ऊपर उठती हुई पोनाचिमालाई नामक चोटी पर जाकर समाप्त होती है, जो 5,000 फीट से अधिक ऊंची है और सीधी रेखा में लगभग छह मील दूर है।

मेरा शांत, लेकिन भरोसेमंद साथी, जो कई वर्षों से और कई रोमांचक यात्राओं में मेरे साथ रहा है, एक थोड़ी खस्ताहाल .405 विंचेस्टर राइफल, जिसका सब मज़ाक उड़ाते हैं, उसे ज़्यादा देखभाल की ज़रूरत नहीं है। मेरी ही तरह, यह भी एक पुरानी

राइफल है जो मानो खुद ही अपना ख्याल रखती है। वैसे भी, यह आपकी उस 10-शॉट वाली अमेरिकी 3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल से बहुत घटिया लगती है, जिसकी आप इतनी सावधानी से देखभाल करते हैं, यह बिल्कुल सही है।

जब हम शिविर से निकले तब भी अंधेरा था। हमारा पुजारी साथी हमारे साथ आने के लिए उत्सुक था, लेकिन चूंकि हम एक ऐसे सफर पर निकल रहे थे जिसमें मैं आपको कुछ रोचक चीजें दिखाना चाहता था, इसलिए मैंने अपने साथ लाए थोड़े से सामान की देखभाल करने के बहाने उसे पीछे छोड़ने का फैसला किया। हमारा पुजारी मित्र बायरा, जो एक सच्चा शिकारी है, अगर मैं आपको किसी विशाल सांभर हिरण को दिखाने के बजाय उसे गोली न मारूँ तो उसे बहुत बुरा लगेगा; वहीं अगर मैं आपका ध्यान चित्तीदार हिरणी की ओर आकर्षित करूँ, जो अपने बच्चे को बचाने के लिए खुद को निशाना बना रही है, तो वह मुझसे बहुत नाराज़ होगा कि मैंने गोली क्यों नहीं चलाई और माँ और बच्चे दोनों को क्यों नहीं मारा।

सौ गज के भीतर ही हवा ठंडी हो जाती है, और जैसे-जैसे हम पहली पहाड़ी की चोटी तक ढलान वाली जमीन पर चढ़ना शुरू करते हैं, हवा और भी ठंडी होती जाती है।

अभी भी अंधेरा है और हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। पत्थरों पर ठोकर लगने और झाड़ियों में उलझने से हमारी चाल का पता चल जाएगा और हमारी छोटी सी सैर का पहला चरण असफल हो जाएगा। क्योंकि यह वह मौसम है जब जुमलम के पेड़ अपने बैंगनी फल बहुतायत से जमीन पर गिराते हैं, और यह कसैला फल आलसी भालुओं के लिए बेहद आकर्षक होता है, जो ऐसे पेड़ पर आने के लिए एक रात में मीलों का सफर तय कर लेते हैं। कल ही मैंने नदी किनारे, शिविरों से मुश्किल से दो फर्लांग की दूरी पर, जुमलम के पेड़ों का एक छोटा सा झुंड देखा, जहाँ कई आलसी भालुओं के पदचिह्न और मल थे जो हर रात गिरे हुए बैंगनी फलों को खाने के लिए वहाँ आते थे।

जिस छोटी पहाड़ी पर हम अभी चढ़ रहे हैं, वह पेड़ों के झुरमुट से सटी हुई है और वहाँ अभी भी भोजन कर रहे सुस्त भालुओं के लिए पीछे हटने का सीधा रास्ता बनेगी। अपनी आदत के अनुसार, वे सुबह होते ही ऊँची ज़मीन की ओर बढ़ना शुरू कर देंगे। वह समय अब नज़दीक आ गया है, और आकाश में क्षणिक चमक इस अनोखी घटना का संकेत देती है।

लेकिन कुछ ही मिनटों के भीतर एक बार फिर अंधेरा पूरे इलाके को घेर लेता है,

जब तक कि लगभग बीस मिनट बाद पूर्वी आकाश में एक व्यापक रूप से फैलती हुई रोशनी सच्ची सुबह और एक नए दिन की शुरुआत की घोषणा नहीं कर देती।

यह झूठी सुबह न केवल जंगल में नए शिकारी को धोखा देती है, बल्कि जंगल के निवासियों को भी। जंगली मुर्गे बांग देने लगते हैं, मोर अपनी कर्कश आवाज में चिल्लाने लगते हैं, शिकार की तलाश में निकले मांसाहारी जानवर अपने मांदों में लौट जाते हैं, और लकड़बग्घे और सियार जो उनके शिकार के बचे हुए हिस्से से भोजन की उम्मीद में उनका पीछा कर रहे थे, जमीन और चट्टानों के नीचे बने अपने बिलों में लौट जाते हैं, जहां वे दिन के दौरान शरण लेते हैं।

चिड़चिड़े और लालची आलसी भालू, जो गिरे हुए फलों को चट करने में अपनी ऊर्जा लगा रहे थे, वे भी इस झूठी सुबह के धोखे में आ जाएँगे। अनिच्छा से वे उन थोड़े से फलों को छोड़ देंगे जिन्हें वे जबरदस्ती अपने गले से नीचे नहीं उतार पाए हैं और पहाड़ियों की ओर चले जाएँगे जहाँ उन्हें शांति मिलेगी। वहाँ वे दोपहर की गर्मियाँ किसी गुफा या घास के मैदान में, या शायद किसी पुराने, टेढ़े-मेढ़े पेड़ की छाया में गहरी नींद में बिताएँगे।

लेकिन हम खुद गुमराह नहीं होते और भोर के अंधेरे में क्षणिक चमक गायब होने से पहले ही अपनी जगह पर जल्दी से पहुँच जाते हैं। हमें छिप जाना चाहिए ताकि हम सुस्त भालुओं के आने की आहट सुन सकें और शायद भोर की रोशनी में उनमें से किसी एक की झलक पा सकें। उस बीस मिनट के छोटे से अंतराल के धुंधलेपन में अचानक चौंक जाना ठीक नहीं होगा।

सुस्त भालू अपने अन्य रिश्तेदारों की तरह ही गुस्सैल, उत्तेजित, द्वेषपूर्ण और आक्रामक होने के लिए बदनाम है, खासकर तब जब कोई अचानक उसके सामने आ जाए। भारत में कई वनवासियों के शरीर पर भयानक निशान हैं क्योंकि उनका सामना अचानक किसी कोने से आते हुए सुस्त भालू से हो गया या वे सोते हुए सुस्त भालू के सामने आ गए। कई लोगों ने तो उनके नुकीले पंजों के नीचे अपनी आंखें और नाक खो दी हैं।

यह चट्टान, जिस पर हम आ पहुँचे हैं, हमारे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। यह लगभग चार फीट ऊँची और शायद छह फीट लंबी है। हम दोनों इसके पीछे छिपकर भालू के आने का इंतज़ार कर सकते हैं। बेशक, यह महज़ एक संभावना है, जो शायद पूरी हो या न भी हो, क्योंकि भालुओं के पास घूमने के लिए पूरा जंगल है

और ऐसे कई रास्ते और पगडंडियाँ होंगी जिनसे वे इस विशेष दिशा से गुज़रे बिना पहाड़ी पर चढ़ सकते हैं।

हम अपनी किस्मत आजमाते हैं और कुछ मिनटों तक चुपचाप इंतजार करते हैं, सिर्फ अपनी सांसों की आवाज सुनते हुए। तभी टीले के तल पर कहीं से पत्थर के गिरने की हल्की सी आवाज आती है, जिससे हमारी उम्मीदें बढ़ जाती हैं। शायद कोई जानवर, जो आमतौर पर अपनी आदतों में अनाड़ी होता है या ऐसे पत्थरों के नीचे छिपे कीड़ों की तलाश में होता है, ऐसी आवाज करके अपनी मौजूदगी का संकेत दे सकता है। निश्चित रूप से कोई हिरण नहीं, क्योंकि वह डर जाता; और निश्चित रूप से कोई बाघ या तेंदुआ तो अपने गुजरने का संकेत नहीं देता। दूसरी संभावना हाथी की हो सकती है। यह हमें कुछ ही क्षणों में पता चल जाएगा।

अब हमें भारी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही है, मानो कोई बूढ़ा व्यक्ति बड़ी मुश्किल से पहाड़ी पर चढ़ रहा हो। इससे यह संदेह दूर हो जाता है कि एक सुस्त भालू सचमुच चट्टानों के नीचे बने छेदों और झाड़ियों की जड़ों को सूंघता हुआ कीड़े-मकोड़े और अन्य रसीले भोजन की तलाश में पास आ रहा है।

भोर होने के साथ ही पूर्वी आकाश में हल्की रोशनी फैलने लगी है, लेकिन जिस चट्टान के पीछे हम छिपे हुए हैं, उसके पीछे अभी भी अंधेरा है, तभी भालू हमारे पास आ जाता है। तुम मेरे दाहिनी ओर हो, और भालू तुम्हारे दाहिनी ओर, लगभग दस फीट की दूरी पर है। मैं तुम्हारा हाथ कसकर पकड़ लेता हूँ और तुम मेरी बिना कही बात समझ जाती हो कि मुझे हिलना नहीं है। हो सकता है कि वह हमें देख न पाए, क्योंकि उसकी नज़र बहुत कमज़ोर होती है। वह बहुत बहरा भी होता है। अगर हम अपनी मौजूदगी का पता चलने दें तो वह हमला कर सकता है, और हम उसे गोली नहीं मारना चाहते, क्योंकि आम तौर पर भालू हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता।

भालू की गुर्राहट, बड़बड़ाहट, फुफकार और सूंघने की आवाज़ें आती-जाती रहती हैं। झाड़ियों के बीच हमें बस एक काली धुंधली आकृति दिखाई देती है; फिर भालू पहाड़ी पर चढ़ते हुए गायब हो जाता है और उसके चलने की आवाज़ें धीमी होती जाती हैं।

भोर तेज़ी से फैल रही है और नदी के उस पार पूर्व दिशा में आकाश में बदलते रंगों का एक अद्भुत नज़ारा दिखाई दे रहा है, जो गहरे भूरे और गाढ़े बैंगनी रंग से शुरू होकर बैंगनी, हरे, नीले, नारंगी और सिंदूरी रंग में बदलता जाता है, और अंत में दूर

स्थित पर्वत चोटियों की ऊबड़-खाबड़ ऊँचाइयों के ऊपर सूर्य का किनारा उभर आता है। उसकी फैली हुई किरणें अभी इतनी तेज़ नहीं हैं कि हम उस शानदार, चमकते हुए सूर्य को निहारने से खुद को रोक सकें।

अभिवादन में, छोटे-बड़े, दूर-दूर के पक्षी मधुर गीत गाने लगते हैं। सैकड़ों बुलबुलों की चहचहाहट, काले-लाल कौवे-तीतर की पुकार, और मस्तिष्क-बुखार से पीड़ित पक्षी की ऊँची होती हुई चीख पहाड़ी से हमारे कानों में गूंजती है, जबकि नदी के किनारे घने जंगल से जंगली मुर्गों की चुनौती भरी आवाज, 'व्हीव! कुक-क्या-क्या-कहक्कम,' और दूर से आती मोर की मधुर आवाज, 'म्याऊं! म्याऊं!' सुनाई देती है। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह अपनी पूंछ के शानदार पंखों को एक बड़े पंखे की तरह फैलाए, मुर्गों के झुंड के सामने इतराते और नाचते हुए चल रहा है।

क्रैक-आ-आ-आक! हमें यह आवाज़ सिर्फ़ एक बार सुनाई देती है, काफ़ी धीमी लेकिन साफ़-साफ़। कोई भारी चीज़ पहाड़ी पर चढ़ रही है, शायद कोई दूसरा सुस्त भालू, लेकिन मुझे नहीं लगता। भालू लगातार शोर मचाते रहते हैं, जबकि यह जानवर, उस शुरुआती आकस्मिक आवाज़ को छोड़कर, बाकी समय बिल्कुल शांत रहता है।

हम चट्टान के पीछे चुपचाप दुबक जाते हैं, बस हमारे सिर और आँखें दिखाई देती हैं। जंगल में छिपने का पहला रहस्य है बिल्कुल स्थिर रहना। अगर कोई जानवर आपको देख भी ले, तो भी वह आपको पहचान नहीं पाएगा, बशर्ते आप बिल्कुल स्थिर रहें। दूसरा महत्वपूर्ण कारक है हवा की दिशा। अधिकांश जंगली जीवों में, विशेषकर हिरण परिवार के सदस्यों में, दृष्टि की तुलना में सूंघने की क्षमता कहीं अधिक विकसित होती है। यदि हवा सीधे आपकी ओर से शिकार की तरफ नहीं बह रही है, और यदि आप बिल्कुल स्थिर रहते हैं, तो आपके पास लगभग किसी भी जानवर पर सफलतापूर्वक घात लगाने का अच्छा मौका है।

कुछ ही देर बाद हमने इसे परखा, जब हमारे सामने झाड़ियाँ हल्की सरसराहट के साथ हटीं और एक विशाल सांभर हिरण का सिर और कंधे दिखाई दिए। उसके विशाल सींग एकदम समरूप रूप से फैले हुए थे, और वह इतना करीब था कि हम उनकी टेढ़ी-मेढ़ी मोटाई को देख सकते थे, जो आधार पर आपकी बांह के बराबर थी।

हिरण कुछ क्षण पहले सुस्त भालू की तुलना में हमारे अधिक करीब है, और बिल्कुल हमारे सामने है, फिर भी वह हमें नहीं देख रहा है। जिस चट्टान के पीछे हम छिपे हैं, उसके दूसरी ओर खुले स्थान में आगे बढ़ने से पहले वह सावधानी से कुछ देर

रुकता है। फिर वह आगे बढ़ता है और हम उसके विशाल शरीर को उसकी पूरी भव्यता के साथ देखते हैं।

उसके गहरे भूरे रंग, गर्दन के चारों ओर घने बालों और बगल के लंबे, मोटे बालों से पता चलता है कि वह एक बूढ़ा जानवर है। उसके ये बाल उसकी त्वचा को पूरी तरह से ढकने के लिए पर्याप्त घने नहीं हैं। ये कारक और उसके विशाल सींग उसकी अधिक उम्र का संकेत देते हैं।

अब मैं आपको दिखाऊंगा कि सांभर कितना जिज्ञासु हो सकता है। अपने बगल में घास की एक मोटी डंडी तोड़कर, मैं उसके पंखदार सिरे को चट्टान के ऊपर निकालता हूँ, और उसे उंगली और अंगूठे के बीच पकड़े रहता हूँ। फिर मैं उसे घुमाना शुरू करता हूँ और हिरण पर इसका असर तुरंत होता है। यह हरकत भले ही हल्की और बिना आवाज़ वाली हो, लेकिन उसकी चौकस आँखों में तुरंत नज़र आ जाती है। वह अचानक रुक जाता है, उसके दोनों बड़े कान आगे-पीछे और फिर आगे की ओर फड़फड़ाते हैं। अधीर होकर वह अपना दाहिना पैर घुटने से मोड़कर उठाता है और ज़मीन पर ज़ोर से पटकता है। उसके खुर से पत्थर पर धातु जैसी खटक की आवाज़ आती है।

हिरण इस क्रिया को दोहराता है और मेरी घुमाई जा रही घास की डंडी को पहले से भी अधिक ध्यान से घूरता है। उसकी सारी शंकाएँ अब जागृत हो गई हैं क्योंकि उसकी अंतरात्मा उसे चेतावनी दे रही है कि कुछ अजीब हो रहा है। उसने कई बार घास की डंडियों को हवा में लहराते देखा है। लेकिन उसने कभी किसी डंडी को गोल-गोल घूमते नहीं देखा!

हम उन टकटकी लगाए आँखों के पीछे छिपे हिरण के विचारों को पढ़ सकते हैं। सहज प्रवृत्ति उसे सचेत करती है और भागने के लिए उकसाती है। लेकिन जिज्ञासा उसे उस घास के तने के बारे में और जानने के लिए प्रेरित करती है जो इतने विचित्र ढंग से घूम रहा है। सांभर एक कदम आगे बढ़ता है, पूरे एक मिनट तक हिचकिचाता है, और फिर आगे बढ़ता है। उसके शरीर की हर मांसपेशी तनी हुई है, पल भर में भागने के लिए तैयार; लेकिन वह अपनी जिज्ञासा पर काबू नहीं पा सकता।

हिरण और मृग परिवारों में पाई जाने वाली यह स्वाभाविक जिज्ञासा ही वह कारण है जिसके चलते हर साल हज़ारों हिरण अनुभवी शिकारियों द्वारा मारे जाते हैं। ये शिकारी वही करते हैं जो मैं इस समय कर रहा हूँ, या फिर उन्हें मौत के जाल में

फंसाने के लिए कोई और चाल चलते हैं। हिरण अब इतना करीब आ चुका है कि भाले से फेंके जाने पर भी वह वहीं जम जाएगा; और वह और भी करीब आ रहा है! ज़ाहिर है, इस मूर्ख जानवर को सबक सिखाना ज़रूरी है और मैंने उसे इतना डराने का फैसला किया है कि उसकी जान ही निकल जाए।

चट्टान के पीछे से उछलकर, मैं पूरी ताकत से चिल्लाया, 'व्रोफ़! व्रोफ़! व्रोफ़!'। यह कहना कि हिरण बाघ जैसी आवाज़ वाले इस अचानक इंसान को देखकर चौंक गया, स्थिति का हल्का वर्णन होगा। वह पिछले पैरों पर खड़ा हुआ, एक पत्थर पर फिसल गया, घुटनों के बल गिर पड़ा, फिर उठ खड़ा हुआ और खतरे की एक तीखी चीख निकाली।

'ऊ-ओन्क!' वह चीखता है।

फिर वह अपने सींगों को बगल में समेट लेता है ताकि वे पेड़ों की शाखाओं में न फंसें, और पहाड़ी से नीचे लुढ़क जाता है। उसकी दौड़ इतनी तेज होती है कि हम उसके कदमों की आहट को पत्थरों की खड़खड़ाहट से तब तक सुन सकते हैं जब तक वह नदी के किनारे घने जंगल में शरण नहीं ले लेता। वहाँ हिरण रुककर देखता है कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा, और फिर पूरे जंगल को चेतावनी देता है कि पहाड़ी पर खतरा और मौत मंडरा रही है।

'ऊ-ओंक! धा-अंक!' वह बार-बार दहाड़ता है।

जुमलम के पेड़ों के झुरमुट में आराम से चर रहे लंगूर बंदरों के झुंड के रखवाले में हलचल मची हुई है। हम जहां छिपे हैं, वहां से उसकी एक झलक दिखाई देती है। वह पेड़ की चोटी पर दो पैरों पर सीधा खड़ा है और सांभर द्वारा बताए गए खतरे को देखने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। लाख कोशिश करने पर भी वह हमें नहीं देख पा रहा है। जाहिर है, वह उलझन में है और दुश्मन की पहचान करना चाहता है। तभी वह बड़ा नर लंगूर अपने झुंड और आसपास के अन्य जंगली जीवों के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का फैसला करता है और खतरे की चेतावनी देने में शामिल हो जाता है।

'हर्र!' वह कर्कश स्वर में चीखता है; और फिर एक क्षण बाद, 'हर्र! हर्र-हर्र!' लगातार। जंगल में अब पूरी तरह हलचल मच जाती है, और नदी के उस पार से एक जंगली भेड़, जो अपनी प्यास बुझाने ही वाली थी, डर जाती है, भाग जाती है और भागते हुए कुत्ते जैसी आवाज़ में 'खर्र! खर्र! खर्र!' चिल्लाती है।

जिस पहाड़ी की ढलान पर हम छिपे हुए थे, उसके दूसरी ओर चर रहे चित्तीदार

हिरणों के झुंड ने शोर सुना और चेतावनी दी। 'आओ! आओ! आओ!' मादा हिरणों ने एक-दूसरे को जल्दी-जल्दी पुकारा। दूर से एक हाथी की तीखी चिंघाड़ सुनाई दी।

अंततः उत्साह शांत हो जाता है और हम अपनी सुबह की सैर फिर से शुरू करने का फैसला करते हैं, क्योंकि छिपते रहने से कोई लाभ नहीं है। सांभर ने इतना शोर मचा दिया है कि अब हमारे रास्ते में आना संभव नहीं है।

क्या आपने चाय के पौधे जैसी नुकीली पत्तियों वाली वह झाड़ी देखी है जो केवल ऊंचे पहाड़ों पर ही उगती है? ऐसी कई झाड़ियाँ चारों ओर उगती हैं। इसे 'वेल्लारी' पौधा कहते हैं। इसकी पत्तियों को पट्टी या पुल्टिस के रूप में लगाने से गठिया के दर्द और किसी भी प्रकार की सूजन में बहुत आराम मिलता है। इस बड़े पेड़ की पांच नोक वाली पत्तियां, जो ऊपर से हरी और नीचे से चांदी जैसी सफेद होती हैं, कच्चे घावों या चोट पर लगाने पर बहुत अच्छा असर दिखाती हैं; चांदी जैसी सफेद तरफ को प्रभावित जगह पर रखा जाता है। वह छोटा पौधा जो कठोर जमीन पर उगता है, मुश्किल से एक फुट ऊंचा, चांदी जैसे भूरे रंग की, लगभग नुकीली पत्तियों वाला, जहरीले सांप के काटने का इलाज माना जाता है, और वह दूसरा छोटा पौधा जिसमें सफेद, डेज़ी जैसे फूल और दांतेदार पत्तियां होती हैं, घावों पर पत्तियों का रस निचोड़ने से खून बहना रोकने के लिए प्रसिद्ध है। यह डॉक्टर द्वारा दी गई किसी भी दवा की तरह ही तेजी से उच्च रक्तचाप को भी कम करता है।

सचमुच, जंगल हर तरह की जड़ी-बूटियों और पौधों से भरा पड़ा है, जिनके पत्ते, तने, बीज, फूल और यहाँ तक कि जड़ें भी मानव जाति को होने वाली अधिकांश बीमारियों का इलाज हैं। ये जंगल में और शहरी इलाकों में, यहाँ तक कि रेलवे ट्रैक के किनारे भी उगते हैं।

आपने अक्सर भारतीय पेरीविंकल झाड़ी के हरे पत्तों के बीच से खिलते हुए अनगिनत गुलाबी और सफेद फूलों को देखा होगा, जो लगभग हर जगह, खासकर रेलवे तटबंधों पर खूब पनपती है। इस पौधे की चालीस पत्तियों को चाय की तरह उबालकर एक बड़े कप पानी या दूध में मिलाकर प्रतिदिन पीने से इंसुलिन के स्राव में मदद मिलती है और अग्नाशय उत्तेजित होता है, जिससे मधुमेह नियंत्रित होता है। लेकिन कुछ अन्य जड़ें और पत्तियां भी हैं जो इस बीमारी के इलाज में और भी अधिक प्रभावी हैं, जिनमें से एक छोटी लता है जो हर जंगल में आम है। इसे 'शुगर किलर' के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी सिर्फ एक पत्ती चबाने से ही चीनी अपनी मिठास

खो देती है और मुंह में रेत जैसी लगने लगती है, यह असर लगभग तीन घंटे तक रहता है।

लेकिन हम विषयांतर कर रहे हैं और इसी बीच हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए हैं और दूसरी तरफ उतरना शुरू कर दिया है। अब हमें सावधानी से चलना होगा, क्योंकि कुछ जगहों पर ढलान बहुत ज़्यादा है, और अगर हममें से किसी ने भी कोई पत्थर गिरा दिया या कोई शोर मचाया, तो चित्तीदार हिरणों का वह परिवार, जिसने अब बोलना बंद कर दिया है और जिसे हम जल्द ही देखने की उम्मीद कर रहे हैं, ज़रूर सतर्क हो जाएगा। सौभाग्य से हवा पहाड़ी की ओर बह रही है, इसलिए उन्हें हमारी गंध नहीं आएगी।

हम छोटी पहाड़ी की तलहटी तक पहुँचते हैं और काँटेदार झाड़ियों और लैंटाना के बीच से दबे पांव चलते हुए एक घास के मैदान तक पहुँचते हैं। वहाँ, शांति से चरते हुए, कम से कम चालीस हिरणों का एक झुंड था, जिन्हें हम देखने की उम्मीद कर रहे थे। सौभाग्य से, पहरा दे रही किसी भी मादा हिरण ने हमारे आने की सूचना नहीं दी और हम ठीक समय पर युवा रेडवुड पेड़ों के एक झुंड के पीछे रुक गए।

हमारे सामने का नज़ारा बेहद खूबसूरत है। नर हिरण झुंड के बीचोंबीच हैं, उनके सींग फैले हुए और नुकीले हैं। वे गर्व से अपना सिर ऊपर उठाते हैं और हवा को सूंघते हैं, फिर चरने के लिए नीचे झुक जाते हैं। उनके चारों ओर मादा हिरण और उनके बच्चे हैं। मादा हिरण हमेशा चौकन्ने रहती हैं, उनके कान आगे की ओर उठे रहते हैं और हल्की सी भी आवाज़ सुनने के लिए फड़फड़ाते रहते हैं। कभी-कभी कोई मादा हिरण अपना सिर और गर्दन ज़मीन पर झुकाकर घास या पत्तियां चबाती है, लेकिन तुरंत ही ऊपर उठा लेती है, हमेशा चौकस और सतर्क।

हिरण के बच्चों पर ऐसी कोई जिम्मेदारी नहीं होती और उनमें से कई को बेरहमी से और अचानक मौत का सामना करना पड़ता है, इससे पहले कि जीवित बचे लोग यह सीख सकें कि जंगल में निरंतर अस्तित्व का सबसे बड़ा रहस्य 'हर पल सतर्क रहना' है; क्योंकि मौत हर जगह घात लगाए बैठी रहती है।

वे आपस में उछल-कूद और खेल रहे हैं, एक दूसरे का पीछा करते हुए गोल-गोल घूम रहे हैं। कुछ बहुत छोटे बच्चे अपनी माताओं से चिपककर, चुपके से अपने नन्हे सिर पास लटके थनों के नीचे डुबोकर दूध पीने की कोशिश कर रहे हैं। माताएँ भी बीच-बीच में दूध पिलाना रोककर अपने नन्हे बच्चों को प्यार से चाटती हैं, लेकिन एक

पल के लिए भी वे आसपास के जंगल में किसी संभावित दुश्मन की तलाश में चौकसी करना नहीं छोड़तीं। उनकी आँखें हर दिशा में टकटकी लगाए रहती हैं, कान आगे की ओर कसे रहते हैं ताकि हल्की सी भी आवाज़ सुन सकें, और नाक के नथुने खतरे की हल्की सी भी गंध को सूंघने के लिए फैले रहते हैं।

चरते हुए हिरणों के ठीक ऊपर एक पेड़ पर लंगूरों का एक छोटा परिवार बैठा है। इनमें से दो ज़मीन पर कूदते हैं और एक चित्तीदार हिरण के बच्चे का पीछा करते हैं। फिर एक लंगूर वापस एक नीची शाखा पर उछलता है और अपने पैरों से लटकते हुए, हिरण के बच्चे की पूंछ पकड़कर उसे आधा ज़मीन से ऊपर उठा लेता है। हिरण का बच्चा इस खेल का आनंद लेता है, लेकिन उसकी माँ को यह पसंद नहीं आता।

देखने में तो सब कुछ एकदम शांत, सुंदर और निर्मल लग रहा था। लेकिन हमारी नज़र बाईं ओर दूर एक बड़ी झाड़ी के नीचे हल्की सी हलचल पर पड़ी। हमने झाड़ी को और ध्यान से देखा, लेकिन हलचल बंद हो चुकी थी।

उस झाड़ी के पास चर रही एक हिरणी अपने बच्चे के साथ यह सब देख चुकी थी। उसने अचानक अपना सिर ऊपर उठाया और घूरने लगी, उसके दोनों कान आगे की ओर उठे हुए थे और थूथन कांप रही थी। फिर उसने अपना दाहिना पैर ज़मीन पर पटका और अपनी चेतावनी भरी चीख का पहला अक्षर 'आओ!' बोला।

लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। सुबह की सुनहरी धूप में चमकता एक लंबा-चौड़ा, धब्बों से भरा शरीर, उस झाड़ी के नीचे से निकलता है और दो छलांगों में उस नन्हे हिरण के बच्चे तक पहुँच जाता है। अगले ही पल वह मर जाता है, जबकि पैंथर उस छोटे से कांपते हुए शरीर पर घूरता और गुर्राता रहता है।

फिर हम एक ऐसा दृश्य देखते हैं जो जितना मार्मिक है उतना ही भव्य भी। हिरण के बच्चे की माँ, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, उसे बचाने के लिए आगे बढ़ती है। पैंथर उस नन्हे शव को छोड़कर हिरणी पर झपटता है, उसका गला पकड़ लेता है और उसे ज़मीन पर गिरा देता है। उसके खुर हरी घास पर अपनी मृत्यु-पीड़ा की आवाज़ निकालते हैं, जो उसके फटे हुए गले से बहते खून से पहले ही गहरे लाल रंग से रंगी हुई है।

मैं तुम्हें देखता हूँ जब तुम अपनी 10 गोलियों वाली स्प्रिंगफील्ड पिस्तौल को गुर्राते हुए पैंथर पर निशाना साधने के लिए उठाते हो, ताकि तुम उस हत्या का बदला ले सको जो अभी-अभी हुई है। लेकिन मैं अपना हाथ बढ़ाकर पिस्तौल की नली पकड़

लेता हूँ और तुम्हारा निशाना चूकने की कोशिश करता हूँ।

'गोली मत चलाओ, जॉन! यह जंगल का कानून है। पैंथर ने भोजन के लिए शिकार किया है, जानबूझकर नहीं।'

पैंथर ने मेरी आवाज़ सुनी, फिर हमें देखा। अगले ही पल वह गायब हो गया। लेकिन वह वापस आएगा।

दो

बेलुंडुर ओग्रे

बेलंदूर मैसूर राज्य के शिमोगा जिले में स्थित एक छोटा सा गांव है, जो एक पहाड़ी की ढलान पर बसा है और टैगार्थी गांव से लगभग तीन मील दूर है।

सदियों से मैसूर का यह हिस्सा बाघों का घर रहा है, जिनकी संख्या इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने अपने छोटे चचेरे भाइयों, अधिक चालाक लेकिन कहीं कम शक्तिशाली तेंदुओं को लगभग खत्म कर दिया था, जो कुछ समय पहले तक इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में घूमते थे। दरअसल, इन छोटी बिल्लियों ने अपने समय में तबाही मचाई थी। बाघों की तुलना में कहीं अधिक साहसी, चालाक और उनसे बचना कहीं अधिक कठिन था; वे छोटे होने के कारण बेहतर ढंग से छिप सकते थे; वे गांवों के आसपास आतंक मचाते थे और सूर्यास्त के बाद हर रात व्यवस्थित रूप से उन पर हमला करते थे, मुर्गियों, कुत्तों, बकरियों, भेड़ों और बछड़ों को समान रूप से तिरस्कार और भेदभाव के साथ उठा ले जाते थे।

वे मनुष्यों को शायद ही कभी नुकसान पहुंचाते थे जब तक कि वे खुद घायल न

हो जाएं, लेकिन उन दुर्लभ अवसरों पर जब वे इस अपराध के दोषी होते थे, तो उनके खिलाफ प्रतिशोध लेना मुश्किल था क्योंकि क्षेत्र के घने जंगलों द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाती थी, जो भारी मानसूनी बारिश से अच्छी तरह से सिंचित होते थे।

मेरी कहानी की शुरुआत में, बाघों का बोलबाला था, जबकि बेलुंदुर में एक जादूगर रहता था जो हर तरह के ताबीज़ और मंत्र बनाने में माहिर था। कहा जाता था कि ये ताबीज़ किसी प्रियजन को पाने में, या इसके विपरीत, किसी ऐसे व्यक्ति से छुटकारा पाने में विशेष रूप से कारगर थे जिनसे आप उतना प्यार नहीं करते थे। यह भी अफवाह थी कि ये नौकरी पाने या याचिका को सफल बनाने में भी बहुत प्रभावी थे।

अपनी अन्य क्षमताओं के अलावा, यह जादूगर मंत्रों और जादू-टोनों द्वारा जंगल को 'बांधने' की शक्ति के लिए प्रसिद्ध था, जिससे उस क्षेत्र में शिकार करने वाले किसी भी शिकारी को पूर्णतः असफलता मिलती थी। शिकार या तो उसकी राइफल के सामने प्रकट नहीं होता था; या यदि प्रकट होता भी था, तो राइफल नहीं चलती थी; या यदि चलती भी थी, तो कुछ गज की दूरी पर भी गोली शिकार को नहीं लगती थी। मैं इस व्यक्ति से कुछ वर्ष पूर्व मिला था, और मैंने अपनी पिछली कहानियों में से एक में उसके बारे में लिखा है। [1] अपने पेशे के अधिकांश लोगों की तरह, उसे थोड़ी चापलूसी पसंद थी। अन्यथा, मैंने उसे काफी मिलनसार पाया था और उसकी इस कमजोरी में मुझे कुछ भी गलत नहीं लगा था। आखिरकार, हम सभी को चापलूसी पसंद होती है।

लेकिन बेलंदूर के उस 'राक्षस' के बारे में, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ, ने अपना जीवन लगभग सामान्य तरीके से ही शुरू किया था - एक साधारण और हानिरहित बाघ के रूप में। अपने शुरुआती दिनों में उसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। जाहिर है, उसका ध्यान केवल चित्तीदार हिरण, सांभर और सूअर का शिकार करने और उन्हें खाने तक ही सीमित था, जो उस समय हर जगह बहुतायत में पाए जाते थे। फिर सरकार ने पशुपालन कार्यक्रमों को बढ़ावा देना शुरू किया, और जैसे ही समृद्ध चरागाहों की उपलब्धता बढ़ी, मवेशियों के झुंड लाए गए जो थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में बढ़ गए, जिससे जंगली हिरण और सूअरों को नुकसान हुआ जो पहले बिना किसी बाधा के चरते थे।

बाद में 'राक्षस' के नाम से मशहूर इस राक्षस ने जंगली जानवरों के मांस के साथ-

साथ उत्तम दर्जे के गोमांस के प्रति भी अपना आकर्षण विकसित कर लिया, और यह लगाव इतनी तेज़ी से बढ़ा कि उसने अन्य किसी भी प्रकार के मांस को त्याग दिया। वह मारता और खाता रहा, फिर खाता और मारता रहा, यहाँ तक कि उसने कई मवेशियों के झुंडों को मार डाला और अंततः ग्रामीणों को लगा कि कुछ किया जाना चाहिए।

भारतीय ग्रामीण असीम धैर्यवान होते हैं, और यह गुण उनकी पूर्ण उदासीनता, त्याग की भावना और ईश्वर की इच्छा से आने वाली किसी भी विपत्ति को स्वीकार करने की क्षमता को देखकर आसानी से समझा जा सकता है। इसलिए, जब मैं आपको बताऊँ कि अंततः ग्रामीणों का इस बाघ से मन भर गया और उन्होंने इसके उत्पात को रोकने का निश्चय कर लिया, तो आप समझ जाएँगे कि यह राक्षस वास्तव में हद पार कर चुका था। उन्होंने जाल बिछाकर उसे पकड़ने और फिर मार डालने का फैसला किया।

शिकार के रास्ते के बीचोंबीच एक गहरा आयताकार गड्ढा खोदा गया; इसके मुँह को पत्तियों और टहनियों से ढके पतले, आपस में गुंथे हुए बांसों से सावधानीपूर्वक छिपा दिया गया था, और गाँव के सबसे कम मूल्यवान बछड़े को चारा बनाकर गड्ढे के दूसरे छोर पर एक खूंटी से बांध दिया गया था। गड्ढे के दोनों ओर और उससे आगे घनी झाड़ियों से घिरे होने के कारण बाघ के लिए किसी भी अन्य दिशा से चारे तक सीधे पहुँचना असंभव था, जिससे केवल एक ही रास्ता खुला रह गया था।

सब कुछ योजना के अनुरूप हुआ और तीसरी रात बाघ गड्ढे में गिर गया।

अगली सुबह बेलंदुर गाँव के सभी निवासी, जिनमें तांत्रिक भी शामिल था, अपने पुराने दुश्मन पर खुशी मनाने और उस पर जलती हुई मशालें फेंकने के लिए इकट्ठा हुए, और फिर ऊपर से भाले से वार करके उसे मार डाला। जाहिर है, किसी के पास बंदूक नहीं थी, और क्रूरता का सवाल तो किसी के मन में आया ही नहीं। आखिर क्या यह वही बाघ नहीं था जिसने उनके इतने सारे मवेशियों को मार डाला और खा लिया था?

SKETCH MAP: OGRE AND GOWNDNORAI TIGERS
(Chapters 2 and 3)

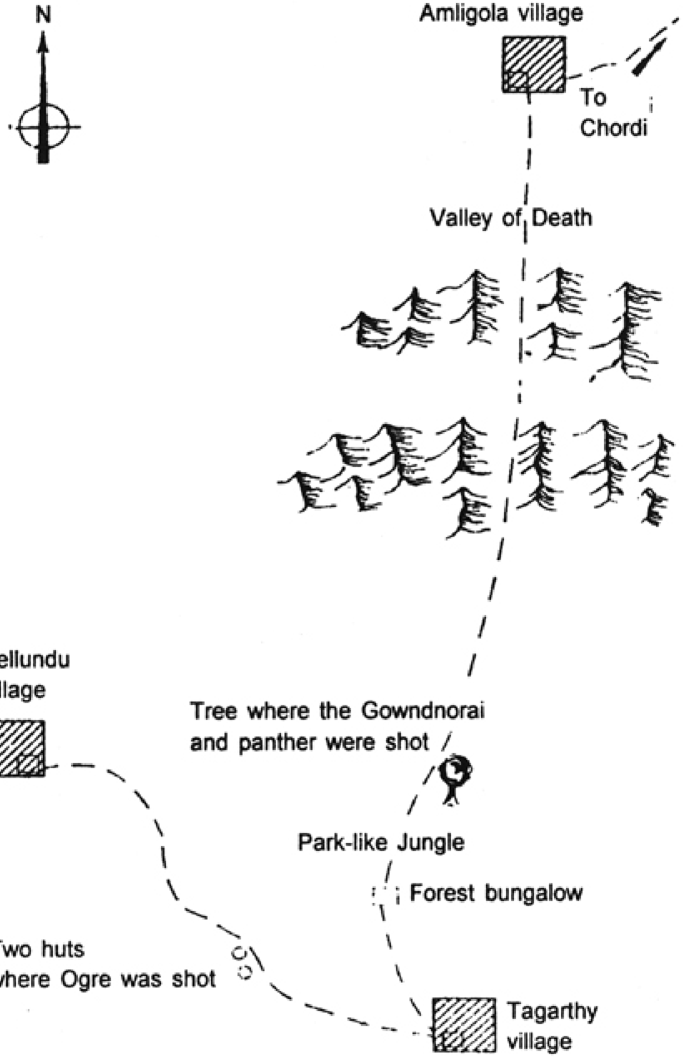

बेलंदुर के निवासियों के पास न केवल बंदूकें नहीं थीं, बल्कि उनके पास भाले भी बहुत कम थे। मुझे बाद में पता चला कि केवल दो लोगों के पास भाले थे, या भाले जैसी कोई वस्तु थी। एक भाला छोटा था, चार फुट से भी कम लंबा और सिरे पर

बिल्कुल कुंद। यह भाले से ज़्यादा लोहे की छड़ जैसा लग रहा था। दूसरा भाला असली था और स्थानीय मंदिर का था। कहा जाता है कि इसका इस्तेमाल ढाई सदी पहले किसी युद्ध में हुआ था, लेकिन अब यह लोहे की छड़ की तरह कुंद हो चुका था, क्योंकि इसका इस्तेमाल कई बार ज़मीन से शकरकंद खोदने के लिए किया गया था। खैर, दोनों हथियारों के डंडे गड्ढे की सतह से बाघ तक पहुँचने के लिए बहुत छोटे थे, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि दोनों के मालिक आश्वस्त थे कि अपने-अपने हथियार के एक ही वार से वे उस जानवर को मार सकते हैं।

कहा जाता है कि इस बात पर काफी बहस हुई कि पहले हथियार कौन चलाएगा। अंततः, हालांकि मुझे नहीं पता कि किस आधार पर, लोहे की छड़ वाले ने बाजी मार ली। उसने सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए अपना हथियार फेंका; जैसे ही वह उसके हाथ से छूटा, उसका कुंद सिरा मुड़ गया और हथियार का किनारा, कुंद सिरे की बजाय, बाघ के पार्श्व भाग पर एक धीमी सी आवाज के साथ जा लगा।

जैसा कि उम्मीद थी, बाघ ने इस तरह के व्यवहार को हल्के में नहीं लिया। उसने दहाड़कर अपनी चुनौती पेश की और अपने उत्पीड़कों को घूरकर देखा। जब दूसरे भालाधारी ने निराश बाघ को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और भाला चलाने की तैयारी की, तो वहाँ मौजूद भीड़ में हल्की हंसी गूंज उठी। 250 साल पुराना भाला अपने लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ा और उसका कुंद सिरा बाघ के पिछले हिस्से में धंस गया।

अब बेलुंदुर पूरी तरह निहत्था था! और राक्षस का गुस्सा भड़क उठा। अचानक मिली ऊर्जा के बल पर, वह उछलकर गड्ढे के किनारे तक पहुँच गया और अपने अगले पंजों से उसे टटोलने लगा। उसके पंजे किनारे तक पहुँचे, उसे पकड़ लिया और नरम मिट्टी में धंसा दिए। पिछले पंजे हवा में बेतहाशा लात मारते हुए गड्ढे की दीवारों से टकराए और जानवर को ऊपर की ओर खींच लिया। और अगले ही पल बाघ आज़ाद हो गया, नरक के किसी दानव की तरह गड्ढे के मुँह से बाहर कूद पड़ा, और पहले से कहीं ज़्यादा खतरनाक हो गया।

भीड़ में से केवल एक ही व्यक्ति उसकी स्वतंत्रता के मार्ग में खड़ा था; बाकी सब भाग चुके थे। बाघ अपने सामने खड़े व्यक्ति के ऊपर से छलांग लगाकर, चारों पैर फैलाकर पीछे की ओर लात मारता हुआ आगे बढ़ा, और उसके भयानक पंजों में से एक का पंजा उस व्यक्ति की खोपड़ी के पिछले हिस्से से टकराया, इससे पहले कि

वह भागने के लिए होश में आ पाता। यह केवल एक हल्की सी चोट थी, बाघ द्वारा लगाए गए बल को देखते हुए अपेक्षाकृत हल्की, क्योंकि यदि पंजा पूरी तरह से सिर पर लगता तो खोपड़ी अंडे के छिलके की तरह चकनाचूर हो जाती। लेकिन, पंजे के सिरे व्यक्ति की गर्दन के पिछले हिस्से की त्वचा में धंस गए, और बाघ के कूदने के दौरान उसके वजन ने बाकी का काम कर दिया।

फिर बाघ चला गया। वह आदमी जहाँ खड़ा था वहीं गिर पड़ा, लेकिन वह पूरी तरह जीवित था। उसकी खोपड़ी का पूरा हिस्सा, जो हड्डी से साफ-सुथरा अलग किया गया था, अब उसके चेहरे पर लटका हुआ था, और उसके लंबे बाल पीछे की बजाय आगे की ओर लहरा रहे थे। उस आदमी को मरने में तीन दिन लगे, क्योंकि आखिरी क्षण तक वह इस उम्मीद में जी रहा था कि उसकी खोपड़ी को वापस जोड़ दिया जाएगा। वह राक्षस का पहला शिकार था, हालाँकि यह अनजाने में हुआ था।

स्वाभाविक रूप से, घाव भरने के बाद बाघ और भी चालाक हो गया। उसके लिए कई तरह के जाल लगाकर चारा डाला गया, लेकिन बाघ ने उन्हें जानबूझकर अनदेखा कर दिया। इसके बाद उसने दिन दहाड़े, आमतौर पर दोपहर के समय, मवेशियों को मारा, जब सुबह चरने के बाद झुंड आराम कर रहे होते थे और उनके रखवाले झाड़ियों की छाया में सो रहे होते थे। जो लोग जाग रहे थे या घायल जानवर की हल्की चीख सुनकर जाग गए थे, उन्होंने पहले चिल्लाकर और पत्थर फेंककर बाघ को भगाने की कोशिश की। लेकिन बाघ ने जल्द ही एक चरवाहे पर झपट्टा मारकर और उसे बुरी तरह घायल करके उसकी इन कोशिशों पर विराम लगा दिया। हैरानी की बात यह है कि वह आदमी पूरी तरह से ठीक हो गया, हालांकि उसे जो सबक मिला वह काफी कारगर था। इसके बाद, बाघ को देखते या उसकी आवाज सुनते ही सभी चरवाहे भाग जाते थे, अपने जानवरों को उसकी दया पर छोड़कर।

बेलंदूर में हालात बद से बदतर होते चले गए। पशुपालक अब अपने पशुओं को चराने के लिए जंगल में नहीं छोड़ सकते थे, बल्कि उन्हें घर पर ही खिलाने का प्रयास करने लगे, और ज़ाहिर है, इसमें बहुत पैसा खर्च होने लगा। इसी के चलते, बेलंदूर से गोमांस की आपूर्ति कम होने से बाघ की भूख भी बढ़ गई, इसलिए उसने अपने कार्यक्षेत्र को बढ़ाकर टैगार्थी और आसपास के कुछ छोटे गांवों तक फैला दिया। मवेशी चुराने वाले के रूप में उसकी बहादुरी दूर-दूर तक फैलने लगी।

इसी तरह एक सज्जन व्यक्ति, जिन्हें हम श्री जॉनसन कहेंगे, को बाघ के बारे में

पता चला।

जॉनसन रेलवे में एक अधिकारी थे, जिनका हाल ही में भारत के किसी अन्य हिस्से से इस क्षेत्र में तबादला हुआ था, जहाँ बाघ नहीं पाए जाते थे। इस वजह से वे उस जानवर का शिकार करने के लिए बहुत उत्सुक थे, जिसकी पूरे इलाके में चर्चा हो रही थी। उनके पास राइफल थी, इसलिए वे कुछ दिनों की छुट्टी लेकर बेलंदूर के लिए निकल पड़े, जो रेलवे ट्रैक से लगभग सात मील दूर था। उन्हें उम्मीद थी कि इस दौरान उन्हें सफलता मिलेगी। और यहीं से मेरी कहानी में बूढ़े बुद्धियाह, जो एक तांत्रिक थे, का प्रवेश होता है।

यह सुनकर कि एक श्वेत व्यक्ति आया है और बाघ के बारे में पूछताछ कर रहा है, बुद्धिया ने अपना औपचारिक भगवा वस्त्र धारण किया, ऐसे अवसरों के लिए रखे अपने लंबे, गंदे नकली बालों को अपने सिर के मुकुट के चारों ओर लपेटा, अपने माथे पर खूब राख मली, जिसे उसने धार्मिक महत्व के सिंदूरी चिह्नों से सजाया, अपने गले में बड़े अंबर के लकड़ी के मोतियों की माला पहनी और तेल में भीगी हुई अपनी टेढ़ी-मेढ़ी छड़ी को हाथ में पकड़े हुए जॉनसन के सामने उपस्थित हुआ और अपनी सेवाएं देने की पेशकश करते हुए दावा किया कि यदि श्वेत व्यक्ति बाघ का शिकार करने में सफल होना चाहता है तो ये सेवाएं बिल्कुल अपरिहार्य हैं।

अब मामला सचमुच बहुत सीधा-सादा था। सामान्य अनुभव वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह स्पष्ट था कि बूढ़ा बुद्धिया कुछ रुपये कमाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उससे भी बढ़कर वह अपने गांव वालों को जादूगर के रूप में अपनी महानता से प्रभावित करने का मौका ढूंढ रहा था। वह उन्हें यह महसूस कराना चाहता था कि एक गोरे आदमी को भी मदद के लिए उसके पास आना पड़ता है। अगर जॉनसन ने थोड़ी सी मनोविज्ञान और सामान्य ज्ञान का इस्तेमाल किया होता, तो वह इन बातों को समझ जाता और बूढ़े को कुछ रुपये देकर उसका मन बहला देता। इसके बजाय, जॉनसन को गुस्सा आ गया, उसने जादूगर को अपने सामने से चले जाने को कहा, और जब बुद्धिया ने गुस्से में विरोध करना शुरू किया, तो जॉनसन ने उसकी गर्दन तोड़ने की धमकी देकर मामला और बिगाड़ दिया!

इसलिए, जादूगर गुस्से में वहां से चला गया: ग्रामीणों के बीच उसकी प्रतिष्ठा, जिसे बढ़ाने के लिए वह लगातार प्रयास कर रहा था, उस गोरे आदमी के शब्दों से बुरी तरह से गिर गई थी। उसे लगा कि उसके साथी उस पर चुपके से हंसेंगे, हालांकि उसे

अब भी पूरा भरोसा था कि वे उससे इतना डरते हैं कि खुलकर ऐसा नहीं करेंगे।

दूसरी ओर, ग्रामीणों को शर्मिंदगी महसूस हुई। हालाँकि उनमें से किसी को भी बुद्धियाह पसंद नहीं था, जिसने बचपन से ही उनका लगातार शोषण किया था, फिर भी वह उनका अपना जादूगर था। उन्हीं में से एक। एक गोरे आदमी द्वारा इस तरह से बात करना और पिटाई की धमकी देना, उनके जादूगर के प्रति और साथ ही साथ स्वयं उनके और पूरे गाँव के प्रति अनादर दर्शाता था। इस प्रकार, अपने जल्दबाज़ी भरे शब्दों से जॉनसन ने मित्र बनाने के बजाय चारों ओर शत्रु बना लिए थे। ग्रामीणों ने उसे वहीं छोड़ दिया और उससे कोई वास्ता रखने से इनकार कर दिया। न ही कोई उसे बाघ को फंसाने के लिए चारा बेचने या किराए पर लेने को तैयार था।

दृढ़ निश्चयी स्वभाव के जॉनसन ने स्थानीय असहयोग के बावजूद सफल होने का निश्चय कर लिया। वे वापस टैगार्थी लौट आए, जहाँ उन्होंने बेलंदूर में दिखाई गई सूझबूझ का इस्तेमाल करते हुए दो बूढ़े बैल खरीद लिए। चरवाहों को काम पर लगाकर उन्होंने इन दोनों जानवरों को बेलंदूर के बाहरी इलाके में ले जाकर एक नाले में बाँध दिया, जिसके बारे में कहा जाता था कि वहाँ बाघ अक्सर आता-जाता है; लेकिन चूंकि ये चरवाहे टैगार्थी के थे, बेलंदूर के नहीं, इसलिए उन्हें बाघ की गतिविधियों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी।

अगली सुबह जॉनसन और उसके चरवाहे चारे के पास गए। एक चारा गायब था। यह निश्चित रूप से बाघ द्वारा नहीं लिया गया था, क्योंकि नाले की रेतीली तलहटी में बाघ के कोई पदचिह्न नहीं थे, बल्कि कई मानव पदचिह्न थे। क्या ये पदचिह्न पिछले दिन उसके अपने आदमियों ने बनाए थे, या किसी और ने? दूसरे चारे को छुआ तक नहीं गया था।

जॉनसन का यह निष्कर्ष बिल्कुल सही था कि बेलुंदुर गांव के ग्रामीणों ने उसका पहला चारा चुरा लिया था। वह भरी हुई राइफल लेकर गांव में घुस गया, बैल वापस करने की मांग की और फिर पुलिस को सूचना देने की धमकी दी। इन सब बातों पर ग्रामीणों ने मासूमियत का ढोंग किया। उन्होंने दावा किया कि रेतीली खाई में उसने जो इंसानी पैरों के निशान देखे थे, वे उसके अपने आदमियों के थे जब उन्होंने चारा बांधा था और उससे इसे गलत साबित करने को कहा। जॉनसन की चोरों को गोली मारने की गंभीर धमकियों पर भी ग्रामीणों ने अनसुना कर दिया और मुस्कुराते रहे।

दूसरे चारे के भी गायब हो जाने के डर से जॉनसन ने अपने दो आदमियों को

उसके ऊपर मचान बनाने का आदेश दिया, जिस पर वह उसी दोपहर बैठ गया, शायद बाघ को पकड़ने की गंभीर उम्मीद से ज़्यादा अपने चारे को चोरी होने से बचाने के लिए। लेकिन अप्रत्याशित घटना घटी। मुझे बताया गया है कि बाघ दिन के उजाले में ही प्रकट हो गया। जॉनसन ने गोली चलाई, लेकिन वह जानवर को केवल घायल करने में सफल रहा, जो भाग गया।

अगले पूरे सप्ताह जॉनसन ने निडरतापूर्वक दृढ़ संकल्प के साथ बाघ की तलाश में जंगलों को छान मारा। कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आया; यहाँ तक कि उसके दो साथी भी यह कहकर उसके साथ जाने से इनकार कर गए कि यह बहुत खतरनाक है। अकेले ही, जॉनसन एक बार रास्ता भटक गया और उसे जंगल में रात बितानी पड़ी। अंत में, घोर निराशा के साथ, जॉनसन को बाघ को पकड़े बिना ही अपने कर्तव्य पर लौटना पड़ा।

उसके बाद कुछ समय तक सब शांत रहा। राक्षस प्रकट नहीं हुआ और बेलंदूर के ग्रामीणों को यह स्वीकार करना पड़ा कि उनके तमाम असहयोग प्रयासों के बावजूद, साहब ने उन्हें उस विपत्ति से छुटकारा दिला दिया था जो उनके पशुओं को भारी नुकसान पहुँचा रही थी। जादूगर बुद्धिह पहले से कहीं अधिक दुखी था। उसने अपने अभिमान और प्रतिष्ठा को और भी कम होते देखा, क्योंकि उसने शेखी बघारते हुए कहा था कि साहब बाघ को नहीं मारेंगे या मार नहीं सकते; फिर भी उन्होंने ऐसा किया और बेलंदूर को उस घृणित पशु-चोर से मुक्ति दिला दी।

इसलिए मवेशियों को प्रतिदिन चरने के लिए एक बार फिर जंगलों में ले जाया जाता था। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक कि अपरिहार्य घटना घटित नहीं हो गई!

एक दोपहर, जानवरों का एक झुंड गाँव की ओर तेज़ी से लौटा, लेकिन उनमें से एक सदस्य गायब था—और वह उन्नीस वर्षीय युवक भी गायब था जो उस सुबह जानवरों को चराने के लिए उनके साथ गया था। शाम तक किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। फिर लड़के के रिश्तेदारों को उसकी थोड़ी चिंता हुई, जबकि लापता गाय के मालिक को अपने कीमती जानवर की कहीं ज़्यादा चिंता होने लगी। अगली सुबह तलाशी में गाय मृत पाई गई: उसकी गर्दन एक बड़े बाघ ने बड़ी सफाई से तोड़ दी थी, जिसके पदचिह्न उस खेत में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे जहाँ उसे मारा गया था। सौ गज दूर, एक झाड़ी के नीचे, लापता युवक का शव मिला।

हालांकि, दोनों शवों में एक अंतर था: गाय को बाघ ने नहीं खाया था, जबकि

युवक के शरीर का आधे से अधिक हिस्सा बाघ खा चुका था। वही पुरानी कहानी फिर से सामने आ गई: एक निर्दोष बाघ घायल होकर और अपने हाल पर छोड़ दिए जाने के कारण आदमखोर बन गया था।

उसके बाद एक के बाद एक दुखद घटनाएँ घटती गईं और घटनाक्रम दोहराया गया। बेलुंदुर के लोग सूर्यास्त के समय अपनी झोपड़ियों में बंद हो जाते थे, जबकि मवेशियों को बाड़ों में भूखा रखा जाता था। बूढ़े बुद्धिया की प्रतिष्ठा अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच चुकी थी।

मानव शिकार की कमी के कारण बाघ ने अपना दायरा टैगार्थी और उससे भी दूर के गांवों तक फैला दिया, और तभी से उस जानवर को 'राक्षस' कहा जाने लगा। यह नाम दबी आवाज़ में, बंद दरवाजों के पीछे और केवल दिन के उजाले में ही बोला जाता था। अन्यथा, बाघ को पता चल जाता और वह उस व्यक्ति पर भयानक बदला लेता जिसने उसे बाघ कहने की हिम्मत की।

अंधेरा होने के बाद राक्षस सक्रिय हो जाता था! वह हर जगह घूमता था और बंद कमरे में भी कोई सुरक्षित नहीं रहता था। राक्षस, या उसका कोई जासूस, चमगादड़ या उल्लू के रूप में हवा में उड़ने वाली कोई बुरी आत्मा, या जंगल में रहने वाले कई शैतानों में से कोई भी, कही गई बातें सुन सकता था और उस खूंखार नरभक्षी तक खबर पहुंचा सकता था।

फिर तो इसके खिलाफ बोलने वाले व्यक्ति का सचमुच बुरा हाल हो गया! राक्षस द्वारा भयानक बदला लेने में बस कुछ ही समय बाकी था। उसका भाग्य तय हो चुका था और बचने का कोई रास्ता नहीं था। यही सर्वमान्य राय थी।

इस समय मेरे पुराने मित्र, टैगार्थी गाँव के चिकित्सा अधिकारी, डॉक्टर स्टेनली ने मुझे एक लंबा पत्र लिखा और यह कहानी सुनाई, साथ ही मुझे उस राक्षस के जीवन को समाप्त करने के प्रयास में शामिल होने का निमंत्रण दिया। इस डॉक्टर के पास केवल .12 बोर की शॉटगन थी और कोई राइफल नहीं थी। उन्होंने अपने युवा दिनों में कई बाघों का शिकार किया था, ठीक उसी तरह जैसे सैंटावेरी के पोस्टमास्टर डिक बर्ड ने किया था, जिनका उल्लेख मैंने एक अन्य कहानी में किया है। अब जब वे बूढ़े हो गए थे, तो उन्हें लगा कि उनकी पुरानी बंदूक, हालांकि अभी भी एक भरोसेमंद हथियार है, शायद आदमखोर बाघ के लिए पर्याप्त नहीं होगी।

तीन दिन बाद, अपनी स्टडबेकर कार से टैगार्थी पहुँचने के बाद, मैं उनसे उनके

औषधालय-सह-अस्पताल के सामने वाले कमरे में मिला। सबसे पहले उन्होंने एक शानदार भोजन और ढेर सारी चाय का आग्रह किया, जिसके बाद पाइप के धुएँ के बीच हमने लगभग तीन घंटे तक पुराने दिनों की बातें कीं। स्वभाव से मैं आमतौर पर धैर्यवान हूँ, लेकिन कभी-कभी अधीर हो जाता हूँ; अंत में मैंने उस भले डॉक्टर को याद दिलाया कि एक काम करना बाकी है। ज़ाहिर है, पहला कदम बेलुंदुर जाना और वहाँ से आगे की जानकारी जुटाना था।

स्टुडेबेकर को इस गाँव तक पहुँचने में बहुत मुश्किल हुई। रास्ता, जो हमेशा से खराब था, पिछली बारिश के बाद और भी बदतर हो गया था। मेरे बगल में बैठे डॉक्टर ने कहा कि हमें पैदल ही चलना चाहिए था। आखिरकार बेलंदूर पहुँचकर, मैंने जॉनसन की नासमझी के कारण हुई गड़बड़ी को जितना हो सके ठीक करने का प्रयास शुरू किया। मैं अपनी झोपड़ी में रूठे बैठे बुद्धियाह के पास गया, उससे अपने धार्मिक वस्त्र पहनने और मेरे लिए पूजा करने तथा अपने सभी ज्ञात मंत्रों का जाप करने का अनुरोध किया, ताकि मैं आदमखोर को मार गिराने में सफल हो सकूँ, और उसे दस रुपये आकस्मिक खर्चों के लिए दिए।

वह तुरंत खुश हो गया। देखते ही देखते वह बाज़ार में चला गया, पूरी तरह सज-धज कर, और वहाँ पहुँचते ही उसने मुझसे एक काले मुर्गे और 'अराक' नामक स्थानीय शराब की एक बोतल के लिए पाँच रुपये और माँगे। मुर्गे को मारकर, पकाकर वह खुद खाने वाला था, शायद जंगल की आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए, और अराक को भी बुद्धिया पीने वाला था, शायद उसी उद्देश्य से। बूढ़े ने कहा कि इसके बाद ही वह आदमखोर के विनाश के मंत्रों का उच्चारण करने की स्थिति में होगा। डॉ. स्टेनली और मैं, यह जानते हुए कि वह कैसी स्थिति होगी, ने सहमति जताने का नाटक किया।

मैंने पैसे सौंप दिए और कम से कम एक घंटे की और देरी के लिए खुद को तैयार कर लिया, क्योंकि मुर्गे के अधपका होने में इतना ही समय लगता, जबकि बुद्धियाह अपने मंत्रों का जाप करने के लिए अराक पीकर खुद को तैयार कर रहा था। लेकिन अगर जॉनसन द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई करनी थी, तो उस बूढ़े आदमी और खासकर बेलुंदुर गांव के लोगों को खुश रखना जरूरी था।

डॉक्टर और मैं बातें कर रहे थे, तभी उस बदकिस्मत काले मुर्गे को लाया गया, हमारी आँखों के सामने उसका वध किया गया, उसे उबालकर करी बनाया गया और फिर उस लालची बूढ़े जादूगर ने उसे चट कर लिया। बिना रुके ही उसने बोतल का

ढक्कन अपने मुँह से लगाकर सारा अराक पी डाला। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह इस प्रक्रिया में घुटकर मरा क्यों नहीं।

यह सब करने के बाद, जादूगर लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ। वह बुरी तरह नशे में था और मुश्किल से सीधा खड़ा हो पा रहा था। लाल आँखों और एक बेजान मुस्कान के साथ, उसने अपने शरीर पर कहीं से एक गंदे कपड़े के थैले से सूखी और मुड़ी हुई जंगली लताओं से बनी एक कंगन जैसी दिखने वाली चीज़ निकाली। मेरी राइफल मांगते हुए, उसने उस कंगन को राइफल के मुंह के सिरे से लेकर बैरल की पूरी लंबाई तक तीन-चार बार घुमाया। वह इतना नशे में था कि एक-दो बार उसका निशाना चूक गया, लेकिन मैंने चुपचाप बैरल के सिरे को इस तरह घुमाकर गलती सुधार ली कि कंगन उसके चारों ओर लिपट जाए।

मंत्र का अंत हो गया। बाघ का अंत निश्चित था! वह मेरी राइफल से मारा जाएगा! बूढ़े बुद्धिया के रूप में जंगल की आत्माओं ने खूब खाया-पिया था। हमारे चारों ओर घेरा बनाकर खड़े ग्रामीणों की भीड़, जो हर छोटी-छोटी बात पर नज़र रख रही थी, ने ज़ोर से यह आश्वासन दिया। खैर, मंत्र और उनके आश्वासन ठीक समय पर समाप्त हुए, क्योंकि अगले ही पल बूढ़े बुद्धिया कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़े।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सद्भाव बहाल हो गया था। बुद्धियाह का सम्मान फिर से बढ़ गया था, साथ ही ग्रामीणों और बेलुंदुर गांव का भी। डॉ. स्टेनली और मुझे 'अच्छे लोग' कहकर सम्मान दिया जाने लगा, जबकि उस राक्षस की गतिविधियां क्षण भर के लिए दब गईं। उस समय वह एक साधारण बाघ से ज्यादा कुछ नहीं था, जो गोली लगने का इंतजार कर रहा था।

अब अंधेरा हो चुका था, और स्टुडेबेकर में टैगार्थी वापस जाना किसी बुरे सपने जैसा था। फिर भी हम बिना किसी टूटे हुए एक्सल या स्प्रिंग के वहाँ पहुँच गए, लेकिन हमने तय कर लिया कि अब से हम पैदल ही जाएँगे और वापस आएँगे, बजाय इसके कि गाड़ी खराब होने का जोखिम उठाएँ, जो कि अगर हमने किस्मत को ज्यादा आजमाया तो होना ही था।

स्टैनली ने टैगार्थी से दो चारे प्राप्त किए, जिन्हें हमने अगले दिन बेलंदूर जाने वाले रास्ते के पास उपयुक्त स्थानों पर बांध दिया, क्योंकि आपको याद होगा कि मैंने आपको बताया था कि उस समय तक बाघ पूरे क्षेत्र में सक्रिय था। दोपहर के भोजन

के बाद हम सात मील चलकर उस गाँव तक पहुँचे, और वहाँ हमें बिना किसी कठिनाई के तीन और जानवर अतिरिक्त चारे के रूप में मिल गए। स्पष्ट रूप से, पिछली शाम बुद्धिया के साथ हमने जो छोटा सा तमाशा आयोजित किया था, उसका अच्छा प्रभाव पड़ा था। इन चारों को उन स्थानों पर बांधा गया, जिनके बारे में ग्रामीणों ने हमें बताया था कि वहाँ अक्सर बाघ आता-जाता रहता है।

समय हमारे लिए प्रतिकूल था और हम इतनी जल्दी में थे कि उस दिन बिछाए गए पाँचों चारे में से किसी एक के ऊपर मचान नहीं लगा पाए। यह मेरी सामान्य प्रक्रिया के विपरीत था, जिसमें मैं पहले मचान बनाता हूँ और फिर उसके सामने चारा बाँधता हूँ। इस प्रक्रिया के दो फायदे हैं: पहला, अगर कोई शिकार होता है, तो वह मचान के ठीक सामने होता है और उसे हटाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। दूसरा, मचान बनाते समय कोई शोर नहीं होता, जो शिकार होने पर होना लाज़मी होता। अगर बाघ आस-पास कहीं छिपा हो या घात लगाए बैठा हो, तो ऐसे शोर से उसे शक हो सकता है।

जब हम टैगार्थी वापस लौटे तो फिर से घना अंधेरा हो चुका था, हम आदमखोर के अचानक हमले से बचने के लिए अपनी टॉर्च से लगातार सतर्क थे, लेकिन हमें केवल एक पैंगोलिन ही मिला जो सूखे पत्तों के बीच भोजन की तलाश कर रहा था, जो इन जीवों के लिए सामान्य से बहुत पहले बाहर निकला था।

उस रात हमने जो पाँचों चारे बाँधे थे, उनमें से किसी को भी किसी ने नहीं छुआ। लेकिन तीसरे दिन सुबह देर से एक आदमी डॉक्टर के औषधालय में दौड़ता हुआ आया और बताया कि उसके चचेरे भाई को बाघ ले गया है। पीड़ित और उसकी पत्नी, हमारे सूचना देने वाले और उसकी पत्नी के साथ, बेलंदूर जाने वाले रास्ते पर थोड़ी ही दूरी पर अगल-बगल बनी दो झोपड़ियों में रहते थे। जब यह चचेरा भाई, जो सामान लेने के लिए टैगार्थी से लौट रहा था, अपनी झोपड़ियों के सामने इकट्ठा होकर बातें कर रहे उस छोटे से समुदाय के बाकी तीन सदस्यों की नज़र में आया, तब सूरज दोपहर के समय था। वे उसे पुकारने ही वाले थे कि वह ज़ोर से चिल्लाया और फिर हवा में गायब हो गया।

हमारे मुखबिर ने बताया कि उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और अपने चचेरे भाई की पत्नी के साथ यह पता लगाने के लिए निकल पड़ा कि आखिर मामला क्या है। उसकी पत्नी हाथ मलते हुए ज़ोर-ज़ोर से विलाप कर रही थी। उन्हें नरभक्षी का ख्याल भी नहीं आया था। बल्कि उन्हें शक था कि जंगल की किसी बुरी आत्मा ने उनके साथी

को मार डाला है।

जिस जगह से वह आदमी गायब हुआ था, वहाँ पहुँचकर वे पगडंडी की नरम रेत में बाघ के पदचिह्न देखकर भयभीत हो गए। डर के मारे आगे न बढ़ पाने के कारण वे वापस लौटने ही वाले थे कि तभी उस महिला की चीखें तेज़ होती सुनाई दीं, जिससे पास ही में अपने शिकार को खाने की कोशिश कर रहे आदमखोर बाघ को गुस्सा आ गया। बाघ ज़ोर से गुर्राया, जिसके बाद वह आदमी और उसकी पत्नी दोनों भाग गए। दोनों महिलाओं को झोपड़ी में खुद को बंद करने का मौका देने के लिए थोड़ी देर रुककर, वह आदमी घूम-फिरकर टैगार्थी आया और मुझे और डॉक्टर को घटना की जानकारी दी। उसने कहा कि अगर हम तुरंत आकर उसे गोली मार दें, तो वह राक्षस अभी भी वहीं होगा और उसके चचेरे भाई को खा रहा होगा।

राइफल, टॉर्च और गर्म कोट लेकर मैं अपने मुखबिर स्टैनली के साथ दौड़ पड़ा, जो अपने साथ .12 बोर की बंदूक और एक और टॉर्च लेकर आया था। उन दिनों मैं आज से छोटा था, और डॉक्टर तो और भी छोटा था, इसलिए हम दोनों झोपड़ियों तक ठीक-ठाक हालत में पहुँच गए, हालाँकि थोड़ी साँस फूल रही थी। कुछ मिनट बाद, डॉक्टर बीच में, स्टैनली उसके बाईं ओर और मैं दाईं ओर, हम उस जगह की ओर बढ़े जहाँ यह त्रासदी घटी थी, और हमने ठान लिया था कि हम आदमखोर सांप को उसके शिकार पर झकझोर देंगे।

बाघ को हमारे आने का आभास हमसे बहुत पहले ही हो गया था, क्योंकि हमें उसके खाने या हड्डियाँ टूटने की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। संभवतः उसने हमें उन दो झोपड़ियों के पास पहुँचते हुए देख लिया था, जो, जैसा कि मैंने बताया, उस स्थान के ठीक सामने थीं जहाँ उस राक्षस ने अपने शिकार को पकड़ा था।

जब हम उसके काफी करीब पहुँच गए, तो आदमखोर भालू गुर्राने लगा और उसकी चीखें भयानक रूप से तेज हो गईं। साफ था कि वह हमें भगाने पर तुला हुआ था। अगर हम अभी, जब हालात ठीक हैं, पीछे हट जाते, तो सब ठीक रहता। लेकिन अगर हम आगे बढ़ते रहे, तो या तो वह हम पर झपट पड़ेगा, या आखिरी क्षण में उसका साहस टूट जाएगा और वह भाग जाएगा।

स्टैनली और मैंने एक-दूसरे को सिर हिलाकर सहमति दी, बस एक पल के लिए हिचकिचाए। मैंने अपने बाएं हाथ से उस आदमी को पीछे धकेल दिया जिसने हमें बुलाया था, और हाथ से इशारा करके उसे चले जाने को कहा। फिर हम कंधे से कंधा

मिलाकर आगे बढ़े। हमें अभी तक बाघ दिखाई नहीं दे रहा था। लगातार दहाड़ें सुनाई दे रही थीं और हमारे सामने की झाड़ियाँ ज़ोर से हिल रही थीं। हम रुक गए, अपनी-अपनी बंदूकें और राइफलें कंधों पर रखे, उस हमले का इंतज़ार करते हुए जो होना ही था।

वह आया ही नहीं! आखिरी क्षण में आदमखोर बाघ ने मुठभेड़ टाल दी! वह इंसानों का पीछा करने और उन्हें मारने का आदी था। इससे पहले कभी किसी इंसान ने जानबूझकर उसका पीछा नहीं किया था और न ही उसके पास गया था। एक आखिरी दहाड़ के साथ, बाघ उस जगह से उछलकर दूर चला गया और मैं बस एक पल के लिए लाल-भूरे रंग के एक रूप को झाड़ी में भागते हुए देख पाया; फिर वह गायब हो गया। मैं गोली चला सकता था। मैंने ऐसा क्यों नहीं किया, यह मैं कह नहीं सकता, लेकिन मुझे अपनी इस गलती पर पछतावा हुआ।

बाघ सचमुच बहुत भूखा रहा होगा, क्योंकि हमने देखा कि उसने अपने शिकार का आधा से ज़्यादा हिस्सा चट कर लिया था, बस उसका सिर, हाथ, टांगें और कुछ पसलियाँ ही बची थीं। स्टेनली और मैंने एक-दूसरे से बात नहीं की। हम दोनों इतने अनुभवी थे कि जानते थे कि इंसान की आवाज़ बहुत दूर तक सुनाई देती है। इसके बजाय, मैंने चारों ओर देखा कि क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ मैं छिप सकूँ और उस आदमखोर बाघ के लौटने का इंतज़ार कर सकूँ, अगर वह बचे हुए टुकड़े खाने के लिए वापस आने का फैसला करे।

लेकिन उस राक्षस ने अपनी अगली हरकत से मेरे सारे विचार झटक दिए, जो जितनी अप्रत्याशित थी उतनी ही अचानक भी। शायद भूख थी, या स्वभाव से ही खराब स्वभाव, या फिर शायद इसलिए कि भागते समय उसने देखा कि भीड़ नहीं बल्कि सिर्फ दो इंसान उसका पीछा कर रहे थे। खैर, वह असाधारण जानवर अचानक रुक गया, मुड़ा और हमारी तरफ बढ़ने लगा, पास आते ही उसकी दहाड़ और तेज़ हो गई। ज़मीन उसकी आवाज़ की तीव्रता से कांप उठी, और उसकी बढ़ती हुई तीव्रता से संकेत मिल रहा था कि बाघ खतरनाक रूप से करीब आ रहा है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि इस पूरे समय हम उस जानवर को देख नहीं पा रहे थे क्योंकि वह झाड़ियों में छिपा हुआ था। हम बस झाड़ियों को ज़ोर से हिलते हुए देख पा रहे थे जैसे-जैसे वह करीब आता जा रहा था।

जो कुछ घट रहा था, वह उस सिद्धांत की पुष्टि करता है जिसे मैंने अपनी पिछली

कहानियों में बार-बार दोहराया है। जंगल में कोई निश्चित नियम नहीं होते और कोई भी दो जानवर एक जैसे नहीं होते। हमारी तरह वे भी अलग-अलग प्राणी हैं; वे अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं और अक्सर अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं।

एक बार फिर कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर, डॉक्टर और मैं उस आदमखोर बाघ की ओर मुड़े, जो हम पर हमला करके हमारी समस्या का समाधान कर रहा था। एक मिनट में बाघ को अपना असली रूप दिखाना ही था, और फिर सब कुछ खत्म हो जाता।

लेकिन वो पल कभी आया ही नहीं! क्योंकि राक्षस उम्मीद से कहीं ज़्यादा चालाक था। आखिरी क्षण में उसने अपना इरादा फिर बदल दिया और बिना खुद को दिखाए, हमारे और अपने बचे हुए भोजन के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, और पूरी ताकत से गुर्राता और दहाड़ता रहा। अब उस जानवर की चाल साफ़ थी। हमला करने ही वाला था कि उसका साहस फिर से टूट गया। अब उसका इरादा अपने शोर से हमें भगाना था।

फिर मुझे एक विचार आया। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि बाघ कितना चौकस था, उसकी याददाश्त कितनी तेज़ थी और उसकी सहज प्रवृत्ति कितनी सतर्क थी। उसने हम दोनों को आते हुए देख लिया था। यह तो स्पष्ट था। अब अगर हममें से एक चला जाए और दूसरा शिकार के अवशेषों के पास कहीं घास में छिप जाए, तो क्या बाघ को इस बात का पता चलेगा? क्या वह सोचेगा कि खतरा टल गया है और अपने शिकार की ओर लौट जाएगा? क्या वह पीछे हट रहे व्यक्ति का पीछा करके उस पर हमला करने के लिए ललचाएगा? क्या वह हमारी उस चाल को समझ जाएगा जिसमें हम पीछे रह गए व्यक्ति का पीछा करके उस पर पीछे से हमला करने की कोशिश कर रहे थे?

इस स्थिति में बहुत सी अनिश्चितताएं थीं और मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे वे बिल्कुल भी पसंद नहीं थीं। इसके अलावा, डॉक्टर के पास केवल एक शॉटगन थी। अगर मैं उन्हें वापस जाने और मुझे पीछे छोड़ने का सुझाव देता, तो संभव था कि बाघ उनका पीछा करने का फैसला कर ले, जिससे स्टेनली को भारी नुकसान होता। दूसरी ओर, अगर मैं डॉक्टर को पीछे छोड़कर खुद चला जाता और आदमखोर बाघ मुझ पर हमला करने के बजाय उन पर हमला कर देता, तो भी वही नुकसान होता। अंतिम

उपाय के रूप में, मैं डॉक्टर को अपनी राइफल दे सकता था और उनकी बंदूक ले सकता था।

सच कहूँ तो, मुझे वह आखिरी उपाय पसंद नहीं आया। आपात स्थितियों में मैं अपनी .405 पिस्टल का इस्तेमाल करता था। इसमें कोई शक नहीं कि स्टैनली को भी अपनी शॉटगन से ऐसा ही लगता होगा। अगर हम हथियार बदल लेते, तो हम दोनों ही अपने-अपने हथियार से अपरिचित होते, और शॉटगन तो किसी आदमखोर से मुकाबले के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थी।

ज़ाहिर है, यही विचार स्टैनली के मन में भी चल रहे थे और उसने मेरे लिए समस्या का समाधान कर दिया। उसने मुझे फुसफुसाकर कहा कि मैं छिप जाऊं, जबकि वह चला जाएगा। बिना कुछ बोले, मैंने अपनी राइफल उसकी ओर तान दी और उसकी बंदूक छीनने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन स्टैनली ने उसे मुझसे दूर कर दिया और अधीरता से झाड़ियों की ओर इशारा किया कि मैं छिप जाऊं।

बाघ अब रेंगता हुआ हमारे चारों ओर चक्कर लगा रहा था और लगातार गुर्राता और दहाड़ता जा रहा था। लगभग तीस फीट की दूरी पर एक झाड़ी थी, जिसकी ऊँचाई चार फीट से अधिक नहीं थी, और उसका आधार घास और हरियाली की घनी चादर से ढका हुआ था। वहाँ कोई और बड़ा पेड़ या चट्टान नहीं थी जो पनाह दे सके। मैं दबे पांव झाड़ी तक गया और उसके पीछे छिप गया, हथियार तैयार रखते हुए ज़मीन पर बैठ गया। हम तब तक इंतज़ार करते रहे जब तक बाघ उस दिशा के विपरीत दिशा में नहीं पहुँच गया जहाँ डॉक्टर को दो झोपड़ियों की ओर जाने वाले रास्ते पर वापस लौटना था। फिर मैंने उसे जल्दी से वहाँ से चले जाने का इशारा किया।

आदमखोर को यह बताने के उद्देश्य से कि वह जा रहा है और भोजन के लिए वापस आने का रास्ता साफ है, स्टेनली ने हल्की खांसी की और खुद से बात करते हुए धीरे-धीरे ट्रैक की ओर पीछे हटने लगा। मैंने उसे ध्यान से उस दिशा में देखते हुए देखा जहाँ आदमखोर अभी भी प्रदर्शन कर रहा था, उसकी .12 बोर की बंदूक तुरंत कार्रवाई के लिए तैयार थी, अगर जानवर हमला करता।

लेकिन स्टैनली ने बोलकर गलती कर दी थी। डॉक्टर की उम्मीद के मुताबिक, अब जब खतरा टल गया था, तो यह अनोखा जानवर अपने शिकार के पास लौटने के बजाय, एक बार फिर अप्रत्याशित काम कर बैठा। अपने शिकार के अवशेषों (और

संयोग से मेरे भी) के आसपास घूमकर, बाघ डॉक्टर के पीछे चलने लगा। इससे भी बुरी बात यह थी कि उसने दहाड़ना और गुर्राना बंद कर दिया था। साफ था कि अब यह आदमखोर अपना काम करने के इरादे से आया था। उस पल वह जो भी कर रहा था, या अगले पल जो भी करने वाला था, वह चुपचाप ही करना था। स्टैनली, जिसके पास पहले से ही सिर्फ एक बंदूक थी, अब इस बात से और भी लाचार होने वाला था कि उसे पता नहीं था कि आदमखोर किस दिशा से उस पर हमला करेगा।

इस विचार ने मुझे चिंतित कर दिया। जब मेरे दोस्त की जान उस समय गंभीर खतरे में थी, तब चुपचाप झाड़ी के पीछे बैठे रहना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। परिणामों पर विचार किए बिना ही मैंने बाघ के पीछे चुपके से जाने का फैसला किया। उस समय मेरे इस कृत्य से बड़ी मूर्खता और कोई नहीं हो सकती थी, और मैं आपको इसका कारण बताऊंगा।

कल्पना कीजिए कि डॉक्टर एक-एक कदम पीछे हट रहा है, उसकी शॉटगन दोनों बैरल में भरी हुई है और तुरंत इस्तेमाल के लिए तैयार है, उस दिशा में निशाना साधे हुए है जहाँ उसे लगता है कि बाघ चुपके से और बिना दिखे उस पर हमला करने आ रहा है। उसे नहीं पता कि मैं झाड़ियों में अपने ठिकाने से निकलकर उसके और बाघ के पीछे आ रहा हूँ। अब खुद को बाघ की जगह पर रखिए, गुस्से के बाद अब आपने अपना संयम वापस पा लिया है। आप धीरे और चुपचाप आगे बढ़ रहे हैं, उस दखल देने वाले इंसान का अंत करने पर तुले हुए हैं जिसने आपका पीछा करने की हिम्मत की है। साथ ही, आप जानते हैं कि आप आखिरी छलांग लगाने के लिए काफी करीब हैं, लेकिन आपकी अंतरात्मा आपको चेतावनी देती है कि ऐसा करना खतरे को न्योता देना होगा। और आपको नहीं पता कि एक दूसरा इंसान भी आपका पीछा कर रहा है। उन दोनों के पीछे मैं हूँ, उतनी ही सावधानी से आगे बढ़ रहा हूँ, मेरी विंचेस्टर शॉटगन तैयार है और बाघ की पहली झलक मिलते ही इस्तेमाल के लिए तैयार है। लेकिन मैं उसे या स्टेनली को नहीं देख पा रहा हूँ। मैं बस अपने सामने इधर-उधर झाड़ियों की हल्की सरसराहट सुन पा रहा हूँ, जैसे स्टेनली या बाघ अपनी सावधानी के बावजूद उनसे टकरा रहे हों। अंत में, यह मत भूलिए कि डॉक्टर और मेरे बीच की दूरी अब चालीस या पचास गज से अधिक नहीं हो सकती, और बाघ कहीं बीच में मौजूद है।

काश उस बाघ में थोड़ी अक्ल होती, तो उस दिन कितना मज़ा आता! उसे बस इतना करना था कि खुद को छिपा लेता और फिर दौड़ते हुए बाघ की तरह 'व्रूफ़! व्रूफ़!

व्रूफ़!' की दहाड़ लगाता। स्टेनली और मैं गोली चला देते। कोई न कोई अपने साथी को गोली मार देता। शायद किस्मत से—या बदकिस्मती से—हम एक-दूसरे को ही गोली मार देते। उन दिनों मैं आज के मुकाबले कहीं ज़्यादा आसानी से खाया जा सकता था! डॉक्टर भी, भले ही उससे हल्की-सी आयोडीन की गंध आती! और अखबारों की क्या सुर्खियाँ होतीं! 'आदमखोर के पीछे भागे शिकारी एक-दूसरे को गोली मारते हैं! आदमखोर दोनों को खा जाता है!'

मैं बाघ का पीछा करने में इतना मग्न था कि उस समय मुझे इन सब बातों का एहसास ही नहीं हुआ। आदमखोर बाघ, जिसे अपने पीछे आने का पता ही नहीं था, स्टैनली के पीछे लगातार लगा रहा; वहीं डॉक्टर, बाघ की धमकी भरी दहाड़ों के बाद छाई खामोशी से स्वाभाविक रूप से चिंतित था, क्योंकि बाघ के पीछे आने पर बीच-बीच में हल्की-सी सरसराहट सुनाई दे रही थी। वह सोच रहा था कि क्या वह हमले से पहले झोपड़ियों तक पहुँचने वाले रास्ते पर पहुँच पाएगा।

फिर कुछ ऐसा हुआ! डॉक्टर! डॉक्टर मौके पर पहुँच गए। बाघ ने दहाड़ते हुए सन्नाटा तोड़ दिया! कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन सब कुछ सुनाई दे रहा था, इसलिए मैं तुरंत समझ नहीं पाया कि आदमखोर डॉक्टर पर हमला कर रहा है या मुझ पर। डॉक्टर ने गोली चलाई और उनकी बंदूक से निकली गोलियां झाड़ियों के बीच से मेरे बेहद करीब आकर बिखर गईं। आवाज़ से भयभीत बाघ घबरा गया, मुड़ा और पूरी रफ्तार से मेरे पास से भाग निकला। मैंने बाघ को आते देखा, राइफल को कंधे पर रखा और लगभग बिल्कुल करीब से ट्रिगर दबा दिया।

स्टैनली ने कुछ मिनट बाद मुझे बताया कि मेरी गोली उसके सिर के बिल्कुल पास से गुज़री, बस कुछ इंच की दूरी से। उसने ज़ोर देकर कहा कि गोली उसके सिर के बाल भेदने से बस इसलिए बच गई क्योंकि वह गंजा था! अनजाने में ही उस राक्षस ने लगभग वह कर दिखाया जो वह तर्क शक्ति से नहीं कर पाया था। डॉक्टर और मैं बाल-बाल एक-दूसरे को गोली मारने से बच गए।

फिर भी हमें उम्मीद बाकी थी। हम दोनों को शिकार का अच्छा खासा अनुभव था। जब हमने ट्रिगर दबाया था, तब हम दोनों गोली चलाने के लिए पूरी तरह तैयार थे। दोनों ने बिलकुल नज़दीक से गोली चलाई थी। बाघ ज़रूर पास ही बुरी तरह घायल पड़ा होगा, शायद मर भी गया हो। हममें से किसी एक ने तो उसे कम से कम घायल किया ही होगा। उत्साह में हम इस बात को भूल गए कि मैंने स्टेनली की बंदूक से

निकली गोलियों की आवाज़ सुनी थी, जबकि उसने मेरी गोली की आवाज़ सुनी थी।

हमने दूर-दूर तक खोजबीन की, लेकिन खून का एक धब्बा भी नहीं मिला। न कहीं मरा हुआ या घायल बाघ दिखाई दिया, न उसकी आवाज़ सुनाई दी! तभी हमें सच्चाई समझ में आई। यह मानना भले ही कठिन था, लेकिन सच सामने था। हम दोनों चूक गए थे, हालाँकि राक्षस लगभग हमारे आमने-सामने आ गया था। स्टेनली बहुत उदास दिख रहा था। मुझे नहीं पता कि मैं कैसा दिख रहा था; लेकिन मुझे पता है कि मैं कैसा महसूस कर रहा था!

हम चुपचाप झोपड़ियों की ओर वापस चले गए, जहाँ छिपे हुए एक आदमी और दो महिलाओं को हमने सारी घटना बताई। टैगार्थी से आधा फर्लांग दूर ही थे कि निराशा से सुन्न हो चुका मेरा दिमाग फिर से काम करने लगा।

आम तौर पर, गोलीबारी के बाद बाघ लंबे समय तक उस जगह से दूर रहता है जहाँ गोलीबारी हुई थी। याद रहे, इस बाघ पर एक बार नहीं, बल्कि दो बार गोलीबारी हुई थी! इसलिए, सभी नियमों के अनुसार, उसे उस इलाके को छोड़ देना चाहिए था और वहाँ दोबारा नहीं दिखना चाहिए था। लेकिन क्या इसके विपरीत कोई छोटी सी संभावना थी? उस बाघ ने पहले ही दो मौकों पर अपना बेहद असामान्य स्वभाव दिखाया था। वह भागा और फिर मुड़कर वापस रेंगता हुआ आ गया। और जब स्टेनली के लिए अपने शिकार तक पहुँचने का रास्ता साफ था, तब भी उसने जानबूझकर उसका पीछा किया था। क्या वह एक बार फिर अपना अनोखा स्वभाव दिखाते हुए उस जगह पर लौटेगा जहाँ, कम से कम उसकी अंतरात्मा तो यही कहती है, वह दो बार बाल-बाल बचा था? इसकी संभावना 99 प्रतिशत थी। यानी बाघ के वापस लौटने की मात्र एक प्रतिशत संभावना थी!

यह ख्याल आते ही मैं थम गया। डॉक्टर भी रुक गए, सोचने लगे कि क्या बात है। मैंने उन्हें बताया। स्टेनली ने सोचते हुए अपनी भौंहें सिकोड़ीं और माथे पर शिकन डाली। फिर उन्होंने सिर हिलाया। लेकिन वह खुद भी इतने अच्छे शिकारी थे कि इस मौके को गंवाना नामुमकिन नहीं था। इसलिए हम वापस झोपड़ियों की ओर चल पड़े।

सुरक्षा के लिए एक झोपड़ी में बंद उस आदमी और दोनों महिलाओं को हमारी जल्दी वापसी देखकर आश्चर्य हुआ। जब हमने उन्हें बताया कि हम क्यों आए थे, तो वे सचमुच खुश हुए। लेकिन उन्होंने ईमानदारी से कहा कि उन्हें नहीं लगता कि हमारे सफल होने की कोई उम्मीद थी। उस आदमी का मानना था कि बाघ अब तक कई

मील दूर जा चुका होगा।

स्टैनली और मैं उस जगह पर वापस लौटे जहाँ आदमखोर बाघ के शिकार के अवशेष बिखरे पड़े थे। हमने उस जंगल के हिस्से से गुजरते हुए अत्यधिक सावधानी बरती, जहाँ डॉक्टर, बाघ और मैंने लुका-छिपी का अपना अजीब खेल खेला था। हमारे शिकार का न तो कोई निशान था और न ही कोई आवाज़।

हम सबमें राहत और निराशा का एक अजीब मिश्रण भर गया, राहत इस बात की कि राक्षस ने दोबारा हमला नहीं किया और निराशा इस भावना से कि वह शायद कभी वापस न आए।

मैंने छिपने की संभावनाओं का जो सर्वेक्षण किया था, वह भले ही जल्दबाजी में किया गया था, लेकिन उसमें संभावनाओं का सही-सही आकलन किया गया था। डॉक्टर के पीछे हटने के दौरान मैं जिस चार फुट ऊँची झाड़ी के पीछे खड़ा था, उसके अलावा छिपने की कोई और जगह नहीं थी। दिन के उजाले में आदमखोर बाघ से बचने के लिए उस झाड़ी के पीछे छिपना, जैसा कि मैंने पहले भी किया था, एक बात थी; लेकिन अंधेरा होने के बाद वहाँ टिके रहना बिलकुल अलग बात थी। बाघ, जो रात में देख सकता है, मुझे तुरंत देख लेगा जैसे ही वह अपने शिकार के बचे हुए हिस्से की ओर उस झाड़ी के ठीक सामने से छोड़कर किसी भी कोण से आएगा, जिसके पीछे मैं छिपा रहूँगा, जबकि मेरे लिए उसे देखना नामुमकिन होगा। इसके अलावा, अगर कुछ ही घंटे पहले दो बार गोली लगने के बावजूद वह वापस आ भी जाता है, तो आदमखोर बाघ निस्संदेह बेहद सावधानी से आएगा और मैं उसे सुन नहीं पाऊँगा। अंत में, उस छोटी सी झाड़ी के पीछे किसी भी तरह का आश्रय बनाना संभव नहीं था जिससे मेरी मौजूदगी का तुरंत पता न चल जाए।

मैं क्या कर सकता था? आदमखोर बाघ के वापस आने की उस छोटी सी संभावना को भी मैं छोड़ना नहीं चाहता था। आत्महत्या करना, और वह भी बाघ के जबड़ों में सबसे दर्दनाक तरीके से, तो मैं और भी ज्यादा अनिच्छुक था।

हम चुपचाप इस मामले पर विचार करते रहे और कोई हल निकलता नहीं दिख रहा था, तभी अचानक डॉक्टर को एक विचार आया। क्या पास की झोपड़ियों में रहने वाले उस आदमी और दो महिलाओं की मदद से, ठीक उसी जगह पर एक संकरा गड्ढा खोदना संभव नहीं होगा जहाँ मानव अवशेष बिखरे हुए थे? वह उस गड्ढे में छिप जाएगा जो उसे छुपाने के लिए काफी चौड़ा और गहरा होगा, बाघ के लौटने का

इंतजार करेगा और फिर उसे बिल्कुल करीब से गोली मार देगा।

इस योजना को अमल में लाने में कई बाधाएँ आईं। पहली बाधा यह थी कि बाघ को गड्ढा दिख जाए और वह भाग जाए; इससे भी बुरी बात यह थी कि बाघ उसकी जाँच-पड़ताल करने का फैसला कर ले। दूसरी बात यह थी कि गड्ढे में छिपा आदमी बाघ से छिपा हुआ था, लेकिन बाघ भी उस आदमी से छिपा हुआ था, जिसे बाघ पर गोली चलाने के लिए सीधा खड़ा होना पड़ता। इस दौरान बाघ उसे देख लेता, मानो वह ज़मीन से बाहर निकल रहा हो। ऐसा होने पर बाघ डर तो जाता, लेकिन साथ ही साथ बहुत गुस्सा भी हो जाता। इसके बाद क्या होता, यह इस बात पर निर्भर करता कि ऊपर बताई गई प्रतिक्रियाओं में से कौन सी हावी होती है।

खैर, इसके बारे में और सोचने का कोई फायदा नहीं था। मौका और जोखिम उठाना ही पड़ेगा, नहीं तो पूरी योजना रद्द करनी पड़ेगी। समय बीत रहा था और अब दोपहर के 3 बज चुके थे। हमें जल्दी काम करना होगा। हम जल्दी से झोपड़ियों की ओर वापस भागे, जहाँ रहने वालों ने खुशी-खुशी हमारी मदद करने की पेशकश की, लेकिन बताया कि उनके पास खोदने के लिए किसी भी तरह के औजार नहीं हैं। डॉक्टर, जो गाँव के चिकित्सक के रूप में काफी प्रभावशाली थे,

इस समस्या का समाधान टैगार्थी के पास तुरंत लौटकर किया गया, जहाँ से वह अविश्वसनीय रूप से कम समय में छह सहायकों के साथ वापस आया। इनमें से दो के पास कुल्हाड़ी, दो के पास लोहे की छड़ें और दो के पास बड़ी-बड़ी टोकरियाँ थीं जिनमें खोदी गई मिट्टी के सभी अंशों को हटाया जा सके। पहले के तीन सहायकों और हमारे साथ, हम ग्यारह लोग काम पर लग गए, जिसके परिणामस्वरूप आश्चर्यजनक रूप से जल्दी ही गड्ढा खोद दिया गया और सारी ढीली मिट्टी हटाकर दूर फेंक दी गई।

मुझे पता था कि योजना के जनक होने के नाते, स्टेनली ने खुद बैठने के लिए गड्ढा तैयार किया था। मुझे यह भी पता था कि कितना भी समझाने पर भी वह नहीं मानेगा। अगर मैं उसे यह समझाने की कोशिश करता कि उसकी शॉटगन इतने खतरनाक शिकार के लिए कारगर हथियार नहीं है, तो वह जवाब देता कि इतनी नज़दीकी दूरी पर तो यही सही हथियार है। और मैं उसके दावों की सच्चाई को नकार भी नहीं सकता था, क्योंकि वास्तव में, बिल्कुल नज़दीकी दूरी पर .12 बोर की बंदूक के अपने फायदे होते हैं। इसलिए मैंने एक बार के लिए निष्क्रियता को स्वीकार कर लिया और टैगार्थी में रात बिताई।

मेरे साथ रवाना होने से पहले हमारे सहायक अपना औजार समेट ही रहे थे कि किस्मत ने एक बार फिर इस विचित्र घटना में अपना खेल खेला। दो आदमी अचानक हमारे सामने आ गए, जो डॉक्टर की तलाश में टैगार्थी से दौड़ते हुए आए थे। एक गांव का पटेल था, जो इतने ज़िम्मेदार पद के लिए काफी युवा था; दूसरा उसका नौकर था। पटेल ने बताया कि उसकी गर्भवती पत्नी कुएं से पानी का घड़ा लाते समय फिसलकर गिर गई। उसका गर्भपात हो गया है और उसे बहुत खून बह रहा है। डॉक्टर को तुरंत आना चाहिए।

जब वह बोल ही रहा था, तभी उस युवक ने स्थिति का सारांश समझ लिया और महसूस किया कि स्टेनली शेर का सामना करने के लिए तैयार हो रहा है। इसलिए अपनी बात को और प्रभावी बनाने के लिए, उसने ज़ोर-ज़ोर से विलाप करना शुरू कर दिया कि डॉक्टर, जो उसका सबसे अच्छा दोस्त है, उसकी पत्नी की जान बचाने के लिए तुरंत उसकी मदद के लिए आए, और साथ ही उसने उस महिला को हठी बताया।

हे दासी! उसने कितनी बार उसे वज़न उठाने से मना किया था, खासकर कुएँ से पानी का घड़ा लाने से। क्या वह गाँव का मुखिया नहीं था? क्या उसके पास इस काम के लिए पर्याप्त नौकर नहीं थे? फिर भी अपनी ज़िद्दीपन में वह कभी उसकी बात नहीं सुनती थी। अब यही नतीजा निकला। और बाघ की चिंता छोड़ो; क्या उसकी पत्नी का जीवन उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण नहीं था?

स्टैनली ने मेरी तरफ देखा, उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी। फिर उसने प्यार से मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया।

'शुभकामनाएं, एंडी,' उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'और कृपया सावधान रहना। क्या तुम मेरी बंदूक का इस्तेमाल करना चाहोगे?'

'धन्यवाद, डॉक्टर,' मैंने जवाब दिया, 'आप जानते ही हैं। बूढ़ी विनी से काम चल जाएगा।'

एक मिनट के भीतर ही स्टैनली और समूह के बाकी सदस्य, जिनकी संख्या बढ़कर बारह हो गई थी, नज़रों से ओझल हो गए। मैं मृत व्यक्ति के अवशेषों के साथ अकेला रह गया।

शाम ढल रही थी और एक पल भी गंवाने का समय नहीं था। मैंने तैयार किए गए गड्ढे में प्रवेश किया, तल पर बैठ गया और ऊपर आसमान के एक वृत्त को देखने लगा।

अपनी भरी हुई और तैयार विंचेस्टर पिस्तौल को दाहिनी जांघ से सटाकर और फोरसाइट गार्ड को मेरे सामने वाले गड्ढे की दीवार से टिकाकर, हमने स्टैनली की .12 बोर बंदूक को एक विशेष स्थिति में मापकर यह सुनिश्चित कर लिया था कि उसका अगला सिरा जमीन से ऊपर दिखाई न दे।

जिस योजना को बनाने और उसे अंजाम देने की जल्दबाजी और उत्साह में, जो अब मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगी थी कि काफी अजीब थी, हम इस बात को भूल गए थे कि गड्ढे के अंदर बहुत गर्मी होगी। आसपास की मिट्टी दिन भर सूरज की किरणों के संपर्क में रही थी, हवा अंदर नहीं जा पा रही थी, और मेरा शरीर गड्ढे के किनारों के बिल्कुल करीब होने के कारण, हवा का संचार कहीं भी नहीं हो पा रहा था। मुझे जल्द ही बहुत पसीना आने लगा।

सौभाग्य से उन दिनों टैगार्थी के आसपास या मैसूर राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित किसी भी जिले में जंगली हाथी नहीं थे। वे ऐसे दिन थे जब सैकड़ों बाघ घूमते थे, लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं और मांसाहारी जानवर दुर्लभ हो गए हैं, लेकिन अपने जंगली रूप में 'जंबो' ने उन जंगलों में अपना विचरण बढ़ा दिया है और हाथियों के झुंडों ने अब वहाँ अपना घर बना लिया है, जहाँ कभी कोई हाथी नहीं हुआ करता था।

मुझे याद है कि उस गड्ढे के अंदर सन्नाटा पसरा हुआ था और रात को सोने के लिए बैठते हुए मोर, जंगली मुर्गे और अन्य पक्षियों की चहचहाहट भी मुश्किल से सुनाई दे रही थी। आदमखोर बाघ की किसी हल्की सी आवाज़ से भी उसके आने की आहट सुनने की उम्मीद करना नामुमकिन था। मैं उसे तभी सुन पाता जब वह पास में दहाड़ता या गुर्राता, और वह राक्षस ऐसा करने वाला नहीं था—कम से कम मुझे यही लग रहा था, जब तक कि मुझे याद नहीं आया कि बाघ ने कुछ ही घंटे पहले ठीक ऐसा ही किया था। काश वह चुपचाप आने के बजाय फिर से ऐसा ही करता!

लगभग अंधेरा हो चुका था जब मेरे सिर के ऊपर आकाश के घेरे को पार करते हुए एक लंबी काली आकृति चुपचाप गुजरी। एक नाइटजार पक्षी, पंख फैलाए, उस स्थान के ऊपर नीची उड़ान भर रहा था, जाहिर तौर पर उन कीड़ों को खाने की संभावना तलाशने के लिए जो पहले से ही मानव हड्डियों से लटके हुए मांस के टुकड़ों पर भोजन करने के लिए इकट्ठा हो रहे थे और बाघ के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार के शव के कुछ हिस्सों को खा रहे थे। मैं नीली मक्खियों की भिनभिनाहट सुन सकता था जो मेरे

सिर के ऊपर के छेद के ऊपर से उड़कर उस गंदगी पर बैठ रही थीं, जबकि सड़ते हुए मांस की दुर्गंध, जो दिन भर धूप में तपते रहने के कारण और भी बढ़ गई थी, जमीन से चिपकी हुई और एक अदृश्य, घिनौने तरल की तरह छेद में बहती हुई प्रतीत हो रही थी।

क्या बाघ आएगा? क्या वह तुरंत खाना शुरू कर देगा? या उसे कुछ असामान्य होने का आभास हो जाएगा? हो सकता है वह दूर किसी झाड़ी की आड़ से हमें देख रहा हो। हो सकता है उसे उसी क्षण पता चल गया हो कि उसका एक कट्टर दुश्मन, एक आदमी, कहीं जमीन में छिप गया है। अब बाघ के लिए उस दुश्मन को खोदकर निकालने और खा जाने का बेहतरीन मौका होगा। यह सोच बिल्कुल भी उत्साहजनक नहीं थी!

ऊपर जहाँ अंडाकार आकाश फैला हुआ था, वहाँ अब दो तारे टिमटिमाते हुए मुझ पर पड़ रहे थे और मैं समझ गया कि रात हो चुकी है। वे ऊपर इतने शांत और निर्मल प्रतीत हो रहे थे मानो नीचे गड्ढे में मेरी दयनीय स्थिति से बेखबर हों। मेरे विचार उन्हीं तारों पर केंद्रित हो गए और मैं सोचने लगा कि पृथ्वी के अन्य दूरस्थ कोनों में उस क्षण घट रही अन्य त्रासदियों पर भी वे तारे इतनी निष्पक्षता से टिमटिमा रहे होंगे।

अगले ही पल, वे दोनों तारे एक अशुभ संकेत देने लगे। वे दो क्रूर आँखों में बदल गए जो शत्रुतापूर्ण प्रत्याशा से मेरी ओर घूर रही थीं। किस बात की?

मैंने खुद को इस निराशाजनक विचार से मुक्त करने और कुछ और सोचने के लिए मजबूर किया। यह आश्चर्यजनक है कि खतरे में होने पर, जैसा कि मैं उस समय था, मन में कितने अजीब और अक्सर अप्रासंगिक विचार आते हैं। शायद यह प्रकृति का घबराहट से बचाव का तरीका है। मैंने सोचा कि क्या स्टेनली पटेल की पत्नी की जान बचा पाएगा।

तभी मैंने पहली बार वह आवाज सुनी: धीमी लेकिन स्पष्ट रूप से भारी सांस लेने की आवाज।

यह ज़रूर बाघ होगा! इसने मुझे ढूंढ लिया था और मेरे छिपने की जगह से मुझे बाहर खींचने के लिए पेट के बल रेंग रहा था। अनायास ही मेरा हाथ राइफल की ओर बढ़ गया। धातु और लकड़ी का स्पर्श, उस भयानक गड्ढे में हर चीज़ की तरह गर्म, मेरे मन को बहुत सुकून दे रहा था।

आवाज कुछ देर के लिए बंद हो गई। फिर अचानक एक तेज फुफकार सुनाई दी,

और फिर सन्नाटा छा गया। क्या यह कोई पैंथर गुजर रहा था?

मैंने पहले ही बताया है कि इस इलाके में तेंदुओं की संख्या बहुत कम थी क्योंकि बाघों ने उन्हें खाकर यहाँ से भगा दिया था। फिर भी, यहाँ-वहाँ एक-दो तेंदु दिख जाते थे, और हो सकता है कि कोई तेंदुआ संयोग से वहाँ से गुजर रहा हो और उसकी नज़र शिकार पर पड़ गई हो, और वह चुपके से आगे बढ़कर उसका एक टुकड़ा छीन ले। तेज़ साँसें और फुफकार की आवाज़ निश्चित रूप से किसी तेंदु की ही हो सकती है, जो बाघ के शिकार को चुराने के इरादे से आया हो।

काफी देर तक मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर एक धीमी, घिसने जैसी आवाज़ आई, मानो मेरे सिर के ऊपर ज़मीन पर कुछ सरक रहा हो। क्या कोई बड़ा साँप इसका कारण हो सकता है? कोई हमाद्र्याद? इन जंगलों में, जहाँ की वनस्पति और जंगल दक्षिण के जंगलों से अलग, 'नम' किस्म के थे, ऐसे कई साँप पाए जाते थे।

सन्नाटा छा गया, मैं कान लगाकर हल्की से हल्की आवाज़ सुनने की कोशिश कर रहा था और आँखें ऊपर बने छेद की धुंधली रोशनी को तब तक घूरती रहीं जब तक कि उनमें दर्द नहीं होने लगा। दोनों तारे अब भी मुझ पर टिमटिमा रहे थे, लेकिन तिरस्कार से या उपहास से, यह मैं नहीं जानता था। मैंने देखा कि वे ऊपर बने वृत्त के किनारे की ओर खिसक गए थे और जल्द ही मेरी नज़रों से ओझल हो जाएँगे, जिससे पता चलता था कि जब मैंने उन्हें पहली बार देखा था तब से समय बीत चुका था। मुझे उनकी संगति की कमी खलेगी और तब मैं सचमुच अकेला हो जाऊँगा। क्या उनकी जगह दूसरे तारे ले लेंगे, मैंने सोचा?

यही विचार मेरे मन में चल रहा था कि आखिरकार सन्नाटा टूट गया। एक ज़ोरदार चटकने की आवाज़ आई और आदमखोर उस हड्डी को कुतरने लगा जिसे उसने अभी-अभी तोड़ा था।

भोजन करते हुए बाघ की आवाज़ उसके मूड को दर्शाती है। आमतौर पर यह अत्यंत संतुष्टि का भाव होता है, और भोजन के दौरान चबाने, कुतरने, मांस को फाड़ने और चीरने की आवाज़ें लगातार आती रहती हैं। यदि दूसरा बाघ मौजूद हो, या शिकारी बाघिन अपने शावकों के साथ हो, तो बहुत गुर्राहट और लड़ाई होती है, साथ ही दूसरे बाघ या शावक के बहुत करीब आने पर धमकी भरे गुर्राने की आवाज़ें भी आती हैं। माँ का प्यार बहुत गहरा होता है—और ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ बाघिन ने अपने शावकों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया है—लेकिन खाने के समय, सहज प्रवृत्ति

बाघिन को बताती है कि भोजन को जल्दी साझा नहीं करना चाहिए, और उसे अपने साथी, या यहाँ तक कि अपने शावकों को भी पास आकर बचा हुआ भोजन खाने देने से पहले पेट भरकर खाने के लिए प्रेरित करती है।

मेरे ऊपर मंडराता बाघ गुर्राने लगा। तब मुझे समझ आ गया कि वह अकेला नहीं हो सकता। शायद उसके साथ उसके बच्चे हों, या शायद कोई दूसरा बाघ भी हो। स्थिति बेहद जटिल थी और मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा पेचीदा। शाम को जब स्टैनली के मन में गड्ढे में बैठने का विचार आया था, तब हममें से किसी ने भी इस संभावना पर विचार नहीं किया था।

मैंने आगे क्या करना है, इस बारे में बहुत सोचा। ज़ाहिर है, बाघ पर निशाना लगाने के लिए, मुझे पहले उसे छेद के किनारे से झाँककर देखना होगा और फिर राइफल को छेद से बाहर निकालकर ज़मीन पर रखकर निशाना साधना होगा। इस पूरी प्रक्रिया में काफ़ी हलचल करनी पड़ेगी; शायद कोई आवाज़ भी निकल जाए; राइफल ज़मीन से टकरा सकती है। चरता हुआ जानवर मुझे सुन लेगा और मेरे हथियार को निकालने से पहले ही हमला कर देगा। अगर बाघ का मुँह दूसरी तरफ़ हो, तो शायद उसकी नज़र से बचने की थोड़ी सी उम्मीद हो सकती है।

लेकिन वहाँ एक दूसरा बाघ भी मौजूद था। अगर मेरे सिर और कंधों को, और फिर राइफल को ज़मीन से निकलते हुए देख लेते, तो शावक भी भेद खोल देते। यह सोचना तो कल्पना और भाग्य पर बहुत ज़्यादा निर्भर था कि मेरे ऊपर मौजूद सभी जानवर मेरी तरफ पीठ करके गलत दिशा में देख रहे होंगे। और अगर मेरे ऊपर दो बाघ हों, तो उनमें से आदमखोर कौन होगा? यह तो एक बेतुका सवाल है: ज़ाहिर है, जो खा रहा होगा वही। लेकिन क्या दोनों बाघों में आदमखोरी की आदत थी, या सिर्फ़ एक में? मुझे गलत बाघ को नहीं मारना चाहिए। इसलिए, कोई जोखिम न लेते हुए मुझे दोनों को गोली मारनी होगी।

दूसरा विकल्प यह था कि चुपचाप गड्ढे में बैठा रहूँ, जानवरों को अपना भोजन समाप्त करने दूँ और फिर उन्हें अपने काम पर जाने दूँ, और फिर दिन समाप्त कर दूँ। लेकिन मैं यहाँ आदमखोर बाघ को मारने आया था; उससे छिपने नहीं। मैंने उस आदमी के बारे में सोचा जिसे उसने मारा था और अब खा रहा था। जब स्टैनली और गाँव वाले सुबह आकर देखेंगे कि ज़मीन बाघ के पैरों के निशानों से ढकी है, उस आदमी के टुकड़े पूरी तरह से खा लिए गए हैं, और मैं गड्ढे में छिपा हुआ हूँ, तो वे मेरे

बारे में क्या कहेंगे?

मैंने मन ही मन कहा, "चलो शुरू करते हैं," और एक-एक मिलीमीटर करके, अगर इतनी धीमी गति से चलना सचमुच संभव हो सकता है, तो मैंने अपने पैरों को सहारा देने के लिए सही जगह पर रखना शुरू किया। फिर धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, मैंने खुद को ऊपर उठाना शुरू किया, अपने सिर को ज़मीन के स्तर तक लाने की कोशिश की। इसमें ही काफी समय लग गया, क्योंकि मुझे ज़रा सी भी आवाज़ नहीं करनी थी, और इतनी देर तक घुटनों के बल बैठने से मेरी जांघें और टांगें अकड़ गई थीं। बाघ खाना खाता रहा, बीच-बीच में गुर्राता और दहाड़ता रहा ताकि दूसरे बाघ को, या शायद उसके शावकों को, दूर रख सके।

अंततः मैं घुटनों और पंजों के बल आ गया और अपने दोनों हाथों को नीचे की ओर फैलाकर अपनी फैली हुई उंगलियों पर अपना वजन टिकाने की कोशिश की। फिर बहुत धीरे-धीरे मैंने खुद को ऊपर उठाना शुरू किया।

समय बीतता जा रहा था और मेरे हाथों और पैरों पर पड़ने वाला तनाव दिखने लगा था। लेकिन मुझे जल्दी नहीं करनी चाहिए। अब भी, जैसे-जैसे मेरे कान ऊपर की सतह के करीब आते गए, बाघ की दहाड़ें और तेज़ होती गईं। मैं डरने लगा था।

अपने वजन को संभाले रखने के लगातार तनाव से मेरे हाथ कांपने लगे थे, तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरा सिर लगभग ज़मीन के स्तर तक पहुँच गया है। मैं और देर नहीं कर सकता था, क्योंकि अगर बाघ या बाघ मेरी तरफ देख रहे होते तो वे मुझे देख लेते, जबकि मैं उन्हें नहीं देख पाता। इसलिए मैंने जल्दी से अपना सिर ऊपर उठाया, जब तक कि मेरी आँखें ज़मीन के स्तर तक नहीं पहुँच गईं।

मेरे सामने एक भयानक दृश्य प्रकट हुआ। सौभाग्य से, इतने लंबे समय तक गड्ढे के अंधेरे में बैठे रहने के कारण मेरी आँखें अँधेरे की आदी हो गई थीं, इसलिए मैं देख सका कि कुछ ही फीट की दूरी पर, एक विशालकाय बाघ पेट के बल लेटा हुआ था और अपने अगले पंजों के बीच पकड़े हुए शिकार के किसी हिस्से को चबा रहा था। इससे भी बुरा यह था कि एक और आकृति, जो पूरी तरह से फैली हुई थी, मुझसे थोड़ी दूर और शिकार कर रहे बाघ से कुछ फीट की दूरी पर, उसके सामने थी और चिंतित होकर देख रही थी कि बाघ कैसे एक के बाद एक निवाला निगल रहा है। यह दूसरा बाघ, जो पहले बाघ के सामने था, मेरी ओर भी देख रहा था और मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा ज़मीन से बाहर निकलते हुए देखना उसके लिए असंभव नहीं था।

उसने हैरानी से गुर्राया और झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। मैं एक खिलौने की तरह अपने बिल में घुस गया, अपनी राइफल उठाई और ऊपर की ओर देखा, यह उम्मीद करते हुए कि शायद एक या दोनों बाघ बिल के मुहाने पर हमला कर रहे हों। मैं सोच रहा था कि चुपचाप बैठा रहूँ या जल्दी से खुद को और राइफल को ज़मीन पर उठाकर गोली चलाने का जोखिम उठाऊँ, लेकिन मुझे याद आया कि बाहर एक नहीं बल्कि दो बाघ थे। इसलिए मैंने डर के मारे अपना इरादा बदल दिया और चुपचाप बैठे रहने का फैसला किया।

यह सब कुछ ही सेकंडों में घट गया, लेकिन उस दौरान दावत उड़ा रहा बाघ निष्क्रिय नहीं रहा। अपने साथी की गुर्राहट सुनकर और उसे उछलते हुए देखकर, इस जानवर को यह पता नहीं था कि मेरे दिखने के कारण ही वह उत्तेजित हुआ था। उसने सोचा कि उसके साथी ने शिकार में हिस्सा पाने के लिए लड़ने का फैसला कर लिया है। फिर एक और ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी, जिसके बाद एक भयानक शोर मच गया, क्योंकि दावत उड़ा रहा बाघ, जो स्पष्ट रूप से आदमखोर था, उस बाघ पर टूट पड़ा जिसने मुझे देख लिया था।

मैंने मन ही मन कहा, अब मेरा मौका है, क्योंकि उनका ध्यान इतना भटका हुआ था कि वे मुझे नोटिस ही नहीं करेंगे।

मैंने झट से खुद को उठाया। पहले राइफल, फिर सिर और कंधे ज़मीन पर आ गए। एक पल के लिए, जानवरों की लड़ाई से उठी धूल के कारण मैं कुछ भी देख या कर नहीं पा रहा था। लेकिन न तो कोई बाघ नज़र आ रहा था और न ही कोई गुर्राहट या दहाड़ सुनाई दे रही थी।

मुझे समझ नहीं आया। शायद दूसरा बाघ पहले बाघ का पीछा करते हुए भाग गया हो। लेकिन अगर ऐसा होता, तो मुझे कम से कम कुछ आवाज़ें तो सुनाई देनी चाहिए थीं, जैसे एक जानवर दूसरे को भगा रहा हो, गुर्राहट और दहाड़। शायद उन्होंने राइफल देखी हो, या फिर मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा छेद से बाहर निकलते देखा हो, और इस अचानक दृश्य को देखकर भाग गए हों। तब भी गुर्राहट और दहाड़ की आवाज़ें आनी चाहिए थीं; कम से कम जाने की कुछ आवाज़ें तो आनी चाहिए थीं।

जंगल एकदम शांत था। मुझे समझ नहीं आ रहा था; यह बहुत अजीब था। तभी मेरे मन में ख्याल आया कि अगर आदमखोर ने अपने साथी को भगा दिया है, तो वह बचे हुए शिकार को खत्म करने के लिए ज़रूर वापस आएगा। इसलिए मैं वापस बिल

में छिप गया और उसके लौटने और खाने की आवाज़ें सुनने का इंतज़ार करने लगा।

मेरा इंतज़ार व्यर्थ गया। लगभग आधा घंटा बीत चुका था कि मुझे एक तेज़, लगातार चीख सुनाई दी। इसने सन्नाटा तोड़ दिया, आवाज़ तेज़ होती गई, फिर सिसकियों में बदल गई और शांत हो गई। फिर मुझे दूसरी चीखें और चिल्लाहटें सुनाई दीं, और एक गहरी और तीखी आवाज़ भी सुनाई दी। ये आवाज़ें पास की दो झोपड़ियों में रहने वाले उस आदमी और दो महिलाओं में से एक की थीं। वे मदद के लिए चिल्ला रहे थे।

तभी मुझे समझ आया कि क्या हुआ था। दूसरी औरत को आदमखोर बाघ ले गया था! अपने साथी को दावत से भगाते हुए, या शायद मेरी राइफल और मुझे ज़मीन से निकलते देख तेज़ी से भागते हुए, वह आदमखोर बाघ उन दो झोपड़ियों के पास से ज़रूर गुज़रा होगा जहाँ वह आदमी, उसकी पत्नी और मृत बाघ की विधवा पनाह लिए हुए थे। लेकिन उस राक्षस ने अपना दूसरा शिकार कैसे पाया? शायद वह इतने गुस्से में था कि उसने उसे उस झोपड़ी से घसीट कर बाहर निकाल लिया जिसमें वह सो रही थी। यह बाघ इतना भूखा तो बिल्कुल नहीं था कि ऐसा करे, क्योंकि वह तो इतनी देर से दावत उड़ा रहा था।

मैं असमंजस में था कि क्या करूँ। क्या मुझे वहीं रहना चाहिए, या झोपड़ियों की ओर जल्दी जाना चाहिए? दोनों ही स्थिति में, मैं कुछ खास नहीं कर सकता था। इस बात की बहुत कम संभावना थी कि आदमखोर सांप अपने पहले शिकार की हड्डियों पर वापस लौटेगा, जब उसके पास एक नया शिकार मौजूद होगा। और अंधेरे के कारण मैं दूसरे शिकार को अंजाम नहीं दे पाऊँगा। वह तो सूर्योदय के बाद ही संभव होगा।

मैंने वहीं रुकने का फैसला किया। यह संभव था कि दूसरा बाघ—जिसे भगा दिया गया था—मेरे ऊपर पड़े थोड़े से अवशेषों की ओर लौट आए। अगर ऐसा हुआ तो मैं गोली चला दूंगा; भले ही वह स्वयं राक्षस न हो, यह दूसरा बाघ निश्चित रूप से समय के साथ आदमखोर बन जाएगा। मुझे याद आया कि कुछ ही समय पहले वह बेचैनी से मानव अवशेषों को खाने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, हालांकि दावत उड़ाते हुए आदमखोर ने उसे रोक रखा था।

उसके बाद मैंने पूरी रात नींद नहीं ली, असहनीय गर्मी और छोटी-छोटी चींटियों व अन्य कीड़ों के डंकों से परेशान था, जिन्होंने मेरे घर में डेरा डाल लिया था। कुछ भी

नहीं हुआ, और लगभग चार बजे तक सन्नाटा छाया रहा। तभी एक लकड़बग्घे ने मेरे ऊपर पड़ी हड्डियों को खोज निकाला और हंगामा मच गया। लकड़बग्घे ने बाघों की गंध सूंघ ली और जान गया कि वह चोरी का एक अक्षम्य अपराध करने जा रहा है। उसे यह भी पता था कि मालिक या मालिकों द्वारा पकड़े जाने का मतलब मौत होगा। इसलिए वह अपनी भूख मिटाने और मारे जाने के डर के बीच असमंजस में था, और इसी असमंजस में उसने ज़ोरदार आवाज़ निकाली, जिससे पूरे जंगल को पता चल गया कि वह एक बड़ी दुविधा में फंसा है। मैं उस जीव को तेज़ी से गोल-गोल दौड़ते हुए और हर तरह की दुविधा की अजीब आवाज़ें निकालते हुए सुन सकता था। 'ची-आह! ची-ए! ची-ए!' वह बड़बड़ाया, फिर दूर की गड़गड़ाहट जैसी गुर्राहट की आवाज़ निकाली। 'गुडू-गुडू-ग्रू!' फिर उसने इस पूरे मामले पर शोक व्यक्त करने का फैसला किया: 'मी-ए!' 'मी-ए! मी-ए!' उसने एक बिल्ली की तरह भोजन के लिए गिड़गिड़ाते हुए दयनीय स्वर में कहा।

लेकिन समस्या अनसुलझी ही रही: बाघ दिखाई नहीं दिया, लेकिन किसी भी क्षण आ सकता था, और अगर वह देर तक रुका रहा तो लकड़बग्घे का वह आखिरी पल होगा। इन सब बातों से मुझे मनोरंजन मिला और मेरा ध्यान उस भयानक त्रासदी से हट गया जो मेरे इतने करीब घटी होगी और मैं हस्तक्षेप करने में असमर्थ था।

मेरे ऊपर का खुला हिस्सा झूठी सुबह की रोशनी से थोड़ा उजाला हो गया, इससे पहले कि वह लकड़बग्घा, जो अब तक शोर मचाता रहा था, आखिरकार हिम्मत जुटाकर खाना शुरू करे। मैंने कुछ देर के लिए कुछ हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनी, फिर शायद उसके डरपोक दिल में डर लौट आया, क्योंकि मुझे उसके जाने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। मैं उस बेचारे जानवर को तेज़ी से खिसकते हुए देख सकता था, उसके जबड़ों के बीच एक इंसान की हड्डी, जिसे वह बाद में चट्टानों के बीच अपने सुरक्षित ठिकाने में या ज़मीन में किसी गड्ढे में कुतरने वाला था, इस खतरे और मंडराती मौत की जगह से दूर।

मैंने असली सूर्योदय का इंतज़ार किया और फिर बड़ी सावधानी से अपनी विनचेस्टर राइफल और खुद को ज़मीन से ऊपर उठाया। रास्ता साफ़ था और मैंने अपने जकड़े हुए पैरों को उस भयानक गड्ढे से बाहर निकाला, कुछ मिनट इधर-उधर पैर पटके ताकि रक्त संचार सामान्य हो सके, और फिर झोपड़ियों की ओर चल पड़ा यह देखने के लिए कि क्या हुआ था। वहाँ मुझे एक भयानक दृश्य दिखाई दिया।

डर से कांपते हुए उस आदमी और उसकी पत्नी ने, जो अभी भी झोपड़ियों में से एक के कोने में छिपे हुए थे, मुझे एक बेहद भयावह कहानी सुनाई। आदमखोर के शिकार की विधवा के साथ, उन्होंने दोनों झोपड़ियों में से एक में सोने का फैसला किया था, जो उन्हें दोनों में से ज़्यादा सुरक्षित लगी। आदमी ने फर्श के बीचोंबीच, सभी दीवारों से बराबर दूरी पर सोने का पूरा ध्यान रखा था, जबकि उसकी पत्नी उसके बाईं ओर सोई थी। दूसरी महिला को मजबूरी में कहीं अकेले सोना पड़ा था। इसलिए वह थोड़ी दूरी पर लेट गई थी। स्वाभाविक रूप से वह थोड़ी घबराई हुई ज़रूर रही होगी, लेकिन शर्म के मारे वह आदमी के दाईं ओर नहीं लेट सकती थी, इसलिए उसे दंपति से यथासंभव दूर सोना पड़ा। इसलिए वह झोपड़ी की दीवार के पास और उनके पैरों के सामने लेट गई।

झोपड़ी तुलनात्मक रूप से छोटी थी। लगभग बारह फीट चौड़ी और बारह फीट लंबी, चौकोर थी। झोपड़ी के बीच में सो रहे पति-पत्नी के लिए छह फीट और उनके पैरों को आराम देने के लिए तीन फीट की अतिरिक्त जगह छोड़कर, दूसरी महिला दीवार से ज़्यादा से ज़्यादा एक गज की दूरी पर लेटी हुई थी। भारत के नम क्षेत्रों में ऐसी झोपड़ियों की दीवारों का निचला हिस्सा ज़मीन से कुछ इंच ऊपर रखा जाता है ताकि दीमक रात भर में उन पर चढ़कर दिन के उजाले में झोपड़ी के बड़े हिस्से को नष्ट न कर दें। इस प्रक्रिया से ज़मीन के स्तर पर चारों ओर थोड़ी सी खुली जगह रह जाती है।

झोपड़ी के बहुत करीब से गुज़रा आदमखोर जानवर, जो शायद अपने साथी का पीछा कर रहा था या मुझसे भाग रहा था, संभवतः बहुत गुस्से में था। उसने इस छोटे से छेद से सो रही महिला की एक झलक देखी होगी, या उसकी उपस्थिति को भांप लिया होगा, और उसे बाहर खींचने का फैसला किया होगा। उसने अपना एक पंजा छेद के नीचे डाला, महिला को पकड़ा और उसे बाहर खींचना शुरू कर दिया।

उसकी चीखें और विलाप, जो मैंने सुने थे, ने उसके दोनों साथियों को जगा दिया था, जिन्होंने मदद के लिए चिल्लाना और पुकारना शुरू कर दिया था। इसी बीच आदमखोर उस औरत का सिर और गर्दन झोपड़ी से बाहर खींचने में कामयाब हो गया था और उसका गला फाड़कर उसे मार डाला था। लेकिन उसका बाकी शरीर अंदर ही फंसा रह गया था, क्योंकि मरते समय वह औरत झोपड़ी की दीवार को सहारा देने वाले दो बांसों से लिपट गई थी। ये बांस टूट गए थे और उनमें से एक का सिरा उसकी

साड़ी और जैकेट को छेदते हुए उसकी कमर के मांस में घुस गया था, जिससे उसका शरीर बांस की दीवार से चिपक गया था।

उसकी चीख-पुकार और उसके साथियों के शोरगुल से मचे कोलाहल ने मानो बाघ को डरा दिया हो; बाघ ने अपना इरादा बदल दिया और शिकार को छोड़ दिया। मेरे सामने पड़ी उस स्त्री का शव एक भयानक दृश्य था। बाघ के पंजों ने उसकी छाती को छेद दिया था और एक स्तन को चीर कर रख दिया था। फिर उस राक्षस ने उसके गले को चीरते हुए उसकी श्वास नली को फाड़ दिया था, जिससे उसकी गर्दन की हड्डियाँ और त्वचा बच गई थीं ताकि उसका सिर पूरी तरह से धड़ से अलग न हो जाए। वह अपने ही खून के तालाब में पड़ी थी, जिसका अधिकांश हिस्सा सूखी मिट्टी में समा गया था, सिवाय कुछ जगहों पर जमे हुए खून के।

बचे हुए दो लोग, पति-पत्नी, डर से कांपते हुए झोपड़ी के एक कोने में दुबके बैठे थे, मानो किसी भी क्षण आदमखोर बाघ के लौटने की आशंका से बेहाल हों। दरअसल, वे इतने भयभीत थे कि उन्हें इस बात का भी एहसास नहीं था कि बाहर दिन का उजाला हो चुका है। मेरे आने की आहट सुनकर और यह सोचकर कि उन्होंने बाघ को लौटते हुए सुना है, वे डर के मारे कांपने लगे।

मैंने उन्हें दिलासा देने के लिए ज़ोर से आवाज़ लगाई। तभी वह आदमी और औरत झोपड़ी के दरवाज़े पर झपटे, उसे खोला और बाहर भागे, जहाँ वे ज़मीन पर गिर पड़े और डर और राहत के मारे काँपते और रोते रहे। वे पूरी तरह से बेहाल थे और अपनी कहानी सुनाने के लिए उन्हें शांत होने में काफी समय लगा।

मैं झोपड़ी में दाखिल हो चुका था और अंदर के भयानक दृश्य का जायजा ले ही रहा था कि स्टैनली और कुछ अन्य लोग, जिन्होंने पिछली शाम हमारी मदद की थी, वहाँ पहुँच गए। स्टैनली पूरी रात जागा हुआ था, लेकिन उसे मेरी राइफल की कोई आवाज नहीं सुनाई दी, जिसकी आवाज टैगार्थी गाँव तक सुनाई देती। इसलिए उसने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ वापस नहीं आया था—या मैं मारा गया था—और वह यह पता लगाने के लिए जल्दी कर रहा था कि क्या हुआ था।

मुझे डर है कि मेरे पहले सवाल ने डॉक्टर साहब को चौंका दिया होगा: 'पटेल की पत्नी कैसी हैं?'

मेरी बेतुकी बात सुनकर वह थोड़ा दुखी हुआ, फिर बुदबुदाया, 'वह सुरक्षित है। लेकिन हुआ क्या है?' मैंने उसे पूरी कहानी बताई। जल्द ही हमारी योजनाएँ बन गईं।

हमने बचे हुए दोनों लोगों और उनके सामान को झोपड़ी से बाहर निकाला, जिसके लिए ज़्यादा समझाने-बुझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी, और उन्हें सलाह दी कि वे हमारे दल के बाकी लोगों के साथ गाँव लौट जाएँ। स्टैनली दूसरी झोपड़ी में छिप जाएगा, जबकि मैं उस झोपड़ी में छिप जाऊँगा जिसमें मारी गई महिला का शव था। आम तौर पर, आदमखोर बाघ के अपने शिकार के पास लौटने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन चूंकि वहाँ एक दूसरा बाघ भी था जो आदमखोर हो सकता था, या शायद पहले से ही हो, इसलिए डॉक्टर उससे निपटने के लिए मौजूद रहेगा।

हमने अपनी योजना सावधानीपूर्वक बनाई। सबसे पहले, हममें से कोई भी उस दिशा में गोली नहीं चलाएगा जहाँ दूसरा छिपा हुआ है। दूसरे, अगर स्टेनली को पहले एक या दोनों बाघ दिख जाएँ, तो उसे तब तक गोली नहीं चलानी थी जब तक कि असली आदमखोर अपने शिकार के शव के पास न पहुँच जाए, ताकि मुझे असली अपराधी पर निशाना लगाने का मौका मिल सके। जैसे ही मैंने गोली चलाई, डॉक्टर को दूसरे बाघ को गोली मारनी थी, अगर वह अभी भी नज़र में हो। ये सावधानियाँ आखिरी क्षण में गलती से बचने के लिए ज़रूरी थीं, क्योंकि अगर डॉक्टर पहले गोली चला देता, तो वह गलत बाघ को गोली मार सकता था और आदमखोर भाग सकता था। हमें सबसे पहले ओग्रे को मारना था, हालाँकि मैंने जो कारण पहले ही बताए हैं, उनके चलते दूसरे बाघ को भी मारना ज़रूरी था। लेकिन आदमखोर को पहले मरना था और हम उसके भागने का जोखिम नहीं उठा सकते थे।

चूंकि मैं रात भर सोए बिना थका हुआ था, जबकि स्टेनली उतना थका हुआ नहीं था, हालांकि उसने रात का काफी समय पटेल की पत्नी की देखभाल में बिताया था, इसलिए यह तय हुआ कि मैं भोजन और कुछ देर आराम करने के लिए टैगार्थी वापस जाऊं और तीन बजे तक लौट आऊं। मैं डॉक्टर का दोपहर का भोजन और हम दोनों के लिए बाद में खाने के लिए कुछ खाना, साथ ही पानी, चाय और वह टॉर्च लेकर आऊंगा जो स्टेनली ने अपनी बंदूक के बैरल पर लगाई थी। यह समझदारी भरा कदम था कि हम में से कोई एक पहरा दे, कहीं ऐसा न हो कि कोई बाघ दिन के उजाले में शिकार पर वापस आ जाए।

तभी मेरे मन में एक और विचार आया। मैंने स्टैनली को बताया और वह मान गया। हमने एक झोपड़ी से एक बोरी ली और पहले हुए शिकार के अवशेषों की ओर चल पड़े। मेरी योजना थी कि मैं वहाँ बचे हुए सभी अवशेषों को हटा दूँ, ताकि अगर

दोनों में से कोई एक या दोनों उस पुरानी जगह पर दोबारा आने की सोचें, तो उन्हें कुछ भी न मिले। इससे वे झोपड़ियों की ओर आने के लिए मजबूर हो जाएँगे, जहाँ हम छिपे होंगे।

जब हमने अपने आदमियों को यह काम करने को कहा तो थोड़ी सी अड़चन आ गई। ऊँची जाति के होने के कारण वे घबरा गए और साफ इनकार कर दिया। हमारे पास स्टैनली और मेरे अलावा कोई चारा नहीं था कि हम यह काम खुद करें। स्टैनली को कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि वह डॉक्टर था, लेकिन मेरे लिए यह एक अप्रिय काम था। मांस का जो थोड़ा-बहुत हिस्सा बचा था, वह दो दिन पुराना था और उससे भयानक बदबू आ रही थी। इसके अलावा, नीली मक्खियों ने बचे हुए मांस में अंडे दे दिए थे और तेज धूप में उनमें से अनगिनत कीड़े निकल आए थे। मांस कीड़ों के उबलते हुए ढेर से ढका हुआ था।

हमने सारे टुकड़े-टुकड़े इकट्ठा करके बोरी में डाल दिए। चूंकि हमारे किसी भी अनुयायी ने उसे छूने से इनकार कर दिया, इसलिए मुझे इस भारी बोझ को अपने कंधे पर लादकर गांव तक ले जाने का दुर्भाग्यपूर्ण काम करना पड़ा। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे टुकड़े कितने भारी निकले, जबकि वे अपने मालिक का बहुत छोटा सा हिस्सा ही थे।

मुझसे भयानक बदबू आ रही थी और मैं पसीने से तरबतर था; सड़ते हुए मांस और हड्डियों से कोई चिपचिपा तरल पदार्थ बोरी से रिस रहा था। जब मैंने अपना भयानक बोझ स्थानीय पुलिस चौकी के प्रवेश द्वार पर रखा, तो वह मेरे हाथों, कंधों और गर्दन पर लगा हुआ था। पहरे पर तैनात कांस्टेबल मुझे हैरानी से घूर रहा था। अपने जीवन में पहली बार वह इतना अचंभित था कि उसने बयान नहीं मांगा। मुझे बयान अच्छी तरह याद था, लेकिन मैंने उसे याद दिलाने की परवाह नहीं की। मैं क्यों याद दिलाता? वैसे भी, जब सब-इंस्पेक्टर और मुख्यालय के अन्य अधिकारी टैगार्थी पहुंचेंगे, तो खूब हंगामा होने वाला था। हमने त्रासदी स्थल से शव क्यों हटाया था? पुलिस को कैसे पता चलेगा कि उस आदमी को बाघ ने मारा था? क्या उसकी हत्या हुई थी? शायद उसने आत्महत्या की थी? इन सवालों के जवाब बाद में देने के लिए काफी समय है। मुझे बस नहाना, खूब सारी चाय पीना, गरमा गरम खाना और थोड़ी नींद चाहिए थी।

मैं डॉक्टर के छोटे से कमरे में जल्दी से पहुँचा, जहाँ उन्होंने मुझे अपने साथ रहने

के लिए आमंत्रित किया था, और उनके नौकर को एक गैलन चाय बनाने का आदेश दिया। फिर मैंने अपने बदबूदार कपड़े उतार दिए और कमीज़ धोई। उसके बाद मैंने स्नान किया, और क्या शानदार स्नान था!

कम से कम दो पौंड वजन कम होकर बाहर निकला, मैंने चाय पीनी शुरू की और लगभग दो क्वार्ट पी ही ली थी कि डॉक्टर के नौकर ने गंभीरता से सुझाव दिया कि दोपहर के भोजन के लिए थोड़ी जगह छोड़ दूं। लेकिन जब मैं मेज से उठा तो दोपहर का भोजन कुछ भी नहीं बचा था। मैंने देखा कि नौकर के मन में मेरे लिए एक नया सम्मान पैदा हो गया था, क्योंकि मैं बहुत अधिक खाने वाला व्यक्ति था।

मैंने लड़के से कहा कि डॉक्टर का दोपहर का खाना अलग रख दे और हम दोनों के लिए रात का खाना बना दे, और कहा कि मैं तीन बजे तीनों भोजन लेकर दोनों झोपड़ियों में चला जाऊँगा। उदास होकर उस लड़के ने सिर हिलाया और नाराज़गी से कहा कि दोपहर का खाना बचा ही नहीं है। मैंने सारा खा लिया था। इसलिए मैंने उसे दोपहर का खाना और दो रात का खाना बनाने के लिए पैसे दिए। और मैंने उससे कहा कि मुझे ठीक 2:30 बजे जगा दे।

जब उसने मुझे जगाया तो लगभग तीन बज रहे थे, लेकिन चूंकि भोजन तैयार था और पैक किया हुआ था, साथ ही चाय की दो थर्मस और पानी की दो कैंटीन भी थीं, इसलिए मुझे केवल डॉक्टर की टॉर्च उठानी थी और उसे भोजन और थर्मस के साथ एक बड़े बैग में रखना था, कैंटीन और अपनी राइफल को अपने कंधों पर टांगना था और झोपड़ियों के लिए निकल पड़ना था।

तेज़ चलते हुए मैं जल्द ही वहाँ पहुँचा तो मुझे एक बहुत भूखा डॉक्टर मिला जिसे बाघों के बारे में कोई खबर नहीं थी। उसने जल्दी से अपना दोपहर का भोजन निगल लिया जबकि हमने दबी आवाज़ में अपनी योजनाओं पर चर्चा की और थोड़ा पानी पिया। चाय के थर्मस हमने रात के लिए बचाकर रखने का फैसला किया।

चार बजे हम अलग हो गए; मैं पास की झोपड़ी में गया जहाँ महिला का शव पड़ा था, अपने साथ राइफल, टॉर्च, खाना और चाय की एक थर्मस व आधा पानी लेकर, स्टेनली को दूसरी झोपड़ी में चाय, पानी और खाने के उसके हिस्से के साथ छोड़ दिया। सबसे दूर वाले छोर पर, जहाँ शव पड़ा था, उससे यथासंभव दूर जाकर, मैंने सुबह होने तक चौदह घंटे की लंबी निगरानी की तैयारी में खुद को आराम से बिठा लिया।

मुझे घंटों तक पालथी मारकर बैठने की आदत है, लगभग बिना हिले-डुले और बिना आवाज़ किए। शिकार के लिए जागते समय यह आदत बहुत ज़रूरी है। ज़रा सी भी हलचल या हल्की सी भी आवाज़ किसी भी जंगली जीव, जानवर या पक्षी को आपकी मौजूदगी का पता दे देगी। अगर आपका शिकार कोई ऐसा जानवर है जिसकी सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ है, तो हवा की दिशा का भी ध्यान रखना होगा, और हवा जितनी तेज़ होगी, आपकी गंध उतनी ही दूर तक फैलेगी। इसी कारण भारत में हिरण का शिकार करने वाले शिकारी तेज़ हवा वाली रात में शायद ही कभी बाहर निकलते हैं। बारिश से गंध दूर तक नहीं फैलती, लेकिन बाघों को छोड़कर बाकी सभी जानवर भी बारिश से बचने के लिए आश्रय लेते हैं, और अगर बारिश बहुत तेज़ हो तो बाघ और हाथी भी अपनी गतिविधि सीमित कर लेते हैं।

चूंकि बाघों की सूंघने की क्षमता बहुत कम होती है, इसलिए मुझे इस बात की चिंता नहीं थी। मुझे बस इस बात का ध्यान रखना था कि आदमखोर बाघ मेरी मौजूदगी को न तो देख पाए और न ही उसकी आवाज़ सुन पाए। पिछली रात के घटनाक्रम और उससे हुए डर के बाद, हम उम्मीद कर सकते थे कि दोनों बाघ बहुत सतर्क होंगे। यह देखना अद्भुत है कि कैसे सहज प्रवृत्ति एक आदमखोर बाघ को असहाय और निहत्थे संभावित शिकार और उसकी जान लेने की कोशिश कर रहे शिकारी के बीच अंतर करने में सक्षम बनाती है।

धूप से सुरक्षित रहने के कारण शव से अभी तक दुर्गंध नहीं आ रही थी, और झोपड़ी के अंदर का वातावरण सुखद था, जिससे पिछली रात की भीषण गर्मी और तंग जगह की तुलना में काफी राहत मिली थी। मेरे चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, क्योंकि आदमखोर भालू के डर से टैगार्थी और आसपास के कई मील दूर स्थित गांवों के चरवाहों ने अपने पशुओं को चराने के लिए जंगलों में ले जाने की अपनी सामान्य आदत छोड़ दी थी।

दोपहर खामोशी में गुज़री, सिवाय मक्खियों की भिनभिनाहट के, जिन्होंने मृत शरीर को खोज निकाला था और कच्चे मांस में अंडे देने में व्यस्त थीं। शाम का अंधेरा झोपड़ी के अंदर और गहरा हो गया और जल्द ही देखना मुश्किल हो गया, हालांकि मैं बाहर बची हुई दिन की रोशनी को देख पा रहा था, जो झोपड़ी की दीवारों के आधार और फर्श के बीच कुछ इंच की जगह से मेरे चारों ओर दिखाई दे रही थी।

पैंथर और जंगली बिल्लियों की बड़ी प्रजातियों की कमी के कारण, जंगली मुर्गे,

जो आमतौर पर इन जानवरों का शिकार होते हैं, इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में जमा हो गए थे और उनकी आवाजों के साथ-साथ मोर और मोर की आवाजों ने मुझे बताया कि सूरज डूबने वाला है। चुपचाप, मैंने रात के खाने के लिए लाया हुआ भोजन खाया और चाय पी।

कुछ देर बाद पक्षियों की चहचाहट धीमी पड़ गई, और उसकी जगह पास में मौजूद चित्तीदार हिरणों के झुंड की आवाज और थोड़ी दूर पर मौजूद एक सांभर हिरण की घुंह सुनाई देने लगी। इससे मुझे पता चला कि सूरज डूब चुका है, हालांकि अब तक मेरी झोपड़ी के अंदर काफी अंधेरा हो चुका था।

कुछ ही देर में चिड़ियों ने चिढ़ाने वाली आवाज़ें निकालनी शुरू कर दीं और घाटी के तल पर बहने वाली छोटी सी धारा में एक बगुला विलाप करने लगा। तब मुझे पता चला कि सचमुच रात हो चुकी है, और अब मुझे उस झोपड़ी के अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अगर आदमखोर भालू आकर उस औरत के शव को उठाने लगा, तो मुझे अपनी मशाल का इस्तेमाल करना ही पड़ेगा।

इससे एक समस्या खड़ी हो गई। जब मैं टॉर्च का इस्तेमाल करता, तो उसकी रोशनी झोपड़ी की दीवार के अंदरूनी हिस्से से टकराकर मेरी आँखों में वापस आ जाती। मैं न तो दीवार के पार देख पाता, न ही दीवार और फर्श के बीच के गैप से। दूसरे शब्दों में, आदमखोर मुझे दिखाई नहीं देता। यह विचार मुझे परेशान करने लगा और मैंने अपनी स्थिति बदलने का फैसला किया। मैं फर्श पर औंधे मुंह लेट गया, जितना हो सके उस महिला के शरीर के उस हिस्से के करीब जो अंदर ही था। इससे मुझे बहुत फायदा होता। अपनी राइफल को अपने सामने जमीन पर फैलाकर रखने से, जब बाघ आता, तो मुझे बस इतना करना होता कि राइफल की नली जानवर की दिशा में करके ट्रिगर दबा देना होता। आदमखोर महिला के शव को झोपड़ी से बाहर खींचते समय कुछ आवाज जरूर करता, क्योंकि, जैसा कि आपको याद होगा,

पिछली रात के संघर्ष में झोपड़ी की दीवार के एक बांस का सिरा उसके शरीर में धंस गया था। बाघ को उसके शरीर को इस अवरोध से मुक्त कराना होगा।

चाय की थर्मस और अपना हथियार लेकर मैं दबे पांव रेंगता हुआ उस महिला के शव तक पहुंचा और उसके बगल में लेट गया। राइफल मेरे सामने ज़मीन पर पड़ी थी, बट मेरी बगल में थी और बैरल का सिरा उसके छेद से कुछ ही इंच दूर था। अचानक मेरा कंधा किसी ठंडी, सख्त और अकड़ी हुई चीज़ से छू गया। वह शव का पैर था और

मैं कुछ इंच पीछे हट गया।

तीन घंटे बीत गए और बाघ का कोई अता-पता नहीं था। दस बज चुके थे। बाघ आमतौर पर आठ बजे के आसपास अपने शिकार के पास लौट आते हैं; तेंदुआ तो उससे भी बहुत पहले लौट आते हैं, और मुझे लगने लगा था कि हमारे शिकार झोपड़ियों से दूर ही रहना चाहते हैं, तभी तीन घंटे पहले जिस पैर ने मेरे कंधे को छुआ था, उसने फिर से उसे छुआ।

इससे भी बुरी बात यह थी कि वह ठंडी, अकड़ी हुई टांग अब स्पष्ट रूप से हिल रही थी। वह न केवल मेरे कंधे से रगड़ रही थी, बल्कि धीरे-धीरे आगे भी बढ़ रही थी।

मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। लेकिन पैर फिर से हिल गया! मेरे रोंगटे खड़े हो गए। दहशत ने मुझे जकड़ लिया। मैं घुटनों के बल रेंगकर उस भयानक, क्षत-विक्षत मानव आकृति से जितना हो सके दूर भागने ही वाला था जो अचानक जीवित हो उठी थी। तभी होश आया। मैं कांप रहा था और मेरे चेहरे से पसीना बह रहा था, तभी मुझे समाधान मिला। पैर और उसका मालिक न तो जीवित हुए थे, न ही अपनी मर्जी से हिले थे। आदमखोर उसे हिला रहा था!

मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। राइफल की नली आगे करके अंधाधुंध गोली चलाने का कोई मतलब नहीं था; इससे बाघ डरकर भाग जाएगा और कहीं और अपना उत्पात मचाएगा। ज़्यादा से ज़्यादा मैं उसे घायल कर सकता था। मुझे पहले यह सुनिश्चित करना था कि मैं किस पर गोली चला रहा हूँ।

तभी मुझे अपने बहुत करीब, थोड़ा दाहिनी ओर से एक हल्की सी खरोंचने की आवाज़ सुनाई दी। मुझे अभी भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मेरा मन टॉर्च जलाने का हुआ, लेकिन मुझे याद आया कि ऐसा करने से मेरी आँखें चौंधिया सकती हैं। फिर भी, यह पता लगाना बहुत ज़रूरी था कि खरोंचने की आवाज़ कहाँ से आ रही थी और किस वजह से आ रही थी।

मैंने एक बेहद मूर्खतापूर्ण काम किया। देख न पाने के कारण, मैंने सोचा कि शायद मैं महसूस कर सकूँ कि क्या हो रहा है, और इसी सोच के साथ, मैंने अपना दाहिना हाथ बहुत धीरे-धीरे खुजली की दिशा में आगे बढ़ाया।

मुझे ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। मेरी उत्सुक उंगलियाँ किसी रोएँदार, किसी रेशेदार चीज़ से छू गईं, और अगले ही पल सब कुछ तहस-नहस हो गया। आदमखोर बाघ, शायद पिछली रात अपने शिकार के शरीर को छुड़ाने में हुई कठिनाई को याद

करते हुए, या शायद लाश पर बेहतर पकड़ बनाने की कोशिश में, दीवार के नीचे की दरार में अपना पंजा बढ़ा चुका था और किसी ठोस चीज़ को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। उसके पंजे की यही हरकत उस खरोंचने की आवाज़ का कारण थी जो मैंने कुछ देर पहले सुनी थी। जब मेरी उंगलियाँ उसकी त्वचा को छूईं, तो भूतों के बारे में न जानते हुए भी, बाघ समझ गया कि झोपड़ी के अंदर कोई जीवित प्राणी है।

एक साधारण बाघ तो भाग जाता। लेकिन वह दैत्य, जो साधारण बाघ नहीं था और हमेशा अप्रत्याशित काम करता था, अपना आपा खो बैठा। उसने एक भयानक दहाड़ मारी, फिर झोपड़ी की दीवार को अपने जबड़ों में जकड़ लिया और उसे फाड़ना शुरू कर दिया।

उसके बाद मेरा काम आसान हो गया। मेरे सामने एक बड़ा छेद दिखाई दिया और मेरी टॉर्च की रोशनी में एक भयानक बाघ दिखाई दिया जिसके मुंह में अभी भी दीवार की चटाई ठूंसी हुई थी। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए बस कुछ इंच की दूरी पर, मेरी .405 राइफल की गोली उसके गले में जा लगी; फिर मैं अपनी राइफल के साथ बार-बार लुढ़कता रहा ताकि जो कुछ भी मेरे पीछे आने वाला था, उसकी पहुंच से बाहर हो सकूं। मैं झोपड़ी के दूसरे छोर के पास था जब वह राक्षस उस छेद से अंदर घुस आया। लेकिन मेरे पास दो और गोलियां सीधे उस पर चलाने का समय था।

उसका सिर। मरते हुए जानवर को ज़मीन पर तड़पते देख, मैं झोपड़ी के दरवाजे की ओर भागा, उसे खोलकर बाहर कूद गया, और तभी मुझे एक और भयानक दृश्य का सामना करना पड़ा।

एक और बाघ वहाँ था, लगभग बीस फीट दूर और दूर वाली झोपड़ी के एक छोर पर! लेकिन वह ज़मीन पर लेटा हुआ था, एक तरफ़ फैला हुआ और अभी भी तड़प रहा था। स्टैनली ने दूसरे बाघ को लगभग बेहद नज़दीक से, अपनी शॉटगन के दोनों बैरलों से एक साथ चलाई गई घातक गोलियों से मार गिराया था। मेरी अपनी राइफ़ल के शोर और मेरे खुद के उत्साह के कारण, मैं स्टैनली की गोलियों की आवाज़ बिल्कुल नहीं सुन पाया था।

डॉक्टर ने बाद में बताया कि उन्होंने आदमखोर बाघ की दहाड़ सुनी, उसके बाद मेरी पहली गोली चलने की आवाज़ आई। फिर झोपड़ी की दीवार के ढहने की आवाज़ आई। हमारे समझौते की अवहेलना करते हुए, वह मेरी मदद के लिए दौड़े, और वहाँ उन्होंने दूसरे बाघ को अपने सामने कुछ ही गज की दूरी पर, सीधा खड़ा देखा, जो

अपने साथी को देख रहा था और स्पष्ट रूप से तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे। उन्होंने अपनी घातक गोलियों से भरी शॉटगन की दोनों नालें बाघ के दिल में दाग दीं, जिससे वह तुरंत मर गया।

जैसा कि हमें संदेह था, आदमखोर बाघिन निकली और दूसरा जानवर उसका साथी था।

टैगार्थी में भोर तक खूब धूमधाम और जश्न मनाया गया, और अगले दिन जब यह खबर बेलुंदुर पहुँची तो बूढ़ा बुद्धिह गर्व से इतराता फिरा। क्या वह सभी जादूगरों में सबसे महान नहीं था? क्या उसके मंत्रों ने आदमखोर सांप और उसके साथी का अंत नहीं कर दिया था? बुद्धिह सचमुच बहुत खुश था। एक जादूगर के रूप में उसकी प्रसिद्धि एक बार फिर आसमान छू रही थी, और वह मुर्गे की करी की कई दावतों और बेलुंदुर गाँव की मशहूर शराब की कई और बोतलों का लुत्फ़ उठा सकता था। दोपहर तक वह बुरी तरह नशे में धुत था, जब मैंने उसे धन्यवाद देने के लिए फोन किया।

---

1 नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें।

तीन

अमलिगोला का अभिजात

इस कहानी के शीर्षक से आपको लग सकता है कि जिस प्राणी के बारे में मैं आपको

बताने जा रहा हूँ, वह कुलीन और भययोग्य होगा और अमलीगोला नामक स्थान से आया होगा, लेकिन शायद आप यह अनुमान न लगा पाएँ कि कहानी वास्तव में एक बहुत बड़े बाघ के बारे में है, जिसमें कुछ ऐसे गुण थे जो निश्चित रूप से कुलीनता से परे थे। आपमें से बहुत कम लोगों ने अमलीगोला के बारे में सुना होगा, क्योंकि यह मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के सुदूर जंगलों में स्थित है और मेरी कहानी के समय यह मात्र एक छोटा सा गाँव था।

कन्नड़ भाषा में लोग उसे 'गौंडनोराई' कहते थे, जिसका अर्थ लगभग 'कुलीन' होता है। उसे यह उपाधि उस समय के उसके अप्रत्याशित व्यवहार से मिली जब वह पहली बार गाँव के आसपास के घने जंगलों में प्रकट हुआ था। अफवाह थी कि वह टैगार्थी के जंगलों से आया था, जो बाघों के लिए प्रसिद्ध स्थान है और गाँव से केवल आठ मील दूर है; जबकि कुछ अन्य लोगों का कहना था कि वह करादिबेट्टा बाघ अभयारण्य से भटक गया था, जिसे उसने अपने साथियों की अधिकता और भोजन की होड़ बढ़ने के कारण घृणावश छोड़ दिया था।

ऐसा लगता है कि 'गौंडनोराई' को यह सब पसंद नहीं था। बाघ प्रजाति के आम लोगों के साथ मेलजोल रखना ही काफी बुरा था, लेकिन जब अक्सर ऐसा होता था कि युवा और फुर्तीले बाघ उसका शिकार छीन लेते थे, या फिर एक नवोदित बाघिन द्वारा पूरा शिकार ही बर्बाद कर दिया जाता था और शिकार को भगा दिया जाता था, तो उसे लगता था कि अब बेहतर है कि वह अधिक सुरक्षित जंगलों में चला जाए, जहाँ उसकी प्रजाति के बाघ कम हों और उसके शिकार के लिए अधिक जानवर उपलब्ध हों।

आमलिगोला से लगभग दो मील दूर जंगल में एक छोटी सी पहाड़ी है जो इस गांव से टैगार्थी जाने वाले रास्ते के किनारे स्थित है, और एक शाम लगभग पांच बजे, इसी रास्ते से घर लौट रहे लकड़हारे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि एक बाघ पहाड़ी की एक चट्टानी चोटी पर आराम कर रहा था, और पश्चिम में ऊंचे सागौन के पेड़ों के पीछे डूबने से पहले सूरज की किरणों का आनंद ले रहा था, जबकि सूरज को डूबने में अभी एक घंटा बाकी था।

उन्होंने अपने कदम तेज़ कर दिए। सभी जानते थे कि ये घने जंगल बाघों का घर हैं, हालाँकि ऐसे जानवर दिन के उजाले में शायद ही कभी दिखाई देते हैं। जिस बाघ को वे अब देख रहे थे, सौभाग्य से काफ़ी दूरी से, वह एक विशालकाय जानवर था

और उसकी सुस्त उदासीनता को देखकर ऐसा लग रहा था कि उसे उनकी मौजूदगी की ज़रा भी परवाह नहीं थी। वे ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे और वह उन्हें देख और सुन सकता था, लेकिन वह गर्म चट्टान पर लेटा रहा और बड़ी सी जिज्ञासा से अपना विशाल सिर उनकी ओर घुमाता रहा।

इसलिए लकड़हारों ने बेहतर यही समझा कि वे अंधेरा छाने से पहले ही घर लौट जाएं। सूरज डूबने और जंगल की हल्की रोशनी के अंधेरे में घुल जाने के बाद ऐसे राक्षस के सामने उनका कोई बचाव नहीं हो पाता।

इसके बाद अक्सर ऐसा होता था कि चरवाहे, लकड़हारे और वन रक्षक शाम के समय लगभग उसी समय उसी ऊंचे स्थान पर इस बाघ को धूप सेंकते हुए देखते थे और वह उन्हें बिल्कुल बेपरवाही से देखता रहता था, जब वे जंगल से गुजरते थे या उस पगडंडी का अनुसरण करते थे जो आमलिगोला की ओर जाने वाली पहाड़ी के आधार के चारों ओर घूमती थी।

उनमें से किसी को भी याद नहीं था कि उन्होंने पहले कभी किसी बाघ को ऐसा करते देखा हो। तेंदुए अक्सर उसी चट्टान पर, और दूसरी चट्टानों पर, शाम के समय धूप सेंकते हुए देखे गए थे; लेकिन बाघ कभी नहीं। बड़े मांसाहारी जानवर इतने चालाक और इतने डरपोक होते हैं कि वे राइफल की आसान गोली के सामने इस तरह खुद को उजागर नहीं करते।

धूप सेंक रहे बाघ पर किसी ने गोली नहीं चलाई, इसका बहुत अच्छा कारण यह था कि उस समय अमलीगोला में किसी के पास राइफल नहीं थी, जबकि दूरी इतनी अधिक थी कि साधारण थूथन से चलने वाली बंदूकें वहां से नहीं चलाई जा सकती थीं, हालांकि कुछ बंदूकें, बेशक बिना लाइसेंस के, स्थानीय ग्रामीणों के पास थीं।

पहले कुछ महीनों तक यह दिखने में सीधा-सादा बाघ चित्तीदार हिरणों और जंगल के अन्य जंगली जीवों पर ही ध्यान केंद्रित किए संतुष्ट रहा। फिर, जैसा कि पश्चिमी घाट के इतने करीब स्थित और भारी वर्षा वाले इस क्षेत्र में शायद ही कभी होता था, एक साल दक्षिण-पश्चिम मानसून विफल हो गया और जंगल सूख गया। घास सूख गई, खेत बंजर पड़े रहे, और घास और अनाज खाने वाले जंगली जीव उन क्षेत्रों में जाने के लिए मजबूर हो गए जहाँ थोड़ा पानी और उनके पेट भरने के लिए कुछ घास मिल सके। मवेशियों के झुंड, जो अब तक हिरणों के साथ चरते थे और बाघ द्वारा अब तक परेशान नहीं किए गए थे, अब खुद को अकेला पा रहे थे।

फिर भी, यह बाघ अपने भोजन के मामले में बहुत चुनिंदा था। वह झुंडों को छोड़कर गांव के डाकघर-सह-शिक्षक के खेत में भटक गया, जहां उसने मालिक के विशाल सफेद बैल को मार डाला। यह बैल हर हफ्ते बाजार के दिन उसकी गाड़ी को सागर कस्बे तक 19 मील की दूरी तक खींचकर ले जाता था। बाघ ने न केवल अपने पंजे के एक ही वार और गर्दन मरोड़कर उस विशाल बैल को मार डाला, बल्कि शिकार को अपनी पीठ पर लादकर दिन दहाड़े ही ले गया और खेत को जंगल से अलग करने वाले छह फुट चौड़े नाले को बड़ी आसानी से पार कर गया।

खेत पोस्टमास्टर के घर के पीछे था, और मालिक अपने छोटे से कुएँ पर कपड़े धो रहा था, और उसने यह सब अपनी आँखों से देखा। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, इस उम्मीद में कि बाघ डरकर अपना शिकार छोड़ देगा, हालाँकि इससे कोई फ़ायदा नहीं होता क्योंकि सफ़ेद बैल पहले ही मर चुका था। लेकिन, बाघ ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। वह उसी शान से उसी गति से नाले की ओर बढ़ा, मृत बैल उसकी पीठ पर था, उसने नाले को पार किया और जंगल में गायब हो गया।

बाघ ने फिर से शिकार किया, और उसके बाद कई बार ऐसा किया, लेकिन हैरानी की बात यह है कि हर बार उसका शिकार एक अकेला, विशाल बैल या एक मोटी, सुंदर गाय होती थी। उसने कभी भी झुंडों पर हमला नहीं किया, जैसा कि उससे पहले अन्य बाघों और तेंदुओं ने किया था, जो पहुँच के भीतर पहले जानवर को चुनकर मार डालते थे।

इस बाघ ने अपने शिकार की तलाश और चयन में काफी समय बिताया, और उसे हमेशा सबसे बड़ा जानवर ही चुनना होता था, जो उसके अपने विशाल आकार के अनुपात में हो, जिसका पता उसके द्वारा खेतों और जंगल की ओर जाने वाले रास्तों की हवा से उड़ने वाली रेत में छोड़े गए विशाल पदचिह्नों से चलता है।

उस समय मैं टैगार्थी गया था, जो मेरी पसंदीदा जगह थी, जहाँ मुझे गौंडनोराई और उसके विशाल आकार के बारे में पता चला। चूंकि यह जानवर सामान्य शिकार कर रहा था, इसलिए मेरा उसे परेशान करने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन उसके असाधारण आकार की बार-बार सुनाई जाने वाली कहानियों ने मुझे उसे देखने की उत्सुकता जगा दी।

इसलिए एक अंधेरी रात को मैं पैदल ही घने जंगल से होकर आमलिगोला जाने वाले जंगल के रास्ते पर निकल पड़ा, आपात स्थिति में राइफल मेरी पीठ पर थी, मेरे

हाथ में तीन सेल वाली टॉर्च थी और मेरी जेब में कुछ अतिरिक्त सेल थे।

मुझे वह रात अच्छी तरह याद है। रास्ते में, मशाल की किरण चित्तीदार हिरणों और सांभर की हरी आँखों में झलक रही थी, जो मशाल की रोशनी से बचने की कोशिश में ऊपर-नीचे हो रहे थे; जंगली सूअर की अकेली लाल आँख, जो रोशनी का सामना करने से इनकार कर रही थी और भाग रही थी; एक बैल-बाइसन की चौड़ी नीली आँखों में चमक, जो मेरे गुजरते समय उदास निगाहों से घूर रहा था; एक पैंथर की लाल-सफेद आँखों में चमक, जो एक छोटी झाड़ी के पीछे छिप गई और फिर ऊपर से मुझे झाँका; और एक सुस्त भालू की गुलाबी-नीली आँखें, जो अपने पिछले पैरों पर बैठा मुझे देख रहा था, जब मैं अपने रबर के जूतों में दस फीट से भी कम दूरी पर धीरे-धीरे गुजर रहा था।

आमलिगोला से सटे खेतों में प्रवेश करते ही मेरी मुलाकात गौंडनोराई से हुई और मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, हालांकि मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। दो विशाल प्रकाश के धब्बे चमकदार तारों की तरह सफेद-लाल रंग में चमक रहे थे, जो छोटी पहाड़ी से नीचे आती रात की हवाओं के साथ धीरे-धीरे हिलती घासों के ठीक ऊपर लटके हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वह सौ गज दूर हो।

यह बाघ वास्तव में विशालकाय था।

जब मैं टॉर्च की रोशनी लगातार उस पर टिकाए हुए उसे देखने के लिए रुका, तो गौंडनोराई ने बिना पलक झपकाए मेरी ओर देखा। हमारी निगाहें एक-दूसरे पर टिकी रहीं और लगभग दस मिनट तक ऐसा ही चलता रहा। फिर बाघ ने एक अजीब हरकत की। धीमी सी गुर्राहट के साथ, और उसकी आँखें अभी भी सामने से आ रही तेज किरणों में चमक रही थीं, गौंडनोराई मेरी ओर चलने लगा।

कोई साधारण बाघ ऐसा नहीं करता; वह तो उछलकर भाग जाता। कोई घायल बाघ, या यहाँ तक कि आदमखोर बनने की क्षमता रखने वाला बाघ भी ऐसा नहीं करता; वह तो भयंकर दहाड़ते हुए मेरी ओर दौड़ता, या फिर सीधे मुकाबले से बचते हुए जंगल में गायब हो जाता।

गौंडनोराई ने ऐसा कुछ नहीं किया। वह धीरे-धीरे, निर्दयतापूर्वक, दृढ़ता से मेरी ओर बढ़ा, उसके गले से एक कर्कश गुर्राहट निकली।

जब वह आया तो उसका मुंह थोड़ा खुला हुआ था, उसके धारीदार चेहरे पर क्रोध या भय का कोई निशान नहीं था।

एक बात जल्द ही स्पष्ट हो गई। यह विचित्र जानवर, चाहे उसका कारण कुछ भी हो, स्पष्ट रूप से मशाल के बिल्कुल पास आने और यह पता लगाने के लिए दृढ़ संकल्पित था कि आखिर यह सब क्या है।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उसके रवैये ने मुझे थोड़ा विचलित कर दिया। मेरा उस दरिंदे को गोली मारने का कोई इरादा नहीं था, क्योंकि उसने मानव जाति को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। लेकिन जब वह मेरी टॉर्च के बिल्कुल पास आकर उसके पीछे एक आदमी को देखेगा, तो वह क्या करेगा, इसका कोई अंदाजा नहीं था।

बाघ अब पचास गज से भी कम दूरी पर था और धीरे-धीरे करीब आ रहा था, तभी मेरे मन में ये विचार कौंधे और उसके अजीब व्यवहार का कारण समझ में आया। क्रिसमस आने में सिर्फ चार दिन बचे थे और यह उनके प्रजनन का मौसम था। निस्संदेह बाघ नर था, और एक बाघिन कहीं पास ही बैठी थी, इस दृश्य को प्रशंसा भरी निगाहों से देख रही थी, क्योंकि उसकी निगाहों में गौंडोराई अपनी शक्ति और खतरे के प्रति अनादर का प्रदर्शन कर रहा था।

प्रजनन के मौसम में अपने नवयुवतियों के साथ बाघों का सामना होने पर वे बेहद खतरनाक हो सकते हैं। अपनी शान दिखाने की तीव्र इच्छा और प्रेम-प्रसंग में खलल डालने वाले किसी भी घुसपैठिए के प्रति उनकी स्वाभाविक घृणा, साथ ही अपने साथी को किसी भी प्रकार के नुकसान का डर, मिलकर उन्हें विनाशकारी प्राणी बना देते हैं जो घुसपैठिए, चाहे वह मनुष्य हो या जानवर, को नष्ट कर देंगे।

फिर मन में यह चिंताजनक विचार आया कि कहीं बाघिन अपने साथी की सहायता के लिए अंधेरे में मेरे पीछे-पीछे न आ रही हो। मैं अपनी टॉर्च की रोशनी गौंडनोराई की आँखों से हटाना नहीं चाहता था, कहीं ऐसा करने से वह मुझ पर हमला न कर दे; साथ ही, मेरे पीछे बाघिन की मौजूदगी की आशंका ने मुझे कोई और विकल्प नहीं छोड़ा था।

मैंने जोखिम उठाते हुए तेज़ी से पीछे मुड़ा और टॉर्च की रोशनी को जंगल में दाईं ओर एक छोटे से अर्धवृत्त में घुमाते हुए पीछे की ओर ले गया। और सच में, बाघिन ठीक वहीं थी। वह एक विशालकाय बिल्ली की तरह अपने पिछले पैरों पर बैठी थी, ठीक मेरे पीछे, अपने साथी के आने का इंतज़ार कर रही थी।

उसके बाद बाघ के अजीब व्यवहार का कारण स्पष्ट हो गया। वह बाघिन के पास जा रहा था जब मैं अचानक उन दोनों के बीच आ गया, और उसकी संभोग की तीव्र

इच्छा उसे अपने इरादे से नहीं रोक पाई। मुझे इस बात का पूरा अंदाजा था कि जब वह मुझे अपने और अपनी साथी के बीच खड़ा देखेगा तो क्या करेगा। अब वहाँ से निकल जाना ही बेहतर था!

मैंने तुरंत और तेज़ी से यही किया, जितना हो सके चुपचाप और तेज़ी से बगल में हटते हुए, साथ ही टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। गौंडनोराई अचानक रुक गया और उसकी गुर्राहट एक तेज़ दहाड़ में बदल गई। इससे भी बुरी बात यह थी कि मुझे अपने पीछे बाघिन की दहाड़ सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि एक साथ हमला होने वाला है।

मैंने अपने बाएं हाथ से भरी हुई राइफल को कंधे से उतारा, बट को अपने कंधे पर टिकाया और हथियार की नली से जुड़ी दूसरी टॉर्च का बटन अपने अंगूठे से दबाया। दोनों टॉर्च की किरणें एक पल के लिए एक साथ चमकीं, और मैंने ट्रिगर पर अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली रखने से पहले तीन सेल वाली टॉर्च को अपनी पतलून की जेब में रख लिया।

शायद दो मशालों की एक साथ जलती रोशनी ने ही आपदा को टाल दिया। हो सकता है कि गौंडनोराई को यह दृश्य पसंद न आया हो, और उन्हें अचानक दूसरी रोशनी के प्रकट होने से संभावित खतरे का आभास हो गया हो, जहाँ कुछ क्षण पहले केवल एक ही रोशनी थी। गुर्राते हुए वह तिरछे होकर अपनी साथी की ओर बढ़ा, और स्थिति को समझते हुए, मैंने दोनों मशालें जलाए रखते हुए उसके पीछे-पीछे चलना शुरू कर दिया। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, दोनों जानवर मेरी ओर मुड़ गए। अब सफेद-लाल आँखों के दो जोड़े गुस्से से मेरी ओर घूर रहे थे।

फिर मैं भागने के लिए पीछे की ओर चलने लगा। कहना आसान है, करना मुश्किल। क्या आपने कभी घोर अंधेरे में, घुमावदार पगडंडी पर, घनी घास और जंगल के बीच से पीछे की ओर चलने की कोशिश की है, आपके बाएं हाथ में राइफल कंधे पर अजीब तरह से टिकी हुई हो, अंगूठा टॉर्च के बटन पर दबा हो, और दाहिने हाथ में एक और टॉर्च हो जो राइफल को अपनी जगह पर रखने में मदद कर रही हो, जबकि आपके सामने दो बाघ संभोग कर रहे हों और स्वभाव से ही गुस्सैल हों?

मैं कुछ दूर तक इस चाल में कामयाब रहा, लेकिन चूंकि दोनों बाघों ने मेरा पीछा करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई, इसलिए मैं कुछ सेकंड के लिए पगडंडी पर तेजी से चलने के लिए मुड़ा और फिर वापस आकर देखने लगा कि बाघ क्या कर रहे हैं। वे

उसी जगह पर थे, जाहिर तौर पर मेरे जाने से खुश थे।

जल्द ही मैं अमलिगोला पहुँच गया और अपने मित्र मुखिया की झोपड़ी में जाकर मैंने उसे अपनी आपबीती सुनाई। मुखिया रामैया विधवा थे और उन्होंने मुझे रात भर अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि शायद दिन के उजाले में मैं बाघों का बेहतर ढंग से अध्ययन कर सकूँ।

कई मग दूध और कुछ बासी वड़ाई (तीखे स्वाद वाले छोटे केक) जो उसने मुझे दिए, के साथ-साथ रामिया और मैंने बातें शुरू कीं, लेकिन थोड़ी ही देर में जंगल से तेज़ दहाड़ और गुर्राहट की आवाज़ आई जिससे पता चला कि बाघों का मिलन शुरू हो चुका है। शोर काफी देर तक जारी रहा। फिर कुछ देर शांति छाई रही, जिसके बाद शोर फिर से शुरू हो गया। ऐसा तब तक चलता रहा जब तक हम सो नहीं गए।

अगली सुबह मुझे जाँच-पड़ताल करने की कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि मुझे पता था कि दोनों अपने कठिन मिलन-सत्रों के बाद आराम कर रहे होंगे और मेरा जल्दी पहुँच जाना टकराव को जन्म दे सकता था। इसके अलावा, रामिया की झोपड़ी में बिताई बेचैन रात के बाद मुझे बहुत नींद आ रही थी।

लगभग दस बजे मैं जागा और रामिया के अब सख्त हो चुके वड़ाई के एक और दौर के बाद, कम से कम तीन कप कॉफी पीने के बाद (जो कि चाय की जगह, जिसे मैं बहुत पसंद करता) कन्नड़ गांव वालों का सामान्य पेय है, मैंने पिछली रात के शोरगुल भरे मिलन स्थल की जाँच करने की तैयारी की। रामिया ने ज़रूरी काम का बहाना बनाकर मेरे साथ आने से मना कर दिया, इसलिए मैं अकेला ही निकल पड़ा।

जिस जगह से आवाज़ें आ रही थीं, जब मैंने आखिरकार उसे ढूंढ लिया, वह शायद एक फर्लांग से थोड़ी ज़्यादा दूर थी। वहाँ पहुँचकर पता चला कि दोनों बाघों ने अपने प्रेम-संबंध में कितनी ऊर्जा लगाई थी। हालाँकि साल के इस समय ज़मीन काफ़ी सख्त होती है, फिर भी वह खरोंचों से भरी और ढेलों में खुदी हुई थी, और उछल-कूद करते जानवरों की हरकतों से छोटी झाड़ियाँ जड़ समेत उखड़ गई थीं।

इस जगह से ज़मीन घनी वनस्पति से भरी एक गहरी खाई में उतरती थी, जहाँ एक पेड़ की छाल पर खरोंच के निशान और ताज़ा गोबर के ढेर (जो पैंथर के विपरीत, बाघ मिट्टी से ढकने के बजाय खुला छोड़ देता है) उस रास्ते का संकेत देते थे जिससे प्रेमी खाई में दाखिल हुए थे। जिज्ञासावश मैंने उनका पीछा किया, हालाँकि मैं जानता था कि मैं जो कर रहा हूँ वह जल्दबाजी भरा है; इसलिए राइफल तैयार रखते हुए और

हर झाड़ी के पीछे देखने की कोशिश करते हुए, मैं चुपचाप आगे बढ़ा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मेरे रबर के तले वाले जूते किसी सूखे पत्ते या टहनी पर न पड़ें।

जैसे ही मैं उस घाटी में उगे विशाल वृक्षों की छाया में पहुँचा, मृत्यु की मीठी-सी दुर्गंध मेरी नाक में आई और मैं समझ गया कि मैं किसी मृत जानवर के पास पहुँच रहा हूँ। कुछ ही गज आगे बढ़ने पर मुझे वह मिल गया। एक विशाल जंगली मादा सुअर के आंशिक अवशेष, जिसे गौंडनोराई ने मार डाला था और जिस पर दो बाघों ने भूख से दावत उड़ाई थी, क्योंकि बाघों को सूअर का मांस बहुत पसंद होता है। मादा सुअर होने के बावजूद, उसने संघर्ष किया था, जैसा कि जमीन पर उसके खुरों के निशानों से पता चलता था।

मैंने मादा सुअर का बहुत ध्यान से निरीक्षण नहीं किया, क्योंकि आप यकीन मानिए कि मैं चारों ओर चौकन्ना था ताकि उन भयानक प्रेमियों में से कोई भी मुझे चौंका न दे। इसी दौरान मेरी नज़र तीस गज दूर एक जंगली बेर की झाड़ी के पत्तों के बीच से कुछ सफेद चीज़ पर पड़ी। मैं उस वस्तु के पास गया और पता चला कि वह एक सांभर मादा की श्रोणि की हड्डी थी, जिसे बाघों ने पिछली रात अपने उत्पात के दौरान आधा खा लिया था। यह पता लगाना संभव नहीं था कि दोनों जानवरों में से - मादा सुअर या सांभर - पहले मारा गया था, लेकिन यह स्पष्ट था कि सांभर को कुछ दूरी पर मारा गया था और फिर गौंडनोराई उसे अपनी साथी के लिए उस स्थान पर लाया था, क्योंकि कोई भी जंगली जानवर उस जगह के पास नहीं आता जहाँ पहले से ही किसी का शिकार किया गया हो।

एक शाखा से नीचे उतरकर ज़मीन पर आते-जाते तीन कौवों की मौजूदगी से संकेत मिला कि थोड़ी दूरी पर एक तीसरा शिकार भी हुआ है। कौवों का ज़मीन पर उतरना इस बात का संकेत था कि कोई भी बाघ आस-पास नहीं था। यह शिकार एक चित्तीदार हिरण निकला जिसे गौंडनोराई जनजाति कहीं और मारकर घाटी में ले आई थी। हिरण का बहुत कम हिस्सा ही खाया गया था, क्योंकि तब तक बाघ इतना भर चुके थे कि वे मांस का थोड़ा-थोड़ा स्वाद चखने से ज़्यादा कुछ नहीं कर पाए।

लेकिन अभी मेरा शिकार ढूंढना खत्म नहीं हुआ था। दरअसल, चित्तीदार हिरण और मादा हिरण के शव के ठीक बीच में पड़ी एक और मादा सांभर की लाश से मेरा पैर टकरा गया। इस सांभर का बहुत कम हिस्सा बचा था, क्योंकि बाघों ने उसका अधिकांश भाग खा लिया था। अब मुझे लगभग यकीन हो गया था कि यह सांभर, न

कि मादा हिरण, जैसा कि मैंने सोचा था, उन चार शिकारों में से पहला था। मादा हिरण उसके बाद आई थी, ज़मीन पर उसके खुरों के निशान बता रहे थे कि मरने से पहले उसने संघर्ष किया था। उसे मरे हुए सांभर के पास नहीं आना चाहिए था। शायद किसी बाघ ने उसका पीछा किया होगा। दूसरे सांभर और चित्तीदार हिरण को बाद में उस जगह पर लाया गया था, क्योंकि मुझे कहीं भी ज़मीन पर घसीटने के निशान नहीं दिखे, जिससे यह स्पष्ट होता कि बाघ अपने शिकारों को एक-एक करके अपनी पीठ पर लादकर ले गया था। अगर मुझे उसके आकार का और सबूत चाहिए था, तो वह यहीं था।

जंगल के रहस्यमय दृश्यों के तथ्यों को तर्क से सुलझाने में एक अजीब सी संतुष्टि मिलती है, और मुझे यह तब महसूस हुआ जब मैं अपने निष्कर्ष पर पहुँचा। वह खाई वास्तव में एक कत्लखाना थी; मौत की दुर्गंध हवा में फैली हुई थी, और अचानक मैं डर गया।

मुझे किसी चीज से आगाह हुआ कि कोई मुझे देख रहा है। मैं तेजी से पीछे की ओर भागा और एक पेड़ से पीठ टिकाकर खुद को पीछे से होने वाले हमले से बचाने लगा। फिर मैंने आसपास की हर झाड़ी और पेड़ के तने को ध्यान से देखना शुरू किया।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए और सूरज बादलों से रहित आकाश में ऊपर चढ़ता गया, जंगल में हवा का एक झोंका भी नहीं आया। समय बीतने के साथ-साथ गर्मी बढ़ती जा रही थी, हालाँकि पेड़ों के कारण मैं उसे देख नहीं पा रहा था। सन्नाटा पसरा हुआ था; यहाँ तक कि घाटी के किनारे ऊँचे पेड़ों से आवाज़ कर रहे दो झींगुर भी अब चुप थे। कौवों ने मुझे देख लिया था और वे चुपचाप उम्मीद भरी निगाहों से सब कुछ देख रहे थे, उनके सिर थोड़े एक तरफ झुके हुए थे, चोंच थोड़ी खुली हुई थी और गर्मी से वे हाँफ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो जंगल साँस रोककर बैठा हो, किसी नाटक के अगले दृश्य का इंतज़ार कर रहा हो जो किसी भी पल शुरू हो सकता था।

मेरी नजर के कोने से मैंने घास का एक नाजुक और पंख जैसा गुच्छा देखा, जो अचानक एक पल के लिए हिला और फिर स्थिर हो गया। उस उमस भरी सुबह में उसका हिलना उचित नहीं था, जब तक कि जमीन के पास तने पर किसी चीज का दबाव न पड़ा हो।

वह चीज जरूर बाघों में से एक होगी!

अधिकांश बाघ—यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी—अगर उन्हें यह महसूस हो जाए कि किसी इंसान ने उनकी मौजूदगी का पता लगा लिया है, तो हमला करने में हिचकिचाते हैं। वे अचानक हमला करने का फायदा उठाना पसंद करते हैं। मुझे यह अपने अनुभव से पता था, इसलिए मैंने अपनी आँखें पूरी तरह खोल लीं और उस जगह को घूरकर देखा जहाँ घास हिली थी। इससे बाघ को पता चल जाएगा कि मैंने उसकी छिपी हुई जगह का पता लगा लिया है।

एक पल के लिए मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। फिर घास के पीछे से दो काले उभार धीरे-धीरे उठते हुए दिखाई दिए, जिनके सिरे सफेद थे, और मैं समझ गया कि मैं एक बाघ के कान देख रहा हूँ। एक क्षण बाद, जानवर ने अपना सिर थोड़ा और ऊपर उठाया और मैं बाघों में से एक की भयानक आँखों में देख रहा था। मैं जानता था कि यह मादा बाघिन थी। उसका सिर उसके साथी के आकार के नर बाघ के सिर से बहुत छोटा था। अब बस बाघ का ही सामना करना बाकी था। वह शायद इस समय कहीं छिपा हुआ था, मुझे नहीं पता कहाँ, अचानक हमला करने के लिए हिम्मत जुटा रहा था, कम से कम इसलिए कि वह पास से देख रही बाघिन को यह साबित कर सके कि वह कितना बहादुर प्राणी है।

कुछ नहीं हुआ, बाघिन घास के ऊपर से मुझे देखती रही, और थोड़ी देर बाद मुझे उम्मीद होने लगी कि शायद वह अकेली हो। हो सकता है उसका साथी पाँचवें शिकार की तलाश में गया हो!

लगभग दस मिनट बाद बाघिन एक अजीब सी आवाज़ निकालने लगी। मैं कह सकता हूँ कि वह म्याऊँ कर रही थी, लेकिन वह आवाज़ इतनी कर्कश और भारी थी कि इस शब्द से उसका सही वर्णन नहीं हो पाता। वह अपने साथी को बुला रही थी। चूंकि उसने अब तक मुझ पर हमला नहीं किया था, यह स्पष्ट था कि बाघिन में अकेले हमला करने का साहस नहीं था। बाघ के आने पर क्या होगा, यह तो बिलकुल अलग बात होगी।

मैंने समझदारी से काम लेते हुए फैसला किया और मैं उस पेड़ के तने के पीछे छिप गया जिसके सहारे मैं अब तक खड़ा था। फिर मैं पीछे हटने लगा।

अगले ही पल मेरे पीछे खाई के ऊपर से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी, जिससे मुझे पता चला कि बहुत देर हो चुकी है। गौंडनोराई आ चुका था। उसकी साथी की म्याऊं जैसी आवाज़ों से उसे आगाह मिला कि सब कुछ ठीक नहीं है। अब मैं उसे

सूखी पत्तियों और झाड़ियों को चीरते हुए, तेज़ी से मेरी ओर आते हुए सुन सकता था।

मैं वैसे तो अच्छा पर्वतारोही नहीं हूँ, लेकिन हिम्मत ने मुझे फुर्ती दी और मैंने राइफल कंधे पर टांगे हुए बड़ी तेज़ी से पेड़ पर चढ़ गया। पहली शाखा ज़मीन से मुश्किल से आठ फीट ऊपर थी। मैं वहाँ पहुँचा और ऊपर चढ़ने की कोशिश की, तभी राइफल अजीब तरह से मेरे कंधे से फिसलकर मेरी कोहनी में आ गिरी। मैंने उसे फिर से कंधे पर टांगा, और उतनी ही तेज़ी से वह एक बार फिर नीचे फिसल गई।

गौंडनोराई मेरे पेड़ के नीचे आ पहुंचा और मेरी हरकतों से उसने ऊपर की ओर देखा और मुझे पहचान लिया। मैंने फैसला किया कि मुझे उसका सामना करना होगा और अपनी बांह में रखी राइफल को कंधे पर रखना होगा। मुझे उम्मीद थी कि वह तुरंत मुझ पर हमला करेगा, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय वह जमीन पर बैठ गया, ऊपर देखा और गुर्राता रहा, गुर्राता रहा और गुर्राता रहा।

अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने बड़ी मूर्खता की थी, अपना इरादा बदल लिया और ऊपर चढ़ने की कोशिश करने का फैसला किया, लेकिन फिर भी मैं ज्यादा दूर नहीं जा सका। मैं शायद सात फीट और चढ़ पाया, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं पतली शाखाओं की सीमा तक ही पहुँच पाया हूँ। इसी समय, बाघिन, अपने साथी द्वारा दी गई सुरक्षा से आश्वस्त होकर, प्रकट हुई और उछल-कूद करते हुए उसकी ओर बढ़ी, जब तक कि वे दोनों लगभग पंद्रह फीट नीचे नहीं आ गए।

मुझे उम्मीद थी कि कोई भी बाघ मेरा पीछा नहीं करेगा, क्योंकि जिस डाल से मैं बड़ी मुश्किल से चिपका हुआ था, वह इतनी कमजोर थी कि उस पर और वजन नहीं सह सकती थी। ऊपर चढ़ने की अपनी मूर्खता के कारण मैं खुद को एक खतरनाक स्थिति में डाल चुका था। मुझे डाल को दोनों हाथों और घुटनों से कसकर पकड़ना पड़ा, और इससे राइफल का इस्तेमाल करना नामुमकिन हो गया, जिसे मैं कंधे से उतार भी नहीं सकता था, क्योंकि अगर मैंने अपना हाथ छोड़ा तो मैं पेड़ से गिर जाऊंगा। इसके अलावा, मेरे हाथों और पैरों की मांसपेशियों पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ रहा था, और मैं ज्यादा देर तक इस स्थिति में नहीं रह सकता था।

मुझे ख्याल आया कि मैं जोर से चिल्लाकर बाघों को भगाने की कोशिश करूँ। यह तरकीब शायद कामयाब हो जाए; लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि न हो। मेरी आवाज से जानवर चिढ़ सकते हैं, खासकर बाघ, जो अब तक एक सज्जन की तरह व्यवहार

कर रहा था।

कुछ मिनटों बाद दोनों बाघों ने आपसी सहमति से मामला सुलझा लिया और शांतिपूर्वक साथ-साथ चले गए। पाँच मिनट और बीतने का इंतज़ार करते हुए मैं सावधानी से नीचे उतरा, लेकिन नाले के किनारे चढ़कर गाँव की ओर चलने के बाद भी मुझे दोनों में से किसी भी जानवर का कोई निशान नहीं मिला। मैं गौंडनोराई और उसके साथी का जीवन बचाने के लिए वास्तव में आभारी हूँ।

कुछ ही समय बाद मैं टैगार्थी की ओर वापस लौट रहा था, यह सोचकर कि मैंने बाघ को आखिरी बार देखा और सुना था। लेकिन जैसा कि मुझे जल्द ही पता चला, मेरा यह विचार पूरी तरह गलत था।

बैंगलोर में आए मुझे अभी एक महीना भी नहीं बीता था कि अमलीगोला के मुखिया ने, जिनके साथ मैंने गौंडनोराई और उसके साथी की बातें सुनते हुए रात बिताई थी, मुझे एक पोस्टकार्ड लिखा। वह पोस्टकार्ड भेजने के लिए टैगार्थी तक पैदल चलकर गए थे। उन्होंने मुझे बताया कि बड़ा बाघ बहुत ही साहसी होता जा रहा है और मुझसे उसे मारने के लिए आने की विनती की। उन्होंने कहा कि गौंडनोराई के आदमखोर बनने में बस कुछ ही समय बाकी है।

मैं उन बाघों के शिकार का विरोध करता हूँ जिन्होंने कभी मनुष्य को परेशान नहीं किया है, और मैं मुखिया के उस डर को स्वीकार नहीं करने वाला था जो अभी तक हुआ ही नहीं था; गौंडनोराई बाघ शायद कभी आदमखोर न बने और मेरे पास उस जानवर को गोली मारने का कोई औचित्य नहीं था जिसने दो मौकों पर मेरी जान बचाई थी।

संयोगवश मेरे पास कुछ दिन का खाली समय था और मुझे अपने उपकारक, उस विशाल बाघ को एक बार फिर देखने से ज्यादा सुखद कोई और काम सूझ नहीं रहा था। लेकिन जब मैं अमलीगोला पहुँचा, तब तक हालात बदल चुके थे, हालाँकि रामैया के पत्र लिखे जाने के कुछ ही दिन बीते थे। वह बड़ा बाघ और भी ज्यादा साहसी हो गया था और गाँव वालों के कीमती मवेशियों को मार रहा था। रामैया पहले ही अपना सबसे अच्छा बैल खो चुका था, और अब गौंडनोराई ने उसके दूसरे सबसे अच्छे बैल को भी मार डाला।

मुखिया का धैर्य पहले से ही टूट चुका था और यह सब कुछ हद से ज़्यादा हो गया था। मेरे आने का इंतज़ार किए बिना, रामैया लगभग बीस मील दूर कुम्सी कस्बे के

लिए रवाना हो गया, अपने चचेरे भाई से .12 बोर की बंदूक उधार ली और अगली बार जब बाघ इनाम के लिए मवेशियों की तलाश में अम्लिगोला के बाहरी इलाके में आएगा, तो उस पर घात लगाने के लिए तैयार हो गया। पहले भी कई बार सफल हो चुका गौंडनोराई (बाघ) पूरी तरह से बेखबर होकर जाल में फंस गया और रामैया की उधार ली हुई बंदूक से निकली गोलियों की बौछार उसके चेहरे पर लगी। बाघ फिर भयानक दहाड़ मारते हुए भाग गया। घाव से उसका गुस्सा इतना उग्र था कि उसने खेत में ग्रामीणों द्वारा अनाज खाने वाले पक्षियों को भगाने के लिए बनाए गए बांस के चबूतरे को पूरी तरह से तोड़ दिया, जो बाघ के जंगल में वापस भागते समय उसके रास्ते में खड़ा था।

उस पूरे दिन और रात, और उसके बाद की दो रातों तक, रामैया और उसके साथियों को घायल बाघ की दर्द भरी दहाड़ें सुनने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि वह जंगल में अपनी पीड़ा और क्रोध को व्यक्त कर रहा था, जबकि वे अपनी झोपड़ियों के अंदर दुबके हुए थे।

मुझे पता नहीं था कि क्या हुआ था, क्योंकि टैगार्थी में किसी ने मुझे कुछ नहीं बताया था। पाँचवें दिन की शाम को मैं अमलीगोला पहुँचा। आठ मील तक मैं जंगल में बेखबर चलता रहा, बिना कुछ सुने-सुने। उस रात हमें बाघ की आवाज़ नहीं सुनाई दी, लेकिन छठे दिन की सुबह रामैया के गलत समय पर किए गए निशाने का पहला नतीजा सामने आया।

रात के नौ बज चुके थे और मैं टैगार्थी लौटने के लिए निकलने ही वाला था कि तभी एक आदमी लड़खड़ाते हुए अमलिगोला में आया और गांव की मुख्य सड़क की इकलौती गली में गिर पड़ा। उसने बताया कि वह और एक अन्य व्यक्ति कुछ मील दूर स्थित चोर्डी गांव से भोर से ठीक पहले निकले थे और अमलिगोला जा रहे थे, तभी अपनी मंजिल से लगभग दो मील पहले उन्होंने एक बाघ को उनका पीछा करते देखा। बाघों से परिचित होने और यह न जानने के कारण कि गौंडनोराई घायल हो गया है, वे ज्यादा विचलित नहीं हुए, लेकिन चलते समय पीछे सतर्क रहने का फैसला किया।

अगले दो-तीन सौ गज तक उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर उन्हें बाघ की एक झलक मिली, और इस बार वह उनसे तीस गज से अधिक पीछे नहीं था। जानवर के कुछ नुकसान पहुंचाने के इरादे को भांपते हुए, दोनों आदमी भागने लगे, तभी बाघ दहाड़ा और उन पर हमला कर दिया।

आमलिगोला में लड़खड़ाते हुए पहुंचा वह आदमी महज़ इसलिए बच गया क्योंकि वह तेज़ दौड़ रहा था। उसने बताया कि कैसे बाघ ने उसके साथी को, जो उससे बस एक गज पीछे दौड़ रहा था, तेज़ी से पकड़ लिया। उसके दोस्त की मरते समय की चीख ने उसे पीछे मुड़कर देखने पर मजबूर कर दिया और उस भाग्यशाली लकड़हारे ने कहा कि उसने जो दृश्य देखा वह हमेशा के लिए उसकी याद में बसा रहेगा। बाघ का चेहरा भयानक था। वह बुरी तरह घायल था और खून से लथपथ था। उसे नहीं लगता था कि जानवर की आंखें बची थीं: उसने जिस शिकार को पकड़ा था, उस पर जो क्रूरता दिखाई थी, वह सचमुच भयानक थी। अब पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत न करते हुए, वह आदमी अपनी पूरी ताकत से आमलिगोला की ओर भागा और बुरी तरह थककर वहां पहुंचा।

घायल गौंडनोराई ने अपना पहला शिकार मार डाला था। हमने जो सुना था, उसके अनुसार रामियाह की गोलियों ने उस बेचारे जानवर को अंधा कर दिया था।

बिना देर किए, मैं उस जगह की ओर भागा जहाँ हमला हुआ था, रामैया और बचा हुआ लकड़हारा अनिच्छा से मेरे साथ आए। बाघ बहुत भूखा रहा होगा; उसने अपने शिकार का अधिकांश हिस्सा वहीं खा लिया था। फिर उसने हमारे आने की आहट सुनी होगी, क्योंकि हमारे पहुँचने से शायद कुछ ही मिनट पहले वह बचे हुए हिस्से को लेकर झाड़ियों में भाग गया। हम जानते थे कि बाघ ने पेट भरकर खाया था, क्योंकि उसके शिकार का सिर, हाथ और पैर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जो भरपेट भोजन का स्पष्ट संकेत था।

रास्ता ताजा था, लेकिन झाड़ियाँ घनी थीं। रामिया और लकड़हारा कन्नड़ थे और जंगल में रहने वाले या शिकारियों जैसे नहीं थे। उन्होंने आगे आने से साफ इनकार कर दिया। इसलिए मैं टूटी हुई झाड़ियों और उनके शिकार की झुकी हुई शाखाओं के सहारे उनके पीछे-पीछे चलने लगा। तेजी से आगे बढ़ते हुए आगे और दोनों तरफ अचानक हमले से बचाव करना मुश्किल था।

अपने विशाल आकार के बावजूद, गौंडनोराई ने लड़ने के लिए रुकने का फैसला नहीं किया। शायद हाल ही में लगी चोट और दर्द के कारण वह किसी अन्य सशस्त्र व्यक्ति से मुठभेड़ का जोखिम नहीं लेना चाहता था। यह आश्चर्यजनक है कि कैसे एक जंगली जानवर किसी ऐसे इंसान की मौजूदगी को भांप लेता है जो उसके लिए खतरा हो सकता है और उसे किसी असहाय, निहत्थे या शत्रुतापूर्ण विचार न रखने वाले

व्यक्ति से अलग पहचान लेता है।

पगडंडी घने जंगल से होते हुए हल्की झाड़ियों में जा पहुँची, जहाँ आगे बढ़ना और भी मुश्किल हो गया, और फिर एक खड़ी ढलान से नीचे उतरते हुए, जहाँ बाघ आखिरकार एक संकरी खाई में कूद गया, जो किसी जलधारा से कम नहीं थी। यहाँ मुझे हाथों और घुटनों के बल नीचे उतरना पड़ा और कुछ ही गज के भीतर जंगल इतना घना हो गया कि आगे जाना असंभव हो गया। किसी भी हालत में, पीछा करना व्यर्थ था क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में मैं अपने शिकार को पकड़ने की कभी उम्मीद नहीं कर सकता था।

मैं निराश तो था, लेकिन दो बातें अब निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी थीं। पहली बात, रामैया की गोलियों से गौंडनोराई पूरी तरह अंधा नहीं हुआ था। इसलिए वह मानव जाति के लिए एक बड़ा खतरा बना हुआ था और तब तक बना रहेगा जब तक वह अपने घावों से पूरी तरह उबरकर मवेशियों और जंगली जानवरों का शिकार करने के लिए वापस नहीं लौट जाता। हालांकि, ऐसा होने की संभावना बहुत कम थी, क्योंकि एक बार जब कोई बाघ मानव मांस का स्वाद चख लेता है और उसे पता चल जाता है कि मनुष्य को मारना कितना आसान है, तो वह इस आदत को शायद ही कभी छोड़ता है। दूसरे शब्दों में, यह एक आदमखोर बाघ अपने भयानक करियर की शुरुआत में था। दूसरी बात, अपने विशाल आकार के बावजूद, इस बाघ में लड़ने का जज़्बा नहीं था, इसलिए वह आम बाघों की तुलना में अधिक कायर, चालाक, मायावी और पकड़ना कहीं अधिक कठिन साबित होने की संभावना थी, जो आमतौर पर अधिक साहसी होते हैं और इसलिए खुद को खतरे में डालने के लिए अधिक प्रवृत्त होते हैं।

मेरी दोनों अटकलें कितनी सही थीं, यह अपेक्षाकृत कम समय में ही स्पष्ट हो गया। आमलीगोला में मेरा प्रवास लंबा नहीं हो सका क्योंकि मुझे उस विमान कारखाने में काम पर लौटना था जहाँ मैं उस समय कार्यरत था। इसलिए, रामिया को निर्देश देकर कि वह मुझे घटित घटनाओं की सटीक जानकारी देता रहे, मैं अगली सुबह बैंगलोर लौट आया।

रामिया को दोबारा लिखने में देर नहीं लगी। उन्होंने बताया कि गौंडनोराई एक खतरनाक और मायावी जानवर में बदल गया था। अब वह छोटी पहाड़ी की ढलानों पर सबके सामने धूप सेंकने नहीं जाता था। अब उसका कोई निशान नहीं दिखता था, न

ही उसकी कोई आवाज सुनाई देती थी। केवल उसके विशाल, तश्तरी जैसे पंजों के निशान ही उसके गुजरने का संकेत देते थे, और हर बार जब कोई यात्री यात्रा पर निकलता था, तो वह अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाता था।

रामैया ने बताया कि बाघ आमलिगोला से टैगार्थी जाने वाले पैदल मार्ग के सबसे सुनसान हिस्से में मंडराने लगा था, जहाँ से वह यात्रियों के समूह में से आखिरी व्यक्ति को झपट लेता था। ऐसा तीन बार हो चुका था, और अब लोग इस रास्ते से जाना पसंद नहीं करते थे। वे टैगार्थी जाने के लिए 25 मील का गोलाकार रास्ता अपनाना पसंद करते थे।

मैंने खुद भी कई बार उस शॉर्टकट का इस्तेमाल किया था, इसलिए मुझे वह जगह ठीक से पता थी जिसका जिक्र रामिया ने किया था। यह दो छोटी पहाड़ियों के बीच से गुजरती एक घाटी में एक ढलान थी, जहां ऊंचे बांस और घनी सदाबहार झाड़ियाँ थीं, जो बाघ को राहगीरों के समूह पर घात लगाकर हमला करने के लिए आदर्श आवरण प्रदान करती थीं।

अगले दिन मैं टैगार्थी के लिए रवाना हुआ, एक मील दूर स्थित खूबसूरत जंगल में बने वन विभाग के विश्राम गृह में कार खड़ी की और अमलीगोला तक आठ मील के पैदल मार्ग पर चल पड़ा, जो उस घाटी से होकर गुजरता था जिसे अब मृत्यु घाटी कहा जाता था, जहां से गौंडनोराई बाघ अपने हमले करता था। दोपहर के ठीक दो बज रहे थे और मौसम सुहाना और बादल छाए हुए थे। बाघ के सुबह-सुबह निकलने के लिए परिस्थितियां बिल्कुल अनुकूल थीं।

मुझे धीरे-धीरे और सावधानी से आगे बढ़ना था और मैंने आम्लिगोला पहुँचने का समय लगभग छह बजे या ज़्यादा से ज़्यादा आधे घंटे बाद तय किया, ठीक उस समय जब अंधेरा इतना बढ़ जाता था कि कुछ दिखाई नहीं देता था। उसके बाद बाहर रहने पर मुझे टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ता, और यह जानते हुए कि मैं एक बहुत ही शर्मीले और चालाक जानवर से निपट रहा हूँ, मुझे लगा कि वह उस समय खुद को दिखाने की संभावना कम रखेगा और शायद उस समय हमला करना पसंद करेगा जब उसे लगे कि यात्री तैयार नहीं है।

पहले एक मील तक, रास्ता खूबसूरत पार्क जैसे इलाके से होकर गुजरता है, और यहाँ मोर, जिन्होंने प्रजनन के मौसम के बाद अपने पूंछ के पंख गिराने के बाद अभी-अभी अपने नए पंख उगाना शुरू किया था, झाड़ियों के नीचे खोजबीन कर रहे थे और

जैसे ही मैं एक मोड़ से निकला, वे जोर-जोर से आसमान की ओर अपने पंख फड़फड़ाने लगे।

धीरे-धीरे वनस्पति घनी होती गई, पेड़ ऊँचे होते गए और झाड़ियाँ भी घनी होती गईं। दूसरे मील के बाद, मुझे केवल आगे का रास्ता ही दिखाई दे रहा था और मैं पीछे की ओर बस एक सरसरी नज़र डाल पा रहा था। मेरे बाएँ और दाएँ घने हरे रंग की दीवार ने एक गज से अधिक दूरी पर सब कुछ छिपा रखा था।

जिस खतरनाक घाटी के बारे में मैंने बात की है, जहां गौंडनोराई ने तीन बार घात लगाकर हमला किया था, वह अभी भी तीन मील आगे थी, जो मेरे आने वाले रास्ते के लगभग पांचवें मील से शुरू होती थी, और मेरे गंतव्य, अम्लिगोला तक पहुंचने में अभी तीन मील और बाकी थे।

जैसे-जैसे मैं इस घाटी के करीब पहुँचता गया, वनस्पति और घनी होती गई। दरअसल, इस तरह के जंगल आमतौर पर बाघों को पसंद नहीं आते, वे उस पार्क जैसे इलाके को पसंद करते हैं जहाँ से मैं पहले ही गुजर चुका था। बाइसन, हाथी, सांभर और भौंकने वाले हिरण यहाँ के निवासी हैं, ये बिल्लियाँ खुले जंगलों को चुनती हैं जहाँ उनके मुख्य शिकार, जैसे चित्तीदार हिरण, जंगली सूअर और गाँव के मवेशी, वहाँ उगने वाली भरपूर घास चरते हैं। यह गौंडनोराई की चालाकी का एक और संकेत था जिसने उसे अपनी प्रजाति की आदत से हटकर ऐसी जगह पर रहने के लिए प्रेरित किया जहाँ उसे घात लगाने के लिए अधिकतम सुरक्षा मिल सके।

अंततः मैं पहाड़ी की तलहटी में उतर आया, जिसकी नींव मृत्यु घाटी की शुरुआत को दर्शाती है। अगले पहाड़ी पर चढ़ाई शुरू होने वाले रास्ते तक तीन-चौथाई मील, या शायद सात फर्लांग की दूरी है, और घने बांस और हरी-भरी झाड़ियाँ दोनों ओर संकरे रास्ते को भारी दबाव से घेरे हुए हैं।

मैं एक पल के लिए रुका और मुट्ठी भर रेत उठाई, जिसे मैंने कंधे तक उठाया और फिर धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से गिरने दिया। हवा बहुत कम थी, लेकिन जो भी थोड़ी बहुत थी, वह रेत को थोड़ा-थोड़ा करके मेरी बाईं ओर धरती की तरफ ले जा रही थी। इसलिए हवा दाईं से बाईं ओर बह रही थी, और अगर बाघ हमला करता, तो वह लगभग निश्चित रूप से रास्ते के बाईं ओर से हमला करता, न कि दाईं ओर से। मेरा यह अनुमान जंगल के एक मूलभूत नियम पर आधारित था।

बिल्ली प्रजाति के जानवर हिरण और ऐसे जीवों का शिकार करते हैं जिनकी

सूंघने की शक्ति बहुत तीव्र होती है। हवा के विपरीत दिशा से ऐसा करने पर उनका शिकार करने का प्रयास विफल हो जाता है, क्योंकि हवा के झोंके उनकी उपस्थिति का पता लगा देते हैं और उनका शिकार भाग जाता है। इसलिए मांसाहारी जानवरों ने सहज प्रवृत्ति से यह सीख लिया है कि वे हमेशा हवा के विपरीत दिशा से ही शिकार की ओर बढ़ें, ताकि हमला करने से पहले उनकी गंध से ही उनका पता न चल जाए।

हिरणों के विपरीत, आत्मरक्षा के लिहाज़ से मनुष्य में सूंघने की क्षमता न के बराबर होती है, और एक आम इंसान किसी बाघ या तेंदुआ की गंध को सूंघ नहीं पाएगा, चाहे वो एक गज की दूरी पर ही क्यों न छिपा हो, चाहे हवा किसी भी दिशा से आ रही हो। लेकिन बिल्ली प्रजाति के इस प्राणी को यह बात पता नहीं होती, इसलिए वह किसी मनुष्य का पीछा करने के लिए भी वही नियम अपनाती है जो वह जंगल के किसी अन्य प्राणी का पीछा करने के लिए अपनाती है। इसी कारण, मुझे लगभग पूरा यकीन था कि अगर गौंडनोराई मेरे पास आता है, तो वह बाईं ओर से हमला करेगा।

और वह इतना कायर था कि मेरे पीछे से उस पर हमला करने के दस में से एक मौका था।

इन सभी बातों को तर्क के आधार पर स्थापित करने के बाद, मैं किसी भी संभावित घटना के प्रति सतर्क रहते हुए चुपचाप रास्ते पर आगे बढ़ने लगा।

शुरुआती एक चौथाई मील का सफर डर से भरा था। मैं थोड़ी-थोड़ी देर में पीछे मुड़कर देखता था कि कहीं कोई मेरा पीछा तो नहीं कर रहा। एक बार जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मैंने देखा कि जिस झाड़ी के पास से मैं अभी गुजरा था, वह अचानक ज़ोर से हिली और फिर स्थिर हो गई।

मैं घूम गया। मुझे पता था कि मैं झाड़ी के नीचे नहीं देख सकता; वह बहुत घनी थी। लेकिन मैं उसके ऊपरी हिस्से को देख सकता था। बाघ झाड़ी के बीच से छलांग नहीं लगा सकता, उसे छलांग लगाने से पहले शाखाओं को पार करने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ता है, और जब वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता है तो झाड़ियों के ऊपरी हिस्से हिलते हैं। यदि आप शाखाओं के ऊपरी हिस्सों को देखते रहेंगे तो आप उन्हें हिलते हुए देख पाएंगे, तब आपको पता चल जाएगा कि बाघ आ रहा है।

रास्ते के किनारे के बिल्कुल पास एक शाखा का ऊपरी सिरा थोड़ा सा हिल गया, जैसे किसी चीज ने उसके आधार को छू लिया हो। मैंने मन ही मन कहा, "बस यही है," और अपनी .405 पिस्तौल कंधे पर रख ली।

कुछ ही क्षण बाद शाखा और अधिक स्पष्ट रूप से कांप उठी और एक जंगली सूअर पूरी तरह से सामने आ गया। मुझे देखते ही वह अचानक मेरी ओर मुड़ गया, उसकी गर्दन के बाल रीढ़ की हड्डी की तरह खड़े हो गए, सिर नीचे झुका हुआ था और उसके नुकीले दांत मेरी ओर थे, उसकी छोटी लाल आंखें गुस्से से ऊपर की ओर देख रही थीं।

मुझे हंसी आ रही थी, लेकिन मैंने राहत की सांस ली। मेरे बाईं ओर से सूअर का प्रकट होना इस बात का संकेत था कि बाघ आस-पास कहीं नहीं था।

मुझे बिना हिले-डुले खड़ा देखकर और उसकी ओर कोई हरकत न करते हुए, सूअर ने सोचा कि मैं शायद हानिरहित हूँ, हालाँकि मुझ पर गंभीर संदेह ज़रूर किया जाना चाहिए। अपना सिर झुकाए हुए, ताकि ज़रूरत पड़ने पर मुझ पर नज़र रख सके और हमला कर सके, सूअर रास्ते को पार करके दाईं ओर घनी झाड़ियों में घुस गया, पत्तों को ज़ोर से रगड़ते हुए। अगले ही पल वह गायब हो गया।

इस बार मैंने सचमुच राहत की सांस ली। मैं फिर से आगे बढ़ा, शायद राहत ने मुझे थोड़ा कम सतर्क बना दिया था, और जल्द ही घाटी के अंत के करीब पहुँच गया। मुझे सामने कुछ भी दिखाई नहीं दिया; मैंने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन वहाँ भी कुछ नहीं था। मैंने फिर से सामने देखा, तभी किसी चीज़ ने मुझे पीछे मुड़ने के लिए प्रेरित किया।

और मेरे बाईं ओर हरे रंग की दीवार से, जिसे मैं अभी-अभी पार कर चुका था, गौंडनोराई, या यूँ कहें कि उसका सिर, उभर रहा था। उसने एक भी आवाज़ नहीं की थी। मैंने अपनी राइफल कंधे पर रखी और तिरछी नज़र से बैरल की ओर देखा।

लेकिन बाघ अब वहाँ निशाना साधने के लिए नहीं था। उसकी सहज प्रवृत्ति और जन्मजात कायरता ने उसे आगाह कर दिया कि यहाँ कोई निहत्था राहगीर नहीं है। वह उतनी ही खामोशी से गायब हो गया जितनी खामोशी से वह आया था।

आत्मविश्वास ने मुझे साहसी बना दिया और मैंने उसे देखने के लिए आगे कदम बढ़ाया। तभी एक धीमी सी गुर्राहट सुनाई दी, और फिर कुछ गज दूर झाड़ियों में पत्तों की सरसराहट से मुझे पता चला कि वह बड़ा बाघ लड़ने के लिए नहीं रुकेगा। वह भाग रहा था।

मैं अंधेरा होने से कुछ ही देर पहले अमलिगोला पहुंचा और वहां पहुंचकर मैंने आश्चर्यचकित रामिया को अपने साहसिक कारनामे के बारे में बताया।

मुझे अगले दिन क्या करना है, यह ठीक से समझ नहीं आ रहा था। रामिया ने कहा कि मवेशियों को चारा बनाकर रखना बेकार है, क्योंकि गौंडनोराई उन्हें देखेंगे भी नहीं। वैसे भी, अमलिगोला में बहुत कम मवेशी थे, और उनके मालिक इस उद्देश्य से उन्हें बेचना नहीं चाहते थे। अगर मुझे चारा खरीदना था, तो मुझे अगली सुबह टैगार्थी वापस जाने का इंतजार करना पड़ता।

उस दोपहर गौंडनोराई ने अपना ही नियम तोड़ दिया। शायद उसे बहुत भूख लगी थी। हो सकता है उसने सोचा हो कि मेरे रहते हुए घाटी में कुछ समय के लिए रहना उसके लिए खतरनाक होगा। इसलिए उसने उस पार्क जैसे जंगल में एक आदमी को मार डाला जिसके बारे में मैंने आपको बताया है, जो टैगार्थी वन विश्राम गृह से लगभग एक मील दूर था जहाँ मैंने अपनी कार खड़ी की थी। पीड़ित के तीन साथी मुझे खबर देने के लिए घाटी से जल्दी से आए। वे जानते थे कि जब बाघ अपने शिकार को खा रहा था तब घाटी पार करना सुरक्षित था। जब वे पहुँचे तब दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे और मुझे घटना स्थल तक पहुँचने के लिए सात मील का सफर तय करना था। हमें साढ़े चार बजे के कुछ देर बाद उस आदमी का बचा हुआ हिस्सा मिला।

गौंडनोराई ने झाड़ी के पीछे से, जिसके बीचोंबीच एक जंगली काजू का पेड़ उग रहा था, अपने शिकार पर अपेक्षित तरीके से हमला किया, उसे मार डाला और उसी झाड़ी में वापस ले गया, जहाँ उसने काम शुरू किया और शरीर के आधे से अधिक हिस्से को खा लिया। पीड़ित के आगे चल रहे तीनों व्यक्ति लगभग दौड़ते हुए आमलिगोला तक पहुँचे।

वहाँ उगने वाला जंगली काजू का पेड़ बहुत ही सौभाग्यशाली साबित हुआ। उसकी अनेक शाखाओं और बड़े पत्तों के कारण मचान का निर्माण जल्दी और आसानी से हो गया। हालाँकि मैंने खुद से शर्त लगाई थी कि गौंडनोराई कभी नहीं आएगा, क्योंकि वह बहुत ही चालाक था, और मचान बनाते समय आदमियों द्वारा चुपचाप काम करने के तमाम प्रयासों के बावजूद मचान का शोर उसे ज़रूर सुनाई दिया होगा, जहाँ वह लेटा हुआ था, शायद बहुत दूर नहीं, फिर भी उसके आने की थोड़ी सी संभावना बनी हुई थी। छह बजे तक मैं मचान में था, जो इतने कम समय में बनकर तैयार हुआ था, उसे देखते हुए काफी आरामदायक था, और तीनों आदमी उस एक मील की दूरी तय करके टैगार्थी वापस चले गए, जो उन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण आदमी के साथ तय की थी, जो अब झाड़ी के पीछे बुरी तरह घायल पड़ा था।

यह वसंत ऋतु थी और जल्द ही अंधेरा छाने लगा। एक घंटे के भीतर ही मेरे नीचे जमीन पर पड़े शव के अवशेष मेरी नजरों से ओझल हो गए। चांदनी नहीं थी और मैं अपनी राइफल की नली पर लगी टॉर्च पर निर्भर था, ताकि अगर बाघ वापस आए तो वह दृश्य को रोशन कर सके।

लगभग एक घंटे तक सन्नाटा छाया रहा, सिवाय कुछ रात्रि पक्षियों की आवाज़ों और पेड़ के चारों ओर मंडराते बड़े चमगादड़ों के पंखों की फड़फड़ाहट के। मैंने अपनी घड़ी के चमकदार डायल पर नज़र डाली। आठ बज रहे थे, वह समय जब बाघ आमतौर पर अपने शिकार के पास लौटते हैं!

ठीक समय पर, पूर्व दिशा में स्थित पार्क जैसे घने जंगल से चित्तीदार हिरणों का एक झुंड खतरे की चेतावनी देने लगा। उनकी चीखें अभी धीमी ही हो रही थीं कि मेरे ठीक नीचे झाड़ियों में एक जानवर हिलने लगा। गौंडनोराई आ चुका था। अगले ही पल वह खाना शुरू कर सकता था और फिर मुझे मौका मिल जाता।

ठीक उसी क्षण मुझे एक बाघ की दहाड़ सुनाई दी, लेकिन वह कम से कम सौ गज या उससे भी अधिक दूर था; निश्चित रूप से मेरे नीचे नहीं था। तो गौंडनोराई के पास एक साथी था!

इस तथ्य ने कई उलझनें खड़ी कर दीं। क्या वाकई यही आदमखोर था? मुझे उसकी कायरता याद आ गई। शायद कोई दूसरा बाघ ही असली आदमखोर था। या शायद दोनों को ही यह आदत थी!

मेरे विचारों में तब खलल पड़ा जब मेरे नीचे मौजूद जानवर गुर्राया; फिर पूरी रफ्तार से भाग निकला। उसके बाद मुझे दोनों बाघों की कोई आवाज नहीं सुनाई दी और मैंने सोचा कि वे दोनों चले गए हैं, तभी नौ बजने से कुछ मिनट पहले एक टहनी टूटने की आवाज आई और उसके बाद हड्डियों के चटकने की आवाज सुनाई दी। एक बाघ वापस आ गया था। इसलिए मैंने गोली चलाने की तैयारी में धीरे से राइफल को अपने कंधे पर उठाया।

पल भर में अफरा-तफरी मच गई। मेरे ठीक पीछे अंधेरे से लगातार गर्जनाएं सुनाई दीं, ठीक नीचे से खांसने और गुर्राने की आवाज आई, और इसके बाद एक भारी शरीर के पेड़ के तने पर बेतहाशा चढ़ने की आवाज सुनाई दी, जिस पर मैं बैठा था। लगभग उसी क्षण एक दूसरा शरीर पेड़ से टकराया, जिससे पेड़ हिल गया और तने को फाड़ने लगा।

पेड़ ऐसे हिल रहा था मानो किसी तूफान ने उसे हिला दिया हो और मुझे लगा कि मैं मचान से बाहर फेंक दिया जाऊँगा। मेरे पैरों के ठीक नीचे से आती दहाड़ें, गुर्राहटें और दहाड़ें सुनकर मैं दहशत में आ गया। जल्दी से राइफल की नली नीचे की ओर करके मैंने टॉर्च का बटन दबाया। रोशनी ने अंधेरे को चीरते हुए सिर्फ दो फीट नीचे एक पैंथर पर पड़ी। लेकिन वह नीचे की ओर देख रहा था।

मैंने बंदूक की नली को थोड़ा सा हिलाया, और अब, मैंने गोवंडनोराई की धधकती आँखों में देखा, जिनमें उस पेड़ पर हमला करने की हिम्मत कभी नहीं होती जिस पर मैं छिपा हुआ था, अगर शिकार से बचकर आया पैंथर उसमें शरण न लेता। दोनों जानवरों को नहीं पता था कि पेड़ पर पहले से ही मैं मौजूद था।

पहला निशाना आसान था—आँखों के बीचोंबीच। गाउंडनोराई दहाड़ते ही पीछे की ओर गिर पड़ा। दूसरा भी आसान था। पैंथर चौंककर ऊपर देखने लगा, जिससे उसे एक और आसान निशाना मिल गया, वह भी आँखों के बीचोंबीच। मैं उसे छोड़ नहीं सकता था, हालाँकि मैं ऐसा करना चाहता था। वह किसी इंसान का शिकार खा रहा था और शायद खुद भी आदमखोर बन जाए।

गौंडनोराई शायद अब तक का सबसे बड़ा बाघ था जिसे मैंने मारा था; और निश्चित रूप से सबसे कायर भी।

चार

दिगुवामेटा का हत्यारा

अगर आप आंध्र प्रदेश राज्य के गुंटकल जंक्शन से मीटर-गेज रेलगाड़ी से दक्षिण-पूर्व

दिशा में यात्रा करें, तो आप नंदीयाल नामक बड़े शहर से गुजरेंगे और कुछ ही देर बाद घने जंगलों से आच्छादित और अनेक धाराओं से घिरे पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। इन धाराओं पर से गुजरते हुए आप बसवपुरम और चेलामा के वन स्टेशनों पर थोड़ी देर रुकेंगे और दो सुरंगों को पार करेंगे, जिनमें से एक छोटी और दूसरी बहुत लंबी है। अंत में आप एक हरे-भरे घाटी को एक सुरम्य ऊंचे पुल से पार करेंगे, जिसके नीचे दूर तक फैले वृक्षों की चोटियाँ दिखाई देंगी। कुछ मील आगे आपको रेल की दाहिनी ओर एक विशाल पत्थर का जलस्तंभ दिखाई देगा, जो हमेशा पानी से भरा रहता है। इसके बगल में ही 'बाहरी' संकेत लगा है जो दिगुवामेटा रेलवे स्टेशन के आगमन की सूचना देता है, जहाँ पहाड़ और जंगल समाप्त होते हैं और खेती योग्य मैदान फिर से शुरू हो जाते हैं।

'हत्यारे' की गतिविधियाँ इस स्टेशन से लेकर घाटी में स्थित उस बहुत लंबी सुरंग तक फैली हुई थीं, जिसे लंबे पुल द्वारा पार किया जाता था, लेकिन यह विशेष रूप से टपकते पानी के स्तंभ और उसके बगल में स्थित 'बाहरी' सिग्नल के आसपास के क्षेत्र में सक्रिय थीं।

चेलामा और दिगुवामेटा के बीच के जंगलों के प्रति मेरे मन में हमेशा से एक खास लगाव रहा है, इसलिए नहीं कि वहाँ शिकार या मांसाहारी जानवर बहुतायत में पाए जाते हैं, बल्कि इसलिए कि वहाँ का वातावरण बिल्कुल शांत और एकांत है, और पूर्वी घाट के इस हिस्से में फैले जंगलों में रहने वाले चेंचु जनजाति के लोग बहुत ही मिलनसार हैं। मैंने पाया है कि आंध्र प्रदेश का आम ग्रामीण भी, कुल मिलाकर, मैसूर राज्य के ग्रामीणों की तुलना में कहीं अधिक मिलनसार होता है, जहाँ मैं रहता हूँ, जबकि मद्रास राज्य के लोगों का स्वभाव इन दोनों के बीच का होता है।

इसके अलावा, यहां की वनस्पति की प्रकृति दक्षिण में उगने वाली वनस्पति से काफी अलग है, और हालांकि यहां हाथी या बाइसन नहीं पाए जाते हैं, यह क्षेत्र नीलगाय या ब्लू-बुल की वह दक्षिणी सीमा है जहां सांभर हिरण की तरह दिखने वाला मृग प्रजाति का एक बड़ा जानवर पाया जाता है।

तो एक दिन मैं दिगुवामेटा के लिए ट्रेन से रवाना हुआ, लंबी सुरंग और लंबे पुल से गुज़रते हुए, जो हमेशा से मेरे लिए एक बचपन का आकर्षण रहे थे, सिग्नल और टपकते पानी के स्तंभों से बचते हुए, मैं अपने छोटे से बिस्तर, कैंप किट और राइफल के साथ दिगुवामेटा में उतरा। कुछ बच्चों ने मेरा बिस्तर और कैंप किट छीन लिया, और

राइफल को कंधे पर टांगकर हम उस सड़क पर चलने लगे जो रेलवे ट्रैक के समानांतर उस दिशा में जाती थी जहाँ से ट्रेन अभी आई थी।

वन बंगले तक शायद आधा मील की दूरी थी, जो इतनी पुरानी इमारत होने के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से आरामदायक था; इसके दक्षिण में सागौन के पौधों का बागान था, पूर्व और उत्तर में जंगल था, जबकि पश्चिम में रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क थी, और उसके बाद फिर से रेलवे लाइन थी, जैसा कि मैंने अभी बताया। सिग्नल और पानी का खंभा बस आधा फर्लांग की दूरी पर थे। मेरे पुराने दोस्त, वन बंगले के रखवाले अलीम खान ने द्वार पर अपनी चौड़ी मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया, साथ ही बच्चों को मेरे सामान लाने के लिए जल्दी करने को कहा।

बंगले में कमरों के दो सुइट थे, और हमेशा की तरह अलीम ने मुझे बेहतर वाले सुइट में ठहराया, जो सड़क और रेलवे ट्रैक की ओर खुलता था। यह बेहतर इसलिए था क्योंकि इस सुइट से जुड़े बाथरूम में शॉवर लगा हुआ था, जबकि दूसरे वाले में नहीं था।

अलीम मुसलमान था और उसकी सिर्फ़ दो पत्नियाँ थीं, जबकि उसके कई सह-धर्मियों की चार पत्नियाँ थीं, जो कि कानूनी तौर पर एक मुसलमान के लिए अधिकतम संख्या है। उसने मुझे पहले भी बताया था कि उसे लगता है कि दो पत्नियाँ ही काफ़ी हैं। बिना देर किए उसने इन दोनों महिलाओं को बुलाया और उन्हें एक साथ हैंडपंप चलाने को कहा। यह यंत्र एक बड़े कुएँ से पानी खींचकर मेरे बाथरूम की छत पर बने जस्ता के पानी के टैंक में भरता था। आधे घंटे तक, जब मैं अपना सामान खोल रहा था और फिर चौकीदार द्वारा जल्दी से बनाई गई चाय पी रहा था, मैं हैंडपंप की खट-खट-खट की आवाज़ और दोनों पत्नियों की आपस में बहस और फिर झगड़ा सुन सकता था, क्योंकि दोनों एक-दूसरे पर पंपिंग में अपना हिस्सा न करने का आरोप लगा रही थीं। बाथरूम की छत से पानी गिरने की आवाज़ से झगड़ा समाप्त हुआ। टैंक पूरी तरह भर गया था!

फिर आखिरकार मुझे वह बहुप्रतीक्षित शावर बाथ का सुख मिला, या यूं कहें कि एक के बाद एक कई शावर बाथ, ठंडे पानी की पतली धारें मेरे शरीर पर बह रही थीं। बाहर का तापमान 100 डिग्री फ़ारेनहाइट से भी ऊपर था और आंध्र प्रदेश की चिरस्थायी धूप पड़ रही थी, लेकिन उस बाथरूम के अंदर इतनी ठंडक, इतनी नमी और इतना सुहावना माहौल था। यह सोचकर मेरे चेहरे पर एक शरारती मुस्कान आ गई कि

मैं उन दो महिलाओं द्वारा मेरे लिए इतनी मेहनत से निकाले गए उस कीमती पानी को कितनी बेरहमी से बर्बाद कर रहा था।

तरोताज़ा होकर, बरामदे में एक आरामकुर्सी पर आराम से लेटकर, मैंने सुकून से अपनी पाइप का कश लिया और एक के बाद एक कई मग चाय पी। एक मालगाड़ी भारी आवाज़ करते हुए गुज़री, दोनों सिरों पर एक-एक इंजन था, आगे वाला इंजन अपनी चिमनी से काले धुएं के बादल उड़ाता हुआ पूरी ताकत से खींच रहा था, जबकि पीछे वाला इंजन बेफिक्र होकर चल रहा था, मानो उसे किसी बात की परवाह ही न हो।

अलीम खान मेरी कुर्सी के बगल में ज़मीन पर एड़ियों के बल बैठ गया और मुझे अपने परिवार की कुछ परेशानियाँ बताने लगा। उसकी इकलौती बहन के पति, जो एक वन रक्षक थे, की तपेदिक से अचानक मृत्यु हो गई थी, जिससे उनकी पत्नी और दो बच्चे बेसहारा हो गए थे। वे तुरंत अलीम के पास शरण लेने आए थे और अब समस्या बहुत गंभीर हो गई थी। अलीम की पहली पत्नी के तीन बच्चे थे, दूसरी के दो; और अब उसकी बहन, उसके दो बच्चों और खुद अलीम को मिलाकर कुल चार वयस्क और सात बच्चों का पेट पालना उसकी मामूली तनख्वाह पर निर्भर था।

क्या मैं कुछ कर सकता था? अलीम ने बताया कि दो बच्चों के बावजूद, उसकी बहन अब भी सुंदर, आकर्षक, सुडौल, मिलनसार स्वभाव की और एक अच्छी पत्नी बनने के सारे गुण रखती थी। एक पल के लिए मैं ललचा गया और आँखें बंद करके सोचने लगा। इस्लाम अपनाने की घोषणा करना कितना मजेदार होगा! मैं अलीम की बहन से शादी कर सकता था और इस तरह दो और पत्नियाँ पा सकता था। बैंगलोर में एक पत्नी के साथ, कुल चार पत्नियाँ हो जातीं।

फिर खर्च का पहलू मेरे लिए एक गहरा झटका साबित हुआ, और उसके परिणामस्वरूप आने वाली परेशानियाँ उससे भी कहीं ज़्यादा गंभीर थीं। मैं अपनी इस दयनीय स्थिति को देखकर भयभीत हो गया, और फिर यह याद करके मुस्कुरा उठा कि यह सब तो सिर्फ़ अनुमान पर आधारित था।

मैंने जल्दी से अलीम से कहा कि मैं बैंगलोर में एक उपयुक्त उम्मीदवार की तलाश करूंगा, और फिर उतनी ही जल्दी से विषय बदल दिया। क्या वहाँ कोई बाघ या तेंदुआ थे?

उन्होंने बताया कि दस दिन पहले ही एक सरकारी अधिकारी ने जीप में सवार

होकर, वन विभाग की अग्निशमन रेखा पर, विश्राम गृह से दो सौ गज की दूरी पर स्थित उस रेखा का निरीक्षण किया था और एक बाघ का शिकार किया था। आपको बता दें कि यह अग्निशमन रेखा पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई थी। यह बंगले के उत्तर-पश्चिम में स्थित सड़क से शुरू होकर एक फर्लांग दूर पूर्व दिशा में दो मील दूर एक अन्य सड़क तक जाती थी, जो जंगल से होकर गुजरती थी और दिगुवामेटा को लगभग चालीस मील दूर स्थित गोंडाचेरुवु नामक एक छोटे से गाँव से जोड़ती थी।

अलीम ने यह भी बताया कि आसपास एक पैंथर घूम रहा था और यह जानवर परेशानी पैदा करने लगा था। सुबह-सुबह विश्राम गृह के आसपास उसके पैरों के निशान दिखाई देते थे और तीन हफ्ते पहले वह उसके कुत्ते को पीछे के बरामदे में उसके सोने की जगह से उठा ले गया था। उसने आगे बताया कि उसकी बहन अपने दो बच्चों के साथ-साथ अपने कुत्ते को भी लाई थी और पैंथर ने अलीम द्वारा अपनी बहन को दिए गए उस कमरे के दरवाजे के ठीक बाहर उस पर हमला कर दिया था। लेकिन गांव के आम कुत्तों के मुकाबले यह जानवर काफी बड़ा था, और इसका दिल भी बड़ा था। उसने पैंथर पर इतनी भयंकर आक्रामकता से हमला किया कि पैंथर तेजी से भाग निकला और कुत्ता उसका पीछा करने लगा। अलीम और उसकी बहन दोनों ने चांदनी रात में यह दृश्य देखा था।

फिर भी, चौकीदार ने कहा कि वह इस स्थिति से खुश नहीं था और उसे लगता था कि पैंथर हिम्मत जुटाकर वापस आएगा और अंततः कुत्ते को ले जाएगा। लेकिन सबसे ज्यादा चिंता उसे वहां मौजूद सात बच्चों की मौजूदगी से थी, जिनमें से दो तो बिल्कुल छोटे बच्चे थे। अगर पैंथर बहुत ज्यादा साहसी हो गया—या भूखा हो गया—तो वह उनमें से किसी एक को लेकर भाग सकता था।

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि मैं भारत छोड़कर इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया या कनाडा क्यों नहीं चला जाता। मैंने इस सवाल का जवाब देने की कोशिश की है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं किसी को भी समझा पाया हूँ। दिगुवामेटा में उस दोपहर आरामकुर्सी पर लेटे हुए यह विचार मेरे मन में फिर से आया। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया या कनाडा में, या दुनिया में कहीं और, शायद अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका को छोड़कर, मुझे भारत जैसी परिस्थितियाँ कहाँ मिलेंगी? ट्रेन या सड़क मार्ग से कुछ घंटों की यात्रा मेरे बैंगलोर स्थित घर को दो सौ मील के दायरे में स्थित कई पर्वत श्रृंखलाओं की ठंडी जलवायु से, या उससे भी करीब स्थित मैदानी इलाकों की उमस भरी गर्मी से अलग करती है;

पश्चिम में घने जंगलों से, जहाँ भारी वर्षा होती है, और पूर्व में अत्यंत शुष्क, अर्ध-मरुस्थलीय क्षेत्रों से; शहरों की लाखों की भीड़ से और घर से पचास मील के भीतर स्थित जंगल के एकांत से; शहरों की विविध भाषाओं और बोलियों से और वनवासियों की लगभग अस्पष्ट शब्दावली से। घर की सुरक्षा और आराम से लेकर अचानक बीमारी, सांप के काटने या किसी जंगली जानवर के हमले से होने वाली मौत के निरंतर खतरे तक, दुनिया में और कहाँ भारत जैसा समय इतना कम महत्व रखता है? दुनिया में और कहाँ परिणाम इतने कम महत्वपूर्ण होते हैं? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसे कपड़े पहनते हैं या पहनते भी हैं या नहीं! जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं ही मायने रखती हैं। बाकी सब कुछ इसके साथ ही आता है, कभी भरपूर मात्रा में तो कभी न के बराबर; लेकिन वास्तव में इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता और किसी भी चीज की कोई जल्दी नहीं होती। जन्म का समय होता है और मृत्यु का, और दोनों घटनाएं अपरिहार्य हैं। इसके अलावा, मृत्यु जीवन का अनुसरण करती है और जीवन मृत्यु का, इसलिए वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ से शुरू करते हैं और कहाँ समाप्त करते हैं, क्योंकि अंततः सब कुछ एक ही बात पर आकर समाप्त होता है।

मेरे दोस्त यह बात नहीं समझ पाते जब मैं उन्हें बताता हूं कि इन्हीं चीजों की वजह से मुझे भारत से प्यार है, और मुझे नहीं लगता कि मैं इसे कभी छोड़ूंगा।

मेरी तल्लीनता उस समय भंग हो गई जब वन रेंज अधिकारी साइकिल पर सवार होकर अलीम खान को यह सूचना देने आए कि उन्हें खबर मिली है कि जिला वन अधिकारी (डी.एफ.ओ.) दिगुवामेटा से गुजर रहे हैं और अगली रात विश्राम गृह में बिताएंगे। क्या मेरे पास बंगले में रहने की लिखित अनुमति थी?

मुझे मना करना पड़ा, और रेंज अधिकारी दंग रह गया। मैंने अतिक्रमण का अक्षम्य अपराध किया था। मैं बिना अनुमति के सरकारी इमारत में था। उसने गहरी साँस ली और फिर मुझे तुरंत बाहर निकलने को कहा।

यहां मुझे वही कठिनाई महसूस हुई जो मैंने कई जंगलों में बने कई वन बंगलों में झेली थी। इसीलिए मैंने कई क्षेत्रों में इतनी सारी ज़मीनें खरीदी हैं, ताकि मैं अधिकारियों की दखलंदाज़ी के बिना शांति से डेरा डाल सकूं, उस सर्वव्यापी भय से मुक्त होकर जो अनादिकाल से देश के कोने-कोने में मंडराता रहा है, ब्रिटिश राज के दिनों में भी मंडराता रहा और स्वतंत्रता के बाद तो और भी अधिक हावी हो गया है।

मैंने रेंज ऑफिसर की चापलूसी की और देखते ही देखते वो मेरे इशारों पर नाचने लगा। उसने भी सहमति जताते हुए कहा, "जी साहब, ये वरिष्ठ अधिकारी जो दौरे पर आते हैं, वाकई बहुत झंझट पैदा करते हैं। क्यों (और मेरी सज्जनता को जानते हुए उसने मुझे भरोसे में बताया) कि जब वे आते हैं तो बिल्कुल काम नहीं करते। काम तो वो और उसके मातहत ही करते हैं। ये दौरे तो बस पैसे कमाने का बहाना होते हैं, जब उनके पास पैसों की कमी होती है। इस बात का सबूत ये है कि ये 'दौरे' हमेशा महीने के आखिरी हफ्ते में ही होते हैं।" बेशक, मैं रात बंगले में रुक सकता था, लेकिन मुझे वादा करना होगा कि मैं अगले दिन दोपहर से पहले चला जाऊंगा, वरना अगर रक्षा अधिकारी को पता चला कि मैं बिना इजाज़त के बंगले में रह रहा हूं, तो वो बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा।

मैंने वादा किया और फिर पूछा कि क्या गाँव में कहीं कोई खाली कमरा है। रेंज अधिकारी को ऐसा नहीं लगा।

बातचीत के इस मोड़ पर मैंने बताया कि मुझे कई अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ी थीं, इसलिए मैंने लगभग हर जंगल में छोटे-छोटे भूखंड खरीदना शुरू कर दिया था और उस समय मेरे अपने बीस से अधिक शिविर स्थल थे। यह सुनकर वह खुश हो गया। उसने बताया कि राजस्व विभाग में उसका एक मित्र है, जिसके पास रेलवे स्टेशन के ठीक बाहर कई एकड़ जमीन है। उसकी सिफारिश पर, रेंजर को पूरा विश्वास था कि उसका यह मित्र, जिसका नाम रंगा रेड्डी था, मुझे खुशी-खुशी एक छोटा सा भूखंड उपहार के रूप में मुफ्त में दे देगा, जो तंबू लगाने के लिए काफी बड़ा होगा।

एक घंटे के भीतर हम अपने मित्र के घर पहुँच गए। वहाँ हमने कॉफ़ी पी और हमें दो-दो डोसे खाने के लिए मजबूर किया गया। फिर रंगा रेड्डी हमें अपनी ज़मीन पर ले गए, जो रेलवे स्टेशन से एक चौथाई मील आगे और लाइन के पूर्व में थी, और मुझे अपनी पसंद की कोई भी जगह, जहाँ भी मैं चाहूँ और जितनी ज़रूरत हो, चुनने के लिए आमंत्रित किया।

खेत उपजाऊ काली मिट्टी से बना था, जो कृषि के लिए अच्छा था। हमें खेत के दूर कोने में जाकर एक खाली ज़मीन का टुकड़ा ढूंढना पड़ा, जो बंजर पड़ा था और जिसकी मिट्टी खेत के बाकी हिस्से जितनी उपजाऊ नहीं थी। आख़िरकार, मुझे तो बस एक शिविर स्थल चाहिए था और मैं अपने नए दोस्त को किसी भी मूल्यवान चीज़ से

वंचित नहीं करना चाहता था। थोड़ी दूरी पर एक छोटी नदी बह रही थी, जबकि मुख्य सड़क एक तरफ से उस ज़मीन को घेरे हुए थी। एक आदर्श शिविर स्थल! दस सेंट ज़मीन मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी होगी।

मैंने मालिक को अपनी पसंद बताई। उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि मैं वह ज़मीन ज़रूर ले सकता हूँ। वे अगले दिन मुझे अपनी जीप में बारह मील दूर गिद्दालुर कस्बे तक ले जाएँगे, जहाँ मेरे स्वामित्व का औपचारिक पंजीकरण करवाना होगा।

मैंने कीमत पूछी। उन्होंने जवाब दिया, बिल्कुल मुफ्त। मैंने कहा, यह तो बिल्कुल ठीक नहीं है। इसके अलावा, यह कानूनी खरीद नहीं होगी; उन्हें कुछ कीमत तो चुकानी ही होगी। श्री रेड्डी ने हिचकिचाते हुए कहा, 'पांच रुपये,' और मैंने कहा, 'नहीं, पचास रुपये ले लीजिए।'

वह दहशत से पीछे हट गया। 'ऐसी बेकार ज़मीन के लिए दोस्त से पचास रुपये लेना!' आखिरकार हम तीस रुपये पर सहमत हो गए, जो अंग्रेजी मुद्रा में दो पाउंड से भी कम है।

अगली सुबह हम गिद्दालुर स्थित रजिस्ट्रार कार्यालय में उसके खुलने के समय ही पहुँच गए थे। आधे घंटे बाद मैं दिगुवामेटा में दस सेंट जमीन पर बने अपने शिविर स्थल का गर्वित मालिक बन गया!

हालांकि, मैंने आपको ज़मीन की खरीद के बारे में बताकर घटनाओं का कुछ पूर्वाभास कर दिया है। मुझे घटनाओं के सही क्रम में यह बताना चाहिए था कि उस रात क्या हुआ जब मैं उस आग की लकीर के किनारे थोड़ी देर टहलने के बाद विश्राम गृह लौटा था जहाँ हाल ही में बाघ को गोली मारी गई थी। यह आग की लकीर एक गहरे नाले को पार करती थी जो एक बहती हुई धारा का तल था, जहाँ शुष्क मौसम होने के कारण पानी का बहाव एक गज से अधिक चौड़ा नहीं था। दोनों किनारों पर कीचड़ में एक मध्यम आकार के पैंथर के पदचिह्न थे। यह जानवर, अपनी प्रजाति के अन्य जानवरों की तरह, पानी में चलने से कतराता था, इसलिए वह कूदकर पार गया था।

मुझे लगा कि शायद यह वही जानवर हो जिसके बारे में अलीम ने मुझे बताया था। पैरों के निशान जंगल में बने लॉज की ओर जा रहे थे और शायद पिछली रात ही बने थे। फिर मैंने झुककर उन्हें और करीब से देखा और मेरा विचार बदल गया। कुछ जगहों पर पुराने जलमार्गों और धाराओं के किनारे उगने वाली गहरे हरे रंग की फफूंद

की परत दोनों किनारों पर पानी के किनारे तक फैली हुई थी, और पैंथर के वजन से वह परत उस तरफ से दब गई थी जहाँ से जानवर कूदा था और उससे कहीं ज़्यादा गहराई से उस किनारे पर जहाँ वह उतरा था। गहरे हरे रंग की फफूंद का दोनों तरफ से अभी भी दबा हुआ होना बहुत महत्वपूर्ण था। बाकी जगहों पर वह अपनी सीधी स्थिति में वापस क्यों नहीं आई? अगर पैंथर ने पिछली रात छलांग लगाई होती, जैसा कि मैंने पहले सोचा था, तो ऐसा हो जाता। केवल एक ही निष्कर्ष निकल सकता था: तथ्यों से साफ पता चलता था कि पैंथर एक या दो घंटे पहले ही नदी पार कर चुका था।

अब शाम के छह बज चुके थे, इसलिए जानवर सूर्यास्त से काफी पहले, चार-पाँच बजे के बीच इस रास्ते से गुजरा होगा। अगर ऐसा है, तो वह इस समय बंगले के आसपास ही होगा, जब तक कि वह रेलवे ट्रैक पार करके पानी की टंकी की तरफ न चला गया हो। मैं अपनी सैर रोककर वापस मुड़ गया, यह सोचकर कि क्या रात में मुझे उसकी आवाज सुनाई देगी।

मैं घर से लाया हुआ ठंडा भुना हुआ गोमांस खाने बैठा ही था कि यह घटना घटी। ठीक शाम के 7:45 बज रहे थे; मुझे याद है क्योंकि मैंने अभी-अभी अपनी घड़ी में चाबी भरी थी, जो मेरी रात के खाने से पहले की एक आदत है। अलीम की बहन का कुत्ता मेरे पास आकर बैठ गया और मेरी कुर्सी के पास अपने पिछले पैरों पर बैठा था, मेरी थाली से जूठा खाना मिलने की उम्मीद में बड़ी श्रद्धा से मेरी ओर देख रहा था। मैंने उसे सूखी चपाती का एक टुकड़ा दिया।

अधिकांश कुत्ते निवाला निगल जाते और और खाने की तलाश करते, लेकिन यह प्राणी, गाँव के अन्य आवारा कुत्तों की तरह, निवाला लेकर बाहर अकेले में उसका आनंद लेने का फैसला किया। वह बरामदे में भागा, और फिर मैंने कुत्ते की धीमी गुर्राहट सुनी, जिसके बाद एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी।

मेरी राइफल केंद्रीय भोजन कक्ष से जुड़े शयनकक्ष में थी, और उसे लेने का समय नहीं था। यह समझते हुए कि पैंथर ने हमला कर दिया है और अगर मुझे कुत्ते को बचाना है तो मुझे तुरंत कार्रवाई करनी होगी, मैं बरामदे की ओर भागा, जहाँ चाँदनी में मैंने ठीक समय पर देखा कि एक चित्तीदार आकृति बरामदे के ऊँचे चबूतरे से नीचे कूदी, उसके जबड़ों में कुत्ता था, जो अभी भी जीवित था और संघर्ष कर रहा था।

हमलावर को डराने के लिए ज़ोर से चिल्लाते हुए, मैंने हाथ में आई पहली चीज़, सरकारी इमारतों में रखी जाने वाली लकड़ी की सख्त कुर्सियों में से एक, उस झुके

हुए शरीर पर फेंक दी। भागता हुआ तेंदुआ केवल पंद्रह फीट दूर था जब कुर्सी सीधे उस पर गिरी, लेकिन तेंदुआ ने बेचारे कुत्ते को नहीं छोड़ा। इसके विपरीत, वह कुत्ते को कसकर पकड़े हुए ही उछलने लगा।

मैं राइफल लेने के लिए दौड़कर बेडरूम में गया, जल्दी से उसमें गोलियां भरीं और पैंथर की दिशा में चल पड़ा। आंगन में तेज चांदनी थी, इसलिए मैंने अपनी टॉर्च को हथियार से जोड़ने का इंतजार नहीं किया। इसमें समय लगता, और कुत्ते को बचाने के लिए एक पल भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था।

लेकिन बंगले के चारों ओर फैले जंगल में पहुँचते ही मामला बिल्कुल बदल गया। पेड़ों की घनी पत्तियों से छाए अंधेरे ने मुझे चारों ओर से घेर लिया, जिसमें कहीं-कहीं चाँदनी की किरणें छलक रही थीं। मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि झाड़ियों और अंधेरे में इधर-उधर भटकने से पैंथर और डर जाएगा और शिकार को और दूर ले जाएगा। वैसे भी, कुत्ते की जान बचाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। इसलिए मैं एक पेड़ की छाया में बैठ गया, इस बात से नाराज़ था कि मैंने राइफल पर टॉर्च क्यों नहीं लगाई। ऐसा करने में समय तो लगता, लेकिन कम से कम मैं देख तो पाता।

पैंथर को जब एहसास हुआ कि मैंने उसका पीछा करना छोड़ दिया है, तो उसने सोचा होगा कि मैं चला गया हूँ, क्योंकि दस मिनट के भीतर ही उसने खाना शुरू कर दिया। वह ज़्यादा दूर भी नहीं था, क्योंकि मुझे बीच-बीच में उसकी धीमी गुर्राहट सुनाई दे रही थी, जो मांस के फटने और हड्डी के टूटने की आवाज़ के साथ बदल रही थी। मैं दुविधा में था कि जानवर के पास चुपके से जाऊँ या टॉर्च लेने बंगले में वापस जाऊँ, और जैसा कि अक्सर दुविधा में होने पर होता है, मैंने गलत काम चुना।

धीरे-धीरे उठकर, अंधेरे में सावधानी से कदम बढ़ाते हुए, ताकि कोई आवाज़ न निकले, मैं बीच-बीच में सुनाई देने वाली आवाज़ों की ओर दबे पांव बढ़ा। मैंने पुराने शिकारी की तरह आवाज़ों के आने तक ही आगे बढ़ने और आवाज़ बंद होते ही रुक जाने का नियम अपनाया। क्योंकि जब कोई जानवर, जिसका आप पीछा कर रहे हैं, खा रहा हो या किसी भी तरह की आवाज़ कर रहा हो, तो इस बात की संभावना कम होती है कि वह आपके आने पर होने वाली आवाज़ों को सुन पाए, चाहे वे कितनी भी हल्की क्यों न हों। लेकिन अगर वह चुप रहे तो उसके आपको सुनने की संभावना कहीं अधिक होती है।

उस रात मैं पैंथर के काफी करीब आ गया था। मुझे नहीं लगता कि वह मुझसे

पाँच गज से ज़्यादा दूर रहा होगा, जब किस्मत, जिसने अब तक मेरा साथ दिया था, ने अचानक मेरा साथ छोड़ दिया। संयोगवश, इसने तीन निर्दोष लोगों की जान ले ली। किसी भालू, सूअर या पैंगोलिन ने ज़मीन में गड्ढा खोद रखा था। अंधेरे में मुझे वह दिखाई नहीं दिया और मैंने अपना बायाँ पैर सीधे उस गड्ढे में डाल दिया, जिससे मैं झटके से गिर पड़ा। मैं आगे की ओर लड़खड़ाया, और पैंथर को पता चल गया कि मैं वहाँ हूँ। खाँसते हुए गुर्राते हुए वह भाग गया, और मैंने उसे झाड़ियों में भागते हुए सुना।

खुद को उस स्थिति से निकालकर मैं आगे बढ़ता रहा, जब तक कि मुझे उस कुत्ते का शव नहीं मिल गया जिसे पैंथर खाने लगा था। ज़मीन के अंधेरे में मुझे उसकी आकृति धुंधली सी दिखाई दे रही थी। जब मैं विश्राम गृह लौटा, तो अलीम और उसका परिवार कुत्ते को ढूंढते हुए बाहर आ चुके थे और सोच रहे थे कि मैं कहाँ चला गया था।

मैंने अपनी टॉर्च .405 पिस्तौल की नली पर टिकाई और चौकीदार के साथ वापस लौटा। कुत्ते का केवल एक चौथाई हिस्सा ही खाया गया था। अलीम अवशेषों को बंगले में वापस ले गया और कहा कि वह उन्हें सुबह दफना देगा, जबकि मैंने पैंथर की तलाश करने का फैसला किया।

अब टॉर्च की मदद से जंगल में घूमना आसान हो गया था, और मैंने इमारत के चारों ओर एक फर्लांग के दायरे में दो घंटे से अधिक समय तक छानबीन की। मुझे पैंथर का कोई निशान नहीं दिखा, जबकि सूअरों के एक छोटे झुंड की मौजूदगी से पता चला कि चित्तीदार बिल्ली इस इलाके से पूरी तरह दूर चली गई थी। सड़क के दूसरी ओर और सिग्नल के पास रेलवे ट्रैक के किनारे, कुछ चित्तीदार हिरण और एक अकेली नीलगाय शांति से चर रहे थे, तभी अचानक एक इंजन की तीखी सीटी और एक मालगाड़ी की भारी गड़गड़ाहट से उनकी शांति भंग हो गई।

पैंथर जा चुका था। अगली सुबह जब कुत्ते के बचे हुए हिस्से को दफनाया गया तो महिलाओं और बच्चों ने खूब रोया। थोड़ी देर बाद, तय समझौते के अनुसार, मैं विश्राम गृह से निकला और रेंजर के क्वार्टर पर रुका ताकि उससे एक पुराना तंबू उधार ले सकूँ, जिसे उसने मुझे देने का वादा किया था।

दो घंटे के भीतर ही तंबू लग गया और मैंने अपनी नई जगह पर डेरा डाल दिया। बाज़ार से खरीदे गए दो मिट्टी के बर्तन तंबू के एक कोने में रखे थे, जिनसे पीने और

धोने का पानी चलता था। तंबू के बाहर पत्थरों से बने दो चूल्हे मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी थे, एक से चाय और दूसरे से खाना पकाया जाता था। ज़मीन ही मेरा बिस्तर थी; पास ही बहने वाली नदी पीने और नहाने के पानी का स्रोत थी; रात में रोशनी के लिए एक छोटी लालटेन थी। मुझे और क्या चाहिए था? मैं जब चाहूँ आ-जा सकता था! कम से कम दिगुवमेत्ता के लिए तो मैं हमेशा के लिए अधिकारियों और सरकारी नियमों-कानूनों से मुक्त हो गया था। मैं बहुत खुश और संतुष्ट था।

बस एक ही चीज़ गड़बड़ हो सकती थी। अगर बारिश हो जाती, तो काली कपास की मिट्टी कीचड़ में बदल जाती और चिपचिपी दलदल बन जाती। मैं कैंपकॉट लाना भूल गया था क्योंकि मेरा इरादा जंगल के बंगले में रुकने का था। इसलिए, सचमुच, मैं मुसीबत में पड़ जाता।

उस दोपहर, गिद्दलूर से लौटने के बाद, एक जीप तेज़ी से सड़क पर आई और जैसे ही वह मेरे तंबू के पास से गुज़री, मैंने आगे और पीछे लगे तख्तों पर बड़े-बड़े सफेद अक्षरों में 'आंध्र वन विभाग' लिखा देखा। ड्राइवर के बगल में बैठे व्यक्ति का सांवला चेहरा मुझे घूर रहा था। ज़िला वन अधिकारी आ गए थे!

बाद में शाम को मैं शिष्टाचार भेंट के लिए विश्राम गृह गया। मुझे सरकारी अधिकारी भले ही नापसंद हों, लेकिन भारत में अगर आप स्वतंत्र रूप से घूमना-फिरना चाहते हैं तो उनसे संपर्क बनाए रखना जरूरी है।

रक्षा अधिकारी एक युवा व्यक्ति थे, जो सेवा में लगभग नए थे और कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने, प्रशिक्षण लेने और प्रांतीय केंद्रों में से एक में विभागीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सीधे विभाग में भर्ती हुए थे। बहुत जल्द ही मुझे पता चल गया कि उन्हें जंगल के जीव-जंतुओं के बारे में कुछ भी नहीं पता था और बाघों और तेंदुओं की भयानक क्रूरता के बारे में उनके मन में आम धारणाएँ ही थीं।

अलीम ने उसे पिछली रात कुत्ते के साथ हुई घटना के बारे में बताया था, लेकिन उसने कहानी में मेरी भूमिका का खुलासा नहीं किया था, और न ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं उस बंगले में रह रहा था।

फिर रक्षा अधिकारी ने मुझे घटना का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया, जिसमें यह भी बताया कि कैसे पैंथर अलीम की छाती पर कूद पड़ा और वहाँ सो रहे कुत्ते को उठाकर ले गया। मैंने यह सब भोलेपन से, बल्कि आश्चर्य भरे भाव से सुना। जाहिर है, उसे यह बात समझ में नहीं आई कि लोग आमतौर पर अपनी छाती पर इतने भारी-भरकम

कुत्तों को रखकर नहीं सोते।

हालांकि, नतीजा यह हुआ कि रक्षा अधिकारी ने मुझे पैंथर का शिकार करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ ठहर रहा हूँ और यह जानकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि मेरे पास दस तंबू हैं और मैं अपनी ही जगह पर डेरा डाले हुए हूँ। उन्होंने बड़ी उदारता से सुझाव दिया कि मैं बंगले के दूसरे हिस्से में रहूँ और वहाँ की सुविधाओं का आनंद लूँ।

शर्म से सिर झुकाए हुए मैंने उन्हें याद दिलाया कि मेरे पास 'सरकारी वन लॉज में रहने की आधिकारिक अनुमति' नहीं है, और चालाकी से कहा कि इस मामले में उनके विभाग के नियम बहुत सख्त हैं। अनुमति केवल वन संरक्षक या जिले के कलेक्टर द्वारा ही दी जा सकती है।

मेरे नए दोस्त को बुरा लगा। क्या वो डीएफओ नहीं थे? क्या उनकी अनुमति काफी नहीं थी? संरक्षक और संग्रहकर्ता भाड़ में जाएं! उन्होंने कहा, 'तुम अभी बंगले पर आओ; आज रात हम साथ में खाना खाएंगे।'

तो मैं वहीं लौट आया जहाँ से मैंने शुरुआत की थी, लेकिन अब एक मेहमान के रूप में, क्योंकि मैं एक आवारा की तरह चला गया था। इतना ही नहीं, और मुझे पूरा यकीन है कि यह महज़ किस्मत की बात थी, मुझे एक बार फिर इमारत के पश्चिमी या स्नानघर वाले हिस्से में जगह मिल गई। और यह वाकई सौभाग्य की बात थी कि मैं बंगले की शरण में ठीक समय पर लौट आया, क्योंकि उस रात बहुत तेज़ बारिश हुई थी। अगली सुबह, मेरा शिविर स्थल काली मिट्टी के समुद्र में तब्दील हो गया था।

रक्षा अधिकारी ने अलीम के कहने पर, मेरी इच्छा के विरुद्ध, गाँव से एक कुत्ता लाने को कहा और चौकीदार को निर्देश दिया कि उसे इमारत के लगभग दस गज पीछे उगे सागौन के पेड़ से बाँध दे। वह चाहता था कि मैं ही उस लुटेरे को पकड़ूँ। मुझे कुत्तों को चारा बनाना पसंद नहीं है। वे बहुत संवेदनशील होते हैं और बाँधे जाने पर डर से काँपने लगते हैं, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे का एहसास हो जाता है।

रक्षा अधिकारी के पास कोई बंदूक नहीं थी, लेकिन वह मेरे साथ भोजन कक्ष में एक और कुर्सी पर बैठ गया। दरवाज़ा आधा खुला रखने से हम बाहर की हर चीज़ को साफ़ चाँदनी में देख सकते थे, जबकि भोजन कक्ष के अंधेरे में पैंथर शायद हमें न देख पाए।

आप यकीन मानिए कि मैं पूरी सतर्कता से नज़र रख रहा था, क्योंकि मैं नहीं

चाहता था कि कुत्ते की जान जाए। कुत्ते ने खतरे को भांपते हुए और ठंडी हवा से परेशान होकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकना और रोना शुरू कर दिया। अगर पैंथर उस समय आधे मील या उससे भी ज़्यादा दूरी के दायरे में होता, तो वह उसकी आवाज़ ज़रूर सुन लेता।

रात 11 बजे के कुछ देर बाद रक्षा अधिकारी को हल्की नींद आने लगी और आधी रात से पहले ही वह अपने बिस्तर पर चले गए। सुबह दो बजे के कुछ ही देर बाद, जब चाँद पेड़ों के पीछे छिप गया, तो लंबी-लंबी परछाइयाँ पड़ने लगीं और कुत्ते को छिपाने लगीं, जिसने अपनी किस्मत मान ली थी। उसने भौंकना बंद कर दिया था और गहरी नींद में सो रहा था, मेरी नज़रों से ओझल। अगर पैंथर अब हमला कर दे, तो मैं उस आवारा कुत्ते को मरने से नहीं बचा पाऊँगा। फिर भी मैं तब तक हिचकिचाता रहा जब तक चाँद पश्चिम के जंगल के पीछे छिप नहीं गया और चारों तरफ़ घना अंधेरा नहीं हो गया। फिर मैं अपनी कुर्सी से उठा, कुत्ते को खोला, जो मुझे देखकर खुशी से अपनी पूंछ हिला रहा था, उसे अंदर ले आया और खुद सो गया।

अगले दिन दोपहर के भोजन के बाद, डीएफओ नंदीयाल के लिए अपनी वापसी यात्रा पर रवाना हो गया, जबकि मैंने अलीम को अपना बैंगलोर का पता और साथ में कुछ स्टांप लगे डाक लिफाफे देकर आधी रात की ट्रेन पकड़ ली। ये लिफाफे मैं हमेशा ऐसे ही कामों के लिए अपने साथ रखता हूँ। मैंने चौकीदार को हिदायत दी कि अगर कोई असामान्य घटना घटे तो मुझे पत्र लिख दे। मुझे आभास था कि उस पैंथर के बारे में अभी सब कुछ पता नहीं चला है। लेकिन यात्रा समाप्त होने से पहले ही मैं उस घटना को पूरी तरह भूल गया।

लगभग चार महीने बाद जब अलीम का पत्र मेरे पास पहुँचा तो मुझे आश्चर्य हुआ। उसमें लिखा था कि एक रेलवे कर्मचारी को लंबे पुल और पानी के स्तंभ के बीचोंबीच, जहाँ बाहरी सिग्नल स्टेशन बिल्कुल पास में था, एक जंगली जानवर ने मार डाला था। पत्र में यह भी लिखा था कि वहाँ कोई पटरियाँ नहीं मिलीं और कर्मचारी का शरीर आधा खा लिया गया था। फिर उसमें आगे बताया गया कि इस बात पर मतभेद था कि किस जानवर ने यह अपराध किया था। कुछ लोगों का कहना था कि हत्यारा बाघ था; कुछ का कहना था कि वह भालू था। कुछ अंधविश्वासी लोगों ने बुरी आत्मा को दोषी ठहराया, लेकिन अलीम खुद मानता था कि यह पैंथर था। क्या मैं आकर उस जीव को मार डालूँगा, चाहे वह कुछ भी निकले?

मैंने जवाब दिया कि चूंकि यह हत्या पुरानी घटना है और शायद किसी क्रोधित भालू के साथ आकस्मिक मुठभेड़ का महज़ नतीजा हो सकती है, इसलिए दिगुवामेटा जाना इस समय कोई काम का नहीं होगा; लेकिन मैंने उनसे आग्रह किया कि अगर आगे कुछ और पता चले तो वे दोबारा लिखें।

अगला पत्र लगभग एक महीने बाद आया। इसमें बताया गया कि जल स्तंभ के प्रभारी गैंगर ने सूर्यास्त से पहले रेलवे स्टेशन लौटने की आदत बना ली थी। वह और एक अन्य गैंगर, जिसका काम हर शाम ठीक छह बजे 'बाहरी' सिग्नल के लिए तेल का दीपक जलाना था, हमेशा सिग्नल के नीचे मिलते और साथ लौटते थे। जब से वे दोनों मित्र बने थे, तब से यह उनकी नियमित आदत बन गई थी।

जिस शाम यह पत्र लिखा गया था, उससे एक शाम पहले यह मुलाकात नहीं हो पाई थी। दूसरे गैंगर ने संकेत मिलते ही दीपक जलाया, लोहे की सीढ़ी से नीचे आया, लेकिन पानी की टंकी के पास उसका दोस्त कहीं नहीं मिला, जिसे वहाँ उसका इंतज़ार करना चाहिए था। यह सोचकर कि वह सो गया होगा, उसने ज़ोर से उसका नाम पुकारा, 'राम! राम!'

कोई जवाब नहीं आया, इसलिए दूसरे सिपाही ने किसी खतरे की आशंका न जताते हुए अपने साथी की तलाश में निकल पड़ा। उसे पानी के टैंक को सहारा देने वाली पत्थर की संरचना के आधार पर शव मिला। शव का ज़्यादा हिस्सा खाया नहीं गया था: बस छाती से थोड़ा सा। और यद्यपि छह बज चुके थे, फिर भी इतनी रोशनी थी कि वह पानी के टैंक से बहकर आई मिट्टी में कई पदचिह्न देख सका, जो एक-दूसरे को काट रहे थे। ये पदचिह्न किसी पैंथर के थे।

गिरोहपाल अपनी जान बचाने के लिए तेजी से भागा और स्टेशन पहुंचने तक लगातार दौड़ता रहा।

'तुरंत आओ,' अलीम के पत्र का समापन जल्दबाजी भरे लहजे में हुआ। 'एक आदमखोर पैंथर हमारे बीच है!'

दुर्भाग्यवश, उस दिन मेरे कुछ ज़रूरी काम थे, इसलिए मैंने अगली सुबह जल्दी निकलने का फैसला किया। मैंने कार से यात्रा की ताकि देरी न हो और मैं अपना टेंट, सामान और शिविर स्थल पर रहने के लिए आवश्यक सभी चीज़ें साथ ले जा सकूँ। मैं अपने अभियान के बीच में बंगले से निकाले जाने की परेशानी दोबारा नहीं मोल लेना चाहता था। इसके अलावा, जब किसी आदमखोर जानवर, विशेषकर पैंथर का शिकार

कर रहे हों, तो सरकार के उन नियमों का पालन करना संभव नहीं है जो यात्रियों के बंगले या वन विश्राम गृह में तीन दिन से अधिक ठहरने पर रोक लगाते हैं।

मैं उसी शाम घर लौटा था, अपना सामान पैक कर चुका था और खाना खाने ही वाला था कि बाहर साइकिल की घंटी सुनाई दी। तभी मेरा नौकर थंगावेलु एक टेलीग्राम और मेरे हस्ताक्षर के लिए संदेशवाहक की पुस्तिका लेकर अंदर आया।

मैंने जल्दी से हस्ताक्षर किए और टेलीग्राम का कवर फाड़कर खोला तो मुझे अब तक का सबसे अप्रिय झटका लगा: 'पैंथर ने बहन के बच्चे को मार डाला। तुरंत आओ। अलीम।'

भोर होने से पहले ही मैं अपने रास्ते पर निकल चुका था।

यदि आप कभी दिगुवामेटा स्थित वन विश्राम गृह जाएँ, तो इमारत के दक्षिण-पूर्वी कोने पर और उससे बीस गज की दूरी के भीतर, आपको एक पत्थर की पटिया के नीचे एक छोटी सी कब्र दिखाई देगी। पत्थर पर केवल एक शब्द खुदा हुआ है: 'शरारत'।

कहा जाता है कि कई साल पहले, ब्रिटिश राज के दिनों में, एक ब्रिटिश वन अधिकारी, या शायद कोई संग्रहकर्ता, अपने छोटे कुत्ते 'मिशचीफ' के साथ बंगले में ठहरे हुए थे। अचानक एक तेंदुआ उन पर झपटा और उन्हें उठाकर ले जा रहा था, तभी अंग्रेज ने गोली चलाई और तेंदुआ और उनका कुत्ता दोनों मारे गए। अपने पालतू जानवर की याद में और उसके गम में डूबे हुए, उस अधिकारी ने उसे वहीं दफना दिया जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी और बाद में वहाँ एक उत्कीर्णित समाधि-पत्थर लेकर लौटे और उसे उस स्थान पर स्थापित किया।

जब मैं अपनी कार से उतर रहा था, तभी अलीम ने मुझे हाल ही में हुई एक दुखद घटना की कहानी सुनाई। उसकी बहन की बड़ी बेटी को 'शरारत' की कहानी सुनाई गई थी और उसने हर सुबह कब्र पर जंगली फूलों का एक छोटा गुच्छा रखने की आदत बना ली थी। उस सुबह, किसी कारणवश, वह पत्थर की पटिया पर अपने द्वारा इकट्ठा किए गए फूल रखना भूल गई थी, और उसे देर शाम को लगभग अंधेरा होने पर ही याद आया। इस बीच, फूलों का छोटा गुच्छा काफी मुरझा चुका था।

'पियरी' नाम की उस लड़की ने अपनी माँ, अलीम की बहन को अपनी चूक के बारे में बताया और कहा कि वह तुरंत कब्र पर फूल चढ़ा देगी। उसकी माँ ने जवाब दिया कि अंधेरा हो रहा है और आदमखोर उसे पकड़ लेगा। इसके अलावा, फूल पहले

ही मुरझा चुके थे; वह अगली सुबह कब्र पर ताजे फूल चढ़ा सकती थी।

बिना परवाह किए, पीयरी मुरझाते फूलों को उठाकर भाग गई। वह अपने गंतव्य तक पहुँच गई होगी, क्योंकि फूलों का छोटा गुच्छा वहीं मिला। किसी ने कोई आवाज़ नहीं सुनी; न चीख, न सिसकी, न गुर्राहट। बच्चा वापस नहीं आया।

घबराई हुई उसकी माँ ने उसे आवाज़ दी, लेकिन कोई जवाब न मिलने पर उसने बगल के कमरे से अलीम और उसकी दोनों पत्नियों को बुलाया। चौकीदार ने एक छड़ी उठाई और चारों, दो लालटेन लेकर, उस छोटी सी कब्र पर गए, जहाँ उन्हें फूल तो मिले, लेकिन बच्ची का कोई निशान नहीं था। कुछ ही दूरी पर कांच के मोतियों का बिखरा हुआ ढेर और उन्हें पिरोने वाली डोरी पड़ी थी। और, ज़ाहिर है, थोड़ा आगे जाकर खून की कुछ बूँदें भी मिलीं!

अलीम और तीनों महिलाएं जल्दी से गांव गए थे, और काफी देर बाद रेंजर, कुछ वन रक्षकों और कुल्हाड़ी, लाठी, चाकू और लालटेन से लैस काफी संख्या में लोगों के साथ वापस लौटे। किसी के पास बंदूक नहीं थी।

उस रात उन्होंने झाड़ियों में बड़े बेतरतीब ढंग से तलाशी ली, लेकिन कुछ नहीं मिला, क्योंकि हर कोई पैंथर से डरा हुआ था। अगली सुबह उन्होंने फिर से तलाशी ली। इस बार उन्हें हत्यारे के पदचिह्न और बच्चे के शरीर के निशान मिले, जहाँ उसे घनी झाड़ियों से घसीटा गया था। उन्हें कपड़े के कुछ फटे-पुराने टुकड़े भी मिले। उसके बाद, आदमखोर और शिकार के सभी निशान गायब हो गए थे।

अलीम ने कहा कि मुझे विश्राम गृह में ही रहना चाहिए और अपने तंबू में रहते हुए पैंथर के हमले के खतरे से बचना चाहिए। मैंने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया, लेकिन तभी उसने मुझे एक ऐसा विचार दिया जो जितना साहसी था उतना ही खतरनाक भी। उसने कहा कि अगर मैं अपनी राइफल को एक खंभे के पीछे छिपाकर बरामदे में लेट जाऊं, तो वह रात भर शरारती पैंथर की कब्र पर चारा बनकर बैठा रहेगा। उसने कहा कि पैंथर की मौजूदगी का एहसास होते ही वह धीरे से आवाज लगाएगा। तब मैं अपनी टॉर्च जलाकर उसकी रोशनी चारों ओर घुमाकर, रोशनी में जानवर की आंखें या आकृति देखकर उसे गोली मार सकता था। उस समय चांद नहीं था, रातें एकदम अंधेरी थीं।

अलीम की योजना बेहद साहसी थी, लेकिन पूरी तरह से बेतुकी और मूर्खतापूर्ण थी। भला उसे आदमखोर पैंथर की मौजूदगी का एहसास समय रहते हो पाएगा और

हमले से पहले वह मुझे चेतावनी दे पाएगा! उसे तब तक कुछ भी पता नहीं चलेगा जब तक कि वह उस पर हमला न कर दे, और तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। इससे भी बुरी बात यह थी कि मैं गोली नहीं चला पाऊँगा, क्योंकि अगर मैंने ऐसा किया तो शायद गोली उसे लग जाएगी, पैंथर को नहीं। मान लीजिए कि अलीम को पैंथर के आने का आभास हो भी जाए और वह मुझे पुकार भी दे, तो भी आदमखोर पैंथर कभी सामने नहीं आएगा।

'नहीं!' मैं बार-बार दोहराता रहा, 'नहीं, नहीं, नहीं!' लेकिन साथ ही मैं सोच रहा था कि अलीम की योजना में संभावनाएं हैं और इससे मुझे एक विचार आया: मुझे भारतीय कपड़े पहनकर शरारती जानवर की कब्र पर बैठने से कोई नहीं रोक सकता! मेरे सामान्य कपड़े आदमखोर को डरा सकते हैं, क्योंकि पैंथर बेहद चालाक और धूर्त होते हैं, लेकिन भारतीय वस्त्र उसे धोखा दे देंगे। किसी और को खतरा नहीं था, इसलिए मुझ पर हत्या का आरोप नहीं लगाया जा सकता था; न ही आत्महत्या का कोई विचार हो सकता था। अगर आदमखोर आ भी जाए, और मुझे पहले से इसकी जानकारी न हो, तो आत्महत्या का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि मैं आरोप का जवाब देने के लिए वहां मौजूद ही नहीं रहूंगा। इसलिए मैंने अलीम को अपनी योजना बताई और अब विरोध करने की बारी उसकी थी।

लेकिन हमेशा की तरह इन मामलों में मेरी ही मर्ज़ी चली, और सूर्यास्त के समय मैं मिसचीफ की समाधि पर पालथी मारकर बैठा था, अलीम के सबसे गंदे कपड़े पहने हुए, मेरा चेहरा और हाथ कोयले से काले हो चुके थे, और माथे पर एक गंदा कपड़ा बंधा हुआ था जो पगड़ी जैसा लग रहा था। राइफल पास ही ज़मीन पर चुपचाप पड़ी थी, उस पर टॉर्च लगी हुई थी, जिसे पत्तों की हल्की परत से ढका गया था ताकि आदमखोर उसे देख न सके। आप यकीन मानिए कि मैंने विश्राम गृह की तरफ पीठ करके बैठने का पूरा ध्यान रखा था ताकि मैं तीन तरफ से जंगल देख सकूँ।

सूर्यास्त का समय और सूर्योदय का समय जंगल में बिताए गए सबसे सुखद क्षणों में से एक है, खासकर उन लोगों के लिए जो जंगल और उसमें रहने वाले जंगली जीवों से मोहित हैं। यही वह समय होता है जब दिन के पक्षियों के मधुर गीत सुनाई देते हैं। रात्रि के जीव और पक्षी मानो दिन के अपने साथियों से प्रेरणा लेते हैं और अंधेरे में स्वागत की उनकी पुकारें अपने घोंसले में बैठे साथियों की पुकारों के साथ मिल जाती हैं और सूर्योदय के साथ धीरे-धीरे मंद पड़ जाती हैं।

लेकिन इस समय मेरा मन ऐसे संगीत को सुनने का नहीं कर रहा था, हालांकि यह हमेशा मुझे मंत्रमुग्ध कर देता है, क्योंकि मेरे कान, मन और नसें कातिल के आने की प्रतीक्षा में तल्लीन थीं। यही वह घड़ी थी, सूर्यास्त का समय, जब वह हरकत में आएगा। ठीक इसी क्षण उसने बेचारी छोटी पीयरी को अगवा किया था, और पूरी संभावना थी कि वह किसी और शिकार की तलाश में उसी जगह पर वापस आएगा जहाँ उसने उसे मारा था। ऐसे विचार मेरे मन में आए और मुझे लगातार बढ़ते खतरे के अहसास से भर दिया।

जल्द ही घना अंधेरा हो गया। मेरे पीछे स्थित विश्राम गृह, हालांकि इतना करीब था, घने जंगल की पृष्ठभूमि में एक धुंधली सी आकृति जैसा दिख रहा था। ऊपर आकाश में, पेड़ों की चोटियों के बीच खाली जगहों में तारे टिमटिमा रहे थे, जो हल्की हवा के साथ धीरे-धीरे हिल रही थीं। थोड़ी दूरी पर बांसों का एक लंबा झुंड आसमान की ओर बढ़ रहा था, उनके विशाल पंख जैसे तने चारों दिशाओं में धरती की ओर झुके हुए थे, मानो एक सुंदर लेकिन विशाल गुलदस्ता हो।

तभी मुझे बाईं ओर हल्की सरसराहट सुनाई दी। थोड़ी देर बाद फिर वही आवाज़ आई, ऐसा लगा जैसे कुछ ही दूरी पर किसी झाड़ी से आ रही हो। मैंने आँखें गड़ाकर देखा, पर घने काले जंगल के बीच झाड़ी का धुंधला सा धब्बा ही दिखाई दिया। मेरा हाथ मेरे पैरों के पास रखी भरी हुई राइफल पर था, और बिजली की तेज़ी से मैंने उसका बट कंधे पर रखा और अपने बाएं अंगूठे से स्विच को ज़ोर से दबा दिया। एक तेज़ किरण अंधेरे को चीरती हुई निकली और उसमें छोटी-छोटी आँखें चमक उठीं, जो माणिक की तरह चमकदार थीं, मासूम नाराज़गी से भरी हुई। जिसे मैंने आदमखोर समझा था, वह असल में भारत में, खासकर आंध्र प्रदेश में पाए जाने वाले बड़े काले बिच्छुओं में से एक था, जो सूखे पत्तों को सरसराते हुए कीड़ों की तलाश कर रहा था।

ये जीव आठ इंच तक लंबे होते हैं, इनका रंग गहरा काला से लेकर बहुत गहरा हरा तक होता है, ये छोटे-छोटे, कांटेदार बालों से ढके होते हैं, इनके आगे केकड़े जैसे विशाल पंजे होते हैं और एक लंबी खंडित पूंछ होती है, जिसके सिरे पर सुई जैसी नुकीली नोक होती है। इस जीव का डंक चौबीस घंटे तक असहनीय पीड़ा देता है और कमजोर हृदय वाले लोगों की मृत्यु का कारण बन सकता है।

रोशनी पड़ते ही बिच्छू अपनी जगह पर रुक गया और झुंझलाहट से फुफकारा। मैंने मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और बिच्छू पर फेंक दी, जो फुफकारते हुए फिर भाग गया।

फिर मैंने टॉर्च बंद कर दी, राइफल को सावधानी से अपने पैरों के पास ज़मीन पर रख दिया और जो पत्ते मैंने हटाए थे उन्हें टटोलते हुए उसे हल्के से फिर से ढक दिया, मन ही मन बड़बड़ाते हुए।

यह पूरी घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण थी। बिच्छू ने टॉर्च जलाकर मुझे अपनी स्थिति का खुलासा करने पर मजबूर कर दिया था। अगर पैंथर आस-पास कहीं भी होता तो उसे रोशनी दिख जाती, और आदमखोरों की उस अनोखी प्रवृत्ति के कारण, जो शिकार होने का आभास कर लेते हैं, वह जानवर तेजी से भाग जाता और अब बहुत दूर चला गया होता।

कहते हैं कि बिच्छुओं की दो से ज़्यादा आँखें होती हैं। मैं सोचने लगा कि क्या सच में ऐसा होता है और उसकी कौन सी आँख मेरी टॉर्च की रोशनी को पकड़ कर परावर्तित कर रही होगी, तभी मुझे एक इंजन की सीटी सुनाई दी जो बाहरी सिग्नल तक पहुँचने से ठीक पहले मोड़ पर मुड़ रहा था। मालगाड़ी ज़ोरदार आवाज़ के साथ रुकी और इंजन-चालक ने फिर से सीटी बजानी शुरू कर दी, पहले छोटी-छोटी तेज़ आवाज़ों में और फिर एक लंबी सीटी में जिससे पूरा जंगल हिल गया। मुझे आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं, चालक और उसके फायरमैन आपस में बात कर रहे थे। वे ज़रूरत से ज़्यादा उत्साहित लग रहे थे और काफी शोर मचा रहे थे।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ये सब क्या हो रहा है, तभी मुझे इसका हल सूझा। स्टेशन में प्रवेश करने वाली ट्रेन के लिए 'बाहरी' सिग्नल 'ऊपर' होना चाहिए, क्योंकि नंदीयाल जाने वाली यात्री ट्रेन विपरीत दिशा से आ रही थी। इसका मतलब था कि आधी रात हो चुकी थी और समय मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से बीत गया था।

लोगों की आवाज़ें आती रहीं, तभी मुझे दूर से यात्री ट्रेन के इंजन की हॉर्न की आवाज़ सुनाई दी, और फिर स्टेशन पर उसके आने की आवाज़ आई। मालगाड़ी के चालक ने सीटी बजाई और अपनी ट्रेन को दौड़ाना शुरू किया, जो धीरे-धीरे खड़खड़ाती हुई आगे बढ़ी। कुछ मिनट बाद, नीचे की ओर जाने वाली यात्री ट्रेन तेज़ गति से नंदीयाल की ओर रवाना हुई।

मुझे जिस शांति की उम्मीद थी, वह नहीं आई, क्योंकि जल्द ही मुझे फिर से आवाजें सुनाई देने लगीं, जो तेज होती गईं। कुछ लोग लालटेन लिए विश्राम गृह के द्वार से अंदर आए और इमारत की ओर बढ़ने लगे। आदमखोर को गोली मारने की

सारी उम्मीदें खत्म हो जाने से मैं चिढ़ गया और शरारती जानवर की कब्र से उठकर बरामदे की ओर बढ़ा, जहां अलीम भी मेरे साथ आ गया, जो जाग रहा था और सुन रहा था। पता चला कि उस समूह में स्टेशन मास्टर, रेंजर, मालगाड़ी का ड्राइवर, गार्ड और एक दमकलकर्मी शामिल थे।

वे सब घबराए हुए थे और उन्होंने बताया कि लंबी सुरंग से बाहर निकलते ही इंजन की हेडलाइट से पटरी के किनारे एक कुचला हुआ मानव शरीर दिखाई दिया। यह देखकर चालक ने अनुमान लगाया कि पहले की किसी ट्रेन ने पटरी पार करने की कोशिश कर रहे किसी व्यक्ति को टक्कर मार दी होगी। चूंकि उस समय उसकी ट्रेन धीमी गति से चल रही थी, इसलिए उसने रुककर जांच करने का फैसला किया, ताकि बाद में उस व्यक्ति की हत्या का आरोप उस पर न लगे। हालांकि, चालक और उसके दमकलकर्मियों को यह देखकर निराशा हुई कि उस व्यक्ति को ट्रेन ने कुचला नहीं था। बल्कि, उसे किसी जानवर ने खा लिया था, जैसा कि उसकी कुतरी हुई हड्डियों के बिखरे होने से स्पष्ट था।

ट्रेन गार्ड, जो तब तक उनके साथ आ चुका था, ने सुझाव दिया कि शव किसी घुमंतू चेंचु जनजाति के व्यक्ति का हो सकता है, क्योंकि वह केवल एक लंगोटी में लिपटा हुआ था। पैंथर के उत्पातों के बारे में सुनकर, ड्राइवर और उसके साथियों ने दिगुवामेटा स्टेशन मास्टर को सूचित करने का निर्णय लिया, जो घटना की सूचना टेलीग्राम द्वारा अधिकारियों को दे सकता था। उन्होंने ऐसा किया ही था कि स्टेशन मास्टर को पता चला कि मैं वहीं पास में हूँ और आदमखोर पैंथर को गोली मारने आया हूँ, इसलिए उसने अपना संदेश भेजने से पहले रेंजर और मुझे पहले सूचित करने का निर्णय लिया।

तो मैं सही था! पैंथर सचमुच बहुत दूर था। शायद वह उस रात बंगले के पास आया ही नहीं था। शायद वह ठीक उसी समय आया था जब बड़े बिच्छू ने मुझे झूठा आगाह किया था। हो सकता है उसने मेरी टॉर्च की रोशनी देखी हो, भाग गया हो, सुरंग के पास चेनचू से मिला हो और उसे मार डाला हो। लेकिन यह लगभग असंभव था, क्योंकि सुरंग मेरे बैठने की जगह से काफी दूर थी। यह भी संभव था कि चेनचू कोई यात्री था जिसने आदमखोर पैंथर के बारे में नहीं सुना था, या शायद उसने सुना था और इसी वजह से उसने सुरंग के अंदर सोने का फैसला किया था, यह सोचकर कि यह एक सुरक्षित जगह है जहाँ पैंथर कभी नहीं आएगा।

मैंने अपने मुखबिरों को धन्यवाद दिया और कहा कि मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा। उनके चले जाने के बाद, क्योंकि कब्र के पास और रुकने का कोई फायदा नहीं था, मैंने थोड़ी देर सोने का फैसला किया और अलीम को हिदायत दी कि वह मुझे चार बजे के बाद जगा दे।

वह जागता रहा होगा, क्योंकि जब उसने मुझे फोन किया तो चार बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। हमने चाय बनाई और कुछ बिस्कुट खाए, जिसके बाद हम अंधेरे में रेलवे ट्रैक के किनारे एक-एक करके चलने लगे। अगर आदमखोर बाघ होता, तो ऐसा करना बेहद खतरनाक होता, क्योंकि आदमखोर बाघ लगभग हमेशा कतार में सबसे पीछे वाले व्यक्ति को ही ले जाता है। पैंथर के मामले में खतरा कम था: वह जितना डरपोक होता है, उतना ही चालाक भी होता है, वह हमला करने से पहले अकेले और असहाय शिकार का इंतजार करता है, और एक से अधिक लोगों की मौजूदगी में खुद को दिखाने से बचता है।

भोर होते-होते हम लंबे पुल पर पहुँचे। यहाँ हमें लगभग दस मिनट तक इंतज़ार करना पड़ा, जब तक कि इतनी रोशनी नहीं हो गई कि हम पुल पार करने की कोशिश कर सकें, क्योंकि यह एक जोखिम भरा काम था, जिसमें पटरियों के बीच एक स्लीपर पर कदम रखते हुए आगे बढ़ना पड़ता था। घाटी और नीचे दूर तक फैले पेड़ों की चोटियों को देखने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी, क्योंकि हमें स्लीपरों के बीच की खुली जगहों से उनकी झलक दिख रही थी।

दूसरे छोर तक की दूरी अंतहीन लग रही थी, लेकिन आखिरकार हम वहाँ पहुँच गए। थोड़ी ही दूर पर सुरंग का प्रवेश द्वार था, जो एक विशाल काले गड्ढे जैसा दिखता था। वहाँ पहुँचने से ठीक पहले, हमारे बाईं ओर और पटरी के पास, एक चेंचु के क्षत-विक्षत अवशेष पड़े थे।

जांच से पता चला कि आदमखोर जानवर अपने शिकार पर वापस लौटा होगा, या तो मालगाड़ी के गुजरने के बाद या शायद बाद में, यात्री ट्रेन के विपरीत दिशा में जाने के बाद, क्योंकि शरीर का जितना हिस्सा खाया गया था, उतना मुझे बताया नहीं गया था। सिर, पैर और हाथ धड़ से अलग होकर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जिससे आदमखोर जानवर के वापस आने की एक संभावना (हालांकि बहुत मजबूत नहीं) बची थी।

ठीक उसी क्षण दूर से आती गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ ने हमारे विचारों को

अचानक भंग कर दिया। यह आवाज़ सुरंग के मुहाने से आ रही थी, जो धीरे-धीरे तेज़ होती गई और फिर एक निरंतर गर्जना में बदल गई। दिगुवामेटा जाने वाली सुबह की यात्री ट्रेन आ रही थी। मैंने झट से मन बना लिया और अलीम को अपने पीछे आने का इशारा किया। मैं सुरंग से कुछ गज दूर पटरी पर दौड़ा ताकि ड्राइवर मुझे देख सके। मैं पटरियों के बीच खड़ा हो गया और इंजन के आगे के हिस्से को, जो धुएं के गुबार उड़ाता हुआ सुरंग से बाहर निकला, ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाने लगा।

जब ड्राइवर ने मुझे देखा तो ट्रेन तेज़ी से चल रही थी। उसने ब्रेक लगाए और मैं पटरियों से हटकर निकल गया, लेकिन ट्रेन के रुकने से पहले ही आधी ट्रेन निकल चुकी थी। मैंने ड्राइवर और गार्ड को, जो ट्रेन के दोनों सिरों से दौड़ते हुए आए, संक्षेप में स्थिति समझाई और उनसे कहा कि वे अलीम को साथ ले जाएं और दिगुवामेटा स्टेशन मास्टर को बताएं कि वे रेंजर से स्थानीय पुलिस के माध्यम से आदेश जारी करने को कहें कि उस रात किसी को भी पुल या सुरंग के पास न जाने दें। मैं आदमखोर सांप के संभावित लौटने का इंतज़ार करने वाला था। मैंने अलीम को जल्दी से निर्देश दिए और उससे कहा कि वह हम दोनों के लिए खाना, चाय और कंबल लेकर वापस आए। दोपहर 2 बजे के कुछ ही देर बाद एक यात्री ट्रेन आने वाली थी, और वह सुरक्षित रूप से उसमें बैठ सकता था।

जब मैं बोल रहा था, तब बहुत सारे यात्री मेरे आस-पास जमा हो गए, यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है। इनमें से कुछ अब शव को देखने पर अड़े हुए थे, जिसके कारण ड्राइवर को अपनी यात्रा जारी रखने में पंद्रह मिनट से अधिक का समय लग गया। मैंने ट्रेन को लंबे पुल से गुजरते हुए देखा, जो खड़खड़ाती हुई मोड़ पर गायब हो गई।

बेहद कम समय में गिद्धों ने अवशेषों को खोज लिया। पहले तो एक गिद्ध मेरे ऊपर आसमान में एक छोटे से बिंदु के रूप में दिखाई दिया, फिर जल्द ही अन्य बिंदु भी दिखाई दिए। इसके बाद उनके पंखों से हवा की तेज़ सरसराहट सुनाई दी और वे ज़मीन पर झपट्टा मारकर अपने संभावित भोजन से कुछ ही फीट की दूरी पर भारी कदमों से उतरे, जिसकी ओर वे बेढंगे ढंग से लड़खड़ाते हुए बढ़ने लगे।

सुरंग के मुहाने पर बैठकर, मेरे पास पटरी पर बिछी बजरी में गोला-बारूद का भरपूर भंडार था। मैंने उन पत्थरों को साहसी गिद्धों पर फेंका, और इतनी नज़दीक से मैंने कई सीधे निशाने लगाए, जिससे वे अवांछित पक्षी दूर रहे। इस तरह समय बीतता

गया और दुगुवामेटा जाने वाली एक मालगाड़ी सुरंग से तेज़ी से गुज़र गई। ड्राइवर ने मुझे, जो मुहाने के एक तरफ बैठा था, या बिखरे हुए चेंचु के अवशेषों को, देखा तक नहीं, हालांकि उसने पटरी के दोनों ओर जमा हुए गिद्धों की असामान्य संख्या को अवश्य ही देखा होगा।

यह मार्ग व्यस्त नहीं था और दोपहर दो बजे के कुछ देर बाद तक कोई और ट्रेन नहीं आई। उस ट्रेन में अलीम के लिए चाय, मेरा दोपहर का खाना और हम सबके लिए रात के लिए एक-एक कंबल था। ड्राइवर ने अलीम को उतरने के लिए ट्रेन रोकी और फिर खुद अपने दमकलकर्मियों, गार्ड और यात्रियों की भीड़ के साथ नीचे उतरा, ताकि उस शव को देख सकें जिससे अब तक बहुत दुर्गंध आ रही थी।

'शुभकामनाएं' की आवाज़ों के बीच ट्रेन फिर से गरजती हुई चली गई, एक घंटे बाद एक मालगाड़ी भी उसके पीछे-पीछे चली गई, जिसके बाद हमें अपने हाल पर छोड़ दिया गया। गिद्धों ने अब तक अपना काम निराशाजनक समझकर छोड़ दिया था और निराश होकर उड़ गए थे, हमें रात के लिए अपनी योजनाएँ बनाने के लिए अकेला छोड़कर।

छिपने के दो संभावित स्थान थे। पहला था सुरंग का मुँह; दूसरा, प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर कहीं। यह निर्धारित करने के लिए कि दोनों में से कौन सा स्थान पकड़े जाने की संभावना कम रखता है, मैंने खुद को उस आदमखोर की जगह पर रखकर सोचा। सहज प्रवृत्ति और उस इलाके से लंबे समय से जुड़े रहने के कारण उसे यह बात पता थी कि विशालकाय राक्षस, गरजते-चिल्लाते और धुआँ उगलते हुए, समय-समय पर धरती में बने उस छेद से निकलते रहते हैं। इसलिए वह निश्चित रूप से छेद को बहुत ध्यान से और लंबे समय तक देखता रहेगा, इससे पहले कि वह खुद को दिखाने की हिम्मत करे; इस गहन निगरानी के दौरान वह हमें देख ही लेता, क्योंकि मुझे अलीम को अपने साथ रखना था। उसे कहीं और भेजने का कोई रास्ता नहीं था, और उसे निहत्थे घर लौटने के लिए कहना बेहद खतरनाक होता।

इसलिए हमारा निष्कर्ष स्पष्ट था: हम पहाड़ी पर कहीं छिप जाएँगे, सुरंग के मुहाने के ठीक ऊपर जितना संभव हो सके, इस उम्मीद में कि पैंथर दुश्मन को देखने के लिए ऊपर की ओर न देखने के सामान्य नियम का पालन करेगा। सुरंग के प्रवेश द्वार के ऊपर की ज़मीन धीरे-धीरे ढलान वाली थी और अधिकतर मोटी घास और खरपतवारों से ढकी हुई थी, जिसमें कहीं-कहीं छोटे-छोटे पेड़ थे। यह काफी पथरीली थी और चारों

ओर बड़ी-बड़ी चट्टानें बिखरी पड़ी थीं, जिनका आकार फुटबॉल से लेकर एक आदमी की ऊँचाई तक था।

इस सुरक्षित आश्रय से मिली सुविधा के लिए आभारी होकर, हमने मिलकर जल्द ही पत्थरों का एक छोटा सा सहारा बना लिया। हमने उसे सुरंग के प्रवेश द्वार से थोड़ा ऊपर एक दीवार की तरह कतार में खड़ा कर दिया, जो इतनी ऊँची थी कि उसके पीछे लेटने पर हम छिप सकें। इन पत्थरों के बीच हमने दो छेद बनाए, एक अलीम के लिए और दूसरा मेरे लिए, जिनसे हम नीचे रास्ते के किनारे पड़े अवशेषों और उसके आसपास के इलाके पर नज़र रख सकें। बेहतर नज़ारा देखने और निशाना लगाने के लिए मुझे अपने बनाए हुए खुरदुरे पत्थर के चबूतरे के ऊपर से देखना पड़ता। अगर मैं राइफल को छेद से निकालने की कोशिश करता, तो हो सकता है कि बैरल पत्थर से टकराकर आवाज़ करे। पैंथर यह आवाज़ सुनकर ऊपर देख लेता और हमें देख लेता। हमारी स्थिति का एक ही नुकसान था कि हम नीचे की ओर झुके हुए थे, हमारी एड़ियाँ हमारे सिर से ऊपर थीं।

हम चार बजे तक अपनी जगह पर पहुँच गए थे, सूरज की तेज़ गर्मी हम पर पड़ रही थी और ज़मीन आग की तरह गर्म थी। हम अपने कंबलों पर लेट गए, लेकिन वे जल्द ही असहनीय रूप से गर्म हो गए, और ढलान की असुविधा अब महसूस होने लगी। मुझे लगता है, मेरे पूरे शरीर में समान रूप से रक्त के वितरण के बजाय, मेरे सीने और सिर में लगातार रक्त जमा होने के कारण, मुझे घुटन महसूस होने लगी, जो सूर्यास्त के करीब आते-आते और भी बढ़ गई। इससे मैं बेचैन होने लगा, और मैंने देखा कि अलीम भी बेचैन हो रहा था, जिससे मुझे लगा कि वह भी मेरी तरह असहज महसूस कर रहा है। अगर केवल दो घंटों के छोटे से समय में ही मुझे इतनी घुटन महसूस हो रही थी, तो यह स्पष्ट था कि हमें जल्द ही अपनी जगह बदलनी पड़ेगी।

अब अंधेरा होने लगा था, और हमें अभी भी चेंचु के अवशेष दिखाई दे रहे थे, तभी हमारे पीछे पहाड़ी की चोटी से एक हिरण ने जोर से आवाज लगाई। 'खर्र!' वह चिल्लाया, 'खर्र! खर्र! खर्र!'

वह कर्कश स्वर में भौंकता रहा, लेकिन हिला तक नहीं। इसलिए, जो कुछ भी उसने देखा था, वह स्पष्ट रूप से सुरक्षित दूरी पर था, जिससे वह खतरे का संकेत देते हुए अपनी जगह पर डटा रहा। एक मोर ने ज़ोर से आवाज़ निकाली और हमारे पीछे एक पेड़ पर बैठे अपने ठिकाने से उड़ गया और ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए दूर

चला गया। मैंने उसे अपनी आँखों के कोने से देखा जब वह फैले हुए पंखों के साथ लंबे रेलवे पुल के नीचे घाटी में चला गया।

उसके बाद सन्नाटा छा गया और लगभग अंधेरा छाने ही वाला था कि हमारे पीछे पहाड़ी पर कहीं से एक जंगली मुर्गी 'कोक! कोक! कोक! कोक!' की कर्कश आवाज करते हुए अचानक फड़फड़ाने लगी। मुझे अपने पीछे हो रही यह हलचल बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। निस्संदेह, कोई ऐसा जानवर जो खतरे की घंटी बजाने वाले जीवों के लिए खतरा था, हमारे पीछे कहीं मौजूद था। यह कोई बाघ या तेंदुआ हो सकता था, लेकिन कहीं अधिक संभावना यही थी कि वह आदमखोर ही हो।

अगले कुछ मिनटों में इतना अंधेरा हो गया कि चेनचू दिखना बंद हो गया, हालांकि मैं रेल पटरी के किनारे गिट्टी की एक लकीर देख पा रहा था, जो मेरे नीचे सुरंग से दूर एक धुंधली धूसर पट्टी की तरह फैली हुई थी। जब मैं अभी भी देख ही रहा था, तभी मुझे अपने पीछे कहीं एक छोटा पत्थर लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ धीमी थी, लेकिन जंगल में किसी भी आवाज़ को ध्यान से सुनने की मेरी आदत ने उसे पकड़ लिया।

नीचे पड़े गिट्टी को देखने के लिए आँखें गड़ाए हुए, मैंने अपना सिर बाईं ओर घुमाया और असहज होकर पीछे की ओर देखा। मेरे बगल में बैठा अलीम भी ऐसा ही कर रहा था। तभी मेरे मन में एक ख्याल आया: शायद आदमखोर जानवर रास्ते पर चलते हुए नीचे पड़े छोटे ग्रेनाइट के पत्थरों में से किसी एक को हटा दिया हो। हो सकता है कि जानवर सुरंग से ही गुजरा हो और प्रवेश द्वार पर रखे पत्थरों में से किसी एक को खिसका दिया हो। कितनी अच्छी बात है कि हमने सुरंग के मुहाने पर न बैठने का फैसला किया!

मैं इसी तरह खुद को बधाई दे रहा था कि तभी एक भयानक विचार मेरे मन में आया: शायद पैंथर हमारे नीचे था ही नहीं। हो सकता है उसने हमें ऊपर पहाड़ी की चोटी से देख लिया हो और ठीक उसी क्षण पीछे से हमारी ओर रेंग रहा हो, अंतिम हमला करने से पहले पर्याप्त करीब आने का इंतजार कर रहा हो।

उस क्षण सारी अटकलें धराशायी हो गईं जब मेरे नीचे की धरती कांप उठी। गहरी गड़गड़ाहट एक लंबी गर्जना में बदल गई, और कुछ ही क्षण बाद मेरे सामने धरती से चिंगारियों और काले धुएं की बौछार निकली, मानो एक हल्का इंजन, जो पीछे की ओर चल रहा था, सुरंग के मुहाने से तेज़ी से बाहर निकला हो। चूंकि यह इंजन पीछे

की ओर चल रहा था, इसलिए चालक अपनी हेडलाइट का उपयोग नहीं कर सका, और हमें उसके आने की कोई चेतावनी नहीं मिली। इंजन की काली आकृति अंधेरे में गायब हो गई और बाकी सभी आवाज़ें सुनाई देना बंद हो गईं।

तभी पैंथर ने हमला करने का फैसला किया और वह हमारे पीछे से आया, नीचे से नहीं। शायद उसने हममें से केवल एक को ही देखा होगा और इसलिए उसे यह एहसास नहीं हुआ कि वास्तव में दो लोग मौजूद थे, क्योंकि वह असली आदमखोर की तरह उछलता हुआ आया, लेकिन बिना कोई आवाज़ किए, जबकि आम पैंथर हमला करते समय 'भौंकता' और खांसता है।

जब वह हमारी ओर झपटा, तो हमें केवल उसके कोमल पंजों की कठोर ज़मीन पर पड़ने की धीमी सी आवाज़ सुनाई दी, एक हल्की सी खरोंच, खोखली सी गड़गड़ाहट, जिसने हमें अचंभित कर दिया। एक पल और रुकता तो वह हम पर टूट पड़ता, लेकिन तभी उसे पता चला कि वह जहाँ एक व्यक्ति पर हमला करने की उम्मीद कर रहा था, वहाँ दो लोगों पर हमला कर रहा है। पैंथर दो गज दूर रुक गया, और गुस्से में गुर्राने और दहाड़ने लगा। तब, और केवल तभी, हमें पता चला कि आदमखोर सचमुच आ चुका है।

इसके बाद क्या हुआ, मुझे ठीक से याद नहीं। मुझे पता है कि अलीम चीखते हुए उछल पड़ा और मैं खतरे से बचने के लिए अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनते हुए इधर-उधर लुढ़कता रहा। लेकिन मुझे इतना जरूर याद है कि मैंने अपनी टॉर्च जलाई और पैंथर के चेहरे पर एकदम करीब से गोली चलाई। तभी वह उछलकर आगे बढ़ा, हमारे बीच से गुजरा और जिस सुरंग के ऊपर हम बैठे थे, उसके किनारे से नीचे गिर गया, जहां से नीचे रेलवे ट्रैक पर ज़ोरदार आवाज़ हुई।

आधी रात को नीचे जाने वाली बस का चालक कुछ देर बाद अपनी हेडलाइट की रोशनी में जो दृश्य देखा, उसे देखकर दंग रह गया। दो आदमी चाय पी रहे थे। उनके बीच एक मरा हुआ पैंथर पड़ा था, और थोड़ी ही दूरी पर एक आदमी के क्षत-विक्षत अवशेष और हड्डियाँ बिखरी थीं। मुझे यकीन है कि वह सेवामुक्त होने के बाद भी इस दृश्य को लंबे समय तक याद रखेगा। भला आदमी होने के नाते, उसने अलीम और मुझे, साथ ही मरे हुए पैंथर को भी दिगुवामेटा तक लिफ्ट दे दी।

चावल के आटे से बना एक तला हुआ चपटा केक।

पाँच

अलौकिक कहानियाँ

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि क्या जंगलों में बिताए वर्षों के दौरान मुझे कोई रहस्यमय अनुभव हुए हैं, और इस बारे में मेरी राय क्या है कि ऐसी चीजें सच हैं या काल्पनिक, या शायद अतिरंजित कल्पना की उपज हैं।

मुझे सच में समझ नहीं आता कि शिकार के अनुभवों और वन विद्या का संबंध तंत्र-मंत्र से क्यों है, लेकिन किसी न किसी तरह यह जुड़ा हुआ है। मुझसे कहीं अधिक अनुभवी अन्य शिकारियों ने इस तरह की कुछ रोचक घटनाओं का वर्णन किया है और हमारे पास उन पर संदेह करने का कोई ठोस कारण नहीं है। मुझे स्वयं भी कुछ विचित्र अनुभव हुए हैं और मैंने उन्हें पहले ही बताया है, जैसे कि कलहट्टी वन बंगले के मृत चौकीदार की घटना। सौभाग्य से उस समय मैं अकेला नहीं था; मेरा बेटा डोनाल्ड मेरे साथ था। हम दोनों ने चौकीदार को इतनी स्पष्टता से देखा जितनी स्पष्टता से मैं इस कागज को देख सकता हूँ; जबकि उसे बहुत पहले ही गोली मारकर दफना दिया गया था!

फिर कैप्टन नेइड का मामला था, जिन्होंने एक प्राचीन मंदिर से एक पुराना दीपक हटा दिया था। इसके कुछ ही समय बाद उन्हें बुखार से गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और दीपक को वापस उसकी जगह पर रखने के बाद ही वे ठीक हुए। लगभग उसी इलाके में एक लड़की रहती थी जिस पर किसी बुरी आत्मा का साया था, जिसके

कारण वह हर बार शाम का भोजन करने की कोशिश करते समय पत्थर उगलती थी। मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा और एक धार्मिक चिकित्सक द्वारा उसका इलाज होते हुए भी देखा। इन दोनों घटनाओं का विवरण मैंने अपनी पिछली पुस्तक में दिया है।

मैं तंत्र-मंत्र का विशेषज्ञ नहीं हूँ और मुझे लगता है कि जिस विषय के बारे में किसी को कोई जानकारी न हो, उस पर राय देना बहुत मूर्खतापूर्ण है। इसलिए मैं केवल दक्षिण भारत के लोगों की कुछ मान्यताओं को दर्ज करना चाहता हूँ। बेशक, यह उन लोगों के सवालों का जवाब नहीं है जिन्होंने मुझसे व्यक्तिगत राय पूछी है। वास्तव में, मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में शायद सबसे प्रचलित मान्यता पति-पत्नी के रूप में विद्यमान दुष्ट आत्माओं के एक जोड़े में है। तमिल भाषा में स्त्री को मिन्नीस्पुरम और मलयालम में यक्षी कहा जाता है। यह सर्वमान्य है कि स्त्री अत्यंत शत्रुतापूर्ण और मनुष्यों, विशेषकर अन्य महिलाओं के लिए खतरनाक होती है, जबकि पुरुष आमतौर पर काफी हानिरहित होते हैं, कम से कम तमिल मान्यताओं के अनुसार। यह दृष्टिकोण मानव जाति के पुरुषों और महिलाओं के संबंध में हमारे अपने दृष्टिकोण से काफी मिलता-जुलता है। लेकिन मलयाली लोग अलग सोचते हैं: उनका कहना है कि यक्षिणियाँ (स्त्री आत्माएँ) और गंधर्व (पुरुष आत्माएँ) दोनों ही मनुष्यों के लिए अत्यंत खतरनाक हैं।

तमिलों का मानना है कि मिनीस्पुरम (स्त्री) किसी भी रूप या आकार को धारण कर सकती हैं, चाहे वह पशु हो या मनुष्य, और अक्सर धुंधली सफेदी या कालेपन के ऊंचे खंभों के रूप में प्रकट होती हैं। मलयाली कहते हैं कि यक्षिणियां आमतौर पर अधिक सुंदर रूप में प्रकट होती हैं, जैसे कि आकर्षक नग्न स्तन वाली महिलाएं, कमर के नीचे अर्ध-पारदर्शी लुंगी पहने हुए, उनके बाल लंबे और पीठ पर लहराते हुए, इस प्रकार उनकी खोखली पीठ को छुपाते हैं जो इन आत्माओं की विशेषता है। ऐसी कहानियां प्रचलित हैं कि कैसे एक पुरुष या युवक रात में घर लौटते समय इन धुंधली प्राणियों में से किसी एक से मिला और उसके पास जाने के लिए प्रलोभित हुआ; फिर उसे सिर या पीठ पर प्रहार किया गया, खून की उल्टी होने लगी और चौबीस घंटे के भीतर उसकी मृत्यु हो गई। अन्य लोगों को कुओं या तालाबों के किनारे तक प्रलोभित किया गया और फिर उन्हें अंदर धकेल दिया गया।

दो नंबूदरी (पश्चिमी तट के ब्राह्मण पुजारी) की एक कहानी है, जिनका सामना दो यक्षिणियों से हुआ जो सुंदर कन्याओं के रूप में थीं। उन्होंने उन कन्याओं से बात की और उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण मिला। पुजारी आकर्षित हुए और पता चला कि दोनों कन्याओं का घर वाकई बहुत सुंदर था। दोनों नंबूदरी एक-एक कन्या के साथ अलग-अलग कमरों में गए। लेकिन किसी अज्ञात कारण से उनमें से एक घबरा गया: प्रेम करने के बजाय उसने अपने हाथ में अपना निजी ताबीज, ताड़ का पत्ता जिस पर पवित्र शब्द 'नघरी' खुदा हुआ था, कसकर पकड़ लिया।

अगले कमरे से खिलखिलाहट की आवाज़ आई, जो अचानक रुक गई और उसके बाद हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनाई दी। लड़की ने पुजारी को छुआ तक नहीं, बल्कि उससे विनती की कि वह ताड़ का पत्ता फेंक दे और प्रेम करे, और अपने नग्न शरीर को दिखाकर प्रलोभन को और भी बढ़ा दिया। लेकिन पुजारी, जो अब पूरी तरह से शंकालु हो चुका था, अपने पत्ते से मजबूती से चिपका रहा।

अचानक बगल वाले कमरे से आ रही चरमराहट की आवाज़ बंद हो गई, जिसके बाद लड़की क्रोधित हो उठी, उसने पुजारी को ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ दीं, उसके चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा और आँखों से ओझल हो गई। घर भी गायब हो गया! और पुजारी ने खुद को अँधेरे में अपने दोस्त के क्षत-विक्षत शरीर के साथ अकेला पाया।

पिशाचवाद में विश्वास, लेकिन एक विशेष रूप में, आम है। यूरोपीय पिशाचों की तरह खून चूसने के बजाय, भारतीय पिशाच, जो केवल रात में प्रकट होता है और दिन भर धरती में सोता है, रात में अकेले आदमी का पीछा करने में माहिर है; जब वह रुकता है तो वह भी रुक जाता है और जब वह चलता है तो वह भी चलने लगता है। यह सिलसिला आदमी के गंतव्य से सौ गज की दूरी तक जारी रहता है, और फिर पिशाच हमला करता है! यह पीछे से हमला करता है, फिर अपने शिकार के टुकड़े-टुकड़े करके उसका मांस खा जाता है। बचने का एकमात्र तरीका है एक पवित्र शब्द बोलना और खींची हुई छुरी से पिशाच पर पलटवार करना। पिशाच एक घायल जानवर की तरह चीखेगा। उसे तब तक बार-बार चाकू मारना होगा जब तक वह गिर न जाए, और फिर वह खून के तालाब में गायब हो जाएगा। या ऐसा कहा जाता है!

व्यापार में अपार सफलता और भरपूर धन-संपत्ति अर्जित करने के साथ-साथ कई तरह की दौलत जमा करने का अधिकार तब प्राप्त होता है जब कोई व्यक्ति अपनी

पत्नी को एक विशेष प्रकार की आत्मा को सौंपने के लिए सहमत हो जाता है, जो बदले में परिवार को अपार धन प्रदान करती है। सांसारिक पति को अपनी पत्नी से अलग रहना पड़ता है और उसके साथ यौन संबंध नहीं रखना चाहिए, हालांकि उसे उससे बात करने और कभी-कभार उसके साथ भोजन करने की अनुमति होती है।

पत्नी को अलग घर में रहना पड़ता है; रात नौ बजे दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और सांसारिक पत्नी को खिड़कीविहीन शयनकक्ष में जाना पड़ता है। जल्द ही एक धुंधली सी आकृति प्रकट होती है जो आत्मा-पति का रूप धारण कर लेती है। वह सुबह तीन बजे तक उसके साथ रहता है, क्योंकि यही वह समय है जब सभी सम्मानित आत्माओं को प्रेत रूप में उसी तरह विदा होना पड़ता है जैसे वे आई थीं, जबकि कम सम्मानित पुरुष अपने जूते हाथों में लिए चुपके से घर लौट जाते हैं!

कई साल पहले, मैं रंगून से आए एक यहूदी परिवार को जानता था। पति हार्डवेयर का व्यापार करता था। उसकी पत्नी और तीन बच्चे थे। उनकी शादी को काफी समय हो गया था और व्यापार अच्छा नहीं चल रहा था। फिर कहा जाता है कि उन्होंने एक आध्यात्मिक पति से समझौता किया, जिसे पत्नी पसंद आ गई, क्योंकि तीन बच्चों के बावजूद भी पत्नी का रूप-रंग अभी भी सुंदर था। यह स्पष्ट नहीं है कि पत्नी ने यह समझौता चाहा था या व्यापार में रुचि रखने वाले पति ने।

नियमों के अनुसार, वह एक अलग घर में रहने लगी, रात नौ बजे दरवाजे बंद कर लेती और सुबह तीन बजे तक अपने आध्यात्मिक पति के साथ समय बिताती। उसका सांसारिक पति और तीनों बच्चे रात भर दूसरे घर में सोते थे, लेकिन दिन में उससे मिलने आते थे। व्यापार में तरक्की हुई। उनके हाथ में जो भी आता, वह फलता-फूलता और सोने में तब्दील हो जाता। यह परिवार रंगून के सबसे समृद्ध और बेहद धनी परिवारों में से एक बन गया।

फिर एक दोपहर कुछ ऐसा हुआ। सांसारिक पति-पत्नी साथ थे। बच्चे बाहर गए हुए थे। पत्नी अब भी सुंदर थी और पुरानी आदतें इतनी प्रबल थीं कि उन पर काबू पाना मुश्किल था। दोनों पति-पत्नी अंतरंग हो गए।

उस रात नौ बजे के बाद पत्नी के घर में बहुत हंगामा हुआ। पति की आत्मा प्रकट हुई और वह बहुत क्रोधित और ईर्ष्यालु था। उसने पत्नी को बुरी तरह पीटा और कहा कि वह फिर कभी यहाँ नहीं आएगा। लेकिन वह नहीं आया और परिवार की किस्मत लगातार बिगड़ती चली गई। उनका व्यापार पूरी तरह ठप हो गया। उन्हें अपना सब

कुछ बेचना पड़ा और रंगून के सबसे अमीर परिवारों में से एक से वे सबसे गरीब परिवारों में से एक बन गए।

ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिनमें आत्मा-पत्नियां रात में आती हैं। लेकिन क्या ये भौतिक धन लाती हैं, या भौतिक गरीबी और मुसीबतें लाती हैं, जैसा कि आमतौर पर उनकी सांसारिक समकक्ष करती हैं, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या काले जादू में कोई सच्चाई है, और मेरे करीबी दोस्तों के जीवन में इसके कई उदाहरण हैं। मैं पहले ही ओस्सी ब्राउन के मामले का जिक्र कर चुका हूं, जिसका मैं बेहद अनिच्छुक गवाह था।

लगभग बीस साल पहले मैंने कुछ ऐसा किया था जो मुझे नहीं करना चाहिए था; लेकिन अब मुझे यह स्पष्ट नहीं है कि मैंने संबंधित व्यक्ति को नाराज़ किया था या मैं उसके प्रभाव में आ गया था। आप चाहें तो इसे मेरी अवचेतन कल्पना कह सकते हैं। लेकिन दो सप्ताह से अधिक समय तक, ठीक सुबह 3 बजे, मैं एक भयानक, घुटन भरी अनुभूति के साथ जाग जाता था, मानो कोई मुझे गले से जकड़ रहा हो। फिर मुझे खिड़की के बाहर भारी कदमों की आहट सुनाई देती थी—किसी के सेना के बूट पहने हुए चलने की धीमी, सधी हुई चाल। मैं कई बार लाठी लेकर—यहाँ तक कि बंदूक लेकर भी—बाहर भागा। फिर भी तेज चाँदनी में कुछ भी दिखाई नहीं देता था, और कदमों की आहट बंद हो जाती थी। जैसे ही मैं अंदर लौटता, कदमों की आहट फिर से शुरू हो जाती। यह लगभग दस मिनट तक चलती रहती थी।

एक रात हालात बेकाबू हो गए। मैं लगभग दम घुटते हुए उठा। मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। हमेशा की तरह मैं बंदूक लेकर बाहर भागा और हर जगह तलाशी ली। कुछ भी नहीं मिला। मैं वापस आया तो कदमों की आहट फिर से शुरू हो गई। मैंने खिड़की बंद कर दी और ताला लगा दिया। सब कुछ बहुत अजीब था, लेकिन मैंने इसे नजरअंदाज करने का फैसला किया। बिजली की बत्ती बंद करके मैं बिस्तर पर लेट गया।

अगले ही पल कोई नरम चीज़ मेरे मच्छरदानी से टकराई और ज़मीन पर गिर गई। मैं बिस्तर से उछलकर उठा और लाइट जलाई। ज़मीन पर गीली मिट्टी का एक गोला पड़ा था, जो मेरी मुट्ठी जितना बड़ा था। ये कहाँ से आया? खिड़की तो बंद थी। मेरी पत्नी और बच्चे बगल वाले कमरे में गहरी नींद में सो रहे थे।

इस स्तर पर मैंने इस मामले में कुछ करने का निश्चय किया—कुछ ऐसा जो मैं

सामान्यत: कभी करने के बारे में नहीं सोचता।

बैंगलोर में एक संत रहते हैं, जिन्होंने ज्योतिषी, चोरी की संपत्ति वापस दिलाने वाले और तंत्र-मंत्र करने वाले के रूप में काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। परामर्श के लिए उनकी फीस एक रुपया (लगभग एक शिलिंग और चार पेंस) है, जिसे पान के पत्ते पर रखकर उन्हें देना होता है—न अधिक, न कम। मैंने इस व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ सुना था और उसे एक चालाक बदमाश समझा था।

मैं उससे मिलने गया। उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें और बड़ी-बड़ी मूंछें थीं। इसके अलावा उसमें कुछ भी खास नहीं था। मैं उसके कमरे में गया और पान के पत्ते पर अपना एक रुपया रख दिया, उस समय मैं खुद को शहर का सबसे बड़ा मूर्ख महसूस कर रहा था।

मेरी ओर देखते हुए उन्होंने शांत भाव से कहा: 'आपको रात में कदमों की आहट सुनकर परेशानी हो रही है। हाल ही में आप पर मिट्टी का गोला फेंका गया था। आप पर जादू कर दिया गया है'—(और यहाँ उन्होंने संबंधित व्यक्ति का वर्णन किया) 'क्योंकि आपने उस व्यक्ति को वह देने से इनकार कर दिया जो उसने माँगा था।'

आप कहेंगे, इसे समझाना आसान है। शायद मन पढ़ना ही इसका जवाब है; या सम्मोहन का कोई रूप; या दोनों। आप बिल्कुल सही हो सकते हैं। लेकिन सुनिए आगे क्या हुआ।

उन्होंने मुझसे कहा, 'घर जाओ। अपनी खिड़की से सूरज उगने की दिशा में छह कदम नापो। फिर जमीन में एक फुट तक खोदो। तुम्हें कुछ मिलेगा। उसे नष्ट कर दो। फिर तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।'

मैं गुस्से से भरा घर लौटा। मैंने अपने हाथों में फावड़ा उठाया और मेरा गुस्सा और बढ़ गया। मैंने अपनी खिड़की से पूरब की ओर छह कदम नापे और खोदना शुरू कर दिया। अब मैं सिर्फ गुस्से में ही नहीं था, बल्कि यह भी सोच रहा था कि मैं इतना मूर्ख कैसे बन गया। लेकिन मुझे कुछ मिला, और मैंने लगभग एक फुट गहरा खोदा था। मुझे मिट्टी से बनी एक गुड़िया मिली जो ज़मीन में दबी हुई थी। एक भद्दी सी गुड़िया जिसका सिर, हाथ और पैर बेढंगे थे। लेकिन उसके सिर पर इंसानी बाल चिपकाए गए थे और उसमें एक कील ठोंकी गई थी। कील के नुकीले सिरे पर एक सूखा नींबू का छिलका था जिसे लगभग आधा काट दिया गया था। इंसानी बाल बिल्कुल मेरे अपने बालों जैसे दिख रहे थे।

मैं दंग रह गया; और मैंने उस चीज़ को जला डाला! अगली सुबह तीन बजे मुझे कदमों की आहट नहीं सुनाई दी, और न ही कभी सुनाई दी!

अब, उस द्रष्टा को यह कैसे पता चला? यह मन-पढ़ने की क्षमता तो नहीं हो सकती थी, क्योंकि मुझे खुद उस गुड़िया के बारे में पता नहीं था। और न ही उसने पहले से कोई योजना बनाई होगी, क्योंकि उसे कैसे पता चलता कि मैं उससे सलाह लूँगा?

कई वर्षों बाद, मैंने यह घटना एक ऐसे व्यक्ति को बताई जो ऐसे मामलों में रुचि रखता था। उसने मुझे बताया कि मानव बालों वाली मिट्टी की गुड़िया मुझे ही दर्शाती है। सिर में ठोंकी गई कील इस बात का प्रतीक थी कि मंत्र मेरे मन, मेरी तर्क शक्ति के विरुद्ध किया गया था। यदि ऋषि ने मुझे गुड़िया का पता न बताया होता और श्राप दूर न किया होता, तो मैं निश्चित रूप से कुछ ही समय में पागल हो जाता!

इस घटना ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मैंने इन मामलों की पूरी तरह से जांच करने का फैसला किया। चूंकि मेरा यह मित्र काला जादूगर और तंत्र-मंत्रियों के बीच लोकप्रिय था, इसलिए मैंने उससे और अधिक जानकारी देने के लिए, वास्तव में, मुझे अपने समूह में शामिल करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया। लेकिन उसने साफ इनकार कर दिया!

मुझमें एक ऐसी आदत है जिसके बारे में मुझे नापसंद करने वाले लोग जमकर शिकायत करते हैं। यह है ज़िद्दीपन और दृढ़ता। मेरा दोस्त जितना मना करता, मैं उतना ही उसे परेशान करता। आखिरकार, उसने मुझे सिल्वर आर्मलेट बिरादरी का सदस्य बना लिया!

मेरे पास चांदी का बाजूबंद है जिसे मैं विशेष अवसरों पर पहनती हूँ, और इसे छूने की अनुमति किसी और को नहीं है। मैं आपको समाज के सभी रहस्यमय अनुष्ठानों के बारे में नहीं बता सकती क्योंकि मैंने उन्हें प्रकट न करने की शपथ ली है; लेकिन मैं आपको दीक्षा समारोहों की संक्षिप्त जानकारी दे सकती हूँ।

पहली विधि के अनुसार, अमावस्या की रात (जो अमावस्या से पहले की रात होती है) किसी पुराने कब्रिस्तान में जाना होता है—कब्रिस्तान जितना पुराना हो उतना अच्छा। नौसिखिए को आधी रात के बाद अकेले जाना होता है, अपने साथ या तो एक जीवित काला मुर्गा और उसका गला काटने के लिए एक चाकू ले जाना होता है, या यदि उसे मुर्गे का गला काटने में झिझक महसूस होती है, तो उसके बदले में कुछ

किलो सूअर की आंतें और जिगर ले जाना होता है।

उसे श्मशान में प्रवेश करना होगा, और कपूर आदि जलाकर संक्षिप्त पूजा करने के बाद, मुर्गे का गला काटना होगा और फिर पूरे पक्षी को, पंख समेत, उंगली भर टुकड़ों में काटना होगा। या, यदि वह सूअर का जिगर और आंतें लाया है, तो उसे टुकड़ों में काटना होगा। इसके बाद उसे पीछे मुड़े बिना श्मशान में चलना होगा, और इन टुकड़ों को एक-एक करके अपने बाएं और दाएं कंधों पर फेंकते हुए, अपनी इच्छानुसार किसी भी बोली में, जितनी गंदी भाषा वह सोच सकता है, उतनी गंदी भाषा का प्रयोग करना होगा। 'इसे लो, तुम—और इसे खाओ,' इत्यादि। इससे आत्मा या निराकार सत्ता उसकी ओर आकर्षित होती है।

इसके बाद नौसिखिया घर जाता है और एक और अनुष्ठान करता है जिससे यह आत्मा उसकी सेवक बन जाती है।

आपने भारत में ऐसे संतों के चमत्कारों के बारे में सुना और पढ़ा होगा जो हवा से किसी भी प्रकार के फल, धन, मिठाई और यहाँ तक कि कुछ दवाइयाँ भी प्रकट कर सकते हैं। ये सब कुट्टी शैतान नामक एक प्रकार के छोटे जिन्न की सहायता से संभव होता है, जिनमें से एक व्यक्ति से पचास-पचास के अनुबंध के आधार पर जुड़ जाता है। वे दोनों एक-दूसरे के सेवक बन जाते हैं और जीवन भर के लिए बंध जाते हैं। तमिल और मलयालम में कुट्टी शब्द का अर्थ 'छोटा' होता है, जबकि उर्दू और हिंदी में शैतान शब्द का अर्थ 'राक्षस' होता है—चार भाषाओं का एक विचित्र संयोजन। यह आत्मा 'तत्वीय' श्रेणी में आती है, लेकिन स्वयं को प्रकट करने के लिए तीन से चार इंच से अधिक ऊँचाई वाले एक छोटे काले व्यक्ति का रूप धारण कर लेती है।

किसी भी रात आधी रात के बाद, विशेषकर अमावस्या की रात, जब यह दृश्य दिखाई देने लगता है, तो भैंसों के झुंड वाले बाड़े में छिपे हुए किसी व्यक्ति को एक विचित्र हलचल दिखाई देती है। वह देखता है कि कोई चीज एक जानवर की पीठ से दूसरे जानवर की पीठ पर झटक रही है। यह किसी बड़े पतंगे या शायद किसी छोटे चमगादड़ जैसी दिखती है, लेकिन जाहिर तौर पर इसके पंख नहीं हैं! यह एक भैंस की पीठ पर नाचती है, दूसरी पर छलांग लगाती है, झूलती है, गायब हो जाती है और फिर किसी दूसरी भैंस की पीठ पर प्रकट हो जाती है। लेकिन जानवर इसे न तो देख पाते हैं, न ही इसकी उपस्थिति को महसूस कर पाते हैं।

यह कुट्टी शैतान अपने प्राकृतिक आवास और अवस्था में है। यदि देखने वाला

इतना देखकर संतुष्ट हो जाता है, तो सब ठीक है। लेकिन यदि वह उन महान पुरुषों की तरह बनना चाहता है जो मानो 'हवा से' कुछ भी उठा सकते हैं, तो वह आग से खेल रहा है! क्योंकि ऐसा करने के लिए उसे कुट्टी शैतान को अपने भीतर समाहित करना होगा। उसे उस तात्विक आत्मा के साथ एक 'सौदा' करना होगा: एक वादा कि वे जीवन भर एक-दूसरे की सेवा करेंगे। सौदा करना तो आसान है; लेकिन उससे बाहर निकलना लगभग असंभव है।

सौदा करने के लिए उसे भैंसों के पास जाकर उस नन्ही परी को छीनने और पकड़ने का नाटक करना होता है—हालाँकि असल में वह ऐसा कभी नहीं कर सकता—और मन ही मन उस कुत्ति शैतान की सेवा पाने की इच्छा पर ध्यान केंद्रित करना होता है। उसे एक संदेश मिलता है, कभी-कभी पहले प्रयास में ही और कभी-कभी दो-तीन बार असफल होने के बाद—जो आमतौर पर उसके अवचेतन मन और फिर चेतन मन को टेलीपैथिक संदेश होता है—कि आगे क्या करना है। आमतौर पर संदेश में उसे लकड़ी, हाथीदांत, हड्डी या किसी अन्य पदार्थ से एक छोटी काली गुड़िया बनाने (या खरीदने) का निर्देश दिया जाता है, जिसे उसे अपने घर में किसी मेज या शेल्फ पर रखना होता है, और जलती हुई मोमबत्तियों, अगरबत्ती, कपूर और अन्य चीजों से प्रतिदिन उसकी पूजा करनी होती है। यह छोटी सी मूर्ति कुत्ति शैतान का प्रतीक है, और यह अनुष्ठान उस बंधन को पक्का करता है जिसके द्वारा परी उसकी सेवा करने के लिए सहमत होती है।

फिर वह व्यक्ति जो चाहे मांग सकता है और पा सकता है, बशर्ते वह उसे एक निश्चित समय सीमा के भीतर, जैसे एक या दो महीने में लौटाने के लिए सहमत हो जाए। लेकिन उसे मुफ्त में कुछ नहीं मिलेगा। वह छोटी परी उसे पैसे, सेब, सिरदर्द की दवा, पका हुआ भोजन, यहाँ तक कि खराब कार के लिए पेट्रोल भी लाकर देगी। लेकिन हर चीज तय समय पर लौटानी होगी। अन्यथा, वह व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, उसे खो बैठेगा!

यह परी अपने संरक्षक के लिए केवल एक ही नि:शुल्क सेवा करती है। यह उसे आने वाले खतरे से आगाह करती है और उससे बचाने का उपाय करती है। लेकिन इस परी द्वारा माँगी गई कीमत बहुत अधिक है। इसके कारण संरक्षक की आयु कम हो जाती है; वह किसी स्त्री से संबंध नहीं रख सकता; उसे रात में मुश्किल से ही सोने दिया जाता है; वह कभी धन अर्जित नहीं कर सकता, हालाँकि उसे अपनी वर्तमान

आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन मिलता है; उसके अपने परिवार के साथ अच्छे संबंध नहीं रहते; वह हमेशा एक घुमक्कड़, बेचैन और कभी स्थिर न हो पाने वाला व्यक्ति बना रहता है।

सिल्वर आर्मलेट के भाईचारे के सदस्य के रूप में, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि काला जादू अध्ययन करने के लिए एक आकर्षक विषय है - लेकिन अगर इसे अपनाया जाए तो यह एक कठोर और निर्दयी गुरु साबित हो सकता है!

मेरा एक और अच्छा दोस्त है, जो सेना से सेवानिवृत्त डॉक्टर है और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय चिकित्सा सेवा में कर्नल था। उसने मुझे एक कहानी सुनाई, जिसके बारे में वह मुझे यकीन दिलाता है कि वह बिल्कुल सच है। मद्रास में तैनात रहते हुए, उसकी मुलाकात दो भाइयों, मोहम्मद बे और अली बे से हुई, जो मिस्र के थे। उसकी मोहम्मद बे से दोस्ती हो गई, लेकिन उसे लंबे समय तक यह पता नहीं था कि दोनों भाई तांत्रिक थे और उन्होंने मिस्र में एक कुशल गुरु के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

जब कर्नल को यह पता चला, तो उसने मजाक में अपने दोस्त से कहा, 'अच्छा, तो तुम मुझे एक आत्मा दिखा पाओगे। मैं एक आत्मा को देखने के लिए तरस रहा हूँ और वर्षों से कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन सफलता नहीं मिली है।'

मोहम्मद बे ने गंभीरता से उत्तर दिया, 'मैं न केवल तुम्हें एक आत्मा दिखाऊंगा, बल्कि उसे जीवन भर के लिए तुम्हारा सेवक बना दूंगा, जो तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगा और तुम्हारे लिए सौभाग्य लाएगा। लेकिन एक पक्की शर्त है। कभी भी, किसी भी समय, इस आत्मा सेवक का इस्तेमाल किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाने या किसी भी प्रकार के बुरे उद्देश्य के लिए मत करना। अगर तुमने ऐसा किया, तो वह तुम पर पलटवार करेगा और तुम्हारी निश्चित रूप से मृत्यु हो जाएगी, और वह भी अत्यंत कष्टदायी। क्या तुम सहमत हो?'

डॉक्टर ने हंसते हुए कहा, 'आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। यह प्रस्ताव बहुत आकर्षक है और मुझे इसमें बेहद दिलचस्पी है।'

मोहम्मद बे ने फिर एक राइटिंग पैड और पेंसिल मांगी, और ये सामग्री मिलने पर वे कुछ देर तक काम में लगे रहे। कर्नल ने बड़ी कृपा करके मुझे वह कागज का पन्ना दिया जिस पर मिस्रवासी ने बीस साल से भी पहले अपना चित्र बनाया था, और मैंने उसे हूबहू कॉपी करके पृष्ठ 129 और 130 पर छाप दिया है।

आत्माओं को बुलाने का मंत्र, या शब्द, जैसा कि मिस्र के जादूगर ने बताया था।

आह, आह, शरहील वा बुरहुदे वा नुदाजु वा अस्किराह इफ अलुए अयव्हेल कदामु मा अमुरो बी ही मिट शाइन हथल कागदी बी ह्यकी शरहील उस फुर या रूह (तीन बार) था-अल (तीन बार) बिल अमरुहो (सात बार)।

उत्तर दिशा की ओर मुख करके प्रारंभ करें। फिर दाईं ओर या पूर्व दिशा की ओर मुड़ें और ऊपर दिए गए शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें। फिर बाईं ओर या पश्चिम दिशा की ओर मुड़ें और शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें। इसके बाद दाईं ओर मुड़कर विपरीत या दक्षिण दिशा की ओर मुख करें और शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें और शब्दों को एक बार फिर सात बार पढ़ें। चारों दिशाओं में यह पूरा करने के बाद, अपने चुने हुए कब्रिस्तान की दिशा में मुड़ें और शब्दों को इक्कीस बार पढ़ें। अंत में, धीरे-धीरे सांस लें, थोड़ी देर सांस रोकें और फिर धीरे-धीरे तीन बार सांस छोड़ें, हर बार उस आध्यात्मिक अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करें जो इस अभ्यास को सिखाने वाले व्यक्ति द्वारा चाही गई हो, या जिसे आप स्वयं देखना चाहते हों।

इस प्रक्रिया का पालन बाईस दिनों तक करना है, जिसकी शुरुआत इस प्रकार होनी चाहिए कि तेईसवाँ दिन मंगलवार या शुक्रवार को पड़े। यही वह दिन है जिस दिन कब्रिस्तान जाना है। दूसरे शब्दों में, निर्देशों का पालन बाईस दिनों तक करें, और यह प्रक्रिया सोमवार या गुरुवार को समाप्त होनी चाहिए। अगले दिन (मंगलवार या शुक्रवार) कब्रिस्तान जाना है।

नीचे दिए गए चित्र को कागज के एक टुकड़े पर ट्रेस करके, मोड़कर लॉकेट या वॉलेट में सौभाग्य के लिए रखा जा सकता है:

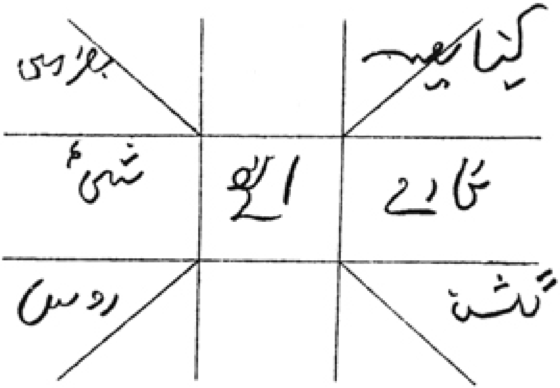

मोहम्मद बे ने समझाया, 'मैंने इसे रोमन-अरबी में लिखा है ताकि आप इसे पढ़ सकें।' (रोमन-अरबी अरबी का वह रूप है जिसमें अरबी को रोमन अक्षरों में ध्वन्यात्मक रूप से लिखा जाता है)। 'इसके बाद अंग्रेजी में निर्देश दिए गए हैं। इनका अक्षरशः और पूरी ईमानदारी से पालन करें।'

'अंतिम दिन की शाम तक गुलाबों की एक बड़ी माला तैयार करने का आदेश दें, और उस दिन आधी रात से नब्बे मिनट पहले स्नान करके साफ सफेद कमीज और सूट पहन लें। मैं आपको 11:30 बजे बुलाऊंगा और आगे क्या करना है, यह बताऊंगा। एक और बात। आपको उस अंतिम दिन उपवास रखना होगा, लेकिन आप सुबह और शाम को एक-एक कप दूध पी सकते हैं। इससे ज्यादा कुछ नहीं।'

अब आइए गणना शुरू करें कि तेईसवाँ दिन कौन सा है।

इसके बाद मिस्रवासी ने दीवार पर टंगे एक बड़े कैलेंडर की ओर रुख किया, पेंसिल की नोक से कैलेंडर पर दिनों की गिनती करते हुए कुछ गणनाएँ कीं, और अंत में एक दिन और एक तारीख का नाम दिया।

'तैयार रहो,' उसने रहस्यमय ढंग से कहा, और डॉक्टर सहमत हो गया।

निर्देशों का अक्षरशः पालन किया गया, लेकिन इस दौरान कर्नल मोहम्मद बे से कभी नहीं मिले। तीसरे सप्ताह के अंत में उन्हें लगा कि उनका मित्र जानबूझकर उनसे बच रहा है। उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या यह सब एक मज़ाक था।

अंतिम दिन आ गया। कर्नल द्वारा मंगवाई गई गुलाबों की माला शाम तक तैयार हो गई थी। रात 10:30 बजे उन्होंने स्नान किया और फिर साफ सफेद कपड़े पहने।

उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें खुद पर मूर्खता का एहसास हुआ।

ठीक रात 11:30 बजे, एक कार उनके पुराने जमाने के आवास के बरामदे के नीचे आकर रुकी और मिस्रवासी नीचे उतरे। वे भी सफेद कपड़े पहने हुए थे।

'डॉक्टर साहब, माला ले आइए,' उसने एक सहज स्वर में कहा, 'हमें आधी रात तक वहाँ पहुँचना होगा।'

वे कहाँ जा रहे हैं, यह सोचते हुए डॉक्टर ने निर्देशानुसार काम किया। पंद्रह मिनट में वे कब्रिस्तान पहुँच गए और गुलाबों की माला लिए डॉक्टर अपने साथी के पीछे-पीछे छोटे गेट से अंदर चले गए। चारों ओर घना अंधेरा था, बस तारों की हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी। कब्रिस्तान के अंदर मिस्रवासी एक पल के लिए रुका। फिर वह कुछ दूर तक कब्रों के बीच चला, मानो किसी खास कब्र की तलाश में हो, और डॉक्टर उसके पीछे-पीछे चलने लगे। आखिरकार उन्हें वह कब्र मिल ही गई। एक कब्र जिस पर ग्रेनाइट की पटिया और एक गोल पत्थर लगा था। अंधेरा इतना घना था कि आगे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

मोहम्मद बे ने निर्देश दिया, 'डॉक्टर, समाधि के पत्थर पर माला डालिए और अपनी भुजाओं को छाती पर बांधकर कब्र के चरणों में खड़े हो जाइए। मैं बगल में खड़ा रहूंगा। अब, चाहे कुछ भी हो जाए, डरिए मत। मैं यहां हूं; मुझ पर भरोसा रखिए। हमें आधी रात तक इंतजार करना होगा।'

कुछ मिनट बाद दूर से आती एक घड़ी की घंटी बजी और बारह बज गए। लेकिन मोहम्मद बे ने कुछ मिनट तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। फिर वह किसी ऐसी भाषा में कुछ बुदबुदाने लगे जिसे डॉक्टर समझ नहीं पाए, लेकिन उन्हें लगा कि वह अरबी है। शब्द लयबद्ध स्वर में निकल रहे थे और मिस्रवासी मानो समाधि में लीन थे।

यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा, फिर अचानक कुछ गड़बड़ हो गई। मंत्रोच्चार अचानक रुक गया, और उसके बाद मिस्रवासी ने गुस्से में कुछ शब्द कहे, फिर कुछ देर रुककर और भी गुस्से भरे शब्द कहे। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अदृश्य व्यक्ति से तीखी बहस कर रहा हो, जिसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

मिस्रवासी और भी उत्तेजित हो गया। उसने अपने हाथ हिलाए। ऐसा लग रहा था मानो वह अपशब्दों का प्रयोग कर रहा हो। फिर उसने कब्र पर थूका। अगले ही पल वह ग्रेनाइट की शिला पर ऐसे गिर पड़ा जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से पटक दिया हो। धुंधली रोशनी में उसका शरीर कांप रहा था, और उसके गले से भयानक, घुरघुराहट

की आवाजें आ रही थीं। डॉक्टर घबरा गया और भागने ही वाला था, उसके मन में बस यही ख्याल था कि किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग जाए।

उस समय उनकी पेशेवर शिक्षा उनके काम आई। आखिर वे एक डॉक्टर थे। मिस्रवासी को मिर्गी का दौरा, दिल का दौरा या किसी अन्य प्रकार की बीमारी हो सकती थी। वहाँ रुकना उनका चिकित्सीय कर्तव्य था। साथ ही, यह भयावह विचार भी मन में आया कि अगर मिस्रवासी को अकेला छोड़ दिया गया तो उसकी मृत्यु हो सकती है। जब उसका शव मिला, और अगर कभी यह पता चला कि डॉक्टर कब्रिस्तान में उसके साथ थे, तो उन पर हत्या का आरोप लग सकता था।

इसलिए वह आगे दौड़ा, अपने साथी के शरीर को पकड़ा जो अभी भी छटपटा रहा था और जिससे भयानक सिसकियां और कराहें निकल रही थीं, और उसे उठाने का प्रयास किया।

डॉक्टर ने शपथपूर्वक कहा कि उनका सामना एक ऐसी शक्ति से हुआ जो उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली थी और उस व्यक्ति को दबाए हुए थी। संघर्ष हुआ, फिर मिस्रवासी हांफते हुए बोला: 'गुलाबों की माला, मुझे दे दो।'

डॉक्टर ने अपने साथी को छोड़ दिया, समाधि के पत्थर से माला उतारी और उसे ज़मीन पर गिरे हुए आदमी की ओर फेंक दिया। वह अभी भी मिर्गी के दौरे की तरह ग्रेनाइट की पटिया पर रेंग रहा था, तभी मोहम्मद बे ने माला को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। और जैसे ही माला

जैसे-जैसे वह बिखरता गया, ऐसा प्रतीत होने लगा कि काला जादूगर स्थिति पर अपना नियंत्रण हासिल कर रहा है।

अंततः वह खड़ा हुआ, उसके बाल बिखरे हुए थे और वह हांफ रहा था। उसके माथे पर एक गहरा घाव था, जहाँ उसका माथा ग्रेनाइट की पटिया से टकरा गया था, और वहाँ से खून बह रहा था।

'अब सब ठीक है, डॉक्टर,' उसने हांफते हुए कहा, 'लेकिन चलिए यहां से चलते हैं। मैं आपको कार में बताऊंगा।'

दोनों आदमी जल्दी से कार की ओर भागे और डॉक्टर के घर वापस जाने लगे। कर्नल तब तक इंतजार करते रहे जब तक कि उनका साथी शांत नहीं हो गया। आखिरकार मिस्रवासी बोला।

'आत्मा तो आ ही गई। वास्तव में, कई आत्माएँ थीं। लेकिन वे विचित्र रूपों में थीं,

अजीब जानवरों जैसी दिखती थीं। उन सभी ने आपकी सेवा करने की पेशकश की। लेकिन मैंने जोर दिया कि केवल एक ही आत्मा होनी चाहिए, और वह भी मानव रूप धारण करे। उन्होंने इनकार कर दिया, और इस बात पर अड़े रहे कि सभी आपसे जुड़ जाएँ और अपने वर्तमान विचित्र रूपों में ही रहें। मैंने इसकी अनुमति नहीं दी। बहस हुई और अचानक नेता ने मुझे नीचे गिरा दिया और वे सभी मुझ पर टूट पड़े, मेरा गला घोंटने लगे। अगर आपने मुझे माला न फेंकी होती जिससे जादू टूटा, तो मैं मारा जाता।'

आप कहेंगे कि मिस्रवासी ने डॉक्टर को धोखा देने के लिए बड़ी चालाकी से अभिनय किया। मकबरे के पत्थर से माथे पर लगा घाव तो निश्चित रूप से एक अनपेक्षित दुर्घटना थी। शायद वह खून नहीं था, बल्कि कुछ चुपके से लगाया गया था!

मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ, और यह एक तर्कसंगत स्पष्टीकरण भी है। लेकिन याद रखिए, उस मिस्रवासी ने अपने मित्र से कभी पैसे या कोई एहसान नहीं माँगा था। तो फिर उसने यह सब क्यों किया?

भारत के कई परिवार, विशेषकर पश्चिमी तट पर रहने वाले परिवार, मानते हैं कि उनकी रक्षा 'देवताओं' द्वारा की जाती है। ये कोई बुरी आत्माएं, जिन्न या देवता नहीं हैं। इन्हें श्रेष्ठ आध्यात्मिक प्राणी माना जाता है। प्रत्येक की अपनी विशिष्टता होती है।

एक विशेष सुगंधित फूल की खुशबू से दूसरे को अलग किया जा सकता है, जो कहीं से भी आती है। कुछ अपने साथ चमेली की खुशबू लाते हैं; यह बहुत आम है और मैंने खुद कई बार ऐसे कमरों और जगहों पर इसे सूंघा है जहाँ किसी भी तरह के फूल मौजूद नहीं थे। श्रेष्ठ श्रेणी के लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे गुलाब या अन्य सुगंध लाते हैं।

अमावस्या की रात—नए चाँद से पहले की रात, महीने की सबसे अँधेरी रात—काला जादू-टोना करने के लिए चुनी जाती है, और ऐसी ही रातों में कई भारतीय परिवार अपने संरक्षक आत्माओं की उपस्थिति को महसूस और सुनते हैं। ये आत्माएँ भारी जंजीर के घिसटने या खनकने की आवाज़ से, या स्त्री आत्मा के मामले में, कंगन के आपस में टकराने की हल्की आवाज़ से प्रकट होती हैं। मुख्य संरक्षक आत्मा घर में घूमते हुए व्यक्ति की तरह आवाज़ करके, बीच-बीच में अंगूठे को उंगलियों से चटकाकर, या फिर सधे हुए, भारी कदमों से अपनी उपस्थिति का संकेत देती है।

भारत में सभी धर्मों में आत्माओं के अस्तित्व और तंत्र-मंत्र में विश्वास समाहित हो

गया है। मेरी राय में, सभी धर्म, अपने मूल रूप में, शुद्ध और दिव्य उत्पत्ति के थे: हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म, सभी सर्वोच्च सत्ता की ओर मार्ग प्रशस्त करते थे। लेकिन एक ओर पुरोहितवाद और दूसरी ओर अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र इन सिद्धांतों में इस कदर घुलमिल गए हैं कि इनके कई अनुयायी एक ऐसे धर्म का पालन करते हैं जो मूल धर्म के सिद्धांतों से बहुत भिन्न है, और कुछ मामलों में तो बिल्कुल विपरीत है।

भारत में कई ईसाई धर्मान्तरित लोगों, चाहे वे रोमन कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेंट, की मान्यताएँ और प्रथाएँ वास्तव में धर्म, अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र का एक विचित्र मिश्रण हैं। ये लोग स्वाभाविक रूप से सभी धर्मों के अधिकांश धर्मनिष्ठ पुरोहितों के लिए निराशा का कारण हैं, हालाँकि दुर्भाग्य से यहाँ-वहाँ कुछ ऐसे भी हैं जो विकृत मान्यताओं को कुप्रथा की हद तक बढ़ावा देते हैं ताकि नरक की आग का भय पैदा कर सकें और अपने अनुयायियों को वश में रख सकें।

संत एंथोनी, जिन्हें जीवित रहते हुए सर्वत्र परम परोपकारी माना जाता है, भारत में अनेक लोगों द्वारा दूसरों से बदला लेने और प्रार्थना द्वारा लाभ प्राप्त करने का अचूक साधन माने जाते हैं। उनके माध्यम से भयानक प्रतिशोध और शत्रुओं को उचित या अभद्र तरीकों से पराजित करने की प्रार्थना की जाती है, जिनमें कष्टदायी बीमारी और दीर्घायु मृत्यु भी शामिल है। संत एंथोनी को खोई हुई या चोरी हुई संपत्ति की प्राप्ति और दोषी चोर को अनेक प्रकार की हिंसा द्वारा दंडित करने का मुख्य साधन भी माना जाता है। संत एंथोनी से अपराधी या शत्रु को दंडित करने के लिए जिन दंडों का अनुरोध किया जाता है, उनमें से कुछ इतने घृणित और किए गए अपराधों के अनुपात से परे होते हैं। उदाहरण के लिए, एक पौंड चावल चुराने के प्रतिशोध में, संत एंथोनी से ज्ञात या अज्ञात चोर को हैजा और प्लेग जैसी भयानक बीमारियाँ देने का अनुरोध किया जाता है।

मेरी सेविका रोमन कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो चुकी है, लेकिन संत एंथोनी के माध्यम से खोई हुई वस्तु को वापस पाने की उसकी विधि इस प्रकार है: चोर को ढूंढने के लिए, प्रार्थना करने वाले को पहले स्नान करना चाहिए। फिर उसे संत की मूर्ति को धोना चाहिए, या (यदि उसके पास मूर्ति नहीं है) तो संत के चित्र को ढकने वाले कांच को धोना चाहिए। संत की प्रतिमा को पानी के बजाय दूध से नहलाना अधिक प्रभावी माना जाता है। यह अनुष्ठान मंगलवार को सूर्यास्त के समय किया जाना चाहिए। इसके

बाद, मूर्ति या चित्र के चरणों में चार मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं, जिनके सामने फूल चढ़ाए जाते हैं और धूप जलाई जाती है। एक छोटा सिक्का कपड़े में बांधकर चित्र के फ्रेम के ऊपर या मूर्ति के चरणों में रखा जाता है।

फिर संत से प्रार्थना की जाती है कि वे चोर को ढूंढने, धन या संपत्ति वापस दिलाने, या अपराधी को कड़ी सजा देने की कृपा प्रदान करें। इसके साथ ही यह प्रतिज्ञा भी की जाती है कि यदि प्रार्थना स्वीकार हो जाती है, तो संत के नाम पर तेरह भिखारियों को किसी न किसी रूप में दान दिया जाएगा। यह दान धन, वस्त्र या भोजन के रूप में हो सकता है। संत से ऐसी प्रार्थनाएं तेरह दिनों तक प्रत्येक शाम सूर्यास्त के समय की जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि कुछ छोटी-मोटी कृपाएं आठ दिनों के भीतर पूरी हो जाती हैं, जबकि अधिक मूल्यवान वस्तुओं जैसी बड़ी कृपाओं में अधिक समय लग सकता है, लेकिन संत की ओर से कार्रवाई एक महीने के भीतर अवश्य ही दिखाई देगी।

मेहनत से कमाए गए पैसों से खरीदी गई खोई हुई संपत्ति या चोरी हुए पैसे की वापसी सुनिश्चित करने के लिए संत एंथोनी की मूर्ति या चित्र के सामने लगातार तेरह शामों तक धूप के साथ एक मोमबत्ती जलाना चाहिए।

भारत के कुछ हिस्सों में, विशेषकर पुराने हैदराबाद राज्य में, संत एंथोनी से की जाने वाली ये प्रार्थनाएँ अधिक ज़ोरदार रूप ले लेती हैं। संत की प्रतिमा के पैर रस्सी से बाँध दिए जाते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रार्थना करने वाला तब तक प्रतिमा नहीं छोड़ेगा जब तक उसकी इच्छा पूरी न हो जाए। सबसे कठोर—और मज़ेदार—उदाहरण जो मैंने देखा है, वह काज़ीपेट नामक स्थान पर रहने वाले एक बूढ़े एंग्लो-इंडियन द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया है। वह एक पूर्व सैनिक थे और शायद सोचते थे कि संत एंथोनी को समय-समय पर थोड़ा अनुशासन सिखाने की ज़रूरत है। यदि निर्धारित समय के भीतर उनकी इच्छा पूरी नहीं होती, तो संत की प्रतिमा के साथ कठोर व्यवहार किया जाता था। प्रतिमा को बगीचे में लगे इमली के पेड़ से बाँध दिया जाता था और उस पर मिर्च पाउडर और अन्य तीखे पदार्थों का मिश्रण लेप दिया जाता था। उनका उद्देश्य यातना देकर संत से इच्छा पूरी करवाना था, और ऐसा होने पर वह बूढ़ा सैनिक प्रतिमा को वापस घर के अंदर ले आता, उसे धोता, दूध से स्नान कराता और फिर से उसके आसन पर स्थापित कर देता था।

इसी प्रकार, कुंवारी मरियम की मूर्तियों और तस्वीरों से भी सामान्य कृपा की

प्रार्थना की जाती थी। गुरुवार को पहली प्रार्थना के लिए उपयुक्त दिन माना जाता था, जिसे लगातार आठ दिनों तक दोहराया जाना था।

भारत में कैंची को इस प्रकार बांधने की पुरानी अंग्रेज़ी विधि का व्यापक प्रचलन है कि कैंची के दोनों लूप दो व्यक्तियों की उंगलियों पर टिके रहें और दोषी व्यक्ति का नाम लेने पर घूमने लगें। इसी प्रकार, अगरबत्ती के पात्र के ऊपर माला लटकाने की प्रथा भी प्रचलित है, जिसमें क्रॉस सीधे आग के ऊपर रहता है; ऐसा माना जाता है कि दोषी व्यक्ति का नाम लेने पर माला हिलने लगती है।

जिन कब्रिस्तानों में भारतीय ईसाईयों को दफनाया जाता है, वहां अक्सर मृतकों के रिश्तेदारों को कुछ निश्चित दिनों में कब्र पर दूध और भोजन की भेंट लेकर आते देखा जाता है, संभवतः दिवंगत आत्मा को उच्च लोकों की लंबी यात्रा में सहारा देने के लिए।

इन बातों का उल्लेख करने का मेरा उद्देश्य यह दर्शाना है कि भारत में अंधविश्वास और प्राचीन रीति-रिवाज किस प्रकार ईसाई धर्म से गहराई से जुड़े हुए हैं। अंधविश्वास, आस्था और अज्ञात का भय सभी समुदायों और सभी धर्मों में व्याप्त है। उच्च वर्ग के हिंदुओं में यह अधिक व्यापक रूप धारण कर लेता है, फिर भी उतना ही शक्तिशाली है। जन्म से ही बच्चे की कुंडली को सर्वोपरि माना जाता है और विवाह निर्धारण में इसकी प्रमुख भूमिका होती है—लड़का और लड़की विवाह समारोह से पहले शायद ही कभी एक-दूसरे को देखते हैं—और नक्षत्र पुरुष के जीवन भर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहते हैं। कैलेंडर पर महीने के प्रत्येक दिन के लिए समय की दो सूचियाँ स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं, जिन्हें क्रमशः राहुकालम् और गुलिगैकलम शीर्षक दिया जाता है, जिनका अर्थ है 'बुरा समय' और 'शुभ समय'। कोई भी हिंदू, और कई गैर-हिंदू भी, राहुकालम् या 'बुरे समय' में घर से निकलने या किसी व्यवसाय या यात्रा पर जाने का सपना भी नहीं देख सकते। वह धैर्यपूर्वक उस समय के बीतने और शुभ समय आने तक प्रतीक्षा करेगा। फिर वह अपने उद्यम पर निकल पड़ेगा, सफलता के प्रति पूर्ण आत्मविश्वास और विश्वास से परिपूर्ण। एक ऐसी अंगूठी जो स्त्री-स्त्रियों को आकर्षित करने में जादुई गुण रखती है, कभी-कभी तो उन्हें अत्यधिक शर्मिंदगी भी उठानी पड़ती है, उसे निम्नलिखित तरीके से बनाया जा सकता है। मैंने इस सूत्र को लिखने में बहुत मेहनत की है, या आप इसे जो भी कहना चाहें। एकमात्र समस्या यह है कि इसमें शामिल मंत्रों को सीखना और आत्मसात करना आवश्यक है। यह रहस्य इतना

मूल्यवान है, संभवतः इसलिए कि इसका प्रतिफल इतना बड़ा है, कि अब तक कोई भी मुझे ये मंत्र बताने को तैयार नहीं है, ताकि मैं उन्हें सीखकर दोहरा सकूँ। लेकिन मैं अभी भी किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में हूँ जो इस रहस्य को साझा करने को तैयार हो।

हालांकि, आपको मध्यम आकार का गहरे रंग का जीवित मीठे पानी का कछुआ प्राप्त करना होगा। यह बहुत मुश्किल नहीं है। लगभग एक रुपये में कोई आपको एक कछुआ लाकर दे देगा। ये ग्रामीण इलाकों के मीठे पानी के कुओं में बहुतायत में पाए जाते हैं।

एक जीवित कछुआ प्राप्त करने के बाद, कुछ सूखे कद्दू के बीज लें जो आसानी से अंकुरित हो सकें। ये बीज किसी भी बीज विक्रेता से आसानी से मिल सकते हैं, या बाजार से खरीदे गए किसी भी कद्दू से भी प्राप्त किए जा सकते हैं, हालांकि बाद की स्थिति में, बीज अच्छी तरह से सूखे होने चाहिए।

इसके बाद, बेचारे कछुए को केंचुए या छोटा मेंढक जैसे कुछ खाने का लालच दें। जब वह खाने के लिए अपनी गर्दन खोल से बाहर निकाले, तो एक तेज़ चाकू से उसके सिर के ठीक पीछे और गर्दन के ऊपरी हिस्से पर वार करके उसे काट दें; यानी, ध्यान रखें कि गर्दन का एक अच्छा-खासा हिस्सा बाहर निकला रहे। जब उसकी सारी हलचल बंद हो जाए, तो गर्दन के कच्चे हिस्से में लगभग आधा दर्जन सूखे कद्दू के बीज अच्छी तरह से भर दें। फिर कछुए को सीधा ज़मीन में गाड़ दें, ताकि बीजों सहित गर्दन का हिस्सा ज़मीन की सतह से लगभग दो इंच नीचे रहे। फिर उस जगह पर हर दिन थोड़ा-थोड़ा पानी डालें।

कद्दू के बीज, या उनमें से कुछ, अंकुरित हो जाएँगे। सबसे अच्छे और स्वस्थ बीजों का चयन करें। दूसरी कोंपल निकलने तक प्रतीक्षा करें, और फिर कछुए के सड़ते हुए गर्दन के ठूंठ से पूरे पौधे को उसकी जड़ों सहित सावधानीपूर्वक उखाड़ लें। जड़ों से गंदगी साफ करें, और पौधे को, जड़ों सहित, नीचे की ओर बने खांचे से होते हुए एक छल्ले के खोखले भाग में कसकर डालें, जिसे आपने पहले से तैयार कर लिया हो।

कोई भी अंगूठी चलेगी, लेकिन चांदी या तांबे की अंगूठी सबसे अच्छी होती है। अंगूठी के चारों ओर यथासंभव गहरी खोखली खांच काटनी चाहिए।

पौधे को उसकी जड़ों समेत जितना हो सके खोखले खांचे में डालने के बाद, उसे सीलिंग वैक्स या किसी अन्य प्रकार के लैकर या चिपचिपे पदार्थ से सील कर दें जो

सूखकर सख्त हो जाए। अंगूठी को सील करवाने के लिए किसी जौहरी के पास न भेजें, क्योंकि सील करने के लिए धातु को पिघलाने में वह जो गर्मी देगा, उससे अंदर का पौधा जल जाएगा।

इस प्रकार तैयार और सीलबंद अंगूठी का उपयोग अगली अमावस्या तक नहीं किया जाना चाहिए। इससे पहले वाली रात, यानी अमावस्या की रात, आधी रात को अंगूठी पर ग्यारह बार एक मंत्र का जाप करना होता है, और तब यह उपयोग के लिए तैयार हो जाती है। ऐसा कहा जाता है कि महिलाओं को आकर्षित करने और उन्हें शर्मिंदा करने में इसकी प्रभावशीलता जीवन भर बनी रहती है।

यह विषय तब तक पूरा नहीं होगा जब तक मैं आपको मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के पूर्व में स्थित चितलद्रूग नामक कस्बे के पास, एक ऐसे जंगल में घटी एक घटना के बारे में न बताऊं जो कभी बाघों के लिए प्रसिद्ध था। चितलद्रूग से कुछ मील दूर स्थित संपिगेहल्ली गांव घने जंगल से घिरा हुआ है। इस गांव से लगभग चार मील दूर, बुढल्ली नामक एक अन्य गांव की ओर जाने वाले रास्ते पर, जंगल के बीचोंबीच, एक खंडहर मंदिर और एक गहरा कुआँ स्थित है। मंदिर और कुएँ के बारे में कहा जाता है कि वहाँ भूत-प्रेत का वास है, इसी कारण दिन के उजाले में शायद ही कोई उनके एक फर्लांग के भीतर भी जाता है, जबकि सूर्यास्त के बाद तो उस क्षेत्र में जाना पूरी तरह से वर्जित है।

अपने एकांतवास के कारण, एक-दो सुस्त भालू अक्सर खंडहरों में या उसके आस-पास ही रहते थे, जबकि एक तेंदुआ अक्सर भालुओं के पास स्थित पुराने मंदिर में शरण लेता था, लेकिन उनसे उसका कोई वास्ता नहीं होता था। कभी-कभी कोई बाघ कुछ हफ्तों के लिए वहाँ रहने का फैसला करता था, और जब ऐसा होता था तो भालू और तेंदुआ अस्थायी रूप से सुरक्षित स्थानों पर चले जाते थे। उनमें से किसी के लिए भी जंगल के राजा के साथ एक ही घर में रहने का साहस करना एक महंगा प्रयोग साबित हो सकता था। लेकिन अंततः बाघ आगे बढ़ जाता था, और फिर भालू और तेंदुआ वापस आ जाते थे और सब कुछ सामान्य हो जाता था।

कुछ समय पहले संपिगेहल्ली गांव से एक ग्रामीण लापता हो गया, और एक महीने बाद बुधल्ली गांव से एक और ग्रामीण लापता हो गया। किसी को नहीं पता था कि उनके साथ क्या हुआ, न ही उनके अवशेषों का कोई सुराग मिला। चूंकि भारत में ग्रामीण लोग शायद ही कभी स्वेच्छा से अपना जन्मस्थान छोड़ते हैं, इसलिए इन दोनों

पुरुषों के एक के बाद एक लापता होने से संदेह पैदा हो गया। इससे संकेत मिलता है कि कोई त्रासदी घटी थी।

इसी समय एक असाधारण रूप से बड़ा बाघ, जिसके बारे में ग्रामीणों का कहना था कि वह बेहद खूंखार था क्योंकि वह निडरता से उनके मवेशियों पर हमला करता था और हर बार शिकार करने में सफल होता था, उस इलाके में, या शायद पुराने मंदिर में ही, रहने लगा। इसकी पुष्टि उसके पदचिह्नों से हुई, जो सुबह-सुबह मंदिर लौटते समय दिखाई देते थे। ये पदचिह्न पिछली शाम को मंदिर से बाहर जाते समय धूल में छोड़े गए पदचिह्नों के ऊपर बने हुए थे। ग्रामीणों को लगा कि इस बाघ ने उनके दो साथियों को एक-एक करके खा लिया है, इसलिए उन्होंने अधिकारियों से उस आदमखोर बाघ के खिलाफ मदद की गुहार लगाई, जिसके बारे में उन्हें पूरा यकीन था कि वह पुराने मंदिर के खंडहरों में रहता है।

संपिगेहल्ली कभी मेरी पसंदीदा जगह हुआ करती थी और मेरे कई गाँव के दोस्तों ने मुझे पत्र लिखकर मदद मांगी। दो हफ्ते बाद जब मैं गाँव पहुँचा तो मैंने लापता हुए दोनों पुरुषों की आखिरी गतिविधियों के बारे में गहन पूछताछ की, लेकिन सब कुछ रहस्य में डूबा हुआ था। एक गाँव की लड़की इस मामले में शामिल थी और कहा जाता था कि दोनों पुरुष उसके प्रेमी थे। लड़की गरीब थी, जबकि दोनों पुरुष तुलनात्मक रूप से संपन्न थे और अपने-अपने गाँवों में जमीन के मालिक थे। वे विवाहित थे और उनके परिवार थे, लेकिन दोनों परिवारों के किसी भी सदस्य को इस बात की जरा भी जानकारी नहीं थी कि लापता होने से ठीक पहले उनमें से प्रत्येक के पास इतनी बड़ी रकम थी, और न ही उन्हें यह पता था कि उनका रिश्तेदार अपने साथ इतनी रकम क्यों ले जा रहा था। यह सब बाद में ही सामने आया। क्योंकि भारत आज दुनिया के उन कुछ स्थानों में से एक है जहाँ पत्नियाँ अपने पतियों की गतिविधियों या अधिकार पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं करतीं।

पुरुष का वचन ही कानून है और महिलाएं रसोई तक ही सीमित रहकर संतुष्ट रहती हैं।

इस बीच, बाघ को उन दोनों आदमियों के लापता होने से जोड़ने वाला कोई सबूत नहीं था। पूछताछ के दौरान, मैंने लापता आदमियों के बारे में उस लड़की से बात की और मुझे लगा कि वह इस मामले में जितना बता रही है उससे कहीं ज़्यादा जानती है। मेरी नज़र में, वह किसी आदमखोर बाघ से कहीं ज़्यादा खतरनाक और चतुर थी;

लेकिन पुलिसवाला न होने के कारण, मैंने मुखबिर या जासूस बनने का दायित्व नहीं समझा। मुझे लड़की के इरादों, गतिविधियों और उसके प्रेमियों के साथ क्या हुआ, उससे कहीं ज़्यादा बाघ में दिलचस्पी थी।

इसलिए मैंने उस दिन दोपहर के भोजन के तुरंत बाद पुराने मंदिर जाने का फैसला किया, एक उपयुक्त छिपने की जगह चुनकर वहाँ पूरी रात इस उम्मीद में रहने का सोचा कि शायद मुझे वह आदमखोर दिख जाए। मैंने अभी तक यह तय नहीं किया था कि अगर वह दिख भी जाए तो उसे गोली मारूँ या नहीं, क्योंकि मुझे अंदर से लग रहा था कि वह अपराधी नहीं है। वैसे भी, गर्मी का मौसम था, जिसे भारत में 'गर्म मौसम' के नाम से जाना जाता है, और पूर्णिमा आने में बस एक-दो दिन बाकी थे। चाँदनी और खुली हवा किसी छोटे से मिट्टी के घर में, जहाँ गर्मी असहनीय होती, या यहाँ तक कि वन विभाग के बंगले में रात बिताने से कहीं ज़्यादा सुखद होती।

दोपहर के भोजन के बाद मैंने रात के लिए आवश्यक कुछ सामान इकट्ठा किया: मेरी राइफल, गोला-बारूद, चाय की थर्मस, पानी की बोतल, इलेक्ट्रिक टॉर्च और कुछ बिस्कुट एक कपड़े के थैले में रखे, जो कागज़ के रैपर की तरह चटकने वाला नहीं था, और पुराने मंदिर के लिए निकल पड़ा। एक घंटे से कुछ अधिक समय में मैं अपने गंतव्य पर पहुँच गया। मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता था, हालाँकि मैंने वहाँ कभी रात नहीं बिताई थी। यह ग्रेनाइट के ठोस, अनियमित ब्लॉकों से बनी एक छोटी केंद्रीय संरचना थी, जिसके चारों ओर कभी एक काफी ऊँची पत्थर की दीवार हुआ करती थी। कुआँ, जो वास्तव में बहुत गहरा था, अभी भी पानी से भरा हुआ था और मंदिर के सामने वाले आँगन में था।

मुझे नहीं पता कि कुएँ में कितना पानी था, लेकिन सतह ज़मीन से बहुत नीचे चमक रही थी। कुआँ खुद पंद्रह फुट से ज़्यादा व्यास का नहीं था, जिसके ऊपर लगभग एक गज ऊँची पत्थर की एक नीची दीवार बनी हुई थी। मंदिर के मुख्य भाग, आँगन की चारों दीवारों और कुएँ की दीवार को बनाने वाले कई ग्रेनाइट के पत्थर ढीले होकर अपनी जगह से गिर गए थे, जबकि टेढ़े-मेढ़े या बौने पेड़, मुख्य रूप से जंगली अंजीर, उन सभी जगहों पर जड़ पकड़ चुके थे जहाँ लैंटाना झाड़ी ने पहले से ही अपना कब्ज़ा नहीं जमा रखा था। कुल मिलाकर दृश्य उजाड़ और उदास था, और यह स्पष्ट था कि समय के साथ मंदिर और उसके आसपास के बचे-खुचे अवशेष बढ़ते जंगल में समा जाएँगे।

लेकिन उस समय मुझे मंदिर में, चाहे वह ऐतिहासिक हो या कुछ और, कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरी दिलचस्पी बाघ के छिपने की जगह में थी, और उसे ढूंढने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगा। एकमात्र संभावित जगह मंदिर की मुख्य इमारत ही थी। ज़मीन अधिकतर सख्त थी, लेकिन कहीं-कहीं रेतीले हिस्से थे और नरम ज़मीन पर, आते-जाते, एक बड़े बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से छपे हुए थे, जो पुराने खंडहरों की ओर जाते और आते थे।

मुझे पता था कि अगर वह जानवर उस समय घर पर होता तो शायद अंदर गहरी नींद में सो रहा होता। मैं खुद कभी इस इमारत के अंदर नहीं गया था, लेकिन मेरा अनुमान था कि यह आम तौर पर ऐसी ही इमारतों की तरह ही बनी होगी, जिसमें मंदिर के इकलौते प्रार्थना कक्ष के आखिरी छोर पर एक छोटा सा अलग कमरा होगा। इस छोटे से कमरे में एक या दो नंदी की मूर्तियाँ, भारत में हिंदुओं द्वारा सार्वभौमिक रूप से पूजे जाने वाले पवित्र बैल की अलग-अलग आकार की पत्थर की मूर्तियाँ, या शायद कई देवी-देवताओं की एक या कई मूर्तियाँ रखी होंगी।

इन परिस्थितियों में, इस अवसर का लाभ उठाना आपदा को न्योता देने जैसा होता। अगर बाघ अपने घर में होता, चाहे वह आदमखोर हो या नहीं, तो वह अपनी निजता के इस खुले उल्लंघन को निश्चित रूप से नापसंद करता और शायद घुसपैठिए से तुरंत छुटकारा पाने का फैसला करता। यह उन अवसरों में से एक था जब शारीरिक बल की बजाय बुद्धि का प्रयोग करना अधिक उचित था, इसलिए मैं स्थिति का जायजा लेने और एक योजना बनाने के लिए वहीं रुका रहा।

और समाधान ठीक मेरे सामने पुराने कुएँ की टूटी हुई मुंडेर में था। मुझे बस इतना करना था कि उसके पीछे आराम से बैठ जाऊँ, मुख्य मंदिर की ओर जाने वाले द्वार की ओर मुँह करके। अगर बाघ अंदर था, जैसा कि मुझे पूरा यकीन था, तो देर-सवेर उसे बाहर आना ही होगा, और वह केवल इसी द्वार का उपयोग करके बाहर आ सकता था। मैं अपनी राइफल के निशाने पर इस द्वार को रखूँगा, ताकि बाघ चाहे जिस कोण से निकले, उसे कोई फर्क न पड़े। यह सब कुछ 'बहुत आसान' लग रहा था।

जब मैं मंदिर के प्रवेश द्वार के ठीक सामने, प्राचीर के पीछे खड़ा हुआ, तो सूरज की तेज़ धूप मुझ पर पड़ रही थी। मुझे एहसास हुआ कि मेरा सिर प्राचीर के ऊपर था, इसलिए मैंने गिरे हुए कुछ पत्थर के टुकड़े उठाए और उन्हें अपने सामने इस तरह व्यवस्थित किया कि लगभग छह इंच का चौकोर छेद बन जाए, जिससे मैं झाँक सकूँ।

अगर बाघ दिखाई देता, और अगर मैंने तब तक उसे गोली मारने का फैसला कर लिया होता, तो मैं इस छेद से गोली चला सकता था।

एकमात्र शर्त यह थी कि मुझे बिल्कुल स्थिर बैठना था। सौभाग्य से, मुझे इस तरह की चीजों का अच्छा अभ्यास है, इसलिए न तो गर्मी, न ही कहीं से भी आने वाले उड़ने वाले कीड़े, और न ही कभी-कभार दिखने वाली चमकीली नारंगी और पीली पीठ वाली काली छिपकली ने मुझे विचलित किया, जब मेरे चेहरे से पसीना टपक रहा था और कीड़े मेरे होठों पर बैठ रहे थे और छिपकलियां मेरे शरीर पर रेंग रही थीं।

फिर शाम हो गई। घोंसले में बैठे पक्षियों की आवाज़ों के बाद सुबह-सुबह चमगादड़ों की चहचहाहट और एक मच्छर की भिनभिनाहट सुनाई दी। लगभग अंधेरा हो चुका था जब पूर्णिमा से पहले का चाँद निकलने लगा। जल्द ही उसकी रोशनी ने मंदिर के प्रवेश द्वार की गहरी छाया को रेखांकित कर दिया, जहाँ से बाघ, अगर वह घर पर होता, तो किसी भी क्षण बाहर निकल सकता था। दिन का बचा हुआ उजाला तेज़ी से गायब हो गया, और उसकी जगह चाँदनी ने ले ली, जिससे समय बीतने का एहसास होने से पहले ही रात हो गई। मुझे थोड़ी सी कंपकंपी हुई, क्योंकि उन कुछ मिनटों में ही काफ़ी ठंड हो गई थी।

तभी मैंने पहली बार वह आवाज़ सुनी। तीन अलग-अलग, तीखी सीटियाँ जो मेरे ठीक सामने वाले कुएँ से आती हुई प्रतीत हुईं। पहली सीटी धीमी थी, दूसरी उससे ऊँची, तीसरी छोटी, तीखी, तेज़ और पिछली दोनों से भी ऊँची थी।

उस पुराने कुएँ में कौन छिपा हो सकता है? सच कहूँ तो, मैं बहुत परेशान था। इतनी देर तक चिलचिलाती धूप में चुपचाप बैठे रहने के बाद, क्या इस अमुक व्यक्ति को इस नाजुक मौके पर सीटी बजानी चाहिए और मंदिर से निकलने वाले बाघ को डराना चाहिए? क्या अब और छिपना बेकार था? बाघ ने मेरी सीटी मुझसे भी ज़्यादा साफ़ सुनी होगी, और वह अपने ठिकाने के ठीक बाहर किसी इंसान को देखकर कभी बाहर नहीं आएगा। या आएगा? अगर वह सचमुच आदमखोर है, तो शायद उसे लगे कि कोई शिकार उसके आस-पास ही है।

लगभग दस से पंद्रह मिनट बीत चुके होंगे जब मुझे फिर से सीटी की आवाज़ सुनाई दी, तेज़ और साफ़, तीन तीखी आवाज़ों में। पहली धीमी और थोड़ी लंबी थी; दूसरी तेज़, छोटी और ऊँची पिच वाली थी; तीसरी सबसे तेज़, छोटी और उससे भी ऊँची पिच वाली थी। फिर एकदम सन्नाटा छा गया।

मैं कुएं में झांकने और घुसपैठिए को कोसने के लिए उठने ही वाला था कि मंदिर के आयताकार काले प्रवेश द्वार में एक हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा। उस कालेपन में एक धुंधली सी आकृति दिखाई दी। वह गायब हुई, फिर दिखी और फिर गायब हो गई। एक पल बाद, चांदनी में, तिरछी दिशा में, स्पष्ट रूप से दिखाई देता हुआ बाघ खड़ा था!

यह स्पष्ट था कि उसे मेरी उपस्थिति का जरा भी आभास नहीं हुआ, क्योंकि उसने मेरी ओर देखा तक नहीं। जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो वह सीधे आगे देख रहा था, लेकिन उसी क्षण रुककर उसने अपनी गर्दन झुकाई और अपने दाहिने अगले पैर को चाटा। मैं उसके सिर की हरकत को स्पष्ट रूप से देख सकता था, और हर बार जब वह खुद को चाटता था, तो उसकी खुरदरी जीभ की उसके शरीर पर रगड़ने की आवाज सुन सकता था। और फिर, तीसरी बार, वे तीन तेज सीटियाँ सुनाई दीं, जिनकी आवाज़ धीरे-धीरे बढ़ती गई।

मैंने सोचा, बस हो गया। बाघ को अब सीटी की आवाज़ ज़रूर सुनाई दे रही होगी। वह दुबक जाएगा, गुर्राएगा, मंदिर की ओट में वापस भाग जाएगा, या फिर अपनी प्रवृत्ति या तंत्रिकाओं की स्थिति के अनुसार भाग जाएगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ! बाघ बेफिक्र होकर खुद को चाटता रहा। ज़ाहिर है उसने सीटी की आवाज़ नहीं सुनी थी, और इसके केवल दो ही कारण हो सकते थे। या तो बाघ पूरी तरह बहरा था, या फिर सीटी की आवाज़ उसके कानों तक नहीं पहुँची।

बाघ ने खुद को चाटना बंद कर दिया और आगे बढ़ने लगा। उसी समय मुझे अपने सामने कुएँ की गहराई से पंखों के फड़फड़ाने जैसी आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ भारी, धीमी और स्पष्ट थी। मैंने सोचा कि यह किसी बड़े और भारी पक्षी की या फिर किसी ऐसे चमगादड़ की आवाज़ होगी जो भारतीय उड़ने वाली लोमड़ी या फल खाने वाले चमगादड़ से बहुत छोटा न हो।

फिर उस शाम चौथी बार सीटी बजी, पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ और नज़दीक से। बाघ को गोली मारने का मेरा फैसला इस रहस्य में पूरी तरह खो गया। दरअसल, मैंने उसे देखा तक नहीं, बल्कि पुराने कुएँ के ऊपरी हिस्से को घूरता रहा, पता नहीं किस चीज़ के निकलने का इंतज़ार करता रहा।

अब पंखों की भारी, धीमी फड़फड़ाहट लगातार जारी थी। वह बड़ा पक्षी या चमगादड़, या जो भी था, हर पल ऊपर की ओर बढ़ता जा रहा था और एक-दो पल में

दिखाई देने वाला था। जैसे ही मैंने उस खुले स्थान को देखा, मुझ पर एक अजीब सा आकर्षण छा गया। एक बार फिर तीन सीटियाँ बजीं, और फिर कुएँ से एक बड़ी, काली, अस्पष्ट आकृति की परछाई निकली।

चांदनी तेज और साफ थी और मैं उस जगह को टकटकी लगाए देख रहा था। मुझे कुछ दिखाई दिया, इसमें कोई शक नहीं था, लेकिन उसका कोई वास्तविक आकार या रूप नहीं था: कुएं से काले धुएं जैसा एक छोटा सा बादल निकला। उसका व्यास लगभग छह फीट और ऊंचाई भी लगभग उतनी ही थी।

मुझ पर एक गहरी उदासी छा गई; एक अजीब सी, निराशाजनक हताशा। क्या कुएँ से जो निकलेगा उससे कोई फर्क पड़ेगा? क्या सारी परेशानियों के साथ जीना सार्थक है? क्यों न कुएँ में कूद जाऊं और सब कुछ भूल जाऊं?

मैंने खुद को झटककर देखा और घूरने लगा। मेरी नज़र कुएँ के मुँह के ऊपर एक पल के लिए ठहरी और अगले ही पल गायब हो गई। चाँदनी उस जगह से साफ़ चमक रही थी, जो कुछ पल पहले उस अस्पष्ट आकृति से ढकी हुई थी। बाघ के प्रकट होते ही मैं उत्साह से पसीना बहाने लगा था, और आज भी जब मैं जंगल में बाघ देखता हूँ तो ऐसा ही होता है। अब मुझे ठंड लग रही थी और मेरा शरीर पसीने से भीग रहा था।

इसी बीच, वह बाघ, जो कम से कम मांस और हड्डियों का बना था, भटक गया। मुझे पता था कि संभवतः वह सुबह तड़के तक नहीं लौटेगा, जब तक कि उसे खाने के लिए कुछ मिल न जाए। इसलिए, अगर मैं उसके लौटने पर उसे गोली मारना चाहता, तो मुझे शायद काफी देर तक इंतजार करना पड़ता। लेकिन किसी तरह मेरा मन उस बाघ को गोली मारने का नहीं कर रहा था; कुएँ से निकली वह अजीब सी सीटी और उससे भी अजीब सी परछाई मुझे कहीं ज्यादा आकर्षित कर रही थी। वैसे भी, चांदनी रात में खुली हवा में वहाँ बैठना, संपिगेहल्ली में चार मील दूर स्थित उस घुटन भरे आश्रय में रहने से कहीं बेहतर था।

मैं सीटी की आवाज़ और परछाई के अलावा सब कुछ भूल गया और यह सोचने लगा कि आखिर मैंने जो देखा था, उसका कारण क्या हो सकता है। सीटी की आवाज़ किसी ऐसे पक्षी की आवाज़ जैसी नहीं थी जिसे मैं जानता था। बल्कि, वह साफ तौर पर किसी इंसान की आवाज़ जैसी थी। पंखों की फड़फड़ाहट जो मैंने सुनी थी, वह किसी बड़े पक्षी या उस भारतीय उड़ने वाली लोमड़ी की हो सकती थी जिसका मैंने पहले ज़िक्र किया है। लेकिन न तो कोई पक्षी निकला और न ही कोई चमगादड़, और

मैंने एक पल के लिए भी अपनी नज़र उसके मुँह से नहीं हटाई। जो निकला वह बिल्कुल अलग और अप्रत्याशित था: एक धुंधली सी आकृति, जिसका स्वरूप समझ से परे था। सीधे शब्दों में कहें तो, एक छोटा सा बादल। और वह बादल मेरी आँखों के सामने गायब हो गया!

मैं समस्या में इतना मग्न था कि मुझे समय का बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ और मैं अपने आसपास की चीजों से बेखबर हो गया। तभी मेरे पीछे से आती एक धीमी सी गुर्राहट ने मुझे झटके से होश में ला दिया। बाघ वहाँ खड़ा था! वह दूसरी दिशा से लौट आया था और मेरी मौजूदगी का पता लगा चुका था। वह आदमखोर बाघ के रूप में जाना जाता था, जिसने पहले ही दो आदमियों को मारकर खा लिया था।

मैं घबराकर पीछे मुड़ा और सहज ही अपनी .405 पिस्तौल कंधे पर रख ली। करीब चालीस गज दूर चांदनी में एक बाघ अपने पिछले पैरों पर बैठा था और मुझे घूर रहा था। फिर उसने अपना सिर थोड़ा झुकाया और हल्की सी गुर्राहट के साथ विरोध जताया। मानो शब्द बोलकर ही कह रहा हो, वह जानवर कह रहा था, 'क्या तुम यहाँ से दफ़ा नहीं हो सकते?' इससे मुझे पूरी तरह तसल्ली हो गई। मैं उसकी दया पर था और मुझे पता चलने से पहले ही मार सकता था। यह बाघ आदमखोर नहीं था!

जब कोई मेरे साथ अच्छा व्यवहार करता है तो मैं हमेशा आभारी रहने की कोशिश करता हूँ, और इस जानवर के प्रति भी मैं निश्चित रूप से आभारी था। इसने मेरी जान बचाई थी और मैं भी इसका एहसान चुकाना चाहता था। मैं खड़ा हुआ, और देखते ही देखते बाघ मेरी नज़रों से ओझल हो गया।

जानवर के अचानक मन बदलने की आशंका से बचने के लिए राइफल को अपनी कोहनी में दबाकर, मैंने टॉर्च की रोशनी कुएँ में डाली, यह उम्मीद करते हुए कि वहाँ कोई रहस्यमयी बाघ छिपा होगा। लेकिन गहराई में केवल पानी ही रोशनी को प्रतिबिंबित कर रहा था। वहाँ कोई भी नहीं छिपा था, क्योंकि मैंने कुएँ के हर कोने की तलाशी ले ली थी। फिर मैं मुड़ा और गुस्से में सोचते हुए वहाँ से जाने लगा। बाघ कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

मैंने उस रात का बाकी समय वन विश्राम गृह के बरामदे में बिताने का फैसला किया, इसलिए मैं गाँव से लगभग एक मील दूर बने छोटे बंगले तक गया और अंदर सो रहे चौकीदार को ज़ोर से आवाज़ दी। बार-बार आवाज़ देने पर भी किसी ने जवाब नहीं दिया। ज़ाहिर है, चौकीदार ड्यूटी पर नहीं था, बल्कि गाँव की किसी झोपड़ी में

आराम से सो रहा था।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। भारत में रहने वाले लोग जानते हैं कि चौकीदार आमतौर पर पहरा नहीं देते। वे इसके बजाय चैन से सोते हैं; शायद आपसे या मुझसे भी ज़्यादा चैन से, क्योंकि उनके मन में यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि रात का समय सोने का होता है।

इसलिए मैं उस पत्थर पर चढ़ गया जो छोटे आयताकार बंगले के तीन तरफ फैले बरामदे तक जाता था। रखवाले ने लापरवाही से एक कुर्सी बरामदे के एक हिस्से में छोड़ दी थी, यह जानते हुए कि इतनी सुनसान जगह में कोई चोर भी ऐसी जर्जर चीज नहीं चुराएगा; इसलिए मैं उस कुर्सी पर लेट गया और कुछ घंटों की नींद लेने की कोशिश की।

मेरा इरादा अगली सुबह संपिगेहल्ली में अपने दोस्तों को यह बताने का था कि मुझे पूरा यकीन है कि बाघ आदमखोर नहीं था, और अगर वे वाकई लापता लोगों का रहस्य सुलझाना चाहते हैं, तो उन्हें पुलिस को उस दुबली-पतली लड़की से पूछताछ करने का सुझाव देना चाहिए जो उन दोनों से बहुत करीब से जुड़ी हुई थी; खासकर यह पता लगाने के लिए कि उनके पैसे का क्या हुआ। फिर मैं स्टुडेबेकर कार में बैठकर घर के लिए निकल जाता।

लेकिन उस रात मुझे नींद नहीं आई। वे रहस्यमयी सीटियाँ, पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़, मुझ पर छाई अजीब सी सुस्ती, और सबसे बढ़कर कुएँ से निकली वह अजीब सी धुंधली आकृति, एक तर्कसंगत व्याख्या की माँग कर रही थी। इस समस्या से जूझते हुए, थककर, आखिरकार प्रकृति ने अपना काम किया और भोर होने के बाद मैं सो गया। उस सुबह जब मैं उठा तो काफी देर हो चुकी थी, लेकिन बंगले का रखवाला अभी तक नहीं लौटा था।

मैं गाँव गया, जहाँ मैंने अपने दोस्तों को बताया कि मैंने बाघ को देखा था और बाघ ने भी मुझे देख लिया था। मैंने उन्हें समझाया कि वह आदमखोर नहीं था। मैंने उन्हें सीटी जैसी आवाज़ों के बारे में नहीं बताया जो मैंने सुनी थीं और न ही उस धुंधली आकृति के बारे में जो मैंने देखी थी, क्योंकि अपनी कहानी को बेवजह जटिल बनाने और खुद को हास्यास्पद साबित करने का कोई फायदा नहीं था।

फिर मेरे एक दोस्त ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ छिपा था, और मैंने उसे बताया कि मैं पुराने कुएँ की मुंडेर के पीछे छिपा था। यह सुनकर उसने मुझे अजीब नज़रों से

देखा।

उसने पूछा, 'क्या तुमने बाघ के अलावा कुछ और देखा? क्या तुमने कुछ सुना?'

मैंने कुछ देर तक कोई जवाब नहीं दिया। फिर मैंने पलटकर पूछा, 'आप क्यों पूछ रहे हैं?'

'क्या आपने कोई विशाल चमगादड़ देखा या सुना? पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़?'

पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़! मैंने वह आवाज़ ज़रूर सुनी थी: कुएँ की गहराई से आती भारी, फड़फड़ाती पंखों की आवाज़। दरअसल, मैंने वह आवाज़ कई बार सुनी थी, हर बार वह आवाज़ ऊपर आती और कुएँ के मुँह के करीब पहुँचती जा रही थी, और वह आवाज़ तभी बंद हुई जब वह अजीब सी धुएँ जैसी आकृति बाहर निकली। कितनी बड़ी मूर्खता थी मेरी कि मैंने पहली बार आवाज़ सुनते ही अपनी टॉर्च की रोशनी कुएँ में नहीं डाली! शायद मुझे कुछ दिखाई देता। फिर मुझे याद आया कि मैं बाघ का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए खुद को दिखाना नहीं चाहता था।

मेरे दोस्त ने मेरे जवाब में देरी को भांप लिया था। उसके चेहरे पर एक समझदारी भरी मुस्कान आ गई। इसलिए मैंने उसे सब कुछ बता दिया।

जब मैंने कुएँ से निकले उस धुंधले रूप का जिक्र किया तो वह भयभीत हो गया। जाहिर है, दूसरों ने सीटी और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी थी, लेकिन किसी ने कुछ देखा नहीं था, क्योंकि किसी ने देखने के लिए इंतजार ही नहीं किया था।

फिर मेरे मित्र ने एक विचित्र कहानी सुनाई। उसके अनुसार, कुछ सौ या उससे भी अधिक वर्ष पहले—उसे ठीक-ठीक समय नहीं पता था—मंदिर फलता-फूलता था और व्यापक श्रद्धा का केंद्र था, जबकि आसपास के क्षेत्र पर एक छोटे से सरदार का शासन था जिसने दूर स्थित राजधानी वाले राजा से स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर लिया था। इस छोटे से सरदार के दरबार में एक ऐसा व्यक्ति था जो सलाहकार और मसखरे दोनों की भूमिका निभाता था, और जिसके प्रति सरदार का स्पष्ट रूप से बहुत सम्मान था।

मंदिर का प्रबंधन कई पुजारियों के हाथ में था—सभी ब्राह्मण—जिनका नेतृत्व एक प्रखर चरित्र वाले प्रधान पुजारी द्वारा किया जाता था। जैसा कि अक्सर होता है जब प्रखर बुद्धि वाले लोग एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, प्रधान पुजारी, उसके सलाहकार विदूषक और ब्राह्मण प्रधान पुजारी के बीच हितों का टकराव हुआ।

बेशक, सारी बातें बहुत पहले भुला दी गई थीं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि प्रधान पुजारी ने अपने प्रतिद्वंद्वी, विदूषक के विरुद्ध झूठे आरोप लगाकर उसे राजपरिवार के प्रति विश्वासघात का दोषी ठहराया था। नतीजा यह हुआ कि उस दुर्भाग्यशाली सलाहकार पर सार्वजनिक रूप से मुकदमा चलाया गया, राजद्रोह के आरोप में उसे मृत्युदंड दिया गया और तुरंत ही उसे जिंदा ही कुएँ में फेंक दिया गया, लेकिन मरने से पहले उसने प्रधान पुजारी और मंदिर के सभी भिक्षुओं से बदला लेने की धमकी दी थी।

इस कहानी का अगला भाग यह था कि एक सप्ताह के भीतर ही प्रधान पुजारी लापता हो गया, और कुछ दिनों बाद उसका शव कुएँ में तैरता हुआ मिला। विदूषक ने अपना पहला शिकार बना लिया था। इसके बाद, कुछ अंतरालों पर, अन्य पुजारी एक-एक करके गायब हो गए, और उनके शव भी प्रधान पुजारी की तरह कुएँ में औंधे मुँह तैरते हुए पाए जाते थे। अन्य पुजारी मंदिर में आए, लेकिन उन सभी का भी वही हश्र हुआ।

समय-समय पर प्रतिशोधी विदूषक की आत्मा को भगाने के लिए भव्य समारोह आयोजित किए जाते थे, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि धीरे-धीरे एक के बाद एक पुजारी गायब होते चले गए और बाद में उनका डूबा हुआ शरीर कुएं के पानी की सतह पर तैरता हुआ मिला। विदूषक की प्रतिशोधी आत्मा को अपना कार्य पूरा करने में शायद सौ साल लग गए, लेकिन वह समय आ गया जब कोई भी पुजारी, चाहे वह कितना भी पवित्र क्यों न हो या दिखने में पवित्र क्यों न हो, मंदिर में पूजा-पाठ करने के लिए स्वेच्छा से अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार नहीं था। और इसी तरह मंदिर और कुआं वीरान हो गए और अंततः खंडहर में तब्दील हो गए।

कथावाचक ने अपनी विचित्र कहानी का समापन एक अत्यंत महत्वपूर्ण वाक्य से किया: 'महोदय, अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझिए कि आप आज सुबह जीवित हैं। वह दुष्ट आत्मा आपको आसानी से कुएँ में फेंक सकती थी, ठीक उसी तरह जैसे उसने अतीत में कम से कम सौ पुजारियों को नष्ट कर दिया है!'

क्योंकि मैं ब्राह्मण पुजारी नहीं हूँ, मैंने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया और कहा, 'बिल्कुल बकवास! धिक्कार है!' ये शब्द मेरे मुँह से उग्रता और गुस्से से निकले। सच कहूँ तो, मैं बहुत नाराज़ था! क्या इस मूर्ख को लगता था कि वह मुझे इन पुरानी कहानियों से डरा सकता है? मुझे डर है कि अगले कुछ मिनटों तक मैं अपने उस बेचारे परिचित के साथ

बहुत बदतमीज़ी से पेश आया, क्योंकि मैंने उसे साफ-साफ बता दिया कि मुझे उसकी कहानी और उसे सुनाने के उसके तरीके के बारे में क्या लगा।

बेचारे का चेहरा उतर गया और वह शर्मिंदा होकर चला गया। मैं निडर होकर उसके पीछे-पीछे घूरता रहा। फिर मैंने घर लौटने की तैयारी में स्टुडेबेकर कार में सामान पैक करना शुरू किया, जिसमें मुझे ज्यादा समय नहीं लगा। मैंने अपने दोस्तों को आधे मन से और कुछ अचानक ही अलविदा कहा, क्योंकि मैंने देखा कि जिस आदमी ने मुझे मंदिर के बारे में बताया था, वह उनमें नहीं था। भारतीय लोगों के हमेशा की तरह मेहमाननवाज़ी करते हुए, उन्होंने आखिरी क्षण तक भी मुझसे रुकने का आग्रह किया। जवाब में मैंने सेल्फ-स्टार्टर दबाया, कार को गियर में डाला और चला गया।

संपिगेहल्ली से लगभग छह मील का सफर तय करने के बाद मैंने अपनी स्टुडेबेकर कार रोकी, इंजन बंद किया और सोचने लगा। मैंने बेवजह ही बदतमीज़ी की थी। आखिर उस आदमी ने तो मुझे कहानी सिर्फ इसलिए सुनाई थी क्योंकि उसने दूसरों से सुनी थी। सीटी की आवाज़ मैंने सुनी थी, पंखों की फड़फड़ाहट मैंने सुनी थी और वह अजीब सी परछाई मैंने ही देखी थी। अब यह मुझ पर था कि मैं उस कहानी पर विश्वास करूं या अगर मुझे कोई बेहतर स्पष्टीकरण मिल जाए तो उसे नकार दूं। मेरे लिए सबसे समझदारी की बात यह होती कि मैं इस मामले की और जांच-पड़ताल करने के लिए और लोगों से बात करूं। सबसे समझदारी की बात तो यह होती कि मैं कुएं पर एक और रात बिताऊं और देखूं कि क्या वह घटना दोबारा दोहराई जाती है। इन दोनों में से कुछ भी करने के बजाय, मैंने एक बच्चे की तरह व्यवहार किया और गुस्से में वहां से चला गया।

इसलिए मैंने गाड़ी मोड़ी और वापस गाँव की ओर चल दिया, जहाँ पहुँचते ही मैंने सबसे पहले अपने दोस्त से माफी माँगी। उसने मुझे तुरंत माफ कर दिया और कहा कि वह मेरी भावनाओं को समझता है, और फिर से मुस्कुराने लगा। दरअसल, मेरे लौटने पर सभी मुस्कुरा रहे थे, जब तक कि मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि इस बार मैं बाघ का शिकार करने नहीं, बल्कि भूत का शिकार करने आया हूँ—पुराने मंदिर के कुएँ में रहने वाली बुरी आत्मा का।

ये शब्द सुनकर सबकी मुस्कान गायब हो गई। फिर मेरे दोस्त ने कहा: 'सर, मैं असभ्य नहीं होना चाहता, लेकिन कृपया इस मूर्खतापूर्ण काम को करने के बजाय

तुरंत बैंगलोर वापस चले जाइए। आप शेर से तो बच सकते हैं, लेकिन शैतान से नहीं।'

उस शाम, बाघ से डरने की कोई बात न होने के कारण, मैं पुराने मंदिर में उतनी जल्दी नहीं गया जितना पिछली दोपहर गया था। लगभग छह बज रहे थे जब मैं कुएँ की मुंडेर के पीछे उस जगह पर बैठ गया जहाँ मैं पहले बैठा था। मैं अपने साथ राइफल लाया था, इस डर से कि कहीं बाघ मुश्किल न हो जाए, लेकिन इस बार चुप रहने की कोई खास ज़रूरत नहीं थी, इसलिए मैंने अपने लिए चाय का एक बड़ा थर्मस, रोटी, मक्खन, डिब्बाबंद मटन और कुछ संतरे भी रख लिए थे, और अपनी पुरानी पाइप तो थी ही।

जैसे ही मैं जल्दी से जल्दी और आराम से अपनी पुरानी जगह पर बैठा, टॉर्च, फ्लास्क, पानी की बोतल और अन्य सामान अपने दाएं-बाएं समेटते हुए, बाघ का कोई निशान नहीं दिखा। शायद वह मेरे आने से पहले मंदिर के पवित्रतम स्थान में अपने छिपने की जगह से बाहर आ गया हो, हालांकि मुझे ऐसा होने की संभावना कम ही लगती थी। मेरा यह अनुमान सही साबित हुआ। समय सात बजकर कुछ मिनट ही हुआ था और बहुत ठंड बढ़ रही थी। नाइटजार पक्षियों ने बोलना शुरू कर दिया था, तभी गर्भगृह के अंधेरे द्वार के अंदर एक पत्थर अपनी जगह से हटकर बाहर किनारे पर लुढ़क गया।

मुझे पता था कि बाघ कुएं के मुहाने पर खड़ा है, यह देखने के लिए कि बाहर निकलना सुरक्षित है या नहीं। हो सकता है कि वह मुझे अभी देख ले, या शायद पहले ही देख चुका हो; शायद उसे पिछली शाम कुएं की मुंडेर पर मेरी मौजूदगी याद आ गई हो। ठीक उसी क्षण मैंने पहली सीटी सुनी, तेज़, धीमी और लंबी, जिसके तुरंत बाद एक और तेज़, ऊँची और छोटी सीटी सुनाई दी। उसके बाद एकदम सन्नाटा छा गया।

मुझे अचानक याद आया कि पिछली शाम को बाघ के प्रकट होने से ठीक पहले सीटी बजनी शुरू हुई थी। वही बात फिर से दोहराई गई। मेरे मन में यह विचार आया: क्या सीटी बजाने वाली कोई चीज़ बाघ को मेरी उपस्थिति के बारे में चेतावनी देने की कोशिश कर रही थी?

यह धारणा कुछ ही क्षण बाद तब दूर हो गई जब बाघ मंदिर के प्रवेश द्वार की अंधेरी रूपरेखा से निकला, पहले एक अस्पष्ट आकृति के रूप में और फिर नव उदय हुए चंद्रमा के पहले प्रकाश में एक विशालकाय जानवर के रूप में।

जैसा कि मैंने पिछली शाम देखा था, किसी अज्ञात कारण से ये तेज़ सीटियाँ बाघ

के कानों तक नहीं पहुँचीं, हालाँकि मुझे ये साफ़ सुनाई दे रही थीं। यह बात विचित्र थी और अगले ही पल इसकी पुष्टि हो गई जब लगातार तीन सीटियाँ पहले से कहीं ज़्यादा ज़ोर से और लगातार बजीं। लेकिन बाघ ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर मुझे पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ फिर से सुनाई देने लगी, हल्की और जैसे दूर से आ रही हो। पहले तो आवाज़ का स्रोत पता लगाना मुश्किल था, लेकिन फिर अचानक मुझे एक अप्रिय झटके के साथ एहसास हुआ कि यह मेरे सामने मौजूद गहरे कुएँ की तलहटी से आ रही थी।

इस बीच बाघ स्थिर खड़ा था, सुबह की चांदनी में साफ दिखाई दे रहा था। वह मेरी ओर टकटकी लगाए देख रहा था। यह स्पष्ट था कि बाघ को याद आ गया था कि उसने मुझे पिछली रात वहां देखा था। मैं कुएं में टॉर्च की रोशनी डालकर फड़फड़ाहट की आवाज का कारण पता लगाना चाहता था, लेकिन इसका मतलब था बाघ से नजर हटाना, जो मैं बिल्कुल नहीं करना चाहता था। यह अफवाह कि यह आदमखोर बाघ है, एक बार फिर मेरे दिमाग में जोर से गूंज उठी। मान लीजिए कि यह सच है: अगर वह कुएं में देखते समय मुझ पर हमला करने का फैसला करता है, तो मैं उसकी दया पर निर्भर हो जाऊंगा।

तीसरी बार बजने वाली तीन सीटियों और पंखों की फड़फड़ाहट की बढ़ती आवाज़ ने मेरी सतर्कता को तोड़ दिया। एक नज़र में ही पता चला कि बाघ अभी भी मेरी ही तरफ देख रहा था। तभी मैं घुटनों के बल उठा, कुएँ की मुंडेर से अपना सिर और कंधे बाहर निकाले, टॉर्च पकड़े हुए अपना दाहिना हाथ जितना हो सके कुएँ में नीचे तक बढ़ाया और बटन दबा दिया। तेज़ रोशनी गहरे काले कुएँ में घुस गई और फिर कुछ दूरी पर उठते हुए घने काले धुएँ या भाप के बादल में गायब हो गई।

बाघ को भूलकर मैं जिज्ञासा से स्तब्ध होकर कुएँ की ओर टकटकी लगाए देखता रहा, जबकि नीचे से निकलता हुआ प्रतीत होने वाला बादल, जो इतना घना था कि मेरी टॉर्च की रोशनी भी उसे भेद नहीं पा रही थी, मेरी ओर निरंतर बढ़ता जा रहा था। उसे उस सतह तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा जहाँ मैं दुबका हुआ था।

एक तेज़ गुर्राहट ने मुझे बाघ से होने वाले खतरे के प्रति सचेत कर दिया। मैंने झट से टॉर्च उस दिशा में चमकाई जहाँ वह खड़ा था, और दूसरे हाथ से अपनी राइफल ढूँढी। लेकिन बाघ वहाँ नहीं था! शुक्र है कि मुझे एहसास हुआ कि उसने मुझे देख लिया था और भाग गया था, जो गुर्राहट मैंने सुनी थी वह मेरे दखल का विरोध था।

अजीब तरह से मुझे बाघ की कमी महसूस हुई, क्योंकि अब मेरे सामने कोई भौतिक शत्रु नहीं था, बल्कि एक ऐसी अमूर्त चीज़ थी जिससे निपटना मुझे नहीं आता था। और मैं आपको बता सकता हूँ कि यह विचार बेहद बेचैन करने वाला था।

फड़फड़ाहट की आवाज़ फिर से आई; तेज़, भारी और नज़दीक से। मैंने कुएँ के अंदर टॉर्च की रोशनी डाली, जिससे पता चला कि धुएँ के बादल के घूमते हुए गुबार अब कुएँ के मुँह से मुश्किल से पाँच फीट दूर थे और टॉर्च की किरणें उन्हें भेद नहीं पा रही थीं। वे तेज़ी से ऊपर उठे और जल्द ही मेरी टॉर्च के सामने पहुँच गए, जिसे मैंने नीचे की ओर करके रखा था। मेरा हाथ बुरी तरह काँपने लगा, जिससे रोशनी बेतरतीब ढंग से नाचने लगी।

इस धुंध में कुछ अवर्णनीय बुराई सी झलक रही थी, और इसने मुझ पर एक ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न की जिसका अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था। सामान्य धुएं के विपरीत, यह धुंध घने, रिबन जैसे निशानों में घूम रही थी, मानो किसी अंतहीन लंबाई के विशालकाय सांप के कुंडल हों जो उग्र, बेचैन, निगलने वाली, कभी न खत्म होने वाली गति में अपने चारों ओर, अंदर-बाहर और चारों ओर मुड़ते-घुमड़ते रहते हों।

देखते ही देखते, वह बादल मेरे सिर और कंधों तक पहुँच गया और मुझे पूरी तरह से घेर लिया। मैंने कुएँ में नीचे देखने के लिए गर्दन झुकाई। बादल पिछली रात की तुलना में कहीं अधिक घना था, बिल्कुल मटर के सूप जैसे कोहरे जैसा, जिसे महसूस किया जा सकता था। मैं वैसे तो डरपोक इंसान नहीं हूँ, लेकिन अगले कुछ पलों तक मुझे समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है। उस अनुभूति को शब्दों में बयान करना कठिन है। शायद यह कहना कि मैं अपने आप से अलग हो गया था, सबसे सटीक होगा, हालाँकि मुझे पता है कि ऐसे शब्द शायद ही कोई अर्थ व्यक्त कर पाते हैं।

एक बार फिर मैं असहनीय रूप से थका हुआ, अकेला, उदास और पूरी तरह निराश महसूस कर रहा था। मेरे मन में एक तीव्र इच्छा जाग उठी कि मैं दीवार से कूदकर कुएँ में समा जाऊँ, ताकि हमेशा के लिए अपने सारे दुख-दर्द खत्म कर दूँ। जीवन की यातनाओं, परेशानियों और परीक्षाओं का यह कितना आसान, कितना सुखद अंत होगा! कितना आसान रास्ता! कितना आरामदायक और सुकून देने वाला! कितना सुकून देने वाला! कितना सुकून देने वाला!

और फिर वह गैस, या धुआँ, या जो भी था, ऊपर उठा। बल्कि, वह कुएँ की मुंडेर को पार कर मेरे सिर के ऊपर एक घने, भारी, घूमते हुए बादल की तरह उठ खड़ा

हुआ। उसके उठने के साथ ही मेरा मन भी शांत हो गया और मैं एक बार फिर ज़मीन पर लौट आया, कुएँ में कूदने के अपने हाल के निराशाजनक विचारों को आश्चर्य से याद करते हुए। बादल ऊँचा उठता गया और हवा में घुलमिलकर पतला होता गया। मैंने उसे अपनी टॉर्च की रोशनी में पूरे दस मिनट तक देखा, तब तक वह शायद पचास फीट या उससे भी अधिक ऊँचा उठ चुका होगा, फिर वह बिखर गया और मैं उसे देख नहीं पाया।

मैंने टॉर्च बुझा दी और उस विचित्र घटना पर विचार करने के लिए बैठ गया। मेरे मित्र के शब्द और उसने जो कहानी मुझे सुनाई थी, वो सब मुझे ज़ोर से याद आ गई। मैंने बुराई और प्रतिशोध की उस कहानी पर फिर से विचार किया, और मुझे उस अजीब सी उदासीनता और सुस्ती का एहसास याद आया जो मुझ पर हावी हो गई थी जब भाप ने मुझे घेर लिया और मेरे सिर के ऊपर से गुज़र गई: निराशा का एहसास, और कुएँ में कूदकर अपनी सारी परेशानियों को खत्म करने का सुकून देने वाला प्रलोभन। दरअसल, मैं खुद भी उस सदियों पुराने अभिशाप का शिकार होने ही वाला था। यह जानकर मुझे ज़बरदस्त झटका लगा, मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ, कि कुछ ही पल पहले मैं निर्दयता से आत्महत्या के बारे में सोच रहा था।

फिर इस घटना के कुछ ऐसे पहलू भी थे जिनकी व्याख्या करना असंभव था। एक के बाद एक तीन अजीब सी सीटियाँ; पंखों के फड़फड़ाने की अनसुनी आवाज़; यह तथ्य कि बाघ इन आवाज़ों को नहीं सुन सका; और सबसे अजीब बात यह थी कि कुएँ से निकली वह विचित्र वस्तु, या जो भी चीज़ थी, एक काले बादल के रूप में प्रकट हुई।

मैं दूसरी बार जंगल में बने बंगले की ओर वापस चला गया, उस जर्जर पुरानी कुर्सी में सुकून पाने के लिए, पहले से कहीं अधिक उलझन में, मन में अधिक व्याकुल और स्वयं से अधिक असंतुष्ट।

अगले दिन सुबह, अपने गाँव के दोस्तों को अपने नए कारनामे के बारे में बताने के बाद, मैं इसी मनोस्थिति में संपिगेहल्ली से रवाना हुआ। उन सभी ने, बिना किसी अपवाद के, सिर हिलाकर सहमति जताई और अलग-अलग लहजों में एक ही बात दोहराई, 'हमने तो पहले ही कहा था।' जिस व्यक्ति ने मुझे कल नाराज़ किया था, उसने प्रसन्नता से कहा, 'कल तो तुम मुझसे नाराज़ थे। आज तो तुम सचमुच भाग्यशाली हो कि ज़िंदा हो। भाग्य ने तुम्हें दूसरी बार उस कुएँ में डूबने वालों में

शामिल होने से बचा लिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तुम्हारा समय अभी नहीं आया था। लेकिन वहाँ तीसरी रात मत रुकना, महोदय। वरना शायद तुम्हारा समय आ जाए और तुम ज़रूर कुएँ में कूद जाओगे।'

मैं उससे बहस कर सकता था और यह बता सकता था कि, यदि वास्तव में तीसरी रात को कुएं में कूदना ही मेरी नियति थी, तो मुझे संपिगेहल्ली में ही रहना पड़ता, चाहे वह, मैं या कोई और मुझे वहां से जाने के लिए कहे या न चाहे।

---

1 देखें: नरभक्षी की पुकार।

2 देखें: बाघ की दहाड़।

3 देखें: नरभक्षी की पुकार।

छह

गेरहेट्टी तेंदुए का विचित्र मामला

गेरहेट्टी एक छोटा सा गांव है जिसमें एक दर्जन से भी कम झोपड़ियां हैं, जो मद्रास राज्य के सलेम जिले में स्थित पेनग्राम के बड़े गांव की ओर एंचेट्टी से लगभग दक्षिण दिशा में जाने वाले वन मार्ग से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित है।

यह एंचेटी से केवल सात मील दूर है, लेकिन गेरहेटी पहुँचने के लिए आपकी कार को लगभग असंभव कोण पर घुमावदार रास्ते से नीचे उतरना पड़ता है, जो बेहतरीन ब्रेकिंग सिस्टम पर भी भारी दबाव डालता है, फिर दो बेहद पथरीले नदी-नालों को पार

करना पड़ता है जिनमें साल के नौ महीने से ज़्यादा समय तक पानी नहीं रहता, और फिर उतनी ही घुमावदार और असंभव ढलान पर चढ़ना पड़ता है। पुराने ज़माने में, जब मेरे पास मॉडल टी फोर्ड कारें हुआ करती थीं, यानी मेरे बचपन के दिनों में, मुझे अपनी प्यारी 'लिस्सोम लिज़ी' के स्टीयरिंग व्हील पर बैठकर, जिसका नाम उसके पीछे बड़े अक्षरों में लिखा होता था, उसे नियंत्रित करने वाले तीन पैडलों में से बाएँ पैडल को ज़ोर से दबाकर, और लाल-गरम इंजन और उबलते रेडिएटर से निकलते भाप के बादलों के बीच शिखर पर पहुँचने में बचकाना और असीम आनंद मिलता था।

एक बार लिज़म लिज़ी उस ढलान पर आधी चढ़ाई चढ़ गई, लेकिन उससे आगे नहीं चढ़ सकी। मैं गेरहेट्टी से बारह मील आगे मुत्तूर के वन लॉज जा रहा था, जहाँ मैंने अपने आदिवासी पुजारी मित्र बायरा से चिन्नार नदी के किनारे स्थित वन विभाग के कुएँ में फँसे एक मगरमच्छ को पकड़ने में मदद करने की व्यवस्था की थी, और मुझे वह मुलाकात पूरी करनी थी। मैं क्या करता? हेनरी फोर्ड और मॉडल टी की अद्भुत अनुकूलन क्षमता की जय हो! मैंने कार को घुमाया, अपने दाहिनी ओर के हैंड-लीवर को न्यूट्रल स्थिति में रखा, तीन पैडलों में से बीच वाले पैडल (जो मॉडल टी में रिवर्स पैडल था) को दबाया और उस भयानक ढलान पर आसानी से पीछे की ओर चढ़ गया! कार और मेरी गर्दन दोनों पर ज़ोर पड़ा, लेकिन हम पहुँच गए।

ढलान के शिखर पर पहुँचने के लगभग एक मील बाद, एक संकरा रास्ता दाईं ओर मुड़ता है, जिसके दोनों ओर घना जंगल है। इस रास्ते पर एक और मील चलने पर दाईं ओर एक पानी का कुंड मिलता है, जो बाईं ओर गेरहेट्टी फ़ॉरेस्ट लॉज की ओर जाने वाले रास्ते के ठीक सामने है। यह एक छोटा सा प्यारा बंगला है, जिसमें उन दिनों बस एक ही कमी थी। यह हमेशा बंद रहता था, क्योंकि देखभाल करने वाला, जो लापरवाह और बेपरवाह था और जिसे किसी बात की परवाह नहीं थी, छुट्टी पर गया रहता था, कभी-कभी एंचेट्टी में, लेकिन ज़्यादातर पेनाग्राम में, जो कि मिट्टी के मामले में गरीब होने के बावजूद लड़कियों से भरपूर था। और यहीं से एक कहानी शुरू होती है।

पुराने ब्रिटिश काल में, इस क्षेत्र के प्रभारी एक ज़िला वन अधिकारी (डी.एफ.ओ.) थे, जो पुराने ज़माने के थे। उनका नाम थोड़ा अटपटा था, वे नियमों के पक्के थे, और मुझे बिल्कुल पसंद नहीं करते थे। उनकी इस नापसंदगी का कारण मैं कभी समझ नहीं पाया। शायद उन्हें यह बात पसंद नहीं थी कि मैं उनके अधिकार क्षेत्र

में आने वाले जंगलों में ऐसे घूमता था जैसे वे मेरे अपने हों, और जब कभी दुर्भाग्यवश मुझे उनसे बात करने का मौका मिला, तो उन्होंने अपनी नफ़रत इस तरह दिखाई जैसे मैं कोई ऐसी चीज़ हूँ जिसे बिल्ली ने दरवाज़े पर छोड़ दिया हो। इस सज्जन का यही कहना था कि उनके क्षेत्र में वन विभाग के किसी भी बंगले में रहने से पहले मुझे उनकी अनुमति लेनी होगी और वह लिखित में प्राप्त करनी होगी। वास्तव में, यही नियम था और आज भी है। लेकिन भारत में रहने वाले किसी भी व्यक्ति से पूछिए, वह मुझसे सहमत होगा कि नियम तो तोड़ने के लिए ही बनाए जाते हैं। हर कोई उन्हें तोड़ता है और इस प्रक्रिया का आनंद लेता है। नियम जितना सख्त होता है, उसे तोड़ने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। कम से कम, भारत में तो ऐसा ही लगता है। और अगर ऐसा है, तो मैं क्यों नहीं?

हालांकि, इस व्यक्ति से बेवजह उलझने से बचने के लिए, मैंने एक बार उसे पूरे एक महीने पहले सूचना दे दी थी और गेरहेट्टी फॉरेस्ट लॉज में रहने की अनुमति मांगी थी। चूंकि मेरे पास उस क्षेत्र का शिकार लाइसेंस था, इसलिए वह मना नहीं कर सकता था। समय आने पर मुझे उसकी लिखित अनुमति मिल गई, लेकिन साथ ही एक लंबा-चौड़ा पैराग्राफ भी था जिसमें मुझे चेतावनी दी गई थी कि मैं किसी भी तरह से नियमों और विनियमों का उल्लंघन न करूं, माचिस फेंककर जंगल में आग न लगाऊं, जितने दिन मैं वहां रहूं उतने दिनों का निर्धारित किराया चुकाने में चूक न करूं, इत्यादि।

आखिरकार वो खुशनुमा दिन आ ही गया और मैं अपनी मॉडल टी कार में गेरहेट्टी के लिए निकल पड़ा। सौभाग्य से, मैं घाट की चोटी पर पहुँचते ही था कि मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। मॉडल टी कारें कभी खराब मौसम की परवाह नहीं करतीं, और इतनी मजबूत गाड़ी को रोकने के लिए बारिश की बूँदें काफी नहीं थीं। इसी तरह, वे यात्रियों से भी यही उम्मीद करती थीं कि उन्हें कोई फर्क न पड़े, क्योंकि उनके पास बैठने के लिए पर्याप्त सुरक्षा नहीं थी।

जब मैं गेरहेट्टी लॉज के मुख्य द्वार पर पहुँचा तो मैं पूरी तरह भीगा हुआ था, और वहाँ मैंने देखा कि दरवाजा एक विशाल ताले से मजबूती से बंद था। और लापरवाह चौकीदार अपनी मौज-मस्ती में मग्न था।

मुझे उस बदतमीज़ रक्षा अधिकारी से उस जगह पर कब्ज़ा करने की लिखित अनुमति मिली हुई थी। मैंने उसे एक महीने पहले सूचना दे दी थी। उसके कार्यालय को

चौकीदार को सूचित कर देना चाहिए था कि वह मेरा खुले दिल से स्वागत करे। फिर भी, मुझे बाहर ही रखा गया। यह बूढ़ा बदमाश, जो दूसरों से नियमों का पालन करवाने में इतना सख्त था, खुद ही नाकाम हो गया! ऊपर से, मूसलाधार बारिश हो रही थी, जिससे मैं और मेरा सामान पूरी तरह भीग रहे थे।

तो मैं लड़खड़ाते हुए इमारत के चारों ओर घूमा और पाया कि पीछे वाले बाथरूम का दरवाजा अपने कब्ज़ों से ढीला हो गया था। मैंने अपना कंधा लगाकर उसे कब्ज़ों से उखाड़ दिया। दरवाजा ज़ोर से खुल गया, और इस तरह मैं बंगले में घुस गया।

मैं जितने दिन के लिए आया था, उतने पूरे हफ्ते गेरहेटी में ही रुका रहा, लेकिन इतने समय में चौकीदार कभी आया ही नहीं। लगता है पेनाग्राम में उसकी मुलाकातें ज़्यादा ज़रूरी थीं। फिर मेरे जाने का समय आ गया। बाथरूम का दरवाज़ा, जो 'गलती से' अपने कब्ज़े से निकल गया था, सिर्फ़ खींचकर ही बंद हो सकता था। और किराया लेने के लिए भी कोई मौजूद नहीं था।

मैंने बैंगलोर से डाक द्वारा डीएफओ को किराया भेजा और उसके लापरवाह केयरटेकर के खिलाफ़ मज़बूत शिकायत दर्ज कराई। मैंने दावा किया कि तूफान के कारण आश्रय ढूंढते समय मैं कीचड़ में फिसलकर गिर गया, और खुद को बचाने की कोशिश में मेरा हाथ बाथरूम के दरवाजे से टकरा गया। दुर्भाग्यवश, इस मामूली दबाव के कारण पुराने कब्ज़े टूट गए और दरवाजा खुल गया। इसका मतलब यह था कि इस सरकारी इमारत की सुरक्षा व्यवस्था उतनी अच्छी नहीं थी जितनी होनी चाहिए थी।

लेकिन लापरवाह चौकीदार मेरी सोच से कहीं ज़्यादा बेपरवाह निकला। उसने और उसके मालिक ने मिलकर एक निर्दोष, ईमानदार, कानून का पालन करने वाले, ईसाई सज्जन के खिलाफ़ एक घिनौनी साज़िश रची! बंगले की सागौन की कुर्सी और बाथरूम का जस्ता का टब गायब थे। वे चोरी हो गए थे! या तो मैंने उन्हें चुराया था, जिस स्थिति में सरकारी इमारत में सेंध लगाने और उसका सामान चुराने के लिए मुझ पर मुकदमा चलाया जा सकता था और मुझे जेल भेजा जा सकता था। या फिर इमारत में सेंध लगाने की मेरी गैरजिम्मेदाराना हरकत ने उसे असुरक्षित बना दिया था, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी संपत्ति की चोरी होना तय था, जिसके लिए मैं पूरी तरह से ज़िम्मेदार था। मुझे सात दिनों के भीतर जवाब देने के लिए कहा गया, जिसके बाद मेरे खिलाफ़ कड़ी कार्रवाई करने का प्रस्ताव रखा गया। चौकीदार की अनुपस्थिति के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया।

मैंने तुरंत सोचा। अगर रक्षा अधिकारी (डीएफओ) इतना अप्रिय न होता तो मैं गायब हुई चीज़ों के लिए भुगतान करने की पेशकश कर देता। लेकिन हालात ऐसे थे कि ऐसी कोई भी पेशकश अपराध स्वीकार करने के रूप में मानी जाती। इसके अलावा, भारत में कोई भी चोर इतनी सुनसान जगह पर जाकर एक पुरानी कुर्सी और टपकते हुए बाथटब को नहीं चुराएगा, जिनका न तो खुद के इस्तेमाल के लिए कोई मूल्य होगा और न ही किसी ग्रामीण को बेचने के लिए।

ज़ाहिर है, वो सामान लापरवाह लेकिन चालाक चौकीदार ने या फिर खुद रक्षा अधिकारी के आदेश पर मुझे फंसाने के लिए हटा दिया था। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि कोई अंग्रेज़ अधिकारी ऐसा काम करेगा, चाहे वो मुझे कितना भी नापसंद करता हो। तो ज़ाहिर है, कसूरवार वही चौकीदार था। उसने ये सब मुझसे बदला लेने के लिए किया था, जब उससे उसकी गैरमौजूदगी के बारे में पूछा गया था, जैसा कि मैंने बताया था। लेकिन सामान कहाँ गया? उसने उन्हें बेचने की कोशिश तो नहीं की होगी, क्योंकि इससे सबूत मिल जाता। तो उसने उन्हें ज़रूर कहीं छिपाया होगा।

स्पष्ट उत्तर यही था कि उसने उन्हें अपनी प्रेमिका के घर में छिपा रखा था। इसलिए मैं पेन्नाग्राम के लिए निकल पड़ा और आधी रात के बाद पहुँचा, जब सब सो रहे थे। मैंने अपने साथी रंगा को जगाया, उसे सारी बात बताई और पूछा कि हमें तलाशी कहाँ से शुरू करनी चाहिए। यह सवाल भी उठा कि चौकीदार बारह मील दूर गेरहेट्टी से पेन्नाग्राम तक उन दो भारी वस्तुओं को कैसे लाया होगा। रंगा ने बिना झिझक के जवाब दिया। कटे हुए बांसों से लदी बैलगाड़ी में!

गेरहेट्टी के आसपास के जंगल से लगातार बांस पेन्नागरम की ओर बहते रहते थे, जहाँ वन विभाग का एक लकड़ी का गोदाम था। वन विभाग में एक अधिकारी होने के नाते, भले ही उनका पद छोटा ही क्यों न हो, इस चौकीदार के लिए एक-दो गाड़ीवालों को मनाना आसान था कि वे बांसों के नीचे छिपाकर रखी गई इन वस्तुओं को गाड़ी में पेन्नागरम तक पहुँचा दें।

सौभाग्य से, रंगा, जो स्वयं कभी गाड़ीवान रह चुका था, अपने साथियों से अच्छी तरह परिचित था। समय काफी ढल चुका था, फिर भी वह शहर में मौजूद लोगों से पूछताछ करने के लिए निकल पड़ा और सुबह 4 बजे लौटकर मुझे खुशखबरी दी कि उसने न केवल दो गाड़ीवानों को ढूंढ निकाला है, जिनमें से प्रत्येक अपने वाहन में एक-एक वस्तु लाया था, बल्कि उसे यह भी पता चल गया है कि वे वस्तुएं कहां

छिपाई गई थीं।

किसी पुलिस स्टेशन में आराम से सो रहे अकेले संतरी को जगाने का यह बहुत ही असमय समय था, लेकिन हमने थोड़ी देर बाद ठीक यही किया। कांस्टेबल बहुत नाराज़ था। इतना ही नहीं, अकेले चौकीदार होने का दावा करते हुए उसने कहा कि वह अपनी चौकी नहीं छोड़ सकता। लेकिन कुछ बातचीत के बाद उसका मन शांत हो गया। हमें थाने का ज़िम्मा सौंपकर वह पुलिस चौकी की ओर तेज़ी से गया और थोड़ी देर में अपने एक साथी के साथ लौटा, जिसने मौके के मुताबिक पूरी वर्दी पहन रखी थी। यह पुलिसकर्मी रंगा और मुझे उस छोटे से घर तक ले गया, जिसमें, मैं मानता हूँ, एक बेहद खूबसूरत लड़की रहती थी। मुझे उस लापरवाह लेकिन बेफिक्र चौकीदार की महिलाओं के प्रति पसंद की तारीफ़ करनी पड़ी। लेकिन उस समय ज़्यादा ज़रूरी था उसके छोटे से घर के एक कोने में रखी पुरानी सागौन की कुर्सी और जस्ता का बाथटब।

उस बेचारी लड़की को गिरफ्तार कर लिया गया और दोनों सामान पुलिस स्टेशन ले जाए गए। उसी सुबह सब-इंस्पेक्टर (एसआई) वहाँ पहुँचा और मैंने उसे दो लिखित दस्तावेज सौंपे। पहला, चोरी के संबंध में शिकायत पत्र था, जिस पर कुछ दिन पहले की तारीख थी। दूसरा, सब-इंस्पेक्टर की प्रशंसा और बधाई का पत्र था। वह बहुत प्रसन्न हुआ। मैंने उससे निवेदन किया कि वह लड़की को रिहा कर दे और चोर को पकड़ ले।

देखभालकर्ता; लेकिन मुझे नापसंदगी भरी निगाहों से देखते हुए उसने कहा कि वह ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि लड़की 'घटना के बाद की सहभागी' थी, भले ही वह एक सुंदर युवती थी।

मेरे वकील ने वन विभाग (डीएफओ) को मानहानि का नोटिस भेजा, जिसमें भारी भरकम हर्जाने की मांग की गई थी, और इसकी एक प्रति मद्रास के मुख्य वन संरक्षक को भी भेजी गई थी। लेकिन बेचारे पर समय मेहरबान था। वैसे भी वह सेवानिवृत्ति के कगार पर थे और रातोंरात छुट्टी पर गायब हो गए, जहां से वे कभी वापस नहीं लौटे। हालांकि, मुझे सबसे ज्यादा संतोष इस बात से मिला कि मैंने बिना किसी पूर्व सूचना के ही अपराधी की पहचान कर ली थी।

इस विषयांतर के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन मेरा बहाना यह है कि मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जंगलों में भी हमारी अपनी समस्याएँ होती हैं। भारत एक ऐसा

देश है जो अपने निवासियों से बुद्धि की तीक्ष्णता की अपेक्षा रखता है। और इसी से मुझे एक और कहानी याद आती है।

भारत में बिना टिकट के ट्रेन यात्रा करना आम बात है। इससे निपटने के लिए अधिकारी कई तरह की जाँच व्यवस्था करते हैं, जिसके चलते छोटी यात्रा में भी यात्री को कई बार अपना टिकट 'यात्रा टिकट निरीक्षकों' को दिखाना पड़ सकता है। मेरे एक परिचित, जो भारत से ब्रिटेन चले गए थे, यह देखकर सुखद आश्चर्यचकित हुए कि जिस उपनगरीय लाइन पर वे रोज़ काम पर जाते थे, वहाँ कोई टिकट जाँच नहीं होती थी। इसलिए उन्होंने कुछ महीनों तक बिना टिकट के यात्रा की, जब तक कि एक दिन वे पकड़े नहीं गए।

लेकिन इन सब बातों का उस विचित्र तेंदुए से कोई लेना-देना नहीं है जिसके बारे में मैं आपको बताने वाला था।

गेरहेट्टी स्थित वन लॉज से लगभग दो फर्लांग पीछे इसी नाम की एक छोटी सी बस्ती है, जिसमें आधा दर्जन झोपड़ियाँ हैं। यहाँ के निवासी लकड़हारे हैं, जो वन विभाग के लिए कुली का काम करके, सड़क की मरम्मत करके, चंदन और अन्य लकड़ी चुराकर और गर्मियों के महीनों में हिरणों का शिकार करके अतिरिक्त आय अर्जित करते हैं, जब जंगल में पानी नहीं होता और जानवर देर रात पानी पीने के लिए उस गड्ढे पर आते हैं, जिसके बारे में मैंने आपको पहले ही बताया है कि वह लॉज के ठीक सामने उस स्थान पर स्थित है जहाँ से मुख्य मार्ग मुड़ता है।

इस छोटे से गाँव में कुछ भेड़ें थीं—ब्रिटिश शासन के दौरान जंगल में बकरियाँ पालना सख्त मना था, क्योंकि ये जानवर पौधों को बहुत नुकसान पहुँचाते थे—और कुछ मुर्गियाँ थीं। यहाँ कुछ मवेशी भी थे, लेकिन बाघों और तेंदुओं ने उन्हें मार डाला था।

इस कहानी में वर्णित तेंदुआ, जो कि औसत आकार का जानवर था, ने जंगल के किनारे गिरे हुए पत्तों के बीच भोजन करने के लिए झोपड़ियों से भटकती हुई मुर्गियों को चुराकर अपना शिकार शुरू किया। अगला चरण तब आया जब तेंदुए ने और आगे बढ़ने का फैसला किया और कांटों की दीवार से रेंगते हुए उस झोपड़ी पर हमला कर दिया जिसमें मुर्गियां रखी थीं। उसने जितनी हो सके उतनी मुर्गियों को खा लिया और बाकी पक्षियों को मजे के लिए मार डाला या बुरी तरह घायल कर दिया। अब उसे भेड़ों की ओर रुख करना पड़ा, क्योंकि खाने के लिए और कुछ नहीं बचा था, और

उसने मौका मिलते ही उन्हें एक-एक करके मारना शुरू कर दिया। मुझे इस तेंदुए के बारे में बताया गया था, लेकिन चूंकि इसे काफी हानिरहित जानवर बताया गया था - वास्तव में, लगभग दोस्ताना स्वभाव का - इसलिए मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

इस जानवर को मैंने पहली बार करीब साढ़े चार बजे एक शाम देखा था। मैं लॉज के बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठा चाय पी रहा था, तभी पानी के गड्ढे के पास कुछ हलचल हुई, जिसका किनारा मेरी जगह से दिखाई दे रहा था। सूरज तेज़ चमक रहा था और दिन काफी गर्म था। आम तौर पर कोई जंगली जानवर ऐसे समय में नहीं दिखता। फिर हलचल हुई और पीले रंग की कोई चीज़ तालाब के किनारे उगी सरकंडों की दीवार से बाहर निकली। मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या था।

लगभग एक मिनट बाद, बिना किसी स्पष्ट हलचल के, वह वस्तु सरकंडों के पीछे से पूरी तरह बाहर निकली और एक तेंदुआ में तब्दील हो गई। वह जंगल में बने बंगले की ओर टकटकी लगाए देख रहा था, मानो उसे पूरा यकीन था कि अगर कोई खतरा होगा तो वह इसी दिशा में होगा। मैं अपनी कुर्सी पर बिल्कुल नहीं हिला। लगभग तीन मिनट तक गौर से देखने के बाद, तेंदुए ने फैसला किया कि सब कुछ सुरक्षित है। वह पानी पीने के लिए झुका, लेकिन दो बार रुककर बंगले की ओर ऊपर देखा ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि सब ठीक है।

मैंने इस जानवर को दूसरी बार तब देखा जब इसने एक जंगली मुर्गे का पीछा करते हुए उसे पेड़ पर चढ़ा दिया। मैं सुबह-सुबह सैर से लौट रहा था तभी जंगली मुर्गे ने कुछ गज आगे अपनी तीखी चेतावनी भरी आवाज निकाली और जोर-जोर से अपने पंख फड़फड़ाते हुए ऊपर की ओर चला गया।

'चेक! चेक! चेक! चेक!' मुर्गे ने चीख मारी और मैं वहीं रुक गया। मुझे लगा कि उसने मुझे देख या सुन लिया होगा। पर मैं गलत था, क्योंकि एक पल बाद ही झाड़ियों से एक तेंदुआ निकला और पक्षी के पीछे भागा, और जिस पेड़ पर वह बैठा था, उस पर जल्दी से चढ़ गया, लेकिन उसकी कोशिश नाकाम रही। जंगली मुर्गे ने फिर चीख मारी और इस बार दूर उड़ गया, जबकि तेंदुए को आगाह हो गया कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए उसने अपना सिर घुमाकर पीछे देखा।

तभी उसने मुझे देखा। अपनी पकड़ छोड़ते हुए, पैंथर हल्के से जमीन पर गिर पड़ा, एक पल के लिए अपनी पीठ को झुकाया और अपनी पूंछ को ऊपर की ओर

लपेटा, मानो कोई दोस्ताना बिल्ली हो, फिर मुड़ा और चुपचाप झाड़ियों में गायब हो गया।

तीसरी बार जब मैंने इस जानवर को शांतिपूर्ण परिस्थितियों में देखा, तब मैं अपनी मॉडल टी कार में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मैं गेरहेटी बंगले और पानी के गड्ढे को पार कर चुका था, और उस रास्ते पर आगे बढ़ रहा था जो, जैसा कि आपको याद होगा, मुत्तूर और पेन्नाग्राम जाने वाले मुख्य मार्ग से अलग हो जाता है।

उन दिनों उस रास्ते से गाड़ियाँ नहीं आती थीं और बैलगाड़ियाँ भी बहुत कम थीं। गर्म मौसम में, जब जंगल सूख जाता था, तो मवेशी कभी-कभार नटरापलयम गाँव और कावेरी नदी की ओर जाते हुए दिखाई देते थे, जो सात-आठ मील दूर थी, जहाँ अभी भी कुछ चरागाह उपलब्ध थे। इस क्षेत्र में रहने वाले कुछ लोग अपना बोझ सिर पर उठाते थे या, जब बोझ बहुत भारी होता था, तो टट्टू या गधे की पीठ पर लादते थे; गधे को इसलिए प्राथमिकता दी जाती थी क्योंकि वे सस्ते थे। संकरे रास्ते के ऊपर पेड़ों की शाखाएँ आपस में मिलती थीं, इसी कारण से मॉडल टी की पहले से ही जर्जर हो चुकी हुड को नीचे करना पड़ता था और विंडशील्ड को भी नीचे करना पड़ता था। फिर भी, स्टीयरिंग व्हील पर टहनी रगड़ने के लिए अक्सर आगे की सीट पर एक तरफ लेटना आवश्यक हो जाता था।

एक तीखे मोड़ पर मुड़ते ही, मैंने देखा कि ठीक आगे एक मोटी शाखा ट्रैक के ऊपर फैली हुई है, और उस शाखा पर एक पैंथर लेटा हुआ था, जिसने जाहिर तौर पर नीचे से गुजरने वाले किसी भी जानवर पर घात लगाने की उम्मीद में यह स्थान ले लिया था। उसने कार की आवाज नहीं सुनी थी क्योंकि मैं ढलान पर तेजी से नीचे जा रहा था, और लिस्सोम लिज़ी के बाएं पैडल को आधा दबाए हुए था, जो गियर-कम-क्लच का काम करता था।

जब मैं लगभग उसके नीचे था, तभी पैंथर शाखा पर से उठा, फिर घबराकर बेढंगे तरीके से उछला, पिछली सीट को पार करते हुए कार के पिछले हिस्से पर जा गिरा, जहाँ से वह फिर से झाड़ियों में भाग गया, लेकिन इससे पहले कि वह भाग पाता, उसके पिछले पैरों के पंजों ने दूसरी छलांग लगाने के लिए सहारा ढूंढते हुए पहले से ही फटे हुए गद्दे में एक बड़ा छेद कर दिया।

इस रास्ते पर जंगलपालयम नाम का एक गाँव है। यह गेरहेट्टी और नटरापालयम के लगभग बीच में स्थित है, दोनों से ढाई मील की दूरी पर। मैं इसे 'खुशहाल गाँव' के

नाम से जानता था, क्योंकि इस छोटे से गाँव में रहने वाले लोग, भले ही सभ्यता, चिकित्सा सहायता, स्कूल, मनोरंजन स्थलों और तथाकथित सहकारी केंद्रों से दूर हों, जो कभी किसी काम में सहयोग करते हुए नहीं दिखते, फिर भी हमेशा संतुष्ट और हंसमुख रहते थे। इस छोटे से गाँव का दौरा करना और यहाँ के निवासियों से बातचीत करना बहुत अच्छा लगा। वे भारत में व्याप्त राजनीतिक चेतना से पूरी तरह मुक्त प्रतीत होते थे।

हर महीने, पूर्णिमा के दिन, और उससे दो दिन पहले और दो दिन बाद, गाँव वाले चाँदनी रात में खेल खेलते थे। ये खेल शाम के भोजन के लगभग एक घंटे बाद, जो लगभग आठ बजे होता था, शुरू होते थे और आधी रात तक चलते थे। शालीनता के कारण पुरुष और महिलाएं एक साथ नहीं खेल सकते थे, इसलिए महिलाएं गाँव के बीच में एक घेरा बनाकर बैठ जाती थीं, जबकि पुरुष गाँव के खलिहान में चले जाते थे, जो गाँव के एक तरफ लगभग पचास गज की दूरी पर एक साफ जगह होती थी। महिलाएं ज्यादातर गाती और नाचती थीं, जबकि पुरुष कई तरह के खेल खेलते थे, जिनमें सबसे लोकप्रिय बलचिक या कबड्डी था, हालांकि इस विशेष गाँव में इसे गोड्डूगोड्डू के नाम से जाना जाता था, जो पूरे भारत में व्यापक रूप से खेले जाने वाले लोकप्रिय खेल साल्ट्स का एक रूप था।

इस खेल के नियम सरल हैं। ज़मीन पर कोयले से एक सीधी रेखा खींची जाती है, और पाँच से सात सदस्यों की दो टीमें दोनों ओर इकट्ठा होती हैं। खेल तब शुरू होता है जब, मान लीजिए, टीम A का एक सदस्य (हालाँकि गाँव वाले टीमों को 'मेंढक', 'टिड्डा' या इससे भी कम अपमानजनक नामों से पुकारते हैं) आधार रेखा के पास आता है, बार-बार और तेज़ी से 'कब्बाड्डी' (या 'गॉड्डूगॉड्डू) शब्द बुदबुदाता है, बुदबुदाते हुए ही रेखा पार करता है, और अपनी उंगलियों से टीम B के एक सदस्य (जिसे शायद 'नपुंसक' या 'हिजड़ा' या कोई और अभद्र नाम दिया गया हो) को हल्के से छूता है, फिर टीम B के किसी भी सदस्य द्वारा पकड़े जाने से पहले ही कोयले की आधार रेखा पर वापस उछल पड़ता है।

नियम यह है कि टीम ए के खिलाड़ी को लगातार और बिना रुके जोर-जोर से 'कब्बाड्डी' (या 'गॉड्डूगॉड्डू') बुदबुदाते रहना होगा। यदि टीम बी का एक या अधिक सदस्य उसे पकड़कर नीचे गिराने में सफल हो जाता है, जिससे वह कोयले की आधार रेखा तक वापस न जा सके, तो उसकी टीम का भी एक अंक कट जाएगा।

टीम ए के खिलाड़ी के सफल या असफल होने के बाद, लाइन के पास आने की बारी टीम बी के खिलाड़ी की आती है, और इसी तरह यह सिलसिला चलता रहता है। जीतने वाली टीम वह होती है जो पहले से तय अंकों की संख्या, आमतौर पर इक्कीस, प्राप्त कर लेती है। कभी-कभी परिणाम पर एक छोटी सी शर्त भी लगी होती है, जिसमें प्रत्येक टीम के सदस्य शाम के दौरान आधा रुपया जीतते या हारते हैं, जो एक शिलिंग से लगभग कम होता है।

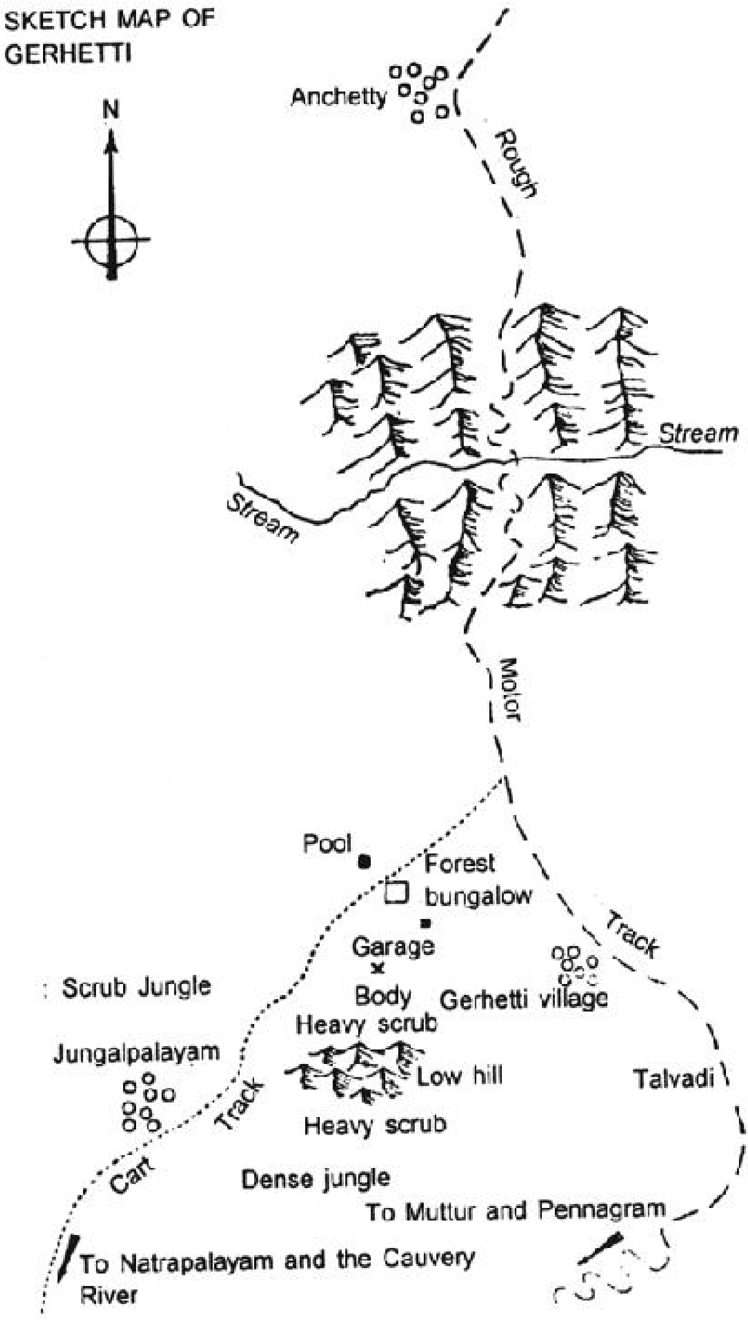
SKETCH MAP OF GERHETTI
N
Anchetty
Rough
Stream
Stream
Motor
Track
Pool
Forest bungalow
Garage
Body
Scrub Jungle
Gerhetti village
Heavy scrub
Jungalpalayam
Low hill
Talvadi
Track
Heavy scrub
Cart
Dense jungle
To Muttur and Pennagram
To Natrapalayam and the Cauvery River

कई चांदनी रातों में मैंने जंगलपालयम गांव के लोगों के साथ गोड्डू-गोड्डू का खेल खेला है। उन दिनों मैं एक नौजवान था और बहुत ही मजबूत इरादों वाला। फिर भी, लगातार जोर-जोर से 'गोड्डू-गोड्डू' बुदबुदाते हुए, फुर्तीले, चुस्त-दुरुस्त गांव के युवकों से बचते हुए, मेरी सांस फूल जाती थी। औरतें अपना गाना-नाचना छोड़कर मेरे चारों ओर इकट्ठा हो जाती थीं और दोराई (एक तरह का खेल) की बेइज्जती देखती थीं, जो हमेशा होती थी, हालांकि जिस टीम की तरफ से मैं खेलता था, वे मुझे सहज महसूस कराने के लिए कहती थीं कि मैं उनके लिए कोई बोझ नहीं हूं। मैं सुबह तड़के पश्चिम में जंगल से ढकी पहाड़ियों के पीछे चांद डूबते समय पैदल या गाड़ी से गेरहेट्टी लौटता था, और अक्सर खुद को अनजाने में 'गोड्डू-गोड्डू-गोड्डू-गोड्डू' बुदबुदाते हुए देखकर डर जाता था।

तभी तेंदुए ने हमला कर दिया! जाहिर है, गेरहेट्टी से जंगलपालयम जाने वाले रास्ते पर लटकी हुई वह शाखा, जिस पर मैंने उसे अचानक देखा था, इस जानवर का पसंदीदा घात स्थल था, क्योंकि एक दिन उसने इसी शाखा से छलांग लगाकर एक गधे पर हमला कर दिया, जो इमली के फलों से लदे दो बोरों में लदा हुआ था, जिन्हें गधे का मालिक पेन्नाग्राम के बाजार ले जा रहा था। आदमी एक जंगली बेल तोड़कर खाने के लिए रुका था और गधा पचास गज आगे रास्ते के मोड़ पर मुड़ा ही था कि तभी एक शरीर के गिरने की धड़ाम की आवाज और एक कर्कश गड़गड़ाहट सुनाई दी।

उस आवाज को अपने गधे पर मंडरा रहे किसी खतरे से जोड़कर न देखते हुए, उस आदमी को डर था कि कहीं आगे कोई हाथी न हो। इसी कारण वह चारों ओर पैनी नजर रखते हुए धीरे-धीरे मोड़ की ओर बढ़ा। लेकिन जब उसने देखा कि उसका बेचारा गधा मरा पड़ा है और रास्ते के एक किनारे घसीटा जा रहा है, तो वह भयभीत हो गया। एक तेंदुआ उसके पेट से सटा हुआ था, उसके दांत अभी भी गधे के गले में गड़े हुए थे और वह कटी हुई नस से रिसते गर्म खून का आनंद ले रहा था।

फिर वह आदमी, जो आम तौर पर भाग जाता और वास्तव में उस हाथी को देखकर भागने के लिए तैयार भी था, अपना आपा खो बैठा और हाथ में पकड़ी लाठी घुमाते हुए तेंदुए पर झपटा। तेंदुए ने अभी-अभी जो शिकार किया था, उससे वह बहुत उत्साहित था, उसके शरीर की गर्माहट और उसके जबड़ों से रिसते गर्म खून से वह अपना भोजन छोड़ने के मूड में नहीं था। वास्तव में, मुझे लगता है कि गुस्से में आए

उस आदमी के उस पर टूट पड़ने से पहले उसे ऐसा करने का मौका ही नहीं मिला।

लाठी पैंथर की पीठ पर ज़ोर से पड़ी और पैंथर उस आदमी पर झपटा, उसका गला पकड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उस ग्रामीण की लंबी काली दाढ़ी देखकर उसका ध्यान भटक गया और उसने आदमी की छाती पर काट लिया। आदमी का संतुलन बिगड़ गया, वह पीछे की ओर गिर पड़ा और चीखने लगा।

मैं उस समय संयोगवश गेरहेट्टी आया हुआ था, लेकिन उस समय काफी दूर, गाँव के पीछे एक पहाड़ी की ढलान पर, अपने चचेरे भाई के लिए एक खास तरह का भृंग खोज रहा था, जो भृंगों का शौकीन संग्राहक है। मुझे चीखने की हल्की-हल्की आवाज सुनाई दी, और यह सोचकर कि किसी आदमी को हाथी मार रहा है, मैं उनकी दिशा में दौड़ पड़ा। अफसोस की बात है कि मैं अपनी राइफल जंगल के लॉज में ही छोड़ आया था। भृंग पकड़ने वाले लोग आमतौर पर हथियार नहीं रखते, और उस समय उस इलाके में आदमखोर हाथी या हिंसक हाथी का कोई खतरा नहीं था।

जो चीखें मैंने बहुत धीमी आवाज़ में सुनी थीं, वे अब बंद हो चुकी थीं, इसलिए मैं उनके स्रोत का अंदाज़ा ही लगा पा रहा था; लेकिन इस विश्वास के साथ कि एक हाथी ने एक आदमी पर हमला किया था, मैंने अनुमान लगाया कि जो भी हुआ होगा, वह जंगलपालयम जाने वाले रास्ते पर कहीं हुआ होगा। इसलिए मैं उसी दिशा में दौड़ पड़ा, झाड़ियों और पेड़ों के बीच से लड़खड़ाते हुए आखिरकार रास्ते पर पहुँच गया।

आस-पास कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। क्या मैं दाएँ मुड़ूँ या बाएँ? आवाज़ इतनी दूर से आ रही थी कि मैंने जंगलपालयम की ओर मुड़ने का फैसला किया और बाएँ मुड़ गया, जितना हो सके चुपचाप आगे बढ़ता रहा और किसी भी क्षण किसी क्रोधित हाथी के सामने आने की आशंका करता रहा।

मैंने जोर से आवाज लगाई लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। लगभग एक फर्लांग चलने के बाद मैं उस पीड़ित के पास पहुँचा जो अपने मरे हुए गधे के बगल में पड़ा था। तेंदुआ उसे छोड़कर चला गया था; शायद उसकी चीखों ने जानवर को डराकर भगा दिया था, या हो सकता है कि मनुष्य से पहली बार सामना होने के कारण तेंदुए के मन में अभी भी मनुष्य का कुछ डर बाकी था। जब मैंने उसे पुकारा तो उसकी आँखें झपकीं और उसने मुझे अपना नाम सुब्रमण्यम बताया, कि वह इमली लेने पेन्नाग्राम से आया था, और कैसे तेंदुआ उस पर हमला करने आया था। फिर वह बेहोश हो गया। मैंने उसे अपने कंधे पर उठाया और उसे वन लॉज तक ले जाने का इरादा किया, जहाँ

से मैं उसे अपनी कार में बिठाकर बैंगलोर के अस्पताल ले जा सकता था।

अफसोस, मैं जैसे ही बंगले पर पहुँचा और उसे बरामदे के फर्श पर लिटाया, तभी उसमें मृत्यु के लक्षण दिखने लगे। उसके मुँह और सीने के भयानक घावों से खून बहने लगा। यह स्पष्ट था कि उसके फेफड़े फट गए थे, और जैसे ही मैंने उसे उठाकर अपनी कार में बिठाया, उसकी मृत्यु हो गई। अधिकारियों को पूरी घटना बताने में मुझे जो परेशानी हुई, उसका मैं विस्तार से वर्णन नहीं करूँगा, लेकिन कार्यवाही जारी रहने के दौरान ही मैं गेरहेट्टी, जंगलपालयम और नटरापालयम के लोगों को चेतावनी देने के लिए वापस लौट आया कि तेंदुआ खतरनाक हो सकता है।

आश्चर्य की बात यह है कि कुछ महीनों तक कुछ नहीं हुआ। फिर पेन्नाग्राम में हैजा की भयानक महामारी फैल गई और वहाँ से यह दूर-दूर तक, यहाँ तक कि नटरापलयम तक पहुँच गई। इस दूरस्थ गाँव में दो-तीन लोगों की मृत्यु हो गई, और क्योंकि उनकी मृत्यु एक संक्रामक बीमारी से हुई थी, इसलिए ग्रामीणों ने शवों को सामान्य तरीके से दफनाने या जलाने के बजाय जंगल में सड़ने के लिए फेंक दिया।

शायद पैंथर ने इस मांस का कुछ हिस्सा खाया होगा, हालांकि कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता, क्योंकि कोई भी इतने बड़े शव के पास जाने की हिम्मत नहीं करेगा। अन्यथा, आदमखोर जानवर का उदय और उसके ऐसा बनने का कारण रहस्य में डूबा हुआ है।

मुसीबत तब शुरू हुई जब गेरहेट्टी में पानी के कुंड पर घड़ा लेकर गया एक लड़का वापस नहीं लौटा। उसकी अनुपस्थिति का कारण केवल आलस्य ही था, इसलिए उसके पिता शाम को उसे ढूंढने निकले और अपने साथ एक मोटी छड़ी ले गए ताकि सोते हुए लड़के की पीठ पर रख सकें। पिता को अपने बेटे का टूटा हुआ घड़ा मिला, जो पानी से भरा होने पर गिर गया था और इसलिए वापसी यात्रा के दौरान टूट गया था। उन्होंने घास पर लड़के का खून देखा और एक पैंथर के पंजों के निशान भी देखे, जो मुख्य रास्ते पर चल रहा था और फिर लड़के को देखकर उस पर झपटा था। एक घसीटने के निशान से पता चला कि शव को किस दिशा में ले जाया गया था।

बाघों की तुलना में पैंथर बहुत छोटे, कम ऊंचे और कमजोर होते हैं, इसलिए वे अपने शिकार को उठाकर जमीन से दूर नहीं ले जा सकते। उन्हें अपने शिकार को घसीटना पड़ता है, यही कारण है कि वे खाने से पहले ज्यादा दूर नहीं जाते। बाघ न केवल ऊंचे होते हैं बल्कि कहीं अधिक शक्तिशाली भी होते हैं, वे भैंस के बराबर भारी

शिकार को भी जमीन से उठा सकते हैं। इसके अलावा, जब कोई बाघ खाने से पहले अपने शिकार को किसी दूर स्थान पर ले जाना चाहता है, तो वह अपने शिकार की गर्दन पकड़ता है और तेजी से अपना सिर घुमाकर मृत शरीर को अपनी पीठ पर लाद लेता है, जिससे वजन चारों पैरों पर समान रूप से आ जाता है। इस तरह, बाघ अपने शिकार को लंबी दूरी तक ले जाने के लिए जाने जाते हैं, इसलिए आदमखोर बाघ के मामले में, उनके मानव शिकार अक्सर नहीं मिलते।

अब कहानी पर लौटते हैं: पिता जल्दी से गेरहेट्टी गाँव की ओर भागे, वहाँ के कुछ निवासियों से मदद मांगी और लाठी-पत्थरों से लैस होकर, छोटा सा दल घसीटने के निशान का पीछा करने लगा। उन्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना था। लड़के का बचा हुआ हिस्सा पानी के गड्ढे के ठीक दूसरी ओर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था।

उस दिन से जंगल में कोई भी अकेला नहीं निकलता था। कम से कम चार लोग मिलकर एक दल बनाते थे और अपने साथ लकड़ी काटने के औजार, कुल्हाड़ी या मजबूत लाठी रखते थे। यह खबर जंगलपालयम, नटरापालयम, पेन्नाग्राम और एंचेटी तक फैल गई। हर कोई तेंदुआ की तलाश में था।

अजीब बात यह थी कि तेंदुए द्वारा कभी-कभार मुर्गी या भेड़ चुराने की घटनाएँ अभी भी जारी थीं। इलाके के अधिकांश लोगों ने कभी न कभी उस हानिरहित तेंदुआ को देखा था, जिससे मेरा सामना तीन बार हुआ था, इसलिए किसी ने भी उसे उस जानवर से नहीं जोड़ा जिसने इमली व्यापारी पर हमला किया था और बाद में लड़के को खा गया था। आदमखोर को कोई राहगीर जानवर या कोई तेंदुआ समझा जाता था जो बीमारी या घावों के कारण अत्यधिक भूख से मरणासन्न हो गया था। कुछ लोगों का तो यह भी मानना था कि तेंदुआ पागल हो गया था, क्योंकि उसने हैजा से मरे जानवरों के शव खा लिए थे। क्योंकि इस क्षेत्र में आदमखोर जानवर लगभग अज्ञात थे; अतीत में कुछ आदमखोर बाघ थे, लेकिन वे बहुत दूर, केम्पेकेराई क्षेत्र में सक्रिय थे। जहाँ तक आदमखोर तेंदुआ की बात है, किसी को भी इसके बारे में सुनने की याद नहीं थी।

उस लड़के के पीछे एक तीसरी शिकार हुई, इस बार एक महिला जो अपने दो साल के बच्चे को नहलाकर कुएँ से लौट रही थी। इस कुएँ का पानी बहुत खारा था और पीने या खाना पकाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था; इसका इस्तेमाल केवल धोने के लिए किया जा सकता था। हैरानी की बात यह थी कि तेंदुए

ने बच्चे को छुआ तक नहीं, बल्कि उसने माँ को मार डाला और उसके शव को कुएँ से कुछ गज दूर एक नाले में घसीट कर फेंक दिया। बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर गाँव वाले जाँच करने के लिए वहाँ पहुँचे।

इस त्रासदी के बाद, चारों ओर गंभीर भय फैल गया। जंगल में लकड़ी काटना और सभी प्रकार की आवाजाही पूरी तरह से ठप हो गई, और रात में जंगल के कुछ गिने-चुने पानी के स्रोतों पर मंडराने वाले शिकारी बेहतर समय आने तक अपनी बंदूकें और पुराने पिस्तौलें पन्ने रख कर रख दिए।

एंचेटी में मेरा किरायेदार, नारायण नाम का एक युवक, जो मेरी ज़मीन के छोटे से टुकड़े पर खेती करता था लेकिन कभी किराया नहीं देता था, मुझे यह खबर लाया। साथ ही उसने एंचेटी के पटेल (जो नाममात्र के लिए गेरहेटी बस्ती के मुखिया भी थे) का अनुरोध भी दिया कि मैं आकर उस तेंदुआ को मार डालूँ। उस समय मैं बैंगलोर में ज़रूरी काम में व्यस्त था, इसलिए मैंने नारायण से कहा कि मैं एक हफ्ते में आऊँगा। मैंने उसे पटेल को यह संदेश देकर वापस भेज दिया और गेरहेटी के लोगों को यह चेतावनी भी दी कि वे समूह में ही चलें, कभी अकेले न चलें। आदमखोर तेंदुआ स्वभाव से कायर होते हैं और वे केवल अंधेरे में ही हमला करते हैं, जबकि आदमखोर बाघ अधिक बहादुर और निडर होता है और किसी भी समय हमला कर सकता है। इस मामले में गेरहेटी का तेंदुआ अलग था; उसने अपने तीनों शिकार दिन दहाड़े किए थे।

मेरे गेरहेटी पहुँचने से एक दिन पहले, पैंथर ने चौथी बार हमला किया, और शिकार बंगले की रखवाली करने वाले का बेटा निकला, वही लापरवाह शख्स जिसने मुझे कुर्सी और बाथटब के बहाने फंसाने की कोशिश की थी। पैंथर ने सुबह तड़के अपने शिकार को अपना शिकार बनाया।

बाथटब और कुर्सी वाले कांड के बाद, पिता ने वन विभाग में अपनी नौकरी खो दी थी और एक छोटे-मोटे वन ठेकेदार बन गए थे। वे सार्वजनिक नीलामी में फल, विभिन्न औषधीय बीज और पत्ते, मेहंदी, शहद, हिरण के सींग और अन्य छोटी-मोटी वस्तुएँ इकट्ठा करने का अधिकार खरीदते थे। इस व्यवसाय में पुत्र सक्रिय रूप से शामिल था, और अपनी मृत्यु के समय वह गेरहेट्टी आया था ताकि वहाँ रहने वाले कुछ पुजारियों को गेरहेट्टी से लगभग चार मील दूर पेरियामलाई नामक एक छोटे पहाड़ की ऊँची चट्टानों पर लटके जंगली चट्टानी मधुमक्खियों के छत्तों पर छापा मारने में मदद करने के लिए मना सके।

नटराज नाम के उस लड़के ने अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा कर लिया था और वह जंगली शहद से भरे लगभग चार-पाँच केरोसिन के डिब्बे इकट्ठा करने में कामयाब रहा था। औसतन, प्रत्येक डिब्बे में चौबीस बोतलों के बराबर शहद था, जिनमें से प्रत्येक को बेचने पर तीन रुपये मिलते थे। इस तरह इस यात्रा से उसे लगभग तीन सौ रुपये की कमाई हुई।

पूरी तरह संतुष्ट होकर वह डिब्बों के साथ गेरहेट्टी लौट आया, जहाँ उसने रात बिताने का फैसला किया, क्योंकि गाँव में यह अफवाह फैल गई थी कि जंगली हाथियों का एक झुंड हाल ही में कावेरी नदी से निकलकर तलवाड़ी की घाटियों में घूम रहा है, जहाँ से पेन्नाग्राम के बाजार जाने वाली सड़क गुजरती है। नटराज अपने कीमती शहद को जंगली हाथियों के सामने जोखिम में नहीं डालना चाहता था।

वन में बना लॉज (जिसमें से उसके पिता फर्नीचर ले गए थे) बंद था, लेकिन गैराज खुला था: दरअसल, उसमें दरवाजे ही नहीं थे! इसलिए नटराज ने शहद के डिब्बों के साथ रात गैराज में बिताने का फैसला किया।

सुबह तड़के, गेरहेट्टी गांव के लोगों ने बताया कि उन्होंने नटराज की मदद के लिए चीखें सुनीं, लेकिन संख्या में कम होने और निहत्थे होने के कारण उन्होंने अपनी झोपड़ियों के दरवाज़े और मज़बूती से बंद कर लिए और भोर का इंतज़ार किया। दिन निकलने पर, उनमें से कुछ लोग यह देखने के लिए गैरेज में आए कि क्या हुआ था। नटराज कहीं नज़र नहीं आया। संघर्ष के निशान स्पष्ट थे। मिट्टी के फर्श पर खून फैला हुआ था और शहद का एक डिब्बा उलट गया था, जिससे हज़ारों चींटियाँ आकर्षित हो गई थीं। ऐसा भी लग रहा था कि किसी भारी चीज़ को ज़मीन पर घसीटकर खुले दरवाज़े से जंगल की ओर ले जाया गया हो, जो दस गज पीछे से शुरू होता था।

पैंथर ने उसे ज्यादा दूर तक ले जाने की जहमत नहीं उठाई। उसका सिर, हाथ और पैर, वो हिस्से जिन्हें पैंथर और यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी बड़ी सावधानी से खाते हैं और बाद के भोजन के लिए छोड़ देते हैं, पैंथर की भूख का मूक गवाह बनकर इधर-उधर बिखरे पड़े थे। पिल्लों के अनुसार वह शिकारी काफी छोटा था, लेकिन उसने बहुत सारा मांस खा लिया था।

मैं उस सुबह दस बजे गेरहेटी पहुँचा और पुलिस के एंचेटी से आने और उनकी उबाऊ और निरर्थक पूछताछ शुरू होने से पहले ही अवशेष देख लिए। उन्होंने पूछा, मैं क्यों आया था? क्या मेरे पास हथियार लाइसेंस था? बंदूक लाइसेंस? कार लाइसेंस?

ड्राइविंग लाइसेंस? कोई भी सवाल, सिवाय पैंथर से जुड़े सवालों के।

मैंने उनसे कहा कि वे अवशेषों को वहीं छोड़ दें और जितनी जल्दी हो सके चले जाएं, क्योंकि इससे मुझे नटराज के अवशेषों के पास बैठकर शायद उस आदमखोर को गोली मारने का मौका मिल जाएगा। दोपहर में उसके लौटने की संभावना थी, और अंधेरा होने के बाद लौटने की भी संभावना थी।

सब-इंस्पेक्टर की अनुपस्थिति में दल का प्रतिनिधित्व कर रहे दफेदार (प्रमुख कांस्टेबल या सार्जेंट) ने साफ इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि शव वहीं रहना चाहिए जब तक कि उनके बॉस स्वयं उसे देख न लें। और चूंकि उन्हें एंचेटी लौटना था, इसलिए वे अपने साथ आए दो कांस्टेबलों को शव की निगरानी के लिए वहीं छोड़ देंगे, जब तक कि सब-इंस्पेक्टर नहीं आ जाते, जो शायद शाम को या अगली सुबह आने की संभावना अधिक है।

दफ्फेदार की बातें सुनकर उसके सभी अधीनस्थों ने उसकी योजना का सर्वसम्मति से विरोध किया। उनमें से एक ने गुस्से में कहा कि उसने उस सुबह नाश्ता नहीं किया था और अगले दिन तक तो बिल्कुल भी इंतजार नहीं कर सकता था। दूसरे ने बहाना बनाया कि उसे ज़ुकाम है। इस पर दफ्फेदार ने कहा कि उसने उस दिन उसे एक बार भी खांसते हुए नहीं सुना। इस पर कांस्टेबल ने देर तक खांसा!

आदेश तो आदेश होते हैं, दफ्फेदार ने सख्ती से कहा और अपनी साइकिल पर सवार होकर एंचेटी की ओर चल पड़ा। दोनों पुलिसवाले एक-दूसरे को और मुझे घूरते रहे, जब तक कि मैंने उन्हें बिना बोले, लेकिन लगभग सभी को समझ आने वाली भाषा में एक इशारा नहीं किया, जिससे उन्हें सामान्य संकेत मिल गया; 'हिम्मत रखो, लड़कों; हर मुश्किल में कोई न कोई उम्मीद की किरण होती है।' कम से कम इस मामले में तो उनके लिए उम्मीद की किरण थी, और वह भी सचमुच, क्योंकि दफ्फेदार के जाते ही दोनों पुलिसवाले भी वहाँ से जाने के लिए बेताब हो गए, भले ही उन्हें पास के छोटे से गाँव तक ही जाना पड़े। किसी भी कीमत पर इस भयानक जगह से निकलना था, उस निर्जीव, आरोप लगाने वाले चेहरे पर उन खाली, घूरती आँखों से दूर जाना था। मैं अपने हाल पर छोड़ दिया गया और मेरे सामने अब छिपने की जगह ढूंढने और हत्यारे के संभावित लौटने का इंतजार करने की तात्कालिक समस्या थी।

जैसा कि अक्सर होता है, छिपने के लिए कोई जगह नहीं थी। यह स्वाभाविक है क्योंकि आदमखोर जानवर—चाहे बाघ हों या तेंदुआ—अपने शिकार को घसीटकर या

उठाकर घनी झाड़ियों में ले जाते हैं ताकि वे बिना किसी बाधा के आराम से अपना भोजन कर सकें। वे अपने शिकार को किसी ऐसे पेड़ के नीचे नहीं छोड़ते जहाँ से उन्हें गोली मारी जा सके! वहाँ लैंटाना की घनी झाड़ियाँ थीं और तेंदुआ अपने शिकार के शरीर को इन्हीं दो झाड़ियों के बीच घसीटकर ले गया था, जहाँ उसने उसका अधिकांश भाग खा लिया था। आस-पास छिपने की कोई भी कोशिश आसानी से नज़र आ जाती और तेंदुआ कभी दिखाई नहीं देता। कुल मिलाकर, मेरा सोचा हुआ घात लगाना असंभव लग रहा था।

मैंने बहुत सोचा-समझा और अंत में एक विचार आया। इसे शब्दों में बयान करना थोड़ा मुश्किल है, इसलिए मैंने एक रेखाचित्र बनाया है जिससे मुझे उम्मीद है कि मेरी योजना का कुछ अंदाजा लग जाएगा।

नटराज के अवशेष जिस स्थान पर थे, उसके उत्तर में वन लॉज और गैराज था। पूर्व में, कुछ ही दूरी पर, एक छोटा सा गाँव और लगभग खुला मैदान था। पश्चिम में हल्की झाड़ियाँ थीं, जिनसे होकर गेरहेट्टी से जंगलपालयम जाने वाला रास्ता जाता था। दक्षिण में घनी झाड़ियाँ थीं, जिनके किनारे एक छोटी पहाड़ी थी। मैं पहले ही पश्चिमी दिशा वाले रास्ते पर चल चुका था। रेतीली सतह पर पैंथर के आने-जाने के कोई निशान नहीं थे। इसलिए आदमखोर दक्षिण की पहाड़ी से आया था और उसी रास्ते से वापस चला गया था।

मेरी योजना थी कि मैं गैराज में तब तक छिपा रहूँ जब तक मुझे उसके खाने की आवाज़ सुनाई न दे—कम से कम मुझे उम्मीद तो यही थी कि मुझे सुनाई देगी। फिर मैं दबे पांव गैराज से निकलकर बंगले के सामने वाले हिस्से तक जाऊँगा, जंगलपालयम की ओर जाने वाले रास्ते पर चलूँगा, और वहाँ से मुड़कर पैंथर और पहाड़ी के बीच में आ जाऊँगा, क्योंकि मुझे पूरा यकीन था कि बिल्ली उसी दिशा में भागेगी।

अंत में, जब मैं एक उपयुक्त स्थिति में होता, तो मैं कुछ पत्थर (जो मैंने पहले से ही अपनी जेब में इकट्ठा करके रखे थे) गैरेज की ओर पूरी ताकत से फेंकता, इस उम्मीद में कि पत्थर दावत उड़ा रही बिल्ली के ऊपर से निकलकर उसके पार गिर जाए। इससे वह डर जाएगी और अंधाधुंध भागती हुई अपने एकमात्र सुरक्षित ठिकाने, दक्षिण की ओर पहाड़ी की तरफ दौड़ेगी, जहाँ मैं छुपकर उसका इंतज़ार कर रहा होता। पैंथर्स में सूंघने की शक्ति नहीं होती, इसलिए जब मैं दबे पांव रास्ते पर चल रहा

होता, तो वह मुझे सूंघ नहीं पाती। लेकिन उनकी सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है और अगर मैंने ज़रा सी भी आवाज़ की, तो वह मुझे सुन सकती थी। यह एक ऐसा जोखिम था जो मुझे उठाना ही था।

बाद में मुझे एक विचार आया और मैंने तय किया कि मैं अपनी खाकी कमीज को फाड़कर उसके टुकड़े रास्ते के किनारे उगी झाड़ियों पर टांग दूँ, ताकि अगर तेंदुआ गलती से उस दिशा (पश्चिम की ओर) आ भी जाए, तो हवा में लहराते इन टुकड़ों को देखकर वह वापस दक्षिण की ओर, पहाड़ी की तरफ—और मेरी तरफ—मुझकी तरफ मुड़ जाए! वह न तो पूरब की ओर भागेगा क्योंकि वहाँ गाँव है, और न ही उत्तर की ओर, क्योंकि वहाँ बंगला बना हुआ है।

मैं आमतौर पर अपनी कमीज़ें नहीं फाड़ता, खासकर तब जब मैंने अंदर कुछ नहीं पहना होता, लेकिन कोई चारा नहीं था, क्योंकि मेरे पास किसी भी तरह के कपड़े नहीं थे और कार में रखी हुई कमीज़ मेरी कमीज़ से थोड़ी बेहतर थी। इसलिए मैंने अपनी कमीज़ उतारकर उसे लंबी-लंबी पतली पट्टियों में फाड़ दिया। इस तरह मैंने लगभग आठ-दस पट्टियाँ बनाईं और उन्हें रास्ते के किनारे उगी लैंटाना और दूसरी झाड़ियों से बाँध दिया। ये पट्टियाँ उस जगह से छिपी हुई थीं जहाँ पैंथर चर रहा होता, लेकिन अगर वह पश्चिम की ओर रास्ते की तरफ मुड़ता, तो वह उन्हें तुरंत देख लेता, जब मैं उस दिशा से पत्थर फेंकना शुरू करता। खाकी रंग की बजाय सफेद या रंगीन कपड़े की पट्टियाँ होती तो बेहतर होता, लेकिन शिकार करते समय कोई सफेद कमीज़ तो नहीं पहनता।

अंत में, मैं बंगले के पूर्व में स्थित छोटे से गाँव में गया और वहाँ के निवासियों, जिनमें दो कांस्टेबल भी शामिल थे, को चेतावनी दी कि वे दिन भर घर से बाहर न निकलें। मैं यह नहीं कह सकता कि मेरी सलाह अनावश्यक थी। नटराज की हत्या और उसके मांस को उनकी झोपड़ियों से कुछ ही गज की दूरी पर खाए जाने के बाद, गाँव के निवासी पहले ही यथासंभव सुरक्षित रूप से अपने आप को अंदर बंद कर चुके थे।

ताकि पैंथर की नज़र से बच सके, मैंने अपनी मॉडल टी कार को, जिसमें मैं आया था, जंगल के लॉज के सामने खड़ा कर दिया। वहाँ से कार गैरेज और पीछे से आने वाले किसी भी पैंथर की नज़र से ओझल हो गई। मैंने कार में मौजूद सारा सामान, जैसे बिस्तर, खाना, पानी और अतिरिक्त हथियार के तौर पर लाई हुई शॉटगन, सब

गैरेज में रख दिया। मैं अगली सुबह सूरज निकलने तक यहीं रुका रहा, इस उम्मीद में कि तेंदुआ अपने बचे हुए भोजन के लिए वापस आएगा।

इन सबमें दोपहर होने में आधा घंटा लग गया था, और सूरज निर्दयता से उस सूखे जंगल पर चमक रहा था जो झींगुरों की आवाज़, छोटे चित्तीदार कबूतरों की गुटरगू और काले शरीर और नारंगी पंखों वाले कौवे-तीतर की पुकार से गूंज रहा था, जो जंगल के किनारे से कुछ ही कदम दूर पक्षियों के अंडे, छिपकलियों और इल्लियों की लगन से तलाश कर रहा था।

घंटे धीरे-धीरे बीतते गए और गर्मी बढ़ती गई, जमीन से झिलमिलाती लहरों की तरह उठती हुई। यहां तक कि कौवे-तीतर ने भी इसे महसूस किया और अपनी खोज छोड़ दी, हालांकि अथक झींगुर अपनी नीरस धुन में भिनभिनाते रहे।

घंटे बीतते गए और मैं हत्यारे की वापसी की सूचना देने वाली हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनने के लिए कान गड़ाए बैठा रहा। आसमान में ऊँचे उड़ते एक राजा गिद्ध की चीख के अलावा मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसने अवशेष बहुत पहले ही देख लिए होंगे, लेकिन चूंकि वे किसी इंसान के थे, इसलिए 'राजा' ने धरती पर उतरने में देरी कर दी, वरना मीलों दूर तक फैले अन्य गिद्धों को दावत के लिए इकट्ठा होने का न्योता मिल जाता।

पांच बज गए, वातावरण में उल्लेखनीय ठंडक आ गई और गिद्ध की भूख और तेज़ हो गई। उसने ज़रा भी देर नहीं की, बल्कि अपने फैले हुए पंखों के सख्त परों से गुज़रती हवा के तेज़ झोंके के साथ ज़मीन पर झपटा और शिकार के पास हल्की सी आवाज़ के साथ उतरा। जल्द ही दूसरे गिद्ध भी उसके पीछे आ गए और पैंथर के शिकार का कुछ भी नहीं बचा, बस साफ-सुथरी हड्डियाँ ही बचीं। अगर तेंदुआ उस रात आता भी, तो उसे खाने को कुछ नहीं मिलता और वह भटक जाता!

कुछ अंतरालों पर चार-पाँच गिद्ध राजा के पास आते रहे, हालाँकि विशाल पक्षी अभी भी अपना भोजन शुरू करने में हिचकिचा रहे थे। नटराज का सिर, अपनी टकटकी लगाए आँखों के साथ, अक्षुण्ण बना रहा और उन्हें दूर रखा।

समय धीरे-धीरे बीतता गया, और शाम होते ही बसेरों में बैठे पक्षियों का मधुर गायन शुरू हो गया, जो जंगल प्रेमियों के कानों को सुहाने दिन को विदाई दे रहा था। पहाड़ी की तलहटी से जंगली मुर्गों ने 'कुक-क्या-क्या-खुकम!' की आवाज लगाई; ऊपर एक तीतर ने 'की-कोक! की-कोक! की-कोक!' की आवाज लगाकर चुनौती दी,

और पहाड़ी की चोटी से उसके प्रतिद्वंद्वी ने 'की-कोक-कोक! की-कोक-कोक! की-कोक-कोक!' की आवाज में जवाब दिया। चिड़ियों ने एक-दूसरे पर गुर्राते हुए 'वैक! वैक! कुकर-रॉवाक!' की आवाज लगाई, जबकि दूर कहीं एक मोर ने भी इस गायन में शामिल होते हुए 'ज़ैंक! मिया! मिया! मिया-ऊ-ओ!' की आवाज लगाई।

पंखों के ज़ोरदार फड़फड़ाने की आवाज़ आई और 'राजा' और उसके उतने ही डरपोक साथी भारी-भरकम ढंग से ज़मीन से उठकर पास के किसी पेड़ पर बैठ गए। वे सुबह तक इंतज़ार करेंगे और उनकी भूख ज़रूर बढ़ जाएगी।

अंधेरा छाने लगा; चारों ओर गहरी खामोशी छा गई, जिसे महसूस किया जा सकता था। तभी 'चक! चक! चक! चक-ऊऊऊऊ!' की आवाज़ नाइटजार पक्षी की और 'हूऊऊ! हूऊऊ! हूऊऊ!' की आवाज़ एक सींग वाले उल्लू की आई। मैंने अपनी टॉर्च को राइफल के बैरल पर कसकर बांधने वाले दोनों क्लैंप को लगाया और रोशनी को एक बिंदु के रूप में समायोजित किया। इसके तुरंत बाद रात हो गई। तेंदुआ दिखाई नहीं दिया और मेरी सोची-समझी योजना विफल होती दिख रही थी।

मैं आपको अगले छह घंटों का वर्णन करके बोर नहीं करूंगा। दरअसल, बताने के लिए कुछ है ही नहीं, क्योंकि कुछ हुआ ही नहीं। चांद, जो अब घट रहा था, देर से निकला था, और अगर पैंथर अपने शिकार के पास आता तो मैं अपनी योजना पर अमल नहीं कर पाता, क्योंकि रात इतनी उजाली नहीं होती कि मैं उसे देख पाता जब वह मेरे फेंके पत्थरों से डरकर पहाड़ी पर दौड़ता हुआ आता। मुझे या तो उसे खाने देना पड़ता, या फिर चुपके से उस पर हमला करने की कोशिश करनी पड़ती, जो कि बहुत मुश्किल होता और मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं था।

इन्हीं विचारों में खोकर मुझे शायद नींद आ गई। फिर अचानक किसी चीज़ ने मुझे चौंका दिया। मैं बता नहीं सकता कि वह क्या था। वह कोई ऐसी आवाज़ नहीं थी जिसे मैं सुन सकूँ, बल्कि ऐसा लगा जैसे किसी जानलेवा खतरे ने मुझे घेर लिया हो। वह बहुत भारी और घुटन भरा था; ऐसा महसूस किया जा सकता था।

एक पल के लिए मुझे लगा कि यह सब मेरी कल्पना है, लेकिन खतरे का अहसास बना रहा और बहुत वास्तविक हो गया। ऐसा लगा जैसे सब कुछ मेरे चारों ओर सिमट रहा हो। निस्संदेह, कहीं न कहीं से कोई चीज़ मुझे धमका रही थी।

तब मुझे एहसास हुआ कि यह क्या था। आदमखोर तेंदुआ पास ही था! वह अजीब छठी इंद्री, जिसे मैंने घोर खतरे के समय महसूस किया है और जिसने बाद में

कई बार मेरी जान बचाई है, मुझे मानो शब्दों में बता रही थी कि तेंदुआ हमला करने ही वाला है।

मैंने अपनी .405 पिस्तौल पर हाथ रखे और बिना हिले-डुले चारों ओर देखने की कोशिश की। चांदनी से गैराज का आयताकार दरवाज़ा जगमगा रहा था, और दृश्य के केंद्र में जंगल में बने बंगले का पिछला हिस्सा दिखाई दे रहा था। तभी चांदनी से जगमगाते इस पर्दे के निचले बाएँ कोने में कुछ हल्का सा हिला। कुछ काला और थोड़ा सा लहराता हुआ सा। मैं ठीक से देख नहीं पा रहा था कि वह क्या था, क्योंकि वह गैराज के अंधेरे में छिपा हुआ था और धुंधली चांदनी की पृष्ठभूमि ने ही मेरा ध्यान पास की उस हल्की हलचल की ओर खींचा था।

परछाई बहुत धीरे से हिली और मेरे कान तक फुफकारने की हल्की सी आवाज पहुंची। क्या यह कोबरा था? या फिर यह आदमखोर सांप हो सकता है?

सौभाग्य से मैंने ज़रा भी हरकत नहीं की थी। अगर मैंने ऐसा किया होता, तो वह प्राणी शायद मुझ पर हमला कर देता जब उसे पता चलता कि मुझे चौंकाने की उसकी कोशिश पकड़ी गई है। लेकिन अब हरकत करना—और वह भी बहुत तेज़ी से—ज़रूरी था।

मैं झट से खड़ा हुआ और पीछे की ओर कूदा, लेकिन पीछे की दीवार से टकराकर अचानक रुक गया। उसी समय मैंने अपनी राइफल का मुंह आगे की ओर किया और टॉर्च का बटन दबा दिया। हालांकि टॉर्च की रोशनी से उसकी आंखें चौंधिया गईं, फिर भी आदमखोर ने हमला कर दिया।

इसके बाद के कुछ क्षणों का वर्णन करते हुए मुझे विनम्रता और कृतज्ञता का भाव व्यक्त करना चाहिए। क्योंकि यह दावा करना उचित नहीं है कि 'मैंने एक ही गोली से उसे मार डाला', क्योंकि जंगली जानवरों का थोड़ा-बहुत अनुभव रखने वाला कोई भी व्यक्ति आपको बता सकता है कि एक सांभर अपने शरीर में नौ गोलियां झेलकर मीलों तक चल सकता है, एक बाइसन पंद्रह, एक जंगली हाथी कभी-कभी पच्चीस, और एक बाघ या तेंदुआ मरने से पहले बहुत सी गोलियां झेल सकता है। और मरने से पहले वह आपको टुकड़े-टुकड़े कर सकता है।

फिर भी, कारतूस खराब हो सकता है, कैप में गड़बड़ी हो सकती है, या गोली चलाते ही जानवर मुड़ सकता है। कुछ भी हो सकता है। इतना कहना ही काफी है कि मेरी गोली महज़ किस्मत से निशाने पर लगी और तेंदुए को हवा में ही मार गिराया,

हालांकि पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए मैंने अपने पैरों के पास तड़पते हुए उसके शरीर पर दो और गोलियां चलाईं।

सब-इंस्पेक्टर अगली सुबह समय से काफी पहले पहुँच गया। उसे यह देखकर निराशा हुई कि नटराज की अधिकांश हड्डियाँ, जिनमें उसका सिर भी शामिल था, रात के दौरान लकड़बग्घे और सियार ले गए थे।

सात

लक्कावल्ली नरभक्षी

यदि आप मैसूर राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित तारिकेरे कस्बे का दौरा करें, तो आपको वहां दो मोटर योग्य सड़कें मिलेंगी। इन सड़कों पर, कस्बे से चार-पांच मील की दूरी पर, यदि आपके पास रुककर सुनने का समय हो, तो आप ग्रामीणों से बाघों के अत्याचारों के बारे में कई कहानियां सुनेंगे।

इन सड़कों में से पहली सड़क तारिकेरे से लगभग दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाती है, जो बाबा बुडांस के नाम से जानी जाने वाली ऊँची घोड़े की नाल के आकार की पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में स्थित लिंगधल्ली गाँव से होकर एक घुमावदार रास्ते से गुजरती है, संतावेरी गाँव में इसकी निचली ढलानों को पार करती है, और लगभग बीस मील दूर चिकमगलूर शहर तक जाती है।

दूसरी सड़क उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है, जो उन्हीं पहाड़ों की पूर्वी और उत्तर-पूर्वी ढलानों से गुजरती है, फिर लक्कावल्ली और उम्बलेबायल नामक दो छोटे गांवों से होते हुए भद्रावती शहर तक जाती है, जो खुद तारिकेरे से मुश्किल से दस मील दूर

है, और वहां तक एक तीसरी और अधिक सीधी सड़क जाती है।

इस प्रकार पहली और दूसरी सड़कें बाबा बुदन पर्वतमाला की दक्षिणी और पूर्वी ढलानों को घेरती हैं, और पश्चिम और उत्तर की ओर स्थित गहरी घाटी से पहाड़ों की चोटी को पार करने वाले बाघ, जो इन पहाड़ों से घिरे हुए हैं, खुद को या तो दक्षिणी सड़क पर स्थित संतावेरी गांव के आसपास पाते हैं, या पूर्वी सड़क के पश्चिम में लाउबाग के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र में पाते हैं।

इन बातों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है: संतावेरी गांव और लाउबाग क्षेत्र। क्योंकि इन्हीं स्थानों और इनके बीच के क्षेत्र में बाघ के साथ वह रोमांचक घटना घटी थी, जिसके बारे में आप अब सुनने वाले हैं। समुद्र तल से 4,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित संतावेरी एक पथरीला, जंगली और घने जंगलों वाला क्षेत्र है, जबकि लाउबाग, जो लगभग तीस से पैंतीस मील की दूरी पर है, हालांकि एक हजार फीट से अधिक नीचे है और कम पथरीला है, फिर भी अधिक घने जंगलों से घिरा हुआ है।

मैं संयोगवश अपने पुराने मित्र डिक बर्ड से मिलने गया था, जो सैंटावेरी में पोस्टमास्टर थे और निजी जीवन में जिले के सबसे प्रसिद्ध बाघ शिकारियों में से एक थे, जिन्होंने राइफल का उपयोग करने से इनकार करते हुए अपने सभी बाघों को .12 बोर की शॉटगन से मारा था।

'जॉक,' उसने मुझसे पूछा, 'क्या तुमने केमंगुंडी के आसपास दिखाई देने वाले बाघ के बारे में सुना है?'

मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि केमंगुंडी, संतावेरी और लाउलबाग क्षेत्र के लगभग मध्य में स्थित है, और डिक हमेशा मुझे 'जॉक' कहकर बुलाता है। क्योंकि मैं इतने स्थानों पर रह चुका हूँ, इतने जंगलों में, इतने अलग-अलग मौसमों में, विभिन्न जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के बीच शिकार कर चुका हूँ, और इतने अलग-अलग काम कर चुका हूँ कि मैं एक तरह से जेकिल और हाइड बन गया हूँ, जिसके कई नाम और उपनाम हैं। मेरे बहुत पुराने दोस्त मुझे 'जॉक', 'स्कॉची' या 'स्कॉच' कहकर बुलाते हैं, जबकि हाल ही में मिले लोग मुझे 'एंडी', 'केनेथ', 'केन' और 'केडीएस' कहकर पुकारते हैं।

स्कूल में मुझे 'साँप सपेरा' कहकर चिढ़ाया जाता था, क्योंकि मुझे अपनी कमीज़ के अंदर से सांप निकालकर संडे स्कूल, स्कूल के चैपल, क्लासरूम, डाइनिंग और स्टडी हॉल, सिनेमाघरों और अन्य भीड़भाड़ वाली जगहों पर छोड़ने का शौक था। यह

बहुत पहले की बात है, और अब कुछ सालों से मुझे 'साँप सपेरा' कहकर नहीं चिढ़ाया जाता, क्योंकि मैंने सार्वजनिक स्थानों पर सांप छोड़ने की आदत छोड़ दी है।

सबसे शर्मनाक बात तो यह है कि मेरे बेटे का दोस्त, युवा दुधवाला, मुझे 'डॉट' कहकर बुलाने पर अड़ा रहता है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे अपने और 'कलम या नुकीली चीज़ से बने किसी छोटे निशान' के बीच कोई समानता या संबंध नहीं दिखता, जिसे शब्दकोश में 'डॉट' का अर्थ दिया गया है। इसलिए, मुझे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है और मैं थोड़ा भुलक्कड़ भी हूँ, तो कभी-कभी मैं भ्रमित हो जाता हूँ और यह देखने के लिए इधर-उधर देखता हूँ कि मुझे किसने पुकारा है।

लेकिन डिक के सवाल पर वापस आते हैं।

'नहीं,' मैंने उत्तर दिया, 'मैं काफी समय से उस क्षेत्र में नहीं गया हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, मैं पहले सलेम जिले में काफी काम करता था, लेकिन अब मुझे नीलगिरी और आंध्र प्रदेश तक अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाना पड़ा है। वहाँ अभी भी बाघों की अच्छी खासी संख्या है।'

'खैर, अभी भी काफी सारे हैं,' डिक ने आगे कहा। 'लेकिन आम वाले। मतलब, मवेशी चुराने वाले। झपटमार जानवर जो मवेशियों के झुंड को परेशान करते हैं। हालांकि, जिस जानवर का मैंने जिक्र किया है, वह थोड़ा अलग लगता है।'

फिर उन्होंने आगे बताया कि चरवाहों की रिपोर्टों के अनुसार, एक बहुत बड़े बाघ ने हाल ही में उनके झुंडों पर हमला करने की आदत बना ली है, यहाँ तक कि जब वे अभी भी सड़कों पर होते हैं और चरागाहों की ओर ले जाए जा रहे होते हैं। उनकी आँखों के सामने ही वह सबसे मोटी और उत्तम गाय को पकड़कर मार डालता और उसे अपने कंधों पर लादकर ले जाता। ऐसा कई बार हो चुका था और यह घटना संतावेरी से कुछ ही मील दूर, उस सड़क पर हुई थी जिसके बारे में मैंने आपको बताया था, जो तारिकेरे से चिकमगलूर जाती है। इसी तरह की घटना एक और छोटी सड़क पर भी होने की सूचना मिली थी, जो एक पहाड़ी की ओर जाती है।

इसका नाम केमंगुंडी रखा गया, जो लिंगधल्ली गांव से गुजरने के कुछ ही समय बाद मुख्य तारिकेरे-चिकमगलूर सड़क से अलग होकर एक शाखा के रूप में निकलती है।

डिक ने आगे बताया कि दो या तीन चरवाहों ने चिल्लाकर और पत्थर फेंककर बाघ को डराने की कोशिश की ताकि वह शिकार के शव को छोड़ दे, क्योंकि बाघ उसे

ले जा रहा था।

हालांकि, वे जल्द ही रुक गए, क्योंकि बाघ ने शव को छोड़कर भागने के बजाय गाय को नीचे गिरा दिया और उनकी ओर दौड़ पड़ा—जिसके बाद वे भाग गए। बाद में हुई जांच से पता चला कि बाघ चरवाहों को भगाकर वापस आया, गाय को उठाया और उसे लेकर भाग गया। ऐसा लगता है कि यह बाघ अपने शिकार को गर्दन या गले से पकड़कर जमीन पर घसीटने के बजाय अपने कंधों पर लादकर ले जाना पसंद करता था।

हमने इस बिंदु पर चर्चा की और इस बात पर सहमति जताई कि संकेतों से यह पता चलता है कि या तो बाघ असाधारण रूप से साहसी जानवर था—संभवतः एक बूढ़ा नर—या फिर वह शिकार को खाने से पहले उसे काफी दूर तक ले जाने का इरादा रखता था, शायद किसी दूर की गुफा या मांद में, यदि वह शावकों वाली बाघिन होती। जानवर इतना बुद्धिमान था कि वह जानता था कि शिकार को लंबी दूरी तक घसीटने से वह झाड़ियों और कांटों में फंस सकता है; इसलिए उसने शव को उठाकर ले जाना बेहतर समझा।

'काश मुझे इस घटिया विभाग में कुछ छुट्टी मिल जाती,' डिक ने शिकायत करते हुए कहा, 'मैं किसी भी तरह से छुट्टी ले लेता। लेकिन दो-तीन दिन की आकस्मिक छुट्टी भी बड़ी झंझट में पड़ जाती है। मेरी जगह किसी और को तारिकेरे या चिकमगलूर से बुलाना पड़ता है, और अधीक्षक पागलों जैसा व्यवहार करता है। यही तो पोस्टमास्टर होने का नतीजा है।'

मेरी यात्रा समाप्त हो गई, मैं बैंगलोर लौट आया और बाघ के बारे में सब कुछ भूल गया। वैसे भी, मुझे मवेशी चोरों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

कुछ महीने बीत गए, फिर एक सुबह मैं बैंगलोर में जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में सरकारी डाक टिकट खरीदने गया, जिसकी मुझे जरूरत थी। तभी मेरी मुलाकात डाक टिकट विक्रेता के स्टॉल पर एक भारतीय सज्जन से हुई। वे शिकायत कर रहे थे क्योंकि उन्हें जिस मूल्यवर्ग के डाक टिकट चाहिए थे, वे उपलब्ध नहीं थे, और न ही उनसे छोटे मूल्यवर्ग के डाक टिकट थे, जिनकी कुल राशि आवश्यक राशि के बराबर हो।

मैंने अपनी जरूरत का कागज खरीदा, जो काफी अधिक मूल्य का था और उपलब्ध था।

'क्या नाम?' विक्रेता ने मुझसे पूछा, नियमों के अनुसार स्टांप पेपर के पीछे यह नाम लिखने की तैयारी करते हुए।

'के.डी.एस. एंडरसन,' मैंने धीरे से उत्तर दिया, एंडरसन नाम की स्पेलिंग इस तरह लिखी ताकि वह इसे सही ढंग से लिख सके।

हमारे साथ मौजूद भारतीय सज्जन मुझे घूर रहे थे। मेरा नाम दर्ज करने और भुगतान प्राप्त करने के बाद, विक्रेता ने मुझे स्टांप पेपर दिया और फिर उस सज्जन ने कुछ कहा।

'माफ़ कीजिए महोदय,' उसने पूछा, 'लेकिन क्या आप वही मिस्टर एंडरसन हैं जो बाघों का शिकार करते हैं?'

'हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है,' मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। 'कम से कम मुझे किसी और एंडरसन के बारे में नहीं पता जिसे यह बुरी आदत हो।' फिर, बाद में सोचते हुए मैंने जोड़ा, 'शायद आपका मतलब मेरे बेटे से है?'

'मेरा नाम वेंकटसुब्बाराओ है,' उस आदमी ने कहा। 'मैं तारिकेरे के पास लक्कावल्ली बांध परियोजना में सहायक मुख्य अभियंता हूं। देखिए, जब विक्रेता ने आपका नाम पूछा और आपने एंडरसन बताया, तो मुझे आपकी ओर ध्यान गया। मैंने आपके बारे में हर जगह बाघों का शिकार करने की बात सुनी है। आपको लक्कावल्ली जरूर आना चाहिए, महोदय। मेरे मेहमान बनकर आइए। मेरे पास बड़ा कमरा है और मैं आपके लिए आरामदायक व्यवस्था कर सकता हूं। आप बिल्कुल आराम से रहेंगे और आदमखोर बाघ का शिकार करने के लिए मैं आपके लिए सभी जरूरी बंदोबस्त कर दूंगा।'

'कौन सा आदमखोर?' मैंने हैरानी से पूछा।

'क्या तुमने नहीं सुना?' उसने हैरानी से जवाब दिया। 'अरे, यह तो तीन दिन पहले अखबार में छपा था। लेकिन चलो मेरे साथ कॉफी पीते हैं, मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताता हूँ।'

मजिस्ट्रेट कोर्ट से कुछ ही दूरी पर 'टिफिन रूम' नाम का एक रेस्टोरेंट है, और मैं और वेंकटसुब्बाराओ वहीं गए। एक नहीं, बल्कि कई कप कॉफी पीते हुए उन्होंने मुझे यह कहानी सुनाई।

तारिकेरे से बाबा बुदन पर्वत श्रृंखला की पूर्वी ढलानों से होते हुए लक्कावल्ली से गुजरते हुए भद्रावती की ओर जाने वाली सड़क पर एक विशाल बाघ प्रकट हुआ था।

उसने सबसे पहले सड़क के किनारे के जंगल में चरने के लिए लाए गए कई पशुओं के झुंडों के मवेशियों को मारना शुरू किया। बाघ अपने शिकार को अपनी पीठ पर लादकर ले जाने के लिए प्रसिद्ध था, और यदि कोई चरवाहा हस्तक्षेप करने की हिम्मत करता, तो वह जानवर जोर से गुर्राकर उन्हें भगा देता था। वह हमेशा पश्चिम दिशा में, लाउलबाग के जंगलों में गायब हो जाता था।

समय बीतता गया। किसी भी चरवाहे को कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन बाघ अपना कहर बरपाता रहा। स्वाभाविक रूप से, चरवाहे बाघ से और अधिक क्रोधित हो गए और उसी अनुपात में अधिक साहसी बन गए। ठीक उसी तरह, बाघ भी उनसे और अधिक क्रोधित हो गया और स्वयं भी अधिक साहसी बन गया।

वह दिन आ गया जब दोनों पक्षों का गुस्सा चरम पर पहुँच गया। बाघ अपने कंधों पर एक मोटी गाय को लेकर जा रहा था, तभी एक चरवाहा, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, उसके पीछे दौड़ा और अपनी लाठी फेंक दी। अपनी आदत के अनुसार, बाघ ने शिकार के शरीर को नीचे गिरा दिया और भयानक दहाड़ते हुए उस आदमी पर हमला कर दिया, निस्संदेह यह उम्मीद करते हुए कि वह भी कई अन्य लोगों की तरह भाग जाएगा।

लेकिन यह आदमी भागा नहीं। शायद वह दूसरों से ज़्यादा बहादुर था। शायद वह डर से कांप गया था। शायद अपनी लाठी फेंक देने के बाद उसने सोचा कि भागना बेकार है। ज़ाहिर है, खुद वहाँ मौजूद न होने के कारण वेंकटसुब्बाराओ को नहीं पता था कि असल में क्या हुआ था। उसे इतना पता था कि बाघ ने चरवाहे को मारकर खा लिया और फिर अपनी मोटी शिकार, गाय को लेकर चला गया।

खबर फैल गई और लक्कावल्ली इलाके के चरवाहों ने बाघ से उलझना बंद कर दिया। जब बाघ ने किसी झुंड पर हमला किया, तो झुंड के मुखिया तुरंत भाग गए, और बाघ ने भी विनम्रता से उनका पीछा नहीं किया। लेकिन दूर-दराज के अन्य चरवाहों को लक्कावल्ली के पास हुई घटना की जानकारी नहीं थी। उन्होंने अपने पुराने तरीके जारी रखे और बाघ द्वारा अपने जानवरों पर हमला करने पर उसे भगाने की कोशिश की। लक्कावल्ली में अपने शिकार हुए इंसान की बेबसी का एहसास होने पर, बाघ का हौसला बढ़ गया और उसने केमंगुंडी में एक के बाद एक दो चरवाहों को मार डाला, और एक अन्य को संतावेरी से कुछ ही दूरी पर मार डाला। बताया जाता है कि बाघ ने इन तीनों को पूरी तरह से खा लिया और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें

खाने के बाद उसने मारे गए मवेशियों के शवों को त्याग दिया।

इसके बाद बाघ लक्कावल्ली लौट आया। एक बार फिर त्रासदी का दृश्य सामने आया। दो आदमी, एक अधेड़ उम्र का आदमी और उसका पंद्रह साल का बेटा, अपने मवेशियों को चराने के लिए ले जा रहे थे। वे साथ खड़े होकर अपने मवेशियों की रखवाली कर रहे थे, तभी लड़के ने जमीन के एक ऊंचे टीले के पीछे से एक विशाल बाघ का सिर उन्हें घूरते हुए देखा। उसने अपने पिता का ध्यान उस ओर दिलाया। दोनों अपने मवेशियों को बाघ के भरोसे छोड़कर भागने के लिए मुड़े, लेकिन बाघ ने मवेशियों पर हमला करने के बजाय उनका पीछा किया।

लड़का जवान और फुर्तीला होने के कारण आगे दौड़ रहा था, तभी पिता ने देखा कि बाघ उसके पास से उछलकर निकला, लड़के को पकड़ लिया और उस पर झपटा। घबराहट में, बूढ़े ने गाड़ी को दाईं ओर मोड़ दिया और तेज़ी से भागने लगा। गाँव पहुँचते ही वह बेहोश होकर गिर पड़ा, और काफी देर बाद उसे समझ आया कि क्या हुआ था।

ग्रामीण वेंकटसुब्बाराव के घर उनसे मदद मांगने गए। हालांकि, मेरे नए दोस्त के पास बंदूक नहीं थी, इसलिए वह उस समय उनकी मदद नहीं कर सका। उसने पिता से गहन पूछताछ की और उनसे सारी जानकारी हासिल कर ली, ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझे बताई।

मदद के लिए करीब ग्यारह मील दूर तारिकेरे में एक संदेशवाहक भेजा गया। इसी बीच मवेशियों का झुंड दौड़ता हुआ गांव लौट आया। वह पूरी तरह सुरक्षित था। किसी भी मवेशी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था।

अगली सुबह पुलिसकर्मियों और वन रक्षकों का एक संयुक्त दल, जिसमें नौ लोग लाठियों से लैस थे, राइफलों से लैस दो कांस्टेबलों और रिवॉल्वर लिए एक पुलिस सब-इंस्पेक्टर के साथ वहाँ पहुँचा। इस प्रकार, पिता के नेतृत्व में बारह लोग उस स्थान पर गए जहाँ बाघ ने हमला किया था। लड़के का शव वहाँ नहीं मिला और सभी वापस लौट आए।

इसके बाद बांध पर काम करने के लिए मज़दूरों की उपलब्धता एक असहनीय समस्या बन गई। गाँव की झोपड़ियों में रहने वाले लोगों ने बाहर जाने से इनकार कर दिया, जबकि कई लोग तारिकेरे लौट गए। अन्य लोग—और उनकी संख्या काफी अधिक थी—हर सुबह तारिकेरे से बांध पर काम करने के लिए ग्यारह मील की दूरी

साइकिल से तय करते थे और शाम को उतनी ही दूरी वापस लौटते थे। उन्होंने भी अब यह यात्रा करने से इनकार कर दिया। और जो लोग तारिकेरे से बांध पर काम कर रहे तकनीकी कर्मचारियों के लिए चावल, अनाज, रोटी और सब्जियां लाते थे, उन्होंने भी उस भयानक सड़क पर यात्रा करने से मना कर दिया। इस प्रकार न केवल बांध पर काम लगभग ठप हो गया, बल्कि लक्कावल्ली में तैनात वरिष्ठ कर्मचारी भी भूख से बेहाल हो रहे थे।

मेरे नए परिचित ने निष्क्रियता का फायदा उठाते हुए छोटी छुट्टी पर बैंगलोर का दौरा किया था, जहाँ हमारी मुलाकात स्टाम्प विक्रेता की दुकान पर हुई थी। उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं उनके साथ लक्कावल्ली वापस चलूँ ताकि गाँव को उस बुराई से मुक्त कराया जा सके जिसने उसे जकड़ रखा था।

मुझे काम था, लेकिन मैंने अपने साथी के बार-बार अनुरोध पर सहमति जताते हुए कहा कि मैं केवल पाँच या छह दिनों के लिए ही आऊँगा। मेरे लिए इससे अधिक समय तक रुकना संभव नहीं था।

वेंकट, जिसे मैं आगे इसी नाम से पुकारूँगा, बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे नहीं लगता कि उसे इस बात का एहसास था कि पाँच दिनों में आदमखोर को ढूँढ़ना लगभग नामुमकिन है। तय हुआ कि वह अपने होटल लौटकर बिस्तर और कुछ अन्य सामान जो वह अपने साथ लाया था, इकट्ठा करके उसी दिन दोपहर 3 बजे तक मेरे घर पहुँच जाएगा। फिर हम मेरी कार से लक्कावल्ली के लिए रवाना होंगे।

मैं जल्दी से घर पहुंचा ताकि अपना सामान इकट्ठा कर सकूं, जो हमेशा कुछ डिब्बाबंद खाने-पीने की चीजों के साथ तैयार रखा रहता है, तभी मुझे एक और आश्चर्य हुआ। डाकिया डिक बर्ड का एक छोटा सा पत्र लेकर आया था।

प्रिय जॉक,

जल्दी आओ। कल तक यहाँ पहुँच जाना। जिस बाघ के बारे में मैंने तुम्हें बताया था, वह आदमखोर बन गया है और कई चरवाहों को निगल चुका है। कल, वह मेरे डाकिया को उठा ले गया जब वह यहाँ से तीन मील दूर होसूर गाँव तक चिट्ठियों का थैला ले जा रहा था। मुझे छुट्टी लेने का समय नहीं मिला, इसलिए मैंने बीमार होने का बहाना बनाया और डाकिया

के शव की तलाश में निकल पड़ा। हमने दिन भर खोजा, लेकिन बेचारे की सिर्फ़ टोपी और चप्पलें ही मिलीं।

और हां, वो चिट्ठियों का थैला भी। (कहीं उस खूंखार बाघ ने उसे खा न लिया होता!)

समय समाप्त हो गया है और मुझे कल ड्यूटी पर वापस जाना है। अब कोई बहाना नहीं चलेगा; परसों (यानी, जिस दिन तुम्हें यह पत्र मिलेगा उसके अगले दिन) मैं तुम्हारे लिए दोपहर का खाना रखूँगा, बशर्ते कि बाघ उस आरक्षित डाकिया को न खा जाए जो आज यह पत्र लेकर डाक पहुँचा रहा है। बेचारा, वह बहुत उदास है और मैं उसे दोष नहीं दे सकता।

तुम्हारा दोस्त, डिक

डिक उस रात दो मेहमानों को डिनर पर देखकर हैरान रह गया। वेंकट और मैंने रिकॉर्ड समय में यात्रा पूरी कर ली थी।

हम देर रात तक बातें करते रहे, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे याद आया कि अगली सुबह से मेरे पास आदमखोर को ढूंढकर उसे मारने के लिए ठीक पाँच दिन थे। डिक बर्ड अपनी ड्यूटी नहीं छोड़ सकता था। वेंकट ने चाहे जितनी भी तत्परता दिखाई, उसे शूटिंग के बारे में कुछ भी नहीं पता था और वैसे भी उसके पास कोई हथियार नहीं था। डाकिया के शरीर का कोई सुराग नहीं मिला और उसे ढूंढने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि सिर्फ हड्डियाँ ही बची होतीं।

वेंकट ने कहा कि उसे अगले दिन दोपहर तक बांध पर वापस आना है, इसलिए हमने उसी रात गाड़ी से उसके घर जाने का फैसला किया। सड़क मार्ग से वह लगभग पचास मील दूर था, हालांकि सीधी दूरी के हिसाब से काफी पास था। हमने रम का एक आखिरी गिलास पिया और आधी रात के काफी बाद डिक को अलविदा कहा। मैंने वेंकट को स्पॉटलाइट चलाने का तरीका बताया, जिसकी मदद से हम गाड़ी की हेडलाइट्स के साथ जंगल में खोज करते हुए आगे बढ़े।

तारिकेरे से हम अभी भी लगभग पंद्रह मील दूर थे, बागावडकट्टे नामक स्थान पर, जहाँ एक छोटी सी पुलिया वाली सड़क के नीचे से एक धारा बहती थी। सड़क के दोनों ओर, दाएं और बाएं, घने ताड़ के पेड़ थे, जिनके नीचे घनी झाड़ियाँ और बाघ घास उग रही थी। वहीं हमें एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। पुलिया के ठीक पीछे, एक

तरफ खड़ा, और स्पष्ट रूप से सड़क पार करने ही वाला था, एक शानदार बाघ!

हेडलाइट्स और स्पॉटलाइट की रोशनी पड़ते ही उसने अपना सिर कार की ओर घुमाया, और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों का प्रतिबिंब चमकीला सफेद-लाल था, मानो सड़क के किनारे दो बड़े तारे चमक रहे हों। 'सफेद-लाल' से मेरा मतलब है कि सफेद रंग में लाल रंग की हल्की सी झलक। इसी तरह मैं रात में बाघ की आँखों को पैंथर की आँखों से अलग पहचानता हूँ, जिनकी आँखें छोटी, पास-पास और लाल-सफेद रंग की होती हैं—यानी उनमें लाल रंग ज़्यादा और सफेद रंग कम होता है।

हमारी तेज रोशनी में हम बाघ के धारीदार शरीर को, बल्कि उसके पूरे आकार को स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

मैंने गाड़ी रोक दी। बाघ और तेंदुआ, जब उन पर तेज़ रोशनी पड़ती है, तो अक्सर ज़मीन पर लेटकर छिपने की कोशिश करते हैं, हालांकि वे रोशनी की तरफ देखते रहते हैं, जिससे उनकी मौजूदगी का पता चल जाता है। हमारे बाघ ने भी यही किया। वह नीचे लेट गया और फिर पेट के बल रेंगते हुए पुल की रेलिंग के पीछे छिपने लगा।

वेंकट उत्साह से बेहाल था। वह बुरी तरह कांप रहा था और स्पॉटलाइट हिल रही थी। 'गोली चलाओ! गोली चलाओ! गोली चलाओ!' वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था।

बाघ ने उसकी आवाज़ सुन ली। वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा और पुल की दीवार के नीचे छिप गया। फिर वह नदी में कूद गया, पुल के नीचे से गुजरा, और खजूर के पेड़ों की कतार के नीचे लंबी घास और झाड़ियों में हमारे बाईं ओर गायब होते हुए हमने उसकी गुर्राहट सुनी। वेंकट ने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए। उसके होंठ काँप रहे थे। एक पल के लिए मुझे लगा कि वह रोने ही वाला है।

मैंने उन्हें विस्तार से समझाया कि सभी बाघ आदमखोर नहीं होते, कि हम इस समय आदमखोर बाघों के 'क्षेत्र' से बाहर थे, और बागवडकट्टे एक प्रसिद्ध स्थान रहा है जहाँ बाघ सड़क पार करते हैं या पुल के नीचे से गुजरते हैं, एक तरफ की निचली पहाड़ियों से दूसरी तरफ की निचली पहाड़ियों की ओर, और हमने जो जानवर देखा था वह निस्संदेह मनुष्यों के लिए पूरी तरह से हानिरहित, निर्दोष जानवर था। इसके अलावा, स्पॉटलाइट की सहायता से सड़क किनारे बाघों का शिकार करना नियमों के विरुद्ध था और साथ ही अनुचित भी।

मुझे आज तक यह बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि वेंकट मेरी बातों से सहमत हुए

या मुझे मूर्ख समझा। जब तक हम रात के लगभग 2 बजे उनके बंगले पर नहीं पहुँच गए, तब तक वे शर्मनाक चुप्पी साधे रहे। वहाँ पहुँचकर उनका चेहरा थोड़ा खिल उठा।

यह घटना तब घटी जब चौकीदार ने उसे बताया कि आदमखोर बाघ बांध पर काम कर रहे बचे हुए कुछ कुलियों में से एक को उठा ले गया था, जब वह पिछली शाम 5 बजे के कुछ देर बाद काम से गांव लौट रहा था। इसके परिणामस्वरूप, कुलियों ने चौकीदार से कहा था कि जब उसका मालिक वापस लौटे तो उसे बता दे कि वे अगले दिन काम पर नहीं आएंगे। भले ही बागवडकट्टे पुल पर मेरी दलीलों से वेंकट की नज़र में मुझे वहां देखे गए बाघ को न मारने का औचित्य साबित न हुआ हो, लेकिन अब उसे यह विश्वास दिलाना ही था कि वहां सड़क पार करने वाला जानवर आदमखोर बाघ नहीं हो सकता था।

वेंकट ने मुझे खाना दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया और कहा कि हमें सुबह 6 बजे अपना काम शुरू करने के लिए तैयार रहने के लिए शाम पांच बजे तक थोड़ी नींद ले लेनी चाहिए। इसके बाद वह मुझे एक छोटे से कमरे में ले गया जहाँ एक आरामदायक बिस्तर था, और पाँच मिनट में ही मैं सो गया।

भोर हो चुकी थी जब हम चौकीदार और तीन कुलियों के साथ उस जगह के लिए निकले जहाँ बाघ ने अपना नवीनतम शिकार किया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि ये तीनों कुली उस शिकार के साथ थे जब बाघ ने उसे पकड़ा था। चारों आदमी निर्माणाधीन बांध की ऊँची दीवार पर चल रहे थे। वे बांध के अंत तक पहुँच गए थे और उस खड़ी ढलान से नीचे उतर रहे थे जहाँ जलद्वार बनाया जाना था, ताकि दूसरी तरफ चढ़ सकें, तभी आदमखोर बाघ ने हमला कर दिया। एक तीखी चीख सुनाई दी, और जब चारों ओर देखा तो चौथा आदमी अपने साथियों को दिखाई नहीं दिया।

कुछ ही देर बाद उनकी नज़र उस पर पड़ी, जिसे एक बाघ ने गले से जकड़ रखा था। बाघ उसी ढलान पर चढ़ गया जहाँ से वे अभी-अभी नीचे आए थे। वह जानवर बांध के ऊपर से गुज़रा और नज़रों से ओझल हो गया। उन्होंने एक पल भी देर नहीं की और गाँव में खबर देने के लिए तुरंत भागे। फिर वे इंजीनियर के बंगले पर गए। किसी ने भी उसे बचाने की कोशिश नहीं की थी।

हमने उस खाई की तलाशी ली जहाँ से जलद्वार बनाया जाना था, और वहाँ पिछली शाम की त्रासदी, अपने सभी भयावह विवरणों के साथ, हमारे सामने स्पष्ट हो गई। आदमखोर बाघ खाई में घात लगाकर नहीं बैठा था, जैसा कि हमने अनुमान

लगाया था। वास्तव में, वह कुछ दूरी पर था जब उसने आदमियों को देखा और जानबूझकर उनका पीछा किया। नरम मिट्टी पर बाघ के पैरों के निशान थे जहाँ वह बांध पर चढ़ा, ऊपर से उछला-कूदा और फिर खाई की ढलान से नीचे उतर रहे आखिरी आदमी पर झपटा।

बेचारे की चीखने के तुरंत बाद ही उसकी मौत हो गई होगी। हमले वाली जगह पर खून के कोई निशान नहीं थे, जिससे पता चलता है कि बाघ ने अपने शिकार को उठाकर भागने में जरा भी देर नहीं की।

बांध के ऊपर से भागते समय हत्यारे के पदचिह्न हमें मिले। ढलान के आधे रास्ते में उसका पैर फिसल गया था, और इकट्ठी हुई मिट्टी से उसके चारों पैरों के गहरे निशान दिख रहे थे, जो उसने फिसलने से रोकने के लिए ज़मीन में गाड़े थे। इसी समय उसने मरे हुए आदमी के गले पर अपनी पकड़ छोड़ी होगी, क्योंकि जब बाघ ने उसे दोबारा उठाया, तो उसने ढलान के बाकी हिस्से से लेकर जंगल तक खून के निशान छोड़े।

खून के निशान के बिना हमारे लिए पदचिह्नों का पीछा करना असंभव होता, क्योंकि हाल ही में हुई बारिश के कारण झाड़ियाँ घनी थीं। लेकिन खरपतवारों की हरी-भरी चादर खून की लाल बूंदों के साथ एक तीखा विरोधाभास पैदा कर रही थी, जो कुछ दूरी तक हमारे सामने स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं।

बाघ अपने शिकार को पश्चिम दिशा में, काफी दूर तक ले गया था। लक्कावल्ली गाँव से लगभग आधा मील आगे, मुख्य सड़क के एक तीखे मोड़ पर उसने सड़क पार की थी, जहाँ से सड़क उम्बलेबायल और भद्रावती की ओर मुड़ने लगी थी। जानवर स्पष्ट रूप से लौलबाग वन क्षेत्र की ओर जा रहा था, और मुझे संदेह होने लगा कि वह इस क्षेत्र की किसी गुफा में रह रहा होगा।

कुछ मिनट बाद हमने वन विभाग की 'अग्नि-रेखा' पार कर ली और अब हम आधिकारिक तौर पर लौलबाग वन ब्लॉक के अंदर थे। हमारा शिकार एक पल के लिए भी नहीं रुका था, और उसके निशान का पीछा करना मुश्किल होता जा रहा था। उसके शरीर में खून जम चुका था और बहना बंद हो गया था, इसलिए जो बूँदें गिर रही थीं वे बहुत कम और छोटी थीं। नतीजतन, हमें लंबे अंतराल पर उसकी तलाश करनी पड़ रही थी, जिससे हमारी प्रगति धीमी हो रही थी, और मुझे डर था कि बहुत जल्द निशान मिट जाएंगे।

ठीक दस-पंद्रह मिनट बाद यही हुआ। हमें खून की कोई बूंद नहीं मिली, न ही आदमखोर बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए। उसके उस रास्ते से गुज़रे बारह घंटे बीत चुके थे, और रात की ठंडी हवाओं और ओस की बूंदों के कारण, बाघ और उसके शिकार के शरीर के गुज़रते समय कुचले गए या हटाए गए खरपतवार, घास और झाड़ियों के झुके हुए तने फिर से सीधे हो गए थे। तनों और पत्तियों के सीधे खड़े होने से, खरपतवार और झाड़ियाँ हमें बाघ और उसके शिकार के जाने की दिशा का कोई भी संकेत नहीं दे पा रही थीं। निशान मिट चुके थे।

वेंकट और मेरे बाकी साथी बेहद निराश थे। मैं भी निराश था। हालांकि, उस सुबह की हमारी खोज से एक महत्वपूर्ण जानकारी मिली थी। यह स्पष्ट था कि बाघ लाउबाग क्षेत्र में किसी गुफा या गुप्त ठिकाने में रहता था, जैसा कि मुझे शुरू से ही संदेह था, और जिस दूरी तक वह अपने शिकार को ले गया था, उसे देखते हुए, उसका छिपने का स्थान उस जगह से बहुत दूर नहीं हो सकता था जहां उसके निशान खत्म हो गए थे। मैंने गुफा के बारे में पूछताछ की, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी भी ग्रामीण को इसके बारे में जानकारी नहीं थी।

गांव लौटते ही मैंने स्थानीय वन रक्षक के बारे में पूछा। उसे अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले जंगल की भौगोलिक स्थिति की जानकारी होगी। मुझे यह जानकर बहुत निराशा हुई कि रक्षक तारिकेरे स्थित विभागीय मुख्यालय गया हुआ है और सुबह ही लौटेगा।

समय बर्बाद करने का कोई सवाल ही नहीं था, इसलिए मैंने वेंकट को अपने बगल वाली कार में बिठाया और बिना देर किए तारिकेरे के लिए निकल पड़ा। गुफा या किसी अन्य छिपने की जगह के बारे में मेरे मन में जो शंका थी, उसे दूर करना ही मेरे लिए सबसे ज़रूरी था, तभी मैं संतुष्ट हो पाऊंगा।

आधे घंटे में हम ज़िला वन कार्यालय पहुँच गए, जहाँ हमें न केवल वह गार्ड मिला जिसकी हमें तलाश थी, बल्कि उसका वरिष्ठ अधिकारी, वन रेंजर और संभागीय प्रमुख, ज़िला अधिकारी भी मिले। इन लोगों के बीच हमने उन्हें बताया कि कैसे हमने लौलबाग़ के जंगल में आदमखोर बाघ का पीछा किया और फिर उसका सुराग खो दिया। क्या वे हमें बता सकते हैं कि इस ब्लॉक में कोई गुफा या कोई अन्य छिपने की जगह है जहाँ बाघ ने अपना घर बनाया हो सकता है?

रक्षा अधिकारी ने रेंजर की ओर देखा, और रेंजर ने अपने गार्ड की ओर। फिर गार्ड

ने रेंजर की ओर देखा, और यह सिलसिला चलता रहा।

'मिस्टर एंडरसन, इस इलाके में कोई गुफा होने की संभावना नहीं दिखती,' डी.एफ.ओ. ने विस्तार से घोषणा की।

मेरे दिमाग में जो भ्रम बैठा था, वह बुरी तरह से मर रहा था। मेरा सिद्धांत चकनाचूर हो गया! एक नंगे पैर पर खड़ा गार्ड दूसरे पैर के अंगूठे से अपनी पिंडली खुजला रहा था।

'मुझे नहीं लगता कि शैतान पुराने मुन्नेस्वरा मंदिर में शरण ले सकता है, क्या ऐसा हो सकता है, स्वामी?' उसने शर्मिंदा होकर अपने तत्काल वरिष्ठ अधिकारी, रेंजर से पूछा।

रेंजर ने सोच-विचार करते हुए कहा, 'मुन्नेश्वर मंदिर!' 'मुन्नेश्वर मंदिर!'

'मुन्नेश्वर मंदिर!' रक्षा अधिकारी ने उत्साह से चिल्लाते हुए कहा। फिर, शर्म से सिर झुकाए गार्ड से बोला, 'अरे मूर्ख! तुमने पहले क्यों नहीं बताया? यही तो है! वह यहीं है! पुराना मुन्नेस्वरा मंदिर!' रक्षा अधिकारी उत्साह में उछल-कूद करने लगा।

जब भावनाएं शांत हुईं तो मुझे बताया गया कि लाउबाग ब्लॉक की सीमा के भीतर थोड़ी ही दूरी पर एक प्राचीन मंदिर है, जो लगभग खंडहर हो चुका है। गार्ड द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार, उस सुबह जब हम रास्ता भटक गए थे, तब हम मंदिर के बहुत करीब रहे होंगे। कहा जाता है कि मंदिर का भीतरी कक्ष, या गर्भगृह, आंशिक रूप से ढह गया था, लेकिन गार्ड के अनुसार बाघ के रहने के लिए पर्याप्त जगह बची थी।

हम वापस लक्कावल्ली गए, जहाँ रक्षा अधिकारी, रेंजर और गार्ड सरकारी जीप में हमारे पीछे-पीछे आ रहे थे। उन्होंने कहा कि वे 'शिकार' के समय मौजूद रहना चाहते हैं, हालाँकि उन्होंने मुझसे वादा किया कि वे गाँव में ही रहेंगे और हत्या के दौरान मुझे परेशान नहीं करेंगे।

दोपहर के भोजन का समय बीत चुका था, लेकिन बुखार की गर्मी में उत्सुकता के चलते मैंने भोजन छोड़ दिया और वन रक्षक के साथ पुराने मंदिर के खंडहरों की ओर पैदल चल पड़ा। हम उस जगह से आगे निकल गए जहाँ खून के निशान खो गए थे और एक मील से अधिक आगे जाने के बाद अचानक ज़मीन में एक गड्ढा दिखाई दिया। इस छोटे से गड्ढे के बीचोंबीच घनी झाड़ियों का एक द्वीप था, और विभिन्न प्रकार के पत्तों के बीच से झाँकते हुए मुझे एक छोटे मंदिर के धूसर खंडहर दिखाई

दिए।

मैंने अपने साथी को एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर ऊपर ही रहने का निर्देश दिया, जिसे उसने तुरंत मान लिया। इसके बाद मैं दबे पांव खंडहरों की ओर बढ़ा, हर झाड़ी का सहारा लेते हुए। तेज धूप पड़ रही थी और मुझे कोई जल्दी नहीं थी।

उत्साह में आकर मुझे याद आया कि मैं पहरेदार से मंदिर की दिशा पूछना भूल गया था। यह बहुत ज़रूरी था, अगर मैं आदमखोर बाघ को अचानक पकड़ना चाहता था। यह ठीक नहीं होता कि मैं मंदिर के पीछे पहरा दे रहा होता और बाघ सामने से निकलकर झाड़ियों की आड़ में घूमकर मुझ पर पीछे से हमला कर देता।

अंततः, पास पहुँचने पर, मुझे मंदिर-पवित्रस्थल की ओर जाने वाला द्वार दिखाई दिया। यह थोड़ा मेरे दाहिनी ओर था और मलबे से आंशिक रूप से अवरुद्ध था। मैं भाग्यशाली था। अब मुझे बस इस द्वार के पास चुपके से जाना था, छुपना था, आदमखोर को बाहर निकालना था और उसे गोली मार देनी थी।

मैंने यही किया। धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए मैं मंदिर के बाहरी हिस्से में बने चौकोर कोने तक पहुँच गया। मुझे यह जगह अपने शिकार पर घात लगाने और छिपने के लिए बहुत उपयुक्त लगी। बाघ के बाहर आने पर मैं हमले से सुरक्षित रहूँगा। स्वाभाविक रूप से, वह सीधे मुझ पर हमला करेगा और मुझे अपने दाएं या बाएं देखने की ज़हमत नहीं उठाएगा।

लेकिन एक अड़चन थी। अगर मैं इमारत के एक कोने के पीछे छिप जाता, तो कौन मुझे रोक पाता कि बाघ मेरे पीछे दूसरे कोने में छिपकर मुझ पर पीछे से हमला न कर दे? शायद उस समय वह मंदिर में न हो, मुझे क्या पता। हो सकता है वह किसी झाड़ी की आड़ से मुझे देख रहा हो और साथ ही साथ मेरी तलाश भी कर रहा हो।

मैंने मंदिर के प्रवेश द्वार से कुछ ही फीट की दूरी तक दबे पांव जाने और दीवार से सटकर लेट जाने का फैसला किया। कम से कम इससे मुझे सामने कोने से झांकते समय पीछे से होने वाले हमले से बचाव मिल जाता। मैंने ऐसा ही किया और आखिरकार सही जगह पर पहुंच गया। अब बात बाघ को बाहर निकालने की थी। मुझे उसे डराना नहीं था और न ही उसे गुस्सा दिलाना था। उसे जिज्ञासावश खुद ही बाहर आना था।

तो मैंने दूर से आती हुई बाघ की आवाज की नकल करते हुए धीरे से कराहने की कोशिश की। कुछ नहीं हुआ! शायद बाघ ने मुझे सुना ही नहीं, हालांकि मुझे इस बात

पर यकीन करना मुश्किल था। मैंने फिर से कराहने की कोशिश की, और फिर भी कुछ नहीं हुआ। मैंने तीसरी बार कराहने की कोशिश की, और इस बार बहुत जोर से। वह दूर का बाघ बहुत तेजी से पास आ गया था! फिर भी कुछ नहीं हुआ और मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ मंदिर में नहीं था। मैंने कोने से बहुत सावधानी से झाँका; फिर हिम्मत जुटाकर मैं टूटे हुए द्वार से अंदर घुस गया, कमर झुकाकर। अंदर आते ही मुझे एक सीलन भरी, सड़ी हुई गंध आई। प्रवेश द्वार पर जमी धूल में बाघ के पैरों के निशान नहीं थे। न ही वहाँ किसी इंसान के अवशेष मिले। न सिर्फ यहाँ कोई बाघ नहीं था, बल्कि महीनों से कोई बाघ यहाँ आया ही नहीं था। साफ था कि मुन्नेस्वरा मंदिर आदमखोर बाघ का छिपने का स्थान नहीं था।

हमें बहुत निराशा हुई कि मेरे दोस्त वेंकट ने अपने और मेरे लिए जो विशाल दोपहर का भोजन तैयार किया था, वह वन अधिकारी और रेंजर के लिए भी पर्याप्त था। इतना ही नहीं, थोड़ा सा भोजन बच भी गया, जो वन रक्षक के लिए नाश्ता करने के लिए काफी था।

कुछ देर बाद, वेंकट के बंगले के बरामदे की चौखट पर बैठकर सिगरेट पीते हुए, मुझे इस देरी पर गुस्सा आ रहा था जबकि मेरे दोस्त घटनाओं पर बातें करते रहे। मेरे लिए समय का बहुत महत्व था, लेकिन उनके लिए कुछ भी नहीं। भारत में यही एक चीज है जिस पर कभी कोई पाबंदी नहीं लगी; और न कभी लगेगी।

दोपहर की धूप में, एक लंबड़ी चरवाहा अपनी भैंसों को बाहर चरा रहा था। आदमखोर जानवर के खतरे को देखते हुए, उनके लिए भैंसों को जंगल में ले जाना बेहद जोखिम भरा था, जबकि इंजीनियर के क्वार्टर के परिसर में उगी थोड़ी-बहुत घास ही उसके लिए एक मामूली विकल्प थी। मेरी पाइप, वेंकट के सिगार और वन विभाग के हमारे दो दोस्तों द्वारा पी जा रही सिगरेटों के धुएं और गंध से आकर्षित होकर, वह व्यक्ति इतना साहसी हो गया कि हमारे पास आकर सिगरेट मांगने लगा। वन विभाग के अधिकारी ने उसे एक सिगरेट फेंक दी और हम उसे भूल गए, क्योंकि हमने उसे बंगले के पीछे जाते हुए देखा, जहाँ हमने उसे और वन रक्षक को आपस में बात करते हुए सुना।

कुछ मिनट बाद पहरेदार पास आया। वह उत्साहित था, लेकिन अपने उच्च अधिकारियों की बातचीत में दखल देने से हिचकिचा रहा था।

'तो?' गार्ड ने बड़ी झिझक के साथ बुदबुदाया। 'आपसे विनती है कि क्रोधित न हों,

लेकिन उस बहिष्कृत लंबड़ी ने मुझे बताया है कि मुन्नेस्वरा मंदिर से एक मील आगे एक चट्टान की लटकती हुई चोटी है जिसके नीचे बाघ के छिपने के लिए पर्याप्त जगह है। वास्तव में, वह कहता है कि उसने एक शाम अपनी भैंसों के साथ लौटते समय चट्टान की चोटी पर एक बाघ को धूप सेंकते हुए देखा था, और यह आदमखोर बाघ के हमारे बीच आने से पहले की बात है। बेशक, वह भाग गया और उसके जानवर भी उसके पीछे चले गए। वह कहता है कि वह फिर कभी वहां नहीं गया।'

हमने बिना देरी किए लंबड़ी को बुलाया और उससे गहन पूछताछ की। उसका जवाब बिल्कुल वही था जो वन रक्षक ने हमें बताया था। उसने जो एकमात्र नई जानकारी दी, वह यह थी कि उसे पूरा यकीन था कि उसने जो बाघ देखा था और आदमखोर बाघ एक ही जानवर थे, क्योंकि उस समय बाघ ने आदमखोरी का रूप नहीं धारण किया था। कुछ ही मिनटों में मैं फिर से अपने रास्ते पर चल पड़ा, इस बार वन रक्षक कुछ अनिच्छा से मेरे साथ आया। लेकिन लंबड़ी का मूड बेहतर था।

जब हम मंदिर के पास से गुज़रे तब साढ़े चार बज रहे थे, और लगभग पाँच बजने ही वाले थे कि लंबडी ने मुझे लगभग दो सौ गज आगे ज़मीन में एक हल्की सी ऊँचाई दिखाई, जिसके ऊपर एक ढलान वाली चट्टान झाँक रही थी। उसने मुझे बताया कि हालाँकि हम जहाँ खड़े थे वहाँ से जंगल के कारण वह दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन जब मैं उसके पास पहुँचूँगा तो देखूँगा कि चट्टान से एक नीची लटकती हुई गुफा बनी हुई है, जिसका प्रवेश द्वार दो फुट से ज़्यादा ऊँचा नहीं है। उसके अनुसार, मानसून के दौरान बारिश के पानी के तेज़ बहाव के कारण ऐसा हुआ होगा, क्योंकि गुफा ज़्यादा गहरी नहीं थी। पिछली बार जब वह आया था तो लगभग उसी जगह पर था जहाँ हम अब खड़े थे और उसने चट्टान के ऊपर बाघ को पूरी लंबाई में लेटकर धूप सेंकते हुए देखा था। वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग गया था।

मैंने एक बार फिर अपने साथियों से पेड़ों पर चढ़ने और मेरे लौटने तक वहीं रहने को कहा, और उस दिन दूसरी बार मैं यथासंभव सावधानी से दबे पांव आगे बढ़ा।

इस बार मेरा आगे बढ़ना घने जंगल से होकर गुज़र रहा था, न कि खुले मैदान से, जैसा कि उस घाटी में था जहाँ पुराना मुन्नेस्वरा मंदिर खंडहर हो चुका था। मैं दाएं-बाएं और पीछे देखता रहा, ताकि पार्श्व और पीछे से होने वाले हमलों से खुद को बचा सकूं। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और मैं हर कदम पर एक पल के लिए नीचे देखता था। किसी भी हालत में मुझे किसी ऐसे पत्ते पर पैर नहीं रखना था जो सरसरा सकता

हो या किसी ऐसी टहनी पर जो चटक सकती हो। तमाम सावधानियों के बावजूद, कभी-कभी मेरे शरीर का कोई हिस्सा किसी झाड़ी से टकरा जाता और हल्की सी रगड़ की आवाज़ आती।

मैंने मन ही मन कहा: 'मुझे दोबारा ऐसा नहीं करना चाहिए: बाघ मुझे सुन लेगा।'

मैं अब चट्टान के बहुत करीब था, लेकिन सामने की घनी झाड़ियों ने अभी भी उस खुले स्थान को छिपा रखा था जिसका ज़िक्र लंबड़ी ने किया था। मैं कुछ मिनटों के लिए रुक गया। शायद अगर मैं ध्यान से सुनूँ तो मुझे बाघ की आवाज़ सुनाई दे। मैंने ऐसा किया, लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

मैंने मन ही मन कहा, 'कुछ और कदम, और मैं देख पाऊंगा।'

मैंने नीचे देखा। सामने न कोई पत्ता था, न कोई टहनी, न कोई ढीला पत्थर। मेरे लिए एक और कदम आगे बढ़ाना सुरक्षित था।

मैंने वह कदम बढ़ाया, लेकिन दाहिनी ओर मौजूद एक छोटी सी झाड़ी को नज़रअंदाज़ कर दिया। उस झाड़ी में कांटे थे, और उन्हीं कांटों ने अपना काम कर दिया। वे मेरी पतलून से ज़ोर से रगड़े, एक पल के लिए चुभे, और फिर एक और रगड़ के साथ छूट गए।

इससे पहले कि मैं समझ पाता कि आदमखोर बाघ ने मेरी बात सुनी है या नहीं, उसने सुन ली थी। उसकी सहज प्रवृत्ति ने उसे आगाह कर दिया था कि जो प्राणी उसकी नज़रों से ओझल होकर पास आ रहा है, वह कोई पक्षी, खरगोश या कोई छोटा जीव नहीं है। वह भली-भांति जानता था कि उड़ने, चलने या रेंगने वाला कोई भी प्राणी उसकी भयानक उपस्थिति के इतने करीब आने की हिम्मत नहीं करेगा। इसलिए यह अवश्य ही कोई शत्रु है, और उससे भी बढ़कर, कोई ऐसा शत्रु जो उसका पीछा कर रहा है, यानी बाघ, जो निस्संदेह उसे मारने के लिए ही आया है।

उसकी सहज प्रतिक्रिया ने उसे यह संदेश दिया और उसने जरा भी देर नहीं की। बाघ ने आक्रमण किया, उसकी 'व्रूफ़! व्रूफ़! व्रूफ़!' की दहाड़ ने सन्नाटा तोड़ दिया।

मेरे सामने झाड़ियाँ हट गईं और उसका सिर और शरीर उनमें से तेज़ी से निकल गया, इससे पहले कि वह मुझे देख पाता। अंतिम छलांग लगाने से पहले वह एक पल के लिए रुका। शायद उसने कभी उम्मीद नहीं की थी कि भागने के बजाय उसे एक बेचारा इंसान मिलेगा। सिर और पंजे ज़मीन पर, पिछला हिस्सा और पूंछ ऊपर उठी हुई, बाघ थोड़ा हास्यास्पद लग रहा था।

मैंने उसके सिर पर दो बार गोली मारी। फिर मैं झट से एक तरफ कूद गया, क्योंकि किसी बाघ पर नज़दीक से गोली चलाने के बाद तुरंत एक तरफ कूदना कभी नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि संभावना 99 में से 1 है कि वह सीधे दौड़ेगा, भले ही उसे अगले ही पल मरना पड़े। मरता हुआ बाघ वास्तव में आपको बहुत नुकसान पहुंचा सकता है।

आदमखोर ने वही किया जो मुझे उम्मीद थी, और मैंने उसके कंधे के पीछे दो बार और गोली मारी। जैसे ही वह तड़पा और फिर अकड़ने लगा, मैंने देखा कि वह काफी बूढ़ा जानवर था, शिकार करने की उम्र पार कर चुका था।

जिस कुली के शव की हम तलाश कर रहे थे, उसकी हड्डियाँ उथली गुफा के प्रवेश द्वार पर बिखरी पड़ी थीं। उन्हें कुतर-कुतर कर साफ कर दिया गया था। लाल चींटियाँ उन पर चिपके मांस के छोटे-छोटे टुकड़ों को चट कर रही थीं।

हम तीनों अंधेरे में वापस लौटे, इस बार निडर थे। बंगले में एक और दावत थी, जिससे मुझे बदहजमी हो गई। मंदिरों से बाघों के निकलने के सपने मुझे सुबह तक परेशान करते रहे। फिर वेंकट और वन विभाग के मेरे दोस्तों को विदाई दी।

मैं सुबह नौ बजे तक सैंटावेरी पहुँच गया था। डिक ने मुझे दोपहर का भोजन दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया। पेट में अभी भी गुड़गुड़ाहट हो रही थी, मैंने जल्दी से रम का एक घूंट पिया। चार बजे तक मैं घर पहुँच गया, और अपना मिशन समय से पहले पूरा कर लिया था।

आठ

आंधी-तूफान अपने साथ क्या लेकर आया

मेरा बेटा डोनाल्ड खुद से बेहद खुश था। उसने अभी-अभी मैसूर राज्य राइफल एसोसिएशन द्वारा आयोजित क्ले-पिजन शूटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान के लिए संयुक्त रूप से बराबरी की थी।

भारत में हम लोग आमतौर पर क्ले-पिजन शूटिंग नहीं करते, कम से कम जहाँ तक मुझे पता है। शायद इसलिए कि यहाँ जंगली कबूतर इतने ज़्यादा हैं कि हमें क्ले-पिजन या उन्हें बनाने में इस्तेमाल होने वाले किसी भी पदार्थ से खेलने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। ज़्यादा संभावना यही है कि अब तक किसी के पास इन छोटे-छोटे क्ले-पिजन को हवा में उछालने का उपकरण नहीं था। मैंने तो इन्हें पहले कभी नहीं देखा था। मुझे यकीन है कि मैं खुद भी इन्हें नहीं मार सकता। मैं तो राइफल से निशाना लगाने में माहिर हूँ, लेकिन बंदूक चलाने में लगभग बेकार। सालों पहले स्नाइप और बत्तख पर किए गए मेरे प्रयासों ने मुझे इस बात का पक्का सबूत दे दिया था।

वैसे तो डोनाल्ड बंदूक और राइफल दोनों से ही अच्छा निशाना लगाता है। मेरी तरह उसने भी कभी क्ले-पिजन शूटिंग का उपकरण नहीं देखा था, इसलिए उसे अभ्यास करने का मौका भी नहीं मिला था। लेकिन उसने प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार जीता। अब उसने सुझाव दिया कि इस अवसर को मनाने के लिए हमें जंगल की सैर पर जाना चाहिए।

जंगलों में? जश्न मनाने के लिए यह कितनी अजीब जगह है! लेकिन सच तो यह है कि हम दोनों को जंगल बहुत पसंद हैं। उनमें हमें घर जैसा लगता है; वहाँ हमें शांति मिलती है। इसलिए मुझे जाने के लिए ज्यादा मनाना नहीं पड़ा।

इस बार हमने बाघों को गोली मारने के बजाय रात में उनकी तस्वीरें खींचने का फैसला किया। डोनाल्ड ने अपने स्कूली दिनों के पुराने दोस्त, युवा दुधवाला से एक शानदार कैमरा और टॉर्च उधार ली थी, जो अब युवा नहीं था और जिसके बारे में मैंने अपनी पिछली किताब में एक कहानी सुनाई है।* डॉन लंबे समय से रात में फोटोग्राफी के सबसे कठिन और साथ ही साथ सबसे कुशल खेल में हाथ आजमाना चाहता था और यह उसका मौका था।

मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि हम किस जंगल में गए थे, क्योंकि यह दक्षिण भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक है जहाँ अभी तक बाघ नहीं पाए जाते। कुछ उत्साही लोगों ने मेरी किताबें पढ़ी हैं और उन स्थानों पर गए हैं जिनका मैंने उल्लेख

किया है, अपनी किस्मत आजमाने के इरादे से। भारतीय संरक्षण के दृष्टिकोण से, अब इन स्थानों का नाम न लेना आवश्यक हो गया है। क्योंकि दक्षिण भारत में बाघ, तेंदुआ और भालू बहुत कम होते जा रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत में विदेशियों के आगमन के कारण हुए भारी शिकार ने इनकी संख्या में भारी कमी ला दी। विशेष रूप से भारतीय शिकारी, जो स्पॉटलाइट वाली जीपों का इस्तेमाल करते हैं, ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया। फिर आया वह घातक कीटनाशक जिसके बारे में मैं पहले ही बात कर चुका हूँ, जिसे सरकार अभी भी ग्रामीणों की फसलों को विभिन्न कीटों से बचाने के लिए लगभग मुफ्त में उपलब्ध कराती है, लेकिन जिन किसानों के मवेशी या बकरियाँ बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे जाते हैं, वे अपने मारे गए जानवरों के मांस पर इसे लगाने में जरा भी संकोच नहीं करते। लगभग हमेशा, इस घिनौने कृत्य में सफलता तब मिलती है जब शिकारी दूसरी बार भोजन के लिए लौटता है और उसे जहर दे दिया जाता है।

इसके परिणाम इतने भयावह रहे हैं कि, विशेष रूप से मैसूर राज्य में, बाघ, तेंदुआ, लकड़बग्घा, यहाँ तक कि सियार और कुछ हद तक गिद्ध भी इस रसायन के दुरुपयोग से लगभग विलुप्त हो गए हैं—देश भर में आत्महत्या, हत्या और आकस्मिक विष के कारण मनुष्यों की उच्च मृत्यु दर को तो हमने गिना ही नहीं है। आर्सेनिक, स्ट्राइकिन और जस्ता लवण जैसे पुराने और कहीं अधिक धीमी गति से असर करने वाले, कम घातक विष, जो केवल बहुत कम मात्रा में ही खरीदे जा सकते हैं, आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन सरकार लगभग माँगने पर ही किसी को भी भारी मात्रा में घातक कीटनाशक दे देती है। यह खेदजनक है कि अधिकारी इस मामले की सच्चाई को देख नहीं पा रहे हैं, देख नहीं रहे हैं या देखना नहीं चाहते हैं।

तो हम 'बाघों की भूमि' की ओर चल पड़े, एक सुंदर सी झोपड़ी में जो हमने बांस और घास से बनाई थी। यह झोपड़ी उस छोटे से भूखंड पर बनी थी जिसे मैंने कई साल पहले 120 रुपये (लगभग सात पाउंड स्टर्लिंग) में खरीदा था। हमारी झोपड़ी के ठीक सामने 200 गज की दूरी पर एक नदी बह रही थी, जिसकी मौजूदगी दोनों किनारों पर उगे विशाल मुठी, इमली, जुमलम और जंगली आम के पेड़ों की घनी वृद्धि से स्पष्ट थी। जगह-जगह ऐसे क्षेत्र थे जहाँ बांस के घने झुंडों ने अन्य सभी प्रकार की वनस्पतियों को हटा दिया था, और उनके ऊंचे, पंखुड़ीदार पत्ते नदी के झरनों और तालाबों पर लटक रहे थे, जबकि सड़ते पत्तों की चादर से ढके अंधेरे और शांत मैदान

पानी के किनारे तक फैले हुए थे।

मगरमच्छ को ऐसी जगहें बहुत पसंद होती हैं, क्योंकि हिरणों को भी ये जगहें अच्छी लगती हैं। बांसों का घना आवरण, उनकी छाया और सड़ते पत्तों की बिछी ज़मीन सांभर, नीलगाय और चित्तीदार हिरणों को दिन की तेज़ गर्मी में और रात में भी चुपचाप, सुरक्षित और अपेक्षाकृत सुगम रास्ता प्रदान करती है, ताकि वे ऊपर पहाड़ों की ठंड से बहकर आए ठंडे पानी से अपनी प्यास बुझा सकें।

किसी भी पेड़, बांस के झुंड या झाड़ी के पीछे छिपे विशाल मांसाहारी जानवरों से बचने की चिंता में, हिरण बिना समय गंवाए जितनी जल्दी हो सके पानी पीते हैं। उनकी नाक और कान बाघ की गंध या आवाज के लिए सतर्क रहते हैं, और उनकी आंखें पैंथर या क्रूर जंगली कुत्तों पर नजर रखती हैं। अक्सर, परिदृश्य का जायजा लेने की चिंता में, वे बदसूरत मगरमच्छ को नजरअंदाज कर देते हैं, जो वैसे भी अदृश्य होता है, जिसका सिर और शरीर नदी की सतह के नीचे और किनारे के बहुत करीब होता है।

और इस तरह एक सांभर पानी पीने के लिए अपना सिर नीचे करता है, और जैसे ही वह ऐसा करता है, मगरमच्छ पानी से बाहर आ जाता है। लंबे, आरी जैसे दांतों वाले क्रूर जबड़े सांभर के थूथन पर कस जाते हैं, और लगभग उसी क्षण सरीसृप की चपटी, खुरदरी पूंछ पानी से बाहर निकलती है और अदम्य बल के साथ वार करती है, सांभर के पैरों या बगल पर प्रहार करती है और उसे असंतुलित करके तालाब में गिरा देती है।

सांभर के चेहरे पर अपनी पकड़ ढीली किए बिना, मगरमच्छ पीछे की ओर गहरे पानी में तैरता है, और अपने छटपटाते शिकार को अपने साथ घसीटता है। एक बार जब मगरमच्छ अपने शिकार को पकड़ लेता है, तो वह अविश्वसनीय गति से चक्कर लगाता है ताकि उसकी गर्दन तोड़ दे या उसे बेहोश कर दे, और अगले ही पल मगरमच्छ और सांभर दोनों तालाब की अंधेरी सतह के नीचे गायब हो जाते हैं और त्रासदी के दृश्य पर शांत बहते पानी में केवल बड़े-बड़े बुलबुले ही हलचल मचाते हैं।

लेकिन जंगल की नदी की तलहटी में कीचड़ और दलदल में चल रहे भयावह नाटक के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। अपनी झोपड़ी के बरामदे में आरामदेह बेंत की कुर्सियों पर बैठे हम विशाल बांसों के तनों के टूटने की तेज़ आवाज़ सुनते हैं, जिन्हें नदी के दूसरी ओर चर रहे हाथियों का झुंड तोड़ रहा है। बीच-बीच में हाथी के बच्चे की

हल्की सी चीख सुनाई देती है और किसी वयस्क हाथी के पाचन अंगों से गड़गड़ाहट जैसी धीमी आवाज़ आती है, या फिर किसी मादा हाथी की संतुष्ट गाय जैसी रंभाहट सुनाई देती है। सब कुछ शांत है और दूर से आती मोर की आवाज़ ऊपर से आती तीखी, बिल्ली जैसी म्याऊं की आवाज़ों के साथ बदलती रहती है, जो भूरे गिद्धों का जोड़ा जंगल की बड़ी बिल्लियों द्वारा छोड़े गए भोजन के टुकड़ों की निरंतर खोज में निकाल रहा है।

जंगल में ऊपरी तौर पर शांति थी, लेकिन हमारी झोपड़ी में कुछ कलह चल रही थी। हमारे अनुपस्थित रहने पर झोपड़ी की देखभाल के लिए नियुक्त किए गए चौकीदार और उसकी पत्नी के बीच अनबन हो गई। उसकी पत्नी नदी से एक पुराने मिट्टी के तेल के डिब्बे में दिन में दो बार पानी लाती थी। वहाँ बड़बड़ाहट और शिकायत की आवाजें गूंज रही थीं, और कभी-कभी एक कर्कश महिला की चीख सुनाई देती थी जो गिद्धों को भी शर्मिंदा कर देती थी।

डोनाल्ड ने संक्षिप्त लहजे में कहा, 'बूरा और उसकी पत्नी के बीच कुछ अनबन है। बेहतर होगा कि हम जाकर देखें कि मामला क्या है। मैंने उसे दो बार कहा है, लेकिन वह अभी तक मेरे नहाने के लिए पानी नहीं लाई है।'

तो मैं उठा और रसोई में गया, जो हमारे घर के पीछे स्थित एक छोटी सी घास-फूस की झोपड़ी थी, लगभग बारह फुट चौकोर। वहाँ बूरा ज़मीन पर बैठा था, आलस में एक डंडी से आग को कुरेद रहा था, जबकि उसकी पत्नी उसके सामने बैठी सुपारी चबा रही थी और चारों ओर लाल थूक रही थी। वहाँ मेरा शिकारी थंगावेलु भी उत्सुकता से देख रहा था, जो मूल रूप से दूर क्लोज़पेट से आया था और डॉन की सेवा में शिविर-रसोइया, टेबल-बॉय, ड्रेसिंग-बॉय और लगभग हर तरह का काम करता था, सिवाय उस लड़के के जो ईमानदारी से कोई काम करता हो।

'तुम दोनों को क्या हो गया है?' मैंने गुस्से से पूछा, बारी-बारी से बूरा और उसकी पत्नी को घूरते हुए। फिर, उस महिला से कहा, 'तुम्हारी गंदी भाषा बेहद घिनौनी है।'

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर बूरा ने स्थानीय बोली में समझाया: 'महोदय, मैंने तीन साल पहले इस बदचलन औरत से शादी की थी। उससे मेरे तीन बच्चे हैं, लेकिन वह उनकी देखभाल नहीं करती। न ही वह मुझे ठीक से खाना खिलाती है। वह आलसी होने के कारण काम नहीं करती। सारा दिन पान चबाती रहती है और और खरीदने के लिए पैसे मांगती है। कुल मिलाकर, वह बहुत खर्चीली है।'

जब मैंने उससे शादी की थी, तब मैंने उसके पिता को उसके लिए दस रुपये दिए थे। अब, बूढ़े जवाना ने मुझे अपनी सबसे छोटी बेटी पंद्रह रुपये में देने की पेशकश की है। वह सुंदर है और मेरा अच्छे से ख्याल रखेगी। इतना ही नहीं, जवाना मुझसे इस दुबली-पतली औरत को पाँच रुपये में लेने को तैयार है, जो मैंने उसके लिए दिए गए दाम का आधा है, इसलिए सौदा मुझे केवल दस रुपये में ही करना पड़ेगा। वह अपने तीन बच्चों को अपने पास रख सकती है - मुझे तो उन्हें बिल्कुल नहीं चाहिए!

बूरा की आगे की योजनाओं में उसकी पत्नी देवी की चीखती हुई आवाज ने बाधा डाल दी।

'अरे बूढ़े लंपट!' वो चिल्लाई। 'लक्ष्मी जैसी जवान लड़की से तुम्हें क्या चाहिए? वो तो सिर्फ पंद्रह साल की है, और वो भी बदतमीज़! तुम तो पहले से ही अधमरे हो, और उसके साथ एक हफ़्ते बिताने के बाद मुझे तुम्हारी थकी हुई हड्डियों को दफ़नाने की मशक्कत करनी पड़ेगी! और उस बूढ़े कमीने की बात ही क्या! वो इतना बूढ़ा है कि उसके दांत ही नहीं हैं! और उसे जवान लड़के पसंद हैं! मुझे कौन संतुष्ट करेगा? मैं तो अभी भी जवान और तंदुरुस्त हूँ!'

वाकई, यह एक पेचीदा मामला था! लेकिन एक राहत की बात भी थी। एक रुपये के मुकाबले एक शिलिंग और चार पेंस की विनिमय दर को देखते हुए, इस आपसी लेन-देन में शामिल लागत, चाहे आप इसे किसी भी तरह से देखें, बहुत अधिक नहीं थी। थंगावेलु ने चौड़ी मुस्कान के साथ संक्षेप में स्थिति का वर्णन किया, और अपनी सीखी हुई बटलर-शैली की अंग्रेज़ी में कहा:

'सर, मुझे ये जगह बहुत पसंद है। बहुत ही बढ़िया जगह है। यहाँ बहुत सारे शिकार, बाघ और हिरण हैं। औरतें भी बहुत हैं, और वो भी बहुत सस्ते दामों पर। यहाँ पाँच रुपये या दस रुपये में पत्नी मिल जाती है। फिर अगले महीने भी दे सकते हैं। जब ज़रूरत न हो, तो बदल सकते हैं। दूसरी पत्नी मिल जाती है, सिर्फ़ दस रुपये में! फिर तो वो औरत जाती ही नहीं। ज़्यादा पैसे चाहिए। सौ रुपये से कम में दूसरी पत्नी नहीं मिल सकती। सर, ये जगह बहुत ही बढ़िया है।'

थंगावेलु ने अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ अपनी बात समाप्त की।

'थांगावेलु, उस कमीनी औरत से कहो कि मेरा नहाने का पानी लाए,' डोनाल्ड बरामदे से दहाड़ा। तभी कुनमारी, जो स्थानीय शिकारी था, वहाँ आ पहुँचा और हमारे द्वारा माँगी गई जानकारी लेकर आया। वह सुबह से ही जंगल में खोजबीन कर रहा था

और उसने बताया कि लगभग आधा मील दूर एक सूखे नाले के किनारे एक बाघ और एक तेंदुआ आए थे। तेंदुआ वहाँ का पुराना निवासी लग रहा था क्योंकि कुनमारी ने बताया कि उसके पुराने और नए, दोनों तरह के पदचिह्न कई बार दिखाई दिए थे। बाघ जाहिर तौर पर टहल रहा था और कुछ समय तक उसके उस रास्ते से लौटने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।

इसलिए संभावना यही थी कि अगर हम किसी वस्तु को चारा बनाकर बाद में उसकी तस्वीर खींचने की कोशिश करते, तो शायद उसे बाघ नहीं बल्कि पैंथर मार डालता। हम तो सिर्फ बाघ ही पकड़ना चाहते थे; हमने कुनमारी को यह बात फिर से बताई और उनसे कहा कि वे दोबारा जाकर ऐसी जगह ढूंढें जहां पैंथर की बजाय बाघ अक्सर आता हो।

उस दोपहर वह सफलता की खबर लेकर लौटा। उसने बताया कि नदी के उस पार एक नियमित पगडंडी थी, जिस पर बाघ के बच्चे, बूढ़े और नए, दोनों ही तरह के, अक्सर आते-जाते थे। इसके अलावा, वहाँ एक सुविधाजनक पेड़ था, जो हाथियों के दखल से सुरक्षित था, जहाँ से हम समय आने पर आसानी से तस्वीरें ले सकते थे। बाघ उस रात या अगली रात उसी रास्ते से ज़रूर गुज़रेगा।

हमने चार भैंसें चारा के तौर पर मंगवाई थीं और उनमें से दो को बांधने का फैसला किया—बड़ी भैंस को नदी के उस पार बाघों के आने-जाने वाले रास्ते पर और छोटी भैंस को उससे चार फर्लांग दूर नाले में, जहाँ पैंथर के आने की पूरी संभावना थी। थंगावेलु कुनमारी के साथ दोनों जानवरों को बांधने में मदद करने गया, जबकि डॉन और मैं नदी किनारे शाम की सैर पर निकल गए।

यह विशेष जंगल अभी भी वन्यजीवों के लिए एक सच्चा स्वर्ग था और हमने चित्तीदार हिरणों के बड़े झुंड देखे, साथ ही काफी संख्या में सांभर और नीलगाय भी चरते हुए दिखाई दिए।

नदी के किनारे। नदी के मोड़ पर हमें एक नर हाथी शाम को पानी पीते हुए दिखाई दिया। हम शिकार पर नहीं थे, इसलिए हमारे पास कोई हथियार नहीं थे। एक-दो पल के लिए नर हाथी गुस्से में दिखा; शायद उसे हमारी दखलअंदाजी पसंद नहीं आई। फिर उसने अपना इरादा बदल लिया, मुड़ा और धीरे-धीरे पेड़ों की घनी झाड़ियों में चला गया। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा जानवर इतनी खामोशी से कैसे चल सकता है।

अगली सुबह कुनमारी शिकारगाह की ओर गई और थंगावेलु नाले की ओर, यह देखने के लिए कि रात में हमारे चारे का क्या हुआ था। जंगल में अक्सर अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं, और वे जो रिपोर्ट लाए, वे फोटोग्राफी की दृष्टि से आश्चर्यजनक होने के साथ-साथ उत्साहवर्धक भी थीं। एक बाघ, कोई तेंदुआ नहीं, उस नाले के किनारे आया था जहाँ हमने छोटा चारा बाँधा था, यह सोचकर कि तेंदुआ उसे मार डालेगा। उसने आसानी से रस्सी तोड़ दी और भैंस के बच्चे को थोड़ी दूर एक खाई में ले गया। वहाँ उसने सिर और चारों खुरों को छोड़कर बाकी सब खा लिया। झाड़ियों में छिपे होने के कारण गिद्धों को अवशेष नहीं मिले।

आश्चर्य की बात यह थी कि बाघ की अपेक्षा नहीं, बल्कि एक पैंथर नदी पार करते हुए शिकार के रास्ते पर आ गया था। उसने उस बड़े भैंस के बच्चे को मार डाला जिसे हमने बाघ के लिए बांधा था। जाहिर है, उसने बड़ी मुश्किल से उसे मारा होगा, क्योंकि कुनमारी ने संघर्ष के निशान देखे थे। लेकिन पैंथर रस्सी को तोड़ने में सक्षम नहीं था। इसलिए उसने भैंस के बच्चे का एक छोटा सा हिस्सा खा लिया और बाकी को रास्ते के किनारे छोड़ दिया, जहाँ हम चाहें तो रात को लौटते समय रास्ते के किनारे लगे बड़े पेड़ से उसकी आसानी से तस्वीर ले सकते हैं।

डॉन बहुत खुश था। आखिरकार वह अपने बाघ की तस्वीर खींच पाएगा। स्वाभाविक रूप से उसने नाले में बांधे गए छोटे बछड़े के बचे-खुचे अवशेषों, जिनमें सिर और पैर ही बचे थे, के ऊपर बैठने का फैसला किया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बाघ ने एक

उसने सुझाव दिया कि हम अपना तीसरा चारा भी पास ही बांध दें, कहीं ऐसा न हो कि बाघ पहले वाले के अवशेषों को इतना महत्वहीन समझे कि दोबारा आने की जरूरत ही न समझे।

वैसे, मैं यह बताना चाहूंगा कि यह तरीका मुझे बाघ और तेंदुआ दोनों के शिकार में सबसे कारगर लगा है। आखिर, वे भी हमारी ही तरह जीव हैं; उनमें भी हमारी ही तरह अंतर होते हैं और उनमें भी हमारी कुछ कमियां तो होती ही हैं। इनमें सबसे आम है लालच। कुछ तेंदुआ और बाघ अपने शिकार के पास दोबारा शायद ही कभी लौटते हैं। कुछ तभी लौटते हैं जब वे इलाके का अच्छी तरह जायज़ा ले लेते हैं और खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं। इसी जायज़ा लेने के दौरान वे अक्सर शिकारी को देख लेते हैं, जो पेड़ पर या कहीं और छिपा होता है। इस लालच का फायदा उठाने के लिए, मैंने

पाया है कि दूसरे जीवित शिकार को अधखाए हुए शिकार के पास बांध देना अच्छा रहता है, और अगर मुमकिन हो तो दोनों के बीच में बैठना चाहिए; या अगर यह मुमकिन न हो, तो पुराने अधखाए हुए शिकार की बजाय नए शिकार के ऊपर बैठना चाहिए।

होता ये है कि बाघ या तेंदुआ अपने पहले शिकार के स्थान पर लौटता है, लेकिन शव के पास तुरंत नहीं जाता। उसे संदेह होता है और वह उस जगह के चारों ओर कई चक्कर लगाता है ताकि उस व्यक्ति की मौजूदगी का पता लगा सके जिसके बारे में उसकी अंतरात्मा चेतावनी देती है कि वह कहीं छिपा हुआ है। इसी चक्कर के दौरान उसे नया जीवित शिकार दिखाई देता है। कोई अनुमान लगा सकता है कि इससे बाघ और भी अधिक सतर्क हो जाएगा। आखिर एक जीवित जानवर उस जगह के इतने करीब कैसे आ गया जहाँ उसने एक मृत और लगभग पूरी तरह से खाया हुआ शिकार छोड़ा था? लेकिन आपको याद रखना होगा कि बाघ और तेंदुआ मनुष्यों की तरह तर्क नहीं कर सकते। वे सहज प्रवृत्ति के प्राणी हैं, भले ही उनकी यह सहज प्रवृत्ति अक्सर अचूक रूप से कारगर हो।

इसका तात्कालिक परिणाम यह होता है कि शिकार की तलाश में निकला बाघ या तेंदुआ जीवित जानवर को मार डालता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ताजा मांस की संभावना दिनभर धूप और गिद्धों के संपर्क में रहने वाले सड़ते हुए मांस की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक होती है, और इस प्रकार बाघ या तेंदुआ स्वयं ही अपनी मृत्यु का कारण बनता है।

मेरे पास रात में फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त कैमरा नहीं था, और चूंकि हम शिकार पर नहीं जा रहे थे और हमारे पास कोई हथियार भी नहीं थे, इसलिए नदी के उस पार बड़े पेड़ पर बैठकर किसी पैंथर को भोजन करते हुए सुनने का कोई फायदा नहीं था। इसलिए मैंने रात का पहला हिस्सा अपनी बांस की झोपड़ी के बरामदे में बेंत की कुर्सी पर आराम से बैठकर जंगल की आवाज़ें सुनने में बिताने का फैसला किया; और बाकी का हिस्सा बिस्तर पर बिताया।

इलाके में रुक-रुक कर बारिश हो रही थी, इसलिए हममें से हर कोई अपने साथ एक तिरपाल की चादर लाया था ताकि ज़रूरत पड़ने पर मचान पर छत के तौर पर इस्तेमाल कर सकें। मैं इस तरीके की बिल्कुल भी सलाह नहीं देता। पहली बात तो यह है कि इससे मचान बहुत आसानी से नज़र आ जाता है और उसे अतिरिक्त

छलावरण की ज़रूरत पड़ती है। दूसरी बात, बारिश शुरू होने पर छत पर पानी की आवाज़ इतनी तेज़ होती है कि कुछ सुनाई नहीं देता। इससे भी बुरा यह है कि पचास गज नीचे ज़मीन पर मौजूद कोई भी जीव ऊपर हो रहे शोर को सुने बिना नहीं रह सकता। वह ऊपर देखता है, मचान को देख लेता है और जान जाता है कि आप वहाँ हैं। लेकिन मूसलाधार बारिश में पूरी रात पेड़ पर बैठे रहना कोई मज़ाक नहीं है, चाहे आपने ओवरकोट या वाटरप्रूफ केप ही क्यों न पहना हो। बारिश में किसी भी चीज़ के अंदर घुसने की अजीब आदत होती है।

डॉन ने तिरपाल का उपयोग करने का फैसला किया और मैं कुनमारी और थंगावेलु के साथ-साथ बुंडा नामक एक अन्य व्यक्ति के साथ उसकी मचान में मदद करने के लिए चला गया।

नाले के एक किनारे पर एक रीठा का पेड़ था और डॉन ने उस पर बैठने का फैसला किया। यह उस खाई से लगभग तीस गज की दूरी पर था जिसमें हमारे पहले शिकार का सिर और पैर पड़े थे और यहाँ से नाले के दोनों ओर का नजारा दिखाई देता था। इस पेड़ का एक तीसरा फायदा भी था। बाघ, पिछली रात हमारे शिकार का पीछा करते हुए, एक तीसरे नाले से होकर आया था, जो कि एक उथली खाई जैसी थी, और रीठा का पेड़ ठीक उस जगह के सामने था जहाँ यह खाई मुख्य नाले से मिलती थी। इसलिए यह रणनीतिक रूप से एक बेहतरीन जगह पर था और खेल के सभी नियमों के अनुसार, अगर किस्मत अच्छी रही तो बाघ कहीं न कहीं दिखाई देगा और डॉन को एक अच्छी तस्वीर लेने का मौका मिल जाएगा।

हमारे तीनों साथियों ने मचान को बड़ी कुशलता से तैयार कर दिया। आसमान में बादल छाने लगे थे, इसलिए डॉन ने मचान के चबूतरे के ऊपर तिरपाल बिछाने का फैसला किया। उसने एक लकड़ी काटकर इस तरह रखी कि दोनों तरफ ढलान बन जाए, जिससे पानी आसानी से बह जाए। तिरपाल को पत्तियों और शाखाओं से इस तरह छिपा दिया गया था कि वह बिल्कुल भी दिखाई न दे। हम चारों शाम करीब 5 बजे वहां से चले गए और डॉन को कैमरा देकर एक रोमांचक रात की तैयारी में जुट गए।

मैं पहले आपको वह बात बताऊंगा जो मैंने हमारी बांस की झोपड़ी से सुनी, और फिर डॉन को कहानी का अपना हिस्सा बताने दूंगा।

थंगावेलु ने जल्दी ही खाना परोस दिया, और फिर मैं बरामदे में बेंत की कुर्सी पर

बैठकर पाइप पीते हुए रम और नींबू का रस पी रहा था। अंधेरा अभी-अभी हुआ था और जंगल उस पल शांत था। नदी के उस पार से चित्तीदार हिरणों की 'ऐओ! ऐओ! ऐओ!' की आवाज़ आई, वहीं पास के किनारे पर बैठा एक नर सांभर कर्कश आवाज़ में 'धंक! धंक! ऊ-ओंक!' कहकर चेतावनी दे रहा था, और थोड़ी दूर पर बैठी एक मादा सांभर ने खतरे का संकेत सुना और थोड़ी ऊँची, लेकिन उतनी कर्कश नहीं, आवाज़ में जवाब दिया 'वॅांक! वॅांक! वॅांक!'

मेरे दाहिनी ओर अंधेरे में बस थोड़ा सा दिखाई दे रहे बरगद के पेड़ पर बैठे लंगूर बंदरों का झुंड बहुत पहले ही सो चुका था। सिवाय पहरेदार के, जो अपनी ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास रखते हुए पूरी तरह जागा हुआ था। बाद में, जब उसे नींद आने लगी, तो उसने अपने सहायक को जगाया, जो अगले बड़े नर लंगूर को जगाने का समय आने तक पहरा देता रहा, और यह सिलसिला रात भर और दिन भर चलता रहा, क्योंकि बड़े नर लंगूरों में अनुशासन और ज़िम्मेदारी की अद्भुत भावना होती है।

बारी-बारी से, सबसे ऊंचे पेड़ की चोटी पर बैठे एक चौकीदार का कर्तव्य होता है, जो संभावित खतरे की तलाश करता है और मादाओं और बच्चों को अप्रत्याशित हमले से बचाता है।

लंगूर चौकीदार ने सांभर और चित्तीदार हिरण की आवाज सुनी और अपने कबीले के सदस्यों को जगाने के लिए जोर से चिल्लाया: 'हर्र! हा-हर्र! हर्र! हा-हर्री!' मैं कल्पना कर सकता था कि मादा लंगूरें अपने बच्चों को अपनी छाती से लगाए हुए बरगद के पेड़ पर बैठी रात के अंधेरे में नीचे झाँक रही थीं, ताकि हत्यारे का पता लगा सकें और यह अनुमान लगा सकें कि वह कहाँ से उन पर हमला कर रहा होगा।

चित्तीदार हिरण और सांभर की आवाज़ों से मैं बाघ के आने की दिशा का पता लगा सकता था। वह नदी पार करके पानी पी रहे एक हिरण को डराकर ले गया। 'ख्र्र! ख्र्र!' वह छोटा जानवर चिल्लाया। उसकी आवाज़ हिरण प्रजाति की किसी भी अन्य आवाज़ से बिल्कुल अलग है। यह कुत्ते के कर्कश भौंकने जैसी लगती है और इसी कारण इस छोटे से जीव को, जिसे मुंटजैक भी कहा जाता है, बोलचाल की भाषा में इसी नाम से जाना जाता है।

अब बाघ का चेहरा तिरस्कारपूर्ण था। वह जानता था कि उसका भेद खुल गया है और अब अपनी हरकतों को छुपाने की कोशिश करना उसके लिए अपमानजनक होगा। 'ऊ-ऊंग!' की दहाड़ उसने लगाई, और फिर अपनी आवाज़ को थोड़ा नरम

लेकिन गहरी 'आउंग! उघ; उघ-आ!' में बदल दिया। उसकी आवाज़ में न तो गुस्सा था और न ही वह भूखा था।

जैसे जादू से, उसकी दहाड़ की आवाज़ सुनते ही जंगल में गहरी शांति छा गई। हिरण और बंदर थम गए। नदी किनारे बैठे मेंढक भी टर्राना बंद कर दिए। सभी जीव-जंतु, बड़े और छोटे, जान गए कि जंगल का राजा शिकार की तलाश में निकला है और वे डर से कांप रहे थे। केवल एक अकेला लकड़ी का शेर, जो हमारे बांस के केबिन के शौचालय में पानी के बर्तन के पीछे आराम से बैठा था, उस धारीदार आतंक की चुनौती को नज़रअंदाज़ कर रहा था। शायद उसने सुना ही न हो। शायद उसे बाघ जैसे बड़े और भद्दे जीवों से कोई मतलब न हो। शायद उसकी समस्या कुछ और ही थी।

फिर नदी के किनारे सन्नाटा टूट पड़ा: 'हा-आह! हा-आह! हा-आह!'

पैंथर बहुत पहले लौट आया था और निस्संदेह हमारे बड़े शिकार को खाकर अपना पेट भर चुका था। इस सारी हलचल ने उसे परेशान कर दिया था, जबकि उसके बड़े, गुस्सैल और दबंग चचेरे भाई, बाघ की दहाड़ों ने उसे बेचैन और चिड़चिड़ा बना दिया था। वह उस विशाल आतंक की निकटता से नाराज़ था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। गुस्से में वह बार-बार 'हा-हा! हा-आह! हा-आह!' दोहरा रहा था, यह तय करते हुए कि वहीं रुके या चुपके से निकल जाए।

मुझे पता था कि डॉन ने भी ये सारी आवाजें सुनी होंगी, और वह बाघ की तस्वीर लेने की तैयारी कर रहा होगा, जो इस समय तक उस भैंस के बच्चे के अवशेषों के पास होना चाहिए जिसे उसने पिछली रात मारा था, और उस जीवित चारे के पास जिसे हमने पास में ही बांध रखा था।

जंगल में फिर से सन्नाटा छा गया। नदी किनारे मेंढक फिर से टर्राने लगे और रात और भी गहरी होती चली गई। मैंने आसमान की ओर देखा और सोचा कि मुझे तारे क्यों नहीं दिख रहे। कुछ ही पल बाद मुझे इसका जवाब मिल गया जब हमारी झोपड़ी के पीछे पहाड़ियों की श्रृंखला में गरज सुनाई दी। बार-बार बिजली चमकी और आसमान से बिजली हम पर बरसने लगी, हर गरज से पहले चमकीली बिजली की लकीरें आसमान में ऐसे फैल रही थीं मानो किसी विशाल नक्शे पर नदियाँ बनी हों।

फिर हवा चलने लगी। दूर से उसकी गरज सुनाई दे रही थी, जैसे वो पहाड़ी से नीचे आ रही हो, मानो किसी भयानक चीख की तरह, उसकी आवाज़ लगातार तेज़

होती जा रही हो, जब तक कि वो हमारे जंगल तक नहीं पहुँच गई। मुझे पेड़ों के ज़ोर से हिलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, उनकी डालियाँ दर्द से टकरा रही थीं, हालाँकि अँधेरा होने के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और हमारी झोपड़ी के बाँस के खंभे हिल रहे थे, तनाव में थे, चरमरा रहे थे और कराह रहे थे। मुझे लगा कि छप्पर की छत उड़ जाएगी।

फिर अचानक, जितनी तेज़ी से हवा आई थी, उतनी ही तेज़ी से चली गई। मैं उसे दूर जंगल की चोटियों के पार क्षितिज तक जाते हुए सुन सकता था। लेकिन बिजली की तीव्रता बढ़ती गई, और गरज की आवाज़ें और भी नज़दीक और तेज़ होती गईं। अचानक एक विशाल पेड़ पर बिजली गिरी। वह चीर गया और एक तेज़ रोशनी से पूरा जंगल दिन के उजाले की तरह जगमगा उठा, हमारी झोपड़ी के इतने करीब कि बिजली की गड़गड़ाहट पल भर में सुनाई दी। मुझे अपने सोप-नट के पेड़ पर बैठे डॉन की याद आई और मैं चिंतित हो गया। हालाँकि, वह पेड़ न तो बहुत बड़ा था और न ही बहुत ऊँचा, और उस पर बिजली गिरने की संभावना भी कम ही थी, क्योंकि वहाँ चुनने के लिए कई ऊँचे पेड़ मौजूद थे।

बारिश झोपड़ी तक पहुँच गई और एक पल के लिए तो ऐसा लगा जैसे पहाड़ी से नीचे की ओर आ रही हो, झोपड़ी तक पहुँचने से बहुत पहले ही। मैंने सोचा, डोनाल्ड को बहुत खुशी हुई होगी कि उसने अपनी मचान के ऊपर तिरपाल की छत लगाने का फैसला किया।

बारिश झोपड़ी तक पहुँच गई और एक पल के लिए गिरते पानी के शोर में गरज भी दब गई। मेरे ऊपर घास की छत से सरसराहट की आवाज़ आ रही थी, और सौ जगहों से पानी टपक रहा था, टपक रहा था और हमारे सामान पर हर दिशा में बह रहा था। जो कुछ ही पल पहले एक आरामदायक झोपड़ी थी, वह अब पानी से लथपथ एक गड्ढा बन गई थी, फर्श पर पानी के गड्ढे थे और दूर-दूर तक कोई सूखी जगह नज़र नहीं आ रही थी। मैं बैठा रहा, मन ही मन उन मज़दूरों को कोस रहा था जिन्होंने छत का इतना घटिया काम किया था।

कोलाहल से जागकर, थंगावेलु (शायद वह सपने में देख रहा था कि दर्जन भर पत्नियां पांच रुपये प्रति पत्नी के हिसाब से बिक रही हैं), अंदर भागा आया, अपने चारों ओर भीगी हुई चीजों को देखकर अचंभित हुआ, और फिर उनके लिए आश्रय खोजने की व्यर्थ कोशिश में इधर-उधर भटकने लगा।

एक घंटे तक भारी बारिश जारी रही और फिर हल्की बूंदा-बांदी में बदल गई।

'क्वैक-कर! क्वैक-कर! क्वैक-कर! क्वैक-कर!' मेंढकों की आवाज़ अब बदल गई थी। नदी और आसपास के छोटे-छोटे तालाबों से निकलकर हज़ारों मेंढकों की यह मिलन की पुकार थी, जो मानसून के आगमन का स्वागत कर रही थी। मैं उठा और सोने की तैयारी करने लगा। मुझे लगा कि बांस के पलंग के ऊपर की बजाय उसके नीचे ही सूखी जगह है।

उसी क्षण मुझे एक क्रोधित हाथी की चीख सुनाई दी। यह नाले और डॉन के मचान की दिशा से आ रही थी। थंगावेलु, जो अभी भी इधर-उधर भटक रहा था, उसने भी यह आवाज़ सुनी। वह रुक गया और हम दोनों ने एक-दूसरे को चिंता से देखा। फिर हम दोनों बेहतर ढंग से सुनने के लिए भीगे हुए बरामदे में चले गए।

हाथी फिर से चीखा। यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि चीख नाले से आ रही थी। तभी मुझे दूर से कुछ चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, जो लगातार बारिश की वजह से धीमी थी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि यह किसी इंसान की आवाज़ थी, जो कुछ शब्द बोल रहा था जिन्हें मैं समझ नहीं पा रहा था। आवाज़ उसी दिशा से आ रही थी जहाँ से हाथी की चीख आई थी। नाले में डोनाल्ड के अलावा और कौन हो सकता था?

फिर अचानक मुझे सच्चाई का अहसास हुआ। मेरा बेटा खतरे में था: हाथी उसे मचान से बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था, और वह उसे भगाने की कोशिश कर रहा था। और वह निहत्था था।

मुझे इस स्थिति की विडंबना समझ में आई और मैंने अपने अति आत्मविश्वास और लापरवाही के लिए खुद को कोसा। मुझे बेहतर पता होना चाहिए था; उस लड़के की कोई गलती नहीं थी। हम निहत्थे थे। क्योंकि हम अपने साथ कोई हथियार नहीं लाए थे, उन्हें पीछे छोड़ आए थे क्योंकि हम फोटोग्राफी के लिए आए थे और गोली चलाने के लालच में नहीं पड़ना चाहते थे!

एक हाथ में दो लालटेन में से बड़ी वाली और दूसरे हाथ में चंदन की लकड़ी की छड़ी लेकर मैं दौड़ पड़ा और भीगे हुए जंगल में लड़खड़ाते हुए जितनी तेज़ी से हो सके नाले तक आधा मील का रास्ता तय करने लगा। मुझे ठंड का ज़रा भी एहसास नहीं था और न ही इस बात का कि मैंने सिर ढका हुआ था और मेरे पास कोट नहीं था, क्योंकि बारिश ने मुझे पूरी तरह भिगो दिया था।

मैं काफी दूर तक पूरी ताकत से भागा, तभी मुझे अपने पीछे एक और लालटेन हिलती हुई दिखाई दी। वह थंगावेलु था, जो दूसरी लालटेन लिए खड़ा था। वह डोनाल्ड से बहुत प्यार करता था, और मैं उसकी मौजूदगी के लिए आभारी था। उस भयानक रात में, घोर अंधेरे में और निहत्थे, कोई और नौकर उस जगह जाने की हिम्मत नहीं करता, जहाँ एक जंगली हाथी गुस्से में उत्पात मचा रहा था।

फिर हमें चीरने-फाड़ने जैसी आवाज़ सुनाई दी, और एक ज़ोरदार धमाका हुआ। मैं समझ गया कि हाथी ने उस पेड़ को गिरा दिया है जिस पर डॉन की मचान थी। मैंने तेज़ी से दौड़ने की कोशिश की और थंगावेलु मेरे साथ-साथ दौड़ने लगा। लेकिन मैं उसकी बराबरी नहीं कर पाया, इसलिए हम दौड़ते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, ताकि हाथी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो और वह डोनाल्ड से दूर चला जाए।

डोनाल्ड खुद इस कहानी का अपना हिस्सा इस तरह बताते हैं: 'मुझे नहीं पता कि मेरे पिता अपनी किताबें लिखते समय मुझे उनमें क्यों शामिल करते हैं। एक तो मुझे अपने बारे में लिखना और बात करना बिल्कुल पसंद नहीं है। असल में, अब मुझे यह पूरी घटना "छोटी सी बात का बतंगड़" लगती है।'

पिताजी ने बताया था कि यह सब कैसे शुरू हुआ और मैं दुधवाला की टॉर्च और कैमरे के साथ रीठा के पेड़ पर कैसे बैठा था, ताकि उस बाघ की तस्वीर ले सकूँ जिसने पिछली रात हमारे चारे को मारकर खा लिया था। इतना कम बचा था कि मैंने पास में ही एक ज़िंदा रीठा बाँधने का फैसला किया ताकि जब बाघ आस-पास घूमे, जैसा कि बाघ आमतौर पर अपने शिकार के पास जाने से पहले करते हैं, तो उसे लुभा सकूँ।

मचान आरामदायक था; पहले बछड़े का सिर और पैर मेरे बाईं ओर लगभग तीस गज की दूरी पर एक खाई में पड़े थे, जबकि मेरे नीचे वह नाला था जिसके बारे में हमारे शिकारी कुनमारी ने बताया था कि यह बाघों और तेंदुओं का नदी की ओर जाने का नियमित मार्ग है। इसमें एक छोटी जलधारा प्रवेश करती थी जिसका उपयोग बाघ ने पिछली रात किया था। मेरे दाईं ओर छाया में, और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, हमारा तीसरा चारा—एक जीवित—एक और भैंस का बछड़ा था। दूसरे चारे को पिछली रात नदी के उस पार एक तेंदुआ ने मार डाला था।

अंधेरा छाते ही हिरण और लंगूर बंदरों ने खतरे की चेतावनी भरी आवाजें निकालीं और मुझे पता चल गया कि कोई बाघ या तेंदुआ आसपास है—जानवरों की आवाज

सुनकर तो यही लग रहा था कि शायद बाघ ही होगा। तभी बाघ ने काफी पास दहाड़ मारी, और थोड़ी देर बाद ही मुझे दूर से एक तेंदुआ की दहाड़ सुनाई दी। संभवतः वही तेंदुआ था जिसने हमारे दूसरे शिकार को मारा था।

'मैं अपनी तस्वीर लेने के लिए तैयार हो गया। फिर भी, मेरी इच्छा थी कि कैमरे की जगह मेरे हाथों में राइफल होती। बूढ़ा आदमी हमेशा गोली चलाने के बजाय तस्वीरें खींचने की बात करता है, और मुझे लगता है कि वह सही है, लेकिन फिर भी मन में यह इच्छा थी। मुझे अब बहुत तीव्र इच्छा हो रही थी कि काश मेरे पास मेरी .423 राइफल होती।'

अगली आवाज़ जो मैंने सुनी, वह एक ज़ोरदार धमाका और ज़िंदा शिकार की चीख थी। मैं जानता था कि यह एक बाघ था, पैंथर नहीं, जो बछड़े को मार रहा था, क्योंकि पैंथर अपने शिकार का गला घोंट देता है, जो स्वाभाविक रूप से संघर्ष करता है। संघर्ष की कोई आवाज़ नहीं थी, क्योंकि बछड़ा पहले ही गर्दन टूटने से मर चुका था।

मैंने कैमरा नीचे और दाईं ओर, जीवित शिकार की दिशा में घुमाया और स्विच बटन दबा दिया। एक तेज़ रोशनी चमकी और बाघ ने चौंककर 'ग्र-आ-आहम!' की आवाज़ निकाली। इसके बाद झाड़ियों के सरसराने की हल्की सी आवाज़ आई। मैं समझ गया कि वह चला गया है।

'मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं बचा था, इसलिए मैं एक अच्छी तस्वीर की उम्मीद में संतुष्ट होकर सोने के लिए लेट गया। मचान थोड़ा सख्त था और मेरी इच्छा थी कि मैं वापस अपनी बांस की झोपड़ी में होता।'

उसके बाद मुझे नींद आ गई होगी, क्योंकि मैं अचानक चौंककर उठा तो देखा कि तेज़ हवा में पेड़ के झुकने और ज़ोर से हिलने से मेरी मचान बुरी तरह झूल रही थी। रात बेहद अंधेरी थी, तभी बिजली चमकी और उसके तुरंत बाद गरज की तेज़ आवाज़ आई, जिससे मुझे पता चला कि हम एक भयंकर तूफान में फंसने वाले हैं। पेड़ से डालियाँ और पत्ते टूटकर मेरे चेहरे के पास से गुज़रे, जबकि मेरी तिरपाल की छत आधी उड़ गई। तिरपाल का एक सिरा टिका रहा, वह कोना जिसे हमने पेड़ के तने से बाँधा था, जबकि दूसरा सिरा हवा में ज़ोर से हिल रहा था, डालियों से टकराकर ज़ोरदार आवाज़ कर रहा था।

फिर अचानक हवा थम गई और बारिश शुरू हो गई। यह बारिश से ज़्यादा झरने

जैसी थी। मैंने दुधवाला का कैमरा और टॉर्च बंद करके उनके डिब्बे में रख दिए और उम्मीद की कि पानी अंदर न जाए। मैं खुद एक स्पंज की तरह था; इतना पानी से भरा हुआ कि ऐसा लग रहा था जैसे पानी मेरे अंदर से बह रहा हो। और बारिश लगातार होती रही।

अब कुछ असामान्य घटना घटी। बाघ वापस आ गया। शायद बिजली गिरने से उसे लगा कि भाग जाना उसकी मूर्खता थी। उसने जो देखा होगा वह केवल बिजली की एक चमक रही होगी, इससे ज्यादा कुछ नहीं। इसलिए वह वापस आया और उस बछड़े को नोंचने लगा जिसे उसने कुछ देर पहले ही मारा था।

'मैंने दूसरी तस्वीर लेने की हिम्मत नहीं की। भगवान जाने दुधवाला के कैमरे का क्या होगा, मैंने सोचा, अगर मैंने उसे मूसलाधार बारिश में खोला तो। कुछ भी करने की कोशिश करने का कोई फायदा नहीं था; गिरती बारिश में मेरी टॉर्च की रोशनी भी बाघ तक नहीं पहुंच पा रही थी।'

'आखिरकार बारिश थोड़ी कम हुई और मुझे बाघ के कुतरने की आवाज़ ज़्यादा साफ़ सुनाई देने लगी। तभी मुझे एक नई आवाज़ सुनाई दी: नाले के किनारे से आते हुए विशाल कदमों की आहट, नीचे बहते तेज़ पानी में से गुज़रते हुए, जिसकी कलकल की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी। एक हाथी!'

'शायद वहां बहुत ज्यादा गीलापन था इसलिए वह खा नहीं पा रहा था और बस आश्रय लेना चाहता था, क्योंकि वह कोई शाखा नहीं तोड़ रहा था। वह धीरे-धीरे पास आता गया।'

'बाघ ने भी यह आवाज सुनी और उसे पसंद नहीं आई। उसने एक भयानक "व्र-आह!" की आवाज निकाली। आम तौर पर वह चुपचाप खिसक जाता, क्योंकि बाघ और हाथी एक-दूसरे से यथासंभव बचते हैं। लेकिन यह बाघ अपवाद था। वह खाना खा रहा था।'

इसके अलावा, वह क्रोधित था। इसलिए वह बार-बार गुर्राया: "व्र-आह! व्र-आह! व्र-आह!"

कीचड़ की आवाज़ अचानक बंद हो गई। हाथी ने खतरे और चेतावनी के संकेत के रूप में अपनी सूंड ज़मीन पर पटकने की कोशिश की। लेकिन उसकी सूंड ठोस ज़मीन के बजाय कीचड़ और पानी से टकराई, और उससे निकलने वाली आवाज़ किसी ऐसे व्यक्ति की तरह थी जिसे ज़ुकाम हो और वह अपनी नाक साफ कर रहा हो।

'इससे बाघ और भी ज्यादा चिढ़ गया और वह पहले से भी ज्यादा जोर से गुर्राया, और हाथी शायद तब वहां से चला जाता और बाघ को उसकी दावत के लिए छोड़ देता, और मुझे शांति से रहने देता, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम के कारण ऐसा नहीं हुआ।'

अचानक हवा का एक झोंका आया और तिरपाल का किनारा झंडे की तरह लहराते हुए हाथी के सिर के ठीक ऊपर पेड़ की शाखाओं से टकराने लगा। इस नई आवाज़ को सुनकर बाघ उछल पड़ा और हाथी के बगल में झाड़ियों में जा गिरा। इससे विशालकाय जानवर चौंक गया और क्रोधित हो गया; भ्रमित और भयभीत होकर, उसे समझ नहीं आ रहा था कि बाघ उस पर हमला करना चाहता है या उसके सिर के ऊपर लहराती वह अजीब वस्तु खतरे का संकेत दे रही है। उसने ऊपर देखा और सब कुछ देखा: तिरपाल, मचान और मैं!

जंबो ने एक भयानक चीख मारी और सीधे साबुन के पेड़ की ओर दौड़ा, उसका माथा धड़ाम से पेड़ के तने से टकराया। भारी बारिश ने मिट्टी को गीला और ढीला कर दिया था, पेड़ का तना सीधा खड़ा रहने के बजाय तिरछा हो गया, और मैं अच्छी तरह जानता था कि एक-दो धक्के और लगते ही वह ज़मीन पर गिर जाएगा।

जंबो फिर से चीखा, थोड़ा पीछे हटा और स्पष्ट रूप से आगे हमले के लिए तैयार हो रहा था। हालांकि बहुत अंधेरा था, मैं उसकी आकृति को धुंधला सा देख पा रहा था, वह इतना करीब था कि लगभग हाथ की पहुँच में, ठीक मेरे बाईं ओर। उस गहरे काले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेदी की एक हल्की सी लकीर उसके दांतों को दर्शा रही थी और पुष्टि कर रही थी कि वह एक बैल था। इसके अलावा, अब मैं उसकी गंध भी महसूस कर सकता था। बारिश ने उसे अच्छी तरह से धो दिया होगा, इसके बावजूद उसके शरीर से एक जंगली हाथी की तीखी, अचूक गंध आ रही थी, जो विशेष रूप से तब तेज होती है जब जानवर गुस्से में होता है।

अगले झटके में साबुन का पेड़ गिर जाएगा और मुझे भी अपने साथ ले जाएगा। इसलिए मैं पागलों की तरह, अपनी पूरी ताकत से, जो भी शब्द मेरे दिमाग में आए, चिल्लाने लगा। मेरी आवाज़ का असर हुआ—कम से कम उस पल के लिए। हाथी ने अपना हमला रोक दिया और फिर से दहाड़ा। अगला पल ही मेरा भाग्य तय करेगा।

'मेरी इलेक्ट्रिक टॉर्च! मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा? रोशनी से वह ज़रूर डरकर भाग जाएगा। मैंने जल्दी से उसे उठाया और सीधे हाथी के चेहरे पर

चमकाया।'

खेल के सारे नियमों के हिसाब से तो उसे तुरंत पीछे हट जाना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय, वह पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाया, और एक पल बाद मुझे ऐसा लगा जैसे किसी स्टीमरोलर ने मुझे टक्कर मार दी हो, जब उसने अपना माथा दूसरी बार रीठा के पेड़ के तने से टकराया। धीमी गति से, मानो जानबूझकर ऐसा किया गया हो, पेड़ जड़ों के टूटने की तेज़ आवाज़ के साथ झुक गया। फिर, गति पकड़ते हुए, वह ज़मीन पर गिर पड़ा, मुझे, मचान और सब कुछ अपने साथ ले गया।

जब मुझे लगा कि मैं गिर रहा हूँ, तो मैंने अपने सिर के ऊपर की शाखा को पकड़ लिया ताकि झटके के अलावा मुझे कोई शारीरिक चोट न लगे। मैंने तुरंत सोचा। मेरे दिमाग में सबसे पहला विचार भाग निकलने का आया; लेकिन मैं सूखे पेड़ की शाखाओं में उलझ गया था और मुझे अपनी टॉर्च नहीं मिल रही थी। गिरते समय मैंने शाखा को पकड़ने के लिए टॉर्च छोड़ दी थी। पता नहीं वह कहाँ चली गई। चारों तरफ घना अंधेरा था और मचान बनाने वाले बाँसों के जाल से, जो अब मेरे चारों ओर बिखरे हुए थे, और पेड़ की शाखाओं से बाहर निकलना काफी मुश्किल होता, और इससे हाथी मेरे पास आ जाता।

हाथी ने हवा में लहरा रहे तिरपाल के एक सिरे को ढूंढकर और अपनी सूंड से उसे पकड़कर समस्या का समाधान कर दिया। एक सिरा अभी भी एक शाखा से बंधा हुआ था, इसलिए उसने उसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया और मैं कुछ कदम दूर दूसरे टुकड़े पर उसके पैर पटकने और रौंदने की आवाज सुन सकता था।

मैं शाखाओं के बीच दुबक गया, लेकिन यह देखने के लिए झाँका कि वह कितना करीब है। चारों ओर घना अंधेरा था, लेकिन उसकी हरकतों से पता चल रहा था कि वह पंद्रह फीट के भीतर ही है। मैं उसकी तेज़ गंध महसूस कर सकता था और उसकी साँसें सुन सकता था, क्योंकि वह अपनी सूंड से तिरपाल के किनारे को ज़मीन पर पटक रहा था, उस पर पैर रख रहा था और उसे टुकड़े-टुकड़े कर रहा था। यह शोर एक-दो मिनट तक जारी रहा, तभी एक और आवाज़ मुझ तक पहुँची। मुझे आदमियों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी।

'ऐसा लग रहा था कि वे पास आ रहे हैं, और जल्द ही मुझे पिताजी की आवाज़ और एक और आवाज़ सुनाई दी, जिसे मैंने थंगावेलु की आवाज़ के रूप में पहचान लिया। दूर से आती टिमटिमाती रोशनी से पता चला कि वे लालटेन या मशालें लिए

हुए थे। अचानक बैल ने तिरपाल पीटना बंद कर दिया। वह एक पल के लिए चुप रहा और फिर घबराहट और गुस्से में अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर पटका। मैंने उसे पास आते आदमियों की ओर मुड़ते हुए सुना।'

'पिताजी और थंगावेलु दौड़ते हुए आ रहे थे और चिल्ला रहे थे। मुझे पता था कि मेरे पिताजी निहत्थे हैं और यह देखना बहुत नाजुक स्थिति थी कि क्रोधित बैल उन पर हमला करेगा या खुद पीछे हट जाएगा। शायद अगर मैं चिल्लाना शुरू कर दूं तो उस दुष्ट जानवर को भ्रमित करने में मदद मिलेगी।'

तभी, पानी से भरे नाले में लड़खड़ाते और कीचड़ उछालते हुए दो आदमी आए, अपने हाथों में लालटेन लिए हुए और चुड़ैलों की तरह चीखते हुए। बूढ़ा आदमी चिल्ला रहा था, "डॉन, क्या तुम ठीक हो?" लेकिन मेरी हिम्मत नहीं हुई जवाब देने की। हाथी बहुत करीब था और मेरी आवाज़ उसे मुझ पर झपटने के लिए उकसा सकती थी।

टिमटिमाती रोशनी में मुझे उस विशालकाय जीव का रूप दिखाई दिया, जो उनकी ओर मुँह करके खड़ा था, उसकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, जो किसी हाथी के हमले की तैयारी का स्पष्ट संकेत था। मुझे उसका ध्यान भटकाने के लिए कुछ करना होगा, इसलिए मैंने जोर से चिल्लाया और चिल्लाता रहा।

हाथी ने तीखी चिंघाड़ भरी। पिताजी और थंगावेलु, जिन्होंने उसे देख लिया था, दौड़ना बंद कर दिया और लालटेन ऊपर उठाकर उस शोर-शराबे में शामिल हो गए, चिल्लाते हुए। पिताजी कुछ ऐसा हास्यास्पद कर रहे थे कि उस समय हम सब जिस खतरे में थे, उसके बावजूद मुझे लगभग हंसी आ गई। वह एक छड़ी लहरा रहे थे।

हम सब जो चीख-पुकार मचा रहे थे, वो बहुत भयानक लग रही होगी। लेकिन, भगवान का शुक्र है, बैल ने भी ऐसा ही सोचा और घबरा गया। वह अचानक मुड़ा और तेज़ी से किनारे पर चढ़ गया। मैंने पेड़ से उतरकर पिताजी और थंगावेलु के पास पहुँचने में ज़रा भी देर नहीं की।

“क्या आप ठीक हैं?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

'मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। वह मुझसे भी बदतर हालत में लग रहा था और चीखने-चिल्लाने से उसकी आवाज बैठ गई थी।'

"धन्यवाद। मैं ठीक हूँ," मैंने उसे आश्वस्त किया।

"भगवान का शुक्र है," उसने कहा, और फिर, "चलो यहाँ से चलते हैं।"

"मैं इस भावना से पूरी तरह सहमत हूं। और जल्दी से," मैंने कुछ हद तक

अनावश्यक रूप से कहा।

'हम साबुन के पेड़ से जितनी जल्दी हो सके दूर भाग गए। आखिर हाथी भी अलग-अलग स्वभाव के होते हैं, और यह अपना मन बदल सकता है और वापस लौट सकता है।'

अगली सुबह हम दुधवाला का कैमरा और डॉन की टॉर्च वापस लेने गए। वहाँ हमें एक चौंकाने वाला दृश्य देखने को मिला।

शायद कैमरा गिरते हुए पेड़ से दूर जा गिरा था, या शायद तिरपाल में फंस गया था। खैर, जानबूझकर या अनजाने में, हाथी ने उसे कुचल दिया था। दुधवाला का कैमरा और डोनाल्ड की बाघ के शिकार खाते हुए टॉर्च से ली गई कीमती तस्वीर गायब हो गई! लेकिन हमें टॉर्च सही सलामत मिल गई।

बाद में उसी दिन हम नदी के उफनते किनारों पर बैठे, और नदी के दूसरी ओर चित्तीदार हिरणों और लंगूर बंदरों को चरते-खेलते देख रहे थे। पिछली रात की तेज़ हवा ने नदी के उस पार स्थित विशाल पेड़ से हज़ारों जंगली अंजीर गिरा दिए थे। लगभग तीस चित्तीदार हिरणों का एक झुंड उन अंजीरों को खा रहा था, जबकि लंगूर बंदरों का वह परिवार, जिसने पहले ही अंजीर ढूंढ लिए थे और उन्हें खा रहा था, अब इतना भर चुका था कि और कुछ नहीं खा सकता था। वे आपस में और चित्तीदार हिरण के बच्चों के साथ बच्चों की तरह खेल रहे थे। कभी-कभी एक अधेड़ लंगूर पेड़ की डाल से उछलकर चौंकी हुई चित्तीदार हिरणी की पीठ पर चढ़ जाता, उसके कान नोचता या उसकी छोटी पूंछ खींचता और फिर वापस कूद जाता। चित्तीदार नर हिरण और बड़े लंगूर दोनों ही ऐसी हरकतों से नाराज़ थे, लेकिन हिरण के बच्चे उछल-कूद कर छोटे बंदरों के साथ पकड़ने-पकड़े खेलने की कोशिश कर रहे थे। यह एक अनोखा और सुंदर दृश्य था।

लेकिन जब हम देख ही रहे थे, तभी अचानक उस जगह मौत का साया मंडरा उठा जहाँ सब कुछ इतना शांत था। हिरणों का झुंड तो चला गया था, लेकिन बंदर अभी भी उछल-कूद कर रहे थे, तभी जंगल से एक जंग लगे भूरे रंग की लकीर निकली और उसने झुंड से थोड़ी दूर भटक गए एक अधेड़ लंगूर पर झपट्टा मारा।

एक बार तो लंगूरों का रखवाला अपने कर्तव्य में विफल हो गया था। शायद वह हमें देखने में इतना मशगूल था कि उसने उस अकेले, चुपके से रेंगते जंगली कुत्ते को नहीं देखा, जिसने सफलतापूर्वक खुश बंदरों का पीछा किया था और अब नदी के दूसरे

किनारे पर खड़ा था, जिसमें से एक बंदर उसके जबड़े से लटका हुआ था।

अधिकांश बंदर गालियां बकते हुए पेड़ की चोटी पर चढ़ गए, लेकिन लंगूर रक्षक और बड़े नर लंगूर एक साथ नीचे कूद पड़े और लंगूरों की कर्कश युद्ध-पुकार लगाई: 'होक! होक! होक! होक!' लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। युवा लंगूर पहले ही मर चुका था।

डॉन और मैं खड़े हो गए और एक साथ चिल्लाए। पिछली रात की भागदौड़ से मेरी आवाज़ पहले से ही थकी हुई थी, और वह भयानक लग रही होगी, क्योंकि जंगली कुत्ता डर के मारे मरे हुए बंदर को गिराकर कुछ गज दूर भाग गया। वहाँ रुककर वह हमें पत्थर की तरह घूरने लगा। ये जीव असाधारण रूप से साहसी होते हैं, जंगल की बड़ी बिल्लियों से भी कहीं ज़्यादा। वे मनुष्य से शायद ही डरते हैं, हालाँकि वे आम तौर पर उस पर हमला नहीं करते।

नदी उफान पर थी और इतनी गहरी थी कि उसे पार करना असंभव था, लेकिन जंगली कुत्ते को दूर भगाने के लिए चिल्लाते हुए, हम एक पुराने पेड़ के तने और शाखाओं पर चढ़कर नदी पार करने में कामयाब हो गए। यह पेड़ वर्षों पहले गिर गया था और अभी भी नदी के ऊपर फैला हुआ था। जब हमने काले चेहरे वाले छोटे लंगूर को उठाया तो उसका चांदी जैसा भूरा शरीर गर्म था, और लगभग एक गज लंबी उसकी विशाल पूंछ शव से लटक रही थी।

बंदरों का झुंड अभी भी पेड़ की चोटी पर था, देखने वाले हत्यारे पर गालियां बरसा रहा था, जबकि चौकीदार और अन्य नर बंदर बारी-बारी से जंगली कुत्ते और हम पर अपने दांत दिखा रहे थे। फिर उन्हें समझ आ गया कि उस नन्हे जीव की मौत के लिए हम ज़िम्मेदार नहीं थे और वे चुप हो गए जब हमने उसके बेजान शरीर को उठाया और उसे पेड़ की उस शाखा पर जितनी ऊंचाई तक डॉन पहुंच सकता था, रख दिया जहां बंदरों का समूह था। उसके बाद हम नदी के अपने किनारे लौट आए।

अब लंगूर नीचे आए और अपने साथी के शव को घेर लिया। कुछ ने उसे सूंघा, कुछ ने उसे छुआ। एक बूढ़ी मादा, जो शायद उसकी माँ थी, ने उसे उठाया और चूमा। उन काले चेहरों में बड़ी-बड़ी काली आँखें अजीब तरह से चमकदार और नम लग रही थीं। क्या लंगूर रोते हैं?

उस दोपहर हम 'बाघों की भूमि' से निराश होकर निकले, लेकिन हाथी के साथ अपने छोटे से साहसिक अनुभव से हम काफी समृद्ध हो गए थे। इस साल हिमालय से

हंस सामान्य से अधिक संख्या में आए थे, और डॉन ने कुछ दोस्तों के साथ हंस और बत्तख के शिकार अभियान की योजना बनाई थी। इसलिए हमें उनसे मिलने के लिए समय पर लौटना पड़ा। मैं उस दल में शामिल नहीं हुआ।

---

* देखें: आदमखोर और जंगल के हत्यारे।

आदमखोर और जंगल के हत्यारे

परिचय

समय और सभ्यता निरंतर आगे बढ़ती जा रही हैं, अपने साथ औद्योगीकरण, जीवन स्तर में सुधार और अधिक सुख-सुविधाएं ला रही हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि इसकी कीमत प्रकृति के प्रति घटती सराहना के रूप में चुकानी पड़ रही है। मानव निर्मित परियोजनाओं और निर्माणों ने प्रकृति के चेहरे को दागदार और विकृत कर दिया है। दिन के हर मिनट, सदियों पुराने, जंगल के विशालकाय वृक्ष, जिनमें से कुछ सदियों पुराने हैं, मनुष्य के हाथों से काट दिए जाते हैं, या तो उनकी लकड़ी के लिए या एक यांत्रिक संस्कृति के निरंतर विस्तार के लिए जगह बनाने के लिए: एक ऐसी स्थिति

जिसमें केवल कुछ ही लोग खुश हैं और जो कभी-कभी सबसे बर्बर अत्याचारों से भरी होती है।

वनों के विशालकाय वृक्षों के विनाश के साथ-साथ अन्य चीजें भी लुप्त हो रही हैं: जंगली जानवर, पक्षी और वे सभी जीव-जंतु जिन्होंने कभी हमारी धरती को सुशोभित किया था। वे सब लुप्त हो रहे हैं, और बहुत तेजी से!

कुछ समय पहले अमेरिकी मैदानों का भी यही हाल था, जो कभी अनगिनत बाइसन का घर हुआ करते थे और अब अपने प्राचीन निवासियों से पूरी तरह खाली हो चुके हैं। अफ्रीका भी तेज़ी से इसी राह पर चल रहा है। वे असंख्य जंगली जानवर कहाँ हैं जो कभी उस अद्भुत भूमि को सुशोभित करते थे? कुछ अभी भी बचे हैं; लेकिन बहुत पहले ही अधिकांश जानवरों की हड्डियाँ अफ्रीका की तेज़ धूप में सूख रही थीं, जो लालची, बेईमान और धन-लोभी शिकारियों की गोलियों से हज़ारों मील तक बिखरी पड़ी थीं—वे लोग जो कभी-कभी व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए हज़ारों की संख्या में विशाल हाथियों का भी शिकार करते थे।

भारत को भी बहुत कुछ खोना पड़ा है, क्योंकि यहाँ के वन्यजीवों की विविधता और संख्या में कमी चिंताजनक रही है। मैं ऐसे इलाकों को जानता हूँ जहाँ 1930 तक रात में बाघ की कराह या तेंदुआ की कर्कश आवाज़ें आम थीं, जिनके बाद हमेशा सांभर और हिरण परिवार के अन्य सदस्यों की चेतावनी भरी पुकार सुनाई देती थी। अब रात सन्नाटे में गुज़रती है, सिवाय शायद लगातार चहचहाते झींगुर के। जहाँ कभी बाघ के पदचिह्न और अन्य जंगली जानवरों के रास्ते सुबह उन जीवों की कहानी बयां करते थे जो रात में वहाँ से गुज़रे थे, वहीं आज कुछ खरगोशों के छोटे-छोटे पदचिह्न शायद यह संकेत देते हैं कि कम से कम वे विलुप्त नहीं हुए हैं।

मैं इस बात पर बहस में नहीं पड़ना चाहता कि किसी देश को उसके वन्य जीवन के लुप्त होने से इतना बड़ा नुकसान कैसे और क्यों होता है। जिसने कभी जंगल को जाना और उससे प्रेम नहीं किया, उसकी शांति और उसके निवासियों के महत्व को नहीं समझा, वह इन भावनाओं को कभी नहीं समझ सकता, न ही उस अपूरणीय क्षति और दुःख को महसूस कर सकता है जो उन लोगों को होता है जो कभी परिचित रूपों की तलाश करते हैं जो अब वहां नहीं हैं, या उन परिचित ध्वनियों को व्यर्थ ही सुनने की कोशिश करते हैं जो कभी उनके कानों को संगीत की तरह लगती थीं, लेकिन अंत में उन्हें एक विनाशकारी सन्नाटा ही मिलता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह समय आएगा जब आज जो कुछ जीवित प्राणी अपनी प्राकृतिक अवस्था में बचे हैं, वे भी विलुप्त हो जाएंगे, और मनुष्य को तब, और केवल तभी, बहुत देर से एहसास होगा कि उसने कितनी अनमोल संपत्ति को लापरवाही से खो दिया है।

मैं ये कहानियाँ न केवल इस आशा से लिखता हूँ कि ये साहसी लोगों को कुछ हद तक आनंद प्रदान कर सकें, बल्कि इसलिए भी कि ये भारत के विशाल जंगलों में और उसके आसपास रहने की परिस्थितियों को दर्शा सकें, और यह भी दिखा सकें कि 'शिकार' के उत्तम खेल में अपने कौशल और दृढ़ता को प्रदर्शित करने का एक ऐसा अवसर, जिसकी कोई भी व्यक्ति कामना कर सकता है, अब हमेशा के लिए लुप्त होने की प्रक्रिया में है।

एक

केम्पेकराई का लुटेरा

अगर आप दो समानांतर पर्वत श्रृंखलाओं की कल्पना करें, जिनकी औसत ऊँचाई समुद्र तल से चार हजार फीट या उससे अधिक है, और उनके बीच लगभग पाँच मील चौड़ी घाटी है, जो ऊबड़-खाबड़ चोटियों को छोड़कर घने जंगलों से ढकी है, तो आपके मन में मेरी कहानी की पृष्ठभूमि उभर आएगी। यह कहानी दक्षिण भारत में मद्रास प्रेसीडेंसी के उत्तरी सलेम जिले में घटित होती है।

पहाड़ उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हुए हैं, और पूर्वी पर्वत श्रृंखला दोनों में अधिक ऊँची है, जिसका दक्षिणी छोर 4,500 फीट से अधिक ऊँची गुथेरायन चोटी

पर जाकर समाप्त होता है। इसकी ढलानों पर एक सुंदर छोटा वन लॉज है, जिसे कोडेकराई बंगलो के नाम से जाना जाता है, जो दुनिया के कुछ सबसे खूबसूरत दृश्यों के बीच स्थित है। चारों ओर लहरदार पहाड़ियाँ और उभरी हुई चट्टानें दिखाई देती हैं। सुबह की धुंध के उमड़ते बादलों के ऊपर से सूरज गुलाबी रंग की छटा बिखेरता हुआ उगता है, और अंततः पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के पीछे नारंगी-कांस्य रंग की परछाइयों में अस्त हो जाता है। फिर चंद्रमा अपनी फीकी चमक के साथ उदय होता है, पहाड़ियों की चोटियों और बाद में गहरी घाटियों को अपनी प्रकाशमयी छड़ी से रोशन करता है। रात भर वह आकाश में विराजमान रहती है, नीचे के घने जंगलों में होने वाली कई त्रासदियों की मूक साक्षी बनी रहती है। मरते हुए सांभर की चीख या चित्तीदार हिरण की तीखी चीख अक्सर उसी पूर्णिमा की रात व्यर्थ ही गूंजती है, जब वे भूखे बाघ के पंजों के नीचे जंगल की ज़मीन पर अपना खून बहा देते हैं।

बीस वर्ष से भी अधिक समय पहले मुझे अफ़गानिस्तान के राजा अमानुल्लाह के भाई से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्हें उनके वतन से निर्वासित कर दिया गया था और वे कोडेकराई बंगले में रहते थे, जो उनका पसंदीदा निवास स्थान था। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें वह स्थान बहुत प्रिय था, वहाँ का नज़ारा उन्हें उनके प्रिय अफ़गानिस्तान की याद दिलाता था, बस फर्क इतना था कि कोडेकराई की पहाड़ियाँ जंगलों से ढकी थीं, जबकि उनके देश की पहाड़ियाँ बंजर थीं। लेकिन दोनों ही स्थान विशालता और स्वतंत्रता का प्रतीक थे।

केम्पेकराई पश्चिमी पर्वत श्रृंखला की निचली ढलानों पर बसा एक छोटा सा गाँव है। इसके चारों ओर कुछ खेत हैं और खेतों के पार घने बांस का जंगल है, जिसे एक पथरीली धारा काटती हुई घाटी के मध्य से बहती है।

इस घाटी को, जिसे मैंने 'मकड़ी घाटी' नाम दिया है क्योंकि यहाँ की संकरी पगडंडी पर विशाल मकड़ियाँ अपने जाले बुनती हैं, जो धारा के किनारे से होकर गुजरती है, दक्षिण की ओर फैलकर एक बड़े भूभाग में बदल जाती है जिसे मोरप्पुर घाटी के नाम से जाना जाता है, जहाँ पथरीली धारा अंततः कावेरी नदी से लगभग दस मील दूर सोपथी नामक स्थान पर चिन्नार नदी में मिल जाती है।

मैंने इस क्षेत्र का विस्तृत वर्णन इसलिए किया है ताकि पाठक थोड़ी कल्पनाशीलता से इसकी मनमोहक सुंदरता को महसूस कर सकें: सड़ती हुई वनस्पति की दुर्गंध, घने जंगल का धुंधलका, अपने शिकार की तलाश में भटकते आदमखोर

बाघ की दूर से आती आधी दहाड़, आधी कराह, उन रोमांचकारी आवाजों के बाद छा जाने वाली भयानक और भयावह खामोशी, और अंत में झाड़ियों में होने वाली हल्की सरसराहट, वह अनिश्चित सी रेंगती हुई चीज जो आदमखोर बाघ की है, जो आपकी उपस्थिति से अवगत होते ही आपको देखता है और अपनी प्रजाति के सदियों पुराने शिकार कौशल को मनुष्य की सभ्य बुद्धि के विरुद्ध आजमाता है।

लेकिन चलिए मैं अपनी कहानी शुरू करता हूँ।

केम्पेकराई में भारी भय का माहौल था, क्योंकि एक आदमखोर बाघ प्रकट हुआ था, और उसके कुछ ही निवासियों में से तीन पहले ही उसका शिकार करने के लिए जा चुके थे।

पहला शिकार, एक बूढ़ा पुजारी, एक महीने पहले मुत्तूर (जो यहाँ से ग्यारह मील दूर है) से केम्पेकराई आया था। उसका फिर कभी पता नहीं चला। इन इलाकों में हाथी बहुतायत में पाए जाते हैं और कभी-कभार ही इंसानों को मार डालते हैं, इसलिए जब पुजारी केम्पेकराई नहीं पहुँचा, तो एक खोज दल मुत्तूर की ओर रवाना हुआ। शायद दल के सदस्यों को उम्मीद थी कि उन्हें किसी हाथी के थाली जैसे पदचिह्न मिलेंगे और कुचले हुए अवशेष मिलेंगे। लेकिन उन्हें न तो कुछ मिला और न ही कुछ। केम्पेकराई से लगभग पाँच मील दूर उन्हें एक नर बाघ के पदचिह्न, रास्ते के किनारे थोड़ा सा खून, बूढ़े आदमी की लाठी और उसकी धोती मिली—बस इतना ही।

लगभग दस दिन बाद, सूर्यास्त के समय, एक महिला रात के लिए अपना घड़ा भरने के लिए सामुदायिक कुएँ पर गई। वह कभी वापस नहीं लौटी। रात आठ बजे उसके पति और उसके कुछ दोस्त लालटेन और लाठियाँ लेकर उसे ढूँढ़ने कुएँ पर गए। पीतल का घड़ा, आधा भरा हुआ, कुएँ से लगभग बीस फीट दूर एक तरफ पड़ा था, जहाँ महिला ने गाँव लौटते समय उसे गिरा दिया था। उसका कोई पता नहीं चला।

अगली सुबह, एक तलाशी दल गठित किया गया, जिसने महिला की साड़ी, बाद में एक चांदी की पायल और अंत में उसके अवशेष बरामद किए। उसका सिर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था; उसके हाथ और पैर इधर-उधर बिखरे हुए थे; उसके शरीर के शेष भाग में कुतरी हुई हड्डियों की अच्छी-खासी संख्या से पता चलता है कि बाघ वास्तव में भूखा था और उसने भरपूर भोजन किया था।

एक महीना घिसटता चला गया। केम्पेकराई एक घिरे हुए किले की तरह लग रहा था। न कोई अंदर आ सकता था, न कोई बाहर जा सकता था। कुछ झोपड़ियों के

आस-पास का इलाका, और कुछ मामलों में तो उनके अंदरूनी हिस्से भी, इंसानी गंदगी से बदबूदार थे। क्या कोई हत्यारा आस-पास ही नहीं छिपा था, जो पहले शिकार का इंतज़ार कर रहा हो जो शौच के लिए भी बाहर निकलने की हिम्मत करे? रात के समय स्थिति और भी खतरनाक हो जाती थी; लोग, अपने मवेशियों और कभी-कभी अपने कुत्तों के साथ, तंग झोपड़ियों में बंद रहते थे, जिनके दरवाज़े लकड़ी के लट्ठों या नदी से लाए गए गोल पत्थरों से बंद किए जाते थे। लोगों की दयनीय परिस्थितियों के कारण झोपड़ियाँ हर दिन और भी गंदी होती जा रही थीं।

लेकिन बेहतरीन सावधानियां भी कभी-कभी मनचाहा परिणाम देने में नाकाम रहती हैं। मेरे पुराने दोस्त बायरा, जो पुजारी थे, के दामादों में से एक, मारा, ऐसी अस्वच्छ परिस्थितियों में रहने से कतराता था। उसने अपनी पत्नी से कहा था कि चाहे आदमखोर बाघ हो या न हो, वह अपने घर के अंदर गंदगी नहीं फैलाएगा। वह हर रात शौच के लिए बाहर जाता और लौट आता था। फिर एक रात वह हमेशा की तरह उसी उद्देश्य से बाहर गया, लेकिन इस बार वह वापस नहीं लौटा। उसकी पत्नी, जो अंदर बेसब्री से इंतजार कर रही थी, मानती है कि उसने एक धीमी सी आवाज और एक कर्कश गड़गड़ाहट सुनी, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं।

पंद्रह मिनट बाद उसने शोर मचाया। कोई उसकी मदद के लिए नहीं आया, क्योंकि किसी की हिम्मत नहीं थी। दीवारों से घिरी झोपड़ियों में रहने वालों ने उसकी चीखें सुनीं। वे जानते थे कि अब मारा को बचाना नामुमकिन था। वह मर चुका था, लेकिन वे ज़िंदा थे! बाहर जाकर उसके साथ मृतकों में शामिल होने का क्या फायदा! इसलिए वे अंदर ही रहे और उस लंबी रात के बाकी समय तक उसकी चीखें सुनते रहे।

अगली सुबह, मारा के अवशेषों को खोजने का एक अधूरा प्रयास किया गया, और यह प्रयास असफल ही रहता अगर बाघ गाँव से दो सौ गज की दूरी पर झाड़ियों में जाकर बेधड़क अपना पेट न भर लेता। कुएँ पर गई महिला की तुलना में मारा का थोड़ा अधिक अवशेष बचा था। शायद उसका मांस अधिक सख्त था, या शायद बाघ को भूख कम लगी थी। कौन जाने? कम से कम उसका सिर और धड़ तो साबुत थे।

अपने दामाद की दुखद घटना से दुखी होकर, मेरे पुराने मित्र बायरा, जो उस समय केम्पेकराई में थे, अगले दिन पेन्नाग्राम गाँव तक अठारह मील की जोखिम भरी यात्रा पर निकल पड़े। कोई भी उनके साथ नहीं गया, इसलिए वे अकेले ही गए और आदमखोर को देखे या उसकी आवाज़ सुने बिना ही यात्रा पूरी की। पेन्नाग्राम पहुँचकर

उन्होंने अपने पुराने परिचित रंगा से मुलाकात की और दोनों बस से बैंगलोर आ गए। उसी रात 9 बजे मुझे दरवाजे पर कुछ आवाज़ें सुनाई दीं और बाहर जाकर मैं अपने पुराने जंगल के साथियों को फिर से देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुआ।

इस बीच, सलेम जिले ने शारीरिक, नैतिक और निस्संदेह आध्यात्मिक उत्थान के लिए 'शराबबंदी' को मार्गदर्शक नीति के रूप में अपना लिया था। लेकिन मेरे दोनों आगंतुक, जो सीधे-सादे, ईमानदार वनवासी थे और शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक रूप से इतने ऊंचे दावे नहीं करते थे, उन्होंने आधा गिलास शुद्ध ब्रांडी पीकर आनंद लिया। इस प्रकार तरोताज़ा होकर, उन्होंने शुरुआत से बात शुरू की, या यूँ कहें कि बायरा ने शुरू की, और आदमखोर के आने और उसके कारनामों का संक्षिप्त इतिहास सुनाया, जैसा कि मैंने आपको बताया है, और अंत में यह स्पष्ट रूप से कहा कि उसके दामाद, मारा का बदला लिया जाना चाहिए और यह काम मुझे करना है।

उस तर्क और मुझ पर उसके बचकाने भरोसे के सामने, मुझे कोई ठोस जवाब नहीं सूझा। तीन दिन बाद मैं पेन्नाग्राम के रास्ते पर था, जहाँ मैंने स्टुडेबेकर कार छोड़ दी। हमने स्थानीय बाज़ार से कुछ सामान खरीदा और कुछ ही घंटों में हम तीनों अठारह मील पैदल चलकर केम्परकाराई नामक छोटे से गाँव की ओर चल पड़े, जहाँ कार नहीं जा सकती थी।

अपनी मंज़िल से कुछ मील पहले हमें पगडंडी पर बाघ के ताज़े पदचिह्न मिले। कई दिनों से इस रास्ते से कोई भी यात्री नहीं गुज़रा था, और पदचिह्न साफ़ थे। मैंने ध्यान से नाप लिया और पाया कि ये पदचिह्न औसत आकार के नर बाघ के थे। इससे यह पता नहीं चला कि पदचिह्न बनाने वाला जानवर बूढ़ा था या सामान्य वयस्क था, और न ही उस समय हममें से कोई यह कह सकता था कि वह आदमखोर बाघ था या महज़ कोई और बाघ जो वहाँ से गुज़र रहा था।

केम्पेकराई के कुछ निवासी बायरा द्वारा मुझे दी गई जानकारी में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं दे सके। उनका मानना था कि आदमखोर एक विशालकाय जानवर था, लेकिन ज़ाहिर है, जब आम लोग घोर आतंक की स्थिति में होते हैं, जैसा कि पिछले कुछ हफ्तों से इन बेचारे लोगों के साथ हो रहा था, तो वे अपने उत्पीड़क को अमानवीय चालाकी और अकल्पनीय शारीरिक शक्ति और आकार का मानने लगते हैं।

अब समस्या यह थी: आगे कैसे बढ़ा जाए और क्या किया जाए? जवाब था:

शिकार का इंतज़ार करना, या किसी जीवित जानवर को चारा बनाना। इस बाघ ने ग्रामीणों की एक भी गाय या अन्य पालतू जानवर को नहीं मारा था। कम से कम अभी तक तो इसने केवल मनुष्यों को ही मारा था। सवाल यह था: क्या यह किसी जानवर को चारा बनाएगा, या फिर चारा मनुष्य होना चाहिए? जिसका एकमात्र जवाब यही था कि अगर चारा मनुष्य हो, तो वह मेरे अलावा कोई और नहीं हो सकता, एक ऐसा जवाब जिसके बारे में सोचना भी मुझे बेहद नापसंद था।

बायरा, रंगा और मैंने लगातार चाय पीते हुए गहन विचार-विमर्श किया और अंततः एक समाधान निकलने लगा। मैंने सोचा कि हमें जानवरों को चारा बनाकर देखना चाहिए, लेकिन उनका मानना था कि इंसान को चारा बनाकर—यानी मुझे—तुरंत परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। मेरी दिली इच्छा थी कि वे किसी और निष्कर्ष पर पहुँचे होते।

तीन सदस्यीय समिति में, उनमें से कोई भी दो सदस्य भारी बहुमत बना लेते हैं। तीसरे सदस्य को झुकना ही पड़ता है, लेकिन मैं अपनी बात मनवाने में कामयाब रहा और इस बात पर सहमत हो गया कि मानव चारा के साथ-साथ, कुछ चुनिंदा स्थानों पर कुछ युवा बैलों को अतिरिक्त आकर्षण के रूप में आज़माने में कोई बुराई नहीं है।

केम्पेकराई में भैंसें नहीं मिलीं, इसलिए मैंने दो बैल खरीदे। एक को हमने उस जगह बांध दिया जहाँ हमें जानवरों के पैरों के निशान मिले थे, और दूसरे को घाटी के तल में बहने वाली धारा के किनारे बांध दिया। मैं कुएँ की पत्थर की मुंडेर पर बैठ गया, मेरी पीठ उस लकड़ी के खंभे से टिकी थी जिस पर पानी निकालने के लिए रस्सी लगी थी। मैंने रस्सी के एक सिरे पर एक धातु का घड़ा बांध दिया, जिसे मैंने अपने पास मुंडेर पर रखा। ताज़ा पानी हमेशा बोतल के पानी से बेहतर होता है।

कुएँ से लगभग पचास गज की दूरी पर जंगल चारों ओर फैला हुआ था, सिवाय एक दिशा के। यहाँ किसी ने एक दर्जन या उससे अधिक पपीते के पेड़ लगाए थे। कुएँ से कभी-कभार पानी मिलने से इन पेड़ों के चारों ओर घास की झाड़ियाँ उग आई थीं, जिनमें कहीं-कहीं कुछ छोटी झाड़ियाँ भी थीं। दिन के उजाले में ये झाड़ियाँ नगण्य प्रतीत होती थीं, लेकिन जैसे-जैसे शाम ढलती और अंधेरा होने लगता, मुझे लगने लगा कि ये आदमखोर सांप के लिए आने का एक आसान रास्ता बन गई हैं, जो आसानी से पेट के बल रेंगते हुए मेरे पास आ सकता है, और मुझे उसकी मौजूदगी का पता भी नहीं चलेगा।

जब यह विचार मेरे मन में आया, तो मैंने कुएं के दूसरी तरफ अपनी स्थिति बदल ली, और सामने वाले लकड़ी के सीधे खंभे को पीठ के सहारे के रूप में इस्तेमाल किया, ताकि अब मेरा मुख पपीतों की ओर हो।

मैंने खुद को सबके सामने लाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि हम सौभाग्य से पूर्णिमा से ठीक पहले वहाँ पहुँचे थे। चाँद का उदय लगभग सूर्यास्त के समय ही हुआ, लेकिन मैं भूल गया था कि उस अंधेरे कुएँ पर अपनी रोशनी बिखेरने से पहले चाँद को पूरब की पहाड़ियों की चोटी तक पहुँचना था। ऐसा रात 8 बजे के बाद ही हो पाता और मैंने अपने जीवन के सबसे बुरे नब्बे मिनट उस बहुप्रतीक्षित चाँद की पहली किरणों का इंतज़ार करते हुए बिताए—मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता कि मैं कितना बेसब्र और बेचैन था।

इस अनुभव ने मुझे गुम्मलपुर की झोपड़ियों के सामने उस भयानक पैंथर की प्रतीक्षा में बिताए उन भयावह घंटों की याद दिला दी, और उस दिन की भी याद दिला दी जब मैं सुदूर चमाला वन क्षेत्र में सागौन के पेड़ की ओर पीठ करके बैठा था, उसी तरह के आदमखोर की एक झलक पाने की उम्मीद में; और मैं सोचने लगा कि आखिर किस मूर्खता ने मुझे फिर से ऐसी अजीब स्थिति में डाल दिया था। फिर सामान्य ज्ञान ने मुझे बताया कि शायद यही एकमात्र रास्ता था।

अंधेरा सन्नाटा पसरा हुआ था, और जानी-पहचानी चिड़िया भी मेरे पास नहीं आई। कुछ चमगादड़ कुएँ में उतरकर, दिनभर की गर्मी के बाद अपनी प्यास बुझाने के लिए, साफ पानी को हल्के-हल्के चुम्बनों की तरह पी रहे थे। मैंने अपनी आँखें गड़ाकर न केवल पपीते के पेड़ों की ओर, बल्कि चारों ओर देखा। कल्पना ने आदमखोर सांप की आकृति गढ़ दी, जो धीरे-धीरे रेंगता हुआ, चुपके से मेरी ओर आ रहा था, मेरी दृष्टि सीमा से ठीक बाहर। मैं दीवार की मुंडेर पर चिपका बैठा रहा, मेरी .405 पिस्तौल तैयार थी, और अंगूठा टॉर्च के स्विच पर था।

ऐसे समय में मनुष्य के मन में उठने वाले विचार अक्सर विचित्र और समझ से परे होते हैं, लेकिन मैं आपको उनसे क्यों परेशान करूं? बाघ ने पहले तो संभावित प्रतिशोधी भाग्य की भूमिका निभाई। अन्य समयों में वह लगभग चेतना से ओझल हो गया।

आठ बजने के कुछ ही देर बाद पूर्वी पर्वत श्रृंखला के ऊपर क्षितिज अधिक स्पष्ट होने लगा; आकाश में एक हल्की सी चमक फैल गई, जिससे तारे धुंधले पड़ गए, और

फिर चंद्रमा प्रकट हुआ, जिससे आसपास का वातावरण और मेरी घबराहट दोनों ही शांत हो गईं। जैसे-जैसे चंद्रमा आकाश में ऊपर चढ़ता गया, दृश्य और भी उज्ज्वल होता गया, यहाँ तक कि मैं पपीते के पेड़ों के तनों के बीच से लगभग सब कुछ स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। रात के लगभग आधे हिस्से तक मेरी निगरानी की शांति में किसी भी आवाज ने खलल नहीं डाला।

रात 11 बजे के कुछ ही देर बाद, एक सांभर हिरण ने नदी के किनारे से, जहाँ मैंने अपने एक बैल को बाँधा था, अपनी तीखी आवाज निकाली। मैंने उसकी आवाज में घबराहट और डर का भाव पहचान लिया, क्योंकि वह बार-बार पुकार रहा था, और अंत में दूर जाकर उसकी आवाज धीमी हो गई, जब हिरण सामने की पहाड़ियों की प्राचीर पर चढ़कर सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

फिर सन्नाटा छा गया, और रात अपने आखिरी पलों को धीरे-धीरे गुजारने लगी। तभी मुझे ख्याल आया कि अगर बाघ एक मील के दायरे में कहीं भी हो, तो शायद मैं कुएं के ऊपर लगे पुली-पहिया को चलाकर उसकी तेज़ सुनने की शक्ति का फायदा उठा सकूँ। मैंने दोपहर में पहले ही देखा था कि वह अपनी धुरी पर घूमते हुए ज़ोर से चरमराहट और चीखने की आवाज़ कर रहा था। शायद वह आवाज़ सुनकर आकर्षित हो जाए, यह सोचकर कि कोई दूसरा संभावित शिकार कुएं से पानी निकाल रहा है।

तो मैं कुएँ के चारों ओर घूमकर उस जगह पहुँचा जहाँ पानी का घड़ा ज़मीन पर रखा था। सबसे पहले मैंने बंदूक को दीवार के सहारे खड़ा किया, फिर घड़े को पानी में डुबोया, और धीरे-धीरे उसे ऊपर-नीचे करता रहा। रात के सन्नाटे में पुली ज़ोर से चरमरा उठी, और मैं लगभग एक घंटे तक यही करता रहा, बीच-बीच में रुककर अपने आस-पास के वातावरण का ध्यान से जायज़ा लेता रहा, खासकर हर झाड़ी की गहरी छायाओं का। पर कुछ भी नहीं हिला, और उस सन्नाटे में एक पत्ता भी नहीं हिला, यहाँ तक कि कोई चूहा भी पास के पपीतों के नीचे ज़मीन पर बिछी सूखी पत्तियों को नहीं हिला पाया। देखा जाए तो, झोपड़ियों में बंद दरवाजों के पीछे सुरक्षित बैठे लोगों के अलावा, उस इलाके में मैं ही अकेला जीवित प्राणी था।

सुबह 3 बजे के बाद चंद्रमा पश्चिमी पहाड़ी श्रृंखला के पीछे डूबने लगा, और मौसम पिछली शाम जैसा ही हो गया। अंधेरा बढ़ता ही गया, और जल्द ही मैं अपने आसपास कुछ ही गज की दूरी देख पा रहा था, और वह भी तारों की हल्की रोशनी में, जो डूबते चंद्रमा के गायब होने के साथ ही चमकने लगे थे।

अब सिर्फ नब्बे मिनट का अंधेरा बचा था और मुझे बहुत नींद आ रही थी। फिर भी मुझे अब और भी सतर्क रहना था। क्या मैं पिछले एक घंटे से बाघ को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश नहीं कर रहा था? चूंकि वह पूरी रात उस रास्ते से नहीं गुजरा था, इसलिए हो सकता है कि वह अब गुजर जाए। इसके अलावा, अचानक हमले के लिए सारी परिस्थितियां उसके पक्ष में थीं, क्योंकि पपीते के पेड़ अब धुंधले से दिखाई देने लगे थे, बस मेरी दृष्टि में मौजूद अन्य छायाओं के बीच एक गहरे धब्बे की तरह दिख रहे थे।

मुझे एहसास हुआ कि अगर वह आदमखोर हमला करने का फैसला करता, तो मैं पूरी तरह से उसके रहमो-करम पर होता। अगर वह दहाड़ते हुए आगे बढ़ता, तो कम से कम मैं उस पर एकदम करीब से अपनी राइफल से गोली चला सकता था। दूसरी ओर, अगर वह चुपके से मेरे पास आता, तो मुझे उसके आने का तब तक पता नहीं चलता जब तक कि वह मुझ पर हमला न कर देता।

उसी समय, सारे चूहे, खरगोश और अन्य छोटे जानवर, जो पूरी रात गायब रहे थे, मानो कुएँ के पास इकट्ठा होने के लिए यही क्षण चुन रहे हों। वे इधर-उधर भागने लगे और सूखी पत्तियों को सरसराने लगे, कभी शोर मचाते हुए, कभी धीमी आवाज़ में, जबकि मेरी उत्तेजित कल्पना ने मुझे यह संदेश दिया कि 'आदमखोर आ रहा है'।

कुल मिलाकर मेरा समय बहुत ही भयानक बीता। झूठी सुबह आई और चली गई, और फिर सुबह 5:45 बजे पूर्वी पर्वतमाला के ऊपर क्षितिज पर एक बार फिर से उजाला होने से मुझे पता चला कि आखिरकार दिन का उजाला हो गया है और उबाऊ प्रतीक्षा लगभग समाप्त हो गई है। सूरज के पूर्वी पहाड़ियों से झाँकने में सात बज चुके थे, और मैं उठा और अपने सतर्क, नींद से भरे कदमों को घसीटते हुए गाँव के दक्षिणी छोर पर लगाए गए तंबू तक पहुँचा।

गरम चाय पी और साढ़े दस बजे तक झपकी ली। फिर, रंगा और बायरा के साथ, मैं सबसे पहले नदी के तल में बंधे चारे को देखने गया। वह जीवित और स्वस्थ था। करीब से देखने पर पता चला कि एक बाघ उसके 15 फीट करीब तक आया था और सरसरी तौर पर निरीक्षण करने के बाद मर गया था।

रात में मैंने जिस सांभर हिरण की आवाज़ सुनी थी, उसने निस्संदेह इस बाघ को देखा या उसकी गंध पहचान ली थी और ज़ोर से चेतावनी दी थी। बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से उसी जानवर के थे, जिनके पदचिह्न मैंने पश्चिमी पर्वतमाला के रास्ते पर आते

समय देखे थे, जहाँ ज़मीन अधिक ठोस थी और आकार बहुत बड़ा नहीं था। फिर भी, मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि यह असली आदमखोर बाघ ही था, क्योंकि एक सामान्य बाघ आसानी से किसी आकर्षक, असुरक्षित शिकार को ज़िंदा नहीं छोड़ता।

फिर हम दूसरे बैल को देखने गए, जहाँ हमें एक चौंकाने वाली बात पता चली। उसे एक बाघ ने मार डाला था, जिसके पदचिह्न ठीक वैसे ही थे जैसे मैंने पिछले दिन रास्ते के ठीक उसी स्थान के पास सावधानीपूर्वक नापे थे।

अब सवाल यह था: क्या आस-पास दो बाघ थे, या दूसरे बैल को आदमखोर बाघ ने मार डाला था? यदि बाद वाला मामला था और केवल एक ही बाघ था—और वह आदमखोर बाघ—तो उसने नदी के किनारे बंधे हुए बैल को क्यों नहीं मारा, बल्कि उसे देखकर दूसरे को मारने का फैसला क्यों किया?

मुझे पक्का यकीन हो गया था कि आस-पास दो बाघ थे, और आदमखोर बाघ ने ही नदी किनारे बैल को अनदेखा किया था। रंगा मुझसे सहमत था, लेकिन बायरा किसी भी राय पर पक्का यकीन नहीं कर पा रहा था। उसने सुझाव दिया कि आदमखोर बाघ शायद उस इलाके का इकलौता बाघ हो, और उसने पहले बैल को शायद इसलिए नहीं मारा क्योंकि वह सफेद था। दूसरा बैल गहरे भूरे रंग का था, इसलिए उस पर शक नहीं किया जा सकता था।

जीवित चारे के रंग के बारे में मेरा दृष्टिकोण बहुत खुला है। मेरे अपने अनुभव के अनुसार, बाघ के लिए रंग से कोई खास फर्क नहीं पड़ता, और कुछ अन्य शर्तें पूरी होने पर वह आपके चारे को खा लेगा। उसे भूखा होना चाहिए, क्योंकि बाघ शायद ही कभी बेवजह शिकार करता है। इसके अलावा, उसे किसी भी तरह के जाल का संदेह नहीं होना चाहिए। आजकल जब बाघों का शिकार बढ़ रहा है, बाघ जल्दी ही सबक सीख रहे हैं। प्रकृति उस प्रजाति को बचाने का प्रयास कर रही है जो तेजी से विलुप्त हो रही है।

इस प्रकार, रस्सी से गर्दन में बांधे गए चारे के बाघ द्वारा छुए जाने की संभावना बहुत कम होती है। बाघ तर्क नहीं कर सकता, लेकिन उसकी सहज प्रवृत्ति या आत्मरक्षा की भावना उसे बताती है कि ग्रामीणों द्वारा अपने मवेशियों को रात के लिए जंगल में बांधना अस्वाभाविक है। सींगों में बंधी रस्सी से बंधे चारे के मारे जाने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि जानवर अपने सींगों से झाड़ियों में उलझ सकता है।

पिछले पैर में बंधा चारा भी आसानी से ले लिया जाता है। याद रखने वाली मुख्य बात यह है कि बाघ और तेंदुआ दोनों ही अपने शिकार के गले पर हमला करते हैं, इसलिए हमले की इस विधि को रोकने के लिए कोई स्पष्ट बाधा नहीं होनी चाहिए, अन्यथा हमलावर को संदेह हो जाता है।

इस मामले में पैंथर आमतौर पर बाघों की तुलना में कम सावधान होते हैं और अधिक जोखिम उठाते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मुझे पैंथर के लिए कुत्तों को चारा बनाकर बांधना पसंद नहीं है; मुझे लगता है कि यह प्रथा अत्यंत क्रूर है, क्योंकि कुत्ता एक बहुत ही समझदार जानवर है और वह अच्छी तरह जानता है कि उसे किस उद्देश्य से बांधा जा रहा है। ऐसे में, उसे अपने हमलावर के आने तक भयानक मानसिक पीड़ा सहनी पड़ती है। जब मैं छोटा था, और, मैं स्वीकार करता हूँ, मुझमें नैतिकता की भावना कम थी, तो मैंने कुत्ते की जान बचाकर अपने अंतरात्मा को शांत करने की कोशिश की। इसके लिए मैंने चमड़े के दो टुकड़ों का उपयोग करके लगभग चार इंच चौड़ा एक पट्टा बनाया, जिसमें कई दो इंच लंबे, नुकीले नाखून एक पंक्ति में बाहर की ओर निकले हुए थे, जिनके सिरे चमड़े की दोनों पट्टियों के बीच में आते थे। उन बीते दिनों में, मुझे यह देखकर मज़ा आता था कि पैंथर कुत्ते का गला पकड़ने की कोशिश करता था, और फिर नुकीले नाखूनों के उसके मुंह में चुभते ही वह स्पष्ट रूप से घबराकर पीछे हट जाता था। इससे पहले कि वह इस पहेली को सुलझा पाता, उसे गोली मार दी जाती थी। लेकिन बाघ पर इस तरह की साधारण चालें नहीं चली जा सकतीं।

बीमार जानवर को ज़िंदा चारा बनाकर बांधना भी सफलता के लिए घातक होता है। नीलगिरी पर्वतमाला में रहने वाली बडागा जनजाति स्वस्थ जानवरों को चारा के लिए बेचने से सख्त परहेज़ करती है, चाहे उनकी कितनी भी कीमत क्यों न मिले। वे एक अच्छे बैल की जान कुर्बान करना पाप समझते हैं। वे हमेशा इस काम के लिए केवल बीमार जानवर को ही पेश करते हैं, जिसके दिन वैसे भी गिने-चुने होते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने एक बैल को पैर-मुंह रोग की आखिरी अवस्था में बांधा था। रेत में बने पदचिह्नों से पता चला कि लगातार तीन रातों तक बाघ उस जगह पर आया, चारे के चारों ओर घूमा, यहाँ तक कि उसके सामने बैठ भी गया, और फिर उसने तय किया कि वह इतना बीमार है कि उसे मारा नहीं जा सकता। चौथी रात, मेरा बेटा बीमार जानवर के पास बैठा रहा, लेकिन आठ बजे तक उसकी जीवन अवधि समाप्त

हो रही थी। वह गिर पड़ा और पूरी रात उसे मरने में लग गई। उस रात बाघ दिखाई भी नहीं दिया।

अनुभवी शिकारी जीवित चारे के रंग के बारे में अलग-अलग राय रखते हैं, और मैंने कुछ ऐसे लोगों से मुलाकात की है जो सफेद जानवरों, चाहे गाय हो या बकरी, का इस्तेमाल करने से बचते हैं, क्योंकि उनका दावा है कि इनके शिकार होने की संभावना सबसे कम होती है। पुराने समय के एक प्रसिद्ध पैंथर शिकारी, जिन्होंने सौ से अधिक पैंथर मारे थे, काले रंग की बकरी को बांधने के सख्त खिलाफ थे, क्योंकि उनका दावा था कि इससे पैंथर सतर्क हो जाता है।

मैंने इन बिंदुओं पर कुछ विस्तार से चर्चा की है, क्योंकि मुझे लगता है कि आपमें से कई लोग जो ये कहानियां पढ़ते हैं, बाघ और तेंदुआ के शिकार की तकनीक के कुछ पहलुओं के बारे में जानने में रुचि रखेंगे। बैठक-गृह में अक्सर हम किसी शिकारी या बड़े जानवरों के शिकारी की असाधारण 'अच्छी किस्मत' के बारे में सुनते हैं। वास्तव में, इस 'अच्छी किस्मत' का बहुत बड़ा हिस्सा उनके पिछले अनुभव के कारण होता है, जिसमें उन असंख्य कारकों का ज्ञान होता है जो किसी सफल शिकार को संभव या असफल बना सकते हैं।

अब वापस अपनी कहानी पर आते हैं। ज़ाहिर है, करने के लिए एक ही काम था, और वो था अधखाए भूरे बैल के ऊपर मचान लगाना। अनुभव से पता चला था कि हमारे दोनों चारे उपयुक्त पेड़ों के पास बंधे थे; इसलिए जब मैं थोड़ी देर और झपकी लेने के लिए तंबू में वापस गया, तो रंगा और बायरा, जो दोनों ही इस काम में माहिर थे, ने मेरे साथ लाई हुई कैनवास की कुर्सी को करीने से मोड़कर टांगने का बढ़िया काम किया। चारपाई या भारतीय रस्सी के पलंग के बाद, एक तह करने वाली कुर्सी एक अच्छा मचान बन जाती है। यह चारपाई जितनी आरामदायक या विशाल तो नहीं होती, लेकिन इसका फ़ायदा यह है कि इसे आसानी से अलग-अलग हिस्सों में बाँटा जा सकता है।

शाम 5 बजे वापस आकर, मैंने अपनी जगह ले ली और पूरी रात की निगरानी के लिए तैयार हो गया।

केम्पेकराई गाँव के ऊपर पश्चिमी पर्वत श्रृंखला पर स्थित इस रास्ते पर उगते चाँद की किरणें गाँव और उस कुएँ की तुलना में बहुत पहले पहुँच जाती थीं, जहाँ मैंने पिछली रात बिताई थी। इसलिए, सूरज के पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे डूबने के तुरंत

बाद, चाँद पूर्वी पर्वत श्रृंखला के ऊपर से झाँकने लगा और चारों ओर दृश्यता साफ़ हो गई।

आठ बजने के कुछ देर बाद तक कुछ नहीं हुआ, फिर अचानक मुझे एहसास हुआ कि बाघ मेरे ठीक नीचे खड़ा है। वह कैसे और कहाँ से आया, यह मैं कभी नहीं जान पाया। निश्चित रूप से उस रास्ते से तो नहीं आया होगा जो जंगल में दूर तक फैला हुआ दोनों दिशाओं में साफ दिखाई दे रहा था। मुझे पता चला कि बाघ मेरे नीचे है, क्योंकि उसने अपने शरीर को उस पेड़ के तने से रगड़ा जिससे हल्की सी आवाज़ निकली, जिस पर मैं बैठा था, और ऐसा करते हुए उसने ऊपर देखा और मेरी मौजूदगी का एहसास हुआ!

फिर घटनाएँ तेज़ी से घटने लगीं। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ, बाघ तुरंत पेड़ के तने पर चढ़ने लगा। सौभाग्य से, हमने एक ऐसा पेड़ चुना था जिसका तना ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर, जहाँ मैं कैंप की कुर्सी पर बैठा था, पहले जोड़ तक काफ़ी सीधा था। मैं जानता था कि यह आदमखोर बाघ है, क्योंकि आम तौर पर एक बाघ किसी इंसान को अपने ऊपर बैठे हुए देखकर तुरंत भाग जाता है।

मैंने सहज ही अपने दोनों पैरों को जितना हो सके ऊपर उठा लिया और कुर्सी से थोड़ा झुककर बाईं ओर निशाना साधने की कोशिश की। दुर्भाग्यवश, मैं गलत दिशा में झुक गया था, क्योंकि बाघ मेरे दाहिनी ओर पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। मैंने तुरंत खुद को संभाला, लेकिन अब मुझे राइफल को अपने बाएं कंधे पर टिकाना पड़ा।

पिछले दो पैराग्राफ पढ़ने में आपको जितना समय लगा, उस रात की घटनाओं में लगे वास्तविक समय से कहीं अधिक समय लगा। जैसा कि मैंने कहा, मैं ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर बैठा था। एक सामान्य बाघ नाक से पूंछ तक लगभग नौ फीट लंबा होता है। उसकी पूंछ की लंबाई घटाकर और उसके आगे के पंजे की लंबाई जोड़कर, हम लगभग आठ फीट की अनुमानित लंबाई तक पहुँच सकते हैं, जो किसी भी बाघ या आदमखोर बाघ की 'फैलने की सीमा' को दर्शाती है। पंद्रह फीट की मूल ऊंचाई में से इन आठ फीट को घटाने पर लगभग सात फीट का अंतर आता है, जो लगभग उतनी ही दूरी थी जितनी बाघ उस रात पेड़ के तने पर चढ़ने में सफल हुआ था। मुझे पकड़ने की हड़बड़ी में उसने अपना एक पंजा बढ़ाया, और जैसे ही उसके नुकीले पंजे कैंप-चेयर की सीट के कैनवास और संयोगवश मेरी पैंट को चीरते हुए

अंदर घुसे, बाघ अपना संतुलन खो बैठा और पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। वहीं, अपनी पीठ बचाने की चिंता में, मैंने सहज रूप से खुद को कुर्सी से आधा ऊपर उठा लिया। मैं भाग्यशाली था कि मैंने अपनी राइफल नहीं गिराई और बाघ के पीछे नहीं भागा।

आदमखोर जानवरों, चाहे बाघ हों या तेंदुआ, के बारे में एक अनोखी बात यह है कि वे देखने में कायर लगते हैं, हालांकि वे इंसानों पर हमला करके उन्हें खा जाते हैं। लगभग हमेशा ही, ऐसे हमले पीछे से किए जाते हैं, और तब होते हैं जब शिकार अपने हमलावर की मौजूदगी से अनजान होता है। दरअसल, बहुत कम ही ऐसा हुआ है कि किसी आदमखोर जानवर ने सामने से हमला किया हो या किसी ऐसे व्यक्ति पर झपट्टा मारा हो जो उसकी मौजूदगी से वाकिफ हो और उसका सामना कर रहा हो।

उस रात ऐसा ही हुआ, जैसे ही वह पीछे की ओर धरती पर गिरा, नरभक्षी को एहसास हुआ कि उसकी उपस्थिति का पता चल गया है, और जमीन पर उतरते ही, एक छलांग और गुर्राहट के साथ, वह आसपास की लैंटाना झाड़ियों में गायब हो गया।

मैं यह नहीं कह सकता कि यह हमारे सौभाग्य का ही परिणाम था कि उसने ऐसा किया, क्योंकि यद्यपि मुझे उसकी उपस्थिति का आभास हो चुका था और मैं उसके लिए तैयार था, फिर भी उस बेहद कठिन कोण से, ठीक मेरे नीचे, निशाना लगाने की कोशिश में मेरा संतुलन बिगड़ सकता था या राइफल गिर सकती थी। खैर, वह पलक झपकते ही चला गया, उतनी ही अचानक और अप्रत्याशित रूप से जितना वह आया था।

मेरी मौजूदगी का पता चल जाने के बाद, अब चुपचाप या बिना हिले-डुले रहने का कोई फायदा नहीं था। नुकसान का जायजा लेते हुए मैंने कुर्सी के कैनवास पर तीन पंजे के निशान देखे, हर एक लगभग पाँच इंच लंबा था, जहाँ बाघ के अगले पंजे ने खरोंचा था। इनमें से दो निशान मेरी पैंट की सीट को भेद गए थे—और कुछ हद तक मेरे शरीर को भी। त्वचा में तेज़ दर्द हो रहा था, जो मुझे इस बात का एहसास दिला रहा था।

आम तौर पर, ऐसी घटना हंसमुख लोगों के मन में हंसी पैदा कर देती, लेकिन मैं उन्हें याद दिलाता कि सभी मांसाहारी जानवरों के पंजे सड़े हुए मांस से निकले जहरीले बैक्टीरिया से भरे होते हैं, और नरभक्षी भी इस नियम का अपवाद नहीं है, क्योंकि यह मांस इंसान का होता है। कुर्सी का कैनवास और मेरी पैंट का कपड़ा इतना मोटा नहीं

था कि इस सारे जहरीले पदार्थ को सोख सके, इसलिए मेरे घाव में संक्रमण होने की कुछ संभावना थी।

मैं अपने साथ प्राथमिक उपचार की कई सामग्रियाँ लाया था, जिनमें प्रोकेन पेनिसिलिन का अच्छा स्टॉक और मेरी पाँच सीसी की हाइपोडर्मिक सिरिंज शामिल थीं। लेकिन ये सभी सामग्रियाँ केम्पेकराई स्थित मेरे तंबू में थीं, जो लगभग दो मील दूर था। इसलिए मुझे या तो तुरंत वापस लौटकर चिकित्सा सावधानी बरतने का विकल्प चुनना था, या सुबह तक रुकने का—जो कम से कम दस घंटे दूर थी—क्योंकि तब तक ज़हर घावों में फैल चुका होता। एक स्थिति में मुझे आदमखोर सांप के हमले का सामना करना पड़ता, जो केम्पेकराई तक फैले दो मील के रास्ते में कहीं भी हमला कर सकता था। दूसरी ओर, मुझे सेप्सिस के अधिक निश्चित खतरे का सामना करना पड़ता, और आदमखोर सांप का पीछा करने में असमर्थ होने के कारण लंबे समय तक अक्षम रहना पड़ता।

इसलिए मैंने बाघ से खतरा मोल लेना बेहतर समझा, क्योंकि यह दो खतरों में से कम खतरनाक था। मैंने जल्दी से अपनी राइफल को उस रस्सी पर लटका दिया जो इसी उद्देश्य से लाई गई थी, और मैं भी तेजी से नीचे उतर गया, मन ही मन प्रार्थना कर रहा था कि आदमखोर बाघ दोबारा हमला करने के लिए ठीक उसी क्षण को न चुने। जमीन पर पहुँचकर मैं पेड़ के तने की ओर पीठ करके खड़ा हो गया, और राइफल को उस रस्सी से छुड़ाया जिससे मैंने उसे नीचे उतारा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, जंगल के किसी भी हिस्से से कोई आवाज नहीं आ रही थी जिससे मुझे अपने हालिया हमलावर के ठिकाने का कोई संकेत मिल सके। संभवत: वह दस मील दूर हो सकता था, या पास की किसी झाड़ी के पीछे! चमकीली चाँदनी ने जंगल को अपनी अलौकिक चमक से नहला दिया था, जिससे हर पत्ता और घास का तिनका दिखाई दे रहा था, जो रात की हल्की हवाओं के साथ धीरे-धीरे हिल रहे थे। ये हवाएँ जंगल के मैदानों में रात के फूलों की सुगंध बिखेर रही थीं, या अनगिनत पेड़ों के बीच से तेज झोंकों के साथ बह रही थीं।

कुछ क्षण बाद, मैं केम्पेकराई तक दो मील की पैदल यात्रा के लिए रास्ते पर चल पड़ा। यह रास्ता मिट्टी की प्रकृति और वनस्पति के प्रकार के अनुसार चौड़ाई में भिन्न होता है, अधिकतम पंद्रह फुट से लेकर मुश्किल से एक गज तक। कुछ स्थानों पर यह लंबी घास से घिरा है और अन्य स्थानों पर लैंटाना की झाड़ियों से। कई छोटी-छोटी

धाराओं को पार करना पड़ता है, जहाँ बांस बहुतायत में उगते हैं, उनके लंबे लहराते तने हल्की हवा में चरमराते हैं, जबकि पत्तियां चांदनी को ढकते हुए सामने जमीन पर भूतिया, चौकोर पैटर्न बनाती हैं।

ऐसे हालात में आपका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता है, मानो पिंजरे से बाहर निकल आएगा; आपकी नसें बुरी तरह तनावग्रस्त हो जाती हैं और हर हल्की सी सरसराहट भी आदमखोर बाघ के हमले का संकेत देती है। भागने की इच्छा होती है, या यूं कहें कि दौड़ पड़ें। आपकी नसें आपको इधर-उधर देखने का इशारा करती हैं, क्योंकि बाघ पीछे से या दोनों तरफ से हमला कर सकता है!

इन सभी भावनाओं को कड़े नियंत्रण में रखना चाहिए, क्योंकि इनके प्रति जरा सा भी झुकाव घबराहट का कारण बनेगा, और घबराहट से आप अपना होश खो देंगे, जिसके परिणामस्वरूप अंततः निश्चित रूप से विनाश होगा।

सुनिश्चित करने वाली बात यह है कि बाघ आपके सामने घात लगाकर न बैठा हो और आपके उसके सामने आने का इंतजार न कर रहा हो। हमला करने के लिए

पीछे से आने वाले व्यक्ति को, आगे बढ़ते समय आपकी सामान्य चाल के साथ तालमेल बिठाने के लिए झाड़ियों में कम से कम कुछ शोर करना पड़ता है।

इसलिए, सिर को इधर-उधर घुमाने के बजाय, सामने देखना ही सबसे समझदारी भरा कदम है, भले ही आपकी आंखें हर परछाई को ध्यान से देखें। अपनी राइफल को तैयार रखें और उसे अपनी कोहनी में दबाकर रखें, क्योंकि आपको कमर से ही गोली चलानी होगी और अपने निशाने पर पूरी तरह से सटीक निशाना लगाना होगा। राइफल को कंधे पर उठाकर निशाना लगाने का समय नहीं मिलेगा, क्योंकि बाघ एक शिकारी है, और चाहे जानवर हो या इंसान, शिकारियों की यह आदत नहीं होती कि वे अपनी मौजूदगी का ऐलान करें। अगर वे ऐसा करेंगे, तो वे जल्द ही शिकारी नहीं रहेंगे, बल्कि खुद 'मारे' जाएंगे।

यदि आपका शिकार घायल है, तो शायद आपको गुर्राहट या घुरघुराहट सुनाई दे, लेकिन संभवतः आपको उसकी आक्रमणकारी शक्ति के दौरान धरती को हिला देने वाली भयानक 'भौंकने' की आवाज़ सुनाई देगी। यदि वह घायल नहीं है और आदमखोर है, तो आप कुछ भी सुनने की उम्मीद न करें, क्योंकि वह पलक झपकते ही आप पर हमला कर देगा।

केम्पेकराई से मुश्किल से एक चौथाई मील पहले रास्ते के दोनों ओर पत्थरों का

एक छोटा सा टीला है। घर वापसी के रास्ते में यह सबसे खतरनाक जगह है, क्योंकि बाघ इनमें से किसी भी पत्थर के पीछे छिपा हो सकता है। हालांकि, जब वह भागा तो उसे दूसरी तरफ जाते देखकर मुझे लगा कि उसे वापस लौटने का पर्याप्त समय नहीं मिला। इसी भरोसे के साथ मैंने पत्थरों को पार किया और जल्द ही केम्पेकराई और अपने तंबू तक पहुँच गया।

रंगा और बायरा जाग रहे थे, जैसा कि वे हमेशा तब जागते थे जब मैं अकेले बाहर जाता था, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे मेरी मदद कर सकें। मैंने उन्हें आग जलाने और पानी गर्म करने के लिए कहा और पहले से तैयार रखी हुई कॉफ़ी पी ली, फिर अपनी इंजेक्शन वाली सुई निकाली और उसे गर्म पानी में भिगोकर स्टेरलाइज़ किया। इसके बाद, मैंने प्रोकेन पेनिसिलिन की आठ लाख यूनिट की दो शीशियों को मिलाकर सिरिंज से इंजेक्शन लगाया।

मैंने रंगा और बायरा से बचे हुए गर्म पानी में पोटेशियम परमैंगनेट घोलकर घावों को अच्छी तरह साफ करवाया, फिर सल्फोनोमाइड मरहम से पट्टी बांधी। घाव पर पट्टी या प्लास्टर नहीं लगाया जा सकता था, इसलिए मैं यह उम्मीद करते हुए सो गया कि घावों पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

कई रातों तक नींद न आने के कारण मैं थका हुआ था, और अगली सुबह लगभग नौ बजे तक मेरी नींद खुली। जंगल में इतनी देर से उठना बहुत अजीब बात है, क्योंकि आमतौर पर लोग सूर्योदय से पहले ही उठकर निकल जाते हैं। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि घावों में ज्यादा दर्द नहीं था।

पेनिसिलिन की चार लाख की एक और खुराक लेने और घावों पर पट्टी बांधने के बाद, मैंने दलिया, बेकन और अंडे का शानदार नाश्ता किया, और कुएं के किनारे वाले बगीचे से एक बहुत बड़ा, पका हुआ पपीता खाया, जहां मैंने पहली रात बिताई थी।

फिर मैं नदी के किनारे रखे अपने शिकार को देखने के लिए चल पड़ा, जो मुझे पिछली सुबह की तरह ही ज़िंदा और तंदुरुस्त मिला। पिछली रात जहाँ मैं बैठा था, वहाँ वापस दो मील चलने पर मैंने पाया कि बाघ न तो लौटा था और न ही उसने उस बैल को छुआ था जिसे उसने दो रात पहले मारा था। पेड़ के पास आते समय उसके पदचिह्नों से उसकी पहचान उसी बाघ के रूप में हुई जिसके पदचिह्न मैंने सबसे पहले देखे थे।

नीलगिरी, कोयंबटूर और चित्तूर जिलों के जंगलों के विपरीत, सलेम के जंगल

अधिकतर कांटेदार होते हैं, जिनमें लैंटाना और 'वेट-ए-बिट' कांटे प्रमुख हैं। घाटियों और नदी-नालों के किनारे ये कांटेदार झाड़ियाँ घनी कतारों में फैली हुई बांस की झाड़ियों में बदल जाती हैं। दोनों ही स्थितियों में, प्रभाव एक ही होता है, यानी घूमना-फिरना या शिकार करना लगभग असंभव हो जाता है।

एक मांसाहारी जानवर चुपचाप चलता है, और एक सफल शिकारी के रूप में उसकी सफलता का रहस्य इस बात में निहित है कि वह सहज रूप से देखता है कि वह अपना अगला पंजा कहाँ रख रहा है ताकि कोई आवाज़ न हो। फिर वह अपना पिछला पंजा ठीक उसी जगह पर रखता है, और अगला पंजा आगे बढ़कर अगला कदम बढ़ाता है। मानव शिकारी को भी चुपचाप चलना चाहिए। उसे ध्यान से देखना चाहिए कि वह अपना हर कदम कहाँ रख रहा है, क्योंकि सबसे छोटा सूखा पत्ता भी कुचलने पर चरमराहट पैदा कर देगा; सबसे छोटी टहनी भी टूट जाएगी। उन चुभने वाले कांटों से भी बचना चाहिए जो आपको रोक सकते हैं, क्योंकि एक कांटा भी इतना मजबूत होता है कि अगर वह आपके कपड़ों में कहीं भी फंस जाए तो आपकी प्रगति रोक सकता है, और अगर आप शॉर्ट्स पहनने की मूर्खता करते हैं तो वह निश्चित रूप से आपका मांस फाड़ देगा।

इन सब बातों से आपका ध्यान बाघ की तलाश करने से हट जाएगा, और अगर वह बाघ आदमखोर है, जो कांटों से नहीं डरता, तो आप स्पष्ट रूप से नुकसान में होंगे।

उस स्थान का जंगल अत्यंत कंटीला था, इसलिए हम केम्पेकराई लौट आए और गाँव के वरिष्ठ नागरिकों के साथ युद्ध परिषद आयोजित की। तथ्यों के आधार पर, जहाँ तक हमें अब तक जानकारी थी, यह पता चला कि:

आदमखोर एक औसत कद का नर था।

वह विशेष रूप से पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के रास्ते पर अक्सर जाया करता था।

उन्हें बैल का मांस खास पसंद नहीं था।

हमें अभी भी यह निश्चित नहीं था कि आसपास कोई दूसरा बाघ मौजूद है या नहीं।

इस चर्चा के बाद जो स्पष्ट निष्कर्ष निकला, वह लगभग वही था जो रंगा, बायरा और मैंने केम्पेकराई आने के पहले दिन निकाला था: या तो अगले मानव शिकार का इंतज़ार किया जाए, या किसी जीवित मानव को चारा बनाया जाए, अधिमानतः केम्पेकराई जाने वाले पश्चिमी पहाड़ी मार्ग पर कहीं। आदमखोर बाघ को लुभाने के

लिए जंगल में कहीं और कुछ बैल भी बांधे जा सकते थे, लेकिन मुख्य रूप से यह पता लगाने के लिए कि क्या उसी क्षेत्र में कोई दूसरा बाघ भी सक्रिय है।

बाघ के घावों की वजह से, जहाँ वे थे, वहाँ मेरे लिए पंद्रह मिनट से ज़्यादा देर तक एक जगह बैठना नामुमकिन था। इस वजह से, सचमुच में, 'सीधे बैठने' की कोई गुंजाइश नहीं थी। सच है, अगर मुझे चारा बनना होता तो मुझे एक जगह बैठने की ज़रूरत ही नहीं होती। दरअसल, बाघ को आकर्षित करने के लिए हिलना-डुलना ज़रूरी होता। दूसरी तरफ, बैठना न सिर्फ़ असहनीय होता, बल्कि घावों के भरने में भी देरी करता, जिन्हें मैं स्वाभाविक रूप से जल्दी भरना चाहता था।

हमारे पास खड़े रहने या लेट जाने के दो ही विकल्प बचे थे। रात भर जागकर निगरानी करने के लिए खड़े रहना स्वाभाविक रूप से उचित नहीं था, इसलिए इन परिस्थितियों में लेट जाना ही एकमात्र व्यावहारिक उपाय था।

हमने उस दिन बहुत सोच-विचार किया और अंततः एक ऐसी योजना पर पहुँचे जिसे हम सभी ने बहुत ही चतुराईपूर्ण समझा। यह योजना वास्तव में कितनी चतुराईपूर्ण साबित हुई—या यूँ कहें कि कितनी नहीं—यह आपको बहुत जल्द पता चल जाएगा।

मैंने पहले ही बताया है कि पश्चिमी पर्वतमाला से केम्पेकराई तक जाने वाला पैदल मार्ग कई स्थानों पर छोटी-छोटी धाराओं से घिरा हुआ था, जिनके किनारे घनी झाड़ियाँ और बांस के झुंड थे। इन छोटी धाराओं के तल पथरीले थे और मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।

संयोगवश, केम्पेकराई जाने के रास्ते में, जिस पेड़ पर मैं पिछली रात बैठा था, वहाँ से पार करने वाली छोटी धाराओं में से पहली धारा सबसे चौड़ी थी, और साथ ही वह हर आकार के गोल पत्थरों से घनी तरह ढकी हुई थी। मेरी योजना थी कि केम्पेकराई गाँव में मौजूद केवल दो बैलगाड़ियों में से एक से एक बैलगाड़ी का पहिया निकाल लूँ, धारा के तल में एक गड्ढा खोदूँ, उसमें घुस जाऊँ, पहिया ऊपर रखूँ और उसे चारों ओर बड़े पत्थरों से मज़बूती से गाड़ दूँ। छोटे पत्थर और सूखे पत्तों की आड़ में पहिया छिपा रहेगा। मैं एक मानव पुतला भी बनाऊँगा और उसे पगडंडी पर कहीं रख दूँगा जहाँ वह धारा को पार करती है। बैलगाड़ी के पहिये को एक सिरे से ज़मीन से ऊपर उठा दूँगा, ताकि मुझे उस दिशा में निशाना लगाने की सुविधा मिल सके।

यह मेरी सामान्य योजना थी। जो लोग भारत नहीं गए हैं, उनकी सुविधा के लिए

मैं समझाना चाहूँगा कि भारतीय बैलगाड़ी का पहिया—मैं बड़ी बैलगाड़ी की बात कर रहा हूँ—औसतन पाँच फुट व्यास का होता है। इसकी परिधि लकड़ी की होती है, लगभग छह इंच चौड़ी और तीन इंच मोटी, जिस पर लोहे का एक घेरा टायर का काम करता है। इसमें बारह मजबूत लकड़ी की तीलियाँ होती हैं, जो सभी एक विशाल केंद्रीय लकड़ी के हब पर आकर मिलती हैं। लकड़ी के हब में बना केंद्रीय छेद लगभग डेढ़ इंच मोटे लोहे के धुरी पर घूमता है। पहिए को गिरने से रोकने के लिए धुरी के बाहरी सिरे से होकर गुजरने वाली चपटी लोहे की कील लगी होती है। इसी प्रकार, पहिए को गाड़ी के फ्रेम की ओर खिसकने से रोकने के लिए धुरी स्वयं होती है, जो हब पर धुरी की भार वहन सतह के ठीक बाद अचानक मोटी हो जाती है, जिसकी चौड़ाई शायद एक फुट से थोड़ी अधिक होती है। कुछ मॉडलों को विलासितापूर्ण कहा जा सकता है, जिनमें लकड़ी के हब के छेद को लोहे या गैल्वनाइज्ड पाइप से ढककर बेहतर भार वहन सतह प्रदान की जाती है। गाँव के नज़रिए से, 'उच्च-स्तरीय स्नेहन' के लिए, कॉटर-पिन और पहिया हटाकर धुरी के सिरों पर लगभग हर पखवाड़े में एक बार पुराना मोटर तेल लगाया जाता है। तेल को गाड़ी के नीचे कहीं लटकाए गए एक पुराने बैल के सींग के खोल में स्थायी रूप से रखा जाता है, और 'मरम्मत का समय' आने पर, आस-पास पड़ी किसी भी लकड़ी के टुकड़े के सिरे से धुरी पर लगाया जाता है।

उस दिन करतब दिखाने का समय नहीं था, इसलिए हम गाँव वालों से पुराने कपड़े इकट्ठा करने में जुट गए। ऐसे इलाकों में पैंट का चलन नहीं है, इसलिए मैंने अपनी एक पैंट दे दी, जिसमें हमने बाँस की दो टांगें ठूँस दीं और उन्हें भूसे से लपेट दिया। कहीं बाघ को पैंट अपरिचित न लगे, इसलिए हमने पैंट के ऊपर एक धोती (जो सारोंग और लंगोटी का मिश्रण होती है) डाल दी। पुतले का शरीर एक पुराने बोरे में भूसा ठूँसकर बनाया गया था, जिसके ऊपर हमने दो फटी हुई कमीज़ें और एक बहुत ही पुराना कोट डाल दिया। पुतले का सिर कला का एक नमूना था; इसे एक बड़े आकार के नारियल से बनाया गया था, जिसमें उसके रेशे भी लगे हुए थे।

खास मौकों पर भारतीय महिलाएं अपने प्राकृतिक बालों को कृत्रिम बालों से सजाती हैं, जिन्हें वे सिर के पीछे जूड़े या कूंडे में बांधती हैं और उनमें फूल, खासकर चमेली लगाती हैं। सौभाग्य से केम्परकराई में एक सुंदरी थी जो ऐसे ही बालों का एक गुच्छा रखने की शौकीन थी। हमने उसे उधार लिया, कंघी की और नारियल के चारों ओर इस तरह बांध दिया जैसे किसी ग्रामीण के लंबे बाल हों। फिर नारियल के चारों

ओर देहाती शैली की एक बेतरतीब पगड़ी लपेटी गई और नकली नारियल के पैरों में चप्पलें पहना दी गईं।

जैसा कि मैंने कहा है, बाघों में सूंघने की क्षमता नहीं होती है, इसलिए वह पुतला इतना यथार्थवादी लग रहा था कि किसी आदमखोर को आकर्षित कर सके, बशर्ते वह उसे इतनी देर तक न देखता रहे कि उसकी विचित्र स्थिरता पर आश्चर्य करने लगे।

उस रात मैंने अपने घावों पर नई पट्टी बांधी और अगली सुबह पेनिसिलिन का एक और इंजेक्शन लगवाया। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि अभी तक कोई असामान्य सूजन नहीं हुई थी।

सुबह 8 बजे तक, लगभग आधा दर्जन इच्छुक सहायकों और मैंने गाड़ी को उस जगह तक घसीट लिया जहाँ से मैंने पुलिया बनाने का सोचा था। वहाँ पहुँचकर हम लगभग चार फुट चौड़ा और चार फुट गहरा गड्ढा खोदने में जुट गए। यह काम आसानी से हो गया, क्योंकि हम नदी के तल की नरम रेत में खुदाई कर रहे थे। फिर कुछ घास काटकर गड्ढे में डाल दी गई ताकि खुदाई के साथ-साथ बढ़ती हुई रेत की नमी को कुछ हद तक सोख सके।

अंदर बैठकर मैंने पाया कि मैं केवल अर्धझुकी हुई स्थिति ही अपना सकता था, जो वास्तव में बहुत असुविधाजनक होने वाली थी। इसका एकमात्र फायदा यह था कि इसने मुझे बैठने की स्थिति से बचा लिया, जो कि, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मेरे हाल के घावों को देखते हुए बहुत असुविधाजनक होती।

हमने एक नकली पुतला लगभग पंद्रह फीट दूर एक इमली के पेड़ की ओर पीठ करके रखा, जो उस नाले के पश्चिमी किनारे पर खड़ा था जहाँ से केम्पेकराई जाने वाला रास्ता गुजरता था; इसे इस तरह रखा गया था कि इसके पैर रास्ते पर पैंतालीस डिग्री के कोण पर निकले हुए थे। इस प्रकार, यदि बाघ किसी भी दिशा से गुजरता, तो नाले के किसी भी बिंदु से या रास्ते के किसी भी हिस्से से यह पुतला उसे तुरंत दिखाई देता। अंत में, हमने कुछ बड़े-बड़े पत्थर इकट्ठा किए, और जब मैं अपनी राइफल लेकर पहरा दे रहा था, तब रंगा और बायरा ने पहिये को छिपाने के लिए झाड़ियाँ और मलबा इकट्ठा किया।

जब मैं आखिरकार गड्ढे में घुसा, तो पहिया मेरे सिर से बस कुछ इंच ऊपर था। ज़मीन और पहिये के बीच छह इंच की जगह थी, जहाँ से मैं डमी की दिशा में निशाना लगा सकता था; यह जगह दो पत्थरों को लगभग तीन फुट की दूरी पर परिधि के नीचे

रखकर बनाई गई थी, जिससे हवा आने-जाने के लिए बीच का हिस्सा खुला रहता था। पत्थरों के बीच झाड़ियाँ और मलबा बिखरा हुआ था; इससे मुझे चेतावनी भी मिल जाती अगर वह पीछे से आता, क्योंकि जब वह मलबे से टकराता या उस पर पैर रखता तो वह चटकने की आवाज़ करता।

सुरक्षा के लिहाज़ से, मैंने यह व्यवस्था की थी कि सभी लोग एक साथ केम्पेकराई लौटें और अगली सुबह फिर से एक साथ ही लौटें। मुझे पूरी रात उस गड्ढे में कैद रहना पड़ेगा, क्योंकि पहियों और उनके ऊपर रखे पत्थरों का वज़न इतना ज़्यादा था कि मैं उन्हें अकेले अंदर से उठा नहीं सकता था।

शाम के 4:30 बज रहे थे जब मैं अपनी बनाई हुई जेल में दाखिल हुआ। पहियों पर पत्थरों को रखने और छलावरण करने में लगभग आधा घंटा और लग गया, इसलिए जब मैंने खुद को अकेला पाया तो लगभग पाँच बज चुके थे। ऊपर खुला होने के बावजूद, गड्ढे के अंदर गर्मी दम घोंटने वाली थी। मैंने अपना कोट और कमीज़ उतार दी, और बाकी के कपड़े भी उतार देता, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि रेत मेरे घावों में जाए।

ज़मीन से थोड़ा ऊपर झाँककर देखने पर मुझे पुतला और आसपास का काफ़ी बड़ा इलाका साफ़ दिखाई दे रहा था। पुतले के पीछे ढलान पर बीच में मेहंदी की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। उस दिशा में हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा, जो एक सुंदर चित्तीदार हिरण के कान के फड़कने और फैलने के कारण थी। वह हिरण उत्सुकता से उस स्थिर पुतले को देख रहा था। जंगल में शांत बैठे रहने का महत्व मुझे तब समझ आया, क्योंकि हिरण पूरे दस मिनट तक उस पुतले को देखता रहा। फिर जैसे उसकी दिलचस्पी उस अनोखी चीज़ में कम हो गई, वह खुले रास्ते पर आ गया, जिसे पार करके वह दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया। पुतले और हिरण के बीच की दूरी बीस फीट से ज़्यादा नहीं रही होगी, फिर भी हिरण बिल्कुल भी नहीं डरा। अगर पुतले की जगह कोई इंसान बैठा होता, तो वह ज़रूर हिलता, भले ही पलक ही क्यों न झपकाता, और इससे हिरण डरकर भाग जाता।

तभी मोर का एक जोड़ा पगडंडी पर इतराता हुआ आया। नर मोर रुका, अपनी पूंछ फैलाई और अपनी मादा मोर को लुभाने के लिए अपने पंख फड़फड़ाए। मादा मोरनी की तरह, उसने एक आँख उस पर और दूसरी कहीं और रखी! खैर, उसने नकली मोरनी को देखा, थोड़ी दौड़ लगाई और हवा में उड़ गई। नर मोरनी को अपनी

सुंदरता की सराहना न करने पर निराशा हुई, उसने अपनी पूंछ नीचे की और नकली मोरनी को देखा। मादा मोरनी से कहीं अधिक भारी होने के कारण, वह उड़ने की कोशिश में बेतहाशा फड़फड़ाने लगा, शाम की शांत हवा में उसके पंख ज़ोर से फड़फड़ा रहे थे, आखिरकार वह आसपास की झाड़ियों से थोड़ा ऊपर उठने में कामयाब हुआ और अपनी सतर्क मादा मोरनी के पीछे-पीछे सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

अंधेरा होने से पहले नदी के किनारे कुछ दाने चुगने के लिए निकले भूरे जंगली मुर्गों ने चारों दिशाओं में 'कुक-काया-काया-खुक' की आवाज़ें निकालीं। छोटे-छोटे लड़ाकू पक्षी, जिन्हें स्पूररूका-वैक-कुकुररूका-वैक कहा जाता है, जंगल में नर मुर्गों के बीच एक मुर्गी को पाने के लिए छोटी-छोटी लड़ाइयाँ चल रही थीं। मुर्गी दिखने में भले ही साधारण और नीरस लगे, लेकिन उस शाम उनके लिए दुनिया में बस एक ही मकसद था, उसका दिल जीतना।

अंधेरा छा गया, और मोर के जोड़े की विदाई की आवाज सुनाई दी, जो रात भर के लिए जंगल के किसी ऊंचे पेड़ पर बसेरा बनाने जा रहे थे, जो शायद एक चौथाई मील दूर था। 'मिया-आ-ऊ-आओ' की आवाजें गूंजीं, जैसे ही सूरज पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के पीछे डूब गया।

आपमें से जो लोग भारतीय जंगलों में गए हैं, उन्हें सूर्यास्त के समय होने वाला वह अद्भुत परिवर्तन याद होगा, जब दिन के पक्षी चहचहाना बंद कर देते हैं और रात के पक्षी चहचहाना शुरू कर देते हैं। 'चक-चक-चक-चुको' की आवाज़ें निकालते हुए रात्रि पक्षी अपने पंख फैलाकर कीड़ों की तलाश में ऊपर उड़ते हैं या रेत की पृष्ठभूमि में पत्थरों की तरह ज़मीन पर बैठ जाते हैं।

जहां मैं बैठा था, वहां घना अंधेरा था और यहां तक कि पुतला भी इमली के पेड़ की छाया में छिपा हुआ था, जिसके नीचे उसे रखा गया था। मुझे लगा कि चांदनी दस बजे के बाद ही वहां पहुंचेगी। नौ बजे मैंने एक सुस्त भालू की तेज़ सूंघने और गहरी गड़गड़ाहट सुनी, जो लड़खड़ाते हुए नाले से मेरी तरफ आ रहा था। वह लगभग उस मलबे पर गिर पड़ा जो हमने बाघ के आने की चेतावनी देने के लिए नाले के तल पर रखा था, और फिर उसने गाड़ी के पहिये पर रखे नए पत्थरों को देखा! मैं उसके घने काले बालों के नीचे उसके छोटे से दिमाग में चल रहे विचारों को पढ़ सकता था! 'यहां कुछ स्वादिष्ट मोटे कीड़े, या एक-दो भृंग ढूंढने का मौका है; शायद दीमकों का

घोंसला, या सबसे उम्मीद की बात, उन छोटी पीली मधुमक्खियों का छत्ता जो मुझ जैसे बड़े भालू को डंक नहीं मार सकतीं।'

इन्हीं विचारों के साथ, भालू उन पत्थरों को हटाने के काम में जुट गया, जिन्होंने मेरे कार्टव्हील को बड़ी सावधानी से टिका रखा था।

'भागो!' मैंने दबी आवाज़ में फुसफुसाया। 'दूर हटो, तुम दखलंदाज़...!'

भालू ने मेरी आवाज़ सुनी और रुक गया। 'यह आवाज़ कहाँ से आई?' वह सोच रहा था। कुछ मिनटों की खामोशी छाई रही, फिर उसने पत्थरों को घूरना शुरू कर दिया। 'दूर हटो! भागो!' मैंने फुसफुसाते हुए कहा। भालू रुका, पत्थरों के ऊपर से चढ़ा और पत्थरों के बीच से नीचे मेरी तरफ देखा।

'आ-र, व्र-र्र!' वह गुर्राया। 'निकल जा, बेवकूफ!' मैं गुर्राया। 'व्र-ऊफ! व्र-ऊफ! व्र-ऊफ!' उसने जवाब दिया और पत्थरों पर बेतरतीब ढंग से चढ़ता हुआ, मलबे पर ठोकर खाता हुआ, किनारे पर चढ़ता हुआ सूखे बांसों के बीच से गिर पड़ा।

भालू के शोर मचाते हुए चले जाने के मुश्किल से दस मिनट ही बीते थे कि मुझे एक बहुत ही हल्की सी आवाज़ सुनाई दी, किसी भारी जानवर के गद्देदार पैर की धीमी आहट। उस आवाज़ को शब्दों में बयान करना लगभग नामुमकिन है, और कागज़ पर तो और भी मुश्किल। मैं उसका सबसे सटीक वर्णन ऐसे कर सकता हूँ जैसे किसी मुलायम तकिए को सोफे पर फेंके जाने पर आने वाली हल्की सी आवाज़।

बाघ आ चुका था और चुपचाप मेरे पीछे नदी के किनारे बिखरे मलबे के किनारे से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था। वह बड़ी सावधानी से उस पर से अपना रास्ता बना रहा था।

क्या वह डमी पर हमला करेगा? क्या वह मेरे सामने से गुजरेगा? ये सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे, जब मैं आगे की स्थिति का इंतजार कर रहा था। मेरी नसें उत्सुकता से तनावग्रस्त थीं।

चाँद निकल चुका था, लेकिन उसकी किरणें इमली के घने पत्तों की छाया तक नहीं पहुँच पा रही थीं। पुतला मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे पता था कि बाघ उसे साफ देख सकता था।

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा—कितनी देर तक, यह मैं नहीं कह सकता। फिर मेरे सिर के ऊपर से एक पत्थर के लुढ़कने की खनक सुनाई दी। किसी ने भी उस दिशा से हमले की उम्मीद नहीं की थी; लेकिन मेरे हाल ही के मेहमान, भालू ने पहले

ही दिखा दिया था कि अप्रत्याशित भी हो सकता है। अब मेरे ऊपर बाघ की मौजूदगी से अप्रत्याशित घटना फिर से दोहराई जा रही थी। किस बात ने उसे नकली वस्तु को नज़रअंदाज़ करके सीधे उस जगह पर आने के लिए प्रेरित किया जहाँ मैं लेटा था, यह एक रहस्य था। बहुत संभव है कि बाघ भालू को देख रहा था, उसके अजीब व्यवहार को देखा था, उसकी जल्दबाजी में जाने पर ध्यान दिया था और जाँच करने आया था। इससे भी अधिक संभव है कि भालू के व्यवहार ने बाघ को मानव हस्तक्षेप का संदेह पैदा किया हो, जिसकी पुष्टि करने के लिए वह स्वयं आया हो। या शायद पहिया संयोगवश उस सबसे छोटे रास्ते पर स्थित था जिसका अनुसरण करते हुए बाघ नकली वस्तु तक पहुँच रहा था।

कारण चाहे जो भी हो, बाघ अब मुझसे केवल दो गज की दूरी पर था और मेरे ठीक ऊपर था।

ये सारे विचार मेरे मन में दौड़ रहे थे, तभी मुझे बाघ की साँसों की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। फिर वह बड़ी फुर्ती से पहिए को थामे रखने वाले बड़े-बड़े पत्थरों में से एक के ऊपर से गुजरा और मेरी तरफ नीचे देखने लगा।

इस बीच मैं निष्क्रिय नहीं बैठा था। जितना हो सका, मैंने खुद को समेटते हुए, आधा पीठ के बल लेटकर बाघ को ऊपर की ओर देखा। मैंने राइफल को अंदर और पीछे की ओर तब तक खींचा जब तक कि उसका बट छेद के किनारे से न टकरा गया। मैंने आपको पहले ही बताया है कि यह छेद लगभग चार फीट चौड़ा और लगभग उतना ही गहरा था। इसलिए राइफल को पूरी तरह ऊपर की ओर निशाना लगाना असंभव था। मैं ज़्यादा से ज़्यादा छेद के तल से साठ डिग्री से थोड़ा अधिक का कोण ही बना पाया। दुर्भाग्य से, बाघ उस दिशा में नहीं था जिस दिशा में राइफल का मुंह था, बल्कि वह उसके पीछे और ठीक उस जगह के ऊपर खड़ा था जहाँ राइफल का बट छेद के किनारे से टकरा रहा था।

फिर घटनाएँ तेज़ी से घटीं। बाघ ने भालू की तरह प्रतिक्रिया नहीं दी। मेरे ऊपर धुंधले से दिखाई दे रहे उसके चेहरे पर एक भयानक गुर्राहट छा गई। उसकी गहरी गड़गड़ाहट की आवाज़ें लगातार निकलती रहीं, और गाड़ी के पहिए पर लेटकर उसने अपने अगले पैर के पंजों से मुझे खरोंचने की कोशिश की, जिसे उसने पहिए की तीलियों के बीच फंसा दिया था।

मुझे पता था कि अगर उसके पंजे मेरे चेहरे और सिर को छू भी लेते तो वे उसे

चीर-फाड़ कर देते, इसलिए जितना हो सके गड्ढे में नीचे झुककर, मैंने राइफल का मुंह बाघ की ओर मोड़ने के लिए जी-जान से संघर्ष किया।

यह सब कुछ पल भर में हो गया। बाघ गुर्राया और थोड़ा और आगे बढ़कर पहिये के पास आ गया। मेरी राइफल की नली उसके कंधे से टकराई और मैंने ट्रिगर दबा दिया।

उस तंग जगह में धमाका इतना भयानक था कि कान बहरे हो गए। बाघ भयानक दहाड़ते हुए पीछे की ओर उछल पड़ा। अगले तीस सेकंड तक वह पत्थरों, पहिए और यहाँ तक कि रेत को भी दांतों से काटता रहा, दर्द से कराहते हुए लगातार दहाड़ता रहा। फिर मैंने उसे मलबे के बीच गिरते, उठते, फिर गिरते, फिर उठते और अंत में छोटी सी धारा के किनारे उगी झाड़ियों में जा टकराते सुना। वह अभी भी दहाड़ रहा था, और लगभग पंद्रह मिनट तक लड़खड़ाते हुए जंगल की ओर बढ़ता रहा।

अंततः, जंगल में घोर सन्नाटा छा गया। अभी-अभी मचे उस भयानक कोलाहल के बाद, कीड़े-मकोड़ों समेत हर प्राणी ने यही समझदारी समझा कि समय बीतने के साथ-साथ वे अपना भय भूल जाएं, तब तक छिप जाना ही बेहतर होगा।

घंटे बीतते गए। सुबह एक बजे पहाड़ियों पर तेज़ हवा चलने लगी, काले तूफ़ानी बादल आसमान में छा गए, चाँद को पूरी तरह से ढक लिया, और जल्द ही पश्चिमी पर्वतमाला से आती बारिश की दूर की आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची। कुछ ही देर बाद, बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें पेड़ों की तीलियों के बीच से निकलकर मुझ पर गिरीं।

फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, ऐसी बारिश जो केवल उष्णकटिबंधीय देशों, विशेषकर घने जंगलों में ही हो सकती है। मैं पूरी तरह भीग गया था और पानी गड्ढे के किनारों से रिसने लगा। तभी मुझे अचानक एहसास हुआ कि सूखी पड़ी यह धारा जल्द ही सैकड़ों सहायक नदियों से चारों ओर से बहकर आ रहे बारिश के पानी से भर जाएगी। मैं गड्ढे में चूहे की तरह डूब जाऊंगा।

मैं घबराकर हरकत में आ गया, हाथों और घुटनों के बल बैठ गया, अपनी पीठ पहिये से टिकाई और पूरी ताकत से ऊपर की ओर धकेलने लगा। पहिया रत्ती भर भी नहीं हिला! मेरे सहायकों ने मुझे बाघ से बचाने का अपना काम बखूबी कर दिया था! उन्होंने पहिये के चारों ओर सबसे भारी पत्थर रख दिए थे जो उन्हें मिल सके और मैं उन्हें अकेले हिला नहीं पा रहा था।

अब बस एक ही मौका बचा था, और वो था खुद को उस छह इंच चौड़े छेद से

बाहर निकालना जो हमने मेरे लिए गोली चलाने के लिए बनाया था। हताशा में, मैंने दोनों हाथों से मिट्टी को गड्ढे में नीचे की ओर धकेला, जो पहले से ही आधा पानी और रेत से भरा हुआ था; गीले किनारे ढह रहे थे, जिससे यह साफ हो गया था कि अगले कुछ मिनटों में, अगर मैं जल्दी से बाहर नहीं निकला, तो मेरे ऊपर पत्थर और चट्टानें एक साथ गिर जाएँगी।

जब मुझे लगा कि मेरे शरीर के निकलने के लिए पर्याप्त जगह है, तो मैंने राइफल को पहिये के स्पोक्स के बीच धकेल दिया और फिर उसे उन पर टिका दिया। इसके बाद मैंने अपने द्वारा खोदे गए छेद से खुद को निचोड़ना शुरू किया, रेत और पानी में एक फंसी हुई मछली की तरह रेंगता हुआ, जब तक कि मैं आखिरकार संघर्ष करते हुए नदी के तल पर नहीं पहुँच गया।

बारिश लगातार तेज़ होती जा रही थी। मुझे नहीं पता था कि बाघ कितनी दूर चला गया है या किस दिशा में गया है, इसलिए मैंने राइफल उठाई और पहले नकली बाघ को नदी के किनारे से उठाकर पश्चिमी तट पर ऊँचाई पर रख दिया। फिर मैं केम्पेकराई लौटने के लिए नदी पार करने लगा, और ऐसा करते समय मुझे पहाड़ियों की दिशा से नदी में बहते बारिश के पानी की धीमी गर्जना सुनाई दी।

कुछ ही मिनटों में वह आ गई, तीन फुट से भी ऊँची झागदार जलधारा, जो अपने साथ सब कुछ बहा ले गई। लकड़ी के लट्ठे, उखड़े पेड़, सूखे बांस और हर तरह का बहकर आया कचरा, झागदार पानी में मिल गया। वह गाड़ी के पहिये तक पहुँचा और उसे ढक लिया; फिर गाड़ी का पहिया और बड़े-बड़े पत्थर तेज धारा के साथ बहते हुए नीचे की ओर चले गए। पाँच मिनट से भी कम समय में धारा एक उग्र नदी में बदल गई, जिसकी गहराई चार फुट से भी अधिक थी।

मुझे जो राहत मिली थी, उसकी सराहना करते हुए मैंने केम्पेकराई की वापसी यात्रा शुरू की। बारिश की बूंदों की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। अंधेरा घना था, मेरी टॉर्च से बस एक गोलाकार रोशनी निकल रही थी। ऊपर से, मेरे पहने हुए मुलायम रबर के जूतों के लिए ज़मीन बेहद फिसलन भरी थी। मुझे तीन और छोटी-छोटी धाराओं को पार करना था, जो उस धारा से थोड़ी छोटी थीं जहाँ मैं बैठा था, लेकिन सभी में पानी उफान पर था।

केम्पेकराई के आधे रास्ते में, मुझे आती हुई एक रोशनी की झलक दिखाई दी। थोड़ी देर बाद, मेरी मुलाकात उसे ले जा रहे लोगों के समूह से हुई—रंगा, बायरा और

गाँव के कुछ बहादुर लोग। पानी का स्तर बढ़ने पर उन्होंने मेरी स्थिति का अंदाजा लगा लिया था और आदमखोर सांप से मुठभेड़ का जोखिम उठाकर मेरी मदद के लिए आए थे।

अगली सुबह घने जंगल पर सूरज की तेज़ रोशनी पड़ रही थी। हम पिछली रात के अपने साहसिक कार्य के स्थान पर वापस लौटे। सभी नदियाँ तेज़ी से बह रही थीं, हालाँकि अब उनकी गहराई दो फीट से ज़्यादा नहीं थी। पुल के पास कहीं भी गाड़ी के पहिये का कोई निशान नहीं था। ज़ाहिर है, बाढ़ के पानी के साथ बहकर वह शायद चकनाचूर हो गया था। इसके बाद हमने दोनों किनारों की छानबीन की, लेकिन बाघ का कोई सुराग नहीं मिला। मूसलाधार बारिश ने खून के निशान या पंजों के निशानों को पूरी तरह मिटा दिया था।

दो घंटे बाद, निराश और हताश होकर हम केम्पेकराई लौट आए। वहाँ मैं तीन और दिन रुका रहा, बाघ के बारे में खबर सुनने की उम्मीद में, लेकिन मुझे निराशा ही हाथ लगी। बायरा और रंगा दोनों को लगा कि बाघ अपने घावों के कारण मर गया होगा, लेकिन मुझे इस पर बहुत संदेह था, क्योंकि मैं जानता था कि मेरा निशाना इतना सटीक नहीं था कि मैं एक साधारण तीर से ज़्यादा कुछ मार सकूँ।

इस जानवर का शिकार करने के उद्देश्य से ली गई मेरी छुट्टी की अवधि अब समाप्त हो चुकी थी, इसलिए मैं चौथे दिन सुबह केम्पेकराई से रवाना हो गया और रंगा को निर्देश दिया कि वह बायरा की मदद के लिए वहीं रुक जाए। फिर उन्हें पेन्नाग्राम आना था और वहाँ से धर्मपुरी जाना था, जहाँ एक टेलीग्राफ कार्यालय था जहाँ से वे मुझे संदेश भेज सकते थे। उन्हें वहाँ मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करनी थी।

बैंगलोर लौटने के दस दिन बाद, वह प्रतीक्षित टेलीग्राम आया जिसमें बताया गया था कि कोडेकराई फॉरेस्ट लॉज के एक वन रक्षक के घोड़े की हत्या कर दी गई है। टेलीग्राम से यह अनुमान लगाते हुए कि मेरे वहाँ पहुँचने तक चार दिन बीत चुके होंगे, मैंने जवाब भेजा और अपने साथियों को केम्पेकराई लौटने और वहाँ आगे की घटनाओं का इंतज़ार करने के लिए कहा, जिनकी सूचना टेलीग्राम द्वारा ही दी जानी थी।

छह दिन और बीत गए, जब मुझे दूसरा टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि चिनार नदी पर स्थित मोराप्पुर नामक छोटे से गांव से सोपथी की ओर जा रहे एक काफिले के आखिरी बैलगाड़ी चालक पर एक बाघ ने हमला कर दिया था।

यह निस्संदेह वही आदमखोर सांप था। एक घंटे के भीतर मैं कार से धर्मपुरी के

लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने अपने दो साथियों को साथ लिया। हम पेन्नाग्राम तक गए, जहाँ हमने कार छोड़ दी और लगभग बारह मील की पैदल यात्रा करके मोरप्पुर पहुँचे, रास्ते में चिनार नदी और सोपथी से गुज़रे।

इसी बीच मुझे पता चला कि बाघ के हमले का शिकार हुए गाड़ीवाले ने अपनी जान बचाने के लिए गाड़ी से कूदकर जुए पर छलांग लगाई और फिर गाड़ी खींच रहे दो बैलों के बीच आ गया। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और उसकी चीखों में गाड़ीवालों का काफिला भी शामिल हो गया। इसके बाद बाघ भाग गया।

मैंने मोरप्पुर में एक गाड़ीवाले से बात की। उसने बताया कि बाघ अचानक उसकी गाड़ी के पीछे प्रकट हुआ, जो कतार में सबसे पीछे थी, और पीछे से उस पर कूदने की कोशिश की। तब वह अपने बैलों के बीच छिप गया। जब मैंने उससे पूछा कि बाघ गाड़ी में चढ़ने के अपेक्षाकृत आसान काम में सफल क्यों नहीं हुआ, तो उसने बताया कि वह आधा ही अंदर कूदा था, और उसने आगे देखने का इंतजार नहीं किया।

इसी बीच, सोपथी से हमारा पीछा करते हुए आए यात्रियों के एक समूह ने खबर दी कि उन्हें चिनार नदी की ओर जाने वाले ताजे बाघ के पदचिह्न मिले हैं, जो पिछली रात के हैं।

यह सुनकर हम जल्दी से सोपथी लौट आए, और हमें पदचिह्न ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। चिनार नदी में पानी चांदी की धारा की तरह बह रहा था, किनारों से किनारों तक लहराता हुआ, और नरम, गीली रेत में हमने साफ देखा कि जिस बाघ ने ये निशान बनाए थे, वह बुरी तरह लंगड़ा रहा होगा। शरीर का लगभग सारा भार बाएं अगले पैर पर था, दाहिना पैर हर कदम पर रेत पर बहुत हल्का रखा जा रहा था।

मैंने पहले भी कहा है कि 'स्पाइडर वैली' इसी स्थान पर चिनार नदी से मिलती है। आधा मील नीचे की ओर, और जिस दिशा में बाघ गया था, उसी दिशा में नदी के बीचोंबीच एक छोटी, लंबी चट्टान थी। यह नदी के तल से लगभग चार फीट ऊपर उठी हुई थी और लगभग चालीस फीट लंबी और आठ फीट चौड़ी थी। मैंने उस रात उस चट्टान पर बैठने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि बाघ चिनार नदी के ऊपर की ओर वापस आएगा और मुझे मेरी ऊँची जगह पर देख लेगा।

रंगा की पगड़ी, पुराना भूरा कोट और धोती उधार लेकर, मैंने तीनों को पहन लिया, धोती को अपने कपड़ों के ऊपर पहना, और शाम 5:30 बजे तक चट्टान पर बैठ गया। चूंकि रंगा और बायरा अकेले मोरप्पुर लौटने से डर रहे थे, इसलिए उन्होंने इस

इलाके में चिनार के किनारे उगने वाले विशाल मुट्ठी वृक्षों की ऊँची डालियों पर आराम से रात बिताने का फैसला किया।

उस समय रातें अंधेरी होती थीं, लेकिन चट्टान पर मेरी स्थिति से, और चूंकि चिनार का जंगल उस स्थान पर लगभग 100 गज चौड़ा था, मैं सफेद रेत पर भरोसा करता था कि वह तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित करके बाघ की आकृति को किसी भी दिशा से प्रकट कर देगी। लंगड़ापन के कारण थोड़ी परेशानी के अलावा, मैं जानता था कि बाघ पचास गज की दूरी से अपने शिकार पर हमला नहीं करेगा, बल्कि अंतिम हमला करने से पहले जितना संभव हो सके मेरे करीब आने की कोशिश करेगा।

अपने प्रकाश उपकरणों का परीक्षण करने के बाद, मैंने सावधानीपूर्वक .405 पिस्तौल लोड की और उसे कॉक किया, जिसे मैंने अपने दाहिनी ओर चट्टान पर रख दिया, जहाँ बाघ उसे देख न सके और उसे शक न हो। मैंने एहतियात के तौर पर अपनी .12 बोर की दोहरी बैरल वाली जेफ्रीज़ पिस्तौल भी अतिरिक्त हथियार के रूप में साथ रखी थी। चोक बैरल में एल.जी. स्लग और दाहिनी बैरल में घातक गोली डालकर, मैंने जेफ्रीज़ को अपने बाईं ओर चट्टान पर रख दिया। चाय की मेरी थर्मस, सुबह की भूख मिटाने के लिए कुछ चपातियाँ और मेरा पाइप रात भर के लिए मेरी ज़रूरतों को पूरा कर रहे थे। मैं अपने ओवरकोट पर बैठ गया, क्योंकि वह उस कठोर चट्टान से मुझे आराम दे रहा था; अगर रात ज़्यादा ठंडी हो जाती तो मैं उसे पहन लेता।

जंगल से आने वाली जानवरों और पक्षियों की सामान्य आवाजों ने दिन को विदाई दी, जबकि रात के निवासियों ने अपनी कम मधुर और अधिक भयावह चीखों के साथ अपनी गतिविधि की बारी का स्वागत किया।

साढ़े सात बजे अंधेरा हो चुका था; चिनार के रेगिस्तान की रेत की परावर्तित सफेदी ने मेरी चट्टान को इस तरह घेर रखा था मानो वह एक द्वीप हो।

नौ बजने के ठीक बाद तेज़ शोर और हलचल हुई और एक हाथी नदी के किनारे से नीचे आया, रेत पर चलता हुआ उस चट्टान के पास से गुजरा जहाँ मैं बेसुध बैठा था, और आगे बढ़ गया। वहाँ उसे नदी के किनारे बहती हवा का झोंका मिला और उसने मेरी गंध पहचान ली। अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर पटकते हुए, और एक अजीब सी आवाज़ निकालते हुए, जैसे जस्ता की चादर तेज़ी से बीच से मुड़ रही हो, वह मुड़ा, मेरी गंध को और सूंघा और तेज़ी से नदी के किनारे घनी झाड़ियों की ओट में चला गया। जब हाथी शरारती नहीं होता, तो उसका व्यवहार ऐसा ही होता है।

ग्यारह बज रहे थे और मैं सूर्यास्त से ही चारों दिशाओं पर नज़र रख रहा था। तभी, मेरे ठीक पीछे और बाईं ओर, मुझे कुछ हलचल महसूस हुई, दिखाई नहीं दी। ध्यान से देखने पर भी कुछ नहीं दिखा। अरे नहीं! क्या वह नदी की हल्की भूरी-सफेद रेत की चादर पर धुंधला सा कुछ तो नहीं था? मैंने नज़र हटाई और फिर उसी जगह पर वापस देखा जहाँ मुझे धुंधलापन दिखा था। वह वहाँ नहीं था!

मैंने सोचा, 'यह तो अजीब बात है। क्या मेरी आंखों को धोखा हो रहा है, या वे बस थक रही हैं?'

ध्यान से देखने पर मुझे वह फिर से दिखाई दिया। लेकिन इस बार वह मेरे बहुत करीब था, पहले की तुलना में। दरअसल, वह दूर वाले किनारे और उस चट्टान के ठीक बीच में था जिस पर मैं बैठा था।

जब तक मैं इस विचित्र वस्तु को परिभाषित करने में सफल नहीं हो जाता, तब तक मैं किसी और दिशा में देखने का जोखिम नहीं उठा सकता था। और जैसे-जैसे मैं उसे देखता गया, वह फैलती हुई, मेरी ओर तैरती हुई प्रतीत हुई, कभी लंबी तो कभी छोटी होती हुई, लेकिन कोई आवाज़ नहीं कर रही थी।

फिर अचानक मुझे समझ आया कि यह क्या है। बाघ चुपचाप, छोटे-छोटे तेज़ कदमों से, पेट के बल रेंगता हुआ मेरी ओर आ रहा था, जब तक कि उसे यह महसूस नहीं हुआ कि वह अपने अंतिम, घातक हमले के लिए पर्याप्त दूरी पर है।

मेरे चेहरे और गर्दन से पसीना बह रहा था; मैं भय और उत्तेजना से कांप रहा था। लेकिन यह काफी नहीं था; इसलिए मैंने गहरी सांस ली और उसे रोककर कांपना बंद किया, अपने ईश्वर से मौन प्रार्थना की और राइफल को अपनी गोद में रखकर कंधे पर उठा लिया।

लगभग बीस गज दूर खड़ा बाघ, मेरी हलचल देखकर समझ गया कि उसकी मौजूदगी का पता चल गया है। एक पतली काली लकीर की तरह, उसकी पूंछ उसके पीछे हिल रही थी। हमला करने के लिए तैयार होते ही उसका धुंधलापन और भी स्पष्ट हो गया। मेरी टॉर्च की रोशनी सीधे उसके गुर्राते, चपटे सिर पर पड़ी। तभी राइफल चली, उसके छलांग लगाने से ठीक एक पल पहले।

मेरी गोली लगते ही वह उछला और आगे की ओर भागा। मेरी जान इसलिए बच गई क्योंकि मशाल बुझी नहीं थी और मैं दूसरी गोली चला सका। तब तक वह चट्टान तक पहुँच चुका था।

उसके पहले के घाव या मेरी हालिया गोलियों की वजह से—उस समय मैं यह नहीं बता सकता था कि कौन सी वजह थी—वह ऊपर नहीं चढ़ पाया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल किनारे से चलाई गई थी, उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में जाकर लगी, और उस हमले को रोक दिया जो लगभग मुझ तक पहुँचने ही वाला था, और वह चिनार की रेत पर लुढ़क गया, उसका अंत हो गया।

सोपथी लौटते समय सीटी बजाते हुए, मैंने रंगा और बायरा को मुट्ठी के पेड़ों से नीचे उतारा, जिन पर वे बैठे थे। मेरी गोलियों की आवाज सुनकर और नदी के किनारे से मुझे आते देख, वे समझ गए कि मैंने बाघ को मार गिराया है।

अगली सुबह हमने उसे औसत कद-काठी का, कुछ दुबला-पतला नर बाघ पाया। सत्रह दिन पहले गाड़ी के पहिए के नीचे से चलाई गई मेरी गोली ने अनुमान से कहीं अधिक नुकसान पहुँचाया था, क्योंकि वह उसके दाहिने कंधे से होकर गुज़री थी, हड्डी को तोड़ते हुए बाहर निकल गई थी। लेकिन घाव अच्छी हालत में था, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अंततः ठीक हो जाता, हालाँकि बाघ अपंग ही रहता। पिछली रात चलाई गई मेरी पहली गोली उसके खुले मुँह से होकर गर्दन से बाहर निकल गई थी, जिससे एक बड़ा छेद हो गया था। फिर भी, वह लड़ता रहा। दूसरी गोली ऊपर की ओर गई, बाएं कंधे के पीछे से अंदर घुसी, फेफड़ों से नीचे की ओर गुज़री और फिर बाहर निकल गई। फिर भी, वह लड़ता रहा। केवल मेरी आखिरी गोली, जो उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से से होकर गुज़री, ने उसके उस मस्तिष्क को चकनाचूर कर दिया था जो उसकी अदम्य भावना को शक्ति प्रदान करता था।

इस बाघ को आदमखोर किसने बनाया? यह वह पहेली है जिसे हर शिकारी किसी आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के बाद सुलझाने की कोशिश करता है, न केवल अपनी जानकारी के लिए, बल्कि आम जनता को शिक्षित करने के लिए भी। और यह जानवर भी इस अटल नियम का अपवाद नहीं था कि मानव जाति ही बाघ को आदमखोर बनाती है। उसके दाहिने पैर में, उसी जगह पर एक पुराना गोली का घाव था जहाँ मुझे हमारी पहली मुठभेड़ में चोट लगी थी, बस थोड़ा नीचे; कोहनी के जोड़ में एक चपटी सीसे की गोली फंसी हुई थी, जो एक साल या उससे भी पहले किसी बंदूक से चलाई गई थी।

उस सबसे महत्वपूर्ण जोड़ में फंसी इस बाहरी वस्तु ने न केवल बाघ को असहनीय पीड़ा दी, बल्कि जंगली जानवरों और मवेशियों जैसे अपने वैध भोजन को

मारने में उसकी गति को भी काफी हद तक बाधित कर दिया। इसने उसके दाहिने पैर के उपयोग को कमजोर कर दिया था, जो उसके सामान्य शिकार को पकड़ने और नीचे खींचने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निस्संदेह, यही एकमात्र कारण था जिसने बाघ को भूख से बचने के लिए मनुष्यों को भोजन के रूप में अपनाने के लिए मजबूर किया।

---

1 नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें

दो

आलम बक्स और बड़ा काला भालू

अब मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, वह एक सुस्त भालू के बारे में है। एक काफी बड़ा, काला और खूंखार भालू।

जैसा कि मैंने अन्य कहानियों में भी उल्लेख किया है, सभी भालू उत्तेजित, अविश्वसनीय और चिड़चिड़े स्वभाव के जानवर होते हैं। वे बिना किसी स्पष्ट कारण के लोगों पर हमला करने के लिए जाने जाते हैं, बशर्ते कि कोई व्यक्ति उनके बहुत करीब से गुजरे, चाहे भालू सो रहा हो, खाना खा रहा हो या बस टहल रहा हो। इसलिए स्थानीय लोग भालुओं से दूरी बनाए रखते हैं; हाथी के साथ-साथ, वे जंगल में रहने

वाले लोगों के बीच सबसे अधिक सम्मान के पात्र होते हैं।

यह विशेष भालू अपने बेवजह और असाधारण रूप से गुस्सैल स्वभाव और आक्रामकता के कारण अपनी प्रजाति में सबसे अलग था। वह लोगों पर हमला करने के लिए हर संभव प्रयास करता था, यहाँ तक कि जब वह उन्हें काफी दूर से देखता था तब भी।

उसके असामान्य व्यवहार का कारण समझाना कठिन था। उसके बारे में कई कहानियां प्रचलित थीं, जो जितनी अलग-अलग थीं उतनी ही असाधारण भी। सबसे सरल कहानी यह थी कि वह पूरी तरह पागल था। कुछ अन्य कहानियों में कहा गया कि वह एक मादा भालू थी जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए थे और उसने मानव जाति से बदला लेने की कसम खाई थी। मुझे लगता है कि किसी समय किसी इंसान ने उस भालू को घायल कर दिया था। शायद सबसे अविश्वसनीय कहानी यह थी कि लगभग एक साल पहले, इस भालू ने एक भारतीय लड़की को साथी बनाने के लिए अगवा कर लिया था, जब वह उस पहाड़ी पर बकरियों का झुंड चरा रही थी जहां वह रहता था। कहानी आगे कहती है कि पूरा गांव उस लड़की को बचाने के लिए एकजुट हो गया था, और अंततः वे उसे बचाने में सफल हो गए, जिससे भालू बहुत नाराज हो गया; इसके बाद उसने प्रतिशोध में मनुष्यों पर हमला करना शुरू कर दिया।

कारण चाहे जो भी हो, इस भालू के नाम पीड़ितों की एक लंबी सूची दर्ज थी; मुझे बताया गया कि लगभग बारह लोग मारे गए थे और दो दर्जन अन्य घायल हुए थे।

अन्य भालुओं की तरह, वह भी हमेशा शिकार के चेहरे पर हमला करता था, जिसे वह अपने बेहद लंबे और शक्तिशाली पंजों से नोंच-नोंच कर फाड़ देता था। इसके अलावा, वह जानबूझकर बेरहमी से काटता भी था ताकि अपने काम में सफल हो सके। घायलों में से लगभग आधे लोगों की एक या दोनों आंखें चली गई थीं; कुछ की नाक कट गई थी, जबकि कुछ के गाल बुरी तरह से नोंच दिए गए थे। मारे गए लोगों के चेहरे लगभग धड़ से अलग हो गए थे। स्थानीय अफवाहों के अनुसार, भालू अपने शिकारों को खाने लगा था, जिनमें से आखिरी तीन को उसने आधा खा लिया था।

मुझे इन अफवाहों की सच्चाई की पुष्टि करने का अवसर नहीं मिला, लेकिन मुझे लगा कि ये कुछ हद तक सच हो सकती हैं, क्योंकि भारतीय सुस्त भालू कभी-कभी सड़े-गले मांस को भी खा लेता है, हालांकि आम तौर पर वह पूरी तरह शाकाहारी होता है और केवल जड़ वाली सब्जियां, फल, शहद, दीमक और इसी तरह के स्वादिष्ट खाद्य

पदार्थ ही खाता है। इसलिए ताजा मांस, यहां तक कि मानव मांस भी, उसके लिए शायद अवांछित न हो।

यह भालू मूल रूप से नागवारा पहाड़ियों में रहता था, जो बैंगलोर से लगभग 105 मील उत्तर-पश्चिम में स्थित अरसिकेरे नामक बड़े शहर के पूर्व में और मैसूर राज्य में स्थित हैं।

इन्हीं पहाड़ियों पर उसने अपने पहले अपराध किए थे। फिर, जैसे-जैसे उसका मनुष्यों का भय कम होता गया और वह अधिक साहसी होता गया, बिना किसी स्पष्ट कारण के वह मैदानों में उतर आया और भोर और शाम के समय खेतों में लोगों को परेशान करने लगा। वह इधर-उधर बिखरी हुई असंख्य छोटी-छोटी चट्टानों से भरी पहाड़ियों में से किसी एक से भोजन की तलाश में निकलता था।

लगभग एक साल से मैं इस जानवर के बारे में कभी-कभार कहानियां सुनता आ रहा था, लेकिन मैंने उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, क्योंकि मुझे लगता था कि भारत में जंगली जानवरों द्वारा किए गए हमलों और हत्याओं की लगभग सभी कहानियों की तरह, ये कहानियां भी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई थीं। इसके अलावा, जैसा कि मुझे लगता है कि मैंने कहीं और भी जिक्र किया है, ब्रुइन मेरा काफी पुराना दोस्त है, जिसके प्रति मेरे मन में कोई द्वेष नहीं है। इसलिए मैं उसके पीछे जाने के लिए बिल्कुल भी इच्छुक नहीं था।

लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर कर दिया। मेरा एक पुराना दोस्त है, आलम बक्स नाम का एक बुजुर्ग मुस्लिम, जो अरसिकेरे से होकर शिमोगा जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित एक मुस्लिम दरगाह का रखवाला है। यह दरगाह लगभग पचास साल पहले रहने वाले एक मुस्लिम संत का दफन स्थान है, और भारत भर में फैली सैकड़ों ऐसी ही दरगाहों की तरह, मुस्लिम समुदाय द्वारा इसे संरक्षित और पवित्र माना जाता है। हर दरगाह का अपना रखवाला या देखभाल करने वाला होता है; आमतौर पर कोई बुजुर्ग व्यक्ति होता है जो दरगाह की साफ-सफाई और देखभाल के लिए वहीं रहता है। उसका एक विशेष कर्तव्य दरगाह के ऊपर एक दीपक जलाना है, जो रात भर जलता रहता है, यह दर्शाने के लिए कि संत की स्मृति श्रद्धालुओं के हृदय में सदा प्रज्वलित रहे।

मेरी पहली मुलाकात आलम बक्स से एक अंधेरी रात में हुई थी, जब मैं बाघ के शिकार के लिए बैंगलोर से शिमोगा जा रहा था। मेरी स्टडबेकर कार का पिछला

पहिया निकल गया और ब्रेक का ड्रम ज़ोर से सड़क पर टकराया। उस समय मैं अकेला था और कार से बाहर निकलकर मैंने बड़ी घृणा और झुंझलाहट के साथ यह सब देखा। सौभाग्य से, यह घटना लगभग मंदिर के सामने ही हुई थी, और ब्रेक के ड्रम के टकराने और सड़क पर घिसटने की आवाज़ सुनकर बूढ़े आलम बक्स जाग गए और देखने आए कि आखिर हुआ क्या है। मेरी परेशानी देखकर, उस बूढ़े ने मेरी मदद करने की पेशकश की, और उन्होंने काफी हद तक मेरी मदद की। वे अपने घर से लालटेन लाए, कार का एक्सल उठाते समय सहारा देने के लिए पत्थर इकट्ठा किए, और अंत में, मुझे गर्म चाय पिलाई। मैंने उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया, जब उसने गाड़ी का पहिया वापस लगा दिया था, और वादा किया कि जब भी मैं उसकी छोटी सी झोपड़ी के पास से गुजरूंगा, उससे मिलूंगा। मैंने अपना वादा निभाया, और जब भी मैं उसके पास से गुजरता, तो हमेशा उसके लिए कुछ न कुछ सामान जरूर लाता था।

मंदिर से लगभग चार सौ गज आगे पत्थरों का एक छोटा सा टीला था, जिसके बीच लैंटाना की झाड़ी उगी हुई थी। इस टीले के चारों ओर, मंदिर और उससे सटी सड़क तक, खेत थे जिनमें ग्रामीण मानसून की बारिश के बाद मूंगफली उगाते थे। भालुओं को मूंगफली बहुत पसंद होती है और हमारा बड़ा काला भालू भी इसका अपवाद नहीं था। पत्थरों से ढका यह टीला उसके लिए सुविधाजनक ठिकाना था और मूंगफली के खेत उसे बहुत आकर्षित करते थे। इसलिए उसने चट्टानों के बीच अपना डेरा जमा लिया।

उसने एक लटकते हुए बड़े पत्थर के नीचे एक गहरी गुफा में अपना ठिकाना बनाया था। सूर्यास्त तक भूख से बेहाल होकर वह अपनी गुफा से बाहर आता दिखाई देता था, और जैसे-जैसे शाम ढलकर रात होती जाती, वह पहाड़ी से नीचे उतरकर मूंगफली के खेतों में आ जाता। यहाँ वह पूरी रात व्यस्तता से बिताता, खाता-पीता, उखाड़ता और रात भर इधर-उधर घूमता रहता। भोर होते ही वह तृप्त हो जाता, उसका पेट जड़ों, मूंगफली, दीमकों, कीड़ों और अन्य तरह के चारे से भरा होता, जो उसे भोजन की तलाश में मिलता। आलस से वह वापस अपने ठिकाने पर चढ़ जाता, और दिन के गर्म घंटे गहरी और हल्की नींद में बिताता। मैं बताना भूल गया कि पहाड़ी के दूसरी ओर एक छोटा सा तालाब था, जिसे भारतीय भाषा में प्राकृतिक झील कहते हैं, जिससे हमारे इस प्यारे भालू को किसी चीज की कमी नहीं होती थी।

लगभग इसी समय, छोटे से मंदिर के पास से गुजरने वाली मुख्य सड़क के किनारे

लगे अंजीर के पेड़ों में फल लगने का मौसम आ जाता था। पके हुए लाल फलों के गुच्छे शाखाओं पर भर जाते थे और नीचे ज़मीन पर गिरकर एक मुलायम, लाल, स्पंजी परत बना देते थे। दिन के समय सैकड़ों तरह के पक्षी अंजीर खाते थे। रात में, बड़ी संख्या में उड़ने वाली लोमड़ियाँ, जो आकार और रूप में प्रसिद्ध 'पिशाच' चमगादड़ जैसी दिखती हैं, अपने चमड़े जैसे पंखों को फड़फड़ाती हुई, चीखती-चिल्लाती, एक-दूसरे को नोचती और आपस में लड़ती हुई पके हुए फलों को चट कर जाती थीं।

दिन-रात आने वाले ये असंख्य आगंतुक, जितने अंजीर खाते थे, उससे दोगुने अंजीर गिरा देते थे, जिससे ज़मीन पर बिखरे हुए फलों की बहुतायत और बढ़ जाती थी। ये फल हवा से उड़कर अक्सर अपने वजन से ही गिर जाते थे। यह सब भालू के लिए और भी आकर्षक था, क्योंकि अब उसे अपने भोजन में एक सुखद बदलाव मिल गया था। यह सब प्रचुर मात्रा में मौजूद था, बस खाए जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इसलिए वह खेतों से अंजीर के पेड़ों के पास जाया करता था, और इस तरह भोजन की तलाश में वह मंदिर परिसर में पहुँच जाता था। यहीं से मुसीबत शुरू हुई।

आलम बक्स का एक बेटा था, जिसकी उम्र लगभग बाईस वर्ष थी। वह अपने संरक्षक की बूढ़ी पत्नी और छोटी बहन के साथ दरगाह में रहता था। एक रात परिवार ने लगभग नौ बजे भोजन किया और सोने की तैयारी कर रहे थे, तभी लड़का किसी कारणवश बाहर चला गया। रात काफ़ी अंधेरी थी और भालू भी पास ही अंजीर खा रहा था। अचानक किसी इंसान को देखकर भालू को लगा कि यह बेवजह की घुसपैठ है और उसने तुरंत लड़के पर हमला कर दिया। जानबूझकर नहीं, बल्कि अनजाने में भालू ने लड़के के गले पर काट लिया, न कि उसके चेहरे पर, जो आमतौर पर उसका पहला निशाना होता था। लड़के ने चीखने की कोशिश की, लात मारी और संघर्ष किया। भालू ने उसे फिर से काटा, इस बार नाक और एक आँख पर, और उसके सीने, कंधों और पीठ पर बुरी तरह से खरोंचें मारीं। फिर उसने उसे छोड़ दिया और अँधेरे में भाग गया।

खून से लथपथ लड़का लड़खड़ाते हुए अपने माता-पिता के पास लौटा। उसकी गर्दन की नस फट गई थी, और हालाँकि उन्होंने उपलब्ध कपड़ों से खून रोकने की कोशिश की, लेकिन वे उसकी जान बचाने में असफल रहे। अंधेरे में उसकी जान धीरे-धीरे निकल गई, क्योंकि एक-एक कपड़ा उसके खून से भीगता चला गया।

भोर होते ही युवक की मृत्यु हो गई, जबकि अंजीर और मूंगफली से लबालब भरा

बूढ़ा भालू चट्टानों के बीच बनी अपनी गुफा में वापस चढ़ गया।

आलम बक्स एक गरीब आदमी था और उसके पास मुझे टेलीग्राम भेजने के लिए पैसे नहीं थे, यहाँ तक कि ट्रेन या बस से बैंगलोर जाने का किराया भी नहीं था। लेकिन उसने मुझे एक पोस्टकार्ड भेजा जिस पर दुख भरी कहानी लिखी थी; पेंसिल से, कांपती हुई उर्दू लिपि में। वह उसके आँसुओं से भीगा हुआ था। पोस्टकार्ड दो दिन बाद पहुँचा और मैं तीन घंटे के भीतर आसिकेरे के लिए निकल गया।

मुझे लगा था कि इस भालू का शिकार करना आसान होगा और इसमें ज़्यादा से ज़्यादा एक-दो घंटे लगेंगे। इसलिए, मैंने लंबी यात्रा की तैयारी नहीं की थी। मैं अपने साथ सिर्फ़ एक टॉर्च, .405 विंचेस्टर राइफ़ल और एक जोड़ी कपड़े लेकर गया था। मैं शाम पाँच बजे के कुछ देर बाद आलम बक्स पहुँचा और उसने मुझे अपनी कहानी सुनाने में ज़्यादा समय नहीं लगाया।

उस समय चांदनी नहीं थी। फिर भी, जो योजना अपनानी थी वह सरल प्रतीत होती थी; अर्थात्, पूरी तरह अंधेरा होने तक प्रतीक्षा करना और फिर अपनी टॉर्च की सहायता से भालू की खोज में निकलना।

इस प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए, आलम बक्स ने मुझे सूर्यास्त के समय अपने घर में प्रवेश करने दिया और यह दिखाने के लिए दरवाजा बंद कर दिया कि सब कुछ शांत है। उस छोटे से अंधेरे कमरे में हम एक छोटे से तेल के दीपक की टिमटिमाती रोशनी में बातें कर रहे थे, जबकि वह बार-बार अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप कर रहा था। वास्तव में, कुछ ही मिनटों में पूरा परिवार रोने-धोने लगा। मुझे मजबूरी में आठ बजे तक लगातार यह सब सुनना पड़ा, जब मैं इसे और सहन नहीं कर सका और भालू की तलाश में बाहर जाने का फैसला किया।

अपनी राइफल में गोलियां भरकर और टॉर्च को ठीक से काम करते देख, मैं बाहर निकला। आलम बक्स ने मेरे पीछे दरवाजा बंद कर दिया और कुंडी लगा दी। अंधेरा घना था, और जैसे ही मैंने राइफल के मुंह के पास लगी टॉर्च का बटन दबाया, उसकी तेज रोशनी मेरे बाईं ओर मूंगफली के खेतों और दाईं ओर सड़क के किनारे लगे अंजीर के पेड़ों की घनी कतार पर पड़ी।

भालू कहीं नज़र नहीं आया, इसलिए मैंने अंजीर के पेड़ों से उसकी तलाश शुरू की। ये पेड़ सड़क के दोनों ओर उगे हुए थे, इसलिए मैंने सोचा कि सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि मैं सड़क के किनारे-किनारे चलूँ और अपनी राइफल को सड़क

के एक तरफ से दूसरी तरफ घुमाता रहूँ। मैं इसी तरह आसिकेरे से लगभग डेढ़ मील दूर चला, लेकिन भालू का कोई निशान नहीं दिखा। फिर मैं मंदिर वापस आया और विपरीत दिशा में डेढ़ मील और चला, लेकिन फिर भी भालू का कोई निशान नहीं मिला। इसलिए मैं मंदिर वापस आया और मूंगफली के खेतों में तलाश शुरू कर दी।

टॉर्च की रोशनी से परावर्तित होकर कई आँखों की चमकीली झलकें मेरी ओर चमक रही थीं। लेकिन वे खरगोशों और तीन-चार सियार की आँखें निकलीं। मैंने टीले का चक्कर लगाया और तालाब के किनारे-किनारे दूसरी तरफ चलने लगा; जहाँ मुझे जंगली सूअरों का एक छोटा झुंड कीचड़ में लोटता हुआ मिला। लेकिन बूढ़े भालू का अभी भी कोई निशान नहीं था। फिर मैं टीले के पास गया और उसके चारों ओर दो-तीन बार घूमकर अपनी टॉर्च ऊपर और चारों दिशाओं में चमकाई। यह थका देने वाला काम था, और बूढ़ा भालू दिखाई नहीं दिया। तीसरी बार तो मैं लगभग एक बहुत बड़े रसेल वाइपर पर पैर रखने ही वाला था जो मेरे रास्ते में दो चट्टानों के बीच कुंडली मारकर बैठा था। भालू की आँखों की परावर्तित चमक को ढूंढने में व्यस्त होने के कारण मैंने अपने सामने की ज़मीन पर ध्यान नहीं दिया। मेरा पैर वाइपर से कुछ ही इंच दूर था जब उसने हमला करने की तैयारी में ज़ोरदार, कर्कश फुफकार के साथ अपना शरीर फुला लिया। सहज ही मैंने उसकी चेतावनी को माना और पास नहीं आया, और पीछे की ओर छलांग लगाई। साथ ही, मैंने टॉर्च की रोशनी सीधे सांप पर डाली। सांप ने अपने जबड़े फैलाकर उस जगह पर काटने के लिए झपट्टा मारा, जहाँ कुछ ही पल पहले मेरे पैर थे। बाल-बाल बच गया, और उस पल मुझे लगा कि सांप को गोली मार दूं। लेकिन इससे बहुत शोर मच जाता और भालू भी डरकर भाग सकता था, साथ ही एक कीमती कारतूस भी बर्बाद हो जाता। आखिरकार, सांप ने मुझे चेतावनी देकर अच्छा किया था, इसलिए मैंने बदले में उस पर एक छोटा पत्थर फेंका, जिससे वह चट्टानों के नीचे रेंगकर भाग गया।

तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि भालू या तो शाम को पहले ही बाहर निकल गया था और बहुत दूर भटक गया था, या फिर उसे भूख नहीं लगी थी और वह अभी भी अपनी गुफा में ही था। मैं आलम बक्स की झोपड़ी में लौट आया और कुछ घंटों में एक और चक्कर लगाने का फैसला किया।

मैंने ऐसा ही किया, और उसके बाद दो और चक्कर लगाए, कुल मिलाकर चार चक्कर लगाए, लेकिन भालू कहीं दिखाई नहीं दिया, और झूठी सुबह होने पर भी मैं

व्यर्थ ही दुश्मन की तलाश में पहाड़ी के चारों ओर चक्कर लगाता रहा।

दिन की रोशनी होते ही मैंने आलम बक्स से कहा कि मैं बैंगलोर लौट जाऊंगा, लेकिन उन्होंने मुझसे आज का दिन रुकने और पहाड़ी पर चढ़कर गुफा में भालू को ढूंढने का आग्रह किया। इस बीच उनकी पत्नी ने गरमा गरम चपातियां (गेहूं के आटे से बनी गोल चपटियां) और गरमा गरम चाय तैयार कर दी थी, जिन्हें मैंने बड़े चाव से खाया। फिर मैं सो गया। दोपहर करीब आलम बक्स ने मुझे जगाया और बताया कि उनकी पत्नी ने मेरे लिए खास पुलाव बनाया है। इसके लिए उनका धन्यवाद करते हुए मैंने भी उसे खाना शुरू किया और देखते ही देखते सारा खत्म कर दिया। श्रीमती आलम बक्स बहुत प्रसन्न हुईं कि मुझे उनका खाना इतना पसंद आया। सूरज अब अपने चरम पर था और दोपहर की तेज गर्मी में चमकती चट्टानों पर बेरहमी से चमक रहा था। मुझे पता था कि भालू को ढूंढने का यही अच्छा समय होगा, यह मानते हुए कि वह घर पर होगा, क्योंकि वह गहरी नींद में सो रहा होगा।

आलम बक्स मेरे साथ पहाड़ी पर चढ़े और पचास गज की दूरी से उन्होंने मुझे वह ढलान वाली चट्टान दिखाई जिसके नीचे भालू की गुफा थी। मैं अपने जूतों के रबर के तलवों से बिना आवाज़ किए, पंजों के बल ऊपर चढ़ने लगा। लेकिन इस फायदे के बदले मुझे जल्द ही एक बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि धूप में तपती चट्टान की गर्मी रबर को भेदकर मेरे पैरों के तलवों को जलाने लगी।

गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचकर, मैं अपने घुटनों के बल बैठ गया और ध्यान से सुनने लगा।

सोते हुए भालू के खर्राटे लेना आम बात है, अक्सर इंसानों के खर्राटों जितने तेज़। अगर भालू गहरी नींद में सो रहा होता, जैसा कि मुझे उम्मीद थी, तो मुझे उसकी वो जानी-पहचानी आवाज़ सुनने की उम्मीद थी। लेकिन मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी, और लगभग दस मिनट तक ऐसे ही बैठे रहने के बाद, सूरज की किरणें मेरी कमीज़ के पीछे से महसूस होने लगीं। कुछ कंकड़ पास ही पड़े थे, और मैंने उनमें से कुछ उठाकर गुफा में फेंकना शुरू कर दिया।

इस तरह की हरकत से तो सो रहा भालू भी बहुत गुस्सा हो जाता है। लेकिन मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। इसलिए मैं गुफा के प्रवेश द्वार के पास गया और पत्थर अंदर की तरफ फेंके। फिर भी कुछ नहीं हुआ। मैंने और पत्थर फेंके, लेकिन फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ। भालू अपनी गुफा में नहीं था।

पहाड़ी से नीचे उतरते हुए मैंने आलम बक्स को खबर दी और बैंगलोर लौटने की अपनी मंशा बताई। मैंने उनसे अनुरोध किया कि अगर भालू दोबारा दिखाई दे तो मुझे टेलीग्राम भेज दें। मैंने उन्हें टेलीग्राम के खर्च और तात्कालिक खर्चों के लिए कुछ पैसे दिए। फिर मैं बैंगलोर के लिए रवाना हो गया। एक महीना बीत गया, और मुझे कोई खबर नहीं मिली।

मंदिर स्थल से लगभग बीस मील उत्तर-पश्चिम दिशा में मैसूर के कादुर जिले में स्थित चिकमगलूर का जंगल शुरू होता है। चिकमगलूर और कादुर के लगभग मध्य में जंगल से घिरा हुआ छोटा सा कस्बा सकरेपटना स्थित है।

मुझे अगली खबर यह मिली कि सकरेपटना के पास एक भालू ने दो लकड़हारों पर गंभीर हमला किया था, जिनमें से एक की बाद में मौत हो गई। चिकमगलूर के जिला वन अधिकारी (डीएफओ) ने मुझे पत्र लिखकर पूछा कि क्या मैं आकर उस भालू को मार सकता हूँ।

मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह वही भालू था जो आलम बक्स के बेटे की मौत का कारण बना था, लेकिन जंगल के विशाल क्षेत्र में किसी एक विशेष भालू को ढूंढना भूसे के ढेर में सुई खोजने जैसा था, इसलिए मैंने पशुपालन कार्यालय को पत्र लिखकर जानवर के ठिकाने के बारे में अधिक सटीक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया।

दस दिन बाद उसने जवाब दिया कि भालू कस्बे से लगभग तीन मील दूर एक छोटी पहाड़ी पर एक गुफा में रह रहा है, जो 'आयनकेरे' नामक एक बड़ी झील की ओर जाने वाले पैदल मार्ग के पास है, और यह भी कि उसने वन रक्षक पर हमला किया था, जो अपनी नियमित गश्त के दौरान इसी रास्ते पर चल रहा था।

इसलिए मैं कार से चिकमगलूर गया, वहां से वन विभाग का अधिकारी (डीएफओ) लिया और सकरेपटना कस्बे की ओर चल पड़ा, जहां मैसूर वन विभाग का एक छोटा सा विश्राम गृह है। मैंने अगले कुछ दिनों के लिए यहीं अपना मुख्यालय बनाया।

संयोगवश—या कहें बदकिस्मती से—अगली ही दोपहर एक आदमी दौड़ता हुआ बंगले पर आया और हमें बताया कि एक पशुपालक—दरअसल उसका भाई—उसी पहाड़ी के पास अपने मवेशियों को चरा रहा था जहाँ भालू के रहने की आशंका थी, तभी उस पर भालू ने हमला कर दिया। उसने मदद के लिए चीख-पुकार मचाई और

उसकी चीखें भालू की गुर्राहट में मिल गईं। उसका भाई, जो पहाड़ी से नीचे और पगडंडी के पास था, आवाज़ें सुनकर और इंतज़ार नहीं किया, बल्कि दौड़कर बंगले पर वापस आया और हमें यह खबर दी।

भालू मूलतः रात्रिचर प्राणी होते हैं और दिन के उजाले में कभी बाहर नहीं निकलते। ज़्यादा से ज़्यादा वे शाम या सुबह तड़के ही दिखाई देते हैं, दोपहर में तो बिलकुल नहीं। शायद दुर्भाग्यवश चरवाहा किसी ऐसी जगह के बहुत करीब चला गया था जहाँ भालू सो रहा था, जिसके कारण भालू ने उस असामान्य समय पर उस पर हमला कर दिया। इस अजीब हमले का यही एकमात्र कारण हो सकता है।

शाम के लगभग 4:30 बज रहे थे जब उसने हमें यह खबर दी, और मैं अपनी राइफल, टॉर्च और तीन-चार सहायकों के साथ उस चरवाहे को बचाने के लिए निकल पड़ा जिस पर हमला हुआ था। हमें जल्द ही पता चला कि घटनास्थल की दूरी उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के भाई द्वारा बताई गई दूरी से कहीं अधिक थी। मैंने अनुमान लगाया कि जंगल में लगभग छह मील चलने के बाद हम एक पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे जो घनी झाड़ियों से ढकी हुई थी, जिसमें बांस के झुंड भी शामिल थे। तब लगभग छह बज चुके थे और सर्दी का मौसम होने के कारण अंधेरा होने लगा था। मेरे साथ आए लोगों ने आगे आने से इनकार कर दिया और कहा कि वे सकरेपटना लौट जाएँगे, मुझे उनके साथ चलने की सलाह दी और सुझाव दिया कि हमें अगली सुबह अपनी खोज जारी रखने के लिए वापस आना चाहिए। लापता व्यक्ति का भाई वहीं रुकने के लिए तैयार हो गया जहाँ हम खड़े थे, लेकिन वह जंगल में आगे आने से बहुत डरा हुआ था। अपने लापता रिश्तेदार को खोजने में मेरी मदद करने के लिए वह बस इतना ही कर सका कि उसने अपने हाथ के इशारे से उस क्षेत्र की ओर संकेत किया जहाँ हमला हुआ था।

मैं उस दिशा में आगे बढ़ा और उस आदमी का नाम ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा जिस पर हमला हुआ था। मेरी चीखों का कोई जवाब नहीं मिला और मैं झाड़ियों के बीचोंबीच और अंदर चला गया। तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था, लेकिन मैं घबराया नहीं, क्योंकि मैं अपनी टॉर्च साथ लाया था और झाड़ियों के बीच से रास्ता ढूंढते हुए उसे चमकाने लगा।

कुछ ही देर में घना जंगल इतना घना हो गया कि मैं आगे नहीं बढ़ सका और वापस लौटने ही वाला था कि तभी मुझे दूर से एक हल्की सी कराह सुनाई दी। उस

जगह पर ज़मीन ढलानदार होकर एक घाटी जैसी बन जाती थी जो पहाड़ी की दो चोटियों के बीच स्थित थी, और कराह इस घाटी के भीतरी हिस्से से आती हुई प्रतीत हुई।

लापता व्यक्ति का नाम थिम्मा था, और मैंने अपने दोनों हाथों को मुँह पर रखकर, जोश से उसका नाम पुकारा, और बीच-बीच में जवाब सुनने का इंतज़ार करता रहा। हाँ! निःसंदेह, वही आवाज़ फिर से सुनाई दी! एक धीमी, सिसकती हुई आवाज़, कमज़ोर, लेकिन फिर भी सुनाई देने वाली। यह आवाज़ निश्चित रूप से घाटी से मुझ तक पहुँची।

घनी झाड़ियों से रास्ता बनाते हुए, मैं ढलान पर मुश्किल से नीचे उतरा, चट्टानों और ढीले पत्थरों पर फिसलता रहा, और बार-बार कांटों का सहारा लेता रहा। कुछ सौ गज चलने के बाद, मैंने फिर से आवाज़ लगाई। कुछ देर बाद मुझे अपने दाहिनी ओर कहीं से कराहने की आवाज़ सुनाई दी। मैं इसी तरह उस आवाज़ का पीछा करता रहा, जब तक कि आखिरकार मुझे थिम्मा एक पेड़ के नीचे अपने ही खून के पोखर में पड़ा हुआ नहीं मिला। उसका चेहरा कच्चे मांस और टूटी हड्डियों का ढेर था, और उसके सांस लेने का एकमात्र संकेत जमे हुए खून से निकलती हवा के बुलबुले थे। इसके अलावा, भालू ने अपने पंजों से उसके पेट पर खरोंचें मारी थीं, जिससे बाहरी मांस फट गया था और आंत का एक हिस्सा बाहर निकला हुआ था। जब मैंने उसे पाया तो वह लगभग बेहोश था, और मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि जिसे मैंने अपनी आवाज़ का कराहना समझा था, वह तो बस उसकी बेहोशी में बीच-बीच में निकलने वाली कराहें थीं।

हालात बेहद गंभीर थे, और जांच करने पर मैंने पाया कि एक और रात खुले में रहने से सुबह तक उसकी मौत हो जाएगी। इसलिए उसे वापस उसी जगह ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं था जहाँ मैंने उसके भाई को छोड़ा था। उसकी दयनीय हालत को देखते हुए उसे कंधे पर उठाना बहुत मुश्किल था। स्थिति और भी खराब इसलिए थी क्योंकि वह भारी-भरकम शरीर वाला आदमी था, वजन में मेरे बराबर। लेकिन मैंने किसी तरह उसे उठा लिया और अपनी राइफल के बट का सहारा लेकर उसी रास्ते से ऊपर की ओर बढ़ने लगा जिससे मैं आया था।

मैं दोबारा कभी ऐसी भयानक यात्रा का अनुभव नहीं करना चाहता। मैं लगभग उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच ही गया था जहाँ से मैं कुछ देर पहले नीचे आया था,

तभी यह हादसा हुआ। मेरा बायाँ पैर फिसल गया और दो बड़े पत्थरों के बीच ज़ोर से जा गिरा। जैसे ही मैं थिम्मा के साथ चट्टान पर गिरा, मुझे एक तेज़, चुभने वाला और दर्द भरा झटका लगा, और राइफल ज़मीन पर गिर पड़ी।

मेरे टखने में मोच आ गई थी और मैं खुद चलने में असमर्थ था। जहाँ हम लेटे थे, वहीं से मैंने भाई को आवाज़ देना शुरू किया; लेकिन लगभग एक घंटे बाद मुझे एहसास हुआ कि वह या तो मुझे सुन नहीं पा रहा था या सुनना नहीं चाहता था। मेरे पास मरने वाले आदमी के साथ रात बिताने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

टॉर्च की बैटरी को रात भर चलाने की इच्छा से, मैंने ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल नहीं किया। सुबह के शुरुआती घंटे कड़ाके की ठंड से भर गए और थिम्मा की कराहें धीरे-धीरे कमज़ोर होती गईं, यहाँ तक कि अंत में वे घुरघुराहट में बदल गईं। मुझे एहसास हुआ कि वह मर रहा है। सुबह लगभग 5 बजे उसकी मृत्यु हो गई, और मैं उसके पास तब तक बैठा रहा जब तक कि सुबह छह बजे के कुछ देर बाद उजाला नहीं हो गया।

फिर मैंने खुद को पैरों पर खड़ा करने की पूरी कोशिश की, लेकिन पाया कि मेरा पैर मेरा भार नहीं संभाल पा रहा था। मैंने रेंगने की कोशिश की, लेकिन कांटों ने एक अभेद्य बाधा खड़ी कर दी। उन्होंने मेरे हाथों, चेहरे और कपड़ों को बुरी तरह से नोच डाला। जल्द ही मैंने हार मान ली और इस बात को स्वीकार कर लिया कि मुझे तब तक इंतजार करना होगा जब तक कोई बचाव दल हमारी तलाश में नहीं आ जाता।

दोपहर ढलने के काफी बाद तक वन विभाग के लोग, थिम्मा के भाई और लगभग एक दर्जन ग्रामीणों के साथ, घटनास्थल के पास नहीं पहुँच पाए। आखिरकार, मेरी चीखों से मार्गदर्शन पाकर वे हमें ढूंढ पाए, और उसी शाम मैं सक्रपटना वन बंगले में वापस आ गया, चारपाई पर लेटा हुआ था और मेरा टखना बुरी तरह सूजा हुआ था। वन विभाग के अधिकारी लगभग नौ बजे आए और मुझे मेरी कार में चिकमगलूर ले गए, जहाँ मैं इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल गया। एक हफ्ते बाद मैं लंगड़ाते हुए चलने में सक्षम हुआ। आप समझ सकते हैं कि इस समय तक मैं देरी के कारण खुद पर बहुत गुस्सा था, और उससे भी ज्यादा उस बड़े, दुष्ट, काले भालू पर जिसने सारी मुसीबत खड़ी की थी। मैंने ठान लिया था कि जैसे ही मैं चलने लायक हो जाऊँगा, उसे हर हाल में पकड़ूंगा।

इस बीच वह निष्क्रिय नहीं बैठा था, बल्कि उसने लोनकेरे झील की ओर जाने

वाले रास्ते पर चल रहे दो और लोगों पर हमला कर दिया था।

चार दिन बाद मैं साक्रेपटना वापस आ गया, लगभग चलने लायक हो गया था, हालांकि लंबी दूरी तक नहीं। यहाँ मुझे बताया गया कि भालू गाँव से लगभग एक मील दूर खेतों में आने लगा था, जो बोरम के पेड़ों से घिरे थे, जिनके फल उस समय पकने वाले थे। शाम 5 बजे मैं उन पेड़ों के पास पहुँचा और सबसे बड़े पेड़ को चुना, जिस पर सबसे ज़्यादा फल लगे थे, और भालू के आने की उम्मीद में रात उसके नीचे बिताने का फैसला किया। मैं पेड़ के तने की ओर पीठ करके ज़मीन पर बैठ गया, और राइफल को अपने घुटनों पर रख लिया।

ग्यारह बजने के कुछ ही देर बाद मुझे पास आते हुए भालू की गुर्राहट और गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दी। वह बार-बार रुक रहा था, शायद कुछ खाने की तलाश में, और जैसे-जैसे वह करीब आता गया, मुझे उसकी जड़ों को खोदने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उसे बोरम के पेड़ तक पहुँचने में लगभग एक घंटा लग गया, तब तक मैं पूरी तरह तैयार हो चुका था। आखिरकार, वह झाड़ियों से बाहर निकला और खुले में टहलने लगा, तारों की हल्की रोशनी में एक काला धब्बा उसकी परछाई की तरह दिख रहा था।

मैंने टॉर्च का बटन दबाया और रोशनी उस पर पड़ी। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर मुझे हैरानी से देखने लगा, और मैंने टॉर्च की रोशनी में साफ दिख रहे सफेद V-निशान के बीचोंबीच उसकी छाती में गोली मार दी। और इस तरह उस खतरनाक भालू का अंत हो गया।

भालू आम तौर पर उत्तेजित हो जाते हैं लेकिन आमतौर पर हानिरहित प्राणी होते हैं। इस विशेष भालू पर कैन की छाप थी, क्योंकि यह बिना किसी उकसावे के कई लोगों का निर्मम और सुनियोजित तरीके से हत्यारा बन गया था, जिन्हें इसने बेहद भयानक ढंग से मौत के घाट उतार दिया था।

तीन

मामंदुर नरभक्षी

यह जानवर मादा थी, और वह भी कम उम्र की; इसलिए उसके नरभक्षी बनने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था। लेकिन चूंकि उसने चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की मृत्यु के कुछ ही समय बाद अपने हिंसक कारनामों को अंजाम देना शुरू किया—जिसके जीवन की कहानी मैंने 'चमाला घाटी का धारीदार आतंक' में लिखी है—और वह आंशिक रूप से उसी इलाके में सक्रिय थी, इसलिए शायद स्थानीय अफवाहों में कुछ सच्चाई थी कि वह उस खूंखार हत्यारे की साथी थी। एक और, और उतनी ही संभावित व्याख्या यह थी कि वह एक वयस्क शावक थी, जिसने अपने दुष्ट पिता से नरभक्षी और नरभक्षी बनने की बुरी प्रथा सीखी थी।

उसके अतीत चाहे जो भी रहा हो, इस बाघिन ने पहली बार किसी इंसान को मारने की कोशिश तब की जब उसने एक चरवाहे पर हमला किया। चरवाहा अपने मवेशियों के झुंड में से एक दुधारू गाय को बचाने की कोशिश कर रहा था, जिसे बाघिन ने चुनकर हमला किया था और जिसकी गर्दन उसने बड़ी कुशलता से तोड़ दी थी। चरवाहे ने बड़ी बहादुरी से, लेकिन मूर्खता से, बाघिन को गिरी हुई गाय से दूर भगाने की कोशिश की। वह चिल्लाता रहा और हवा में अपना डंडा लहराता रहा। आमतौर पर ऐसी तरकीबें बाघ को डराकर भगा देती हैं, लेकिन इस मामले में इसका उल्टा असर हुआ। भागने के बजाय, बाघिन चरवाहे की ओर दौड़ी और उनके बीच की बीस गज की छोटी सी दूरी को अविश्वसनीय गति से तय कर लिया। चरवाहा दुम दबाकर भागा, लेकिन बाघिन ने अपने अगले पंजे से उस पर ऐसा वार किया जिससे उसके कंधे से लेकर नितंबों तक की त्वचा फट गई। वार के वजन से वह जमीन पर गिर पड़ा; लेकिन मनुष्य पर अपने इस पहले हमले में, बाघिन ने जाहिर तौर पर यह मान लिया कि उसने पर्याप्त नुकसान पहुँचाया है, क्योंकि वह उस गाय की ओर वापस मुड़ गई जिसे उसने अभी-अभी मारा था।

होश में आने पर चरवाहे को मात्र चालीस गज की दूरी पर बाघिन द्वारा गाय को नोचने की हड्डियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। सौभाग्य से, उसने अपना धैर्य बनाए रखा और उठने की कोशिश नहीं की। संभवतः ऐसा कोई भी हिलना-डुलना दूसरे

हमले को उकसा सकता था, जो इस बार घातक साबित हो सकता था।

इसलिए वह जिस तरह गिरा था, उसी तरह मुंह के बल पड़ा रहा, लेकिन चुपके से अपने सिर को बहुत धीरे-धीरे और थोड़ा सा हिलाकर, वह बाघिन को भोजन करते हुए देखने में सक्षम था।

बाद में उसने मुझे बताया कि वह अगले एक घंटे को जीवन भर नहीं भूलेगा। ऐसा लगता है कि बाघिन बीच-बीच में खाना बंद कर देती, अपना सिर उठाती और उसकी तरफ देखती। एक बार तो वह खड़ी भी हो गई और उसकी तरफ कुछ कदम भी बढ़ाए। बेचारा डर के मारे चीखने ही वाला था और लगभग हिलने की गलती कर बैठा। शायद उसी डर ने उसकी जान बचा ली, क्योंकि वह हिल नहीं पा रहा था। सौभाग्य से, बाघिन ने अपना इरादा बदल दिया और गाय के पास लौट गई।

चरवाहे ने मुझे बताया कि एक घंटे से अधिक समय बीतने के बाद ही बाघिन ने आखिरकार तय किया कि उसका पेट भर गया है। फिर वह आराम से अपने पिछले पैरों पर बैठ गई, अपने अगले पंजों को अच्छी तरह चाटा और अपना चेहरा साफ करने लगी। लेटे हुए चरवाहे पर एक आखिरी नजर डालकर, वह आखिरकार खड़ी हुई, संतुष्टि से अंगड़ाई ली और जंगल की ओर चल पड़ी।

चरवाहा दस मिनट तक वहीं लेटा रहा, ताकि उसे पूरी तरह यकीन हो जाए कि वह सचमुच चली गई है। फिर वह उठा और जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, घर की ओर भागा।

इस कहानी का एक और उतना ही आश्चर्यजनक अंत है: बाघिन द्वारा किए गए गहरे घाव उचित चिकित्सा उपचार के अभाव में भी पूरी तरह से ठीक हो गए, सिवाय कुछ पिसी हुई जड़ी-बूटियों को गोबर में मिलाकर एक स्थानीय चिकित्सक द्वारा घावों पर मलने के। शायद उसके कंधों पर लिपटी शॉल ने पंजों के नीचे मौजूद विषैले पदार्थ को रक्त में प्रवेश करने से रोक दिया था।

यह घटना मामंदुर रेलवे स्टेशन से मुश्किल से चार मील की दूरी पर घटी थी, जहां एक चट्टानी ढलान लगभग तीन सौ फीट नीचे एक वन घाटी में तेजी से गिरती थी, जिसके बीच से एक छोटी सी धारा बहती थी।

अगली घटना भी हमले की ही थी, लेकिन इस बार पीड़ित इतना भाग्यशाली नहीं था। एक बार फिर, एक चरवाहा ही इसका शिकार हुआ, एक बुजुर्ग व्यक्ति जिसकी घावों के कारण मृत्यु हो गई। घटनाक्रम पहले वाले मामले जैसा ही था। बाघिन रेलवे

लाइन से एक मील पश्चिम में जंगल से होकर गुजरने वाले मवेशियों के झुंड में घुस गई और एक बार फिर, उसने एक दुधारू गाय को अपना शिकार बना लिया। जैसे ही डरे हुए मवेशी उस बुजुर्ग चरवाहे के पास से भागने लगे, वह उस दिशा में दौड़ा जहाँ से वे आए थे, ताकि उनके डर का कारण पता चल सके।

कुछ ही देर में उसकी नज़र बाघिन पर पड़ी, जो मरी हुई गाय पर सवार थी। इस बार उसने उसे डराने की कोशिश नहीं की; चरवाहा आश्चर्य से वहीं रुक गया। लेकिन जाहिर तौर पर बाघिन को उसका वहाँ आना पसंद नहीं आया, क्योंकि उसने उस पर हमला कर उसे बुरी तरह घायल कर दिया। फिर वह मरी हुई गाय के पास वापस गई और उसे झाड़ियों में घसीटकर ले गई।

तीन घंटे बाद बूढ़े आदमी को मदद मिली। मवेशी रेल पटरी पार कर भाग गए थे। बूढ़े आदमी का भाई उसे ढूंढते हुए आया तो उसने देखा कि मवेशी तो चले गए हैं, लेकिन उनका मालिक कहीं नज़र नहीं आ रहा। रेल की मेड़ पर खड़े होकर उसने अपने भाई को ज़ोर से पुकारा, पर कोई जवाब नहीं मिला। तब उसे कुछ गड़बड़ का एहसास हुआ और वह मदद के लिए मामंदुर गाँव की ओर भागा।

भागते हुए मवेशियों के पदचिह्नों का पीछा करते हुए खोज दल को वह घायल व्यक्ति मिला। वह बेहोश था और खून की कमी से लगभग मरणासन्न था। वे उसे गाँव ले गए और फिर स्टेशन ले गए, ताकि उसे आधे घंटे में आने वाली मालगाड़ी के गार्ड के डिब्बे में बिठा सकें, जो नौ मील दूर स्थित रेनिगुंटा कस्बे के लिए जा रही थी, जहाँ एक अस्पताल था। लेकिन मालगाड़ी के मामंदुर पहुँचने से पहले ही उस बूढ़े चरवाहे की मृत्यु हो गई।

अपनी तीसरी हत्या के बाद ही इस बाघिन में आदमखोर बनने की प्रवृत्ति विकसित हुई। उसने फिर से एक चरवाहे पर हमला किया, इस बार सुबह लगभग नौ बजे। घटना का ब्योरा दूसरे चरवाहे ने दिया, जो हमले के समय पहले चरवाहे के बगल में खड़ा था। बाघिन हमेशा की तरह झुंड में घुस गई और एक युवा बैल पर झपटी। किसी तरह, वह बैल को गिराने के अपने पहले प्रयास में असफल रही। दूसरी ओर, बाघिन को अपनी पीठ पर लिए हुए बैल पागलों की तरह उन दोनों चरवाहों की ओर भागा जहाँ वे खड़े थे। उनमें से एक—वह व्यक्ति जो बच गया—भाग निकला। दूसरा चरवाहा कुछ नहीं कर सका, बल्कि आश्चर्य से वहीं जड़वत खड़ा रह गया।

भागते हुए उस आदमी ने सिर्फ एक बार पीछे मुड़कर देखा, और तभी उसने

बाघिन को भागते हुए बैल से छलांग लगाकर भयभीत चरवाहे पर हमला करते हुए देखा। इसके बाद उसने कुछ नहीं देखा, क्योंकि वह मुड़कर जितनी तेज़ी से और जितनी दूर हो सकता था, भाग गया।

कुछ घंटों बाद जब बचाव दल लाठियों और बंदूकों से लैस होकर पहुंचा, तो पीड़ित का शव वहां नहीं मिला। इसलिए दल अतिरिक्त सहायता लेने के लिए वापस लौट गया। तीन घंटे और बीतने के बाद बचाव दल, जिसमें अब लगभग सौ लोग शामिल थे, हमले वाली जगह पर पहुंचे। उन्होंने एक स्पष्ट निशान का पीछा किया और एक संकरे नाले की रेतीली तलहटी में औंधे मुंह पड़ा शव पाया। छाती और नितंबों का कुछ हिस्सा खा लिया गया था।

अगले कुछ महीनों में तीन और लोगों की हत्या हुई। इनमें से एक चरवाहा था, एक रेनिगुंटा मार्ग पर यात्रा कर रहा यात्री था, और तीसरा लुंबानी था, जो जंगली शहद इकट्ठा करने निकला था। इसके बाद, मवेशियों की चराई पूरी तरह बंद हो गई, और जंगली शहद का संग्रहण भी रुक गया। अब कोई भी यात्री पैदल सड़क मार्ग से आने की हिम्मत नहीं करता था। वे इसके बजाय ट्रेन से आने लगे।

उस समय के जिला वन अधिकारी श्री लिटिलवुड ने मुझे पत्र लिखकर सुझाव दिया कि मैं मामंदूर स्थित खूबसूरत वन बंगले में कुछ दिन बिताऊं और इस बाघिन को ढूंढने का प्रयास करूं। मेरे पास पंद्रह दिन की विशेषाधिकार छुट्टी थी, इसलिए मैंने बैंगलोर से रात की मेल ट्रेन पकड़ी; लेकिन अगले दिन दोपहर 3:30 बजे तक मैं मामंदूर के छोटे से स्टेशन पर धीमी गति से चलने वाली यात्री ट्रेन से उतरा।

वन बंगला एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर मात्र सात फर्लांग की दूरी पर स्थित है। बंगले तक जाने का रास्ता मामंदुर नामक छोटे से गाँव से होकर गुजरता है, जहाँ मैं कुछ देर रुका ताकि सबको बता सकूँ कि मैं विशेष रूप से बाघिन का शिकार करने आया हूँ। मेरा उद्देश्य यह खबर हर किसी तक पहुँचाना था, ताकि मैं न केवल उस जानवर के बारे में उपलब्ध सभी जानकारियाँ प्राप्त कर सकूँ, बल्कि विशेष रूप से किसी भी नए शिकार, चाहे वह पशु हो या मानव, की सूचना प्राप्त कर सकूँ। मैंने तीन भैंस की बछियों को भी खरीदा, जिनका भुगतान मैंने नकद में किया और उन्हें स्थानीय शिकारी, अरोकियास्वामी नामक व्यक्ति की देखरेख में सौंप दिया, जिसे मैंने मामंदुर की पिछली यात्राओं के दौरान भी नियुक्त किया था।

बंगले में एक चौड़ा और सुरक्षित बरामदा था। इसकी पहाड़ी से आग बुझाने वाली

रेखाएँ, जिन्हें कभी-कभी 'वन रेखाएँ' भी कहा जाता है, पाँच दिशाओं में फैली हुई थीं। दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर जाने वाली रेखाएँ क्रमशः गाँव और रेलवे तटबंध के पास से गुज़रती थीं। बाकी तीन रेखाएँ जंगल में दूर तक जाती थीं, और नज़र कई मीलों तक उन पर चल सकती थी। उत्तर की ओर जाने वाली आग बुझाने वाली रेखा उस ढलान की ओर फैली हुई थी जहाँ सबसे पहले चरवाहे को बाघिन ने घायल कर दिया था। पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाली रेखाएँ लगभग सीधी रेखाओं में जंगल के भूलभुलैया में जाती थीं, मानो किसी विशाल पहिये के तीलियाँ हों। इन दोनों दिशाओं का इलाका समतल था।

बीते वर्षों में, जब शिकार के लिए जानवर बहुत अधिक थे, मैंने कई सुखद सुबह या देर शाम बंगले के बरामदे या चबूतरे पर शक्तिशाली दूरबीन लेकर उन जंगलों की ओर देखते हुए बिताए थे। सांभर, चित्तीदार हिरण और मोर को एक तरफ से दूसरी तरफ जाते देखना आम बात थी। मैंने तीन बार भालू को सुबह-सुबह देखा था, और एक बाघ को शाम पांच बजे उत्तरी जंगल की सीमा पार करते हुए देखा था। इसके अलावा, हालांकि लगभग दो मील दूर, मैंने ग्यारह जंगली कुत्तों के झुंड को एक बूढ़े भालू को घेरे हुए देखा था। उस समय मैं उनके पीछे भागा था - भालू को उसके क्रूर अंत से बचाने के लिए - ठीक उसी समय पहुंचा जब ग्यारह कुत्ते उस थके-हारे, लेकिन बहादुर बूढ़े जानवर के करीब पहुंच रहे थे। तीन कुत्ते मर चुके थे इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि उन्हें एक नए दुश्मन का सामना करना है। जैसे ही झुंड भागने लगा, मेरी राइफल की आवाज के साथ ही चौथा भी गिर पड़ा, और जब झुंड के बचे हुए सदस्य जंगल में नजरों से ओझल हो गए, तब तक पांचवा भी बाकी चार के साथ मिल गया।

उन दिनों मैं अपनी पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल का इस्तेमाल कर रहा था और मेरी मैगज़ीन खाली हो चुकी थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि मुझे एक पागल भालू का सामना करना है, जो कुत्तों के हमले और पहले से मिले ज़ख्मों के दर्द से बेहाल हो चुका था।

वह मुझसे लगभग साठ गज दूर था, और चीखते हुए सीधे मेरी ओर दौड़ा, 'वूफ़! वूफ़!' मैं जंगल की सीमा रेखा के साथ-साथ जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा, और दौड़ते हुए मैंने .405 राइफल का निचला लीवर खोला, कारतूस को ब्रीच में ठूंसा, और लीवर बंद कर दिया, जिससे राइफल अपने आप कॉक हो गई। तेज़ी से

घूमकर मैंने भालू का सामना किया, जो मुश्किल से पंद्रह गज दूर था। भालू के असली अंदाज़ में, पाँच गज की दूरी पर, वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और आखिरी वार करने के लिए तैयार हो गया, जिसे आम तौर पर सबसे भयानक स्पर्श, 'भालू का आलिंगन' माना जाता है, जिसके बारे में हम सबने बहुत सुना है।

दरअसल, दक्षिण भारतीय स्लॉथ बियर अपने दुश्मन को गले नहीं लगाता। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने तीन इंच लंबे, ताकतवर पंजों से शिकार का चेहरा नोंचता है या अपने शक्तिशाली दांतों से उसके सिर पर काटता है। अपने पिछले पैरों पर खड़े होते ही भालू ने अपने सीने पर मौजूद चौड़ा सफेद V-निशान दिखा दिया, जो सभी स्लॉथ बियर के सीने पर होता है। राइफल में मौजूद एक कारतूस से मैंने उसे V-निशान के निचले हिस्से में गोली मार दी। वह आगे की ओर गिर पड़ा और दो गज की दूरी पर ही पड़ा रहा!

उन जंगली कुत्तों में से तीन नर थे और बाकी दो मादा। वन विभाग ने मुझे प्रत्येक नर के लिए दस रुपये और प्रत्येक मादा के लिए पंद्रह रुपये का इनाम दिया। जंगली कुत्ते हिरणों के लिए बहुत हानिकारक होते हैं, इसलिए उनका शिकार करना प्रोत्साहित किया जाता है। मुझे बूढ़े ब्रुइन को मारना पड़ा, इसका मुझे बहुत दुख हुआ, लेकिन उसने खुद ही यह मुसीबत मोल ली थी।

यह सब बहुत-बहुत पहले हुआ था।

इस बंगले को बेहद आकर्षक बनाने वाला एक और कारण था दोपहर दो बजे के कुछ ही समय बाद पूरब से आने वाली समुद्री हवा। मेरा अनुमान है कि सीधी रेखा में बंगाल की खाड़ी इस छोटे से बंगले से कम से कम पचहत्तर मील दूर है; और मैं इस बात पर बहस करने का विशेषज्ञ नहीं हूँ कि समुद्री हवा किस दूरी पर अपना असर खो देती है। मैं बस इतना जानता हूँ कि लगभग दो बजे यह हवा उस छोटे से बंगले के बरामदे को झपकी लेने के लिए एक सुखद ठंडी जगह में बदल देती है। अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो मामंदुर फॉरेस्ट बंगले पर जाकर देखिए।

उस शाम बहुत देर हो चुकी थी, इसलिए तीन भैंसों में से एक को ही बांधना संभव हो पाया, क्योंकि वे शाम 5:30 बजे ही पहुंची थीं। इस भैंस को मैं उत्तरी दिशा में आग बुझाने वाली पट्टी के साथ-साथ दो मील दूर ले गया, जहाँ मैंने इसे एक बड़े और घने इमली के पेड़ के नीचे बांध दिया। जब मैं लौटा तो सात बज चुके थे, इसलिए मैंने बाकी दो भैंसों को गैरेज में रखा और अरोकियास्वामी को रसोई में सोने के लिए

कहा।

अगली सुबह हम तुरंत हरकत में आ गए। सबसे पहले हमने वह चारा लिया जिसे हमने पिछली रात दो मील दूर बांधा था और जो अभी भी जीवित था, और उसे लेकर उस चट्टान के तल तक गए जहाँ पहला हमला हुआ था। वहाँ हमने उसे घनी हरी घास के एक सुंदर मैदान में एक पेड़ की जड़ों से बांध दिया।

हम बंगले में वापस आए और दूसरी बछिया को पूर्व की ओर फैली आग की रेखा के साथ ले गए, जहाँ मैंने उसे लगभग उसी स्थान पर बांध दिया जहाँ जंगली कुत्तों और भालू के साथ मेरी मुठभेड़ हुई थी।

दूसरी बार बंगले पर लौटकर, हम तीसरी और आखिरी बछिया को पश्चिम की ओर रेलवे लाइन के पार ले गए, और उसे उस स्थान के पास बांध दिया जहां बुजुर्ग चरवाहे की हत्या की गई थी।

जब मैं तीसरी बार बंगले पर लौटा तो दोपहर हो चुकी थी और बहुत गर्मी थी। पसीने से भीगी कमीज़ उतारकर मैंने देर से ठंडा दोपहर का भोजन किया और समुद्री हवा के आने का इंतज़ार करने लगा, जो मुझे पता था कि लगभग दो बजे शुरू हो जाएगी। और मैं निराश नहीं हुआ; क्योंकि जब हवा चली, तो उस झुलसा देने वाली गर्म बरामदे का नज़ारा किसी दूर दक्षिण सागर द्वीप के तट जैसा हो गया, जहाँ हम पढ़ते हैं कि 'समुद्री हवाएँ सदा बहती रहती हैं'।

अगले दो दिन नीरस रहे। मैंने हर दिन तीनों चारागाहों का दौरा किया, लेकिन उनमें से किसी को भी छुआ नहीं गया था। पाँचवें दिन की शाम एक दुखद घटना घटित हुई।

दक्षिण भारत की रेल लाइनों पर लगे सिग्नल रात में केरोसिन के तेल के दीपों से रोशन किए जाते हैं, सिवाय बड़े रेलवे जंक्शनों के शंटिंग यार्डों के। जैसा कि आप जानते ही होंगे, हर सामान्य रेलवे स्टेशन के दोनों ओर दो सिग्नल सेट होते हैं: एक नज़दीकी या 'होम' सिग्नल और दूसरा दूर का या 'आउटर' सिग्नल। सामान्यतः, इन सिग्नलों पर लगे केरोसिन के दीपों को शाम लगभग छह बजे एक पॉइंट्समैन या इस काम के लिए नियुक्त रेलवे कर्मचारी द्वारा साफ, ट्रिम, फिर से भरा और जलाया जाता है। लेकिन मामंदुर में बाघिन की मौजूदगी और इस तथ्य के कारण कि दक्षिण में रेनिगुंटा और उत्तर-पश्चिम में सेतिगुंटा की दिशा में स्थित आउटर सिग्नल जंगल से घिरे हुए थे, सूरज निकलने से पहले ही, यानी शाम पांच बजे से काफी पहले, इन दीपों को

जलाने का रिवाज बन गया था।

उस शाम दो मार्गदर्शक दोपहर चार बजे इस कार्य के लिए निकले थे, एक रेनिगुंटा की ओर और दूसरा विपरीत दिशा में। दूसरा व्यक्ति कभी वापस नहीं लौटा।

शाम छह बजे से कुछ ही देर पहले, स्टेशन मास्टर द्वारा भेजे गए सात आदमियों का एक दल जंगल वाले बंगले की ओर दौड़ता हुआ आया, ताकि मुझे घटना की जानकारी दे सके। मैंने जल्दी से अपनी राइफल, टॉर्च और रात भर निगरानी के लिए कुछ अन्य आवश्यक सामान उठाया और उन सातों आदमियों को वापस स्टेशन भेज दिया, साथ ही अरोकियास्वामी को भी, क्योंकि उसने उस रात बंगले में अकेले रहने से साफ इनकार कर दिया था। फिर मैं पश्चिम की ओर जाने वाले जंगल के रास्ते पर तेजी से बढ़ा, जो मुझे पता था कि 'भीतरी' और 'बाहरी' सिग्नलों के लगभग बीच में रेलवे ट्रैक से मिलता है।

जब मैं रेलवे लाइन पर पहुंचा, जो यहां दस फीट ऊंचे तटबंध के साथ-साथ चल रही थी, तो मैंने अपनी बाईं ओर देखा और 'आंतरिक' सिग्नल को देखा, जिसकी लाल बत्ती टिमटिमा रही थी।

'बेवकूफ आदमी!' मैंने सोचा। 'सुबह-सुबह बाहर की रोशनी पर ध्यान देने और स्टेशन जाते समय अंदर की रोशनी पर वापस आने के बजाय, उसने अंदर की रोशनी पर समय बर्बाद किया, और फिर काफी देर हो जाने पर बाहर की रोशनी पर गया।'

दाईं ओर मुड़कर, मैं तटबंध के किनारे-किनारे 'बाहरी' सिग्नल की ओर चलने लगा, जो एक मोड़ पर दिखाई दिया। चलते-चलते मैंने पटरियों के आसपास उस हमले के निशान खोजने की कोशिश की जो निश्चित रूप से तब हुआ होगा जब मार्गदर्शक बाहरी सिग्नल की ओर बढ़ रहा था। मुझे कुछ नहीं मिला। फिर मैं 'बाहरी' सिग्नल के नीचे पहुँचा और ऊपर देखा। बत्ती जल रही थी!

तो उस व्यक्ति पर हमला 'बाहरी' सिग्नल की देखभाल करने के बाद वापस लौटते समय हुआ था, न कि उससे पहले। इसके अलावा, 'भीतरी' सिग्नल की बत्ती भी जल रही थी। शायद उसने पहले उस बत्ती की देखभाल नहीं की थी, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। हो सकता है उसने पहले बाहरी सिग्नल जलाया हो, फिर भीतरी, और भीतरी सिग्नल और स्टेशन यार्ड के बीच कहीं उस पर हमला हुआ हो।

लेकिन क्या यह संभव था, इस तथ्य को देखते हुए कि स्टेशन से लेकर 'आंतरिक' सिग्नल तक का सारा इलाका, और उससे थोड़ा आगे तक का क्षेत्र भी, खुली खेती

योग्य भूमि थी? क्या कोई बाघ, चाहे वह आदमखोर ही क्यों न हो, दिन के उजाले में इतनी बेखौफ होकर खुले मैदान में घूम सकता था? यह संभव था, लेकिन इसकी संभावना बहुत कम थी।

मेरी घड़ी में शाम के 6:55 बज रहे थे और जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता जा रहा था, मैं भीतरी संकेत की ओर वापस लौटने लगा, पहले से कहीं अधिक सतर्क होकर। चाँद जल्दी निकल आया था, जो वाकई सौभाग्य की बात थी, वरना इस समय तक काफी अंधेरा हो चुका होता।

लगभग उसी जगह पर जहाँ से मैं जंगल से तटबंध पर आया था, एक छोटी सी पुलिया थी, जो एक संकरे लेकिन गहरे नाले को पार कर रही थी। वहाँ कुछ सफेद रंग का मेरी नज़र में आया, जो रेलवे ट्रैक के स्लीपरों के बीच फड़फड़ा रहा था, क्योंकि ट्रैक नाले के ऊपर से गुजर रहा था। मैं रुका और स्लीपरों के बीच से झाँका।

यह रेलवे कर्मचारी की सफेद धोती थी। तटबंध से बीस फीट दूर, एक बड़े पत्थर के नीचे, एक लंबी, काली आकृति पड़ी थी, जिसे मैं पीड़ित का शव समझ गया था। उस धुंधली रोशनी में भी मैं बता सकता था कि शिकार के बाद बीते थोड़े समय में ही शव का कुछ हिस्सा खा लिया गया था। गर्दन कटी हुई थी और सिर लगभग एक गज दूर पड़ा था। चूंकि बाघिन शायद उस समय आसपास ही हो सकती थी, या झाड़ियों की आड़ से मुझे देख रही हो, इसलिए तटबंध से नीचे उतरकर शव की बारीकी से जांच करना अनावश्यक रूप से खतरनाक होगा।

स्थिति का जल्दी से जायजा लेने के बाद मैंने रेलवे लाइन के ठीक बीचोंबीच, पुलिया के आर-पार समकोण पर लेटने का फैसला किया। इससे मैं आगे या पीछे से हमले से सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि ऐसा करने के लिए बाघिन को नाले के तल से सीधे पंद्रह फीट की छलांग लगाकर पटरी पर आना पड़ेगा। इससे उसके पास पटरी के किनारे, मेरे दाईं या बाईं ओर से हमला करने का विकल्प बचेगा। मुझे आपको बताना चाहिए था कि पुलिया की चौड़ाई लगभग बीस फीट थी। ज़्यादा नहीं, लेकिन कम से कम मुझे बाघिन को देखने का समय तो मिल जाएगा।

बेशक, यह संभावना थी कि वह तटबंध पर तिरछे कोण से रेंगती हुई आएगी और मुझ पर परोक्ष रूप से हमला करेगी, या तो सामने से, या इससे भी बदतर, पीछे से; और या तो मेरे बाईं ओर से या दाईं ओर से।

यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाना ही था।

बंगले से निकलते समय मैंने अपनी टॉर्च राइफल से बांध ली थी। मैंने अपना थैला सीने के नीचे रख लिया ताकि रेल की पटरी से मेरा संपर्क कम हो। यह पटरी चौड़ी थी, यानी पटरियां पांच फीट छह इंच की दूरी पर थीं। पैर फैलाकर मैंने देखा कि मेरे तलवे दूसरी पटरी को छू रहे थे, लेकिन उस पर चढ़े नहीं थे। जिस सागौन की लकड़ी से बने चबूतरे पर मैं लेटा था, वह शायद आठ इंच चौड़ा था: लेटने में बिल्कुल भी आरामदायक नहीं था और बेहद सख्त था!

इस समय तक चाँद खूब चमक रहा था और दृश्य को स्पष्ट रूप से रोशन कर रहा था। चट्टान के हल्के रंग और नाले की बारीक सफेद रेत के बीच शव और उसका कटा हुआ सिर साफ दिखाई दे रहा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

आंतरिक संकेत से निकली लाल बत्ती झिलमिला उठी; ऐसा लगा जैसे वह मुझे याद दिला रही हो कि मदद करीब है—पर फिर भी बहुत दूर है।

घंटे बीतते गए; पश्चिम की ओर जंगल से एक सांभर नर हिरण की आवाज आई। शायद उस आवाज ने बाघिन के आने का संकेत दिया हो! नहीं, क्योंकि उत्तर-पूर्व में थोड़ी दूर पर एक और नर हिरण ने आवाज दी, और फिर पूर्व में एक और नर हिरण ने। बीच-बीच में चित्तीदार हिरण भी अपनी तीखी चेतावनी भरी आवाजें निकालते रहे, 'आओ! आओ! आओ!'

लेकिन ये आवाज़ें किसी एक दिशा से नहीं आ रही थीं; अगर ऐसा होता तो इससे निश्चित रूप से पता चलता कि उस इलाके में कोई मांसाहारी जानवर मौजूद है। ये आवाज़ें चारों ओर से, दूर-दूर से आ रही थीं, जिससे संकेत मिलता है कि कई मांसाहारी जानवर घूम रहे थे। साथ ही, चूंकि रात में चांदनी थी, इसलिए संभव था कि जंगली कुत्तों के झुंड शिकार पर निकले हों। ये जानवर दिन में अपने शिकार का पीछा करते हैं और कभी अंधेरी रात में नहीं, लेकिन चांदनी रात में, कुछ जंगलों में, वे कभी-कभी अपना व्यवहार बदल देते हैं और चांदनी में शिकार करते हैं।

आधी रात को फिर से सन्नाटा छा गया। और फिर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, क्योंकि जो मैं देख रहा था वह सचमुच भयानक था। कटा हुआ सिर एक तरफ लुढ़क गया था!

इतने समय से वह आकाश की ओर घूर रहा था; अब उसकी निर्जीव आँखें और चेहरा मेरी ओर मुड़े हुए थे। फिर भी किसी जानवर ने उसे छुआ नहीं था, क्योंकि वह खुले में पड़ा था और तेज चाँदनी में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

मुझे अपने शरीर में कंपकंपी और ठंडक महसूस होने लगी। मैंने अपने सूखे होंठों को चाटा और उस भयानक सिर को घूर कर देखा।

फिर से वह हिल गया! उसने अपनी पिछली स्थिति में वापस जाने की कोशिश की थी; वह आधा घूम गया था और फिर, मानो पूरी तरह घूमने की ताकत न होने के कारण, वह वापस लुढ़क गया और मेरी ओर घूर रहा था।

अब मैं आपको बता दूं कि मैं बहुत व्यावहारिक व्यक्ति हूं, अंधविश्वासी नहीं, न ही अंधेरे से डरता हूं। मैंने कई रातें ऐसी ही या इससे भी अधिक खतरनाक स्थिति में बिताई हैं; मैं पहले भी अधखाए हुए मानव शरीरों के ऊपर बैठा था, और पहले भी कई बार मुझे लगा था कि मैंने उन्हें हिलते हुए देखा है। लेकिन अपने जीवन में मैंने पहले कभी किसी कटे हुए मानव सिर को अपने आप घूमते हुए, फिर वापस घूमने की कोशिश करते हुए और असफल होते हुए, और अंत में स्पष्ट निराशा में लुढ़कते हुए नहीं देखा था।

मैं लगभग चीख पड़ा और काफी देर तक मेरे मन में उठकर उस टिमटिमाती, दोस्ताना लाल बत्ती की ओर दौड़ने की तीव्र इच्छा हुई, जो 'अंदरूनी' संकेत की ओर इशारा कर रही थी। फिर अचानक मेरी बुद्धि ने अपना असर दिखाया। एक मृत सिर, चाहे वह इंसान का हो या किसी और जीव का, अपने आप हिल नहीं सकता। उसे किसी चीज़ ने ज़रूर हिलाया होगा!

मैंने सिर को ध्यान से देखा, और तेज़ चाँदनी ने मुझे मेरी समस्या का हल दिखा दिया। सफेद रेत में दो काली वस्तुएँ हिलती हुई दिखाई दे रही थीं। वे 'गैंडा भृंग' थे: बड़े कीड़े, डेढ़ इंच से भी ज़्यादा लंबे, जिनकी नाक पर गैंडे के सींग जैसे बड़े-बड़े कांटे होते हैं, इसी समानता के कारण इनका नाम पड़ा है। आम तौर पर ये रात में सक्रिय होते हैं, हालाँकि इन्हें अक्सर जंगल की सड़कों पर, सुबह-सुबह और फिर देर शाम को, अपने आकार से लगभग तीन गुना बड़े गोबर के गोले को किसी अज्ञात जगह की ओर लुढ़काते हुए देखा जा सकता है।

इन दोनों नन्हे जीवों ने अपनी संयुक्त शक्ति से एक बार इस सिर को पलटने में सफलता प्राप्त कर ली थी, लेकिन दूसरी बार वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए। मैं जो देख रहा था उसमें इतना मग्न था कि बाघिन के बारे में पूरी तरह भूल गया था; उस समय वह आसानी से मुझे चौंका सकती थी।

अब 1:40 बज रहे थे और मेरे सीने के नीचे की रेल पटरी कांपने लगी। तभी मुझे

दूर से एक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी जो धीरे-धीरे तेज़ और नज़दीक आती गई। एक तीखी सीटी की आवाज़ गूंजी और देखते ही देखते एक इंजन की तेज़ रोशनी सीधे मुझ पर पड़ी। यह मद्रास से बॉम्बे जाने वाली नाइट मेल ट्रेन थी।

मैं बड़ी मुश्किल से उठा, अपना थैला उठाया, पुलिया के अंत तक गया और फिर तटबंध से कुछ कदम नीचे उतरा। लेकिन मैं ट्रेन चालक की सतर्कता को पूरी तरह से भूल गया था। उसने इंजन की तेज हेडलाइट में मुझे साफ देखा था, हालांकि उसने मेरी राइफल पर ध्यान नहीं दिया था। जैसा कि वह मुझे कुछ ही मिनटों में बताने वाला था, उसने मुझे आत्महत्या करने की कोशिश करने वाला समझा, जो जानबूझकर पटरी पर लेटकर ट्रेन के नीचे कुचल जाना चाहता था, लेकिन आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वैसे, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि आत्महत्या करने का यह तरीका भारत में काफी प्रचलित है।

खैर, ब्रेक की तेज़ आवाज़ और भाप की ज़ोरदार फुफकार के साथ, ट्रेन मेरे पास से इंजन के गुज़रने के ठीक बाद आकर रुक गई। इसके बाद मैंने जो सुना, वह था कठोर ज़मीन पर बूटों की ज़ोरदार आवाज़, जैसे कोई मेरी ओर दौड़ रहा हो। वे इंजन के ड्राइवर और उसके दो दमकलकर्मी थे।

वे मुझ पर झपटे और मुझे पकड़ लिया। तभी उन्हें एहसास हुआ कि मैं वो नहीं था जो उन्होंने मुझे समझा था। इसी बीच, डिब्बों की खिड़कियों से कई लोगों ने सिर बाहर निकाले और सैकड़ों आवाज़ें सवाल-जवाब और अटकलें लगाने लगीं। पहरेदार अपनी लालटेन लेकर पीछे से आया। इसलिए मेरे पास उन्हें यह बताने के अलावा कोई चारा नहीं था कि मैं क्या कर रहा था।

'वह आदमी कहाँ है जिसे बाघ ने खा लिया?' ड्राइवर ने पूछा, जो अधेड़ उम्र का एंग्लो-इंडियन था। मैंने उसे लाश की ओर इशारा किया। 'और तुम शाम से यहाँ खुले में अकेले पड़े हो?' उसने अविश्वास से पूछा।

जब मैंने हाँ में जवाब दिया, तो उसने बड़ी सरलता से कहा, 'तुम बिलकुल पागल हो,' और अपने माथे पर इशारा करते हुए कहा। उसके दोनों दमकलकर्मी और ट्रेन के भारतीय गार्ड ने भी सहमति में सिर हिलाया।

कुछ मिनट बाद, मेल ट्रेन बॉम्बे की अपनी लंबी यात्रा पर आगे बढ़ गई, और मैं एक बार फिर अकेला रह गया। लेकिन इतनी हलचल के बाद बाघिन के आने की मुझे बहुत कम उम्मीद थी।

रात के 2:30 बजे रेल की पटरियाँ फिर से गड़गड़ाने लगीं। इस बार मैं इंजन की हेडलाइट से अपनी मौजूदगी का पता चलने से पहले ही तटबंध पर लेट गया और अपनी राइफल छिपा ली। नतीजतन, मालगाड़ी बिना रुके मेरे पास से गुज़र गई। सुबह 4 बजे फिर से रेल की पटरियाँ गड़गड़ाने और कांपने लगीं, और मैं एक बार फिर छिप गया। यह बॉम्बे से मद्रास जाने वाली वापसी मेल ट्रेन थी, जो पूरी गति से गड़गड़ाती हुई गुज़री, क्योंकि मेल ट्रेनें मामंदूर में नहीं रुकतीं।

झूठी सुबह आई और चली गई। जागते हुए मोरों की दूर से आती हुई आवाज हवा में गूंजी, वे जंगल की घाटियों में 'मिया-आ-ऊ-आओ' की आवाज लगा रहे थे, जिसका जवाब उस सबसे प्यारे पक्षी, भूरे जंगली मुर्गे की हंसमुख आवाज 'व्ही-ई-ई-ई-कुच-काया काया-खुक्कम' से मिला।

पूर्वी पहाड़ियों के ऊपर आसमान में हल्का गुलाबी रंग छाया हुआ था, जो अब मखमली काले रंग से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। इसी बीच, रात भर चमकता रहा और अब अस्त होने वाला चंद्रमा अपनी चमक खोने लगा था।

पूर्व दिशा में, हल्का गुलाबी रंग अद्भुत रूप से बैंगनी रंग में बदल गया, फिर गहरे गुलाबी रंग में, जिसके किनारों पर हल्के हरे और शुद्ध नीले रंग की झलक थी। गुलाबी रंग नारंगी-बैंगनी, फिर केवल नारंगी, फिर गहरा लाल और अंत में ज्वाला जैसा हो गया, जैसे ही सूर्य की चमकती नोक पूर्व की ओर पहाड़ियों की लहरदार रेखाओं के ऊपर से झाँकी।

तेजी से बढ़ते हुए उस गोले से आकाश की ओर आती हुई सूर्य की किरणें, स्पेक्ट्रम के सभी रंगों से जगमगाते हुए आसमान में दौड़ते हुए, रुई जैसे बादलों को छू रही थीं। फिर, अचानक, जैसे कोई तितली अपने कोकून से फूटती है, सूर्य पहाड़ियों के ऊपर आ गया, और अपने आगे नीचे नम जंगल से उठती हुई धुंध की हल्की-हल्की परतों को भंवरों में उड़ा ले गया।

एक और दिन था, और उसके आगमन का स्वागत करते हुए मेरे चारों ओर जंगल के पक्षियों का मधुर गीत गूंज उठा। हर झाड़ी और पेड़ जीवन से ओतप्रोत, जीवंत और नया लग रहा था। भारतीय जंगल में सूर्योदय का यह अद्भुत नजारा देखने वाले इसे कभी नहीं भूलेंगे।

उसका सिर अब भी मेरी ओर देख रहा था, लेकिन अब वह स्थिर था; रात भर लगन से काम करने वाले दोनों गैंडे के भृंग बहुत पहले ही उस असमान कार्य को

छोड़कर आराम करने चले गए थे।

मैं निराश और धीरे-धीरे स्टेशन की ओर बढ़ा, स्टेशन मास्टर को यह बताने के लिए कि वे मृतकों के परिजनों को शवों को दाह संस्कार के लिए ले जाने की अनुमति दे सकते हैं, और आठ बजे तक मैं बंगले के बरामदे में सो गया था। दोपहर में समुद्र की ठंडी हवा ने मुझे और गहरी नींद में सुला दिया।

शाम चार बजे मैं तरोताज़ा और चुस्त-दुरुस्त होकर उठा और जल्दी से दोपहर का भोजन और चाय पी। साथ ही मैंने अरोकियास्वामी की रिपोर्ट सुनी कि उन्होंने चार अन्य लोगों के साथ सभी चारे की जाँच की थी और उन्हें जीवित पाया था। ऐसा लग रहा था कि यह बाघिन मेरे द्वारा बाँधी गई किसी भी बछिया को नहीं मारेगी।

फिर सूर्यास्त हुआ और चांदनी रात हो गई। मुझे टहलने का मन हुआ। अगर मैं जंगल की उन पांचों आग की लपटों के बीचोंबीच चलता रहूँ, तो मुझे लगा कि मैं काफी हद तक सुरक्षित रहूँगा, बशर्ते चलते समय मैं सतर्क रहूँ। रात में अगर हमारे रास्ते आपस में टकराते हैं, तो बाघिन का ध्यान आकर्षित होने का भी पूरा खतरा था।

मैंने मौके के हिसाब से कपड़े पहने। मेरे पास अपने किट में सिर्फ खाकी कपड़े और एक काली कमीज थी जो रात में मचान का काम करने के लिए ठीक थी। इसलिए मैं अरोकियास्वामी के साथ उनकी झोपड़ी में गया, जहाँ मैंने एक लंबी सफेद कमीज पहन ली, जिसकी पूंछें मेरी खाकी पैंट के बाहर ढीली-ढाली लहरा रही थीं। अरोकियास्वामी ने मेरे सिर पर सफेद पगड़ी बांधकर मेरे वेश को और भी पूरा किया।

मुझे नहीं पता था कि अगर हमारी मुलाकात होती तो बाघिन मुझे क्या समझती; लेकिन मुझे पता है कि मैं ग्रामीणों के लिए काफी मनोरंजन का स्रोत था, जो मेरी योजना के बारे में सुनकर कुछ हद तक हैरान थे।

मैंने कुछ देर सोचा कि पहले किस फायर-लाइन पर चलूँ और अंत में पूर्व दिशा की ओर जाने वाली लाइन पर चलने का फैसला किया। शाम के 7:30 बज रहे थे जब मैंने चलना शुरू किया। मैं लाइन के बीचोंबीच चलता रहा और चलते-चलते दोनों ओर की झाड़ियों और घनी वनस्पतियों पर नजरें गड़ाए रहा। बीच-बीच में मैं पीछे मुड़कर भी देखता रहा।

चांदनी तेज होने के बावजूद, झाड़ियों की लंबी काली छायाएँ पड़ रही थीं, और काँटों और घास के गुच्छे मेरे चारों ओर भूतिया धूसर रंग के दिख रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि इतनी चांदनी के बावजूद, मेरी आँखें उस अवास्तविक चमक में छिपे हुए

किसी भी मांसाहारी जानवर को नहीं देख पाएँगी, भले ही वह दिखाई दे, जो कि वह नहीं देगा। मुझे अपनी सुनने की शक्ति पर भरोसा करना होगा—और उस दूसरी, मेरी छठी इंद्री पर!

मैं हर दस मिनट के अंतराल पर किसी न किसी धुन की एक पंक्ति सीटी बजाकर बाघिन को अपनी उपस्थिति का आगाह करता था; लेकिन केवल आधे मिनट के लिए ही, ताकि मेरे अपने कान बाधित न हों, जो हल्की से हल्की आवाज को भी पकड़ने के लिए अभ्यस्त थे।

इस प्रकार, घास से ढकी पहाड़ियों से गुजरते समय मुझे कई बार हल्की सरसराहट सुनाई दी। हमेशा की तरह, रात में निकलने वाला बांस का चूहा ही इसका दोषी होता था, क्योंकि मेरे पास आते ही वह छिपने के लिए भाग जाता था। फिर एक अस्पष्ट, लंबी, रेंगने जैसी सरसराहट सुनाई दी: वह एक सांप था, शायद रसेल वाइपर, जो घास में आराम से लिपटा हुआ था, ताकि उसे गर्माहट मिले। आसमान से कोई भारी चीज़ नीचे आई और आग की लकीर पार करते हुए एक खरगोश की पीठ पर आकर गिरी। खरगोश चीख उठा, और उस पर हमला करने वाले बड़े सींग वाले उल्लू ने उसके माथे पर ज़ोर से चोंच मारी। मैं उल्लू के पास गया, जिसने अपने दोनों पंख ज़मीन पर फैला दिए ताकि खरगोश मुझसे छिप जाए, ठीक वैसे ही जैसे मुर्गी अपने चूजों को छिपाती है। मैं और करीब गया तो उल्लू ने मुझे घूरा; मैं और करीब गया तो उल्लू उड़ गया। मैंने बेजान खरगोश को उठाया और उसकी पीठ को तेज़ी से सहलाया। होश में आने पर वह ज़ोर-ज़ोर से लात मारने लगा। मैंने उसे लंबी घास में जाने दिया।

इन जंगलों में न तो बाइसन थे, न हाथी, लेकिन उनकी जगह भालू बहुतायत में थे। कुछ ही देर में मेरी मुलाकात ब्रुइन से हुई, जो अपने पसंदीदा शौक, चींटियों के टीलों से दीमकें चूस रहा था। दूर से आती एक आवाज़, भिनभिनाहट और गुनगुनाहट के बीच की, एक अजीब सी आवाज़ जो किसी के बैगपाइप फुलाने जैसी या गुस्से में मधुमक्खियों के झुंड की आवाज़ जैसी थी, ने मुझे सबसे पहले बताया कि कोई भालू आसपास घूम रहा है। आवाज़ तेज़ होती गई और बीच-बीच में गुर्राहट, खांसी, अधीरता भरी फुसफुसाहट और झुंझलाहट भरी दहाड़ें सुनाई देने लगीं।

वहाँ, कतार के एक तरफ और मेरे दाहिनी ओर दीमकों का एक टीला था। वहाँ उसके सामने, एक छेद में सिर डाले, एक खुरदुरा, काला आकार खड़ा था। वह भालू

था, जो फूँक रहा था, चूस रहा था, बड़बड़ा रहा था, गालियाँ दे रहा था और शिकायत कर रहा था, क्योंकि उसे बहुत कम या न के बराबर सफलता मिल रही थी। कभी-कभार ही वह किसी स्वादिष्ट चीज़ को निगलने पर खुशी से खिलखिला उठता था।

जब मैं चुपचाप अपने रास्ते पर आगे बढ़ रहा था, तब वह अपने काम में पूरी तरह मग्न था, और उसकी दावत की आवाज़ें मेरे पीछे धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं। मैं दो घंटे तक उसी रास्ते पर चलता रहा, फिर मुड़कर वापस लौट आया। जब मैं चींटियों के टीले पर दोबारा पहुँचा, तब तक ब्रुइन घर जा चुका था, और उसके प्रयासों के कारण वह अपनी मूल ऊँचाई का केवल आधा रह गया था। फ़ॉरेस्ट लॉज पहुँचने तक मुझे और कुछ नहीं दिखाई दिया।

इसके बाद, मैं उत्तरी दिशा की ओर मुड़ा और ढलान की ओर चलने लगा। यह रेखा उस रेखा की तरह सीधी नहीं थी जिसे मैंने अभी-अभी छोड़ा था। बल्कि, ढलान के पास पहुँचते ही यह काफी टेढ़ी-मेढ़ी हो गई। तीसरे मील पर एक धारा इसे काटती थी, जिसमें बहता साफ, ठंडा पानी चांदनी में चांदी की तरह चमक रहा था।

झुककर मैंने पानी पिया, बाएं हाथ की हथेली से पानी मुंह तक पहुंचाया; मेरे दाहिने हाथ में राइफल थी जिसका बट जमीन पर टिका था, जबकि मेरी आंखें जंगल पर टिकी थीं और कान हल्की सी भी आवाज सुनने के लिए तल्लीन थे। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और एकमात्र आवाज पानी के बहने की थी। मैं आगे बढ़ता रहा।

मैंने जो चारा बांधा था, वह अगले मोड़ पर था। वह जीवित था, और जब मैं उसके पास से गुजरा, तो उसने मुझे उस क्रूर भाग्य के लिए मौन निंदा भरी निगाहों से देखा, जिसके सामने मैंने उसे लाचार कर दिया था। मेरे पास कोई जवाब नहीं था, कोई बहाना नहीं! इसमें कोई शक नहीं था कि मैं दोषी था। मैंने अपनी नज़रें फेर लीं, लेकिन अपराधबोध से मुक्त नहीं हो सका।

अंततः ढलान की तलहटी तक पहुँच गए। यहाँ आग बुझाने वाली रेखा समाप्त हो गई और एक संकरी पगडंडी बन गई जो अचानक हरियाली के भूलभुलैया में समा जाती थी। ऐसी परिस्थितियों में आगे जाना बहुत खतरनाक था, इसलिए मैं वापस लौट आया।

वापसी की यात्रा में मैंने जो कुछ देखा, वह एक विशाल कोबरा था जो एक बांस के चूहे को निगल रहा था। चूहे का तीन-चौथाई हिस्सा कोबरा के गले में उतर चुका

था, केवल पिछला भाग और पूंछ बाहर निकली हुई थी, तभी मैं आग की लपटों के बीचोंबीच उस दृश्य के पास पहुँचा। साँप ने मुझे देखा और अपना सिर ज़मीन से दो फीट ऊपर उठा लिया, साथ ही अपनी गर्दन की पतली हड्डियों को सीधा करके भारत में नए आए किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे सुंदर और साथ ही सबसे मोहक दृश्य बना लिया; प्रसिद्ध कोबरा का फन। चूहे के पिछले पैर और पूंछ अभी भी उसके मुँह से अजीब तरह से लटक रहे थे। उसकी चमकीली काली आँखें फास्फोरस की रोशनी में दुर्भावना से चमक रही थीं।

मैंने तेज़ी से पैर पटके और ताली बजाई। कोबरा घबरा गया और अंत में दहशत में आ गया। उसने चूहे को उगल दिया, अपने फन को पिचकाते हुए ज़मीन पर लेट गया और आग की लपटों के दूसरी ओर झाड़ियों में रेंगता हुआ चला गया।

मैं एक बार फिर बंगले पर लौट आया था। मैंने बीस मील की दूरी तय कर ली थी और सुबह के 2:45 बज रहे थे।

आग बुझाने के लिए दो रास्ते बचे थे, लेकिन मेरे पास केवल एक ही रास्ता चुनने का समय था: या तो दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाला रास्ता, जिस पर मैं अपने आगमन के बाद से अभी तक नहीं गया था, या दक्षिण-पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता, जो रेलवे तटबंध को पार करता था, जहाँ मैं पिछली रात शव के पास बैठा था। किसी अज्ञात कारण से, मैंने दूसरा रास्ता चुना।

मैं रेलवे ट्रैक पर पहुँचा, उसे पार किया और पश्चिम की ओर एक मील से अधिक आगे बढ़ चुका था कि अचानक एक बाघिन की कराहने की आवाज़ से सन्नाटा टूट गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह आवाज़ मुझसे कुछ ही फर्लांग आगे से आ रही थी। शायद वह जानवर उसी आग की रेखा के साथ चल रहा था; हो सकता है वह दूर जा रही हो या शायद मेरी ओर आ रही हो।

अगले 50 गज तक आगे बढ़ते हुए, मैं एक बड़े जंगली सेब के पेड़ के तने के पीछे छिप गया, राइफल को लोड किया और निशाना साधा। फिर मैंने नर बाघ की तरह गहरी दहाड़ मारी।

लगभग तुरंत ही जवाब आ गया, मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा नज़दीक से—शायद सौ गज दूर से। मैंने दोबारा पुकारने की हिम्मत नहीं की, इस डर से कि कहीं मुझे पहचान न लिया जाए कि मैं एक धोखेबाज़ हूँ।

बाघ की आवाज को बहुत करीब से नहीं निकालना चाहिए, क्योंकि असली बाघ

आवाज की ध्वनि में अंतर पहचान सकता है। अगर उसे शक हो गया, तो वह शायद भाग जाए। ऐसी नकल करने की कोशिश करने के लिए सबसे कम दूरी लगभग सौ गज है। बेशक, आदमखोरी की प्रवृत्ति और जिज्ञासा, जिससे अधिकांश जानवर कुछ हद तक पीड़ित होते हैं, बाघ को आगे आने के लिए मजबूर कर सकती है, लेकिन हमेशा यह जोखिम रहता है कि शक उसे भगा दे। इसलिए मैं चुप रहा—और स्थिर रहा।

तीस सेकंड बाद, एक बाघिन जंगल की सीमा रेखा से मेरी ओर बढ़ी, उसके शरीर पर बनी काली धारियों पर चांदनी चमक रही थी। वह मेरे बराबर आकर रुकी, फिर आगे बढ़ने लगी।

मैंने उसके कान के पीछे गोली मारी। ज़मीन पर गिरते समय उसकी पूंछ बस थोड़ी सी हिली। उसे पता ही नहीं चला कि क्या हुआ; उसके बचने का कोई मौका ही नहीं था। यह एक अनुचित गोली थी।

खैर, मामंदुर में अब कुछ सालों से किसी इंसान की हत्या नहीं हुई है। बाघिन, जो कि युवा थी, अच्छी हालत में थी और उसके आदमखोर बनने का कोई कारण नहीं था। शायद, आखिरकार, चमाला नामक आदमखोर बाघिन ने ही उसे यह बुरी आदत सिखाई होगी।

लेखक की पिछली पुस्तक, नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग देखें।

चार

गेरहेट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर

यह एक ऐसे हाथी की कहानी है जिसने 'बदमाश' का नाम कमाया और मद्रास सरकार द्वारा कलेक्टर और सलेम के जिला वन अधिकारी के माध्यम से अधिसूचना जारी करके उसे प्रतिबंधित कर दिया गया।

मैं जिन घटनाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ, वे काफी समय पहले घटी थीं। हमेशा की तरह, इस हाथी के मनुष्यों को परेशान करने के पीछे का कारण किसी को नहीं पता था। गेरहेट्टी में तैनात वन रक्षक ने बताया कि लगभग एक महीने पहले, जब इस हाथी ने उत्पात मचाना शुरू किया था, उससे पहले एक रात उसने जंगल में दो नर हाथियों को लड़ते हुए सुना था। उसके अनुसार, यह लड़ाई तीन घंटे से अधिक समय तक रुक-रुक कर चलती रही और वन बंगले से लगभग आधा मील दूर स्थित एक पानी के गड्ढे के पास हुई थी।

अगले दिन उसने देखा कि जंगल रौंदा हुआ था और चारों ओर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो दिए गए दंड का प्रमाण थे। उसने जो बताया और वहाँ मचे हंगामे को देखकर लगता है कि यह एक भयंकर संघर्ष रहा होगा। संभवतः वह दुष्ट हाथी, जैसा कि बाद में हमें पता चला, उस लड़ाई में सबसे बुरी तरह घायल हुआ था और उसी क्षण से उसने अपना क्रोध सभी पर निकालना शुरू कर दिया था।

एक और संभावित कारण यह हो सकता है कि वह दुष्ट हाथी, 'मस्त' नामक एक आवधिक बीमारी में फंसा हुआ एक साधारण नर हाथी था, जो लगभग तीन महीने तक रहती है और इस दौरान वे असाधारण रूप से खतरनाक हो जाते हैं।

एक तीसरी संभावना यह थी कि इस हाथी को सलेम जिले के जंगलों में पाए जाने वाले कई शिकारियों में से किसी एक ने घायल कर दिया हो। ये शिकारी गर्म और शुष्क गर्मी के महीनों में पानी के स्रोतों और नमक के टीलों पर बैठकर हिरणों का शिकार करते हैं। आम तौर पर, जब कोई शिकारी किसी हानिरहित हिरण से अधिक खतरनाक जानवर को देखता है, तो वह या तो चुप रहता है या अगर उसे लगता है कि शिकार करने का मौका अच्छा है तो चुपके से निकल जाता है। फिर भी, शिकारियों के बीच भी कुछ ऐसे होते हैं जो अंधाधुंध गोली चलाते हैं। वे अपने आस-पास दिखने वाले किसी भी जानवर पर अपनी बंदूकें चला देते हैं, और हो सकता है कि इन्हीं में से

किसी एक ने हाथी को घायल कर दिया हो और इस तरह उसने एक बदमाश के रूप में अपना करियर शुरू किया हो।

यह भी संभव है कि रात में अपनी फसलों की रखवाली कर रहे किसी साधारण किसान ने अपनी बंदूक से उस पर गोली चला दी हो। हाथी जंगल के पास उगने वाली फसलों को नष्ट करने के शौकीन होते हैं।

जो भी बात उसे शुरू में परेशान कर रही थी, गेरहेट्टी के उस बदमाश ने अपना करियर काफी अचानक शुरू किया, और थोड़े समय के लिए उसने उस घने जंगल में अपना दबदबा कायम रखा जहां वह रहता था, और वह एक आतंक बन गया, जिसने लगभग चार सौ वर्ग मील के क्षेत्र में बैलगाड़ी और पैदल यात्रियों सहित सभी यातायात को ठप कर दिया।

गेरहेट्टी एक छोटे से गाँव का नाम है जिसमें लगभग पाँच-छह झोपड़ियाँ हैं। यह गाँव सलेम नॉर्थ फ़ॉरेस्ट डिवीज़न में एंचेटी से पेन्नाग्राम जाने वाले रास्ते से लगभग दो मील दूर स्थित है। यहाँ का इलाका बहुत पहाड़ी है और तलवादी नाले नामक एक पथरीली धारा के दोनों किनारों से लगभग तीन मील की दूरी तक घना बाँस का जंगल फैला हुआ है। यह धारा कावेरी नदी में उस स्थान से लगभग पंद्रह मील दक्षिण-पश्चिम में मिलती है जिसके बारे में मैं आपको बता रहा हूँ। इस बाँस के जंगल में लगभग हमेशा हाथियों के झुंड दिखाई देते हैं और अक्सर तीन-चार हाथी अकेले भी घूमते रहते हैं। हालाँकि हाथी हिंसक नहीं होते, फिर भी जंगल के निवासी उनसे बहुत सावधानी से बचते हैं।

गोलमोथी नामक एक अन्य धारा, तलवाड़ी नदी के लगभग समानांतर बहती है, जो उससे लगभग बारह मील उत्तर में स्थित है और गुंडालम नदी में मिल जाती है, जो स्वयं कावेरी नदी की एक सहायक नदी है। ये तीनों नदियाँ, चारों ओर से घिरी पहाड़ियाँ और घने बाँस के जंगल, किसी भी हाथी के लिए आदर्श निवास स्थान बनाते हैं, और यहीं से उस दुष्ट हाथी ने एक हत्यारे के रूप में अपना करियर शुरू किया था।

यह सब कुछ इस तरह शुरू हुआ। भीषण गर्मी के कारण, गोलामोथी नदी सूख गई थी, सिवाय एक-दो छिटपुट जलकुंडों के जो नदी तल पर उभरी विशाल चट्टानों के बीच बने थे और भूमिगत जल के रिसाव से पोषित हो रहे थे। इनमें से एक जलकुंड में कुछ बड़ी मछलियाँ पाई जाती थीं, जिनकी लंबाई शायद छह से आठ इंच थी। एक दोपहर, पाँच मील दूर स्थित एंचेटी गाँव के दो लोगों ने फैसला किया कि वे इस

जलकुंड में जाकर कुछ मछलियाँ पकड़ेंगे, क्योंकि तेजी से वाष्पीकरण के कारण यह सीमित क्षेत्र बचा था।

वे तालाब के पास पहुँचे और अपने जाल डाले। जल्द ही उन्हें काफी मछलियाँ मिल गईं। फिर उन्होंने मछलियों को अपनी टोकरियों में रखा और तालाब के किनारे एक छायादार पेड़ के नीचे थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गए।

लगभग पाँच बजे उनमें से एक की नींद खुली। सूर्य अभी-अभी तालाब के पश्चिम में स्थित एक पहाड़ी की चोटी के पीछे डूबा था, लेकिन फिर भी काफी उजाला था। जैसे ही वह अपने सोए हुए साथी के बगल में बैठा, किसी चीज़ ने उसे पीछे मुड़कर देखने के लिए प्रेरित किया, जहाँ उसने गोलमोथी नदी के दक्षिणी किनारे से तालाब की ओर जाते हुए एक विशालकाय हाथी को देखा।

उस आदमी ने हाथ बढ़ाकर अपने साथी को ज़ोर से हिलाया और तमिल में फुसफुसाते हुए कहा, 'अनाई वरदबु', जिसका अर्थ है 'हाथी आ रहा है'। फिर वह उठा और उत्तरी किनारे की ओर जंगल में भाग गया। उसका साथी, जो अचानक नींद से जाग गया था, चेतावनी का महत्व पूरी तरह समझ नहीं पाया और जब वह इधर-उधर देख रहा था और सोच रहा था कि उसके दोस्त को क्या हुआ है, तभी हाथी उस पर आ गिरा।

जो आदमी बच निकला, उसने मुझे बताया कि उसने अपने पीछे छूटे दोस्त की चीखें सुनीं, जो क्रोधित हाथी की तीखी चिंघाड़ के साथ मिली हुई थीं। फिर सन्नाटा छा गया। ज़ाहिर है, उसने और कुछ सुनने का इंतज़ार नहीं किया। दो दिन बाद, जब एंचेटी से खोज दल अवशेषों की तलाश में आया, तो उन्हें टूटे हुए मांस और हड्डियों का एक गूदा ढेर मिला जो तेज़ धूप में सड़ रहा था। इस बात के सबूत मिले कि हाथी ने पहले उस आदमी पर अपना पैर रखा और फिर अपनी सूंड से उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वह एक पैर को दस गज दूर एक जगह पर ले गया, जहाँ उसने उसे एक जंबुलम पेड़ के टेढ़े-मेढ़े तने पर पटका और अंत में चट्टानों के बीच फेंक दिया।

वह उस दुष्ट हाथी का पहला शिकार था। उसका दूसरा प्रयास एक चरवाहे पर था जो सूर्यास्त के समय अपने पशुओं को गुंडालम स्थित मवेशी बाड़े की ओर ले जा रहा था। यह लड़का युवा और फुर्तीला होने के कारण सूखी नदी के किनारे रेत पर भाग निकला, जिसका पीछा वह क्रूर हाथी कर रहा था। जब उसे लगा कि वह पीछे छूट रहा है, तो लड़के ने सूझबूझ से पहाड़ी की खड़ी ढलान पर चढ़ गया, जहाँ चट्टानें बहुत

फिसलन भरी थीं और छोटे-छोटे ढीले पत्थर बहुतायत में थे। इससे वह अपनी बढ़त बनाए रखने में सफल रहा।

भागने की अफरा-तफरी में लड़के के नंगे पैर नुकीले पत्थरों पर बुरी तरह छिल गए, जबकि उसके शरीर पर जगह-जगह कांटे और झाड़ियाँ थीं जो उसे रोकने की कोशिश कर रही थीं। लेकिन वह दौड़ता रहा और पहाड़ी पर लगभग दो सौ गज ऊपर निकली एक ऊँची चट्टान पर चढ़कर हाथी से बच निकलने में कामयाब रहा।

बाद में उसने मुझे बताया कि जब हाथी चट्टान के पास पहुँचा, तो वह उसके चारों ओर कई बार घूमा, चिंघाड़ता रहा और अपनी सूंड से अपने शिकार पर वार करने की कोशिश करता रहा। लेकिन लड़के ने अपना धैर्य बनाए रखा और हाथी के साथ-साथ चलता रहा, उस भयानक सूंड की नोक से यथासंभव दूर रहने की कोशिश करता रहा। उसने मुझे बताया कि चट्टान की चोटी का क्षेत्रफल लगभग पच्चीस वर्ग फुट था और शिकारी हाथी की सूंड की साँप जैसी नोक कभी-कभी उसके टखनों से एक फुट की दूरी पर आ जाती थी। फिर भी वह उससे बचने में कामयाब रहा, और एक घंटे तक इस खेल के बाद हाथी ने अचानक अपने शिकार में रुचि खो दी और वहाँ से चला गया। फिर भी लड़का इतना डरा हुआ था कि नीचे नहीं उतर पाया और उसने रात चट्टान की चोटी पर ही बिताई, अगली सुबह सूरज के आसमान में काफी ऊपर चढ़ने के बाद ही वह नीचे उतरा, जब उसे लगा कि हाथी आसपास कहीं नहीं है।

इसके बाद एक महीने तक शांति छाई रही, जब उस इलाके में रहने वाले कुछ लोगों को लगने लगा कि शायद हाथी दूसरे क्षेत्रों में चला गया है, या फिर अगर वह मद में था, तो वह मद का मौसम बीत चुका है और उसकी हालत सामान्य हो गई है।

लेकिन वे बहुत आशावादी थे, क्योंकि चरवाहे का पीछा करने में असफल रहने के ठीक पाँच सप्ताह बाद, इस हाथी ने दो यात्रियों पर हमला कर दिया, जब वे एंचेटी से लगभग आठ मील दक्षिण में स्थित नट्ट्रपलयम गाँव की ओर जंगल से होकर जा रहे थे। इन दोनों व्यक्तियों का अचानक उस दुष्ट हाथी ने पीछा करना शुरू कर दिया और वे जंगल के रास्ते पर भागने लगे, जबकि हाथी लगभग सौ गज पीछे उनका पीछा कर रहा था। इनमें से एक व्यक्ति लगभग तीस वर्ष का था और दूसरा उससे लगभग दस वर्ष बड़ा। उम्र का असर जल्द ही बड़े व्यक्ति पर दिखने लगा, जिससे वह पीछे रह गया और उसकी साँसें सिसकते हुए चलने लगीं। वह जानता था कि उसकी मृत्यु निश्चित है, और उसने भागते रहने की पूरी कोशिश की। दुर्भाग्य से, उसने अपना आपा

खो दिया था, और उसने हाथी से बचने का कोई प्रयास नहीं किया, जैसा कि वह कर सकता था, जैसे कि पेड़ पर चढ़ना, किसी चट्टान के पीछे छिपना या भागते समय अपने कपड़े का कुछ हिस्सा फेंक देना। यह अंतिम उपाय हमलावर को कुछ मिनटों के लिए रोक सकता था। क्योंकि जब कोई हाथी पीछा कर रहा हो, तो अंतिम उपाय के रूप में अपने कपड़े का कुछ हिस्सा फेंक देना ही उचित होता है; जब हाथी उस तक पहुँचता है और उसे इंसानी गंध आती है, तो वह हमेशा रुककर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता है। इस तरह मिले कीमती पलों में पीड़ित को भागने का मौका मिल जाता है।

लेकिन यह बेचारा आदमी तब तक दौड़ता रहा जब तक वह और दौड़ नहीं सका। जब वह रास्ते पर बेसुध पड़ा था, तो हाथी ने उसे पकड़ लिया, उसका शरीर दर्द से कराहते फेफड़ों से उबड़-खाबड़ हो रहा था। जल्द ही इस धरती पर उनकी सेवा समाप्त हो गई, क्योंकि हाथी ने उसे अपनी सूंड में उठाया और रास्ते के किनारे एक बड़े पत्थर से बार-बार टकराया, उसे बुरी तरह पीटकर अधमरा कर दिया और अंत में जंगल में फेंक दिया।

इन घटनाओं के परिणामस्वरूप, वन अधिकारियों के माध्यम से सलेम जिले के कलेक्टर को याचिकाएँ भेजी गईं, जिसमें इस हाथी को 'अनैतिक' घोषित करने की मांग की गई थी। इसका अर्थ यह था कि जिले में किसी भी शिकार लाइसेंस धारक को हाथी का शिकार करने की अनुमति दे दी गई थी। सामान्यतः, भारत में हाथी को सख्त संरक्षण प्राप्त है। दुनिया के अन्य हिस्सों की तरह ही, भारत में भी लालफीताशाही एक धीमी प्रक्रिया है, और भारत में तो यह स्थिति और भी गंभीर है। इसी कारण आवश्यक आदेश जारी करने में तीन महीने या उससे अधिक का समय लग गया। जिले के सभी शिकार लाइसेंस धारकों को सूचित करने में एक महीने की और देरी हुई।

इस बीच वह बदमाश काफी सक्रिय था। उसने वन विभाग द्वारा काटे गए चंदन से लदी एक बैलगाड़ी पर हमला कर दिया। बैलगाड़ी का चालक और चंदन के साथ चल रहा वन रक्षक जंगल में भागकर बच निकले, लेकिन बैलगाड़ी चकनाचूर हो गई और एक बैल को मामूली चोट आई।

कुछ ही समय बाद, उस बदमाश ने एक असामान्य काम किया। चरवाहों द्वारा जंगल में छोड़े गए मवेशी आम तौर पर काफी बड़े क्षेत्र में फैल जाते हैं। जाहिर तौर पर इनमें से एक जानवर उस बदमाश के बहुत करीब भटक गया, जिस पर बदमाश ने

हमला किया और उसकी कमर तोड़ दी।

कुछ समय की शांति के बाद यह खबर आई कि उसने इस क्षेत्र की एक जंगली जनजाति के 'पुजारी' की हत्या कर दी है, क्योंकि वह उस ठेकेदार के लिए जंगल से शहद लेकर लौट रहा था जिसने वन विभाग से इस विशेष क्षेत्र में सभी जंगली शहद को इकट्ठा करने का अधिकार खरीदा था।

फिर मुझे आधिकारिक सूचना मिली। आम तौर पर मुझे हाथी के शिकार में कोई आनंद नहीं आता, क्योंकि इन विशाल और महान जानवरों के प्रति मेरे मन में बहुत स्नेह है। दूसरी बात, मुझे लगता है कि हाथी अपेक्षाकृत शांत स्वभाव के होते हैं; हाथी चरते समय झाड़ियों में शोर मचाकर अपनी स्थिति का पता दे देते हैं। ऐसे में शिकार के हवा के विपरीत दिशा में जाकर उसके पास तक पहुंचना अपेक्षाकृत आसान होता है। बस पैरों को सही जगह पर रखने का थोड़ा अनुभव होना चाहिए, ताकि सूखी पत्तियों या टहनियों पर पैर न पड़े जो चटकने की आवाज करके शिकारी की स्थिति का पता दे देती हैं।

'स्थिर शिकार' का एक और बेहद महत्वपूर्ण पहलू है 'स्थिर' रहने की क्षमता, यानी उस समय आप जिस भी स्थिति में हों, शिकार के आपकी ओर देखने पर एकदम शांत हो जाना। अर्ध-झुकी हुई स्थिति में यह कभी-कभी थोड़ा अटपटा लग सकता है, लेकिन सीधा होना या नीचे बैठना घातक हो सकता है, क्योंकि ज़रा सी भी हलचल से शिकारी का भेद खुल जाएगा। सबसे अच्छा तरीका है कि आप पूरी तरह से 'मृत' अवस्था में रहें, चाहे दस मिनट तक भी उसी अर्ध-झुकी हुई स्थिति में। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह कभी-कभी बेहद थकाने वाला हो सकता है।

इन तरीकों से मैंने कई बार हाथियों का पीछा करते हुए उनके कुछ गज के करीब जाकर उन्हें शांति से चरते हुए देखा है, और उन्हें मेरी मौजूदगी का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। लेकिन हल्की सी भी सरसराहट, मेरी गंध, या पैरों की हल्की सी भी सरसराहट उन्हें तेज़ी से भगा देती। हाथी की नज़र बहुत कमज़ोर होती है, और अगर आप मिलिट्री की खाकी-हरे रंग की वर्दी पहने हों और बिल्कुल स्थिर खड़े रहें, तो भी वे अक्सर आपकी ओर देखेंगे, लेकिन उन्हें आपकी मौजूदगी का पता नहीं चलेगा।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, इन्हीं कारणों से मुझे हाथियों का शिकार करना पसंद नहीं है। साथ ही, कई तथाकथित बदमाश हाथी असल में बदमाश होते ही नहीं हैं। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, शिकारी और किसान अक्सर हाथियों पर गोली

चलाते हैं और इस प्रक्रिया में उन्हें घायल कर देते हैं, जब वे मानव जाति से क्रोधित हो जाते हैं। फिर, तथाकथित बदमाशों के खिलाफ दर्ज की गई कई घटनाएं तो कभी हुई ही नहीं, क्योंकि हाथी का शिकार करने के इच्छुक लोग कभी-कभी मनगढ़ंत कहानियां गढ़ते हैं और ग्रामीणों को बढ़ा-चढ़ाकर रिपोर्ट लिखने के लिए उकसाते हैं ताकि कलेक्टर उस बदमाश हाथी पर प्रतिबंध लगा दे। कलेक्टर आमतौर पर आदेश जारी करने से पहले ऐसे मामलों की बहुत सावधानीपूर्वक और गहन जांच करते हैं; लेकिन कभी-कभी, इन सभी सावधानियों के बावजूद, ऐसे हाथी मारे जाते हैं जो वास्तव में बदमाश होते ही नहीं हैं।

इसलिए मैंने सूचना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, जब तक कि लगभग तीन सप्ताह बाद पेन्नाग्राम कस्बे में रहने वाले मेरे शिकारी रंगा का पत्र नहीं आया। उसने बताया कि चार दिन पहले गेरहेट्टी से लगभग सात मील दूर अनाइबिद्दामदुवु नामक स्थान पर एक हाथी ने एक पुजारी महिला को मार डाला था। इस नाम का शाब्दिक अर्थ है 'वह तालाब जिसमें हाथी गिरा'। यह एक प्राकृतिक तालाब है, जो अनाइबिद्दाहल्ला नदी के तल पर खड़ी चट्टानों से बना है। अनाइबिद्दाहल्ला नदी चिन्नार नदी की एक सहायक नदी है, जो स्वयं दक्षिण भारतीय नदियों में सबसे बड़ी कावेरी नदी की सहायक नदी है। इसके अलावा, यह तालाब गहरा है और कभी सूखता नहीं है। मुझे बताया गया है कि कई साल पहले एक हाथी पानी के लिए अपनी सूंड से पानी लेने की कोशिश करते समय उसमें गिर गया था और उसके चारों ओर मौजूद खड़ी और फिसलन भरी चट्टानों के कारण बाहर नहीं निकल पाया था। हाथी अच्छे तैराक होते हैं और उनमें अदम्य शक्ति और सहनशक्ति होती है, लेकिन उनका शरीर भी बहुत बड़ा होता है। तो यह बेचारा प्राणी, लगातार तीन दिनों तक तालाब में गोल-गोल तैरने के बाद, धीरे-धीरे डूब गया और उन लोगों की काफी बड़ी भीड़ के सामने दम तोड़ दिया, जो पेन्नाग्राम से ग्यारह मील की दूरी तय करके इस तमाशे को देखने आए थे।

रंगा का पत्र मिलने के बाद, और चूंकि उससे मिले हुए काफी समय बीत चुका था, मैंने चार दिन की छुट्टी ली और पेन्नाग्राम के लिए रवाना हो गया। मैंने उसे वहां से लिया और गेरहेट्टी वन बंगले तक जाने वाली अठारह मील या उससे अधिक की बेहद खराब वन सड़क तय की, रास्ते में अन्नाइबिधमधुवु से होते हुए।

गेरहेट्टी के वन रक्षक ने मुझे बताया कि वह हाथी आस-पास ही था, साथ ही लगभग दस हाथियों का एक झुंड भी था। ये सभी जानवर बंगले के सामने वाले पानी

के गड्ढे पर पानी पीने आते थे, और झुंड में कई जानवर लगभग उसी आकार के थे जिस आकार का वह हाथी था, इसलिए यह पहचानना मुश्किल था कि कौन सा हाथी कौन है। इस वजह से किसी भी खास पदचिह्न का निश्चित रूप से पीछा करना संभव नहीं था।

इसके अलावा, अधिसूचना में इस जानवर का वर्णन बहुत अस्पष्ट था; इसमें केवल इतना बताया गया था कि अगले पैर की परिधि 4'10" थी, जिससे हाथी की ऊंचाई लगभग 9'.8" हो जाती है, क्योंकि अगले पैर की परिधि का दोगुना लगभग ऊंचाई होती है। रंग काला बताया गया था, लेकिन सभी हाथी नहाने के बाद काले हो जाते हैं, हालांकि वे जल्द ही खुद को रेत या मिट्टी से ढक लेते हैं। जंगल की रेत अलग-अलग रंगों की होती है, जो लाल से लेकर भूरी, धूसर और लगभग काली तक होती है। इसलिए यह भी कोई विशिष्ट पहचान नहीं थी। हाथी की पहचान करने वाली एकमात्र विशेषता यह थी कि उसके दो दांत, जिनकी लंबाई तीन फीट से अधिक बताई गई थी, नोक के पास मिलते और एक दूसरे को काटते थे।

इसलिए आप समझ सकते हैं कि आखिरी कारक ही एकमात्र ऐसा तरीका था जिससे मैं इस विशेष जानवर की पहचान कर पाता, क्योंकि यह संदेह था कि वह मुझे पास जाकर उसकी ऊंचाई मापने की अनुमति देगा या नहीं! लेकिन यह देखने के लिए कि क्या उसके दांत एक-दूसरे को काट रहे थे, हाथी को सामने से देखना ज़रूरी था, क्योंकि किसी कोण से देखने पर दांत बिना काटे भी एक-दूसरे को काटते हुए दिखाई दे सकते हैं। मैं निश्चित रूप से गलत जानवर को गोली नहीं मारना चाहता था, इसके अलावा इससे होने वाली भारी परेशानी और आधिकारिक स्पष्टीकरण से भी बचना चाहता था।

इसका मतलब यह था कि मैं उस हाथी के माप तक आने वाले किसी भी पदचिह्न का चयन कर सकता था और उनका पीछा तब तक कर सकता था जब तक कि मुझे वह जानवर न मिल जाए जिसने वे पदचिह्न बनाए थे। फिर मैं जानवर को सामने से देखने के लिए आगे बढ़ता ताकि यह पता लगा सकूँ कि क्या उसके दांत आपस में मुड़े हुए हैं। यदि ऐसा होता, तो वह मेरा हाथी होता। यदि ऐसा नहीं होता, तो मुझे फिर से तालाब में वापस जाकर पदचिह्नों के दूसरे समूह का पीछा करना पड़ता। यह याद रखना आवश्यक है कि मेरे पास केवल चार दिन थे, और इन चार दिनों में से एक दिन रंगा को लेने, गेरहेट्टी आने और आवश्यक पूछताछ करने में ही बीत चुका था।

उस रात करीब दस बजे मैंने तालाब के पास हाथियों के चरने की आवाज़ सुनी। यह निस्संदेह हाथियों का झुंड था, और वह शरारती हाथी उनके साथ नहीं होगा। इसलिए मैं फिर से सो गया।

भोर होते ही मैं रंगा और वन रक्षक के साथ मिलकर एक पदचिह्न का पीछा करने के लिए निकल पड़ा। पानी के गड्ढे के किनारे पर हर आकार के हाथियों के पैरों के निशान बिखरे पड़े थे, जहाँ हाथियों के झुंड ने पिछली रात पानी पिया था। इनमें कुछ बहुत छोटे हाथियों के भी पदचिह्न थे, जिनकी ऊँचाई मुश्किल से तीन फीट से ज़्यादा रही होगी।

तालाब के चारों ओर घूमते हुए, मुझे तीन पदचिह्न मिले जो उस हाथी के आकार के लगभग बराबर थे। मैंने देखा कि इनमें से दो पदचिह्न तालाब के उसी तरफ बने थे जहाँ हाथियों का झुंड पानी पी रहा था, जबकि तीसरा पदचिह्न उस हाथी का था जो पानी की ओर बिल्कुल अलग दिशा से आया था। इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि यह तीसरा जानवर ही वह हाथी हो सकता है, और हम एक कतार में उसका पीछा करने लगे। रंगा आगे-आगे पदचिह्नों का पीछा कर रहा था; मैं उसके पीछे-पीछे अपनी दोहरी बैरल वाली 450/400 जेफ्री राइफल से उसे कवर करते हुए चल रहा था; वन रक्षक मेरे पीछे था, उसका काम पीछे से होने वाले हमले से बचाव करना था, यदि हाथी अर्धवृत्ताकार घूमकर हमारे पीछे चर रहा हो।

पानी से निकलने के कुछ ही दूर बाद ज़मीन लंबी भाले जैसी घास से ढकी हुई थी, जिससे पिछली रात हाथी के गुज़रने के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे, जो चारों ओर से कुचले हुए थे। फिर भाले जैसी घास हटकर लैंटाना और वेट-ए-बिट थॉर्न जैसी कांटेदार झाड़ियाँ उग आईं। यहाँ भी हमारे शिकार के गुज़रने का रास्ता देखना अपेक्षाकृत आसान था, लेकिन कांटों के कारण हमारा आगे बढ़ना मुश्किल हो गया, क्योंकि वे हमारे कपड़ों को नोच रहे थे और फाड़ रहे थे।

फिर भी रास्ते साफ़ थे और हम लगभग एक मील तक अच्छी गति से आगे बढ़े, तभी हम एक छोटी पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। इस पहाड़ी की ढलानें घने बाँस से ढकी हुई थीं, और हाथी इसी से गुज़रते हुए पहाड़ी पर चढ़ गया था। वह बाँस की पत्तियों के सिरों से निकलने वाली कोमल कोंपलों को चरने के लिए भी रुका था, जैसा कि रास्ते में मिले टूटे हुए बाँस के तनों के ढेर में उसके द्वारा मचाई गई तबाही से स्पष्ट था। यहाँ उसने काफी मात्रा में गोबर किया था, और जब हम पहाड़ी की चोटी पर

पहुँचे और दूसरी तरफ नीचे उतरे, तो यह स्पष्ट हो गया कि हाथी ने उस सुबह तड़के तक भोजन किया था; क्योंकि गोबर ताज़ा था और ठंडा होने का समय नहीं मिला था।

यहां से आगे का हमारा सफर बेहद धीमा और श्रमसाध्य हो गया। घने बांस ने हमें पूरी तरह से घेर लिया था और हममें से किसी के भी लापरवाही से कदम रखने पर सरसराहट या तेज चटकने की आवाज आती थी, यह इस बात पर निर्भर करता था कि हम पत्तियों पर पैर रख रहे हैं या बांस की टहनियों पर।

मैंने रंगा की कोहनी को छुआ और उसे स्थिर खड़े रहने का इशारा किया, गार्ड और मैंने भी ऐसा ही किया। हम दस मिनट से अधिक समय तक हाथी के भोजन करने की जानी-पहचानी आवाज़ या पाचन प्रक्रिया के दौरान उसके विशाल पेट से निकलने वाली गहरी गड़गड़ाहट सुनने की कोशिश करते रहे। लेकिन जंगल अपेक्षाकृत शांत था, सिवाय हमारे चारों ओर गूंजते भूरे जंगली मुर्गों की चहचहाहट और सामने की पहाड़ी पर दूर से आती लंगूर बंदरों की आवाज़ के।

ज़ाहिर तौर पर हमारा शिकार आराम कर रहा था, या शायद हमारे सामने फैली गहरी घाटी में और नीचे चला गया था। चूंकि बाद वाला ज़्यादा संभावित लग रहा था, इसलिए हम दबे पांव, धीरे-धीरे और सावधानी से उसके पीछे-पीछे चलने लगे। हमें अपनी नज़रें नीचे रखनी पड़ीं ताकि हम किसी ऐसी चीज़ पर पैर न रख दें जिससे हमारी मौजूदगी का पता चल जाए। आधा मील और चलने पर हम घाटी में पहुँच गए, जहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं; जंगली बेर, बेल और विशाल इमली के पेड़ हर जगह बहुतायत से उगे हुए थे, जिससे पंद्रह से बीस गज से आगे देखना असंभव था। दो सौ गज और चलने पर हम गोलामोथी नदी की एक छोटी सहायक नदी के पथरीले तल पर पहुँच गए।

हाथी यहाँ नदी के तल के किनारे-किनारे चलकर पचास गज आगे एक रेतीले स्थान पर नदी पार कर गया था। नदी का वह किनारा, जिस पर वह चढ़ गया था, काफी ढलान वाला था, इसलिए अब हमारे सामने हाथी के ठीक ऊपर होने का खतरा मंडरा रहा था, जो किसी 'दुष्ट' हाथी से सामना करने का सबसे अच्छा तरीका तो बिल्कुल नहीं था।

हम बहुत धीमी गति से और यथासंभव खामोशी से आगे बढ़े। हमारा शिकार खाना बंद कर चुका था और अब फिर से चलने लगा था। हमने जल्द ही देखा कि वह उस पहाड़ी की चोटी के पार स्थित किसी दूसरी घाटी की ओर जा रहा था जिस पर

हम चढ़ रहे थे। यह निष्कर्ष निकालते हुए हमने अपनी गति बढ़ा दी, लेकिन अभी हम केवल एक चौथाई मील ही आगे बढ़े थे कि हमें हाथी के पेट से भारी भोजन पचाने की गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी।

मैंने रंगा और वन रक्षक को एक मजबूत इमली के पेड़ पर चढ़ा दिया और खुद अकेले ही आवाज़ की दिशा में दबे पांव आगे बढ़ा। हाथी बांसों से घिरे एक छोटे से गड्ढे में था। जाहिर है वह आराम कर रहा था, या शायद लेटा हुआ था, क्योंकि उसके खाने की कोई आवाज नहीं आ रही थी। इस समय तक गड़गड़ाहट भी बंद हो चुकी थी।

बहुत सावधानी से, लगभग इंच-दर-इंच, मैं गड्ढे में उतरा। फिर एक पल रुककर, मैंने अपने हाथ में थोड़ी सी नरम मिट्टी उठाई और उसे अपने सामने ऊपर उठाकर गिरा दिया ताकि देख सकूँ कि हवा किस दिशा से बह रही है। मिट्टी सीधी गिरी, जिससे पता चला कि गड्ढे में न के बराबर हवा थी। यह एक नुकसान था, क्योंकि शांत हवा में हाथी के मुझे सूंघ लेने की संभावना थी।

तो मैं और भी सावधानी से आगे बढ़ा, अगर ऐसा संभव था तो। बाँस के पेड़ मेरे ऊपर ऊँचे-ऊँचे खड़े थे, और मैं हर बाँह के पास पहुँचते ही उसके पीछे से झाँकता हुआ देखता। इसी तरह कुछ और कदम चलने पर मुझे अपने सामने एक स्लेटी रंग का बड़ा पत्थर दिखाई दिया। वह हाथी था, ज़मीन पर लेटा हुआ, और बदकिस्मती से, उसका मुँह दूसरी दिशा में था।

अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो मैं रास्ता बदलकर हाथी के सामने से आने की कोशिश करता, जहाँ से मैं उसके दांत देख पाता और गोली चलाने से पहले उसे ही शरारती हाथी के रूप में पहचान लेता, या फिर इससे कहीं आसान तरीका यह था कि मैं जहाँ खड़ा था वहीं से उसे उकसा देता। वह निश्चित रूप से पलटकर मेरी ओर देखता, जिससे मैं उसे पहचान लेता और उसके कुछ समझने से पहले ही गोली चला देता।

दूसरा और आसान रास्ता चुनते हुए, मैं बांस के एक झुंड के पीछे छिप गया और धीरे से सीटी बजाई। हाथी ने ध्यान नहीं दिया। शायद वह गहरी नींद में था, या उसने सोचा कि आवाज़ किसी जंगली पक्षी की है। फिर मैंने ज़ोर से जीभ चटकाई। इसका असर हुआ और हाथी झट से खड़ा हो गया और मेरी तरफ घूम गया।

वह एक भव्य हाथी था, लगभग दस फीट लंबा, और उसके हाथीदांत सुबह की धूप में शानदार ढंग से चमक रहे थे। लेकिन वे एक दूसरे से काफी दूर थे, बिल्कुल भी

आपस में नहीं टकरा रहे थे। मैंने अपना समय गलत हाथी का पीछा करने में बर्बाद कर दिया था।

हाथी लगभग आधे मिनट तक हैरानी से मेरी ओर देखता रहा, उसकी छोटी-छोटी आँखें उस प्राणी को निहार रही थीं जिसने उसकी नींद में खलल डाला था। मैं लगभग उसके मन में चल रहे विचारों को पढ़ सकता था। हैरानी के बाद उसकी पहली प्रतिक्रिया झुंझलाहट थी और वह धमकी भरे अंदाज़ में एक-दो कदम आगे बढ़ा। मैंने एक और तेज़ सीटी बजाई, जिसकी आवाज़ से उसका साहस पस्त हो गया और वह दुम दबाकर जंगल की ओर भाग गया, उसके भागने की गड़गड़ाहट दूर जाकर गुम हो गई।

जब मैं रंगा और वन रक्षक को जिस स्थान पर छोड़कर लौटा, तब तक वे इमली के पेड़ से नीचे उतर चुके थे। उन्होंने जो आवाज़ें सुनी थीं, उनसे उन्हें स्पष्ट रूप से समझ आ गया था कि मुझे कोई ऐसा जानवर मिल गया है जो वह बदमाश नहीं है जिसकी हम तलाश कर रहे थे। फिर हम तीनों निराश होकर पानी के स्रोत की ओर वापस चल पड़े, न केवल हताश थे, बल्कि समय बर्बाद होने से नाराज़ भी थे।

जैसा कि पहले बताया गया था, लगभग समान आकार के दो और पदचिह्न थे। वे तालाब की कीचड़ में बने थे और उन्हें टेप से नापकर यह पता लगाने का कोई फायदा नहीं था कि कौन सा पदचिह्न उस बदमाश के बताए गए आकार के सबसे करीब है; नरम कीचड़ किसी भी जानवर के पदचिह्न को बढ़ा देती है। रंगा ने एक पदचिह्न का पीछा किया, और गार्ड और मैंने दूसरे का, इस समझ के साथ कि हम आगे की चर्चा के लिए पंद्रह मिनट में पानी के गड्ढे पर लौटेंगे।

कुछ ही देर में मुझे समझ आ गया कि जिस जानवर का मैं पीछा कर रहा था, वह झुंड का ही एक हिस्सा था, क्योंकि झाड़ियों के बीच से चरती हुई गायें और उनके बच्चे दिखाई दे रहे थे जो उसके साथ थे। वह निश्चित रूप से शरारती हाथी नहीं था, और मेरी घड़ी के अनुसार ठीक पंद्रह मिनट बाद मैं मुड़ा और पानी के स्रोत की ओर वापस चल पड़ा। रंगा के पास घड़ी नहीं थी, इसलिए वह अभी तक नहीं आया था, तो मैं शांति से बैठकर वन रक्षक द्वारा लाई गई थर्मस से गर्म चाय की चुस्की लेने लगा। लगभग दस मिनट बाद, वह यह बताने आया कि हाथी पानी के स्रोत से एक चौथाई मील दूर घूमकर अर्धवृत्ताकार चक्कर लगाकर जंगल की एक पट्टी से गुजरा जो बंगले के ठीक पीछे, विपरीत दिशा में एक पहाड़ी की ओर जाती थी।

यह खबर आशाजनक लग रही थी, इसलिए हम तुरंत चल पड़े। जल्द ही हम उस जगह पर पहुँच गए जहाँ से रंगा ने रिपोर्ट दी थी। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि हमारा नया शिकार एक यात्री था, क्योंकि वह शायद ही कभी रुका था, बस कभी-कभार रसीले नए पत्तों की एक छोटी सी डंडी तोड़ रहा था। वह हाथी हमें जंगल बंगले के पीछे वाली पहाड़ी से होते हुए, अगली दो पहाड़ियों को पार करके, लगभग सीधी रेखा में तलवाड़ी धारा तक ले गया।

कुल मिलाकर हमने उस नदी के तल तक पहुँचने से पहले चार मील से अधिक का सफर तय किया, जहाँ हमने पाया कि हाथी दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ गया था और सीधे तलवाड़ी नदी की ओर बढ़ रहा था। मुझे पता था कि कावेरी नदी पंद्रह मील की दूरी पर है, और मुझे लगने लगा कि हमारे शिकार ने अचानक बड़ी नदी तक पहुँचने का निश्चय कर लिया है। एक बार ऐसा करने के बाद, और विशेष रूप से यदि वह तैरकर दूसरी ओर चला गया, तो उसका पीछा करना असंभव होगा, क्योंकि वहाँ का इलाका न केवल अत्यंत घना है, बल्कि सौ मील से भी अधिक दूर नीलगिरी और बिलिगिरिरंगन पर्वतों तक फैला हुआ अखंड जंगल और पहाड़ी क्षेत्र है।

इसलिए हम बिना सोचे-समझे पूरी गति से आगे बढ़ गए, लेकिन हमारा हाथी कई घंटों की बढ़त ले चुका था, और उसके लंबे और दृढ़ कदमों को देखकर यह स्पष्ट था कि वह यात्रा करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

दोपहर की तेज धूप में नदी की नरम रेत अब झुलसा देने वाली गर्म हो गई थी। इससे मेरा चलना मुश्किल हो रहा था और यह रेत मेरे जूतों में इस तरह रिस रही थी जैसे नदी या समुद्र की महीन रेत रिसती है। बीच-बीच में नदी का तल पथरीला हो जाता था और दूर-दूर तक महीन रेत की जगह गोल, पानी से घिसे हुए बड़े-बड़े पत्थर दिखाई देते थे। ऐसी जगहों पर हाथी पत्थरों से बचने के लिए नदी के किनारों की झाड़ियों को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था, और हम भी ऐसा ही कर रहे थे, लटकती लताओं से बचते हुए कमर झुकाए हुए, और मेहनत से पसीने से तरबतर।

पंद्रह मील पैदल चलने के बाद हम तलवाड़ी और कावेरी के संगम के पास पहुँच गए। बड़ी नदी से कुछ सौ गज की दूरी पर, तलवाड़ी धारा को उत्तैमलाई गाँव से बिलिगुंडलू जाने वाला एक कच्चा रास्ता पार करता है। हाथी ने यहाँ दिशा बदल ली थी और उत्तैमलाई की ओर दो मील और चलने के बाद, बड़ी नदी के किनारे स्थित एक दलदल की ओर दक्षिण की ओर मुड़ गया। यह दलदल, जिसे करतेई पलाम के नाम

से जाना जाता है, जिसका अर्थ है बाइसन की खोखली जगह, मुझे अच्छी तरह से ज्ञात था। वर्षों पहले यह बाइसन के झुंडों का नियमित ठिकाना हुआ करता था, जो कोयंबटूर तट से सलेम तट तक कावेरी नदी को तैरकर पार करते थे। साल के इस समय दलदल कुछ जगहों को छोड़कर काफी सूखा था, लेकिन हर जगह हरी-भरी घास उगी हुई थी, जबकि घने पेड़ों के समूह पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे।

अब हमें ऐसे संकेत मिले कि हाथी ने खाना शुरू कर दिया था, और जैसे ही हम दलदल के केंद्र की ओर बढ़े, ताजे गोबर के ढेर से पता चला कि जानवर ज्यादा दूर नहीं था।

ज़मीन भी दलदली हो गई थी, और मैंने एक बार फिर रंगा और गार्ड को वापस भेज दिया ताकि कीचड़ में तीन लोगों के चलने से होने वाली आवाज़ को कम किया जा सके। प्रगति बहुत धीमी गति से हो रही थी, क्योंकि मुझे न केवल हाथी से सावधान रहना था, बल्कि हर कदम पर ज़मीन का ध्यानपूर्वक निरीक्षण भी करना था, ताकि अचानक कमर तक चिपचिपी काली मिट्टी में न धंस जाऊं। फिर भी, कई बार मैं घुटनों तक कीचड़ में धंस गया, और खुद को बाहर निकालने के लिए मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी और खूब शोर मचाना पड़ा, तब जाकर मुझे ज़मीन पर पैर जमाने का मौका मिला।

कई बार मैंने रुककर सुनने की कोशिश की, पर कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, सरकंडों वाली घास में ज़ोरदार सरसराहट हुई और हाथी लगभग बीस कदम दूर खड़ा था, पूरी तरह भीगा हुआ और चिपचिपी कीचड़ से सना हुआ जिसमें वह लेटा हुआ था। वह एक विशाल नर हाथी था, जिसके चमकदार सफेद दांत समरूप रूप से मुड़े हुए थे। लेकिन वे उस दुष्ट हाथी के टेढ़े दांत नहीं थे। निराशा और घृणा ने मुझे इतना घेर लिया कि मैंने उस बेचारे हाथी को लगभग भगा ही दिया, और जब मैं अपने अनुयायियों के पास लौटा, तो मेरा मूड बिल्कुल भी अच्छा नहीं था, जैसा कि वे स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

शाम के चार बज चुके थे, और हमें तलवाड़ी नदी के किनारे-किनारे लगभग पंद्रह मील वापस लौटना था, साथ ही गेरहेट्टी बंगले तक चार मील और। दूसरा विकल्प यह था कि हम बिलिगुंडलू में डेरा डालें और अगली सुबह लौटें; लेकिन इससे मेरे बचे हुए दो दिनों में से आधा दिन और बर्बाद हो जाता। इसलिए मैंने वापसी का आदेश दे दिया, जिससे मेरे साथी बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि हमारे पास

किसी भी तरह की रोशनी नहीं है, इसलिए हमारी यात्रा का अधिकांश भाग अंधेरे में ही तय करना होगा, क्योंकि चाँद भी नहीं है। कहीं हमें हाथी भी न मिल जाए! मुझे डर है कि मेरा जवाब संक्षिप्त था, और मैंने इस हाथी को, और सभी हाथियों को, एक ऐसे क्षेत्र में भेज दिया जहाँ उन्हें बहुत गर्मी लगेगी।

वापसी का वह सफर लड़खड़ाने, फिसलने, चट्टानों पर घिसटने, ठूंठों से टकराने या बेलों में उलझने का एक लंबा सिलसिला सा लग रहा था, और हाथी का कोई आभास या आवाज भी नहीं सुनाई दे रही थी। लगभग आधी रात हो चुकी थी जब हम लड़खड़ाते हुए गेरहेट्टी बंगले में पहुँचे, पूरी तरह थके हुए और बच्चों की तरह चिड़चिड़े। हम सुबह होते ही उठ गए थे, लगातार चलते रहे, कांटों, घास, नदी की रेत और दलदल से होते हुए लगभग चालीस मील का सफर तय कर चुके थे। हमें बहुत तेज भूख और प्यास भी लगी थी।

अगली सुबह मेरे पैरों में ऐंठन और दर्द था। वन रक्षक ने अपना टखना दिखाया, जो उसने तलवाड़ी नदी के किनारे कहीं मोड़ लिया था, और उस दिन के काम से छुट्टी मांगी। केवल रंगा ही स्वस्थ और एक और कठिन दिन के लिए तैयार लग रहा था। दलिया, बेकन और अंडे, और कड़क कॉफी ने मुझे नई ऊर्जा दी, जबकि रागी का एक बड़ा गोला, जो एक छोटा अनाज होता है, उबालकर लगभग एक छोटे तोप के गोले के आकार का बनाया गया था, जिसे कॉफी के साथ खाया गया, रंगा को रात तक संतुष्ट रखेगा।

रात भर हम सब इतने थके हुए थे कि कोई आवाज़ नहीं सुन पाए थे, लेकिन पानी के कुंड पर जाने से पता चला कि हमारे सोते समय हाथियों का झुंड वापस लौट आया था। वहाँ दो बड़े हाथियों के ताज़े पदचिह्न भी थे, जिनमें से एक शायद वही पहला हाथी था जिसका मैंने पिछले दिन पीछा किया था, जबकि दूसरा वह जानवर था जिसका मैंने बिल्कुल भी पीछा नहीं किया था। तीसरे हाथी को, जैसा कि हम अच्छी तरह जानते थे, हमने कार्तई पलाम में बहुत दूर छोड़ दिया था।

फिर भी, कुछ भी संयोग पर नहीं छोड़ा जा सकता था; इसलिए हमने पिछले दिन की ही योजना का पालन किया और इन दोनों जानवरों का पीछा करते हुए तब तक आगे बढ़े जब तक हम उन तक नहीं पहुँच गए। सुबह 9:30 बजे तक हम उस पहले बैल तक पहुँच गए जिसका हमने पीछा करने का फैसला किया था। वह पिछले दिन पीछा किए गए दोनों बैलों से थोड़ा छोटा था, और वह बदमाश बैल नहीं था! निस्संदेह

यह उन तीन जानवरों में से तीसरा था जिनके पदचिह्न हमने पिछले दिन देखे थे। पानी के गड्ढे पर वापस जाकर, हम शेष रास्ते पर चल पड़े और दोपहर 2:30 बजे हमें उसका निशान बनाने वाला जानवर एक बड़े और घने इमली के पेड़ के नीचे चुपचाप खड़ा मिला। वह भी बदमाश बैल नहीं था। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, वह वही पहला जानवर था जिसका मैंने पिछले दिन पीछा किया था और जिसे मैंने बांसों के बीच लेटे हुए परेशान किया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट था कि 'दुष्ट' आस-पास कहीं नहीं था। मेरे पास उपलब्ध चार दिनों में से तीन दिन बीत चुके थे, लेकिन मैं अभी भी उस दिन से आगे नहीं बढ़ पाया था जिस दिन मैं आया था।

पांच बजे हम बंगले पर वापस आ गए और चाय का एक बड़ा प्याला बना रहे थे। तभी साढ़े पांच बजे आठ मील दूर स्थित एंचेटी से बैलगाड़ियों का एक काफिला रात बिताने के लिए वहाँ पहुँचा, क्योंकि वहाँ एक बदमाश हाथी मौजूद था। बैलगाड़ियों ने बताया कि एंचेटी से लगभग आधे रास्ते में, जहाँ गोलमोथी नदी सड़क को पार करती है, उन्हें एक बड़े हाथी के पदचिह्न मिले थे, जो कई बार सड़क पार कर चुका था और जाहिर तौर पर नदी के मुहाने के पास ही मंडरा रहा था।

आखिरी क्षण तक हार न मानने का दृढ़ निश्चय करके, रंगा और मैंने जल्दी खाना खाया और अभी भी थके हुए वन रक्षक को कार में बिठाकर उस घाट की ओर चल पड़े जिसके बारे में गाड़ीवालों ने बात की थी।

जब हम वहाँ पहुँचे तो शाम के 7 बज रहे थे और लगभग अंधेरा हो चुका था। कार की रोशनी से हाथी के पदचिह्न दिखाई दिए, जहाँ गाड़ीवालों ने बताया था। नदी पार करते समय, टॉर्च की मदद से हमने अपने दोस्तों की गाड़ी के पहियों से बनी संकरी लकीरों पर हाथी के थाली जैसे पदचिह्न देखे। हाथी गर्म मौसम में दिन के समय बाहर नहीं घूमते, और इससे साफ पता चलता है कि हमारे आने से पहले उसी शाम हाथी सड़क पर था। शायद उसने कार की आवाज़ सुनी हो, या हमारी बत्तियाँ देखी हों, और हमारे पहुँचने से ठीक पहले वहाँ से चला गया हो।

हमने जल्दी से स्टुडेबेकर का हुड नीचे कर दिया। मैंने अपनी 'सील्ड-बीम' स्पॉटलाइट रंगा को दे दी, जिसे मैंने पीछे वाली सीट पर बिठा दिया, लेकिन गार्ड को आगे वाली सीट पर ही रहने दिया। मैं खुद मुड़े हुए हुड पर बैठ गया, मेरे पैर ड्राइविंग सीट पर थे, और मेरी राइफल और टॉर्च तैयार थीं। जल्द ही चारों ओर घना अंधेरा छा

गया, क्योंकि हम गोलमोथी नदी के किनारे लगे ऊंचे मुथी और जुमलम के पेड़ों और बांस के झुंडों से घिरे हुए थे, जिनके तने नदी के सूखे रेतीले तल पर ऊपर-नीचे बहने वाली जंगली हवा की धाराओं से अजीब तरह से चरमरा रहे थे।

हालात बहुत खराब थे। पहली बात तो यह कि हमें पता नहीं था कि हमने जो पदचिह्न देखे थे, वे उस हाथी के ही थे या नहीं। वे किसी भी हाथी के हो सकते थे। हमें बस इतना पक्का पता था कि वे गेरहेट्टी के आसपास मौजूद तीन बड़े नर हाथियों में से किसी के नहीं थे। दूसरी बात, उस हाथी के लिए उस घाट पर वापस जाने का कोई कारण नहीं था जहाँ से वह अभी-अभी गुजरा था, क्योंकि उसके पास घूमने के लिए पूरा जंगल था। तीसरी बात, हम सब जानते थे कि एक हाथी के लिए दस मील की दूरी आराम से चलने में मुश्किल से दो घंटे लगते हैं, और जब वह वास्तव में दौड़ रहा होता है तो उसकी गति बहुत तेज होती है। चौथी बात, हवा चारों दिशाओं में बह रही थी, और हमारी गंध को एक चौथाई मील के दायरे में मौजूद किसी भी हाथी तक ले जा सकती थी और अगर वह हाथी नहीं होता, तो उसे भगा सकती थी। दूसरी ओर, एक हल्की सी उम्मीद थी कि अगर वह हाथी होता, तो हमारी गंध उसे आकर्षित कर सकती थी।

तो हम घोर अंधेरे में रात 8:30 बजे तक इंतज़ार करते रहे, और फिर कहीं ऊपर की ओर से एक खोखले लट्ठे के पलटने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। आखिरकार हाथी चलने लगा और आवाज़ से लग रहा था कि वह लगभग चार-पाँच सौ गज दूर है। फिर पंद्रह मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, तभी पास ही से एक शाखा के टूटने की तेज़ आवाज़ आई, जिससे पता चला कि हाथी चर रहा था और साथ ही नदी पार करने की ओर बढ़ रहा था।

मुझे पता था कि उसने अभी-अभी जो शाखा तोड़ी थी, उसके सिरे से नए पत्ते खाने में उसे कम से कम तीस मिनट लगेंगे, ताकि उसके पास आने से पहले काफी समय मिल जाए। नदी के मोड़ से आते समय कार, जिसमें हम बैठे थे, उसे साफ दिखाई देगी, और पूरी संभावना थी कि अगर वह शरारती हाथी नहीं था, तो हमें देखते ही वह चुपचाप जंगल में गायब हो जाएगा। लेकिन मैंने हवा पर ध्यान नहीं दिया था; तभी अचानक तेज़ हवा हमारी तरफ से हाथी की ओर बहने लगी।

कुछ मिनटों तक सन्नाटा छाया रहा, फिर हमें कार के सबसे नज़दीक नदी के किनारे झाड़ियों में हल्की सरसराहट सुनाई दी। यह एक धीमी सी आवाज़ थी, मानो

झाड़ियों में किसी छोटे जीव की आवाज़ हो। तभी अचानक कुचले हुए बांस के टूटने की भयानक आवाज़ सुनाई दी। फिर से गहरा सन्नाटा छा गया। मानो हवा भी थम सी गई हो, ताकि अगली घटना के लिए पूरा समय मिल सके।

यह एक दौड़ते हुए नर हाथी की कान फाड़ देने वाली चीख थी, जो बांस और झाड़ियों के ढहने की आवाज़ के साथ मिल गई थी क्योंकि वे हमारी ओर दौड़ते हुए उस विशालकाय हाथी के सामने गिर पड़े थे।

रंगा ज़रा भी नहीं हिचका! स्पॉटलाइट की किरण घने अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ी। मेरी टॉर्च की रोशनी, उस कहीं ज़्यादा चमकदार स्पॉटलाइट की रोशनी के साथ मिलकर, एक विशालकाय हाथी को दिखा रही थी, जिसका पूरा शरीर काला था, सूंड ऊपर और अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और उसके दो नुकीले सफेद दांत सिरे पर एक-दूसरे को काटते हुए, हम पर गरजते हुए आ रहे थे!

पचास गज की दूरी से मेरी दाहिनी बैरल से निकली गोली उसके गले में जा लगी। गोली लगते ही वह रुक गया और गुस्से से चीखने लगा। निस्संदेह, यह उसके लिए बहुत भयानक था! धमाके, दर्द और तेज रोशनी ने उसे भ्रमित कर दिया और वह आधा जंगल की ओर मुड़ गया। मेरी दूसरी गोली, जो जल्दबाजी में कनपटी पर चलाई गई थी, उसके सिर के एक तरफ लगी। वह जंगल में भागा, अपने अगले पैरों पर लड़खड़ाया, फिर उठा और जैसे ही मेरी तीसरी गोली उसके शरीर में लगी, वह बांसों में गायब हो गया। लगभग पंद्रह मिनट तक हम जंगल में भारी आवाज़ें सुनते रहे, क्योंकि हाथी लड़खड़ाता, गिरता और फिर उठकर भागता रहता था।

कार स्टार्ट करके, मैंने रिवर्स किया और गेरहेटी लौट आया। उस रात मैं चैन से सोया, रंगा ने सुबह मुझे गरमागरम, कड़क चाय का मग देकर जगाया।

सुबह 6:30 बजे तक हम घायल बदमाश के पीछे-पीछे चल रहे थे। उसके गले के घाव से खून की बड़ी-बड़ी धारें बह रही थीं और उसके धड़ से होकर आसपास की झाड़ियों पर फैल रही थीं, जो उसके गुजरने से लाल हो गई थीं। जल्द ही हम भी उसके खून से लाल हो गए, क्योंकि हम उसके पीछे-पीछे झाड़ियों में से होकर आगे बढ़ रहे थे।

वह कई जगहों पर लेटा हुआ था, या गिर पड़ा था, जहाँ की हरी घास गहरे लाल रंग से रंग गई थी। वह कई पेड़ों के तनों से टिका हुआ था जो अभी भी उसके खून से लथपथ थे। सचमुच, अगर आप हाथी को मारने का काम पूरा नहीं करते, तो आप

अपने लिए एक खूनी राह बना लेते हैं। मुझे इस बेचारे जानवर पर बहुत दया आई, भले ही वह इंसानों का खूंखार हत्यारा था।

दो मील चलने के बाद मैंने उसे एक पेड़ के तने से टिके हुए, आधा घुटने टेके और आधा लेटे हुए पाया। खून की कमी से वह इतना कमजोर हो गया था कि मुश्किल से हिल पा रहा था, हालाँकि मेरी ओर बढ़ते हुए उसने मुझे साफ़ देखा। जीवन का एकमात्र संकेत उसकी छोटी-छोटी खून से लाल आँखें थीं, जो मेरी ओर आते देख चमक रही थीं और हिल रही थीं। पंद्रह गज की दूरी से मैंने अंतिम प्रहार करने के लिए अपनी राइफल उठाई। मानो मृत्यु को सलाम करते हुए, वह ताकतवर जानवर सिर से पैर तक काँप उठा और अपने विशाल शरीर को पूरे दस फीट तक सीधा खड़ा कर लिया। सूंड ऊपर की ओर मुड़ गई, बड़े कान बाहर की ओर फड़फड़ाए, और वह अपने अंतिम आक्रमण में दो कदम आगे बढ़ा, तभी 450/400 कैलिबर की भारी गोली उसकी कनपटी पर लगी और वह कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा।

हालांकि गेरहेटी का 'क्रॉस-टस्कर' एक हत्यारा था, लेकिन वह एक बहादुर योद्धा भी था, और मैंने उसे सम्मान दिया जब वह मेरे अभी भी धुआं उगलते थूथन के सामने पड़ा था - जीवन में शक्तिशाली और अपनी मृत्यु में उससे भी अधिक शक्तिशाली!

पाँच

संगम पैंथर

बेंगलुरु स्थित मेरे घर पर यह खबर पहुंची कि एक तेंदुआ, जिसे भारत में आमतौर पर 'पैंथर' के नाम से जाना जाता है, शहर से लगभग सत्तर मील दक्षिण में स्थित संगम

नामक स्थान के आसपास लोगों को मार रहा था।

दक्षिण भारत में आदमखोर तेंदुओं का मिलना दुर्लभ है। एक तो, यहाँ के जंगल उतने विस्तृत नहीं हैं, और न ही उतने निरंतर पर्वतीय हैं जितने उत्तर भारत में, विशेषकर विशाल हिमालय पर्वतमाला की तलहटी में। इसका अपवाद पश्चिमी घाट है, जो लगभग चार सौ मील से अधिक दूरी तक पूरी तरह से जंगलों से ढका हुआ है, जिसकी औसत चौड़ाई दस से पंद्रह मील है। लेकिन अन्य वन क्षेत्र काफी छोटे हैं और लगभग चारों ओर से खेती से घिरे हुए हैं। इस कारण मांसाहारी जानवर, और विशेष रूप से तेंदु, अपना ध्यान मवेशियों और बकरियों के झुंडों तक ही सीमित रखते हैं, जिनमें यह देश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, और कुछ हद तक गाँव के आवारा कुत्तों पर भी, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'पाईडॉग' कहा जाता है, जो आम बंदरों की तरह ही इस क्षेत्र के लिए अभिशाप हैं। हाइड्रोफोबिया के टीके के आने से पहले, पागल कुत्तों के काटने से होने वाले संक्रमण से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी, क्योंकि ये आवारा कुत्ते लगातार रेबीज से संक्रमित होते रहते हैं, खासकर गर्म मौसम में। बंदर हमेशा से ही एक बड़ा खतरा रहे हैं, जो फसलों और फलों के पेड़ों को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। बंदर का भारतीयों के लिए गहरा धार्मिक महत्व है, और इसे नुकसान पहुंचाने के किसी भी प्रयास का कड़ा विरोध किया जाता है। इसलिए, पैंथर —कम से कम 'पाइडॉग' और बंदरों के संदर्भ में—इस भूमि की बहुत बड़ी सेवा करते हैं।

पश्चिमी घाट, जिसके बारे में मैंने अभी बात की है, में भारी वर्षा होती है, जो प्रति वर्ष सौ इंच से भी अधिक होती है। यह क्षेत्र घने बांस, लंबी घास और घनी सदाबहार वनस्पतियों से ढका हुआ है—जो मच्छरों, कीड़ों, जोंकों, मक्खियों और अन्य कीट-पतंगों के लिए प्रजनन स्थल हैं।

पैंथर को ज़्यादा पानी पसंद नहीं होता और वे हर तरह के कीटों से घृणा करते हैं! इसलिए, एकमात्र ऐसे क्षेत्र में जहाँ वे बेरोकटोक प्रजनन कर सकते हैं, वे मुश्किल से ही पाए जाते हैं! अतः, प्राकृतिक व्यवस्था के कारण, दक्षिण भारत के अन्य सभी जंगलों में पाए जाने वाले पैंथरों को आमतौर पर भरपूर भोजन मिलता है और वे किसी तरह नरभक्षी बनने की बुरी आदत से बच जाते हैं। इसका एक उल्लेखनीय अपवाद गुम्मलपुर का पैंथर था, जिसकी कहानी मैंने कहीं और बताई है[1]; उस मामले में कुछ विशेष परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण उसने नरभक्षी बनना शुरू कर दिया था।

बैंगलोर में अक्सर ऐसी खबरें आती थीं कि लोग तेंदुओं और बाघों के हमले का शिकार हो रहे हैं, जिनमें से ज़्यादातर हमले तेंदुओं द्वारा किए जाते थे। लेकिन इन अफवाहों पर किसी ने खास ध्यान नहीं दिया क्योंकि मौके पर की गई जांच से हमेशा एक ही बात सामने आती थी। कोई ग्रामीण अपनी बंदूक से या कोई अनुभवहीन शिकारी तेंदुओं पर गोलियां चलाता, आमतौर पर छर्रे, और उसे बस घायल कर पाता। फिर, जंगल के नियमों से अनभिज्ञ होकर, वह तेंदुओं का पीछा करने की कोशिश करता, लैंटाना की झाड़ियों या चट्टानों के बीच से, और इस चक्कर में बुरी तरह घायल हो जाता—कभी-कभी तो गंभीर रूप से। बीते वर्षों में, ऐसे हमलों के 75 प्रतिशत से अधिक मामलों में सेप्टीसीमिया से मौत हो जाती थी। सल्फा दवाओं के आने से, मरने वालों की संख्या घटकर 10 प्रतिशत से भी कम हो गई।

इसलिए जब ऐसी खबरें आईं तो किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। भला क्यों देते? उनके पास करने के लिए और भी काम थे। इसके अलावा, भारत में अफवाहें हमेशा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश की जाती हैं! एक मामूली खरोंच को भी भयानक हमले में बदल दिया जाता है, और मामूली हमले को हत्या बता दिया जाता है। जब वास्तव में कोई हत्या होती है, तो प्रेस में उसे कई हत्याओं के रूप में बताया जाता है।

इसलिए, जब मैंने सुना कि संगम में एक पैंथर ने एक महिला को मार डाला और बाद में एक बच्चे को मारकर खा लिया, तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। फिर पैंथर ने तीसरी और चौथी बार भी हत्या की। प्रेस को यह खबर मिली और यह अखबारों के पहले पन्नों पर छाई रही।

बैंगलोर, मैसूर और मद्रास से कई शिकारी उस जानवर का शिकार करने निकले, लेकिन एक महीने तक पैंथर ने किसी को नहीं मारा। एक शिकारी ने पैंथर को मार गिराने में सफलता प्राप्त की; और यह तथ्य, साथ ही मनुष्यों की हत्याओं का रुक जाना, इस बात का संकेत देता प्रतीत हुआ कि जिस पैंथर को मारा गया था वह आदमखोर ही था। शिकारी अपने-अपने शहरों में लौट गए।

फिर पैंथर ने एक बार फिर शिकार किया, लेकिन उसे अपने शिकार को खाने से रोक दिया गया, जो एक आदमी था और एक झोपड़ी जैसे कमरे में चार आवारा कुत्तों के झुंड के साथ सो रहा था, जिनके साथ वह खरगोश और कभी-कभी हिरण का शिकार किया करता था।

शेड के प्रवेश द्वार पर कंटीली बाड़ लगी हुई थी। छत जस्ता की चादरों के ढीले

टुकड़ों से बनी थी, और दीवार जमीन में गाड़े गए लकड़ी के खंभों से बनी थी, जिनके बीच के अंतराल कंटीले ...

पैंथर शेड में घुस गया। कुत्ते एक जगह जमा हो गए लेकिन कुछ नहीं किया, और हमलावर उनके पास से गुज़रते हुए उस आदमी का गला पकड़ लिया। एक तीखी चीख के साथ ही उसकी मौत हो गई।

पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग शेड में कुत्तों के भौंकने और गुर्राने की आवाज़ से परेशान थे। वे सोच रहे थे कि आखिर क्या हो रहा है, लेकिन कोई भी बाहर जाकर देखने को तैयार नहीं था। तभी पैंथर ने उसी छेद से मरे हुए आदमी को शेड से बाहर खींचने की कोशिश की, जिससे वह अंदर आया था। छेद काफी बड़ा नहीं था। इसलिए पैंथर खुद उसी छेद से अंदर घुस गया और आदमी को अपने पीछे खींचने की कोशिश की। लेकिन शरीर कांटों में फंस गया और अटक गया। फिर पैंथर ने ज़ोर से धक्का दिया, जिससे बाड़ का संतुलन बिगड़ गया और वह जानवर के ऊपर ज़ोर से गिर पड़ी। इससे वह बहुत डर गया होगा, क्योंकि वह लाश को कांटों में फंसा छोड़कर भाग गया।

पैंथर के लगातार शोरगुल से पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग घबरा गए, जो इतनी देर से सांस रोककर सुन रहे थे। वे चिल्लाने लगे और दूसरे ग्रामीणों को जगा दिया। काफी देर बाद, कुछ बहादुर आदमी लालटेन लिए, बंदूकें, लाठी और डंडे लेकर बाहर आए, तो उन्हें मरा हुआ आदमी तो मिला, लेकिन पैंथर नहीं।

अब फिर से दहशत फैल गई, और मुझे यह खबर गांव के पटेल (मुखिया) ने दी, जो खास इसी उद्देश्य से बैंगलोर आए थे। उस समय मुझे दो दिन की आकस्मिक छुट्टी मिल सकती थी, और रविवार को तीसरी छुट्टी मिल जाती थी। इसलिए मैं उनके साथ जाने और उन तीन दिनों के भीतर पैंथर को मारने की कोशिश करने के लिए सहमत हो गया।

संगम जाने वाली सड़क बैंगलोर से छत्तीस मील दूर कंकनहल्ली कस्बे से होकर गुजरती थी, जहाँ से यह कावेरी नदी के तल की ओर तेज़ी से नीचे उतरने लगती थी। रास्ते के आखिरी दस मील बेहद खराब थे, और मेरी स्टडबेकर कार इस खराब व्यवहार के विरोध में अपने सभी जोड़ों से ज़ोर-ज़ोर से हिलती, चरमराती और कराहती हुई आवाज़ें निकाल रही थी। बेतुके ढलानों और तीखे कोणों पर बने घुमावदार मोड़ (जहाँ सभी मील के पत्थर और फर्लांग की पट्टियाँ काले रंग से रंगी हुई

थीं ताकि जंगली हाथी उन्हें उखाड़ न सकें, क्योंकि उन्हें सफेद रंग से सख्त नफरत होती है) मेरी यात्रा के अंत का संकेत दे रहे थे, और जल्द ही एक छोटी लेकिन बेहद कठिन यात्रा के बाद मैं उस छोटे से यात्री बंगले पर पहुँच गया।

'संगम' शब्द का अर्थ 'मिलन' या 'संगम' होता है, और यह सबसे उपयुक्त था, क्योंकि यह कावेरी नदी और उसकी सहायक नदी, अर्करावर्ती नदी के संगम को चिह्नित करता था, जो बैंगलोर के उत्तर में अपने स्रोत से लगभग एक सीधी रेखा में दक्षिण की ओर बहती है।

कावेरी नदी यहाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, संगम इसके उत्तरी किनारे पर मैसूर राज्य क्षेत्र के भीतर स्थित है। कावेरी का दक्षिणी किनारा उत्तरी कोयंबटूर जिले (कोलेगल वन प्रभाग) के जंगलों में आता है। संगम से लगभग तेरह मील पूर्व में मैसूर राज्य क्षेत्र समाप्त होता है और इसके दोनों ओर सलेम जिला स्थित है, जिसके बाद नदी का उत्तरी किनारा सलेम जिले के अंतर्गत आता है और उत्तरी कोयंबटूर जिला दक्षिणी किनारे पर फैला हुआ है। उत्तरी कोयंबटूर और सलेम दोनों जिले मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आते हैं।

संगम एक खूबसूरत वन क्षेत्र है, जहाँ सामान्य मौसम में उत्कृष्ट मछली पकड़ने का आनंद लिया जा सकता है। नदी के किनारे रेत के टीलों और चट्टानों के बीच मगरमच्छों का शिकार भी किया जा सकता है। जंगल के मैसूर की ओर चित्तीदार हिरण, सांभर, भौंकने वाला हिरण, जंगली सूअर, पक्षी और कभी-कभार भालू, तेंदुआ या बाघ भी दिखाई देते हैं। हाथी अक्सर कोयंबटूर किनारे से नदी पार करते हैं। दक्षिणी किनारे पर, कोयंबटूर के जंगलों में, ऊपर बताए गए सभी जीव-जंतुओं की संख्या अधिक है, साथ ही बाइसन के कई बड़े झुंड भी पाए जाते हैं। हाथी और भालू विशेष रूप से बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

नदी के किनारे और बंगले के पास उगने वाले विशाल मुट्ठी के पेड़ों के नीचे कार खड़ी करने के बाद, मैं उस छोटे से गाँव की ओर गया जहाँ हाल ही में कुत्ते की देखभाल करने वाले की हत्या हुई थी। मैंने वहाँ जाकर खुद घटनास्थल का मुआयना किया और पड़ोसियों से घटना का विस्तृत ब्यौरा सुना, जिन्होंने उस दिन बहुत कुछ सुना था, लेकिन उस बेचारे की मदद के लिए कुछ नहीं किया था। मेरे साथ लौटे पटेल भी उस कहानी में शामिल हो गए।

बहुत पूछताछ और बहस के बाद यह स्पष्ट हो गया कि इस पैंथर को पकड़ना बेहद

मुश्किल होगा, क्योंकि नदी के उत्तरी किनारे पर उसके पास घूमने के लिए जंगल का बहुत बड़ा इलाका था, और दक्षिणी या कोयंबटूर की तरफ फैले कई वर्ग मील के जंगल को तो छोड़ ही दीजिए। लेकिन बाद वाले क्षेत्र को उचित रूप से खारिज किया जा सकता था, क्योंकि बाघों के विपरीत, पैंथर आमतौर पर बड़ी नदियों को तैरकर पार करना पसंद नहीं करते, हालांकि मजबूर होने पर वे अच्छी तरह तैर लेते हैं।

सबसे पहला और जाहिरा तौर पर एकमात्र उपाय चारा लगाना था। पटेल की सक्रिय सहायता से, मैंने पाँच बड़े बछड़े खरीदे। इनमें से पहले को हमने बंगले से लगभग आधा मील पश्चिम में और नदी के किनारे से लगभग उतनी ही दूरी पर बाँधा; दूसरे को नदी के लगभग समानांतर और उससे एक मील पश्चिम में; तीसरे को दूसरे से एक मील पश्चिम में; चौथे को अर्करावर्थी की सहायक नदी के दूर वाले किनारे पर, बंगले से लगभग आधा मील पूर्व में और कावेरी से उतनी ही दूरी पर; और पाँचवें को चौथे चारे से एक मील पूर्व में बाँधा। इस प्रकार पाँचों चारे लगभग एक सीधी रेखा में, नदी के दोनों ओर, लगभग आधा मील अंतर्देशीय और पश्चिम में सबसे दूर वाले चारे से पूर्व में सबसे दूर वाले चारे के बीच चार मील की दूरी पर थे।

बंगले में लौटने से पहले ही सूरज डूब चुका था। ठंडे खाने से मेरी भूख शांत हुई, जिसे मैंने बंगले के छोटे से बरामदे में बैठकर खाया और दो गर्म कप चाय के साथ पिया। अपनी पाइप जलाकर मैं दीवार से पीठ टिकाकर बैठ गया और नदी की धीमी आवाज़ सुनता रहा, जो अपने पथरीले तल पर तेज़ी से बह रही थी। रात काफी अंधेरी और बादलों से घिरी हुई थी। बादलों के बीच से कभी-कभार दिखने वाले तारे रात में तारे देखने के लिए पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मैं अंदर चला गया और सो गया।

अगली सुबह हमने चारे की जाँच की। सभी जानवर जीवित थे। मैं उसी सड़क पर चला गया जिससे मैं पिछले दिन आया था, घुमावदार मोड़ों और घाट वाले हिस्से को पार करते हुए। कहीं भी पैंथर के पदचिह्न नहीं दिखे। चित्तीदार हिरणों का एक झुंड और तीन सांभर - अलग-अलग जगहों पर - रात के दौरान सड़क पार कर चुके थे, लेकिन कोई अन्य जानवर नहीं गुजरा था।

बंगले की ओर लौटते समय, सड़क से वापस आने के बजाय, मैं जंगल से होते हुए पहाड़ी से नीचे उतरा और अर्करावर्ती नदी के सूखे तल पर पहुँच गया। वहाँ से मैं दक्षिण की ओर मुड़ा और रेत में चलते हुए संभावित पदचिह्नों की तलाश करने लगा। कोई पदचिह्न नहीं मिला, लेकिन चित्तीदार हिरणों का वही झुंड जो सड़क पार कर गया

था, रेत पर भी चल रहा था। कुछ देर बाद, मैं अपने चौथे शिकार स्थल से गुजरा और उस स्थान पर पहुँचा जहाँ अर्करावर्ती नदी कावेरी नदी से मिलती है।

मेरे पास उपलब्ध तीन दिनों में से डेढ़ दिन बीत चुका था, और मुझे पैंथर के पदचिह्न तक नहीं दिखे थे। स्थिति निराशाजनक लग रही थी।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने पूर्व दिशा में, कावेरी नदी के किनारे-किनारे लगभग साढ़े तीन मील चलने का फैसला किया, जहाँ नदी लगभग बीस फीट तक संकरी हो जाती थी। इस स्थान पर नदी एक गहरी खाई से होकर गर्जना करती हुई बहती थी, जिसे मेके-दात के नाम से जाना जाता है। कन्नड़ भाषा में इस शब्द का अर्थ है 'बकरी की छलांग'। लोककथाओं के अनुसार, वर्षों पहले, कोयंबटूर की ओर जंगली कुत्तों द्वारा पीछा की जा रही एक जंगली भेड़ नदी के किनारे तक पहुँच गई थी, और उसने बीस फीट की छलांग लगाकर मैसूर की ओर अपनी जान बचाई थी।

यहां, संकरे द्वार से होकर बहते हुए उग्र जल के शोर में अन्य सभी ध्वनियां दब जाती हैं, और एक आदमी अपनी पूरी ताकत से चिल्लाने पर भी मुश्किल से अपनी आवाज सुन पाता है।

मैं चट्टानों के किनारे पर बैठ गया और उफनती, तेज़ बहती नदी को देखता रहा। सौ गज दूर, नदी के निचले हिस्से में जहाँ सतह फिर से शांत हो गई थी, कभी-कभार कोई मछली पानी से बाहर उछलती, मानो जीवन के प्रति अपार उमंग और आनंद प्रकट कर रही हो। एक मछली-बाज साफ नीले आसमान में चक्कर लगा रहा था। थोड़ी देर बाद, मैं उठा और बंगले की ओर वापस चल दिया। मुझे अभी तक किसी पैंथर के पदचिह्न नहीं मिले थे।

रात आसमान साफ था। हालांकि चांद नहीं था, लेकिन पिछली रात के बादल भी नहीं थे और जंगल में तारों की रोशनी इतनी थी कि कुछ गज तक देखा जा सके।

बंगले के चौकीदार के पास एक 'पाइडॉग' (भारत में देसी कुत्तों को इसी नाम से जाना जाता है) था, और मेरी आदत के विपरीत और समय की कमी के कारण, मैंने उससे आधी रात तक उसे उधार देने का अनुरोध किया। पहले तो उसने आनाकानी की, लेकिन तीन रुपये के लेन-देन के बाद वह मान गया।

उस दिन सड़क पर चलते हुए, मेरी नज़र लगभग एक मील दूर, उसके किनारे पर पड़ी एक चट्टान पर पड़ी। मैंने कुत्ते को लिया, उसे चट्टान के नीचे बाँधा और सड़क पर आगे बढ़ गया। कुत्ते की नज़र से ओझल होते ही, मैं दाईं ओर मुड़ा और जंगल में घुस

गया, फिर चट्टान के दूसरी तरफ़ पहुँच गया। चुपचाप मैं ऊपर चढ़ गया और उसके शिखर पर लेट गया। चट्टान अभी भी धूप से गर्म थी, जो दिन भर उस पर पड़ती रही थी।

यह सोचकर कि उसे छोड़ दिया गया है, कुत्ता बारी-बारी से भौंकने, रोने और चिल्लाने लगा। कुत्ते बहुत बुद्धिमान होते हैं, उन्हें चारा बनाकर बांधना अनुचित है। गायों और बकरियों के विपरीत, वे खतरे को तुरंत भांप लेते हैं और, भले ही उन पर हमला न हो, घंटों मानसिक पीड़ा झेलते हैं। मैं एक ऐसे कुत्ते को जानता हूँ जिसे एक पैंथर के लिए चारा बनाकर बांधा गया था—हालाँकि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ—वह इतना घबरा गया कि अगले दिन बीमार पड़ गया और एक हफ्ते के भीतर मर गया।

मैं चट्टान की चोटी से देख रहा था। लगभग एक घंटा बीत गया, और फिर अचानक एक धुंधली, धूसर आकृति सड़क पर तेजी से दौड़ती हुई आई। वह कुत्ते से लगभग दस फीट की दूरी तक तेजी से दौड़ी, फिर रुक गई। क्या यह पैंथर हो सकता है?

तारों की रोशनी इतनी ही थी कि अंधेरा पूरी तरह से न छाए, उससे ज़्यादा नहीं। मुझे धुंधली सी एक आकृति कुत्ते को घूरती हुई दिखाई दी। कुत्ता गुर्राया और घुसपैठिए की ओर मुड़ गया। मैंने सोचा, ज़रूर कोई पैंथर होगा, और मैंने अपनी राइफल का निशाना उसकी ओर साध लिया, ताकि बैरल पर लगी टॉर्च का स्विच दबा सकूँ।

घुसपैठिए ने 'हा! हा! हा! हा! हा!' कहा, और उसके बाद अपमानजनक लेकिन तेज़ आवाज़ में 'ची! शी-ए! शी-ए!' की आवाज़ आई।

यह एक लकड़बग्घा था, दक्षिण भारत का आम धारीदार लकड़बग्घा। कुत्ता और भी भयंकर रूप से गुर्राया; फिर उन्माद में भौंकने लगा।

अब एक मनोरंजक नाटक शुरू हुआ, जैसा कि रात में जंगल में पहरा देने वालों को कभी-कभार देखने का सौभाग्य मिलता है। लकड़बग्घा सड़क से हटकर झाड़ियों में घुस गया, जहाँ वह 'गुड्डा! गुद्दार! गर्रार! गुर्र-र्र-आ!' कहने लगा और अंत में अपनी आदत के अनुसार 'ची-आर! शी-आर!' कहने लगा।

कुत्ते ने शोर की ओर मुँह किया और ज़ोर से भौंका। लकड़बग्घा कुत्ते के पीछे सड़क पर फिर से प्रकट हुआ, लेकिन उसे देखता रहा और कर्कश आवाज़ में बोला,

'हा! हा! हा! गुड्डर! गर्रार! शी-ए!'

अपने अफ्रीकी रिश्तेदारों, चित्तीदार और भूरे लकड़बग्घे के विपरीत, जिनमें से चित्तीदार लकड़बग्घा वही जाना-पहचाना 'हंसने वाला लकड़बग्घा' है जिसके बारे में हम सबने सुना है, भारतीय लकड़बग्घा आमतौर पर शांत स्वभाव का जानवर होता है, जो अकेले या ज़्यादा से ज़्यादा जोड़े में शिकार करता है। चित्तीदार लकड़बग्घे झुंड में चलते हैं। आम तौर पर, सभी लकड़बग्घे डरपोक जानवर होते हैं, हालांकि वे अपने आकार के हिसाब से बेहद ताकतवर होते हैं और उनके जबड़े इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे आसानी से किसी आदमी की बांह, हड्डी समेत, काट सकते हैं।

बहुत कम ही ऐसा होता है कि वे असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हैं, जिसका एक उदाहरण मैंने एक बार देखा था। मैं एक पैंथर के शिकार के पास बैठा था। तभी उसका मालिक आया और खाने लगा। मैंने गोली नहीं चलाई, क्योंकि मैं उसे मारने से पहले उसका लिंग जानना चाहता था। मुझे बताया गया था कि आस-पास एक नर और एक मादा पैंथर रहते हैं, और मादा के साथ लगभग छह महीने के दो शावक भी हैं। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मैं गलती से माँ को गोली न मार दूं।

जब मैं हिचकिचा रहा था, तभी एक लकड़बग्घा वहाँ आ गया, और उसका आना उस समय बहुत ही नाटकीय था। वह मानो कहीं से अचानक आ गया हो, और मुझे उसके आने का पता तब चला जब वह उसी तरह की आवाज़ें निकालते हुए, बेखौफ होकर पैंथर के पास दौड़ा, जैसा मैंने अभी बताया है। अपने शिकार पर लेटा हुआ पैंथर, जलती हुई आँखों से उस नए आने वाले को घूर रहा था, और गुस्से से गुर्रा रहा था। लकड़बग्घा पैंथर की पहुँच से बस पाँच फीट की दूरी पर आ गया, और उसने इतनी भयानक आवाज़ें निकालीं कि मानो नरक के राक्षसों का समूह चिल्ला रहा हो।

पैंथर और भी ज़ोर से गुर्राकर शोर बढ़ा रहा था, और बीच-बीच में अपने पंजों से लकड़बग्घे पर वार कर रहा था। लकड़बग्घा हर वार से बचकर पीछे हट जाता, फिर तेज़ी से आगे बढ़कर पैंथर के पीछे पहुँचने की कोशिश करता। पहले तो पैंथर भी लकड़बग्घे को देखते हुए पीछे मुड़ता, और भी ज़ोर से गुर्राते हुए अपने पंजों से लकड़बग्घे की तरफ़ छोटे-छोटे वार और थप्पड़ मारता। लेकिन लकड़बग्घा हमेशा उसकी पहुँच से बाहर रहता, और लगातार जोश से चीखता-चिल्लाता, गुर्राता और घुरघुराता रहता।

उस अशोभनीय शोर से भयभीत—या शायद घृणा से—तेंदुए ने अंततः अपने

शिकार से उठकर धीरे-धीरे पीछे मुड़कर कई बार गुर्राते हुए लकड़बग्घे की ओर चलना शुरू किया। लकड़बग्घा तब तक अपना अजीब शोर मचाता रहा जब तक कि वेदंघे के झाड़ियों में गायब नहीं हो गया। फिर वे स्वयं भी बड़े उत्साह से—और निस्संदेह, पूरी तरह से उचित उत्साह से—शिकार पर टूट पड़े।

लेकिन जिस लकड़बग्घे को मैं चट्टान से देखता रहा, वह निस्संदेह उस आवारा कुत्ते से थोड़ा डरा हुआ था। वह अक्सर सड़क के एक या दूसरे किनारे गायब हो जाता था। फिर सूखी पत्तियों के बीच से उसकी हल्की फुहार सुनाई देती, जब वह इधर-उधर, अलग-अलग जगहों पर लौट आता और अपनी अटपटी, विचित्र और अक्सर हास्यास्पद आवाजें निकालता रहता।

इन दो अनुभवों से मैंने यह सीखा कि लकड़बग्घे अपनी लगातार, कर्कश आवाज से अपने विरोधियों को डराने की कोशिश करते हैं। पहले लकड़बग्घे ने तेंदुए को उसके शिकार से भगा दिया था, जबकि दूसरा लकड़बग्घा कुत्ते को डराने की कोशिश कर रहा था, शायद उसे सड़क से हटाने या झाड़ियों में धकेलने के लिए, जहाँ से वह उस पर आसानी से झपट्टा मार सके।

लेकिन कुत्ता बंधा हुआ था, इसलिए हिल नहीं पा रहा था, जो लकड़बग्घे को समझ नहीं आया। एक घंटे तक इस तरह का शोर मचाना मेरे लिए मनोरंजक नहीं रहा, और मुझे एहसास हुआ कि यह शोर, खासकर लकड़बग्घे की वजह से, आसपास के किसी भी पैंथर को, चाहे वह आदमखोर हो या कोई और, भगा देगा। इसलिए, एक छोटा सा पत्थर ढूंढकर, मैंने उसे लकड़बग्घे पर फेंका। मेरा निशाना चूक गया, और पत्थर सड़क की सख्त सतह पर ज़ोर से गिरा। लकड़बग्घा घबराकर उछल पड़ा और झाड़ियों में भाग गया, जबकि कुत्ता भौंकना बंद करके धीरे-धीरे रोने लगा। मुझे लगा कि मैंने एक अवांछित मेहमान को वहां से भगा दिया है।

लगभग पंद्रह मिनट बीत चुके थे कि मुझे फिर से दबी-दबी टप-टप की आवाज़ सुनाई दी, जिसके तुरंत बाद लकड़बग्घे की अजीब आवाज़ें आईं। कुत्ता भौंका और गुर्राया। मैंने लकड़बग्घे पर एक और पत्थर फेंका। वह रुका; लेकिन दस मिनट बाद फिर से शुरू हो गया। एक बार फिर पत्थर; एक बार फिर सन्नाटा, फिर एक नई शुरुआत। लगभग पाँचवें पत्थर के बाद ही लकड़बग्घे को लगा कि वह जगह किसी तरह अस्वस्थ हो गई है, और आखिरी बार 'आह! आह! आह! ची-ई! शी-ए!' कहते हुए वह वहाँ से चला गया। दस बज चुके थे।

मेरी घड़ी में आधी रात होने में पाँच मिनट बाकी थे, तभी मुझे इंसानों की आवाज़ें सुनाई दीं। थोड़ी देर बाद, मैंने दो लालटेन की टिमटिमाती रोशनी देखी, जो दूर से कई आदमियों के कदमों को रोशन कर रही थी। कुत्ते ने उन्हें देखा और उसका कराहना बंद हो गया।

जब दल कुत्ते के पास पहुंचा, तो मैंने ग्यारह आदमियों को गिना, जिनमें से दो लालटेन लिए हुए थे, और एक को छोड़कर बाकी सभी किसी न किसी प्रकार के डंडे और लाठी लिए हुए थे।

उनमें से एक अपवाद था जिसके पास बंदूक थी। जाहिर है वे मेरी ही तलाश में आए थे। मैंने उनकी आवाज सुनी और चट्टान से नीचे उतर आया।

फिर उन लोगों ने मुझे बताया कि लगभग एक घंटे पहले ही, पैंथर उसी गाँव की एक झोपड़ी में घुस गया था जहाँ कुत्ते के रखवाले पर हमला हुआ था। उसने छप्पर की दीवार में छेद करके अंदर प्रवेश किया और सो रही पाँच महिलाओं में से एक, लगभग पच्चीस साल की एक महिला को पकड़ लिया। जब उसे घसीटकर ले जाया जा रहा था, तो वह ज़ोर से चीखी, जिससे कमरे में मौजूद अन्य चार लोग, उसके पिता, दो भाई और माँ, जाग गए।

इसी बीच, पैंथर उस छप्पर में बने छेद से लड़की को बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था जिससे वह अंदर आया था। लड़की ने ज़ोरदार संघर्ष किया। पैंथर ने उसे छोड़ दिया और बेरहमी से काट लिया। भाइयों में से एक ने झोपड़ी के अंदर के अंधेरे को दूर करने के लिए माचिस जलाई। उसके पिता ने सराहनीय साहस और सूझबूझ दिखाते हुए, अपने हाथ में आए एकमात्र हथियार को पैंथर पर फेंक दिया। वह हथियार पीतल का एक भारी पानी का घड़ा था, जो पैंथर के बगल में ज़ोर से लगा। आदमखोर जानवर, चाहे बाघ हों या पैंथर, स्वभाव से हमेशा थोड़े डरपोक होते हैं और यह पैंथर भी इसका अपवाद नहीं था। अपने शिकार को छोड़कर, वह छप्पर में बने छेद से झोपड़ी से बाहर निकल गया।

घायल महिला की चीख-पुकार और चारों ओर मची अफरा-तफरी ने पूरे गांव को जगा दिया था। पुरुष लालटेन लेकर, जितना हो सके उतने हथियारों से लैस होकर बाहर आए। ग्यारह लोगों का दल मुझे ढूंढने के लिए विश्रामगृह आया था, और जिस चौकीदार से मैंने कुत्ता उधार लिया था, उसने उन्हें उस जगह का रास्ता बताया जहां मैं बैठा था।

मैंने एक आदमी को रस्सी खोलने और कुत्ते को साथ लाने के लिए कहा और जल्दी से बंगले की ओर वापस भागा। मैंने स्टुडेबेकर की पिछली सीट से अपनी प्राथमिक चिकित्सा किट निकाली। फिर हम गाँव की ओर तेज़ी से बढ़े, जहाँ एक भयानक दृश्य मेरा इंतज़ार कर रहा था। बेचारी लड़की के दाहिने कंधे पर चीं-चीं का घाव था, और फिर पेट पर भी, जहाँ पैंथर ने उसे दूसरी बार तब पकड़ा था जब वह भागने की कोशिश कर रही थी। उसका एक स्तन और छाती का पूरा हिस्सा चीर-फाड़ गया था, जहाँ उसके गंदे पंजों ने उसके मांस में गहरे धंसकर उसे बुरी तरह से घायल कर दिया था। उसकी जैकेट और साड़ी टुकड़े-टुकड़े हो गई थी, और वह खून से लथपथ पड़ी थी, अपने इस भयानक अनुभव के बाद वह बेहोश पड़ी थी।

मैंने तुरंत समझ लिया कि मेरे पास जो थोड़ी-बहुत प्राथमिक चिकित्सा सामग्री थी, वह इस स्थिति के लिए बिल्कुल अपर्याप्त थी, लेकिन हमने जल्दी से पोटेशियम परमैंगनेट के गाढ़े घोल से घावों को धोया और दूसरी साड़ी से फाड़ी गई पट्टियों से उसके सीने और पेट पर पट्टी बाँध दी। उसके पिता, दो भाई और गाँव के तीन मददगार पुरुषों ने उसे रस्सी से बने पलंग पर लिटाकर स्टुडेबेकर तक पहुँचाया। उसे जितना हो सके आराम से लिटाकर, मैंने उसके तीन पुरुष रिश्तेदारों को भी साथ लिया और कंकनहल्ली कस्बे के लिए रवाना हो गया, जहाँ पास का ही गाँव का अस्पताल था। हम सुबह साढ़े तीन बजे के बाद वहाँ पहुँचे, जहाँ मैंने डॉक्टर को जगाया और घायल महिला को उनके हवाले कर दिया। बहुत अधिक खून बह जाने के कारण उसकी हालत बहुत खराब लग रही थी।

साढ़े चार बजे तक मैं कंकनहल्ली स्थित यात्री बंगले के बाथरूम में था, जहाँ मैंने अपने खून से सने कपड़े उतारे और ठंडे पानी से स्नान किया। मेरे पास बदलने के लिए कपड़े नहीं थे, क्योंकि उस समय की अफरा-तफरी में मैं उन्हें संगम पर ही छोड़ आया था। इसलिए मैंने बंगले के वेटर से एक साफ धोती और एक कंबल उधार लिया।

भोर होने वाली थी जब मैंने डाकघर का दरवाजा खटखटाया, एक अत्यंत विनम्र पोस्टमास्टर को उसकी नींद से जगाया, आवश्यक विलंब शुल्क का भुगतान किया और बैंगलोर को एक तत्काल टेलीग्राम भेजकर चार और दिनों के लिए छुट्टी बढ़ाने का अनुरोध किया।

जब मैं बंगले पर लौटा तो घायल महिला का छोटा भाई रोते हुए मेरा इंतज़ार कर रहा था। वह अस्पताल से आया था और मुझे बताया था कि उसकी बहन का अभी-

अभी निधन हो गया है। कुछ देर बाद, पिता आकर मुझसे अपनी बेटी के शव को कार में वापस संगम ले जाने के लिए कहने लगा, जहाँ कावेरी नदी के किनारे उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा और अंत में उसकी राख को नदी में बिखेर दिया जाएगा। यह एक ऐसा अनुरोध था जिसे मैं मना नहीं कर सका। बंगले के नौकर ने मुझसे कहा कि उसे अपनी धोती और कंबल वापस चाहिए। इसलिए मुझे अपने खून से सने कपड़े दोबारा पहनने पड़े।

हम वापस अस्पताल गए, लड़की के बेजान शरीर को पिछली सीट पर रखा और संगम के लिए अपनी वापसी यात्रा शुरू की, पुलिस स्टेशन में दो घंटे की देरी हुई, जहां हमने घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई।

नदी के किनारे एक शांत तालाब में मगरमच्छों से मुक्त स्नान करने, ताज़े कपड़े बदलने, ठंडा दोपहर का भोजन करने और चाय के दो बड़े मग पीने के बाद, मैं एक जर्जर पुरानी कुर्सी पर लेटकर स्थिति का जायजा लेने लगा। मेरी भरी हुई पाइप, जिससे निकलता सुकून देने वाला धुआँ खुरदरी टाइलों वाली नीची छत की ओर घुमावदार तरीके से उठ रहा था, पिछली रात की घटनाओं के बाद मेरे तनाव को काफी हद तक कम करने और नींद से आँखें बंद होने से रोकने में सहायक रही।

मेरे पास बचे हुए चार दिन और पाँच रातों में मैं क्या करूँ, ताकि इन बेचारे गाँव वालों को बार-बार होने वाली इन भयानक घटनाओं से बचा सकूँ? तथ्यों से यही संकेत मिलता था कि: (1) पैंथर जानवरों का चारा नहीं खाता, (2) उसके पास छिपने के लिए बहुत जगह है, और (3) वह लोगों को झोपड़ियों से बाहर खींच लाने के लिए प्रवृत्त रहता है। फिर, सोचते-सोचते मुझे नींद आ गई।

दोपहर 3 बजे मेरी नींद खुली और सोते समय मुझे एक संभावित कार्ययोजना सूझी। वह यह थी:

संगम नाम का छोटा सा गाँव, जिसमें लगभग एक दर्जन झोपड़ियाँ थीं, एक केंद्रीय गली के दोनों ओर सामान्य ढंग से बसा हुआ था। मुझे याद आया कि इस गली के दक्षिणी किनारे पर, नदी के तट से कुछ ही दूरी पर, ग्रामीणों के मवेशियों के छोटे-छोटे झुंड एक साझा बाड़े में रखे जाते थे, जो बांस की बाड़ से घिरा हुआ था और बीच-बीच में कटी हुई लैंटाना की झाड़ियाँ लगी हुई थीं। गाँव में बचे हुए इकलौते कुत्ते, जो मारे गए व्यक्ति के थे, उस झोपड़ी जैसे कमरे में बंद थे जहाँ उसकी हत्या हुई थी, और वह कमरा पश्चिमी तरफ बड़े मवेशी बाड़े से सटा हुआ था। मेरे मन में यह विचार

आया कि अगर मैं रात में मवेशियों के बीच छिप जाऊँ, तो न केवल मैं अचानक हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि अगर पैंथर पास आएगा तो मवेशी बेचैन होकर पर्याप्त चेतावनी देंगे, बल्कि यह बेचैनी और कुत्तों का भी साथ देना, मुझे पैंथर की उपस्थिति का पता लगाने में मदद करेगा, अगर वह गाँव में प्रवेश करता है। इस बीच, मैं अपने पांच जीवित चारे बांधकर रखूंगा, इस उम्मीद में कि शायद उनमें से कोई एक मछली पकड़ ले।

इस योजना को ध्यान में रखते हुए, मैंने रात के लिए गर्म कपड़े पहने और ओस से बचने के लिए खाकी ऊनी 'बालाक्लावा' टोपी पहनी। मेरे सामान्य रात्रिकालीन सामान में इस बार चाय का एक बड़ा थर्मस, कुछ बिस्कुट और मेरा पाइप शामिल था, क्योंकि मुझे पता था कि इस स्थिति में धूम्रपान करने से कोई नुकसान नहीं होगा।

पैंथर की मौजूदगी के कारण, गाँव वाले सुबह छह बजे से काफी पहले ही अपनी झोपड़ियों के अंदर चले गए थे, दरवाजों को ताज़े कटे कांटों से बंद कर दिया था। मैंने मवेशी बाड़े के बीचोंबीच अपनी जगह ले ली। मेरे चारों ओर लगभग पचास गज का क्षेत्र था, जिसमें लगभग सौ साधारण दिखने वाले मवेशी इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

पहले तो जानवरों को मेरी मौजूदगी से चिढ़ हुई और वे मुझसे दूर कोनों में जमा हो गए, जिससे मैं बाड़े के बीचोंबीच अकेला रह गया। मैंने उनसे दोस्ती करने की कोशिश शुरू की। एक जानवर ने मेरी चाय की थर्मस को लात मारकर गिरा दिया और लगभग तोड़ ही दी! इसके अलावा, कुछ बैल काफी आक्रामक थे और अगर मैं उनके बहुत करीब जाता तो वे अपने सींगों से मुझ पर वार करते। एक घंटे साथ बिताने के बाद, स्थिति थोड़ी शांत हुई और मैं धीरे-धीरे झुंड के बीचोंबीच पहुँच गया, जहाँ लगभग आधे जानवर ज़मीन पर आराम कर रहे थे। मैं भी नीचे बैठ गया।

जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, सन्नाटा बना रहा, सिवाय कभी-कभार किसी जानवर की हल्की सी आवाज़ या किसी दूसरे जानवर के हिलने-डुलने की आहट के। एक गाय मुझसे घुलमिल गई और दोस्ती जताने के लिए अपना थूथन मेरी छाती से रगड़ने लगी। आखिरकार वह संतुष्टि से मेरे बगल में ज़मीन पर लेट गई।

फिर मवेशियों के कीड़े मुझे कई जगहों पर बेरहमी से काटने लगे। मैंने खुद को ज़ोर से खुजलाया, हालाँकि मुझे पता था कि ऐसा करने से जलन और बढ़ जाएगी। ठंड बढ़ती गई, और जल्द ही मुझे उस गाय के गर्म शरीर से सटकर आराम करने में खुशी हुई, जिसने मेरे साथ यह अजीब दोस्ती शुरू की थी। बीच-बीच में झुंड की कोई

गाय संतुष्टि से 'मूं' करती, या फुफकारती, या लात मारती, या ज़मीन पर गिर जाती, या फिर उठने की कोशिश करती।

समय धीरे-धीरे बीत रहा था और कीड़े काट रहे थे। दोपहर एक बजे गाँव के उत्तर में स्थित छोटी पहाड़ी पर एक सांभर ने आवाज़ लगाई। यह एक हिरणी थी जिसने पुकार लगाई थी, और वह बार-बार पुकार रही थी। फिर उसकी आवाज़ एक ककार की आवाज़ में गूंज उठी, जिसकी कर्कश आवाज़ पहाड़ी की निचली ढलानों पर बनी नालियों में गूंज रही थी।

इस समय तक सांभर हिरणी ने आवाज निकालना बंद कर दिया था, जबकि काकर पक्षी ऊपर चढ़ रहा था और बीच-बीच में कर्कश आवाज निकाल रहा था। जिस भी चीज ने उन्हें डराया था, वह पहाड़ी से नीचे आ गई थी।

लगभग बीस मिनट बाद, पहाड़ी की तलहटी से नदी के किनारे तक फैले जंगल में चित्तीदार हिरणों ने एक-दूसरे को चेतावनी भरी आवाजें निकालकर पुकारना शुरू कर दिया। या तो कोई बाघ या कोई तेंदुआ आसपास था, और अगले कुछ मिनटों में पता चल जाता कि वह मांसाहारी जानवर सिर्फ एक सामान्य प्राणी था या वह खूंखार शिकारी जिसका मैं इंतजार कर रहा था।

लगभग घोर अंधेरा हो चुका था जब मवेशी बेचैन हो गए। ज़मीन पर लेटे हुए सभी मवेशी एक साथ उठ खड़े हुए, और मैंने भी ऐसा ही किया, उस मिलनसार गाय के पास ही रहा। कुछ बैलों ने हिनहिनाहट की, और पूरा झुंड उस गली की ओर मुड़ गया जो छोटे से गाँव को दो भागों में बाँटती थी और मवेशियों के बाड़े की सीमा पर बनी कंटीली झाड़ियों के पास से गुज़रती थी।

जानवर बहुत बेचैन हो गए और बाड़े के दूसरे छोर पर, झाड़ियों और गली से दूर, झुंड बनाकर इकट्ठा होने लगे। पास के शेड में मौजूद चारों कुत्ते पहले ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे; अब वे धीरे-धीरे रोने लगे। जो भी चीज़ उन्हें डरा रही थी, वह ठीक उसी समय उस गली से गुज़र रही थी।

मैं मवेशियों के बीचोंबीच फंस गया था और मुझे बहुत सावधानी बरतनी पड़ रही थी ताकि कहीं मेरे चारों ओर फड़फड़ाते हुए कई सींगों में से किसी एक से मेरा सिर न टकरा जाए। मैंने झुंड के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे की पंक्ति तक पहुंचने की कोशिश शुरू की, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कुछ दिखाई दे, लेकिन अंधेरा और झाड़ियाँ कुछ भी नहीं दिखा रही थीं।

मुझे उस शेड में बंद कुत्तों के भौंकने और कराहने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मेरे कान हल्की से हल्की आवाज़ भी पकड़ लेते थे, लेकिन मवेशियों और कुत्तों के शोर ने मुझे सुनने का ज़्यादा मौका नहीं दिया। कुछ मिनट बाद, मुझे खरोंचने की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। ध्यान से सुनने पर मुझे पता चला कि यह आवाज़ गली में आगे से आ रही थी। आवाज़ें तेज़ होती गईं।

और अधिक अधीर हो गया। तभी मुझे एहसास हुआ कि पैंथर कुछ दूरी पर स्थित एक झोपड़ी के दरवाजे को खरोंच रहा था।

मवेशियों के झुंड को चीरते हुए, मैं दबे पांव बाड़ के पास पहुंचा, इस उम्मीद में कि राइफल की टॉर्च जलाते ही मुझे पैंथर की एक झलक मिल जाएगी। जिस झोपड़ी में पैंथर खुजली कर रहा था, उसमें रहने वाले लोग ठीक उसी क्षण चीख-पुकार मचाने लगे; सन्नाटा भयानक शोर से टूट गया।

मुझे लगा कि आदमखोर झोपड़ी में घुसने में कामयाब हो गया है, इसलिए मैंने सब कुछ भूलकर बाँस और काँटों से बने उस दरवाजे की ओर दौड़ लगाई जो किलेबंदी का प्रवेश द्वार था। शाम ढलते ही मैंने एक विशाल Y-आकार का लट्ठा मजबूती से वहाँ फंसा दिया था, और उसे बड़े-बड़े पत्थरों से निकालने में मुझे कुछ कीमती पल लग गए।

मैंने उसे एक तरफ खींचकर टॉर्च जलाई, उस भारी-भरकम दरवाजे को वापस धकेला और गली में कदम रखा। चारों ओर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

पीछे से होने वाले हमले से बचने के लिए मैंने अपनी पीठ कंटीली बाड़ की ओर कर ली और चारों दिशाओं में प्रकाश की किरणें डालीं, लेकिन फिर भी मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। पैंथर हवा में गायब हो गया था। इस बीच, चीखें और चिल्लाहटें लगातार जारी रहीं।

फिर मुझे यह ख्याल आया कि शायद पैंथर इतने समय से झोपड़ी के अंदर ही था, वहां रहने वालों पर हमला कर रहा था और उन्हें मार रहा था, और इस खतरनाक विचार को ध्यान में रखते हुए मैंने बीच के बीस गज की दूरी को सावधानीपूर्वक तय करना शुरू कर दिया।

जब मैं प्रवेश द्वार के पास पहुँचा, तो देखा कि वह कसकर बंद था। मैंने कैदियों को आवाज़ दी। पहले तो शोरगुल के कारण वे मुझे सुन नहीं पाए। फिर मैंने और ज़ोर से, कई बार आवाज़ दी। तब जाकर शोरगुल धीरे-धीरे कम हुआ।

मैंने अंदर रहने वालों को दरवाजा खोलने के लिए चिल्लाकर कहा। उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। तभी अंदर से एक भयानक आवाज आई, जिसने पूछा कि मैं इंसान हूँ या शैतान? मैंने जवाब दिया कि मैं ही हूँ और पैंथर जा चुका है। आवाज ने कहा कि अंदर रहने वाले सुबह होने पर ही दरवाजा खोलेंगे। इसी बीच, मेरी टॉर्च की रोशनी से झोपड़ी के दरवाजे पर ताज़े पंजे के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, जहाँ से पैंथर ने अभी-अभी अंदर घुसने की कोशिश की थी।

मैं बाड़े में वापस लौटा, दरवाजा दोबारा बंद किया, वाई-आकार के लट्ठे और पत्थरों को वापस अपनी जगह पर रखा और उस जगह पर वापस चला गया जहां अलार्म बजने के समय मैं गाय के सहारे लेटा हुआ था।

मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि झुंड के जानवरों के पैरों की आवाज़ से मेरा थर्मस टूट गया था और अब मैं वो गर्म चाय नहीं पी सकता था जिसकी मुझे बहुत चाह थी। मेरे बिस्कुट भी चट हो गए थे, और जब मैं दुखी मन से उस गाय को देख रहा था, तो उसने बिस्कुटों में लिपटे कागज़ का आखिरी टुकड़ा भी खा लिया। सौभाग्य से, मैंने अपनी पाइप और तंबाकू जेब में रखी हुई थी, और इसी के सहारे मैंने बाकी रात आराम से बिताई, एक बार फिर गाय के पास सटकर।

मैं भोर होते ही बंगले पर थका-हारा और निराश होकर लौटा। सबसे बुरी बात यह थी कि मेरा पूरा शरीर जूँ के काटने से भरा हुआ था और उसमें भयानक खुजली हो रही थी। इसके अलावा, मुझे यह भी अच्छी तरह पता था कि अगले दस दिनों में हर घाव में मवाद भर जाएगा और मुझे बहुत असहज समय से गुजरना पड़ेगा।

ठंडे पानी से नहाने और कपड़े बदलने के बाद, गर्म चाय, डिब्बाबंद बेकन और ब्रेड-बटर ने मेरी उदासी को कुछ हद तक कम किया और सुबह 7:30 बजे तक मैं सो गया। दोपहर के भोजन के लिए उठा और फिर दोपहर 3 बजे तक सो गया। उसके बाद मैं उठा और एक नई योजना बनाने लगा।

मवेशियों के साथ दोबारा बैठना नामुमकिन था, क्योंकि अगर पिछली रात की तरह मुझे फिर से उतने ही कीड़े काट लेते, तो मुझे कीड़े के काटने से होने वाला बुखार हो सकता था। फिर भी, यह बात निर्विवाद थी कि जब पैंथर गली से गुजरा था, तब मवेशियों और कुत्तों दोनों ने मुझे सचेत करने में सराहनीय मदद की थी।

अंततः मुझे एक नया विचार आया, जो इस स्थिति में एकमात्र समाधान प्रतीत हुआ। कुत्ते के बाड़े की छत जस्ता की चादरों के टुकड़ों से बनी थी। मैंने तय किया कि

मैं उस छत पर लेट जाऊँगा, अच्छी तरह से छुपकर और गली की ओर देखते हुए, ताकि अगर पैंथर फिर से गली से गुजरे तो मैं उसे गोली मार सकूँ। मवेशी और कुत्ते भी अलार्म बजाकर मेरी मदद करेंगे। मैं छत पर कटे हुए कांटों के ढेर लगाकर अपनी पीठ और दोनों किनारों की रक्षा कर सकता था। पैंथर जैसा कोई भी भारी शरीर, जो जस्ता की छत पर कूदेगा, उसके बाद होने वाले शोर से उसकी उपस्थिति का पता अवश्य चल जाएगा। यह न केवल एकमात्र समाधान प्रतीत हुआ, बल्कि वास्तव में समस्या का एक अच्छा समाधान भी था।

इसलिए मैं अपना रात्रिकालीन सामान, बिस्कुट और चाय (जो मैंने बंगले के चौकीदार से उधार ली हुई एक खाली बीयर की बोतल में डाली थी) लेकर गाँव की ओर तेज़ी से चल पड़ा। गाँव वालों को अपनी नई योजना बताने के बाद, कुछ इच्छुक लोगों ने बकरी के बाड़े की जस्ता की छत पर काँटेदार टहनियों के ढेर चौकोर आकार में लगा दिए। कुछ अन्य लोग सूखी घास लाए, जिसे उन्होंने मेरे लेटने के लिए काँटेदार टहनियों के चौकोर ढेर के अंदर छत पर बिछा दिया।

शाम 6 बजे मैंने अपनी जगह ले ली। दो कमियाँ लगभग तुरंत ही सामने आने लगीं: पहली, गली की ओर मुँह करके लेटना पड़ता था, इसलिए मुझे इस तरह लेटना पड़ता था कि मेरे पैर मेरे सिर से थोड़े ऊँचे हों, क्योंकि जस्ता की छत पीछे से आगे की ओर थोड़ी ढलान वाली थी, ताकि बारिश का पानी आसानी से बह जाए; दूसरी, मुझे ज़्यादातर समय पेट के बल लेटना पड़ता था, क्योंकि मेरी ज़रा सी भी हरकत जस्ता की छत पर साफ़ सुनाई देती थी। लेकिन फ़ायदे ये थे कि मैं पीछे से होने वाले अचानक हमले से सुरक्षित था; मुझे गली का साफ़ और निर्बाध दृश्य दिखाई देता था और मैं विशेष रूप से मवेशियों या कुत्तों के बेचैन होने पर उनकी आवाज़ें साफ़-साफ़ सुन सकता था; और अंत में, मैं उन भयानक कीड़ों से दूर था।

लेकिन वह रात बिल्कुल शांतिपूर्ण थी, इस बात का कोई संकेत नहीं मिला कि पैंथर गाँव से दो-तीन मील की दूरी तक आया था। अगली सुबह बंगले पर लौटकर मैंने फिर स्नान किया और दिनभर सोता रहा। हर दिन कुछ लोग मेरे जीवित चारे की जाँच करते थे, लेकिन किसी भी जानवर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

उस रात मैं एक बार फिर छत पर जा बैठा। रात के 2 बज चुके थे, आसपास के जंगल से कोई आहट नहीं सुनाई दी थी, और मुझे बहुत नींद आ रही थी। अचानक, जैसे सपने में होता है, मैंने मवेशियों को बेचैनी से हिलते-डुलते सुना। मेरे नीचे बने बाड़े

में मौजूद कुत्तों में से एक गुर्राया। फिर चारों कुत्ते एक साथ भौंकने या चिल्लाने लगे।

धीरे-धीरे आगे देखते हुए, मैंने गाँव की गली को दोनों दिशाओं में देखना शुरू किया। उस समय तारों की रोशनी पर्याप्त नहीं थी, बस इतनी ही थी कि रात का अंधेरा न छाए। दाईं और बाईं ओर की गली धुंधली सी दिखाई दे रही थी और आसपास के वातावरण से थोड़ी हल्की थी। मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था और कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था।

तभी मुझे एक बहुत ही धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कोबरा फुफकार रहा हो। जी हाँ, फिर वही आवाज़! और वो मेरे ठीक सामने और नीचे से आ रही थी। क्या ये किसी साँप की फुफकार थी या फिर वो हल्की सी आवाज़ जो कोई पैंथर अपने ऊपरी होंठ की त्वचा को पीछे की ओर मोड़ते समय निकालता है?

मैंने नीचे की ओर देखा और पहले तो कुछ दिखाई नहीं दिया। कुछ ही सेकंड बाद, उस धुंधली रोशनी में, मेरी नज़र में एक हल्की, लंबी आकृति उभरी, गली के आसपास के धुंधलेपन से कहीं ज़्यादा हल्के रंग का एक धब्बा। मैंने उसे घूरकर देखा और मुझे लगा कि वह हिल रही है। इस बार फुफकार की आवाज़ ज़्यादा साफ़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था कि वह आवाज़ उसी हल्के धब्बे से आ रही है। मेरे नीचे बने शेड में मौजूद कुत्ते अब रोने और सिसकने लगे। मवेशी बहुत बेचैन थे।

मुझे एहसास हुआ कि मैं जहां लेटा था, वहां से राइफल नीचे की ओर नहीं कर सकता था; मुझे शायद एक फुट और आगे बढ़ना होगा, जब तक कि मेरा सिर और कंधे उस जस्ता की चादर के किनारे से पूरी तरह बाहर न निकल जाएं जिस पर मैं लेटा था। मैंने ऐसा करना शुरू किया, लेकिन मेरी पूरी सावधानी के बावजूद, भूसा सरसराया और जस्ता की चादर से हल्की सी चरमराहट की आवाज आई।

उस धुंधले धब्बे से एक भयावह गुर्राहट सुनाई दी, और मैं समझ गया कि मैं पकड़ा गया हूँ और अगले कुछ ही सेकंड में पैंथर शायद जस्ता की छत पर कूदकर मुझ पर हमला कर देगा।

बचे हुए छह इंच आगे बढ़ते हुए, मैंने राइफल को छत के किनारे से नीचे किया और टॉर्च का स्विच दबाया। दो चमकते गोले एक धब्बेदार शरीर से प्रकाश को प्रतिबिंबित कर रहे थे, जो छलांग लगाने के लिए झुका हुआ था। इतनी नज़दीकी दूरी से केवल एक गोली ही पर्याप्त थी और उन धधकते गोलों से जीवन की चिंगारी धीरे-धीरे बुझ गई: धधकते सफेद रंग से वे मंद नारंगी, फिर हल्के हरे, फिर एक खाली

झिलमिलाहट में बदल गए, और अंत में बैंगनी-नीले रंग में, क्योंकि प्रकाश अब निर्जीव रेटिना द्वारा परावर्तित हो रहा था।

अगली सुबह मैंने एक बूढ़ी मादा पैंथर को देखा, जिसके नुकीले दांत लगभग ठूंठ जैसे हो गए थे। उसका शरीर बेहद पीला था; यहाँ तक कि उसके रोसेट भी बेढंगे और धुंधले थे। उसके पंजे कुंद और घिसे हुए थे। उसमें किसी भी तरह की विकृति या पहले के किसी घाव का कोई संकेत नहीं था। ऐसा लगता था कि केवल बुढ़ापा और जानवरों को मारने की शारीरिक अक्षमता के कारण धीरे-धीरे भुखमरी से मरने की आशंका ने ही संगम पैंथर को मानव जाति पर आक्रमण करने के लिए मजबूर किया था—एक ऐसा युद्ध जो चाहे कितना भी भयानक और डरावना क्यों न हो, अंततः इस बिल्ली प्रजाति की मृत्यु में ही समाप्त होता है। आधुनिक बंदूकें और मानवीय बुद्धि जंगल की सहज प्रवृत्ति, चालाकी और भूख की पीड़ा के आगे कुछ भी नहीं हैं।

---

[1] नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग में, जॉर्ज एलन एंड अनविन, 1954।

छह

The Ramapuram Tiger

यह कहानी एक ऐसे बाघ की है जिसने तीन महीनों तक लगभग आधे जिले पर राज किया, जो लगभग साठ मील लंबा और लगभग साठ मील चौड़ा इलाका था। हालाँकि

उसका शासनकाल अपेक्षाकृत छोटा था, फिर भी वह बेहद हलचल भरा था, क्योंकि इस थोड़े से समय में रामपुरम का बाघ अपने 3,600 वर्ग मील के क्षेत्र में सचमुच हर जगह मौजूद था। स्कारलेट पिम्परनेल की तरह, उसे हर कोई ढूंढ रहा था, लेकिन कोई भी उसे पकड़ नहीं पाया, जब तक कि उसका अंत अप्रत्याशित तरीके से नहीं हो गया।

उत्तरी कोयंबटूर ज़िला मुख्यतः पहाड़ियों और जंगलों से बना है। दक्षिण में कोयंबटूर के निचले मैदानी इलाकों से घिरा यह ज़िला अचानक डिंबम ढलान तक ऊपर उठता है। दक्षिण-पश्चिम में नीलगिरी या नीली पर्वत श्रृंखला के जंगल हैं। पश्चिम में मैसूर के जंगल हैं। उत्तर-पश्चिम में पहाड़ियों की एक और ऊँची श्रृंखला है - बिलिगिरिरंगन। उत्तर, उत्तर-पूर्व और पूर्व की ओर कावेरी नदी बहती है, जिसके दोनों किनारे घने जंगलों से ढके हैं, और इसके उत्तर-पूर्वी और पूर्वी हिस्से सलेम ज़िले के जंगलों से सटे हुए हैं।

उत्तरी कोयंबटूर जिले में इस नाम के योग्य केवल एक ही कस्बा है: कोललेगल, जो उत्तर-पश्चिमी कोने पर स्थित है और कावेरी नदी से लगभग आठ मील दूर है। कोललेगल से चार सड़कें निकलती हैं। पश्चिम और उत्तर की ओर मैसूर जाने वाली सड़कों का इस विवरण में कोई उल्लेख नहीं है। तीसरी सड़क दक्षिण की ओर जाती है और लगभग सीधी है तथा बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों के पूर्वी तल के साथ-साथ चलती है। इस सड़क पर सत्रह मील चलने पर लोकनहल्ली नामक बड़ा गाँव आता है; लोकनहल्ली से तेरह मील आगे बैलूर है, जहाँ से 'बाइसन रेंज' शुरू होती है और अड़तालीसवें मील के पत्थर पर हसनपुर तक और कोललेगल से बावन मील दूर ढलान के शिखर पर स्थित डिंबम तक पहुँचती है।

चौथी सड़क दक्षिण-पूर्व दिशा में जाती है और कोल्लेगल से लगभग पच्चीस मील दूर रामपुरम गाँव से होकर गुजरती है, जहाँ से यह दक्षिण की ओर मुड़कर चौबीस मील आगे बरगुर तक जाती है, फिर पाँच मील आगे तामरकाराई तक और अंत में डिंबुम ढलान के दक्षिण-पूर्वी छोर तक जाती है, जहाँ से यह मैदानी इलाके में स्थित अंदियूर गाँव की ओर तेज़ी से नीचे उतरती है। इस सड़क की कुल लंबाई लगभग इक्यासी मील है।

कोल्लेगल-लोकनहल्ली-बैलूर-डिंबम सड़क पर ट्रकों का आवागमन बहुत कम होता था और प्रतिदिन एक बस सेवा चलती थी; जबकि रामपुरम, तामरकारी और

अंदियूर जाने वाली सड़क अपने अंतिम साठ मील के हिस्से में जीपों या पुराने जमाने की ऊंची ग्राउंड क्लीयरेंस वाली अमेरिकी कारों को छोड़कर मोटर वाहनों के लिए अनुपयुक्त थी। इलाका बेहद दुर्गम था, जिसमें पत्थरों से भरे तेज उतार-चढ़ाव थे। यह एक संकरा रास्ता बन जाता था, जो बैलगाड़ियों के पहियों से गहरा कटा हुआ था और दोनों ओर घने जंगल से घिरा हुआ था। जंगल की धाराओं के रेतीले—और अक्सर पथरीले—तल इस रास्ते को थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पार करते थे। गहरी घाटियों में विशाल बांस के जंगल फैले हुए थे, जिनकी झुकी हुई टहनियाँ कार के बोनट को छूती थीं, जब कार धीमी गति से चलती थी और उसका रेडिएटर लगातार गर्म होता रहता था। कभी-कभी रास्ते में कोई गिरा हुआ बांस का तना या पेड़ की टूटी हुई शाखा पड़ी होती थी, जिसे हाथी की भूख मिटाने के लिए तोड़ दिया गया हो। फिर चालक रुकता है, और अपनी कुल्हाड़ी, जिसे यहाँ 'चॉपर' कहा जाता है, से बाधा को काटता है और उसे एक तरफ खींच लेता है, फिर आगे बढ़ता है जब तक कि उसे कोई दूसरी ऐसी ही बाधा न मिल जाए। इस उपयोगी 'चॉपर' के बिना, यह रास्ता पार करना असंभव होता।

बाघ आमतौर पर घनी वनस्पतियों को नापसंद करते हैं और कम झाड़ियों वाले जंगलों में रहना पसंद करते हैं, जबकि हाथी और बाइसन ऐसे जंगलों को पसंद करते हैं। बाघ की इस पसंद के कई कारण हैं, जिनमें से एक यह है कि घनी झाड़ियाँ बाघ को अपने शिकार का सावधानीपूर्वक पीछा करने से रोकती हैं और उसके अंतिम समय के प्रभावी हमले में बाधा डालती हैं। दूसरा कारण यह है कि बाघ का वैध शिकार - सभी प्रकार के हिरण, जंगली सूअर और, ज़ाहिर है, गाँव के मवेशी - घने जंगलों में प्रवेश नहीं करते, जहाँ मुख्य रूप से हाथी और बाइसन रहते हैं, जिनसे बाघ आमतौर पर दूर रहता है। तीसरा कारण यह है कि घनी झाड़ियों में जोंक, कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े और मक्खी (जिसे भारत में घोड़ा मक्खी या पशु मक्खी कहा जाता है) जैसे कीट पनपते हैं; बाघ इन कीटों से बेहद नफरत करते हैं।

रामपुरम का आदमखोर कावेरी नदी के किनारे, छह हजार फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित पोन्नाचाई मलाई नामक पर्वत क्षेत्र से आया बताया जाता है। इस पर्वत की ढलानों पर शोलागा और अन्य भारतीय बागान मालिकों के स्वामित्व वाले कुछ छोटे कॉफी बागान मौजूद हैं। कहा जाता है कि रामपुरम के आदमखोर ने एक साधारण मवेशी चोर के रूप में अपना धंधा शुरू किया था, जो बागान मालिकों और मजदूरों के

पालतू पशुओं को चुराने के लिए इन बागानों पर धावा बोलता था। बताया जाता है कि उसने कई पशुओं को मारकर खा लिया था, जब तक कि एक बागान मालिक, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, कोयंबटूर शहर गया और वहाँ से एक बेहद मजबूत दिखने वाला जाल खरीद लिया।

यह जाल लोहे का बना था, जिसमें दांतों की दो अर्धवृत्ताकार पंक्तियाँ थीं। जब इन्हें खोलकर अलग रखा जाता था, तो इनका फैलाव लगभग ढाई फीट तक होता था। दांत लगभग दो इंच लंबे थे। जबड़ों को एक बेहद संवेदनशील ट्रिगर द्वारा अलग रखा जाता था, जिसे छोड़ने पर एक असाधारण रूप से शक्तिशाली स्प्रिंग बिजली की गति से जबड़ों को शोर मचाते हुए एक साथ ले आती थी, जिससे नुकीले दांत आपस में फंस जाते थे।

कुछ ही समय बाद, बाघ ने एक दुधारू गाय को मार डाला और उसे खाई में घसीटकर सूखे पत्तों के ढेर के नीचे छिपा दिया, बिना खाए। शिकार का पीछा किया गया और उसे खोज निकाला गया। जाल को गाय के पिछले हिस्से के पास सावधानीपूर्वक लगाया गया, जहाँ बाघ आमतौर पर भोजन के लिए लौटते समय अपना काम शुरू करता था। जिन सूखे पत्तों से शिकार छिपाया गया था, उन्हीं पत्तों का इस्तेमाल जाल को छिपाने के लिए किया गया। बाघ वापस आया, और दुर्भाग्य से और दूसरों के भविष्य के दुर्भाग्य के लिए—उसका सिर जाल में फंस गया, जिसने उसकी गर्दन के दोनों ओर, कानों के ठीक पीछे, उसे मजबूती से जकड़ लिया।

जाल को एक खूंटी से जमीन में गाड़ दिया गया था। बाघ ने जाल पर हमला किया और खूंटी को उखाड़ने में कामयाब हो गया, जबकि जाल उसके गले में मजबूती से जकड़ा हुआ था। फिर वह भारी जाल को घसीटते हुए जंगल में भाग गया, और लगभग दो मील दूर एक जगह पर जाल दो बड़ी चट्टानों के बीच बुरी तरह फंस गया। बाघ ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन जाल पहले से भी ज्यादा मजबूती से फंस गया।

दर्द से कराहते हुए बाघ दहाड़ा और बुरी तरह छटपटाया। उसकी दहाड़ें आधी रात तक बागान मालिक और उसके डरे हुए मजदूरों को सुनाई देती रहीं, जो दो मील दूर अपने बागान में थे। आखिरकार, जानवर खुद को छुड़ाने में कामयाब हो गया, इस दौरान उसका बायां कान और आंख कट गई, साथ ही गर्दन और चेहरे पर भी गंभीर चोटें आईं। इसके बाद करीब एक हफ्ते तक इलाके में उसकी दर्द से कराहने की

आवाजें दिन-रात सुनाई देती रहीं।

फिर एकदम सन्नाटा छा गया। सबको लगा कि बाघ अपने ज़ख्मों से मर गया है। बागान मालिक और उसके नौकर गिद्धों पर नज़र रखे रहे, जो शायद शव को देख लेते और भोजन के लिए ज़मीन पर झपट्टा मारते हुए मरे हुए जानवर की मौजूदगी का पता बता देते। लेकिन आसमान में ऊँचे उड़ते हुए गिद्ध ही दिखाई दिए, जो नीचे धरती पर मौत के संकेतों की तलाश में ध्यान से देख रहे थे; लेकिन कोई भी झपट्टा नहीं मारा, क्योंकि बाघ मरा नहीं था।

दो सप्ताह बीत गए; फिर एक दोपहर, एक छोटे कॉफी बागान की ओर जाने वाले रास्ते पर, शोलागा जनजाति का जेकेन और उसकी अठारह वर्षीय पत्नी सवार हुए। भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार, जेकेन आगे चल रहा था और उसकी पत्नी उससे लगभग एक गज पीछे, सिर पर अनाज की बोरी रखे हुए थी। वे एक सूखे नाले को पार कर चुके थे और उसके किनारे पर चढ़ ही रहे थे कि तभी, इन क्षेत्रों में नदी के किनारों पर उगने वाली गन्ने जैसी घास के एक झुंड में से एक बाघ ने लड़की पर झपट्टा मारा और उसे ज़मीन पर पटक दिया।

मुड़कर देखा तो जेकेन ने अपनी पत्नी को ज़मीन पर लेटे हुए देखा, जो भयभीत और विनती भरी आँखों से उसे घूर रही थी। बाघ उसकी पीठ पर बैठा था, उसके दोनों पंजे उसके कंधों पर थे, और उसका खुला मुँह उसके सिर के ठीक ऊपर था। यह एक ऐसा बाघ था जिसकी बाईं आँख और बायाँ कान नहीं था, और उसकी गर्दन और चेहरे के घाव अभी तक भरे नहीं थे!

जेकेन पत्थर की तरह जम गया। वह हिल नहीं सकता था, बोल नहीं सकता था, बस भय और विस्मय से अपनी जगह पर जड़वत खड़ा रहा। बाघ ने भयानक गुर्राहट की, और अपने पहले से ही घायल चेहरे को और भी भयावह बना लिया। फिर उसने लड़की को उसके दाहिने कंधे से पकड़ा और अपने शिकार को लेकर नदी पार कर गया—लड़की का सिर नीचे की ओर झुका हुआ था, उसके बिखरे बाल और बायां हाथ-पैर रेत में घिसट रहे थे। एक पल बाद, बाघ और लड़की नदी के उस पार जंगल में गायब हो गए।

जाहिर है, बेचारी महिला बेहोश हो गई थी, या शायद डर से मर गई थी। जेकेन ने अपनी पत्नी को आखिरी बार उसी समय देखा था, और हमले के समय भी उसने जरा सी भी चीख नहीं निकाली थी।

एक महीने बाद रामपुरम से दो मील की दूरी पर एक चरवाहे को बाघ ने मार डाला। इस मामले में, उसके आधे खाए हुए अवशेष एक झाड़ी में मिले। तीसरी मानव हत्या लगभग तीन सप्ताह बाद, कोललेगल-लोकनहल्ली-बैलूर-डिंबम सड़क पर लगभग इक्कीसवें मील के पत्थर के पास हुई। इस बार एक सड़क मजदूर, एक अधेड़ उम्र की महिला, शाम पांच बजे से ठीक पहले अपने साथियों के सामने हमले का शिकार हुई। वह कुछ मिनटों के लिए काम रोककर जंगल में कुछ कदम अंदर गई थी, तभी एक बाघ अचानक कहीं से उस पर झपटा और उसे उठाकर ले गया। वह बुरी तरह चीखी, और आस-पास मौजूद लोगों ने बाघ को साफ देखा था। बाघ का चेहरा चोटिल था और उसका बायां कान और आंख नहीं थी!

ऐसा हुआ कि उस समय उत्तरी कोयंबटूर क्षेत्र के लिए मेरा शिकार लाइसेंस समाप्त हो चुका था। यह क्षेत्र दो वन प्रभागों में विभाजित है: उत्तरी कोयंबटूर और कोललेगल प्रभाग। यद्यपि प्रशासनिक दृष्टि से कोललेगल उत्तरी कोयंबटूर जिले के अंतर्गत आता था, लेकिन वन विभाग ने हाल ही में जिले को दो अलग-अलग वन प्रभागों में विभाजित कर दिया था। मेरा लाइसेंस, जो समाप्त हो चुका था, उत्तरी कोयंबटूर और डिंबम क्षेत्र को कवर करता था; जबकि लोकनहल्ली, बैलूर और रामपुरम कोललेगल प्रभाग के अंतर्गत आते थे। मैं अपना पुराना लाइसेंस नवीनीकृत कराना चाहता था और आवश्यक शुल्क भेजने ही वाला था कि मैंने अखबारों में इस बाघ द्वारा किए गए नवीनतम अत्याचार के बारे में पढ़ा। इससे मेरा मन पक्का हो गया और दस दिनों की विशेषाधिकार छुट्टी का लाभ उठाते हुए, मैं सुबह-सुबह बैंगलोर से निकल गया और कोललेगल स्थित वन विभाग के कार्यालय में, जो 87 मील दूर था, कार्यालय खुलने से पहले ही पहुँच गया। मुझे आवश्यक शिकार लाइसेंस और बाघ के बारे में सभी उपलब्ध जानकारी प्राप्त करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

जिस इलाके में आदमखोर सांप सक्रिय था, वह मेरे लिए अपेक्षाकृत नया था, इसलिए मैंने शुरुआत में रामपुरम में स्थित छोटे से वन लॉज में डेरा डालने का फैसला किया, जो पच्चीस मील दूर था, और मैं बेहद ऊबड़-खाबड़ सड़क से गुजरने के बाद डेढ़ घंटे में वहां पहुंच गया।

ज़ाहिर है, सबसे पहला काम रामपुरम के निवासियों का विश्वास जीतना था, उन्हें यह बताकर कि मैं उन्हें बाघ से छुटकारा दिलाने आया हूँ। लोग मुझे नहीं जानते थे और उन्होंने कुछ अस्पष्ट बातें बताईं, जिससे यह संकेत मिला कि बाघ पोन्नाचाई

मलाई, जहाँ उसने अपना पहला शिकार किया था, और बैलूर के बीच कहीं भी हो सकता है, जो लगभग साठ मील की सीधी दूरी पर स्थित है।

जैसा कि मैंने आपको बताया है, बैलूर कोललेगल से लगभग तीस मील दूर कोललेगल-लोकनहल्ली-डिंबम सड़क पर स्थित एक छोटा सा गाँव था। इसलिए, मैं या तो कार से कोललेगल लौटकर वहाँ से बैलूर जा सकता था, या रामपुरम में कार छोड़कर रामपुरम से बैलूर तक लगभग उन्नीस मील की दूरी पैदल चलकर त्रिभुज के तीसरे भाग को तय कर सकता था। मैंने बाद वाला विकल्प चुना, क्योंकि इससे मुझे आरक्षित वन से सटे कई वन बस्तियों से गुजरने का अवसर मिलता, जहाँ मुझे बाघ के बारे में कुछ जानकारी मिलने की उम्मीद थी।

तदनुसार, अगली सुबह भोर होते ही मैंने रामपुरम स्थित छोटे से फॉरेस्ट लॉज को छोड़ दिया और बैलूर की ओर अपनी यात्रा शुरू की। रास्ता आम तौर पर दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाता था, जो कहीं-कहीं विरल रूप से खेती वाले क्षेत्र से होकर गुजरता था और कहीं-कहीं झाड़ियों वाले जंगल से होकर जाता था, जो आरक्षित वन की सीमा के भीतर, दक्षिण में कुछ मील दूर स्थित छोटी पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के किनारे-किनारे चलता था।

मैं कुछ छोटे-छोटे गांवों से गुजरा, लेकिन सभी निवासी या तो अपने घरों के अंदर थे या अपनी झोपड़ियों के प्रवेश द्वार पर बैठे हुए थे। उनके कुछ मवेशी बाहर बाड़े में बंद थे या झोपड़ियों के आस-पास की थोड़ी-बहुत घास चर रहे थे, क्योंकि आदमखोर की कहानी दूर-दूर तक फैल चुकी थी और ऐसी घटनाओं से उत्पन्न होने वाला सामान्य भय पहले ही कायम हो चुका था।

मैं धीरे-धीरे चलता रहा और जहाँ भी संभव हुआ, पूछताछ करता रहा। इन बस्तियों में रहने वाले लगभग सभी शोलागा लोगों ने बताया कि उन्होंने पिछली रात या पिछले बहत्तर घंटों के भीतर आसपास बाघ की दहाड़ सुनी थी। एक जगह मुझे बाघ के पैरों के स्पष्ट निशान दिखाए गए, जो हाल ही में जोते गए खेत को पार कर रहा था, जो मालिक की झोपड़ी से मात्र सौ गज की दूरी पर था। मैंने आगे बढ़ने से पहले भविष्य के संदर्भ के लिए उन निशानों की विस्तृत माप ली, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि इस क्षेत्र के लोग या तो इतने घबराए हुए थे कि वे पूरी तरह से झूठी और बढ़ा-चढ़ाकर बातें बता रहे थे, या फिर रामपुरम और बैलूर के बीच उन्नीस मील के क्षेत्र में बाघों की संख्या असामान्य रूप से अधिक थी। क्योंकि, प्राप्त जानकारी के

अनुसार, पिछले तीन-चार दिनों में प्रत्येक बस्ती में एक बाघ आया था!

शाम लगभग 5 बजे मैं बैलूर गाँव पहुँचा, जहाँ लगभग बीस झोपड़ियाँ थीं। यहाँ मेरी मुलाकात सड़क निर्माण दल के उन सदस्यों से हुई जिन्होंने इक्कीसवें मील के पत्थर के पास महिला की हत्या देखी थी। उन्होंने मुझे वही बताया जो मैंने पहले ही लिख लिया है और विशेष रूप से बाघ के विकृत शरीर पर ज़ोर दिया, जिसे उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा था जब वे भय से वहीं खड़े रह गए थे, जबकि बाघ अपनी चीखती हुई शिकार, सड़क निर्माण मजदूर महिला को लेकर झाड़ियों में भाग गया था।

सबसे नज़दीकी वन विभाग का लॉज डिंबम की दिशा में मोटर रोड पर लगभग साढ़े तीन मील आगे था। रिजर्व सड़क के दोनों ओर फैला हुआ था। शाम के 5:30 बज रहे थे और मुझे पता था कि एक घंटे में रात हो जाएगी, इसलिए मैंने आखिरी साढ़े तीन मील की दूरी तेज़ी से तय की और अंधेरा होने से कुछ ही देर पहले छोटे से वन बंगले पर पहुँच गया।

बंगले से लगभग तीन मील पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों की विशाल श्रृंखला के पीछे सूरज डूब चुका था, और शाम के समय पेड़ों पर बैठे मोर और जंगली मुर्गों की चहचहाहट ने मेरा स्वागत किया जब मैं बरामदे में घसीटकर लाई गई एक पुरानी टूटी कुर्सी पर बैठ गया। पश्चिम की ओर से नीचे उतरते हुए एक सांभर हिरण की दूर से आती हुई आवाज मेरे कानों को मधुर संगीत की तरह लगी, क्योंकि वह बंगले को तलहटी से अलग करने वाली घनी घाटी के ऊपर से गुजर रहा था। इस घाटी के असंख्य वृक्षों की चोटियाँ ढलते हुए धुंधलके में एक काले कालीन की तरह लग रही थीं।

आधा घंटा भी मुश्किल से बीता था कि चारों ओर घना अंधेरा छा गया, जिसकी हल्की-हल्की टिमटिमाहट लाखों जुगनुओं की झिलमिलाहट से गूंज रही थी। वे हर जगह तैर रहे थे, मानो अंधेरे में नन्हे-मुन्ने परी हों, और अपनी चमकीली लालटेनें आस-पास के हर झाड़ी या पेड़ की चोटी तक पहुंचा रहे हों। कभी-कभार उनकी चमक एक साथ मिलती थी, और जिस पेड़ या झाड़ी के चारों ओर वे झुंड बनाते थे, वह हजारों छोटे जीवों द्वारा बनाई गई एक विशाल और एकसमान प्रकाश की चमक से कांप उठता था। जंगल की रात का अंधेरा एक क्षणिक, प्रकाशमान और अलौकिक चमक के सामने छंट जाता था—लेकिन केवल एक पल के लिए—जब तक कि फिर से वह दुर्लभ संयोग नहीं आ जाता।

मैंने जल्दी ही रात को लॉज के छोटे से केंद्रीय कमरे के फर्श पर सोकर आराम किया; लेकिन लगभग 2 बजे, एक बाघ की कराहने की आवाज ने मुझे जगा दिया। घाटी से गुजरते हुए मैंने उसकी आवाज रुक-रुक कर सुनी, जब तक कि वह दूर जाकर धीमी नहीं हो गई।

सुबह तड़के मैं बैलूर गाँव पहुँच गया, जहाँ मैंने दो स्थानीय शिकारियों की मदद ली और चारे के लिए तीन जवान बैल खरीदे। इनमें से एक को हमने बंगले के पश्चिम में घाटी से बहने वाली धारा के किनारे बाँध दिया, जहाँ मैंने रात में बाघ की आवाज़ सुनी थी। दूसरे को सड़क से मात्र 100 गज की दूरी पर, गाँव और वन बंगले के बीचोंबीच एक छोटे से जंगल में बाँध दिया। तीसरे को बाँधने के लिए हम वापस इक्कीसवें मील के पत्थर तक गए, जहाँ सड़क बनाने वाले मजदूर की हत्या हुई थी। इस जगह के पास ही सड़क एक वन धारा से होकर गुजरती थी, जिसे ओड्डुम बेट्टा हल्ला के नाम से जाना जाता था; इसके किनारे बाँस से ढके हुए थे, सिवाय वन विभाग द्वारा बनाए गए एक छोटे से खुले स्थान के, जिसमें विभिन्न वन पौधों के पौधे प्रायोगिक रूप से उगाए जा रहे थे। मेरे सहायकों ने मुझे बताया कि एक बाघ अक्सर इस खुले स्थान से गुजरता है, और मैंने पाया कि यह बात सच थी, क्योंकि तीन अलग-अलग स्थानों पर पुराने और अपेक्षाकृत नए, दोनों तरह के पदचिह्न दिखाई दे रहे थे। मैंने इन पदचिह्नों में से सबसे नए पदचिह्न की जांच की और उनकी तुलना पिछले दिन गांव में लिए गए पदचिह्नों के माप से की। दोनों ही पदचिह्न नर बाघ द्वारा बनाए गए थे, लेकिन विभागीय वृक्षारोपण में मिले पदचिह्न कहीं अधिक उम्रदराज और भारी जानवर के थे।

हमने तीसरा चारा खुले मैदान में ठीक उसी जगह बांधा जहां से ऑडम बेट्टा हाल्ला धारा इस बागान के पास से बहती है।

यह सब हो जाने पर शाम के 5:30 बज चुके थे, और बैलूर गाँव लौटते समय एक हट्टे-कट्टे, सुंदर दिखने वाले शोलागा ने मुझसे संपर्क किया और अपना परिचय जेकेन के रूप में दिया, जो उस लड़की का पति था जो आदमखोर बाघ का पहला शिकार बनी थी। उसने बताया कि पोन्नाचाई मलाई की ढलानों पर स्थित कॉफी बागान से गुजर रहे यात्रियों के एक समूह ने, जहाँ वह काम करता था, उसे सूचित किया था कि एक साहब बाघ का शिकार करने रामपुरम आए हैं। अपनी पत्नी की हत्या का बदला लेने के इरादे से, उसने बागान मालिक से रामपुरम जाने की अनुमति ली ताकि वह मेरी सहायता कर सके। रामपुरम पहुँचकर उसे बताया गया कि मैं बैलूर

चला गया हूँ, और वह तुरंत मेरे पीछे-पीछे अकेले ही वहाँ पहुँच गया।

मैंने जेकेन को उसके प्रस्ताव और मुझे ढूंढने में की गई मेहनत के लिए धन्यवाद दिया और तुरंत उसे अपना निजी सहायक नियुक्त कर लिया। मुझे उसका रूप-रंग और बाघ को पकड़ने के लिए कोई कसर न छोड़ने का उसका दृढ़ निश्चय पसंद आया। जेकेन ने मेरी सहमति पर मुस्कुराते हुए मुझे धन्यवाद दिया, लेकिन उसने भुगतान लेने से साफ इनकार कर दिया; वास्तव में, उसने स्पष्ट कर दिया कि यह उसके प्रस्ताव की शर्त थी।

मैं फॉरेस्ट लॉज लौट आया और जेकेन और बाकी दो सहायकों को अगली सुबह जल्दी निकलने और इक्कीसवें मील के पत्थर के पास रखे चारे को देखने का निर्देश दिया। मैं खुद बाकी दो चारे देखने गया। अगली सुबह मैंने यही किया, पहले घाटी में नदी के किनारे बंधे बैल को देखा, फिर फॉरेस्ट बंगले और बैलूर गाँव के बीच में बंधे चारे को। दोनों बैल सुरक्षित थे और जहाँ उन्हें बांधा गया था, उसके आस-पास की रेत में कहीं भी पग कुत्तों के निशान नहीं मिले। फिर मैं बाकी की दूरी पैदल चलकर बैलूर गाँव पहुँचा, जहाँ मैंने अपने तीन स्काउट्स के लौटने का इंतज़ार किया; एक घंटे के भीतर वे आ गए और मुझे बताया कि तीसरा चारा जीवित है।

जेकेन और एक शोलागा को गाँव में छोड़कर, मैंने दूसरे व्यक्ति को अपने साथ लिया, जिसने दावा किया कि वह उस क्षेत्र के वन पथों से भलीभांति परिचित है, और पश्चिम की ओर तब तक चलता रहा जब तक हम बिलिगिरिरंगन की तलहटी में नहीं पहुँच गए। चूंकि यह सारा इलाका मेरे लिए अपरिचित था, इसलिए मैंने उसे आगे चलने को कहा और अपनी राइफल तैयार रखते हुए पीछे से उस पर नज़र रखी। शोलागा लोग जन्मजात वनवासी होते हैं, और मेरे मार्गदर्शक ने ज़रा भी घबराहट नहीं दिखाई, जब हम एक कतार में, एक वन पथ से ऊपर और दूसरे से नीचे, अंधेरी नालियों को पार करते हुए आगे बढ़े, अक्सर बाँस की लटकती पत्तियों या काँटेदार झाड़ियों से बचने के लिए कमर झुकाते हुए। लेकिन हमें किसी ताज़े बाघ के पदचिह्न का कोई निशान नहीं दिखा।

एक जगह से एक विशाल नर पैंथर गुजरा था, और दूसरी जगह से एक मादा पैंथर अपने शावक के साथ गुजरी थी; लेकिन यह स्पष्ट था कि जिस बाघ की हम तलाश कर रहे थे वह उस रास्ते से नहीं गुजरा था।

दोपहर के लगभग 3 बज चुके थे जब हम फॉरेस्ट लॉज वापस लौटे और देर से

ठंडा दोपहर का भोजन किया। शोलागा ने आग जलाई, जिस पर मैंने कुछ पानी उबालकर हम दोनों के लिए कई कप चाय बनाई। फिर मैंने परिसर में बने छोटे से कुएं से पानी निकाला, ताकि ठंडे पानी से नहाने का आनंद ले सकूं।

पांच बजे मैं शोलागा के साथ बैलूर गाँव लौटा, जहाँ मैंने उसे और जेकेन को निर्देश दिए कि वे और तीसरा शोलागा अगली सुबह इक्कीसवें मील के पत्थर पर स्थित चारागाह पर जाएँ। जब मैं बंगले पर लौटा तब तक सात बज चुके थे। उस रात मैं चैन से सोया, और किसी बाघ की दहाड़ ने भी मुझे नहीं विसर्जित किया। सुबह जल्दी ही मैं बाकी दो चारागाहों की जाँच के लिए निकल पड़ा। दोनों जगह बाघ सुरक्षित थे।

फ़ॉरेस्ट लॉज लौटकर मैंने सादा भोजन किया और फिर बैलूर की ओर चल पड़ा, रास्ते में बाघ के पदचिह्नों पर सावधानीपूर्वक नज़र रखता रहा। कोई बाघ उस रास्ते से नहीं गुजरा था और सुबह 9:15 बजे मैं अपने साथियों का इंतज़ार कर रहा था। वे दस बजे से पहले लौट आए, इस बार यह बताने के लिए कि बाघ ने रस्सी को काटकर चारा हटा दिया था।

सौभाग्य से मैं ऐसी स्थिति के लिए तैयार था और अपने साथ टॉर्च और रात में शिकार करने का अन्य सामान एक थैले में लेकर आया था। हम जितनी जल्दी हो सके वापस भागे और दोपहर के कुछ ही समय बाद उस जगह पहुँच गए जहाँ बैल को बाँधा गया था। लगभग बीस फीट दूर नरम मिट्टी में बाघिन के पैरों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, और जाँच करने पर पता चला कि हत्यारा बाघिन थी, न कि बाघ। वहीं से उसने बैल पर अंतिम हमला किया था, जिससे बैल की मृत्यु हो गई थी, उसने उस रस्सी को काट दिया था जिससे उसका पैर बाँधा गया था।

हमें पता नहीं था कि शिकार कितनी दूर ले जाया गया है, इसलिए मैंने अपने साथियों से कहा कि वे दोपहर 3 बजे तक इक्कीसवें मील के पत्थर के पास मेरा इंतज़ार करें, जबकि मैं घसीटने के निशान का पीछा करूँगा। अगर मृत बैल को कुछ दूर ले जाया गया होता, तो मैं बाघिन के लौटने का इंतज़ार करने के लिए एक छिपने की जगह बना लेता और पूरी रात वहीं बिताता। ऐसी स्थिति में, मैं तीन बजे तक वापस नहीं आ पाता और उन्हें बैलूर लौट जाना होता। दूसरी ओर, अगर बाघिन ने शिकार को ज़्यादा दूर नहीं छोड़ा होता, तो मैं अपने साथियों के पास लौट आता और उनसे एक अच्छी तरह से मचान बनाने को कहता।

मैंने देखा कि बाघिन शिकार को पहले दो सौ गज तक आधा घसीटती रही, तब तक वह निचले इलाके और नाले के आसपास उगे बांस के घने जंगल से निकल चुकी थी। फिर उसे घनी लैंटाना की झाड़ियाँ मिलीं, जो जाहिर तौर पर उसके रास्ते में रुकावट बन गईं, क्योंकि वह मरे हुए बैल को ढो रही थी। यहाँ उसने जाहिर तौर पर उसे अपने कंधे पर लाद लिया, जैसा कि बाघ कभी-कभी अपने शिकार को ले जाने के लिए करते हैं, और फिर उसके निशान का पीछा करना बेहद मुश्किल हो गया।

किसी जानवर के खुर घसीटने या बैल के सींगों से जगह-जगह टहनियाँ टूट गई थीं, और यही उनके गुजरने के एकमात्र दिखाई देने वाले निशान थे। सड़ती हुई वनस्पति और गिरे हुए लैंटाना के पत्तों की चादर ने पगडंडियों के निशान ढूंढने की सारी उम्मीदें खत्म कर दी थीं। स्वाभाविक रूप से, चलना भी बहुत धीमा था, और मुझे यह स्थिति बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रही थी, क्योंकि मेरा लगभग पूरा ध्यान पगडंडी का पीछा करने पर ही केंद्रित था, जिससे मैं अचानक हमले से पूरी तरह सावधान नहीं रह पा रहा था। अंत में लैंटाना की घास खत्म हुई और खुला जंगल शुरू हो गया, जिसमें जगह-जगह पेड़ और बौने खजूर के पेड़ फैले हुए थे।

दो बार मुझे वह जगह दिखी जहाँ बाघिन ने अपना बोझ रखा और फिर उसे उठा लिया। अब यह स्पष्ट हो गया था कि उसका कोई विशेष गंतव्य था, संभवतः कोई मांद जहाँ उसके बच्चे थे और जिनके लिए वह मांस ले जा रही थी।

पगडंडी ऊपर की ओर बढ़ती जा रही थी; इलाका धीरे-धीरे पथरीला होता जा रहा था, और अंत में, पेड़ों के तनों के बीच एक दरार में, मुझे एक छोटी पहाड़ी दिखाई दी, जो शायद मेरे खड़े होने की जगह से लगभग एक चौथाई मील दूर और लगभग 200 फीट ऊपर थी। पगडंडी सीधे पहाड़ी की ओर जा रही थी। अब तक मुझे काफी हद तक यकीन हो चुका था कि जिस जानवर का मैं पीछा कर रहा था, वह आदमखोर नहीं था, क्योंकि आदमखोर के बारे में जुटाई गई सभी जानकारियों के अनुसार वह बाघ था, बाघिन नहीं, हालांकि उसका लिंग पूरी तरह से निश्चित नहीं था। हालांकि, यह एक ज्ञात तथ्य था कि आदमखोर ने अपनी बाईं आंख और कान खो दिए थे, इसलिए अगर मुझे अपने पीछा किए जा रहे जानवर की एक झलक मिल जाती, तो मैं जल्द ही जान जाता कि वह सही जानवर है या नहीं।

उस झलक को कैसे पाया जाए, यही समस्या थी। इसका सबसे आसान जवाब था कि तब तक आगे बढ़ते रहें जब तक हमारी मुलाकात न हो जाए, लेकिन यह मुझे

बिल्कुल भी पसंद नहीं था, क्योंकि भले ही बाघिन आदमखोर न हो, फिर भी वह निश्चित रूप से किसी भी ऐसे इंसान का स्वागत नहीं करेगी जो उस मांद का दरवाजा खटखटाए जहां उसके बच्चे थे।

लेकिन मैं आगे बढ़ता रहा। अब निशान का पीछा करना आसान हो गया था, क्योंकि बाघिन चट्टानों और पत्थरों से टकराई थी, जहाँ खून के धब्बे मृत बैल के गुजरने का संकेत दे रहे थे।

अब आधी दूरी तय हो चुकी थी; बाकी आधी दूरी मुझे शिखर तक ले जाएगी। चट्टानें ढेरों में पड़ी थीं, और जिस रास्ते पर मैं चल रहा था वह उनके बीच से टेढ़ा-मेढ़ा होकर गुजर रहा था, मानो बाघिन अपना रास्ता चुनते हुए चल रही हो ताकि उसका कोई भी बोझ चट्टानों के बीच न फंस जाए। तीन बजने में दस मिनट बाकी थे; सूरज नंगी चट्टानों पर बेरहमी से चमक रहा था, और बदले में वह गर्मी भट्टी के दरवाजे से निकलती हुई गर्मी की तरह मेरे चेहरे पर वापस आ रही थी। मेरे कपड़े पसीने से भीगे हुए थे, जो नदियों की तरह मेरे चेहरे से बहकर मेरी आँखों में जा रहा था, जिससे मेरी आँखें जल रही थीं और उनमें जलन हो रही थी, और मेरे होंठों के कोनों तक पहुँच रहा था। मैंने अपने होंठ चाटे और मुझे याद है कि उस पल की उत्तेजना में लगभग अनजाने में ही मैंने नमकीन स्वाद महसूस किया।

गर्म चट्टानों पर चलते हुए मेरे रबर के बूटों से कोई आवाज़ नहीं आई। एक के बाद एक मोड़ आते गए, और हर मोड़ पर मुझे पता था कि आगे क्या है। फिर मैं एक ढलान वाली चट्टान पर पहुँचा जो ऊपर उठती ज़मीन से लगभग तीन सौ डिग्री के कोण पर मिलती थी, जिससे एक असली गुफा की बजाय एक उथला गड्ढा बन गया था। काले रंग की धारियों वाले, नीचे से सफेद, गहरे भूरे रंग के दो बड़े गोले एक-दूसरे पर गिर रहे थे और 'पकड़ो पकड़ो' का ज़ोरदार खेल खेल रहे थे। वे बाघ के दो बच्चे थे, और वे खेल रहे थे!

मैं थम सा गया; बस राइफल के हल्के से लोड होने की हल्की सी आवाज आई, जो सुनाई नहीं दी। पर इतना ही काफी था! हालांकि वे सिर्फ शावक थे, लेकिन पीढ़ियों से चली आ रही सहज प्रवृत्ति उनमें समाई हुई थी। उन्होंने खेलना बंद कर दिया, खुद को छुड़ाया और घबराहट भरी निगाहों से मेरी तरफ देखने लगे।

मुझे आज भी वह दृश्य याद है: एक शावक के चेहरे पर मासूमियत भरी हैरानी का भाव था, और दूसरे के चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं, मानो वह घबराहट में फुफकार

रहा हो।

वो फुफकार एक भयंकर तूफान का संकेत थी, क्योंकि उसने सो रही बाघिन को जगा दिया। गरजती हुई दहाड़ों की एक श्रृंखला के साथ वो गुफा से बाहर निकली, शावकों के ऊपर से छलांग लगाई और सीधे मेरी ओर आ गई।

दूरी लगभग बीस गज रही होगी। जैसे ही वह आगे बढ़ी, मैंने उसकी आँखों के बीचोंबीच निशाना साधा। फिर पाँच गज दूर जाकर वह रुक गई; वह पेट के बल ज़मीन पर लेट गई, आँखें धधक रही थीं और मुँह चौड़ा खुला हुआ था, जबकि उसकी दहाड़ और गुर्राहट से वह ज़मीन भी काँप रही थी जिस पर मैं खड़ा था। वह देखने में तो एकदम सटीक थी, लेकिन निश्चित रूप से आदमखोर नहीं थी!

आश्चर्य की बात यह थी कि वह घर की ओर नहीं दौड़ी। आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वह मुझे सरल शब्दों में कह रही थी: 'जल्दी निकल जाओ, और मेरे बच्चों को नुकसान मत पहुँचाना वरना मैं तुम्हें मार डालूँगी।'

मुझे ऐसा करने में खुशी हुई। धीरे-धीरे मैं पीछे हटता गया, अपनी निगाहें उसकी आँखों से हटाए बिना, राइफल के निशाने को जरा भी हिलने दिए बिना, मेरी तर्जनी उंगली अभी भी ट्रिगर पर थी।

और वह वहीं डटी रही! ऐसा लगा जैसे उसे समझ आ गया हो कि मैं जा रहा हूँ। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वह मुझे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी; वह तो बस अपने बच्चों की रक्षा कर रही थी। शायद वह डरी हुई थी। मैं भी डरा हुआ था! लेकिन मैं उसे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था, न ही उस प्यारे, खुशहाल छोटे परिवार को तोड़ना चाहता था।

इसलिए मैं पीछे हटता चला गया। बाघिन दहाड़ती रही। अब मैं उस पहली चट्टान के कोने से मुड़ चुका था जिसने उसे मेरी नज़रों से छिपा रखा था। तभी मैंने हिम्मत करके पीछे मुड़कर देखा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, हालाँकि मेरा चेहरा अभी भी बाघिन की ओर ही था, जिसने अब दहाड़ना बंद कर दिया था, लेकिन गुर्रा रही थी। मैं जानता था कि जब तक वह ये आवाज़ें निकालती रहेगी, मैं सुरक्षित हूँ; मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ है।

एक और बड़ा पत्थर पार करने के बाद, मैं मुड़ा और जल्दी से पीछे हट गया, इससे पहले कि वह अपना इरादा बदलकर मेरे पीछे आती। उसने गुर्राना बंद कर दिया, और मैं समझ गया कि असली खतरा आ गया है। हो सकता है वह अपने बच्चों के

पास वापस चली गई हो, या हो सकता है वह मेरा पीछा कर रही हो। मैं जितनी जल्दी हो सके पहाड़ी से नीचे उतरा, बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। जल्द ही मैं पेड़ों और खजूर के पेड़ों के पास पहुँचा, फिर लैंटाना की पट्टी के पास, जिस पर मैं बड़ी मेहनत से पगडंडी पर चला था, और अंत में बांस और सड़क के पास।

शाम के 4:30 बज रहे थे और निर्देशानुसार मेरे साथी बैलूर लौट चुके थे। मुझे नौ मील का सफर तय करना था और अंधेरा होने में सिर्फ दो घंटे बचे थे। फिर भी, मैंने सड़क किनारे पाँच मिनट बैठकर एक सिगरेट का आनंद लिया। मुझे लगा कि मैं इसका हकदार हूँ। मैं इस बात के लिए भी शुक्रगुजार था कि मुझे बाघिन को गोली नहीं मारनी पड़ी, क्योंकि उन दो शावकों का दृश्य अभी भी मेरी यादों में ताजा था।

बैलूर गाँव पहुँचने में मुझे साढ़े छह बज चुके थे। वहाँ मेरे तीनों साथी मेरा इंतज़ार कर रहे थे, मेरी कहानी सुनने के लिए उत्सुक थे। जब मैंने उन्हें कहानी सुनाई, तो वे इस बात से सहमत हुए कि किसी बाघिन का अपने बच्चे को पूरी तरह से काबू में न कर पाना असामान्य बात थी।

जब मैं जंगल में बने बंगले की ओर अपनी यात्रा के अंतिम चरण में उस छोटे से गाँव से निकला, तब तक अंधेरा छा चुका था। लेकिन चूंकि गाँव और बंगले के बीच लगभग आधे रास्ते में, सड़क से कुछ ही दूरी पर एक खुले मैदान में हमारा एक चारा बंधा हुआ था, तो मेरे मन में आया कि मैं वहाँ जाऊँ। यह विचार मेरे मन में क्यों आया, यह मैं ठीक से नहीं बता सकता क्योंकि मैंने बैलूर जाते समय उस जगह को पहले ही देख लिया था। यह एक सहज आवेग था, और मैंने अपना पूरा जीवन सहज आवेगों का अनुसरण करते हुए बिताया है। मैं उस छोटे से रास्ते पर मुड़ गया जो सड़क से दूर उस खुले मैदान की ओर जाता था जहाँ चारा बंधा हुआ था। चारों ओर घना अंधेरा था, सिवाय साफ नीले-काले आकाश में चमकते तारों की हल्की रोशनी के। मेरे आस-पास की झाड़ियाँ भूतिया आकार ले रही थीं, और सड़क के किनारे लगे 'बारिश के पेड़' की शाखाओं के बीच हवा रुक-रुक कर सरसरा रही थी। बीच-बीच में, एक बड़ा सागौन का पत्ता बहुत ही धीमी आवाज के साथ जमीन पर गिरता था, मानो रात का कोई विशाल पतंगा आराम करने के लिए बैठ रहा हो।

मैं उस छोटे जंगली अंजीर के पेड़ के पास पहुँचा जिसके नीचे मेरा चारा बंधा हुआ था। वहाँ परछाइयाँ ज़्यादा गहरी थीं, और चारा भूरे रंग का था। जब तक मैं उसके बहुत करीब नहीं पहुँचा, तब तक वह मुझे दिखाई नहीं दिया। पास आते ही वह

लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, मानो मेरे आने से चौंक गया हो, ठीक वैसे ही जैसे मैं उसकी अचानक हरकत से चौंक गया था। वह अभी भी सुरक्षित था। मैं उसके चारों ओर घूमकर दूसरी तरफ गया, ताकि उसके पिछले पैर से बंधी रस्सी की जाँच कर सकूँ, कहीं वह मुड़ तो नहीं गई थी।

और उसी क्षण आदमखोर ने हमला कर दिया।

मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि मैं बैल के दूसरी तरफ चला गया, जिसके परिणामस्वरूप बैल मेरे और बाघ के बीच आ गया। लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं पूरी तरह से हैरान रह गया था।

जिस जंगल से मैं अभी निकला था, वहाँ से ज़ोरदार भौंकने की आवाज़ आई। बैल घूम गया। मैं उसके पीछे कूद पड़ा, मेरी पीठ अंजीर के पेड़ के तने की ओर थी और मैं लगभग रस्सी से टकराकर गिरते-गिरते बचा। एक विशाल धूसर आकृति बैल की पीठ पर उछल पड़ी, और अचानक पड़े भार से बैल गिर पड़ा।

लेकिन बाघ ने बैल की गर्दन या गला नहीं पकड़ा था। वह तो बस बैल पर कूद पड़ा ताकि मेरे पास पहुँच सके। सौभाग्य से, बैल के गिरने से बाघ की छलांग नाकाम हो गई, वरना वह पलक झपकते ही उसके पीछे कूद पड़ता।

गिरे हुए बैल के छटपटाते शरीर से बाघ खुद को अलग कर ही रहा था कि मेरी गोली उसकी आंखों के बीच जा लगी। वह बुरी तरह से पीछे की ओर मुड़ा, अभी भी बैल के ऊपर लेटा हुआ था, और बैल अब बाघ को अपनी पीठ पर लिए हुए लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, उसका सिर और अगला हिस्सा आगे की ओर झुका हुआ था।

बिना सोचे-समझे, मैंने अनायास ही अपनी दूसरी गोली उस जगह पर चलाई जो मुझे बाघ के बाएं कंधे के पीछे लगी। बाघ गिर पड़ा! बाघ बाघ से लुढ़ककर मेरी ओर आया, और मेरी तीसरी गोली उसके गले में जा लगी।

बैल टस से मस नहीं हुआ। बाघ ने बेतहाशा लात मारी। और फिर अंत में सब कुछ शांत हो गया।

राइफल की टॉर्च की रोशनी से पता चला कि मेरी पहली गोली बाघ की खोपड़ी को चकनाचूर कर गई थी। दूसरी गोली थोड़ी नीचे लगी थी। भारी .405 कैलिबर की गोली बाघ की छाती के पिछले हिस्से को चीरते हुए निकल गई और उसके पेट में एक बड़ा छेद कर दिया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल अनावश्यक थी, बाघ के गले से आर-पार हो गई, जिससे एक गहरा छेद हो गया। लेकिन मैंने उस बेचारे बाघ को मार

डाला था जिसने अनजाने में मेरी जान बचाई थी।

मेरे हाथ कांप रहे थे, मेरे घुटने लड़खड़ा रहे थे, और अचानक मुझे बहुत ज़्यादा बीमार महसूस होने लगा। उस शाम की घटनाओं के बाद यह प्रतिक्रिया अचानक हुई। मैं अंजीर के पेड़ की ओर पीठ करके ज़मीन पर बैठ गया और अपना हाथ माथे पर रखा, जिसे छूते ही मुझे बर्फ़ जैसा ठंडा महसूस हुआ, यह देखकर मैं हैरान रह गया।

मैं कितनी देर तक इस हालत में रहा, यह मुझे नहीं पता। फिर मैंने अपनी पाइप ढूंढी, उसमें तंबाकू भरा और उसे जलाया। पहले कुछ कशों ने मेरे बुरी तरह से घबराए हुए मन को शांत किया और मैं जल्द ही सड़क पर वापस आ सका और बैलूर गांव की ओर अपने कदमों के निशान पर चलने लगा।

मैंने देखा कि निवासी सड़कों पर जमा थे, उत्साह और उम्मीद से भरे हुए। क्योंकि आसपास की पहाड़ियों में मेरी तीन गोलियों की आवाज गूंज उठी थी, जो घाटियों और पथरीली चोटियों पर दूर तक फैली हुई थी। उन्होंने अनुमान लगाया था कि बंगले के रास्ते में मुझ पर हमला हुआ था, लेकिन वे सोच रहे थे कि क्या यह हमला आदमखोर जानवर ने किया था, या किसी भालू या हाथी ने।

मुझे अंधकार से निकलते देख, वे सब मेरा स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े, मेरे तीनों नौकर सबसे आगे थे। मैं सड़क किनारे बैठ गया और उन्हें सारी कहानी सुनाई। उनके होंठों से हैरानी और अविश्वास की आहें निकलीं, फिर उन्होंने मुझे बधाई दी और मेरी सुरक्षा के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

मेरे सामने गरमागरम दूध का एक बड़ा बर्तन और केलों का एक गुच्छा रखा गया। उपहार के लिहाज से यह कुछ खास नहीं था, लेकिन इससे ग्रामीणों की हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त हुई।

आधे घंटे के भीतर ही लगभग पूरा गाँव लालटेन और मिट्टी के तेल की मशालें, एक मजबूत डंडा और रस्सियों के कुंडल लेकर बाघ को पकड़ने के लिए इकट्ठा हो गया। हम वापस उसी जगह गए और पचास से अधिक लोग उस विचित्र दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गए, उनकी आँखें विस्मय से चौड़ी हो गई थीं। जेकेन की हालत विशेष रूप से दयनीय थी। उसने अपने चाकू से मरे हुए बाघ पर वार करना शुरू कर दिया— यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह उस खाल को और नुकसान पहुँचा रहा था जो मेरी गोलियों से पहले ही लगभग खराब हो चुकी थी। मैंने धीरे से, लेकिन दृढ़ता से, उसे रोका; फिर वह अपनी मृत पत्नी को याद करके फूट-फूट कर

रोने लगा।

एक बलवान और बहादुर व्यक्ति के गहरे रोते हुए दृश्य को देखना सुखद नहीं होता; यह संक्रामक होता है, और मुझे अपने गले में एक अजीब सी गांठ महसूस हुई - एक ऐसी गांठ जो काफी देर तक कम नहीं हुई।

अब बताने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं बचा है, सिवाय एक अजीबोगरीब घटनाक्रम के। अगली सुबह, बंगले पर आते समय, जेकेन उस जगह से गुज़रा जहाँ मैंने पिछली रात सड़क छोड़ी थी। पचास गज आगे जाकर उसने शौच करने का फैसला किया और एक बेर की झाड़ी के पीछे छिप गया। वहाँ उसे पहली बार पता चला कि बाघ पिछली रात मेरा इंतज़ार कर रहा था; ज़ाहिर है वह आसपास ही था, और उसने या तो मुझे सड़क पर आते हुए देखा था या मेरी आवाज़ सुनी थी।

जेकेन ने मुझे अपनी खोज के बारे में बताया और मैं खुद जाँच करने के लिए उसके साथ वापस चला गया। मैंने पाया कि उसकी बात सच थी। नरम रेत पर बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से अंकित थे, जबकि तारा-प्लम झाड़ी के नीचे की नरम घास और घनी झाड़ियाँ बाघ के शरीर के भार से अभी भी आंशिक रूप से दबी हुई थीं, हालाँकि बारह घंटे से अधिक समय बीत चुका था जब वह वहाँ घात लगाकर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था।

फिर भी कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि ईश्वरीय विधान, मार्गदर्शक शक्ति, अंतर्ज्ञान या छठी इंद्री जैसी कोई चीज नहीं होती; आप इसे जो चाहें कह लें। मुझे तो ईश्वरीय विधान को समझने से भी ज्यादा मुश्किल इन अविश्वासियों को समझना लगता है!

सात

मुदियानूर का महान पैंथर

मुडियानूर एक छोटे से गांव का नाम है जो एक उपजाऊ घाटी के दक्षिण-पूर्वी छोर के पास बसा हुआ है, जो मोयार नदी और नीलगिरी पर्वत श्रृंखला की विशाल चट्टानों के उत्तर में और बिलिगिरिरंगन के नाम से जानी जाने वाली छोटी पर्वत श्रृंखला की तलहटी के दक्षिण में स्थित है।

इस अशांत धरती पर यह छोटी सी घाटी काल्पनिक कहानियों की उन मायावी 'सुखद घाटियों' के जितना संभव हो सके उतना करीब आती है, जिनके सपने हम अपनी बेचैन नींदों में देखते हैं। यह निश्चित है कि दोनों छोरों पर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं के कारण कमजोर मानसून के मौसम में भी वर्षा अवश्य होगी। मिट्टी अत्यंत उपजाऊ है, विशेष रूप से पत्तों की खाद और महीन लाल दोमट मिट्टी से भरपूर है, क्योंकि हाल के वर्षों तक यह उस प्राचीन जंगल का हिस्सा थी जिसे सभ्यता के विस्तार के कारण धीरे-धीरे, लेकिन निरंतर रूप से पीछे धकेला जा रहा है। दिन के समय जलवायु समशीतोष्ण रहती है और रात में पर्वतीय चोटियों से बहने वाली ठंडी हवाओं के कारण काफी सर्द हो जाती है।

मुडियानूर के अधिकांश लोग किसान हैं, हालांकि कुछ लोग पशुपालक भी हैं, जो पशुओं के विशाल झुंड पालते हैं और उन्हें दिन के समय आसपास के जंगलों में चराने के लिए ले जाते हैं। इन पशुओं के दूध का उपयोग पूरी तरह से घी बनाने में किया जाता है, जो पिघला हुआ मक्खन होता है और पूरे भारत में खाना पकाने में इस्तेमाल होता है। मिट्टी के तेल के डिब्बों में भरा घी पहाड़ी पर बने घुमावदार रास्ते (जिसे घाट कहा जाता है) से ऊपर भेजा जाता है, जो डिंबम नामक छोटे से गांव में मैसूर से सत्यमंगलम जाने वाली मुख्य सड़क से मिलता है। वहां घी के डिब्बों को बैलगाड़ियों—और कभी-कभी ट्रकों—पर लादकर बिक्री के लिए ले जाया जाता है। मैसूर और सत्यमंगलम में, और विशेष रूप से पास के गोबिचेट्टीपलयम शहर में, घी के अच्छे बाज़ार हैं।

इसलिए यहाँ की आबादी खुशहाल और समृद्ध है। घाटी में बहुत कम ही विदेशी आते हैं, क्योंकि बैलगाड़ी का रास्ता लगभग मोटरगाड़ियों के चलने लायक नहीं है।

कभी-कभी बाघ या तेंदुआ झुंडों पर हमला कर देते हैं; तो कभी किसान सुबह उठकर देखते हैं कि रात भर चरने वाले हाथियों ने उनके खेतों के कुछ हिस्सों को रौंद डाला है। जंगली सूअर और हिरण फसलों को मामूली नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन इन्हें छोटी-मोटी आपदाएँ माना जाता है और इन्हें अपरिहार्य भाग्य का नियम समझकर

स्वीकार कर लिया जाता है।

'महान पैंथर' नाम उसे इसलिए मिला क्योंकि वह असाधारण रूप से बड़ा था। माना जाता था कि वह नीले पहाड़ों के दुर्गम इलाकों से आया था, शायद अनाइकुट्टी या सेगुर से, और मोयार नदी (जिसे आमतौर पर मैसूर खाई कहा जाता है) को पार करके आया था। उसने गाँव के मवेशियों पर हमला करना शुरू कर दिया, और बाघ की तरह गर्दन तोड़कर उन्हें मार डाला, इसलिए कुछ समय तक उसे बाघ ही समझ लिया गया।

फिर, बढ़ते साहस के साथ, यह पैंथर मेरे मित्र ह्यूगी हेलस्टोन की जागीर में मौजूद उत्तम दुधारू गायों के झुंड को परेशान करने लगा। यह जागीर, मोयार वैली रेंच, एक उत्कृष्ट फार्म है, जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि इसके मालिक एक असाधारण व्यक्तित्व हैं। पेशे से एक प्रतिभाशाली इंजीनियर, उनका दिमाग एक आविष्कारक की तरह तेज है—तेजी से सोचने और मूल्यों का आकलन करने में माहिर—और अपनी चतुराई से उन्होंने कई उपकरण और यांत्रिक सुधार विकसित किए हैं। इसके अलावा, ह्यूगी जन्मजात शिकारी हैं। उन्हें जंगल और उसके जानवर बेहद पसंद हैं, और उन्हें बंदूक चलाने या उसमें कुछ बदलाव करने में सबसे ज्यादा खुशी मिलती है। यांत्रिक प्रतिभा और जंगल के प्रति प्रेम के इस दुर्लभ संयोजन से मोयार वैली रेंच का जन्म हुआ; क्योंकि अथक परिश्रम और कौशल, दृढ़ संकल्प और हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति के साथ, ह्यूगी ने सचमुच घने जंगल के बीचोंबीच अपना रेंच बनाया।

विशाल वन वृक्षों को काटना और साफ करना आवश्यक था। ह्यूगी ने इस स्थिति का फायदा उठाते हुए उन्हें कोयले में परिवर्तित किया और फिर उसे ट्रकों में भरकर दूर-दराज के शहरों में बेचा। ईंटें, तराशे हुए पत्थर, सीमेंट, गारा और भवन निर्माण में प्रयुक्त अन्य सभी वस्तुएं भी उन्हीं स्थानों से मंगाई जाती थीं। बढ़ई भी बाहर से मंगाए गए, जिन्होंने ह्यूगी के कुशल मार्गदर्शन में, जल्द ही बेहतर वन-लकड़ी का उपयोग भवन निर्माण कार्यों में कर लिया। देखते ही देखते एक आधुनिक इमारत खड़ी हो गई। पवनचक्की बैटरी-चार्जर के साथ, घर में बिजली की रोशनी, एक रेफ्रिजरेटर और कई आधुनिक सुविधाएं थीं। इसके अलावा, कृषि मशीनरी भी आयात की गई, जिससे मोयार वैली रेंच देखते ही देखते एक समृद्ध फार्महाउस बन गया।

ह्यूगी के कई व्यावसायिक हित हैं और वे अक्सर विदेश यात्रा करते हैं। कभी-कभी वे कुछ हफ्तों में लौट आते हैं, लेकिन कभी-कभी वे महीनों तक अनुपस्थित रहते

हैं, और यह कहानी उनकी एक लंबी अनुपस्थिति से संबंधित है। उन्होंने बड़ी विनम्रता से मुझे किसी भी समय अपने फार्म पर आने का सौभाग्य दिया था, और विशेष रूप से मुझसे अपने पशुओं पर नज़र रखने का अनुरोध किया था। इसलिए एक दिन, जब हमें ह्यूगी के देखभालकर्ता, वर्गीस नामक व्यक्ति का पत्र मिला, जिसमें बताया गया था कि एक बड़े पैंथर ने ह्यूगी के सबसे अच्छे अल्सेशियन कुत्ते को मार डाला है, तो कुछ करना आवश्यक हो गया।

उस समय मैं किसी बहुत ज़रूरी और अहम काम में डूबा हुआ था और अगले दो हफ़्तों तक छुट्टी लेना नामुमकिन था। वर्गीस का पत्र गाँव की डाक से हम तक पहुँचने में छह दिन लग चुके थे। लेकिन मेरे बेटे डोनाल्ड ने पैंथर से निपटने का ज़िम्मा उठाया और मैंने खुशी-खुशी उसे यह काम सौंप दिया। स्टडबेकर कार का एक एक्सल एक महीने पहले टूट गया था और मैं अभी भी बॉम्बे से उसके बदले एक्सल के आने का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए डोनाल्ड अपने दोस्त के घर कार उधार लेने के लिए जल्दी से चला गया।

इस बिंदु से मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि डोनाल्ड खुद ही बाकी की कहानी सुनाए, क्योंकि अभियान से लौटने पर उसे खरी-खोटी सुनाने के अलावा मैंने इस मामले में कोई और भूमिका नहीं निभाई।

जब पिताजी ने मुझे मुडियानूर जाने को कहा, तो पहली समस्या यात्रा के लिए कार ढूंढने की थी, क्योंकि उनकी स्टडबेकर कार खराब पड़ी थी। इसलिए मुझे स्कूल के एक दोस्त रुस्तम दुधवाला का ख्याल आया। रुस्तम एक अच्छा इंसान है और उसके पास तीन-चार कारें हैं। थोड़ी सी बातचीत में ही मुझे उसे कार में दिलचस्पी दिलाने में कोई दिक्कत नहीं हुई। यात्रा के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करने और पिताजी का भाग्यशाली बाघ-आशीर्वाद उधार लेने में मुझे सिर्फ चार घंटे लगे, जो उन्हें सालों पहले बुधिया नाम के एक जंगली आदमी ने दिया था। मुझे पता है कि पिताजी इस आशीर्वाद के बारे में बात नहीं करते, क्योंकि उन्हें लगता है कि लोग उनका मज़ाक उड़ाएंगे, लेकिन मुझे यह भी पता है कि उन्हें इस पर बहुत विश्वास है। आशीर्वाद असल में बांस के एक छोटे टुकड़े में लिपटा हुआ है, जिसे हाथी की पूंछ के बाल से बांधा गया है। इसके अंदर क्या है, यह मुझे नहीं पता। इसे गले में पहना जा सकता है, क्योंकि बांस एक डोरी से बंधा हुआ है, लेकिन पिताजी आमतौर पर इसे अपनी जेब में रख लेते हैं।

'जाने से ठीक पहले मैंने अपने एक और दोस्त, सेड्रिक बोन को साथ ले जाने का सोचा। वह एक शौकीन फोटोग्राफर और अच्छे स्वभाव का व्यक्ति है, और मुश्किल परिस्थितियों में भी शानदार ढंग से रह सकता है। सेड्रिक आने के लिए तैयार हो गया, और जल्द ही हम तीनों मुडियानूर के लिए निकल पड़े। मैं अपने साथ .423 माउज़र राइफल ले गया, जो पिताजी की पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल से कहीं बेहतर है। वह खुद यह जानते हैं, लेकिन सभी पुराने ख्यालों वाले लोगों की तरह, उन्हें भी पुरानी चीज़ों से चिपके रहना पसंद है। मैं अपने साथ .3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल भी लाया था, जिसे मैं खाने के लिए हिरण का शिकार करने के लिए रिजर्व राइफल के रूप में रखता था। मेरे पिताजी मुझे हिरण मारने के खिलाफ उपदेश देते रहते हैं और मैं उनकी बात सुनने का नाटक करता हूँ। जब वह आस-पास होते हैं, तो बेशक, ऐसा करना वर्जित है; लेकिन जब वह नहीं होते, तो मामला बिल्कुल अलग होता है।'

'मुदियानूर जाने वाले रास्ते के आखिरी सत्रह मील बहुत खराब थे, और हमें वहाँ पहुँचने में लगभग आठ घंटे लग गए। वर्गीस ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया, हालाँकि मुझे लगा कि वह थोड़ा निराश था क्योंकि पिताजी साथ नहीं आए थे। आजकल यही समस्या है। मेरे जैसे युवाओं की अक्सर कद्र नहीं की जाती और बड़े-बुजुर्ग हमें कुछ हद तक गैरजिम्मेदार समझते हैं। वे भूल जाते हैं कि वे भी कभी जवान थे।'

खैर, वर्गीस ने हमें बताया कि गांव के मवेशियों के अलावा, उस बड़े पैंथर ने तीन दिन पहले श्री हेलस्टोन की एक गाय को भी मार डाला था। इसलिए तत्काल समस्या यह थी कि कुछ अधपके बैलों के रूप में जीवित चारा खरीदा जाए, और इस उद्देश्य के लिए रुस्तम बहुत काम आया।

मैं आपको रुस्तम के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। वह बाईस साल का है और पारसी है, जो भारत में शुरुआती फारसी प्रवासियों के वंशज हैं। वह एक बहुत अमीर परिवार से आता है, जिसके पास मुंबई में लाखों रुपये की संपत्ति है, जिससे एक दिन में इतनी आमदनी होती है कि मुझे कई बार खरीदा जा सकता है। इसके अलावा, रुस्तम के पिता एक चतुर व्यापारी हैं, जिनकी आमदनी संपत्ति से होने वाली मासिक आमदनी से भी अधिक है। वह बहुत ही खेल प्रेमी हैं और अपने बेटे से बहुत प्यार करते हैं, लेकिन कभी-कभी रुस्तम को शिकार पर जाने देने के मामले में वे बेवजह सख्त हो जाते हैं। जब ऐसा होता है, तो रुस्तम और मैं आमतौर पर अपने पिता को

श्री दुधवाला से मिलने के लिए आमंत्रित करने का जुगाड़ कर लेते हैं, क्योंकि जब ये बुजुर्ग एक-दो घंटे मिलते हैं और आपस में बातचीत करते हैं, तो हमारी शिकार यात्रा पक्की हो जाती है।

खैर, मैं आपको जो बता रहा था, उस पर वापस आते हैं। रुस्तम चार जवान बैल लाया, जिन्हें हमने उस जगह के पास अलग-अलग जगहों पर बांध दिया, जहाँ हाल ही में उस बड़े पैंथर ने शिकार किया था। इनमें से पहला हमने जंगल की सीमा रेखा के पास बांधा, जो श्री हेलस्टोन की जागीर से सटी हुई है। दूसरा हमने लगभग एक चौथाई मील दूर, घने बांस के जंगल से घिरी एक छोटी झील के पास बांधा। तीसरा हमने मुडियानूर गाँव के बाहरी इलाके में बांधा, और आखिरी मुडियानूर में आने वाले बैलगाड़ी के रास्ते पर ही बांधा। पिताजी हमेशा चारे के साथ अपना मचान लगाते हैं; लेकिन चूंकि वर्गीस ने श्री हेलस्टोन के पोर्टेबल मचान का उपयोग करने की पेशकश की थी, इसलिए मैंने शिकार होने के बाद ही अपना मचान लगाने का फैसला किया।

हमने अपने शिकार को सुरक्षित रखने के लिए उसके पिछले पैरों को जमीन में गाड़े गए मजबूत खूंटों से बांध दिया, क्योंकि जीवित शिकार के गले में रस्सी डालना एक गलती होती है। कभी-कभी तेंदुआ, और खासकर बाघ, गले में रस्सी बंधे जानवर पर हमला करने से हिचकिचाते हैं। वे गर्दन पकड़कर मारते हैं, और रस्सी को लेकर वे संशय में रहते हैं, क्योंकि यह उनके रास्ते में बाधा बन सकती है।

'आखिरी समय पर वर्गीज ने हमें बताया कि पिछले दो दिनों से बंगले के आसपास एक बाघ की आवाजें आ रही थीं। इसलिए, मैंने रस्सी के बजाय श्री हेलस्टोन की चेन का इस्तेमाल उनके बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे चारे को सुरक्षित करने के लिए किया। ऐसा इसलिए क्योंकि मुझे लगा कि अगर बाघ इस बैल को मार देता है तो वह रस्सी तोड़कर उसे ले जा सकता है। चूंकि कोई और चेन नहीं थी, इसलिए बाकी तीन चारे रस्सी से ही बंधे रहने दिए गए।'

रुस्तम उस रात मुडियानूर गांव के आसपास के खेतों में जंगली सूअर का शिकार करने जाना चाहता था, लेकिन मैंने उसे रोक दिया, क्योंकि गोली चलने से पैंथर घबरा सकता था। अगली सुबह, हमारे चारों शिकार ज़िंदा थे और हम निराश हो गए। लेकिन जैसा कि पिताजी ने मुझे सिखाया है, शिकार धैर्य का खेल है, इसलिए मैंने रुस्तम को चुप रहने और एक-दो दिन तक किसी भी प्रगति की उम्मीद न करने को कहा। तीसरी रात को बड़े तेंदुए ने बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे बैल को मार डाला। संयोग

से उसी रात बाघ ने जंगल के तालाब के पास बांसों के बीच बंधे दूसरे शिकार को भी मार डाला।

अब मेरे सामने एक मुश्किल खड़ी हो गई थी। मैंने मन ही मन कहा, "पैंथर भाड़ में जाए, मैं बाघ को मारूंगा।" लेकिन कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी थीं: रुस्तम ने मुझे याद दिलाया कि मेरा मकसद उस पैंथर को मारना था जिसने मिस्टर हेलस्टोन के मवेशियों को मार डाला था। इसलिए पैंथर का शिकार करना मेरी ज़िम्मेदारी थी। मुझे पता था कि वह सही कह रहा है और पिताजी भी यही कहते। फिर भी, बाघ का शिकार करने का मौका गंवाना मुझे थोड़ा मूर्खतापूर्ण लग रहा था, और मैंने रुस्तम को पैंथर का शिकार करने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की। लेकिन उसमें अपने पिता की कुछ व्यावसायिक समझ थी, और वह अपनी पुरानी दलीलों पर अड़ा रहा। इसलिए, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं फंस गया हूं, तो मुझे हार माननी पड़ी।

'सेड्रिक ने मेरे साथ आकर बैठने का फैसला किया, क्योंकि उसे लगा कि मेरे साथ रहने से बड़े पैंथर को देखने की संभावना रुस्तम के साथ जाने की तुलना में अधिक है। उसे लगा कि रुस्तम बहुत शोर मचाएगा और बाघ के शिकार के पास आने से पहले ही उसे भगा देगा।'

तो मैंने काम शुरू किया और श्री हेलस्टोन का पोर्टेबल मचान उस पेड़ पर टांग दिया जो मरे हुए बैल से लगभग तीस गज की दूरी पर था। रुस्तम ने भी ग्रामीणों से उस पेड़ पर मचान लगवाया जो उस जगह के पास था जहाँ दूसरे बैल को बाघ ने मारा था। मैं यह बताना भूल गया था कि इन चारों चारों को बांधते समय मैंने सावधानी बरती थी और उन्हें पेड़ों के पास बांधा था, ताकि बाद में मचान लगाने में कोई परेशानी न हो।

दोनों दल शाम करीब 4 बजे बंगले से निकले। रुस्तम को लंबी दूरी तय करनी थी, इसलिए वह और वर्गीस, अपने साथ सैंडविच, पानी की बोतल, टॉर्च, गर्म मफलर, कंबल और अन्य सामान लेकर तेज़ी से चल पड़े। सेड्रिक और मैं अपने खाने के पैकेट और एक पानी की बोतल के साथ जंगल की सीमा तक धीरे-धीरे चलते रहे। हमें लगा कि कंबल की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि मौसम गर्म लग रहा था।

किसी मचान पर बैठना बहुत थकाऊ होता है, और मुझे हमेशा एक जगह स्थिर रहना मुश्किल लगता है। मेरे पिताजी ने मुझे कई बार कहा है कि मूर्ति की तरह बैठना बहुत ज़रूरी है, लेकिन वे ऐसा कैसे करते हैं, यह मुझे नहीं पता। मैं उनके साथ कई

बार बैठा हूँ और उनका तरीका है कि वे अपने पैर मोड़कर आराम से बैठ जाते हैं, पाइप पीते हैं, थर्मस से थोड़ी सी चाय पीते हैं, और फिर पूरी रात मूर्ति की तरह बैठे रहते हैं। लेकिन मेरे साथ तो तरह-तरह की चीजें होती हैं। मेरे पैरों में झुनझुनी होने लगती है, मेरी पीठ अकड़ जाती है और दर्द करने लगती है, और मच्छर मुझे बहुत परेशान करते हैं: वे न सिर्फ मुझे काटते हैं, बल्कि मेरे कानों और नाक में भी घुस जाते हैं और उनसे छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका है कि जब वे खून चूसने के लिए बैठें, तब उन्हें ज़ोर से थप्पड़ मार दिया जाए। पिताजी कहते हैं कि मचान पर ऐसा करना ठीक नहीं है; लेकिन शायद वे भूल जाते हैं कि मेरा खून, जवान होने के कारण, शायद मच्छरों को उनके खून से ज़्यादा आकर्षित करता है। मुझे पूरा यकीन है कि आप समझ जाएंगे कि बूढ़े लोगों को युवा लोगों को यह बताने में काफी आनंद आता है कि उन्हें क्या नहीं करना चाहिए।

खैर, जब शाम सात बजे अंधेरा हुआ, तब तक मच्छर सेड्रिक और मुझ पर बुरी तरह से झपटने लगे थे। मैंने सेड्रिक को मच्छरों को मारने से मना किया था, शायद इसीलिए जब मैंने ऐसा किया तो उसने मुझे एक-दो बार धक्का दिया। समय बीतता गया, और फिर लगभग पौने आठ बजे, हमने एक लंबी सी वस्तु देखी, जो अंधेरे में भूरे रंग की दिख रही थी, मानो कहीं से प्रकट हुई हो। मुझे यह स्पष्ट करना होगा कि, हालांकि चाँद नहीं था, चारों ओर तारों की हल्की रोशनी थी जो जंगल में हमेशा अधिक चमकते हुए दिखाई देते हैं। कम से कम इतनी रोशनी तो थी कि बड़े पेड़ और वह भूरी वस्तु दिखाई दे रही थी, लेकिन मरा हुआ बैल नहीं, जो काला था। खैर, वह भूरी आकृति उस जगह की ओर बढ़ी जहाँ बैल पड़ा था, और थोड़ी देर बाद हमने जंजीर की खड़खड़ाहट सुनी, उसके बाद खाने की आवाज़ और हड्डियों के चटकने की आवाज़ आई। धीरे-धीरे मैंने अपनी राइफल कंधे पर उठाई, लेकिन किस्मत से राइफल की नली से बंधी मेरी टॉर्च पेड़ से टकरा गई और हल्की सी आवाज़ हुई। शिकार की दिशा से एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी और वही धूसर वस्तु जंगल की सीमा पार करके मेरी बाईं ओर चलने लगी। थोड़ी देर में वह गायब हो गई, और फिर लगभग दस मिनट बाद, मेरी दाईं ओर, लगभग हमारे नीचे, फिर से दिखाई दी। मुझे चाटने की आवाज़ सुनाई दी, और ऐसा लगा कि पैंथर वहाँ अपने पिछले पैरों पर बैठा है। इस बार मैंने राइफल को ठीक से निशाना बनाया और अपनी टॉर्च का स्विच दबाया। तेज़ रोशनी से पैंथर ज़मीन पर कुत्ते की तरह बैठा हुआ दिखाई दिया, जो मुश्किल से बीस

गज दूर था। उसने मेरी ओर देखा, और मैंने तुरंत निशाना साधकर ट्रिगर दबा दिया। मेरी सबसे अच्छी दोस्त, .432 राइफल, दहाड़ उठी, और पैंथर एक तरफ गिर गया। मुझे लगा कि अब वह मर चुका है, लेकिन फिर वह अचानक उठा और उस पेड़ के नीचे जंगल में कूद गया जहाँ हम बैठे थे।

'यह सब होते हुए सेड्रिक बहुत उत्साहित था, क्योंकि पैंथर के गायब होते ही वह नीचे उतरने के लिए तैयार हो गया। मैंने उसे रोका, और उसने कहा, "चलो, उसके पीछे चलते हैं।" लेकिन मैंने उसे मूर्खता न करने के लिए कहा और कहा कि बेहतर होगा कि हम सुबह तक इंतजार करें।'

हम वहां लगभग एक घंटे और बैठे रहे। मच्छर इतने असहनीय हो गए कि हमने नीचे उतरकर बंगले में वापस जाने का फैसला किया। मैं पहले नीचे उतरा और सेड्रिक ने मुझे राइफल थमा दी। फिर वह पानी की बोतल लेकर मेरे पीछे आया। आखिरी छह फीट उसने छलांग लगाकर पार किए और जैसे ही वह धड़ाम से जमीन पर गिरा, पास से एक भयानक दहाड़ सुनाई दी। मैं मुड़ा और टॉर्च जलाकर राइफल को आवाज की दिशा में तान दिया, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कुछ मिनट इंतजार करने के बाद, हम कुछ कदम आगे बढ़े, लेकिन वहां लैंटाना की झाड़ियाँ बहुत घनी थीं और अंधेरे में आगे बढ़ना असुरक्षित लग रहा था। फिर हम उस जगह गए जहां पैंथर बैठा था जब मैंने गोली चलाई थी, और खून के निशान ढूंढने लगे।

टॉर्च की रोशनी में कोई निशान नहीं दिख रहा था और मेरे मन में यह चिंताजनक ख्याल आया कि शायद मेरा निशाना चूक गया हो। मैंने दबी आवाज़ में सेड्रिक से इस बारे में बात की, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि मेरी गोली पैंथर को लगी थी। फिर भी, मुझे संदेह था और आखिरकार हमने मचान पर वापस जाने का फैसला किया, इस बहुत कम संभावना के साथ कि शायद मेरा निशाना चूक गया हो और पैंथर बाद में अपने शिकार के पास लौट आए।

मच्छरों और सुबह होते ही शुरू हो चुकी भीषण ठंड के कारण बाकी की रात बेहद असहज रही। फिर भी हम डटे रहे और भोर होते ही हम दोनों बेहद निराश और हताश हो गए। हम पेड़ से नीचे उतरे और लगभग एक घंटे तक नीचे हरी घास पर लेट गए, ताकि सूरज को उगने का मौका मिले और हमारी अकड़ी हुई मांसपेशियां ढीली हो जाएं। फिर, सात बजने के कुछ ही देर बाद, हमने गंभीरता से खून के निशान ढूंढना शुरू किया। थोड़ी देर में मुझे तसल्ली मिली जब मुझे कुछ बूंदें मिलीं जहाँ पैंथर लैंटाना

में घुसा था, और फिर झाड़ियों के अंदर लगभग चालीस गज की दूरी पर काफी मात्रा में खून मिला। अब यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया था कि उसे बुरी तरह चोट लगी थी और वह यहीं लेट गया था; और यह भी कि पिछली रात जब सेड्रिक पेड़ से नीचे कूदा था, तब इतनी जोर से गुर्राने वाला वही पैंथर था। दरअसल, यह समझ में आया कि पैंथर ने उस समय हम पर हमला नहीं किया था और हमें सोते हुए पकड़ लिया था।

'सेड्रिक ने उस जगह की तस्वीर खींची। वह उन कैमरा प्रेमियों में से एक है जो लगभग हर चीज की तस्वीरें खींचते हैं।'

'मैंने देखा कि इस बिंदु से सौ गज से भी अधिक दूरी तक खून का निशान दिखाई दे रहा था। इस दूरी के भीतर वह एक बार फिर लेट गया, जिससे इस बात की पुष्टि हो गई कि उसे बुरी तरह चोट लगी थी। फिर खून का निशान धुंधला हो गया, शायद इसलिए कि वसा, या झिल्ली के एक टुकड़े ने गोली के छेद को ढक लिया था और बाहरी रक्तस्राव को रोक दिया था।'

'झाड़ियाँ काफी घनी थीं और हमने हर जगह ध्यान से तलाशा, लेकिन कोई पैंथर नहीं मिला। जंगल की सीमा रेखा आगे बढ़ती रही, और मैं उसके किनारे-किनारे चलता रहा, लैंटाना की झाड़ियों में झाँकते हुए उस जानवर को देखने की उम्मीद कर रहा था।'

मैं शायद सौ गज और आगे बढ़ गया था, सेड्रिक लगभग बीस कदम की दूरी पर अपने कैमरे के साथ जंगल की खुली सीमा के किनारे-किनारे चल रहा था, तभी अचानक यह घटना घटी। ज़ाहिर है, पैंथर खुले मैदान के दूसरी तरफ एक झाड़ी के नीचे छिपा हुआ था और मेरी नज़र से बच गया था। उसने मेरे गुज़र जाने का इंतज़ार किया और फिर, अपनी खास खाँसी भरी आवाज़ के साथ, मुझ पर हमला कर दिया। सेड्रिक लगभग उसी जगह पर था जहाँ पैंथर छिपा हुआ था, और यह एक रहस्य है कि कैसे पैंथर ने उसे नहीं देखा और मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला कर दिया, और यह सेड्रिक के लिए बहुत बड़ी किस्मत की बात है। शायद पैंथर मुझे देखने और अपने अचानक हमले की तैयारी में व्यस्त था। खैर, उसने हमला तो किया, लेकिन उस खाँसी भरी आवाज़ को सुनकर मैं समय रहते पलट गया और उसे आते हुए देख लिया। सौभाग्य से, पिछली रात मेरी चलाई गोली ने उसके दाहिने अगले पैर को चकनाचूर कर दिया था, जो घिसटता हुआ आगे बढ़ता गया।

मैंने अपनी राइफल को अपने बाएं कंधे पर रखा—जहां से मैं गोली चलाता हूं—मैंने ट्रिगर दबाया और गोली उसके गले में जा लगी। वह आगे की ओर सीने के बल

गिर पड़ा, अभी भी जोर से गुर्रा रहा था, और इससे मुझे दूसरी गोली चलाने का समय मिल गया।

'तभी मैंने देखा कि सेड्रिक मेरे ठीक पीछे था और उत्साह से झूम रहा था। वह मेरी सीधी गोलीबारी की चपेट में आ गया था, और हो सकता है कि मैंने पैंथर की जगह उसे ही गोली मार दी होती। लेकिन इस अद्भुत उत्साही ने हमले की तस्वीर खींच ली। सेड्रिक में इतनी हिम्मत कैसे आई कि उसने तस्वीर खींची, जबकि सौ में से निन्यानवे आदमी, जो उसके जैसे निहत्थे थे, दुम दबाकर भाग जाते, यह मेरी समझ से परे है। इससे बस यही पता चलता है कि फोटोग्राफी के प्रति उसके जुनून ने उसे बाकी सब कुछ भुला दिया। वह मुझे बताता है कि उसने बस कैमरा निशाना लगाया और बिना सोचे-समझे शटर दबा दिया।'

जब हम खुशखबरी सुनाने के लिए बंगले पर लौटे, तो हमने पाया कि रुस्तम और वर्गीस पहले ही वापस आ चुके थे, वे लगभग 2 बजे तक जागे रहे थे। इस समय तक मच्छर उन पर हावी हो चुके थे, और चूंकि बाघ दिखाई नहीं दिया था, इसलिए रुस्तम और उसके साथी ने दिन का काम समाप्त करने और झपकी लेने के लिए बंगले पर वापस जाने का फैसला किया था।

'हम पैंथर को नौ बजे तक अंदर ले आए और लगभग एक घंटे में उसकी खाल उतार ली। यह काफी बड़ा नर पैंथर निकला, जिसकी नाक से पूंछ तक की लंबाई 7'8" थी।'

दोपहर का भोजन जल्दी करने के बाद, मैंने रुस्तम से कहा कि हमें उस बैल को देखने जाना चाहिए जिस पर वह बैठा था। मैं आपको यह बताना नहीं भूलूंगा कि इस बीच, वर्गीस ने तीसरे और चौथे जानवर का पता लगाने के लिए कुछ लोगों को भेजा था। वे लोग लौटकर हमें यह सूचना देने आए कि दोनों जानवर अभी भी जीवित हैं।

जब हम रुस्तम के मचान पर पहुँचे, तो हमने पाया कि बाघ अपने शिकार के पास लौट आया था, संभवतः रुस्तम के नीचे उतरने के बाद सुबह तड़के। शायद वह देख रहा था और उसे पता चल गया था कि रुस्तम ऊपर है। बाद में जब आसपास कोई नहीं था, तो वह देर रात का भोजन करने वापस आया था। बैल का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खा चुका था।

रुस्तम बेहद निराश था, लेकिन उसने फिर से उठने का पक्का इरादा कर लिया था। तभी मुझे एक विचार आया। समझदारी से, या नासमझी से, मैंने वर्गीस को एक

आदमी के साथ हमारा चौथा चारा लाने भेजा, जिसे मुडियानूर गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बाँधा गया था। उस जानवर को लाने में लगभग दो घंटे लगे, और हमने उसे पुराने शिकार के अवशेषों से लगभग तीस कदम दूर बाँध दिया। ऐसा करने के पीछे मेरी यह उम्मीद थी कि अगर बाघ पुराने शिकार पर लौटने में हिचकिचाए, जो दो दिन से मरा पड़ा था और बुरी तरह बदबू मार रहा था, तो शायद वह उस पर हमला करने के लिए प्रेरित हो जाए। रुस्तम ने इस योजना का विरोध किया, क्योंकि उसे लगा कि बाघ एक दिन पहले मरे हुए बैल को जहाँ छोड़ा था, वहाँ एक ज़िंदा बैल को देखकर डर जाएगा। लेकिन मुझे लगा कि जोखिम लेना उचित होगा।

शाम लगभग 5:30 बजे, हम तीनों, रुस्तम, सेड्रिक और मैं, मचान में घुस गए। हमने पहले से ही छिपने के लिए ताज़ी हरी पत्तियाँ बिछा रखी थीं, क्योंकि पिछली रात की पत्तियाँ गर्मी से मुरझा गई थीं। रुस्तम को पहली तस्वीर लेनी थी, और मैं उसके बाद। सेड्रिक ने एक और रोमांचक तस्वीर लेने की उम्मीद में अपने प्यारे कैमरे में फ्लैश बल्ब और रिफ्लेक्टर लगा रखा था।

शाम ढलते ही पास के तालाब से तरह-तरह के अनगिनत कीड़े-मकोड़े निकलकर हमारी जिंदगी को मुश्किल बना देते थे। लेकिन हम जवान थे और बेहद उत्सुक थे। रुस्तम लंबे समय से बाघ का शिकार करने के मौके का इंतजार कर रहा था।

आठ बज गए, फिर नौ और दस, लेकिन थोड़ी देर बाद हमें बाघ की कराहने की आवाज सुनाई दी, जो तालाब से लगभग एक मील दूर पहाड़ी से नीचे उतर रहा था। लगभग पैंतालीस मिनट बीत गए, तभी हमारे बाईं ओर घने बांसों के बीच से एक ककार ने कर्कश आवाज निकाली। यह स्पष्ट था कि बाघ आ रहा था, और हम सभी तीव्र उत्साह से भर गए थे।

हम इंतज़ार करते रहे। यहाँ पिछली रात मेरे मचान की तुलना में बहुत ज़्यादा अँधेरा था, क्योंकि यहाँ बाँस थे। मैंने रुस्तम से फुसफुसाकर कहा कि वह तब तक इंतज़ार करे जब तक बाघ या तो ज़िंदा बैल पर हमला न कर दे या अपने पुराने शिकार के पास वापस न आ जाए, तब मैं टॉर्च से निशाना लगाने में उसकी मदद करूँगा। सौभाग्य से, ज़िंदा बैल सफ़ेद रंग का था, और हम उसे धुंधला-सा देख पा रहे थे, और उसकी गुर्राहट और छटपटाहट सुन पा रहे थे, क्योंकि वह अपने पैर को रस्सी से छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। यह स्पष्ट था कि उस जानवर को आने वाले खतरे और अपने अंजाम का कुछ आभास ज़रूर हो गया होगा।

दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। फिर एक गहरी "वूफ़" की आवाज़ आई और बाघ ज़िंदा बैल पर झपटा। रुस्तम दबी हुई उत्तेजना से कांप रहा था, लेकिन मैंने उसे शांत रखने के लिए उसका कंधा कसकर पकड़ लिया। उसके बाद बैल के गले से एक कर्कश गड़गड़ाहट की आवाज़ आई और उसकी गर्दन की हड्डियाँ चटक गईं और शव ज़मीन पर गिर पड़ा।

'मैंने रुस्तम के कंधे पर अपनी पकड़ बनाए रखी। लगभग दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, फिर बाघ ने बैल के पिछले हिस्से को काटना शुरू कर दिया, ताकि उसके अंदरूनी अंगों को फाड़कर बाहर निकाल सके।'

फिर भी हम इंतजार करते रहे, और तभी हमें झिल्ली फटने की खरोंच जैसी आवाज सुनाई दी, जब बाघ ने बैल की आंतें बाहर निकालना शुरू किया। मैंने अनुमान लगाया कि अब तक उसका पूरा ध्यान अपने शिकार पर केंद्रित हो गया होगा; इसलिए मैंने धीरे से रुस्तम के कंधे से अपनी पकड़ ढीली की और उसे गोली चलाने के लिए तैयार होने का इशारा किया।

'उसने अपनी राइफल उठाई, जैसे मैंने उठाई। लगभग दस सेकंड बाद मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया। जैसे ही रोशनी निकली, बाघ, जो अपने शिकार पर हमारी ओर करवट लेकर लेटा हुआ था, मुड़ा और ऊपर देखा। उसी क्षण रुस्तम ने भी अपनी टॉर्च जला दी, और दोनों किरणों में बाघ साफ दिखाई दे रहा था, जैसे वह हमें घूर रहा हो। सेकंड बीतते गए, और मैं सोचने लगा कि क्या रुस्तम गोली चलाने वाला है। तभी, जैसे ही मैं ट्रिगर दबाने वाला था, दो बैरल वाली .405/400 राइफल की दहाड़ ने रात को चीर दिया।'

रुस्तम ने दोनों बैरल एक साथ चलाए थे, और उस भारी हथियार का झटका काफी जोरदार रहा होगा; मैंने महसूस किया कि वह बुरी तरह पीछे की ओर लड़खड़ा गया। फिर भी, दोनों गोलियां निशाने पर लगीं और कंधे के ठीक ऊपर बाघ की गर्दन में जा लगीं। जानवर बुरी तरह कांप उठा और फिर आगे की ओर गिर गया, मानो सो रहा हो। पूंछ कुछ बार फड़फड़ाई और फिर स्थिर हो गई। रुस्तम ने अपना पहला बाघ मार गिराया था।

'हमने आधे घंटे और इंतज़ार किया, लेकिन जानवर में कोई हलचल नहीं हुई; इसलिए हम मचान से नीचे उतर गए, टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। लेकिन वह ज़रा भी नहीं हिला। यह स्पष्ट था कि बाघ मर चुका था। जाँच करने पर रुस्तम यह

देखकर बहुत खुश हुआ कि उसने एक शानदार नर बाघ को मार गिराया था, जिसकी लंबाई नाक से पूंछ तक 9 फुट 4 इंच थी।'

और इस तरह हम बेहद खुश होकर बैंगलोर लौट आए। रुस्तम को उसका बाघ मिल गया था, और मैं श्री हेलस्टोन के जानवरों को परेशान कर रहे पैंथर को मारने में कामयाब हो गया था। लेकिन हम तीनों में से मुझे लगता है कि सेड्रिक बोन सबसे ज्यादा खुश था क्योंकि उसने एक बेहद भाग्यशाली तस्वीर खींची थी और एक भयानक हमले से बाल-बाल बच गया था, अगर पैंथर ने मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला किया होता तो उसकी जान भी जा सकती थी।

'मैंने पिताजी को पूरी कहानी सुनाई, और उन्होंने हम दोनों को बधाई दी। लेकिन उस समय उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि सेड्रिक पैंथर और मेरी राइफल की गोली से बाल-बाल कैसे बचा था।'

अगले दिन, जब उन्होंने तस्वीर देखी, तो उन्होंने बहुत सी अपमानजनक बातें कहना शुरू कर दिया। उस समय मुझे लगा कि वे कुछ ज्यादा ही कठोर और अनुचित थे; लेकिन अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूं, तो मुझे लगता है कि वह बूढ़ा आदमी सही था।

'मैंने दो बड़ी गलतियाँ की थीं। पहली, मैंने झाड़ियों में ठीक से नहीं देखा था और पैंथर को देखे बिना ही उसके पास से गुजर गया था। दूसरी, उत्तेजना में मैंने सीधे अपनी गोली की दिशा में लगभग बीस कदम की दूरी पर खड़े एक इंसान पर गोली चला दी थी। कहते हैं कि किस्मत नौसिखिए का साथ देती है, और इस मामले में भी ऐसा ही हुआ।'

आठ

राजनगर का हमलावर

यह कहानी सुनाते समय (नवंबर 1995), वह खूंखार जानवर अभी भी जीवित है, और उसे पकड़ने के मेरे सभी प्रयासों को विफल कर चुका है। न केवल मेरे, बल्कि दो साल से अधिक समय तक कई अन्य शिकारियों के प्रयासों को भी।

यह हमलावर बाघ अपने आप में एक अनोखा बाघ है, क्योंकि इसकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग हैं और यह ऐसे इलाकों में रहता है जहाँ कई सालों से किसी बाघ के होने का कोई आभास नहीं है। इसकी आदतें बाघों से अलग इसलिए हैं क्योंकि इसके पहले के रिकॉर्ड में केवल मनुष्यों को अपने अगले पैरों से खरोंचकर घायल करने तक ही सीमित हैं। इस बाघ द्वारा किए गए ऐसे हमलों के तैंतीस मामले दर्ज हैं, जिनमें इसके शिकार मुख्य रूप से चरवाहे थे। किसी भी मामले में इसने अपने शिकार को न तो काटा और न ही मारा। हर मामले में इसने आदमी के सिर से लेकर चेहरे और गर्दन तक, और छाती और पीठ पर बुरी तरह खरोंचें मारीं।

इस व्यवहार को देखकर पहले तो मुझे लगा कि जिसे बाघ कहा जा रहा था, वह असल में एक 'तेंदुआ' ही था। लेकिन बाद में जब मैंने उसके कई पीड़ितों से पूछताछ की, तो उन सभी ने पुष्टि की कि हमला करने वाला बाघ ही था, न कि कोई तेंदुआ।

मुझे यह भी लगा कि जानवर के जबड़े, मुंह या चेहरे के किसी हिस्से में चोट लगी होगी, जिससे वह अपने शिकार को काटकर पूरी तरह से हमला नहीं कर पाया होगा। चरवाहों ने इस सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज कर दिया और बताया कि दो साल के दौरान उसी बाघ ने उनके दो सौ से अधिक मवेशियों को मारकर खा लिया था। उन्होंने घटना के बाद कई शिकारों की जांच की थी और किसी भी मामले में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे यह पता चले कि बाघ अपने दांतों का ठीक से इस्तेमाल करने में असमर्थ था। उसने न केवल बाघों की तरह गर्दन तोड़कर अपने शिकार को मारा था, बल्कि प्रत्येक जानवर को बहुत ही सामान्य और पूरी तरह से खाया था।

इस जानवर के बारे में अगली अजीब बात यह थी कि उसने अपने शिकार की शुरुआत जंगल के एक ऐसे हिस्से से की थी जो बाघों के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त था, जिसमें छोटी झाड़ियाँ और कांटेदार वनस्पतियाँ थीं: पथरीली, लहरदार पहाड़ियाँ जिनके बीच-बीच में पत्थरों से भरी हुई खड़ी ढलान वाली छोटी नदियाँ बहती थीं,

जिनके किनारों पर लंबी घास और कहीं-कहीं बांस के झुंड थे। यह ज्ञात था कि इस क्षेत्र में अक्सर पैंथर घूमते थे, और उन्हें यहाँ से गुजरने वाली मुख्य सड़क पर भी देखा गया था; लेकिन बाघ के बारे में मौजूदा पीढ़ी को कोई जानकारी नहीं थी।

यह वन क्षेत्र उत्तरी कोयंबटूर जिले में डिंबम ढलान के ठीक दक्षिण में स्थित है। डिंबम से 2,500 फीट से अधिक की तीव्र ढलान आपको इस शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र में ले जाती है, जहाँ जगह-जगह ताड़ के पेड़ दिखाई देते हैं और मुख्य रूप से कांटेदार झाड़ियाँ और लैंटाना झाड़ियाँ पाई जाती हैं। अन्य वन्यजीव भी दुर्लभ हैं, जिनमें कुछ मोर और कभी-कभार दिखने वाली जंगली भेड़ें ही शामिल हैं। यह क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा है, उत्तर से दक्षिण तक लगभग पाँच मील और पूर्व से पश्चिम तक लगभग तीस मील लंबा है, जहाँ यह भवानी नदी से मिलता है, जो अंततः कावेरी नदी में मिल जाती है।

हमें बताया गया है कि यह बाघ मूल रूप से नीलगिरी के जंगलों से आया था, भटकते हुए मोयार नदी तक पहुंचा और फिर इस क्षेत्र में बस गया। इस इलाके के प्रति इसका लगाव आसानी से समझा जा सकता है, क्योंकि यह क्षेत्र छोटे-छोटे पशुपालन के बाड़ों से भरा हुआ है और सैकड़ों मवेशियों को चराने के लिए पूरी तरह से समर्पित है। इसलिए, प्राकृतिक जंगली जानवरों की कमी की भरपाई पालतू जानवरों की बड़ी संख्या से हो जाती है, जो किसी भी बाघ के लिए कहीं अधिक आसान शिकार होते हैं।

कहा जाता है कि शुरुआती दौर में बाघ सामान्य रूप से शिकार करता था, अपने शिकार को सामान्य रूप से खाता था और जब क्रोधित चरवाहे उसे उसके शिकार से भगा देते थे, तो वह सामान्य रूप से भाग जाता था। लेकिन, जैसा कि पुरानी कहावत है, 'किसी भी चीज़ की अति बुरी होती है'! या कम से कम, इस बाघ को ऐसा ही लगता था। चरवाहों ने स्पष्ट रूप से उसके लिए बहुत अधिक परेशानी खड़ी कर दी थी, क्योंकि वे बार-बार उसे उसके शिकार से भगाते थे।

पहला हमला, जैसा कि आमतौर पर होता है, एक चरवाहे लड़के पर हुआ जिसने दुस्साहस करते हुए बाघ पर पत्थर फेंका था, ठीक उसी समय जब बाघ एक अच्छी-खासी मोटी गाय को मारकर घसीट रहा था। बताया जाता है कि पत्थर बाघ के पेट में लगा; बाघ ने गाय को छोड़ दिया और लड़के पर हमला कर दिया, जिसके चेहरे और छाती पर उसने बुरी तरह खरोंचें मारीं। फिर वह वापस गया और गाय को ले आया,

जिसे उसने बाद में शांति से खाया।

बाद में कई बार चरवाहों और लड़कों ने उसे उन जानवरों से दूर भगाने की कोशिश की जिन्हें उसने मार डाला था, या ले जा रहा था, या खा रहा था। हर बार बाघ ने घुसपैठिए पर हमला किया और उसे खरोंच दिया।

स्वाभाविक रूप से, जैसे-जैसे ऐसे हमले बढ़ते गए, वह और भी अकेला होता चला गया। वह स्पष्ट रूप से एक बहुत ही बुद्धिमान बाघ था और इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि घुसपैठियों को मारना नहीं, बल्कि उन्हें खरोंचना उसके लिए अधिक लाभदायक था; क्योंकि इसके बाद वे उसे बिना किसी बाधा के अपने शिकार को खाने के लिए छोड़ देते थे।

और इस तरह समय बीतता चला गया। लगभग दो साल बीत चुके थे और उसके खरोंचों के शिकार लोगों की संख्या बढ़कर तैंतीस हो गई। इनमें से ग्यारह लोगों की मौत बाघ के पंजों में मौजूद सड़े हुए पदार्थ से उत्पन्न रक्त विषाक्तता के कारण हुई। लेकिन इन मौतों को निश्चित रूप से बाघ द्वारा जानबूझकर की गई मौत नहीं माना जा सकता। ये तो हमले का केवल एक अप्रत्यक्ष परिणाम थीं।

और फिर, जुलाई 1955 में, पहला व्यक्ति वापस नहीं लौटा। यह ज्ञात था कि उस पर बाघ ने हमला किया था, क्योंकि उसकी मदद के लिए चीखों ने पास खड़े एक अन्य चरवाहे को यह जानकारी दी थी। यह व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भाग गया था। पहले के मामलों में, पीड़ित आमतौर पर लड़खड़ाते हुए मुख्य सड़क या मवेशी गांव तक पहुँचने में कामयाब हो जाते थे, जो भी पास होता था। लेकिन यह पीड़ित वापस नहीं लौटा। लगभग दो घंटे बाद एक खोज दल उसकी तलाश में निकला। वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ हमला हुआ था। इस बार उन्हें मरी हुई गाय तो मिली, लेकिन चरवाहा नहीं मिला। दल में आगे खोज करने का साहस नहीं था, और चरवाहा फिर कभी नहीं मिला।

लगभग आधा दर्जन और हमले हुए, जिनमें से तीन में पीड़ित हमेशा की तरह बुरी तरह से खरोंचे हुए मिले। लेकिन बाकी तीन नहीं मिले। और न ही उन्हें फिर कभी देखा गया। इसलिए, जिस समय मेरी कहानी वास्तव में शुरू होती है, उस समय आधिकारिक आंकड़ा चार हत्याओं और छत्तीस घायलों का था; हर मामले में घायल केवल खरोंचों से ही हुए थे। क्या बाघ ने वास्तव में उन चार आदमियों को खाया था जिन्हें उसने संभवतः मार डाला था, या केवल उन्हें जंगल के किसी दूरदराज के हिस्से

में घसीट कर ले गया था, जहां बाद में उन्हें सियार, लकड़बग्घे और गिद्धों ने खा लिया था, यह जानने का कोई साधन नहीं था।

मैंने अखबारों में कभी-कभार इस जानवर की हरकतों के बारे में पढ़ा था, लेकिन वन अधिकारियों से आधिकारिक रिपोर्ट मिलने तक मुझे कोई विस्तृत जानकारी नहीं थी। इसी समय मेरे पास कुछ दिनों की छुट्टी भी बची थी और मैंने सोचा कि इस बाघ को पकड़ने की कोशिश में इसका सदुपयोग करना सबसे अच्छा रहेगा।

मेरे पास मौजूद वन मानचित्र और प्राप्त जानकारी के आधार पर, यह संकेत मिला कि मेरा मुख्यालय बनाने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान राजनगर नामक छोटा सा गाँव होगा, जहाँ एक छोटा सा वनगृह था जो मुझे और मेरे सामान को आश्रय प्रदान करेगा। यह स्थान, डिंबम होते हुए, बैंगलोर से ठीक 147 मील दूर है, और सड़क अच्छी होने के कारण, मैं अपनी स्टडबेकर कार से लगभग चार घंटे में, शाम लगभग चार बजे वहाँ पहुँच गया।

मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे कितना रोमांचक समय आने वाला है। मैं राजनगर से सिर्फ दो मील दूर था और सूखे झाड़ीदार इलाके से होते हुए सड़क पर गाड़ी चला रहा था, तभी मैंने अपने सामने तीन आदमियों को देखा, जिनमें से एक को बाकी दो सहारा दे रहे थे। जैसे ही मैं उनके पास पहुंचा, मैंने देखा कि बीच वाला आदमी खून से लथपथ था। कारण जानने के लिए रुकने पर मुझे पता चला कि कुछ ही मिनट पहले उस पर एक अनजान बाघ ने हमला किया था और उसे बुरी तरह खरोंच दिया था। और पूछताछ करने पर पता चला कि बाघ ने छुपकर उस पर हमला किया था। पीड़ित ने बताया कि इससे पहले कि उसे पता चलता कि वह खतरे में है, उसने एक धीमी सी गुर्राहट सुनी; फिर बाघ उसके बगल में प्रकट हुआ, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसके चेहरे और छाती पर बुरी तरह खरोंच दिया। वह बाघ के ऊपर गिर पड़ा और मदद के लिए चिल्लाया। फिर बाघ उसे छोड़कर आसपास घूम रहे मवेशियों की ओर दौड़ पड़ा। जब वह खून से लथपथ जमीन पर पड़ा था, तब उसने देखा कि बाघ ने एक अधेड़ भूरे बैल को मार डाला और फिर उसे घसीटकर ले गया। चूंकि कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आया, इसलिए वह किसी तरह उठ खड़ा हुआ और मदद के लिए चिल्लाते हुए सड़क की ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ा। उसके दोनों साथी थोड़ी देर बाद उसके पास आ पहुंचे।

मैंने इस अवसर को ईश्वर का वरदान समझा और तुरंत कार्रवाई करने का निर्णय

लिया। मैंने उससे अपने साथियों को हमले की सही जगह बताने को कहा। उसने मुझे जगह बता दी, और फिर मैंने एक व्यक्ति को अपने साथ घटनास्थल पर चलने के लिए कहा, जबकि दूसरा पीड़ित को लेकर राजनगर चला गया।

अब उन दोनों के बीच तीखी बहस छिड़ गई, दोनों ने गांव में ज़रूरी काम होने का बहाना बनाया। यह साफ़ था कि दोनों में से कोई भी बाघ से सामना करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता था, क्योंकि बाघ अपनी क्रूरता पहले ही दिखा चुका था, जबकि मैं उनके लिए बिल्कुल अजनबी था। उन्हें इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि बाघ के आने पर मैं भाग नहीं जाऊंगा और अपने साथी को उसके चंगुल में नहीं छोड़ दूंगा।

बहुत मिन्नतें करने, दबाव डालने और यहां तक कि धमकियों के बाद, आखिरकार मैंने एक आदमी को बहुत अनिच्छा से मेरे साथ आने के लिए राजी कर लिया, जबकि दूसरा घायल आदमी के साथ आगे बढ़ गया।

फिर मैं और मेरा साथी सड़क छोड़कर जंगल में चले गए। पूरे रास्ते हमें हाल ही में घायल हुए उस आदमी के खून के छींटे दिखाई दिए। चट्टानी इलाके को पार करते समय ये छींटे बहुत अधिक थे, जिससे मुझे एहसास हुआ कि मेरी जल्दबाजी में हुई बातचीत के दौरान मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक गंभीर रूप से वह घायल हुआ था। मुझे लगने लगा कि मुझे उसे अपनी कार में सत्यमंगलम ले जाना चाहिए था, जहाँ अस्पताल था, बजाय इसके कि उस बेचारे को जैसे-तैसे वहाँ पहुँचने के लिए छोड़ दूं। हालाँकि, मेरी इस लापरवाही के बावजूद, मेरे पास उस बाघ से आमने-सामने मिलने और हिसाब बराबर करने का एक अनूठा अवसर था।

थोड़ी देर बाद हम उस जगह पर पहुँचे जहाँ बाघ ने उस आदमी पर हमला किया था। पगडंडी पर पड़ी रेत खुद ही कहानी बयां कर रही थी। हम उस जगह को खोजने लगे जहाँ बाघ ने भूरे बैल को मारा था, और जल्द ही वह जगह लगभग तीस गज दूर मिल गई। मेरा साथी अब आगे जाने से मना कर रहा था, और मैं भी नहीं चाहता था कि वह जाए, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से बहुत डरा हुआ था और आगे जाना उसके लिए मददगार से कहीं ज़्यादा बोझ होता। इसलिए मैंने उसे घबराया हुआ वहीं छोड़ दिया और बाघ द्वारा बनाए गए घसीटने के निशान का पीछा करने लगा। बाघ उस भूरे बैल को घसीटते हुए नीचे की ओर उस खाई की तरफ ले गया था जो उस छोटी पहाड़ी और एक चौथाई मील दूर स्थित एक और ऊँची पहाड़ी के बीच थी।

दुर्भाग्य से, मैंने इतनी जल्दी कार्रवाई की उम्मीद नहीं की थी, और शिकार के लिए मैं जिन रबर के तले वाले बूटों को पसंद करता था, उनके बजाय मैंने साधारण चमड़े के जूते पहने हुए थे। लाख कोशिश करने के बावजूद, ये जूते कठोर ज़मीन और बिखरे हुए पथरीले पत्थरों पर आवाज़ कर रहे थे। फिर भी, मैं जितना हो सके चुपचाप चलता रहा, जब तक कि मैं नाले के पास नहीं पहुँच गया। फिर मैं रुका और चारों ओर देखा। यहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं, और जहाँ नाला वास्तव में घुमावदार था, वहाँ और भी घनी हो गई थीं। मेरी नज़र सामने वाली छोटी पहाड़ी की ढलानों पर पड़ी, जो काफ़ी खुली हुई थीं। बाघ या बैल का कोई निशान दिखाई नहीं दिया, और यह स्पष्ट था कि उसने उसे नाले में कहीं छिपा रखा होगा, और संभवतः इस समय उसे खा रहा होगा। अगर वह वास्तव में उसे नहीं खा रहा था, तो वह निश्चित रूप से आसपास कहीं लेटा होगा।

मेरे जूतों ने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया था और वे उस नाले की ओर मेरी प्रगति में बाधक साबित हो सकते थे। अगर मैं उन्हें उतारकर मोजे पहने हुए आगे बढ़ने की कोशिश करता, तो लगभग निश्चित रूप से किसी कांटे पर पैर पड़ जाता, और चारों ओर बिखरे नुकीले पत्थरों की तो बात ही छोड़िए। उसी समय, मुझे एहसास हुआ कि यह अवसर इतना अच्छा था कि इसे गंवाना नहीं चाहिए था, और इसे हर हाल में भुनाना चाहिए था। यह हज़ारों में एक मौका था, जो शायद मुझे दोबारा कभी न मिले। शाम के ठीक 5 बज रहे थे और सूर्यास्त में डेढ़ घंटा बाकी था।

जब मैं हालात पर विचार कर रहा था, तभी बाघ ने पहला वार किया। उसने मुझे साफ़-साफ़ सुन लिया था; शायद उसने मुझे देख भी लिया था। खैर, एक महान सेनापति की तरह उसने बगल से हमला करने का फैसला किया। मुझे ज़रा भी शक नहीं हुआ, वह उसी ढलान पर चढ़ गया था जहाँ से मैं नीचे आ रहा था, लेकिन थोड़े अलग कोण से, जिससे वह उस जगह के ऊपर और पीछे आ गया जहाँ मैं सोच रहा था। फिर वह पेट के बल रेंगता हुआ मेरी तरफ आया और मुझसे मुश्किल से दस फीट दूर एक बड़ी झाड़ी के पीछे छिप गया, और मुझे इसका बिल्कुल भी पता नहीं चला। इस मामले में, आने वाले खतरे को भांपने की मेरी छठी इंद्री बिल्कुल नाकाम रही। मैंने नाले की तरफ बढ़ने का फैसला ही किया था कि मेरे पीछे एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और बाघ उछल पड़ा; मैं घूमा और एकदम करीब से गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया।

शायद धमाके की आवाज़, शायद किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने की अजीब स्थिति जो स्पष्ट रूप से चरवाहा नहीं था, या शायद मेरे पहने हुए चमकीले लाल और नीले रंग के चेक वाले कोट ने उसे डरा दिया। क्योंकि ज़ोर-ज़ोर से भौंकते हुए वह झाड़ियों में और नाले की ओर भागा। मैं भी जितनी तेज़ी से हो सकता था, उसके पीछे भागा और नाले के तल पर पहुँच गया, जहाँ मैं लगभग भूरे बैल पर गिर पड़ा। जाँच से पता चला कि बाघ ने मेरे आने की आहट या आभास होने से पहले ही अपना भोजन शुरू कर दिया था और हमले के लिए खुद ही आगे बढ़ गया था।

आस-पास कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए मैं घनी झाड़ी के नीचे अंधेरा होने तक बैठा रहा, इस उम्मीद में कि शायद बाघ दोबारा दिखाई दे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, और 6:15 बजे मैं सावधानी से उसी रास्ते से वापस लौट आया। उस जगह पहुँचकर जहाँ मैंने अपने साथ आए चरवाहे को छोड़ा था, मैंने उसे वहाँ नहीं पाया और यह निष्कर्ष निकाला कि वह घर चला गया होगा। इसलिए मैं उस सड़क पर चला गया जहाँ मेरी स्टुडेबेकर कार खड़ी थी, और थोड़ी देर बाद राजनगर पहुँच गया।

यहां काफी भीड़ जमा थी, और उनमें से एक वन रक्षक से मुझे पता चला कि घायल चरवाहा अपनी पत्नी और भाई के साथ सत्यमंगलम अस्पताल के लिए रवाना हो चुका था। मेरे साथ आया चरवाहा, जिसे मैंने बाघ के हमले वाली जगह पर छोड़कर अकेले ही घसीटने के निशान का पीछा किया था, वापस नहीं लौटा था।

मुझे पता था कि वह उस जगह पर नहीं था जहाँ मैंने उसे छोड़ा था, और यह भी कि मेरे जाने के बाद बाघ भाग गया था। चरवाहा कहाँ चला गया? हम सभी समझ गए थे कि वह जंगल में या सड़क पर, उस बाघ के आतंक से घिरे इलाके में नहीं रुकेगा। उसका क्या हुआ होगा? मैं इस सवाल पर सोच रहा था, जबकि उसकी पत्नी और परिवार, जो भीड़ में मौजूद थे और मेरी बातें सुन चुके थे, रोने-बिलखने लगे।

अब काफी अंधेरा हो चुका था, और लापता आदमी को खोजना नामुमकिन था, क्योंकि अगर बाघ उसे ले गया होता तो उसके कोई निशान नहीं मिलते। फिर भी, मैंने वन रक्षक को अपने साथ चलने के लिए कहा और वापस उसी जगह पर गाड़ी चलाकर गया जहाँ मैंने पहले गाड़ी छोड़ी थी। वहाँ हम थोड़ी देर रुके और मैंने वन रक्षक को उस आदमी को नाम से पुकारने का निर्देश दिया। इससे कोई नतीजा नहीं निकला। हम सड़क पर एक मील और आगे गए और फिर गाँव लौट आए। अब मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि पिछली शाम का मेरा साथी बाघ ले गया था। जाहिर है, जब

मैं एक घंटा नाले में बैठकर बाघ के भूरे बैल के शव के पास लौटने का इंतजार कर रहा था, तब बाघ ने खुद ही कुछ शिकार किया और उस बेचारे चरवाहे को उठा ले गया।

उस रात हमें ज़्यादा नींद नहीं आई, क्योंकि जंगल में बने धर्मशाला के दरवाज़े पर बैठे उस आदमी के परिवार के रोने-धोने की आवाज़ें लगातार सुनाई दे रही थीं। आँसुओं के बीच वे सब मुझे याद दिला रहे थे कि उसकी मौत के लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूँ। यह बात मेरे अंतरात्मा पर बहुत गहरा असर डाल रही थी, क्योंकि अगर मैंने उस बेचारे को ज़बरदस्ती अपने साथ न लाया होता, तो आज वो ज़िंदा होता।

भोर होते ही मैं उस जगह की ओर वापस चल पड़ा जहाँ मैंने उसे छोड़ा था। वहाँ पहुँचकर मैंने संघर्ष के किसी भी निशान या बाघ के हमले के अन्य निशानों की तलाश शुरू की। लेकिन ज़मीन पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

अपनी खोज के दौरान मैं चारों ओर बड़े-बड़े घेरे बनाता चला गया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं मिला। उसका क्या हुआ, यह एक रहस्य था। मुझे पता था कि पिछली शाम जब मैं बाघ का पीछा कर रहा था, तब वह मेरे पीछे नहीं आया था। ज़्यादा संभावना यही थी कि अकेले खड़े रहने के डर से वह सड़क की ओर वापस चलने लगा हो। इसी अनुमान पर चलते हुए, मैं अब पीछे मुड़ा और धीरे-धीरे अपने कदमों के निशान पर चलने लगा, चारों ओर उसके किसी निशान की तलाश करने लगा।

जहां मैंने उसे छोड़ा था, उससे लगभग तीन सौ गज की दूरी पर मुझे पहला सबूत मिला - एक अजीब चमड़े की चप्पल, और उससे थोड़ी ही दूर पर उसकी दूसरी चप्पल। इस जगह पर सूखी घास फैली हुई थी, इसलिए कोई पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे। लेकिन चप्पलों की स्थिति से मुझे स्पष्ट हो गया कि उसने उन्हें उतार फेंका था, जाहिर तौर पर तेजी से भागने के लिए। चलते हुए चारों ओर खोजते हुए, मैंने अपने बाईं ओर एक झाड़ी के नीचे हवा में कुछ सफेद फड़फड़ाते हुए देखा। यह उस आदमी की धोती थी, जिसे भारत में लंगोटी कहते हैं। घास पर और झाड़ियों पर खून के छोटे-छोटे छींटे थे, और करीब से देखने पर पता चला कि बाघ झाड़ियों के बीच से होकर अपने शिकार तक कैसे पहुंचा था। यहां से बाघ उस आदमी को सड़क के लगभग समानांतर उसी नाले की ओर घसीटता हुआ ले गया, जहां मैं पिछली शाम बैठा था, लेकिन उस जगह से काफी आगे जहां उसने भूरे बैल को छिपाया था।

लगभग एक चौथाई मील चलने के बाद मैं अंततः इस छोटी नदी के पथरीले तल

पर पहुँचा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और पूरी तरह सन्नाटा था। मुझे पता था कि बाघ ने अवशेष कहीं आस-पास ही छिपाए होंगे।

चुपचाप देखते हुए, लगभग सौ गज नीचे की ओर एक जगह से दो मैनाओं ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। वे एक कंटीले बबूल के पेड़ की चोटी पर बैठी थीं, जहाँ वे उत्साह से चहचहा रही थीं और बार-बार नीचे की ओर देख रही थीं। जंगल के संकेत उन लोगों के लिए बहुत स्पष्ट होते हैं जो उन्हें समझ सकते हैं। मैनाओं ने या तो शव को ढूंढ लिया था, या वे बाघ को देख रही थीं, जो शायद मुझे देख रहा था।

नाले के बीचोंबीच चलते हुए, मैं दबे पांव आगे बढ़ने लगा, इस बार मैंने जो रबर के जूते पहने थे, उनसे चट्टानों पर कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। बबूल के पेड़ तक आधे रास्ते में ही, मैनाओं ने मुझे देखा, उनकी चहचहाहट बंद हुई और वे उड़ गईं।

मैंने उस जगह को चिह्नित कर लिया था जहाँ वे बैठे थे, और सावधानी से आगे बढ़ा। बबूल के पेड़ के ठीक नीचे, नदी के किनारे से एक छोटी, लंबी, काली चट्टान निकली हुई थी, और इस चट्टान के पीछे लापता मुनियाप्पा के आधे खाए हुए अवशेष पड़े थे। उस जगह की नरम रेत पर बाघ के पदचिह्न भी दिखाई दिए, और उनकी सरसरी जाँच से पता चला कि वह जानवर एक नर बाघ था, जिसका आकार और बनावट बहुत बड़ी नहीं थी।

एक बार फिर, आस-पास कोई ऐसा पेड़ नहीं था जिस पर मैं बैठ सकूँ, सिवाय उस बबूल के पेड़ के, जो काँटों से भरा होने के कारण बैठने लायक नहीं था। संयोगवश, वहाँ कोई बड़ी झाड़ियाँ या बाँस के झुंड भी नहीं थे जिनके नीचे मैं शरण ले सकूँ। हर तरह से, वह जगह बैठने के लिए सबसे अनुपयुक्त, बल्कि असंभव ही थी, जितनी मैंने कभी देखी थी। फिर भी, मुझे कुछ तो करना ही था, क्योंकि अब तक मेरे मन में कोई संदेह नहीं रह गया था कि मैं, कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से, और संभवतः प्रत्यक्ष रूप से, बेचारे मुनियाप्पा की मृत्यु का कारण था।

मुझे पता था कि बाघ दोपहर से पहले अपने भोजन के लिए वापस नहीं आएगा। अगर मैं शव को ऐसे ही छोड़ देता, तो गिद्ध उसे कुछ ही घंटों में देख लेते और सारा मांस नोच लेते। इसलिए मैंने अपना खाकी कोट उतारकर शव पर फैला दिया और आसपास पड़े छोटे-छोटे पत्थरों से उसे थोड़ा दबा दिया। फिर मैं गाड़ी में वापस गया और राजनगर लौट आया।

यहाँ मुझे बुरी खबर देनी पड़ी, जिससे न केवल फिर से रोना-धोना शुरू हो गया,

बल्कि शोक संतप्त पत्नी ने अपने पति के शव को तुरंत अंतिम संस्कार के लिए वापस लाने की मांग भी की। उसे मनाने में हमें पूरा एक घंटा लग गया कि वह मुझे उस शाम शव के पास बैठकर बाघ की तस्वीर लेने का मौका दे, जो उसकी मनमानी में पूरी तरह से हाथ से निकल जाता। आखिरकार, उसने बड़ी अनिच्छा से सहमति दी।

नाश्ते के बाद, मैंने एक 'युद्ध परिषद' बुलाई, जिसमें गाँव का पटेल, वन रक्षक और मैं शामिल थे। मैंने उन्हें शव की स्थिति समझाई और बताया कि मैं दोपहर को वापस आऊँगा और बाघ के लौटने का इंतज़ार करते हुए शव के पास बैठ जाऊँगा। उन्हें यह विचार मूर्खतापूर्ण लगा और मैं भी उनसे पूरी तरह सहमत था। लेकिन चूंकि कोई बेहतर सुझाव नहीं दे सका, इसलिए मेरे पास इसे करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, अन्यथा शव को गाँव वापस लाना पड़ता और बाघ पर निशाना लगाने का मौका हाथ से निकल जाता।

दोपहर के कुछ ही समय बाद, मैं शव से कुछ ही गज की दूरी पर बैठा था, जिससे एक बेहद अप्रिय गंध आ रही थी। दरअसल, लाखों मक्खियाँ मेरे कोट पर बैठ चुकी थीं, और जैसे ही मैंने उसे उतारा, वे शव पर टूट पड़ीं।

मैंने अप्रिय स्थिति के लिए खुद को तैयार कर लिया था, अपनी नाक में रुई के छोटे-छोटे टुकड़े ठूंस लिए थे; लेकिन इन उपायों के बावजूद वह भयानक दुर्गंध मेरे अंदर तक घुस गई और कुछ समय बाद मुझे उल्टी जैसा महसूस होने लगा। गर्मी असहनीय थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय आसपास की झाड़ियों की शाखाओं से आती झींगुरों की चहचहाहट के।

तीन बज गए, फिर चार और फिर पाँच। साढ़े पाँच बजे एक मोर नदी के किनारे आकर बैठ गया। मैं वहाँ बिल्कुल स्थिर बैठा था, उसने मुझे देखा तक नहीं, जिससे यह साबित होता है कि जंगल में बिल्कुल शांत रहना कितना ज़रूरी है। वह नदी के किनारे ऊपर की ओर बढ़ा और जब वह दस फीट दूर था, तभी उसे अपने सामने दो अजीब चीज़ों का एहसास हुआ। वह तेज़ी से और भारी-भरकम तरीके से हवा में उठा, उड़ने से पहले उसने अपने पंखों को ज़ोर से फड़फड़ाया ताकि उसे गति मिल सके।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, उस समय मैं अत्यधिक उत्तेजना और उससे भी अधिक भय की स्थिति में था, और इसके अलावा, आधे खाए हुए आदमी से उठ रही भयानक दुर्गंध के कारण मुझे उल्टी आने वाली थी।

फिर पंद्रह मिनट तक पूर्ण सन्नाटा छाया रहा: एक ऐसा सन्नाटा जो सर्वव्यापी

था, जो हमें घेर लेता था, जो हर जगह मौजूद था, यहाँ तक कि हवा में भी। न तो जंगली झींगुर की हल्की सी आवाज़ थी, न ही किसी नन्हे पक्षी की चहचहाहट, और न ही ज़मीन पर गिरते सूखे पत्ते की हल्की सी सरसराहट। बस एक पूर्ण और परम शांति। सन्नाटा ऐसा ही महसूस होता है, जब कोई आदमखोर के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहा होता है।

हालांकि मैं बिल्कुल स्थिर बैठा था, मेरी आंखें सामने और दोनों ओर की झाड़ियों को बारीकी से देख रही थीं। मेरी सभी इंद्रियां पूरी तरह से सचेत थीं, लेकिन उन पर न तो कोई दृश्य और न ही कोई ध्वनि दर्ज हो रही थी।

नाले में थोड़ी दूर पर एक जंगली मुर्गे की मधुर बांग ने तनाव को कुछ हद तक कम कर दिया। छह बज गए, फिर छह बजकर पंद्रह मिनट हो गए। एक चिड़िया ने अपनी अनोखी चहचहाहट शुरू कर दी। मैं समझ गया कि अब मुझे जाने का समय आ गया है। थोड़ी देर में पूरी तरह अंधेरा हो जाएगा, और फिर खुले में आदमखोर के सामने बैठे रहना सचमुच आत्महत्या के समान होगा।

मैं लड़खड़ाते हुए उठा और वापस कार की ओर चला, जहाँ मैंने पहले से ही कुछ लोगों को बुलाया था ताकि वे दुर्भाग्यशाली मुनियाप्पा के अवशेष वापस ला सकें। जब मैंने उन्हें इकट्ठा किया तब तक काफी अंधेरा हो चुका था। लेकिन मुझे पता था कि मेरी टॉर्च की रोशनी और उनकी संख्या हमें बाघ के किसी भी हमले से बचा लेगी। हम वापस खाई में गए, जहाँ हमने उस अभागे चरवाहे के अवशेषों को एक पुराने कंबल में लपेटा, जिसे वे लोग इसी उद्देश्य से अपने साथ लाए थे। फिर, जब छोटा जुलूस राजनगर की ओर बढ़ रहा था, मैं अपनी कार से वापस सड़क पर चल पड़ा।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं फिर से उस छोटे नाले के पास मंडरा रहा था। बाघ उस जगह पर नहीं लौटा था जहाँ शव था, क्योंकि वहाँ कोई पदचिह्न नहीं थे। तब मैंने उस नाले के किनारे-किनारे उस जगह की ओर चलने का फैसला किया जहाँ दो दिन पहले भूरे बैल को छोड़ा गया था। मैं बहुत सावधानी से चल रहा था, क्योंकि नाले का किनारा कहीं-कहीं छह फुट से भी कम चौड़ा था और कहीं-कहीं पत्थरों का ढेर था या पूरी तरह से लैंटाना झाड़ियों से ढका हुआ था। भूरे बैल को उस जगह से आधे मील से भी ज़्यादा दूर छिपाया गया था जहाँ उस आदमी को खाया गया था। उसे एक झुकी हुई झाड़ी के नीचे अच्छी तरह से छिपाया गया था, जिसके बारे में मुझे पता था कि वह गिद्धों से सुरक्षित है। लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने पाया कि बाघ रात में लौट

आया था और उसे पूरी तरह से नष्ट कर चुका था। शायद उसने अपने शिकार में रुचि खो दी थी या हो सकता है कि उसने मुझे शाम को उसके पास बैठे हुए देखा हो और उसे शक हो गया हो। खैर, बात यह थी कि वहाँ कुछ भी नहीं बचा था और मुझे बाघ से मिलने के लिए दूसरे तरीके आज़माने होंगे।

उस दिन दोपहर तक और फिर शाम को भी मैं पहाड़ियों और घाटियों में, नदियों के किनारे-किनारे घूमता रहा। कई बार मुझे बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए, लेकिन मैंने उसे एक बार भी नहीं देखा, न ही आसपास उसकी उपस्थिति का कोई संकेत मिला।

मैंने इस तरह तीन दिन बिताए, लेकिन परिणाम पूरी तरह से नकारात्मक रहे। मैंने केवल एक सप्ताह की छुट्टी ली थी और बाघ का शिकार करने के लिए मेरे पास मुश्किल से चार दिन बचे थे।

अगली सुबह मैंने नई रणनीति अपनाई। इलाके के बीचोंबीच स्थित एक बड़ी पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर, मैंने बाघ की तरह पूरी ताकत से आवाज़ लगाई। हर दस मिनट में मैं यही आवाज़ दोहराता रहा, इस उम्मीद में कि कोई जवाब मिलेगा। दो घंटे बाद मैंने पास की एक पहाड़ी पर भी यही किया। कोई आवाज़ नहीं आई। शाम को भी मैंने यही तरीका अपनाया, लेकिन बाघ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि वह आस-पास कहीं नहीं था।

पाँचवें दिन चरवाहे अपने मवेशियों के साथ फिर निकले। आप, जो इसे पढ़ रहे हैं, शायद इसे उनकी ओर से एक बहुत ही साहसी कार्य मानें, और निस्संदेह यह था भी। लेकिन आपको यह भी समझना होगा कि मवेशी अपने भोजन के लिए पूरी तरह से चरागाह पर निर्भर थे। चरागाह न होने का मतलब भोजन न होना था, क्योंकि किसी भी मवेशी गाँव में चारे के भंडार की व्यवस्था नहीं की गई थी।

उस सुबह मैं चरवाहों के साथ उनके जानवरों के बीच घूमने लगा, और शाम को भी मैंने यही किया। लेकिन रात हो गई और बाघ का कोई अता-पता नहीं चला। छठी सुबह मैं बहुत निराश था, क्योंकि मुझे लगा कि जिस जानवर की मैं तलाश कर रहा था, वह कहीं दूर चला गया है और मुझे उसे पकड़ने का दूसरा मौका नहीं देगा। लेकिन मैं और कुछ नहीं कर सकता था, सिवाय इसके कि उस इलाके में चर रहे मवेशियों के अलग-अलग झुंडों के साथ मिल जाऊं।

उस सुबह मैंने कई मील की दूरी तय की और मुनियाप्पा की हत्या के स्थान से लगभग आठ मील दूर था, तभी दोपहर के आसपास पुरुषों का एक समूह झाड़ियों से

दौड़ता हुआ मेरे पास आया और मुझे बताया कि तीन मील दूर एक अन्य चरवाहे पर हमला हुआ है।

मैं उनके साथ जल्दी से उस जगह पहुँचा जहाँ वह आदमी लेटा हुआ था। मुझे एक बार फिर वही जाने-पहचाने निशान दिखाई दिए: चेहरे, छाती और बगल में गहरे खरोंच के निशान, लेकिन काटने का कोई निशान नहीं था। उस आदमी का बहुत खून बह चुका था और वह चलने में बहुत कमजोर था, इसलिए मैं जल्दी से अपनी कार में वापस गया और आदमियों को उसे सड़क तक ले जाने का निर्देश दिया। वहाँ से मैं उसे सत्यमंगलम ले गया, जहाँ मैंने उसे स्थानीय अस्पताल में बहुत बुरी हालत में छोड़ दिया। फिर मैं वापस सड़क पर उस जगह पर भागा जहाँ उसे ले जाया गया था, कार वहीं छोड़ दी और वापस जंगल में चला गया। उसके पीछे छोड़े गए खून के निशानों का पीछा करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और इसी निशान ने मुझे हमले की जगह तक पहुँचा दिया।

इस मामले में मुझे पता चला कि बाघ मवेशियों में से किसी को भी मारने में सफल नहीं हुआ था, जो भगदड़ मचाते हुए सड़क की ओर भाग गए थे। इसलिए बाघ की तलाश एक बार फिर निष्फल प्रयास प्रतीत हुई। मैं इधर-उधर भटकता रहा और बीच-बीच में बाघ की तरह आवाजें निकालता रहा, इस उम्मीद में कि वह मेरी ओर आकर्षित हो। कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली और इस तरह एक और दिन समाप्त हो गया।

उस रात मैंने सोचा कि झाड़ियों से होकर गुजरने वाली लगभग पाँच मील लंबी सड़क पर गाड़ी चलाकर, स्पॉटलाइट का इस्तेमाल करते हुए, बाघ की आँखों को देखने की कोशिश करूँ, अगर वह कहीं आस-पास से गुजरे। मैंने रात करीब 10 बजे इस योजना पर अमल करना शुरू किया, धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए, हर चक्कर के अंत में पंद्रह मिनट का ब्रेक लेते हुए। इस नीरस प्रक्रिया के छह घंटे बाद मैं बुरी तरह से नींद में था और पेट्रोल भी बहुत कम बचा था।

इस तरह मेरी छुट्टी का सातवां और आखिरी दिन शुरू हुआ। हाल ही में हुए हमले के बाद चरवाहे अपने मवेशियों के साथ बाहर नहीं निकले थे, इसलिए आखिरी बार मैं अकेले झाड़ियों के बीच भटकता रहा, इस उम्मीद में कि शायद मुझे वह मायावी बाघ मिल जाए। दोपहर तक मैं अपनी कार से लगभग छह मील दूर था, तभी मैं मुड़ा और वापस लौटने लगा।

मैं पहाड़ी से नीचे उतर रहा था और उसके तल पर बने छोटे गड्ढे तक पहुँच ही गया था कि मेरे सामने एक और पहाड़ी खड़ी हो गई। इस घाटी में कोई धारा नहीं बहती थी, और यहाँ कुछ बौने बबूल के पेड़ थे, जो आम लैंटाना और अन्य झाड़ियों के बीच उग रहे थे। लगभग पचास गज आगे, बाघ अचानक प्रकट हुआ। हम दोनों ने एक ही क्षण में एक-दूसरे को देखा, और फिर एक छोटी सी छलांग लगाकर वह लैंटाना के झुंड के पीछे गायब हो गया।

राइफल को कंधे पर उठाकर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा, इस उम्मीद और आशा के साथ कि वह मुझ पर हमला करेगा और मेरी नज़र में आ जाएगा। उसी समय मैं बुरी तरह डरा हुआ था और मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

हमला हुआ ही नहीं! मानो उसकी छठी इंद्री ने उसे बता दिया था कि यहाँ कोई पीड़ित नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जो जानबूझकर उसे नष्ट करने आया है। वह मेरे झाड़ी के पास पहुँचने से पहले ही भाग गया होगा, क्योंकि वह वहाँ बिल्कुल नहीं था। मैंने उसके चारों ओर घूमकर हर जगह तलाशा, लेकिन वह मुझे फिर कभी नहीं मिला।

इस प्रकार मेरा सातवां और अंतिम दिन समाप्त हुआ। अब मेरे लिए बैंगलोर और अपने कर्तव्य पर लौटने का समय आ गया था।

हालांकि यह एक असफल शिकार की कहानी है—वास्तव में, पूरी तरह से नाकामयाबी की कहानी—मैंने इसे इसलिए बताया है ताकि पाठक यह समझ सकें कि ऐसे रोमांच हमेशा सफलता से परिपूर्ण नहीं होते। नाकामयाबी और निराशा कहीं अधिक आम हैं। लेकिन कड़ी मेहनत, अथक प्रयास, शिकार का रोमांच, मानवीय बुद्धि और पशु प्रवृत्ति के बीच संघर्ष—ये सभी कारक मौजूद हैं, और काफी हद तक उत्साही व्यक्ति को उसकी नाकामयाबी की भरपाई कर देते हैं। हालांकि मुझे वास्तव में दुख हुआ कि मुझे चरवाहों को, कम से कम कुछ समय के लिए, इस जानवर के लगातार हमलों के भरोसे छोड़ना पड़ा, फिर भी मुझे इस बात का संतोष था कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया और मैं वापस लौटने की उम्मीद कर रहा था, जब शायद मुझे बेहतर किस्मत मिले।

मैंने मुनियाप्पा की विधवा को एक चेक सौंपा और बैंगलोर लौटने की अपनी यात्रा के शुरुआती बिंदु पर उस पांच मील लंबे रास्ते पर चल पड़ा। जैसे ही कांटेदार झाड़ियाँ कार के पीछे से गुज़रती गईं, मैंने उस बेहद चालाक और असाधारण बाघ को अस्थायी

विदाई दी, जिसने न केवल हर मुठभेड़ में मुझे मात दी थी, बल्कि अपने शिकारों को काटने के बजाय केवल खरोंचने की अपनी विचित्र आदत का कारण भी सफलतापूर्वक छिपा रखा था—सिवाय उन लोगों के जिन्हें उसने वास्तव में मार डाला था।

नरभक्षी की पुकार

परिचय

साहसिक कहानियों की इस नई किताब में मैंने अपने निवास स्थान की खूबसूरत भूमि के कुछ विशाल जंगली जानवरों के शिकार का वर्णन मात्र देने से कहीं अधिक प्रयास किया है। मैंने पाठकों के मन में न केवल घटित घटनाओं को, बल्कि उनके घटित होने की पृष्ठभूमि को भी पुनः जीवंत करने और चित्रित करने का प्रयास किया है।

'कैंप फायर के पास एक रात' शीर्षक वाले अध्याय में मैंने जंगल में ऐसी रातें बिताने के दौरान घटी घटनाओं का वर्णन किया है। मैंने पाठक को भी अपने साथ उस यात्रा पर ले जाने और वहाँ के दृश्यों, ध्वनियों और अनुभवों से परिचित कराने का प्रयास किया है। बाद के दो अध्यायों में मैंने अपने विचारों को खुलकर व्यक्त किया है, उन अद्भुत दिनों और रातों के बारे में जिनमें विचित्र या मनोरंजक घटनाएँ, और कुछ मूर्खतापूर्ण घटनाएँ भी घटी हैं। ये यादें मेरे लिए बहुत अनमोल हैं और मुझे विश्वास है

कि मैं इन्हें कभी भूल नहीं पाऊँगा। यदि इन विचारों को लिखकर मैं पाठक को उतना आनंद दे पाऊँ जितना मुझे इन्हें सुनाने से मिला है, तो मैं अत्यंत संतुष्ट हो जाऊँगा।

मैंने इस अद्भुत भूमि के कुछ कम ज्ञात प्राणियों की आदतों के बारे में भी बताया है, और कुछ अधिक ज्ञात प्राणियों के बारे में भी, ताकि पाठक उनसे और अधिक घनिष्ठता से परिचित हो सकें - मेरे विनम्र वनवासी मित्र, जिनकी संगति में मैं बहुत खुश और संतुष्ट हूं।

भारत में एक बड़ा आंदोलन अभी शुरू हुआ है, हालांकि दुर्भाग्य से बहुत देर से, जिसका उद्देश्य जनता के मन में अपने आसपास के वन्य जीवों के प्रति प्रेम जगाना है। ये जीव भारत के मुकुट में जड़े अनमोल रत्न हैं जो लगभग हमेशा के लिए लुप्त हो चुके हैं। कई स्थान जो कभी वन्यजीवों से भरे रहते थे और उनकी मधुर आवाजों से गूंजते थे, अब सन्नाटे में डूबे हुए हैं। इससे पहले कि यह अनूठी विरासत पूरी तरह से अतीत का हिस्सा बन जाए, यह सरकार का, और विशेष रूप से प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह उस अंधाधुंध नरसंहार को समाप्त करे जो आज भी रात-दिन और साल के हर दिन जारी है। भविष्य के खेल प्रेमियों के लिए, मैं राइफल और बंदूक के बजाय कैमरे का उपयोग करने की पुरजोर वकालत करूंगा। यह आपको उतना ही आनंद दे सकता है - स्वच्छ आनंद, रक्त की गंध, मृत्यु के दृश्य और पश्चाताप की पीड़ा से मुक्त।

इसलिए मैं आपको उन जगहों की एक अद्भुत यात्रा पर आमंत्रित करता हूँ जो शायद आपके लिए नई हों और देखने में बेहद खूबसूरत हों—वह जंगल जो जीवन से भरपूर है, भले ही आपकी नज़रों से छिपा हो। रात में आप इसे अपने चारों ओर महसूस कर सकते हैं, आपकी टिमटिमाती कैंप फायर की सीमा से ठीक बाहर, जहाँ अंधेरे की दीवार शुरू होती है और चाँदनी से जगमगाते जंगल के गलियारों और मैदानों में दूर तक फैली हुई है, या चाँदनी रात में जंगल की गहरी छाया में, जहाँ, लॉरेंस होप के शब्दों में:

> कोई आवाज नहीं थी; उसने कोई चीख नहीं मारी।
> लापरवाह तारे शांत भाव से देख रहे थे।
> जंगल की अचानक त्रासदी
> अनसुना, अज्ञात, अदृश्य ही रहा।

ऊँचे पेड़ों की डालियों से होकर गुज़रती रात की हवा की सरसराहट, लाखों पत्तों का थरथराना जो दूर के सागर की तरह फुसफुसाते हैं; शाखाओं के बीच झिलमिलाते जुगनुओं की चमक; चारों ओर छाया अँधेरा, और उसके भीतर अदृश्य रूप से रेंगता हुआ गहरा अँधेरा; और दूर से आती सियार के झुंड की अजीब, अलौकिक चीख: 'ऊऊऊ-ऊह! ऊह-कहाँ? ऊह-कहाँ? कहाँ? कहाँ?' और सरदार का जवाब, लोमड़ियों के समूह की आवाज़ के साथ: 'हाँ, यहीं! ही-रे! ही-ई-याह! याह! याह! याह!' फिर अंत में वह भयानक लेकिन रोमांचकारी पुकार जो पहाड़ियों पर गूंजती है और कोहरे से भरी घाटियों में गूँजती है: 'आ-ऊंग! ओ-ओ-न-ऊन! औघ-हा! उघ! उघ! उ-उ-उ-घ!' आदमखोर की पुकार!

इसलिए अपनी सारी मानवीय चिंताओं को एक तरफ रख दें और मेरे साथ इन अद्भुत क्षेत्रों की यात्रा करें, जहाँ जंगल का बोलबाला है और प्रकृति के नियम कायम हैं। एक अन्य कवि के शब्दों में, अपने हृदय और मन की शांति में इन जंगली स्थानों को आपसे बात करने दें।

इसलिए तुम मेरे बगीचों में सीखते हो
जहां जंगली जीव सो रहे हैं,
प्रकृति के प्रति श्रद्धा
जिसे शहर की सड़कें नकारती हैं,
आप वास्तविक मूल्य सीखते हैं
दोमट मिट्टी से बने मनुष्य का;
और तुम घुटने टेककर अपने सृष्टिकर्ता का धन्यवाद करो।
जैसे-जैसे तुम अपने घर की ओर कदम बढ़ाते हो।

डब्ल्यू.जे.के.एस.

एक

नरभक्षी की पुकार

आधी रात के कुछ ही पल हुए थे और बाहर घना अंधेरा था। मैं जोल्डाहल स्थित वन बंगले के बरामदे में रखी लंबी कुर्सी पर आराम से लेटा हुआ था, दोनों पैर लकड़ी के स्टैंड पर रखे हुए, पाइप पी रहा था और उस ध्वनि को सुन रहा था जो भारत में हर जंगल प्रेमी के कानों को संगीतमय लगती है और हर शिकारी और परभक्षी के लिए एक चुनौती है।

वह पूरे जंगल में कराहता रहा; और फिर, जैसे ही वह प्राणी चुपचाप जंगल से गुज़रने लगा, मेरे कानों में उसकी संतुष्टि की एक कोमल आह सुनाई दी, मानो वह अपने पूरे क्षेत्र का सर्वोच्च स्वामी हो। 'उह! उह! उहहा!'

मेरी कल्पना में उस पुकारने वाले की छवि बन गई। उस घोर अंधेरे में उसका भूरा रंग, उस पर बनी गहरी काली धारियाँ और कानों के पीछे तथा गले और पेट के निचले हिस्से पर मौजूद सफेद धब्बे, देखने वाले को बिल्कुल भी दिखाई नहीं देते, अगर वह उन्हें देख भी पाता। वास्तव में, वह बाघ के रूप में बिल्कुल भी पहचान में नहीं आता। देखने वाला, अगर देख भी पाता, तो केवल एक काली परछाई देखता, जो आसपास के जंगल से भी कहीं अधिक काली होती।

यदि देखने वाला कोई पुरुष होता, और उसके पास टॉर्च या चाँदनी न होती, तो उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, क्योंकि मनुष्य की दृष्टि घने अंधेरे में और अधिक अंधेरा देखने के लिए नहीं बनी होती। फिर भी, उसे यह बात निश्चित रूप से पता चल जाती कि कोई बाघ पास ही है। जंगल को कंपा देने वाली दहाड़ें उसे बता देतीं; और देखने वाला स्वयं भी कांप उठता। यदि वह असाधारण रूप से तीव्र श्रवण शक्ति वाला प्रशिक्षित और अनुभवी शिकारी होता, तो वह घास की हल्की सरसराहट या किसी भारी वस्तु से टकराते पत्ते की आवाज सुन पाता। वह किसी टहनी के टूटने की

आवाज नहीं सुन पाता, क्योंकि बाघ इतना लापरवाह नहीं होता कि ऐसी किसी चीज पर पैर रख दे, क्योंकि वह स्वयं एक शिकारी है, और शिकारी अपनी उपस्थिति का पता नहीं चलने देते और न ही कोई गलती करते हैं।

यदि कोई व्यक्ति पेड़ की नीची शाखा पर बैठा हो और बाघ ठीक उसके नीचे से गुज़रे, और उसकी सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ हो, तो शायद उसे अचानक एक तेज़ हरी गंध महसूस हो जो कुछ पल के लिए उसकी नाक तक पहुँचे। ऐसे में, यदि वह धार्मिक हो, तो उसके लिए बेहतर होगा कि वह जल्दी से प्रार्थना करे और अपनी सांस रोक ले, और न तो शरीर को हिलाए और न ही पलक झपकाए। क्योंकि बाघ की सूंघने की शक्ति लगभग न के बराबर होती है, लेकिन उसकी सुनने की शक्ति असाधारण रूप से तेज़ और दृष्टि अद्भुत होती है, जिससे वह अपने आस-पास की छोटी से छोटी हलचल को भी पकड़ लेता है। यदि बाघ उस क्षण देखने वाले को सुन या देख ले, तो देखने वाला शायद फिर कभी न देखे।

जिस बाघ की दहाड़ मैं सुन रहा था, वह कोई साधारण बाघ नहीं था। वह आदमखोर था!

आप शायद यह सवाल पूछें कि बाघों की इस सारी छुपकर चलने की कला, उनकी अद्भुत सुनने और देखने की क्षमता, और उनकी उस असाधारण छठी इंद्री का क्या फायदा, जब वह मूर्ख जानवर कराहते, आहें भरते और दहाड़ते हुए अपनी मौजूदगी का ऐलान कर रहा था? यह एक वाजिब सवाल है, जिसका जवाब मेरे लिए संतोषजनक ढंग से देना मुश्किल है, क्योंकि मैं खुद बाघ नहीं हूँ। मैं सिर्फ एक सुझाव दे सकता हूँ। ज़्यादातर ताकतवर लोग, अच्छी तरह से विकसित शरीर वाले, अच्छे मुक्केबाज़ या पहलवान, अपनी ताकत के बारे में चुप और विनम्र नहीं रह सकते। हम सभी कभी-कभी अपनी उपलब्धियों का बखान करने के लिए ललचाते हैं। यहाँ तक कि जो पुरुष महिलाओं को लुभाने में माहिर होते हैं, वे भी अपनी जीतों की बात करते हैं और कहते हैं कि वे अप्रतिरोध्य हैं। शायद बाघ भी ऐसा ही अहंकारी है, जो दूर-दूर तक यह ऐलान करता है कि वह अजेय है, निडर है, जंगल का सर्वविजयी स्वामी है, और पहाड़ियों, घाटियों, मैदानों और घने जंगलों में अपनी ही चुनौती की गूंज सुनकर आनंदित होता है, यह जानते हुए कि उसे सुनने वाला हर प्राणी डर जाएगा, कांप जाएगा और छिप जाएगा। शायद वह उदास और अकेला है, अपनी ही संगति से ऊब गया है, ठीक वैसे ही जैसे कभी-कभी हम सब महसूस करते हैं, किसी साथी की

तलाश में, खासकर अगर वह साथी एक सुंदर, आकर्षक और खूबसूरत बाघिन हो। हो सकता है उसने अभी-अभी भरपेट खाना खाया हो, और वह पाचन क्रिया में मदद के लिए खाने के बाद टहलने निकला हो; हम सब भी कभी-कभी ऐसा करते हैं, और टहलते हुए सीटी बजाते हैं या गाना गाते हैं।

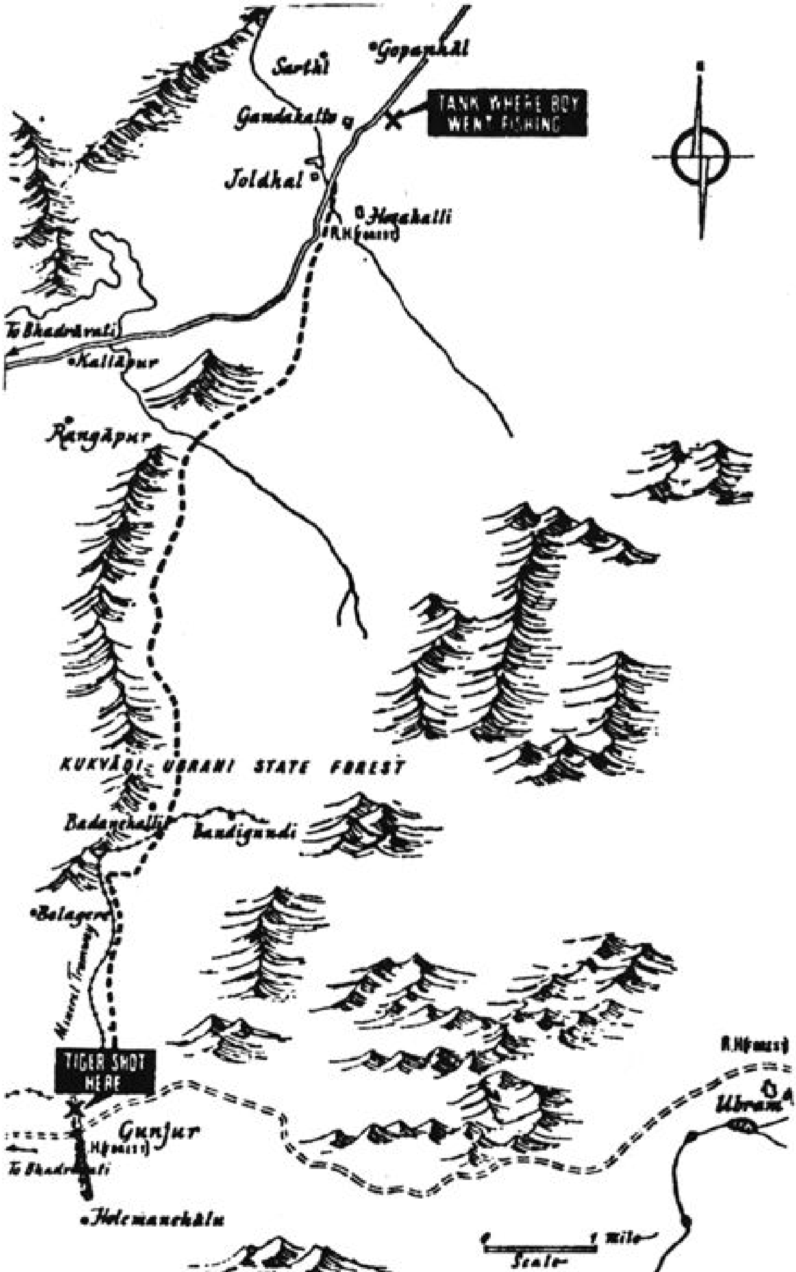
Sarthi
Gopanhal
TANK WHERE BOY WENT FISHING
Gandakatte
Joldhal
Hosahalli
R.H.
To Bhadravati
Kallapur
Rangapur
KUKVADI-UBRANI STATE FOREST
Badanehalli
Bandigundi
Belagere
Mineral Tramway
TIGER SHOT HERE
Gunjur
To Bhadravati
Holemanchalu
R.H.
Ubrani
0 1 mile
Scale

लेकिन मैंने इस कहानी की शुरुआत ठीक से नहीं की है और इधर-उधर की बातें कर रहा हूँ, जबकि मुझे शुरुआत से शुरू करना चाहिए था। मैं आपको यह तो बिल्कुल नहीं बता सकता कि बाघ वहाँ क्यों था, सिवाय इसके कि बाघ जंगलों में रहते हैं। लेकिन मुझे यह ज़रूर समझाना चाहिए था कि मैं आधी रात को जोल्डाहल वन बंगले के बरामदे में आरामकुर्सी पर लेटा हुआ, पाइप पी रहा था और उन विस्मयकारी लेकिन अद्भुत और मधुर ध्वनियों को सुन रहा था।

यह सब इस प्रकार हुआ। मैसूर राज्य में शिमोगा जिले के मुख्यालय से लगभग बारह मील की दूरी पर, लगभग उतना ही बड़ा शहर भद्रावती स्थित है, जो एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र बन चुका है और यहाँ एक विशाल लौह और इस्पात कारखाना है। बाबा बुदन पर्वत श्रृंखला पर कुछ मील दूर स्थित केमंगोंडी नामक स्थान से निकाला गया लौह अयस्क, केबल-बाल्टी की एक श्रृंखला द्वारा भद्रावती कारखाने तक पहुँचाया जाता है। ईंधन के लिए आसपास के विशाल जंगलों में लगातार काटे जाने वाले पेड़ों से प्राप्त लकड़ी का कोयला उपलब्ध कराया जाता है। भद्रावती की भट्टियों की चमक कई मील दूर तक दिखाई देती है, जो क्षितिज को लाल कर देती है और आकाश में बादलों पर प्रतिबिंबित होती है।

जोल्डाहल, भद्रावती से लगभग पंद्रह मील दूर, चितलद्रूग की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह पूरी तरह से घने जंगल से घिरा हुआ है और यहाँ वन विभाग का एक सुंदर बंगला है। जोल्डाहल से लगभग दस मील दक्षिण-पश्चिम में, घने जंगल में ही, एक और वन बंगला है, जो थोड़ा कम आकर्षक है। यह बंगला गुंजुर नामक स्थान पर स्थित है।

पुराने दिनों में मैं अक्सर गुंजुर में डेरा डालता था। यह एक खूबसूरत जगह है। लेकिन गुंजुर तक जाने वाली सड़क को सिर्फ एक ही शब्द में बयान किया जा सकता है - 'बेहद खराब'। यह सड़क बैंगलोर से तारिकेरे और भद्रावती जाने वाली मुख्य सड़क से भद्रावती पहुँचने से लगभग पाँच मील पहले पूर्व की ओर मुड़ जाती है। उस बिंदु से आगे यह सड़क नहीं, बल्कि बैलगाड़ी का रास्ता बन जाती है, और वह भी बेहद खराब। शुरुआती दिनों में मैंने अपनी मॉडल टी फोर्ड से और उसके बाद से अपनी स्टडबेकर से इस रास्ते पर सफर किया है। इसके पूरे बीस मील के सफर में मेरी सहानुभूति और असीम प्रशंसा हेनरी फोर्ड और स्टडबेकर भाइयों के साथ रही है। हर समय मेरा धैर्य टूटता रहता था, फिर भी मैंने वहाँ की किसी भी यात्रा में कभी भी

स्प्रिंग या एक्सल नहीं तोड़ा।

गुंजुर बंगले में एक बहुत ही मेहनती और मददगार केयरटेकर रहते थे, जो हर मौके पर मेरे रहने को आरामदायक बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते थे। इस केयरटेकर की एक प्यारी सी छोटी बेटी थी। जब मैं पहली बार उनसे मिला, तब वह लगभग बारह साल की थीं, और उन्हें गाड़ियों को देखने और सम्मानजनक दूरी से मेरी बंदूकों को निहारने में बहुत दिलचस्पी थी। साथ ही, अपने पिता की तरह वह भी बहुत मददगार थीं। वह लगभग एक फर्लांग दूर एक झरने से अपना घड़ा भरतीं और उसे उठाकर बंगले के बाथरूम में रखे पुराने जस्ता के टब में मेरे इस्तेमाल के लिए डालतीं।

यह बच्ची बड़ी होकर लगभग सत्रह साल की एक प्यारी लड़की बन गई। उसके पिता ने हमेशा की तरह बड़ी मेहनत से जोल्डाहल के एक सम्मानित ग्रामीण से उसकी शादी की सारी व्यवस्था कर दी थी, और शादी जल्द ही होने वाली थी।

एक दिन वह अपने पिता और खुद के इस्तेमाल के लिए पानी भरने के लिए अपना घड़ा लेकर झरने पर गई। वे जंगल में बने बंगले के पीछे रसोई और गैरेज के बीच बने एक छोटे से गोदाम में रहते थे। लेकिन वह कभी वापस नहीं लौटी। क्योंकि जैसे ही वह घड़ा झरने में डुबोने के लिए झुकी, आदमखोर ने उसे पकड़ लिया।

वह चीखती-चिल्लाती उसे उठाकर झरने के किनारे तक फैले घने जंगल में ले गया। उसके पिता ने उसकी आवाज़ सुनी। उनके पास बंदूक नहीं थी। उन्होंने लकड़ी काटने वाला औजार उठाया और पूरी ताकत से उसका पीछा किया, जब तक कि उन्होंने बाघ को पकड़ नहीं लिया।

उसने अपनी मातृभाषा कन्नारिस में उस पर चिल्लाते हुए कहा: 'मेरे बच्चे को छोड़ दो, तुम दरिंदे। मैं इसके लिए तुम्हें मार डालूंगा।'

बाघ ने आवाज़ सुनी और मुड़ा। उसने आदमी को पीछे भागते देखा। हर आदमखोर के दिल में छिपी कायरता ने उसे भयभीत कर दिया। लेकिन उसके मुँह में फँसी कमज़ोर शिकार इतनी लुभावनी थी कि उसे इतनी आसानी से छोड़ना मुश्किल था। इसलिए बाघ ने अपनी गति बढ़ा दी और जंगल में भाग गया, जबकि बेचारी लड़की की चीखें धीरे-धीरे धीमी होती गईं और अंत में शांत हो गईं। बाद में मुझे उस दुखी व्यक्ति ने बताया कि उसे अपनी बेटी के अवशेष कभी नहीं मिले।

गुंजुर और जोल्डाहल को जोड़ने वाली कोई सड़क नहीं है, केवल एक घुमावदार पगडंडी है जो घने जंगलों वाली घाटियों और पहाड़ियों से होकर लगभग दस मील तक

जाती है। जैसा कि मैंने बताया, जोल्डाहल स्वयं भद्रावती से पंद्रह मील दूर, चितलद्रूग जाने वाली सड़क पर और गुंजुर के उत्तर-पूर्व में स्थित है। कम से कम वह सड़क तो काफी अच्छी है।

मुझे बताया गया है कि लगभग दो महीने बाद एक छोटा मुस्लिम लड़का जोल्डाहल बस्ती की झोपड़ियों से लगभग छह फर्लांग दूर स्थित छोटी झील में मछली पकड़ने गया। वह काफी भाग्यशाली रहा होगा, क्योंकि बाद में उसके द्वारा लाई गई टोकरी में, उसके द्वारा इस्तेमाल की जा रही दो छड़ियों के साथ, मुर्राल, कैटफ़िश और छोटी कार्प सहित एक दर्जन मछलियाँ मिलीं।

वैसे, भारत में मछली पकड़ने का काम रील से या चम्मच या मक्खी जैसे चारे से नहीं किया जाता है। यहाँ मछली पकड़ने के लिए पतली बांस की छड़ी का इस्तेमाल होता है; रील रस्सी से बनी होती है; तैरने के लिए मोर, सींगदार उल्लू या बाज के पंखों से बना एक पंख होता है; और चारा सड़क किनारे नाले से खोदा गया केंचुआ होता है।

शायद उसकी किस्मत ने ही उसे शाम को देर तक वहीं रोके रखा, जबकि अगर उसे कम मछलियाँ मिली होतीं तो वह इतनी देर तक नहीं रुकता। वह अंधेरा होने तक वहीं रुका रहा। लेकिन शाम ढलते ही बाघ बाहर निकलते हैं। और आदमखोर बाघ भी इसका अपवाद नहीं था।

लड़का कभी घर नहीं लौटा। आठ बज गए और खाने का समय हो गया। उसके पिता और बड़े भाई, जो जानते थे कि वह मछली पकड़ने तालाब गया है, लालटेन और लाठियाँ लेकर उसे लेने गए। शायद वे उसे लाठियों से पीटना चाहते थे। उन्हें दो छड़ें और मछलियों से भरी टोकरी तो मिल गई। लेकिन वह छोटा लड़का नहीं मिला। इसके बजाय, उनकी टिमटिमाती लालटेन की रोशनी में कीचड़ में एक बड़े बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए। बाघ जंगल से बाहर आया था, कीचड़ में फिसल गया था और वापस जंगल में चला गया था। लेकिन अकेला नहीं। बाघ लड़के को अपने साथ ले गया था।

घास पर कुछ काला और चमकदार सा दिखाई दिया। जब उन्होंने झुककर उस चमकदार काले पदार्थ को छुआ और अपनी उंगलियों को देखा, तो वे लाल थीं। यह खून था। पिता और पुत्र दौड़कर गाँव की ओर वापस भागे।

फिर एक तीसरी हत्या हुई, लेकिन किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। जोल्डाहल में एक पागल आदमी आ गया था; कोई नहीं जानता था कि वह कौन है या कहाँ से

आया है, और पूरी तरह पागल होने के कारण वह कुछ बता भी नहीं सकता था। भारत में पागलों के साथ कुछ हद तक सहनशीलता बरती जाती है। छोटे लड़के-लड़कियाँ कभी-कभी उन्हें चिढ़ाते हैं। बड़े-बुजुर्ग बच्चों को रोकते हैं और पागल को मुट्ठी भर खाना देते हैं। इसके अलावा वे उस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते।

तो वह पागल आदमी दान में मिले भोजन को खाकर रात को झोपड़ियों के बंद दरवाजों के बाहर, सड़क किनारे सोता था। लेकिन एक सुबह वह गायब मिला; किसी ने कोई चिंता नहीं दिखाई। दो दिन बाद, गाँव के चारों ओर फैले जंगल में गश्त कर रहे कुछ वन रक्षकों ने आकाश में गिद्धों को चक्कर लगाते और नीचे उतरते देखा। उन्होंने तुरंत सोचा कि किसी जानवर को मारा गया है, शायद कोई हिरण, और उसके शव पर कुछ मांस बचा होगा - बेचने के लिए या कम से कम खाने के लिए। वे जल्दी से उस जगह पहुँचे जहाँ गिद्ध जमा थे और वहाँ उन्हें हिरण के अवशेष नहीं, बल्कि उस पागल आदमी की सफ़ेद हड्डियाँ मिलीं। केवल उसका सिर, जो थोड़ी दूरी पर पड़ा था और मृत्यु में भी जीवन की तरह ही मूर्खतापूर्ण ढंग से उन्हें देखकर मुस्कुरा रहा था, वह सुराग था जिससे हड्डियों की पहचान लापता पागल आदमी के रूप में हुई। सिर के चारों ओर नरम रेत में एक बाघ के पदचिह्न छपे हुए थे, जो काफी बड़ा था।

मुझे इन हत्याओं के बारे में तब तक पता भी नहीं चला था, जब तक कि मेरे एक दोस्त के दोस्त, जो चितलद्रूग से भद्रावती जा रहे थे, कुछ खोजबीन के लिए जोल्डाहल बंगले पर दो दिन के लिए नहीं रुके। वहाँ उन्हें बाघ और उसके तीन शिकारों के बारे में पता चला। जोल्डाहल बंगले के केयरटेकर, जो गुंजुर में अपने समकक्ष के दूर के रिश्तेदार थे, ने उन्हें बताया कि पहला शिकार गुंजुर बंगले की देखभाल करने वाले व्यक्ति की होनहार बेटी थी। जब वे बैंगलोर लौटे, तो उन्होंने मेरे एक दोस्त को इसके बारे में सब कुछ बताया। यह जानते हुए कि मुझे ऐसी जानकारी की छानबीन करने की आदत है, मेरे दोस्त जो थॉम्पसन ने यह कहानी मुझे आगे बताई।

जिस लड़की को मैं अच्छी तरह से याद करता था, उसकी मृत्यु ने मुझे जोल्डाहल के वन क्षेत्र अधिकारी को पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसमें मैंने विवरण मांगा और विशेष रूप से यह पूछा कि क्या वह अफवाह सच थी जो मैंने सुनी थी, कि गुंजुर के केयरटेकर की बेटी पहली शिकार थी। पांच दिन बाद उनके जवाब ने उस दुखद कहानी की पुष्टि कर दी।

तो मैं स्टुडेबेकर कार से सीधे जोल्डाहल गया, जहाँ मुझे वह कहानी पता चली जो

मैंने अभी बताई है। यह घटना अड़तालीस घंटे पहले की थी। तब से मैं दस मील के पैदल रास्ते से चलकर गुंजुर पहुँचा और वहाँ अपने पुराने दोस्त, चौकीदार से मिला। अपनी बेटी की दुखद मौत की कहानी सुनाते हुए वह फूट-फूटकर रोया। मैंने उससे वादा किया कि मैं उसका बदला लेने की कोशिश करूँगा और उससे कहा कि अगर अगले हफ्ते तक उसे बाघ के कोई संकेत दिखाई दें या सुनाई दें, तो जोल्डाहल में मुझे बता दे।

उन्होंने सुझाव दिया था कि मुझे गुंजुर में डेरा डालना चाहिए, लेकिन मैंने दो कारणों से जोल्डाहल को प्राथमिकता दी। पहला, वहाँ दो हत्याएँ हुई थीं। दूसरा, स्टुडेबेकर कार त्वरित परिवहन के लिए उपलब्ध थी और सड़कें भी उपयोग योग्य थीं। फिर मैं उसी रास्ते से वापस जोल्डाहल लौट आया।

उस रात मैं बंगले के अंदर सो रहा था, आधी रात के कुछ देर बाद जंगल में बाघ की दहाड़ सुनकर मेरी नींद खुली। मैं बरामदे में रखी कुर्सी पर आकर बैठ गया, सिगरेट पीते हुए सोचने लगा और उस भयानक आवाज़ को सुनने लगा। जैसे ही मैंने वह आवाज़ सुनी, मुझे कुछ साल पहले की वो नन्ही सी बच्ची याद आ गई, जो हर बार जब मैं गुंजुर जाता था, मेरी कारों और बंदूकों में इतनी दिलचस्पी दिखाती थी; जो अपनी मर्जी से मेरे लिए पानी लाती थी; जो शादी की दहलीज पर एक खूबसूरत लड़की बन चुकी थी; और अब उसी शानदार लेकिन क्रूर जानवर का शिकार हो गई थी, जिसकी दहाड़ मैं उस पल सुन रहा था।

यह फिर से आ गया! आ-ऊंग! आउंग-हा! ओ-ओ-ओ-न-ओ-ऑन!

अनायास ही मैं सिहर उठा। आवाज़ दूर जाकर मंद पड़ गई, और जहाँ तक मैं समझ पाया, बाघ गुंजुर की ओर जा रहा था, शायद उसी पगडंडी पर चल रहा था जो वहाँ तक जाती थी। मैंने सुबह उठते ही सबसे पहले इसकी जाँच करने का निश्चय किया और इसी बारे में सोचते-सोचते सो गया।

मच्छर सुबह तक सक्रिय रहे और मेरी नींद को खलल डाला। लेकिन मैं सूरज निकलने से पहले ही उठ गया और कुछ कॉफी और चपातियाँ खाकर, सूरज के थोड़ा ऊपर आने का इंतज़ार किया, फिर उस जानवर का पता लगाने के लिए निकल पड़ा जो पिछली रात से आवाज़ दे रहा था। पहले निकलना सुरक्षित नहीं होता क्योंकि रास्ते के किनारे झाड़ियों में कहीं भी बाघ के छिपे होने की संभावना थी। भोर की हल्की रोशनी शाम की धुंधली रोशनी की तरह ही भ्रामक हो सकती है, जबकि मुझे

पता था कि सूरज निकलने के साथ ही आदमखोर बाघ, संभवतः, दिन की गर्मी से बचने के लिए शाम तक किसी सुरक्षित और सुनसान जगह पर चला जाएगा।

बंगले से एक मील से कुछ अधिक दूरी पर मुझे वह मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी। बाघ एक संकरी खाई से होते हुए उसके किनारे पर कूद गया और उसी रास्ते पर चलने लगा जिस पर मैं चल रहा था, जो गुंजुर की ओर जाता था। आधी रात के कुछ समय बाद बने उसके ताज़े, तश्तरी जैसे पदचिह्न, पगडंडी के बीचोंबीच चलते हुए, मिट्टी पर स्पष्ट रूप से अंकित थे। वह किसी भी दखलंदाज़ी की परवाह नहीं करता था, क्योंकि वह चलते-चलते पुकार रहा था, यह जानते हुए कि हर प्राणी उसके रास्ते से हट जाएगा।

इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं था कि यही बाघ आदमखोर था; लेकिन उसके घमंडी हावभाव से मुझे लगा कि शायद वही था, और मुझे पूरा यकीन था कि मेरा अनुमान सही था। मैंने उसके पदचिह्नों का पीछा करने का फैसला किया ताकि पता चल सके कि बाघ वाकई गुंजुर तक गया था या कुछ दूरी तय करने के बाद वापस लौट आया था।

मैंने देखा कि दो मील या उससे अधिक दूरी तक वह जानवर, जिसके पदचिह्नों से पता चलता था कि वह एक बड़ा नर था, पगडंडी के बीचोंबीच चला था। फिर उसके पदचिह्न एक सूखी धारा के तल पर उतर गए, जिसका पीछा बाघ ने करना शुरू कर दिया। सूर्य की स्थिति से, जो हर पल ऊपर चढ़ता और गर्म होता जा रहा था, मैं जितना अनुमान लगा सका, धारा लगभग दक्षिण-पूर्व की ओर बह रही थी, इसलिए बाघ के पदचिह्न अब गुंजुर और जोल्डाहल दोनों से दूर जा रहे थे। लेकिन यह ज्यादा देर तक नहीं चला। लगभग आधा मील चलने के बाद वह धारा के दाहिने किनारे पर चढ़ गया और जंगल में प्रवेश कर गया, जहाँ कठोर, सूखी ज़मीन पर उसके पदचिह्न जल्द ही मेरी नज़र से ओझल हो गए।

मुझे लगा कि शायद वह अपने रास्ते पर वापस मुड़ गया होगा और जंगल से होते हुए उस पगडंडी पर लौट आया होगा जिस पर वह नदी मिलने से पहले चल रहा था। इसी विचार के साथ, झाड़ियों में भटकने के बजाय, मैं अपने कदमों के निशान पर वापस चला जब तक कि मुझे फिर से गुंजुर जाने वाला रास्ता नहीं मिल गया। मैंने उस रास्ते पर चलना शुरू किया और नदी से लगभग एक मील चलने के बाद, अपने सामने रेत में बाघ के पदचिह्न देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा अनुमान सही निकला। उसने

जंगल से होकर शॉर्टकट लिया था और गुंजुर की ओर अपने पुराने रास्ते पर वापस लौट आया था।

इस हरकत से साफ पता चल गया था कि उसने वहाँ जाने का मन बना लिया था, और मुझे अपने अनुभव से पता था कि जब तक कोई असाधारण घटना न घटे, वह अपना इरादा नहीं बदलेगा। मेरा अनुमान सही निकला, क्योंकि इधर-उधर थोड़ा भटकने के अलावा, बाघ पूरे रास्ते गुंजुर तक पगडंडी पर ही चलता रहा। उसके पदचिह्नों पर नज़र रखने के कारण मैं उतनी तेज़ी से नहीं चल पाया जितना मैं चल सकता था, इसलिए मुझे उन दस मील की दूरी तय करने में चार घंटे लग गए, और मैं रात ग्यारह बजे के ठीक बाद बंगले के रखवाले के पास पहुँचा।

मैं आपको बता दूं कि उस आदमी का नाम अनंतस्वामी था, और मैंने उसे बताया कि आधी रात के कुछ ही समय बाद मैंने जोल्डाहल में बाघ की आवाज सुनी थी और उसी सुबह उसके पदचिह्नों का पीछा करते हुए सीधे गुंजुर तक पहुँच गया था। अनंतस्वामी ने मुझे बताया कि वह सुबह चार बजे से जागा हुआ था, लेकिन उसे बाघ की कोई आवाज नहीं सुनाई दी। हालांकि, सुबह 4:30 बजे के कुछ ही समय बाद दो-तीन सांभरों ने आवाज लगाई थी, जबकि चित्तीदार हिरण भोर में बेचैन थे और बंगले के दक्षिण में एक छोटी पहाड़ी की तलहटी से खतरे की चेतावनी दे रहे थे। हम इस बात पर सहमत हुए कि बाघ की चुप्पी, और हिरणों की दोनों प्रजातियों की खतरे की आवाजों से यह संकेत मिलता है कि वह किसी गंभीर उद्देश्य से गुंजुर आया था।

यह सोचना गलत है कि हर आदमखोर बाघ या तेंदुआ सिर्फ इंसानी मांस खाकर ही जीवित रहता है। ये दोनों प्रजातियाँ, खासकर बाघ, बहुत ज्यादा खाने वाले होते हैं, और अगर वे सिर्फ इंसानी मांस पर ही जीने का फैसला कर लें, तो दो बातें होंगी। शुरुआती दौर में मरने वालों की संख्या बहुत ज्यादा होगी, क्योंकि औसतन एक बाघ हफ्ते में कम से कम दो बार शिकार करता है। उसके बाद, जब लोग इतने सतर्क हो जाएंगे कि बाघ को उन्हें मारने का मौका न दें, तो वह अंततः भूख से मर जाएगा। असल में होता यह है कि आदमखोर बाघ को इंसानी मांस का स्वाद पसंद आने लगता है, और यह बात उसे और भी ज्यादा प्रोत्साहित करती है कि जंगली जानवरों की तुलना में इंसानी शिकार को पकड़ना और मारना कहीं ज्यादा आसान है। इसलिए एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब वह पालतू मवेशियों या हिरण और जंगली सूअर जैसे जंगली जानवरों को मारने के बजाय किसी पुरुष, महिला या बच्चे को मारना और

खाना पसंद करता है। लेकिन जब उसे आसानी से कोई इंसान नहीं मिलता, तो वह अगले मौके का इंतजार करते हुए बिना किसी झिझक के अपने प्राकृतिक भोजन पर लौट आता है। इसके अलावा, एक विचित्र तथ्य यह भी है कि चाहे वह कितने ही लोगों को मारकर खा जाए, आदमखोर बाघ और तेंदुआ मूल रूप से मनुष्यों से डरते हैं। यह बात बार-बार साबित हुई है जब किसी पुरुष—या कभी-कभी किसी महिला—ने उनका विरोध किया है या विरोध करने का प्रयास किया है और यहाँ तक कि पलटवार भी किया है। अक्सर सबसे खूंखार आदमखोर भी दुम दबाकर भाग जाते हैं। लेकिन बाघ कभी भी पालतू पशुओं या उन जंगली जानवरों से नहीं डरते जिनका वह शिकार करते हैं, सिवाय वयस्क बैल बाइसन और हाथी के।

इसलिए, जोल्डाहल में किसी अन्य इंसान को पकड़ने में नाकाम रहने पर, बाघ ने जाहिर तौर पर गुंजुर आने का फैसला किया था, जहाँ नीची पहाड़ियों और चौड़ी घास की घाटियों में हिरणों की भरमार है। संभावना थी कि वह वहाँ कुछ दिनों तक रुकेगा, कुछ सांभर और चित्तीदार हिरणों का शिकार करके उन्हें खाएगा, और जब उसका पेट भर जाएगा तो वह एक बार फिर इंसानी मांस खाने की अपनी नई-नई लत को पूरा करने के बारे में सोचेगा।

अब अकेले रह रहे चौकीदार के अलावा, गुंजुर में कोई और नहीं था, क्योंकि वहाँ कोई गाँव नहीं था। इसलिए कुछ दिन बीतने के बाद, बाघ शायद जोल्डाहल वापस चला जाएगा, या भद्रावती-चितलद्रूग मुख्य सड़क के किनारे बसे अन्य छोटे गाँवों में से किसी एक के आसपास अपनी किस्मत आजमाएगा। इस प्रकार पूरी उम्मीद थी कि आदमखोर बाघ कम से कम अगले दो-तीन दिनों तक गुंजुर के आसपास ही रहेगा। अगर वह किसी हिरण का शिकार करके अपनी तत्काल भूख मिटा लेता, तो यह उम्मीद और भी मजबूत हो जाती, क्योंकि तब वह आराम करेगा और अगले अड़तालीस घंटों तक उसके अवशेषों को खाएगा। और उसके सफल न होने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, गुंजुर में हिरण बहुतायत में पाए जाते हैं: सांभर, चित्तीदार हिरण, जंगली भेड़ और चार सींग वाले मृग।

यह बाघ को चारा डालने के लिए भी एक अनुकूल स्थान है, क्योंकि जिस खुले मैदान में वन बंगला स्थित है, और साथ ही पास में स्थित झरना, छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जो बाघ को नीचे खुली घाटी में स्पष्ट रूप से रखे गए किसी भी चारे का शानदार दृश्य प्रदान करेगा।

दुर्भाग्यवश, राइफल के अलावा मैं अपने साथ कोई सामान नहीं लाया था। मेरी टॉर्च, रात में जागने के लिए मेरे गर्म काले कपड़े, मेरा प्राइमस स्टोव और खाने-पीने का सामान सब जोल्डाहल बंगले में था। लेकिन वह बंगला दस मील दूर था और मैं अभी-अभी वहाँ से आया था। इन चीज़ों को लेने के लिए वापस जाना और फिर उन्हें लेकर लौटना कुल मिलाकर तीस मील की यात्रा होती। यह विचार मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। इसके अलावा, मैं रात होने से पहले अपनी यात्रा पूरी नहीं कर सकता था।

अनंतस्वामी ने मुझे अपनी टॉर्च उधार देने की पेशकश की, हालाँकि वह सिर्फ़ दो कोठरियों वाला कमरा था। उन्होंने मुझे मुफ्त में खाने-पीने और रहने की जगह भी दी, बशर्ते मैं उनके पास मौजूद एकमात्र भोजन - रागी के गोले - को उनके साथ बाँटने के लिए तैयार रहूँ। रागी के गोले पिसी हुई रागी की सूखी दलिया से बनाए जाते हैं, जिसे दोनों हाथों से दबाकर तोप के गोले के आकार का बना दिया जाता है। यह बहुत पौष्टिक और पेट भरने वाला होता है, लेकिन बिल्कुल बेस्वाद होता है।

उनका निमंत्रण स्वीकार करने के बाद, एक और बड़ी बाधा सामने आई। अनंतस्वामी के पास चारा के रूप में बांधने के लिए कोई जानवर नहीं था। उनके पास एक कुत्ता था—एक बदबूदार, बीमार और कुटिल कुत्ता। लेकिन बाघ के लिए कुत्ते का इस्तेमाल चारा के रूप में बेकार है। इसके अलावा, मैं खुद कुत्तों से प्यार करता हूँ, इसलिए मैं किसी भी परिस्थिति में कुत्ते को चारा के रूप में इस्तेमाल करने से इनकार करता हूँ।

एक और सवाल था। क्या मैं कुछ ज़्यादा ही आशावादी तो नहीं हो रहा था? मुझे कैसे पता था कि जिस बाघ का मैंने पीछा किया था, वही आदमखोर था? हो सकता है वो बस एक सामान्य, बेहद शांत और हानिरहित, शिकार करने वाला और मवेशी चुराने वाला जानवर हो। मैंने अनंतस्वामी से इस बारे में विस्तार से बात की। जब मैंने उनकी मेहमाननवाज़ी स्वीकार की और कहा कि मैं उनके साथ दो दिन रुकूँगा, तो उनकी गहरी आँखें खुशी से चमक उठीं। उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि शिकार वही आदमखोर था क्योंकि उस समय आसपास कोई और बाघ नहीं था। जहाँ तक चारे की बात है, उन्होंने कहा कि इसका हल आसानी से निकल जाएगा। वे खुद खुले में चारे के रूप में बैठेंगे या खड़े होंगे, जबकि मैं किसी आड़ में या पेड़ पर छुपकर बाघ को गोली मारूँगा—अगर मुमकिन हो तो उसके उन पर झपटने से पहले ही। और उसी समय

उन्होंने कहा: 'यह मत सोचो, दोराई, कि मैं यह तुम्हारे लिए कर रहा हूँ। यह मत सोचो कि मैं यह इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं बहादुर हूँ और मुझे डर नहीं लगता—क्योंकि मुझे भी बहुत डर लगता है।' लेकिन मैं यह कर रहा हूँ—और खुशी-खुशी कर रहा हूँ—अपनी नन्ही बेटी का बदला लेने के लिए। वह मेरे लिए सब कुछ थी—उसकी माँ की प्रसव के दौरान मृत्यु हो जाने और उसके बड़े भाई की कुछ ही समय बाद चेचक से मृत्यु हो जाने के बाद, वही मेरे लिए दुनिया में सब कुछ थी। मैं उसके क्रूर हत्यारे को मौत के घाट उतारने के लिए खुशी-खुशी अपनी जान कुर्बान कर दूंगा।'

उनकी सादगी और महान साहस ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। लेकिन यह भावुक होने का समय नहीं था; न ही मैं किसी बहादुर व्यक्ति का खून अपने हाथों पर लगाना चाहता था। याद रखिए: रातें अंधेरी थीं और मुझे उनकी दो सेल वाली टॉर्च का इस्तेमाल करना था। न ही मैं टॉर्च को राइफल से जोड़ने वाले क्लैंप लाया था। मुझे उसे अपने बाएं हाथ में पकड़ना होगा और गोली चलाते समय राइफल की नली पर रोशनी डालनी होगी। इससे कम से कम दो सेकंड का समय लगेगा, रोशनी को सही दिशा में लाने में। और एक सेकंड भी बाघ के लिए अनंतस्वामी पर झपटने और उन्हें मार डालने के लिए काफी होगा।

मैंने बहुत ज़ोर देकर जवाब दिया: 'नहीं।' फिर, उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाने और अपना असली कारण छिपाने के लिए, मैंने आगे कहा: 'जब बाघ आएगा, तो मुझे उस पर टॉर्च की रोशनी डालने के लिए आपकी ज़रूरत होगी, जबकि मैं उस पर गोली चलाऊँगी।'

अनंतस्वामी मेरी दी गई व्याख्या से असंतुष्ट प्रतीत हुए। उन्होंने कहा: 'दोराई अपने बाएं हाथ में टॉर्च को राइफल के सामने पकड़कर भी गोली चला सकता है।'

बहस शुरू होने का आभास होते देख मैंने जवाब दिया: 'नहीं, बिलकुल नहीं!'

उसके बाद हम कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। हम सब गहरी सोच में डूबे हुए थे। तभी मेरे मन में एक विचार आया। आदमखोर बाघ ने उस आदमी की बेटी को उस झरने पर ले जाकर मार डाला था जहाँ वह पानी भरने गई थी। शायद बाघ को वह शिकार याद होगा जो उसने वहाँ किया था। उसने शायद उस लड़की को, और यहाँ तक कि अनंतस्वामी को भी, कई बार उस झरने पर पानी भरने जाते देखा होगा। कम से कम वह उस झरने को किसी इंसान के आने-जाने से तो जोड़कर देखेगा ही। वह झरना बंगले से महज़ एक फर्लांग दूर था और आसपास की पहाड़ियों से साफ़ दिखाई देने

वाले एक हल्के गड्ढे में था। जी हाँ, बिल्कुल; चारा तैयार करने के लिए झरना ही सबसे अच्छी जगह होगी। रातें अँधेरी थीं और मेरे पास टॉर्च नहीं थी, इसलिए चारा न तो अनंतस्वामी हो सकता था और न ही मैं। तो एकमात्र विकल्प यही था कि मैं एक ऐसे पुतले को बनाऊँ जो झरने से पानी भरते हुए आदमी जैसा दिखे, और मैं जितना हो सके उसके पास छिप जाऊँ। इतना पास कि दो सेल वाली टॉर्च की हल्की रोशनी असरदार हो सके।

मैंने अनंतस्वामी को अपने विचार विस्तार से बताए, जो बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा: 'चलो, दोराई; हम तुरंत झरने पर चलते हैं और तुम वह जगह चुन लो जहाँ तुम छिपकर आज रात जब बाघ नकली पुतले पर हमला करे तो उसे गोली मारोगे।'

मैंने उसे सीधे देखा, और उसने भी मुझे उतनी ही सीधे नज़र से देखा। उसकी आँखों में स्पष्टवादिता और उत्सुकता थी, डर का कोई निशान नहीं था, और मैं जान गया कि यह आदमी अब 'ना' को स्वीकार नहीं करेगा।

हम उठे और झरने की ओर चल पड़े। ज़मीन पर पड़ी एक चपटी चट्टान की दरार से पानी रिस रहा था। यह एक हल्की ढलान से बहकर एक छोटे से कुंड में जा रहा था, जो लगभग तीन फुट गहरा और लगभग दस फुट चौड़ा था। इसी कुंड से पिता और पुत्री वर्षों से पानी भरते आ रहे थे, जब से वह गुंजुर बंगले के रखवाले थे। पानी का बहाव जंगल में फैल गया, जहाँ धारा बनने के लिए अपर्याप्त होने के कारण वह मिट्टी में समा गया। लगातार नमी के कारण लगभग पच्चीस गज तक हरी-भरी घास उग आई थी। फिर जंगल दोबारा शुरू हो गया। अनंतस्वामी ने मुझे बताया कि जब वह पहली बार गुंजुर आए थे, तो झाड़ियाँ कुंड तक फैली हुई थीं और उसे पूरी तरह से घेरे हुए थीं। उन्होंने अपनी पुत्री की मदद से लगभग पच्चीस गज तक उन झाड़ियों को काट दिया था, जिससे अब वहाँ केवल घास ही उगती है।

सामने समस्या यह थी: हम कहाँ छुपेंगे? मचान बनाने के लिए सबसे नज़दीकी पेड़ 100 गज से भी ज़्यादा दूर था। इतनी दूरी को टॉर्च की रोशनी से तय करना नामुमकिन था, जिसमें सिर्फ़ दो ही सेल थे और वो भी पुराने। ऐसा लग रहा था कि पुतले के ऊपर बैठने की हमारी सारी योजना धरी की धरी रह जाएगी, क्योंकि छुपने के लिए कोई जगह नज़र ही नहीं आ रही थी।

मैंने चौकीदार से पूछा कि क्या उसके पास कोई सुझाव है। उसने बड़े दुख से कहा कि उसके पास कोई सुझाव नहीं है। एक बात स्पष्ट हो गई थी कि हमें कहीं ज़मीन पर

बैठना होगा और जितना हो सके खुद को छिपाना होगा। या फिर हमें पूरी योजना छोड़नी पड़ेगी। पास का बड़ा पेड़ तालाब से बहुत दूर था और अनंतस्वामी की टॉर्च की हल्की रोशनी उस दूरी को पार नहीं कर सकती थी। मैंने चौकीदार के गोदाम में टॉर्च की रोशनी का परीक्षण किया था और देखा था कि उसकी कोठरियाँ आधी सूख चुकी थीं।

हम सबकी सहमति से लगभग पच्चीस गज घास के मैदान को पार करके उस जगह तक पहुँचे जहाँ झाड़ियाँ शुरू होती थीं। हम दोनों ने एक शब्द भी नहीं बोला था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे हम दोनों ने अपरिहार्य को स्वीकार कर लिया हो। यहीं हमें बैठना होगा—अगर बैठना ही पड़े तो—ताकि बाघ का इंतज़ार कर सकें।

झाड़ियाँ हमेशा की तरह ही घनी थीं; काँटेदार झाड़ियाँ, लैंटाना और अन्य जंगली झाड़ियाँ, सब एक साथ घनी और सघन रूप से उगी हुई थीं। काँटेदार झाड़ियाँ मनुष्यों और जानवरों, दोनों को ही नापसंद होती हैं, क्योंकि जब ये बहुत घनी उग जाती हैं तो एक असंभव बाधा बन जाती हैं; यहाँ तक कि एक अकेली टहनी भी अगर आपके कपड़ों के संपर्क में आ जाए तो आपको काफी देर तक रोके रख सकती है। अगर ये आपके शरीर को छू लें, तो आपको अपनी त्वचा का कुछ हिस्सा खोने के लिए तैयार रहना होगा, जो असंख्य सुई जैसे नुकीले, हुक जैसे काँटों में धंस जाएगा।

एक जगह पर, जहाँ झाड़ियाँ शुरू ही होती थीं, वहाँ एक छोटी सी काँटेदार झाड़ी थी; वास्तव में काफी बड़ी। बिना चाकू के कोई भी आदमी उसे पार नहीं कर सकता था। यहाँ तक कि हाथी को छोड़कर कोई भी जानवर भी ऐसा नहीं कर सकता था। इसलिए उस समय मैंने उस झाड़ी को बड़ी कृपा दृष्टि से देखा। ऐसा लगा जैसे उसी ने स्थिति को संभाला हो।

मैंने अनंतस्वामी से पूछा, 'क्या बंगले में अभी भी लोहे के दो स्प्रिंग वाले पलंग हैं?'

'जी हां, दोराई,' उसने जवाब दिया। फिर, अचानक पूछे गए इस अजीब सवाल के एहसास ने उसके मन में जगह बनाते हुए कहा, 'अगर मालिक थके हुए हैं, तो मैं बंगले का दरवाजा खोल दूंगा और वे आराम से लेटकर सो सकते हैं।'

जाहिर तौर पर बिल्कुल अप्रासंगिक ढंग से, मैंने आगे पूछा: 'क्या परिसर में इस तरह का तीसरा पलंग है?'

मैंने देखा कि उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं, और मुझे लगभग ज़ोर से हंसी

आ गई। उस पल उसके मन में जो विचार थे, वे उसके स्पष्ट चेहरे पर साफ झलक रहे थे। आखिर इस आदमी को तीसरे पलंग की क्या ज़रूरत है? पहले से ही दो हैं, और अकेला होने के कारण वह उनमें से केवल एक पर ही सो सकता है। उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।

मैंने इसे दोहराया: 'क्या इस तरह का तीसरा पलंग उपलब्ध है, अनंतस्वामी?'

उसकी आँखें और भी चौड़ी हो गईं; लेकिन उसने बड़ी कुशलता से खुद को संभाला और जवाब दिया, 'नहीं,' 'बस वे दो जो हमेशा से यहाँ रहे हैं।'

'आओ, अनंतस्वामी,' मैंने बंगले की ओर मुड़ते हुए कहा। 'दरवाजा खोलो। मैं अंदर जाकर फर्नीचर देखना चाहता हूँ।'

निश्चित रूप से लू लग गई होगी; या फिर किसी और तरह का पागलपन। बेचारा डोराई! कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसा इतने नाजुक समय पर हुआ! चौकीदार अपने विचारों को छिपा नहीं सका। इस बार तो मैं खुलकर हंस पड़ा।

'घबराइए मत, अनंतस्वामी,' मैंने समझाया जब हम वापस उस छोटी सी झोपड़ी की ओर चल पड़े। 'मैं पागल नहीं हो रहा हूँ। मेरे मन में यह विचार है कि मैं आपके और मेरे लिए एक पिंजरा बनाऊँ, ठीक उसी जगह जहाँ अभी वह काँटेदार झाड़ी उगी है। दो पलंगें, जिन्हें करवटों में रखा जाएगा—वैसे, लंबी करवटों में—हमारे लिए एक तरह की बाधा बनेंगी। उनके बीच में हम काँटेदार झाड़ी की शाखाएँ और लताएँ लगाएँगे जिन्हें आपको काटना होगा। सामने का हिस्सा खुला रहेगा, क्योंकि उस दिशा में हम पुतले की ओर मुँह करके बैठेंगे।'

लेकिन एक अड़चन है, अनंतस्वामी। एक बहुत बड़ी अड़चन। हमें कुछ ढूंढना होगा, कोई तीसरी चीज़, ताकि तीसरी तरफ तीसरी रुकावट बन सके। क्योंकि हम सिर्फ एक ही दिशा में देख सकते हैं, दो दिशाओं में नहीं, मेरे दोस्त। यह मत भूलो कि इस समय रातें बहुत अंधेरी होती हैं; बेहद अंधेरी। और तुम्हारी टॉर्च भी खराब हालत में है।

मेरी बताई योजना को समझने में उसे काफी समय लग गया। हम चलते-चलते बातें कर रहे थे, और जब आखिरकार उसे बात समझ आई, तो उसकी प्रतिक्रिया बिल्कुल अप्रत्याशित थी। अचानक रुककर, चौकीदार कमर झुकाकर, हथेलियों से अपनी जांघों पर थपथपाया और खूब हँसा।

'हे भगवान!' वह खिलखिलाकर हँसा, 'मैंने ऐसी योजना पहले कभी नहीं सुनी।

हमें दो पलंगों और कुछ अन्य फर्नीचर से पिंजरा बनाना है और उसमें बैठकर बाघ का इंतजार करना है? और पलंगों को कांटेदार झाड़ से ढकना है? दोराई, मैं यह योजना अपने बच्चों को, और उनके बाद उनके बच्चों को भी बताऊंगा। कसम से।'

बेचारे अनंतस्वामी! वे तो यह बात पूरी तरह भूल ही गए थे कि उनके कोई बच्चे नहीं हैं। बाघ ने उनके इकलौते बच्चे को खा लिया था। इसके अलावा, उनके इरादों को पूरा करने की कोई उम्मीद भी नहीं थी, क्योंकि उनकी पत्नी भी नहीं थी!

उसने बंगले का दरवाजा खोला और हम अंदर चले गए। वहाँ लोहे के दो स्प्रिंग वाले पलंग थे, प्रत्येक शयनकक्ष में एक-एक। अन्य फर्नीचर में एक बड़ी डाइनिंग टेबल, दो छोटी टेबल, दो ड्रेसिंग टेबल (एक टूटे हुए दर्पण वाली और दूसरी बिना दर्पण वाली), एक काफी बड़ी अलमारी, सभी बंगलों में आम तौर पर पाई जाने वाली एक आरामकुर्सी और लगभग आधा दर्जन पुरानी, लकड़ी के तले वाली कुर्सियाँ थीं। बाथरूम में एक प्राचीन जस्ता का टब, लोहे के स्टैंड पर पीतल का वॉशबेसिन और एक तौलिया रखने का स्टैंड था। वहाँ कोई कमोड नहीं था; इसके लिए बाहर मिट्टी की दीवारों वाले शौचालय में जाना पड़ता था, जहाँ जमीन में एक गड्ढा था जिसके ऊपर दो पत्थर रखे थे।

फर्नीचर के इस ढेर को देखकर मेरे मन में निराशा छा गई। एक तो अलमारी बहुत भारी थी और हम दोनों उसे उठाकर झरने तक नहीं ले जा सकते थे। छोटी मेजें भी बहुत छोटी थीं। इसलिए हमें तीसरी बाधा के लिए डाइनिंग टेबल और आर्मचेयर में से किसी एक को चुनना था। डाइनिंग टेबल निश्चित रूप से अधिक सुरक्षित और मजबूत विकल्प था। लेकिन समस्या यह थी कि जब इसे तिरछा रखा जाता था, तो इसका सपाट ऊपरी भाग कांटों या पत्तों से भी आसानी से नहीं छिपता था। यह एक बहुत ही स्पष्ट वस्तु साबित होती, जो न केवल बाघ का संदेह पैदा करती, बल्कि उसे डराकर भगा भी देती। लेकिन कम से कम आर्मचेयर का आकार थोड़ा-बहुत छिपाने में मददगार था।

'हम आरामकुर्सी ले लेंगे,' मैंने फैसला किया और चौकीदार को अपना कारण बताया।

मैंने अपनी घड़ी देखी। समय 12:25 था। 'अनंतस्वामी, अगर आपकी रागी की लोइयां तैयार हैं, तो हम उन्हें खाएंगे। फिर हमें काम पर लगना होगा। हमें बहुत सारा काम करना है।'

मैंने रागी का आधा गोला खाया। बस इतना ही खा पाया। बेस्वाद चीज़ को निगलने में मुझे बार-बार पानी के घूंट भरने पड़े। लेकिन अनंतस्वामी ने दो गोले खा लिए। फिर उन्होंने एक देगची में पानी भरकर अपनी आग के बचे हुए हिस्से पर रख दिया। ताकि लौटने पर चाय बन सके। हमें तब चाय की ज़रूरत पड़ेगी; हम ज़रूर थके हुए होंगे।

अनंतस्वामी अपनी कुल्हाड़ी लेकर आए और मुझे एक अतिरिक्त, बल्कि कुंद सी, कुल्हाड़ी थमा दी। हम झरने तक अपने कदमों के निशान पर चले और पूरी लगन से काम में जुट गए। सबसे पहले हमने कांटेदार झाड़ी काटी, इस काम में हमें कई खरोंचें आईं जिनसे खून बह रहा था और मेहनत से पसीना बह रहा था। फिर हम लगभग 200 गज दूर गए और उसी तरह की झाड़ियाँ काटीं जो उस जगह उग रही थीं जहाँ हम बैठने वाले थे। इनमें लैंटाना और अन्य झाड़ियाँ थीं, लेकिन कांटेदार झाड़ी बिल्कुल नहीं थी। हमने इन झाड़ियों को घसीटकर नहीं, बल्कि उठाकर उस जगह तक ले गए जहाँ हमने कांटेदार झाड़ी काटी थी। घसीटने से निशान बन जाते जिससे बाघ को शक हो सकता था। जब तक हमने सारा ज़रूरी छलावरण इकट्ठा किया, तब तक दो बज चुके थे।

इसके बाद हम बंगले में वापस लौटे, जहाँ से हमने एक-एक करके पलंग उठाए, हममें से एक-एक व्यक्ति दोनों सिरों पर खड़ा होकर, अपनी चुनी हुई जगह पर ले गए। हमारी सुरक्षा में पिछला हिस्सा स्वाभाविक रूप से सबसे कमजोर कड़ी था। वहाँ हमने एक पलंग को उसकी लंबी भुजा पर लिटाया, उसके पैर बाहर की ओर थे। दूसरे पलंग को हमने पहले पलंग के समकोण पर उसकी भुजा पर लिटाया, उसके पैर भी बाहर की ओर थे। फिर हम आरामकुर्सी लेने के लिए बंगले में वापस गए, जिसे हम वापस लाए और उसे भी उसकी भुजा पर लिटाया, फिर से पैर बाहर की ओर करके, हमारे कच्चे पिंजरे की तीसरी भुजा पर—बंगले की ओर वाली भुजा पर। हमने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हम जानते थे कि यह हमारी तीन कमजोर दीवारों में सबसे कमजोर थी, जबकि बाघ के बंगले की दिशा से आने की संभावना सबसे कम थी। हमारे 'चौकोर' का चौथा सिरा ज़ाहिर तौर पर खुला था। यह पूल के सामने घास के मैदान की ओर था जहाँ हम अपना पुतला रखने वाले थे।

अब शुरू हुआ कांटेदार झाड़ियों की शाखाओं और लताओं को दोनों पलंगों के स्प्रिंगों में, और कुर्सी के पैरों के बीच और उसके बेंत के तले में पिरोने का दर्दनाक

काम। तीनों फर्नीचर के बाहरी हिस्से को पूरी तरह से छिपाने के लिए, हमने उन झाड़ियों को भी इसमें मिला दिया जिन्हें हम दो सौ गज दूर से काटकर लाए थे।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि हमारे पास इस काम को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए पर्याप्त छलावरण नहीं था। हमें और सामग्री लाने के लिए छह बार और चक्कर लगाने पड़े, और तब भी हमारे पास मुश्किल से ही पर्याप्त सामग्री थी। खैर, काम शाम 4 बजे तक पूरा हो गया। दूर से और अलग-अलग कोणों से देखने पर, हमारा ज़ारेबा लगभग वही कांटेदार झाड़ी जैसा दिख रहा था जो कुछ घंटे पहले वहाँ उग रही थी। लेकिन मैं इससे खुश नहीं था। इतने कमज़ोर और साफ़-साफ़ दिखने वाले छलावरण से बाघ जैसे इतने सतर्क जानवर को धोखा देने की कोशिश करना सरासर कोरी कल्पना लग रही थी।

हमारी एकमात्र उम्मीद यही थी कि हम नकली पुतले को इतना असली बना दें कि बाघ का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो जाए और वह हमारी तरफ ज्यादा ध्यान न दे। मुझे पता था कि सफलता काफी हद तक इस बात पर भी निर्भर करेगी कि वह किस कोण से आ रहा है। अगर वह किसी भी तरफ से आता है, तो शायद वह हमारे छिपने की जगह को न देख पाए। अगर वह सीधे विपरीत दिशा से आता है, तो हमारी छिपने की जगह साफ दिखाई देगी और हमारे बचने की संभावना 90 प्रतिशत कम हो जाएगी। लेकिन अगर वह पीछे से आकर हमें देख लेता है, तो क्या होगा? खैर, हमें ज्यादा देर तक संदेह नहीं रहेगा। या तो वह डरकर चुपचाप चला जाएगा, या फिर हमला कर देगा। दोनों ही स्थितियां लगभग पचास-पचास थीं।

हमें जल्दी से पुतला बनाना था। पहले ही बहुत देर हो चुकी थी। अनंतस्वामी के छोटे से कमरे में वापस आकर, हमने उनके बक्से, बिस्तर और उनके पास जो कुछ भी था, सब कुछ खंगाला। असली जैसा पुतला बनाने के लिए न तो समय था और न ही पर्याप्त सामग्री। उनके बालों के तेल से काला पड़ा उनका पुराना गंदा तकिया ही पुतले का धड़ बना। मैंने उनकी हैरानी के बीच तकिये के दोनों ओर छेद कर दिए और उनमें से एक-एक बांस निकाल दिया; दोनों ओर निकला हुआ यह बांस दो भुजाएँ बना रहा था। तकिये के एक सिरे पर एक छोटा सा बांस लगाया गया, जिसमें एक छोटे मिट्टी के बर्तन का किनारा डाला गया, वह सिर था। पैरों के लिए बांस नहीं थे, इसलिए पुतले को तालाब के किनारे उकड़ू बैठे हुए दिखाना पड़ा; वैसे भी, पानी भरते समय किसी आदमी के लिए यह एक स्वाभाविक स्थिति होती है।

तकिये पर चौकीदार की एक पुरानी फटी हुई कमीज रखी थी, जिसकी बाँहों से बाँसें बाहर निकली हुई थीं। उसके ऊपर एक सफेद कोट, ताकि वह आसानी से नज़र आ जाए। मिट्टी के बर्तन के चारों ओर एक तरह की पगड़ी। खैर, यह तो काफी आसान था।

लेकिन आखिर हम इस पुतले को बिठाए कैसे रखते? मैं घबराकर इधर-उधर देखने लगा। तभी एक विचार आया और मैं तुरंत बाथरूम में गया और तौलिया रखने वाले रैक से लकड़ी का क्रॉस-मेंबर लेकर वापस आया। तकिए के निचले हिस्से में, जो वैसे भी लगभग खराब हो चुका था, एक आखिरी छेद किया और तौलिया रखने वाले रैक के क्रॉस-मेंबर को सूती कपड़े से, बाँहों के बीच से, और मिट्टी के बने सिर के निचले हिस्से में बने छेद से जबरदस्ती अंदर डाला, ताकि पहले से लगे बाँह को और मजबूती मिल सके। इससे एक ठीक-ठाक गर्दन बन गई। कम से कम मजबूत तो थी।

अब बस क्रॉस-मेंबर के दूसरे सिरे को ज़मीन में मज़बूती से गाड़ना बाकी था। लेकिन पाँच बज चुके थे। खाने का समय नहीं था। भला रागी बॉल का एक और डोज़ कौन खाना चाहेगा? और चाय का भी समय नहीं था। ये तो बहुत बुरा हुआ। जल्दबाजी में हम चाय के बारे में भूल गए और पानी फिर से ठंडा हो गया।

'अनंतस्वामी, कुल्हाड़ी और दूसरा चाकू ले आओ। गर्म कोट भी पहन लो। टॉर्च लाना मत भूलना। और दो पानी के बर्तन भी ले आओ ताकि लगे कि पुतला पानी भर रहा है। जल्दी करो, यार, जल्दी करो!'

हम जल्दी से तालाब के पास वापस गए, जिसके किनारे चौकीदार ने कुल्हाड़ी से ज़मीन में एक गड्ढा खोदा। मैंने पुतले की 'रीढ़ की हड्डी' को उस गड्ढे में डाला और मिट्टी को एक बार फिर मजबूती से दबा दिया। हमने पानी के दोनों घड़े ज़मीन पर रख दिए, एक-एक दोनों तरफ। देखो! पुतला तालाब के किनारे बैठ गया। हमने पूरी ईमानदारी से उम्मीद की कि किसी भूखे आदमखोर की नज़र में वह एक इंसान की तरह दिखेगा जो वहाँ बैठकर पानी भर रहा हो। मेरी नज़र में तो वह बस एक बेतुका ढेर लग रहा था। एक बार फिर चारों ओर नज़र घुमाकर यह सुनिश्चित किया कि सब कुछ ठीक है, फिर हम सामने से सावधानी से अपने 'किले' में घुस गए।

हम बैठ गए, चौकीदार मेरे दाहिनी ओर बैठा था जबकि मैं आरामकुर्सी के बगल में। मुझे उसकी दाहिनी ओर बैठने की ज़रूरत थी, क्योंकि बाघ के आने पर उसे टॉर्च की रोशनी डालनी थी। राइफल के निशाने को सही करने के लिए, अगर वह मेरे बाईं

ओर बैठता तो रोशनी बहुत दूर होती, क्योंकि मैं दाहिने कंधे से गोली चलाता हूँ।

शाम के 5:30 बजने में बस तीन मिनट बाकी थे और मुझे पता था कि हमें कम से कम एक घंटा पहले ही अपनी जगह पर पहुँच जाना चाहिए था। हम पूरब की ओर मुंह करके बैठे थे और सूरज हमारे पीछे पहाड़ियों के किनारे डूब चुका था। कुछ जल्दबाजी भरे और फुसफुसाते वाक्यों में मैंने अनंतस्वामी को उनके अंतिम निर्देश दिए।

किसी भी हालत में अपना सिर, हाथ या पैर मत हिलाना। अगर मच्छर काटें तो उन्हें फूंक मारकर भगा देना। उन्हें थप्पड़ मत मारना। अगर कुछ सुनाई या दिखाई दे तो मुझे अपने बाएं घुटने से धीरे से धक्का देना। किसी भी हालत में फुसफुसाना भी मत। अगर बाघ आए तो मैं तुम्हें दो बार धक्का देकर बता दूंगा। यही संकेत होगा। जब वह नकली पुतले पर कूदेगा और अपने पंजों के नीचे मांस और खून नहीं पाएगा तो शायद गुर्राएगा। फिर टॉर्च जलाकर जानवर पर तब तक जलाए रखना, चाहे कुछ भी हो जाए। याद रखना, तुम्हें डगमगाना नहीं है और न ही टॉर्च बुझने देनी है। अगर तुमने ऐसा किया तो हम सब मर जाएंगे; क्योंकि मैं अंधेरे में नहीं देख सकता और बाघ देख सकता है।

उनका जवाब आश्वस्त करने वाला था, 'डरो मत, दोराई। मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगा। राजम्मा की खातिर तो बिल्कुल नहीं।'

उनकी बेटी का नाम राजम्मा था। उसके बाद हमारी फिर कभी बात नहीं हुई।

'टोक-टोक-टोक-टोक।' हमारे पीछे जंगल में एक हरे और लाल रंग का कठफोड़वा अपनी मजबूत चोंच से पेड़ के तने पर लगातार चोंच मार रहा था। तभी आसपास की झाड़ियों में एक नन्हा चिड़िया झगड़ा करने लगा। 'काव-विक-अ-वैक,' चुनौती भरे मुर्गे ने कहा, और उसकी चुनौती चारों ओर गूंज उठी। 'कुकुरुका-वैक! कुकुरुका-वैक!' झगड़ालू छोटे मुर्गे लड़ाई के लिए बेताब थे। दूर कहीं, कोयल, जो कोयल परिवार का ही एक सदस्य है, बारिश के लिए अपनी दुख भरी पुकार लगा रहा था, जैसा कि जंगल के लोग कहते हैं। 'कोयल! कोयल! को-येल! को-येल!', वह बढ़ती हुई आवाज़ में चीख रहा था। उसका चचेरा भाई, कोयल परिवार का ही एक चिड़िया, 'दिमाग-बुखार', ने सोचा कि कोयल की पुकार उसके द्वारा लगाई जा सकने वाली चरम सीमा के सामने कुछ भी नहीं है, अगर वह सच में कोशिश करे। और उसने किया, 'दिमाग-बुखार!' 'दिमाग का बुखार; दिमाग का बुखार!' चीख लगभग उन्मादपूर्ण और दिल

दहला देने वाली थी, जिसने कोयल के सारे प्रयासों को फीका कर दिया। कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, और इससे पहले कि कोयल फिर से बांग दे पाती, एक ताज़ा और सुहावनी आवाज़ सुनाई दी; सिल्वर-हैकल्ड जंगली मुर्गे की बुलंद आवाज़। 'व्ही-ई-ई-ईव! कुक-काया-क्या-कुक'म,' उसने जोश से बांग दी। इससे कोयल एक-दो पल के लिए चुप हो गई। फिर वे दोनों फिर से झगड़ने लगे, जबकि दूसरे जंगली मुर्गे ढलते दिन को विदाई देते हुए बांग दे रहे थे।

जंगल में हमेशा की तरह शाम बहुत जल्दी ढल गई। एक पल पहले उजाला था। फिर मेरे सामने का जंगल धुंधला, धुएँ के रंग जैसा बैंगनी हो गया। कुछ ही क्षणों में अंधेरा छाने लगा और देखना मुश्किल हो गया।

दिन भर के पक्षियों की आखिरी आवाज दूर किसी ऊंचे पेड़ पर बैठे मोर की थी। 'मिया-आ-ऊ! मिया-आ-ऊ! आओ! आओ!' उसकी आवाज बेहद उदास और दिल को छू लेने वाली थी। मानो यह जताने के लिए कि मोर के सक्रिय रहने का समय अब समाप्त हो गया है, रात के एक पक्षी ने जवाब दिया और भूरे मुलायम पंखों के गुच्छे की तरह मेरे सामने लंबी घास में उड़ गया। 'चक। चक। चक। चक-ओ-ओ-ओ-ओ।' मेरे छोटे दोस्त, रात्रि के पक्षी, एक बार फिर सक्रिय हो गए और उड़ने लगे। एक पल बाद रात हो गई।

मैंने अक्सर देखा है कि दिन में पक्षियों की आखिरी आवाज़ के बाद रात में पक्षियों की शुरुआती आवाज़ सुनाई देती है। फिर कुछ देर के लिए पूरी तरह सन्नाटा छा जाता है। दिन में पक्षी सो चुके होते हैं, जबकि रात में उड़ने वाले पक्षी निस्संदेह भोजन करने में व्यस्त होते हैं, सिवाय उन छोटे कीड़े खाने वाले चमगादड़ों के जो तेज़ आवाज़ में चीखते हुए ऊपर से तेज़ी से उड़ते हैं। 'ची-ई-क। ची-ई-क।' मैं उस छोटे से झिंगुर का आभारी था जो लगभग मेरे पैरों के पास चहचहाना शुरू कर दिया: 'सिज़। सिज़। सिज़-ज़-ज़! सिज़-ज़-ज़!'

अब तारे खूब चमक रहे थे, जिनमें शाम का तारा सबसे प्रमुख था। आसमान बादलों से रहित था और गहरे नीले रंग का था, जो अनगिनत टिमटिमाते रत्नों के लिए एक आदर्श पृष्ठभूमि थी, जो इतनी शांति से चमक रहे थे, मानो स्वर्ग के अतुलनीय दीपक हों। हमारे आस-पास जंगल में और भी कई जगमगाते रत्न थे, जो इधर-उधर घूम रहे थे; कभी यहाँ, कभी वहाँ; कभी गायब, फिर से प्रकट होते हुए। वे जुगनू थे जो रात के घने, सर्वव्यापी अंधेरे में क्षण भर के लिए ठहरते थे, और अगले ही पल गायब

हो जाते थे। फिर वे क्षण भर के लिए फिर से प्रकट होते और अपनी चमक को एक साथ मिलाकर एक तीव्र, क्षणिक, पल भर की चकाचौंध में बदल देते, जो दूर के पेड़ों की रूपरेखा को भी उजागर करने के लिए पर्याप्त होती। फिर वे गायब हो जाते; अंधेरा पीछे छोड़ते हुए।

हम बिना हिले-डुले बैठे रहे। धीरे-धीरे मच्छर आने लगे, हमारे चारों ओर भिनभिनाते और गुनगुनाते हुए, मानो हवा मच्छरों के बादलों से भर गई हो। मुझे एक के बाद एक मच्छरों के काटने से हल्का लेकिन तेज़ दर्द महसूस हो रहा था—मेरे चेहरे पर, मेरी गर्दन पर, मेरे हाथों पर; वास्तव में, जहाँ भी वे मेरी त्वचा तक पहुँच सकते थे। मैंने अपने चेहरे पर धीरे से फूँका और अपना सिर या हाथ न हिलाने की पूरी कोशिश की। सौभाग्य से मेरी पैंट, मोज़े और जूते मेरे पैरों की रक्षा कर रहे थे। मैं अपने साथी को भी फूँकते हुए सुन सकता था, जैसा मैंने उसे निर्देश दिया था।

यह बेहद असहज और कष्टदायक था, कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है। लेकिन खतरनाक नहीं था। क्योंकि ये मलेरिया फैलाने वाले मच्छर नहीं थे। जब ऐसा कोई कीड़ा काटता है, तो वह लगभग उल्टा खड़ा हो जाता है और उसकी पूंछ हवा में होती है, और आपको डंक का दर्द महसूस नहीं होता। ठीक इसी तरह, मुझे कैसे पता चलता कि उस शाम तक कितने मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों ने मुझे काट लिया था, और रात खत्म होने से पहले कितने और मच्छर मुझे काटेंगे?

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। लगभग 8:30 बज रहे थे। अभी कई घंटे बाकी थे। दस बजते ही सन्नाटा छा गया—लगभग शांति छा गई। ऐसा लग रहा था मानो अंधेरे में कोई और जीव-जंतु हो ही नहीं। लेकिन फिर भी हम जानते थे कि सबसे खतरनाक जीव अंधेरे में छिपा हुआ है, एक आदमखोर बाघ जो पहले ही कई लोगों की जान ले चुका है। लेकिन क्या इस सन्नाटे का मतलब यह था कि वह कहीं और चला गया था? क्या यही कारण था कि हमें डरे हुए हिरणों की कोई चेतावनी भरी आवाज़ नहीं सुनाई दी? यह एक निराशाजनक और उदास करने वाला विचार था।

जैसे कि इन धारणाओं को दूर करने के लिए, मुझे एक अजीब सी चीख सुनाई दी। बल्कि, मुझे कहना चाहिए, एक विशिष्ट पुकार, ऐसी पुकार जो मैंने काफी समय से नहीं सुनी थी, और जो जंगल में हमेशा सुनाई नहीं देती: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

यह निस्संदेह 'अकेले सियार' की पुकार थी, वह रहस्यमय और अनसुलझा सियार

जिसके बारे में जंगल की जनजातियाँ कहती हैं कि वह बाघ या तेंदुआ के साथ साझेदारी करता है और उसे शिकार तक अचूक रूप से ले जाता है। इस साझेदारी में सियार को यह अधिकार मिलता है कि वरिष्ठ साथी के भरपेट खाने के बाद वह बिना किसी रोक-टोक के शिकार की हड्डियाँ चुन-चुनकर खा सके।

सियार हर मिनट करीब आता जा रहा था, और बहुत तेजी से, क्योंकि उसकी चीख हर बार और भी तेज और स्पष्ट होती जा रही थी! 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

मैंने उस भयानक अफवाह के बाकी हिस्से के बारे में सोचा: कि एक बार जब अकेला सियार किसी को ढूंढ लेता है और शिकार शुरू कर देता है, तो कोई भी पीड़ित इस भयानक और शैतानी गठबंधन से बच नहीं सकता। मैं अनायास ही कांप उठा, और उसी क्षण मुझे अनंतस्वामी का बायां घुटना मेरी दाहिनी जांघ पर जोर से दबा हुआ महसूस हुआ। घुटना बहुत तेजी से कांप रहा था।

मैंने घोर अंधेरे में चारों ओर टकटकी लगा दी, और सबसे हल्की आवाज़ सुनने के लिए अपने कान लगा लिए। लेकिन मुझे उस भयानक चीख के अलावा कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दे रहा था जो बार-बार दोहराई जा रही थी और करीब आती जा रही थी: 'बा-ऊह-आह!'

क्या मेरे साथी ने कुछ देखा या सुना था? या वह मुझे उस अकेले सियार के बारे में बताने की कोशिश कर रहा था? निस्संदेह, वह खुद भी उस अजीब कहानी को जानता था। शायद उसे पता नहीं था कि मैं भी इसे जानता हूँ। हो सकता है वह मुझे सतर्क रखने की कोशिश कर रहा हो, क्योंकि मैंने उसे किसी भी कीमत पर बोलने या फुसफुसाने से भी मना किया था। मैंने अपने मन से उस अफवाह के बारे में सोचना बंद कर दिया—चाहे वह सच हो या झूठ, महज़ अंधविश्वास हो या कुछ और। अब मेरे लिए बस एक ही ठोस तथ्य बचा था। एक सियार अजीब तरह से आवाज़ निकाल रहा था, बिल्कुल भी अपने सामान्य तरीके से नहीं। वह हर पल करीब आ रहा था और बहुत जल्द हमारे पास पहुँच जाएगा। यह पता लगाना मेरा काम था कि वह अकेला था या उसके साथ कोई दूसरा जानवर था—शायद सियारों का झुंड ही उसके जैसा था।

एक बार फिर, और इस बार बेहद करीब से, वह अजीब सी आवाज सुनाई दी: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

क्या मैंने उसमें द्वेषपूर्ण प्रसन्नता का भाव देखा था? लगभग उपहास भरी हंसी? विजय की हंसी? मैंने गुस्से से इन बेतुके विचारों को रोका और खुद को पहले से कहीं

अधिक सतर्क कर लिया। उसके बाद वह अजीब सी चीख फिर कभी नहीं सुनाई दी। बस सन्नाटा छा गया, जिसे महसूस किया जा सकता था। गहरा, दमनकारी सन्नाटा, बहुत गहरा और बहुत वास्तविक।

अनंतस्वामी बुरी तरह कांप रहे थे। उनका घुटना मेरी जांघ से टकरा रहा था। उनका पूरा शरीर, जिसे उन्होंने मेरी दाहिनी बांह और बगल से सटा रखा था, बुखार से कांप रहा था। मैं उनकी तेज़-तेज़ सांसें सुन सकता था; छोटी-छोटी, सिसकती हुई सांसें। मैंने अपनी बाईं बांह अपनी गोद में डाली, उनके घुटने पर धीरे से और मजबूती से हाथ रखा, और फिर उन्हें तसल्ली देते हुए थपथपाया। मैं नहीं चाहता था कि कई साल पहले बैंगलोर से सिर्फ तीस मील दूर क्लोज़पेट नामक जगह पर हुए अपने अनुभव की पुनरावृत्ति हो। वह घटना काफी हास्यास्पद थी, उसमें कोई खतरा नहीं था। अब, मौजूदा परिस्थितियों में उसी तरह का अनुभव निश्चित रूप से हास्यास्पद नहीं होगा। दूसरी ओर, यह इस तरह का या किसी भी अन्य प्रकार का आखिरी अनुभव हो सकता है जो देखभाल करने वाले या मेरा हो।

मेरी एक परिचित, जो संयोगवश एक प्रतिष्ठित महिला थीं, मेरे पास एक पैंथर का शिकार करने के लिए आई थीं। हम कार से क्लोज़पेट गए, जहाँ हमने चारा के रूप में दो गधे बाँधे थे। दो दिन बाद सूचना मिली कि उनमें से एक मारा गया है। हम घटनास्थल पर पहुँचे तो पता चला कि गधे को ठीक से नहीं बाँधा गया था, जिसके परिणामस्वरूप पैंथर उसे मारने के बाद पेड़ के नीचे से खींचकर ऐसी जगह ले गया जहाँ केवल झाड़ियाँ थीं और कोई पेड़ नहीं था। इसलिए हमारे सामने दो विकल्प थे: या तो ज़मीन पर बैठकर उसके लौटने का इंतज़ार करें या बिना देर किए बैंगलोर वापस चले जाएँ। मेरी परिचित ने खुशी-खुशी मेरी बात मान ली और जहाँ भी मैं कहूँ वहाँ बैठने को तैयार हो गईं।

उस दिन शिकारी थंगावेलु और उनके भाई, जिन्हें हम अपने साथ लाए थे, ने असाधारण उपलब्धि हासिल की। उन्होंने इतना सुंदर छिपने का स्थान बनाया था कि जब पैंथर वहाँ पहुँचा, तो उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हम अंदर हैं। और न ही हमें कभी यह एहसास हुआ कि वह बाहर है—या कम से कम काफी देर तक तो नहीं।

वह रात भी अंधेरी और बिना चाँद वाली थी। उस घने लेकिन अद्भुत रूप से कारगर छिपने की जगह में हम एक-दूसरे को देख नहीं पा रहे थे। कुछ समय बाद मुझे झाड़ी के दूसरी तरफ से, मेरे दोस्त के बाईं ओर से एक हल्की सी आवाज़ सुनाई देने

लगी, जो मेरे बाईं ओर बैठा था।

रगड़-रगड़-खुरदराहट। कोई खुरदुरा पदार्थ किसी मुलायम पदार्थ पर सरक रहा है। ये क्या हो सकता है? कोई साँप? झाड़ी के चूहे? नहीं; साँप तो काफी देर तक सरसराहट करते रहेंगे; जबकि दूसरे लैंटाना में भागते हुए रुक-रुक कर झटकेदार आवाजें करेंगे। क्या ये दीमक हो सकते हैं, जो गिरे हुए पत्ते और सूखी लकड़ी खा रहे हों? नहीं; क्योंकि उनकी आवाज पेड़ों के पत्तों पर बारिश की बूंदों के गिरने जैसी होगी, लेकिन सौ गुना धीमी। क्या ये इल्लियाँ या रात के भृंग खा रहे हों? नहीं; क्योंकि इल्लियाँ खाते समय कोई आवाज नहीं करतीं। कम से कम, ऐसी कोई आवाज नहीं जो इंसान के कान सुन सकें। कुछ भृंग बहुत हल्की आवाज करते हैं, जैसे परियों के जाल की क्लिकिंग: भृंगों के जबड़े आपस में टकराते हैं जब वे किसी पत्ते को काटते हैं, और एक तीखी और कर्कश आवाज पैदा करते हैं।

लेकिन ये कुछ अलग ही था। खरखराहट। रुकना। रगड़ना। फिर रुकना। कुछ सेकंड की खामोशी। फिर एक बार फिर। खरखराहट। आखिर ये क्या हो रहा था?

अचानक ज्ञानोदय हुआ। वह पैंथर था, जो अपनी खुरदरी जीभ से खुद को चाट रहा था। और वह छिपने की जगह के ठीक बाहर बैठा था। इतना ही नहीं, उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि हम उससे दो फीट से भी कम दूरी पर थे।

मुझे याद है कि मैंने अपनी दोस्त को कोहनी मारी, उसकी बांह को दबाया, अपनी तर्जनी उंगली उसकी आंखों के पास ले जाकर शोर के संभावित स्रोत की ओर इशारा किया। बेशक, उसे कुछ समझ नहीं आया।

फिर मुझे एक और विचार आया। मैं फुसफुसाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, क्योंकि पैंथर मुझे सुन लेता। इसलिए, मैंने अपने बाएं हाथ से उसका एक हाथ पकड़ा। मैंने उंगलियां खोलीं और हथेली को ऊपर की ओर मोड़ दिया। सब कुछ मैंने स्पर्श के बल पर किया। मैं अक्सर सोचता हूं कि उसने क्या सोचा होगा कि मुझसे क्या गलती हुई है, आगे क्या होने वाला है।

लेकिन मैंने उसे ज्यादा देर तक असमंजस में नहीं रखा। मैंने अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली से उसकी हथेली पर वर्णमाला के बड़े अक्षर बनाने शुरू किए। मैंने पहले P बनाया, फिर A, फिर N, फिर T और H

फिर उसे अचानक समझ आ गया। और सचमुच में। मैंने कभी किसी इंसान को बैठे हुए से इतनी तेज़ी से खड़े होते नहीं देखा था। बिजली की तरह, उसने खुद को

हवा में उछाला, मुझसे टकराई और मेरे पीछे झाड़ियों में सिर के बल गिर पड़ी, और अपने जूते से मेरे चेहरे पर ज़ोरदार लात मारी।

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। बल्कि, बहुत कुछ हुआ। पैंथर ने भी उसी करतब को दोहराया—और बड़े ही शानदार तरीके से। अपने बगल से ज़मीन से किसी आवाज़ को निकलते हुए सुनकर, जो शायद खुद शैतान की आवाज़ थी, या पैंथरों की भाषा में शैतान का जो भी नाम हो, पैंथर भी घबराकर वैसा ही करने लगा। वह हवा में उछला, कलाबाज़ी खाई और हमारे छिपने की जगह की बाईं दीवार पर जा गिरा, जिसके ठीक बगल में मेरा साथी एक पल पहले बैठा था। यह समझकर कि वह बहुत डरा हुआ है और अंधाधुंध अपने पंजों से हमला कर सकता है या काट भी सकता है, मैंने भी हवा में उछलकर और पीछे की ओर गिरकर इस मनोरंजन का ज़बरदस्त अंत किया।

खैर, सब कुछ बहुत खुशी और सुरक्षित तरीके से समाप्त हो गया। हमने एक-दूसरे के बहुत करीब आए बिना ही अपना मामला सुलझा लिया, कम से कम पैंथर के मामले में तो ऐसा ही था, और उसने भी बदले में ऐसा ही किया। वह बस गायब हो गया।

हम सब इस पर खूब हंसे। मेरी दोस्त ने कहा कि वह इस घटना को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहती थी—हजार रुपये के लिए भी नहीं। लेकिन—और यहाँ एक असली सवाल था—क्या होता अगर हम एक हानिरहित पैंथर की जगह आदमखोर बाघ से निपट रहे होते?

हकीकत और वर्तमान में लौटते हुए, मुझे डर था कि चौकीदार का धैर्य अचानक टूट सकता है। वह कुछ भी कर सकता था: उछल सकता था, चिल्ला सकता था, या चीख भी सकता था। और फिर शायद स्थिति अच्छी न हो—यह याद रखते हुए कि हमें 'अपवित्र साथियों' से निपटना था, न कि किसी साधारण पैंथर से। मैं जानता था कि अनंतस्वामी एक बहादुर आदमी था और निश्चित रूप से बाघ से नहीं डरता था। लेकिन जो कुछ घट रहा था, उसका अलौकिक पहलू उसे परेशान कर रहा था—या यूँ कहूँ कि जिसे वह अलौकिक समझ रहा था: वह शैतानी साझेदारी, उस रहस्यमय 'अकेले सियार' की अमानवीय, या यूँ कहें कि अलौकिक बुद्धि, जो आदमखोर को सीधे हमारे पास ले आई थी। मैंने उसके घुटने को पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से दबाया, फिर उसे धीरे से थपथपाया, बार-बार, उसे दिलासा देने के लिए, उसे शांत करने की कोशिश करने के लिए।

उसके बाद घटनाएँ तेज़ी से घटने लगीं। मुझे बाईं ओर झाड़ियों की सूखी पत्तियों पर तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी; वह हमारे बेतुके छोटे किले का सबसे कम सुरक्षित हिस्सा था, आरामकुर्सी वाला हिस्सा, बंगले की ओर, जिस दिशा से हमने कभी किसी के आने की उम्मीद नहीं की थी।

वे हमारी ओर आ रहे थे, और झाड़ियों के बीच से आ रहे थे; क्योंकि आवाज़ सूखी पत्तियों की थी। अगर आवाज़ सामने से या यहाँ तक कि बाईं ओर से भी आती, तो हम उसे सुन नहीं पाते, क्योंकि वहाँ घास घनी, मुलायम और हरी थी, और तालाब के पास होने के कारण ज़मीन नम थी।

कदमों की आहट थम गई, फिर आगे बढ़ी, और फिर थम गई; दो-तीन कदम आगे बढ़ी, और फिर पूरी तरह से बंद हो गई।

उस खर्राटे की आवाज़ को सिर्फ़ सियार ही निकाल सकता था—वह अकेला सियार। और अब वह रुक गया था। क्यों? क्या उसे शक हो गया था? क्या उसने हमें देख लिया था? या फिर वह किसी और वजह से रुका था? क्या अब उसका 'मार्गदर्शक' और कनिष्ठ सदस्य का काम खत्म हो गया था? क्या अब वरिष्ठ साथी की बारी थी?

हमें बाघ की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी थी। लेकिन मुझे पूरा यकीन था—उतना ही यकीन जितना मुझे अपने नाम का—कि बाघ भी वहीं था। मेरी हर सहज प्रवृत्ति, मेरे शरीर का हर कण, ज़ोर-शोर से संदेश दे रहा था। सावधान! खतरा! आदमखोर बाघ पास ही है।

एक और भी ज़्यादा परेशान करने वाला विचार मेरे दिमाग में कौंध गया। शायद छोटा साथी, चालाक, अकेला सियार, जानबूझकर पत्तों के बीच से चलकर शोर मचा रहा था ताकि हमारा ध्यान भटका सके। शायद ठीक उसी समय वरिष्ठ साथी, जल्लाद, जो अपने अंजाम तक पहुँचने को तैयार था, गीली ज़मीन और हरी घास पर चुपचाप रेंगता हुआ आ रहा था, ताकि आखिरी घातक वार करने के लिए काफ़ी करीब पहुँच सके। इससे भी बुरा, शायद वह पीछे से आ रहा था।

मैंने चौकीदार के घुटने से अपना हाथ हटा लिया, क्योंकि मेरा हाथ भी लगभग उतना ही कांप रहा था। मैं अपने सामने के अंधेरे में घूर रहा था, आँखें जल रही थीं, कान चौकन्ने थे। मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। पल बीतते जा रहे थे, शायद ये इस धरती पर बिताए मेरे आखिरी पल थे। पसीना मेरे चेहरे

से बह रहा था, गालों से टपककर मेरे कंधे से लगी .405 राइफल के बट पर गिर रहा था, जिसका मुंह व्यर्थ ही बाहर की ओर काले अंधेरे में था, मानो कुछ दिखाई ही न दे रहा हो। राइफल पकड़े मेरे हाथ पसीने से तरबतर थे।

वह हमारे पीछे कैसे आया, यह हम कभी नहीं जान पाए, लेकिन अचानक उस दिशा से चौंकाने वाली तेज़ी के साथ एक अजीब, शैतानी चुनौती सुनाई दी: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

और उस शाम पहली बार, उस अपवित्र साथी ने जवाब दिया। हमने बाघ की दहाड़ सुनी जब वह पुतले पर झपटा। अपनी उत्तेजना में हम यह बात पूरी तरह भूल गए थे। हमने इस संभावना को नज़रअंदाज़ कर दिया था कि सियार—अगर उसने सचमुच बाघ को उसके 'शिकार' तक पहुँचाया था—तो वह उसे पुतले तक ले गया था, न कि हमारे पास। हमारी चाल वास्तव में कामयाब हो गई थी।

लेकिन अनंतस्वामी इतना भयभीत था कि उसने टॉर्च नहीं जलाई, या शायद जलाना ही नहीं चाहा। घोर अंधेरे में बैठे हुए और बाघ को अपने 'शिकार' को परेशान करते हुए सुनते हुए वह मानो लकवाग्रस्त हो गया था।

और ठीक उसी नाजुक क्षण में हमें एक और आवाज़ सुनाई दी— लेकिन इस बार एक सुकून देने वाली, आश्वस्त करने वाली, घरेलू सी आवाज़। चौकीदार का आवारा कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। वह ज़रूर अपने मालिक की तलाश में आया होगा। उसने सियार की आवाज़ सुनी थी, उसके बाद बाघ की दहाड़ और पुतले को नोंचते हुए की आवाज़ सुनी थी। लेकिन भाग जाने के बजाय, जैसा उसे करना चाहिए था, वह पूरी ताकत से भौंकने लगा।

मैंने अपनी मुट्ठी से अनंतस्वामी की जांघ को जोर से धक्का दिया और बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया: 'बैटरी पोडु (टॉर्च जलाओ)।'

उसने टॉर्च की रोशनी डाली, बेचारा। लेकिन बाघ पर नहीं। उसने सीधे मेरे चेहरे पर रोशनी डाली। मेरी आँखें चौंधिया गईं, मैंने अपने बाएँ हाथ से उससे टॉर्च छीन ली और उसे हमारे सामने अँधेरे में घुमा दिया, जहाँ वह पुतला बैठा था। टॉर्च की रोशनी में बाघ की आँखें चमकीं और उसके पीछे उसकी आकृति धुंधली सी दिखाई दी। मैंने अपने बाएँ हाथ से टॉर्च को ऊपर उठाया और उसे अपनी राइफल की नली पर टिकाने की कोशिश की ताकि आगे का निशाना स्पष्ट हो जाए और साथ ही बाघ और उसकी चमकती आँखें भी दिखाई दें।

लेकिन उस रात किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया। एक बार फिर बाघ ने अपने पीछे आने वाले इंसान के प्रति आदमखोर का स्वाभाविक भय दिखाया। एक ज़ोरदार 'र्-र्-रॉफ़!' की आवाज़ गूंजी और अगले ही पल बाघ गायब हो गया।

मैंने टॉर्च चारों दिशाओं में घुमाई, इस उम्मीद में कि शायद कहीं और उसकी आँखें दिख जाएँ। लेकिन वह गायब हो चुका था। मैंने टॉर्च पीछे की ओर घुमाई, उस मनहूस सियार को ढूंढने की उम्मीद में, जिसे देखते ही मैं गोली मार देता। लेकिन अपने साथी की तरह वह भी गायब हो गया था। तभी कोई छोटी सी भूरी-सफेद चीज़ कराहती हुई हमारी ओर भागी। क्या यह वही अकेला सियार था? आख़िरकार हमारी दया पर? लेकिन आते ही वह कराहने और भौंकने लगा। यह तो अनंतस्वामी का छोटा सा कुत्ता था।

पंद्रह मिनट बाद हम तीनों उठे और बंगले की ओर वापस चलने लगे। अब और रुकना स्पष्ट रूप से व्यर्थ था। नकली चाल का पर्दाफाश हो चुका था। बाघ और सियार दोनों को अब पता चल गया था कि वहाँ मनुष्य मौजूद हैं—ऐसे मनुष्य नहीं जो अनजान हों—और जो सबसे पहले उन्हें मार डालेंगे। इसलिए उन्होंने वहाँ से भागने का फैसला कर लिया था।

बंगले की ओर लौटते समय मैंने कुछ मिनट पहले बनाए अपने निष्कर्ष को पलट दिया। मैंने सोचा था कि यह मेरी बदकिस्मती भरी रात थी। अब मुझे यकीन था कि यह वास्तव में बहुत ही भाग्यशाली रात थी। पहली बात तो यह कि तथाकथित चालाक साथी, सियार, उतना चालाक साबित नहीं हुआ जितना मैंने सोचा था। उसने हमें बाघ के आने की चेतावनी दे दी थी। दूसरी बात, जब मैंने टॉर्च जलाई, लेकिन गोली चलाने के लिए तैयार नहीं था, तो बाघ ने सहर्ष भाग जाने का फैसला किया। अगर वह हम पर हमला कर देता तो? तीसरी बात, शायद अपने तेज भौंकने से उस छोटे कुत्ते ने बाघ को डरा दिया था और उसे भागने पर मजबूर कर दिया था, जबकि वह हम पर आसानी से झपट्टा मार सकता था।

जी हाँ, वाकई वो रात बदकिस्मती की नहीं, बल्कि किस्मत की ही थी! हम दोनों बुरी तरह डर गए थे। हम दोनों से ही गलती हो गई थी और इसीलिए हम बाघ को खो बैठे। लेकिन दोषारोपण से कोई फायदा नहीं। इसलिए हम सो गए।

अगली सुबह सूरज की तेज और गर्म किरणें हमें पिछली रात की निराशा भुलाने में मदद कर रही थीं। अनंतस्वामी को अपने ऊपर बहुत शर्म आ रही थी। उसने मुझे

बार-बार यकीन दिलाया कि वह आदमखोर बाघ से नहीं, बल्कि उस रहस्यमयी बुरी आत्मा, उस अकेले सियार से डरा था, जो उस शैतानी साझेदारी के पीछे का शातिर दिमाग था। मैंने भी उसे यकीन दिलाया कि मैं भी उतना ही डरा हुआ था, लेकिन बाघ से, न कि उस बुरी आत्मा या चालाक दिमाग वाले अकेले सियार से। इस तरह, हम दोनों के बीच अपनी कायरता स्वीकार करने से माहौल साफ हो गया और हमने नए सिरे से योजना बनाना शुरू कर दिया।

यह कहना मुश्किल था कि नकली पुतले वाली तरकीब को दोबारा आजमाने पर सफलता की कोई संभावना थी या नहीं। बाघ को जब पता चल गया कि उसने किसी जीवित व्यक्ति पर हमला करने के बजाय पुराने कपड़ों के गट्ठे और पानी के घड़े पर हमला किया है, तो वह इतनी मूर्खता नहीं करेगा कि चौबीस घंटे के भीतर दोबारा धोखा खा जाए। इसलिए हमें कोई नई रणनीति सोचनी होगी—और बहुत गंभीरता से सोचना होगा।

मैंने बाघ के पदचिह्नों का अध्ययन किया, या यूँ कहूँ कि तालाब के किनारे हमें जितने भी पदचिह्न मिल सके, उनका। वह पुतले पर कूदा था और फिर कीचड़ में फिसल गया था, क्योंकि उसके वजन से पुतला धंस गया था। उसके अगले पैरों के केवल दो स्पष्ट निशान ही दिखाई दे रहे थे—शायद उसी जगह पर जहाँ वह एक पल के लिए रुका था, जब मैंने अपनी राइफल की नली के साथ अपनी बाईं ओर छोटी टॉर्च को संरेखित करने की कोशिश की थी। ये निशान लगभग उसी आकार के थे जैसे उस जानवर के पदचिह्न थे जिसका मैंने पिछले दिन गुंजुर जाने वाले रास्ते पर पीछा किया था। हरी घास पर उसने कोई निशान नहीं छोड़ा था, जबकि पीछे का जंगल सूखा और पथरीला था, जिस पर कोई निशान नहीं था।

एक बात तो स्पष्ट थी। सियार की मदद से हो या न हो, बाघ बहुत भूखा था। उसने तुरंत ही नकली पुतले पर हमला कर दिया था, जिससे उसकी भूख और बढ़ गई थी। उसे खाना ही था, और जल्दी ही। इसलिए, या तो उसने रात के आखिरी घंटों में किसी जानवर का शिकार किया होगा, या आने वाली रात के शुरुआती घंटों में करेगा। आम तौर पर बाघ दिन के उजाले में जंगली जानवरों का शिकार नहीं करते, और गुंजुर में कोई पालतू मवेशी नहीं थे। या फिर, वह डर के मारे सूर्यास्त के समय उस जगह से निकल चुका होगा, या निकल जाएगा, और कहीं और चला जाएगा।

हम दोनों साथ-साथ पैदल रास्ते से होते हुए लगभग एक मील चलकर जोल्डाहल

वापस गए। लेकिन बाघ उस रास्ते से नहीं लौटा था। हम वापस गुंजुर गए और बंगले से आधा मील दूर एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ गए। इस ऊँचाई से हमने ध्यान से आसमान की ओर देखा, ताकि अगर कोई शिकार हुआ होता तो उसका पता चल जाता। लेकिन किसी भी दिशा में कोई गिद्ध नज़र नहीं आ रहा था।

दोपहर होते-होते हम और भी निराश और पूरी तरह असफल हो चुके थे; और फिर हमने एक बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम किया। हमने नकली बाघ को फिर से खड़ा किया और उसी छिपने की जगह पर बैठ गए। यह दो कारणों से मूर्खतापूर्ण लग रहा था। पहला, इस बात की संभावना बहुत कम थी कि बाघ दोबारा नकली बाघ के झांसे में आ जाएगा। लेकिन, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात, जो हमें तब तक समझ नहीं आई जब तक हम वास्तव में अपनी जगह पर नहीं बैठ गए थे, वह यह थी कि अगर बाघ वापस आता, तो पिछली रात की घटना के कारण उसे पता चल जाता कि हम कहाँ हैं।

चित्तीदार हिरणों ने रात 8 बजे के कुछ देर बाद ही आवाज लगाई। जिस टीले पर हम उस सुबह चढ़े थे, उसके नीचे का जंगल उनकी तीखी, भयभीत चीखों से गूंज उठा: 'आओ! आओ! आओ!' एक नर हिरण ने सबसे पहले आवाज लगाई, और फिर बाकी हिरणों ने भी उसका साथ दिया। 'आओ! आओ! आओ!'

उन्होंने निःसंदेह बाघ को देखा या उसकी गंध महसूस की होगी। इससे हमारा मनोबल काफी बढ़ गया। कम से कम वह अभी भी यहीं था और कहीं गया नहीं था। लेकिन हमें न तो बाघ की कोई आवाज सुनाई दी, न ही उसके साथी, अकेले सियार की।

दस बज गए, और एक बार फिर ऐसा लगा जैसे बाघ की गतिविधियों का पर्दा उठने का पूर्वनिर्धारित समय आ गया हो। हमसे थोड़ा दक्षिण की ओर से हमें एक दर्दनाक, पीड़ादायक चीख सुनाई दी; एक चीख जो दो बार दोहराई गई और अंत में एक दबी हुई, सिसकती हुई आवाज़ में समाप्त हुई। एक जानवर की अभी-अभी हत्या कर दी गई थी; शायद एक चित्तीदार हिरण या एक छोटा सांभर। बाघ अपने शिकार को ढूंढने में सफल हो गया था। हमने उस आवाज़ की अनुमानित दिशा को ध्यान में रख लिया।

उसके बाद पूरी रात कुछ नहीं हुआ, न ही चित्तीदार हिरण ने दोबारा आवाज लगाई। अनंतस्वामी दो बजे के बाद सो गया, जबकि मैं मुश्किल से अपनी आँखें खुली

रख पा रहा था। लेकिन जागते रहना जरूरी था। हम दोनों का सोना वाकई बहुत खतरनाक होता।

जैसे ही उजाला हुआ, हम छिपने की जगह से निकले और पिछली रात की आवाज़ की दिशा में चलने लगे। अगर हमारी किस्मत अच्छी रही तो शायद हम बाघ को उसके शिकार के पास ही देख पाएंगे। लेकिन इस योजना में एक ही खामी थी। हमें पता नहीं था कि शिकार वास्तव में कहाँ है या उसे कहाँ ढूँढना है। हमने लगभग नौ बजे तक खोज की। फिर सूरज तेज़ होने लगा और मैं बहुत थक गया था। मैं पूरी रात सोया नहीं था और उससे पहले वाली रात भी आधी ही सो पाया था। इसलिए हम बंगले में वापस चले गए।

अनंतस्वामी ने रागी के गोले पकाने शुरू किए, जिन्हें मैं किसी और चीज़ से ज़्यादा तोप के गोले समझने लगा था। इस भयानक खाने का इंतज़ार किए बिना, मैं सो गया। दोपहर एक बजे के बाद जब मैं जागा तो देखा कि मेरे पास एक थाली में एक बहुत बड़ा रागी का गोला रखा हुआ था, साथ में चाय का एक कटोरा भी था जो बिल्कुल ठंडा हो चुका था। अनंतस्वामी कमरे के दूसरे कोने में सो रहे थे। मैंने हार मानकर उस चिपचिपे, बेस्वाद गोले को थोड़ा-थोड़ा खाया। काश उसमें थोड़ी चीनी या नमक ही होता। मैंने ठंडी चाय की तरफ देखा और कटोरा खाली कर दिया। कम से कम उसमें थोड़ा स्वाद तो था।

बंगले के बरामदे में कदम रखते हुए मैंने उम्मीद भरी निगाहों से दक्षिण दिशा की ओर देखा। आसमान में कोई गिद्ध मंडराता हुआ नहीं दिखा। पिछली रात के शिकार का कोई सुराग नहीं मिला। इसका मतलब यह था कि आने वाले अंधेरे घंटों के लिए हम कोई निश्चित कार्ययोजना नहीं बना सकते थे।

हालांकि, एक बात के लिए मैं शुक्रगुजार था। भले ही बाघ द्वारा मारा गया हिरण अपेक्षाकृत छोटा ही क्यों न हो, और उसने उसे पूरी तरह खा लिया हो, फिर भी संभावना यही थी कि भूख उसे दोबारा शिकार की तलाश में निकलने से पहले वह चौबीस घंटे तक आसपास ही मंडराता रहेगा।

मेरे लिए दस मील चलकर जोल्डाहल वापस जाना, एक जीवित चारा खरीदना और उसे सूर्यास्त से पहले बांधकर लाना बहुत देर हो चुकी थी। मैंने तय किया कि मैं यह काम अगले दिन करूँगा। उस रात मुझे झरने के पास अपने पुराने ठिकाने पर फिर से बैठने से बेहतर कुछ नहीं लगा, इस बार मैं नकली जानवर की जगह बदलूँगा। इस

बीच, चूंकि अभी दो बजे नहीं बजे थे और चौकीदार अभी भी सो रहा था, मैंने दोपहर के अगले दो घंटे उस छोटे बंगले के आसपास की पहाड़ियों में जाने वाले कुछ जंगली जानवरों के रास्तों पर घूमने में बिताने का फैसला किया।

मुझे पूरा यकीन था कि बाघ ने पिछली रात ही शिकार किया था, क्योंकि अनंतस्वामी और मैंने दोनों ने ही शिकार की चीख सुनी थी। अगर मैं रात होने से पहले उस जगह का पता लगा लेता और वहां बैठ जाता, तो लगभग निश्चित था कि बाघ वापस आएगा।

इसी विचार को मन में लिए मैं एक बार फिर दक्षिण की ओर उस पहाड़ी की तरफ चल पड़ा जहाँ से वह मरणासन्न चीख सुनाई दी थी। इस बार मैं एक अलग कोण से उसके पास पहुँचा, मेरा ध्यान दो बातों पर बँटा हुआ था: एक तरफ़ रेतीली ज़मीन पर बाघ के पैरों के निशान ढूँढ़ना, दूसरी तरफ़ गिद्धों या पेड़ पर बैठे कौवे को ढूँढ़ना, ताकि पता चल सके कि बाघ ने शव कहाँ छिपाया था। और हर समय मुझे ध्यान से देखना था कि मैं कहाँ चल रहा हूँ, किसी भी झाड़ी या घनी वनस्पति के बहुत पास से न गुज़रना था, जिसके पीछे कोई बाघ घात लगाकर बैठा हो सकता था।

जिस तरह मैं उसका शिकार कर रहा था, उसी तरह आदमखोर बाघ मेरा भी शिकार कर रहा था। यह एक ऐसा खेल था जिसमें ज़रा सी भी गलती की गुंजाइश नहीं थी, क्योंकि गलती का मतलब न सिर्फ खेल का अंत होता, बल्कि गलती करने वाले का भी अंत। इसी सावधानी के चलते मेरी प्रगति बहुत धीमी रही। आखिरकार मैं एक रेतीले नाले पर पहुँचा जो पहाड़ी की तलहटी के चारों ओर घूमता था। यहाँ मैं रुका और बाईं ओर मुड़कर थोड़ी दूर तक नाले का पीछा किया यह देखने के लिए कि क्या बाघ उसे पार कर गया है। थोड़ी देर बाद मुझे रेत में बाघ के पैरों के निशान दिखाई दिए, लेकिन वे निश्चित रूप से पिछली रात के नहीं थे। ये कम से कम एक सप्ताह पुराने थे; शायद दस दिन पुराने। निराश होकर, मैंने नाला पार किया और पहाड़ी पर चढ़ना शुरू कर दिया।

ज़मीन पथरीली हो गई थी, जो मैसूर राज्य की कई छोटी पहाड़ियों पर बहुतायत में पाए जाने वाले लाल लेटराइट कंकड़ से ढकी हुई थी। इसी वजह से वनस्पति विरल हो गई थी, झाड़ियाँ कहीं-कहीं छिटपुट उग रही थीं, जिनमें वल्लारी के पौधे, बौनी घास और लैंटाना के साथ-साथ कांटेदार नाशपाती भी शामिल थे। मुझे इस बात की खुशी थी क्योंकि इस अपेक्षाकृत खुले मैदान में बाघ अब मुझ पर अचानक हमला नहीं

कर सकता था। इसी तरह, वह अपने शिकार को यहाँ नहीं लाता, क्योंकि उसे छिपाने की कोई जगह नहीं थी। इसलिए मेरी खोज जारी रखना व्यर्थ था। जब मैंने अपनी घड़ी देखी तो मुझे आश्चर्य हुआ कि दोपहर के 3:20 बज रहे थे। मुझे जल्दी वापस जाना होगा, क्योंकि हमें नकली बाघ को तैयार करना है और पाँच बजे तक अपने छिपने की जगह पर पहुँच जाना है।

वापसी का सफर जल्दी तय हो गया, क्योंकि मैंने बाघ के पैरों के निशान या गिद्धों की तलाश नहीं की, हालांकि मैंने झाड़ियों या घास के बड़े-बड़े झुंडों से पूरी तरह दूरी बनाए रखी, जिनके पीछे बाघ छिपा हो सकता था। चार बज चुके थे जब मैं वापस लौटा तो अनंतस्वामी बहुत चिंतित थे। सौभाग्य से उन्होंने ताज़ी चाय तैयार कर रखी थी, जिसे मैंने कृतज्ञतापूर्वक पी लिया, हालांकि रागी की एक और गेंद खाने के उनके निमंत्रण को मैं ठुकरा नहीं सका। हमने पुतले को थोड़ा सजाया और उसे वापस नदी के किनारे ले गए। इस बार हमने उसे तालाब के किनारे नहीं रखा, बल्कि अपने छिपने की जगह से लगभग बीस गज दूर घास के मैदान पर रख दिया। इस जगह का कोई खास फायदा नहीं था सिवाय इसके कि यह हमारे छुपने की जगह से कुछ गज करीब थी, जिसके पीछे हम पांच बजने के कुछ देर बाद बैठ गए।

यह जानते हुए कि उस दोपहर अनंतस्वामी भले ही कई घंटे सो चुके थे, फिर भी आधी रात तक उन्हें दोबारा नींद आ जाएगी, मैंने उनसे कहा कि वे सात बजे तक, यानी अंधेरा होने तक, पहरा दें, जबकि मैं रात भर जागने की तैयारी के लिए थोड़ी देर झपकी ले लूँ। इस तरह उस अवसर पर मैं दिन के पक्षियों की मधुर चहचहाहट को धीरे-धीरे कम होते हुए और रात के पक्षियों और जानवरों की तेज़ आवाज़ों में बदलते हुए सुनने से वंचित रह गया।

मैं देर से जागा, चौकीदार ने मेरा कंधा हिलाया। ऊपर, साफ, मखमली आकाश में तारे शांति से टिमटिमा रहे थे। घना अंधेरा था और मैं जानता था कि अनाथस्वामी ने मुझ पर दया की थी और मुझे उस समय से ज़्यादा सोने दिया था जिस समय मैंने उन्हें जगाने के लिए कहा था। मैंने अपनी घड़ी देखी। रात के 8:12 बज रहे थे। धीरे से, और जितना हो सके चुपचाप, मैं उठ बैठा।

और फिर मैंने उसे सुना। हालाँकि आवाज़ दूर से आ रही थी, फिर भी ठंडी रात की हवा में वह स्पष्ट रूप से सुनाई दी: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

अनायास ही, सहज रूप से, मेरा हाथ राइफल के बट पर कस गया, क्योंकि

सदियों पुरानी जंगल की अफवाह से उपजे पुराने, डरावने विचार एक बार फिर मेरे मन में उमड़ पड़े। वे भयानक साथी फिर से शिकार की तलाश में थे। क्या वह रहस्यमयी सियार बाघ को हमारे पास ले आएगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने दो रात पहले किया था?

जवाब आया, मानो मेरे अनकहे विचारों का मौखिक उत्तर हो: 'आ-ऊंग! ओ-ओ-न-ऊह! आउंग-हा! आउंग-हा!'

बाघ दहाड़ रहा था, और उसकी आवाज़ ठीक उसी दिशा से आ रही थी जहाँ से कुछ ही मिनट पहले अकेले सियार की आवाज़ आई थी। जंगल के लोगों ने हर दिशा में खतरे की घंटी बजा दी। बंगले के उत्तर की ओर, एक सांभर हिरण ने अपनी गहरी, नाक से निकलने वाली चेतावनी भरी दहाड़ लगाई, जो चौंककर 'पोंक!' से शुरू हुई, फिर 'व्ही-ओंक! व्ही-ओंक!' अंत में वह एक स्थिर चेतावनी भरी आवाज़ में चिल्लाने लगा जो पहाड़ियों के पार दूर-दूर तक गूंज रही थी: 'धंक! धंक! धंक!' हमारे काफी करीब एक मुंटजैक, या भौंकने वाला हिरण, अपनी कर्कश, लगभग कुत्ते जैसी भौंकने की आवाज़ निकाल रहा था, जिसके कारण उसका नाम पड़ा है: 'खर्र! खर्र! खर्र!'

भय की आवाज़ें सुनकर, हमारे पीछे झाड़ियों में छिपी एक चित्तीदार हिरणी ने अपनी प्रारंभिक चेतावनी देते हुए एक कर्कश, तीखी, सीटी जैसी आवाज़ निकाली; 'फ्रू! फ्रू!' फिर झुंड के मुखिया नर हिरण ने भी चौंककर 'आइओ! आइओ! आइओ!' की आवाज़ निकाली। यहाँ तक कि दूर किसी डाल पर सो रहा एक मोर भी विचलित हो गया। जागते ही वह 'पे-हौन! पे-हौन!' चिल्लाया, और फिर अपनी सामान्य आवाज़ में 'मिया-आ-ऊ! आओ! मिया-आ-ऊ!' में बदल गया।

पूरा जंगल दहशत और सतर्कता से भर गया। तालाब में मेंढक टर्राना बंद कर दिए। यहाँ तक कि नम घास में झींगुर भी चहचहाना बंद कर दिए। हर छोटा-बड़ा जीव एक ही बात सोच रहा था और जान रहा था: सावधान! बाघ! खतरा!

लेकिन हमारे लिए भागने का कोई रास्ता नहीं था। हम वहाँ एक निश्चित उद्देश्य से पहुँचे थे—उस आदमखोर को मार गिराना। तनावग्रस्त नसों और मांसपेशियों के साथ हम अगले कुछ मिनटों या घंटों में होने वाले नाटकीय घटनाक्रम का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

खतरे की चीखें दूर तक गूंजती रहीं, क्योंकि चीखने वाले जानवर सुरक्षित क्षेत्रों की ओर भाग गए, उस धारीदार आतंक से यथासंभव दूर, जो उनके लिए, और उस

समय हर जीवित प्राणी के लिए, हिंसक मौत का प्रतीक था। जंगल में सन्नाटा छा गया, जो भयावह था। मैंने अनंतस्वामी की कमज़ोर दो-सेल वाली टॉर्च के बारे में सोचा, जिसकी रोशनी हाल ही में उसके इस्तेमाल के कारण और भी कमज़ोर हो गई थी। वही एकमात्र साधन था जिससे बाघ दिखाई देता और मैं उसकी तस्वीर ले पाता।

कुछ नहीं हुआ। एक घंटा बीत गया, एकदम सन्नाटा पसरा रहा। यहाँ तक कि मेंढक और झींगुरों ने भी अपनी जानी-पहचानी आवाज़ें नहीं निकाली थीं। और समय बीत गया, और तनाव कम होने पर मैंने घड़ी पर नज़र डाली। रात के 10:5 बज रहे थे और मुझे बहुत तेज़ भूख लग रही थी।

फिर मेरी गर्दन के बाल मानो अपने आप खड़े हो गए। अनंतस्वामी का ठंडा और पसीने से भीगा हाथ मेरी बांह पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। वह बुरी तरह कांप रहा था।

टप-टप। टप-टप। टप-टप। इस बार आवाज़ हमारे पीछे से आई, एक बार फिर झाड़ियों के बीच से। उन्हीं झाड़ियों में जहाँ हम अपने कमज़ोर पिंजरे की आड़ में छिपे हुए थे। कोई जानवर ज़मीन पर बिछे सूखे पत्तों के कालीन पर तेज़ी से चल रहा था। जैसे ही वह झाड़ियों और छोटे पौधों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा, कुछ टहनियाँ टूट गईं।

यह क्या हो सकता है? निश्चित रूप से बाघ तो नहीं। कदमों की आहट बहुत हल्की और तेज़ थी। क्या यह अकेला सियार था जो एक बार फिर रास्ता दिखा रहा था? मैं उस छोटे से आवारा कुत्ते को याद कर रहा था जिसने भौंककर शायद अड़तालीस घंटे पहले हमारी जान बचाई थी। अफसोस, हमने उसे चौकीदार के कमरे में बंद करके यह सुनिश्चित कर लिया था कि वह फिर कभी किसी नाजुक समय में दखल न दे।

फिर सन्नाटा छा गया। तारों की रोशनी में मैं बीस गज दूर पड़ी उस पुतली को धुंधला-धुंधला देख पाया: एक धुंधली, सफेद वस्तु, जो मेरी थकी हुई आँखों को लगभग दिखाई नहीं दे रही थी। हमारे पीछे घनी झाड़ियों में से, जहाँ से वह हल्की-हल्की आवाज़ आ रही थी, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

कुछ देर बाद हमें अपने दाहिनी ओर, जहाँ हम बैठे थे उसके दक्षिण में, तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी। फिर सन्नाटा छा गया और तभी एक धूसर, प्रेत जैसी आकृति हमारे सामने घास पर, हमारे और पुतले के बीच से गुज़रती हुई दिखाई दी। वह काफ़ी छोटी लग रही थी और तेज़ी से, अजीब तरह से झटके से चल रही थी। वह लगभग

हमारे सामने आकर रुक गई।

तारों की परावर्तित रोशनी से इतनी रोशनी नहीं मिल पा रही थी कि मैं जानवर की हरकतें साफ़-साफ़ देख सकूँ। अचानक वह अपने आकार से आधा सिकुड़ गया, लेकिन मुझे समझ आ गया कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह प्राणी हमारी ओर मुड़ गया था। उसका सिर तेज़ी से ऊपर-नीचे हिल रहा था, मानो उसकी आँखें घनी झाड़ियों को भेदकर हमें पहचानने की कोशिश कर रही हों।

एक बात तो तय थी: हमारी स्थिति अब गुप्त नहीं रही। जानवर को पता चल गया था कि छलावरण के पीछे कोई न कोई ज़रूर है। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से हुई कि उसने नकली वस्तु पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। उसने नकली वस्तु की ओर पीठ कर ली थी और हमें घूर रहा था।

अगले ही पल मैंने न केवल अकेले सियार की चीख सुनी बल्कि जानवर को अपना सिर आकाश की ओर उठाते हुए यह कहते हुए भी देखा: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

इसके तुरंत बाद, मानो अचानक हरकत में आकर, सियार कुछ गज दूर भाग गया, जहाँ वह अचानक रुक गया, मुड़ा और हमारी दिशा में ध्यान से देखने लगा।

मैं उस जानवर की हरकतों में इतना मग्न था कि अनंतस्वामी के हाथ ने, जो मेरी बांह को ज़ोर से और दर्दनाक तरीके से दबा रहा था, मुझे मजबूर कर दिया कि मैं अपना सिर आधा उसकी तरफ घुमाऊं। और जैसे ही मैंने ऐसा किया, मेरी नज़र एक ऐसे दृश्य पर पड़ी जिसने मुझे पल भर के लिए सदमे से स्तब्ध कर दिया। ठीक उसी जगह पर जहाँ एक पल पहले सियार था, एक विशालकाय जानवर खड़ा था। उस अवास्तविक रोशनी में वह घोड़े जितना बड़ा दिख रहा था।

मुझे पता था कि मैं बाघ को ही देख रहा था, जो हमारे सामने घास में खड़ा था, बगल से हमारी ओर देख रहा था, ठीक वैसे ही जैसे कुछ क्षण पहले सियार ने किया था।

मैंने अनंतस्वामी को दो बार ज़ोर से और जल्दी से धक्का दिया। यह उसके लिए पूर्वनिर्धारित संकेत था कि वह जानवर पर अपनी टॉर्च की रोशनी डाले। कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। देखभाल करने वाला हिल भी नहीं सका। मुझे अफ़सोस हुआ कि एक बार फिर उसने मुझे उस समय निराश किया जब मुझे उसकी मदद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। मैंने उसे फिर से धक्का दिया, लेकिन फिर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं

हुई। मैंने मुट्ठी बांधकर उसे घूंसा मारा। लेकिन अनंतस्वामी बस बैठा रहा और देखता रहा। मैंने अपनी टॉर्च पीछे छोड़ने पर खुद को कोसा। लेकिन जो कुछ घटित हुआ, उसका मैं पहले से अनुमान कैसे लगा सकता था?

बाघ ने मेरी हलचल देख ली। या शायद उसने अनंतस्वामी की जांघ पर मेरी मुट्ठी की हल्की सी आवाज सुन ली हो। वह धमकी भरे स्वर में गुर्राया और उसकी आकृति छोटी होती चली गई, मानो घास में घुलमिल गई हो। मैं समझ गया कि वह हम पर हमला करने की तैयारी में जमीन पर लेट गया है। दो-तीन छलांगों में ही वह हमारे ऊपर आ गिरेगा, हमारी असुरक्षित चमड़ी के सामने से होते हुए।

बाघ की हरकत और मेरे निष्कर्ष लगभग एक साथ निकले। शायद यह सब दस सेकंड से भी कम समय में हुआ।

चौकीदार की बेजान उंगलियों से टॉर्च छीनकर, मैंने राइफल की नली पर निशाना साधने से पहले ही बटन दबा दिया। रोशनी की किरण से मेरी फोरसाइट तो नहीं दिखी, लेकिन वह सीधे बाघ की आंखों में पड़ी। हालांकि रोशनी बहुत तेज़ नहीं थी, फिर भी बाघ काफ़ी झिझका। शायद उसने रोशनी को दो रात पहले हुए उस अचानक हमले से जोड़ लिया हो, जब उसने नकली बाघ पर छलांग लगाई थी। उसके झिझकने का जो भी कारण रहा हो, उसने मुझे फोरसाइट की नोक को बैकसाइट और चमकती आंखों के बीच सीधी रेखा में लाने के लिए ज़रूरी एक पल का समय दे दिया।

इस तरह का निशाना लगाना बिल्कुल भी आदर्श नहीं था, खासकर तब जब मैंने टॉर्च और राइफल दोनों को अपने बाएं हाथ से पकड़ रखा था। अगर गोली बहुत ऊपर लगती, तो बाघ के पीछे हटते माथे से टकराकर निकल जाती। लेकिन मेरे पास और कुछ करने का समय नहीं था, और मैंने ट्रिगर दबा दिया।

राइफल की आवाज के बाद एक कान फाड़ देने वाली दहाड़ सुनाई दी, जब बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसके अगले पंजे उसके कुचले हुए चेहरे को खरोंच रहे थे। मैंने हड़बड़ी में नीचे का लीवर चलाया और उसकी छाती पर दिख रहे सफेद फर पर गोली चला दी।

उसके बाद वह ज़मीन पर आ गिरा, अंधाधुंध इधर-उधर भटकता रहा, जबकि उसके नुकीले पंजों से ज़मीन पर बेतहाशा प्रहार होते हुए मिट्टी और घास के ढेले उखड़ रहे थे, और उसके खुले जबड़े दर्द से कराहते हुए बेरहमी से काट रहे थे। लगातार दहाड़ें गूंज रही थीं, और मैंने मैगज़ीन की सारी गोलियां चला दीं। गोलियों की गिनती

भूलकर, मैंने खाली चैंबर में फायरिंग पिन की क्लिक की आवाज़ सुनी। बाघ अभी भी छटपटा रहा था, लेकिन दहाड़ों की जगह एक घुरघुराहट सुनाई दी, जो मरते हुए बाघ की स्पष्ट अंतिम सांस थी।

'टॉर्च पकड़ो।' मैंने जल्दी से फुसफुसाते हुए टॉर्च को चौकीदार के सुन्न हाथ में थमा दिया, और साथ ही तेजी से मैगज़ीन में तीन गोलियां भर लीं।

लंबी घास में लेटे हुए बाघ का धड़कता हुआ हिस्सा मुझे साफ दिखाई दे रहा था। उसकी गड़गड़ाहट अनियमित हो गई। अचानक वह बंद हो गई और मैं समझ गया कि बाघ मर चुका है। हमने पंद्रह मिनट और इंतजार किया, लेकिन कोई हलचल नहीं हुई।

वह अकेला सियार फिर कभी प्रकट नहीं हुआ। शायद उसे सहज ज्ञान से पता चल गया था कि उसने अपने साथी को मृत्यु के घाट उतार दिया है और उसे खेद हुआ होगा। संभवतः वह इसके बाद किसी दूसरे साथी की तलाश में जल्दी से चला गया, यह याद करते हुए कि अब तक इस साथ ने उसे सहज और बड़े लाभ दिए थे।

अगली सुबह हमने बाघ का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया। वह बहुत बूढ़ा नर बाघ था, जिसके नुकीले दांत घिसे हुए थे। लेकिन इसके अलावा उसमें कोई और दोष नहीं दिख रहा था। आखिर किस बात ने उसे इंसानों के खिलाफ कर दिया था? शायद यह बस एक सनक थी। हो सकता है उसे बुढ़ापा आ रहा हो और उसने भोजन प्राप्त करने का एक आसान तरीका खोज लिया हो। शायद सियार ने ही उसे शिकार की ओर ले जाकर उकसाया हो—यानी चौकीदार की अभागी बेटी। कौन जानता है?

दो

उम्बलमेरु का दुष्ट

जंगल की सुनहरी भूरी घास, जो पहले बारिश से हल्की हुई और फिर दोपहर की चिलचिलाती धूप से सूख गई, ढलान वाली पहाड़ियों के किनारों को ढक लेती है, जो इस जंगली इलाके में बेतरतीब ढंग से उठी हुई प्रतीत होती हैं। प्रत्येक पहाड़ी के आधार पर, संकरी, तीखी घाटियाँ सदियों से आए तूफानों के दौरान बारिश के पानी से बनी हैं, जो ऊँची चोटियों से टकराकर उग्र, कीचड़ भरी धाराओं के रूप में जंगल से ढकी ढलानों से नीचे घाटियों में बह जाती हैं, जहाँ वे आपस में मिलकर अंततः छोटी कल्याणी नदी की उत्तर-पूर्वी शाखा का निर्माण करती हैं।

ये छोटी-छोटी घाटियाँ झाड़ियों से भरी हुई हैं: बेंत-बांस, लैंटाना और 'घातक' लता की चिपकने वाली लताएँ, जिसने निश्चित रूप से अपना नाम सार्थक कर लिया है।

कई साल पहले, शायद किसी नन्ही चिड़िया ने इसके कुछ भूरे बेर खाए होंगे और फिर पत्तों वाली टहनी पर बैठ गई होगी। बेरों का गूदा जल्दी ही पच गया और चिड़िया ने बिना पचे बीज निकाल दिए। ऐसा ही एक बीज उस विशाल पेड़ की जड़ों में गिर गया होगा जहाँ वह बैठी थी। फिर बारिश आई और वह छोटा बीज अंकुरित हुआ और एक नन्हा 'किलर' पैदा हुआ, जो शुरू में आपकी छोटी उंगली के नाखून से भी छोटा था।

लेकिन पौधा तेजी से बढ़ता है और एक महीने का होते ही अपनी बेलें निकाल लेता है, इस प्रकार पहली बार एक रेंगने वाले पौधे के रूप में प्रकट होता है जो अपना भार अन्य पौधों और पेड़ों पर टिकाता है। यह बढ़ता ही जाता है और पहले वर्ष के अंत तक शायद उस विशाल पेड़ की एक तिहाई ऊँचाई तक चढ़ चुका होता है जिसने इसे आश्रय दिया था। लेकिन इसका तना अभी भी आपकी मध्यमा उंगली से अधिक मोटा नहीं होता। दो वर्षों के भीतर यह पेड़ के शिखर तक पहुँच जाता है, जहाँ से इसकी बेलें आसपास के विशाल वन वृक्षों की ओर भूख से फैल जाती हैं, जो सभी, मेजबान वृक्ष की तरह, संभवतः दो या तीन शताब्दियों पुराने होते हैं। और अब लता का तना आपकी कलाई जितना मोटा हो जाता है।

वर्ष बीतते जाते हैं और लता उस पुराने पेड़ को पूरी तरह से ढक लेती है और जकड़ लेती है जिस पर वह टिकी है। तना, जो कभी आपकी उंगली जितना मोटा था और फिर आपकी कलाई जितना, अब आपकी जांघ जितना मोटा हो गया है, और यह तब तक बढ़ता रहता है जब तक कि यह आपके शरीर जितना मोटा न हो जाए। इसका वजन बहुत अधिक है। यह अपने मेजबान पेड़ के तने और शाखाओं के चारों

ओर और भी कसकर लिपट गई है, नरम बाहरी छाल को काटकर लकड़ी के बिल्कुल भीतरी हिस्से तक पहुंच गई है।

धीरे-धीरे, निर्दयतापूर्वक, यह अपने मेजबान का गला घोंटकर उसे मार डालता है। वर्षों बाद बारिश और तूफान फिर आते हैं। शायद उसी रात जैसी किसी रात, जिस रात 'हत्यारे' का जन्म हुआ था, वह विशाल पुराना पेड़, जिसने कभी मासूम दिखने वाले हत्यारे को आश्रय दिया था, ज़मीन पर गिर पड़ता है, और उस 'बच्चे' द्वारा निगल लिया जाता है जिसे उसने कभी पनाह दी थी। गिरे हुए मलबे के बीच से 'हत्यारे' की लताएँ लालच से पड़ोसी पेड़ों के तनों की ओर बढ़ती हैं, और वहाँ उस भयावह कहानी को दोहराती हैं और बार-बार 'हत्यारे' के रूप में अपना नाम कमाती हैं।

संकरी घाटियों में घनी झाड़ियों के कारण, मनुष्य का प्रवेश असंभव है, और किसी भी आकार के जानवर के लिए तो यह लगभग नामुमकिन है। यह कृन्तकों और ऐसे ही अन्य छोटे जीवों का घर है, और उन पर शिकार करने वाले साँपों की कई प्रजातियों का भी। सबसे शुष्क गर्मी के महीनों और सबसे तेज़ उष्णकटिबंधीय सूरज के बावजूद, यहाँ हमेशा हरियाली छाई रहती है। ऐसा लगता है मानो आसपास की पहाड़ियों का भार धरती से ही नमी सोख लेता है, जिससे घनी हरियाली में दलदल बन जाता है जहाँ दिन भर झींगुर चहचहाते रहते हैं और हमेशा धुंध छाई रहती है। सूरज की किरणें हरियाली के आवरण को भेद नहीं पातीं। अंकुरण और ऊपर की ओर बढ़ने में एक पल की भी देरी का मतलब है कि पास की झाड़ी, लता या छोटा पौधा अवसर का लाभ उठा लेता है और पीछे रह जाने वाला पौधा हमेशा छाया में रहने और अंततः सड़ने-गलने से मरने के लिए अभिशप्त हो जाता है।

लेकिन घाटियों के ऊपर, पहाड़ियों की ढलानों पर, स्थिति अलग है। वहाँ सूरज बेरहमी से तपता है, और गर्मियों के महीनों में पेड़ों के पत्ते सूखकर जमीन पर गिर जाते हैं, जिससे धरती पर सरसराहट की एक चादर बिछ जाती है, जब तक कि बारिश उन्हें सड़ाकर मिट्टी में तब्दील नहीं कर देती, जो उन्हीं पेड़ों को पोषण देती है जिनसे वे गिरे थे।

पहाड़ियों पर ऊँचाई पर मौसम ठंडा और पथरीला होता है: यह उखड़े हुए पत्थरों, लाइकेन और काई का क्षेत्र है, जबकि ऑर्किड तनों और शाखाओं से लटके रहते हैं, और 'सीटी बजाने वाले स्कूली लड़के' के रूप में जाना जाने वाला बड़ा नीला-काला पक्षी अपने अद्भुत, बेतरतीब, चहचहाते स्वरों से श्रोताओं को रोमांचित कर देता है, जो

कभी भी एक ही धुन को दो बार नहीं दोहराता है।

दोपहर के कुछ ही समय बाद मेरी कहानी शुरू होती है: सीटी बजाता हुआ स्कूली बच्चा, अन्य अधिकांश पक्षियों और लगभग सभी छोटे-बड़े जानवरों के साथ, एक छायादार चट्टान के नीचे दोपहर की झपकी ले रहा है। वहाँ से चट्टान की दरार से रिसता हुआ निर्मल, बर्फीला ठंडा पानी दिखाई दे रहा है। हवा का झोंका भी न के बराबर महसूस हो रहा है, और पेड़ों की टहनियाँ और लंबी घासों के कांटेदार तने बिल्कुल स्थिर हैं। दोपहर के इस समय अजीब सी शांति छाई हुई है। यहाँ तक कि झींगुर भी चुप हैं, और आस-पास कोई पत्ता भी नहीं हिल रहा है। ऐसा लगता है मानो पूरी दुनिया गहरी नींद में सो गई हो।

लेकिन कुछ देर बाद एक हल्की सी आवाज़ सुनाई देती है, जो नदी के पानी की धीमी कलकल ध्वनि के ऊपर सुनाई देती है, जब वह चिकनी, घिसी हुई, काई लगी हरी, फिसलन भरी चट्टानों पर बहता है। यह रुक-रुक कर आने वाली, अनियमित आवाज़ है। किसी के खोदने की आवाज़, और यह नदी के दूसरे किनारे से, लगभग पचास गज की दूरी से आ रही है।

वहाँ एक मानव आकृति दिखाई देती है, जो घुटनों के बल बैठी है और नदी के किनारे बहुतायत में उगने वाली 'हाथी के कान' जैसी लिली की विशाल पत्तियों के बीच लगभग छिपी हुई है। केवल उस व्यक्ति की छोटी सी लोहे की छड़ चलाते समय होने वाली झटकेदार हरकतें और खुदाई की आवाज़ ही उसकी उपस्थिति का संकेत देती हैं; क्योंकि उसका गहरा काला शरीर, गंदी लंगोटी की एक छोटी सी पट्टी के अलावा नग्न, लिली की विशाल पत्तियों के नीचे और आसपास की गहरी छाया में पूरी तरह घुलमिल जाता है।

बूढ़े कोथंडा रेड्डी अपने गाँव रंगमपेट से, जो लगभग बारह मील दूर है, विशाल लिली के बीच उगने वाले दुर्लभ कामोत्तेजक कुलु जलपौधे के कंद खोदने के लिए आए हैं। यह पौधा अपने कामोत्तेजक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। उन्हें तीन पंखुड़ियों वाले, तिपतिया घास जैसे छोटे पत्ते वाले कुलु जलपौधे को बड़ी सावधानी से खोजना पड़ता है, जो अपने विशाल साथी पौधे के कारण लगभग पूरी तरह से छिप जाता है। जब उन्हें एक पौधा मिल जाता है, तो उन्हें कीचड़ में गहराई तक खोदना पड़ता है और हिलने वाले पत्थरों को हटाकर पौधे की पतली, कंदयुक्त सफेद जड़ों तक पहुँचना पड़ता है। इन जड़ों को अच्छी तरह सुखाकर, बाद में पीसकर पुरुष वीर्य के साथ

मिलाकर, अमावस्या की रात (जिसे 'अमावस्या' कहा जाता है) को मंत्रों से उपचारित करने पर, ये अपनी पूरी शक्ति प्राप्त कर लेती हैं।

ऐसा कहा जाता है कि इस पाउडर की एक चुटकी, प्रियजन के भोजन में मिलाकर, या इससे भी बेहतर, बिना दूध वाली कॉफी में गुड़ या भूरी चीनी डालकर, ताकि इसका हल्का तीखा स्वाद छिप जाए, देने से स्त्री इतनी उत्तेजित हो जाती है कि वह अपनी सारी शर्म-हया को त्यागकर, निःसंकोच और निर्लज्जता से अपने उत्सुक और पहले से तैयार प्रेमी की बाहों में समा जाती है। जाहिर है, इस मिश्रण का कुछ महत्व है—या कम से कम इसकी प्रतिष्ठा तो है ही—क्योंकि बूढ़े कोथंडा रेड्डी इसे कुछ वर्षों से एक रुपये प्रति चुटकी के हिसाब से बेच रहे थे। उन्हें रंगमपेट गांव में नाजायज बच्चों की संख्या पर चुपके से गर्व है—जो उनकी राय में कुलु की जड़ों की प्रभावकारिता के जीते-जागते प्रमाण हैं।

तो कोथंडा रेड्डी काम में जुट जाता है और गहराई तक खुदाई करने लगता है, जबकि उसकी लोहे की छड़ की धीमी और रुक-रुक कर आने वाली आवाज़, तेज़ बहते पानी की कलकल और बुलबुले की आवाज़ में लगभग दब जाती है, लेकिन पूरी तरह नहीं। और इस तरह तल्लीन होने के कारण वह उन द्वेषपूर्ण और क्रूर आँखों पर ध्यान नहीं देता जो ठीक ऊपर, चट्टानी छोटी धारा के किनारे से उस पर टकटकी लगाए खड़ी हैं।

उसे देख रहा प्राणी अपनी उपस्थिति का जरा सा भी संकेत देने वाली कोई आवाज नहीं निकालता। उसकी गुफा जैसी छाती और गले से किसी भी प्रकार की गुर्राहट नहीं निकलती। उसकी खोजपूर्ण और निर्मम निगाहों में पलकें भी नहीं झपकतीं।

अंततः लोहे की छड़ की नोक से कोमल सफेद जड़ें बाहर आ जाती हैं। बूढ़े कोथंडा रेड्डी उसे एक तरफ रख देते हैं और झुककर अपने द्वारा बनाए गए गड्ढे में दोनों हाथों से जड़ों को आसपास के कीचड़ से अलग करने लगते हैं।

ऊपर बैठा मूक दर्शक, जो उसकी हर हरकत पर नज़र रख रहा था, उस घटना को देख लेता है और जानता है कि सिर झुकाए हुए वह व्यक्ति अब उसे देख नहीं सकता। एक लाल जीभ तेज़ी से उसके ऊपरी जबड़े के होंठों को चाटती है। फिर वह प्राणी और नीचे झुकता है और सिलसिलेवार हत्याओं में से पहली हत्या को अंजाम देता है, जिसके कारण उसे चित्तूर जिले के तीन वन क्षेत्रों (भाकरापेट रिजर्व, चमाला घाटी

और मामंदुर हाई रेंज वन) की सीमा से लगे लगभग बीस गांवों और बस्तियों में 'शैतान' का नाम मिलेगा। (यह जिला अब आंध्र प्रदेश राज्य का हिस्सा है)।

पल भर में ही सब कुछ हो गया। कोथंडा रेड्डी ने उस विशालकाय आकृति को नहीं देखा जो हवा में तेज़ी से उड़ती हुई उन पर आ गिरी, हालांकि एक पल के लिए उन्होंने उसका भारी वज़न महसूस किया और उसके पंजों से हुए गहरे घावों की पीड़ा को भी सहा, जो उनकी खुली पीठ और बगलों में धंस गए थे। लेकिन यह केवल एक पल के लिए ही था, क्योंकि अगले ही पल विशाल नुकीले दांतों से लैस शक्तिशाली जबड़ों ने उनकी गर्दन और खोपड़ी के पिछले हिस्से को कुतर दिया। इस प्रकार कोथंडा रेड्डी की मृत्यु हो गई, और उन्हें उस क्षण का पता भी नहीं चला जब वे उस दूसरे लोक में चले गए जहाँ कामोत्तेजक दवाओं की कोई मांग नहीं है और कुलु की जड़ों का कोई मूल्य नहीं है।

रंगमपेट में उस बूढ़े व्यक्ति के लापता होने की खबर काफी समय बाद फैली। उनकी आदत थी कि वे रहस्यमयी जड़ों और जड़ी-बूटियों की तलाश में जंगल में चले जाते थे, या अपने बनाए हुए काढ़े, जादुई पाउडर, ताबीज और कवच बेचने के लिए आस-पास के गांवों का चक्कर लगाते थे, जिससे एक महान जादूगर या मंत्रंकार के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। और जब आखिरकार वे लापता हुए, तो उनकी हड्डियां कभी नहीं मिलीं, जिससे उनके निधन को किसी शैतान से जोड़ा जा सके। लेकिन, कुछ हफ्तों बाद, दो भटकते हुए वन रक्षक, जो पहाड़ी की ढलान पर चढ़े और बर्फीले ठंडे पानी से भरे छोटे नाले पर रुके, उन्होंने एक लोहे की छड़ और उसके पास एक गंदा कपड़े का थैला देखा, जिसे दीमक ने आधा खा लिया था, लेकिन उन भयानक दिखने वाली और सड़ती हुई जड़ों को नहीं खाया था जो अब नाले की गीली जमीन पर बिखरी पड़ी थीं। तब उन्हें याद आया कि कोथंडा रेड्डी काफी समय से लापता थे, जिसके कारण कुछ लोगों ने कहा कि वे अचानक और हमेशा के लिए रंगमपेट छोड़कर चले गए हैं। अब पहली बार वन रक्षकों को पता चला कि वह कभी वापस क्यों नहीं लौटा।

यह त्रासदी स्पष्ट रूप से काफी समय पहले घटी थी, और हत्यारे की प्रकृति या पहचान का कोई सुराग नहीं मिला था। वन रक्षकों ने अपनी खोज की सूचना रंगमपेट स्थित पुलिस चौकी को दी, जहाँ उनकी कही गई बातों को नोट कर लिया गया।

शैतान की गतिविधियों का कोई निश्चित या उचित रिकॉर्ड नहीं रखा गया था, कम

से कम उसके करियर की शुरुआत में तो नहीं; लेकिन रिपोर्टों के अनुसार अगली घटना निम्नलिखित तरीके से घटी।

दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे, जब सात बैलगाड़ियों का एक काफिला जंगल से रंगमपेट की ओर जाने वाले ऊबड़-खाबड़ रास्ते से लौट रहा था। यह रास्ता जंगल में सात मील दूर पुलिबोनू नामक स्थान पर स्थित एक कुएं से होकर जाता था। सड़क से लगभग एक चौथाई मील दूर, और गांव से चौथे मील के पत्थर के ठीक सामने, नरसिम्हा चेरुवु नामक एक बारहमासी जलकुंड है। सातों व्यक्ति चौथे मील के पत्थर के पास अपनी गाड़ियां रोककर दो फर्लांग नीचे जलकुंड की ओर उतरे। रास्ते में वे बातें करते हुए अपने चेहरे, हाथ और पैर साफ, गुनगुने भूरे पानी से धोते थे, और फिर मुट्ठी भर पानी होठों पर लगाकर बिना निगले गरारे करते थे और उसे कुंड में थूक देते थे।

आखिरकार, सातों आदमी पानी के किनारे एक बबूल के पेड़ के नीचे बैठ गए और थोड़ी देर बीड़ी पी। बीड़ी खत्म होते ही वे उठे और एक-एक करके अपनी गाड़ियों की ओर लौट गए। वे अपनी गाड़ियों तक तो पहुँच ही गए। कम से कम उनमें से छह तो पहुँच ही गए— लेकिन सातवें आदमी का कोई अता-पता नहीं था। वह कहाँ गया होगा? उसके आधे दर्जन साथी, भारतीय ग्रामीण की तरह शांत और धैर्यवान, समय की परवाह किए बिना, सड़क किनारे बैठ गए और उसका इंतज़ार करने लगे और कुछ और बीड़ी पीने लगे। यूँ ही उनमें से एक ने कहा कि लापता गाड़ीवान पुट्टू रेड्डी कतार में सबसे पीछे चल रहा था। बोलने वाले ने एक पल के लिए पीछे मुड़कर देखा और पुट्टू रेड्डी को बीड़ी जलाते हुए देखा। वह बहुत ज़्यादा बीड़ी पीता था।

समय बीतता गया और लापता व्यक्ति का कोई पता नहीं चला। सामान्य परिस्थितियों में अनिश्चित काल तक उसका इंतजार करना सुरक्षित होता। लेकिन अगर वे अब और देर करते तो जंगल से बाहर निकलकर रंगमपेट के आसपास के खेतों तक पहुँचने से पहले ही अंधेरा हो जाता। यह उन्हें मंजूर नहीं था।

वे उसे पुकारने लगे: 'पुट्टू रेड्डी! जल्दी आओ, यार; तुम कहाँ हो?'—'पुट्टू रेड्डी!'—'पुट्टू रेड्डी!' पुट्टू रेड्डी प्रकट नहीं हुआ।

छह गाड़ीवानों में दहशत छा गई। अपने लापता साथी को ढूंढने के लिए पानी के स्रोत तक वापस जाना उनके लिए नामुमकिन था। शायद किसी बुरी आत्मा ने उसे पकड़ लिया हो। हो सकता है किसी सांप ने उसे काट लिया हो। शायद उसे कोई बाघ,

कोई तेंदुआ या कोई भालू ले गया हो। लेकिन उनमें से अधिकतर लोगों का मानना था कि उसका गायब होना अलौकिक शक्तियों का परिणाम था।

कुछ ही क्षणों में उनमें से प्रत्येक अपनी बैलगाड़ी में सवार हो गया और छह जोड़ी बैल लगातार चाबुक की मार से प्रेरित होकर अपनी-अपनी गाड़ियों को लेकर तेज़ी से चल पड़े। चौथे मील के पत्थर पर सातवीं गाड़ी - पुट्टू रेड्डी की गाड़ी - अकेली रह गई, बैल धैर्यपूर्वक अपने मालिक का इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन वह कभी नहीं आया।

रात होते-होते ठंड बढ़ गई और ओस खूब बरसने लगी। गाड़ी से जुते हुए दोनों बैल अपने मालिक को भूल गए और रंगमपेट स्थित अपने सूखे, आरामदायक बाड़ों को याद करने लगे। उन्होंने रात भर सफर तय किया और सुबह करीब 4 बजे गांव पहुंचे। चूंकि उन्हें किसी ने परेशान नहीं किया था, इसलिए वहां बाघों का कोई नामोनिशान नहीं था।

फिर भी, पुट्टू रेड्डी—ठीक कोथंडा रेड्डी की तरह—बिना कोई निशान छोड़े हवा में गायब हो गया। जब अगले दो महीनों के भीतर एक तीसरा और फिर एक चौथा व्यक्ति गायब हो गया, तो लोग कहने लगे कि चमाला घाटी में एक 'शैतान' का साया है, जो अपने आने-जाने का कोई सबूत नहीं छोड़ता, सिवाय इसके कि वह हर बार अपने साथ एक इंसान को ले जाता है।

तीसरा शिकार एक छोटा व्यापारी था जो रंगमपेट से उत्तर-पश्चिम दिशा में तेरह मील दूर एक छोटे से गाँव तक चने से लदे दस-बारह गधों का झुंड ले जा रहा था। उसे पुलिबोनू के कुएँ पर दोपहर का भोजन करते देखा गया था, जो इस रास्ते पर सातवें मील के पत्थर से थोड़ा आगे था। दरअसल, उसने वहाँ डेरा डाले हुए कई बांस काटने वालों में से एक से कुएँ से उसके लिए पानी निकालने का अनुरोध किया था, क्योंकि उसके पास रस्सी नहीं थी। उस आदमी ने उसकी मदद की और व्यापारी ने जी भरकर पानी पिया। फिर उसे अपने गधों पर दोबारा सामान लादते देखा गया और अंत में वह उन्हें आगे बढ़ाते हुए चल पड़ा।

अगले दिन विपरीत दिशा से आ रहे कुछ अन्य यात्रियों ने दसवें मील के पत्थर के पास गधों के झुंड को बिखरा हुआ पाया, जो संतुष्ट भाव से चर रहे थे। वे अब भी अपनी पीठों पर चने की बोरियाँ लादे हुए थे। लेकिन उनके मालिक का कोई अता-पता नहीं था।

लापता होने वाला चौथा व्यक्ति पुलिबोनू में ही गायब हुआ था। और संयोगवश,

वह वही बांस काटने वाला था जिसने गधों के मालिक के लिए कुएँ से पानी निकाला था। पुलिबोनू के पास ही स्थित एक छोटे से जंगल में बांस काटने के लिए ठेके पर काम कर रहे बांस काटने वालों का एक दल एक महीने से अधिक समय से वहाँ डेरा डाले हुए था। लापता व्यापारी की मदद करने के कुछ ही दिनों बाद, यही बांस काटने वाला अपने साथियों के साथ पुलिबोनू के कुएँ के पास दोपहर का भोजन करने और पानी पीने के लिए इकट्ठा हुआ था। इसके बाद वे सभी अपने-अपने काम पर लौट गए। लेकिन शाम को, जब दिन का काम खत्म हो गया, तो वह सड़क के किनारे बनी अपनी अस्थायी झोपड़ियों में अपने साथियों के पास वापस नहीं आया। और फिर कभी उसे देखा भी नहीं गया।

बाँस काटने वाले बाकी लोग तुरंत घबराए नहीं। दरअसल, अगली सुबह वे सब मिलकर उसकी तलाश में निकल पड़े। वे उस जगह पहुँच गए जहाँ वह बाँस काट रहा था। थोड़ी ही दूरी पर उन्हें उसका कोइथा (काँटने वाला चाकू) मिला। उसके पास ही उसकी पगड़ी का सफेद कपड़ा पड़ा था, जो गिर गया था और उसके सिर पर अभी भी टिका हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो उसने पगड़ी को सावधानी से उतारकर ज़मीन पर रख दिया हो, न कि वह अपने आप गिर गई हो।

उसके साथी पंखे की तरह फैलकर जंगल, ज़मीन, यहाँ तक कि पेड़ों की पत्तियों और घास के तिनकों तक में उसकी रहस्यमय गुमशुद्धि का सुराग ढूँढ़ रहे थे। अगर उस पर किसी जंगली जानवर ने हमला किया होता और उसे मार डाला होता, तो ज़रूर कुछ निशान होते, खून का धब्बा, किसी के पंजे का निशान, या घसीटने का निशान जहाँ उसके शरीर को झाड़ियों के बीच से घसीटा गया हो। लेकिन वहाँ इनमें से कुछ भी नहीं था।

ऐसा लग रहा था मानो उसने जानबूझकर और बड़े करीने से अपनी पगड़ी उतारी हो, उसे ज़मीन पर रखा हो और फिर हवा में गायब हो गया हो। लेकिन कोई भी ऐसा नहीं कर सकता था, और हिंसा का कोई निशान न होने के कारण, बाँस काटने वालों के मन में यही निष्कर्ष निकल सकता था कि अलौकिक शक्तियों ने एक बार फिर अपना काम किया है और उनके साथी को उसी तरह उठा ले गई हैं जैसे उससे पहले उस छोटे व्यापारी को और उससे पहले उस गाड़ीवाले को। यहाँ तक कि उनके गाँव के जाने-माने जादूगर, कोथंडा रेड्डी भी इन बुरी आत्माओं या उस दुष्ट आत्मा के सामने बेबस थे, जो अब उनके जंगलों में आ गई थी और ऐसा लग रहा था कि यहीं रहने

वाली है।

रंगमपेट के निवासियों में एक बार दहशत फैल गई तो वह सचमुच गंभीर हो गई। घबराहट जल्द ही आतंक में बदल गई और सभी गांवों में फैल गई। पुलिस और वन विभाग के अधिकारियों को सतर्क कर दिया गया। यहां तक कि चित्तूर के कलेक्टर को भी सूचित कर दिया गया। लेकिन रंगमपेट में रहने वाले बुजुर्गों ने दुख से, और शायद थोड़ा मज़ाक उड़ाते हुए भी, सिर हिलाया। पुलिस और अन्य अधिकारी उस शैतान के खिलाफ क्या कर सकते थे?

स्पष्टतः, एकमात्र उपाय था उस दुष्ट आत्मा को प्रसन्न करना। और प्रसन्न करने का एकमात्र तरीका था बलिदान—रक्त का बलिदान! आस-पास के पुलिस अधिकारी चिंतित हो गए। ऐसे मामले में बलिदान का प्रश्न उठता ही था कि क्या भयभीत ग्रामीण किसी जानवर, जैसे मुर्गी या बकरी, जो आमतौर पर बलि के लिए प्रयुक्त प्राणी होते थे, के जीवन को जंगल में विचरण कर रही इस दुष्ट आत्मा को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त महत्व देंगे। उन्हें यह आभास हो सकता था कि किसी उच्च कोटि के बलिदान की आवश्यकता है। मानव बलि; शायद किसी बच्चे की बलि। ऐसी घटनाएँ पहले भी हो चुकी थीं।

इसलिए रंगमपेट की छोटी पुलिस चौकी के प्रभारी पुलिस दफ्फेदार (मुख्य कांस्टेबल, जिसका पद सार्जेंट के बराबर था) ने कृष्णाप्पा रेड्डी को चेतावनी दी - जो गांव का नया जादूगर, तांत्रिक और जादूगरनी था, जिसके कंधों पर पुराने कोथंडा रेड्डी की विरासत स्वतः ही आ गई थी क्योंकि वह आसपास का एकमात्र योग्य उम्मीदवार था - कि अगर गांव का कोई भी बच्चा लापता पाया गया तो उसे जेल में डाल दिया जाएगा और फिर फांसी दे दी जाएगी।

अपने पेशेवर गतिविधियों पर इस प्रतिबंध का सामना करते हुए, कृष्णप्पा रेड्डी आसानी से विचलित नहीं हुए। उन्होंने क्या निष्कर्ष निकाला, यह ज्ञात नहीं है। इसके कुछ ही समय बाद, हरिजन महिला आदिमा, जो सफाईकर्मी वर्ग से थी, के नौ वर्षीय बेटे आदिराज के चंद्रगिरी कस्बे से लापता होने की सूचना उसकी माँ ने दी।

चंद्रगिरि, रंगमपेट से मुश्किल से छह मील दूर है और जिले का मुख्यालय है। यहाँ हर सोमवार को एक साप्ताहिक बाज़ार लगता है, जिसे 'शंडी' कहते हैं। आसपास के गाँवों के लोग इस साप्ताहिक बाज़ार में आते हैं और ऐसी ज़रूरी चीज़ें और सामान खरीदते हैं जो उनके गाँवों में नहीं मिलते। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि कृष्णाप्पा

रेड्डी को एक सोमवार की सुबह बाज़ार में कई लोगों ने देखा था। छोटा लड़का, आदिराज, पिछली रविवार रात अपनी माँ के पास सोया था। सोमवार की सुबह उसने अपनी माँ से कहा कि वह बाज़ार घूमने जा रहा है, यह देखने के लिए कि वहाँ क्या देखने को मिलता है, और उसके बाद उसे किसी ने नहीं देखा।

शुक्रवार तक आदिमा ने हिम्मत जुटाकर पुलिस को अपने बेटे के सोमवार सुबह से लापता होने की सूचना दी। सब-इंस्पेक्टर को जब सुराग मिला, तो उसने एक जूटका (टाट्टू द्वारा खींचा जाने वाला दो पहिया वाहन) मंगवाया और चालक को आदेश दिया कि वह टाट्टू को छह मील की दूरी तय करके रंगमपेट गांव तक पूरी रफ्तार से दौड़ाए। वहां उसने कृष्णप्पा रेड्डी की झोपड़ी की बड़ी सावधानी से तलाशी ली, इस उम्मीद में कि लापता लड़के के बारे में कोई सुराग मिल जाए—शायद खून से सना कपड़ा या चाकू, या उसके शरीर का कोई अंग, जैसे कि जिगर, हृदय या अन्य अंग, क्योंकि ये अंग बलि के अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन उसे कुछ नहीं मिला।

अपनी असफलता से बेहद नाराज़ और निराश होकर, सब-इंस्पेक्टर कृष्णप्पा रेड्डी को हथकड़ी पहनाकर चंद्रगिरी वापस ले गया और उसे वहाँ एक सप्ताह से अधिक समय तक रखा। लेकिन कोई भी सामने आकर यह नहीं कह पाया कि उसने कृष्णप्पा रेड्डी को लापता लड़के आदिराज से बात करते देखा था। इससे भी बुरी बात यह थी कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो कम से कम यह कह सके कि उसने उस आदमी और बच्चे को एक साथ देखा था। आखिर, कृष्णप्पा रेड्डी एक जादूगर था! मान लीजिए कि वह उस आदमी या औरत पर श्राप दे दे जो उसके खिलाफ झूठी या झूठी गवाही दे?

नौवीं सुबह सब-इंस्पेक्टर ने जादूगर को रिहा कर दिया और उसे छह मील पैदल चलकर अपने गाँव वापस जाने को कहा, जहाँ उसे रहना था और पुलिस की अनुमति के बिना गाँव नहीं छोड़ना था। इस पर कृष्णप्पा रेड्डी ने रहस्यमय ढंग से कहा, 'लोमड़ी तो चालाक होती है, लेकिन क्या वह सियार को मात दे सकती है?'

सब-इंस्पेक्टर कई दिनों तक उन शब्दों पर विचार करता रहा। क्या उसे सियार कहा गया था? या वह सिर्फ लोमड़ी था? आदिराज का क्या हश्र हुआ, यह कभी पता नहीं चला। लेकिन अगर सचमुच उसे गुप्त बलि के रूप में इस्तेमाल किया गया था, तो जाहिर तौर पर शैतान उसे अपने पास नहीं रखना चाहता था। क्योंकि एक हफ्ते के

भीतर ही पांचवां शिकार गायब हो गया।

इस बार एक महिला थी। और वह उस मोड़ के पास गायब हो गई जहाँ से रागिमनकोनार नामक नाले की ओर जाने वाला पैदल मार्ग रंगमपेट से पुलिबोनू जाने वाली सड़क से अलग होकर एक नाले की ओर मुड़ता है। यह मोड़ गाँव से तीन मील की दूरी पर है।

वेंकट्टम्मा नाम की उस महिला ने अपने पति के लिए दोपहर का भोजन तैयार किया था, जो सुबह अपने मवेशियों को लेकर जंगल में चराने के लिए निकल गए थे, जहाँ उन्हें चराने का अधिकार प्राप्त था। वह दोपहर में भोजन लेकर उस स्थान पर जाने के लिए निकलीं, जहाँ उन्होंने जाने से पहले मिलने का तय किया था—रागीमनकोनार नाले के किनारे उगने वाला पवित्र पीपल का पेड़, जहाँ से यह नाला लगभग तीस फीट नीचे एक चौड़े रेतीले गड्ढे में गिरता था, जहाँ केवल बरसात के मौसम में ही पानी जमा होता था।

वह आदमी भूख से क्रोधित हो गया; और जब उसकी पत्नी दोपहर का भोजन लेकर नहीं आई, तो उसका क्रोध भूख के अनुपात में बढ़ता चला गया। उसने तय किया कि जब वह आएगी तो उस आलसी औरत की खूब पिटाई करेगा। इससे उसे भविष्य में समय पर आने की सीख मिलेगी।

लेकिन पिटाई कभी हुई ही नहीं। वेंकटम्मा पिटाई सहने के लिए कभी आई ही नहीं।

उस दोपहर एक बेहद नाराज़ और क्रोधित चरवाहा अपने झुंड को सामान्य समय से बहुत पहले घर ले गया, ताकि वह देर से दोपहर का भोजन कर सके और अपनी पत्नी को सामान्य पिटाई के बजाय, जिसे वह हमेशा याद रखेगी, वैसी ही पिटाई कर सके जैसी कि आमतौर पर सजा के तौर पर की जाती थी। एक बार फिर उसे निराशा ही हाथ लगी। न तो उसका दोपहर का भोजन उसका इंतज़ार कर रहा था और न ही वेंकटम्मा। उसकी छोटी बेटी ने उसे बताया कि माँ ठीक दोपहर 12 बजे मिट्टी के बर्तन में खाना लेकर चली गई थी।

कुछ दिनों बाद खोजकर्ताओं को वह बातूनी घड़ा फुटपाथ के किनारे टूटा हुआ मिला, जो उस पीपल के पेड़ से आधे मील से भी कम दूरी पर था जिसके नीचे चरवाहा दोपहर भर इंतजार कर रहा था। लेकिन वेंकटम्मा का कोई सुराग नहीं मिला।

एक दिन मैं अपने एक भारतीय मित्र के साथ नागपतला के वन बंगले में एक

सप्ताह के लिए डेरा डालने आया। यह बंगला रंगमपेट से एक मील दूर, पुलिबोनू जाने वाले रास्ते पर, जंगल के बाहरी इलाके के पास बना हुआ था। उस समय मेरे आने का तरीका और उद्देश्य कुछ असामान्य था। हालांकि मैं अपने साथ राइफल और बंदूक तो लाया ही था, लेकिन हमने किसी गंभीर शिकार यात्रा की योजना नहीं बनाई थी। मेरा मित्र, देवा सुंदरम, मुसीबत में था और मैं उसकी मदद करने के लिए उसे नागपतला लाया था। दरअसल, देवा सुंदरम को काली खांसी हो गई थी और उसने खुद बताया था कि उसकी उम्र अड़तीस वर्ष थी।

मुझे बीमारियों के बारे में बहुत कम जानकारी है और चिकित्सा के बारे में तो और भी कम। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि काली खांसी बच्चों की बीमारी है और वयस्कों को शायद ही कभी होती है। फिर भी, देवा सुंदरम को यह बीमारी अपने छोटे बेटे से ही लगी थी। ऐसा लगता था कि सभी ज्ञात उपचारों से बेचारे को कोई फायदा नहीं हुआ था, न ही उनकी खांसी, घरघराहट और काली खांसी के दौरे कम हुए थे। एक शाम मैं संयोगवश बैंगलोर में उनके घर उनसे मिलने गया। वे सोफे पर दुबके बैठे थे, उनकी आँखें फटी हुई थीं, वे खांस रहे थे और गले से अजीब आवाजें निकाल रहे थे। दौरे के बीच उन्होंने मुझे घबराकर दूर जाने का इशारा किया और हकलाते हुए कहा: 'चले जाओ। मुझे काली खांसी है। अगर तुम मेरे पास आओगे तो तुम्हें भी लग जाएगी। चले जाओ—चले जाओ।' उनकी पत्नी ने घबराकर बताया कि उन्होंने बाजार में मिलने वाली हर दवा और कई डॉक्टरों से इलाज करवा लिया है, लेकिन देव की हालत बिगड़ती जा रही है।

अब पता चला कि कुछ ही साल पहले मेरी बेटी जून और बेटे डोनाल्ड को काली खांसी हो गई थी। उस समय मैंने नागपटला में शिकार पर जाने की योजना बनाई थी। मेरी पत्नी, जो नर्स भी हैं, ने सोचा कि वहाँ की शुष्क और गर्म जलवायु से बीमारी जल्दी ठीक हो जाएगी और उन्होंने सुझाव दिया कि हम बच्चों को भी साथ ले जाएं। हमने ऐसा ही किया और उनकी बात सही साबित हुई। दोनों बच्चों की खांसी अड़तालीस घंटे के भीतर ठीक हो गई।

मैंने श्रीमती सुंदरम को इस बारे में बताया। देव ने दम घुटने की कोशिश करना थोड़ी देर के लिए रोककर मेरी बात सुनी। जंगल से प्रेम करने वाला देव मुश्किल से इतना ही कह पाया था, 'शानदार; चलो आज से शुरू करते हैं,' और फिर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। उसे देखना काफी मज़ेदार था और मैं अपनी हंसी मुश्किल से रोक

पाया। बाद में उसने मुझसे कहा कि उसे मेरा सेंस ऑफ ह्यूमर कुछ खास पसंद नहीं आया।

हालांकि, इन सब के चलते, हम अगली सुबह नागपतला के लिए निकल पड़े, वो भी मेरी उस समय की फोर्ड टी मॉडल कार में। हमने बेंगलुरु से थोड़ा जल्दी ही निकल गए ताकि देव को रात की ठंडी हवा का सामना न करना पड़े। टी मॉडल कार, अपनी तमाम खूबियों के बावजूद, तेज़ रफ़्तार वाली गाड़ी नहीं है, और लगभग 170 मील की दूरी होने के कारण हम नागपतला देर रात तक ही पहुँच पाते। सुबह निकलकर और लगभग बीस मील प्रति घंटे की रफ्तार से धीरे-धीरे चलते हुए, बीच-बीच में रेडिएटर में पानी डालने और दोपहर के भोजन के लिए रुकते हुए, हम शाम पाँच बजे से कुछ देर पहले बंगले पर पहुँच गए। तब भी काफ़ी गर्मी थी, और देव बहुत खुश था कि मैंने इस जगह आने का सुझाव दिया था। टी मॉडल कार के कठोर स्प्रिंग्स पर लंबी, थोड़ी असुविधाजनक और ऊबड़-खाबड़ यात्रा के बावजूद, चित्तूर से आगे निकलकर निचले इलाके में पहुँचने के बाद से उसकी खांसी कम हो गई थी।

फूस की छत वाले बंगले के चौड़े बरामदे में लालटेन की रोशनी में रात का खाना खाते हुए, मैंने 'बंगले के रखवाले' से बातचीत शुरू की, जो वन विभाग का एक विनम्र सेवक और मेरा एक पुराना दोस्त था, और उससे जंगली खुब्बर के बारे में पूछा, यानी उस छोटे से बंगले के आसपास के जंगलों में क्या हो रहा था, उसकी ताजा खबर।

वह उत्साह से फूला नहीं समा रहा था और ताबड़तोड़ भाषण देते हुए उस शैतान के कारनामों के बारे में बताने लगा जो पिछले कुछ महीनों में जंगल में आया था और जिसके कारण पहले ही पांच लोग लापता हो चुके थे।

अफवाहों, अपने अनुमानों, सदियों पुराने अंधविश्वास और बचपन में सीखी जादू-टोने की कहानियों के मिश्रण से, बंगले की रखवाली करने वाले उस बूढ़े व्यक्ति ने हमें एक दिलचस्प और रोमांटिक कहानी सुनाई, जिसमें पांचों पीड़ितों के गायब होने के बारे में शानदार विवरण दिए गए थे।

देव और मैं रोमांचित हो गए; और इसे और भी रोमांचक बनाने के लिए, जैसे ही हम सुन रहे थे, एक पैंथर लकड़ी काटने जैसी आवाज़ करते हुए कल्याणी नदी की ओर चलने लगा, जो जंगल के किनारे से होकर हमारे बैठने की जगह से आधे मील से भी कम दूरी पर बहती थी। 'आह-हा! आह-हा!' वह पुकार रहा था, उसकी आवाज़ लगभग लकड़ी काटने जैसी थी, बस उससे कहीं ज़्यादा तेज़ और गहरी थी।

उसकी आवाजों से हम अपने मन में पैंथर की गतिविधियों का अनुसरण कर सकते थे, जो बांस के झुंड से मुथी के पेड़ तक, और आश्रय देने वाली झाड़ियों से लंबी घासों के बीच से होते हुए कल्याणी नदी के किनारों पर लहराती सरकंडों की पट्टी तक, और उसकी शांत, लहरदार जलधारा के बीच से होकर तेजी से बहती है, जो घने, शांत और रहस्यमय अंधेरे जंगल की भूलभुलैया से होकर गुजरती है, जहां केवल मखमली-काले आकाश में तारे ही अशांत धारा पर अपना प्रतिबिंब डालते हैं।

उस रात हमने बंगले के अंदर सोने की कोशिश की, लेकिन बहुत गर्मी थी और घुटन भरे वातावरण में हवा का नामोनिशान नहीं था। ऊपर हमारे सिर के ऊपर घास की छत में उछल-कूद करते चूहे एक-दूसरे का पीछा करते हुए चीं-चीं कर रहे थे। अचानक उनमें से एक डर और फिर दर्द से चीख उठा। हम दोनों कमरे में बिछे सख्त तख्तों वाले पलंगों पर जागते हुए लेटे थे। चूहे ने कुछ सेकंड तक जोर-जोर से चीख मारी और फिर चुप हो गया। देव ने मुझसे पूछा कि क्या मैं बता सकता हूँ कि वह क्यों चीखा था। मेरे लिए जवाब एकदम स्पष्ट था। उसे किसी सांप ने काट लिया था, पकड़ लिया था और अब वह उसे निगलने की प्रक्रिया में था, जो इसी उद्देश्य से घास की छत में घुस आया था।

जब मैंने उसे यह बताया, तो देव बिस्तर से झटपट उठ खड़ा हुआ और चारपाइयों को बरामदे में ले जाने का सुझाव दिया। मुझे भी यह अच्छा विचार लगा। बरामदा न केवल ठंडा था, बल्कि उसकी छत जस्ता की थी, जहाँ चूहे रात भर उछल-कूद नहीं करते थे और साँप उनका पीछा नहीं करते थे।

उसके बाद हम सो गए, और देव ने रात भर मुझे ज्यादा परेशान नहीं किया। उसकी खांसी पहले से बेहतर हो गई थी।

'व्ही-ई-ई-ईव! कुक-काया-काया-खुक्कम।' अगली सुबह मुझे जंगली मुर्गे की जानी-पहचानी आवाज से नींद से जगाया, जब भोर का भ्रम छंट रहा था और अंधेरे का एक छोटा सा दौर फिर से शुरू हो रहा था। फिर असली भोर आई, जो पूर्वी क्षितिज पर फैल गई, और दूर के जंगल से ढके पहाड़ों को गुलाबी, सिंदूरी, लाल और गहरे नीले रंगों की भव्यता से भर दिया, जो मोर के हरे रंग में मिल रहे थे, जिसमें पीले, नारंगी और बैंगनी रंग की झलक थी। मैंने इससे पहले भी कई भोर और सूर्यास्त देखे थे, लेकिन उगते सूरज के सुनहरे गोले को जंगल की नम मिट्टी से उठने वाले कोहरे के घेरों को हटाते हुए देखने से मैं कभी नहीं थका।

'कुकड़ू-कुकड़ू।' बंगले के दक्षिण से यह आवाज़ आई, जहाँ एक मील दूर रंगमपेट गाँव बसा हुआ था। गाँव का मुर्गा, अपने जंगली चचेरे भाई की चुनौती सुनकर, जवाब देने की इच्छा को रोक नहीं पाया, हालाँकि लगभग दो मील की कृषि भूमि उन्हें अलग करती थी। उत्तर में एक मील दूर स्थित जंगल, एक नए दिन की शुरुआत के साथ जाग उठा, जब देवा सुंदरम ने अपना नींद से भरा सिर हिलाया और सुनने के लिए कोहनियों के बल उठ खड़ा हुआ।

दूर जंगल के किसी पेड़ पर बैठे एक मोर ने 'मिया-आ-ऊ, मिया-ऊ' की आवाज़ लगाई। चित्तीदार हिरण किसी चीज़ से डरकर लगातार 'आओ! आओ! आओ!' चिल्ला रहा था। शायद जिस पैंथर की आवाज़ हमने पिछली रात सुनी थी, वह घर लौट रहा था और उसने उन्हें डरा दिया था।

मैंने अपने प्राइमस स्टोव पर कुछ बेकन तला, जिसे हमने बैंगलोर से लाई हुई चपातियों के साथ खाया। हम उस खास कॉफी के लिए गर्म पानी उबलने का इंतजार कर रहे थे, जिसे देव ने उस सुबह बनाने का वादा किया था। और उसने अपना वादा निभाया। कॉफी बहुत स्वादिष्ट थी।

थोड़ी देर बाद हम जंगल में घूमने निकले और रागिमनकोनार नदी के किनारे स्थित पीपल के पेड़ तक गए, जिसके पास ही वेंकटम्मा नाम की महिला रहस्यमय तरीके से गायब हो गई थी। जाते समय मैंने ज़मीन का और रागिमनकोनार नदी के रेतीले तल का जायज़ा लिया, यह देखने के लिए कि रात में कौन-कौन से जानवर वहाँ से गुज़रे थे। कल्याणी नदी के किनारे पहुँचते ही हमें एक तेंदुआ के पदचिह्न दिखाई दिए। वह एक बड़ा नर तेंदुआ था। एक मील आगे एक मादा भालू जुमलम के पेड़ के नीचे आराम कर रही थी, जबकि उसके दो शावक उसके आसपास खेल रहे थे। रेत पर उनके छोटे-छोटे पैरों के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे। अलग-थलग पड़े सांभर, चित्तीदार हिरण और जंगली सूअर के पदचिह्न उन अन्य जानवरों के निशान दिखा रहे थे जो रात के अंधेरे में बाहर निकले थे।

लेकिन मुझे वो चीज़ बिल्कुल नहीं मिली जिसकी मुझे खास तलाश थी और जिसे पाने की मुझे उम्मीद थी: बाघ के पगड़े। कोई बाघ उस रास्ते से नहीं गुजरा था। देव और मैं बंगले पर लौट आए, और कॉफी पीकर रंगमपेट की ओर दक्षिण दिशा में चल दिए। हम उस अजीब कहानी के दूसरे पहलू सुनना चाहते थे जो बंगले के रखवाले बूढ़े दादू ने पिछली रात खाने के दौरान सुनाई थी। पटेल और ग्राम मुंसिफ दोनों ने हमें और

कॉफी पिलाकर स्वागत किया और गांव वाले हमारे चारों ओर जमा हो गए। आगंतुकों का आना, खासकर दूर से आने वालों का, हमेशा बातचीत का मौका होता था।

'वह दुष्ट, डोराइलू?' एक बूढ़े, झुके हुए, लड़खड़ाते हुए और अपनी लाठी के सहारे खड़े व्यक्ति ने पूछा। 'जी हाँ, वह सचमुच जंगल में है और पाँच लोगों को पकड़ चुका है। लेकिन वह आपकी गोलियों से नहीं गिरेगा, महोदय, क्योंकि वह आपके सामने प्रकट होकर आपको मौका ही नहीं देगा। वह धूर्त है—सचमुच बहुत धूर्त। हालाँकि अगर वह खुद को प्रकट भी करे, तो भी आपकी गोलियों का उस पर कोई असर नहीं होगा, लेकिन वह ऐसा कभी नहीं करेगा। क्योंकि आप अजनबी हैं, परदेसी हैं और हमसे अलग हैं। लेकिन वह जंगल में घात लगाए बैठा रहेगा, किसी झाड़ी के पीछे या ज़मीन में किसी गड्ढे में, या शायद वह एक भृंग के आकार का होकर किसी ऊँचे पेड़ की चोटी पर चढ़ जाएगा, जहाँ से वह हम में से किसी एक का इंतज़ार करेगा; पुरुष, स्त्री या बच्चा, जो भी अकेला वहाँ से गुज़रे। फिर पलक झपकते ही उसका आकार और रूप बदल जाएगा। एक छोटे से भृंग से वह एक विशालकाय राक्षस बन जाएगा। वह उस दुर्भाग्यशाली को पकड़ लेगा और उसे खा जाएगा और उसका कोई निशान नहीं छोड़ेगा।' यह सिलसिला तब तक ऐसे ही चलता रहेगा जब तक हम सब या तो उसे ले नहीं जाते या फिर इस शापित जंगल को उसके हवाले छोड़कर कभी इसमें प्रवेश नहीं करते।'

वहाँ मौजूद भीड़ ने उदासी भरे स्वर में सहमति में सिर हिलाया। ऐसे गहरे अंधविश्वास के सामने हम सचमुच बहुत असहाय महसूस कर रहे थे। मैंने तिरस्कारपूर्ण भाव दिखाने की कोशिश की और कहा: 'बकवास है, बुज़ुर्ग; मुझे आश्चर्य है कि आपकी उम्र और ज्ञान का व्यक्ति एक छोटे बच्चे की तरह बात कर रहा है। निस्संदेह यह कोई बाघ या तेंदुआ है जो आदमखोर बन गया है और सारी गड़बड़ी फैला रहा है।'

वह घमंडी मुस्कान के साथ बोला, 'मैं आदमखोर बाघों से पहले भी मिल चुका हूँ। जब मैं जवान था, तब उम्बलमेरु के पार खड़ी चट्टान के नीचे एक बाघ ने मुझ पर हमला कर दिया था। सौभाग्य से उस समय मेरे पास लकड़हारे की कुल्हाड़ी थी, जिसे मैंने उस दरिंदे पर फेंक दिया। और भी बड़े सौभाग्य से कुल्हाड़ी का ब्लेड सीधे उसकी आँखों के बीचोंबीच जा लगा। उस दिन उस बाघ का जिगर पानी बन गया। वह घूमकर भाग गया। इसलिए मैं यहाँ यह कहानी सुनाने आया हूँ। हो। हो। हो।' घटना को याद करते हुए वह बेजान-से हँस पड़ा।

'लेकिन यह बिल्कुल अलग बात है, महोदय,' उन्होंने आगे कहा। 'देखिए: आप बाघों और तेंदुओं के बारे में कुछ जानते हैं, और हम जानते हैं कि आप एक शिकारी हैं जो पहले भी इन जंगलों में आ चुके हैं। क्या आपने कभी ऐसा बाघ या तेंदुआ देखा है जो अपने पैरों के निशान न छोड़े; किसी भी तरह का कोई निशान न छोड़े? जहाँ खून की एक बूँद भी न मिले।

पांचों पीड़ितों में से किसी को भी नहीं ले जाया गया। घसीटने का कोई निशान तक नहीं मिला, जिससे पता चले कि वह उनके शवों को घसीटकर जंगल में ले गया था। अगर इस समय इन इलाकों में कोई बाघ होता, खासकर आदमखोर, तो क्या हमें जंगल में, धूल भरी पगडंडियों पर, रेतीले नालों में, या कल्याणी नदी के किनारों की नम मिट्टी पर उसके पदचिह्न नहीं मिलते? क्या हमें रात में शिकार की तलाश करते हुए उसकी कराहने की आवाजें नहीं सुनाई देतीं? और यही बात तेंदुओं पर भी लागू होती है, हालांकि कुछ हानिरहित तेंदु भी आसपास मौजूद हैं। जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, तेंदुओं की यह आदत नहीं होती कि वे अपने शिकार को मारने के बाद बहुत दूर तक घसीटकर ले जाएं। एक तो उनमें इतनी ताकत नहीं होती।

'अंततः, आदमखोर जानवर हमेशा अंधेरे में या शाम के समय हमला करते हैं, जब रात का अंधेरा छाने वाला होता है। लेकिन इस मामले में पांचों शिकार दिन दहाड़े, और वह भी दोपहर या शाम की चिलचिलाती गर्मी में किए गए हैं, जब सभी मांसाहारी जानवर आराम कर रहे होते हैं।'

'आप इसे समझा नहीं सकते, है ना, डोराइलू? लेकिन मैं समझा सकता हूँ; और इसका स्पष्टीकरण सरल और स्पष्ट है। हम स्वयं शैतान के सामने हैं—एक ऐसी आत्मा जो अपनी इच्छा से प्रकट और लुप्त हो सकती है, और किसी भी रूप या आकार को धारण कर सकती है, एक कीड़े से लेकर एक राक्षस तक, जो वह स्वयं है। आपकी बंदूकें बेकार होंगी, सज्जनों। क्योंकि आप किसी हाड़-मांस के बाघ या तेंदुआ से नहीं लड़ रहे हैं। मैं आपको घर जाने की सलाह देता हूँ। शायद अगर आप उसे बहुत ज़्यादा परेशान करेंगे, तो वह आप में से किसी एक को ले जा सकता है; शायद आप दोनों को ही।'

इतना कहकर बूढ़े व्यक्ति ने फिर से भावहीन मुस्कान बिखेरी। यह जताने के लिए कि उसने अंतिम शब्द कह दिया है, बूढ़े ने मुंसिफ के छोटे से ईंट-मिट्टी के मकान की दीवार की नींव पर पान और सुपारी का एक घूंट अचूक निशाने से थूक दिया। आस-

पास खड़े लोगों ने सहमति और अनुमोदन व्यक्त किया। यहां तक कि पटेल और ग्राम मुंसिफ ने भी उदास भाव से सिर हिलाया।

देव और मैं चुपचाप नागपतला लौट आए। बूढ़े आदमी के शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे। यह कैसा प्राणी था जो न तो पैरों के निशान छोड़ता था, न खून का कोई निशान, न ही किसी तरह का घसीटने का निशान, जो पूरी तरह खामोशी से काम करता था, और जो दिन के सबसे गर्म समय में हत्या करता था? मेरे अनुभव में किसी भी आदमखोर ने ऐसा व्यवहार नहीं किया था। फिर भी मैं जानता था कि इन हमलों के लिए कोई बुरी आत्मा जिम्मेदार नहीं थी। इसका कोई तर्कसंगत कारण जरूर होगा।

पांचों लोगों की हत्याएं अनियमित अंतरालों पर की गई थीं। हर मामले में एक बात समान थी कि हर पीड़ित की हत्या या लापता होने की घटना दोपहर के ठीक बाद हुई थी। दूसरी बात, घटना का कोई अन्य प्रत्यक्षदर्शी नहीं था। कोथंडा रेड्डी के लापता होने के बारे में काफी हद तक अटकलें लगाई जा रही थीं; लेकिन निश्चित रूप से गाड़ीवान, व्यापारी, बांस काटने वाला और अपने पति के लिए भोजन ले जा रही महिला, सभी अकेले थे। छोटे व्यापारी के मामले में, घटना के समय उसके गधे उसके साथ थे। वे बोल नहीं सकते थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि उनमें से किसी पर भी हमला नहीं हुआ था, न ही उन्हें चोट लगी थी और न ही उनकी हत्या हुई थी। और जाहिर तौर पर, जब उनके मालिक गायब हो गए थे, तब भी वे ज्यादा घबराए नहीं थे, क्योंकि अगले दिन वे सभी एक साथ चरते हुए पाए गए थे। अगर वे डर गए होते, तो स्वाभाविक रूप से वे हर दिशा में भाग जाते। और निश्चित रूप से, किसी बाघ या यहां तक कि किसी तेंदुआ के अचानक आने से कोई भी गधा बुरी तरह डर जाता।

हम बंगले में वापस आए और हमने अपना सादा दोपहर का भोजन तैयार किया। देव ने मुझसे पूछा: 'जॉक,'—वह मुझे पिछले अट्ठाईस वर्षों से हमेशा 'जॉक' कहकर बुलाता है—'तुम्हें क्या लगता है कि यह क्या है?'

'देव, यह बाघ या तेंदुआ के अलावा और कुछ नहीं हो सकता,' मैंने जवाब दिया, 'हालाँकि मुझे यह मानना पड़ेगा कि यह वाकई एक अजीब और अनोखा जानवर है। इस जंगल में हाथी या बाइसन नहीं हैं, और बिना उकसावे के हमला करने वाला एकमात्र दूसरा जानवर सुस्त भालू ही हो सकता है। और सुस्त भालू एक मूर्ख, अनाड़ी जानवर होता है। वह ज़रूर कोई निशान छोड़ जाता। इसके अलावा, वह अपने शिकारों के शवों को उठाकर नहीं ले जाता। वह उन्हें वहीं छोड़ देता जहाँ उसने उन्हें मारा था।'

दोपहर के भोजन के बाद मैंने देव से कहा: 'यह रहस्य मुझे बहुत आकर्षित करता है। मैं इसे सुलझाना ज़रूर चाहूँगा। मुझे बताइए, क्या लीला'—श्रीमती देवा सुंदरम—'आपके यहाँ और दस दिन रुकने पर आपत्ति करेंगी?'

वह इसके लिए बहुत उत्साहित था। दरअसल, शैतान के बारे में सुनने के बाद से देव अपनी काली खांसी को पूरी तरह से भूल चुका था, जो वैसे भी लगभग ठीक हो चुकी थी। इसलिए हममें से प्रत्येक ने उसकी पत्नियों को पत्र लिखकर बताया कि हम योजना से अधिक समय तक रुक रहे हैं। हालांकि हमने सीधे तौर पर नहीं कहा, लेकिन हमें उम्मीद थी कि वे यह अनुमान लगा लेंगी कि देव की काली खांसी ही हमारे रुकने का एकमात्र कारण है।

दोपहर तीन बजे तक हम बाघ के निशान ढूंढने के लिए वापस जंगल में थे। हमें कुछ नहीं मिला। हम सड़क पर चौथे मील के पत्थर तक चले और फिर पूर्व की ओर जंगल में मुड़ गए, दो फर्लांग चलकर नरसिम्हा चेरुवु नामक जलकुंड तक पहुँचे। कुंड के कीचड़ भरे किनारे पर भी हमें बाघ के पैरों के निशान नहीं मिले। हाल ही में एक तेंदुआ पानी पीने आया था और, ज़ाहिर है, कई तरह के हिरण भी दिखे।

सड़क मार्ग से लौटने के बजाय, हम कल्याणी नदी के किनारे-किनारे वापस आए। यहाँ हमें कई जगहों पर एक और तेंदुआ के पदचिह्न मिले। वह काफी बड़ा जानवर था, और निश्चित रूप से वह जानवर नहीं था जिसके पदचिह्न हमें नरसिम्हा चेरुवु में मिले थे। शायद वही बड़ा तेंदुआ पिछली रात आवाज लगा रहा था।

एक बात तो अब लगभग निश्चित थी। उस समय जंगल के उस हिस्से में कोई बाघ मौजूद नहीं था। लेकिन वहाँ निश्चित रूप से दो तेंदुआ थे; शायद और भी अधिक।

क्या उनमें से कोई आदमखोर था? अगर इस सवाल का जवाब 'हाँ' है, तो इस बात की और भी ज़्यादा संभावना है कि गायब हुए पाँचों लोगों में से कम से कम एक या ज़्यादा मामलों में हमले का कोई सबूत ज़रूर मिलना चाहिए था। क्योंकि आदमखोर पैंथर, हालांकि एक घातक जीव है, लेकिन उसमें बाघ जैसी शारीरिक ताकत नहीं होती कि वह अपने शिकार को उठाकर ले जा सके। कभी-कभी वह उसे वहीं खाना शुरू कर देता है, लेकिन आम तौर पर वह बचे हुए हिस्से को झाड़ियों में घसीटकर ले जाता है और वहीं खाता है। दोनों ही मामलों में, लगभग अनुभवहीन खोजकर्ताओं के लिए भी किसी न किसी तरह का सुराग ढूंढने के लिए पर्याप्त संकेत मौजूद होते।

हमें इसमें बेहद दिलचस्पी थी।

अगली सुबह हम सात मील पैदल चलकर पुलिबोनू पहुँचे और बाँस काटने वालों के शिविर में अपनी पूछताछ जारी रखी, जो अभी भी वहीं था। कोई भी तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं दे सका, और यही सर्वमान्य धारणा थी कि इसके लिए कोई दुष्ट आत्मा जिम्मेदार है।

हमने कल्याणी नदी के किनारे, जंगली जानवरों के रास्तों और पुलिबोनू से निकलने वाले पैदल रास्तों की छानबीन की। इनमें से एक रास्ता उत्तर-पश्चिम दिशा में जाता है, और इसी रास्ते पर वह छोटा व्यापारी अपने गधों से अलग हुआ था। दूसरा पैदल रास्ता उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ता है, गुंडलपेंटा नामक एक पथरीले तालाब के किनारे से गुजरता है और एक ऊंचे, भयावह चट्टानी टीले की तलहटी में स्थित उंबलमेरु नामक एक अन्य तालाब तक जाता है। इसी क्षेत्र में कहीं पहला शिकार, गांव का जादूगर, बूढ़ा कोथंडा रेड्डी, गायब हो गया था।

पुलिबोनू से अलग होकर निकलने वाले ये दो रास्ते, रंगमपेट से पुलिबोनू जाने वाले मुख्य मार्ग के साथ मिलकर Y अक्षर बनाते हैं। हम रंगमपेट गांव से पुलिबोनू तक सात मील की दूरी इसी Y अक्षर की पूंछ पर चलकर तय कर चुके थे। वहां से हमने Y की ऊपरी शाखाओं में से प्रत्येक का अनुसरण एक मील से अधिक दूरी तक किया। उम्बालमेरु की ओर जाने वाले रास्ते पर हमें बाघ के पहले पदचिह्न मिले। ये कुछ दिन पुराने थे, लेकिन इनसे पुष्टि हो गई कि कम से कम एक बाघ इस क्षेत्र में मौजूद था। दोनों अलग-अलग दिशाओं में और Y की पूंछ पर, हमने तेंदुओं के पदचिह्न और एक असाधारण रूप से बड़े लकड़बग्घे के निशान देखे, लेकिन बाघ के कोई पदचिह्न नहीं मिले।

देव ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे लगता है कि जो कुछ हुआ उसके लिए लकड़बग्घा ज़िम्मेदार हो सकता है, और मैंने इस सुझाव को सिरे से खारिज कर दिया। मैं कई बार और कई जगहों पर लकड़बग्घों से मिल चुका था, और मैंने उन्हें न केवल मनुष्यों के प्रति पूरी तरह से हानिरहित पाया था, बल्कि बेहद डरपोक भी। वे केवल मृत जानवरों का मांस खाते हैं, जैसे बाघों और तेंदुओं का शिकार, या किसी अन्य प्रकार से मरे हुए जानवर। मैंने उनके गांवों के कब्रिस्तानों में घुसकर शवों को खोदकर निकालने की अफवाहें सुनी हैं, और मैंने एक-दो बार अखबारों में पढ़ा है कि मध्य प्रदेश के कुछ जंगलों में उन्हें गांवों के बाहरी इलाकों से बच्चों को ले जाने का आरोप

लगाया गया था। लेकिन दक्षिण भारत में अपने पूरे अनुभव में मैंने इस तरह का एक भी मामला नहीं सुना था। दक्षिण के लकड़बग्घे अपना पूरा ध्यान मृत जानवरों, जानवरों और पक्षियों के मल-मूत्र और हर तरह की गंदगी पर ही केंद्रित करते हैं, साथ ही साथ छोटे जानवरों जैसे चूहे, छिपकली और घोंसला बनाने वाले पक्षियों को भी पकड़ लेते हैं। एक-दो बार उनके द्वारा बकरियों और भेड़ों पर हमला करने की खबरें भी आई हैं।

उस शाम अंधेरा होने के बाद जब हम नागपतला स्थित बंगले पर वापस लौटे तो हम बुरी तरह थक चुके थे, क्योंकि हमने अठारह मील से अधिक की दूरी पैदल तय की थी। और हमें बहुत भूख भी लगी थी। देव और मैं उस रात इतनी गहरी नींद सोए कि अगली सुबह जब हम उठे तो सूरज तेज चमक रहा था।

तीन दिन बाद हमारे दोस्तों, बांस काटने वालों ने, शैतान की पहचान का पहला ठोस सुराग दिया। उन्होंने पुलिबोनू में कुएं के पास वाले बाड़े में अपना बांस काटने का काम पूरा कर लिया था, और उन्हें काम पर रखने वाले बांस ठेकेदार ने पूरे दल को अगले बाड़े में भेज दिया, जहाँ उसे बांस काटने का अधिकार प्राप्त था। यह बाड़ा पुलिबोनू में मुख्य मार्ग छोड़ने के बाद, अक्षर Y की दाहिनी शाखा के बिल्कुल अंत में था। यह उम्बालमेरु नामक चट्टानी कुंड से आधे मील के भीतर था, और चमाला घाटी आरक्षित वन की प्राकृतिक उत्तर-पूर्वी सीमा बनाने वाली ऊँची चट्टान के लगभग आधार पर था, जहाँ शैतान ने अंततः अपनी पहचान प्रकट की।

पूरा क्षेत्र बांस से भरा हुआ था और वन विभाग ने इसे ब्लॉकों या कूपों में विभाजित किया था। जब बांस के तने एक निश्चित ऊंचाई और मोटाई तक बढ़ जाते थे, तो उस विशेष ब्लॉक या कूप की कटाई के लिए नीलामी की जाती थी, और बांस काटने वालों के दल को काम पर रखने वाले ठेकेदार ने नीलामी में सबसे ऊंची बोली लगाकर उस क्षेत्र में बांस काटने और बेचने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। उसके लिए समय ही पैसा था, इसलिए उसने अपने कर्मचारियों को तुरंत उस स्थान पर भेजने में देरी नहीं की जहाँ उन्हें कटाई का काम शुरू करना था।

पहले ही दिन दोपहर में, काम से आराम कर रहे एक व्यक्ति की नज़र अचानक ऊपर की ओर पड़ी। चट्टान की चोटी पर, उसे एक बाघ का सिर और चेहरा दिखाई दिया, जो उसे घृणा से घूर रहा था। वह भाग गया।

उस रात या उससे भी आगे जंगल में डेरा डालने से बाँस काटने वालों ने इनकार

कर दिया। उन्होंने अपने मालिक से कहा कि वे हर शाम बारह मील पैदल चलकर रंगमपेट की सुरक्षित जगह पर वापस जाना पसंद करेंगे और जब तक बाड़ा साफ नहीं हो जाता, तब तक अगली सुबह लौट आएंगे।

ठेकेदार प्रभावित नहीं हुआ। उसने तर्क दिया कि तेज़ चलने पर भी उन्हें एक तरफ़ जाने में ढाई घंटे लगेंगे। इसका मतलब था कि हर दिन पाँच घंटे काम का नुकसान होगा, और परिणामस्वरूप प्रतिदिन कम बाँस काटे जाएँगे। उसने उन्हें याद दिलाया कि जितने कम बाँस काटे जाएँगे, उतनी ही कम कमाई होगी। उन्होंने जवाब दिया कि अगर वह सहमत नहीं हुआ, तो वे सब मिलकर काम छोड़ देंगे। तब बाँस काटना बंद हो जाएगा और उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि बाँस काटने और बाँस की कमाई से ज़्यादा उनकी अपनी जान मायने रखती है। ठेकेदार ने समझौता करने की कोशिश करते हुए कहा कि अगर वे दैनिक मज़दूरी में आनुपातिक कमी करने को तैयार हों, तो वह मान जाएगा। लेकिन ठेकेदार को वे लोग अड़ियल लगे। उन्होंने उसी दर पर मज़दूरी की माँग की और फिर से काम छोड़ने की धमकी दी।

'अरे हाँ,' ठेकेदार ने मन ही मन सोचा। 'हालात वाकई खराब हैं। दुनिया भर में मजदूर दिन-रात अड़ियल, झंझट भरे और काबू से बाहर होते जा रहे हैं। अगर मैंने हार नहीं मानी, तो ये लोग चले जाएंगे और फिर मेरे लिए बांस काटने वाला कोई नहीं बचेगा। इस क्रूर बाघ पर लानत हो। उसकी बहुत दर्दनाक मौत हो, और वो भी जल्दी।'

इसलिए वह उनकी मांग पर सहमत हो गया और उस शाम सूर्यास्त के समय ठेकेदार समेत पूरा दल रंगमपेट लौट आया। रास्ते में उन्हें नागपतला वन लॉज के गेट से होकर गुजरना पड़ा, जहाँ देव और मैं ठहरे हुए थे। सभी अंदर चले गए और जिस व्यक्ति ने बाघ देखा था, उसने हमें उसके बारे में बताया। ठेकेदार ने भी अपनी दुख भरी कहानी सुनाई। हम सब बहुत खुश हुए। आखिरकार रहस्य सुलझ गया। वह दुष्ट आत्मा, कोई अवास्तविक या काल्पनिक प्राणी नहीं था, जैसा कि सबने सोचा था। वह सचमुच एक बाघ था, जैसा कि मैंने लगभग अनुमान लगाया था।

बाघ ने अगले ही दिन हमला करने का फैसला किया। बांस काटने वाले सुबह लौट आए थे और अपने-अपने काम में लगे हुए थे। सबने मिलकर उस जगह से दूरी बनाए रखी, जहाँ उनमें से एक ने पिछली शाम बाघ को देखा था। मजदूरों के प्रभारी मुखिया ने दोपहर के समय काम बंद करने और इमली के पेड़ों के झुरमुट के नीचे भोजन करने के लिए इकट्ठा होने की घोषणा लंबी, तीखी सीटियों की एक श्रृंखला से

की, जो उसने अपनी जीभ और दांतों की मदद से बजाईं। इसके लिए एक घंटा दिया गया था और बांस काटने वालों ने इसका पूरा फायदा उठाया। उम्बालमेरु के तालाब से निकलने वाली एक छोटी सी धारा से मटमैला पानी भरकर करी और चावल खाने के बाद, वे बैठ गए और धूम्रपान किया, या पान के पत्ते चबाए, या ऊंघने लगे।

एक घंटे के अंत में, मिस्त्री ने सीटी की एक समान श्रृंखला बजाकर उन्हें काम पर लौटने का संकेत दिया, और जल्द ही बांस के कटने और गिरते हुए तनों के गिरने की आवाज उस घाटी से गूंज उठी जिसमें वे काम कर रहे थे।

लेकिन जिस आदमी ने कल बाघ को देखने की सूचना दी थी, उसकी कहानी ने उन्हें घबरा दिया और उन्हें असामान्य रूप से सतर्क कर दिया। और इसी वजह से उस दिन उनमें से एक की जान बच गई। क्योंकि लकड़ी काटते समय वह बार-बार घबराकर अपने चारों ओर देख रहा था। इस तरह उसने देखा कि एक बड़े झुंड के नीचे से उगी कोमल बांस की कुछ पत्तियां हल्की-हल्की हिल रही थीं, और भूरी-पीली चमकती आंखें उसे लालच भरी निगाहों से घूर रही थीं।

जैसे ही बाघ ने छलांग लगाई, वह आदमी कोइठा उठाए हुए तेज़ी से घूम गया। अपने शिकार की हरकत देखकर बाघ समझ गया कि उसे देख लिया गया है और वह आदमी बचाव के लिए तैयार है। उसने अपनी रीढ़ और पूंछ को ज़ोर से घुमाकर हवा में ही अपनी छलांग रोक दी और अपने शिकार से बस थोड़ी ही दूर पर उतरा। उसके नुकीले दांत हवा में बेजान से लहराते हुए जानवर को बाल-बाल से चूक गए।

लेकिन बाघ को इस तरह का स्वागत पसंद नहीं आया। वह अपने शिकार को अचानक पकड़ने की उम्मीद कर रहा था। ज़मीन पर उतरते ही वह ज़ोर से गुर्राया, एक पल के लिए दुबका रहा मानो दोबारा हमला करने वाला हो, फिर पूंछ घुमाकर वापस उसी बाँस के झुरमुट में कूद गया जहाँ से वह आया था और तुरंत ही नज़रों से ओझल हो गया।

उस आदमी ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर खतरे का संकेत दिया, 'अय्यो! अय्यो! पिल्ली! पिल्ली!' (मदद! मदद! बाघ! बाघ!), और फिर इमली के झुरमुट की ओर भागा। चारों ओर फैले उसके साथी मज़दूरों ने उसकी चीखें सुनकर अफरा-तफरी मचा दी और इमली के झुरमुटों की ओर दौड़ पड़े। ठेकेदार, जो अभी-अभी वहाँ सो गया था, शोरगुल और लोगों के बेतहाशा भागते हुए उस तक पहुँचने की वजह से बुरी तरह जाग गया।

दिन भर काम करने का कोई ख्याल नहीं था। ठेकेदार के नेतृत्व में कुली अपनी पूरी ताकत लगाकर उम्बलमेरु के दुर्गम इलाकों में छिपी खूंखार बिल्ली से यथासंभव दूरी बनाने की कोशिश कर रहे थे।

देव और मैंने सुबह जल्दी चाय पी ली थी और पुलिबोनू जाने वाली सड़क पर तीसरे मील के पत्थर के पास ही पहुँच गए थे कि हमें गाँव की सुरक्षा की ओर दौड़ते हुए कुछ लोग बड़बड़ाते हुए मिले। वे सब एक साथ बड़बड़ाने लगे और स्थिति को समझने और उस व्यक्ति को ढूंढने में कम से कम एक मिनट लग गया जिसने इतना भयानक अनुभव झेला था। उसने बाघ का वर्णन करते हुए कहा कि वह अपने चारों पैरों पर 'इतनी ऊँचाई' तक खड़ा था, और ऐसा करते हुए उसने अपनी छाती की ओर इशारा किया। सचमुच, वह एक विशालकाय जानवर था।

शाम के 3:45 बज रहे थे जब यह सब हुआ। मैंने उस आदमी से जल्दी करने को कहा, क्योंकि उसे देव और मुझे लेकर वापस आना था और हमें वह जगह दिखानी थी जहाँ बाघ दिखाई दिया था। मेरे ऐसा करने का एक कारण था। सीधे शब्दों में कहें तो, मैं उसकी कहानी की पुष्टि करना चाहता था, यदि संभव हो तो बाघ के पदचिह्नों को स्वयं देखकर। आपको याद रखना चाहिए कि उस समय तक हमने इस अजीब जानवर के बारे में केवल अतिरंजित कहानियाँ ही सुनी थीं, इसके वास्तविक अस्तित्व का कोई सबूत नहीं था। और मैं अपने अनुभव से जानता हूँ कि जब जंगल के सीधे-सादे लोगों के मन में अतिशयोक्ति को बेकाबू होने दिया जाता है तो वह किस हद तक जा सकती है।

वह आदमी स्तब्ध रह गया। उस भयानक जगह पर वापस जाना? बिलकुल नहीं! यह विचार ही धिक्कार है! उसने ये सब और भी बहुत कुछ मुझसे अपनी स्थानीय भाषा में कहा, और मैं उसके इस तरह महसूस करने के लिए उसे दोष नहीं दे सकता था। लेकिन मुझे उसकी कहानी की पुष्टि करनी ही थी। इसलिए मैंने सख्ती बरती।

मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि मैंने क्या कहा, लेकिन थोड़ी देर में देव, बांस काटने वाला और मैं अपनी पूरी गति से उस सड़क पर चल रहे थे जो पुलिबोनू की ओर जाती थी, और वहां से अक्षर Y की दाहिनी शाखा के साथ-साथ उम्बालमेरू की ओर।

हमें नौ मील का सफर तय करना था और हमने शाम 6:30 बजे से कुछ पहले ही इसे पूरा कर लिया। जल्द ही अंधेरा होने वाला था, लेकिन इससे हमें कोई खास चिंता

नहीं थी क्योंकि देव और मैं दोनों अपने साथ इलेक्ट्रिक टॉर्च लाए थे, ताकि अगर हम लंबी पैदल यात्रा से देर से लौटें तो काम आ सकें। वैसे भी, रात में ज्यादा ठंड नहीं होगी, सिवाय देव के, जो काली खांसी का मरीज होने के कारण रात की ठंडी हवा और ओस में बाहर नहीं निकलना चाहता था। मैंने उसे धीरे से चेतावनी दी।

'काली खांसी!' उसने हैरानी से कहा। 'किसने कहा कि मुझे काली खांसी है? मुझे हुई थी, लेकिन बहुत समय पहले।'

कुली ने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ वह बाँस काट रहा था, और उन छोटे बाँस के पत्तों की ओर भी इशारा किया जिन्हें उसने हिलते हुए देखा था और जहाँ से बाघ निकला था। हमने उसके आस-पास और पीछे की ज़मीन की जाँच की। शाम ढलने के बावजूद हमें बाघ के पदचिह्न साफ़ दिखाई दिए। बेशक, वह बहुत बड़ा नहीं था, और ढलती रोशनी और गिरे हुए, सड़े हुए बाँस के पत्तों के कारण, जिन पर वह चला था, मैं यह नहीं बता सका कि वह नर था या मादा। लेकिन वे निश्चित रूप से बाघ के ही पदचिह्न थे।

ज़मीन का मुआयना करने के बाद मैं एक प्रसन्न और संतुष्ट व्यक्ति बनकर उठा। रहस्य सचमुच सुलझ गया था। वह शैतान जिसने हमें इतने लंबे समय तक उलझन में डाल रखा था, कोई अलौकिक या रहस्यमयी चीज़ नहीं थी। वह बस एक बाघ था; लेकिन बेहद शर्मीला, चालाक और पकड़ में न आने वाला बाघ। साथ ही डरपोक भी।

हमारे पास चारा नहीं था; बैठने के लिए कुछ भी नहीं था। चारों ओर पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। बंगले तक वापस जाने का मतलब था अंधेरे में बारह मील पैदल चलना और टॉर्च की बैटरी खत्म कर देना। तो, क्यों न जंगल में ही रात बिता दी जाए, बस मजे के लिए? हो सकता है हमें कुछ सुनाई दे या दिखाई दे, या हो सकता है कुछ भी सुनाई या दिखाई न दे। कम से कम मज़ा तो आएगा। नागपतला के चूहों और साँपों से भरे विश्राम गृह में एक और रात बिताने से तो बेहतर ही है।

मैंने सुझाव दिया। देव उत्साहित था। हमारे साथ आया आदमी हैरान रह गया। लेकिन बेचारा कुछ नहीं कर सकता था, जब तक कि वह अकेले वापस न चला जाए —जो उसने बिल्कुल नहीं चुना।

अगला सवाल था कि कहाँ बैठें। उम्बालमेरु का तालाब ही बैठने के लिए सबसे अच्छी जगह हो सकती थी। कम से कम मुझे तो यही उम्मीद थी कि हमें वहाँ कोई उपयुक्त जगह मिल जाएगी। जिस जंगल में हम थे, वह बहुत घना था और बांस बहुत

पास-पास थे। रात होते-होते हम पूरी तरह से उनके बीच घिर जाते।

जब हम तालाब तक थोड़ी दूरी तय कर पाए, तब तक काफी अंधेरा हो चुका था। ज़मीन पर छिपने की जगह बनाने का समय नहीं था, पेड़ पर किसी भी तरह का चबूतरा या मचान बनाने की तो बात ही दूर थी। लेकिन पास ही में एक बरगद का पेड़ था, और वह काफी बड़ा और पुराना पेड़ था।

बरगद एक ऐसा वृक्ष है जिसकी शाखाओं से जड़ें निकलती हैं। ये जड़ें ज़मीन तक पहुँचती हैं, अंदर तक जाती हैं और समय के साथ-साथ अन्य वृक्षों के तने बन जाती हैं। इस प्रकार बरगद लगातार बढ़ता जाता है, अधिक से अधिक ज़मीन को ढक लेता है और इसमें कई तने होते हैं, जिनमें मूल वृक्ष और बाद में जड़ पकड़ चुके कई अन्य तने शामिल होते हैं। इस वृक्ष का एक सुंदर नमूना—भारत में अपनी तरह का सबसे बड़ा—कलकत्ता के वनस्पति उद्यानों में स्थित है। यह एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। यह उन प्रमुख स्थलों में से एक है जिनके लिए वहाँ के उद्यान प्रसिद्ध हैं। इसी तरह का एक विशाल बरगद का वृक्ष बैंगलोर से लगभग बयालीस मील और थाली नामक गाँव से दो मील दूर स्थित है। इसके आधार पर कभी एक पत्थर का मंदिर हुआ करता था। लटकती जड़ों ने मंदिर की पत्थर की दीवारों को पूरी तरह से ढक लिया है, हालाँकि इसका प्रवेश द्वार खुला रखा गया है। सरसरी नज़र से देखने पर जड़ें एक प्राकृतिक गुफा जैसी प्रतीत होती हैं। संयोगवश, गुफा के पिछले हिस्से में एक छेद में एक सौ साल पुराना काला कोबरा रहता है। मंदिर की देखरेख करने वाले ब्राह्मण पुजारी उसे एक बार में दूध के कटोरे और आधा दर्जन अंडे खिलाते हैं। पुजारी ने मुझे बताया कि यह पेड़ 2,000 साल पुराना है।

लेकिन उम्बालमेरु की बात पर लौटते हैं। तालाब से कुछ ही दूरी पर एक बरगद का पेड़ था। इतना बड़ा और पुराना तो नहीं था, लेकिन उसकी कई जड़ें थीं जो मुख्य तने के चारों ओर जमीन में उगनी शुरू हो गई थीं। इनमें से दो जड़ें लगभग चार फीट की दूरी पर थीं; प्रत्येक का व्यास लगभग आठ फीट रहा होगा।

हम दोनों पेड़ों की जड़ों के बीच ज़मीन पर बैठ गए। मैंने अपनी राइफल पकड़ी और जंगल की ओर मुँह करके बैठ गया। देव मेरी तरफ पीठ करके तालाब की ओर मुँह करके बैठा था, और उसकी गोद में मेरी .12 बोर की शॉटगन पड़ी थी, जिसके दाहिने बैरल में एक घातक गोली और बाएं बैरल में एक एल.जी. कारतूस भरा हुआ था। बांस काटने वाला देव के दाहिनी ओर बैठा था और उसी दिशा में मुँह किए हुए

था। देव और मेरे पास अपनी-अपनी टॉर्च थीं, लेकिन जहाँ मैं टॉर्च को राइफल से जोड़ने वाले क्लैंप लाना भूल गया था, वहीं देव और शॉटगन के लिए कोई क्लैंप नहीं थे। इसलिए बरगद काटने वाले को देव के लिए टॉर्च पकड़नी थी और ज़रूरत पड़ने पर उसे जलाना था। बरगद की जड़ों से सुरक्षित हमारे दोनों किनारों को छोड़कर, हम पूरी तरह से खुले में थे और दिखाई दे रहे थे।

देव के सामने तालाब था। अगर बाघ पास वाले किनारे से नहीं आता, तो उसे पानी पार करना पड़ता, जहाँ कुछ हद तक सुरक्षा थी। कम से कम हम उसकी आवाज़ तो सुन सकते थे। मेरे सामने जंगल था, जिसमें अंधेरा होने के बाद टॉर्च जलाए बिना कुछ दिखाई नहीं देता था। हम तीनों को सिर्फ अपनी सुनने की शक्ति पर ही निर्भर रहना पड़ता। अगर बाघ तालाब के किनारे से या मेरे सामने वाले जंगल से आता, तो वह हमें तुरंत देख लेता। आगे क्या होता, यह किस्मत की बात थी और बाघ के साहस पर निर्भर करता। क्या वह तीनों आदमियों पर एक साथ हमला करता या चुपके से भाग जाता?

देव उतना ही प्रसन्न और उत्साहित था जितना कोई स्कूली बच्चा मेले में होता है।

देखते ही देखते घना अंधेरा छा गया। मेरे पंख वाले दोस्त, पक्षी, हमारे बैठने से बहुत पहले ही अपने घोंसलों में जा चुके थे। थोड़ी देर बाद केवल दूर से आती हुई सींगदार उल्लू की आवाज़ सुनाई दे रही थी। कहीं बहुत ऊपर, विशाल चट्टान की दुर्गम पहाड़ियों में, शायद एक मील दूर, वह नीचे फैली घाटी को निहारते हुए बड़े आराम से बैठा था। और बैठे-बैठे ही वह 'हूऊऊ-ऊऊ! हूऊऊ-ऊऊ!' की आवाज़ निकाल रहा था।

अचानक तालाब में एक मेंढक टर्राने लगा। 'खोर! खोर! खोर! खोर! खोर!' दूसरे मेंढक भी एक-एक करके उसमें शामिल हो गए। यह एक धड़कता हुआ, स्पंदित संगीतमय स्वर बन गया।

'स्किच! स्किच! स्किच! स्किच!' बांस काटने वाला, जिसकी पीठ मेरी बाईं बांह से छू रही थी, अचानक चौंक गया। मैं कल्पना कर सकता था कि वह अंधेरे में घूर रहा होगा। लेकिन वह तो बस एक पानी का मेंढक था।

बुल-मेंढक से काफी छोटा और लंबे, पतले पिछले पैरों वाला यह मेंढक तालाबों और झीलों के किनारे आधा डूबा हुआ बैठा रहता है। कभी-कभी इनमें से कोई एक मेंढक पानी की सतह पर कुछ गज तक उछलता है, अपने पिछले पैरों से ज़ोरदार लातों से सतह को लगभग छूते हुए, फिर रुक जाता है और अपनी आँखें और आधा

सिर पानी से बाहर निकालकर तैरने लगता है। पानी पर उछलने या कूदने की इसी क्रिया से वह आवाज़ निकली थी जिसके कारण कुली अचानक चौंक गया था।

मुझे पता था कि जब तक कोई एक मेंढक कभी-कभार पानी की सतह पर तैरता रहे, तब तक चिंता की कोई बात नहीं है। लेकिन अगर कई मेंढक एक साथ ऐसा करने लगें, तो यह एक बहुत ही विश्वसनीय संकेत होगा कि कोई चीज आ रही है और उसने उन्हें डरा दिया है, जिसके कारण वे पानी के बीच में शरण लेने के लिए मजबूर हो गए हैं।

उम्बालमेरु तालाब बहुत बड़ा नहीं है। अंडाकार आकार का यह तालाब लगभग साठ फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा है। उत्तरी और संकरे छोर पर यह चट्टानों से घिरा है, जो ढलान के तल पर स्थित भूभाग का ही विस्तार है। बाकी तीन तरफ जंगल है। हम पूर्वी किनारे पर बैठे थे। अब अंधेरा होने के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन बैठने से पहले मैंने ऊपर देखा और हमारे ऊपर फैली ढलान को देखा, जिसकी ऊंचाई शायद 500 फीट थी।

मेरे पीछे पानी के किनारे मेंढक जोर-जोर से टर्रा रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। तभी सींग वाले उल्लू ने अपनी डरावनी आवाज फिर से शुरू कर दी: 'हूऊऊऊ! हूऊऊऊ! हूऊऊऊ!'

नीचे घाटी में अचानक एक चिड़िया चीखने लगी: 'क्या तुमने किया! क्या तुमने किया! जल्दी! जल्दी! जल्दी! जल्दी!' किसी चीज़ ने चिड़िया को डरा दिया था। आखिर क्या हो सकता था? लगभग एक साथ ही, मैंने महसूस किया कि देवा सुंदरम और कुली की पीठ मेरे पीछे सीधी और तन गई। लेकिन मुझे पता था कि अभी समय है। जिस भी चीज़ ने चिड़िया को डराया था, अगर वह हमारी तरफ आ रही थी, तो उसे आने में कम से कम पाँच मिनट, शायद दस मिनट और लगेंगे।

मेरे सामने जंगल में एक छोटा जानवर पत्तों को सरसरा रहा था। शायद वह नेवला था, या फिर दक्षिण भारतीय जंगलों में बहुत कम पाए जाने वाले उन जीवों में से एक, जैसे कि रैटल। सरसराहट और सन्नाटा बीच-बीच में सुनाई दे रहा था, क्योंकि वह छोटा जानवर भोजन की तलाश रोककर अपने संभावित दुश्मनों की आहट सुन रहा था। फिर वह दोबारा ज़मीन खोदने और पत्तों को खुरचने लगा।

अचानक सब कुछ रुक गया और सन्नाटा छा गया। पाँच मिनट लगभग पूरे हो चुके थे। क्या इसने किसी के आने का आभास किया होगा? इसी विचार के साथ ही

मैंने महसूस किया कि मेरे दोनों साथियों की कोहनियाँ उत्तेजित होकर मेरी पीठ के निचले हिस्से में चुभ रही थीं।

मैंने बहुत धीरे से अपना सिर घुमाया। पहले तो मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर, पानी की सतह की हल्की धुंधली रूपरेखा के बीच एक हिलती हुई काली आकृति की तरह, कुछ हमारी ओर बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ।

मुख्य बरगद के पेड़ की बाहरी शाखाओं से पड़ने वाली काली छाया में वह गायब हो गया और पूरी तरह आंखों से ओझल हो गया। लेकिन जब ऐसा हुआ, तब वह हमारी ओर आ रहा था। यह सोचकर मुझे बहुत घबराहट हुई। मुझे पूरा यकीन था कि वह बाघ ही था, और अंधेरे में असहाय होकर किसी आदमखोर बाघ का हमारे ऊपर हमला करना वाकई एक अपमानजनक अंत होता।

मैं दाहिने घुटने पर संतुलन बनाते हुए मुड़ा। राइफल का बट कंधे पर रखकर, मैंने उसका मुंह उस दिशा में किया जहाँ मुझे लगा कि हत्यारा होगा और जल्दी से अपने बाएं अंगूठे से टॉर्च का बटन दबाया। तेज रोशनी से एक भयानक सिर दिखाई दिया, जिसमें से दो नीली-हरी आँखें आश्चर्य से मेरी ओर देख रही थीं, टॉर्च की रोशनी उनमें पूरी तरह से चमक रही थी। लेकिन वे कायर, धूर्त और षड्यंत्रकारी आँखें थीं, हालांकि उनकी चौंकी हुई अभिव्यक्ति थोड़ी नादान लग रही थी। विशाल सिर, जो एक बड़े लकड़बग्घे के ढलानदार शरीर के अनुपात से कहीं अधिक बड़ा था, हमारी ओर देख रहा था। मैं उसके लंबे, सीधे कान, काला थूथन और गले के नीचे का काला धब्बा स्पष्ट रूप से देख सकता था, हालांकि सामने से होने के कारण, उसके भूरे शरीर का अधिकांश भाग, जिस पर काली धारियाँ थीं, छिपा हुआ था।

मैंने मशाल जलाए रखी। हम तीनों बिना हिले-डुले चुपचाप खड़े रहे।

'ग्र्र-र्र-र्र! गू-डू! गू-डू! गू-डू!' आश्चर्यचकित जानवर गुर्राया, वह एक पल के लिए भी प्रकाश के स्रोत को, और न ही मानव हस्तक्षेप से उसके संबंध को समझ पा रहा था।

फिर शायद उसकी नाक ने, या शायद सिर्फ उसकी सहज प्रवृत्ति ने, उसे बता दिया।

'फूफ! फूफ!' वह फुफकारा और अपनी अजीबोगरीब लहरदार चाल से छिपने के लिए भागा। उसकी चाल उसके बेहद छोटे और कमजोर पिछले पैरों की वजह से थी, जो उसके लंबे और ताकतवर अगले पैरों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश कर रहे

थे। वह बेढंगे तरीके से दौड़ रहा था, जबकि उसकी गर्दन और पीठ पर बालों की लटें सीधी खड़ी थीं, जिससे ऐसा लग रहा था मानो वह हमारी आंखों के सामने अचानक अपने आकार से दोगुना बड़ा हो गया हो। उसकी भूरी पूंछ, जो उसके बाकी शरीर की तरह ही पूरी तरह से कांटेदार थी, एक पंख वाले ब्रश की तरह पीछे की ओर फैली हुई थी।

लकड़बग्घा झाड़ियों में गायब हो गया, लेकिन वह वहां से गया नहीं। वह हमारे चारों ओर एक बड़े घेरे में दौड़ता रहा, झाड़ियों को चीरता हुआ अपना रास्ता बनाता रहा, और साथ ही तरह-तरह की अजीबोगरीब और परेशान करने वाली आवाजें निकालता रहा: 'हा! हा! हा! हा! हा!' वह खिलखिलाकर हंसा, 'ये क्या हो रहा है? हा! हा!'

जब वह हमारे हवा की दिशा वाली तरफ आया और आखिरकार हमारी गंध पहचान पाया, तब उसे समझ आया कि आस-पास ही इंसान बैठे हैं। उसने अपनी चीखें बदलकर तिरस्कार भरी आवाज़ें निकालनी शुरू कर दीं: 'ची! शी-ए! शी-ए!' और इधर-उधर भागने लगा, उम्मीद कर रहा था कि हम चले जाएँगे। लेकिन हम नहीं गए और वह इससे खुश नहीं था। बल्कि, वह और भी नाराज़ हो गया। 'गरार! गरार!' वह गुर्राया, फिर गरारे जैसी आवाज़ में विरोध करते हुए बोला, 'गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार!'

हमारी ज़िद पर अड़े रहने से नाराज़ होकर, वह जंगल में खूब शोर मचाता रहा, इधर-उधर भागता रहा और अजीबोगरीब आवाज़ें निकालता रहा, यहाँ तक कि हम उसे सुनकर तंग आ गए। एक बात साफ़ समझ में आने लगी। अगर हमने इस बकबक करने वाले मेहमान को नहीं भगाया, तो बेहतर यही होगा कि हम अपना सामान समेटकर बंगले पर वापस चले जाएँ और कुछ घंटे चैन से सो जाएँ।

'भागो! भागो!' मैंने कहा। 'भागो! भागो!' देव चिल्लाया। 'ची! पो फिसाच! (शैतान जाओ!),' कुली ने दोहराया। लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ; क्योंकि वह जाने को बिल्कुल तैयार नहीं था।

मैंने अपने बगल की मिट्टी में मिट्टी का ढेला ढूँढा, मिल गया और उसे शोर मचाने वाले घुसपैठिए पर फेंक दिया। उसने पहले से भी ज़्यादा शोर मचाया।

'गोली उचूदू थायवूली मेले!' बांस काटने वाले ने सलाह दी, जिसका अर्थ है, 'फलां को गोली मारो!' लेकिन वह बेचारा लकड़बग्घा था, हालांकि वह अपने काम से काम

नहीं रख रहा था, और मैं ऐसा करना भी नहीं चाहता था। शोर असहनीय था।

वह लकड़बग्घा फिर से नजर आया—पानी के कुंड की हल्की चमक के बीच एक गहरी छाया, जो तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थी।

तभी पानी के दूसरी ओर से बाघ की गुर्राहट सुनाई दी: 'आ-ऊ-ओम! आ-ऊ-ओम!'

लकड़बग्घे पर इसका असर तुरंत हुआ। वह वहीं रुक गया, मानो पत्थर बन गया हो। उसके लंबे कान साफ दिखाई दे रहे थे, जब उसने अपना सिर घुमाकर उस भयानक आवाज के स्रोत को ढूंढने की कोशिश की। अगले ही पल वह गायब हो गया!

गिरे हुए पत्तों पर से भागते हुए उसकी सरसराहट की कुछ सेकंड तक आवाज सुनाई दी। फिर सन्नाटा छा गया: गहरा और डरावना।

हमें पता था कि जब बाघ ने गुर्राया था, तब वह हमारे सामने और पानी के उस पार कहीं था। लेकिन क्या वह अभी भी वहीं था? हो सकता है, लेकिन यह भी उतना ही संभव है कि वह अब हमारे पीछे या किसी भी तरफ हो। क्योंकि बाघ लकड़बग्घे की तरह अपनी हरकतों का संकेत नहीं देते। या हो सकता है वह चला गया हो।

लकड़बग्घे ने उसे आगाह कर दिया था और वह समझ गया था कि सब कुछ ठीक नहीं है। सवाल यह था: क्या वह जांच करना चाहेगा? या लकड़बग्घे की तरह चुपचाप निकल जाएगा? अगले कुछ पलों में हमें जवाब मिल जाएगा, और यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। इसलिए हम चुप रहे और सतर्क रहे।

मिनट धीरे-धीरे बीतते गए और एक घंटा गुज़र गया। दूर से आती झींगुरों की चहचहाहट और पास से आती मेंढकों की टर्राहट के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। मुझे लकड़बग्घे की वापसी की कामना होने लगी। उसकी आवाज़, भले ही बेतुकी थी, लेकिन कुछ ठोस और वास्तविक थी। लेकिन यह सन्नाटा बेचैन करने वाला और परेशान करने वाला था! हम सब बेचैन हो गए।

आधी रात आई और गुज़र गई, फिर ठंड बढ़ गई। हमें सूखी पत्तियों और झाड़ियों में हल्की सरसराहट और मंद-मंद सरसराहट की आवाज़ें सुनाई दीं। शायद चूहे या अन्य छोटे जानवर पानी पर भोजन कर रहे थे और अपनी प्यास बुझा रहे थे।

एक परछाई हमारे सिर के ऊपर से गुजरी। हमें पंखों के फड़फड़ाने की भारी आवाज सुनाई दी। फिर से सन्नाटा छा गया।

'हू-हू! हू-हू!' सींगदार उल्लू अब हमारा साथी बन गया था। इसमें कोई शक नहीं

कि वह जानता था कि छोटे जीव कब पानी पीने आएंगे और कुछ पलों के लिए खुद को सामने लाएंगे। हमें कभी पता नहीं चला कि उसने कब हमला किया; लेकिन हमने उसका नतीजा ज़रूर सुना।

एक खरगोश (भारत में जिसे 'खरहा' कहते हैं) शिकार बना। हमने उसकी दया की भीख मांगती हुई चीख सुनी, जब उल्लू के क्रूर पंजे उसकी कोमल पीठ में धंस गए, और हमने उसकी शक्तिशाली चोंच के उसके सिर पर लगने की हल्की 'धड़-धड़' की आवाज सुनी। फिर खरगोश की चीख थम गई। क्योंकि वह मर चुका था।

घंटे धीरे-धीरे बीतते गए और ठंड बढ़ती गई। बरगद के पेड़ों की घनी शाखाओं के कारण हमें ठीक ऊपर का आकाश दिखाई नहीं दे रहा था; लेकिन पानी के गड्ढे के ऊपर बने खुले मैदान से, जहाँ से कुछ देर पहले एक विशाल उल्लू उड़कर गया था, हमें आकाश की झलक मिल रही थी। आसमान में कोई बादल नहीं थे और एक-दो तारे दूर टिमटिमा रहे थे।

साफ आसमान की वजह से पृथ्वी को सूर्य की रोशनी के बाद बची हुई थोड़ी-बहुत गर्मी को विकीर्ण करने में मदद मिली। ठंड तेजी से बढ़ती गई। इससे भारी ओस गिरने लगी और हमारे सिर के ऊपर बरगद के दो तनों और उसकी शाखाओं के कारण हम सुरक्षित थे, फिर भी हम अपने आसपास के पेड़ों की पत्तियों से नमी टपकने की आवाज सुन सकते थे।

बेचारा कुली बहुत दुबला-पतला था और उसे ठंड से बहुत तकलीफ होने लगी थी। मैं उसकी कंपकंपी अपनी पीठ पर महसूस कर सकता था और उसके दांतों की हल्की सी कटकटाहट सुन सकता था। मेरे हाथों में राइफल की नली बर्फ जैसी ठंडी थी और उस पर ओस की बूँदें धीरे-धीरे बह रही थीं। मैंने नमी को अंदर जाने से रोकने के लिए नली का मुंह नीचे की ओर कर दिया।

कुछ हद तक ठंड ने मच्छरों को निष्क्रिय कर दिया था, जो सूर्यास्त के बाद से काफी सक्रिय थे। चूहों और अन्य छोटे जानवरों की हल्की खरोंच की आवाज़ें भी मंद पड़ गईं। निस्संदेह, उन्हें भी ठंड लग रही थी। मेंढकों का समूह भी धीरे-धीरे शांत हो गया और उनमें से किसी एक की छिटपुट आवाज़ सुनाई देने लगी। सुबह का वह समय था, जब रात के जीव भी आराम करते प्रतीत होते हैं।

सुबह 3 बजे के बाद हवा चलने लगी। हमारे नीचे घाटी में मौजूद गर्म हवा, जो अब तक ठंडी हो चुकी थी, काफी देर पहले ही जमीन से ऊपर उठ चुकी थी और

उसकी जगह उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर स्थित ऊंचे ढलान से आने वाली ठंडी हवा ने ले ली थी। यह हवा घाटी में तेज झोंकों के साथ बहती हुई सरसराहट और सिसकारी भर रही थी और छोटे पेड़ों की चोटियों को झुका रही थी।

मैं बाघ के बारे में सोचना भूलने लगा और मुझे नींद आने लगी। लेकिन इतनी ठंड थी कि झपकी लेना भी मुश्किल था। दूर से आती एक जंगली मुर्गे की बांग से पता चला कि सुबह के 4 बज चुके हैं। हमारी निगरानी खत्म होने वाली थी और बाघ अभी तक नहीं आया था।

लगभग पाँच बजे भोर का भ्रम हुआ, जिससे जल्दी सूर्योदय की उम्मीद जगी। फिर, हमेशा की तरह, कुछ मिनटों के लिए फिर से घना अंधेरा छा गया। पूर्व की ओर ढलान की चोटी की धुंधली आकृति से संकेत मिला कि रात का समय आखिरकार समाप्त हो रहा है। नीचे की घाटी अभी भी अंधेरे में डूबी हुई थी, जबकि ऊपर की चट्टानें हल्के गुलाबी रंग की कोमल छटाओं में दिखाई देने लगीं, जो बैंगनी और नीले रंग की पृष्ठभूमि के साथ विचित्र रूप से मिश्रित थीं। इनके सामने ढलानों पर उगने वाले पेड़ों से धुंध के गुच्छे ऊपर की ओर ऐसे उठ रहे थे मानो हमलावर रेड इंडियनों के समूह के धुएं के संकेत हों।

'वूम्प! वूम्प! वूम्प!' यह जोशीली आवाज़ चट्टानी ढलान पर गूंज उठी और नीचे जंगल से घिरी घाटी में खोखली गूंज के साथ गूंजती रही। यह नर लंगूर की आनंदमयी पुकार थी, जो दक्षिण भारत के जंगलों में रहने वाला एक बड़ा, भूरे रंग का बंदर है, जिसके चेहरे पर काली मूंछें और असामान्य रूप से लंबी, घुमावदार पूंछ होती है। वह जागकर आने वाले दिन का स्वागत कर रहा था। जल्द ही अन्य लंगूर भी उसमें शामिल हो गए और एक के बाद एक पुकारें चट्टान से चट्टान तक गूंजती रहीं और फिर जंगल से घिरी घाटी में गूंजती हुई दूर जाकर मंद पड़ गईं।

जहां हम बैठे थे, वहां काफी उजाला था, हालांकि सूरज अभी तक पूरब की ओर ढलान की चोटी पर स्थित चट्टानों और पत्थरों की नुकीली कतार के ऊपर नहीं चढ़ा था। आखिरकार हम उठे, पैर पटके, अंगड़ाई ली और जम्हाई ली ताकि नींद न आने वाली, असहज रात के असर को दूर कर सकें, और नागपतला स्थित बंगले तक बारह मील की पैदल यात्रा शुरू की। हममें से कोई भी अच्छे मूड में नहीं था, और न ही किसी को बात करने का मन था।

बंगले के द्वार पर हमें अपने कुछ दोस्त मिले, जो बांस काटने वाले थे और गांव से

हमारे लौटने का इंतजार कर रहे थे। किसी ने पूछा, 'क्या हुआ?' दूसरे ने पूछा, 'क्या बाघ आया था?' तीसरे ने पूछा, 'क्या उसने तुम पर हमला किया?'

'भांग को धिक्कार है!' मैंने चिढ़कर जवाब दिया। फिर, मेरा मन नरम पड़ गया और मैंने अपने कुली को कहा कि वह अपने साथियों को सारी घटना का ब्यौरा दे दे। वे ज़ोर-ज़ोर से चर्चा कर रहे थे जब मैंने चाय के लिए गर्म पानी बनाने के लिए केतली चूल्हे पर रखी। और वे अभी भी चर्चा कर ही रहे थे जब देव और मैं सख्त पलंगों पर गिर पड़े और तुरंत सो गए।

हम दोपहर भर सोते रहे और शाम करीब 4 बजे उठे, फिर देर से दोपहर का खाना खाया और साथ में चाय भी पी। उसके बाद हम सब मिलकर बाघ से हिसाब बराबर करने का कोई तरीका सोचने लगे।

तथ्यों को इकट्ठा करने पर, या यूँ कहें कि जितने तथ्य हमें ज्ञात थे, उनसे हमने पाया कि हमारा सामना एक ऐसे जानवर से था जो आदमखोरों के सामान्य व्यवहार से बिल्कुल अलग था। पहली बात तो यह थी कि उसने जितने भी मानव शिकार किए थे, वे सभी दोपहर के समय, दिन की भीषण गर्मी में किए थे। दूसरी बात यह थी कि उसके सभी शिकार लगभग एक ही क्षेत्र में, उम्बालमेरु तालाब और चट्टानी इलाके से कुछ मील की दूरी के भीतर ही हुए थे, जहाँ वह रहता हुआ प्रतीत होता था। आम तौर पर, आदमखोर एक बड़े क्षेत्र में घूमते हैं और एक निश्चित मार्ग का अनुसरण करते हैं, जो कभी-कभी सौ मील से भी अधिक लंबा होता है। तीसरी बात यह थी कि जिन लोगों को वह अपना शिकार बनाता था, उन्हें वह पूरी तरह से और रहस्यमय तरीके से गायब कर देता था। एक भी शव बरामद नहीं हुआ था। चौथी बात यह थी कि वह असामान्य रूप से शर्मीला जानवर प्रतीत होता था, और उसमें सामान्य से कहीं अधिक कायरता थी, जो सभी आदमखोरों में आम तौर पर पाई जाती है, जब कोई इंसान उसका विरोध करता है। इस मामले में, बाँस काटने वाले ने उसे अपने कोइथा से डराकर भगा दिया था, जबकि पिछली रात लकड़बग्घे की चेतावनी ने उसे चुपके से भागने पर मजबूर कर दिया था, जबकि वह आसानी से हम पर हमला कर सकता था। पांचवीं बात, ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि इसमें बाघों की तरह अपने जंगल क्षेत्र में घूमने की आदत थी। हमने जिन जंगल के रास्तों या नदी-नालों की तलाशी ली थी, उनमें से किसी पर भी हमें इस जानवर के पदचिह्न नहीं मिले। छठी बात, हमें आसपास के क्षेत्र में मवेशियों के मारे जाने की कोई सूचना नहीं मिली थी।

हमें इससे कुछ भी समझ नहीं आया, इसलिए हमने एकमात्र संभव काम करने का फैसला किया - उम्बालमेरु जलकुंड के आसपास एक या दो जीवित मछलियों को चारा बनाकर छोड़ देना, हालांकि हमें शायद ही उम्मीद थी कि उन्हें कोई मछली पकड़ेगी।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए हम उस रात खाना खाने के बाद रंगमपेट गाँव गए। गाँव वालों ने तुरंत सहयोग किया और देव और मैंने लगभग चालीस रुपये में (उन दिनों के हिसाब से) एक-एक लगभग तीन-चौथाई विकसित बैल खरीद लिए। अंग्रेज़ी मुद्रा में यह लगभग तीन पाउंड प्रति बैल था! उनमें से एक भूरे रंग का था और दूसरा राख-धूसर। हमने जानबूझकर सफेद या काले रंग के जानवरों से परहेज किया, क्योंकि कुछ बाघ दोनों रंगों के शिकार से दूर रहते हैं, खासकर सफेद रंग के। हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। सौदा पूरा होने के बाद, हम अपने जानवरों को वापस वन लॉज ले गए और रात के लिए उन्हें मोटर-शेड में अलग-अलग हिस्सों में बाँट दिया, और अपनी मॉडल टी कार को बाहर निकाल दिया।

अगली सुबह जल्दी ही हम काम में जुट गए और दो बांस काटने वालों की मदद से अपने जानवरों को वापस उम्बालमेरु ले आए। हमने एक जानवर को पानी के गड्ढे के किनारे बरगद के पेड़ के नीचे बांध दिया, और दूसरे को लगभग दो मील दूर, पुलिबोनू की ओर जाने वाले रास्ते के पास बांध दिया। यहाँ भी हमने उसे एक चुने हुए पेड़ के पास बांध दिया। हमने जानबूझकर ऐसा किया ताकि अगर कोई जानवर मारा जाए, तो हमारे पास बैठने और बाघ के लौटने का इंतज़ार करने के लिए एक उपयुक्त पेड़ मौजूद हो।

इन सबमें हमें दोपहर तक का समय लग गया, इसलिए जब हम नागपतला स्थित विश्राम गृह लौटे तब तक शाम हो चुकी थी।

अगली सुबह हमने फोर्ड कार से पुलिबोनू तक के पहले सात मील के ऊबड़-खाबड़ रास्ते को तय किया। कार आगे नहीं जा सकी क्योंकि सड़क वहीं खत्म हो गई थी। इसलिए हम पैदल ही अपने शिकारों को देखने गए। वे दोनों जीवित थे।

हमने बारी-बारी से दोनों को खोलकर पानी तक ले गए और फिर उन्हें दोबारा बांध दिया, ताकि दोनों को अगले दिन तक खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिल सके। इसके बाद हम और कुछ नहीं कर सकते थे। देव ने कहा कि वह तिरुपति शहर के कुछ मंदिरों में दर्शन करना चाहेंगे, जो बंगले से लगभग पंद्रह मील दूर था। तो हमने ऐसा

किया।

तिरुपति हिंदू तीर्थयात्रा का एक प्रमुख केंद्र है, जहां साल भर हजारों श्रद्धालु भगवान गोविंदा के दर्शन करने आते हैं और उनका नाम लगातार जपते रहते हैं। इन तीर्थस्थलों पर आने वाली सभी महिलाओं को तीर्थयात्रा पूरी करने के प्रतीक के रूप में अपने सिर के सारे बाल मुंडवाने पड़ते हैं। चूंकि प्रतिदिन सैकड़ों महिलाएं आती हैं, इसलिए मुंडवाए गए बालों की मात्रा बहुत अधिक होगी।

वापस लौटने से ठीक पहले हम रेलवे स्टेशन पर बने जलपान कक्ष में चाय पीने के लिए रुके। कुछ देर तक कोई ट्रेन आने वाली नहीं थी, इसलिए प्रबंधक उस समय खाली था। तो वह हमारे पास आकर बैठ गया और समय बिताने के लिए बातचीत शुरू कर दी। भारत के सहज और सरल स्वभाव के साथ उसने हमसे पूछा कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं, क्यों आए हैं, और ऐसे ही कई अन्य प्रश्न पूछे।

देव ने विनम्रतापूर्वक उसे सारी जानकारी दे दी। प्रबंधक, जो शिकार के बारे में काफी कुछ जानने का दावा करता था, ने भी इस बात से सहमति जताई कि बाघ का सामान्य व्यवहार अत्यंत असामान्य था और आदमखोर बाघ के सामान्य व्यवहार के अनुरूप नहीं था।

फिर उसने कुछ ऐसा कहा जिससे मैं एकदम चौंककर बैठ गया। 'मुझे आश्चर्य है कि क्या यह वही बाघिन हो सकती है जो कुछ महीने पहले शहर में आए एक सर्कस से भाग निकली थी।'

अब मेरी बारी थी सवाल पूछने की, और मैंने उन पर सवालों की बौछार कर दी। कौन सा सर्कस? कितने समय पहले? बाघिन कहाँ से भागी थी? क्या कोई रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी? क्या उसे दोबारा पकड़ लिया गया था?

उन्होंने मेरे सवालों के जवाब टुकड़ों में दिए, और उनके द्वारा दी गई जानकारी से हमें निम्नलिखित तथ्य पता चले। एक छोटा सा सर्कस, जिसमें एक बाघिन और कुछ अन्य जानवर थे, तिरुपति आया था और शहर से लगभग एक मील दूर डेरा डाला था। सर्कस के मालिक ने रेलवे स्टेशन पर बने भोजनालय के प्रबंधक से दोस्ती कर ली थी क्योंकि वे दोनों शराब नहीं पीते थे, और ऐसे जिले में जहां शराबबंदी लागू है, शराब न पीने वाले लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की चाह में एक-दूसरे से बहुत कुछ साझा करते हैं।

एक शाम, कुछ गिलास चुपके से पीने के बाद, सर्कस के मालिक का मूड थोड़ा

ठीक हो गया और उसने जलपान कक्ष के प्रबंधक को बताया कि दो रात पहले बाघिन भाग गई थी। उसकी देखभाल करने वाले मूर्ख व्यक्ति ने उसके पिंजरे का दरवाजा ठीक से बंद नहीं किया था। मालिक पुलिस को सूचित करने से डर रहा था, और चूंकि वह एक मिलनसार व्यक्ति था और अपने कलाकारों और कर्मचारियों के बीच सम्मानित था, इसलिए उसे विश्वास था कि वे यह रहस्य किसी को नहीं बताएंगे। और किसी ने नहीं बताया। लापता बाघिन को खोजने का आधा-अधूरा प्रयास किया गया, लेकिन किसी ने भी उसे नहीं देखा। चूंकि जंगल तिरुपति से एक मील की दूरी पर है, मालिक ने स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकाला कि उसकी बाघिन वापस जंगल में चली गई होगी जहाँ वह अपना ख्याल रख सकेगी। उसने अपने नुकसान को स्वीकार कर लिया और सर्कस आगे बढ़ गया।

मैंने मैनेजर से पूछा कि क्या उसने भागने से पहले इस जानवर को कभी देखा था। उसने जवाब दिया कि उसने देखा था, क्योंकि सर्कस मालिक ने उसे जितनी बार चाहे उतनी बार शो देखने की छूट दे रखी थी। वह बहुत बड़ी बाघिन नहीं थी, लेकिन पूरी तरह से विकसित थी। उसने आगे कहा कि उसे वह असामान्य रूप से खूंखार लगती थी, क्योंकि उसने उसे अक्सर हर दिन गोमांस का अपना एक ही भोजन खाते समय गुर्राते और दहाड़ते देखा था। उसे यह भी लगता था कि उसे कभी पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं किया गया था, क्योंकि उसने उसे सर्कस के बाघों के सामान्य करतब करते हुए कभी नहीं देखा था।

मेरे मन में एक जिज्ञासु विचार आया और मैंने उससे पूछा: 'यह बाघिन अपना दैनिक भोजन लगभग किस समय प्राप्त करती थी?'

उन्होंने मेरी तरफ कुछ हैरानी से देखा, लेकिन तुरंत जवाब दिया: 'दोपहर में, सर्कस वालों के अपना दोपहर का भोजन समाप्त करने के बाद।'

रहस्य सुलझ गया, और उस जानवर की विचित्र आदतें अब रहस्य नहीं रहीं। क्योंकि अब मुझे पूरा यकीन था कि आदमखोर वही भागी हुई बाघिन थी, कोई और जानवर नहीं।

दोपहर में खाना खाने की उसकी आदत बनी रही। वह लोगों से बेहद डरती थी—जब तक कि वह उन पर अचानक हमला करके उन्हें झटपट मार न डाले। वह ठीक से शिकार नहीं कर पाती थी, इसलिए उसने आम आदमखोर बाघों की तरह कोई निश्चित इलाका तय नहीं किया था। लोगों से डरने के कारण, वह अपने शिकार को जितनी

जल्दी हो सके, बिना कोई निशान छोड़े, अपराध स्थल से बहुत दूर ले जाकर खा जाती थी। और, इतने लंबे समय तक पिंजरे में रहने के बाद भी उसकी ये आदतें पूरी तरह नहीं छूटी थीं, इसलिए उसने अपने लिए एक ठिकाना ढूंढ लिया था, शायद कोई गुफा, और उसे अपना स्थायी निवास बना लिया था, बजाय इसके कि वह आम बाघों की तरह, चाहे वे आदमखोर हों या नहीं, जंगल के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में भटकती रहे।

जैसे-जैसे मैं इस बारे में सोचता गया, मुझे अपने सिद्धांत के सही होने का और भी पक्का यकीन होता गया। और उसका ठिकाना निस्संदेह उंबलमेरु के आस-पास ही कहीं था; शायद किसी गुफा या चट्टानी खोखले हिस्से में, ढलान के नीचे। आख़िरकार, सीधी रेखा में तिरुपति से उंबलमेरु के पास की ढलान की दूरी बीस मील से ज़्यादा नहीं हो सकती, अगर इतनी भी हो तो। और बाघ के लिए इतनी दूरी तय करना कोई बड़ी बात नहीं है।

मैंने उस समय देव को अपने विचार नहीं बताए, बल्कि जलपान कक्ष के प्रबंधक से लगातार सवाल पूछता रहा। लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उसने हमें वह सब बता दिया था जो उसे पता था। वह केवल इतना ही बता सका कि सर्कस तिरुपति से रेनिगुंटा, फिर पुत्तूर नामक स्थान पर और उसके बाद मद्रास शहर से लगभग चालीस मील दूर स्थित रेलवे स्टेशन अरकोनम चला गया था। वह मालिक के साथ अनियमित रूप से पत्र व्यवहार करता था और इन सभी स्थानों से उसे पत्र मिलते थे। फिर पत्र आने बंद हो गए, इसलिए अब उसे पता नहीं था कि सर्कस कहाँ चला गया है।

आखिरी बात जो उसने मुझे बताई, वह यह थी कि उसे याद था कि बाघिन का नाम रानी था।

जब आखिरकार हम उस शाम अंधेरा होने के बाद तिरुपति से नागपटला स्थित वन बंगले में वापस लौटने के लिए निकले, तो मुझे लगा कि हमारी यात्रा अत्यंत उपयुक्त रही।

अगली सुबह भोर से पहले हम पुलिबोनू गए, गाड़ी वहीं छोड़ दी और अपने शिकार को फिर से देखने गए। दोनों ज़िंदा और स्वस्थ थे। उसके बाद हमने कई नालों और रास्तों की छानबीन की, ताज़े बाघ के पंजों की तलाश में और अपने शिकार से मिलने की उम्मीद में। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। शाम हो चुकी थी जब हम

बंगले पर वापस लौटे। हमने खाना खाया और फिर रंगमपेट गए, जहाँ हमने रामैया नाम के एक व्यक्ति से मदद मांगी, जिसने कई साल पहले चमाला घाटी में शिकार यात्राओं पर मेरी मदद की थी। मुझे उम्मीद थी कि वह अब मेरी मदद कर पाएगा।

रामैया एक असाधारण व्यक्ति हैं, कम से कम गाँव वालों के हिसाब से तो ऐसा ही है। उनसे मेरी पहली मुलाकात लगभग आठ-दस साल पहले हुई थी, जब उन्होंने कुछ ऐसी बातों में दिलचस्पी दिखाई थी जो गाँव के किसी और व्यक्ति को जानने की ज़हमत ही नहीं उठाती। रामैया का दावा था कि उन्होंने घाटी में उगने वाली एक गुप्त जड़ी बूटी खोजी है, जिसकी पत्तियों को खाने से किसी भी ज़हरीले साँप के काटने का असर खत्म हो जाता है। उन्होंने बताया कि वे इन पत्तियों को सुखाकर पीसकर अपनी झोपड़ी में रखते हैं और इनकी मदद से उन्होंने कई लोगों की जान बचाई है जिन्हें कोबरा और रसेल वाइपर ने काटा था, साथ ही मवेशियों को भी बचाया है। मेरे कहने पर वे मेरे लिए एक छोटा पौधा लाए थे जिसे मैं बैंगलोर ले आया और अपने बगीचे में उगाने की कोशिश की। दुर्भाग्य से, वह पौधा मर गया। रामैया ने एक और जड़ी बूटी भी खोजी थी, जिसकी कुछ पत्तियाँ चाय बनाते समय चायदानी में डालने से उसका स्वाद बहुत बढ़ जाता है। मैंने इस जड़ी बूटी को आजमाया और पाया कि उनका दावा सही था। उन्होंने मुझे टेनिस बॉल के आकार का एक चिकना, अंडाकार पत्थर दिया था, जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि इसमें से हमेशा थोड़ी नमी निकलती रहती है, खासकर सुबह के समय। मैं उस पत्थर को अपने साथ बैंगलोर ले गया और पाया कि उनकी बात सच थी। इस विचित्र घटना ने मुझे इतना आश्चर्यचकित और उत्सुक कर दिया कि मैंने बैंगलोर के एक भूविज्ञानी को वह पत्थर दिखाया। लेकिन वह सज्जन, मेरी ही तरह आश्चर्यचकित थे, उन्होंने इस विचित्र घटना का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया।

एक बार शिकार यात्रा के अंत में, मैंने रामिया को उसकी सेवाओं के लिए भुगतान करने की पेशकश की थी। इसके बदले में, उसने मुझसे घाटी के ऊपरी हिस्से में, जहाँ से जंगल शुरू होता था, एक ज़मीन का टुकड़ा सस्ते में खरीदने के लिए कहा, और उसे खेती करने की अनुमति देने के लिए कहा, और बदले में जब भी मैं शिकार के लिए नागपतला आऊँगा, वह मेरी सेवा करने के लिए तैयार रहेगा।

मैंने उसकी बात मानकर लगभग ढाई एकड़ ज़मीन पचास रुपये (अंग्रेज़ी मुद्रा में चार पाउंड से भी कम) में खरीद ली। उसके बाद, रामैया ने बिना किराया दिए उस

ज़मीन पर खेती की और जब भी मैंने उसे बुलाया, वह खुशी-खुशी मेरी मदद के लिए आया।

तो उस रात हमने रामिया को उसकी झोपड़ी से बाहर निकाला और उसके दरवाजे पर बैठकर मैंने उसे वह सब बताया जो मैंने भोजनालय के प्रबंधक से सुना था। जब हमें इस हत्यारे के बारे में पहली बार पता चला था, तब मैंने रामिया से सलाह ली थी, लेकिन चूंकि वह उन कई लोगों में से एक था जो 'बुरी आत्मा' के सिद्धांत में विश्वास करते थे, इसलिए मैंने अब तक उसकी मदद लेना उचित नहीं समझा था।

भाग निकली बाघिन की कहानी सुनाने के बाद मैंने कहा: 'मुझे पूरा यकीन है कि अगर कोई चमाला घाटी के जंगल के हर कोने को जानता है, तो वह आप ही हैं। अब बहुत ध्यान से सोचिए। क्या उम्बालमेरु तालाब के पास या उससे दो-तीन मील के दायरे में, ढलान के नीचे कोई गुफा है?'

उनका जवाब तुरंत आया। 'जी हाँ, साहब। देखिए—एक, दो, तीन, चार, और हाँ, एक और, कुल पाँच गुफाएँ हैं, लगभग उतनी ही दूरी पर जितनी आपने बताई है। उनमें से दो उत्तर दिशा में हैं, और बाकी तीन पूर्व दिशा में। उत्तर दिशा वाली दो गुफाओं में से एक खड़ी ढलान पर काफी ऊँचाई पर है। मुझे नहीं लगता कि कोई बाघ आसानी से उसका इस्तेमाल करेगा। चढ़ाई बहुत खड़ी है। मुझे पता है कि लंगूर बंदर उस गुफा के आसपास खेलते हैं, लेकिन वे उसमें रहते नहीं हैं। बाकी चारों गुफाएँ बाघ के आराम करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त होंगी।'

मैं बेहद खुश हुआ और अपनी खुशी जाहिर की। मैंने कहा, 'वाह, रामिया! क्या तुम मुझे उन सभी के पास ले जाओगे?'

'ज़रूर, साहब,' उसने तुरंत सहमति दे दी। 'मैंने आपसे वादा किया है कि इस जंगल में आप जहाँ भी चाहें, मैं आपके साथ किसी भी समय चलूँगा, इसके बदले में आपने मुझे इतने वर्षों तक बिना किराया लिए आपकी ज़मीन पर खेती करने की अनुमति दी है। मैं अपना वादा निभाऊँगा, साहब,' उसने सरल शब्दों में कहा।

मैंने उनसे इन गुफाओं के बारे में और पूछताछ की और मुझे पता चला कि उनके मन में जिन चार गुफाओं का जिक्र था, उनमें से तीन काफी छोटी थीं। चौथी गुफा, जो पूर्वी दिशा में ढलान के नीचे स्थित तीन गुफाओं में से एक थी, बाकी गुफाओं से काफी बड़ी थी और उसका अपना एक नाम था: 'मडापेंटा', क्योंकि यह ढलान से नीचे बहने वाली एक छोटी सी धारा से बने एक छोटे से तालाब के पास थी। पेंटा का अर्थ तालाब

होता है।

मैंने उससे पूछा, 'हम एक ही दिन में इन चारों गुफाओं का दौरा कर पाएंगे, है ना?'

'जी हां, साहब,' उन्होंने सहमति जताई। 'उत्तर की ओर वाली गुफा उंबलमेरु से मुश्किल से एक मील दूर है। पूर्व की ओर वाली तीनों गुफाएं जलस्रोत से दो से तीन मील की दूरी पर हैं, लेकिन एक दूसरे से एक मील के भीतर स्थित हैं।'

मैंने उससे कहा, 'मैं कल सुबह मुर्गे की बांग के साथ कार से तुम्हें लेने आऊंगा। तैयार रहना। जल्दी शुरुआत करने पर हम सूर्योदय तक पुलिबोनू पहुंच जाएंगे। हम उम्बालमेरु तक की शेष दूरी पैदल तय करेंगे और वहां से गुफाओं तक जाएंगे, जिसकी शुरुआत उत्तर दिशा वाली गुफा से होगी।'

'जैसा आप कहें, साहब,' उन्होंने तुरंत सहमति जताते हुए कहा। 'मैं आपका इंतजार करूंगा।'

देव और मैं बच्चों की तरह खुश होकर जंगल वाले बंगले में वापस लौटे। वहाँ देव ने आधी रात तक .12 शॉटगन की बार-बार सफाई की। उसने मेरी राइफल भी साफ की।

अगली सुबह जब मॉडल टी कार नागपतला विश्राम गृह के गेट से निकली, तो भूरे रंग के जंगली मुर्गे बांग दे रहे थे, और जब हम रामैया की झोपड़ी पर पहुँचे, तो उनके चचेरे भाई, रंगमपेट गाँव के मुर्गे भी बांग देने लगे थे। लगभग सुबह के 5 बज रहे थे। उसने फोर्ड कार के आने की आहट सुन ली थी और जैसे ही मैंने कार रोकी, वह दरवाजे से बाहर आ गया।

हम सात मील की दूरी तय करके पुलिबोनू पहुँचे, और सुबह के 6:5 बज रहे थे जब हम कुएँ के पास रुके और उस पगडंडी पर चलना शुरू किया जो अक्षर Y के दाहिने स्ट्रोक का आकार बनाती थी और जो लगभग उत्तर-पूर्व दिशा में जाकर उम्बालमेरु के पानी के कुंड पर समाप्त होती थी। हम आठ बजने से कुछ मिनट पहले कुंड पर पहुँचे, और आसमान बिल्कुल साफ था और सूरज खूब चमक रहा था।

रामिया ने मुझे बताया कि उम्बालमेरु से उन चारों गुफाओं तक कोई स्पष्ट पगडंडी नहीं जाती, जिनकी हम खोज करने वाले थे। हमें केवल दिशा के बारे में उसकी जानकारी पर ही भरोसा करना होगा।

और रामैया का दिशा ज्ञान कभी धोखा नहीं देता था। वह आगे-आगे चल रहा था,

उसके हाथ में कोइथा था, जो एक लंबी, घुमावदार नोक वाली चाकू होती है, जिसका हैंडल लगभग एक फुट लंबा बांस का बना होता है। यह देखने में प्रश्न चिह्न जैसा लगता था, लेकिन झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाने के लिए जब भी वह इसका इस्तेमाल करता था, यह बेहद उपयोगी साबित होता था।

अक्सर हमें हर दिशा में जाते हुए जानवरों के रास्ते दिखाई देते थे, जो मुख्य रूप से, जैसा कि मैं खुद पटरियों को देखकर समझ सकता था, सांभर और जंगली सूअरों द्वारा बनाए गए थे, और कभी-कभार सुस्त भालुओं द्वारा छोड़े गए निशान भी थे, जिन्होंने इधर-उधर जड़ें खोदी थीं और दीमकों की तलाश में चींटियों के हर टीले को व्यवस्थित रूप से नष्ट कर दिया था। लेकिन इन सब बातों से हमारे गाइड का हौसला ज़रा भी नहीं टूटा और न ही वह एक पल के लिए भी दिशा का ज्ञान खो बैठा। वह उत्तर की ओर बढ़ता रहा और मैं उसके ठीक पीछे .405 पिस्तौल को अचानक हमले से बचाव के लिए तैयार रखे हुए था। देव शॉटगन लेकर सबसे पीछे चल रहा था।

ज़मीन धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठने लगी, उस ढलान की ओर जो पेड़ों के बीच से दिखाई दे रही थी, मानो हम पर गुस्से से घूर रही हो। जल्द ही बड़े पेड़ कम होते गए और उनकी जगह घनी झाड़ियाँ आ गईं, और चारों ओर बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, जिनका आकार और संख्या जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, बढ़ती गई। मुझे पूरा यकीन था कि ये पत्थर समय-समय पर बारिश और उसके परिणामस्वरूप हुए भूस्खलन से ढलान से बहकर नीचे आ गए होंगे।

आधे घंटे बाद रामिया रुकी और फुसफुसाते हुए बोली कि हम पहली गुफा के पास पहुँच रहे हैं। उम्बालमेरु के तालाब से निकलने के बाद से हम जो सावधानी बरत रहे थे, उसे हमने और भी बढ़ा दिया—अगर यह संभव था तो। आदमखोर कहीं भी घात लगाए बैठा हो सकता है, और हमें इसकी भनक तक नहीं लगेगी।

फिर रामियाह दूसरी बार रुका और बिना कुछ बोले सिर हिलाकर गुफा की ओर इशारा किया। और मैंने उसे देख लिया—मेरा मतलब गुफा से है। पत्थरों का ढेर एक के ऊपर एक गिर गया था और इस तरह एक गुफा बन गई थी। अब मुझे उसका प्रवेश द्वार दिखाई दे रहा था। वह बहुत बड़ा तो नहीं था, शायद प्रवेश द्वार का व्यास एक गज ही होगा, लेकिन इतना बड़ा ज़रूर था कि उसमें एक बाघ आसानी से छिप सकता था।

मैंने अपना बायां हाथ बढ़ाकर रामैया के कंधे को छुआ। फिर मैंने उसे पीछे खींचा और आगे बढ़कर उसे अपने और देव सुंदरम के बीच में रखा, जो अभी भी पीछे था। मैं

दबे पांव, जितना हो सके चुपचाप, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कहीं किसी सूखी लकड़ी या पत्ते पर पैर न पड़ जाए जिससे चटकने की आवाज आए, धीरे-धीरे आगे बढ़ा और गुफा के मुहाने से लगभग पंद्रह फीट दूर खड़ा हो गया। दुर्भाग्य से, सामने की ज़मीन सख्त और पथरीली थी। इसके अलावा, जगह-जगह भाले के आकार की घास के गुच्छे उगे हुए थे। ऐसी ज़मीन पर कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं देते।

मैंने रामैया और देव को इशारे किए कि वे पत्थर उठाकर गुफा में फेंकें। वे मेरे इशारे समझ गए और कुछ ही सेकंड में उन्होंने छोटे-बड़े पत्थरों की एक बेतरतीब बौछार शुरू कर दी, जो गुफा के संकरे प्रवेश द्वार में घुस रहे थे।

कुछ नहीं हुआ। हर पत्थर के गिरने की आवाज़ और अंदर उछलते-उछलते पत्थरों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी। यकीनन, अगर कोई बाघ वहाँ छिपा होता, तो या तो हम पर हमला कर देता या कम से कम गुर्राकर अपनी मौजूदगी का संकेत ज़रूर देता। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। पत्थरों की खड़खड़ाहट और धमक के अलावा पूरी तरह सन्नाटा था। ऐसा लगने लगा जैसे बाघ घर पर नहीं है।

और भी पत्थर फेंके गए, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। दस मिनट बाद मुझे यकीन हो गया कि गुफा में कोई नहीं रहता। मैं गुफा के मुहाने तक गया, जहाँ घास और पत्थर खत्म होते थे और ज़मीन पर मिट्टी बिछी हुई थी। अँधेरे अंदरूनी हिस्से पर पैनी नज़र रखते हुए, मैं नीचे झुका और ज़मीन पर पैरों के निशान देखे। कहीं भी कोई पदचिह्न नहीं थे। गुफा में रहने वाला एकमात्र जानवर, जैसा कि मैं उसके छोटे-छोटे पैरों के निशानों से देख सकता था, एक साही था; और मैं जानता था कि कितना भी पत्थर फेंकने से वह बाहर आकर तेज़ धूप का सामना नहीं करेगा। रात में सक्रिय रहने वाला साही, केवल धुएं से ही अपने बिल से बाहर निकाला जा सकता है, और वह भी बड़ी मुश्किल से। आम तौर पर, अगर वह और गहरा बिल नहीं खोद पाता, तो ऐसी स्थिति में वह दम घुटकर मरना पसंद करेगा।

हमारे मुड़ने से ठीक पहले, रामिया ने ऊपर की ओर खड़ी चट्टान की तरफ इशारा किया। उसने हमारा ध्यान उन दो गुफाओं में से दूसरी गुफा की ओर दिलाया, जिनके बारे में उसने कहा था कि वह पानी के गड्ढे के उत्तर में स्थित है। हम उसका प्रवेश द्वार मुश्किल से देख पा रहे थे, जो घनी घास से आधा छिपा हुआ था। गुफा हमसे कम से कम 200 फीट या उससे अधिक ऊपर लग रही थी और शायद दो फर्लांग दूर थी।

रामियाह सही था। कोई बाघ इतनी खड़ी चढ़ाई चढ़ने की हिम्मत नहीं करता।

इसके अलावा, एक और पुख्ता सबूत था कि उस दूसरी गुफा में कोई बिल्ली प्रजाति का जानवर नहीं रहता था। गुफा के प्रवेश द्वार पर एक लंगूर बंदर आराम से बैठा था और उत्सुकता से हमारी ओर देख रहा था। अगर कोई बाघ आस-पास से गुजरा होता, और अगर कोई बाघ उस गुफा में रहता भी, तो लंगूर वहां नहीं होता। वे इतने प्यारे होते हैं कि जोखिम नहीं उठाते।

हम ढलान से नीचे उम्बालमेरु की ओर बढ़े और फिर पूर्वी ढलान के तल पर स्थित तीन गुफाओं की ओर चल पड़े। एक बार फिर रामिया ने दूरी का अच्छा अनुमान लगाया। पहली गुफा तक पहुँचने में हमें लगभग पैंतालीस मिनट लगे, जिससे मैंने अनुमान लगाया कि यह पानी के स्रोत से लगभग दो मील दूर है। ढलान वाली ज़मीन और भूभाग लगभग एक जैसे ही थे, लेकिन गुफा एक सामान्य गुफा की बजाय एक गहरी खाई जैसी लग रही थी, क्योंकि यह ऊपर से खुली थी और चट्टान के एक बड़े टुकड़े के भूस्खलन में गिरने से बनी थी, जो चट्टान के आधार से लगभग दस फीट दूर पड़ा था। गिरा हुआ टुकड़ा लगभग बीस फीट या उससे अधिक ऊँचा लग रहा था, और इसके और ढलान के बीच की दस फीट की जगह को ही रामिया ने गुफा कहा था। ऊपर से खुली होने के कारण इसमें बारिश और धूप आती थी, और यह लैंटाना और लंबी घास से घनी तरह से ढकी हुई थी।

हालांकि यह अस्थायी रूप से छिपने के लिए एक शानदार जगह थी, लेकिन बाघ के लिए लंबे समय तक रहने के लिए यह उपयुक्त स्थान नहीं लग रहा था। एक तो यह घनी झाड़ियों से भरा हुआ था। बाघ ऐसी जगह घर बनाना पसंद नहीं करता जहाँ उस पर अचानक हमला हो सकता है।

मैंने अपने साथियों को भी वही योजना अपनाने को कहा कि वे भी उसी खाई में पत्थर फेंकें, जबकि मैं अपनी राइफल लेकर उनकी रक्षा करता रहूँ। जैसा कि उम्मीद थी, कुछ नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद हम और करीब पहुँच गए। ज़मीन इतनी पथरीली और सख्त थी कि पैरों के निशान दिखना मुश्किल था, लेकिन देव और रामैया द्वारा खाई में बरसाए गए पत्थरों की ज़ोरदार बौछार से जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बाघ वहाँ नहीं था।

हम ढलान के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर बढ़ते हुए अगली गुफा तक पहुँचे, जहाँ पहुँचने में हमें लगभग पंद्रह मिनट लगे। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह किसी भूमिगत मार्ग का निकास द्वार है जो ढलान में जाता है। गुफा का मुँह अपेक्षाकृत छोटा था,

लगभग दो फुट चौड़ा। हमने हमेशा की तरह पत्थर फेंके, लेकिन तीसरी बार भी हमें कोई सुराग नहीं मिला। ज़मीन फिर से इतनी सूखी और सख्त थी कि कोई निशान नहीं बन पा रहे थे, इसलिए हम मार्ग के मुँह के पास गए और आसपास उगी घास में आग लगा दी।

पत्थरबाजी से भले ही कोई नतीजा न निकला हो, लेकिन आग का नजारा और धुएं की गंध बाघ को तुरंत बाहर निकाल लाते। फिर भी कुछ नहीं हुआ। अगले दस मिनट तक हमने सावधानीपूर्वक अपनी लगाई हुई आग के हर निशान को बुझाया। हम अच्छी तरह जानते थे कि एक सुलगता अंगारा भी जंगल में आग लगाने के लिए काफी होगा, जो कई दिनों तक जलती रहेगी और हजारों एकड़ जंगल को नष्ट कर देगी।

हमारी निराशा को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। हम पूरी तरह से हताश हो गए थे। लेकिन एक गुफा अभी भी देखने बाकी थी, जो उन सभी गुफाओं में सबसे बड़ी थी, जिसे रामिया ने मदापेंटा कहा था। उसने हमें बताया था कि वह एक मील से भी अधिक दूर है।

सफलता की बहुत कम उम्मीद के साथ हम इस जगह के लिए निकल पड़े। वहाँ पहुँचने से ठीक पहले हम उस छोटे से जंगल के तालाब के पास पहुँचे, जिसके नाम पर इस गुफा का नाम पड़ा था। और यहाँ हमारी उम्मीदें आसमान छू गईं। तालाब के किनारे कीचड़ में कई जगह बाघिन के पंजों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। जाहिर है, यही उसका पानी का मुख्य स्रोत था।

कम से कम 200 गज की दूरी तक सावधानीपूर्वक और चुपचाप आगे बढ़ने के बाद गुफा दिखाई दी। इसका प्रवेश द्वार चौड़ा था, पाँच फीट से अधिक और ऊँचाई भी लगभग उतनी ही थी। अंत में, यह घास और झाड़ियों से मुक्त था और अंदर छिपी बाघिन की ओर बढ़ते दुश्मन का स्पष्ट दृश्य प्रस्तुत करता था। अगले कुछ ही क्षणों में यह स्पष्ट हो गया कि यह दृश्य कितना उत्कृष्ट था। देव या रामैया के पहला पत्थर फेंकने से पहले ही, अंदर के अँधेरे से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और अगले ही पल बाघिन बाहर कूद पड़ी।

तेज धूप ने कुछ देर के लिए उसकी आंखों को चौंधिया दिया। फिर उसकी आंखें सामान्य हुईं और उसने हमें देख लिया। एक पल के लिए वह हिचकिचाई, फिर डर, जो इस जानवर के स्वभाव में काफी प्रबल प्रतीत होता था, उस पर हावी हो गया। वह

भागने के लिए दाईं ओर मुड़ गई।

उसी क्षण मैंने आवेग में आकर तुरंत प्रतिक्रिया दी। मैंने जोर से और तीखी आवाज में पुकारा: 'रानी! रानी!'

शेरनी रुक गई। वह मेरी ओर मुड़ी। उसके चेहरे पर भयंकर क्रोध था; लेकिन साथ ही हैरानी, पहचान और आंशिक समर्पण का एक अजीब सा भाव भी था। लेकिन हमारी उपस्थिति उसके लिए एक पहेली थी जिसका उत्तर उसे कभी नहीं मिला, क्योंकि मैंने कोई जोखिम न लेते हुए उसकी छाती में गोली मारी और जैसे ही वह आगे की ओर गिरी, मैंने उसके दिमाग में एक और गोली दाग दी।

वह एक युवा जानवर थी, अभी पूरी तरह से विकसित भी नहीं हुई थी, और स्पष्ट रूप से दुबली-पतली और कुपोषित थी। रानी को आदमखोर बनने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

जवाब सीधा-सादा था। वर्षों की कैद ने उसे जंगली जानवरों का पीछा करने और उन्हें मारने की कला में अक्षम बना दिया था। दूसरी ओर, वह केवल मनुष्यों के रूप-रंग और आदतों से ही परिचित थी, हालाँकि अंत तक उसके मन में मनुष्यों के प्रति सहज भय बना रहा।

इसलिए, इन परिस्थितियों में उसने खुद को जीवित रखने के लिए एकमात्र संभव उपाय किया। उसने अचानक हमला करके अपने शिकारों को मार डाला और फिर शवों को दूर ले गई, जहाँ वह पीछा किए जाने के खतरे से सुरक्षित रहते हुए भोजन कर सके।

इस कहानी को समाप्त करने से पहले, मैं एक चेतावनी देना चाहूँगा, जो निश्चित रूप से केवल भारत, अफ्रीका और अन्य देशों में रहने वाले लोगों पर लागू होगी, जहाँ जंगली जानवरों को बचपन में ही पकड़कर पालतू जानवर के रूप में रखा जा सकता है। मैं एक ऐसी महिला को जानता हूँ जिसने एक पैंथर के बच्चे को तब तक पाला जब तक वह इतना बड़ा और खतरनाक नहीं हो गया कि उसे रखना असंभव हो गया। वह उस जानवर से बहुत लगाव रखती थी, और जानवर भी उससे उतना ही प्यार करता था। वह उसे किसी चिड़ियाघर या सर्कस में देने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी, क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि दोनों ही जगहों पर उसके साथ बुरा बर्ताव किया जाएगा। उसे गोली मारना तो उसके लिए नामुमकिन था। इसलिए वह उसे कार से एक बड़े जंगल में ले गई और वहाँ उसे आज़ाद कर दिया। संयोग से, उसने बाद में मुझे

आँखों में आँसू लिए बताया कि जैसे ही कार चली गई, पैंथर उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ उसके पास वापस आने की कोशिश करने लगा।

मुझे आश्चर्य होता है कि क्या इस नेक इरादे वाली, लेकिन दुर्भाग्य से गुमराह महिला को इस बात का पूरा एहसास था कि वह क्या कर रही है। उसने अभी-अभी एक बेहद खतरनाक जानवर को आज़ाद किया था, जिसे उसने बचपन से ही उबला हुआ मांस, चावल, रोटी, हलवा, दलिया और न जाने क्या-क्या खिलाकर पाला था, और मिठाई, आइसक्रीम जैसी स्वादिष्ट चीज़ों का ज़िक्र तक नहीं किया था। यह बेचारा जानवर खुद की देखभाल करने और अपने शिकार को पकड़ने और मारने में पूरी तरह असमर्थ था। इसके साथ केवल तीन ही बातें हो सकती थीं, और तीनों ही सोचना बेहद भयावह था। हो सकता है कि यह किसी भी इंसान से दोस्ती के भाव से मिले और इसी वजह से मारा जाए। दूसरा, हो सकता है कि यह भूख से मर जाए, हालाँकि इसकी संभावना बहुत कम है, क्योंकि भूख से बेहाल होने पर आत्मरक्षा की प्रवृत्ति इतनी प्रबल हो जाती है कि पैंथर अंततः किसी न किसी को मार ही डालेगा। तीसरा, और सबसे बुरा, हो सकता है कि यह जानवर आदमखोर बन जाए।

उसने मुझे बताया कि अपने पालतू जानवर को आज़ाद करने के एक हफ्ते से भी कम समय में उसने क्या किया था। मैंने उसे अगले एक महीने तक अखबारों को ध्यान से पढ़ने की सलाह दी। मैंने भी ऐसा ही किया।

कुछ दिनों के भीतर हम दोनों ने एक छोटी सी खबर पढ़ी जिसमें एक बेहद कमजोर पैंथर के अजीब व्यवहार का जिक्र था। वह पैंथर एक गाँव में भटक गया था (जो उस जगह से कुछ मील की दूरी पर था जहाँ उसने अपने पालतू जानवर को छोड़ा था) और घास की झोपड़ी में सो गया था। फिर आया दुखद घटनाक्रम। ग्रामीणों ने झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया, छत पर केरोसिन तेल डाला और आग लगा दी, जिससे बेचारा जानवर जलकर मर गया।

अपने पालतू जानवर की भयानक मौत से वह महिला बहुत दुखी थी। लेकिन मैं सोचती हूँ कि अगर उसे यह पता चलता कि वह जानवर इंसानों का कातिल बन गया था, और उसे उस समय आज़ाद छोड़ देने की मूर्खता के कारण इस घिनौनी आदत को अपनाने पर मजबूर होना पड़ा था, जब वह पूरी तरह से खुद का बचाव करने में असमर्थ था, तो उसे कैसा महसूस होता।

तीन

कैंप फायर के पास एक रात

मेरी पत्नी कहती है कि मैं सनकी हूँ। मेरे दोस्त भी यही कहते हैं। और मुझे लगता है कि वे सब काफी हद तक सही हैं। लेकिन अगर मैं सच में सनकी हूँ तो क्या हुआ? मुझे कभी-कभी सनकी होना अच्छा लगता है।

मेरी एक आदत, जो आज भी बनी हुई है, जब मुझे बहुत सारे लोगों और उनके शोर से चिढ़ होती है, तो मैं अपनी कार में बैठकर पास के किसी जंगल में चला जाता हूँ। वहाँ मैं कार छोड़ देता हूँ, जंगल में भटकता रहता हूँ, रात होने पर अपने लिए एक बड़ी सी आग जलाता हूँ और रात के अंधेरे में बस आग के पास बैठा रहता हूँ। मैं ज़रूरत के हिसाब से आग में ताज़ी लकड़ियाँ डालता रहता हूँ, जिन्हें मैं अंधेरा होने से पहले ही इकट्ठा कर लेता हूँ। आखिरकार लकड़ियाँ खत्म हो जाती हैं या मुझे नींद आने लगती है। दोनों ही मामलों में एक ही उपाय है। वो है आग के पास सो जाना। अंगारे मुझे गर्म रखते हैं, जबकि सुबह की ठंड और ओस असहनीय हो सकती है। वे मुझे हाथियों और साँपों से भी बचाते हैं, जो कि ऐसे जीव हैं जिनसे डरने की ज़रूरत होती है, जब आसपास कोई आदमखोर जानवर न हों। सुबह होते ही मैं वापस कार में जाता हूँ और घर लौट आता हूँ और सोचता हूँ कि मैंने ऐसा मूर्खतापूर्ण और अजीब काम क्यों किया और इससे मुझे क्या मिला।

लेकिन मैंने यह किया है, और मैं इसे बार-बार करता रहूंगा।

इस पागलपन के अन्य रूप हैं चांदनी रातों में, और अंधेरी रातों में भी, जंगल में जाना, किसी पेड़ के पीछे, या किसी चट्टान पर, या किसी पानी के गड्ढे के किनारे बैठना, और बस देखना और सुनना।

जिन लोगों को कभी भी खुले आसमान के नीचे, अलाव के पास बैठने का सौभाग्य मिला हो, भले ही वहां घात लगाए बैठे जानवरों या जहरीले सांपों का कोई

खतरा न हो, वे इस शौक के प्रति मेरे लगाव को समझ सकते हैं। ऐसे क्षणों में जो आनंद मिलता है, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। यह हमारे भीतर छिपे किसी तार को छू लेता है और आत्मा को प्रज्वलित कर देता है!

शायद ऐसे ही अवसरों पर, और ऐसे ही एकांत में, मनुष्य का अंतर्मन अनंत के सबसे निकट पहुँचता है। तब मैं ईश्वर के बहुत निकट महसूस करता हूँ, किसी भी चर्च की तुलना में कहीं अधिक निकट, जहाँ पादरी, चाहे मासिक वेतन के आधार पर हो या अन्य पारिश्रमिक के माध्यम से, मेरे भटकते और पापी मन के उत्थान के लिए स्वतः ही उपदेश दोहराता रहता है।

खैर, मैं अपने बारे में बात नहीं करना चाहता। शायद आप मेरे साथ जंगल में इन रात्रिकालीन सैरों में से किसी एक पर चलना चाहेंगे—आप इन्हें 'कैंप फायर ट्रिप' भी कह सकते हैं।

स्टुडेबेकर में छह गैलन पेट्रोल भरा हुआ है। इसमें छह सिलेंडर का इंजन है और इसकी हॉर्सपावर रेटिंग अच्छी है, हालांकि इतने कठिन वर्षों के बाद उनमें से कितने घोड़े जीवित बचे हैं, यह मैं नहीं जानता, और न ही अनुमान लगाने की कोशिश करता हूँ। बस कुछ सैंडविच, पानी की बोतल और अगर मिल सके तो गर्म चाय का थर्मस ले आइए। मुझे आप और भी अच्छे लगेंगे। ठंड लगने पर पहनने के लिए एक ओवरकोट और टोपी भी ले आइए, और अगर आप धूम्रपान करते हैं तो एक पाइप, तंबाकू और माचिस भी ले आइए। बस इतना ही आवश्यक है। दोपहर के 3 बज रहे हैं, लेकिन हमें केवल लगभग पचास मील की दूरी तय करनी है।

मैं आपको कुंदुकोट्टई नामक स्थान पर ले जा रहा हूँ, जहाँ एक सुंदर जंगल है। वहाँ पहाड़ियों की दो श्रृंखलाएँ मिलती हैं; और अलग-अलग दिशाओं से आने वाली दो धाराएँ मिलकर एक बड़ी नदी बनाती हैं। स्थानीय भाषा में इस बड़ी नदी को डोड्डाहल्ला (बड़ी खोखली घाटी) कहते हैं, लेकिन मैंने इसे गुप्त नदी नाम दिया है। इस क्षेत्र के आसपास के जंगल में बाइसन को छोड़कर लगभग हर प्रजाति के कुछ जानवर पाए जाते हैं। मुझे बताया गया है कि बाइसन भी कभी यहाँ हुआ करते थे, लेकिन बहुत पहले उनका शिकार कर लिया गया था, हालाँकि वन क्षेत्र अधिकारी का कहना है कि वे जंगल में चरने वाले गाँव के मवेशियों से फैले फुट-एंड-माउथ रोग से खत्म हो गए। आखिर बेचारा सच कैसे मान सकता है? आखिर वह वन क्षेत्र अधिकारी है।

हम निकल पड़े हैं, और अपने रास्ते के पहले पच्चीस मील तक हम पक्की सड़क

पर चलते हैं। बैंगलोर से उन्नीसवें मील पर यह सड़क मैसूर राज्य को पीछे छोड़कर मद्रास राज्य में प्रवेश करती है। ठीक पच्चीसवें मील पर हम होसुर नामक छोटे कस्बे में पहुँचते हैं, जो उस क्षेत्र का तालुक मुख्यालय भी है। होसुर से हम मुख्य सड़क से अलग होकर अगले सोलह मील तक एक ऐसी सड़क पर चलते हैं जिसे भारत में कच्ची सड़क कहा जाता है—यानी रेत और पत्थरों से बनी सड़क, जहाँ किसी न किसी कारण से ये दोनों घटक कभी भी उचित अनुपात में नहीं होते जिससे यह एक अच्छी सड़क बन सके। बारी-बारी से कोई एक हावी हो जाता है। पत्थर गाड़ी के टायरों को काटते हैं, जबकि रेतीले हिस्से गाड़ी को मुश्किल बना देते हैं। बरसात के मौसम में ये रेतीले हिस्से उन ड्राइवरों के लिए बहुत मनोरंजक हो जाते हैं जिनमें हास्यबोध होता है, अगर ऐसा कोई व्यक्ति हो, क्योंकि तब वे इधर-उधर फिसलते रहते हैं, या अगर वे सावधान नहीं रहे तो शायद पहिए तक रेत में धंस जाते हैं। लेकिन यह बारिश का मौसम नहीं है और हम उन सोलह मील की दूरी को उचित समय में तय कर लेते हैं, और डेनकनिकोटा नामक छोटे शहर में पहुँच जाते हैं, जो जंगल के विभिन्न ब्लॉकों को नियंत्रित करने वाले दो वन रेंज अधिकारियों का मुख्यालय है।

अब हम पत्थर और रेत की पक्की सड़क को छोड़कर एक ऐसी सड़क पर चलते हैं जो सड़क जैसी बिल्कुल नहीं है, क्योंकि यह तो बस बैलगाड़ी के लिए बनी एक साधारण सी पगडंडी है। डेनकनिकोटा से लगभग साढ़े तीन मील दूर यह पगडंडी उन दो धाराओं में से एक के ऊपरी हिस्से को पार करती है जिनका मैंने पहले ज़िक्र किया है। यहाँ कोई जटिल और महँगे पुल नहीं हैं; पगडंडी सीधे धारा को चीरते हुए आगे बढ़ती है। यह तब तक ठीक है जब तक भारी बारिश न हुई हो। भारी बारिश होने पर धारा उफान पर आ जाती है और पानी दस फीट तक गहरा हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको बस डेनकनिकोटा वापस लौटना होगा और दो दिन बाद फिर से कोशिश करनी होगी, जब पानी का स्तर कम हो चुका होगा। ज़रा सोचिए कि आप कितने भाग्यशाली थे कि आप डेनकनिकोटा की तरफ थे। मान लीजिए कि आप दूसरे किनारे पर होते; तो आपको बाढ़ उतरने तक वहीं रहना पड़ता।

हम दो बार और उस धारा को पार करते हैं जो पगडंडी के किनारे-किनारे टेढ़ी-मेढ़ी बहती है। आठवें पड़ाव पर हम कुंदुकोट्टई गाँव से गुज़रते हैं, जो एक चट्टानी पहाड़ी की छाया में बसा है, जो दो चीज़ों के लिए प्रसिद्ध है—तेंदुए और बड़ी चट्टानी मधुमक्खी। और याद रखें कि इन दोनों में से मधुमक्खियाँ उत्तेजित होने पर कहीं अधिक

खतरनाक होती हैं।

अब रास्ता चट्टानी पहाड़ी की ढलानों के चारों ओर घूमते हुए एक घाटी में तेज़ी से नीचे उतरता है। लेकिन हमें अब केवल एक मील और चलना है, और वहाँ, नौवें मील के पत्थर के पास, हमें स्टुडेबेकर को पहले पीछे करके और वापसी यात्रा के लिए घुमाकर छोड़ना होगा - यह एक बड़ा मुश्किल काम है क्योंकि रास्ता कार की लंबाई से मुश्किल से ही चौड़ा है, और एक तरफ़ गहरी ढलान है।

आखिरकार काम हो गया। हमने गाड़ी को गियर में ही छोड़ दिया है, और चारों पहियों के पीछे चार पत्थर रख दिए हैं, ताकि कोई लापरवाह राहगीर नियंत्रणों से छेड़छाड़ न कर दे। साथ ही, हमें बैटरी का एक तार भी अलग करना होगा, क्योंकि राहगीर आपके लिए बत्ती जला सकता है और उसे जलने दे सकता है। अपने साथ लाए थोड़े से सामान को लेकर, हमें डोड्डाहल्ला धारा की ओर तेज़ी से ढलान पर उतरना होगा, जिसके दो हिस्से एक मील से भी कम दूरी पर ऊपर जाकर मिल जाते हैं और एक जलधारा बनाते हैं, जिसे मैंने गुप्त नदी नाम दिया है।

वास्तव में, इसके आगे के मार्ग में भूवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहस्य छिपे हैं। लेकिन आप मुझे उन्हें प्रकट करने के लिए प्रेरित नहीं करेंगे, क्योंकि यदि मैंने ऐसा किया, तो जंगल और नदी के इस सुंदर क्षेत्र पर अतिक्रमण हो जाएगा और इसका व्यवसायीकरण करके इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा।

अंततः हम छोटी नदी के तल तक पहुँचते हैं और उसे किसी परीलोक जैसा पाते हैं। इस मौसम में इसमें ज़्यादा पानी नहीं है; बस एक पतली सी धारा बहती है जो कभी रेतीले तल के बीचोंबीच बहती है, तो कभी किनारों से किनारों तक मुड़ती हुई आगे बढ़ती है। दोनों किनारे ऊँचे-ऊँचे, टेढ़े-मेढ़े पेड़ों से घने हैं—ज़्यादातर इमली, जुमलम और मुट्ठी के पेड़ हैं, और कहीं-कहीं वन-वन, फिकस, बरगद, नीम और महोवा के पेड़ भी हैं। पेड़ों के बीच बाँस के लंबे, पंख जैसे तने रेतीले किनारों पर खूबसूरती से झुके हुए हैं। ठंडी हवा के अचानक झोंके घाटी से नीचे आते हैं और नदी के तल पर बहने लगते हैं। जब ऐसा होता है, तो पेड़ों की शाखाएँ और बाँस के ऊँचे गुच्छे एक साथ झूलते और हिलते हैं, जिससे दूर से आती झरनों की सरसराहट जैसी आवाज़ आती है, या किसी अशांत सागर में दूर की चट्टानों पर लहरों की गड़गड़ाहट जैसी।

अभी शाम के सिर्फ 5 बजे हैं, लेकिन अंधेरा होने से पहले हमें बहुत काम करना है। सबसे पहले हम एक शिविर स्थल चुनते हैं: रेतीले किनारे पर थोड़ी ऊंचाई पर एक

जगह। और अब बारी आती है हमारी आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करने की। ध्यान रहे कि हम जितनी ज़्यादा लकड़ियाँ इकट्ठा करेंगे, आग उतनी ही देर तक जलती रहेगी, और उतनी ही तेज़ और चमकदार होगी। लकड़ियाँ इकट्ठा करने में कोई कठिनाई नहीं है, क्योंकि वे हर जगह प्रचुर मात्रा में पड़ी हैं, दोनों किनारों पर और यहाँ तक कि नदी के चौड़े तल पर भी, पत्थरों और पेड़ों के तनों के बीच फंसी हुई हैं, जिन्होंने बारिश के बाद नदी में आए उफान के दौरान रास्ता रोक दिया था और अपने साथ सब कुछ बहा ले गई थी—पेड़ों के तने, लट्ठे, शाखाएँ, जड़ें—सब कुछ।

शाम के 6:15 बज रहे हैं और हम तैयार हैं। अंधेरा भी हो रहा है। लेकिन अभी आग न जलाएं, क्योंकि इससे पक्षी घबरा जाएंगे। इसके बजाय, आइए कुछ देर उनकी आवाज़ सुनें: भूरे जंगली मुर्गों की चुनौती भरी पुकार, स्पूरफाउल की घुड़दौड़, मोर की कर्कश, दर्द भरी म्याऊं, हमेशा चौकस रहने वाले प्लोवर की बेचैन चीखें या 'क्या तुमने किया?' की आवाज़, और दूर से आती हुई 'दिमागी बुखार' वाले पक्षी की उत्तेजित कर देने वाली तेज़ आवाज़।

अब लगभग अंधेरा हो चुका है और नाइटजार पक्षी इधर-उधर फुदक रहे हैं। एक पक्षी एक चट्टान पर बैठा है और पत्थर के साथ घुलमिल जाने वाले अपने बेजोड़ छलावरण में नज़रों से ओझल हो जाता है। लेकिन हम जानते हैं कि वह वहीं है क्योंकि हम उसकी आवाज़ सुनते हैं, 'चक! चक! चक! चक! चक-ऊऊऊ!'

अचानक दूर से आती हुई कई आवाज़ों का मिश्रण हमारे कानों में पड़ता है। बेसुरी नहीं, बल्कि अजीब तरह से रोमांचकारी; शायद डरावनी।

'ऊऊऊ-ऊऊ-ऊऊह! 'वूउ-वूउ-वूओह!'

'कहाँ? कहाँ? कहाँ? कहाँ? कहाँ?'

'यहाँ! यहाँ! यहाँ! प्रभु! प्रभु! प्रभु! प्रभु!'

'Hee-yah! Hee-yah! Heeee-yah!'

'हां! हाँ! हाँ-आह! हाँ-आह! हीईईईई याह! 'हीईई-याह!'

यह भोजन की तलाश में बेचैन सियार झुंड का सामूहिक गायन है। सरदार कर्कश स्वर में पुकारता है—'ऊ-कहाँ? ऊ-कहाँ? ऊ-कहाँ?'—और झुंड मानो जवाब देता है: 'यहाँ! यहाँ! यहाँ! ही-याह! याह! याह! याह!'

लंबी चीख फिर फूट पड़ती है और उसका जवाब कर्कश, कर्कश और शोरगुल भरी प्रतिध्वनि से मिलता है। क्रूर पुकार और दर्द भरी प्रतिक्रिया आसपास के जंगल के

भयानक अंधेरे में गूंजती रहती है, जंगल की गलियों में कभी तेज़ तो कभी धीमी होती जाती है। शोर का चीखता हुआ चरम उन्माद में बदल जाता है और एक लंबे, अवर्णनीय कोलाहल में तब्दील हो जाता है। यह चिपचिपे, घेरने वाले, ढँकने वाले कालेपन में समा जाता है। इसे कोई रोक नहीं सकता। वह बेतहाशा सुंदर और असीम रूप से क्रूर कोरस ठहरता है, मंद पड़ जाता है और फिर चरम पर चीखता है, सिसकता है, धीमा होता है और फिर बढ़ता है; बेकाबू आवाज़ों का एक अंतहीन मिश्रण।

रात हो चुकी है। आग जलाने का समय आ गया है, सियार के डर से नहीं, क्योंकि उनकी डरावनी आवाज़ों के बावजूद वे हानिरहित हैं; न ही किसी भटकते हुए बाघ या तेंदुआ के डर से, क्योंकि इस क्षेत्र में फिलहाल कोई आदमखोर जानवर नहीं है और न ही वे आपको नुकसान पहुँचाएँगे। आग जलाने का कारण दो अलग-अलग प्रकार के जीव हैं, जिनमें से एक बहुत बड़ा और दूसरा काफी छोटा है, जो अगर गलती से भी आपके बहुत करीब आ गए तो आपको निश्चित रूप से नुकसान पहुँचाएँगे: एक अकेला भटकता हुआ हाथी और एक रेंगता हुआ ज़हरीला साँप। हम कोई हथियार नहीं लाए हैं, और अँधेरे में यह एक सुखद अनुभव नहीं होगा अगर कोई हाथी हम पर हमला कर दे या कोई ज़हरीला साँप हमें अपने रास्ते में रुकावट के रूप में पा ले।

आग जल्द ही चटकने लगती है। कुछ चिंगारियाँ आसमान की ओर उड़ती हैं और उसकी चमक हमारे चारों ओर के पेड़ों के तनों को धीरे-धीरे रोशन करती है, मानो वे चौकस जंगल के मूक प्रहरी हों। सियार उस चमक को देखते हैं, या शायद धुएँ की गंध महसूस करते हैं। उनकी चीख-पुकार अचानक बंद हो जाती है। आग ने सब कुछ शांत कर दिया है, सिवाय जंगली झींगुरों के जो गिरे हुए पत्तों के बीच अपने आश्रयों से लगातार चहचहा रहे हैं।

बड़े जानवर कम से कम आठ बजे के बाद ही हिलना-डुलना शुरू करेंगे, इसलिए हमारे पास बातचीत के लिए लगभग एक घंटा है। दोस्ताना बातचीत के लिए अलाव से बेहतर कोई जगह नहीं है। लाल अंगारे, लपटों की चटक, आग में लकड़ी का नया टुकड़ा डालने पर छिटपुट चिंगारियों की बौछार, ऊपर आकाश की ओर सर्पिलाकार रूप में उठते धुएं की तीखी गंध—ये सब मिलकर मन को स्वयं से, प्रकृति से और ईश्वर से जुड़ाव का अहसास कराते हैं।

शायद आप चाहेंगे कि मैं आपको इन जंगलों में रहने वाले कुछ जीवों के अधिक अंतरंग और व्यक्तिगत स्वभाव के बारे में बताऊं। अब तक मैंने आपको उनके शिकार

और गोलीबारी की कहानियां सुनाई हैं जिनसे यह धारणा बनती है कि ये जानवर निःसंदेह क्रूर, निर्दयी और तर्कहीन हैं, जो केवल मारने और नष्ट करने की लालसा में डूबे रहते हैं। मैं भी अपने बचपन में ऐसा ही सोचता था। लेकिन उस पुराने समय से मैंने इनमें से अधिकांश जीवों को पालतू जानवर के रूप में रखा है, हालांकि बचपन से ही, लेकिन काफी उम्र तक विभिन्न तरीकों और क्षमताओं में; उनमें से हर एक ने उल्लेखनीय समझदारी और स्नेह के गुण दिखाए हैं, बशर्ते मालिक उनकी छोटी-छोटी विशेषताओं और कमियों को समझ सके।

चलिए, मैं आपको इनमें से कुछ के बारे में बताकर अपनी बात को स्पष्ट करने की कोशिश करता हूँ।

मैं ब्रूनो से शुरुआत करूंगा, जो मेरी पत्नी का पालतू स्लॉथ बियर है। मैंने उसे गलती से उसके लिए ले लिया था।

मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ जंगली सूअर का शिकार करने गया था। मैसूर शहर से लगभग तीस मील दूर एक जगह है जहाँ गन्ने के खेतों में जंगली सूअर भरे पड़े हैं, जिनसे फसलों को बहुत नुकसान होता है। सूअर दिन में गन्ने के खेतों में आराम करते हैं और हमने उन्हें 'बीटर्स' (जो खेतों के मालिक और उनके किराए के लोग होते हैं) की मदद से भगाया। हम उन्हें तब गोली मार देते थे जब वे आस-पास के खेतों के बीच से निकलते या आसपास के झाड़ियों वाले जंगल में भागने की कोशिश करते थे। समझौते के अनुसार, आधा मांस बीटर्स को मिलता है और बाकी हम ले लेते हैं।

लगभग दो साल पहले, ऐसे ही एक गश्ती क्षेत्र में, सूअरों का एक झुंड अचानक बाहर निकला और उनमें से कुछ को गोली मार दी गई, जबकि बाकी भाग गए। सबको लगा कि मज़ा खत्म हो गया है, तभी अचानक एक ज़ोरदार 'भौंक! भौंक!' की आवाज़ आई और एक अकेला सुस्त भालू पीछे-पीछे आया, जो दोपहर की तेज़ धूप में बिल्कुल काला और बेहद गर्म दिख रहा था।

मैं तो बिना सोचे-समझे किसी सुस्त भालू को गोली नहीं मारूंगा, लेकिन दुर्भाग्य से उस बेचारे जानवर के लिए, मेरे एक साथी की ऐसी राय नहीं थी, और उसने तुरंत मौके पर ही भालू को गोली मार दी।

जब हम गिरे हुए जानवर को देख रहे थे, तो हमें आश्चर्य हुआ कि उसकी पीठ पर मौजूद काले बाल हिले और उसके गिरे हुए शरीर से अलग हो गए। फिर हमने देखा कि वह एक छोटा भालू था जो अपनी माँ की पीठ पर सवार था जब अचानक चली

गोली ने उसकी माँ को मार डाला। वह नन्हा जीव अपनी गिरी हुई माँ के चारों ओर दौड़ता हुआ दयनीय आवाजें निकाल रहा था।

मैंने उसे पकड़ने की कोशिश में दौड़ लगाई। वह गन्ने के खेत में भाग गया। मैंने उसे डंडों से पीटते हुए उसका पीछा किया और आखिरकार उसकी गर्दन पकड़ ली, जबकि वह मुझ पर झपटने लगा और अपने लंबे, नुकीले पंजों से मुझे खरोंचने की कोशिश करने लगा।

हमने उसे मांस के लिए लाए गए बोरे में से एक में रख दिया, और जब मैं बैंगलोर वापस आया तो मैंने उसे अपनी पत्नी को भेंट कर दिया। वह बहुत खुश हुई! उसने तुरंत उसके गले में रंगीन रिबन बांध दिया, और जब उसे पता चला कि शावक नर है, तो उसने उसका नाम ब्रूनो रख दिया।

ब्रूनो ने जल्द ही बोतल से दूध पीना शुरू कर दिया। यह उसके लिए एक कदम आगे बढ़ने जैसा था और कुछ ही दिनों में उसने सब कुछ खाना-पीना शुरू कर दिया। और 'सब कुछ' कहना बिल्कुल सही होगा, क्योंकि वह किसी भी सामग्री से बना दलिया, सब्जियां, फल, मेवे, मांस (विशेषकर सूअर का मांस), करी और चावल, चाहे उसमें मसाले हों या मिर्च, रोटी, अंडे, चॉकलेट, मिठाई, हलवा, आइसक्रीम आदि सब कुछ खाता था। पेय पदार्थों की बात करें तो: दूध, चाय, कॉफी, नींबू का रस, कार्बोनेटेड पानी, छाछ, बीयर, मादक पेय और वास्तव में, हर तरल पदार्थ। वह सब कुछ बड़े चाव से पीता था।

भालू हमारे दो अल्सेशियन कुत्तों और हमारे बंगले में रहने वाले किरायेदारों के सभी बच्चों से बहुत लगाव रखता था। अपने बचपन में उसे पूरी आज़ादी मिली हुई थी और वह अपना समय खेलने, रसोई में दौड़ने और हमारे बिस्तरों में सोने में बिताता था।

एक दिन उसके साथ एक हादसा हो गया। मैंने अपनी लाइब्रेरी में घुस आए चूहों और गिलहरियों को मारने के लिए ज़हर (बेरियम कार्बोनेट) डाला था। ब्रूनो ने भी ऐसा ही किया; और उसने थोड़ा ज़हर खा लिया। उसे इतना लकवा हो गया कि वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पा रहा था। लेकिन वह अपने ठूंठों के बल घिसटता हुआ मेरी पत्नी के पास पहुँचा, जिसने मुझे बुलाया। मैं समझ गया कि क्या हुआ है। मैं तुरंत कार से पशु चिकित्सक के पास भागा। ज़हर का मामला! पालतू भालू—बेरियम कार्बोनेट—अब क्या करें?

उन्होंने अपनी चिकित्सा पुस्तकें निकालीं और इंडेक्स को तेज़ी से देखना शुरू किया: 'आपने किस ज़हर की बात की, महोदय?' 'बेरियम कार्बोनेट'। 'अरे हाँ-बेरियम-बेरियम लवण-अरे! बेरियम कार्बोनेट! लक्षण-लकवा-उपचार-इंजेक्शन...एक मिनट रुकिए, महोदय। मैं अपनी सिरिंज और दवा लाता हूँ।'

गाड़ी में वापस भागने का प्रयास। ब्रूनो अभी भी अपने ठूंठों पर लड़खड़ा रहा था, लेकिन स्पष्ट रूप से तेजी से कमजोर हो रहा था; उसे उल्टी हो रही थी, सांस लेने में तकलीफ हो रही थी, उसके पेट के किनारे फूल रहे थे और मुंह खुला हुआ था।

सब लोग उसे पकड़ो! इंजेक्शन लगाया गया—ब्रूनो चीख उठा—10 सीसी एंटीडोट उसके शरीर में बिना एक बूंद भी बर्बाद किए चला गया। दस मिनट बाद: हालत में कोई बदलाव नहीं! 10 सीसी और इंजेक्शन लगाया गया! दस मिनट बाद: सांस लेने में घरघराहट कम हुई—ब्रूनो अपने हाथ-पैर थोड़ा हिला सकता है, हालांकि वह अभी खड़ा नहीं हो सकता। तीस मिनट बाद: ब्रूनो उठा और खूब खाया! वह हमें तिरस्कार भरी नजरों से देखता है, मानो कह रहा हो, 'मेरे जैसे बड़े काले भालू के लिए बेरियम कार्बोनेट क्या है?' ब्रूनो अभी भी खा रहा है।

एक बार उसे लगभग एक गैलन पुराना इंजन ऑयल मिला, जिसे मैंने स्टुडेबेकर के इंजन के निचले हिस्से से निकाला था और दीमकों से बचाव के लिए रखा था। उसने तुरंत सारा तेल पी लिया। लेकिन इसका उस पर कोई बुरा असर नहीं हुआ।

महीने बीतते गए और ब्रूनो अपने आने के समय से कई गुना बड़ा हो गया था। वह अल्सेशियन कुत्तों के बराबर लंबा हो गया था और उनसे भी लंबा हो गया था। लेकिन उतना ही प्यारा, उतना ही शरारती और उतना ही चंचल था। और वह हम सभी को बहुत प्यार करता था। सबसे बढ़कर, वह मेरी पत्नी से बहुत प्यार करता था, और मेरी पत्नी भी उससे बहुत प्यार करती थी! उसने उसका नाम ब्रूनो से बदलकर बाबा रख दिया था, जो एक हिंदुस्तानी शब्द है जिसका अर्थ है 'छोटा लड़का'। और वह कुछ करतब भी जानता था। 'बाबा, कुश्ती करो' या 'बाबा, मुक्केबाजी करो' कहने पर, वह किसी भी ऐसे व्यक्ति को जोश से पकड़ लेता जो उससे लड़ने के लिए आगे आता। उसे एक छड़ी दो और कहो 'बाबा, बंदूक पकड़ो', और वह छड़ी तुम्हारी ओर कर देता। उससे पूछो, 'बाबा, बच्चा कहाँ है?' और वह तुरंत लकड़ी का एक टुकड़ा निकालता और प्यार से उसे सहलाता, जिसे उसने अपने पुआल के बिस्तर में छिपा रखा था। लेकिन किराएदार के बच्चों के कारण, बेचारे ब्रूनो, या बाबा को ज्यादातर समय जंजीर

से बांधकर रखना पड़ता था।

तब मैंने और मेरे बेटे ने मेरी पत्नी को सलाह दी, और दोस्तों ने भी उसे यही सलाह दी, कि बाबा को मैसूर के चिड़ियाघर में दे दिया जाए। वह घर में रखने के लिए बहुत बड़ा हो गया था। कुछ हफ्तों की सलाह के बाद आखिरकार वह मान गई। जल्दी से, और इससे पहले कि वह अपना मन बदल पाती, चिड़ियाघर के क्यूरेटर को एक पत्र लिखा गया। क्या उन्हें अपने संग्रह के लिए एक पालतू भालू चाहिए? उन्होंने जवाब दिया, 'हाँ।' चिड़ियाघर ने मैसूर से अस्सी-सात मील की दूरी तय करके एक लॉरी में पिंजरा भेजा, और बाबा को भेज दिया गया।

हम सभी को उनकी बहुत याद आ रही थी; लेकिन एक तरह से हमें राहत भी मिली। मेरी पत्नी का दिल टूट गया था। वह रोती और परेशान होती रही। पहले कुछ दिनों तक उसने कुछ नहीं खाया। फिर उसने क्यूरेटर को कई पत्र लिखे। बाबा कैसे हैं? जवाब आया: 'ठीक हैं, लेकिन परेशान हैं; उन्होंने खाना भी छोड़ दिया है।'

उसके बाद, मैसूर घूमने आए दोस्तों से मैंने गुज़ारिश की कि वे चिड़ियाघर ज़रूर जाएँ और बाबा का हालचाल देखें। उन्होंने बताया कि बाबा ठीक तो हैं, लेकिन बहुत दुबले-पतले और उदास दिख रहे हैं। चिड़ियाघर के सभी कर्मचारियों ने कहा कि वे परेशान हैं। तीन महीने तक मैं अपनी पत्नी को मैसूर जाने से रोकता रहा। फिर एक दिन उसने कहा: 'मुझे बाबा को देखना ही है। या तो आप मुझे गाड़ी से ले जाइए; या मैं खुद बस या ट्रेन से चली जाऊँगी।' तो मैं उसे गाड़ी से ले गया।

दोस्तों ने अंदाज़ा लगाया था कि भालू उसे पहचान नहीं पाएगा। मैंने भी यही सोचा था। लेकिन जब वह उसके पिंजरे से कुछ ही गज दूर थी, बाबा ने उसे देख लिया और पहचान लिया। वह खुशी से चिल्ला उठा। वह दौड़कर उसके पास गई, पिंजरे की सलाखों के बीच से उसे सहलाया, और वह खुशी से सिर के बल खड़ा हो गया।

अगले तीन घंटों तक वह उस पिंजरे से बाहर नहीं निकली। उसने उसे चाय, नींबू पानी, केक, आइसक्रीम और न जाने क्या-क्या दिया। फिर 'बंद होने का समय' आ गया और हमें जाना पड़ा। मेरी पत्नी फूट-फूटकर रोई; बाबा फूट-फूटकर रोए; यहाँ तक कि सख्त मिजाज क्यूरेटर और रखवाले भी उदास हो गए। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने आगे जो होने वाला था, उसे स्वीकार कर लिया था।

'ओह, महोदय,' उसने क्यूरेटर से पूछा, 'क्या मुझे मेरे बाबा वापस मिल सकते हैं?'

हिचकिचाते हुए उसने जवाब दिया: 'महोदया, यह चिड़ियाघर का जानवर है और

अब सरकारी संपत्ति है। मैं सरकारी संपत्ति किसी को नहीं दे सकता। लेकिन अगर मेरे बॉस, बैंगलोर के अधीक्षक, सहमत हों, तो निश्चित रूप से आप इसे वापस ले सकती हैं।'

इसके बाद बैंगलोर की वापसी यात्रा हुई और अधीक्षक के बंगले पर मुलाकात हुई। वहां उन्होंने रोते हुए विनती की: 'बाबा और मैं दोनों एक-दूसरे के लिए बहुत चिंतित हैं। क्या आप कृपया इसे मुझे वापस दे देंगे?' वह दयालु व्यक्ति थे और मान गए। इतना ही नहीं, उन्होंने क्यूरेटर को पत्र लिखकर भालू को बैंगलोर ले जाने के लिए हमें एक पिंजरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया।

हम अधीक्षक के पत्र के साथ फिर से मैसूर लौट आए। बाबा को एक छोटे से पिंजरे में बिठाकर गाड़ी के ऊपर चढ़ाया गया; पिंजरे को मजबूती से बांध दिया गया, और धीरे-धीरे सावधानीपूर्वक बैंगलोर की वापसी यात्रा पूरी की गई।

घर लौटने पर, हमारे परिसर में विशेष काम के लिए मजदूरों की एक टुकड़ी को लगाया गया। बाबा के लिए एक द्वीप बनाया गया। यह बीस फीट लंबा और पंद्रह फीट चौड़ा था, और इसके चारों ओर छह फीट चौड़ा और सात फीट गहरा एक सूखा गड्ढा या खाई थी। मुर्गियों के रहने वाला एक लकड़ी का बक्सा लाया गया और बाबा के रात में सोने के लिए द्वीप पर रख दिया गया। उन्हें गर्म रखने के लिए अंदर पुआल बिछाया गया, और उनका 'बच्चा', टेढ़ा-मेढ़ा पेड़ का ठूंठ, और उनकी 'बंदूक', बांस का टुकड़ा, जिन्हें चिड़ियाघर भेजे जाने के बाद से भावनात्मक रूप से सहेज कर रखा गया था, उनके खेलने के लिए वापस रख दिए गए।

कुछ दिनों में कुलियों ने पिंजरा उठाकर द्वीप पर रख दिया और बाबा को छोड़ दिया गया। वह बहुत खुश हुआ; अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर उसने अपनी 'बंदूक' तान दी और अपने 'बच्चे' को गोद में उठा लिया। मेरी पत्नी घंटों वहाँ कुर्सी पर बैठी रहती थी और वह उसकी गोद में बैठा रहता था। वह पंद्रह महीने का था और काफी भारी भी था!

मेरी पत्नी जिस तरह से द्वीप पर पहुँचती है और वापस आती है, वह बहुत दिलचस्प है। मैंने एक आम के पेड़ की लटकती हुई शाखा से एक रस्सी बाँधी है, जिसके एक सिरे पर एक फंदा है। वह एक पैर फंदे में डालकर दूसरे पैर से धक्का देती है, जिससे वह आसपास के गड्ढे की छह फुट चौड़ी खाई को पार कर लेती है। वापसी की यात्रा भी इसी तरह होती है।

लेकिन अब कौन कह सकता है कि सुस्त भालू में स्नेह की भावना नहीं होती, उसकी याददाश्त नहीं होती और उसमें कोई व्यक्तिगत विशेषता नहीं होती?

अब मैं आपको एक बिल्कुल अलग तरह के जानवर के बारे में बताऊँगी—एक लकड़बग्घे के बारे में—जो अभी हमारे साथ है और मेरा पालतू जानवर है। उसका नाम जैकी है, और वह मुझे कुछ बेहद दुखद परिस्थितियों में मिला था।

लगभग चौदह महीने पहले मैं जंगल में एक रात बिता रहा था। लेकिन जगह और हालात अलग थे। यह सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे स्थित सोपथी नामक एक पथरीली जगह थी, और रात चांदनी से जगमगा रही थी। मैंने अलाव नहीं जलाया था, बल्कि नदी के रेतीले किनारे पर लटके एक बड़े पत्थर पर बैठा था। मैं अकेला था और अपने साथ कोई हथियार नहीं लाया था।

लगभग दस बजे मैंने देखा कि कोई अनजानी सी चीज़ रेत पर मेरी तरफ़ सरक रही है। जैसे-जैसे वह नज़दीक आती गई, उसकी अजीब सी लचकदार चाल, झुके हुए शरीर और धूसर रंग के शरीर से, जिस पर चाँदनी में काली धारियाँ मुश्किल से दिखाई दे रही थीं, मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह एक लकड़बग्घा है। जब वह लगभग मेरे सामने आ गई, तो वह अचानक रुक गई और मुँह फेरकर जंगल में किसी चीज़ को टकटकी लगाकर देखने लगी। मैं उसके बड़े, सीधे खड़े, चमगादड़ जैसे कानों को साफ़ देख सकता था, जो हल्की सी भी आवाज़ सुनने के लिए तत्पर थे।

जल्द ही उसके इस व्यवहार का कारण स्पष्ट हो गया। चांदनी रात में लकड़बग्घे की तरह दिखने वाला एक जंगली कुत्ता, हालांकि वास्तव में वह लाल-भूरे रंग का जानवर था जिसकी पूंछ लगभग काली और घनी थी, नदी के घने किनारे से निकलकर रेतीले तल की ओर बढ़ा। देखते ही देखते उसके साथ पांच और कुत्ते आ गए। लकड़बग्घा मुड़ा और उस चट्टान के पास उग रहे पेड़ों की ओट में छिपने की कोशिश करने लगा जिस पर मैं बैठा था। लेकिन जंगली कुत्तों ने उसकी हरकत भांप ली और तुरंत उस पर हमला कर दिया।

मैंने पहले भी कहा है कि जंगली कुत्ते खूंखार और निर्दयी शिकारी होते हैं। मनुष्य, हाथी और बाइसन को छोड़कर, वे बाघों और तेंदुओं समेत किसी भी हिलती-डुलती चीज़ पर हमला कर देते हैं, और उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं होती कि लड़ाई में उन्हें कितना नुकसान उठाना पड़ेगा, जब तक कि वे अंततः अपने शिकार को पकड़कर, उसके टुकड़े-टुकड़े करके, उसे लगभग ज़िंदा ही खा न लें। उस समय तक

मेरा अपना अनुभव यह था कि जंगली कुत्ते लकड़बग्घों को या तो रिश्तेदार समझते थे या उन्हें तुच्छ समझते थे और उन्हें अकेला छोड़ देते थे। लेकिन वह रात एक अपवाद थी, क्योंकि छह कुत्तों ने लकड़बग्घे पर तुरंत हमला कर दिया।

लकड़बग्घे ने भागने की कोशिश की, लेकिन उसके लड़खड़ाते पैर बहुत धीमे थे और पलक झपकते ही कुत्ते उस पर टूट पड़े। पहला हमलावर बहुत करीब आ गया था। बिजली की तरह, लकड़बग्घे ने पलटी मारी, अपना सिर एक कोण पर झुकाया और अपने मजबूत जबड़े कुत्ते की गर्दन पर गड़ा दिए। जब शक्तिशाली दांत उसके गले में धंसे तो मैंने उस घायल जानवर की मरणासन्न चीख सुनी। हड्डियों के टूटने की तेज़ आवाज़ आई और गर्दन सूखी टहनी की तरह टूट गई। लेकिन बाकी पांच कुत्ते भी उस बेचारे लकड़बग्घे पर टूट पड़े।

हाइना स्ट्रिएटा, जिसका पूरा लैटिन नाम यही है, लड़ाकू नहीं है। बल्कि, यह स्वभाव से डरपोक, छिपकर चलने वाला और दुबका रहने वाला प्राणी है, जो जंगल में रेंगता हुआ, मृत जानवरों की तलाश में लंबी दूरी तय करता है—चाहे उनकी मृत्यु किसी भी कारण से हुई हो या वे किसी भी अवस्था में सड़ रहे हों। हाइना एक मृतभक्षी है। कभी-कभार ही वह किसी भटकती हुई बकरी, भेड़ या गांव के कुत्ते पर हमला करके उसे मार डालता है और खा जाता है, लेकिन ऐसा वह केवल अत्यधिक भूख लगने पर ही करता है। वह किसी भी कीमत पर लड़ाई से बचने की कोशिश करता है।

यह बेचारा लकड़बग्घा, जिसकी दुर्दशा मैं देख रहा था, चुपके से भागने की कोशिश कर रहा था, लेकिन कुत्ते बहुत फुर्तीले थे। अब जब उसे समझ आ गया कि वह बच नहीं सकता, तो उसने अपनी जान की बाजी लगा दी। कुत्ते अपनी अजीबोगरीब अदाओं से चीख-पुकार मचाकर अपने साथियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे, वहीं लकड़बग्घा अपने गले से गुर्राते हुए दाएं-बाएं झपट रहा था और अपने हमलावरों को बुरी तरह काट रहा था, जिससे वे दर्द से चीख रहे थे। लेकिन वे पांच कुत्ते बहुत ज़्यादा थे। उन्होंने लकड़बग्घे के शरीर को घेर लिया, गुर्राते हुए, काटते हुए और मांस को हड्डियों से नोचते हुए। मुझे पता था कि एक मिनट में ही वह जानवर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

मैं मदद करना चाहता था, लेकिन मेरे पास कोई हथियार नहीं था—एक लाठी या पत्थर भी नहीं। एक पल के लिए मैंने सोचा कि जिस चट्टान पर मैं बैठा था, वहाँ से

नीचे उतरकर हमलावरों को चिल्लाकर भगाते हुए उनकी मदद के लिए दौड़ पड़ूँ। लेकिन यह संभव था कि गुस्से में आकर वे मेरी दखलअंदाजी से नाराज़ हो जाएँ और मुझ पर हमला कर दें। इसलिए मैं अपने छिपने की जगह से उठा, खुद को सबके सामने लाया और सीटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।

लड़ाई में लगे कुत्ते एक-दूसरे को नोंच-नोंच करने में इतने मशगूल थे कि उन्हें मेरी आवाज़ सुनने में काफ़ी देर लग गई। फिर, एक-एक करके, कुत्तों ने लकड़बग्घे पर हमला करना बंद कर दिया और मुड़कर उस चट्टान की ओर देखने लगे जिस पर मैं खड़ा था। चाँदनी में मैं देख सकता था कि लकड़बग्घे की हालत बहुत खराब थी: अब वह धूसर नहीं था, बल्कि उस पर बड़े-बड़े काले धब्बे थे जो इतनी दूरी से भी चमक रहे थे। मैं जानता था कि ये धब्बे कई घावों से बहते खून के कारण थे। पाँचों कुत्ते भी घायल थे। उनमें से कुछ मुझे और फिर अपने शिकार को देखते हुए खुद को या एक-दूसरे को चाट रहे थे।

लकड़बग्घे ने मौके का फायदा उठाया, सूखे नदी के किनारे लड़खड़ाते हुए पार किया और दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया। कुछ मिनट बाद पांचों कुत्ते भी उसके पीछे-पीछे चले गए, निस्संदेह अपना काम पूरा करने के इरादे से। लेकिन मुझे आगे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी, और लड़ाई के शोर और मेरे द्वारा मचाए गए शोर के बाद, पूरी रात कोई और जानवर दिखाई नहीं दिया।

भोर होते ही मेरे मन में यह विचार आया कि मैं लकड़बग्घे के पदचिह्नों का पीछा करके देखूँ कि क्या हुआ था। यह अपेक्षाकृत आसान था, क्योंकि यद्यपि दूसरी ओर की ज़मीन इतनी कठोर थी कि पैरों के निशान दिखाई नहीं दे रहे थे, फिर भी घास पर खून की एक स्पष्ट लकीर थी और झाड़ियों के पत्तों पर खून के धब्बे लगे हुए थे। यह लकीर एक छोटी पहाड़ी की ओर जाती थी जो शायद आधा मील दूर थी। इस पहाड़ी की चोटी के पास कुछ बड़े-बड़े पत्थर एक दूसरे के ऊपर ढेर थे, जिनके चारों ओर भालाकार घास उग रही थी। यहीं पर लकड़बग्घे ने आखिरी बार बहादुरी से मुकाबला किया और निर्दयी पीछा करने वालों के फिर से करीब आने पर उसकी मृत्यु हो गई।

लाल रंग के कुत्तों में से एक मरा पड़ा था, लंबी भाले जैसी घास में अकड़ा हुआ, जो तनों के सिरों से टपकती ओस की बूंदों के भार से झुकी हुई थी। केवल कुछ हड्डियाँ और लकड़बग्घे की खोपड़ी ही बची थी। भूरे और काले रंग की धारियों वाले उसके शरीर के टुकड़े मेरे चारों ओर बिखरे पड़े थे, जिनमें से अधिकतर खून से गहरे

जंग लगे लाल रंग के हो गए थे। लेकिन न तो शव दिखाई दे रहा था और न ही मांस। कुत्ते सब कुछ खा गए थे।

लगभग दस गज की दूरी पर बिखरे पत्थरों के बीच एक खुला रास्ता था। निस्संदेह, यह वही मांद थी जिसमें लकड़बग्घे हमलावरों के आने से पहले जा रहे थे। जब मैं उस भयावह दृश्य को देख रहा था, तभी मेरी नज़र मांद के प्रवेश द्वार पर हुई एक हल्की हलचल पर पड़ी। मैंने ऊपर देखा तो दो नन्हे लकड़बग्घों के डरे हुए, उदास चेहरे दिखाई दिए।

तो पिछली रात इतनी मुश्किलों का सामना करने वाला बहादुर जानवर एक मादा लकड़बग्घा था, न कि नर, जैसा कि मैंने सोचा था। इसके अलावा, वह एक माँ थी और अपने पीछे दो अनाथ बच्चे छोड़ गई थी। उनके आकार से मैं समझ गया था कि वे खुद की देखभाल करने के लिए बहुत छोटे थे और तीन-चार दिनों में भूख से मर जाएँगे। मैंने उन्हें पकड़ने का निश्चय किया। मैं लकड़बग्घे के बच्चों की नज़रों के सामने, जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से नीचे की ओर लौट गया। फिर मैंने रास्ता बदला और दूसरी तरफ से पहाड़ी की ओर बढ़ा। आखिरकार मैं पत्थरों के ढेर के पीछे छिप गया और बच्चों के बाहर आने का इंतज़ार करने लगा। मुझे पता था कि ऐसा बहुत जल्द होगा, जैसे ही उन्हें भूख लगेगी।

आखिरकार मेरा मौका आ ही गया। वे अपने मांद से साथ-साथ बाहर आए और कुछ कदम आगे बढ़कर अपनी माँ के अवशेषों को उदास और आश्चर्य भरी निगाहों से देखने लगे। तभी मैंने उन पर झपट्टा मारा। सौभाग्य से मैंने एक पिल्ले को उसकी गर्दन से पकड़ लिया। लेकिन बदकिस्मती से दूसरे ने मेरी आहट सुन ली या महसूस कर ली और वापस गुफा में भाग गया।

अपने छटपटाते हुए पिल्ले को पकड़े हुए, मैं पत्थरों के ढेर के पीछे वापस चला गया और दूसरे पिल्ले के फिर से बाहर आने का इंतजार करने लगा। लेकिन लगभग एक घंटे तक वहीं रहने के बावजूद, वह नहीं निकला।

इस बीच, लगातार छटपटाते रहने के कारण, मेरे हाथों में पकड़े हुए पिल्ले को संभालना मुश्किल हो गया। वह लगातार काटता, खरोंचता और छटपटाता रहा। एक-दो बार तो वह लगभग मेरी पकड़ से फिसल ही गया था, और मुझे पता था कि अगर ऐसा हुआ तो मैं उसे दोबारा कभी नहीं पकड़ पाऊँगा। इसलिए, पंद्रह मिनट बाद मैंने अनिच्छा से दूसरे पिल्ले को उसके हाल पर छोड़ने का फैसला किया और लगभग पाँच

मील पैदल चलकर पेन्नाग्राम गाँव वापस चला गया, जहाँ मैंने अपनी कार खड़ी की थी।

इस तरह मुझे जैकी मिला, जैसा कि मैंने उसका नाम रखा था, क्योंकि वह नर निकला, और मैं उसे बैंगलोर ले आया। कुछ दिनों तक मैंने उसे बोतल से बकरी का दूध पिलाया, क्योंकि मैंने पाया है कि गाय का दूध अधिकांश मांसाहारी जंगली जानवरों को रास नहीं आता, क्योंकि उसमें प्रोटीन की कमी होती है। मैंने बकरी के दूध के साथ कुछ आने कच्चा, कीमा बनाया हुआ मटन भी दिया, जो आसानी से पच जाता था और साथ ही आवश्यक प्रोटीन भी प्रदान करता था।

जैकी की ताकत और आकार दोनों में तेजी से वृद्धि हुई, और जल्द ही उसे बकरी के दूध और कीमा बनाया हुआ भेड़ का मांस खाने की आवश्यकता नहीं रही। अब से उसका आहार कच्चे गोमांस और हड्डियों से बना था, और इससे उसे जरा भी फर्क नहीं पड़ता था कि यह ताजा था या सड़ चुका था, कीड़ों से भरा हुआ और मक्खियों से घिरा हुआ था।

फिर जैकी के साथ पहली दुर्घटना घटी जिसमें उसकी जान बाल-बाल बची। बैंगलोर से लगभग तेरह मील पूर्व में व्हाइटफील्ड नाम की एक छोटी सी बस्ती है, जिसमें लगभग सभी एंग्लो-इंडियन परिवार रहते हैं। इस जगह पर एक छोटा सा पांच कमरों वाला कॉटेज, जिसमें बरामदा और रसोईघर था और आधे एकड़ से अधिक जमीन थी, 5,000 रुपये में बिक रहा था, जो अंग्रेजी मुद्रा में लगभग 375 पाउंड के बराबर है। मेरी पत्नी को यह जगह बहुत पसंद आई, उसने इसे 'छोटा सा' कॉटेज कहा और चाहती थी कि मैं इसे खरीद लूँ। मैंने इसे खरीद लिया, साथ ही एक गाँव की कुतिया को भी, जिसे उसके पिछले मालिक ने छोड़ दिया था लेकिन वह वहीं रह गई थी। यह कुतिया मुझसे तुरंत घुलमिल गई। मैंने उसका नाम जिप्सी रखा, जो उसके पूर्वज के लिए उपयुक्त था।

मैं हर हफ्ते कुछ दिनों के लिए इस कॉटेज में रहने आता था और बाकी दिनों के लिए बैंगलोर स्थित अपने घर लौट जाता था, और इन यात्राओं के दौरान मैं जैकी को अपने साथ कार से ले जाता था।

यह झोपड़ी कुछ समय से खाली पड़ी थी, और इसी वजह से आसपास के ग्रामीणों ने इसे लगभग अपनी संपत्ति मान लिया था। वे न केवल परिसर में मवेशी और बकरियां चराते थे, जिससे बगीचा नष्ट हो रहा था, बल्कि वे जलाऊ लकड़ी के

लिए पेड़ काटते थे और अपने मवेशियों के लिए घास काटते थे, साथ ही दिन के समय चरवाहों के मिलने का अड्डा भी बन गए थे। मैंने यह सब रोकने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। फर्क सिर्फ इतना था कि ग्रामीण दिन के उजाले में लकड़ी चुराने के बजाय चांदनी रातों में ऐसा करने आते थे, जबकि उनकी महिलाएं सुबह होते ही घास काटने आती थीं, ठीक वैसे ही जैसे सुबह जल्दी उठने वाला पक्षी कीड़ा पकड़ लेता है। इससे पुलिस में शिकायतें हुईं और एक-दो बार आमना-सामना भी हुआ। इसलिए ग्रामीणों ने मुझे सबक सिखाने का फैसला किया।

अब मुझमें कई बुरी आदतें पड़ गई हैं, और उनमें से एक यह है कि मैं अपने कुत्ते को रात में घर के अंदर ही रखता हूँ, उसे आँगन में खुला नहीं छोड़ता। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि पहले भी मेरे कुत्ते साँप के काटने से या जंगली इलाकों में तेंदुओं द्वारा उठा ले जाने से मर चुके हैं। इसलिए जिप्सी मेरे पलंग के नीचे चटाई पर सोती है।

एक सुबह तड़के, मैं बाथरूम के दरवाजे पर उसके धीरे-धीरे गुर्राने की आवाज़ से जाग गया। बाहर तेज़ चाँदनी थी और सुबह के 3:10 बज रहे थे। भला कोई कुत्ता बिना वजह इस तरह गुर्राता नहीं है। इसलिए, मैंने टॉर्च लेकर धीरे से दरवाजा खोला और बाथरूम में चला गया। जिप्सी मेरे पास से गुज़री, बाथरूम के बाहरी दरवाजे पर रुक गई, जो कि बंद था, और अब भी खतरनाक तरीके से गुर्रा रही थी।

मुझे यकीन था कि कहीं न कहीं कोई सांप जरूर होगा। तभी मुझे याद आया कि दरवाजे का एक तख्ता, जो लगभग दो इंच चौड़ा और जमीन से लगभग तीन फीट ऊपर था, गायब था। मैं झुककर उस दरार से अंदर झाँका। जो मैंने देखा, उससे मेरे मन में मिली-जुली भावनाएँ उमड़ आईं। तेज चाँदनी में ग्यारह आदमी खड़े थे—मैंने उन्हें आसानी से गिन लिया—लाठों और बाँसों से लैस। जाहिर है, ये नाराज़ ग्रामीणों का एक समूह था, जो मेरे अडिग रवैये के कारण मुझे पीटने आए थे।

मेरी आँखों के सामने ही, एक आदमी दूसरे के कंधों पर चढ़ गया और वहाँ से टाइलों वाली छत पर पहुँच गया, जो उस जगह से ज़मीन से लगभग नौ फीट ऊपर थी। मैंने अंदाज़ा लगा लिया कि वह क्या करने वाला है: एक-दो टाइलें हटाकर उस दरार से घर में घुस जाएगा और फिर अपने साथियों को अंदर आने देने के लिए बाहरी दरवाजे की कुंडी खोल देगा। मुझे बहुत गुस्सा आया।

दबे पांव वापस अपने बेडरूम के कोने में रखी .12 बोर की शॉटगन के पास

जाकर, मैंने दो-तीन नंबर 8 गेज के कारतूस अपने नाइटकोट की जेबों में डाले और बाथरूम में लौट आया। मैं सोच रहा था कि नंबर 8 की गोली से भीड़ के पैरों में एक के बाद एक वार कर दूं। लेकिन, ठीक समय पर, मुझे समझ आ गया कि इसका क्या नतीजा होगा; बेशक, कई लोगों के पैर छर्रों से दुखेंगे, और शायद एक-दो को अस्पताल जाना पड़ेगा, लेकिन इससे पुलिस का मामला बिगड़ जाएगा और तरह-तरह के कानूनी झंझट शुरू हो जाएंगे। मैंने गोली क्यों चलाई? मैंने इतने लोगों को क्यों घायल किया? क्या यह सचमुच आत्मरक्षा थी? मुझे यह साबित करना होगा। वे लोग कसम खा सकते हैं कि उनका कोई बुरा इरादा नहीं था। लेकिन उन्हें यह समझाना होगा कि वे रात के उस समय कैसे और क्यों आए थे। कुल मिलाकर यह एक पेचीदा मामला होगा, जिसके लिए मुझे पुलिस स्टेशन और अदालत में पेश होना पड़ेगा। इसलिए मैंने उनके पैरों पर गोलियां चलाने के प्रबल प्रलोभन पर काबू पाया और उनके सिर के ऊपर गोली चलाने का फैसला किया।

उस सन्नाटे में बंदूक की आवाज और चमक सुनकर, जो नौ लोग अभी भी एक साथ खड़े थे, वे पूरी रफ्तार से भागने लगे। जिस आदमी ने अपने साथी को छत पर चढ़ाया था, वह पूरी तरह से घबरा गया और चिल्लाया कि उसे गोली लग गई है और वह मर गया है, फिर उसने जल्दी से अपना बयान बदलकर कहा कि वह मर रहा है। वह इतना डरा हुआ था कि उसकी चलने-फिरने की शक्ति जवाब दे गई और वह वहीं जड़वत खड़ा रहा, जोर-जोर से चिल्लाता रहा। ग्यारहवां साहसी, जो मेरी छत पर चढ़ गया था, नीचे उतरने में जरा भी देर नहीं की। वह कूदा, धड़ाम से जमीन पर गिरा और खुद को संभालते हुए बिजली की तरह भाग निकला। इससे सन्नाटा टूटा और उसका साथी आखिरकार होश में आया और तेजी से उसके पीछे भागा। यह सब कुछ ही सेकंड में हुआ और फिर जिप्सी और मैं अकेले रह गए।

मैंने बाथरूम का दरवाजा खोला और बाहर जाकर देखा कि कहीं कोई और बदमाश तो आसपास नहीं छिपा है। उनका कोई निशान नहीं था। लेकिन युद्ध के मैदान में कुछ 'स्मृति चिन्ह' बचे थे—या शायद मैं उन्हें 'लूट का माल' कहना ज़्यादा सही समझूँ। तीन बाँस के डंडे, एक ठोस लकड़ी का डंडा जो अगर मेरे मोटे सिर पर पड़ता तो ज़रूर फूट जाता, और सबसे अजीब बात, चप्पलों के दो जोड़े, या खुरदुरे चमड़े के सैंडल, जैसे दक्षिण भारत के देहाती लोग आमतौर पर पहनते हैं।

अगली सुबह मैंने घर-घर जाकर फल, सब्ज़ियाँ और अंडे बेचने वाले विक्रेताओं से

कहा कि ठीक तीन दिन बाद, मैं पहले आने वाले व्यक्ति को दो जोड़ी अच्छी चप्पलें बहुत सस्ते दामों पर बेचूँगा। बिक्री के लिए तय सुबह दो 'खरीदार' आए और चप्पलों की दो जोड़ियाँ खरीदने की पेशकश की। मैंने घोषणा की कि मैं उन्हें बहुत कम दामों पर बेच रहा हूँ—केवल एक रुपया और आठ आना प्रति जोड़ी—लगभग दो शिलिंग! कीमत स्वीकार कर ली गई और प्रत्येक व्यक्ति ने अपने पैसे दिए, अपनी चप्पलें लीं, उन्हें पहना और संतुष्ट होकर चले गए। मुझे पूरा यकीन था कि वे उन चप्पलों के असली मालिक थे जिन्हें उन्होंने उस यादगार रात को फेंक दिया था। उसके बाद मेरी छोटी सी झोपड़ी में सेंध लगाने की कोई कोशिश नहीं हुई और हर तरह के घुसपैठिए गायब हो गए।

यह सब बताने का मेरा मकसद यह है कि मुझे जिप्सी से काफी लगाव हो गया। यह सब जैकी को पाने से कुछ समय पहले हुआ था, इसलिए जब मैंने उसे बैंगलोर से व्हाइटफील्ड लाना-ले जाना शुरू किया, तब वह काफी छोटा था, जबकि जिप्सी एक पूरी तरह से बिगड़ी हुई लड़की थी, जो बिगड़ने की कगार पर थी।

जैकी पर पहली विपत्ति तब आई जब उसने जिप्सी की खाई हुई हड्डी चुराने की कोशिश की। जिप्सी ने उसे काट लिया और उसका एक दांत उसकी बाईं आंख के पास से गुजरा, जिससे आंख के ठीक नीचे एक गहरा घाव हो गया। एक फोड़ा बन गया और मुझे लगा कि मैं जैकी को खो दूंगी, या कम से कम उसकी आंख तो चली ही जाएगी, क्योंकि उसे तेज बुखार हो गया था। पशु चिकित्सक ने उसे पेनिसिलिन के इंजेक्शन दिए, एक बार में चार लाख यूनिट, जब तक कि उसे पांच इंजेक्शन नहीं लग गए। फिर फोड़ा फूट गया - सौभाग्य से बाहर की ओर - और उसकी आंख के साथ-साथ उसकी जान भी बच गई।

उसके बाद वह तेजी से बढ़ने लगा और जल्द ही जिप्सी से भी लंबा हो गया। लेकिन उसने कभी भी, चाहे खेल में हो या गुस्से में, उसे काटने की कोशिश नहीं की। वह उसके साथ उतनी ही कोमलता से पेश आता है जितना एक महिला के साथ पेश आना चाहिए, और उसके साथ खेलना-कूदना उसे बहुत पसंद है।

जैकी को खाना खिलाना अब एक समस्या बन गया था, क्योंकि उस समय वह प्रतिदिन आठ से दस पाउंड कच्चा गोमांस खा रहा था, और बैंगलोर में गोमांस की कीमत आठ आना प्रति पाउंड थी, यानी लगभग आठ पेंस! मुझे उसके लिए कच्चा गोमांस खरीदने पर प्रतिदिन लगभग सात शिलिंग खर्च करना उचित नहीं लग रहा था।

इसलिए मैंने उसे व्हाइटफील्ड स्थित अपनी कुटिया में स्थायी रूप से रख लिया, जहाँ मैंने बड़ी चतुराई से दो स्थानीय कसाइयों से दोस्ती कर ली थी। उन्होंने मुझे प्रतिदिन दस पाउंड वजन का गोमांस, जिसमें फेफड़े, आंतें, त्रिकास्थि, जिगर आदि शामिल थे, छह आना में देने का जिम्मा लिया। यानी, दस पाउंड गोमांस के लिए लगभग छह पेंस प्रतिदिन!

यह व्यवस्था काफी समय तक ठीक-ठाक चलती रही, लेकिन एक दिन मुझ पर और जैकी पर गंभीर मुसीबत आ पड़ी।

मैं आपको बता दूं कि भारत के कुछ हिस्सों में, जिनमें मैसूर राज्य भी शामिल है, जिसे 'गाय-वध' कहा जाता है, वह निषिद्ध है। इन स्थानों पर मवेशियों का वध करना प्रतिबंधित है, हालांकि कानून गोमांस खाने पर रोक नहीं लगाता, बशर्ते वह इसे ऐसे स्थान से प्राप्त कर सके जहां यह प्रतिबंध लागू नहीं है। जिस प्रकार शराब पर प्रतिबंध भारत के कुछ राज्यों और हिस्सों में लागू है और अन्य में नहीं, उसी प्रकार एक स्थान पर 'गाय-वध' पर प्रतिबंध पड़ोसी राज्य या ऐसे हिस्से से मांस की आपूर्ति के फलते-फूलते व्यापार का खुला निमंत्रण है जहां यह कानून लागू नहीं है। इस प्रकार, मद्रास राज्य को कानून द्वारा सीमा पार मैसूर राज्य और बैंगलोर में गोमांस की आपूर्ति करने की अनुमति है, जहां गाय-वध निषिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि मैसूर राज्य के कुछ हिस्सों, जैसे बैंगलोर जिले में, जहां शराब पर प्रतिबंध लागू नहीं है, कुछ व्यक्ति (हालांकि इस बार कानूनी रूप से नहीं) निषिद्ध वस्तु को सीमा पार मद्रास राज्य में आपूर्ति करके इसका प्रतिफल देते हैं, जो पूरी तरह से 'शराब-मुक्त' क्षेत्र है।

बैंगलोर को अब इसी तरह से गोमांस मिलता है! लेकिन व्हाइटफील्ड का क्या? वहां के कसाई दावा करते हैं कि उन्हें गोमांस की आपूर्ति मद्रास सीमा के उस पार से भी मिलती है, जो लगभग बीस मील दूर है। लेकिन एक दिन व्हाइटफील्ड की पुलिस को शक हुआ और उन्होंने उस कसाईखाने पर छापा मारा जहां मांस रखा जाता था और दरवाजे सील कर दिए। उन्होंने बताया कि वहां मवेशियों को काटा जा रहा था। तो जैकी के लिए मांस नहीं बचा था और वह बुरी तरह भूखा था। मैं क्या करता?

उस रात मैंने एक बोरी ली और कसाइयों के घरों की ओर चल पड़ा। पुलिस ने सामने के दरवाज़े सील कर रखे थे। लेकिन क्या पीछे के दरवाज़े, खिड़कियाँ और रोशनदान जैसी कोई चीज़ नहीं होती? और क्या छत से किसी इंसान के आने-जाने के लिए टाइलें नहीं हटाई जा सकतीं? उस सुबह मुझसे मिलने आए सज्जनों ने ही मुझे

यह विचार दिया था।

संक्षेप में, मैं अपने कंधों पर गोमांस से भरा एक बोरा लादकर, जिसके लिए मुझे भारी कीमत चुकानी पड़ी थी, खेतों के पार, व्हाइटफील्ड कब्रिस्तान के बाहरी इलाके से होते हुए और फिर एक पहाड़ी को पार करके अपनी छोटी सी कुटिया की ओर चल पड़ा। आखिरकार मैं खून से लथपथ घर पहुँचा, क्योंकि बोरा खून से भीग चुका था। रात के उस समय, अगर मैं पकड़ा जाता, तो निस्संदेह मुझ पर हत्या का संदेह होता। लेकिन मैंने जैकी को पूरे एक हफ्ते तक खिलाने के लिए पर्याप्त मांस जुटा लिया था, हालाँकि चौथे दिन के बाद मेरी छोटी सी कुटिया से सड़े हुए मांस की भयानक बदबू आने लगी थी। लेकिन तब तक पुलिस को पता चल चुका था कि गोमांस मद्रास से आया था, न कि व्हाइटफील्ड के अवांछित मवेशियों से।

जैकी अब मेरे साथ है और काफी बड़ा हो गया है, और देखने में थोड़ा अजीब लगता है। लेकिन वह बिल्कुल भी हिंसक नहीं है। इसके विपरीत, उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य उछल-कूद और खेलना है। मैं उसे कभी-कभी खुला छोड़ देता हूँ और वह मेरे पीछे-पीछे घूमता है, शाम को लंबी सैर पर निकलता है और बच्चों, भेड़ों, बकरियों या अन्य कुत्तों को नुकसान नहीं पहुँचाता। उसे पिल्लों, बिल्ली के बच्चों, मुर्गियों और ऐसे ही छोटे जीवों से बहुत लगाव है।

कभी-कभी उसके खेलने-कूदने के तरीके हद से ज़्यादा शोर-शराबे वाले होते हैं। हालाँकि जिप्सी अब उससे बहुत दोस्ताना व्यवहार करती है, फिर भी उसे उसका उबड़-खाबड़ खेल बिल्कुल पसंद नहीं आता और वह उस पर गुर्राती है, भले ही वह उससे कद में लंबा हो।

इसलिए उसके लिए एक साथी के रूप में, मैं एक कसाईखाने से एक मादा पिल्ला घर ले आया, जो भारत में 'आवारा कुतिया' के नाम से जानी जाती है। वह लगभग चार महीने की है, जबकि जैकी अब एक साल से अधिक का है, और उसका आकार लगभग जैकी के आकार का पांचवां हिस्सा है। मैंने उसका नाम जिल रखा है। लेकिन वह जैकी को खूब कसरत करवाती है, कभी उसका पीछा करके तो कभी खुद उसका पीछा करवाकर; उछल-कूद करके, खेलकर और यहाँ तक कि जब जैकी थोड़ा ज्यादा शरारती हो जाता है तो उसे काट भी लेती है। जैकी यह सब चुपचाप सह लेता है। वह छोटी जिल से बहुत प्यार करता है, जो उसके मुँह से कच्चा मांस भी छीन लेती है। उसने उसे कभी नहीं काटा; कभी उस पर गुर्राया भी नहीं।

और उसने मेरे साथ इनमें से कोई भी काम नहीं किया है। वह थोड़ा मूर्ख है, औसत कुत्ते की तुलना में उसकी बुद्धि बहुत कम है। लेकिन वह प्यारा और नेक स्वभाव का है, अपने भूरे रंग के शरीर, काली धारियों, नुकीले कानों वाले बड़े सिर, गर्दन और पीठ पर फैली लंबी लटों, छोटे पिछले पैरों और लड़खड़ाती चाल के साथ कुत्तों में एक मसखरे जैसा दिखता है। तो आप देख सकते हैं, लकड़बग्घा उतना भयानक, क्रूर और घृणित प्राणी नहीं है जितना लोग सोचते हैं।

हमारे पास कुल मिलाकर लगभग आठ पैंथर के शावक थे, जिनमें से अधिकांश को उनकी मांओं के मारे जाने के बाद उनकी मांद से बचाया गया था। मुझे याद है कि हमने पहले दो शावकों को प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद पेट की सूजन (गैस्ट्राइटिस) से खो दिया था! वे पेट दर्द के भी बहुत आसानी से शिकार हो जाते हैं। उम्मीदों के विपरीत, पैंथर का शावक अत्यंत नाजुक होता है और आसानी से मर जाता है, क्योंकि वह भालू या लकड़बग्घे जितना मजबूत नहीं होता। गाय का दूध उन्हें बिल्कुल भी रास नहीं आता और कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो जाती है। बकरी का दूध उन्हें कुछ हद तक रास आता है, लेकिन जब वे बहुत छोटे होते हैं तब भी उन्हें एक चम्मच कीमा बनाया हुआ भेड़ का मांस और भेड़ का खून देना पड़ता है - गोमांस नहीं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, भेड़ के मांस की जगह गोमांस दिया जा सकता है, लेकिन एक बार में दी जाने वाली मात्रा को नियंत्रित करना आवश्यक है। शुरुआती चरणों में भेड़ के मांस की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि, जैसा कि मैंने अपनी पिछली पुस्तक में उल्लेख किया है, जंगली परिस्थितियों में माँ अपने शिकार का मांस पहले खुद खाकर और फिर उसे उल्टी करके शावकों के लिए बाहर निकाल देती है, जिससे शावकों की पाचन क्रिया में सहायता होती है। शावक बहुत अधिक खाने वाले होते हैं और तब तक खाते रहते हैं जब तक कि वे मुश्किल से हिल-डुल पाते हैं। इसी समय उन्हें कभी-कभी पेट दर्द हो जाता है, और जैसा कि मैंने कहा है, पेट दर्द या आंत्रशोथ होने पर यह घातक हो सकता है।

पैंथर के बच्चे बेहद चंचल और शरारती होते हैं। वे अपने मालिक को दूसरों के बीच से पहचान लेते हैं। हालांकि, बड़े होने पर उनका खेल बेहद उग्र हो जाता है, लेकिन मेरे पास जितने भी पैंथर के बच्चे रहे हैं, उनमें से कोई भी जरा भी हिंसक नहीं था।

मुझे उनमें से एक याद है, एक मादा जिसे हमने स्पॉटी नाम दिया था और लगभग

नौ महीने तक अपने पास रखा था। वह बहुत प्यारी और समझदार थी। जब हम पढ़ रहे होते थे या किसी और काम में व्यस्त होते थे, तो वह हमारा पीछा करती थी, जब उसे लगता था कि हम उसकी मौजूदगी से अनजान हैं। वह दरवाजे के पीछे छिप जाती थी, या कुर्सी या मेज के पीछे से रेंगकर हमारे करीब आ जाती थी। फिर वह बनावटी सख्ती से हम पर हमला करती या झपट पड़ती थी। ऐसे मौकों पर उसने हमें कभी नहीं काटा, बल्कि कोमल रहने की पूरी कोशिश की। फिर भी उसके पंजे उसकी सोच से कहीं ज्यादा तेज थे और अक्सर हम पर कुछ खरोंचें आ ही जाती थीं।

कुछ लोगों का मानना है कि अगर पैंथर के बच्चे को उबला हुआ मांस और नरम भोजन खिलाया जाए तो वह हिंसक नहीं बनेगा। लेकिन, यह धारणा पूरी तरह गलत है, क्योंकि बच्चा शायद मर ही जाएगा! पैंथर को प्रोटीन की आवश्यकता होती है, और हमने जितने भी बच्चे पाले हैं, उन सभी को कच्चा मांस खिलाया गया है और बड़े होने पर उन्हें खून पीने को दिया गया है। फिर भी, इस आहार के बावजूद उनमें से कोई भी हिंसक नहीं हुआ।

जिस मादा हिरण के बारे में मैं आपको बता रहा था, स्पॉटी, उसकी एक दिन दुखद मौत हो गई, और यह इस तरह हुआ। मेरे बेटे डोनाल्ड ने एक विशाल सांभर हिरण का शिकार किया, और किसी कारणवश हम देखना चाहते थे कि स्पॉटी उसके शव को कितना खा सकती है। इसलिए हमने उसे जी भर के खाने दिया। उसने इतना खाया कि वह मुश्किल से रेंग पा रही थी। उसी रात उसे उल्टी होने लगी और पेट खराब हो गया। कुछ घंटों में वह गुर्राने लगी और फिर दर्द से चीखने लगी और पेट दर्द के मारे बुरी तरह काटने लगी। सुबह तक उसकी मौत हो चुकी थी।

कुछ समय बाद हमें एक और शावक मिला, इस बार नर। हमने उसका नाम स्पॉट्टी II रखा। अपनी पिछली गलतियों से सबक लेते हुए, हमने उसके आहार को नियंत्रित किया और उसे दस महीने से अधिक समय तक बैंगलोर स्थित अपने घर में रखा। इस पूरे समय में उसने कभी किसी जीव को नुकसान नहीं पहुँचाया। लेकिन हमारी कुछ जिम्मेदारियाँ थीं। घर में किराएदार रहते थे और उनके बच्चे थे। बच्चे पैंथर के पास आने की जिद करते थे। स्पॉट्टी II उन्हें बहुत प्यार करता था और उनके साथ खेलता था। लेकिन हमें एहसास हुआ कि हम एक बड़ा जोखिम उठा रहे हैं। अंततः, बहुत दुख और अनिच्छा से, हमने उसे अपने एक मित्र, एक स्विस सज्जन को दे दिया, जिन्होंने बाद में उसे एक जर्मन पशु व्यापारी को बेच दिया। आखिरी खबर जो

हमें मिली वह यह थी कि स्पॉट्टी को यूरोप के किसी चिड़ियाघर में भेज दिया गया था।

हाल ही में डोनाल्ड एक और पैंथर का बच्चा घर लाया है। उसे हमारे पास आए लगभग एक महीना हो गया है और वह अभी तीन महीने का भी नहीं हुआ है। लेकिन हमने इसका नाम ग्रम्पी रखा है और वह अभी हमारे साथ है।

फिर आती है एला नाम की सियार। वह कुत्तों, बिल्लियों और बाकी सबके साथ खेलती है, लेकिन उसे अंधेरे कोनों में छिपना बहुत पसंद है, जैसे कि अलमारी के नीचे। एला कभी-कभी रात में अपनी 'सियार जैसी आवाज' निकालती है, लेकिन मादा होने के कारण वह नर सियार की पूरी और अनोखी आकर्षक आवाज के बजाय 'अधूरी आवाज' जैसी आवाज निकालती है।

एक दिन एक ग्रामीण पाँच सियार के पिल्ले बेचने के लिए लाया, जिनकी उम्र शायद चार से छह सप्ताह थी। मुझे लगा कि एला को अपने जैसे साथियों की कमी के कारण अकेलापन महसूस हो रहा होगा, इसलिए मैंने उन्हें एला के लिए खरीद लिया। उस दोपहर एला बहुत खुश हुई और बड़े प्यार से उनकी देखभाल करने लगी। लेकिन आधी रात के आसपास, मैंने पिल्लों के चीखने की आवाज़ सुनी और पाया कि एला ने एक पिल्ले को मार डाला था और उसे खा रही थी। मैंने बाकी चार को बचा लिया और अगले दिन, क्योंकि मेरे पास उन्हें रखने की जगह नहीं थी, मैंने उन्हें जैकी नाम के लकड़बग्घे के पास रख दिया। उन्होंने जैकी का दूध पीने की कोशिश की, जिससे बेचारा जैकी बुरी तरह घबरा गया। तब से वे काफी बड़े हो गए हैं, और जैकी भी। मैंने उन्हें काफी समय तक साथ रखा और यह देखना दिलचस्प था कि कैसे जैकी ने इन चार शरारती बच्चों की देखभाल का गंभीर दायित्व अपने कंधों पर ले लिया। खाना खिलाने के समय, जैकी मुश्किल से अपना खाना खत्म कर पाता था कि चारों सियार, जो अपना हिस्सा पहले ही निगल चुके होते थे, बचे हुए खाने को चुराने के लिए उसके चारों ओर जमा हो जाते थे। हमेशा की तरह, जब वह उनमें से एक को मज़ाक में भगाता था, तो बाकी तीन बचा हुआ सारा खाना चट कर जाते थे। जैकी की हालत इतनी खराब हो गई कि मुझे मजबूर होकर चारों सियार को वहां से हटाकर ब्रूनो नाम के सुस्त भालू के पास रखना पड़ा। ब्रूनो खाने के समय लकड़बग्घे जितना शांत स्वभाव का नहीं होता और अगर सियार उसके पंजे की पहुंच में आ जाएं तो उन पर झपट्टा मारता है, हालांकि दोपहर और रात में वे उसके लकड़ी के बक्से में उसके आसपास और कभी-कभी उसके ऊपर भी सो जाते हैं।

इसी बीच, वयस्क मादा सियार एला भी काफी चालाक हो गई है। वह खाने की मेज पर कूदती है, चायदानी से कवर हटाती है, फिर ढक्कन हटाकर सारी चाय पी जाती है।

हमने हिरण परिवार की सभी प्रजातियों को रखा है। वे प्यारे और शांत स्वभाव के होते हैं, लेकिन मांसाहारी हिरणों या भालू ब्रूनो जितने दिलचस्प या बुद्धिमान नहीं होते।

मेरे पिताजी के पास लगभग दस साल तक एक सांभर हिरणी थी। उन्होंने उसका नाम फ्लोरा रखा था। वह उनकी खास लाडली थी और उनसे बहुत प्यार करती थी। लेकिन जैसे-जैसे वह बूढ़ी होती गई, उसे अजनबियों पर हमला करने की बुरी आदत पड़ गई। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ी होकर अपने अगले खुरों से उनके सिर पर वार करती थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि हिरणी होने के कारण उसके सींग नहीं उगते थे। दरअसल, जब उसने इस तकनीक में महारत हासिल कर ली, तो वह अक्सर बाजार से लौट रही हमारी भारतीय रसोइया को रास्ते में रोक लेती थी। बेचारी औरत या तो फ्लोरा के हाथों गिर जाती या जान बचाकर भागती। दोनों ही मामलों में वह अपने साथ ले जा रही खाने-पीने की टोकरी गिरा देती और फ्लोरा मांस और लकड़ी को छोड़कर बाकी सब कुछ खा जाती।

मैं अपने एक और अजीब पालतू जानवर का ज़िक्र करना चाहूँगी—और वो अब भी मेरे साथ है। उसका नाम है जेमिमा, अजगर। भारत में हम उसे 'चट्टानी साँप' कहते हैं। मैंने उसे येम्मैदोड्डी के जंगल में पानी की नहर के पास पकड़ा था और सात साल से ज़्यादा समय से वो मेरे पास है। वो काफ़ी शांत और आसानी से पाली जा सकती है। डॉन उसके लिए महीने में एक बार खरगोश का शिकार करता है। मैं बाज़ार में एक आदमी से एक बैंडिकूट खरीदती हूँ—जो कि एक बड़ी किस्म का चूहा होता है, गिनी-पिग से भी बड़ा—चार आना प्रति बैंडिकूट के हिसाब से, हर पंद्रह दिन में एक बार। वो बस इतना ही खाती है। एक रात डॉन ने एक चूहे-हिरण का शिकार किया। उसने उसे पूरा निगल लिया और लगभग एक महीने तक कुछ नहीं खाया।

अब जबकि आपने मेरी पत्नी और मेरे द्वारा पाले गए कुछ विचित्र जानवरों और सरीसृपों के बारे में सुन लिया है, तो चलिए चाय की चुस्की लें और अपने सैंडविच का थोड़ा सा स्वाद लें; क्योंकि इसके बाद जंगल से मिलने वाली बातों को सुनने का गंभीर काम शुरू होगा।

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहता है, बीच-बीच में आग की चटकने की आवाज़

या तेज़ 'पुट-पुट' की आवाज़ आती है, जिसके बाद लकड़ी के हरे टुकड़ों या नमी से भरे टुकड़ों से भाप की हल्की फुफकार सुनाई देती है। फिर, पहाड़ी की चोटी पर, सड़क के ऊपर जहाँ हमने कार खड़ी की थी, कहीं से एक सींगदार उल्लू बार-बार बोलता है, एक गूंजती हुई, अजीब सी आवाज़ जो आमतौर पर किसी पक्षी से नहीं आती। 'हू-हू! हू-हू!' काफी देर तक फिर सन्नाटा छा जाता है, बीच-बीच में विशाल उल्लू की आवाज़ आती है, और कभी-कभी चहचहाते, फुदकते हुए नाइटजार पक्षियों की आवाज़ आती है, जिन्हें आग की रोशनी से कोई फर्क नहीं पड़ता।

हमारे कैंप फायर से थोड़ी दूर उगी झाड़ियों में और नदी के ऊपरी किनारे से हमें हल्की सरसराहट और खड़खड़ाहट सुनाई देती है। ये आवाजें रुक-रुक कर आती हैं। लेकिन ऐसा लगता है जैसे ये हमेशा मौजूद हैं, एक पल के लिए भी पूरी तरह बंद नहीं होतीं। चिंता की कोई बात नहीं है, क्योंकि ये आवाजें झाड़ी वाले चूहों और बांस के चूहों की हैं जो इन जंगलों में हजारों की संख्या में रहते हैं। ये छोटे जीव हानिरहित और जिज्ञासु होते हैं, लेकिन अगर हम आग न जलाते तो भोजन की तलाश में हमारे शरीर पर दौड़ पड़ते, अगर हम काफी देर तक स्थिर बैठे रहते और हिलते-डुलते नहीं। इनकी मौजूदगी ही एक कारण है कि यहाँ हर तरह के सांप, जहरीले और गैर-जहरीले, बहुतायत में पाए जाते हैं। चूहे और मेंढक भी इनके लिए भोजन का भरपूर स्रोत हैं।

अचानक, कहीं दूर से, हमें एक तेज़ आवाज़ सुनाई देती है: चटकने, टूटने और गिरने की आवाज़। हाथी! वे पेड़ों की पूरी शाखाओं को तोड़ रहे हैं, सिर्फ़ तनों के सिरों पर फूटने वाली कुछ रसीली नई कोंपलों को खाने के लिए।

'क्विंक! क्विंक! क्विंक!' एक हल्की, तीखी आवाज़ उसी दिशा से आती है जहाँ से हमने अभी शाखा टूटने की आवाज़ सुनी थी। इसका मतलब है हाथी के बच्चे; नन्हे हाथी!

लेकिन घबराने की कोई वजह नहीं है। अगर यहाँ बच्चे हैं, तो यह साफ़ संकेत है कि उनकी माँएँ आस-पास ही हैं। दरअसल, हाथियों का झुंड है; क्योंकि हाथी के बच्चे अकेले नर हाथी के साथ नहीं रहते। और हाथियों का झुंड बिल्कुल हानिरहित होता है, जब तक कि आप गलती से किसी माँ के पास न पहुँच जाएँ, जो अपने बच्चे की रक्षा में आप पर हमला कर सकती है। लेकिन यहाँ, आग के पास बैठे हुए, हम घर की तरह सुरक्षित हैं और हमें बिल्कुल भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अगर चरते हुए हाथी हमारी तरफ आ भी जाएँ, तो वे हमारी आग का धुआँ सूंघ लेंगे या लपटें देख लेंगे,

और बिना देर किए भाग जाएँगे।

अकेला घूमता हुआ नर हाथी ही खतरनाक होता है। आमतौर पर, अकेले रहने का कारण या तो 'मस्त' होता है, जो नर हाथियों में होने वाली एक आवधिक बीमारी है और लगभग तीन महीने तक रहती है, जब वे यौन रूप से उत्तेजित हो जाते हैं और अन्य नर हाथी उन्हें झुंड से बाहर निकाल देते हैं; या फिर वह एक पक्का 'विद्रोही' हाथी होता है जिसे अकेले रहना पसंद होता है। दोनों ही मामलों में सावधान! पूरे भारतीय जंगल में इससे ज्यादा क्रूर, इतना भयानक और इतना निर्दयी विनाशकारी हाथी कोई और नहीं है। लेकिन अगर कोई 'विद्रोही' हाथी होता तो मुझे पता चल जाता, क्योंकि वन विभाग प्रेस में नोटिस जारी करने के अलावा सभी शिकार लाइसेंस धारकों को ऐसे जानवरों की उपस्थिति की सूचना देता है। इसके अलावा, एक विद्रोही हाथी भी जलती हुई आग के पास जाने से हिचकिचाएगा।

हम हाथियों के चरने की आवाज़ें सुनते हैं। थोड़ी-थोड़ी देर में किसी बड़ी शाखा के टूटने या बांस के तने के चटकने की तेज़ आवाज़ आती है, जिसके बाद विशालकाय हाथियों द्वारा पत्तियों को नोचने और फाड़ने की आवाज़ सुनाई देती है। वे चुपचाप चरते हैं, जबकि दूर से आती गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ बताती है कि उनके विशाल पेट के अंदर पाचन क्रिया चल रही है। बछड़े बेचैनी से अपनी माताओं से लिपटते हुए दूध के लिए उन्हें परेशान करते हैं, जबकि लंबे अंतराल पर झुंड के सांडों में से कोई एक धीरे से दहाड़ता है, एक बैल की दहाड़ जैसी आवाज़, लेकिन कहीं अधिक तेज़ और गहरी। यह केवल संतुष्टि की पुकार है, यह बताने के लिए कि सब ठीक है; या शायद, छोटा बच्चा अपने पिता को परेशान करने में लगा है, जो दहाड़कर उसे धीरे से डांट रहे हैं।

क्रोधित हाथी, जो हमला करने ही वाला होता है, एक बिल्कुल अलग तरह की आवाज़ निकालता है। वह चीखता है, और उसकी वह तीखी 'तुरही' जैसी आवाज़ धरती को हिला देती है। यह मानो विनाश की पुकार है, और उस भयानक आवाज़ में समाए क्रोध, द्वेष और विनाश की भावनाओं को समझने में कोई संदेह नहीं है।

डरा हुआ हाथी भी चीखता और चिंघाड़ता है, लेकिन आवाज़ में बहुत अंतर होता है। यह तीखी और पतली होती है, और ऐसा लगता है जैसे हाथी के डर और घबराहट को व्यक्त कर रही हो। इसमें वह ज़ोरदार चीख नहीं होती जो किसी क्रोधित नर हाथी के हमले से पहले सुनाई देती है। थोड़ी देर बाद हमें एक धीमी, खोखली सी आवाज़ सुनाई देती है: हाथियों का झुंड नदी के तल तक पहुँच गया है, जो शायद हमसे आधा

मील नीचे है, और जो आवाज़ हमने अभी सुनी वह उनमें से किसी एक हाथी द्वारा वहाँ पड़े एक गिरे हुए पेड़ के तने को पलटने के कारण हुई थी।

हाथियों की आवाज़ को हम जिस तल्लीनता से सुन रहे थे, वह अचानक एक कर्कश, गहरी आवाज़ वाले हिरण की पुकार से भंग हो जाती है, जिसे मुंटजैक, काकर या जंगली भेड़ भी कहा जाता है। नदी के दूसरी ओर पहाड़ी की चोटी से कहीं से वह 'खर्र! खर्र!' की तेज़ आवाज़ में चेतावनी भरे स्वर में दोहराता है। घाटी में एक सांभर भी चौंककर 'व्ही-ओंक!' की आवाज़ निकालता है, और फिर रुक-रुक कर 'धंक! धंक!' की आवाज़ में आने वाले खतरे की सूचना फैलाता है।

उन आवाज़ों का मतलब तीन ही हो सकता है: या तो जंगल का बादशाह बाघ शिकार की तलाश में है—या उसका छोटा चचेरा भाई, एक तेंदुआ। ये आवाज़ें जंगली कुत्तों के झुंड की मौजूदगी का संकेत भी हो सकती हैं, जो जंगल के सबसे खूंखार शिकारी होते हैं, लेकिन रात चाँदनी नहीं है। जंगली कुत्ते दिन में या चाँदनी में शिकार करते हैं, अंधेरे में कभी नहीं। इसलिए इस मामले में वे खतरे की वजह नहीं हैं; या तो बाघ है या तेंदुआ।

घाटी में सांभर के पीछे-पीछे जाते हुए, शोरगुल मचाने वाले पैंथर की पहचान थोड़ी देर बाद एक कर्कश, आरी जैसी आवाज़ से उजागर हो जाती है। 'आह! हा!, आह! हा! आह!-हा!' दो चौकस हिरणों द्वारा अपनी उपस्थिति का पता चलने से निराश होकर, पैंथर आरी जैसी कर्कश, खुरदरी साँसों की एक श्रृंखला में अपना गुस्सा निकालता है।

कुछ देर के लिए फिर से सन्नाटा छा जाता है। हम हाथियों के झुंड के बारे में लगभग भूल ही गए थे कि तभी पेड़ की छाल के टूटने की आवाज़ ने हमें याद दिलाया कि वे अभी भी नदी के किनारे चर रहे हैं और हमारे शिविर की आग के करीब आ रहे हैं। लेकिन जैसा कि अनुमान था, उनमें से एक हाथी को या तो धुएं की गंध आती है या आग की चमक दिखाई देती है। हाथी अपनी सूंड को ज़मीन पर ज़ोर से मारता है और उसी से ज़ोर से हवा बाहर निकालता है। इससे एक अजीब सी धातु जैसी आवाज़ निकलती है, जैसे जस्ता या जस्ती लोहे की चादर अचानक दो टुकड़ों में मुड़ गई हो। यह हाथी का खतरे का प्रारंभिक संकेत देने का तरीका है।

दो बार फिर सूंड ज़मीन पर ज़ोर से टकराती है, और दो बार फिर धातु जैसी आवाज़ आती है। फिर हाथी एक बार चिंघाड़ता है—डर और खतरे की पतली, तीखी

आवाज़। बच्चे इसे समझ जाते हैं और चुप हो जाते हैं। बस एक हल्की, अस्पष्ट, सरसराहट और रगड़ने जैसी आवाज़ सुनाई देती है। यह आवाज़ उनके विशाल शरीरों से आती है जब वे नदी के किनारे झाड़ियों के बीच से चुपचाप निकलने की कोशिश करते हैं, माताएं अपने बड़े बच्चों को आगे धकेलती हैं, या छोटे बच्चों को अपनी सूंड से उठाती हैं, जिसे वे अपने बच्चों के पेट के चारों ओर लपेटकर उन्हें ज़मीन से ऊपर उठा लेती हैं। कुछ सेकंड बाद हल्की सरसराहट और सरसराहट बंद हो जाती है। झुंड गायब हो जाता है। एक बार फिर सन्नाटा छा जाता है। हमें अब पैंथर या हिरण की कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती।

हमारी आग कुछ पल के लिए मंद पड़ जाती है, बस जलते अंगारों की हल्की रोशनी रह जाती है। हम नदी के दूसरी ओर अंधेरे में टकटकी लगाए देखते हैं, लेकिन एक पल के लिए कुछ दिखाई नहीं देता, क्योंकि हम आग को घूर रहे थे और हमारी आँखें अभी तक अंधेरे के अनुकूल नहीं हुई थीं। तभी रहस्यमय छोटी-छोटी रोशनी दिखाई देती हैं, जो हमारी आग की रोशनी से परे पेड़ों की शाखाओं के बीच अकेली, दो-तीन के समूह में घूमती हुई नज़र आती हैं। जैसे ही हमारी आँखों की पुतलियाँ अंधेरे को भेदने के लिए फैलती हैं, हम दिखाई देने वाली छोटी-छोटी रोशनी की संख्या देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो हजारों रोशनी हों, क्योंकि वे चमकती हैं, झिलमिलाती हैं, फीकी पड़ जाती हैं और फिर से प्रकट होती हैं, कभी गुच्छों में तो कभी असंख्य संख्या में, जब एक क्षण के लिए वे ऊँचे पेड़ों और उनकी शाखाओं को रोशन कर देती हैं, जो अब तक अंधेरे में अस्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

जुगनू! हज़ारों की संख्या में! कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी दिखते और फिर गायब हो जाते, फिर अचानक प्रकट होते हैं। ये एक ऐसा अलौकिक आकर्षण पैदा करते हैं जो आबादी वाले इलाकों में कभी नहीं देखा जा सकता। निस्संदेह, नदी के आसपास की नमी ने इन्हें आकर्षित किया है। कई बार, जब मैं जंगल में बिना आग जलाए देख रहा था, तो मैंने इन असंख्य छोटे जीवों की संयुक्त चमक को इतना तीव्र पाया कि आसपास का जंगल जगमगा उठा और उसकी हर चीज़ पल भर के लिए स्पष्ट दिखाई देने लगी। हालाँकि इस तरह की एक साथ चमक बहुत लंबे अंतराल पर होती है और केवल एक सेकंड के लिए ही रहती है, फिर भी यह एक ऐसा अनुभव है जिसे महसूस करने पर ही विश्वास किया जा सकता है, और यह मन में सुंदरता और आश्चर्य का एक अवर्णनीय अहसास जगाती है।

हमें कुछ सुनाई नहीं देता और घंटे धीरे-धीरे बीतते जाते हैं। आग जल रही है, जिसे हम ढेर से ताज़ी लकड़ियाँ डालकर जलाते रहते हैं, फिर भी हवा ठंडी होती जा रही है और जलती हुई लकड़ियों से उत्पन्न गर्मी के घेरे से बाहर उग रहे पेड़ों की पत्तियों से ओस की बूँदें टपकने लगी हैं। मैं अपनी घड़ी पर नज़र डालता हूँ। सुइयाँ आधी रात पर हैं।

क्या आप हमारे वनक्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों के कुछ अंधविश्वासों के बारे में जानना चाहेंगे? वे आत्माओं के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास रखते हैं; लेकिन एक अंतर के साथ—उनके लिए सभी आत्माएँ बुरी होती हैं। यहाँ तक कि किसी प्रियजन की मृत्यु के तुरंत बाद उसकी आत्मा भी एक दुष्ट शक्ति बन जाती है, जो जीवित लोगों को गंभीर शारीरिक क्षति पहुँचाने में सक्षम होती है, और कभी-कभी तो ऐसा करने पर तुली भी रहती है। इसी कारण वे मानव शव, कब्रिस्तान या श्मशान घाट से दूर रहते हैं। किसी आदिवासी को अपने साथ किसी अधखाए हुए शव के पास बैठने के लिए कहना, जो लौट रहे नरभक्षी को लुभाने के लिए चारा के रूप में रखा गया हो, उसे आत्महत्या करने के लिए कहने के समान है। वास्तव में, यह उससे कहीं अधिक बुरा है; क्योंकि उसे लगता है कि उसका अंत भयानक और हिंसक होगा।

वह समझाएगा कि तुम दुष्ट आत्मा से सुरक्षित हो, क्योंकि तुम एक विदेशी हो। दुष्ट आत्माएँ भी विदेशियों को नापसंद करती हैं, विशेषकर यदि वे श्वेत पुरुष हों। लेकिन वह, जो एक बेचारा, असहाय जंगली आदमी है, तुम्हारे पास बैठे-बैठे ही निश्चित रूप से एक हिंसक अंत को प्राप्त होगा। यह अनुमानित अंत तब होगा जब अदृश्य आत्मा पीछे से हमला करेगी: तब पीड़ित गिर पड़ेगा, बेहोश हो जाएगा, खून की उल्टी करेगा और सुबह तक मर जाएगा। वह कहता है कि यदि तुम दिन के उजाले में उसकी पीठ की जाँच करोगे, तो उसकी काली त्वचा के बावजूद, तुम्हें उस आत्मा के हाथ के पाँच उंगलियों के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई देंगे जिसने उसे मारा था। यह मृत व्यक्ति का भूत होगा जो यह काम करेगा, क्योंकि वह अपने हिंसक अंत का बदला लेने के लिए बेताब है।

देश के घनी आबादी वाले इलाकों, कस्बों और शहरों में भी यह आम बात है कि कोई व्यक्ति रात में कारखाने में नाइट शिफ्ट से घर लौटते समय या सिनेमा हॉल में देर रात तक जागने के बाद किसी दुर्घटना का शिकार हो गया। पीड़ित बताता है कि उसे पीठ पर किसी भारी हाथ का ज़ोरदार प्रहार महसूस हुआ। वह लड़खड़ाते हुए घर

पहुंचता है, अपने रिश्तेदारों को घटना के बारे में बताता है और फिर गिर पड़ता है। रात भर उसे खून की उल्टी हो सकती है और अगले दिन उसे तेज़ बुखार हो जाता है। लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर, अड़तालीस घंटों के भीतर उसकी मृत्यु हो जाती है।

इस तरह की घटनाएं अक्सर मेरे संज्ञान में आती रही हैं और मैंने इनके कारणों की जांच करने की कोशिश की है, लेकिन सफलता नहीं मिली। यह महत्वपूर्ण है कि ऐसी समस्याओं का सामना केवल अज्ञानी, गरीब श्रमिक वर्ग ही करता है। विशेष रूप से नौकर वर्ग।

एक यह भी मान्यता है कि अगर कोई व्यक्ति सूअर का मांस खाकर या छूकर रात में नंगे पैर बाहर निकलता है, तो उसे बुरी आत्मा का प्रकोप होने का खतरा रहता है, क्योंकि बुरी आत्मा को सूअर का मांस बिल्कुल पसंद नहीं होता। यह धारणा सर्वव्यापी है। मैंने इसे पहली बार बचपन में सुना था। मुझे याद है कि मैंने बिना देर किए कच्चा सूअर का मांस खरीदा, अपने पिता से कहा कि मैं सिनेमा देखने जा रहा हूँ, लेकिन इसके बजाय मैं सूअर का मांस लेकर कब्रिस्तान के द्वार पर चला गया। वहाँ मैंने अपने जूते उतार दिए, द्वार फांदकर कब्रिस्तान के बीच बनी छोटी सी गली में चला गया, बहुत डरते हुए सूअर का मांस पकड़े हुए। आज तक मैं उस रात जितना डरा हुआ था, उतना कभी नहीं डरा। हर पल मुझे लग रहा था कि कोई बुरी आत्मा पीछे से आकर मुझे ज़ोरदार थप्पड़ मारेगी। लेकिन जब तक मैं अपने जूतों तक पहुँचा, तब तक किसी बुरी आत्मा ने मुझे नहीं मारा था। अगले दिन मुझे बुखार आ गया। यह 'ब्लू फंक' बुखार था!

मृतकों की आत्माओं के अलावा, जिन्हें इन सब कामों का श्रेय दिया जाता है, जंगलों में रहने वाले आदिवासी और दक्षिण भारत के गरीब श्रमिक वर्ग पश्चिमी देशों के अध्यात्मवादियों द्वारा 'तत्वीय' कहे जाने वाले प्राणियों में दृढ़ विश्वास रखते हैं। इन प्राणियों का तमिल नाम मिनिस्पुरम है। ऐसा माना जाता है कि ये नर और मादा दोनों रूपों में पाए जाते हैं: नर मिनिस्पुरम अपेक्षाकृत छोटा होता है, शायद ही कभी दिखाई या सुनाई देता है, और सौम्य और हानिरहित होता है, जबकि मादा मिनिस्पुरम अत्यंत लंबी (दस फीट से अधिक) बताई जाती है और कभी-कभी बिना सिर, हाथ-पैर वाली एक लंबी काली आकृति के रूप में, और कभी-कभी बिना सिर, हाथ-पैर वाली एक लंबी सफेद आकृति के रूप में प्रकट होती है। मादा मिनिस्पुरम का एक अन्य रूप बौने के रूप में दिखाई देता है, जो पारदर्शी, चमकीले रंग की साड़ी पहने और फूलों और

आभूषणों से सजी होती है। ये कुओं, तालाबों और नदियों में रहते हैं और ऐसा माना जाता है कि ये युवाओं को पानी के किनारे तक फुसलाकर लाते हैं और फिर उन्हें पानी में धकेल कर डुबो देते हैं। सभी प्रकार की स्त्री मिनिस्पुरम मनुष्य जाति, विशेषकर पुरुषों के प्रति शत्रुतापूर्ण होती हैं।

मेरे दोस्त बायरा, जो पुजारी हैं, ने मुझे बताया कि एक बार वह सलेम जिले में सांभर का शिकार कर रहे थे, तभी एक मादा मिनीस्पुरम हिरण उनके सामने आ गई। बताया जाता है कि वह नदी के किनारे बनाए गए अपने गुप्त ठिकाने पर बैठे थे। उस समय नदी सूखी थी, सिवाय उस कृत्रिम पानी के गड्ढे के जो उन्होंने दिन में रेत में एक गहरा गड्ढा खोदकर बनाया था। इस गड्ढे में पानी रिसता था। शाम ढलते ही उन्होंने थोड़ा पानी आसपास की रेत पर छिड़क दिया, ताकि पानी की गंध प्यासी हिरणों को आकर्षित करे। ऐसा होते ही वह अपनी बंदूक से पहली हिरण को मार गिराते!

बायरा ने बताया कि आधी रात के कुछ ही समय बाद उन्हें बाईं ओर से घंटियों की झंकार सुनाई दी। चिनार नदी के उस मोड़ पर एक घुमाव था, इसलिए उन्हें उत्सुकता हुई कि उस समय और उस स्थान पर कौन आ रहा होगा। उन्होंने देखा और कुछ ही देर में सफेद धुंध का एक विशालकाय खंभा सा दिखाई दिया, जो मोड़ से मुड़ा और सूखी नदी के बीचोंबीच तैरने लगा, जबकि घंटियों की झंकार तेज होती चली गई। बायरा ने कहा कि उन्हें सहज ही एहसास हो गया था कि यह एक मादा मिनीस्पुरम है। उन्होंने बताया कि कुछ पलों के लिए उन्होंने भागने का सोचा, लेकिन अगर वे ऐसा करते तो मिनीस्पुरम उन्हें देख लेती और उनका पीछा करती। इसलिए उन्होंने छिपने का फैसला किया।

इसी बीच विशाल सफेद खंभा पास आता हुआ दिखाई दिया। वह उसके ठीक सामने आकर रुका, और घंटियों की झनझनाहट अब जंजीरों के ज़मीन पर घिसटने जैसी आवाज़ में बदल गई। उसने अभी-अभी यह सोचकर खुद को बधाई देना शुरू ही किया था कि मिनीस्पुरम (छोटा खंभा) अब गुजर जाएगा, तभी वह भयानक रूप से ऊंचा सफेद खंभा नदी के तल पर ठीक उसके सामने आकर रुक गया। उसने एक कर्कश स्त्री की आवाज़ में राक्षसी हंसी सुनी।

बायरा ने बताया कि वह बेहोश हो गया था। जब उसे होश आया तो मिनीस्पुरम गायब हो चुका था। उसकी जगह, हल्की चांदनी में साफ दिखाई दे रहा था, एक झिझकता हुआ लकड़बग्घा खड़ा था, जो अंत में भाग गया। बायरा का कहना है कि

मिनीस्पुरम को अगर खोज लिया जाए तो वे जानवरों में बदल जाते हैं। उसने उजाला होने तक हिलने की हिम्मत नहीं की। उसके बाद अंधेरा होने पर वह नदी के उस हिस्से के पास कभी नहीं गया।

दक्षिण भारत में, विशेषकर पश्चिमी तट और हैदराबाद राज्य में, काला जादू और मंत्रोच्चार में विश्वास सर्वव्यापी है। हालांकि, ये जादूगर चुड़ैलें नहीं हैं। वे ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने अपने पिता से यह कला सीखी है या वर्षों के दीक्षा संस्कार के बाद स्वयं को इस अभ्यास के प्रति समर्पित कर दिया है।

किसी को इन जादूगरों के वश में करना एक आसान काम माना जाता है। इस प्रक्रिया का खर्च इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितना नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। सबसे आसान तरीका है पीड़ित को बीमार करना, उसकी नौकरी छीन लेना या पति-पत्नी के बीच दरार पैदा करना। एक और तरीका है उसे आत्माओं द्वारा परेशान करना, जो रात में और कभी-कभी दिन में भी उसकी छत पर पत्थर फेंकती हैं, बर्तन तोड़ती हैं, खाना खाते समय उसमें रेत डाल देती हैं, और कभी-कभी फर्नीचर को हिंसक रूप से हिलाती हैं या उसे बिस्तर से नीचे फेंक देती हैं।

जादू का सबसे बुरा रूप वह होता है जब पीड़ित इतना बीमार हो जाता है कि उसकी मृत्यु हो जाती है। ऐसे मामलों में चिकित्सा सहायता व्यर्थ होती है, क्योंकि कोई भी डॉक्टर बीमारी का निदान करने में सक्षम नहीं होता। मैंने जादू-टोने के कई मामले देखे हैं और मैं आपको उनमें से दो के बारे में बताऊंगा।

ऑस्कर ब्राउन नाम का एक व्यक्ति था, जिससे मेरी मुलाकात 1936 में हुई थी। ओस्सी एक सौम्य, मिलनसार, हंसमुख, बेफिक्र और खुशमिजाज इंसान था। हम दोनों के अच्छे दोस्त बन गए। एक दिन ओस्सी ने मुझे एक कहानी सुनाई। उसने बताया कि करीब तीन साल पहले वह कालीकट के एक दफ्तर में काम कर रहा था। कर्मचारियों को हर महीने की पहली तारीख को वेतन मिलता था, और कई भिखारियों ने हर वेतन दिवस पर दफ्तर में आकर कर्मचारियों से जितना हो सके दान लेने की प्रथा बना ली थी।

उनमें से एक लंबे बालों वाला, भगवा वस्त्र पहने, कुछ हद तक झगड़ालू दिखने वाला व्यक्ति था। यह आदमी हर महीने की पहली तारीख को अवश्य आता था और भीख मांगने के बजाय भीख की गुहार लगाता था। उसका व्यवहार ऐसा था मानो उसे इस पर पूरा अधिकार हो। उसकी इस आदत से मेरा मित्र ओस्सी बहुत परेशान हो

गया था, और एक दिन उसने उसे पुलिस के हवाले करने की धमकी दी। इस पर भगवा वस्त्र पहने उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे गाली देने की! मैं तुम्हें श्राप देता हूँ। मैं तुम्हारे अंदर एक ऐसा व्यक्ति डाल दूँगा जो तुम्हारी मृत्यु तक तुम्हारा साथी रहेगा।' इतना कहकर वह चला गया। ओस्सी घर गया और इस सब के बारे में भूल गया।

उस रात ओस्सी की नींद खुली और जिस मच्छरदानी के नीचे वह लेटा था, उसके आर-पार उसने अपने बिस्तर के पास एक बहुत लंबे काले आदमी की आकृति देखी। उसे लगा कि कोई चोर है, इसलिए ओस्सी उठ बैठा और बिस्तर से कूदने की तैयारी में मच्छरदानी को हटाने लगा। तभी वह आकृति उसके ऊपर झुकी और अगले ही पल मानो उसमें समा गई। ओस्सी ने खुद कहा, 'वह मेरे अंदर समा गया।' फिर उसने कहा: 'एंडी, क्या तुम्हें पता है कि वह अब मेरे अंदर है? वह दिन-रात मेरे साथ रहता है। मैं उससे छुटकारा नहीं पा सकता। वह जाता नहीं। कभी-कभी वह मुझ पर हावी हो जाता है और मुझे वश में कर लेता है। तब मुझे पता नहीं चलता कि मैं कौन हूँ या क्या कर रहा हूँ। दोस्त कहते हैं कि मेरी आवाज़ और रूप बदल जाते हैं। मेरा व्यवहार अलग तरह का, उग्र हो जाता है। मेरे लिए सब कुछ खाली है। जब मैं होश में आता हूँ, तो मुझे याद नहीं रहता कि क्या हुआ था। मुझे कुछ भी याद नहीं रहता।'

मुझे शक होने लगा कि मेरा नया दोस्त मानसिक रूप से थोड़ा असंतुलित है। फिर मैं यह सब भूल गया।

कुछ महीनों बाद मैंने ओस्सी को जंगल की एक छोटी यात्रा पर अपने साथ चलने का न्योता दिया। एक अजीब संयोग से, हमने इसी नदी के किनारे डेरा डाला, जिसे मैं 'गुप्त नदी' कहता हूँ, लेकिन यहाँ से लगभग बीस मील दूर, एंचेटी गाँव से आगे, उस स्थान पर जहाँ यह मुख्य नदी, कावेरी से मिलती है। हमने अपना भोजन समाप्त कर लिया था और आग के पास बैठे इधर-उधर की बातें कर रहे थे। मेरी .405 विंचेस्टर राइफल, भरी हुई लेकिन 'हाफ-कॉक' स्थिति में, एक मेहंदी के पेड़ से पाँच-छह फीट की दूरी पर रखी थी।

मुझे याद नहीं कि हम दोनों में से आखिरी किसने बात की थी। लेकिन मुझे याद है कि मैं कावेरी नदी को देख रहा था जो हमसे कुछ ही फीट दूर बह रही थी। तभी एक अजीब, कर्कश आवाज ने पूछा, 'तुम कौन हो? मैं कहाँ हूँ?'

मैं लगभग डर के मारे उछल पड़ा। मैंने ओस्सी की तरफ देखा। क्या यह वही था

जिसने अभी बात की थी? वह बिल्कुल अलग लग रहा था। उसकी आँखें अजीब तरह से चमक रही थीं। उसका चेहरा विकृत और बिगड़ा हुआ था।

'क्या हुआ है ओस्सी?' मैंने खुद को हकलाते हुए सुना।

'मुझे ओस्सी मत बुलाओ। यह मेरा नाम नहीं है,' वह गुर्राया। 'तुम कौन हो? मैं कहाँ हूँ?'

मैंने उसे शांत करने की कोशिश की। 'क्या तुम्हें याद नहीं?' मैंने पूछा। 'हम गोली चलाते हुए आए थे।'

'गोलीबारी? झूठ मत बोलो! बंदूक कहाँ है?'

मुझे अचानक ही सब समझ आ गया। ओस्सी निस्संदेह पागल हो चुका था। मैंने सुना था कि पागलों में असाधारण ताकत आ जाती है; अगर उसे मेरी राइफल मिल जाती तो वह मुझे वहीं गोली मार सकता था। सौभाग्य से उसने राइफल नहीं देखी थी, क्योंकि वह उसके पीछे थी। मैंने रणनीति अपनाई। 'मेरे पीछे, वहाँ,' मैंने लापरवाही से इशारा करते हुए अपनी पीठ के पीछे अस्पष्ट रूप से कहा।

ओस्सी, या जो भी मुझसे बात कर रहा था, मेरे पास से तेज़ी से गुज़रा, मेरी राइफल (जिसे उसने 'बंदूक' कहा था) को ढूंढने के इरादे से। मैं जल्दी से हथियार की ओर झपटा। मैंने उसे पकड़ लिया और घूम गया। ओस्सी मेरी ओर मुड़ा और मुझे घूर रहा था। मैंने जितना हो सके खुद को काबू में रखते हुए नरमी से कहा: 'मुझे मिल गई। यह यहीं पड़ी थी।'

'मुझे इसे देखने दो,' उसने मांग की थी।

'नहीं, मैं नहीं कर सकता,' मैंने उससे झूठ बोला। 'यहाँ बाघ और हाथी हैं और मुझे हमेशा अपने हाथों में यह राइफल रखनी होगी।'

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि आग की ओर चला गया और अंगारों पर नदी की रेत डालकर उसे बुझाने की कोशिश करने लगा।

'बस करो, ओस्सी,' मैंने उस पर चिल्लाते हुए कहा। 'हमें आग की जरूरत है। हाथी आ सकते हैं।'

'मैं ओस्सी नहीं हूं,' उसने सपाट लहजे में जवाब दिया।

फिर वह अचानक मुड़ा और मेरी ओर तेज़ी से बढ़ने लगा। मैं कुछ कदम पीछे हट गया और उसे रुकने के लिए चिल्लाया। लेकिन उसने कुछ नहीं किया।

'मुझे वह बंदूक चाहिए,' उसने बस इतना ही कहा और आगे बढ़ गया।

उसे रोकना नामुमकिन लग रहा था, और मैं हथियार छोड़ना भी नहीं चाहता था। तभी मेरे मन में एक विचार आया। जब वह मुझसे पाँच गज से भी कम दूरी पर था, मैंने राइफल उठाई और तेज़ी से उसके सिर के ऊपर गोली चला दी। वह वहीं रुक गया। फिर वह बुरी तरह काँप उठा, मानो उसे बुखार हो गया हो। लगभग यंत्रवत ही उसने अपना हाथ आँखों पर रखा और आह भरी। कुछ ही सेकंड बाद ओस्सी ने मुझसे फिर बात की, लेकिन इस बार वह ओस्सी था जिसे मैं जानता था।

'क्या हुआ, एंडी?' उसने पूछा। 'तुम डरे हुए लग रहे हो।'

मैं चुप रहा, इतना सदमे में था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था।

'ओह, मैं समझ गया,' उसने आगे कहा। 'मुझे अपना एक दौरा पड़ गया था, है ना? मेरे दूसरे रूप ने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया था। अब क्या आपको उस बात पर यकीन हुआ जो मैंने आपको उस दिन बताई थी?'

'बिल्कुल सही,' मैंने जवाब दिया। 'मुझे लगा कि मेरा आखिरी पल आ गया है और तुम मुझे गोली मार दोगे—या मुझे मजबूर कर दोगे कि मैं तुम्हें गोली मार दूं!' फिर मैंने आगे कहा: 'हाथी हों या न हों, मेरे दोस्त, मैं तुम्हारे साथ एक और रात अकेले नहीं बिताऊंगा। चलो, एंचेटी की ओर चलें। अगर मुझे सांप पर भी पैर रखना पड़े, तो भी यह उस अनुभव से बेहतर है जो मैंने अभी तुम्हारे साथ झेला है।'

मैंने यह घटना डॉक्टरों को बताई है, जिन्होंने कहा कि लक्षण और मरीज़ का आखिरी क्षण में कांपना हिस्टीरिया के विशिष्ट लक्षण हैं। मैंने यह बात उन लोगों को भी बताई है जो तंत्र-मंत्र के बारे में कुछ जानकारी होने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि यह 'आत्मा के वश में होने' का एक स्पष्ट मामला है और शरीर से बाहरी शक्ति के अस्थायी रूप से निकलने पर ही कांपना होता है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि किस पर विश्वास करूं।

लेकिन इस कहानी का अगला भाग यह है कि घटना के कुछ समय बाद ही ओस्सी बैंगलोर छोड़कर चला गया। दो साल बाद मुझे पता चला कि उसकी कलकत्ता में मृत्यु हो गई। उसने तीन मंजिला इमारत की बालकनी से छलांग लगा दी थी!

दूसरी घटना को संक्षेप में बताया जा सकता है। शिमोगा में तैनात एक तेल कंपनी में काम करने वाले मेरे एक मित्र को अपने एक सहकर्मी से पदोन्नति मिल गई, जिससे वह बेहद नाराज था। दुखी व्यक्ति उसी शहर के एक तांत्रिक के पास गया। अगली अमावस्या को ही पदोन्नत व्यक्ति के घर में अजीबोगरीब घटनाएं घटने लगीं।

उसकी छत पर पत्थर बरसने लगे; खाना खाते समय उसके खाने में रेत फेंकी जाने लगी, मानो कहीं से भी; बर्तन, मेज, कुर्सियाँ और यहाँ तक कि पलंग भी अपनी जगह से हिलने लगे; उसका छोटा बेटा उठकर नीचे गिर गया, सौभाग्य से उसे कोई चोट नहीं आई। यह सिलसिला छह महीने से अधिक समय तक चलता रहा, जब तक कि परेशान व्यक्ति को कोई उपाय या मदद न मिलने पर, घोर निराशा में उसने पदोन्नत पद से इस्तीफा दे दिया। उसी समय, सभी घटनाएं बंद हो गईं।

भारत में यह आम धारणा है—खासकर भारतीय और एंग्लो-इंडियन दोनों ही वर्गों के शिक्षित और उच्च वर्ग के लोगों में—कि एक स्त्री किसी पुरुष को अपने प्रेम में इस कदर उलझा सकती है कि वह इतना मोहित हो जाए कि उसे अपने किए का एहसास ही न रहे। एक महिला ने एक पादरी के साथ ऐसा ही किया, जिसके कारण उसने अपनी पत्नी और तीन बच्चों को छोड़ दिया। भारत में इस प्रथा को 'पिलिंग' के नाम से जाना जाता है।

जिस महिला का मैंने जिक्र किया है, उससे मेरे एक नेक इरादे वाले दोस्त ने पूछताछ की और इस पूरे मामले का विरोध किया। इस पर उस महिला ने आक्रामक भाव से मेरे दोस्त को विस्तार से बताया कि उसने वे 'सामग्री' कैसे बनाईं जिनसे यह गड़बड़ हुई और उसने उन्हें काली कॉफी में कैसे मिलाया था। मेरे पास वह नुस्खा है; यह कोई सेहतमंद मिश्रण नहीं है।

लेकिन मुझे वह दूसरा नुस्खा नहीं मिला है, जिसका इस्तेमाल कोई पुरुष किसी महिला को प्रभावित करने के लिए कर सकता है—अर्थात्, 'ऊडुम्बु' नामक बड़ी छिपकली की पूंछ के पाउडर का उपयोग कामोत्तेजक के रूप में करने के अलावा, जिसके बारे में मेरे पुराने मित्र, पुजारी बायरा ने मुझे बहुत समय पहले बताया था, और निश्चित रूप से, 'कुलू' नामक जलीय पौधे की जड़ों के पाउडर का उपयोग, जिसका उल्लेख मैंने इस पुस्तक की एक अन्य कहानी में किया है।

रहस्यमयी बातों की बात करें तो, मैं बताना चाहूंगा कि कुछ साल पहले मैं और मेरा बेटा डोनाल्ड नीलगिरी घाट की तलहटी में स्थित सेगुर से ऊटाकामंड की चोटी तक चौदह मील की खड़ी चढ़ाई पर पैदल यात्रा के लिए निकले थे। रात के ग्यारह बज चुके थे और हमने भोर से पहले ऊटी पहुंचने की योजना बनाई थी। लेकिन जब हम लगभग आधे रास्ते में कलहट्टी नामक स्थान पर पहुंचे, तो बारिश शुरू हो गई और हमने खड़ी सड़क से थोड़ी ही दूरी पर एक पगडंडी के अंत में बने यात्रियों के बंगले में

शरण ली।

इस बंगले के भूतिया होने की अफवाह लंबे समय से फैली हुई थी। कहा जाता है कि इसकी शुरुआत इस प्रकार हुई। क्रिसमस से एक रात पहले, एक यूरोपीय सज्जन, जो बुरी तरह नशे में थे, वहाँ डेरा डाले हुए थे। लगभग 2:30 बजे, उन्होंने बंगले के बरामदे पर एक जानवर को खड़ा देखा, जिसे उन्होंने एक सुस्त भालू समझा। नशे की हालत को देखते हुए, उन्होंने ठीक-ठाक निशाना साधते हुए भालू को गोली मार दी, जो चीखने लगा। इसके बाद उन्होंने अपनी पिस्तौल से चार और गोलियां चलाईं, लेकिन जानवर की चीख बंद हो गई क्योंकि वह मर चुका था। लेकिन पूरी घटना में एकमात्र गड़बड़ी यह थी कि उन्होंने जिस जानवर को गोली मारी थी, वह एक सुस्त भालू नहीं था: बल्कि वह एक आदमी था, बंगले का चौकीदार, जिसे सरकार ने विश्राम गृह की देखभाल के लिए वहाँ तैनात किया था।

स्थानीय बडागा लोगों का कहना था कि उस अभागे आदमी की बेचैन आत्मा ही कुछ रातों को बंगले में भटकती है। मुझे याद है जब डॉन और मैं बारिश से बचने के लिए बरामदे में भागे, तो हम पूरी तरह भीग चुके थे और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। साथ ही, हमें बहुत भूख भी लग रही थी। उस समय हमारे मन में तंत्र-मंत्र का कोई ख्याल नहीं था। हम उस आदमी को ढूंढना चाहते थे जो वहां का प्रभारी था, जिसने उस बेचारे की जगह ली थी जिसे गोली मार दी गई थी, ताकि पता चल सके कि क्या वह हमारे लिए गर्म चाय बना सकता है।

तो हम सबने मिलकर चिल्लाया: 'चौकीदार! पहरेदार!'

लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। फिर डॉन एक तरफ गया और मैं दूसरी तरफ, बंगले के चारों ओर उसे ढूंढने के लिए। हम इमारत के पीछे मिले। जाहिरा तौर पर चौकीदार वहां नहीं था। हम दोनों हल्की बारिश से बचने के लिए सामने वाले बरामदे में लौट आए। बरामदे के अंत में एक काली आकृति हमारा इंतजार कर रही थी। हम दोनों ने उस आदमी को साफ-साफ देखा। अगले ही पल, वहां कोई नहीं था। रात के ठीक 2:30 बज रहे थे।

खैर, अब इस विषय पर बात बंद करते हैं। लगभग एक बज चुका है और तुम नींद में लग रहे हो। शायद मेरी कहानियाँ सुनते-सुनते थक गए हो। ऐसे में हम मेरी थर्मस में बची हुई चाय खत्म कर सकते हैं, बची हुई लकड़ी आग में डाल सकते हैं और थोड़ी देर के लिए सो सकते हैं। कोई भी हमारे पास नहीं आएगा, क्योंकि आग बुझने के बाद

भी अंगारे सुलगते रहेंगे। लेकिन तुम्हें ठंड लगेगी, इसलिए इसके लिए तैयार रहना।

हम ठीक यही करते हैं। चाय खत्म करते हैं, बची हुई सारी लकड़ियाँ आग में डालते हैं जब तक कि आग तेज़ न हो जाए, और फिर जलती हुई लकड़ियों के जितना हो सके पास रेत में दुबक जाते हैं। उस समय तो असहनीय गर्मी लगती है, लेकिन थोड़ी देर में, जैसे-जैसे लपटें धीमी होती जाती हैं और केवल अंगारे रह जाते हैं, हमें ठंड लगने लगती है।

मैं भोर से पहले कई बार जाग जाता हूँ। एक बार मुझे दूर से भयभीत चित्तीदार हिरणों की आवाज़ सुनाई देती है। जंगल में दूर कहीं उनमें से एक अपनी आखिरी चीख निकालता है, मानो किसी सफल मांसाहारी शिकारी का शिकार हो गया हो।

---

1 देखें द ब्लैक पैंथर ऑफ शिवानीपल्ली, जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन।

चार

मोयार घाटी का काला बदमाश

उसके बारे में कहा जाता था कि वह एकदम काला है, और जब तक मैंने उसे खुद नहीं देखा, तब तक मुझे इस बात पर पूरी तरह यकीन नहीं हुआ। वह वाकई काला था, यकीनन मैंने अब तक जितने भी हाथी देखे हैं, उनमें से सबसे गहरे रंग का हाथी था, चाहे वह जंगली अवस्था में हो या कैद में। साथ ही, एक पूर्ण विकसित हाथी के हिसाब से वह असाधारण रूप से बालों वाला था, खासकर उसके भारी सिर के ऊपरी हिस्से

के आसपास। हाथी के बच्चे तो बालों वाले होते हैं, लेकिन बड़े होने पर उनके बाल कम होने लगते हैं। हालांकि, 'काला बदमाश', जैसा कि मैंने उसे नाम दिया है, पूर्ण विकसित होने के बावजूद, अपने शरारती दिनों में भी एक अलग ही तरह का झबरा रूप लिए हुए था, क्योंकि सबसे बढ़कर, वह निश्चित रूप से एक 'बदमाश' था, और वह भी बहुत ही बुरा बदमाश।

लेकिन शुरू करने से पहले, मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि इस कहानी का अंत काफी दुखद और अप्रत्याशित है। इसका अंत एक ऐसे अनुभव के साथ होता है जो मैंने पहले कभी नहीं किया और जिसे मैं दोबारा बिल्कुल नहीं दोहराना चाहता।

मोयार नदी पश्चिम से पूर्व की ओर एक गहरी घाटी से होकर बहती है, जो पूरी तरह से घने जंगल से ढकी है और दक्षिण भारत में पाई जाने वाली हर प्रकार की छोटी-बड़ी वन्यजीव प्रजातियों का घर है, सिवाय नीलगाय के, जिसे कभी-कभी 'ब्लू-बुल' भी कहा जाता है। यह मृग परिवार का एक सदस्य है जो सांभर के आकार तक बढ़ सकता है। इन जंगलों में बाइसन और हाथियों के बड़े-बड़े झुंड बहुतायत में पाए जाते हैं, और सांभर और चित्तीदार हिरण भी प्रचुर मात्रा में हैं। बाघ और तेंदुआ हमेशा यहाँ मौजूद रहते हैं, हालाँकि उनकी संख्या बहुत अधिक नहीं है। यह एक विचित्र बात है, जब हम उन वन्यजीवों की प्रचुरता पर विचार करते हैं जो इन दोनों बिल्ली प्रजातियों के भोजन के रूप में काम आ सकते हैं। शायद साल भर घाटी में पाए जाने वाले छोटे-बड़े दोनों प्रकार के टिक्स और नम क्षेत्रों में, विशेष रूप से मानसून की बारिश के दौरान पाए जाने वाले जोंक, बाघों और तेंदुओं को नदी के निचले इलाकों में ज्यादा देर तक रहने से रोकते हैं। मांसाहारी जानवर इन कीटों से घृणा करते हैं।

मैं जिस घटना का वर्णन करने जा रहा हूँ, वह मैसूर राज्य के जंगलों में घटी, जो मोयार नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित हैं, उत्तर-पूर्व में कोयंबटूर जिले में, और नीलगिरी के जंगलों में, जिन्हें 'नीले पहाड़' भी कहा जाता है, जो इस नदी के दक्षिण में, भवानी नामक एक अन्य धारा में इसके संगम तक फैले हुए हैं। इस प्रकार आप देखेंगे कि न केवल जंगल का एक विशाल क्षेत्र, बल्कि कई विशाल क्षेत्र, इसमें शामिल थे, बल्कि तीन अलग-अलग वन विभागों का अधिकार क्षेत्र भी था। कोयंबटूर और नीलगिरी क्षेत्रों का अपना-अपना प्रशासन है, हालांकि दोनों मद्रास राज्य के अंतर्गत आते हैं; जबकि मैसूर, जो हाल तक एक महाराजा द्वारा शासित एक स्वतंत्र क्षेत्र था, अब एक स्वतंत्र इकाई है जिसका अपना राज्य प्रशासन है।

वहाँ दो बड़े वन्यजीव अभयारण्य मौजूद हैं। इनमें से एक, नदी के उत्तर में, मैसूर राज्य की सीमा के भीतर आता है और इसे बांदीपुर वन्यजीव अभयारण्य कहा जाता है। इससे सटा हुआ, नदी के दक्षिण में, मद्रास राज्य के नीलगिरी जिले में मुदुमलाई अभयारण्य है। उत्तर-पूर्व में स्थित कोयंबटूर के जंगल आरक्षित वन कहलाते हैं, जहाँ केवल लाइसेंस के तहत ही शिकार की अनुमति है। इस हिस्से को भी अन्य दो समीपवर्ती अभयारण्यों की तरह अभयारण्य बनाने का प्रस्ताव है, जहाँ शिकार पूरी तरह से प्रतिबंधित होगा, ताकि तीनों अभयारण्य मोयार नदी के दोनों किनारों पर वन्यजीवों की बेहतर सुरक्षा कर सकें। बांदीपुर और मुदुमलाई अभयारण्यों की उपस्थिति ने काले हाथी को तब तक सुरक्षा प्रदान की जब तक वह उनके भीतर था, ताकि उसका शिकार तभी किया जा सके जब वह कोयंबटूर के जंगलों में प्रवेश कर जाए, या मोयार नदी के किनारे पूर्व में नीलगिरी के जंगलों में, भवानी नदी की ओर और मुदुमलाई अभयारण्य की सीमा से आगे चला जाए।

हर जगह हाथियों की बहुतायत के कारण, तीनों क्षेत्रों के जंगलों में काम करने वाले आदिवासी और अन्य लोग हमेशा सतर्क रहते थे। फिर भी, किसी के हाथी द्वारा पीछा किए जाने की खबरें आना आम बात थी, जबकि कभी-कभार छिटपुट दुर्घटनाएँ भी होती थीं जिनमें लोग मारे जाते थे। हालाँकि, ऐसी घटनाएँ बहुत कम होती थीं और कोई उन पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था, सिवाय इसके कि जंगली हाथी की नज़र, आवाज़ या गंध से दूर रहने के लिए बहुत सावधानी बरती जाए।

काले हाथी का पहली बार प्रकट होना या उसके उग्र स्वभाव का पता लगाना अस्पष्ट है। दो प्रचलित मत हैं। पहला यह है कि मुदुमलाई अभयारण्य के भीतर दो दिन और दो रातों तक रुक-रुक कर एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसकी आवाज मैसूर-ऊटाकामुंड मार्ग पर स्थित छोटे से गांव तिप्पाकाडु के निवासियों ने सुनी। इस स्थान पर मोयार नदी पर एक संकरा, काले रंग का लोहे का पुल बना हुआ है, और युद्ध के दूसरे दिन दोपहर को तिप्पाकाडु के निवासी पुल पर इकट्ठा होकर नदी के किनारे कुछ सौ गज की दूरी पर दो नर हाथियों को भयंकर रूप से लड़ते हुए देखने लगे। उन्होंने बताया कि दोनों हाथी विशालकाय थे, लेकिन उनमें से बड़ा हाथी स्पष्ट रूप से युद्ध में हावी हो रहा था, जबकि उसका प्रतिद्वंद्वी, उससे थोड़ा छोटा, काला हाथी, अपने प्रतिद्वंद्वी के दांतों से लगी कई चोटों के कारण सिर और बगल से बहते खून से लाल हो गया था।

दूसरी कहानी कोयंबटूर के उत्तर-पूर्वी जंगलों में बसे तल्लामलाई गाँव से आती है, जहाँ के एक निवासी ने गर्व से दावा किया कि उसी ने इस हाथी को बागी बनने की राह दिखाई। एक अकेला नर हाथी गाँव के आसपास के खेतों में फसलों पर हमला करके उन्हें नष्ट करने की आदत बना चुका था। हाथियों का शिकार करना, यहाँ तक कि शिकार लाइसेंस धारकों के लिए भी, सरकार द्वारा सख्ती से प्रतिबंधित है। फिर भी, नुकसान से तंग आकर, इस व्यक्ति ने एक रात अपने खेत के बीचोंबीच खड़े हाथी पर अपनी पुरानी बंदूक से गोली चला दी। गोली अवश्य लगी होगी, क्योंकि अगली सुबह खेत से जंगल तक खून के बड़े-बड़े धब्बे दिखाई दिए। ज़ाहिर है, घायल जानवर को देखने कोई नहीं आया।

कई लोगों ने इस जानवर को देखा था और सभी का कहना था कि यह एक बेहद काला और घने बालों वाला हाथी था। उस समय तक इसने किसी पर हमला नहीं किया था। घायल होने के बाद, हाथी तल्लामलाई के आसपास के इलाके से चला गया; कुछ लोगों का कहना था कि वह जंगल में मरने चला गया, जबकि अन्य का मानना था कि वह इलाका छोड़कर चला गया।

तीन महीने से भी अधिक समय बाद, अपने मवेशियों को चराते हुए एक चरवाहे पर एक काले हाथी ने हमला कर उसे मार डाला। तब लोगों को याद आया कि एक हाथी, जो उनकी फसलों को नष्ट करने का आदी था और बाद में घायल हो गया था, वह भी काले रंग का था। इसलिए सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यही हाथी घायल हुआ था, जबकि बंदूक के मालिक को खूब वाहवाही मिली और वह खुद पर बहुत गर्व करने लगा।

दूसरी कहानी शायद सच है, क्योंकि इसमें पहली हत्या की घटना का प्रमाण मिलता है, हालांकि यह भी संभव है कि तिप्पाकाडु में बुरी तरह पिटने वाला हाथी मोयार नदी के किनारे भटकता हुआ उत्तर-पूर्व के जंगल में निकला हो और चिड़चिड़े मूड में उस दुर्भाग्यपूर्ण चरवाहे के पास पहुँचकर अपना क्रोध उस पर निकालते हुए उसे बुरी तरह कुचल दिया हो।

इसके बाद मैंने जिन तीनों क्षेत्रों का उल्लेख किया है, उन सभी में छिटपुट हमले हुए। लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि इनमें से अधिकांश हमले कोयंबटूर वन क्षेत्र में हुए। वहां हाथी ने डिंबम से तल्लामलाई जा रही एक बैलगाड़ी को चकनाचूर कर दिया। चमत्कारिक रूप से गाड़ी पलटने पर उसमें सवार दोनों यात्री बच गए और

अपनी जान बचाकर भाग गए, लेकिन सारथी और दो बैलों में से एक, साथ ही गाड़ी भी हाथी के प्रकोप का शिकार हो गई। सारथी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। हाथी ने स्पष्ट रूप से अपना अगला पैर उसके शरीर पर रखा और अपनी सूंड से उसकी दोनों भुजाएँ और एक टांग तोड़ दी। बैल को उसके एक विशाल दांत से बुरी तरह घायल कर दिया गया था और सूंड के प्रहार से उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई थी। गाड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गए थे।

यह अजीब बात थी कि बचे हुए बैल को कुछ नहीं हुआ। जब जुताई टूटी तो वह बस सरपट भाग गया, लेकिन ग्रामीणों ने कहा कि उसके भागने का कोई कारण ज़रूर था। वह बिल्कुल काले रंग का था, जबकि मारा गया जानवर सफेद और भूरा था, और गाड़ीवान ने सफेद धोती, सफेद बनियान और सफेद पगड़ी पहनी हुई थी। यह इस बात का पर्याप्त सबूत था कि सभी जंगली हाथियों को सफेद रंग बिल्कुल पसंद नहीं होता। इसलिए, भारत में हाथी वाले इलाकों में यात्रा करते समय आप देखेंगे कि सभी मील और फर्लांग के पत्थर, जो आमतौर पर सफेद रंग के होते हैं और उन पर काले अंक लिखे होते हैं, अब काले रंग के हैं और अंक आमतौर पर पीले रंग के हैं। सरकार को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है कि जंगली हाथी सफेद पत्थरों को लगाते ही उखाड़ देते हैं।

अपनी जान बचाकर भागे दोनों आदमी घटना की जानकारी देने के लिए दौड़ते हुए वापस दिंबुम पहुँच गए, जहाँ से उन्होंने यात्रा शुरू की थी। उन्होंने ज़ोर देकर बताया कि हाथी लगभग पूरी तरह काला था। उन्होंने यह भी बताया कि बायाँ दाँत दाएँ दाँत से छोटा था और अंदर की ओर मुड़ा हुआ था, जबकि हाथी कम से कम नौ फ़ीट ऊँचा था और उस पर असामान्य रूप से ज़्यादा बाल थे। हाथी का यह अब तक का सबसे विस्तृत विवरण था, जिसे वन विभाग ने सही मान लिया। आख़िरकार, जब क्रोधित हाथी ने बैलगाड़ी को पलट दिया था, तब ये दोनों आदमी दस फ़ीट की दूरी पर ही थे; अगर किसी को पता होता, तो शायद यही लोग जानते कि हाथी कैसा दिखता था।

कोयंबटूर के कलेक्टर, जो इसी नाम के जिले का मुख्यालय है, को वन विभाग द्वारा यह विवरण दिया गया और उनसे अनुरोध किया गया कि वे जानवर को 'अशांत' घोषित कर दें और जिला शिकार लाइसेंस धारक किसी भी व्यक्ति द्वारा उसका शिकार करने की अनुमति दें। लेकिन घोषणा होने से पहले ही हाथी ने फिर हमला कर दिया, इस बार मुडियानूर बस्ती और अपेक्षाकृत बड़े गांव तलवाड़ी के बीचोंबीच, जो

दोनों डिंबुम से तल्लामलाई जाने वाले एक ही मार्ग पर स्थित हैं, लेकिन उस स्थान से लगभग अठारह मील आगे जहां गाड़ीवान मारा गया था।

जिस ग्रामीण पर हमला हुआ, वह साइकिल चला रहा था। वह तलवाड़ी से मुडियानूर जा रहा था और लगभग आधे रास्ते पर था। उसने सफेद कमीज पहनी हुई थी जो उसकी सफेद शॉर्ट्स के बाहर ढीली लटक रही थी। हाथी ने जाहिर तौर पर उसे आते हुए देख लिया था और रास्ते के किनारे इंतजार कर रहा था; क्योंकि जैसे ही वह उसके पास पहुंचा, हाथी गुस्से से चीखते हुए साइकिल सवार पर झपटा।

उस आदमी ने हाथी को आते हुए देखा और सुना, और सहज रूप से वही किया जिससे उसकी जान बच गई। उसने अपनी साइकिल से छलांग लगा दी। सौभाग्य से, उस जगह पर रास्ता एक ढलान के किनारे से होकर गुजरता था और ग्रामीण उस ढलान पर घनी झाड़ियों और लंबी घास में कूद गया। जैसे ही हाथी उसकी गिरी हुई साइकिल के पास पहुँचा और उसे कुचलकर धातु के एक बेजान, मुड़े-तुड़े ढेर में बदलने लगा, वह घनी झाड़ियों में ओझल हो गया। हाथी लगातार जोर-जोर से चिंघाड़ रहा था। ग्रामीण ने समझदारी दिखाते हुए बिल्कुल शांत लेटा रहा। शायद वह इतना भयभीत था कि हिलने-डुलने में असमर्थ था। साइकिल को नष्ट करने की जल्दबाजी में हाथी उसे भूल गया, और उसने यह काम बड़ी व्यवस्थित और पूरी तरह से किया। अंत में, साइकिल को खाई में फेंककर, लगभग उसके भयभीत मालिक के ऊपर, वह विशालकाय हाथी लड़खड़ाता हुआ चला गया।

ग्रामीण एक घंटे से अधिक समय तक झाड़ियों में छिपा रहा, जब तक उसे यकीन नहीं हो गया कि हमलावर चला गया है। फिर, कांटों से लगे अनगिनत खरोंचों से दर्द से कराहते हुए, वह दर्द से कराहते हुए वापस रास्ते पर लौटा, जहाँ उसने चारों ओर बेचैनी से देखा, मानो किसी भी क्षण अपने भारी-भरकम हमलावर को देख ले। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर वह अपनी पूरी ताकत से भागा और तलवाड़ी की ओर वापस दौड़ पड़ा, जहाँ से वह लगभग ढाई घंटे पहले निकला था।

हाथी का उसका वर्णन गाड़ी से बच निकलने वाले लोगों द्वारा दिए गए वर्णन से काफी हद तक मेल खाता था। उसने पुष्टि की कि हाथी के दांत आकार और स्थान में एक समान नहीं थे, और हाथी बहुत काला था। इसके कुछ ही समय बाद कोयंबटूर के कलेक्टर ने घोषणा जारी की कि हाथी एक उपद्रवी हाथी है और शिकार लाइसेंस रखने वाला कोई भी व्यक्ति उसका शिकार कर सकता है।

जैसे ही उसे एहसास हुआ कि उसके सिर पर इनाम रखा गया है, वह काला बदमाश तुरंत उस इलाके से गायब हो गया और लगभग तीन महीने बाद तक फिर कभी वहाँ नहीं देखा गया। इसी बीच उसने ऊटाकामुंड-मैसूर राज्य सीमा से आधे मील की दूरी पर, लेकिन मुदुमलाई अभयारण्य के भीतर, एक करुंबा का पीछा किया और उसे मार डाला, जब वह शहद चुरा रहा था। हालाँकि, इस घटना को गंभीरता से नहीं लिया गया, क्योंकि यह माना गया कि चोर को उसके कुकर्मों का उचित दंड मिल गया था।

मैसूर शहर से ऊटाकामंड तक जाने वाली मुख्य सड़क, जो नीलगिरी पर्वतमाला पर स्थित एक खूबसूरत पहाड़ी स्टेशन है और समुद्र तल से 7,500 फीट ऊपर है, बांदीपुर और मुदुमलाई अभयारण्यों के मध्य से होकर गुजरती है। ये अभयारण्य नीलगिरी पर्वतमाला के उत्तरी तलहटी में स्थित हैं। तिप्पाकाडु गांव से निकलने के बाद, जहां दो हाथियों के बीच ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, सड़क लगभग चालीस मील की चढ़ाई शुरू करती है। रास्ते में गुडालूर नामक स्थान आता है और ऊटाकामंड पहुंचने से पहले कॉफी, चाय और चिनकोना के विशाल बागानों से गुजरते हुए कई घुमावदार मोड़ आते हैं। यह सड़क तारकोल से बनी है और मैसूर राज्य और मद्रास के नीलगिरी जिले की सरकारों द्वारा इसका रखरखाव बहुत अच्छे से किया जाता है। इस पर मध्यम स्तर का यातायात रहता है, जिसमें ऊटाकामंड जाने वाले कई पर्यटकों की निजी कारें शामिल हैं।

तिप्पाकाडु से एक और सड़क दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है और ऊटाकामंड पहुँचने से पहले इक्कीस मील का छोटा रास्ता तय करती है। यह मोयार नदी पर बने काले पुल को पार करती है, जहाँ से ग्रामीणों ने हाथियों की लड़ाई देखी थी। यह सड़क मासिनीगुडी, महवनहल्ला और सेगुर नामक तीन गाँवों से होकर गुजरती है और फिर ऊटाकामंड तक एक बेहद खड़ी ढलान वाली सड़क पर चढ़ती है। मुख्य सड़क की आधी लंबाई होने के बावजूद, यह रास्ता अपनी अत्यधिक ऊबड़-खाबड़ और खड़ी ढलान, विशेष रूप से हेयरपिन मोड़ों के आसपास, के कारण बहुत कम इस्तेमाल होता है; यह निश्चित रूप से असाधारण रूप से कुशल चालकों के लिए खतरनाक है जो उच्च हॉर्सपावर और उत्तम स्थिति वाले ब्रेक वाले वाहनों का उपयोग करते हैं।

बांदीपुर से गुडालूर जाने वाली मुख्य सड़क और खड़ी घाट की तलहटी में स्थित तिप्पाकाडु से सेगुर जाने वाले शॉर्टकट मार्ग पर, कोयंबटूर के कलेक्टर द्वारा उसे

आधिकारिक तौर पर दुष्ट घोषित किए जाने के लगभग तीन महीने बाद तक वह काला हाथी समय-समय पर आता-जाता रहा। लेकिन यह घोषणा केवल मोयार नदी के उत्तर-पूर्व में स्थित जंगलों पर लागू होती थी, जो कि जैसा कि मैंने आपको बताया है, कोयंबटूर जिले के अंतर्गत आते हैं। यह मैसूर और नीलगिरी क्षेत्रों पर लागू नहीं होती थी, जहाँ हाथी को अभी तक दुष्ट घोषित नहीं किया गया था और इसलिए वह अभी भी संरक्षित था। लेकिन हर बार और अधिक साहसी होते हुए, काले हाथी ने अपनी घोषणा को जल्दी करने का फैसला किया और कभी-कभी दोनों सड़कों पर मोटरगाड़ियों का पीछा भी करने लगा।

सेगुर में उसने लगभग एक अंग्रेज, मेरे दोस्त कोलेट को भी अपने शिकारों की सूची में शामिल कर लिया था। यह सज्जन शाम को अपनी बंदूक और पाँच आवारा कुत्तों के साथ टहलने निकले थे, इस उम्मीद में कि उन्हें रात के खाने के लिए एक मोर, जंगली मुर्गा या शायद एक खरगोश या दो तीतर मिल जाएँगे। उन्हें क्या मिला, यह तो मुझे नहीं पता, लेकिन शाम ढलते-होते वह मोयार नदी की सहायक नदी सेगुर के किनारे एक पेड़ से पीठ टिकाकर बैठे थे और उनके पाँच कुत्ते उनके चारों ओर थे, तभी पानी पीने के लिए वही काला बदमाश नीचे आया। उसने कोलेट को तुरंत देख लिया और अपनी हमेशा की तरह गुस्से और नफरत से भरी चीख के साथ उस पर झपट पड़ा।

मेरे दोस्त के पास सिर्फ एक शॉटगन थी जो हाथी के सामने बेकार थी; उसके दाहिने पैर में स्थायी चोट भी थी, जिसके कारण वह थोड़ा लंगड़ाकर चलता था। इससे वह दौड़ नहीं पाता था और न ही जल्दी से पेड़ पर चढ़ पाता था। अगर पांच देसी कुत्तों ने हाथी पर पलटवार न किया होता, तो एक और हत्या का मंजर बन जाता। वे हाथी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे। इससे हाथी इतना विचलित और क्रोधित हो गया कि वह अपने शिकार को भूल गया और कुत्तों को कुचलने या उनमें से किसी एक को अपनी सूंड में पकड़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन कुत्ते उसकी पहुँच से दूर रहे और नाराज़ हाथी व्यर्थ ही इधर-उधर भागने लगा। जैसे ही वह किसी एक कुत्ते को पकड़ने पर ध्यान केंद्रित करता, बाकी चार कुत्ते उसके पीछे भौंकने लगते। कोलेट एक पेड़ के तने के पीछे छिप गया और जब हाथी नहीं देख रहा था, तो वह जंगल में एक पगडंडी तक पहुँचने में कामयाब हो गया, जिस पर वह अपनी लंगड़ाती हुई क्षमता के साथ तेज़ी से भाग निकला। उसके बंगले पर पहुंचने के

कुछ ही समय बाद, पांचों कुत्ते वहां आ गए, सभी unharmed थे और अपनी मेहनत से खुशी से हांफ रहे थे।

लगभग तीन महीने बाद हाथी कोयंबटूर के जंगलों में वापस आ गया और वहाँ भी उसने जल्द ही एक और शिकार को अपना शिकार बना लिया, जो जीरगल्ली नामक एक छोटे से गाँव का निवासी था, जो मुडियानूर और दक्षिण-पश्चिम में स्थित उस गहरी घाटी के लगभग मध्य में स्थित है जिससे होकर मोयार नदी बहती है।

इस घटना के कुछ समय बाद, बैंगलोर घूमने आए एक अमेरिकी पर्यटक मुझसे मिलने आए और मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें किसी ऐसी जगह ले जा सकता हूँ जहाँ वे बाइसन की तस्वीरें ले सकें। उन्होंने अफ्रीका के कुछ प्रसिद्ध वन्यजीव अभ्यारण्यों का दौरा किया था और उनके पास वहाँ के सभी वन्यजीवों, जिनमें गैंडा, शेर और अफ्रीकी हाथियों के विशाल झुंड शामिल थे, की वीडियो रीलों का एक शानदार संग्रह था, जो उन्होंने मुझे दिखाया। उन्होंने कहा कि अब उन्हें बाघों और भारतीय बाइसन की एक-दो रीलें चाहिए। मैंने उन्हें समझाया कि शेरों के विपरीत, जो खुले मैदानों में रहते हैं, बाघ जंगलों में रहते हैं जहाँ आसानी से तस्वीरें नहीं ली जा सकतीं। लेकिन मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि बाइसन की तस्वीरें लेना अपेक्षाकृत आसान होगा। इस मुलाकात का नतीजा यह हुआ कि वे मेरे साथ अपनी कार में तीन दिन की यात्रा पर चलने के लिए सहमत हो गए और हम अगली सुबह रवाना हो गए।

अब मुझे बाइसन की तस्वीरें खींचने के लिए कोयंबटूर के जंगलों से बेहतर कोई जगह नहीं पता। न केवल वहां ये जानवर बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं, बल्कि जंगल मैसूर के कुछ हिस्सों की तुलना में कम घना है और निश्चित रूप से बहुत कम कंटीले हैं। रास्ते में मैंने अपने पुराने जंगल के दोस्त और साथी, राचेन नाम के एक शोलागा को गेदेसाल गांव में उसकी झोपड़ी से लिया और डिंबम के लिए निकल पड़ा, जहां से हम पश्चिम की ओर मुड़कर होनाथेट्टी नामक एक अन्य गांव की ओर चल दिए, जो डिंबम-तल्लामलाई सड़क पर लगभग सात मील दूर स्थित है। मुझे पता था कि वहां बाइसन विशेष रूप से बहुतायत में पाए जाते हैं।

दो टायर पंक्चर होने और कुछ अन्य छोटी-मोटी देरी के कारण, हम शाम के लगभग 4 बजे अपने गंतव्य पर पहुँचे। बाइसन की तलाश शुरू करने का समय बिल्कुल नहीं था। इसके अलावा, जैसा कि सभी जानते हैं, शाम का समय फोटोग्राफी के लिए सबसे अच्छा नहीं होता। इसलिए मैंने अपने अमेरिकी मित्र से कहा कि हम

गाँव के पास एक पेड़ के नीचे रात बिताएँगे और अगली सुबह काम शुरू करेंगे। इसी बीच, हमारी वहाँ के कुछ निवासियों से बातचीत हुई, जिन्हें मैंने अपने उद्देश्य के बारे में बताया। यह सुनकर वे बहुत निराश हुए कि हम किसी नियमित शिकार यात्रा पर नहीं आए थे और उन्होंने हमें उस रात पानी के गड्ढे के पास बैठकर उनके लिए मांस के लिए एक सांभर का शिकार करने के लिए लुभाने की बहुत कोशिश की। पानी के गड्ढे के पास शिकार करना न केवल वर्जित है, बल्कि यह बहुत ही अनुचित भी है, और हमने विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से मना कर दिया।

उस रात खाना खाने के बाद गाँव के कई शोलागा लोग हमारे कैंप फायर के चारों ओर जमा हो गए, और उनमें से एक ने अगले दिन सुबह राचेन को अपने साथ ले जाने की पेशकश की ताकि पास के बाइसन झुंड के पदचिह्नों का पता लगाया जा सके। योजना यह थी कि झुंड का तब तक पीछा किया जाए जब तक कि वे दिन भर के लिए आराम न कर लें और फिर वापस आकर हमें बताएँ। बाइसन दोपहर की तेज़ गर्मी में ज़्यादा दूर नहीं जाते हैं, इसलिए हमारे लिए अपने शोलागा गाइडों के साथ जाना, बाइसन के आराम करने की जगह के हवा की दिशा में जाना और सावधानी से उनके करीब जाना, ताकि झुंड के डरकर भागने से पहले हम कुछ तस्वीरें ले सकें, काफी आसान होगा।

योजना बन जाने के बाद, हम अन्य विषयों पर चर्चा करने लगे और बातचीत के दौरान उस काले बदमाश का ज़िक्र हुआ। ज़ाहिर है, उसकी बदनामी दूर-दूर तक फैल चुकी थी, लेकिन उसने अब तक होनाथेट्टी के किसी भी निवासी को परेशान नहीं किया था, हालाँकि उनमें से कुछ लोगों ने उसे कभी-कभार देखा था। हालाँकि, यह घटना कुछ महीने पहले हुई थी और आम राय यही थी कि वह हमेशा के लिए चला गया है। उसके बाद किसी ने उसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा।

सुबह होने ही वाली थी कि गांव का शोलागा अपने वादे के मुताबिक आ गया और राचेन को अपने साथ लेकर रात के दौरान वहां से गुजरे किसी भी बाइसन के पदचिह्नों की तलाश करने निकल पड़ा। उसने हमें भरोसा दिलाया कि उसे बाइसन ज़रूर मिल जाएंगे, क्योंकि उसके गांव के आसपास की निचली पहाड़ियों और जंगल में बाइसन बहुतायत में पाए जाते थे।

मेरे दोस्त के पास शिकार का लाइसेंस नहीं था और मुझे भी पक्षियों का शिकार करने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए हमने अगले कुछ घंटे शिविर में आराम

करते हुए बिताए और सुबह-सुबह जंगली मुर्गों की बांग और मोरों की कर्कश आवाजें सुनीं। सूरज काफी ऊपर आ चुका था और काफी गर्मी हो रही थी, तभी दो शोलागा लोग दस बजे से ठीक पहले वापस लौटे और हमें बताया कि उन्हें बाइसन के एक बड़े झुंड के पदचिह्न मिले हैं, जिनका वे लगभग दो मील तक पीछा करते रहे, जब तक कि वे उन जानवरों के पास नहीं पहुँच गए जो एक छोटी सी पहाड़ी के किनारे एक छोटी सी धारा के पास दिन भर आराम कर रहे थे। उन्हें अपने अनुभव से पता था कि बाइसन शाम तक वहीं आराम करेंगे, फिर आगे बढ़ेंगे।

शोलागा लोगों के अनुसार, हमें इस जगह तक पहुँचने के लिए कम से कम चार मील पैदल चलना था। शोलागा लोग, बाकी सभी आदिवासियों की तरह, दूरियों का ठीक-ठीक अंदाज़ा नहीं लगा पाते, इसलिए मुझे पता था कि अगर हम छह मील से कम में वहाँ पहुँच गए तो हम खुद को भाग्यशाली समझेंगे। मुझे याद है कि उस सुबह सूरज बहुत तेज़ था, इसलिए मैंने आलस के मारे अपनी राइफल वहीं छोड़ दी। बारह मील तक उसे ढोना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। इसके अलावा, जैसा कि मैंने आपको बताया है, हम फोटोग्राफी के लिए आए थे, गोली चलाने के लिए नहीं।

हम उसी के अनुसार चल पड़े, मेरे दोस्त और मैंने उसका कैमरा और अन्य उपकरण आपस में बाँट लिए। जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, दो मील नहीं बल्कि तीन मील से भी अधिक दूरी तय करने के बाद हमें पशुओं का झुंड मिला। घास निश्चित रूप से ताज़ी थी। जिन घासों को जानवरों ने चरकर खाया था और उनके गोबर से यह बात स्पष्ट रूप से पता चल रही थी।

हम चौड़े रास्ते पर चलने लगे और लगभग तीन मील का सफर तय करने के बाद राचेन और दूसरे शोलागा ने उस नीची पहाड़ी की ओर इशारा किया जहाँ हम खड़े थे। कम से कम एक मील दूर हमें पेड़ों से लगभग छिपी हुई पानी की हल्की चमक दिखाई दी, जो उस धारा का संकेत थी जहाँ झुंड ने दिन भर आराम करने का फैसला किया था।

अगला काम था हवा की दिशा का पता लगाना ताकि हम अपने शिकार के ठीक सामने पहुँच सकें। बाइसन की सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, और हवा के विपरीत दिशा से उनके पास जाने का मतलब था कि वे निश्चित रूप से हमारे आने का पता लगा लेंगे और छिपने की जगह छोड़ देंगे। सौभाग्य से हमने पाया कि हवा ऊपर की ओर बह रही थी; यानी बाइसन से हमारी ओर। इसका मतलब था कि हमें चक्कर

नहीं लगाना पड़ेगा बल्कि पिछली रात के उनके पदचिह्नों का पीछा करते हुए चुपके से झुंड के पास नीचे की ओर जाना होगा।

मैंने बताया था कि नदी लगभग एक मील दूर थी। पहाड़ी ढलान धीरे-धीरे नीचे की ओर जा रही थी। यह काफी खुला, पार्क जैसा इलाका था, जिसमें बिखरे हुए छोटे-छोटे पेड़, लंबी हरी घास और जगह-जगह कुछ चट्टानें थीं। होनाथेट्टी का शोलागा आगे-आगे चल रहा था, क्योंकि उसे रास्ता पता था, उसके ठीक पीछे अमेरिकी और राचेन थे, जबकि मैं सबसे पीछे था। आसमान एकदम साफ और नीले रंग का था, और सूरज की तेज रोशनी हम पर पड़ रही थी। सब कुछ शांत और निर्मल लग रहा था।

दोनों शोलागाओं की क्षमताओं पर पूरा भरोसा रखते हुए, जो कि कुशल ट्रैकर और जंगल के ज्ञान में निपुण थे, मैं यूं ही चलता रहा, बिना किसी खास बात के, तभी अचानक मेरी नज़र राचेन पर पड़ी जिसने पीछे मुड़कर उस रास्ते की ओर देखा जिससे हम आए थे। वह अचानक रुक गया और उसने अशुभ शब्द कहे: 'दोराई, अन्नाई वरुदु!', जिसका अर्थ है, 'महोदय, एक हाथी आ रहा है!'

उसी दिशा में देखते हुए, मैं यह देखकर दंग रह गया कि एक हाथी सचमुच बिखरे हुए पेड़ों के बीच से होते हुए सीधे हमारी ओर आ रहा था। वह हमसे मात्र एक फर्लांग की दूरी पर प्रतीत हो रहा था। उसकी धीमी दौड़ में दृढ़ संकल्प स्पष्ट था। उसमें कोई झिझक नहीं थी, न ही डर या भय का कोई संकेत, न ही हमसे बचने या छिपने का कोई प्रयास। यह हाथी जितनी जल्दी हो सके हम तक पहुँचने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

मुझे पता था कि उसका अगला कदम क्या होगा। जैसे ही उसे लगेगा कि वह काफी करीब आ गया है, वह गुस्से से चीखते हुए हम पर झपट पड़ेगा। एक सामान्य हाथी का व्यवहार बिल्कुल अलग होता। जैसे ही उसे इंसानों की गंध आती या वह उन्हें देखता, वह भागने की पूरी कोशिश करता। लेकिन यह जानवर जानबूझकर हमारा पीछा कर रहा था, और उसके इरादे में एक भयावह और शैतानी झलक रही थी। इसमें कोई शक नहीं था कि यही वह दुष्ट हाथी था जिसके बारे में मैंने इतना कुछ सुना था। इतनी दूरी से भी वह गहरे काले रंग का लग रहा था।

आगे चल रहे शोलागा और मेरे अमेरिकी मित्र, दोनों को ही उसकी उपस्थिति का आभास नहीं था, क्योंकि पास आते समय उसने कोई आवाज़ नहीं की। सौभाग्यवश, राचेन ने पीछे मुड़कर उसे देख लिया था। अन्यथा, उस दिन हममें से कम से कम एक

की बहुत दर्दनाक मृत्यु हो जाती!

मैं हताशा से चारों ओर देखने लगा, बचने का रास्ता ढूँढ़ रहा था। जैसा कि मैंने बताया, पेड़ छोटे थे। एक भी ऐसा पेड़ नहीं था जिसे हाथी आसानी से न गिरा सके। लेकिन लगभग 200 गज दूर, हमारे दाहिनी ओर, मुझे एक चट्टान दिखाई दी जो बीच के पेड़ों के तनों से आधी छिपी हुई थी। मुझे यह जानने का कोई साधन नहीं था कि वह कितनी बड़ी या कितनी ऊँची थी। लेकिन वह एक चट्टान थी और वही हमारी एकमात्र शरण थी।

मैं चिल्लाने से बच रहा था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि हाथी मुझे सुन ले और शायद हमला कर दे। मैंने अपने अमेरिकी दोस्त को धीरे से पुकारा: 'मेरे पीछे दाईं ओर उस चट्टान तक आओ। वह उग्र हाथी हमारे पीछे है। भागो!'

सामान्य परिस्थितियों में इसका उस पर पड़ने वाला प्रभाव मनोरंजक कहा जा सकता था। वह एकदम रुक गया और असमंजस में इधर-उधर देखने लगा।

'यह क्या है?' उसने पूछा। 'कहाँ?'

आगे दौड़ते हुए, मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे चट्टान की ओर धकेलने लगा, जबकि मैं खुद भी भागने की कोशिश कर रहा था। इसी बीच, राचेन ने दूसरे शोलागा को धीमी आवाज़ में चेतावनी दी।

हाथी लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहा था और हमसे बस आधा फर्लांग से थोड़ा ही दूर था। निस्संदेह उसने हमारी तेज़ चाल देख ली थी और समझ गया था कि उसकी मौजूदगी का पता चल गया है। क्योंकि बिना देर किए उसने ज़ोर से चिंघाड़ा। फिर उसने हमला कर दिया!

मेरे दोस्त ने अपना कैमरा नीचे फेंक दिया और हम चारों जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे, उस चट्टान की ओर भागे। लंबी घास, कांटों और बीच में आने वाले पेड़ों की परवाह किए बिना, हम बड़ी तेज़ी से आगे बढ़े, और हाथी लगातार चिंघाड़ता हुआ हमारे पीछे था। चट्टान से बस थोड़ी ही दूरी पर होने के कारण हम अपनी बढ़त बनाए रखने में कामयाब रहे और अपने पीछा करने वाले से लगभग 100 गज पहले अपने लक्ष्य तक पहुँच गए।

यह एक नीची, ढलान वाली चट्टान थी, जिसका एक सिरा ज़मीन से मुश्किल से तीन फीट ऊपर था और दूसरा लगभग पाँच फीट। लेकिन बचने का कोई और रास्ता नहीं था, इसलिए हम लगभग एक साथ चट्टान पर कूद पड़े। यह लगभग तीस फीट

लंबी रही होगी। बिना रुके, हम ढलान पर दौड़ते हुए ऊपरी सिरे तक पहुँच गए। चट्टान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक दरार थी। इस ढलान में मोटी घास उगी हुई थी।

हम हाँफते-हाँफते चट्टान के ऊपरी सिरे तक पहुँचे और फिर मुड़कर देखने लगे कि हाथी क्या करेगा। क्रोधित हाथी सीधे हमारी ओर बढ़ा, और जैसे ही हम पीछे हटकर उसकी सूंड की पहुँच से बाहर हुए, वह अपनी छाती का निचला हिस्सा पत्थर से सटाकर रुक गया। इसी स्थिति में वह लगातार ज़ोर-ज़ोर से चिंघाड़ता रहा और बारी-बारी से अपनी सूंड से हम पर हवा के झोंके फेंकता रहा। कुछ क्षण बाद हाथी को एहसास हुआ कि हम उसकी पहुँच से बाहर हैं। उसने पास उग रही झाड़ियों को उखाड़ दिया और उन्हें अपनी सूंड के सिरे से पकड़कर हम पर वार करने की कोशिश की। ज़ाहिर है, हम और पीछे हट गए, लेकिन उसे चट्टान के निचले सिरे तक आने का ख्याल नहीं आया। इसके बजाय उसने एक ढीला पत्थर उठाया और उसे हम पर फेंक दिया, जो मेरे दोस्त को बाल-बाल बचा गया।

उस जानवर को दूसरी तरफ से हम तक पहुँचने का विचार आने में दस मिनट लग गए; फिर असल में काम शुरू हुआ। ज़ाहिर है, यह विचार उसे अचानक आया, क्योंकि उसने अचानक चिंघाड़ना बंद कर दिया और अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद आश्चर्यजनक तेज़ी से चट्टान के चारों ओर घूमकर दूसरे छोर पर पहुँच गया। वहाँ उसने चट्टान को केवल तीन फुट ऊँचा पाया। ग्रेनाइट पर अपना एक भारी अगला पैर रखकर उसने सावधानी से उसकी स्थिरता जाँची और अगले कुछ ही सेकंड में वह चट्टान पर चढ़ गया और सीधे हमारी ओर आने लगा।

अब राचेन ने अद्भुत सूझबूझ और सूझबूझ का परिचय दिया। उसने तमिल में पुकारा: 'जल्दी से नीचे कूद जाओ। हाथी उस रास्ते से हमारा पीछा करने की कोशिश नहीं करेगा। वह रास्ता बहुत ढलान वाला है और उसे पैर टूटने का डर रहेगा!'

अपनी बात को अमल में लाते हुए, वह कूद गया, और हम तीनों ने बिना देर किए उसका पीछा किया। तभी मेरा दोस्त भागने लगा, लेकिन मैंने उसे पकड़ लिया और कहा: 'रुको। वह अपने भारी वजन के साथ पांच फीट की ऊंचाई से जमीन पर कूदने की कोशिश नहीं करेगा; लेकिन अगर हम इस चट्टान को छोड़ देंगे तो वह घूमकर खुले में हममें से किसी एक को पकड़ लेगा।'

वह बदमाश चट्टान के किनारे तक पहुँच गया, जहाँ से वह हम सबके ऊपर खड़ा था—यह सचमुच एक अद्भुत दृश्य था! उसने एक बार फिर अपनी सूंड से हम तक

पहुँचने की कोशिश की और फिर छलांग लगाने के इरादे से अपना एक अगला पैर हवा में हिलाया। लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया और गुस्से से चीखते हुए खुद को रोक लिया। हम उसकी पहुँच से दूर खड़े रहे और उसके अगले कदम का इंतज़ार करते रहे।

लगभग एक मिनट बाद वह घूमा और तेज़ी से नीचे की ओर भागा। फिर हिचकिचाते हुए, उसने धीरे से कदम रखा और चट्टान के चारों ओर घूमकर हमें पकड़ने के लिए मुड़ा। इस तरह हम पाँच फीट ऊपर चढ़े और उसके फिर से हमारे नीचे पहुँचने से कुछ ही सेकंड पहले शिखर पर पहुँच गए, ठीक उसी जगह पर जहाँ वह पहली बार पहुँचा था।

क्रोधित बैल दो बार फिर चट्टान के चारों ओर चक्कर लगाकर नीचे से ऊपर चढ़ गया। हम दो बार फिर उन पाँच फुट की दूरी से नीचे कूदे और उसकी पहुँच से ठीक बाहर, आधार पर खड़े हो गए। यह सचमुच एक पकड़म-पकड़ी का खेल था, जिसमें एक पल की भी देरी होने पर, चाहे कूदने में हो या फिर से चढ़ने में, कुचले जाने और टुकड़े-टुकड़े हो जाने से भयानक मौत का खतरा मंडरा रहा था। अगर इस रोमांचक खेल में हम केवल एक या दो ही होते, तो शायद इतना बुरा न होता। लेकिन हम चार थे, इसलिए हम एक-दूसरे के रास्ते में आते रहे, खासकर जब पाँच फुट की चट्टान पर चढ़ने की बात आती थी। एक सेकंड के अंश की भी देरी होने पर दर्दनाक मौत का दंड था, इसलिए हर कोई अपनी जान बचाने में लगा था।

सबसे भयानक बात शायद हाथी की दिल दहला देने वाली चीख थी। उसकी आवाज़ से पूरा वातावरण कांप रहा था और डर के मारे अपनी जगह पर जम जाने से बचने के लिए बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटानी पड़ी। सौभाग्य से, तीसरे प्रयास के बाद, क्रोधित जानवर या तो थक गया या उसे एहसास हो गया कि इस तरह वह हमें पकड़ नहीं सकता। हालांकि, यह एक गलती थी, क्योंकि अगर वह ऐसा करता रहता तो हम थक जाते और देर-सवेर वह हममें से किसी एक को पकड़ ही लेता।

लेकिन वह रुक गया और अब उस चट्टान के चारों ओर घूमने लगा जिस पर हम खड़े थे, बार-बार उसके पास आकर अपनी सूंड से हम तक पहुँचने की कोशिश करता। हर बार जब वह ऐसा करता, हम झुंड बनाकर दूसरी तरफ भाग जाते, जहाँ हम उसके वापस आने का इंतज़ार करते और फिर वापस भाग आते। यह सब चल रहा था और मैं अपनी राइफल न लाने की अपनी घोर लापरवाही पर खुद को कोस रहा

था। सूरज लगभग सिर के ठीक ऊपर था और साफ आसमान से हम पर तेज़ धूप पड़ रही थी। चट्टान से गर्मी की लहरें उठ रही थीं और शांत हवा में झिलमिला रही थीं। मैंने जल्दी से अपनी घड़ी देखी। लगभग दोपहर हो चुकी थी।

आखिरकार हाथी को भी गर्मी और धूप का असर महसूस होने लगा। उसने अपनी ज़ोरदार कसरत रोक दी और कुछ ही गज दूर एक पेड़ की छाँव में खड़ा हो गया। वह वहीं रुका रहा। इस तरह एक घंटा बीत गया। जिस ग्रेनाइट चट्टान पर हम खड़े थे, वह असहनीय रूप से गर्म हो गई। गर्मी मेरे जूतों के रबर के तलवों तक पहुँच गई, जिससे मैं मुश्किल से ही दो पैरों पर खड़ा हो पा रहा था। दो शोलागाओं की हालत तो और भी खराब थी, क्योंकि वे दोनों नंगे पैर थे; गर्मी से उनके नंगे तलवे जलने लगे थे, इसलिए वे चट्टान पर लगभग उछल-कूद कर चल रहे थे।

मुझे एक अजीब सा विचार आया कि उस राक्षस को डराकर भगा दिया जाए। मैंने अपने तीनों साथियों से कहा कि वे पूरी ताकत से चिल्लाना शुरू कर दें, और मैं भी उनके बेमेल चीखों में शामिल हो गया। लेकिन हमारी आवाज़ों से हाथी घबराने के बजाय फिर से हम पर झपट पड़ा, और इस बार वह तीन फुट चौड़े किनारे से सीधे चट्टान पर आ गया। हम सब एक साथ दूसरे किनारे से नीचे कूद गए और उसकी पहुँच से बाहर खड़े हो गए, जबकि वह हमारे ऊपर चट्टान के किनारे पर गुस्से से नाच रहा था। हम चारों जानते थे कि अगर उसने छलांग लगा दी, तो हममें से कम से कम एक तो अगली सुबह का उजाला देख ही नहीं पाएगा। लेकिन गुस्से में होने के बावजूद, हाथी सतर्क था और कूदा नहीं। वह चट्टान पर ही बैठा रहा और चीखता रहा और अपनी सूंड फैलाकर हमारे चेहरों पर हवा फेंकता रहा।

संभवतः कुछ देर बाद पत्थर की गर्मी उसके मजबूत पैरों के मोटे तलवों को भी भेदने लगी थी, क्योंकि वह एक-एक करके, तेजी से अपने पैर ऊपर उठाता रहा। फिर वह मुड़ा और चट्टान के निचले सिरे से नीचे उतर गया। हम चारों एक साथ जलते हुए पत्थर पर फिर से चढ़ गए। इस बार हम चुप रहे और उस क्रूर प्राणी को देखते रहे जो हमें भी देख रहा था।

यह गतिरोध कुछ मिनटों तक जारी रहा, फिर वह बदमाश हाथी अचानक मुड़ा और उसी पहाड़ी से लड़खड़ाते हुए चला गया जहाँ से वह आया था और नज़रों से ओझल हो गया। मैं खुद को बधाई देने लगा कि हम उससे छुटकारा पा चुके हैं, तभी दोनों शोलागा लोगों ने कहा कि उन्हें लगता है कि यह एक चाल थी और हाथी हमें

चट्टान से दूर खींचने की कोशिश कर रहा था। इसलिए इस बात की जाँच करने के लिए, हम चारों नीचे उतरे और लगभग पचास गज दूर चले गए। अचानक लकड़ी के टूटने की तेज़ आवाज़ आई, घृणा की चीख सुनाई दी, और वह बदमाश हाथी बिल्कुल दूसरी दिशा से हम पर हमला करने के लिए दौड़ पड़ा। हम एक बार फिर चट्टान पर चढ़ गए।

हाथी ने हमें आधे घंटे तक रोके रखा। फिर वह दोबारा चलने लगा, इस बार उस धारा की ओर जहाँ बाइसन का झुंड शरण लिए हुए था। ढलान होने के कारण हम उसे कुछ दूरी तक देख सके, जब तक कि उसका काला शरीर अंत में बीच के पेड़ों में छिप नहीं गया। हमें शक था कि वह अपनी पुरानी चाल चल रहा है, इसलिए हम चट्टान से नहीं हटे, बल्कि शोलागाओं से कहा कि वे दो सबसे ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाएँ ताकि अगर वह रास्ता बदलकर दूसरी दिशा से आने की कोशिश करे तो वे उसे देख सकें। उन्होंने ऐसा किया और थोड़ी देर बाद इशारा किया कि रास्ता साफ है।

जब शोलागास हमसे दोबारा मिले, तो राचेन ने बताया कि हाथी को शायद गर्मी लग गई थी और वह पानी पीने और नहाने के लिए नदी की ओर चला गया था। उसके बाद, उसने कहा, वह शायद वापस आकर रात होने तक चट्टान के पास ही रहेगा।

घोर अंधेरे में उस काले राक्षस के साथ लुका-छिपी का वो भयानक खेल खेलने का ख्याल ही मुझे डरा रहा था। उसे ठीक से देख न पाने की वजह से, मुझे पूरा यकीन था कि हममें से कोई न कोई पकड़ा जाएगा। मैंने सुझाव दिया कि उस बदमाश के वापस आने से पहले हम भाग जाएं, और इस योजना को सभी ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया।

मैंने राचेन से अमेरिकी का कैमरा लाने को कहा, जो उसने तुरंत ला दिया। फिर हम चारों चट्टान से नीचे उतरे और गाँव की ओर चल पड़े। दौड़ते हुए हम होनाथेट्टी की ओर बढ़ रहे थे और बार-बार पीछे मुड़कर देख रहे थे कि कहीं कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा। लेकिन हाथी सचमुच पानी पीने गया था, क्योंकि वह कहीं नज़र नहीं आया। दोपहर की भीषण गर्मी में पसीने से तरबतर और हाँफते हुए हम पौने तीन बजे गाँव पहुँचे और एक भयानक मौत से बच निकलने पर बहुत खुश थे।

मैं थका हुआ और गुस्से में था। सबसे बढ़कर, मुझे शर्म आ रही थी। लगभग तीन घंटे से मैं और मेरे साथी चूहे-बिल्ली का खेल खेल रहे थे, जिसमें हम ही चूहे बने हुए थे। अब जब मेरी राइफल मेरे हाथों में थी, तो थकावट के बावजूद मैंने ठान लिया कि

मैं शोलागाओं के साथ तुरंत वापस जाऊँगा और काले हाथी को फिर से ढूँढ़कर खेल जारी रखूँगा, लेकिन इस बार स्थिति उलट जाएगी। मैं बहुत जल्द इस घमंडी हाथी को दिखा दूँगा कि अब वही चूहा बनने वाला है।

मेरे अमेरिकी दोस्त हमारे साथ वापस आना चाहते थे और अगर हो सके तो हाथी की इस परेशानी की तस्वीरें लेना चाहते थे। लेकिन उनकी मौजूदगी एक अनावश्यक ज़िम्मेदारी होती, साथ ही इससे मेरी आवाजाही में भी बाधा आती। मैंने बड़े ही विनम्रता से, लेकिन दृढ़ता से उन्हें याद दिलाया कि वे फोटोग्राफर हैं, शिकारी नहीं। एक अच्छे खिलाड़ी होने के नाते, वे समझ गए और उन्हें बुरा नहीं लगा, हालांकि उनके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी।

तेज़ चलते हुए, और कभी-कभी दौड़ते हुए, राचेन, दूसरा शोलागा और मैं चट्टान की ओर बढ़े। इस बार हम उस जगह को घेरने वाले पार्क जैसे जंगल के इलाके से होते हुए साहसपूर्वक आगे बढ़े और एक घंटे के भीतर वहाँ पहुँच गए। वहाँ कोई हाथी नज़र नहीं आया। अभी चार बजे थे और हमारे पास हाथी को खोजने के लिए दिन के उजाले में दो घंटे से थोड़ा अधिक समय था, जो कहना आसान है, करना मुश्किल, क्योंकि उसके सामने पूरा जंगल फैला हुआ था। लेकिन मुझे याद आया कि मेरे साथ दो शोलागा थे। ये आदिवासी, जो पीढ़ियों से जंगलों में रहते आए हैं, दुनिया भर में सबसे कुशल ट्रैकर्स में से हैं, इसलिए हमारे लक्ष्य तक पहुँचने की अच्छी संभावना थी।

हम उस दिशा में बढ़े जिधर वह विशालकाय जानवर गायब हो गया था। जंगल सूखा था, और वह चर नहीं रहा था बल्कि सीधे नदी की ओर जा रहा था, इसलिए अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद, घनी झाड़ियों और लंबी घास से उसका गुजरना किसी अनाड़ी की नज़र में स्पष्ट नहीं होता। लेकिन राचेन और उसके साथी को उसे ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। यह देखना दिलचस्प था कि कैसे उनकी पारखी नज़र ने घास के हर उस तने को पहचान लिया जो गुजरते हुए जानवर के कारण मुड़ गया था या टूट गया था, और हर उस पत्ते या टहनी को जो उन विशाल पैरों के नीचे कुचल गई थी।

इस निशान का पीछा करते हुए, हमें उस जगह तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा जहाँ काला हाथी नदी तक पहुँचा था। वहाँ सरकंडे जैसी लंबी घास उगी हुई थी और हम साफ़ देख सकते थे कि वह कैसे उसमें से रास्ता बनाते हुए पानी के किनारे तक पहुँचा था। राचेन घुटनों से थोड़ा ऊपर तक पानी में उतर गया और जिस जगह

हाथी ने पानी पिया था, वहाँ से मुड़कर वह कुचले हुए सरकंडों और जलीय पौधों से बने निशानों पर नदी के विपरीत दिशा में चलने लगा, जबकि मैं और दूसरा शोलागा नदी के किनारे उसके समानांतर चलते रहे।

किसी कारणवश हाथी नदी पार नहीं कर पाया, बल्कि लगभग सौ गज पानी में चलने के बाद वापस उसी किनारे पर आ गया जहाँ हम खड़े थे। जाहिर है उसने जी भरकर पानी पी लिया था, क्योंकि उसके थाली जैसे पदचिह्न, जो नदी के किनारे पर छपे हुए थे और अभी भी कीचड़ भरे पानी से धुंधले थे, थोड़ी दूरी के बाद छोटी नदी को छोड़कर वापस जंगल की ओर चले गए थे।

हम इस निशान का बारीकी से पीछा करते रहे, यह जानते हुए कि वह हाथी अब चर रहा होगा और अगर वह बहुत दूर अंदरूनी इलाके में नहीं चला गया है तो हम उसे जल्द ही सुन सकेंगे। गर्मी बहुत थी और हो सकता है वह दोबारा पानी पीने के लिए भी जाए। लेकिन ऐसा थोड़ा बाद में, सूर्यास्त के समय होगा, जब हाथी आमतौर पर पानी पीते हैं। हमारे पास एक घंटे से अधिक का समय था और हम उम्मीद कर सकते थे कि हमारा शिकार नदी से काफी दूर, अंदरूनी इलाके में चर रहा होगा।

जैसा हमने अनुमान लगाया था, रास्ता जंगल में मुड़ गया। हाथी को कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि वह बीच-बीच में छायादार पेड़ों के नीचे रुकता था और जाहिर तौर पर धूप से बचने के लिए आराम कर रहा था।

लगभग एक मील का रास्ता इसी तरह तय करने के बाद, हमें पहली बार एक शाखा के टूटने की स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी। शाखा पर छाल की मोटी परत थी, क्योंकि टूटने की आवाज़ के बाद एक झनझनाहट की आवाज़ आई, जैसे हाथी पेड़ से लकड़ी को फाड़ रहा हो, और जब शाखा आसानी से नहीं टूटी तो वह छाल को खींचकर अलग कर रहा था। आवाज़ की तीव्रता और उसकी दिशा से, हमारा शिकार आसानी से दो फर्लांग दूर था।

अगर आप कभी किसी जंगली हाथी के पास जाना चाहें, तो सबसे ज़रूरी है हवा की दिशा का पता लगाना। ऐसा करने के बाद, आपको इस तरह से खड़ा होना चाहिए कि हवा हाथी से आपकी ओर बहे। अगर आप ऐसा नहीं करते और हवा की विपरीत दिशा में या आंशिक रूप से विपरीत दिशा में जाते हैं, तो हाथी की सूंघने की तीव्र शक्ति उसे आपके आने का पता लगा लेगी। तब दो में से एक बात होगी। एक सामान्य हाथी, और अक्सर दुष्ट हाथी भी, जब उसकी सहज प्रवृत्ति उसे चेतावनी देती

है कि आप कोई साधारण राहगीर नहीं बल्कि दुश्मन हैं, तो वह चुपचाप वहाँ से गायब हो जाएगा, और जब आप उस जगह पहुँचेंगे जहाँ वह खड़ा था, तो आपको कुछ नहीं मिलेगा। या फिर, हाथी किसी चट्टान, पेड़ या बांस के झुंड के पीछे चुपचाप घात लगाकर आप पर हमला कर सकता है, जब तक आप उसके बहुत करीब न आ जाएँ, तब तक वह चीखता हुआ आप पर झपटेगा और अपने रास्ते में आने वाली हर बाधा को कुचल देगा। यह दुष्ट हाथियों की पसंदीदा आदत है, खासकर उस हाथी की जिसने पहले ही कई लोगों को मार डाला हो और उस सबसे घृणित दो पैरों वाले प्राणी, मनुष्य की पूरी तरह से लाचारी को समझ लिया हो!

मैंने ज़मीन से मुट्ठी भर घास तोड़ी, उसे हाथ में ऊपर उठाया और फिर धीरे-धीरे टूटी हुई पत्तियों और तनों को छोड़ दिया, जिससे वे एक-एक करके ज़मीन पर गिर गईं। वे सभी दाएं से बाएं की ओर बहने लगीं। इसका मतलब था कि हवा दाईं ओर से बह रही थी और मैं बीच में था, न तो हवा के विपरीत दिशा में और न ही हवा के विपरीत दिशा में, क्योंकि मेरा शिकार सीधे हमारे आगे था। यह काफी नहीं था, इसलिए हम सब बाईं ओर मुड़े और एक कतार में, जितना हो सके चुपचाप, बीच में आने वाली झाड़ियों और पेड़ों के तनों के चारों ओर से आगे बढ़े। इस तरह हम दो फर्लांग से अधिक दूरी तय कर चुके थे कि तभी हमें आधी दाईं ओर से एक और चटकने की आवाज़ सुनाई दी। इस बार आवाज़ धीमी थी।

मैंने एक बार फिर हवा की दिशा जाँची, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसने अपना रास्ता नहीं बदला है। फिर हम सब आगे की ओर मुड़े और चुपके से एक कतार में, उस दिशा से नब्बे डिग्री के कोण पर आगे बढ़े, जिस दिशा में हम अभी-अभी चल रहे थे। इस तरह हम लगभग 200 गज की दूरी तय कर चुके थे कि हाथी ने तीसरी शाखा तोड़ दी। इस बार आवाज़ ठीक दाईं ओर से आई। हम काफ़ी चक्कर लगा चुके थे और अब सीधे हवा की दिशा में थे। जब तक वह खुद किसी दूसरी जगह न चला जाए, तब तक उसे हमारी गंध नहीं मिल सकती थी। अब हमें बस यह सुनिश्चित करना था कि उसके पास जाते समय हम कोई शोर न करें, और फिर वह मेरी दया पर होगा।

हम एक कतार में आगे बढ़े, राचेन सबसे आगे, मैं बीच में और हनाथेट्टी का शोलागा मेरे पीछे। आखिरी आवाज के आधार पर, हाथी कम से कम एक चौथाई मील या उससे अधिक दूर था। हमने वह दूरी धीरे-धीरे तय की, लेकिन आगे कोई आवाज नहीं सुनाई दी। शायद उस शरारती हाथी ने पहले ही काफी शाखाएँ तोड़ ली थीं

जिससे उसे हरे पत्तों का स्वादिष्ट भोजन मिल गया था और वह उन्हें खाने में व्यस्त था।

कुछ कदम आगे बढ़ने पर ज़मीन एक छोटी घाटी में उतर जाती थी, जो दो छोटी पहाड़ियों से बनी थी। हाथी स्पष्ट रूप से घाटी में था। लेकिन ऐसी जगहें हाथी जैसे तीव्र सूंघने की क्षमता वाले जानवर का पीछा करने के लिए अनुकूल नहीं होतीं, क्योंकि दोनों ओर की पहाड़ियाँ अक्सर हवा को रोक देती हैं, जिससे शांत हवा में मनुष्य की गंध, विशेषकर जब तीन मनुष्य एक साथ हों, हाथी तक पहुँच जाती है। ठीक यही हुआ, हाथी को हमारी आहट मिल गई। सहज रूप से उसे पता चल गया कि उसका दुश्मन पास आ रहा है और वह चुपके से खिसक गया।

जब हम उस जगह पहुँचे जहाँ वह चर रहा था, तो हमें टूटी हुई डालियाँ और उसका ताजा गोबर मिला, लेकिन हाथी का कोई निशान नहीं था। अब दोनों शोलागा एक साथ मिलकर उसके पदचिह्नों का पीछा करने लगे, और मैं उनके पीछे-पीछे सुरक्षा के लिए चल रहा था। यह आसान काम था। हाथी छोटी सी घाटी से होते हुए आगे बढ़ा जो जल्द ही एक बड़े नाले के सूखे तल में जाकर खत्म हो गई। उसके बड़े-बड़े पदचिह्न, जो सूखी मिट्टी में साफ दिखाई दे रहे थे, यह दर्शाते थे कि वह नाले की ओर मुड़ गया था, जो स्पष्ट रूप से उस धारा की ओर जाता था जहाँ से हम अभी-अभी आए थे, और जो अब एक मील से भी अधिक दूर थी। हम जानते थे कि अगर वह धारा तक पहुँच गया तो वह उसे पार करके शायद दूसरी तरफ भाग जाएगा। शाम हो चुकी थी और दिन का उजाला मुश्किल से एक घंटा ही बचा था। हमारे पास एकमात्र रास्ता यही बचा था कि हम सावधानी को दरकिनार करके उसका पीछा करें और बहुत देर होने से पहले उस पर गोली चला दें। इसलिए हम नाले की ओर दौड़ने लगे।

निस्संदेह, हमारी आवाज़ सुनकर और पूरी तरह से घबराकर उस दुष्ट हाथी ने भी अपनी गति बढ़ा दी। लगभग आधा मील चलने के बाद मैं बुरी तरह थक गया था, हालाँकि मेरे साथ मौजूद दोनों जंगली लोगों पर थकान का कोई निशान नहीं दिख रहा था। नाला मुड़ा और फिर सीधा हो गया। मुझसे काफी आगे, पूरी ताकत से लड़खड़ाता हुआ, मैं उस काले दुष्ट हाथी को—या यूँ कहें कि उसके पिछले हिस्से को—नदी की ओर जाते हुए देख सका। मैं गोली नहीं चलाना चाहता था, क्योंकि मैं ज़्यादा से ज़्यादा उसे पीछे से घायल कर सकता था, और मुझे किसी भी जानवर को, यहाँ तक कि एक दुष्ट हाथी को भी, जानबूझकर घायल करना पसंद नहीं है। इसलिए,

हाँफते-हाँफते और बुरी तरह साँस फूलते हुए, मैं जितना हो सका, उसके पीछे भागा।

अगले मोड़ पर हाथी गायब हो गया। कुछ देर बाद हम उसी मोड़ पर पहुँचे, उसे पार किया और कुछ सौ गज आगे नदी दिखाई दी। लेकिन नदी से ठीक पहले हाथी था, या यूँ कहें कि उसका आधा हिस्सा, क्योंकि उसकी पीठ अभी भी हमारी ओर थी, जबकि उसका शरीर बिना किसी प्रगति के इधर-उधर मुड़ता-घुमड़ता रहा।

हम सब अचंभित हो गए और सोचने लगे कि आखिर उसे क्या रोक रहा है, इसलिए हमने अपनी रफ्तार बढ़ा दी, या यूं कहें कि मेरे साथियों ने। मेरी बात करें तो, मैं तो इतनी तेजी से दौड़ ही नहीं पाता, चाहे हाथी मेरे पीछे ही क्यों न होता! खैर, आखिरकार मैं उनके बराबर पहुँच गया और देखा कि हाथी एक दलदल में बुरी तरह फँस गया था जो उसके पेट तक पहुँच गया था। इसका कारण सीधा-सा था। नाले और नदी के मिलने की जगह दलदल बन गई थी, क्योंकि नाले की नरम रेत नदी के पानी से पूरी तरह भीग गई थी। डर के मारे भागता हुआ हाथी सीधे उसी दलदल में गिर गया था।

दक्षिण भारत में दलदली भूमि, अपने सही अर्थों में, शायद ही कहीं पाई जाती है, हालांकि कुछ स्थानों पर ऐसी ही स्थितियाँ देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए, सलेम जिले के अंचेटी गाँव के ऊपर, सीक्रेट नदी के ऊपरी इलाकों में एक ऐसी जगह है जहाँ नदी के लगभग सूख जाने पर उसे पार करना बेहद खतरनाक होता है। मुझे इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है, क्योंकि एक बार मैंने नदी पार करने की कोशिश की थी और अचानक खुद को कमर तक कीचड़ में डूबा हुआ पाया था। दो वन रक्षकों की मदद के बिना, मुझे लगता है कि मैं अनिश्चित काल तक वहीं फंसा रहता या शायद डूब ही जाता। मुझे आज भी अच्छी तरह याद है कि मैंने अपनी पूरी ताकत से संघर्ष किया, लेकिन अपने पैरों को उस चिपचिपे कीचड़ से एक इंच भी बाहर नहीं निकाल पाया।

हमारे सामने बुरी तरह छटपटा रहे हाथी के लिए हालात बेहद बदतर थे। उसका विशाल शरीर और वज़न, साथ ही उसकी बेताब कोशिशें, हर पल हालात को और भी बदतर बना रही थीं। धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, वह हमारी आँखों के सामने कीचड़ में धंसता जा रहा था। अपनी सूंड से वह अपने सामने कीचड़ को दाएं-बाएं पटक रहा था, मानो खुद को बाहर निकालने का कोई रास्ता ढूंढ रहा हो। वह दहशत से चीख रहा था, उसकी छोटी-छोटी आँखें डर से चौड़ी हो गई थीं, क्योंकि उसकी अंतरात्मा उसे

बता रही थी कि उसका अंत निश्चित है। और हर पल, इंच-इंच करके, वह और नीचे धंसता जा रहा था, जबकि उसकी चीखें, जो पहले डर से भरी थीं, अब दया और गुहार में बदल गई थीं।

हालांकि वह एक हत्यारा था, उसकी दयनीय हालत देखकर हम तीनों को गहरा दुख हुआ। मानो कल की ही बात हो, मुझे याद है जब मैं उस दिन सीक्रेट नदी की गीली रेत में धंस गया था। उस भयानक हालत में, जब वह अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहा था, उसे गोली मारना एक कायर और हत्यारे का काम लग रहा था। मेरे मन में उसे बचाने की एक अजीब और प्रबल इच्छा जाग उठी।

लेकिन हम कुछ नहीं कर सकते थे। आखिर वह एक जंगली हाथी था और उसकी सूंड के पास आना ही उसकी निश्चित मृत्यु थी। देखते-देखते यह दृश्य और भी भयावह होता जा रहा था। बेचारा जानवर अब सचमुच गीली रेत में गर्दन तक डूबा हुआ था और उसकी पीठ लगभग रेत की सतह के बराबर थी। दृश्य को और भी भयावह बनाने के लिए, अंधेरा तेजी से छा रहा था। बेचारे जानवर के लिए बचना नामुमकिन था। या तो वह जल्द ही रेत में डूबकर दम घुटकर मर जाता, जो वास्तव में कम बुरी नियति थी, या अगर आखिरी क्षण में उसके पैर जमीन पर पड़ भी जाते, तो वह भूख से मरते-मरते बचता। मैं उसे बचा नहीं सकता था, लेकिन मैं उसके कष्टों का अंत जरूर कर सकता था। और मुझे यह तुरंत करना होगा, क्योंकि जल्द ही इतना अंधेरा हो जाएगा कि कुछ दिखाई नहीं देगा।

एक ऐसा घातक निशाना होता है, जिसे सही ढंग से लगाने पर विशालकाय हाथी भी अपनी जगह पर ही गिर जाता है, हालांकि ऐसा निशाना लगाना बहुत मुश्किल होता है: कान के पीछे का निशाना, जहां गोली माथे की मोटी हड्डियों से सुरक्षित न रहते हुए सीधे मस्तिष्क में प्रवेश करती है। घुटने टेककर, मैंने बाएं कान के पीछे सावधानीपूर्वक निशाना साधा, उसके हिलना बंद होने का इंतजार किया, अपनी सांस रोकी और धीरे से ट्रिगर दबा दिया।

धमाके की आवाज़ अभी पूरी तरह शांत भी नहीं हुई थी कि हाथी बुखार से पीड़ित की तरह कांप उठा। उसकी सूंड बेजान सी होकर कीचड़ पर गिरी, हालांकि उसका सिरा अभी भी किसी विशालकाय इल्ली की तरह पत्ती को टटोलते हुए सवालिया निगाहों से कुछ खोज रहा था। मैं कुछ कदम दाहिनी ओर भागा, फिर से घुटनों के बल बैठा और दोबारा गोली चलाई, इस बार दाहिने कान के पीछे।

हम तीनों ने राहत की सांस ली। कम से कम बेचारे जानवर को अब और कष्ट नहीं सहना पड़ा। वह मर चुका था।

हम उस भयानक जगह से निकल आए और अंधेरे में टटोलते हुए वापस होनाथेट्टी पहुंचे। लेकिन शोलागा जनजाति के लोग, जिनका वह गांव था, उन्होंने हमें सही-सही रास्ता दिखाया। आखिरकार हम वापस आ गए और मैंने अपने अमेरिकी दोस्त को अपने उस भयानक अनुभव के बारे में बताया। लेकिन उसने खुद न देखा था, इसलिए उसने कहा कि काश वह वहां होता और तस्वीरें ले पाता, और वह अगली सुबह उस जगह पर जाकर देखना चाहेगा कि क्या कोई तस्वीर ली जा सकती है।

यह जानने की उत्सुकता से भरा हुआ कि क्या उन दुष्ट रेत ने आखिरकार अपना शिकार बना लिया है या नहीं, मैं अगले दिन उसके साथ चला गया। हम उस जगह पर पहुँचे, लेकिन हमें केवल शांत, बिना हिले-डुले गीली रेत की सतह दिखाई दी, जो सुबह की पहली किरण में मासूमियत से चमक रही थी। हाथी पूरी तरह गायब हो चुका था, और भीगी हुई रेत अपने गहरे रहस्य को छिपाए बैठी थी।

पाँच

जंगल के दिन और रात

इन एकांत स्थानों में, जहाँ मुख्यधारा से हटकर जीवन व्यतीत होता है, कई वर्षों के दौरान अनेक छोटी-छोटी घटनाएँ घटित हुई हैं। ये घटनाएँ अपने आप में कोई रोमांच तो नहीं हैं, लेकिन स्मृतियों के लंबे सफर में मील के पत्थर अवश्य हैं, जो अक्सर मेरे शांत क्षणों में मुझे याद आ जाती हैं। मैं उनमें से कुछ का वर्णन करना चाहूँगा, जिनमें

से कुछ दुखद हैं, कुछ हास्यपूर्ण हैं, और एक घटना तो ऐसी भी है जिसमें मैंने अत्यंत शर्मनाक व्यवहार किया था।

यह घटना कई साल पहले घटी थी, लेकिन उस घटना की याद आज भी मुझे सताती है और मैं उसे भुला नहीं पा रहा हूँ। कहते हैं कि पापों का पश्चाताप करने से अंतरात्मा को शांति मिलती है। इसलिए मैं अब यही करने जा रहा हूँ।

लेकिन हर बुरे काम करने वाले को अपना बचाव करने की अनुमति दी जानी चाहिए, और मेरा बचाव एक प्रस्तावना में निहित है, एक घटना जो पहले घटी थी, जिसका परिणाम मेरी स्मृति में बहुत मजबूती से बसा हुआ था और दूसरी घटना घटने पर इसने मुझे बहुत प्रभावित किया।

यह पहली घटना लगभग पच्चीस साल पहले घटी थी। मेरे दोस्त देवा सुंदरम और मैं अपनी फोर्ड कार में बैंगलोर से लगभग अट्ठाईस मील दक्षिण में स्थित गुम्मलापुर नामक स्थान पर पैंथर के बारे में खबर लेने गए थे। खबर शब्द से घबराइए मत; यह हिंदुस्तानी भाषा में समाचार या जानकारी के लिए इस्तेमाल होने वाला एक साधारण शब्द है।

गुम्मलापुर मद्रास राज्य के सलेम जिले में स्थित है और मैसूर राज्य की सीमा से लगभग तीन मील दूर है। गुम्मलापुर से दो मील पश्चिम में कई ऊबड़-खाबड़, खंडित पहाड़ियाँ हैं, जिनकी निचली ढलानें घनी झाड़ियों से ढकी हैं और ऊपरी भाग में ग्रेनाइट के बड़े-बड़े पत्थर और छोटी-छोटी गुफाएँ हैं। इन पहाड़ियों के बीच से एक संकरी धारा बहती है जिसका नाम थोड़ा कठिन है: मुथियालम्मा होले। इसमें केवल बरसाती मौसम में ही पानी रहता है, कहीं-कहीं यह पथरीली है, तो कहीं-कहीं यह अद्भुत रूप से मुलायम रेत से भरी है। दोनों किनारों पर जंगल घना हो जाता है और पेड़ ऊँचे और हरे-भरे होते हैं।

मेरे पिता के बचपन के दिनों में, और यहाँ तक कि जब मैं बहुत छोटा था, इस जंगल में बाघ, हाथी, बाइसन और तेंदुआ रहते थे, साथ ही इस क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी सामान्य जंगली जानवर भी थे। लेकिन उसके बाद बाघ और बाइसन गायब हो गए, जिन्हें पास के बैंगलोर से आने वाले कई शिकारियों ने मार गिराया। सरकार द्वारा संरक्षित हाथी अभी भी हैं, लेकिन उनकी संख्या कम हो गई है, और वे केवल मानसून के महीनों में ही दिखाई देते हैं जब वे कावेरी नदी से उत्तर की ओर प्रस्थान करते हैं। तेंदुआ कई कारणों से अभी भी मौजूद हैं। पहला, वे जहाँ भी पहाड़ियाँ हैं, वहाँ आम

हैं। दूसरा, गुम्मलपुर से जंगल में चरने के लिए लाए गए घरेलू मवेशियों के कई झुंडों में उनके लिए भरपूर भोजन उपलब्ध है। तीसरा, लोग तेंदुओं का शिकार करने में उतने उत्सुक नहीं हैं जितने कि वे बड़े जंगली जानवरों का शिकार करने में होते हैं।

देवा सुंदरम और मैं वहां स्थानीय चरवाहों से यह जानने के लिए गए थे कि क्या हाल ही में उनके कई जानवर पैंथरों के हमले में मारे गए हैं, और हम उस रात के खाने के लिए कुछ शिकार, या जंगली भेड़ या सूअर ढूंढने की उम्मीद में झाड़ीदार जंगल में सुबह की सैर के लिए भी आए थे।

मुझे अब याद नहीं कि चरवाहों से हमें क्या जानकारी मिली थी, लेकिन हमने नदी पार की और झाड़ियों के बीच से एक ढलान पर चढ़ना शुरू किया जो हमें जल्द ही एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर ले आया। इस ऊँचाई से हमने नीचे फैले जंगल को देखा और ऊपर की पहाड़ियों की पेड़ों से ढकी ढलानों का जायजा लिया।

फिर हमने कुछ देखा, शायद करीब एक मील दूर और मैसूर राज्य की सीमा से सटे जंगल के पास। गिद्ध आसमान में चक्कर लगा रहे थे, बहुत सारे। बीच-बीच में कोई एक नीचे उतरता, अपने पंख फैलाकर पहाड़ियों की गोद में बसी एक छोटी सी घाटी में गायब हो जाता। हवा के उन फैले हुए पंखों से टकराने की तेज़, खड़खड़ाहट की आवाज़ इतनी दूर थी कि सुनाई नहीं दे रही थी। इसका केवल एक ही कारण हो सकता था। घाटी में कोई मृत वस्तु पड़ी थी। गिद्धों ने उसे ढूंढ लिया था और दावत के लिए जल्दी से वहाँ पहुँच रहे थे।

क्या यह किसी पैंथर का शिकार हो सकता है? शायद उन कई मवेशियों में से एक, जिन्हें झाड़ियों में चराने के लिए ले जाया गया था, और जिनके मालिक को अभी तक उनकी कमी महसूस नहीं हुई थी।

देव और मैं एकमत होकर उस जगह की ओर चल पड़े। उसे ढूँढना मुश्किल नहीं था। ज़मीन पर आपस में जूझते और धक्का-मुक्की करते गिद्धों का झुंड फुफकारता और कभी-कभी चीखता हुआ हमें सीधे शव तक ले गया। लेकिन हमारे लिए एक बहुत बड़ा आश्चर्य इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि वे विशाल पक्षी भारी-भारी पंख फड़फड़ाते हुए बड़ी मुश्किल से हवा में उड़ने लगे। बेशक, वहाँ एक शव पड़ा था, लेकिन वह किसी बैल या गाय का शव नहीं था जिसे किसी तेंदुआ ने मार डाला हो। वह एक मानव शव था, और जैसे ही हम पास पहुँचे, हमने देखा कि वह एक महिला का शव था।

ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी हत्या कर दी गई थी और फिर उसके हाथों और पैरों को बांस के खंभे से बांध दिया गया था। रस्सी के पारंपरिक तरीके के बजाय जंगली लताओं का इस्तेमाल किया गया था। फिर उसे जंगल में, एक बड़े चंदन के पेड़ के तने के पास फेंक दिया गया था। गिद्धों ने जाहिर तौर पर कुछ समय तक उसका मांस नोच डाला था, क्योंकि उन्होंने शरीर से मांस के टुकड़े नोच डाले थे। आंखें निकाल ली गई थीं, नाक गायब थी, और गालों और गले की त्वचा में छेद कर दिए गए थे, जिससे नीचे की हड्डियां दिखाई दे रही थीं। लेकिन खोपड़ी का अधिकांश भाग बचा हुआ था, जिस पर लंबे काले बाल अभी भी चिपके हुए थे।

शव नग्न अवस्था में था, पक्षियों ने पतली साड़ी और जैकेट को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। आंतें बाहर निकाल कर खा ली गई थीं, जिससे पेट में एक गहरा गड्ढा दिखाई दे रहा था, और बांहों, जांघों और टांगों का भी काफी मांस खा लिया गया था, जिससे केवल सफेद हड्डियां ही दिखाई दे रही थीं। अगर हम एक घंटा या उससे थोड़ा ज़्यादा देर से आते, तो हमें हड्डियों के सिवा कुछ नहीं मिलता। गिद्ध उन्हें भी खा जाते।

देव और मैं शव पर झुककर यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि महिला की मृत्यु कैसे हुई। लेकिन कुछ ही मिनटों में हमने यह प्रयास छोड़ दिया। गिद्ध बहुत देर से अपना काम कर रहे थे और उन्होंने हत्या के तरीके के सभी सुरागों को लगभग पूरी तरह नष्ट कर दिया था; यानी, अगर हत्यारे या हत्यारों ने कोई सुराग छोड़ा भी हो तो।

लेकिन एक बात तो निश्चित थी। लूटपाट मकसद नहीं था। भारी चांदी की पायलें अभी भी टखनों की हड्डियों में थीं, जहाँ से मांस गल चुका था; सोने की प्रतीत होने वाली एक अंगूठी अभी भी दाहिने हाथ की एक उंगली में थी; और कानों में कीमती बालियाँ थीं। शायद उसने नाक में भी कोई आभूषण पहना था। लेकिन वह अब गायब था—नाक के साथ! उसके दोनों हाथों में कोहनियों तक कई रंग-बिरंगी और सुंदर डिज़ाइन की कांच की चूड़ियाँ थीं।

शांत वातावरण में सड़न और दुर्गंध का घनापन छाया हुआ था और देव, जो मूल रूप से एक दफ्तर में काम करने वाला व्यक्ति था और ऐसी गंधों का आदी नहीं था, उल्टी करने की कगार पर था। उसने अपने नाक और मुंह पर रुमाल रखा और पीछे हट गया।

हमारी सरसरी जाँच का कोई फायदा नहीं हुआ। ज़ाहिर है, उस बदकिस्मत औरत की हत्या करने के बाद, अपराधियों ने लाश को रात में इस सुनसान जगह पर लाया था, बजाय इसके कि वे कब्र खोदने और उसे दफनाने की परेशानी और खतरे का सामना करें। वे अच्छी तरह जानते थे कि सुबह होते ही गिद्ध अपराध के सारे सबूत मिटा देंगे। अगर एक-दो हड्डियाँ भी बच गईं, तो सियार और अगली रात उस रास्ते से गुज़रने वाला कोई भी लकड़बग्घा उन्हें भी खा जाएगा। सब कुछ योजना के मुताबिक ही हुआ था, सिवाय उस सबसे दुर्भाग्यपूर्ण और अप्रत्याशित घटना के कि उस दिन, देव और मैंने जंगल में घूमने का फैसला किया था।

अब हम क्या करते? ज़ाहिर है, जनहितैषी होने के नाते, हमने पुलिस को सूचना दी। यही सोचकर हम गुम्मलापुर वापस जाने के लिए निकल पड़े। पहली पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर मैंने घाटी का पता याद कर लिया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे दोबारा ढूँढ़ सकूँ। यह करने के बाद हम तेज़ी से आगे बढ़े। गाँव पहुँचते ही पता चला कि वहाँ का इकलौता पुलिसकर्मी बीमार पड़ गया था और उसे होसुर कस्बे के अस्पताल ले जाया गया था।

जैसा कि मैंने आपको बताया, यह इलाका मद्रास राज्य के सलेम जिले में पड़ता था। होसुर शहर इसका तत्काल मुख्यालय था, लेकिन यह हमारे रास्ते से काफी दूर था। देव और मुझे उसी दोपहर अपने-अपने काम पर वापस जाना था। इसलिए हमने गुम्मलापुर गांव के पटेल या मुखिया को अपनी खोज और उसके स्थान के बारे में सूचित करने का फैसला किया, फिर बैंगलोर लौटकर होसुर पुलिस स्टेशन को डाक से एक लिखित रिपोर्ट भेजने का निर्णय लिया। चूंकि बैंगलोर स्वयं मैसूर राज्य में है, इसलिए बैंगलोर पुलिस को भेजी गई ऐसी रिपोर्ट मद्रास पुलिस को भेजने के निर्देश के साथ वापस कर दी जाएगी।

तो हमने पटेल को बताया और अगली सुबह बैंगलोर से एक रिपोर्ट भेजी। दो दिन बाद असल में घटनाएँ घटने लगीं। मेरे घर पर एक पुलिस वैन आई जिसमें तीन अलग-अलग तरह के पुलिसकर्मी थे, सभी ने अलग-अलग वर्दी पहनी हुई थी। मद्रास राज्य के होसुर के पुलिसकर्मी थे, जिन्होंने ऊँची लाल पगड़ी पहनी हुई थी। बैंगलोर छावनी के पुलिसकर्मी थे, जो उस समय ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में एक ब्रिटिश-प्रशासित क्षेत्र था, उन्होंने नीली और सफेद पगड़ी पहनी हुई थी। और मैसूर राज्य के पुलिसकर्मी थे जिन्होंने नीली पगड़ी पहनी हुई थी जिस पर लाल और पीले रंग की

पट्टियाँ लगी हुई थीं।

फिर सवालों की झड़ी लग गई। क्या मैं मिस्टर एंडरसन था? मेरा पूरा नाम, पेशा और आमदनी क्या थी? मिस्टर देवा सुंदरम कहाँ थे? उनका पूरा नाम, पेशा और आमदनी क्या थी? हम गुम्मलापुर क्यों गए थे? हमें मृत महिला कैसे मिली? क्या वह कोई करीबी दोस्त थी या महज़ एक आम जान-पहचान वाली? हमें उस खास जगह पर क्यों जाना चाहिए था? जब हमने उसे पाया तो क्या वह जीवित थी? क्या वह मर चुकी थी? उसकी मौत कैसे हुई? क्या मुझे यकीन था कि हममें से कोई उसे पहले नहीं जानता था? उसका नाम क्या था? वह कहाँ से आई थी? क्या वह एक युवती थी? अब एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल आया जिसका जवाब मुझे बहुत सावधानी से देना था; क्या उसे गोली के घाव थे? हमने गुम्मलापुर के पुलिसवाले को मामले की सूचना क्यों नहीं दी? हम तुरंत होसुर जाकर मामले की सूचना देने में अपनी ड्यूटी निभाने में क्यों नाकाम रहे? हम उस दिन और पिछले दिन कहाँ थे? क्या हम अक्सर गुम्मलापुर जाते थे?

सवालों की बौछार को रोकने में मुझे कुछ समय लगा। मैंने बताया कि देव और मैंने अपने संयुक्त बयान में सभी प्रासंगिक तथ्यों को स्पष्ट रूप से लिख दिया था। मैंने उन तथ्यों को फिर से दोहराया।

सवाल-जवाब का सिलसिला जारी रहा। हमें कैसे पता चला कि वह महिला सचमुच मर चुकी है? क्या वह शायद जीवित नहीं थी; शायद बेहोश थी? क्या हमने प्राथमिक उपचार देने की कोशिश की थी? हत्यारे (हमारे हिसाब से, और अगर ऐसा कोई था भी) शव को खंभे से बांधकर जंगल में इतनी दूर तक क्यों ले गए? क्या उसे दफनाना ज़्यादा आसान नहीं होता?

मुझे गुस्सा आने लगा। मैंने स्पष्ट किया कि मैं कोई जासूस नहीं हूँ और मैंने एक जनहितैषी नागरिक के रूप में अपनी रिपोर्ट दर्ज कराई है। मैंने उनसे कहा कि हमारे लिए चुप रहना बहुत आसान होता। लेकिन सब व्यर्थ था। फिर एक आदेश आया, जो अनुरोध के रूप में छिपा हुआ था। क्या मैं कृपया उन्हें देवा सुंदरम के घर ले चलूँ, जिसके बाद हम दोनों को होसुर पुलिस स्टेशन जाना होगा।

अब मुझे सचमुच गुस्सा आ गया। मैंने तीनों पुलिसवालों से कहा कि मैं उन्हें देवा सुंदरम के घर तक जरूर ले जाऊँगा, लेकिन उसके बाद मैं होसुर नहीं जाऊँगा जब तक वे मुझे गिरफ्तार न कर लें, जिसके लिए उन्हें वारंट की आवश्यकता होगी।

हमने फिलहाल समझौता करते हुए देव के घर जाने का फैसला किया, जहाँ सब कुछ फिर से शुरू हो गया। पूछताछ के दौरान हमें अचानक, और बड़े आश्चर्य के साथ पता चला कि होसुर पुलिस अभी तक शव की तलाश में घटनास्थल पर नहीं गई थी। हमने उन्हें तुरंत ऐसा करने का सुझाव दिया और उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए।

तीनों प्रकार के कानून प्रतिनिधियों के बीच इस बात को लेकर काफी झिझक और विचार-विमर्श हुआ कि हम दोनों के साथ क्या किया जाना चाहिए, या यूं कहें कि क्या किया जा सकता है। होसुर से आए दल हमें अपने साथ वापस ले जाना चाहते थे, लेकिन बैंगलोर छावनी के दल का मानना था कि वारंट के बिना ऐसा संभव नहीं है। मैसूर राज्य के पुलिसकर्मी तटस्थ रहे और किसी भी स्थिति में सहायता के लिए तैयार थे। अंत में, दल ने हम दोनों को आगे की पूछताछ के लिए उपलब्ध रहने की चेतावनी देकर प्रस्थान किया।

दो दिन बाद वे फिर लौटे। उन्हें कोई शव नहीं मिला! हड्डियाँ भी नहीं! यहाँ तक कि वह बाँस का खंभा भी नहीं मिला जिससे हमने कहा था कि शव बंधा हुआ था। क्या सचमुच वहाँ कोई शव था भी?

नतीजा यह हुआ कि मैंने उनसे कहा कि मैं उन्हें उस जगह ले जाऊँगा। देव व्यस्त था और नहीं आ सका। मैं पुलिस वैन में बैठकर गुम्मलपुर गया। वहाँ से मैं दल के साथ उसी रास्ते पर चल पड़ा जिस रास्ते से देव और मैं उस सुबह लौटे थे। हम आखिरी पहाड़ी पर चढ़े और वहाँ से मैंने घाटी का नज़ारा देखा। आखिरकार हम उस विशाल चंदन के पेड़ तक पहुँचे जिसके नीचे हमें मृत महिला मिली थी।

वहाँ कोई शव नहीं था; न हड्डियाँ, न फटी हुई साड़ी का एक टुकड़ा, और सबसे बढ़कर, न ही कोई बांस का खंभा। कुछ भी नहीं! हर तरह के पुलिसकर्मी मुझे संदेह भरी निगाहों से घूर रहे थे। क्या यह कोई मज़ाक था? क्या मैं उन्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा था?

मैं ठीक उसी जगह पर गया जहाँ शव पड़ा था और उसे ध्यान से तलाशा। वहाँ मुझे टूटी हुई चूड़ी का आधा टुकड़ा मिला और थोड़ी देर में लंबे, काले बालों के कुछ गुच्छे मिले—निस्संदेह ये किसी महिला के बाल थे। मैंने ये चीजें पुलिसकर्मियों को दिखाकर अपनी रिपोर्ट की सत्यता साबित की। मैंने सुझाव दिया कि हत्यारे गुम्मलापुर में हैं और उन्हें हमारी खोज के बारे में तब पता चला होगा जब देव और मैं उस सुबह लौटते समय गाँव के पुलिसकर्मी के बारे में पूछताछ कर रहे थे। उन्होंने पटेल को दी

गई हमारी रिपोर्ट के बारे में भी सुना होगा। जाहिर है, वे वापस आए और जाँच में बाधा डालने के लिए शव को वहाँ से हटा दिया।

मेरी थ्योरी पर पुलिसकर्मियों की प्रतिक्रिया पहले से कहीं ज़्यादा अप्रत्याशित थी। वे जानना चाहते थे कि मैं वापस कैसे आ पाया और उन्हें ठीक उसी जगह तक कैसे ले गया। वे यह भी जानना चाहते थे कि मैंने टूटी हुई चूड़ी का टुकड़ा और बालों के गुच्छे ढूंढने के लिए इतनी खोजबीन क्यों की।

ये सवाल सुनकर मैंने गहरी सांस ली और बहुत धीरे-धीरे दस तक गिना। फिर मैंने उनसे कहा कि मैं अपने वकील के ज़रिए जवाब दूंगा। लेकिन इससे उनका शक पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गया। संक्षेप में कहें तो, देव और मुझे हत्यारा मानना बंद करने में उच्च अधिकारियों के साथ करीब तीन महीने का पत्राचार और होसुर पुलिस स्टेशन के दो चक्कर लगे। मद्रास पुलिस ने जो हल निकाला, वह वाकई बड़ा चालाकी भरा था। उन्होंने कहा कि हत्या मैसूर राज्य के अधिकार क्षेत्र में हुई होगी और शव को सीमा पार लाकर मद्रास के जंगलों में फेंक दिया गया होगा। जब शव मिलने की खबर फैली, तो अपराधी उसे वापस ले गए।

मैसूर पुलिस ने इस बात को सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि सीमा के उस पार किसी की हत्या नहीं हुई थी और मद्रास वाली बात सच्चाई को छिपाने के लिए गढ़ी गई थी। अपराध चाहे कहीं भी हुआ हो और जिसने भी किया हो, सच्चाई यही है कि न तो पीड़ित और न ही अपराधी कभी पकड़े गए।

जंगल में मिली किसी चीज़ की रिपोर्ट करने पर मुझे सरकारी दण्ड का सामना करना पड़ा, यह दूसरी बार था। इससे पहले मुझे एक अधविकसित हाथी मृत मिला था। उसे बंदूक की गोली से कान के पीछे मारा गया था। घाव साफ दिखाई दे रहा था। मैंने स्थानीय वन विभाग को इसकी सूचना दी थी, साथ ही मृत हाथी की एक तस्वीर भी भेजी थी जिसमें घाव दिख रहा था। उस रिपोर्ट के कारण मेरा शिकार लाइसेंस लगभग रद्द हो गया था, क्योंकि मुझ पर हाथी को खुद मारने का संदेह था। बाद में कहा गया कि मैंने अपनी गलती छिपाने के लिए रिपोर्ट की थी। उस मामले में भी काफी पत्राचार हुआ था। मुझे एक उच्च अधिकारी से मिलना पड़ा और उन्हें अपनी कहानी बतानी पड़ी। मुझे आज भी लगता है कि उन्होंने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। लेकिन चूंकि स्थानीय वन रक्षकों ने मृत हाथी के शव पर सूखी लकड़ी रखकर उसे जला दिया था, क्योंकि उस जगह से लगभग एक मील तक दुर्गंध फैल गई थी,

इसलिए मेरा अपराध साबित नहीं हो सका। इसलिए मुझे संदेह का लाभ देते हुए मेरा शिकार लाइसेंस बरकरार रखने की अनुमति दी गई, लेकिन मुझ पर कड़ी आशंका बनी रही।

इन दो घटनाओं का 'प्रस्तावना' के रूप में वर्णन करने के बाद, अब मैं आपको उस मुख्य घटना के बारे में बताऊंगा जो लगभग पाँच वर्ष पूर्व घटी थी, और जिसमें मुझे लगता है कि मैंने बेहद शर्मनाक व्यवहार किया था। हम चार लोग बिलिगिरिरंगन पर्वत पर स्थित दो बड़े कॉफी बागानों के प्रबंधक, अल्फी मॉरिसन नामक एक बागान मालिक मित्र से मिलकर लौट रहे थे। हमारे साथ हमारी कार का मालिक, मेरे बेटे का दोस्त रुस्तम दुधवाला, एक अन्य मित्र विली वोलन, मेरा बेटा डोनाल्ड और मैं थे। हमने अल्फी मॉरिसन के साथ रात का भोजन किया, उसके बाद कॉफी और नाश्ता किया और उनकी बेहतरीन व्हिस्की का थोड़ा सा सेवन किया, जिसके बाद हम कुछ घंटों तक बातें करते रहे। आधी रात के काफी बाद हम उनके बागान से निकले, और पुंजुर नामक स्थान पर पहुँचने से पहले हमें बीस मील से अधिक घने जंगल को पार करना पड़ा। यह एक संकरी, घुमावदार सड़क थी, जो कई जगहों पर खड़ी ढलान वाली थी, जिसके दोनों ओर बांस का घना जंगल था, जो मुख्य रूप से हाथी, बाइसन और सांभर का निवास स्थान था, और कभी-कभार बाघ या अन्य छोटे मांसाहारी जानवर भी दिख जाते थे। रुस्तम गाड़ी चला रहा था और मैं उसके बगल में बैठा था। बाकी दोनों पीछे थे।

हम पुंजुर के लगभग आधे रास्ते पर थे। जंगल बेहद घना और सघन था। समय रात के 1:15 बज रहे थे। अचानक, जैसे ही रुस्तम ने सड़क के एक तीखे मोड़ पर गाड़ी मोड़ी, हमने देखा कि एक इंसान सड़क पर पड़ा हुआ है, जो कार की तेज रोशनी में साफ दिखाई दे रहा था। उसने उस आदमी को कुचलने से बचने के लिए जोर से ब्रेक लगाया, और हम सब यह देखने के लिए बाहर निकले कि मामला क्या है।

हमने पाया कि सड़क के बीचोंबीच पड़ी हुई आकृति किसी पुरुष की नहीं बल्कि एक स्त्री की थी; वास्तव में, वह लगभग अठारह वर्ष की एक लड़की थी। उसकी लाल और काली साड़ी की घटिया गुणवत्ता से स्पष्ट था कि वह गरीब थी। उसकी साड़ी और जैकेट दोनों जगह से फटी हुई थीं और साड़ी पर काफी खून लगा हुआ था। कार की रोशनी में यह दिखाई नहीं दे रहा था क्योंकि, जैसा कि मैंने आपको बताया है, वह काली और लाल साड़ी थी और कृत्रिम रोशनी में दूर से इन दोनों रंगों में खून

दिखाई नहीं देता। करीब से देखने पर पता चला कि लड़की के साथ बेरहमी से छेड़छाड़ और बलात्कार किया गया था। वह पूरी तरह बेहोश थी, शायद किसी चोट या आघात के कारण। सांस लेने पर उसकी नंगी छाती बहुत कम हिल रही थी और उसकी नब्ज बहुत कमजोर थी।

अब क्या किया जाए? हम चारों की सहज प्रतिक्रिया यही थी कि उसे कार में बिठाकर बाकी दस मील का सफर तय करके पुंजुर ले जाएं और वहां पुलिस को सूचना दें, फिर उसे कुछ मील दूर चामराज नगर के अस्पताल ले जाएं। लेकिन दूसरे विचार मन में उठने लगे। हमारे सामने एक युवती पड़ी थी। उसके साथ बेरहमी से बलात्कार किया गया था। कार में हम चारों थे और हम सब पुरुष थे! अगर हम उस लड़की को उस हालत में और रात के समय सहित मौजूद सबूतों के साथ पुंजुर के पुलिस स्टेशन ले जाते, तो पुलिस शायद कहती कि बलात्कार हम चारों ने किया है। वे यह भी कह सकते थे कि हमने उसे कार से टक्कर मारी और फिर उसके साथ बलात्कार किया। बेशक, अगर लड़की को होश आ जाता, चाहे पुंजुर के पुलिस स्टेशन में या चामराज नगर के अस्पताल में, तो वह हम पर से शक दूर कर देती। लेकिन क्या सच में ऐसा होता? क्या होता अगर उसके हमलावर अचानक उस पर हमला कर देते? क्या होता अगर वह उन्हें जानती ही न होती? याद रखिए, हमें यह पता लगाने का कोई तरीका नहीं था कि उस पर हमला कहां हुआ था। यह घटना कहीं और भी हो सकती थी और अपराधी उसे बेहोशी की हालत में बैलगाड़ी में लाकर सड़क के बीचोंबीच फेंक सकते थे। जब वह होश में आती—अगर वह होश में आती भी—तो वह शायद सचमुच हमें ही दोषी मानती और हम पर आरोप लगाती। अंत में, और सबसे बुरी बात यह होती कि मान लीजिए वह इतनी गंभीर रूप से घायल हो जाती कि कभी ठीक ही न हो पाती। हम बलात्कार और हत्या के आरोपों के साथ एक भयानक मुसीबत में फंस जाते। हम पर सालों तक चलने वाला मुकदमा चलता। हमें जेल भी हो सकती थी। हमें फांसी भी हो सकती थी।

हम लगभग एक घंटे तक सड़क के बीचोंबीच स्थिति पर बहस करते रहे, इस उम्मीद में कि लड़की को होश आ जाए, तब हम उससे बात करेंगे, पता लगाएंगे कि क्या हुआ था और फिर उसे गाड़ी में बिठा लेंगे। लेकिन उसे होश नहीं आया। इसके विपरीत, उसकी सांसें धीमी होती गईं और उसकी नाड़ी लगभग न के बराबर हो गई।

एक ऐसे इंसान को अकेला छोड़ देना, जो स्पष्ट रूप से बेहद ज़रूरतमंद था और

मौत के कगार पर था, हाथियों से भरे घने जंगल के बीचोंबीच, आधी रात को, मीलों दूर और बिना किसी मदद के। यह एक कठिन फैसला था। दूसरी ओर, मुझे गुम्मलापुर के पास मरे हुए हाथी और हत्या की गई महिला की घटना याद आ गई। दोनों ही मौकों पर मुझ पर आरोप लगे थे। अब हमारे खिलाफ सबूत, हालांकि परिस्थितिजन्य थे, निश्चित रूप से कहीं अधिक और लगभग निर्णायक थे। हम केवल यही बचाव कर सकते थे कि अगर हम दोषी होते, तो हम लड़की को वहीं छोड़ देते और उसे सुरक्षित स्थान पर नहीं लाते। लेकिन इस कार्रवाई को भी हमारे अपराध को छिपाने की एक चालाकी भरी चाल के रूप में देखा जा सकता था। दल के सबसे वरिष्ठ सदस्य के रूप में, मैं जानता था कि मैं दूसरों को संभावित खतरे को स्वीकार करने और लड़की को कार में पुंजुर और फिर चामराज नगर के अस्पताल ले जाने के लिए मना सकता था। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, मैं उनके साथ उस बेचारी लड़की को वहीं छोड़ने और अपने रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए सहमत हो गया।

बेशक, हमें कभी पता नहीं चला कि उस अभागी युवती का क्या हुआ। लेकिन उसे अकेला छोड़ देना और उसके भाग्य पर छोड़ देना, यह एक ऐसा कृत्य है जो आज तक मुझे अपराधबोध से भर देता है।

अब मैं इन यादों का मिजाज बदलने के लिए अपने बारे में दो छोटी कहानियां सुनाऊंगा, ऐसी कहानियां जो यह दर्शाती हैं कि एक बाघ का दिखना एक नौसिखिए के हौसले पर क्या असर डालता है।

पहली घटना तब घटी जब मैं पंद्रह साल का था। मेरे पिताजी मुझे मैसूर राज्य के कादुर जिले में लिंगधल्ली नामक स्थान पर बत्तख और चिड़िया के शिकार के लिए ले गए थे। पिताजी बड़े जानवरों के शिकारी नहीं थे, हालांकि उन्होंने ही मुझे बहुत कम उम्र में बंदूक चलाना सिखाया था। वे चिड़िया का बेहतरीन निशाना लगाते थे, जिसमें मैं आज तक पूरी तरह नाकाम रहा हूँ, और उन्हें बत्तख का शिकार और अन्य छोटे जानवरों का शिकार करना बहुत पसंद था।

लिंगधल्ली के पास दो-तीन तालाब हैं, जहाँ क्रिसमस के समय जंगली बत्तखों और टील पक्षियों की अच्छी-खासी संख्या देखी जा सकती है, और कभी-कभी हंस भी नज़र आते हैं। इसके आसपास संरक्षित वन भी हैं, जहाँ बाघ और तेंदुआ पाए जाते हैं। हमारे पास पिताजी की पसंदीदा .16 बोर की दोहरी बैरल वाली बंदूक और एक पुरानी .12 बोर की दोहरी बैरल वाली बंदूक थी, जो उन्होंने मुझे उस साल मेरे

जन्मदिन पर उपहार में दी थी।

दूसरे दिन दोपहर को मुझे खबर मिली कि जिस तालाब के पास हम उसी सुबह बत्तख का शिकार करने गए थे, उसके बगल वाले सुपारी के बागान में एक बाघ ने एक बैल को मार डाला है। बागान मालिक ने मुझे इसके बारे में बताया, लेकिन मैंने पिताजी से यह बात छुपाई। मुझे पता था कि वह मुझे बाघ का शिकार करने नहीं देंगे। उस समय मुझे बड़े जानवरों के शिकार का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था, लेकिन जब बागान मालिक ने मुझे बाघ को मारने की कोशिश करने पर मचान बांधने का प्रस्ताव दिया, तो मैंने ठान लिया कि मैं जान देकर भी यह कोशिश करूंगा और उसे आगे बढ़ने के लिए कह दिया।

उस शाम मैंने पिताजी से झूठ बोला, कहा कि मैं एक ग्रामीण के साथ 'फ्लाइंग फॉक्स' (भारतीय फल खाने वाले बड़े चमगादड़ का नाम) का शिकार करने जा रहा हूँ, और कहा कि मैं लगभग ग्यारह बजे लौट आऊँगा। मैंने बड़े चाव से कल्पना की कि मैं मरे हुए बाघ को अपने साथ वापस लाऊँगा। पिताजी को छोटे से घुमंतू बंगले में यह कहकर छोड़कर कि मैं फ्लाइंग फॉक्स का शिकार करने जाने से पहले मोर और खरगोश का शिकार करके अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ, मैं शाम 5 बजे से कुछ पहले निकल पड़ा। एक घंटे से भी कम समय में मैं ऊँचे-ऊँचे लहराते सुपारी के पेड़ों के बीच मचान में अकेला था, और मरा हुआ बैल मेरे नीचे ज़मीन पर पड़ा था।

मुझे आज भी वह मचान याद है। वह ज़मीन से बारह फीट से ज़्यादा ऊँचा नहीं रहा होगा; एक ऊबड़-खाबड़, बिखरा हुआ, असुरक्षित मचान। यकीनन, ऐसा मचान जिसे बाघ आसानी से पहचान लेता और इसलिए उसके पास आने की हिम्मत नहीं करता। लेकिन हमने तो 'शुरुआती किस्मत' के बारे में सुना ही है, और उस यादगार शाम को मेरे साथ भी वही किस्मत थी।

शाम ढल रही थी जब बाघ आया, और आते ही उसने सबसे पहले ऊपर देखा और मुझे उस साफ़ दिखाई देने वाले चबूतरे पर बैठा पाया। वह गुर्राया और चलते-चलते रुक गया। मैं डर से कांप रहा था। मेरे शरीर का एक भी अंग हिल नहीं रहा था, न ही मेरी बात मान रहा था। मैं डर के मारे ज़ोर से चीखना चाहता था, लेकिन वह भी नहीं कर पाया। बाघ गुस्से और घबराहट भरी गुर्राहट के साथ भाग गया, क्योंकि .12 पिस्तौल मेरी कांपती उंगलियों से फिसलकर चबूतरे से लुढ़कते हुए ज़मीन पर ज़ोर से गिरी। सौभाग्य से ज़मीन गीली और नरम थी, और पिस्तौल आगे की तरफ से गिरी,

इसलिए उसे कुछ नहीं हुआ। लेकिन मैं बहुत नाराज़ था और खुद को कायर समझकर खुद से नफ़रत कर रहा था, और उस रात 8 बजे से पहले जब मैं वापस यात्रियों के बंगले पर पहुँचा, तो मैंने पिताजी को इसके बारे में कुछ नहीं बताया।

जो कुछ हुआ था, उससे मैं बहुत आहत था। कुछ समय बाद ही मैं अपने से थोड़े बड़े जेरी बैरो नाम के एक लड़के के साथ शिकार पर गया। हम मैसूर राज्य के शिमोगा जिले में सागर कस्बे से कुछ मील दूर एक गाँव में गए। नौसिखिए होने के नाते, एक बार फिर हमारी किस्मत अच्छी रही, क्योंकि हमारे पहुँचने के एक दिन के भीतर ही जंगल में दो अलग-अलग जगहों पर दो बाघों के शिकार की खबर मिली, दोनों ही जगहें गाँव से मुश्किल से एक मील दूर थीं। हमने सिक्का उछाला और मुझे याद है कि मुझे गाँव के पश्चिम में हुआ शिकार मिला। वहाँ एक पूरी तरह से विकसित गाय नाले के किनारे पर पड़ी थी, जिसका कुछ हिस्सा खाया हुआ था। संयोग से, पास में ही एक छोटा पौधा उग रहा था, और लिंगधल्ली में जो कुछ हुआ था, उसे याद करके, जब मैं बारह फीट ऊँचे मचान पर बैठा था, मैंने यह सुनिश्चित किया कि चबूतरे को पेड़ की शाखाओं के बीच में कम से कम अठारह फीट ऊपर बांध दिया जाए, जहाँ नाले के किनारे पर शिकार पड़ा था। वह पौधा नदी के तल से सीधा ऊपर की ओर और नाले के किनारे से समकोण पर उगा, जो स्वयं इस स्थान पर ढलानदार था और रेतीले तल से कम से कम एक दर्जन फीट ऊंचा था।

मैंने जल्दी ही अपनी जगह ले ली और घबराकर चौकन्ना हो गया। सभी नौसिखिए ऐसा ही करते हैं। धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा और शाम के साथ ही दो बाघ —या यूँ कहें कि एक बाघ और एक बाघिन—एक के पीछे एक चलते हुए दिखाई दिए। दिक्कत बस इतनी थी कि वे नाले के ऊँचे किनारे पर चल रहे थे, जबकि मेरा मचान उसी नाले से लगभग अठारह फीट ऊपर था। और इस तरह मैं बाघ और उसकी साथी से सिर्फ छह फीट ऊपर रह गया। मैंने हालात सुधारने की कोशिश की थी, लेकिन अनजाने में उन्हें और बिगाड़ दिया था। कम से कम लिंगधल्ली में तो मैं जंगली अवस्था में देखे गए पहले बाघ से बारह फीट ऊपर था। अब मैं उनमें से दो को देख रहा था, और आधी दूरी पर! फिर भी, इस समय तक मैंने कुछ प्रगति कर ली थी, कम से कम अपनी घबराहट भरी प्रतिक्रियाओं के मामले में। मैंने बंदूक को मचान से गिरने नहीं दिया, हालाँकि घोर डर ने मुझे गोली चलाने से रोक रखा था।

एक अजीब संयोग से, लगभग वैसा ही अनुभव मेरे एक मित्र के साथ, बहुत पास

ही एक जगह पर, कई साल बाद हुआ। और उसने भी मेरे जैसा ही व्यवहार किया—और वह भी एक नौसिखिया था।

अक्सर, दूसरे शिकारियों से बातचीत के दौरान, मैं किसी नौसिखिए या अनुभवहीन शिकारी के कारनामों के बारे में अपमानजनक टिप्पणियाँ सुनता हूँ: कि वह इसलिए गोली नहीं चला रहा क्योंकि उसे गोली चलाना नहीं आता, या बुरी तरह चूक गया क्योंकि वह काँप रहा था। तब मैं उन अनजान नौसिखियों के प्रति सहानुभूति जताते हुए, दो मौकों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ अपने श्रोताओं को बताता हूँ। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि जंगल के राजा को उसके जंगली रूप में, उसकी पूरी शान में, नज़दीक से और अंधेरे में देखना ही विस्मयकारी होता है। यह चिड़ियाघरों और सर्कसों में दिखने वाले शांत, अधभूखे बाघों से बिल्कुल अलग नज़ारा होता है।

हमारी कुछ यात्राओं के दौरान हास्य से भरपूर छोटी-मोटी घटनाएं घटित हुईं; वहीं कुछ अन्य घटनाएं, जिनका अंत कहीं अधिक गंभीर हो सकता था, काफी मजेदार साबित हुईं।

मैं कई तरह के लोगों के साथ रहा हूँ। कुछ साथी उदास और चिड़चिड़े थे, जो ज़रा सी असुविधा पर भी बड़बड़ाते और शिकायत करते थे। वहीं कुछ बेहद सख्त मिजाज के थे, जैसे कि वे लोग जो सिर्फ घर का बना खाना खाना चाहते थे, सिर्फ उबला हुआ पानी या सोडा वाटर, चाय और कॉफी पीना चाहते थे, और मच्छरदानी के नीचे कैंप के पलंगों पर सोना चाहते थे। एक तीसरी किस्म के लोग, जो कि दुर्लभ हैं, बिल्कुल विपरीत छोर पर थे; वे इतने उत्साही थे कि चौबीसों घंटे लगातार चलते रहना चाहते थे। चाहे बारिश हो या धूप, बिना या बहुत कम भोजन के, और बिना आराम किए।

इसीलिए, सभी गंभीर शिकार यात्राओं पर मैं अकेले रहना पसंद करता हूँ। मुझे कहीं भी सोने की आदत हो गई है, यहाँ तक कि खुले में पेड़ के नीचे भी, और जो कुछ भी उपलब्ध हो, उसे खाने की भी, चाहे वह पका हुआ यूरोपीय या भारतीय भोजन हो या जामुन, जड़ें और यहाँ तक कि अधपका मांस जैसा आदिवासी भोजन। पानी के लिए, मुझे रेतीले नदी तल में गड्ढे खोदने पड़ते हैं, पानी जमा होने तक इंतजार करना पड़ता है, और फिर लेटकर खोदे गए गड्ढे से पानी चूसना पड़ता है, रुमाल के एक कोने को मुँह पर रखकर रेत के बारीक कणों और कभी-कभी पानी में मौजूद हरे रंग के कीचड़ को छानना पड़ता है।

एक बार मेरे एक मित्र, जो एक मेजर थे, और दो अन्य मित्रों, एक डॉक्टर और

उनके बेटे ने मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के जंगलों के एक बेहद दूरदराज इलाके में तीन सप्ताह के बाघ शिकार की योजना बनाई थी। वहाँ मोटर योग्य सड़क से बहुत दूर एक छोटा सा वन बंगला था, और पास ही एक छोटा सा गाँव था। हम अपने साथ खाने-पीने का बहुत सारा सामान ले गए थे, लेकिन तीन सप्ताह लंबा समय होता है और हम सभी लगातार भूखे रहते थे और भरपेट खाते थे, साथ ही वहाँ शिकार के लिए जानवर भी बहुत कम थे और हम अंधाधुंध शिकार करके आसपास के बाघों को डराना नहीं चाहते थे, इसलिए दस दिनों के भीतर ही हमारा भोजन भंडार खत्म होने लगा। अंत में, सभी को आधा-आधा राशन देना पड़ा।

एक रात, अकाल के दौरान, मुझे बंगले के उस हिस्से से अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई दीं जिसे हम भोजन कक्ष के रूप में इस्तेमाल करते थे। मुझे हल्की-सी खड़खड़ाहट और घिसने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अपनी इलेक्ट्रिक टॉर्च उठाई, दबे पांव भोजन कक्ष की ओर जाने वाले दरवाजे तक गई और उसे चालू किया। वहाँ डॉक्टर का बेटा खाना चुरा रहा था। उसने ब्रेड के एक टुकड़े पर मक्खन लगाया, उस पर गाढ़ा दूध फैलाया और अंत में उस पर चीनी छिड़क दी।

फिर मैंने एक अशोभनीय काम किया। मैं चुपके से निकल गया। डर का नाटक करते हुए, मैं जोर से चिल्लाया: 'डॉक्टर, डॉक्टर; भोजन कक्ष में एक चोर है।'

डॉक्टर अपने बेटे को रंगे हाथों पकड़ने के लिए बाहर आया। लड़के को दी गई फटकार इतनी तेज़ और इतनी लंबी थी कि मुझे अगले एक घंटे तक नींद नहीं आई।

उस शिविर में भोजन पहले से भी कहीं अधिक दुर्लभ हो गया था, लेकिन हम उसे छोड़ना नहीं चाहते थे क्योंकि बाघों ने हमारे द्वारा उनके लिए बांधे गए जीवित शिकारों को मारना शुरू कर दिया था, हालांकि अभी तक हमें एक भी बाघ को मारने का सौभाग्य नहीं मिला था। हमने तय किया कि हमें ग्रामीणों के पास जाकर उनसे किसी भी कीमत पर किसी भी प्रकार का भोजन खरीदने का प्रस्ताव देना चाहिए। बेटा पहले गया और एक अंडा लेकर लौटा। अगले दिन डॉक्टर ने अपनी किस्मत आजमाई। वह बहुत गुस्से में लौटा। ग्रामीणों ने उसे बताया था कि पिछले दिन उन्होंने युवा साहब को सात अंडे बेचे थे। लड़का केवल एक अंडा वापस लाया था। अपने पिता के सामने उसने कबूल किया कि वह बहुत भूखा था और वापस आते समय उसने बाकी छह अंडे कच्चे ही खा लिए थे। ग्रामीणों ने डॉक्टर को यह भी बताया कि उनके पास बेचने के लिए अतिरिक्त भोजन नहीं है, क्योंकि भोजन की कमी थी और उन्हें खुद के लिए

उसकी आवश्यकता थी।

तीसरे दिन मैं गया। ग्रामीणों ने मुझे वही बात बताई। उनके पास बेचने के लिए न तो मुर्गियाँ थीं और न ही रागी। सब कुछ उनके अपने उपभोग के लिए आवश्यक था। जब मेजर की भीख मांगने की बारी आई, तो उन्होंने कुछ नया करने का फैसला किया। उन्होंने उस दोपहर पूरे गाँव को पास के वन बंगले में आमंत्रित किया, जहाँ वे एक भव्य मनोरंजन कार्यक्रम देखने वाले थे, जिसमें नृत्य भी शामिल थे, जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखे थे, और जिनका प्रदर्शन पूरी तरह से उन्हीं के द्वारा किया जाना था। उन्होंने कहा कि यह एक निःशुल्क कार्यक्रम होगा; लेकिन अंत में भोजन के रूप में चंदा लिया जाएगा, चाहे वह किसी भी रूप में हो।

उस दोपहर कुछ बूढ़े और कुछ नौजवान धीरे-धीरे आने लगे। ये दर्शक बरामदे के फर्श पर बैठ गए। एक घंटे बाद लगभग तीस लोग जमा हुए। जब मेजर को लगा कि इतने ही लोग इकट्ठा हो पाएंगे, तो वह अंदर गए और कमर पर तौलिया बांधकर वापस आए। फिर, उन्होंने अपने होठों को दबाकर बैगपाइप की बहुत अच्छी नकल करते हुए गुनगुनाया और हाइलैंड फ्लिंग और कुछ रील नृत्य किए। अंत में, उन्होंने दो राइफलें फर्श पर रखकर तलवार नृत्य किया।

मुझे यकीन नहीं है कि दर्शकों ने शो की कितनी सराहना की, लेकिन उनके तमाम प्रयासों के बावजूद उनमें से कोई भी खाने-पीने का सामान नहीं लाया था, और रॉबी द्वारा चंदा इकट्ठा करने के लिए ले जाया गया थैला उनके अथक प्रयासों के बाद भी उतना ही खाली था जितना पहले था।

एक और छोटी सी घटना येम्मैदोड्डी में घटी, जो कदुर जिले में स्थित है। डॉन और मैं, अपने एक युवा मित्र सन्नी के साथ, सन्नी को एक बाघ दिखाने के लिए कुछ दिनों के लिए वहाँ गए थे, जिसका वह शिकार करने वाला था। यात्रा के पहले दिन सुबह सन्नी 3 बजे उठा, और मैंने उसे डॉन को जगाने और जंगल में टॉर्च की रोशनी में सैर के लिए उसमें रुचि पैदा करने की कोशिश करते सुना। कड़ाके की ठंड थी, और ऊपर से हल्की बूंदा-बांदी भी हो रही थी। डॉन को अपना गर्म बिस्तर ज़्यादा पसंद था, और उसने सन्नी को साफ-साफ बता दिया। मुझे उस लड़के पर दया आई, इसलिए मैंने आत्म-बलिदान की भावना से उसके साथ चलने का फैसला किया।

हम चल पड़े, सन्नी ने मेरी .405 राइफल ले रखी थी, जो उसने उधार ली थी, जबकि मैं बाघ की आँखों को देखने की उम्मीद में पाँच सेल वाली टॉर्च की रोशनी

इधर-उधर घुमा रहा था। थोड़ी ही देर में हम एक संकरे रास्ते पर पहुँच गए जो लगभग चार मील दूर स्थित मद्दक टैंक नामक एक बड़ी झील से आने वाली जलधारा के समानांतर चलता था, और हम उस झील की ओर चलने लगे। सौभाग्य से हल्की बारिश रुक गई थी, लेकिन ठंड पहले से कहीं अधिक थी और चारों ओर घना अंधेरा था।

झील तक लगभग आधे रास्ते में मुझे पानी की नहर के दूसरी ओर जंगल से आती हुई दो रोशनी दिखाई दीं। वे धधकती लाल थीं। यह कौन सा जानवर था? उसकी आँखें इतनी लाल थीं। मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी का इस्तेमाल करके उस जीव को हिलाने या उसका सिर घुमाने की कोशिश की ताकि उसकी पहचान पता चल सके। दोनों लाल रोशनी ज़रा भी नहीं हिलीं। एक पल के लिए मैंने टॉर्च की रोशनी उनसे हटा ली, ताकि जानवर हमें देख सके और हिल सके, लेकिन लाल रोशनी जलती रहीं। इससे समस्या हल हो गई। वे किसी जानवर की आँखें नहीं थीं, बल्कि आग के अंगारे थे। कुछ जंगली लोग वहाँ डेरा डाले हुए थे।

यह एक प्रचलित, लेकिन पूरी तरह से गलत धारणा है कि जंगली जानवरों की आंखें अंधेरे में अपनी ही चमक से जगमगाती हैं। ऐसा नहीं है। जब उन पर तेज रोशनी पड़ती है, तभी उनकी आंखों की भीतरी सतह, खुली पुतलियों के माध्यम से, प्रकाश को परावर्तित करती है और आंखें अलग-अलग रंगों से चमकती हैं - हरा, सफ़ेद-हरा, सफ़ेद-लाल या लाल-सफ़ेद, यह चमक जानवर और प्रकाश के कोण पर निर्भर करती है। लेकिन आंखें अपने आप नहीं चमकतीं। इसलिए, अगर टॉर्च की रोशनी नहीं है, तो किसी भी जानवर की आंखों से कोई परावर्तित चमक नहीं आ सकती। इसके विपरीत, अगर टॉर्च की रोशनी न होने पर भी चमक आती है, तो वह किसी भी जानवर की आंखों से नहीं आ सकती।

जैसा कि मैंने कहा, समाधान सरल था। हमारा सामना आग की चिंगारियों से हुआ था, न कि किसी जंगली जानवर से। सन्नी मेरे बगल में खड़ा था जब मैंने लापरवाही से और बेपरवाही से कहा, 'फायर'। अगले ही पल एक जोरदार धमाका हुआ, क्योंकि उसने मेरी राइफल से गोली चला दी। सौभाग्य से उसका निशाना बुरी तरह चूक गया।

अचानक नींद से जागे हुए लोगों ने चीख-चीख कर दहशत फैला दी। 'अय्यो! अय्यो!' वे घबराकर चिल्लाने लगे।

'तुम ये क्या कर रहे हो, बेवकूफ?' मैंने सन्नी पर चिल्लाते हुए कहा। 'मैंने तुमसे कहा था कि आग लगी है।'

'आपने ऐसा कुछ नहीं किया,' उसने जवाब दिया। 'आपने बस "फायर" कहा और मैंने फायर कर दिया।'

वैसे तो, यह छोटी सी घटना दर्शाती है कि जंगली लोग उन बाघों को कितनी घृणा से देखते हैं जो आदमखोर नहीं होते। ये लोग खुले में, बिल्कुल असुरक्षित अवस्था में, ऐसे क्षेत्र में सो रहे थे जो बाघों के आश्रय स्थल के रूप में सर्वविदित है।

सन्नी नाम का यह आदमी खतरनाक किस्म का था। बिलकुल आवारा किस्म का, अगर आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब? एक बार हम तारिकेरे के पास झाड़ियों वाले जंगल के एक खास इलाके से गाड़ी चला रहे थे, खाने के लिए एक जंगली सूअर का शिकार करने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि येम्मायदोड्डी में हमारे कैंप में मांस की कमी हो रही थी। उस दोपहर खूब बारिश हुई थी, और चूंकि वह इलाका सूअरों के लिए मशहूर था, हमें लगभग यकीन था कि किसी भी पल कोई सूअर दिख जाएगा। रात के करीब 10 बज रहे थे। सन्नी मेरी कार के बाईं ओर के मडगार्ड पर एक पुरानी .12 गेज की शॉटगन लेकर बैठा था, जो उसने उधार ली थी। बेसिल जोन्स नाम का एक दोस्त पीछे की सीट पर दूसरी शॉटगन लेकर बैठा था। डॉन मेरे बगल में बैठा था, और मैं गाड़ी चला रहा था। हमारे पास स्पॉटलाइट नहीं थी, क्योंकि यह नियमों के खिलाफ था, लेकिन यह माना गया कि अगर कोई सूअर हेडलाइट की रोशनी में सड़क पार करे तो उस पर गोली चलाना जायज है।

अचानक, कार के ठीक सामने कुछ गज की दूरी पर एक जंगली सूअर तेजी से भागा, जो हेडलाइट्स की तेज रोशनी में चमक रहा था। लेकिन सन्नी ने उसे नहीं देखा। वह शायद सपना देख रहा था। हम सब चिल्लाए, 'गोली चलाओ', लेकिन तब तक सूअर जा चुका था। हमने सन्नी को खूब खरी-खोटी सुनाई और उसे अगले के लिए तैयार रहने को कहा।

लगभग एक मील आगे एक और सुअर सड़क पार कर गया। सन्नी ने उसे देख तो लिया, लेकिन गोली चलाने में देर कर दी। बेसिल जोन्स गाड़ी की डिक्की सीट पर खड़ा हुआ और हमारे सिर के ऊपर से गोली चलाई। शायद गाड़ी के हिलने-डुलने के कारण उसका निशाना चूक गया। इसके बाद एक ज़ोरदार धमाका हुआ और स्टुडेबेकर के रेडिएटर-कैप पर लगा धातु का हवाई जहाज गोलियों की बौछार में चकनाचूर हो

गया।

तभी सन्नी मुझे रुकने के लिए बेतहाशा इशारे करने लगा। मुझे लगा कि शायद बेसिल ने सूअर को टक्कर मार दी होगी और

सन्नी ने उसे गिरते हुए देखा था। इसलिए मैंने अचानक ब्रेक लगाया। सन्नी मडगार्ड पर अपनी सीट से कूद गया, कार के सामने से घूमकर आया और अपनी .12 कैलिबर की पिस्तौल को हाथ की दूरी पर पकड़े हुए मेरी ओर दौड़ा।

'लो, ये घटिया बंदूक ले लो,' उसने गुस्से से कहा। 'इसमें कुछ खराबी है। ट्रिगर दबाने से पहले ही ये चल गई और तुम्हारे रेडिएटर कैप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।'

'मुझे देखने दो,' मैंने सुझाव दिया। मैंने उससे हथियार लिया और उसका ब्रीच खोला। दोनों चैंबरों में कारतूस थे और उनमें से किसी से भी गोली नहीं चली थी। बेसिल की बंदूक के विस्फोट और रेडिएटर-कैप के टूटने से हुई आवाज़ ने सन्नी को यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि शायद उसी की बंदूक से गोली चली है।

इस नौजवान से जुड़ी तीसरी घटना सबसे मज़ेदार थी, हालाँकि यह आसानी से एक त्रासदी में तब्दील हो सकती थी। इस बार हम बैंगलोर से लगभग पंद्रह मील दक्षिण में बैनरघट्टा के झाड़ीदार जंगल में सूअरों की तलाश में सुबह के समय गश्त कर रहे थे। गश्त के दौरान एक विराम आया। सन्नी एक छोटी सूखी खाई के तल पर खड़ा था। आर्थर स्टेनली नाम का एक और साथी उसके किनारे पर खड़ा था, सन्नी से लगभग दस फीट ऊपर और उतनी ही दूरी पर। वे बातें कर रहे थे, और किसी बात पर ज़ोर देने के लिए सन्नी ने उसी .12 बोर की शॉटगन का बट ज़मीन पर पटका, जिसे उसने एक बार फिर उधार लिया था। बंदूक के चलने की ज़ोरदार आवाज़ हुई, और झटके से बंदूक सन्नी के हाथ से छूट गई, जबकि आर्थर स्टेनली का धूप से बचने वाला हेलमेट दूर जा गिरा, सन्नी की बंदूक से निकली गोलियों से उसका किनारा आगे से टूट गया था।

आर्थर सदमे से बेहोश हो गया। हम सब उसके पास पहुँचे और उसे होश में लाए, साथ ही सन्नी को जन्मजात मूर्ख कहकर कोसते रहे। वह खाई के तल पर जड़वत खड़ा रहा, हम सबको हैरानी से देखता रहा और सोचता रहा कि आखिर हुआ क्या है। आर्थर जल्द ही होश में आया और खाई के किनारे पर खड़ा था, लगभग उसी जगह पर जहाँ से गोली चली थी।

'यह कैसे हो सकता है?' सन्नी पूछ रहा था। 'मैंने दाहिनी नली में केवल एक

कारतूस भरा था और बंदूक के बट को धीरे से जमीन पर थपथपा रहा था कि अचानक, बिना किसी कारण के, बंदूक चल गई।'

ये शब्द कहते ही सन्नी ने यह दिखाना शुरू किया कि वह बंदूक के बट को धीरे से ज़मीन पर थपथपा रहा था, तभी अचानक, अप्रत्याशित रूप से, उसकी बंदूक से दूसरी बार गोली चल गई। गोली आर्थर के सिर के पास से गुज़रते ही वह बेहोश होकर पीछे गिर पड़ा।

'मुझे लगा था कि तुमने कहा था कि तुमने अपनी बंदूक में सिर्फ एक कारतूस भरा है?' डॉन ने बेहद व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा।

'यह सच है,' सन्नी ने जवाब दिया। 'आप खुद ही देख लीजिए।'

ये कहते हुए उसने अपनी शॉटगन का ब्रीच खोला। फिर उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। ब्रीच में दो गोलियां थीं, एक-एक बैरल में। और दोनों ही चलाई जा चुकी थीं।

एक बार रुस्तम दुधवाला की मॉडल ए फोर्ड कार में हमारा एक मजेदार अनुभव हुआ। यह घटना कोयंबटूर जिले के कोललेगल से लगभग तीस मील दूर, दोपहर के समय घटी। पंखे को कसने वाला नट ढीला हो गया और अचानक पंखे ने रेडिएटर में एक गोल छेद कर दिया, जिससे पानी की हर बूंद तुरंत रिसने लगी। हम जंगल के बीचोंबीच थे और यह स्पष्ट था कि हमें किसी तरह कार को मरम्मत के लिए कोललेगल वापस ले जाना होगा।

फिर रुस्तम को एक विचार आया, जिसे उसने एक अद्भुत शुरुआत बताया। उसने बोनट पूरी तरह से हटाकर रेडिएटर को सिलेंडर हेड से जोड़ने वाली नली को पकड़े हुए धातु के क्लैंप ढीले कर दिए। फिर उसने अपने पास मौजूद अतिरिक्त इनर ट्यूबों में से एक को एयर-इनलेट नोजल के पास से काट दिया और ट्यूब के एक खुले सिरे को सिलेंडर हेड से बाहर निकले धातु के नेक पर फिट कर दिया। उसने अतिरिक्त रबर को उसके चारों ओर मोड़ दिया और ढीले किए गए धातु के होज़ क्लैंप से ट्यूब को नेक से मजबूती से जोड़ दिया। उसने कार के पीछे रखे दो गैलन के टिन से खोखली ट्यूब के नेक में पानी डाला, जब तक कि सिलेंडर हेड और आधी रबर की ट्यूब पानी से भर न गई। रुस्तम ने कार को घुमाया और कोललेगल की ओर वापस चल दिया, जबकि उसके एक मित्र विली वोलन को मडगार्ड पर बैठने और आधे भरे इनर ट्यूब के खुले सिरे को दोनों हाथों से पकड़ने के लिए कहा गया।

जल्द ही कुछ अजीबोगरीब घटनाएं होने लगीं। पानी गर्म हो गया और भाप निकलने लगी। नली खतरनाक तरीके से फूलने लगी और ऐसा लगा जैसे कुछ पल के लिए फट ही जाएगी। दबाव कम करने और कुछ भाप बाहर निकालने के लिए विली ने नली के सिरे पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। लेकिन वह भूल गया था कि पानी का पंप चल रहा था। भाप ही नहीं निकली, बल्कि खौलता हुआ गर्म पानी उसके हाथों पर गिर पड़ा। उसने गुस्से में नली को छोड़ दिया और सारा पानी फिर से बह गया। हम उसकी इस परेशानी पर खूब हंसे, लेकिन जब उसने नली को पकड़ने से साफ इनकार कर दिया तो हमारी हंसी रुक गई। खैर, हमने नली में थोड़ा पानी डाला और बारी-बारी से उसे पकड़े रहे जबकि रुस्तम कुछ मील तक गाड़ी चलाता रहा, बीच-बीच में रुककर पानी को ठंडा होने देता रहा। इस बीच हम हर नदी, टैंक या कुएं से दो गैलन पेट्रोल का डिब्बा भरते रहे। और इस तरह आखिरकार हम कोललेगल पहुंच गए।

मुझे एक सज्जन अच्छी तरह याद हैं जिन्हें मैं अपने साथ सैर पर ले गया था। वे थोड़े सनकी थे। उन्होंने कहीं पढ़ा था कि गाढ़ा दूध पोषक तत्वों से भरपूर होता है और सभी आवश्यक विटामिन प्रदान करता है; इसलिए उन्होंने कहा कि वे अपने साथ केवल डिब्बाबंद गाढ़ा दूध ही लाएंगे और पूरे सप्ताह उसी पर गुजारा करेंगे। उनके पोषक तत्वों के सिद्धांत शायद ठीक थे, लेकिन पाँचवें दिन उन्हें परेशानी होने लगी। गाढ़ा दूध कब्ज पैदा करता है। इसके अलावा, गर्मी (गर्मी का मौसम था) और पसीने में निकले नमक के कारण उनका शरीर डिहाइड्रेटेड हो गया था। उस शाम वे अचानक गिर पड़े और कहने लगे कि उन्हें बहुत अस्वस्थ महसूस हो रहा है। उनका तापमान तेजी से बढ़ गया और पेट में तेज ऐंठन होने लगी। लाख कोशिश करने के बावजूद भी वे शौच नहीं कर पाए। स्थिति बहुत गंभीर हो गई। तब हमने सोचा कि जो भी सामग्री उपलब्ध है, उसी का इस्तेमाल करें। कार के फुट-पंप के रबर के तार के दोनों सिरों पर लगे धातु के जोड़ काट दिए गए थे। हॉर्न के बल्ब को गुनगुने पानी से भरकर तार के एक सिरे पर दबाया गया, जिससे एक प्रभावी एनीमा का काम हुआ। बल्ब को फिर से भरने और दबाकर खाली करने की प्रक्रिया को दो-तीन बार दोहराना पड़ा, लेकिन इससे वांछित परिणाम प्राप्त हुआ और संभवतः उस व्यक्ति की जान बच गई। एक चम्मच ग्रेड 40 का इंजन ऑयल मुंह से देने पर भी फायदा हुआ।

कई साल बाद, सलेम जिले के गेरहेटी नामक स्थान पर मैंने एक बार फिर इस उपचार का प्रयोग किया, जब मेरे साथ हाथियों की तस्वीरें खींचने आए सेल्स नामक

एक बुजुर्ग सज्जन अचानक लू लगने से बेहोश हो गए। हम दिन भर चिलचिलाती धूप में बाहर थे, और जब हम शाम ढलते ही जंगल के बंगले में वापस लौटे, तो उन्होंने तेज सिरदर्द और चक्कर आने की शिकायत की। जल्द ही उन्हें तेज बुखार और उल्टी होने लगी, और वे बेहोश हो गए। कार के पंप नोजल से उपचार और हर घंटे ठंडे पानी से स्पंज स्नान कराने से उनका तापमान कम हो गया, और अगली सुबह तक वे फिर से खड़े हो गए।

कई साल पहले जब मैं अपने दोस्त बायरा (पुजारी) के साथ पूरे एक हफ्ते के लिए जंगल में गया था, तो मेरा खुद का एक दिलचस्प अनुभव रहा। बायरा से मेरी मुलाकात मद्रास राज्य के सलेम जिले के जंगलों में कुछ असामान्य परिस्थितियों में हुई थी। मजे के लिए मैंने तय किया था कि मैं न तो बंदूक ले जाऊंगा और न ही कोई खाना। मैं इन सात दिनों तक जंगल में ही रहना चाहता था, और उन चीजों पर निर्भर रहना चाहता था जो बायरा अपने पास मौजूद आदिम साधनों से जंगल से जुटा सकता था। मैंने यह शर्त रखी थी कि बायरा अपनी बहुमूल्य, लेकिन बिना लाइसेंस वाली, माचिस वाली बंदूक न लाए।

इस यात्रा की सबसे खास बात यह थी कि मुझे पूरे समय, हर घंटे और हर दिन ज़बरदस्त भूख लगती रही। मुझे यकीन है कि बायरा को मुझे और खुद को खिलाने में बहुत मेहनत करनी पड़ी होगी। सच कहूँ तो, मैंने उससे लगभग तीन गुना ज़्यादा खाया। हमने तरह-तरह के बेर और अलग-अलग लताओं की जड़ें खाईं जिन्हें उसने खोदा था; हमने जंगली मधुमक्खियों के छत्ते खाए; हमने चिनार नदी के पास एक तालाब के किनारे रहने वाले छोटे-छोटे केकड़ों को खाया; हमने घोंघे और टिड्डे चबाए; हमने एक दीमक के टीले से एक बड़ी, लंबी, मोटी रानी चींटी खाई जिसे हमने साथ मिलकर खोदा था। बायरा ने दो ओडुम्बस (एक गज से ज़्यादा लंबी छिपकली की प्रजाति, जिसे सही मायने में इगुआना कहते हैं) पकड़ीं, जिन्हें हमने पकाकर खाया; मुझे वे बहुत स्वादिष्ट और मुलायम लगीं।

फिर भी मुझे भूख लग रही थी। घोड़े के बालों से बुने हुए फंदे वाली एक अनोखी तरकीब की मदद से बायरा ने एक जंगली मुर्गे को पकड़ लिया। उसका गला मरोड़ने के बाद उसने उसे 'मिट्टी में भूनने' की विधि अपनाई। मैं इसकी विधि बता रहा हूँ, जो वास्तव में बहुत सरल है, ताकि कोई साहसी लड़का या कोई और इसे खुद आजमा सके।

बिना बर्तनों के रोस्ट तैयार करने के दो तरीके हैं। बेशक, आप चाहे जो भी तरीका अपनाएं, सबसे पहले आपको जिस पक्षी या जानवर को रोस्ट करना है, उसके पंख या बाहरी खाल और उसके अंदरूनी अंग निकालने होंगे। इसके बाद, आप अपनी पसंद के अनुसार 'स्टिक रोस्ट' या 'मड रोस्ट' कर सकते हैं। स्टिक रोस्ट में एक लंबी, नुकीली छड़ी को पक्षी या जानवर के शरीर में आर-पार गाड़ दिया जाता है। फिर दो Y-आकार की छड़ें काटकर उनके सिरों को जमीन में इतनी दूरी पर गाड़ दिया जाता है कि मांस को पिरोने वाली छड़ी का सिरा Y-आकार के सपोर्ट पर टिका रहे। फिर छड़ी और उस पर लगे भार को घुमाया जा सकता है। नीचे अंगारों की धीमी आग जलाई जाती है और मांस को जलने से बचाने के लिए छड़ी को धीरे-धीरे हाथ से घुमाया जाता है। आग में पत्तों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे मांस को काला और धुआंयुक्त बना देंगे।

इस विधि में कई कमियां हैं। पहली बात तो यह है कि इसमें लगातार ध्यान देने की आवश्यकता होती है। दूसरी बात, सींक को बार-बार पलटना पड़ता है। तीसरी बात, चाहे आप कितनी भी सावधानी बरतें, तैयार भुना हुआ मांस हमेशा सूखा और आंशिक रूप से जला हुआ निकलता है, जबकि अंदर का हिस्सा लगभग कच्चा रह जाता है। इसका एकमात्र फायदा यह है कि इसे जंगल में कहीं भी, कम समय में तैयार किया जा सकता है।

'मड रोस्ट' के लिए पक्षी या जानवर को इसी तरह तैयार किया जाता है। फिर नदी या तालाब के किनारे से ली गई या मिट्टी और पानी से बनाई गई मिट्टी की एक परत शव के ऊपर लगभग एक इंच मोटी कर दी जाती है। इससे मांस को पूरी तरह से ढकने वाला मिट्टी का गोला बन जाता है। इसके बाद अंगारों की आग तैयार की जाती है और मिट्टी के गोले को उसमें रख दिया जाता है। फिर गोले को और अंगारों से ढक दिया जाता है जब तक कि वह पूरी तरह से दिखाई न दे, सिवाय ऊपर के हिस्से के जहाँ मिट्टी थोड़ी सी दिखाई देनी चाहिए। मध्यम आँच तब तक रखी जाती है जब तक कि मिट्टी में दरारें न दिखने लगें। इसके बाद दस मिनट का समय दिया जाता है, फिर मिट्टी के गोले को आग से निकाल लिया जाता है, ध्यान रखें कि निकालते समय वह टूटे नहीं। वैकल्पिक रूप से, मिट्टी के गोले के चारों ओर और नीचे के अंगारों को हटाकर केवल गोला ही रहने दिया जा सकता है। इसे थोड़ा ठंडा होने दें और फिर एक और लकड़ी की मदद से ऊपर की परत को तोड़ दें। इस तरह भुना हुआ मांस बहुत

स्वादिष्ट और न ज्यादा सूखा होगा, और मांस पूरी तरह से पक जाएगा।

इस विधि की एक कमी यह है कि मांस को पूरी तरह से ढकने के लिए उपयुक्त गाढ़ेपन वाली मिट्टी ढूंढना या बनाना मुश्किल होता है। यदि इसमें मोटे दाने वाली रेत अधिक हो, तो अंदर का मांस ठीक से भुनने से पहले ही परत गर्मी से बिखर जाएगी और मांस जल जाएगा। यदि मिट्टी बहुत पतली हो, तो वह मांस से चिपकेगी नहीं। लेकिन यदि मिट्टी सही गाढ़ेपन की हो और मांस आपस में चिपकी रहे, तो मांस अपने ही रस में बेहतरीन तरीके से पकता है। यह विधि मुर्गी या खरगोश जैसे छोटे जानवरों के लिए बहुत कारगर है, लेकिन बड़े जानवरों के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसे मामलों में मिट्टी की परत बरकरार नहीं रहेगी।

जो साथी कीटाणुओं और पेचिश के डर से केवल उबला हुआ पानी पीने पर ज़ोर देते हैं और मलेरिया के डर से मच्छरदानी के नीचे सोते हैं, वे परेशानी का सबब बनते हैं। मेरी विनम्र राय में, वे तरह-तरह के रोगाणुओं की मौजूदगी की कल्पना करके बार-बार अपनी जान जोखिम में डालते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे 'गतिशील' नहीं होते। जंगल में, खासकर गंभीर शिकार के मामले में, कहीं भी और तेज़ी से जाने में सक्षम होना ज़रूरी है, और इसका मतलब है कि जो भी उपलब्ध हो उसे खाना और जहाँ और जब भी मौका मिले, पानी पीना और सोना। डिब्बाबंद भोजन, पानी उबालने के बर्तन, मच्छरदानी, खाट और तंबू के बोझ से लदे शिकारियों का दल बोझिल हो जाता है। इन सभी सामानों को ढोने के लिए कुली या भारवाहक की ज़रूरत पड़ती है। इसका मतलब है कि ज़्यादा लोगों का पेट भरना पड़ेगा।

मुझे याद है कि एक बार मैं एक पति-पत्नी और उनके वयस्क बेटे को कावेरी नदी के किनारे मछली पकड़ने ले गया था। मैं उनकी कार में उनके साथ गया था। जब रात हुई—एक खूबसूरत चांदनी रात—मैंने नदी के रेतीले किनारे पर अपना बिस्तर लगाया। नदी से आती ठंडी हवाएँ ताजगी भरी थीं और मुझे नींद आ गई। लेकिन मेरे ग्राहकों ने मुझे जगा दिया, वे जानना चाहते थे कि क्या मगरमच्छों या जंगली जानवरों से कोई खतरा है। नींद में ही मैंने 'नहीं' में जवाब दिया और फिर सो गया। लेकिन कुछ ही मिनटों में उनके शोर से मेरी नींद टूट गई। ये लोग मच्छरदानी और डंडे लाए थे और उन्हें रेत में गाड़ रहे थे। ढांचे में आड़ी पट्टियाँ बाँधी गईं, फिर एक बर्फ जैसा सफेद पर्दा लाया गया और चारों कोनों पर डंडों से बाँध दिया गया। अंत में वे तीनों उसके नीचे लेटकर सो गए।

लेकिन सोने के बजाय, वह बूढ़ा आदमी थोड़ी-थोड़ी देर में उठकर मच्छरदानी उठाता और टॉर्च से चारों ओर रोशनी करता। मैं उनकी तरफ पीठ करके करवट लेकर लेट गया और फिर से सो गया। पर ज़्यादा देर नहीं। क्योंकि औरत की चीख सुनकर मैं चौंक गया, उसके बाद बहुत शोर हुआ। मैंने करवट बदली तो देखा कि परिवार के तीनों सदस्य अपने ही मच्छरदानी में उलझे हुए थे, जो खंभों समेत उनके ऊपर गिर पड़ी थी। औरत चिल्ला रही थी, 'बिच्छू! बिच्छू!', और टॉर्च की टिमटिमाती रोशनी कुछ गज दूर नदी की रेत पर पड़ रही थी।

उठकर मैंने थोड़ी अधीरता से शोर का कारण पूछा। महिला ने कहा कि टॉर्च की रोशनी में उसने कुछ ही दूरी पर रेत पर एक बड़ा बिच्छू रेंगते हुए देखा था। उसके पति से टॉर्च लेकर मैं उस जगह गया जहाँ उसने इशारा किया था। मुझे वहाँ कोई बिच्छू नहीं दिखा, लेकिन उसने बड़े विश्वास से कहा कि कुछ क्षण पहले वहाँ एक बिच्छू था। हो सकता है वह सही हो, हालाँकि मुझे इस पर संदेह है। लेकिन अगर बिच्छू था भी, तो वह गायब हो चुका था। मैंने थोड़ी देर तक खोजा, लेकिन कुछ न मिलने पर मैंने सुझाव दिया कि हम सब थोड़ी देर सोने की कोशिश कर लें।

लेकिन नहीं, वे मेरी बात मानने को तैयार नहीं थे। तीनों ने अड़ियल रवैया अपनाते हुए कहा कि वे पूरी रात अपनी कार में ही बैठना पसंद करेंगे। फिर उन्होंने एक चौंकाने वाला काम किया। उन्होंने अपनी मच्छरदानी को पूरी तरह से कार पर डाल दिया और उसके नीचे घुसकर दरवाजे खोलकर गाड़ी में बैठ गए। उन्होंने कहा कि इस तरह उन्हें मच्छर नहीं काटेंगे। मैंने सोचा, ठीक है; अब मुझे थोड़ी नींद आ जाएगी। लेकिन मैं पूरी तरह गलत था। कार के अंदर से, खिड़कियों और मच्छरदानी के बीच से, वे उस भयानक टॉर्च की रोशनी बार-बार मुझ पर चमकाते रहे। बात और बिगड़ गई जब थोड़ी देर बाद उन्होंने बिजली का हॉर्न बजाना शुरू कर दिया।

'आखिर तुम कर क्या रहे हो?' मैंने चिढ़कर पूछा।

उनमें से एक ने जवाब दिया, 'हमें जंगल में आवाजें सुनाई दे रही हैं। आसपास जंगली जानवर हैं। तुम सो रहे हो इसलिए सुन नहीं सकते, लेकिन हम सुन सकते हैं।'

उस शोर-शराबे, टॉर्च की रोशनी और बिजली के हॉर्न की वजह से मुझे पता था कि कोई भी जानवर आधे मील के दायरे में नहीं आएगा। लेकिन इस बात का ज़िक्र करना बेकार था। सुबह करीब 4 बजे उनकी सारी हिम्मत जवाब दे गई।

उस आदमी ने मुझे पुकारते हुए कहा, 'जाग जाओ, और चलो इस भयानक जगह

से निकल चलते हैं। यहाँ रहना हमारे लिए खतरनाक है।'

एक बार फिर मैंने कुछ नहीं कहा, बस चुपचाप उठकर गाड़ी में बैठ गया। हमेशा, जब जंगल छोड़कर सभ्यता में लौटने का समय आता है, तो मुझे अफसोस होता है। लेकिन इस बार मामला अलग था। मैं बुरी तरह से तंग आ चुका था और इंजन स्टार्ट होते ही मुझे राहत महसूस हुई, जब हमने बैंगलोर की वापसी यात्रा शुरू की।

एक बार, जिस कारखाने में मैं पहले काम करता था, वहाँ के एक बहुत वरिष्ठ अधिकारी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें एक बहुत बड़े मगरमच्छ का शिकार करने ले जा सकता हूँ, क्योंकि उन्हें उसकी खाल की बहुत ज़रूरत थी। मैं मान गया और उसी रात हम उनकी कार में कावेरी नदी के किनारे स्थित होगेनैकल के लिए निकल पड़े, जहाँ ये सरीसृप अच्छी खासी संख्या में पाए जाते हैं। हम चार लोग थे: अधिकारी, उनकी महिला मित्र, मेरा बेटा डोनाल्ड और मैं।

अगली सुबह करीब नौ बजे जब सूरज बहुत तेज़ हो रहा था, हमने एक छोटी नाव किराए पर ली, उसके किनारों को टहनियों से ढक दिया और नदी के किनारे रेत के टीलों पर धूप सेंक रहे मगरमच्छों की तलाश में धीरे-धीरे नदी में बहने लगे। मैंने उस बड़े आदमी से कहा कि जब हमें कोई मगरमच्छ दिखेगा, तो उसे किनारे पर उतरना होगा, जंगल में जाना होगा और चुपचाप उसका पीछा करना होगा जब तक कि वह गर्दन पर गोली मारने के लिए काफी करीब न पहुँच जाए। छोटी नाव में सीधे उसके पास जाना उसे खोने जैसा होगा, क्योंकि मगरमच्छ बहुत चालाक होते हैं और खतरा आते ही पानी में वापस चले जाते हैं। गर्दन में गोली मारने से मगरमच्छ की रीढ़ की हड्डी लकवाग्रस्त हो जाती है और वह आखिरी क्षण में शरीर को घुमाकर पानी में वापस नहीं जा पाता, जिसके बाद वह फिर कभी दिखाई नहीं देता। या तो धाराएँ शव को मीलों दूर बहा ले जाएँगी या मगरमच्छ नदी के तल में चट्टानों के बीच फंसकर वहीं मर जाएगा।

लेकिन उस महान व्यक्ति ने मेरी बात का तीखे शब्दों में खंडन किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने एक किताब में पढ़ा है कि बाएं अगले पैर के ठीक पीछे, दिल में गोली मारना सबसे कारगर होता है। मैंने समझाने की कोशिश की कि इसमें कोई शक नहीं कि दिल में गोली लगने से मगरमच्छ मर जाएगा, लेकिन इससे पहले कि वह नदी में वापस कूद जाए और गायब हो जाए। लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।

कुछ देर बाद हमें एक बड़ा मगरमच्छ रेत के टीले पर धूप सेंकता हुआ दिखाई

दिया। हमने अपने आदमी को किनारे पर, नज़रों से ओझल और नदी से एक चौथाई मील ऊपर की ओर उतार दिया। फिर मैं अपनी छोटी नाव में बैठकर दूरबीन से सारा दृश्य देखने लगा। अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद उसने बड़ी कुशलता से शिकार किया। जिस टीले पर मगरमच्छ लेटा था, वह थोड़ा ऊंचा था, और काफी देर बाद मैंने शिकारी को टीले के ऊपर आते देखा। वह लेट गया और सावधानी से निशाना साधा। अचानक मगरमच्छ अपनी पूंछ पर खड़ा हुआ और ज़ोरदार छपछपाहट के साथ पानी में कूद गया। अगले ही पल राइफल की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

मैंने छोटी नाव के मालिक को जल्दी से उस जगह पर चप्पू चलाने का आदेश दिया। वहाँ मेरा ग्राहक चौड़ी मुस्कान के साथ मुझसे मिला, गर्मी और मेहनत से उसका चेहरा गहरा लाल हो गया था। उसने कहा, 'मैंने उसे पकड़ लिया, ठीक बाएं कंधे के पीछे।'

'मुझे अफसोस है कि आपने ऐसा नहीं किया है,' मैंने जवाब दिया। 'इसमें कोई शक नहीं कि आपने उसे मारा होगा और वह मर जाएगा। लेकिन हम उसे कभी नहीं ढूंढ पाएंगे।'

'बकवास!' उसने रूखेपन से जवाब दिया। 'कुछ मछुआरों को बुलाओ और उनसे कहो कि वे नदी में जाल डालें, हम उसे जल्द ही पकड़ लेंगे।'

ओताईमलाई गाँव से मछुआरों को जालों के साथ लाने के लिए एक छोटी नाव भेजी गई। वे एक घंटे बाद आए और जाल डाले गए। लेकिन कोई मरा हुआ मगरमच्छ नहीं मिला। नदी बहुत गहरी थी और जाल तल तक नहीं पहुँच पाए। इसके अलावा, तेज़ धाराएँ भी थीं।

मैंने सांत्वना भरे लहजे में सुझाव दिया, 'चलिए एक और कोशिश करते हैं।'

'तुम मुझे नहीं जानते,' उस महान व्यक्ति ने कहा। 'जब तक मुझे सफलता नहीं मिल जाती, मैं कभी हार नहीं मानूंगा।'

शाम तक जाल बिछाए गए, लेकिन हमें कोई मरा हुआ मगरमच्छ नहीं मिला। उस रात खाने के समय मैंने सुझाव दिया कि चूंकि हमें अगले दिन काम पर वापस जाना था, इसलिए हमें लगभग दस बजे निकल जाना चाहिए।

मुझे बताया गया, 'तुम मुझे नहीं जानते। मैं तब तक हार नहीं मानूंगा जब तक मुझे सफलता नहीं मिल जाती। मैं तब तक इस जगह को नहीं छोड़ूंगा जब तक मुझे मेरा मगरमच्छ वापस नहीं मिल जाता।'

अगली सुबह मैंने फिर से सुझाव दिया कि हम एक और मगरमच्छ की तलाश करें। मेरे साथी ने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। जाल फिर से डाला जाने लगा, लेकिन दोपहर के भोजन तक कोई शव नहीं मिला। जब हम जंगल के बंगले में दोपहर के भोजन के लिए बैठे, तो वह महान व्यक्ति पसीने से तरबतर था और जोर-जोर से गालियाँ दे रहा था। उसने अपना बुश-कोट उतारकर एक कुर्सी पर फेंक दिया और कमर तक नंगे होकर बैठ गया। उस महान व्यक्ति को आराम से बैठे देखकर, डोनाल्ड ने भी वैसा ही किया और बैठने से पहले अपनी कमीज उतार दी, वह भी कमर तक नंगे होकर बैठ गया।

अचानक उस महान व्यक्ति ने पूछा: 'एंडर्सन, आपके कारखाने में सीधे आपके अधीन कितने लोग काम करते हैं?' प्रश्न की अचानकता पर आश्चर्यचकित होकर, मैंने स्वतः ही उत्तर दिया, 'लगभग 110।'

मुझे बेहद आश्चर्य और निराशा हुई जब उसने तीखे लहजे में जवाब दिया: 'यह बात मुझे वाकई हैरान करती है कि आप उन्हें कैसे नियंत्रित करती हैं जबकि आप अपने ही बेटे को नियंत्रित नहीं कर सकतीं।'

मेरे चेहरे पर हैरानी देखकर उसने ठंडे स्वर में कहा, 'तुम अपने बेटे को एक महिला की मौजूदगी में नग्न अवस्था में लंच टेबल पर बैठने की अनुमति देते हो!'

इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, डोनाल्ड बीच में ही बोल पड़ा। 'और तुम? क्या तुम भी नग्न नहीं हो? तुम्हें दूसरों को वह करने से रोकने के लिए खुद ऐसा करने के बजाय एक उदाहरण पेश करना चाहिए।'

उस आदमी का चेहरा गुस्से से पहले तो गहरा लाल हो गया, फिर लगभग बैंगनी पड़ गया। 'अरे यार, क्या तुम इस नासमझ को मुझसे, अपने वरिष्ठ अधिकारी से, इस तरह बात करने की इजाज़त देते हो?' फिर डॉन की ओर मुड़कर उसने गुस्से से कहा: 'चुप हो जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें चुप करा दूंगा।'

यह बात डोनाल्ड के लिए कुछ ज़्यादा ही हो गई। वह जवान और बहुत फुर्तीला था। उसने जवाब दिया, 'अरे बूढ़े, मेरे पिताजी भले ही तुम्हारे नीचे काम करते हों, लेकिन मैं नहीं। बाहर आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे उस घिनौने मगरमच्छ को खिला दूँगा।'

मुझे नहीं पता कि उस महान व्यक्ति को लकवा कैसे नहीं हुआ। शायद उनके दोस्त ने हमें तुरंत बैंगलोर लौटने का सुझाव देकर स्थिति को संभाला, और हमने वैसा ही किया। वह व्यक्ति उसके बाद दो साल से अधिक समय तक मेरा बॉस रहा, लेकिन

उसने मुझसे फिर कभी बात नहीं की। डॉन और मैं आज भी इस घटना को याद करके हंसते हैं और सोचते हैं कि महान लोग इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं।

अब मैं आपको अपने दोस्त फ्रेडी गैलिफ और उस जंगली हाथी के बारे में बताता हूँ - जो आधा बदमाश और निश्चित रूप से एक खूंखार था - जो उसकी विशाल जागीर के एक कोने में रहता था, और जिसके लिए फ्रेडी के मन में एक खास लगाव था, क्योंकि इस बूढ़े राक्षस की उपस्थिति और उसकी रात की सैर लकड़ी चोरों की गतिविधियों को काफी हद तक हतोत्साहित करती थी, जो समय-समय पर उसकी जागीर के दूरदराज के हिस्सों में उगने वाली मूल्यवान लकड़ी और बांस के लिए धावा बोलते थे।

फ्रेडी गैलिफ के पास काफी बड़ी जागीर है, लगभग 600 एकड़ जमीन, जिसका लगभग आधा हिस्सा अछूता जंगल है। यह जागीर मैसूर राज्य के भीतर और कूर्ग की सीमा पर स्थित है, जो कुछ समय पहले तक मैसूर के बड़े क्षेत्राधिकार के पश्चिम में स्थित एक छोटा स्वतंत्र राज्य था। पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखलाएं यहीं से शुरू होती हैं और यह इलाका जंगली, ऊबड़-खाबड़ और घने जंगलों से आच्छादित है। इसकी सुंदरता शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। बड़े-बड़े इलाके पूरी तरह से बांस के जंगल से ढके हुए हैं, और बांस के तने बहुत ऊंचे और बेहद मजबूत होते हैं, कभी-कभी तो आपकी जांघ जितने मोटे।

फ्रेडी की संपत्ति के पश्चिम में बांस के जंगल का एक विशाल क्षेत्र स्थित है जिसे अन्नाय चौक कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'हाथी का निवास', जो एक सरकारी आरक्षित वन है और लंबे समय से हाथियों के लिए एक बुरी प्रतिष्ठा रखता है और कई बदमाशों का जन्मस्थान रहा है, जब तक कि किसी को याद है।

मैंने इस हाथी को 'फ्रेडी का बदमाश' नाम दिया है। यह हाथी जाहिर तौर पर अन्नय चौक से आया था, लेकिन किसी अज्ञात कारण से फ्रेडी की जागीर में आ गया और उसकी ज़मीन के पश्चिमी कोने में लगभग स्थायी रूप से रहने लगा, जहाँ घना जंगल और कोमल बांस हैं, जो हाथियों का पसंदीदा भोजन हैं। मेरे मित्र ने, जिसने इस हाथी को कई बार देखा है, जो विवरण दिया है, उससे पता चलता है कि यह बदमाश हाथी बहुत बूढ़ा है, क्योंकि उसके कानों के ऊपरी सिरे मुड़े हुए हैं। जाहिर तौर पर इसकी ऊंचाई नौ फीट से अधिक है, जो एक भारतीय हाथी के लिए काफी बड़ी है।

फ्रेडी जिस छोटी सी झोपड़ी में रहता है, उससे कुछ ही दूरी पर एक प्राकृतिक झील है, जिसे भारत में 'तालाब' कहा जाता है। फ्रेडी ने इस तालाब का फायदा उठाते हुए एक तरफ मेड़ बना ली है और एक नाली के फाटक से पानी लेकर कई धान के खेतों की खेती करता है, जहां वह बेहतरीन गुणवत्ता वाले चावल उगाता है।

चांदनी रात में कुछ लुटेरे धान चुराने आए। वे बैलगाड़ी में आए थे, जिसमें धान भरकर ले जाने का उनका इरादा था। और उन्होंने ठीक वैसा ही किया। उन्होंने धान चुराया, गाड़ी में भरा और उसे लेकर चले गए। लेकिन बदकिस्मती से एक मील दूर उनकी मुलाकात 'फ्रेडी के बदमाश' से हो गई। उसने एक चोर को मार डाला, गाड़ी को चकनाचूर कर दिया और हैरानी की बात यह है कि उसने धान को छुआ तक नहीं।

एक बार फिर लकड़ी चोरों ने फ्रेडी की ज़मीन पर उग रहे एक सागौन के पेड़ को काट डाला, उसकी डालियाँ तोड़ दीं और उसका सीधा तना उठा ले गए। तना भारी था, इसलिए वहाँ छह-आठ चोर रहे होंगे। एक बार फिर 'फ्रेडी का बदमाश' कोने से निकला। उसने उनमें से एक को कुचल दिया। दूसरे को उसने मज़ाक में उछाल दिया, जिससे ज़मीन पर गिरने पर चोर की जांघ टूट गई। अगली सुबह उसकी मदद की गुहार सुनकर फ्रेडी और उसके आदमी वहाँ पहुँचे। वहाँ उन्हें भारी सागौन का लट्ठा, कुचला हुआ चोर और उसका घायल साथी मिला।

तीसरी बार चोरी हुई। इस बार फ्रेडी के उन तगड़े बैलों में से एक, जिन्हें वह हल खींचने के लिए रखता था, शिकार बना। उसे फ्रेडी की झोपड़ी के पीछे अन्य बैलों के साथ रखा गया था; चोरों ने आधी रात को उसे खोल दिया और ले गए। लेकिन ज्यादा दूर नहीं। शायद वे आधा मील ही गए होंगे कि न्याय की पुकार करते हुए 'फ्रेडी का बदमाश' प्रकट हुआ। उसने चोरों में से एक का पीछा किया, जो अपनी जान बचाने के लिए फ्रेडी की झोपड़ी में शरण लेने आया था। चोर ने फ्रेडी के दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक दी। अपना जुर्म कबूल करने के बाद उसने खुद को पुलिस के हवाले कर दिया।

एक दिन फ्रेडी के कुछ दोस्त, एक साहसी जोड़ा, उसकी जागीर में आया। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक साल जंगल में रहने का फैसला किया है और फ्रेडी से उसकी जागीर के किसी सुनसान हिस्से में अपने लिए एक झोपड़ी बनाने की अनुमति मांगी। यह एक अजीब अनुरोध था, लेकिन फ्रेडी को अनुमति देने में कोई हर्ज नहीं था, इसलिए उन्होंने दयालुता से सहमति दे दी। हालांकि, उन्होंने उन्हें एक खतरनाक हाथी के बारे में चेतावनी दी, लेकिन वे बिल्कुल भी नहीं डरे और बरगद के पेड़ की शाखाओं

के बीच, ज़मीन से लगभग बीस फीट ऊपर, टार्ज़न की तरह एक झोपड़ी बनाने में जुट गए। उनके लिए यह वाकई सौभाग्य की बात थी कि उन्होंने यह ऊंचाई चुनी।

लगभग दो महीने तक उन्होंने बांस और पत्तों से अपनी झोपड़ी बनाई और लताओं से चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ी भी बनाई। इस दौरान वे फ्रेडी की साधारण सी झोपड़ी में रहे। फिर आखिरकार गृहप्रवेश का अवसर आया। पेड़ पर बना उनका घर तैयार था। फ्रेडी उसमें चढ़े और उसे बेहतरीन बताया। उस रात उस साहसी जोड़े ने बरगद के पेड़ पर बने अपने प्रेम-आश्रय में अपनी पहली रात बिताई।

अंधेरे में किसी समय उन्हें नीचे से अजीब आवाज़ें सुनाई दीं और उनकी नींद खुल गई। उन्होंने अपने सामने के दरवाजे से नीचे झाँका तो देखा कि एक विशाल हाथी नीचे ज़मीन पर खड़ा है, उसकी सूंड हवा में लहरा रही है, जो उनसे कुछ ही फीट नीचे है। सौभाग्य से उन्होंने कोई आवाज़ नहीं की, जबकि हाथी क्रोधित नहीं था, बल्कि केवल थोड़ा जिज्ञासु था। निस्संदेह उसने उनकी गंध महसूस की होगी, लेकिन वह ठीक से पता नहीं लगा पाया कि वे कहाँ हैं। वह एक घंटे से अधिक समय तक नीचे ही रहा, फैली हुई सूंड से सूंघता रहा। अगर वह सर्कस के तमाशों की तरह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता, तो वह अपनी सूंड के सिरे से उन तक पहुँच सकता था और उनके कमज़ोर से घर को ज़मीन पर गिरा सकता था। सौभाग्य से उसने ऐसा नहीं किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि चुप रहकर दंपति ने अपनी जान बचाई, क्योंकि अंततः हाथी ने उस ढांचे में रुचि खो दी और वहाँ से चला गया। सुबह होते ही वे नीचे उतर गए, और उन्होंने उस छोटी सी पेड़ की झोपड़ी में एक और रात नहीं बिताई जिसे उन्होंने इतनी मेहनत से बनाया था।

फ्रेडी अपने इस हाथी से बहुत लगाव रखता है, जिसे वह 'शरारती' कहता है। वह लगातार अधिकारियों को इसकी सूचना देने से इनकार करता है, और अपनी ज़मीन पर खुद हाथी को गोली मारने की कोशिश भी नहीं करता—जबकि यह जायज़ है। फ्रेडी का दावा है कि यह हाथी उसका बिना वेतन वाला रखवाला है। यह महत्वपूर्ण है कि अब चोर रात में फ्रेडी की ज़मीन को अकेला छोड़ देते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि फ्रेडी खुद सूर्यास्त के बाद बाहर नहीं निकलता। वाकई, बिना वेतन वाला रखवाला बढ़िया काम कर रहा है! वह घुसपैठियों और मालिक दोनों को बंद दरवाजों के पीछे रखता है!

* देखें नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग, जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन।

छह

जंगल के जीव

अफ्रीका के बड़े शिकार और मांसाहारी जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, और भारत में बाघों, तेंदुओं और हाथियों के बारे में भी बहुत कुछ लिखा गया है। साहित्य के इस विशाल भंडार में छोटे जानवरों को अक्सर भुला दिया जाता है।

इनमें से एक, भारतीय जंगली कुत्ता, जिसका लैटिन नाम सायन दुखुएन्सिस है, एक अत्यंत रोचक जानवर है, जो दिखने और आदतों में पालतू कुत्ते से बहुत मिलता-जुलता और संबंधित है। इसका रंग लाल-भूरा होता है, जो पेट पर सफेद हो जाता है। पीठ के बाल गहरे भूरे या काले रंग के होते हैं, कानों के सिरे अक्सर काले होते हैं, और इसकी पूंछ छोटी और घनी होती है, जिसके सिरे पर काले बालों का गुच्छा होता है। कभी-कभी इस काले गुच्छे के भीतर और अंत में सफेद बालों का एक छोटा गुच्छा होता है। एक नर कुत्ते का वजन चालीस पाउंड से अधिक होता है और इसकी ऊंचाई लगभग दो फीट होती है। गर्दन और जबड़े मजबूत होते हैं, छाती गहरी होती है, लेकिन कमर पतली होती है, जो यह दर्शाता है कि यह जानवर तेज गति के लिए बना है। खोपड़ी और दांतों में इसकी संरचना पालतू कुत्ते से भिन्न होती है, और इसमें स्तन ग्रंथियां अधिक होती हैं। पैर और उंगलियां बालों वाली होती हैं, और इनके पदचिह्न

पालतू कुत्तों की तुलना में अधिक नुकीले होते हैं।

गर्म मौसम में जंगली कुत्ते झुंड में अधिक संख्या में इकट्ठा होते हैं। शायद इसका कुछ सहज संबंध इस तथ्य से है कि उस समय जंगलों में पानी की कमी होती है और जिन हिरणों का वे शिकार करते हैं, वे पानी के स्रोतों के आसपास अधिक संख्या में पाए जाते हैं, जहाँ उन्हें मजबूरी में पानी पीना पड़ता है। अक्टूबर के आसपास ये झुंड दो-दो के समूह में बंट जाते हैं; यही प्रजनन का मौसम होता है और ठंडे मौसम में पिल्ले पैदा होते हैं। एक बार में लगभग पाँच पिल्ले हो सकते हैं, जिनका घर चट्टानों के बीच की गुफा या ज़मीन में बना गड्ढा होता है। दूध छुड़ाने के बाद मादा कुत्ता अपने पिल्लों को कच्चा मांस खिलाती है, जिसे वह पहले शिकार से प्राप्त करती है, आंशिक रूप से पचाती है और फिर अपने बच्चों के लिए उल्टी कर देती है। बच्चे बुद्धि और समझदारी में तेज़ी से बढ़ते हैं। छोटी उम्र से ही वे खून और कच्चे मांस की गंध या दृष्टि से अत्यधिक उग्र हो जाते हैं।

जंगली कुत्तों की देखने, सुनने और सूंघने की क्षमता बहुत तीव्र होती है, खासकर सूंघने की, जिससे उन्हें अपना शिकार ढूंढने में मदद मिलती है। वे जंगल में किसी भी जीवित प्राणी पर हमला करते हैं, जिनमें वयस्क बाघ और तेंदुआ, और बाइसन के बच्चे भी शामिल हैं, लेकिन हाथी, मनुष्य, लकड़बग्घे और सियार से दूर रहते हैं, शायद उन्हें अपने करीबी रिश्तेदार मानते हैं। हालांकि, इस सामान्य व्यवहार का एक अपवाद तब सामने आया जब छह जंगली कुत्तों ने एक लकड़बग्घे—जैकी की माँ—पर हमला करके उसे मार डाला, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है। इससे यह साबित होता है कि जंगली जानवरों के साथ कोई निश्चित नियम नहीं होते। अप्रत्याशित घटनाएँ अक्सर घटित होती रहती हैं।

आंध्र प्रदेश के चित्तौड़ जिले में मुझे ऐसे कई मामले पता हैं जहाँ इन कुत्तों ने खुद काफी नुकसान उठाने के बाद एक बाघ को बुरी तरह से घायल कर दिया। संभवतः बाघ, जो हमेशा हमलावर रहने और अपने शिकार जानवरों को डराने का आदी होता है, जब खुद शिकार बनता है तो वह पूरी तरह से घबरा जाता है और कुत्तों के हमले से पहले ही मानसिक रूप से पराजित हो जाता है। तेंदुआ और बंदर पेड़ या चट्टानों पर चढ़कर भाग जाते हैं, लेकिन भ्रमित बाघ को पता चलने से पहले ही वह कुत्तों के चंगुल में फंस जाता है। जंगली कुत्ते दिन में शिकार करते हैं, खासकर सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे के बीच के गर्म समय में। वे कभी-कभी अन्य समय में और चांदनी

रातों में भी शिकार करते हैं। मैंने उन्हें कभी अंधेरी रात में शिकार करते नहीं देखा। शिकार करते समय वे एक विशेष रूप से तीखी, ऊँची आवाज़ में भौंकते हैं जिसे पक्षी की आवाज़ समझा जा सकता है। यदि वे सांभर जैसे किसी बड़े जानवर का शिकार कर रहे हों, तो झुंड का मुख्य भाग आराम से पीछे-पीछे सरपट दौड़ता है, जबकि 'किनारे वाले' आगे बढ़कर शिकार पर घात लगाते हैं। उनका हमला करने का तरीका बेहद क्रूर होता है, क्योंकि वे शिकार किए गए जानवर को जकड़ लेते हैं और उसे सचमुच जिंदा ही टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। आंखें, नाक, गला, कान, पेट और अंडकोष उनके पसंदीदा हमले के अंग होते हैं।

एक बार जब मैं एक सूखी नदी के किनारे बैठा था, तभी एक पूरी तरह से विकसित सांभर हिरणी झाड़ियों से निकलकर जंगली कुत्तों से घिरी हुई दौड़ती हुई गुजरी; उसकी आंतें रेत में घिसटती हुई उसके पीछे लगभग बीस फीट तक फैली हुई थीं। उसकी दोनों आँखें कुतर दी गई थीं, उसका चेहरा बुरी तरह से फटा हुआ था, और दो कुत्तों के दांत उसके पेट में धंसे हुए थे जिन्हें दौड़ती हुई सांभर हिरणी घसीट रही थी। ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ इन कुत्तों द्वारा शिकार किए गए हिरण अपने निर्दयी दुश्मनों से बचने के लिए गाँव में भाग जाते हैं, निर्दयी हत्यारों की बजाय मनुष्यों का साथ पसंद करते हैं। दुर्भाग्य से, केवल मांस में रुचि रखने वाले ग्रामीण इस बात को नहीं समझते और कुत्तों को भगाकर हिरणियों को खुद मार देते हैं।

एक बार मैं मामंदुर में दोपहर की तेज़ गर्मी से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था, तभी मुझे जंगली कुत्तों की अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ की तरफ़ तेज़ी से बढ़ते हुए, मैंने देखा कि एक पूरी तरह से विकसित सांभर हिरणी पानी के एक कुंड में खड़ी थी, जिसमें वह अपनी जान बचाने के लिए दौड़कर आई थी। कई कुत्ते उसकी तरफ़ तैर रहे थे, जबकि दो उस तक पहुँच चुके थे। उनमें से एक उसकी पीठ पर चढ़ गया था और उसकी गर्दन काट रहा था। विंचेस्टर राइफल से चलाई गई चार गोलियों में से चार मारे गए, जबकि बाकी जंगल में भाग गए। सांभर हिरणी अभी भी पानी में खड़ी थी, अपनी बड़ी-बड़ी, भयभीत आँखों से मुझे घूर रही थी। मैं कुंड में उतरा और उसके पास गया। फिर मैंने उसे छुआ, यह सोचकर कि वह भाग जाएगी। बेचारी डर से काँप रही थी और हिली तक नहीं। मैंने उसकी गर्दन पर हाथ फेरा, लेकिन उसने मेरी तरफ़ देखा तक नहीं। उसका सिर और बड़े कान उस जगह की तरफ़ मुड़े हुए थे जहाँ कुत्ते गायब हुए थे। आख़िरकार मैंने उसे कुंड से बाहर

धकेलना शुरू किया। जब वह किनारे पर पहुँची तब भी नहीं भागी, जब तक मैंने उसकी पीठ पर दो ज़ोरदार थप्पड़ नहीं मारे। इससे उसे होश आया और वह सरपट दौड़ने लगी। उसे बुरी तरह काटा गया था और घावों से मांस और चमड़ी के कई टुकड़े लटक रहे थे। जंगली कुत्तों के नुकीले दांत पालतू कुत्तों की तुलना में ज़्यादा पीछे की ओर मुड़े होते हैं। इससे न केवल उन्हें भागते हुए शिकार पर अपनी पकड़ बनाए रखने में मदद मिलती है, बल्कि हमला करते या शिकार करते समय मांस के बड़े-बड़े टुकड़े फाड़ने में भी मदद मिलती है।

ये जानवर बेहद शिकारी होते हैं। ये सड़ा हुआ मांस या मृत जानवर नहीं खाते, न ही दूसरे जानवरों के शिकार को छूते हैं। इनका तरीका है खुद शिकार करना, और बार-बार शिकार करना, ताकि ये गर्म, लाल खून और ताजा मांस का आनंद ले सकें। ये जंगल के सबसे विनाशकारी जीव हैं। इसी कारण पूरे प्रायद्वीप में इनके शिकार के लिए इनाम दिया जाता है, और मादा और पिल्लों के लिए इनाम और भी अधिक होता है। इनाम का दावा करते समय खाल और खोपड़ी पेश करनी पड़ती है।

अपनी भयंकर आक्रामकता के बावजूद, जंगली कुत्ते जंगल में किसी पालतू कुत्ते से मिलने पर उसके प्रति एक अजीब सी मित्रता दिखाते हैं। कई बार, जब मैं अपने कुत्ते निपर के साथ बाहर होता हूँ, तो वह एक या एक से अधिक जंगली कुत्तों के साथ मेरे पास दौड़ता हुआ लौट आता है, जो उसके पीछे-पीछे खेलते हुए मस्ती करते हैं—हमेशा पिल्ले ही नहीं, बल्कि पूरी तरह से विकसित जानवर भी होते हैं। ऐसे मौकों पर मेरा मन उन्हें गोली मारने का नहीं करता, बल्कि मैं चुपचाप खड़ा होकर देखता रहता हूँ कि आगे क्या होता है। वे मेरे बिल्कुल पास तक आ जाते हैं, अपनी पूंछ हिलाते हैं और निपर को निहारते हैं, और वैसी ही धीमी आवाज़ निकालते हैं जैसी कोई भी कुत्ता दोस्ती करने के लिए निकालता है। मैं बिना हिले-डुले खड़ा रहता हूँ और वे गोल-गोल दौड़ते रहते हैं, मेरी पहुँच से थोड़ा दूर, मुझे पूरी तरह से अनदेखा करते हुए, निपर से दोस्ती करने की कोशिश करते हैं। दुर्भाग्य से निपर कभी कोई प्रतिक्रिया नहीं देता, बल्कि बहुत डरा हुआ लगता है। यहाँ तक कि जब मैं निपर को अपने पैरों के बीच में रखकर चला जाता हूँ, तब भी वे मेरे पीछे-पीछे आते हैं, अपनी पूंछ हिलाते हैं और दोस्ताना अंदाज़ में धीमी आवाज़ निकालते हैं।

मैंने आज तक जंगली कुत्तों द्वारा किसी मनुष्य पर हमला करने या उसे काटने का एक भी मामला न तो सुना है और न ही जाना है, लेकिन वे अजीब तरह से मनुष्यों से

बेखौफ होते हैं और मनुष्य को देखकर खड़े रहते हैं, भागते नहीं, जबकि बाघ, तेंदुआ या हाथी भाग जाते। मैंने जंगली कुत्तों पर गोली चलाई है और एक-दो को मार गिराया है, जबकि बाकी झुंड आसपास ही मंडराता रहा। कई बार, मैंने आड़ लेकर एक कुत्ते को गोली मारी है और भागने के बजाय, पूरा झुंड पास आकर मरे हुए जानवर को सूंघने लगा। मुझे बताया गया है कि ऐसी परिस्थितियों में वे अपने मरे हुए साथी को भी खा जाते हैं।

एक बार उत्तरी कोयंबटूर जिले के दिंबुम के पास, जब मैं अपनी स्टडबेकर कार से सड़क के मोड़ पर मुड़ रहा था, तो मैंने एक जंगली कुतिया को सड़क पार करते देखा, जिसके पीछे तीन अधेड़ पिल्ले थे। माँ या पिल्लों को गोली मारने का मन नहीं हुआ, इसलिए मैंने अचानक कार रोक दी, बाहर निकला और उनका पीछा करने लगा। लेकिन जैसे ही मैं जंगल में कुछ ही कदम आगे बढ़ा था, तीनों पिल्ले अपनी माँ से अलग हो गए और मेरे चारों ओर भौंकते हुए, अपनी पूंछ हिलाते हुए, मेरे पहुँच से थोड़ा दूर रहे। यह स्पष्ट था कि

उनके चेहरों पर ऐसे भाव थे मानो वे दोस्त बनाने के लिए बेताब हों, लेकिन पास आने की हिम्मत जुटा नहीं पा रहे थे। माँ अलग खड़ी थी, शांत भाव से मुझे और अपने बच्चों को देख रही थी। मुझे बताया गया है कि अगर इन्हें छोटी उम्र में पकड़ लिया जाए तो आसानी से पाला जा सकता है और ये अच्छे पालतू जानवर बन सकते हैं, लेकिन अभी तक मुझे इसे स्वयं आजमाने का मौका नहीं मिला है।

यह एक विचित्र तथ्य है कि जंगल के किसी भी हिस्से में जंगली कुत्तों की संख्या में अत्यधिक उतार-चढ़ाव होता रहता है। कभी-कभी जंगल का एक हिस्सा उनसे भरा पड़ा होता है। तो कभी-कभी एक भी कुत्ता नज़र नहीं आता और न ही उनके कोई पदचिह्न मिलते हैं। कुछ आदिवासियों ने मुझे बताया है कि वे किसी विचित्र बीमारी से ग्रस्त हैं, और ऐसे समय में उन्होंने जंगल में सड़ते हुए कई जंगली कुत्तों के शव देखे हैं। कोई भी जानवर मरे हुए जंगली कुत्ते के पास उसे खाने नहीं जाता; यहाँ तक कि लकड़बग्घा या सियार भी नहीं। गिद्ध ही एकमात्र ऐसे प्राणी हैं जो ऐसे शव मिलने पर उन्हें खा जाते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मैंने कभी भी किसी ऐसे जंगली कुत्ते का शव नहीं देखा है जिसे किसी अन्य जीवित प्राणी ने न मारा हो, और मेरा मानना है कि प्रकृति ने इन जानवरों को अत्यंत बेचैन और निरंतर गतिशील रहने के लिए बनाया है। यदि वे स्थायी रूप से किसी एक स्थान पर ही रहें तो जल्द ही वहाँ शायद ही कोई प्राणी

जीवित बचेगा।

मैंने जंगली कुत्तों या लकड़बग्घों को रेबीज होने के बारे में कभी नहीं सुना, लेकिन सियार के जलभराव (हाइड्रोफोबिया) से पीड़ित होकर मनुष्यों और अन्य जानवरों को काटने के कई मामले देखे हैं। संभवतः जानवरों के अवशेषों की तलाश में गांवों में घूमने के कारण उन्हें किसी रेबीज से पीड़ित ग्रामीण कुत्ते से यह बीमारी लग गई होगी, जिसके बाद उन्होंने इसे आपस में फैला दिया होगा।

बैंगलोर से लगभग तैंतालीस मील दूर, सलेम जिले में जंगल के किनारे पर जोवलागिरी नाम का एक गाँव है। जोवलागिरी के दक्षिण-पश्चिम में, लगभग तीन मील की दूरी पर, चट्टानी पहाड़ियों से घिरे जंगल में एक शांत तालाब है, जहाँ घाटियों में घने बांस उगते हैं। यह वह स्थान है जहाँ अक्सर पैंथर पानी पीने आते हैं। एक रात जब पूर्णिमा होने वाली थी, मैंने जल्दी खाना खाया और कुछ सैंडविच और अपने कुत्ते निपर को साथ लेकर जोवलागिरी के लिए निकल पड़ा। निपर को मैंने जोवलागिरी से लगभग नौ मील दूर देवराबेट्टा गाँव से बड़ी मुश्किल से हासिल किया था। मेरा इरादा था कि मैं इस तालाब पर आधी रात तक बैठा रहूँ, इस उम्मीद में कि शायद कोई पैंथर आ जाए, लेकिन मुख्य रूप से एकांत और चांदनी का आनंद लेने के लिए। मैं शाम 7 बजे तक जोवलागिरी पहुँच गया और एक घंटे से भी कम समय में तालाब पर पहुँच गया।

लेकिन मुझे पहले ही आगाह कर दिया गया था। शिकारी, जो पानी की तलाश में निकले किसी अनजान हिरण का शिकार करने आए थे, वहाँ पहले से ही मौजूद थे। तेज़ चाँदनी में मैंने काले कंबलों में लिपटे दो लोगों को जंगल से भागते हुए देखा, वे कमर झुकाए हुए थे, उनमें से एक के हाथ में बंदूक थी। मैं उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ से वे भागे थे। एक बड़े पेड़ के नीचे मुझे पानी के गड्ढे के सामने एक अच्छी तरह से बनाया गया 'छिपने का स्थान' मिला। भागने की हड़बड़ी में शिकारी एक बिजली की टॉर्च, बारूद की एक छोटी बोतल, गोलियों के ढक्कनों का एक टिन का डिब्बा और सीसे के टुकड़ों से भरा एक कपड़े का थैला वहीं छोड़ गए थे, जो उनकी फ्लिंटलॉक बंदूक का गोला-बारूद था। इन वस्तुओं को 'युद्ध की लूट' समझकर मैं निपर के साथ छिपने के स्थान पर बैठ गया। रात के 10 बजे के ठीक बाद निपर चौकन्ना होकर उठ खड़ा हुआ। तभी कोने से एक चित्तीदार हिरणी पूरी रफ्तार से दौड़ती हुई आई, जिसके पीछे आधा दर्जन जंगली कुत्ते उसका पीछा कर रहे थे। वह अपनी जान बचाने के लिए

तालाब में कूद गई, जबकि छह कुत्ते कुछ देर के लिए किनारे पर रुक गए।

तभी मैंने गोली चलाई और उनमें से तीन को मार गिराया। बाकी कुत्ते भागने लगे और मैं चौथी गोली चलाने ही वाला था कि अचानक कुछ अजीब होने लगा। कोई बहुत बड़ी चीज़ पेड़ से नीचे गिरी और मेरे बगल में, लगभग निपर के ऊपर ही जा गिरी, जो डर के मारे उछल पड़ा। वह एक इंसान था। एक पल के लिए मैं इतना हैरान रह गया कि उसे पकड़ नहीं पाया। बिजली की तरह वह उठा और भाग गया।

तब मुझे समझ आया कि क्या हुआ था। मेरे ऊपर पेड़ पर एक तीसरा शिकारी गहरी नींद में सो रहा था। उसे अपने दो साथियों के जाने और मेरे आने का ज़रा भी आहत नहीं था। मेरी तीन गोलियों की आवाज़ से वह इतना चौंक गया कि पेड़ से गिर पड़ा। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। बिलकुल भी नहीं। वह बेचारा आदमी एक मील दूर स्थित गाँव की ओर जाने के बजाय जंगल में भाग गया। जंगल में कहीं से मैंने उसकी चीखें सुनीं, वह गाँव वालों से मदद के लिए गुहार लगा रहा था और अजीबोगरीब झूठ बोल रहा था। उसने कहा कि कोई पानी के कुंड पर आया था और उसे गोली मार दी थी। उसने कहा कि वह भाग गया था, लेकिन उसे डर था कि कोई उसका पीछा करके उसे फिर से गोली मार देगा। वह अपने दोस्तों से गुहार लगा रहा था कि वे आकर उसे बचा लें।

कुछ ही देर में मुझे गाँव से जवाब में चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं। इस सारी अफरा-तफरी के बीच मुझे पता था कि पानी के गड्ढे तक किसी पैंथर या किसी अन्य जीव के आने की कोई संभावना नहीं थी। जिस चित्तीदार हिरणी का कुत्तों ने पीछा किया था, वह भी भाग गई थी। मैं निपर के साथ छिपने की जगह से बाहर आया और उन तीन कुत्तों को देखा जिन्हें मैंने गोली मारी थी। मेरे लिए तीन शवों और अपनी राइफल को ले जाना असंभव था, इसलिए मैंने कुत्तों की खाल उतारने और केवल उनकी खाल लेने का फैसला किया।

मैंने यह काम शुरू ही किया था कि निपर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा, और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, जंगल से आदमियों का एक बड़ा दल मेरी ओर दौड़ पड़ा। सबसे आगे मैंने पाँच बंदूकधारी देखे, सभी ने अपनी बंदूकें सीधे मेरी ओर तान रखी थीं। उनके पीछे कुल्हाड़ी, चाकू और लाठियों से लैस दूसरे आदमी भी थे। मुझे तुरंत समझ आ गया कि एकमात्र उपाय यही है कि मैं बेपरवाह दिखूं और जितना हो सके बहादुरी का दिखावा करूं। इसलिए मैंने जंगली कुत्ते की खाल उतारना जारी रखा,

मानो मुझे उस समूह के दिखने से कोई फर्क ही न पड़ता हो। वे चारों ओर जमा हो गए। तभी उनमें से एक ने मुझसे रूखे स्वर में कहा:

'हमारे जिस साथी को तुमने गोली मारी है, उसका शव कहाँ है?' उसने पूछा।

'गोली मारी?' मैंने बड़े आश्चर्य और आक्रोश का नाटक किया। 'तुम्हारा दोस्त पेड़ से कूदकर भाग गया। मैंने उसे गोली नहीं मारी।'

उन्होंने जोर देकर कहा, 'हमने तीन गोलियों की आवाज सुनी।'

'क्या आपको पूरा यकीन है?' मैंने पूछा।

'बिल्कुल निश्चित,' उसने चिढ़कर जवाब दिया, और फिर दोहराया, 'तीन गोलियां।'

'आप बिलकुल सही हैं,' मैंने निष्कर्ष निकाला। 'मैंने तीन गोलियां चलाईं, और ये तीन मरे हुए जंगली कुत्ते हैं। मैं आपके दोस्त को कैसे गोली मार सकता था?'

इस तर्क की सच्चाई धीरे-धीरे उनके दिमाग में बैठ गई। 'लेकिन उसने हमें चिल्लाकर बताया कि उसे गोली लगी है और तुम उसे मारने वाले हो।'

'मुझे पता है,' मैंने जवाब दिया। 'मैंने भी उसे सुना था। तुम्हारा दोस्त मूर्ख, कायर और झूठा है। वह जंगल में कहीं छिपा हुआ है। अभी उसे पुकारो, शायद वह जवाब दे दे।'

सब मिलकर पुकारने और सीटी बजाने लगे। थोड़ी देर बाद उसने भी जवाब दिया। जो लोग कुछ पल पहले इतने आक्रामक थे, अब एक-दूसरे को शर्मिंदगी से देखने लगे। मैं समझ गया कि वे हार चुके हैं और मैंने उन्हें काबू में कर लिया है। मैंने पलटवार करके अपनी बढ़त को और मजबूत करने का निश्चय किया।

मैंने अपनी विंचेस्टर पिस्तौल छुपकर ही छोड़ दी थी और मेरे पास कोई हथियार नहीं था। धीरे-धीरे मैं उठा और उनके नेता से बोला: 'तुमने एक साहब पर अपने मूर्ख मित्र की हत्या का आरोप लगाने की हिम्मत कैसे की?' मैंने गरजते हुए कहा। 'याद रखो, मैं इस जंगल में लाइसेंसधारक हूँ और मुझे यहाँ शिकार करने का अधिकार है, जबकि वह एक शिकारी है, जो रंगे हाथों पकड़ा गया है।'

फिर, इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, मैंने अपनी बात जारी रखी: 'मैं अब आपको एक खेल-खेल में प्रस्ताव देता हूँ, क्योंकि मैं स्वयं एक खिलाड़ी हूँ। या तो आप इस आदमी को झूठ बोलने के लिए बुरी तरह पीटेंगे, या मैं उसे पीटूँगा। इसके अलावा, उसे ये तीन मरे हुए कुत्ते जोवलागिरी में मेरी कार तक ले जाने होंगे। यदि आप मेरी शर्तें मान लेते हैं, तो मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं इस मामले को भूल

जाऊँगा और किसी को कुछ नहीं बताऊँगा। यदि आप सहमत नहीं होते हैं, तो मैं न केवल उसकी, बल्कि आपके पूरे गाँव की शिकायत करूँगा कि उसने मुझे हथियारों से धमकाया है, और आपके हथियार ज़ब्त करवा दूँगा।'

वे एक-दूसरे को देखते हुए चुप रहे। फिर दोनों ने एक-दूसरे को बोलने का इशारा किया। अंत में नेता ने हिचकिचाते हुए कहा, 'मैं खुद उस मूर्ख को पीटूँगा और उससे तुम्हारे लिए तीनों कुत्तों को उठवाऊँगा। लेकिन क्या तुम वादा करोगे कि हमारी शिकायत नहीं करोगे?'

मैंने जवाब दिया, 'मैंने पहले ही वादा कर दिया है।' फिर पेड़ के नीचे छिपी जगह की ओर इशारा करते हुए मैंने कहा: 'वहाँ किसी की टॉर्च, बारूद की बोतल, गोलियों के ढक्कनों का डिब्बा और छर्रों की थैली है। इन्हें ले आओ और मेरी राइफल मेरे पास ले आओ।'

एक आदमी इस आदेश का पालन करने के लिए दौड़ पड़ा। तभी वह आदमी, जो इस सारे हंगामे का कारण था, बेखौफ होकर जंगल से बाहर निकला और बड़े ही शान से हमारी ओर बढ़ा। बेचारे को नहीं पता था कि उसके साथ क्या होने वाला है। जैसे ही वह करीब आया, सरदार ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार प्रहार किया। वह ज़मीन पर गिर पड़ा, तभी एक दूसरे आदमी ने उसे बेरहमी से लात मारी। उसकी हैरानी जल्द ही दहशत भरी चीखों और दया की भीख में बदल गई। सरदार ने उसके बाल पकड़कर उसे ज़बरदस्ती खड़ा किया।

'मुझे दिखाओ कि तुम्हें कहाँ चोट लगी है?' उसने फुफकारते हुए कहा।

उस व्यक्ति ने डरते हुए उत्तर दिया, 'मैंने तीन गोलियों की आवाज सुनी और मुझे लगा कि मुझे गोली लग गई है।'

अंततः उन्होंने उसे पीटना बंद कर दिया और वह बुरी तरह घायल हो गया। फिर उन्होंने तीनों मरे हुए कुत्तों को उसकी पीठ पर लाद दिया और मुझे भी अपनी राइफल उसके गले में टांगने के लिए कहा। लेकिन वजन बहुत ज्यादा होता। मुझे पता था कि तीनों कुत्तों का वजन लगभग चालीस पाउंड (लगभग 40 पाउंड) था, और मैं नहीं चाहता था कि वह आदमी गिर जाए और मेरी राइफल को नुकसान पहुंचे। इसलिए मैंने जवाब दिया कि मैं हमेशा अपनी राइफल खुद लेकर चलता हूँ।

उस रात या यूँ कहें कि अगली सुबह, क्योंकि सब कुछ खत्म होने तक आधी रात हो चुकी थी, मैंने अपने सबसे अच्छे दोस्तों से विदा ली, उन लोगों के समूह से जो

शायद मुझे जान से मारने के इरादे से आए थे। फिर मैं जोवलागिरी और कार की ओर मुड़ा, निपर मेरे पीछे-पीछे था और बेचारा शिकारी तीन कुत्तों के बोझ तले लड़खड़ाता हुआ मेरे आगे था, कहीं वह अचानक कुत्तों को छोड़कर भाग न जाए।

एक और जानवर जिसके बारे में बहुत कम लिखा गया है, वह है भारतीय जंगली सूअर, जिसे आमतौर पर जंगली सूअर के नाम से जाना जाता है। पुराने समय में ऐसी कहानियां प्रचलित थीं कि कैसे साहसी निमरोद जनजाति के लोग 'पिगस्टिकिंग' करते थे—यानी घोड़ों पर सवार होकर भाले से जंगली सूअर का शिकार करते थे। इनमें से कुछ खूंखार शिकारी अपने इस शौक में विविधता लाने के लिए कुत्तों के झुंड पालते थे, जिनमें से कुछ मिश्रित नस्ल के होते थे, लेकिन ज्यादातर बुल टेरियर नस्ल के होते थे। वे इन कुत्तों का इस्तेमाल न केवल जंगली सूअर, बल्कि भालू और एक बार तो बाइसन का भी शिकार करने के लिए करते थे। जब शिकार किए जाने वाले जानवर पर कुत्ते झपट पड़ते थे, तो शिकारी मौके पर पहुंचकर घोड़े पर सवार होकर ही उसे गोली मारकर या भाले से मार गिराता था।

एक कुत्ते प्रेमी के तौर पर, मुझे लगता है कि यह तथाकथित खेल बेहद क्रूर था, खासकर जंगली सूअरों के खिलाफ इस्तेमाल किए जाने पर। एक पूरी तरह से उत्तेजित सूअर के सामने सबसे बहादुर कुत्ते का भी कोई चांस नहीं होता, और कई कुत्ते तो गुस्से में भरे सूअर के दांतों से टुकड़े-टुकड़े हो जाते थे। और यहां तक कि जब बहादुर सूअर को अंततः गोली मारकर या भाले से मार दिया जाता था, तब भी उसे अपनी बहादुरी दिखाने का उचित मौका नहीं मिलता था, क्योंकि वह कई कुत्तों के हमलों से खुद को बचाने में लगा रहता था।

भारतीय जंगल में जंगली सूअर सबसे साहसी जानवर है, शायद रैटल को छोड़कर, जो उससे काफी छोटा चौपाया जानवर है, आधा नेवला और आधा भालू। मुझे उसकी जो खूबी सबसे ज्यादा पसंद है, वह यह है कि जब वह लड़ने के लिए तैयार होता है, तो वह आखिरी दम तक लड़ता है। उसके बाद उसके लिए भागने का कोई रास्ता नहीं होता। वह या तो विजयी होकर उभरेगा या अपनी जान कुर्बान कर देगा। इसका यह मतलब नहीं है कि सूअर आक्रामक जानवर है, जो जंगल में लड़ाई और शिकार की तलाश में घूमता रहता है। अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाए तो वह बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुंचाता। मैंने कई बार जंगली सूअरों का आमना-सामना आमने-सामने और अचानक किया है, लेकिन उन्होंने कभी भी हमला नहीं किया, जैसा

कि सुस्त भालू हमेशा करते हैं। वे या तो स्थिर खड़े रहे या मुठभेड़ से बचने के लिए भाग गए। लेकिन जब उनका पीछा किया जाता है, उन्हें धकेला जाता है और परेशान किया जाता है, या जब वे घायल हो जाते हैं और उनका पीछा किया जाता है, तो वे लड़ने के लिए पलट जाते हैं। इसका मतलब है हमला करना। यहां तक कि जब एक घायल पैंथर हमला करता है, तो वह जानलेवा हमला नहीं होता; वह बस हमला करके भाग जाता है। लेकिन जंगली सूअर तब तक बार-बार हमला करता रहेगा जब तक कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को खत्म न कर दे।

कई बार मैंने बाघ और जंगली सूअर के बीच लड़ाई के परिणाम देखे हैं। आम तौर पर सूअर मारा जाता है, लेकिन ऐसा तब होता है जब वह अपने प्रतिद्वंद्वी को बुरी तरह घायल कर देता है और ज़बरदस्त लड़ाई लड़ता है। भागते हुए बाघ द्वारा छोड़े गए खून के निशान इस बात का प्रमाण हैं। कुछ मामलों में परिणाम अलग भी रहे हैं: बाघ मारा गया है या सूअर द्वारा बुरी तरह पीटे जाने के बाद लड़ाई छोड़कर भाग गया है। एक बार टारगथी में मुझे लगभग बीस गज की दूरी पर एक मरे हुए सूअर और एक मरी हुई बाघिन के अवशेष मिले। सूअर स्पष्ट रूप से पहले मरा था क्योंकि वह लड़ाई के मैदान की ओर मुंह किए हुए था; फिर बाघिन रेंगकर दूर जाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन मौत ने उसे जकड़ लिया। सूअर के गले में चीरा लगा था और उसकी मौत हो गई थी; बाघिन का पेट बुरी तरह फट गया था और उसकी आंतें बाहर गिर गई थीं, जबकि उसकी गर्दन की धमनी सूअर के नुकीले, मुड़े हुए दांतों के ऊपर की ओर वार से कट गई थी।

एक विशाल जंगली सूअर का वजन 300 पाउंड या उससे भी अधिक हो सकता है, जबकि उसके घुमावदार दांत आठ इंच तक लंबे होते हैं। वह बुद्धिमान और ताकतवर होता है, और उसमें एक कट्टर योद्धा का साहस होता है। अगर उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए, तो जंगली सूअर मिलनसार जानवर होते हैं और झुंड में रहते हैं। वे अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं और उनकी बहादुरी से रक्षा करते हैं। सूअरों को पानी बहुत पसंद होता है और वे हमेशा उसके आसपास ही पाए जाते हैं। उनका आहार बहुत विविध होता है, जिसमें जड़ें, कीड़े, अपशिष्ट और खेती की फसलें, छिपकलियां, सांप और बाघ या तेंदुआ द्वारा मारे गए जानवर, साथ ही खेतों में बीमारी से मरे हुए मवेशी भी शामिल हैं। उन्हें जंगली फल भी बहुत पसंद होते हैं, खासकर खट्टे, जंगल में उगने वाले आम और अंजीर, और जब ये पेड़ से गिरते हैं तो वे इन्हें बड़ी

मात्रा में खा जाते हैं। मादा सूअर टहनियों, घास या गिरी हुई बांस की शाखाओं से अपना घोंसला बनाती है, जिसके नीचे वह बच्चे को जन्म देने से पहले बिल बनाती है।

बड़े-बड़े जंगली सूअर अक्सर झुंड के नेता बनने के लिए आपस में लड़ते हैं, अपने नुकीले दांतों का बेधड़क और बेरहमी से इस्तेमाल करते हुए एक-दूसरे को बुरी तरह घायल कर देते हैं। ठंड के मौसम में और बारिश के दौरान, वे एक-दूसरे से चिपककर गर्मी पाने के लिए झुंड बना लेते हैं, अक्सर पिरामिड की तरह एक-दूसरे के ऊपर सो जाते हैं। एक बार मैं लिंगधल्ली से केमंगोंडी घाट रोड पर गाड़ी चला रहा था। ज़ोरदार बारिश हो रही थी। अचानक हेडलाइट्स की रोशनी में मेरे सामने एक रुकावट दिखाई दी: सड़क के बीचोंबीच पत्थरों का ढेर जैसा कुछ दिखाई दिया, लेकिन असल में जंगली सूअरों का एक झुंड ठंड और बारिश से बचने के लिए एक साथ ढेर बनाकर बैठा था।

हमला करने से पहले जंगली सूअर दो-तीन तेज़, तीखी गुर्राहट करता है। फिर उसकी छोटी पूंछ पीछे की ओर उठ जाती है और वह आगे बढ़ता है। जब जंगली सूअर घिर जाते हैं, तो वे हमलावरों की पूरी पंक्ति पर हमला कर देते हैं, ऐसा कारनामा जो आदमखोर बाघ समेत सबसे खूंखार बाघ भी शायद ही कभी करते हैं। ऐसे उदाहरण भी सामने आए हैं जब घायल सूअर पीछा किए जाने पर रास्ता बदलकर पीछे से हमला कर देता है। मुझे इन अफवाहों पर तब तक विश्वास नहीं हुआ जब तक मैंने खुद इसका अनुभव नहीं किया। एक सुबह मैंने पनापत्ती के पास चिनार नदी के किनारे एक बड़े सूअर पर गोली चलाई, लेकिन वह बच निकला, हालांकि मुझे पता था कि गोली उसे लगी है। जहां मैंने उसे गोली मारी थी, वहां पहुंचकर मुझे खून मिला और मैंने उसके निशान का पीछा करना शुरू किया। निशान रेतीले तल से होते हुए नदी के किनारे तक और फिर दो छोटी पहाड़ियों के बीच एक नाले में जा रहा था। मैं उस नाले में उसके पदचिह्नों का पीछा कर रहा था और उन्हें आगे जाते हुए साफ देख पा रहा था, तभी मुझे अपने ठीक पीछे से दो जानी-पहचानी गुर्राहट सुनाई दी। मैंने ठीक समय पर मुड़कर देखा तो पाया कि कुछ ही गज की दूरी पर नाले के किनारे से एक जंगली सूअर मेरी ओर पीछे से दौड़ता हुआ आ रहा था। मैंने उसे ठीक समय पर गोली मार दी। अगर उसने गुर्राकर अपनी मौजूदगी का पता न चलने दिया होता, तो आज मैं यह नहीं लिख रहा होता। यह स्पष्ट था कि उसे पता था कि उसका पीछा किया जा रहा है, इसलिए वह नाले के किनारे से निकला, किनारे पर चढ़ा और पीछे से मुझ पर हमला

करने के लिए वापस आ गया। यह सब उसकी बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। उसे गोली मारने के बाद मैंने उसके खून के निशानों का पीछा करते हुए इस बात की पुष्टि की।

एक बार, मैं अपने चचेरे भाई स्टीवर्ट हर्सी और दोस्त विली थॉमस के साथ शेवरॉय हिल्स के येरकौड में सूअर का शिकार कर रहा था। एक विशाल सूअर मेरे पास से गुजरा। मैंने गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया। फिर स्टीवर्ट ने गोली चलाई, लेकिन उसका भी निशाना चूक गया। आखिर में विली थॉमस ने गोली चलाई; उसका निशाना नहीं चूका, लेकिन उसने सूअर को घायल कर दिया। तुरंत ही सूअर मुड़ा और मुझ पर हमला कर दिया। विली ने अपनी बंदूक की दूसरी नली से भी गोली चलाई, लेकिन वह उसे रोक नहीं पाया। अगले ही पल विली जमीन पर गिर पड़ा और सूअर के दांतों के तेज वार से उसकी ठुड्डी से कनपटी तक गहरा घाव हो गया। अगर स्टीवर्ट और मैं वहां उस बहादुर बूढ़े सूअर को मारने के लिए मौजूद न होते, तो वह जरूर वापस आता और विली की जिंदगी भी खत्म हो जाती। विली थॉमस, जिसने कई पैंथर और बड़े-बड़े जानवरों का शिकार किया है, इस मुठभेड़ को मौत के सबसे करीब का अनुभव मानता है। उसके शरीर पर आज भी उस सूअर का निशान है।

सुस्त भालू एक ऐसा प्राणी है जिसमें मेरी हमेशा से गहरी दिलचस्पी रही है। शायद इसका कारण यह है कि वह काफी आम है और मैंने उसे अक्सर देखा है, चाहे वह जंगलों में जंगली अवस्था में हो या शहरी इलाकों में घुमंतू 'भालू-पालकों' के पास, जो प्रशिक्षित भालुओं को अपने साथ ले जाते हैं और उन्हें दर्शकों के सामने कुश्ती या नृत्य करवाते हैं। भालू के स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता है उसका पूरी तरह अप्रत्याशित होना! आप कभी निश्चित रूप से नहीं जान सकते कि वह आगे क्या करेगा। यही मुख्य कारण है कि जंगलों में घूमने वाले लोगों को, जहाँ भालू बहुतायत में होते हैं, अक्सर हमलों का सामना करना पड़ता है। भालू गहरी नींद सोते हैं, कभी-कभी लंबी घास में या अपने खोदे हुए गड्ढों में सोते हैं। जब वे सोते हैं तो गहरी नींद सोते हैं, अक्सर खर्राटे लेते हुए। राहगीर लगभग किसी भालू से टकरा ही जाता है, इससे पहले कि वह अचानक जाग जाए और अपने दुश्मन को इतना करीब पाए। फिर उस आदमी के साथ कुछ न कुछ बुरा हो ही जाता है।

भालुओं की दृष्टि और श्रवण शक्ति बहुत कमजोर होती है। उनकी सूंघने की क्षमता केवल कीड़े-मकोड़े, दीमक, जड़ और फल जैसे भोजन का पता लगाने तक ही सीमित है, और वे मनुष्यों की उपस्थिति को सूंघ नहीं पाते। अचानक डर जाने पर वे

भागने का रास्ता ढूंढते हैं। लेकिन उनकी प्रतिक्रिया भी उतनी ही कमजोर होती है और शायद उन्हें लगता है कि घुसपैठिए को पहले मार गिराना ही बचने का एकमात्र उपाय है। वे अपने दांतों और पंजों से हमला करते हैं, हमेशा चेहरे या छाती पर वार करते हैं। मैंने बिना किसी उकसावे के अचानक इस तरह के हमले में बुरी तरह से क्षत-विक्षत हुए लोगों के चेहरे देखे हैं। अक्सर उनकी एक या दोनों आंखें निकल जाती हैं।

मामंदुर में डेरा डाले हुए मुझे रात में खबर मिली कि दो आदमी, जो उस दोपहर जंगल से शहद ला रहे थे, नाला पार करते समय एक बाघ के हमले का शिकार हो गए और उनमें से एक की मौत हो गई। मैंने लालटेन लेकर एक बचाव दल निकाला, जिसमें वह आदमी भी शामिल था जो बच निकला था और जिसने जोर देकर कहा कि उसने बाघ ही देखा था। हम उस जगह पर गए जहाँ यह हादसा हुआ था। हमें शव मिला, लेकिन उसके बुरी तरह से क्षत-विक्षत चेहरे को देखकर हम आश्वस्त हो गए कि हत्यारा बाघ नहीं था। नाले की रेतीली ज़मीन की सावधानीपूर्वक जाँच करने पर पता चला कि एक भालू अपने बच्चे के साथ किनारे पर सो रही थी। न केवल उस आदमी के अचानक आने से भालू चौंक गई, बल्कि अपने बच्चे की मौजूदगी से भी, जिसे वह स्वाभाविक रूप से किसी भी संभावित हमले से बचा रही थी, उसने बिना किसी उकसावे के हमला कर दिया। सबूतों के सामने आने पर, मुझे घटनास्थल पर ले जाने वाले उस आदमी ने कबूल किया कि उसने जानवर को देखने का इंतज़ार ही नहीं किया था। एक गुर्राहट की आवाज सुनकर, उसके बाद अपने दोस्त की दहशत और दर्द भरी चीख सुनकर, वह दौड़ने लगा और मामंदुर गांव पहुंचने तक नहीं रुका।

एक बार मैं अपने बेटे के साथ चमाला घाटी में डेरा डाले हुए था, जो उस समय लगभग चौदह वर्ष का था। घाटी में सांभर और चित्तीदार हिरण बहुतायत में पाए जाते हैं; दोनों ही प्रजातियों के अच्छे सिर वाले नर हिरण आम हैं। कुछ समय से डोनाल्ड मुझे एक नर हिरण का शिकार करने देने के लिए परेशान कर रहा था। हिरण का शिकार करने का मेरा शौक तो बहुत पहले ही खत्म हो चुका था और मैं उस अवस्था में पहुँच गया था जब मैंने इन सुंदर और निर्दोष प्राणियों को मारना छोड़ दिया था, इसलिए मैंने डोनाल्ड को अपने विचारों से प्रभावित करने की बहुत कोशिश की। लेकिन कम उम्र का होने के कारण वह और भी जिद्दी था और मुझे परेशान करता रहा, इसलिए अंततः मैं मान गया।

उन दिनों डोनाल्ड के पास अपनी राइफल नहीं थी। उसने मेरी राइफल उधार ली

और अगली सुबह भोर से पहले ही अपने खून के प्यासे शिकार पर निकल पड़ा। मैं उसके पीछे-पीछे कुछ कदम चला, ताकि उसे मनचाहा निशाना लगाने का मौका मिल सके। चमाला घाटी में पार्क जैसे खूबसूरत इलाके हैं, जो मुझे विशेष रूप से पसंद हैं। हम ऐसे ही एक स्थान पर तब पहुँचे जब पूर्व की ओर स्थित एक बड़ी पहाड़ी, जिसे मंकी हिल के नाम से जाना जाता है, पर भोर की हल्की रोशनी फैल रही थी। डोनाल्ड मुझसे लगभग 100 गज आगे था, एक हिरण को देखने की उम्मीद में पेड़ों के तनों के बीच से होकर गुजर रहा था।

अचानक मैंने देखा कि वह एकदम रुक गया और ज़मीन से, मानो उसके पैरों के पास ही, एक काले रंग का रोएंदार जीव उभरा जिसे मैंने तुरंत एक सुस्त भालू के रूप में पहचान लिया। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा था, मानो उस पर हमला करने ही वाला था, लेकिन सौभाग्य से उसने अपना इरादा बदल दिया और उतनी ही तेज़ी से 'वूफ़! वूफ़!' की आवाज़ करते हुए भाग गया। उस समय छोटा बच्चा होने के कारण, डोनाल्ड भी भालू की तरह ही हैरान था। आज तक वह इसे अपने जीवन का सबसे बाल-बाल बचने वाला अनुभव मानता है।

भालू रात में घूमते हैं। कभी-कभी वे शाम या भोर में भी दिख जाते हैं—जैसे डोनाल्ड को उस सुबह भालू मिला था! लेकिन एक बार मेरी मुलाकात दोपहर करीब दो बजे हुई, जब दिन सबसे गर्म होता है। यह मुलाकात चमाला घाटी में हुई। मैं उस दिन अपनी पत्नी के साथ वहाँ गया था, और अपने पुराने दोस्त और शिकारी रंगा को भी साथ ले गया था, जो सलेम जिले से था। हम दोपहर में गुंडलपेंटा नामक एक जलकुंड पर टहलने गए थे और पुलिबोनू नामक स्थान पर वन विभाग के कुएँ के पास अपने शिविर में लौट रहे थे। हम तीन लोग थे—मेरी पत्नी, रंगा और मैं—और रंगा ने काला कोट, काली शॉर्ट्स पहनी हुई थी और उसके पैर नंगे थे। मैं आगे था, मेरी पत्नी मेरे पीछे थी; रंगा सबसे पीछे था।

जिस रास्ते पर हम चल रहे थे, वह एक मोड़ पर मुड़ गया। वहाँ, कुछ गज की दूरी पर, दीमक का एक टीला था, और उसके पास खड़ा एक काला साया टीले के एक छेद में ध्यान से देख रहा था। उस पल के लिए मेरी पत्नी भूल गई कि रंगा उसके पीछे है, और यह सोचकर कि मेरा नौकर दीमक के टीले की जाँच कर रहा है, उसने तमिल में पुकारा: 'क्या देख रहे हो रंगा?'

काली आकृति मुड़ी और ज़ाहिर है, वह रंगा नहीं था। वह एक सुस्त भालू था। हम

तीनों को देखकर आश्चर्यचकित होकर, वह एक कमज़ोर नज़र वाले इंसान की तरह मूर्खतापूर्ण ढंग से हमें घूरता रहा।

फिर रंगा—इस बार असली रंगा—पुकार उठा: 'कराडी! (भालू!)। हाय! भागो!' ब्रूइन जान बचाकर भागा, गुस्से में, लेकिन चौंकते हुए, 'वूफ़! वूफ़!' बुदबुदाते हुए।

भालू दीमकों के टीलों को चूसना बहुत पसंद करते हैं। वे अपनी थूथन को दीमक के टीले में बने छेदों पर लगाते हैं, या कभी-कभी खुद ही छेद खोदते हैं, फिर मिट्टी में हवा भरते हैं, और अंत में पूरी ताकत से चूसना शुरू कर देते हैं। इससे निकलने वाली आवाज़ें विचित्र और मनोरंजक दोनों होती हैं। यह मधुमक्खियों या ततैयों की भिनभिनाहट जैसी लगती है, और कभी-कभी बैगपाइप की धीमी गूंज जैसी भी। उनकी एक और अजीब आदत है कि वे अपने अगले पंजों को लगातार गुनगुनाते हुए चूसते रहते हैं। कुछ अनुभवी शिकारियों का मानना है कि वे लगातार खोदने से घायल या दर्द हुए पंजों को आराम देने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि हमारा पालतू भालू ब्रूनो, जिसके बारे में मैंने इस किताब में कहीं और लिखा है, अक्सर अपने पंजे चूसता है, जबकि खोदने से उसके पंजे बिल्कुल भी घायल या दर्द नहीं करते। मुझे पूरा यकीन है कि पैर की उंगलियों के बीच से किसी प्रकार का स्राव निकलता है— चाहे वह चिपचिपा हो, मीठा हो या नमकीन हो, मुझे नहीं पता— जो इस आदत को सभी सुस्त भालुओं के लिए आकर्षक बनाता है।

भालू बहुत बुद्धिमान जानवर होते हैं। उनमें एक अद्भुत अंतर्ज्ञान होता है जो उन्हें जंगल में विभिन्न प्रकार के फलों के पेड़ों तक ले जाता है, खासकर जब उन फलों का मौसम होता है। बोरम बेरी इसका एक उदाहरण है। विशेष रूप से चमाला घाटी में, जब ये फल पककर जमीन पर गिरने लगते हैं, तो बड़ी संख्या में भालू दिखाई देते हैं। जंगली आमों के बारे में भी यही कहा जा सकता है, जो रेशेदार, खट्टे और मनुष्यों के स्वाद के लिए अरुचिकर होते हैं, हालांकि वे भालुओं के लिए एक स्वादिष्ट व्यंजन हैं; कटहल के बारे में भी यही कहा जा सकता है, जो आमतौर पर जंगलों में नहीं उगते बल्कि जंगल से सटे खेती वाले क्षेत्रों में लगाए जाते हैं; गन्ने के बारे में भी यही कहा जा सकता है, जिसे कृषि भूमि पर बड़े-बड़े खेतों में बोया जाता है; और विशेष रूप से जामुन या जुमलम के बारे में, जो अंगूर जैसे बैंगनी रंग के होते हैं और हर साल जुलाई और अगस्त में हजारों की संख्या में मूल पेड़ से गिरकर जमीन को बैंगनी-काले, हल्के कसैले फलों से ढक देते हैं।

सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे जुमलम के पेड़ घनी संख्या में उगते हैं, और उन महीनों में बड़ी संख्या में भालू गिरे हुए फलों को खाने के लिए आते हैं। अपने शुरुआती दिनों में मैंने कुछ भालुओं का शिकार किया, लेकिन जल्द ही मुझे यह एक नीरस और नीरस शौक लगा। मैं दोपहर में अपने सहायकों, रंगा और बायरा, और यदि उपलब्ध हो तो एक-दो और आदमियों के साथ पेड़ों पर जाता था, और गिरे हुए जुमलमों को मुख्य पेड़ के नीचे एक विशाल ढेर में इकट्ठा करता था। हम जितने अधिक फल इकट्ठा कर पाते और ढेर जितना बड़ा होता, मेरी योजना के लिए उतना ही अच्छा होता।

मैं बस या ट्रक के पुराने इनर ट्यूब से काटी गई रबर से बनी एक बहुत शक्तिशाली गुलेल और नदी की तलहटी से इकट्ठा किए गए चिकने कंकड़ों से भरी एक जेब लेकर तैयार रहता था। सूर्यास्त से पहले और चांदनी रात में, आपात स्थिति के लिए अपनी राइफल साथ लेकर, मैं पेड़ पर चढ़ जाता और सुस्त भालुओं के आने का इंतजार करता। लगभग आठ बजे वे एक-एक करके आते; बड़े, काले, बड़बड़ाते, गड़गड़ाते और भारी-भरकम जीव। उन्हें वहाँ कितना शानदार भोजन मिलता! मुझे यकीन है कि उन्होंने सोचा होगा कि वे स्वर्ग में हैं! जल्द ही जुमलम के ढेर पर चार, पाँच या उससे अधिक भालू टूट पड़ते।

और अब मस्ती का समय आ गया था। मैंने अपना हाथ जेब में डाला, एक उपयुक्त कंकड़ ढूंढा, उसे गुलेल के चमड़े के पट्टे में लगाया और अपने नीचे मौजूद सबसे बड़े भालू पर निशाना साधा—जो शायद बारह से पंद्रह फीट दूर था। मैंने पट्टे को पूरी तरह खींचा और फिर फेंक दिया। कंकड़ उस बड़े, काले भालू की गर्दन के पिछले हिस्से पर ज़ोर से लगा, और फिर तो जैसे मानो हंगामा मच गया!

'मेरे बगल में खड़े इस आदमी को धिक्कार है,' उसने शायद यही सोचा होगा, और इसी बीच उसने अपने निर्दोष पड़ोसी को बेरहमी से काट लिया।

'लड़ना चाहते हो ना?' पड़ोसी ने पूछा और फिर अपने अगले पड़ोसी को काट लिया। और यह सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि मेरे नीचे भालुओं का एक झुंड ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था, जबकि मैं अपने पेड़ पर चूहे की तरह शांत बैठा था। किसी तरह उन्होंने विरोध की चीखों, दर्द भरी कराहों और गुस्से की कई गुर्राहटों के साथ खुद को अलग किया। खूब सूंघने, इधर-उधर भागने और फुफकारने की आवाज़ें आईं, लेकिन कुछ देर बाद वे उस बेवकूफी भरी घटना को भूल गए और अपने सामने फैले

फलों को खाने के लिए फिर से बैठ गए।

फिर गुलेल ने दूसरी बार वार किया, और चीखते-चिल्लाते, काटते-पीटते भालुओं का काला झुंड एक बार फिर एक-दूसरे पर टूट पड़ा, इस बार ज़्यादा देर तक। लेकिन आखिरकार वे खाने के लिए बैठ गए और एक-दूसरे की क्रूरता को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करने लगे। फिर गुलेल ने तीसरी बार वार किया! यह सचमुच एक ज़बरदस्त लड़ाई थी! आखिरकार कुछ भालू अलग हो गए और इधर-उधर भटकने लगे। उन्हें वह जगह अस्वस्थ लगी।

लेकिन अचानक एक भालू ने ऊपर देखा और मुझे पहचान लिया। तो लकड़ी के ढेर में छिपा हुआ नीग्रो यही था! डर और गुस्से से चीखते हुए वह चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। उसका डर दूसरे भालुओं में भी फैल गया और वे सब एक साथ चीखने-चिल्लाने लगे। केवल एक बार एक भालू ने मेरे बारे में कुछ करने का सोचा। वह पेड़ के नीचे पहुंचा और तने पर चढ़ने लगा। मैंने सोचा कि मुझे उसे अपनी राइफल से गोली मारनी पड़ेगी, जिसे मैं एहतियात के तौर पर अपने साथ लाया था। लेकिन मैंने उसे भगाने की आखिरी कोशिश की। एक बार फिर गुलेल का इस्तेमाल करते हुए, मैंने उसके चेहरे पर ज़ोर से मारा। पूरे जंगल में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए, वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर वह जल्दी से उठा और ज़ोर-ज़ोर से शिकायत करते हुए भाग गया।

जब एक भालू घायल हो जाता है तो दूसरे को काटना भालुओं का आम व्यवहार है। अगर दो भालू साथ हों और उनमें से एक को बंदूक या राइफल की गोली लग जाए, तो वह दूसरे पर बेरहमी से हमला कर देता है। सुस्त भालू जब चाहें आसानी से पेड़ पर चढ़ सकते हैं। वे मधुमक्खी के छत्ते चुराने के लिए ऊपर जाते हैं, जिन्हें वे ज़मीन पर गिरा देते हैं और फिर खा जाते हैं। उन्हें खजूर के पेड़ों पर लगे घड़ों से ताड़ी पीते हुए भी देखा गया है। इससे उन्हें कुछ नशा हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे महोवा फूल की मोटी पंखुड़ियाँ ज़मीन पर गिरने से होता है। हालाँकि वे बिना किसी परेशानी के पेड़ पर चढ़ सकते हैं, लेकिन उन्हें उतरने में कठिनाई होती है। कभी-कभी वे पीछे की ओर फिसलने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी वे बस पेड़ छोड़ देते हैं और धड़ाम से ज़मीन पर गिर जाते हैं। ऐसा लगता है कि इस तरह से उन्हें कभी चोट नहीं लगती।

हालांकि वे चिड़चिड़े और आसानी से उत्तेजित हो जाते हैं, सुस्त भालू अपने बच्चों और एक-दूसरे के प्रति बेहद स्नेही होते हैं। जब वे अकेले होते हैं और घायल हो जाते

हैं, तो एक भालू जोर से चीखता है और जंगल को अपनी पीड़ा के बारे में बताता है। उसके साथी भी सहानुभूति में चीखने लगते हैं। वे एक-दूसरे की मदद करने की कोशिश करते हैं और मैंने एक नर भालू के बारे में सुना है जिसने गोली लगने से मरी अपनी मादा साथी के मृत शरीर को हटाने की कोशिश की थी। मादा भालू अपने बच्चों को - आमतौर पर एक बार में दो शावक पैदा होते हैं - अपनी पीठ पर तब तक रखती हैं जब तक वे काफी बड़े नहीं हो जाते, और अपनी जान की कीमत पर भी उनकी रक्षा करती हैं। सभी भालुओं, जिनमें नर भी शामिल हैं, की पीठ पर, कंधों के ठीक पीछे, बहुत लंबे बालों का एक गुच्छा होता है। संभवतः यह माँ के तेजी से चलने पर शावकों को बेहतर पकड़ प्रदान करने के लिए होता है।

यह सोचना गलत है कि सुस्त भालू पूरी तरह शाकाहारी होता है और उसका आहार केवल जड़ वाली सब्जियों, शकरकंद और कीड़ों तक ही सीमित होता है। ऐसा बिल्कुल नहीं है। कई बार, जब हम बाघ और तेंदुआ के शिकार के पास बैठे होते हैं, तो ब्रुइन आकर शव को खाना शुरू कर देता है, भले ही वह काफी ऊपर तक पहुंच गया हो। हमारा पालतू भालू ब्रुनो हर तरह का मांस बहुत पसंद करता है, खासकर सूअर का मांस, हिरण का मांस और जंगली बत्तखों का मांस।

स्लॉथ भालू के पंजे, विशेष रूप से अगले पंजों के, सफेद, बहुत लंबे (लगभग चार इंच) और बेहद मजबूत होते हैं। उसके पिछले पैरों के निशान बिना उंगलियों वाले मानव पदचिह्नों से काफी मिलते-जुलते हैं। खाल उतारने के बाद जानवर का शरीर काफी हद तक मानव शरीर जैसा दिखता है और बहुत सुगठित होता है।

भालुओं को गर्मी का कुछ हद तक एहसास तो होता ही है, क्योंकि उनके शरीर पर लंबे और घने काले बाल होते हैं। उन्हें पानी बहुत पसंद होता है और वे अक्सर सूखे नदी-तल की रेत में गड्ढे खोदते हैं ताकि उसमें से रिसने वाले थोड़े से पानी तक पहुँच सकें। वे शोर मचाने वाले जीव हैं और तरह-तरह की आवाज़ें निकालते हैं। जब वे जोड़े में चलते हैं, लेकिन एक-दूसरे से दूरी बनाए रखते हैं, तो वे लगातार तीखी, गड़गड़ाहट भरी आवाज़ों के मिश्रण से एक-दूसरे से संपर्क बनाए रखते हैं। अगर उनमें से कोई एक लकड़ी के लट्ठे या पत्थर के नीचे कीड़ों का घोंसला ढूंढ लेता है, तो वह तुरंत चीखों और खुशी भरी चहचहाहटों की एक श्रृंखला से दूसरे भालू को बुलाता है।

भारतीय जंगलों का एक बेहद अनोखा जीव है पांच पैर की उंगलियों वाला पैंगोलिन, जिसे लैटिन भाषा में Manis pentadactyla नाम से जाना जाता है।

इसकी औसत लंबाई लगभग साढ़े तीन फीट होती है, जिसमें से लगभग आधी इसकी पूंछ होती है। इसका शरीर मोटी, एक-दूसरे पर चढ़ी हुई, नुकीली धार वाली पपड़ियों के कवच से ढका होता है और छूने पर यह गेंद की तरह गोल हो जाता है। पैंगोलिन बहुत कम ही दिखाई देता है और ज्यादातर लोग, यहां तक कि अनुभवी शिकारी भी, इसके अस्तित्व से अनजान हैं। इसका कारण यह है कि यह पूरी तरह से निशाचर जीव है, इतना कि यह रात में 1 बजे से पहले अपने बिल से शायद ही कभी बाहर निकलता है, और वह भी हर रात नहीं, बल्कि कभी-कभार ही। इसका असली बिल एक सुरंग के अंत में, सतह से लगभग दस फीट नीचे होता है। इसे खोदकर बाहर निकालने की कोशिश करना व्यर्थ है, क्योंकि जितना गहरा खोदोगे, पैंगोलिन उतना ही गहरा चला जाएगा। आप इसे कभी पकड़ नहीं पाएंगे, क्योंकि प्रकृति ने इसे बिल खोदने के लिए विशेष रूप से अनुकूल पंजे दिए हैं।

पैंगोलिन को देखने या पकड़ने का सबसे अच्छा तरीका है किसी पानी के गड्ढे की कीचड़ में उसके पदचिह्नों को खोजना। जब वह पानी पीने के लिए किनारे की ओर बढ़ता है, तो उसके पदचिह्न एक अजीब समानांतर कतार में नुकीले निशान या छेद बना देते हैं। पानी का गड्ढा मिल जाने पर, आपको चांदनी रात में रात-रात भर जागते रहना होगा, जब तक कि आप उसे कीचड़ पर इधर-उधर लुढ़कते हुए पानी के किनारे तक पहुँचते हुए न देख लें। पैंगोलिन की यह अजीब लुढ़कने वाली चाल इसलिए होती है क्योंकि वह अपने पैरों के पोरों पर चलता है, उसके अगले पैरों के पंजे अंदर की ओर मुड़े होते हैं, जबकि पिछले पैरों के तलवे बाहर और ऊपर की ओर मुड़े होते हैं। उसके गुजरने का संकेत देने वाले समानांतर निशानों की कतारें अंदर की ओर मुड़े हुए पंजों के पिछले हिस्से से बनती हैं।

जब वह झाड़ियों से निकलकर कीचड़ के बीच में होता है, तो उस पर झपटना अपेक्षाकृत आसान होता है; वह तुरंत खुद को गेंद की तरह समेट लेता है। वैसे तो पैंगोलिन हानिरहित होता है, लेकिन अपने शरीर या पूंछ के एक झटके से वह अपने तेज धार वाले शल्कों से आपके हाथ को बुरी तरह काट सकता है। यदि आप पैंगोलिन को जंगल में वापस जाने देते हैं, तो वह आपसे बच सकता है, क्योंकि उसकी आदत होती है कि वह घनी घास या झाड़ी में तब तक छिपा रहता है जब तक आप वहां से गुजर नहीं जाते, और फिर वह विपरीत दिशा में रेंगता हुआ निकलता है और तेज चाल से भाग जाता है।

पकड़े जाने पर पैंगोलिन आमतौर पर फुफकारने जैसी आवाज़ निकालता है, जैसा कि ओडुम्बु या इगुआना करते हैं। चलते समय, इनकी खाल के शल्क आपस में हल्की सरसराहट करते हैं, जैसे साही के कांटे। भागते समय ये अपनी पूंछ को ज़मीन से ऊपर रखते हैं ताकि वह बाधा न बने। पूरी तरह से निशाचर और ज़मीन के गहरे नीचे रहने वाले इस जानवर से यही उम्मीद की जा सकती है कि तेज़ धूप में इन्हें ठीक से दिखाई नहीं देता। मैंने लकड़बग्घे में भी यही बात देखी है। पैंगोलिन को शक्तिशाली तैराक कहा जाता है, हालाँकि मैंने इन्हें कभी पानी में नहीं देखा। लेकिन मैंने देखा है कि चट्टानों के नीचे बिल बनाते समय, ये इतने मज़बूत होते हैं कि अपने वज़न के बावजूद पत्थर को हटा देते हैं।

मुझे लकड़बग्घे से विशेष लगाव है, शायद इसका कारण यही है कि अधिकतर शिकारी उसे तुच्छ समझते हैं, मानो उसे तस्वीर या गोली के लायक भी न समझते हों। यह पूर्वाग्रह इतना प्रबल है कि मेरे कई परिचित शिकारी तो मानो उसके अस्तित्व को ही नकार देते हैं और कहते हैं कि दक्षिण भारत के जंगलों में लकड़बग्घे दुर्लभ हैं। मुझे समझ नहीं आता कि वे इतने गलत कैसे हो सकते हैं, क्योंकि मुझे शायद ही कोई ऐसा जंगल याद है जहाँ नदी के रेतीले तल पर या खड्डों और नालों को पार करते हुए लकड़बग्घे के पदचिह्न न मिलते हों।

भारत में लकड़बग्घे की केवल एक ही विशेष प्रजाति पाई जाती है - धारीदार लकड़बग्घा, हाइना स्ट्रिएटा। एक पूर्ण विकसित लकड़बग्घा लगभग ग्रेट डेन जितना लंबा होता है, जिसका सिर काफी बड़ा और चौड़ा होता है। इसका रंग राख जैसा भूरा होता है जिस पर काली धारियाँ होती हैं और गले पर एक काला धब्बा होता है। इसके बड़े, लंबे, नुकीले कान, चौड़ा माथा, अत्यंत शक्तिशाली जबड़ा, चौड़ी छाती और बेहद मोटे और मजबूत अगले पैर होते हैं, जो बड़े, बालों वाले पंजों में समाप्त होते हैं। इसकी पीठ काफी पतली होकर एक बेहद कमजोर कूल्हे और पिछले हिस्से तक जाती है, और इसके पिछले पैर अपर्याप्त और कमजोर दिखते हैं। इसलिए, इसके पदचिह्न पैंथर के पदचिह्नों से बिल्कुल अलग होते हैं, हालांकि दोनों लगभग बराबर आकार के होते हैं, क्योंकि लकड़बग्घे के अगले पंजे उसके पिछले पंजों से लगभग दोगुने बड़े और गोल होते हैं, जबकि पिछले पंजे लंबे होते हैं। लकड़बग्घे के पैर के नाखूनों के निशान, जो पीछे नहीं हट सकते, पटरियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जबकि पैंथर के पदचिह्न बिल्कुल अलग होते हैं। पैंथर के आगे और पीछे के पंजे लगभग एक ही व्यास

के होते हैं, जबकि पैर का अगला हिस्सा लकड़बग्घे की तुलना में काफी बड़ा होता है, और उसके पंजे पीछे हट सकते हैं इसलिए दिखाई नहीं देते।

मुझे पूरा यकीन है कि लकड़बग्घा बेहद कम बुद्धि वाला जानवर है। उसकी दृष्टि बहुत कमजोर होती है (खासकर दिन के समय), सुनने की क्षमता भी कम होती है, और (इस मामले में मैं अन्य लेखकों से असहमत हूँ) उसकी सूंघने की क्षमता भी औसत दर्जे की होती है। मैंने जैकी पर कई परीक्षण किए हैं, जिसमें मैंने कुछ ही गज की दूरी पर तेज गंध वाला मांस का टुकड़ा फेंका, लेकिन वह उसे ढूंढ नहीं पाया। इसमें कोई शक नहीं कि उसे मांस की हल्की सी गंध जरूर आई होगी, क्योंकि वह उसे ढूंढने की नाकाम कोशिश में इधर-उधर बेतरतीब ढंग से गोल-गोल घूमता रहा।

जैकी को सैर पर ले जाते समय मैंने उसमें एक आदत देखी है कि हर कुछ मिनटों में वह गोल-गोल घूमता है, और लगभग हमेशा घड़ी की विपरीत दिशा में। लेकिन उसकी कई अजीब आदतों में शायद सबसे अनोखी यह है कि जब भी वह किसी पेड़ के सूखे ठूंठ, खंभे या झाड़ी के पास से गुजरता है, तो वह सचमुच उसके चारों ओर घड़ी की विपरीत दिशा में नाचने लगता है, अपने अगले पैरों को सीधा और पिछले पैरों को मोड़कर, पिछला हिस्सा ज़मीन से थोड़ा ऊपर उठाकर। फिर वह रुक जाता है और कुछ सेकंड के लिए उसका पूरा गुदा बाहर निकल आता है, मानो वह मल त्याग करने वाला हो। लेकिन वह गैस छोड़ता है और फिर सीधा होकर आगे बढ़ जाता है। हो सकता है कि इसका उद्देश्य जंगली लकड़बग्घे को ऐसी जगहों को सूंघकर वापस लौटने में मदद करना हो, हालांकि उसकी सूंघने की क्षमता इतनी कमज़ोर होने के कारण यह सिद्धांत काफी कमजोर पड़ जाता है।

लेकिन अगर उसकी सूंघने की क्षमता वाकई इतनी कमजोर है, तो जंगली लकड़बग्घा जंगल में मरे हुए और सड़ते हुए जानवरों का पता कैसे लगाता है? शायद शिकार का पता लगाने से पहले गंध हवा के ज़रिए उस तक पहुंचती हो। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मैं एक बेहद विवादास्पद विषय पर चर्चा कर रहा हूं, क्योंकि दुनिया भर में लकड़बग्घों को दूर से भी मौत और सड़न की गंध सूंघने की अद्भुत क्षमता के लिए जाना जाता है, लेकिन जैकी पर किए गए मेरे प्रयोगों से एक बिल्कुल अलग निष्कर्ष निकला है।

इसमें कोई शक नहीं कि लकड़बग्घा अपने मांद से बहुत लगाव रखता है, जो ज़मीन में बना एक छेद हो सकता है, चट्टानों या पत्थरों के बीच हो सकता है, या एक

छोटी गुफा हो सकती है, और वह सालों तक उसी जगह पर रहता है। मैं गुंडालम के पास, सीक्रेट नदी के किनारे रहने वाले एक जोड़े को जानता हूँ, जो पाँच साल से ज़्यादा समय से उसी छोटी गुफा में रह रहे हैं और वहाँ कई बच्चों का पालन-पोषण कर चुके हैं। बाकी सभी जानवरों के विपरीत, ये जोड़े लंबे समय तक साथ रहते हैं। मैंने एक तरह से लकड़बग्घे के किसी खास घर के प्रति लगाव को इस बात से साबित किया है कि जैकी कई महीनों तक मेरे व्हाइटफील्ड स्थित छोटे से कॉटेज में रहा, जहाँ मैंने उसे रहने के लिए एक अतिरिक्त बाथरूम दिया था। हालाँकि मैंने उसे शौच के लिए बाहर जाने देने के लिए बाहरी दरवाज़ा दिन-रात खुला रखा था (उसने कभी भागने की कोशिश नहीं की), फिर भी उसने चारों कोनों से ईंट की दीवार तोड़कर और अंदर-बाहर दोनों दरवाज़ों को काटकर उस छोटे से बाथरूम को काफी नुकसान पहुँचाया। इसलिए अंततः मैंने उसे बैंगलोर स्थित अपने घर में ले आया। इसके लिए मैंने परिसर में एक छोटा सा द्वीप खुदवाया, जिसके चारों ओर चार फुट चौड़ी और चार फुट गहरी खाई खोदी गई थी। द्वीप पर मैंने उसके लिए एक बड़ा ईंटों का घर बनवाया, जिसकी छत जस्ता की चादरों की थी। द्वीप से खाई तक सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, ताकि वह नीचे जाकर दौड़-भाग कर सके। लेकिन जैसे ही मैंने जैकी को उसके नए घर में रखा, उसने लगभग दो सप्ताह तक खाना-पीना पूरी तरह छोड़ दिया, हालांकि वह पानी पीता रहा।

अब यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि वह मुझे ही याद कर रहा था, क्योंकि मैं उसके साथ बैंगलोर गया था। मैंने उसे दोपहर और सूर्यास्त के समय ही खाना खिलाया और वही पुराना खाना दिया - कई दिन पुराना, कीड़ों से भरा गोमांस। मुझे यह भी लगा कि शायद वह अपनी साथी, व्हाइटफील्ड में रहने वाली मेरी देसी कुतिया जिल की कमी महसूस कर रहा हो, इसलिए मैं जिल को बैंगलोर ले आया। जैकी उसे देखकर बहुत खुश हुआ, प्यार से अपनी पूंछ हिलाई और हमेशा की तरह जोश और मस्ती से उसके साथ खेलने लगा। लेकिन इन सबके बावजूद, उसने खाना नहीं खाया। जैसा कि उम्मीद थी, उसका वजन कम हो गया और वह दुबला-पतला दिखने लगा, जिससे मैं उसे वापस व्हाइटफील्ड ले जाने के बारे में सोचने ही वाला था। तभी मुझे एक विचार आया कि उसके मांस को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर उसे थोड़ा-थोड़ा करके खिलाऊं। पंद्रह दिन बाद उसने थोड़ा सा खाना खाया, ठीक उसी समय जब यह स्पष्ट हो गया था कि वह जल्द ही भूख से मर जाएगा। फिर धीरे-धीरे उसने दोबारा

खाना शुरू कर दिया, हालांकि उसे अपनी सामान्य भूख वापस पाने में दो सप्ताह और लग गए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वेच्छा से भूखे रहने का यह महीना केवल इसलिए हुआ क्योंकि मैंने उसे व्हाइटफील्ड स्थित अपनी कुटिया के उसके छोटे से बाथरूम से हटा दिया था, जिससे उसे बचपन से ही लगाव हो गया था। उसे अपने उस सुरक्षित ठिकाने की याद आ रही थी।

उसके खाने के प्रति पूर्ण अरुचि को दूर करने के मेरे प्रयासों के दौरान, मैंने उसे बंगले के अंदर खुला छोड़ दिया। एक मिनट के लिए मेरी पीठ मुड़ते ही, उसने सबसे पहले डोनाल्ड की अलार्म घड़ी चबा डाली, जिससे मेरे बेटे को बहुत गुस्सा आया। जैकी ने मेरी पत्नी के पालतू जानवर, एला नाम की सियार से दोस्ती करने की कोशिश की और उसके साथ खेलना चाहता था; लेकिन, हालांकि वह आकार में उससे लगभग एक-छठा हिस्सा थी, एला ने उसे बेरहमी से काटना शुरू कर दिया, हालांकि उसने पलटकर नहीं काटा। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि व्हाइटफील्ड में मेरे कुत्ते, जिप्सी और जिल, हालांकि वे उसके साथ खुलकर खेलते थे, कभी-कभी जब वह बहुत ज्यादा शरारत करता था तो अपना आपा खो देते थे और उसे काट लेते थे। उसने कभी भी अपने से बहुत छोटे और बेहद कमजोर जानवरों पर पलटवार करने की कोशिश नहीं की।

मैंने पहले भी बताया है कि जैकी के द्वीप के चारों ओर बनी खाई केवल चार फीट चौड़ी और चार फीट गहरी थी। व्हाइटफील्ड में मेरे साथ रहते हुए मैंने गौर किया था कि अपने छोटे और कमजोर पिछले पैरों के कारण वह दो फीट से ज्यादा ऊपर या अगल-बगल कूद नहीं पाता था। लेकिन मुझे लगता है कि लकड़बग्घे के शरीर की इस अजीबोगरीब बनावट के पीछे एक ठोस कारण है। मैं अक्सर जैकी को खाते हुए देखता था। वह अपने मजबूत अगले पैरों के बीच हड्डी को मजबूती से पकड़ता, अपने पिछले पैरों को नीचे मोड़ लेता और फिर अपने बेमेल शरीर के झुकाव या ढलान का इस्तेमाल करके हड्डी से मांस के बड़े-बड़े टुकड़े फाड़ लेता। कुत्ते की सीधी पीठ से उसे इतनी पकड़ या ताकत नहीं मिल सकती थी।

यदि आप मांद के पास जाते हैं, विशेषकर जब अंदर शावक हों, तो लकड़बग्घा आमतौर पर डर जाता है और एक गहरी, कंपनशील, गुनगुनाती हुई गुर्राहट निकालता है जो लंबे समय तक जारी रहती है। यदि वह बहुत भयभीत हो, उदाहरण के लिए किसी शिकार पर बाघ के प्रकट होने से, जहाँ वह लूटपाट कर रहा था, तो वह एक

तेज़, गुर्राहट भरी आवाज़ निकालता है, जो किसी क्रोधित बाघ या शेर की छोटी गुर्राहट जैसी होती है, लेकिन उतनी तेज़ नहीं। यदि आप उसे ऐसा करते हुए देखते हैं, तो आप देखेंगे कि वह सचमुच डर से कांप रहा है। अक्सर वह अनजाने में पेशाब कर देता है। यदि घुसपैठिया बाघ से कम खतरनाक हो, जैसे कि एक तेंदुआ या भालू, तो लकड़बग्घा एक उदास, शोकपूर्ण तरीके से चीख सकता है (शायद 'म्याऊँ' उस आवाज़ का वर्णन करने के लिए बेहतर शब्द है)। यदि आप किसी शिकार या पानी के गड्ढे के पास बैठे हों और लकड़बग्घा आपकी उपस्थिति को भांप ले, तो वह या तो तुरंत भाग जाएगा, जिसके बाद आप उसे सूखे पत्तों पर फुदकते हुए सुन सकते हैं, या फिर वह बहुत उत्तेजित हो जाएगा, जिसके बाद वह तरह-तरह की आवाजें निकालेगा जिन्हें केवल 'बड़बड़ाहट' ही कहा जा सकता है। अक्सर, वह तिरस्कार भरी फुफकार से शुरू करता है, एक तरह की उपहासपूर्ण, थूकने जैसी आवाज: 'ची! शी-ए!' और अक्सर इससे पहले या बाद में, आश्चर्य और उग्र उद्गारों की एक श्रृंखला निकालता है: 'हा! हा! हा! हा!' फिर, जैसे-जैसे उसका आक्रोश बढ़ता है, वह अन्य अजीब आवाजें निकालता है: 'गरार! गुर्र-र्र-आ! गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार! गू-डू! गू-डू!'

वाकई अजीबोगरीब आवाजें! लेकिन डरने की कोई बात नहीं है। बेचारा लकड़बग्घा बस घबराया हुआ है और उम्मीद कर रहा है कि आपका भी यही हाल होगा। वह बस अपनी मसखरे जैसी आवाजों से आपको भगाने की कोशिश कर रहा है। वह आपको डराने की इतनी कोशिश करता है कि खुद ही डर जाता है। अपने मचाए शोर-शराबे के बावजूद वह आप पर हमला नहीं करेगा।

इससे हम एक अक्सर बहस में रहने वाले सवाल पर आते हैं। क्या एक लकड़बग्घा किसी बाघ या तेंदुआ को उसके शिकार से भगा सकता है? या, अगर वह शिकार चुराते हुए पकड़ा जाए, तो क्या बाघ के प्रकट होते ही लकड़बग्घा भाग जाएगा, या वह असली शिकारी को डराकर भगाने की कोशिश करेगा? मेरे अनुभव में, इसका केवल एक ही जवाब है: लकड़बग्घा एक पल भी इंतजार नहीं करेगा, वह तुरंत गायब हो जाएगा।

लेकिन लकड़बग्घों का एक जोड़ा शोर मचा देता है। यह नर्वसनेस की लड़ाई होती है। कभी-कभी एक पैंथर शोर के इस अजीब मिश्रण को सहन नहीं कर पाता और स्वेच्छा से खिसक जाता है। लेकिन अगर पैंथर अपनी जगह पर डटा रहे, तो तब तक चीख-पुकार मचती है जब तक कि एक या दूसरे का धैर्य टूट न जाए। अगर पैंथर

खतरा बन जाता है, तो लकड़बग्घे बिना हिचकिचाए भाग जाते हैं। आखिर वे बड़े, अनाड़ी और बुद्धिहीन कुत्ते ही तो हैं, और सीधी लड़ाई में एक पैंथर उन्हें आसानी से हरा सकता है। वे अपनी चाल में बहुत धीमे और इतने मूर्ख होते हैं कि एक दृढ़ हमले का सामना नहीं कर सकते, खासकर जब पैंथर बिजली की तरह फुर्तीला जानवर हो। यहां तक कि अगर दो या तीन लकड़बग्घे भी हों, तो उनमें अपने कार्यों को समन्वित करने और एक साथ लड़ने की बुद्धि की कमी होती है।

बाघ के सामने तो आधा दर्जन लकड़बग्घे भी टिक नहीं पाएंगे। हालांकि जंगली कुत्तों से कहीं बड़े, भारी और ताकतवर होने के बावजूद, उनमें बाघ जैसी तीक्ष्ण बुद्धि, फुर्ती और लगभग जानलेवा साहस की कमी होती है। फिर भी यह अजीब बात है कि जंगली कुत्ते आमतौर पर उन्हें परेशान नहीं करते। सियार और लकड़बग्घे को एक ही शिकार पर भोजन करते देखना आम बात है। ऐसे समय में वे एक-दूसरे की मौजूदगी को पूरी तरह से नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि शिकार के असली मालिक के अचानक लौटने पर पैनी नजर रखते हैं, जो निस्संदेह तुरंत बदला लेगा।

अपने भद्दे शरीर के बावजूद, लकड़बग्घे आपातकालीन स्थिति में काफी तेज़ दौड़ सकते हैं। देखने वाले को वे घोड़े की तरह सरपट दौड़ते हुए और टेढ़े-मेढ़े भागते हुए दिखाई देते हैं। शायद इसका कारण यह है कि तेज़ दौड़ते समय लकड़बग्घा अपना सिर एक कोण पर रखता है, जिससे उसका पूरा शरीर टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देता है।

लकड़बग्घे जंगल के सफाईकर्मी होते हैं, जो शिकार किए गए और मृत जानवरों को खाकर उपयोगी काम करते हैं, अन्यथा वे धीरे-धीरे सड़ कर वातावरण को प्रदूषित कर देते। विशेष रूप से घने जंगलों में, जहाँ गिद्ध अपना काम नहीं कर पाते, क्योंकि घनी वनस्पति उन्हें शिकार को देखने से रोकती है, लकड़बग्घे, सियार, जंगली सूअर और कभी-कभी भालू भी सड़ते हुए शव को तेजी से साफ करने में मदद करते हैं।

लकड़बग्घे केवल मरे हुए जानवरों को खाते हैं। कभी-कभी वे हिरण के बच्चे, बछड़े, कुत्ते या बकरी को मार देते हैं—हमेशा ऐसे जानवर को जो उनसे बहुत कमजोर होता है। लकड़बग्घे किसी छोटे, असहाय जानवर को मारने के लिए उसके पास चुपके से जाते हैं, अचानक अपना सिर एक कोण पर झुकाते हैं और छोटे जीव का गला पकड़ लेते हैं। उनके जबड़ों की जबरदस्त ताकत और उनकी पकड़ इतनी मजबूत होती है कि वे हड्डी को भी आसानी से तोड़ सकते हैं या काट सकते हैं। लेकिन लकड़बग्घे में किसी भी जीवित प्राणी पर हमला करने का साहस नहीं होता, जब तक कि वह उनसे

बहुत छोटा और बिल्कुल असहाय न हो।

लकड़बग्घे की गर्दन के पिछले हिस्से से लेकर घनी पूंछ की जड़ तक भूरे-काले बालों की लंबी गर्दन होती है। जब लकड़बग्घा घबराया हुआ, उत्तेजित या क्रोधित होता है, तो ये बाल सीधे खड़े हो जाते हैं, जिससे जानवर की ऊंचाई लगभग छह इंच बढ़ जाती है और उसका शरीर कुछ चपटा सा दिखने लगता है। भयंकर और डरावने चेहरे के बावजूद, उसकी आँखों में एक विशेष भावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इतना घिनौना भोजन करने वाला होने के बावजूद, लकड़बग्घे का पूरा शरीर अत्यंत स्वच्छ और गंधहीन होता है। इस मामले में वे गिद्धों से भिन्न होते हैं, जो वास्तव में बहुत बदबूदार होते हैं। मैंने जैकी को भी जूँ, पिस्सू या अन्य कीड़ों से पूरी तरह मुक्त पाया है, या कम से कम उस पर बिल्लियों और हिरणों की तुलना में बहुत कम कीड़े हैं। एक वयस्क नर का वजन छह स्टोन से अधिक होता है और मादा का लगभग एक स्टोन कम। वह एक बार में चार या पाँच पिल्लों को जन्म देती है और मांसाहारी जानवरों के बच्चों की तरह, आँखें खुलते ही वे अपनी माँ के दूध के साथ-साथ आंशिक रूप से पचा हुआ कच्चा मांस भी खाने लगते हैं, जिसे उनकी माँ खाती है और फिर उनके लिए उल्टी कर देती है। हालांकि जंगली अवस्था में ये निशाचर होते हैं, लेकिन मैंने कई बार लकड़बग्घों को सुबह की धूप में उनके मांद या गुफाओं के प्रवेश द्वार पर धूप सेंकते हुए देखा है। कभी-कभी, और विशेष रूप से नीलगिरी की तलहटी में सेगुर और अनाइकुट्टी के आसपास, मैंने उन्हें दिन के उजाले में भी घनी घास में या किसी कंटीली झाड़ी के नीचे बिल बनाकर लेटे हुए पाया है।

पुस्तक की पहली कहानी एक सियार और बाघ की सक्रिय साझेदारी के बारे में है। यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह एक आम घटना है, क्योंकि इस प्रश्न पर अनुभवी भारतीय शिकारियों के बीच वर्षों से गरमागरम बहस होती रही है। मेरी अपनी राय है—और यह केवल मेरी राय है, इसलिए ज़रूरी नहीं कि सही हो—कि एक सियार, जो अत्यंत बुद्धिमान प्राणी है, पहले एक बाघ या तेंदुआ से परजीवी की तरह चिपक जाता है, यह जानते हुए कि इससे उसे भोजन मिलना निश्चित है, क्योंकि बाघ या तेंदुआ खाने के लिए शिकार करते हैं और जीने के लिए खाते हैं। अपने स्वभाव और दिन के उजाले में शिकार को छोड़ने की आदत के कारण, ये बड़ी बिल्लियाँ परजीवी के लिए पर्याप्त भोजन छोड़ देती हैं। इस पूरे समय के दौरान सियार अपनी दूरी बनाए रखने का पूरा ध्यान रखता है, और बाघ या तेंदुआ शुरुआती चरणों

में शायद उसकी मौजूदगी से भी अनजान रहते हैं। समय बीतने के साथ, सियार—जो हमेशा दोनों जानवरों में अधिक बुद्धिमान होता है—पाता है कि अपने मेज़बान के पीछे-पीछे एक शिकार से दूसरे शिकार तक जाने की आदत उसे लगातार बहुत लाभ पहुँचाती है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि सियार संभावित शिकार को देखकर आवाज निकालने लगे, जिससे उसे अपने मेज़बान को सूचना मिल जाए। बाघ या तेंदुआ, यद्यपि भोजन के लिए सियार पर निर्भर नहीं होते, फिर भी वे उसकी उपस्थिति के अभ्यस्त हो चुके होते हैं और मुख्यतः बड़े शिकार का शिकार करके अपना पेट भरते हैं, इसलिए वे ऐसे जीव के बारे में ज्यादा चिंता नहीं करते जो अपने दम पर पर्याप्त भोजन न जुटा सके। जब सियार आवाज निकालने लगता है, तो सियार समझ जाता है कि कुछ होने वाला है और उसे शिकार की उपस्थिति का पता चल जाता है।

आम तौर पर यह माना जाता है कि बाघों और तेंदुओं की सूंघने की शक्ति बहुत तीव्र होती है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। ये दोनों ही जानवर शिकार करने के बाद वहीं नहीं खाते। वे हमेशा अपने शिकार को किसी आश्रय स्थल, जैसे झाड़ी या नाले में घसीटकर ले जाते हैं। दूसरी बार खाने आते समय, शिकारी ज़मीन पर सूंघते हुए घसीटने के निशान का पीछा करता है। ऐसा लगता है कि उसे ठीक से याद रहता है कि उसने अपना शिकार कहाँ छोड़ा था, क्योंकि वह किसी भी दिशा से लौट सकता है, चाहे हवा किसी भी दिशा से बह रही हो, और ज़रूरी नहीं कि वह अपने ही पदचिह्नों पर वापस चले। इसके अलावा, मैंने अक्सर इन दोनों जानवरों के लिए अलग-अलग तरह के 'छिपाव' स्थलों में ज़मीन पर बैठकर, बिल्कुल स्थिर रहकर, हवा की दिशा चाहे जो भी हो, उन्हें लगभग छूने की दूरी तक आने दिया है, बिना उन्हें मेरी उपस्थिति का एहसास हुए। ऐसी परिस्थितियों में, सूंघने की थोड़ी सी भी क्षमता उन्हें मेरी निकटता के बारे में सचेत कर देती, लेकिन जब तक मैं बिल्कुल स्थिर रहा और कोई आवाज़ नहीं की, वे पूरी तरह अनजान बने रहे। इससे स्पष्ट होता है कि इन दोनों जानवरों में सूंघने की क्षमता बिल्कुल नहीं होती, हालांकि इनकी दृष्टि अत्यंत तीव्र होती है, जो सूक्ष्मतम हलचल को भी भांप लेती है, और श्रवण शक्ति भी अत्यंत तीव्र होती है, जो मंदतम ध्वनि को भी सुन लेती है। बाघों और तेंदुओं की अद्भुत रात्रि दृष्टि उन्हें घोर अंधेरे में भी घने जंगल में बिना आवाज किए शिकार करने में सक्षम बनाती है, यह गुण अपने आप में ही उन्हें अतिरिक्त क्षमताओं के बिना भी बेहद शक्तिशाली बनाता है।

शहर में रहने वाला अनजान व्यक्ति शायद यह सोचे कि बाघ के चटख रंग और पैंथर के उससे भी चमकीले फर के कारण वे जंगल में आसानी से दिखाई देंगे। लेकिन ऐसा नहीं है। बाघ, जो हमेशा रात या शाम के समय शिकार करता है, जब वह स्थिर हो जाता है या बिना हिले-डुले बैठ जाता है, तो वह अदृश्य हो जाता है, उसकी त्वचा झाड़ियों, घास, पेड़ों और मिट्टी के साथ घुलमिल जाती है। पैंथर तो दिन के उजाले में भी कम दिखाई देता है; वह अपने से छोटी झाड़ी के नीचे या सूखे पत्तों और घास के बीच इस तरह लेट सकता है कि जब तक वह हिलता-डुलता नहीं, तब तक वह बिल्कुल अदृश्य रहता है। रंगों का यह घुलमिल जाना, इन दोनों प्रजातियों के घायल जानवर का पीछा करने में एक बड़ा खतरा है; शिकारी को जानवर की मौजूदगी का एहसास होने से पहले ही लगभग उस पर पैर रखने का खतरा रहता है।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या किसी इंसान के लिए बाघ की तरह इतनी सटीक आवाज निकालना सचमुच संभव है कि बाघ पास आ जाए? क्या इंसान के फेफड़ों में इतनी ताकत होती है कि वे इतनी ज़ोरदार आवाज़ निकाल सकें? आखिरी सवाल का जवाब बिल्कुल 'नहीं' है। इंसान के फेफड़े कभी भी बाघ के फेफड़ों के बराबर नहीं हो सकते। लेकिन इसका मतलब सिर्फ इतना है कि कोई इंसान इतनी ज़ोर से आवाज नहीं निकाल सकता कि दूर खड़े बाघ का ध्यान आकर्षित कर सके। अगर बाघ पास ही है, तो अच्छी तरह से नकल की गई आवाज उसे ज़रूर पास ला सकती है। बाघ को असल में आकर्षित करने वाला कारक जिज्ञासा है। जब तक कोई इतना अनुभवी और कुशल है कि बाघ की आवाज की हूबहू नकल कर सके, भले ही आवाज की टोन थोड़ी अलग हो, तब तक वह उस 'बाघ को ढूंढने' की जिज्ञासा से प्रेरित होगा जो यह अजीब सी आवाज निकाल रहा है।

यही बात पैंथर या कई अन्य जंगली जानवरों के बारे में भी कही जा सकती है। आखिर, अमेरिका में कई ऐसे उपकरण बिकते हैं जो मूस, हिरण, जंगली बक और विभिन्न पक्षियों की आवाज़ की नकल करते हैं। मेरा एक चचेरा भाई है जो घास के एक तिनके की मदद से बिल्कुल जंगली मुर्गे या चिड़िया की तरह आवाज़ निकाल सकता है और नियमित रूप से इन पक्षियों को शिकार करने से पहले लुभाता है। बाघ की आवाज़ की नकल करने में बस इतना ही अंतर है कि इसमें किसी उपकरण का उपयोग नहीं किया जाता; लेकिन सिद्धांत वही है।

जानवरों के निशानों का पता लगाना एक बेहद दिलचस्प कला है, और जिन

आदिवासियों के साथ मुझे बाहर जाने का सौभाग्य और आनंद मिला है, उनकी तुलना में मैं खुद को इस खेल में बिल्कुल नौसिखिया मानता हूँ। एक चौकस व्यक्ति जिसने कई बाघों और तेंदुओं के पदचिह्न देखे हों, वह शायद यह सवाल पूछेगा: 'ऐसा क्यों होता है कि बाघ कभी-कभी दोहरे पदचिह्न छोड़ता है, जिनमें चारों पैरों के निशान दिखाई देते हैं, जबकि कभी-कभी वह एक ही पदचिह्न छोड़ता है जैसे कि उसके मनुष्य की तरह केवल दो पैर हों? और तेंदुआ, विशेष रूप से गांवों के पास रहने वाले औसत आकार के जानवर, हमेशा दोहरे पदचिह्न ही क्यों छोड़ते हैं?'

मुझे लगता है कि इसका जवाब यह है कि बाघ, जो शिकार पर नहीं बल्कि आराम से टहल रहा होता है, शांति से चलता है और अपने पीछे दो पदचिह्न छोड़ जाता है। जैसे ही उसे अपने शिकार की मौजूदगी का एहसास होता है और वह उसका पीछा करना शुरू करता है, वह सावधानी बरतता है: वह अपनी गति धीमी कर लेता है और शायद हर अगले पैर को ज़मीन पर रखकर उसे 'महसूस' करता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह किसी ऐसी टहनी या पत्ते पर पैर न रखे जो चटक कर उसकी मौजूदगी का पता दे दे। अतिरिक्त सावधानी के तौर पर, वह अपना पिछला पैर उठाता है और उसे ठीक उसी जगह पर रखता है जहाँ से उसका अगला पैर अगले कदम के साथ हटता है। बेशक, वह यह सब सहज रूप से करता है, जानबूझकर नहीं।

जहां तक पैंथर की बात है, जो अपने शिकार के अंतिम चरणों में पेट को जमीन से सटाकर रेंगता है, शायद उसके पास ऐसा कुछ नहीं है।

अपने अगले पैरों द्वारा खाली किए गए स्थानों पर अपने पिछले पैर रखने का अवसर। एक तथ्य जो इस अनुमान की पुष्टि करता प्रतीत होता है—और मैं एक बार फिर इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगा कि यह अंततः केवल एक अनुमान ही है—वह यह है कि जहाँ एक बाघ का पीछा करते हुए उसके अंतिम हमले के स्थान तक पहुँचा जा सकता है, वहीं एक पैंथर के पदचिह्नों का पीछा करते समय ऐसा करना शायद ही कभी संभव होता है। पदचिह्नों के अंतिम कुछ फीट अस्पष्ट हो जाते हैं, जो यह दर्शाता है कि पैंथर रेंगना शुरू कर चुका था।

मुझसे अक्सर यह सवाल पूछा जाता है कि क्या कोई बाघ सचमुच सांभर की आवाज की नकल कर सकता है, और अगर करता है, तो क्या वह सांभर पर घात लगाने के लिए ऐसा करता है? इस सवाल के पहले हिस्से का जवाब बिल्कुल हां है। मैंने ऐसा होते हुए सुना है। लेकिन दूसरे हिस्से का जवाब देना मुश्किल है, क्योंकि मैंने

एक बाघ को अपने शिकार, एक युवा बैल, के पास जाते समय सांभर जैसी आवाज निकालते हुए सुना है, वह भी टैगार्थी के पास जंगल के एक ऐसे हिस्से में जहां कोई सांभर नहीं था। एक और मौके पर, चमाला घाटी में, एक बाघ ने अपने शिकार, एक मृत भैंस, के पास जाते समय सांभर जैसी आवाज निकाली, जबकि वह उससे कुछ ही फीट दूर था; उस जंगल के हिस्से में कई सांभर थे। लेकिन यह बाघ शिकार नहीं कर रहा था; वह अपने शिकार के पास लौट रहा था। ये दोनों उदाहरण इस बात का संकेत देते हैं कि बाघों द्वारा की गई 'पूक' की आवाज़, हालांकि सांभर की आवाज़ से काफी मिलती-जुलती है, लेकिन हिरण की आवाज़ से ज़्यादा हिरणी की आवाज़ जैसी है, और यह किसी असली सांभर को लुभाने के उद्देश्य से नहीं की गई थी। इसलिए यह आवाज़ किसी उम्मीद, संतुष्टि, भूख या आनंद को व्यक्त कर सकती है। शायद यह किसी बाघिन को दावत में आमंत्रित करने की आवाज़ हो, या यह किसी प्रकार की मिलन की आवाज़ हो सकती है, हालांकि मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि ऊपर बताए गए दोनों ही मामलों में कोई बाघिन आस-पास नहीं थी।

यहां मैं साधारण नर बाघ की बात कर रहा हूं, न कि आदमखोर बाघ की। बाघ आमतौर पर शांत स्वभाव का होता है और मनुष्य से दूर रहने की पूरी कोशिश करता है। अगर कोई इंसान उसकी निजता में दखल भी दे, तो बाघ चुपचाप खिसक जाता है। बाघिन भी ऐसा ही करती है, हालांकि वह गुर्रा सकती है या कुछ हद तक नाराजगी दिखा सकती है। लेकिन इस सामान्य नियम का एक अपवाद है, और वह है संभोग का समय, और विशेष रूप से संभोग की क्रिया। उस समय बाघ बहुत उग्र हो जाते हैं और देखते ही हमला कर देते हैं, और तब तक हमला करते रहते हैं जब तक कि वे उस व्यक्ति को मार न डालें जिसने उनकी निजता में दखल दिया है। यह बाघिन को 'दिखावा' करने की इच्छा हो सकती है, हालांकि मुझे लगता है कि यह उनकी अत्यधिक यौन उत्तेजना के कारण होता है। खैर, उस विशेष क्षण में किसी के द्वारा देखे जाने पर बाघ को नाराज होना स्वाभाविक है।

मैं बाल-बाल बच गया जब मैं अपने एक जर्मन फोटोग्राफर दोस्त के साथ गया था, जो रात में बाघ अभयारण्य में घूमकर टॉर्च की रोशनी में तस्वीरें लेना चाहता था। मैंने उसे यह कहकर रोकने की कोशिश की कि बाघ देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं होते, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। हम अक्टूबर की शुरुआत में गए थे, जो बाघों के प्रजनन के सामान्य मौसम से कुछ पहले था, जो नवंबर के अंत से जनवरी

के अंत तक चलता है। हम दोनों पैदल थे और हमारे पास टॉर्च कैमरे के अलावा कोई हथियार नहीं था, क्योंकि अभयारण्य में शूटिंग सख्त वर्जित है और किसी भी प्रकार का हथियार लेकर घूमना मना है।

लेकिन संयोगवश, अचानक हमारी मुलाकात दो बाघों से हो गई। सौभाग्य से वे संभोग नहीं कर रहे थे, लेकिन फिर भी उन्हें हमारा दखल पसंद नहीं आया। वे गुर्राए और साथ-साथ उस छोटे से खुले मैदान को छोड़कर, जहाँ हमने उन्हें चौंका दिया था, उस रास्ते पर आगे बढ़ गए जहाँ से हम अभी-अभी आए थे।

इन बाघों को अपनी ताकत दिखाने का बहुत मन कर रहा था। लेकिन अगर हम उस लालच में पड़ जाते, तो मुझे यकीन है कि वो प्रेमी जोड़ा भी हमारा पीछा करने के लिए उतना ही ललचा जाता। इसलिए हमने 'योजना के अनुसार पीछे हटना' शुरू किया, जिसका मतलब था कि हम लगातार टॉर्च जलाते हुए तेज़ी से चलते रहे। फिर भी, नाराज़ जोड़ा एक मील से भी ज़्यादा दूर तक हमारा पीछा करता रहा। एक बेहद खतरनाक जगह पर, जहाँ रास्ता एक गहरी और झाड़ियों से भरी खाई से होकर गुज़रता था, वे लगभग पच्चीस गज पीछे आकर हमारे पास आ गए। हमने ज़ोर से खांसा और इतनी ऊँची आवाज़ में बोलने लगे कि किसी भी वक्ता को मात दे देते। इससे वो फुर्तीले बाघ एक बार फिर पीछे हट गए, और इस तरह हम उस मुश्किल हालात से निकल गए जो कुछ पल के लिए वाकई जानलेवा साबित हो सकता था।

शावकों के जन्म से पहले बाघिन आमतौर पर एकांतवास में चली जाती है, क्योंकि उसके नर साथी को अपने बच्चों को मारकर खाने की प्रवृत्ति होती है। वह आम तौर पर गुफा चुनती है, हालांकि कभी-कभी वह किसी खाई या अन्य झाड़ियों वाली जगह पर भी बच्चे पैदा कर सकती है। औसतन तीन से चार शावक पैदा होते हैं। इन्हें दूध पिलाया जाता है, और बाद में जब तक वे ठोस भोजन पचाने में सक्षम नहीं हो जाते, तब तक उन्हें उल्टी किया हुआ मांस खिलाया जाता है। बड़े होने पर वे अपनी माँ के साथ भोजन की तलाश में जाते हैं। फिर, कुछ समय बाद, नर उनके साथ वापस आ जाता है और माता-पिता उन्हें शिकार की गर्दन तोड़कर मारने की कला सिखाना शुरू करते हैं। इस प्रक्रिया में कभी-कभी बहुत अधिक व्यर्थ वध होता है; एक झुंड के चार या पाँच मवेशियों को केवल छुरा घोंपने के लिए मार दिया जाता है ताकि छोटों को सबक सिखाया जा सके या उन्हें अभ्यास कराया जा सके। युवा बाघ अक्सर काम बिगाड़ देते हैं, वे अपने शिकार को सीधे मारने के बजाय केवल घायल करने में

ही सफल होते हैं।

जब शावक आधे बड़े हो जाते हैं, तो कभी-कभी बाघों का एक पूरा परिवार दिखाई देता है, जिसमें नर, मादा और कई बड़े शावक होते हैं। मैं खुद एक रात टैगार्थी के पास कोडिहल्ली नामक स्थान पर टहलने निकला था, तभी मुझे चार शावकों का एक परिवार दिखाई दिया। वे एक झरने से पानी पीकर किनारे पर चढ़े थे। सबसे पहले माँ दिखाई दी। उसने मुझे देखा, गुर्राई, रास्ते के उस पार छलांग लगाई और एक अजीब सी तेज़ म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी। इससे दो शावक बाहर आ गए, जो लगभग स्पैनियल कुत्ते के आकार के थे। टॉर्च की रोशनी देखकर वे ज़रा भी नहीं डरे, बल्कि कुछ कदम चंचल भाव से आगे बढ़े। इस अनुचित व्यवहार पर माँ ने ज़ोर से गुर्राकर विरोध किया। पीछे खड़े पिता को यह व्यवहार असहनीय लगा। वह उनका रास्ता रोकने के लिए उनके सामने रास्ते पर कूद पड़े और धमकी भरे अंदाज़ में दहाड़े। उस दहाड़ का न केवल शावकों को माँ के पास वापस भेजने का असर हुआ, बल्कि मुझे भी इतना डर लगा कि मैं लगभग उन्हें गोली मार ही देता। मुझे खुशी हुई कि मैंने ऐसा नहीं किया जब मुझे एहसास हुआ कि उसका इरादा मुझ पर हमला करने का नहीं बल्कि केवल अपने चंचल बच्चे को डांटने का था।

बाघों की कुछ खास आदतें होती हैं, जिनमें वे पैंथर से भिन्न होते हैं। उनमें से कुछ—सभी नहीं—नरम छाल वाले पेड़ों के तनों पर अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर, जितना हो सके ऊपर तक पहुँचकर, अपने अगले पंजों के पंजों को नरम छाल में रगड़कर साफ करते हैं। उनके मल त्यागने का तरीका भी अलग होता है। इस मामले में पैंथर एक असली बिल्ली की तरह होता है; वह जंगल के रास्ते के किनारे की मिट्टी को खरोंचता है और बाद में अपने मल को सावधानीपूर्वक ढक देता है। लेकिन बाघ ऐसा नहीं करता; वह लगभग एक फुट चौकोर ज़मीन के एक टुकड़े को खुरचकर साफ कर देता है, कभी-कभी तो रास्ते के ठीक बीच में। ऐसा करते समय वह अपने पिछले पैरों को एक साथ रखकर, झुकी हुई मुद्रा में 'नाचता' हुआ प्रतीत होता है, और स्पष्ट रूप से कांपता है। मल त्यागते समय वे अपनी पूंछ को हास्यास्पद रूप से ऊपर उठाते हैं। मल चिपचिपा, काला और तारकोल जैसा होता है, और इसे खुला छोड़ दिया जाता है।

एक और अंतर जिस पर मैंने ध्यान दिया है, वह है उनके भोजन करने का तरीका। बाघ अपने शिकार पर हमला गुदा मार्ग से शुरू करते हैं, अक्सर प्रक्रिया को आसान

बनाने के लिए जानवर की पूंछ काट देते हैं। फिर वे अंदर घुसते हैं और शव में पंजा डालकर आंतों और पेट को बाहर निकालते हैं, जिसे वे आमतौर पर खाने से कुछ फीट दूर हटा देते हैं। इसके विपरीत, तेंदुआ गंदे तरीके से भोजन करते हैं और अपने शिकार के पेट और गोबर को मांस के साथ मिला देते हैं। लेकिन एक बड़ा 'तेंदु', या वन तेंदुआ, बाघ की तरह खाता है, न कि अपने छोटे भाइयों की तरह।

बाघ गर्मी बर्दाश्त नहीं कर पाते, जबकि पैंथर ऐसा नहीं है। वे ठंडी और छायादार जगहों पर आराम करना पसंद करते हैं और अक्सर उन्हें किसी छोटी नदी में डूबे हुए देखा जा सकता है, जहाँ उनका केवल सिर पानी की सतह से ऊपर रहता है। उन्हें तैरना भी बहुत पसंद है और वे अक्सर नदियाँ पार करते हैं। पैंथर, जो हर मायने में एक असली बिल्ली है, पानी से घृणा करता है, यहाँ तक कि बरसात की रात में अपने शिकार अभियान भी रोक देता है। केवल जंगली कुत्तों का झुंड या जंगल में लगी आग ही उसे नदी पार करने के लिए मजबूर कर सकती है। मजबूरी में वह अच्छी तरह तैर सकता है।

इन दोनों जानवरों की आदतों में एक और अंतर तब सामने आता है जब वे अपने द्वारा मारे गए किसी भी बड़े जानवर का शिकार करते हैं और उसके बाद भोजन करते हैं। हर बार भोजन करने के बाद बाघ को काफी पानी पीना पड़ता है। यह जानते हुए, शिकार के पास के किसी भी पानी के स्रोत या धारा पर शिकारी की मौजूदगी का पता लगाना और उसी के अनुसार 'घेराबंदी' करना काफी आसान होता है, बशर्ते शिकारी ऐसा व्यक्ति हो जो मचान पर बैठकर बाघ के लौटने का इंतजार करने के बजाय घेराबंदी करना पसंद करता हो। लेकिन पैंथर के मामले में ऐसा नहीं है। उसे इतने पानी की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए उसका पता लगाना मुश्किल होता है।

बाघ अक्सर बाइसन, जंगली सूअर, भालू और यहाँ तक कि अपनी ही प्रजाति के सदस्यों से भी लड़ते हैं। उन्हें साही खाना बहुत पसंद होता है, लेकिन ऐसे मुठभेड़ों से वे हमेशा सुरक्षित नहीं बच पाते। टैगार्थी से कुछ मील दूर मुझे एक मरी हुई बाघिन मिली जिसके चेहरे पर साही के कई कांटे चुभे हुए थे। बाघ तेंदुओं को भी मार डालते हैं, और इसी कारण जिन जंगलों में बाघ बहुतायत में होते हैं, वहाँ तेंदु कम ही पाए जाते हैं, क्योंकि तेंदु अपने से बड़े और अधिक शक्तिशाली चचेरे भाइयों के सामने हार मान लेते हैं। तेंदु इतने लड़ाकू या साहसी भी नहीं होते, और ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जहाँ एक गाँव का कुत्ता भी हमले का शिकार होकर हताशा में तेंदु पर ही टूट पड़ा

और हमलावर भाग गया।

बाघों को सूअर का मांस बेहद पसंद होता है, जबकि तेंदुओं के लिए बंदर का मांस एक स्वादिष्ट व्यंजन माना जाता है। ये दोनों बिल्लियाँ अपने-अपने पसंदीदा भोजन को पाने के लिए असाधारण प्रयास करती हैं और अपने पसंदीदा शिकार को छोड़ने में बहुत आनाकानी करती हैं। वास्तव में, अगर कोई बाघ को रसीले जंगली सूअर से दूर भगाने की कोशिश करे तो वह बेहद आक्रामक हो जाता है, और एक तेंदुआ लंगूर बंदर के शव पर हिंसक प्रदर्शन करता है। अपने शिकार को मारने के बाद, कम से कम मेरे अनुभव के अनुसार, मैंने कभी किसी बाघ को जानवर के गले पर अपनी पकड़ बनाए रखते हुए उसका खून चूसते हुए नहीं देखा है। शायद इसका कारण यह है कि बाघ जल्दी मार देते हैं, शिकार की गर्दन तुरंत टूट जाती है, जबकि तेंदुओं के शिकार को दम घुटने से लंबी और दर्दनाक मौत का सामना करना पड़ता है। तेंदुआ अक्सर अपने शिकार का खून चूस लेता है।

बाघ अपने भोजन के मामले में पैंथर से कहीं अधिक नखरे वाले होते हैं, इसलिए किसी बूढ़े, कमजोर या बीमार बैल या भैंस को बाघ के लिए चारा बनाना बहुत बड़ी गलती है। एक बार अनाइकुट्टी में, मुझे केवल एक ही चारा मिल पाया, जो फुट-एंड-माउथ रोग की अंतिम अवस्था से पीड़ित था और मृत्यु के कगार पर था। अगली सुबह, उसके पदचिह्नों से पता चला कि बाघ आया था, चारे के चारों ओर घूमा, उसके सामने बैठ गया, और ज़मीन पर बने कई निशानों से मैंने अनुमान लगाया कि वह उसके साथ खेल भी रहा था। लेकिन उसने बीमार बैल को न तो मारा और न ही उसे कोई चोट पहुँचाई, जो अगले दिन बीमारी से मर गया।

बाघ कभी-कभी अपने शिकार को, यहाँ तक कि बहुत भारी जानवर को भी, बड़ी-बड़ी बाधाओं के ऊपर से घसीटते या उठाकर ले जाते हैं। मैंने 'उठाना' शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि मेरा यही अर्थ है। एक बरसात की दोपहर, एक बाघ ने टैगार्थी गाँव से मुश्किल से दो फर्लांग दूर एक खेत के बीचोंबीच एक बड़े भूरे बैल का शिकार किया। वह उस जानवर को अपनी पीठ पर लादकर, एक खुर गीली ज़मीन पर घिसटते हुए, लगभग आधा मील तक पहाड़ी से नीचे जंगल की एक खाई में ले गया। एक अन्य बाघ एक बड़े हल चलाने वाले बैल को बाड़ तक घसीटकर ले गया और मरे हुए जानवर के साथ बाड़ के ऊपर से कूद गया। पैंथर कभी-कभी अपने शिकार, जैसे हिरण या बकरी, को पेड़ पर घसीटकर ले जाते हैं, शायद उन्हें अन्य शिकारी जानवरों

से बचाने के लिए।

गर्मी के दिनों में बाघ कभी-कभी बड़े ही अनोखे तरीके से आराम करते हैं। वे किसी नाले की ठंडी रेत पर पेड़ की छांव में पीठ के बल लेट जाते हैं और चारों पैर हवा में उठाकर सो जाते हैं। उन्हें रेत में नहाना और सूखे पत्तों पर लोटना भी बहुत पसंद होता है। शायद वे ऐसा अपनी पीठ खुजलाने और कीड़ों से छुटकारा पाने के लिए करते हैं। ये कीड़े अक्सर किसी बाघ के शिकार के बाद उसके शरीर पर बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

बाघ बेहतरीन शिकारी होते हैं और भोजन की तलाश में एक रात में कई मील का सफर तय करते हैं। इसके अलावा, उनकी एक निश्चित क्षेत्र में घूमने की आदत होती है, जो सौ मील तक फैला हो सकता है, और वे हमेशा एक ही रास्ते पर एक ही दिशा में बार-बार जाते हैं। जैसा कि मैंने अपनी पिछली कहानियों में बताया है, यह आदत किसी आदमखोर बाघ के किसी विशेष स्थान पर लौटने के संभावित समय का अनुमान लगाने में काफी मददगार होती है, और यह अनुमान हमेशा एक या दो सप्ताह के भीतर सटीक होता है।

यह सिद्ध हो चुका है कि बाघ भारत में अपेक्षाकृत हाल ही में आया है। उसके आने से पहले भारत में एशियाई शेर का प्रभुत्व था। फिर बाघ उत्तर से—साइबेरिया और मंचूरिया से—आया और शेर धीरे-धीरे इस अधिक सक्रिय जानवर के सामने कमजोर पड़ने लगा। बाघ का आकार थोड़ा छोटा हो गया है और उसका रंग पहले से अधिक गहरा हो गया है। अब उसका रंग भूरे रंग के साथ काले निशान वाला रसेट ब्राउन हो गया है, लेकिन फिर भी उसमें मूल बाघों के काले निशान मौजूद हैं। हालांकि, वह अभी तक गर्मी के प्रति अपनी असहिष्णुता पर काबू नहीं पा सका है, जिसके कारण उसे बार-बार पानी पीना पड़ता है और ठंडी जगहों पर लेटना पड़ता है, अक्सर वह किसी तालाब में डुबकी लगाता है।

साक्ष्यों के आधार पर, पैंथर, स्लॉथ बियर की तरह, भारत का मूल निवासी है और प्राचीन काल से ही यहाँ मौजूद रहा है। पैंथर विश्वभर में व्यापक रूप से वितरित हैं। ये न केवल दक्षिण अमेरिका में गठीले जगुआर के रूप में पाए जाते हैं, बल्कि अफ्रीका, मध्य पूर्व, एशिया माइनर, फारस, पूरे भारत और श्रीलंका, बर्मा, मलाया, इंडोनेशिया, इंडो-चीन, चीन और मंचूरिया में भी पाए जाते हैं। इतने व्यापक वितरण के कारण यह स्वाभाविक है कि क्षेत्र के अनुसार जानवर के आकार, आकृति और आदतों

में काफी भिन्नता होगी। लेकिन मूल रूप से ये सभी एक ही प्रजाति के हैं। चूंकि मैं केवल भारत और विशेष रूप से दक्षिण भारत के बारे में बात कर रहा हूँ, इसलिए मैं अपनी टिप्पणियों को केवल स्थानीय प्रजाति तक ही सीमित रख सकता हूँ।

भारत में पाए जाने वाले पैंथर आकार और रंग में काफी भिन्न होते हैं। जंगल पैंथर की बड़ी प्रजातियाँ सात फीट छह इंच तक लंबी और 160 पाउंड से अधिक भारी हो सकती हैं। इनका रंग गहरा भूरा होता है, जिस पर बड़े-बड़े धब्बेदार निशान और लंबे बाल होते हैं, खासकर पेट के नीचे। इनका सिर बड़ा और चौकोर होता है। ये पैंथर काफी बड़े जानवरों का शिकार कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, एक स्वस्थ घरेलू बैल, एक सांभर हिरणी या मध्यम आकार का टट्टू भी। इनका शिकार करने का तरीका बाघों जैसा ही होता है, यानी ये आमतौर पर अपने शिकार का गला घोंटने के बजाय उसकी गर्दन तोड़ देते हैं। और ये बाघों की तरह ही पिछले हिस्से से खाना शुरू करते हैं। ये बड़े पैंथर आमतौर पर घने जंगलों में पाए जाते हैं।

दूसरी ओर, हमें गाँव का या 'बंदर पैंथर' मिलता है, जो एक वयस्क जानवर है, जिसकी लंबाई शायद ही कभी पाँच फीट से अधिक होती है और वजन लगभग साठ पाउंड होता है। इनका रंग आमतौर पर हल्का पीला होता है, इन पर छोटे-छोटे धब्बे होते हैं, बाल छोटे होते हैं और सिर छोटा और गोल होता है। इनका आहार बहुत व्यापक होता है और इसमें कुत्ते, बिल्लियाँ, बकरियाँ, मुर्गियाँ (पालतू और जंगली दोनों), खरगोश, पक्षी, छिपकलियाँ और यहाँ तक कि मेंढक और केकड़े जैसे कई छोटे जीव शामिल होते हैं। ये गाँवों के आसपास, चट्टानों के बीच और विरल झाड़ियों में पाए जाते हैं, हालाँकि छोटा पैंथर कभी-कभी घने जंगल में भी मिल जाता है, ठीक उसी तरह जैसे थेन्दु कभी-कभी झाड़ियों में या गाँव के पास किसी छोटी पहाड़ी पर रहता है।

इस तीव्र विरोधाभास के कारण, लंबे समय तक यह तर्क दिया जाता रहा कि दो अलग-अलग जानवर हैं। वह सिद्धांत अब समाप्त हो चुका है: केवल एक ही जानवर है, जिसका रूप और आहार उसके परिवेश के अनुसार बदलता रहता है।

काले पैंथर दुर्लभ रूप से दिखाई देते हैं। ये पूरी तरह से काले नहीं होते, बल्कि नज़दीक से देखने पर गहरे भूरे रंग के होते हैं। दूर से देखने पर, भले ही ये पूरी तरह से काले दिखाई दें, लेकिन जब इन पर किसी कोण से प्रकाश पड़ता है तो इन पर बने रोसेट निशान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। काले पैंथर कोई अलग प्रजाति नहीं हैं। ये

मेलानिज़्म के उदाहरण हैं और आमतौर पर उन जंगलों में पाए जाते हैं जहाँ भारी वर्षा होती है और वनस्पति घनी होती है। कभी-कभी ये अन्य जंगलों में भी पाए जाते हैं। एक सामान्य मादा दो या तीन शावकों को जन्म दे सकती है, जिनमें से एक काला हो सकता है। यह विचित्र है कि मेलानिज़्म केवल पैंथरों में ही पाया जाता है, बाघों में नहीं, जबकि लगभग सफेद बाघों और लगभग भूरे या यहाँ तक कि धूसर रंग के स्लॉथ भालुओं के मामले भी दर्ज किए गए हैं।

पैंथरों की एक खास विशेषता उनकी पूंछ की लंबाई में भिन्नता है। छोटे पैंथरों की पूंछ लंबी होती है, जबकि बड़े पैंथरों की पूंछ छोटी होती है। पैंथर भीषण गर्मी सहन कर सकते हैं और उन्हें ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती। वास्तव में, उन्हें पानी बिल्कुल पसंद नहीं होता। मैंने अक्सर उनके पदचिह्नों को देखकर यह गौर किया है कि पैंथर कुछ इंच पानी या कीचड़ को पार करने से बचने के लिए काफी लंबा रास्ता तय करते हैं, सिवाय तब जब उन्हें किसी नदी को पार करना ही हो। बाघों को पानी में चलने या तैरने में कोई संकोच नहीं होता और वे अक्सर ऐसे मौके का स्वागत करते हैं।

मेरी राय में, पैंथर कहीं अधिक बुद्धिमान जानवर है। उसके कार्यों के पीछे एक निश्चित उद्देश्य होता है। उदाहरण के लिए, शाम लगभग 5 बजे, सूरज डूबने और हवा ठंडी होने से पहले, एक पैंथर पहाड़ी की चोटी पर एक चट्टान पर लेटकर नीचे के इलाके में बकरियों, भेड़ों, कुत्तों आदि जैसे शिकार की तलाश करता है, जो अपने गांवों की ओर लौट रहे होते हैं। संभावित शिकार को देखते ही, वह चुपके से सबसे छोटे रास्ते से नीचे उतरता है, अपने शिकार का पीछा करता है और कुछ ही मिनटों में उसे मार डालता है। बेशक, बाघ भी बेहतरीन शिकारी होते हैं; लेकिन मुझे लगता है कि उनका शिकार करना दूरदर्शिता की बजाय सहज प्रवृत्ति और अद्भुत कौशल का मेल है।

शावकों वाली पैंथर अपनी रक्षा के लिए जी-जान से जुट जाती है। बाघिनें, भले ही यह आश्चर्यजनक लगे, कभी-कभी अपने बच्चों को छोड़ देती हैं, हालाँकि एक बार मुझे इसका एक बेहद अप्रिय अनुभव हुआ था। पैंथर विशेष रूप से बंदरों, सूअर के बच्चों और साही को पकड़कर खाना पसंद करते हैं, हालाँकि वे वयस्क जंगली सूअर से काफी दूर रहते हैं। साही की बात करें तो, सलेम जिले के गुम्मलपुर में मुझे एक बिल मिला, जिसके प्रवेश द्वार पर नरम रेत में बने पदचिह्नों से पता चला कि उसमें एक

साही और एक पैंथर दोनों रहते थे। यह बिल मुथियालम्मा होले नामक एक धारा के किनारे पर था। मैंने उसी शाम इस जगह के ठीक सामने एक पेड़ पर बैठकर सच्चाई की पुष्टि करने का फैसला किया। पुजारियों ने मुझे अक्सर बताया था कि साही और पैंथर साथ रहते हैं, लेकिन मैंने इन कहानियों पर कभी पूरी तरह विश्वास नहीं किया क्योंकि मैं जानता था कि ये जीव जन्मजात दुश्मन हैं। वह अपेक्षाकृत सुनसान जगह थी, और शाम 6 बजे से ठीक पहले एक मध्यम आकार की वयस्क पैंथर बाहर निकली। बाद में अंधेरा छा गया, लेकिन काफी अंधेरा होने से पहले ही मुझे साही के कांटों की सरसराहट सुनाई दी। मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी डाली और नदी किनारे चट्टानों के बीच उसी छेद से एक बड़े आकार के साही को निकलते देखा। इस विचित्र संयोग का कारण मुझसे मत पूछिए, क्योंकि मैं इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकता।

तेंदुओं की क्षमता बाघों से कहीं अधिक होती है। वे खुले मैदानों में भी रह सकते हैं जहाँ झाड़ियाँ कम हों, बशर्ते चट्टानों और पत्थरों के बीच आश्रय मिल सके। वे अपने बड़े चचेरे भाइयों की तुलना में दिन के उजाले में कहीं अधिक घूमते हैं। वे बेहतरीन पर्वतारोही भी होते हैं। मुझे याद है कि कई साल पहले मुत्तूर में मैंने एक तेंदु की तस्वीर खींची थी जो एक विशाल मुठी के पेड़ की चोटी पर चढ़ गया था, जहाँ उसने एक डरे हुए छोटे बंदर को घेर लिया था। तेंदु रोशनी से कम डरते हैं, खासकर अगर वह लालटेन या किसी अन्य तेल के दीपक से आ रही हो।

दो कारणों से, घायल पैंथर का पीछा करना अक्सर बाघ का पीछा करने से ज़्यादा खतरनाक होता है। उसका रंग जंगल में घुलमिल जाता है और जब तक उस पर पैर न पड़ जाए, वह अदृश्य रहता है। साथ ही, वह बाघ की तरह पहले से चेतावनी भरी गुर्राहट भी नहीं करता। सौभाग्य से, इस कमी को पूरा करने के लिए पैंथर में अक्सर हमला करने का साहस नहीं होता। वह ज़ोरदार हमला करता है, लेकिन आखिरी क्षण में पीछे हट जाता है। यहाँ तक कि जब वह किसी आदमी पर झपटता है, तो वह बस कुछ सेकंड के लिए खरोंचता और काटता है। फिर वह भाग जाता है। वह बाघ की तरह आदमी को मारने के लिए नहीं रुकता।

आदमखोर बाघ और उसी आदत को अपना चुके पैंथर में एक बड़ा अंतर है। एक बार बाघ को मानव मांस का स्वाद लग जाए तो वह इसका स्थायी आदी हो जाता है; वह तब तक लोगों को मारता रहता है जब तक वह खुद मारा न जाए। वहीं, आदमखोर

पैंथर कभी भी सिर्फ मानव मांस नहीं खाता, न ही वह इस पर निर्भर रहता है; वह अपना सामान्य भोजन भी खाता और मारता रहता है। कभी-कभी वह लंबे समय तक मानव हत्या करना पूरी तरह बंद कर देता है और एक सामान्य पैंथर की तरह व्यवहार करता है। लेकिन देर-सवेर वह फिर से मानव जाति पर अपना हमला शुरू कर देता है। यही बात उसे और भी खतरनाक और ढूंढना व मारना मुश्किल बना देती है। यहां तक कि जब कोई शिकारी किसी पैंथर को यह सोचकर गोली मार देता है कि वह उसी आदमखोर पैंथर की तलाश में है, तब भी वह कभी निश्चित नहीं हो सकता कि उसने किसी साधारण पैंथर को नहीं मारा है और अपराधी अभी भी फरार तो नहीं है। एकमात्र कसौटी समय है—और यह तथ्य कि उस विशेष क्षेत्र में अब और कोई इंसान नहीं मारा जाता।

पैंथर, जो इंसानों के ज़्यादा संपर्क में रहते हैं, बाघों से कहीं ज़्यादा साहसी होते हैं। मुझे याद है कई साल पहले, मैं अपने चाचा, चाची और चचेरे भाइयों के साथ शेवरॉय पहाड़ियों पर स्थित येरकौड में उनके घर पर खाना खा रहा था। उनके पास सात बिल्लियाँ थीं जो बंगले के बरामदे में तीन प्लेटों में खाना खा रही थीं। हमने एक बिल्ली की भयानक चीख सुनी और दौड़कर बाहर गए तो देखा कि एक पैंथर बरामदे से कूद रहा है और उनमें से एक को अपने मुँह में दबाए हुए है। देखते ही देखते हम सबने शोर मचाया और कुत्तों को छोड़ दिया। किसी तरह बिल्ली बच निकली, लेकिन उसका एक पिछला पैर कट गया था। मार्था नाम की उस बिल्ली ने अपने घाव से उबरकर कई सालों तक तीन पैरों पर जीवन बिताया। जंगल में टहलते समय पालतू कुत्तों के पैरों के बीच से उठाकर ले जाने के कई उदाहरण हैं। और एक से ज़्यादा बार मैं एक मुर्गी फार्म के बीच में एक चालाक 'बंदर' पैंथर का इंतज़ार करता रहा हूँ, जिसे हफ्ते में कई बार रात के खाने में चिकन खाने की आदत पड़ गई थी।

पैंथर्स को आमतौर पर मचान से तब गोली मारी जाती है जब वे अपने शिकार के ऊपर होते हैं, और शायद ही कभी बीट में। वे इतने चतुर और चालाक होते हैं कि उन्हें भगाया नहीं जा सकता, और वे बहुत अच्छी तरह छिप सकते हैं। यह उनकी असाधारण बुद्धिमत्ता का एक और उदाहरण है। हालाँकि, इस सामान्य नियम का एक अपवाद यह है कि गोली लगने और चूक जाने के बाद भी वे अपने शिकार पर लौट आते हैं। बाघ ऐसा बहुत कम करते हैं। मैंने एक और मामले के बारे में सुना है जहाँ एक पैंथर अपने शिकार पर लौट आया था जहाँ कुछ गज की दूरी पर एक जलती हुई

लालटेन रखी थी, हालाँकि मैं उस समय वहाँ मौजूद नहीं था।

मुझे लगता है कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत के विभिन्न राज्यों में सरकार और वन विभाग इस जानवर को 'हानिकारक जीव' मानते हैं, जबकि कुछ जगहों पर तो इसके शिकार के लिए लाइसेंस की भी आवश्यकता नहीं होती। हालांकि यह प्रजाति पूरे देश में अभी भी काफी संख्या में मौजूद है, फिर भी मुझे लगता है कि यह बेहतर स्थिति की हकदार है। धूप और छांव से जगमगाते जंगल में एक सुंदर पैंथर का शिकार करना बाघ से भी कहीं अधिक मनमोहक होता है। यह भारत का सबसे खूबसूरत जंगली जानवर है। पैंथर की आवाज - एक कर्कश, खुरदरी और घुरघुराहट भरी गुर्राहट - तब सुनाई देती है जब नर अपनी मादा को पुकारता है, और कभी-कभी जब वह अपने शिकार के पास पहुंचता है। यह एक विशिष्ट ध्वनि है और इतने छोटे आकार के जानवर के लिए आश्चर्यजनक रूप से तेज और दूर तक सुनाई देने वाली होती है। जंगल में, पैंथर छोटे हिरणों - चित्तीदार हिरण, जंगली भेड़ और चूहा हिरण - का भारी शिकार करते हैं, जो जंगली मादा सूअरों और उनके बच्चों के साथ उनका मुख्य भोजन होते हैं। बड़े नर सूअरों को वे बिल्कुल अकेला छोड़ देते हैं। ग्रामीण इलाकों में, भोजन में घरेलू बकरियों और कुत्तों को शामिल किया जाता है; कुछ गांवों में तो एक-दो फुर्तीले पैंथरों ने कुत्तों की पूरी आबादी को ही खत्म कर दिया है। जोवलागिरी वन बंगले में, एक रात मैं बरामदे में निकला और लगभग एक पैंथर से टकरा ही गया जो वहां लेटा हुआ था और मेरे कुत्ते निपर को घूर रहा था, जो खाने की मेज के नीचे सो रहा था। ऊपर बताए गए जानवरों के अलावा, पैंथर छोटे जीवों और सभी प्रकार के पक्षियों का शिकार करते हैं। बदले में, उन्हें अक्सर बाघ मार कर खा जाते हैं, इसलिए जिन इलाकों में बाघ स्थायी रूप से मौजूद होते हैं, वहां पैंथर बेहद शर्मीले और चालाक होते हैं और कभी-कभी तो बिल्कुल भी दिखाई नहीं देते। वे बाघ के शिकार से कुछ चुराने के लिए ललचाते हैं, लेकिन ऐसा करते समय वे असली मालिक के अचानक लौटने के डर से बहुत सतर्क रहते हैं। अंत में, वे सड़े हुए मांस को भी खाते हैं और बहुत अधिक सड़ चुके शवों पर भी दावत करते हैं। मैंने पाया है कि दक्षिण भारत में बाघ ऐसा नहीं करते, और आमतौर पर वे ऐसा करने के लिए एक से अधिक बार नहीं लौटते, क्योंकि वे बहुत अधिक भोजन करते हैं और उस समय तक, यदि उन्हें परेशान न किया जाए, तो वे अपना सारा भोजन खा चुके होते हैं। लेकिन तेंदुए लगातार दो और यहाँ तक कि तीन रातों तक अपने शिकार पर लौटते हैं।

इन स्मृतियों को जंगली जानवरों के उस विशालकाय जीव, हाथी के उल्लेख के बिना अधूरा माना जा सकता है, जो प्रागैतिहासिक काल से ही किसी न किसी रूप में मानव जाति के साथ रहा है। आज हाथी की केवल दो ही प्रजातियाँ मौजूद हैं: अफ्रीकी और एशियाई, हालाँकि इन दोनों मुख्य श्रेणियों में भी भिन्नताएँ पाई जाती हैं। अफ्रीकी हाथी आकार में बड़ा होता है, जिसकी कंधे तक की ऊँचाई अक्सर बारह फीट तक होती है। दिखने में वह अपने एशियाई चचेरे भाई से काफी भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, उसके कान बहुत बड़े होते हैं और उसके दाँत बहुत लंबे और भारी होते हैं। उसकी पीठ अवतल होती है, जिसमें एक विशिष्ट गद्दी होती है, और उसके प्रत्येक पिछले पैर में केवल तीन उंगलियाँ होती हैं। उसका माथा तेजी से पीछे की ओर धंसा हुआ होता है, और यह, उसके लंबे कानों के साथ मिलकर, उसके सिर को नुकीला आकार देता है। मादा हाथियों के भी दाँत होते हैं। लेकिन एशियाई हाथी कई मायनों में भिन्न होता है। उनमें से सबसे बड़ा हाथी भी दस फीट से अधिक ऊँचा नहीं होता। उसके कान बहुत छोटे होते हैं, और दाँत भी छोटे होते हैं और उतने भारी या मोटे नहीं होते। कुछ मामलों में पीठ उत्तल होती है, जिसमें हल्का सा कूबड़ होता है, जबकि अन्य में यह अपेक्षाकृत सपाट होती है। प्रत्येक पिछले पैर में चार उंगलियां होती हैं। धड़ अफ्रीकी प्रजाति की तरह छल्लेदार या खुरदुरा नहीं होता, खोपड़ी के दाएं और बाएं हिस्सों के बीच ऊपरी भाग में हल्का सा गड्ढा होता है; प्रत्येक कनपटी पर स्पष्ट गड्ढे होते हैं। मादाओं में कभी भी दांत नहीं उगते।

अफ्रीकी हाथी प्रजाति की तरह, एशियाई हाथी की भी कुछ देशों, जैसे कि श्रीलंका और मलाया में बौनी प्रजाति पाई जाती है, जहाँ नर और मादा दोनों ही बिना दांत वाले होते हैं। भारत में बड़े आकार के हाथियों के झुंड में कभी-कभी बिना दांत वाले नर हाथी, जिन्हें मुक्ना कहा जाता है, पाए जाते हैं, हालाँकि दक्षिण भारत में ये बहुत आम नहीं हैं। यह तथ्य कि ऐसे बिना दांत वाले नर हाथी अकेले नहीं रहते, बल्कि सामान्य झुंड में दांत वाले नर हाथियों के साथ रहते हैं, इस सिद्धांत का खंडन करने के लिए पर्याप्त प्रमाण है कि वे एक अलग प्रजाति हैं, हालाँकि इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि उनके दांत कभी क्यों नहीं बढ़े। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे बिना दांत वाले नर हाथी सामान्य दांत वाले अधिकांश नर हाथियों की तुलना में अधिक भारी-भरकम जानवर बन जाते हैं।

यह सोचना कि 'अनैतिक' हाथी पागल होता है, बिल्कुल गलत है। अक्सर यह भी

मान लिया जाता है कि अनैतिक हाथी हमेशा मस्त अवस्था में होता है। वास्तव में, ये शब्द नर हाथी को प्रभावित करने वाली तीन बिल्कुल अलग-अलग स्थितियों को दर्शाते हैं। मस्त की अवस्था अस्थायी होती है, जो कुछ हफ्तों से लेकर तीन महीने तक रहती है और नर हाथियों में संभोग के मौसम के समान होती है। यह सीधे तौर पर यौन उत्तेजना से जुड़ी होती है और मस्त अवस्था समाप्त होने पर समाप्त हो जाती है। मस्त की यह अवधि मुख्य रूप से नर हाथियों को प्रभावित करती है, इस दौरान वे बेचैन, झगड़ालू, उत्तेजित और गुस्सैल हो जाते हैं। वे झुंड के अन्य नर हाथियों से लड़ते हैं, जो कभी-कभी मिलकर उन्हें झुंड से बाहर निकाल देते हैं जब तक कि उनका मस्त शांत नहीं हो जाता। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता, क्योंकि कभी-कभी मस्त हाथी झुंड में अन्य हाथियों, विशेष रूप से छोटे बच्चों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं।

मस्त में हाथी से सामना करना हमेशा ही बेहद खतरनाक होता है। वह बिना किसी उकसावे के, देखते ही हमला कर सकता है। यह सभी हाथियों में एक स्वाभाविक और आवधिक अवस्था है, इसलिए पालतू नर हाथी भी मस्त हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें काम पर नहीं लगाया जाता और उनके पिछले पैरों में जंजीर बांधकर तब तक सुरक्षित रखा जाता है जब तक कि उनका मस्त शांत न हो जाए। मस्त होने पर वे सामान्य हो जाते हैं। यह एक ग्रंथि संबंधी विकार है। कनपटी सूज जाती है और फूल जाती है। यह स्राव दोनों गालों में, कनपटी और कान के बीच स्थित छिद्रों से निकलता है और हाथी के चेहरे पर गाढ़े तैलीय पदार्थ के रूप में बहता है। साथ ही वीर्य का स्राव भी होता है। इन स्रावों के कारण मस्त में जानवर से एक विशेष गंध आती है। मस्त की अवस्था में पालतू हाथियों के हमले से कई दुर्घटनाएं हुई हैं और लोगों की मौत भी हुई है। आमतौर पर महावत या हाथी चालक पहला शिकार होता है।

एक उग्र हाथी को कोई खास समस्या नहीं होती। वह उग्र इसलिए हो जाता है क्योंकि उसने मनुष्यों का भय खो दिया है और बिना किसी उकसावे के उनका पीछा करके उन्हें मार डालने की आदत बना ली है। इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला, मस्त अवस्था में उसने लोगों पर हमला किया होगा, उनका पीछा किया होगा और शायद कुछ लोगों को मार भी डाला होगा। इससे उसका मानव जाति के प्रति अंतर्निहित भय समाप्त हो गया और उसे यह एहसास हो गया कि मनुष्य वास्तव में कितने असहाय हैं। इसलिए मस्त अवस्था समाप्त होने के काफी समय बाद भी वह

अपनी इस आदत को जारी रखता है। या हो सकता है कि उसकी किसी दूसरे हाथी या हाथियों से लड़ाई हुई हो और उसे झुंड से निकाल दिया गया हो। हताशा और क्रोध के आवेश में, उसका सामना किसी दुर्भाग्यशाली मनुष्य से हुआ हो, जो उसके पास आते ही भाग गया हो, जिससे वह उसका पीछा करने लगा और अंत में उसे मार डाला हो। इसके बाद से उसने इसे एक मनोरंजक शौक बना लिया है। तीसरा, हो सकता है कि वह मनुष्यों द्वारा इतना आहत या परेशान किया गया हो कि एक दिन उसने पलटवार करते हुए अपने ही एक उत्पीड़क पर हमला करके उसे मार डाला हो। उस क्षण से यह महसूस करते हुए कि मनुष्यों को आसानी से मारा जा सकता है, उसने हर अवसर पर किसी न किसी मनुष्य को समाप्त करने का कोई मौका नहीं छोड़ा।

हाथी का हिंसक स्वभाव बाघ या तेंदुआ के आदमखोर बनने जैसा ही है, बस फर्क इतना है कि मुझे किसी ऐसे हिंसक हाथी के बारे में जानकारी नहीं है जिसने अपने शिकार इंसान का कोई हिस्सा खाया हो। हालांकि, मेरे दोस्त फ्रेडी गैलिफ ने मुझे बताया कि हाल ही में अन्नाय चौक आरक्षित वन की सीमा के ठीक बाहर, उनकी जागीर से कुछ ही दूरी पर, एक छोटे हिंसक हाथी को गोली मार दी गई थी, जिसके पेट में इंसान की जांघ की हड्डी मिली थी। मैं खुद इसकी पुष्टि नहीं कर पाया हूँ, लेकिन अगर यह सच है, तो हिंसक हाथियों के इतिहास में यह एक अनोखी घटना होगी।

पागल हाथी वह होता है जो मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया हो। हो सकता है कि किसी पागल कुत्ते के काटने से उसे जलभराव (हाइड्रोफोबिया) हो गया हो (इस स्थिति में हम यह नहीं कह सकते कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया है, जैसा कि इस शब्द का सर्वमान्य अर्थ है), या हो सकता है कि वह लू लगने या अत्यधिक काम करने का शिकार हो गया हो (इस स्थिति में भी वह वास्तव में मानसिक रूप से विक्षिप्त नहीं है)। व्यक्तिगत रूप से मैंने कभी इस तरह का कोई मामला नहीं देखा है, हालांकि मैंने ऐसे मामले भारतीय शासकों के हाथियों के अस्तबलों में और सरकारी बाड़ों में पढ़े हैं जहाँ हाथियों को जंगलों में काम करने के लिए रखा जाता था।

हाथियों की दृष्टि कमजोर होती है, लेकिन उनकी सुनने की क्षमता बहुत अच्छी और सूंघने की क्षमता अद्भुत होती है। इसी कारण, किसी जंगली हाथी के पास अवलोकन, फोटोग्राफी या शूटिंग के उद्देश्य से जाने का प्रयास केवल हवा की दिशा से ही किया जा सकता है। अन्यथा, लंबे समय तक पीछा करने के बाद भी पता चलेगा कि शिकार बहुत पहले ही भाग चुका है। कहा जाता है कि जंगली हाथी एक-दूसरे को

तीन मील दूर से सूंघ सकते हैं, और यदि मनुष्य हवा की विपरीत दिशा में हो तो उसे एक मील दूर से सूंघ सकते हैं।

हाथी के अगले पैर की परिधि का दुगुना उसके कंधे तक की सटीक ऊंचाई बताता है। इस तथ्य का उपयोग हमेशा उन हाथियों की ऊंचाई का अनुमान लगाने में किया जाता है जिन्हें गोली मारने के लिए प्रतिबंधित किया गया है, और पहले से दर्ज किए गए उनके पदचिह्नों के माप के आधार पर गोली मारे गए हाथियों की पहचान करने में भी किया जाता है। गोली लगने के बाद जब कोई हाथी गिर जाता है, तो उसकी मृत्यु का सबसे निश्चित संकेत उसके लिंग का खोल से पूरी तरह बाहर निकला होना है।

ये जानवर सौ साल से भी ज़्यादा जीते हैं, और एक ऐसा मामला भी दर्ज है जहाँ एक जानवर 150 साल की उम्र तक पहुँच गया था। बुढ़ापे के लक्षण आमतौर पर उसका दुबला-पतला और कुपोषित होना (दांत इतने घिस चुके होते हैं कि वे भोजन को चबा नहीं पाते, और मल में बिना पचे पत्ते होते हैं), पिचके गाल, धँसी हुई आँखें और कनपटी, कान जो ऊपर से काफी मुड़े हुए और नीचे से खुरदुरे होते हैं, और शरीर पर बाल न होना तथा पीली, बहुत झुर्रीदार त्वचा होना हैं। इस विषय के विशेषज्ञ कहते हैं कि पहले पंद्रह साल तक कानों के ऊपरी किनारे बिल्कुल सीधे रहते हैं। फिर वे हर तीस साल में एक इंच की दर से मुड़ने लगते हैं, लेकिन मुझे इस कथन की सत्यता की कोई व्यक्तिगत जानकारी नहीं है।

हाथियों के साथ लगातार संपर्क में रहने वाले लोग उन्हें बहुत बुद्धिमान जानवर मानते हैं, हालांकि कुछ शिकारी इससे असहमत हो सकते हैं। जंगली अवस्था में उनके व्यवहार और पालतू बनाए जाने पर उनके अनेक उपयोगों को देखते हुए, वे निश्चित रूप से चतुर और समझदार होते हैं। लेकिन उनमें एक निर्विवाद विशेषता है: इतनी विशालता के बावजूद उनमें साहस की कमी, जो घोर कायरता के समान है। एक परिपक्व जंगली सूअर, उत्तेजित होने पर, कई गुना अधिक साहसी होता है। एक हाथी अपने विशाल शरीर और रोंगटे खड़े कर देने वाली, उन्मादी चिंघाड़ से किसी व्यक्ति पर अचानक हमला कर सकता है, जिससे वह भयभीत हो जाता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति डटकर खड़ा रहे, ताली बजाए, चिल्लाए और हाथ हिलाए, तो हाथी हमेशा अंतिम क्षण में मुड़कर भाग जाएगा। जंगली सूअर ऐसा नहीं करता। वह सीधे राइफल की धधकती नली की ओर दौड़ता है, भले ही उसके शरीर में कई गोलियां लगी हों—जब तक कि कोई गोली उसके दिल या किसी अन्य महत्वपूर्ण अंग को भेद

न दे।

कई हाथी ल्यूकोडर्मा नामक बीमारी से पीड़ित होते हैं: उनकी त्वचा पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं, खासकर सूंड और कानों पर। ऐसे जानवर को पालना बहुत शुभ माना जाता है, हालांकि वे देखने में भद्दे लगते हैं। शायद यह अंधविश्वास इस तथ्य का ही प्रतिबिंब है कि तथाकथित 'सफेद' हाथी को सियाम और बर्मा के बौद्धों के बीच धार्मिक महत्व दिया जाता है।

मादा हाथी लगभग ढाई साल में एक बार प्रजनन करती है, जबकि गर्भधारण की अवधि औसतन बीस महीने होती है। वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करती है, इसलिए अगर उसका बच्चा आसपास हो और अचानक उससे सामना हो जाए तो वह खतरनाक हो सकती है। मुझे इस बात का भला तब पता चला जब मैं बैंगलोर में अपने साथ काम कर रहे कुछ अमेरिकियों को इन जानवरों के झुंड की तस्वीरें लेने के लिए ले गया था। दुर्भाग्य से, जो लोग अंचेटी से कुछ ही दूरी पर सीक्रेट नदी के किनारे हाथियों के झुंड को उस दिशा में ले जा रहे थे जहाँ से वे छिपे हुए कैमरामैनों के पास से गुजर सकें, वे एक बच्चे वाली मादा हाथी के चक्कर में पड़ गए। उसने तुरंत उन पर हमला कर दिया और वे वापस उस जगह की ओर भागने लगे जहाँ हम सब आराम से बैठे थे, और क्रोधित मादा हाथी को भी अपने पीछे खींच लाए। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि उस दिन हम सब बहुत तेज़ी से भागे, और हमारे कपड़े और शरीर का एक बड़ा हिस्सा उस कांटेदार झाड़ी में गिर गया जिससे हम भागे थे। सौभाग्य से बच्चा हमारी और अपनी माँ की रफ़्तार का मुकाबला नहीं कर पाया। बीच रास्ते में छोड़े जाने पर वह चीखने लगा और इसी वजह से मादा हाथी ने उसका पीछा करना छोड़ दिया और अपने बच्चे के पास लौट गई। वरना एक भयानक दुर्घटना हो सकती थी, क्योंकि हममें से कोई भी हथियारबंद नहीं था, और घोषित बदमाश हाथी को छोड़कर किसी भी हाथी को गोली मारना सख्त मना है।

जब हाथी मार्च करते हैं, तो मादा हाथी और उनके बच्चे झुंड के आगे चलते हैं, नर हाथी सबसे पीछे रहते हैं। बच्चों की उम्र के अनुसार चरागाह और पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, रुकने के स्थानों का निर्धारण माताएँ ही करती हैं। जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो पूरा झुंड एक सप्ताह के लिए अपना मार्च रोक देता है, जब तक कि बच्चा इतना मजबूत न हो जाए कि उनके साथ चल सके। खतरे के समय नर हाथी अपने बच्चों की रक्षा करने का बहुत कम प्रयास करते हैं। दूसरी ओर, वे अक्सर

भागने के दौरान सबसे आगे रहते हैं। नदी पार करते समय, माँ अपने बच्चे को अपनी सूंड से पेट के नीचे सहारा देकर सतह पर अपने सामने रखती है। वे आसानी से लंबी दूरी तक तैर सकते हैं। बाधाओं का सामना करते समय या चढ़ाई पर जाते समय, वह अक्सर अपने बच्चे को अपने आगे धकेलती है। बच्चे कई महीनों तक अपनी माँ का दूध पीते हैं, जब तक कि वे अपेक्षाकृत बड़े नहीं हो जाते। वे अपने मुँह से चूसते हैं, न कि अपनी सूंड से; माँ के स्तन उसके अगले पैरों के ठीक पीछे स्थित होते हैं।

चराई खत्म होने पर झुंड लगातार चलते रहते हैं। वे दिन में दो बार पानी पीते हैं, सूर्यास्त से ठीक पहले और सूर्योदय के समय, लेकिन दिन के अन्य समयों में भी, विशेषकर गर्म मौसम में, यदि अवसर मिले तो पानी और रेत में स्नान का आनंद लेते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति बहुत स्नेही होते हैं और हमेशा अपने बच्चों के कल्याण के प्रति सजग रहते हैं, और एक झुंड एक बड़े खुशहाल परिवार की तरह व्यवहार करता है। लगातार अंतर्प्रजनन के कारण सदस्य अक्सर रिश्तेदार होते हैं। मैंने उन्हें कभी संभोग करते नहीं देखा, क्योंकि मुझे कभी मौका नहीं मिला; लेकिन पुजारियों ने मुझे बताया है कि नर मादा को गड्ढे में या नीचे की ओर ले जाने के बाद ही संभोग करने का प्रयास करता है, ताकि वह संभोग आसानी से कर सके, और वह मादा के पीछे लगभग सीधी मुद्रा में खड़ा होकर संभोग करता है।

भोजन पचाते समय वे कई तरह की आवाज़ें निकालते हैं, जिनमें एक धीमी, गड़गड़ाहट जैसी, गरजने वाली आवाज़; संतुष्ट होने पर पालतू बैल जैसी, लेकिन कहीं ज़्यादा तेज़ दहाड़; बहुत खुश होने पर सूअर जैसी चीखें; खतरे का आभास होने या हमला करने पर एक छोटी, तीखी तुरही जैसी आवाज़; और घुसपैठिए को चेतावनी देने और एक-दूसरे को सचेत करने के लिए तेज़ खटखटाहट की आवाज़ शामिल है। यह आखिरी आवाज़ वे सूंड को ज़मीन पर पटकते हुए और उसमें से तेज़ी से हवा फूंकते हुए निकालते हैं।

हाथी असमंजस में होने पर अपनी उंगलियाँ (जो उनकी सूंड के सिरे से दर्शाई जाती हैं) भी चूसते हैं। किसी असमंजस में पड़े हाथी को अपनी सूंड का सिरा अपने मुँह में लिए यह सोचते हुए देखना मनोरंजक होता है कि आगे क्या करना है; बिल्कुल किसी डरपोक छोटे बच्चे की तरह जो अपना अंगूठा चूस रहा हो।

हिरणों के विपरीत, जो समय-समय पर अपने सींग गिराकर नए सींग उगा लेते हैं, हाथी अपने दांत जीवन भर अपने पास रखते हैं। अगर लड़ाई में उनका एक दांत टूट

जाए, तो जानवर को बाकी जीवन क्षतिग्रस्त अंग के साथ ही गुजारना पड़ता है। यह सोचना गलत है कि हाथी अपने दांतों का इस्तेमाल पेड़ों को गिराने के लिए करते हैं; हाथी ऐसा पेड़ के तने पर अपना माथा रखकर और अपने शरीर के वजन का इस्तेमाल करते हुए जोर से धक्का देकर करते हैं। ढलान पर चलते समय हाथी बहुत सावधान रहते हैं, ताकि ठोकर न लगे या फिसल न जाएं, कहीं उनका पैर न टूट जाए। वे अपने वजन और गिरने से होने वाली चोटों के प्रति बहुत सचेत रहते हैं, चाहे उनका पैर किसी गड्ढे में चला जाए या वे किसी दलदल में फंस जाएं। इसी कारण, अगर कोई व्यक्ति हाथी द्वारा पीछा किया जाता है, तो उसके बचने की संभावना ऊपर की ओर या समतल पर दौड़ने की तुलना में ढलान पर दौड़ने से कहीं अधिक होती है। हाथी क्षैतिज या लंबवत रूप से कूद नहीं सकते, क्योंकि वे कभी भी अपने चारों पैरों को जमीन से ऊपर नहीं उठा सकते। वैसे तो वे आम तौर पर प्रचलित अर्थों में दौड़ते नहीं हैं, बल्कि तेज़ कदमों से चलते हैं जिनकी गति पंद्रह मील प्रति घंटे से थोड़ी अधिक हो सकती है। वे इस गति को कुछ मील तक लगातार बनाए रख सकते हैं।

एक कुशल धावक पीछा कर रहे हाथी से कुछ दूरी तक तो आगे निकल सकता है, लेकिन यह एक समस्या है कि वह अपनी बढ़त को कितनी देर तक बनाए रख सकता है, खासकर जब वह घने या कंटीले जंगल, पेड़ों के तनों, झाड़ियों के झुंडों और विशेष रूप से कांटों के बीच से भाग रहा हो। ऐसी बाधाओं से बचने में कीमती समय बर्बाद हो जाता है, और बाधाओं को पार करने की कोशिश में व्यक्ति और उसके कपड़ों को काफी नुकसान पहुंचता है, जबकि पीछा कर रहा हाथी बस आगे बढ़ता चला जाता है।

हाथियों के बारे में कोई भी चर्चा इस दिलचस्प सवाल के बिना अधूरी है: हाथी मरते कहाँ हैं? इस सवाल को लेकर उन सभी देशों में अंधविश्वास और अटकलों का अंबार लगा हुआ है जहाँ ये विशालकाय जानवर जंगली अवस्था में रहते हैं। अफ्रीका में, लंबे समय से यह माना जाता रहा है कि हाथियों के गुप्त कब्रिस्तान मौजूद हैं, और वहाँ मौजूद हाथीदांत के खजाने को खोजने के लिए कई अभियान भी भेजे गए हैं। लेकिन कोई भी सफल नहीं हुआ। श्रीलंका, बर्मा, मलाया और सियाम में भी यही सवाल पूछा जाता है और यही मान्यता है। लेकिन इनमें से किसी भी देश में इसका कोई सबूत नहीं मिला है।

दक्षिण भारत के आदिवासी इस मामले में अपने विश्वासों में बंटे हुए हैं। करुम्बा

और पुजारी 'गुप्त कब्रिस्तान' के सिद्धांत का समर्थन करते हैं, जबकि शोलागा मानते हैं कि हाथी कभी मरते ही नहीं, जो स्पष्ट रूप से गलत है, क्योंकि हर जीवित प्राणी को मरना ही है। लेकिन पहला सिद्धांत भी उतना ही निराधार है, क्योंकि दक्षिण भारत के जंगलों का कोई भी कोना ऐसा नहीं है जहाँ मनुष्य के पैर न पड़े हों। वहाँ कोई भी अनछुआ स्थान नहीं है।

तो फिर बूढ़े होने पर हाथी कहाँ मरते हैं? जंगल में भटकते हुए मैंने आज तक किसी हाथी का शव नहीं देखा जिसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई हो। मुझे एक छोटी मादा हाथी ज़रूर मिली है जिसे दो बाघों ने मार डाला था। और हाँ, मोयार घाटी का वह दुष्ट हाथी रेत में धंसकर मर गया। लेकिन इनमें से किसी भी अंत को स्वाभाविक मृत्यु नहीं कहा जा सकता। इसलिए सवाल अनुत्तरित ही रहता है और कहानी जारी रहती है। ज़्यादा से ज़्यादा हम अनुमान लगा सकते हैं या कोई संभावित समाधान सुझा सकते हैं, जिनमें से एक से अधिक समाधान भी हो सकते हैं।

दो बार मुझे कावेरी नदी के कीचड़ और दलदल में हाथी की हड्डियाँ मिलीं, जब अत्यधिक गर्म और शुष्क मौसम के दौरान पानी असामान्य रूप से कम हो गया था। इनमें से एक रीढ़ की हड्डी का एक हिस्सा था, जो मुझे होगेनैकल में मिला था। दूसरी जांघ की हड्डी थी, जो संगम में मिली थी। ये दोनों स्थान हाथियों के निवास स्थान हैं और कावेरी नदी के किनारे स्थित हैं। क्या बूढ़े हाथी, जब उन्हें मृत्यु निकट आती दिखती है, तो जानबूझकर डूबकर आत्महत्या कर लेते हैं? यह विचार असंभव लगता है, क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से कुशल तैराक होते हैं। इसके अलावा, सभी प्राणियों में जीने की प्रबल इच्छा होती है। हालांकि, यह संभव है कि बुढ़ापे के साथ वे इतने कमजोर हो जाते हैं कि धारा का सामना करने में असमर्थ हो जाते हैं, और इसलिए दुर्घटना में डूब जाते हैं। मुझे लगता है कि यही समस्या का सबसे संभावित समाधान है, क्योंकि हर उस देश में जहाँ हाथी पाए जाते हैं, वहाँ जंगलों से होकर बहने वाली बड़ी नदियाँ होती हैं; उन्हें पानी बहुत पसंद होता है और वे उसमें तैरते रहते हैं, और अंत में वह दिन आ जाता है जब वे खुद को पानी में तैरते रहने के लिए बहुत कमजोर हो जाते हैं, इसलिए वे उग्र धाराओं में डूबकर मर जाते हैं।

दूसरी थ्योरी यह है कि हाथी जंगल के दूरदराज इलाकों में मर जाते हैं, जहाँ गिद्ध, लकड़बग्घे, जंगली सूअर, भालू, साही, चींटियाँ, दीमक और फफूंद मिलकर शव और हड्डियों को पूरी तरह नष्ट कर देते हैं, इससे पहले कि कोई इंसान वहाँ से गुज़रे।

हालाँकि, उस जगह के दूर होने के कारण वहाँ इंसानों का आना बहुत कम होता है। यह एक संभावित समाधान है, हालाँकि मुझे नहीं लगता कि यह सही है। किसी न किसी समय कोई न कोई ज़रूर वहाँ पहुँचकर शव को ढूंढ लेता, भले ही कंकाल न मिले। हाथियों के कंकालों को छोड़कर, जिनके मारे जाने की पुष्टि हो चुकी है, बाकी कभी नहीं मिलते।

तीसरा सिद्धांत यह है कि हाथी इतनी लंबी उम्र जीते हैं—वास्तव में 150 वर्ष से अधिक—कि औसत के नियम के अनुसार वे कभी भी प्राकृतिक मृत्यु नहीं पाते, बल्कि देर-सवेर हिंसक मौत मरते हैं। जैसा कि मैंने कहा है, ऐसी परिस्थितियों में उनके अवशेष अक्सर पाए जाते हैं। वास्तव में, सड़ते हुए हाथी के शव से आने वाली दुर्गंध मीलों दूर तक उसकी मौजूदगी का संकेत देती है। इस अंतिम सिद्धांत पर आपत्ति यह है कि इसके बावजूद, अप्राकृतिक रूप से मरने वाले हाथियों के शव, कंकाल और हड्डियाँ असाधारण रूप से कम पाई जाती हैं, जबकि हाथियों के निवास स्थान वाले प्रत्येक देश में हर साल मरने वाले हाथियों की संख्या इससे कहीं अधिक है। यह स्थिति विशेष रूप से अफ्रीका में है, जहाँ आज हजारों हाथी जंगली अवस्था में हैं, जबकि अप्राकृतिक कारणों से मरने वाले जीवों के शवों और कंकालों की संख्या हर साल होने वाली कुल मौतों की संख्या के अनुपात में बहुत कम है।

---

1 नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें।

2 देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।

3 देखें: नरभक्षी और जंगल हत्यारे, जॉर्ज एलन एंड अनविन

सात

सुलेकुंटा पैंथर

सुलेकुंट का पैंथर एक 'थेन्डू' था, जो हिंदुस्तानी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ है 'जंगल में रहने वाला विशाल आकार का पैंथर'। यह असाधारण रूप से बड़ा थेन्डू था।

मुझे इस जानवर के बारे में सबसे पहले अपने एक शिकारी मुनियाप्पा से पता चला। शिकारी शब्द का अर्थ है 'शिकारी', आमतौर पर वह व्यक्ति जिसने इसे अपना पेशा बना लिया हो, और मुनियाप्पा हर मायने में एक शिकारी था। इसके अलावा, वह एक पक्का अवैध शिकारी था। मैं 'था' शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुनियाप्पा मुझे यकीन दिलाता है कि उसने अवैध शिकार करना छोड़ दिया है। खैर, वह यही कहता है; लेकिन मैं उस पर विश्वास नहीं करता। मुनियाप्पा बहुत बड़ा झूठा है।

कई साल पहले इस आदमी ने आदमखोर बाघिन को जन्म दिया था, जिसने सलेम जिले के जोवलागिरी में अपना आतंक फैलाना शुरू किया और फिर सुलेकुंटा और अन्य स्थानों पर भी गई। खैर, यह सब एक अलग कहानी है। मैं इसका जिक्र सिर्फ इसलिए कर रहा हूं ताकि आपको पता चले कि मुनियाप्पा एक शिकारी था और उसने अतीत में कई तरह की शरारतें की थीं। लेकिन फिर भी वह एक भरोसेमंद शिकारी है और अपने गांव जोवलागिरी के दस मील के दायरे में मौजूद जंगलों को वह हथेली की तरह जानता है।

सुलेकुंटा, उत्तरी सलेम क्षेत्र के जंगल में स्थित एक छोटा सा गाँव है, जो जोवलागिरी से लगभग सात मील दक्षिण-पूर्व में है। यहाँ विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं; एक गहरी घाटी में घने जंगल हैं जिनमें बांस की बहुतायत है, और इस घाटी से बत्तैमादुवु हल्ला नामक एक धारा बहती है। यह धारा अंततः दक्षिण-पूर्व दिशा में बहती है और डोड्डाहल्ला नामक एक बड़ी नदी की सहायक नदी है, जिसे मैंने गुप्त नदी कहा है और जिसके बारे में मैं पहले ही लिख चुका हूँ।

सुलेकुंटा बस्ती थोड़ी ऊँची ज़मीन पर बसी है, जिसके चारों ओर रागी और चोलम की खेती के लिए कुछ खेत हैं। खेतों के चारों ओर झाड़ियाँ और जंगल हैं। इस क्षेत्र के चारों ओर छोटी पहाड़ियाँ हैं, जो काफी पथरीली हैं और कई जगहों पर बड़े-बड़े पत्थरों

के ढेर हैं, जिनके बीच-बीच में लंबी, कांटेदार घास उगी है। घास के बीच-बीच में और अक्सर घने झुंडों में लैंटाना और वेट-ए-बिट कांटेदार झाड़ियाँ बहुतायत से उगती हैं।

यह इलाका कभी मोरों से भरा हुआ था, जो कैक्टस के रसीले लाल फलों को खाते थे। लेकिन वन विभाग ने कोचीनियल नामक कीट को यहाँ ला दिया, जो केवल कैक्टस पर ही निर्भर रहता है और उसे नष्ट कर देता है। यह प्रयोग बेहद सफल साबित हुआ है और कैक्टस तेजी से खत्म हो रहा है, लेकिन इसकी संख्या में कमी के साथ ही बेर जैसे फल दुर्लभ होते जा रहे हैं। इसलिए मोर दूसरे क्षेत्रों में चले गए हैं, हालांकि इस इलाके में अभी भी काफी संख्या में पक्षी मौजूद हैं। ये पक्षी सुबह और शाम को खेतों में घुस आते हैं, जहाँ से उनकी दर्द भरी आवाजें घाटियों और पहाड़ियों में गूंजती हैं। चंदन के पेड़ यहाँ बहुतायत से उगते हैं, हालांकि किसी न किसी कारण से इस क्षेत्र के पौधे 'स्पाइक' कीट के हमलों से बुरी तरह प्रभावित होते हैं और ज्यादातर अस्वस्थ रहते हैं।

खैर, अपनी कहानी पर लौटते हुए, एक दिन मुनियाप्पा ने मुझे तमिल भाषा में एक पोस्टकार्ड भेजा, जिसमें लिखा था कि सुलेकुंटा गाँव के पास ही एक बाघिन ने तीन हफ़्तों के भीतर तीन मवेशियों को मार डाला है। उन्होंने मुझे आकर उसका शिकार करने का न्योता दिया। मैं तमिल नहीं पढ़ सकता, इसलिए मैंने एक भारतीय मित्र से पोस्टकार्ड का अनुवाद करवाया। मैंने उससे विशेष रूप से पूछा कि क्या उसे यकीन है कि मुनियाप्पा ने ही कहा था कि हत्यारा बाघिन थी, या उनका मतलब बाघ या शायद कोई तेंदुआ था। मेरे मित्र को पूरा यकीन था और उसने पुष्टि की कि मुनियाप्पा ने स्पष्ट रूप से लिखा था कि हत्या एक बाघिन ने की थी। इसलिए मैंने न्योते का जवाब नहीं दिया, क्योंकि मुझे बाघिन का शिकार करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, जो आखिरकार भोजन के लिए ही अपना जायज़ शिकार कर रही थी। मैंने अपने मित्र से तमिल में जवाब लिखवाया, जिसमें मुनियाप्पा को जानकारी के लिए धन्यवाद दिया गया था, लेकिन यह भी कहा गया था कि मुझे इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है।

लगभग एक महीने तक मुझे कोई खबर नहीं मिली, फिर मुनियाप्पा का एक और पत्र मिला, जो एक बार फिर तमिल में था। इसमें बताया गया था कि बाघिन ने तब से चार और मवेशियों को मार डाला है, यानी इलाके में आने के बाद से औसतन प्रति सप्ताह एक शिकार। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं अवश्य आऊं और बाघिन का

शिकार करूं। मैंने एक बार फिर जवाब भेजा और स्पष्ट रूप से कहा कि मुझे बाघिन का शिकार करने की कोई इच्छा नहीं है, क्योंकि वह तो बस अपना प्राकृतिक भोजन कर रही थी और किसी को नुकसान नहीं पहुंचा रही थी। दो सप्ताह बाद मुनियाप्पा स्वयं आए। वे ठीक उसी समय पहुंचे जब मैंने दोपहर का भोजन समाप्त किया था, और उन्होंने बताया कि वे सुबह-सुबह जोलागिरी से बस से आए थे। यह देखते हुए कि जोलागिरी बैंगलोर से केवल तैंतालीस मील दूर है, आपको दक्षिण भारत में 'तीसरी श्रेणी की बस सेवाओं' के नाम से जानी जाने वाली बसों की धीमी गति का कुछ अंदाजा हो सकता है। मुनियाप्पा ने कहा कि वे मुझे बाघिन का शिकार करने के लिए प्रेरित करने आए हैं। मैंने जवाब दिया कि मुझे इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है और सुझाव दिया कि वे स्वयं जानवर का शिकार करें। उन्होंने कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि उनके पास शिकार का लाइसेंस नहीं है।

मैंने काफी सीधे शब्दों में जवाब दिया, 'मुन्नियप्पा, अब तक तो आपको मुझे बेहतर तरीके से जान लेना चाहिए था। क्या आपको लगता है कि मैं एक पल के लिए भी आपकी बात पर विश्वास करता हूँ?'

मुनियाप्पा कुछ देर तक हिचकिचाया, फिर बोला: 'दोराई को धोखा देने की कोशिश करना व्यर्थ है। वह अच्छी तरह जानता है। असल बात तो यह है कि मेरी थूथन से चलने वाली बंदूक बाघिन के खिलाफ शायद ही कारगर होती है।'

मैंने जवाब दिया, 'मुझे याद आ रहा है कि तुमने एक बार इससे एक बाघ को गोली मारी थी, और उस छोटी सी गोलीबारी ने काफी बड़ी मुसीबत खड़ी कर दी थी। क्या ऐसा ही है?'

वह एक मिनट तक चुप रहा और फिर बोला, 'मैं एक और जोखिम नहीं लेना चाहता। इस बार मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि बाघिन को मार दिया जाए।'

उनकी बातों ने मेरी जिज्ञासा जगा दी। मैंने पूछा, 'आप इस बाघिन में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं?'

अंततः, पूर्वी रिवाज़ के अनुरूप, और यह देखकर कि मेरे तीखे सवालों ने उसे घेर लिया है, मुनियाप्पा ने सच उगल दिया। पता चला कि उसने अपने गाँव के एक प्रभावशाली व्यक्ति से सौ रुपये उधार लिए थे, क्योंकि उसे अपने खेत में हल चलाने के लिए एक अच्छा बैल खरीदने के लिए उन पैसों की ज़रूरत थी। उसके पास पहले दो बैल थे, लेकिन उनमें से एक मर गया था और उसके लिए तुरंत नुकसान की

भरपाई करना ज़रूरी था, क्योंकि हल चलाने के लिए एक नहीं बल्कि दो बैलों की ज़रूरत थी।

लेनदार अपने पैसे वापस लेने के लिए दबाव डालने लगा था, लेकिन मुनियाप्पा के पास पैसे नहीं थे। संक्षेप में कहें तो, लेनदार मुनियाप्पा को कर्ज से मुक्त करने के लिए तैयार हो गया था, बशर्ते वह उसे एक अच्छी, ताजा शिकार की हुई बाघ की खाल उपलब्ध करा दे। लेनदार उस खाल को एक अन्य व्यक्ति, जो इस बार एक अधिकारी था, को एक विशेष कृपा के बदले में भेंट करने का इरादा रखता था।

मुनियाप्पा ने मुझे लेनदार और उस व्यक्ति का विवरण दिया जिसे वह बाघ की खाल भेंट करना चाहता था; साथ ही उस विशेष कृपा के बारे में भी बताया। लेकिन इसका कहानी से कोई संबंध नहीं है। मैंने बहाना बनाया कि मैं व्यस्त हूँ और अगले एक महीने तक छुट्टी नहीं ले सकता, जो कि सच था। लेकिन मुनियाप्पा मुझे तब तक परेशान करता रहा जब तक कि मैंने समझौता नहीं कर लिया और अगले पाँच सप्ताह बीत जाने के बाद आने वाले किसी भी बुलावे का जवाब देने के लिए सहमत हो गया, क्योंकि उस दौरान मैं पूरी तरह से व्यस्त था। वह काफी हद तक संतुष्ट हो गया और कहा कि जब यह अवधि बीत जाएगी और कोई शिकार हो जाएगा, तो वह गिद्धों से बचाव के लिए उसे शाखाओं से ढकने की व्यवस्था करेगा और जोवलागिरी से होसुर के जिला मुख्यालय तक तेईस मील साइकिल चलाकर जाएगा, जहाँ से वह मुझे एक टेलीग्राम भेजेगा। संदेश मिलते ही मैं तुरंत कार से चला जाऊँगा। मेरे आने तक वह वापस आकर मचान लगा देगा, ताकि मुझे बस बाघिन के दिखाई देने पर उसे गोली मारनी हो। उसने अपनी बात इतनी अच्छी तरह रखी कि वह न केवल मुझसे बैंगलोर जाने का बस किराया लेने में सफल रहा, बल्कि वापसी यात्रा का किराया, साथ ही साथ उसके द्वारा भेजे जाने वाले टेलीग्राम के लिए दो रुपये और अपने लिए कुछ अतिरिक्त पैसे भी लेने में सफल रहा।

अभी पाँच सप्ताह ही बीते थे कि मुझे टेलीग्राम का संदेश मिला। तय समझौते के अनुसार, मैंने तुरंत जवाब दिया, और लगभग नब्बे मिनट बाद मैंने अपनी स्टडबेकर कार जोवलागिरी में मुनियाप्पा के छोटे से घर के सामने रोकी। मैंने उन्हें दरवाजे पर बैठे, मेरे आने का इंतज़ार करते हुए पाया। वे अभी-अभी होसुर से साइकिल पर लौटे थे। उन्होंने बताया कि पिछली शाम सुलेकुंटा से एक मील के भीतर बाघिन ने एक बड़े भूरे बैल को मार डाला था। अंधेरा होने से पहले एक संदेशवाहक ने यह सूचना दी थी।

मुनियाप्पा और संदेशवाहक लालटेन की रोशनी में सुलेकुंटा लौट आए थे, और उन्होंने रात वहीं बिताई थी। भोर होते ही वे मृत बैल के पास गए और पाया कि बाघिन उसका लगभग आधा हिस्सा खा चुकी थी। मुनियाप्पा और उनके सुलेकुंटा के दोस्तों ने शव को पत्तों से ढक दिया था। फिर उन्होंने उन्हें मचान बनाने के लिए निर्देश दिए, और मचान बनाने के बाद वे दौड़कर जोवलागिरी तक सात मील की दूरी तय करके आधे रास्ते तक पहुँचे, साइकिल पर सवार हुए और दो घंटे में तेईस मील की दूरी तय करके मुझे अपना टेलीग्राम भेजा। संदेश जल्दी ही आ गया था और मैंने भी तुरंत जवाब दे दिया था, अब दोपहर के 3 बज चुके थे और मुझे आठ मील पैदल चलना था। फिर मुझे बस मचान पर बैठना था, जो निस्संदेह तैयार होगा और मेरा इंतजार कर रहा होगा, और बाघिन के आते ही उसे मार देना था। बस इतना ही आसान था।

हम बिना देर किए सुलेकुंटा के लिए निकल पड़े। रास्ते में मैंने मुनियाप्पा से उस इलाके के बारे में पूछा जहाँ शिकार हुआ था। उन्होंने बताया कि बैल घने बाँसों के झुरमुट में भटक गया था, जहाँ उसकी मौत हो गई। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने शिकार के बारे में कोई खास बात देखी थी, और क्या उन्हें कोई पदचिह्न मिले थे जिससे यह साबित हो सके कि हत्यारा एक बाघिन थी।

'नहीं,' उसने उत्तर दिया; 'मुझे कोई पदचिह्न नहीं मिले, क्योंकि पूरा इलाका गिरे हुए, सूखे और सड़ते हुए बांस के पत्तों से घना ढका हुआ है। इसके अलावा, मेरे पास दूर-दूर तक पटरियों की तलाश करने का समय नहीं था, क्योंकि मुझे टेलीग्राम भेजने के लिए जल्दी वापस लौटना था। लेकिन हत्यारा निश्चित रूप से एक बाघ ही है, क्योंकि बैल की गर्दन टूटी हुई थी, जो एक पुख्ता सबूत है। यह एक बाघिन ही होनी चाहिए, क्योंकि सुलेकुंटा के लोग ऐसा ही कहते हैं।'

उस बेतुके तर्क से मुझे संतुष्ट होना पड़ा, इसलिए हमने आगे बातचीत में समय बर्बाद नहीं किया। तमाम कोशिशों के बावजूद सुलेकुंटा पहुँचने में दो घंटे लगे, और फिर मरे हुए बैल तक पहुँचने में कुछ और समय लगा। मेरी घड़ी में ठीक शाम के 5:30 बज रहे थे।

हमने शव से पत्ते हटाए। जैसा कि मुनियाप्पा ने बताया था, बैल की गर्दन टूटी हुई थी और आंतें कुछ फीट बाहर निकालने के बाद उसका पिछला आधा हिस्सा खा लिया गया था। सभी संकेत बाघ या बाघिन के काम की ओर इशारा कर रहे थे! गिरे हुए और सूखे बांस के असंख्य पत्तों के बीच किसी भी तरह के पदचिह्न देखने की कोई

उम्मीद नहीं थी।

फिर मैंने अपना ध्यान मचान पर केंद्रित किया। जैसा कि उम्मीद थी, क्योंकि इसे एक पक्ष ने दूसरे पक्ष को निर्माण के लिए सौंप दिया था, इसलिए मेरी राय में परिणाम संतोषजनक नहीं था। सबसे पहले तो, यह उन बांस के पेड़ों पर बने मचानों में से एक था, यानी इसे बांस के एक झुंड के ऊपर बनाया गया था। बेशक, इसमें किसी की गलती नहीं थी, क्योंकि बैल को बांस के घेरे में ही मार डाला गया था और आस-पास कोई दूसरा पेड़ नहीं था जिस पर चबूतरा बांधा जा सके। लेकिन ऐसे मचानों में कई कमियां होती हैं। जब तक इन्हें बहुत सावधानी और चतुराई से न बनाया जाए, ये बहुत ही ध्यान खींचने वाले होते हैं। यह मचान भी इसका अपवाद नहीं था।

लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई पर बांस के हर एक डंठल को काट दिया गया था, फिर कटे हुए टुकड़ों से पत्तियां हटाकर उन्हें आड़े-तिरछे रखकर मचान का फर्श बनाया गया था। परिणामस्वरूप, बांस का वह विशेष गुच्छा स्पष्ट रूप से कटा हुआ दिखाई दे रहा था और उसके ऊपर का चबूतरा साफ दिख रहा था। दूसरी बात, आड़े-तिरछे रखे गए टुकड़े बहुत कम थे और उनमें से कुछ कई इंच दूर थे। पूरी संरचना बेहद अस्थिर लग रही थी और मुझे पता था कि यह बुरी तरह हिलेगी और चरमराएगी। तीसरी बात, इसे नीचे से या किनारों से छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। यह बस एक नंगा चबूतरा था, जिसे अचानक छोटे किए गए बांस के गुच्छे के ऊपर खड़ा कर दिया गया था।

समय तेज़ी से बीत रहा था और अब कुछ भी करना संभव नहीं था। मरे हुए बैल के ऊपर से पत्ते हटाने के बाद, मैं अपनी राइफल और रात में इस्तेमाल होने वाले सामान्य सामान के साथ चबूतरे पर चढ़ गया।

मेरी आशंकाएँ तुरंत सच हो गईं। देखते ही देखते, मेरे वजन से एक सिरा दूसरे से नीचे झुक गया, जिससे पूरी संरचना क्षैतिज से लगभग तीस डिग्री के कोण पर टेढ़ी हो गई और मुझे उसमें खतरनाक कंपन महसूस होने लगी। मुनियाप्पा ने कुछ हरे बांस के पत्ते काटकर मेरे नीचे के खंभों के बीच फंसा दिए ताकि नीचे से संरचना छिप जाए। लेकिन यह एक बेकार कोशिश थी, और अब लगभग छह बज चुके थे, चबूतरे के चारों सिरों पर और कुछ छिपाना संभव नहीं था। फिर मुनियाप्पा चले गए और मैंने अपनी ज़िंदगी की सबसे भयानक रातों में से एक रात बिताई। बांस के टुकड़े नीचे से मुझे चुभ रहे थे। हर बार जब मैं हिलता, तो पूरी संरचना चरमराती और हिलती। मेरे वजन

और हर हरकत से मचान और भी ज्यादा टेढ़ा होता जा रहा था। इसलिए मुझे डर था कि कहीं यह अजीबोगरीब संरचना गिर न जाए या एक सिरे से इतनी तेजी से नीचे न झुक जाए कि वहाँ रहना असंभव हो जाए, इसलिए मैं हिलने-डुलने को मजबूर नहीं था।

हालांकि कई लोग शिकार के पास बैठकर समय बिताना एक थकाऊ और उबाऊ काम मानते हैं, लेकिन मेरे लिए यह हमेशा से ही बेहद आनंददायक रहा है। शायद इसका कारण यह है कि मैं प्रकृति प्रेमी हूँ। नीरसता के बजाय, मुझे लगता है कि समय बहुत तेज़ी से बीत जाता है। मैं रात के चमत्कारों में इतना खो जाता हूँ, चाहे वह चाँदनी हो जब चाँद की कोमल, चाँदी जैसी किरणें जंगल को दिन के उजाले से बिल्कुल अलग, एक रहस्यमयी चमक से भर देती हैं; या फिर अँधेरी रात, जब जुगनू इधर-उधर टिमटिमाते रहते हैं और आकाश में तारे शांत भाव से टिमटिमाते हैं, जिनकी चमक आसपास की झाड़ियों और परिदृश्य को खूबसूरती से उभार देती है। सुनने के लिए बहुत कुछ है, भले ही कोई जंगल की रात में उमड़ने वाले अनगिनत जीवों को न देख पाए। सीखने के लिए बहुत कुछ है, बस इच्छा और क्षमता होनी चाहिए।

लेकिन यह रात हर मायने में अपवाद थी। आसमान घोर अंधकार से भरा था, और आसमान में छाए घने बादलों ने इस अंधकार को और भी गहरा कर दिया था। लेकिन जंगल एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था। न किसी जानवर या पक्षी ने हल्की सी भी आवाज निकाली, न ही बांसों की लहराती कतारों में किसी मेंढक ने टर्राया और न ही झींगुर ने चहचहाया।

मुझे इन असामान्य परिस्थितियों का कारण पता था। एक तूफान आने वाला था। रात के आठ बज रहे थे जब बांस के झुरमुट में मूसलाधार बारिश का पहला संकेत महसूस हुआ। हवा चलने लगी। मैं बांसों की चोटियों से आती हुई उसकी आवाज़ सुन सकता था, जो दूर समुद्र की गर्जना जैसी लग रही थी। आखिरकार वह मुझ तक एक विशाल हाथ के प्रहार की तरह पहुँची। पंखनुमा बांसों की चोटियाँ हवा के झोंके से झुक गईं, जबकि मेरे नीचे कटे हुए तने हवा के साथ मुड़ने लगे। इससे जिस चबूतरे पर मैं बैठा था, उसके जोड़ चरमराने लगे और सबसे बुरी बात यह थी कि वे धीरे-धीरे अलग होने लगे। जैसे-जैसे कटे हुए बांस के तने हर झोंके के साथ हिलते और डगमगाते गए, झुकाव और भी तीव्र होता गया।

और फिर बारिश शुरू हो गई! जंगल में, खासकर पहाड़ी इलाकों में, अक्सर

बारिश की बूंदें ज़मीन पर गिरने से पहले ही सुनाई देती हैं। मुझे दूर से आती हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दी, जब घने बादल नीचे प्यासे जंगल की ओर बरसने लगे। बारिश जंगल पर बरसते ही यह आवाज़ तेज़ गर्जना में बदल गई, और जैसे-जैसे पानी की दीवार मेरी ओर बढ़ती गई, गर्जना और भी तीव्र होती गई। एक आखिरी झोंके ने नीचे टूटे हुए बांसों को हिला दिया। वे ज़ोर से झुक गए, और फिर पानी की एक चादर ने मुझे घेर लिया। बिजली की तेज़ चमक धरती की ओर कौंधी, जिसके बाद गरज की कान फाड़ देने वाली आवाज़ आई। पल भर में मैं पूरी तरह भीग गया।

लेकिन मुझे अपनी असुविधा पर शोक मनाने का ज्यादा समय नहीं मिला, क्योंकि एक और भी बड़ी विपत्ति मुझ पर आ पड़ी। हवा के अगले झोंके के साथ ही मेरे उस अजीब से प्लेटफॉर्म को पकड़े हुए रस्सियाँ या तो फिसल गईं या टूट गईं, और मैंने महसूस किया कि वह ढाँचा पैंतालीस डिग्री के कोण पर झुक गया और मैं, अपने सारे उपकरण के साथ, उस खतरनाक ढलान से नीचे फिसल गया।

जैसे ही मुझे लगा कि मैं गिर रहा हूँ, मैंने राइफल छोड़ दी। मुझे याद है कि वह बाँस के तनों से टकराई और फिर धीमी सी आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर गई। उछलते बाँसों के कटे हुए सिरे मुझे भेदने की कोशिश कर रहे थे, और मैं बेढंगे तरीके से गिरते हुए किसी चीज़ को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। एक कटे हुए सिरे ने मेरी कमीज़ को पीछे से फाड़ दिया, जबकि दूसरे ने लगभग मेरी आँखें निकाल लीं। मैंने डरते हुए दूसरे सिरे को पकड़ लिया, और उसे दूर धकेलने की कोशिश की, क्योंकि वह मेरे माथे को चीर रहा था। और इस अफरा-तफरी के बीच, मेरे नीचे से खाँसने की कई आवाज़ें आईं और झाड़ियों के बीच से एक भारी शरीर के भागने की आवाज़ सुनाई दी।

मैं अपने चेहरे के सामने बांस को दोनों हाथों से कसकर पकड़े हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी। मेरे पैर और शरीर बांस की डंडियों के बीच फंसे हुए थे, और मेरा पूरा वज़न दोनों हाथों पर था। इस स्थिति में मैं अपनी जान बचाने के लिए पूरी ताकत से बांस को पकड़े रही, और उस बाघिन को भगाने के लिए लगातार चीखती रही, जो अब मेरे नीचे थी।

जो कुछ हुआ था, वह बिल्कुल स्पष्ट था। बारिश शुरू होते ही वह शिकार पर लौट आई थी और उसने उस बाँस के झुंड के नीचे शरण लेने का फैसला किया था, जहाँ मेरा सबसे असुरक्षित मचान बना हुआ था। संभवतः हवा, बारिश, गरज और बिजली,

सबने मिलकर उसका ध्यान उस स्पष्ट चबूतरे से भटका दिया था जिस पर मैं बैठा था, और जिसे वह सामान्य परिस्थितियों में निस्संदेह तुरंत देख लेती। लेकिन तभी मेरे मचान को बाँधने वाली रस्सियाँ टूट गईं। मेरी राइफल और अन्य उपकरण उसके चारों ओर गिर पड़े, जबकि मैं ऊपर बाँस के तनों के बीच छटपटाने लगा।

वह बुरी तरह डरी हुई और नाराज़ भी रही होगी। इसीलिए तो उसने विरोध में इतनी ज़ोर से दहाड़ मारी थी। लेकिन सवाल यह था: क्या वह भाग गई थी, या अभी भी नीचे छिपी हुई थी?

मैं घोर अंधेरे में था, राइफल के साथ मेरी टॉर्च भी गिर गई थी। मैं ज्यादा देर तक टिक नहीं सकता था। मेरे हाथ, चेहरा और पीठ बुरी तरह घायल हो गए थे, गीला बांस मेरे हाथों से फिसलने लगा था, और मेरे पैर और शरीर एक फुट नीचे खिसक गए। फिर मैं बांस के तनों के बीच फंस गया। मैं पूरी तरह से फँस गया था, और हर तरह से असहाय था।

जैसा कि मैंने आपको बताया, चबूतरा ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई पर बनाया गया था। यह लगभग दो फीट नीचे झुक गया होगा। फिर मैं कम से कम एक फीट और नीचे खिसक गया, जिसके बाद मैं फंस गया। इस प्रकार मैं मूल पंद्रह फीट से लगभग तीन फीट नीचे था। मेरी ऊंचाई 5 फीट 7 ½ इंच है। परिणामस्वरूप, मेरे पैर ज़मीन से लगभग छह फीट ऊपर लटक रहे थे। बेशक, मैंने उस समय यह सब मानसिक गणना नहीं की थी। लेकिन मुझे इतना ज़रूर समझ आ गया था कि अगर बाघिन ने हमला करने का फैसला किया तो मैं बहुत बड़े खतरे में पड़ जाऊंगा। क्योंकि अब कोई भी बाघ मुझ तक आसानी से पहुँच सकता था, जबकि मैं बांसों के बीच फंसा हुआ था, निहत्था था और घोर अंधेरे में था।

क्या आप मुझे चिल्लाने के लिए दोषी ठहरा सकते हैं? मैंने ऐसा सिर्फ़ बाघिन को डराने के लिए नहीं किया था। मुझे लगता है कि जब कोई सचमुच डरा हुआ होता है, तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया चिल्लाना होती है—या यूँ कहूँ कि चीखना। इसलिए मैं काफ़ी देर तक यही करता रहा, पूरी तरह बेकाबू और बेशर्मी से। फिर मैंने खुद पर काबू पाया और सोचने लगा। मुझे याद आया कि मैंने झाड़ियों के बीच से किसी भारी शरीर के भागने की आवाज़ सुनी थी। निस्संदेह, वह बाघिन ही थी। लेकिन क्या वह तुरंत भाग गई थी, या अपने आस-पास और ऊपर मची अफरा-तफरी के बाद किसी और झाड़ी की ओट में कूद गई थी?

शांत होने पर मुझे बड़ी कृतज्ञता के साथ एहसास हुआ कि बाघिन तो बस एक आम मवेशी चुराने वाली थी, आदमखोर नहीं। मेरी चीखों ने उसे पहले से कहीं ज़्यादा डरा दिया होगा। अब तक के अनुमान के आधार पर मुझे पूरा यकीन था कि वह भाग गई होगी और ज़मीन पर उतरने से मैं सुरक्षित रहूँगा। लेकिन असल बात यह थी कि मैं उतर नहीं सकता था, मैं हिलते हुए तनों के बीच बुरी तरह फँसा हुआ था।

अगले कुछ मिनट बेहद भयावह थे। खुद को इतनी मजबूती से जकड़ा हुआ पाकर, स्वाभाविक उपाय यही था कि मैं अपने पैरों और निचले अंगों को छुड़ाने के लिए उस तने पर थोड़ा ऊपर चढ़ जाऊं जिससे मैं चिपकी हुई थी। मैंने ऐसा करना शुरू किया और साथ ही अपने कैनवास के जूतों की उंगलियों से सहारा ढूंढने लगी, ताकि कुछ सेकंड के लिए ही सही, मेरा वजन संभाल सके और मेरी बाहों पर पड़ रहे भयानक तनाव से राहत मिल सके।

पता नहीं आप में से कितने लोगों ने बांस के तने या पत्ती को करीब से देखा या परखा है। उस पर उभरे हुए हिस्से होते हैं जिनसे पत्तियां निकलती हैं। कुछ पत्तियां नुकीली होती हैं, लेकिन सभी अपेक्षाकृत मजबूत होती हैं, हालांकि उनकी मोटाई एक आदमी की मध्यमा उंगली जितनी ही होती है। इन नुकीले कांटों ने मेरे पहने हुए पतले रबर के जूतों के तलवों को छेद दिया और मेरी त्वचा में चुभ गए। लेकिन वे मेरा वजन सहने के लिए काफी मजबूत थे। काफी मशक्कत के बाद मैंने अपना खोया हुआ एक-दो पैर वापस पा लिया। ऐसा करते ही मुझे लगा कि मेरे पैर आज़ाद हो गए हैं। जल्द ही मैं सिर्फ एक तने से चिपका रह गया, जिसने मेरा पूरा वजन संभाल रखा था।

इन सबके बीच तूफान अपनी पूरी ताकत से जारी रहा। बिजली कड़क रही थी, बादल गरज रहे थे और मूसलाधार बारिश हो रही थी। हवा और भी तेज़ हो गई, मानो ऐसा संभव हो, और बांस के झुरमुट को चीरती हुई इधर-उधर से डालियाँ तोड़ती हुई मेरे चेहरे के पास से गुज़र रही थीं। अचानक एक ज़बरदस्त धमाका हुआ, जो पहले के सभी धमाकों से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली था, और उसने बांस की चोटियों को जकड़ लिया। उसने टूटे हुए बांस के गुच्छे पर प्रहार किया, जिससे तने पहले से कहीं ज़्यादा झुक गए, और जिस तने से मैं चिपका हुआ था, वह मेरे नीचे ज़ोर से टूट गया। मुझे लगा जैसे मैं गिर रहा हूँ, मेरा शरीर दूसरे तनों से टकराता हुआ आगे बढ़ रहा है, और एक पल बाद, टूटे हुए बांस को अभी भी हाथों में पकड़े हुए, मैं ज़मीन पर ज़ोर से धड़ाम से गिर पड़ा।

सहज ही मैं झटपट उठा और घोर अंधेरे में अपने गिरे हुए राइफल को टटोलने लगा। लेकिन उसे ढूंढने में काफी समय लग गया, और तब जाकर मुझे बांस के उस झुंड के चारों ओर दो चक्कर लगाने पड़े। मुझे राइफल की नली का सिरा कीचड़ से सना हुआ महसूस हुआ और मैंने सबसे पहले उसे साफ किया।

मौसम गर्म होने के कारण मैं अपने साथ ओवरकोट नहीं लाया था; केवल एक पुलओवर लाया था। वह मेरे बाकी सामान के साथ ज़मीन पर गिर गया था और मैंने बड़ी मूर्खता से उसे ढूंढने के बारे में नहीं सोचा, जिसकी वजह से मुझे उस रात के खत्म होने से पहले ही भारी कीमत चुकानी पड़ी।

इसके बाद मैंने राइफल की नली से बंधी टॉर्च का बटन दबाया। कुछ नहीं हुआ। मैंने टॉर्च को टटोलकर उसके लेंस तक पहुँचा, लेकिन वहाँ न तो शीशा था और न ही बल्ब। गिरने से दोनों चकनाचूर हो गए थे। चारों ओर घना अंधेरा था। और बारिश लगातार तेज़ होती जा रही थी।

मैंने बताया था कि बैल को सुलेकुंटा गाँव से लगभग एक मील दूर मारा गया था। एक मील कोई बहुत दूर नहीं है, लेकिन उन परिस्थितियों में उस गाँव तक पहुँचना मुश्किल होता, क्योंकि बारिश और अंधेरे के अलावा मुझे बाँस के घने जंगल से भी निपटना पड़ता। जो लोग रात में ऐसे जंगलों में रहे हैं, वे समझ सकते हैं कि इसका क्या मतलब है, क्योंकि बाँस झुंडों में उगते हैं, हर झुंड अपने पड़ोसी से कुछ ही फीट की दूरी पर होता है। आमतौर पर उनके बीच कोई पेड़ या बड़ी झाड़ियाँ नहीं होतीं, बीच की ज़मीन घास, छोटी-छोटी झाड़ियों या गिरे हुए, सड़ते हुए बाँस के पत्तों की मोटी चादर से ढकी होती है। तेज धूप में भी बांसों का एक झुंड दूसरे झुंड जैसा ही दिखता है, और मैं जानता था कि घोर अंधेरे में, बांसों की वजह से और भी घना अंधेरा छा जाएगा, आसमान में बादल छाए रहेंगे, मूसलाधार बारिश होगी, मुझे रास्ता दिखाने के लिए कोई तारा नहीं होगा, और अगर मैं गीली माचिस की डिब्बी पर एक माचिस जला भी लूं तो भी वह जलती नहीं रहेगी। ऐसे में, एक बार जब मैं उस झुंड को छोड़ दूंगा जिस पर मैं बैठा था, तो मैं पूरी रात गोल-गोल भटकता रहूंगा और सुलेकुंता के करीब भी नहीं पहुंच पाऊंगा। मैं उस छोटे से गांव से और भी दूर भटक सकता हूं।

इस समय तक मैंने बाघिन के बारे में चिंता करना छोड़ दिया था। अगर वह आस-पास भी होती और मुझ पर हमला करना चाहती, तो अब तक कर चुकी होती। वरना, कोई भी जानवर ऐसे तूफ़ान में बाहर नहीं निकलता। यहाँ तक कि जंगली हाथी भी,

जिनमें से कुछ आम तौर पर इन मिश्रित जंगलों में रहते हैं, जहाँ बांस उगता है और उन्हें कोमल पत्तियाँ प्रदान करता है, ऐसी स्थिति का सामना नहीं करते, बल्कि जहाँ भी आश्रय मिलता, वहाँ छिप जाते और बांस के झुंडों के नीचे दुबक जाते। बेशक, अगर मैं अँधेरे में भटकते हुए किसी बाघिन के सामने आ जाता, तो यह बहुत बुरा होता। यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाना ही था।

मैंने अगली बिजली की चमक का इंतज़ार किया, और वह जल्द ही आ गई। उस क्षणिक रोशनी के बाद, मैंने उस दिशा की ओर रुख किया जहाँ मुझे लगा कि गाँव है। मैंने अपने हाथ फैलाकर कुछ कदम चले, जो जल्द ही अगले बाँस के झुंड से बनी नुकीली रुकावट से टकरा गए। मैंने उसे टटोलते हुए रास्ता बनाया, और जब मुझे लगा कि मैं लगभग आधा चक्कर लगा चुका हूँ, तो मैंने सही दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश की। कुछ मिनटों तक ऐसा करने से मुझे इसकी पूरी तरह से निराशा का एहसास हुआ। सबसे पहले तो, जब मैं बाँस के हर झुंड के चारों ओर घूमता था, तो मेरे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि मैंने उसका आधा चक्कर लगाया है, या कम, या ज़्यादा; इसलिए हर बार जब मैं अगले झुंड के लिए निकलता था, तो मैं लगभग किसी भी दिशा में चल रहा होता था। तब मैंने फैसला किया कि तूफान के गुजरने का इंतजार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। मैं अगले बाँस के झुंड के नीचे घुटनों के बल बैठ गया। ज़मीन लगभग छह इंच पानी और कीचड़ से भरी थी, इसलिए मैंने अपनी राइफल अपने घुटनों पर रखी और आगे की स्थिति का इंतजार करने लगा।

रात के दस बज चुके थे जब तेज बारिश रुकी, लेकिन लगभग आधी रात तक हल्की बूंदा-बांदी जारी रही। गरजना काफी देर पहले ही बंद हो चुकी थी और बिजली की चमक भी धीरे-धीरे कम होती गई और फिर पूरी तरह से रुक गई, जिससे चारों ओर घना अंधेरा छा गया।

जब तक तेज बारिश होती रही, मुझे ज्यादा ठंड नहीं लगी। अजीब बात यह थी कि पानी तुलनात्मक रूप से गर्म लग रहा था। जब हल्की बूंदा-बांदी शुरू हुई तो मुझे ठंड लगने लगी, और आधी रात के बाद जब बूंदा-बांदी रुकी, तब जाकर मुझे सच में ठंड लगने लगी। सुबह के शुरुआती घंटों में तापमान में गिरावट और भीगे कपड़ों से भाप बनकर उड़ने के कारण मैं जमने लगा। मैंने खुद को कोसना शुरू कर दिया कि मैंने अपना स्वेटर क्यों नहीं ढूंढा। आखिरकार मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए, इधर-

उधर चला, उछल-कूद की, हाथ-पैर हिलाए और अपने ठंडे शरीर में खून का संचार बनाए रखने के लिए हर संभव कोशिश की। मैंने माचिस जलाने की कोशिश की, लेकिन माचिस की डिब्बी और उसमें रखी चीजें भीग चुकी थीं। आसमान बादलों से घिरा रहा, सुलेकुंता पहुंचने की मेरी अगली कोशिश में कोई तारा मेरा मार्गदर्शन नहीं कर रहा था। और इस तरह मैंने वह रात गुजारी जो निस्संदेह अब तक की सबसे असहज रात थी। ठंड से बेहाल और दांत किटकिटाते हुए, मैंने घने जंगल से उठते भाप के बादलों को चीरते हुए भोर को देखा।

दिन की रोशनी होते ही मुझे उस छोटे से गाँव की दिशा का अंदाज़ा हो गया और मैं उसकी ओर चल पड़ा। सोचिए, मुझे कितना आश्चर्य हुआ जब एक मिनट बाद ही मैं उस कटे हुए पेड़ों के झुंड के पास से गुज़रा जिस पर मैं पिछली रात बैठा था। हालाँकि सुबह के शुरुआती घंटों में कई बार मेरा मन हुआ था कि मैं ठंड से जम जाऊँगा और दोबारा निकल पड़ूँ, लेकिन उस पल मैंने खुद को वहीं रुके रहने के लिए दिल से बधाई दी। आखिरकार, अपनी भीगी हुई पतलून पहने हुए मैं उस छोटे से गाँव में पहुँचा, जहाँ मुनियाप्पा बेसब्री से मेरा इंतज़ार कर रहे थे।

उसे सारी बात बताने से पहले, मैंने उससे कहा कि वह बिना देर किए भूसे, लकड़ी, सूखे गोबर—यानी जलने वाली किसी भी चीज़—की बड़ी आग जलाए। थोड़ी ही देर में अच्छी-खासी आग जल उठी और मैं उसके पास बैठ गया, मेरी भीगी हुई कमीज़ मेरे पैंट के बगल में ज़मीन पर फैली हुई थी, और मैंने मुनियाप्पा की पगड़ी अपनी कमर पर बाँध रखी थी। जैसे ही गर्मी मेरे पूरे शरीर में फैली, मुझे परम आनंद का अनुभव हुआ। फिर, जब मुनियाप्पा ने चाय बनाने की तैयारी में आग के बीच में पानी का एक छोटा बर्तन रखा, तो मैंने उसे अपनी सारी दुख भरी कहानी सुनाई।

एक घंटे बाद मैंने जोवलागिरी और अपनी कार तक सात मील की पैदल यात्रा शुरू की। अब मुझे सुलेकुंटा की बाघिन से हिसाब चुकता करना था। हालाँकि उसका इरादा निश्चित रूप से निर्दोष था, फिर भी मुझे लगता था कि उस भयानक रात के लिए वही ज़िम्मेदार थी जो मैंने अभी-अभी झेली थी। जोवलागिरी में मैंने मुनियाप्पा को एक और टेलीग्राम के लिए पैसे दिए ताकि अगर बाघिन फिर से किसी को मार डाले तो वह मुझे तुरंत सूचित करे। फिर मैं बैंगलोर लौट आया, पहले से ज़्यादा दुखी, लेकिन पहले से कहीं ज़्यादा समझदार।

उसी शाम मुझे भीषण बुखार हो गया। ठंड लगने से मलेरिया हो गया था। तीन

दिन बाद मलेरिया के साथ-साथ ब्रोंकाइटिस भी हो गया, जो बाद में निमोनिया में बदल गया। तभी मुनियाप्पा का टेलीग्राम आया: सुलेकुंटा में शेरनी ने फिर से शिकार कर लिया था। ज़ाहिर है, मैं जवाब नहीं दे सका। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि वह मुनियाप्पा को पत्र लिखकर मेरी हालत के बारे में बता दे, और मैं उनसे तब संपर्क करूंगा जब मैं ठीक हो जाऊंगा। लेकिन पूरे एक महीने बाद ही मैं मचान में एक और रात बिताने का जोखिम उठा सका। और यह भी, ज़ाहिर है, मेरी पत्नी और डॉक्टर दोनों के मना करने के बावजूद। इसी बीच मैंने मुनियाप्पा को पत्र लिखकर बताया कि मैं फिर से ठीक हो गया हूँ।

लगभग एक महीना बीतने के बाद मुझे अगला टेलीग्राम मिला। उसमें संक्षेप में बताया गया था कि सुलेकुंटा के पास एक गाय मारी गई है। बदला लेने की प्यास में मैं एक बार फिर जोवलागिरी के लिए निकल पड़ा, लेकिन इस बार एक रेनकोट और दो पुलओवर, साथ ही एक अतिरिक्त टॉर्च, बैटरी, बल्ब और माचिस भी साथ ले गया, जिन्हें गीलेपन से बचाने के लिए एक पुराने चमड़े के थैले में लपेटा गया था। मैंने सबक सीख लिया था: तब से मैं हमेशा ये अतिरिक्त सामान अपने साथ रखता हूँ।

जब मुनियाप्पा मुझसे जोलागिरी में मिले, तो उन्होंने मुझे बताया कि हत्यारा एक बहुत बड़ा पैंथर—एक थेन्दु—था, न कि कोई बाघिन जैसा कि उन्होंने सोचा था। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात का पूरा यकीन है क्योंकि उन्होंने शिकार के पास रेत में जानवरों के पैरों के निशान साफ देखे थे। मेरी निराशा को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। फिर मुनियाप्पा ने कुछ ऐसा कहा जिससे मैं गहराई से सोचने लगा। उन्होंने कहा कि अब उन्हें लगता है कि वहाँ कभी कोई बाघिन थी ही नहीं, और सुलेकुंटा में हुई इतनी सारी हत्याओं के लिए सिर्फ यही थेन्दु जिम्मेदार था। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि जिस बैल के ऊपर मैं बैठा था, उसके पास हमें कोई पैरों के निशान नहीं मिले थे। हम दोनों ने यही निष्कर्ष निकाला था कि जानवर बाघ ही था क्योंकि बैल की गर्दन टूटी हुई थी और सुलेकुंटा के ग्रामीणों ने ही कहा था कि वह एक बाघिन थी। उन्होंने मुझे यह भी याद दिलाया कि थेन्दु भी बाघों की तरह ही शिकार करते हैं और खाते हैं।

यह सोचकर मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था कि मैंने एक तेंदुए के लिए इतना भयानक कष्ट सहा था। खैर, इतनी दूर आने के बाद, मैं मुनियाप्पा के साथ सुलेकुंटा के लिए निकल पड़ा। इस बार मेरा शिकार, एक पूरी तरह से विकसित और सफेद गाय, उसी बांस के झुरमुट के किनारे पर पड़ी थी। मैंने अपने पत्र में मुनियाप्पा को

बांस के पेड़ों पर और मचान न बनाने के लिए कहा था। इसलिए, मेरे पास बैठने की जगह चुनने और दिन के बचे हुए एक घंटे में अपना छिपने का स्थान बनाने का ही विकल्प बचा था। ठीक पाँच बज रहे थे।

उन शुरुआती दिनों में मैंने वह पोर्टेबल मचान नहीं बनाया था जिसे मैं बाद के वर्षों में ऐसी ही आपात स्थिति से निपटने के लिए अपने साथ रखता था। इसलिए अगर मुझे छह बजे तक मौके पर पहुंचना था तो मुझे बहुत तेज़ी से काम करना पड़ा। शिकार बांस की पट्टी के किनारे पर किया गया था और वह बस्ती के काफी करीब था। वहां बांस कम घना था और उसके बीच-बीच में कुछ पेड़ और काफी संख्या में लैंटाना और अन्य झाड़ियाँ थीं जो पास के झाड़ीदार जंगल से फैलकर आई थीं।

चारों ओर जल्दी से नज़र घुमाते हुए, मेरी नज़र लगभग बीस गज दूर एक बड़ी लैंटाना झाड़ी पर पड़ी। यह अपने पड़ोसियों से कुछ ही फीट की दूरी पर थी और आदर्श जगह लग रही थी। मुनियाप्पा लकड़ी काटने के लिए अपना घुमावदार चाकू लाया था, इसलिए हम पूरी लगन से काम पर लग गए। लैंटाना झाड़ी के उस किनारे से, जहाँ गाय लेटी थी, हमने उसके केंद्र तक जाने के लिए एक छोटा सा रास्ता बनाया, जिसे हमने बाद में काटकर अलग कर दिया, और छलावरण के लिए काटी गई सभी शाखाओं और टहनियों को बचा लिया। मैं उस रास्ते से रेंगकर झाड़ी के केंद्र में बैठ गया। फिर, मेरे सिर के बराबर, मुनियाप्पा ने मृत गाय के ठीक सामने एक आयताकार छेद काटा। हमने झाड़ी के बीच में इतनी जगह बनाई कि मैं अपने रेनकोट, पुलओवर और चाय की थर्मस के साथ आराम से बैठ सकूँ। अपनी जगह लेते हुए, मैंने गोली चलाने के कोण और दिशा का परीक्षण करने के लिए अपनी राइफल को आयताकार छेद से शिकार की ओर निशाना साधा।

हमने तेज़ी से काम किया और छह बजने में अभी दस मिनट बाकी थे जब मुनियाप्पा ने हर तरफ से बारीकी से जाँच करने के बाद, यह सुनिश्चित किया कि कहीं कुछ छूट तो नहीं गया, और फिर संतुष्ट होकर चले गए। झाड़ी के नीचे काफी गर्मी थी, और नीचे की ज़मीन में दिन की कुछ गर्मी अभी भी बाकी थी। इससे मुझे थोड़ा पसीना आया, लेकिन जैसे-जैसे अंधेरा होता गया, यह मामूली असुविधा दूर हो गई और मैं पूरी तरह से सहज महसूस करने लगा।

सूर्यास्त के समय जंगल की सामान्य आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जिनमें बैंगनी सिर वाले अनगिनत छोटे हरे तोतों की चीखें गूंज रही थीं, जो बांस के जंगलों के आसपास

बहुतायत में पाए जाते हैं, जहां वे सूखे बांस के बीजों को बड़े चाव से खाते हैं। 'सात बहनें' पक्षी, जो भारतीय 'बब्बलर' का बोलचाल का नाम है, के झुंड झाड़ी से ज़मीन और फिर वापस झाड़ी पर फड़फड़ाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चहचहा रहे थे, और कुछ मैनाएं खुले मैदान में उड़ रही थीं, घास के ठंडा होने पर उसमें दिखाई देने वाले कीड़ों को झपट रही थीं। इस काम में मैनाओं का एक सक्रिय प्रतिद्वंद्वी एक अकेला हूपो था जो ज़मीन पर फुदक रहा था, अपने हल्के भूरे रंग के कंघी जैसे पंखों की कलगी को बार-बार ऊपर उठाता और कीड़ों का पीछा करते हुए नीचे करता रहता था। इस नज़दीकी शोरगुल की पृष्ठभूमि में दूर से आती मोरों की आवाज़ें, जंगली मुर्गों की चुनौती भरी बांग और स्पूरफाउल की ज़ुबान की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं; ये तीनों, तोतों के साथ, विशेष रूप से उन इलाकों को पसंद करते हैं जहां बांस घनी मात्रा में उगता है, जो उन्हें भोजन और घने आवरण दोनों प्रदान करता है जिसमें वे अपने प्राकृतिक शत्रुओं - मनुष्य और बिल्ली-जनजाति के सदस्यों से छिप सकते हैं।

अंततः अंधेरा छा गया। हालाँकि चाँद नहीं था, आकाश बिल्कुल साफ था और जल्द ही असंख्य तारों से भर गया। तारों की रोशनी मेरे सामने ज़मीन पर हल्की-हल्की पड़ रही थी, जिससे लैंटाना की झाड़ियों में बनाए गए छेद से देखने पर भी मरी हुई गाय धुंधली सी दिखाई दे रही थी, हालाँकि उसका आकार लगभग गायब हो चुका था। उसके शरीर पर सफेद धब्बे उसके शरीर के उन हिस्सों को दर्शा रहे थे, जबकि भूरे धब्बे लगभग अदृश्य थे। मिनट जल्दी बीत गए और 7:45 बज रहे थे जब मुझे अपने दाहिनी ओर एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। यह एक हल्की सी आह या शायद दबी हुई जम्हाई जैसी लग रही थी। फिर, कुछ ही सेकंड बाद, हल्की सी खरोंच की आवाज़ आई।

यह आवाज़ किसकी हो सकती थी? न तो कोई पैंथर, न ही कोई बाघ। शायद कोई नेवला इधर-उधर घूम रहा था। इससे खरोंचने की आवाज़ तो समझ में आ जाती है, लेकिन हल्की सी आह या दबी हुई जम्हाई की आवाज़ नहीं। मिनट तेज़ी से बीत गए और फिर खरोंचने की आवाज़ दोबारा आने लगी। इस बार यह मेरे पीछे से आ रही थी। कोई जानवर उस लैंटाना झाड़ी को धीरे-धीरे खरोंच रहा था जिसमें मैं बैठा था। ऐसा लग रहा था कि उसने मुनियाप्पा द्वारा वहाँ बेतरतीब ढंग से रखी गई ताज़ी कटी हुई शाखाओं और टहनियों को खोज निकाला था और उनकी जाँच कर रहा था; शायद उन्हें हटाने की कोशिश भी कर रहा था। जो भी जानवर वहाँ व्यस्त था, वह या तो

असाधारण रूप से बहादुर था या असाधारण रूप से जिज्ञासु। मैं भी जिज्ञासु हो गया और मैंने धीरे से अपना सिर घुमाकर अपने बाएं कंधे के ऊपर देखा।

खरोंचने की आवाज़ अचानक बंद हो गई। क्या जानवर उस हल्की सी हलचल को, बीच में मौजूद टहनियों के बावजूद, महसूस कर पाया था? काफी देर तक कुछ नहीं हुआ। फिर खरोंचने की आवाज़ दोबारा शुरू हुई, इस बार और भी ज़ोर से और तेज़ी से। जिस अंधेरे में मैं बैठा था, उसमें मेरे पीछे झाड़ी के पत्ते और टहनियाँ तारों से भरे आकाश की पृष्ठभूमि में धुंधली सी दिखाई दे रही थीं। मैंने उन्हें कांपते और हिलते हुए देखा। अब वह प्राणी ढीली टहनियों को हटाने की पूरी कोशिश कर रहा था। तभी मैंने एक हल्की फुफकार सुनी, जो संदेह में डूबे पैंथर की गुर्राहट की स्पष्ट पहचान थी।

धीरे-धीरे मैंने राइफल को अपने सामने के आयताकार छेद से पीछे खींचा और अपने शरीर को आधा घुमाया। तभी पैंथर का संदेह और जिज्ञासा दोनों ही खत्म हो गए। तेज, गहरी गुर्राहटों की एक श्रृंखला सुनाई दी, जिसके बाद एक झपट्टा और धड़ाम की आवाज आई, क्योंकि पैंथर पीछे हट गया और किसी अन्य झाड़ी या घास के गुच्छे की आड़ में छलांग लगा दी।

मेरी यादें दो महीने पहले की उस बरसात वाली रात में लौट गईं, जब मैं झुकी हुई मचान से फिसल गया था और लगभग बांस के कटे हुए सिरों पर फंसकर मरते-मरते बचा था। तब भी मैंने ठीक यही गुर्राहट सुनी थी, और फिर किसी जानवर के भागने की तेज़ आवाज़ आई थी। मैं सोचने लगा कि क्या मुनियाप्पा सही कह रहे थे। क्या सच में वह कोई पैंथर था जो बांस के नीचे छिपा हुआ था जब मैं उस पर गिरा था, न कि कोई बाघिन या बाघ, जैसा मैंने सोचा था?

खैर, उस समय जो भी जानवर हमला करने आया था, मुझे इसमें कोई शक नहीं था कि इस बार मैं एक पैंथर से निपट रहा था—और वो भी एक थेन्दु (एक प्रकार का जानवर)। अब उसे मेरी मौजूदगी का पता चल गया था और वो जा चुका था, और उसके लौटने की कोई उम्मीद नहीं थी। किस्मत पूरी तरह से मेरे खिलाफ थी। मैंने अपनी घड़ी देखी; समय 8:20 था। रात अभी जवान थी, इसलिए मैंने आधी रात तक इंतजार करने और फिर सुलेकुंता लौटने का फैसला किया।

संयोगवश, उस रात मैंने थेन्दु की आखिरी आवाज नहीं सुनी थी। जाहिर तौर पर भूखा, उत्सुक और जासूसी किए जाने से क्रोधित, वह आधा चक्कर लगाकर वापस आया और बिना खुद को प्रकट किए, मेरे सामने और मरी हुई गाय के ठीक पीछे

जंगल से पैंथर की जानी-पहचानी चीखने जैसी आवाज निकालने लगा। पैंथर अक्सर शिकार किए गए जानवर के पास लौटते समय ऐसी आवाजें निकालते हैं, लेकिन इसने अभी तक ऐसा नहीं किया था।

मैं बिल्कुल स्थिर रहा और उस थेन्दु पर इसका असर आश्चर्यजनक था। वह एक बड़े घेरे में घूमता रहा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि वह मेरी नज़रों से ओझल रहे, जब तक कि वह मेरे पीछे नहीं आ गया। फिर, मानो उसे एहसास हो गया हो कि वह फायदे में है, उसने अपनी गुर्राहट को और तेज़ कर दिया—अगर यह संभव था—और बीच-बीच में दहाड़ता रहा। एक समय वह अचानक रुक गया और कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। या तो वह चला गया था या हमले की तैयारी कर रहा था। लेकिन तेंदु, यहाँ तक कि बड़े थेन्दु भी, ऐसा तब तक नहीं करते जब तक वे आदमखोर न बन जाएँ, और मैं जानता था कि यह जानवर आदमखोर नहीं था। क्योंकि जोवलागिरी आदमखोर के शासनकाल के बाद से इस क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को बाघ या तेंदु द्वारा परेशान किए जाने की एक भी रिपोर्ट नहीं थी।

कुछ देर बाद मेरा शक दूर हो गया जब वह मेरे सामने, लेकिन थोड़ा बाईं ओर घूमकर आया और वहाँ से उसने फिर से आवाज़ें निकालनी शुरू कर दीं। इससे मुझे उम्मीद जगी कि अगर मैं बिल्कुल स्थिर रहा तो शायद वह हिम्मत जुटाकर शिकार की ओर बढ़ जाए, या कम से कम एक-दो मिनट के लिए खुद को दिखा दे। लेकिन यह उम्मीद बेकार साबित हुई। आखिरकार, उसने मुझे अपनी आवाज़ों से डराने की कोशिश छोड़ दी और चला गया, उसकी नापसंदगी और निराशा भरी गुर्राहट धीरे-धीरे दूर होती चली गई।

आधी रात तक उसके लौटने का कोई आसार नहीं मिला, और फिर यह मानकर कि वह हमेशा के लिए चला गया है, मैं अपने छिपने की जगह से बाहर निकला और सुलेकुंटा तक थोड़ी दूर पैदल चला, जहाँ मैंने मुनियाप्पा को जगाया और उसे सारी घटना बताई। मुनियाप्पा ने कहा कि उसे लगता है कि मेरा वहाँ से चले जाना गलत था और मुझे वहीं छिपे रहना चाहिए था, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि पैंथर सुबह तड़के वापस आ जाएगा। उसने तो मुझे वापस जाकर लैंटाना की झाड़ियों में फिर से घुसने का सुझाव भी दिया। लेकिन मेरी राय अलग थी, मुझे पूरा विश्वास था कि पैंथर वापस नहीं आएगा, क्योंकि मुझे वहाँ से हटाने के उसके सारे प्रयास विफल हो चुके थे, तो वह इतनी मूर्खता तो नहीं करेगा कि वापस आकर खुद को दिखाए, जबकि मैं अभी भी

छिपा हो सकता हूँ।

मुनियाप्पा ने मुझे इस मुद्दे पर शर्त लगाने की चुनौती दी। मैंने चुनौती स्वीकार कर ली और पाँच रुपये (लगभग छह शिलिंग) की शर्त लगाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि यह रकम बहुत ज़्यादा है, लेकिन वे एक रुपये की शर्त लगाने को तैयार थे कि थेन्दु वापस आ जाएगा। मैंने चुनौती स्वीकार कर ली।

यह तय हुआ कि मैं अकेले ही जोवलागिरी वापस पैदल जाऊं और बाकी रात वहां के छोटे से वन विश्राम गृह में बिताऊं, जबकि मुनियाप्पा सुलेकुंटा में ही रहेंगे, अगली सुबह जल्दी शिकार का निरीक्षण करेंगे कि क्या पैंथर वापस आया है, और फिर जोवलागिरी आकर रिपोर्ट करेंगे।

मैंने जोवलागिरी विश्राम गृह में देर सुबह बिताई और जब जागा तो देखा कि मुनियाप्पा उस छोटी खिड़की की लोहे की सलाखों से मुझे झाँक रहे थे जिसे मैंने खुला छोड़ दिया था। समय सुबह 8:30 बजे का था। बिस्तर से उठकर मैं बरामदे में गया, जहाँ मुनियाप्पा ने मुझे बताया कि उन्होंने शर्त जीत ली है और अपने पैसे लेने आए हैं। थेन्दु लौट आया था और उसने पेट भरकर खाया था, लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि तीसरे भोजन के लिए भी पर्याप्त बचा है। इसका मतलब यह होगा कि पैंथर उसी शाम शिकार पर होगा। मुनियाप्पा ने यह भी बताया कि उन्होंने गिद्धों से बचाने के लिए शव के बचे हुए हिस्से को पत्तों से ढक दिया था।

मैंने उसे विश्राम गृह के शयनकक्ष में बुलाया और गंभीरता से एक रुपया दांव पर लगा दिया। फिर मैंने उससे कहा कि अगर वह मेरी केतली को बंगले के पीछे लगभग सौ गज दूर स्थित छोटे पत्थर से बने कुएं से पानी भरने ले जाए, तो मैं उसके लिए चाय बना दूंगा। उसने तुरंत ऐसा किया और जल्द ही मेरे प्राइमस स्टोव की तेज आवाज ने हम दोनों को बता दिया कि जलपान आने वाला है। दाढ़ी बनाने की परवाह किए बिना, मैंने कुछ ठंडी चपातियों पर मक्खन लगाया और उनके साथ परोसने के लिए सार्डिन मछली का एक बड़ा डिब्बा खोला। जातिवादी होने के कारण, मुनियाप्पा को मेरी मक्खन लगी चपातियों और सार्डिन मछलियों से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन उसने मेरे द्वारा दी गई चाय का बड़ा मग स्वीकार कर लिया। फिर हमने आने वाली रात के लिए एक योजना बनाने की कोशिश की।

अब मुझे झाड़ियों में दोबारा बैठने का विचार पसंद नहीं आ रहा था, क्योंकि मुझे लगभग यकीन था कि अगर पैंथर वापस आया भी, तो वह अपने शिकार के पास आने

से पहले झाड़ियों का अच्छी तरह निरीक्षण करेगा। अगर उसने मुझे अंदर पा लिया, जो कि उसे पूरा यकीन था, तो वह पिछली रात वाली हरकत दोहराएगा। यह सच है कि वह सुबह तड़के वापस आ गया था, जैसा कि मुनियाप्पा ने भविष्यवाणी की थी। लेकिन मुझे लगा कि अगर मैं पिछली रात झाड़ियों में वापस चला गया होता, जैसा कि मेरे साथी ने सुझाव दिया था, या वहीं रुका रहता, तो वह ऐसा नहीं करता। इसलिए मेरे मन में एक योजना बनने लगी, लेकिन मैंने मुनियाप्पा को नहीं बताया, जिसका मानना था कि मुझे अपने पुराने ठिकाने पर वापस जाना चाहिए। इसके बजाय, मैंने उससे कहा कि वह वन विश्राम गृह से आधा मील दूर जोवलागिरी गाँव में अपने घर जाए, जल्दी दोपहर का भोजन करे और ठीक एक बजे मेरे साथ सुलेकुंटा लौटने के लिए तैयार रहे।

मैंने खुद ठंडा खाना खाया और साढ़े बारह बजे बंगले से निकलकर मुनियाप्पा को लेने गाँव की ओर चल पड़ा, लेकिन मेरे पहुँचने तक मेरे नौकर ने खाना शुरू भी नहीं किया था। खैर, बहुत मनाने के बाद, मैं उसे दोपहर साढ़े एक बजे चलने के लिए तैयार करने में कामयाब हो गया। भीषण गर्मी थी, लेकिन हम तेज़ गति से चलते रहे और ठीक साढ़े तीन बजे मृत गाय के अवशेष के पास पहुँच गए। हम दोनों पसीने से तरबतर थे। फिर मैंने अपनी गुप्त योजना को अंजाम देने का तरीका खोजना शुरू किया। आप शायद समझ गए होंगे कि मैं क्या खोज रहा था: एक सुविधाजनक पेड़, जो उस झाड़ी के ऊपर हो जिसके नीचे मैंने पिछली रात शरण ली थी, चाहे पेड़ से मृत गाय दिखाई दे या न दे।

जैसे ही मुनियाप्पा को मेरे मन की बात समझ आई, उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि उन्हें यह योजना अच्छी नहीं लगी। सोचिए, खाली झाड़ी के ऊपर बैठकर काम करना कितना अजीब था! उनके लिए तो यह पूरा विचार ही बेवकूफी भरा था। हमें लगभग तीस गज दूर एक पेड़ मिला—एक अधपका जुमलम का पेड़। वहाँ से लैंटाना की झाड़ी का साफ नजारा दिखता था, लेकिन वहाँ से मरी हुई गाय दिखाई नहीं देती थी, क्योंकि गाय जुमलम के पेड़ और लैंटाना की झाड़ी के बीच खींची गई रेखा के समकोण पर थी। ये तीनों बिंदु एक समकोण त्रिभुज के तीनों कोनों को दर्शाते थे। इसीलिए मैंने शुरू में झाड़ी के बजाय जुमलम को नहीं चुना था।

एक सुविधाजनक शाखा चुनकर, मैंने मुनियाप्पा को मचान बनाने का निर्देश दिया, जिसे उन्होंने एक घंटे से कुछ अधिक समय में बड़ी कुशलता से बना दिया।

उन्होंने मचान को चारों ओर से और नीचे से भी उसी पेड़ की पत्तियों से ढक दिया। जब वह मचान बनाने में व्यस्त थे, मैंने उन्हें अपनी गुप्त योजना के दूसरे चरण के बारे में बताया। मैंने पिछली रात जिस लैंटाना झाड़ी में बैठा था, उसके अंदर एक अतिरिक्त खाकी कमीज लटका दी।

जब मैं जुमलम के पेड़ पर चढ़ा और मुनियाप्पा को सुलेकुंटा में मेरा इंतज़ार करने को कहा, तब पाँच बजने में दस मिनट बाकी थे। वह कुछ उदास चेहरे के साथ चला गया। ज़ाहिर है, उसे लगा कि मैं बहुत बेवकूफ़ हूँ; लेकिन जाते समय उसने वही किया जो मैंने उसे पहले करने को कहा था: वह ज़ोर-ज़ोर से खुद से बातें करने लगा ताकि अगर पैंथर आस-पास कहीं छिपा हो, तो उसे लगे कि जो आदमी उसके शिकार के पास था, वह अब जा रहा है। मैं एकदम शांत बैठा रहा। अगले एक घंटे में पता चल जाएगा कि मैं सही था या नहीं।

सूरज अभी डूबा नहीं था और काफी उजाला था, तभी एक बड़ा थेन्दु (एक प्रकार का जंगली कुत्ता) दाहिनी ओर जंगल से धीरे-धीरे निकला, झाड़ी से लगभग बीस कदम दूर रुका और उसे ध्यान से देखने लगा। वह मेरे सामने समकोण पर, बिल्कुल स्थिर और सीधा खड़ा था, जिससे मुझे निशाना लगाने का एकदम सही मौका मिल रहा था—चाहे बाएं कंधे के पीछे से या गर्दन पर, जैसा मैं चाहूँ।

मैंने बहुत धीरे से अपनी राइफल उठाई, उसके बट को आराम से अपने कंधे पर टिकाया और पैंथर पर निशाना साधना शुरू किया, जो बिल्कुल स्थिर था और झाड़ियों की ओर घूर रहा था। वह कितना सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रहा था! उसकी शानदार चित्तीदार खाल बेहद खूबसूरत थी! हर चित्ती साफ़ दिखाई दे रही थी। उसके खड़े कान और थोड़ा झुका हुआ सिर झाड़ियों से आने वाली हल्की सी भी आवाज़ या हलचल को पकड़ने के लिए तैयार थे। केवल उसकी छल्लों वाली पूंछ का सिरा ही रुक-रुक कर इधर-उधर फड़फड़ा रहा था, जो उसके उस निडर हावभाव में ज़रा भी दिखाई न देने वाले तनाव को दर्शा रहा था।

मैं लगभग ट्रिगर दबा ही चुका था कि मुझे उन दो रातों की याद आ गई जिनमें इस जानवर ने मुझे रोमांच और मनोरंजन दिया था। क्या अब उसे बेरहमी से मार डालना जायज़ था, जबकि वह मेरी मौजूदगी से पूरी तरह अनजान था और उसने कोई अपराध नहीं किया था? दो बार उसने मुझे अपनी दया पर छोड़ दिया था, लेकिन मैंने कुछ नहीं किया था। अब वह मेरी दया पर था। मैं क्या करूँ?

मैं एक पल के लिए और हिचकिचाया—और फिर रास्ता भटक गया!

अपनी राइफल नीचे रखते हुए, मैंने उनसे विनम्रतापूर्वक कहा, 'शुभ संध्या।'

वह चौंककर मेरी तरफ देखने लगा। फिर उसने मेरी अभिवादन का जवाब दिया। 'वूफ़! वूफ़!' कहते ही वह गायब हो गया!

मैंने पक्षियों की जानी-पहचानी और हमेशा मनमोहक आवाज़ें सुनीं जब वे अपने घोंसलों में जा रहे थे, और रात लगभग 9 बजे सुलेकुंटा लौट आया, यह खबर लेकर कि पैंथर नहीं आया था। मैंने मुनियाप्पा से स्वीकार किया कि शिकार के पास बैठकर उनकी बात न मानकर मैंने बहुत बड़ी गलती की थी। उन्होंने बड़े ही घमंडी अंदाज़ में सिर हिलाया और कुछ अकड़कर कहा: 'मैंने तुम्हें पहले ही कहा था, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। तुम्हें लगा कि तुम मुझसे ज़्यादा जानते हो। अगली बार याद रखना कि मैं, मुनियाप्पा, जो जोलागिरी का सबसे अच्छा शिकारी है, जंगल के जानवरों और उनके तौर-तरीकों के बारे में सब कुछ जानता हूँ।'

मैं अपने सेवक को यह सोचने नहीं देता कि उसका कुत्ता अचानक नरम और भावुक हो गया है। गलत साबित होना बेहतर है, बजाय इसके कि मुझे भावुक मूर्ख समझा जाए। लेकिन उस खूबसूरत जानवर की जान बख्शने के अपने आखिरी क्षण के फैसले पर मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ।

वैसे, मुझे नहीं पता कि उस अधिकारी ने मुनियाप्पा के लेनदार का वह एहसान पूरा किया या नहीं जो उससे अपेक्षित था। शायद नहीं; क्योंकि उसे न तो बाघ की खाल मिली और न ही तेंदुआ की। लेकिन मुझे इतना ज़रूर पता है: मुनियाप्पा ने अपना सौ रुपये का कर्ज कभी नहीं चुकाया। उसने कई साल बाद मुझे यह बात बताई और अपनी बेईमानी का सीधा और एकमात्र कारण मुझे बताया, क्योंकि मैं तेंदुआ को मारकर उसकी खाल हासिल करने में नाकाम रहा था।

---

1 देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।

2 देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।

देखें: नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग, जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन

आठ

हमलावर से लेकर नरभक्षी तक

यह कहानी मेरी पिछली साहसिक कहानियों की किताबों में दर्ज दो घटनाओं का अगला भाग है। इनमें से पहली घटना तब शुरू हुई जब एक बाघ ने बेहद अजीब व्यवहार करना शुरू कर दिया। वह उत्तरी कोयंबटूर जिले (जो अब मद्रास राज्य के नाम से जाना जाता है) में डिंबम ढलान की तलहटी में स्थित राजनगर गाँव के चरवाहों पर हमला कर रहा था। अनोखी बात यह थी कि इस बाघ ने अपने किसी भी शिकार को कभी नहीं काटा और न ही इस बात का कोई पुख्ता सबूत था कि उसने किसी को मारा या खाया हो। वह बस अपने शिकार पर झपटता और पास आकर अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता और अपने अगले पंजों के पंजों से उसके सिर, छाती, पीठ और बांहों पर बुरी तरह से वार करता। मैंने इस मायावी जानवर को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन पूरी तरह असफल रहा।

फिर दृश्य का स्वरूप बदल गया और अभियान का दायरा काफी विस्तृत हो गया, जो राजनगर से साठ से सौ मील उत्तर और उत्तर-पूर्व में फैला हुआ था। जंगल में स्थित पेगेपलयम नामक एक छोटे से गाँव में एक बाघ ने एक लड़के को मार डाला और उसे उठाकर ले गया। वह लड़का कई पीड़ितों में से पहला था, जिनमें से कुछ के अवशेष बरामद किए गए। शवों पर बाघ के पंजों से हुए गंभीर घावों के स्पष्ट प्रमाण थे, जबकि मांस खाने के स्थानों को छोड़कर अन्य जगहों पर दांतों के निशान नदारद थे। एक मामले में, पेड़ पर चढ़े दो लोगों ने अपने साथी को बाघ द्वारा बुरी तरह घायल होते देखा। बाघ ने उस पर दो अलग-अलग मौकों पर हमला किया, पहली बार में उसके चेहरे पर पंजे मारे और दूसरी बार में अपने पंजे के वार से उसे मार डाला, फिर उसे उठाकर ले गया।

मिले हुए मानव अवशेषों से संकेत मिलता है कि जानवर के दांतों या जबड़ों में

कोई खराबी नहीं थी, जैसा कि पहले अनुमान लगाया गया था। क्योंकि उसने हर अंग से भरपेट भोजन किया था, जो खराब दांतों या टूटे हुए या किसी अन्य प्रकार से क्षतिग्रस्त जबड़े के साथ संभव नहीं होता।

हालांकि, उसका लगातार हमला करने का तरीका, जो काटने के बजाय अपने अगले पंजों से खरोंचने और प्रहार करने का था, इस बात का निर्विवाद संकेत देता प्रतीत होता था कि यह जानवर कोई और नहीं बल्कि वही पूर्व 'राजनगर का हमलावर' था जो भटककर उत्तर की ओर अपने मूल निवास स्थान से कहीं बड़े जंगल क्षेत्र में आ गया था। मेरे बेटे डोनाल्ड ने इस जानवर को पकड़ने के दो प्रयास किए, पहला पेगेपालयम में और दूसरा लोकनहल्ली और बैलूर के बीच सड़क के पास, ठीक उसी क्षेत्र में जहाँ मैंने कुछ साल पहले रामपुरम बाघ को देखा था। लेकिन उसे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा, क्योंकि दोनों ही मौकों पर यह बाघ अपने द्वारा मारे गए मानव पीड़ितों के अवशेषों पर वापस नहीं लौटा, जिन पर डोनाल्ड ने बड़ी मुश्किल से शोक संतप्त परिजनों को बैठने की अनुमति दी थी।

स्वाभाविक रूप से, डोनाल्ड और मैं दोनों ही अखबारों को उत्सुकता से पढ़ते थे ताकि मानव वध की और खबरें मिल सकें, इसके अलावा हमें वन विभाग से समय-समय पर मिलने वाली खबरें भी मिलती रहती थीं। इन स्रोतों से बहुत कम खबरें लंबे अंतराल पर आती थीं। उत्तरी कोयंबटूर जिले के कोललेगल तालुक के सुदूर उत्तर-पूर्वी कोनों में, कावेरी नदी के ठीक दक्षिण में, जो इसे उत्तर-पश्चिम में मैसूर राज्य और उत्तर-पूर्व में मद्रास राज्य के सलेम जिले से अलग करती है, छिटपुट इलाकों में बाघों का शिकार होने लगा।

अंततः दो पुख्ता और प्रामाणिक खबरें आईं। पहली खबर यह थी कि अपनी गायों को चराते समय एक बूढ़ी औरत को एक बाघ उठा ले गया, जिसने चर रही गायों को छुआ तक नहीं। उसके अवशेष कभी नहीं मिले। यह घटना गुल्या नामक एक पशुशाला में घटी। दूसरी खबर यह थी कि सलेम जिले से कावेरी नदी के पार आलमबाड़ी नामक एक अन्य पशुशाला में गाय चरा रहे एक व्यक्ति पर बाघ ने हमला किया और उसे बुरी तरह घायल कर दिया, लेकिन उसकी मौत नहीं हुई। इस मामले में बताया गया कि चरवाहा, जो जंगल में जानवरों के चरने के दौरान उनके बीच खड़ा था, ने ऊपर देखा तो उसे पास की एक झाड़ी से एक बाघ निकलता हुआ दिखाई दिया और आसपास के जानवरों की परवाह किए बिना सीधे उसकी ओर आ रहा था। उसने

बाघ पर चिल्लाया, और जैसे ही वह उसकी पहुँच में आया, उसने साहसपूर्वक अपने हाथ में पकड़ी लकड़ी की लाठी से उस पर वार किया। ऐसा प्रतीत होता है कि बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसके सीने और बाहों पर बुरी तरह से पंजे मारे, जिससे वह गिर पड़ा। लेकिन उस आदमी के मवेशियों में पाँच भैंसें थीं, और ये जानवर पास ही चर रहे थे। भैंसों की आदत के अनुसार, पाँचों ने मिलकर बाघ पर हमला कर दिया, जिससे बाघ दुम दबाकर भाग गया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वह आदमी लड़खड़ाते हुए वापस बाड़े तक पहुँचा, जहाँ कई अन्य चरवाहे उसकी मदद के लिए मौजूद थे।

पट्टी जंगल का वह हिस्सा है जिसे सरकार द्वारा कुछ चरवाहों को आरक्षित वन में चरने के लिए लाइसेंस प्राप्त मवेशियों को रात में बाड़े में रखने के लिए पट्टे पर दिया जाता है। इन जानवरों को पट्टी के चारों ओर लगभग तीन मील के दायरे में दिन के समय जंगल में चरने की अनुमति होती है। चराई का समय बारह महीनों में से लगभग छह महीने तक रहता है: मानसून के बाद और गर्म शुष्क मौसम के दौरान, जब गांवों के आसपास चारा उपलब्ध नहीं होता है। लाइसेंस की लागत छह महीने के लिए प्रति पशु चार आना है, जो छह महीने के लिए तीन पशुओं के लिए लगभग एक शिलिंग बैठता है। इस प्रकार, लगभग अट्ठाईस वर्ग मील के क्षेत्र में पूरे दिन चरने के अधिकार के लिए प्रति पशु प्रति माह दो-तिहाई पैसा खर्च होता है।

खैर, अब मुख्य मुद्दे पर आते हैं: इन दोनों घटनाओं के स्थल, और विशेष रूप से आलमबाड़ी, कावेरी नदी के निकट थे, जिसके दूसरी ओर सलेम जिला था, और वहां सड़कें और संचार व्यवस्था काफी अच्छी थी, इसलिए खबर तेजी से और विस्तार से फैली, और हमें बेंगलुरु में घटनाओं के एक महीने के भीतर ही इसकी जानकारी मिल गई। ऐसे हालात और इतने दूरदराज के इलाकों के लिए यह लंबा समय नहीं है। इसलिए यह लगभग निश्चित था कि यह बाघ पूरी तरह से आदमखोर नहीं था। वह आदमखोर तेंदुओं की तरह ही इंसानों पर हमला करता था, केवल तभी जब उसे कोई असाधारण रूप से आसान मौका मिलता था या शायद जब उसका मन करता था। बाकी समय वह स्पष्ट रूप से जंगली जानवरों का शिकार करता था, क्योंकि उस क्षेत्र में बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे गए मवेशियों की संख्या सामान्य से अधिक नहीं थी।

समय बीतता गया और हम उस बाघ के बारे में भूलने ही लगे थे कि तभी एक के बाद एक खबरें आईं कि बेजाहाई नाम के एक छोटे से गांव में दो लोगों को मारकर खा

लिया गया है। कहा जाता है कि पहले पीड़ित का शव कभी बरामद नहीं हुआ, लेकिन दूसरे का शव आधा खाया हुआ मिला। उस आदमी के चेहरे और छाती पर बुरी तरह से घाव थे और पंजे के निशान थे।

डोनाल्ड मुझसे सहमत था कि आखिरकार हमारे पास काम करने के लिए कुछ ठोस और प्रामाणिक चीज़ थी। पेगेपलयम का मायावी बाघ, जिसके बारे में हमें संदेह था कि वह राजनगर का खूंखार बाघ ही है, एक बार फिर सक्रिय प्रतीत हो रहा था। नक्शे के अनुसार, बेजाहहाई गाँव समुद्र तल से लगभग 3,000 फीट ऊपर, कोललेगल तालुक की सबसे ऊँची पर्वत चोटी, पोन्नाच्ची बेट्टा या पोनाची मलाई, जो स्वयं लगभग 5,000 फीट ऊँची है, के पूर्व में स्थित एक घाटी में था। डोनाल्ड ने लंबे समय से इस बाघ का शिकार करने और अपने शिकार को मारने से पहले उसे बुरी तरह घायल करने की उसकी विचित्र आदत के रहस्य को सुलझाने का निश्चय कर लिया था। इसलिए उसने अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक महीने की 'सफारी' पर निकलने का फैसला किया, जैसा कि उसने इसे नाम दिया था। आगे डोनाल्ड की कहानी है, जैसा कि उसने मुझे बताया:

बेजाहहाई में हुई दो मानव हत्याओं की रिपोर्ट मिलने के बाद, मैंने हर कीमत पर उस बाघ को पकड़ने का फैसला किया जो इसके लिए जिम्मेदार था, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे यकीन था कि यह वही जानवर था जिसे मैंने लगभग एक साल पहले पेगेपलयम में गोली मारने की असफल कोशिश की थी।

इस बाघ के बारे में दो अजीब बातें थीं। पहली यह कि वह हमला करने वाले लोगों को काटने के बजाय अपने पंजों से खरोंचता था। दूसरी यह कि वह कभी भी किसी इंसान को मारने के बाद वापस नहीं आता था; मैं पहले भी कई बार इंसानी लाशों के ऊपर बैठकर उसकी तलाश कर चुका था, लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली।

इसलिए मैंने जल्दी से तैयारी की और लगभग 300 रुपये इकट्ठा किए, ताकि सफारी के दौरान अपने चारे और अन्य खर्चों को पूरा कर सकूँ। हालाँकि यह अच्छी-खासी रकम थी, लेकिन अगर मैं इस चालाक जानवर का शिकार कर पाता, जो इतने लंबे समय से मेरे लिए खतरा बना हुआ था, तो यह खर्च करना जायज़ था। तो एक सुबह पाँच बजे मैं अपनी कार में निकल पड़ा, जो पुरानी होने के बावजूद जंगल के काम के लिए बार-बार बेहतरीन साबित हुई थी।

मैं पेन्नाग्राम में कुछ घंटों के लिए रुका, ताकि पिताजी के पुराने शिकारी, रंगा को

ले सकूँ, जिसे मैं नौकर से ज़्यादा एक पुराने दोस्त की तरह मानता था। फिर मैं जंगल के रास्ते से होते हुए मुत्तूर नामक स्थान पर पहुँचा, जो चिनार नदी के किनारे एक घाटी में सात मील दूर स्थित है। वहाँ मैंने अपने एक और पुराने शिकारी दोस्त बायरा को भी अपने साथ चलने के लिए मना लिया। बायरा एक पुजारी है, जो जंगल में ही पला-बढ़ा एक आदिवासी है। पिताजी और मैं उसे कई सालों से जानते हैं। हालाँकि वह काफ़ी बूढ़ा है, फिर भी मुझे लगता है कि जंगल के ज्ञान और काम के मामले में वह रंगा से भी बेहतर है। वह निश्चित रूप से एक बेहतर ट्रैकर है।

हम मोटरबाइक से पेन्नाग्राम वापस आए और फिर पश्चिम की ओर मुड़कर कावेरी नदी के किनारे बसे होगेनैकल नामक एक छोटे से गाँव तक दस मील का सफर तय किया। यहाँ कुछ झरने हैं जो धार्मिक कारणों से प्रसिद्ध हैं, कम से कम हिंदू धर्म में तो ज़रूर। कई साल पहले यहाँ एक और बहुत अच्छा शिकारी रहता था, जिसने एक बार अपने शिकार के दौरान एक हाथी को गोली मारकर सरकार के साथ विवाद खड़ा कर दिया था। वह मुझे बचपन से जानता था, लेकिन अब वह मर चुका था। होगेनैकल से एक मील दूर ऊतैमलाई नाम का एक गाँव है, जहाँ पिताजी की एक कमरे की ईंटों की झोपड़ी है, जिसका इस्तेमाल वे पुराने दिनों में डेरा डालने के लिए करते थे, जब इलाके में शिकार बहुतायत में होता था और वे नियमित रूप से शिकार पर आते थे। हालाँकि, तब से हालात बदल गए हैं और अब इस इलाके में शिकार के लिए ज़्यादा कुछ नहीं है।

मैंने अपनी कार उसकी झोपड़ी के सामने खड़ी कर दी और उसे स्थानीय वन रक्षक के हवाले कर दिया। फिर मैंने अपना सारा सामान रंगा, बायरा और अपने बीच बाँट लिया और हम लगभग साढ़े नौ मील की दूरी पैदल चलकर बेजाहाई तक पहुँचने के लिए निकल पड़े।

सबसे पहले हम ऊतैमलाई से उत्तर-पश्चिम की ओर जाने वाली सड़क पर तीन मील पैदल चले, कावेरी नदी के किनारे-किनारे बिलिगुंडलू नामक स्थान की ओर। तीसरे मील पर नदी पार करने के लिए एक नौका थी, और हमें दूसरी ओर स्थित आलमबाड़ी मवेशी बाड़े तक पहुँचने के लिए इसका उपयोग करना पड़ा। संयोगवश, यह नौका कोई साधारण लकड़ी की नाव नहीं थी, बल्कि एक गोलाकार, टोकरीनुमा संरचना थी, जिसका व्यास लगभग आठ फीट था, जो मजबूत भैंस की खाल से ढकी हुई थी और मुश्किल से छह इंच पानी में डूबती थी। चमड़े और टोकरीनुमा संरचनाओं

से बनी इन नौकाओं को स्थानीय भाषा में कोराकल कहा जाता है। इन्हें एक व्यक्ति एक छोटे लकड़ी के चप्पू से चलाता है; वह नदी की तेज धाराओं को पार करने और सतह के ठीक नीचे मौजूद चट्टानों के नुकीले किनारों से बचने में अत्यधिक कुशल है। आलमबाड़ी के पास नदी के दूसरे किनारे पर कदम रखते ही हम कोललेगल तालुक में थे, जो उत्तरी कोयंबटूर जिले का हिस्सा है और जिसका वन विभाग का प्रशासन पूरी तरह से अलग है। आलमबाड़ी उन स्थानों में से एक था जहाँ कुछ महीने पहले इस बाघ ने एक व्यक्ति को बुरी तरह घायल कर दिया था। मैंने पट्टी में रहने वाले चरवाहों से उस जानवर के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की, लेकिन मैं बहुत कम जानकारी जुटा सका।

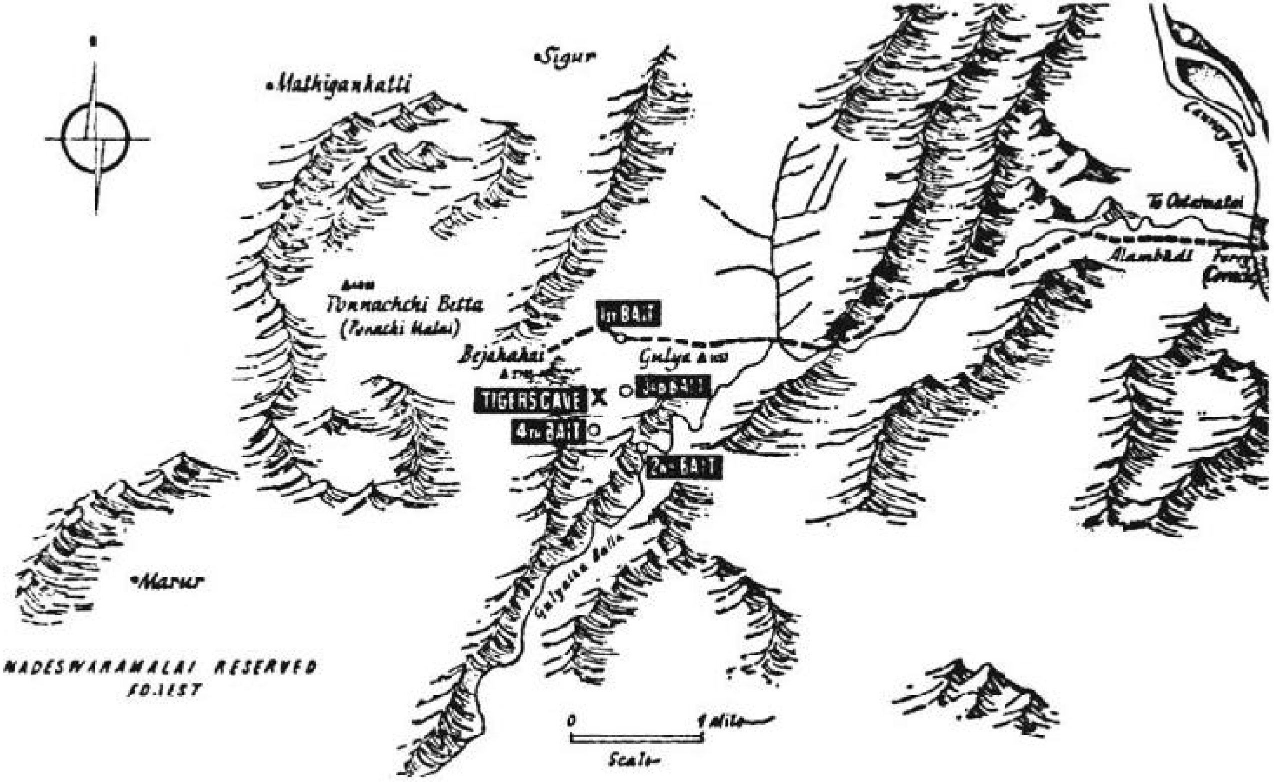

Mathiganhatti
Sigur
Tonnachchi Betta
(Ponachi Malai)
Bejahahai
1st BAIT
Gulya
3rd BAIT
TIGERS CAVE
4th BAIT
2nd BAIT
To Odekmalai
Alambadi
Marur
NADESWARAMALAI RESERVED FOREST
0
1 Mile
Scale

हालांकि, दो तथ्य प्रमुख थे। पहला, कि हर कोई बुरी तरह डरा हुआ था और अपनी जान के डर से इधर-उधर घूम रहा था। दूसरा, उस व्यक्ति को देखने वालों से मिली जानकारी के अनुसार, उसके कंधों, छाती और पीठ पर गहरे खरोंच के निशान थे, लेकिन कहीं भी काटा नहीं गया था। बेचारे की बाद में खून में ज़हर फैलने के कारण मृत्यु हो गई।

जिस जगह मुझे जाना था, वह बेजाहहाई नाम का एक छोटा सा गाँव था, जो लगभग दस मील लंबी, उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली एक पर्वत श्रृंखला की पूर्वी ढलानों पर बसा था। इस श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी पोनाची मलाई नामक स्थान पर है, जो उत्तरी छोर से लगभग चार मील दूर है। गुल्याथा हल्ला नाम की एक धारा इस श्रृंखला के दक्षिण में कहीं से निकलती है और उत्तर-पूर्व दिशा में बहती हुई आलमबाड़ी के कुछ उत्तर में कावेरी नदी में मिल जाती है। आलमबाड़ी से बेजाहहाई तक एक पैदल मार्ग है, जो लगभग पाँच मील तक उसी सहायक नदी के समानांतर चलता है जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, और फिर शेष डेढ़ मील तक पश्चिम की ओर मुड़कर बेजाहहाई पहुँचता है। हम तीनों इसी पैदल मार्ग पर चल पड़े। दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे। सूरज बहुत तेज़ था, और संकरे और पथरीले रास्ते पर चलना बहुत मुश्किल था। हमने सहायक नदी को लगभग आधा दर्जन बार पार किया; जैसे-जैसे ज़मीन आगे पर्वत श्रृंखला की ओर बढ़ती गई, रास्ता और भी पथरीला और पत्थरों से भरा होता गया।

हमारी यात्रा पूरी तरह से शांतिपूर्ण नहीं रही। हमने लगभग पहले पाँच मील का सफर तय कर लिया था और जब हम आखिरी नदी पार करने वाले स्थान पर थे, जहाँ से रास्ता नदी को छोड़कर पश्चिम की ओर बेजाहहाई की ओर मुड़ने वाला था, तभी हमारी नज़र हाथियों के एक झुंड पर पड़ी जो नदी के दोनों किनारों पर उगे मुथी और इमली के पेड़ों की छाँव में गर्मी से राहत पाने के लिए आराम कर रहे थे। उस समय वे चर नहीं रहे थे, इसलिए हमें उनकी आवाज़ सुनाई नहीं दी, और पहाड़ियों से आती हवा उनके पास से गुज़रते हुए हमारी ओर बह रही थी, इसलिए उन्हें हमारी गंध भी नहीं आई। मैंने रबर के तले वाले जूते पहने थे, जबकि रंगा और बायरा नंगे पैर थे। इसलिए उन्हें हमारे आने की आहट सुनाई नहीं दी, और नतीजा यह हुआ कि हम लगभग उनके बीचों-बीच पहुँच गए। जैसे ही हाथियों ने हमें एक साथ सूंघा और देखा, वहाँ अफरा-तफरी मच गई। मानो यह दिखाने के लिए कि ये विशालकाय जानवर

वास्तव में कितने कायर हैं, बड़ी संख्या में होने पर भी—कुल मिलाकर लगभग तीस हाथी रहे होंगे—उनका झुंड बेतहाशा भागने लगा। डरी हुई मादा हाथियों की चीखों से कहीं ज़्यादा ज़ोर से नर हाथियों ने चिंघाड़ भरी आवाज़ें निकालीं। अपनी माँ के पीछे-पीछे तेज़ी से भागते हुए बछड़ों की सूअर जैसी चीखें भी अफरा-तफरी मचा रही थीं। सबसे मज़ेदार बात यह थी कि बड़े-बड़े नर हाथी, जिनसे उम्मीद की जाती थी कि वे मादा हाथियों और उनके बच्चों की रक्षा के लिए आगे आएंगे, वास्तव में उन्हें धक्का देकर किनारे कर रहे थे और एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगा रहे थे। कुछ ही पलों में, जहाँ पहले बहुत सारे हाथी और शोर था, वहाँ सन्नाटा छा गया।

हम शाम लगभग पाँच बजे बिना किसी और घटना के अपने गंतव्य पर पहुँच गए। हालाँकि सूर्यास्त में अभी अपेक्षाकृत लंबा समय था, लेकिन पूरा इलाका पहले ही छाया में डूब चुका था, क्योंकि सूर्य पर्वत श्रृंखला की विशाल चोटी के पीछे छिप चुका था। पोनाची मलाई की वास्तविक चोटी उत्तर-पश्चिम दिशा में, लगभग एक मील दूर, दिखाई दे रही थी।

बेजाहहाई अन्य जंगली बस्तियों की तरह ही था, जिसमें लगभग एक दर्जन झोपड़ियाँ एक साथ सटी हुई थीं। इनमें से अधिकांश की दीवारें कंटीली झाड़ियों की और छतें सूखी जंगली घास की बनी थीं। कंटीली झाड़ियों और घास को सूखी जंगली लताओं से बंधे बांसों से जोड़ा गया था। एक-दो झोपड़ियाँ, जो स्पष्ट रूप से 'बेहतर' थीं, उनकी दीवारें तीन फुट ऊंची सूखी मिट्टी की बनी थीं, जिन पर गोबर का लेप किया गया था, लेकिन छतें भी वैसी ही जंगली घास की थीं। प्रत्येक झोपड़ी के पीछे बने मवेशी बाड़े की दीवारें बुने हुए बांस की थीं, जिनके ऊपर कंटीली झाड़ियों की बाड़ लगी थी। यह बाड़ हमलावर तेंदुओं और बाघों को दूर रखने के लिए आवश्यक थी।

हमारे आगमन से काफी हलचल मच गई। दो-तीन दर्जन पुरुष, जिन्होंने कमर पर केवल चिथड़े के टुकड़े लपेट रखे थे, नग्न स्तन वाली महिलाएं, फटी-पुरानी साड़ियां पहने महिलाएं, और मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों के कारण तिल्ली बढ़ने से पीड़ित मोटे पेट वाले बच्चे, दबे पांव अपनी झोपड़ियों से बाहर निकले या दरवाजों पर खड़े होकर हमें संदेह और भय से देखने लगे। उनमें से एक-दो पुरुषों ने घबराकर सलाम किया।

हम झोपड़ियों के इस समूह के बीचोंबीच आकर रुक गए। ज़ाहिर है, अगर मुझे उनसे सवाल पूछने थे, तो सबसे पहले मुझे वहाँ के निवासियों को सहज महसूस

कराना था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने सोचा कि बायरा से बात करना सबसे अच्छा रहेगा। एक तो वह खुद आदिवासी था, और ये डरे हुए लोग उसकी बात समझ जाएँगे। मुझे अपने अनुभव से पता था कि रंगा उन लोगों के प्रति काफी घमंडी था जिन्हें वह सामाजिक रूप से अपने से नीचा समझता था, और उन्हें 'जंगली बंदर' और 'बेवकूफ लंगूर' जैसे अपमानजनक नामों से पुकारता था। अगर मैं खुद उनसे बात करता तो शायद वे और भी घबरा जाते। यकीनन वे मेरी बात पर विश्वास नहीं करते।

मैंने बायरा से हमारा परिचय कराने को कहा। उसके शब्दों से मुझे इतनी खुशी कभी नहीं हुई थी। बायरा ने कहा कि मैं एक महान शिकारी हूँ जिसने सैकड़ों बाघ, हाथी, तेंदुआ और ऐसे ही छोटे-मोटे जीवों का शिकार किया है, और बेजाहाई के निवासियों की दुर्दशा सुनकर मैं उनकी मदद करने के लिए कई मील दूर से आया हूँ। उसने कहा कि उनकी ओर से एक महत्वपूर्ण योगदान यह होगा कि मैं उन्हें हर संभव जानकारी और सहायता प्रदान करूँ। उसका भाषण थोड़ा लंबा था, लेकिन मुझे कहना होगा कि उसने अपना उद्देश्य पूरा किया। मेरे आस-पास बैठे कुछ लोगों के चेहरों पर मुस्कान आ गई। खैर, तनाव साफ तौर पर कम हो गया।

मैं तमिल और हिंदुस्तानी बोल सकता हूँ और कुछ कन्नड़ समझ सकता हूँ। मेरे श्रोताओं में से अधिकांश तमिल थे, हालाँकि मैं कुछ शोलागा लोगों को भी पहचान सका, जो बायरा की तरह ही आदिवासी हैं और प्राचीन काल से कोयंबटूर के जंगलों में निवास करते आए हैं। इसलिए इस स्तर पर मैंने सभा को तमिल में संबोधित करके कार्यवाही में सक्रिय रूप से भाग लिया। मैंने यथासंभव सरल शब्दों में लोगों को बताया कि मेरा उद्देश्य उनके जीवन में आए इस भयानक खतरे से उन्हें मुक्ति दिलाना है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मुझे सफलता का पूरा भरोसा है। बस एक ही शर्त थी: कि मुझे उनका पूर्ण और सक्रिय सहयोग प्राप्त हो। मैंने कहा कि मैं गाँव के प्रत्येक सक्षम पुरुष से पूरी सहायता की अपेक्षा करता हूँ। मेरे सरल भाषण का वांछित प्रभाव प्रतीत हुआ। भारत में ग्रामीण पश्चिम के लोगों की तरह ताली बजाकर अभिनंदन नहीं करते। लेकिन वे कुछ ऐसा ही अच्छा करते हैं, बल्कि उससे कहीं बेहतर। वे मुस्कुराते हैं, यहाँ तक कि सहमति में हँसते भी हैं। उस शाम बेजाहाई के निवासी खुलकर मुस्कुराए।

उनका भरोसा जीतने के बाद, मैंने उनसे बाघ के बारे में पूछताछ शुरू की। मैंने पूछा कि क्या उनमें से किसी ने उसे देखा है, क्या उसके तौर-तरीकों या रूप-रंग में

कोई खास बात है, क्या उसकी कोई विशेष आदतें हैं या कोई पसंदीदा इलाका है जहाँ वह अक्सर पाया जाता है। कई सीधे-सादे लोगों ने जवाब दिया कि उन्होंने आदमखोर बाघ को देखा है, लेकिन उनके विरोधाभासी जवाबों से जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि या तो उस इलाके में कई अलग-अलग दिखने वाले बाघ थे, या फिर लोग सिर्फ मुझे खुश करने के लिए उस जानवर को देखने की बात कह रहे थे।

जैसा कि उम्मीद थी, अधिकांश लोगों ने कहा कि वह एक विशालकाय जानवर था, जिसका सिर लगभग दो फीट व्यास का और शरीर कम से कम बारह फीट लंबा था। एक-दो महिलाओं ने, जिन्होंने कहा कि उन्होंने उस शिकारी को गाँव के बाहरी इलाके के पास घूमते हुए देखा था, ज़ोर देकर कहा कि वह बाघिन थी, बाघ नहीं। लेकिन एक बात पर वे सब लगभग एकमत थीं: कि उस आदमखोर को गोली मारने की कोशिश करना मेरे लिए बिल्कुल बेकार होगा। उन्हें पूरा विश्वास था कि वह जानवर, या वह, एक वन देवी द्वारा संरक्षित था जो उसकी गर्दन पर बैठी रहती थी और शिकार के दौरान उसके साथ जाती थी। वास्तव में, उन्हें पूरा यकीन था कि देवी ही उस आदमखोर को सीधे उसके हर शिकार तक ले जाती थी।

जब यह भाषण चल रहा था, मैंने देखा कि एक व्यक्ति, जो थोड़ी दूरी पर ज़मीन पर बैठा था और एक मुँह तक नहीं खोल रहा था, बाकी लोगों के बेतुके बयानों के बीच एक व्यंग्यात्मक मुस्कान लिए बैठा था। वह अधेड़ उम्र का था, स्पष्ट रूप से शोलागा समुदाय का था, और उसने केवल एक छोटी सी धोती पहन रखी थी। यह सोचकर कि शायद वह मेरी तमिल भाषा न समझ पाए, मैंने बायरा से उससे सवाल पूछने को कहा।

लेकिन उस आदमी ने बीच में ही टोकते हुए कहा: 'मैं तुम्हारी बात समझ सकता हूँ, डोराई, और जैसे ही हमारे आसपास के ये झूठे लोग बोलना बंद कर देंगे, मैं बोलना शुरू कर दूंगा।'

उन शब्दों का ऐसा प्रभाव हुआ कि भीड़ एकदम शांत हो गई और तुरंत शोरगुल बंद हो गया। फिर शोलागा ने बोलना शुरू किया और उनके शब्द जितने अनोखे थे उतने ही नाटकीय भी थे।

'एक बात तो ये है, दोराई,' उसने कहा, 'आदमखोर नर होता है, मादा नहीं। मुझे ये बात पक्के तौर पर पता है, क्योंकि तीन दिन पहले जब मैं एक ओडुम्बु को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ा था, जो उसमें छिपा हुआ था, तो वो जंगल से बाहर आया और

शांति से पेड़ के नीचे बैठ गया, मेरे उतरने का इंतज़ार करने लगा। मैंने उस पर चिल्लाया और टहनियाँ फेंकीं, लेकिन वो सिर्फ़ गुर्राया और मुझे धमकी भरी नज़रों से घूरने लगा। मुझे लगा कि वो कभी नहीं जाएगा, लेकिन दोपहर होते-होते, जब सूरज अपने चरम पर पहुँच गया और गर्मी की लहरें ज़मीन पर नाचने लगीं, तो उसे प्यास लगी और वो अचानक जंगल में चला गया। मुझे लगा कि ये कोई चाल है और वो झाड़ियों में छिपकर मेरे उतरने का इंतज़ार कर रहा होगा। इसलिए मैं दो घंटे और पेड़ पर ही बैठा रहा।' मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ, तभी ज़ोरदार शोर मच गया और करीब एक दर्जन जंगली कुत्तों का झुंड एक सांभर हिरण का पीछा करते हुए मेरे पेड़ के नीचे खुले मैदान में आ गया और पल भर में उसे नोंच-नोंच कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। फिर वे उसके शव को खाने लगे। मैं जानता था कि यही मेरा एकमात्र मौका है। कोई बाघ, यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी, जंगली कुत्तों के झुंड के सामने आने की हिम्मत नहीं करेगा। अगर मैं पेड़ से नीचे उतरकर भाग जाता, तो कुत्ते मुझे नुकसान नहीं पहुँचाते, जबकि संभावना यही थी कि बाघ बहुत पहले ही भाग चुका होता।

तो मैंने वही किया, दोराई। कुत्ते खाना छोड़कर खड़े हो गए और जिज्ञासा भरी निगाहों से मेरी ओर देखने लगे। लेकिन उनमें से एक भी नहीं भागा। मानो उनकी सहज प्रवृत्ति ने उन्हें बता दिया हो कि मैं निहत्था और असहाय हूँ और वे चाहें तो मुझे मार सकते हैं। और जब वे अभी भी मुझे देख रहे थे, मैं चुपके से निकल गया और बिना किसी नुकसान के गाँव लौट आया, हालाँकि मैं मानता हूँ कि जंगली कुत्तों की मौजूदगी से दूर होते ही मैं बहुत डर गया था, क्योंकि वास्तव में उन्हीं कुत्तों ने मेरी जान बचाई थी। मुझे यकीन था कि आदमखोर सांप नदी के किनारे सूख रहे कुछ बचे हुए तालाबों में से किसी एक में अपनी प्यास बुझाने के बाद आसपास ही लौट आएगा।

'खैर, दोराई, मैंने उस जानवर को साफ़-साफ़ देखा। यह उतना बड़ा बाघ नहीं है जितना ये लोग बता रहे हैं, बल्कि औसत आकार का है। लेकिन इसकी पूंछ काफ़ी लंबी है। मैंने इस बात पर खास ध्यान दिया, क्योंकि यह मेरी तरफ़ घूरते हुए अपनी पूंछ को बार-बार अगल-बगल हिला रहा था। और वह नज़र, दोराई! मैंने किसी भी जीवित प्राणी की आँखों में ऐसी शैतानी नफ़रत कभी नहीं देखी, जैसी मैंने उस बाघ की आँखों में देखी।'

मैंने संदेह से पूछा, 'तुम वापस आकर दूसरे ग्रामीणों को अपनी देखी हुई बातें क्यों नहीं बताईं?'

शोलागा कुछ देर चुप रहा। फिर उसने कहा: 'इस जानवर को मारने पर इनाम है। मैं अपने चाचा की बंदूक उधार लेकर इसे मारने की कोशिश करने वाला था। मेरे चाचा परसों इस गाँव में वापस आने वाले हैं। मुझे इनाम चाहिए था, क्योंकि मैं गरीब हूँ। मैं तुम्हें इस घटना के बारे में बताता भी नहीं, लेकिन गाँव वालों की बताई बेतुकी कहानियाँ सुनकर मेरा जी मिचला गया।'

भीड़ में क्रोध और विरोध की हल्की फुसफुसाहट फैल गई, लेकिन शोलागा ने बोलना जारी रखा। 'दोराई, इस बाघ के पास न तो कोई जादू है और न ही कोई देवी जो इसकी रक्षा करे। लेकिन इसमें बुद्धि है, यहाँ खड़े अधिकांश लोगों से कहीं अधिक बुद्धि। हालांकि, अगर दोराई सचमुच गंभीर है और इसे मारना चाहता है, तो मैं उसकी मदद करूंगा। क्योंकि मुझमें भी बुद्धि है; बाघ या हमारे आस-पास के इन लोगों से कहीं अधिक बुद्धि।'

और इस तरह मेरी मुलाकात लोटा शोलागा से हुई—जो एक साधारण आदिवासी होने के बावजूद बेहद मुखर, अहंकारी और अपनी राय पर अडिग था। लेकिन जैसा कि मुझे जल्द ही पता चला, वह अपने जंगल और उसके निवासियों को भली-भांति जानता था, और वह एक अत्यंत साहसी व्यक्ति भी था। मैंने उससे कहा कि वह जो भी सहायता दे सकता है, मैं उसका स्वागत करूंगा, जिस पर उसने सहमति जताते हुए आकर मेरे साथ आए दो साथियों के बगल में खड़ा हो गया।

गाँव के निवासियों से ज़्यादा जानकारी न मिलने के कारण, मैं अपने तीन साथियों को लेकर लगभग एक फर्लांग जंगल में चला गया, जहाँ हम ज़मीन पर बैठकर आगे की योजना बनाने लगे। जब तक यह सारी बातचीत समाप्त हुई, तब तक चालीस मिनट और बीत चुके थे: ठीक शाम के 5:40 बज रहे थे। अब जीवित चारे बाँधने का समय नहीं था, इस प्रक्रिया में सबसे उपयुक्त स्थानों का चयन करना और यदि संभव हो तो उन्हीं स्थानों पर पहले से मचान (सुरक्षा घेरा) लगाना जैसे जटिल लेकिन अत्यंत आवश्यक कार्य शामिल होते हैं, ताकि शिकार होने की स्थिति में बाद में कोई गड़बड़ी न हो।

लोट्टा ने हमें बताया कि बाघ के पदचिह्न अक्सर सुबह के समय दिखाई देते थे, जो गुल्याथा हल्ला नदी की सूखी रेत पर बने होते थे। ये पदचिह्न हमेशा नदी के बाएँ या उत्तर-पश्चिमी किनारे से लगभग 500 फीट ऊँची एक छोटी पहाड़ी के ठीक दक्षिण में पाए जाते थे, जो नदी से लगभग एक मील दूर, उसी दिशा से ऊपर उठती थी जिस

दिशा से हम उस शाम आए थे। वास्तव में, नदी को छोड़ने के बाद जिस रास्ते से हम बेजाहहाई गए थे, वह इसी पहाड़ी के उत्तरी किनारे से होकर गुजरता था। उन्होंने बताया कि पहाड़ी की चोटी के पास एक छोटी गुफा थी, जिसमें उनका मानना था कि आदमखोर बाघ दिन के समय आराम करता था। हालाँकि दक्षिण-पूर्व में पाँच सौ फीट नीचे नदी के तल से पूरी पहाड़ी स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी, लोट्टा ने कहा कि गुफा एक बड़े पत्थर के कारण दिखाई नहीं देती थी। उनके अनुसार, पहाड़ी का निचला दो-तिहाई हिस्सा जंगल से ढका हुआ था, लेकिन ऊपरी ढलानें अपेक्षाकृत खाली थीं, जिनमें एक दूसरे के ऊपर ढेर लगे हुए टूटे-फूटे पत्थर थे। इसलिए, गुफा के पास जाने वाला कोई भी व्यक्ति खतरे में पड़ जाता। वह न केवल ऊपर से बाघ को दिखाई देता, बल्कि चाहे कोई व्यक्ति कितनी भी खामोशी से चढ़े, ऊबड़-खाबड़ इलाके में चलते समय, एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदते समय या उनके बीच से निकलने की कोशिश करते समय किसी न किसी तरह की आवाज जरूर करता।

हमने लोट्टा से पूछा कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि बाघ पहाड़ी पर स्थित गुफा को आश्रय के रूप में इस्तेमाल करता है। उन्होंने जवाब दिया कि नदी के किनारे से होकर गुजरने वाले और पहाड़ी से शुरू होकर वापस उसी ओर जाने वाले पैरों के निशान बार-बार दिखाई देते थे, इसके अलावा उन्होंने पहाड़ी पर लंगूर बंदर की चेतावनी भरी आवाजें भी कई बार सुनी थीं। साथ ही, लगभग चार रात पहले, पहाड़ी पर कहीं से एक बाघ की आवाज आई थी।

बायरा ने बताया कि इनमें से कोई भी घटना अपने आप में निर्णायक रूप से यह साबित नहीं करती कि आदमखोर बाघ पहाड़ी पर रहता था, लेकिन सभी तथ्यों को एक साथ देखने पर, साथ ही लोटा द्वारा बताई गई छिपी हुई गुफा की मौजूदगी से यह संकेत मिलता है कि ऐसा हो सकता है। इस सवाल का हल निकालने का एकमात्र तरीका पहाड़ी पर चढ़कर, यदि संभव हो तो, गुफा की जाँच करना था। इसलिए हमने तय किया कि अगली सुबह हम दो जीवित चारे लाएँगे और उनमें से एक को पहाड़ी के दक्षिण-पूर्व में नदी के किनारे बाँध देंगे, जहाँ अक्सर पैरों के निशान दिखाई देते थे, और दूसरे को उस पगडंडी पर बाँध देंगे जिससे हम अभी आए थे, और जो, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, पहाड़ी के उत्तरी किनारे से होकर गुजरती है। इसके अलावा, दोपहर के ठीक बाद, जब सूरज सबसे तेज़ होता है, मैंने पहाड़ी पर चढ़कर गुफा को खोजने का फैसला किया। ऐसा करने में संभव था कि मुझे बाघ के वहाँ रहने

के अतिरिक्त सबूत मिल जाएँ। यह भी थोड़ी सी संभावना थी कि मुझे उसकी एक झलक मिल जाए—शायद मैं उसकी तस्वीर भी ले सकूँ।

जब तक सारी चर्चा और फैसला हुआ, तब तक दिन ढलने लगा था, इसलिए हम रात बिताने के लिए बेजाहाई लौट आए। रहने की समस्या खड़ी हो गई। मैं अपने साथ तंबू नहीं लाया था क्योंकि लंबी यात्रा में इतना वजन उठाना पड़ता। इसके अलावा, मार्च का आखिरी सप्ताह था, जब मौसम न केवल बहुत शुष्क होता है बल्कि असहनीय गर्मी भी बढ़ जाती है। पिताजी और मैं आमतौर पर मानसून को छोड़कर हर समय पेड़ों के नीचे ही डेरा डालते हैं। लोटा ने हमें अपनी झोपड़ी इस्तेमाल करने की पेशकश की। मना करना असभ्यता होती, लेकिन जब मैं छोटे, निचले प्रवेश द्वार पर खड़ा होकर उस छोटे, अंधेरे और दुर्गंधयुक्त अंदरूनी हिस्से को देखा, जिसमें किसी भी तरह की हवा आने-जाने की कोई व्यवस्था नहीं थी, तो मैंने विनम्रता से लेकिन दृढ़ता से कहा कि इतनी गर्म और बंद जगह में मुझे नींद नहीं आएगी, और मैं बाहर सोना पसंद करूंगा। अब दक्षिण भारत के किसी भी गांव के पास सोने की कोशिश करने वाला कोई भी व्यक्ति तुरंत मुझसे सहमत होगा कि यह लगभग असंभव है। न केवल जमीन हर तरह के कूड़े और गंदगी से ढकी होती है, बल्कि अंधेरा होने के बाद निवासी इसका खुलेआम शौचालय के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसलिए कचरे से बचने के लिए हम लगभग 150 गज दूर एक खुली जगह पर गए और वहीं रात बिताने का फैसला किया। लोटा ने कहा कि वह हमारे साथ रहेगा, और मैं ज़मीन पर लेट गया जबकि मेरे तीन साथी लकड़ियाँ इकट्ठा करने लगे और जल्द ही आग मज़े से जलने लगी।

कार्यक्रम का पहला काम चाय बनाना था, और जब तक पानी उबल रहा था, मैंने घर से लाए हुए ठंडे नमकीन गोमांस और चपातियों में से थोड़ा सा खा लिया। फिर, गरमा गरम चाय की चुस्की लेते हुए, मैंने अपने तीन दोस्तों की कहानियाँ सुनीं। और सचमुच मैं खुश था। ऊपर तारों से भरा आकाश, जो उगते चाँद की रोशनी से हल्का होता जा रहा था, घने जंगल के पेड़ों की पृष्ठभूमि में जुगनुओं की चमक, पश्चिम में पोन्नाच्ची बेट्टा पर्वत श्रृंखला की ऊँची और नुकीली आकृति, नींद लाने वाली गर्माहट से जगमगाती हमारी अलाव की हल्की टिमटिमाती रोशनी, और धुएँ के गुबार जो घूमते-घूमते हुए अंत में अधूरे रह गए—ये सब उस खुशी में योगदान दे रहे थे।

रंगा और बायरा को घड़ी देखकर समय देखना सिखाया गया था, इसलिए आठ

बजे मैंने अपनी घड़ी उतारकर रंगा को दे दी और उसे हिदायत दी कि वह जागता रहे और सतर्क रहे तथा साढ़े दस बजे तक आग जलाए रखे। फिर उसे बायरा को जगाना था, जिसकी पहरेदारी एक बजे तक चलती। उसके बाद मेरी बारी आती, साढ़े तीन बजे तक। अंत में, मैं यह ज़िम्मेदारी लोटा (जिसे समय देखना नहीं आता था) को सौंप देता, जब तक कि सुबह छह बजे सूर्योदय नहीं हो जाता।

मुझे तुरंत नींद आ गई और एक बजे जब बायरा ने मुझे कंधे से हल्के से हिलाया तो मेरी नींद खुली। मैंने देखा कि बाकी दोनों आदमी गहरी नींद में सो रहे थे और बायरा भी जल्द ही उनके साथ सो गया। आग बुझकर कुछ अंगारों में बदल गई थी और उसे जलाने के लिए ज्यादा लकड़ी नहीं बची थी। आखिरकार, मौसम के बावजूद, काफी ठंड हो गई। मेरी रात बिना किसी घटना के गुज़री। दूर से एक हाथी की चिंघाड़ सुनाई दी, और पास ही एक सांभर हिरण ने तीन-चार बार आवाज़ लगाई। लेकिन आवाज़ें इतनी देर तक नहीं थीं कि किसी मांसाहारी जानवर के गुज़रने का संकेत मिले। शायद किसी छोटे जानवर ने उसे डरा दिया था, क्योंकि हिरण जल्द ही अपने डर पर काबू पा लिया और शांत हो गया। मुझे फिर से नींद आने लगी और जब मेरी घड़ी में साढ़े तीन बजे तो मुझे खुशी हुई। मैंने लोटा को जगाया, उससे फुसफुसाकर कहा कि बची हुई कुछ लकड़ियों को बचाकर रखे ताकि अंगारे सुबह तक जलते रहें, और मैं फिर से सो गया।

साढ़े छह बज चुके थे जब मैं उठा तो देखा कि मेरे तीनों सहायक एक बड़ी आग जलाने में व्यस्त थे, जिसके ऊपर चाय के लिए केतली उबल रही थी, जिसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। फिर हम सब पूरी लगन से काम में जुट गए। काफी मोलभाव के बाद, मैं दस रुपये प्रति बैल के हिसाब से दो भूरे बैल किराए पर लेने में कामयाब रहा। बैल किराए पर लेने वाले व्यक्ति ने साफ कर दिया कि वह जानवरों को सीधे नहीं बेच सकता, क्योंकि वह उनका मालिक नहीं था। असली मालिक एक दूर के गाँव में रहता था और उसने मुझे छह महीने की अवधि के लिए लगभग पैंतीस मवेशी चराने के लिए सौंपे थे। इसके लिए उसका वेतन तीन रुपये प्रति माह (4 शिलिंग 6 पेंस) था, साथ ही उसे जितना चाहे उतना दूध पीने को मिलता था। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह मुझे कुछ रातों के लिए बीस रुपये में बैल किराए पर देने के लिए ललचाया, जो लगभग सात महीने के वेतन के बराबर था। लेकिन उसने यह भी साफ कर दिया कि अगर इनमें से कोई भी जानवर मर गया तो मुझे सौ रुपये का मुआवजा देना होगा।

इसके अलावा, किसी को भी यह नहीं बताया जाना चाहिए कि उसने जानवरों को चारे के लिए उधार दिया था। वह मालिक को बताता कि चरते समय बाघ ने बैल को मार डाला। मालिक बेशक दो-तीन महीने की तनख्वाह रोककर उस पर जुर्माना लगाता, लेकिन चूंकि उसे मुझसे सौ रुपये मिल चुके थे, इसलिए उसे कम से कम नब्बे रुपये का मुनाफा हो जाता। एक ईमानदार वनवासी का यही सीधा-सादा तर्क होता है।

हम उसी रास्ते से वापस लौटे जिससे हम पिछली शाम बेजाहाई पहुँचे थे, और एक मील से थोड़ा अधिक चलने के बाद हम उस छोटी पहाड़ी के ठीक उत्तर में पहुँच गए जिसका वर्णन लोट्टा ने किया था। जैसा कि उसने कहा था, निचले हिस्से का आधे से अधिक भाग जंगल से ढका हुआ था, लेकिन उसके आगे पहाड़ी पर कुछ कंटीली झाड़ियों के अलावा कोई वनस्पति नहीं थी, जो पत्थरों के ढेरों के बीच उगी थीं।

पगडंडी के किनारे एक इमली का पेड़ पहली मचान बनाने के लिए आदर्श जगह थी, जिसे ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर बांधना था, जो कि आदर्श ऊंचाई है। हमने एक बैल के अगले पैर को रास्ते के बीचोंबीच ज़मीन में गाड़े गए एक खंभे से बांध दिया; फिर मेरे साथियों ने मचान बनाने का काम शुरू कर दिया। चूंकि वे तीनों जंगल के कामों में माहिर थे, इसलिए मुझे उन्हें कुछ बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वास्तव में, लगभग पचहत्तर मिनट में बनकर तैयार हुई मचान एक कलाकृति थी और इतनी अच्छी तरह से छिपी हुई थी कि तीस फीट की दूरी से भी मुश्किल से दिखाई देती थी।

इमली के पेड़ से हम लोट्टा के पीछे-पीछे जंगल के शॉर्टकट रास्ते से गए और आधे मील के भीतर ही नाले (गुल्याथा हल्ला) तक पहुँच गए। वहाँ से एक चौथाई मील ऊपर की ओर मुड़ने पर हम पहाड़ी के ठीक दक्षिण-पूर्व में उस जगह पर पहुँच गए जिसका वर्णन लोट्टा ने पिछली शाम किया था। उसकी कहानी को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि कुछ ही मिनटों में रंगा को सहायक नदी की रेत पर बाघ के नए पदचिह्न दिखाई दिए। स्पष्ट था कि पिछली रात ये पदचिह्न बनाने वाला बाघ पहाड़ी से नीचे उतरा था। कुछ ही गज की दूरी पर एक अधपका बेर का पेड़ दूसरे मचान को बाँधने के लिए एक उपयुक्त स्थान था। डेढ़ घंटे बाद यह काम पूरा हो गया और हमने दूसरे बैल को पेड़ के ठीक नीचे नदी के किनारे गाड़े गए एक खंभे से बाँध दिया।

दोपहर हो चुकी थी और हमारे अभियान का अगला चरण यह था कि मैं पहाड़ी

पर चढ़कर गुफा का पता लगाने की कोशिश करूं। जहाँ तक दो जीवित चारे की बात थी, अब बस यही उम्मीद की जा सकती थी कि बाघ आने वाली रात या उसके बाद वाली रात में उनमें से किसी एक को मारकर खा जाएगा।

मेरे तीनों सेवकों के बीच इस बात पर तीखी बहस छिड़ गई कि उनमें से कौन मेरे साथ जाए, तीनों का कहना था कि यह उनका अपना कर्तव्य है। रंगा ने ज़ोर देकर कहा कि जब मैं दो महीने का था तब उसने मुझे अपनी गोद में उठाया था, इसलिए वह मुझे सबसे लंबे समय से जानता है। बायरा भी उतनी ही ज़िद पर अड़ा था, उसका कहना था कि बाघ को नज़दीक से सूंघने में वह सबसे माहिर है, इसलिए वह मेरे लिए सबसे उपयोगी साबित होगा। लोटा, जिसे एक दिन पहले ही भर्ती किया गया था, का दावा था कि वह सबसे योग्य है क्योंकि केवल वही गुफा की स्थिति जानता है।

ज़ाहिर है, मुझे लोट्टा को अपने साथ ले जाना चाहिए था, क्योंकि उसका दावा सबसे ज़्यादा तर्कसंगत था। लेकिन यहाँ एक पेचीदा मामला सामने आया। पूर्वी मानसिकता की पेचीदगियाँ कभी-कभी समझना मुश्किल होता है, और मैं अच्छी तरह जानता था कि अगर मैं नए आदमी को अपने साथ ले जाता, तो मैं अपने दोनों पुराने साथियों की भावनाओं, स्वाभिमान और स्नेह को गहरी चोट पहुँचाता। और उनमें से किसी एक को दूसरे पर तरजीह देना, पीछे रह जाने वाले को और भी ज़्यादा दुख पहुँचाता। इसलिए मैंने तुरंत फैसला कर लिया। मेरे पास अकेले जाने के अलावा कोई चारा नहीं था।

मैंने यथासंभव सहजता से अपना निर्णय सुनाया और लोटा से पूछा कि हम जहाँ खड़े हैं, वहाँ से छिपी हुई गुफा की अनुमानित स्थिति क्या है। इसके परिणामस्वरूप फिर से हंगामा मच गया, तीनों ने कहा कि ऐसा करना बेहद खतरनाक है। दरअसल, मेरी इस शर्मनाक स्थिति को समझते हुए कि मुझे उनमें से किसी एक को चुनना है, तीनों ने स्वेच्छा से पीछे हटने की पेशकश की ताकि मैं बाकी दो में से किसी एक को चुन सकूँ। लेकिन इससे मामला आसान नहीं हुआ। मुझे अभी भी बाकी दो के नुकसान पर तीनों में से किसी एक को चुनना था। इसके अलावा, मैंने कहा था कि मैं अकेले पहाड़ी पर चढ़ूँगा, अब अपना इरादा बदलना यह दर्शाता कि मैं डरा हुआ हूँ। इसलिए मैंने दृढ़ता से कहा कि मैंने अपना निर्णय ले लिया है: मैं अकेले ही जाऊँगा।

लोटा ने कुछ संकोच से पहाड़ी की चोटी से कुछ गज की दूरी पर खड़े एक बड़े पत्थर की ओर इशारा किया और बताया कि गुफा का प्रवेश द्वार ठीक उसके पीछे है।

उसने सुझाव दिया कि गुफा तक सीधे नीचे से जाने के बजाय, मुझे पहाड़ी पर तिरछे कोण से चढ़ना चाहिए जब तक कि मैं चोटी पर न पहुँच जाऊँ, और फिर धीरे-धीरे चोटी के साथ-साथ रेंगते हुए गुफा को देख सकूँ, जिसे पत्थर को निशान के रूप में इस्तेमाल करते हुए ढूंढना मेरे लिए आसान होगा।

इन निर्देशों को ध्यान में रखते हुए मैंने और कुछ नहीं कहा, बल्कि नदी पार करके दूसरी तरफ चला गया और चढ़ाई शुरू कर दी। पहाड़ी के निचले दो-तिहाई हिस्से को ढकने वाले घने जंगल ने गुफा के प्रवेश द्वार के पास छिपे बाघ को मुझ तक पहुँचने से प्रभावी ढंग से रोक दिया। इसी तरह, अगर बाघ झाड़ियों में छिपा होता और मेरे पास आने का इंतज़ार कर रहा होता, तो वह मुझ पर हमला कर सकता था।

मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा, सामने की हर झाड़ी और घनी वनस्पति को ध्यान से देखता हुआ। स्वाभाविक रूप से इस तरह मेरी प्रगति धीमी थी, इसलिए मुझे यह देखने में कुछ समय लगा कि जैसे-जैसे मैं पहाड़ी के ऊपरी हिस्से की ओर बढ़ रहा था जहाँ बड़े-बड़े पत्थर थे, झाड़ियाँ कम होती जा रही थीं। लेकिन अंततः मैं वहाँ पहुँच गया, और पाया कि अब मेरी स्थिति घने जंगल वाले क्षेत्र की तुलना में कहीं अधिक खराब थी। ऊपर से देखने वाले किसी भी व्यक्ति को मैं स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। बाघ मुझ पर हमला कर सकता था, और किसी भी पत्थर के पीछे छिपकर वह मेरे पास आते ही मुझ पर झपट सकता था; या वह मेरे गुजरने का इंतजार करके पीछे से हमला कर सकता था। लेकिन मैंने यह ठान लिया था, इसलिए आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं था।

कुछ चट्टानें काफी बड़ी थीं, दस फीट या उससे भी अधिक ऊँची। कुछ छोटी थीं, लगभग तीन फीट ऊँची। कई बार छोटी चट्टानों के बीच से या उनके आसपास से निकलना मुश्किल था क्योंकि वे आपस में गुंथी हुई थीं। अक्सर मुझे एक चट्टान पर चढ़कर दूसरी पर कूदना पड़ता था। इससे मैं ऊपर से आसानी से दिखाई देने लगा। इसके अलावा, रबर के तले वाले जूते पहनने और पूरी सावधानी बरतने के बावजूद, मेरे चलने-फिरने से शोर होना लाज़मी था। इस समय मुझे अपनी नादानी पर पछतावा हुआ और मुझे लगने लगा कि काश मैं अपने किसी साथी को साथ ले आया होता।

लेकिन किस्मत ने मेरा साथ दिया और आखिरकार मैं पहाड़ी की चोटी पर, लगभग उसके दाहिने छोर पर पहुँच गया। अब मुझे चोटी के साथ-साथ दूसरे छोर की ओर रेंगना था, जब तक कि मुझे वह चट्टान दिखाई न दे जो गुफा के प्रवेश द्वार को

छुपाए हुए थी। मैंने ऐसा ही किया, बीच-बीच में अपने पंजों पर खड़ा होकर चट्टान को देखने की कोशिश करता रहा। लेकिन एक नई मुश्किल खड़ी हो गई। मेरी स्थिति से मैं केवल प्रत्येक चट्टान का ऊपरी भाग ही देख पा रहा था, उसका आधार नहीं, जो पहाड़ी की ढलान के कारण मेरी नज़र से छिपा हुआ था। और वहाँ इतनी सारी चट्टानें थीं कि लोटा द्वारा बताई गई चट्टान को पहचानना मेरे लिए नामुमकिन था। इस दुविधा में भी मैं आगे बढ़ता रहा, तभी अचानक मेरी समस्या हल हो गई।

अचानक मेरे ठीक सामने एक चट्टान के पीछे से एक बड़ा सा भूरा आकार निकला और उछलकर भाग गया। मैं बुरी तरह डर गया और मुझे लगा कि यह बाघ है, इसलिए मैंने अपनी .470 पिस्तौल कंधे पर रख ली। तभी मैंने देखा कि यह एक अकेला लंगूर बंदर था। वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदता हुआ पहाड़ी के दूसरे छोर की ओर चला गया और कुछ ही पलों में मेरी नज़रों से ओझल हो गया। लंगूर की उपस्थिति से मुझे बहुत तसल्ली मिली। अगर आसपास बाघ होता, तो मुझे अच्छी तरह पता था कि बंदर वहाँ नहीं होता। मैं और तेज़ी से, और कम सावधानी के साथ, उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ लंगूर गायब हुआ था।

फिर एक अजीब घटना घटी। लंगूर ने खतरे की चीख मारी; 'हार! हार! हार!' अगले ही पल वह फिर प्रकट हुआ और उछलता हुआ वापस आ गया। चट्टानों पर छलांग लगाते हुए वह तेजी से आगे बढ़ा और मेरी नजरों से ओझल हो गया।

अब लंगूर ने खतरे का संकेत क्यों दिया था? वह इतनी बेतहाशा तेजी से वापस क्यों भागा, लगभग मेरे ऊपर ही क्यों आ गिरा था?

मैं और भी सावधानी से उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ बंदर फिर से दिखाई दिया था। जैसे ही मैं पहाड़ी के किनारे के पास पहुँचा और नीचे की ओर देखने लगा, मुझे एक बड़े पत्थर का ऊपरी आधा हिस्सा दिखाई दिया। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, वह और स्पष्ट होता गया, और जल्द ही वह पूरी तरह से दिखाई देने लगा, तब मुझे पता चला कि यह वही पत्थर था जिसे लोटा ने नदी के किनारे से दिखाया था। उस समय मैं गुफा के ठीक ऊपर खड़ा था। यह बात मुझे अचानक समझ में आ गई। लंगूर शायद इसलिए चिल्लाया और पीछे हट गया क्योंकि उसने गुफा के प्रवेश द्वार पर बाघ को लेटे हुए देख लिया था, या उसे अपने पुराने दुश्मन की निकटता का आभास हो गया था। अब सवाल यह उठता था कि बाघ गुफा के बाहर है या अंदर, और इसका जवाब जानने का एकमात्र तरीका था और भी करीब जाना।

तो मैं धीरे-धीरे, इंच-इंच करके आगे बढ़ता गया, जब तक कि मैं पहाड़ी के किनारे तक नहीं पहुँच गया और ज़मीन मेरे पैरों के सामने तेज़ी से नीचे की ओर ढलान पर आ गई। अपने हाथों और घुटनों के बल बैठकर और गर्दन आगे करके, मैं आखिरकार गुफा का प्रवेश द्वार देख पाया—चट्टान में एक संकरा छेद, जो मुझे लगभग पाँच फीट ऊँचा और शायद एक गज चौड़ा लगा। कोई बाघ दिखाई नहीं दिया। मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। मुझे ज़ोर से चिल्लाने या एक छोटा पत्थर फेंकने का मन हुआ, ताकि बाघ बाहर निकल आए और खुद को दिखा दे। लेकिन मैंने समय रहते खुद को रोक लिया। बाघ शायद घर पर न हो। इसके अलावा, पत्थर फेंकने से वह बेवजह डर जाएगा। वह पहली गुफा से जुड़ी दूसरी गुफा से बाहर आ सकता है, जिसके बारे में लोटा को कुछ नहीं पता था, और फिर जंगल के किसी दूसरे हिस्से में भाग सकता है, जहाँ उसे पकड़ने का काम फिर से शुरू करना पड़ेगा। सब कुछ कहने और करने के बाद, सबसे बुद्धिमानी भरा रास्ता यही प्रतीत हुआ कि न तो खुद को उजागर किया जाए और न ही उसे डराया जाए, बल्कि चुपचाप पीछे हट जाया जाए और घटनाओं को - उसके द्वारा दोनों में से किसी एक प्रलोभन को स्वीकार करने के रूप में - अपना रास्ता खुद तय करने दिया जाए।

इसलिए, जिस खामोशी से मैं आया था, उसी खामोशी से और पीछे से होने वाले अचानक हमले के डर से बार-बार पीछे मुड़कर देखते हुए, मैं उसी स्थान पर वापस लौटा जहाँ मैं पहली बार पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा था, और फिर दूसरी तरफ नीचे उतरता गया, अंततः नदी के किनारे अपने साथियों के बीच पहुँच गया। उस शाम हम शिविर में ही रहे ताकि जंगल को अनावश्यक रूप से परेशान न करें और जल्दी सो गए, हालाँकि पिछली रात की तरह ही हम बारी-बारी से पहरा देते रहे। इस बार हमने एहतियात के तौर पर पहले से ही झाड़ियों का एक बड़ा ढेर इकट्ठा कर लिया था, जिसमें कुछ बड़े लट्ठे भी थे, ताकि हमें अपने पशुओं की देखभाल करने की नौबत दोबारा न आए।

भोर होते ही हम अपने पहले चारे—उस बैल को देखने के लिए निकल पड़े जिसे हमने गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बाँधा था। वह बिल्कुल ठीक-ठाक था और उसे कोई चोट नहीं आई थी। रास्ते में उसके पैरों के कोई निशान भी नहीं थे। हम उसी शॉर्टकट से होते हुए नदी और अपने दूसरे चारे की ओर बढ़े। लेकिन वह जानवर भी ज़िंदा था, पर एक फर्क था: हमने चारों ओर खोजबीन की तो पाया कि बाघ ने उसे

देख लिया था। वह पंद्रह गज की दूरी तक आया, नदी के किनारे बैठ गया और जानवर को गौर से देखा, शायद सोच रहा था कि उसे मारना चाहिए या नहीं। और फिर, किसी अज्ञात कारण से, वह चला गया। नदी की नरम रेत पर उसके पैरों के निशान हमें कहानी इतनी स्पष्ट रूप से बता रहे थे मानो हम उसे देख रहे हों।

कुछ करने को न होने के कारण हम गाँव लौट आए और देखा कि लोट्टा के चाचा समय पर आ गए थे और अपने साथ बंदूक भी लाए थे। बंदूक की मौजूदगी (चाचा की नहीं) ने लोट्टा को हरकत में ला दिया। उन्होंने मेरे सामने एक ऐसा विचार रखा जिस पर उनकी पूरी सहमति थी। शिविर में तीसरी रात कुछ न करते हुए बिताने के बजाय, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मुझे दो और मवेशी चारे के लिए माँगने, उधार लेने या चुराने चाहिए और उन्हें पहाड़ी के पूर्व और पश्चिम में स्थित दो शेष किनारों पर बाँध देना चाहिए। मुझे उनमें से एक पर बैठना चाहिए, जबकि वह अपने चाचा की बंदूक से चौथे चारे पर बैठ जाएँ। उनका तर्क था कि चूंकि बाघ पहले दो चारे के पास तो आया था लेकिन उसे शक हो गया था और उसने उन्हें नहीं खाया था, इसलिए बहुत संभव है कि अगर वह पहाड़ी पर स्थित गुफा से नीचे उतरने के बाद तीसरे और चौथे चारे पर आ जाए तो वह उन्हें भी खा ले। इसलिए लोट्टा ने सुझाव दिया कि मैं पश्चिम में जीवित चारे पर बैठूँ और वह पूर्व में चारे पर बैठ जाएँ। तब हम दोनों में से किसी को भी बाघ को तब गोली मारने का मौका मिल सकता है जब वह चारे की जाँच कर रहा हो। बेशक, अगर बाघ इन दोनों नए चारे में से किसी एक को मार देता है, तो यह हमारे लिए आसान निशाना सुनिश्चित करने में और भी बेहतर होगा।

स्वभाव से मैं बेचैन स्वभाव का व्यक्ति हूँ और दिन-रात निष्क्रिय बैठे इस उम्मीद में इंतज़ार करना कि बाघ पहले दो चारे में से एक खा लेगा, मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। कई बार मैंने उसे उसकी गुफा से बाहर निकालने की कोशिश करने का सोचा, लेकिन बायरा और रंगा ने मुझे इस योजना के खिलाफ चेतावनी दी, कहीं ऐसा न हो कि हम बाघ को डराकर भगा दें। इन परिस्थितियों में मुझे कोई भी ऐसी योजना अच्छी लगी जिसमें कुछ करने का मौका हो और मैं तुरंत लोटा के विचार से सहमत हो गया। उसे दो और बैल लाने का काम सौंपकर, और वह भी जल्दी से, मैंने अपने साथ लाए डिब्बाबंद खाने से जल्दी से दोपहर का भोजन तैयार करना शुरू कर दिया।

लोटा को मेरी उम्मीद से कहीं जल्दी सफलता मिल गई और दोपहर तक वह एक अधविकसित काले बैल और एक भैंस की बछिया के साथ आ गई। हम चारों तुरंत

चल पड़े, रंगा और बायरा मेरा ओवरकोट, पानी की बोतल, सैंडविच और चाय से भरी एक खाली बीयर की बोतल लिए हुए थे। मेरे पास मेरी टॉर्च भी थी, जिसे दो क्लिप की मदद से मेरी राइफल से जोड़ा जा सकता था। लोटा पीछे-पीछे बैल और बछिया को हांकते हुए चल रही थी।

मैं मानता हूँ कि लोटा के सुझाव के अनुसार पहाड़ी के पश्चिमी भाग के बजाय पूर्वी भाग को चुनना कुछ हद तक स्वार्थपूर्ण था, क्योंकि मैंने सोचा था कि बाघ के इस दिशा से आने की संभावना अधिक होगी, क्योंकि यहाँ से नदी दिखाई देती थी। मैंने काले बैल के बजाय भैंस की बछिया को चुना, क्योंकि बाघ कभी-कभी पूरी तरह से काले जानवर से डरते हैं। दूसरी बात, पिछली रात एक बैल को चारा बनाने से मना करने के बाद, मुझे उम्मीद थी कि बाघ एक युवा भैंस को मना नहीं करेगा।

इसके बाद बैठने के लिए उपयुक्त जगह ढूंढने का काम शुरू हुआ, और इसमें कुछ कठिनाई आई क्योंकि पहाड़ी के निचले दो-तिहाई हिस्से में घनी झाड़ियाँ, घास और पेड़ थे जो न तो इतने ऊँचे थे और न ही इतने मजबूत कि मचान में मेरा वजन सह सकें। मुझे जल्द ही इस सच्चाई का सामना करना पड़ा कि पहाड़ी के इस हिस्से में बैठने के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं थी, जब तक कि मैं किसी झाड़ी में जमीन पर बैठने के लिए तैयार न हो जाऊं, जो कि बहुत खतरनाक होगा।

फिर मुझे थोड़ा और ऊपर चढ़ने का विचार आया, ऊपरी ढलानों पर बहुतायत में जमा चट्टानों के बीच। हमने ऐसा किया और थोड़ी देर में हमें एक ऐसी संरचना दिखाई दी जो मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त लग रही थी। बारह फीट से अधिक ऊँचे दो बड़े पत्थर, उनके बीच फँसे एक तीसरे पत्थर को छू रहे थे, जो पहले दो पत्थरों से थोड़ा ऊँचा, लगभग पंद्रह फीट ऊँचा था। तीनों पत्थर एक दूसरे से लगभग नब्बे डिग्री के कोण पर थे। सामने का स्थान खुला था और वहाँ से पहाड़ी और नीचे बहती गुल्याथा हल्ला नदी दिखाई दे रही थी। यदि मैं अपने सहायकों से तीनों पत्थरों के आधारों के बीच की जगह में कांटे काटकर मजबूती से गूँथवाकर, बीच वाले और सबसे ऊँचे पत्थर के आधार पर बैठ जाता, तो मैं पीछे से होने वाले हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहता। मुझ तक पहुँचने के लिए बाघ को तीनों पत्थरों में से किसी एक पर कूदना पड़ता, जो वह आसानी से कर सकता था, लेकिन फिर भी पत्थरों के घुमाव के कारण मैं उसे सीधे दिखाई नहीं देता। उसे पहले बीच में स्थित एम्फीथिएटर में छलांग लगानी होगी, और फिर मुड़कर मुझे ढूंढना होगा और मुझ पर हमला करना होगा,

जिससे मुझे गोली चलाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा।

मेरे पास पहुँचने का उसका एकमात्र दूसरा रास्ता सामने के खुले इलाके से आना था, जहाँ मैंने अपनी भैंस की बछिया को लगभग पंद्रह गज दूर बाँधने का इरादा किया था। मैंने सोचा कि अगर बाघ को मेरी मौजूदगी का पता भी चल जाए और वह चट्टानों के बाहरी किनारे से छिपकर आने की अक्ल रखता हो, तो भी उसे भैंस की बछिया सामने खड़ी मिलेगी, जो उसके लिए एक पक्का बचाव होगा। हो सकता है वह उसे मारने का मन बना ले; हो सकता है वह उसका मुआयना करने के लिए उसके चारों ओर घूमे; लेकिन उसकी मौजूदगी उसे ज़रूर उलझन में डाल देगी और उसकी हमले की मूल योजना को बिगाड़ देगी। अंत में, भैंस की बछिया पहाड़ी की चोटी से बाघ को दिखाई देगी और उसे आकर्षित करने का काम करेगी। बेशक, अगर वह चट्टानों के बीच की किसी भी जगह से रेंगकर आने की कोशिश करता है, तो उसे काँटे हटाने होंगे और शोर से मुझे पर्याप्त चेतावनी मिल जाएगी।

इसलिए मुझे इतना बढ़िया और अपेक्षाकृत सुरक्षित छिपने का स्थान पाकर बहुत खुशी हुई। मैंने अपने तीनों साथियों को अपनी योजना बताई, और वे सभी इस बात से सहमत थे कि यह वाकई एक अच्छी योजना है। मैं प्रवेश द्वार पर राइफल लेकर उनकी रखवाली कर रहा था, तभी वे पहाड़ी से थोड़ी दूर नीचे गए और ढेर सारे कटे हुए कांटे लेकर वापस आए, जिन्हें उन्होंने चट्टानों के आधार पर बनी दरारों में कसकर ठोक दिया। अंत में उन्होंने बछिया को उसके अगले पैर से एक खूंटी से बांध दिया, जिसे उन्होंने ठीक उस जगह से बीस कदम की दूरी पर जमीन में गाड़ दिया जहाँ मैं बैठने वाला था।

अब लोटा के लिए पहाड़ी के दूसरी ओर एक उपयुक्त जगह ढूंढना बाकी था, जहाँ वह अपने चाचा की पुरानी बंदूक छिपा सके। मैं इसमें मदद करना चाहता था, इसलिए जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से सीधे पहाड़ी पार करने या शॉर्टकट के रूप में उसकी चोटी पर चढ़ने के बजाय, क्योंकि दोनों ही मामलों में बाघ हमें देख या सुन सकता था और सतर्क हो सकता था, हम एक कतार में पहाड़ी की तलहटी तक उतरे और एक चक्कर लगाया। हम थोड़ी दूर तक नदी के किनारे-किनारे चले और फिर बीच के जंगल से होते हुए लोटा के नेतृत्व में पहाड़ी के दूसरी ओर चढ़ गए।

यहां की परिस्थितियां पूर्वी तरफ जैसी ही थीं। निचली ढलानों पर मचान के लिए कोई बड़ा पेड़ नहीं था, इसलिए हम ऊपर चट्टानों और पत्थरों वाले इलाके में चढ़ गए।

मुझे लगा था कि मुझे वैसा आदर्श छिपने का स्थान मिल जाएगा जैसा मैंने चुना था। चट्टानों के ढेर के बीच से लड़खड़ाते हुए और चढ़ते-उतरते हुए, लोटा ने आखिरकार एक लगभग सपाट चट्टान का टुकड़ा चुना जो शिखर या छोटी पहाड़ी के किनारे से थोड़ा ऊपर था। उसने कहा कि यह ठीक है, और वह चट्टान के ऊपर लेट जाएगा और काले बैल को ऊंचे सिरे के सामने बांध देगा, जहां से बाघ उस पर बिना किसी रुकावट के नजर रख सकेगा। बाघ की गुफा पहाड़ी के कोने या ढलान पर थी, जो सपाट चट्टान से दिखाई नहीं देती थी और काफी ऊपर थी।

अब शाम के करीब चार बज चुके थे और शिविर में वापस जाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। पहाड़ी के पश्चिम में स्थित सपाट चट्टान की ऊपरी सतह, जो दोपहर की धूप के सीधे संपर्क में थी, लोटा के लिए तुरंत अपनी जगह लेने के लिए बहुत गर्म हो गई थी। इसलिए हम सभी ने काले बैल को बांधने में मदद की और फिर लोटा को उसकी बंदूक के साथ चट्टान के दूसरी तरफ छाया में छोड़ दिया। उसने कहा कि जैसे ही चट्टान ठंडी होगी, वह लगभग साढ़े पांच बजे ऊपर चढ़ जाएगा।

एक बार फिर रंगा, बायरा और मैं पहाड़ी से नीचे सरकते हुए, जंगल से होते हुए और नदी के किनारे-किनारे चलते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ से मुझे उन तीन चट्टानों तक पहुँचने के लिए चढ़ाई शुरू करनी थी जहाँ मुझे बैठना था। यहाँ मैंने अपने दोनों नौकरों से विदा ली, उन्हें सख्त हिदायत दी कि वे गाँव लौट जाएँ और सुबह तक वहीं रहें, जब मैं वापस उनके पास आऊँगा।

पांच बजने के कुछ मिनट बाद मैं अपने छिपने की जगह पर लौटा। बछिया बिल्कुल शांत, ज़मीन पर लेटी हुई थी, आधी सोई हुई। सूरज पश्चिम की पहाड़ी की चोटी के नीचे डूब चुका था, इसलिए चट्टानों के नीचे अपेक्षाकृत ठंडक थी और पूरी तरह से छाया थी, खासकर इसलिए क्योंकि मैं उनके पूर्व में बैठा था और मेरे और पहाड़ी की चोटी के बीच चट्टानें थीं, जिस पर, जैसा कि मैंने अभी कहा, सूरज पहले ही डूब चुका था। आस-पास कोई जंगल न होने के कारण, पहाड़ी की तलहटी में नीले-काले लैंटाना बेरों के गुच्छों पर पल रहे सैकड़ों बुलबुलों की दूर से आती चहचहाहट के अलावा शायद ही कोई आवाज़ मुझ तक पहुँच रही थी। उससे भी नीचे हरियाली की एक पट्टी थी जो धारा के किनारे इमली, मुट्ठी और जुमलम के पेड़ों को दर्शाती थी। उस दिशा से मुझे जंगली मुर्गों और स्पूरफाउल की कभी-कभार आने वाली आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, क्योंकि नर मुर्गे रात को सोने से पहले अपने प्रतिद्वंद्वियों को चुनौती दे रहे

थे।

छह बजने के कुछ ही देर बाद काफी अंधेरा हो गया, हालांकि मुझे अब भी नीचे दूर नदी के दोनों किनारों पर उगे पेड़, थोड़ी दूरी पर फैली झाड़ियाँ और बीस गज की दूरी पर खड़ी बछिया दिखाई दे रही थी। मुझे याद है कि मैंने उस दृश्य की तुलना सिनेमा स्क्रीन पर चल रही किसी तस्वीर से की थी, जहाँ दर्शक अंधेरे में बैठा होता है जबकि स्क्रीन रोशन होती है। लेकिन बहुत जल्द वह तस्वीर भी धुंधली पड़ गई; और फिर मेरे चारों ओर घना, गहरा कालापन छा गया, जिसे केवल ऊपर टिमटिमाते कुछ तारों से ही थोड़ी राहत मिल रही थी। मेरे चारों ओर की चट्टानें मुझे जंगल की सामान्य और सुहावनी आवाज़ों से अलग कर रही थीं।

फिर, जैसे ही मेरी घड़ी में आठ बजकर दस मिनट हुए, अचानक दूर से आती एक चीख ने सन्नाटा तोड़ दिया, और एक-दो सेकंड बाद ही बंदूक की गड़गड़ाहट सुनाई दी। फिर पूर्ण सन्नाटा छा गया, और आधे मिनट बाद ही, नीचे घाटी में कहीं दूर से आती एक सांभर हिरणी, मेरी ही तरह उन आवाज़ों से चौंककर, अपनी गूंजती हुई चेतावनी भरी चीख निकालने लगी, जो घाटियों और घने जंगलों से ढके रास्तों में गूंजती हुई पहाड़ों की दुर्गम घाटियों में कहीं जाकर गुम हो गई।

मैं झट से खड़ा हो गया। निस्संदेह बेचारे लोटा के साथ कुछ भयानक हुआ था। मैंने जो अजीब सी चीख सुनी थी, हालाँकि वह अमानवीय लग रही थी, लेकिन वह केवल उसी के मुँह से निकली हो सकती थी। एक मजल-लोडर की आवाज़, जो अनुभवी कानों के लिए राइफल या ब्रीच-लोडिंग बंदूक की आवाज़ से बिल्कुल अलग होती है, केवल उसी पुरानी मस्कट से आ सकती थी जिसे वह पकड़े हुए था। चीख का पहले आना यह संकेत देता है कि लोटा पर या तो हमला हुआ था या वह बुरी तरह डर गया था और फिर उसने आत्मरक्षा में गोली चलाई थी। लेकिन लोटा आसानी से डरने वाला आदमी नहीं था।

यह कहना मुश्किल था कि रंगा और बायरा, जो एक मील से भी ज़्यादा दूर गाँव में थे, ने बंदूक की गोली की आवाज़ सुनी होगी या नहीं, खासकर इसलिए क्योंकि वह पहाड़ी के दूसरी तरफ से आई थी। उन्होंने चीख तो बिल्कुल नहीं सुनी होगी। और मैंने उन्हें साफ-साफ हिदायत दी थी कि वे गाँव छोड़कर न जाएँ। इसलिए अब एक ही रास्ता बचा था—और वो भी तुरंत। मुझे खुद लोटा के पास जाना होगा और देखना होगा कि मैं उसकी क्या मदद कर सकता हूँ।

अपनी राइफल से बंधी टॉर्च की मदद से मैं झाड़ियों से भरे जंगल से होते हुए लड़खड़ाते हुए नदी के किनारे तक पहुँचा, और फिर थोड़ी दूर तक दौड़ा। मुझे जंगल के उस हिस्से से होकर जाने वाला शॉर्टकट नहीं पता था जो उस पहाड़ी की तलहटी तक जाता था जहाँ से हमने समतल चट्टान तक पहुँचने के लिए चढ़ाई शुरू की थी, क्योंकि उस रास्ते से हमें खुद शोलागा ने ही रास्ता दिखाया था। इसलिए मैंने एकमात्र वैकल्पिक मार्ग चुना, जो नदी से पश्चिम की ओर पहाड़ी की तलहटी तक जाना था, और फिर बाईं ओर थोड़ा मुड़ते हुए चढ़ाई शुरू करना था, जिससे मैं जल्द ही घायल व्यक्ति की आवाज़ सुन सकूँ, और अगर वह जीवित होता तो मुझे जवाब दे देता।

झाड़ियों के बीच से ऊपर चढ़ते हुए मैं उत्तेजना और घबराहट से कांप रहा था, और डर के मारे टॉर्च की रोशनी इधर-उधर चमका रहा था कि कहीं आदमखोर किसी भी क्षण मुझ पर हमला न कर दे। आखिरकार झाड़ियाँ खत्म हुईं और वे भयानक चट्टानें शुरू हो गईं। तारों भरे आकाश में मुझे पहाड़ी की चोटी दिखाई दे रही थी, और इसे अपने आधे दाहिनी ओर रखते हुए, मैं उस कठिन इलाके में जितना हो सके आगे बढ़ता रहा। कुछ ही क्षणों में, यह महसूस करते हुए कि लोटा मेरी आवाज़ सुन सकता है, मैंने उसका नाम पूरी ताकत से पुकारना शुरू कर दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मैं दो में से एक काम पूरा कर सकूँ—या तो आदमखोर को भगा दूँ या उसे अपनी ओर आकर्षित कर लूँ।

काफी देर तक मेरी पुकारों का कोई जवाब नहीं मिला। फिर मुझे एक धीमी सी कराह सुनाई दी। मैं आवाज की दिशा जानने के लिए रुक गया और फिर से चिल्लाया: 'लोटा, तुम कहाँ हो? मुझे जवाब दो, मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा।'

मुझे एक दबी हुई कराह सुनाई दी, जिसके कुछ ही सेकंड बाद एक धीमी सी चीख सुनाई दी, 'डोराई, मैं यहाँ हूँ। मुझे तुम्हारी रोशनी दिखाई दे रही है। तुम पहाड़ी पर बहुत ऊपर जा रहे हो। आगे बढ़ो, लेकिन थोड़ा नीचे आ जाओ।'

आवाज बहुत दूर से आती हुई प्रतीत हुई, लेकिन सौ गज के भीतर ही मेरी नज़र लोट्टा पर पड़ी। वह जिस चट्टान पर लेटा था, उसके तल पर गिर पड़ा था, लेकिन किसी तरह अपनी बंदूक को पकड़े रहा, हालांकि वह उसे दोबारा लोड नहीं कर पा रहा था। शोलागा ने उसकी पीठ, नितंबों और जांघों पर बुरी तरह खरोंचें मारी थीं। सौभाग्य से उसे काटा नहीं गया था।

फुसफुसाते हुए उसने मुझे बताया कि बाघ ने उसे पहाड़ी की चोटी से कहीं से देख

लिया था और पीछे से घूमकर उसके पास आ गया था, जबकि वह ढलान वाली चट्टान पर ऊपर की ओर मुंह करके लेटा हुआ था, जहाँ हमने काले बैल को बाँधा था। बिना किसी चेतावनी के बाघ पीछे से चट्टान पर झपटा और उसकी पीठ पर कूदकर उसे नोचने लगा। न तो वह मुड़ सका और न ही अपना हथियार तान सका, इसलिए उसने बस ट्रिगर दबा दिया। धमाके की गर्जना और निस्संदेह बारूद से निकली आग और धुएँ ने जानवर को डरा दिया था, क्योंकि वह उछलकर दूर भाग गया और ऐसा करते हुए उसे चट्टान से नीचे गिरा दिया। लोटा चट्टान के नीचे लेटा हुआ था, किसी भी क्षण आदमखोर के लौटने की उम्मीद कर रहा था, तभी उसने मेरी मशाल की रोशनी देखी और मुझे उसका नाम पुकारते हुए सुना। अगर वह चट्टान के दाईं ओर गिरने के बजाय बाईं ओर गिरता, तो चट्टान उसके और मेरे बीच आ जाती और वह मेरी रोशनी कभी नहीं देख पाता।

टॉर्च की रोशनी में बारीकी से जांच करने पर पता चला कि गंभीर और गहरे खरोंच के निशान और अत्यधिक खून बहने के बावजूद, कोई गंभीर या खतरनाक घाव नहीं हुआ था। वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से गंभीर सदमे में था और बहुत दर्द में था, लेकिन काटने का कोई निशान नहीं था।

मैंने उसे समझाया कि हमें किसी भी तरह गाँव वापस जाना होगा, क्योंकि सुबह तक कोई मदद नहीं पहुँच पाएगी। पहले तो लोटा ने कहा कि वह खड़ा नहीं हो सकता, लेकिन सदमे का असर कम होते ही मैंने उसे खड़ा किया; अपनी बंदूक छोड़ने के बाद, जिसे वह पहले तो छोड़ने को तैयार नहीं था, उसने दोनों हाथों से मेरी गर्दन पकड़ ली। मैंने उसे अपने बाएँ हाथ से सहारा दिया जबकि दाहिने हाथ में जलती हुई मशाल के साथ राइफल पकड़ी हुई थी। इस तरह हमने पहाड़ी से नीचे की एक भयानक यात्रा शुरू की।

बड़ी मुश्किल से और काफी देर बाद हम नदी के किनारे पहुँचे, जहाँ लोटा थकान से चूर होकर गिर पड़ा। वहाँ से मैंने उसे अपने कंधों पर उठाकर ले गया, जैसे कोई अग्निशामक उठाता है, और जब तक हम गाँव वापस पहुँचे, मैं बुरी तरह थक चुका था, और मेरी टॉर्च की बत्तियाँ, जो इतनी देर से जल रही थीं, काफी धीमी पड़ चुकी थीं।

हमने निवासियों को जगाया और गर्म पानी तैयार होते ही चारों ओर हलचल मच गई। फिर मैंने शोलागा के घावों को यथासंभव धोया और उन पर पोटेशियम परमैंगनेट

के कच्चे क्रिस्टल डाले, उसके बाद आयोडीन डाला। मुझे पता था कि यह एक क्रूर उपचार था, और वह दर्द से कराह उठा। अंत में, मैंने पेनिसिलिन प्रोकेन की दो शीशियों की कुल आठ लाख यूनिट की मात्रा उसके नितंबों में इंजेक्ट कर दी। पिताजी और मैं हमेशा अपने शिकार यात्राओं पर एक हाइपोडर्मिक सिरिंज, पेनिसिलिन, आयोडीन, एक तेज चाकू, पट्टियाँ, रुई और प्राथमिक चिकित्सा की अन्य सामग्री साथ रखते हैं, ताकि ऐसी आपात स्थितियों से निपटा जा सके।

सुबह के 3 बज चुके थे जब मैंने गांव के मुखिया से कहा कि अगली सुबह जल्दी ही उन्हें आठ तंदुरुस्त आदमियों को काम पर लगाना होगा ताकि लोट्टा को चारपाई पर बिठाकर कावेरी नदी तक ले जाया जा सके और फिर नाव से पार करने के बाद ऊतैमलाई तक ले जाया जा सके, जहां से मैं उसे अपनी कार में बिठाकर पेन्नाग्राम के अस्पताल ले जाऊंगा।

मैं अत्यधिक थकान से सो रहा था, तभी बायरा मेरे पास एक नाटकीय विचार लेकर आया। उसने कहा, 'दोराई, चलो इस बाघ को मारने का आखिरी प्रयास करते हैं। बंदूक की आवाज से डरकर यह शायद अपनी गुफा में वापस चला गया होगा और वहीं छिपा होगा। तुम अब सो जाओ। जब जंगली मुर्गे बांग देने लगेंगे, मैं तुम्हें बुलाऊंगा। हम नदी के किनारे वापस जाएंगे और सुबह होते ही पहाड़ी पर चढ़ेंगे। तुम धीरे-धीरे ऊपर की ओर रेंगते हुए उस जगह तक पहुंच जाना जहां से लंगूर उछला था, जो गुफा के प्रवेश द्वार के ऊपर है। तुम्हें स्थिति में आने के लिए पर्याप्त समय देने के बाद, मैं एक तरफ से पहाड़ी पर आऊंगा और गुफा के सामने थोड़ी देर के लिए दिखाई दूंगा। अगर बाघ अंदर है, तो वह हमला करने से पहले शायद गुर्राएगा, और फिर हमला करके बाहर निकल आएगा। मैं पीछे हटकर चट्टान से सटकर छिप जाऊंगा ताकि रास्ते में न आऊं। तुम अपनी राइफल की दोनों नालों से ऊपर से उसकी पीठ में गोली मार देना। मैंने कह दिया है।'

'बकवास,' मैंने विरोध करना शुरू किया, तभी बायरा बीच में बोली: 'जल्दी सो जाओ, डोराई; तुम्हारे पास आराम करने के लिए मुश्किल से दो घंटे हैं।'

और मैं इतना थक गया था कि बहस करने से पहले ही सो गया।

ठीक पाँच बजे बायरा ने मुझे जगाया, और अपने वादे के मुताबिक मुझे जंगली मुर्गों की बांग सुनाई दी, हालाँकि बाहर काफी अंधेरा था। मैं अब भी असमंजस में था कि मैं समझदारी का काम कर रहा हूँ या मूर्खता का, फिर भी मैं उसके पीछे चल

पड़ा। नदी के किनारे पहुँचने से बहुत पहले ही टॉर्च की बत्ती बुझ गई। यकीन मानिए या नहीं, हालाँकि मैंने बैंगलोर से लाए अपने सभी सामान की सावधानीपूर्वक जाँच की थी, फिर भी सबसे ज़रूरी चीज़— टॉर्च की अतिरिक्त बैटरी—भूल गया था। लेकिन मुझे अपने पुराने जंगली दोस्त बायरा पर पूरा भरोसा था, इसलिए मैं उसके पीछे-पीछे चलता रहा और घने पेड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुए आखिरकार नदी की सूखी रेत पर पहुँच गया। यहाँ हम लगभग आधे घंटे तक बैठे रहे, जब तक कि भोर नहीं होने लगी। फिर मैंने टॉर्च और राइफल की नली से क्लैंप हटा दिए, क्योंकि अब ये अनावश्यक बाधा थे, अपनी .470 राइफल की दोनों नलियों में गोलियों की दोबारा जाँच की, और बायरा के पीछे पहाड़ी पर चढ़ने लगा।

जब हम लगभग चोटी पर पहुँच गए थे, तो उसने मेरा हाथ पकड़ा और फुसफुसाते हुए कहा: 'तुम यहाँ से आगे बढ़ो, डोराई। बिलकुल भी आवाज़ मत करना। धीरे-धीरे रेंगते हुए शिखर तक पहुँच जाना। फिर बाईं ओर मुड़ना और तब तक चलते रहना जब तक तुम गुफा के ठीक ऊपर न पहुँच जाओ। वहाँ लेट जाना और ट्रिगर पर उंगली रखकर तैयार रहना। मैं तुम्हें अपने प्रकट होने से पहले काफी समय दूंगा। जब तुम गोली चलाओ, तो दोनों बैरल से गोली चला देना ताकि कोई शक न हो।'

फिर, बिना कुछ कहे, वह एक बड़े पत्थर के पीछे गायब हो गया। बहुत शंकाओं के साथ मैंने वही किया जो उस छोटे बूढ़े आदमी ने मुझे बताया था। पहाड़ी की चोटी तक पहुँचना और बाईं ओर की पहाड़ी पर चलना तो आसान था। लेकिन उस जगह को याद करना जहाँ तक मैं लंगूर बंदर का पीछा करते हुए गया था, बिलकुल अलग बात थी। तीन बार मैंने जगह का गलत अनुमान लगाया और ऊपर से नीचे देखने पर मुझे कोई गुफा नहीं दिखी। फिर मुझे वह नुकीला पत्थर याद आया जो नदी के किनारे खड़े होने पर गुफा के प्रवेश द्वार को छिपा देता था। आखिरकार मैंने उसे देख लिया, और उसे एक निशान के रूप में ध्यान में रखते हुए, मैंने तुरंत उस सटीक जगह को पहचान लिया जहाँ से मैंने लंगूर बंदर के वापस भागने के बाद गुफा के मुँह को देखा था। एक बार फिर गुफा ठीक मेरे नीचे थी।

अब एक और बात मुझे परेशान करने लगी। क्या बायरा ने मुझे जगह ढूंढने में हुई मेरी तीन गलतियों को सुधारने का पर्याप्त समय दिया था? मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी थी, इसलिए कुछ भी नहीं हुआ होगा। चुपचाप मैं ऊपर नंगी चट्टान पर लेट गया, ताकि मेरी राइफल का मुंह गुफा के संकरे प्रवेश द्वार के ऊपर रहे। और मैं वहीं

इंतज़ार करता रहा। लेकिन बायरा फिर भी नहीं आया।

फिर अचानक, इससे पहले कि मैं उसकी निकटता को महसूस कर पाता, वह छोटा आदमी नीचे से और मेरे बाईं ओर से दिखाई दिया। शांत और सावधानी से, ताकि सही समय आने से पहले कोई आवाज़ न हो, वह संकरी गुफा के मुँह की ओर बढ़ा, उसके सामने खड़ा हुआ, अपने पैर से एक ढीले पत्थर को ठोकर मारी और अपना गला साफ़ किया। उसके बाद, बिजली की गति से वह उसी रास्ते से वापस चला गया और बाईं ओर एक चट्टान के पीछे मेरी नज़र से ओझल हो गया।

घटनाएँ तेज़ी से घटीं। जिस ज़मीन पर मैं लेटा था, वह भूकंप आने जैसी गड़गड़ाहट से काँप उठी, तभी नीचे गुफा में बाघ दहाड़ा। फिर उसने ज़ोर से दहाड़ा, और अगले ही पल वह धरती के गर्भ से बाहर निकल आया।

आदमखोर एक पल के लिए झिझका, यह न जानते हुए कि जिस व्यक्ति ने इतनी गुस्ताखी से उसकी निजता भंग की थी, वह कहाँ चला गया। तभी मेरी पहली गोली उसकी गर्दन के पीछे लगी। वह पलटकर पीठ के बल गिर पड़ा, उसका सफेद पेट मेरी ओर था—उसके चारों पैर बेतहाशा हवा में फड़फड़ा रहे थे। मेरी दूसरी गोली उसके सीने में जा लगी।

वह अभी ठीक से तड़पना बंद भी नहीं कर पाया था कि बायरा कोने से फिर प्रकट हुई और कमर पर हाथ रखकर मेरी तरफ देखकर मुस्कुराई, मानो उसकी योजना पूरी तरह सफल हो गई हो। मैं बहुत उत्साहित होकर ऊपर से चट्टान से नीचे फिसल गया और बड़े ही अनाड़ीपन से बायरा के पैरों के पास ढेर की तरह गिर पड़ा, उस बाघ के बेहद करीब, जिसके बारे में हम दोनों को ही पक्का यकीन नहीं था कि वह सचमुच मर गया है। हम वहाँ लगभग पाँच मिनट तक इंतज़ार करते रहे। फिर बायरा ने एक पत्थर फेंका जो जानवर से टकराकर निकल गया, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इससे हमें वह पता चल गया जो हम जानना चाहते थे; बाघ मर चुका था।

और अब उस रहस्य को सुलझाने का समय आ गया है जिसने पिताजी, मुझे और कई अन्य लोगों को लगभग पाँच वर्षों से उलझन में डाल रखा था। इस बाघ ने अपने मानव शिकारों पर पहली बार हमला करते समय उन्हें काटने के बजाय खरोंचने और पंजे मारने की आदत क्यों बना ली थी?

अंत में, जब हमने मृत जानवर की जांच की, तो रहस्य सुलझ गया। उसकी पूरी नाक एक पुराने गोली के घाव से उड़ गई थी, जो संभवतः .12 शॉटगन या शायद

मजल-लोडर से लगी थी। गोली लगने से नाक की हड्डी भी चकनाचूर हो गई थी, जो नथुनों से लेकर आंखों के बीच तक फैली हुई थी। यह एक भयानक और बेहद दर्दनाक चोट रही होगी, लेकिन चमत्कारिक रूप से ठीक हो गई थी। लेकिन बाघ ने निस्संदेह उस भयानक घाव को मानव जाति से जोड़ना कभी नहीं भूला था, और इसलिए जब भी वह किसी मनुष्य पर हमला करता था, तो वह अपने उस अंग को सुरक्षित रखने का पूरा ध्यान रखता था। यही एकमात्र स्पष्टीकरण हो सकता है, क्योंकि इस बाघ द्वारा मारे गए सभी मवेशियों को सामान्य तरीके से, अपने दांतों और पंजों से मारा गया था। इसके अलावा, वह सामान्य रूप से खाता-पीता था। जैसा कि मैं देख सकता था, घाव पूरी तरह से भर गया था। इसलिए यह बहुत ही असंभव था कि उसे काटने के दौरान अब भी दर्द होता हो। निश्चित रूप से, इस चोट के बिना, वह किसी भी सामान्य बाघ की तरह, मानव जाति के लिए पूरी तरह से हानिरहित रहता।

हम अत्यंत प्रसन्न होकर गाँव की ओर दौड़े और सबको खुशखबरी सुनाई। लोट्टा ने ज़ोर-ज़ोर से बधाई दी। बेजाहाई गाँव का हर पुरुष, स्त्री और बच्चा उस मरे हुए आदमखोर को देखने के लिए पहाड़ी पर चढ़ गया।

कुछ देर बाद ऊतैमलाई की ओर लौटते हुए जुलूस में लोट्टा आठ आदमियों द्वारा उठाई जा रही चारपाई पर बैठा था, और बाघ की खाल का एक बंडल बायरा के सिर पर रखा था। हालांकि झटके से शोलागा को काफी दर्द हुआ होगा, लेकिन उसने एक बार भी शिकायत या बड़बड़ाहट नहीं की, बल्कि बाघ का वध करने वाले के रूप में मेरी और उस छोटे बूढ़े पुजारी बायरा की खूब प्रशंसा की, जिसकी जंगल की चतुराई ने बाघ का अंत किया और जिसकी निडरता ने आदमखोर बाघ को उसकी मांद से भगा दिया।

मुझे इस बात का पछतावा हो रहा था कि बाघ को वापस लाने के चक्कर में लोटा को जो चिकित्सा सहायता पहले मिल सकती थी, उसमें देरी हो गई। लेकिन मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वह जल्दी और आसानी से ठीक हो गया। बायरा ने जो कुछ भी किया, उससे मेरी नज़र में उसकी इज़्ज़त और बढ़ गई। उसके लिए मेरा सम्मान चरम पर था। बूढ़ा रंगा थोड़ा निराश था कि इस बार उसके प्रतिद्वंद्वी ने उसे हरा दिया। लेकिन अब लोटा के साथ ये दोनों हमेशा वफादार दोस्त, साथी और सहायक बनकर हमारा इंतज़ार कर रहे हैं, और किसी भी समय पिताजी और मेरी सेवा करने के लिए तैयार हैं।

1 देखें: नरभक्षी और जंगल के हत्यारे।

The Kenneth Anderson **Omnibus**

Brought together for the first time, three of Kenneth Anderson's most-loved books.

TALES FROM THE INDIAN JUNGLE

Ace hunter and wildlife chronicler Anderson recalls real-life jungle tales, some macabre and some incredible, of adventures in pursuit of man-eating tigers and leopards.

He writes about the danger and excitement generated by the clash of the world of human beings and the world of animals.

MAN-EATERS AND JUNGLE KILLERS

Called upon to rid a locality of prowling man-eaters, Anderson the hunter rises to the occasion. Step by step he takes the reader through his adventure, explaining his modus operandi and the terrible excitement and lurking danger he experiences. Stirring tales of cunning wild animals pitted against human wit and presence of mind, told by the ace hunter and master storyteller himself.

THE CALL OF THE MAN-EATER

Anderson's love-hate relationship with panthers and tigers, who terrorized villagers and were eventually hunted down by the author in hair-raising encounters, is legendary.

In this book, the jungle is crowded with a hyena, a jackal, a bear, a barking deer and even a few snakes that the hunter-writer tamed and kept as pets. A thrilling read.

Adventure

RUPA

THE KENNETH ANDERSON

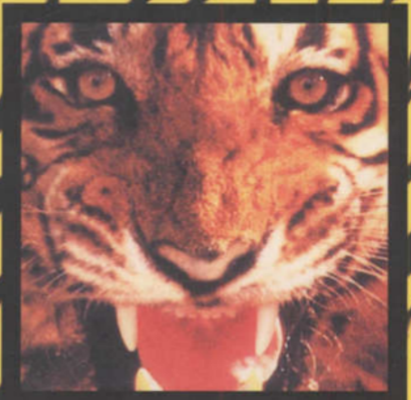

OMNIBUS
VOLUME 2

THE BLACK PANTHER OF SIVANIPALLI
THE TIGER ROARS
JUNGLES LONG AGO

केनेथ एंडरसन ओमनीबस

केनेथ एंडरसन ओमनीबस

केनेथ एंडरसन

खंड II

RUPA

यह रूपा पेपरबैक 2000 में पुनर्मुद्रित किया गया था।
ग्यारहवां संस्करण 2012

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
7/16, Ansari Road, Daryaganj,
नई दिल्ली 110 002

सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

टाइपसेट द्वारा
माइंडवेज़ डिज़ाइन
1410 चिरंजीव टावर
43 नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110 019

अंतर्वस्तु

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

परिचय

एक पैंथर का रास्ता

येल्लागिरी पहाड़ियों का आदमखोर पैंथर

ओल्ड मुनुस्वामी और मगदी का पैंथर

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

सांप और अन्य जंगली जीव

हैदराबाद का हत्यारा

गेडेसल का विशाल बैल बाइसन

चोर्डी का अयालदार बाघ

पेगेपलयम का आदमखोर

बाघ दहाड़ता है

परिचय

मांची का नौसिखिया

पेद्दाचेरुवु का लंगड़ा आतंक

चीजों का विचित्र पक्ष

तलावड़ी का गूंगा नरभक्षी

वायनाड का हत्यारा

तलाइनोवु का पुरुष-विरोधी

शेर खान और बेट्टामुगलम नरभक्षी

बहुत समय पहले के जंगल

परिचय

स्पाइडर वैली में एक रात

भारत का चिकित्सा ज्ञान

गुप्त विद्या और अन्य मामले

कुछ भारतीय वन्यजीव अभयारण्य

अनाइबिद्दाहल्ला बाघिन

बहुत समय पहले एक जंगल में

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

परिचय

इस पुस्तक के पहले पाँच अध्याय पैंथरों को समर्पित हैं। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैंने पैंथरों पर ही ध्यान क्यों केंद्रित किया है और जंगल के अन्य जानवरों के बारे में क्यों नहीं लिखा। इसका एक कारण यह है कि पैंथर आज भी भारत में काफी आम हैं। दूसरा, इन्हें ढूंढना अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि आज भी ये कुछ बड़े शहरों से कुछ मील की दूरी पर ही मिल जाते हैं। तीसरा कारण यह है कि पैंथरों का शिकार काफी सस्ता है और आम आदमी की जेब के बजट में है। पैंथर कुत्ते, बकरी या गधे जैसे चारे पर आ जाते हैं; जबकि बाघ को भैंस या बैल से आकर्षित करना पड़ता है, जिसमें काफी खर्च आता है।

इसके बदले में, पेड़ की मचान की सुरक्षा में बैठकर शिकार करने के बजाय जमीन पर बैठकर खेल भावना से पैंथर का शिकार करना बाघ के शिकार जितना ही रोमांचकारी अनुभव प्रदान करता है।

मैंने बाघों और अन्य जानवरों के बारे में एक अध्याय लिखा है, और साँपों के बारे में भी कुछ लिखा है। मैंने साँपों को इसलिए शामिल किया है क्योंकि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बाघों, हाथियों, शेरों और बड़े जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा और जाना जाता है, लेकिन साँपों के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं लिखा गया है, और ज़्यादातर लोग उनके बारे में बहुत कम जानते हैं, सिवाय इसके कि आम तौर पर उनसे बचना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि मैं इन समान रूप से रोचक जीवों पर कुछ प्रकाश डाल सकूँगा। पाठक को एक पल के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि बाघ, तेंदुआ, भालू और हाथी भारतीय जंगल में मिलने वाले सबसे खतरनाक जीव हैं। झाड़ियों या घास में घात लगाए बैठा ज़हरीला साँप कहीं ज़्यादा तेज़, कहीं कम दिखाई देने वाला और कहीं ज़्यादा शक्तिशाली होता है।

मैंने एक बहादुर बाइसन की कहानी और बाघों के साथ दो रोमांचक अनुभवों के

बारे में भी बताया है। इन दोनों कहानियों से आपको आदमखोर बाघ का शिकार करने में आने वाली कठिनाइयों, परेशानियों और निराशाओं का अंदाजा लग जाएगा। एक मामले में मैं पूरी तरह असफल रहा; दूसरे में मुझे सफलता मिली, लेकिन महज़ संयोग से। मैंने एक ऐसे बाघ के संक्षिप्त वर्णन के साथ अपनी बात समाप्त की है जिसका व्यवहार बहुत ही विचित्र था। जब मैं यह लिख रहा हूँ तब वह जीवित है—और वह अब भी एक रहस्य बना हुआ है।

जैसे-जैसे मैं इन रोमांचक अनुभवों को लिखता हूँ, वर्तमान के दृश्य और ध्वनियाँ धुंधली होती जाती हैं और यादें उमड़ पड़ती हैं। जंगल की रात का अंधेरा, ऊपर तारों से भरा आकाश और नीचे जंगल की चादर पर टिमटिमाते रत्न, घने पत्तों के बीच अनगिनत जुगनू जो परी जैसे दीपक की तरह चमकते हैं; और वे अन्य, अधिक चमकदार, जीवंत प्रकाश, बाघ, तेंदुआ या बाइसन की चमकती आँखें, और झाड़ियों के बीच से धीरे-धीरे चलते हुए सुंदर हिरण की हरी आँखें, जो सरसराते पेड़ों के नीचे चलते समय मेरी टॉर्च की रोशनी को प्रतिबिंबित करती हैं।

आइए, मेरे साथ उन कुछ घंटों के लिए, जो इस पुस्तक को पढ़ने में आपको लग सकते हैं, बाघ, तेंदुआ और हाथी के क्षेत्र में, विशाल वृक्षों की बुलंदियों और घनी छाया के बीच, जिनके तने इस अद्भुत इमारत की संरचना करते हैं। तथाकथित सभ्यता के झूठे मूल्यों और विचारों को भूल जाइए, जीवन की स्वतंत्र और सरल सच्चाइयों पर थोपे गए उन नियमों को भूल जाइए। यहाँ जंगल में आपको सत्य मिलेगा, आपको शांति, आनंद और खुशी मिलेगी; आपको जीवन ही मिलेगा। यहाँ पाखंड, बनावटीपन, कृत्रिमता और झूठेपन के लिए कोई जगह नहीं है, कोई समय नहीं है। आप आदिम स्वरूप के आमने-सामने हैं, उस वास्तविकता के सामने हैं, उस अद्भुत चीज़ के सामने हैं - जो ईश्वर है।

यदि मैं आपको कुछ क्षणों के लिए आपके जीवन की सभी नीरसताओं से दूर ले जाकर, उष्णकटिबंधीय जंगल के चमत्कारों और उसके रोमांच में ले जाने में सफल हो जाऊं, जहां आपका जीवन आपकी इंद्रियों, आपकी बुद्धि, आपके कौशल और अंत में ईश्वर की कृपा पर निर्भर करता है, जब आप घने हरे-भरे जंगलों या पत्थरों के ढेर के बीच एक घायल आदमखोर के खून के निशान का पीछा करते हैं, तो मैं स्वयं को भरपूर पुरस्कृत महसूस करूंगा।

एक

एक पैंथर का रास्ता

हर तेंदुआ दूसरे तेंदुआ से अलग होता है। कुछ तेंदुआ बेहद साहसी होते हैं; कुछ बेहद डरपोक। कुछ बेहद चालाक होते हैं; कुछ बिल्कुल मूर्ख प्रतीत होते हैं। मैंने ऐसे तेंदुओं को भी देखा है जिनमें मानो छठी इंद्री होती है, और वे ऐसे व्यवहार करते हैं मानो किसी के मन की हर बात को पढ़ और समझ सकते हों। अंत में, लेकिन बहुत कम ही, ऐसे तेंदुआ भी होते हैं जो मनुष्यों पर हमला करते हैं, और उससे भी कम, ऐसे तेंदुआ जो उन्हें खा जाते हैं।

आम तौर पर, आदमखोर जानवर किसी असाधारण परिस्थिति का परिणाम होते हैं। हो सकता है कि किसी ने उसे घायल कर दिया हो, और उसके बाद वह आसानी से अपने प्राकृतिक शिकार—अन्य जानवरों—का शिकार करने में असमर्थ हो गया हो। इसलिए, मजबूरीवश वह मनुष्यों को खाने लगता है, क्योंकि वे उसके लिए आसान शिकार होते हैं। या शायद किसी पैंथर ने किसी मृत मानव शरीर को खा लिया हो, जिसे पहले बहुत उथली कब्र में दफनाया गया था और बाद में सियार या भालू ने खोदकर निकाल लिया था। मानव मांस का स्वाद चखने के बाद, पैंथर को अक्सर इसकी आदत पड़ जाती है। अंत में, हालांकि यह बहुत ही दुर्लभ है, हो सकता है कि यह किसी आदमखोर माँ का बच्चा हो, जिसने उसे यह आदत सिखाई हो।

आम तौर पर पैंथर एक शांत और काफी हानिरहित जानवर होता है जो मनुष्यों से डरता है और उन्हें देखते या उनकी आवाज सुनते ही चुपचाप झाड़ियों में गायब हो जाता है। घायल होने पर, कुछ पैंथर असाधारण क्रूरता और बहादुरी दिखाते हैं। वहीं

दूसरी ओर, कुछ बेहद कायर होते हैं और अपने पीछे आने देते हैं, या कुत्तों की तरह उनका पीछा भी करते हैं।

अगर आप किसी पहाड़ी की चोटी से किसी पैंथर को अपने शिकार का पीछा करते हुए देख पाते, तो यह एक बेहद मनोरंजक नज़ारा होता। आप उसे हर झाड़ी, हर पेड़ के तने और हर पत्थर के पीछे छिपते हुए देखते। वह खुद को ज़मीन पर इस तरह से समेट सकता है कि वह दिखाई ही न दे, जब तक कि आपकी नज़रें बहुत तेज़ न हों। एक बार मैंने दूरबीन से एक पैंथर को देखा और जंगल में उसकी अद्भुत कुशलता देखकर दंग रह गया। फिर आती है उसकी आखिरी छलांग। कुछ ही छलांगों में, बिजली की तेज़ी से, वह अपने शिकार तक पहुँच जाता है।

अचूक निशाने के साथ, वह अपने शक्तिशाली नुकीले दांतों से ऊपर और पीछे से जानवर का गला पकड़ लेता है, ताकि जब जानवर ज़मीन पर गिरे तो पैंथर उसके खुरों से दूर, दूसरी तरफ रहे, जिससे गंभीर चोट लग सकती है। शिकार ज़मीन पर गिर जाता है और उसकी पकड़ तब तक ढीली नहीं पड़ती जब तक जानवर मर नहीं जाता। मरने के बाद भी, पैंथर अपने शिकार के गले में किए गए गहरे घावों से उसका खून चूसता रहता है।

ज़रा कल्पना कीजिए जंगल की खामोशी और चुपके से आते हुए पैंथर की, जो अपने शिकार की ओर बढ़ रहा है या उसके लिए बांधे गए जीवित शिकार का पीछा कर रहा है। अगर आप पैंथर का शिकार करना चाहते हैं, तो बहुत ध्यान से देखें: हर झाड़ी में झाँकें, घास के हर गुच्छे में देखें, किसी चट्टान या पत्थर के पास से गुजरते समय सावधान रहें, गड्ढों और खाइयों में भी गौर करें। क्योंकि पैंथर इनमें से किसी के भी पीछे हो सकता है, या ज़मीन में किसी गड्ढे में छिपा हो सकता है। न केवल आपकी सफलता, बल्कि आपका जीवन भी आपकी सावधानी पर निर्भर करेगा, क्योंकि आप जंगल के सबसे कुशल जीव और एक बेहद खतरनाक शिकारी के खिलाफ अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर रहे हैं।

पैंथर का उसके अपने तरीके से शिकार करने की कोशिश करना सबसे कठिन और रोमांचक शौक में से एक है। इसे 'स्टिल-हंटिंग' के नाम से जाना जाता है।

शिकार करते समय सफल होने के लिए, आपके पास जंगल की गहरी समझ, कोमल चाल और लगभग पैंथर जैसी बुद्धि होनी चाहिए; क्योंकि आप इस बेहद चालाक जानवर को उसी के खेल में मात देने की कोशिश करने वाले हैं। आप उसका

शिकार अपने पैरों पर खड़े होकर करने वाले हैं—और याद रखें, वह स्वयं भी सबसे कुशल शिकारी है।

सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि वह शिकार की तलाश में कब निकलता है। वह आम तौर पर निशाचर जानवर है और रात में जंगल में घूमता है। आप इंसान हैं, इसलिए टॉर्च की मदद के बिना अंधेरे में नहीं देख सकते। लेकिन टॉर्च से शिकार करना संभव नहीं है। दूसरा सबसे अच्छा समय शाम को अंधेरा होने से ठीक पहले का होता है। तब आपको पैंथर से मिलने का मौका मिल सकता है। दिन में बाहर जाना बेकार है, क्योंकि उस समय वह आराम कर रहा होता है। इसके अलावा, उसे तेज़ धूप पसंद नहीं है।

दूसरा सवाल यह है कि आम तौर पर उसे खोजने के लिए सबसे अच्छी जगहें कौन सी हैं? इसका जवाब जानने के लिए, आपको अगले सवाल का जवाब पता होना चाहिए—जंगल में पैंथर आमतौर पर किसका शिकार करता है? इस सवाल का जवाब बहुत मददगार नहीं होगा, क्योंकि पैंथर किसी भी जीवित चीज़ को खा जाता है, बशर्ते वह इतनी बड़ी न हो कि उसे पकड़ा न जा सके। जंगली मुर्गे, मोर, खरगोश, बंदर, जंगली सूअर और हिरण परिवार के सभी जानवर, बहुत बड़े नर हिरणों को छोड़कर, उसके शिकार होते हैं। गांवों के पास, पालतू सूअर, कुत्ते, बकरियां, भेड़ें, गधे और औसत आकार के मवेशी उसका मुख्य भोजन हैं। यहां तक कि गांव की आवारा बिल्ली भी उसका शिकार बन सकती है, बशर्ते वह झोपड़ियों से बहुत दूर भटकने की मूर्खता करे।

मान लीजिए कि हम एक जंगल में हैं जहाँ पैंथर अपना प्राकृतिक भोजन शिकार करता है। पैंथर शिकार कैसे करता है? याद रखिए, उसकी दृष्टि और सुनने की शक्ति अद्भुत है, लेकिन सूंघने की क्षमता लगभग न के बराबर है। अगर आप पैंथर की जगह होते, तो आप क्या करते?

ज़ाहिर है, दो में से एक बात होगी। या तो आप चुपचाप उन इलाकों में घूमेंगे जहाँ भोजन मिलने की संभावना है, या फिर आप किसी ऐसी जगह के पास छिप जाएँगे जहाँ आपको भोजन मिलने की उम्मीद हो। पैंथर ठीक यही करता है।

वह दबे पांव, गद्देदार कदमों से, उन जगहों पर घूमता है जहां उसे लगता है कि जिन पक्षियों और जानवरों की वह तलाश कर रहा है, उनके होने की संभावना है, या वह किसी पानी के गड्ढे या नमक चाटने की जगह के पास उनका इंतजार करता है

जहां वे आम तौर पर आते हैं।

अगर वह शिकार की तलाश में है और चुपचाप रहना चाहता है, तो वह हमेशा घनी झाड़ियों या सूखे पत्तों के बीच नहीं छिप सकता, क्योंकि उनसे सरसराहट की आवाज़ आती है। इसलिए वह पगडंडियों, जानवरों के रास्तों, जंगल की आग बुझाने वाली जगह या नाले या नदी के किनारे छिपकर चुपके से चलता है। इसके अलावा, वह पानी के स्रोतों या नमक के टीलों के पास छिप जाता है, जहाँ से गुजरते हुए वह अपने शिकार पर झपट्टा मार सकता है। आपको उसे ऐसी ही जगहों पर ढूंढना चाहिए।

इसके अलावा, आपकी हलचल भी उसका ध्यान आकर्षित करेगी। इसलिए, दिन के समय जंगल में टहलें और देखें कि क्या आपको पग के निशान मिलते हैं—सिर्फ़ कुछ पग के निशान नहीं, बल्कि पुराने और नए, कई निशान। जब आपको ये निशान मिल जाएं, तो आप समझ जाएंगे कि आपको पैंथर का एक जाना-माना रास्ता मिल गया है। ऐसी जगह चुनें जहाँ दो या दो से अधिक ऐसे रास्ते मिलते या एक-दूसरे को काटते हों, या ऐसी जगह जहाँ ऐसा कोई रास्ता या आग की लकीर किसी नदी को पार करती हो।

जब आपको वह जगह मिल जाए, तो उसी शाम वापस आएं और किसी सुविधाजनक पेड़ के तने या झाड़ी के पीछे छिप जाएं; और फिर, चाहे कुछ भी हो जाए, एकदम शांत बैठे रहें और आस-पास के रास्तों, आग बुझाने वाली जगहों या नदी-नालों पर पैनी नज़र रखें। अगर आप भाग्यशाली रहे, तो हो सकता है आपको कोई शिकारी पैंथर इनमें से किसी एक पर चलता हुआ दिखाई दे, जो शायद बीच-बीच में पेड़ों की ओर देखकर किसी बंदर या किसी बड़े जंगली पक्षी की तलाश कर रहा हो। यह तो ज़ाहिर सी बात है कि ऐसी निगरानी में आपको बाघ, हाथी या हिरण की कई प्रजातियों में से कोई एक भी दिख सकती है।

लेकिन फिलहाल मान लेते हैं कि आप सिर्फ एक पैंथर की तलाश में हैं। अगर आपको जंगल में कोई तालाब या नमक चाटने की जगह मिल जाए, तो उसके पास किसी छाया में या अगर चींटियों का टीला उपलब्ध हो तो उसके पीछे लेट जाना सुविधाजनक होगा। जंगल के विभिन्न जीवों को ऐसी जगहों पर आते-जाते देखना आपके लिए काफी मनोरंजक होगा। अगर कुछ समय बाद आपको कोई पैंथर या बाघ आपके जैसी ही जगह पर बैठा हुआ दिखाई दे, तो आश्चर्यचकित न हों, हालांकि मैं आपको आगाह करना चाहूंगा कि उन्हें पहचानना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा,

क्योंकि वे बहुत चुपचाप चलते हैं। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मांसाहारी जीव ऐसी जगहों पर छिपकर अपने प्राकृतिक भोजन की प्रतीक्षा करते हैं।

मुझे याद है कि एक बार मैं एक पेड़ के तने के पीछे घास में लेटा हुआ था, जहाँ से एक उथली खाई के कोने में बने नमक के टीले का नज़ारा दिखता था। पहले की जाँच से पता चला था कि चित्तीदार हिरण और सांभर बड़ी संख्या में इस नमक के टीले पर आते थे। शाम ढल रही थी, तभी मेरे ठीक पीछे हल्की सी सरसराहट सुनाई दी, जिससे मैंने धीरे से अपना सिर घुमाकर पीछे देखा। वहाँ मैंने एक पैंथर को देखा जो मुझे स्पष्ट रूप से आश्चर्यचकित होकर देख रहा था। जब उसने देखा कि उसे देख लिया गया है, तो वह खड़ा हो गया और भागने के इरादे से आधा मुड़ गया। फिर उसने एक बार फिर मेरी तरफ देखा, मानो कह रहा हो, 'क्या तुम यहाँ से दफ़ा नहीं हो सकते?' अंत में वह चला गया।

इन जानवरों को उनके शावकों के साथ या बाघिन को उनके शावकों के साथ देखना बेहद मनमोहक होता है। माँ की देखभाल का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मांसाहारी जानवर अपने शावकों को तब तक गुफा से बाहर नहीं लाते जब तक वे ठीक से चलने-फिरने लायक न हो जाएं और शिकार के बुनियादी नियम न समझ लें। तब तक उन्हें गुफा में ही सुरक्षित रखा जाता है। बहुत छोटे होने पर उन्हें केवल दूध पिलाया जाता है। जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो माँ उन्हें कच्चा मांस खिलाना शुरू कर देती है, जिसे पहले वह खुद खाकर थोड़ा पचा लेती है और फिर शावकों के खाने के लिए उल्टी कर देती है। जैसे-जैसे शावक ठोस मांस पचाने में सक्षम होते जाते हैं, माँ अपने शिकार को गुफा में लाती है—शायद कोई जंगली मुर्गा या मोर, और समय बीतने के साथ-साथ छोटे जानवर, हिरण की टांग तक, या शायद पूरा हिरण भी।

शावक बहुत लालची होते हैं और अगर उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए तो वे ज़रूरत से ज़्यादा खा लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। मैंने कई तेंदुआ और बाघ के शावक पाले हैं और पाया है कि तेंदुआ विशेष रूप से पेट की सूजन (गैस्ट्राइटिस) से ग्रस्त होते हैं। वे कच्चे मांस के टुकड़े चट कर जाते हैं और खून के कटोरे भर-भरकर पीते हैं, यहाँ तक कि लगभग हिलने-डुलने में असमर्थ हो जाते हैं। एक बार जब उन्हें पेट की सूजन हो जाती है, तो यह बीमारी लगभग लाइलाज साबित होती है और वे तीन-चार दिनों में भीषण पीड़ा से मर जाते हैं। यह बीमारी उन्हें लगभग आठ महीने की उम्र तक प्रभावित करती है और मैंने इस बीमारी से कई शावकों को खोया है।

जंगली अवस्था में, एक माँ को यह बात सहज रूप से पता होती है और वह अपने बच्चों को उतना ही खाना देती है जितना उन्हें चाहिए होता है, कच्चे मांस के साथ प्राकृतिक दूध भी तब तक देती रहती है जब तक कि बच्चे काफी बड़े नहीं हो जाते और दूध पीते समय उसे काटने और खरोंचने नहीं लगते।

यदि गुफा पर किसी प्रकार का खतरा मंडराता है, चाहे वह घुसपैठ करने वाले मनुष्यों के रूप में हो या प्रजाति के नर के रूप में, जो अपने बच्चों को खाने का शौकीन होता है, तो वह उन्हें एक सुरक्षित स्थान पर ले जाती है। वह ऐसा करने के लिए उन्हें गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़कर अपने मुंह में उठा लेती है।

जब शावक चलने लायक हो जाते हैं, तो माँ उन्हें शिकार करने और खुद शिकार करने की कला सिखाने के लिए बाहर ले जाती है। यह एक लंबी प्रक्रिया होती है। माँ पहले खुद शिकार को मारती है, जबकि शावक झाड़ियों में छिपे रहते हैं। फिर वह म्याऊँ जैसी कर्कश आवाज़ें निकालकर उन्हें बुलाती है, जिससे वे मरे हुए जानवर पर उछल-कूद कर सकें, उसे काट सकें और ताज़ा शिकार और गर्म खून का स्वाद चख सकें। ऐसा करते समय शावकों द्वारा निकाली गई भयंकर आवाज़ें सुनने में बहुत मज़ेदार होती हैं। वे अपना साहस बढ़ाते हैं और गुस्से में आकर एक-दूसरे पर और यहाँ तक कि अपनी माँ पर भी गुर्राते और झपटते हैं।

अगला पाठ तब शुरू होता है जब वह शिकार को आधा ही मारती है, या उसके पैर की नसें घायल कर देती है, जिससे बच्चों को बाकी काम अपनी क्षमता के अनुसार पूरा करने का मौका मिलता है। वे जानवर के गले पर हमला करके और उसे काटकर मार डालते हैं—यह एक बहुत ही क्रूर प्रक्रिया है।

शिकार करने की कला सिखाने में बाघ के शावकों को पैंथर की तुलना में कहीं अधिक समय लगता है। पैंथर अपने शिकार का गला दबाकर और लटककर उन्हें मार डालते हैं, जबकि बाघ बड़ी कुशलता से गर्दन तोड़ देता है। इसलिए बाघ के शावकों को सिखाने में अधिक समय लगता है, और यह आम बात है कि एक बाघिन अपने शावकों को सिखाते समय झुंड में से चार या पाँच मवेशियों को मार देती है, जबकि अक्सर शावकों को अगर अकेला छोड़ दिया जाए तो वे केवल काटकर या नोंचकर काम बिगाड़ देते हैं, और अंततः जानवर बच निकलता है।

मैंने पहले भी बताया है कि बाघ एक बहुत ही वैज्ञानिक और कुशल शिकारी होता है। वह आम तौर पर अपने शिकार की पीठ पर आधा छलांग लगाता है, झुककर

दूसरी तरफ से उसका गला पकड़ लेता है, और अपने अगले पंजों से मज़बूती से उसे जकड़े रखता है। फिर वह एक तेज़ और ज़ोरदार झटके से ऊपर और पीछे की ओर खींचता है जिससे जानवर गिर जाता है। शिकार और बाघ के संयुक्त वजन के साथ-साथ गर्दन के अचानक और ज़ोरदार घुमाव के कारण ही शिकार की गर्दन टूट जाती है।

जब कोई मादा बाघिन या तेंदुआ अपने बच्चों के साथ शिकार पर निकलती है, तो बच्चे उसके पीछे-पीछे चलते हैं, माँ की हर हरकत की नकल करते हैं और ठीक उसी तरह ज़मीन पर या झाड़ियों के पीछे छिप जाते हैं। ऐसे समय में बाघिन के बहुत पास रहना खतरनाक होता है। वह अपने बच्चों की रक्षा में आप पर हमला कर सकती है। तेंदुआ मादा के हमले की संभावना कम होती है, हालांकि वह भयंकर गुर्राहट करके अपनी ताकत का प्रदर्शन जरूर करती है। फिर भी, कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता, इसलिए जब भी कोई परिवार नज़र आए तो अपनी राइफल तैयार रखना ही समझदारी है।

लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, और जब तक बेहद अपरिहार्य न हो और आत्मरक्षा में ही करना पड़े, कृपया माँ को गोली न मारें, चाहे वह पैंथर हो या बाघिन। ऐसा करने पर शावक निश्चित रूप से जंगल में भाग जाएंगे जहाँ वे भूख से मर सकते हैं, या यदि वे बड़े हो गए तो आदमखोर बन सकते हैं। आपको याद रखना चाहिए कि उन्होंने अभी तक अपने प्राकृतिक भोजन, यानी अन्य जानवरों को मारना ठीक से नहीं सीखा है। यदि आप इस स्तर पर उनकी शिक्षा में बाधा डालते हैं, तो आपके द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों के कारण वे अपनी भूख मिटाने के लिए मनुष्यों को मारने लग सकते हैं। हमेशा याद रखें कि किसी भी बड़े जानवर की तुलना में मनुष्य का पीछा करना, उस पर हमला करना और उसे मारना कहीं अधिक आसान है।

इस तरह के शौक को पूरा करने के लिए भारतीय शीत ऋतु के दौरान, यानी नवंबर, दिसंबर और जनवरी के महीनों में, एक दिलचस्प समय होता है, क्योंकि यही वह समय होता है जब इन दोनों मांसाहारी प्रजातियों का प्रजनन काल होता है।

बेशक, आपको याद रखना चाहिए कि ये जानवर ज़्यादातर रात में सक्रिय रहते हैं, और शाम ढलने के समय इन्हें देखने या सुनने की संभावना बहुत कम होती है। बाघिन द्वारा अपने साथी को पुकारने की आवाज़ सुनना रोमांचकारी होता है, और उसकी पुकार में अधीरता का भाव लगभग महसूस किया जा सकता है। हालांकि, मैं

आपको चेतावनी देना चाहूंगा कि इस मौसम में बाघ निश्चित रूप से खतरनाक होते हैं, खासकर जब वे मादा को रिझाने की कोशिश कर रहे हों या संभोग कर रहे हों। उनका तरीका बेहद हिंसक होता है, बाघ और बाघिन दोनों ही अक्सर एक-दूसरे को बेरहमी से काटते और खरोंचते हैं।

आपने शायद घरेलू बिल्लियों के संभोग के दौरान उनके अजीब व्यवहार को देखा होगा। इसे कई गुना बढ़ा दें, तो आपको बाघों की कामुकता का कुछ अंदाजा हो जाएगा। वे उन्माद और क्रोध में डूब जाते हैं, और इस यौन उत्तेजना के समय उनकी निजता में दखल देने वाले किसी भी इंसान का बुरा हाल होता है। बाघिन इस दौरान बाघ से भी ज्यादा उत्तेजित और इसलिए ज्यादा खतरनाक मानी जाती है। कामुक आवाजों में चिल्लाती हुई बाघिन अक्सर बड़े-बड़े इलाकों में वन विभाग के काम और बैलगाड़ियों का आवागमन रोक देती हैं।

इस मामले में पैंथर भी काफी हद तक समान होते हैं, लेकिन आम तौर पर उनमें किसी मानव घुसपैठिए पर हमला करने का साहस नहीं होता है, हालांकि वे इसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने में कोई संकोच नहीं करेंगे।

एक पैंथर बाघ की तुलना में बिल्ली से अधिक मिलता-जुलता है। शिकार के रास्ते के किनारे रेत या सूखे पत्तों को खरोंचकर पैंथर द्वारा शौच करने और फिर मल को ढकने के निशान से पता चलता है, ठीक उसी तरह जैसे एक पालतू बिल्ली करती है। हालांकि, एक बाघ ऐसा नहीं करता, बल्कि कुत्ते की तरह मल को खुला छोड़ देता है। दोनों ही मामलों में, मल में ज्यादातर पिछले शिकार के बिना पचे बाल होते हैं।

लकड़बग्घा, जो मृत जानवरों का मांस खाता है, हड्डियाँ भी पूरी तरह निगल जाता है। इसलिए इस जानवर का मल आसानी से पहचाना जा सकता है, जो अर्ध-पचे हुए हड्डियों के कठोर, सफेद टुकड़ों के रूप में दिखाई देता है। लकड़बग्घे के पदचिह्नों को उसके आगे और पीछे के पंजों के आकार में बड़े अंतर से पहचाना जा सकता है; आगे के पंजे पीछे के पंजों से काफी बड़े होते हैं।

बाघों की तरह, पैंथर भी चलते समय अपने पंजे अंदर खींच लेते हैं, इसलिए लगभग एक ही आकार के पैंथर और लकड़बग्घे के पदचिह्नों में अंतर यह है कि पैंथर के पदचिह्न का गोला लकड़बग्घे के पदचिह्न से काफी बड़ा होता है, जबकि पंजे के सिरे बिल्कुल भी दिखाई नहीं देते। लकड़बग्घा अपने पंजे अंदर नहीं खींच पाता, इसलिए वह जमीन पर अपने निशान स्पष्ट रूप से छोड़ देता है।

अतीत में, कुछ शिकारी यह दावा करते थे कि पैंथर और तेंदुआ दो बिल्कुल अलग प्रजातियाँ हैं, जबकि अन्य कहते थे कि वे एक ही हैं। लेकिन आधुनिक युग में यह विवाद समाप्त हो गया है, क्योंकि अब यह स्वीकार किया जा चुका है कि वे वास्तव में एक ही हैं। पर्यावरण और आहार में अंतर के कारण कुछ जानवर दूसरों की तुलना में बहुत बड़े आकार के हो जाते हैं। जंगल में रहने वाला पैंथर, जो शिकार किए गए जानवरों का अधिक पौष्टिक आहार लेता है, आमतौर पर गाँवों के पास रहने वाले पैंथर की तुलना में बहुत बड़ा होता है और उसका फर गहरा और मोटा होता है, जहाँ उसका भोजन कुत्तों और बकरियों तक ही सीमित होता है। इसके अलावा, चट्टानों और पत्थरों के बीच रहने के कारण, उसका फर हल्का होता है और बाल छोटे और मोटे होते हैं। संयोगवश, जंगल में रहने वाले पैंथर का गहरा फर उसे जंगल की घनी वनस्पति में प्रभावी ढंग से छलावरण करने में मदद करता है, जबकि 'गाँव के पैंथर' (जैसा कि उसे कभी-कभी कहा जाता है) का हल्का फर उसे चट्टानों के बीच ढूंढना बहुत मुश्किल बना देता है।

हालांकि, कभी-कभार दोनों ही मामलों में अपवाद देखने को मिलते हैं, और प्रकृति अप्रत्याशित रूप से अपने ही नियम को तोड़ती हुई प्रतीत होती है। मैंने गांवों के पास और घने जंगल से दूर रहने वाले कुछ बहुत बड़े पैंथरों का शिकार किया है, जिनके शरीर पर गहरे, घने बाल थे, और जंगल के भीतर कुछ छोटे पैंथरों का भी शिकार किया है जिनके शरीर पर हल्के रंग के बाल थे।

यही बात बाघों पर भी लागू होती है। जो बाघ मवेशी खाने के आदी हो जाते हैं, वे मोटे और भारी हो जाते हैं, जबकि असली शिकारी बाघ दुबले-पतले और मांसल होते हैं, उनमें बिल्कुल भी चर्बी नहीं होती, क्योंकि जंगली जानवरों का शिकार करने में उन्हें मवेशी खाने वाले बाघों की तुलना में कहीं अधिक मेहनत करनी पड़ती है, जो बिना किसी खास मेहनत के अपना शिकार पकड़ लेते हैं। कठिन व्यायाम से चर्बी कम होती है, न केवल मनुष्यों में, बल्कि बाघों में भी।

दोनों प्रजातियों के नरभक्षी विशिष्ट अपवाद हैं और अप्राकृतिक परिस्थितियों के परिणाम हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है।

पैंथर्स अच्छी तरह से पेड़ पर चढ़ सकते हैं और कभी-कभी बंदरों का पीछा करते हुए या जंगली कुत्तों से बचने के लिए पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। बाघ ऐसा नहीं कर सकते, हालांकि मैंने मैसूर चिड़ियाघर में एक ऐसे बाघ को देखा है जिसने काफी ऊँचाई तक

चढ़ना सीख लिया था और अपने बाड़े के अंदर एक पेड़ पर उसके लिए विशेष रूप से बनाए गए चबूतरे पर लेट जाता था। यह इस बात का उदाहरण है कि बाघ, मनुष्यों की तरह, एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

तेंदुआ और बाघ दोनों ही बंदरों का शिकार एक अनोखे तरीके से करते हैं। जंगली बंदर बहुत सतर्क होते हैं और अपने प्राकृतिक शत्रु, मांसाहारी जानवरों पर पैनी नजर रखते हैं। इनमें से किसी भी जानवर की आवाज या झलक मिलते ही वे सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ जाते हैं, जहां वे सुरक्षित रहते हैं। यह जानते हुए, तेंदुआ और बाघ भयानक गुर्राहट और दहाड़ के साथ उस पेड़ की तलहटी पर हमला कर देते हैं जिस पर बंदर चढ़े होते हैं। ये डरावनी आवाजें बेचारे बंदरों को बुरी तरह डरा देती हैं, और वे अपनी सुरक्षित जगह पर रहने के बजाय अगले पेड़ पर कूदने की कोशिश करते हैं; या, अगर वह पेड़ बहुत दूर होता है, तो वे दूसरे पेड़ पर चढ़ने के इरादे से बहुत ऊंचाई से जमीन पर कूद जाते हैं। इस प्रक्रिया में उनमें से कुछ घायल हो जाते हैं या बेहोश हो जाते हैं, और चालाक शिकारी के आसान शिकार बन जाते हैं।

भारतीय जंगलों में पाए जाने वाले सबसे बुद्धिमान जानवरों में से एक, बल्कि शायद सबसे बुद्धिमान, जंगली कुत्ता है। पुराने समय के शिकारी इस श्रेणी में जंगली हाथी, बाघ और तेंदुआ को स्थान देते रहे हैं, लेकिन यदि आपने जंगली कुत्ते की आदतों का अध्ययन किया है, तो आप उनसे असहमत हो सकते हैं। हिरण का शिकार करते समय, वे अपने साथ 'फ्लैंकर' भेजते हैं, जो शिकार से आगे दौड़ते हैं और बाद में उस पर हमला करते हैं। तीस या उससे अधिक के बड़े झुंड में, ये जानवर निडर शिकारी होते हैं और किसी भी बाघ या तेंदुआ को घेरकर, हमला करके, सचमुच टुकड़े-टुकड़े कर मार डालते हैं, भले ही इस प्रक्रिया में उन्हें कितना भी नुकसान क्यों न उठाना पड़े।

विशेषकर मद्रास की पूर्व प्रेसीडेंसी के चित्तूर जिले के जंगलों में, बाघों ने इस मामले में काफी बदनामी हासिल की है, और मुझे कम से कम तीन ऐसे मामले पता हैं जहाँ भयंकर लड़ाई हुई, जिसके परिणामस्वरूप बाघ के टुकड़े-टुकड़े हो गए, लेकिन इससे पहले उसने आधा दर्जन कुत्तों को मार डाला था और कई अन्य को घायल कर दिया था। मैंने कभी किसी पैंथर को इस तरह मरते हुए नहीं देखा, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, वे पेड़ों पर चढ़कर भागने में सक्षम होते हैं।

बाघ को पानी बहुत पसंद होता है और वह बड़ी-बड़ी नदियों को आसानी से

तैरकर पार कर लेता है। खासकर गर्मी के मौसम में, दोपहर के समय वह किसी छायादार नदी या तालाब के किनारे झपकी लेना बहुत पसंद करता है, कभी-कभी तो पानी में ही लेट जाता है। वह बरसात के दिनों में भी बेफिक्र होकर शिकार करता है, और अक्सर तेज बारिश के बाद अगली सुबह उसके पदचिह्न दिखाई देते हैं। लेकिन पैंथर के साथ ऐसा नहीं है। हर मायने में एक असली बिल्ली की तरह, उसे पानी से नफरत है, बारिश से घृणा है, और वह तैरना नहीं जानता, हालांकि आपातकालीन स्थिति में, जैसे जंगली कुत्तों के झुंड से बचने के लिए, वह तैर सकता है।

बाघ मूल रूप से मंगोलिया के ठंडे क्षेत्रों से भारत में आया था। इसीलिए उसे गर्मी से बचने के लिए ठंडी जगहें पसंद हैं। तेंदुआ भारत और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है।

बाघ कभी-कभार ही सांभर की आवाज़ की नकल करते हैं, जाहिर तौर पर उन्हें आकर्षित करने और घात लगाकर हमला करने के लिए। ऐसी नकल बहुत कम ही सुनने को मिलती है और केवल उन जंगलों में जहाँ हिरण बहुतायत में पाए जाते हैं। हालाँकि, पैंथर इस प्रथा का पालन नहीं करते, बल्कि वे पूरी तरह से चुपचाप शिकार का पीछा करने, ज़मीन पर लेटकर बेहद छोटी जगहों में छिपने की क्षमता और अंत में अपने शिकार पर तेज़ी से झपटने पर निर्भर रहते हैं।

पुराने ज़माने के शिकारी अक्सर कहते थे कि बाघ 'सज्जन' होता है, जबकि पैंथर 'उछल-कूद करने वाला'। मुझे लगता है कि ये कहावतें उन अनुभवी और मंझे हुए शिकारियों के अनुभवों से लोकप्रिय हुई हैं, जिन्होंने दोनों प्रजातियों के घायल जानवरों का पीछा करते हुए, अक्सर मजल-लोडर जैसी पुरानी बंदूकों से उन्हें सबक सिखाया है। वाकई, उन्हें सलाम! उन दिनों के फैशन के हिसाब से कम हथियारों और बेढंगे कपड़ों में, भारी बूट और मोटी टोपी पहने हुए, वे निडर होकर घायल जानवर का पीछा करते थे। आज के शिकारी से कितना अलग! जो रात में कार की सुरक्षित जगह से गोली चलाता है, जिसकी रोशनी बेचारे जानवर को चकाचौंध कर देती है और उसे बचने का ज़रा भी मौका नहीं देती!

एक घायल बाघ आमतौर पर अपने पीछा करने वाले के पास आने पर गुर्राकर अपनी मौजूदगी का पता दे देता है, लेकिन एक घायल पैंथर अक्सर चुपचाप और छुपकर बैठा रहता है और शिकारी के गुजर जाने के बाद उस पर पीछे से हमला करता है। इसलिए पैंथर को 'बदमाश' कहने वालों की बात में कुछ सच्चाई नजर आती है।

दरअसल, बाघ आमतौर पर कहीं ज्यादा बहादुर और निश्चित रूप से कहीं ज्यादा ताकतवर होता है, और जब वह मारने के इरादे से हमला करता है तो वह अपना काम पूरी तरह से अंजाम देता है। हालांकि, एक पैंथर—जब तक कि वह आदमखोर न हो—अपने पीछा करने वाले को बुरी तरह घायल कर देता है और फिर भाग जाता है, बजाय उसे सीधे मारने के।

पैंथर अपने शिकार की हड्डियों को कुतरते हैं, भले ही वे बहुत सड़ चुकी हों। आमतौर पर, बाघ दूसरे दिन के बाद अपने शिकार के पास नहीं जाते। एक तो वे बहुत अधिक खाते हैं और दो-तीन बार के भोजन के बाद उनका सारा खाना खत्म हो जाता है। दूसरा कारण यह है कि वे साफ-सफाई से भोजन करते हैं। सड़ा हुआ मांस दोनों प्रजातियों के पंजों के नीचे फंस जाता है। इससे खतरनाक कीटाणु पनपते हैं और इनके काटने से ज़्यादा इनके खरोंच ही रक्त विषाक्तता का कारण बनते हैं। बाघ अपने पंजों के नीचे फंसी इस गंदगी के प्रति बहुत सजग रहते हैं और कुछ पेड़ों की मुलायम छाल पर खरोंच कर अपने पंजों को साफ करते हैं और उन्हें तेज भी करते हैं। पैंथर ऐसा बहुत कम करते हैं, इसलिए उनके पंजे आमतौर पर ज़्यादा संक्रमित होते हैं। छह या सात फीट की ऊंचाई पर ऐसे पंजे के निशान वाले पेड़, जहां बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने अगले पंजों के पंजे साफ करता है, शिकारी के लिए अपने शिकार की उपस्थिति का एक शुभ संकेत होता है।

अन्य मायनों में भी, बाघ कहीं अधिक साफ-सुथरा भोजन करता है। जहाँ एक तेंदुआ अपने शिकार के पेट की तरफ से छेद करके अपना भोजन शुरू करता है, और जल्द ही पेट, आंतें, अपशिष्ट पदार्थ आदि सब कुछ उसके शिकार के मांस में मिल जाते हैं, वहीं बाघ गुदा के पास एक छेद बनाता है जिसमें वह अपना पंजा डालता है और आंतों और पेट को बाहर निकालता है, उन्हें लगभग दस फीट दूर घसीटता है और फिर साफ भोजन करना शुरू करता है। इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए, वह अक्सर जानवर की पूंछ को जड़ के पास से काटकर अलग कर देता है। जंगलों में पाए जाने वाले बड़े तेंदुआ कभी-कभी ऐसा ही करते हैं, लेकिन सामान्य और छोटे जानवर कभी नहीं करते, जो जल्द ही खुद को ऐसे भोजन में मिला लेते हैं जिसमें आंतें और मल सब कुछ शामिल होता है।

एक बाघिन और उसके शावकों की गुफा या मांद, पैंथर के परिवार द्वारा बसे हुए स्थान की तुलना में बहुत साफ-सुथरी रखी जाती है, और स्पष्ट रूप से हड्डियों और

अन्य अपशिष्ट पदार्थों से मुक्त प्रतीत होती है जो लगभग हमेशा पैंथर के रहने वाले स्थानों पर मौजूद होते हैं।

प्रजनन के मौसम को छोड़कर, बाघ जंगल में अपनी उपस्थिति का संकेत पैंथर की तुलना में कहीं अधिक देते हैं। भारत के जंगलों में रहने वाली आदिवासी जनजातियाँ इस बात की पुष्टि करेंगी और आपको शिकार के दौरान बाघों द्वारा आमतौर पर अपनाए जाने वाले रास्तों की दिशा बताएँगी। उनकी मधुर, गहरी और धीमी कराह, जो उस अविस्मरणीय 'ऊ-ऊ-ओंग' ध्वनि में समाप्त होती है, जो विशाल वन वृक्षों के नीचे घोर अंधेरे में या चमकीली चाँदनी में घाटियों और घने जंगलों में गूंजती है, जंगल प्रेमी के कानों को संगीत की तरह लगती है। पैंथर की कर्कश लेकिन कम दूर तक सुनाई देने वाली आवाज, जो लकड़ी काटने वाले आदमी की आवाज से काफी मिलती-जुलती है, कभी-कभी जंगल की रात के सन्नाटे को भेदती है, और बहुत कम सुनाई देती है।

बाघ की एक और अनोखी आदत है शिकार के दौरान एक खास रास्ते पर चलना। यह रास्ता मीलों लंबा, शायद सौ मील तक भी हो सकता है; लेकिन यह हमेशा एक ही मार्ग पर चलता है; शायद किसी सूखे नाले के तल पर, किसी नदी या नाले के किनारे, किसी जंगल वाली घाटी से होते हुए या किसी पहाड़ी की ढलान पर। पसंदीदा रास्ते पर आपको शिकार करते हुए बाघ के पदचिह्न धूल में छपे हुए मिल सकते हैं; और एक बार उन्हें ढूंढ लेने पर, यकीन मानिए कि वे फिर से दिखाई देंगे। कुछ दिन बीत सकते हैं, जो हफ्तों, एक महीने या उससे भी अधिक समय तक बढ़ सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसने कितना रास्ता तय किया है; लेकिन आप लगभग निश्चित हो सकते हैं कि बाघ उस रास्ते से फिर से गुजरेगा। वह शायद ही कभी उसी रास्ते से लौटता है, बल्कि एक विशाल चक्कर लगाता है, उसी जगह पर वापस आता है जहां आपको उसके पदचिह्न मिले थे और फिर उसी दिशा में आगे बढ़ जाता है।

अपने क्षेत्र में गश्त के दौरान, यदि वह किसी जानवर को मारने में सफल होता है, तो बाघ उसे पूरी तरह से नष्ट करने तक कुछ दिनों के लिए आसपास ही रहेगा, जिसके बाद वह अपनी यात्रा फिर से शुरू कर देगा।

आदमखोर जानवर की गतिविधियों का अनुमान लगाते समय उसकी इस विशिष्ट आदत को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लगभग कुछ दिनों के भीतर उसी

स्थान पर लौट आता है, जो उसके क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर करता है। मानचित्र पर उसके द्वारा मारे गए जानवरों की संख्या और उनके मारे जाने की तारीखें अंकित करके और फिर कुछ सरल गणना करके आप दिनों की संख्या और उसके क्षेत्र की सीमा का अनुमान लगा सकते हैं।

पैंथर किसी तय पैटर्न का पालन नहीं करता, बल्कि हर जगह मौजूद रहता है। 'दुर्लभ पिम्परनेल' की खोज की तरह, कहीं भी प्रकट होने और उतनी ही अचानक गायब हो जाने की उसकी आदत के कारण, आदमखोर पैंथर की गतिविधियों का अनुमान लगाना लगभग असंभव है। वह अपने शिकार को लेने के लिए बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से प्रकट होता है, और वह भी ऐसे समय और स्थान पर जो सबसे अनुभवी और चतुर शिकारी भी नहीं बता पाते।

इस अध्याय में मैंने आपको 'स्थिर शिकार' के कुछ संकेत देने का प्रयास किया है, साथ ही बड़े मांसाहारी जानवरों की कुछ आदतों और विशेषताओं के बारे में भी बताया है। मैंने जानबूझकर ऐसे मौकों पर मेरे द्वारा मारे गए जानवरों के उदाहरणों का वर्णन नहीं किया है, क्योंकि मुझे लगता है कि उनमें आपकी रुचि नहीं होगी। आखिरकार, खेल का मज़ा तो इन जानवरों के खिलाफ अपने कौशल, जंगल के ज्ञान, सहनशक्ति और चतुराई का प्रदर्शन करने और उन्हें उन्हीं के खेल में हराने में है, न कि केवल उन्हें मारने में। वास्तव में, मैं आपको दृढ़ता से सलाह दूंगा कि आप अपने साथ एक कैमरा रखें, और मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इन खूबसूरत जीवों की तस्वीरें लेने तक ही सीमित रहें, न कि उन्हें गोली मारने में। आपात स्थिति में सुरक्षा के लिए अपनी राइफल अवश्य साथ रखें; लेकिन यदि आप प्रलोभन का विरोध कर सकते हैं, तो अनावश्यक हत्या से बचने का प्रयास करें।

हमेशा याद रखें कि एक अच्छी, चतुराई से खींची गई तस्वीर, आपके ड्राइंग रूम की दीवार पर टंगी या फर्श पर सजी किसी भी सजी हुई ट्रॉफी से कहीं अधिक सराहनीय और प्रशंसनीय उपलब्धि है। पहली तस्वीर में आप जानवर को उसकी जीवंत सुंदरता और शक्ति के साथ जितनी बार चाहें देख सकते हैं; जबकि एक सजी हुई ट्रॉफी, किसी टूटे हुए अंडे के छिलके या रेशम के खोल की तरह, कभी खूबसूरत रहे जानवर का मात्र खोखला ढांचा है जो समय और कीड़ों द्वारा धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा।

दो

येल्लागिरी पहाड़ियों का आदमखोर पैंथर

दोपहर का समय था। उष्णकटिबंधीय सूरज आसमान में तेज़ी से चमक रहा था, मानो आग का गोला हो। जंगल उसकी चिलचिलाती गर्मी में शांत और स्थिर पड़ा था। सुबह से चहचहाते पक्षी और बंदर भी अब शांत थे, मानो सुस्त हवा में सो गए हों।

घने वन वृक्षों की गहरी छायाओं के नीचे सुनहरी धूप से कुछ राहत मिल रही थी, हालांकि उस तापमान में छायाएँ भी कांप रही थीं। हवा के जरा से भी हिलने से जंगल की ज़मीन पर बिछी घनी पत्तियों में कोई हलचल नहीं हुई, मानो प्रकृति ने पीले-भूरे रंग की एक सुंदर चादर बिछा रखी हो। मानसून शुरू होते ही, यही सूखी पत्तियाँ सड़ती हुई खाद में बदल जाएँगी, जो समय के साथ-साथ जंगल के अन्य वृक्षों को पोषण देंगी, उन विशाल वन वृक्षों के बहुत बाद भी जिनसे ये गिरी थीं।

घने सन्नाटे में कभी-कभी खोखली सी आवाज़ सुनाई देती थी, जो चरने के लिए जंगल में लाए गए मवेशियों के झुंड के गले में लटकी लकड़ी की घंटियों से आती थी। इन लकड़ी की घंटियों के दो उद्देश्य होते हैं। पहला और मुख्य उद्देश्य है चरवाहों को घनी झाड़ियों में उन जानवरों का पता लगाने में मदद करना जिनके गले में ये घंटियाँ लटकी हैं। दूसरा उद्देश्य है किसी भी ऐसे मांसाहारी जानवर को डराना जो घंटियाँ पहनने वालों पर हमला करने की कोशिश करे। अक्सर दूसरा उद्देश्य सफलतापूर्वक पूरा हो जाता है, क्योंकि बाघ और तेंदुआ शंकालु जानवर होते हैं और ऐसे शिकार पर हमला करने से हिचकिचाते हैं जिसके गले में अजीब सी आवाज़ करने वाली लकड़ी की कोई वस्तु लटकी हो। लेकिन कभी-कभी यह तरकीब नाकाम भी हो जाती है, जो

उस बाघ या तेंदुआ के स्वभाव पर और उससे भी ज़्यादा उस समय उसकी भूख पर निर्भर करता है।

उस खास दोपहर को एक ऐसा ही अपवाद देखने को मिला। एक मोटा-ताज़ा, भूरा साँप झुंड के किनारे पर चर रहा था, बरगद के पेड़ों की छाँव में घास के बड़े-बड़े टुकड़े चबा रहा था। हर बार जब वह ज़मीन से घास का टुकड़ा तोड़ता, तो अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाकर आसपास के जंगल को निहारता से देखता, जबकि उसके जबड़े लगातार घास चबाते रहते। मानो कुछ भी हलचल नहीं थी और भूरा साँप अपने आप में और दुनिया में पूरी तरह शांत था।

अगर उसने पीछे मुड़कर देखा होता, तो वह इतना आत्मसंतुष्ट नहीं होता। ज़रा भी सरसराहट नहीं हुई, घास का एक गुच्छा हटा और दो द्वेषपूर्ण हरी आँखें दिखाई दीं जो मोटे भूरे बैल को तीव्र लालसा से घूर रही थीं। ये आँखें एक विशाल जंगली तेंदुआ के नर की थीं, और उसका भारी शरीर, जो लगभग एक बाघिन के बराबर था, ज़मीन से सटा हुआ था, उसके रोसेट का रंग घास के विभिन्न रंगों में स्वाभाविक रूप से घुलमिल गया था।

धीरे-धीरे और बिना आवाज़ किए, पैंथर ने अपने पिछले पैरों को खींचकर बैठने की मुद्रा बना ली। उसकी मांसपेशियां तनाव से कांप रही थीं। उसका पूरा शरीर धीरे-धीरे हिल रहा था, ताकि वह आने वाले घातक हमले के लिए संतुलन बना सके।

फिर अचानक, मानो आसमान से बिजली गिरी हो, वह हमला हुआ। पीले और काले धब्बों की एक लकीर की तरह, पैंथर का भारी शरीर हवा में उछला और इससे पहले कि भूरा बैल कुछ समझ पाता, उसके क्रूर पीले दांत उसकी गर्दन में धंस गए। एक पल के लिए बैल ने अपने अगले पैरों को फैलाकर संतुलन बनाए रखने की कोशिश की, चर रहे झुंड के बीच दौड़ने की उम्मीद में। लेकिन सांस रुक जाने और फटे गले से खून बहने के कारण, उसका प्रतिरोध क्षणिक ही रहा। वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा, अपने चारों पैरों से हमलावर को लात मारकर दूर भगाने की कोशिश कर रहा था। पैंथर ने फुर्ती से अपने शरीर को खुरों की पहुँच से दूर कर लिया, लेकिन बैल के गले पर अपनी निर्दयी पकड़ नहीं छोड़ी। घायल जानवर के खुले मुंह से एक घुरघुराहट भरी आवाज निकली, उसके पैर पहले की तरह तेजी से नहीं हिल रहे थे, और फिर उसकी आतंकित आंखें धीरे-धीरे बेजान और भावहीन हो गईं क्योंकि हमले के कुछ ही मिनटों के भीतर उसकी मृत्यु आ गई।

इस प्रकार चरवाहे नाथन ने अपने सबसे अच्छे पशुओं में से एक को खो दिया, क्योंकि बाकी झुंड, मरते हुए बैल की आवाज से घबराकर, सुरक्षा के लिए जंगल से होते हुए उस वन-सीमा की ओर भागा जो अंततः कुछ मील दूर स्थित गांव तक जाती थी।

लेकिन यह नाथन का एकमात्र नुकसान नहीं था। अगले तीन महीनों में उसने अपने चार और मवेशी खो दिए, जबकि उसी गाँव में रहने वाले अन्य दो चरवाहों ने भी दो-दो मवेशी खो दिए। दूसरी ओर, इन हमलों के लिए ज़िम्मेदार पैंथर ने यह निष्कर्ष निकाला, और निस्संदेह काफी हद तक सही भी, कि उसे एक ऐसा इलाका मिल गया है जहाँ भोजन प्रचुर मात्रा में और आसानी से उपलब्ध है। उसने जंगल में शिकार के लिए जाने की बजाय पास में ही रहने का फैसला किया, क्योंकि वैसे भी जंगल में शिकार करना कहीं अधिक कठिन था।

फिर मानसून आया और भारी बारिश के साथ चारों ओर चारागाह उग आया, जिससे मवेशियों के झुंड को चराने के लिए जंगल में ले जाना अनावश्यक हो गया। गाँव के पास और आसपास के कुछ खेतों में घास उग आई, और मवेशियों के झुंड को गाँव के करीब ही रखा जाने लगा जहाँ उनकी बेहतर निगरानी की जा सकती थी।

यह बदलाव जाहिर तौर पर पैंथर को पसंद नहीं आया, और वह और भी साहसी हो गया, क्योंकि परिस्थितियों के चलते उसे नए चरागाहों में झुंडों का पीछा करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

गाँव के आसपास जंगल कम घना हो गया था, जबकि खेत पूरी तरह से वृक्षहीन थे। इससे पैंथर का आना और भी मुश्किल हो गया, और अक्सर चरवाहे उसे अपने जानवरों की ओर रेंगते हुए देख लेते थे। ऐसे मौकों पर वे चिल्लाते, उस पर पत्थर फेंकते और अपने डंडे लहराते। इन हरकतों से वह डरकर भाग जाता था।

फिर उसकी भूख बढ़ गई, उसने पाया कि उसे या तो गांव के झुंडों को शिकार के रूप में पूरी तरह से छोड़ देना चाहिए और जंगलों के जंगली जानवरों का पीछा करने के लिए वापस लौटना चाहिए, या चरवाहों के प्रति अधिक आक्रामक नीति अपनानी चाहिए।

पैंथर ने बाद वाली नीति अपनाने का फैसला किया।

एक शाम वह जितना संभव हो सका, छुपकर आगे बढ़ा और फिर खुलेआम पास की गाय की ओर झपटा। पास ही खड़े दो चरवाहों ने उसे आते देखा। वे चिल्लाए

और लाठियाँ लहराईं, लेकिन उसका हमला तब तक नहीं रुका जब तक उसने अपने नुकीले दांत गाय के गले में नहीं गाड़ दिए। गाय के मरने में कुछ मिनट लगे और चरवाहे वहीं स्तब्ध खड़े रहे। फिर वे उस चित्तीदार हमलावर पर पत्थर और गालियाँ बरसाने लगे, जबकि वह अपने शिकार के अभी भी कांपते हुए शव पर पड़ा था।

जब पत्थरों की गड़गड़ाहट हुई, तो पैंथर ने गाय पर अपनी पकड़ छोड़ दी और खून से लथपथ थूथन से आदमियों पर भयानक गुर्राया, उसका चेहरा विकृत हो गया और उसकी आँखें घृणा से धधक रही थीं। उस भयावह चेहरे और रोंगटे खड़े कर देने वाली गुर्राहट को देखकर चरवाहे भाग गए।

हालात बिगड़ने पर ग्रामीणों ने स्थानीय वनपाल से मदद करने का अनुरोध किया; अन्यथा किसी और से सहायता लेने की बात कही। रामू नाम का वनपाल खुद भी शिकार करता था और उसके पास एक बारह बोर की सिंगल बैरल वाली ब्रीच-लोडिंग बंदूक थी। यद्यपि सरकार के प्रतिनिधि के रूप में शिकारियों पर लगाम लगाना उसका कर्तव्य था, फिर भी वह पानी के स्रोतों और नमक के टीलों पर थोड़ी-बहुत अवैध शिकार करता रहता था। उसका शिकार विभिन्न प्रकार के हिरण होते थे जो इन स्थानों पर आते थे, या कभी-कभार कोई जंगली सूअर। जहाँ तक संभव होता, वह अपने अधीनस्थों, वन रक्षकों को इन गुप्त गतिविधियों के बारे में नहीं बताता था, लेकिन जब यह संभव नहीं होता था, तो वह अपने द्वारा मारे गए जानवर की एक स्वादिष्ट टांग उन्हें देकर और रेंज अधिकारी को इसके बारे में एक शब्द भी बताने पर उन्हें गंभीर धमकी देकर रक्षकों की चुप्पी सुनिश्चित करता था। इन सभी सावधानियों के बावजूद, रेंज अधिकारी को रामू के इस शौक के बारे में पता चल ही गया था। वह एक कर्तव्यनिष्ठ युवा अधिकारी था, जो वन्यजीव संरक्षण की सरकारी नीति का पालन करने के लिए उत्सुक था, और उसने अपने अधीनस्थ को रंगे हाथों पकड़ने की कोशिश की। लेकिन वह अब तक अपने आधिकारिक रिकॉर्ड को बेदाग रखने में कामयाब रहा था। शायद वह बहुत चालाक था, या गार्डों को दी गई उसकी धमकियाँ इतनी खौफनाक थीं कि रेंज ऑफिसर (आर.ओ.) अभी तक सफल नहीं हो पाया था।

अब तक रामू ने किसी भी बड़े मांसाहारी जानवर पर अपने हथियार का इस्तेमाल नहीं किया था, और जब ग्रामीणों ने पैंथर को मारने में मदद के लिए उससे संपर्क किया, तो वह इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए बहुत उत्सुक नहीं था। लेकिन ग्रामीणों ने अपना अनुरोध जारी रखा, और जल्द ही रामू को यह स्पष्ट हो गया

कि उसकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी है, क्योंकि वह गांव आने के लिए बहुत व्यस्त होने या गोला-बारूद खत्म हो जाने जैसे अस्पष्ट बहाने बनाकर अनिश्चित काल तक देरी नहीं कर सकता था।

इसलिए रामू एक सुबह अपने हथियार के साथ गांव पहुंचा। उसे संकट का संभावित रक्षक मानकर उसका स्वागत किया गया और उसने तुरंत इस बात का पूरा फायदा उठाते हुए ग्रामीणों द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोजन किया। एक गिलास कॉफी पीने के बाद, उसने संतुष्टि से डकार ली और घोषणा की कि वह अपने आने वाले काम को निपटाने से पहले एक घंटे की झपकी लेगा।

रामू कुछ घंटों बाद जागा, तब तक दोपहर हो चुकी थी। उसने मुखिया से चारे के रूप में एक बकरी देने की मांग की। ऐसा किया गया और रामू पांच-छह ग्रामीणों के साथ जंगल की ओर चल पड़ा।

उस क्षेत्र के प्रभारी वनपाल होने के नाते, रामू उस इलाके से भली-भांति परिचित थे और उन्होंने अपने मचान के लिए पेड़ का चुनाव भी कर लिया था। यह एक विशाल बरगद का पेड़ था, जो गाँव से आने वाले रास्ते और जंगल की आग बुझाने वाली रेखा के मिलन बिंदु पर सुविधाजनक रूप से उग रहा था। संयोगवश, एक नाला भी उसी स्थान के पास आग बुझाने वाली रेखा को काटता था। पैंथर इन तीनों रास्तों से होकर गुजरता था, जैसा कि उसके बार-बार पड़ने वाले पदचिह्नों से स्पष्ट था, इसलिए रामू का चुनाव वास्तव में बुद्धिमानी भरा था; क्योंकि यदि पैंथर आग बुझाने वाली रेखा के साथ-साथ चलता या नाले से ऊपर आता, तो रामू को उसकी बकरी अवश्य दिख जाती, जबकि वह स्वयं मचान में बैठकर इन दोनों रास्तों के ऊपर और नीचे, साथ ही गाँव की ओर जाने वाले रास्ते के कुछ हिस्से को भी देख सकता था।

फिर, रामू ने अपने साथ आए ग्रामीणों को उस पेड़ पर जमीन से लगभग बीस फीट ऊपर एक मचान बनाने का निर्देश दिया, और स्वयं छिपने की कला में निपुण होने के कारण, उसने इसे पत्तियों से चतुराई से छिपा दिया, ताकि यह पैंथर की नजर में बिल्कुल भी न आए।

उस शाम चार बज चुके थे, तब जाकर काम पूरा हुआ। रामू मचान पर चढ़ा और फिर बकरी को रस्सी से उसके गले में बांधकर जमीन में गाड़े गए एक खंभे से जोड़ दिया गया।

जब ग्रामीण चले गए, तो बकरी ने खुद को अकेला पाकर गाँव के रास्ते की ओर

देखा और जोर-जोर से मिमियाने लगी। परिस्थितियाँ बिल्कुल अनुकूल थीं, और पैंथर ने बकरी की आवाज सुनी और लगभग छह बजे, जब तक रोशनी अच्छी थी, उस पर झपट्टा मारा। रामू ने अपनी बंदूक में एल.जी. कारतूस भर रखा था, जिसे उसने पैंथर पर तब दागा जब पैंथर ने बकरी को उसके गले से पकड़कर जमीन पर गिरा रखा था। एक ज़ोरदार खांसी की आवाज आई; और पैंथर उछलकर झाड़ियों में भाग गया। बकरी, जो पहले से ही दम घुटने और गले में लगे घाव से मर रही थी, एक छर्रा उसके कान से होते हुए मस्तिष्क में जा लगा और उसकी तुरंत मौत हो गई।

रामू ने कुछ देर इंतजार किया, फिर बरगद के पेड़ से नीचे उतरा और जल्दी से गांव की ओर लौट गया, जहां उसने लोगों से कहा कि उसे पूरा यकीन है कि उसने पैंथर को गोली मार दी है और उसे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे उसे अगली सुबह मृत पाएंगे।

सुबह होते ही पुरुषों का एक बड़ा दल इकट्ठा हुआ और रामू के नेतृत्व में बरगद के पेड़ के पास गया। वहाँ उन्होंने देखा कि रात के दौरान एक लकड़बग्घे ने बकरी को पूरी तरह खा लिया था। रामू ने उस दिशा की ओर इशारा किया जिधर तेंदुआ कूदा था और सभी पुरुष दल ने मिलकर उसकी तलाश शुरू कर दी। कुछ ही देर में उन्हें झाड़ियों और लैंटाना के पत्तों पर खून के निशान मिले, जिससे पता चला कि उसने वास्तव में तेंदुआ को निशाना बनाया था। लेकिन तेंदुआ का कोई निशान नहीं मिला, हालांकि दल ने एक मील से अधिक दूर तक निशान का पीछा किया, लेकिन अंत में वह निशान गायब हो गया।

इसके बाद दो महीने तक मवेशियों या बकरियों पर कोई नया हमला दर्ज नहीं किया गया, और रामू सहित सभी को यकीन था कि पैंथर किसी झाड़ी में चला गया होगा और मर गया होगा।

फिर एक शाम, लगभग 16 साल का एक लड़का उसी जंगल के रास्ते गाँव लौट रहा था। वह अकेला था। एक मोड़ पर आते ही उसने लगभग बीस गज की दूरी पर एक पैंथर को अपने पिछले पैरों पर बैठा हुआ देखा, जो सीधे उसकी ओर देख रहा था। वह वहीं रुक गया, यह सोचकर कि पैंथर आम पैंथरों की तरह चला जाएगा। लेकिन इस पैंथर ने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय, उसने अपनी स्थिति बदल ली और दुबक कर बैठ गया और भयंकर रूप से गुर्राने लगा।

लड़का मुड़कर उसी रास्ते भागा जिससे वह आया था, और पैंथर उसका पीछा

करने लगा। सौभाग्य से, जिस जगह उसने लड़के को पकड़ा, वहाँ जंगल की सीमा के पार सड़ी हुई लकड़ी का एक टुकड़ा पड़ा था। जैसे ही पैंथर उसकी पीठ पर कूदा और गर्दन के पास उसके कंधे को काट डाला, वजन से लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा, और गिरते समय उसने सड़ी हुई लकड़ी का टुकड़ा देखा। भय और हताशा ने उसके हाथों को ताकत दी और उसके दिमाग को असाधारण तेज़ी दी। लकड़ी को पकड़कर, वह एक तरफ लुढ़का और उसका सिरा पैंथर के मुंह में ठूंस दिया। इससे पैंथर ने अपनी पकड़ छोड़ दी, लेकिन इससे पहले कि वह छोड़ता, उसने अपने पंजों से लड़के की बांह और जांघों को बुरी तरह खरोंच दिया था। अपने पैरों पर उछलकर, लड़के ने फिर से उस पर हमला किया; अपने शिकार के इस अप्रत्याशित प्रतिशोध से पैंथर का हौसला टूट गया और वह झाड़ियों में कूद गया। अभी भी उस लकड़ी को पकड़े हुए जिसने उसकी जान बचाई थी, और सीने, पीठ, बांहों और पैरों से खून बह रहा था, लड़का लड़खड़ाते हुए गांव की ओर भागा।

यह किसी इंसान पर किया गया पहला हमला था। अगला हमला लगभग तीन हफ्ते बाद हुआ, और इस बार पैंथर भागा नहीं। हुआ यूं कि एक बकरी चराने वाला अपने जानवरों के साथ लौट रहा था, तभी एक पैंथर ने उन पर हमला कर दिया और एक बकरी को पकड़ लिया। चरवाहा गरीब था और उसके सारे धन का प्रतीक उसका झुंड था। इसलिए उसने अपनी बकरी को बचाने की कोशिश की और पैंथर पर चिल्लाया, जो उसकी ओर दौड़ रहा था और अपनी लाठी घुमा रहा था। यह बहादुरी भरा कदम था, लेकिन मूर्खतापूर्ण भी, क्योंकि उसे पता था कि आस-पास ही एक पैंथर है जिसने कुछ ही देर पहले बिना किसी उकसावे के एक इंसान पर हमला किया था। उसे अपनी इस मूर्खतापूर्ण बहादुरी की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी, क्योंकि पैंथर ने बकरी को छोड़कर उस पर छलांग लगाई और अपने जबड़े से उसका गला कसकर पकड़ लिया।

बकरियां गांव की ओर वापस भाग गईं। जब उन्होंने देखा कि उनके साथ कोई चरवाहा नहीं लौट रहा है, तो कुछ ग्रामीणों को आश्चर्य हुआ कि क्या हुआ होगा, लेकिन उन्होंने फिलहाल इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। बाद में पता चला कि वह चरवाहा अकेला था और उसका कोई रिश्तेदार नहीं था, इसलिए लगभग एक घंटा बीत गया और शाम होने लगी, तब जाकर लोगों ने उसकी अनुपस्थिति को एक तथ्य के रूप में स्वीकार किया और यह स्पष्ट हुआ कि उसके साथ कुछ हुआ है। तब तक

बहुत देर हो चुकी थी और कुछ नहीं किया जा सकता था।

अगली सुबह लगभग तीस लोगों का एक दल लाठियों और डंडों से लैस होकर गाँव से निकला और बकरी चराने वाले को खोजने की कोशिश करने लगा। वे गाँव से जंगल की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े। पिछली शाम गाँव लौटते समय बकरियों के झुंड के खुरों के निशान रास्ते पर साफ़ दिखाई दे रहे थे। वे थोड़ा और आगे बढ़े और वहाँ उन्हें वह जगह मिली जहाँ पैंथर ने हमला किया था। धूल भरी ज़मीन पर उस विशाल चित्तीदार बिल्ली के पैरों के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे। पैंथर द्वारा अपने शिकार को घसीटकर ले जाने का एक स्पष्ट निशान भी था। जगह-जगह पर आदमी के गले से खून की कुछ बूँदें रिसकर ज़मीन पर गिरी थीं। लेकिन रास्ते से दूर की ज़मीन धूप में सूखकर सख्त हो गई थी और खून सोख चुकी थी, इसलिए उसे ढूँढ़ना मुश्किल था, हालाँकि घसीटने का निशान बिल्कुल साफ़ था।

पैंथर ने अपने शिकार को उस रास्ते से हटा दिया था जिस पर वह आदमी अपनी बकरियाँ चरा रहा था, और शव को घसीटकर जंगल में ले गया था। लेकिन वह अपने शिकार करने की जगह से ज़्यादा दूर नहीं गया था, और लगभग सौ गज की दूरी पर ही ग्रामीणों के एक समूह ने शिकार का शव ढूंढ लिया। छाती और एक जांघ का छोटा सा हिस्सा खाया जा चुका था। इस प्रकार येल्लागिरिस के आदमखोर पैंथर का जन्म हुआ।

येल्लागिरि पर्वतमाला दक्षिणी रेलवे के जलारपेट जंक्शन रेलवे स्टेशन के ठीक पूर्व में स्थित अर्धचंद्राकार पहाड़ियों का एक समूह है। अर्धचंद्राकार पर्वतमाला का खुला भाग जंक्शन से दूर की ओर है, जबकि इसका शीर्ष, स्टेशन से लगभग दो मील की दूरी पर, समुद्र तल से लगभग तीन हजार फीट की ऊंचाई पर अचानक ऊपर उठता है। एक बहुत ही ऊबड़-खाबड़, टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता इस खड़ी ढलान पर ऊपर की ओर जाता है, और कई जगहों पर चट्टानों को चढ़कर ऊपर जाना पड़ता है।

कई साल पहले—दरअसल 1941 में—मैंने इस पहाड़ी की चोटी पर एक छोटा सा खेत खरीदा था। मेरा इरादा इस खेत को, जो बैंगलोर से लगभग पचानवे मील दूर है, सप्ताहांत विश्राम स्थल के रूप में रखने का था, लेकिन मुझे नियमित रूप से वहां जाने का समय नहीं मिल पाता था। परिणामस्वरूप, खुली ज़मीन पर तेज़ी से बढ़ने वाली लैंटाना झाड़ी का अतिक्रमण होने लगा था।

मैंने लैंटाना को हटाने के काम की निगरानी करने के लिए लगभग तीन दिनों के

लिए इस जगह पर आने का फैसला किया था, और जब मैं वहाँ पहुँचा तो संयोग से बकरी चराने वाले की मृत्यु के कुछ दिन बाद का समय था। काम के लिए मैंने जिन कुलियों को रखा था, उन्होंने मुझे उस पैंथर के बारे में बताया, जिसके बारे में किसी भी अखबार में कोई खबर नहीं छपी थी। उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि वह अभी भी गाँव के आसपास मंडरा रहा है, क्योंकि उन्होंने ठीक एक दिन पहले ही उसके पदचिह्न फिर से देखे थे।

यह खबर मुझे दिलचस्प लगी और मैंने सोचा कि क्यों न उस जानवर को मारने की कोशिश की जाए। मैं अपनी दोनों राइफलें साथ नहीं लाया था, सिर्फ अपनी बारह बोर की शॉटगन लाया था, क्योंकि येल्लागिरिस में जंगली मुर्गे बहुतायत में पाए जाते हैं और जितनी बार भी मैं वहाँ गया था, हर बार खाने के लिए दो-तीन मुर्गे मार गिराए थे। इसके अलावा, इसी उद्देश्य से मैं अपने साथ आपात स्थिति के लिए सिर्फ दो एल.जी. कारतूस लाया था, बाकी नंबर छह के कारतूस जंगली मुर्गों के लिए थे। इसलिए मुझे पैंथर को सिर्फ उन्हीं दो एल.जी. कारतूसों से मारना था।

दोपहर के करीब मैंने लैंटाना पर काम रोक दिया और मजदूरों के साथ इलाके का जायजा लेने वापस चला गया। स्थिति वैसी ही थी जैसा मैंने अनुमान लगाया था। जंगल एक संकरी पट्टी में बदल गया था जिसमें लैंटाना उगी हुई थी और वह पट्टी गांव की सीमा से लगे कुछ खेतों पर आकर खत्म हो जाती थी। इन्हीं खेतों में से एक के अंत में एक पगडंडी पर एक पैंथर के पदचिह्न साफ दिखाई दे रहे थे—उसके पंजों को देखकर लग रहा था कि वह काफी बड़ा वयस्क नर पैंथर था। वह पिछली रात ही उस रास्ते से गुजरा था।

मैं गाँव गया और वहाँ के पटेल (मुखिया) से अपना परिचय दिया, जिनसे मैं पहले कभी नहीं मिला था, और उन्हें बताया कि मैं वहाँ कैसे पहुँचा। उन्होंने मेरी उपस्थिति पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और हर संभव सहयोग का वादा किया। हमारी बातचीत हुई और मैंने पटेल को बताया कि मैं पैंथर के खिलाफ अपने अभियान के शुरुआती चरण में चारा के रूप में इस्तेमाल करने के लिए एक बकरी खरीदना चाहता हूँ।

और यहीं पर पटेल के सहयोग की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि उनके गाँव में कोई बकरी उपलब्ध नहीं थी। बड़ी मुश्किल और देरी के बाद वे मेरे लिए पास के एक छोटे से गाँव से एक बकरी ला पाए, जो इतनी छोटी थी कि बाँधने पर मिमियाती थी। पटेल

स्वयं मेरे साथ आए, और उनके साथ चार अन्य लोग भी थे, जिनमें से एक बकरी को आगे ले जा रहा था, और बाकी लोग कुल्हाड़ी लिए हुए थे जिनसे मचान बनाया जा सके।

वे मुझे उसी रास्ते से वापस उस जगह ले गए जहाँ चरवाहे पर हमला हुआ था, और अंत में उस स्थान पर जहाँ उनके अवशेष मिले थे। वह स्थान 'मद्रास काँटे' या 'कोरकापुल्ली' के नाम से जाने जाने वाले इंगा डलसिस पौधे की छोटी-छोटी झाड़ियों से घना आच्छादित था। वहाँ ज़मीन पर बैठना असंभव था, क्योंकि काँटे इतने पास-पास उगे थे कि दो-चार गज की दूरी से आगे किसी भी जानवर को देखना असंभव था। इसलिए हमें मजबूर होकर उसी रास्ते पर लगभग एक चौथाई मील वापस लौटना पड़ा।

वहाँ हमें एक विशाल और घने पत्तों वाला कटहल का पेड़ दिखाई दिया, जिसके घने पत्ते बहुतायत में उग रहे थे और जो मचान बनाने के लिए आदर्श स्थान प्रतीत होता था। पेड़ के मुख्य तने से लगभग आठ फीट की ऊंचाई पर पहली शाखा निकल रही थी। उसके बाद तीसरी शाखा पगडंडी के ऊपर से गुजर रही थी और जमीन से लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई पर सुविधाजनक रूप से दो भागों में बंट रही थी।

इस विभाजन के पार मैंने अपने अनुयायियों को मचान बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने सबसे पहले पास के पेड़ से छोटी-छोटी शाखाएँ काटकर और पत्तियाँ हटाकर यह काम शुरू किया। फिर उन्होंने कटी हुई लकड़ियों को विभाजन के पार रखा और जंगल से लाई गई लताओं से उन्हें दोनों भुजाओं से बाँध दिया। इस तरह उन्होंने जल्द ही लगभग चार फुट लंबा और तीन फुट चौड़ा चबूतरा बना लिया। यह मेरे बैठने के लिए पर्याप्त था। अंत में, मचान के चारों किनारों को उन पत्तियों से अच्छी तरह ढक दिया गया जिन्हें उन्होंने मचान का आधार बनाने के लिए काटी गई छोटी शाखाओं से निकाला था। हमने चबूतरे के आधार को भी पत्तियों से अच्छी तरह ढक दिया, ताकि आसपास कहीं भी, किसी भी कोण से, या यहाँ तक कि ठीक नीचे खड़े किसी भी तेंदुआ को मचान पर बैठे व्यक्ति का कुछ भी दिखाई न दे, और न ही कुछ ऐसा दिखाई दे जो उसे अनावश्यक रूप से संदेह पैदा करे।

मैंने एक आदमी से लकड़ी का एक टुकड़ा लेकर एक नुकीला खूंटा बनवाया, उसके एक सिरे को थोड़ा नुकीला किया और फिर उसे मचान से लगभग बीस फीट की दूरी पर एक बड़े पत्थर से सख्त जमीन में गाड़ दिया, इस बात को ध्यान में रखते

हुए कि मैं एक शॉटगन का इस्तेमाल कर रहा था।

जब सब कुछ तैयार हो गया, तो मैं खुद मचान पर चढ़ गया और पत्तों में एक छेद बनाया ताकि खंभे की ओर मुंह करके बैठ सकूँ और बकरी और उसके आसपास की ज़मीन का एक छोटा सा हिस्सा साफ दिखाई दे। जब तक हम तैयार हुए, शाम के लगभग पाँच बज चुके थे।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, मैं येल्लागिरिस में बड़े शिकार के लिए नहीं आया था, इसलिए मैं अपना रात्रि उपकरण, यानी राइफल की नली पर लगाने वाली मशाल नहीं लाया था। इसके बजाय, मैं एक छोटी सी दो-कोशों वाली मशाल लाया था जिसका उपयोग मैं केवल शिविर में करता था। इसकी रोशनी बहुत कम फैलती थी और मेरे वर्तमान कार्य के लिए बिल्कुल अपर्याप्त थी। इसके अलावा, इसमें कोई क्लैंप न होने के कारण, मुझे मशाल को अपने बाएं हाथ में पकड़कर बंदूक की नली के पास रखना पड़ता। स्थिति अच्छी नहीं थी, क्योंकि मैं महीने के अमावस्या वाले समय में आया था और अंधेरे में पैंथर की उपस्थिति और उसके सटीक स्थान का अनुमान लगाने के लिए मुझे केवल आवाज़ों और अपनी इंद्रियों पर निर्भर रहना पड़ता, यदि वह दिखाई देता।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, मैं मचान पर बैठ गया और जितना हो सके आराम से बैठ गया। फिर मैंने आदमियों को बकरी को खंभे से बांधने और आपस में जोर-जोर से बातें करते हुए गाँव वापस जाने का निर्देश दिया। इससे न केवल बकरी उन्हें जाते हुए देखकर मिमियाने लगेगी, बल्कि अगर कोई तेंदुआ आस-पास कहीं देख रहा हो, तो उनके शोरगुल भरे जाने और बकरी की मिमियाहट से वह जल्दी बाहर आकर खाना खाने के लिए मजबूर हो जाएगा।

निर्देशानुसार, उन आदमियों ने बकरी को खंभे से बांध दिया और जोर-जोर से बातें करते हुए गांव की ओर वापस चलने लगे। बकरी ने तुरंत खंभे से बंधी रस्सी को खींचना शुरू कर दिया और इतनी जोर से और लगातार मिमियाने लगी कि मैंने मन ही मन पटेल को उनके द्वारा चुने गए चारे के लिए बधाई दी। मुझे यकीन हो गया कि अगर पैंथर इस बकरी के एक मील के दायरे में कहीं भी होता, तो वह इसकी आवाज जरूर सुनता और अपने शिकार की ओर तेजी से बढ़ता।

लेकिन मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। बकरी लगातार और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती रही, इतनी ज़ोर से कि सूरज डूबने तक उसकी आवाज़ पूरी तरह बैठ गई

और उसकी चीखें कर्कश फुसफुसाहट में बदल गईं। शाम ढलते-ढलते बकरी की आवाज़ इतनी बैठ गई कि मानो उसने हार मान ली हो और खुले में रात बिताने का निश्चय कर लिया हो। अपने अगले पैरों को पहले मोड़कर, वह ज़मीन पर बैठ गई और सो गई। अब मुझे पता था कि पैंथर के बकरी को ढूंढने की संभावना बहुत कम थी, जब तक कि वह सचमुच वहाँ से न गुज़रे और उसे अचानक न देख ले। फिर भी, मैंने लगभग नौ बजे तक इंतज़ार करने और अपनी किस्मत आज़माने का फैसला किया।

अगले ढाई घंटे जंगल में बिताए गए उन कई घंटों की तरह ही थे, जो मैंने पहले भी इसी तरह की परिस्थितियों में बिताए थे। जंगल के पक्षियों की आवाज़ें, कम से कम दिन के समय की आवाज़ें, बहुत पहले ही शांत हो चुकी थीं। केवल कभी-कभार सुनाई देने वाली आवाज़ 'हर्डबॉय' पक्षी की विशिष्ट धीमी सीटी जैसी थी। यह एक भूरे रंग का रात्रिचर पक्षी है, जिसकी लंबाई लगभग आठ इंच होती है। इसकी धीमी लेकिन तीखी आवाज़ बिल्कुल वैसी ही होती है जैसी चरवाहे अपने मवेशियों को जंगल में चराते समय उन्हें एक साथ रखने के लिए निकालते हैं। इसीलिए इसका नाम 'मत-पाया कुर्वी' है, या कहें तो इसका तमिल मूल नाम 'मत-पाया कुर्वी' है, जिससे यह पूरे दक्षिण भारत में जाना जाता है। संयोगवश, यह पक्षी केवल जंगली क्षेत्रों या उनके आस-पास के इलाकों में ही पाया जाता है, क्योंकि मैंने इसे कभी भी खेती वाले क्षेत्रों में नहीं देखा है।

मैं आपको इससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सकता, सिवाय इसके कि रात 9:15 बजे मैंने निगरानी छोड़ देने का फैसला किया। मैंने बकरी की तरफ टॉर्च की रोशनी डाली, लेकिन रोशनी सोए हुए जानवर तक मुश्किल से ही पहुँच रही थी, जिसे मैं बस एक धुंधली सी आकृति के रूप में देख पाया, तभी मैंने उसे उठते हुए सुना। अगर पैंथर ने उस बकरी पर हमला किया होता तो मैं उसे ठीक से देख नहीं पाता, इसलिए मैंने खुद को यह सोचकर तसल्ली दी कि शायद अच्छा ही हुआ कि पैंथर नहीं आया।

पेड़ से नीचे उतरकर मैंने बकरी को खोला और उसकी पीठ पकड़कर वापस गांव चला गया, जहां मैंने उसे मचान बनाने में मदद करने वाले एक आदमी के पास छोड़ दिया और उसे अगले दिन तक उसकी देखभाल करने का निर्देश दिया।

अगली सुबह मैं पैंथर के बारे में और अधिक जानकारी जुटाने के लिए गाँव लौट आया। लेकिन मुझे इस कहानी की शुरुआत में बताई गई बातों के अलावा और कुछ नहीं पता था, जिन्हें मैंने धीरे-धीरे जोड़कर समझा। किसी को ठीक से नहीं पता था कि

पैंथर कहाँ से आया था और कोई भी यह नहीं बता सका कि वह किस इलाके में रह रहा होगा।

अगले तीन दिन मेरी ज़मीन पर काम में बीत गए, और उन तीनों दिनों की हर शाम मैं उसी मचान में आधी रात से कुछ घंटे पहले तक अलग-अलग बकरियों को चारा बनाकर बैठा रहा। लेकिन उन तीनों शामों में मुझे तेंदुए की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। हर सुबह मैं मचान के आसपास, जंगल की सीमाओं और विभिन्न नदी-नालों में उसकी तलाश करता, लेकिन मुझे उस जानवर के कोई ताज़े पदचिह्न नहीं मिले जिसकी मैं तलाश कर रहा था। इससे पता चलता है कि वह उन रातों में आसपास कहीं नहीं गया था। बहुत संभव है कि वह येल्लागिरी पहाड़ियों के किसी दूरदराज इलाके में चला गया हो।

चौथे दिन सुबह मैंने गांव के पटेल को अपना नाम, पता और एक टेलीग्राम के लिए पैसे सौंपकर बैंगलोर के लिए प्रस्थान किया, जिसे उसे एक संदेशवाहक के माध्यम से जलारपेट रेलवे स्टेशन भेजना था।

एक महीने से अधिक समय बीत गया। कोई टेलीग्राम नहीं आया और मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि पैंथर कोई नियमित आदमखोर नहीं था या शायद येल्लागिरी पहाड़ियों को छोड़कर बीच के खेती वाले मैदानी इलाके को पार करके जावड़ी पहाड़ियों तक फैले विशाल वन क्षेत्र में पहुँच गया था। यह बाद वाला वन क्षेत्र काफी विस्तृत है और येल्लागिरी से बहुत दूर दक्षिण-पूर्व दिशा में तिरुवनमलाई की ओर जाता है, जो एक पवित्र पहाड़ी है जहाँ एक ऐसे ऋषि का निवास है जिनके बारे में कहा जाता है कि उनके पास कई वरदान थे।

मैं पूरी तरह गलत था, जैसा कि बाद में घटित घटनाओं से साबित हुआ।

सात सप्ताह बीतने के बाद वह टेलीग्राम आया, जिसे मैं लगभग भूल ही चुका था। उसमें बताया गया था कि जलारपेट से पहाड़ी पर स्थित विभिन्न गांवों और बस्तियों तक 'टप्पल' या डाक पहुंचाने वाले 'डाकिया' को तेंदुए ने मार डाला था।

मुझे दोपहर तीन बजे के बाद ही टेलीग्राम मिला। फिर भी, जल्दीबाजी करके मैं त्रिचिनोपोली एक्सप्रेस पकड़ने में कामयाब रहा, जो बैंगलोर से सुबह सात बजे निकली और रात 10:30 बजे जलारपेट पहुंची। मैं अपने साथ पेट्रोमैक्स लालटेन लाया था, और उसकी तेज रोशनी में स्टेशन से पहाड़ी पर चढ़कर गांव पहुंचा, जो आठ मील दूर था, रात के 2 बजे से ठीक पहले। आम तौर पर मैं रात में उस ऊबड़-

खाबड़, खड़ी और पत्थरों से ढकी पगडंडी पर जाने की हिम्मत नहीं करता, खासकर जब आसपास आदमखोर पैंथर का खतरा मंडरा रहा हो, लेकिन मुझे पता था कि जब तक पेट्रोमैक्स जल रही है, तब तक सब ठीक रहेगा। मेरी 405 राइफल और उपकरणों से भरा थैला मेरी पीठ पर बंधा था, साथ ही मेरे बाएं हाथ में लटकी हुई लालटेन, इन सबने मिलकर उस खड़ी पगडंडी पर काफी भारी और असुविधाजनक बोझ बना दिया था, और पहाड़ी की चोटी पर पहुंचते-पहुंचते मैं पसीने से भीग चुका था। गांव अभी भी एक मील दूर था, और चलते-चलते ठंडी हवा मेरे गीले कपड़ों को और ठंडा कर रही थी, जो मेरी पीठ पर सूख रहे थे।

मैंने पटेल को जगाया, जिसने बदले में गांव के अधिकांश लोगों को जगा दिया, जिससे पेट्रोमैक्स की रोशनी में सौ सांवले चेहरों और चमकते सफेद दांतों का एक समूह मेरे चारों ओर जमा हो गया।

पटेल ने मुझे भोजन की पेशकश की, जिसे मैंने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया, लेकिन मैंने उनसे कहा कि मुझे कुछ गर्म चाय मिल जाए तो मैं आभारी रहूंगा। चाय जल्द ही तैयार हो गई, और पटेल के पीतल के बड़े बर्तन में चाय की चुस्कियां लेते हुए मैंने उनकी कहानी सुनी।

दरअसल, बताने लायक कुछ खास नहीं था। मेरी पिछली यात्रा के बाद से दिन के समय, खासकर जंगल के आसपास, बाहर निकलते समय सभी लोग बहुत सावधान रहते थे। रात में वे घर के अंदर ही रहते थे। फिर जैसे-जैसे कई सप्ताह बीतते गए और पैंथर का कोई और संकेत नहीं मिला, हमेशा की तरह सतर्कता भी कम होती चली गई।

डाकिया सुबह-सुबह पहाड़ी पर चढ़ता था, लगभग 6 बजे रेलवे स्टेशन के पास स्थित छोटे डाकघर से जलारपेट से निकलता था। सभी डाक ट्रेनें रात में ही गुजरती थीं, जिनमें बैंगलोर, पूर्वी तट पर मद्रास और पश्चिमी तट पर कालीकट से आने वाली ट्रेनें शामिल थीं। येल्लागिरि पहाड़ियों तक डाक का आवागमन अपेक्षाकृत कम था, और पहाड़ी की चोटी के लिए भेजे जाने वाले कुछ ही पत्र या सामान विभिन्न डाक ट्रेनों के कर्मचारियों द्वारा अलग-अलग थैलों में रखे जाते थे और जलारपेट स्टेशन पर उतारे जाते थे। पहाड़ी पर चढ़ने वाला डाकिया इन थैलों को खोलकर उनकी सारी सामग्री अपने कंधे पर टांगे या कभी-कभी सिर पर संतुलित करके ले जाने वाले एक थैले में रखता था।

उसका एकमात्र सुरक्षा कवच—जो सुरक्षा के हथियार से कहीं अधिक पद का प्रतीक और चिह्न था, साथ ही सांपों को डराने का एक यंत्र भी—एक छोटा भाला था, जिसके डंडे पर लोहे के कई छल्ले जड़े हुए थे। वह इस भाले को हाथ में लिए रहता था और हर कुछ कदम पर इसके आधार को ज़मीन पर पटकता था। छल्ले लोहे के डंडे से और आपस में टकराते हुए झनझनाते थे, जिससे वह तेज़ झनझनाहट की आवाज़ निकलती थी जो लगभग सौ वर्षों से पूरे भारत में डाकियाओं के बीच जानी-पहचानी है।

उस मनहूस दिन डाकिया हमेशा की तरह सुबह करीब छह बजे जलारपेट के छोटे से डाकघर से निकला था। लेकिन वह पहाड़ी की चोटी तक कभी नहीं पहुंचा। गांव वाले उसे गांव की मुख्य सड़क से गुजरते हुए उसकी घंटियों की आवाज सुनने और देखने के आदी हो चुके थे। लेकिन उस सुबह उन्हें वह जानी-पहचानी आवाज सुनाई नहीं दी। पूर्वी इलाकों की खास उदासीनता और बेफिक्री के चलते किसी ने भी इस बारे में न तो चिंता की और न ही कुछ सोचा।

दोपहर के भोजन के बाद, कुछ लोग जलारपेट की ओर पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। लगभग एक चौथाई रास्ता तय करने के बाद, उन्होंने चट्टानों पर सूखे खून के धब्बे देखे, जो जंग लगे रंग के थे और एक निशान बना रहे थे। वे रुककर सोचने लगे, तभी एक व्यक्ति की पैनी नज़र ने डाकिया का भाला रास्ते से दूर एक झाड़ी के पास पड़ा देखा। कुछ समझकर, पूरा दल वापस गाँव की ओर भागा। वहाँ उन्होंने पटेल समेत कुछ और लोगों को इकट्ठा किया और अंत में वापस आकर उस बदकिस्मत डाकिया का आधा खाया हुआ शव पाया।

पटेल ने टेलीग्राम लिखकर उसी दल के माध्यम से मुझे जालापेट स्टेशन से भिजवाया था। तमाम अफरा-तफरी के चलते वह अगले दिन शाम तीन बजे के बाद तक मुझ तक नहीं पहुंचा, यानी लगभग चौबीस घंटे की देरी हुई, जबकि जालापेट बेंगलुरु से मात्र 89 मील दूर है। मुझे यह भी सूचना मिली कि जालापेट पुलिस अधिकारियों ने शव को जांच और अंतिम संस्कार के लिए ले लिया है।

जब तक यह सारी बातचीत समाप्त हुई और मैंने पटेल और ग्रामीणों से पैंथर के बारे में आवश्यक सारी जानकारी प्राप्त कर ली, या शायद यह कहना अधिक सही होगा कि पटेल और ग्रामीणों को जो भी जानकारी थी, वह सब मिल गई, तब तक सुबह के चार बज चुके थे। पटेल ने मुझे एक रस्सी का पलंग दिया जिसे मैं गाँव के

बाहरी इलाके में ले गया, जहाँ मैं भोर तक दो घंटे की संक्षिप्त नींद के लिए लेट गया। भोर में मेरी नींद खुली तो जंगल की जानी-पहचानी आवाजों से नहीं, बल्कि दो कुत्तों के जोर-जोर से भौंकने से खुली, जो रस्सी के पलंग पर लेटे हुए मुझे स्पष्ट रूप से संदेह और घृणा से देख रहे थे।

जैसा कि मैंने कहा, येल्लागिरी पहाड़ियों में बहुत अधिक प्राकृतिक जंगल नहीं हैं, और इसलिए यहाँ किसी भी प्रकार के आदिवासी वनवासियों का कोई अस्तित्व नहीं है। मुझे एहसास हुआ कि पैंथर का पता लगाने के लिए मुझे ग्रामीणों और खुद पर ही निर्भर रहना होगा।

उस सुबह मैंने जो सवाल पूछे थे, उनमें से एक सवाल पैंथर के संभावित छिपने की जगह के बारे में था। इसका कोई निश्चित जवाब नहीं मिला था, लेकिन कुछ पशुपालकों ने बताया कि पिछले कुछ हफ्तों में उन्होंने तीन-चार बार दोपहर में 'पेरियामलाई' या 'बड़ी पहाड़ी' नाम की एक पहाड़ी की पथरीली चोटी पर एक पैंथर को धूप सेंकते हुए देखा था। येल्लागिरि पर्वतमाला ऊपर एक पठार बनाती है, और यह पेरियामलाई एकमात्र पहाड़ी है जो पठार से ऊपर उठती है और अर्धचंद्राकार येल्लागिरि पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी है। यह समुद्र तल से लगभग 4,500 फीट ऊपर है।

मैं पटेल के घर गया और उन्हें सोता हुआ पाया, लेकिन वे थोड़ी देर में जाग गए और मुझे पीने के लिए गर्म दूध से भरा एक बड़ा 'चुम्बो' दिया, जो एक गोल पीतल का बर्तन होता है, जो पानी के छोटे बर्तन जैसा दिखता है। फिर मैंने उनसे कहा कि वे उन पशुपालकों को बुलाएँ जिन्होंने पेरियामलाई पर पैंथर को देखा था और उनसे कहें कि वे मेरे साथ पहाड़ी पर चलें और उस खास चट्टान को दिखाएँ जहाँ पैंथर अक्सर देखा जाता था।

इन दोनों व्यक्तियों को मेरे साथ चलने के लिए राजी करने में कुछ समय लगा। वे बिल्कुल अनिच्छुक थे और मैं देख सकता था कि वे निश्चित रूप से डरे हुए थे। हालांकि, पटेल ने उन्हें मनाने के लिए अपने ही तरीके अपनाए, जिनमें इनकार करने पर प्रतिशोध की धमकी देना भी शामिल था, इसलिए अंततः मैं उनके साथ रवाना होने में सफल रहा।

पेरियामलाई गांव से लगभग तीन मील पूर्व में स्थित है और जलारपेट से पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते के विपरीत दिशा में है। कुल मिलाकर, इस पहाड़ी और उस

स्थान के बीच लगभग पाँच मील की दूरी थी जहाँ दुर्भाग्यपूर्ण डाकिया मारा गया था। इसके अलावा, बीच की लगभग सारी ज़मीन खेती योग्य थी। पेरियामलाई को ढकने वाला जंगल येल्लागिरी पर्वतमाला की ढलानों से उत्तर की ओर फैले अर्धचंद्राकार हिस्से की ओर जाता था। मुझे यह देखकर अच्छा नहीं लगा क्योंकि मुझे लगा कि मवेशी चराने वालों ने शायद कोई दूसरा ही तेंदुआ देखा होगा, न कि वह जिसने डाकिया को मारा था।

पेरियामलाई की तलहटी पर पहुँचकर, मेरे दोनों साथियों ने लगभग 300 फीट ऊपर उभरी एक चट्टान की ओर इशारा करते हुए बताया कि उन्होंने कई दोपहरों को वहीं पैंथर को धूप सेंकते देखा था। पहाड़ी की तलहटी से लेकर चट्टान की तलहटी तक और पेरियामलाई के लगभग आधे हिस्से तक, जहाँ से असली जंगल शुरू होता था, घनी लैंटाना झाड़ियाँ उगी हुई थीं। मैं देख सकता था कि, जैसा कि दक्षिण भारत के कई छोटे वन मार्गों के साथ हो रहा था, लैंटाना धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से जंगल पर अतिक्रमण कर रही थी और मूल पेड़ों को दबा रही थी। येल्लागिरी पर्वतमाला की तरह ही, पेरियामलाई भी पत्थरों के ढेर से बनी एक पथरीली पहाड़ी है और लैंटाना के उस विशाल जंगल और चट्टानों के बीच पैंथर को ढूँढना एक असंभव कार्य था, क्योंकि लैंटाना का जंगल अभेद्य था।

इसलिए मैंने पहाड़ी की तलहटी में उगने वाले एक पेड़ के नीचे एक जगह चिह्नित की और उन आदमियों से कहा कि हम गांव वापस जाकर चारा लाएंगे, और उन्हें उसे लेकर वापस आना चाहिए और उसे उस जगह पर बांध देना चाहिए जिसे मैंने चुना था।

इसलिए हम वापस गए और पटेल ने मेरे लिए एक गधा मंगवाया। इस स्थिति में बकरी किसी काम की नहीं होती क्योंकि मेरा इरादा उसके साथ जागने का नहीं था। अगर बकरी मर जाती, तो तेंदुआ उसे एक ही बार में खा जाता और अगली रात उसके वापस आने का कोई कारण नहीं बचता, जबकि गधा इतना बड़ा था कि तेंदुआ पहले भोजन के बाद बचे हुए हिस्से के लिए वापस आ सकता था। इसके विपरीत एक नुकसान यह था कि बकरी अपनी मिमियाहट से तेंदुआ को आसानी से और जल्दी आकर्षित कर लेती, जबकि गधा चुप रहता।

लेकिन मुझे इस बात का भरोसा था कि अगर पैंथर पहाड़ी पर कहीं भी रहता है, तो अपनी ऊँची जगह से वह नीचे ज़मीन पर बंधे गधे को देख सकेगा। इसलिए मैंने कुछ मज़बूत रस्सी उधार ली और चरवाहों को गधे को ऊपर ले जाकर उस जगह पर

बाँधने का निर्देश दिया जो मैंने उन्हें पहले ही बता दी थी।

यह सब हो जाने के बाद, पटेल स्वयं और तीन-चार ग्रामीण मेरे साथ उस जगह को दिखाने आए जहाँ डाकिया की हत्या की गई थी। पता चला कि वह जगह गाँव से लगभग डेढ़ मील दूर थी, ठीक उसी जगह जहाँ जलारपेट से आने वाला रास्ता लैंटाना और चट्टानी टीलों के बीच से गुजरता था। पिछली रात जब मैं लालटेन लेकर पहाड़ी पर चढ़ रहा था, तब मैं खुद उस जगह से गुजरा था, लेकिन लालटेन की रोशनी में खून पर मेरी नज़र नहीं पड़ी थी। निस्संदेह यह अच्छा ही हुआ, वरना मेरी शांति भंग हो जाती।

हमें रास्ते में खून के कुछ सूखे धब्बे दिखाई दिए, और मेरे साथियों ने मुझे पास ही एक जगह दिखाई जहाँ उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को घसीटकर ले जाया गया था और उसका कुछ हिस्सा खा लिया गया था। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, उसके अवशेषों को दाह संस्कार के लिए जलारपेट ले जाया गया था, इसलिए उन्हें वहाँ और रखने से कोई लाभ नहीं था।

पगडंडी से लगभग तीन सौ गज ऊपर एक काजू का पेड़ खड़ा था, और इस पेड़ के नीचे मैंने पटेल से एक और गधे को बांधने के लिए कहा।

फिर हम वापस गाँव की ओर चल पड़े, और मैंने सुझाव दिया कि एक तीसरे गधे को उस जगह बाँध दिया जाए जहाँ झाड़ियाँ गाँव के सबसे करीब हों। पटेल ने एक बार फिर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए दो और गधे मंगवाए और उन्हें अलग-अलग समूहों में बाँटकर मेरी हिदायत के मुताबिक बाँधने के लिए भेज दिया।

यह सब होते-होते दोपहर के एक बज चुके थे, और मुझे एहसास हुआ कि अब मेरे पास आगे की घटनाओं का इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि पैंथर उस रात तीन गधों में से किसी एक को मार डालेगा, बशर्ते कि वह गलती से उसके सामने आ जाए। चूंकि पैंथर ने अब तक कुछ ही इंसानों का शिकार किया था, इसलिए यह स्पष्ट था कि वह मुख्य रूप से दूसरे जानवरों का मांस खाकर ही जीवित था।

पटेल ने मेरे सामने गरमागरम भोजन परोसा, जिसमें चावल और दाल करी थी, साथ में उनके खेत में उगाए गए बैंगन और प्याज भी थे, और लाल मिर्च की भरपूर मात्रा डालकर इसे बेहद तीखा बनाया गया था। मुझे कहना पड़ेगा कि मुझे वह भोजन बहुत पसंद आया, हालांकि मिर्च के कारण मेरे चेहरे से पसीना बह रहा था। यह

देखकर मेरे मेज़बान को बहुत हंसी आई और उन्होंने माफी मांगना शुरू कर दिया, लेकिन मैंने उन्हें यह कहकर रोक दिया कि मुझे ऐसा भोजन वाकई बहुत पसंद आया। इसके बाद खूब सारी कॉफी पी गई, और जब मैं आखिरकार उठा तो बहुत संतुष्ट महसूस कर रहा था।

समय बिताने के लिए मैं अपने छोटे से खेत में गया और बाकी शाम वहीं बिताई। आपको शायद यह जानकर दिलचस्पी होगी कि मेरा यह खेत केवल डेढ़ एकड़ का है, लेकिन यह बहुत ही छोटा और सघन खेत है। यहाँ एक 'मार्किंग-नट' का पेड़ है, जिसके फल से एक काला तरल पदार्थ निकाला जाता है, जिसका उपयोग आमतौर पर धोबी और कपड़े धोने के लिए भेजते समय मालिक के नाम के पहले अक्षर लिखने के लिए करते हैं। एक बार निशान लग जाने पर यह 'स्याही' धुलती नहीं है। तीन 'कटहल' के पेड़ हैं, जो ग्राफ्टिंग द्वारा उगाए गए हैं, और प्रत्येक पेड़ पर दो से बारह पाउंड या उससे भी अधिक वजन के फल लगते हैं। यहाँ कुछ अमरूद के पेड़, कुछ आड़ू के पेड़ और एक सब्जी का बगीचा है। दो मौजूदा इमारतें, जिन्हें कोट्टाई कहा जाता है, मिट्टी की दीवारों वाली हैं और उन पर जंगली घास और 'चोलम' अनाज के डंठलों के मिश्रण से बनी मोटी छप्पर की छतें हैं। इनके सामने एक छोटा सा गुलाब और क्रोटन का बगीचा है। उस समय मेरे पास लगभग तीन दर्जन मुर्गियाँ थीं, जिनमें लेगहॉर्न, रोड्स और ब्लैक माइनोरका शामिल थीं, और कुछ बत्तखें भी थीं। मेरा पीने का पानी एक छोटे से कुएँ से आता है जिसमें मैंने कुछ मछलियाँ डाली थीं, जिन्हें मैं मूल रूप से बैंगलोर से पानी साफ रखने के लिए लाया था। सामने एक छोटी सी धारा बहती है जो मेरी एक सीमा बनाती है, और बाकी तीन तरफ बांस के पेड़ लगे हैं। हालाँकि यह जगह छोटी है, फिर भी बेहद आरामदायक है, और बैंगलोर से रविवार को शांति से घूमने के लिए एक आदर्श स्थान है।

लगभग आधी ज़मीन नीची है और उस नाले से लगती है जिसका मैंने अभी ज़िक्र किया है। मैंने इस छोटी नदी से थोड़ा पानी लेकर 'पेगु चावल' नाम की एक किस्म का काला चावल उगाया है, जिसे मूल रूप से बर्मा से आयात किया गया था। मेरी जानकारी के अनुसार, मेरा खेत दक्षिण भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक था जहाँ उस समय यह काला बर्मा चावल उगाया जाता था। मुझे पता था कि इसे कई जगहों पर बोया गया था, लेकिन किसी न किसी कारण से इसकी खेती सफल नहीं हो पाई थी।

इस फार्म के बारे में एक रोचक तथ्य यह था कि इसके दो कोट्टई में से एक पर उस एंग्लो-इंडियन महिला के भाई का भूत रहता था, जिससे मैंने 1941 में इसे 500 रुपये में खरीदा था; जो अंग्रेजी मुद्रा में लगभग 35 पाउंड के बराबर है। उस व्यक्ति की मृत्यु एक रहस्यमयी बीमारी से हुई थी, जिसके बारे में मुझे बताया गया था कि उसके बाएं हाथ और सीने में अचानक असहनीय दर्द होता था—संभवतः एंजाइना पेक्टोरिस। वह इस छोटे से फार्म से बहुत लगाव रखता था और कहा जाता है कि बंजर भूमि के रूप में इसे खरीदने के बाद उसने वहां पच्चीस साल से अधिक समय बिताया था। फिर उसने इसे अपनी बहन को दे दिया, क्योंकि उसका अपना कोई परिवार नहीं था। हालांकि, कहानी के अनुसार, उसकी मृत्यु के बाद, शाम ढलने के समय अक्सर गांव वाले उसे अपने कोट्टई के सामने खड़े देखते थे। इसके बाद, जाहिर सी बात है, गांव वाले उस जगह से दूर रहने लगे।

मेरी बहन ने मुझे उस कथित भूतिया घटना के बारे में तब तक कुछ नहीं बताया जब तक कि मैंने खेत खरीदकर उप-पंजीयक के सामने बिक्रीनामा पंजीकृत करवाते समय नकद भुगतान नहीं कर दिया। शायद उसे लगा होगा कि 'भूत' की वजह से मैं सौदा रद्द कर दूंगा। फिर उसने बताया कि उसका मृत भाई कभी-कभी रात में दोनों कोट्टई में घूमता था, और उसने उसे कई बार चांदनी रात में गुलाब के पेड़ों की देखभाल करते हुए देखा था, जो उसका खास शौक था। उसने यह भी बताया कि वह 'आत्मा' बिल्कुल हानिरहित थी, कोई आवाज नहीं करती थी, न ही कोई परेशानी पैदा करती थी, और पास जाने पर गायब हो जाती थी।

मैं यह बताना भूल गया कि कोट्टियों के साथ मुझे कुछ बहुत पुराना फर्नीचर भी मिला: प्रत्येक इमारत में एक पलंग, एक टूटी-फूटी ड्रेसिंग टेबल, दो अलमारियाँ और तीन-चार खस्ताहाल कुर्सियाँ। पलंग पुराने ज़माने के थे, जिनमें पट्टियाँ लगी हुई थीं।

मुझे वह पहली रात अच्छी तरह याद है जब मैं एक कोट्टाई में सोया था (संयोग से वही कोट्टाई जिसमें मेरे भाई की मृत्यु हुई थी), क्योंकि वह बरसात की रात थी और दूसरे कोट्टाई की छत टपक रही थी। मैंने बिना गद्दे वाला अपना पलंग लकड़ी के तख्तों से बने पलंग पर बिछाया और सोने के लिए लेट गया। लेकिन तख्ते चुभ रहे थे और मेरे कंधों और पीठ पर दबाव डाल रहे थे। कुछ देर तक नींद न आने पर मैंने सोचा कि ज़मीन पर सोना ज़्यादा आरामदायक होगा। ज़ाहिर है, वहाँ बिजली नहीं थी, इसलिए मैंने एक मोमबत्ती जलाई ताकि पलंग को ज़मीन पर रख सकूँ। मोमबत्ती बुझाकर मैं

सोने के लिए लेट गया। इस बार मैं कामयाब रहा और तुरंत सो गया।

मुझे नहीं पता कि मैं कब जागा। चारों तरफ़ घना अंधेरा था। कोई भारी, ठंडी और चिपचिपी चीज़ हिली और मेरे गले से लग गई, और ऐसा लगा जैसे दो बर्फीली गीली उंगलियाँ मेरी गर्दन के दोनों ओर फैली हुई हों।

मैं कोई कल्पनाशील व्यक्ति नहीं हूँ। मुझे अंधेरे से डर नहीं लगता। न ही मैं अंधविश्वासी हूँ। लेकिन अचानक यादों के सैलाब में मुझे अपने मरे हुए भाई और उसके भूत की याद आ गई, यह भी कि मैंने अपनी टॉर्च खिड़की पर कुछ ही दूरी पर छोड़ दी थी, और यह भी कि मुझे माचिस की डिब्बी कहाँ मिली थी। ये सारे विचार एक साथ आए, और तभी वह ठंडी, चिपचिपी, गीली चीज़ साफ़ तौर पर हिलने लगी और ऐसा लगा जैसे वह अपनी दो फैली हुई उंगलियों को मेरे गले के दोनों ओर और भी कसकर दबा रही हो। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। वहाँ और लेटना नामुमकिन था। जैसे किसी अलौकिक शक्ति से मैं उठ खड़ा हुआ और उस अनजान खिड़की की ओर भागा जहाँ मैंने अपनी टॉर्च छोड़ी थी। अंधेरे में इधर-उधर टटोलते हुए, आखिरकार मुझे वह टॉर्च मिल ही गई। मैंने बटन दबाया, यह उम्मीद करते हुए कि भूत और उसके चिपचिपे हाथ, कब्र से ठंडे होकर, मेरे सामने होंगे! लेकिन वहाँ ज़मीन पर एक ऐसा मेंढक था जो मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा था। एक विशाल, काला, चिपचिपा जीव, लगभग एक फुट लंबा। वह बारिश के कारण झोपड़ी में आ गया था।

इससे पता चलता है कि इंसान की भावनाएं कितनी तीव्र हो सकती हैं। कुछ ही सेकंड पहले मैं अलौकिक और अज्ञात के विचार से बुरी तरह भयभीत था। अब मैं मन ही मन हंस रहा था जब मैंने चप्पल पहने पैर के अंगूठे से मेंढक को कोट्टई के दरवाजे तक पहुंचाया और फिर उसे बारिश में बाहर निकाल दिया।

अगली सुबह तीनों गधे ज़िंदा थे, इसलिए मैंने पूरा दिन अपने खेत में बिताया। पैंथर के बारे में किसी के पास कोई खबर नहीं थी। एक और रात बीत गई और अगली सुबह तीनों गधे ज़िंदा थे। इस बार थोड़ी सी खबर थी। डाकिया की मृत्यु के बाद, डाक को पहाड़ी पर एक के बजाय तीन लोग ले जा रहे थे। दल में मृत डाकिया की जगह आया हुआ नया डाकिया और दो चौकीदार थे, जिन्हें अंगरक्षक के रूप में उसके साथ भेजा गया था। उनके पास साधारण भाले थे, साथ ही वह भाला भी था जो कभी मृत डाकिया का था और अब उसके उत्तराधिकारी को मिल गया था।

इन तीनों व्यक्तियों ने गांव में उत्साहपूर्वक बताया कि उन्होंने एक पैंथर को एक

चट्टान की कगार पर धूप सेंकते हुए देखा था, जो उस स्थान से लगभग एक चौथाई मील नीचे की ओर थी जहां पिछले डाकिया की हत्या कर दी गई थी।

यह खबर सुनकर पटेल ने एक ग्रामीण को मेरे पास आने और मुझे बताने के लिए भेजा। अपनी राइफल लेकर मैं उसके साथ वापस गाँव गया, जहाँ दोनों चौकीदारों ने मेरे साथ चट्टान दिखाने के लिए चलने की पेशकश की। हमने लगभग दो मील की दूरी आराम से तय कर ली। लेकिन सामने केवल एक नंगी चट्टान ही दिखाई दी। वहाँ लेटा हुआ पैंथर, चाहे वह आदमखोर हो या नहीं, जा चुका था, और इतनी गर्मी, इतनी पथरीली जगह और पत्थरों के ढेर में उसे ढूँढ़ना असंभव था। हालाँकि, यह खबर उत्साहजनक थी, क्योंकि इससे संकेत मिला कि पैंथर अभी भी आसपास ही है। गाँव और अपने छोटे से खेत में लौटने से पहले, मैंने एक बार फिर काजू के पेड़ के नीचे रखे चारे का निरीक्षण किया और मन ही मन उस शाखा का चयन कर लिया जिस पर मैं ज़रूरत पड़ने पर अपना मचान लगाऊँगा।

वह रात सौभाग्य लेकर आई, हालांकि काजू के पेड़ के नीचे बैठे गधे के लिए बुरी खबर थी, क्योंकि अंधेरे के घंटों के दौरान पैंथर ने उसे मार डाला और उसका लगभग आधा हिस्सा खा लिया।

अगली सुबह, इस तथ्य का पता उन लोगों के दल को चला जिन्हें मैंने बारी-बारी से तीनों चारे का निरीक्षण करने, उन्हें भोजन और पानी देने का काम सौंपा था। वे वापस आए और मुझे बताया, इससे पहले उन्होंने गधे के अवशेषों को गिद्धों द्वारा हड्डियों तक खा जाने से बचाने के लिए उन्हें शाखाओं से ढकने की सावधानी बरती थी।

मैंने दोपहर का खाना जल्दी खत्म किया और अपना ओवरकोट, टॉर्च, चाय की थर्मस और कुछ बिस्कुट लेकर गाँव की ओर चल पड़ा, जहाँ मुझे पटेल से आसानी से एक चारपाई उधार मिल गई। चार मददगारों ने उसे काजू के पेड़ तक पहुँचाया, जहाँ उसे टांगकर हमारे साथ लाई रस्सियों से बाँध दिया गया। मैंने खुद चारपाई को छोटी-छोटी टहनियों और पत्तों से इस तरह ढक दिया कि वह हर तरफ से, यहाँ तक कि नीचे से भी, अदृश्य हो गई। मैं जानता था कि आदमखोर मांसाहारी जानवरों से निपटने के लिए यह काम बहुत सावधानी से करना बेहद ज़रूरी था। ज़रा सी भी लापरवाही सफलता और असफलता के बीच का अंतर पैदा कर सकती थी। अगर कोई पत्ता उल्टा पड़ा हो, जिसका निचला हिस्सा ऊपर दिख रहा हो, या चारपाई का कोई भी

हिस्सा किसी भी कोण से दिखाई दे रहा हो, या पेड़ के नीचे टहनियों या गिरे हुए पत्तों का कोई टुकड़ा भी हो, तो इनमें से कोई भी चीज़ आदमखोर जानवर का शक जगाने के लिए काफी थी, जो अपने शिकार के पास लौटते समय हमेशा बेहद सतर्क रहता है।

सभी व्यवस्थाएँ अंततः मेरी संतुष्टि के अनुरूप पूरी हो गईं, और मुझे केवल एक ही कमी नज़र आई कि मचान कुछ ज़्यादा ऊँचा नहीं था, ज़मीन से दस फीट से भी कम। साथ ही, काजू के पेड़ पर चढ़ना आसान था। दोपहर लगभग ढाई बजे मेरे साथ आए लोगों का दल चला गया, जबकि मैंने उन्हें निर्देश दिया था कि अगर मैं रात में गाँव वापस नहीं लौट पाया तो वे भोर होते ही वापस आ जाएँ।

मैं मचान पर वापस बैठ गया और खुद को यथासंभव आरामदायक स्थिति में लाने की कोशिश की।

दोपहर का समय बहुत उमस भरा था, चारों ओर जमा पत्थरों से गर्मी परावर्तित हो रही थी। पेड़ भी दोपहर की तेज़ धूप से ज़्यादा बचाव नहीं कर पा रहे थे। सच कहूँ तो, शाम होते ही मुझे सुकून मिला और सूरज पश्चिम में मैसूर पठार की ओर डूबने लगा। नीचे मैदान में मुझे जलारपेट रेलवे स्टेशन दिखाई दे रहा था और यार्ड में शंटिंग इंजनों से क्रीम रंग का धुआँ उठ रहा था। कुछ-कुछ अंतराल पर कोई ट्रेन आती-जाती और इंजनों की सीटियाँ साफ़ सुनाई देतीं। बाकी सब कुछ शांत था।

शाम ढलते ही दूर से एक मोर की दहाड़ सुनाई दी और कुछ चिड़िया पेड़ के आसपास मंडराती रहीं। इनके अलावा और कोई जानवर या पक्षी नजर नहीं आ रहा था।

फिर रात का अंधेरा छा गया। पश्चिम की ओर मुख किए पहाड़ी की ढलान पर बैठे हुए, मैं मैदानों को काले आवरण में लिपटे हुए देख सकता था, जबकि मेरे ऊपर पहाड़ी की चोटी पर अभी भी दिन के उजाले के अंतिम निशान बाकी थे। जलारपेट की बत्तियाँ एक-एक करके टिमटिमाने लगीं, जिनमें स्टेशन के प्लेटफार्मों और शंटिंग यार्डों के नीले रंग के नियॉन लैंप प्रमुख थे। कहीं-कहीं मुझे रेलवे सिग्नल की लाल और हरी बत्तियाँ दिखाई दे रही थीं। उत्तर से एक ट्रेन जलारपेट की ओर आ रही थी, इंजन की तेज हेडलाइट अपने आगे प्रकाश की एक लकीर खींच रही थी। फिर ट्रेन एक ढलान पर पहुँची और इंजन अपने भार के कारण ज़ोर लगाने लगा। 'अगर वह कर सकती है... तो मैं भी कर सकता हूँ... अगर वह कर सकती है... तो मैं भी कर सकता हूँ।'

चढ़ाई पर चढ़ने के लिए संघर्ष करते हुए उसकी धुएँ की आवाज़ मेरे मन में गूंज रही थी, और मैं उसके घिसे हुए बड़े बेयरिंग की खड़खड़ाहट सुन रहा था। ये सभी आवाज़ें मुझे बहुत करीब लग रही थीं—और फिर भी बहुत दूर थीं; सीधी रेखा में वे कम से कम पांच मील से अधिक दूर थे।

मेरे चारों ओर अंधेरा छा गया। यह बिना चाँद की रात थी। घने बादल आसमान में इधर-उधर भाग रहे थे, कुछ येल्लागिरी पर्वतमाला की चोटियों में विलीन हो रहे थे। कोई भी तारा प्रकाश नहीं बिखेर रहा था, और अंधेरा घना होता जा रहा था। मुझे अपनी श्रवण शक्ति पर ही निर्भर रहना होगा।

कीड़े-मकोड़े न के बराबर दिखाई दे रहे थे, यहाँ तक कि जंगली झींगुर की मधुर चहचाहट भी सुनाई नहीं दे रही थी। मैं खाट पर चुपचाप बैठा रहा। कभी-कभार कोई मच्छर मेरे सिर के आसपास भिनभिनाता हुआ मेरे चेहरे या हाथों पर बैठ जाता। फिर उसकी सुई जैसी नुकीली सूंड मेरी त्वचा में चुभती और हल्की सी चुभन महसूस होती। मैं अपनी उंगलियाँ या हाथ थोड़ा हिलाता या चुपचाप अपने निचले होंठ को थोड़ा बाहर निकालकर अपने चेहरे पर फूँकता। इससे मच्छर थोड़ा विचलित हो जाता और या तो अपने रास्ते चला जाता या फिर मुझे काटने की कोशिश में इधर-उधर उड़ने लगता।

मुझे जंगल में मचानों या छिपने की जगहों पर बैठने की आदत थी, इसलिए मुझे समय का पता ही नहीं चला, क्योंकि वैसे भी बार-बार घड़ी देखने का कोई फायदा नहीं था। मैं समय को जल्दी तो नहीं गुजार सकता था।

ऐसे मौकों पर इंसान के मन में तरह-तरह के विचार आते हैं, कुछ सुखद, कुछ अप्रिय और कुछ पुरानी यादें। मुझे याद है कि उस शाम, किसी अज्ञात कारण से, मैं एक नई तरह की साइकिल बनाने के बारे में सोचने लगा, ऐसी साइकिल जिसे कम से कम मेहनत से तेज़ गति से और लंबी दूरी तक चलाया जा सके। क्या यह अजीब नहीं है कि जब इंसान का मन खाली बैठा होता है तो वह क्या-क्या सोच सकता है?

इस साइकिल के बारे में मेरे ख्यालों में खलल एक हल्की सी आह जैसी आवाज़ से पड़ा। मैं समझ गया कि पैंथर आ गया है और मरे हुए गधे के ऊपर खड़ा है। मैंने जो दबी हुई आवाज़ सुनी थी, वह उसके मुंह को थोड़ा सा खोलने पर निकली सांस की थी।

मैंने सोचा कि इस समय टॉर्च जलाकर गोली चलाना शायद जल्दबाजी होगी।

बेहतर होगा कि उसे आराम से खाना खाने दिया जाए। काश मैंने ऐसा न किया होता, क्योंकि ऐसा करने से मैंने एक सफल मौका गंवा दिया और एक और इंसान की जान ले ली।

मैं बड़ी बेसब्री से मांस के फटने और हड्डियों के टूटने की आवाज़ का इंतज़ार कर रहा था, जिससे मुझे यकीन हो जाता कि पैंथर गधे को खा रहा है, लेकिन इसके बजाय मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। पल बीतते चले गए और फिर मुझे बेचैनी से शक होने लगा कि कुछ गड़बड़ हो गई है।

मुझे अपने अनुभव से पता है कि मांसाहारी जानवर जब चाहें तो कितने शांत रह सकते हैं; खासकर पैंथर, जो न केवल बिना आवाज किए, बल्कि बिना दिखाई दिए भी आ-जा सकता है, और वह भी दिन के उजाले में। इस घोर अंधेरे में, यह जानवर चाहे एक गज दूर हो या एक मील दूर, इस अंधकार में उसका दिखना लगभग असंभव था।

मैंने अपनी घड़ी के चमकदार डायल पर नज़र डाली, जिसमें नौ बजने में बीस मिनट बाकी थे। मैं बिना हिले-डुले इंतज़ार करता रहा। नौ बज गए और फिर, मेरे दाहिनी ओर चट्टानों के एक हिस्से से, मुझे एक गहरी गुर्राहट सुनाई दी, और कुछ ही सेकंड बाद एक और गुर्राहट सुनाई दी।

किसी तरह पैंथर को मेरी मौजूदगी का एहसास हो गया था। वह मुझे सूंघ नहीं सकता था, क्योंकि पैंथरों की सूंघने की शक्ति बहुत कम या न के बराबर होती है। वह मुझे सुन भी नहीं सकता था, क्योंकि मैंने कोई आवाज़ नहीं की थी। इसलिए, या तो उसने अनजाने में ऊपर देखा होगा और मचान को देख लिया होगा, या किसी अंतर्ज्ञान ने उसे आगाह किया होगा। दोनों ही मामलों में, अब उसे पता चल गया था कि वहाँ एक इंसान है। हो सकता है कि उसने मुझे नीचे खींचने के लिए पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की हो, लेकिन संभवतः उसकी आत्मरक्षा की भावना ने उसे आगाह कर दिया होगा कि यह इंसान उसके लिए खतरनाक है और उन लोगों जैसा नहीं है जिन्हें उसने मारा था।

बेशक, यह पैंथर आदमखोर नहीं हो सकता है, हालांकि उसके वर्तमान व्यवहार को देखते हुए यह कम तर्कसंगत व्याख्या प्रतीत होती है।

शुरू में तो ये गुर्राहटें चेतावनी देने के लिए थीं। जैसे-जैसे ये बढ़ती गईं, इनका मकसद जानवर का हौसला बढ़ाना भी था। शायद काफी गुर्राहटों के बाद वह इतना

उत्तेजित हो जाए कि जिस पेड़ पर मैं बैठा था उस पर हमला कर दे और ऊपर चढ़ने की कोशिश करे। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, पैंथर अक्सर बंदरों के साथ ऐसा ही करते हैं। वे पेड़ के तने पर झपटने से पहले लगातार तेज गुर्राहटों से बंदरों को डरा देते हैं। फिर बंदर आम तौर पर डर के मारे नीचे गिर जाते हैं या कूद जाते हैं। शायद उसे भी यही उम्मीद थी कि उसकी ये आवाज मुझ पर भी वैसा ही असर डालेगी जिससे मेरा मनोबल गिरेगा।

कुछ ही देर में गुर्राहट की तीव्रता और गति दोनों बढ़ गईं। पैंथर अब भयानक शोर मचा रहा था। जैसा मैंने अभी सोचा था, वह या तो मुझे पूरी तरह से डराकर भगाना चाहता था या मुझे मेरे ठिकाने से हटाना चाहता था; या फिर वह पेड़ पर चढ़ने के लिए अपना साहस जुटा रहा था। मैंने बाद वाली संभावना के लिए खुद को तैयार कर लिया।

कुछ और मिनटों तक ऐसा ही चलता रहा और फिर वह हर हमलावर पैंथर की तरह खांसते हुए दहाड़ता हुआ बाहर आया। जैसे ही वह काजू के पेड़ के नीचे पहुँचा, मैं पलंग के किनारे झुक गया, छलावरण करने वाली टहनियों को हटाकर राइफल को नीचे की ओर किया और टॉर्च का स्विच दबाया। मुझे पता था कि मुझे जल्दी करनी होगी क्योंकि, जैसा कि मैंने आपको बताया है, मचान ज़मीन से केवल दस फीट ऊपर था और पेड़ पर चढ़ना आसान था, इसलिए पैंथर पल भर में मुझ तक पहुँच जाएगा।

दुर्भाग्यवश, छलावरण करने वाली एक शाखा पैंथर पर गिर पड़ी। निस्संदेह इससे पेड़ पर उसकी चढ़ाई में कुछ देरी हुई, भले ही वह पूरी तरह से रुकी न हो। लेकिन साथ ही, इससे वह टॉर्च की रोशनी से पूरी तरह से छिप गया। जब मैंने नीचे देखा तो शाखा तेज़ी से हिल रही थी और मैंने अनुमान लगाया कि उसने पैंथर को ढक लिया है।

उस क्षण मैंने एक मूर्खतापूर्ण कार्य किया। जानवर के शाखा से छूटने का इंतज़ार करने के बजाय, मैंने तुरंत उस जगह पर निशाना साधा जहाँ मुझे लगा कि उसका शरीर होगा और ट्रिगर दबा दिया। गोली की आवाज़ के साथ ही एक गिरते हुए शरीर की आवाज़ आई, क्योंकि पैंथर ज़मीन पर पीछे की ओर गिर पड़ा। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैंने उसे मार डाला है, लेकिन यह विचार बस एक पल के लिए ही रहा, क्योंकि जैसे ही उसने ज़मीन को छुआ, वह उस शाखा से कूद गया जिसमें वह उलझ गया था, और इससे पहले कि मुझे अपनी राइफल को रीलोड करने के लिए

अंडरलीवर चलाने का मौका मिलता, मैंने उसकी पीली आकृति को झाड़ियों में छलांग लगाते हुए एक पल के लिए देखा।

मैंने टॉर्च उस जगह पर चमकाई जहाँ से वह गायब हुआ था, लेकिन न तो उसका कोई निशान दिखा, न ही उसकी कोई आवाज़ सुनाई दी, न ही उसके आगे बढ़ने का कोई संकेत मिला। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। हो सकता है वह झाड़ियों में मृत पड़ा हो, या घायल हो, या फिर कहीं दूर जाकर गायब हो गया हो। कुछ भी पता नहीं चल सकता था।

मैंने कुछ देर तक टॉर्च घुमाई और फिर कुछ हलचल की आवाज़ सुनने की उम्मीद में अंधेरे में बैठ गया। लेकिन कुछ भी सुनाई नहीं दिया। मैंने एक घंटा और इंतज़ार किया और फिर उस दिशा में झाड़ियों में गोली चलाने का फैसला किया जहाँ वह गया था, इस उम्मीद में कि अगर वह वहाँ घायल पड़ा हो तो शायद कुछ प्रतिक्रिया हो। इसलिए, टॉर्च जलाकर मैंने राइफल से उस जगह पर गोली चलाई जहाँ से वह गायब हुआ था। गोली की आवाज़ पहाड़ी पर गूंज उठी, लेकिन पैंथर की तरफ से कोई आवाज़ या प्रतिक्रिया नहीं हुई।

एक मालगाड़ी जलारपेट से चली और बेंगलुरु की ओर जाने वाले घाट खंड पर मुलानुर की ढलान पर चढ़ने लगी। पीछे वाला बैंकिंग इंजन, जिसका काम ढलान के शीर्ष तक पहुँचने तक धक्का देकर सहायता करना था, ज़ोर से धक्का देने लगा और उसकी तेज़ आवाज़ और खड़खड़ाहट ने आगे वाले इंजन की आवाज़ को दबा दिया, जिसका चालक शायद पीछे से मिल रही सहायता के कारण आराम से चल रहा था।

मैं रात 11:30 बजे तक इंतज़ार करता रहा। आती हुई मद्रास-कोचीन एक्सप्रेस के इंजन की तेज़ सीटी की आवाज़ सुनकर मैंने पेड़ से नीचे उतरकर अपने घर जाकर चैन की नींद सोने का फ़ैसला किया। मुझे ऐसा करने में कोई हिफ़ाज़त नहीं थी, क्योंकि अगर पैंथर घायल होता और आस-पास होता, तो मेरी आखिरी गोली की आवाज़ सुनकर वह ज़रूर प्रतिक्रिया देता। या तो वह मर चुका था या बहुत दूर चला गया था। अगर वह घात लगाकर बैठा भी होता, तो मेरी आखिरी गोली उसे डराकर भगा देती।

मैं काजू के पेड़ से नीचे उतरा और अपनी टॉर्च की रोशनी में वापस गांव की ओर चल पड़ा, जहां अपने घर जाने से पहले मैंने पटेल और उत्साहित ग्रामीणों को सारी घटना बताई।

अगली सुबह मैं गाँव लौटा, जहाँ कम से कम बीस इच्छुक पुरुष इकट्ठा हुए और मेरी मदद करने को तैयार हो गए। उन्होंने मेरी सलाह और निर्देशों के अनुसार गाँव के आधे दर्जन कुत्तों को भी साथ ले लिया। इस प्रकार, संख्या में पर्याप्त होने और सुरक्षित होने के कारण, हम काजू के पेड़ और पिछली रात की घटना स्थल की ओर चल पड़े।

गधे के अवशेष अछूते थे। पेड़ के ठीक नीचे ज़मीन में एक गड्ढा था, जहाँ मेरी गोली धंस गई थी, और कहीं भी खून का एक धब्बा भी नहीं दिख रहा था। हमने उन झाड़ियों में अच्छी तरह से तलाशी ली जिनमें पैंथर गायब हो गया था और जहाँ मैंने अपनी दूसरी गोली चलाई थी, साथ ही आसपास के बड़े-बड़े पत्थरों और झाड़ियों में भी काफी बड़े इलाके में तलाशी ली, लेकिन यह स्पष्ट था कि मेरा निशाना पूरी तरह चूक गया था और पिछली रात चलाई गई मेरी गोली वह भाग्यशाली निशाना नहीं लगा पाई जिसकी मुझे उम्मीद थी। पैंथर पूरी तरह से बच निकला था।

मैं गुस्से से भरा हुआ और खुद से निराश था, इसलिए मैं अपने साथियों के साथ गाँव लौट आया, जहाँ मैंने पटेल को बताया कि मेरा समय समाप्त हो गया है और मुझे बैंगलोर लौटना होगा। हालाँकि, मैंने उनसे कहा कि अगर कोई नई जानकारी मिले तो मुझे एक और टेलीग्राम भेज दें। फिर मैं कोट्टा गया, अपना सामान इकट्ठा किया और उसे अपने थैले में भर लिया, और जल्द ही काजू के पेड़ के पास से गुजरते हुए जलारपेट की ओर उतरने लगा, जहाँ से मैंने मद्रास से शाम की एक्सप्रेस पकड़ी और उसी रात आठ बजकर पंद्रह मिनट में घर पहुँच गया।

येल्लागिरी नरभक्षी पैंथर के साथ मेरी मुठभेड़ का पहला दौर यहीं समाप्त हुआ।

मेरी उम्मीदों के विपरीत, पटेल से मुझे कोई खबर नहीं मिली। दो महीने बीत जाने पर मैंने उन्हें एक पत्र लिखा और कुछ ही दिनों में जवाब मिला कि जानवर के बारे में कोई और खबर नहीं मिली है। इससे मुझे लगा कि शायद उसने आदमखोरी छोड़ दी हो या येल्लागिरि से मुश्किल से पंद्रह मील दक्षिण में स्थित जावड़ी पर्वत श्रृंखला की ओर चला गया हो। दूसरी ओर, अगर बाद वाली बात सच होती, तो जावड़ी पहाड़ियों पर किसी के मारे जाने की खबर मुझे प्रेस या सरकारी सूचना के माध्यम से जरूर मिल जाती। इसलिए मैं पहले वाले सिद्धांत की ओर झुका और मुझे लगा कि पैंथर ने इंसानों पर हमला करने की अपनी प्रवृत्ति छोड़ दी है। बेशक, हो सकता है कि मेरी गोली निशाने पर लगी हो और जानवर किसी सुनसान जगह पर

जाकर मर गया हो। लेकिन यह आखिरी सिद्धांत शायद ही तर्कसंगत था।

नौ सप्ताह और बीत गए, फिर पटेल परिवार की ओर से जालरपेट रेलवे स्टेशन से एक टेलीग्राम आया, जिसमें बताया गया था कि पैंथर फिर से प्रकट हुआ है और उसने एक बार फिर एक इंसान को मार डाला है। टेलीग्राम में मुझे तुरंत आने के लिए कहा गया था, और मेरे पास दो घंटे का समय बचा था, इसलिए मैंने अगली ट्रेन पकड़ ली।

यह एक धीमी गति वाली ट्रेन थी जो मुझे उस रात लगभग साढ़े आठ बजे जलारपेट स्टेशन पर लेकर आई। तुरंत पहाड़ी पर चढ़ने का कोई उद्देश्य नहीं था, क्योंकि उस समय मैं कुछ कर ही नहीं सकता था; इसलिए मैंने प्रतीक्षा कक्ष में कुछ घंटे सोने और भोर होते ही चढ़ाई शुरू करने का फैसला किया। हालाँकि, यह योजना बहुत सफल साबित नहीं हुई। सबसे पहले, गुजरती ट्रेनों का शोर मुझे हर बार सोने से रोकता था, क्योंकि मुझे हल्की नींद आती है। दूसरे, मच्छरों और खटमलों के हमले, जो कुर्सी पर बहुतायत में थे, मुझे प्लेटफार्म पर इधर-उधर घूमने के लिए मजबूर करते रहे, जो मैं सुबह पाँच बजे तक करता रहा, जब मैं लगभग दो मील दूर येल्लागिरि की तलहटी के लिए रवाना हुआ। जब मैंने चढ़ाई शुरू की तब भोर हो चुकी थी और मैं सुबह 7:15 बजे तक पटेल के गाँव पहुँच गया।

मेरे पटेल मित्र ने हमेशा की तरह बड़े ही सौहार्दपूर्ण ढंग से मेरा स्वागत किया और खूब सारा दूध मिलाकर गरमागरम कॉफी पिलाई। फिर उन्होंने बताया कि तीन दिन पहले सुबह-सुबह एक तेंदुए ने एक युवती पर हमला कर उसे मार डाला था। वह युवती पेरियामलाई पहाड़ी की तलहटी से बहने वाली एक छोटी नदी से पानी भरने गई थी। उन्होंने यह भी बताया कि जिस गाँव की वह युवती थी, वहाँ के लोग कुछ ही देर बाद वहाँ पहुँच गए और शव को अंतिम संस्कार के लिए ले गए। ऐसा लगता है कि तेंदुए ने उस दुर्भाग्यपूर्ण युवती का बहुत कम हिस्सा खाया था, शायद इसलिए कि उसे ढूंढ रहे लोगों के दल ने परेशान कर दिया था और उसे आराम से बैठकर भोजन करने का समय नहीं मिला था।

इस बार मैंने बकरी को जीवित चारा बनाकर उस पर बैठने का फैसला किया, क्योंकि येल्लागिरि में मेरा प्रवास चार दिन से अधिक नहीं हो सकता था, क्योंकि मेरे पास केवल चार दिन की ही छुट्टी थी। इसलिए पटेल ने मेरे लिए उसी पड़ोसी गाँव से एक बकरी लाने की पेशकश की, जहाँ से उन्होंने पिछली बार लाई थी, लेकिन कहा

कि इसमें अच्छी खासी रकम लगेगी—लगभग बीस रुपये—क्योंकि येल्लागिरि में न केवल बकरियाँ दुर्लभ थीं, बल्कि उस गाँव में, जो लगभग तीन मील दूर था, उनके मालिकों को मांग का पता चल गया था और उन्होंने उसी के अनुसार कीमतें बढ़ा दी थीं। मैं मान गया और पैसे दे दिए, और बकरी के आने में लगने वाले समय में मैं अपने खेत में जाकर देखने लगा कि काम कैसा चल रहा है।

दोपहर में, बैंगलोर से लाया हुआ ठंडा भोजन खाने के बाद, मैं पटेलों के गांव लौटा तो पाया कि बकरी अभी तक नहीं आई थी।

दोपहर के दो बज चुके थे जब जानवर को लाने के लिए भेजा गया आदमी एक बूढ़ी काली बकरी लेकर लौटा। मतलब, वह उस अवस्था से आगे निकल चुकी थी जब अकेले रहने पर वह देर तक मिमियाती थी और पैंथर को आकर्षित करती थी। दूसरी बात, जैसा कि मैंने कहा, वह एक काली बकरी थी। काली या सफेद बकरियाँ कभी-कभी कुछ पैंथरों के मन में संदेह पैदा कर देती हैं। आमतौर पर भूरे रंग का चारा, चाहे बकरी हो, कुत्ता हो या बैल, सबसे अच्छा होता है, क्योंकि उनका रंग उन जंगली जानवरों से मिलता-जुलता होता है जो पैंथर का प्राकृतिक भोजन होते हैं। हालांकि, अब बकरी बदलने का समय नहीं था और मुझे परिस्थितियों के अनुसार ही काम चलाना था।

पटेल और चार-पाँच आदमी मेरे साथ थे, जिनमें से पाँचों के पास कुल्हाड़ी, रस्सियाँ और वही चारपाई थी जिसका इस्तेमाल मैंने पिछली बार किया था। हम एक घंटे से भी कम समय में उस गाँव पहुँच गए जहाँ से वह लड़की थी। वहाँ दो और आदमी मेरे दल में शामिल हो गए, जिन्होंने मुझे वह जगह बताने की पेशकश की जहाँ उस युवती की हत्या की गई थी।

यह गाँव से लगभग तीन-चौथाई मील दूर था। पश्चिम से पूर्व की ओर एक छोटी सी धारा बहती थी, जिसमें पानी की एक पतली धार थी, और यह पेरियामलाई पहाड़ी के आधार के किनारे से होकर गुजरती थी, जो लगभग आधा मील दूर थी। यह धारा रेतीली थी और इसके किनारे मिश्रित लैंटाना और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों का घना जंगल था। जिस स्थान पर लड़की पर हमला हुआ था, वहाँ ग्रामीणों ने एक उथला गड्ढा खोदा था ताकि शुष्क मौसम में जब धारा का बाकी पानी सूख जाए तो वे अपने मवेशियों को पानी पिला सकें। पिछले दिन जब लड़की की हत्या हुई थी, तब वह इसी स्थान पर पानी पीने आई थी। लैंटाना उस गड्ढे के काफी करीब उगी हुई थी, और यह

स्पष्ट था कि आदमखोर ने इस झाड़ी की आड़ में उसका पीछा किया था, और यहीं से उस पर अंतिम हमला किया था।

हालात ऐसे थे कि इस पैंथर ने एक बार फिर साबित कर दिया था कि वह आदमखोर होने के बावजूद अपनी आदतों में बेहद असामान्य था। उसने बार-बार दिन दहाड़े अपने शिकार पर हमला किया था। ऐसा सिर्फ बाघ ही करते हैं, क्योंकि आदमखोर पैंथर स्वभाव से कायर होते हैं और आमतौर पर रात के अंधेरे में ही हमला करते हैं। मुझे लगा कि शायद लड़की के आने से पहले ही यह जानवर झाड़ियों में छिपा हुआ था और इतनी आसानी से मिले भोजन के लालच में नहीं आ सका।

इसी विचार के साथ, मैं घुटनों के बल नीचे बैठ गया और लैंटाना की झाड़ियों और आसपास की ज़मीन का बारीकी से निरीक्षण करने लगा। जल्द ही मुझे अपने सिद्धांत की पुष्टि मिल गई, क्योंकि एक झाड़ी आराम करने के लिए पर्याप्त आश्रय प्रदान करती थी। उसके नीचे सूखे लैंटाना के पत्तों की मोटी परत के कारण किसी भी स्पष्ट पदचिह्न को ढूंढना असंभव था, लेकिन जंगली जानवर की हल्की सी गंध ने मुझे अपने अनुमान की पुष्टि करने के लिए प्रेरित किया, और यह कि पैंथर इस जगह का उपयोग कभी-कभी आराम करने के लिए करता था, क्योंकि यह तालाब के पास पानी पीने आने वाले किसी भी शिकार पर हमला करने के लिए आदर्श स्थान था।

यह उत्साहवर्धक था, क्योंकि अगर पैंथर ने पहले इसका इस्तेमाल किया था, तो पूरी संभावना थी कि वह इसे फिर से इस्तेमाल करेगा। इसके अलावा, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, पेरियामलाई पहाड़ी लगभग आधा मील दूर थी। पैंथर का पहाड़ी के ऊपर चट्टानों और गुफाओं में अपना नियमित मांद हो सकता था और उसे यह लैंटाना का मांद किसी अनजान शिकार के आने की प्रतीक्षा करने के लिए सबसे सुविधाजनक जगह लगती।

इन परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए अचानक मेरे मन में एक विचार आया। मैं एक ऐसा दृश्य बनाऊँगा जो पैंथर की अपेक्षा के यथासंभव निकट हो। मैं बकरी को तालाब के किनारे एक खंभे से बाँध दूँगा ताकि वह पानी पीने आई हुई जानवर जैसी लगे। और मैं उसी लैंटाना झाड़ी के नीचे छिपकर पैंथर के आने को रोक दूँगा। यदि वह बकरी की आवाज़ सुन ले, या पहाड़ी पर ऊपर से, जहाँ से वह स्पष्ट रूप से दिखाई देगी, उसे देख ले, तो वह सीधे मेरे हमले के स्थान पर आएगा और मुझे वहाँ उसका इंतज़ार करते हुए पाएगा।

मैंने पटेल और अपने साथ आए लोगों को अपना विचार समझाया। उन्हें यह विचार चतुर लगा, लेकिन पटेल ने इसे मूर्खतापूर्ण बताया, क्योंकि इसमें बहुत बड़ा जोखिम था। मैंने उन्हें समझाया कि वास्तव में खतरा बहुत कम है, क्योंकि आसपास घनी लताना और झाड़ी की सघनता के कारण पैंथर को किसी भी तरफ या पीछे से मुझ तक पहुँचने में कठिनाई होगी, और वह केवल इस गुप्त आश्रय के प्रवेश द्वार से ही मुझ तक पहुँच सकता है, जबकि मैं उस दिशा से उसके आने की उम्मीद कर रहा हूँगा और तैयार रहूँगा। इसके अलावा, उसका ध्यान बकरी पर केंद्रित होगा और उसे शायद ही पता चलेगा कि उसके अपने ही ठिकाने में कोई दुश्मन उसका इंतजार कर रहा है।

हम जो खूंटा साथ लाए थे, उसे नदी के किनारे से एक पत्थर की मदद से रेत में गहराई तक गाड़ दिया गया। मैं झाड़ी के नीचे छिप गया और रात के लिए आराम से बैठने का इंतजाम करने में समय लगाया। मैंने अपनी राइफल की नली पर टॉर्च भी लगा दी और यह जांच लिया कि वह ठीक से काम कर रही है या नहीं। यह टॉर्च मैंने हाल ही में खरीदी थी। यह तीन सेल वाली फिक्स्ड फोकस टॉर्च थी। आखिर में, मैंने अपनी पानी की बोतल से चाय का एक लंबा घूंट लिया और फिर आदमियों को बकरी को उसके पिछले पैरों से खूंटे से बांधने का आदेश दिया।

इन सभी तैयारियों के दौरान बकरी को कुछ दूरी पर रखा गया था, ताकि उसे पता न चले कि कोई इंसान इतनी पास झाड़ियों में छिपा हुआ है; क्योंकि अगर उसे पता चल जाता, तो अकेलेपन के कारण उसके मिमियाने की संभावना बहुत कम हो जाती। दूसरी ओर, अगर बकरी को सचमुच अकेलापन महसूस होता, तो उसके रोने की संभावना कहीं अधिक होती।

जब बकरी को बांधा जा रहा था, मैं पूरी तरह चुप रहा। अपना काम खत्म करने के बाद, पटेल और उसके आदमी चले गए और मैं अकेला ही आगे की स्थिति का इंतजार करने के लिए रह गया।

लैंटाना के नीचे गर्मी थी और सन्नाटा छाया हुआ था, और सूर्यास्त से काफी पहले ही जहाँ मैं बैठा था वहाँ अंधेरा छा गया था। बकरी ने शुरू में कुछ बार मिमियाया और फिर चुप हो गई। मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि अंधेरा होने पर वह फिर से मिमियाएगी। लेकिन मेरी निराशा अधूरी रही। कभी-कभी मुझे बकरी की आवाजें सुनाई देती थीं जब वह रस्सी से बंधी होने के लिए लात मारती और छटपटाती थी,

लेकिन अब वह आवाजें भी बंद हो गई थीं और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि वह जानवर सो गया है।

मजबूरीवश, मुझे पूरी रात जागते और सतर्क रहना पड़ता था और मैं बकरी की नींद में शामिल नहीं हो सकता था। मुझे उस बदकिस्मत बकरी से ईर्ष्या होती थी।

मच्छरों ने मुझे परेशान कर दिया था, और तरह-तरह के कीड़े मेरे शरीर पर रेंग रहे थे। जंगली चूहे, जो पालतू चूहों से भी छोटे होते हैं, लैंटाना के पत्तों को सरसराते हुए और तनों पर रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक बार कोई लंबी और मुलायम चीज़ सूखे पत्तों के बीच से और झाड़ी के किनारों से सरकती हुई गुजरी। वह एक सांप था। वह हानिरहित था या जहरीला, यह मैं नहीं जान सका। मच्छरों और कीड़ों के बावजूद मैं बिल्कुल स्थिर बैठा रहा, और रेंगने की आवाज़ बंद हो गई।

पैंथर नहीं आया। झाड़ी के नीचे सन्नाटे में कोई आवाज़ नहीं गूंजी, रात के पक्षी की पुकार भी नहीं। समय अपने लंबे और उबाऊ सफर पर चलता रहा। मेरी घड़ी की चमकदार सुइयाँ बहुत धीरे-धीरे घंटे गिन रही थीं। मुझे नींद आ रही थी, लेकिन कुछ पल के लिए भी आँखें बंद करने की इच्छा को रोकने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने पैंथर के बारे में सोचना बंद करने के लिए दूसरी बातों और घटनाओं के बारे में सोचने की कोशिश की। लेकिन मेरे दिमाग में बस एक ही बात आई - उस बकरी को कोसना।

नए दिन की धुंधली रोशनी धीरे-धीरे छनकर आ रही थी, यहाँ तक कि किसी जंगली मुर्गे, मोर या किसी अन्य पक्षी की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। मैं उस झाड़ी से भारत का सबसे निराश व्यक्ति बनकर निकला। वह बकरी, जो खंभे के पास कुंडली मारकर सो रही थी, आलस से उठी, आराम से अंगड़ाई ली, अपनी छोटी पूंछ हिलाई और मुझे इस तरह देखा मानो पूछ रही हो, 'अब बताओ, असली बकरी कौन है, तुम या मैं?' जवाब जानते हुए भी मैंने कुछ कहने से परहेज किया।

इसके बजाय, मैंने उस बदकिस्मत जानवर को खोल दिया, जो मेरे पीछे-पीछे उस गाँव तक आ गया जहाँ पटेल रहते थे। वह सज्जन, उन्हीं लोगों के साथ जो एक दिन पहले हमारे साथ आए थे, यह देखने के लिए निकलने ही वाले थे कि मेरा क्या हाल हुआ। मैंने उनसे काली बकरी लौटाने को कहा और बताया कि मैं कुछ घंटे सो लूँगा और फिर खुद जाकर कोई बेहतर चारा ढूँढूँगा। मैं अपने घर गया और दोपहर तक सोता रहा।

जब मैं जागा तो मुझे भूख लग रही थी, इसलिए मैंने डिब्बाबंद सैल्मन मछली

खोली और उसे बैंगलोर से लाई हुई रोटी के साथ खाया। रोटी थोड़ी सूखी हो गई थी, लेकिन उस पर डिब्बाबंद मक्खन की मोटी परत लगाने से उसका स्वाद बेहतर हो गया। इससे मेरा पेट दोपहर के भोजन के लिए भर गया। मैंने पहले ही अपने पोर्टेबल प्राइमस स्टोव पर चाय के लिए पानी उबालने के लिए रख दिया था और चाय वाकई ताज़गी देने वाली थी। दोपहर का भोजन करते समय मैंने एक और केतली में चाय उबाली और उसे अपनी पानी की बोतल में डाल लिया। रात भर जागने के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करके मैं पटेलों के गाँव लौट आया। सौभाग्य से मौसम पिछली रात की तरह ही गर्म था, इसलिए ओवरकोट की ज़रूरत नहीं पड़ी।

मैंने अपनी बात को और मज़बूत करने के लिए पटेल को अपने साथ लिया और उस गाँव की ओर चल पड़ा जहाँ बकरियाँ उपलब्ध थीं। वहाँ, कुछ बकरियों को चुनने और फिर गरमागरम सौदेबाजी के बाद, मैं एक अधपकी बकरी को चुनने में कामयाब रहा जो मिमियाने की ज़्यादा संभावना रखती थी। शाम के 3:30 बज चुके थे जब हम उस जगह के लिए निकले जहाँ मैं पिछली रात रुका था, लेकिन वास्तव में कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि जगह पहले ही तय हो चुकी थी और कोई मचान लगाने की ज़रूरत नहीं थी।

पांच बजने से पहले ही मैं झाड़ियों में घुस गया था, नई बकरी को बांध दिया गया था और आदमी वापस लौट रहे थे।

जैसे ही वे नज़र और आवाज़ से ओझल हुए, बकरी मिमियाने लगी और लगातार मिमियाती रही। मैंने मन ही मन अपने चयन पर खुशी जताई।

शाम होते-होते लैंटाना के नीचे फिर से घना अंधेरा छा गया, बकरी ज़ोर से चिल्लाई और मैं तेंदुए के आने की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगा। एक घंटा बीत गया। तभी मुझे लगभग सुनाई न देने वाली सरसराहट सुनाई दी, जैसे किसी सूखी टहनी पर पैर रखा गया हो, और मुझे आभास हुआ कि तेंदुए आ रहा है। निर्णायक क्षण लगभग आ ही गया था। अब मुझे सावधान रहना था कि तेंदुए के पूरी तरह दिखाई देने से पहले टॉर्च की रोशनी न डालूँ। अगर मैंने ऐसा किया, तो मुझे पता था कि वह गायब हो जाएगा। दूसरी ओर, अगर मैंने बहुत देर कर दी, तो हो सकता है कि वह मुझे पहले देख ले और मुझ पर हमला कर दे, या फिर गायब ही हो जाए।

अपनी सारी इंद्रियों को पूरी तरह से समेटे, मैं इंतज़ार करता रहा। कोई नई सरसराहट या दूसरी आवाज़ नहीं आई। तभी मुझे एक हल्की फुफकार सुनाई दी।

सहज ही मैं समझ गया कि पैंथर ने मुझे देख लिया है या महसूस कर लिया है। उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए थे, मानो वह गुर्राने की तैयारी में हो। उसके होंठों के उसी सिकोड़ने से वह हल्की फुफकार सुनाई दी थी जो मैंने सुनी थी। अब करो या मरो। मैंने टॉर्च का बटन दबाया। उसकी रोशनी सीधे पैंथर की दो लाल-सफेद आँखों पर पड़ी। मैं उसका चेहरा और सीना साफ़ देख पा रहा था, लगभग दस फीट दूर से। जल्दी से गले पर निशाना साधते हुए मैंने विनचेस्टर का ट्रिगर दबा दिया। पैंथर एक कदम आगे बढ़ा। फिर वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया, लेकिन इससे पहले कि मेरी दूसरी गोली उसके सीने में लग जाती। वह पीछे की ओर गिर पड़ा और आँखों से ओझल हो गया और कुछ सेकंड तक झाड़ियों में लोटता रहा। फिर एक मरते हुए जानवर की स्पष्ट गड़गड़ाहट सुनाई दी; फिर सन्नाटा छा गया।

मैंने आधा घंटा और इंतज़ार किया, फिर झाड़ियों से बाहर निकलने का जोखिम उठाने का फैसला किया। मुझे लगा कि ऐसा करना काफी सुरक्षित होगा, क्योंकि मुझे लगभग यकीन था कि पैंथर मर चुका है। भरी हुई राइफल को सामने पकड़े हुए, मैं झाड़ियों से बाहर निकला और बकरी के पास खड़ा हो गया। मेरा पहला विचार था कि उसे खोलकर अपने साथ ले जाऊं। तभी मेरे मन में ख्याल आया कि जिस पैंथर पर मैंने गोली चलाई थी, वह शायद आदमखोर पैंथर न होकर कोई साधारण जानवर ही हो। अगर ऐसा होता, तो मुझे अंधेरे में पटेलों के गांव लौटते समय बहुत सावधानी बरतनी पड़ती और बकरी को साथ ले जाने से मेरा ध्यान भटकता, जो मेरे लिए परेशानी का सबब बन सकती थी। इसलिए मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और पटेलों के घर की ओर चल पड़ा, जहां मैं धीरे-धीरे और सावधानी से चलते हुए पहुंचा। लोग अभी भी जागे हुए थे और मैंने उन्हें सारी घटना बताई। फिर मैं चैन की नींद के लिए अपने घर चला गया।

अगली सुबह हमें पैंथर वहीं मिला जहाँ वह गिरा था। एक बूढ़ा नर, जिसकी खाल कुछ खुरदरी और पीली थी, उसमें आदमखोर होने के सारे लक्षण दिख रहे थे, क्योंकि उसके नुकीले दांत बुढ़ापे के कारण घिस गए थे और उसके पंजे कुंद और फटे हुए थे।

लेकिन असली अपराधी को पकड़ने में सफल हुआ या नहीं, यह तो समय ही बताएगा।

दोपहर तक मैं उसकी खाल लेकर पहाड़ी से नीचे उतर रहा था।

उस घटना को हुए कई साल बीत चुके हैं, लेकिन येल्लागिरी या जावड़ी पर्वतमाला में उसके बाद किसी की भी मौत नहीं हुई है, इसलिए मुझे पूरा यकीन है कि उस रात आदमखोर सांप को पकड़ने में मैं सफल रहा था।

तीन

ओल्ड मुनुस्वामी और मगदी का पैंथर

मैं जिस शहर में रहता हूँ, वह बैंगलोर, भारत के पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी से लगे मद्रास शहर से लेकर पश्चिमी तट पर अरब सागर से लगे मंगलौर शहर तक खींची गई सीधी रेखा के लगभग मध्य में स्थित है। बैंगलोर समुद्र तल से लगभग तीन हजार फीट ऊपर एक पठार पर बसा है। यहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति इसकी अनूठी जलवायु को कभी नहीं भूल सकता—न तो बहुत गर्म, न बहुत ठंडा, न ही बहुत

बरसात, न बहुत सूखा—नवंबर से फरवरी के मध्य तक सर्दियों में सुहावनी धुंध भरी सुबहें और गर्मियों में भी ताजगी भरी ठंडी सुबहें। बैंगलोर नाम कन्नड़ शब्द 'बंगाल उरु' का अंग्रेज़ीकरण है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बीन शहर', इसलिए इसे 'बीन का शहर' के नाम से जाना जाता है; और बैंगलोर के स्वादिष्ट फलों और सब्जियों का स्वाद चखने वाला कोई भी व्यक्ति इन्हें कभी नहीं भूल सकता, चाहे वे उष्णकटिबंधीय हों या यूरोपीय।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक बैंगलोर एक शहर के रूप में विकसित होने से बहुत दूर था। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में इसकी रणनीतिक सैन्य स्थिति, एक बड़े औद्योगिक शहर के रूप में विकसित होने की अपार क्षमता और अन्य सभी खूबियों ने मिलकर इसे भारत का सबसे लोकप्रिय स्थान बना दिया। युद्ध के दौरान और बाद में शरणार्थियों की व्यापक आमद के कारण, इसकी जनसंख्या तीन गुना हो गई है, यह अत्यधिक औद्योगीकृत हो गया है और अब एक तेजी से विकसित होने वाला शहर है।

लेकिन यह बैंगलोर की खूबियों का वर्णन नहीं है; बस इतना कहना था कि मैं एक बेहद खूबसूरत शहर में रहता हूँ। बैंगलोर कई पहाड़ियों पर बसा है, और अगर आप उनमें से किसी एक पर खड़े होकर चारों ओर देखें, तो आपको क्षितिज पर तीन बहुत ऊँची पहाड़ियाँ दिखाई देंगी, जो क्रमशः उत्तर, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम दिशा में हैं। ये सभी पहाड़ियाँ पैंतीस मील के दायरे में हैं और प्रत्येक की ऊँचाई चार हज़ार फीट से अधिक है। उत्तर की ओर स्थित पहाड़ी सबसे ऊँची है। वास्तव में यह एक नहीं बल्कि तीन पहाड़ियाँ हैं, जिनमें तीन चोटियाँ मिलकर नंदीद्रूग समूह बनाती हैं। 'द्रूग' का अर्थ है 'पहाड़ी किला', और इन तीन चोटियों में से सबसे पूर्वी चोटी पर एक पुराने किले के अवशेष हैं, जो आज भी अच्छी हालत में हैं। इसे मैसूर के वीर योद्धा टीपू सुल्तान ने बनवाया था। यह किला एक ऐसे बिंदु पर स्थित है जहाँ से लगभग 600 फीट की सीधी खाई दिखाई देती है। इसे 'टीपू की खाई' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहीं पर यह बूढ़ा सैनिक अपने दुश्मनों को सज़ा देता था। वह उन्हें आँखों पर पट्टी बाँधकर एक पतले, हिलते-डुलते तख्ते पर खाई के ऊपर चलने के लिए मजबूर करता था। अगर वे तख्ते के अंत तक चलकर वापस आ जाते, तो उन्हें छोड़ दिया जाता था। ऐसा लगता है कि इस कारनामे को अंजाम देने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। शायद तख्ता बहुत ज़्यादा हिलता था—या शायद उसे जानबूझकर इतना ज़्यादा हिलाया जाता था। कौन जाने? इतिहासकार इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं।

बैंगलोर के उत्तर-पश्चिम में शिवनगंगा नामक पहाड़ी है। इसके शिखर पर एक मंदिर है और यह हिंदुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। इसके शिखर पर एक कुआँ भी है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह इतना गहरा है कि उसका कोई तल नहीं है। एक अन्य मान्यता यह भी है कि यह कुआँ एक गुप्त भूमिगत मार्ग का आरंभ है जो बैंगलोर तक पूरे पैंतीस मील तक जाता है।

पश्चिम की ओर स्थित तीसरी पहाड़ी को मगदी पहाड़ी के नाम से जाना जाता है। बैंगलोर की ऊँची ज़मीन से देखने पर यह चीनी से लदी हुई प्रतीत होती है; लेकिन जब आप वहाँ पहुँचते हैं तो पाते हैं कि इसमें ऊँट की तरह दो कूबड़ हैं। इनके बीच एक घनी घाटी है जिसमें प्रवेश करना कठिन है, क्योंकि रास्ते फिसलन भरे हैं; यदि आप फिसल गए, तो आपका हाल उन आँखों पर पट्टी बाँधे कैदियों से कुछ बेहतर नहीं होगा जिनके साथ टीपू नंदीड्रूग पर मनोरंजन करते थे।

यही वह घाटी है जो मुझे कहानी की शुरुआत तक ले जाती है, क्योंकि यहीं पर उस पैंथर की गुफा बताई जाती थी जिसने मगदी में आतंक मचा रखा था।

मगदी पहाड़ी चारों ओर से घने जंगलों और पहाड़ियों से घिरी हुई है। दक्षिण में आरक्षित वन का एक बड़ा हिस्सा है, जो पहाड़ियों की एक श्रृंखला को कवर करता है और संगम नामक स्थान के पास कावेरी नदी तक सत्तर मील से अधिक दक्षिण की ओर फैला हुआ है। इस क्षेत्र का पूरा हिस्सा आरक्षित वन नहीं है, लेकिन इसका एक बड़ा हिस्सा है, जबकि शेष भाग घनी झाड़ियों से आच्छादित है। पहाड़ियों की इस श्रृंखला के लगभग मध्य में, क्लोज़पेट और कंकनहल्ली कस्बों के बीच, चोटियाँ विशेष रूप से ऊँची और घनी हैं, और यह क्षेत्र पैंथरों से भरा हुआ है। यह शिकारगाह मेरे बेटे डोनाल्ड का पसंदीदा स्थान है। उसने वहाँ चालीस पैंथर और एक दर्जन से अधिक भालू मारे हैं, और उसकी उम्र अभी तेईस साल से थोड़ी ही अधिक है।

मगदी पहाड़ी के पश्चिम में कम झाड़ियों वाले मैदान हैं। यहाँ काले हिरण, खरगोश, मोर, तीतर और बटेर बहुतायत में पाए जाते हैं। पहाड़ उत्तर की ओर भी जारी हैं, लेकिन वहाँ वे काफी कम ऊँचे हैं। पूर्व में अधिक पहाड़ी क्षेत्र है, और बैंगलोर लगभग पैंतीस मील दूर है। अर्करावर्थी नदी, जो अपेक्षाकृत छोटी नदी है, तेईसवें मील के पत्थर के पास बैंगलोर जाने वाली सड़क को पार करती है, और ठीक वहीं पर इस पर बांध बना हुआ है। इसका जल संग्रहण क्षेत्र इतना बड़ा है कि वर्ष के सबसे सूखे समय में भी बैंगलोर को पर्याप्त जल आपूर्ति सुनिश्चित कर सके। इस बांध को

तिप्पगोंडाहल्ली के नाम से जाना जाता है, और विशाल पंप शेष तेईस मील की दूरी तय करके बैंगलोर तक पानी पहुंचाते हैं।

यहां आपको उस देश का पूरा परिदृश्य मिलेगा जहां यह तेंदुआ पहली बार दिखाई दिया था। यह न सोचें कि इस जानवर में कोई खास बात है क्योंकि मैंने इसे 'तेंदुआ' नाम दिया है। तेंदुआ और पैंथर एक ही प्राणी हैं। मेरी जानकारी के अनुसार, भारत में हम इन्हें अक्सर पैंथर कहते हैं, हालांकि इसका कोई ठोस कारण नहीं है।

जिन घटनाओं का मैं वर्णन करने जा रहा हूँ, वे पिछले युद्ध से पहले घटित हुई थीं।

इस पैंथर ने मगदी पहाड़ी की तलहटी में बसे कुछ बिखरे हुए गांवों में कुछ बकरियों और एक-दो ग्रामीण कुत्तों को मार डाला। किसी ने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उस इलाके में पैंथर पीढ़ियों से ऐसा करते आ रहे थे और लोग उनके साथ पले-बढ़े थे।

समय बीतता गया और उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया। उसने कुछ युवा बैलों और कुछ गायों को भी मार डाला।

भारत में बैल एक पवित्र पशु है और कोई भी हिंदू उसका मांस नहीं छूता। फिर भी, बैल ही सारे कठिन काम करता है। वह खेतों की जुताई करता है और बैलगाड़ियाँ खींचता है। यहाँ तक कि वह चूना पीसने वाले विशाल पत्थर के पहियों को भी घुमाता है। लेकिन उसके अनेक उपयोगों और अत्यधिक महत्व को देखते हुए, लोग कभी-कभार किसी तेंदुआ द्वारा अपने बैलों में से किसी एक को खा लेने पर आपत्ति नहीं करते—बशर्ते वह अत्यधिक लालची न हो जाए। लेकिन जब वह गायों को मारने लगता है—जो दूध और मक्खन देती हैं, जिनसे घी बनता है, जो पिघला हुआ मक्खन है और पूरे देश में खाना पकाने में उपयोग किया जाता है और जिसका बहुत महत्व है—तो वह एक अक्षम्य अपराध करता है और अब कुछ करने का समय आ गया है।

बैंगलोर में एक व्यक्ति रहता है—और मैं वर्तमान काल का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि वह अभी भी वहीं है—जिसका नाम 'मुनुस्वामी' है। वह खुद को एक पेशेवर 'सज्जन शिकारी' गाइड बताता है। वह एक धूर्त भी है। वह शिकार की खबरें शहर में लाता है और उन्हें नौसिखियों और अनुभवहीन लोगों को बताता है। 'मास्टर, व्हाइटफील्ड के पास चालीस जंगली सूअरों का झुंड है, जहाँ आप शिकार कर सकते हैं, वह बारह मील दूर है।' या, 'मास्टर, मगदी रोड पर दसवें मील और मैसूर शहर जाने

वाली सड़क पर अठारहवें मील पर काले हिरणों के कई झुंड हैं, प्रत्येक में पचास जानवर हैं, जिन्हें मास्टर बहुत आसानी से मार सकते हैं।' वह जानकारी के बदले में उचित अग्रिम राशि मांगता है, और यदि वह तय दिन पर नौसिखिए के साथ उस स्थान पर जाता है, तो नौसिखिए आमतौर पर यह सोचकर हैरान रह जाता है कि उन ढेरों जंगली सूअरों और काले हिरणों का क्या हुआ, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे वहाँ बहुतायत में हैं। लेकिन मुनुस्वामी को एक पल के लिए भी कम मत समझिए। वह बहुत बुद्धिमान और झूठ बोलने में माहिर है। 'देखिए, मालिक,' वह कहेगा, 'मैंने आपको बहुत पहले ही जल्दी आने को कहा था। आप नहीं आए। कल ही बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी साहब गाड़ी में आए थे। उन्होंने दो सूअरों को गोली मार दी। अब सब भाग गए हैं। मालिक, फिर किसी और दिन आइएगा, ठीक है?'

जंगली सूअर और काले हिरण मुनुस्वामी के लिए तो बस 'मुर्गी का खाना' हैं। उन्हें अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में देखना तब होता है जब वे किसी बदकिस्मत नौसिखिए को पैंथर के बारे में खबर सुनाते हैं, जिसे जीवन का सबसे बड़ा सबक मिलने वाला होता है। वे बंगले के द्वार पर हाज़िर होंगे या सड़क पर साहब से कुछ इस तरह कहेंगे: 'सर, मैं बड़ा सज्जन शिकारी-गाइड हूँ। मैं मालिक को काले हिरण, जंगली सूअर, मोर, खरगोश, तीतर और हरे कबूतर दिखाता हूँ। या मालिक को चिड़िया और जंगली बत्तखें पसंद हैं? ये दिसंबर के महीने में बहुत सारी आती हैं - क्रिसमस का समय होता है। मालिक को बहुत बड़ा पैंथर मारना पसंद है? उनके पास एक बड़ा पैंथर है। यहाँ से केवल पंद्रह मील दूर, कंकनहल्ली रोड पर। मालिक पंद्रह चिप्स एडवांस देते हैं, मैं एक ज़िंदा गधा बाँध देता हूँ। पैंथर गधे को मार देता है, मैं आकर मालिक को बताता हूँ। मैं एक बढ़िया मचान भी बनाता हूँ। मालिक पैंथर को बहुत आसानी से मार देते हैं।'

नौसिखिए को अचंभित कर दिया गया। एक जिंदा शिकार के लिए सिर्फ पंद्रह रुपये? एक पैंथर सिर्फ पंद्रह मील दूर? किसने कहा था कि शिकार करना एक महंगा या मुश्किल शौक है?

तो पंद्रह रुपये मुनुस्वामी को दे दिए जाते हैं, जिसे याद आता है कि मालिक को शिकार की खबर देते समय उसे खाने के लिए दो रुपये और बस के किराए के लिए तीन रुपये और देने होंगे। नौसिखिए को यह बहुत वाजिब लगता है और वह पाँच रुपये और दे देता है। मुनुस्वामी अत्यंत संतुष्ट होकर चला जाता है।

सबसे पहले वे स्थानीय ताड़ी की दुकानों में से एक पर जाते हैं। वे केवल ताड़ी

ही पीते हैं और शराब से परहेज करते हैं, क्योंकि उनका कहना है कि वह उनके लिए बहुत तेज़ होती है। लेकिन वे ताड़ी की तीन बोतलें पी जाते हैं। यह नारियल के पेड़ का किण्वित रस होता है। फिर बूढ़े मुनुस्वामी गहरी नींद में सो जाते हैं।

अगले दिन वह उठता है और पूरी लगन से 'पैंथर' को फंसाने के काम में जुट जाता है।

बैंगलोर में आवारा पशुओं, कुत्तों और गधों के लिए दो पशु बाड़े हैं। अगर आपका गधा बाड़े में जब्त हो गया है, तो उसे वापस लेने का आधिकारिक शुल्क एक रुपया है। लगभग दस दिनों के बाद, लावारिस जानवरों को सार्वजनिक नीलामी में बेच दिया जाता है ताकि उन दस दिनों के दौरान उनके पालन-पोषण में हुए खर्च का कुछ हिस्सा वसूल किया जा सके। ये नीलामियाँ सप्ताह में लगभग दो बार होती हैं, और मुनुस्वामी के लिए इनमें से किसी एक में जाकर लगभग दो रुपये में गधा खरीदना बहुत आसान है। या फिर वह जब्त किए गए जानवरों में से किसी एक का मालिक होने का झूठा दावा भी कर सकता है। आखिर, एक गधा दूसरे गधे जैसा ही दिखता है, और प्रभारी अधिकारी के पास मुनुस्वामी के दावे की सच्चाई की जाँच करने का कोई तरीका नहीं है, खासकर तब जब वह किसी दोस्त या एजेंट को यह दावा करने के लिए भेजता है।

इस प्रकार मुनुस्वामी को वह गधा, जिसके लिए साहब ने उसे पंद्रह रुपये दिए थे, केवल दो रुपये में मिल गया, जिससे उसे तेरह रुपये का लाभ हुआ, जो उसकी प्रारंभिक लागत पर संभावित 650 प्रतिशत लाभ दर्शाता है। वाकई एक शानदार शुरुआत।

फिर वह साहब को बताए गए तेंदुआ के मिलने की जगह तक कई मील पैदल चलकर जाता है और गधे को वहाँ दो-तीन दिन के लिए बाँध देता है। तीसरे दिन सुबह तड़के वह खुद गधे को मार डालता है। वह इस तरह करता है: उसके पास एक बड़ा सा चाकू होता है जिसमें लगभग एक दर्जन चीज़ें लगी होती हैं, जिनमें एक गोल नुकीला औजार भी होता है, जो शायद घोड़ों के खुरों से पत्थर निकालने के लिए बनाया गया था। कम से कम मुझे तो यही बताया गया है, लेकिन मैं खुद पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ। इस भद्दे औजार से वह बेचारे जानवर की गर्दन की नस में वार करता है और जब वह गिर जाता है, तो वह फिर से वार करता है, कुल मिलाकर चार घाव करता है, गले के दोनों तरफ दो-दो। उसी चाकू के धारदार सिरे से वह पेट चीरता है,

आँतों को बिखेर देता है और बाहरी चमड़ी से मांस के कुछ टुकड़े नोच लेता है। फिर वह शव को टहनियों से ढक देता है। अंत में, वह अपने साथ लाए एक गंदे थैले से एक रहस्यमयी वस्तु निकालता है। क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि यह क्या है? यह मुनुस्वामी का सबसे बेहतरीन करतब है। यह एक पैंथर का पंजा है, जिसे भूसे से भरकर बनाया गया है। इसकी मदद से वह जगह-जगह 'पग के निशान' बनाता है।

दृश्य को अपनी विशेषज्ञता के अनुरूप तैयार करने के बाद, मुनुस्वामी कुछ आने देकर एक लॉरी में लिफ्ट लेकर शहर जाता है और बड़े उत्साह से साहब को बुलाता है। अनुभवहीन साहब भी उत्तेजित हो जाते हैं। हड़बड़ी में वह अपनी पत्नी से अपने लिए सैंडविच और थर्मस में चाय तैयार करवाता है, जबकि वह खुद अपनी राइफल साफ करता है, गोलियां, टॉर्च, बैटरी और कई अन्य छोटी-मोटी चीजें इकट्ठा करता है—जिनमें से अधिकांश का वह कभी उपयोग नहीं करता और जो वैसे भी बेकार हैं। फिर वह मुनुस्वामी को लेकर तेज गति से उस जगह की ओर निकल पड़ता है जहाँ 'पैंथर' ने 'हत्या' की है।

मुनुस्वामी ने ज़मीन पर बने पंजों के निशान और गधे के गले पर बने तेंदुए के दांतों के निशान दिखाए, और साहब मान गए। उन्होंने दो कुलियों को काम पर लगाकर एक मचान बंधवाने का भी इंतज़ाम किया, जिनके काम के लिए उन्होंने दो-दो रुपये लिए, जबकि उन्हें उन्होंने सिर्फ़ बारह आने ही दिए। आखिर में, साहब के ऊपर जाने से पहले, उन्होंने एक सौदा किया। अगर मालिक तेंदुए को मार गिराता है, तो उसे मुनुस्वामी को बीस रुपये बख्शीश देनी होगी। अगर मालिक चूक जाता है—जो मालिक की अपनी गलती है—तो उसे अपने वफ़ादार सेवक को दस रुपये देने होंगे। अगर तेंदुए नहीं आता—मालिक को यह नहीं भूलना चाहिए कि तेंदुए बहुत चालाक जानवर होते हैं और कभी-कभी शिकार पर वापस नहीं आते—तो मुनुस्वामी ने मालिक के लिए चिलचिलाती धूप में बहुत मेहनत की है और उसे पाँच रुपये मिलने चाहिए। सौदा तय हो गया।

आश्चर्यजनक रूप से, मुनुस्वामी अपने गुरु पर उतना ही भरोसा करता है, जितना वह गुरु से अपने प्रति भरोसे की अपेक्षा करता है।

खैर, पैंथर नहीं आता—और इसका कारण भी बिल्कुल स्पष्ट है: कोई पैंथर है ही नहीं। मुनुस्वामी पहले अपने पाँच रुपये जेब में रख लेता है, फिर मालिक को यह कहकर दिलासा देता है कि पैंथर अप्रत्याशित प्राणी होते हैं और शायद अगली बार आ

जाए। वह दूसरा गधा बाँधने की पेशकश करता है। और कहानी ऐसे ही चलती रहती है, जब तक कि नौसिखिए ने इन मायावी प्राणियों में से किसी एक को देखने का विचार ही छोड़ दिया और अपना ध्यान जंगली बत्तख या तीतर पर केंद्रित करने का फैसला कर लिया। यहाँ भी मुनुस्वामी काम आता है।

आप मुझसे पूछ सकते हैं: 'आपको मुनुस्वामी के बारे में यह सब कैसे पता है?' मैं भी एक समय ऐसा ही अनुभवहीन था और उन्होंने मुझे कम से कम चार बार बेवकूफ बनाया था। एक दिन मुनुस्वामी के साथ एक दुर्घटना घटी। वह मुझे उनके पदचिह्न दिखा रहे थे। एक आवारा कुत्ता हमें उत्सुकता से देख रहा था और अचानक एक झाड़ी में घुस गया और कपड़े का थैला लेकर बाहर आया। मुनुस्वामी घबराकर उसके पीछे भागे। कुत्ता भागा और थैले से कुछ धब्बेदार चीज़ गिर गई। मुनुस्वामी और मैं दोनों उसे लेने दौड़े। वह एक पैंथर का भरा हुआ पैर था। फिर, गधे की मौत से भी कहीं ज़्यादा भयानक मौत के खतरे के बावजूद, उन्होंने मुझे अपनी कार्यशैली विस्तार से बताई, ठीक वैसे ही जैसे मैंने आपको बताई है।

मैं धैर्यवान व्यक्ति हूँ और 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत में विश्वास रखता हूँ। अगर मेरे जैसे नासमझ और अनुभवहीन लोग हैं, जो बस 'उठाए जाने' का इंतज़ार कर रहे हैं—तो मुनुस्वामी उन्हें क्यों न चुनें? इसलिए मैंने कभी भी उनके खेल में बाधा नहीं डाली और मुनुस्वामी मुझे पसंद करते हैं।

यह मत सोचिए कि यह बताकर मैं उसका खेल बिगाड़ रहा हूँ, क्योंकि मुनुस्वामी बैंगलोर में फैले शिकारियों के गिरोह में नए सदस्य से मिलते समय हर बार अपना नाम बदल लेता है। वह रामैया, पूजा, पूनिया या सौ अन्य नामों से जाना जा सकता है। लेकिन अगर आप कभी बैंगलोर आएं और हमारे गिरोह में शामिल होना चाहें, तो मैं आपको उसके बारे में एक संकेत देता हूँ—एक सामान्य सा वर्णन। अगर कोई अंग्रेज़ी बोलने वाला 'सज्जन का शिकारी-गाइड' आपसे मिले—एक दुबला-पतला, लंबा, अधेड़ उम्र का, गहरा काला आदमी, जिसके लंबे बाल पीछे की ओर बंधे हों और एक गांठ हो, और बड़ी उभरी हुई आँखें हों, चाहे उसने पगड़ी पहनी हो या टोपी, धोती, लुंगोटी या ढीली पतलून या शॉर्ट्स, और यहाँ तक कि अगर वह अपना नाम जैक जॉनसन बताए, तो उससे दूर रहें और अपना पर्स किसी दराज में सुरक्षित रख दें। बहुत संभव है कि वह मेरा पुराना दोस्त मुनुस्वामी ही हो, वही खुशमिजाज 'टेढ़ा-मेढ़ा' गाइड।

इस व्यक्ति के बारे में बात करते हुए, मुझे पता है कि आपको लग सकता है कि मैं अपनी कहानी से बहुत भटक गया हूँ। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, क्योंकि वह कहानी की शुरुआत और अंत में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और मुझे यकीन है कि आपको इस अनोखे और विलक्षण चरित्र से परिचित होने में आनंद आया होगा।

मुनुस्वामी को मगदी पहाड़ी क्षेत्र में बैल और गायों को मारने वाले तेंदुओं की गतिविधियों के बारे में पता चला था। यह मत सोचिए कि मुनुस्वामी भले ही अपने बनाए हुए तेंदुओं का इस्तेमाल करते थे, लेकिन उन्हें असली तेंदुओं के बारे में कुछ भी नहीं पता था। उन्हें पता था। सालों पहले, जब वे जवान थे और हालात इतने कठिन नहीं थे, तब वे खुद एक सच्चे शिकारी थे और इन जानवरों के बारे में काफी कुछ जानते थे। इसलिए जब उन्हें यह सूचना मिली, तो वे बस से मगदी गए और खुद जाकर जाँच-पड़ताल की, जिससे उन्हें पता चला कि तेंदुआ अक्सर बकरियों और मवेशियों को मार रहा था।

आप समझ सकते हैं कि उनके तौर-तरीकों और इस अजीब तथ्य के कारण कि मुनुस्वामी के साथ शिकार पर जाने वाले किसी भी व्यक्ति ने कभी पैंथर नहीं देखा, और बहुत कम ही कुछ और देखा, एक गाइड के रूप में उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो रही थी। यूरोपीय और भारतीय, दोनों ही तरह के अनुभवी और नौसिखिए, आधे से अधिक शिकारी पुरुषों के घर उनके लिए बंद हो चुके थे। मुनुस्वामी के लिए यह बहुत ही दयनीय स्थिति थी और इसका सीधा असर उनकी आय और परिणामस्वरूप उनके पेट पर पड़ रहा था। अब समय आ गया था कि वे इस समस्या का समाधान करें और खुद को निर्दोष साबित करें।

पैंथर का निडरतापूर्वक और बार-बार शिकार करना उसे आसानी से पकड़ने लायक बना देता था, और इसी बात ने मुनुस्वामी की छिपी हुई शिकार की प्रवृत्ति को जगा दिया। उसने फैसला किया कि वह जानवर को मार गिराएगा और फिर शहर में जुलूस निकालकर इस बात का प्रचार करेगा। इस जुलूस में पैंथर को ढोल की थाप पर बिठाकर बेंगलुरु की सड़कों पर घुमाया जाएगा। इससे भी बेहतर यह होगा कि मुनुस्वामी पैंथर के साथ अपनी तस्वीर खिंचवाएगा और उसकी प्रतियां अपने उन ग्राहकों को देगा जिनसे अभी भी उसके अच्छे संबंध हैं। जो ग्राहक संपर्क में नहीं हैं, उन्हें वह डाक से प्रतियां भेजेगा। प्रत्येक प्रति के पीछे वह एक संक्षिप्त बयान लिखेगा

कि शिकारी मुनुस्वामी ने फलां दिन, फलां जगह पर इस पैंथर को मारा है, क्योंकि उसके साथ आए साहब, उसकी तमाम मदद के बावजूद, ऐसा करने में असमर्थ रहे थे।

जैसे-जैसे वह इस बारे में सोचता गया, बूढ़े मुनुस्वामी को यह विचार और भी रोमांचक लगने लगा। इससे उन्हें सोचने के लिए कुछ मिलेगा और उनकी घटती प्रतिष्ठा को जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा।

बहुत समय पहले अपनी बंदूक बेच देने के बाद, उसने किसी तरह एक पुरानी, हथौड़े के आकार की .12 बोर वाली दोहरी बैरल वाली बंदूक उधार ली। फिर वह उस जगह पर वापस आया और ग्रामीणों को बताया कि वह, मुनुस्वामी, एक बूढ़ा शिकारी, जिसने कभी जनरलों और वायसराय के साथ सेवा की थी, उस जानवर को मारने आया है जो उन्हें इतना नुकसान पहुंचा रहा है। उसने कहा कि वह मगदी गांव में रहना चाहता है, जो उस पहाड़ी से लगभग चार मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है जिसके नाम पर इस गांव का नाम पड़ा है, और उसने ग्रामीणों से कहा कि अगर उनके किसी जानवर को मार दिया जाए तो उसे तुरंत सूचना दें।

दो दिन बाद खबर आई कि पैंथर ने एक और गाय को मार डाला है। एक कारतूस और तीन अन्य कारतूस, जिनमें एल.जी. (लॉन्ग-गैस) के गोले थे और जो उसने बंदूक के साथ उधार लिए थे, लेकर मुनुस्वामी घटनास्थल पर पहुंचा। उसने अपनी मचान बांधी और पैंथर के कंधे के ऊपरी हिस्से में कारतूस से गोली मार दी। दूसरे कारतूस में मौजूद एल.जी. (क्योंकि उसने दोनों कारतूस एक साथ चलाकर सुनिश्चित किया था) ने भी उसे घायल कर दिया, लेकिन पैंथर फिर भी बच निकला। बाद में स्थिति का जायजा लेते हुए मुनुस्वामी ने फैसला किया कि घायल पैंथरों का पीछा करने के लिए उसकी उम्र काफी बढ़ चुकी है। इसके अलावा, जिस 'प्रचार स्टंट' ने उसकी कल्पना को हवा दी थी, उससे मिलने वाले फायदे अब पैंथर द्वारा छोड़े गए खून के निशान का पीछा करने के खतरों के मुकाबले काफी नहीं लग रहे थे। इसलिए उसने उस दिन का काम वहीं खत्म करने का फैसला किया और बैंगलोर लौट गया।

कई सप्ताह बीत गए, और फिर वही पुरानी कहानी, जो हमेशा एक ही तरह से शुरू होती है, अपने सामान्य क्रम में आगे बढ़ी। मगदी से क्लोज़पेट तक फैली 22 मील लंबी सड़क के किनारे बसे कुछ गांवों के बाहर एक पैंथर ने कुत्तों और बकरियों पर हमला करना शुरू कर दिया। दो मामलों में, बकरियों के रखवालों ने अपनी बकरियों को बचाने की कोशिश की और उन पर हमला हो गया। इस हमले में एक

आदमी और एक लड़के को बुरी तरह घायल कर दिया गया।

फिर एक जूटका चालक और उसका टट्टू कहानी में आए। तीन लोग एक रात क्लोज़पेट रेलवे स्टेशन पर मैसूर से आने वाली रात की ट्रेन से उतरे। उस समय बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण, इन तीनों ने क्लोज़पेट से दस मील दूर स्थित अपने गाँव तक जूटका से जाने का फैसला किया। जूटका, उन लोगों के लिए जो इस शब्द से परिचित नहीं हैं, एक दो पहिया वाहन होता है जिसकी छत बांस से मजबूत की गई चटाई की अंडाकार होती है, और इसे एक विशेष रूप से पाले गए छोटे आकार के टट्टू द्वारा खींचा जाता है। जूटका के टट्टू आम गाँव के टट्टुओं से मिलते-जुलते हैं, सिवाय इसके कि उनके बाल और पूंछ छोटे होते हैं।

जूटका अपने गंतव्य पर पहुँची और यात्रियों को उतार दिया। चालक ने गाँव में ही सोने और अगली सुबह क्लोज़पेट लौटने का फैसला किया। उसने अपने टट्टू को खोलकर उसे सूखी घास खिलाई, जो उसने गाड़ी के फर्श के ठीक नीचे लटकी बोरी में रखी थी। फिर वह सो गया।

टट्टू ने घास चर ली और फिर गांव की गली में भटकने लगा, इस उम्मीद में कि उसे वहां और घास मिल जाएगी। इस तरह वह गांव के बाहरी इलाके में पहुंच गया, जो कि एक छोटा सा गांव था।

गली के किनारे बनी आखिरी झोपड़ी के पीछे से अचानक कोई चीज़ उछलकर उसके बगल में आ गई और उसका गला नोचने लगी। ज़ोर से हिनहिनाते हुए टट्टू गली में वापस भाग गया। हमला करने वाली चीज़ ने टट्टू के गले पर अपनी पकड़ बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन गिर पड़ी, हालांकि गिरने से पहले उसने उसे एक गहरा घाव दे दिया था। वह चीज़ पैंथर थी।

भयभीत टट्टू की आवाज़ और पैंथर की दहाड़ से जूटका मालिक की नींद खुल गई, जिसने देखा कि उसका जानवर उसकी ओर दौड़ रहा है। वह डर से कांपते हुए रुक गया, उसके गले से खून बह रहा था। उसने तुरंत अलार्म बजाया।

टट्टू जूतका को खींच नहीं सका; इसलिए अगले दिन मालिक उसे पैदल ही क्लोज़पेट वापस ले गया, जहाँ उसने पुलिस को मामले की सूचना दी। खबर फैल गई और यह बात सबको पता चल गई कि इलाका एक ऐसे पैंथर से खतरे में है जो किसी भी दिन आदमखोर बन सकता है।

कुछ ही समय बाद, मगदी गाँव से दो मील की दूरी पर एक व्यक्ति पर हमला

हुआ और उसे बुरी तरह घायल कर दिया गया। कुछ दूरी पर अपने खेतों में काम कर रहे ग्रामीण मदद के लिए दौड़े और उन्होंने उसे जमीन पर पड़ा पाया, जिसके शरीर पर जानवर के नुकीले पंजों से बुरी तरह खरोंचें और घाव थे। वे उसे मगदी गाँव ले गए और वहाँ के स्थानीय निधि अस्पताल में उसका इलाज किया गया। पुलिस में सूचना दर्ज कराई गई और स्थानीय पुलिस अधिकारी, जिसका पद लगभग सार्जेंट के बराबर होता है, गाँव का सबसे वरिष्ठ अधिकारी और पुलिस चौकी का प्रभारी होने के नाते, सबूतों की मौके पर जाँच करने के लिए एक कांस्टेबल के साथ साइकिल पर रवाना हुआ।

उन्हें उस जगह ले जाया गया जहाँ रैयतों ने घायल आदमी को उठाया था। जब वे खून के निशान और जानवरों के पैरों के निशान देख रहे थे, और शायद पुलिसकर्मियों की तरह ढेर सारे नोट्स बना रहे थे, तभी किसी ने ऊपर देखा और कहा कि उन्हें एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर एक चट्टानी टीले पर एक पैंथर लेटा हुआ दिखाई दे रहा है, जो मुश्किल से दो फर्लांग दूर था। दाफेदार ने उसे देखा, अपने कांस्टेबल की साइकिल उधार ली, और तेज़ी से वापस गाँव की ओर भागा ताकि वहाँ मौजूद पुलिस शस्त्रागार में रखी तीन राइफलों में से एक ले आए।

हालांकि वह तेजी से साइकिल चलाकर वापस लौटा, लेकिन जब तक वह उस स्थान पर पहुंचा, उसके कांस्टेबल और एक-दो ग्रामीणों ने, जो वहीं रुके हुए थे, बताया कि पैंथर पहाड़ी की चोटी के पीछे गायब हो गया था। ग्रामीणों ने दफ्फेदार को बताया कि यदि वह पहाड़ी के चारों ओर से घूमकर जाए—दूरी बहुत ज्यादा नहीं थी—तो शायद वह पैंथर को दूसरी तरफ से घेर सके।

दफ्फेदार बेहद उत्साही और बहादुर था। उसने एक ग्रामीण को शॉर्टकट बताने के लिए साथ लिया और पहाड़ी के चारों ओर तेजी से घूमकर अपनी बंदूक में एक 303 कारतूस लोड किया। भारत में पुलिस बल सैन्य बलों के समान राइफलों से लैस होते हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि उनमें आमतौर पर बारूद की तीलियां नहीं होतीं, ताकि एक बार में सिर्फ एक ही कारतूस दागा जा सके। इससे दंगे या स्थानीय अशांति के समय किसी पुलिसकर्मी को बेवजह गोली चलाने से रोका जा सकता है। इसी कारण दफ्फेदार के पास सिर्फ एक ही कारतूस था और दो-तीन कारतूस उसकी जेब में थे।

वे पहाड़ी के दूसरी ओर पहुँचे, लेकिन उन्हें पैंथर का कोई निशान नहीं मिला। वहाँ कई बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, और गाँववाले ने सुझाव दिया कि वे पहाड़ी पर

थोड़ा ऊपर चढ़ें, क्योंकि पैंथर शायद कहीं आसपास ही होगा। उन्होंने ऐसा ही किया, और कुछ चट्टानों के बीच या पीछे से पैंथर प्रकट हुआ। दाफेदार चौंक गया और उसने कमर से गोली चलाई, जो पूरी तरह से चूक गई। अगले ही पल वह ज़मीन पर पड़ा था और पैंथर उसके ऊपर था, उसकी छाती और बांहों पर काट और खरोंच रहा था। उसका साथी तेज़ी से पहाड़ी से नीचे भाग रहा था।

कुछ सेकंड तक अपना क्रोध प्रकट करने के बाद, वह पैंथर, जो अभी तक आदमखोर नहीं बना था, घायल पुलिसकर्मी को छोड़कर वापस चट्टानों की ओट में चला गया जहाँ से वह आया था। बुरी तरह घायल दाफेदार वहीं पड़ा रहा जहाँ उस जानवर ने उसे छोड़ा था।

इसी बीच भागता हुआ ग्रामीण वापस कांस्टेबल और अन्य ग्रामीणों के पास लौटा और उन्हें सारी घटना बताई। कांस्टेबल तुरंत अपनी साइकिल पर सवार होकर गांव के पुलिस स्टेशन की ओर भागा, जहां उसने स्थानीय पुलिस बल के अन्य तीन सदस्यों को बुलाया और उन्हें बताया कि उनके दाफेदार की संभवतः हत्या कर दी गई है।

अपने रैक से बची हुई दो राइफलें और दो लाठियाँ लेकर, कानून के चार प्रतिनिधि पहाड़ी की ओर तेज़ी से वापस लौटे। रास्ते में और भी ग्रामीण उनके साथ जुड़ते गए। दस से अधिक लोगों के एक दल ने अंततः गंभीर हालत में दफ्फेदार को उठाया और उसे स्थानीय निधि अस्पताल ले गए। अगले दिन बैंगलोर से एक एम्बुलेंस बुलाई गई, जो उसे शहर के विक्टोरिया अस्पताल ले गई।

पैंथर के विभिन्न हमलों की सभी रिपोर्टें दर्ज कर ली गई थीं, लेकिन जब उसने पुलिस बल के एक जवान—और वह भी एक दफ्फेदार—पर हमला किया, तो पुलिस सचमुच हरकत में आ गई। उन्हें यह पता लगाने में ज्यादा समय नहीं लगा कि इस सारी परेशानी की जड़ कौन था, और इसी समय, शरारती शिकारी गाइड, बूढ़ा मुनुस्वामी, फिर से मैदान में आ गया।

पुलिस ने उसे पकड़ लिया। गवाहों ने गवाही दी थी कि उसने एक मचान बनाया और पैंथर के लिए बैठ गया। उन्होंने यह भी कहा कि उसने उसे घायल कर दिया था। ऐसा करने के लिए उसने बंदूक का इस्तेमाल किया होगा। क्या उसके पास बंदूक थी? क्या उसके पास शस्त्र लाइसेंस था? क्या वह बिना लाइसेंस वाली बंदूक छिपा रहा था? क्या उसने बंदूक उधार ली थी? किससे? क्यों? कब? कहाँ? क्या मालिक के

पास लाइसेंस था? उसने कितने कारतूस लिए थे?

उन्हें एक सौ एक सवालों के जवाब देने थे। कुल मिलाकर, बेचारे मुनुस्वामी को समझ आ गया था कि उनका समय बहुत बुरा बीतने वाला है। उन पर लगे आरोपों की संख्या इतनी ज़्यादा थी कि अगर दाफेदार की ज़ख्मों से मौत हो जाती है तो उन पर 'संभावित हत्या' का आरोप लगाया जा सकता है—ये आरोप एक पूरा पन्ना भर देते थे और निस्संदेह उन्हें लंबे समय तक जेल में भेज देते।

तब मुनुस्वामी की जन्मजात सूझबूझ काम आई और उन्होंने अपना सबसे बड़ा सौदा किया। उन्होंने चार दिनों के भीतर पैंथर को गोली मारकर उसका शव जिला पुलिस अधीक्षक (डी.एस.पी.) के चरणों में रखने का वचन दिया। अगर वे असफल रहे, तो पुलिस उनके साथ जो चाहे कर सकती थी। अगर वे सफल रहे, तो उन पर लगे आरोप भुला दिए जाएंगे।

डीएसपी, एक व्यावहारिक अधिकारी होने के नाते, मुनुस्वामी पर मुकदमा चलाने की बजाय पैंथर को गोली मारने में अधिक रुचि रखते थे। क्योंकि यह स्पष्ट था कि यह जानवर आदमखोर बनने की राह पर था; जबकि मुनुस्वामी, अपने सभी कुटिल तरीकों के बावजूद, इतनी कुख्याति तक पहुँचने की संभावना नहीं थी। इसलिए डीएसपी ने उसे केवल चार दिन की सजा देकर लॉक-अप से रिहा कर दिया।

उसी दोपहर मैंने अपने दरवाजे पर लगातार 'सर, सर' की आवाज़ सुनी। यह मुनुस्वामी थे। उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे—वे इतनी जल्दी कैसे बहने लगे, यह एक रहस्य है जो उन्होंने अभी तक मुझे नहीं बताया है—उन्होंने अपनी पूरी दुख भरी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, और उस पैंथर के बारे में वह सारी जानकारी दी जो उन्हें पता थी या जो वे जुटा पाए थे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने यहाँ कहानी बताई है।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उनके पास पैंथर को मारने के लिए सिर्फ़ चार दिन हैं, अगर वे ऐसा नहीं कर पाए तो उन्हें 'बड़ी-बड़ी जेल' जाना पड़ेगा, जैसा कि उन्होंने खुद कहा था। मैंने हँसते हुए उनसे पूछा कि वे भाग क्यों नहीं गए। उन्होंने माना कि यह विचार उनके मन में आया था, लेकिन पूरे भारत में उन्हें ऐसे खेल-प्रेमी साहब कहाँ मिलेंगे जो उन्हें इतनी आसानी से पैसे दे दें; ऐसी उदार नीलामी जहाँ वे सिर्फ़ दो रुपये में ज़िंदा गधे खरीद सकें; और, ओह! बैंगलोर में रहने के और भी कई फ़ायदे हैं। इन विचारों से बूढ़ा आदमी टूट गया और उसकी आँखों से पहले से कहीं ज़्यादा आँसू बहने लगे। मुझे यह जानकर हैरानी नहीं होती कि उनमें से कुछ आँसू सचमुच के थे।

क्या मैं इस पैंथर को गोली मारकर उसकी मदद कर सकता हूँ? मैं उसे बचा लूँगा, और ओह! उन अनगिनत लोगों को भी बचा लूँगा जिन्हें यह पैंथर मार सकता है।

मैंने दूसरी बात मान ली, लेकिन मैंने मुनुस्वामी से साफ-साफ कह दिया कि मुझे पहली बात में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। उन्हें बुरा नहीं लगा। मैंने कहा कि मैं उनकी मदद एक शर्त पर करूंगा: चूंकि निस्संदेह वही सारी परेशानी की जड़ थे, इसलिए पैंथर को गोली मारते समय उन्हें मेरे साथ रहना होगा और भागना नहीं होगा।

बूढ़े व्यक्ति ने सहमति जताते हुए मुस्कुरा दिया। हैरानी की बात यह थी कि उसके आंसू पूरी तरह गायब हो गए थे।

उसी शाम मैं उसे डीएसपी के घर ले गया, जहाँ मैंने हँसते हुए मुनुस्वामी के आने की सारी बातें बताईं। मैंने पुलिस अधिकारी से कहा कि मुझे नहीं पता कि मुनुस्वामी को पैंथर को मारने के लिए चार दिन की मोहलत देना वाकई गंभीर था या नहीं, लेकिन मैंने यह भी कहा कि अगर ऐसा है तो यह समय सीमा एक बाधा है, क्योंकि मैं उस बूढ़े बदमाश को अपने साथ रखना चाहता हूँ ताकि वह मेरी मदद कर सके, और अगर पाँचवें दिन पुलिस आकर उसे ले जाए तो यह एक झंझट बन जाएगा।

डीएसपी ने जवाब दिया कि उनका इरादा वास्तव में मुझे अपना काम पूरा करने के लिए केवल चार दिन देने का था, लेकिन मेरी बात को ध्यान में रखते हुए, जब तक मैं आगे बढ़कर इस जानवर को पकड़ने की कोशिश करता रहूंगा, तब तक वे हस्तक्षेप नहीं करेंगे। उन्होंने मुझे एक पत्र भी दिया, जिसमें सभी पुलिस अधिकारियों से, जिन्हें मैं यह पत्र दिखा सकूं, मेरी हर संभव सहायता करने का अनुरोध किया गया था।

मैंने यह बात मुनुस्वामी को नहीं बताई। इससे वह अपने प्रयासों में ढिलाई बरतते। इसके बजाय, मैंने बताया कि डीएसपी साहब को उन्हें चार दिन का समय देने पर पछतावा होने लगा था और वे इसे घटाकर तीन दिन करना चाहते थे, लेकिन मैंने उनकी ओर से हस्तक्षेप करके ऐन मौके पर स्थिति को संभाल लिया।

इससे मुनुस्वामी मेरे प्रति पहले से कहीं अधिक आभारी हो गए और यात्रा पर निकलने के लिए उतने ही बेचैन हो गए। अगली सुबह हम स्टुडेबेकर कार में बैठकर मगाडी पहाड़ी पर पहुंचे और उसके तलहटी में स्थित विभिन्न गांवों में पूछताछ शुरू कर दी, जिसमें वह स्थान भी शामिल था जहां मुनुस्वामी ने पैंथर को घायल किया था। रास्ते में सवाल पूछते हुए हम मगाडी गांव तक पहुंचे, जहां मैंने उन पुलिस कांस्टेबलों से बात की जिन्होंने उनके दफ्फेदार को बचाया था। वहां से हम कार में बैठकर

क्लोज़पेट की ओर चल पड़े, रास्ते में पड़ने वाले हर गांव में रुककर सवाल पूछते रहे। इस तरह हम उस गांव तक पहुंचे जहां पैंथर ने टट्टू पर हमला किया था, और अंततः क्लोज़पेट कस्बे तक पहुंचे, जहां पुलिस सब-इंस्पेक्टर, जिन्हें मैंने डी.एस.पी. द्वारा दिया गया नोट दिखाया, ने तुरंत जूटका-वाले को बुलवाया। मैंने उससे पूछताछ की और उसने मुझे बताया कि उसके टट्टू के साथ क्या हुआ था।

ये सारे सवाल पूछने में मुझे उस शाम देर तक का समय लग गया, लेकिन इसके बावजूद मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो यह जानता हो कि पैंथर कहाँ रह रहा होगा या उसकी आदतें कैसी होंगी। बेशक, मुझे पता था कि कोई जल्दी नहीं है, लेकिन मुनुस्वामी का उदास चेहरा और भी मुरझा गया जब उन्हें एहसास हुआ कि उनके चार दिनों में से एक दिन बिना किसी ठोस नतीजे के बीत चुका है।

हम उस रात मगदी गांव वापस आए और यात्रियों के बंगले में सोए।

अगली सुबह तड़के एक दुबला-पतला व्यक्ति आया और बताया कि वह आसपास की पहाड़ियों पर स्थित मधुमक्खी के छत्तों से शहद इकट्ठा करके, जड़ी-बूटियाँ और अन्य औषधीय जड़ें जमाकर तथा मौका मिलते ही खरगोश, तीतर और बटेर का शिकार करके अपना जीवन यापन करता है। उसने बताया कि उसे पिछली रात बताया गया था कि मैं मुनुस्वामी के साथ पैंथर के बारे में जानकारी लेने आया था, और वह यह बताने आया था कि उसे लगभग यकीन है कि वह जानवर मगदी पहाड़ी की दो छोटी पहाड़ियों के बीच की दरार में स्थित एक गुफा में रहता है।

मैंने उनसे पूछा कि उन्हें इस बात का इतना यकीन कैसे है? उन्होंने बताया कि कुछ सप्ताह पहले वे जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने वहाँ गए थे और उन्होंने देखा कि खून से लथपथ एक जानवर कुछ चट्टानों को पार कर गया था और अपने पीछे एक स्पष्ट निशान छोड़ गया था। सावधानी से पीछा करते हुए, उन्होंने उस जगह पर तेंदुए के पदचिह्न पाए जहाँ जानवर ने चट्टानों को छोड़ा था। इसके बाद उन्होंने पीछा करना बंद कर दिया। बाद में उन्हें पता चला कि पिछले दिन किसी ने पास ही एक तेंदुए को घायल कर दिया था। वह व्यक्ति मुनुस्वामी ही था।

वह उस गुफा के बारे में जानता था, क्योंकि उसने अतीत में कई बार उसके आस-पास के मधुमक्खी के छत्ते से शहद निकाला था। कुछ दिन पहले, दाफेदार पर हमले के ठीक बाद, लेकिन मेरे सूचनादाता को क्लोज़पेट में एक सप्ताह के लिए बाहर रहने के कारण इसकी सूचना मिलने से पहले, वह यह देखने के लिए गुफा के पास

गया था कि क्या मधुमक्खियों ने फिर से छत्ता बनाना शुरू कर दिया है। वह गुफा से कुछ दूरी पर ही था कि एक जानवर ने उस पर गुर्राया। उसे तुरंत हफ्तों पहले मिले खून के निशान याद आ गए और वह जितनी जल्दी हो सके घाटी से निकल गया।

यह वाकई एक बड़ी खबर थी।

मैंने सवाल पूछना शुरू किया, और उसने मुझे गुफा तक ले जाने का जिम्मा लिया, बशर्ते कि मैं घाटी और गुफा तक जाने वाले घने लैंटाना के बीच से लगभग एक फर्लांग तक हाथों और घुटनों के बल रेंगने के लिए तैयार रहूँ।

मैं सहमत हो गया और मुनुस्वामी से कहा कि अब समय आ गया है कि वह सौदे के अपने हिस्से को पूरा करे, जो कि मेरे साथ चलना और पैंथर को मारने के समय मौजूद रहना था, ताकि वह उसे घायल करने के अपने पाप का प्रायश्चित कर सके।

अगर मैंने उससे डर दिखाने की उम्मीद की थी, तो मैं गलत था। पुलिस ने उसे इतना डरा दिया था कि वह किसी पैंथर का सामना करने से ज्यादा इस बात से डरा हुआ था कि बचे हुए तीन दिन बिना हमारे शिकार को पकड़े ही बीत जाएंगे।

सूरज के तेज होने का इंतजार करते हुए मैंने आराम से 'छोटा हज़री' खाया। ऐसा इसलिए ताकि पैंथर को अपनी गुफा में दिन भर की नींद पूरी करने का समय मिल सके। अगर मैं वहां जल्दी पहुंच जाता, तो वह मुझे आते हुए सुन सकता था और भाग सकता था।

हम ठीक दस बजे कार से बंगले से निकले और पंद्रह मिनट से भी कम समय में सड़क पर उस जगह पहुँच गए जो पहाड़ी की दो छोटी-छोटी चोटियों के बीच घाटी के लगभग सामने थी। दुबले-पतले आदमी, जिसने अपना नाम अलिमुथु बताया था, ने इशारा किया कि हमें कार से उतरना होगा। मैंने कार को सड़क से थोड़ी दूर एक पेड़ की छाँव में खड़ा किया और हम तीनों नीचे उतर गए। मैंने अपनी राइफल का निचला लीवर चलाकर यह जाँच लिया कि वह ठीक से काम कर रही है या नहीं। फिर अलिमुथु, मुनुस्वामी और मैं गुफा की ओर चल पड़े।

यह पहाड़ी सड़क से लगभग दो मील दूर है। हम आधार तक पहुँच गए और घाटी की ओर चढ़ना शुरू कर दिया, जो हमारे चारों ओर पेड़ों के कारण अब दिखाई नहीं दे रही थी। पेड़ों की चोटियों के ऊपर से मुझे ऊपर और हमारे दाएं-बाएं ओर स्थित दो छोटी पहाड़ियों की चोटियाँ मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।

हम एक घंटे तक चढ़ते रहे और यह एक कठिन चढ़ाई थी। फिर हम लैंटाना

झाड़ियों के एक विशाल जंगल में पहुँचे, जिसने पेड़ों और आसपास के छोटे जंगल को पूरी तरह से घेर लिया था। यही वह जगह थी, जैसा कि अलीमुथु ने बताया, जहाँ से हमें कुछ दूरी तक लैंटाना के बीच से रेंगते हुए जाना था।

मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि अगले एक फर्लांग (लगभग एक फर्लांग) का सफर तय करना बेहद मुश्किल था। हम पहले से ही पसीने से तरबतर थे और कांटों से खरोंचें लग चुकी थीं। अलिमुथु आगे रेंग रहा था; मैं उसके पीछे-पीछे चल रहा था, और मुनुस्वामी उससे भी ज़्यादा करीब था। जब तक हम लैंटाना के उस घने जंगल को पार कर पाए, तब तक हम पसीने से तरबतर हो चुके थे और मेरी खाकी कमीज़ और पैंट कई जगहों से फट चुकी थीं। मुझे यकीन है कि लैंटाना की हर शाखा पर लगे नुकीले हुकों में मेरे चेहरे, गर्दन और हाथों के छोटे-छोटे हिस्से लटक रहे थे।

आखिरकार हम उस घेरे से निकलकर टीलों के बीच की घाटी में पहुँच गए। वहाँ हर जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, जो भालाकार घास से आधे तक ढके हुए थे। अलिमुथु ने फुसफुसाते हुए बताया कि गुफा बाईं ओर है और घाटी के लगभग तीन-चौथाई हिस्से पर है। वहाँ एक पैंथर को देखना नामुमकिन था, यहाँ तक कि थोड़ी दूरी से भी। एक दर्जन बाघ भी वहाँ उतने ही अदृश्य होते।

अब मैं आगे चल रहा था, मेरे पीछे अलिमुथु और उसके ठीक पीछे मुनुस्वामी थे। मैं दाईं ओर रहा और दाहिनी ओर की छोटी पहाड़ी के किनारे-किनारे चलता रहा, ताकि अगर पैंथर गुफा से या बाईं ओर किसी आड़ से हमला करे, तो मुझे उसे आते देखने का मौका मिल सके। हम गुफा के ठीक सामने आ गए। उसके ऊपर चट्टान में एक लटकती हुई दरार थी। मैंने देखा कि इस चट्टान पर मोम के कांटों के निशान थे, जो पुराने मधुमक्खी के छत्ते रहे होंगे, हालांकि कोई नया छत्ता दिखाई नहीं दे रहा था। गुफा के अंदर का हिस्सा बाहर बिखरी हुई लंबी घास और चट्टानों के ढेरों से छिपा हुआ था, जिनमें से कई जाहिर तौर पर ऊपर से पहाड़ी से लुढ़क कर नीचे आ गए थे।

फिर हमने वह आवाज सुनी। एक स्पष्ट गुर्राहट। अलिमुथु ने मुझे रोकने के लिए मेरा कंधा छूने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन मैंने वह आवाज पहले ही सुन ली थी।

इसे किसी पैंथर ने बनाया हो सकता है—या फिर किसी भालू ने।

मैं सोचने के लिए रुक गया। मेरे सामने दो रास्ते थे। इसमें कोई शक नहीं था कि आवाज़ सामने से आई थी: गुफा से या उसके बहुत पास किसी जगह से। मैं पत्थर फेंक सकता था या थोड़ा और आगे बढ़ सकता था। लेकिन मुझे दूसरा रास्ता अपनाने

में डर लग रहा था। वह जीव, चाहे जो भी हो, गुफा के ऊपरी हिस्से से मुझ पर हमला कर सकता था। अगर मैं घास और चट्टानों के बीच से उसे आते हुए नहीं देख पाया, या मेरा पहला निशाना चूक गया, तो मैं बड़ी मुसीबत में पड़ सकता था।

विवेक ने वीरता पर विजय प्राप्त कर ली और मैंने अलिमुथु और मुनुस्वामी से फुसफुसाकर कहा कि वे उस दिशा में पत्थर फेंकें। उन्होंने वैसा ही किया।

कुछ नहीँ हुआ।

अपनी राइफल को तैयार अवस्था में रखकर, मैं अपने सामने के दृश्य में जरा सी भी हलचल पर नजर रख रहा था।

उन्होंने और पत्थर फेंके, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ।

फिर मैंने देखा कि लंबी घास थोड़ी सी दाहिनी ओर हिल रही थी, पहाड़ी की ओर जा रही थी, गुफा के किनारे से आगे बढ़कर पीछे की ढलान वाली जमीन से मिल रही थी।

वह हलचल हवा के झोंके या घास में से किसी जानवर के रेंगने के कारण हो सकती थी। एक बात तो मुझे पक्का पता थी, वह भालू तो बिल्कुल नहीं था। दक्षिण भारत में ब्रुइन का रंग काला होता है, और मैं भूरी घास के बीच ऐसी काली चीज़ को आसानी से पहचान लेता। वैसे भी ब्रुइन इस तरह से छिपकर चल भी नहीं सकता—कोशिश करने पर भी नहीं। वह एक अनाड़ी किस्म का है, जो या तो अचानक किसी जगह पर पहुँच जाता है या अचानक वहाँ से भाग जाता है।

मैंने अपनी आँखों पर जोर डाला और फिर धब्बेदार आकृति का एक हिस्सा देखा क्योंकि वह गुफा के ऊपर लटकी हुई चट्टान की ऊंचाई के बराबर आ गया था।

अब वह जानवर हिलना-डुलना बंद कर चुका था और निस्संदेह हमारी तरफ देख रहा था, हालाँकि घास में उसका सिर या चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ सेकंड और बीत जाते तो शायद वह गायब हो जाता।

मैंने उस धब्बेदार हिस्से को अपनी नज़र में लिया और धीरे से ट्रिगर दबा दिया।

पैंथर घास से उछलकर निकला, झींगे की तरह दुगना हो गया, फिर ढलान पर पीछे की ओर लुढ़क गया और घास में छिप गया। एक बड़े पत्थर पर चढ़कर मैंने नीचे देखने की कोशिश की। कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

मैंने दस मिनट तक इंतजार किया; फिर अलिमुथु और मुनुस्वामी को छिपने का इशारा करके मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। बीच-बीच में मैं किसी चट्टान पर चढ़कर जानवर

की एक झलक पाने की कोशिश करता रहा।

आखिरकार मैंने ऐसा कर ही दिया, और मेरी सारी सावधानी बेकार थी, क्योंकि पैंथर मर चुका था। मेरी वो तस्वीर किस्मत से सही निकली थी। .405 की गोली उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से होकर उसके सिर में जा लगी थी।

जांच से पता चला कि मुनुस्वामी की बंदूक से निकली गोली जानवर की पीठ के आर-पार, कंधों के ठीक पीछे से आर-पार हो गई थी। इससे पीठ में एक बड़ा छेद हो गया था और एक भयंकर खुला घाव बन गया था जिसमें कीड़े रेंग रहे थे। त्वचा में दो एल.जी. छर्रे धंसे हुए थे, लेकिन उनसे बने घाव भरते हुए प्रतीत हो रहे थे। हालांकि, मुख्य घाव अंततः जानवर की मृत्यु का कारण बन जाता, अगर इससे पहले वह आदमखोर न बन गया होता। यह एक अधेड़ उम्र का नर जानवर था, जिसकी लंबाई लगभग सात फीट थी।

हमें उस भयानक लैंटाना के घने जंगल से उसके शरीर को घसीटकर ले जाने में बहुत परेशानी हुई, लेकिन बहुत मेहनत और पसीने के बाद हम आखिरकार वहां पहुंच गए।

उस शाम हमने शव को डीएसपी के चरणों में रख दिया। मैंने उनसे चार दिन की समय सीमा बढ़ाने का अनुरोध किया था, तब से ठीक अड़तालीस घंटे बीत चुके थे। लेकिन मुनुस्वामी और मैंने यह काम आधे समय में ही पूरा कर लिया था। डीएसपी के चेहरे पर मुस्कान थी।

चार

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

बैंगलोर के नज़दीक होने और सप्ताहांत में घूमने-फिरने या चांदनी रात में कुछ घंटों के लिए आराम से समय बिताने के कारण शिवानीपल्ली हमेशा से मेरी पसंदीदा जगह रही है। आपको बस बैंगलोर से 41 मील दूर डेनकनिकोट्टा तक गाड़ी से जाना है, फिर चार मील गाड़ी चलाकर कार से आगे बढ़ना है, और फिर गाड़ी छोड़कर पांच मील पैदल चलकर शिवानीपल्ली पहुंचना है। यह छोटा सा गांव आरक्षित वन के किनारे पर बसा है।

इस छोटे से गाँव से लगभग तीन मील पश्चिम में ज़मीन लगभग तीन सौ फीट नीचे ढलान पर जाती है, जहाँ एक धारा बहती है। गाँव के दक्षिण में एक और धारा पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है, जो कई झरनों के साथ तेज़ी से नीचे उतरती है और पश्चिमी घाटी के तल पर बहने वाली पहली धारा में मिल जाती है। शिवानीपल्ली के पूर्व में जंगल एक पहाड़ी पर लगभग पाँच सौ फीट की ऊँचाई पर स्थित गुलहट्टी बंगलो नामक वन लॉज तक फैला हुआ है। गुलहट्टी के पूर्व में, लगभग साढ़े चार मील की दूरी पर, अय्यूर नामक स्थान पर एक और वन बंगलो है। उत्तर-पूर्व में चार मील दूर कुचुवड़ी नामक एक पथरीली पहाड़ी के पास वन विभाग का एक शेड है। यह चंदन का क्षेत्र है, और शेड में एक प्राचीन विशाल तराजू रखा हुआ है जिसका उपयोग जंगल से लाए गए चंदन के टुकड़ों को तौलने के लिए किया जाता है, जिन्हें बाद में डेनकनिकोट्टा स्थित ब्लॉक मुख्यालय में वन विभाग के गोदामों में भेजा जाता है।

शिवानीपल्ली के उत्तर की ओर, घनी झाड़ियों वाला जंगल सड़क तक और

उससे भी आगे, पाँच मील की दूरी तक फैला हुआ है, जहाँ आपको कार छोड़कर पैदल ही गाँव की ओर प्रस्थान करना होगा।

शिवानीपल्ली में मुश्किल से आधा दर्जन फूस की झोपड़ियाँ हैं और यह इतना बड़ा भी नहीं है कि इसे एक छोटा गाँव कहा जा सके। इससे काफी बड़ा गाँव सालिवरम उत्तर दिशा में तीन मील की दूरी पर स्थित है, जो मुख्य सड़क की ओर जाने वाले पैदल मार्ग के लगभग आधे से थोड़ा अधिक आगे है।

वन विभाग की अग्नि-रेखाएँ शिवानीपल्ली को चारों ओर से घेरे हुए हैं, जो गाँव से आधे मील से एक मील की दूरी पर स्थित आरक्षित वन की शुरुआत को दर्शाती हैं। दक्षिण-पूर्वी कोने पर जहाँ ये दो अग्नि-रेखाएँ मिलती हैं, वहाँ लगभग एक जलकुंड है। गाँव के पश्चिम में तीन सौ फुट की गहरी खाई के तल पर मिलने वाली दो धाराएँ जंगल से होते हुए शिवानीपल्ली से लगभग आठ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक अन्य बड़े गाँव, एंचेटी की ओर बहती हैं।

मैंने आसपास के क्षेत्र की स्थलाकृति का यह विस्तृत विवरण इसलिए दिया है ताकि आप उस क्षेत्र की एक तस्वीर अपने मन में बना सकें जिसमें वह रोमांचक घटना घटी जिसका वर्णन मैं करने जा रहा हूं।

यह पैंथर की गतिविधियों के लिए एक आदर्श स्थान है, जहाँ चारों ओर छोटी-छोटी पथरीली पहाड़ियाँ, झाड़ियाँ, घने जंगल और दो जलधाराएँ (पानी के स्रोत के अलावा) मौजूद हैं। ये जलधाराएँ न केवल पैंथरों के लिए, बल्कि उनके शिकार के लिए भी निरंतर जल आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं। पानी की इस नियमित आपूर्ति के कारण, शिवानीपल्ली में मवेशियों का एक बड़ा झुंड रहता है, जो इन बिल्लियों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण है!

परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र के आसपास काफी संख्या में पैंथर लगभग स्थायी रूप से निवास करते हैं। यही मुख्य कारण है कि 1929 में जब मैंने पहली बार शिवानीपल्ली का दौरा किया था, तो मैं इसकी ओर आकर्षित हुआ था।

यह जंगल कई प्रकार का है, जिसमें जलकुंड के आसपास उगने वाले घने बांस से लेकर दक्षिणी और पश्चिमी किनारों पर घने जंगल तक, और पूर्व और उत्तर की ओर चंदन के पेड़ों से घिरे हुए काफी पतले जंगल और झाड़ियाँ शामिल हैं।

ग्रामीण इलाका बेहद खूबसूरत है, पश्चिम क्षितिज पर धुंधली नीली रेखा की तरह फैली पहाड़ियों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। सुबह-सुबह जंगल से कोहरे की

चादर उठती है और पहाड़ियों की निचली सतह को पूरी तरह से ढक लेती है, जिससे उनकी चोटियाँ ऊनी ऊन के सागर में उबड़-खाबड़ द्वीपों की तरह दिखाई देती हैं। बादल वाले दिन इसका ठीक उल्टा नजारा देखने को मिलता है, जब तूफानी बादल पहाड़ियों की चोटियों पर छा जाते हैं और उन्हें पूरी तरह से छिपा लेते हैं, तो केवल उनकी ढलानों का निचला हिस्सा ही दिखाई देता है, जिससे ऐसा लगता है मानो यह इलाका लगभग समतल है।

मैंने शिवानीपल्ली के आसपास के जंगलों में चांदनी रातों में कई बार 'घूमने' का आनंद लिया है। 'घूम' शब्द उर्दू क्रिया 'घूम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'घूमना-फिरना'। इन जंगलों में हर तरह के जानवर पाए जाते हैं, सिवाय बाइसन के, जिनकी संख्या सीमित है। चांदनी रात में जंगल में घूमते समय, हाथी से सामना होने, बाघ की गुर्राहट, पैंथर की कर्कश आवाज या घबराए हुए सांभर के भागने की आवाज सुनने की संभावना हमेशा बनी रहती है। हालांकि, आप उन्हें देख नहीं पाएंगे—शायद हाथी को छोड़कर, क्योंकि मांसाहारी जानवरों की ये दोनों प्रजातियां, और सांभर भी, बहुत चालाक होते हैं और आपको आते हुए बहुत पहले ही देख या सुन चुके होते हैं।

आपको शायद कोई भालू ज़मीन में दीमक या कंद की जड़ों को खोदते हुए या धीरे-धीरे चलते हुए ज़ोर-ज़ोर से सूंघते और फुफकारते हुए दिखाई दे। आप उसे देखने से बहुत पहले ही उसकी आवाज़ ज़रूर सुन लेंगे, क्योंकि वह घनी वनस्पति की धुंधली पृष्ठभूमि में एक काले धब्बे की तरह दिखेगा, चाँदनी में धूसर और भूतिया सा।

सन् 1934 में शिवानीपल्ली में एक अनोखी घटना घटी। एक चरवाहा अपने मवेशियों को दिनभर चराने के लिए जंगल ले गया था और वहां से लौट रहा था तभी उसने एक काले तेंदुआ को पानी के कुंड पर पानी पीते देखा। शाम के पांच बजने के कुछ ही समय बाद का समय था, जो मवेशियों को गांव के बाड़ों में वापस लाकर रात भर के लिए रखने का सामान्य समय होता है। सुबह करीब नौ बजे या उससे भी बाद में मवेशियों को दिनभर चराने के लिए जंगल में ले जाने और शाम को जल्दी वापस लाने का रिवाज है। देर से निकलने और जल्दी लौटने का कारण यह है कि गायों को दिन में दो बार दुहा जा सके।

इस प्रकार, जब चरवाहे ने पानी के किनारे उगी एक झाड़ी के पास खड़े एक काले पैंथर को देखा, तब लगभग पाँच बज चुके थे और अभी भी काफी उजाला था। वह शांति से तालाब से पानी पी रहा था। उसने कसम खाकर कहा कि वह बिल्कुल

काला था और मेरे पास उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि जानबूझकर झूठ बोलने का कोई मतलब नहीं था। जब झुंड पास आया, तो पैंथर ने मवेशियों की ओर देखा; लेकिन जब चरवाहा अपने जानवरों के बीच दिखाई दिया, तो वह झाड़ियों में गायब हो गया।

काला तेंदुआ कोई अलग या विशेष प्रजाति नहीं है। यह केवल मेलेनिज़्म का एक उदाहरण है। कभी-कभी, हालांकि बहुत कम ही, एक ही झुंड में एक काला शावक दिखाई देता है, जबकि अन्य शावक सामान्य आकार और रंग के होते हैं। कहा जाता है कि काले तेंदुआ इस जिले के आसपास की तुलना में मलाया, बर्मा, असम और इसी तरह के घने सदाबहार जंगलों में अधिक पाए जाते हैं। इन्हें भारत के पश्चिमी घाटों में भी कभी-कभार देखा गया है और इनका शिकार भी किया गया है। मेरे पास इस बात पर विश्वास करने के सभी कारण हैं कि वे इन घने सदाबहार जंगलों में अधिक पाए जाते हैं, क्योंकि तब उनका गहरा रंग उन्हें बेहतर छलावरण प्रदान करता है। साथ ही, चूंकि वे मेलेनिज़्म के सरल उदाहरण हैं, इसलिए उन्हें हर जगह और हर उस जगह पाया जाना चाहिए जहां तेंदुआ पाए जाते हैं, चाहे जंगल किसी भी प्रकार का हो। मैंने जंगली अवस्था में केवल एक अन्य काले तेंदुआ को देखा है, और वह तब था जब वह एक शाम लगभग छह बजे कावेरी नदी के पास पेन्नाग्राम और मुत्तूर के बीच घाट खंड पर सड़क पार कर रहा था। वे प्रकृति के—या यों कहें कि जंगल के—उन रहस्यों में से एक हैं जिन्हें आज तक पूरी तरह से संतोषजनक ढंग से हल नहीं किया जा सका है।

यदि आप चिड़ियाघर में किसी काले पैंथर को ध्यान से देखें, तो आप पाएंगे कि सामान्य पैंथर के रोसेट निशान अभी भी काले बालों के बीच से दिखाई देते हैं, हालांकि निश्चित रूप से वे बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते हैं।

जब चरवाहे ने इस काले पैंथर को देखा, तो वह गाँव आया और लोगों को इसके बारे में सब कुछ बताया। इस इलाके में पहले कभी किसी काले पैंथर को देखा या सुना नहीं गया था और उसकी कहानी पर आम तौर पर किसी ने विश्वास नहीं किया। बेशक, उसने जानवर को अपनी आँखों से देखा था, इसलिए उसे कोई संदेह नहीं था, हालाँकि उसे पूरा यकीन था कि उसने जिस जानवर को देखा था वह कोई सामान्य या जीवित जानवर नहीं था, बल्कि शैतान था, जो जंगल में अपने कई रूपों में से एक रूप धारण करके अपने जैसे बेचारे ग्रामीणों को डराता था।

कुछ सप्ताह बीत गए और फिर कभी किसी ने उस काले पैंथर को न देखा और न ही उसके बारे में सुना। चरवाहे की कहानी भुला दी गई।

कुछ महीनों बाद, एक दिन दोपहर के समय, जब सूरज आसमान में चमक रहा था, मवेशियों का एक और झुंड आराम कर रहा था। कुछ मवेशी आँखें बंद करके बैठे थे और कुछ पास के पेड़ों की छाँव में आलस से घास चर रहे थे। मवेशी दो से लेकर छह के छोटे-छोटे समूहों में लेटे हुए थे। दोनों चरवाहों ने दोपहर का भोजन, रागी के गोले और करी, जो वे अपने साथ एक गंदे कपड़े में बाँधकर लाए थे, खा लिया था और दूसरे पेड़ की छाँव में अगल-बगल लेटे हुए गहरी नींद में सो रहे थे।

यह वास्तव में एक शांत दृश्य था, क्योंकि नीले आकाश से उष्णकटिबंधीय सूर्य की प्रचंड किरणें पृथ्वी पर चमकती हुई गर्मी की लहरों के रूप में परावर्तित हो रही थीं। मवेशियों का झुंड आराम से, सुस्त और बेफिक्र था, तभी शिवानीपल्ली के काले पैंथर ने अपना पहला शिकार किया।

अचानक प्रकट होते ही, पैंथर ने अपने नुकीले दांत एक अधविकसित भूरे और सफेद रंग की गाय के गले में गाड़ दिए, लेकिन इससे पहले कि वह दर्द से चीखती और अपने पैरों पर खड़ी हो जाती, उसने अपने हमलावर को उसके दांतों से गले में फंसाए हुए ही जमीन से ऊपर उठा लिया।

गाय की दर्द भरी चीख सुनकर सो रहे चरवाहों में से एक जाग गया, और जो यह सब देखकर दंग रह गया। उसने अपने साथी को जगाया और उसे दिखाया कि शैतान अचानक काले रूप में प्रकट हुआ है। उन्होंने देखा कि घायल गाय ज़मीन पर गिर पड़ी और बुरी तरह छटपटाते हुए अपनी जान गंवा बैठी। काला पैंथर उस पर अपनी पकड़ बनाए हुए था। इस तरह गाय की मृत्यु हो गई। चरवाहे उछल पड़े और खड़े हो गए।

आम तौर पर, अगर कोई पैंथर उनके किसी मवेशी पर हमला कर देता, तो वे उसकी मदद के लिए दौड़ पड़ते, अपनी लाठियाँ लहराते और जोर-जोर से चिल्लाते, अगर पीड़ित की जान बचाने के लिए नहीं तो कम से कम हमलावर को भगाने के लिए, इससे पहले कि वह शिकार को घसीटकर ले जा सके।

इस मामले में उनमें से किसी ने भी ऐसा करने की हिम्मत नहीं दिखाई। वे बस वहीं जड़वत खड़े रहे और हैरानी से देखते रहे। जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, पैंथर ने मरी हुई गाय के गले पर अपनी पकड़ छोड़ दी और उनकी ओर देखा। हालांकि वह लगभग पचास गज दूर था, फिर भी वे गाय के फटे हुए गले से बहते हुए गहरे लाल खून को

साफ देख सकते थे, जिससे पैंथर का थूथन काले फर की पृष्ठभूमि पर गहरे लाल रंग में रंग रहा था।

वे दुम दबाकर भाग गए।

जब शिवानीपल्ली के कुछ ग्रामीणों ने यह कहानी सुनी, तो वे शव को पूरी तरह खाए जाने से पहले वापस लाने के लिए बाहर जाने से बहुत हिचकिचा रहे थे। अगर हत्यारा एक सामान्य पैंथर होता, तो वे ऐसा ज़रूर करते, लेकिन इस अनसुने काले राक्षस की मौजूदगी ने उन्हें पूरी तरह से डरा दिया था। उन्हें उस पैंथर के बारे में बताया गया था जिसे पानी के गड्ढे पर सबसे पहले देखने वाले चरवाहे ने बिल्कुल काला बताया था। चूंकि वे खुद ग्रामीण थे, इसलिए उन्होंने उस मामले में अतिशयोक्ति की गुंजाइश रखी थी, लेकिन यहाँ दो और चरवाहे थे, दोनों एक ही बात कह रहे थे। क्या यह सचमुच सच हो सकता है?

उस दिन के बाद, काले रंग के लुटेरे ने शिवानीपल्ली से नियमित रूप से जानवरों की चोरी शुरू कर दी। उसे कई बार देखा गया, जिससे ग्रामीणों के मन में उसके वास्तविक अस्तित्व और रंग के बारे में कोई संदेह नहीं रह गया था।

जब लोगों को जंगल में उसकी मौजूदगी का पता चला, जो उनके पशुओं पर लगातार हो रहे हमलों के कारण उन्हें मजबूरन अपने घरों तक लाना पड़ा था, तो उनकी सामान्य सुस्ती और उदासीनता भी हिल उठी और वे अधिक से अधिक सतर्क हो गए। अंततः एक ऐसी स्थिति आ गई जब मवेशियों को गाँव से लगभग एक चौथाई मील के दायरे से आगे चरने के लिए नहीं ले जाया जाता था।

अपने भोजन की आपूर्ति बाधित होते देख, काले पैंथर ने अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाना शुरू कर दिया। उसने दक्षिण-पश्चिम में अंचेटी से और पूर्व में गुलहट्टी और अय्यूर से आने वाले झुंडों के जानवरों को मारकर खा लिया। उसने सालिवरम से एक बड़ा गधा भी उठा लिया, जो जैसा कि मैंने बताया, शिवानीपल्ली के उत्तर में और वन अभ्यारण्य के ठीक बाहर स्थित था।

लगभग इसी समय, मैं अपने एक मित्र के साथ शिवानीपल्ली गया। हम रविवार को दोपहर के भोजन के बाद वहाँ गए थे, हमारा इरादा जंगल में शाम की सैर करने और शायद एक जंगली मुर्गा या दो हरे कबूतर पकड़ने का था। काले तेंदुआ के उद्भव और गतिविधियों की कहानी में मेरी बहुत रुचि थी। इससे पहले मैंने केवल एक बार ही चिड़ियाघर के बाहर इसे देखा था, इसलिए मैंने ठान लिया था कि अगर संभव हो तो मैं

इसे जरूर पकड़ूंगा।

मैंने ग्रामीणों को यह पेशकश की कि अगर वे इस पैंथर द्वारा मारे गए अगले जानवर को बिना छेड़े छोड़ दें और मुझे सूचित करें, तो मैं उन्हें उसकी कीमत चुका दूँगा। उन्हें बस से होसुर कैटल फार्म नामक छोटे कस्बे तक जाना होगा, जो टेलीग्राफ कार्यालय के सबसे नज़दीक था, जहाँ से बैंगलोर में मुझे संदेश भेजा जा सकता था। मैंने उनसे यह भी कहा कि वे यह जानकारी उन सभी लोगों तक पहुँचाएँ जहाँ पैंथर पहले ही हमला कर चुका है। अंत में, और अधिक प्रोत्साहन और आकर्षण के रूप में, मैंने कहा कि मैं न केवल मरे हुए जानवर की कीमत चुकाऊँगा, बल्कि मेरे निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करने वाले को पचास रुपये की नकद बख्शीश भी दूँगा।

अगले कुछ दिनों में फोन आने की उम्मीद में मैंने बैंगलोर में अपनी पोर्टेबल चारपाई-मचान और अन्य सामान तैयार रखा था ताकि टेलीग्राम मिलते ही कुछ ही मिनटों में निकल सकूँ। लेकिन आखिरकार फोन आने में दो हफ्ते से भी ज्यादा समय लग गया। और तो और, यह देर से आया! यानी, शाम चार बजे से ठीक पहले मुझे मिला। मैं चार बजकर पंद्रह मिनट पर निकल चुका था, लेकिन जब मैं शिवानीपल्ली पहुँचा तब तक लगभग सात बजकर पंद्रह मिनट हो चुके थे और काफी अंधेरा हो चुका था।

मैंने देखा कि टेलीग्राम उस दोपहर लगभग डेढ़ बजे होसुर कैटल फार्म में पहुँचाया गया था, जो कि बहुत देर हो चुकी थी, इसके अलावा बैंगलोर की तरफ से भी अतिरिक्त देरी हुई थी क्योंकि इसे एक्सप्रेस टेलीग्राम के बजाय एक साधारण संदेश के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जैसा कि मैंने निर्दिष्ट किया था।

शिवानीपल्ली में रंगास्वामी नाम का एक व्यक्ति रहता था, जिसने पहले दो-तीन बार शिकारी के रूप में मेरी सहायता की थी। होसुर पशु फार्म से टेलीग्राम भेजने वाले उसी व्यक्ति ने यह सूचना दी थी कि उसी सुबह दस बजे, मवेशियों के चरने के लिए गांव से निकलने के तुरंत बाद, एक तेंदुआ ने शिकार किया था। प्रभारी चरवाहे को, जिसे बाकी लोगों की तरह ही मारे गए जानवर के लिए नकद इनाम के साथ-साथ मेरी पेशकश के बारे में बताया गया था, उसने बड़ी समझदारी से शव को नहीं छुआ और यह खबर लेकर शिवानीपल्ली वापस भाग गया। उसने यह खबर रंगास्वामी को दी, जिसने बारह बजकर पंद्रह मिनट की बस पकड़ने के लिए समय पर डेनकनिकोट्टा पहुंचने का भरसक प्रयास किया। वह किसी तरह एक बजे होसुर पशु फार्म के

टेलीग्राम कार्यालय पहुंचा।

रंगास्वामी और चरवाहे द्वारा मुझे तुरंत खबर भेजने के लिए उनकी सराहना करते हुए, अब मुझे यह तय करना था कि मैं टॉर्च की रोशनी में शिकार पर बैठे पैंथर का पीछा करने की कोशिश करूं या अगली शाम तक शिवानीपल्ली में उसका इंतजार करूं। पहली योजना पूरी तरह से जोखिम भरी थी क्योंकि इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि जब मैं वहां पहुंचूंगा तो पैंथर शिकार पर होगा या उसके आसपास कहीं भी होगा। साथ ही, अगले चौबीस घंटे गांव में निष्क्रिय बैठे रहने का कोई ठोस बहाना भी मेरे पास नहीं था।

मैंने पता लगाया कि शिकार कहाँ हुआ था और मुझे बताया गया कि यह गाँव से पश्चिम की ओर लगभग आधा मील दूर था, जहाँ से ज़मीन ढलान से होते हुए लगभग तीन मील दूर नदी के तल तक जाती थी। यह जगह बहुत ही नज़दीक लग रही थी और इसलिए मैंने रंगास्वामी और चरवाहे से कहा कि अगर वे मुझे उस जगह से एक चौथाई मील दूर तक ले जाकर शिकार की दिशा बता दें, तो मैं उसी रात उस पैंथर को पकड़ने की कोशिश करूँगा जब वह अपना शिकार खा रहा होगा। मुझे लगा कि मैं अपनी सुनने की शक्ति और विवेक पर भरोसा कर सकता हूँ कि वे मुझे वहाँ से आगे ले जाएँगे।

वे दोनों इस योजना के खिलाफ थे और अगली शाम तक इंतजार करने की पुरजोर वकालत कर रहे थे, लेकिन मैंने कहा कि मैं फिर भी इसे आजमाना चाहूंगा।

यह सारी बातचीत खत्म होते-होते आठ बजने में दस मिनट बाकी थे और समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था, क्योंकि पैंथर शायद उसी क्षण खाना खा रहा होगा। मैंने अपनी तीन सेल वाली, फिक्स्ड-फोकस इलेक्ट्रिक टॉर्च, जिसे मैंने काला रंग दिया था ताकि वह दिखाई न दे, अपनी राइफल पर लगा दी और तीन अतिरिक्त सेल और पांच अतिरिक्त गोलियां अपनी जेब में रख लीं। मैंने राइफल में चार और गोलियां भरीं, तीन मैगज़ीन में और एक ब्रीच में रखी। हालांकि .405 विंचेस्टर राइफल मैगज़ीन में चार गोलियां और एक ब्रीच में रखने के लिए डिज़ाइन की गई है, मैं हमेशा मैगज़ीन में एक गोली कम भरता हूँ ताकि जाम न हो, जो रीलोडिंग के दौरान अंडर-लीवर को बहुत तेज़ी से चलाने पर हो सकता है। अंत में, मैंने अपने जूते बदलकर हल्के रबर के सोल वाले भूरे रंग के 'खेड़' जूते पहन लिए। ये जूते मुझे हल्के और बिना आवाज़ किए चलने में काफी मदद करेंगे। उस समय मैंने खाकी पैंट और

कमीज पहनी हुई थी, और मैंने उसे बदलकर काली कमीज पहन ली जिसे मैं आमतौर पर मचान में बैठते समय पहनता हूँ।

रंगास्वामी और चरवाहा मेरे साथ एक सूखी नदी तक आए। फिर चरवाहे ने मुझे बताया कि यह नदी लगभग सीधे पश्चिम की ओर बहती है और रास्ते में केवल दो मोड़ लेती है, जहाँ तक पहुँचने पर पैंथर ने शिकार किया था। उसने बताया कि मरी हुई गाय को बाद में नदी के दूसरे मोड़ के ठीक उत्तर दिशा में जंगल के अंदर लगभग दो सौ गज तक घसीटा गया था।

उनके निर्देश काफी स्पष्ट थे और नदी के दो मोड़ों के कारण ही वे इतने सटीक निर्देश दे पाए थे, इसके लिए मैं उनका आभारी था। मैंने उन लोगों को वापस जाने के लिए कहा, क्योंकि मैं अंततः शिवानीपल्ली जाने का अपना रास्ता खुद ही ढूंढ लूंगा, और इस तरह मैंने अपना प्रयास शुरू किया।

मैंने सबसे समझदारी भरा और शांत तरीका यही समझा कि इस सूखी नदी के तल पर चलना, इसके किनारों के ऊपर चलने की बजाय, बेहतर होगा। अनजाने में मेरे द्वारा की गई कोई भी हल्की सी आवाज़ दब जाएगी और पैंथर को कम सुनाई देगी। दूसरा, नदी के तल पर चलने से मैं आसानी से इसके मार्ग का अनुसरण कर सकता था, बिना टॉर्च जलाए यह देखने की ज़रूरत के कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, जबकि अगर मैं किनारे पर चलता तो मुझे टॉर्च जलानी पड़ती, जहाँ वनस्पति मुझे रोकती, खासकर इसलिए कि बहुत अंधेरा था और आसमान पूरी तरह से बादलों से घिरा था, बादल तारों को और उनकी हल्की रोशनी को भी पूरी तरह से छिपा रहे थे।

इसलिए मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा और जल्द ही मुझे नदी का पहला मोड़ महसूस हुआ, जो दक्षिण-पश्चिम दिशा में था। थोड़ी देर बाद नदी फिर से उत्तर की ओर मुड़ने लगी और फिर सीधी होकर पश्चिम की ओर बहने लगी। मैं चरवाहे द्वारा बताए गए दो मोड़ों में से पहला मोड़ पार कर चुका था।

कुछ ही देर बाद सड़क दूसरी बार मुड़ी, लेकिन इस बार उत्तर दिशा में। मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा ताकि किसी ढीले पत्थर या चट्टान से टकराकर आवाज़ न हो। हालाँकि मुझे जो जानकारी दी गई थी, उससे मुझे पता था कि शिकार अभी भी लगभग तीन सौ गज दूर है, लेकिन पैंथर की सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, और अगर मेरा शिकार आस-पास कहीं भी होता, भले ही वह शिकार को खा न रहा हो, तो भी वह मुझे सुन लेता और शायद फिर से भाग जाता।

सौभाग्यवश, नदी के इस हिस्से में लगभग कोई बड़े पत्थर या झाड़ियाँ नहीं थीं, जिससे मुझे चुपचाप आगे बढ़ने में मदद मिली। थोड़ी देर बाद, इसने उत्तर की ओर अपना मोड़ पूरा कर लिया और दक्षिण की ओर मुड़ने लगी। कुछ गज आगे जाकर यह फिर से सीधी हो गई और अपनी मुख्य पश्चिमी दिशा में बहने लगी।

मैं रुक गया। मैं उस जगह पहुँच गया था जहाँ पैंथर ने गाय को मारा था और जहाँ से वह शिकार को घसीटते हुए जंगल में उत्तर दिशा में लगभग दो सौ गज दूर ले गया था। मैं जानता था कि अब मुझे छोटी नदी को छोड़कर घनी झाड़ियों में जाना होगा ताकि शव और हत्यारे को ढूँढ़ सकूँ, जिसे मैं खाते हुए रंगे हाथों पकड़ने की उम्मीद कर रहा था। घोर अंधकार में मुझे रास्ता दिखाने के लिए केवल मेरी सुनने की शक्ति ही सहारा थी।

मैं दबे पांव नदी के उत्तरी किनारे की ओर बढ़ा, जो उस स्थान पर केवल छाती तक ही गहरा था। अपने पैर रेतीले तल पर रखते हुए, मैंने राइफल को किनारे पर धीरे से रख दिया और अपनी बाहों को छाती पर मोड़कर, उस पर झुककर ध्यान से सुनने लगा।

पांच मिनट बीत गए, लेकिन सन्नाटे को भंग करने वाली कोई आवाज़ नहीं आई। शायद शिकार इतनी दूर था कि मैं पैंथर को खाते हुए नहीं सुन पाया; यानी, अगर वह शिकार पर था और खा रहा था।

अपने हाथों पर भार डालते हुए, मैंने धीरे से खुद को किनारे के शीर्ष पर खींच लिया, और ऐसा करते समय मैंने कोई आवाज़ नहीं की। फिर मैंने राइफल उठाई और बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। अंधेरा घना था। साथ ही, मुझे पता था कि अगर पैंथर मुझे देख भी ले, तो मुझे उससे डरने की कोई खास ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह आदमखोर नहीं था और उसने कभी भी इंसानों को परेशान करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई थी। फिर भी, यह मेरा काले पैंथर के साथ पहला अनुभव था और मैंने उनके बेहद खतरनाक और आक्रामक होने के बारे में कई आम कहानियाँ सुनी थीं। सच कहूँ तो, इससे मैं काफी घबरा गया था।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, मैं हर कुछ गज पर रुककर उन आवाज़ों को सुनने की कोशिश करता था जिनसे पता चलता कि पैंथर खाने में व्यस्त है। केवल वही आवाज़ें मेरा मार्गदर्शन कर सकती थीं, क्योंकि टॉर्च की मदद के बिना कुछ भी देखने की उम्मीद करना बेकार था, और टॉर्च का इस्तेमाल तभी किया जा सकता था जब मैं

उसके काफी करीब पहुँच जाऊं। टॉर्च की हल्की सी रोशनी भी अगर पैंथर को दिख जाती तो वह भाग जाता।

मैं इसी तरह चलता रहा, मानो अंतहीन समय बीत रहा हो। शायद मैं पचहत्तर गज या उससे अधिक ही आगे बढ़ा था कि कई बार रुककर सुनने के दौरान, मुझे लगा कि सामने से थोड़ा दाहिनी ओर से एक हल्की सी आवाज़ आ रही है। मैंने कुछ देर तक फिर से ध्यान से सुना, लेकिन वह आवाज़ दोबारा नहीं आई।

मेरे चारों ओर झाड़ियाँ और पेड़ घनी तरह से उग रहे थे, और घनी झाड़ियों से होकर गुजरते समय, पूरी सावधानी बरतने के बावजूद, मेरे शरीर से कुछ आवाज़ आ रही थी। हर कदम पर मेरे पैरों से भी आवाज़ आ रही थी। मैंने उन्हें ज़मीन से उठाकर और घसीटते हुए आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन फिर भी मैं पूरी तरह से चुप नहीं हो पा रहा था। मैंने ऐसा न केवल आवाज़ को रोकने के लिए किया, बल्कि पैंथर के सुनने पर अपने मानवीय कदमों की आहट को छिपाने के लिए भी किया। वह निश्चित रूप से किसी भी घिसटने या रेंगने की आवाज़ को किसी इंसान से नहीं जोड़ेगा, बल्कि उसे घास और झाड़ियों में घूमते हुए किसी छोटे निशाचर जीव की आवाज़ समझेगा; जबकि एक सामान्य कदम की आवाज़ से तुरंत पता चल जाता कि आस-पास कोई इंसान है। मेरे मन में एक अप्रिय विचार आया कि कहीं मैं अंधेरे में किसी ज़हरीले साँप पर पैर न रख दूं, और मेरे रबर के जूते मेरे टखनों की रक्षा नहीं कर रहे थे। मैंने उस विचार को मन से निकाल दिया और अपने सामने उगने वाली झाड़ियों और पौधों के चारों ओर से निकलने की कोशिश की। इस वजह से मुझे उस मृत गाय की ओर जाने वाले उत्तरी मार्ग से कुछ हद तक भटकना पड़ा, जिसका अनुसरण करने का मुझे निर्देश दिया गया था।

मैं बीच-बीच में रुककर सुनता रहा, लेकिन जो आवाज़ मैंने आखिरी बार सुनी थी, वह दोबारा नहीं सुनाई दी। कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं उस छोटी नदी से दो सौ गज की दूरी से बहुत आगे निकल चुका था, जहाँ शिकार के पड़े होने की बात कही जा रही थी, और साथ ही मैं दिशा का सारा ज्ञान खो चुका था, क्योंकि मैं घने पेड़ों और झाड़ियों के बीच, बादलों से घिरे आसमान के नीचे था।

फिर अचानक मुझे वह आवाज सुनाई दी जिसे सुनने की मैं लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहा था - मांस के फटने और हड्डियों के चूर-चूर होने की स्पष्ट आवाज।

मैं वाकई भाग्यशाली था। उस समय पैंथर अपने शिकार पर था और उससे भी

बड़ी बात यह थी कि वह खाने में पूरी तरह मग्न था। अब मुझे बस इतना करना था कि उसके काफी करीब रेंगकर जाऊं ताकि टॉर्च जलाकर तस्वीर खींच सकूं। लेकिन यह सब सिर्फ सिद्धांत में ही संभव था। विचार जितना आसान था, उसे अमल में लाना उतना आसान नहीं था।

सबसे पहले तो, आवाज़ें उस दिशा से नहीं आ रही थीं जिस दिशा में मैं जा रहा था, बल्कि मेरे बाईं ओर और कुछ दूरी पर पीछे से आ रही थीं, जिससे पता चलता है कि मैंने अंधेरे में सीधा रास्ता नहीं लिया था। मैं दाईं ओर मुड़ गया था, शिकार को पार करते हुए। शायद पहले मुझे खाने की आवाज़ इसलिए नहीं सुनाई दी क्योंकि पैंथर अभी-अभी लौटा था। या—और यह एक बहुत ही बेचैन कर देने वाला विचार था जो मेरे मन में आया—हो सकता है कि उसने अंधेरे में मेरे गुजरने की आवाज़ सुन ली हो और जानबूझकर चुप रहा हो।

मैं कुछ क्षणों के लिए रुका और आवाज़ों की दिशा का पूरी तरह से पता लगाने के लिए ध्यान से सुनने लगा। अंधेरे में मैंने अनुमान लगाया कि पैंथर पचास से सौ गज की दूरी पर कहीं होगा।

अब मैंने बहुत धीरे-धीरे और बहुत सावधानी से अपने पैरों को उस आवाज की ओर बढ़ाना शुरू किया।

अगर पैंथर अपने शिकार को किसी झाड़ी में या उसके पीछे घसीटकर ले जाता, तो मेरे लिए मनचाहा निशाना लगाना नामुमकिन हो जाता। दूसरी ओर, अगर मैं गोली चलाकर उसे घायल कर देता, तो सारा फायदा पैंथर को ही मिलता, और अगर वह हमला करता, तो स्थिति बेहद अप्रिय हो जाती।

साथ ही, मैंने खुद को यह याद दिलाकर प्रोत्साहित करने की कोशिश की कि इससे पहले इस पैंथर ने कभी किसी इंसान को परेशान नहीं किया था, और जब मैं आखिरकार अपनी टॉर्च की रोशनी चमकाऊंगा, तो वह डर से भर जाएगा और मुझ पर हमला करने से रुक जाएगा, भले ही वह जानवर को पूरी तरह से भगा न दे।

उसके बाद के क्षणों का सटीक वर्णन करना या मैंने वास्तव में क्या किया, यह बताना कठिन है। मेरा मन और इंद्रियाँ इतनी सजग और सतर्क थीं कि मैंने पेड़ों और झाड़ियों जैसी बाधाओं को सहजता से पार कर लिया। मुझे पता था कि जब तक मैं पैंथर के भोजन करते समय आने वाली आवाज़ें सुन सकता हूँ, तब तक मैं निश्चित हो सकता हूँ कि वह पूरी तरह से अपने काम में लगा हुआ है और उसे मेरे आने का पता

नहीं है। ये आवाज़ें बंद होते ही मुझे सतर्क होना पड़ा, क्योंकि तब पैंथर ने मुझे सुन लिया था और वह भोजन करना छोड़कर मेरी बात सुनने लगा था।

आवाजें आती रहीं और मैं भी धीरे-धीरे, सावधानी से आगे बढ़ता रहा, हर कदम को पैर की उंगली से परखने से पहले कभी पैर नहीं रखता था। जब मुझे अपने नीचे किसी पत्ते की सरसराहट सुनाई देती या महसूस होती, तो मैं चुपचाप चलने के लिए जगह ढूंढता। हर समय मेरी निगाहें सामने के अंधेरे पर टिकी रहतीं और मेरे कान जानवरों के चरने की आवाज़ों को सुनने के लिए चौकन्ने रहते।

फिर अचानक वे आवाजें बंद हो गईं, और एक भयानक सन्नाटा मुझे घेर लिया।

क्या पैंथर ने अपनी मर्जी से कुछ देर के लिए खाना बंद कर दिया था? क्या उसने खाना खत्म कर लिया था और चला गया था? क्या वह बस जा रहा था? या उसने मेरे चुपके से आने की आहट सुन ली थी और उसी क्षण हमला करने की तैयारी कर रहा था? ये सारे विकल्प मेरे दिमाग में कौंध गए और मैं भी रुक गया।

मैं कुछ देर तक चुपचाप और स्थिर खड़ा रहा। कितनी देर तक, मुझे ठीक से याद नहीं, लेकिन मुझे याद है कि मैं सोच रहा था कि अब मुझे क्या करना चाहिए। अब जब उसने खाना बंद कर दिया था, तो आगे बढ़ना पैंथर के सामने मेरी मौजूदगी का पता लगा देता—यानी, अगर उसे पहले से ही मेरी मौजूदगी का एहसास न हो। मैं चाहे कितना भी सावधान क्यों न रहूँ, अंधेरे में किसी इंसान के लिए इतनी खामोशी से चलना नामुमकिन था कि इतने तेज़ कानों वाले जानवर को मेरी आवाज़ सुनाई न दे। दूसरी ओर, अगर मैं वहीं रुका रहता और चुप रहता, तो शायद पैंथर के पास आने पर उसकी आवाज़ सुनाई दे जाती, हालाँकि पैंथर बिना आवाज़ किए चलने के लिए जाने जाते हैं।

दो विकल्पों में से मैंने दूसरा विकल्प चुना, इसलिए मैं वहीं खड़ा रहा। जैसा कि आगे चलकर घटनाओं से साबित हुआ, ऐसा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी।

कुछ क्षणों के लिए, मेरी कान लगाकर सुनने की कोशिश करने पर मुझे एक बहुत ही हल्की सरसराहट सुनाई दी। वह रुकी और फिर शुरू हो गई। कुछ हिल रहा था। कुछ भी हो सकता था। यह एक लगातार सी आवाज़ थी, जैसे कोई साँप घास और झाड़ियों में रेंगते हुए करता है। लेकिन एक पैंथर भी पेट के बल रेंगते हुए मेरी ओर आकर ऐसी ही आवाज़ पैदा कर सकता था। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि यह एक बहुत ही डरावना विचार था।

एक बात तो तय थी। यह आवाज़ किसी चूहे या मेंढक, या किसी छोटे जंगली जीव या रात के पक्षी की नहीं थी। अगर ऐसा होता, तो यह धीमी आवाज़ रुक-रुक कर आती; जैसे जीव के हिलने पर झटके लगते। लेकिन यह एक लगातार चलने वाली आवाज़ थी, रेंगने या सरकने जैसी धीमी लेकिन निरंतर प्रगति का संकेत। अब यह बात पूरी तरह से निश्चित हो गई थी कि यह आवाज़ इन दो चीज़ों में से किसी एक की थी: या तो साँप की या तेंदुए की।

मैंने अपने मन में उमड़ रहे अंतर्मन के विचारों को आपको बताने में कुछ समय लिया है। वास्तव में, वे इतनी तेज़ी से दौड़े कि उस भयावह, दबे पांव आने की आहट सुनते ही मैंने कुछ ही सेकंडों में अपना मन बना लिया था।

कुछ और सेकंड बीतने पर मैंने यह तय कर लिया कि पैंथर निश्चित रूप से मेरी ओर रेंग रहा है, लेकिन जब तक मैं उसकी आवाज़ सुन सकता था, मुझे पता था कि मैं किसी भी हमले से सुरक्षित हूँ। फिर अचानक आवाज़ बंद हो गई।

इसके बाद वही जानी-पहचानी फुफकार सुनाई दी, जो किसी गुस्से में भरे कोबरा के अचानक ज़ोर से साँस छोड़ने जैसी थी। पैंथर गुर्राने लगा था। थोड़ी ही देर में वह ज़ोर से गुर्राएगा, शायद घुरघुराएगा, और फिर हमला कर देगा। मैंने पहले भी कई बार ऐसी आवाज़ें सुनी थीं और मुझे पता था कि क्या होने वाला है। जल्दी से राइफल को कंधे पर उठाते हुए मैंने टॉर्च का बटन दबा दिया।

दो भयावह लाल-सफेद आंखें मेरी ओर घूर रही थीं, लेकिन मैं जानवर के बारे में कुछ भी नहीं देख पा रहा था जब तक कि मुझे याद नहीं आया कि मैं एक काले पैंथर से निपट रहा था, जो रात में लगभग अदृश्य होता है।

शायद शुरू में मेरे पास आने का उसका कोई बुरा इरादा नहीं था, बल्कि वह अपने शिकार के आस-पास की हलचल की आवाज़ सुनकर चुपके से आगे बढ़ा था। लेकिन जब उसने आवाज़ के स्रोत को एक नफ़रत भरे इंसान के रूप में पहचान लिया, तो उसकी गुर्राहट की फुफकार से पता चला कि काले पैंथर ने निश्चित रूप से आक्रामक होने का फैसला कर लिया था। उसकी आँखें बिना पलक झपकाए मेरी टॉर्च की रोशनी को घूर रही थीं।

मेरे पास सावधानीपूर्वक निशाना साधने के लिए काफी समय था। फिर मैंने गोली चला दी।

मेरी उम्मीदों के विपरीत, या कम से कम अपनी मृत्यु की पीड़ा में छटपटाने और

संघर्ष करने के बजाय, पैंथर कर्कश दहाड़ों के साथ दूर भाग गया। क्या मेरा निशाना पूरी तरह चूक गया था, या मैंने जानवर को घायल कर दिया था?

मुझे पूरा यकीन था कि मुझसे चूक नहीं हुई होगी, लेकिन यह सवाल दिन की रोशनी में ही सुलझ सकता था। मैं वापस लौटने के लिए मुड़ गया।

इस बार, बेशक, मुझे अपनी टॉर्च का इस्तेमाल करने की आजादी थी, और उसकी मदद से मैं लगभग उसी दिशा में वापस चल पड़ा जहाँ से मैं आया था।

हालांकि, मेरा अनुमान गलत था, और मैं आधे घंटे तक भटकता रहा, लेकिन उस छोटी नदी तक वापस नहीं पहुंच सका जिसके पास मैं पहुंचा था।

मैंने आकाश की ओर देखा। आसमान में अभी भी बादल छाए हुए थे और मुझे एक भी तारा दिखाई नहीं दे रहा था जिससे मुझे शिवानीपल्ली गाँव की सही दिशा का अंदाज़ा लग सके। तभी मुझे याद आया कि गाँव से पश्चिम की ओर ज़मीन हल्की ढलान वाली थी, जो पश्चिम में बहने वाली दो नदियों द्वारा बनी खाई की ओर जाती थी। इसलिए, अगर मैं थोड़ी ऊपर की ओर जाने वाली दिशा में चलूँ तो मैं भटक नहीं सकता और गाँव के आस-पास ही कहीं पहुँच जाऊँगा।

मैंने पहाड़ी की ओर चलना शुरू किया।

लेकिन मैं शिवानीपल्ली या उसके आसपास कहीं भी नहीं पहुँच पाया। संक्षेप में, उस रात साढ़े ग्यारह बजे के बाद मैं वहाँ पहुँचा, शिवानीपल्ली या उसके आसपास के इलाके में नहीं, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, बल्कि सालिवरम की ओर उत्तर दिशा में जाने वाले रास्ते के आधे से ज़्यादा हिस्से में। उसके बाद, ज़ाहिर है, मुझे पता चल गया कि मैं कहाँ हूँ और आधे घंटे के भीतर गाँव पहुँच गया।

वहाँ मैंने रंगास्वामी को जगाया और सारी घटना बताई। उसके बाद सोने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

मैंने आपको पहले ही बताया है कि शिवानीपल्ली एक छोटा सा कस्बा था जहाँ मुश्किल से आधा दर्जन झोपड़ियाँ थीं। रंगास्वामी स्वयं कई विवाह कर चुके थे और उनके परिवार में कई महिलाएं और बच्चे थे, इसलिए मैं उनसे अपनी झोपड़ी में आमंत्रित करने की उम्मीद नहीं कर सकता था। इसलिए मैं मुख्य रास्ते से थोड़ा हटकर रखे एक भूसे के ढेर पर लेट गया और ओस से भीगी हुई भूसी को अपने ऊपर ओढ़ लिया ताकि ठंड से बच सकूँ।

अगर आप कभी दक्षिण भारत के जंगलों में बहुतायत में पाए जाने वाले नन्हे

घास के कीड़ों द्वारा आधा खाए जाने का रोमांचक अनुभव लेना चाहें, तो मैं आपको शिवानीपल्ली में घास के ढेर में एक रात बिताने की सलाह दूंगा। आप निश्चित रूप से निराश नहीं होंगे। घास का कीड़ा एक छोटा सा जीव है जो आमतौर पर पिन की नोक से भी बड़ा नहीं होता। आपका खून चूसने के बाद यह काफी बड़ा हो जाता है। लेकिन यह बहुत ही कृतघ्न जीव है। यह न केवल आपका खून चूसता है, बल्कि एक छोटा सा घाव भी छोड़ जाता है जो तेजी से मवाद से भरे फोड़े में बदल जाता है। असहनीय खुजली को शांत करने के लिए आप जितना खुजलाते हैं, यह घाव उतना ही बड़ा होता जाता है और अंततः एक भयंकर फोड़े में बदल जाता है जिस पर भूरे रंग की पपड़ी जैसी परत जम जाती है और अंदर से पानी निकलता है। इसके अलावा, अगर एक साथ कई कीड़े आप पर हमला कर दें, तो आपको घावों के साथ-साथ बुखार भी हो जाएगा।

उस भयानक रात के बाकी समय में मैं मुश्किल से ही सो पाया, बल्कि अंधेरे के बचे हुए घंटों में पूरे शरीर को खुजलाता रहा। सुबह होते ही मैं बहुत थका हुआ, बहुत नाराज़ और बहुत दर्द से कराह रहा था, मानो उस रात दुश्मन से हुई मुठभेड़ में मुझे सबसे बुरी स्थिति का सामना करना पड़ा हो—इस मामले में वह लगभग सूक्ष्म आकार का घास का कीड़ा था।

सबसे पहले तो मुझे गर्म चाय बनानी थी ताकि मेरा मनोबल बढ़ सके, जो काफी गिरा हुआ था। इसी सोच के साथ मैं रंगास्वामी की कुटिया की ओर गया, लेकिन दरवाजा कसकर बंद मिला। यह स्पष्ट था कि वहां रहने वाले लोग देर से उठने का इरादा रखते थे। यह मेरी योजना के बिल्कुल विपरीत था, इसलिए मैंने मजबूत लकड़ी के दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक दी और बार-बार आवाज लगाई। काफी देर बाद मुझे अंदर से कुछ हलचल सुनाई दी। आखिरकार दरवाजे को अंदर से बंद करने वाली लकड़ी की छड़ हटाई गई, और बिखरे बालों वाला, नींद में डूबा हुआ रंगास्वामी बाहर आया।

मैंने उसे आग जलाने का निर्देश दिया, जिसे उसने गाँव की सड़क के दूसरी ओर तीन पत्थरों को त्रिभुज के तीन बिंदुओं पर रखकर और बीच में गीली लकड़ियों और भूसे से धुआँदार आग जलाकर शुरू किया। मैं अपने साथ पानी उबालने का कोई बर्तन नहीं लाया था, इसलिए मुझे उसके घर का एक मिट्टी का बर्तन उधार लेना पड़ा, जिसके बारे में उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह बिल्कुल साफ है, हालाँकि मैं खुद

उसकी इस बात पर पूरी तरह विश्वास करने को तैयार नहीं था।

लेकिन आखिरकार पानी उबल गया। मैंने अपनी पानी की बोतल खाली करके उसमें कुछ चाय की पत्तियां डालीं, फिर उबलता हुआ पानी डाला, ढक्कन लगाकर बोतल को हिलाया, न कि चम्मच से चलाया। इसी बीच दूसरी झोपड़ियों में रहने वाले लोग जाग उठे। वे मुझे उत्सुकता से देख रहे थे। किसी ने थोड़ा दूध दिया, और किसी ने गुड़ दिया, जिसके लिए मैं बहुत आभारी था, क्योंकि मैं चीनी लाना भूल गया था। हमने दूध उबाला और अपने मग में गुड़ के कुछ टुकड़े डाले, फिर उसमें चाय और उबलता हुआ दूध मिलाया। यकीन मानिए, उससे जो मिश्रण बना, वह चाय जैसा लग रहा था।

नाश्ते में मैंने कुछ अंडे खाए जिन्हें मैंने खरीदा और उसी चूल्हे पर उबाल लिया। पिछली रात उन घिनौने छोटे कीड़ों के साथ हुए भयानक अनुभव के बाद, लगभग सात बजे तक मेरी दिलचस्पी फिर से जाग उठी थी और मैंने पैंथर के बारे में कुछ करने का सोचा।

मैंने रंगास्वामी से कहा कि वह उस चरवाहे को बुलाए जो पिछली रात हमारे साथ था और जो उस सुबह तक दिखाई नहीं दिया था, या उसके किसी साथी को, यदि संभव हो तो भैंसों का झुंड इकट्ठा करने और उन्हें घनी झाड़ियों में ले जाकर पैंथर को भगाने के लिए कहे, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मैंने अपने एक ही शॉट से उस जानवर को पूरी तरह से नहीं चूका था।

वहाँ मौजूद सभी लोगों ने जवाब दिया कि शिवानीपल्ली में भैंसें नहीं हैं; और कोई भी अपने मवेशियों को पैंथर के संभावित हमले में घायल होने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। तभी पिछली रात का मेरा लापता साथी—वह चरवाहा जो मेरे साथ आया था—मिल गया। उसने बताया कि सालिवराम में उसका एक दोस्त है जिसके पास एक पिस्तौल है। वह मुझसे मदद करने के लिए पिस्तौल उधार लेना चाहता था, और इसी उद्देश्य से वह उस सुबह अंधेरा रहते ही सालिवराम के लिए निकल पड़ा था। दुर्भाग्य से, उसका दोस्त अपनी पिस्तौल लेकर कहीं बाहर गया हुआ था, इसलिए वह उसे उधार नहीं ले सका। वह खाली हाथ लौट आया।

मैंने उनकी मदद करने की नेक मंशा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन मन ही मन मैं इस बात से बहुत खुश था कि वे मुझसे मजल-लोडर (बंदूक) उधार लेने में नाकाम रहे। एक अनुभवहीन व्यक्ति के लिए मजल-लोडर एक बेहद घातक हथियार

बन सकता है और मैं मानता हूँ कि अगर वे और वह बंदूक मेरे पीछे होते तो मैं बहुत घबरा जाता।

भैंसों का इस्तेमाल न कर पाने के बाद, मैंने शिवानीपल्ली में मौजूद ऐसे ही आवारा कुत्तों के मालिकों का सहयोग लेने की कोशिश की। काफी आनाकानी के बाद, आखिरकार एक अकेली आवारा कुतिया मिली। वह दुबली-पतली कुतिया थी, जिसके कान जड़ से कटे हुए थे, पूरी तरह भूरे रंग की थी और उसकी पूंछ बहुत लंबी और मुड़ी हुई थी। वह गांव के 'आवारा कुत्ते' का एक विशिष्ट उदाहरण थी, जिनके कान बचपन में ही काट दिए गए थे क्योंकि बाद में उन पर और अंदर कीड़े लग जाते। ग्रामीणों के लिए यह समझना आसान है कि अपने कुत्तों के कान बचपन में ही काट देना, बाद में समय-समय पर उनमें से सैकड़ों कीड़े निकालने की तुलना में कहीं कम मेहनत और कम समय लेता है।

एक अजीब संयोग से, इस कुतिया का नाम 'कुश' रखा गया, जिसने मुझे जंगल के दिनों के मेरे पुराने दोस्त,* पुजारी बायरा के कुत्ते 'कुश कुश करिया' के नाम की याद दिला दी। मुझे नहीं पता कि यह नाम सलेम जिले के वन क्षेत्रों के कुत्ते पालकों के बीच लोकप्रिय है या यह सिर्फ किसी भी कुत्ते का ध्यान आकर्षित करने के लिए स्वाभाविक रूप से निकलने वाली ध्वनि जैसा लगता है। व्यक्तिगत रूप से, मैं दूसरे विचार की ओर अधिक झुकाव रखता हूँ। जो भी हो, मुझे तब यह नहीं पता था कि यह कुतिया कुश अपने नाम वाले बायरा के कुत्ते की तरह ही बेहद चंचल स्वभाव की होगी।

अंत में, चरवाहे रंगास्वामी, कुश और उसके मालिक के साथ, हम यह पता लगाने के लिए निकल पड़े कि उस पैंथर का क्या हुआ था।

हम पिछली रात के अपने कदमों के निशान पर वापस उसी स्थान पर गए जहां मेरे साथियों ने मुझे छोड़ा था, फिर नदी के दो मोड़ों के साथ-साथ अपने ही पदचिह्नों का अनुसरण किया और अंत में उस स्थान पर उसके उत्तरी किनारे पर चढ़ गए जिसे मैंने पिछली रात चुना था।

उसके बाद मैं राइफल ताने हुए आगे-आगे चल रहा था, कुश मेरे और उसके मालिक के बीच दौड़ रही थी, जो कतार में सबसे पीछे था। हमारे बीच में रंगास्वामी था, और उसके पीछे चरवाहा था।

जैसा कि मुझे पिछली रात ही पता चल गया था, झाड़ियाँ इतनी घनी थीं कि

बारह घंटे पहले मैंने जिस रास्ते का अनुसरण किया था, उसका सटीक पता लगाना असंभव था; और दिन का उजाला होने के कारण, मैं उन पेड़ों या झाड़ियों में से किसी को भी पहचान नहीं पा रहा था जिनसे मैं अंधेरे में होकर गुजरा था, हालाँकि मुझे मोटे तौर पर पता था कि मैं किस दिशा में गया था।

चरवाहे को बेशक पता था कि शिकार कहाँ पड़ा है, लेकिन मैं सीधे वहाँ नहीं जाना चाहता था। मेरा इरादा था कि अगर मुमकिन हो तो उस जगह को ढूँढ़ूँ जहाँ मैंने पैंथर पर गोली चलाई थी। मैं कामयाब नहीं हुआ। जो लोग जंगलों में रहे हैं, वे समझ सकते हैं कि दिन के उजाले में एक छोटी सी झाड़ी भी रात के उजाले से आकार, आकृति और जगह में कितनी अलग दिखती है। अंधेरा जंगल में वस्तुओं के आकार को बहुत बड़ा कर देता है, उनकी आकृति को बिगाड़ देता है और दिशा के बारे में भ्रम पैदा करता है।

मुझे जो चाहिए था उसे ढूंढने में मदद के लिए, मैंने चरवाहे से कहा कि वह हमें मरी हुई गाय तक ले जाए, जिसे उसने आसानी से ढूंढ लिया। संयोग से, वह आधी खाई हुई थी, हालांकि उस समय यह जानना संभव नहीं था कि क्या पैंथर ने मेरे उससे मिलने से पहले खाना खा लिया था, या क्या मैंने उसे पूरी तरह से नहीं देखा था और वह मेरे जाने के बाद खाने के लिए वापस आया था। पैंथर कभी-कभी अपने शिकार को ढूंढने के लिए वापस आ जाते हैं यदि उन्हें कोई ढूंढ नहीं पाता है, हालांकि ऐसा व्यवहार, कम से कम मेरे अनुभव में, बहुत आम नहीं है।

शिकार तक पहुँचने के बाद, मैंने अब उस दिशा को याद करने और फिर से समझने की कोशिश की जहाँ से मैं आया था, ताकि मैं वहाँ से अपने ही पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए अंततः उस स्थान पर पहुँच सकूँ जहाँ मैंने गोली चलाई थी। दुर्भाग्य से, मुझे ठीक-ठीक पता नहीं था कि पैंथर कितनी दूर से मेरी ओर रेंगता हुआ आया था, बल्कि मुझे पूरी तरह से अपने अनुमान पर निर्भर रहना पड़ा कि जब मैंने पहली बार उसे चरते हुए सुना था तब वह कितनी दूर था। रात में जंगल में, जब ध्वनि सुनने वाला और ध्वनि का स्रोत दोनों ही आसपास की झाड़ियों से घिरे होते हैं, तो ध्वनि बहुत भ्रामक हो सकती है, और इसी कारण से यह अनुमान लगाना मुश्किल होता है कि वह कितनी दूर तक जा सकती है। मुझे लगा कि जहाँ तक मुझे याद है, मैं मृत गाय से पंद्रह से पचास गज की दूरी पर खड़ा हो सकता था।

मैंने अंदाज़ा लगाया कि मैं कहाँ खड़ा हो सकता था, और पंद्रह गज नापकर मैंने

एक आदमी से एक छोटी सी शाखा झुकाकर उस जगह को चिह्नित करने को कहा। फिर मैंने पैंतीस गज और नापा ताकि पचास गज की अधिकतम दूरी पूरी हो जाए, जो मेरे अनुमान से उस पैंथर से मेरी दूरी का अधिकतम माप था जिसे मैंने पिछली रात चरते हुए सुना था। यहाँ हमने एक और शाखा झुकाई।

इन दोनों निशानों के बीच कहीं, और लगभग उसी दिशा में जहाँ मैं चल रहा था, मुझे पता था कि मुझे कोई न कोई सुराग ज़रूर मिल जाएगा जिससे पता चल सके कि मेरी गोली पैंथर को लगी थी या नहीं। अगर मुझे कुछ नहीं मिला तो मुझे यही मानना पड़ेगा कि गोली मारने का मेरा प्रयास पूरी तरह विफल रहा।

इस समय तक मुझे यह भी यकीन हो गया था कि अगर पैंथर घायल हुआ भी था, तो वह आस-पास कहीं छिपा नहीं था, क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह हमारी आवाजाही और बातचीत सुनकर अब तक कोई न कोई संकेत जरूर देता। वह संकेत गुर्राहट के रूप में होता, या शायद अचानक हमला भी कर देता। ऐसी किसी प्रतिक्रिया का न होना और पूरी तरह सन्नाटा छा जाना, मुझे इस निष्कर्ष पर ले आया कि अगर मैंने उसे मारा भी होता, तो घाव इतना गंभीर नहीं था कि वह वहां से भाग न सके।

मैंने अपने तीनों साथियों को चारों ओर घेरा बनाकर खून के निशान की सावधानीपूर्वक तलाश करने का निर्देश दिया। मैं भी उनके साथ शामिल हो गया, और थोड़ी ही देर में कुश किसी चीज़ को सूंघते हुए अपने मालिक का ध्यान आकर्षित करने लगी। उसने चिल्लाकर कहा कि उसे वह मिल गया है जिसकी हम तलाश कर रहे थे। उसके और कुतिया के चारों ओर इकट्ठा होकर हमने लेमनग्रास की एक पत्ती पर सूखे खून का एक लंबा धब्बा देखा।

मेरा मनोबल काफी बढ़ गया। यह इस बात का सबूत था कि मेरा निशाना नहीं चूका था। ज़मीन से खून के निशान की ऊंचाई से पता चलता था कि मैंने अपने शिकार को उसके शरीर के ऊपरी हिस्से में कहीं घायल किया था, और जैसा कि मुझे पता था कि मैंने उसकी आंखों के बीच गोली चलाई थी क्योंकि मेरी टॉर्च की रोशनी उसकी आंखों में पड़ रही थी, इसलिए मेरी गोली उसके सिर को छूकर निकल गई होगी। या फिर, अगर वह उस समय अपने पिछले पैरों को ऊपर उठाकर बैठा होता (जो कि रेंगते हुए पैंथर के लिए एक असामान्य स्थिति है), तो मेरी गोली उसकी पीठ के पिछले हिस्से में कहीं धंस गई होती।

यहीं पर कुश ने अपनी खूबी दिखाई। वह बिल्कुल अप्रशिक्षित कुतिया थी,

लेकिन सहज रूप से उसे समझ आ गया कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है। थोड़ी देर तक वह बेतरतीब ढंग से इधर-उधर सूंघती रही, फिर रोने लगी और हमसे आगे दौड़ने लगी।

हमने उसका पीछा किया और पाया कि जहाँ से पैंथर गुजरा था, वहाँ पत्तियों और घास पर खून के और भी धब्बे थे। झाड़ियों और ऊँची घास के गुच्छों के बीच ज़मीन पर भी खून के धब्बे थे। यह एक उत्साहवर्धक खोज थी, क्योंकि इससे पता चलता था कि जानवर का काफी खून बह रहा था, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि घाव केवल मामूली खरोंच नहीं था।

कुछ बेहद सुरक्षित स्थानों को छोड़कर, अधिकांश रक्त सूख चुका था। वहाँ यह इतना नम था कि उंगलियों से रगड़कर हटाया जा सकता था। हालाँकि, यह इतना गाढ़ा या गहरा नहीं था कि यह संकेत दे सके कि मेरी गोली किसी महत्वपूर्ण अंग, जैसे फेफड़े, में घुस गई थी।

कुश पश्चिम दिशा में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ी, और यह स्पष्ट था कि वह एक ऐसे रास्ते का अनुसरण कर रही थी जो अंततः हमें ज़मीन की तीव्र ढलान तक ले जाएगा, जहाँ से उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली धारा का तल निकलता है, इससे पहले कि वह नीचे दूसरी धारा से मिलकर पश्चिम की ओर मुड़ जाए। संगम से पहले इस धारा को अनेकल वंका के नाम से जाना जाता है। इन दोनों धाराओं के संयोजन को डोड्डा हल्ला कहा जाता है, जिसका कन्नड़ भाषा में शाब्दिक अर्थ है 'बड़ी घाटी'। इसका यह नाम इसलिए है क्योंकि इसके कई भाग खाइयों और दर्रों से होकर गुजरते हैं और अनचेटी गाँव के पास से एक घुमावदार और कष्टदायक मार्ग बनाते हैं। वहाँ नदी अचानक अपना मार्ग बदल लेती है और गुंडालम से होते हुए दक्षिण की ओर मुड़ जाती है, और अंततः कावेरी नदी में मिल जाती है। यही डोड्डा हल्ला धारा कभी जोवलागिरी के आदमखोर बाघ का निवास स्थान हुआ करती थी,* लेकिन यह एक अलग कहानी है। मैंने इसके हर हिस्से की खोजबीन की है, उस जगह तक जहाँ यह कावेरी नदी से मिलती है, और इसे 'गुप्त नदी' नाम दिया है। इसका एक कारण यह है कि इसके मार्ग पर कई मील की कठिन पैदल यात्रा करनी पड़ती है, इसलिए बहुत कम लोग इस रास्ते से गुजरते हैं, और यह बेहद शांत और मानव जाति की आवाज़ों से दूर है; दूसरा कारण यह है कि मैंने इसके किनारों पर भूवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहस्य खोजे हैं। मैं उन्हें प्रकट करने में संकोच करता हूँ, क्योंकि उनके सार्वजनिक होने से अगला

आवश्यक पाप अपने आप ही हो जाएगा, यानी सलेम जिले के सबसे रमणीय और एकांत वन क्षेत्रों में से एक की पवित्रता का उल्लंघन।

उस सुबह घटी घटनाओं पर लौटते हैं। झाड़ियाँ बहुत घनी थीं, लेकिन कुश की अचूक प्रवृत्ति को ये कोई बाधा नहीं लग रही थीं। वास्तव में, परेशानी तो उसके साथ चलने में थी। उसका छोटा और फुर्तीला भूरा शरीर झाड़ियों और काँटों के बीच से तेज़ी से निकल रहा था। हमारे पैर, हाथ और बाँहें इन काँटों से बुरी तरह छिल गए थे क्योंकि हम कुश को नज़र में रखने के लिए मूर्खतापूर्ण गति से चल रहे थे, और घायल पैंथर के अचानक हमले से बचने के लिए ज़रा भी सावधानी नहीं बरत रहे थे, अगर वह हमारे ठीक आगे आ जाता। कभी-कभी कंटीली झाड़ियाँ और अन्य रुकावटें हमारी गति धीमी कर देती थीं, और कुश बहुत आगे निकल जाती और गायब हो जाती। तब उसे सीटी बजाकर वापस बुलाना ज़रूरी हो जाता था, और जब वह कुछ मिनटों बाद वापस आती थी, तो उसे फिर से हमारे रास्ते पर आने में कुछ कठिनाई होती हुई प्रतीत होती थी।

हमारे पास रस्सी नहीं थी, इसलिए मैंने चरवाहे की पगड़ी उधार ली और कपड़े का एक सिरा कुश के गले में बांध दिया, और दूसरा सिरा उसके मालिक को दे दिया। लेकिन पगड़ी छोटी थी और कपड़ा भी कम पड़ रहा था। आदमी को पकड़ बनाए रखने के लिए झुकना पड़ा, जबकि कुश आगे बढ़ने की बेचैनी में छटपटाती, हांफती और खांसती रही।

इसी तरह हम आगे बढ़ते रहे और अंततः पठार के किनारे पर पहुँच गए, जहाँ से ज़मीन अचानक ढलान पर उतरकर अनेकल वंका नदी के तल तक पहुँचने लगी। नीचे पेड़ों की चोटियों के बीच से हमें नदी दिखाई दे रही थी, जिसकी चाँदी जैसी सतह पर सूरज की किरणें चमक रही थीं और वह रेतीले तल पर इधर-उधर बहती जा रही थी। उस समय नदी तीन-चौथाई सूखी थी।

कुछ देर बाद हमें पहला ठोस सबूत मिला जिससे पता चला कि पैंथर को अपने ज़ख्मों का असर महसूस होने लगा था। वह बबूल के पेड़ के नीचे घास में लेट गया था और दर्द से कराह रहा था, क्योंकि जहाँ-जहाँ वह लेटा और करवटें बदल रहा था, वहाँ खून के धब्बे और निशान दिखाई दे रहे थे। कुश ने उस जगह पर काफी देर बिताई और खून चाटकर एक और असामान्य व्यवहार दिखाया। आम तौर पर गाँव का कुत्ता पैंथर से डरता है, लेकिन कुश, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, एक अनोखा जानवर

था, और यह वाकई बहुत अच्छी बात थी कि उसका मालिक उसे साथ लाने को तैयार था। आम तौर पर, गाँव वाले जो एक पिल्ले के कान जड़ से काटने में भी संकोच नहीं करते, वे घायल पैंथर या बाघ का पता लगाने के लिए कुत्ते का इस्तेमाल करने को क्रूरतापूर्ण प्रथा मानते हैं और ऐसे किसी भी काम में शामिल होने से साफ इनकार कर देते हैं। लेकिन उस कुतिया की अमूल्य सहायता के बिना, हम उस सुबह खून के निशान का पीछा नहीं कर पाते। घनी झाड़ियों में यह सामान्य मानवीय दृष्टि से दिखाई नहीं देता।

जैसे-जैसे हम गहरी ढलान से नीचे उतरते गए, वनस्पति विरल होती गई और ज़मीन नंगी और पथरीली होती गई। हर जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे हुए थे, जिनके बीच-बीच में कठोर, लंबी पत्तियों वाली लेमनग्रास के गुच्छे दिखाई दे रहे थे।

फिर हम एक ऐसे पड़ाव पर पहुँचे जहाँ केवल बड़े-छोटे पत्थर ही थे और ढलान लगभग समाप्त हो चुकी थी। मानसून के दौरान जब नदी में बाढ़ आती है, तब उसका जलस्तर इतना ही होता है।

यहां, वनस्पति के खत्म होते ही, निशान ढूंढना आसान हो गया। घायल जानवर से गिरे और चट्टानों पर छिटके खून की बूंदों से उसके गुजरने का पता चल रहा था। जितनी दूरी हम तय कर चुके थे और पैंथर के बहे खून की मात्रा को देखते हुए, ऐसा लग रहा था कि वह मेरी शुरुआती कल्पना से कहीं ज्यादा बुरी तरह घायल था। घाव गहरा रहा होगा और गोली शायद किसी धमनी में लगी होगी। अगर गोली कहीं और, खासकर जानवर के किसी मांसल हिस्से में लगी होती, तो संभव था कि त्वचा के नीचे मौजूद प्राकृतिक वसा के जमा होने और गोली से बने छेद को बंद करने से खून बहना कम हो जाता, या शायद पूरी तरह रुक भी जाता।

हम नदी के संकरे तल पर पहुँचे जहाँ पानी अभी भी बह रहा था। यहाँ पैंथर पानी पीने के लिए नीचे बैठा था, और वहाँ खून के दो निशान थे, एक पानी के किनारे के ज़्यादा करीब था। दूर वाले निशान पास वाले निशानों की तुलना में ज़्यादा खून बहने का संकेत दे रहे थे। यह बात अजीब थी और उस समय मुझे बहुत उलझन में डाल रही थी, क्योंकि मैंने पिछली रात सिर्फ़ एक गोली चलाई थी। इसका हल तो और भी ज़्यादा चौंकाने वाला था।

एक जगह पर पैंथर अपने ही खून में लथपथ हो गया था और नदी पार करने से ठीक पहले एक चट्टान पर अपने पदचिह्न छोड़ गया था। यह निशान जानवर के अगले

पैर के एक पंजे से बना था और इसके आकार से पता चलता है कि पैंथर का आकार औसत दर्जे का था और वह संभवतः नर था। जब जानवर नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचा तब तक पैर से खून धुल चुका था, लेकिन पत्थरों और चट्टानों पर खून की सूखी बूँदें अभी भी मौजूद थीं।

नदी पार करने के बाद पैंथर ने अपना रास्ता बदल लिया और लगभग दो सौ गज तक पानी के किनारे-किनारे समानांतर चलता रहा, फिर वह बाईं ओर मुड़ा और विपरीत ढलान पर चढ़ने लगा। पत्थर और चट्टानें एक बार फिर तेजी से वनस्पतियों में तब्दील हो गईं, और हम फिर से लंबी घास, कांटेदार झाड़ियों, बिखरे हुए छोटे-छोटे बांसों और पेड़ों के घने झुरमुटों से होकर गुजरे।

पैंथर ऊपर की ओर चढ़ता चला गया था, और अब कुश भी उसी राह पर चल पड़ी, मानो उसे इस काम के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया हो। आखिरकार हम उस सड़क पर आ गए जो डेनकनिकोट्टा से एंचेटी की ओर जाती है और नीचे की ओर जाते हुए जंगल को पार करती है। हम इस सड़क पर ठीक नौवें मील के पत्थर के सामने आ गए थे, जो अब सड़क के किनारे हमारे सामने दिखाई दे रहा था। संयोग से, यही वह सड़क थी जिस पर मैंने अपनी कार पाँचवें मील के पत्थर के पास खड़ी की थी जब मैं पिछली शाम शिवानीपल्ली जाने के लिए निकला था।

रात भर और उस सुबह तड़के कई बैलगाड़ियाँ उस सड़क से गुज़री थीं, और धूल के गुबार में कुछ पल के लिए गंध पूरी तरह खो गई थी। लेकिन कुश को दूसरी तरफ़ पहुँचने पर गंध पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और हम उसके पीछे-पीछे चल दिए।

घास और बांस धीरे-धीरे कम होते गए और उनकी जगह कांटेदार झाड़ियाँ और लैंटाना उग आए, जो हमारे कपड़ों और शरीर के हर उस हिस्से को चीरते हुए निकल रहे थे, जहाँ वे छूते थे। कुछ जगहों पर, जहाँ पैंथर लैंटाना और कांटेदार झाड़ियों के नीचे दुबका हुआ था, वहाँ हमारे सामने लगभग अभेद्य बाधा खड़ी हो गई थी। न तो आगे जाने का रास्ता था और न ही पीछे हटने का, इसलिए हमारे पास झाड़ियों के नीचे पेट के बल रेंगते हुए उसका पीछा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

ऐसी जगहों और हालातों में मेरी राइफल बोझ बन गई थी, और काँटे मेरे बालों और चेहरे को नोंच रहे थे और मेरे हाथों, शरीर और पैरों में धँस रहे थे, जिससे मैं कोस रहा था और गालियाँ दे रहा था। मेरे तीनों साथियों की हालत तो मुझसे कहीं ज़्यादा

खराब थी, क्योंकि उन्होंने मुझसे कम और पतले कपड़े पहने थे। शायद उनकी चमड़ी ज़्यादा मोटी थी—मुझे ठीक से पता नहीं। लेकिन मुझे यकीन है कि हम चारों के मुँह से जो गालियाँ निकल रही थीं, उनसे बिलिंग्सगेट की किसी भी प्रतियोगिता में हमें इनाम मिल जाता। सिर्फ़ कुश ही बेफिक्र थी, और आगे खड़ी होकर वह बार-बार हमारी तरफ देख रही थी, साफ़ तौर पर हमारी धीमी और बेढंगी चाल से वह अधीर हो रही थी।

लेकिन इस बार यह भी स्पष्ट था कि घायल जानवर कुंदुकोट्टई नामक एक छोटे से गाँव से लगभग आधा मील पीछे स्थित एक बड़ी पहाड़ी की ओर जा रहा था। यह गाँव डेनकनिकोट्टा-अंचेट्टी सड़क पर सातवें और आठवें मील के पत्थर के बीच स्थित था, जिसे हमने अभी-अभी पार किया था। पहाड़ी की चोटी पर कई छोटी-बड़ी गुफाएँ थीं, और इससे भी बुरी बात यह थी कि कुछ बड़ी गुफाओं की मेहराबदार छतों को जंगली चट्टानों पर रहने वाली बड़ी मधुमक्खियों ने अपने छत्ते बनाने के लिए सुरक्षित और आदर्श स्थान के रूप में चुन लिया था। मैंने पहले भी कई बार अंचेट्टी जाने वाली सड़क पर गाड़ी चलाते हुए इन छत्तों को देखा था।

मुझे लगा कि काले पैंथर को पकड़ने की मेरी उम्मीदें बहुत कम होती जा रही हैं। उन गुफाओं में उसे ढूंढना भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा था। इसके अलावा, अगर पैंथर का छिपने का स्थान मधुमक्खियों द्वारा चुनी गई कई गुफाओं में से एक होता, तो मधुमक्खियां उसकी रक्षा करतीं। मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि ये चट्टानी मधुमक्खियां, जब परेशान होती हैं, तो बेहद खतरनाक दुश्मन बन सकती हैं।

हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए और गुफाओं की कतार के नीचे झाड़ियों से बाहर निकले, जहाँ ढलान वाली चट्टानों की वजह से कांटेदार झाड़ियाँ कम हो गईं और उनकी संख्या घटने लगी। ये चट्टानें सदियों से ऊपर से बहते बारिश के पानी से घिसकर कांच की तरह चिकनी हो गई थीं।

गंध चट्टान की ढलान पर ऊपर की ओर बढ़ती हुई एक बड़ी गुफा की ओर जा रही थी जो हमारे ऊपर दिखाई दे रही थी। जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से हम गुफा की छत से लटके हुए कम से कम आधा दर्जन मधुमक्खी के छत्तों के काले समूह देख सकते थे, जिनमें से प्रत्येक लगभग एक गज लंबा और लगभग दो फुट चौड़ा था। उनके बीच पुराने छोड़े हुए छत्तों के अवशेष बिखरे पड़े थे, मोम चट्टान से बाहर निकला हुआ था, जो गंदे पीले-सफेद रंग के चपटे त्रिकोणों के आकार का था, लगभग नौ इंच लंबा।

कैनवास के तले वाले मेरे जूतों की बदौलत मैं फिसलन भरी चट्टान पर आसानी से चढ़ गया, जबकि मेरे साथियों के नंगे पैरों ने उनकी और भी मदद की। कुश के पंजे हमारे आगे चट्टान पर चढ़ते समय हल्की सी क्लिक की आवाज़ कर रहे थे।

हम गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचे जहाँ एक धीमी सरसराहट की आवाज़ गूंज रही थी। यह लाखों मधुमक्खियों की हलचल से आ रही थी जो हमारे ऊपर लटके छत्तों में इधर-उधर रेंग रही थीं। इसके अलावा, एक लगातार हल्की भिनभिनाहट भी थी, जो व्यस्त कीड़ों के पंखों से उठ रही थी, जो जंगल से जंगली फूलों से शहद लेकर आ रहे थे, जिसे वे छत्तों में जमा कर रहे थे, और कुछ और शहद लाने के लिए रवाना हो रहे थे।

वे छोटे जीव अपने कर्तव्यों में मग्न थे और हमारी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे, लेकिन हमें एहसास हुआ कि अगर हमने गलती से भी उन्हें परेशान किया, तो यही छोटे जीव, जो अभी इतने निर्दोष और शांत दिख रहे हैं, काले लावा की धारा की तरह हम पर विषैले हमले करेंगे और कुछ ही मिनटों में हमें डंक मारकर मौत के घाट उतार देंगे।

हम गुफा के प्रवेश द्वार के सामने खड़े थे, जहाँ खून के निशान, जो अब बहुत हल्के हो गए थे, दो छोटी सूखी बूंदों के रूप में अभी भी दिखाई दे रहे थे। इनसे पता चलता था कि घायल जानवर अंदर चला गया था।

गुफा के प्रवेश द्वार के पास काफ़ी बड़ी थी, लगभग बीस फीट चौड़ी और लगभग बीस फीट ऊँची। कुछ गज तक अंदर तक दिन की रोशनी आती थी, उसके आगे पूरी तरह अंधेरा था। मैंने गुफा के प्रवेश द्वार के पास छत से लटके हुए नौ अलग-अलग मधुमक्खी के छत्ते गिने, सभी बड़े आकार के थे। ज़मीन चट्टान की थी और ऐसी जगहों पर आमतौर पर पाई जाने वाली नमी से मुक्त प्रतीत होती थी। निस्संदेह इसी कारण से यह गुफा पैंथर और मधुमक्खियों का निवास स्थान थी। क्योंकि ये जानवर और कीड़े, विशेष रूप से पैंथर, नम जगहों को नापसंद करते हैं।

मैंने अपने तीनों साथियों से फुसफुसाकर कहा कि वे बाहर ही रहें और गुफा के प्रवेश द्वार के किनारे ढलान वाली चट्टान पर चढ़कर गुफा के ऊपर तक पहुँच जाएँ, और किसी भी हालत में नीचे न उतरें, क्योंकि अगर पैंथर मेरे पास से गुजरा तो वह उसी दिशा से मुझ पर हमला करेगा। वे चले गए, और कुश और मैं गुफा में प्रवेश कर गए।

उस पल से कुश को आहत हो गया कि आगे खतरा है। उसका पहले वाला साहस गायब हो गया था, और वह धीरे-धीरे मेरे पीछे-पीछे चलने लगी।

बाहर से छनकर आ रही धुंधली रोशनी में मैं जहाँ तक देख सकता था, आगे बढ़ता रहा। ज़्यादा से ज़्यादा तीस फीट ही चल पाया होगा। फिर हम रुक गए। मैं और आगे नहीं जा सका क्योंकि मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि मेरा शिकार ऐसी गुफा में जाएगा, इसलिए मैं गाँव से टॉर्च लाना भूल गया था।

अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो घायल जानवर को जगाने की कोशिश करना, या मशाल लेने के लिए शिवानीपल्ली वापस जाना और अपने साथियों को ऊपर अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थान से निगरानी रखने के लिए कहना ताकि मेरे लौटने से पहले पैंथर चुपके से बाहर न निकल जाए। मुझे बेशक दूसरा विकल्प चुनना चाहिए था। यह न केवल सुरक्षित था, बल्कि अधिक निश्चित भी था। असल में, मुझे लगता है कि मैं इतनी दूर जाकर वापस आने में बहुत आलसी महसूस कर रहा था। इसलिए मैंने सोचा कि पहले विकल्प को आजमा कर देखूं और यदि संभव हो तो लंबी पैदल यात्रा की परेशानी से बच जाऊं।

मैंने सीटी बजाई और जोर से चिल्लाया। कुछ नहीं हुआ। मैंने फिर चिल्लाया। कुश, जो पहले मुस्कुरा रहा था, अचानक भौंकने लगा। फिर भी कुछ नहीं हुआ।

गुफा प्रवेश द्वार पर लगभग आधी चौड़ी हो गई थी। हमारे प्रयासों का फल केवल सन्नाटे के रूप में मिला। गहरा, अंधेरा भीतरी भाग किसी कब्र की तरह शांत था।

क्या घायल जानवर गुफा के अंदर ही मर गया था? यह असंभव लग रहा था, क्योंकि अनेकल वंका नदी पार करने से पहले आराम करने के बाद पैंथर के दोबारा लेटने का कोई सबूत नहीं था। क्या वह हमारे आने से पहले गुफा से निकल गया था? ऐसा आसानी से हो सकता था; लेकिन फिर से, ऐसा होने का कोई सबूत नहीं था।

मैंने फेंकने के लिए कुछ ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। मेरे पैरों के पास ही एक बड़ा पत्थर पड़ा था। मैंने उसे अपने बाएं हाथ में उठाया और पाया कि वह भारी है।

मैं बाएं हाथ से काम करता हूं, फेंकने के लिए, हालांकि मैं दाहिने कंधे से निशाना लगाता हूं। मैंने अपनी राइफल पहले ही तैयार कर ली थी, और उसे अपने दाहिने हाथ के मोड़ में संतुलित करते हुए, मैंने पूरी ताकत से पत्थर को बगल से फेंका। वह गुफा के अंधेरे में गायब हो गया। मैंने उसे चट्टानी सतह पर एक धीमी सी

धमक के साथ टकराते हुए सुना और फिर वह कई छोटी-छोटी उछालों के साथ आगे बढ़ गया।

अगले ही पल, वही जानी-पहचानी खाँसी और दहाड़ों की गूँज सुनाई दी, जैसे कोई पैंथर अँधेरे से निकलकर मुझ पर झपटा हो। काला पैंथर होने के कारण, मैं उसे तब तक नहीं देख पाया जब तक वह अंधेरे से निकलकर मेरी राइफल के ठीक दो-तीन गज आगे नहीं आ गया। मैंने गोली चलाई—लेकिन उसके हमले की तेज़ी से ऐसा लगा जैसे पैंथर मेरी ओर फिसल रहा हो। मैंने फिर गोली चलाई। गुफा के अंदर दो गोलियों की गूँज गूंज उठी।

फिर अचानक अफरा-तफरी मच गई। मधुमक्खियों की आवाज़, जो अब तक लगभग अचेतन रूप से मेरे कानों में एक हल्की भिनभिनाहट के रूप में दर्ज हो रही थी, अचानक चरम पर पहुँच गई। गुफा के प्रवेश द्वार से आने वाली दिन की रोशनी अनगिनत काले, तेज़ी से भागते धब्बों से भर गई, जिनकी संख्या आवाज़ की तीव्रता बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती गई। वे काले कण मुझ पर झपटने लगे। हवा उनसे जीवंत हो उठी थी।

मैंने मधुमक्खियों का प्रकोप भड़का दिया था। जैसे ही मैंने अपनी खाकी जैकेट उतारी, उसे अपनी नंगी पीठ और चेहरे के चारों ओर लपेटा और प्रवेश द्वार की ओर तेज़ी से बढ़ा, पैंथर का ख्याल मेरे दिमाग से गायब हो गया।

मधुमक्खियाँ मुझ पर हिमस्खलन की तरह टूट पड़ीं। उन्होंने मेरे हाथों को डंक मारा। वे जैकेट की सिलवटों से अंदर घुस गईं और मेरी गर्दन, सिर, चेहरे पर डंक मारा। एक तो मेरी कमीज़ के कॉलर के नीचे घुस गई और मेरी पीठ पर डंक मारा।

डंक लगने से असहनीय दर्द हुआ।

मैं उस ढलान वाली चट्टान से नीचे फिसल गया जिस पर हम कुछ ही देर पहले चढ़े थे। दूर से मुझे कुश की दर्द भरी चीखें सुनाई दे रही थीं। मेरी गति जितनी तेज़ थी, मेरे पंख वाले दुश्मन उससे भी तेज़ गति से चलने लगे; हवा उनसे भरी हुई थी, वे बेरहमी से मुझ पर हमला कर रहे थे। मुझे याद आया कि मैंने उनकी तुलना जापान के आत्मघाती पायलटों से की थी, जिन्होंने दुश्मन पर खुद को झोंक कर अपनी जान और अपने विमान दोनों कुर्बान कर दिए थे। ठीक उसी तरह, उस दिन मुझे डंक मारने वाली हर मधुमक्खी ने स्वतः ही अपनी जान कुर्बान कर दी, क्योंकि हर मधुमक्खी के डंक का सिरा कांटेदार होता है, और दुश्मन को डंक मारने के बाद डंक के सिरे को

निकालने की कोशिश में कीड़ा अपने डंक को ज़हर की थैली समेत फाड़ देता है। ये ज़हर की थैली पीड़ित की त्वचा में धंसी रह जाती है। इस प्रकार, डंक मारने से मधुमक्खी खुद को अपूरणीय क्षति पहुंचाती है, जिसके प्रभाव से वह बहुत जल्द मर जाती है।

मैं ढलान वाली चट्टान के तल तक पहुँचा, मधुमक्खियाँ अभी भी मेरे चारों ओर थीं। हताशा में, मैं रेंगकर सबसे घनी लैंटाना झाड़ी के नीचे घुस गया। मैंने हमेशा इस झाड़ी को जंगल की वनस्पति के लिए एक भयानक अभिशाप और मनुष्य के लिए एक कीट माना था, क्योंकि यह हमेशा जंगलों और खेतों दोनों पर अतिक्रमण करती है, साथ ही शिकार के रास्तों पर चुपचाप और आराम से चलने में बाधा डालती है; लेकिन उस क्षण मैंने अपने श्राप वापस ले लिए और लैंटाना पर आशीर्वाद बरसाया। इसने मेरी जान बचाई। मधुमक्खियाँ उड़ते समय ही हमला करती हैं और डंक मारती हैं, जो उन्हें ऊपर बताए गए हमलावर पक्षियों से एक और समानता प्रदान करता है। वे जितनी चालाक होती हैं, उनमें बैठने और फिर आगे बढ़कर हमला करने की समझ नहीं होती। उनका नियम है गोता लगाना, डंक मारना और मर जाना। लैंटाना की झाड़ियों के घने जाल ने उन्हें सीधे मेरे शरीर पर हमला करने से रोक दिया। और इस तरह मैं उस निश्चित मौत से बच गया होता, अगर उस इलाके में वह हानिकारक लैंटाना न होता जिसे मैं पहले अक्सर कोसता था।

मैं चाहे जितनी भी तेजी से दौड़ता, मधुमक्खियां मुझसे भी तेज उड़तीं और हजारों की संख्या में मुझ पर टूट पड़तीं।

अब तक नौों छत्ते बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो चुके थे, और मेरे ऊपर हवा में गुस्से से भरी मधुमक्खियों की भिनभिनाहट गूंज रही थी। मैं लैंटाना की सुरक्षात्मक झाड़ी के नीचे चुपचाप लेटा रहा, भागते समय उन जीवों द्वारा किए गए कई डंकों से मुझे दर्द हो रहा था।

मधुमक्खियों की भिनभिनाहट शांत होने और उन्हें दोबारा काम पर लौटने में दो घंटे से अधिक समय लग गया। मुझे बहुत नींद आ रही थी और अगर डंक के दर्द ने मुझे जगाए न रखा होता तो मैं सो ही जाता। जैसे-जैसे हर घाव के आसपास की त्वचा सूजती गई, जलन और बढ़ती गई।

दोपहर के तीन बज चुके थे जब मैं लैंटाना की झाड़ियों से रेंगकर बाहर निकला और किसी तरह ढलान से नीचे सड़क तक पहुँचा; वहाँ से मैं कुंडुकोट्टई गाँव तक पैदल

गया। वहाँ मुझे मेरे तीन साथी मिले। गुफा के प्रवेश द्वार के ऊपर अपने सुविधाजनक स्थान पर बैठे वे मधुमक्खियों के हमले से लगभग पूरी तरह बच गए थे। मधुमक्खियों ने स्पष्ट रूप से अपना हमला अपने ठीक सामने चल रहे दुश्मनों पर केंद्रित कर दिया था—मुझ पर और बेचारी कुश पर, जो अब उन तीनों आदमियों के साथ थी। उसे बुरी तरह डंक लगा था, और मुझे पूरा यकीन था कि पैंथर पर भी मधुमक्खियों ने तीखे हमले किए होंगे।

हम सब चलकर उस कार तक गए जहाँ मैंने उसे एक दिन पहले छोड़ा था। कार में बैठने के बाद मैं डेनकनिकोट्टा के लिए निकल पड़ा, जहाँ एक स्थानीय निधि अस्पताल और औषधालय था। शाम काफी देर हो चुकी थी जब हमने डॉक्टर को जगाया। वह हमें अस्पताल के अपने क्लिनिक में ले गए और चिमटी की मदद से कुश और मेरे शरीर में धंसे डंक निकाले। गुफा में उन छोटे शैतानों ने हमें क्रमशः उन्नीस और इकतालीस डंक मारे थे। डॉक्टर ने हमारे घावों पर अमोनिया लगाया।

हमने डेनकनिकोट्टा के वन बंगले में रात बिताई। वहाँ के बिस्तर लोहे के थे, गद्दे नहीं थे। इसलिए मैं एक कुर्सी पर लेटा। तीनों आदमी कुश के साथ बरामदे में सोए।

डंकों के कारण मुझे मलेरिया और बुखार हो गया। कुश भी तकलीफ में थी और मैं उसकी सिसकियाँ सुन सकती थी। मेरी गर्दन, चेहरा और हाथ अभी भी सूजे हुए थे। एक मधुमक्खी ने मेरी बाईं आँख के कोने के पास डंक मार दिया था, जिससे मेरी आँख थोड़ी बंद हो गई थी।

भोर के समय मेरी सूजी हुई आंख और फूला हुआ चेहरा उस बंगले में मौजूद एकमात्र धुंधले दर्पण के सामने खड़े होने पर मेरी दयनीय स्थिति दिखाई दे रही थी।

हमने दस बजने तक इंतज़ार किया और फिर नौवें मील के पत्थर तक वापस गाड़ी चलाई। अपने कदमों के निशान पर चलते हुए—लेकिन इस बार मवेशियों और जंगली जानवरों के रास्तों से, जहाँ चलना अपेक्षाकृत आसान था—हम उस चट्टानी टीले के नीचे उस जगह पर पहुँचे जहाँ हम एक दिन पहले खड़े थे।

मधुमक्खियाँ एक बार फिर अपने छत्तों में व्यस्त थीं। चारों ओर शांति और सुकून का माहौल था।

तीनों ग्रामीणों को वहीं छोड़कर, मैं कुश के साथ दूसरी बार ढलान पर चढ़ा और सावधानी से गुफा की ओर बढ़ा। मुझे पता था कि जब तक मैं मधुमक्खियों को दोबारा परेशान नहीं करता, तब तक मैं उनसे सुरक्षित हूँ। और मुझे लगभग यकीन था कि

पिछले दिन मेरे द्वारा चलाई गई दो गोलियों ने पैंथर को मार डाला था। अगर ऐसा नहीं भी होता, तो मधुमक्खियाँ वह काम पूरा कर देतीं।

मैं सही था। कुछ कदम अंदर, गेंद की तरह सिकुड़ा हुआ, काला पैंथर पड़ा था, मरा हुआ और बिल्कुल अकड़ा हुआ। कुश उससे एक गज दूर खड़ी रही, सूंघती और गुर्राती रही। मैंने उसका मुंह अपने हाथ से ढक दिया ताकि वो चुप हो जाए, कहीं वो भयानक मधुमक्खियां परेशान न हो जाएं और हम पर फिर से हमला न कर दें।

गुफा से बाहर निकलते हुए मैंने आदमियों को अपने पास आने का इशारा किया। हम सब मिलकर पैंथर को ढलान से नीचे खींच लाए। चरवाहे ने, जिसके पास चाकू था, एक शाखा काट दी जिससे हमने लता की मदद से उसके पैरों को बांध दिया। फिर हम चारों ने मिलकर बोझ उठाया और उसे इंतज़ार कर रही कार तक ले गए, जहाँ मैंने मरे हुए जानवर को बोनट और मडगार्ड के बीच लटका दिया।

डेनकनिकोट्टा वन बंगले में मैंने खाल उतारी। यह एक नर पैंथर था, सामान्य आकार का, जिसकी लंबाई छह फीट सात इंच थी। काले बालों के नीचे उसके धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। यह पहला और संयोगवश एकमात्र काला पैंथर था जिसे मैंने कभी मारा था।

काले बालों में धंसे मधुमक्खी के डंकों का पता लगाना मुश्किल था, लेकिन मैंने कर्मचारियों को निकाले गए डंकों की सावधानीपूर्वक गिनती करने को कहा, जिसकी मैंने स्वयं जाँच की। निकाले गए डंकों की संख्या से पुष्टि हुई कि उस जानवर में 273 डंक थे। निश्चित रूप से और भी कई डंक रहे होंगे जो हमारी नज़र से बच गए।

मैंने उन लोगों को उनकी सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया और मधुमक्खियों द्वारा किए गए दंड की भरपाई करते हुए बैंगलोर लौट आया—क्योंकि मेरे पास एक काले पैंथर की खाल थी, जो कि बहुत ही दुर्लभ वस्तु है—और मेरे पास कुश नाम का एक अद्भुत बुद्धिमान कुत्ता था, जिसे मैंने उसके मालिक से सात रुपये में खरीदा था।

एक बात मैं बताना लगभग भूल ही गया था। आपको याद होगा कि अनेकल वंका नदी में जहाँ पैंथर पानी पीने के लिए रुका था, वहाँ मुझे खून के दो अलग-अलग निशान मिले थे। उनमें से एक में दूसरे की तुलना में ज़्यादा खून बह रहा था, और क्योंकि मैंने सिर्फ़ एक गोली चलाई थी, इसलिए मुझे उस समय थोड़ा आश्चर्य हुआ था। अब कारण बिल्कुल स्पष्ट हो गया है। मेरी एक गोली, जो आँखों के बीच में लगी थी, निशाने से चूक गई, कनपटी और कान को पार करते हुए जानवर के जांघ में जा

धँस गई। दूसरा घाव ही था जिससे बहुत ज़्यादा खून बह रहा था। पहला घाव सिर्फ़ ऊपरी तौर पर था। ज़ाहिर है, उस रात जब मैंने गोली चलाई थी, तब पैंथर उछलने के लिए थोड़ा मुड़ा और झुक गया था, और मैंने ठीक समय पर गोली चलाई थी।

गुफा में चलाई गई दो गोलियों में से एक (पहली) पैंथर की छाती में लगी थी, और दूसरी, जब पैंथर मेरी ओर फिसल रहा था, तो उसके खुले मुंह में घुस गई और गर्दन के पिछले हिस्से से बाहर निकल गई।

---

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

पाँच

सांप और अन्य जंगली जीव

भारतीय जंगलों के जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जो उन लोगों के लिए बेहद दिलचस्प है जिनके लिए किसी भी प्रकार का जानवर और कोई भी जंगल एक गुप्त आकर्षण का स्रोत होता है। डनबर-ब्रैंडर, चैंपियन, ग्लासफर्ड, बेस्ट, कॉर्बेट और कई अन्य जैसे प्रख्यात लेखकों ने इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है और इन जानवरों की आदतों को अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर दर्ज किया है। इनमें से कुछ ने लगभग पचास साल पहले लिखा था, उस समय, यह याद रखना महत्वपूर्ण है, भारतीय प्रायद्वीप के जंगल शिकार, विशेष रूप से मांसाहारी जानवरों से भरे हुए थे। उनके लेखन की हमेशा सराहना की गई है, लेकिन अब जाकर उनके महत्वपूर्ण कार्यों का वास्तविक आंतरिक मूल्य सामने आ रहा है, और यह कहना उचित होगा कि जैसे-जैसे वर्ष बीतते जाएंगे और भारत का वन्य जीवन अतीत की बात बन जाएगा, इन महान व्यक्तियों के अभिलेखों का महत्व लगातार बढ़ता जाएगा, जो भावी पीढ़ियों के लिए ऐसे ज्ञान को संरक्षित करेंगे जिसे कोई धन-दौलत कभी नहीं खरीद सकती।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत के शिकारी और यहाँ तक कि अफ्रीका के महान श्वेत शिकारी, जिन्होंने अपने करियर की शुरुआत ट्रॉफी इकट्ठा करने वाले या, बाद वाले मामले में, पेशेवर के रूप में की थी, अपने जीवनकाल में उन वन्य जीवों के प्रति प्रेम विकसित करते रहे, जिनका वे कभी शिकार करते और मारते थे। उनमें से अधिकांश ने शिकार करने की आदत को त्यागकर वन्य जीवों की फोटोग्राफी और प्रकृति के अध्ययन की अधिक सार्थक लेकिन कठिन कला को अपनाया।

आरंभिक वर्षों में शिकार के लिए जंगल में प्रवेश करना एक बेहद जोखिम भरा कार्य माना जाता था। जानवरों से होने वाले खतरों के अलावा, जिन्हें बहुत अधिक माना जाता था, विभिन्न विषैले सांपों, बिच्छुओं, मकड़ियों और अन्य जीवों का खतरा भी था, साथ ही मलेरिया, काला पानी बुखार आदि जैसी जंगली बीमारियों से स्वास्थ्य को भी खतरा था।

उदाहरण के लिए, मेरे पिता के ज़माने में नीलगिरी पर्वतमाला की तलहटी में स्थित जंगलों की यात्रा, या मैसूर राज्य के शिमोगा और कादुर ज़िलों के जंगलों की यात्रा, या पश्चिमी घाट के आसपास के इलाकों की यात्रा, बहुत जोखिम भरी मानी जाती थी। सुबह-सुबह इन इलाकों को ढकने वाले कोहरे को ब्रोंकाइटिस, निमोनिया और विशेष रूप से मलेरिया का प्रत्यक्ष कारण माना जाता था। कहा जाता था कि जंगल के जानवर बेहद निडर और डरावने होते हैं।

इसके विपरीत, प्राचीन लेखकों ने हमें दिखाया है कि जंगली जीव स्वभाव से आक्रामक नहीं थे, और लगभग बिना किसी अपवाद के वे मानव जाति से भयभीत रहते थे। विज्ञान ने हमें यह सिखाया है कि भारत में कोई जहरीली मकड़ी, छिपकली या मेंढक नहीं पाए जाते हैं और केवल कुछ ही प्रकार के जहरीले सांप मिलते हैं; साथ ही यह भी कि ब्रोंकाइटिस और निमोनिया कहीं भी हो सकते हैं, यहाँ तक कि भारत के सबसे गर्म और शुष्क शहरों में भी। सर रोनाल्ड रॉस ने दिखाया है कि मलेरिया परजीवी को मच्छर की एक विशेष प्रजाति ले जाती है, न कि जंगलों की नम धुंध और हवा। यह परजीवी न केवल जंगलों में बल्कि पूरे देश में पाया जाता है। मलेरिया फैलाने वाला मच्छर रुके हुए पानी और गंदी नालियों में पनपता है, और ऐसे स्थान बड़े से बड़े शहरों में भी बहुतायत में पाए जाते हैं। अधिकारियों द्वारा चलाए गए अभियानों और उपायों ने इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया है, और चिकित्सा विज्ञान ने इन बीमारियों के लिए त्वरित और लगभग निश्चित इलाज विकसित किए हैं, जिससे अब वे उतना भय नहीं पैदा करते जितना पहले करते थे।

जंगली जानवरों और साँपों से होने वाले खतरों के बारे में, व्यक्ति का अपना अनुभव ही सबसे अच्छा शिक्षक रहा है और हमेशा रहेगा। लेकिन कुछ ही अपवादों को छोड़कर, और वे भी केवल कुछ खास जगहों पर, यह कहना सुरक्षित और सही है कि घने जंगलों में घूमने का खतरा किसी व्यस्त शहर की सड़क पार करते समय पैदल चलने वाले व्यक्ति के खतरे से कहीं कम होता है। अतीत के सभी लेखकों ने यह बात सिद्ध की है।

बेशक, खेल में नौसिखिया कभी-कभी कोई मूर्खतापूर्ण काम कर बैठता है जिससे वह मुसीबत में पड़ सकता है, लेकिन वह मुसीबत पूरी तरह से उसकी अपनी अनुभवहीनता और अज्ञानता का परिणाम होती है। अनुभव, विशेष रूप से उसके लिए जो न केवल सीखने के लिए इच्छुक है बल्कि उत्सुक भी है, आसानी से प्राप्त हो जाता है।

भारतीय जंगलों में शेर को राजा माना जाता है क्योंकि शेर गुजरात प्रायद्वीप के गिर वन को छोड़कर कहीं और नहीं पाया जाता, जहाँ उसे बहुत सख्ती से संरक्षित किया जाता है। बाघ एक भव्य, सुंदर और राजसी जानवर है, लेकिन वास्तव में भारतीय जंगलों का असली राजा हाथी है, जो अपने विशाल आकार, अपार शक्ति और कभी-कभी अप्रत्याशित स्वभाव के कारण प्रसिद्ध है। आमतौर पर वह बाघ से

कहीं अधिक खतरनाक जानवर होता है, और जिन क्षेत्रों में ये दोनों जानवर बहुतायत में पाए जाते हैं, वहाँ के आदिवासी बाघ को (आदमखोर बाघ को छोड़कर) तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं, जबकि वे जंगली हाथी का अत्यंत सम्मान करते हैं। किसी भी आदिवासी के साथ जंगल के रास्ते पर चलें। यदि आप भाग्यशाली रहे और आपको बाघ या तेंदुआ दिख जाए, तो वह आपको बड़े ही सहज भाव से उसे दिखा देगा। लेकिन अगर उसे किसी शाखा के टूटने की आवाज सुनाई दे, तो वह तुरंत रुक जाएगा और अपनी स्थानीय भाषा में 'हाथी' का अर्थ बताने वाला एक शब्द बोलेगा, आवाज की दिशा का अनुमान लगाएगा और ऐसा रास्ता खोजने का प्रयास करेगा जिससे वह उस इलाके के पास से न गुजरे जहां हाथी चर रहा है।

यह स्वाभाविक सावधानी उनके पूर्वजों और स्वयं उनके द्वारा संचित वन अनुभव का परिणाम है। वे और वे इन शक्तिशाली जानवरों के अनिश्चित स्वभाव से परिचित हैं, इसलिए वे किसी भी अनावश्यक जोखिम से बचते हैं।

वास्तव में, जंगली हाथी आम तौर पर एक हानिरहित प्राणी होता है, जो मनोदशा और अचानक उत्तेजना, भय और चिड़चिड़ापन के अधीन होता है। इस सामान्यीकरण के चार अपवाद हैं।

इसके विपरीत, और अफ्रीकी हाथियों से बिल्कुल उलट, भारतीय हाथियों के झुंड में सदस्यों की संख्या जितनी अधिक होती है, उससे खतरा उतना ही कम होता है। इसके चार अपवाद हैं: एक मान्यता प्राप्त 'विद्रोही' हाथी जिसने पहले ही किसी इंसान को मार डाला हो, एक 'मस्त' हाथी जो नर हाथी की विशेष यौन अवस्था में होता है, कभी-कभी झुंड से अलग चरने वाला एक अकेला नर हाथी, और एक मादा हाथी जिसके साथ उसका बच्चा हो और जिसकी रक्षा के लिए वह अपनी जान तक दे सकती है। यह ध्यान देने योग्य है कि इन चारों मामलों में खतरा झुंड से नहीं बल्कि एक ही जानवर से उत्पन्न होता है। कहा जाता है कि अफ्रीकी हाथी जरूरत पड़ने पर सामूहिक रूप से किसी शिकारी पर हमला करने की क्षमता रखते हैं। भारतीय हाथी ऐसा नहीं करते।

लेकिन ऊपर दिए गए चारों मामलों में, वह जानवर बेहद खतरनाक और विनाशकारी हो सकता है। वह किसी इंसान का लगातार पीछा करेगा, कभी-कभी एक मील तक भी, बशर्ते इंसान इतनी दूर तक दौड़ सके, जब तक कि वह उसे पकड़ न ले। फिर वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा, या अपने पैरों से कुचलकर और जमीन पर

रगड़कर उसका बुरा हाल कर देगा, या उसे किसी पेड़ के तने या जो भी चीज पास हो, उससे पटक देगा, या उसे हवा में उछाल देगा।

जंगल में गहरे पानी के कुंड पर बैठे-बैठे मैं अक्सर वहाँ रोज़ पानी पीने और नहाने आने वाले जंगली हाथियों का मज़ाक उड़ाता हूँ। कभी बाघ की तरह आवाज़ निकालता हूँ तो कभी पैंथर की तरह चीर-फाड़ करता हूँ। अगर हाथी झुंड में हों, तो वे ज़ोर से चिंघाड़ते हैं और डालियों व झाड़ियों के टूटने की आवाज़ के साथ तेज़ी से भाग जाते हैं। यह देखना बहुत आनंददायक होता है कि माँएँ अपने छोटे बच्चों को अपनी सूंड से सहारा देकर लगभग अपने आगे उठाती हैं और पानी के किनारे झाड़ियों में छिपे हुए बाघ के डर से भाग जाती हैं। अगर कोई हाथी अकेला आया हो, तो आवाज़ सुनते ही वह एकदम स्थिर खड़ा हो जाता है, अपने कान आगे करके आवाज़ सुनने की कोशिश करता है और अपनी सूंड से हवा को सूंघकर दुश्मन की मौजूदगी का पता लगाने की कोशिश करता है। फिर वह मुड़कर चुपचाप जंगल में चला जाता है। कभी-कभार कोई हाथी गुस्से में अपने पैर पटकता है और अपना सिर व सूंड इधर-उधर हिलाता है, लेकिन एक मिनट के भीतर ही वह भी वहां से गायब हो जाता है। मुझे आज तक एक भी ऐसा हाथी नहीं मिला जो बाघ की आवाज निकालते रहने पर भी अपनी जगह पर डटा रहा हो। जाहिर है, अपने आकार और ताकत के बावजूद, उनमें उस खूंखार जानवर के सामने टिके रहने का साहस नहीं होता। मैंने कहीं पढ़ा है कि हाथी की आंखें जिस चीज को देखती हैं उसे बड़ा करके दिखाती हैं। स्वाभाविक रूप से, इससे बाघ या इंसान हाथी को असलियत से कहीं ज्यादा बड़े दिखाई देते हैं। शायद यही असली वजह है कि हाथी बाघों, तेंदुओं और इंसानों से भी डरते हैं।

पैंथर की आवाज़ का असर कुछ अलग ही होता है। अगर हाथी झुंड में हों, तो नर हाथी आक्रामक हो जाते हैं और अपने बच्चों की रक्षा करने के संकेत देते हैं। लेकिन अकेला हाथी हमेशा भाग जाता है, हालांकि उतनी जल्दी में नहीं जितनी जल्दी में 'बाघ' की आवाज़ सुनकर भागता है। एक-दो हाथियों ने पानी पर पैर पटका या अपनी सूंड से मारा और फिर पानी पीने लगे। लेकिन यह साफ़ था कि वे काफ़ी घबराए हुए और असहज थे।

मेरे ये छोटे-छोटे मनोरंजक प्रयोग स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि हाथी अपने विशाल आकार और ताकत के बावजूद साहसी प्राणी नहीं होते। इसके विपरीत, वे बेहद डरपोक और सहमे हुए होते हैं। शायद यह कहना उचित होगा कि सभी 'धमकाने

वालों' की तरह, वे केवल उसी स्थिति का पूरा फायदा उठाते हैं जिसमें उनका दुश्मन उनसे डरने के संकेत देता है। लेकिन ऊपर बताए गए चार अपवादों को छोड़कर, हमला करना, विशेष रूप से किसी भी ऐसी चीज पर जो पलटवार कर सकती है, आम हाथी के व्यवहार का हिस्सा नहीं है।

हाथियों को सफेद वस्तुओं से स्वाभाविक रूप से नफरत होती है। इसी कारण हाथी-ग्रस्त क्षेत्रों में सड़कों के किनारे लगे मील के पत्थर और पथ-पत्थर काले रंग से रंगे होते हैं, क्योंकि सफेद रंग की इन वस्तुओं को हाथी देखते ही तुरंत उखाड़कर फेंक देंगे। इसी कारण हाथी-ग्रस्त जंगल में सफेद कपड़े पहनकर घूमना भी असुरक्षित है, क्योंकि इससे हमला होने का खतरा रहता है। पुराने समय में सफेद, धूप से बचाने वाली टोपियां काफी प्रचलित थीं, क्योंकि धूप से बचाव के साथ-साथ ये सूर्य की किरणों को परावर्तित करके सिर को ठंडा रखती थीं। मेरे एक परिचित को एक बार जंगल में ऐसी ही सफेद टोपी पहने घूमते देखा गया था। उन्होंने जंगल में इसे क्यों पहना था, यह मुझे नहीं पता, क्योंकि हाथियों की नापसंदगी के अलावा यह बहुत ही ध्यान खींचने वाली होती और किसी भी जीव का शिकार करने की संभावना को खत्म कर देती। खैर, उन्होंने इसे पहना था। वह और उसका साथी, एक शोलागा, एक पहाड़ी की चोटी पर चल रहे थे, तभी उन्होंने लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक हाथी को देखा, जो पहाड़ी पर थोड़ी ऊँचाई पर एक खुले मैदान के दूसरी ओर चर रहा था। उसी क्षण हाथी ने उन्हें देख लिया। सामान्यतः इतनी दूरी से हाथी उन्हें नहीं देख पाता, क्योंकि हाथियों की दृष्टि बहुत कमजोर होती है, और हवा उनकी ओर बह रही थी, इसलिए हाथी को उनकी गंध भी नहीं आई होगी। लेकिन जंगल के हरे-भरे और भूरे रंग के बीच वह चमकता हुआ सफेद हेलमेट किसी से छिपा नहीं था। हाथी ने चिंघाड़ मारी और उनका पीछा करने लगा। शिकारी और शोलागा दुम दबाकर भाग निकले। सौभाग्य से शोलागा एक अनुभवी शिकारी था, जिसे जंगल में 'साहिबों को ले जाने' का वर्षों का अनुभव और प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उसने अपने शिष्य को नहीं छोड़ा, बल्कि उसके पीछे-पीछे दौड़ता रहा और उसे दिशा बताता रहा। हाथी तेजी से उनके करीब आ गया। तभी शोलागा ने शिकारी को पकड़ लिया, उसकी सफेद टोपी छीनकर जमीन पर फेंक दी, और साहब को दौड़ते रहने के लिए प्रेरित किया। हाथी टोपी तक पहुंचा और उनका पीछा करने में उसकी रुचि खत्म हो गई। कहने की जरूरत नहीं है कि जब हाथी ने उस टोपी को खाया, तब तक उसका आकार भी पूरी तरह बिगड़

चुका था। उसे उनका पीछा करने या उन्हें नुकसान पहुंचाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन उस भयानक सफेद वस्तु को सहन करना उसके लिए असहनीय था। उसे बस उसे मिटाना ही था।

नर हाथियों के बीच लड़ाई तीन दिनों तक चलती रहती है, जिसमें बीच-बीच में आराम के लिए कुछ ही विराम मिलते हैं। कभी-कभी यह लड़ाई किसी ताकतवर मादा हाथी के प्रति आकर्षण के लिए प्रतिद्वंद्वी नर हाथियों के बीच भी हो सकती है, हालांकि ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं। अक्सर ऐसा तब होता है जब मदमस्त नर हाथी का झुंड की मादा हाथियों के प्रति आकर्षण बहुत बढ़ जाता है और उसे झुंड से बाहर निकालना पड़ता है। ज्यादातर यह तब होता है जब एक युवा नर हाथी, अपने जीवन के चरम पर पहुंचकर, झुंड के मुखिया नर हाथी को नेतृत्व के लिए चुनौती देता है।

ऐसे संघर्षों के दौरान, बैल एक-दूसरे को बुरी तरह घायल कर देते हैं, अपने दांतों से दुश्मन के शरीर के किसी भी हिस्से पर वार करते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि इन लड़ाइयों के दौरान और बाद में, प्रतियोगी बेहद गुस्से में होते हैं और जो भी जीवित प्राणी उन्हें दिखाई देता है, उसका बुरा हाल होता है।

सलेम जिले के वन विभाग में कार्यरत एक वनपाल ने सलेम जिले की डोड्डा हल्ला घाटी के दुर्गम इलाकों में दो सांडों को आपस में लड़ते हुए देखा। उस घटना में एक विचित्र घटना घटी। दोनों सांडों ने अपनी दुश्मनी भुला दी और एक साथ उस पर टूट पड़े। कुछ दिनों बाद जब उसके विभागीय सहकर्मियों ने उसका शव देखा तो वह बुरी तरह घायल था।

मैंने अपनी पिछली कुछ कहानियों में 'हिंसक' हाथियों के बारे में लिखा है, इसलिए मैं यहाँ उनके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगा, बस इतना कहूँगा कि वे जंगल में मिलने वाले सबसे खतरनाक जीव होते हैं। एक बार उनकी क्रोध और घृणा से भरी चीखें सुन लें, और उनके विशाल शरीर को झाड़ियों और घनी वनस्पतियों के बीच से अपनी ओर आते हुए देख लें, जब उनकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी होती है, कान बाहर निकले होते हैं और छोटी पूंछ खड़ी होती है, तो यह अनुभव आपको जीवन भर याद रहेगा। अगर वे किसी इंसान को पकड़ लेते हैं, तो उसे दी जाने वाली सजा अलग-अलग हो सकती है। नीलगिरी की तलहटी में एक हिंसक हाथी ने एक वन रक्षक को हवा में उछाल दिया। गिरते समय वह बांस के टूटे हुए तने पर फंस गया और अंततः उसकी मृत्यु हो गई। सेगुर का हिंसक हाथी, जिसे रेवरेंड बुल ने गोली मार दी थी,

तुलनात्मक रूप से छोटा जानवर था, लेकिन फिर भी अपनी चतुराई और क्रूरता के लिए जाना जाता था। वह सचमुच किसी इंसान का पीछा करता था या किसी चट्टान या बांस के झुंड के पीछे से उस पर हमला कर देता था। उसने सेगुर रोड पर एक कुली महिला को पकड़ा, उसे पैरों से कुचलकर ज़मीन पर रगड़ा और फिर शरारत में उसके हाथ में पहनी चांदी की पायल और गले में लकड़ी की माला दोनों को तोड़कर कुछ गज दूर फेंक दिया। कोयंबटूर जिले में एक बीमार वनपाल का मामला था, जो गिनी-कृमि से पीड़ित था। लंबे समय तक बीमारी की छुट्टी पर रहने के बाद, वह इतना आलसी हो गया कि वह काम नहीं करना चाहता था—या शायद कर ही नहीं सकता था। उसका तबादला बिलिगिरिरिंगन पर्वत श्रृंखला में कर दिया गया, जो हाथियों से भरा इलाका है। उस समय वहाँ एक दुष्ट हाथी भी रहता था, जिसे लंबे समय से दुष्ट घोषित किया गया था, लेकिन कभी मारा नहीं गया था। एक दिन उस आदमी का दुर्भाग्य से उस दुष्ट हाथी से सामना हो गया। वह उसका पीछा करने लगा। भागते समय एक नाला पार करते हुए उसका टखना मुड़ गया। दुष्ट हाथी ने उसे पकड़ लिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इसके बाद तीन दिनों तक वह उसके बिखरे हुए अवशेषों के आसपास उत्पात मचाता रहा और किसी भी वाहन को गुजरने नहीं दिया। अंत में उसने दया दिखाते हुए वहां से जाने का फैसला किया और उसके परिजनों को अंतिम संस्कार के लिए बचे हुए अवशेषों को इकट्ठा करने दिया। उसी जिले के बैलूर के पास एक और बदमाश था जिसने बैलगाड़ी को उसके बैलों सहित सड़क से नीचे गिरा दिया था। उसे मैसूर के प्रसिद्ध पशुकृत करने वाले श्री वैन इंगन ने मार डाला था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ऊपर वर्णित घटनाएँ शरारती हाथियों द्वारा की गई थीं और इसलिए असामान्य हैं। जैसा कि मैंने दिखाने का प्रयास किया है, सामान्य हाथी एक डरपोक, एकांतप्रिय प्राणी होता है जिसमें साहस या वीरता का कोई लक्षण नहीं होता।

निडर और अदम्य साहस के मामले में, घायल जंगली सूअर भारतीय जंगल का सबसे बड़ा दिलदार जानवर है। अपने अपेक्षाकृत छोटे आकार के बावजूद, बड़े जानवरों की तुलना में, वह इतना साहस, इतनी क्रूरता, इतना दृढ़ संकल्प और सबसे बढ़कर, इतना जोश, इतनी सहनशक्ति और शिकार करने की इतनी प्यास रखता है जितना मैंने किसी और जानवर में नहीं देखा। घायल हाथी, बाइसन, यहाँ तक कि बाघ और तेंदुआ भी पहले तो भागने की कोशिश करते हैं और घिर जाने पर ही पलटवार

करते हैं। लेकिन अगर आप बूढ़े जंगली सूअर को घायल कर दें और उसे अपनी जगह का पता चलने दें, तो वह आप पर टूट पड़ेगा। बालाक्लावा में किसी भी भाले वाले ने इतनी बहादुरी और दृढ़ संकल्प से हमला नहीं किया होगा जितना कि अगर आप उसे घायल कर दें और फिर अपनी स्थिति बता दें तो वह आप पर टूट पड़ेगा।

भारत के जंगलों में हाथी के बाद बाघ का स्थान सबसे दिलचस्प जानवरों में आता है। मुझे लगता है कि बाघ बेहद आकर्षक है। कुछ आदमखोर बाघों को छोड़कर, जो कभी-कभार इंसानों को मारकर खा जाते हैं और कुछ सौ वर्ग मील के क्षेत्र में आतंक मचा देते हैं, बाघ को 'सज्जन' कहना बिल्कुल उचित है।

उसका शिकार करना वाकई में सभी खेलों का राजा माना जा सकता है। घायल बाघ का पीछा करना वाकई एक जोखिम भरा काम है और शिकारी को जंगल में माहिर होना चाहिए। लेकिन घायल बाघ को जंगल में बिना मारे छोड़ देना न केवल क्रूरता है, क्योंकि घायल जानवर दर्द सहता रहता है, बल्कि कायरता भी है, क्योंकि उस इलाके में और उसके आसपास रहने वाले गरीब लोगों का भी ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि वही घाव उसके जीवन का वो मोड़ हो सकता है जो उसे आदमखोर बना दे। इसके अलावा, वह एक बहादुर प्रतिद्वंद्वी है। वह पहले तो संघर्ष से बचने की कोशिश करता है, लेकिन अगर उसका पीछा किया जाए और उसे बहुत ज्यादा परेशान किया जाए, तो वह पलटकर आखिरी दम तक लड़ता है।

बैंगलोर के एक जाने-माने सैन्य अधिकारी, रेवरेंड श्री जर्विस, एक बार शिमोगा जिले के कुम्सी में एक घायल बाघ का पीछा कर रहे थे। बाघ ने उन पर हमला किया और उनकी बांह को बुरी तरह चबा डाला। उनके भारतीय कार चालक, जो उनके साथ बंदूक भी लिए हुए थे, लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें बंदूक चलाना नहीं आता था, ने बड़ी बहादुरी से बाघ को अपने मालिक से दूर भगाया। उन्होंने अपने पास रखी अतिरिक्त शॉटगन के बट से बाघ पर हमला किया। इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए चर्च के सदस्यों द्वारा उन्हें जो पुरस्कार दिया गया, वह पूरी तरह से उनके योग्य था। घायल पादरी को कुम्सी स्थित खानाबदोशों के बंगले में ले जाया गया, जहां स्थानीय डॉक्टर ने उस समय उपलब्ध सर्वोत्तम साधनों से उनकी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त बांह को काट दिया। बाद में उस बांह को बंगले के परिसर में एक पेड़ के नीचे दफना दिया गया। बैंगलोर जाने वाली अगली ट्रेन में एक विशेष डिब्बा जोड़ा गया और रेवरेंड श्री जर्विस को वापस भेज दिया गया, हालांकि अगले दिन बैंगलोर के बोरिंग अस्पताल में उनका

निधन हो गया और उन्हें पूरे सैन्य सम्मान के साथ दफनाया गया।

आकार, शक्ति या भव्यता में पैंथर बाघ के बराबर नहीं होता। वह एक बेहद क्रूर दुश्मन भी हो सकता है। मैंने पहले भी कहा है कि आदमखोर पैंथर भी, भले ही उन्हें इंसानी मांस खाने का शौक हो, आम तौर पर इंसानों से वही डर रखते हैं जो उनकी प्रजाति के बाकी सदस्यों में पाया जाता है। वे शायद ही कभी सामने से हमला करते हैं, बल्कि लगभग हमेशा ही अपने शिकार पर पीछे से चुपके से हमला करते हैं, और आमतौर पर ऐसे हमले के लिए वे अंधेरे के समय को प्राथमिकता देते हैं।

आम तौर पर पैंथर को कुत्ते का मांस बहुत पसंद होता है, जिसे वह एक स्वादिष्ट व्यंजन मानता है। कोयंबटूर जिले के कोललेगल कस्बे से मुश्किल से एक मील दूर एक छोटे से मंदिर वाले टीले पर दो पैंथर रहते थे। वे उस पहाड़ी की तलहटी के पास रहने वाले अमेरिकी मिशनरियों के लिए एक बड़ी मुसीबत बन गए थे, क्योंकि वे उनके कुत्तों को इतनी तेजी से खा जाते थे कि मिशनरी उनकी जगह नए कुत्ते ला ही देते थे। आखिरकार पैंथर इतने उपद्रवी हो गए कि स्थानीय पुलिस सब-इंस्पेक्टर ने कस्बे के कुछ युवकों के साथ मिलकर उन्हें उस गुफा से बाहर निकालने का जिम्मा उठाया, जिसमें वे रहते थे। पहले चरण में, उस इलाके की घास में आग लगाई गई। जब इससे भी वे नहीं निकले, तो गुफा में जलती हुई मशालें फेंकी गईं। इससे वे और भी तेजी से बाहर आ गए, और इस झड़प में एक पैंथर मारा गया और कुछ लड़के घायल हो गए। दूसरा पैंथर दल के एक बुजुर्ग सदस्य को बुरी तरह घायल करने के बाद भाग गया। बुकानन नाम का एक मिशनरी उसका पीछा करने गया लेकिन उस पर हमला हुआ, जबकि पैंथर भाग निकला।

दक्षिण भारतीय जंगलों में पाया जाने वाला 'ब्रुइन' नाम का सुस्त भालू कमज़ोर नज़र वाला और गुस्सैल स्वभाव का होता है; वह बिल्कुल भी बहादुर नहीं होता, बल्कि बेहद उत्तेजित हो जाता है। आम तौर पर वह डरपोक होता है। हाल ही में तीन सुस्त भालुओं का एक परिवार - पिता, माता और एक बड़ा सा बच्चा - क्लोज़पेट के पास एक गुफा में घुस गया, जहाँ एक पैंथर पहले से ही डेरा डाले हुए था। पैंथर ने तीनों भालुओं पर हमला कर दिया। बच्चा तुरंत भाग गया। दो बड़े भालुओं ने उसका विरोध करने की कोशिश की, लेकिन क्रोधित पैंथर के तेज़ धार वाले पंजों के सामने उनका साहस पानी की तरह बह गया और वे भी भाग गए। इतना ही नहीं, नर भालू भागने की इतनी जल्दी में था कि उसने देखा तक नहीं कि वह कहाँ जा रहा है और

लगभग सौ फीट ऊँची चट्टान से लुढ़क गया, जिससे उसके दोनों अगले पैर टूट गए। अगले दिन सुबह ग्रामीणों ने भाले से उसका शिकार कर लिया।

अगर वह आपको आते हुए देख या सुन ले तो सुस्त भालू तेज़ी से भाग जाएगा। अगर आप अचानक किसी मोड़ पर उससे मिलें, तो वह बिना किसी उकसावे के हमला कर देगा—बहादुरी से नहीं, बल्कि डर और आपकी मौजूदगी से दूर भागने की चाहत से। शायद उसे लगता है कि आप उसे रोकने की कोशिश करेंगे, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप ऐसा न कर पाएं, वह आप पर हमला कर देता है। और वह ऐसा बहुत बुरी तरह से करेगा, उसका लक्ष्य हमला करने वाले की आंखें और चेहरा होगा, जिसे वह हमेशा अपने चार इंच लंबे नुकीले पंजों से नोंच डालेगा। और वह काटने का काम भी करेगा। मैंने जंगल में रहने वाले लोगों को भालुओं के हमले का शिकार होते देखा है: उनके घाव सचमुच भयानक थे, जिससे पीड़ितों के चेहरे जीवन भर के लिए बिगड़ गए।

जड़ों को खोदते समय या दीमकों के घोंसलों में बिल बनाते समय ब्रुइन अक्सर मसखरे जैसा व्यवहार करता है। उसकी आवाज़ें बैगपाइप की फुलाहट से लेकर हवाई जहाज की भिनभिनाहट तक, गुस्से में ततैया की भिनभिनाहट से लेकर लोहार की धौंकनी की आवाज़ तक, किसी भी प्रकार की पृष्ठभूमि ध्वनि जैसी हो सकती हैं; धौंकनी की आवाज़ें उसकी भिनभिनाहट और गुनगुनाने की आवाज़ों के साथ-साथ चलती रहती हैं। वह अपने शरीर को हर आकार में मोड़ता-मरोड़ता है, बशर्ते उसे वे स्वादिष्ट जड़ें या वे बेहद लज़ीज़ दीमक मिल जाएं। वह गहरी नींद सोता है, अक्सर ज़मीन में खोदे गए उथले गड्ढों में, चट्टानों के बीच, गुफाओं में, छायादार पेड़ों के नीचे और घास वाले इलाकों में सोता है। उसके खर्राटे इतने ज़ोरदार होते हैं कि दूर से भी साफ़ सुनाई देते हैं। जब वह खर्राटे नहीं ले रहा होता है, तो कोई अनजान आदमी उसके जागने से पहले लगभग उस पर पैर रख देता है। अचानक जागने पर वह चौंककर बिना सोचे समझे हमला कर देता है।

कोयंबटूर के शोलागा लोग भालुओं से निपटने में बेहद साहसी होते हैं। वे अपनी छोटी, धारदार कुल्हाड़ियों से कई भालुओं की खोपड़ी चीरने के लिए जाने जाते हैं। भालू अपने शिकार के चेहरे तक पहुँचने के लिए पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता है, जिससे उसका अपना सिर, चेहरा, गला और छाती सामने आ जाती है और वह एक शक्तिशाली और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति द्वारा चलाई गई कुल्हाड़ी के वार के लिए

असुरक्षित हो जाता है। शोलागा आमतौर पर अपनी बाईं बांह पर लपेटे हुए छोटे, काले ऊनी कंबल को ही एकमात्र ढाल के रूप में रखते हैं।

वैसे तो 'ब्रुइन' स्वभाव से शाकाहारी या कीड़े-मकोड़े खाने वाला है, लेकिन उसे सड़ा हुआ मांस खाने में भी कोई आपत्ति नहीं है। मैंने उसे कई बार बाघ या तेंदुआ के शिकार से सड़ा हुआ मांस चुराते हुए पकड़ा है।

किसी भी जंगल का एक संभावित खतरा कई प्रकार के जहरीले सांप होते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे जंगलों में पाए जाते हैं। वास्तव में, पर्यटकों को सुनाई जाने वाली सांपों से जुड़ी अधिकांश कहानियाँ बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई जाती हैं। आमतौर पर, जंगल वाले इलाकों में सभी प्रकार के सांप अपेक्षाकृत कम होते हैं और अक्सर दिखाई नहीं देते। खेतों और गांवों के आसपास इनकी संख्या कहीं अधिक होती है, क्योंकि इन जगहों पर अनाज उगाया जाता है। लाखों चूहे जमीन में बिल बनाकर अनाज खाते हैं। और सांप इन चूहों को खाते हैं।

इसके अलावा, मनुष्यों की बात करें तो, पूरे प्रायद्वीप में केवल पाँच प्रकार के विषैले साँप ही हैं जो घातक विष की खुराक दे सकते हैं। विषैले साँपों की अन्य प्रजातियाँ भी हैं, लेकिन उनके काटने से केवल स्थानीय सूजन और कुछ दर्द होता है। घातक प्रजातियों में किंग कोबरा या हमाद्र्याद, कोबरा, रसेल वाइपर, सॉ-स्केल्ड वाइपर या 'पुरसा' और करैत शामिल हैं। कोरल साँप का डंक बहुत विषैला होता है, लेकिन उसका मुँह इतना छोटा होता है कि वह मनुष्य को पकड़ नहीं पाता; इसके अलावा, उसका स्वभाव बहुत शांत होता है। पिट वाइपर सभी विषैले होते हैं, लेकिन उनके काटने से कभी मृत्यु नहीं होती, सिवाय बहुत ही दुर्लभ मामलों के जहाँ काटे गए व्यक्ति का हृदय कमजोर होता है और वह विष के प्रभाव से अधिक सदमे से मर जाता है। अधिकांश समुद्री साँप अत्यंत घातक होते हैं, उनमें से कुछ का विष कोबरा के विष से बारह गुना अधिक शक्तिशाली होता है; लेकिन निश्चित रूप से वे केवल समुद्र में ही पाए जाते हैं।

मोटे तौर पर कहें तो, सांपों के जहर की तीव्रता और उससे होने वाली मृत्यु दर इस प्रकार है: रसेल वाइपर का जहर सॉ-स्केल्ड वाइपर के जहर से लगभग दोगुना घातक होता है; कोबरा का जहर रसेल वाइपर के जहर से तीन गुना अधिक शक्तिशाली होता है; और करैत कोबरा के जहर से लगभग दोगुना जहरीला होता है। किंग कोबरा का जहर साधारण कोबरा के जहर जितना शक्तिशाली नहीं होता, लेकिन

आकार में पंद्रह फीट या उससे भी अधिक लंबा होने के कारण, यह अपनी इस मामूली कमी को मात्रा से पूरा कर लेता है। यह कोबरा की ग्रंथियों में मौजूद जहर की मात्रा से लगभग चार गुना अधिक जहर इंजेक्ट करता है, इसलिए इस सांप का काटना, जो संयोगवश दुनिया का सबसे बड़ा जहरीला सांप है, साधारण कोबरा के काटने की तुलना में लगभग तीन गुना तेजी से मृत्यु का कारण बनता है।

हमाद्र्याड सांप केवल पहाड़ी क्षेत्रों में सदाबहार जंगलों के बीच में पाया जाता है, जहाँ भारी वर्षा होती है। यह पूरी तरह से जंगलों में रहता है और जहाँ तक संभव हो मानव बस्तियों से दूर रहता है। इसका भोजन अन्य सांप होते हैं, जिसके कारण इसे कैद में रखना बहुत मुश्किल होता है। हाल ही में मैसूर चिड़ियाघर में एक सांप की एक साल तक भूख से तड़पने के बाद मृत्यु हो गई। इस दौरान उसे विभिन्न प्रकार के विषरहित सांप खिलाने का हर संभव प्रयास किया गया, लेकिन उसने उनमें से किसी को भी खाने से लगातार इनकार कर दिया और अंततः भूख से मर गया। उसकी मृत्यु ने मैसूर के प्रेस में काफी विवाद खड़ा कर दिया, जहाँ शहर के कुछ लोगों ने धार्मिक आधार पर चिड़ियाघर के अधिकारियों के इस क्रूर कृत्य की कड़ी निंदा की।

जैसा कि मैंने बताया, हमाड्रायड एक विशालकाय सांप है, जो आमतौर पर जैतून-हरे रंग का होता है और उस पर सफेद धारियाँ होती हैं। बर्मा और मलय क्षेत्र में नर सांप लगभग गहरे काले रंग का होता है, हालांकि उस पर सफेद धारियाँ बनी रहती हैं। आम कोबरा की तुलना में इसकी लंबाई के अनुपात में इसका फन उतना विकसित नहीं होता और इस पर प्रसिद्ध 'वी' का निशान भी नहीं होता। कहा जाता है कि यह बहुत आक्रामक होता है और देखते ही हमला कर देता है, खासकर मादा सांप अपने अंडों की रक्षा करते समय। मादा अपने अंडे गिरे हुए, सड़े हुए पत्तों से बने घोंसले में देती है। हालांकि, मैंने खुद इस आक्रामकता का अनुभव नहीं किया है, हालांकि मैं दो बार हमाड्रायड के बहुत करीब से सामना कर चुका हूँ। पहली बार मैं बैंगलोर में अपने बगीचे के लिए पेड़ के फर्न खोद रहा था, और उसी समय पश्चिमी घाट की एक घाटी में, अगुम्बे नामक स्थान के पास, एक धारा में तैर रही कुछ दुर्लभ लाल पूंछ वाली मछलियों को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। ये मछलियाँ मेरे घर के एक्वेरियम के लिए थीं। मैंने देखा कि झाड़ियों के बीच से एक इगुआना छिपकली का सिर मेरी ओर झाँक रहा था। उस समय मैं नदी के तल में चल रहा था और उसे करीब से देखने के लिए आगे बढ़ा, तभी वह हमाद्र्याद (एक प्रकार की छिपकली, इगुआना नहीं जैसा

मैंने सोचा था) अचानक ऊपर उठा और किनारे पर अपनी ऊँची जगह से लगभग छह फीट ऊपर मेरे सामने खड़ा हो गया। वह सरीसृप गुस्से से काँप रहा था और उसकी काली आँखें चमक रही थीं, जैसे ही उसने अपने शरीर से ज़ोर से हवा छोड़ी। मेरे पास एक छड़ी भी नहीं थी, इसलिए मैं बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा। कुछ क्षणों बाद उसका काँपना शांत हुआ, फूला हुआ फन नीचे आया, साँप नीचे झुका और नदी के उस पार पाँच फीट से भी कम दूरी पर रेंगता हुआ चला गया। आधे रास्ते में रुका और मुझे फिर से देखा कि मैं क्या करने वाला हूँ। मैंने कुछ नहीं किया और अभी भी नहीं हिला। फिर वह अपने रास्ते पर चल पड़ा और दूसरे किनारे पर झाड़ियों के बीच गायब हो गया।

दूसरी बार मैं बाबा बुदान पहाड़ियों पर संतावेरी के पास जंगल की आग बुझाने वाली पट्टी पर एक पेड़ के पीछे बैठा था, जब बाघों की तलाश चल रही थी। अचानक मुझे अपने पीछे जंगल से एक अजीब सी सीटी की आवाज़ सुनाई दी। यह कुछ-कुछ बैल-बाइसन के चेतावनी संकेत जैसी थी, और इसलिए मुझे लगा कि बाइसन दिखाई देगा, तभी एक हमाद्र्याड (एक प्रकार का सांप) झाड़ियों से निकला और आग बुझाने वाली पट्टी को पार करते हुए मेरे बिल्कुल करीब से गुजरा। हालांकि, उस स्थिति में, मुझे संदेह है कि सांप ने मुझे देखा भी होगा क्योंकि मैं बिल्कुल भी नहीं हिला।

जिन लोगों को मैंने ये दोनों घटनाएँ सुनाई हैं, उनमें से ज़्यादातर का कहना है कि मैंने न हिलकर अपनी जान बचाई, और अगर मैं हिल जाता तो साँप तुरंत हमला कर देते। इन बड़े सरीसृपों में से किसी के हमले का शिकार न होने के कारण मैं कोई राय नहीं दे सकता। हालाँकि, इसमें कोई शक नहीं कि मैं उस बदकिस्मत जर्मन प्राणी विज्ञानी से ज़्यादा भाग्यशाली था जो कुछ साल पहले चिड़ियाघर के लिए दो हमाद्र्याड पकड़ने अगुम्बे आया था। उसने पहले नर को बिना किसी परेशानी के पकड़ लिया। कुछ दिनों बाद उसने मादा को पकड़ने की कोशिश की। मादा ने उसे काट लिया। उसकी वहीं जंगल में मौत हो गई। उस घटना में यह पुरानी कहावत कि 'प्रजाति की मादा नर से ज़्यादा खतरनाक होती है' अक्षरशः सच साबित हुई। इसके विपरीत, मुझे कई साल पहले बर्मा के मेम्यो में एक सड़क किनारे सपेरे का करतब याद है। संयोग से वह एक बर्मी महिला थी, और बहुत सुंदर थी, जैसा कि मुझे आज भी याद है। उसने एक टोकरी से एक हमाद्र्याड निकाला और उसके सामने तब तक नाचती रही जब तक कि वह अपना फन फुलाकर ज़मीन से कुछ फीट ऊपर न उठ गया। फिर

उसने जानबूझकर उसके मुंह पर चुंबन किया। मैंने बाद में सांप की जांच की। उसमें विष ग्रंथियां और उसके दांत मौजूद थे। लेकिन मुझे याद है कि वह हमाद्र्याद नर था, और जैसा कि मैंने कहा, वह एक बहुत ही प्यारी बर्मी महिला थी। शायद इसीलिए उसके साथ उस दुर्भाग्यशाली जर्मन वैज्ञानिक की तुलना में अधिक सम्मानजनक व्यवहार किया गया।

आम भारतीय कोबरा इतना प्रसिद्ध है कि इसके बारे में ज़्यादा बताने की ज़रूरत नहीं है। प्रचलित कहानियों के विपरीत, इसकी लंबाई शायद ही कभी छह फीट से ज़्यादा होती है। भारत में इसकी दो किस्में पाई जाती हैं: पहली, जिसमें व्यापक रूप से चर्चित 'वी' आकार का निशान होता है, जिसे 'बायोसेलेट' किस्म कहा जाता है, और दूसरी, जिसके फन पर केवल एक सफेद धब्बा होता है, जिसके चारों ओर काला घेरा होता है। इसे 'मोनोसेलेट' किस्म के नाम से जाना जाता है। कहीं-कहीं ऐसे नमूने भी देखने को मिलते हैं जिनमें कोई निशान नहीं होता, हालांकि उनका फन भी उतना ही विकसित होता है।

कोबरा की पहचान के लिए रंग एक बहुत ही अविश्वसनीय तरीका है, क्योंकि ये गहरे काले से लेकर विभिन्न प्रकार के भूरे और यहाँ तक कि लाल, सफेद या हरे रंग के भी पाए जाते हैं। भूरा और धूसर रंग सबसे आम हैं। यहाँ तक कि नवजात कोबरा, जब वे अंडे से निकलते हैं और मात्र छह इंच लंबे होते हैं, तब भी बेहद विषैले होते हैं। अपने जीवन के पहले दो वर्षों में वे कहीं अधिक आक्रामक होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनका स्वभाव शांत हो जाता है, और बहुत बूढ़े कोबरा बिना अत्यधिक उकसावे के काटते नहीं हैं। इस उम्र में, जब उनके दांत और विष की थैली पूरी तरह से मौजूद होते हैं, तब उन्हें पूरी तरह से वश में किया जा सकता है।

कोबरा लगभग पंद्रह अंडे देते हैं, जिनका आकार कबूतर के अंडे के बराबर होता है। ये अंडे नरम खोल वाले होते हैं और इन्हें उथले गड्ढे में या सड़ते हुए पत्तों के बीच में रखा जाता है। इन अंडों को सफलतापूर्वक सेने के लिए सूर्य की अप्रत्यक्ष गर्मी और पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। नमी के बिना ये अंडे सूख जाते हैं।

करैत सांप की औसत लंबाई लगभग तीन फीट होती है और यह पतला, काला सांप होता है जिसके शरीर पर सफेद छल्ले होते हैं। यह बहुत फुर्तीला होता है, लेकिन साथ ही बहुत शर्मीला और घबराया हुआ भी होता है और आमतौर पर पकड़े जाने के एक या दो दिन के भीतर ही बिना किसी स्पष्ट कारण के मर जाता है।

किंग कोबरा, कोबरा और करैत को 'कोलुब्राइन' सांपों के रूप में जाना जाता है, और इनका जहर पूरे तंत्रिका तंत्र को ध्वस्त कर देता है, जो इसका प्राथमिक लक्षण है। इन सभी सांपों के दो स्थिर दांत होते हैं, जिनमें से सामान्य कोबरा के दांत की लंबाई लगभग एक चौथाई इंच, हैमाड्रायड के दांत की लंबाई लगभग आधा इंच और करैत के दांत की लंबाई लगभग एक-आठवां इंच होती है।

'विषैले' साँपों में रसेल वाइपर और सॉ-स्केल्ड वाइपर शामिल हैं। इनके भी दो नुकीले दाँत होते हैं, एक-एक दोनों तरफ। इस्तेमाल न होने पर ये मुँह के पिछले हिस्से से चिपके रहते हैं, लेकिन इन्हें खड़ा किया जा सकता है और इनके आधार को अक्ष मानकर घुमाया जा सकता है। एक बड़े रसेल वाइपर के दाँत पूरे एक इंच तक बढ़ते हैं और नरम चमड़े के जूते, पुट्टी, पैंट या मोटे ऊनी मोजे को भी छेद सकते हैं। कोबरा या करैत के दाँत स्थिर होते हैं और घूम नहीं सकते, इसलिए ऐसा नहीं कर सकते। रसेल वाइपर खुद एक मजबूत साँप है जिसकी लंबाई पाँच फीट से थोड़ी अधिक होती है और इसकी पीठ पर हीरे के आकार के निशानों की तीन पंक्तियाँ होती हैं (एक बीच में और एक दोनों तरफ), जो एक श्रृंखला की तरह आपस में जुड़ी होती हैं और गहरे भूरे रंग की होती हैं। इसी कारण इसे कभी-कभी 'चेन-वाइपर' भी कहा जाता है।

आरी के आकार का तना मुश्किल से दो फीट से अधिक लंबा होता है और यह भूरे रंग का सांप होता है जिसकी पीठ पर सफेद धारियां होती हैं। इसकी विशिष्ट विशेषता इसकी खुरदरी, उभरी हुई खाल है। जब यह उत्तेजित होता है, तो यह अपने शरीर पर गोल-गोल कुंडली बना लेता है, जिससे खालों से काफी तेज कर्कश ध्वनि निकलती है। इसी कारण इसे भारतीय भाषा में 'पुरसा', 'पूरसा' या 'फूर्सा' कहा जाता है, जो इसकी कर्कश खालों से निकलने वाली ध्वनि का उच्चारण है।

कोलुब्राइन सांपों के दांतों के पिछले हिस्से में खांचे होते हैं, जिनसे जहर की थैली से निकलने पर जहर रिसता है। वहीं, वाइपर सांपों के दांतों के बीचोंबीच हाइपोडर्मिक सिरिंज की सुई की तरह खांचे होते हैं, जिनसे जहर निकलता है। इसी वजह से मोटे मोजे, पट्टियां, लंबी पतलून और मुलायम जूते पहनने से वाइपर सांप के काटने से बचाव नहीं होता, हालांकि कोलुब्राइन सांप के काटने से बचाव हो सकता है। खुले रहने पर, अधिकांश जहर कपड़े में समा जाता है या जूते के चमड़े पर फैल जाता है। इन दोनों घातक सांपों के लंबे, घूमने वाले, हाइपोडर्मिक सिरिंज जैसे दांत यह सुनिश्चित करते हैं कि शिकार को जहर की घातक खुराक लगभग पूरी तरह से वैसे ही

मिले जैसे वह जहर ग्रंथियों से निकलती है। रसेल वाइपर के मामले में यह विशेष रूप से सच है, जिसके बेहद लंबे दांत किसी भी सामान्य कपड़े को भेद सकते हैं।

सांप के जहर का मुख्य प्रभाव रक्तस्राव पैदा करना है, जिससे पीड़ित को काफी दर्द होता है।

बेशक, इन सरीसृपों में से किसी के भी काटने से मनुष्य की मृत्यु होने में लगने वाले औसत समय से अधिक समय बताना असंभव है। इसमें अन्य कारक भी शामिल हैं: पीड़ित की आयु, स्वास्थ्य, शारीरिक बनावट और शारीरिक संरचना; सांप का आकार और क्या उसने हाल ही में किसी अन्य जीव को काटा है; और पीड़ित के रक्त में प्रवेश कर चुके विष की मात्रा। आमतौर पर मृत्यु होने का औसत समय इस प्रकार हो सकता है:

हमाद्र्याड के मामले में, लगभग नब्बे मिनट; करैत के मामले में, दो से तीन घंटे; कोबरा के मामले में, चार से छह घंटे; रसेल के वाइपर के मामले में, बारह से छत्तीस घंटे; और सॉ-स्केल्ड वाइपर के मामले में, तीन से सात दिन तक का समय लग सकता है।

भारत में विषैले न होने वाले साँपों की संख्या बहुत अधिक है। शायद सबसे रोचक साँप अजगर या चट्टानी साँप है, जिसकी लंबाई अठारह फीट तक हो सकती है, जबकि मलाया में पाई जाने वाली प्रजाति पैंतीस फीट तक लंबी होती है। यह अपने शिकार को कुंडली मारकर कुचलकर मार डालता है, जिसके बाद यह पूरे जानवर को निगल जाता है। इसके शिकार आकार में चूहे, खरगोश, सूअर और छोटे हिरण तक हो सकते हैं, जो साँप के आकार और क्षमता पर निर्भर करता है। जापानियों के विरुद्ध बर्मा अभियान के दौरान चालीस फीट से अधिक लंबे एक 'रेटिकुलेटेड अजगर' (मलेशियाई प्रजाति, जो बर्मा में भी पाई जाती है) को गोली मारने का वृत्तांत मिलता है। अपनी मृत्यु की पीड़ा में इसने एक जापानी सैनिक का शव, हेलमेट सहित, उगल दिया जिसे इसने निगल लिया था। हालाँकि यह कहानी समाचार पत्रों में छपी थी, मैं इसकी सत्यता की गारंटी नहीं देता। यह धारणा कि अजगर अपने शिकार को निगलने से पहले उसे चिपचिपे पदार्थ से ढक देता है, पूरी तरह से गलत है। अन्य सभी साँपों की तरह, इसके जबड़े आपस में जुड़े हुए नहीं होते, बल्कि पूरी तरह से अलग-अलग इकाइयाँ होती हैं। इसकी बाहरी त्वचा अत्यधिक लचीली होती है, इसलिए यह आसानी से समझा जा सकता है कि एक साँप अपने सिर और परिधि से कई गुना बड़े

जीवों को निगल सकता है।

अन्य विषरहित साँपों में कई प्रकार के ज़मीनी साँप; कई प्रजातियाँ, बेहद पतले, चाबुक जैसे और तेज़ गति से चलने वाले वृक्षीय साँप; मोटे, सुस्त, कीड़े जैसे दिखने वाले रेतीले साँप; और बड़ी संख्या में मीठे पानी के साँप शामिल हैं। एक प्रकार के रेतीले साँप की पूंछ कुंद होती है जो दूसरे सिर जैसी दिखती है, इतनी अधिक कि आज भी व्यापक रूप से यह माना जाता है कि इस सरीसृप के दो सिर हैं, एक दूसरे के दोनों सिरों पर।

मुझे सांपों से हमेशा से ही लगाव रहा है, और बिना किसी स्पष्ट कारण के, आठ साल की उम्र में ही मैंने उन्हें पालतू जानवर के रूप में रखना शुरू कर दिया था। नतीजतन, लड़कियों के बीच मुझे काफी डरावना माना जाता था और स्कूल में तो मैं एक तरह का आतंक ही था। मुझे सिनेमाघरों में, संडे स्कूल में और यहाँ तक कि चर्च में भी सरीसृपों को छोड़ने में बहुत मज़ा आता था। 'सांपों को वश में करने वाला एंडरसन' का नाम आज भी, मेरे साथ जुड़ा हुआ है, भले ही मैं अड़तालीस साल का हो गया हूँ।

सांप के जहर के कई औषधीय उपयोग हैं, और मुझे पूरा यकीन है कि यह कई बीमारियों और स्थितियों के लिए एक अनछुआ इलाज है। असल बात यह है कि इस क्षेत्र में अभी तक पूरी तरह से शोध और उपयोग नहीं किया गया है, क्योंकि मनुष्यों पर इस जहर का प्रयोग करना खतरनाक हो सकता है। वाइपर के जहर को कम मात्रा में पतला करके और होम्योपैथी के नियमों के अनुसार इस्तेमाल करने पर, जहां किसी विशेष जहर की छोटी खुराक उसी जहर की बड़ी खुराक के प्रभाव को कम कर देती है, यह साबित हो चुका है कि यह अत्यधिक रक्तस्राव की स्थिति में बहुत कारगर है, जो कि बड़ी या घातक खुराक दिए जाने पर होता है। इस जहर का उपयोग दंत चिकित्सकों और अन्य लोगों द्वारा दांत निकालने या छोटे ऑपरेशन के बाद अत्यधिक रक्तस्राव को रोकने के लिए किया जाता है।

इसी प्रकार, कोलुब्राइन विष, जो अधिक मात्रा में लेने पर तंत्रिका तंत्र को पूरी तरह से निष्क्रिय कर देता है, मिर्गी और अन्य तंत्रिका संबंधी विकारों के मामलों में बहुत कम मात्रा में प्रभावी होता है।

बॉम्बे स्थित हैफकिन संस्थान सभी पाँच विषैली प्रजातियों के काटने के विषनाशक के रूप में विषरोधी इंजेक्शनों की एक श्रृंखला तैयार करता है। ये इंजेक्शन

प्रत्येक प्रजाति के लिए अलग-अलग उपलब्ध हैं, बशर्ते कि काटने वाले साँप की पहचान हो चुकी हो; या यदि यह निश्चित न हो कि किस साँप ने काटा है, तो सभी प्रजातियों के लिए संयुक्त रूप में उपलब्ध हैं। सीरम को तैयार करने के लिए घोड़ों को धीरे-धीरे साँप के विष की बढ़ती मात्रा का इंजेक्शन दिया जाता है, जिसकी शुरुआत बहुत कम मात्रा से होती है, जब तक कि वे प्रतिरक्षित न हो जाएँ और घातक खुराक से तीन से चार गुना अधिक खुराक को बिना किसी दुष्प्रभाव के सहन करने में सक्षम न हो जाएँ। फिर प्रतिरक्षित घोड़े की जांघ की नस से रक्त निकाला जाता है, और इस रक्त से अंततः विषरोधी सीरम तैयार किया जाता है।

जब मुझे पता चला कि सीरम कैसे तैयार किया जाता है, तो मैं बहुत उत्सुक हुआ और अपना खुद का स्टॉक तैयार करने का निश्चय किया। मैंने दो बूढ़े टट्टू और एक गधा ऐसे स्रोतों से प्राप्त किए जिनका खुलासा करने में मुझे आज भी संकोच होता है और उन्हें कोबरा के जहर की प्रारंभिक खुराक देकर प्रतिरक्षित करना शुरू किया, जिसे मैंने इस उद्देश्य के लिए खरीदी गई एक छोटी 3 सीसी हाइपोडर्मिक सिरिंज से इंजेक्ट किया। दुर्भाग्य से, उन दिनों मुझे दी जाने वाली प्रारंभिक खुराक का ज्ञान बहुत कम था, जिसके परिणामस्वरूप कुछ ही घंटों के भीतर मुझे उन दोनों टट्टुओं और गधे के शवों के निपटान की व्यवस्था करनी पड़ी। मुझे यह भी याद है कि मेरे पिता बहुत नाराज थे।

पिछले विश्व युद्ध से ठीक पहले, मैं अमेरिका में इच्छुक संस्थानों को क्रिस्टलीकृत रूप में सांप का जहर निर्यात करके अच्छा खासा कारोबार कर रहा था, खासकर कोबरा का जहर। एक औसत कोबरा लगभग हर चार से पांच दिन में एक घन सेंटीमीटर जहर पैदा करता है, जिसका क्रिस्टलीकरण होने पर वजन लगभग एक ग्राम होता है, जिसके लिए मुझे लगभग डेढ़ डॉलर मिलते थे। मेरे पास बीस कोबरा थे, जिनसे मुझे हर पांच दिन में तीस डॉलर का जहर मिलता था, यानी एक सौ अस्सी डॉलर प्रति माह। यह बुरा कारोबार नहीं था, क्योंकि सांपों को खिलाने में मुझे कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता था, सिवाय हर दस दिन में एक मेंढक या छिपकली के। ये सांप मेरे लिए एक पंद्रह वर्षीय भारतीय लड़के द्वारा पकड़े जाते थे, ऐसे नौकर को 'चोकरा' कहा जाता है। इस काम के लिए उसका वेतन सात रुपये प्रति माह था, जो अंग्रेजी मुद्रा में दस शिलिंग के बराबर है।

सांप की गर्दन पकड़कर, उसके मुंह को पतले रबर या मूत्राशय की त्वचा से ढके

कांच के कप पर दबाकर उससे विष एकत्र किया जाता है। सांप रबर को काटता है और ऐसा करने से उसकी ग्रंथियों से विष निकलता है, जो कप में टपकता है। बहुत पतले रबर का उद्देश्य सतह पर विष के नुकसान को रोकना है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि सांप अपने दांत कांच पर न तोड़ ले, जिससे उसे चोट न लगे। कप के किनारे पर विद्युत रोधक टेप की कुछ परतें इस उद्देश्य को पूरा करती हैं।

कोबरा को आसानी से संभाला जा सकता है, क्योंकि वे अपने सिर को जमीन से लगभग एक तिहाई ऊपर उठाकर और अपने फन को फुलाकर बाहर निकाल लेते हैं। इसके बाद, फन के पिछले हिस्से पर एक छड़ी को मजबूती से दबाकर सांप को जमीन पर गिराना और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़ना अपेक्षाकृत आसान होता है। रसेल वाइपर, सॉ-स्केल्ड वाइपर और करैत कहीं अधिक खतरनाक होते हैं, क्योंकि वे अपने सिर को अपने शरीर की कुंडलित परतों के नीचे छिपा लेते हैं और साथ ही, वे गति में बेहद तेज होते हैं, जो कोबरा से कहीं अधिक है। इसके अलावा, रसेल वाइपर के बेहद लंबे और घूमने वाले दांत उसे बेहद खतरनाक बनाते हैं, जिसके लिए बहुत सावधानी से संभालने की आवश्यकता होती है।

आम तौर पर कोबरा को आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। घुमंतू सपेरों की टोकरी में मौजूद कोबरा के दांत और विष-कोश निकाल दिए जाते हैं, जिससे वे हानिरहित हो जाते हैं। दांत लगभग एक महीने में फिर से उग आते हैं, लेकिन विष-कोश निकाल देने के बाद सरीसृप जीवन भर हानिरहित रहता है, क्योंकि विष स्रावित नहीं हो पाता। रसेल वाइपर के विष-कोश को नहीं निकाला जा सकता क्योंकि वे मस्तिष्क के बहुत पास और मुंह की एक बड़ी धमनी के निकट स्थित होते हैं। विष-कोश निकालने के ऑपरेशन से न केवल खून की कमी होती है, बल्कि मस्तिष्क में चोट भी पहुंचती है, जिससे कुछ ही समय में उसकी मृत्यु हो जाती है। इसलिए सपेरे ऊपरी और निचले होंठों को दोनों कोनों से सुई और धागे से सिल देते हैं, और सप्ताह में एक बार मुंह के बीच से गले में डाली गई हड्डी की कीप के माध्यम से इस बेचारे सरीसृप को भोजन कराते हैं। आमतौर पर इसे अंडा खिलाया जाता है। यही कृत्रिम और जबरन भोजन कराने की विधि उन कोबरा पर भी अपनाई जाती है जो कैद में रहने पर अक्सर अपना प्राकृतिक भोजन निगलने से इनकार कर देते हैं।

कम खाने की आदत ही सांपों को पालने में इतना आसान बनाती है। आमतौर पर, चूहे, मेंढक, छिपकली या छोटे पक्षी का एक भोजन सांप के आकार के अनुसार

एक सप्ताह या दस दिनों के लिए पर्याप्त होता है। इस मामले में, आश्चर्यजनक रूप से, छोटी प्रजातियाँ बड़ी प्रजातियों की तुलना में अधिक पेटू होती हैं। अजगर कम बार खाते हैं, पंद्रह दिनों से लेकर एक महीने के अंतराल पर, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने आखिरी बार किस आकार का भोजन किया था।

सॉँपों के इस लंबे विवरण को लिखने का मेरा उद्देश्य उनमें से प्रत्येक की रोचक विशेषताओं का वर्णन करना था। एक विशेषता सभी साँपों में समान है, चाहे वे विषैले हों या गैर-विषैले, सिवाय हमाद्र्याद के; कि वे सभी मनुष्य से डरते हैं और उनसे दूर रहते हैं। वे जानबूझकर किसी मनुष्य पर हमला या उसे काटने की कोशिश नहीं करते, बल्कि किसी के आने की आहट सुनकर जितना हो सके रेंगकर नज़रों से ओझल हो जाते हैं, और केवल तभी काटते हैं जब उन पर पैर रख दिया जाए। वे ऐसा डर और आत्मरक्षा के कारण करते हैं। संयोगवश, यह जानना उपयोगी है कि साँपों में कान जैसे किसी अंग के माध्यम से सुनने की क्षमता नहीं होती। उनकी 'सुनने की क्षमता' उनके शरीर के कंपन को महसूस करने की क्षमता में निहित है। इसलिए, सपेरे की बांसुरी और अन्य वाद्ययंत्रों और ध्वनियों से कोबरा को 'वश में' करने की जो कहानियाँ हम सुनते हैं, वे मिथक हैं। सांपों का संगीत सांपों का ध्यान आकर्षित नहीं करता, बल्कि वाद्य यंत्र बजाते समय उसके शरीर, सिर और हाथों का लयबद्ध हिलना-डुलना उन्हें आकर्षित करता है। यही हिलना-डुलना सांपों को देखते हुए उनके साथ-साथ इधर-उधर हिलने पर मजबूर करता है। इस हिसाब से, भारत में किसी अंधेरी पगडंडी पर चलते समय चिल्लाना, गाना या सीटी बजाना किसी छिपे हुए सांप को डरा नहीं सकता, जबकि भारी जूतों की आवाज या जमीन पर छड़ी पटकने से वह निश्चित रूप से डरकर भाग जाएगा।

हर सांप साल में दो से तीन बार अपनी बाहरी त्वचा उतारता है। यह त्वचा मोजे या दस्ताने उतारने की तरह उल्टी दिशा में उतरती है, और ऐसा सांप द्वारा किसी खुरदरी सतह या बाधा पर खुद को रगड़ने और कुंडली बनाने से होता है।

विषैले और गैर-विषैले दोनों प्रकार के साँपों को सामान्यतः दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है—अंडे देने वाले या बच्चे पैदा करने वाले। विषैले साँप अंडे देते हैं, जिनसे कुछ दिनों बाद बच्चे निकलते हैं, जबकि गैर-विषैले साँप सीधे बच्चे पैदा करते हैं। विष की उपस्थिति या अनुपस्थिति का इस वर्गीकरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि प्रत्येक श्रेणी में विषैली और हानिरहित दोनों प्रकार की प्रजातियाँ पाई

जाती हैं। उदाहरण के लिए, कोबरा अंडे देता है, जबकि रसेल वाइपर और अजगर सीधे बच्चे पैदा करते हैं।

पांचों विषैले साँपों में से, साधारण कोबरा मनुष्यों के काफी करीब रहता है और हर खेत या घर के पास चींटियों के टीलों और अन्य बिलों में पाया जाता है। हैरानी की बात है कि यह जंगल में बहुत कम ही देखने को मिलता है। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, हैमाड्रायड इसके ठीक विपरीत है और पूरी तरह से जंगल में ही रहता है। रसेल के विषैले साँप मानव बस्तियों के पास की तुलना में जंगलों और घास के मैदानों में अधिक पाए जाते हैं। करैत कहीं भी बहुत आम नहीं हैं, और आरी-पपड़ीदार विषैला साँप ज्यादातर शुष्क, रेतीले क्षेत्रों में रहता है।

जंगल में, विषनाशक इंजेक्शन की ट्यूब साथ ले जाने के अलावा, जिन्हें वैसे भी रेफ्रिजरेटर में रखना पड़ता है क्योंकि वे जल्दी खराब हो जाते हैं, विषैले सांप के काटने का एकमात्र विश्वसनीय उपाय है: घाव को तुरंत एक तेज चाकू से गहरा काटना, और फिर आसपास के जितना संभव हो उतना विषैला खून चूस लेना, ताकि अवशोषित विष की मात्रा कम से कम हो। वैसे, निगलने पर कोई भी विष विषैला नहीं होता, इसलिए विषैले खून को चूसने से किसी भी तरह के दुष्प्रभाव का कोई खतरा नहीं है। दरअसल, भारत के इस हिस्से में मुसलमानों द्वारा अक्सर आयोजित की जाने वाली कृत्रिम लड़ाइयों में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित मुर्गों और तीतरों को कोबरा का विष खिलाया जाता है ताकि वे अधिक आक्रामक हो जाएं। विजेता पर बड़ी रकम का दांव लगाया जाता है, और यह जैकपॉट जीतने के सामान्य तरीकों में से एक है।

घाव के ठीक ऊपर प्रभावी ढंग से पट्टी बांधने में समय और कौशल की आवश्यकता होती है। साथ ही, यदि व्यक्ति के धड़ पर कहीं भी घाव हो तो यह विधि अव्यावहारिक हो जाती है। किसी भी स्थिति में, पट्टी को प्रभावी ढंग से कसने से पहले ही विष रक्त में प्रवेश कर चुका होता है। घाव पर पोटेशियम परमैंगनेट के क्रिस्टल डालने से रासायनिक क्रिया द्वारा विष को कुछ हद तक बेअसर करने में मदद मिलती है, लेकिन क्रिस्टल के ऊतकों में प्रभावी ढंग से प्रवेश करने और अपना काम करने से पहले गहरे चीरे लगाने पड़ते हैं। इसी कारण मैं जंगल में हमेशा अपनी जेब में एक छोटा, तेज धार वाला चाकू रखता हूँ।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे कोबरा ने पैर में काट लिया था। वह शिकारी था और उसने सूझबूझ दिखाते हुए अपनी बंदूक के थैले में रखे बारूद का ढेर

काटकर उसके कटे हुए हिस्से पर डाल दिया। फिर उसने माचिस से बारूद में आग लगा दी, जिसके परिणामस्वरूप उसके पैर में एक गहरा घाव हो गया, जिससे वह आज भी थोड़ा लंगड़ाकर चलता है। लेकिन वह बच गया। मैं एक और व्यक्ति को जानता हूँ, जो सपेरा था, जिसे कोबरा ने अंगूठे में काट लिया था। उसने दूसरे जोड़ पर चाकू रखा और अपने दूसरे हाथ से चाकू के पिछले हिस्से पर एक भारी पत्थर से ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे अंगूठा काटने में एक से अधिक प्रहार लगे। उसे बहुत पीड़ा हुई होगी और लगभग खून बहने से उसकी जान निकल गई होगी; फिर भी, वह बच गया और आज जीवित है। एक तीसरी घटना में, मैं एक बार मुत्तूर वन बंगले में डेरा डाले हुए था, जब एक व्यक्ति ने मुझे भोर में जगाकर बताया कि लगभग एक घंटे पहले उसे कोबरा ने पैर में काट लिया था। उसने बताया कि वह एक गाड़ीवाला था और कटे हुए बांसों से भरी गाड़ी लेकर पेन्नाग्राम लौट रहा था। पिछली शाम सड़क किनारे उसका सामना जंगली हाथियों के झुंड से हुआ था। डर के मारे उसने अपनी गाड़ी मोड़ दी और मजदूरों के शिविर में लौट आया। उस सुबह करीब 4 बजे वह फिर से निकला, गाड़ी के पीछे-पीछे चल रहा था ताकि हाथियों से दोबारा सामना होने पर आसानी से बच सके। शायद गाड़ी का पहिया सांप के ऊपर से गुजर गया और उसे चोट लग गई। उसने बताया कि उसे तेज दर्द हुआ और नीचे देखा तो एक सांप उसके पैर से लिपटा हुआ था। उसने लात मारी, और सांप ने पैर छोड़ दिया और भाग गया, लेकिन भागने से पहले ही उसने उसके फूले हुए फन से पहचान लिया कि वह एक कोबरा था। सांप के काटने के बाद वह दो मील चलकर बंगले तक आया, इस उम्मीद में कि कोई उसकी मदद कर सके। मैंने तुरंत घाव को चीरा लगाकर साफ किया और एक वन रक्षक की मदद से उसे कोमा में जाने से बचाने के लिए बरामदे में इधर-उधर घुमाया। लेकिन जल्द ही मुझे समझ आ गया कि मेरी सारी कोशिशें बेकार जाएंगी। दुर्भाग्यवश, उस बैलगाड़ीवाले के मुँह से लार टपकने लगी, उसकी आँखें ऊपर की ओर घूम गईं, वह शराबी की तरह लड़खड़ाने लगा और उसकी वाणी अस्पष्ट हो गई। मैंने किसी तरह उसका और उसके परिवार का नाम पता कर लिया, जो पेन्नाग्राम से एक मील दूर एरिगोल्लनूर गाँव में रहते थे। फिर अचानक वह हमारी बाहों में बेजान सा हो गया। वह बेहोश हो गया था। सुबह 8:30 बजे तक उसकी मृत्यु हो गई। मैंने वन रक्षक को उसके रिश्तेदारों और पेन्नाग्राम पुलिस को सूचित करने के लिए भेजा। रिश्तेदार दोपहर 2 बजे तक बैलगाड़ी में आए और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। फिर पुलिस

आई। वे जानना चाहते थे कि जिस वन बंगले में हम उस आदमी को घुमाने ले गए थे, उसके फर्श पर खून के निशान क्यों थे; मैंने उसे क्यों काटा था; उसकी मृत्यु क्यों हुई। अंत में शव को बैलगाड़ी में डालकर पुलिस स्टेशन ले जाया गया और मुझे भी साथ चलने के लिए कहा गया। मैंने साफ इनकार कर दिया। मुख्य कांस्टेबल ने मेरे इनकार पर कुछ देर विचार किया और फिर समझौता करते हुए मुझे निर्देश दिया कि मैं शव परीक्षण की रिपोर्ट आने तक वन बंगले में ही रहूँ। मैंने तुरंत सहमति दे दी। फिर दल सात मील दूर स्थित पेन्नाग्राम के लिए रवाना हुआ, जहाँ से शव को बस द्वारा बयालीस मील दूर स्थित सलेम कस्बे के जनरल अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। तीन दिन बाद रिपोर्ट आई। गाड़ीवान की मौत कोबरा के काटने से हुई थी। चौथे दिन पुलिस ने मुझे सूचित किया कि अब मुझ पर कोई संदेह नहीं है।

पिछले उनतीस वर्षों में, जब से मैं साँपों को संभाल रहा हूँ, मुझे केवल एक बार साँप ने काटा है, और वह भी एक कोबरा ने। यह घटना 1939 में घटी थी। मैंने साँप को पकड़ा ही था कि वह मेरे हाथ से फिसल गया और मेरे बाएँ हाथ की दूसरी उंगली पर काट लिया। लेकिन मैं अभी भी जीवित हूँ; न तो मुझे अपनी उंगली को विस्फोट से उड़ाना पड़ा और न ही काटना पड़ा। सौभाग्य से, यह घटना मेरी ज़मीन पर हुई, जो बैंगलोर से नौ मील दूर है, और मैं अपनी कार से अस्पताल पहुँच सका और विष रोधी दवा का इलाज करवा सका। परिणामस्वरूप, साँप के काटने से कोई अप्रिय लक्षण नहीं हुए; लेकिन इंजेक्शन से ज़रूर हुए, क्योंकि तीसरे दिन मुझे बहुत गंभीर प्रतिक्रिया हुई और मेरे दोनों पैर अस्थायी रूप से आंशिक रूप से लकवाग्रस्त हो गए। हालाँकि, कैल्शियम और अन्य इंजेक्शनों से एक दिन के भीतर ही सब ठीक हो गया।

अंत में, मैं दक्षिण भारत में प्रचलित एक विचित्र मान्यता का उल्लेख करना चाहूंगा, जिसके अनुसार मद्रास शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित दक्षिणी रेलवे के पोलरेड्डीपालयम स्टेशन पर कार्यरत नरसिया नामक एक स्टेशन मास्टर किसी भी व्यक्ति को जहरीले सांप के काटने से ठीक कर सकते थे, बशर्ते उन्हें टेलीग्राम द्वारा सूचना दी जाए। यह मान्यता इतनी व्यापक हो गई थी कि रेलवे अधिकारियों ने अपने टेलीग्राफ सिस्टम पर इस स्टेशन मास्टर को संबोधित किसी भी संदेश को प्राथमिकता दी। मैंने प्रामाणिक स्रोतों से उनके चमत्कारी उपचारों के कई किस्से सुने हैं, और आज दक्षिण भारत में सैकड़ों लोग जीवित हैं जिनकी जान उन्होंने बचाई थी। कार्यप्रणाली यह थी कि जैसे ही श्री नरसिया को किसी के काटे जाने की सूचना वाला टेलीग्राम

मिलता, वे स्टेशन प्रांगण में उगने वाले एक विशेष पेड़ के पास जाते, अपनी धोती या लंगोटी का एक टुकड़ा फाड़कर पेड़ की एक शाखा से बांधते, प्रार्थना करते और फिर उत्तर में एक टेलीग्राम भेजकर पीड़ित को सूचित करते कि यदि वह तंबाकू, शराब और कॉफी से परहेज करे तो वह जीवित रहेगा। हमेशा पीड़ित बच जाता था।

अफसोस! श्री नरसिया को स्वयं ईश्वर की शरण में जाना पड़ा और वे अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। मुझे नहीं पता कि उनका रहस्य उनके साथ ही समाप्त हो गया या नहीं, लेकिन मुझे आशंका है कि ऐसा ही हुआ है, क्योंकि तब से मुझे सांप के काटने के उपचार के क्षेत्र में उनके काम को आगे बढ़ाने वाले किसी उत्तराधिकारी के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है।

छह

हैदराबाद का हत्यारा

ब्रिटिश राज के दिनों में, मैसूर राज्य के उत्तर में बेल्लारी, अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल जिले स्थित थे, जो पूर्व मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आते थे। इनके उत्तर में हैदराबाद राज्य था, जो हैदराबाद के निज़ाम के अधीन था। निज़ाम ब्रिटिश शासन के कट्टर सहयोगी थे और दिल्ली के कभी सर्वशक्तिमान रहे मुगल सम्राट के वंशज थे।

हैदराबाद राज्य अब अस्तित्व में नहीं है और निज़ाम के विशाल साम्राज्य के कुछ हिस्से अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल के साथ मिलकर आंध्र प्रदेश के भाषाई तेलुगु राज्य का एक हिस्सा बन गए हैं, जो नए भारत संघ में लगभग दूसरा सबसे बड़ा राज्य है, क्षेत्रफल में यह उत्तर में स्थित मध्य प्रदेश से ही छोटा है।

हालांकि, यह कहानी बहुत पहले की है जब ये क्षेत्र, हालांकि मुख्य रूप से तेलुगु भाषी थे, मद्रास के अंतर्गत आते थे।

उन दिनों ये जिले काफी हद तक अविकसित थे क्योंकि यहाँ वर्षा कम होती थी, साल के दस महीने भीषण गर्मी पड़ती थी (बाकी दो महीने बस असहनीय गर्मी होती थी) और जनसंख्या घनत्व भी न के बराबर था। अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल कस्बों को छोड़कर, जिनके नाम पर उन जिलों का नाम पड़ा जिनकी वे राजधानियाँ थीं, बाकी का इलाका छोटे-छोटे गाँवों से आबाद था जो दूर-दूर तक फैले हुए थे।

बंबई से मद्रास तक जाने वाली रेल लाइन जिलों को जोड़ने वाली प्रमुख मार्ग थी। यह गुंटकल जंक्शन नामक रेलवे कॉलोनी से होकर गुजरती थी। यह मुख्य मार्ग ब्रॉड गेज का था, जिसकी पटरियों के बीच 5 फीट 6 इंच की दूरी थी। गुंटकल से तीन अलग-अलग मीटर गेज की धाराएँ निकलती थीं। एक पश्चिम की ओर बेल्लारी और हुबली की ओर जाती थी; दूसरी दक्षिण की ओर मैसूर राज्य के बैंगलोर की ओर जाती थी; तीसरी पूर्व की ओर द्रोणचेल्लम और नंदीयाल से होते हुए बेजवाड़ा तक जाती थी, और फिर वहाँ से भारत के पूर्वी तट तक पहुँचती थी। बेजवाड़ा में यह मद्रास और कलकत्ता को जोड़ने वाली एक अन्य ब्रॉड गेज मुख्य धारा से जुड़ती थी, जबकि द्रोणचेल्लम में एक मीटर गेज लाइन उत्तर-पूर्व की ओर सिकंदराबाद और हैदराबाद की ओर मुड़ जाती थी। मीटर गेज के इंजन और रोलिंग स्टॉक ब्रॉड गेज लाइनों की तुलना में स्वाभाविक रूप से छोटे और काफी हल्के होते थे।

गुंटकल, द्रोणाचेल्लम और नंदीयाल से आगे बढ़ते हुए, पूर्वी मीटर-गेज लाइन पांच स्टेशनों तक वन क्षेत्र से होकर गुजरती है, जिनके नाम क्रमशः गज़ुलापल्ली, बसवपुरम, चेलामा, बोगारा और दिगुवमेटा हैं, और फिर बेज़वाड़ा की ओर जाती है।

यह वन क्षेत्र, जो मेरी कहानी का आधार है, लगभग उस जंगल पट्टी के बीचोंबीच स्थित है जो उत्तर की ओर कृष्णा नदी के पार पूर्व हैदराबाद राज्य तक और दक्षिण की ओर कडप्पा शहर तक फैली हुई है।

मीटर गेज की ट्रेनें धीमी होती हैं, और रात में गुजरने वाली ऊपर और नीचे जाने वाली मेल ट्रेनों के ड्राइवरों के लिए यह अभी भी एक आम अनुभव है कि इंजन की हेडलाइट की रोशनी में जंगली जानवर पटरियों को पार करते हुए दिखाई देते हैं, या अंतिम समय में पार करने की कोशिश करने वाले जंगली सूअर या हिरण को कुचल देते हैं।

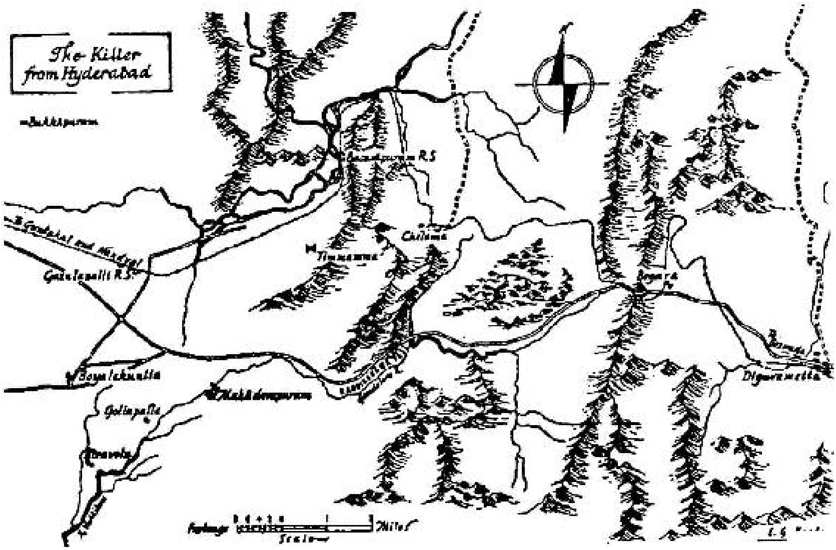

मैंने जिन पाँच स्टेशनों का नाम लिया है, वहाँ से केवल ऊबड़-खाबड़ और पथरीले बैलगाड़ी के रास्ते और पैदल पगडंडियाँ ही आसपास के जंगल में जाती हैं। उन दिनों मोटर योग्य सड़कें नहीं थीं। यह उन मुख्य कारणों में से एक था जिसने इस क्षेत्र के जीव-जंतुओं को बुरी तरह से शिकार होने से बचाने में मदद की, जैसा कि अच्छी सड़कों वाले जंगली क्षेत्रों में हुआ है। उत्साही लेकिन गुमराह और खेल भावना के विरुद्ध शिकारी इन अच्छी सड़कों का उपयोग शाम से सुबह तक मोटरगाड़ियों से जंगल में स्पॉटलाइट चमकाकर और किसी भी जानवर पर गोली चलाकर करते हैं जिसकी आँखों में रोशनी पड़ती है। अक्सर ये शिकारी उस जानवर की प्रजाति या

स्वभाव से भी अनभिज्ञ होते हैं जिस पर वे गोली चलाते हैं। इस मनमानी और दुष्ट प्रथा ने जंगली जानवरों को भारी नुकसान पहुँचाया है और यह नुकसान लगातार बढ़ता जा रहा है, क्योंकि सभी प्रजातियों की मादाओं और बच्चों का अंधाधुंध वध किया जा रहा है, जबकि उससे भी कहीं अधिक संख्या में जानवर बुरी तरह घायल होकर जंगल में तड़प-तड़प कर दर्दनाक मौत मर जाते हैं। ब्रिटिश सरकार ने अपने समय में इस अवैध शिकार को रोकने का प्रयास किया था, और भारतीय सरकार अभी भी प्रयास कर रही है। पहला प्रयास और दूसरा प्रयास दोनों ही पूरी तरह असफल रहे हैं, और भयानक तबाही अभी भी जारी है। इससे भी बुरी बात यह है कि यह स्थिति तब तक बनी रहेगी जब तक या तो जनता इस तथ्य के प्रति जागरूक नहीं हो जाती कि वन्य जीवन एक राष्ट्रीय धरोहर है और इसे अंधाधुंध नष्ट नहीं किया जाना चाहिए; या फिर जब तक वन्य जीवन पूरी तरह से विलुप्त नहीं हो जाता।

हालांकि, जैसा कि मैंने कहा है, सौभाग्य से मोटर योग्य सड़कों के अभाव के कारण, गाज़ुलापल्ली-दिगुवामेटा क्षेत्र अब तक रात में गश्त करने वाले मोटरगाड़ी हत्यारों के प्रकोप से कुछ हद तक बचा हुआ है, और वहां कोई जंगल में इस बात को लेकर आश्वस्त होकर डेरा डाल सकता है कि उसे किसी कार की गूंज, उसके बाद तेज रोशनी की किरण, कार के रुकने पर अचानक आवाज का बंद होना, बंदूक या राइफल की आवाज और शायद किसी घायल या मरते हुए जानवर की दर्द भरी चीख सुनाई नहीं देगी।

इस क्षेत्र के मूल निवासी तेलुगु भाषी चेंचु जनजाति के लोग हैं। अन्य आदिवासियों की तरह, वे भी कम वस्त्र पहनते हैं; पुरुषों और महिलाओं दोनों के मुख्य वस्त्र फटी और गंदी धोती होती हैं। पुरुष धनुष और बाण रखते हैं, और उनमें से अधिकांश अपने गले में मोतियों या पंखों का आभूषण पहनते हैं। विशेष अवसरों पर मोर पंख उनके बालों में लगाने का पसंदीदा आभूषण है। वे मादक पेय के शौकीन हैं, जिसे वे चिपचिपे महोवा फूल के रस या बबूल के पेड़ की छाल से बनाते हैं। वास्तव में, महोवा के पेड़ की बहुतायत के कारण, ये लोग ब्रिटिश शासनकाल में आबकारी अधिकारियों के लिए हमेशा एक बड़ी समस्या रहे हैं, और आंध्र सरकार के लिए तो ये और भी बड़ी समस्या हैं, जहाँ राज्य के कुछ हिस्सों में 'शराबबंदी' की नीति लागू है।

हालांकि, यह कहानी न तो कारों से रात में गोलीबारी के विरोध में लिखी गई है, न ही 'निषेध' की नीति पर चर्चा के लिए; और न ही यह चेन्चू समुदाय के जीवन का

कोई चित्रण है। यह कहानी एक आदमखोर बाघ के बारे में है जिसने लगभग चार वर्षों तक इस क्षेत्र में आतंक मचा रखा था। इस जानवर ने हैदराबाद राज्य के जंगलों में अपनी गतिविधियां शुरू कीं, जहां उसने छह महीने तक चेन्चू समुदाय के लोगों और अकेले यात्रियों को अपना शिकार बनाया, फिर वह दक्षिण की ओर भटक गया और चेलामा में अपने आगमन की घोषणा करते हुए एक ऐसे गैंगर को उठाकर खा गया जो एक सुबह रेलवे लाइन पर पश्चिम की ओर बसवपुरम की दिशा में नियमित गश्त पर निकला था।

उन दिनों, विशेष रूप से, उस क्षेत्र में बाघों की अच्छी-खासी संख्या रहती थी, लेकिन प्राकृतिक शिकार की प्रचुर उपलब्धता के कारण, वे स्थानीय लोगों को शायद ही कभी परेशान करते थे, सिवाय कभी-कभार मवेशियों को चुरा ले जाने के। इसलिए, उस समय गैंगर के गायब होने का कारण आदमखोर बाघ को नहीं माना गया, क्योंकि उसके अवशेष कभी नहीं मिले, और यह सोचा गया कि वह अपने निजी कारणों से उस क्षेत्र से चला गया था। इसके बाद के महीनों में, जब चेन्चू लोग इधर-उधर गायब होने लगे, तब संदेह पैदा हुआ कि कुछ गड़बड़ हो रही है, और लोगों को लगने लगा कि इन गायब होने की घटनाओं का कारण बाघ हो सकता है। तब भी इस आदमखोर बाघ की उपस्थिति का कोई पुख्ता सबूत नहीं था, क्योंकि जंगल के रास्तों पर बाघों के पदचिह्न आम थे और लापता गैंगर और अन्य चेन्चू लोगों को हैदराबाद राज्य के भीतर जंगल के सुदूर उत्तरी भागों में पहले के शिकारों से जोड़ने वाली कोई बात नहीं थी।

गैंगर की घटना के लगभग तीन-चार महीने बाद इस बाघ ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। एक शाम दो कोयला बनाने वाले जंगल के किनारे पर स्थित वडापल्ली नामक एक छोटे से गाँव की ओर लौट रहे थे। वे एक के पीछे एक चल रहे थे, तभी अपने गंतव्य तक पहुँचने से लगभग आधा मील पहले, आगे चल रहे व्यक्ति ने एक ऊँचे पेड़ पर बने घोंसले से एक चित्तीदार कोयल को उड़ते हुए देखा। अब आप सोच रहे होंगे कि मैं इस बात पर ज़ोर क्यों दे रहा हूँ कि यह चित्तीदार पंखों वाली कोयल थी। इसका कारण यह है कि नर कोयल बिल्कुल काला होता है और इसलिए मादा कोयल से उसकी पहचान करना मुश्किल होता है, जो गहरे भूरे रंग की होती है और उस पर सफेद धब्बे होते हैं। कोयल शायद कोयल परिवार का सबसे बड़ा सदस्य है, भारतीय 'दिमाग-बुखार पक्षी' दूसरा सबसे बड़ा सदस्य है। सभी कोयलों की तरह, कोयल

अपना घोंसला खुद नहीं बनातीं, बल्कि दूसरे पक्षियों के घोंसलों में अंडे देती हैं और अंडों को सेने का काम उन पर छोड़ देती हैं।

अब, चेनचू जनजाति के मुखिया ने चितकबरी मुर्गी को घोंसले से उड़ते हुए देखा था, जो इस बात का अकाट्य प्रमाण था कि उसने अभी-अभी वहाँ अंडा दिया था। चेनचू जनजाति के लोगों को कोयल के अंडे न केवल मुश्किल से मिलते हैं, क्योंकि वे किसी भी पक्षी के घोंसले में दिए जा सकते हैं, बल्कि वे उन्हें एक बड़ा व्यंजन भी मानते हैं। उसने अपने साथी का ध्यान इस सौभाग्यपूर्ण घटना की ओर आकर्षित किया। दूसरा व्यक्ति, जो उससे छोटा था, अंडों को चुराने के इरादे से पेड़ पर चढ़ने लगा। वह लगभग अपने लक्ष्य तक पहुँच ही गया था कि उसे नीचे से एक चीख सुनाई दी। नीचे देखने पर वह यह देखकर दंग रह गया कि एक बाघ उसके साथी को अपने मुँह से लटकाए हुए और मदद के लिए चिल्लाते हुए जंगल की ओर भाग रहा है।

पेड़ पर बैठा आदमी किसी तरह उसकी सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ गया, जबकि बाघ अपने अभी भी कराहते हुए शिकार को लेकर नजरों से ओझल हो गया।

रात हो गई, लेकिन पेड़ पर बैठा चेनचु नीचे आने का जोखिम नहीं उठा सका। उसने अगले बारह घंटे वहीं बिताए, डर और ठंड से कांपता हुआ, और हर पल बाघ के लौटने की आशंका करता रहा। अगली सुबह, जब सूरज पूरी तरह निकल आया, तो वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, इस उम्मीद में कि वाडापल्ली के बाहरी इलाके में कोई उसे सुन ले। संयोग से हवा उसी दिशा में बह रही थी और अंततः उसकी चीखें सुनाई दीं, जब ग्रामीणों का एक समूह यह पता लगाने के लिए निकला कि आखिर क्या हो रहा है।

इस प्रकार उस आदमखोर ने आधिकारिक तौर पर चेलामा क्षेत्र में अपनी उपस्थिति की घोषणा की।

वडापल्ली के चेनचु समुदाय ने चेलामा स्टेशन मास्टर को यह खबर दी, जिन्होंने इसे तार द्वारा नंदीयाल तक पहुंचाया। नंदीयाल से यह खबर पुलिस, वन विभाग, रेलवे अधिकारियों और जिले के कलेक्टर तक पहुंची। अफवाहें फैलने लगीं और चार महीने पहले अन्य चेनचु समुदाय के सदस्यों और उस गिरोह के सरगना के रहस्यमय ढंग से गायब होने की घटनाओं को आपस में जोड़कर उस आदमखोर सांड पर दोष मढ़ दिया गया।

सामान्यतः, जब जंगल के किसी विशेष क्षेत्र में आदमखोर जानवर की उपस्थिति

की पुष्टि हो जाती है, तो वन विभाग शिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए आसपास के जंगलों को बिना लाइसेंस के 'खुले शिकार' के लिए खोल देता है, ताकि शिकारी उस खूंखार जानवर को मार सकें। यह कदम स्वतः ही उठाया गया, लेकिन वन विभाग की घोषणा पर कोई खास प्रतिक्रिया नहीं मिली, क्योंकि बहुत कम शिकारी ऐसे जिले में आदमखोर जानवर का शिकार करने की हिम्मत कर रहे थे, जहाँ सड़कें लगभग न के बराबर हैं और उन्हें बिना किसी वाहन के पैदल ही एक-एक इंच चलना पड़ता।

एक-दो रेलवे अधिकारियों ने गज़ुलापल्ली और चेलामा के बीच रेल पटरी पर भरी हुई राइफलें लेकर आधे-अधूरे मन से चक्कर लगाए। उन्हें उम्मीद थी कि पटरी के किनारे बाघ आराम से बैठा होगा और गोली लगने का इंतज़ार कर रहा होगा। लेकिन उनकी उम्मीदें और आशाएं पूरी नहीं हुईं, न ही आदमखोर बाघ ने उनकी कृपा का फल दिया। इतना ही नहीं, उन्हें बाघ दिखाई भी नहीं दिया, बल्कि हर हफ्ते और भी चेंचू लोग उस अदृश्य शैतान का शिकार बनते चले गए, यहाँ तक कि बाघ सहित मृतकों की संख्या ग्यारह तक पहुँच गई। इनमें से केवल दो पीड़ितों की तलाश में लाठियों, कुल्हाड़ियों और तीर-कमानों से लैस ग्रामीणों के समूह पहुँचे और उनके बिखरे हुए अवशेष बरामद किए गए। बाकी के अवशेषों का कोई सुराग नहीं मिला, क्योंकि इलाका दुर्गम था और लोग अपनी जान जोखिम में डालकर उन शवों को बचाने की कोशिश नहीं करना चाहते थे जो पहले से ही आधे खाए जा चुके थे।

ऐसे व्यवहार को उदासीनता और संवेदनहीनता माना जा सकता है। लेकिन मैं पाठक को याद दिलाना चाहूंगा कि ये बेचारे लोग निहत्थे थे और आदमखोर से निपटने के लिए संगठित भी नहीं थे। जंगल का विशाल क्षेत्र घना था, जिसमें घनी झाड़ियों, पत्थरों के ढेर और चारों ओर फैली जंगली घाटियों से होकर गुजरने वाले कुछ ही पगडंडियां थीं। हर कोई जानता था कि अगर आदमखोर किसी समूह पर हमला करने की हिम्मत करे, तो उनमें से कम से कम एक व्यक्ति उसका शिकार होगा। कोई भी वह शिकार नहीं बनना चाहता था। तो भला उन्हें बाहर न निकलने के लिए कौन दोषी ठहरा सकता है? सच्ची पूर्वी विचारधारा में तो पहले से ही मृत व्यक्ति के शव को खोजने के लिए दूसरे जीवन का बलिदान करने का कोई अर्थ नहीं था।

इन ग्यारह हत्याओं के बाद, आदमखोर कुछ समय के लिए उस इलाके से गायब हो गया था, क्योंकि तीन-चार महीनों तक वहाँ ऐसी कोई घटना दर्ज नहीं हुई, हालाँकि कृष्णा नदी के पास वे फिर से दिखने लगे। तब जाकर यह बात स्पष्ट हुई कि हैदराबाद

का पूर्व आदमखोर और चेलामा का आदमखोर एक ही जानवर थे।

हैदराबाद राज्य में बाघ को मारने के लिए शिकारियों से की गई अपील को व्यापक समर्थन मिला और एक-दो मुस्लिम नवाबों (या जमींदारों) ने बाघ के खिलाफ सक्रिय अभियान शुरू कर दिए। अंततः बाघ ने अपनी हद पार कर दी और मदिकोंडा नामक एक छोटे से गाँव के पास ही एक यात्री को मार डाला। इस घटना में बाघ को अपने शिकार का एक टुकड़ा भी खाने का मौका मिलने से पहले ही भगा दिया गया और घटना की खबर कुछ मील दूर स्थित शिविर में मौजूद इलाके के नवाब तक पहुँच गई।

नवाब ने पुकार सुनी और तुरंत मौके पर पहुंचे। सौभाग्य से, वे पीड़ित के शव को दाह संस्कार के लिए ले जाने से पहले ही वहां पहुंच गए थे। उन्होंने पास के एक पेड़ पर मचान बनाकर बाघ के अपने शिकार के पास लौटने का इंतजार किया। चूंकि पीड़ित एक घुमंतू व्यक्ति था, इसलिए उसके शव को लेने के लिए इलाके में कोई रिश्तेदार नहीं था, और इसी कारण बाघ को अब तक गोली लगने का एकमात्र मौका मिला था।

लेकिन इस समय नवाब का सौभाग्य अचानक आए तूफान से भंग हो गया, जो लगभग बाघ के लौटने के साथ ही आया था। या कम से कम नवाब का यही दावा था। कारण चाहे जो भी हो, दुर्भाग्यवश गोली चलाने पर वह बाघ को मार नहीं पाए, और सुबह की रोशनी में खून के कुछ निशान दिखाई दिए जो बारिश से मिट नहीं पाए थे। कम से कम उन्हें इस बात की तसल्ली तो थी कि उन्होंने बाघ को निशाना बनाया था, हालांकि अगले दिन कोई भी उसकी लाश को ढूंढ नहीं पाया। नवाब को उम्मीद थी कि बाघ मर चुका होगा, और बाकी सभी को भी यही उम्मीद थी।

फिर कुछ सप्ताह बीत गए। गज़ुलापल्ली के पास तीतर और जंगली मुर्गे पकड़ने का काम करने वाला एक चेंचु दोपहर के भोजन के लिए घर नहीं लौटा। वह उस सुबह जंगल के विभिन्न हिस्सों में लगाए गए अपने जालों को देखने के लिए निकला था और उसने कहा था कि वह दोपहर तक लौट आएगा, जैसा कि उसकी आदत थी। लेकिन दोपहर बीत गई और शाम हो गई, फिर भी वह नहीं लौटा, और उसकी पत्नी और इकलौते बीस वर्षीय बेटे की चिंता बढ़ गई। उन्होंने चेलामा के आसपास हुई हत्याओं के बारे में तो सुना था, लेकिन वे कुछ महीने पहले हुई थीं और तब से सभी लोग उन घटनाओं को भूल चुके थे। अब, परिवार के भरण-पोषणकर्ता, उस शिकारी

के न होने से, उनकी आशंकाएँ और भय फिर से प्रबल हो गए।

आदमखोरों के कारनामों का वर्णन करते समय यह बात ध्यान देने योग्य है कि उनकी घटनाएँ लगभग एक नियमित क्रम में घटित होती हैं। कहानी का मुख्य खलनायक, यानी आदमखोर, अचानक प्रकट होता है, आमतौर पर किसी शिकारी द्वारा घायल किए जाने के बाद अपने प्राकृतिक शिकार का पीछा करने में असमर्थ हो जाता है। बहुत कम मामलों में, वह (या अक्सर वह मादा) यह आदत अपने माता-पिता से सीखता है, जिन्हें मानव मांस खाने की लत थी। शुरुआत में कम ही हत्याएँ होती हैं, लेकिन जैसे-जैसे जानवर अपनी शक्ति और मानव जाति की असहायता पर अपनी ताकत का विश्वास बढ़ाता है, वैसे-वैसे हत्याओं की संख्या बढ़ती जाती है। सभी आदमखोरों, चाहे वे बाघ हों या तेंदुआ, में एक विचित्र विशेषता यह है कि मानवता के प्रति उनकी बढ़ती घृणा के बावजूद, एक सूक्ष्म छठी इंद्री जैसी सतर्कता, जिसे कुछ शिकारी कायरता समझते हैं, उनके पूरे स्वभाव में व्याप्त होती है। वे हमेशा शिकार पर अचानक हमला करते हैं, आमतौर पर तब जब वह अकेला हो या कम से कम लोगों के समूह के अंत या अग्रभाग में हो। ऐसे मौके बहुत ही कम देखने को मिलते हैं जब कोई आदमखोर जानवर लोगों के समूह पर हमला करता है। दूसरी ओर, ऐसे कई उदाहरण हैं जिनमें शिकार बनने की कोशिश करने वाले जानवर ने प्रतिरोध किया और किसी तरह अपनी जान बचाई, लेकिन आदमखोर जानवर ने हमला बीच में ही छोड़ दिया और भाग गया। यह स्थिति बाघों की तुलना में पैंथरों में अधिक देखने को मिलती है, क्योंकि बाघ इतने शक्तिशाली जानवर होते हैं कि एक बार हमला हो जाने के बाद उनमें से कुछ ही बच पाते हैं। यही स्वाभाविक सावधानी या कायरता, आप इसे जो भी नाम दें, सभी आदमखोर जानवरों की एक सामान्य विशेषता है और यही कारण है कि उन्हें जल्दी मारना एक बहुत ही मुश्किल काम है। जब उन्हें चकमा देने के कई प्रयास किए जाते हैं और असफल हो जाते हैं, तो शिकार किया जाने वाला जानवर स्वाभाविक रूप से अधिक से अधिक सतर्क और चालाक हो जाता है, क्योंकि उसे यह एहसास होने लगता है कि उसके सिर पर एक विशेष इनाम रखा गया है।

आदमखोर बाघ की एक खास राह या मार्ग का अनुसरण करने की आदत होती है, जो सैकड़ों मील तक फैला हो सकता है। वह गांवों या बस्तियों के आसपास एक-दो सप्ताह रुकता है और फिर आगे बढ़ जाता है। इस तरह, वह न केवल तब बच निकलता है जब हालात उसके लिए प्रतिकूल हो जाते हैं, बल्कि वह नए चरागाहों और

अवसरों की तलाश में भी पहुंच जाता है, जहां के निवासी उसके आने से अनभिज्ञ होते हैं। इसी तरह, जब वह किसी इलाके को छोड़ देता है और शिकार बंद हो जाते हैं, तो ग्रामीणों की स्वाभाविक उदासीनता और भूलने की आदत उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि खतरा टल गया है और वे अपनी गतिविधियों में लापरवाह हो जाते हैं, जिससे बाघ के लिए एक और आसान शिकार तैयार हो जाता है जब वह अंततः उस रास्ते से दोबारा आता है। क्योंकि वह इलाके में एक विशाल और अनियमित घेरे में घूमता है, और अपने क्षेत्र की सीमा के अनुसार वह निश्चित रूप से उस रास्ते से फिर से गुजरेगा—शायद एक-दो महीने बाद, या शायद उससे भी अधिक समय बाद।

जैसा कि मैंने इस पुस्तक में पहले भी उल्लेख किया है, यदि किसी के पास धैर्य हो और पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो (जो अक्सर प्राप्त करना अत्यंत कठिन होता है), तो क्षेत्र के मानचित्र की सहायता से और प्रत्येक मानव वध स्थल को घटना की तिथि के साथ चिह्नित करके, न केवल बाघ के कार्यक्षेत्र की संपूर्ण सीमा और क्षेत्रफल का आकलन किया जा सकता है, बल्कि प्रत्येक स्थल पर उसके पखवाड़े भर के भीतर लौटने का अनुमान भी लगाया जा सकता है। यह उन प्रमुख कारकों में से एक है जो आदमखोर बाघ को मारने की वैज्ञानिक योजना बनाने वाले शिकारी को अपने लक्ष्य को पूरा करने में मदद करता है।

पैंथर के मामले में, नियमित क्षेत्र में रहने का कोई प्रमाण नहीं है। वह यहाँ, वहाँ और हर जगह मौजूद रहता है। वह मुख्य रूप से रात में शिकार करता है और दिन के उजाले में बहुत कम ही शिकार करता है। छोटा होने के कारण, आदमखोर पैंथर कहीं भी छिप सकता है। जैसे-जैसे वह अधिक साहसी होता जाता है, वह अक्सर उस अवस्था तक पहुँच जाता है जहाँ वह हमला करता है और झोपड़ियों में रहने वालों को घसीट कर बाहर निकाल लाता है। मेरा मानना है कि बाघों द्वारा ऐसा करने के कुछ ही प्रामाणिक मामले हैं। दूसरी ओर, बाघ दिन के किसी भी समय अपने मानव शिकार पर हमला कर सकता है, चाहे वह जंगल के रास्तों के किनारे हो या गाँव के बाहरी इलाके के पास घात लगाकर बैठा हो।

मैंने 'चेलामा आदमखोर' या, जैसा कि वह बाद में 'हैदराबाद का हत्यारा' के नाम से मशहूर हुआ, उसके आगमन की कहानी बताई है, जिसे मैंने बहुत बाद में तथ्यों को जोड़कर लिखा है। गज़ुलापल्ली में रहने वाले चेंचु पक्षी-शिकारी को मारने और उसका कुछ हिस्सा खाने के बाद उसके कारनामों का विस्तृत वर्णन आपको शायद उबाऊ

लगे। संयोग से उसके अवशेष उसके बेटे को मिले थे। हर घटना लगभग एक जैसी थी, बाघ बार-बार दक्षिण में गज़ुलापल्ली-चेलामा क्षेत्र और उत्तर में हैदराबाद में कृष्णा नदी के बीच अपना ठिकाना बदलता रहता था। जैसा कि आप मानचित्र पर नज़र डालने से समझ जाएंगे, उसका यह कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था। इसके अलावा, मदिकोंडा में नवाब द्वारा घायल किए जाने के बाद, उसने अपनी सामान्य आदमखोर जैसी सतर्कता को और भी बढ़ा दिया, यहाँ तक कि उसे साक्षात शैतान—एक प्रकार का अलौकिक राक्षस—के रूप में ख्याति प्राप्त हो गई। उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण उसने अपने शिकार को मारने के तुरंत बाद उसके शरीर का जितना हो सके उतना हिस्सा खाने की आदत अपना ली, फिर वह शव को वहीं छोड़ देता और बहुत कम ही दोबारा खाने के लिए लौटता। इस आदत ने न केवल उसका पीछा करने वाले कुछ शिकारियों की मुश्किलें बहुत बढ़ा दीं, बल्कि हत्याओं की संख्या भी तेजी से बढ़ने लगी क्योंकि बाघ को अपनी भूख मिटाने के लिए सामान्य से अधिक बार नए शिकार पर हमला करना पड़ता था, और हर बार वह पिछले शिकार के अवशेषों को वहीं छोड़ देता था। इलाका बड़ा और दूरस्थ होने के कारण, जानवर के अत्याचारों को ज्यादा प्रचार नहीं मिला; और जब कभी प्रचार मिलता भी था, तो वह स्थानीय समाचार पत्रों में एक संक्षिप्त पैराग्राफ के रूप में ही प्रकाशित होता था, जो कभी-कभार और अनियमित अंतराल पर होता था, जिसमें उदासीन जनता को सूचित किया जाता था कि आदमखोर ने एक और शिकार को मार डाला है। इस तरह, लगभग साढ़े तीन वर्षों में, बाघ ने लगभग अस्सी लोगों की जान ले ली, इससे पहले कि उसके द्वारा उत्पन्न वास्तविक खतरे को गंभीरता से लिया जाने लगा।

एक ही बाघ के जबड़ों में अस्सी लोगों की मौत किसी शहर में रहने वाले व्यक्ति के लिए भयावह लग सकती है। पश्चिमी मानकों के हिसाब से तो यह वाकई भयावह है। लेकिन भारत जैसे विशाल देश में, जहाँ औसत जीवन प्रत्याशा वर्तमान में तीस वर्ष से काफी कम है, और पहले तो इससे भी कहीं अधिक थी—जहाँ अकाल, बाढ़ और बीमारियों से हर साल हजारों लोगों की जान जाती है; जहाँ साँप के काटने से हजारों और लोगों की मौत हो जाती है; और जहाँ शुरुआती मृत्यु दर और मृत्यु के अन्य सभी कारणों के बावजूद जन्म दर हर साल चिंताजनक स्तर तक बढ़ रही है—वहाँ अस्सी लोगों का बाघ द्वारा खाया जाना समुद्र में एक बूंद के समान है, और चिंता की कोई बात नहीं है। वास्तव में, तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो, यह बाघ की मानव मांस

खाने की कुशलता को दर्शाता है, क्योंकि उसने यह संख्या लगभग 1300 दिनों में ही हासिल की थी। इससे न केवल उसे मनुष्यों का बहुत संयमित भक्षक बताया गया, बल्कि शिकारी के लिए जो बात बहुत महत्वपूर्ण थी, वह यह संकेत देती थी कि वह स्पष्ट रूप से पालतू और जंगली दोनों प्रकार के जानवरों का शिकार करके अपने मानव आहार में विविधता ला रहा था। इसलिए, यदि शिकारी उसे मौका देता, तो वह चारा लेने से भी परहेज नहीं करता।

आदमखोर बाघ के अलावा, हैदराबाद के जंगलों और दक्षिण में भी कई अन्य बाघ और तेंदु सक्रिय थे, जिसके कारण हर साल मारे जाने वाले मवेशियों और अन्य पालतू जानवरों की संख्या हमेशा बहुत अधिक होती थी। इन परिस्थितियों में यह अनुमान लगाना भी असंभव था कि इनमें से कितनी 'प्राकृतिक' हत्याएं आदमखोर बाघ द्वारा की गई थीं और कितनी अन्य मांसाहारी जानवरों द्वारा; लेकिन यह निश्चित था कि आदमखोर बाघ इनमें से कई हत्याओं के लिए जिम्मेदार था, क्योंकि जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, वह इतने लंबे समय तक केवल मानव हत्याओं पर ही जीवित नहीं रह सकता था। यहाँ एक और अनुकूल बात थी। आदमखोर बाघ को बंधे हुए मवेशियों से लुभाया जा सकता था, बशर्ते शिकारी उसके 'पीट' क्षेत्र का अनुमान लगा सके और उसके आगमन की निर्धारित तिथि से पहले और बाद में लगभग दो सप्ताह का अंतर रखकर उसके आने का पूर्वानुमान लगा सके। यह अंतर उसके द्वारा पहले की गई हत्याओं के रिकॉर्ड से मानचित्र पर निकाला जा सकता था।

मैंने समय-समय पर प्रेस में इस जानवर के उत्पातों के बारे में पढ़ा था, और वन विभाग के अधिकारियों से मुझे इसे पकड़ने का प्रयास करने के लिए कई पत्र भी मिले थे। मैंने इन पत्रों पर ध्यान नहीं दिया, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि मेरे लिए अपने काम से समय निकालकर लंबी यात्रा करना मुश्किल था, और इसलिए भी क्योंकि जिस क्षेत्र में यह सक्रिय था वह बैंगलोर से बहुत दूर था, जिससे किसी विशेष इलाके में इसके आने या किसी मानव हत्या की खबर मिलने के बाद समय पर वहाँ पहुँच पाना मेरे लिए संभव नहीं था। साथ ही, मुझे हमेशा से आदमखोर जानवरों, चाहे वह तेंदुआ हो या बाघ, और हिंसक हाथियों की गतिविधियों में दिलचस्पी रही है। इस मामले में, मैंने पहले ही मद्रास प्रेसीडेंसी और हैदराबाद राज्य दोनों के वन विभाग और पुलिस अधिकारियों को पत्र लिखकर जानवर के बारे में सभी संभावित जानकारी, साथ ही सबसे महत्वपूर्ण डेटा: मानव हत्याओं के स्थान और घटनाएँ किस तारीख को

हुईं, प्राप्त करने का अनुरोध किया था। यह डेटा मैंने प्रत्येक घटना के स्थान और तारीख को मानचित्र पर अंकित कर लिया था। इसके बाद, नक्शे के अध्ययन से पता चला कि यह जानवर गज़ुलापल्ली और चेलामा के बीच दो से तीन महीने बिताता था, फिर अगले चार महीनों के लिए उत्तर की ओर हैदराबाद चला जाता था। फिर यह वापस लौट आता था। गज़ुलापल्ली से बसवपुरम की दूरी छह मील है, और बसवपुरम से चेलामा की दूरी पाँच मील है, और जंगल के कुछ हिस्सों के ओवरलैप होने को ध्यान में रखते हुए, इन क्षेत्रों के बीच का पूरा जंगल लगभग पंद्रह मील लंबा था। ये स्टेशन न केवल हैदराबाद के दूर के क्षेत्रों की तुलना में बैंगलोर के बहुत करीब थे, बल्कि क्षेत्रफल में भी छोटे थे, और मीटर-गेज रेलवे लाइन के एक हिस्से से बैंगलोर से जुड़े हुए थे। हैदराबाद के हिस्से इससे जुड़े हुए नहीं थे, और उन्हें जोड़ने वाली कोई मोटर योग्य सड़क भी नहीं थी। अंत में, दक्षिणी क्षेत्र अधिक आबादी वाला था, और इसलिए मुझे हैदराबाद के जंगल में ऑपरेशन शुरू करने की तुलना में वहाँ अधिक सहयोग और शिकार की सूचना जल्दी मिलने की उम्मीद थी।

तो अब आप समझ ही गए होंगे कि मैं काफी समय से इस बारे में सोच रहा था, लेकिन अंत में बाघ ने ही मेरे इस असमंजस को खत्म कर दिया। यह तब हुआ जब रेलवे का एक स्थायी मार्ग निरीक्षक (पीडब्ल्यूआई) एक सुबह चेलामा से बसवपुरम की ओर जाने वाली पटरी का नियमित निरीक्षण ट्रॉली से कर रहा था। भारतीय रेलवे में ये ट्रॉलियां दो पहियों वाले साधारण लकड़ी के प्लेटफॉर्म होते हैं। प्लेटफॉर्म की लंबाई मुश्किल से छह फीट होती है, जिसके ऊपर एक खुरदरी बेंच होती है जिस पर रेलवे अधिकारी बैठता है। इसे दो कुली धकेलते हैं जिन्हें 'ट्रॉली-मैन' कहा जाता है, जो नंगे पैर पटरियों पर दौड़ते हैं। अभ्यास से वे पटरियों पर पैर रखने में माहिर हो जाते हैं, और यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि अगर वे पटरी से फिसलकर गिट्टी पर पैर रख दें तो उन्हें बहुत दर्द होगा। वे ट्रॉली को चढ़ाई पर पैदल चलने की गति से धकेलते हैं, समतल जमीन पर लगभग आठ मील प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ते हैं, और ढलान आने पर ट्रॉली के पीछे कूद जाते हैं। अधिकारी हैंडब्रेक की मदद से ट्रॉली की गति को नियंत्रित करता है, और ट्रेनों के गुजरने के लिए रास्ता बनाने के लिए स्टेशनों पर पूरी असेंबली को लाइन से ऊपर उठा लिया जाता है।

उस दिन ट्रॉली एक ऊँची ज़मीन से होकर गुज़र रही थी, तभी एक प्रत्यक्षदर्शी ने ब्रेक लगाकर उसे रोक दिया ताकि वह नीचे उतरकर पटरी के दोनों ओर बारिश का

पानी निकालने वाली नालियों का मुआयना कर सके। दल के पास काफ़ी समय था, क्योंकि अगली ट्रेन दो घंटे बाद आने वाली थी। ट्रॉली चलाने वालों में से एक ट्रॉली पर ही बैठा रहा, जबकि प्रत्यक्षदर्शी नाली के किनारे-किनारे चलने लगा। दूसरा आदमी लगभग सात फ़ीट ऊँची नाली के किनारे पर चढ़ गया, ऊपर बैठ गया और एक बीड़ी निकाली। यह बिना पकाए तंबाकू से बनी सस्ती भारतीय सिगरेट होती है, जिसे उसी के पत्ते में लपेटा जाता है। उसने संतुष्टि से उसे जलाया और धूम्रपान करने लगा।

पी.डब्ल्यू.आई. ट्रॉली से और दूर चला गया, उस पर बैठा आदमी लेट गया और ऊंघने लगा, जबकि किनारे पर बैठा धूम्रपान करने वाला अपनी पहली बीड़ी का बचा हुआ हिस्सा फेंककर दूसरी बीड़ी लेकर जलाई, धुएं को अपने फेफड़ों में गहराई तक खींचा और अपने वरिष्ठ अधिकारी को उदासीन निगाहों से देखते हुए अपनी नाक से धुआं बाहर निकाला।

खाई का कटाव बहुत अधिक नहीं हुआ था और लगभग सौ गज चलने के बाद, प्रत्यक्षदर्शी (P.W.I.) रेखा पार करने और दूसरी ओर वापस जाकर खाई का निरीक्षण करने के लिए मुड़ गया। ऐसा करते समय, उसने पीछे मुड़कर देखा और उसे ट्रॉली दिखाई दी जिस पर कुली सो रहा था, और फिर उसने ऊपर देखा तो दूसरा कुली कटान के ऊपर बैठा अपनी दूसरी बीड़ी पी रहा था। दोनों ओर जंगल रेखा से पचास गज की दूरी तक फैला हुआ था, लेकिन कुछ झाड़ियाँ इधर-उधर उग आई थीं और काफी पास तक बढ़ गई थीं। प्रत्यक्षदर्शी (P.W.I.) ने ऐसी ही एक झाड़ी देखी—जो थोड़ी बड़ी थी—जो बीड़ी पीने वाले से थोड़ी दूर उग रही थी और उसके एक तरफ से एक गोल सी 'चीज़' निकली हुई दिखाई दी। यह 'चीज़' हिली। सूरज की चमक झाड़ी की पत्तियों से अनगिनत टिमटिमाते बिंदुओं के रूप में परावर्तित हो रही थी। इसके विपरीत, झाड़ी का निचला हिस्सा और गोल 'चीज़' छाया में थी। रहस्यमयी वस्तु फिर से हिली, और प्रत्यक्षदर्शी (P.W.I.) मैं उसे घूरता रहा, सोचता रहा कि आखिर यह क्या हो सकता है। फिर ऐसा लगा जैसे वह चपटा होकर जमीन में समा गया हो और आंखों से ओझल हो गया।

वह पटरी पार करके ट्रॉली की ओर वापस चलने लगा। अब उसकी नज़रें सामने वाली खाई पर टिकी थीं। उसने उस चीज़ को अपने दिमाग से निकाल दिया था। लेकिन यह केवल कुछ सेकंड के लिए ही था। तभी उसे एक तेज़ चीख सुनाई दी। उसने ऊपर देखा तो तटबंध पर खड़ा कुली पीछे की ओर खिंचता हुआ और फिर

चीखता हुआ आँखों से ओझल होता हुआ दिखाई दिया। उस आदमी के साथ क्या हुआ होगा, यह सोचकर, प्रत्यक्षदर्शी (PWI) बेहतर दृश्य पाने के लिए खाई के किनारे पर दौड़ पड़ा, तभी उसने एक बड़े बाघ को कुली को मुँह से लटकाए, उसके हाथों और पैरों को बेजान तरीके से हिलाते हुए, जंगल की ओर शांति से जाते हुए देखा। फिर बाघ और वह आदमी दोनों ही कहीं नज़र नहीं आए।

प्रत्यक्षदर्शी इतना सदमे में था कि हिल भी नहीं पा रहा था, लगभग एक मिनट तक वहीं स्थिर खड़ा रहा। फिर अचानक उसमें हरकत जागी। वह तेजी से ढलान से नीचे रेलवे ट्रैक की ओर भागा और जितनी जल्दी हो सके ट्रॉली की ओर वापस दौड़ने लगा। इसी बीच, सो रहा कुली अपने साथी की चीखों से जाग गया था। स्तब्ध मन से वह यह नहीं समझ पा रहा था कि किस आवाज ने उसे जगाया है या क्या हो रहा है। उसने ऊपर देखा तो उसका अधिकारी उसकी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था।

जब प्रत्यक्षदर्शी (पीडब्ल्यूआई) ट्रॉली के पास पहुँचा, तो उसने अचंभित कुली पर चिल्लाते हुए कहा, 'बाघ रेड्डी कु लैक्का गैया' (एक बाघ रेड्डी को ले गया है) और फिर बोला, 'ट्रॉली कु धक्कलाओ, जुल्धी' (ट्रॉली को जल्दी धकेलो)। इसके बाद कुली को और किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं पड़ी। दोनों ने मिलकर ट्रॉली को पटरी पर पूरी ताकत से धकेलना शुरू कर दिया, जब तक कि वह ढलान पर नहीं पहुँच गई और अपने आप लुढ़कने लगी। फिर वे उस पर कूद पड़े और उसे उस भयानक जगह से दूर, बेतहाशा नीचे की ओर जाने दिया।

इस ताजा हत्या को प्रेस में खूब प्रचारित किया गया, और P.W.I. की हर तरफ से कड़ी आलोचना हुई। उसे जरूरत के समय एक साथी इंसान को छोड़ने के लिए कायर, नैतिक हत्यारा और ऐसा व्यक्ति कहा गया जिसे इंसान के बजाय कीड़ा होना चाहिए था। मुझे आश्चर्य होता है कि अगर उसके आलोचक उसकी जगह होते तो उनमें से कितने अलग तरह से व्यवहार करते। आपको याद रखना चाहिए कि यह सब इतनी अचानक हुआ था। इसके अलावा, वह पूरी तरह निहत्था था।

मुझे लगा कि अब इस आदमखोर से मिलने का समय आ गया है। इसलिए उस रात मैं बैंगलोर से रवाना होने वाली ट्रेन में बैठ गया और अगले दिन दोपहर को गाज़ुलापल्ली में उतर गया।

मुझे लगा कि क्षेत्र के एक छोर से काम शुरू करना और बसवपुरम और चेलामा की ओर बढ़ना सबसे समझदारी भरा कदम होगा, बजाय इसके कि उल्टा किया जाए।

बीच में कहीं से भी बेतरतीब ढंग से शुरू करना अव्यवस्थित था और भाग्य पर बहुत अधिक निर्भर था। इसके अलावा, और सबसे महत्वपूर्ण बात, मुझे स्थानीय मदद और एक मार्गदर्शक की आवश्यकता थी, क्योंकि जिले के बारे में मुझे बहुत कम जानकारी थी, इससे पहले मैं केवल एक बार ही यहाँ आया था। मैं अपने साथ वह नक्शा लाया था जिस पर मैंने बाघ के क्षेत्र को चिह्नित किया था, और मुझे उम्मीद थी कि मैं उस पक्षी-शिकारी के बेटे का पता लगा पाऊँगा जो आदमखोर बाघ के पहले शिकारों में से एक था। मुझे लगा कि वह युवक एक आशाजनक और उपयोगी सहयोगी साबित होगा।

जैसे ही ट्रेन स्टेशन से निकली, मेरी स्टेशन मास्टर और उस छोटे से स्टेशन पर तैनात रेलवे कर्मचारियों से दोस्ती हो गई। जब उन्हें मेरे आने का पता चला, तो वे सब मेरे चारों ओर जमा हो गए और बोले कि उन्हें बहुत खुशी है कि मैं आया हूँ, और वे मेरी हर संभव मदद करेंगे। मुझे थोड़ी परेशानी इसलिए हुई क्योंकि वहाँ की स्थानीय बोली तेलुगु थी, जिसके मैं कुछ ही शब्द बोल पाता था। लेकिन इसकी कुछ हद तक भरपाई इस बात से हो गई कि वहाँ के ज्यादातर लोग थोड़ी-बहुत तमिल और हिंदुस्तानी समझते थे, और ये दोनों भाषाएँ मैं अच्छी तरह से बोल लेता हूँ। किसी तरह हम एक-दूसरे को समझ पाए और हमारी बातचीत चलती रही। स्टेशन मास्टर को अंग्रेजी तो आती ही थी, और वे मेरे मुख्य दुभाषिए बन गए।

सबसे पहले, मैंने समझाया कि मुझे इस बाघ के बारे में और अधिक जानना आवश्यक है, विशेषकर उसकी बनावट या आदतों से संबंधित कोई विशेष बात, ताकि मैं उसे अन्य बाघों से अलग पहचान सकूँ। इस पर स्टेशन कर्मचारियों ने जवाब दिया कि वे केवल इतना जानते हैं कि वह एक बहुत बड़ा बाघ है। बेशक, उन्होंने समय-समय पर बाघों को रेलवे ट्रैक पार करते देखा था, लेकिन उन्हें ऐसी कोई विशेष विशेषता नहीं पता थी जिससे इस बाघ को अन्य बाघों से अलग पहचाना जा सके। लेकिन, उन्होंने सुझाव दिया कि गाँव में रहने वाले दो वन रक्षकों में से कोई एक बेहतर जानता हो और मेरी मदद कर सके।

इस मौके पर मैंने उनसे पूछा कि क्या वे उस शिकारी के बेटे को बुला सकते हैं जिसे बाघ खा गया था। उन्होंने जवाब दिया कि वे उसे जानते तो हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि वह जंगल में कहीं रहता है, बस इतना पता है कि वह ठीक कहाँ रहता है। उन्हें पूरा भरोसा था कि वन रक्षक इस बारे में मुझे और जानकारी दे सकेंगे।

मेरे कहने पर एक सिपाही को वन रक्षकों को बुलाने के लिए भेजा गया, और लगभग बीस मिनट में ये लोग आ गए। उनमें से एक अली बेग नाम का मुसलमान था, जिससे मैं हिंदुस्तानी में बात कर सकता था। दूसरा कृष्णाप्पा नाम का चेंचु था, जो केवल तेलुगु बोलता था। मैंने उन्हें थाने के पीछे उग रहे एक बड़े आम के पेड़ की छाँव में बुलाया, उन्हें ज़मीन पर बैठाया, मैं खुद भी बैठ गया और फिर अपने काम में लग गया।

अली बेग को चेनचू वन रक्षक के लिए दुभाषिया बनाकर, मैंने आदमखोर बाघ से संपर्क करने के खेल में पहला दांव खेला। मैंने उसे बाघ तक पहुंचने की जानकारी देने वाले को भारी इनाम देने की पेशकश की। यह सुनकर दोनों सज्जन चौकन्ने हो गए। अली बेग ने कहा कि वह मुझे बाघ तक ले जाएगा, चाहे इसके लिए उसे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े। चेनचू ने अली बेग के माध्यम से कहा कि वह भी ऐसा ही करेगा, लेकिन वह अपनी जान गंवाना नहीं चाहता, और शर्त यह है कि उसे बाघ का सही-सही पता हो, ताकि वह मुझे वहां तक ले जा सके।

मुझे वह स्पष्ट जवाब अच्छा लगा। सभी आदिवासियों की तरह, मुझे भी लगा कि चेनचू व्यक्ति सच बोल रहा था और व्यावहारिक भी था।

मैंने उनसे बाघ के बारे में पूछताछ शुरू की। दोनों ने उसे देखने का दावा किया। जब से हत्याएं शुरू हुई थीं, तब से वे कभी अकेले जंगल में नहीं गए थे, बल्कि हमेशा साथ-साथ कुल्हाड़ी लेकर जाते थे। न ही वे गांव से बहुत दूर गए थे। लगभग दस दिन पहले उन्होंने एक बाघ को लगभग एक मील दूर आग की रेखा पार करते देखा था। बाघ ने भी उन्हें देख लिया था और तुरंत जंगल में कूद गया था। एक महीने पहले, सुबह लगभग नौ बजे, एक पानी के गड्ढे के पास उनका सामना एक और बाघ से हुआ था। जब वे नज़र आए तो वह भी भाग गया था। उससे पहले की घटना - लगभग चार महीने पहले की बात होगी - उनका सामना गांव से मुश्किल से एक चौथाई मील दूर एक बाघ से हुआ था; उसने उन्हें कुछ पल के लिए चिंतित कर दिया था, क्योंकि वह अन्य बाघों की तरह भागा नहीं था। बल्कि, वह आधा झुका हुआ घूम गया और ज़ोर से गुर्राया। वे अपनी जान बचाने के लिए भागने ही वाले थे। लेकिन चेंचु रक्षक कृष्णाप्पा ने अली बेग से फुसफुसाकर कहा कि उन्हें एक साथ चिल्लाना चाहिए। उन्होंने ऐसा ही किया। बाघ ने जवाब में गुर्राया लेकिन हमला नहीं किया। वह झिझका और फिर दूर चला गया, बीच-बीच में पीछे मुड़कर उन्हें देखता रहा और गुर्राता रहा।

जब वह नज़रों से ओझल हो गया तो वे जल्दी से गाँव की ओर लौट गए।

मेरे दिमाग में अचानक एक विचार आया: चार महीने! यह अंतराल मानचित्र पर मेरी गणनाओं से मेल खाता था, और जानवर के असामान्य व्यवहार ने इस विचार की पुष्टि कर दी। उन्होंने निस्संदेह गज़ुलापल्ली की अपनी पिछली यात्रा के दौरान आदमखोर को देखा था।

वे दोनों भी यही सोचते थे।

इससे भी ज़्यादा रोमांचक बात यह थी कि चार महीने का चक्र फिर से दोहराया गया: बाघ ने चेलामा और बसावपुरम के बीच ट्रॉली-कुली को मार डाला था, और वह आखिरी शिकार था। अगर मेरी गणना सही थी और भाग्य मेहरबान था, तो बाघ उस समय बसावपुरम और गज़ुलापल्ली के बीच कहीं होना चाहिए था। मैं और भी उत्साहित हो गया। ऐसा लग रहा था कि भाग्य मेरा साथ दे रहा है। लेकिन क्या यह सिलसिला कायम रहेगा?

मैंने उनसे उस बाघ के बारे में और गहराई से पूछताछ की जिसने उन पर गुर्राया था। क्या उन्होंने उसमें कुछ अजीब देखा था? अली बेग ने कहा कि वह एक विशाल बाघ था। कृष्णप्पा को पूरा यकीन था कि वह नर बाघ था। उन्होंने सोचा कि उसका रंग आम बाघों की तुलना में हल्का और पीला था। 'याद रखिए साहब,' उन्होंने समझाया, 'हम उस समय बहुत डरे हुए थे और हमें लगा था कि बाघ हम पर हमला कर देगा। भला ऐसी बातों पर कौन ध्यान देता?'

फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या वे उस लड़के को जानते हैं जिसकी मुझे तलाश थी, उस चेंचु शिकारी का बेटा जिसके बारे में मैंने बहुत पहले पढ़ा था कि उसे बाघ ने मार डाला था। बेशक वे उसे जानते थे। वह अपनी माँ, पत्नी और एक बच्चे के साथ जंगल में दो मील से अधिक उत्तर दिशा में एक झोपड़ी में रहता था। वह अपने पिता का पेशा, पक्षी पकड़ने का काम, आगे बढ़ा रहा था, हालाँकि इस 'शैतान' के मंडराने के बावजूद वह यह कैसे कर रहा था, यह उनकी समझ से परे था। वन विभाग के नियमों के अनुसार आरक्षित वन में पक्षियों को पकड़ना गैरकानूनी था, और अपने जीवनकाल में कई बार उनके पिता पर मुकदमा भी चला था। लेकिन हर बार मुकदमा खत्म होने के बाद भी उन्होंने अपना पेशा जारी रखा, और उनका बेटा भी अब यही कर रहा था। अतीत में, समय-समय पर उन्हें अपने पेट भरने के लिए एक मोर या दो जंगली मुर्गे मिल जाते थे, और इस वजह से वे अक्सर पिता और पुत्र दोनों के

गैरकानूनी कामों को नज़रअंदाज़ कर देते थे। अब ये भेंट भी बंद हो गई थीं। लेकिन बेचारे लड़के को कौन दोष दे सकता है? इन दिनों उसे अपने परिवार के लिए पक्षियों को पकड़ना मुश्किल लग रहा होगा, यह जानते हुए कि यह शैतानी बाघ कहीं भी, किसी भी झाड़ी के पीछे या अंदर हो सकता है।

मुझे यह सोचकर खुशी हुई कि मेरी पहली ज़रूरत पूरी हो गई है—ऐसे सहयोगी जो मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करेंगे। मैं झट से खड़ा हुआ और अपनी .405 पिस्तौल कंधे पर टांगकर दोनों वन रक्षकों से उस लड़के तक ले जाने के लिए कहा।

हमने रेल की पटरी पार की और जंगल में घुमावदार पगडंडी पर चलने लगे। हल्की झाड़ियाँ धीरे-धीरे घने जंगल में बदल गईं और जल्द ही हम एक कतार में चलने लगे। कृष्णाप्पा आगे-आगे चल रहे थे, अली बेग उनके ठीक पीछे, जबकि मैं सबसे पीछे था। मैंने एहतियात के तौर पर अपनी राइफल में गोलियां भर ली थीं और उसे अपनी दाहिनी बांह में दबाकर रखा था, ताकि किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहूँ। ऐसा नहीं था कि हमें उम्मीद थी कि बाघ उस समय हमला करेगा, क्योंकि हम तीन ही लोग थे; लेकिन अगर उसने हमला करने का फैसला कर लिया, तो असली खतरा या तो आगे चल रहे कृष्णाप्पा में से किसी एक में होगा, या फिर कतार के अंत में चल रहे मुझमें से किसी एक में। अली बेग दल के मध्य में होने के कारण पूरी तरह सुरक्षित थे।

मुझे लगा कि हमने दो मील के बजाय लगभग तीन मील की दूरी तय की है। फिर हमने एक पथरीली नहर पार की, जिसमें से पानी की एक छोटी सी धारा बह रही थी। हम एक छोटी पहाड़ी पर चढ़े और अपनी मंज़िल पर पहुँच गए। लगभग बीस साल का एक हंसमुख लड़का खुले दरवाज़े पर बैठा था और तेज़ चाकू से बांस तराश रहा था। पास ही में एक अधूरा बना हुआ उपकरण पड़ा था, जिसे मैंने चिड़ियों को पकड़ने का जाल समझ लिया।

हमारे पास आते ही वह उठ खड़ा हुआ और आदरपूर्वक सलाम किया। कृष्णाप्पा ने तेलुगु में मेरा उससे परिचय कराया, और लड़के ने मधुर स्वर में उत्तर दिया। फिर अली बेग ने दुभाषिया की भूमिका निभाते हुए मुझे बताया कि लड़के का नाम बाला है। झोपड़ी से दो महिलाओं के सिर निकले, एक बूढ़ी औरत का, जिसे मैंने लड़के की माँ समझा, और दूसरी लगभग सोलह-सत्रह वर्ष की एक लड़की का। उसकी बांह के सहारे, लगभग एक वर्ष का एक नग्न शिशु संतुष्ट भाव से उसकी छाती से दूध पी रहा

था। निःसंदेह, ये लड़के की पत्नी और पुत्र थे।

हम झोपड़ी से कुछ ही दूरी पर घास पर बैठ गए और मैंने सवाल पूछना शुरू किया। अली बेग ने हर सवाल का लड़के को तेलुगु में अनुवाद किया और उसके जवाब का भी अनुवाद किया। कृष्णप्पा बीच-बीच में टोकते रहे और किसी न किसी बात को स्पष्ट करते रहे जो किसी को समझ में नहीं आ रही थी। हाँ, वह सफेद दोराई बाघ को मारने में मदद करने के लिए ज़रूर तैयार थे, क्योंकि क्या बाघ ने उनके पिता को नहीं खाया था? नहीं, वह किसी भी रूप में पैसा या इनाम नहीं लेंगे। अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनके पिता की आत्मा उनसे बहुत नाराज़ होगी, क्योंकि अपने इकलौते बेटे के रूप में, आत्मा उनसे उम्मीद करती थी कि वे अपने हत्यारे से सीधे तौर पर बदला लें, या कम से कम किसी तरह बाघ की मौत का कारण बनें। हाँ, उन्होंने आदमखोर बाघ को कई बार अपनी आँखों से देखा था। एक बार वह उसी छोटी नदी तक गए थे जिसे हमने अभी पार किया था, झोपड़ी में पानी का घड़ा लाने के लिए। दोपहर का समय था, परिवार के दोपहर का भोजन करने से ठीक पहले। जैसे ही उसने घड़ा नदी में डुबोया, तभी उसकी नज़र ऊपर उठी और उसने देखा कि एक बाघ नदी के दूसरी ओर रेंगता हुआ आ रहा है। सौभाग्य से उसने समय रहते ही उस जानवर को देख लिया, जो शायद सौ गज दूर था और सीधे उसकी ओर बढ़ रहा था। उसने पानी का घड़ा वहीं छोड़ दिया और झोपड़ी की शरण में भागा, जहाँ परिवार ने कंटीली झाड़ियों से बने दरवाजे को जितना हो सके बंद कर दिया था, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि आदमखोर बाघ किसी भी क्षण उस कमज़ोर ढाँचे पर हमला कर सकता है। लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसने अक्सर रात में बाघ की आवाज़ सुनी थी और वह अक्सर नदी में पानी पीने आता था। वह एक बड़ा नर बाघ था, जिसका रंग हल्का पीला था। क्या साहब जानना चाहते हैं कि क्या उसने इस बाघ में कुछ खास देखा है? फिर बाला ने सोचते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं; अंत में उसने आशा भरी नज़रों से ऊपर देखा। वह बस इतना ही कह सका कि हल्के भूरे-पीले रंग की त्वचा पर बनी काली धारियाँ असामान्य रूप से पतली थीं। क्या इससे दोराई को कुछ मदद मिलेगी? उन्होंने अपने छोटे से जीवन में बहुत सारे बाघ देखे थे, लेकिन उन्हें याद नहीं था कि उन्होंने कभी इतने पतले धारियों वाला कोई दूसरा बाघ देखा हो।

उसने आखिरी बार बाघ कब देखा था? कुछ देर सोचने के बाद बाला ने जवाब दिया, 'लगभग चार महीने पहले।' क्या उसने उसके बाद कोई बाघ देखा था? ज़रूर

देखा था; दो बार। लेकिन वे साधारण बाघ थे, उसके पिता के हत्यारे नहीं। उसे यह कैसे पता चला? दरअसल, वे छोटे और गहरे रंग के थे, और जैसे ही उन्होंने उसे देखा, वे गायब हो गए।

फिर बाला वह खबर लेकर आया जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार था। उसे लगा कि बाघ फिर से आसपास ही है, क्योंकि उसने उसे देखा या सुना तो नहीं था, लेकिन नदी के किनारे थोड़ी दूर पर उसे बाघ के बड़े-बड़े पदचिह्न मिले थे। ये बड़े पदचिह्न पहले भी आदमखोर बाघ के आने के समय से मेल खाते थे। ये पदचिह्न उसके पिता के अधोभुने अवशेषों के आसपास मौजूद थे।

मैंने खड़े होकर अपनी इच्छा ज़ाहिर की कि मैं इन पदचिह्नों को स्वयं देखना चाहता हूँ। बाला ने एहतियात बरतते हुए महिलाओं को झोपड़ी के अंदर रहने और उसकी अनुपस्थिति में दरवाज़ा बंद करने को कहा, और फिर हमें लगभग उसी जगह पर वापस नदी के पास ले गया जहाँ से हम आते समय नदी पार कर रहे थे। वह मुड़ा और हमें नदी के बहाव की दिशा में ले जाने लगा। लगभग तीन फर्लांग आगे नदी चौड़ी हो गई, हालाँकि पानी बीचोंबीच बहता रहा। चौड़ी होने के कारण, दोनों ओर रेत का एक संकरा किनारा बन गया था। दो रात पहले एक बाघ इसे पूरब से पश्चिम की ओर पार कर गया था। बाघ के पदचिह्न इतने बड़े थे कि वहाँ पहुँचने से बहुत पहले ही मुझे साफ़ दिखाई दे रहे थे।

ये पदचिह्न किसी बहुत बड़े जानवर के थे, निस्संदेह नर के। जब मैं नीचे से उन्हें देख रहा था, तो मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि नरम रेत में फैले पदचिह्नों के कारण दिखने में थोड़ी अतिशयोक्ति को ध्यान में रखते हुए भी, जिस जानवर ने ये पदचिह्न बनाए थे, वह असाधारण रूप से बड़ा था।

हम झोपड़ी में लौट आए, जहाँ मैंने बाला से कहा कि वह कम से कम मेरे प्रवास के दौरान अपने परिवार को गाज़ुलापल्ली गाँव ले जाए। इससे वह निश्चिंत होकर मेरी सहायता कर सकेगा। उस बूढ़ी औरत, उसकी बहू और उसके नवजात बेटे, और स्वयं बाला के बारे में सोचना भी भयानक था, जो जंगल के भीतर उस दयनीय झोपड़ी में बस उस दिन का इंतज़ार कर रहे थे जब उनमें से कोई एक आदमखोर का शिकार हो जाएगा। संघर्ष और युद्ध के इस आधुनिक दौर में, युद्ध के मैदान में वीरता की कहानियाँ पढ़ना आम बात है, जिनके लिए पुरुषों को पदक दिए जाते हैं, जिनकी प्रशंसा की जाती है। हमने उन जासूसों और एजेंटों की अकेली मौत के बारे में भी पढ़ा

है जो स्वेच्छा से मौत के मुँह में चले गए और गोलीबारी के सामने अपने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया, एक गुमनाम कब्र में दफन हो गए, उनकी प्रशंसा अनसुनी रह गई। निस्संदेह, ये वीरता की रोमांचक कहानियाँ हैं जो हमारी रगों में जोश भर देती हैं। लेकिन उस दिन मेरे रक्त में इस छोटे से आदिवासी परिवार के प्रति विनम्र और सम्मानजनक प्रशंसा की भावना उमड़ आई, जिसने इतनी बहादुरी से लेकिन सादगी से उन लंबे महीनों का सामना अपने एकांत घर में उस हत्यारे के सामने किया, जो सचमुच उनके दरवाजे पर खड़ा था - वह हत्यारा जिसने पहले ही उनके परिवार के मुखिया और कमाने वाले सदस्य की जान ले ली थी।

चेनचु लोग काफी देर तक हिचकिचाते रहे, लेकिन जब मैंने कृष्णाप्पा और अली बेग के मजबूत समर्थन से उन पर और दबाव डाला, तो आखिरकार वे मान गए। मैं और दोनों वन रक्षक पास के एक पेड़ के नीचे बैठ गए और तब तक इंतजार करते रहे जब तक उन्होंने अपना थोड़ा-बहुत सामान तीन फटे-पुराने गठ्ठों में नहीं बांध लिया। फिर बाला ने झोपड़ी का कंटीला दरवाजा बंद कर दिया, और हम सब सिर पर एक-एक गठ्ठा लादकर, माँ अभी भी अपने बच्चे को दूध पिला रही थी, एक कतार में गाँव की ओर चल पड़े।

उस रात स्टेशन मास्टर ने मुझे अपने क्वार्टर में भोजन के लिए आमंत्रित किया। वे शाकाहारी थे, लेकिन उनकी पत्नी ने बड़ी मेहनत से एक ऐसा स्वादिष्ट शाकाहारी करी बनाया था जिसे चखने का सौभाग्य मुझे आज तक मिला है। एक बड़ा कटोरा स्वादिष्ट दही लाजवाब था, और उसके बाद बड़े-बड़े मग कॉफी परोसी गई। हमने भोजन के बाद आगे की रणनीति तय करने के लिए एक बैठक करने का निर्णय लिया था, और स्टेशन मास्टर श्री बालासुब्रमण्यम ने सुझाव दिया कि हम इसे स्टेशन परिसर में ही करें, क्योंकि रात में जब गुंटकल जाने वाली मेल ट्रेन और दो-तीन मालगाड़ियाँ वहाँ से गुजरेंगी, तब उनकी उपस्थिति आवश्यक होगी। इसलिए हम स्टेशन पहुँचे, जहाँ हम खुले प्लेटफार्म पर एक बेंच पर बैठ गए, और हमारे सामने दो वन रक्षक और बाला भी जमीन पर बैठे थे।

मेरे विचार से सबसे अच्छा तरीका यही था कि अगले दिन दो जीवित शिकार बांध दिए जाएं, एक उस जगह पर जहां बाघ ने पहरेदारों को धमकाया था, और दूसरा बाला की झोपड़ी और उस रेतीले टीले के बीच में बहने वाली धारा के किनारे, जहां हमने बाघ के पैरों के निशान देखे थे। बाला और कृष्णाप्पा वहीं रुककर उन पर नज़र

रखेंगे और अगर वे मारे जाते हैं तो सूचना देंगे, जबकि मैं अली बेग को दुभाषिया बनाकर आगे बढ़कर बसावपुरम और चेलामा में पूछताछ करूंगा। अगर दोनों में से कोई भी शिकार मारा जाता है, तो श्री बालासुब्रमण्यम को सूचना मिलेगी और वे मुझे बसावपुरम या चेलामा में, जहां भी मैं डेरा डाले रहूंगा, टेलीग्राम भेज देंगे।

मुझे अपने दफ्तर ले जाकर स्टेशन मास्टर ने दोनों स्टेशनों पर अपने सहयोगियों को फोन किया और जानकारी मांगी। उन्होंने बताया कि आदमखोर सांप के बारे में कोई नई खबर नहीं है, लेकिन सभी सतर्क हैं और रात में कोई भी बाहर नहीं निकलेगा। चेलामा स्टेशन मास्टर ने यह भी बताया कि ट्रॉली उनके स्टेशन पर वापस लाई गई है और फिलहाल वहां प्लेटफार्म पर खड़ी है। उन्होंने सुझाव दिया कि बालासुब्रमण्यम नंदीयाल स्थित पीडब्ल्यूआई (पुलिस एजेंसी) को टेलीग्राम भेजें और अनुरोध करें कि यदि मुझे स्टेशनों के बीच तत्काल परिवहन की आवश्यकता हो तो मुझे ट्रॉली का उपयोग करने की अनुमति दी जाए। कहते ही मेरे मित्र बालासुब्रमण्यम ने तुरंत अपने सुझाव पर अमल किया और नंदीयाल स्थित पीडब्ल्यूआई को तत्काल संदेश भेजकर आवश्यक अनुमति मांगी। इन रेलवे अधिकारियों के उत्साहपूर्ण सहयोग से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। इस पूरी यात्रा में उन्होंने मेरी हर संभव मदद की। स्टेशन मास्टर को कुछ देर के लिए उनके काम पर छोड़कर मैं अपने तीन साथियों को लेकर गांव चला गया। हालांकि रात काफी हो चुकी थी, लेकिन हम अगले दिन किसी भी तरह की देरी नहीं चाहते थे, इसलिए हम एक पशुपालक के घर गए, उसे नींद से जगाया और समझाया कि हमारा मकसद चारे के रूप में इस्तेमाल करने के लिए दो अधपके बैल खरीदना था।

बैंगलोर के आसपास के जंगलों में, और विशेष रूप से मैसूर राज्य में, इस उद्देश्य के लिए जानवरों की खरीददारी करना हमेशा बेहद मुश्किल होता है और इसमें अत्यंत सावधानी बरतनी पड़ती है, क्योंकि वहां के पशुपालक जीवित जानवरों को बाघ या तेंदुआ द्वारा मारे जाने के लिए बांधना एक बुरा काम मानते हैं, भले ही इसका उद्देश्य किसी ऐसे जानवर को खत्म करना हो जिसने किसी इंसान की जान ली हो। लोग इस उद्देश्य के लिए जानवर बेचने में रुचि नहीं रखते, और उनका सहयोग प्राप्त करने में कई बार घंटों लग जाते हैं। आधी रात को किसी पशुपालक से इस तरह की बिक्री के लिए संपर्क करना आमतौर पर एक निष्फल प्रयास होता। लेकिन इस विशेष क्षेत्र के लोगों का दृष्टिकोण काफी व्यावहारिक प्रतीत हुआ। जैसे ही चरवाहे को मेरे उद्देश्य का

पता चला, वह तुरंत सहमत हो गया। वह उत्साहित भी हो गया और उसने मुझे अपनी पसंद के जानवर चुनने के लिए आमंत्रित किया।

उसके घर के पीछे मवेशियों का बाड़ा था, और मैंने अपनी टॉर्च की मदद से दो अधेड़ भूरे बैल चुने। मालिक ने उन्हें मुझे पैंतीस रुपये प्रति बैल के हिसाब से बेच दिया—जो अंग्रेजी मुद्रा में तीन पाउंड से भी कम था। मैंने उसे पैसे दिए, उसकी मदद के लिए धन्यवाद दिया और उससे विनती की कि वह जानवरों को सुबह तक उसके झुंड के साथ रखने दे, जब मेरे अनुयायी उन्हें लेने आएंगे। वह तुरंत मान गया।

हम स्टेशन लौटे तो देखा कि एक मालगाड़ी आकर पटरी पर खड़ी थी। एंग्लो-इंडियन ड्राइवर बालासुब्रमण्यम के दफ्तर में उनसे बातचीत कर रहा था, एक हाथ में कॉफी का थर्मस था और दूसरे हाथ में मग से कॉफी पी रहा था। जाहिर है स्टेशन मास्टर ने मेरे बारे में उससे बात की थी, क्योंकि मेरे पास आते ही उसने अपना परिचय विलियम रॉजर्स के रूप में दिया, मुझे अपना कॉफी का मग दिया और बताया कि चार रात पहले उसने नंदीयाल की दिशा में, पटरी से लगभग एक मील दूर एक बाघ को कूदते हुए देखा था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने बाघ या उसके रंग में कुछ खास देखा था। उसने मुझे याद दिलाया कि इतनी दूरी पर उसके इंजन की हेडलाइट से ऐसी बारीकियां नहीं दिखतीं, लेकिन बाघ काफी बड़ा लग रहा था। उसने यह भी बताया कि अगर मैं चीतल या सांभर हिरण, या जंगली सूअर का शिकार करना चाहूँ, तो वे इस स्टेशन के आसपास की तुलना में दिगुवामेटा के आसपास अधिक संख्या में मिलते हैं।

मैंने श्री रॉजर्स को उनकी जानकारी के लिए धन्यवाद दिया और उनसे कहा कि बाघ को ठिकाने लगाने के बाद मैं हिरण का शिकार करने पर विचार करूँगा। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया, स्टेशन मास्टर से 'लाइन-क्लियर' टोकन लिया, हमें अलविदा कहा और अपने इंजन की ओर चले गए। एक मिनट बाद ही उसकी तीखी सीटी ने सन्नाटा तोड़ दिया, और ज़ोरदार आवाज़ और खड़खड़ाहट के साथ मालगाड़ी आगे बढ़ गई, मोड़ से गुज़रते ही पीछे की लाल बत्ती नज़र से ओझल हो गई। एक बार फिर स्टेशन पर सन्नाटा छा गया।

तभी नंदीयाल से टेलीग्राम द्वारा जवाब आया, जिसमें चेलामा स्टेशन पर खड़ी ट्रॉली के उपयोग के लिए पी.डब्ल्यू.आई. की सहमति व्यक्त की गई थी।

स्टेशन मास्टर ने प्रतीक्षाकक्ष खोला। मैंने माचिस जलाकर छत से लटक रही इकलौती तेल की बत्ती जलाई। बाला मेरी राइफल, पलंग, पानी की बोतलें और

टिफिन की टोकरी लेकर आया। बाथरूम में पानी नहीं था, और बालासुब्रमण्यम से पानी मंगवाने का अनुरोध करने में बहुत देर हो चुकी थी। कमरे में कोई बिस्तर भी नहीं था, बस एक मेज, दो बिना भुजाओं वाली कुर्सियाँ और एक बीच में छेद वाली कुर्सी थी। कम से कम सिर पर छत तो थी, इस बात से मैं संतुष्ट था। मैंने बत्ती बुझाई और कुर्सी की ओर बढ़ा। मेरा आधा पिछला हिस्सा बेंत के तले में बने छेद में धंस गया, लेकिन बाकी का हिस्सा ऊपर ही रहा। मैंने अपने जूते उतारे, कुर्सी पर लेट गया, सावधानी से अपने पैर उठाकर टांगों को सहारा देने वाले स्टैंड पर रखे, और मुझे पता भी नहीं चला कि मैं सो गया।

लगभग 4:30 बजे एक और मालगाड़ी गुजरी। उसके बाद मैं फिर सो गया, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद बाला कमरे में आया और मुझे धीरे से पुकारा। मैं जागा तो देखा कि उजाला हो चुका था। मुझे पता चला कि बालासुब्रमण्यम कुछ घंटे आराम करने के लिए अपने क्वार्टर में गए थे; इसलिए, जब बाला मेरे निर्देश पर प्लेटफार्म के अंत में तीन पत्थर लाने, कुछ लकड़ियाँ ढूँढ़ने और मेरी यात्रा केतली में चाय बनाने के लिए आग जलाने में व्यस्त हो गए, तो मैंने अपना छोटा फोल्डिंग प्राइमस स्टोव निकाला, उसे जलाया और कुछ बेकन तल लिया। बेकन खत्म होने तक चाय का पानी अभी उबल भी नहीं पाया था, इसलिए मैं प्लेटफार्म के दूसरे छोर पर स्थित 'पानी के स्तंभ' की ओर चला गया, जो प्यासे इंजनों को पानी की आपूर्ति करता था। मैं अपने साथ तौलिया, टूथब्रश, टूथपेस्ट, साबुन और कपड़े ले गया था। इन वस्तुओं को पानी के स्तंभ से कुछ दूरी पर रखकर, मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए और तौलिये को अपनी कमर के चारों ओर बाँध लिया। फिर मैं चमड़े की नली के नीचे गया और एक हाथ से पहिया घुमाकर वाल्व खोला और पास ही स्थित चार पत्थर के खंभों पर खड़े दस हजार गैलन के ऊंचे भंडारण टैंक से पानी खंभे में बहने लगा। अचानक मुझ पर जो पानी गिरा, वह इतना ज़बरदस्त था कि मैं लगभग गिर ही गया। फिर भी, मैंने अपने नहाने का आनंद लिया और इसे अपनी सुबह की ब्रश करने की दिनचर्या के साथ मिला लिया। हालाँकि मैं आमतौर पर जंगलों में दाढ़ी नहीं बनाता, लेकिन साफ-सुथरा रहना और तरोताज़ा महसूस करना बहुत ज़रूरी है। मेरे पास खुद को सुखाने के लिए दूसरा तौलिया नहीं था, क्योंकि मेरी कमर पर लिपटा तौलिया गीला था, लेकिन इसकी कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि सुबह बिल्कुल भी ठंडी नहीं थी। कुछ ही मिनटों में मैं सूखे कपड़े पहनकर बाला वापस चला गया, जहाँ केतली में पानी उबल रहा था।

चाय, बेकन और बैंगलोर से लाई गई चपातियों के बचे हुए टुकड़े, जो तब तक पूरी तरह सूख चुके थे, 'छोटाहज़री' के रूप में परोसे गए, जो भारत में नाश्ते के लिए गोरों का दिया जाने वाला एक खास नाम है। हिंदुस्तानी विशेषण 'छोटा' का अर्थ 'कम' होता है, जबकि 'हज़री' का अर्थ 'भोजन' होता है।

जब तक मैंने यह सब काम खत्म किया, तब तक दोनों वन रक्षक उस गाँव से लौट आए थे जहाँ वे रात का आखिरी हिस्सा बिताने गए थे। फिर हम चारों ने पिछली रात खरीदे गए दो युवा बैलों को इकट्ठा किया और उन्हें उन जगहों पर बाँधने के लिए निकल पड़े जो हमने पहले से तय कर रखी थीं। अगर आपको याद हो, तो इनमें से पहली जगह वह थी जहाँ दोनों रक्षकों ने उस बाघ को देखा था जिसने इतना खतरनाक रवैया अपनाया था। यह गाँव से एक मील के भीतर एक संकरी आग-रेखा पर स्थित एक जगह थी। कृष्णप्पा ने अपनी कुल्हाड़ी से एक शाखा काट दी, लगभग तीन फीट काट कर उसका एक सिरा तेज कर दिया। हमने एक ऐसा पेड़ चुना जिस पर मचान आसानी से बाँधा जा सके, बशर्ते बाघ चारा बनकर हमें मार डाले। हमने कृष्णप्पा द्वारा अभी बनाई गई खूंटी को लगभग पंद्रह गज दूर एक उपयुक्त जगह पर जमीन में गाड़ दिया और भूरे रंग के एक बैल को उसके पिछले पैर से बाँध दिया, जिसके लिए हमने अपने बिस्तर में लाई हुई मजबूत सूती रस्सी का इस्तेमाल किया। फिर हम वापस स्टेशन की ओर चले, रेल की पटरी पार की और बाला की झोपड़ी के पास वाली धारा तक तीन मील का सफर तय किया। वहाँ कोई ताजा पदचिह्न नहीं दिखे, इसलिए हमने दूसरे बछड़े को धारा के ढलान पर एक और पेड़ के नीचे बाँध दिया, उस रेतीले टीले से लगभग पचास गज पहले जहाँ बाघ ने अपने पदचिह्न छोड़े थे।

हम दोपहर से कुछ ही पहले स्टेशन वापस आ गए, तभी स्टेशन मास्टर ने मुझसे फिर से दोपहर का भोजन करने की ज़िद की। उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाने के लिए मैंने बहुत विनम्रता से मना कर दिया, क्योंकि मैं जानता था कि एक उच्च जाति के व्यक्ति होने के नाते उनके घर में मेरी उपस्थिति उन्हें अप्रिय लग रही थी, हालाँकि उन्होंने बड़ी शिष्टता से इसे ज़ाहिर न करने की कोशिश की। इसके बजाय, मैं गार्डों के साथ गाँव गया और गाँव के 'होटल' से किसी तरह का भोजन प्राप्त कर लिया—वह एक कमरे का जस्ता की चादर और घास की छत वाला ढाँचा था। भोजन करने के बाद, हम सभी स्टेशन लौट आए, जहाँ मैंने उन दो चेन्चूओं को निर्देश दिए जिन्हें चारे को खिलाने-पिलाने का काम सौंपा गया था: उन्हें स्टेशन मास्टर को सूचित करना था

यदि उनमें से कोई भी मारा जाता। श्री बालासुब्रमण्यम को यह याद दिलाने की आवश्यकता नहीं थी कि इस मामले में उनकी क्या भूमिका है; उन्हें मुझे संदेश भेजना था यदि ऐसा कुछ होता।

मैं इस सज्जन के सहयोग के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं जानता था कि मेरी सहायता करना, मुझे उकसाना या किसी भी तरह से बैल या गाय की मृत्यु करवाना, जो उनकी जाति में पवित्र पशु हैं, उनके धार्मिक सिद्धांतों के घोर विरुद्ध था। लेकिन व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने अपने सिद्धांतों को दरकिनार कर मेरी सहायता करने के लिए हर संभव प्रयास किया।

मुझे अगले स्टेशन, बसवपुरम (जो छह मील दूर था) तक ले जाने वाली ट्रेन दोपहर 2:30 बजे पहुंची। मैंने ड्राइवर से इंजन पर उसके साथ यात्रा करने की अनुमति मांगी, जिसे उसने तुरंत दे दी। मैं ऐसा इसलिए करना चाहता था ताकि पटरी के दोनों ओर के जंगल को देख सकूं। अली बेग पीछे वाले पहले तृतीय श्रेणी के डिब्बे में बैठ गया और हम चल पड़े।

ट्रेन को उन छह मील की दूरी तय करने में पच्चीस मिनट लगे। जैसे ही मैंने उस घने जंगल को देखा जिससे होकर हम गुज़र रहे थे, मेरी सफलता की उम्मीदें बहुत कम हो गईं। यह एक विशाल क्षेत्र था, घने जंगलों से भरा हुआ, और बाघ कहीं भी हो सकता था।

बसावपुरम रेलवे स्टेशन गजुलापल्ली से काफी मिलता-जुलता था। जब मैं उतरा और ड्राइवर को धन्यवाद दिया, तो मुझे लगा कि गजुलापल्ली में उन दो चारे को बांधकर मैंने वाकई बहुत ज्यादा आशावादी होने का नाटक किया था, क्योंकि हो सकता है बाघ बसावपुरम में ही हो, या फिर अगले स्टेशन चेलामा में, जो यहाँ से पाँच मील आगे है।

यहां का स्टेशन मास्टर भी अपने समकक्ष की तरह ही मददगार निकला। वह मसिलमोनी नाम का एक गैर-जातीय तमिल था, और अपने पहले अभिवादन के शब्दों से मुझे सहज महसूस कराने के बाद, उसने मुझे अपने प्रतीक्षालय में ही रुकने का आग्रह किया, यह कहते हुए कि प्रभावित जिले का केंद्र बसवपुरम होने के कारण बाघ निश्चित रूप से वहीं मिलेगा।

एक बार फिर मैंने स्टेशन कर्मचारियों और गांव से आए एक वन रक्षक से पूछताछ करने का अपना नियमित क्रम दोहराया। वह तेलुगु था और उसने मसिलमोनी

के माध्यम से मुझे बताया कि उसके साथ इलाके की देखरेख का जिम्मा संभालने वाला दूसरा वन रक्षक मलेरिया से बुरी तरह पीड़ित था और छुट्टी लेकर नंदीयाल चला गया था। उन सभी ने अलग-अलग समय पर बाघ देखे थे और हर किसी ने दावा किया कि उसने आदमखोर बाघ को देखा था। लेकिन किसी ने भी उसके आकार या शरीर पर बने निशानों में कुछ खास नहीं देखा था। किट्टू नाम के इस वन रक्षक ने मुझे बताया कि रेलवे लाइन के उत्तर में, लगभग एक मील दूर, एक पानी का गड्ढा है, जहां उसने अक्सर बाघों के पैरों के निशान देखे थे जब वे पानी पीने आते थे।

उस शाम हम पानी के गड्ढे तक गए, जहाँ मैंने बाघ के कुछ पुराने पदचिह्न देखे, साथ ही एक बड़े तेंदुआ के हाल ही के पदचिह्न भी। मुझे तेंदुआ देखकर गुस्सा आया, क्योंकि मुझे लगभग यकीन था कि बाघ के आने से बहुत पहले ही वह मेरे द्वारा वहाँ बाँधे गए किसी भी चारे को चट कर जाएगा। तेंदुआ के आने-जाने वाली जगह पर बाघ को चारा डालना परेशानी का सबब है, क्योंकि चारा लगभग निश्चित रूप से तेंदुआ के हाथ लग जाएगा।

मैंने रात प्रतीक्षाकक्ष में बिताई और अगली सुबह गाँव से एक अधेड़ भैंस का बच्चा खरीदा। हमने उसे पानी के स्रोत से आधा मील पहले जंगल में एक खुले स्थान पर बाँध दिया, और मैंने किट्टू को निर्देश दिया कि वह हर सुबह अपने दोस्तों के साथ वहाँ जाए, उसे खाना-पानी दे, और अगर वह मर जाए तो स्टेशन मास्टर को सूचित करे। मसिलमोनी ने बालासुब्रमण्यम का अनुसरण करने और जैसे ही उसे खबर मिले मुझे संदेश भेजने के लिए तुरंत सहमति दे दी।

एक बार फिर मैंने दोपहर की ट्रेन पकड़ी, जो थोड़ी देर से यानी 3.15 बजे आई, और इंजन पर बैठकर चेलामा तक पाँच मील का सफर तय किया। ट्रेन चालक, जो एक भारतीय था, ने जब हम उस जगह से गुज़रे, तो मुझे वह कटाव दिखाया जहाँ ट्रॉली चालक को ले जाया गया था। उसने बताया कि वह दोनों स्टेशनों के लगभग बीचोंबीच था।

हम चेलामा स्टेशन पर उतरे और लगभग उसी प्रक्रिया का पालन किया। स्टेशन मास्टर ने आकर मेरा अभिवादन किया और बताया कि जिन स्टेशनों से मैं हाल ही में निकला था, वहाँ के उनके साथियों ने उन्हें मेरे आने की सूचना दी थी। उन्होंने दो स्थानीय वन रक्षकों को भी मेरे आने की प्रतीक्षा करने के लिए कहा था; वे वास्तव में प्लेटफार्म पर ही मौजूद थे।

इसके बाद हुई बैठक के परिणामस्वरूप मुझे बताया गया कि उस मालगाड़ी के गार्ड ने, जो उस सुबह बसावपुरम से गुज़री थी जब मैं वहाँ के प्रतीक्षालय में सो रहा था, यह सूचना दी थी कि दिगुवामेटा में, जो कि जंगल क्षेत्र के पूर्वी छोर पर स्थित है और बसावपुरम से सोलह मील आगे है, एक महिला की हत्या कर दी गई है। गार्ड बसावपुरम में हममें से किसी को भी इस बारे में नहीं बता सका, क्योंकि उसकी ट्रेन स्टेशन पर बिना रुके आगे निकल गई थी।

इस ताज़ा खबर ने मेरे सारे अनुमानों को गलत साबित कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे मेरी सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं। इससे न केवल आदमखोर बाघ की तलाश का दायरा बहुत बढ़ गया, बल्कि बाघों के शिकार के लिए बनाई गई मेरी सारी योजना भी पूरी तरह से उलट गई। मुझे लगभग पूरा यकीन था कि आदमखोर बाघ गज़ुलापल्ली के आसपास ही कहीं होगा। लेकिन उसने दिगुवामेटा में शिकार किया, जो यहाँ से सत्ताईस मील दूर था।

फिर मुझे याद आया कि सत्ताईस मील की दूरी, आखिरकार, एक बाघ के लिए कोई लंबी पैदल यात्रा नहीं होती।

मैंने स्टेशन मास्टर से अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो दिगुवामेटा को मोर्स लाइन के माध्यम से समाचार की पुष्टि करें। लगभग पंद्रह मिनट तक टेलीग्राफ कुंजी दबाने के बाद, उन्होंने बताया कि दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर ने अपने गाँव के स्थानीय पुलिसकर्मी से इसकी पुष्टि कर ली है। पुलिसकर्मी को सूचना मिली थी कि जंगल के किनारे महोवा फूल इकट्ठा कर रही एक चेंचु महिला परसों की सुबह लापता हो गई थी। उसके गाँव के लोगों को उसकी आधी भरी टोकरी मिली थी, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर ने यह भी सलाह भेजी कि चूंकि उन्होंने सुना था कि मैं विभिन्न स्टेशनों पर जीवित चारा बाँध रहा हूँ, इसलिए मुझे दिगुवामेटा और चेलामा और दिगुवामेटा के बीच स्थित छोटे से स्टेशन बोगड़ा में भी ऐसा करना नहीं भूलना चाहिए।

यह मामला वाकई पेचीदा था। ऐसा लग रहा था मानो उस मायावी बाघ को पकड़ने के लिए मुझे इस पूरी लाइन के हर स्टेशन पर चारा बांधना पड़ेगा।

अगली सुबह चेलामा में मैंने चारा कैसे बांधा, इसकी विस्तृत जानकारी देना शायद उतना रोचक न हो। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैं अगली ट्रेन से दिगुवामेटा के लिए क्यों नहीं रवाना हुआ, लेकिन आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि उस महिला

की हत्या को दो दिन बीत चुके थे, और मेरे पहुँचने तक बाघ उसकी हड्डियाँ पूरी तरह से खा चुका होता—बशर्ते कि मैं उन्हें ढूंढ पाता। इसलिए मैंने चेलामा के लिए चारा बांधने का काम पूरा करना बेहतर समझा, इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूँ।

लेकिन उसी दोपहर मैंने बोगड़ा के लिए ट्रेन पकड़ी, जहाँ मैंने शाम को एक और चारा बाँधा और फिर सुबह तड़के दिगुवामेटा के लिए मालगाड़ी पकड़ी। वहाँ मैंने दो जानवर बाँधे, एक उस जगह के पास जहाँ उस महिला को ले जाया गया था, और दूसरा उस जगह पर जहाँ जंगल की सीमा रेखा, एक बड़ी नदी और जंगल में जाने वाला मवेशियों का रास्ता मिलते थे। दिगुवामेटा में एक वनपाल था, जो एक बुद्धिमान और बहुत मददगार भारतीय ईसाई था। उस आदमी ने मुझे बताया कि बीते वर्षों में कई बाघों को उस जगह पर उगने वाले 'होंगी' के पेड़ की शाखाओं में लगे मचानों से मारा गया था जहाँ मैंने दूसरा चारा बाँधा था।

मैं इस इलाके में करीब पांच दिन बिता चुका था, सात बार चारा लगा चुका था, जितना खर्च करना चाहता था उससे कहीं ज्यादा खर्च कर चुका था, और इस मायावी बाघ की दहाड़ सुने बिना, यहाँ तक कि किसी भी बाघ की दहाड़ सुनकर भी, मैं उसके बारे में सिर्फ कहानियां सुनकर काफी थक चुका था। मेरे आने के बाद से जंगल में असाधारण सन्नाटा छाया हुआ था।

जिस दिन मैंने दिगुवामेटा में दो जाल बांधे थे, उसी शाम मैं भारतीय ईसाई वनपाल जोसेफ के साथ जंगल में लंबी सैर पर निकल गया। चूंकि वह मेरी ही तरह मांसाहारी और अविवाहित था, इसलिए उसके निमंत्रण और इस आश्वासन पर कि मेरी उपस्थिति से उसे कोई असुविधा नहीं होगी, मैंने दिगुवामेटा में कम से कम कुछ दिन रुकने और उसके क्वार्टर के बरामदे में सोने का फैसला किया। स्टेशन मास्टर ने पहले स्टेशन के प्रतीक्षालय का उपयोग करने की पेशकश की थी, लेकिन रात में गुजरने वाली ट्रेनों की आवाज़ मुझे परेशान करती थी। जोसेफ का मलयाली नौकर, जिसे वह कालीकट से अपने साथ लाया था, जो उसका खाना बनाता था और उसकी कुछ ज़रूरतों का ध्यान रखता था, मुझे हर दिन उस बोझ और समय की बर्बादी से मुक्ति दिलाएगा जो मुझे अब तक अपने भोजन को तैयार करने में लगाना पड़ता था, जो कि बहुत कम और जल्दी-जल्दी बनता था।

दिगुवामेटा को अपने शिविर स्थल के रूप में चुनने का एक और कारण, कम से कम फिलहाल के लिए, यह था कि यहीं पर बाघ ने तीन दिन पहले आखिरी शिकार

किया था। आप शायद फिर से सोच रहे होंगे कि हमने उस बेचारी महिला के अवशेषों को खोजने का कोई गंभीर प्रयास क्यों नहीं किया। पहली बात तो यह कि इससे कोई फायदा नहीं होता। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, बाघ के पास उसे पूरी तरह से खा जाने के लिए पर्याप्त समय था, और ज़्यादा से ज़्यादा हमें कुछ कुतरी हुई हड्डियाँ ही मिल पातीं। दूसरी बात, जंगल बेहद सूखा था, और हालाँकि मैंने अपने जीवित शिकार (एक बछड़े) को बाँधते समय खोजबीन की थी, लेकिन बाघ उसे किस दिशा में ले गया, इसका कोई सुराग नहीं मिला। हमने दो सौ गज से अधिक के दायरे में पूरे क्षेत्र की छानबीन की, लेकिन कुछ भी नहीं मिला, यहाँ तक कि उसके वस्त्र का फटा हुआ टुकड़ा भी नहीं। अंत में, जैसा कि मैंने अभी कहा है, इतनी देर से उसके अवशेषों को खोजने का कोई उद्देश्य नहीं था, इसलिए मैं उस क्षेत्र को और अधिक परेशान नहीं करना चाहता था, क्योंकि उस क्षेत्र को पहले ही उन लोगों के दल ने परेशान कर दिया था जो लड़की की तलाश में आए थे और उन्हें उसकी टोकरी मिली थी।

आस-पास का जंगल बेहद खूबसूरत था और सचमुच पक्षियों और हिरणों के लिहाज से शिकारियों के लिए स्वर्ग समान था। जंगल के खुले मैदानों में हमें चीतलों के कई झुंड दिखाई दिए। लंबी भाला घास बिल्कुल सूखी थी और उसके तने के सिरे कांटेदार सूखे बीजों के भार से ज़मीन की ओर झुके हुए थे। इस वजह से दृश्यता काफी बढ़ गई और हम पेड़ों के तनों के बीच से होते हुए खुले मैदानों तक देख पाए। हमें एक भव्य सांभर नर भी दिखाई दिया जिसके सींग बहुत सुंदर थे, और हमारे पास आते ही वह भाग गया। शाम के समय सांभर का दिखना थोड़ा जल्दी था। फिर भी, नर सांभर की उपस्थिति से यह स्पष्ट हो गया कि जंगल में कोई हलचल नहीं थी, लेकिन प्राकृतिक शिकार की इतनी अधिकता से बाघ के मेरे किसी भी चारे को खाने की कोई संभावना या कारण नहीं दिखता था। इसी तरह, इतनी अधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध होने के कारण, बाघ के कभी भी आदमखोर बनने का कोई कारण नहीं दिखता था।

मैंने अली बेग का टिकट खरीदा और उन्हें निर्देश दिया कि वे रात की मेल ट्रेन से गज़ुलापल्ली लौट जाएँ, क्योंकि उनकी उपस्थिति अब आवश्यक नहीं थी। मैं खुद भी जल्दी सो गया। कम से कम यूसुफ के बरामदे में मुझे ट्रेनों की खड़खड़ाहट से कोई परेशानी नहीं हुई, इसलिए मैं दस घंटे चैन से सोया और अगली सुबह काफी आशावादी मन से जागा। जब हम सो रहे थे, तब मलयाली नौकर ने कमाल कर दिया

था। कड़क चाय का एक जग और 'हॉपर्स' और 'पुट्टू-राइस' से भरी एक थाली तैयार थी। 'हॉपर्स' बारीक पिसे हुए चावल के आटे से बनते हैं, और 'पुट्टू-राइस' एक विशेष किस्म के चावल के साबुत दानों से। ये मद्रास की खासियत हैं, और उस सुबह मेरे सामने इनकी मौजूदगी से यह संकेत मिला कि मेरे नए दोस्त और मेज़बान यूसुफ निस्संदेह उसी शहर से आए थे। यह एक स्वादिष्ट और बेहद सुखद भोजन साबित हुआ।

फिर मैंने घर की दीवार से सटाकर बनाए गए उस विशेष स्थान में ठंडे पानी से स्नान किया, जिसकी तीनों भुजाएँ लगभग पाँच फुट चौड़ी बाँहों की चटाइयों से बनी थीं। वहाँ कोई छत नहीं थी।

जब मैं कपड़े पहन रहा था, तब जोसेफ तैयार होकर इंतज़ार कर रहा था। फिर हम उन दो चारे के पास गए जिन्हें हमने एक दिन पहले बांधा था। हमारे साथ जोसेफ के अधीन काम करने वाले वन रक्षक भी थे, जिन्हें उसने इन जानवरों को खिलाने-पिलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। दोनों चारे जीवित थे और उन्हें किसी ने छुआ नहीं था।

अब मेरे पास आगे की स्थिति का इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। इलाका इतना विशाल था कि बाघ को संयोग से देख पाने की उम्मीद में जंगल में लंबी पैदल यात्रा करना व्यर्थ था। बाघ दिगुवामेटा और गज़ुलापल्ली के बीच कहीं भी हो सकता था, जो सत्ताईस मील दूर था, और उसकी खोज करना समय और ऊर्जा की बर्बादी होती। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, अब तक मेरा किसी भी बाघ से कोई संपर्क नहीं हुआ था, लेकिन मैंने काफी मेहनत की थी, और मुझे उम्मीद है कि कुछ ही समय में मुझे उसका फल मिलेगा।

और एक बार शुरू हो जाने के बाद, वाकई घटनाएँ घटने लगीं। अगली सुबह लगभग नौ बजे टेलीग्राफ की तारें बज उठीं जब बसावपुरम के स्टेशन मास्टर मसिलमोनी ने खबर दी कि पिछली रात मेरे चारे को किसी ने मार डाला था। यह सूचना पाकर मैं बहुत उत्साहित नहीं हुआ, क्योंकि आपको याद होगा कि यही वह जगह थी जहाँ मुझे पानी के गड्ढे के पास ताज़े तेंदुए के पदचिह्न मिले थे, और मैंने जानबूझकर अपने चारे को कुछ दूरी पर बाँध दिया था ताकि संभव हो तो वह उस तेंदुए की पहुँच से दूर रहे।

मैंने दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर से मसिलमोनी से बात करने और वन रक्षक

किट्टू से पूछताछ करने के लिए कहा, ताकि पता चल सके कि मेरे चारे को बाघ ने खाया था या तेंदुआ ने। कुछ ही देर में जवाब आ गया; मसिलमोनी ने बताया कि जब वह संकेत दे रहे थे, किट्टू उनके बगल में टेलीग्राफ उपकरण पर था। किट्टू ने बताया कि चारे को तेंदुआ ने मार डाला है और मुझे सलाह दी कि मैं आकर उसे गोली मार दूं, क्योंकि अन्यथा मेरे द्वारा बांधे गए अन्य चारे भी इस जानवर के हाथों उसी भाग्य का शिकार हो जाएंगे।

यह तर्कसंगत था। साथ ही, मेरे पास उस क्षेत्र के लिए नियमित शिकार लाइसेंस नहीं था, बल्कि मैं केवल आदमखोर पैंथर का शिकार करने के विशेष अनुरोध पर आया था, और कुछ नहीं। यह अनुरोध सीधे मद्रास के मुख्य वन संरक्षक ने किया था, जिन्होंने मेरी यात्रा के लिए परमिट जारी किया था। मैंने तय किया कि मैं बाद में मुख्य वन संरक्षक को पत्र लिखकर पैंथर को मारने का कारण समझाऊंगा, और किसी भी आपत्ति की स्थिति में शिकार लाइसेंस शुल्क का भुगतान करने की पेशकश करूंगा। इसलिए मैंने मसिलमोनी के बुलावे का जवाब देने का निश्चय कर लिया।

दिन के समय बसवपुरम की दिशा में कोई यात्री ट्रेन नहीं थी, लेकिन सौभाग्य से उसी सुबह लगभग ग्यारह बजे एक मालगाड़ी वहाँ से गुजरने वाली थी। स्टेशन मास्टर ने मेरे लिए ट्रेन रोक दी और मैं गार्ड के डिब्बे में बैठकर बसवपुरम चला गया। जोसेफ ने मेरे साथ जाने की जिद की।

कित्तू मुझे शिकार के पास ले गया, जिस पर एक तेंदुए के काम के सारे निशान थे, गले में दांतों के निशान से लेकर पेट में बने उस बड़े छेद तक, जहाँ आंतें और मांस सब आपस में मिलकर एक दावत बन गए थे। तेंदुए ने पिछली रात खूब खाया था, और इसी वजह से मुझे डर था कि वह देर से लौटेगा। कित्तू ने मुझे अपनी चारपाई उधार देने की पेशकश की, इसलिए मचान बनाने के बजाय हम उसे लेने वापस चले गए। लौटकर उसे बांधने में मुश्किल से दो घंटे लगे, और चार बजे तक सब कुछ तैयार हो गया था।

अभी सुबह जल्दी उठना बहुत जल्दबाजी थी, इसलिए हम स्टेशन लौट गए, जो मुश्किल से एक मील दूर था, और हमने जल्दी से नाश्ता किया जिसमें बिस्कुट, चपाती, केले और कई कप चाय शामिल थी। जोसेफ ने मेरे साथ देर तक जागने की तीव्र इच्छा व्यक्त की, इसलिए हम दोनों वापस लौटे और शाम 5:30 बजे तक मचान पर अपनी जगह पर बैठ गए।

मैंने कहा था कि मुझे पैंथर के देर से आने की उम्मीद थी। मैं गलत था। मचान में बैठे हुए हमें मुश्किल से बीस मिनट ही हुए थे और मैं आराम से पीछे झुककर बैठा था, तभी मुझे नीचे एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। मैंने नीचे देखा। पैंथर अपने शिकार के पास अपने पिछले पैरों पर बैठा उसे निहार रहा था। वाकई एक शानदार नमूना, मुझे उसे बख्श देने का मन हुआ। लेकिन मैंने इस लालच पर काबू पा लिया क्योंकि उसकी मौजूदगी मेरे चारे में लगातार बाधा डालती। मैंने उसे बाएं कंधे के पीछे गोली मार दी।

स्टेशन पर हमारी जल्दी वापसी ने किट्टू और मसिलमोनी दोनों को आश्चर्यचकित कर दिया। खबर सुनकर मसिलमोनी ने मुझसे कहा कि अगर मुझे खाल की ज़रूरत न हो तो मैं उसे दे दूं, जिस पर मैं सहमत हो गया और हम एक पेट्रोमैक्स टॉर्च और चार कुलियों के साथ मृत पैंथर को लेने वापस चले गए। मैं निगरानी कर रहा था जबकि मसिलमोनी उत्सुकता से खाल उतारने की प्रक्रिया देख रहा था। मैंने उसे सिखाया कि खाल को कॉपर-सल्फेट और नमक के घोल में अस्थायी रूप से कैसे सुरक्षित रखा जाए, जब तक कि वह उसे बैंगलोर के किसी टैक्सिडर्मिस्ट के पास न भेज दे।

अगली सुबह मैंने मरे हुए चारे की जगह दूसरा चारा खरीदा। हम उसे उस पानी के गड्ढे के पास ले गए जहाँ मैंने बाघ के पुराने पदचिह्न देखे थे और वहाँ हमने उसे बाँध दिया।

पैंथर का शिकार करने के बाद मेरा इरादा जोसेफ के साथ दोपहर की ट्रेन से दिगुवामेटा लौटने का था, लेकिन जब हम नया चारा लगाने के बाद बसवपुरम स्टेशन पर वापस आए, तो मसिलमोनी ने मुझे बताया कि मुझे चेलामा स्टेशन के स्टेशन मास्टर से एक मोर्स संदेश मिला है, जिसमें कहा गया है कि पिछली रात मेरे द्वारा लगाए गए चारे को एक बाघ ने खा लिया था।

यह सूचना मुझे रात दस बजे से पहले मिली। चेलामा जाने वाली ट्रेन कम से कम चार घंटे बाद आएगी। इसलिए मैंने चेलामा तक पाँच मील पैदल चलने का फैसला किया, जिस पर जोसेफ तुरंत सहमत हो गया। हम रात 11:30 बजे के कुछ देर बाद वहाँ पहुँच गए।

संदेश पहुंचाने वाले स्टेशन मास्टर और उसे लाने वाले दो वन रक्षक हमारे आने का इंतजार कर रहे थे। वे सभी बहुत उत्साहित थे और रक्षकों ने बताया कि जब वे उस सुबह चारा डालने और पानी देने गए थे, तो उन्हें उसका आधा खाया हुआ अवशेष

और आसपास की मिट्टी में एक बड़े बाघ के पदचिह्न मिले थे। उन्होंने कुछ देर रुककर कुछ शाखाएँ काटीं और गिद्धों से बचाने के लिए मृत जानवर के शव पर रख दीं, फिर जल्दी से स्टेशन लौटकर अपना संदेश भेज दिया।

अब सभी सात मामलों में, चारा बांधते समय, मैंने प्रत्येक स्थान का चुनाव बहुत सावधानी से किया था और यह सुनिश्चित किया था कि प्रत्येक जानवर को ऐसे पेड़ के पास रखा जाए जिस पर मचान बांधना सुविधाजनक हो। इस सावधानी ने पैंथर का शिकार करते समय मेरा काम आसान कर दिया था।

वन रक्षकों ने मेरे लिए चारपाई लाने की पेशकश की, जबकि मैं और जोसेफ, स्टेशन मास्टर के साथ, दोपहर के भोजन के लिए गाँव के इकलौते भोजनालय में गए। भोजन के दौरान जोसेफ ने कहा कि वह मेरे साथ फिर से जागना चाहेंगे, और बड़ी मुश्किल से मैंने उन्हें बिना उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाए मना किया। पैंथर के मामले में उनका साथ एक बात थी, लेकिन बाघ के मामले में बिल्कुल अलग बात थी, खासकर तब जब वह जानवर वही आदमखोर बाघ हो जिसकी हम सब तलाश कर रहे थे। मचान में बैठे किसी व्यक्ति की हल्की सी भी आवाज या लापरवाही भरी हरकत हमारी मौजूदगी का पता लगा सकती थी और जानवर को भगा सकती थी। मुझे पहले भी ऐसे साथियों का अनुभव हो चुका था जो मेरे साथ मचान में बैठे थे और अनजाने में ऐसी आवाजें निकाल देते थे जिससे हमारी निगरानी बेकार हो जाती थी। ऐसा होने की संभावना तब और भी बढ़ जाती है जब जागना रात भर चलता रहे और व्यक्ति बेचैन और अशांत हो जाए। इतने बड़े क्षेत्र में चारा बाँधने में मैंने जो मेहनत की थी, उसके बाद मैं यह जोखिम नहीं उठाना चाहता था।

शिकारगाह स्टेशन से लगभग एक घंटे की पैदल दूरी पर और जंगल के अंदर लगभग तीन मील दूर थी। वहाँ पहुँचने के लिए एक घुमावदार पगडंडी से होकर जाना पड़ता था और फिर ढलान से नीचे की ओर एक शॉर्टकट लेना पड़ता था। मैंने दोपहर 3:30 बजे से काफी पहले ही चारपाई लगा दी थी, लेकिन चूंकि उसे ढकने के लिए पत्तियाँ दूर से लानी पड़ीं ताकि आस-पड़ोस में कोई परेशानी न हो, और साथ ही वे उसी प्रजाति की होनी चाहिए थीं जिस पेड़ पर चारपाई लगाई गई थी (इस मामले में एक इमली का पेड़), इसलिए मुझे उसे सही जगह पर लगाने में लगभग एक घंटा और लग गया।

जब दोनों गार्ड मचान ठीक करने में व्यस्त थे, जोसेफ उनकी मदद कर रहा था

और ज़मीन से डालियाँ ऊपर ला रहा था, तब मैंने शिकार और बाघ के छोड़े हुए लगभग आधा दर्जन पदचिह्नों का अध्ययन किया। ज़मीन काफ़ी सख्त थी, इसलिए निशान आंशिक रूप से ही दिखाई दे रहे थे, और हर निशान में पंजे का गोला स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। मैं देख सकता था कि बाघ बड़ा और नर था, लेकिन यह निश्चित रूप से कहना असंभव था कि वह वही जानवर था जिसके पदचिह्न मैंने गज़ुलापल्ली में बाला की झोपड़ी के पास धारा के किनारे देखे थे। वहाँ निशान नरम, नम रेत में बने थे, जिसने उन्हें फैलाकर कुछ हद तक बड़ा कर दिया था। लेकिन यहाँ ज़मीन सूखी और काफ़ी सख्त थी।

शाम के 4:30 बजने से ठीक पहले मैं चारपाई पर आराम से बैठ गया। मैंने कुछ मिनट चाय से भरी पानी की बोतल को पानी से भरी छोटी बोतल के पास रखने में बिताए। गाँव के 'होटल' ने रात के खाने के लिए केले के पत्ते में लपेटी हुई तीन बड़ी चपातियाँ दी थीं। मैंने इन्हें पेय पदार्थों की बोतलों के पास रख दिया; फिर मैंने अपनी अतिरिक्त टॉर्च और कारतूस निकाले। साल के इस समय रातें गर्म होती हैं, इसलिए मैं कंबल या ओवरकोट नहीं लाया था; केवल अपनी बालाक्लावा टोपी लाया था, जिसे मैंने पहन लिया। अंत में मैंने टॉर्च को राइफल के साथ लगे क्लैंप में लगा दिया, और फिर सब कुछ तैयार था।

मैंने जोसेफ और गार्डों से कहा कि मैं स्टेशन वापस जाने का रास्ता खुद ढूंढ लूंगी। वे चले गए, और मुझे वहीं पहरा देने के लिए छोड़ दिया।

अंधेरा होने ही वाला था कि मुझे अपने ठीक नीचे घास पर दबी हुई आहट सुनाई दी। इमली के पत्ते छोटे और मुलायम होते हैं, इसलिए जब वे सूखकर ज़मीन पर गिरते हैं तो एक लचीली कालीन जैसी बन जाती हैं और उन पर चलने से कोई आवाज़ नहीं आती, बस हल्की-सी सरसराहट की आवाज़ आती है, जिसे पहचानना या परिभाषित करना मुश्किल होता है। इस लिहाज़ से सागौन के सूखे पत्ते किसी भी जीव, यहाँ तक कि चूहे के आने की आगाह करने का आदर्श माध्यम होते हैं, क्योंकि घुसपैठिए के दिखाई देने से बहुत पहले ही वे सरसराहट और चटकने की आवाज़ करते हैं। लेकिन मैं जानता था कि ये दबी हुई आवाज़ें बाघ के आने की सूचना देती हैं, इसलिए जब मैंने आगे झुककर नीचे देखा तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह लगभग तुरंत मेरे नीचे ही था। घास और गिरे हुए छोटे इमली के पत्तों पर उसके शरीर के भार के कारण ही वह हल्की सी आवाज़ आई थी जिससे उसके आने का आभास हुआ था।

कुछ सेकंड के लिए वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया, लेकिन जल्द ही फिर प्रकट हुआ और अपने मारे हुए बैल की ओर निडरता से बढ़ने लगा। वह मुझसे दूर जा रहा था, इसलिए मैं उसका सिर ठीक से नहीं देख पाया, बल्कि उसकी बाईं बगल, पिछला हिस्सा और पूंछ ही दिखाई दी। जैसा कि मैंने बताया, अंधेरा होने ही वाला था। जंगलों में ऐसे समय में रंग धुंधले पड़ जाते हैं और चीज़ें अपने वास्तविक आकार से कहीं बड़ी दिखाई देती हैं। जो भी व्यक्ति शाम के समय जंगल या इंग्लैंड के जंगलों में गया हो, वह यही बात कहेगा। मेरे नीचे दिख रहा जानवर असामान्य रूप से बड़ा लग रहा था, लेकिन मैं यह नहीं बता पाया कि उसका रंग हल्का था या गहरा। धारियाँ धुंधली थीं और मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।

टॉर्च की मदद के बिना तस्वीर लेना बहुत मुश्किल था क्योंकि अंधेरा बहुत था। राइफल का निशाना भी ठीक से नहीं दिख रहा था। इसलिए मैंने अपने बाएं अंगूठे से टॉर्च का बटन दबाया। रोशनी निकली और बाघ के बाएँ हिस्से को रोशन करते हुए उसके आगे शिकार पर पड़ी। जैसे ही मैंने जल्दी से निशाना साधा, मुझे याद है कि बाघ को पता ही नहीं चला कि रोशनी उसके पीछे से आ रही है। बल्कि, उसे लगा जैसे रोशनी शिकार से ही आ रही हो। वह बस वहीं खड़ा रहा और देखता रहा।

मैंने उसके बाएं कंधे के पीछे गोली चलाई। वह मरे हुए बैल पर आगे की ओर गिर पड़ा और फिर अपनी दाहिनी ओर छटपटाने लगा। उसके पेट और छाती का सफेद हिस्सा दिखाई देने लगा। मैंने दोबारा गोली चलाई। जैसे ही मैंने टॉर्च की रोशनी उस पर डाली, बाघ मर गया।

मैंने लगभग बीस मिनट तक इंतजार किया, इस दौरान मैंने बार-बार अपनी टॉर्च जलाकर यह सुनिश्चित किया कि मैंने उसे मार ही दिया है। फिर मैं नीचे उतरा और अपने शिकार की बारीकी से जांच की।

वह अपने यौवन काल में एक विशाल नर बाघ था, लेकिन वह निश्चित रूप से वह जानवर नहीं था जिसका वर्णन बाला ने मुझे किया था। उसका शरीर गहरे रंग का था और उसकी धारियाँ असामान्य रूप से पतली नहीं थीं। क्या मैंने गलत बाघ को गोली मार दी थी, या यही असली आदमखोर था? क्या बाला ने जिस जानवर को देखा था वह कोई और साधारण, बूढ़ा बाघ था? ये सवाल मेरे मन में उठे, लेकिन मैं जानता था कि इसका जवाब तभी मिलेगा जब कोई और इंसान मारा जाए—या फिर कोई और इंसान शिकार न बचे।

टॉर्च की मदद से मैं घुमावदार पटरी ढूंढने में कामयाब रहा, जो मुझे रात 9 बजे से कुछ पहले रेलवे स्टेशन ले आई। जोसेफ प्रतीक्षालय में सो रहा था, जबकि दोनों गार्ड प्लेटफार्म पर चटाई पर लेटे हुए थे। मैंने उन्हें जगाया और सारी बात बताई। मेरे जल्दी लौटने पर उनकी हैरानी मेरी सफलता की खबर सुनकर खुशी में बदल गई, और जोसेफ ने गर्मजोशी से बधाई देते हुए मुझसे हाथ मिलाया।

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन कहा कि मुझे पक्का यकीन नहीं है कि मैंने आदमखोर बाघ को मारा है। उन्होंने पूछा क्यों, और मैंने उन्हें बता दिया। लेकिन वे और पहरेदार आशावादी थे और उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि मैंने सही बाघ को ही मारा है।

इसके बाद स्टेशन मास्टर रात की ट्रेनों के आवागमन की निगरानी करने के लिए पहुंचे और वे भी यह खबर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। दोनों गार्ड सामान ढोने वाली टीम को बुलाने के लिए तुरंत रवाना हुए और लगभग एक घंटे बाद लगभग दस आदमियों, दो मजबूत बांस, रस्सियों और दो लालटेन के साथ वापस लौटे।

हम शिकार स्थल पर वापस गए और रात 1 बजे तक बाघ को लेकर लौट आए। मैंने शव को प्लेटफार्म के छोर पर, स्टेशन यार्ड की सीमा निर्धारित करने वाली लोहे की रेलिंग के ठीक बाहर रख दिया और जोसेफ द्वारा पकड़ी गई दो लालटेन और मेरी अतिरिक्त टॉर्च की सहायता से जानवर की खाल उतारना शुरू कर दिया। मैंने यह काम स्वयं किया क्योंकि पहरेदारों को इस कला की ज्यादा जानकारी नहीं थी, और मैं काम में इतना मग्न था कि जब गुंटकल जाने वाली रात की मेल ट्रेन स्टेशन पर आकर रुकी, तब तक मैं आधा काम कर चुका था।

उस ट्रेन में सवार सभी लोग, ड्राइवर से लेकर गार्ड तक और सभी यात्री भी, नीचे उतर गए और मुझे साफ़ देखने के लिए मेरे चारों ओर एक विशाल घेरा बनाकर खड़े हो गए। उस रात मुझे खूब प्रसिद्धि मिली और ट्रेन निर्धारित समय से पंद्रह मिनट से अधिक देरी से चली। ट्रेन के संचालकों ने देरी को मामूली बात समझा। वैसे भी, रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर आधी रात को एक विशाल बाघ की खाल उतारते देखना कोई आम नजारा नहीं है, यहाँ तक कि भारत में भी नहीं।

कॉपर सल्फेट और नमक के घोल का मानक अनुप्रयोग इसे मेरी यात्रा की अवधि के लिए अस्थायी रूप से संरक्षित रखेगा।

अगले दिन मैंने आराम किया, जबकि स्टेशन मास्टर ने चेलामा के दोनों किनारों

पर स्थित स्टेशनों को खबर दी और सभी खुश थे। मैं खुद इतना खुश नहीं था और मैंने संभव हो तो एक और सप्ताह रुकने का फैसला किया। चूंकि मैंने अपने जाल बिछा दिए थे और जरूरत पड़ने पर एक महीने तक रुकने की तैयारी के साथ आया था, इसलिए मुझे लगा कि बैंगलोर लौटने और फिर से जाल बिछाने के बजाय यहीं रहना बेहतर होगा। क्योंकि एक अजीब सी आशंका मुझे बार-बार परेशान कर रही थी कि आदमखोर सांप मरा नहीं है और बहुत जल्द किसी को मार डालेगा।

चार दिन बीत गए। फिर गज़ुलापल्ली से खबर आई कि बाघ ने बाला की जवान पत्नी को मार डाला है। मुझे पता नहीं था कि वह अपने परिवार को जंगल में अपनी झोपड़ी में वापस ले गया था, यह सोचकर कि अब खतरा टल गया है।

आखिरकार उस आदमखोर ने अपने तय कार्यक्रम का पालन किया।

इस बीच जोसेफ दिगुवामेटा लौट आए थे, इसलिए मैंने बालासुब्रमण्यम को संदेश भेजने के लिए बस कुछ देर इंतजार किया कि वह बाला को अपने पास रखें और चेलामा में ट्रॉली उधार लेकर, क्योंकि अगले चार घंटों तक कोई मालगाड़ी नहीं गुजरने वाली थी, दो ट्रॉली चालकों की मदद से गाजुलपल्ली के लिए रवाना हो गया।

वहाँ पहुँचने में हमें डेढ़ घंटे से थोड़ा अधिक समय लगा और हमने देखा कि बाला प्लेटफार्म के एक कोने में ज़मीन पर बैठकर रो रही थी। बालासुब्रमण्यम भी वहीं थे, और दो वन रक्षक, अली बेग और कृष्णप्पा भी मौजूद थे।

युवा चेनचू की कहानी जितनी संक्षिप्त थी, उतनी ही दुखद भी। यह सुनकर कि मैंने चेलामा में आदमखोर साँप को मार गिराया था, और चूंकि मेरे दोनों जीवित शिकारों को अब तक किसी ने छुआ तक नहीं था, उसने मान लिया था कि उनके जीवन पर खतरा टल गया है और वह दो दिन पहले ही अपने परिवार को अपनी झोपड़ी में वापस ले आया था। उसी सुबह भोर होते ही उसकी पत्नी उठी, अपने बच्चे को उसके पास लिटाया और शौच के लिए बाहर चली गई। कुछ ही क्षण बाद उसने उसकी हल्की सी चीख सुनी। यह समझते हुए कि कुछ भयानक हुआ है, उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और बाहर भागा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

अभी सुबह नहीं हुई थी, और बाला ने कहा कि उसे कुछ भी होने का कोई सुराग नहीं मिला, सिवाय इसके कि उसकी जवान पत्नी वहाँ नहीं थी। उसने उसे पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। बेचैनी से खोजते हुए वह झोपड़ी के दूसरी तरफ गया, जहाँ उसे पता था कि वह अपने इरादे से गई होगी। फिर भी उसे कुछ नहीं मिला।

रात भर हुई ओस के कारण घास गीली थी, और जैसे-जैसे रोशनी तेज होती गई, वह उस रास्ते को देख सका जो किसी ऐसी चीज ने बनाया था जो घास से होते हुए जंगल में चली गई थी।

उसे खून का कोई निशान नहीं मिला, लेकिन वह जानता था कि वह गीली घास में बने उस रास्ते को देख रहा था जिस पर आदमखोर बाघ अपनी पत्नी को लेकर चला था। गीली घास में बना वह निशान साफ था, जहाँ बाघ और उसकी शिकार, दोनों भारी शरीरों के गुजरने से वह निशान दब गया था या हट गया था।

तब बाला ने एक बहुत ही साहसी और बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम किया था। अकेले, और केवल अपनी छोटी सी कुल्हाड़ी के साथ, वह निशान का पीछा करने निकल पड़ा था।

कुछ दूर रोशनी होने पर, कुछ फर्लांग चलने के बाद, उसे खून के निशान का पहला सुराग मिला, जहाँ बाघ ने अपने शिकार को पकड़ने के लिए ओस से भीगी झाड़ियों के बीच लेटकर उसे छुड़ाया था। इसके बाद, उस भयानक निशान का पीछा करना आसान हो गया, और उसने बाघ को एक पुराने सूखे पेड़ के नीचे भोजन करते हुए पकड़ लिया।

आदमखोर बाघ ने उसे देख लिया था। उसने अपने कान पीछे किए और गुर्राया। एक पल में ही वह उस पर हमला कर देता। लेकिन अपनी पत्नी को अपनी आँखों के सामने खाते हुए देखना युवा चेनचू के लिए असहनीय था। किसी निर्भीक और वीरतापूर्ण राक्षस ने उसे जकड़ लिया था, और घृणा से जलते हुए और चीखते हुए, वह अपनी छोटी कुल्हाड़ी लहराते हुए बाघ पर टूट पड़ा।

मैंने तुम्हें अक्सर बताया है कि सभी आदमखोरों में एक अजीब तरह की कायरता पाई जाती है। वे शिकार पर अचानक हमला तो कर देते हैं, लेकिन सीधे जवाबी हमले का सामना शायद ही कभी करते हैं। उस सुबह चेलामा का आदमखोर भी इस नियम का अपवाद नहीं था। वह तब तक हिचकिचाता रहा जब तक छोटा चेनचू लगभग उसके पास नहीं आ गया। फिर वह दुम दबाकर भाग गया।

सौभाग्यवश, अंततः बाला को अक्ल आ गई। यदि वह बाघ का पीछा करने का प्रयास करता, तो बाघ शायद अपना हौसला जुटाकर उसे मार डालता। इसके बजाय, उसने अपनी पत्नी का शव उठाया और उसे लेकर झोपड़ी की ओर भागा।

उस नन्हे आदिवासी द्वारा सरल शब्दों में सुनाई गई इस कहानी को सुनकर मेरा

हृदय प्रशंसा और गर्व से भर गया कि भारत में ऐसे नायक मौजूद हैं, यहां तक कि उसकी सबसे विनम्र और बहिष्कृत जनजातियों के बीच भी।

झोपड़ी में पहुँचकर बाला ने आँसू बहाने में ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया। शव को अंदर छोड़कर, उसने अपनी बूढ़ी माँ को बच्चे को ले जाने के लिए कहा और दरवाज़ा जितना हो सके बंद करके मुझे सूचना देने के लिए रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। यह सौभाग्य की बात थी कि उसने इतनी जल्दी कार्रवाई की, क्योंकि शेर के डर से उबरने और शव या झोपड़ी में वापस आने से पहले ही वह और उसकी माँ स्टेशन की ओर निकल पड़े थे।

यह कहानी सुनाते हुए वह छोटा बच्चा चुपचाप रो रहा था, और मैंने उसे सांत्वना देने की कोई कोशिश नहीं की। उसके आँसू उसके लिए अच्छे ही थे। वे प्रकृति की ओर से उसके गहरे मानसिक तनाव को कम करने वाला मरहम थे और शोक के सदमे के बाद उसकी दबी हुई भावनाओं को बाहर निकालने का ज़रिया थे। दूसरी ओर, मेरी दिखावटी सहानुभूति बिल्कुल बेकार थी। मैं उस दुखद खालीपन को भरने का बहाना भी नहीं ढूंढ सकता था जो उस नन्हे से जीवन में उस सुबह इतनी जल्दी आ गया था।

लेकिन आंसू ज्यादा देर तक नहीं टिके। आदिवासी स्वभाव से ही भाग्यवादी होते हैं। मैं उन्हें टोकना या जल्दबाजी करना नहीं चाहता था, लेकिन दस मिनट बाद बाला खड़े हो गए और कार्रवाई के लिए तैयार हो गए।

मैं तेज़ी से और गहराई से सोच रहा था, और मेरे मन में एक योजना बन रही थी। इसे अमल में लाने के लिए बाला को बहुत बड़ा बलिदान देना पड़ता, और मैं उससे यह बलिदान माँगने में हिचकिचा रहा था। शायद जंगल में बिताए वर्षों के कारण हमारे बीच विचारों की कुछ समानता थी, वह जन्म से और मैं अपनी मर्ज़ी से, जिसने हमें एक साथ बाँध रखा था। उसने मेरी ओर देखा, और एक बार फिर उसकी आँखों से आँसू बह निकले, उसने धीरे से सिर हिलाया। फिर अली बेग ने अनुवाद किया, 'वह मेरी पत्नी थी और मैं उससे प्यार करता हूँ, दोराई। लेकिन तुम्हें उसका शव चारा के रूप में इस्तेमाल करना होगा, ताकि मैं इस प्रियतम और अपने पिता की मृत्यु का बदला ले सकूँ।'

बहुत बातें हो चुकी थीं और बहुत समय बर्बाद हो चुका था। मैं उस भूमिका को निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित था जो इस विनम्र लेकिन महान छोटे आदमी ने मुझे सौंपी थी। मैंने बस जल्दी से सब्जी की करी और चावल का भोजन किया, जो सदा

ध्यान रखने वाले बालासुब्रमण्यम ने अपनी पत्नी से मेरे लिए तैयार करवाया था। मैंने अपनी दोनों पानी की बोतलों में चाय और पानी भरा और दो वन रक्षकों और बाला के साथ चारपाई लेकर झोपड़ी की ओर चल पड़ा।

मृत लड़की का दृश्य दयनीय था। उसके शरीर पर जो थोड़े-बहुत कपड़े थे, वे बाघ ने फाड़ डाले थे, लेकिन बाला ने उसके पास मौजूद एकमात्र साड़ी से उसकी कमर ढक रखी थी। उस युवती के चेहरे पर एक अजीब सी शांति का भाव था। उसकी पीठ के घावों से खून रिसकर झोपड़ी के मिट्टी के फर्श पर फैल गया था, और उसके फटे हुए गले और स्तनों से खून की एक गहरी धारा रिसकर उसकी सांवली त्वचा पर सूख गई थी। हम चारों एक मिनट तक सम्मानपूर्वक मौन खड़े रहे, अपने सामने फर्श पर पड़े उन क्षत-विक्षत अवशेषों को देखते रहे, जो कुछ ही दिन पहले एक जीवित और खुशहाल माँ थी। फिर मैंने झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया और बाला को इशारा किया कि वह हमें उस स्थान पर ले जाए जहाँ उसने बाघ को अपना शिकार शुरू करने की तैयारी करते हुए पाया था।

सूरज ओस को सोख चुका था, और आदमखोर बाघ और उसके शिकार के गुजरने से झुकी हुई भाला घास की कलियाँ फिर से सीधी खड़ी हो गई थीं, हल्की हवा में धीरे-धीरे हिल रही थीं। बाला उस जगह की ओर आगे बढ़ा जहाँ बाघ ने लड़की को पहली बार लिटाया था और अपनी पकड़ बदली थी। वहीं से खून के निशान शुरू हुए और थोड़ी ही देर में हमें एक पुराने सूखे पेड़ तक ले गए, जिसके नीचे बाघ ने लड़की को लिटाकर अपना भोजन शुरू किया था, तभी बाला ने उसे भगा दिया था।

हम चुपचाप चलते रहे और कुछ नहीं बोले, हालाँकि हम चारों सतर्क थे। लेकिन हमारी संख्या अधिक होने के कारण वास्तविक खतरा न के बराबर था। पेड़ के नीचे पहुँचकर हम रुके और ज़मीन की ओर देखा। ज़मीन सख्त थी और उस पर छोटी-छोटी सूखी घास उगी हुई थी। कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे, और उन्हें खोजने की कोई आवश्यकता भी नहीं थी।

मुझे याद आया कि हैदराबाद में नवाब के हाथों घायल होने के बाद इस बाघ के बारे में यह मान्यता थी कि वह कभी किसी इंसान को अपना शिकार बनाने के लिए वापस नहीं लौटेगा। क्या वह अब लौटेगा? क्या उसके लिए जागते रहने का कोई फायदा होगा? ये सारे विचार निराशाजनक रूप से मेरे मन में कौंध गए। इस मामले में उम्मीद की एकमात्र किरण यही थी कि उसने लड़की का एक निवाला भी नहीं खाया

था। लेकिन इसके विपरीत, बाला ने उसे डराकर भगा दिया था। सब कुछ देखते हुए, इस कोशिश के सफल होने की संभावना बहुत कम लग रही थी। लेकिन मुझे पता था कि मुझे कोशिश करनी ही होगी, क्योंकि कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

मैंने चारपाई रखने के लिए एक पेड़ की तलाश शुरू कर दी।

बाघ ने अपने भोजन के लिए घने जंगल में झाड़ियों और छोटी-छोटी वनस्पतियों से घिरी एक जगह चुनी थी। सूखे हुए पेड़ के अलावा सबसे नज़दीकी पेड़ तीस गज दूर था। जब मैं बाघ की लगभग ऊँचाई पर घुटनों के बल बैठा, तो मुझे समझ आया कि घनी झाड़ियों के ऊपर से देखने और गोली चलाने का अच्छा मौका पाने के लिए मुझे बिल्कुल ऊपर बैठना होगा। संभवतः बाघ अंधेरा होने के बाद ही लौटेगा, अगर वह लौटा भी तो, और अगर मैं नीचे बैठता तो टॉर्च की रोशनी झाड़ियों के पार नहीं जा पाती।

मैं तीस गज चलकर पेड़ तक गया और ऊपर देखा। उसकी ऊपरी शाखाएँ मेरी दो उंगलियों से भी पतली थीं और चारपाई पर बैठे मेरे वजन को संभालना उनके लिए नामुमकिन था।

अगला बड़ा पेड़ लगभग दस गज आगे था। मैं वहाँ पहुँचा और चढ़ने लगा। लेकिन मुझे केवल उस सूखे पेड़ के तने का ऊपरी हिस्सा ही दिखाई दे रहा था जहाँ बाघ था। कंटीली झाड़ियों ने उसके आधार और नीचे की हर चीज़ को छिपा रखा था।

यह एक पेचीदा सवाल था। मैं कहाँ बैठूँ?

मैं वापस उन तीनों आदमियों के पास गया और उस सूखे पेड़ के चारों ओर टहलने लगा। अपने समय में वह एक विशाल पेड़ रहा होगा और उसके तने का घेरा बारह से पंद्रह फीट था। उसके मरने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था: शायद किसी बीमारी या कीट के हमले से। शायद उसकी जड़ें ज़मीन में ही गल गई हों। कारण जो भी हो, वह कुछ साल पहले ही नष्ट हो गया था; अब केवल उसकी सूखी शाखाएँ ही मेरे सिर के ऊपर बादलों से रहित आकाश में फैली हुई थीं।

दीमकों ने नीचे से विध्वंस का काम शुरू कर दिया था, और कुछ ही समय में कमजोर आधार मृत ढांचे का भार सहन नहीं कर पाएगा, और पूरा ढांचा जमीन पर गिरकर बिखर जाएगा और दीमकों तथा असंख्य लकड़ी के भृंगों और सभी प्रकार के कीड़ों का भोजन बन जाएगा जो फिर जमीन से उस पर हमला करेंगे।

मैं पेड़ के तने के और करीब गया। मेरे सिर के ठीक ऊपर एक जगह से मुख्य

तने से तीन शाखाएँ फैली हुई थीं। नीचे व्यस्त दीमकों को सूखी मिट्टी की एक परत ने ढक रखा था। मैंने अपने पैर की उंगलियों के बल खड़े होकर तने के नीचे जाने वाले खोखले हिस्से में झाँका। पेड़ अंदर से खोखला था।

बाहर से, विशेषकर उस स्थान से जहां पीड़ित का शव रखा गया था, यह बात ध्यान देने योग्य नहीं थी।

मैंने तीनों आदमियों को इशारा किया और अली बेग से फुसफुसाकर कहा कि वह बाला से कहे कि वह खोखले तने के अंदर जाकर देखे कि क्या मेरे लिए वहाँ कोई जगह बन सकती है। उसे भेजने से पहले, मैंने एहतियात के तौर पर अपनी अतिरिक्त टॉर्च से छेद में रोशनी डाली, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसमें कोई साँप, बिच्छू या कनखजूरा तो नहीं छिपा है। यह पक्का करने के बाद कि वहाँ दीमकों के अलावा कोई जीव नहीं है, बाला फुर्ती से नीचे उतर गया। मुझसे कम से कम एक फुट छोटा होने के कारण वह नज़र से ओझल हो गया, लेकिन फिर अचानक बाहर निकला और कहा कि उसके लिए तो वह जगह तंग है और मेरे भारी-भरकम शरीर के लिए उसमें जगह नहीं हो सकती। अंदर की जगह को बढ़ाना बिलकुल ज़रूरी है।

फिर मैंने देखा कि दीमकों ने दूसरी तरफ की लकड़ी को काफी अंदर तक कुतर दिया था।

बाला अंदर से धक्का दे रहा था और हम तीनों बाहर से अपने हाथों से खींच रहे थे, बीच-बीच में कृष्णप्पा की कुल्हाड़ी से हल्के-हल्के वार करते हुए, हमने उस छेद से सड़ी हुई लकड़ी को तोड़ना शुरू कर दिया जिससे बाला अंदर आया था। दीमकों ने पहले ही हमारा अधिकांश काम कर दिया था, और धीरे-धीरे हम छेद को बड़ा करते हुए नीचे जमीन की ओर बढ़ते गए। हमने प्रवेश द्वार का आकार न केवल ऊपर से बढ़ाया, बल्कि पेड़ के तने के दूसरी तरफ से लकड़ी हटाकर उस तरफ को घुटने तक पूरी तरह से खोल दिया। जैसे ही लकड़ी हटती गई और अंदर का हिस्सा खुल गया, हम अपने हाथ अंदर डाल पाए और बाला की छोटी मूठ वाली कुल्हाड़ी का भी इस्तेमाल कर पाए।

यह काफी मेहनत का काम था और इसमें लगभग दो घंटे लग गए, लेकिन आखिरकार मैं एक ऐसे छेद में पैर रखने में कामयाब हो गया जो मेरे पैरों को घुटनों तक अंदर डालने के लिए काफी बड़ा था। इसके बाद, मैं इतना स्वतंत्र हो गया कि मैंने अपने हाथों और राइफल को ट्रंक के दूसरी तरफ बनाए गए छेद से बाहर निकाल

लिया।

मेरी स्थिति में कई गंभीर अड़चनें थीं। सबसे बड़ी अड़चन यह थी कि मेरी पीठ उस जगह की ओर थी जहाँ बाघ ने महिला को उतारा था, और जहाँ वह संभवतः वापस आता—यानी, अगर वह वापस आता। मैं मुड़कर उस दिशा में नहीं देख सकता था क्योंकि पेड़ का तना मेरे पीछे था। इसके अलावा, हम तने के इस हिस्से से लकड़ी नहीं निकाल पाए थे, क्योंकि दीमकों ने दूसरी तरफ ज़्यादा खा लिया था, जैसा कि मैंने बताया है। ऐसा करने के लिए हमें लकड़ी को काटना पड़ता, जिसके लिए हमारे पास समय नहीं था, साथ ही इससे शोर भी होता।

इन सभी कमियों को देखते हुए यही लग रहा था कि जब हम अंततः कन्या-पत्नी के शव को उसकी जगह पर रखेंगे, तो वह उस स्थान पर नहीं हो सकता जहाँ बाघ ने उसे छोड़ा था। हमें उसकी स्थिति थोड़ी बदलनी ही पड़ेगी। अगर मैंने ऐसा नहीं किया और बाघ आ गया, तो या तो वह मेरे आने से पहले ही शव को हटा देगा, या वह मुझसे पाँच गज की दूरी पर बैठकर उसे खा जाएगा और मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा। बेशक, मैं छिपकर पेड़ के तने के चारों ओर रेंग सकता था। लेकिन मैं ऐसा करने से बहुत डर रहा था। इसके अलावा, अंधेरे में तने से बाहर निकलते समय शायद कुछ आवाज़ हो जाती। बाघ मुझे सुन लेता और शायद गायब हो जाता; या, इससे भी ज़्यादा डरावना, वह मुझे तने के बीच में ही मिल जाता। यह सोचकर मुझे बहुत डर लग रहा था।

दूसरी बड़ी असुविधा यह थी कि मुझे पूरी रात सीधा खड़ा रहना पड़ता। मैं उकड़ू भी नहीं बैठ सकता था, क्योंकि घुटने के नीचे का छेद मेरे पैरों के लिए बस इतना ही बड़ा था।

तीसरी बात, अगर बाघ लाश के पास आने से पहले जगह का जायज़ा लेता, जैसा कि हर समझदार बाघ करता है, तो हमारे द्वारा बनाए गए छेद के सामने आते ही वह सीधे मेरी तरफ देखता। बेशक, मैं अपने आदमियों को पत्तों और लताओं के रूप में कुछ छिपाने का इंतज़ाम करने को कहता, लेकिन अगर वह सीधे मेरी तरफ देखता, तो क्या मैं उसकी जंगल में पली-बढ़ी आँखों को धोखा दे पाता? कम से कम, क्या उसे इन पत्तों और दूसरी चीज़ों पर शक नहीं होता, जो अचानक उस पेड़ के तने पर उग आई थीं जो उसी सुबह बिल्कुल सूखा था?

फिर भी, अगर कोई कोबरा, बिच्छू या कोई और खतरनाक रेंगने वाला जीव ठंडी

रात में खुद को गर्म रखने के लिए सूखे पेड़ के खोखले तने को चुन लेता, तो मैं सचमुच बड़ी मुसीबत में पड़ जाता। मुसीबत की इतनी सारी संभावनाएं थीं कि मैंने उन्हें नजरअंदाज कर दिया। मुझे जोखिम उठाना ही होगा, हालांकि सफलता की संभावना दस में से एक ही लग रही थी।

मैंने अपना कोट ज़मीन पर बिछाया और उस पर हमने सूखी लकड़ी का हर टुकड़ा, यहाँ तक कि आखिरी टुकड़ा भी, ढेर कर दिया। फिर हमने कोट को चारों कोनों से पकड़कर दूर ले जाकर मलबा फेंक दिया।

फिर हम झोपड़ी में लौट आए, जहाँ बाला ने बहादुरी से अपनी पत्नी का शव अपने कंधे पर उठा लिया। हम एक कतार में चुपचाप पेड़ की ओर वापस चले। मैंने उससे कहा कि वह शव को हमारे द्वारा बनाए गए छेद के थोड़ा बाईं ओर रख दे, ताकि बाघ उसे देखते समय छेद और मेरे सीधे संपर्क में न आए। खोखले हिस्से में मेरे और टॉर्च लगी राइफल के अलावा और कुछ रखने की जगह नहीं थी, इसलिए मैंने एक चपाती और अपनी पानी की बोतल से थोड़ी चाय पी ली और फिर उसे अली बेग को वापस ले जाने के लिए दे दिया।

मैं खोखले में दाखिल हुआ। बाला और कृष्णप्पा ने फिर खुले हिस्से पर कुछ लकड़ियाँ रख दीं, जिनके बीच उन्होंने पत्तियाँ और लताएँ इस तरह लपेट दीं कि मैं जितना हो सके छिप सकूँ। बाला ने इस काम को बड़ी गंभीरता से लिया, वह बार-बार पीछे हटकर अलग-अलग कोणों से देखता रहा कि कहीं मैं अंदर से दिखाई तो नहीं दे रहा। उसने मेरे सीने के स्तर पर खुले हिस्से के दोनों ओर एक बड़ी लकड़ी फंसा दी, ताकि गोली चलाते समय मैं अपनी राइफल उस पर टिका सकूँ। मैंने पाया कि मैं बिना कोई आवाज़ किए अपनी राइफल को धीरे-धीरे अपने शरीर के ऊपर से खिसकाकर उस लकड़ी के ऊपर से ले जा सकता था। दोनों चेंचुओं ने लकड़ी और तने को मेरे चेहरे के दोनों ओर लताओं से लपेट दिया, उन्हें पेड़ की दो ऊँची शाखाओं से नीचे की ओर लकड़ी पर लटका दिया। अंत में, उन्होंने मेरे ऊपर फैली तीन शाखाओं के आधार पर पत्तियों और लकड़ी का एक बड़ा ढेर फंसा दिया। मैं सचमुच उस खोखले में पूरी तरह से बंद हो गया था।

जाने से पहले, बाला ने अपनी मृत पत्नी को अंतिम विदाई दी। उसने उसके ठंडे माथे को चूमा और उसके पैरों को भी चूमा। फिर वह शव के पास घुटनों के बल बैठ गया और ज़मीन पर हाथ रखकर प्रणाम किया, ताकि वह उस अपमान के लिए क्षमा

मांग सके जिसका सामना वह उसके निर्धन शरीर को करा रहा था।

जब वह दोबारा उठा, तो उसकी आँखों में आँसू नहीं थे। उसका चेहरा दृढ़ था। उसने बिना कुछ कहे मेरी ओर देखा। एक बार फिर जंगल से प्यार करने वाले लोगों का सहज संचार हुआ। उसकी नज़र ने, बोले गए शब्दों से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से कहा: 'मैंने अपनी पूरी कोशिश की है और अपने प्रियतम के शरीर का बलिदान भी दिया है। अब बाकी सब तुम पर निर्भर है।' मैंने निश्चय किया कि मैं उसे निराश नहीं करूँगा।

कुछ ही देर बाद मेरे तीनों अनुयायी झोपड़ी की ओर चले गए और मैं अकेला रह गया।

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। समय शाम के 4:45 बज रहे थे। झाड़ियों से छनकर आती तेज़ धूप की किरणें मृत महिला की लाल और काली साड़ी पर पड़ रही थीं, जिसे बाला ने उसकी कमर पर लपेटा हुआ था। उसके बाल खुले हुए ज़मीन पर फैले हुए थे, जो उसके सिर और चेहरे को घेरे हुए थे। अब चेहरा मेरी ओर मुड़ा हुआ था और उस पर शांति का भाव था। शरीर अकड़ चुका था और एक हाथ उसकी छाती पर अकड़ा हुआ पड़ा था, जहाँ शायद उसके पति ने सुबह उसके शरीर को झोपड़ी में लाते समय रखा था। दूसरा हाथ उसके बगल में पड़ा था। शाम की हल्की हवा घास को हिला रही थी और साड़ी के एक कोने को हल्के से फड़फड़ा रही थी या उसके काले बालों की एक लट को ऊपर उठा रही थी।

हवा से पत्तों और घास के हिलने के अलावा और कुछ भी नहीं हिल रहा था। मेरी घड़ी की हल्की टिक-टिक और एक धीमी सी धड़कन की आवाज़ के अलावा, जिसे पहचानने में मुझे काफी समय लगा, मुझे कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

मैंने धीरे-धीरे, इंच-इंच करके अपने पैर फैलाए और पीछे झुकते हुए उन्हें जितना हो सके आगे बढ़ाया। पूरी रात मेरे पैरों को ही मेरा भार उठाना था, और उनके प्रति मेरा सबसे कम कर्तव्य यही था कि मैं उस भार को यथासंभव समान रूप से वितरित करने का प्रयास करूं।

पैंतालीस मिनट बाद जंगल में हलचल मच गई, हमेशा की तरह मोर और जंगली मुर्गों की आवाजें सुनाई देने लगीं। एक भूरा मुर्गा मेरे सामने खुले मैदान में अकड़ते हुए आया और आखिरी दम तक चुनौती भरी बांग देता रहा। 'कुक क्य'आ क्य'आ खुक्'म',

उसने पुकारा, और कुछ ही सेकंड में दूर से एक दूसरे जंगली मुर्गे ने उसकी आवाज का जवाब दिया। 'व्हीव, कुक खुक्'म', उसने उत्तर दिया। पहले मुर्गे ने अपने पंख फड़फड़ाए और उस दिशा में देखा जहाँ से जवाब आया था। तभी हवा का एक झोंका आया और साड़ी का कोना हिल गया। पंखों की तेज़ फड़फड़ाहट के साथ मुर्गा गायब हो गया।

एक मोर ने 'मी-इआओ मी-इआओ' की आवाज़ लगाई, जिसका जवाब उसके साथियों ने भी इसी तरह की आवाज़ों से दिया, क्योंकि भारी-भरकम पक्षी एक-एक करके फड़फड़ाते हुए दूर के किसी पेड़ पर समूहों में आराम करने के लिए चले गए। झाड़ियों में स्पूरफाउल अपनी लड़ाई वाली आवाज़ें निकाल रहे थे, जबकि आखिरी तितलियाँ और भृंग अपने घर की ओर उड़ते या भिनभिनाते हुए उस खास पत्ते या अन्य आश्रय की ओर जा रहे थे जिसे उन्होंने उस रात के लिए चुना था।

सभी उष्णकटिबंधीय देशों की तरह दिन का उजाला तेज़ी से ढल रहा था। धूप में उड़ने वाले मेरे साथी पक्षी निस्संदेह अपने सिर पंखों के नीचे छिपा रहे थे, या कम से कम बहुत जल्द ऐसा करने वाले थे। ढलती रोशनी के साथ, आकाश से कुछ कोमल सा उतरा और एक गज दूर ज़मीन पर आकर बैठ गया। यह एक नाइटजार था, जो भारतीय जंगल की रात का संदेशवाहक होता है। 'चक-चक-चक-चक' की आवाज़ में उसने चहचहाया, और सूखी घास पर उसकी भूरी आकृति किसी पत्थर जैसी लग रही थी। फिर, अपने पंखों को खूबसूरती से फैलाकर वह उड़ गया। मेरे ठीक ऊपर से 'चीप-चीप-चीप' की आवाज़ आई। दो चमगादड़ पेड़ के चारों ओर तेज़ी से चक्कर लगा रहे थे, ताकि वे देर से आए दिन के कीड़ों को पकड़ सकें जो अभी आराम करने वाले थे, साथ ही रात के कीड़ों में से कुछ जल्दी आने वाले कीड़ों को भी।

मैंने यह सब पहले भी कई बार देखा और सुना था; दिन के जीवों की धीमी होती आवाज़ रात के जीवों की तेज़ होती आवाज़ में बदल जाती थी। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने पहले कभी ऐसी स्थिति और परिस्थितियों का सामना नहीं किया था, जैसी मैं अब कर रहा था।

फिर कुछ देर के लिए अंधेरा छा गया—पर ज्यादा देर नहीं, क्योंकि तारे अकेले और समूहों में ऊपर टिमटिमाने लगे, जिससे मेरे आस-पास के जंगल पर हल्की रोशनी फैल गई। उजाला होने तक यही मेरी एकमात्र रोशनी थी, क्योंकि यह सब अमावस्या की रातों में हुआ था।

मच्छरों को मुझे ढूंढने में थोड़ा समय लगा, लेकिन जब उनके जासूसों ने आखिरकार मुझे खोज निकाला, तो उन्होंने मुख्यालय को सूचना देने में जरा भी देर नहीं की। फिर तो बमवर्षक विमानों के पूरे दस्ते ने इसका पूरा फायदा उठाया। मैंने अपने होंठ फुलाकर उन्हें अपने चेहरे से भगा दिया और अपने हाथों को अपनी पतलून की जेबों में डाल लिया ताकि उन चालाक मच्छरों को चकमा दे सकूं जो मेरे तने के अंदर घुसकर मेरा खून चूसने पर तुले हुए थे।

आठ बज गए। मैंने एक-एक करके पैर उठाए और अपने कैनवास के जूतों के अंदर अपनी उंगलियों को हिलाया ताकि पैरों के तलवों में रक्त संचार बहाल हो सके। इस बाघ की यह बदनामी थी कि वह कभी भी अपने शिकार किए हुए इंसान के पास वापस नहीं आता था। और मैंने खुद को रात के लिए इस अजीब और असुविधाजनक स्थिति में डाल दिया था। तभी बाला का आँसुओं से भीगा चेहरा और वह मृत चेहरा, जो अब अँधेरे में मेरे इतने करीब पड़ा था लेकिन मेरी नज़रों से छिपा हुआ था, मेरे सामने आ गया, और मेरी बुद्धि ने मुझे आश्वस्त किया कि उस क्षण मैं जो कर रहा था वही मेरे लिए एकमात्र संभव उपाय था।

मेरे विचार कहीं भटक रहे थे कि अचानक मैं पूरी तरह सतर्क हो गया, मेरी हर नस तनाव में थी। मैंने कुछ नहीं देखा था; मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी थी। लेकिन जिस तरह मुझे अपना नाम याद था, उसी तरह मुझे पता था कि आदमखोर बाघ आस-पास ही है। मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मेरे पूरे शरीर में एक हल्की सी घबराहट दौड़ गई। किसी अनजानी और अवर्णनीय भावना ने मुझे चेतावनी दी थी। हाँ, निःसंदेह, बाघ वहीं था।

मैंने हर संभव कोशिश की कि कोई आवाज़ सुनाई दे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। हिरण या जंगल के अन्य जीवों की कोई चेतावनी भरी आवाज़ भी बिल्ली जैसी दिखने वाली इस प्रजाति की हलचल का संकेत नहीं दे रही थी।

इतनी खामोशी और लाश के पास जाने में इतनी देरी का मतलब सिर्फ एक ही था। बाघ को शक हो रहा था। क्या यह उस सुबह बाला द्वारा दिए गए डर का असर था, या उसने अपने आसपास कुछ देखा या महसूस किया था? सबसे बढ़कर, क्या उसने मुझे देखा या महसूस किया था?

मुझे आखिरी सवाल का जवाब जानने के लिए बहुत कुछ देने को तैयार था।

ऐसा लगा मानो अनंत काल बीत गया हो, फिर मुझे हल्की सी खरखराहट की

आवाज सुनाई दी; उसके बाद किसी चीज के घसीटे जाने की आवाज आई।

इसका केवल एक ही कारण हो सकता था। बाघ मृत महिला के शरीर को घसीटकर ले जा रहा था। अगले ही पल वह वहां से चला जाएगा।

मैं सावधानी को दरकिनार करते हुए, अपनी मौजूदगी का खुलासा करने के लिए अपना हथियार निकालकर टॉर्च जलाकर गोली चलाने का जोखिम उठाने ही वाला था कि तभी अचानक घसीटना बंद हो गया। क्या बाघ शव के साथ गायब हो गया था?

फिर खाने की आवाज़ें और हड्डियों के चटकने की आवाज़ें आने लगीं। ये आवाज़ें पेड़ के दूसरी तरफ से और मेरे पीछे से आ रही थीं।

इसका स्पष्टीकरण आसान था। किसी अज्ञात कारण से आदमखोर बाघ शव को घसीटकर उसी जगह वापस ले आया था जहाँ उसने सुबह उसे छोड़ा था। शायद सहज प्रवृत्ति। कम से कम इससे एक बात तो स्पष्ट हो गई: बाघ को शक नहीं था और न ही वह डरा हुआ था, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। अगर ऐसा होता, तो वह या तो चुपके से निकल जाता या शव को लेकर भाग जाता। अगर उसे मेरी मौजूदगी का एहसास हो जाता, तो वह हमला भी कर सकता था।

उसने इनमें से कोई भी काम नहीं किया था, जिससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वह घबराया हुआ नहीं था, बल्कि वह केवल अपना भोजन वहीं खाना चाहता था जहाँ उसने उसे छोड़ा था। शायद उसने मन ही मन सोचा होगा कि किसी पहले आए मेहमान, जैसे कि सियार या लकड़बग्घा, ने उसे वहाँ से हटा दिया होगा।

मैंने राहत की सांस ली—लेकिन तभी मुझे याद आया कि अगर मुझे तस्वीर लेनी है तो मुझे अपने आश्रय से बाहर निकलकर खुले में जाना होगा और पेड़ के तने के चारों ओर घूमना होगा। तब मेरी सारी राहत गायब हो गई।

आपको याद होगा कि बाला और कृष्णप्पा ने मुझे लगभग लकड़ियों, पत्तों, लताओं आदि की मदद से घेर लिया था। बाहर निकलने के लिए मुझे पहले इन बाधाओं को हटाना पड़ता। ऐसा करने पर थोड़ी सी आवाज़ ज़रूर होती। बाघ सुन लेता। वह भाग सकता था, या इससे भी बुरा यह हो सकता था कि वह कारण जानने के लिए पेड़ के चारों ओर घूमकर मुझे ढूंढ लेता, इससे पहले कि मैं तैयार भी होता।

बस एक ही काम करना था, और मैंने वही किया। मैंने बाघ को बड़े चाव से अपना भोजन करने दिया।

जब भी वह मांस नोचता या हड्डी चबाता और शोर मचाता, मैं धीरे से एक पत्ता

या लता को सुलझाता या एक टहनी निकालकर उसे खोखले पेड़ के अंदर से अपने पैरों की ओर सरका देता। इस तरह मैं बाघ के खाते समय बाहर निकलने का रास्ता साफ कर देता था।

फिर मैंने अपना दाहिना पैर हवा में उठाया और एक मिनट के लिए उसे स्थिर रखा ताकि रक्त संचार सामान्य हो सके, फिर उसे बहुत सावधानी से पेड़ के तने के बाहर निकाला। मैं इंतजार करता रहा; लेकिन बाघ अभी भी हड्डियाँ चबा रहा था। मैंने अपने बाएं हाथ से छेद को सहारा दिया और बहुत सावधानी से अपना बायां पैर अपने दाहिने पैर के पास ले आया।

कुछ क्षणों के लिए मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं तस्वीर नहीं ले पाया, और अगर उस आदमखोर ने मुझे देख लिया होता तो मेरे लिए वाकई बहुत दुर्भाग्यपूर्ण होता। लेकिन सौभाग्य से वह अपने भोजन में इतना मग्न था।

मैं धीरे-धीरे, पेड़ के तने के चारों ओर एक-एक इंच करके आगे बढ़ता गया। फिर वो पल आया जब एक और इंच आगे बढ़ने पर मैं दिख जाता। अगर बाघ पेड़ की ओर मुंह करके खड़ा होता तो वो मुझे ज़रूर देख लेता। अगर नहीं, तो शायद वो मुझे तुरंत देख न पाता।

कार्रवाई का समय आ गया था और मुझे जोखिम उठाना ही था। मैंने राइफल उठाई, आसमान की ओर निशाना साधा और उसका बट अपने कंधे पर टिका लिया। मैं हर कदम के साथ एक इंच आगे बढ़ा। फिर मैंने थोड़ा सा गर्दन घुमाकर धड़ के चारों ओर देखा।

मेरी आँखें धुंधली रोशनी की आदी हो चुकी थीं और मैंने बाघ को ज़मीन पर पूरी लंबाई में लेटे हुए देखा, जो उस काली लाश के ऊपर पड़ा था जो उस औरत का बचा हुआ हिस्सा था। वह मुझसे थोड़ा दूर झुका हुआ था, उस दिशा की ओर मुँह किए हुए जहाँ से हम उस शाम आए थे। उस रोशनी में राइफल का निशाना दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए मुझे गोली चलाने के लिए टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ा।

मैंने राइफल को दाएँ कंधे पर रखकर फायरिंग पोजीशन में लाने के लिए अपना बायाँ हाथ धीरे से उठाया। मेरा बायाँ अंगूठा बेचैनी से टॉर्च का स्विच ढूँढ रहा था। किसी चीज़ ने बाघ को आगाह कर दिया कि सब कुछ ठीक नहीं है। जैसे ही रोशनी की किरण उसके सिर और चमकती आँखों पर पड़ी, उसने पीछे मुड़कर देखा, जबकि उसके होठों से मांस और खून टपक रहा था।

मेरी पहली गोली उसकी गर्दन में लगी, और जैसे ही वह सिर के बल उछलकर गिरा, मैंने अपनी विंचेस्टर राइफल का निचला लीवर ऐसे चलाया जैसे मैंने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी नहीं चलाया था। वह बुरी तरह तड़प रहा था जब मैंने उस पर दूसरी गोली दागी, फिर तीसरी। उसके बाद क्या हुआ, यह मैं आपको बता नहीं सकता। बस वह गायब हो गया।

मेरी पहली गोली चलने के बाद से ही वह दर्द और गुस्से से दहाड़ रहा था। गोलियों की बौछार के दौरान भी वह दहाड़ता रहा। अब भी वह गुस्से और पीड़ा में दहाड़ रहा था और झाड़ियों को नोंच रहा था, लेकिन अब वह मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। वह जंगल की ओट में कूद गया था।

मैं जितनी जल्दी हो सके सूखे पेड़ के खोखले तने में वापस घुस गया और आगे की स्थिति का इंतज़ार करने लगा। मैं अभी-अभी चलाई गई तीन गोलियों को बदलना चाहता था, ताकि मेरे पास पूरी मैगज़ीन तैयार रहे। लेकिन .405 विंचेस्टर राइफल इस तरह के काम के लिए उपयुक्त नहीं है। आधी खाली मैगज़ीन में और गोलियां डालने पर 'जाम' होने की संभावना रहती है। अगर ऐसा हुआ, तो मैं बेबस हो जाऊंगा। मैंने इसे ऐसे ही छोड़ देने का फैसला किया। मेरे पास अभी भी एक गोली बची थी जिससे मैं बाघ को रोक सकता था। हालांकि मेरी राइफल की मैगज़ीन में पांच गोलियां आती हैं, लेकिन मैं आमतौर पर केवल चार ही भरता हूं, एक गोली ब्रीच में और तीन मैगज़ीन में रखता हूं, जब मैं किसी मांसाहारी जानवर का शिकार करने के लिए बैठता हूं। यह 'जाम' से बचने के लिए एक अतिरिक्त सावधानी है।

मुझे यह सोचने लगा कि क्या पेड़ के अंदर वापस जाना मेरा सही फैसला था। शायद बाहर ही रहना बेहतर होता। कम से कम अगर बाघ हमला करता तो मैं उसे देख तो सकता था। अब तो मैं उसे तब तक नहीं देख सकता था जब तक वह झाड़ियों से निकलकर मेरे सामने न आ जाए।

लेकिन अब पछताने का कोई समय नहीं था। मैं वहीं खड़ा रहा। मेरा शरीर पसीने से भीग चुका था और राइफल पकड़े रहने से मेरे हाथ फिसल रहे थे। मुझे बहुत बेचैनी हो रही थी और सिर में तेज दर्द हो रहा था।

बाघ अभी भी दहाड़ रहा था और झाड़ियों को नोच रहा था, लेकिन कुछ समय बाद आवाज़ धीमी हो गई और फिर दूर जाकर गायब हो गई। वह जानवर मरा नहीं था, लेकिन कम से कम वह चला गया था और मैं सुरक्षित था। और मैं शुक्रगुजार था। फिर

मुझे उल्टी आई—और इससे मुझे बहुत अच्छा लगा।

दुर्भाग्यवश, बाघ की दहाड़ की दिशा मेरी भ्रमित इंद्रियों को समझ नहीं आई और मैं अनिश्चित था कि वह किस ओर गया है। ऐसी स्थिति में अंधेरे में बाला की झोपड़ी तक पैदल जाने का प्रयास करना आत्मघाती होता। मुझे वहाँ तक पहुँचने के लिए टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ता, और अगर आदमखोर झाड़ियों में छिपा हुआ होता तो टॉर्च मेरी राह में बाधा बन जाती।

इसलिए मैंने बाकी की रात उस सुनसान घाटी में, थके हुए पैरों पर लड़खड़ाते हुए बिताई। भोर होते ही मैं निराश हो गया, फिर मुझे याद आया कि मैं ज़िंदा रहने के लिए भाग्यशाली था। इस बात से मुझे खुशी हुई।

जैसे ही उजाला हुआ और दिखाई देने लगा, मैं खोखले पेड़ से बाहर निकला और बाहर ज़मीन पर बैठ गया। क्या आपने कभी तेरह घंटे तक लगातार पूरी रात खड़े रहने की कोशिश की है? कभी खुद करके देखिए।

लगभग पंद्रह मिनट तक, जब रोशनी तेज़ हुई, मैं आराम करता रहा। फिर मैं यह देखने के लिए उठा कि क्या दिखाई दे रहा है। बाघ के खाने के दौरान, मैंने खुद को टहनियों और पत्तों से मुक्त करने और पेड़ से बाहर निकलने में जो समय लगाया, वह शायद दस मिनट से ज़्यादा नहीं रहा होगा—ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह मिनट—लेकिन बाघ उस मृत महिला का आधे से ज़्यादा हिस्सा खा चुका था। उसका सिर और हाथ शरीर से अलग होकर घास पर बिखरे पड़े थे। एक जांघ और एक टांग भी वहीं थी, और दूसरे पैर का कुछ हिस्सा भी। बाकी का शरीर गायब था, सिवाय कुतरे हुए रीढ़ की हड्डियों के, जिनमें कुछ पसलियों की हड्डियाँ अभी भी जुड़ी हुई थीं।

जहां आदमखोर ने पीड़ा में जमीन को रौंद डाला था, वहां की ज़मीन फटी हुई थी। फिर वह कुछ गज दूर झाड़ियों में कूद गया। वहां झाड़ियों के तने कटे हुए थे और पत्तियां उसके खून से सनी हुई थीं। यही वह जगह थी जहां से मैंने उसकी दहाड़ और उत्पात की आवाज सुनी थी, जब मैं खोखले पेड़ में दुबका हुआ था। वहां से खून का निशान जंगल में दूर चला गया। मैंने कुछ गज तक उसका पीछा किया और पाया कि वह लगभग उत्तर दिशा की ओर जा रहा था। मैं अपेक्षाकृत सुरक्षित रूप से झोपड़ी में लौट सकता था।

मैंने वैसा ही किया। बाला और पहरेदारों ने झोपड़ी से गोलीबारी की आवाज़ सुनी थी, जहाँ वे जागते हुए लेटे हुए थे। उजाला होते ही वे लगभग एक फर्लांग आगे

बढ़ गए थे और मेरा इंतज़ार कर रहे थे। दरअसल, चेन्चू लोग उस सूखे पेड़ तक आ जाते, लेकिन अली बेग ने उन्हें आगाह किया कि मैंने शायद बाघ को सिर्फ़ घायल किया हो और पता नहीं वह कहाँ छिपा होगा।

मैंने उन्हें उस भयानक रात में घटी सारी घटनाएँ बताईं।

मेरी घड़ी में सुबह के 6:25 बज रहे थे। मैंने बाघ पर पिछली रात करीब 8:30 बजे गोली चलाई होगी—दस घंटे पहले। मैंने सोचा, अब तक तो वह मर चुका होगा। या फिर, अगर मरा नहीं तो इतना खून बह गया होगा और ज़ख्मों से उसका शरीर इतना अकड़ गया होगा कि वह कहीं बुरी हालत में पड़ा होगा। मैं खून के निशान का पीछा करने से खुद को रोक नहीं पाया।

अली बेग निहत्था था, इसलिए मैंने उससे झोपड़ी में वापस जाकर हमारा इंतज़ार करने को कहा। उसने जवाब दिया कि उसे वहाँ अकेले रहने से डर लग रहा है और वह हमारे साथ चलना और जोखिम उठाना ज़्यादा पसंद करेगा। इसलिए हम वापस उस सूखे पेड़ के पास लौट गए।

मैंने बाला से कहा था कि मैं ऐसा करना नहीं चाहता था, लेकिन मजबूरी में मुझे बाघ को उसकी पत्नी का शव खाने देना पड़ा ताकि उसका ध्यान भटका सकूँ और मैं छलावरण में लगी लकड़ियों और लताओं से खुद को मुक्त कर सकूँ। उसने तब मेरी बात मान ली थी। लेकिन जब हम पेड़ के पास पहुँचे और उसने उस बेचारी औरत के क्षत-विक्षत अवशेष देखे, तो उसे गहरा सदमा लगा। वह छोटा सा आदमी पूरी तरह टूट गया और फूट-फूट कर रोने लगा।

उसने कहा कि जब तक वह शव का अंतिम संस्कार नहीं कर देता, तब तक वह आगे नहीं बढ़ेगा। हम दोनों वन रक्षकों ने उसे वहीं पर यह काम शुरू करने से रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। वास्तव में, यह कहना मुश्किल है कि अगर अली बेग ने उसे साफ-साफ न कहा होता कि हम सब, और विशेष रूप से वह, स्थानीय पुलिस के शिकंजे में आ जाएंगे, तो हम सफल हो पाते। पुलिस घटना की रिपोर्ट मांगेगी, जिसके बाद वे किसी तरह की जांच करेंगे और शव का निरीक्षण करेंगे। अगर उसने शव को देखे बिना ही उसका अंतिम संस्कार कर दिया, तो पुलिस उसे बख्शेगी नहीं। इसलिए हमने डालियाँ तोड़कर घटनास्थल को ढक दिया ताकि गिद्ध न आ सकें, वरना वे तुरंत वहाँ पहुँच जाते।

हम सभी को उम्मीद थी कि हमें बाघ बहुत कम दूरी के भीतर, मृत या

मरणासन्न अवस्था में मिल जाएगा, और हम जल्द ही वापस आकर पुलिस को आवश्यक सूचना दे सकेंगे।

यहीं पर हमसे बहुत बड़ी गलती हुई थी।

खून के निशान झाड़ियों से होकर गुजर रहे थे। जहाँ तक मेरी नज़र जा रही थी, बाघ को दो जगहों पर चोट लगी थी, जिनमें से एक ऊपरी हिस्से में थी—निस्संदेह मेरी पहली गोली से, जो मैंने उसकी गर्दन पर चलाई थी। दूसरे घाव से लगातार खून टपक रहा था, और जब हम उसका पीछा करते हुए आगे बढ़े तो हमें जमे हुए खून में झिल्ली का एक छोटा सा टुकड़ा मिला। मुझे लगा कि यह पेट में लगी चोट का संकेत था।

जानवर पहले मृत पेड़ से दो फर्लांग की दूरी पर एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। यहाँ उल्टी से निकले, खून से लथपथ मांस के ढेर—उस बेचारी औरत का मांस—यह दर्शाते हैं कि बाघ को उल्टी का गंभीर दौरा पड़ा था और इस बात की पुष्टि करते हैं कि मेरी एक गोली उसके पेट में घुस गई थी।

वहाँ से वह लगभग आधा मील और आगे बढ़ा, जहाँ वह घास पर लेट गया। खून के दो छोटे-छोटे धब्बे इस बात की पुष्टि करते हैं कि उसे दो बार गोली लगी थी। पेट का घाव ज़्यादा गंभीर प्रतीत होता था, क्योंकि वहाँ से बहुत अधिक खून बह रहा था।

फिर भी, जानवर चलता रहा। खून का निशान, जो शुरू में बहुत अधिक था, अब कम हो गया था। संभवतः बाहरी त्वचा, झिल्ली या वसा ने गोली के पेट में घुसने से बने बाहरी छेद को ढक लिया था, जिससे खून बहना बंद हो गया था। संभवतः केवल गर्दन के घाव से ही खून बहता रहा और यही कारण था कि निशान कम हो गया था।

हम दो पहाड़ियों के बीच एक धारा के पास पहुँचे जहाँ बाघ पानी में लेटा हुआ था, जिसमें अभी भी हल्का गुलाबीपन था। किनारे पर कीचड़ में थोड़ा सा खून फैला हुआ था। यहाँ पहली बार पूरे रास्ते में बाघ के पैरों के निशान साफ़ दिखाई दिए। ये एक बड़े नर बाघ के बड़े-बड़े, थाली के आकार के निशान थे।

फिर भी निशान जारी रहे, लेकिन खून बहना काफी कम हो गया था। जल्द ही बस कहीं-कहीं एक-दो बूँदें ही दिखाई दे रही थीं। मैं यह देखकर बहुत हैरान था।

मेरी पहली गोली बाघ की गर्दन पर लगी थी। मुझे पता था कि निशाना नहीं चूका, क्योंकि उसने पूरी तरह से पलटी मारी थी, जिससे पता चलता था कि उसे गोली लगी है। उसके बाद मैंने दो बार गोली चलाई और उनमें से एक गोली उसके पेट में लगी थी। उल्टी में निकले मांस की मात्रा ने भी इसकी पुष्टि कर दी थी। शुरुआत में

हम खून के एक बड़े निशान का पीछा कर रहे थे, जो उस जगह से शुरू हुआ था जहाँ आदमखोर बाघ दर्द और गुस्से में झाड़ियों को चीर रहा था। उसके बाद वह दो से ज़्यादा बार आराम कर चुका था। इन सभी बातों और पिछले कई सालों के मेरे अनुभव से यही लगता था कि खेल के सभी नियमों के अनुसार बाघ को अब तक मर जाना चाहिए था, या लगभग खून बहने से मर जाना चाहिए था। हमें उसे किसी झाड़ी में बेहद कमजोर हालत में पड़ा हुआ मिलना चाहिए था। वास्तव में, हमें लगा था कि निशान छोटा और आसान होगा।

इन सभी अपेक्षित घटनाओं के विपरीत, आदमखोर बाघ लगातार उत्तर दिशा की ओर बढ़ता जा रहा था। उसके घावों से टपकता या झाड़ियों पर फैलता खून अब ज़मीन और पत्तों पर कम ही दिखाई दे रहा था और उसके रास्ते का पता लगाना कठिन होता जा रहा था। हम पगडंडियों से बहुत दूर आ चुके थे और जंगल के भीतरी हिस्से में कई मील अंदर पहुँच चुके थे, जहाँ बस कहीं-कहीं जानवरों के चलने के रास्ते ही दिखाई दे रहे थे। इलाका बहुत पहाड़ी हो चुका था, गहरी, पत्थरों से भरी घाटियों से घिरा हुआ था, जिनमें से प्रत्येक में एक छोटी, रिसती हुई धारा बह रही थी। पानी की कोई कमी नहीं थी, और हमने देखा कि बाघ कई बार इन धाराओं से पानी पीने के लिए रुका था। जंगल के बड़े पेड़ घनी झाड़ियों में बदल गए थे, जिनमें ज्यादातर लैंटाना और अन्य कांटेदार किस्में थीं।

एक बजने में दस मिनट बाकी थे, लेकिन हम चारों ने चारों ओर फैलकर एक बड़े घेरे में खोजबीन की, फिर भी हमें खून की एक भी बूंद नहीं मिली। हम यात्रा के अंत तक पहुँच चुके थे और निशान पूरी तरह से गायब हो चुके थे। सूरज की गर्मी असहनीय थी।

हम सब चुपचाप गाज़ुलापल्ली की ओर वापस जा रहे थे, और मैं बुरी तरह थका हुआ था जब मैंने स्टेशन के प्रतीक्षालय में लगभग बिना तले वाली पुरानी कुर्सी पर खुद को गिरा दिया। जूते उतारने से पहले ही मुझे नींद आ गई।

श्री बालासुब्रमण्यम ने उसी रात पुलिस को टेलीग्राम द्वारा सूचना दी, और अगले दिन दोपहर की ट्रेन से नंदीयाल से अधिकारी पहुंचे। हम उनके साथ उस पुराने सूखे पेड़ के पास गए।

उस बदकिस्मत औरत का जो कुछ बचा था, उससे अब तक बदबू आने लगी थी। उसकी गंध दूर से ही आ रही थी। हमने बचे हुए टुकड़ों पर जो पत्ते डाले थे, उन

पर नीली मक्खियों के झुंड जमा हो गए थे। लेकिन कम से कम वे गिद्धों से तो बच गई थीं। मैंने पुलिस के सब-इंस्पेक्टर को पेड़ के तने का वह खोखला हिस्सा दिखाया जहाँ मैं पिछली रात छिपा था, और फिर उन्हें अपनी कहानी सुनाई।

उसने जो नोट्स बनाए, वे लगभग तेरह पन्नों में फैले हुए थे। मेरा बयान ही छह पन्नों का था।

बाला ने शव जलाने की अनुमति मांगी। पुलिस अधिकारी का मानना था कि शव को पोस्टमार्टम के लिए नंदीयाल ले जाना चाहिए। मैंने कोई सलाह नहीं दी, क्योंकि मैं देख सकता था कि सब-इंस्पेक्टर को शव को चारागाह में छोड़ने का मेरा कार्य उचित नहीं लग रहा था। मुझे लगा कि अब मैं जो भी सलाह दूंगा, उससे वह ठीक विपरीत कदम उठा सकता है। इसलिए मैंने अपने काम से काम रखा। हालांकि, दो वन रक्षकों की उपस्थिति और गवाही ने अंततः बाला के पक्ष में स्थिति को पलट दिया और उसे शव जलाने की अनुमति मिल गई। हम मूक साक्षी बने रहे जब उसने और दोनों रक्षकों ने सूखी लकड़ियों का ढेर इकट्ठा किया, उस पर सड़े हुए शव को रखा, ढेर को और लकड़ियों से भर दिया और फिर आग लगा दी। यह एक सरल और दुखद अनुष्ठान था, जिसमें जलते हुए सड़े हुए मांस की भयानक दुर्गंध के अलावा कोई और बात नहीं थी। बाला की भावनाओं का सम्मान करते हुए, मैं वहीं रुका रहा। पुलिस अधिकारी कुछ दूर जाकर एक पेड़ से टिक गया और बुरी तरह बीमार हो गया।

अगले दिन बाला की आँखों में आँखें डालकर देखना मेरे लिए मुश्किल हो गया। मुझे लगा जैसे मैंने उसे निराश कर दिया हो। लेकिन उस छोटे आदमी की अंतरात्मा ने यह भांप लिया। वह बालासुब्रमण्यम के साथ प्रतीक्षालय में आया, जबकि मैं वहीं बैठा रहा और स्टेशन मास्टर से पूछा कि वह क्या कहने वाला है। उसने बस इतना कहा, 'दोराई' से कह देना कि वह बाघ को गोली न मार पाने पर परेशान न हो। मुझे पता है उसने अपनी पूरी कोशिश की। कोई और आदमी—नहीं, मैं भी नहीं—इससे ज़्यादा कर सकता था।'

और मेरी भावनाओं को शांत करने के लिए इससे अधिक कुछ भी कोई व्यक्ति नहीं कह सकता था। मुझे अच्छा लगा और मैंने बालासुब्रमण्यम को उनके कहे शब्दों और मेरे प्रति उनके द्वारा दिए गए सभी सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उनकी सरल प्रशंसा मेरे द्वारा प्राप्त की गई सबसे अच्छी प्रशंसाओं में से एक थी।

मैं एक और सप्ताह तक गज़ुलापल्ली में ही रहा, लेकिन आदमखोर के बारे में

मुझे कोई और खबर नहीं मिली। दिगुवामेटा में एक पैंथर ने मेरे एक शिकार को मार डाला। मैं इसकी पुष्टि करने वहाँ गया और यह सच साबित हुआ। जब मैंने पैंथर को उसी रात फिर से खाने के लिए शिकार के अवशेष छोड़ दिए, तो जोसेफ बहुत खुश नहीं हुआ।

उस सप्ताह के अंत में मैंने अपने उन सभी नए दोस्तों को विदाई दी जिन्होंने मेरी निस्वार्थ भाव से मदद की और मेरी यात्रा को इतना सुखद बनाया। मैंने अलग-अलग स्टेशनों पर तैनात वन रक्षकों को चारा बाँट दिया, और बाला के लिए भी कुछ अतिरिक्त रखा।

बैंगलोर लौटने के बाद तीन महीने बीत गए। फिर हैदराबाद राज्य में कृष्णा नदी के पास एक बाघ ने एक आदमी को मार डाला। तीन महीने बाद बोगरा रेलवे स्टेशन से कुछ मील उत्तर में एक चेंचु (एक प्रकार का बाघ) मारा गया। तब से लेकर अब तक इंसानों की हत्याओं की खबरें बहुत कम और छिटपुट ही आई हैं। लेकिन फिर भी आती रहती हैं।

क्या मेरे द्वारा घायल किया गया आदमखोर आखिरकार ठीक हो गया? क्या उसने फिर से हमले शुरू कर दिए हैं? क्या मेरी यात्रा के समय दो अलग-अलग आदमखोर सक्रिय थे? दिगुवामेटा में महोवा के फूल इकट्ठा कर रही महिला को ले जाने वाला आदमखोर, बाला की पत्नी की हत्या करने वाले से बिल्कुल अलग था?

क्या ये हालिया हत्याएं इन्हीं दो बाघों में से किसी एक का काम थीं—अगर वास्तव में कभी दो बाघ थे भी? या फिर ये किसी दूसरे बाघ ने की थीं, जो हाल ही में सामने आया था?

ये सवाल कभी-कभी मुझे परेशान कर देते हैं, क्योंकि मुझे इनका जवाब नहीं मिल पाता। लेकिन मैं इन्हें जानने के लिए बहुत कुछ कुर्बान करने को तैयार हूँ।

सात

गेडेसल का विशाल बैल बाइसन

यह किसी आम शिकार की कहानी नहीं है, जिसमें उस विशालकाय बैल बाइसन को गोली मारकर या घायल करके मार गिराया जाता है जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। अगर आप ऐसा सोच रहे हैं, तो आप निराश होंगे, क्योंकि मैंने इस जानवर पर कभी गोली नहीं चलाई, और न ही कभी चलाऊंगा। क्योंकि मैं उसका बहुत सम्मान करता हूँ।

वह एक बहादुर और अनुभवी योद्धा थे, और अगर वह आज भी जीवित हैं तो वह अपने उस झुंड के स्वामी और नेता होने के खिताब के पूरी तरह हकदार हैं जिसकी उन्होंने इतनी निष्ठा से देखभाल की। अगर वह मुझे समझ पाते, तो मुझे उन्हें अपना मित्र कहने में गर्व होता।

गेदेसाल उत्तरी कोयंबटूर जिले के जंगलों में स्थित एक छोटे से शोलागा गांव का नाम है, जो उस क्षेत्र के शीर्ष पर बसा है जिसे मैं 'बाइसन रेंज' कहता हूं। इसी नाम का एक वन बंगला सड़क के किनारे स्थित है, जब यह सड़क कोललेगल कस्बे से दिंबुम गांव की ओर दक्षिण की ओर जाते हुए चढ़ाई के शीर्ष पर पहुंचती है। गेदेसाल से दिंबुम को अलग करने वाली सात मील की दूरी में से पांच मील तक यह सड़क एक पहाड़ी की ढलान से नीचे जाती है। अंतिम दो मील के लिए यह फिर से ऊपर की ओर चढ़ती है। दिंबुम एक खड़ी ढलान के किनारे पर स्थित है। सड़क दिंबुम से दक्षिण की ओर नीचे के मैदानों तक कई तीखे मोड़ों के साथ तेजी से नीचे उतरती है, जहां से यह सत्यमंगलम नामक बड़े कस्बे तक लगभग समतल मार्ग पर आगे बढ़ती है।

गेदेसाल के पश्चिम में बिलिगिरिरंगन पर्वतमाला की विशाल श्रृंखला स्थित है, जिसकी ढलानें हरे-भरे घास के मैदानों के बीच उभरी हुई चट्टानों का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती हैं। पहाड़ियों की घाटियों में और नीचे की ओर बहने वाली असंख्य जलधाराओं के किनारों पर पेड़ों के झुंड और घने जंगल उग आए हैं। इन्हें आमतौर पर 'शोला' या वन के एकांत द्वीप कहा जाता है, जो खुले घास के मैदानों या दुर्गम चट्टानों से घिरे होते हैं।

पूर्व दिशा में पहाड़ियों की एक और श्रृंखला है, जो पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पर्वत श्रृंखला की तुलना में ऊंचाई, आकार और भव्यता में काफी छोटी है। ये नीची पहाड़ियाँ पूरी तरह से जंगल से ढकी हुई हैं, जिनमें मुख्य रूप से दस फीट तक ऊँची बाघ घास उगती है, और इनके बीच हजारों बौने जंगली खजूर के पेड़ फैले हुए हैं। साल के मध्य में इन पेड़ों के झुके हुए तनों के सिरों पर पीले जंगली खजूरों के लंबे गुच्छे लगते हैं—ये सूखे और बेस्वाद फल होते हैं, लेकिन पक्षियों और जानवरों दोनों को ही बहुत पसंद आते हैं।

इस प्रकार, स्थलाकृति, वनस्पति और खजूर के संयोजन से यह क्षेत्र बाइसन, सांभर और भालू के लिए एक पसंदीदा ठिकाना बन जाता है।

पहाड़ों और पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के बीच उत्तर से दक्षिण तक एक लंबी घाटी फैली हुई है, और इस घाटी के किनारे-किनारे कोललेगल से दिंबुम जाने वाली सड़क दक्षिण की ओर एकांत में अपना रास्ता बनाती है, जो गेदेसाल बस्ती और उसी नाम के वन बंगले के बीच से होकर गुजरती है।

यह इमारत जंगल में बने बंगले के हिसाब से असाधारण रूप से बड़ी है, और इसके पीछे वन विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों के रहने के लिए कई छोटे-छोटे मकान बने हुए हैं। इसके अलावा, इसमें एक बड़ा परिसर भी है, जहाँ जंगली पहाड़ी गुलाब के कुछ सुंदर पौधे उगते हैं, जिनके फूल गुच्छों में खिलते हैं और छोटे गुलदस्तों जैसे दिखते हैं।

बंगले के ठीक दक्षिण में एक नीचा भूभाग है, जिसमें एक छोटा तालाब और कुछ दलदली ज़मीन है। वहाँ उगने वाली हरी घास की कोमल कोंपलों के कारण—जो आसपास के क्षेत्र में पाई जाने वाली खुरदरी टाइगर घास से बिल्कुल अलग हैं—चित्तीदार हिरणों का एक छोटा झुंड लगभग हमेशा ही वहाँ रहता है। जब मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था, तो उनका नेतृत्व एक काफी बड़े नर हिरण द्वारा किया जा रहा

था, जिसके सींगों का अच्छा-खासा गुच्छा था, उसके गहरे भूरे कंधे लगभग काले थे, जिन पर सफेद धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

मुझे उम्मीद है कि किसी भी शिकारी, चाहे वह इंसान हो या जानवर, ने उसे नहीं मारा होगा, और वह अभी भी उस हरे-भरे और ताजगी भरे नम, ठंडे घाटी में अपने झुंड के मुखिया के रूप में विचरण कर रहा होगा - उस जंगल की तरह ही प्रभुत्वशाली और स्वतंत्र, जिससे वह संबंधित है।

सड़क के पूर्व में स्थित पहाड़ियों की निचली श्रृंखला और पश्चिम में पहाड़ों की तलहटी के साथ फैली गहरी घाटी, इस क्षेत्र में रहने वाले बाइसन के कई अलग-अलग झुंडों को चरने के व्यापक अवसर प्रदान करती है। इस घाटी में एक बारहमासी, काफी चौड़ी धारा बहती है, और इसमें मिलने वाली विभिन्न सहायक नदियाँ समय-समय पर सड़क को पार करती हैं। इस प्रकार, भीषण गर्मी के मौसम में भी पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित रहती है, जो इन जानवरों को स्थायी रूप से यहाँ बसे रहने में योगदान देने वाला मुख्य कारक है।

बाइसन के इन झुंडों में बीस से चालीस या इससे भी अधिक बाइसन होते हैं, जिनमें से अधिकांश अलग-अलग उम्र की मादा बाइसन और उनके बच्चे होते हैं, और प्रत्येक झुंड में लगभग आधा दर्जन बड़े आकार के नर बाइसन भी होते हैं। सबसे बूढ़ा और परिपक्व नर बाइसन स्वतः ही अपने युवा प्रतिद्वंद्वियों पर श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है और उस झुंड का स्वामी बन जाता है, जब तक कि कोई युवा और अधिक शक्तिशाली नर उसे पदच्युत न कर दे, या जंगल के नियमों के अनुसार उसकी मृत्यु न हो जाए। कभी-कभी कोई बड़ा नर बाइसन झुंड से अलग होकर अपना एकांत जीवन व्यतीत करता है।

बाइसन 'रिंडरपेस्ट' जैसी बीमारियों से बुरी तरह पीड़ित होते हैं, जो अक्सर शोलागा जनजाति के पालतू मवेशियों के झुंडों को प्रभावित करती हैं, जो जंगल या आसपास के चरागाहों में रहते हैं। मवेशियों को जंगल में चरने के लिए छोड़ा जाता है और वे संक्रमण को बाइसन में फैला देते हैं। अक्सर बाइसन को 'फुट-एंड-माउथ' बीमारी से पीड़ित देखा जाता है, जो मवेशियों के लिए बेहद घातक होती है, या गिद्धों को देखकर किसी ऐसे बाइसन के शव तक पहुंचना आम बात है जो मवेशियों की इस सबसे घातक बीमारी से मर गया हो।

मेरी कहानी में जिस विशाल बैल का ज़िक्र है, वह कम से कम तीस जानवरों के

झुंड का सरदार था। मैंने उसे अक्सर सुबह-सुबह देखा है, जब उगते सूरज की रोशनी में ओस की बूँदें चमकती थीं, और कभी-कभी शाम को लगभग 5:30 बजे, 39वें और 41वें मील के पत्थरों के बीच सड़क के किनारे चरते हुए। उसकी पहचान उसके मुड़े हुए बाएँ सींग से आसानी से हो जाती थी, जो स्पष्ट रूप से विकृत था और अंदर व आगे की ओर मुड़ा हुआ था।

शायद इस बूढ़े बैल की लंबी उम्र का कारण इसका यह विकृत अंग है, क्योंकि इसकी वजह से इसका सिर किसी भी तरह से ट्रॉफी के लायक नहीं है, हालांकि इसका दाहिना सींग बेहद खूबसूरत है। यह सच है कि कोई शिकारी या अनोखी चीजों का संग्रहकर्ता इसके सिर को एक अनूठे नमूने के रूप में महत्व दे सकता है, लेकिन सौभाग्य से अभी तक ऐसा कोई जिज्ञासु व्यक्ति इससे नहीं मिला है। जैसा कि मैं आगे बताने वाला हूँ, युद्ध में इसका विकृत सींग एक अमूल्य हथियार साबित हुआ है। इसमें वे प्राकृतिक लाभ हैं जो किसी गेंडा (अगर यह पौराणिक जानवर सचमुच मौजूद होता) को मिलते, यानी यह सामने से किए गए हमले में प्रतिद्वंद्वी को स्तब्ध कर सकता है या अपने सिर को उछालकर उसे बुरी तरह घायल कर सकता है।

मैं अक्सर अंधेरी रात में उस सड़क पर गाड़ी चलाता था, और अपनी कार पर सीलबंद बीम वाली स्पॉटलाइट को इधर-उधर घुमाता था, यह देखने के लिए कि क्या दिखाई देता है और बस मजे के लिए। ऐसे मौकों पर दो-तीन बार एक बाइसन की दूर-दूर स्थित नीली आँखों में लैंप की किरणें प्रतिबिंबित हुईं और करीब से देखने पर मैंने पाया कि वे एक बूढ़े बैल की आँखें थीं।

कुछ साल पहले जब मैं बिलिगिरिरंगन पर्वतमाला की निचली ढलानों पर टहल रहा था, तब मेरा ध्यान पहली बार इस अनुभवी स्थल की ओर आकर्षित हुआ। मुख्य सड़क के पश्चिमी किनारे से जंगल के बीच से एक सड़क गुजरती है। यह गेदेसाल गांव के किनारे से होते हुए एक नाले को पार करती है और फिर पर्वत श्रृंखला की तलहटी पर चढ़ना शुरू करती है, जो अंततः एक दर्रे से नीचे उतरकर दूसरी ओर एक घाटी में विलीन हो जाती है। अंत में यह एक खूबसूरत वन लॉज तक ले जाती है, जो श्री रैंडोल्फ मॉरिस की निजी संपत्ति है। श्री रैंडोल्फ मॉरिस दक्षिण भारत के सबसे बड़े और प्रभावशाली कॉफी बागान मालिकों में से एक हैं। वे शिकार के विशेषज्ञ और एक प्रसिद्ध शिकारी भी हैं, जिन्होंने बड़े जानवरों की आदतों और उनके शिकार पर कई मूल्यवान लेख लिखे हैं। वे इस क्षेत्र के मानद वन्यजीव संरक्षक थे, ब्रिटिश भारत के

वायसराय और पूर्व गवर्नरों के बीच काफी लोकप्रिय थे, और दक्षिण के कुछ सबसे खूबसूरत और सुनियोजित कॉफी बागानों के मालिक हैं।

इस सड़क के पहाड़ी दर्रे से आगे बढ़ने से बहुत पहले, वन विभाग की संपत्ति के रूप में एक अस्थायी शेड बना हुआ है, जिसे दौरे पर गए विभाग के अधिकारियों की सुविधा और शिकार पर गए लाइसेंस प्राप्त खिलाड़ियों के उपयोग के लिए बनाया गया है। किसी समझदार व्यक्ति ने मजबूत, मुड़ी हुई लताओं से एक सीढ़ी बनाई है, जो इस शेड में रखी है और पेड़ों पर बने मचानों पर चढ़ने और उतरने में उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी है जो इस वृक्षीय कला में स्वाभाविक रूप से निपुण या सक्षम नहीं हैं।

उस सुबह मैं इस लॉज के पास से गुज़र रहा था और एक कटोरे जैसी उथली घाटी के ऊपर एक पहाड़ी की चोटी पर चल रहा था, तभी मुझे एक ज़ोरदार टक्कर और धमाकों की आवाज़ सुनाई दी, जिसके बीच-बीच में गुस्से भरी गुर्राहटें आ रही थीं। ये आवाज़ें बाइसन की लड़ाई की ओर इशारा कर रही थीं, और मैं तेज़ी से, जो भी आड़ मिल रही थी, उसका सहारा लेते हुए, आवाज़ों की दिशा में चल पड़ा। थोड़ी ही देर में मैंने अपने नीचे घाटी में, लेकिन लगभग तीन सौ गज की दूरी पर, दो बड़े नर बाइसन को भयंकर लड़ाई में उलझे देखा। सींग उलझे हुए और माथे एक-दूसरे से सटे हुए, वे पूरी ताकत से एक-दूसरे को धकेल रहे थे, हर जानवर के फैले हुए तने हुए पैर यह दर्शा रहे थे कि वे अपने प्रतिद्वंद्वी को पीछे धकेलने के लिए कितना ज़बरदस्त प्रयास कर रहे थे। बीच-बीच में कोई एक जानवर अपने प्रतिद्वंद्वी से अपने सींग और सिर को क्षण भर के लिए अलग करता और फिर से उलझने से पहले एक छोटा सा तेज़ प्रहार करता, इससे पहले कि दूसरा जानवर वैसा ही प्रहार कर पाता।

फिर मैंने देखा कि उनमें से एक के पास एक विचित्र सींग था जो उसे अपने प्रतिद्वंद्वी पर एक स्पष्ट लाभ प्रदान करता था, जिसके गर्दन, कंधों और बगल में घावों से अत्यधिक खून बह रहा था।

अगले बीस मिनट तक लड़ाई बिना रुके भयंकर क्रोध के साथ जारी रही, जब तक कि मैंने पहले जो क्रोध भरी गुर्राहट सुनी थी, उसकी जगह कराहने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं, और दोनों सांडों के पसीने और खून से लथपथ चमकदार किनारे, जो इतनी दूरी से भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, यह दर्शाने लगे कि लड़ाई की भीषण गति और तनाव अपना असर दिखाने लगे थे। सांडों के मुंह से झाग टपक रहा था और उनके शरीर पर छिटककर ज़मीन पर गिर रहा था।

मैंने इससे पहले कभी बाइसन की लड़ाई नहीं देखी थी और यह जानने के लिए बहुत उत्सुक था कि इसका अंत कैसे होगा। सौभाग्य से मैं अकेला आया था। इसके अलावा, हवा मेरी दिशा में बह रही थी। इसलिए लड़ने वाले बाइसन मेरी उपस्थिति से पूरी तरह अनजान थे और उन्होंने प्राकृतिक परिस्थितियों में अपनी लड़ाई लड़ी।

सींग टूटा हुआ बैल भारी पड़ रहा था और उसका प्रतिद्वंदी पीछे हटता जा रहा था। उसके शरीर पर लगे कई घावों से खून बह रहा था और वह खून से लथपथ होकर लाल हो रहा था। बेशक, उसने भी अपने दुश्मन पर कई जोरदार प्रहार किए थे, लेकिन टूटा हुआ सींग उसके मालिक को स्पष्ट रूप से श्रेष्ठता प्रदान कर रहा था। दस मिनट बाद, बुरी तरह घायल जानवर लड़खड़ाने लगा। वह कई बार घुटनों के बल गिरा और हर बार उसका सींग, जो किसी सींग जैसा लग रहा था, उसके शरीर के किसी न किसी हिस्से में धंस गया। आखिरकार, वह टूट गया, मुड़ा और लड़खड़ाते हुए भागा। विजेता ने उसका पीछा करते हुए और उसकी पीठ पर टक्कर मारते हुए इस बढ़त का फायदा उठाया। घाटी का निचला हिस्सा आसपास के जंगल में मिल जाता था, और दोनों जानवर एक जगह से ओझल हो गए।

जिज्ञासावश मैं हाल ही में हुए युद्ध स्थल तक गया। दोनों प्रतिभागियों के ज़ोरदार खुरों से ज़मीन बुरी तरह से उखड़ गई थी और लगभग बीस गज व्यास के एक गोल घेरे में खून और झाग के धब्बे बिखरे हुए थे।

उसके काफी समय बाद मैंने अपने बैल को दोबारा देखा। दूसरी बार, एक शाम को टहलते हुए, मैं सड़क के पूर्वी किनारे पर स्थित एक पानी के कुंड को देखने जा रहा था, जो 41वें मील के पत्थर से लगभग एक चौथाई मील की दूरी पर और लगभग उसी के बराबर था। गेदेसाल गाँव के शोलागा समुदाय के कुछ मवेशियों को एक बाघ ने मार डाला था। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने उसे कई बार शाम के समय उस आग की लकीर के किनारे चलते या उसे पार करते हुए देखा था, जो इस कुंड के पास से गुजरती है और फिर सड़क को पार करती है।

मैं उस दिन शाम लगभग 4:30 बजे पानी के गड्ढे के पास गया और यह देखने के लिए उसके किनारे-किनारे घूमा कि वहाँ कौन-कौन से जानवर आते-जाते थे। वहाँ हाथी, बाइसन, सांभर, चित्तीदार हिरण और कुछ जंगली सूअरों के सामान्य पदचिह्न थे। जहाँ तक मैं उसके पदचिह्नों की उम्र से अनुमान लगा सका, बाघ भी वहाँ लगभग तीन बार पानी पी चुका था, हालाँकि आखिरी बार वह मेरे आने से कम से कम तीन

दिन पहले आया था।

बाइसन के पदचिह्नों के बीच, किसी विशालकाय बैल के नुकीले खुरों के निशान भी दिखाई दे रहे थे। उसके शरीर का भार इतना अधिक था कि वह तालाब के किनारे कीचड़ में लगभग एक फुट धंस गया था। उसके पदचिह्न आसपास के कई स्थानों पर भी दिखाई दे रहे थे, जिससे पता चलता है कि वह अक्सर इस तालाब पर आता था। यह बात कुछ अजीब थी, क्योंकि उसके पास नदी थी, जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, जहाँ वह अपनी प्यास बुझा सकता था।

मैंने उस शोलागा से पूछा, जिसने मुझे बाघ के बारे में बताया था और जो मेरे साथ आया था, कि क्या वह इस बैल के बारे में कुछ जानता है। उसने हाँ में जवाब दिया और बताया कि उसने और सभी ग्रामीणों ने उसे कई बार देखा है, और उसका बायाँ सींग विकृत है, जो आगे की ओर निकला हुआ है। तुरंत ही मेरा मन उस यादगार लड़ाई के दृश्य की ओर चला गया, जिसमें एक विकृत सींग वाले बैल ने अपने प्रतिद्वंद्वी को पूरी तरह से हरा दिया था। मैंने सोचा कि क्या यह वही जानवर हो सकता है और मुझे लगा कि ऐसा ही होना चाहिए, क्योंकि ऐसी विकृति अत्यंत दुर्लभ है।

शोलागा ने मुझे बताया कि बैल अक्सर तालाब के पास आता था, क्योंकि वह उस इलाके में अपने झुंड की देखभाल करता था; शायद इसलिए कि तालाब के आसपास की निचली ज़मीन पर चरने के लिए बेहतरीन घास उपलब्ध थी। फिर उसने आगे कहा कि अगर मैं उसके साथ टहलने चलूँ, तो शायद हमें इस जानवर को देखने का सौभाग्य मिल जाए, या शायद बाघ भी दिख जाए।

उस समय मेरा मुख्य लक्ष्य बाघ था और मुझे बैल में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए मैंने उसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सहमति दी। वैसे भी, दिन के उजाले में बाइसन का पीछा करना एक जोखिम भरा काम है और यह हवा की दिशा, उपलब्ध आवरण और निश्चित रूप से इलाके की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है।

हम बिना किसी उद्देश्य के टहलने निकल पड़े, मवेशियों के रास्तों और जंगली जानवरों के पगडंडियों पर चलते हुए और कई बार आग बुझाने वाली कतार को पार करते हुए। मुझे याद है कि हम एक संकरे रास्ते पर धीरे-धीरे चल रहे थे कि अचानक हमारे सामने, लगभग तीस गज की दूरी पर, लंबी घास हट गई और एक विशालकाय बैल बाइसन का सिर और कंधे दिखाई दिए, जो हमें बड़े आराम से और बेफिक्र होकर

देख रहा था। वह मेरा दोस्त था, वही बाइसन जिसका सींग मुड़ा हुआ था।

उसमें डर का कोई लक्षण नहीं दिखा, वह बस हमें देखता रहा। हम दस गज और आगे बढ़े; फिर, सरकंडों वाली घास की तेज़ सरसराहट के साथ, वह मुड़ा और गायब हो गया। जैसा कि मैंने बताया, उस दिन के बाद मैंने उसे कई बार देखा, और फिर वह यादगार घटना घटी जिसने उसे मेरी ओर खींच लिया।

एक अज्ञात शिकारी, जो अवैध शिकार भी करता था, एक रात सड़क पर आया और उसने एक मादा बाइसन को गोली मार दी। इससे पहले कि वह समझ पाता कि वह कहाँ है, एक बैल ने उसकी जीप पर हमला कर दिया और अपने सिर को झटके से हिलाकर गाड़ी को सड़क के किनारे बने एक नाले में गिरा दिया, जो नदी की एक सूखी सहायक नदी में जा गिरा। सौभाग्य से बाइसन ने हमला जारी नहीं रखा, इसलिए अवैध शिकार करने वाले को केवल एक घायल पैर और टूटी हुई राइफल का ही नुकसान हुआ। उसके साथ मौजूद शोलागा, जो उस जीप के किनारे बैठा था जिस पर हमला हुआ था, ने बैल को स्पष्ट रूप से देखा था और उसने दावा किया कि वह विकृत बाएँ सींग वाला जानवर था।

कुछ महीनों बाद, अपनी अगली यात्रा के दौरान, मुझे इस घटना के बारे में पता चला और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि उस बूढ़े बैल ने इतनी सराहनीय कार्रवाई की थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि जीप को खाई में फेंकने के कारण उसने अपने बैल जैसे दिमाग में यह सोच लिया होगा कि उसने अपने दुश्मन का सफाया कर दिया है। अगर खाई न होती तो शायद वह अपने पहले हमले के बाद एक और हमला करता, अंदर बैठे आदमियों को ढूंढ निकालता और उन्हें पूरी तरह खत्म कर देता।

कुछ समय बाद, नवंबर 1953 में, मैं दिंबुम गया था। मेरा गेदेसाल में रुकने का कोई इरादा नहीं था और मैं गाड़ी चला रहा था तभी मेरी नज़र एक अकेले व्यक्ति पर पड़ी जो पैदल चल रहा था। पास आकर मैंने देखा कि वह शोलागा थे, जिनका नाम राचेन था, जिन्हें मैं उस बंगले में डेरा डालते समय हमेशा काम पर रखता था। गाड़ी रोककर और उनका अभिवादन करते हुए मैंने उनसे तमिल में पूछा: 'येन्ना सुंगधी'—जिसका अर्थ है: 'क्या खबर है?'

राचेन ने जवाब दिया कि दो रात पहले ही गाँव वालों ने गाँव से कुछ ही दूरी पर जंगल में एक बाघ और किसी दूसरे जानवर के बीच भयंकर लड़ाई की आवाज़ें सुनी थीं। लड़ाई की तीव्रता और घंटों तक चलने के कारण, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि

बाघ का प्रतिद्वंद्वी जंगली सूअर नहीं हो सकता, क्योंकि मध्यम आकार का एकमात्र जंगली जानवर जो बाघ का मुकाबला करता है, और उन्हें लगा कि यह एक हाथी हो सकता है। लेकिन फिर, अगर यह हाथी होता, तो उन्हें पूरा यकीन था कि उन्होंने उसकी चिंघाड़ और चीखें सुनी होतीं, जो हाथी मुसीबत में होने पर, लड़ते समय या उत्तेजित होने पर हमेशा करता है।

रात के बाद के समय में आवाजें धीरे-धीरे कम हो गईं, लेकिन उससे पहले ही उन्होंने बाघ द्वारा मचाए जा रहे तेज शोर से यह अंदाजा लगा लिया था कि वह बुरी तरह घायल हो गया था।

अगली सुबह, जिज्ञासावश शोलागा लोग यह देखने गए कि क्या हुआ था और उन्हें वही दृश्य दिखाई दिया, जहाँ उन्होंने पिछली रात के भीषण संघर्ष के बारे में सुना था। लड़ाकों ने झाड़ियों को उखाड़कर रौंद डाला था, और इस अखाड़े के एक तरफ एक बाघ का शव पड़ा था, जिसे बाइसन ने बार-बार सींगों से घायल करके कुचल दिया था।

इसके बाद शोलागा जनजाति के लोगों ने तुरंत बाघ की खाल उतार ली और उसे गांव ले गए।

दोपहर के करीब मैंने यह कहानी सुनी और समय होने के कारण मैंने खुद उस जगह को देखने का मन बनाया। राचेन को अपने बगल में बैठाकर मैं गेदेसाल गाँव की ओर जाने वाले संकरे रास्ते पर गाड़ी चलाकर गया और देखा कि बाघ की खाल सूखने के लिए ज़मीन पर टांगी हुई थी। कच्ची खाल ऊपर की ओर थी और उस पर सूखी राख की मोटी परत लगी हुई थी, जो शोलागा लोगों के लिए एकमात्र संरक्षक है, क्योंकि वहाँ नमक उपलब्ध नहीं है।

बाघ काफी बड़ा जानवर था, लेकिन उसकी खाल के नीचे के हिस्से को देखकर लगता था कि बाइसन ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया था। शरीर पर कम से कम पाँच अलग-अलग छेद थे जहाँ शक्तिशाली सींगों ने वार किया था, और उनमें से एक, बाईं ओर, यह दर्शाता था कि एक घातक वार ने बाघ के दिल को भेद दिया था।

अब मेरी दिलचस्पी पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गई थी और मैंने उस जगह को देखने की तीव्र इच्छा ज़ाहिर की जहाँ लड़ाई हुई थी। अपनी कार छोड़कर, शोलागा समुदाय के लोगों की भीड़ के साथ मैं निकल पड़ा। आधे मील से भी कम दूरी पर हम घटना स्थल पर पहुँच गए।

इसे बयान करने के लिए 'अखाड़ा' सबसे उपयुक्त शब्द है, क्योंकि वास्तव में वहाँ एक भयंकर संघर्ष हुआ था। चारों ओर फैली घास और झाड़ियों पर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो प्रतियोगियों के भार से चपटी हो गई थीं और सूखे खून से लाल हो गई थीं। शोलागा जनजाति ने उस स्थान की ओर इशारा किया जहाँ मृत बाघ पड़ा था।

खून की मात्रा देखकर स्पष्ट था कि बाइसन भी बुरी तरह घायल हो गया था। अचानक ही मैंने सोचा कि अगर संभव हो तो मैं उसका पीछा करके देखूँ कि वह जंगल में कहीं मरा हुआ है या मरणासन्न अवस्था में है। दोनों ही स्थिति में, मुझे लगता था कि अपनी इस हालत में वह लड़ाई वाली जगह से ज्यादा दूर नहीं जा सकता था।

एक नौसिखिए के लिए भी उस निशान का पता लगाना आसान होता, क्योंकि बाइसन ने जंगल में खून के चौड़े निशान छोड़े थे। वह ढलान से नीचे की ओर, नदी की तरफ जा रहा था, और मुझे पूरा यकीन था कि मैं उसे वहीं पानी के किनारे, संभवतः मृत अवस्था में पाऊंगा।

हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे, चुप रहने की परवाह भी नहीं की। उस भयानक खून के निशान पर डेढ़ घंटे की तेज़ चाल से चलते हुए हम धारा तक पहुँचे, और वहाँ हमें एक बाइसन उथले पानी में खड़ा मिला, जो आंशिक रूप से डूबे हुए एक बड़े पेड़ के तने से टिका हुआ था। चट्टानों पर से बहते पानी के शोर के कारण उसने पहले तो हमारी आवाज़ नहीं सुनी, और उसके हमारी ओर मुड़ने से पहले ही हम काफ़ी दूर छिप चुके थे।

यह गेदेसाल का विशालकाय बैल बाइसन था, वह बैल जिसका सींग मुड़ा हुआ था।

जहां हम खड़े थे, नदी की चौड़ाई हमें अलग कर रही थी, वहां से हम बाघ के चेहरे, गर्दन, बगल और पीठ पर उसके दांतों और पंजों से हुए भयानक घावों को साफ देख सकते थे। उसका पेट भी बुरी तरह से फटा हुआ था, और उसमें से कुछ लाल रंग का निकला हुआ पानी में लटका हुआ था। शायद यह उसकी आंत का एक हिस्सा था, शायद त्वचा का फटा हुआ टुकड़ा; मैं अंधेरे में जहां वह खड़ा था, वहां ठीक से नहीं देख पा रहा था।

लेकिन दर्द से भरी आँखों के बावजूद, जब वह खड़ा होकर हमारी ओर देखने लगा, तो उसकी आँखें निर्मल और निडर थीं। फिर वह मुड़ा और लड़खड़ाते हुए जंगल

की ओर चला गया।

मैंने उसे गोली मारकर उसकी पीड़ा से मुक्ति दिलाने का सोचा था, लेकिन इतनी भयानक कीमत पर मिली उसकी वीरतापूर्ण जीत के बाद ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। वैसे भी, मुझे उससे दोबारा मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी।

लेकिन हाल ही में मैंने गेडेसल का दौरा किया, और मुझे बहुत आश्चर्य और खुशी हुई जब एक शाम मैंने उसे अपने प्यारे झुंड से घिरा हुआ, 41वें मील के पत्थर से कुछ ही दूरी पर सड़क के पूर्वी किनारे पर स्थित पानी के गड्ढे के किनारे लंबी घास पर संतुष्टिपूर्वक चरते हुए देखा - जो उसका पसंदीदा ठिकाना था।

वह जिस जंगल का निवासी है, उसमें दीर्घायु हो।

आठ

चोर्डी का अयालदार बाघ

यह एक बहुत बड़े बाघ की कहानी है जिसने उस क्षेत्र में, जहाँ वह रहता था—या यूँ कहें कि उस क्षेत्र के मानव निवासियों के लिए—काफी परेशानी खड़ी की, और जिसका पीछा करना और अंततः उसे पकड़ना बहुत मुश्किल था।

शिकार की कहानियाँ सुनाते समय, कहानीकार का उद्देश्य श्रोताओं की रुचि बनाए रखना होता है। इसके लिए उसे अपने शिकार को मारने में सफल प्रयासों का वर्णन करना पड़ता है। मजबूरीवश उसे कई असफलताओं और निराशाओं को छोड़ना पड़ता है, क्योंकि यदि वह उन सभी का वर्णन करेगा तो श्रोता जल्द ही ऊब जाएंगे। लेकिन केवल सफलताओं का उल्लेख करने से यह धारणा बनती है कि आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के प्रयास लगभग हमेशा सफल होते हैं, लगभग हमेशा आसान होते हैं, और लगभग हमेशा अपेक्षाकृत कम समय में - अधिक से अधिक कुछ दिनों में - पूरे हो जाते हैं।

वास्तव में, ये तीनों धारणाएँ सत्य से बहुत दूर हैं, और वास्तविक परिस्थितियाँ हमेशा इसके बिल्कुल विपरीत होती हैं। असफलताएँ बहुत अधिक होती हैं और शारीरिक, मानसिक और तंत्रिका संबंधी परिस्थितियाँ अत्यंत कठिन होती हैं; और अक्सर जानवर को सामान्य स्थिति में पहुँचने में महीनों और यहाँ तक कि वर्षों लग जाते हैं। कभी-कभी तो उसे गोली भी नहीं लगती।

तो इस कहानी में मैं एक ऐसे प्रयास के बारे में बताने जा रहा हूँ जो अनायास ही शुरू हुआ और जिसे पूरा होने में लगभग पाँच लंबे और थकाऊ साल लग गए। ज़ाहिर है, यह कोई निरंतर खोज नहीं थी, बल्कि छिटपुट प्रयासों की एक श्रृंखला थी। मेरे प्रयासों के अलावा, बैंगलोर और बॉम्बे के अन्य शिकारी भी थे, और स्थानीय धूर्त लोगों का तो कहना ही क्या, जिन्होंने इस चालाक प्राणी को हराने की कोशिश की। और हम सभी असफल रहे—जब तक कि वे पाँच साल बीत नहीं गए।

उसे 'बालों वाला बाघ' कहा जाता था क्योंकि उसकी गर्दन, कानों के पीछे और गले व ठोड़ी पर बालों का एक असाधारण गुच्छा था। स्वाभाविक रूप से, बालों के इस गुच्छे के कारण उसका सिर बहुत बड़ा दिखाई देता था, जिसे हमेशा 'इतना बड़ा' बताया जाता था, गवाह अपने हाथों को बगल में फैलाकर, उंगलियों को अंदर की ओर मोड़कर, हालांकि बहुत कम लोगों ने उसे देखा था और उसके बारे में बताने के लिए जीवित बचे थे।

ऐसा माना जाता है कि उसका मूल निवास स्थान चोर्डी के आसपास था, क्योंकि

यही उस गांव का नाम था जहां उसे पहली बार देखा गया था और जिसके पास ही उसने पहली बार किसी इंसान की हत्या की थी।

चोर्डी एक छोटा सा गाँव है जो जंगल से घिरा हुआ है और कुम्सी नामक छोटे कस्बे से लगभग चार मील दूर सड़क के किनारे बसा है। कुम्सी स्वयं मैसूर राज्य के शिमोगा जिले की राजधानी से सोलह मील दूर है। शिमोगा बैंगलोर से अच्छी सड़क मार्ग से मात्र 172 मील दूर है। बैंगलोर की ओर वाली सड़क का लगभग सत्तर मील का हिस्सा कंक्रीट का है और बाकी तारकोल का है, इसलिए कुछ खतरनाक और अप्रत्याशित मोड़ों को छोड़कर, वाहन चालक आमतौर पर सुरक्षित रूप से और काफी कम समय में शिमोगा पहुँच सकते हैं।

The Maned Tiger of Chordi

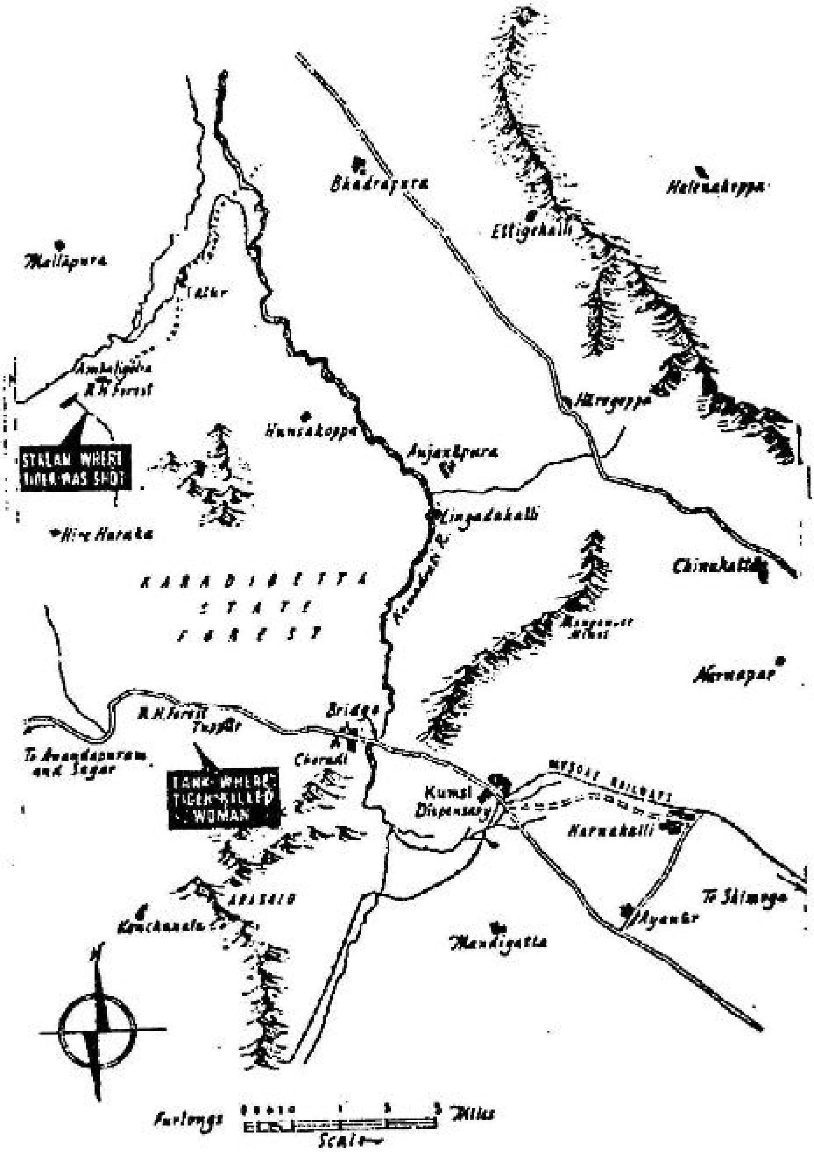

वहां से सड़क कुम्सी और चोर्डी की ओर जाती है, फिर लगभग नौ मील आगे

आनंदपुरम गांव, फिर ग्यारह मील आगे सागर शहर और वहां से लगभग सोलह मील आगे, तलगुप्पा नामक एक अन्य गांव से गुजरते हुए, प्रसिद्ध गेरसप्पा जलप्रपात तक जाती है, जिसे कभी-कभी जोग जलप्रपात के नाम से भी जाना जाता है, जहां शरावती नदी का जल चार अलग-अलग झरनों में 950 फीट की ऊंचाई से गिरता है। यह एक अविस्मरणीय दृश्य है और ऐसा दृश्य है जो सबसे निर्मम और भौतिकवादी लोगों के हृदयों में भी विस्मय और श्रद्धा की भावना जगाता है।

जलप्रपात के शीर्ष पर दो घुमंतू बंगले हैं। शरावती नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित बंगला, जो कि कहीं अधिक आधुनिक इमारत है, मैसूर राज्य की सीमा में आता है और इसे 'मैसूर बंगला' कहा जाता है। नदी के दूसरी ओर, उत्तरी किनारे पर स्थित दूसरा बंगला बॉम्बे राज्य के अधिकार क्षेत्र में आता है। यह एक पुरानी इमारत है, जो बेहद एकांत में स्थित है और इसमें बहुत कम लोग रहते हैं—इसी कारण मैं इसे अधिक पसंद करता हूँ। इसे 'बॉम्बे बंगला' के नाम से जाना जाता है।

दोनों बंगलों में समय-समय पर ठहरने वाले विभिन्न लोगों की कविता-रचनाओं से भरी हुई आगंतुक पुस्तिकाएँ मिलना काफी असामान्य और मनोरंजक है। निस्संदेह, झरनों की भव्यता ने उन लोगों के मन में छिपी हुई काव्यात्मक इच्छा को जगा दिया है जो शायद अब तक उदासीन रहे थे। उनकी कुछ रचनाएँ वास्तव में सराहनीय और प्रेरणादायक हैं; लेकिन बाकी के लिए मुझे लगता है कि कहीं और इतनी बेतुकी रचनाओं का संग्रह करना मुश्किल होगा।

बाघ की हिंसक हरकतें आदमखोरों के जीवन की सामान्य घटनाओं से काफी मिलती-जुलती थीं। जंगल में रहने वाले प्राकृतिक जंगली जानवरों का शिकार करने से लेकर, वह धीरे-धीरे मवेशी चोर बन गया, जिसका कारण निस्संदेह शिमोगा जिले के आरक्षित जंगलों में चरने वाली हजारों मोटी गायों की मौजूदगी थी। अन्य जंगली जानवरों पर चुपके से हमला करने की कठिनाइयों के विपरीत, इन गायों की मौजूदगी और आसानी से उनका पीछा करके उन्हें मार गिराने की क्षमता ने उसे एक हानिरहित शिकारी से चोर्डी के आसपास के चरवाहों के लिए एक बेहद विनाशकारी खतरा बना दिया।

एक के बाद एक हमले होते रहे और बाघों द्वारा मवेशियों को मार डाला गया, अंततः रखवालों की सामान्य सुस्ती इतनी बढ़ गई कि उन्होंने कुछ करने का फैसला किया। मामला तब और बिगड़ गया जब एक साहसी पशुपालक अपने पशुओं को

चराने के लिए जंगल में ले जाते समय अपने साथ भरी हुई बंदूक ले गया, जबकि वन विभाग के नियमों के अनुसार बिना शिकार लाइसेंस के हथियार लेकर अभ्यारण्य में प्रवेश करना उसके लिए गैरकानूनी था।

हालांकि, उसने ठीक वैसा ही किया, और संयोगवश, उसी दिन अयालदार बाघ ने उस पर हमला कर उसके एक जानवर को मार गिराया। पेड़ के तने के पीछे छिपकर उसने अपनी बंदूक से गोलियां चलाईं, और एल.जी. छर्रों से बाघ के दाहिने हिस्से में गंभीर चोट आई। वह कुछ समय के लिए चोर्डी के आसपास से गायब हो गया, और सभी पशुपालक बंदूक के मालिक के आभारी थे कि उन्होंने उन्हें इस खतरे से छुटकारा दिलाया।

फिर कुछ मील दूर, आनंदपुरम की सीमा से लगे झाड़ीदार जंगल में वह अयालदार जानवर फिर से प्रकट हुआ। लेकिन वह अब भी अभ्यारण्य में चर रहे मवेशियों पर हमला करने की अपनी आदत पर अड़ा हुआ था। वह अभी तक बिगड़ा नहीं था—अभी तक आदमखोर नहीं बना था—क्योंकि उसके बगल में लगे घाव ने उसे किसी भी तरह से अक्षम नहीं किया था।

एक बार फिर उसकी अवांछित उपस्थिति ने मवेशी चराने वालों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया, और एक बार फिर वह घायल हो गया। इस बार उसके दाहिने अगले पैर में चोट आई, और वह उस गाय के शव के पास पहुँच रहा था जिसे उसने कल ही मारा था। वह दूसरी बार गायब हो गया। एक बार फिर झूठी उम्मीदें जगीं कि उसका जाना स्थायी है, और एक बार फिर वह प्रकट हो गया।

लेकिन उसकी दूसरी वापसी में एक बड़ा बदलाव आया। अब वह वह घिनौना लेकिन फिर भी हानिरहित बाघ नहीं था जो मवेशियों के लिए इतना विनाशकारी था, लेकिन उनके रखवालों के लिए हानिरहित था। इस बार स्थिति उलट गई थी; मवेशी तो अपेक्षाकृत सुरक्षित थे, लेकिन चरवाहे खतरे में थे—बहुत बड़े और वास्तविक खतरे में—क्योंकि वह जंगल का सबसे बड़ा आतंक और विपत्ति बन चुका था: आदमखोर बाघ।

उसके दाहिने अगले पैर में लगी गेंद से एक हड्डी टूट गई थी। कुदरत ने हड्डी तो जोड़ दी, लेकिन पैर छोटा और टेढ़ा हो गया था। अब वह चुपचाप और असरदार तरीके से अपने शिकार का पीछा नहीं कर सकता था, न ही उन पर झपट्टा मारकर उनकी गर्दन तोड़ सकता था। उसका आना शोरगुल भरा होता था, हमला बेढंगा। उसके

विकृत पैर की वजह से शिकार को पकड़ने की उसकी क्षमता बहुत कम हो गई थी, और अक्सर शिकार बच निकलते थे। यहाँ तक कि सुस्त मवेशी भी उसकी आहट सुनकर उससे बच निकलते थे, या हमला करने पर उसे अपनी पीठ से झटक देते थे।

अपनी विकलांगता के कारण वह दुबला-पतला और कमजोर हो गया, और उसे भुखमरी का सामना करना पड़ा। वह - विशाल अयाल वाला बाघ - बाँस के पेड़ों में दौड़ने वाले चूहों को पकड़ने के लिए मजबूर हो गया, लेकिन वे भी उससे बच निकले।

जंगल में जगह-जगह जमा हुए मैले पानी के तालाबों में रहने वाले चिपचिपे मेंढक और किनारे पर मिलने वाले नुकीले खोल वाले केकड़े ही ऐसे जीवित प्राणी थे जो उसकी रफ्तार को मात दे सकते थे। उसके लिए केवल मजबूरी ही थी, और कुछ नहीं, जिसने उसे मानव मांस के इस नए आहार को अपनाने पर मजबूर किया।

ये इस बाघ के बारे में वो तथ्य हैं जो मैंने समय-समय पर एकत्र किए हैं। उसके घाव की प्रकृति का पता मुझे वर्षों बाद तब चला जब मैंने उसे गोली मारने के बाद उसकी जांच की।

एक दिन एक व्यक्ति आनंदपुरम बस स्टैंड पर उतरा और तीन मील दूर एक छोटे से गाँव के लिए जंगल के रास्ते निकल पड़ा। वह पिछली सुबह शिमोगा शहर के लिए निकला था और अपनी पत्नी से कहा था कि अगले दिन उसका दोपहर का भोजन तैयार रखे, क्योंकि वह समय पर लौट आएगा। भोजन तैयार कर दिया गया था, लेकिन वह नहीं आया। इससे छोटे से घर में कोई चिंता नहीं हुई क्योंकि भारत में, विशेषकर छोटे शहरों में, व्यापारिक मामलों का निपटारा अक्सर लंबा चलता है। पूर्वी भारत में समय का कोई महत्व नहीं है।

उस शाम भी वह नहीं आया, और न ही अगले पूरे दिन। तीसरे दिन उसके सबसे बड़े बेटे, जो अब वयस्क हो चुका था, को शिमोगा भेजा गया ताकि पता चल सके कि उसके पिता को आने में देरी क्यों हुई। वहाँ उसे बताया गया कि लेन-देन तीन दिन पहले ही पूरा हो चुका था और उसके पिता अपने घर लौट गए थे।

फिर भी कोई अप्रिय चिंता नहीं जताई गई, क्योंकि ऐसा माना जा रहा था कि वह इसी मामले के सिलसिले में आनंदपुरम से परे स्थित सागर गया होगा।

इस प्रकार पाँच दिन बीत गए और कोई खबर नहीं मिली, जिससे परिवार सचमुच चिंतित और भयभीत हो गया। सबका यही मत था कि जंगल से घर लौटते समय बदमाशों या डाकुओं ने उस पर हमला कर उसे लूट लिया होगा और संभवतः

उसकी हत्या कर दी होगी। पुलिस को सूचना दी गई और तलाशी अभियान चलाया गया, जिसमें उसके घर के गाँव की ओर जाने वाले रास्ते के किनारे झाड़ियों में एक चप्पल पड़ी मिली।

घरवालों ने उस पुरानी चप्पल को लापता व्यक्ति की चप्पल बताकर पहचान लिया, जिससे डकैत होने की आशंका और पुख्ता हो गई। आनंदपुरम में रहने वाले कई कुख्यात डकैतों (के.डी.) को पुलिस स्टेशन ले जाया गया और उनसे पूछताछ की गई। उन्होंने अपनी बेगुनाही का दावा किया।

इसके बाद गहन और व्यापक तलाशी ली गई। कंटीली झाड़ियों और झाड़ियों पर कपड़ों के टुकड़े और सूखे खून के निशान मिले, और एक नाले के सूखे तल पर बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए। इसके बाद कोई सुराग नहीं मिला।

उन इलाकों में बाघ काफी आम थे—या यूं कहें कि उन वर्षों में आम हुआ करते थे—और चूंकि लापता व्यक्ति से पगडंडियों के निशानों को जोड़ने वाला कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था, इसलिए केवल एक अस्पष्ट संदेह था कि बाघ का उसके लापता होने से कुछ संबंध हो सकता है। पगडंडियों के निशानों की उपस्थिति महज एक संयोग भी हो सकती थी।

यह रहस्य कभी सुलझ नहीं पाया।

दो सप्ताह बाद एक अकेला साइकिल सवार कुम्सी से चोर्डी तक चार मील की दूरी तय कर रहा था। अपने गंतव्य से आधा मील पहले सड़क एक पुल से नदी पार करती है। पुल के दोनों ओर चूना पत्थर की एक दीवार बनी हुई थी। साइकिल चलाते हुए उसने देखा कि एक बाघ लगभग उसके नीचे पानी पी रहा है। वह जानवर से सुरक्षित दूरी पर था, इसलिए उसने ब्रेक लगाकर साइकिल पर बैठकर एक पैर दीवार पर रखा और बाघ को देखने लगा।

बाघ ने पानी पीना समाप्त किया, मुड़ा और किनारे पर वापस चढ़ने लगा। कुछ ही सेकंड में वह झाड़ियों में गायब हो जाता, इसलिए मज़ाक में साइकिल सवार ने 'शू-शू' चिल्लाया। बाघ रुका, अपने कंधे के ऊपर से पीछे मुड़कर साइकिल सवार की ओर देखा और गुर्राया।

उस आदमी ने बड़ी जल्दी से अपना पैर दीवार से हटाया, पैडल पर रखा और जितनी तेज़ी से हो सकता था, चोर्डी की ओर भागा। वहाँ उसने अपने दोस्तों को बताया कि रास्ते में उसकी मुलाकात एक बहुत ही खूंखार बाघ से हुई जिसने उस पर

हमला करने की कोशिश की थी। भगवान की कृपा से ही वह बच पाया।

अगले लगभग एक महीने तक शांति छाई रही, और फिर पहली प्रमाणित मानव हत्या की घटना घटी। यह घटना तुप्पुर नामक स्थान पर हुई, जो चोर्डी और आनंदपुरम के लगभग मध्य में स्थित है। यह सड़क के किनारे बसा एक छोटा सा गाँव है, और वहाँ की एक महिला अपनी भैंस को गाँव के पीछे स्थित नदी में सुबह नहलाने के लिए ले गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि भैंस पानी में लेटी हुई थी, केवल उसका सिर पानी से ऊपर था, जैसा कि भैंसों की सामान्य आदत होती है, तभी एक बाघ ने नदी के किनारे बैठी अपनी भैंस की देखभाल कर रही महिला पर हमला कर दिया। गाँव की एक अन्य महिला नदी से पानी भरकर आई थी और भैंस के पास बैठी महिला से कुछ बातें करके आगे बढ़ रही थी। वह मुश्किल से सौ गज ही चली थी कि उसने एक तीखी चीख सुनी और पीछे मुड़कर देखा तो एक बाघ उसकी भैंस को अपने मुँह में लिए हुए जा रहा था।

बाघ और पीड़ित महिला जंगल में गायब हो गए, जबकि दूसरी महिला ने अपना पानी का घड़ा नीचे फेंक दिया और झोपड़ियों की ओर दौड़ पड़ी।

इस तरह की अधिकांश घटनाओं में जो होता है, वही हुआ। महिला की तलाश में जाने के लिए पर्याप्त संख्या में साहसी पुरुषों को इकट्ठा करने में काफी समय लग गया। आखिरकार, वे वहाँ पहुँच गए और उन्होंने उसे, या यूँ कहें कि उसके बचे हुए अवशेषों को ढूंढ लिया।

यह शुरुआत थी, और उसके बाद मानव पीड़ितों का सिलसिला शुरू हुआ, जिनकी मौतें शरावती नदी के उस पार जोग जलप्रपात के पास बॉम्बे बंगले की ओर जाने वाली सड़क तक हुईं।

सरकारी कामकाज धीमी गति से चलता है, और इन क्षेत्रों में आरक्षित जंगलों को इस जानवर के शिकार के लिए जनता के लिए खोलने में काफी समय लग गया।

कई उत्साही लोग वहां पहुंचे और उनमें बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भी काफी प्रतिनिधि मौजूद थे। उन्होंने पूरी लगन और मेहनत से प्रयास किया, लेकिन भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। यह बाघ जीवित चारे के रूप में बांधे गए मवेशियों और भैंसों से आकर्षित नहीं हुआ। इसी बीच, मानव हत्याएं जारी रहीं।

मेरे एक दोस्त जैक हॉटन, जिसे 'लॉफ्टी' उपनाम से जाना जाता था क्योंकि वह लगभग छह फुट चार इंच लंबा और उसी अनुपात में चौड़ा था, ने इस जानवर का

शिकार करने का फैसला किया और मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा। जहाँ तक मुझे याद है, यह यात्रा बाघ के आदमखोर बनने के लगभग एक साल बाद की गई थी।

कुछ इस तरह हुआ कि किसी कारणवश—संभवतः इसलिए कि मेरी छुट्टी पहले ही इस्तेमाल हो चुकी थी—मैं उनके साथ केवल एक सप्ताह के लिए गया, और उनसे कहा कि मुझे उस समय के बाद वापस लौटना होगा। हमने उनकी 1931 मॉडल की फोर्ड कार में यात्रा की, और यह तय हुआ कि एक सप्ताह समाप्त होने के बाद मैं ट्रेन से बैंगलोर लौट जाऊंगा, जबकि वे लगभग पूरे एक महीने तक वहीं रहेंगे।

हम बैंगलोर से शिमोगा तक कार से गए और वहां आधे दिन के लिए रुके ताकि सागर वन रेंज के जिला वन अधिकारी से मिल सकें, जहां ये हत्याएं हो रही थीं, ताकि उन विभिन्न स्थानों के नाम और उन हमलों की सटीक तारीखों का पता लगाया जा सके जहां लोगों पर हमले हुए थे, ताकि हमलों के क्रम का अध्ययन करके, यदि संभव हो तो, इस बाघ द्वारा अपनाए जा रहे सटीक क्षेत्र का पता लगाया जा सके।

मैंने पहले ही समझाया है कि आदमखोर बाघ आमतौर पर एक निश्चित मार्ग या यात्रा कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं। मानचित्र पर उन गांवों या इलाकों के नाम और प्रत्येक घटना की तारीख नोट करके, जहां वे शिकार करते हैं, अक्सर स्वयं ही उनके क्षेत्र का पता लगाना और यह अनुमान लगाना संभव होता है कि बाघ किस दिशा या क्षेत्र में हो सकता है, जब आप उसे पकड़ने का प्रयास करेंगे।

मानचित्र पर घटनाओं के हमारे अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से पता चला कि यह बाघ सड़क के किनारे से कुछ मील की दूरी के भीतर ही रहा और कुम्सी और शरावती नदी के दूसरे किनारे के बीच, बॉम्बे बंगले तक, ऊपर-नीचे घूमता रहा।

यह एक बेहद घना जंगल वाला इलाका है जिसमें कई बिखरे हुए गाँव हैं, जिनके निवासी लगभग पूरी तरह से मवेशियों के बड़े झुंड चराने में लगे हुए हैं। इन इलाकों में हर महीने बड़ी संख्या में बाघ और तेंदुओं द्वारा इन जानवरों को मार डाला जाता है, इसलिए इस तथ्य के कारण यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि क्या हमारा आदमखोर जानवर मवेशियों को भी मारता था या नहीं। हमें लगभग यकीन था कि वह ऐसा करता था, क्योंकि इंसानों का शिकार बहुत कम और अनियमित था, जिससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह केवल इंसानी मांस खाकर ही जीवित रह सकता था। हमारी राय स्थानीय लोगों की राय से बिल्कुल विपरीत थी, जिनका मानना था कि वह किसी भी पालतू जानवर को हाथ नहीं लगाता था।

लॉफ्टी ने टुप्पुर बस्ती से आधा मील दूर स्थित एक छोटे से वन बंगले में अपना डेरा डालने का फैसला किया। यह एक सुरम्य छोटा सा लॉज है, जो सड़क से लगभग दो सौ गज की दूरी पर जंगल में स्थित है, और आसपास का जंगल जंगली जानवरों, विशेष रूप से चित्तीदार हिरणों से भरा हुआ है। उस वर्ष कुछ नर हिरणों के सिर बहुत ही शानदार थे और हमें उनमें से कई उत्कृष्ट नमूने देखने को मिले।

लॉफ्टी ने हमेशा की तरह तीन जानवरों को चारा बनाकर अपना काम शुरू किया। इनमें से दो जवान भैंसें थीं और तीसरा एक बहुत बूढ़ा और कमजोर बैल था। एक भैंस को उस नाले के पास बांधा गया जहाँ साइकिल सवार ने बाघ को देखा था। बूढ़े बैल को लगभग उसी जगह बांधा गया जहाँ से तुप्पुर की महिला को अगवा किया गया था। बाकी बची भैंस को हमने आनंदपुरम के पास उसी रास्ते पर बांध दिया, जिस रास्ते से लापता व्यक्ति अपने घर जा रहा था।

इन व्यवस्थाओं को पूरा करने के बाद, हम जोग के लिए रवाना हुए और वहाँ दो भैंसों का चारा तैयार किया। हमने एक भैंस को बॉम्बे बंगले से लगभग आधा मील दूर और दूसरी को शरावती नदी के दक्षिणी किनारे पर, उस स्थान के पास बाँधा जहाँ मैसूर किनारे पर स्थित बंगले और बॉम्बे बंगले के बीच चलने वाली नौका नदी पार करती है। यह नौका जलप्रपात से लगभग एक मील ऊपर नदी पार करती है।

इसलिए लॉफ्टी के पास कुल पाँच चारागाह थे, और मुझे याद है कि उन पर उसका काफी पैसा खर्च हुआ था। योजना यह थी कि हम बारी-बारी से तुप्पुर फॉरेस्ट लॉज और बॉम्बे बंगले में रात बिताएंगे, और पिछली रात जहां बिताई थी उसके सबसे पास वाले चारागाह की जाँच करेंगे, फिर कार से उस बंगले के लिए रवाना होंगे जहां हमें अगली रात बितानी थी।

मानव वध की तारीखों की जाँच करने की विधि से किए गए मेरे अनुमानों से, जिनकी संख्या अब नौ हो चुकी थी, ऐसा प्रतीत होता है कि यह बाघ सागर और आनंदपुरम के बीच इस क्षेत्र के मध्य में कहीं हो सकता है।

इसलिए तीसरे दिन मैंने खुद एक भैंस खरीदी, जिसे मैंने इन दोनों जगहों के बीच लगभग आधे रास्ते में और मुख्य सड़क से एक फर्लांग की दूरी पर बांध दिया। हमने इस जानवर को दोपहर लगभग दो बजे तुप्पुर बंगले से जोग जाते समय बांधा।

अगली सुबह तड़के हमने झरने के पास बंधे दो चारे देखे। दोनों जीवित थे। इसलिए हम तुप्पुर के लिए निकल पड़े, रास्ते में रुककर उस भैंस को देखने गए जिसे

मैंने पिछली दोपहर बांधा था। उसे एक बाघ ने मार डाला था।

लॉफ्टी, एक अच्छे खिलाड़ी होने के नाते और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मैंने इस भैंस के लिए पैसे दिए थे, इस बात पर अड़ा रहा कि मैं ही गोली चलाऊं। लेकिन मैं जानता था कि वह कितना उत्सुक था, इसलिए काफी बहस हो गई। आखिरकार हमने टॉस जीता और लॉफ्टी जीत गया।

उसे पेड़ पर असहज रूप से बैठा छोड़कर, मैं उसका मचान लाने के लिए तुप्पुर लॉज चला गया, जिसे हम दोनों उस महत्वपूर्ण दिन बड़ी लापरवाही से अपने साथ लाना भूल गए थे। लॉफ्टी का मचान लगभग चार फुट चौड़ा एक चौकोर बांस का ढांचा था, जिस पर चौड़ी नवारी टेप लगी हुई थी। चारों कोनों पर मोटी रस्सी के लूप लगे थे, जो इसे पेड़ से बांधने में मददगार थे। मैं अपने साथ तुप्पुर बस्ती से तीन आदमी भी लाया था ताकि इस मचान को खड़ा करने में मदद मिल सके।

हमने सड़क किनारे ठंडा दोपहर का भोजन किया, जबकि पुरुष मचान की मरम्मत और उसे शाखाओं से ढकने का काम कर रहे थे। इसके बाद लॉफ्टी कार की पिछली सीट पर चार बजे तक झपकी लेता रहा, जबकि मैं तीनों पुरुषों से बातचीत करता रहा। ऐसा इसलिए था क्योंकि सड़क के पास होने के कारण, हम जानते थे कि बाघ रात होने से पहले दिखाई नहीं देगा।

चार बजे मैंने उसे जगाया और वह अपने सारे सामान के साथ मचान पर चढ़ गया। उसका हथियार 8 मिमी माउज़र राइफल थी—एक बेहद साफ-सुथरी और संतुलित राइफल—जिसे लॉफ्टी प्यार से 'शॉर्टी बिल' कहता था। उसे शुभकामनाएँ देते हुए और सुबह होने तक वापस आने का वादा करते हुए, मैं तुप्पुर के लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने तीनों आदमियों को छोड़ दिया और फिर वापस आकर आनंदपुरम के छोटे से डाक बंगले में रात बिताई, जो उस जगह के करीब था जहाँ मैंने लॉफ्टी को मृत भैंस के पास छोड़ा था।

अगली सुबह तड़के मैं सड़क पर उस जगह पहुँच गया जहाँ वह बैठा था और मैंने कार का हॉर्न बजाया। उसने भी मुझे हल्की सी आवाज़ में जवाब दिया, जो कि हमारे बीच विदा होने से पहले तय किया गया संकेत था, जिससे यह पता चलता था कि सब ठीक है।

मैं उसके पेड़ की ओर चल पड़ा और आधे रास्ते में उससे मिला, वह कार की ओर चल रहा था। उसने मुझे खुशखबरी सुनाई कि उसने बाघ को मार गिराया है, जो

पिछली शाम हमारी उम्मीद से बहुत पहले, अंधेरा होने के ठीक बाद आ गया था।

मुझे उसकी सफलता पर बहुत खुशी हुई, वहीं लॉफ्टी खुद भी बेहद प्रसन्न और उत्साहित था। मैं उसके साथ बाघ को देखने गया, जो एक खूबसूरत, विशाल नर बाघ था और अपने जीवन के चरम पर था, साथ ही उस पर गहरे रंग की आकर्षक धारियाँ बनी हुई थीं।

लेकिन मैंने गौर किया कि वह एक बिल्कुल सामान्य बाघ था। उसमें वह विशिष्ट अयाल बिल्कुल नहीं था जिसे सरकारी अधिसूचना में आदमखोर बाघ की प्रमुख विशेषता बताया गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि अपनी सफलता के उत्साह में लॉफ्टी ने इस तथ्य को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया था और मेरा उसे यह बताने का मन ही नहीं हुआ।

मैंने उनकी सफलता पर उन्हें हार्दिक बधाई दी और पूरी ईमानदारी दिखाने की कोशिश की। फिर उन्हें उनकी बहुमूल्य उपलब्धि की रक्षा करने के लिए छोड़कर, मैं टुप्पुर वापस चला गया ताकि शव को उठाने के लिए चार आदमी और एक बांस का डंडा ला सकूँ।

आदमियों के साथ लौटकर, हमने बाघ के पैरों को खंभे से बांध दिया और उसे उल्टा करके गाड़ी तक ले गए। चूंकि लॉफ्टी के पास पीछे कोई ऐसा मजबूत कैरियर नहीं था जो इतना वजन सह सके, इसलिए हमने शव को गाड़ी के बोनट पर फैला दिया। इस प्रक्रिया में न केवल धातु मुड़ गई, बल्कि गाड़ी चलाना भी बहुत मुश्किल हो गया, क्योंकि अपनी ऊंचाई के बावजूद, बोनट पर पड़े शव के कारण लॉफ्टी को कुछ गज तक आगे सड़क दिखाई नहीं दे रही थी।

आनंदपुरम से गुजरते हुए, लॉफ्टी ने अपने पुरस्कार को वहाँ जमा हुए लोगों को दिखाने के लिए गाड़ी रोक दी, और तभी उसे घोर निराशा का सामना करना पड़ा। लोगों ने बाघ को देखते ही कहा, 'लेकिन साहब, यह आदमखोर बाघ नहीं है।' लॉफ्टी ने गुस्से से जवाब दिया, 'बेशक यह वही है। यह और कौन सा बाघ हो सकता है? और वैसे भी, आपको इतना यकीन कैसे है कि यह आदमखोर नहीं है?' लोगों ने सफाई देते हुए पूछा, 'इसकी गर्दन के बाल कहाँ हैं?'

'बालों की अयाल?' लॉफ्टी पहले तो खाली नज़र से देखने लगा। फिर उसकी आँखों में समझदारी झलकने लगी। आखिर में उसने मुझे इल्ज़ाम भरी नज़रों से देखा। 'मैं अयाल के बारे में पूरी तरह भूल गया था,' उसने स्वीकार किया। 'मैंने गलत बाघ

को गोली मार दी। तुम्हें तो पहले से ही पता था?'

'हां, लॉफ्टी, मुझे पता था,' मैंने स्वीकार किया। 'लेकिन आज सुबह जब मैं तुमसे मिला और तुमने मुझे बताया कि तुमने आदमखोर बाघ को मार गिराया है, तो तुम इतने खुश थे कि मेरा तुम्हें निराश करने का मन ही नहीं हुआ। मैंने सबसे पहले उसकी गर्दन के बाल देखे। बेशक, गोली चलाने के अलावा तुम्हारे पास कोई चारा नहीं था।' और फिर, अपनी बात को और अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए, मैंने जल्दी से कहा: 'आखिरकार, बाघ अंधेरे में आया था, और तुम टॉर्च की रोशनी में भी उसकी गर्दन के बाल नहीं देख सकते थे। वैसे भी, यह एक शानदार नमूना है और गर्व करने लायक ट्रॉफी है; तो खुश हो जाओ, दोस्त।'

लेकिन लॉफ्टी इतनी आसानी से शांत नहीं हुआ। हम तुप्पुर गए, जहाँ मैंने उसे इतना निराश पाया कि बाघ की खाल उतारने के काम की निगरानी में उसकी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, और उसने यह काम पूरी तरह से मुझ पर छोड़ दिया। मैं काम करने वाले लोगों को देखता रहा जबकि लॉफ्टी एक कुर्सी पर उदास बैठा रहा। मैंने कई बार उसका ध्यान जानवर के बड़े-बड़े दांतों और पंजों, उसके गहरे निशानों और अन्य विशेषताओं की ओर दिलाकर उसे खुश करने की कोशिश की, लेकिन उसे ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी और उसने बातचीत में शामिल होने से इनकार कर दिया। उसने बस इतना कहा: 'अगर मुझे पता होता कि यह आदमखोर बाघ नहीं है तो मैं इस बेचारे जानवर को गोली नहीं मारता।'

दिन बीतने के साथ-साथ लोफ्टी का उदास मन और भी गहरा होता गया, बजाय इसके कि वह अपनी निराशा को दूर कर पाए। फिर उसने घोषणा की कि यदि अगली सुबह तक कोई हत्या नहीं हुई, तो वह बैंगलोर लौटना चाहेगा।

अगले दिन हम सुबह जल्दी उठ गए, लेकिन हमारे जाल में फँसे तीनों भैंसें बिल्कुल सुरक्षित थीं। इसलिए, हमने पहले से तय समझौते के अनुसार उन्हें उनके पुराने मालिकों को वापस बेच दिया, लगभग उस कीमत के एक चौथाई दाम पर जो लॉफ्टी ने उनके लिए चुकाई थी। फिर हम शिकारगाह के जोग छोर पर गए, लेकिन वहाँ भी दोनों भैंसें जीवित थीं। हमने उनके मालिकों के साथ वही सौदा किया जो हमने तुप्पुर में किया था, और देर दोपहर हम 'ए' मॉडल गाड़ी में बैठकर बैंगलोर वापस आ गए।

इसके कुछ समय बाद तक मुझे इस बाघ के बारे में कोई खबर नहीं मिली। मुझे

लगता है कि एक साल से भी अधिक समय बाद मैंने अखबारों में पढ़ा कि कुम्सी कस्बे के काफी पास और लगभग सड़क किनारे एक कोयला जलाने वाले को बाघ ने मार डाला और पूरा खा लिया था।

इसलिए मैंने शिमोगा के जिला वन अधिकारी (डीएफओ) को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो भविष्य में होने वाले शिकारों के बारे में मुझे टेलीग्राम द्वारा सूचित करते रहें।

शिमोगा जिले के जंगल, मैसूर राज्य के दक्षिण-पश्चिम और मद्रास और चित्तूर जिलों के जंगलों के विपरीत, घनी आबादी वाले गांवों और बस्तियों से भरे हुए हैं, और इनमें व्यापक रूप से खेती होती है, विशेष रूप से धान के खेत फैले हुए हैं। सड़कें भी वाहनों और पैदल यात्रियों दोनों द्वारा अत्यधिक उपयोग की जाती हैं। इन सब कारणों से, बाघ न केवल कहीं भी हो सकता है और उसे ढूंढना मुश्किल होता है, बल्कि उसका पता लगाना शिकारी के व्यक्तिगत कौशल पर निर्भर करता है। यह एक विचित्र तथ्य है कि भारत के अन्य जंगलों के विपरीत, इस क्षेत्र में कोई आदिवासी वन जनजाति निवास नहीं करती है। जंगलों में जाने वाले एकमात्र लोग मलयाली मूल के कुली हैं, जिन्हें भारत के पश्चिमी तट से बड़ी संख्या में काम पर रखा जाता है। संख्या में उनके बाद लंबानी जनजाति का स्थान आता है। ये भारत की 'खानाबदोश जनजाति' हैं, जो पश्चिमी दुनिया में अपने रोमानी रिश्तेदारों से विचित्र रूप से मिलती-जुलती हैं। लेकिन केवल महिलाएं ही रूप-रंग में विशिष्ट हैं। वे स्थानीय लोगों की तुलना में गोरे रंग की होती हैं और आकर्षक ढंग से सजी-धजी रहती हैं, जिनमें कई आभूषण, बड़ी-बड़ी सफेद हड्डियों की चूड़ियाँ, हर रंग, आकार और प्रकार के मोतियों के हार, नाक में नथनी, कान की बालियाँ, उंगलियों में अंगूठियाँ और पैरों की उंगलियों में अंगूठियाँ शामिल हैं। वे भारत की अन्य महिलाओं की तरह साड़ी नहीं पहनतीं, बल्कि एक विशिष्ट पोशाक पहनती हैं, जिसमें एक बहुत चौड़ी पेटीकोट होती है, जिसके ऊपर एक बहुत ही कसी हुई, पीछे से खुली जैकेट होती है, जिसमें अक्सर उनका खुला हुआ सीना दिखाई देता है, और इसके ऊपर एक बड़ा शॉल जैसा कपड़ा लिपटा होता है जो सिर और कंधों को ढकता है। उनकी जैकेट के दोनों हिस्से पीछे से डोरियों से बंधे होते हैं।

दूसरी ओर, लम्बानी पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक सांवले होते हैं और बहुत ही साधारण कपड़े पहनते हैं। वास्तव में, वे लगभग बाकी स्थानीय ग्रामीणों की

तरह ही कपड़े पहनते हैं, जो कन्नड़ भाषी हैं। वे साधारण ढीली पगड़ी और साधारण या हल्के सफेद सूती कमीज पहनते हैं, जिसके नीचे वे छोटी पैंट या कमर पर ऊँची बंधी हुई धोती पहनते हैं। उनके घुटने और पिंडली आमतौर पर खुले रहते हैं, लेकिन खुरदुरे चमड़े के सैंडल उनके पैरों को कांटों से बचाते हैं।

एक रोचक तथ्य यह है कि दक्षिण भारत के खानाबदोशों में पुरुष और महिलाएं चेहरे या अन्य शारीरिक बनावट में एक-दूसरे से बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं हैं। अधिकांश महिलाएं जितनी सुंदर और आकर्षक होती हैं, पुरुष उतने ही भद्दे और साधारण दिखते हैं।

वे एक असाधारण जनजाति हैं और उन्होंने सदियों से अपनी विशिष्टता को अत्यंत दृढ़ता से संरक्षित रखा है। मैं स्वयं इस बात से आश्चर्यचकित हूँ, क्योंकि पुरुषों का आलस्य ऐसा है कि किसी को उम्मीद होगी कि उनकी जनजातीय विशिष्टता कई पीढ़ियों पहले ही लुप्त हो गई होगी। अपनी परंपराओं को संजोने, अपने आकर्षक पहनावे और रूप-रंग को बनाए रखने और जनजाति एवं उसके रीति-रिवाजों को इतने सुव्यवस्थित ढंग से कायम रखने का श्रेय पूरी तरह से महिलाओं को जाता है।

ये लंबानी लोग कुल मिलाकर घुमंतू होते हैं और एक जगह पर लंबे समय तक नहीं रुकते। वे नियमित गांवों में रहने के बजाय साफ-सुथरे स्थानों में घास-फूस की छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहना पसंद करते हैं। आम तौर पर वे ज्यादा कुशल नहीं होते और खोजबीन में तो बिल्कुल भी माहिर नहीं होते। साथ ही, यह भी सच है कि वे स्थानीय कन्नड़ लोगों की तुलना में कहीं अधिक सहयोगी होते हैं।

लंबानी समुदाय में पुरुष और महिलाएं दोनों ही अत्यधिक शराब पीने वाले होते हैं, वे बबूल के पेड़ की छाल से, या चावल, केले और भूरी चीनी के मिश्रण से, या जामुन को चीनी में भिगोने के बाद उससे, या यूं कहें कि लगभग किसी भी सामग्री से जो उन्हें मिल जाए, अपनी खुद की बहुत ही शक्तिशाली शराब बनाते हैं—और वे स्रोत खोजने में बेहद कुशल होते हैं।

वे पैसे के बदले में मजदूरी (मुख्य रूप से भोजन और पेय पदार्थ) पाकर अधिक खुशी से काम करेंगे, क्योंकि पैसा वैसे भी ज्यादातर शराब खरीदने में खर्च हो जाएगा, अगर वे खुद शराब बनाने में असमर्थ हों। हालांकि, वे अच्छे लोग हैं और भारत की कई रोचक जातियों और जनजातियों में से एक हैं, जिनकी अनोखी और विशिष्ट शारीरिक बनावट है।

पश्चिमी मैसूर के कॉफी बागान और संतरे के बागान काफी हद तक लंबानी समुदाय, विशेषकर महिलाओं के ऋणी हैं, जो उनके यहाँ काम करने वाले अधिकांश श्रमिकों का हिस्सा हैं। शेष श्रमिक पश्चिमी तट से आते हैं—मलयालम और मोपला मूल के लोग। इन पश्चिमी तट के मजदूरों में एक बात समान है। नारियल के पेड़ों, झीलों, नदियों और पश्चिमी तटों पर लहरों के बीच बसे अपने घरों से उनका अटूट लगाव है। यह वास्तव में एक खूबसूरत देश है, और मैं उनकी इस देश के प्रति लगाव को अच्छी तरह समझ सकता हूँ। उद्योग की कमी और किसी भी प्रकार के निश्चित काम के अभाव के कारण वे रोजगार की तलाश में भीतरी इलाकों में चले जाते हैं। लेकिन जैसे ही वे कुछ कमा लेते हैं और कुछ और बचा लेते हैं—क्योंकि लंबानी समुदाय के विपरीत, वे बहुत मितव्ययी होते हैं—वे कुछ महीने आराम से बिताने के लिए अपने वतन लौट आते हैं। यह सर्वव्यापी विशेषता उन्हें बागानों में काम करने वाले मजदूरों के रूप में कुछ हद तक अविश्वसनीय बनाती है, क्योंकि जब तक उनके वेतन का एक हिस्सा एक प्रकार के बॉन्ड के रूप में रोक कर नहीं रखा जाता, तब तक उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित नहीं की जा सकती। कानून जागीरदारों के लिए इस प्रथा को प्रतिबंधित करता है, जबकि दूसरी ओर आम तौर पर मजदूरों को अग्रिम राशि दी जाती है ताकि वे चना और अन्य खाद्य सामग्री, कंबल और अन्य छोटी-मोटी चीजें खरीद सकें। जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, मलयाली मजदूर इसका स्वागत करते हैं, जो अपनी तनख्वाह और जो भी अग्रिम राशि उन्हें मिल पाती है, उसे लेकर अपने तटीय क्षेत्रों में छुट्टी पर चले जाते हैं।

इसलिए बागान मालिक विनम्र और आकर्षक लम्बानी खानाबदोशों को प्रोत्साहित करते हैं और उन पर निर्भर हो गए हैं, क्योंकि वे उनके बागानों के मुख्य आधार बन गए हैं। उनके लिए वह लगभग एक 'अनिवार्य' व्यक्ति बन गया है।

इस स्थिति में मेरी निजी दिलचस्पी सिर्फ इस बात में थी कि अगर मैं कभी इस बाघ का पीछा करता, तो मुझे लगभग पूरी तरह से अपनी सूझबूझ पर ही निर्भर रहना पड़ता। हालांकि लम्बानी लोग जागीर के काम में माहिर हैं, लेकिन वे अन्य आदिवासी वन जनजातियों—जैसे पुजारी, शोलागा, करुम्बा और चेन्चू—की तुलना में निशान ढूंढने और जंगल के सामान्य ज्ञान में उतने कुशल नहीं हैं। काश यह बाघ किसी ऐसे वन क्षेत्र में होता जहां मुझे अनुभवी और मददगार लोग मिल जाते।

शिमोगा में रक्षा अधिकारी को पत्र लिखने के लगभग एक महीने बाद मुझे उनसे

धन्यवाद पत्र और यह खबर मिली कि बाघ ने कुम्सी और चोर्डी के बीच लगभग मध्य में सड़क किनारे उगने वाले सागौन के पेड़ों से पत्तियां इकट्ठा कर रही एक महिला पर हमला कर उसे मार डाला था।

जिन लोगों ने सागौन का पेड़ या उसके पत्ते नहीं देखे हैं, उनके लिए मैं बता दूं कि ये पत्ते आकार में बड़े और रेशेदार होते हैं। ये आसानी से फटते नहीं हैं। इसलिए इनका इस्तेमाल पत्तों की थालियां बनाने में बहुत किया जाता है, जिन पर भारतीय होटलों में भोजन, खासकर चावल परोसा जाता है। ऐसी एक थाली बनाने में लगभग चार-पांच सागौन के पत्ते लगते हैं, जो पश्चिमी मानकों के हिसाब से बहुत बड़ी होती है। किनारों को सुई-धागे से सिलकर या फिर दो इंच लंबे झाड़ू के टुकड़ों से जोड़कर तैयार किया जाता है। मैसूर राज्य के कई भोजनालयों की मांग को पूरा करने के लिए लाखों की संख्या में ऐसी थालियों की आवश्यकता होती है। इसलिए, जिन इलाकों में सागौन के पेड़ बहुतायत में उगते हैं, वहां इनका निर्माण एक बड़ा उद्योग बन गया है। वन विभाग इन पत्तों को तोड़ने का अधिकार ठेकेदारों को बेचता है, जो नीलामी में बोली लगाकर यह अधिकार प्राप्त करते हैं। ठेकेदार बदले में महिला श्रमिकों को काम पर रखते हैं और उन्हें तोड़े गए हर हजार अच्छे पत्तों के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान करते हैं। इस काम के लिए पुरुषों की बजाय महिलाओं को नियुक्त किया जाता है क्योंकि वे पुरुषों की तुलना में लगभग आधी दर ही मांगती हैं।

रक्षा अधिकारी ने अपने लंबे पत्र का समापन इस कथन के साथ किया कि उन्हें उम्मीद है कि मैं कुम्सी आकर उस आदमखोर को मारने की कोशिश करूंगा।

जिस क्षेत्र में बाघ घूमता था, उसका विस्तार और उससे भी अधिक वे अन्य परिस्थितियाँ जिनका मैंने पहले ही विस्तार से वर्णन किया है, मुझे यह महसूस करा रही थीं कि इस स्तर पर खोज लगभग असंभव है। साथ ही, छुट्टी का सवाल भी एक बड़ी समस्या थी। ऐसी परिस्थितियों में बाघ की खोज में कई सप्ताह, या शायद कुछ महीने भी लग सकते थे।

इसलिए मैंने एक बहुत ही कूटनीतिक जवाब लिखने का जिम्मा उठाया। वन अधिकारी को उनके पत्र के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हुए, मैंने उन्हें किसी विशेष इलाके में आदमखोर बाघ को ढूंढने या पकड़ने में लगने वाले समय के बारे में समझाने की कोशिश की। मैंने बताया कि मेरे पास उस समय लंबी यात्रा करने का समय नहीं था। मैंने यह भी सुझाव दिया कि वे क्षेत्र के सभी वन स्टेशनों और पुलिस स्टेशनों को

सूचित करें कि वे निवासियों को आदमखोर बाघ से सावधान रहने की चेतावनी दें और केवल दिन के उजाले में और समूहों में मुख्य सड़कों पर ही चलें; साथ ही चरवाहों और ठेकेदारों के कुलियों को अस्थायी रूप से काम बंद करने के लिए कहें। यदि कोई और मानव हत्या की घटना होती है, तो मैंने सुझाव दिया कि वे पुलिस और अपने अधीनस्थों से पीड़ित के परिजनों से कहें कि वे शव को न छुएं और मुझे एक टेलीग्राम भेजें। मैंने यह भी सुझाव दिया कि वन विभाग आधा दर्जन भैंसों की खरीद को मंजूरी देकर और उन्हें उस क्षेत्र में कुछ-कुछ दूरी पर बांधकर आर्थिक सहायता कर सकता है जहां बाघ सक्रिय है। मैंने वादा किया था कि किसी नए शिकार (चाहे वह जानवर हो या इंसान) की खबर मिलते ही मैं आऊंगा, बशर्ते कि शिकार के शव को उसी स्थान पर छोड़ दिया गया हो जहां बाघ ने उसे आखिरी बार छोड़ा था।

इस पत्र का जवाब तीसरे दिन आया। इसमें मेरे न आ पाने पर गहरा खेद व्यक्त किया गया था और यह भी कहा गया था कि इतने बड़े क्षेत्र में रहने वाले सभी ग्रामीणों द्वारा मेरे द्वारा सुझाए गए एहतियाती उपायों का पालन सुनिश्चित करना असंभव होगा। इसके अलावा, रिश्तेदार अपने प्रियजन के शव को जंगल में आदमखोर बाघ को लुभाने के लिए चारा के रूप में छोड़ने पर सहमत नहीं होंगे। वे मांग करेंगे कि शव को तुरंत हटाकर उसका अंतिम संस्कार किया जाए। अंत में, उन्होंने कहा कि नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जिसके तहत वन विभाग बाघ को लुभाने के लिए छह जीवित भैंसें खरीदने का खर्च उठा सके।

बेशक, मुझे इन दोनों सुझावों पर मिलने वाली प्रतिक्रियाओं का पहले से ही अंदाज़ा था। दरअसल, मैंने ये सुझाव सिर्फ़ इसलिए दिए थे ताकि अप्रत्यक्ष रूप से उस समस्या को उजागर कर सकूँ जिसका सामना मुझे बाघ को ढूंढने में करना पड़ रहा था, जो भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा था। उस पहले पत्र में, जिसमें मुझे तुरंत कुम्सी आने के लिए कहा गया था, ऐसा लगा जैसे लेखक ने शायद कुछ पेचीदगियों को नज़रअंदाज़ कर दिया हो, और मैं चाहता था कि वह मेरी बात को भी समझे।

अगले कुछ हफ्तों तक कुछ नहीं हुआ और फिर आदमखोर बाघ ने दोबारा हमला किया, इस बार चोर्डी और तुप्पुर के बीच दो शिकार किए। इस त्रासदी की खबर मुझे रक्षा कार्यालय (डीएफओ) के एक लंबे टेलीग्राम से मिली, जिसमें लिखा था कि बाघ ने चोर्डी के पास करादिबेट्टा बाघ अभ्यारण्य के सामने वाली मुख्य सड़क पर एक लकड़हारे और उसके बेटे पर हमला किया था। उसने आदमी को मार डाला और बेटे

को उठाकर ले गया। क्या मैं तुरंत आ सकता हूँ?

करादिबेट्टा बाघ अभ्यारण्य यहाँ सड़क के उत्तरी किनारे पर स्थित है। यह सागौन और मिश्रित वन का एक विशाल क्षेत्र है, जिसे मैसूर के महाराजा और राज्य वन विभाग के आदेशानुसार एक अभयारण्य के रूप में अलग रखा गया है, जहाँ शिकार की अनुमति नहीं है।

इस राज्य के प्रबुद्ध शासक ने अपने दूरदर्शी और उतने ही प्रबुद्ध मुख्य संरक्षक की सलाह और सहयोग से मैसूर राज्य के विभिन्न जिलों में वन खंडों को वन्यजीव संरक्षण के लिए वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया है। इन स्थानों पर शिकार करना सख्त वर्जित है। मैसूर राज्य की यह प्रगतिशील नीति भारत के अन्य हिस्सों के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे एक दूरदर्शी शासक और उनके सक्षम सहायक ने वन्यजीव संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस तरह की पहल का अनुकरण पूरे उपमहाद्वीप में किया जा सकता है, जहाँ हर प्रकार के वन्यजीवों का तेजी से शिकार हो रहा है।

इस विशेष मामले में शायद आदमखोर बाघ ने नियमों का उल्लंघन किया था, क्योंकि उसने अभयारण्य में शरण ली थी, जो कि सभ्य और सामान्य बाघों का घर माना जाता है। मैंने सोचा कि मैं खुद जाकर देखूंगा, क्योंकि यह महत्वपूर्ण था कि अधिकांश मानव हत्याएं कुम्सी और आनंदपुरम के बीच हुई थीं। करादिबेट्टा अभयारण्य लगभग इस क्षेत्र के केंद्र में स्थित है।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं बैंगलोर से निकल गया, जंगल में दस दिन रहने के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करने के बाद, क्योंकि शहर से दूर रहने की मेरी क्षमता इससे ज़्यादा लंबी नहीं थी। सड़क के बड़े हिस्से पर कंक्रीट बिछाने का काम चल रहा था, इसलिए मैं दोपहर दो बजे तक शिमोगा में रक्षा अधिकारी (डीएफओ) के पास पहुँच पाया, जहाँ मैंने उनसे मिली जानकारी के लिए धन्यवाद देने के लिए थोड़ी देर के लिए रुका।

उन्होंने कृपा करके मुझे और भी सहायता प्रदान की और अपने अधीनस्थों, कुम्सी और चोर्डी में तैनात वन रेंज अधिकारियों को संबोधित दो पत्र सौंपे। एक पत्र में उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे मेरी हर संभव सहायता करें, विशेष रूप से जीवित चारा खरीदने में, जो मैसूर राज्य में कभी-कभी थोड़ा मुश्किल होता है, जबकि दूसरे पत्र में उन्हें आदेश दिया गया था कि मुझे आदमखोर सांप का पीछा करने के लिए

करादिबेट्टा के वन्यजीव अभ्यारण्य में हथियारबंद होकर जाने की अनुमति दी जाए।

मैंने एक बार फिर उन्हें धन्यवाद दिया और फिर कुम्सी के लिए सोलह मील की दूरी तय करने के लिए तेजी से गाड़ी चलाई। वहाँ के रेंज अधिकारी ने अपने वरिष्ठ अधिकारी का पत्र पढ़ने के बाद मुझे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और कहा कि वह मेरे साथ कार में चोर्डी तक चलेंगे ताकि वहाँ तैनात अपने साथी अधिकारी, रेंजर से मिल सकें।

हमने अगले कुछ मील का सफर बहुत कम समय में तय कर लिया। चोर्डी में तैनात रेंज अधिकारी मंगलौर के ईसाई थे; यानी वे पश्चिमी तट पर स्थित मंगलौर शहर से आए थे, जो भारत में ईसाई धर्म के सबसे पुराने केंद्रों में से एक है। वे मेरी मदद करने के लिए बहुत उत्सुक थे और उन्होंने तुरंत अपने अधीनस्थों को बुलाया और उनसे घटना के प्रत्यक्षदर्शी अन्य लकड़हारों को बुलाने के लिए कहा ताकि मैं उनसे बात कर सकूँ।

कुछ मिनटों बाद ये लोग वहाँ पहुँचे और उन्होंने निम्नलिखित कहानी सुनाई।

शिमोगा के एक ठेकेदार ने हाल ही में तुप्पुर से एक मील दूर जंगल के एक निश्चित हिस्से में लकड़ी काटने का अधिकार खरीदा था, जिसका इस्तेमाल लकड़ी जलाने के लिए किया जाना था। उसने उन दोनों के साथ-साथ मारे गए लकड़हारे और उसके सत्रह वर्षीय बेटे की सेवाएं भी ली थीं। उन सभी के घर शिमोगा में थे, लेकिन उन्होंने उस क्षेत्र में लकड़ी काटने का काम जारी रहने तक अस्थायी रूप से चोर्डी गांव में रहने का फैसला किया था।

जिस दिन यह हत्या हुई थी—जो अब से दो दिन पहले की बात है—उस दिन वे सुबह जल्दी उठ गए थे और उस जगह तक तीन मील पैदल चलकर जाने लगे थे जहाँ पेड़ काटे जा रहे थे। वे करादिबेट्टा ब्लॉक के पास से गुजर रहे थे, जो उनके दाहिनी ओर था, तभी बेटे ने अपने पिता से चबाने के लिए एक पान का पत्ता माँगा।

जो लोग नहीं जानते कि 'पान' का पत्ता क्या होता है, उनके लिए मैं अपनी कहानी को यहाँ एक-दो मिनट के लिए रोकना चाहूँगा। यह पान की बेल का लंबा, दिल के आकार का पत्ता होता है और दक्षिण भारत में सभी वर्गों के लोगों, विशेष रूप से मजदूरों के बीच बहुत लोकप्रिय है। इसे 'बीड़ा' कहा जाता है। फैले हुए पत्ते पर थोड़ा सा 'चूना' या सफेद चूना, तीन-चार छोटे सुपारी के टुकड़े, शायद नारियल के कुछ टुकड़े और थोड़ी चीनी रखी जाती है। फिर पान के पत्ते को इन सामग्रियों के चारों

ओर लपेटकर अच्छी तरह चबाया जाता है। सफेद चूना और सुपारी के कारण मुंह में बहुत लार बनती है और उसका रंग गहरा लाल हो जाता है। चबाते हुए चलते समय ये लोग थूकते हैं, जिससे दीवारों, फुटपाथों और हर जगह खून जैसे लाल निशान बन जाते हैं। भारत में नवागंतुक यूरोपीय लोग, जो हर जगह इन लक्षणों के संकेत देखते हैं, आमतौर पर देश में उन्नत तपेदिक के मामलों की बड़ी संख्या को देखकर स्तब्ध रह जाते हैं।

अब कहानी पर लौटते हैं। पिता अपने बेटे को पत्ता देने के लिए रुका। ऐसा करने के लिए, उसे पहले उसे अपनी धोती के कोने से निकालना पड़ा जहाँ वह गाँठ लगाकर रखा हुआ था। इस बीच, बाकी दो आदमी आगे बढ़ चुके थे। उन्होंने एक दहाड़ सुनी और पीछे मुड़कर देखा तो बेटा सड़क पर पड़ा था और एक बाघ उसके ऊपर था, जबकि हैरान पिता वहीं खड़ा था, उसका हाथ अभी भी अपने बेटे को पत्ता देने के लिए बढ़ा हुआ था।

फिर उन्होंने पिता को एक अद्भुत कला का प्रदर्शन करते देखा—जो उनके जीवन का अंतिम प्रदर्शन और सर्वोच्च बलिदान था। बूढ़ा व्यक्ति आगे बढ़ा, अपने हाथ हिलाते हुए, बाघ को डराने के लिए उस पर चिल्लाया। इसके बाद जो हुआ वह बहुत तेज़ी से हुआ।

बाघ ने एक पल के लिए लड़के को छोड़ा और झपट्टा मारकर पिता पर झपटा, उस पर कूद पड़ा और भयानक ढंग से उसके गले और छाती को काट डाला। पिता के गहरे घावों से फव्वारे की तरह खून बहने लगा। फिर उसे सड़क पर पड़ा छोड़कर बाघ वापस बेटे पर झपटा, जो स्तब्ध होकर अपने पिता को मरते हुए देख रहा था।

उस क्षण जादू टूट गया और दोनों आदमी पीछे मुड़े और जितनी तेजी से हो सके तुप्पुर की ओर भागे, और उन्होंने एक बार भी पीछे मुड़कर यह देखने की कोशिश नहीं की कि उस लड़के या उसके पिता का उस आखिरी दृश्य के बाद क्या हुआ था।

जैसा कि मैंने बताया, तुप्पुर एक छोटा सा गाँव है। इसके अलावा, वहाँ किसी के पास बंदूक नहीं थी। इसलिए एक दर्जन लोग पुलिस को सूचना देने और बंदूकधारी किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए आनंदपुरम की ओर चल पड़े।

संयोगवश रास्ते में उनकी मुलाकात एक लॉरी से हुई जो चोर्डी की ओर जा रही थी ताकि उस नाले से रेत इकट्ठा कर सके जहां से वह पुल के नीचे से गुजरती है, ठीक उसी जगह पर जहां साइकिल सवार ने कुछ समय पहले एक बाघ देखा था।

उन आदमियों ने लॉरी रोक दी और ड्राइवर से कहा कि वह वापस मुड़े और उन्हें जल्दी से आनंदपुरम ले जाए ताकि वे घटना की रिपोर्ट कर सकें। लेकिन ड्राइवर बेहद साहसी था, या कम से कम ऐसा ही लगता था। अगर वे सब उसकी लॉरी में बैठ जाएँ, तो वह उन्हें उस जगह ले जाएगा जहाँ यह 'परीकथा'—जैसा कि उसने खुलेआम बताया—घटना हुई थी। फिर वे सब देखेंगे कि क्या होता है। 'बाघ का क्या होगा?' किसी ने पूछा। 'तुम्हारे पास खुली ट्रक है। मान लो कि वह हम पर हमला कर दे और हममें से कुछ को मार डाले?' 'भाई,' ड्राइवर ने दृढ़ता से कहा, 'मैं यहाँ हूँ; इसलिए तुम्हें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है। क्या तुम्हें लगता है कि मैं चुपचाप बैठा रहूँगा, बाघ के आने का इंतज़ार करूँगा? मैं पलक झपकते ही अपनी ट्रक उस जानवर के ऊपर चढ़ा दूँगा।'

ड्राइवर के साहसी शब्दों से प्रेरित होकर बारह लोग लॉरी पर चढ़ गए। देखते ही देखते वे घटनास्थल पर पहुँच गए। मुझे बताया गया कि जब ड्राइवर ने पिता को सड़क पर अपने ही खून के बड़े तालाब में पड़ा देखा तो वह सचमुच हैरान रह गया—उस समय तक उसकी मौत हो चुकी थी। उसे लगा था कि पूरी कहानी मनगढ़ंत है।

बेटे का कोई अता-पता नहीं था।

इस समय तक चालक का आत्मविश्वास काफी हद तक टूट चुका था। तेरहों लोग कुछ देर रुके और बुजुर्ग लकड़हारे के शव को लॉरी में रख दिया। फिर वे पूरी रफ्तार से चोर्डी की ओर चल पड़े। वहां उन्होंने रेंज अधिकारी को साथ लिया और कुम्सी के लिए रवाना हो गए, जहां कुछ देर बाद कुम्सी रेंज अधिकारी और पुलिस सब-इंस्पेक्टर भी उनके साथ शामिल हो गए। पूरी टीम लॉरी में बैठकर शिमोगा गई, जहां पुलिस और वन विभाग को विस्तृत रिपोर्ट सौंपी गई। औपचारिकताओं के लिए लकड़हारे का संक्षिप्त पोस्टमार्टम किया गया और उसी रात देर से उसका शव उसके परिजनों को सौंप दिया गया।

अगले दिन सशस्त्र पुलिस का एक दल उसी ट्रक में बेटे की तलाश में लौटा। बताया गया कि खून के निशान दिखाई दिए और एक घसीटने का निशान भी, जहाँ आदमखोर अपने शिकार को झाड़ियों से होते हुए वन्यजीव अभ्यारण्य में ले गया था। इसके बाद, जंगल में काम करने में सक्षम कोई भी व्यक्ति निशानों का पीछा करने में सक्षम नहीं था, इसलिए पुलिस दल उसी शाम शिमोगा लौट आया और बताया कि वे बेटे का शव बरामद करने में असफल रहे हैं।

और जहाँ तक मैं देख सका, बाघ के नवीनतम कारनामे की यही पूरी कहानी थी, क्योंकि मैं उन दो लकड़हारों से विवरण जुटाने में सक्षम था जो पूरी घटना और उसके बाद की घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे।

चोर्डी रेंज के अधिकारी ने मुझे कॉफी पिलाई, जिसके बाद वह और उनका सहयोगी, जो कुम्सी से मेरे साथ आया था, दो लकड़हारों और मेरे साथ करादिबेट्टा टाइगर अभयारण्य के सामने सड़क किनारे हुए हमले के स्थल की ओर चल पड़े।

मैं पहले भी कई बार इस सड़क से गुज़र चुका था, और यह दूसरी बार था जब जिस बाघ का मैं पीछा कर रहा था, उसने इस वन्यजीव अभ्यारण्य में शरण ली थी। पहली बार ऐसा तब हुआ था जब गौजा गाँव का एक घायल जानवर अभ्यारण्य में आ गया था, और मैंने उसे अभ्यारण्य की सीमा में प्रवेश करने से ठीक पहले मार गिराया था, जिसकी कहानी मैंने कहीं और बताई है।*

क्षेत्र अधिकारी पहले ही घटनास्थल का दौरा कर चुके थे और उन्होंने ठीक-ठीक उस जगह की पहचान कर ली थी जहाँ बाघ ने पिता-पुत्र पर हमला किया था। यातायात काफी अधिक था और बीच के तीन दिनों में सड़क पर आने-जाने वाली कई बसों, ट्रकों, निजी कारों और बैलगाड़ियों के पहियों के नीचे दबकर खून के सभी निशान मिट गए थे।

अभयारण्य सड़क से कुछ ही गज की दूरी पर सागौन के वृक्षारोपण के रूप में शुरू होता है। उस समय वृक्षों की ऊँचाई लगभग एक समान थी, लगभग बीस फीट, जिन्हें मैसूर वन विभाग द्वारा लगभग दस से पंद्रह वर्ष पहले सीधी पंक्तियों में लगाया गया था। वृक्षारोपण अभयारण्य में लगभग दो फर्लांग तक घना फैला हुआ था, जिसके बाद यह अचानक प्राकृतिक जंगल में विलीन हो जाता था।

सागौन के पेड़ों के नीचे घायल जानवर के खून के निशान ढूंढना लगभग नामुमकिन है। ज़मीन पर गिरे और सूखे पत्ते बिछे हैं, जिन पर कोई निशान नहीं बनता। इस मामले में, आदमखोर जानवर जिस लड़के को ले गया था, उसका खून बहुत कम बहा था। हालांकि लकड़हारों ने वह जगह बता दी थी जहां जानवर और उसका शिकार गायब हुए थे, लेकिन हमने काफी खोजबीन के बाद भी सिर्फ तीन जगहें ढूंढीं जहां सागौन के पत्तों पर खून की बूंदें गिरी थीं। आगे खोजबीन में समय बर्बाद करना उचित नहीं था।

मुझे पता था कि अभयारण्य उत्तर की ओर एक धारा और बैलगाड़ी के रास्ते

तक फैला हुआ है, जो पश्चिम में गौजा गाँव को पूर्व में अमलीगोला नामक दूसरे गाँव से जोड़ता है। बैलगाड़ी का रास्ता और धारा अभयारण्य की उत्तरी सीमाएँ बनाते हैं, हालाँकि जंगल कई मील तक फैला हुआ था। एक समझदारी भरा उपाय यह प्रतीत हुआ कि अभयारण्य की चारों सीमाओं पर चार जीवित शिकार बाँध दिए जाएँ, और एक शिकार केंद्र में बाँध दिया जाए, क्योंकि मुझे इस पवित्र क्षेत्र में इस बाघ का शिकार करने की विशेष अनुमति प्राप्त थी, यदि आवश्यकता पड़ी तो।

मैंने दोनों रेंज अधिकारियों (आर.ओ.) से कहा कि मुझे इन पाँच चारे की व्यवस्था करने में उनके सहयोग की आवश्यकता होगी, क्योंकि इस क्षेत्र में पिछले अनुभव के आधार पर मुझे संदेह था कि पाँच जानवर भी मिल पाएँगे या नहीं, क्योंकि लोग मवेशियों की बलि देने का विरोध करते हैं और सहयोग नहीं करते। उन्होंने मुझे चिंता न करने को कहा और बताया कि वे अगले दिन सुबह नौ बजे तक चारा मेरे पास भेज देंगे।

कुम्सी में एक वन लॉज है—वही लॉज जहाँ बाघ के हमले में घायल हुए रेवरेंड जर्विस का हाथ काटने के लिए आपातकालीन ऑपरेशन किया गया था। मैंने इसी बंगले में डेरा डालने का फैसला किया और कुम्सी के पशु चिकित्सक से अनुरोध किया कि वे मुझे चारा दिखा दें, इससे पहले कि वे उसे चोर्डी ले जाकर अन्य चारे में मिला दें, जिसे चोर्डी में उनके समकक्ष ने लाने का जिम्मा लिया था। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं अपने द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले जीवित चारे के बारे में काफी सतर्क रहता हूँ। बहुत बीमार या बूढ़े मवेशी, जो मौत के कगार पर होते हैं, अक्सर साहब को चारे के रूप में सौंप दिए जाते हैं। फिर वे आश्चर्य करते हैं कि बाघ उन्हें आसानी से क्यों नहीं मार देता। लेकिन बाघ एक शिकारी और सज्जन होता है, साहब की तरह, वह सियार नहीं होता जो हड्डियों के एक बीमार ढेर से संतुष्ट हो जाए।

जब मैं चारे के बारे में बात कर रहा था, तब मेरे साथी बहुत बेचैन हो रहे थे, क्योंकि शाम के छह बज चुके थे और रात का अंधेरा छाने लगा था। हालाँकि, मैं ज़्यादा घबराया हुआ नहीं था, क्योंकि मुझे पता था कि जब तक हम पाँचों साथ रहेंगे, हम सुरक्षित रहेंगे। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि हम घने सागौन के बागान से होते हुए एक साथ मिलकर आगे बढ़े और सड़क पर खड़ी कार तक पहुँच गए। चोर्डी अधिकारी और दो लकड़हारों को अधिकारी के घर छोड़ने में ज़्यादा समय नहीं लगा और हम पंद्रह मिनट से भी कम समय में कुम्सी वापस आ गए।

उस रात मैं वन लॉज में चैन से सोया और अगली सुबह जल्दी ही स्थानीय वन अधिकारी के क्वार्टर में यह देखने गया कि चारा खरीदने का काम कैसा चल रहा है। पिछली शाम के उनके आत्मविश्वास के बावजूद, मुझे लगा कि स्थानीय वन अधिकारी के रूप में अपने प्रभाव के बावजूद, उन्होंने अपने सामने आने वाली कठिनाइयों को कम करके आंका था। अच्छा हुआ कि मैं वहाँ गया, क्योंकि उन्होंने अभी तक काम शुरू नहीं किया था।

संक्षेप में कहें तो, सुबह के 10 बज चुके थे जब उसने तीन जानवरों को इकट्ठा किया। उनमें से एक भैंस का बच्चा था। बाकी दो दुबले-पतले बूढ़े बैल थे। मुझे बाद वाले बिल्कुल पसंद नहीं थे, लेकिन आर.ओ. ने कहा कि उसके पास इससे बेहतर कोई विकल्प नहीं था। इसके अलावा, उन पर मेरा काफी पैसा खर्च हो गया था।

हमने तीन आदमियों को चार मील लंबे सड़क मार्ग से चोर्डी तक उन्हें ले जाने का काम सौंपा और मैं अपनी कार में ग्यारह बजे उस जगह के लिए रवाना हुआ, और तीनों जानवरों से ठीक पहले अपने गंतव्य पर पहुँच गया।

चोर्डी आर.ओ. ने एक अधपका बैल मंगवाया था—काफी अच्छा जानवर, भूरे रंग का—और कहा कि कोटे में दूसरा चारा, जिसे उन्हें पूरा करना था, उसी सुबह मंगवा लिया गया था और जल्द ही आ रहा है। उसे आने में एक घंटा लग गया, और साढ़े बारह बज गए जब तक हमारे पाँचों जानवर एक साथ आए। आधा दिन पहले ही बर्बाद हो चुका था।

नतीजतन, उस दिन हम उनमें से केवल तीन को ही बांध पाए। सबसे अच्छा, अधेड़ उम्र का भूरा बैल, मैंने अभयारण्य के लगभग बीच में बांधा। भैंस के बच्चे को सड़क से कुछ गज अंदर दक्षिण की ओर बांधा गया, जहाँ हमला हुआ था। अभयारण्य के पूर्वी किनारे पर, जो संयोगवश चोर्डी से लगभग पाँच मील उत्तर में था, चारा के रूप में रखा गया बैल एक बूढ़ा सफेद बैल था।

जब तक हमारा काम खत्म हुआ, तब तक सूर्यास्त हो चुका था, और मैंने बचे हुए दो जानवरों को चोर्डी में छोड़ दिया, यह कहते हुए कि मैं अगली सुबह बहुत जल्दी वापस आऊंगा ताकि उन्हें बांधने के लिए जगह चुन सकूं, जो कि आपको याद होगा कि अभयारण्य द्वारा बनाए गए लगभग आयताकार के उत्तरी और पश्चिमी किनारों पर शेष दो हिस्से होने थे।

अगले दिन भोर से पहले मैं अपने दोस्त कुम्सी रोड ऑफिसर के साथ चोर्डी

वापस जा रहा था, जो पहले से ही उठकर मेरा इंतजार कर रहा था। हमारी मंजिल से लगभग आधे रास्ते में एक विशाल सांभर हिरण सड़क पार कर गया और उसने कहा कि यह शुभ संकेत है।

चोर्डी में, वहाँ के वन अधिकारी ने कहा कि वह मेरे साथ शेष दो बछड़ों को बाँधने में मदद करेगा, और उसने अपने अधीनस्थ, एक वनपाल को निर्देश दिया कि वह दो वन रक्षकों और उन लोगों में से एक को साथ ले जाए जो पिछले दिन हमारे साथ थे और इसलिए जानते थे कि वे कहाँ स्थित हैं, ताकि अभयारण्य के पूर्व और दक्षिण में स्थित बछड़े जीवित हैं या नहीं, यह देखा जा सके। हम स्वयं अभयारण्य के केंद्र में बँधे तीसरे बछड़े को देखेंगे, क्योंकि हम पश्चिमी और उत्तरी सीमाओं की ओर मुड़ने से पहले अभयारण्य से होकर एक शॉर्टकट लेंगे। हम सभी एक साथ निकले, और डेढ़ घंटे से अधिक समय बाद हम उस बछड़े के पास पहुँचे जिसे मैंने अभयारण्य के मध्य के पास बाँधा था। वह जीवित और स्वस्थ था।

इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि हर जीवित शिकार को बांधते समय, उसे प्रतिदिन खिलाने-पिलाने का भी ध्यान रखना पड़ता है। खिलाना तो आसान है, क्योंकि चौबीसों घंटे में उसके लिए भूसे का एक गट्ठा भेजा जाता है, लेकिन पानी पिलाना अक्सर एक बड़ी समस्या बन जाता है। बेशक, एक बर्तन या मिट्टी के तेल का डिब्बा उपलब्ध कराया जा सकता है और उसे प्रतिदिन पानी से भरा जा सकता है, लेकिन इस विधि में भी कुछ कमियां हैं। जानवर अक्सर बर्तन को गिरा देता है या अगर वह बर्तन हो तो उसे तोड़ देता है, और मिट्टी के तेल का डिब्बा पास में होने से बाघ अक्सर हमला करने से हिचकिचाता है। इसलिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि जो लोग प्रतिदिन शिकार के पास जाते हैं, वे उसे खोलकर किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाएं, वहां उसे पानी पिलाएं और फिर वापस ले आएं। हालांकि, ऐसा तालाब या नदी आसानी से उपलब्ध नहीं होती, और अक्सर जानवर को एक मील या उससे अधिक दूर तक उपयुक्त स्थान पर ले जाना पड़ता है। गाँव वाले स्वभाव से आलसी और उदासीन होते हैं, और वे आमतौर पर इतनी लंबी पैदल यात्रा को अनावश्यक समझते हैं। उनका तर्क होता है कि जानवर को तो वैसे भी मारने के लिए ही बांधा गया है। तो उसे पानी पिलाने की चिंता क्यों करें? भारत में जीवित शिकारियों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। यदि वे प्रतिदिन शिकारियों के आने-जाने पर निगरानी नहीं रखते हैं, या कम से कम इस काम के लिए भरोसेमंद लोगों को

नियुक्त नहीं करते हैं, और यदि कोई बाघ या तेंदुआ शिकार नहीं करता है, तो लगभग निश्चित है कि बेचारा शिकार एक सप्ताह तक प्यासा और प्यासा ही रहेगा, जब तक कि उसे बांधने की जगह के पास पानी न हो, या किसी बर्तन में पानी उपलब्ध न कराया गया हो।

इस मामले में, आधा मील दूर एक छोटी नदी थी। हम जानवर को वहां ले गए, उसे जी भर पानी पीने दिया और फिर उसे वापस ले आए।

आप सोच रहे होंगे कि पानी पिलाने की समस्या से बचने के लिए चारा किसी नदी या तालाब के किनारे बांधना ज़्यादा आसान होगा। अक्सर ऐसा ही किया जाता है, क्योंकि बाघ खुद भी पानी पीने के लिए ऐसी जगहों पर आते हैं। लेकिन कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी ज़रूरी हैं। नाले, जानवरों के रास्ते, आग बुझाने के रास्ते और कुछ पैदल रास्ते, बैलगाड़ी के रास्ते और यहाँ तक कि सड़कों के कुछ हिस्से, जहाँ बाघ अक्सर चलते हैं, चारा बांधने के लिए उतने ही अच्छे स्थान हैं, और साथ ही वहाँ बाघों के पदचिह्न नियमित रूप से मिलने का अतिरिक्त लाभ भी हो सकता है। जिन जगहों पर ये रास्ते आपस में मिलते हैं, वे और भी बेहतर हैं। बाघ हमेशा नदियों के किनारे नहीं टहलते, खासकर जहाँ नदियाँ बहुत हों। हमने यह चारा एक ऐसे रास्ते पर बांधा था जहाँ बाघ अक्सर चलते हैं, जैसा कि चोर्डी रेंज अधिकारी ने मुझे पिछली शाम आश्वासन दिया था, जब हम एक उपयुक्त जगह की तलाश कर रहे थे।

हमने अपने साथ लाए दो जानवरों को अभयारण्य की पश्चिमी और उत्तरी सीमाओं पर उपयुक्त स्थानों पर पेड़ों की छाया में सुरक्षित कर दिया। लेकिन यह काम पूरा होने में दोपहर हो चुकी थी।

बेशक, आपको एक पल के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि यह सब करके हमने बाघ को अभयारण्य के भीतर पूरी तरह से घेर लिया था। क्योंकि अभयारण्य मीलों तक फैला हुआ था और इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं था कि वह जहाँ भी निकले, उसे मेरे किसी चारे का सामना करना ही पड़ेगा। मैंने तो बस उस समय की परिस्थितियों के अनुसार जो संभव था वही किया था, बाकी सब भाग्य या किस्मत पर छोड़ दिया था, आप जो भी नाम देना चाहें। और उस दिन भाग्य ने बड़ा ही बड़ा खेल खेला।

दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे और हम वापस लौट रहे थे, चोर्डी के पास ही थे, तभी उस छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में अपने खेतों में हल चला रहे कुछ लोगों

ने हमें बताया कि हमने सुबह जिन वन रक्षकों को भेजा था, उन्हें पता चला है कि जिस भैंस के बच्चे को आदमखोर बाघ ने दो आदमियों को मारा था, उसके पास ही बांधकर रखा गया था, जिसे पिछली रात एक बाघ ने मार डाला था। उन्होंने बताया कि वन रक्षकों ने हमें सूचना नहीं दी क्योंकि उन्हें ठीक से पता नहीं था कि हम किस रास्ते गए हैं या कैसे लौटेंगे। इसलिए उन्होंने सभी राहगीरों से कहा था कि अगर वे रास्ते में हमसे मिलें तो हमें सूचित करें।

यह खबर सुनकर हम जल्दी से चोर्डी लौट आए, जहाँ दोनों रेंज अधिकारियों ने हमें घटना की सूचना न देने के लिए गार्डों को खूब खरी-खोटी सुनाई। उनकी गलती तो थी ही नहीं, बेचारे, क्योंकि हम खुद दोपहर भर चलते रहे थे, और अगर वे हमें पकड़ने की कोशिश करते तो शायद वे नाकाम हो जाते और और भी ज्यादा देरी हो जाती। ऐसी स्थिति में, मुझे लगा कि चोर्डी में डटे रहकर और गाँव से गुजरने वाले सभी लोगों के ज़रिए सूचना भेजकर उन्होंने सबसे बुद्धिमानी का काम किया था। खैर, अगर हम जल्दी करते तो मचान लगाने में अभी देर नहीं हुई थी, और यह खबर सुनकर कि उन्होंने गिद्धों से बचाने के लिए शिकार को टहनियों से ढक दिया था, मैंने उनकी तरफ से हस्तक्षेप किया।

दोपहर 3:30 बजे तक मेरी स्टडबेकर कार दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर खड़ी थी, ठीक उस जगह के सामने जहाँ से हमें सागौन के बागान में प्रवेश करना था और भैंस के बछड़े को बाँधने के लिए थोड़ी दूर पैदल चलना था। तीन मिनट में हमने कार के पीछे लगे सामान रखने वाले डिब्बे से अपनी तह करने वाली चारपाई खोल ली। मैंने यह चारपाई हाल ही में बनाई थी और यह पुरानी वाली से बेहतर थी, क्योंकि इसका ढाँचा सामान्य लंबाई से लगभग आधा ही था। इसलिए इसे सामान रखने वाले डिब्बे पर ले जाना आसान था और यह कार की चौड़ाई को दोनों सिरों से पार नहीं करती थी। आराम और सादे रंग के लिए, मैं चौड़ी खाकी नवार टेप पर बैठा था, जिसकी पट्टियाँ चटाई की तरह आपस में बुनी हुई थीं। टेप के सिरे आयताकार ढाँचे को बनाने वाले बांसों के चारों ओर स्थायी रूप से लूप किए हुए थे। चारों कोनों पर लगे चार पैर लगभग एक फुट लंबे थे, जो आयताकार ढाँचे से ऊपर और नीचे लगभग छह इंच तक फैले हुए थे। इससे मचान को पेड़ से बाँधने के लिए पर्याप्त सहारा मिल जाता था। पूरी संरचना सरल, हल्की, बहुत आसानी से ले जाने योग्य और बेहद आरामदायक थी; सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह जरा सी भी हलचल

पर चरमराती नहीं थी, जैसा कि पेड़ों से काटी गई शाखाओं से बने किसी भी सामान्य मचान में होता है।

हालांकि यहाँ सागौन के पेड़ों की औसत ऊँचाई लगभग बीस फीट थी, लेकिन अपेक्षाकृत कम उम्र के होने के कारण कुछ पेड़ काफी पुराने और इसलिए ऊँचे भी थे; मैंने भैंस को इनमें से एक पेड़ के नीचे बाँध दिया था, ताकि भविष्य में मचान लगाने की ज़रूरत पड़ने पर काम आ सके। इस स्थिति में कोई और विकल्प नहीं था, क्योंकि उस बागान में सागौन के अलावा कोई और पेड़ नहीं उगते थे, और सागौन के पेड़ों की शाखाएँ काफी ऊँची होती हैं, इसलिए मुझे सामान्य से अधिक ऊँचाई पर बैठना पड़ा।

उस पेड़ पर चढ़ने में मुझे बहुत परेशानी हुई, क्योंकि पहले बारह फीट तक कोई शाखा नहीं थी, और मैं सीधे डंडों पर चढ़ने में कभी माहिर नहीं था। फिर भी, मैंने एक वन रक्षक के कंधों पर सहारा लिया, और सभी ने खुशी-खुशी मेरे पैरों को थोड़ा ऊपर धकेलने में मदद की, जब तक कि मैं पहली शाखा को पकड़कर खुद को ऊपर खींच न लूँ। सागौन के पत्तों के बड़े आकार के कारण, मचान को पूरी तरह से छिपाना आसान था। इसके अलावा, चूंकि वहाँ केवल वही पत्ते उग रहे थे, इसलिए हमने जो छलावरण की व्यवस्था की थी, वह बहुत कारगर साबित हुई, क्योंकि मचान दिखाई नहीं दे रहा था और आसपास के वातावरण में स्वाभाविक रूप से घुलमिल गया था। पेड़ की वह शाखा जहाँ हमने चारपाई रखी थी, ज़मीन से बीस फीट से अधिक ऊपर थी।

बछड़े की गर्दन टूट गई थी और जानवर का आधा हिस्सा खा लिया गया था, लेकिन इतना बचा हुआ था कि उसके हत्यारे के एक और दौरे को जायज ठहराया जा सके।

दोनों रेंज अधिकारियों में से कोई भी मोटरगाड़ी चलाना नहीं जानता था, न ही दोनों वन रक्षक। लेकिन चूंकि दो लकड़हारे भी हमारे साथ आए थे, इसलिए मैंने उन छहों को मेरी गाड़ी को कम से कम आधा मील या उससे अधिक दूर धकेलने के लिए कहा ताकि अगर बाघ आस-पास कहीं भी सड़क पार करे तो उसे डर न लगे। दरअसल, मुझे यह बात तब तक याद नहीं आई जब तक हम गाड़ी से चारपाई नहीं खोल रहे थे। वैसे भी, सड़क लगभग समतल थी, और उन छह आदमियों को मेरी 'स्टूड' गाड़ी को खींचने में ज्यादा परेशानी नहीं होनी चाहिए थी।

शाम के ठीक पाँच बज रहे थे जब उन्होंने मुझे सागौन के पेड़ पर छोड़ा, और मैंने सोचा कि लगभग बीस मिनट में वे गाड़ी हटा देंगे और बाघ के लिए सड़क पार करने

का रास्ता साफ हो जाएगा, बशर्ते वह उस दिशा से आए। शायद मैं ज़रूरत से ज़्यादा आशावादी था, और वह बिल्कुल भी नहीं आया।

खैर, वह आ तो गया; लेकिन लगभग सवा आठ बजे, जब पूरी तरह अंधेरा हो चुका था। उसने मुझे पहले से ही काफी समय दे दिया था, या यूँ कहें कि चित्तीदार हिरणों के झुंड ने अपनी तीखी आवाजों से और एक भौंकने वाले हिरण ने अपनी कर्कश, गले से निकलने वाली 'खर-र-र खर-र-र' की आवाज से, उसके आने की सूचना दे दी थी। उन्होंने उसकी यात्रा के आखिरी एक मील तक जंगल के सभी जीवों को उसके गुजरने की सूचना दे दी थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बाघ कम बोलने वाले जानवर होते हैं। जंगल के साधारण निवासियों द्वारा उन पर थोपी गई लोकप्रियता—या कहें अलोकप्रियता?—वास्तव में शर्मनाक होती होगी। इस बार, मुझे यकीन है कि बाघ को शर्मिंदगी से कहीं ज्यादा महसूस हुआ होगा।

खैर, वह बिना किसी अनावश्यक सावधानी के आया, और उसके शिकार के पास खड़े होने से बहुत पहले ही मैं उसके भारी कदमों की आवाज सुन सकता था जो सूखे गिरे हुए सागौन के पत्तों को कुचल रही थी।

मैंने टॉर्च की रोशनी डाली और उसने सीधे मेरी ओर देखा। टॉर्च की रोशनी में भी मुझे यह समझने में लगभग तीन सेकंड लगे कि उसके सिर पर कोई खास बाल नहीं थे। लेकिन मैं जोखिम नहीं ले सकता था और गोली उसके दिल में लगी और वह गिर पड़ा।

मैंने पंद्रह मिनट तक इंतज़ार किया, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह मर चुका है। वह ज़रा भी नहीं हिला और मुझे पूरा यकीन हो गया। इसलिए मैं नीचे उतरा, उस भयानक पेड़ से आखिरी सात-आठ फीट की छलांग लगानी पड़ी। शायद मेरा वज़न ज़रूरत से ज़्यादा है, और ज़मीन पर गिरने का जो ज़ोरदार झटका लगा, उससे मुझे पेड़ों से कूदने का अभ्यास बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। मैं मरे हुए बाघ के पास पहुँचा और उसे ध्यान से देखा। फिर मैंने मन ही मन अपशब्द कहे। जैसा कि मुझे गोली चलाते समय भी पता था, यह आदमखोर बाघ नहीं था; क्योंकि मरे हुए जानवर की गर्दन पर एक भी बाल नहीं था। एक बार फिर अपराधी बच निकला था, और एक बार फिर एक निर्दोष बाघ को सज़ा मिली थी। इसके अलावा, मुझे शिमोगा के रक्षा अधिकारी को कुछ स्पष्टीकरण देना होगा। उन्होंने मुझे बाघ अभयारण्य में आदमखोर बाघ को गोली मारने की विशेष अनुमति दी थी—लेकिन किसी निर्दोष जानवर को

नहीं।

खैर, यह तो बहुत ही बुरा हुआ।

मैं वापस सड़क पर आ गया और चोर्डी की ओर चलने लगा, इस उम्मीद में कि मेरी कार वहीं मिल जाएगी जहाँ उन लोगों ने उसे धकेल कर छोड़ दिया था। लेकिन सड़क पर कोई कार नहीं थी।

मैंने सोचा, बेचारे। उन्होंने मुझे गलत समझा था और उसे लगभग दो मील दूर चोर्डी तक धकेल दिया था।

मैं चोर्डी और रेंजर के क्वार्टर में आया। दोनों अधिकारी वहाँ मौजूद थे। मैंने घोषणा की कि मैंने एक बाघ को गोली मारी है, लेकिन मुझे लगभग यकीन है कि यह गलत बाघ था, क्योंकि इसकी गर्दन पर बाल नहीं थे।

उन्होंने तर्क दिया कि शायद यह वही आदमखोर सांप हो। हो सकता है कि पिछले दो सालों में उसके बाल झड़ गए हों। या शायद शुरू से ही उसके बाल न रहे हों और यह वर्णन महज़ एक मिथक हो। मैंने माना कि यह बात सही है; लेकिन मेरी उम्मीदें नहीं बढ़ीं।

फिर मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने मेरी कार कहाँ छोड़ी थी। कार? उन्होंने समझाया, "जी साहब, आपने उसे चोर्डी से दूर, सड़क की ओर मुंह करके छोड़ दिया था। हमें उसे चोर्डी की ओर मोड़ना नहीं आता था, जबकि आपने हमें साफ-साफ निर्देश दिया था कि उसे उस जगह से कम से कम आधा मील दूर धकेलें।" हमने वैसा ही किया, जी साहब, लेकिन उल्टी दिशा में।

खैर, जिंदगी ऐसी ही होती है, मैंने धीरे से कहा। इसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। आज रात भी वैसी ही थी जिसमें उतार-चढ़ाव हावी थे—या शायद उतार-चढ़ाव? मुझे इसका जवाब नहीं मिल पा रहा था।

कुछ और कॉफ़ी पीने के बाद, बाँस, लालटेन और रस्सियों के साथ एक दल इकट्ठा हुआ और हम वापस चल दिए। जब लोग बाघ को सड़क तक लाने के लिए उसे बाँध रहे थे, मैं विपरीत दिशा में चला गया और ठीक चार फर्लांग दूर अपनी कार पाई।

हम एक घंटे से कुछ अधिक समय में कुम्सी वापस आ गए।

अगली सुबह मैंने बाघ की खाल उतारी, जबकि दोनों रेंज अधिकारियों ने शिमोगा स्थित रक्षा अधिकारी को अपनी आधिकारिक रिपोर्ट लिखी। उन्होंने लिखा, "मैंने बिना गर्दन के सींग वाले बाघ का शिकार किया है। यह आदमखोर बाघ नहीं हो

सकता। मेरे पास मौजूद विशेष परमिट के अनुसार मुझे करादिबेट्टा अभयारण्य की सीमा के भीतर केवल आदमखोर बाघ का ही शिकार करना था, किसी और का नहीं।" उन्होंने अपने संयुक्त बयान का समापन यह कहते हुए किया कि 'आप आगे जो भी आवश्यक कार्रवाई उचित समझें, वह करें।'

फिर उन्होंने मुझसे इस तरह की रिपोर्ट लिखने के लिए माफी मांगी।

मैंने अपनी छुट्टी खत्म होने तक इंतजार किया, लेकिन बाकी किसी भी जानवर को नहीं मारा गया। शिमोगा के रक्षा अधिकारी ने मुझे आधिकारिक तौर पर लिखा कि उनके रेंजरों ने बताया है कि मैंने अभयारण्य के अंदर एक बाघ को गोली मारी थी, जो आदमखोर नहीं था, जबकि मुझे दिया गया परमिट आदमखोर बाघ के लिए था, किसी और जानवर के लिए नहीं। क्या मैं इसका स्पष्टीकरण दे सकता हूँ?

मैं पूरी जिंदगी भारत में ही रहा हूँ। इसलिए सरकारी कामकाज में होने वाली लालफीताशाही से मैं भली-भांति परिचित था। लेकिन रक्षा अधिकारी का पत्र पाकर मुझे कोई नाराजगी नहीं हुई। मैंने उन्हें एक आधिकारिक पत्र लिखकर खेद व्यक्त किया कि उन्हें यह गलतफहमी हो गई थी कि मैंने जिस बाघ का शिकार किया था वह आदमखोर बाघ नहीं था। मैंने स्पष्ट किया कि मैंने अभयारण्य के भीतर जिस बाघ का शिकार किया था वह आदमखोर बाघ ही था, कोई दूसरा बाघ नहीं। मैंने उस विशेष परमिट के प्रावधानों के अनुसार ही शिकार किया था जो मुझे इस उद्देश्य के लिए दिया गया था।

तो क्या हुआ? सब लोग खुश थे। सभी पक्षों की ओर से आधिकारिक मर्यादा का पूर्णतः पालन किया गया था। सभी संबंधित पक्षों ने अपने कर्तव्यों का कड़ाई से और उचित ढंग से निर्वाह किया था।

बैंगलोर लौटने का समय आ गया था। मैंने दोनों रेंज अधिकारियों को उनकी मदद के लिए धन्यवाद दिया, बचे हुए चार चारे उनके मालिकों को उनकी खरीद के एक चौथाई से भी कम दाम में बेच दिए और घर वापसी की यात्रा पर निकल पड़ा। रास्ते में मैं शिमोगा में रुका और रक्षा अधिकारी से मुलाकात की। उन्होंने मुझे बताया कि मैंने उनके पत्र का समझदारी से जवाब दिया था जिसमें उन्होंने स्पष्टीकरण मांगा था और पत्र लिखने के लिए माफी मांगी, यह कहते हुए कि उन्हें ऐसा करना पड़ा क्योंकि उनके दोनों रेंज अधिकारियों ने उन्हें रिपोर्ट दी थी। मैंने उनसे कहा कि चिंता न करें और ऐसी बातों का मुझे अनुभव है, साथ ही यह भी बताया कि मैंने ही रेंज

अधिकारियों को बताया था कि मैंने गलत बाघ को गोली मार दी है जब मैंने देखा कि उसकी गर्दन पर बाल नहीं थे। हम अच्छे दोस्त बनकर विदा हुए।

पूरा एक साल बीत गया। उस बूढ़े आदमी और उसके बेटे के शिकार होने के बाद से कोई और हत्या नहीं हुई थी। यह पिछले साल की शुरुआत के आसपास की बात थी। या शायद कुछ महीने बाद की—मुझे अब ठीक से याद नहीं है। सभी को लगता था कि अयाल वाले आदमखोर की कहानी एक मनगढ़ंत कहानी थी और मैंने ही असली अपराधी को मार गिराया था। मुझे भी ऐसा ही लगता था, जब तक कि मेरा भ्रम टूट नहीं गया।

सागर कस्बे के बाहरी इलाके में एक बाघ ने एक आदमी को मार डाला। जैसा कि मैंने बताया, सागर कस्बा कुम्सी और आनंदपुरम से आगे जाने वाली सड़क पर, जोग जलप्रपात से पहले पड़ता है। दो सप्ताह बाद उसने आनंदपुरम के पास एक दूसरे आदमी को मार डाला, और फिर अगले महीने के भीतर ही उसने तगार्थी और गौजा गांवों में एक-एक पुरुष और महिला को मार डाला। ये दोनों स्थान आनंदपुरम से दस मील के दायरे में हैं। अगस्त की शुरुआत में उसने दिनदहाड़े एक लंबानी लड़के को उठा लिया। वह कुम्सी कस्बे के बाहरी इलाके में मुख्य सड़क के पास अपने मवेशियों को चरा रहा था।

अभयारण्य के पास बूढ़े लकड़हारे और उसके बेटे की हत्या करने के बाद नरभक्षी वापस लौट आया था और अब वह पूरी ताकत से हत्याएं कर रहा था। या अगर वह खुद नहीं था, तो उसकी जगह उसके ही किसी रिश्तेदार ने ले ली थी जो कहीं अधिक तेज़ी से इंसानों को अपना शिकार बना रहा था।

मैंने किसी तरह एक हफ्ते की छुट्टी ले ली, जो मुझे मिल सकती थी, और गाड़ी से कुम्सी के लिए निकल पड़ा। शिमोगा में तैनात रक्षा अधिकारी का तबादला हो गया था और उनकी जगह एक दूसरे अधिकारी ने ले ली थी, जिन्हें मैं नहीं जानता था। लेकिन उन्होंने मुझे सफलता की शुभकामनाएं दीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या कुम्सी और चोर्डी में तैनात दोनों रेंज अधिकारी वही हैं जिनसे मैं पिछले साल की शुरुआत में मिला था, और जब उन्होंने हां में जवाब दिया तो मुझे खुशी हुई।

कुम्सी में जब मैं रेंजर से उसके क्वार्टर में दोबारा मिला, तो पुराने दोस्तों की मुलाकात हुई, और कुछ समय बाद चोर्डी में भी, जब मैं उसके साथी से मिला। दोनों अधिकारियों का मानना था कि यह आदमखोर बाघ बिल्कुल अलग तरह का जानवर

है, और मैंने वास्तव में एक साल पहले अभयारण्य के अंदर सही बाघ को मारा था। उनके ऐसा कहने का कारण यह था कि तब से लेकर पिछले कुछ महीनों तक किसी भी इंसान की हत्या नहीं हुई थी। अगर मैंने उस आदमखोर बाघ को गोली नहीं मारी होती, तो वह इतने महीनों तक कहाँ था? एक बार आदमखोर, हमेशा आदमखोर। बाघ कभी भी अपनी इस आदत को पूरी तरह से नहीं छोड़ते। इसलिए यह बाघ जहाँ भी भटका होगा, उसने उस दौरान कम से कम कुछ इंसानों को तो मारा ही होगा और हमें इसकी जानकारी जरूर होती।

मुझे कहना होगा कि उनका तर्क बहुत ठोस प्रतीत हुआ, और मैं अनिच्छा से ही सही, उनकी बात से सहमत हो गया।

हमने आगे क्या करना है, इस पर चर्चा की। इस बाघ ने सागर, आनंदपुरम, टैगार्थी, गौजा और अब कुम्सी में शिकार किया था। यह वही इलाका था जहाँ दो साल पहले दूसरा आदमखोर बाघ—जिसे अयालदार बाघ कहा जाता था, अगर ऐसा कोई जानवर कभी था भी—अपना आतंक मचाता था। मुझे अपने चारे कहाँ लगाने थे? शुरुआत कहाँ से करनी थी? हम कोई फैसला नहीं कर पा रहे थे।

अगले दिन मामला हमारे लिए सुलझ गया। संयोगवश, बाघ ने दिन दहाड़े आमलिगोला में एक चरवाहे को अपना शिकार बना लिया। आपको याद होगा कि आमलिगोला करादिबेट्टा अभयारण्य की उत्तरी सीमा का पूर्वी छोर था। दूसरे शब्दों में, आमलिगोला अभयारण्य के लगभग आयताकार क्षेत्र का उत्तर-पूर्वी कोना था। वहां के वन रक्षकों ने तुरंत चोर्डी मुख्यालय में अपने वन अधिकारी को इसकी सूचना दी, जो मुझे बताने के लिए तुरंत कुम्सी आ गए। उनके पहुंचने का समय दोपहर 3 बजे था।

इस जगह तक पहुँचने के लिए, अमलिगोला, दो रेंज अधिकारियों और मुझे एक लंबा रास्ता तय करके चोर्डी से आगे एक बेहद ऊबड़-खाबड़ बैलगाड़ी के रास्ते से जाना पड़ा। अमलिगोला में एक छोटा सा सुंदर वन-शाला है, जिसके ठीक पीछे करादिबेट्टा की उत्तरी सीमा बनाने वाली धारा बहती है। यह धारा लगभग दो मील दूर एक बड़े तालाब में जाकर गिरती है। लड़का उस तालाब के किनारे मवेशी चरा रहा था। बाघ धारा के किनारे से चलकर आया और सुबह लगभग नौ बजे लड़के पर हमला कर दिया। उसने मवेशियों को छुआ तक नहीं, हालाँकि वे उस जगह के चारों ओर चर रहे थे जहाँ लड़का खड़ा था। शिकार करने के बाद, बाघ अपने शिकार को लेकर उसी धारा के किनारे-किनारे जंगल में वापस चला गया।

मुझे बाघ के पदचिह्न दिखाए गए, जब वह लड़के की ओर आया था, और वापसी की यात्रा के उसके पदचिह्न भी, जहाँ लड़के के पैरों के घिसटने से बने एक निशान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। पदचिह्नों पर न के बराबर खून था।

यह सब देखते-देखते शाम ढल चुकी थी और इतना अंधेरा हो गया था कि उस बेचारे नौजवान का शव ढूंढना नामुमकिन था। यह बहुत दुख की बात थी। मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि कुम्सी में हमें यह खबर इतनी देर से मिली। हालांकि हमने जल्दी पहुंचने की पूरी कोशिश की थी, लेकिन अम्लिगोला जाने वाले खराब रास्ते की वजह से समय बर्बाद हो गया, क्योंकि मैं कोई स्प्रिंग या एक्सल तोड़ना नहीं चाहता था। अगर मुझे उस शाम शव मिल जाता, तो मैं बाघ के लौटने का इंतज़ार करते हुए रात भर जागता रहता। मैंने अपनी बदकिस्मती को कोसा।

रेंज अधिकारी वन लॉज के एक कमरे में सोए। मैं दूसरे कमरे में सोया। दोनों गार्ड रसोई से सटे एक गोदाम में गए थे, जो मुख्य बंगले से अलग एक इमारत थी, जहाँ उन्होंने दरवाज़े को बंद कर दिया और कुंडी लगा दी।

आधी रात के कुछ देर बाद एक बाघ की आवाज सुनाई दी। वह हमसे लगभग एक मील की दूरी पर था। उसने फिर आवाज लगाई और रेंज अधिकारियों ने उसे सुना। उन्होंने मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए हमारे कमरों को अलग करने वाले दरवाजे पर दस्तक दी, कहीं मैं सो न रहा हूँ। मैंने दरवाजा खोला और उन्हें अंदर आने दिया, साथ ही बताया कि मैं खुद भी आवाजें सुन रहा था।

फिर मैंने लॉज के संकरे बरामदे की ओर जाने वाला मुख्य दरवाज़ा खोला। चाँदनी चारों ओर फैले जंगल पर पड़ रही थी और बरामदे के एक कोने से अंदर आ रही थी। केवल उष्णकटिबंधीय भूमि में ही जंगल में चाँदनी रात के उस रहस्यमय रोमांच का पूरा आनंद लिया जा सकता है। जब मैं बाहर की ओर देख रहा था और उस अद्भुत दृश्य में खोया हुआ था, तभी बाघ ने फिर से आवाज़ लगाई, इस बार बहुत करीब से। अचानक मुझे एहसास हुआ कि वह जानवर बंगले के पीछे कुछ ही गज की दूरी पर बहने वाली धारा के किनारे चल रहा था और शायद अगले दस मिनट में वहाँ से गुज़र जाएगा। क्या यह आदमखोर बाघ था?

मैंने अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया।

राइफल की नली पर लगे दो क्लैंपों पर टॉर्च लगाने में मुझे बस कुछ ही मिनट लगे। मैं लॉज के पीछे बने बाथरूम के दरवाजे से बाहर भागा, परिसर की सीमा पर

लगे युवा कैसुआरिना पेड़ों की पतली झाड़ी को पार करते हुए पीछे की ओर ढलान से नीचे उतरकर छोटी सी धारा के किनारे जा पहुँचा।

चांदनी में पानी की सतह चमकती और टिमटिमाती हुई दिखाई दे रही थी, हालांकि जिस किनारे पर मैं खड़ा था, उसके पास उगे पेड़ों के नीचे बहुत अंधेरा था। मैंने आपको बताया है कि यह धारा करादिबेट्टा की उत्तरी सीमा बनाती है। इसका दूसरा किनारा अभयारण्य के भीतर था। वन आश्रम और जिस किनारे पर मैं अब खड़ा था, वे अभयारण्य की सीमा से ठीक बाहर थे।

बाघ ने फिर से दहाड़ लगाई। वह तेजी से पास आ रहा था और मुश्किल से एक चौथाई मील दूर था। अगर मुझे उस पर घात लगाकर हमला करना था तो मुझे जल्दी कार्रवाई करनी होगी।

सबसे अहम सवाल यह था: वह किस किनारे पर चल रहा था? अगर वह सामने वाले या कार्डिबेटा किनारे पर होता, तो चांदनी में उसे देखने और तस्वीर लेने के लिए मुझे पानी के किनारे के बहुत करीब जाना पड़ता। दूसरी ओर, अगर वह उसी किनारे पर आ रहा होता जिस पर मैं खड़ा था, और अगर मैं नदी के किनारे चला जाता, तो बाघ को न केवल पानी पर चांदनी में मेरी परछाई देखने का फायदा मिलता, बल्कि वह खुद भी ऊँची जगह पर होता। अगर वह मुझ पर हमला करता, तो यह मेरे लिए बेहद खतरनाक और नुकसानदेह साबित हो सकता था।

उसने फिर से आवाज़ दी—लगभग एक फर्लांग दूर से। समय बिल्कुल भी बर्बाद करने का नहीं था। मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया। संभवतः वह नदी के दूसरी ओर, अभयारण्य के अंदर ही था।

इस बीच मेरी आँखें छिपने की जगह की तलाश में बेताब थीं। मेरे किनारे से लगभग दो फुट की दूरी पर सरकंडे का एक झुंड था, जो पूरी तरह से पानी से घिरा हुआ था। मुझे पता था कि धारा उथली है, इसलिए मैं किनारे तक दौड़ा और चुपचाप दो फुट पानी में चला गया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कोई छपछपाहट न हो। फिर मैं घास में नीचे बैठ गया। दो-तीन मिनट सन्नाटे में बीत गए। मैं दोनों किनारों पर पेड़ों की गहरी छाया में कुछ भी नहीं देख पा रहा था।

फिर बाघ ने मेरे ठीक सामने, उसी किनारे पर जहाँ मैं अभी खड़ा था, दोबारा कराहने की आवाज़ निकाली। वह ठीक उसी क्षण वहाँ से गुज़र रहा था।

मैंने गिनती की, एक-दो-तीन-चार-पाँच, ताकि वह पूरी तरह से मेरे ऊपर और मेरे

बराबर न दिखे। फिर मैंने टॉर्च का बटन दबाया। वहाँ, मुश्किल से पंद्रह गज की दूरी पर, उसकी धारीदार आकृति दिखाई दी।

वह अचानक रुक गया और पीछे मुड़ गया। उसका चेहरा दाईं ओर था, इसलिए मुझे उसकी दाहिनी कंधे के पीछे गोली मारनी पड़ी। वह हवा में उछला और पीछे की ओर गिर गया। मैंने दूसरी और तीसरी बार गोली चलाई।

फिर उसे मेरी मौजूदगी का एहसास हुआ और वह फिसलते-लुढ़कते ढलान से नीचे मेरी ओर आया। महज पाँच गज की दूरी पर मेरी चौथी गोली उसके सिर को भेद गई।

बाद में, जब मैंने उसकी जांच की, तो मैं उसकी गर्दन के चारों ओर उगने वाले बालों के असामान्य गुच्छे को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। यह एक नियमित अयाल का रूप ले रहा था।

जंगल के कुछ रहस्य कभी सुलझ नहीं सकते, और उनमें से एक यह है कि इस बाघ के सिर पर बाल (अयाल) थे ही क्यों।

---

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

नौ

पेगेपलयम का आदमखोर

यह आदमखोर बाघ के कारनामों और पतन की पूरी कहानी नहीं है, क्योंकि जिस बाघ के बारे में मैं लिख रहा हूँ वह इस समय जीवित है। आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार उसने चौदह लोगों को मारकर खा लिया था, हालांकि अनौपचारिक रूप से उसके शिकारों की संख्या सैंतीस बताई जाती है, जिनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। इस अनौपचारिक अनुमान में से लगभग आधे लोगों को वास्तव में पूरी तरह या आंशिक रूप से खा लिया गया था, शेष को जानवर के पंजों से केवल घायल किया गया था। आधिकारिक रिकॉर्ड में केवल मारे गए और खाए गए व्यक्तियों को ही गिना जाता है, न कि घायल व्यक्तियों को। इसी कारण आधिकारिक और अनौपचारिक मृत्यु-सूचियों में अंतर है।

मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, उसकी दिलचस्प बात यह है कि मेरा मानना है कि यह बाघ वही जानवर है जिसका ज़िक्र मैंने अपनी पिछली किताब में 'राजनगर का हमलावर'* शीर्षक से एक कहानी में किया था। जब मैं वह वृत्तांत लिख रहा था, तब एक बाघ ने उत्तरी कोयंबटूर जिले में, डिंबम ढलान की तलहटी में, पहाड़ी पठार की तलहटी से सटे झाड़ीदार जंगल में, और उत्तर में डिंबम (पहाड़ी पर खड़ी घाट सड़क के शीर्ष पर) और दक्षिण में तलहटी में शुष्क मैदानों पर स्थित सत्यमंगलम शहर के लगभग मध्य में अपना निवास स्थान बना लिया था।

पहाड़ियों की तलहटी में स्थित झाड़ियों वाले घने जंगलों के सबसे नज़दीकी गाँव का नाम राजनगर है। जब से इस बाघ ने इस गाँव के चरवाहों को सताना शुरू किया,

जो अपने मवेशियों को इन झाड़ियों वाले जंगलों में चराने ले जाते थे, तब से वह राजनगर के बाघ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसके अलावा, हमले के अपने अनोखे तरीके के कारण उसने विशेष ख्याति अर्जित की—या कम से कम जब मैंने वह कहानी लिखी थी, तब तो यही माना जाता था। यह अनोखा तरीका यह था कि वह झाड़ियों से निकलकर अचानक हमला करता और अपने पंजों से खरोंचकर चरवाहे को बुरी तरह घायल कर देता, और फिर हमले के दौरान आसपास घूम रहे मवेशियों के झुंड में से हमेशा अपने लिए एक मवेशी चुनकर ले जाता। उस समय तक उसके द्वारा हमला किए गए किसी भी इंसान को काटने का कोई पुख्ता सबूत नहीं था। एक-दो लोगों के लापता होने की सूचना मिली थी और यह माना जाता था कि बाघ उन्हें खा गया था, लेकिन इस अनुमान की पुष्टि करने वाला कोई ठोस सबूत नहीं था। इतना तो पता था कि यह बाघ अपने शिकार को काटने के बजाय अपने पंजों से घायल करता था।

इस विचित्र आदत के कारण यह आम धारणा बन गई कि वह एक ऐसा जानवर था जिसके चेहरे या जबड़े पर इस तरह की चोट लगी थी कि वह काट नहीं सकता था। साथ ही, यह भी पाया गया कि वह चरवाहे पर हमला करने के बाद जिन मवेशियों को मारता था, उन्हें वह बड़े चाव से खाता था, जिससे यह साबित होता था कि जब उसका मन करता था तो वह अच्छी तरह से काट और खा सकता था। कुल मिलाकर, यह एक अत्यंत असामान्य और विचित्र मामला था, जिसकी आज तक संतोषजनक व्याख्या या प्रमाण नहीं मिल पाया है, हालांकि इस आदत के लिए कई तरह के तर्क दिए गए हैं।

मैंने बताया है कि मैंने इस बाघ को गोली मारने की कोशिश कैसे की और कैसे मैं असफल रहा। वह एक बेहद मायावी जानवर था। आखिरकार मैं बेंगलुरु में अपने घर लौट आया, और 'राजनगर के खूंखार बाघ' को हमारी मुठभेड़ के पहले दौर का निर्विवाद विजेता बना दिया। मुझे पूरा विश्वास था कि वह समय आएगा जब दूसरे दौर का अवसर मिलेगा, और मुझे बेहतर सफलता की उम्मीद थी।

कुछ मित्रों और शुभचिंतकों ने मुझे पत्र लिखकर पूछा है कि क्या उस कहानी का कोई अगला भाग है। मेरे एक पुराने परिचित, जो केर्नी ने तो लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया से मुझे एक तार भेजकर बताया कि वे इस विशेष बाघ के बारे में आगे की जानकारी का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

अफसोस, मैं उनमें से किसी की भी जिज्ञासा शांत नहीं कर सका, क्योंकि

'राजनगर के हमलावर' ने अपना हमला बंद कर दिया और मेरे आने के कुछ ही समय बाद वह गायब हो गया। हम सभी को उम्मीद थी कि वह सुधर गया होगा और शायद नए साल के साथ उसने अपनी आदतें सुधार ली होंगी। या शायद वह किसी दूर के जंगल में चला गया होगा या उसकी स्वाभाविक मृत्यु हो गई होगी। समय बीतता गया और राजनगर के चरवाहे अपने खेतों के आसपास के झाड़ीदार जंगल में अपने मवेशियों को चराने के लिए वापस लौट आए और शाम को थके हुए, लेकिन बिना किसी चोट के घर लौट आए।

फिर, लगभग नौ महीने बाद, एक शाम, राजनगर से लगभग पचास मील उत्तर में स्थित बिलिगिरिरंगन पर्वत श्रृंखला के पीछे सूरज डूबने लगा। उसकी तिरछी किरणें पेगेपलयम नामक छोटे से गाँव की कुछ झोपड़ियों की पूर्वी दिशा में लंबी परछाइयाँ बना रही थीं। यह गाँव जंगल के एक खुले मैदान में बसा था, जिसके पश्चिम में पर्वत श्रृंखला थी और पूर्व में दिंबुम से कोललेगल जाने वाली सड़क लगभग दो मील की दूरी पर थी। यह गायों के घर लौटने का समय था, और गाँव से कुछ ही दूरी पर स्थानीय गायों का झुंड पेगेपलयम की ओर जाने वाले जंगल के रास्तों पर चल रहा था; दो चरवाहे, एक आदमी और एक लड़का, उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

घने जंगलों से ढकी घाटियाँ देश को काटती थीं। बरसात के मौसम में पश्चिम की पर्वत श्रृंखला से नीचे बहते पानी की धाराएँ पूर्व की ओर तेज़ी से बहती थीं। लेकिन उस सुहावनी शाम को वे बिल्कुल सूखी थीं, और बुलबुलों की चहचहाहट और 'सात बहन' पक्षियों के कई समूहों की सरसराहट ने उस दृश्य को शांति और सुकून का माहौल दे दिया था।

मवेशी ज़मीन के एक ढलान को पार कर रहे थे। वयस्क चरवाहा आधे रास्ते तक पहुँच चुका था और लड़का घाटी की तलहटी की ओर ढलान वाले दूसरे किनारे पर था। झुकती घास की डंडियों से घिरे युवा बांसों के एक झुंड ने उसका रास्ता रोक रखा था, और ठीक आगे चल रहे मवेशियों के झुंड के पदचिह्न उसके चारों ओर से गुजर रहे थे, जिन पर कई खुरों से उड़ी धूल अभी तक जमी नहीं थी। लड़का अपने विचारों में डूबा हुआ उनके पीछे-पीछे चल रहा था।

आगे चल रहे वयस्क चरवाहे को खोखली सी आवाज़ सुनाई दी, फिर एक हल्की सी सिसकी जैसी आवाज़ आई, तो वह कारण जानने के लिए पीछे मुड़ा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया। उसके पीछे का रास्ता बाँस के झुंड की ओर जा रहा था। वहाँ कोई

भी नहीं था। चरवाहा झुंड के पीछे-पीछे चलने लगा। उसे यकीन था कि लड़का भी उसके साथ आ जाएगा।

अंततः वे पेगेपलयम के पास पहुँच गए। चरवाहे ने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा। लड़के का फिर कोई निशान नहीं था। उसने नाम लेकर पुकारा: 'वेंकट, वेंकट,' लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। चरवाहा थोड़ी देर रुका और फिर पुकारा, लेकिन फिर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इसी बीच मवेशी गाँव की ओर आगे बढ़ रहे थे, और क्योंकि वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, इसलिए वह उनके पीछे गाँव में चला गया। तभी उसे पता चला कि चरवाहा लड़का नहीं आया था।

लड़के के देर से आने के सौ कारण हो सकते थे, इसलिए इस पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया। लेकिन लगभग एक घंटा बीत जाने के बाद भी जब लड़का नहीं आया, तो चरवाहे को याद आया कि बांस के झुंड के चारों ओर से रास्ता पार करने के बाद वह उसे देख नहीं पाया था। उसे एक खोखली सी हांफने की आवाज़ भी याद आई और उसने यह निष्कर्ष निकाला कि लड़के के साथ कुछ हुआ होगा। शायद उसे किसी सांप ने काट लिया हो। चरवाहे के मन में आदमखोर बाघ या तेंदुआ का ख्याल कभी नहीं आया, क्योंकि पेगेपलयम के शांत इलाके में ऐसे किसी खतरे के बारे में कभी सुना भी नहीं गया था।

इसलिए वह वापस मुड़ा और बांस के झुंड की ओर तेजी से बढ़ा। उसने रास्ते के मोड़ को पार किया, और वहाँ, मवेशियों के खुरों के निशान और अपने पैरों के निशानों के ऊपर स्पष्ट रूप से एक बाघ के पदचिह्न, एक संक्षिप्त संघर्ष के संकेत और उस जगह के घसीटने के निशान दिखाई दिए जहाँ शिकारी अपने शिकार को घसीटकर ले गया था।

और इस तरह पेगेपालयम के आदमखोर सांप के बारे में लोगों को पता चला।

समय बीतता गया और छिटपुट मानव हत्याओं की खबरें छिटपुट स्थानों से आती रहीं, दक्षिण-पश्चिम में तलवाड़ी और तलाईमलाई तक, लगभग तीस मील दूर; पूर्व में पोन्नाचीमलाई पहाड़ी की तलहटी में, और एक अन्य घटना कावेरी नदी के किनारे आलमबाड़ी में, चालीस मील से अधिक दूर; और एक और घटना उत्तर दिशा में, कोललेगल के बड़े क़स्बे से मुश्किल से छह मील दूर हुई। यह घटना सबसे ताजा थी, जिसमें एक पंद्रह वर्षीय लड़के पर सुबह लगभग 10:30 बजे चिलचिलाती धूप में उस खेत में काम करते समय बेरहमी से हमला किया गया और उसे घसीट कर ले

जाया गया।

इस आदमखोर के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य वह जानकारी है जो उस घटना के दौरान मिली थी जब पेगेपलयम के चरवाहे लड़के को मारने वाली जगह से लगभग तीन मील दूर एक और शिकार हुआ था। तीन आदमी एक बैलगाड़ी के रास्ते से जंगल में जा रहे थे, जिसका इस्तेमाल पहले पेड़ों से कटे हुए बांस निकालने के लिए किया जाता था। आदमखोर की गतिविधियों के कारण, बांस काटने का काम लगभग बंद हो गया था, और लोग जंगल में तभी जाते थे जब बहुत जरूरी होता था; कभी अकेले नहीं और हमेशा दिन के उजाले में। इन तीनों आदमियों को कोई जरूरी काम था, जिसकी वजह से वे वहां मौजूद थे, उनकी संख्या अधिक थी और समय भी दोपहर दो बजे से ठीक पहले का था। उन्होंने पेगेपलयम में दोपहर का भोजन किया था और लगभग अपनी मंजिल तक पहुँच चुके थे। उन्हें उम्मीद थी कि वे दोपहर 3:30 बजे तक वापस आ जाएँगे।

अचानक और बिना किसी चेतावनी के, एक बाघ आगे चल रहे व्यक्ति के ठीक आगे रास्ते पर झपट पड़ा। दल भय से स्तब्ध होकर रुक गया। फिर बाघ ने आगे चल रहे व्यक्ति पर हमला कर दिया, अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर उसके चेहरे पर पंजे मारने लगा। उसके साथी सौभाग्य से पास ही मौजूद एक पेड़ की ओर भागे और उस पर चढ़ गए। इसी बीच, जिस व्यक्ति पर हमला हुआ था, उसने अद्भुत सूझबूझ और साहस दिखाते हुए, उस चाकू से बाघ के सिर पर अंधाधुंध वार किया, जिसे सभी शोलागा लोग लकड़ी काटने या झाड़ियों में रास्ता बनाने के लिए रखते हैं। वार बाघ के सिर के एक तरफ लगा और फिसल गया। इस अप्रत्याशित हमले से बाघ दर्द से दहाड़ा, और सभी आदमखोरों में पाई जाने वाली स्वाभाविक कायरता के कारण वह अपने शिकार को छोड़कर वापस छिप गया।

इसी बीच बाकी दो आदमी पास के पेड़ की सबसे ऊपरी शाखाओं तक पहुँचने में कामयाब हो गए, जहाँ से उन्होंने नीचे का मंजर डर से देखा। उनके साथी के चेहरे और सीने से खून बह रहा था, जो बाघ के पंजों से लगे गहरे घावों से निकला था। वह सदमे से सुन्न होकर जमीन पर बेसुध बैठा था। पेड़ पर बैठे आदमियों ने उसे पुकारा: 'भाई, जल्दी आओ और इस पेड़ पर चढ़ जाओ। जमीन पर रहना सुरक्षित नहीं है। आदमखोर बाघ वापस आ सकता है।'

घायल व्यक्ति ने उनकी आवाज़ सुनी, उठ खड़ा हुआ और सिर से पगड़ी

उतारकर अपने शरीर पर लगे कई खरोंचों से बहते खून को पोंछने लगा। पेड़ पर बैठे लोगों ने उसे फिर पुकारा, और वह चढ़ने के इरादे से पेड़ के आधार की ओर चलने लगा। लेकिन भाग्य ने उसके जीवन के अंतिम दिन तय कर दिए थे। आदमखोर बाघ की क्षणिक कायरता क्रोध में बदल गई थी, संभवतः उस घाव के दर्द के कारण जहाँ बहादुर व्यक्ति के चाकू ने उसके सिर के किनारे की त्वचा को चीर दिया था। बाघ ने झपट्टा मारा और इस बार अपने अगले पैर से उसके सिर के पिछले हिस्से पर ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे उसकी गर्दन टूट गई। उसका शरीर ज़मीन पर गिरते ही बाघ ने उसे अपने जबड़ों में उठाया और पेड़ पर बैठे दोनों लोगों के सामने जंगल की ओर चल पड़ा।

इस घटना के तुरंत बाद मैंने कोललेगल और पेगेपलयम का दौरा किया और इन दोनों व्यक्तियों से बात की। उनके बयान आश्चर्यजनक रूप से एक-दूसरे से मेल खाते थे और विवरण में स्पष्ट थे। दोनों इस बात पर सहमत थे कि दोनों बार जब बाघ ने हमला किया था, तो उसने मुख्य रूप से अपने पंजों से हमला किया था, न कि अपने दांतों से।

मुझे सब कुछ याद आ गया। क्या यह वही मायावी बाघ हो सकता है, 'राजनगर का खूंखार योद्धा', जिसने पहली मुठभेड़ में मुझे हराया था, समय के साथ और भी साहसी हो गया था और एक पक्का आदमखोर बन गया था, और अब 'पेगेपलयम का आदमखोर' बनकर सामने आया था? दोनों व्यक्तियों के साक्ष्य से यही संभावना प्रतीत होती थी कि यह बाघ वही जानवर था।

मैंने इस संबंध में काफी छानबीन की, न केवल पेगेपलयम में बल्कि आसपास के एक-दो गांवों में भी, जहां इस जानवर ने अपने शिकार बनाए थे, और कोललेगल स्थित वन विभाग से भी संपर्क किया। बाघ द्वारा शवों को पूरी तरह खा जाने से पहले ही कई शव बरामद कर लिए गए थे। सभी के शरीर पर पंजे के निशान थे, साथ ही काटने के निशान भी थे। इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं था कि बाघ ने केवल पंजे मारकर ही शिकार किया था, जैसा कि 'हमलावर' बाघ ने किया था; और वैसे भी, किसी भी शव को खाते समय पंजे मारने और काटने की क्रियाएं तो होती ही हैं।

पेगेपलयम की मेरी पहली यात्रा केवल एक सप्ताह तक चली, लेकिन आदमखोर सांप ने मेरे द्वारा दिए गए तीनों जीवित शिकारों को छुआ तक नहीं। उस दौरान उसके बारे में कोई खबर भी नहीं मिली। कर्तव्य पुकार रहा था और छुट्टी बढ़ाने

का कोई बहाना नहीं था। मैं बैंगलोर लौट आया।

जैसा कि मैंने बताया है, तब से आदमखोर ने फिर से हत्या कर दी है—दिन दहाड़े, खुले मैदान में, एक पंद्रह वर्षीय लड़के की, जबकि कोललेगल का बड़ा कस्बा केवल छह मील दूर था। इस बार मेरा बेटा, डोनाल्ड, उसका पीछा कर रहा है और उसे उम्मीद है कि उसे मुझसे ज़्यादा सफलता मिलेगी।

हम दोनों यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं कि क्या आदमखोर वही खूंखार जानवर है जिसके बारे में मैंने आपको बताया है, हालांकि इस बात को साबित करने का कोई तरीका नहीं दिखता जब तक कि डोनाल्ड उस खूंखार जानवर की दांतों के बजाय पंजों से हमला करने की असामान्य आदत का कोई कारण न ढूंढ ले। अगर वह सफल हो जाता है, तो डोनाल्ड निश्चित रूप से जंगल के एक बेहद दिलचस्प रहस्य को सुलझा लेगा।

और जैसे ही मैं इन विचारों में खो जाता हूँ, ये पन्ने और ये लिखावट एक बार फिर मेरी आँखों से ओझल हो जाते हैं। कल्पना में मुझे अपने सामने एक अलाव की धधकती लपटें दिखाई देती हैं, जिनसे चिंगारियों की बौछारें रुक-रुक कर अंधेरे में गिरती हैं, जबकि धुएँ का एक घना गुबार आकाश की ओर उठता है।

आसमान साफ है, लेकिन अलाव की रोशनी के कारण आकाश में बिखरे असंख्य तारों में से कुछ ही दिखाई दे रहे हैं।

अपनी पूरी शक्ति के बावजूद, टिमटिमाती रोशनी मेरे चारों ओर लगभग पंद्रह गज तक ही अंधेरे को दूर कर पाती है। इसके आगे घना, शांत और सर्वव्यापी अंधकार है, मानो कोई ठोस पदार्थ हो, जो हर चीज़ को ढक रहा हो—जंगल की रात का अंधकार, मखमली उदासी की चादर।

मेरी पाइप से और भी धुआं निकलता है, और मैं संतुष्टि से कश लेता हूँ। धुआँ ऊपर उठता है, आग की लपटों से निकलने वाले धुएं में मिल जाता है और अंत में आग की टिमटिमाती, रुक-रुक कर आने वाली रोशनी में गायब हो जाता है, जिसकी गर्मी सुखदायक तो है, लेकिन थोड़ी घुटन भरी भी है।

मेरे चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है, जिसे केवल आग की लपटों की चटकने और फुफकारने की आवाज ही तोड़ रही है।

फिर मुझे वो आवाज़ सुनाई दी। पहाड़ियों के ऊपर से, दूर से, लेकिन धीरे-धीरे पास आती हुई। 'ओ-ओ-ओ-न-ओ-ओ-न! आ-ऊंग! आ-ऊंग!' ये एक बाघ की पुकार

थी!

मैंने इसे पहले भी कई बार सुना है, और जितनी बार मैं इसे सुनता हूं, उतनी ही बार मैं उस भयानक लेकिन अद्भुत मधुर ध्वनि से रोमांचित हो जाता हूं।

'उघा-उघ! उघ! औंग-हा! आ-ऊंग! ओ-ओ-न-ओ-ओ-न!' फिर से वही आवाज़! बाघ नज़दीक आ रहा है, और भी नज़दीक।

और मेरी कल्पना में, मुझे लगता है कि यह 'पेगेपलयम का आदमखोर' होगा।

---

* देखें मैन-ईटर्स एंड जंगल किलर्स (एलेन एंड अनविन, लंदन)।

बाघ दहाड़ता है

परिचय

प्रस्तावनाएँ लोकप्रिय नहीं होतीं और शायद ही कभी पढ़ी जाती हैं। आख़िरकार, पाठक किताब मनोरंजन, रोमांच या ज्ञान के लिए ही खरीदता है, और लेखक की कोई भी व्याख्या इन चीज़ों को बढ़ा या घटा नहीं सकती। लेकिन इससे पहले कि मैं दक्षिण भारत के जंगलों में अपने कुछ और रोमांचक किस्से सुनाऊँ, मैं बस इन जंगलों के संरक्षण के लिए एक निवेदन करना चाहता हूँ, कि यहाँ का वन्य जीवन और सुंदरता बनी रहे, न केवल अपने लिए, बल्कि इसलिए भी कि आने वाली पीढ़ियाँ भी इनका आनंद उसी तरह उठा सकें जैसे मैंने उठाया है। समय बहुत कम बचा है।

भारत सरकार का, भारत के प्रत्येक राज्य की प्रत्येक सरकार का, और उसके जंगलों में आने वाले प्रत्येक शिकारी का – वास्तव में, यह प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है – कि वह देश के वन्य जीवों को विलुप्त होने से बचाने के लिए सर्वोच्च प्रयास करे।

वन्यजीव और पक्षी अभयारण्य स्थापित किए गए हैं, यह सच है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। नियम तो लिखे गए हैं, लेकिन उनका पालन नहीं कराया जा सकता। एक तो वन रक्षकों और पहरेदारों को पर्याप्त वेतन नहीं मिलता। दूसरा, भ्रष्टाचार चरम पर है।

मैसूर राज्य में और मद्रास राज्य के सलेम जिले में बाघ और तेंदुआ लगभग विलुप्त हो चुके हैं। इन्हें खत्म करने वाले ग्रामीण स्थानीय सरकारों द्वारा लगभग मुफ्त में दिए गए जहर का इस्तेमाल अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए कीटनाशक के रूप में करते हैं। वे इस जहर को बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे गए जानवरों के मांस पर मलते हैं। ये जानवर हमेशा लौट आते हैं, जहर मिला हुआ मांस खाते हैं और कुछ ही गज की दूरी पर मर जाते हैं। उनके पीछे आने वाले सियार, लकड़बग्घे, गिद्ध और कौवे भी मर जाते हैं।

हर ग्रीष्म ऋतु में सैकड़ों हिरणों का शिकार शिकारी करते हैं, जो पानी के उन

स्रोतों पर बंदूकें ताने उनका इंतजार करते हैं जहाँ हिरण पानी पीने आते हैं। कुछ रुपये या शव का एक-आध टुकड़ा उन अधिकारियों को चुप करा देता है जिन्हें सरकार द्वारा इन जानवरों के जीवन की रक्षा के लिए वेतन दिया जाता है।

भारत के वन्य जीवों पर मृत्यु का साया मंडरा रहा है। विशेषकर दक्षिण भारत में, विलुप्ति निश्चित रूप से होगी, जब तक कि विभिन्न राज्यों की सरकारें और स्वयं जनता इस वास्तविकता को शीघ्र ही नहीं समझ लेतीं और व्यावहारिक दृष्टिकोण नहीं अपना लेतीं। अब लगभग बहुत देर हो चुकी है।

मुझे उम्मीद है कि आपको इन कहानियों को पढ़ने में उतना ही आनंद आएगा जितना मुझे इन्हें लिखने में आया है, क्योंकि ऐसा करते हुए मैं जंगल के जीवन में वापस चला गया हूँ - न केवल बीते दिनों की यादों में, बल्कि इसके मनमोहक दृश्यों, इसकी असंख्य विदेशी सुगंधों, इसकी मिली-जुली ध्वनियों, इसके सुख-दुखों, वहाँ के जीवन की उमंग और उसकी त्रासदी में भी।

एक

मांची का नौसिखिया

संकरी पगडंडी चारों ओर फैले विशाल बांस के झुंडों के बीच से होकर गुजरती थी, जिनके लंबे, सुंदर पत्ते सुंदर, पंखदार फूलों के विशाल गुलदस्तों की तरह झुके हुए थे। यह बांस के पेड़ में बीज बनने का समय था, जब प्रत्येक डंठल के सिरे पर हजारों छोटे-छोटे बीजों के गुच्छे भरे होते थे। ये बीज पके हुए गेहूं के दानों जैसे दिखते थे, लेकिन आकार में छोटे थे; फिर भी हजारों बीजों का वजन ही प्रत्येक पत्ते को धरती तक झुका देता था, और जंगल की गलियों से गुजरती हल्की हवाओं के साथ हिलते हुए वे चरमराते और कराहते थे।

बीज बौछार की तरह गिरे, जिससे धरती और संकरा रास्ता एक मोटी परत से ढक गया। यह परत ज्यादातर सड़ चुकी थी, लेकिन कहीं-कहीं छोटे-छोटे गहरे हरे अंकुरों के रूप में उगने के संकेत दिखा रही थी। यह परत लकड़ी के बुरादे जैसी थी और लचीली थी: इस पर चलने वाली किसी भी चीज़ की आवाज़ दब जाती थी, और उस शिकारी की भी आवाज़ दब जाती थी जो अब भोजन की तलाश में बाँस के झुंडों के बीच मंडरा रहा था। ऊपर, हजारों तोते चीख रहे थे, अपने पैरों के बल लटके हुए, सिर नीचे की ओर, घुमावदार रास्ते के ऊपर, अपनी तेज धार वाली घुमावदार चोंच से बीजों को चोंच मार रहे थे, बड़ी कुशलता से छिलके को गुठली से अलग कर रहे थे, जिसे वे निगलने से पहले बारीक पाउडर बना रहे थे। तोते परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में वे छोटे थे, पालतू बडगेरिगर से लगभग दोगुने आकार के, लेकिन वे कई रंगों के थे, पन्ना हरे से लेकर मोर नीले तक, कुछ के पंख हल्के पीले और सिर गुलाबी या गहरे बैंगनी रंग के थे, और कुछ एकसमान हरे रंग के थे, जिनकी गर्दन के चारों ओर लाल और काले रंग का एक पतला छल्ला था।

एक अकेला यात्री जंगल के रास्ते पर सावधानी से चल रहा था। उसने न तो तोतों की आवाज़ सुनी, न ही जंगली कबूतरों और फाख्ताओं समेत हज़ारों अन्य पक्षियों की, जो बांस के बीजों पर पल रहे थे। वह ध्यान से आगे देख रहा था और इधर-उधर भी चुपके से नज़रें गड़ाए हुए था। वह कभी धीमे चलता, कभी रुकता, तो कभी बांस के किसी घने झुंड को ध्यान से देखता, फिर उसके पास पहुँचता। उसकी तेज़, बेचैन आँखें घनी झाड़ियों में छिपी किसी चीज़ को भेदने की कोशिश कर रही थीं। उसके कान भी तोतों की कर्कश, तीखी चीख से बिल्कुल अलग और कहीं ज़्यादा चौंकाने वाली आवाज़ों के लिए चौकन्ने थे। जिन आवाज़ों को वह सुनना चाहता था और जिन्हें सुनकर वह डर रहा था, वे थीं बांस की शाखा के टूटने की तेज़ आवाज़, या

संतुष्ट होकर भोजन करने की गहरी गड़गड़ाहट, या भारी कदमों की सरसराहट जो बीजों और सड़ते पत्तों के कालीन पर से गुज़र रही थीं।

वह आदमी किसी जंगली हाथी या हाथियों के झुंड से मिलने से डरता था, क्योंकि इस इलाके में, खासकर साल के इस समय, बहुत सारे हाथी थे। लेकिन उसकी सुनने की शक्ति उस शिकारी के आने की आहट नहीं सुन पाई, जिसने पहले उसे महसूस किया और फिर देखा। शिकारी ने कोई आवाज़ नहीं की, जबकि ऊपर चहचहाते पक्षी और नीचे घास-फूस की तलाश में तल्लीन हाथी चीख रहे थे। यह शिकारी किसी भी तरह से हानिरहित नहीं था, न ही वह शाकाहारी था। उसने तेज़ी से और निश्चित रूप से मौत बरसाई और इस समय वह बहुत भूखा था।

वह व्यक्ति पुजारी था, जो दक्षिण भारत के सलेम जिले के जंगलों में रहने वाली एक आदिवासी जनजाति का सदस्य था। वह जिस रास्ते पर चल रहा था, वह अयूर नामक छोटे से गाँव से दक्षिण की ओर लगभग दस मील दूर स्थित एक विशाल पहाड़ी श्रृंखला की ढलानों पर बसे उससे भी छोटे गाँव मानची तक जाने वाला पैदल मार्ग था। यह रास्ता एक घाटी से नीचे की ओर जाता था, और साथ ही एक पथरीली धारा भी बहती थी। दोनों रास्ते बार-बार एक-दूसरे को पार करते थे और कभी-कभी समानांतर भी चलते थे, जबकि पूर्व और पश्चिम दोनों ओर पहाड़ियाँ घने जंगलों की एक अटूट श्रृंखला की तरह फैली हुई थीं। संकरा रास्ता कभी-कभी दिखाई देता था, लेकिन जंगल की हल्की हवा के झोंकों से हिलते हुए ऊँचे, झुकते और लहराते बांसों के नीचे अचानक गायब हो जाता था।

लगभग अदृश्य, महीन जाले बार-बार पुजारी के चेहरे पर लग जाते और गुदगुदी करते, जिसका पूरा ध्यान हाथियों की संभावित उपस्थिति पर केंद्रित था। वह गुस्से से दोनों हाथों से उन्हें हटा देता था, जिससे बड़े, लंबे पैरों वाले, पीले, काले और लाल रंग के मकड़े और भी परेशान हो जाते थे। ये मकड़े छह इंच या उससे भी अधिक चौड़े थे और पेड़ों से पेड़ों तक फैले हुए थे, जो अविश्वसनीय रूप से मजबूत, रेशमी धागों से बंधे थे। इनके जालों के बीच का हिस्सा आठ या दस फीट व्यास का था और उस पर जटिल, बारीक बुनाई थी। इन जालों पर ओस जम गई थी और बांस की पत्तियों से छनकर आती धूप में नमी की बूंदें चमक रही थीं। सब कुछ शांत था, सब कुछ शांतिपूर्ण था, सिवाय दाना चुगते पक्षियों के शोर के।

पुजारी कीरा ने यह सुनिश्चित करने के बाद कि कोई हाथी पीछे नहीं छिपा है,

बांस के घने झुंड को पार किया, लेकिन वह काले और जंग लगे कोट में लिपटे उस हत्यारे को देखने में असफल रहा जो जमीन पर झुका हुआ था और द्वेषपूर्ण, बिना पलक झपकाए आंखों से उसे घूर रहा था।

उस आदमी ने दो बार खांसने की दहाड़ सुनी: 'आह-आह! आह-आह!' फिर बाघ ने हमला कर दिया।

कीरा जैसे ही घूमा, एक विशालकाय आकृति ने अपने चौड़े जबड़े से उसे जकड़ लिया। पुजारी ने बस एक बार चीखा: 'अय्यो-ओ-ओ!' उसके बाद वह फिर नहीं चीखा। जो पक्षी इस त्रासदी के समय चहचहाना बंद कर चुके थे, वे फिर से चीखने लगे और रास्ते के किनारे से हड्डियों के चटकने और टूटने की आवाज़ आई, जैसे ही बाघ ने अपना भोजन शुरू किया।

पहाड़ी की ढलान पर लंगूर बंदरों का एक झुंड खुशी-खुशी भोजन कर रहा था, उनकी 'वूम्प! वूम्प, वूम्प!' की आवाज़ें संकरी घाटी में गूंज रही थीं। तभी लंगूर पहरेदार की तेज़ सुनने की शक्ति ने दूर से आती बाघ की दहाड़ और धीमी, व्यर्थ, पीड़ादायक मानव चीख को सुना। वह समझ गया कि बाघ ने अपना शिकार कर लिया है और उसके होठों से कर्कश, गहरी लंगूर जैसी चेतावनी भरी चीख निकली, जब वह अपने पिछले पैरों पर एक ऊँची शाखा पर खड़ा हो गया ताकि पता लगा सके कि हत्यारा किस दिशा में जा रहा है।

'हा-आह! हर्र! हर्र!' चौकीदार बार-बार पुकार रहा था। लंगूरों ने खेलना बंद कर दिया और डर के मारे इधर-उधर भागने लगे, पेड़ों की चोटियों पर अपने-अपने समूह में छिप गए; वहीं जंगल के निचले हिस्से में मौजूद हिरण और अन्य जीव, जिनके तेज़ कानों ने मौत की आहट और बंदरों के खतरे की चेतावनी सुन ली थी, उस भयावह घाटी से दूर पहाड़ी की ओर दौड़ पड़े।

समय बीतता गया और जंगल का जीवन सामान्य रूप से चलने लगा। पक्षी पल भर में उस त्रासदी को भूल गए; बंदरों और अन्य जानवरों को शांत होने में शायद एक घंटा लगा; जबकि दूर स्थित मांची गांव के पुजारी अपने कुल के कीरा की मृत्यु को एक-दो महीने में निश्चित रूप से भूल जाते, अगर दो सप्ताह बाद उनमें से एक और की हत्या न हो जाती; और उसके दस दिन बाद, एक तीसरे की भी।

पुजारी इन बातों को कभी नहीं भूल सके। उन पर एक भयानक भय छा गया। उनके छोटे से गाँव पर एक विपत्ति मंडरा रही थी; एक आदमखोर जानवर वहाँ रहने के

लिए आ गया था!

ये लोग एक ऐसे कबीले से ताल्लुक रखते हैं जो जंगल की उपज पर निर्भर है। वे ऊँची चट्टानों और पेड़ों पर बने विशाल छत्तों से जंगली शहद इकट्ठा करते हैं; वे इगुआना-छिपकली को पकड़ते हैं जिसे वे खाते हैं या उसकी पूंछ में पाए जाने वाले कामोत्तेजक गुणों के लिए बेचते हैं; वे औषधीय जड़ी-बूटियाँ, जड़ें और बेर चुनते हैं जिनका व्यापार दवा के रूप में किया जाता है; और वे साल के मौसम के अनुसार बांस, घास और इमली के फल काटते और इकट्ठा करते हैं। यह सब वे मामूली कमाई के लिए करते हैं, जो यूरोप या अमेरिका में रहने वाला एक आम आदमी अपने पालतू कुत्ते को खिलाने पर खर्च करता है उससे भी कम। उनका काम, उनका अस्तित्व ही जंगल पर निर्भर है, और उस जंगल में अब एक भयानक खतरा आ चुका था। जो भी आदमी सुबह अपनी टूटी-फूटी घास की झोपड़ी से निकलता था, उसे नहीं पता होता था कि वह रात को वापस लौटेगा या नहीं। कोई भी औरत या बच्चा सुरक्षित नहीं था; क्योंकि दूसरी और तीसरी शिकार क्रमशः नौ साल की एक बच्ची और चौदह साल की एक गर्भवती दुल्हन थीं!

उनमें से किसी ने भी इस बारे में कुछ नहीं किया, सिवाय एक व्यक्ति के, और वह था मेरा पुराना मित्र और वन विद्या का प्रशिक्षक, बायरा पुजारी। इससे पहले भी एक बार उन्होंने मुझे 'केम्पेकराई के लुटेरे' के मामले में बुलाया था, जिसके बारे में मैंने कहीं और लिखा है,* और एक बार फिर उन्होंने मुझसे मांची के लोगों की मदद के लिए आने का अनुरोध किया।

इस बार बायरा स्वयं संदेश पहुंचाने के लिए आए, न कि किसी और के माध्यम से। वे मानची से अयूर गांव तक दस मील या उससे अधिक पैदल चले, और फिर वहां से डेनकनिकोटा कस्बे तक नौ मील पैदल चलकर गए, जहां से एक बस उन्हें बैंगलोर ले आई।

उसने मुझे जो कहानी सुनाई, उससे यह स्पष्ट था कि तीनों हत्याएं अपेक्षाकृत कम समय में, कुल चौबीस दिनों के भीतर और सभी मानची से चार मील के दायरे में, अयूर से केम्पेकराई जाने वाले रास्ते के पास, उस गहरी घाटी में हुई थीं, जिसे मैंने कहीं और 'मकड़ी घाटी' के रूप में संदर्भित किया है, क्योंकि वहां बड़ी मकड़ियां पाई जाती हैं।

इन हत्याओं से संकेत मिलता है कि नरभक्षी बाघों का यह कारनामा अभी तक

बिल्कुल नया था। या तो वह कोई युवा जानवर था जिसने किसी कारणवश नरभक्षी बनने का सफर शुरू किया था; या फिर वह कोई घायल बाघ था जो लगभग लाचार होकर भूख से बेहाल था; या शायद कोई बाघिन थी जो अपने शावकों को खिलाने के लिए ही शिकार कर रही थी। तीसरा विकल्प बेहद असंभव था, क्योंकि आसपास की पहाड़ियों पर अभी भी काफी जंगली जानवर मौजूद थे, जबकि अय्यूर, गुलहाटी और बेट्टामुगलम गांवों के आसपास मवेशी बहुतायत में थे।

तथ्यों से तो यही लगता है कि वह बाघ अभी नया था। कोई भी अनुभवी आदमखोर बाघ इतनी जल्दी-जल्दी और लगभग एक ही जगह पर शिकार नहीं करता, जैसा कि इस बाघ ने किया। अनुभवी बाघ इतने चालाक होते हैं कि वे ऐसा नहीं कर सकते। वे कई मील लंबा घुमावदार रास्ता तय करते हैं, एक बड़े भूभाग को कवर करते हैं और अचानक और अनियमित अंतराल पर शिकार करते हैं, ये सभी आदतें मिलकर उन्हें गोली मारना बेहद मुश्किल बना देती हैं।

मेरे लिए सबसे सही रास्ता यही होगा कि मैं तेज़ी से हमला करके इस दरिंदे को पकड़ लूँ, इससे पहले कि वह अनुभव से सीखकर ज़्यादा सतर्क और कुशल हो जाए। वह सतर्कता तब अपनाएगा जब गाँव वाले उसे गोली मारकर या किसी और तरीके से जवाबी कार्रवाई करने की कोशिश करेंगे। तब वह डर जाएगा; या शायद घायल हो जाएगा। इससे वह और भी समझदार और कहीं ज़्यादा खतरनाक दुश्मन बन जाएगा।

मैं उस इलाके से भली-भांति परिचित था। कई वर्षों तक मैंने उस घने बाँस के जंगल में पैदल यात्रा की थी, जो उत्तर और दक्षिण की ओर फैली दो समानांतर पर्वत श्रृंखलाओं से घिरी गहरी, संकरी घाटी में स्थित था। ये श्रृंखलाएँ एक संकरी धारा के किनारों से सटी हुई थीं, जो दक्षिण की ओर बहते हुए अंत में सोपथी नामक स्थान पर चिनार नदी में मिल जाती थी। पूर्वी श्रृंखला दोनों में अधिक ऊँची थी, जिसका अंतिम छोर गुथेरायन नामक एक ऊँची चोटी पर था, जिसके पास कोडेकराई फॉरेस्ट लॉज नामक एक सुरम्य वन बंगला था। केम्पेकराई गाँव दूसरी और पश्चिमी श्रृंखला की ढलानों पर, उस छोटी धारा से थोड़ी दूरी पर स्थित था। यह स्थान लगभग वैसा ही था जैसा मेरे पिछले साहसिक कार्य में था, सिवाय इसके कि 'केम्पेकराई का लुटेरा' एक अधिक अनुभवी आदमखोर था, जो उस नाम के छोटे से गाँव के पश्चिम और दक्षिण के क्षेत्र में शिकार करता था। जैसा कि मैंने अभी आपको बताया है, वर्तमान जानवर ने अब तक अपनी गतिविधियों को मानची बस्ती के उत्तर और अयूर मार्ग के पास तक ही

सीमित रखा था। इस कारण से उसे पकड़ना अपेक्षाकृत आसान होना चाहिए।

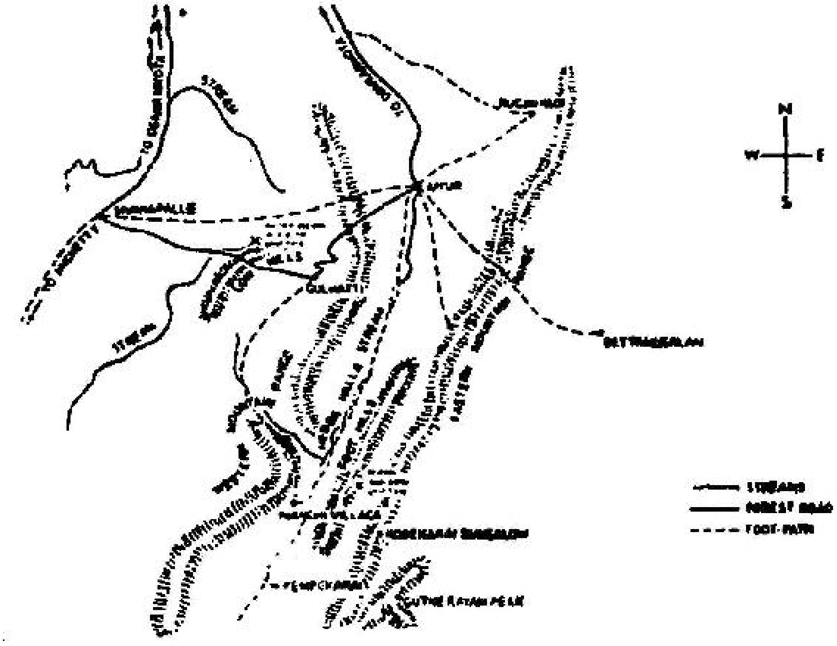

बायरा और मैंने अपना कैंपिंग का सामान स्टुडेबेकर गाड़ी में रखा, जिसमें लगभग एक हफ्ते का खाना था - चपाती बनाने का आटा, रोटी, मक्खन, सब्जियां - खासकर आलू - और हां, चाय, कॉफी और चीनी। साथ ही, मैंने अपना छोटा सा टेंट और बिस्तर भी रखा। फिर हम डेनकनिकोटा और अय्यूर के लिए निकल पड़े। अय्यूर से हमें मानची तक पैदल चलना था, जिसका मतलब था कि बायरा और मुझे दस मील से ज़्यादा का बोझ उठाना पड़ेगा। अच्छी बात यह थी कि जाते समय ज़्यादातर रास्ता ढलान वाला था, लेकिन लौटते समय चढ़ाई थी।

इन यात्राओं के दौरान मैं जहाँ तक संभव हो डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों से परहेज करता हूँ। मानता हूँ कि इन्हें ले जाना सुविधाजनक होता है। लेकिन भारत के ग्रामीणों की तरह मुझे भी ताज़ा और सादा भोजन पसंद है। इसी वजह से मैं अपच और पेट की अन्य समस्याओं से काफी हद तक बचा रहता हूँ, जो दुनिया के आधे से ज़्यादा पढ़े-लिखे लोगों, चाहे वे भारतीय हों या यूरोपीय, को परेशान करती हैं।

मैंने अपना टेंट बायरा के सिर पर रख दिया, पलंग को अपनी पीठ पर लाद लिया, आटे और सब्जियों से भरा थैला उसके ऊपर लाद दिया, और राइफलों समेत बाकी सारा सामान खुद उठा लिया। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि हम काफी बोझ से दबे हुए थे, लेकिन बायरा को जरा भी तकलीफ नहीं हुई क्योंकि वह मेरे आगे-आगे तेजी से चल रहा था।

घाटी गर्म और उमस भरी थी और मैं पसीने से तरबतर था। मेरे साथी को आगे चलने के कारण जंगली हाथी से अधिक खतरा था, जबकि मुझे बाघ से अधिक खतरा था, क्योंकि आदमखोर बाघ हमेशा रास्ते में सबसे पीछे वाले व्यक्ति पर हमला करते हैं। दोनों ही मामलों में, हम दोनों पर इतना बोझ था कि हम कुछ नहीं कर सकते थे। लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमने हाथियों या बाघों के बारे में सोचा भी, क्योंकि हमारा सारा ध्यान यात्रा के अंत तक जल्द से जल्द पहुँचने और अपने इस भारी बोझ से छुटकारा पाने पर था।

आखिरकार हम पहुँच गए, और राहत की साँस लेते हुए मैंने अपने सारे सामान (राइफल को छोड़कर) उस छोटे से पीने के पानी के कुंड के ठीक पास फेंक दिए, जो इस रोमांचक यात्रा में अहम भूमिका निभाने वाला था। सबसे पहली ज़रूरत थी चाय—ढेर सारी चाय—और मैंने बायरा से कहा कि वह कुंड से केतली भर ले और जल्दी से आग जला दे। देखते ही देखते हम गरमागरम चाय पीने लगे और ज़िंदगी एक बार फिर खुशनुमा लगने लगी।

तब तक बायरा के कुछ दोस्त गाँव से हमारे आस-पास जमा हो गए थे। वे सभी पुजारी थे—कमज़ोर, दुबले-पतले और कम कपड़े पहने हुए—लेकिन सभी बेहद साहसी थे। पुरुषों ने छोटी-सी मूंछें बाँध रखी थीं और कुछ नहीं; स्त्रियाँ नग्न थीं, बाकी शरीर फटी हुई साड़ियों से ढका था जो शरीर को ढक नहीं पा रही थीं; बच्चे, लड़के और लड़कियाँ, पूरी तरह नग्न थे।

सामान्य अभिवादन हुआ, जिसके बाद बायरा ने विस्तार से बताया कि वह अपने दोराई को लाने के लिए बैंगलोर कैसे गया था, जो तुरंत उनकी मदद के लिए आ गया था। सबने हैरानी से फुसफुसाया और व्यावहारिक स्वभाव का होने के कारण, मैंने स्थिति का फायदा उठाते हुए कुछ बड़े लड़कों को तालाब के चारों ओर उगने वाली झाड़ियों से लकड़ियाँ लाने के लिए भेजा और एक आदमी को एल्युमिनियम के थैले और मेरे साथ लाई पानी की बोतल में पानी भरकर रखने के लिए भेजा। इन सामान्य

लेकिन आवश्यक कामों को निपटाने के बाद, मैं घर से लाए गए भुने हुए मांस, जैम और मक्खन लगी रोटी को चबाने लगा और अपने साथियों से बाघ के बारे में जो कुछ भी वे जानते थे, वह बताने को कहा।

बायरा द्वारा बताई गई बुनियादी बातों के अलावा मुझे ज़्यादा जानकारी नहीं मिली, लेकिन एक नई बात पता चली। बायरा पिछली सुबह बैंगलोर के लिए रवाना हो गई थी। उसी दिन दोपहर के शुरुआती समय में, आदमखोर सांप के डर से कोई भी तीन बजे के बाद तालाब के पास नहीं जाता था, इसलिए चार औरतें एक साथ पानी लेने गई थीं। वे एक-दूसरे के करीब रहीं, अपनी संख्या के बल पर सुरक्षा का भरोसा कर रही थीं।

महिलाओं ने अपना काम पूरा कर लिया था और मुड़ने ही वाली थीं कि सबसे बड़ी महिला ने लगभग पचास गज दूर जंगल की सीमा पर लगी एक झाड़ी के नीचे हल्की सी हलचल देखी। उसने पास जाकर देखा। उसकी सहेलियों ने भी उसे किसी चीज़ को घूरते हुए देखकर उसी ओर देखा। उस झाड़ी के नीचे ज़मीन पर एक विशाल बाघ का सिर पड़ा था। वह भूखी निगाहों से उन्हें घूर रहा था और गुर्रा रहा था! चीखते हुए उन्होंने अपने पानी के घड़े फेंक दिए और 200 गज से भी कम दूरी पर स्थित छोटे से गाँव की ओर भागीं। इस बार बाघ ने हमला नहीं किया और वे सभी सुरक्षित वापस आ गईं।

उन चार महिलाओं में से दो मेरे आस-पास के समूह में थीं। एक ने बाघ के सिर को 'इतना बड़ा' बताया, यानी फैले हुए हाथों के बीच की दूरी एक गज थी। दूसरी, जो बहुत ही सहज और सुंदर युवती थी, और साथ ही थोड़ी बुद्धिमान भी, ने कहा कि वह इतना बड़ा था कि हम चारों को और मुझे भी खा सकता था। इस कथन के बाद उसकी हल्की सी मुस्कान शायद इस बात का संकेत थी कि सब कुछ खत्म होने के बाद, कम से कम मैं बाघ के पेट के अंदर सुरक्षित और सुरक्षित रहूँगा!

यह खबर सुनकर मुझे खुशी हुई और मैंने बायरा की आँखों में संतोष की चमक देखी। एक अनुभवी शिकारी होने के नाते, वह जानता था कि अब हमारे लिए सब कुछ आसान हो जाएगा। अगर बाघ कल शाम को वहाँ था, तो संभवतः वह आज शाम को भी आएगा। क्या पता, वह इस समय हमें देख रहा हो।

इस नई घटना ने मुझे तालाब के पास तंबू लगाने का अपना इरादा बदलने पर मजबूर कर दिया। यह मेरे नए विचार में फिट नहीं बैठता था। गाँव के भीतर ही डेरा

डालना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि पुजारी, जिनमें कई अच्छे गुण होते हैं, स्वच्छता को महत्व नहीं देते। इसलिए मैंने कुछ आदमियों से अपना सामान गाँव से थोड़ा आगे, जहाँ एक जंगली कटहल का पेड़ उग रहा था, ले जाने को कहा। उसकी छाँव में मैंने छोटा सा तंबू लगाया और अपना सामान अंदर रख दिया।

मेरे मन में जो योजना आई थी, उसमें बाघ को तालाब से जोड़ा गया था। वाकई अजीब बात थी कि आदमखोर बाघ का इंतज़ार करते हुए ऐसी स्थिति दो बार पैदा हो गई। कुछ ही मील दूर, कई साल पहले केम्पेकराई में हुए उस पहले हादसे में, मैं रात भर एक कुएँ पर उस 'हमलावर' के मुझे मारने की कोशिश का इंतज़ार करता रहा था। लेकिन मेरा इंतज़ार बेकार गया था। शायद यह बाघ, जो इतना अनुभवी जानवर नहीं था, ज़्यादा मददगार साबित हो और मुझे खुशी थी कि मैंने तालाब के पास अपना तंबू (जो लगभग सफेद रंग का था) लगाने की गलती नहीं की थी। जहाँ सालों पहले वाला 'हमलावर' तंबू में रहने वाले पर हमला करने के लिए ललचा सकता था, वहीं आदमखोर बाघों में नया आया यह बाघ ज़रूर डरकर भाग जाएगा। कम से कम मैंने यही सोचा था और बायरा भी मुझसे सहमत थी। उस रात की घटनाओं ने हम दोनों को पूरी तरह गलत साबित कर दिया।

सूर्यास्त के समय मैंने जल्दी खाना खा लिया, अपने साथ लाए हुए भुने हुए मांस का बचा हुआ हिस्सा खत्म कर दिया। इस बार मैंने चाय नहीं बनाई और पानी भी न के बराबर पिया, क्योंकि अनुभव ने मुझे सिखाया था कि आदमखोर बाघ की रात भर निगरानी करते समय तरल पदार्थ पीना व्यर्थ होता है। प्रकृति अपने सामान्य नियमों से विचलित नहीं होती, और शिकारी की जरा सी भी हलचल या हरकत आने पर बाघ को उसकी उपस्थिति का पता चल जाता है।

रात अंधेरी होगी, इसलिए मैंने उस 'लुटेरे' वाली योजना को पूरी तरह से नहीं अपनाया। वह चांदनी रात थी और मैंने जानबूझकर चरचराती हुई पुली को चलाकर और पानी भरने का नाटक करके कुएँ पर अपनी उपस्थिति का संकेत दिया था ताकि बाघ को आकर्षित कर सकूँ। लेकिन यह रात पूरी तरह से अंधेरी होगी और खुलेआम खुद को दिखाना मूर्खता होगी। वह मुझे सुन और देख तो लेगा; बस दिक्कत ये होगी कि मैं उसे देख तो नहीं पाऊँगा, और शायद उसे सुन भी न पाऊँ जब तक बहुत देर न हो जाए!

इसलिए मैंने योजना में थोड़ा बदलाव करने का फैसला किया और पानी से

लगभग बीस फीट दूर बबूल के पेड़ से पीठ टिकाकर जंगल की ओर मुंह करके बैठ गया। मैं बिल्कुल स्थिर बैठा रहा, बिना हिले-डुले। आदमखोर सांप पीछे से हमला नहीं कर सकता था। उसे सामने से या दोनों तरफ से आना पड़ता और स्थिर बैठे रहने से न केवल मुझे उसकी आवाज सुनने में मदद मिलती, बल्कि वह भी उलझन में पड़ जाता। हो सकता है वह मुझे देखे ही नहीं; या अगर देख भी ले, तो अनुभवहीन होने के कारण वह मेरी गतिहीनता को देखकर हैरान हो जाएगा और जांच-पड़ताल करने का फैसला करेगा। मुझे उम्मीद थी कि इस दौरान वह कोई आवाज जरूर करेगा।

जब बायरा ने मेरी योजना सुनी, तो उसने कहा कि यह बहुत ही मूर्खतापूर्ण योजना है। बाघ बिना कोई आवाज़ किए हमला कर सकता है। वह पीछे से आ सकता है। उस अंधेरे में मुझे कुछ सुनाई नहीं देगा और कुछ दिखाई नहीं देगा; लेकिन आदमखोर बाघ मुझे ज़रूर देख लेगा, जबकि वह (बायरा) मुझे फिर कभी नहीं देख पाएगा। वैसे भी, बाघ शायद इस रास्ते से आए ही न। आधी रात को वह पानी के कुंड के आसपास क्यों घूमेगा? वह जानवर अच्छी तरह जानता था कि लोग इससे पानी लेते हैं—लेकिन दिन के उजाले में, रात में नहीं।

जब वह बोल रहा था, बायरा ने मेरी ओर विशेष दृष्टि डाली, और उसकी नज़र का अर्थ स्पष्ट हो गया। वह मुझे विचलित करने की कोशिश कर रहा था।

मैंने चिढ़कर बीच में ही टोकते हुए कहा, 'मुझे यह सब पता है, लेकिन यही एकमात्र तरीका है।'

वह बूढ़ा व्यक्ति मामले को और जटिल बनाने पर तुला हुआ था।

'मेरा मतलब यह बिल्कुल नहीं था कि तुम बाघ के सामने न बैठो,' उसने आक्रामक लहजे में कहा। 'मेरा मतलब यह था कि तुम मेरे साथ रहो। हमें मिलकर उसके लौटने का इंतजार करना चाहिए।'

'बेवकूफ,' मैंने बीच में ही टोकते हुए, जितना हो सके उतने अभद्र लहजे में कहा, 'तुम्हारे पास एक मक्खी के बराबर भी अक्ल नहीं है! तुम्हारी मौजूदगी से अंधेरा कैसे कम होगा? इससे दूर रहो और मुझे अपनी योजना पर अमल करने दो, कम से कम आज रात के लिए। कल अगर तुम्हें कोई बेहतर योजना सूझे तो बता देना।'

'अगर आप यहां सुनने के लिए आए हैं,' उन्होंने तीखे लहजे में अपनी बात समाप्त की।

और इसलिए, सूर्यास्त से एक घंटा पहले, मैं छोटे तालाब के पास अपनी जगह

पर बैठ गया, मेरी पीठ बबूल के पेड़ की ओर थी और मेरा मुख जंगल की ओर था, उसके पार बहती छोटी सी धारा और उस रास्ते की ओर जिससे हम उस सुबह आए थे। मन ही मन मैं आशा कर रहा था कि बाघ जल्दी आ जाए और मुझे देख ले और बदले में वह भी उसी तरह प्रकट हो जाए जैसे वह उन चार लड़कियों को हुआ था, ताकि अंधेरा होने से पहले यह मामला समाप्त हो जाए। दुर्भाग्य से, आदमखोर बाघ ने मेरी इच्छा पूरी नहीं की।

गाँव के पुजारियों ने पहले से काटी हुई कंटीली झाड़ियों के बड़े-बड़े गुच्छे अपनी झोपड़ियों के निचले दरवाजों के चारों ओर जमा कर दिए, फिर संभलकर उनके बीच से कदम रखते हुए अंदर चले गए। मैं सुन सकता था कि झोपड़ियों के छप्पर वाले दरवाजों को अंदर से नदी से लाए गए बड़े-बड़े पत्थरों से बंद किया जा रहा था। ये लोग आत्मनिर्भरता में विश्वास रखते थे, और यह स्पष्ट था कि उन्हें मुझ पर ज्यादा भरोसा नहीं था कि मैं उन्हें उस जानलेवा खतरे से बचा पाऊँगा जो अब उनके जीवन के लिए खतरा बन चुका था।

पश्चिम की पहाड़ियों के पीछे सूरज डूब चुका था, नीले रंग की पृष्ठभूमि में पहाड़ियों की ऊँचाई उभर रही थी, जो धीरे-धीरे गुलाबी और फिर नारंगी रंग में बदल गई। चूंकि मैं उत्तर-पूर्व की ओर देख रहा था, इसलिए मुझे इस सूर्यास्त की सुंदरता की झलकियाँ बस कुछ पल के लिए ही दिखाई दे रही थीं। नारंगी रंग गहराकर खून जैसे लाल रंग में बदल गया, फिर गहरे लाल, हरे, पीले, बैंगनी और जामुनी रंग में। एक पल में ही अंधेरा छा गया।

जब मैं सूर्यास्त को ध्यान से देख रहा था, तब मैं जंगल की आवाज़ें सुन रहा था जो हमेशा मेरे कानों को मधुर संगीत लगती हैं, खासकर दिन ढलने पर और फिर भोर में। पहाड़ियों की विपरीत दिशाओं में स्थित दो ढलानों पर बसे लंगूर बंदरों के दो परिवार संकरी, गहरी घाटी में एक-दूसरे को पुकार रहे थे। एक समूह के नर बंदर डालियों पर उछलते हुए 'वूम्प! वूम्प! वूम्प!' की आवाज़ निकाल रहे थे, और नदी के पार पहाड़ी ढलानों पर बसे दूसरे समूह से भी खुशी भरी आवाज़ें आ रही थीं: 'वूम्प! वूम्प! वूम्प!' और मादा और बच्चे 'चीक! चीक!' की आवाज़ निकाल रहे थे।

फिर अचानक खुशी की आवाजें डर और खतरे की आवाजों में बदल गईं, क्योंकि दूर के कबीले के बंदर-पहरेदार ने अपनी रुक-रुक कर भौंकने वाली चेतावनी भरी आवाज निकाली: 'हा-आह! हर्र! हर्र!' जिसे वह थोड़े-थोड़े अंतराल पर दोहराता

रहा।

घाटी के उसी तरफ, मेरे करीब मौजूद बंदरों का समूह शांत हो गया, जबकि उनका पहरेदार बारी-बारी से चेतावनी का स्वर अपनाते हुए अपने साथी की दूर से आती आवाजों का जवाब देने लगा: 'हाहा! हर्र! हर्र!' दोनों बंदर पहरेदार एक-दूसरे को जवाब देते रहे और मेरी नसें उम्मीद से सुखद रूप से झनझना उठीं।

ऐसी आवाज़ों के आदी व्यक्ति के लिए, पुकारों की ध्वनि में बहुत अंतर था। दूर खड़े पहरेदार की आवाज़ में गहरा भय और आशंका थी, और यह स्पष्ट था कि वह खतरे के स्रोत को देख सकता था। घाटी के इस तरफ़ खड़ा पहरेदार भी खतरे की घंटी बजा रहा था, लेकिन वह केवल अपने कबीले को सतर्क करने का अपना कर्तव्य निभा रहा था। उसकी आवाज़ सपाट और सीधी-सादी थी। इसका पता इस बात से चलता था कि वह हर बार दूसरे पहरेदार के तुरंत बाद, प्रतिध्वनि की तरह पुकारता था।

दो बंदरों की आवाजें धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं, तभी नदी के किनारे कहीं एक जंगली मुर्गा अचानक डर से चीख उठा: 'कुक! कुक! कुक!' उसके साथ बैठी मादा मुर्गे ने अपने साथी की डर भरी चीखें सुनकर तेजी से उड़कर 'क्र-र-र-र! कीक! कीक! कीक!' चिल्लाते हुए जंगल में सन्नाटा छा गया। तभी एक मोर ने घबराहट का संकेत दिया; 'क्वैंक! क्वैंक! क्वैंक!' उसकी कर्कश आवाज ने सन्नाटे को तोड़ दिया और कुछ ही देर बाद मुझे दूर से उसके पंखों के फड़फड़ाने की भारी आवाज सुनाई दी, जैसे वह अपने भारी शरीर को हवा में उछालकर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया हो।

मुझे पता था कि बाघ आसपास है! वह पहाड़ियों की दूसरी तरफ से नीचे उतर आया था और दूर खड़े लंगूर-पहरेदार ने उसे देख लिया था। उसने नदी पार की और जंगली मुर्गों और मोर को परेशान किया। अब वह सीधे तालाब और उस जगह की ओर आ रहा था जहाँ मैं बैठा था।

हर मिनट बीतने के साथ अंधेरा गहराता जा रहा था। क्या पास खड़े लंगूर पहरेदार की पैनी नज़रें उसे देख पाएंगी? हालाँकि बंदर ऊँचाई पर होने का फ़ायदा उठा रहा था, फिर भी वह काफ़ी दूर था, और कोई भी बाघ—यहाँ तक कि आदमखोरों में नौसिखिया भी—अपनी मौजूदगी का पता बेवजह नहीं लगने देगा। मेरा शक अगले ही पल दूर हो गया जब मेरे बाईं ओर पहाड़ी पर खड़ा पहरेदार घबराकर, डर के मारे चिल्ला उठा: 'हा-आह! हर्र! हर्र!' उसकी चीखें अब तेज़ थीं, और उसके दूर खड़े साथी

से अलग थीं, जो अभी भी पुकार रहा था, लेकिन काफ़ी देर के अंतराल पर। इस बार उसके कानों में डर था—खतरे और अचानक मौत का डर। उसने आदमखोर को देख लिया था। और वह मेरे अनुमान से कहीं ज़्यादा करीब था।

लेकिन बाघ का मुझे न तो कुछ दिखाई दे रहा था और न ही कुछ सुनाई दे रहा था। अंधेरा लगातार गहराता जा रहा था। मेरे सामने जंगल के किनारे पर उगी झाड़ियाँ धुंधली पड़ गई थीं। वे गहरे चॉकलेट रंग की पृष्ठभूमि में भूरे रंग के ढेर की तरह दिख रही थीं, जो तेज़ी से काले रंग में बदल रहा था। जंगल में एक खौफनाक सन्नाटा छा गया, जो उसे पूरी तरह से घेर रहा था। दूर खड़ा लंगूर पहरेदार बिल्कुल भी नहीं बोल रहा था, और पास वाला भी रुक-रुक कर ही भौंक रहा था। वह अब बाघ को नहीं देख पा रहा था और अपने कबीले को सचेत करके अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद, सोच रहा था कि अब आगे क्या करे।

मेरे दाएं और बाएं ओर फैली पर्वत श्रृंखलाओं की चोटियाँ, कम अंधेरे की पृष्ठभूमि में गहरे काले रंग की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं की तरह दिखाई दे रही थीं, जिन पर असंख्य तारे टिमटिमा रहे थे और अपनी अनूठी चमक बिखेर रहे थे। मैंने उनमें से एक तारे पर ध्यान केंद्रित किया। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी दिव्य रत्न की तरह लगातार अपना रंग बदल रहा हो।

मेरे सामने फैले अँधेरे में घूरते हुए मैंने बारी-बारी से दाएं-बाएं देखा। मैंने अपनी सांसें धीमी कर लीं, यहाँ तक कि पूरी तरह से सांस रोकने की कोशिश भी की, ताकि हल्की सी भी आवाज़ सुन सकूँ। लेकिन मुझे कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया।

फिर, दिल दहला देने वाली अचानकता के साथ, तालाब के ठीक दूसरी ओर झाड़ियों में एक सांभर ने जोर से आवाज लगाई: 'धंक! ऊंक! ऊंक!'

जैसे ही वह झाड़ियों से होते हुए आगे बढ़ा, झाड़ियाँ चटकने लगीं। कुछ ही सेकंड में उसकी दौड़ने की आवाज़ गुम हो गई, लेकिन वह नदी के पत्थरों पर सरसराते हुए और सामने की पहाड़ियों की ढलानों पर चढ़ते हुए घबराहट भरी आवाज़ में पुकारता रहा, 'ऊंक! ऊंक! ऊंक!' उसकी चीखें बढ़ती दूरी के साथ-साथ धीमी होती गईं।

मैं अपने जंगल के साथियों की चेतावनियों के लिए वास्तव में आभारी था, क्योंकि उन्होंने मुझे इतनी स्पष्टता से बताया मानो मैंने उसे अपनी आँखों से देखा हो कि बाघ मेरे बैठने की जगह से कुछ ही गज की दूरी पर था। सवाल ये थे: क्या उसने

मुझे देखा था? क्या वह मुझे देखेगा?

मैं जंगल में स्थिरता का महत्व जानता हूँ, इसलिए मैं बिल्कुल स्थिर बैठा रहा, साँस लेने की भी हिम्मत नहीं कर रहा था। बाघ की तत्काल नज़र से बचने का यही मेरा एकमात्र उपाय था।

सेकंड अंतहीन रूप से बीतते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे मिनट और फिर घंटे बीत रहे हों, हालांकि मैं जानता था कि वे केवल सेकंड ही थे। तभी मुझे अपने दाहिनी ओर एक हल्की सी सरसराहट सुनाई दी: एक पत्ते के पलटने जैसी हल्की सी आवाज़, और वह तालाब की दिशा से आ रही थी। हवा का एक झोंका भी नहीं गुजरा जिससे वह सूखा पत्ता हिल सके और मैं जानता था कि आवाज़ का स्रोत झाड़ियों के बीच से, मेरी नज़र से छिपा हुआ, उस समय तालाब के पास से गुजर रहा था, और कुछ ही क्षणों में वह मेरे पीछे से निकल जाएगा।

मैंने अपनी सांस रोककर ध्यान से सुना, लेकिन मुझे कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दी। मेरी अंतरात्मा मुझे चेतावनी दे रही थी कि बाघ अब आगे निकल चुका है और उस बबूल के पेड़ के दूसरी तरफ झाड़ियों के पीछे कहीं छिपा है, जिस पर मैं टिका हुआ था। मुझे मुड़कर खतरे का सामना करने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन मैं जानता था कि अगर मैंने ऐसा किया तो निश्चित रूप से कोई हल्की सी आवाज़ ज़रूर निकलेगी। चाहे वह कितनी भी धीमी क्यों न हो, बाघ उसे सुन लेगा और संभवतः जाँच करने के लिए मुड़ जाएगा। इसलिए मैंने उस इच्छा को दबा लिया, और यह देखने के लिए अपना सिर घुमाया कि क्या वह जानवर पीछे से मेरी ओर आ रहा है। मुझे बस कुछ इंच की दूरी पर बबूल के पेड़ का तना दिखाई दिया, और उसके आगे अंधेरा ही अंधेरा था।

पता नहीं मैंने कितनी देर तक इस अनिश्चितता को सहन किया, लेकिन अचानक मेरे ठीक पीछे स्थित पुजारी बस्ती में एक कुत्ते के चीखते हुए, डर से भरे भौंकने से सन्नाटा टूट गया। क्षण भर के लिए तनाव कम हुआ और मैंने चैन की सांस ली। अब दो बातें मेरे लिए स्पष्ट थीं। बाघ मेरी मौजूदगी को भांपे बिना कुएं के पास से गुजर गया था और इंसानों का शिकार ढूंढते हुए झोपड़ियों की ओर चला गया था। दूसरी बात, और इसमें कोई संदेह नहीं था, वह आदमखोर बाघ था, क्योंकि कोई भी साधारण बाघ जानबूझकर इंसानी बस्तियों के पास नहीं भटकता।

उसी क्षण मेरे मन में एक बिलकुल बेतुका विचार आया। मैंने सोचा कि जहाँ मैं

हूँ वहीं रहने से मेरा कोई भला नहीं होगा। मान लीजिए कि आदमखोर को कोई इंसान शिकार नहीं मिला, तो इस बात की संभावना बहुत कम थी कि वह वापस लौटकर तालाब के पास से गुजरेगा। वह किसी भी दिशा में भटक सकता था, और अगर वह लौटा भी तो पीछे से मुझ पर हमला करेगा और इस बार शायद वह मेरी मौजूदगी को पहचान लेगा।

मैं आपको यह नहीं बता सकता कि मैंने सबसे आसान काम क्यों नहीं सोचा; यानी जहाँ बैठा था वहीं गाँव की ओर मुँह करके बैठ जाना। इसके बजाय, मैंने खुद गाँव की ओर जाने का फैसला किया, पास पहुँचकर टॉर्च जलाकर बाघ की आँखों की चमक को उसकी रोशनी में देखने का सोचा। इससे मुझे आसानी से निशाना लगाने का मौका मिल जाता।

यह एक मूर्खतापूर्ण काम था। अगर मैं वहीं रुका रहता, तो बाघ तालाब पर पानी पीने लौट आता, जबकि मैं बबूल के पेड़ के तने के पीछे छिपकर आसानी से निशाना लगा सकता था। इसके बजाय, मैं चुपके से खड़ा हुआ और आधा झुककर उस छोटे से गाँव की ओर बढ़ने लगा, जो जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, मुश्किल से 200 गज दूर था।

कुछ कदम चलने पर ही मुझे अपनी मूर्खता का एहसास हो गया, क्योंकि झोपड़ियों से तालाब तक जाने वाला रास्ता तो स्पष्ट था, लेकिन घने अंधेरे में मैं उसे देख नहीं पा रहा था और झाड़ियों में लड़खड़ाने लगा। मेरी आवाज़ इतनी तेज़ थी कि आदमखोर डर कर भाग गया या फिर हमला करने को उकसाया। तब मैंने उस मित्रवत बबुल के पास वापस जाने का सोचा, लेकिन फिर आगे बढ़ने का फैसला किया, इस बार इस बात को पूरी तरह जानते हुए कि आदमखोर शायद पाँच गज की दूरी पर किसी झाड़ी के पीछे छिपा हो और मैं उसे देख न पाऊँ।

उस कुत्ते के बेतहाशा भौंकने की आवाज़ उसके जैसे दूसरे कुत्तों ने भी निकाल ली, और अब तक गाँव के लगभग आधा दर्जन कुत्ते पूरी तरह से पागलों की तरह ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे, इतना शोर मचा रहे थे कि बड़े से बड़े आदमखोर भी घबरा जाते। इस शोर के बीच बाघ का अपने इरादे पर कायम रहना बहुत मुश्किल था; वह या तो चुपके से निकल जाता या वापस लौट जाता। और अगर वह वापस लौटता भी, तो किसी भी पल मुझसे आमना-सामना हो सकता था।

इसी सोच के साथ मैंने शाम की दूसरी गलती कर दी। मैंने अपनी टॉर्च जला ली

—जो कि बहुत जल्दी हो गई थी! जैसे ही तेज रोशनी ने अंधेरे को चीर दिया, बाघ, जिसकी मुझे एक झलक भी नहीं मिली, अधिकांश आदमखोरों के कायर स्वभाव के अनुरूप, सामने कहीं से दहाड़ उठा और मैं उसे सूखी झाड़ियों में गिरते हुए सुन सका।

अब और सावधानी बरतने का कोई फायदा नहीं था। मेरा शिकार भाग चुका था और मैं उदास मन से मशाल की रोशनी में पुजारियों की झोपड़ियों की ओर चल पड़ा, खुद को बार-बार कोसते हुए कि मैं कितना बेवकूफ था। गाँव पहुँचकर मैंने धीरे से बायरा को आवाज़ दी, जो एक झोपड़ी से बाहर आया। वह जागा हुआ था और उसने सूर्यास्त के समय लंगूरों की चेतावनी भरी आवाज़ें सुनी थीं, उसके बाद दूसरी आवाज़ें भी। कुत्तों के भौंकने से वह तब तक हैरान था जब तक बाघ की दहाड़ नहीं सुनाई दी। तभी उसे एहसास हुआ कि आदमखोर बाघ गाँव में ही है। मुझे भी वहाँ देखकर वह और भी हैरान हो गया।

मैंने तुरंत सारी घटना बताई, लेकिन बायरा की व्यंग्य से भरी संक्षिप्त टिप्पणी से मुझे कोई तसल्ली नहीं मिली। 'क्या उस डोराई को लगा कि वह खरगोश का पीछा कर रहा है? शायद उम्र ने उसकी बुद्धि पर असर डाल दिया है!'

अब आठ बज चुके थे, और कुछ और करने को न होने के कारण मैं अपने तंबू की ओर चल पड़ा, जिसे मैंने गाँव के उस पार कटहल के पेड़ के नीचे लगाया था। तंबू के निचले हिस्से में लटकी छोटी सी लालटेन जलाई और अपने लिए एक बर्तन में चाय बनाई। इतना करने के बाद, मैंने तंबू का पर्दा बंद कर दिया, बिस्तर ज़मीन पर बिछाया (क्योंकि मैंने चारपाई का बोझ नहीं उठाया था), लालटेन बुझा दी क्योंकि मुझे जलती हुई रोशनी में सोना पसंद नहीं है, और जल्दी ही गहरी नींद में सो गया।

किसी चीज़ ने मुझे अचानक जगा दिया। जंगल में लोग शहर के लोगों की तरह आरामदायक बिस्तर की गर्माहट से नहीं जागते, न ही आराम से जम्हाई लेते हैं, अंगड़ाई लेते हैं और न ही अगले पाँच मिनट तक उन कामों के बारे में सोचते हैं जिन्हें उन्हें पूरा करना है। जंगल अपने निवासियों को सतर्क रहना सिखाता है। जब वे जागते हैं, तो वे तुरंत कार्रवाई के लिए तैयार होते हैं, क्योंकि एक पल की देरी उनकी आखिरी हो सकती है।

जब मैंने अपनी आँखें खोलीं, तो मेरे मन में व्याप्त खतरे की अस्पष्ट अनुभूति मेरे हाथ और फैली हुई उंगलियों के साथ तालमेल बिठाते हुए उस राइफल को खोजने लगी, जिसे मैंने अपने बगल में ज़मीन पर रखा था। उसकी आरामदायक कठोरता ने

मुझे आश्वस्त किया, जब मैं यह जानने के लिए बैठा कि आखिर किस चीज़ ने मुझे उस तीव्र, दमनकारी खतरे की भावना के साथ जगाया था।

एक पल के लिए मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया, फिर हल्की-सी खरोंचने की आवाज़ आई, जो एक-दो पल बाद रुक-रुक कर फिर शुरू हुई—खरोंच, खरोंच—रुकी—खरोंच, खरोंच—खामोशी, और फिर एक बार फिर। तंबू का एक किनारा थोड़ा सा हिला और नीचे से कुछ अंदर आया; कोई चीज़ इधर-उधर खतरनाक इरादे से टटोल रही थी। क्या वह साँप था?

मेरे बाईं ओर ज़मीन पर पड़े मेरे बिस्तर के किनारे से कुछ टकराया, जो मुझसे बस एक फुट दूर था। वह चीज़ उसमें उलझ गई और तेज़ी से खिंची, जिससे बिस्तर और चादर ज़ोर से फट गए। पंजे! आदमखोर बाहर था!

उसे तंबू के अंदर किसी इंसान की मौजूदगी का आभास हो गया था, लेकिन सौभाग्य से, तंबू की कमजोर संरचना के बारे में जानकारी न होने के कारण, उसने अपने पंजे से तंबू के नीचे और जमीन पर टटोलने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि वह अपने शिकार तक पहुंच जाएगा, जिसे वह शिकार के होश में आने से पहले ही बाहर खींच लेगा।

वाकई, यह एक बढ़िया योजना थी; एकमात्र खामी यह थी कि इसका शिकार मैं खुद बन गया! सौभाग्य से, मुझे भयानक खतरे का पूर्वाभास समय रहते हो गया था।

मैंने जमीन पर लेटते हुए राइफल को तेजी से अपने शरीर के आर-पार खींचा, उसकी नली उस दिशा में तान दी जहां मुझे पता था कि बाघ जरूर होगा, और अपना दाहिना हाथ ट्रिगर की ओर बढ़ा दिया।

याद रखिए, जब यह सब हुआ तब तंबू में घोर अंधेरा था और मुझे ठीक से पता नहीं था कि बाघ बाहर कहाँ और किस स्थिति में खड़ा था। मैंने अगली हलचल का इंतज़ार किया और फिर वही हलचल सुनाई दी जब उसके पंजे ने एक बार फिर पलंग को ज़ोर से खींचा।

फिर मैंने ट्रिगर दबा दिया!

एक कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ और मैं झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और अपने तंबू के कैनवास वाले हिस्से से अंधाधुंध दो और गोलियां चलाने के लिए .405 विंचेस्टर के अंडरलीवर को तेजी से चलाने लगा।

बाघ की ओर से कोई आवाज़ नहीं आई। क्या वह मर गया था? फिर भी, उसे

आखिरी साँस या घुरघुराहट तो ज़रूर निकालनी चाहिए थी। क्या वह घायल था? अगर घायल होता, तो वह दर्द से दहाड़ता। क्या वह भाग निकला? ज़रूर मेरी नज़र नहीं पड़ी। इस रहस्यमयी सन्नाटे का यही एकमात्र कारण हो सकता है।

मूर्खतावश मैंने एक बार फिर अक्षम्य गलती कर दी थी। मेरी टॉर्च राइफल से बंधी हुई थी। गोली चलाने से पहले मैंने उसे एक पल के लिए क्यों नहीं जलाया? टॉर्च की एक-दो सेकंड की रोशनी ही उस दिशा का पता लगाने के लिए काफी होती जहाँ से वह टटोलता हुआ पंजा आ रहा था और जहाँ बाघ तम्बू के बाहर खड़ा था। इसके बजाय मैंने घोर अंधेरे में अंधाधुंध ट्रिगर दबा दिया; वह भी तीन बार, इस उम्मीद में कि शायद उस जानवर को निशाना बना लूँ जिसके ठिकाने का मुझे कोई पता नहीं था।

मशाल जलाकर, मैंने जल्दी से तंबू के प्रवेश द्वार को बंद करने वाले टेप खोले और सावधानी से आगे बढ़कर मशाल की रोशनी हर दिशा में घुमाई। जैसा कि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था, आदमखोर भाग निकला था, और न ही कोई ऐसी आवाज थी जिससे पता चले कि वह किस दिशा में भागा है।

मेरी तीन गोलियों की आवाज से मानची गांव के पुजारी जाग गए थे। मुझे बायरा और कुछ अन्य लोगों की बेचैन आवाजें सुनाई दे रही थीं, जो पूछ रहे थे कि सब ठीक है या नहीं। यह जानते हुए कि अगर मैं जल्दी उनके पास नहीं गया, तो बेचारे अंधेरे में बाहर निकलकर पता लगाने आ जाएंगे कि क्या हुआ है, मैं मशाल की रोशनी में झोपड़ियों तक गया और वहां दुबके, डरे हुए छोटे-छोटे जंगली आदमियों के समूह को सब कुछ बताया कि क्या हुआ था।

वे तुरंत मेरे साथ वापस आने पर अड़े रहे ताकि वे खुद मेरे तंबू के कैनवास में लगे तीन गोली के छेद और बाघ के पंजों से मेरे बिस्तर के फटे किनारों को देख सकें। उन्होंने मेरी रक्षा करने के लिए ईश्वर का ज़ोर-ज़ोर से धन्यवाद किया। फिर मुझे उन्हें गाँव में ही छोड़ना पड़ा, जहाँ बायरा ने मुझसे विनती की कि मैं उसके साथ रात भर उसी झोपड़ी में सो जाऊँ जिसमें वह सोया था और मेरे तंबू में वापस जाने का जोखिम न उठाऊँ।

लेकिन मैंने यह निमंत्रण ठुकरा दिया और एक बार फिर वापस लौट आया, और इस बार तूफ़ानी लालटेन की तेज़ रोशनी में एक बेहद अशांत नींद में सोने के लिए लेट गया। खुद से और हर चीज़ से घृणा के कारण मैं सूर्योदय के बहुत बाद जागा। बाहर से आती आवाज़ों ने मेरा स्वागत किया, और तंबू का पर्दा खोलते ही मैंने देखा कि गाँव

के सभी पुजारी अर्धवृत्त में बैठे हुए थे।

उनके आने का कारण सीधा-सादा था। पिछली शाम और रात की मेरी मूर्खतापूर्ण हरकतें, और मेरे द्वारा चलाई गई तीन गोलियों का निशाना चूक जाना, सिर्फ़ दो शब्दों में समझाया जा सकता था, और वो भी बेहद सरल: काला जादू! किसी ने मुझ पर और मेरी राइफ़ल पर जादू कर दिया था, जिससे मैं और राइफ़ल तालमेल में काम नहीं कर पा रहे थे। किसने किया था? क्यों? कब? कैसे? अगर मुझे आदमखोर को मारना था, तो इस जादू को हटाना ही होगा।

इस तरह का अंधविश्वास भारतीय जंगलों के सीधे-सादे लोगों और शहरी इलाकों के बड़ी संख्या में लोगों में भी प्रचलित है। मैं जानता था कि तर्क-वितर्क, समझाने-बुझाने या बहस करने से पुजारियों का मन नहीं बदलेगा। अगर मैं उनकी मान्यता को नज़रअंदाज़ करता, तो वे मेरा साथ देना बंद कर देते और मेरी असफलता का दोष मुझ पर और मेरे हथियार पर किए गए जादू पर डाल देते। सबसे आसान और सरल तरीका यही था कि मैं उनकी बात मान लूँ।

मैंने कहा, 'जी हां; किसी नीच कमीने ने निस्संदेह जादू कर दिया है। क्या आप कृपया इसे हटा सकते हैं, यदि आप हटा सकते हैं?'

बदले में, उनमें से सबसे बड़े ने उत्तर दिया, 'हाँ, लेकिन इसके लिए पाँच रुपये लगेंगे,' और आगे बताया कि इस राशि में बलि के लिए आवश्यक मुर्गे और अन्य कई वस्तुओं की लागत के साथ-साथ पूजा करने का शुल्क भी शामिल है।

मैंने दोबारा सहमति जताई, पाँच रुपये दिए और एक घंटा और सोने के लिए तम्बू के अंदर चला गया। लेकिन खुद से घृणा ने मुझे सोने नहीं दिया और मैं आदमखोर मुर्गे के बारे में सोचने लगा। एक बदकिस्मत मुर्गे का गला काटे जाने की कर्कश चीख, उसके बाद धुएँ और अगरबत्ती की तीखी गंध ने यह संकेत दिया कि पूजा हो रही है।

कुछ देर बाद बायरा की आवाज बाहर से मुझे सुनाई दी: 'दोराई! दोराई! उठो और बाहर आओ। जादू टूट गया है। चलो अब बाघ को ढूंढते हैं। हम उसे जरूर ढूंढ लेंगे, और इस बार वह तुम्हारी राइफल की एक ही गोली से ढेर हो जाएगा, क्योंकि हथियार तुम्हारे आदेश का पालन करेगा।'

पूजा अभी पूरी नहीं हुई थी। गाँव के तांत्रिक, बूढ़े व्यक्ति ने मेरी राइफल माँगी। उसे ज़मीन पर रखकर उसने कोंकण पाउडर और चूने का इस्तेमाल करते हुए राइफल

के दोनों ओर लाल और सफेद रंग से कई निशान बनाए। फिर मुर्गे की आँतों को गोल घुमाकर राइफल की नली पर आधा दर्जन बार ऊपर-नीचे किया गया। इस दौरान मंत्रों का जाप किया गया और अगरबत्ती का धुआँ भी किया गया। अंत में उसने आग को चारों दिशाओं में बिखेर दिया और बाघ को ज़ोर से पुकार कर कहा कि वह आगे आए और उसे गोली मार दी जाए।

जब यह सब समाप्त हुआ, तब तक सूरज आसमान में काफी ऊपर आ चुका था। बायरा और लगभग बीस साल का एक पुजारी लड़का, जो बाद में पूजा कराने वाले बूढ़े व्यक्ति का पोता निकला, ने मुझे आदमखोर बाघ की तलाश में जंगल में अपने साथ चलने का न्योता दिया। जैसा कि सब जानते हैं, किसी भी जंगल में बाघ, खासकर आदमखोर बाघ को, दिन के उजाले में इधर-उधर भटककर ढूंढना न केवल बेकार है, बल्कि मूर्खतापूर्ण और समय की बर्बादी भी है। बायरा के जंगल के ज्ञान के प्रति मेरा सम्मान असीम था, लेकिन उनके जैसे अनुभवी शिकारी का इस तरह की मूर्खता में पड़ना मुझे आश्चर्यचकित कर गया।

मेरे हावभाव से मेरी असहमति स्पष्ट हो गई होगी, लेकिन बायरा और उस लड़के ने मिलकर मुझे व्यर्थ की बातों में समय बर्बाद न करने के लिए कहा। जाहिर है, उन्हें अपने जादूगर पर पूरा भरोसा था। हम चल पड़े, बायरा आगे, फिर मैं और उसके बाद वह लड़का, लेकिन जैसे ही हम गाँव से ओझल हुए, मैंने चलने का क्रम बदलने पर जोर दिया और मुथु से अपनी जगह बदल ली, क्योंकि उस लड़के का नाम मुथु ही था। अगर आदमखोर हमें देख भी लेता, तो चाहे हमने कितना भी जादू-टोना किया हो, संभावना यही थी कि बाकी आदमखोरों की तरह, वह भी सबसे पीछे वाले पर हमला करेगा, और निहत्थे नौजवान के पास बचने का कोई मौका नहीं होगा।

हम ढलान से नीचे नदी के किनारे तक गए, जहाँ हमने सूखी रेत में हाल के पदचिह्नों की तलाश की। ऐसे इलाके में ताज़े और पुराने पदचिह्नों में अंतर करना हमेशा मुश्किल होता है, फिर भी दोनों पुजारियों को बाघ के पदचिह्न जल्द ही मिल गए। पिछली रात थोड़ी देर बाद, लगभग एक फर्लांग दूर, उन्हें फिर से उसके पदचिह्न मिले, जो इस बार गाँव से दूर जा रहे थे। क्या ये पदचिह्न बाघ ने तब छोड़े थे जब गाँव के पास मेरी रोशनी ने उसे सचेत कर दिया था, या बाद में मेरे तंबू के अंदर से तीन गोलियाँ चलाने के बाद, यह इस तथ्य से स्पष्ट हो गया कि पदचिह्नों के पैर के अंगूठे वाले हिस्से में रेत के कण उखड़े हुए थे, और ज़मीन पर चारों पैरों के अलग-अलग

निशान थे, जिससे पता चलता है कि हमारा शिकार बहुत तेज़ी से चल रहा था, बिना छिपने या सावधानी बरतने की कोशिश किए। ज़ाहिर है, वह बुरी तरह डरने के बाद जल्दी से भाग रहा था और इससे संकेत मिलता है कि हम उस आदमखोर के पदचिह्नों का पीछा कर रहे थे जो मेरे उन मूर्खतापूर्ण गोलों को चलाने के बाद बने थे। शरीर पर कहीं भी खून न होने से यह पुष्टि हो गई कि उसे कोई चोट नहीं आई थी।

हम अभी ज़्यादा दूर नहीं गए थे कि पगडंडी अचानक दाईं ओर मुड़ गई और नदी के पूर्वी किनारे पर पहाड़ी की ओर सीधी चढ़ाई करने लगी। मुझे याद आया कि पिछली शाम जब बाघ पहाड़ी से नीचे उतर रहा था, तब लंगूरों के पहले झुंड के रखवाले बंदर ने इसी दिशा से चेतावनी दी थी। अब बाघ उसी रास्ते से लौट आया था। संभवतः उसकी मांद उस पहाड़ी पर कहीं ऊपर किसी गुफा में थी, या शायद कुछ दूरी पर गुथेरायन पर्वत की ढलानों पर।

इस खोज के साथ ही मुश्किलें भी शुरू हो गईं। बांसों की निचली पट्टी पार करते ही ज़मीन सख्त और पथरीली हो गई। चट्टानों और छोटे पत्थरों के बीच भालाकार घास के गुच्छे उग आए और पैरों के निशान पूरी तरह से गायब हो गए।

दोनों पुजारी, जो जंगल के जानकार थे, जल्द ही पूरी तरह से असमंजस में पड़ गए। वे छोटे-छोटे घेरे बनाकर बाघ के निशान ढूंढने की कोशिश करने लगे। कभी-कभी बायरा और फिर उसका युवा साथी घास की टूटी हुई टहनी या पलटा हुआ पत्थर पाते, जिससे बाघ के जाने का रास्ता पता चलता। लेकिन यह सिलसिला ज़्यादा देर तक नहीं चला और जल्द ही उन्हें रुकना पड़ा। बाघ के पहाड़ी पर जाने के अलावा, हमें उसके ठिकाने का कोई और सुराग नहीं मिला।

हमने दबी आवाज़ में इस विषय पर चर्चा की और खुद पहाड़ी पर चढ़ने का फैसला किया, इस धुंधली सी उम्मीद में कि शायद हमें कोई गुफा मिल जाए जिसमें आदमखोर छिपा हो। एक-एक करके आगे बढ़ने का मतलब था सिर्फ एक ही दिशा तय करना, इसलिए हमने थोड़ा फैलकर ज़्यादा बड़े इलाके की तलाशी लेने का फैसला किया। बायरा मेरी दाहिनी ओर लगभग सौ गज दूर चली गई, लेकिन मेरी नज़र में ही रही, जबकि मुथु मेरी बाईं ओर लगभग उतनी ही दूरी पर चला गया। फिर हम तीनों सावधानी से आगे बढ़ने लगे।

ज़मीन पथरीली होती गई और बड़े-बड़े पत्थरों की संख्या बढ़ती गई, लेकिन हमें किसी गुफा का कोई निशान नहीं मिला। जिस छोटी पहाड़ी पर हम चढ़ रहे थे, वह

लगभग 500 फीट ऊंची रही होगी, लेकिन कुछ देर बाद हम चोटी पर पहुँच गए और दूसरी तरफ नीचे देख पाए। यहाँ ज़मीन तेज़ी से नीचे उतरकर घनी झाड़ियों से ढकी हरी-भरी घाटी में पहुँच गई, जिसके बाद अगली पहाड़ी की तलहटी पर चढ़ाई शुरू हुई। उस पहाड़ी के ऊपर गुथेराय पर्वत की चोटी दिखाई दे रही थी।

मेरे इशारे पर, और एक समान दूरी बनाए रखते हुए, हम तीनों खड़ी ढलान से नीचे उतरने लगे। इस तरफ पहाड़ी अधिक उपजाऊ थी। यहाँ चट्टानें और पत्थर कम थे, घास के बड़े और ऊँचे झुंड थे, और झाड़ियाँ और बौने पेड़ भी थे जिनकी संख्या बढ़ती गई जब तक कि हम बाँस के क्षेत्र में नहीं पहुँच गए, जहाँ हमने खुद को ऊँचे-ऊँचे बाँसों के नीचे एक हरी-भरी घाटी में पाया। अब हम एक-दूसरे को नहीं देख पा रहे थे, और बहुत जल्द मुझे एहसास हुआ कि मेरे साथी, निहत्थे होने के कारण, खुद को भयानक खतरे में डाल चुके थे, क्योंकि अगर बाघ हमला करने का फैसला करता तो मैं उनकी मदद नहीं कर सकता था। बाँस और घने जंगल ने भरपूर आड़ प्रदान की और यहाँ तक कि हम दोनों आदिवासियों की पैनी नज़रें भी उस हरी दीवार को भेद नहीं सकती थीं जिसने हम तीनों को घेर रखा था।

ऐसा लगा मानो इसी विचार ने मुझे हरकत में ला दिया हो, क्योंकि ठीक उसी समय मैंने अपने बाईं ओर लगभग सौ गज की दूरी पर खड़े पुजारी लड़के की चीख सुनी। इसके बाद बाघ ने उस पर हमला कर दिया और उसकी गुर्राहट सुनाई दी। ये दहाड़ें अचानक तब रुक गईं जब मेरे दाईं ओर खड़े बायरा ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। यह जानते हुए कि वह हमलावर को डराने की कोशिश कर रहा है, मैंने भी उसकी चीखों में अपनी चीखें मिला दीं और मुड़कर उस जगह की ओर दौड़ पड़ा जहाँ से चीख और दहाड़ें आ रही थीं।

दूरी कम ही थी, फिर भी लड़के के मिलने से पहले ही बायरा मुझसे मिल चुकी थी। वह पत्थरों और लंबी घास के ढेर के ठीक आगे औंधे मुंह पड़ा था, उसकी खोपड़ी का पिछला हिस्सा बुरी तरह कुचला हुआ था, जबकि गर्दन के निचले हिस्से और दाहिने कंधे पर बाघ के गहरे दांतों के निशान यह दर्शाते थे कि बाघ ने पहले उसे कहाँ काटा था और फिर पंजे के एक ही वार से उसकी खोपड़ी को चकनाचूर कर दिया था। संभवतः हमारे चीखने-चिल्लाने की आवाज़ सुनकर आदमखोर बाघ डर और गुस्से के मिश्रण से ग्रस्त हो गया था, जैसा कि मैंने आपको बताया है, हमारा मकसद लड़के की जान बचाना था। लेकिन इस मामले में, हमारी चीखों ने ही उसकी मौत तय कर दी

थी, क्योंकि बाघ ने उसे मार डाला था।

पत्थरों के ढेर के दूसरी ओर दबी हुई घास से पता चल रहा था कि आदमखोर कहाँ छिपा था, लड़के के वहाँ से गुज़रने का इंतज़ार कर रहा था और फिर पीछे से उस पर झपट पड़ा। हमने उस नौजवान पुजारी को पलटा और एक भयानक दृश्य देखा। सिर के पिछले हिस्से पर हुए ज़ोरदार प्रहार से उसकी आँखें बाहर निकल आई थीं, और लड़के ने अपनी जीभ को इस तरह काट लिया था कि उसका सिरा मांस के एक छोटे से टुकड़े से लटका हुआ था। खून रेत में रिस रहा था और वहाँ एक छोटा सा तालाब बन गया था।

घबराया हुआ और बीमार महसूस करते हुए, मैंने अपने साथी की ओर देखा। उसका काला चेहरा राख जैसा पीला पड़ गया था और उसके चेहरे पर भावनाओं का तीव्र उतार-चढ़ाव था। लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा। न ही मैंने। कहने को क्या था? हम—और निश्चित रूप से मैं—अपनी लापरवाही और इस निहत्थे युवक को बाघ की क्रूर चालाकी के सामने छोड़ने के लिए केवल खुद को ही दोषी ठहरा सकते थे।

मेरी घड़ी में ठीक ग्यारह बज रहे थे और सूरज की तेज धूप उस दृश्य पर बेरहमी से पड़ रही थी।

सदमे से उबरने में कुछ मिनट लगे।

तब मैंने कहा, 'तुम्हें पूरा यकीन था कि उस बेतुकी पूजा के बाद हम बाघ को मार डालेंगे। इसके बजाय, उसने हममें से एक को मार डाला!'

बायरा ने तुरंत जवाब नहीं दिया। जब उसने बोलना शुरू किया तो उसके लहजे में आक्रोश था। 'जादूगर को मुर्गे की बलि देनी चाहिए थी। इसके बजाय, उसने मुर्गी की बलि दी, क्योंकि मुर्गी उसे एक रुपया सस्ती पड़ी। लेकिन इसकी कीमत उसके पोते की जान है!'

मैं लगभग सुन ही नहीं रहा था। मेरे मन में एक विचार कौंध गया। मैं लंबी घास से होते हुए पत्थरों के पास गया, एक पत्थर पर पैर रखा और पीछे मुड़कर लाश को देखा। बस दस गज! दूरी लगभग बहुत कम लग रही थी। वहाँ केवल चार पत्थर बेतरतीब ढंग से पड़े थे, और उनमें से सबसे बड़ा, जिस पर मैं खड़ा था, लगभग तीन फुट ऊँचा था। बाकी पत्थर बहुत छोटे थे।

फिर यह विचार एक पक्की योजना में बदल गया। चूंकि उस जगह पर पहले से ही कुछ पत्थर मौजूद थे, तो क्या बाघ को पता चल जाएगा अगर कुछ और पत्थर

जोड़ दिए जाएं? शायद नहीं, बशर्ते अतिरिक्त पत्थरों को इस तरह रखा जाए कि अनावश्यक संदेह पैदा न हो।

मैंने बायरा की ओर मुड़कर कहा, 'रात गहरी होगी और इससे जिस शैतान का हम पीछा कर रहे हैं, उसे अपने शिकार के पास जल्दी लौटने का लालच होगा, बशर्ते हम लाश को वहीं छोड़ दें। क्योंकि वह भूखा है, याद है ना। वह कल रात भूखा था। इसीलिए वह इतनी हिम्मत से मानची की झोपड़ियों में गया था। और तब से उसने कुछ नहीं खाया है। आज रात वह सचमुच बहुत भूखा होगा। इसलिए हम कुछ और बड़े पत्थर लाएंगे और इन चार पत्थरों के साथ एक छुपने की जगह बनाएंगे, जिसमें मैं बैठूंगा। इतनी नज़दीक से, जब मेरी टॉर्च की रोशनी उस पर पड़ेगी, तो मेरा निशाना नहीं चूकेगा।'

'डोराई, तुम बिल्कुल पागल हो,' बूढ़े शिकारी ने टिप्पणी की। 'जैसे ही वह खाल देखेगा, उसे शक हो जाएगा। शायद वह चला जाए। शायद नहीं! अगर वह पत्थरों के ऊपर से कूद गया, तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि तुम कहाँ हो, वह तुम्हारे ऊपर आ जाएगा।'

उन्होंने आगे कहा, 'इसके अलावा, हमारा यह फर्ज है कि हम मानची लौटकर उस दुष्ट दादाजी को बताएं कि उस बेचारे लड़के के साथ क्या हुआ है। फिर गांव के लोग आएंगे और उसका शव ले जाकर आज रात जला देंगे। इस तरह उसकी आत्मा को शांति मिलेगी। अगर हम उसके अवशेषों को यहीं बाघों के हाथों खा जाने के लिए छोड़ दें और उन्हें न जलाएं, तो उसकी आत्मा इन जंगलों में भटकती रहेगी और हमें अपना फर्ज न निभाने के लिए सताती रहेगी।'

मैंने तीखे स्वर में कहा, 'शेर इन्हें नहीं खाएगा, क्योंकि मैं चट्टानों के बीच छिपकर उसे रोकूंगा। यह मैं तुम्हें वादा करता हूं। क्या यह इस शैतान से बदला लेने का अच्छा मौका नहीं है? अगर मैं आज रात उसे मारने में कामयाब हो जाता हूं, तो क्या मैं कई जानें नहीं बचाऊंगा, शायद तुम्हारी भी? तुम खुद एक शिकारी हो, तो क्या तुम सहमत नहीं हो कि ऐसे सुनहरे अवसर को गंवाना हमारे लिए मूर्खता होगी?'

बायरा ने कोई जवाब नहीं दिया। मैं महसूस कर सकता था कि वह कमजोर पड़ रहा है। आखिरकार उसने मेरी तरफ देखा और उसके चेहरे पर पूर्ण निर्दोषता झलक रही थी।

'हमने हर जगह तलाशा लेकिन शव नहीं मिला, दोराई। चलो अब वापस चलते हैं

और दूसरों को सूचित करते हैं। कल सुबह हम फिर तलाशी लेंगे। आज रात तुम किसी जंगल के रास्ते के किनारे बैठ कर बाघ का इंतज़ार करना, अगर वह वहाँ से गुज़रे, जबकि मैं बंदर की तरह पेड़ पर छिप जाऊँगा, नज़र से ओझल लेकिन आवाज़ से दूर नहीं, ताकि ज़रूरत पड़ने पर मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ।'

इस प्रकार बायरा ने अपने अंतरात्मा के साथ इस मुद्दे को सुलझा लिया और हम पूरी लगन से काम पर लग गए।

बाघ को शक न हो, इसलिए हम लगभग 200 गज दूर पत्थरों से भरे एक दूसरे इलाके में चले गए। हमने मिलकर आधे दर्जन बड़े पत्थर एक-एक करके उठाए और उन्हें पहले से मौजूद चार पत्थरों के साथ एक गोल घेरा बना दिया। इस नींव पर हमने छोटे पत्थर रखे, जिससे धीरे-धीरे लगभग तीन फुट ऊंची एक गोलाकार दीवार बन गई। मुझे एहसास हुआ कि इस दीवार को और ऊंचा बनाना ठीक नहीं होगा, क्योंकि अगर बाघ को शक हो गया और उसने अपने पिछले दौरे में मौजूद न होने वाली कोई संरचना देख ली, तो अतिरिक्त सुरक्षा का कोई फायदा नहीं होगा।

इसके बाद, हमने पत्थरों के बीच की दरारों में मुट्ठी भर सख्त घास भर दी, जिसे हमने कुछ दूरी पर उगने वाले गुच्छों और झुंडों से तोड़ा था। इस सब में काफी समय लगा और यह बहुत मेहनत का काम था, क्योंकि आप समझ सकते हैं कि सूरज हम पर बेरहमी से तप रहा था, और संदेह से बचने के लिए पत्थरों और घास को दूर से लाना पड़ा था।

उस सुबह जब हम मानची से निकले, तो तांत्रिक के इस भरोसे से कि हम बाघ को मार गिराएंगे, मैं अपने साथ केवल राइफल लाया था, टॉर्च या पानी की बोतल नहीं। बायरा को अकेले इन चीजों को लाने के लिए भेजना खतरनाक होता। या तो हम दोनों को वापस जाना पड़ता, या मैं खुद जाकर पुजारी को पेड़ पर छोड़ देता, और अगर मैं ऐसा करता तो हमेशा यह संभावना रहती कि बाघ मेरी अनुपस्थिति में लौट आए और उस दुर्भाग्यपूर्ण लड़के के शव को किसी दूरदराज के स्थान पर ले जाए जहाँ से उसे ढूंढना हमारे लिए मुश्किल हो जाता।

इन सभी बातों पर दबी आवाज़ में विचार करने के बाद, हमने तय किया कि हमारे पास तुरंत अपनी-अपनी जगह लेने के अलावा कोई चारा नहीं था। मैं अपने बनाए हुए तीन फुट के छोटे से किले में और बायरा सुनाई देने की दूरी के भीतर किसी पेड़ पर बैठ गए और अगली सुबह तक वहीं डटे रहे, इस उम्मीद में कि आदमखोर बाघ

को अपना शिकार याद आ जाए और वह भोजन के लिए वापस आ जाए। हम बस यही उम्मीद कर सकते थे कि बाघ इतने समय तक सुनाई देने की दूरी के भीतर कहीं छिपा न रहा हो, क्योंकि अगर ऐसा होता तो पिछले तीन घंटों में हमारी हलचल ने उसे ज़रूर सतर्क कर दिया होता और वह बहुत पहले ही चला गया होता और फिर कभी वापस न आता। हमारी सफलता की एकमात्र उम्मीद यही थी कि वह पानी की तलाश में पहाड़ी पर ऊपर चला गया हो और उसने हमारी आवाज़ न सुनी हो। यह बहुत ही असंभव था कि वह घाटी में बहने वाली धारा पर वापस आया हो, क्योंकि जैसा कि मैंने आपको बताया है, साल के इस समय वह धारा बिल्कुल सूखी होती है।

हमने बायरा के लिए उपयुक्त पेड़ की तलाश में चारों ओर विस्तृत क्षेत्र में छानबीन की, और लड़के की हत्या के स्थान से लगभग आधा फर्लांग दूर, पहाड़ी से थोड़ा नीचे एक पेड़ मिला। यह एक काफी बड़ा इमली का पेड़ था और बूढ़े पुजारी को अगली सुबह मेरे बुलाने तक आराम से उसमें शरण लेने के लिए पर्याप्त जगह प्रदान करता था।

दोपहर के ढाई बजकर पंद्रह मिनट हो रहे थे, शायद दिन का सबसे गर्म समय, जब बायरा ने मुझे सावधानी बरतने और किसी भी कीमत पर न सोने की सलाह देने के बाद इमली के पेड़ पर चढ़ गया। उसे वहीं छोड़कर मैं अपने छोटे से किले में लौट आया, वहाँ दीवार बनाने के लिए रखे गए तपते पत्थरों पर चढ़ गया और अंदर बैठने की कोशिश करने लगा। मुझे तुरंत पहली कठिनाई का सामना करना पड़ा। ज़मीन इतनी गर्म थी कि मैं उस पर बैठ नहीं सकता था, बल्कि घुटनों के बल बैठना पड़ा। यह मुद्रा न केवल दर्दनाक और असुविधाजनक थी, बल्कि दीवार भी इसके लिए पर्याप्त ऊँची नहीं थी। मेरा सिर ऊपर दिख रहा था और बाहर से आसानी से दिखाई दे सकता था, इसलिए मुझे खुद को छिपाने के लिए सिर झुकाकर बैठना पड़ा।

मुझे यह समझने में ज्यादा समय नहीं लगा कि ऐसी स्थिति बेतुकी और खतरनाक थी, क्योंकि अगर बाघ मुझ पर हमला कर दे तो मैं उसे देख नहीं पाऊंगा।

फिर मैं छिपने की जगह से बाहर निकला, थोड़ी दूर चला गया और कई मुट्ठी भर सख्त घास के तने तोड़े जिन्हें मैंने अपनी 'गोरखा' टोपी की पगड़ी में बहुत पास-पास चिपका दिया। इसमें थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार मैं काम से संतुष्ट हो गया। दूर से देखने पर टोपी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी, बस घास का एक और गुच्छा दिख रहा था।

टोपी पहनकर मैं पत्थरों के अपने किले में लौट आया, फिर से घुटनों के बल बैठ गया और स्थिर रहने की कोशिश की। मैं चट्टानों के किनारे से आधा वृत्त बनाकर अपने आगे और दोनों ओर देख पा रहा था, और अपने सिर को धीरे-धीरे दाएं-बाएं घुमाकर मैं पीछे भी देख सकता था। मुझे लगा कि यह हरकत ज्यादा ध्यान देने लायक नहीं होगी, क्योंकि टोपी पर घास का पूरा गुच्छा उसके साथ घूमेगा और बाघ इसे घाटी और नदी के किनारे से पहाड़ियों की ओर बहने वाली गर्म हवा का असर समझ सकता है, जो सूखी घास के झुके हुए सिरों को समय-समय पर लहरों की तरह हिला रही थी।

मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि मैं उस झुकी हुई मुद्रा में ज्यादा देर तक स्थिर नहीं रह सकता। मेरे टखनों में दर्द होने लगा और पैरों की पिंडलियाँ सुन्न हो गईं। मुझे धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके इधर-उधर हिलना पड़ा, जब तक कि चार बज नहीं गए और धरती इतनी ठंडी नहीं हो गई कि मैं बैठ सकूँ।

इस समय तक आसपास का वातावरण असामान्य रूप से शांत था। किसी भी जानवर या पक्षी ने अपनी उपस्थिति का संकेत न तो देखा था और न ही अपनी आवाज़ से। समस्त जीव-जंतु—और निस्संदेह बाघ भी—भयंकर गर्मी से बचने के लिए आश्रय लिए हुए थे। मैंने केवल दो बार हलचल देखी थी, पहली बार जब एक विशाल इगुआना छिपकली ने पार करने का प्रयास किया, तो उसने ज़मीन पर मुथु का शव देखा, अचानक मुड़ी और भाग गई, और दूसरी बार, जब एक छोटा अजगर, एक छोटे पेड़ से सिर नीचे की ओर लटका हुआ, किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना, एक गुजरती हुई गिलहरी पर झपटा और उसे कुचलकर मार डाला। मैंने गिलहरी को देखा था, लेकिन सांप पर तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक मैंने अजगर के कुंडलियों को घास में रेंगते हुए नहीं देखा और शिकार के कुचलकर मरने की चीखें नहीं सुनीं।

शाम पांच बजे तक हवा में काफी ठंडक आ गई थी और इससे मुझे याद आया कि मैंने सुबह से पानी नहीं पिया था। वैसे भी पीने के लिए एक बूंद भी नहीं थी, और सबसे बुरी बात यह थी कि मुझे अगली सुबह मांची लौटने तक प्यासा ही रहना पड़ेगा—यह सोचना वाकई डरावना था!

मेरे बाईं ओर पहाड़ी पर बैठे एक तीतर ने अंततः लंबे सन्नाटे को तोड़ा, 'की-कोक-किक! की-कोक-कोक! की-कोक-कोक!' उसने चुनौती भरे स्वर में पुकारा और कुछ ही मिनटों में पहाड़ी पर थोड़ी ऊंचाई पर बैठे एक अन्य नर पक्षी ने लड़ाई के लिए अपनी स्वीकृति दे दी: 'की-कोक-कोक! की-कोक-कोक! की-कोक-कोक!'

दोनों तीतर एक-दूसरे को चुनौती देते हुए करीब आते गए, लड़ाई के लिए बेताब थे, और अंत में आमने-सामने आ गए। फिर 'कोक! कोक! कोक!' की उन्मादी चीखों के साथ, द्वंद्व शुरू हो गया। दुर्भाग्य से मैं पक्षियों को देख नहीं सका, लेकिन लगभग दस मिनट तक चली इस लड़ाई को अपनी कल्पना में समेटे रखा, जब तक कि एक तीतर अपने प्रतिद्वंद्वी की श्रेष्ठ शक्ति और सहनशक्ति के आगे हार नहीं मान गया। वह लड़ाई के मैदान से बेतहाशा उड़ गया। मैं बस उसकी भूरी आकृति को तेजी से ढलान से नीचे सुरक्षित स्थान की ओर जाते हुए देख सका, जबकि दूसरा पक्षी एक बार फिर जीत की चीख 'की-कोक-कोक! की-कोक-कोक! की-कोक-किक!' लगाता रहा।

तीतरों की लड़ाई ने समय बिताने का अच्छा ज़रिया बना दिया था। अब शाम के 5:40 बज रहे थे और घाटी में नदी के किनारे से जंगली मुर्गों की आवाज़ें शाम के आगमन की घोषणा कर रही थीं। 'व्हीव! कुक-क्या-क्या-कुकम!' वे नीचे से बांग दे रहे थे, जिसका जवाब चारों दिशाओं में पहाड़ियों पर बैठे दूसरे मुर्ग दे रहे थे। कभी-कभी एक मोर अपनी म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ निकालता, जबकि झाड़ियों और घनी वनस्पतियों पर बैठे सैकड़ों बुलबुल भी उस सामूहिक गायन में शामिल हो जाते, जो इन खूबसूरत जंगलों को जानने वाले सभी लोगों की यादों में हमेशा के लिए बस गया है।

लेकिन इन आवाज़ों पर ज़्यादा ध्यान देना ठीक नहीं था, हालाँकि मुझे इन्हें सुनना अच्छा लग रहा था। अब से मुझे बहुत सतर्क रहना होगा, क्योंकि रात होने वाली थी और आदमखोर बंदर को अपना शिकार याद आ सकता था और वह किसी भी क्षण लौट सकता था। इसी समय लंगूर बंदरों के दो झुंड, एक मेरे ऊपर पहाड़ी की चोटी पर और दूसरा नदी के उस पार पास की पहाड़ी पर, शाम के समय उछल-कूद करने लगे। वे आपस में खेल रहे थे और घाटी के उस पार एक-दूसरे को आवाज़ दे रहे थे। 'हूम्प! हूम्प! हूम्प!' की आवाज़ करते हुए वे एक डाल से दूसरी डाल पर कूद रहे थे। मैं जहाँ बैठा था वहाँ से उन्हें देख नहीं पा रहा था, लेकिन पेड़ों की डालियों पर उनके ज़ोर से गिरने की आवाज़ सुन सकता था।

मैं लंगूर बंदरों की उपस्थिति से आभारी था। मुझे पता था कि प्रत्येक समूह का अपना एक रखवाला होता है, जो पेड़ की चोटी पर सतर्कता से बैठा रहता है, गंभीर, शांत और नीचे जमीन पर हलचल और खतरे की निगरानी करता रहता है।

मेरे पीछे पहाड़ियों की श्रृंखला के पीछे सूरज डूब गया और शाम की छाया तेज़ी

से मेरे चारों ओर फैलने लगी। घास, झाड़ियाँ और पत्थर जो अब तक साफ़ दिखाई दे रहे थे, अब धुंधले और अस्पष्ट हो गए। दूरियाँ अपना परिप्रेक्ष्य खो बैठीं। कुछ ही पलों में पृष्ठभूमि का नामोनिशान नहीं रहा; बस मेरे आस-पास उगने वाली कुछ अस्पष्ट झाड़ियाँ ही दिखाई दे रही थीं। बाकी सब कुछ गहरे भूरे रंग का खालीपन था, जो तेज़ी से चॉकलेट रंग में और फिर काले रंग में बदल रहा था। मुथु का शरीर, जो केवल दस गज दूर था, अपना आकार खो बैठा और तेज़ी से अंधेरी होती ज़मीन पर बस एक गहरे रंग का ढेर बन गया।

मेरे सिर के पीछे एक भिनभिनाहट भरी हलचल हुई जिससे मैं चौंक गया, साथ ही तीखी, कर्कश चीखें भी सुनाई दीं। लंबे कानों वाला चमगादड़, कीड़ों की तलाश में मग्न था, उसने सोचा कि मेरी टोपी पर उगी घास के गुच्छे में कुछ कीड़े हो सकते हैं और वह जाँच करने आया था। धीरे से एक नाइटजार मेरे किले की दीवार बनाने वाले पत्थरों में से एक पर आकर बैठ गया। वह इतना करीब था कि मैं अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ सकता था, और मैं इतना शांत बैठे रहने पर खुद से खुश था, क्योंकि मैंने इस पक्षी को भी अपनी उपस्थिति का पता न चलने देने में कामयाबी हासिल कर ली थी। नाइटजार गर्म चट्टान पर नीचे दुबक गया, अपने गले में हवा भरकर फुलाया और अपनी सामान्य आवाज निकाली:

'चक! चक! चक! चक! चक! चक!

फिर उसकी नज़र बेचारे मुथु पर पड़ी। अचानक वह डर गया, एक विशाल पतंगे की तरह अपने दोनों पंख फड़फड़ाए और भारी हवा में उड़कर आँखों से ओझल हो गया। थोड़ी देर बाद मुझे उसकी आवाज़ फिर सुनाई दी, इस बार दूर से, जहाँ पक्षी खुद को पूरी तरह सुरक्षित समझ रहा था, उसकी कर्कश आवाज़ आ रही थी।

अब मुझे झाड़ियाँ, घास, पत्थर, यहाँ तक कि बेचारा मुथु भी दिखाई नहीं दे रहा था। रात होते ही मेरे ऊपर अँधेरे का पर्दा छा गया। जंगल के अँधेरे को कुछ हद तक रोशन करने वाले तारे आज रात बहुत कम थे, जब मैंने उन्हें ढूँढ़ने के लिए आकाश की ओर देखा। हमेशा की तरह रात के आसमान का गहरा नीला-काला रंग छोटे-छोटे, बिखरे हुए, सिरोकुमुलस बादलों की एक लहरदार चादर से ढका हुआ था, जो भेड़ की खाल पर ऊन की लटों जैसी लग रही थीं। वे पहाड़ियों की दो श्रृंखलाओं के बीच फैले हुए थे और तारों को लगभग पूरी तरह से छिपा चुके थे।

यह आदमखोर के लिए मेरी मौजूदगी का पता लगाने और मुझे अपने भोजन में

शामिल करने का एक बिल्कुल सही मौका था, वो भी बिना मुझे अपनी निकटता का एहसास कराए। इतने अंधेरे में उसे देखना नामुमकिन था, और मैं पूरी तरह से उसकी दया पर थी। अचानक मैं बहुत डर गई और कांपने लगी। मैंने बूढ़े पुजारी की अनुभवी सलाह न मानकर खुद को इस मुसीबत में क्यों डाल दिया था? मुझे बायरा को चिल्लाकर बुलाने का मन कर रहा था। मुझे उठकर इस भयानक जगह से दूर भागकर उस इमली के पेड़ के पास जाने का मन कर रहा था, जहाँ मुझे पता था कि मेरा दोस्त, जंगल का आदमी, छिपा हुआ है। घुटन, दम घुटने और क्लॉस्ट्रोफोबिया (बंद जगह से डर) का एहसास मुझे जकड़ रहा था। घबराहट मुझ पर हावी हो गई और डर के मारे पसीना मेरे चेहरे से बहने लगा। दूर से एक सींग वाला उल्लू उदास स्वर में बोला: 'हू! हू! हू! हू! हू! हू!'

उसी क्षण घाटी में नीचे नदी के किनारे से आती हुई एक सांभर हिरण की मरणासन्न चीख से रात की शांति भंग हो गई।

'आर-आर-आर्ह्ह-आह्ह्ह!' वह दर्द से चीख उठा, और फिर एक बार 'आह्ह्ह-गग्र्र्ह्ह!' फिर सन्नाटा छा गया।

मुझे पता था कि उस समय जिस जानवर को मारा जा रहा था, वह एक हिरण था, क्योंकि एक हिरणी की चीख कहीं अधिक ऊँची होती, जबकि चित्तीदार हिरण की चीख बिल्कुल अलग होती। उस हिरण को मारने वाले तीन संभावित दुश्मन हो सकते थे: जंगली कुत्तों का झुंड, एक तेंदुआ या एक बाघ। मैंने कुत्तों की संभावना को खारिज कर दिया; कुत्तों का झुंड शिकार के लिए जोर से पुकारता और मुझे बहुत पहले ही सुनाई दे जाता। इसके अलावा, ये कुत्ते अंधेरी रातों में शिकार नहीं करते। इसलिए हत्यारा या तो तेंदू प्रजाति का कोई बड़ा तेंदुआ था, या फिर एक बाघ। सांभर हिरण जैसे विशाल जानवर को मारने वाला और कोई नहीं हो सकता था। यहाँ तक कि एक तेंदू तेंदुआ के लिए भी इतने बड़े शिकार को मार गिराना बहुत मुश्किल होता।

संभवतः हत्यारा बाघ ही था। लेकिन क्या वह आदमखोर बाघ था, जो केवल मानव मांस खाने के लिए प्रसिद्ध था? या कोई साधारण भटकता हुआ बाघ था जो संयोगवश आसपास ही था? मुझे पता था कि आदमखोर बाघ केवल मानव मांस खाकर जीवित नहीं रह सकता। उसके शिकार बहुत कम और दूर-दूर होते थे। वह जानवरों का भी शिकार करता होगा, और मुझे याद है कि उस रात वह बहुत भूखा था, उसने काफी समय से कुछ नहीं खाया था। संभवतः हिरण पर हमला उसी बाघ ने

किया था। शायद वह मुथु के लिए लौट रहा था और संयोग से हिरण के सामने आ गया था।

सांभर मर चुका था और सारी आवाज़ें थम गई थीं। बाघ रात भर इसी नए शिकार को खाकर अपना पेट भरेगा और पुजारी के शव के पास नहीं आएगा। मेरी निगरानी व्यर्थ ही हो जाएगी। यह सोचकर मुझे बहुत दुख हुआ।

तत्काल खतरे से राहत और अपनी कायरता पर खुद से घृणा की मिली-जुली भावनाएं तब उमड़ आईं जब मुझे एहसास हुआ कि कुछ ही क्षण पहले मैं अंधेरे और आदमखोर की निकटता के विचार मात्र से बुरी तरह डरकर कांप रहा था।

मुझे पता था कि बूढ़े पुजारी ने भी सांभर की चीख सुनी होगी। मेरी तरह, वह भी सोच रहे होंगे कि हत्यारा आदमखोर था या कोई और जानवर। मैं सोच रहा था कि उन्होंने क्या निष्कर्ष निकाला होगा। सांभर की हत्या ने मेरे भीतर व्याप्त मानसिक तनाव को समाप्त कर दिया था। अब मैं बिल्कुल शांत था और बार-बार यही सोच रहा था कि आदमखोर लौटेगा या नहीं।

अगले आधे घंटे तक जंगल में सन्नाटा पसरा रहा और अजीब सी खामोशी छाई रही। ऐसा लग रहा था मानो उसके निवासी जानते हों कि नदी के किनारे कोई खतरा मंडरा रहा है, और जो भी उसकी मौजूदगी का आभास देगा, उसकी अचानक और भयानक मौत हो जाएगी। मैंने अपनी घड़ी देखी। अभी दस बजे भी नहीं थे। मुझे अभी कई घंटों तक थका देने वाली निगरानी करनी थी।

उसके बाद जंगल धीरे-धीरे फिर से जीवंत हो उठा। मुझे अपने दाहिनी ओर कुछ गज की दूरी पर एक हिरण के घास चरने की दबी हुई आवाज सुनाई दी। नीचे, नदी के किनारे, एक हाथी बांस तोड़ रहा था।

घाटी से गर्म हवा ऊपर उठने लगी, तभी पहाड़ियों से ठंडी हवा उसकी जगह लेने के लिए नीचे आ गई। इससे रुक-रुक कर हवा के झोंके चलने लगे और चरते हुए हिरणों तक मुथु के शरीर की गंध पहुँच गई, जो अब महसूस होने लगी थी। अचानक एक आवाज़ आई और छोटा जानवर कुछ गज दूर भाग गया। फिर वह रुक गया और अपनी तेज़ भौंकने वाली चेतावनी भरी आवाज़ निकाली: 'खर्र! खर्र! खर्र! खर्र!'

कुछ मिनटों के अंतराल पर भौंकने की आवाज़ें आ रही थीं। यह अविश्वसनीय लग रहा था कि इतना छोटा जानवर इतनी तेज़ आवाज़ कैसे निकाल सकता है। मुझे पता था कि शांत रात में भौंकने वाले हिरण की आवाज़ एक मील से भी ज़्यादा दूर

तक सुनाई दे सकती है।

कुछ देर बाद घाटी में मौजूद हाथी, ताज़े बांस की कोंपलों की तलाश में, नदी के ऊपरी हिस्से की ओर बढ़ा। इससे वह उस हिरण के अवशेषों के पास पहुँचा जिसे कुछ ही देर पहले मारा गया था। संभवतः उसका हत्यारा, चाहे वह तेंदुआ हो या बाघ, अभी भी वहीं था और अपने शिकार को खा रहा था। जो भी हो, हाथी उत्तेजित हो गया और बार-बार चिंघाड़ने लगा, हर चिंघाड़ की कर्कश आवाज़ जंगल की शांति भंग कर रही थी।

और फिर मुझे साफ सुनाई दिया। 'व्र-आघ! व्र-आघ!'—गुस्से में भरे बाघ की दहाड़ उसी दिशा से आ रही थी। हाथी बार-बार चीख रहा था, और बाघ बीच-बीच में चुनौती भरी दहाड़ें मार रहा था, जैसे जवाब में जवाब दे रहा हो। मैं उस दृश्य की कल्पना कर सकता था। बाघ शायद सांभर के अवशेषों के पास चर रहा था, या सो रहा था, तभी हाथी उस पर आ पड़ा। क्या यह मुठभेड़ लड़ाई में बदल जाएगी, या दोनों में से कोई एक जानवर घबराकर पीछे हट जाएगा?

हाथी की चीख की ध्वनि बदलने लगी। भय की तीखी आवाज़ की जगह क्रोध की लंबी, थोड़ी धीमी आवाज़ ने ले ली। मैं समझ गया कि वह एक बैल था। वह बाँस के जंगल में बाघ की उपस्थिति से नाराज़ था, जिसे वह निस्संदेह अपनी संपत्ति मानता था, और तेज़ी से अपना आपा खो रहा था।

अब बाघ क्या करता? इस मामले में ज्यादा देर तक संशय नहीं रहा। अचानक उसका हौसला पस्त हो गया और उसने क्रोधित हाथी के सामने हार मानने का फैसला कर लिया, भले ही इसका मतलब अपने शिकार को छोड़ना ही क्यों न हो। बाघ के पीछे हटते ही अचानक सन्नाटा छा गया, जबकि हाथी ने देखा कि उसकी धौंस जमाने से दुश्मन भाग गया है, तो उसने धीरे-धीरे अपना संयम वापस पाया और चिंघाड़ना बंद कर दिया।

जंगल में एक बार फिर सन्नाटा छा गया। सूर्यास्त के बाद से तारों को ढके हुए घने बादल लगभग एक घंटे पहले ही छंट गए थे, और अब मैं तारों की रोशनी में मुथु के धुंधले शरीर और आस-पास की झाड़ियों और घास को साफ़-साफ़ देख पा रहा था। अब कम से कम मैं उस आदमखोर बाघ को देख पाऊँगा, अगर वह मुथु के शरीर में वापस आने का फैसला करे। इससे मुझे फिर से यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या हाथी से अभी-अभी हुई झड़प वाला बाघ ही वह आदमखोर बाघ था या नहीं।

उसकी कायरतापूर्ण हरकतें इस सवाल का सकारात्मक जवाब देती थीं।

उसी क्षण एक गुर्राहट की आवाज़ से मेरे विचार भंग हो गए! मैंने इसे केवल एक बार सुना, इसलिए मैं ठीक से यह नहीं बता सका कि आवाज़ कहाँ से आई थी, लेकिन यह एक स्पष्ट गुर्राहट थी। मुझे लगा कि यह मेरे पीछे से, पहाड़ी के नीचे से आई थी, लेकिन मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं था।

मैंने यथासंभव चुपचाप अपने शरीर को कुछ इंच बाईं ओर घुमाया, ताकि यह देख सकूं कि उस दिशा से कुछ आ रहा है या नहीं, लेकिन दाईं ओर देखने पर भी मुझे मुथु का धुंधला सा रूप दिखाई दे रहा था।

और फिर मैंने उसे दोबारा सुना: एक और गुर्राहट, इस बार तेज़ और नज़दीक से। अब कोई शक नहीं था: बाघ पहाड़ी पर चढ़ रहा था, वह मेरी दिशा में आ रहा था।

हाथी ने बाघ को उसके शिकार से भगाकर मेरी जो महान सेवा की थी, उसे याद करके मैं मन ही मन मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। क्रोधित बाघ को अब याद आ गया था कि उसने उसी दोपहर पहाड़ी पर एक और शिकार किया था, एक स्वादिष्ट इंसान का। इसलिए वह वापस उसी शिकार की ओर लौट रहा था, और साथ ही उस हाथी पर अपना गुस्सा जाहिर कर रहा था जिसने उसे परेशान किया था।

मेरी किस्मत बहुत अच्छी थी। बाघ न केवल अपनी मौजूदगी का संकेत दे रहा था, जो अंधेरी रात में मेरे लिए बहुत फायदेमंद था, बल्कि उसका उग्र स्वभाव और हाथी के प्रति उसकी दबी हुई नाराजगी उसे बेचारे मुथु तक पहुँचने पर ज्यादा सतर्क नहीं रहने देगी। आखिरकार, शायद उसे मेरी मौजूदगी का पता ही न चले। यह सोचकर मैं बहुत खुश हुआ।

बाघ ने दो बार और गुर्राया। फिर मुझे अपने बाईं ओर और थोड़ा नीचे एक लंबी, काली, अस्पष्ट आकृति दिखाई दी। ऐसा लगा जैसे वह हिल रही हो। फिर वह पूरी तरह गायब हो गई। फिर वह दोबारा दिखाई दी, इस बार बहुत करीब। वह निश्चित रूप से मेरी ओर बढ़ रही थी।

बाघ फिर गुर्राया। जाहिर तौर पर वह अभी भी हाथी के बारे में सोच रहा था और उसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा था। कर्कश, खुरदरी आवाज उस लंबी, गतिशील वस्तु से आ रही थी जो तेजी से मेरी ओर बढ़ रही थी।

काली परछाई बीच में मौजूद एक झाड़ी के पीछे गायब हो गई। कुछ ही सेकंड बाद, रेंगती हुई आकृति धुंधली सी बाएँ से दाएँ की ओर बढ़ी और मुथु के ऊपर, महज

दस गज की दूरी पर आकर रुक गई। उसने उस छोटे से पत्थर के किले की ओर देखा तक नहीं, जिसे मैंने और बायरा ने बड़ी मेहनत से बनाया था।

बाघ इतना क्रोधित था कि उसने पुजारी के मृत शरीर को बेरहमी से काटते हुए और शव को कुरेदते हुए ज़ोर-ज़ोर से गुर्राया। हाल ही में सांड हाथी के सामने उसकी अपमानजनक वापसी और अपने सांभर शिकार को छोड़ने की वजह से वह बेहद परेशान था। उसे लगा कि उसे अपना गुस्सा किसी न किसी पर निकालना ही होगा।

अब जाकर मुझे एहसास हुआ कि मेरे सामने कितना कठिन काम था। मुझे बाघ को पहली ही गोली में मार गिराना था, या कम से कम उसे इतना घायल करना था कि वह मुझ पर हमला न कर सके। मेरा शिकार महज़ दस गज दूर था, लेकिन वह मुझे धुंधला सा ही दिखाई दे रहा था। मेरे पास न तो टॉर्च थी, न ही नाइटसाइट, न ही कोई सफेद कार्ड जैसा इंडेक्स, जिसके बारे में हम अक्सर पढ़ते हैं, जिसे राइफल के निशाने पर लगाकर रात में निशाना लगाना आसान हो जाता है। मेरी पुरानी .405 राइफल में तो फॉस्फोरसेंट फोरसाइट भी नहीं थी।

मुझे एहसास हुआ कि मुझे तुरंत कार्रवाई करनी होगी, क्योंकि बाघ अभी भी बेचारे मुथु के अवशेषों पर अपना गुस्सा निकाल रहा था। एक बार जब वह शांत हो जाता और खाने के लिए बैठ जाता, तो वह मेरी राइफल की थोड़ी सी भी हलचल देख लेता और मुझ पर हमला कर देता। वास्तव में, अगर उसने पर्याप्त सांभर खा लिया होता, तो शायद वह मर जाता और रात में भूख लगने पर वापस आ जाता, या शायद बिल्कुल भी वापस न आता।

मैंने अत्यंत सावधानी से .405 पिस्तौल का बट अपने कंधे पर उठाया, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि बैरल हमारे द्वारा लगाए गए पत्थरों से न टकराए। उसे मजबूती से पकड़े हुए, मैंने बैरल को यथासंभव उस काले आकार के बाघ के अगले हिस्से की ओर निशाना बनाया।

मुझे पता था कि किसी महत्वपूर्ण अंग पर सटीक निशाना लगाने का कोई मौका नहीं था। मुझे जोखिम उठाना ही होगा। शायद मेरा निशाना पूरी तरह चूक जाए। बहुत संभव था कि मैं बाघ को मामूली रूप से घायल कर दूं और फिर वह पलटकर मुझ पर हमला कर दे। इस बात की सौ में से एक संभावना थी कि मैं उसे अपनी पहली ही गोली में मार दूं।

मैंने अपना हाथ स्थिर किया और अपनी सांस रोककर ट्रिगर दबा दिया।

राइफल की तेज़ आवाज़ गूंजते ही चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। सामने की पहाड़ियों में उसकी आवाज़ गूंज उठी। बाघ ज़ोर से दहाड़ा। सौभाग्य से, गोली चलाते समय उसका मुंह मेरी तरफ नहीं था। गोली कहां से आई, यह न जानते हुए उसने सोचा कि दुश्मन कहीं सामने है और पास की झाड़ी पर झपटा और उसे नोंचने लगा। जैसा कि मुझे आशंका थी, मैंने महसूस किया कि मैंने बाघ को केवल घायल किया था। वह उस समय गुस्से में था। अब वह भयंकर क्रोध में था।

और फिर मैंने एक गलती कर दी। अगर मैं कुछ नहीं करता, तो बाघ झाड़ियों को पूरी तरह नष्ट कर देता और शायद मेरी मौजूदगी का पता चले बिना ही चला जाता। लेकिन मैंने उसकी काली आकृति पर फिर से गोली चलाई।

उसके बाद बाघ का व्यवहार भयावह हो गया। दूसरी बार चोट लगने पर वह हवा में उछला, धड़ाम से ज़मीन पर गिरा और फिर गोल-गोल घूमते हुए कुतरने लगा। ज़ाहिर है उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई थी, क्योंकि जानवर सीधा खड़ा नहीं हो पा रहा था। लेकिन इस बार उसे पता था कि उसका हमलावर कहाँ छिपा है, और कुतरने के चक्कर में वह सीधे मुझ पर आ गिरा।

मैं झटपट खड़ा हुआ और लगभग दो गज की दूरी से उसके सिर पर तीसरी गोली दागी। फिर मैंने हाथों का सहारा लेकर पत्थर की दीवार फांदी और तुरंत दूसरी तरफ गिर पड़ा। मेरे पैरों में ऐसी चुभन हो रही थी मानो हर पैर में हज़ारों सुइयाँ चुभी हों, क्योंकि मैं लगभग ग्यारह घंटे से पालथी मारकर बैठा था और मेरे पैर सुन्न हो गए थे।

सौभाग्यवश बाघ पत्थरों के दूसरी तरफ ही रहा। उससे एक भयानक बुदबुदाहट और गड़गड़ाहट की आवाज आ रही थी, जिससे पता चलता था कि जानवर अभी भी जीवित था लेकिन बुरी तरह घायल था और शायद मर रहा था।

जैसे ही मेरे पैरों में खून वापस आया, मैं घुटनों के बल बैठ गया और बीच में मौजूद चट्टान के ऊपर से सावधानी से झाँका। बाघ दूसरी तरफ पड़ा था, छटपटा रहा था, हांफ रहा था और गुर्रा रहा था। मेरी चौथी गोली ने उसकी पीड़ा समाप्त कर दी।

शोर शांत होने पर, मुझे बायरा की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, वह घबराकर मुझसे पूछ रहा था कि सब ठीक है या नहीं। मैंने हाँ में जवाब दिया और उसे साथ आने को कहा। कुछ मिनट बाद मेरा दोस्त अंधेरे से बाहर आया और मैंने उसे पूरी कहानी सुनाई। नदी के किनारे हाथी ने फिर से चिंघाड़ा।

बायरा ने मुझे अचूक ढंग से घने जंगल से होते हुए मानची गांव तक पहुंचाया। वहां, मैंने दूसरी बार वही सब दोहराया जो हुआ था। गांववाले आखिरी बच्चे के लिए रोशनी लेकर आए और मुथु और बाघ के शवों को लाने के लिए हमारे साथ वापस गए।

मेरी पहली गोली पेट में लगी। दूसरी गोली कंधे के पास रीढ़ की हड्डी को चकनाचूर कर गई। इसी दूसरी गोली ने बाघ को वहीं रोक दिया और उसे भागने से रोक दिया। जैसा हमने अनुमान लगाया था, आदमखोर बाघ एक युवा निकला, और इसी वजह से उसका व्यवहार अनुभवहीन और अनियमित था। पुजारियों ने पूछा कि हमने मुथु के शव को चारा क्यों बनाया। हमने उनसे पूछा कि वे अपने बीच इतने घटिया जादूगर को क्यों रखते हैं। हमने उन्हें यह भी याद दिलाया कि हमने उन्हें आदमखोर बाघ से छुटकारा दिला दिया था। उद्देश्य के लिए जो भी करना पड़े, कर लो।

इस पर उन्होंने कुछ नहीं कहा।

---

* नरभक्षी और जंगल के हत्यारे, अध्याय 1 देखें।

दो

पेद्दाचेरुवु का लंगड़ा आतंक

यदि आप मीटर-गेज रेलवे से गुंटकल से पूर्व की ओर बेजवाड़ा शहर (जिसे अब विजयवाड़ा के नाम से जाना जाता है) की ओर यात्रा करते हैं, तो द्रोणाचेल्लम जंक्शन से निकलने के तुरंत बाद, जब आप नंदीयाल से गुजरते हैं और बसवपुरम, चेलीमा, बोगोडा और दिगुवमेटा स्टेशनों से होकर जाते हैं, तो आप आंध्र प्रदेश राज्य के कुछ सबसे प्रसिद्ध और घने जंगलों से होकर गुजरेंगे।

इस मार्ग के दोनों ओर के जंगल दक्षिण भारत के वे इकलौते क्षेत्र हैं जहाँ कभी बहुतायत में पाए जाने वाले विशाल मृग, जिन्हें नीलगाय या ब्लू बुल के नाम से जाना जाता है, आज भी मौजूद हैं। विशेष रूप से चिन्नमंत्रलमन्ना नामक स्थान पर वन विभाग के विश्राम गृह के आसपास के जंगलों में इनकी संख्या बहुत अधिक है। ये विशालकाय जानवर, जो कभी हर जगह प्रचुर मात्रा में पाए जाते थे, अब दक्षिण के अन्य सभी जंगलों में विलुप्त हो चुके हैं।

नीलगाय के अलावा, भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले अन्य जानवर भी यहाँ बड़ी संख्या में मौजूद हैं, साथ ही जंगली सूअरों के विशाल झुंड भी। ये सभी जानवर बाघों और तेंदुओं को आकर्षित करते हैं, जो पर्याप्त भोजन उपलब्ध होने पर हमेशा पाए जाते हैं। लेकिन जब किसी कारणवश यह प्राकृतिक भोजन कम हो जाता है, तो ये मांसाहारी जानवर गांवों के बाहरी इलाकों में रहने वाले चरवाहों द्वारा चराए जाने वाले मवेशियों, भेड़ों और बकरियों के झुंडों पर हमला करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। तब, और केवल तभी, वे झुंडों की देखभाल करने वाले लोगों के निशाने पर

आ जाते हैं, जो स्वाभाविक रूप से भाले, जाल, गोलियों और अन्य उपकरणों से हमलावरों को भगाने का प्रयास करते हैं। बाघ और तेंदु अन्य तरीकों से भी घायल या जख्मी हो जाते हैं। इससे वे सामान्य शिकार करने में असमर्थ हो जाते हैं, और समय के साथ वे भूख मिटाने के सबसे आसान तरीके के रूप में आदमखोरी करने लगते हैं।

इन वर्षों में इन क्षेत्रों में कई आदमखोर जानवर दिखाई दिए हैं। मैंने पहले ही उनमें से एक के बारे में बताया है जो मेरे द्वारा नामित कुछ स्टेशनों के बीच रेलवे ट्रैक पर घूमता था* और आगे जो कहानी है वह एक अन्य जानवर की है जो उसी इलाके में, लेकिन कुछ मील उत्तर में दिखाई दिया था।

उस स्थान तक पहुँचने के लिए, आपको दिगुवामेटा में ट्रेन से नहीं उतरना है, बल्कि मार्कपुर रोड तक चालीस मील और आगे जाना है। वहाँ उतरकर आप उत्तर दिशा में चालीस मील और आगे सड़क मार्ग से जाएँगे। सड़क एक सुरम्य घाट से होते हुए श्रीशैलम नामक एक छोटे से स्थान तक जाती है, जहाँ से कृष्णा नदी का घुमावदार मार्ग दिखाई देता है। यह नदी कभी दक्षिण में मद्रास प्रेसीडेंसी को उत्तर में हैदराबाद के निज़ाम के राज्य से अलग करती थी। अब अंग्रेज जा चुके हैं, और निज़ाम के राज्य भी समाप्त हो चुके हैं। ये सभी क्षेत्र भारत के दूसरे सबसे बड़े राज्य आंध्र प्रदेश के अंतर्गत आ गए हैं। श्रीशैलम, जो अब तक केवल एक बड़े मंदिर का स्थल था और जिसका केवल धार्मिक महत्व था, अब सिंचाई और बिजली योजना से जुड़ी एक विशाल दोहरी परियोजना के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है।

पहले के वर्षों में, जब परिस्थितियाँ शांत थीं, मार्कपुर रोड रेलवे स्टेशन से लगभग बीस मील दूर से लेकर किस्तना नदी तक का यह मार्ग उस प्रकार के जंगल से आच्छादित था जो बाघों को बहुत पसंद आता है—न तो बहुत घना और न ही बहुत कंटीला—जिसमें पर्याप्त ऊँची घास और छोटे पेड़ थे जो बाघों को छिपने की जगह और उनके प्राकृतिक भोजन, जंगली हिरण और सूअर को चरने और आश्रय प्रदान करते थे। दिलचस्प धाराओं वाली नीची, लहरदार पहाड़ियाँ भीषण गर्मी में भी उन्हें भरपूर पानी उपलब्ध कराती थीं, जबकि दक्षिण के जंगलों के लिए अभिशाप माने जाने वाले छोटे-छोटे जंगली कीड़े और पश्चिमी घाट के लालची जोंक, जो सभी मांसाहारी जीवों के लिए घृणित हैं और जो इन कीटों से छुटकारा नहीं पा सकते, लगभग पूरी तरह से अनुपस्थित प्रतीत होते थे। कम से कम जोंक तो नहीं, जबकि कीड़े केवल बारिश के बाद ही दिखाई देते हैं और तब भी नगण्य संख्या में।

इसलिए बाघ और तेंदुआ, विशेष रूप से बाघ, बहुतायत में पाए जाते थे। वे नीलगाय और हिरणों का शिकार करते थे, और शिकारी अक्सर इस क्षेत्र में नहीं आते थे। हैरानी की बात है कि हाथी और बाइसन इन जंगलों में बिल्कुल नहीं पाए जाते। दुर्लभ नीलगाय इनकी कमी को कुछ हद तक पूरा करती है, लेकिन चूंकि यह संरक्षित है और इसका शिकार करना पूरी तरह से प्रतिबंधित है, इसलिए ये क्षेत्र कभी भी पर्यटकों या शिकारियों के बीच लोकप्रिय नहीं रहे हैं। जलवायु भी कठिन है: सर्दियों में गर्म और गर्मियों में भीषण गर्मी।

एक और कारक जिसने मांसाहारी जीवों को काफी हद तक बचाए रखा है, वह है आंतरिक क्षेत्रों में मोटर योग्य सड़कों की कमी। यदि आप मुख्य सड़क से दूर जाना चाहते हैं, तो आपको या तो पैदल चलना होगा या बैलगाड़ी से जाना होगा। लेकिन इन सब बातों ने श्रीशैलम के जंगलों को मेरे लिए बेहद सुखद बना दिया। उनकी एकांत जगहों में मैं भीड़-भाड़ से दूर, खुद को खो सकता था।

मार्कपुर से श्रीशैलम जाने वाली सड़क के पश्चिम में पेद्दाचेरुवु नाम का एक गाँव है। वहाँ पहुँचने के लिए बैलगाड़ी से अठारह मील के घने जंगल से होकर जाना पड़ता है, जहाँ आमतौर पर आपको कोई दूसरा इंसान नहीं मिलता। पेद्दाचेरुवु एक छोटा सा गाँव है, और इसके दक्षिण में एक सुंदर झील है। बैलगाड़ी का रास्ता इस झील के पास से गुजरता है और कुछ मील दक्षिण की ओर एक पहाड़ी तक जाता है। एक दुर्गम ढलान पर यह रास्ता पहाड़ी से नीचे उतरकर रोलपेंटा गाँव तक जाता है, जहाँ यह दोरानाला गाँव से आत्मकुर शहर की ओर जाने वाली एक अन्य मुख्य सड़क से मिलता है। इससे भी आगे दक्षिण में चिन्नमंत्रलमन्ना का विश्राम गृह है, जहाँ नीलगाय बहुतायत में पाई जाती हैं।

जिस झील के बारे में मैंने अभी आपको बताया, वह जंगल से घिरी हुई है, और इस जंगल में कई बाघ पाए जाते हैं। वास्तव में, उनकी संख्या इतनी अधिक है कि उन्होंने वहां रहने वाले सभी तेंदुओं को मार डाला और खा लिया है। हर साल नवंबर से जनवरी तक, प्रजनन के मौसम के दौरान, सूर्यास्त के बाद और अक्सर दिन के उजाले में भी, आप साथी की तलाश में बाघिन की कराहती हुई आवाज सुन सकते हैं, और कभी-कभी दूर से मादा बाघिन की दहाड़ सुनकर बाघों के बीच होने वाली लड़ाई का भयानक शोर भी सुन सकते हैं।

मैंने आपको पिछली कहानियों में बताया है कि बाघों और तेंदुओं का प्राकृतिक

भोजन जंगल के जंगली जानवर होते हैं, और जब ये कम हो जाते हैं, तो वे चरने के लिए लाए गए पालतू मवेशियों और बकरियों के झुंड को खाते हैं। आदमखोरी हमेशा किसी चोट के कारण होती है, जिससे बाघ या तेंदुआ अपना सामान्य भोजन शिकार करने में असमर्थ हो जाता है। मेरे अनुभव में, जिस एक मामले के बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ, उसे छोड़कर, हर मामले में यह चोट मनुष्य द्वारा पहुँचाई गई होती है। आमतौर पर यह गोली या राइफल से लगी चोट होती है, या स्प्रिंग ट्रैप से भागते समय लगी चोट होती है, जब जानवर को अपने चेहरे या पैर पर जकड़े स्टील के जबड़ों के दांतों से खुद को छुड़ाना पड़ता है।

लेकिन पेद्दाचेरुवु के आदमखोर बाघ के मामले में इनमें से कोई भी बात सच नहीं थी। क्योंकि उसे गोली मारने के बाद मैंने पाया कि यह बाघ, जो अपनी जवानी के आखिरी दिनों में था, किसी दूसरे बाघ से लड़ चुका था। इस लड़ाई में उसकी एक आंख और एक कान दोनों ही दाहिनी ओर से छिद गए थे, जहां उसके दुश्मन ने उसे जकड़ लिया था। उसके दाहिने अगले पैर की नसें बुरी तरह से कुतर दी गई थीं, जिसके कारण चलते समय वह उस पैर को घसीटता था और अपने पीछे एक अलग निशान छोड़ जाता था। इन शारीरिक अक्षमताओं और बढ़ती उम्र के कारण यह जानवर अपने सामान्य शिकार को मारने में असमर्थ था। बाघ के अगले पंजे, और विशेष रूप से दाहिना पंजा, सामान्य हमले के लिए बहुत ज़रूरी होते हैं, क्योंकि इन्हीं से वह अपने शिकार को पकड़ता है और उसकी गर्दन या गले पर काटता है, जिससे जानवर गिर जाता है और अपने ही वजन से उसकी गर्दन टूट जाती है। दाहिना पैर बुरी तरह घायल होने के कारण, यह बाघ चूहे-हिरण से बड़े किसी भी जानवर को पकड़ नहीं सकता था। इसलिए उसने महीनों तक भूखमरी झेली जब तक उसके घाव ठीक नहीं हो गए, और फिर उसने अपने रास्ते में आने वाले हर इंसान को मारना और खाना शुरू कर दिया, क्योंकि उसने उन्हें चलने-फिरने में धीमा और उसका विरोध करने में पूरी तरह से असहाय पाया, यहां तक कि उसकी शारीरिक अक्षमताओं के बावजूद भी।

पेद्दाचेरुवु के लोगों ने मुझे बाद में बताया कि उन्होंने कुछ दिनों से एक बाघिन के कराहने की आवाज़ सुनी थी। यहीं से इस कहानी की असल शुरुआत हुई।

क्रिसमस और प्रजनन के मौसम से ठीक पहले का समय था। दो बाघ उसके लिए आपस में लड़ने लगे थे। यह झगड़ा सूर्यास्त के समय शुरू हुआ और आधी रात

तक चला। ज़ाहिर है, दोनों बाघ बुरी तरह घायल हो गए थे, क्योंकि उनमें से एक झील के किनारे पानी पीने आया था, जहाँ उसने कीचड़ भरे किनारे पर खून का एक धब्बा छोड़ दिया था। दूसरा बाघ डोरोनाला-आत्मकुर सड़क पर पेद्दाचेरुवु से रोलापेंटा जाने वाले रेतीले रास्ते को पार कर गया था। नरम मिट्टी पर खून के निशान और तीन पंजों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, जबकि रेत में एक हल्की सी लकीर से पता चलता था कि जानवर अपने एक पैर को घसीट रहा था और उस पर अपना वजन नहीं डाल पा रहा था।

समय बीतता गया, और फिर कभी कोई भेड़ या बकरी या कोई गांव का कुत्ता गायब हो गया, जबकि अक्सर 'लंगड़ा बाघ' के नाम से मशहूर उस प्रतियोगी के पदचिह्न यह दर्शाते थे कि कम से कम वह प्रतियोगी उस महाकाव्य लड़ाई में बच गया था।

गांव के बुजुर्ग लोग सिर हिलाते हुए फुसफुसाते हुए आपस में बात करने लगे। उनमें से कुछ ने ऐसे मामले पहले भी सुने थे। कुछ ने तो उन्हें अपनी आंखों से देखा भी था। लेकिन वे सब जानते थे कि भेड़ों, बकरियों और खासकर गांव के कुत्तों का शिकार होना इस बात का संकेत था कि एक आदमखोर बाघ पनप रहा है। क्योंकि बाघ ऐसे भोजन को तुच्छ समझते हैं और वे ऐसे तुच्छ शिकार को तभी मारते और खाते हैं जब वे भुखमरी की कगार पर होते हैं, या जब किसी ठोस कारण से वे किसी बड़े जानवर को मारने में असमर्थ होते हैं।

इसके तुरंत बाद ही पहला शिकार हुआ, और बूढ़े लोग और भी ज़्यादा शोर मचाने लगे। वह एक गाड़ीवान था और शाम को पाँच मील दूर एक घाटी से काटे गए बांसों से लदी अपनी गाड़ी लेकर गाँव लौट रहा था। गाड़ी का रास्ता उस झील के किनारे से होकर गुज़रता था जिसके बारे में मैंने आपको बताया है, और यहाँ वह आदमी अपने बैलों को पानी पिलाने के लिए रुका था, लेकिन उन्हें गाड़ी से नहीं उतारा था, क्योंकि गाड़ी बहुत भारी थी और अकेले उन्हें फिर से जोतना उसके लिए नामुमकिन था।

शायद अपने जानवरों को पानी पिलाने से ठीक पहले या बाद में, वह आदमी खुद पानी पीने के लिए अपनी गाड़ी से नीचे उतरा था। तभी उस 'लंगड़े बाघ' ने उसे पकड़ लिया।

बाघ को देखकर बैल भयभीत होकर बेतहाशा भागने लगे और अपने पीछे लदी

गाड़ी को घसीटते चले गए। वे सड़क पर नहीं चल पाए, जिसके परिणामस्वरूप गाड़ी ढलान से नीचे गिर गई और बांसों के भार से दोनों बदकिस्मत बैल भी उसके साथ घिसटते चले गए। एक बैल की जांघ टूट गई और हड्डी, जो बाहरी त्वचा से बाहर निकली हुई थी, उसके पेट में धंस गई, जबकि गाड़ी जानवर के ऊपर पड़ी रही और उसे जकड़ लिया। दूसरा बैल अधिक भाग्यशाली था। जुआ उसकी गर्दन से फिसल गया, जिससे जानवर गांव की ओर भागने के लिए स्वतंत्र हो गया। वहां पहुंचने पर अफरा-तफरी मच गई, लेकिन चूंकि रात हो चुकी थी, इसलिए किसी ने भी गाड़ीवाले की पत्नी और तीन बच्चों की विनती नहीं सुनी कि पुरुषों को लालटेन लेकर परिवार के मुखिया को खोजने के लिए एक दल बनाना चाहिए।

अगले दिन सूरज निकल चुका था जब गांव के तंदुरुस्त आदमी, जिनमें से दो के पास बंदूकें थीं और बाकी के पास भाले और लाठियां, आखिरकार गांव से निकले। थोड़ी ही देर में उन्हें पलटी हुई गाड़ी और टूटी जांघ वाला बेचारा बैल मिला। मालिक का कोई पता नहीं चला।

वे बैलगाड़ी के पदचिह्नों का पीछा करते हुए तालाब के किनारे तक पहुँचे और वहाँ उन्होंने कीचड़ में लंगड़ाते हुए बाघ के पदचिह्न देखे। कुछ खोजकर्ता बैलगाड़ी वाले के अवशेषों की तलाश करना चाहते थे, लेकिन बंदूकों से लैस दो लोग हिम्मत हार गए। एक ने कहा कि उसकी बंदूक बेकार है और गोली नहीं चलेगी। दूसरे, जो अधिक ईमानदार था, ने स्वीकार किया कि वह बहुत डरा हुआ था। परिणामस्वरूप, पूरा दल गाँव लौट आया और बैलगाड़ी वाले के अवशेष कभी नहीं मिले।

दूसरी शिकार एक महिला थी। यह घटना भी शाम के समय घटी, लेकिन गाँव से सौ गज की दूरी पर उस जगह पर जहाँ वह सामुदायिक कुएँ पर पानी का घड़ा लेकर गई थी। वहाँ कोई जंगल नहीं था, लेकिन पास ही पीपल के पेड़ों का एक छोटा सा झुरमुट था, जो आगे नारियल के बागान से सटा हुआ था। इस बागान को घनी बाड़ से घेरा गया था, और दूसरी तरफ झाड़ियों और घास से ढकी बंजर भूमि थी। असली जंगल आधे मील से अधिक दूर से शुरू होता था। कुआँ ऐसी जगह पर था जहाँ सबसे बुजुर्ग निवासी की याद में कभी कोई बाघ नहीं आया था, और वह निवासी सौ वर्ष से अधिक आयु का था।

लेकिन लंगड़ाता हुआ बाघ उसी शाम आ गया। दो अन्य महिलाओं ने उसे अपनी शिकार को ले जाते हुए देखा, तभी वह चीख पड़ी। चीख सुनकर वे पीछे मुड़ीं और

एक विशाल बाघ को, जो स्पष्ट रूप से लंगड़ा रहा था, महिला को उसके कंधे से घसीटते हुए पीपल के पेड़ों की ओर तेज़ी से बढ़ते हुए देखकर दंग रह गईं। उन्होंने और इंतज़ार नहीं किया और चीखते हुए गाँव की ओर भाग गईं।

उसके बाद लगातार कई इंसानों की हत्याएं हुईं, और एक दिन मुझे मेरे एक पुराने दोस्त, ब्याना नाम के एक तेलुगु भारतीय सज्जन का पत्र मिला, जो मार्कपुर रोड रेलवे स्टेशन के पास रहते थे। पत्र में उन्होंने मुझे पेद्दाचेरुवु गांव में हो रही घटनाओं के बारे में बताया और बाघ का शिकार करने के लिए आने का अनुरोध किया। इतना ही नहीं, ब्याना ने मेरी मदद करने के लिए मेरे साथ चलने की पेशकश की और सुझाव दिया कि मैं ट्रेन से मार्कपुर रोड जाऊं, जहां से वे मुझे अपनी लैंड रोवर में हमारे गंतव्य तक ले जाएंगे।

ऐसे आमंत्रण को ठुकराना असंभव था, इसलिए मैंने ब्याना को एक टेलीग्राम भेजकर सूचित किया कि मैं अगली रात एक्सप्रेस ट्रेन से रवाना हो रहा हूँ। अगले दिन सुबह हम दोनों मार्कपुर रोड रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर मिले।

श्री ब्याना बेहद सजग हैं और मेहमाननवाज़ी उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इतनी महत्वपूर्ण कि कभी-कभी तो यह सब कुछ शर्मनाक भी हो जाता है। मुझे उनके घर ले जाया गया जहाँ पिछले दो घंटों से गर्म पानी का स्नान तैयार था। फिर मेरे सामने चिकन पुलाव की एक बड़ी थाली रखी गई और मानो मुझे उसे पूरा खाने का आदेश दिया गया हो। मैं जानता था कि मुझे अच्छा प्रदर्शन करना होगा, क्योंकि ब्याना काफी संवेदनशील हैं और अगर मैंने भोजन का पूरा आनंद नहीं लिया तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा।

जब यह दावत खत्म हुई, तो मुझे घर के पीछे वाले गैरेज में ले जाया गया। वहाँ ब्याना की लैंड रोवर खड़ी थी, जो मेरे आराम के लिए तरह-तरह की फालतू चीज़ों से लदी हुई थी। उसमें एक स्प्रिंग वाला पलंग और गद्दा, कैंप कुर्सियाँ, कैंप टेबल, एक कैनवास का कैंप टब, एक कैंप बेसिन और स्टैंड, एक छोटा फ्रिज और एक पंखा था, दोनों केरोसिन तेल से चलते थे, और न जाने क्या-क्या था। खाने-पीने की बात करें तो! ढेरों बोरियाँ खाने-पीने के सामान से भरी हुई थीं; मेरे ख्याल से पूरे एक महीने के लिए काफी थीं। चार प्राइमस स्टोव दिए गए थे, जिनमें से एक में डबल-रेंज कुकर भी था; और बर्तन, कड़ाही और पानी के लिए ड्रम अजीबोगरीब जगहों और कोणों पर बंधे हुए थे। हम दोनों कहाँ बैठेंगे, यह एक अनसुलझी समस्या लग रही थी।

ब्याना ने मुझसे पूछा कि क्या मैं रात उनके घर में रुकना चाहूँगी और अगली सुबह निकलूँगी, जिस पर मैंने कहा कि उस गर्म पानी से नहाने और लाजवाब चिकन पुलाव के बाद मैं एकदम तरोताज़ा महसूस कर रही हूँ। क्या हम तुरंत निकल सकते हैं? उन्होंने बड़ी सहृदयता से तुरंत सहमति दे दी, और एक घंटे बाद लैंड रोवर, जो अमेरिका के मैदानी इलाकों की उन ढकी हुई गाड़ियों जैसी दिखती थी, श्रीशैलम की ओर जाने वाली उत्तर दिशा की सड़क पर चल पड़ी।

डोरनाला गांव से थोड़ा आगे जाकर हमने मुख्य सड़क छोड़ दी और अठारह मील के ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलना शुरू किया, जो अंततः हमें सीधे जंगल से होते हुए पेद्दाचेरुवु गांव तक ले गया। रास्ते में तुम्मलबायलू नाम का एक और छोटा सा गांव पड़ा, जहां मेरे युवा और अनुभवहीन दिनों में मेरा सामना एक आदमखोर सांप से हुआ था। वहां मैं लैंड रोवर से बाहर निकला और किसी के दरवाजे पर बैठ गया, जबकि ब्याना हमारे चारों ओर जमा हुए ग्रामीणों की भीड़ से तेलुगु में बातें करता रहा।

पता चला कि वह हमारे रहने के लिए एक उपयुक्त कमरा ढूंढने की कोशिश कर रहा था। इसमें ज्यादा समय नहीं लगा, क्योंकि स्थानीय स्कूल के प्रधानाध्यापक, जो हमारी यात्रा का उद्देश्य जानने के लिए भीड़ में शामिल हो गए थे, ने तुरंत हमें अपने छोटे से स्कूल के मुख्य हॉल में रहने की पेशकश कर दी।

हम लैंड रोवर से वहां गए और सामान उतारा। जब तक हमने गाड़ी से सारा सामान बाहर निकाला, तब तक वह कमरा पूरी तरह भर चुका था, हालांकि आधे से ज़्यादा चीज़ें बिलकुल अनावश्यक थीं।

कई ग्रामीणों ने स्वेच्छा से हमारे लिए घड़े भरकर पानी लाया। हमें एक अलग इमारत में बने स्नानघर ले जाया गया, जहाँ हमने स्नान किया; और फिर हमें एक और इमारत में बने शौचालय को दिखाया गया। काफी देर बाद हमें करी और चावल का पहला भोजन मिला, जो ब्याना मार्कपुर स्थित अपने घर से लाया था।

शाम ढल चुकी थी, लेकिन गांव के लोग आते-जाते रहे, हमें घूरते रहे और अनगिनत सवाल पूछते रहे, जिनका ब्याना ने तेलुगु में विस्तार से जवाब दिया। आखिरकार मैंने खुद ही मोर्चा संभाला। मैंने गांव के तीन-चार लोगों को चुना जो आदमखोर सांप के बारे में कुछ जानते थे, और अपनी राइफल लेकर उन्हें अपने साथ बाहर आने को कहा।

चांदनी रात थी। गांव की मुख्य सड़क सीधे उस पगडंडी पर जाकर मिलती थी

जो दोरानाला-आत्मकुर सड़क की ओर जाते हुए झील के किनारे-किनारे चलती थी। आधे फर्लांग की दूरी पर झील शुरू होती थी, और मैं चांदनी में पानी को चमकता हुआ देख सकता था।

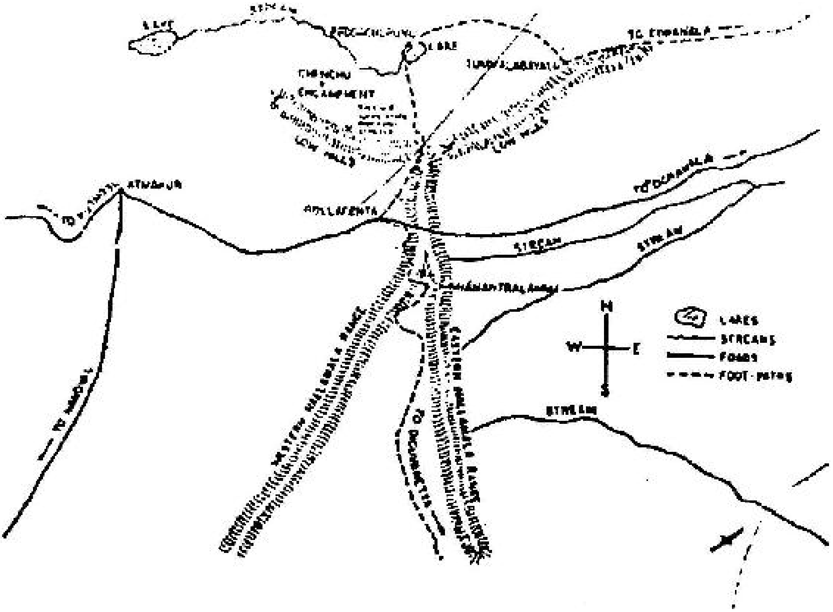

मैं अपने साथियों के साथ सड़क पर चल रहा था, जिन्होंने थोड़ी देर में ही मुझे बताया कि आदमखोर बाघ की वजह से गाँव की सीमा से बाहर निकलना हमारे लिए खतरनाक होगा। मैंने कहा कि मैं उनसे किसी शांत और एकांत जगह पर बात करना चाहता हूँ, जो उस भयानक स्कूल के कमरे में नामुमकिन था, और मैंने उन्हें बाघ के बारे में आश्वस्त किया। आखिरकार हम झील के किनारे पहुँचे और पानी के पास बैठ गए। वहाँ का मौसम बहुत सुहावना था और चाँदनी इतनी तेज थी कि हम झील के उस विशाल विस्तार के पार दूसरी तरफ के जंगल को देख सकते थे।

मैंने देखा कि मेरे साथी घबराकर इधर-उधर देख रहे थे, लेकिन चूंकि हम खुले में थे और बाघ से बचने के लिए कोई आड़ नहीं थी, इसलिए उनके डर का कोई औचित्य नहीं था। धीरे-धीरे मुझे बाघ की हरकतों के बारे में पता चलता गया, क्योंकि मैंने उन्हें

पहले ही बता दिया था, और मेरे साथियों ने अपनी कहानी इस भावुक विनती के साथ समाप्त की कि मैं हर हाल में उस जानवर को गोली मार दूं।

मुझे लगता है कि ब्याना को मेरे अचानक चले जाने पर आश्चर्य हुआ होगा, क्योंकि वह लगभग बीस लोगों के साथ मुझे ढूंढने आया और पानी के किनारे पर आकर हमसे मिल गया। हमने अगले दिन क्या करना है, इस बारे में योजना बनाई।

और तभी एक बाघ दहाड़ने लगा। ठीक हमारे सामने, झील के उस पार, जहाँ से जंगल का घना किनारा पानी की ओर उतरता दिख रहा था, वह नियमित अंतराल पर दहाड़ रहा था। मुझे वह आवाज़ सुखद, रोमांचक, लुभावनी और चुनौती देने वाली लगी। मुझे इतना बताया गया था कि मैं उस आदमखोर को उसकी लंगड़ाहट से तुरंत पहचान लूँगा, बस उसे देख लेना था। मैंने काफ़ी बातें कर ली थीं और काफ़ी खा लिया था; और वो दहाड़ें बहुत ही लुभावनी थीं। और चाँदनी बहुत ही शानदार थी।

अचानक ही मैं उछल पड़ा और अपने साथियों से कहा कि मैं बाघ का पीछा करने जा रहा हूँ। वे सब चौंक गए। लेकिन इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, मैं लगभग दौड़ते हुए उस रास्ते पर चल पड़ा जो झील के लगभग आधे घेरे तक उसके किनारे-किनारे चलता था और फिर जंगल में मुड़ जाता था। मुझे लगा कि बाघ कम से कम एक मील दूर, शायद उससे भी ज़्यादा दूर दहाड़ रहा होगा, और मैं उसके रुकने से पहले ही उस तक पहुँचना चाहता था। ज़ाहिर है, वह झील पर पानी पीने आ रहा था।

पंद्रह मिनट से भी कम समय में मैं लगभग वहाँ पहुँच गया था, और बाघ अब भी दहाड़ रहा था, हालाँकि पहले से ज़्यादा अंतराल पर। मुझे पता था कि बहुत जल्द वह दहाड़ना बंद कर देगा। वह अब इतना करीब था कि हर दहाड़ के साथ धरती काँपती हुई प्रतीत हो रही थी, जब मैंने उस रास्ते को छोड़ा जिसका मैं अनुसरण कर रहा था और जंगल से होते हुए उस आवाज़ की ओर बढ़ा। यहीं से मेरी मुश्किलें शुरू हुईं।

मुझे अच्छी तरह पता था कि अगर मैंने झाड़ियों के बीच से निकलने की कोशिश की तो बाघ मुझे सुन लेगा। या तो वह चला जाएगा या फिर, अगर वह आदमखोर हुआ तो, वह चुपके से आगे बढ़कर मुझ पर पीछे से हमला कर देगा। मेरी उम्मीद यही थी कि अगर मुमकिन हो तो मुझे कोई पगडंडी मिल जाए और मैं चुपचाप उस पर चलकर उसे पहले देख सकूँ—जो कि लगभग नामुमकिन था।

सौभाग्य से मुझे वह पगडंडी मिल गई। दरअसल, वह पैदल चलने का रास्ता नहीं बल्कि जानवरों का रास्ता था जो पानी की ओर जाता था; लेकिन इससे मुझे राहत मिली, क्योंकि वह लगभग उसी दिशा में जा रही थी जहाँ से बाघों की दहाड़ें अभी भी आ रही थीं, हालांकि अब उनके आने का अंतराल पहले से लंबा होता जा रहा था।

मैं रास्ते पर चलने लगा, बार-बार नीचे देखता रहा ताकि कहीं ठोकर न लग जाए या किसी ऐसी चीज़ पर पैर न पड़ जाए जिससे मेरी मौजूदगी का पता चल जाए। जब बाघ ने दहाड़ना बंद किया, तब मुझे लगा कि वह 200 गज के दायरे में ही है। यह महसूस करते ही मैं रुक गया, क्योंकि उसके लिए उसे ढूंढना नामुमकिन था। जबकि चारों ओर छाए सन्नाटे में, मेरी तमाम सावधानियों के बावजूद, वह मेरे कदमों की आहट ज़रूर सुन लेता। मैंने तुरंत सोचा और मुझे एक उपाय सूझा। शिकार के रास्ते के दाईं ओर एक बबूल का पेड़ था। उसका तना इतना मोटा नहीं था कि उसके पीछे छिपने पर मेरा शरीर छिप सके, लेकिन अगर मैं बिल्कुल स्थिर रहता, तो शायद बाघ मुझे देख न पाता—कम से कम इतनी जल्दी तो नहीं।

मैं झटपट बबूल के पेड़ के पीछे चला गया, गहरी साँस ली और अपने फेफड़ों की पूरी ताकत से बाघ की दहाड़ की नकल की। मैंने ऐसा दो बार, लगातार किया। फिर मैं चुपचाप आगे की घटनाओं का इंतज़ार करने लगा। और फिर जो हुआ, वो सचमुच हुआ। मेरे सामने खड़ा बाघ, जाहिर तौर पर हैरान और उस घुसपैठिए की गुस्ताखी से बहुत नाराज़ था जिसने उसके इतने करीब आकर दो बार दहाड़ मारी थी, हालाँकि वो दहाड़ें बहुत ही कमजोर और दहाड़ जैसी लग रही होंगी, और उसका गुस्सा फूट पड़ा। मैं उसे आते हुए सुन सकता था, गुर्राते और घुरघुराते हुए वो आगे बढ़ा। सौभाग्य से, बबूल का पेड़ ऐसी जगह पर उगा था जहाँ रास्ता कुछ गज तक सीधा था, न कि मोड़ पर।

कुछ ही देर में, बाघ तेज़ी से पगडंडी पर दौड़ता हुआ आया। वह अपने जैसे दूसरे बाघ की तलाश में इतना मग्न था कि उसने मुझे उस बबूल के पेड़ के तने के पीछे छिपा हुआ देखा ही नहीं। जब मुझे उसे चुनौती देने के लिए मजबूर होना पड़ा, तब तक वह आगे निकल चुका था। मैंने लगभग न के बराबर खांसा।

बाघ अचानक मुड़ा और उस नई आवाज़ की ओर देखा। वह जानता था कि यह आवाज़ किसी दूसरे बाघ की नहीं बल्कि एक आदमी की है, और उसकी प्रतिक्रिया से

पता चलेगा कि वह आदमखोर है या नहीं।

जब वह जानवर बबूल के पेड़ को घूर रहा था, तब मैं एक इंच भी नहीं हिला। सूंघने की शक्ति न होने के कारण वह मुझे ठीक से पहचान नहीं पाया, हालांकि उसने मेरा कुछ हिस्सा जरूर देखा होगा और जान गया होगा कि उस पेड़ के पीछे कोई छिपा हुआ है। वह झिझका, फिर तीन-चार कदम बाईं ओर बढ़ा, जहाँ से वह मुझे बेहतर ढंग से देख सकता था।

हम दोनों को एक साथ पहचान हो गई। उसे पता चल गया कि मैं कौन हूँ और कहाँ खड़ा हूँ, जबकि मुझे पता चला कि वह आदमखोर नहीं था। क्योंकि उसकी चाल में लंगड़ापन का जरा सा भी निशान नहीं था। हम एक-दूसरे को घूरते रहे।

अगले तीन-चार सेकंड ही हमारा भाग्य तय करेंगे। मेरी तो किसी भी हालत में एक निर्दोष बाघ को गोली मारने की इच्छा नहीं थी, बशर्ते वह मुझे अकेला छोड़ दे। लेकिन क्या वह छोड़ेगा? मैंने दहाड़ मारकर उसे उत्तेजित और चिढ़ा दिया था, और खांसकर स्थिति को और बिगाड़ दिया था। एक क्रोधित बाघ अक्सर खुद पर काबू नहीं रख पाता।

बाघ अपने पिछले पैरों पर बैठ गया और मैं समझ गया कि हमला होने वाला है। मैंने निशाना साधा और ट्रिगर दबाने ही वाला था कि तभी एक ऐसी अप्रत्याशित घटना घटी, जो अक्सर बाघ के व्यवहार को अप्रत्याशित बना देती है। वह मुड़ा और झाड़ियों में कूद गया!

उसे चले जाने और मेरे मन को शांत होने का समय देते हुए, मैं जानवरों के रास्ते से वापस सड़क पर और फिर गाँव की ओर लौटा, जहाँ मैंने ब्याना और अन्य लोगों को, जिन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने मुझे दोबारा देखने की कभी उम्मीद नहीं की थी, सारी घटना बताई।

यह कहना गलत नहीं होगा कि मैं निराश था, लेकिन मुझे खुशी थी कि मैंने गलत बाघ को गोली मारकर स्थिति को और खराब नहीं किया।

अगले तीन दिनों के दौरान हमने चार चारे खरीदे और उन्हें उन सबसे संभावित स्थानों पर बांध दिया जहां नाले और रास्ते एक दूसरे को काटते थे, और बड़ी झील से लगभग एक मील के भीतर, और प्रत्येक चारे के ऊपर हमने लगभग एक उत्तम मचान बनाया।

इसी तरह मेरी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई, जो आगे चलकर घटनाओं से

साबित हुआ कि वह मेरी मुलाकात के किसी भी बहादुर व्यक्ति से कहीं अधिक साहसी था। वह चेन्चू था—इन इलाकों के आदिवासी वनवासियों का यही नाम है—और वह अधिकांश चेन्चू लोगों की तरह धनुष और बाणों का तरकश रखता था। ये दोनों चीजें, और कमर पर बंधी एक गंदी सी पट्टी, जाहिर तौर पर उसकी एकमात्र संपत्ति थीं। उसके पास एक और चीज थी, और मुझे लगता है कि वही उसकी सबसे बड़ी खूबी थी। अप्पू—उसका यही नाम था—की मुस्कान बेहद मनमोहक थी, और उसमें हास्यबोध की अद्भुत क्षमता थी। वह दिन भर खुश रहता था।

अप्पू ने मेरे चारे बांधने के लिए उपयुक्त स्थान चुनने और मचान बनाने में मदद करने की पेशकश की, और मैंने तुरंत स्वीकार कर लिया, क्योंकि उसकी मुस्कान ने मेरा दिल जीत लिया था। उसने कितने शानदार मचान बनाए! उसने उन्हें इतनी चतुराई से छिपाया था कि ज़मीन से घूरते हुए और उसकी जगह जानते हुए भी, मेरे लिए यह पहचानना मुश्किल था कि वहाँ कोई मचान है। सचमुच, छोटे अप्पू ने मचान बांधने की कला के बारे में मेरे ज्ञान को बहुत बढ़ाया, क्योंकि उसके लिए यह सचमुच एक कला थी!

पहली रात कुछ नहीं हुआ, न ही दूसरी रात। जिस भैंस की बछिया को हमने उस जगह से एक चौथाई मील दूर बांध रखा था जहाँ मेरी मुलाकात उस दहाड़ते हुए बाघ से हुई थी, उसे तीसरी रात मार दिया गया और आधा खा लिया गया, इसलिए चौथी रात मैं उस बछिया के अवशेषों के पास बैठा रहा, हत्यारे के लौटने का इंतजार करता रहा।

क्या यह लंगड़ा बाघ था, आदमखोर बाघ, या फिर वही 'दहाड़ता बाघ'—जैसा कि मैंने उसे नाम दिया था—जिससे मेरी मुलाकात कुछ दिन पहले हुई थी? दुर्भाग्य से ज़मीन इतनी सख्त थी कि कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे जिससे इस सवाल का जवाब पहले से दिया जा सके। बाघ अंधेरा होने से पहले ही लौट आया, जो कि बाघों के लिए एक दुर्लभ बात है, हालांकि आमतौर पर पैंथर सूर्यास्त के समय अपने शिकार के पास आते हैं। उसने अप्पू के शानदार मचान की ओर एक नज़र भी नहीं डाली, बल्कि निडरता से बछिया के शव के पास गया और उसे नीचे से घूरने लगा।

उसकी चाल में कोई खराबी नहीं थी। वह लंगड़ा बाघ नहीं था जिसके बारे में मुझे बताया गया था। वह आदमखोर भी नहीं था।

मुझे उस अद्भुत मचान से एक छोटा सा प्रयोग करने का विचार आया। मैंने एक

पैंथर की कर्कश आवाज निकाली। उस बाघ पर इसका असर चौंकाने वाला था; वह क्रोध से भर उठा। वह उस नन्हे लेकिन साहसी पैंथर को ढूंढने के लिए घूमा जिसने उसके शिकार पर उसके अधिकार को चुनौती देने की हिम्मत की थी। यह घुसपैठिया कहाँ था?

'हा-हा! हा-हा!' मैंने फिर पुकारा। फिर रुक गया।

'व्रॉफ! व्रॉफ! व्रॉफ!' बाघ दहाड़ा और सीधे उस पेड़ की ओर दौड़ा जिसमें मैं छिपा हुआ था। मैंने मज़ाक कुछ ज़्यादा ही कर दिया था। बाघ गुस्से से आग बबूला था और पेड़ में छिपे अपने चित्तीदार दुश्मन को जान से मारने पर तुला हुआ था। इसके अलावा, पेड़ पर चढ़ना आसान था और मैं ज़मीन से सिर्फ़ पंद्रह फीट ऊपर था।

जैसे ही बाघ मेरे मचान के चबूतरे के नीचे पहुँचा, वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया। जैसे ही वह पहली शाखा पर कूदा, पेड़ हिल गया और मैं उसके पंजों के छाल पर रगड़ने की आवाज़ सुन सकता था, क्योंकि वह ऊपर की ओर गुर्रा रहा था। पेड़ ज़्यादा बड़ा नहीं था, फिर भी उसके प्रयास और उसके वज़न से एक अजीब सी कंपन पैदा हुई जिससे मेरा पूरा मचान काँप उठा।

मामला हद से ज़्यादा बिगड़ चुका था। अगले ही पल वो विशालकाय पंजे ऊपर पहुँचकर उस चबूतरे को चीर-फाड़ देंगे जिस पर मैं बैठा था। मैं पेड़ से नीचे गिर जाऊँगा और बाघ शायद यह एहसास होने से पहले ही मुझ पर कूद पड़ेगा कि मैं कोई पैंथर नहीं हूँ।

'भागो! भागो! भागो!' मैं हताशा में चीख उठा, राइफल नीचे की ओर ताने हुए उछल पड़ा और उसके सिर या पंजे के चबूतरे के किनारे से बाहर आने का इंतज़ार करने लगा। बेचारे बाघ को ज़बरदस्त झटका लगा। उसने इंसान की आवाज़ पहचान ली और ज़रूर सोचा होगा कि उसके ऊपर कौन सा पैंथर हो सकता है, क्योंकि वह अचानक एक इंसान में बदल गया था। और साहस तो उसकी खासियत नहीं थी, जैसा कि उसने कुछ दिन पहले बबूल के पेड़ के पीछे मुझसे मिलते समय दिखाया था।

गुर्राहट बंद हो गई और बाघ के अपने भारी शरीर को ज़मीन पर पटकने से पेड़ ज़ोर से हिल गया। वह एक पल भी नहीं रुका, बल्कि झाड़ियों में कूद गया; फिर मुझे सूखी झाड़ियों के बीच से उसके तेज़ी से चले जाने की आवाज़ सुनाई दी।

जब मैं शिविर में वापस आया तो मैंने ब्याना, अप्पू और अपने बाकी दोस्तों को बाघ पर किए गए अपने मज़ाक के बारे में बताया। वे सब हँसे, लेकिन छोटा अप्पू तो

हँसते-हँसते लोटपोट हो गया। उसने अपनी हथेलियों से अपनी जांघों पर थपथपाया और हँसता ही रहा। लगभग साँस फूलते हुए, वह बोलते-बोलते रुक गया: 'लेकिन कल, बाघ ने एक बाघ की आवाज़ सुनी जो एक आदमी निकला। आज उसने एक पैंथर की आवाज़ सुनी जो आदमी बन गया। उसे लग रहा होगा कि वह पागल हो रहा है!'

अगले दिन, मैंने मरी हुई बछिया की जगह दूसरी बछिया रख दी, और उसी रात यह नई बछिया भी मारी गई। हमने जगह या मचान नहीं बदला था जहाँ मैंने एक दिन पहले बाघ को छेड़ा था। हम लंगड़े बाघ, आदमखोर बाघ का पीछा कर रहे थे, इसलिए उस मचान का इस्तेमाल करना फ़ायदेमंद था जहाँ से दूसरे बाघ, जिसे हमने मूर्ख 'दहाड़ने वाला बाघ' नाम दिया था, को भगाया गया था। इस मचान का दोबारा इस्तेमाल करके, हम कम से कम यह सुनिश्चित कर सकते थे कि 'दहाड़ने वाला बाघ' दखल नहीं देगा। इसलिए, जब सुबह लगभग 9 बजे अप्पू और कुल्हाड़ी और लाठी से लैस उसके आधे दर्जन आदमियों ने, जो अलग-अलग चारे का मुआयना करने गए थे, नई बछिया के मारे जाने की सूचना दी, तो मेरी उम्मीदें बढ़ गईं। आख़िरकार, मुझे उस आदमखोर बाघ से भिड़ना ही था, क्योंकि यकीनन वह आख़िरकार यहीं था!

इसी उम्मीद से प्रेरित होकर मैं उस दोपहर जल्दी ही मचान पर चढ़ गया और वहाँ पहुँचते ही एक नेवला दिखाई दिया। वह बहुत भूखा रहा होगा, क्योंकि उसने मरी हुई बछिया को कुतरना शुरू किया और फिर मांस के बड़े-बड़े टुकड़े तब तक खाता रहा जब तक कि उसका पेट फूल नहीं गया और वह मुश्किल से चल पा रहा था, फिर वह लड़खड़ाते हुए चला गया।

मानो वे उसके जाने का इंतज़ार कर रहे थे, भारत के इस हिस्से में 'गेर्जर' के नाम से जानी जाने वाली छोटी बटेरों की एक प्रजाति का झुंड कुछ ही समय में खुले मैदान में प्रकट हो गया। उन्होंने सड़ते हुए मांस को छुआ तक नहीं, बल्कि दिन की गर्मी के साथ बढ़ती दुर्गंध से आकर्षित होकर आए असंख्य छोटे भृंगों और अन्य कीड़ों को चोंच मारना शुरू कर दिया। नीली मक्खियाँ झुंड में खुले मांस पर बैठ गईं। वहाँ वे अंडे देतीं जो कुछ ही समय में असंख्य सफेद लार्वा में बदल जाते। ये लार्वा मांस को खा जाते और बदले में उन्हें खाने के लिए आने वाले पक्षी और कीड़े उन्हें खा जाते। चौबीस घंटे से भी कम समय में, केवल कीड़ों की क्रिया से ही वह शव मात्र हड्डियों में तब्दील हो जाता, आकाश के सफाईकर्मी, गिद्ध, जो अंतिम भोज के लिए पहले से ही

इकट्ठा हो रहे थे, और रात के सफाईकर्मी - लकड़बग्घे और सियार - जो अंधेरा होने के बाद बचे हुए थोड़े से अवशेषों के लिए आते।

फिर, ज़ाहिर है, असली मालिक भी था—वह लंगड़ा बाघ, जैसा कि मुझे उम्मीद थी—जिसे ज़्यादा से ज़्यादा आठ बजे तक आ जाना चाहिए था।

मेरी तल्लीनता अचानक पास ही में उड़ते एक जंगली मुर्गे की कर्कश लेकिन खुशमिजाज बांग से टूट गई: 'वाह! कूक-काया-काया-कूक'म' उसने पुकारा, और मैंने घड़ी देखे बिना ही जान लिया कि साढ़े पाँच बजने वाले हैं। शाम हो चुकी थी और मैं उम्मीद करने लगा कि आदमखोर मुर्गा अपने सीधे-सादे चचेरे भाई, दहाड़ते बाघ की तरह, रात होने से पहले ही दिखाई देगा।

झील के किनारे, जो संयोगवश मेरे पीछे थी, मोरों के दो परिवार एक-दूसरे को पुकारने लगे: 'म्याऊं!' जबकि दूर से 'गोलामोथी पक्षी' अपनी मिलन की पुकार लगा रही थी: 'गोलमोथी! गोलमोथी!' आस-पास मौजूद हर नर, उस मोहक और लुभावनी पुकार को सुनकर, उसकी ओर उड़ता और सूर्यास्त से पहले उसके पास चुनने के लिए कई साथी होते।

जल्द ही जंगल में गोधूलि बेला छा गई, दिन और अंधेरे के बीच की अनिश्चितता की वह अवधि, जब दृष्टि सबसे आसानी से धोखा खा जाती है और निर्दोष झाड़ियाँ और पेड़-पौधे दुबके हुए, ताक-झांक करने वाले जानवरों का भयावह रूप धारण कर लेते हैं।

फूट! फूट! फूट! मेरे पीछे कहीं एक पेड़ से कई पक्षी ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए तेज़ी से उड़ गए। उन्होंने चीखते हुए चेतावनी दी, 'की-या! की-या! की-या!'

किसी चीज़ ने लाल सिर वाले तोतों के झुंड को उनके बसेरे से जगा दिया और वे दूसरा बसेरा खोजने के लिए उड़ गए। तोतों ने ऐसा क्यों किया? शायद उन्होंने किसी जंगली बिल्ली को शिकार की तलाश में घूमते देखा हो। या फिर क्या वह बाघ हो सकता है?

समय बीतता चला गया।

'कीच! कीच! कीच! कीच!' कीड़े खाने वाले कई छोटे चमगादड़ अपने अदृश्य शिकार पर झपट्टा मारते और गोता लगाते हुए, उन्हें उड़ते हुए ही पकड़ लेते और इतनी ऊँची आवाज़ में चीखते, जितनी ऊँची आवाज़ में, मुझे बताया गया है, इंसानी कान

उसे सुन ही नहीं सकते। और मुझे इस बात की बहुत खुशी है क्योंकि उस समय उनकी चीखें और चरमराहट की आवाज़ें, जितनी मैं सुन पा रहा था, काफी तेज़ थीं।

एक नाइटजार पक्षी मेरे ऊपर फड़फड़ाता हुआ आया और मेरे पीछे कहीं बैठ गया। उसने चहचहाना शुरू किया, जिसे जल्द ही उसके कई साथी दोहराने लगे: 'चक चक चक चक चक चकूऊऊऊ; चक चक...'

फिर वह अचानक रुका और उड़ गया। मैं उसे अपने दाहिनी ओर पेड़ की चोटी के ऊपर उड़ते हुए देख सकता था। और एक पल बाद, मुझे अपनी मचान के नीचे एक गहरी आह सुनाई दी, जिसके बाद पूरी तरह सन्नाटा छा गया। हालाँकि मैं उसे देख नहीं पा रहा था, लेकिन मैं जानता था कि बाघ आ गया है।

वह मेरे ठीक नीचे खड़ा था, और मुझे महसूस हुआ कि वह शिकार और अपने आस-पास के वातावरण का अत्यंत सावधानी से निरीक्षण कर रहा था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई छिपा हुआ खतरा न हो। क्या वह ऊपर देखेगा और मचान को देख लेगा? इसके बाद कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, जिससे मुझे बहुत तनाव हुआ। फिर मैंने एक धीमी सी लगातार आवाज़ सुनी, जिसका वर्णन मैं नहीं करूँगा, हालाँकि मैं उसे आसानी से पहचान सकता था। बाघ शौच कर रहा था।

मैं बेहद खुश था। यह वाकई एक अच्छा संकेत था। इससे पता चलता था कि वह बिल्कुल भी डरा हुआ या शंकालु नहीं था।

अगले ही पल बाघ मेरे पेड़ के नीचे से निडरतापूर्वक प्रकट हुआ। हालाँकि बहुत अंधेरा हो चुका था, फिर भी मैं उसके सतर्क लेकिन दृढ़ कदमों को देख सकता था जो उसे शिकार की ओर ले जा रहे थे। उसकी चाल में लंगड़ापन का कोई निशान नहीं था। वह निश्चित रूप से लंगड़ा जानवर नहीं था और इसलिए आदमखोर भी नहीं था।

मैंने दबी आवाज़ में अपनी घृणा व्यक्त की। बाघ मानो मेरी बात सुनकर रुक गया। फिर वह आगे बढ़ता रहा और मरी हुई बछिया के पास पहुँचकर उसे नीचे से देखने लगा।

निःसंदेह वह मेरा पुराना दोस्त था, दहाड़ता हुआ बाघ। एक पल के लिए मेरा मन हुआ कि उसे गोली मार दूं, क्योंकि यह जानवर मेरे लिए परेशानी बनता जा रहा था। उसने मेरे दो चारे खा लिए थे और शायद और भी बहुत सारे खा लेता। और चारे तो महंगे होते हैं।

फिर मैं सोचने लगा। क्या सच में वही आदमखोर था? मेरे पास इस बात का

क्या सबूत था कि आदमखोर लंगड़ा था, अफवाहों के अलावा? शायद कहानी ही पूरी तरह गलत थी। हो सकता है यही वो आदमखोर हो, जो वहाँ खड़ा गोली लगने का इंतज़ार कर रहा हो।

लेकिन मुझे वे दो मौके याद आ गए जब उसने मुझे देखा और पाया कि मैं एक आदमी हूँ। वह किसी आदमखोर का व्यवहार नहीं था: वह तो डरे हुए खरगोश की तरह व्यवहार कर रहा था। फिर भी, इससे बचना नामुमकिन था। यह जानवर एक मुसीबत बनता जा रहा था। इसलिए मैंने अपनी राइफल उठाई, जल्दी से उसके पेट के नीचे ज़मीन पर निशाना साधा और गोली चला दी।

गोली उसके पैरों के बीच ज़मीन में जा लगी और लगभग अंधेरा होने के बावजूद मैं धूल का गुबार देख सका जो गोली के ज़मीन में धंसने से उठा। जहाँ तक बाघ की बात है, उसने डरी हुई बिल्ली की तरह अपनी पीठ झुकाई, फिर ज़ोरदार छलांग लगाने के लिए लंबा हो गया और आँखों से ओझल हो गया।

मैं झुंझलाहट में मचान से नीचे उतरा, अपनी राइफल कंधे पर रखी और रास्ते में सांप पर पैर रखने की स्थिति में रोशनी के लिए जेब में रखी टॉर्च का इस्तेमाल करते हुए वापस गांव की ओर चल पड़ा।

अगले दिन मैंने एक और बछिया खरीदी और उसे उसी जगह पर बांध दिया। यकीन मानिए, इस बार दहाड़ता हुआ बाघ उसे नहीं ले जाएगा। और मैंने ठान लिया कि अगर उसने ऐसा किया, तो मैं बिना किसी संकोच के उसे गोली मार दूंगा।

इस बार उसने शिकार नहीं किया। हाँ, वह वहाँ ज़रूर आया था। पूरे गाँव और मैंने उसकी आवाज़ सुनी। वह रात दस बजे से आधी रात तक दहाड़ता रहा। उसने बछिया को देखा था और उसे बहुत भूख लगी थी। लेकिन, एक बाघ जो मनुष्य में बदल गया था, उसके पीछे एक पैंथर-मनुष्य या कहें 'तेंदुए-मनुष्य', और फिर एक अजीब सी चीज़ जिसने ज़ोरदार धमाका किया और उसके पैरों के बीच ज़मीन पर ज़ोर से गिरी, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, वह उस लुभावने शिकार को मारने का साहस नहीं जुटा पाया। इसके बजाय उसने अपनी कुंठा और नाराज़गी को दहाड़कर ज़ाहिर किया।

अगली सुबह किसी शिकार की खबर नहीं मिली। लेकिन छोटे अप्पू के पास कुछ खबर थी। उसने दूर के चारे के पास लंगड़े बाघ के निशान देखे थे। वह भैंस के कुछ ही गज की दूरी से गुजरा था, यहाँ तक कि उसे देखने के लिए रुका भी था। फिर

भी उसने भैंस को नहीं मारा था। अप्पू ने कहा कि उसे लगता है कि आदमखोर बाघ भैंस का मांस नहीं खाता है और इसलिए चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें, वह हमारे किसी भी चारे को नहीं खाएगा। उसने सुझाव दिया कि मैं भैंसों की जगह बैल रखूँ और फिर से कोशिश करूँ।

उसने कहा कि उसके मन में एक और योजना है। मैंने पूछा कि वह क्या है। अप्पू ने बड़ी सी मुस्कान के साथ सुझाव दिया कि हम दोनों हर रात आदमखोर की तलाश में निकलें जब तक कि वह मिल न जाए।

मैंने जवाब दिया, "अच्छा विचार है। लेकिन यह भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा ही बेकार विचार है।"

अप्पू को मेरी बात समझने में थोड़ा समय लगा। भूसे के ढेर से तो वह परिचित था, पर सुई से नहीं। आखिर उसे सुई चाहिए ही क्यों? उसने तो कपड़े भी नहीं पहने थे! मैंने सुई की जगह पिन का सुझाव दिया। उसे वह भी समझ नहीं आया। पिन से अप्पू का क्या लेना-देना? तभी मुझे एक विचार आया। मैंने एक सूखी टहनी उठाई और उस पर उगने वाला सबसे बड़ा कांटा तोड़ दिया। मैंने भूसे के ढेर में कांटा छिपाने का नाटक किया और अप्पू से पूछा कि उसे ढूंढने में कितना समय लगेगा। उसने कंधे उचका दिए।

मैंने कहा कि यह मीलों तक फैले जंगल में लंगड़े बाघ को ढूंढने जैसा है। अप्पू का चेहरा खिल उठा जब उसे आखिरकार मेरी बात समझ आई। वह खूब हंसा।

इन सब बातों की वजह से नाश्ता देर से हुआ, लेकिन मेरी बातचीत खत्म होते ही हम निकल पड़े। अप्पू मुझे झील से दक्षिण-पश्चिम दिशा में ले गया, एक छोटी पहाड़ी की चोटी पार करके दूसरी तरफ एक घाटी में पहुँचा। इस घाटी में एक सूखी नदी बह रही थी और मेरा एक चारा उस जगह बंधा था जहाँ एक आग बुझाने वाली रेखा इस नदी को पार कर रही थी।

जिस रास्ते से हम झील से आए थे, वह भी आग से बचाव के लिए बनाई गई दीवार के पास नदी को पार करता था और आगे लगभग तीन-चार मील दूर एक चेन्चू बस्ती की ओर जाता था। चेन्चू लोग गांवों में नहीं रहते। रास्ते में लकड़ी और घास से बनी एक छोटी सी गोलाकार झोपड़ी दिखाई देती है, जो आसपास के जंगल में मुश्किल से नज़र आती है। एक ऐसी झोपड़ी में दस लोगों का पूरा परिवार रह सकता है। हो सकता है कि पास में ही कोई और झोपड़ी हो, या अगली झोपड़ी तक पहुँचने

के लिए आपको कई मील चलना पड़े।

हमने जानबूझकर उस जंक्शन को चारा बांधने के लिए सबसे अच्छी जगह चुना था, ताकि ऊपर या नीचे से आने वाला बाघ, या आग की रेखा या पगडंडी के किसी भी तरफ से आने वाला बाघ—यानी छह दिशाओं में से किसी भी दिशा से आने वाला बाघ—उसे तुरंत देख ले। और अब, पगडंडी की धूल में, विपरीत दिशाओं से आते हुए, एक बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

मैंने उन्हें ध्यान से देखा। वहाँ तीन पैरों के पदचिह्न थे, जबकि बाघ जब टहलते हैं तो चार अलग-अलग पदचिह्न बनाते हैं, या जब शिकार करते समय वह एक सूखे पत्ते या टहनी पर पैर रखने से बचने के लिए अपने पिछले पैर को अगले पैर के खाली स्थान पर रखता है तो दो निशान छोड़ता है। इसमें कोई संदेह नहीं था: यह जानवर अपने केवल तीन पैरों का उपयोग कर रहा था, और चौथे पैर में कुछ खराबी थी। इसलिए वह सामान्य रूप से घूमने वाले बाघ द्वारा बनाए जाने वाले चार पदचिह्न नहीं छोड़ पा रहा था।

अंततः मैं आदमखोर के पदचिह्नों को देख रहा था। उनके बीच असमान दूरी से संकेत मिलता था कि वह बुरी तरह लंगड़ा रहा था, लगभग कूद-कूद कर चल रहा था, जबकि धूल में कहीं-कहीं घिसटने के निशान यह दर्शाते थे कि उसने अपने दाहिने अगले पैर पर भार डालने की कोशिश की थी, लेकिन ऐसा नहीं कर सका। यह स्पष्ट था कि चोट गंभीर थी और घाव अभी तक भरा नहीं था। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह बहुत पुराना घाव नहीं हो सकता।

लगभग 200 गज पीछे की ओर चलते हुए हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ बाघ जंगल से निकलकर पगडंडी पार करने या उस पर चलने के इरादे से आया था। यहाँ उसने हमारा चारा देख लिया था और जानबूझकर उसके पास चला गया था। हम देख सकते थे कि वह दस फीट की दूरी से बछिया का निरीक्षण करने के लिए रुका और फिर अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

यह व्यवहार मुझे हैरान कर गया। उस जानवर की दयनीय हालत को देखते हुए, यह स्पष्ट था कि वह बहुत भूखा होगा, या शायद ज्यादातर समय भुखमरी की हालत में ही होगा। इतनी दुर्बल अवस्था में उसने उस भोजन को क्यों ठुकरा दिया जो सिर्फ उसी का था? यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि वह उतना भूखा नहीं था, क्योंकि भूख एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसका विरोध न तो भूखा इंसान कर सकता है और

न ही भूखा बाघ।

अपनी बछिया को छोड़कर हम बाघ के पदचिह्नों का पीछा करते हुए आगे बढ़े। वह पगडंडी पर केवल पाँच-छह गज ही चला था कि जंगल में घुस गया, जहाँ से वह नदी पार करके दूसरी ओर के जंगल में चला गया। यहाँ सूखे पत्तों और कठोर ज़मीन के बीच हम उसका पदचिह्न खो बैठे। ऐसा प्रतीत हुआ मानो बाघ ने हमारी भैंस को देखने और उसकी जाँच करने से पहले जहाँ जा रहा था, वहीं वापस जाने का फैसला कर लिया हो।

अप्पू और मैंने उसके पीछे-पीछे चलने का फैसला किया, या यूँ कहें कि उसी दिशा में चलने का, जिस ओर वह जा रहा था, क्योंकि जैसा कि मैंने अभी कहा, सूखी ज़मीन पर आगे कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। थोड़ी देर में हम एक जंगली रास्ते पर पहुँच गए। ज़मीन अभी भी इतनी सख्त थी कि हमें कोई पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे, लेकिन हम सांभर और चित्तीदार हिरणों के नुकीले खुरों से सूखी ज़मीन पर बने खरोंच और निशान देख सकते थे, जबकि थोड़ी दूर आगे एक भालू हाल ही में रास्ते के किनारे पड़े पत्थरों को खोदकर कीड़े-मकोड़े और जड़ें खोज रहा था।

अप्पू ने सुझाव दिया कि शायद लंगड़ा बाघ इसी रास्ते की ओर जा रहा था और संभवतः इसी रास्ते पर चल पड़ा होगा, हालाँकि हमें उसके कोई निशान नहीं दिखे, और मैं उससे सहमत था। ऐसा लग रहा था कि यह रास्ता जंगली जानवरों द्वारा खूब इस्तेमाल किया जाता था, क्योंकि थोड़ी देर बाद ही हमें विपरीत दिशा से आते हुए जंगली सूअरों के झुंड के निशान मिले। बाघ का अभी भी कोई निशान नहीं था।

लेकिन थोड़ी दूर आगे जाकर हमें पता चला कि हमारा अनुमान सही था। एक नाला रास्ते को लगभग समकोण पर काट रहा था। जिस रास्ते पर हम चल रहे थे, वह तेज़ी से ढलान से नीचे इस नाले में जाता था और फिर दूसरी तरफ ऊपर चढ़ता था। नाले की ढीली मिट्टी पर लंगड़े बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से अंकित थे, जो हमसे दूर जा रहे थे। ये पदचिह्न पिछली रात बने थे और हमारा यह अनुमान सही था कि जिस रास्ते पर हम चल रहे थे, वही बाघ का मार्ग था। हमें जिज्ञासा हुई और हमने पता लगाने का फैसला किया कि बाघ कहाँ जाना चाहता था।

हम उस पगडंडी पर एक मील से अधिक दूरी तय कर चुके थे जब हम एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे और दूसरी ओर नीचे देखा। हमारे नीचे, एक छोटे से खुले मैदान से होते हुए, हमें एक स्पष्ट रास्ता दिखाई दिया और हम समझ गए कि यही वह

कच्चा रास्ता था जो चेंचु बस्ती की ओर जाता था जिसके बारे में मैंने आपको बताया था। जिस पगडंडी का हम अनुसरण कर रहे थे वह पहाड़ी के चारों ओर जाने के बजाय उसके पार जाने का एक शॉर्टकट था, और लंगड़ा बाघ बस्ती की ओर बढ़ रहा था।

हम आगे बढ़ते रहे और अगले आधे मील के भीतर ही हमने पाया कि हमारा शिकार का रास्ता चेंचु लोगों के रास्ते से होकर गुजर रहा था। यहाँ बाघ शिकार के रास्ते से हटकर रास्ते पर चलने लगा था, क्योंकि उसके पदचिह्न हमारे सामने धूल में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। हम लगभग एक मील और उसके पीछे चले, तभी हमें विपरीत दिशा से आती हुई आवाज़ें सुनाई दीं। एक मोड़ पर लगभग दस चेंचु लोग तेज़ी से चलते हुए और आपस में ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए दिखाई दिए। सभी के पास धनुष और बाण थे और उनमें से आधे लोगों के पास भाले और कुल्हाड़ी भी थे।

उन्होंने हमें देख लिया और उत्तेजित होकर बातें करते हुए आगे बढ़े, लेकिन इससे पहले कि वे हम तक पहुँच पाते, हमने उनकी बातें सुन लीं और उनकी घबराहट का कारण जान लिया। आदमखोर सांप पिछली शाम को गाँव से एक चेंचु को उठाकर ले गया था।

जब वे हमारे पास पहुँचे तो उन्होंने हमें पूरी कहानी सुनाई। उन्हें आदमखोर बाघ की मौजूदगी के बारे में काफी समय से पता था और ज़रूरत पड़ने पर वे समूह में, जैसा कि अब था, हथियारों से लैस होकर शिकार पर जाते थे। लेकिन उनमें से एक, कल्ला, हमेशा से शिकारी था और आदमखोर बाघों समेत सभी बाघों को तुच्छ समझता था। उसने ऐलान किया था कि उसे किसी बाघ से डर नहीं लगता, जबकि दूसरी तरफ हर बाघ उससे डरता था। कल्ला उस सुबह अपनी कुल्हाड़ी, धनुष-बाण और भाला लेकर शिकार पर निकल गया था। वह दोपहर के भोजन के लिए लौटा और अपनी पत्नी को बताया कि वह कुछ भी नहीं मार पाया, लेकिन उसे यह खबर देकर तसल्ली दी कि उसे गाँव से कुछ ही दूरी पर एक पेड़ के छेद में मधुमक्खी का छत्ता मिला है।

कल्ला ने अपने धनुष, बाण और भाले को अनावश्यक समझकर पीछे छोड़ दिया था और अपने साथ कुल्हाड़ी, माचिस की डिब्बी और कुछ भूसा ले गया था, जिससे वह छत्ते को खोदकर मधुमक्खियों को भगा सके, और शहद इकट्ठा करने के लिए एक खाली डिब्बा भी ले गया था। थोड़ी देर में, कुछ चेन्चू लोगों ने उसकी कुल्हाड़ी की आवाज़ सुनी और सोचने लगे कि वे इतने मूर्ख कैसे हो गए कि कल्ला से पहले छत्ते

का पता नहीं लगा पाए।

उसी क्षण वे एक चीख सुनकर चौंक गए: 'बाघ! बाघ!' कल्ला चिल्लाई, और 'मदद! मदद! मदद!' फिर सन्नाटा छा गया।

कल्ला लोकप्रिय नहीं था और उसकी पत्नी समेत कोई भी उसकी मदद के लिए तुरंत आगे नहीं आया। सब लोग उसके लौटने का इंतज़ार करते रहे, पर कल्ला नहीं आया। कुछ देर बाद, सभी पुरुष इकट्ठा हुए, जितना हो सका हथियारबंद हुए और उस खोखले पेड़ की ओर गए जहाँ कल्ला को मधुमक्खी का छत्ता मिला था। पेड़, मधुमक्खियाँ और कुल्हाड़ी सब वहीं थे, पर कल्ला का कोई निशान नहीं था। इसके बजाय, उन्हें पेड़ के तने में बने गहरे घावों से ताज़ा गोंद रिसता हुआ मिला। ये घाव तब बने थे जब बाघ अपने पिछले पंजे पर खड़ा होकर कल्ला को अपने एकमात्र अगले पंजे (बाएँ पंजे) से पकड़ने की कोशिश कर रहा था। ज़ाहिर है, यह कोशिश बड़ी मुश्किल से हुई थी, क्योंकि लाचार बाघ को अपने शिकार तक पहुँचने के लिए एक पैर से पेड़ के तने का सहारा लेना पड़ा होगा। इसी वजह से कल्ला को मदद के लिए चिल्लाने का मौका मिल गया था। यदि बाघ घायल न हुआ होता, तो चेनचु अपने हमलावर को न तो सुन पाता और न ही देख पाता, जबकि यदि पेड़ कुछ फीट ऊंचा होता, तो कल्ला आदमखोर की पहुंच से बाहर होता, जो उसका पीछा नहीं कर पाता।

आदमखोर कल्ला को झाड़ियों से घसीटते हुए जंगल में ले गया, जहाँ उन्हें खून और उसकी धोती के टुकड़े मिले। वे थोड़ी दूर तक उसके पीछे गए और फिर रुक गए, क्योंकि कल्ला को कोई खास पसंद नहीं करता था। वे जानते थे कि वह मर चुका है। पीछा करने का क्या फायदा? तभी उन्हें याद आया कि किसी ने उन्हें बताया था कि दो दोराई (नर शिकारी) पेद्दाचेरुवु गाँव में इस आदमखोर को मारने आए हैं, और उन्होंने उन्हें बताने के लिए वहाँ जाने का फैसला किया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी और अंधेरा छा चुका था।

अगली सुबह कुछ चेन्चू लोगों ने आराम से नाश्ता किया और फिर ब्याना और मुझे खबर देने के लिए निकल पड़े। इससे यह बात समझ में आई कि अप्पू और मैं रास्ते में उनसे कैसे मिले। मेरे गाइड और मुझे अब पता चल गया था कि लंगड़ा बाघ हमारी भैंस को देखकर किस दिशा में जा रहा था, और हमें यह भी पता चल गया था कि उसने बछिया को मारकर क्यों नहीं खाया।

ज़ाहिर है, उसने पिछली रात चेनचू का अच्छा-खासा शिकार किया था और फिर

पानी पीने के लिए कहीं चला गया था। संभवतः वह पानी पीने के लिए झील पर गया था। वहाँ उसे अपने शिकार की याद आई और उसने वापस आकर बचे हुए हिस्से को खत्म करने का फैसला किया। लौटते समय उसने हमारा चारा देखा, लेकिन उसे इतना भूख नहीं थी कि वह उसे मारकर खा ले, और संभवतः उसे सख्त भैंस के मांस के बजाय चेनचू का मांस ज़्यादा पसंद आया होगा, हालाँकि अब तक चेनचू का बहुत कम हिस्सा ही बचा होगा।

हमने इन घटनाओं में अपनी भूमिका चेन्चू लोगों को बताई, जो अब उत्साहित हो गए और बाघ का पता लगाने में मदद करने की पेशकश की। हम जानते थे कि अगर हम सफल हुए तो हमें कल्ला के अवशेष मिल जाएँगे। लेकिन उनके लिए यह बात ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं थी। मुख्य रूप से, वे चाहते थे कि मैं बाघ को गोली मार दूँ, क्योंकि जब तक वह वहाँ रहता, उनकी जान खतरे में थी। ग्यारह चेन्चू लोगों के साथ, हम लंगड़े बाघ के पीछे कुछ और कदम चले, फिर हमने देखा कि वह फिर से जंगल में मुड़ गया था। इस बार वह उन ग्यारह जोड़ी खोजी निगाहों से नहीं बच सका और कुछ देर बाद हम एक छोटे, सूखे नाले पर पहुँचे, जहाँ हमारा शिकार मुड़ा था। हम उसके पैरों के निशान देख सकते थे, जबकि एक चेन्चू ने फुसफुसाते हुए कहा कि उनकी बस्ती मुश्किल से एक चौथाई मील दूर है। थोड़ी देर में हमें शव की गंध आने लगी, और थोड़ी देर बाद हमें हजारों मक्खियों की भिनभिनाहट सुनाई दी। आखिरकार हम उस अभागे कल्ला के अवशेषों तक पहुँच गए, वह आदमी जो थोड़ा ज्यादा ही आत्मविश्वासी था। उसका भी वही हश्र हुआ जो उससे पहले कई शिकारियों का हुआ था, और वही हश्र जो दुनिया भर में कई और शिकारियों का होने वाला है। वही हश्र जो अतिआत्मविश्वासी और लापरवाह लोगों का होता है।

चेनचू का बहुत कम हिस्सा ही बचा था। उसका सिर बच गया था। उसके हाथ और पैर भी, जो आमतौर पर नरभक्षी द्वारा छोड़े गए मानव शरीर के हिस्से होते हैं। यहाँ तक कि उसकी पिंडली की हड्डियाँ भी चबाकर चकनाचूर हो गई थीं, और उसकी कुछ पसलियाँ भी, जबकि उसकी रीढ़ की हड्डी के कुछ हिस्से लगभग बिना मांस के पड़े थे।

वह आदमखोर बहुत भूखा रहा होगा। सच में, इतनी भूख से मर रहा होगा तभी तो उसने इतना बड़ा भोजन बनाया। मुझे फिर आश्चर्य हुआ कि उसने मेरे भैंस के चारे को क्यों छोड़ दिया, जिससे उसे कहीं अधिक बड़ा भोजन मिल सकता था।

थोड़ी दूरी पर चेन्चू जनजाति के एक व्यक्ति को जांघ की हड्डी मिली। दूसरी हड्डी का कोई निशान नहीं मिला। संभवतः उसे लकड़बग्घा या सियार उठाकर ले गया होगा।

हमने दबी आवाज़ में स्थिति पर चर्चा की। मेरे साथियों की राय अलग-अलग थी। लगभग आधे लोगों का कहना था कि मुझे उस रात उनके द्वारा बनाए जाने वाले मचान में बाघ का इंतज़ार करना चाहिए, जबकि बाकी आधे लोगों को यकीन था कि यह समय की बर्बादी होगी, क्योंकि आदमखोर बाघ कभी वापस नहीं आएगा। उसके खाने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। हाँ, बिल्कुल: लकड़बग्घा ज़रूर आएगा, सियार भी। बाघ? कभी नहीं। बाघ तो मुर्दाखोर नहीं होते!

फिर मुझे याद आया कि लंगड़ा बाघ बहुत भूखा लग रहा था, और मुझे अपने रास्ते पर चलने में कोई संदेह नहीं था। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उस रात कल्ला के अवशेषों पर बैठूंगा। बाघ के लौटने की थोड़ी सी संभावना थी, हालांकि बहुत कम। मैंने अपने साथियों को यह बताया और अब तो संदेह करने वाले भी मेरी बात समझ गए। उत्साह से सब लोग काम पर लग गए, और मचान के उस विशेषज्ञ, अप्पू के मार्गदर्शन में, एक बार फिर मेरी आँखों के सामने एक अद्भुत संरचना आकार लेने लगी।

अप्पू ने लगभग पैंतीस गज दूर उगने वाले एक घने पेड़ को चुना था, और चेन्चू लोगों ने उस पर जो मचान बनाया था, जो सामान्य से थोड़ा ऊँचा था, लगभग बीस फीट ज़मीन से ऊपर, ताकि अवशेषों का निर्बाध दृश्य मिल सके, वहाँ से मैं आदमखोर के संदिग्ध वापसी की प्रतीक्षा करता था। हम अकेली जांघ की हड्डी को वहाँ ले आए जहाँ अन्य हड्डियाँ पड़ी थीं, ताकि उन्हें यथासंभव पास रखा जा सके और एक अधिक आकर्षक दृश्य प्रस्तुत किया जा सके जो कम से कम आदमखोर को आगे आकर उन्हें सूंघने के लिए प्रेरित कर सके।

अप्पू को बाकी चेनचुओं के साथ काम पर छोड़कर, मैं जल्दी से पेद्दाचेरुवु वापस आ गया ताकि कुछ खा सकूँ और रात के लिए ज़रूरी सामान ले सकूँ। ब्याना यह खबर सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने मुझे शुभकामनाएँ दीं।

जब मैं लौटा तो चार बज चुके थे और मैंने देखा कि अप्पू और दो अन्य लोग मचान पर बैठे थे। उन्होंने बचे हुए थोड़े से अवशेषों को गिद्धों की तीखी नज़र से छिपाने के लिए पत्तों वाली शाखाओं से ढक दिया था, और जब वे चेंचु बस्ती के लिए रवाना हुए, जहाँ अप्पू ने दूसरों के साथ रात बिताने का फैसला किया था, तब उन्होंने ये

शाखाएँ हटा दीं।

मेरे साथी के चले जाने के बाद, मैं उस लंगड़े बाघ के बारे में सोचने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह सचमुच किसी दूसरे बाघ से लड़ाई में घायल हुआ था, जैसा कि बताया जा रहा था, या किसी शिकारी की गोली से, जैसा कि अक्सर होता है। निस्संदेह वह जानवर बहुत बुरी तरह से अपंग था, इतना कि उसमें उस बछिया पर हमला करने का आत्मविश्वास ही नहीं रहा होगा जिसे मैंने उसके लिए बांध रखा था। मैंने निष्कर्ष निकाला कि यही असली कारण था कि उसने उसे अकेला छोड़ दिया था। यह बाघ वास्तव में बहुत कमजोर अवस्था में होगा, और उसे अपने तीन स्वस्थ पैरों पर चलकर कुछ छोटे जानवरों और अन्य जीवों का शिकार करना होगा, जब तक कि उसे कोई सौभाग्यशाली मौका न मिल जाए और वह किसी दुर्भाग्यशाली इंसान को ढूंढकर मार न डाले।

इस विचार से नई उम्मीद जगी। इतना भूखा बाघ पिछली रात भरपेट भोजन करने के बाद भी बचे हुए टुकड़ों को खाने के लिए जरूर ललचाएगा।

शाम अपेक्षाकृत खामोशी में ढल रही थी। जंगल के इस हिस्से में पक्षी और बंदर जैसे छोटे जानवर कम ही थे, या फिर किसी अज्ञात कारण से वे अजीब तरह से शांत थे। यह दुर्भाग्यपूर्ण था, क्योंकि जंगल की आवाज़ें न केवल मेरे लिए आनंद का एक अंतहीन स्रोत हैं, बल्कि इन्हीं छोटे जीवों और हिरण परिवार के सदस्यों द्वारा दी जाने वाली चेतावनी भरी आवाज़ों पर ही मैं बाघ की गतिविधियों का पता लगाने के लिए काफी हद तक निर्भर रहता हूँ। एक-दो बार दूर से एक तीतर की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन जंगली मुर्गे और मोर का कोई आभास नहीं हुआ। मैं इस बात को लेकर सोचता रहा, तभी अचानक मुझे जवाब मिल गया। चेंचु बस्ती! उन छोटे निशानेबाजों ने अपने धनुष-बाण से काफी बड़े क्षेत्र में मौजूद सभी खाने योग्य पक्षियों का सफाया कर दिया था।

अंधेरा छाने लगा और रात के पक्षी, जिन्हें चेनचू समुदाय दिन के अपने दुर्भाग्यशाली चचेरे भाइयों की तुलना में कम स्वादिष्ट मानता था और जिनका शिकार करना कहीं अधिक कठिन था, अपनी आवाज़ें निकालने लगे। शाम की नीरस खामोशी को तोड़ती इन आवाज़ों का मैंने स्वागत किया। एक बगुला किसी सूखी नदी के किनारे से निराशा में विलाप कर रहा था, और घाटी में कुछ दूर से उसके साथी ने उसकी आवाज़ का जवाब दिया। दूर कहीं, दो सियार अपनी डरावनी आवाज़ में पुकार रहे थे।

आंध्र प्रदेश के जंगलों में एक छोटी कद-काठी वाली झींगुर बड़ी संख्या में पाई जाती है, जिसे मैंने मद्रास और मैसूर के जंगलों में कभी नहीं देखा और न ही सुना है। यह छोटा सा कीड़ा ज़ोर से चहचहाता है, और जब सैकड़ों झींगुर एक साथ चहचहाते हैं तो शोर इतना तेज़ होता है कि बाकी सभी आवाज़ें दब जाती हैं। कभी-कभी ये कंपन एक साथ होते हैं और उनसे उत्पन्न ध्वनि इतनी तीव्र होती है मानो कोई ट्रैक्टर पास में ही चल रहा हो।

मैं सूर्यास्त के तुरंत बाद शुरू हुई इस आवाज़ को सुन रहा था। जैसे-जैसे और कीड़े-मकोड़े इसमें शामिल होते गए, आवाज़ की तीव्रता और तीव्रता बढ़ती जा रही थी। मुझे और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। अचानक आवाज़ एकदम धीमी हो गई। दूर से आ रही झींगुरों की आवाज़ बंद हो गई, और कुछ ही सेकंड में मेरे पास मौजूद झींगुरों ने भी अपने साथियों की खामोशी को भांपते हुए आवाज़ बंद कर दी। ऐसा लगा जैसे ट्रैक्टर अचानक रुक गया हो।

उसके बाद छाई खामोशी एक तरह से मन को सुकून देने वाली थी, लेकिन दूसरी तरफ यह अजीब तरह से अशुभ और डरावनी भी थी। आखिर किस बात ने झींगुरों को अपना गाना बंद करने पर मजबूर कर दिया था?

दूर से बगुले आपस में विलाप कर रहे थे, तभी मुझे पहली बार आवाज़ सुनाई दी: आदमखोर की पुकार! वह घाटी में दहाड़ा। एक बार, दो बार और फिर बार-बार।

अब मुझे समझ आया कि झींगुरों ने अचानक अपना गायन क्यों बंद कर दिया था। उन्होंने बाघ की पहली दहाड़ सुन ली थी, जो उनके शोर के कारण मुझे सुनाई नहीं दे रही थी। उनके चुप होने के बाद ही मैं उसे सुन पाया। लेकिन आदमखोर बाघ का झींगुरों से क्या लेना-देना था? वे उससे क्यों डरते थे? मैं इस सवाल के जवाब को लेकर सोचने लगा। यह बात मुझे इतनी उत्सुक कर रही थी कि मैंने मद्रास में रहने वाले अपने एक प्रकृतिवादी मित्र से इस बारे में पूछने का फैसला किया। जैसा कि मुझे बाद में पता चला, इसका जवाब बहुत सरल है, और इस कहानी को समाप्त करने से पहले मैं आपको इसके बारे में बताऊंगा।

बाघ अभी भी दहाड़ रहा था। जैसे-जैसे वह करीब आता गया, उसकी दहाड़ लगातार बढ़ती गई। ज़ाहिर है, उसका इरादा चेंचु जनजाति के कल्ला के अवशेषों के पास लौटने का था, लेकिन वह इस तरह क्यों दहाड़ रहा था? यह जितना अजीब था, उतना ही असामान्य भी। जब कोई बाघ अपने शिकार के पास लौटता है, तो वह पूरी

तरह खामोशी से लौटता है, हर कदम पर अपनी हर हरकत को छुपाने के लिए अत्यंत सावधानी बरतता है। वह दहाड़कर अपनी उपस्थिति का ऐलान तो बिल्कुल नहीं करता।

मुझे उत्सुकता हो रही थी और मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह अगले तीस मिनट में क्या करेगा।

वह मेरे मचान से लगभग पचास गज की दूरी तक आ गया, लेकिन वहीं झाड़ियों में छिपा रहा और लगातार दहाड़ता रहा। एक पल के लिए भी वह बाहर नहीं आया और न ही उसने खुद को दिखाया, हालांकि कुछ समय बाद वह मेरे मचान और कल्ला के अवशेषों के चारों ओर एक बड़े घेरे में घूमने लगा, और उसकी दहाड़ और भी तेज और भयंकर होती चली गई।

मुझे यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि आदमखोर को पता था कि मैं उसके शिकार के ऊपर बने पेड़ पर मौजूद हूँ। लेकिन उसे कैसे पता चला होगा? वह मेरी मचान को तो देख ही नहीं सकता था, क्योंकि उसने काफ़ी देर पहले और काफ़ी दूर से दहाड़ना शुरू कर दिया था। इसलिए यह साफ़ था कि उसे मेरे और मचान के बारे में शुरू से ही पता था, और वह मुझे डराकर भगाना चाहता था।

उसे पता चलने का केवल एक ही तरीका था। आदमखोर बाघ हर समय छुपकर बैठा था और हमें मचान बनाते हुए देख रहा था। वह जानता था कि कोई कट्टर मानव शत्रु उसके लौटने का इंतज़ार कर रहा है, और उसका लौटना उसके लिए बड़ा खतरा था। सभी आदमखोर बाघों की तरह, इस बाघ को भी इंसानों से स्वाभाविक भय था, लेकिन इस बार, अपने पिछले भरपेट भोजन के बावजूद, दोबारा खाने की तीव्र इच्छा ने उसे इतना साहसी बना दिया था कि वह सोच रहा था कि ज़ोर-ज़ोर से दहाड़कर वह अपने दुश्मन को भगा सकता है। ज़ाहिर है, वह अप्पू और अन्य चेंचुओं का पीछा करते हुए उनके शिविर तक गया था और अब कुछ हड्डियाँ कुतरने की उम्मीद में वापस आया था।

आदमखोर बाघ लगातार दहाड़ता हुआ चक्कर लगा रहा था, और मैं धैर्यपूर्वक उसकी प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहा था। अगले आधे घंटे में इस रहस्यमय स्थिति का केवल एक ही हल निकल सकता था। या तो बाघ अधीर होकर कोई जोखिम उठाएगा, या मैं अधीर होकर उसकी तलाश में नीचे जाऊँगा। तीसरा विकल्प यह था कि बाघ चला जाएगा और मैं उसे खो दूँगा। हर हाल में मुझे ऐसा नहीं होने देना था।

समय बीतता गया। आधा घंटा। फिर दस मिनट और। लेकिन आदमखोर बाघ दिखाई नहीं दिया। पहले की तरह बड़े घेरे में घूमने के बजाय, बाघ अब स्पष्ट रूप से ज़मीन पर लेटा हुआ था, या शायद अपने पिछले पैरों पर बैठा था, एक घनी झाड़ी में जिसे मैं अंधेरे में एक बड़े, काले खालीपन के रूप में मुश्किल से देख पा रहा था, जो साफ आसमान से चमकते तारों की रोशनी से थोड़ा कम हो रहा था। और इसी झाड़ी से वह लगातार ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ रहा था, उस व्यक्ति या व्यक्तियों को भगाने के लिए जिन्हें वह अच्छी तरह जानता था कि वे उस पेड़ में छिपे हुए थे जहाँ उसने दोपहर में ऐसी हलचल देखी थी।

जब कुछ करना होता है, तो मैं बहुत धैर्यवान नहीं होता, और हर पल कार्रवाई करने की इच्छा और भी प्रबल होती जा रही थी। इसलिए अंततः मैं यथासंभव चुपचाप पेड़ से नीचे उतरने लगा। मैं जितना चुपके से चल रहा था, मुझे पता था कि आदमखोर मुझे सुन लेगा। काश वह मुझे पेड़ की तलहटी तक पहुँचने और कुछ कदम चलकर उस जगह तक पहुँचने का समय दे देता जहाँ कल्ला की हड्डियाँ पड़ी थीं! खतरा इस बात में था कि कहीं वह मेरे आधे रास्ते में ही मुझ पर हमला न कर दे। तब मैं असहाय हो जाऊँगा, क्योंकि मैं अपनी राइफल का इस्तेमाल नहीं कर पाऊँगा। मैं डर के मारे अपने चेहरे पर पसीना बहता हुआ महसूस कर रहा था और मेरे हाथ पसीने से तरबतर हो रहे थे। लेकिन मैंने अपने पैरों को यथासंभव चुपचाप और सावधानी से चलने के लिए नियंत्रित किया। अब गिरकर खुद को चोट पहुँचाना मतलब पूरी तरह से आदमखोर की दया पर ज़मीन पर पड़े रहना होगा।

मैं लगभग आधे रास्ते तक पहुँच चुका था कि गर्जना बंद हो गई। उसने मेरी आवाज़ सुन ली थी और समझ गया था कि उसका शिकार हिल रहा है। क्या वह जाँच करने के लिए पास आएगा? ज़ाहिर है, वह आएगा। हो सकता है कि वह तब भी मुझसे कुछ ही फ़ीट दूर हो।

यह सोचकर मैं कांप उठा और तेज़ी से नीचे उतरने लगा, लगभग एक-दो बार फिसलते-फिसलते बचा। मुझे हर कदम संजोकर रखना पड़ा, हालांकि तारों की रोशनी से ज़मीन दिखाई दे रही थी। जैसे ही मेरा पैर ज़मीन पर पड़ा, राहत और कृतज्ञता की एक गहरी भावना मुझमें उमड़ पड़ी। मैंने तुरंत अपनी भरी हुई राइफल, जिसे मुझे नीचे उतरते समय अपने दाहिने कंधे पर टांगना पड़ा था, तैयार कर ली और पेड़ की ओर पीठ करके खड़ा हो गया, ताकि किसी भी क्षण होने वाले हमले का सामना कर सकूं।

सन्नाटा गहरा था। एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था। झींगुर भी चुप थे। लगता है आदमखोर सांप अब मेरी तरफ रेंग रहा है। ज़रूर वह कोई आवाज़ करेगा, हल्की सी सरसराहट ही सही, जिससे मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ है और मुझे मौका मिल जाएगा। लेकिन उसने कोई आवाज़ नहीं की। कोई सरसराहट नहीं थी। बस एक अजीब सी खामोशी थी।

फिर वही हुआ! बाघ पर भी उतना ही दबाव था जितना मुझ पर, और वह खुद को और रोक नहीं पाया। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ, उसने हमला कर दिया।

लेकिन वह मेरी उम्मीद से बिल्कुल अलग दिशा से आया। उसने अपना हमला पीछे से किया, न कि उस झाड़ी से जिसमें वह छिपा हुआ था।

मैंने गर्जना सुनी और तेज़ी से मुड़ा। पेड़ का तना मेरे रास्ते में था और टॉर्च चालू होने के बावजूद मैं उसे आते हुए नहीं देख पा रहा था। सामने वाले तने से प्रकाश की किरणें मेरी आँखों में वापस पड़ रही थीं और उसके आगे एक गहरा अंधकार छाया हुआ था।

तेज रोशनी के बावजूद बाघ अब खुद को रोक नहीं पाया। दहाड़ते हुए वह अचानक मेरे सामने आ गया, अंधेरे से पेड़ के तने के पीछे से, मेरे बाईं ओर से प्रकट हुआ। मैं पेड़ को अपने और बाघ के बीच रखते हुए, दाईं ओर कूदा और तने की आड़ से दो गज से भी कम दूरी पर स्थित उसके विशाल सिर पर तेज़ी से गोली चला दी।

बाघ अंधाधुंध आगे बढ़ते हुए मुड़ने की कोशिश कर रहा था और पेड़ तक पहुँचने से पहले ही मेरी अक्ल ठिकाने नहीं आई और मुझे .405 पिस्तौल के अंडरलीवर को चलाने की इच्छा हुई। खाली कारतूस ब्रीच से बाहर निकल गया और मुझे बाघ के भ्रमित, धुंधले पिछले हिस्से पर जल्दबाजी में दूसरा शॉट चलाने का समय मिल गया।

वह गायब हो गया, और एक बार फिर सन्नाटा छा गया। मैं उन आवाज़ों को सुनने के लिए उत्सुकता से कान लगाए बैठा था जिन्हें मैं सुनना चाहता था: किसी मरते हुए जानवर की घुरघुराहट भरी कराह, या किसी बुरी तरह घायल जानवर की गहरी, दर्द भरी कराह। कम से कम किसी बुरी तरह घायल जानवर की दहाड़, जिसे किसी तरह भागने की चाह हो, भले ही उसे इस बात की परवाह न हो कि वह कहाँ जा रहा है।

लेकिन इनमें से कोई भी आवाज़ सुनाई नहीं दी: बिलकुल कुछ भी नहीं। मैं शायद दस या पंद्रह मिनट तक इंतज़ार करता रहा, मेरी टॉर्च की रोशनी उसी जगह पर

टिकी रही जहाँ से बाघ मेरी नज़रों से ओझल हो गया था।

फिर भी सन्नाटा छाया रहा। सांभर या चित्तीदार हिरण की दूर से आती कोई चेतावनी भरी आवाज आदमखोर बाघ की हलचल का संकेत नहीं दे रही थी। क्या मेरा पहला ही निशाना घातक साबित हो सकता था? शायद बाघ कुछ ही गज की दूरी पर गिरकर मर गया हो।

फिर आखिरकार मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। यह एक झींगुर की चहचहाहट थी। दूसरे भी उसमें शामिल हो गए, कभी अकेले, कभी दो-तीन के समूह में, और एक बार फिर जंगल उस गूंजती, कर्कश, असमान आवाज़ से भर गया। ऐसा लगा मानो छिपा हुआ ट्रैक्टर फिर से काम पर लग गया हो।

एक बात का मुझे तब पूरा यकीन हो गया था: आदमखोर अब आसपास नहीं था।

तनाव से राहत पाकर, मैंने अपनी राइफल की टॉर्च की रोशनी नीचे करके उस जगह की ज़मीन का मुआयना किया जहाँ बाघ था और मैंने उसके सिर पर गोली चलाई थी। फिर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा और उस दिशा में ज़मीन को ध्यान से देखने लगा जहाँ से वह गया था। मैं कल्ला की हड्डियों के पास से गुज़रा और उस जगह पहुँचा जहाँ से वह गायब हुआ था। लेकिन वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

मैं आगे बढ़ता रहा जब तक कि घनी झाड़ियों में नहीं पहुँच गया और ज़मीन नज़र से ओझल हो गई। भागते हुए आदमखोर के रास्ते पर चलते हुए मैंने पत्तियों, टहनियों और ऊँची घास की पत्तियों का निरीक्षण किया। लेकिन वहाँ खून की एक बूँद भी नहीं दिखी, न ही झाड़ियों के छिटके, काटे या खरोंचे जाने का कोई निशान, न ही किसी घायल जीव के वहाँ से गुज़रने का कोई सबूत।

फिर मुझे अपनी दो गोलियों के बाद छाई गहरी खामोशी याद आई और आखिरकार मुझे इस चौंकाने वाले तथ्य का यकीन हो गया कि मैंने एक बार नहीं, बल्कि दो बार निशाना चूका था, और पहली बार तो बिलकुल करीब से।

अंधेरे में चेनचू बस्ती का रास्ता न जानते हुए, मैं वापस मचान पर चढ़ गया और पूरी रात खुद को कोसता रहा। अब नरभक्षी पहले से कहीं ज़्यादा चालाक हो जाएगा और फिर कभी शिकार करने नहीं लौटेगा। नतीजतन, उसे ज़्यादा भूख लगेगी और इसी वजह से वह ज़्यादा बार शिकार करेगा। चेनचू और उस इलाके में रहने वाले दूसरे बदकिस्मत लोगों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। अब नरभक्षी मेरे खराब

निशानेबाज़ी का अप्रत्यक्ष बदला लेगा।

मुझे सुबह के चार बज चुके थे जब मैं सोया। भोर होते ही अप्पू और उसके साथ आए लगभग एक दर्जन चेनचू (एक प्रकार का साथी) ने मुझे जगा दिया। ये लोग पिछली रात सुनी गई गोलियों की आवाज़ का पता लगाने आए थे। शर्मिंदा होकर मैंने उन्हें सब कुछ बताया। अप्पू ने कुछ नहीं कहा। उसने बस एक भौंह उठाकर मेरी तरफ देखा। उसकी नज़र में घोर तिरस्कार था, और वह जानता था कि मैं इसे समझ गया हूँ।

हमारे पास अपने चेंचु मित्रों से यही कहने के अलावा कोई चारा नहीं था कि अगर उन्हें उस आदमखोर के बारे में कुछ भी पता चले या दिखे तो तुरंत सूचना दें। फिर अप्पू और मैं थका देने वाले रास्ते से पेद्दाचेरुवु वापस लौट आए। पूरे रास्ते हम दोनों में से किसी ने भी कुछ नहीं कहा। हम दोनों को लगा कि ऐसी परिस्थितियों में जितना कम बोला जाए उतना ही अच्छा है।

ब्याना ने कहानी सुनकर मुझे खुश करने की कोशिश की और औसत के नियम पर एक छोटा सा भाषण दिया। असल में उसने कहा कि अगर मैं हर बार अनुपस्थित नहीं रहना चाहता, तो मुझे कुछ समय अनुपस्थित रहना ही पड़ेगा। मुझे उसकी बात समझ नहीं आई और मैं सो गया।

अगले दो दिनों तक कुछ नहीं हुआ और ब्याना ने कहा कि हमें ताज़ा सामान लेने के लिए जल्द ही मार्कपुर लौटना होगा, क्योंकि, भले ही यह अविश्वसनीय लगे, हमारे साथ लाया गया खाने-पीने का सामान कम होता जा रहा था। व्यक्तिगत रूप से, मुझे लगता है कि उसने उम्मीद छोड़ दी थी और उसे लगने लगा था कि आदमखोर जानवर हमारे लिए बहुत चालाक है।

यहीं पर नन्हे अप्पू ने अपनी बहादुरी दिखाई। उसने ब्याना को ताज़ा सामान लाने के लिए शहर जाने को कहा, जबकि मैं और वह बाघ से मिलने की कोशिश में सुबह से शाम तक जंगल में छानबीन करेंगे। मेरे दोस्त ने सहमति जताई, लेकिन साथ ही कहा कि उसे लगता है कि हम अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।

ब्याना अगली सुबह छह बजे मार्कपुर के लिए रवाना हो गया, जबकि अप्पू और मैं भी उसी समय लंगड़े बाघ से मिलने के लिए निकल पड़े। इस बार चेंचु अपने साथ न केवल कुल्हाड़ी लाया था, बल्कि अपना कुत्ता भी लाया था, एक दुबला-पतला, कंकाल जैसा कुत्ता, जिसके कान बचपन में ही काट दिए गए थे ताकि उन मक्खियों

के झुंड को आकर्षित न कर सके, जिन्हें भारत में 'घोड़े की मक्खियाँ' कहा जाता है। ये मक्खियाँ घोड़ों और कुत्तों को बाद में परेशान करती हैं और उनके कानों पर जमा हो जाती हैं। मुझे इन कीटों का असली नाम नहीं पता, लेकिन मुझे बताया गया है कि ये अफ्रीकी त्सेत्से मक्खी के ही परिवार से हैं। इनके काटने से, इनके अफ्रीकी चचेरे भाइयों के काटने के विपरीत, कोई नुकसान नहीं होता, हालांकि यह बहुत तीखा और दर्दनाक होता है।

अप्पू जिस कुत्ते को 'आदिअप्पा' कहकर पुकारता था, वह देखने में ऐसा लग रहा था मानो उसने कम से कम छह महीने से कुछ खाया ही न हो। तेलुगु बोली में आदिअप्पा एक आदमी का नाम है, कुत्ते का नाम तो बिलकुल नहीं। मैंने अप्पू से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि आदिअप्पा उसके पड़ोसी का नाम था, जिसे अप्पू बिल्कुल पसंद नहीं करता था। इसलिए उसने पड़ोसी को अपमानित करने के लिए अपने कुत्ते का नाम उसी के नाम पर रख दिया था। हालांकि, इस चाल में अप्पू को ही नुकसान उठाना पड़ा, क्योंकि उसने बड़े गुस्से से आगे बताया कि कपड़े धोने का काम करने वाले पड़ोसी ने बदले में अपने एक गधे का नाम अप्पू रख दिया था, जिसका इस्तेमाल वह गंदे कपड़ों के गट्ठे धोने के लिए तालाब तक ले जाने के लिए करता था।

तो अप्पू और मैं, अपने प्यारे कुत्ते आदिअप्पा को पैरों के बीच से निकालते हुए, एक बार फिर झील का चक्कर लगाया, इस बार पूर्वी किनारे से, न कि पश्चिमी रास्ते से जहाँ पेद्दाचेरुवु से आने वाला रास्ता आत्मकुर-दोरानाला सड़क की ओर जाता था। झील के इस छोर पर झाड़ियाँ कम थीं, और परिणामस्वरूप मोर और तीतर जैसे पक्षी बहुतायत में थे। हमने काले हिरणों के एक छोटे झुंड को भी देखा, जो आमतौर पर बड़े जंगलों के आसपास नहीं पाए जाते और आमतौर पर खेती वाले क्षेत्रों से सटे बंजर इलाकों तक ही सीमित रहते हैं। एक बूढ़ा हिरण, जिसका शरीर एकदम काला और पेट सफेद था और सींगों का एक विशाल जोड़ा था, हमें जानबूझकर उदासीनता से देखता रहा, जब तक कि आदिअप्पा ने भूख से भौंकते हुए उसका पीछा करने का फैसला नहीं किया। हिरण और उसका झुंड गायब हो गया और कुत्ता वापस आकर हमें उदास, दोषारोपण भरी निगाहों से देखने लगा। साफ तौर पर वह अपने कुत्ते वाले दिमाग में हमें कोस रहा था कि हमने उसे कुछ खाने का मौका क्यों गंवा दिया।

भारत में पाए जाने वाले हिरण परिवार की कुछ प्रजातियों में सबसे सुंदर माने

जाने वाले काले हिरण कभी सबसे अधिक संख्या में पाए जाते थे और हजारों की संख्या में प्रायद्वीप के बंजर इलाकों में विचरण करते थे। तब से लेकर आज तक इनका लगातार तीर-कमान, बंदूकें, कुत्ते और तरह-तरह के जाल बिछाकर शिकार किया जाता रहा है, जिसके चलते आज ये बहुत कम संख्या में बचे हैं, अपने पुराने आवासों में मुश्किल से ही दिखाई देते हैं और विलुप्त होने के कगार पर हैं। इनके संरक्षण के नियम सरकारी दफ्तरों में कागजों पर लिखे हुए हैं और अधिसूचनाओं व राजपत्रों में छपे हुए हैं, लेकिन कोई इन पर ध्यान नहीं देता, और इस खूबसूरत प्राणी का धरती से विलुप्त होना अब निश्चित प्रतीत होता है।

स्थिति और भी बदतर इसलिए है क्योंकि काला हिरण उन जानवरों में से है जो जुगाली करते हैं। यानी, वे अपना भोजन आधा चबाकर निगल लेते हैं, जो पेट में जाता है जहाँ पाचन क्रिया शुरू होती है। यहाँ से भोजन फिर से मुँह में आता है और अंत में निगलने से पहले उसे और चबाया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान जानवर तेज़ या लंबे समय तक चलने में असमर्थ होता है और जल्दी थक जाता है। अगर कुछ दूर तक उसका पीछा किया जाए, तो वह थककर बेबस होकर ज़मीन पर गिर जाता है। स्थानीय शिकारी और गाँव के अवैध शिकार करने वाले यह बात जानते हैं, और वे यह भी जानते हैं कि चरने के ठीक बाद दूसरी पाचन प्रक्रिया कब शुरू होती है और कितनी देर तक चलती है। इसलिए जब वे किसी झुंड को चरते हुए देखते हैं, तो वे धैर्यपूर्वक तब तक देखते रहते हैं जब तक कि जानवर जुगाली करने के लिए नीचे न बैठ जाएँ। वे कुछ मिनट और इंतज़ार करते हैं और फिर कुत्तों के झुंड, बंदूकों, धनुष-बाण और अन्य हथियारों के साथ उनका पीछा करते हैं। डरा हुआ हिरण भागने की कोशिश करता है, लेकिन छोटे सदस्य और मादाएँ ज़्यादा दूर नहीं जा पातीं। वे थककर गिर जाती हैं और या तो पीछा करने वाले कुत्तों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दी जाती हैं या जब आदमी पास आते हैं तो उन्हें करीब से मार दिया जाता है।

कहानी को आगे बढ़ाते हैं! अप्पू और मैं काले हिरण को देखने के बाद ज़्यादा दूर नहीं गए थे कि हमें चार नीलगाय (जिन्हें ब्लू बुल के नाम से भी जाना जाता है) के एक परिवार के पदचिह्न दिखाई दिए। आम तौर पर ये जानवर अकेले ही चरते हैं। ये चारों जानवर पिछली रात झील पर पानी पीने गए थे। इन विशाल हिरणों के पदचिह्न जंगल में रहने वाले उनके चचेरे भाई, विशाल सांभर हिरण के पदचिह्नों से काफी मिलते-जुलते हैं, अंतर सिर्फ इतना है कि इनके पदचिह्न ज़्यादा नुकीले और लंबे होते

हैं। यहीं पर हम रुक गए। क्योंकि, उन चार नीलगाय के पदचिह्नों के ऊपर एक विशाल नर बाघ के पदचिह्न भी थे।

अप्पू और मैंने ज़मीन का ध्यान से जायज़ा लिया और बाघ के पदचिह्नों का पीछा करते हुए थोड़ी दूर तक चले। जल्द ही हमें पता चल गया कि वह हमारा शिकार नहीं था; वह लंगड़ा आदमखोर बाघ। इस जानवर के चारों पैर सही-सलामत थे और उसे किसी तरह की कोई विकलांगता नहीं थी। निस्संदेह हम अपने पुराने दोस्त, उस दहाड़ते हुए लेकिन बेहद डरपोक बाघ के पदचिह्नों को देख रहे थे, जो झील के आसपास के इलाके के साथ-साथ हमारा भी पीछा करता हुआ प्रतीत होता था। वैसे भी वह हमारे किसी काम का नहीं था, जबकि वह लंगड़ा आदमखोर बाघ, जो नर था, शायद ही उसका साथ दे पाता।

हम दक्षिण की ओर बढ़ते रहे, दोपहर तक हमें लगा कि हम झील से कम से कम दस मील दूर हैं, जो मेरे पॉकेट कंपास के अनुसार हमारे ठीक उत्तर में स्थित थी। हम बहुत दूर नहीं जाना चाहते थे क्योंकि आदमखोर सांप ने अब तक अपनी गतिविधियाँ लगभग इसी दायरे में सीमित रखी थीं। इसलिए दबी आवाज़ में सलाह मशवरा करने के बाद अप्पू और मैंने दिशा बदल दी और उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़े, ताकि शाम होने से पहले हम झील के ठीक पश्चिम में और उस छोटी सी चेंचु बस्ती से कुछ मील की दूरी पर पहुँच जाएँ जहाँ मुझे अपना आखिरी रोमांच मिला था।

यहां हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हमें जो भी जानवरों के रास्ते मिले, वे हमारे मार्ग से समकोण पर, दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर जा रहे थे। ये रास्ते उन जानवरों ने बनाए थे जो वर्षों से पानी की तलाश में झील की ओर जाते थे। इसलिए हम उनका अनुसरण करके प्राकृतिक सहायता नहीं ले सके, बल्कि जंगल से जूझते हुए सीधे अपने गंतव्य की ओर बढ़ना पड़ा। इससे यात्रा बहुत कठिन और धीमी हो गई। हर कुछ गज पर हमें कंटीली झाड़ियाँ या घनी वनस्पति के झुंड मिलते थे। हमें उन्हें पार करना पड़ता था। इस प्रकार हमें जो दूरी तय करनी थी वह दोगुनी से भी अधिक हो गई और योजना से कहीं अधिक समय लगा, जिसके लिए मुझे बार-बार कंपास का सहारा लेना पड़ा।

दोपहर 3 बजे सूरज की चिलचिलाती गर्मी थी और हम दोनों पसीने से तरबतर थे जब हम एक छोटी पहाड़ी पर पहुँचे। इस पहाड़ी के एक तरफ हमारे सामने एक लटकती हुई चट्टान थी, और उसके तल से ताजे पानी की एक छोटी सी धारा रिस रही

थी, एक बार में बस कुछ बूँदें, जो मिलकर दो फुट व्यास का एक छोटा सा पोखर बन गई थीं। पानी की मात्रा इतनी कम थी कि कोई धारा नहीं बन पा रही थी और पानी चट्टान से टपकने की गति के बराबर ही जमीन में समा रहा था। परिणामस्वरूप पानी ताजा और एकदम साफ था, और हमारे तपते और थके हुए शरीरों के लिए सहारा रेगिस्तान में किसी नखलिस्तान की तरह सुकून देने वाला था।

लेकिन एक फर्क था। नम मिट्टी में बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से अंकित थे, जिसकी हम तलाश कर रहे थे; वास्तव में, कई पदचिह्न दिखाई दे रहे थे, क्योंकि संयोगवश हमने उसका नियमित पानी पीने का स्थान खोज लिया था। पदचिह्नों के बीच, उन जगहों पर उसके लंगड़ाते हुए पैर के घिसटने के धुंधले निशान भी थे जहाँ उसने पानी पीते समय अपना पैर टिकाया था।

इसमें कोई शक नहीं था। आखिरकार हमें लंगड़े आदमखोर सांप के पदचिह्न मिल ही गए! पदचिह्न मिलने और पीने का पानी मिलने से हम सब खुशी से झूम उठे। मैंने .405 पिस्तौल ज़मीन पर रख दी और पेट के बल लेट गया। उस पल मेरे मन में बस एक ही ख्याल था - पानी पीना, और पीते रहना, और पीते रहना। मैंने अप्पू क्या कर रहा है, यह देखने की ज़हमत भी नहीं उठाई और न ही उसके बारे में सोचा। शायद साहब की आदत के मुताबिक, हर बात को स्वाभाविक मानकर, मेरे अवचेतन मन ने, अगर सोचा भी होगा, तो यही सोचा होगा कि अप्पू मेरे पीने के बाद तक इंतज़ार करेगा।

अच्छा हुआ कि अप्पू ने ऐसा किया, क्योंकि उस दिन मेरा अवचेतन मन शायद ठीक से काम नहीं कर रहा था। क्योंकि जब मैं बर्फीले ठंडे पानी का आनंद ले रहा था, तभी आदमखोर ने मुझ पर हमला कर दिया।

हमारे दाहिनी ओर से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी; 'व्र्र-ऑफ!' और फिर से: 'व्र्र-ऑफ! व्र्र-ऑफ!' और फिर आदमखोर हम पर टूट पड़ा!

अपने दाहिने हाथ से राइफल को टटोलते हुए, मैं घुटनों के बल बैठ गया और जितना हो सके मुड़कर उस हमले का सामना करने के लिए तैयार हो गया। एक भयानक दृश्य मेरे सामने आ गया। बाघ का गुर्राता हुआ रूप लड़खड़ाते हुए उछल-कूद करते हुए हमारी ओर दौड़ रहा था। वह मात्र पंद्रह फीट दूर था! अप्पू अपनी जगह पर डटा रहा और उस हमले का सामना करने के लिए उन्माद में अपनी कुल्हाड़ी को गोल-गोल घुमाता रहा। अपने मालिक के सामने उन्माद में चिल्लाता हुआ कुत्ता आदिअप्पा,

जो अब तक एक हास्यास्पद, अधमरा कुत्ते से ज्यादा कुछ नहीं लग रहा था, उस भयानक हमले का सामना करने के लिए दांत भींचकर खड़ा हो गया।

मुझे लगता है कि बाघ को भी अपने सामने का दृश्य डरावना लगा होगा। उसने अब तक जिन लोगों को मारा था, वे सब अचानक हमले का शिकार हुए थे। वे चीखे तो थे, लेकिन उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया था। इस मामले में एक आदमी उसके सामने खड़ा था, किसी चीज़ को गोल-गोल घुमा रहा था, जबकि एक नीच कुत्ता, जिसे वह देखना भी नहीं चाहता था, लड़ने के लिए बेताब लग रहा था। इस दृश्य में एकमात्र डरपोक और बाघ की उम्मीदों पर खरा उतरने वाला दूसरा व्यक्ति था, जो ज़मीन पर लोट रहा था, स्पष्ट रूप से घोर भयभीत था और उठने में असमर्थ था।

बाघ एक पल के लिए रुका, और उसी क्षण आदमखोर ने अपनी सबसे बड़ी और आखिरी गलती कर दी। ज़मीन पर लेटे हुए व्यक्ति—यानी मैं—को आखिरकार अपनी राइफल मिल गई थी और मैं उठा नहीं क्योंकि मैं निशाना साधने के लिए घुटनों के बल बैठा था। मैंने तभी गोली चलाई, और फिर दो बार और चलाई।

मृत जानवर की जांच से मेरी बात की पुष्टि हो गई। दूसरे बाघ से लड़ाई के दौरान उसके दाहिने पैर में लगी गंभीर चोट के कारण वह आदमखोर बन गया था। कम से कम, इस मामले में इंसान दोषी नहीं था!

अप्पू और उसके कुत्ते आदिअप्पा के लिए मैं आभारी हूँ कि जब ब्याना उस शाम मार्कपुर से ताज़ा खाद्य सामग्री लेकर लौटा, तो मैं उसे बता सका कि उसकी मेहनत व्यर्थ गई। अगर उस छोटे से हट्टे-कट्टे चेंचु और उसके बड़े दिल वाले कुत्ते ने डटकर भाग न लिया होता, तो आदमखोर अपने हमले में कभी नहीं रुकता और मैं यह कहानी सुनाने के लिए ज़िंदा न रहता।

अंत में, मैं समझाऊंगा कि आदमखोर बाघ के दहाड़ने पर झींगुरों ने चहचहाना क्यों बंद कर दिया। मद्रास में मेरे प्रकृतिवादी मित्र का कहना है कि बाघ की दहाड़ से ज़मीन कांप उठी थी। जाहिर है, झींगुर सुन नहीं सकते, लेकिन उनकी स्पर्श इंद्रिय बहुत तीव्र होती है। कंपन ने उन्हें भयभीत कर दिया था—शायद भूकंप आने वाला था? कम से कम झींगुरों ने चिल्लाना तो बंद कर दिया था।

* शिवानीपल्ली का काला पैंथर, अध्याय 4 देखें।

तीन

चीजों का विचित्र पक्ष

जंगल की यात्राएँ हमेशा शिकार और हत्या के उद्देश्य से नहीं होतीं। बिलकुल भी नहीं। जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती है, मुझे लगता है कि मुझमें हत्या करने की कोई इच्छा नहीं रह जाती, सिवाय तब जब कोई विशेष अवसर हो। इसलिए, बदलाव के तौर पर मैं आपको जंगल में अपने भ्रमण के दौरान घटी कुछ अलग तरह की घटनाओं के बारे में बताऊंगा।

नीलगिरी पर्वत श्रृंखला के उत्तर में तलहटी में लहरदार भूभाग फैला हुआ है,

जिसके पश्चिम में भरपूर वर्षा वाले क्षेत्र में घना जंगल है, जबकि पूर्व में नीलगिरी पर्वतमाला से टकराने के कारण मानसूनी बारिश कम होने से कम वर्षा होती है, इसलिए वहां हल्का जंगल है। सदियों पहले, यह सारा भूभाग कृषि योग्य और घनी आबादी वाला था, और अब घने जंगलों में कई खंडहर हो चुके गांवों, मंदिरों, किलों और पुलों के अवशेष मिलते हैं, जहां स्पष्ट रूप से अतीत में सभ्यता फली-फूली थी।

मेरे मन में चेमनाथ का मवेशी बाड़ा है, जहाँ लगभग दो एकड़ ज़मीन के एक गोल घेरे में अब आधा दर्जन झोपड़ियाँ खड़ी हैं। घेरे की परिधि तीन फुट ऊँची, कटी हुई और ढेर की हुई काँटों की एक नीची दीवार से बनी है। अंदर की सतह दशकों से इस बाड़े में आश्रय लेने वाले सैकड़ों मवेशियों द्वारा जमा किए गए गोबर से कई इंच गहरी है। गर्मियों में, जब जंगल में चराई नहीं होती और मवेशियों को दूर ले जाया जाता है, तो यह गोबर सीमेंट की तरह सूखकर सख्त हो जाता है। फिर बारिश आती है और मवेशी लौट आते हैं। बारिश और रात में काँटों के बाड़े के अंदर रहने वाले सैकड़ों जानवरों के मूत्र से जमा हुआ गोबर दलदल बन जाता है। चरवाहे बाड़े के बीच में रहते हैं, इसलिए यदि आप उनसे बात करना चाहते हैं तो आपको दुर्गंधयुक्त दलदल से होकर गुजरना होगा, जो आपके टखनों तक या उससे भी ऊपर तक पहुँच सकता है।

मैं आपको इस पैटी के बारे में नहीं, बल्कि लगभग आधा मील दूर स्थित एक विशाल मंदिर के खंडहरों के बारे में बताने जा रहा हूँ। मंदिर की दीवारों के भीतर विशाल अंजीर के पेड़ों की जड़ें उगती हैं, लेकिन गर्भगृह, परम पवित्र स्थान जहाँ केवल ब्राह्मण पुजारियों को ही प्रवेश की अनुमति थी, काफी अच्छी स्थिति में है। एक आंगन इस गर्भगृह को घेरे हुए है, और आप तराशे हुए पत्थरों के विशाल खंभों को पार करते हुए, जो एक अजीब कोण पर झुके हुए हैं, कम से कम छह इंच मोटे एक विशाल लकड़ी के दरवाजे तक पहुँचते हैं। यह बड़े पीतल के घुंडों से जड़ा हुआ है और बाहर से दरवाजा खोलने के लिए एक मजबूत लीवर लगा है। अंदर से इसे बंद करने वाला विशाल हैंडल अभी भी मौजूद है। कच्चे लोहे से बने जंग लगे कब्ज़े अभी भी लगे हुए हैं, और जब आप अंदर जाने के लिए उन्हें खोलते हैं तो दोनों दरवाजे अजीब तरह से चरमराते हैं। शायद अपने ही वजन से, या शायद जिस कोण पर वे लटके हुए हैं, उसके कारण वे आपस में टकराते हैं और एक बार बंद हो जाने पर आप गर्भगृह के भीतर कैद हो जाते हैं और फिर कभी बाहर नहीं निकल सकते।

मंदिर स्वयं ठोस ग्रेनाइट से बना है, और इसके ठीक सामने कुछ गज की दूरी पर

एक भव्य पत्थर के कुएं के अवशेष हैं, जो कभी एक भव्य कुआँ रहा होगा। यह ग्रेनाइट से बना है और लगभग 150 फीट गहरा और लगभग उतना ही व्यास का है। ग्रेनाइट के कई ब्लॉक अब गिर चुके हैं और कुएं की तलहटी में पानी का कोई निशान नहीं दिखता।

इस मंदिर और कुएं से लगभग एक मील की दूरी पर, सीधे रास्ते से, एक पत्थर के किले के अवशेष खड़े हैं, जो एक खाई से घिरा हुआ है। अब चारों ओर जंगल ही जंगल है। कोई वहां नहीं जाता और जंगल के इरीला लोग भी उस इलाके से दूर रहते हैं। क्योंकि उनका कहना है कि कुछ ही दिनों में वहां मारे गए हजारों लोगों की आत्माएं आज भी उस जगह पर भटकती हैं। किसी को ठीक-ठीक नहीं पता कि यह त्रासदी कब हुई थी। यह कहानी कई पीढ़ियों से पिता से पुत्र को सुनाई जाती रही है और हमेशा एक जैसी ही रही है। यह घटना दो-तीन सौ साल पहले घटी होगी या उससे भी बहुत पहले।

कहते हैं कि उसी समय भयंकर बुखार फैला और हज़ारों लोगों की जान ले ली। मरने वालों ने फिर कभी दिन का उजाला नहीं देखा। न कोई इलाज था, न कोई डॉक्टर। लोग जहाँ गिरे वहीं मर गए और उन्हें दफ़नाने वाला कोई नहीं था। कहा जाता है कि मौत और सड़न की दुर्गंध इतनी तेज़ थी कि सात मील दूर पहाड़ों के बीचोंबीच स्थित कलहट्टी के लोग भी उसे सूंघ सकते थे। जो कुछ लोग बच गए, वे अपने सामान का इंतज़ार किए बिना ही मौत की घाटी से भाग गए और सभ्यता का अंत हो गया। जंगल ने चारों ओर फैलकर मानव बस्तियों को मिटा दिया, और उसके जीव-जंतु पूरे एक साल तक मृतकों के सड़े हुए मांस और अनगिनत हड्डियों को खाते रहे।

यह भयंकर बुखार क्या था, यह कोई नहीं जानता, लेकिन इसके कहर, इसके संक्रामक स्वभाव और शीघ्र अंत को देखते हुए, लोग कहते हैं कि यह संक्रामक रोगों में सबसे भयावह, प्लेग का ही एक सबसे घातक रूप रहा होगा। यह निश्चित है कि उस क्षेत्र में मानव बस्ती पूरी तरह से समाप्त हो गई और फिर कभी वापस नहीं लौटी।

पुराने समय में मंदिर के परम पवित्र स्थान में किसी भी बाहरी व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति नहीं थी, विशेषकर मांसाहारी या विदेशी मूल के व्यक्ति को। प्राचीन पुजारी, जो सभी ब्राह्मण थे, नंगे बदन और नंगे पैर ही पूजा करते थे। यह देखकर मन में यह सवाल उठता है कि क्या जूते पहनकर मंदिर के अंदर खड़े होना उचित है या नहीं।

एक छोर पर मिट्टी का एक ऊंचा चबूतरा बना है, जिस पर हिंदू धर्म के पवित्र पशु, बैल की कई मूर्तियां पत्थर पर उकेरी गई हैं। अगर मुझे सही याद है तो इनकी संख्या लगभग पांच है, जो आकार में भिन्न-भिन्न हैं। बैल को हमेशा बैठे हुए दिखाया गया है। सबसे बड़ी मूर्ति एक फुट से थोड़ी ऊंची और लगभग ढाई फुट लंबी है; सबसे छोटी लगभग चार इंच चौड़ी और दस इंच लंबी है। एक तरफ एक प्राचीन दीपक है, जिसकी ऊंचाई शायद छह इंच है। यह पीतल का बना है, जो समय और ऑक्सीकरण के कारण पूरी तरह से फीका पड़ गया है, और इसमें केवल तेल रखने के लिए एक खोखला गड्ढा और तेल में रखी बाती को सहारा देने के लिए एक किनारा है, और यह सब एक चबूतरे पर टिका है जिस पर किसी देवता की आकृति उकेरी गई है।

और यहीं से एक कहानी शुरू होती है, कुछ साल पहले मैं कुछ पर्यटकों के साथ इस मंदिर में गया था। वे अजनबी थे जिनसे मेरी जंगल में अचानक मुलाकात हुई थी। उन्होंने मंदिर के बारे में सुना था और मुझसे पूछा था कि यह कहाँ है, और क्योंकि इसे ढूँढना मुश्किल था, इसलिए मैं उन्हें खुद वहाँ ले गया था। वे चार लोग थे। हम परम पवित्र स्थान के अंदर खड़े होकर पत्थर के बैलों को देख रहे थे, जिन्हें संयोगवश 'नंदी' कहा जाता है, तभी ऑस्ट्रेलिया से आए एक पर्यटक, जिनका नाम कैप्टन नेइड था, की नज़र पीतल के दीपक पर पड़ी और वह उन्हें बहुत पसंद आया।

'मुझे लगता है मैं इसे एक यादगार के तौर पर रख लूंगा,' उसने कहा और उसे उठाकर अपनी जेब में डाल लिया।

'आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।' मैंने विरोध जताया, और उनकी पत्नी ने मेरा समर्थन किया। 'इसे वापस रख दो, जॉन; हमें इसकी जरूरत नहीं है,' उन्होंने कहा।

'लेकिन क्यों नहीं?' जॉन ने तर्क दिया। 'मुझे इसकी जरूरत है।'

जब हम जाने लगे तो दीपक का ऊपरी हिस्सा उसकी जेब से बाहर निकला हुआ था और मैं मन ही मन सोचे बिना नहीं रह सका कि यह कितना दुख की बात है कि न जाने कितने सैकड़ों वर्षों के बाद यह दीपक अपने घर को छोड़कर जा रहा है। मैं अपने शिविर में लौट आया, जबकि पर्यटकों का दल सत्रह मील दूर ऊटाकामंड शहर की ओर पहाड़ी पर चढ़ गया। उन्होंने बताया था कि वे आगे बढ़ने से पहले वहाँ चार-पाँच दिन बिताएंगे।

चार दिन बाद मैं मुख्य सड़क पर चल रहा था तभी ऊटाकामंड से आ रही एक काली-पीली टैक्सी ने मुझे ओवरटेक किया और फिर रुक गई। टैक्सी आमतौर पर

जंगलों में नहीं आतीं, इसलिए मैं उत्सुकता से यह देखने के लिए उसके पास गया कि अंदर कौन है। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि कैप्टन नेइड पीछे बैठे थे, तकियों के सहारे, कंबल ओढ़े हुए, और बहुत बीमार लग रहे थे। उनके बगल में श्रीमती नेइड बैठी थीं, पीली और चिंतित।

'भगवान का शुक्र है कि हम आपसे मिले, मिस्टर एंडरसन,' वह फूट पड़ी। 'जॉन के साथ कुछ भयानक हुआ है।'

फिर उन्होंने बताया कि जिस शाम उनके पति और उनके दोस्त ऊटाकामंड पहुंचे, उसी शाम उनके पति को तेज बुखार हो गया और उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई। डॉक्टर को बुलाया गया, जिन्होंने लू लगने की समस्या बताई और उसी के अनुसार उनका इलाज किया।

लेकिन रात के दौरान नीडे का तापमान 106 डिग्री तक बढ़ गया। वह बेहोश हो गया। उसकी व्याकुल पत्नी और उसके दोस्तों ने फिर से डॉक्टर को बुलाया। नीडे को अस्पताल ले जाया गया, जहाँ यह माना गया कि उसे ब्लैकवाटर फीवर या मलेरिया का गंभीर दौरा पड़ रहा है। उसे कुनैन दी गई, लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ। तीसरे दिन नीडे की हालत बेहद खराब थी और अस्पताल के कर्मचारियों ने स्वीकार किया कि वे कारण का पता नहीं लगा सके। चौथे दिन सुबह नीडे ने खुद ही इसका समाधान बताया। उच्च तापमान के कारण वह ज्यादातर समय बेहोशी की हालत में था, बीच-बीच में उसे होश आता था और इसी दौरान वह अपनी पत्नी से हांफते हुए बोला, 'मार्गरेट! वह दीपक! मुझे उसे मंदिर वापस ले जाना है। एक कार, एक टैक्सी, कुछ भी भेजो। मुझे उसे आज ही मंदिर वापस ले जाना है, नहीं तो मैं कल मर जाऊंगा। मुझे उसे खुद ले जाना होगा।'

रुक-रुक कर उसने बताया कि उसने एक सपना देखा था जिसमें उसने पुराने मंदिर की वेदी पर दीपक को वापस अपनी जगह पर देखा था। उसकी पत्नी ने घर के डॉक्टर को यह बात बताई, जिसने बस मुस्कुराते हुए संक्षेप में कहा, 'महोदया, यह सब उसका भ्रम था; उसने यह सब कल्पना की थी।'

लेकिन श्रीमती नेइड जानती थीं कि ऐसा नहीं था। होटल के उनके कमरे में मेज पर वह भयानक सा लैंप रखा था। ऐसा लग रहा था मानो वह सबका ध्यान अपनी ओर खींच रहा हो और श्रीमती नेइड उससे अपनी निगाहें नहीं हटा पा रही थीं।

'डॉक्टर साहब, मुझे लगता है कि मैं उसे और लैंप को टैक्सी से ले जाऊंगी,'

उसने बहस करते हुए कहा। 'मुझे लग रहा है कि अगर हम इसे वापस नहीं लौटाते हैं तो कुछ भयानक होने वाला है।'

'श्रीमती नेइड, यदि आप अपने पति को उनकी वर्तमान स्थिति में कहीं ले जाती हैं, तो जो भी होगा उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं रहूंगी। वे बहुत बीमार हैं और मैं अपनी अनुमति नहीं दूंगी।'

वह वापस गई और उसने नेइड को बताया कि डॉक्टर ने क्या कहा था।

'अगर तुम मुझे दीपक लौटाने में मदद नहीं करोगी, तो मैं कल तक मर जाऊंगा। मुझे पता है, मार्गरेट,' उसने हांफते हुए कहा।

'मैं इसे आपके लिए टैक्सी में वापस ले जाऊंगी जॉन;' उसने पेशकश की।

'नहीं, नहीं,' वह अड़ा रहा। 'मैं इसे यहाँ से लाया हूँ और मुझे इसे वापस करना ही होगा,' उसने ज़ोर देकर कहा। और इसी तरह मेरी उनसे रास्ते में मुलाकात हुई।

बिना कुछ कहे, मैं ड्राइवर के बगल में बैठ गया और उसे मुख्य सड़क से चेमनाथ घाटी की ओर जाने वाले रास्ते की ओर इशारा किया। थोड़ी दूर पर मंदिर था, लेकिन गाड़ी आगे नहीं जा सकती थी। कैप्टन नेइड, जो अब होश में थे, दीपक को मंदिर तक ले जाना चाहते थे, लेकिन यह स्पष्ट था कि वे चलने में पूरी तरह असमर्थ थे।

तो मैंने उससे कहा, 'जॉन, मुझे लगता है कि तुमने दीपक ले जाने के लिए खेद दिखाने के लिए काफी कुछ कर लिया है। तुम इसे जितना हो सके वापस ले आए हो। मंदिर के देवता इसे समझेंगे। जब तक तुम यहाँ आराम करते हो, श्रीमती नीडे और मैं इसे तुम्हारे लिए वापस ले चलते हैं।'

वह इतना थका हुआ था कि जवाब नहीं दे सका, लेकिन उसने सहमति में सिर हिलाया और उसकी पत्नी दीपक लेकर और मैं आगे-आगे चलते हुए मंदिर वापस चले गए। प्राचीन दरवाजा चरमराते हुए खुला और हमारे पीछे अपने आप बंद हो गया। हम पाँच नंदी मूर्तियों के सामने वेदी पर खड़े थे और श्रीमती नीडे ने श्रद्धापूर्वक पुराने पीतल के दीपक को उसके आसन पर रख दिया। वह रो रही थीं, और मैं देख सकता था कि वह प्रार्थना कर रही थीं। फिर हम चुपचाप कार की ओर लौट गए।

नीडे गहरी नींद में सो रहे थे। अनायास ही मैंने अपना हाथ बढ़ाकर उनके माथे को छुआ। उन्हें बहुत पसीना आ रहा था, पसीना उनके माथे और गालों से बह रहा था। उनका बुखार उतर चुका था, और छूने पर वे बिल्कुल ठंडे थे। उनकी पत्नी की मदद से मैंने कंबल को उनके चारों ओर और कसकर लपेट दिया, हवा के झोंके को रोकने के

लिए कांच की खिड़कियां बंद कर दीं, और ड्राइवर को उन्हें ऊटाकामुंड के होटल वापस ले जाने का निर्देश दिया।

अस्पताल जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। नीडे ठीक हो गया था। टैक्सी के जाते ही उसकी पत्नी के चेहरे पर खुशी के आंसू थे।

मेरे पाठकों, यही हुआ था। आप जो चाहें, स्पष्टीकरण दे सकते हैं। स्वतः अनुमान? मैं आपसे बहस नहीं करूंगा। मुझे बस इतना पता है कि ऐसा हुआ था!

* * *

मावनहल्ला बस्ती से आधे मील के भीतर स्थित एक छोटे से गांव में, जो ऊटाकामंड से ठीक पंद्रह मील दूर है, मैंने हाल ही में एक और विचित्र घटना देखी, जो खुलेआम काले जादू का मामला था।

गाँव में रहने वाली एक सुंदर लड़की की सगाई बारह मील दूर स्थित गरुपल्ली गाँव में रहने वाले एक युवक से हुई थी। भारत में जोड़े अपनी मर्जी से सगाई नहीं करते। ये सब दोनों पक्षों के माता-पिता द्वारा तय किया जाता है, जो सौदेबाजी और मोलभाव करके समझौते पर पहुँचते हैं। आम तौर पर, शादी होने तक दूल्हा-दुल्हन एक-दूसरे को देखते भी नहीं हैं। लेकिन इस मामले में कुछ अलग था। वह युवक और उसके माता-पिता मावनहल्ला आए थे। उन्होंने लड़की को देखा और उसे पसंद किया, और शादी की तारीख अस्थायी रूप से तय कर ली गई।

इन लोगों को इरिला कहा जाता है, और यहाँ यह प्रथा है कि लड़के के माता-पिता लड़की के माता-पिता को विवाह के लिए एक निश्चित राशि देते हैं। सीधे शब्दों में कहें तो, वे लड़की को खरीदते हैं। यह दहेज की सामान्य भारतीय प्रथा से भिन्न है, जिसमें लड़की के माता-पिता को एक तय राशि देनी होती है।

हालांकि, इस मामले में लड़के के माता-पिता ने आखिरी क्षण में कहा कि वे भुगतान नहीं कर सकते या नहीं करेंगे। लड़की के माता-पिता क्रोधित हो गए और उन्होंने सगाई तोड़ दी और एक अन्य उम्मीदवार ढूंढ लिया जो उनकी बेटी के लिए तय की गई कीमत चुकाने को तैयार था।

फिर कुछ ऐसा हुआ। ठुकराए जाने से क्रोधित और ईर्ष्या से पागल गरुपल्ली का

वह लड़का सौ मील से अधिक का जंगल पार करके कावेरी नदी के किनारे स्थित कोललेगल कस्बे तक पहुँचा, जहाँ एक कुख्यात और कुख्यात काला जादूगर रहता था। उसे बहुत सारा पैसा खर्च करना पड़ा, क्योंकि जादूगर ने उससे बलि के लिए एक पूरी भेड़ खरीदी। उस भेड़ का खून उस आत्मा को अर्पित किया गया जो अब इस मामले में हस्तक्षेप करने वाली थी, जबकि उसका मांस जादूगर को दिया गया। यह अपवित्र अनुष्ठान पूर्णिमा की रात को सुबह तीन बजे संपन्न हुआ।

सौ मील दूर, मावनहल्ला के पास एक छोटे से गाँव में वह लड़की सो रही थी, तभी ठीक सुबह तीन बजे उसके पेट में तेज दर्द हुआ और वह शौच के लिए झोपड़ी से बाहर भागी। हर झोपड़ी के पीछे कुछ ही गज की दूरी पर वह जगह है जहाँ निवासी आमतौर पर शौच के लिए जाते हैं।

उसने बताया कि उसका काम खत्म हो गया था और वह बस आने ही वाली थी कि तभी दो अनजान आदमी अचानक कहीं से प्रकट हुए, उसकी साड़ी पकड़ ली और उसे तुरंत गोरुपल्ली चलने के लिए कहने लगे। यह समझते हुए कि यह उसके दिवंगत मंगेतर की उसे बहकाने की चाल है, लड़की ने कहा कि वह उजाला होते ही आने की कोशिश करेगी। इस पर उन आदमियों ने कहा कि उसे तुरंत आना चाहिए, जिस पर लड़की ने कहा कि दूरी बहुत ज़्यादा है। इस पर उन्होंने उसे गोद में उठाकर ले जाने की पेशकश की।

बातचीत इस स्तर तक पहुँच चुकी थी कि लड़की ने नीचे देखा। यह देखकर वह भयभीत हो उठी कि दोनों पुरुषों के पैर नहीं थे; कम से कम उनके पैर ज़मीन को नहीं छू रहे थे, जो उसे तेज़ चाँदनी में साफ़ दिखाई दे रही थी। बल्कि, तेज़ चाँदनी में उसे ज़मीन तो दिखाई दे रही थी, लेकिन जहाँ पैर होने चाहिए थे वहाँ पैर नहीं थे!

उसके बाद वह चीख पड़ी। आदमी गायब हो गए और उसकी चीख सुनकर लोग अपनी झोपड़ियों से बाहर भागने लगे। उसने सबको सब कुछ बताया, लेकिन पड़ोसियों को लगा कि उसने कोई बुरा सपना देखा है, क्योंकि वहाँ कोई आदमी नज़र नहीं आ रहा था।

वह लड़की दिनभर उदास रही और उसने कुछ नहीं खाया, लेकिन शाम करीब 7:30 बजे अपने सामान्य समय पर उसने रात का खाना खाया, जो कि करी और चावल का एक साधारण भोजन था। हमेशा की तरह उसने अपने दाहिने हाथ से चावल और करी का गोला बनाया और उसे अपने मुंह में डाला। तभी उसका मुंह आग की

तरह जलने लगा और खाना सख्त सा लगने लगा। घबराकर उसने उसे थूक दिया। लेकिन उसके मुंह से जो निकला और थाली में गिरा, वह एक पत्थर था।

यह सिलसिला आठ दिनों तक चलता रहा। फिर संयोगवश मैं मावनहल्ला गया और मुझे इसके बारे में पता चला। बताया गया कि वह लड़की सुबह का नाश्ता बिना किसी रुकावट के कर सकती थी, और दिन के किसी भी समय भी। यह अनोखी घटना सूर्यास्त के बाद ही होती थी, जब वह रात का खाना खाने की कोशिश करती थी।

असामान्य चीजों में मेरी हमेशा से रुचि रही है, इसलिए मैं जल्दी से उस छोटे से गाँव की ओर गया, जहाँ मैंने उस लड़की और उसके माता-पिता को देखा और उनसे बात की। मैंने पड़ोसियों से भी बात की; वास्तव में उस बस्ती के लगभग हर वयस्क से। उन सभी ने उस घटना को देखा था और मुझे वही कहानी सुनाई जो मैंने अभी बताई है। पिता ने उन पत्थरों और कुछ अन्य चीजों को इकट्ठा किया था जो लड़की ने थूक कर निकाली थीं। मैंने उनसे उन्हें मुझे देने के लिए कहा, जो उन्होंने मुझे दे दीं, और लिखते समय वे मेरे सामने हैं। वस्तुएँ इस प्रकार हैं: विभिन्न आकार और प्रकार के पत्थर—छह वस्तुएँ, जिनमें सबसे बड़ी का वजन तीन औंस है; मिट्टी के बर्तनों के टूटे हुए टुकड़े—छह वस्तुएँ; कोयला—दो टुकड़े; और अंत में, बोतल के टूटे हुए कांच का एक टुकड़ा।

जैसा कि मैंने कहा, ये घटनाएँ शाम के भोजन के समय घटित हुईं। इसलिए मैं स्वयं देखने के लिए उस शाम सात बजे के ठीक बाद वापस लौटा।

लड़की एक तरह से बेहोशी की हालत में जमीन पर लेटी हुई थी, उसके चारों ओर एक दर्जन से अधिक लोग थे। उसका चेहरा पसीने से भीगा हुआ था, और थोड़ी-थोड़ी देर में उसका मुंह हिलता, मुड़ता और फूलता था, मानो उसके अंदर कुछ हो।

मैं स्वभाव से संशयवादी हूँ। मेरे मन में यह विचार आया कि वह लड़की नाटक कर रही है और इसका कारण काफी सरल प्रतीत हुआ। वह गरुपल्ली के उस आदमी से शादी करना चाहती थी और उसने यह सारी कहानी गढ़ी थी। दिन के दौरान वह स्वयं, या शायद उसका कोई साथी, पहले से ही एक पत्थर या टाइल का टुकड़ा जुटाकर अपने शरीर में कहीं छिपा लेता था। शाम के भोजन से कुछ समय पहले वह उस वस्तु को अपने मुंह में डाल लेती थी और तब तक वहीं रखती थी जब तक कि वह उसे भोजन के साथ थूक न दे। इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं उसके चारों ओर जमा

हुए सभी लोगों के सामने उसकी इस चालबाज़ी का पर्दाफाश करूँगा।

मैंने उसे अपना मुंह चौड़ा खोलने को कहा। उसने वैसा ही किया। बाहर अंधेरा था, इसलिए मैं अपने साथ टॉर्च लाया था। मैंने टॉर्च की रोशनी उसके मुंह में डाली। वहां कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अचानक, बिना उसकी अनुमति लिए और उसके काटने का जोखिम उठाते हुए, मैंने अपनी तर्जनी उंगली उसकी जीभ के नीचे डाली, यह देखने के लिए कि कहीं वहां कुछ छिपा तो नहीं है। फिर मैंने उसकी गर्दन के पीछे से उसे अपने बाएं हाथ से कसकर पकड़ रखा था, ताकि मेरी खोजी उंगली उस पत्थर को ढूंढ सके जिसके बारे में मुझे पूरा यकीन था कि वह उसके मुंह में छिपा है।

लड़की का दम घुट रहा था, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उसने न तो संघर्ष किया और न ही विरोध किया। बल्कि, ऐसा लग रहा था जैसे वह सो रही हो। उसके मुंह में कुछ नहीं था और आखिरकार मैंने उसे छोड़ दिया। उसके बाद उसके मुंह का हिलना-डुलना, फूलना और मरोड़ना बंद हो गया और समय बीतता चला गया।

लगभग आधे घंटे में उसका शाम का खाना उसके सामने लाया गया। वह खाने के लिए उठी और पहला निवाला लेने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन मैंने उसे रोक दिया। मैंने उसकी माँ को बुलाया और बुढ़िया से कहा कि वह लड़की के हाथ में रखे चावल को तोड़ दे, क्योंकि मुझे लगा कि चावल या करी में कोई पत्थर छिपा हो सकता है।

लड़की ने फिर से अपना हाथ बढ़ाया, जिन दानों की हमने जाँच की थी उन्हें अपनी उंगलियों के बीच उठाया, उन्हें करी में मिलाया, उनकी एक छोटी सी गोली बनाई और उसे अपने मुँह में डाल लिया। फिर वह चबाने लगी। सब कुछ सामान्य था। मैं मन ही मन संतुष्टि से मुस्कुराया। लोमड़ी मुझे चकमा नहीं दे पाई।

अगले ही पल मैंने वह आवाज़ सुनी। लड़की के दांत उसके मुंह में किसी सख्त चीज़ से टकराए, जिससे एक कर्कश, चटकने जैसी आवाज़ आई। उसके चेहरे पर जो घोर भय का भाव था, वह बिल्कुल वास्तविक था। मैं उसकी आँखों में डर देख सकता था, सच्चा डर, बनावटी नहीं। एक दबी हुई चीख के साथ उसने उस चीज़ को थूक दिया। एक पत्थर धीमी सी आवाज़ के साथ करी और चावल से भरी मिट्टी की थाली में गिर गया।

उसी क्षण मैंने उसे मुँह खोलने के लिए चिल्लाया, अपने बाएँ हाथ से उसकी गर्दन के पिछले हिस्से को फिर से पकड़ा और अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली उसके मुँह

में डाल दी। मानो या न मानो, उसके मुँह में चावल का एक दाना या किसी भी तरह का खाना नहीं था! जो निवाला उसने अभी लिया था, वह पूरी तरह गायब हो गया था। उसकी जगह पत्थर ने ले ली थी!

अब उस लड़की के पास खाना चबाने का समय नहीं था, न ही वह उसे निगल सकती थी, क्योंकि मैं लगातार उसे ध्यान से देख रहा था। मुट्ठी भर चावल और करी निगलने के लिए मुंह, गले और अन्नप्रणाली की मांसपेशियों की स्पष्ट क्रिया आवश्यक होती है। उस समय ऐसा कुछ नहीं हुआ था। उस शाम उसने जो पत्थर थूका था, वही तीन औंस का पत्थर अब मेरे सामने है।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। अगली शाम मैंने वही दृश्य देखा। एक बार फिर मैंने लड़की के मुंह में झाँका और खाना खाते समय उसमें छिपी किसी भी चीज़ को ध्यान से ढूँढा। मानो मेरी इस मेहनत का फल मिला हो, इस बार टूटे हुए बोतल के शीशे का एक टुकड़ा, नुकीले किनारों वाला, बाहर निकला। लिखते समय भी वह मेरे सामने ही पड़ा है। मुझे नहीं पता कि टूटे हुए किनारों से उसकी जीभ और मुंह कैसे नहीं कटे। और एक बार फिर शीशा गिरने के बाद उसके मुंह में खाने का एक दाना भी नहीं बचा था। इस बार पहले से कहीं ज़्यादा भीड़ ने यह घटना देखी।

जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, इन घटनाओं की खबर दूर-दूर तक फैल गई थी, और अगली दोपहर एक वैद्य आया। वह लगभग मेरी ही उम्र का एक भारतीय था, ईसाई था और एक सरल स्वभाव का व्यक्ति था। मैं उस शाम लड़की की झोपड़ी में थोड़ा जल्दी चला गया था, क्योंकि मैं अब भी उत्सुक था और अपनी संतुष्टि के लिए इस घटना को एक बार फिर देखना चाहता था। जब मैं पहुँचा तो वह अजनबी भारतीय दरवाजे पर बैठा था। वह उठा और सौहार्दपूर्ण ढंग से मुस्कुराया। उसने धीमी आवाज़ में और त्रुटिहीन अंग्रेज़ी में अपना परिचय दिया और बताया कि वह ऊटाकामंड घूमने आया है। उसने वहाँ उस लड़की के बारे में सुना था और शाम की बस से आया था, जहाँ बस ने उसे उतारा था, वहाँ से वह जंगल के रास्ते तीन मील पैदल चलकर आया था।

अत्यंत विनम्रता से, लेकिन विचित्र आत्मविश्वास के साथ, उसने दावा किया कि ईश्वर ने उसे उपचार की शक्ति दी है और वह लड़की का उपचार करने आया है। मैं थोड़ा अचंभित रह गया और मुझे खेद है कि मैंने कुछ तीखे शब्दों में जवाब दिया।

'आपका मतलब है कि आप उसे ठीक करने की कोशिश करने आए हैं!'

'नहीं, महोदय, मैं उसका इलाज करने आया हूँ। मुझे इसी उद्देश्य से ऊटाकामुंड से आने की प्रेरणा मिली। ईश्वर कभी असफल नहीं होगा, महोदय। वह हो ही नहीं सकता।'

मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई, क्योंकि सामने वाले ने इतना सरल और आत्मविश्वास से मुझे चुप करा दिया। तभी उस अजनबी ने, जिसने अपना परिचय पुट्टास्वामी नाम से दिया था, लड़की और उसके माता-पिता से सवाल पूछना शुरू किया। थोड़ी देर में, उन दोनों ने, और वहाँ मौजूद कई लोगों ने, जिन्होंने कई बार इस घटना को देखा था, पूरी कहानी बता दी। अंत में, मैंने उसे पिछले दो दिनों के अपने अनुभव बताए।

इस समय तक लड़की को पसीना आने लगा था और उसके होंठ हिलने लगे थे। वे लक्षण जो मैंने पहले दो बार देखे थे, फिर से दिखने लगे थे। पुट्टास्वामी उसके बगल में बैठे रहे और कुछ नहीं बोले। उनकी आँखें बंद थीं और उनके होंठ हल्के से हिल रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे खुद से कुछ बुदबुदा रहे हों—शायद प्रार्थना कर रहे थे।

एक बार फिर, वैद्य की उपस्थिति की परवाह किए बिना, मैंने लड़की को अपना मुंह खोलने के लिए कहा और पहले से कहीं अधिक सावधानीपूर्वक उसकी जांच की, उसकी जीभ के नीचे, जबड़ों और गालों के बीच, हर संभव जगह उंगली से उसकी गर्दन की जांच की। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उसके मुंह में कुछ भी छिपा नहीं था।

फिर इस विचित्र नाटक का अंतिम अध्याय आया। लड़की के लिए शाम का भोजन हमेशा की तरह चावल और करी के रूप में लाया गया, क्योंकि इरिला लोग इसके अलावा कुछ और नहीं जानते थे। लड़की ने भोजन का गोला बनाया और मुंह में डालकर चबाना शुरू कर दिया। तभी पुट्टास्वामी ने अचानक सन्नाटा तोड़ दिया। एक अजीब तरह से आत्मविश्वास से भरी, ऊँची आवाज़ में, उसने पुकारा:

'नासरत के यीशु मसीह के नाम पर, तुम चाहे जो भी हो, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, उससे बाहर निकल आओ!'

लड़की के मुंह में पत्थर के टूटने और चटकने की स्पष्ट आवाज आई। वह चीखी और मिर्गी के दौरे की तरह जमीन पर लोटने लगी, अपने बाल नोचने लगी और दांत पीसने लगी। पुट्टास्वामी उसके पास घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखें अंगारों जैसी थीं और भावनाओं से नम थीं। उसने एक बार फिर रोते हुए कहा:

'नाज़रेथ के यीशु मसीह के नाम पर, उसे अभी इसी वक्त छोड़ दो!'

लड़की को ज़ोरदार ऐंठन हुई, वह पीछे की ओर झुक गई, मानो उसे टिटनेस हो गया हो। उसने खाए हुए चावल और करी को थूक दिया। उसके गले से एक भयानक चीख निकली। वह काँपी, फिर शांत हो गई। कुछ मिनट बाद वह फिर हिली। पुट्टास्वामी ने उसे धीरे से बिठाया। उसके मुँह में कोई पत्थर नहीं था—सिर्फ़ चावल और करी के कुछ दाने थे।

कोमल स्वर में, लेकिन गहरी भावना और आनंद से कांपते हुए, पुट्टास्वामी ने कहा, 'धन्यवाद, यीशु।'

वह लड़की ठीक हो गई। हम सभी को सहज रूप से यह पता था क्योंकि हम उस विचित्र और सरल व्यक्ति से निकलने वाली शक्ति को महसूस कर सकते थे।

मैंने इन्हें स्वयं देखा है और मुझे पता है कि ये सच हैं!

* * *

जिस आदमी के बारे में मैं अब आपको बताने जा रहा हूँ, वह एक डाकू था—एक चोर और नौ लोगों का हत्यारा!

कहानी कई साल पहले शुरू हुई थी। उस आदमी का नाम सेल्वराज था। पुलिस रिकॉर्ड में उसका विवरण इस प्रकार था: 'उम्र 36 वर्ष; लंबाई 5 फीट 7 इंच; औसत सांवला रंग; आमतौर पर घनी, घुमावदार मूंछें रखता था जो लगभग कनपटी तक पहुँचती थीं; उसका ऊपरी होंठ स्पष्ट रूप से उभरा हुआ था और उसकी दाहिनी आंख के कोने से लेकर दाहिने कान के लोब तक एक निशान था।'

परेशानी की शुरुआत पारिवारिक कलह से हुई। सेल्वराज के पिता का अपने पड़ोसी से झगड़ा हो गया था। पड़ोसी ने अपने रिश्तेदारों का एक गिरोह इकट्ठा किया, एक रात बुजुर्ग व्यक्ति को रास्ते में रोककर उनकी हत्या कर दी और अगली सुबह सबको सबक सिखाने के लिए शव को राजमार्ग के किनारे एक पेड़ से बांध दिया।

सेल्वराज उस समय एक नौजवान था। वह झगड़े के बारे में जानता था, लेकिन उसने खुद को इससे दूर रखने की कोशिश की थी। लेकिन अपने पिता की क्रूर हत्या उसके लिए असहनीय थी। अपने भाई और पांच अन्य लोगों की मदद से, सात बदला लेने वालों ने हत्यारों के घर पर धावा बोला और उन सभी नौ लोगों को लकड़ी काटने

वाले औजारों से काटकर मौत के घाट उतार दिया।

उसके बाद खूब हंगामा हुआ, क्योंकि सामूहिक हत्याओं का कारण और अपराधियों की पहचान सर्वविदित थी। सेल्वराज के तीन रिश्तेदार, जिन्होंने उसकी सहायता की थी, पकड़े गए, दोषी ठहराए गए और उन्हें फांसी दे दी गई। वह, उसका भाई और दो अन्य लोग छिप गए।

झगड़ा बढ़ता गया और किसी भी पक्ष ने पुलिस की मदद नहीं मांगी। मारे गए नौ लोगों के रिश्तेदार यह पता लगाने आए कि सेल्वराज, उसका भाई और बाकी दो लोग कहां छिपे हैं। हमेशा की तरह, एक महिला के कारण ही यह जानकारी लीक हुई। सेल्वराज का भाई किसी दूसरे आदमी की पत्नी के साथ रह रहा था और सेल्वराज और बाकी दो लोगों के साथ उसी के साथ रह रहा था। दुखी पति ने नौ लोगों के रिश्तेदारों को यह सूचना दे दी। वे रात में पेट्रोल लेकर आए और उस झोपड़ी में आग लगा दी जिसमें उनके दुश्मन सो रहे थे। भाई और महिला जलकर मर गए, जबकि सेल्वराज और उसके दोनों साथी बच निकले।

पुलिस फिर आई, बदला लेने वालों को गिरफ्तार किया और उनमें से दो को दोषी ठहराकर फांसी दे दी। अब दोनों पक्ष पुलिस के डर से जंगल में छिप गए थे और एक-दूसरे का खून करने के लिए बेताब थे।

अपनी सारी संपत्ति, जमीन और आजीविका खो देने के बाद, सेल्वराज को किसी तरह जीना ही था। वह किसी भी कस्बे में ईमानदारी से कमाई नहीं कर सकता था क्योंकि पुलिस उसे देखते ही गिरफ्तार कर लेती थी, इसलिए मजबूरी में उसे डकैती का रास्ता अपनाना पड़ा, लेकिन उसने इसे भी सम्मानजनक तरीके से करने की कोशिश की, अगर अपराध के साथ इस शब्द को जोड़ा जा सकता है।

सेल्वराज एक डाकू बन गया, दक्षिण भारत का एक तरह का रॉबिन हुड। वह अमीरों को लूटकर गरीबों का पेट भरता था। जमींदार, धनी व्यापारी, दुकानदार और संपन्न व्यापारी उसके शिकार होते थे, लेकिन वह अपनी लूटी हुई रकम का केवल एक हिस्सा अपने गुजारे के लिए रखता था। बाकी वह अपंगों, गरीबों, बीमारों और जरूरतमंदों को दे देता था। दरअसल, उसके प्रति लोगों की राय इतनी बंटी हुई थी कि अधिकांश लोग, जिनमें किसान और गरीब रैयत भी शामिल थे, उससे प्यार और सम्मान करते थे। वहीं, अमीरों का छोटा सा समूह, और ज़ाहिर है, पुलिस, उससे बेहद डरते और नफरत करते थे।

लगभग इसी समय सेल्वराज को एक उपनाम मिलने लगा। उसका ऊपरी होंठ उभरा हुआ था और उसे 'मम्प्टीवयन' के नाम से जाना जाने लगा, जिसका अर्थ है 'मम्प्टी जैसे मुंह वाला आदमी'। मम्प्टी स्थानीय भाषा में फावड़े को कहते हैं। वह पूरी तरह से जंगल में रहता था और उसका इलाका कावेरी नदी के किनारे से लेकर कोललेगल जिले के पूर्वी भाग, सलेम जिले, डोड्डाहल्ला या सीक्रेट नदी और पहाड़ों को पार करते हुए चिनार नदी और पेन्नाग्राम कस्बे के बाहरी इलाके तक कई मील तक फैला हुआ था।

वह स्कारलेट पिम्परनेल की तरह प्रकट होता और गायब हो जाता था, और अधिकारी उसे कभी पकड़ नहीं पाए। उत्तर भारत के राजस्थान की चंबल घाटी के दुर्गम इलाकों में आतंक मचाने वाले कुख्यात डाकू मान सिंह की तरह, दक्षिण भारत में मुम्पत्यवयन भी वन क्षेत्रों और उनके सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले गरीबों का उतना ही प्रिय था। अधिकारी कभी उसके ठिकाने के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं कर सके और उसे पकड़ नहीं पाए। दूसरी ओर, जब पुलिस समय-समय पर उसे पकड़ने के लिए जंगलों में सशस्त्र दस्ते भेजती थी, तो लोग उसे पुलिस की गतिविधियों की सूचना दे देते थे।

मुम्पत्यावयन का तरीका सीधा-सादा था। वह अपने कई मुखबिरों से जमींदारों और व्यापारियों की आय के स्रोतों के बारे में जानकारी जुटाता था। फिर वह रहस्यमय तरीके से आधी रात को इन रईसों के घरों में पहुँचता, उन्हें चाकू और बंदूक से धमकाता और जान बचाने के लिए उनसे जल्दबाजी में ली गई बड़ी रकम लेकर भाग जाता था।

उसका एक और काम लकड़ी चोरों से पैसे वसूलना था। आधी रात को ये चोर ट्रक और मजदूरों का एक गिरोह लेकर जंगल के किसी सुनसान कोने में आते, पेड़ काटते, उसे टुकड़ों में बांटते, लकड़ी को अपने वाहनों में लादते और भोर होने से पहले गायब हो जाते। लेकिन ठीक अहम मौके पर, जब इंजन चालू किया जा रहा होता, मुम्प्टीवयान ड्राइवर के केबिन में प्रकट होता, अंदर बैठे लोगों पर बंदूक ताने हुए, और चुप रहने के बदले पचास रुपये मांगता। हमेशा, रकम चुका दी जाती थी।

लेकिन एक बार उस चालाक ड्राइवर ने गियर बदलकर भागने की कोशिश की। मुम्प्टीवायन ने उस आदमी पर गोली नहीं चलाई; उसने ट्रक के दोनों पिछले टायरों पर एक के बाद एक गोली चलाई। इसके बाद ड्राइवर ने पैसे दे दिए। उसका धंधा भी ठप

हो गया, क्योंकि ट्रक में सिर्फ एक ही स्पेयर व्हील था। शहर जाकर दूसरा स्पेयर व्हील लाने से पहले ही सुबह हो गई। शिकारियों ने ट्रक से सारा सामान उतारकर चुराई हुई लकड़ी छिपाने की कोशिश की, लेकिन वे पकड़े गए, गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए और ट्रक जब्त कर लिया गया। खैर, हर टायर की कीमत 600 रुपये थी और डाकू ने सिर्फ 50 रुपये मांगे थे। इस घटना के बाद मुम्प्टीवायन का काफी मान-सम्मान बढ़ गया, जबकि शिकारी को मुम्प्टीवायन की वाजिब मांग ठुकराने का बहुत पछतावा हुआ।

पुलिस को मिली रिपोर्टों के आधार पर यह अनुमान लगाया गया कि मुम्प्टीवयान औसतन प्रति वर्ष 25,000 रुपये लूट से कमाता था, लेकिन यह आंकड़ा दोगुना हो सकता है क्योंकि इसमें वह राशि भी शामिल है जो उसने लूटी थी लेकिन पुलिस को सूचित नहीं की थी। मुम्प्टीवयान इतना चतुर था कि उसने कई ऐसे लोगों को लूटा जिनकी गतिविधियां ऐसी थीं कि उनके लिए पुलिस सहायता मांगना असुविधाजनक, या लगभग असंभव था।

वह हमेशा अकेले ही काम करता था, क्योंकि वह बड़ी समझदारी से काम लेते हुए सहयोगियों पर भरोसा नहीं करता था। उसकी सामान्य पोशाक खाकी कमीज, कुछ हद तक फटी हुई खाकी शॉर्ट्स, कमर पर एक बेल्ट थी जिस पर बाईं ओर एक बड़ा चाकू और दाईं ओर एक खंजर बंधा होता था, कंधे पर कारतूस बेल्ट होती थी जिसमें घर में भरी हुई 12 बोर की गोलियां और छर्रे दोनों होते थे, साथ ही वह एक पुरानी लेकिन अच्छी तरह से रखी हुई हानिरहित .12 बोर की गेको बंदूक रखता था जो उसने चुराई थी। कभी-कभी वह वन रक्षक की वर्दी का दिखावा करने के लिए हरी पगड़ी पहनता था, लेकिन आमतौर पर वह बिना सिर ढके रहता था।

मुम्प्टीवयान महिलाओं के प्रति असाधारण रूप से विनम्र था, और दुर्भाग्यवश स्वयं के लिए, वह उनके प्रति कुछ अधिक ही आसक्त था। उसकी कानूनी पत्नी मेचेरी गाँव में रहती थी, जो मेट्टूर बांध से दस मील दूर था, और जंगल में उसकी कई रखैलें घूमती रहती थीं, फिर भी वह उसे कभी नहीं भूला। छह महीने तक पुलिस ने मेचेरी स्थित पत्नी के घर पर नज़र रखी, फिर भी पति उससे मिलने जाता रहा। एक बार वह महिला के वेश में, पूरे शरीर को ढके हुए आया; पुलिस को इसके बारे में उसके जाने के बाद ही पता चला।

एक महीने बाद एक और दबी हुई आकृति दिखाई दी। पुलिस ने उस पर झपट्टा

मारा, उसे नीचे गिरा दिया और उसके हाथों और पैरों में हथकड़ी लगा दी। लेकिन उनकी निराशा और मज़ाक उड़ाने के लिए आए सभी ग्रामीणों के खुलेआम उपहास के बीच, यह आकृति एक असली महिला निकली। उसने पुलिस को गालियां दीं, लेकिन साथ ही चौड़ी मुस्कान के साथ यह भी स्वीकार किया कि मुम्प्टीवयान ने उसे पुलिस का मज़ाक उड़ाने के लिए भेजा था।

इस घटना से आवारा डाकू का आत्मविश्वास और बढ़ गया और उसने कानून-व्यवस्था के रखवालों को तुच्छ समझा। रातों-रात पुलिस स्टेशन के गेट पर डाकू के हस्ताक्षर वाला एक नोटिस लगा, जिसमें उसने एक हफ्ते पहले ही बता दिया था कि वह एक खास दिन उसी गांव में आएगा। दो गाड़ियां, जिनमें कांस्टेबल भरे हुए थे, मेचेरी भेजी गईं और सभी को आदेश दिया गया कि वे उस बदमाश का हुलिया रट लें ताकि उसे देखते ही पहचान सकें।

विवरण से मेल खाने वाला कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं आया, लेकिन दोपहर के भोजन के समय एक परेशान करने वाला भिखारी, जिसके सिर और चेहरे पर एक भी बाल नहीं था और जो एक दुर्घटना में अपनी दाहिनी आँख खो बैठा था, पुलिस स्टेशन में आ पहुँचा और बरामदे में बैठकर भोजन कर रहे पुलिसकर्मियों से भोजन की भीख माँगने लगा। एक-दो दयालु पुलिसकर्मियों ने उसे मुट्ठी भर चावल दे दिए, लेकिन बाकी पुलिसकर्मियों ने उसे निर्दयतापूर्वक बाहर निकाल दिया।

बाद में उन्हें पता चला कि उनमें से एक का छोटा एल्युमिनियम का टिफिन बैग गायब है। भिखारी ने ही उसे लिया होगा—क्योंकि सभी भिखारी चोर होते हैं! दो दिन बाद, भोर होते ही, नींद से भरी आँखों वाले एक पुलिसकर्मी को थाने के गेट पर टिफिन बैग मिला। उसके अंदर मुम्प्टीवयान का एक नोट था जिसमें उसने बैग उधार देने के लिए मालिक को धन्यवाद दिया था।

इस घटना से बेहद क्रोधित होकर, अधिकारियों ने कथित तौर पर लगभग 300 सशस्त्र पुलिसकर्मियों को पचास-पचास के समूहों में जंगलों में भेजा ताकि डाकू को जिंदा या मुर्दा पकड़ लिया जाए। उन्हें विशेष रूप से सतर्क रहने का निर्देश दिया गया था क्योंकि टिफिन ले जाने वाली घटना के तुरंत बाद, उस बदमाश ने एक जमींदार के घर से राइफल चुरा ली थी, जिसके घर पर उसने छापा मारा था। हालांकि, उस हथियार में गोलियां नहीं थीं और यह आशंका थी कि डाकू गोलियां जुटाने में सक्षम नहीं होगा।

जब पुलिस जंगल में उसकी तलाश कर रही थी, मुम्प्टीवायन कस्बे में आया और पेन्नाग्राम नामक बड़े गाँव में आए एक चलते-फिरते सिनेमाघर में गया। उसने आधा शो खत्म होने तक देखा, फिर बॉक्स ऑफिस गया और कैशियर से शाम की सारी कमाई चुरा ली। कैशियर ने गिड़गिड़ाते हुए कहा कि अगर वह टिकट बेचने गया तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा और जेल भेज दिया जाएगा, क्योंकि मैनेजमेंट कहेगा कि उसने खुद पैसे लेने के लिए यह झूठी कहानी गढ़ी है। तो उस बहादुर डाकू ने उसकी बात समझकर जल्दी से एक नोट लिखकर प्रमाणित कर दिया कि पैसे उसने, मुम्प्टीवायन ने लिए हैं, कैशियर ने नहीं। उसने कैशियर को कमाई में से पाँच रुपये का नोट भी दिया ताकि वह होटल में अच्छा खाना खा सके, इससे पहले कि चोरी की खबर मालिक तक पहुँचे और मुसीबत शुरू हो जाए।

अगली ही सुबह वह ग्यारह मील दूर स्थित उत्तैमलाई गाँव की सबसे बड़ी दुकान पर गया और दुकानदार से तिरसठ रुपये लूट लिए। उस समय उसने गले से लेकर कानों तक लिपटा हुआ काला मफलर और एक ओवरकोट पहना हुआ था, जिसके नीचे से उसने दो सीधी दोधारी कटारें निकालीं और दुकानदार को डराकर चुप करा दिया।

इसी समय एक जेल गार्ड, जिसका गृह नगर भी पेन्नाग्राम गाँव ही था, लेकिन जो सलेम शहर की जेल में काम करता था, को बर्खास्त कर दिया गया। वह बहुत असंतुष्ट होकर पेन्नाग्राम स्थित अपने घर लौटा और वहाँ उसे मुम्प्टीवयान के हालिया कारनामों और पुलिस द्वारा उसे पकड़ने की उत्सुकता के बारे में पता चला। इस पूर्व गार्ड के मन में विचार आया कि थोड़ी चालाकी से वह डाकू को ढूँढ़कर उसका विश्वास जीत सकता है; फिर वह पुलिस के पास जाकर पहले से ही सौदा कर सकता है। उसे सलेम जेल में उसकी पुरानी नौकरी पर बहाल करने का वादा करना होगा, जिसके बदले में वह डाकू को विधिवत हथकड़ी लगाकर पुलिस के हवाले कर देगा।

पूर्व जेलर ने बड़ी चतुराई से अपनी योजना को अंजाम दिया। उसने यह जताने की कोशिश की कि वह एक पीड़ित व्यक्ति है जो डकैत के लिए काम करना चाहता है और उसे सलेम शहर के अमीर जमींदारों और व्यापारियों से आसानी से पैसा कमाने के स्थानों की जानकारी देना चाहता है। यह खबर कुछ समय बाद मुम्प्टीवायन तक पहुँच गई और डकैत उसकी कहानी में आ गया। उसने एक एजेंट के माध्यम से उस व्यक्ति से संपर्क किया और उससे प्रारंभिक बातचीत की। तय हुआ कि वे अगली रात

दस बजे पेन्नाग्राम से लगभग आठ मील दूर पानापत्ती के मवेशी बाड़े के पास एक गुप्त स्थान पर एक पेड़ के नीचे फिर से मिलेंगे और समझौता करेंगे। उस व्यक्ति ने तुरंत पेन्नाग्राम पुलिस को सूचित किया, जिन्होंने अगले दिन रात 10:30 बजे उस स्थान पर छापा मारने की योजना बनाई, तब तक डकैत को अच्छी तरह से जंजीरों में जकड़ दिया जाना था। पुलिस ने यह भी वादा किया कि मुखबिर को सलेम में जेलर के पद पर बहाल कर दिया जाएगा।

अगली रात ठीक 10 बजे दोनों आदमी मिले और बातचीत करने बैठ गए। दुर्भाग्य से, पूर्व जेलर कुछ लापरवाह था और पुलिस द्वारा उधार दी गई हथकड़ियों को जमीन पर बैठते समय एक पत्थर से टकराने दिया। मुम्प्टीवयान के तेज कानों ने वह आवाज सुन ली और उसे शक हो गया।

'तुम्हारे पास ऐसा क्या है जो लोहे जैसा लगता है, भाई?' उसने पूछा।

'यह,' पूर्व जेलर ने जवाब दिया और यह समझते हुए कि खेल खत्म हो गया है, तुरंत डाकू पर झपट पड़ा। दोनों ही हट्टे-कट्टे और ताकतवर थे और दोनों के बीच खामोशी से भयंकर लड़ाई लड़ी गई, न तो कोई पक्ष दया दिखा रहा था और न ही कोई दया जता रहा था, वे जमीन पर जानवरों की तरह संघर्ष कर रहे थे।

फिर, उसी शाम दूसरी बार, ज़मीन पर पड़े पत्थर ने मुम्प्त्यवयन की मदद की। पूर्व जेलर उसके ऊपर बैठा उसे गला घोंटकर जान से मारने की कोशिश कर रहा था, तभी डाकू को अपनी बगल में पत्थर चुभने का एहसास हुआ। मुम्प्त्यवयन ने उसे अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी में पकड़ा और अपने दुश्मन के सिर पर दे मारा। पल भर के लिए अचेत होकर पूर्व जेलर नीचे गिर गया और डाकू उसके ऊपर चढ़ गया। एक बार फिर संघर्ष शुरू हुआ, लेकिन इस बार मुम्प्त्यवयन ने अपना खंजर निकाल लिया था। जैसे ही उसका दुश्मन फिर से उससे भिड़ने के लिए उठा, तेज धार वाले हथियार के एक झटके से उसकी तीन उंगलियां कट गईं। वह दर्द से चीख उठा, यह समझते हुए कि डाकू गुस्से में आकर उसकी धोखेबाजी के लिए उसे मार डालेगा। उसने दया की भीख मांगी और अपने किए पर खेद व्यक्त किया।

तभी मुम्प्टीवयान को पास आती पुलिस वैन की आवाज़ सुनाई दी। वह जंगल के अंधेरे में गायब हो गया, और भावी पुलिस एजेंट को ज़मीन पर लोटते हुए छोड़ गया, जो अपने घायल हाथ से बहते खून को रोकने की कोशिश कर रहा था।

इस घटना के बाद डाकू थोड़ा सतर्क हो गया। वह तीन-चार महीने तक जंगलों से

गायब रहा और धर्मपुरी और कृष्णागिरी कस्बों में उसके बारे में सुना गया, जहाँ उसने छोटी-मोटी दुकानों और लोगों को लूटा। उसने धर्मपुरी से तीन मील दूर एक कार के मालिक से दूरबीन भी चुरा ली। फिर मुम्प्तिवायन अपने पुराने ठिकानों पर लौट आया, और उसकी वापसी का तरीका नाटकीय था।

पुलिस अधीक्षक और उनका परिवार रविवार को कावेरी नदी पर स्थित होगेनैकल जलप्रपात पर पिकनिक मनाने और जलप्रपात में स्नान करने गए थे। उन्होंने अपनी जीप जलप्रपात से कुछ सौ गज की दूरी पर खड़ी की थी। स्नान करने के बाद, उन्होंने पिकनिक का भोजन किया और जब वे वापस जीप के पास लौटे तो पाया कि वहां छोड़ा गया कैमरा चोरी हो गया था। जीप के भूरे रंग पर चाक से पांच अलग-अलग जगहों पर तमिल भाषा में ये शब्द लिखे हुए थे: 'डाकुओं का राजा, म्यम्प्तिवायन!'

इन इलाकों में समय-समय पर आने-जाने के दौरान मैंने मुम्प्टीवयान और उसके कारनामों की कई कहानियाँ सुनी थीं। उसके शुरुआती किस्से सुनकर मुझे उससे सहानुभूति हुई, लेकिन जब मुझे उसके साधारण कारनामों और चोरियों के बारे में पता चला तो यह सहानुभूति काफी हद तक खत्म हो गई। तब मैंने उसे एक सरासर बदमाश समझा। लेकिन जब पुलिस से उसकी हिम्मत, हास्यबोध और अदम्य साहस के बारे में सुना, तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं उसके व्यक्तित्व से आकर्षित हो गया और उससे मिलने की तीव्र इच्छा हुई।

एक दिन मैं अपने कुछ दोस्तों को होगेनैकल में मछली पकड़ने के लिए ले गया और वहाँ मैंने देखा कि उस शांत और सुस्त गाँव में बहुत हलचल मची हुई थी। मुम्प्टीवयान ने एक बार फिर, और नाटकीय ढंग से हमला किया था।

लगभग इसी समय मद्रास राज्य सरकार के एक इंजीनियर को जलप्रपात के ऊपर नदी पर बांध निर्माण की संभावना तलाशने का काम सौंपा गया था, और हर तरह का सर्वेक्षण कार्य चल रहा था। बांध के निर्माण की योजना वाले स्थान से ठीक एक मील ऊपर, एक शिविर स्थल बनाया गया था और सौ से अधिक मजदूर सड़क बनाने, गड्ढे खोदने और सर्वेक्षण कार्य में मदद करने में लगे हुए थे। इंजीनियर और उनके साथियों के लिए एक शेड बनाया गया था। एक वेतन केंद्र स्थापित किया गया था, और एक क्लर्क हर सप्ताह के अंत में मजदूरों को वेतन देने आता था।

ठीक दो दिन पहले मुम्प्टीवायन ने भी ऐसा ही किया था और उसने वेतन क्लर्क

को अगले सप्ताह के वेतन से 350 रुपये की कटौती कर दी थी, जबकि उसने पिछले सप्ताह के वेतन का एक आना भी नहीं छुआ था, जो मजदूरों को दिया जाने वाला था।

अपने इस कारनामे से संतुष्ट न होकर, उसने पास के ही एक मील दूर स्थित उत्तमलाई गाँव में मत्स्य निरीक्षक के क्वार्टर का दरवाजा खटखटाया और बताया कि वह वन रक्षक है और उसे मछली चोरों की मौजूदगी की अत्यावश्यक खबर मिली है। निरीक्षक ने दरवाजा खोला तो उसे मुम्प्तिवायन मिला, लेकिन वहाँ कोई वन रक्षक नहीं था। पलक झपकते ही डाकू अंदर घुस गया और सामने का दरवाजा बंद कर दिया। फिर, हमेशा की तरह अपने दो धारदार खंजर निकालकर उसने अधिकारी को धमकाया। सौभाग्य से उस समय घर में केवल 51 रुपये थे और ये सारे रुपये डाकू को दे दिए गए।

मैं मत्स्य निरीक्षक से मिला, और फिर इंजीनियर से, जिसने मुझे वेतन क्लर्क से बात करने की अनुमति दी, और उन्होंने उन कहानियों की पुष्टि की जो मैंने सुनी थीं।

लेकिन उस समय मेरी चिंता डाकू के कारनामों से ज़्यादा बांध को लेकर थी। यहाँ बांध बनने का मतलब था हज़ारों एकड़ जंगल का जलमग्न होकर नष्ट हो जाना। बांध के बाद कर्मचारियों के लिए क्वार्टर और बस्ती का निर्माण करना पड़ता। उत्तमलाई का पूरा गाँव, जिसमें मेरी वह छोटी सी झोपड़ी भी शामिल थी जिसे मैंने बीस साल से ज़्यादा समय से वहाँ बनाया और अपना रखा था, पानी में डूब जाता।

मैंने इंजीनियर से इन सब बातों के बारे में पूछा और उन्होंने बड़ी विनम्रता से मुझे अपनी जीप में घुमाने और निर्माण कार्य शुरू होने की सही जगह दिखाने की पेशकश की। मैंने उनका निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया। तभी एक तीसरा व्यक्ति हमारे साथ शामिल हुआ, जिसके हाथ में पहली नज़र में एक सर्विस राइफल जैसी कोई चीज़ थी। वह सिर ढके हुए था, कमर पर सफेद धोती और उसके ऊपर खाकी कमीज़ लटकी हुई थी। उसके पैरों में बिना मोज़े के बड़े-बड़े गोला-बारूद के बूट थे।

जैसे ही हम आगे बढ़े, मैंने इंजीनियर से पूछा कि वह हथियारबंद आदमी कौन हो सकता है। वह मुस्कुराया और बोला कि वह एक पुलिस गार्ड है जिसे जंगल में जाते समय उसके साथ भेजा जाता है, क्योंकि आम धारणा यह थी कि अगर उसे पकड़ा नहीं गया और फिरौती नहीं मांगी गई, तो डाकू उसे निश्चित रूप से लूट लेंगे। दरअसल, मेरा दोस्त इस स्थिति का आनंद ले रहा था।

कुछ ही देर में हम प्रस्तावित बांध स्थल पर पहुँच गए, उतरे और साथ में नदी

किनारे घूमने लगे। हमारे पीछे-पीछे हथियारबंद पुलिसकर्मी भी चल रहा था, जो अपने बड़े-बड़े बूटों से नदी के पत्थरों पर ज़ोर से पैर पटक रहा था या उन्हें नरम रेत में घसीट रहा था। इंजीनियर को आँख मारते हुए मैंने पुलिसकर्मी से बातचीत शुरू की और उससे डाकू के बारे में पूछा। उस आदमी ने जल्द ही अपने मन की बात कह दी। उसने माना कि वह सरकारी कर्मचारी है, लेकिन सरकार मूर्खों से भरी है। ज़रा सोचिए, उसे अकेले ही, उसके हाथों में मौजूद उस हास्यास्पद हथियार के साथ, इंजीनियर जैसे इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति की मुम्प्टीवयान जैसे कुख्यात व्यक्ति से रक्षा करने का जिम्मा सौंपा गया है!

मैंने पूछा कि राइफल में क्या खराबी है। पुलिसकर्मी ने तिरस्कार से थूका, अपने कंधे से हथियार उतारा और मुझे बड़े ही घृणापूर्वक थमा दिया।

उन्होंने जोर देकर कहा, 'यह बिल्कुल भी राइफल नहीं है, हालांकि इसे राइफल की तरह बनाया गया है। यह सिर्फ एक बंदूक है।'

मैंने उससे हथियार छीन लिया और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह केवल एक .410 शॉटगन थी, जिस पर लकड़ी का खोल लगाकर उसे .303 सर्विस राइफल जैसा दिखाने की कोशिश की गई थी। फिर पुलिसकर्मी ने अपनी बेल्ट पर लगी चमड़े की थैली खोली और मुझे हथियार के लिए दस गोलियां दिखाईं। वे केवल .410 कारतूस थे।

'इस मामूली सी बंदूक से,' उसने कड़वाहट भरे स्वर में कहा, 'सरकार मुझसे उम्मीद करती है कि मैं इस महान व्यक्ति की रक्षा करूं और इस बदमाश मुम्प्टीवयान को निशानेबाजी में मात दूं, जो कि एक कुशल निशानेबाज है, जैसा कि सभी जानते हैं।'

'इसके अलावा,' वह आगे बोला, 'ये गोलियां पचास गज से ज्यादा दूर तक नहीं जा पाएंगी। मुम्प्टी को बस साठ गज दूर किसी चट्टान पर बैठकर मुझ पर हंसना है, और मैं कुछ नहीं कर सकता। वहां से वो मुझे और इंजीनियर साहब को, छलनी की तरह छेदों से भरे हुए, मार सकता है। छी! छी!' और उसने फिर से गुस्से से थूका।

मैंने गंभीर चेहरा बनाए रखते हुए पूछा, 'तो फिर तुम क्या करोगे, मेरे दोस्त, अगर मम्प्टी अचानक उस चट्टान या पेड़ के पीछे से प्रकट हो जाए?'

चौंककर पुलिसकर्मी ने भयभीत होकर लगभग पचहत्तर गज दूर स्थित विशाल चट्टान और उसके पीछे फैले वृक्षों के समूह की ओर देखा। फिर आत्मविश्वास से भर

कर उसने हम दोनों से बात की।

'महोदय, मैं एक परिवार वाला आदमी हूँ। मेरी पत्नी और छह बच्चे हैं, जिनमें सबसे छोटा अभी शिशु है। अगर यह कमीना मुझे मार डालेगा तो उन्हें कौन खिलाएगा? मुझे क्षमा करें, महोदय; लेकिन अगर वह अभी इसी वक्त प्रकट हुआ तो मैं यह खिलौना बंदूक नीचे रख दूंगा और भाग जाऊंगा।'

जब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो हमने उसकी शर्मिंदगी कम करने के लिए हँसी उड़ाई, और मैंने कहा, 'कृपया सभी को बता दें कि इस मुम्प्टीवयान नाम के व्यक्ति को एंडरसन डोराई किसी दिन उससे मिलने के लिए उत्सुक हैं।'

इस घटना के तीन-चार महीने बाद, मैं चिनार नदी के किनारे स्थित अपनी बारह एकड़ ज़मीन पर कुछ दिनों के लिए डेरा डालने गया। यह ज़मीन होगेनैकल में कावेरी नदी से मिलने के स्थान से बारह मील ऊपर की ओर स्थित थी। मैंने अपने पुराने मित्र और शिकारी रंगा को, जिसका ज़िक्र मैंने अन्य कहानियों में किया है, इस ज़मीन पर रहने और खेती करने की अनुमति दी थी। अपनी आदत के अनुसार, उसने मुझे ज़मीन के एक कोने पर बनी अपनी झोपड़ी में उसके साथ समय बिताने के लिए प्रेरित किया, बजाय इसके कि मैं अपने साथ लाया हुआ तंबू, जिसमें मैं आमतौर पर रहता था, किसी दूसरी जगह पर लगाऊं।

'तो, यहाँ एक खतरनाक हाथी घूम रहा है, डोराई,' उसने आग्रह किया। 'यह कभी-कभी रात में इधर-उधर घूमता है। तुम्हारा तंबू देखकर, हो सकता है कि तुम्हारे जागने से पहले ही वह उसे रौंद डाले।'

'बुरा हाथी?' मैंने पूछा। 'कितनी अजीब बात है! वन विभाग ने मुझे ऐसे किसी प्राणी के बारे में नहीं बताया।'

ग्रीष्म ऋतु का मध्य था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था और जंगल घने जंगल जैसा लग रहा था। चिनार नदी में पानी की एक बूंद भी नहीं थी। यह हाथी के दिखने का उपयुक्त समय नहीं था। हाथी कावेरी नदी के किनारों पर ही रहते थे, जो कई मील तक पानी मिलने का एकमात्र स्थान था।

'क्या आपको पूरा यकीन है?' मैंने फिर पूछा, और मेरे लहजे में संदेह झलक रहा था।

रंगा ने मेरी निगाहें मिलाने से बचने की कोशिश की। फिर वह फुसफुसाते हुए बोला, 'मुम्प्टीवायन यहाँ है,' उसने बताया। 'वह कल रात चांदनी में मेरी कुटिया में

आया था और मुझसे बात की थी। मैं उसे जानता हूँ, और अगर तुम मेरे साथ रहोगी, दोराई, तो वह तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा। लेकिन अगर तुम अकेले रहोगी—तो कौन जाने? वह तुम्हें लूट सकता है! वह तुम्हें मार भी सकता है! कौन कह सकता है?'

'यह तो बहुत ही शानदार है!' मैंने उत्साह से कहा। 'मैं इस शख्स से बहुत दिनों से मिलना चाहता था। बस आप जाइए और उनसे कहिए कि वे आज रात मेरे तम्बू में आ जाएं। मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।'

रंगा ने आश्चर्य और आक्रोश का दिखावा किया। उसने पूछा, 'मैं ऐसा क्यों करूँ? क्या मैं किसी डाकू का दोस्त हूँ?'

मैंने पुष्टि करते हुए कहा, 'तुम बिल्कुल वही हो। लेकिन चिंता मत करो, मैं किसी को नहीं बताऊंगा।'

तो हमने अपना तंबू ज़मीन के उस कोने पर लगाया जहाँ मैं अक्सर डेरा डालता था। उस रात, लगभग 10 बजे तक, मैंने अलाव के पास रंगा से काफी देर तक बातें कीं और फिर सो गया, जबकि वह ज़मीन के दूसरे छोर पर अपनी झोपड़ी में वापस चला गया। मुझे याद है कि मैंने लालटेन जलती नहीं छोड़ी, क्योंकि उससे मच्छर आकर्षित होते हैं, जो उस इलाके में बहुत ज़्यादा हैं। चाँदनी से सब कुछ लगभग दिन के उजाले जैसा लग रहा था, और मैं लगभग एक चौथाई मील दूर पेड़ों की घनी पट्टी को साफ देख पा रहा था, जो चिनार नदी के मार्ग को दर्शाती थी। मैं डाकू के बारे में सोचते-सोचते सो गया।

अचानक मेरी नींद खुल गई। किसी आवाज़ ने मुझे परेशान नहीं किया था, लेकिन मैं जानता था कि अब मैं अकेला नहीं हूँ। एक आदमी मेरे तंबू के प्रवेश द्वार पर खड़ा था, चाँदनी से सिर से पैर तक जगमगा रहा था। दोनों हाथों से उसने कमर तक एक शॉटगन पकड़ रखी थी, जो सीधे मेरी ओर तनी हुई थी। फटी हुई शॉर्ट्स के ऊपर एक खाकी कमीज़ लटकी हुई थी, और आदमी की कमर पर दो लंबे, खतरनाक दिखने वाले खंजर बंधे थे, एक-एक दोनों कूल्हों पर। एक कंधे से तिरछी एक कारतूस बेल्ट बंधी थी, .12 गेज की गोलियों के पीतल के सिरे चाँदनी में चमक रहे थे। दूसरे कंधे पर चमड़े के डिब्बे में एक दूरबीन लटकी हुई थी! उसके सिर पर एक दुपट्टा पगड़ी की तरह लिपटा हुआ था, लेकिन मैं उसकी विशाल काली मूंछें देख सकता था जो ऊपर की ओर उसके कनपटी तक मुड़ी हुई थीं। उसके पैरों में भूरे रंग के रबर के तले वाले जूते थे।

मैंने पलकें झपकाईं और अपनी आँखें मलीं, लेकिन वह अभी भी वहीं था। मेरी घड़ी में ठीक 2 बज रहे थे।

मैं उठ बैठा और खुशी से बोला: 'स्वागत है मुम्प्टीवयान! मैं आपसे बहुत समय से बात करना चाहता था।'

'यह बात करने का समय नहीं है, गोरे आदमी। मैं गंभीर हूं।' उसने कठोर स्वर में, अड़ियल तरीके से कहा। 'भागने या चिल्लाने की कोशिश मत करना, वरना मैं तुम्हें मार डालूंगा। बस अपने तंबू से बाहर आओ और चांदनी रात में यहीं खड़े हो जाओ, जहां से मैं तुम पर नज़र रख सकूं, और तुम्हारी राइफल, बंदूक और पैसे इकट्ठा कर लूं। मुझे तीनों चाहिए।'

मुझे निराशा हुई। मैं इस व्यक्ति से मिलने के लिए उत्सुक था, लेकिन हमारी मुलाकात वैसी सुखद नहीं होने वाली थी जैसी मैंने उम्मीद की थी। खैर, अगर वह ऐसा चाहता है, तो ठीक है।

'मम्प्टीवायन,' मैंने अपनी जगह से हिले बिना सख्ती से जवाब दिया, 'मैं आपसे मिलने और एक मित्र के रूप में बात करने के लिए उत्सुक था। मैंने आपके कारनामों के बारे में सुना है और मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने उनमें से कुछ की प्रशंसा की, लेकिन सभी की नहीं। कम से कम, मुझे लगा कि आप एक बहादुर आदमी हैं। अब मैं निराश हूँ—बहुत निराश। क्योंकि आप एक कायर, शेखीबाज़ और धोखेबाज़ हैं!'

वह आदमी गुस्से से घुट रहा था। 'मुझे ज्यादा उकसाओ मत, गोरे आदमी,' उसने फुफकारते हुए कहा, 'वरना—।'

'देखो, मम्प्टी,' मैंने दृढ़ता से बीच में टोकते हुए कहा, लेकिन मेरा दिल धड़क रहा था। 'तुम बच नहीं सकते। तुम जानते हो। तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम झूठ बोल रहे हो। क्योंकि तुम मुझे गोली मारने की हिम्मत नहीं कर सकते! वैसे भी, तुम्हारे सिर पर इनाम बहुत भारी है। अगर तुम किसी गोरे आदमी को लूटने के लिए मारोगे, तो सरकार तुम्हारे ऊपर बहुत सख्ती से कार्रवाई करेगी। वे पलटनवालों को यहाँ भेजेंगे। वे जंगल के हर कोने को छान मारेंगे जब तक कि तुम्हें सियार की तरह ढूंढ न लें। फिर वे तुम्हें चूहे की तरह मार डालेंगे! इसके अलावा, मैं तुम्हारा दोस्त बनना चाहता था। मैं तुमसे मिलने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। कितना अफसोस है कि सब कुछ इस तरह खत्म हुआ।'

यह एक तरह का छल था। मेरी तरफ से भी और उसकी तरफ से भी। फिर भी,

मेरे दिल में डर बैठ गया। इस आदमी ने पहले ही कई लोगों का कत्ल किया था। क्या वह मुझे कुत्ते की तरह गोली मार देगा? शायद अपने किसी बड़े चाकू से मुझे मार डालेगा? मैं देख सकता था कि वह बहुत ही तगड़ा आदमी था।

उसे पता था कि मैं झूठ बोल रहा हूँ, लेकिन मुझे यह पक्का नहीं पता था कि वह कितना झूठ बोल रहा है। काश मुझे पता होता। उसने मुझे ज़रूरत से ज़्यादा आँका, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि मुझे भी यकीन है कि वह झूठ बोल रहा है, और अगले ही पल उसके हाव-भाव ने इस बात की पुष्टि कर दी।

मुम्प्टीवयान ने अपनी बंदूक का बट ज़मीन पर टिकाया और उस पर झुक गया। फिर उसने बदली हुई आवाज़ में कहा:

'दोराई, तुम सचमुच एक अजीब आदमी हो, और पहले ऐसे व्यक्ति हो जिसने दया की भीख नहीं मांगी। बिल्कुल मेरे जैसे। क्या तुम मुझे वचन दे सकते हो कि तुम मुझे गिरफ्तार करने या नुकसान पहुंचाने की कोशिश नहीं करोगे? क्या तुम वादा करोगे कि तुम किसी को नहीं बताओगे, यहां तक कि हमारे दोस्त रंगा को भी नहीं, कि हम आज रात मिले थे?'

'मैं वादा करता हूँ, पूरी खुशी से, मम्प्टी,' मैंने सचमुच राहत महसूस करते हुए कहा और उठकर चांदनी रात में बाहर चला गया। 'चलिए इस पर हाथ मिला लेते हैं।'

डाकू ने अपनी बंदूक ज़मीन पर रख दी और हमने बड़े ही गंभीर भाव से हाथ मिलाया। किसी देखने वाले के लिए यह एक अजीब नज़ारा होता, जब वह इस खूंखार और बदहाल, कई हत्याओं के दोषी को नीले-सफेद पायजामे पहने एक गोरे आदमी से ज़ोर-ज़ोर से हाथ मिलाते देखता, जिसका दिल अभी भी असामान्य रूप से तेज़ धड़क रहा था।

हम वहीं ज़मीन पर बैठ गए और बातें करते रहे। मुझे शुरू से ही समझ आ गया था कि इस बेचारे को किसी ऐसे व्यक्ति की संगति चाहिए जिससे वह खुलकर बातें कर सके, जिससे वह अपने दिल की बात कह सके। और उसने ठीक वैसा ही किया। उसने मुझे अपनी पूरी जीवन कहानी सुनाई, एक-एक बात। जब उसने बोलना शुरू किया तो उसके शब्दों में गर्व और घमंड था, लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, एक उदासी झलकने लगी। मैं देख सकता था कि उसे जो कुछ भी हुआ था, उसका सचमुच पछतावा था, वह सचमुच पश्चाताप कर रहा था। मुम्पीतिवयान पूरी लगन से इस स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोज रहा था। मैं उसके शब्दों से बहुत

प्रभावित हुआ और मैं उसकी हर संभव मदद करना चाहता था।

अंततः उसने अपनी कहानी समाप्त की, और काफी देर तक हम सब पर सन्नाटा छा गया। चांदनी में सीधे उसके चेहरे की ओर देखते हुए, मैंने बोलना शुरू किया:

'दो गलतियाँ मिलकर सही नहीं हो जातीं, मम्प्टी,' मैंने कहा। 'न कभी हुई हैं, न कभी होंगी। सिर्फ इसलिए कि उन दुष्टों ने तुम्हारे पिता की हत्या कर दी, इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हें उनकी हत्या करने का अधिकार मिल गया। खैर, नुकसान तो हो ही चुका है। मुझे लगता है कि तुम यह खुद देख सकते हो और मानोगे भी, है ना?'

डाकू ने चुपचाप सिर हिलाया।

तो मैंने आगे कहा। मेरे लिए उचित यही होगा कि मैं तुम्हें आत्मसमर्पण करने की सलाह दूं, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि तुम्हारे हित में यह व्यावहारिक सलाह होगी। तुम्हें शायद फांसी हो जाएगी; सच कहूं तो, मुझे पूरा यकीन है कि ऐसा ही होगा। अगर मैं तुम्हें यही करते रहने की सलाह दूं, तो यह बुरी सलाह होगी, मम्प्टी। क्योंकि हर कोई तुम्हारे खिलाफ है...

लेकिन तभी डाकू ने तीखे स्वर में बात काट दी। 'मेरे दोस्तों का क्या, दोराई?' उसने उग्रता से विरोध किया। 'मेरे उन मुखबिरों का क्या, जो मुझे इतनी सारी बातें बताते हैं, यहाँ तक कि पुलिस की हर गतिविधि के बारे में भी? उन्होंने तो तुम्हारे बारे में भी मुझे बताया था!'

फिर आत्मविश्वास से भरे स्वर में उसने स्वीकार किया: 'इंजीनियर को एस्कॉर्ट करने वाले पुलिसकर्मी ने एक कांस्टेबल को बताया कि आप मुझसे मिलना चाहते हैं। उस कांस्टेबल ने यह संदेश मुझे दिया, क्योंकि एक बार मेरी उसके पिता से दोस्ती हो गई थी, जो बहुत गरीब हैं। इसलिए वे मुझे अपने साथी पुलिसकर्मियों की गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हैं। यहां तक कि रंगा भी मेरा दोस्त है।'

मैंने मनाने का एक और तरीका आजमाया। 'क्या आपको कभी-कभी अकेलापन महसूस नहीं होता, मम्प्टी? क्या आपको किसी इंसान के साथ की चाह नहीं होती? कोई ऐसा व्यक्ति जिससे आप बात कर सकें, जिससे आप अपने दिल की बात कह सकें, ठीक वैसे ही जैसे आप इस समय मुझसे कह रहे हैं? ऐसे कितने लोग हैं जिन पर आप इस तरह बात करने के लिए भरोसा कर सकते हैं?'

'जी हां, मुझे पता है,' उसने उदास स्वर में उत्तर दिया। 'मैं जानता हूं कि भीतर से

मैं बहुत दुखी, बहुत व्यथित और बहुत अकेला हूं। लेकिन मुझे बताओ मैं क्या कर सकता हूं!'

उस व्यक्ति की स्पष्ट ईमानदारी और उसके सामने मौजूद समस्या की गंभीरता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। कुछ देर सोचने के बाद हमारे बीच सन्नाटा छा गया। फिर अचानक मुझे एक विचार आया। मुझे लगा कि मेरे पास ही समाधान है।

'तुम यह कर सकते हो, मुम्प्टीवयान। रात में कावेरी नदी पर जाओ। अपनी राइफल, बंदूक, सारा गोला-बारूद, चाकू, चुराए हुए चश्मे, सब कुछ होगेनैकल जलप्रपात के नीचे स्थित "बिग बन्नू" नामक तालाब में फेंक दो, जहाँ पानी लगभग 200 फीट गहरा है। वे फिर कभी नहीं मिलेंगे। अपने पास जो कुछ भी है, उसे अपने पास मत रखना, यहाँ तक कि अपने कपड़े भी, क्योंकि वे तुम्हें फंसा देंगे। सब कुछ "बिग बन्नू" में फेंक दो।'

अपनी मूंछें और बाल हटा लें। अगर फिर भी सोचें तो अपने खाकी कपड़े और जूते जला दें, लेकिन उन्हें नदी में न फेंकें, क्योंकि वे बह सकते हैं। फिर बिलिगुंडू और आगे डोड्डा हल्ला तक पैदल चलें। कावेरी नदी में मिलने से तीन मील ऊपर इस धारा को पार करें और तगट्टी जंगल से होते हुए ओरेगाम कस्बे तक जाएं। सीधे चलते रहें, और आप जल्द ही मद्रास राज्य की सीमा पार करके मैसूर राज्य में प्रवेश कर जाएंगे। वहां की पुलिस आपको नहीं पहचानेगी। आप अंततः एक मुख्य सड़क पर पहुंच जाएंगे। फिर दाईं ओर मुड़ें और कंकनहल्ली कस्बे का रास्ता पूछें। कंकनहल्ली से तैंतीस मील उत्तर में बैंगलोर शहर है, जहां मैं रहता हूं। अगर आप बैंगलोर पहुंचकर मुझसे मिलते हैं, तो मैं आपकी आगे मदद करूंगा।

'पैदल यह यात्रा करने में आपको कुछ दिन लगेंगे। अपने बाल और मूंछें दोबारा कभी मत बढ़ाना, वरना लोग आपको पहचान लेंगे। रास्ते में काम ढूंढने की कोशिश करना। जो पैसे आप कमाएंगे, उससे आपको मदद मिलेगी। यहां से ज्यादा पैसे मत ले जाना, वरना लोग शक करने लगेंगे। मैं आपको बैंगलोर का अपना पता दे दूंगा।'

'मेरे पास पर्याप्त पैसा है, दोराई,' उसने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, 'लेकिन अपना पता एक कागज के टुकड़े पर लिख दो, ताकि मैं तुम्हें बैंगलोर में आसानी से ढूंढ सकूं।'

मैंने उदास होकर सिर हिलाया। 'मैं ऐसा नहीं करूँगा, मम्प्टी। क्योंकि अगर तुम पकड़े गए और तुम्हारे पास से मेरे हाथ से लिखा मेरा पता मिल गया, तो मैं बहुत बड़ी

मुसीबत में पड़ जाऊँगा। लेकिन मैं तुम्हें स्पष्ट निर्देश दे रहा हूँ। इन्हें याद कर लो। ठीक है?'

मम्प्टी ने सिर हिलाया, और मैं आगे बढ़ गया।

'मेरा नाम एंडरसन है। "एंडरसन डोराई" कहकर पुकारें। इस नाम को हर दिन अपने मन में दोहराएं ताकि आप इसे भूल न जाएं।'

उन्होंने मेरा नाम कई बार दोहराया। फिर मैंने आगे बताया, 'मैं तमाशा बंगला (संग्रहालय) के बगल में, महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा के पास रहता हूँ। याद रखना। जब तुम बैंगलोर पहुँचो, तो महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा और उसके पास स्थित तमाशा बंगला का रास्ता पूछ लेना। इन दोनों के बीच में एक बड़ा लाल घर है। मैं वहीं रहता हूँ। एंडरसन डोराई। समझ गए? अब इन निर्देशों को दिन में कई बार दोहराते रहना, ताकि तुम भूल न जाओ।'

जैसा कि मैंने आपको बताया, हम दोनों ज़मीन पर बैठे थे, और डाकू ने आगे झुककर मेरे पैर छू लिए। वह बड़ा आदमी बच्चे की तरह रो रहा था।

'डोराई, तुम मेरे पिता और माता हो,' वह रोते हुए बोला, 'इस पूरी दुनिया में मेरे इकलौते सच्चे मित्र हो। और यह सोचकर दुख होता है कि कुछ ही पल पहले मैं तुम्हें जान से मारना चाहता था। मैं तुम्हारी बात मानूंगा।'

उसके उलझे हुए बालों को सहलाते हुए मैंने खुद को शांत रखने की कोशिश की, लेकिन मेरे गले में एक अजीब सी गांठ सी बन गई। उसने पगड़ी की तरह जो मफलर पहना हुआ था, वह खुल कर जमीन पर पड़ा था।

जब उसने होश में आना शुरू किया तो मैंने उसे बिठाया, उसके दोनों कंधों पर हाथ रखा और उसकी आँखों में देखते हुए गंभीरता से कहा:

'अब तुम्हें जाना होगा, मेरे मित्र। तुम्हें एहसास नहीं हुआ, लेकिन पाँच बज चुके हैं। जंगली मुर्गे बांग दे रहे हैं और सूरज निकलने से पहले चाँदनी फीकी पड़ रही है। जल्द ही भोर हो जाएगी, और तुम्हें यहाँ कोई नहीं देखेगा। अब हिम्मत रखो, मेरे मित्र; दृढ़ निश्चयी बनो; अपने और मेरे प्रति सच्चे रहो और जैसा मैंने कहा है वैसा ही करो। और जब तक हम दोबारा न मिलें, कृष्ण तुम्हारे साथ रहें।'

अचानक ही वह घुटनों के बल बैठ गया और मेरे पैर चूमने के लिए झुका। फिर वह झट से खड़ा हुआ, सलाम किया और अपनी बंदूक उठा ली।

अगले ही पल डाकू मुम्प्टीवयान ढलती चांदनी में गायब हो गया। मैं अकेला था।

या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा। क्योंकि कुछ ही मिनटों में मेरा पुराना दोस्त और साथी, रंगा, मेरे सामने खड़ा था।

'लगता है दोराई ने ठीक से नींद नहीं ली है,' उसने पूछा। 'उसकी आँखों के नीचे काले घेरे हैं। मुझे उम्मीद है कि किसी हाथी ने उसे परेशान नहीं किया होगा, या फिर ये सिर्फ मच्छरों की वजह से हुआ होगा?'

वह आदमी कभी-कभी बहुत परेशान करने वाला हो सकता था और मैं उससे हंसी-मजाक करने के मूड में नहीं था।

मैंने उसकी बात काटते हुए जवाब दिया, 'मैं अच्छी तरह से सोया था, और आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति हूं।'

रंगा को खांसी आई, फिर उसने सहज लहजे में बोलना जारी रखा। 'शायद मैंने कल रात कुछ ज्यादा खा लिया था, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं आज सुबह से सपना देख रहा हूँ। सपने में मैंने दो आकृतियों को चांदनी में, इसी तम्बू के सामने बैठे देखा। उनमें से एक आप थे, दोराई; दूसरा खाकी वर्दी में एक आदमी था जिसके पास बंदूक थी। आप बस बोलते ही रहे। क्या अजीब सपना नहीं था, दोराई?'

तो वो तो हर समय हमें देख रहा था! अचानक ही मैं घूमी और अपना चेहरा आगे की ओर झुका दिया, लगभग उसके चेहरे को छूते हुए।

'सचमुच, यह एक अजीब सपना था,' मैंने गुस्से से कहा। 'लेकिन यह सिर्फ एक सपना था। सिर्फ एक सपना। यह बात हमेशा याद रखना, रंगा। और अब, इस सपने को भूल जाओ। इसके बारे में फिर कभी बात मत करना। क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया—मुझसे या किसी और से—तो हमारी पैंतीस साल से चली आ रही दोस्ती खत्म हो जाएगी!'

बदले हुए स्वर में उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'कल रात मैं चैन से सोया, डोराई। उस भारी भोजन के बाद तो मुझे सपने भी नहीं आए।'

मैंने मुस्कुराते हुए अपना हाथ उसके हाथ पर रखा, और उसने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। हमारी लंबी दोस्ती जारी रहने वाली थी।

उस रात के बाद से मैं अक्सर मुम्प्टीवायन के बारे में सोचता रहता था और लगभग तीन महीने बीत गए। फिर एक दिन मैंने घर पर दोपहर का खाना खत्म किया ही था कि कुत्ते भौंकने लगे। मेरा अल्सेशियन कुत्ता, जिसके पीछे एक छोटा सा ऊनी, बेढंगा कुत्ता था, जो आकार में उसके दसवें हिस्से के बराबर था, पिछले दरवाजे से

बाहर भागा। वे एक भिखारी पर भौंक रहे थे, जो भारत में लगभग हर किसी के घर में लगभग हर दिन आने वाले कई भिखारियों में से एक था।

यह भिखारी लाठी के सहारे बैठा था। उसका सिर गंजा था और दाढ़ी मुंडी हुई थी, उसने केवल एक गंदी धोती और एक पुरानी, टूटी हुई चप्पल पहनी हुई थी तथा बड़े गोल आकार के चश्मे लगाए हुए थे। उसके गले में अखरोट के आकार के लकड़ी के मोतियों का हार था, जो मैला जमा हुआ था। उसके माथे पर कनपटी से कनपटी तक क्षैतिज रूप से सफेद और लाल रंग के जाति चिह्न बारी-बारी से लगे हुए थे।

उसकी कोयले जैसी काली आँखें मुझे घमंडी, यहाँ तक कि तिरस्कारपूर्ण ढंग से देख रही थीं। लगभग घृणा से उसने पूछा, 'क्या किसी श्वेत व्यक्ति के घर में किसी प्रकार की दया की अपेक्षा की जा सकती है?'

बदतमीज़ बदमाश! मेरा मन किया उसे बाहर निकाल दूं। मैं धमकी भरे लहजे में आगे बढ़ा, उसे बुरी तरह से पीटने का इरादा था। उसकी घमंडी काली आँखें मेरी आँखों में घूर रही थीं। तभी मैंने देखा कि सफेद और लाल रंग के जाति चिह्नों के नीचे, उसकी दाहिनी आँख से कनपटी तक एक निशान था, जो केवल पास आने पर ही दिखाई देता था।

मुम्प्टीवायन! हे भगवान! यह कितना अद्भुत था! तब उसे पता चल गया कि मैंने उसे पहचान लिया है। उसकी आँखों में अब घमंड नहीं था। वे चमक रही थीं और खुशी से नम थीं।

मेरा बेटा डोनाल्ड काम पर गया हुआ था। मेरी पत्नी बाहर गई हुई थी। घर में सिर्फ चोकरा (नौकर) ही मौजूद था।

मैंने मुम्प्टी को हाथ से इशारा करके रुकने को कहा और चोकरा को आवाज़ लगाई। जब वह आया तो मैंने उसे निर्देश दिया कि वह करीब दो मील दूर रेलवे स्टेशन जाकर मद्रास से आने वाली मेल ट्रेन के आने का समय पता कर ले। इससे वह कम से कम अगले नब्बे मिनट तक तो व्यस्त रहेगा।

जब चोकरा चला गया, तो मैंने मुम्प्टी को अंदर बुलाया, उसे चाय और अलमारी में जो कुछ भी बचा-खुचा सामान मिला, वह दिया और उससे पूछा कि उसका हालचाल कैसा रहा।

दोराई, मैंने ठीक वैसा ही किया जैसा आपने मुझे निर्देश दिया था। नदी में स्थित "बिग बन्नू" में अपने हथियार और कारतूस फेंकते हुए मेरा दिल टूट गया। लेकिन मैंने

ऐसा किया। बाकी का सफर अपेक्षाकृत आसान था। मैं कुछ समय बाद मैसूर राज्य की सीमा और कंकनहल्ली कस्बे तक पहुँच गया। वहाँ मुझे एक धनी जमींदार के यहाँ मजदूर का काम मिल गया। दोराई, वह आदमी अपने बेचारे मजदूरों पर कितना अत्याचार करता था! काश मैं फिर से मुम्प्तिवायन बन पाता, बस कुछ मिनटों के लिए ही सही, ताकि उसे उचित सबक सिखा सकूँ! उसके व्यवहार ने मुझे यह निश्चय करने पर मजबूर कर दिया कि मैं फिर कभी किसी और के लिए काम नहीं करूँगा।

लेकिन इस समय तक मैंने देखा कि सड़कों पर बहुत से साधु थे, जिनमें से अधिकतर धार्मिक वेश में थे। उनमें से कोई भी भूखा नहीं दिखता था। किसी न किसी तरह कोई न कोई उन्हें भोजन करा देता था। इसलिए मैंने साधु बनने का फैसला किया। मेरा नाम ओमकृष्ण है और मैं इससे अच्छी कमाई कर रहा हूँ। मैं दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहा हूँ और मद्रास शहर पहुँचने की आशा करता हूँ, जहाँ मैं अंततः बस जाऊँगा।

'मद्रास नहीं, मम्प्टी—मेरा मतलब है, ओमकृष्ण,' मैंने खुद को सुधारते हुए कहा, 'वहाँ कोई वर्दीधारी आपको बुला सकता है। यह बहुत नज़दीक है और आपकी पहचान हो सकती है। मेरा सुझाव है कि आप उत्तर की ओर, हैदराबाद राज्य में चले जाएं। आप अपने ऑपरेशन स्थल से जितना दूर होंगे, उतना ही बेहतर होगा, याद रखें।'

उसने एक पल सोचा और फिर सिर हिलाया। 'मुझे लगता है तुम सही कह रही हो, डोराई।'

फिर वह जाने के लिए उठे। मैंने उन्हें पैसे देने की पेशकश की, लेकिन साधु ने मना कर दिया। उन्होंने कहा, 'मैं आपका ऋणी हूँ, आप मेरे नहीं। वैसे मुझे याद आया, मैं आपके लिए कुछ लाया हूँ। यही एक चीज़ है जो मुझे पुराने दिनों से जोड़ती है।'

उसने अपनी धोती में हाथ डाला और एक अंगूठी निकाली—एक सोने की अंगूठी!

'तुमने इसे कहाँ से चुराया?' मैंने कड़े स्वर में पूछा।

'मैंने इसे चुराया नहीं,' उसने जवाब दिया। 'मुझे यह उस इंजीनियर से मिला जो उत्तमलाई में बांध बनाने गया था।' मुम्प्टीवायन उस घटना को याद करके हंसने लगा। 'वह नदी किनारे एक सशस्त्र पुलिसकर्मी के साथ पहरा दे रहा था। उस मूर्ख पुलिसकर्मी के पास राइफल के रूप में छिपाई गई खिलौने वाली बंदूक थी। उन्हें नहीं पता था कि मुझे यह बात पता है।'

उस घटना को याद करके ओमकृष्णा और भी मुस्कुरा उठा। फिर उसने आगे कहा: 'मैंने एक चट्टान की आड़ से पुलिसवाले को आवाज़ देकर कहा कि अगर उसने विरोध करने की कोशिश की तो मैं उसे गोली मार दूंगा।'

वह बेचारा बुरी तरह डर गया था। उसने अपनी बेतुकी बंदूक फेंक दी और भाग गया। मैं फिर इंजीनियर के पास गया, लेकिन पहले पुलिसवाले का हथियार नदी में फेंक दिया। हैरानी की बात यह थी कि इंजीनियर साहब बिल्कुल भी नहीं डरे। वे पुलिसवाले के जल्दबाजी में चले जाने पर मुस्कुरा रहे थे। मैंने अपनी हमेशा की तरह कर्कश आवाज में उनसे पैसे मांगे। इंजीनियर ने मुझसे अजीबोगरीब शब्द कहे: "मुझे धमकाओ मत, मुम्प्टीवयान। विनम्रता से मांगना सीखो।"

'उन्होंने मुझे दस रुपये दिए। उन्होंने अपनी उंगली से यह अंगूठी भी उतारकर मुझे दे दी। मैंने पैसे और अंगूठी लौटाने की कोशिश की, क्योंकि इंजीनियर साहब वाकई एक अच्छे और बहादुर इंसान थे; एक सज्जन भी। लेकिन उन्होंने पैसे और अंगूठी वापस लेने से इनकार कर दिया। इसलिए मैंने कुछ समय तक अंगूठी खुद ही पहन ली। मुझे पता था कि अगर मैंने इसे बेचने की कोशिश की तो मैं पकड़ा जा सकता हूँ। हालांकि, और यह सब उस रात आपसे मिलने से पहले हुआ था, दोराई,' ओमकृष्ण ने माफी मांगते हुए जल्दी से कहा। 'उस मुलाकात के बाद से मैं सीधा-सादा रहा हूँ और मैंने फिर कभी चोरी नहीं की, मैं इसकी कसम खा सकता हूँ। और मैंने अंगूठी आपके लिए उपहार के रूप में रख ली।'

तो आखिरकार अप्रत्याशित घटना घटित हुई! मेरे दोस्त, इंजीनियर, की डाकू मुम्प्टीवयान से मिलने की बहुत इच्छा थी। उनकी मुलाकात हुई, और परिणामस्वरूप अब उनकी अंगूठी मेरे पास थी!

इसके कुछ ही समय बाद ओमकृष्ण चले गए और मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा! पूरा एक साल बीत गया, इस दौरान मैं अक्सर मुम्प्तिवायन के बारे में सोचता रहा, लेकिन उनके बारे में कोई खबर नहीं मिली। मैंने कई बार होगेनैकल और उनके पुराने ठिकानों पर जाकर उनसे मुलाकात की, लेकिन किसी ने उनके बारे में बात नहीं की, किसी ने उन्हें लंबे समय से नहीं देखा था। ऐसा लग रहा था मानो वे हमेशा के लिए गायब हो गए हों। दो महीने बाद यह खबर पूरे इलाके में फैल गई! मुम्प्तिवायन की मौत हो गई थी! उन्हें उनके एक दोस्त ने गोली मार दी थी, जिसने दो साल पहले मद्रास सरकार द्वारा उन पर रखे गए इनाम का दावा किया था। इनाम शायद 500

रुपये और पांच एकड़ जमीन थी, चाहे जिंदा हो या मुर्दा!

मुम्प्टीवायन की मृत्यु के बारे में कई तरह की कहानियां प्रचलित थीं। कुछ का कहना था कि मुम्प्टीवायन अपनी पत्नी से मिलने वापस गए थे, जबकि अन्य का कहना था कि वे अपनी प्रिय रखैल से मिलने लौटे थे। पत्नी हो या रखैल—उस औरत ने उन्हें धोखा दिया था! उसका एक भाई था, जो कर्ज में डूबा हुआ था और उसे इनाम की सख्त जरूरत थी। कहानी यह थी कि उस औरत ने मुम्प्टीवायन के लिए उनका पसंदीदा पकवान बनाया था, लेकिन खाने में उसने फोलिडोल मिला दिया था, जो सरकार द्वारा किसानों को फसलों पर हमला करने वाले कीटों को मारने के लिए दिया जाने वाला एक बहुत ही शक्तिशाली रसायन था। मुम्प्टीवायन ने वह खाना खा लिया। कुछ ही मिनटों में वे मृत्यु के कगार पर पहुंच गए। उसी क्षण उस औरत का भाई, जो शुभ अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, आया और उसने मुम्प्टीवायन को गोली मार दी! क्योंकि इनाम में यह शर्त थी कि डाकू को जिंदा लाया जाए या आत्मरक्षा में गोली मारकर मार डाला जाए, लेकिन उसमें जहर देने के बारे में कुछ नहीं लिखा था।

कहा जाता है कि इनाम दे दिया गया था। मुम्प्तिवायन का शव पुलिस द्वारा धर्मपुरी कस्बे में लाया गया, जहां भीड़ उसके जल्दबाजी में किए गए अंतिम संस्कार को देखने के लिए जमा हो गई।

* * *

मेरी अगली कहानी एक जानवर के बारे में है और इसका जादू या बुरे लोगों से कोई लेना-देना नहीं है। यह एक नर हाथी की कहानी है, और वह भी एक अनोखा हाथी।

एक शाम लगभग साढ़े चार बजे जंगल में गाड़ी चलाते हुए हमारी पहली मुलाकात इस हाथी से हुई। यह जगह अनाइकुट्टी स्थित वन लॉज से लगभग दो मील पहले और उस पुराने मंदिर से लगभग दस मील आगे थी जिसका जिक्र मैंने इस अध्याय की शुरुआत में किया था। वह हमारे दाहिनी ओर लगभग पचास गज की दूरी पर जंगल में शांति से चर रहा था।

कार पर्यटकों और शौकिया फोटोग्राफरों से भरी हुई थी, और उन्होंने बूढ़े हाथी

की अनगिनत तस्वीरें खींचीं। उसने हमें, कारों और लोगों को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया, मानो वह बिल्कुल अकेला हो, मीलों दूर तक उसके आसपास कोई दूसरा प्राणी न हो।

मैं कार की पिछली सीट पर दाहिनी ओर बैठा था, जबकि मेरा एक दोस्त गाड़ी चला रहा था। बाकी लोग विदेशी थे जो भारत में जंगल देखने आए थे। उनमें से एक, जिसने पहले भी हाथी देखे थे, लेकिन केवल चिड़ियाघरों और सर्कसों में, कार से बाहर निकला और हमारी दबी हुई सलाह के बावजूद, गाड़ी के चारों ओर घूमकर हाथी की ओर आधी दूरी तक चला गया। यह बेहद खतरनाक काम था और हम सबने उसे वापस लौटने के लिए कहा। तो वह रुका और एक तस्वीर खींची। उसने कई और तस्वीरें खींचीं और फिर हाथी पर चिल्लाकर, अपने हाथ हिलाकर और अंत में उस पर पत्थर फेंककर मुसीबत मोल लेने लगा। पहला पत्थर बाल-बाल चूक गया। दूसरा पत्थर उस पेड़ की एक शाखा से टकराया जिसके नीचे हाथी खड़ा था और उछलकर सीधे उसकी पीठ पर जा गिरा। तीसरा पत्थर हाथी के चेहरे पर सूंड के नीचे लगा और लुढ़कते हुए नीचे गिरा, बाएं दांत से टकराकर ज़ोर से टकराया।

बैल ने पलटवार नहीं किया। उसने बस हमारी तरफ पीठ फेर ली, पेड़ के पीछे चला गया, हमारी ओर मुड़ा और चुपचाप हमें देखता रहा, मानो कह रहा हो, 'क्या तुम यहाँ से जा नहीं सकते और मुझे शांति से रहने नहीं दे सकते?'

उसका व्यवहार चौंकाने वाला था। कोई दूसरा हाथी, खासकर कोई नर हाथी, ऐसी उकसाहट के बाद ऐसा व्यवहार नहीं करता। सामान्य प्रतिक्रिया तो यही होती कि गाड़ी को देखते ही या उसकी आवाज़ सुनते ही वह भाग जाता। मान लीजिए कि उसने ऐसा नहीं किया, तो भी कोई भी जंगली हाथी बार-बार पत्थर फेंकने पर ज़रूर भड़क उठता। मैं मानता हूँ कि मुझे पूरा यकीन था कि वह हमला कर देगा, और वह सज्जन जो इतने बहादुर और मूर्ख बने थे, गाड़ी और हम सब के साथ जल्द ही मर जाएँगे। हम खुद को बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकते थे, क्योंकि जंगली हाथियों को परेशान करना, उन्हें चिढ़ाना, उन पर पत्थर फेंकना नियमों के खिलाफ है, खासकर अगर वे नाराज़गी दिखाएँ।

बड़ी मुश्किल से हमने अपने दोस्त को उस जगह से दूर किया और अन्य जानवरों की तस्वीरें लेने के लिए अपनी ड्राइव जारी रखी।

शाम के छह बज रहे थे जब हम उसी रास्ते से वापस लौटे, और सोच रहे थे कि

क्या हमें हाथी फिर से मिलेगा। अभी एक फर्लांग ही बचा था कि हमने उसे फिर से देखा, इस बार वह सड़क के दूसरी तरफ खड़ा था, हमारे रास्ते के और भी करीब, और हमारी ओर मुंह किए हुए। हम उसे देखने के लिए फिर रुक गए, लेकिन वह शांति से चबाता रहा, बीच-बीच में टूटी हुई डालियों से पत्तियां तोड़कर अपने मुंह में भरता रहा। हमने देखा कि इस प्रक्रिया में वह उन छोटी शाखाओं की लकड़ी भी खा रहा था जिन पर पत्तियां उग रही थीं।

हमने उस जानवर का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। वह अच्छी स्थिति में प्रतीत हो रहा था, दुबला-पतला नहीं था। उसके असामान्य रूप से शांत व्यवहार का कारण बनने वाले किसी घाव या बीमारी के कोई लक्षण नहीं थे। केवल एक बात जो ध्यान देने योग्य थी, वह यह थी कि वह एक बूढ़ा जानवर था, जिसका अंदाजा उसके कानों के ऊपरी भाग के मुड़े होने और माथे पर बने गड्ढों से लगाया जा सकता था।

एक बार फिर मेरा नया परिचित कार से बाहर निकला और पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। हाथी अब पहले की तुलना में हमारे ज़्यादा करीब था, बस बीस फीट की दूरी पर, बिल्कुल सामने। कुछ तो होना ही था।

लेकिन हाथी ने घृणा से मुंह फेर लिया और चरता रहा। उसका व्यवहार बिल्कुल समझ से परे था। पालतू हाथी भी अजनबियों से ऐसा बर्ताव बर्दाश्त नहीं करता। कम से कम वह तो वहां से भाग जाता! आखिरकार हमारे परिचित—जो शायद बहादुर, या पागल, या दोनों था—ने हमें पुकार कर कहा कि वह हाथी के पास जा रहा है। फिर हम सब गाड़ी से उतरे और उसे पकड़ लिया, लगभग घसीटते हुए गाड़ी तक ले आए, जबकि हाथी शांति से चरता रहा।

'तुम्हारे भारतीय हाथियों को चूहे!' उसने तिरस्कारपूर्वक कहा। 'वे खरगोशों जितने ही हानिरहित हैं।'

उस रात खाने पर भी यही चर्चा थी। मुझसे ऐसे सवाल पूछे गए जिनका जवाब देना मेरे लिए नामुमकिन था। क्या जंगली हाथी सचमुच ऐसे ही व्यवहार करते हैं? मैं चिंतित था। नर हाथी ने इतना शांत व्यवहार क्यों किया? मैं अगले दिन इस पहेली को सुलझाने का निश्चय करके सो गया।

अगली सुबह नाश्ते के बाद, मैंने दो करुंबा ट्रैकर्स की मदद ली और अपनी राइफल लेकर हम उस जगह के लिए रवाना हुए जहाँ पिछली शाम हमें हाथी मिला था। हमने कार वहीं छोड़ दी और जंगल में उसके पीछे-पीछे चलने लगे। करुंबा लोगों

के लिए यह आसान काम था और हमें वह फिर से मिल गया, लगभग आधा मील दूर, अनाइकुट्टी नदी की दिशा में जा रहा था, जो अभी भी लगभग डेढ़ मील दूर थी। वह अब चर नहीं रहा था, बल्कि एक पेड़ के नीचे शांति से खड़ा था।

करुम्बा जनजाति के लोग बेशक बहुत सतर्क थे; लेकिन पिछली शाम के अनुभव से उत्साहित होकर मैं हाथी की ओर बढ़ा, जबकि जंगल के लोग काफी दूरी पर मेरा पीछा कर रहे थे और किसी भी खतरे का आभास होते ही भागने को तैयार थे। कुछ नहीं हुआ, हालांकि मैं हाथी के उतना ही करीब पहुँच गया था जितना मेरा दोस्त पिछली शाम पहुँचा था। हाथी ने मेरी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।

मैं उसके चारों ओर घूमा। मुझे पूरा यकीन था कि वह बुरी तरह घायल है। या शायद वह बहुत बीमार जानवर है। तभी मेरे मन में एक विचार आया: हो सकता है कि वह एक या दोनों आँखों से अंधा हो। या बहरा हो। या सूंघने की शक्ति न रखता हो। उसमें कुछ गंभीर खराबी थी; इस बात का मुझे पूरा यकीन था।

मैंने दूसरी बार उसके चारों ओर चक्कर लगाया। उसी क्षण मैंने देखा कि वह अपनी छोटी-छोटी आँखों से मेरी हरकतों का अनुसरण कर रहा था। लेकिन उसकी आँखें सूजी हुई नहीं थीं, और निश्चित रूप से उनमें उस तरह के स्राव का कोई संकेत नहीं था जो मदमस्त बैल में दिखाई देता है। और वह जानवर अंधा भी नहीं था। फिर उसने अपनी सूंड थोड़ी सी मेरी ओर उठाई और तब मुझे पता चला कि वह सूंघ भी सकता है।

उसे क्या तकलीफ हो सकती है? उसने आलस से अपनी सूंड उठाई, ऊपर पड़ी एक टहनी तोड़ी और उसे अपने मुंह में ठूंस लिया। वह घायल या बीमार तो नहीं हो सकता था, क्योंकि अगर होता तो वह इतना अच्छा खाना नहीं खाता। मैं बस इतना ही पता लगा पाया कि वह वाकई बहुत बूढ़ा जानवर था। उसके माथे और कनपटी के गड्ढों और कानों के ऊपरी हिस्से की मुड़ी हुई त्वचा के अलावा, दोनों दांतों की जड़ उम्र के साथ काली पड़ गई थी।

जब मैं बैल के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, तब दोनों करुम्बा सुरक्षित दूरी पर खड़े थे। उनमें से एक ने मुझे पुकारा, 'इसमें कोई रहस्य नहीं है, दोराई। बुद्धिमान हाथी (जिस तरह से करुम्बा हाथी को आमतौर पर संबोधित करते हैं) बहुत बूढ़ा हो चुका है। पृथ्वी पर उसके दिन समाप्त हो गए हैं, और वह शांतिपूर्वक मरने के लिए नदी में आया है।'

हमने बात वहीं खत्म की और शिविर लौट आए। अगले दिन मुझे जिले के मुख्यालय, गुडालूर कस्बे में कुछ काम था, जो यहाँ से उन्नीस मील दूर था। मुख्य सड़क पर गन्ने से लदी गाड़ियों की एक कतार मेरे सामने से गुजरी। तभी मुझे उस बूढ़े हाथी की याद आई और एक प्रयोग का ख्याल आया जो मैं उसके साथ करना चाहता था। इसलिए मैंने एक दर्जन गन्ने के टुकड़े खरीद लिए, जिनमें से प्रत्येक छह फुट से अधिक लंबा था।

अगली सुबह मैं फिर अनाइकुट्टी गया, इस बार तीन करुम्बाओं के साथ। उनमें से दो गन्ने ढो रहे थे। हमने उस बूढ़े हाथी का पीछा उसी जगह से किया जहाँ हमने उसे आखिरी बार देखा था और उसे अनाइकुट्टी नदी के किनारे पाया। वह एक मुथी के पेड़ की छाया में खड़ा था।

मैं एक करुम्बा के साथ, जिसके पास गन्ने के छह डंठल थे, सावधानी से आगे बढ़ा। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि वह बड़ी अनिच्छा से आया था। बैल ने हमें देखा और धीरे से आधा मुड़ा। अब वह हमारी ओर मुँह करके खड़ा था। करुम्बा रुक गया। मैंने अपने बाएँ हाथ में गन्ने के दो टुकड़े लिए, अपनी भरी हुई राइफल को अपने दाहिने हाथ में कसकर पकड़े हुए, धीरे-धीरे और सोच-समझकर जानवर की ओर बढ़ा, उसकी आँखों में देखते हुए, लेकिन मेरे मन में केवल सुलह के विचार थे। अगले कुछ सेकंड में पता चल जाएगा कि इस अजीब जानवर का व्यवहार दोस्ती में बदलेगा या दुश्मनी में।

जब मैं उसके बिल्कुल करीब पहुंचा, तो बैल बहुत घबरा गया। उसने अपनी सूंड से हवा निकाली और उसे अंदर की ओर मोड़ने लगा ताकि संभावित चोट से खुद को बचा सके। उसके कान फड़फड़ाने लगे। वे आगे आए और फिर सिर के किनारे पीछे चले गए। वाकई बुरे संकेत! वह हमला करने ही वाला था!

मैं रुक गया और गन्ने को उसकी ओर बढ़ाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि इंसानी आवाज़ जानवरों को परेशान और डरा देती है।

हाथी की बेचैनी कम हो गई और गन्ने के भार से मेरी बांहों में दर्द होने लगा। कुछ मिनटों बाद, मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा, तब तक चलता रहा जब तक कि छह फुट लंबे गन्ने के टुकड़े के सिरे पर लगे चौड़े पत्ते उसकी सूंड की पहुँच में नहीं आ गए। फिर मैं रुक गया और उसे लुभावने अंदाज़ में आगे बढ़ाया। हाथी ने अपनी सूंड को

तेज़ी से हिलाते हुए मेरे हाथ से गन्ना छीन लिया, उसे अपनी ओर खींचा और फिर ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से पटका। वह झिझका। मैं समझ गया कि वह सोच रहा था कि आगे क्या करे। उसे अपने मुँह में डाले? उस पर पैर रखकर उसे कुचल दे? फेंक दे? या शायद उस छोटे से घुसपैठिए पर हमला कर दे?

बैल ने संभलकर गन्ने को अपने मुँह में तिरछा रखा और उसे काट लिया। बस! उसने मीठे रस का स्वाद चखा, शायद अपने जीवन में पहली बार, क्योंकि इस इलाके में गन्ने के खेत नहीं थे। या हो सकता है कि वह दूर-दराज के इलाके से आया हो और पहले भी गन्ना खा चुका हो और उसे उसका स्वाद याद हो। खैर, जाहिर है उसे यह पसंद आया। क्योंकि वह गन्ना चबा रहा था, और उसकी छोटी-छोटी आँखें बिना पलक झपकाए मुझे घूर रही थीं। उनमें कोई दुश्मनी नहीं थी, लेकिन घबराहट जरूर थी।

जब उसने पहली छड़ी खत्म कर ली, तो मैंने उसे दूसरी छड़ी थमा दी। उसने उसे तुरंत ले लिया और चबाने लगा।

बाकी गन्ने के साथ करुम्बा हाथी कुछ दूरी पर रुक गया और पास आने से इनकार कर दिया। मैं जानता था कि वे मेरे इस काम को सरासर पागलपन समझ रहे थे। चूंकि मैं अपनी राइफल को छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए मुझे हाथी से करुम्बा हाथी तक दो बार आना-जाना पड़ा, तब जाकर मैंने उसे गन्ने के बचे हुए दस दाने खिलाए। लेकिन आखिरकार उन्होंने खाना खा लिया और उस बूढ़े जंगली बैल और मेरे बीच एक ऐसी अनोखी दोस्ती हो गई, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

अगले दिन मैं कार से इक्कीस मील दूर गुंडलूपेट गया, जहाँ गन्ना मिलता था, और ढेर सारा गन्ना खरीद लाया। वापसी में मेरी मुलाकात मेरे पुराने मित्र श्री चंद्रन से हुई, जो मुदुमलाई वन्यजीव अभ्यारण्य में तैनात वन रेंज अधिकारियों में से एक थे। यह अभ्यारण्य उस क्षेत्र के बहुत करीब था जहाँ वह बूढ़ा बैल अपने जीवन के अंतिम दिन बिता रहा था। मैंने उन्हें पूरी कहानी सुनाई और वे आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कहा कि वन विभाग में अपनी पूरी सेवा के दौरान उन्होंने ऐसा कुछ कभी नहीं सुना था। श्री चंद्रन ने मुझे लगभग दो साल पहले की एक घटना याद दिलाई, जब हम दोनों एक सरकारी जीप में एक जर्मन मित्र को अभ्यारण्य घुमा रहे थे।

उस समय जीप एक संकरे रास्ते पर ढलान से नीचे जा रही थी, तभी एक मोड़ आया और हम बाल-बाल एक जंगली हाथी से टकरा गए जो सड़क पर गिरे हुए बांस

के झुंड को खा रहा था। हाथी ने हमें देख लिया और सीधे जीप की ओर आ गया। मैं आपको बताना भूल गया कि हममें से किसी के पास भी हथियार नहीं थे, क्योंकि वह इलाका वन्यजीव अभयारण्य था और वहाँ राइफल या बंदूक ले जाना मना था। सौभाग्य से ड्राइवर ने अपना धैर्य बनाए रखा और दाईं ओर की खड़ी ढलान पर गाड़ी को पलटने से बचा लिया। बाईं ओर पहाड़ी ऊपर की ओर ढलान वाली थी, इसलिए हम उस रास्ते से बच नहीं सकते थे।

बैल रेडिएटर तक पहुंचा, रुका, अपनी सूंड से बोनट पर ज़ोर से मारा और फिर कुछ नहीं किया! तभी ड्राइवर हरकत में आया और जीप को जितना हो सके पीछे किया। इस बीच, हाथी जा चुका था। दस मिनट बाद हम फिर से उस बांस के झुंड की ओर बढ़े जो रास्ते में फैला हुआ था और जीप के लिए रास्ता बनाने के लिए बाहर निकले, तभी भयंकर गुस्से में बैल हम पर टूट पड़ा!

हम जल्दी से गाड़ी में बैठ गए जबकि हाथी अपने कीमती बांस की रखवाली करने लगा। इस बार हमें जीप को लगभग एक फर्लांग पीछे करना पड़ा, तब जाकर रास्ता इतना चौड़ा हुआ कि हम उसे घुमा सके। कहने की जरूरत नहीं, हमने हाथी को बांस उसके इनाम के तौर पर दे दिया!

श्री चंद्रन ने हाल ही में घटी एक और घटना सुनाई। वे उसी जीप में उसी ड्राइवर के साथ पर्यटकों के एक समूह के साथ थे। जीप की आवाज़ सुनकर अचानक एक हाथी का बच्चा रास्ते से भागा और उसकी माँ उसके पीछे आई। जब उसने अपने बच्चे के इतने करीब उस अजनबी को देखा, जिसे वह अपना दुश्मन समझ रही थी, तो उसकी माँ क्रोधित हो उठी। बिना देर किए उसने जीप पलट दी और अपने बच्चे को सुरक्षित स्थान पर ले गई। सौभाग्य से, बच्चे की मौजूदगी और उसे खतरे से बचाने की उसकी चिंता ने उसका ध्यान भटका दिया और जीप में बैठे लोगों को मारने से रोक दिया। हालांकि, जीप क्षतिग्रस्त हो गई और कई लोग घायल हो गए, लेकिन हाथी के हमले से उन्हें सीधे चोट नहीं आई थी।

इन घटनाओं के आलोक में अनाइकुट्टी में बूढ़े बैल का शांत व्यवहार और भी आश्चर्यजनक था।

मैं अगले दिन उसे दोबारा खिलाने लौटा। उसने बेंत आसानी से ले ली, लेकिन भूख नहीं लग रही थी, क्योंकि उसने सिर्फ दो टुकड़े ही खाए। मैंने उसे जो तीसरा और चौथा टुकड़ा दिया, उसने उसे लेने से मना कर दिया और बस अपनी सूंड के सिरे से

उन्हें छू लिया।

अगले दिन हम फिर वापस गए, लेकिन इस बार बूढ़ा बैल कुछ भी लेने को तैयार नहीं था। वह बस मेरे सामने खड़ा रहा, अपनी सूंड के सिरे से मेरी भेंट का अभिवादन तो किया, लेकिन कुछ भी नहीं लिया। उसकी आँखें नम थीं और ऐसा लग रहा था जैसे वह उदास हो। जब मैं वहाँ से चला गया, तो उसने अपना सिर ऐसे घुमाया मानो किसी पुराने मित्र को विदाई दे रहा हो।

किसी कारणवश मैं अगले दिन हमेशा की तरह उनसे मिलने नहीं जा सका, लेकिन चौथे दिन सुबह लगभग नौ बजे मैं करुम्बा जनजाति और गन्ने के साथ उनसे दोबारा मिलने गया। पर वे वहाँ नहीं थे। हालांकि, हमें अच्छी तरह पता था कि वे कहाँ मिलेंगे। वे 'बिग पूल' पर होंगे, जो नदी के ऊपर की ओर आधा मील दूर है, जिसे करुम्बा जनजाति अपनी भाषा में 'हाथियों के मरने की जगह' कहती है।

और हमने उसे वहीं पाया। वह मर चुका था। मौसम शुष्क था और तालाब केवल चार फुट गहरा था। लेकिन हाथी ने जानबूझकर उसमें एक तरफ लेटकर अपना सिर और सूंड पानी की सतह के नीचे डुबो दिया था ताकि वह डूब जाए। उसका पार्श्व भाग पानी से बाहर निकला हुआ था और इसी हालत में हमने उसे पाया।

इस रहस्य का उत्तर यहीं छिपा है: जब हाथी बूढ़े हो जाते हैं और जीने लायक नहीं रहते, तो वे कहाँ जाते हैं और कैसे मरते हैं? वे नदी में डूबकर आत्महत्या कर लेते हैं। मैंने इस रहस्य को सुलझा लिया था और साथ ही एक पूर्ण विकसित जंगली हाथी के साथ एक अनोखी दोस्ती का अनुभव भी किया, हालांकि यह दोस्ती बहुत संक्षिप्त थी।

चार

तलावड़ी का गूंगा नरभक्षी

मैंने अपने जीवन में कई अविस्मरणीय व्यक्तियों से मुलाकात की है और उनमें से अधिकतर वनवासी थे; भारतीय, एंग्लो-इंडियन और यूरोपीय। ऐसा प्रतीत होता है कि जंगल ही मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करता है। जितना अधिक समय वह वहाँ बिताता है, उसका व्यक्तित्व उतना ही निखरता जाता है। ऐसा ही एक व्यक्ति मेरा मित्र ह्यूगी हेलस्टोन था, जो उत्तरी कोयंबटूर जिले के एक कोने में, तलाईमलाई के पास, मुडियानूर नामक स्थान पर अपने लिए बनाए गए एक शानदार घर में रहता था, जिसका नाम 'मोयार वैली रेंच' था। यह घर मोयार नदी से बहुत दूर नहीं था, जो उत्तरी कोयंबटूर को नीलगिरी वन प्रभाग से अलग करती है।

ह्यूगी वाकई एक अनोखा व्यक्ति था। वह मेरे ही स्कूल में पढ़ता था, लेकिन मुझसे बहुत पहले ही पास हो गया। उसके बाद उसने कई तरह के काम किए। पर वह बहुत बुद्धिमान था। वह जिस भी चीज़ को हाथ लगाता, वह सोने में तब्दील हो जाती। इसी पैसे से उसने जंगल की एक बड़ी ज़मीन खरीदी और उस पर अपना मोयार वैली रेंच बनाया।

ह्यूगी के पास हथियारों का एक बेहतरीन संग्रह था, जो उस समय सबसे बढ़िया थे। लेकिन इनमें से उन्हें एक .023 माउज़र राइफल बेहद पसंद थी, जिसका बैरल षट्कोणीय था। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने बताया था कि इससे उन्होंने नौ हाथी और बीस से ज़्यादा बाघ मारे थे। बाद में, ह्यूगी को मेरा बेटा डोनाल्ड बहुत पसंद आया और उन्होंने उसे यही हथियार तोहफे में दिया। डोनाल्ड ज़ाहिर तौर पर बहुत खुश

हुआ। लेकिन इस तोहफे की अहमियत इस बात से और बढ़ गई कि यह ह्यूगी का पसंदीदा हथियार था। सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि मैं कभी अपनी पुरानी, लेकिन प्यारी .405 राइफल से अलग हो पाऊँगा। यह चालीस साल से ज़्यादा समय से मेरी साथी और सहारा रही है।

मेरी कहानी उस समय से शुरू होती है जब भारत के किसी हिस्से में ह्यूगी को एक खास तरह की घास मिली या उसने उसके बारे में सुना, जिसके सूखे तने आम माचिस की तीलियों से भी ज़्यादा मज़बूत और आसानी से टूटने वाले नहीं थे। वे आसानी से टूटते नहीं थे और जल्दी जल जाते थे। इसलिए ह्यूगी ने मोयार वैली रेंच की ज़मीन पर बड़े पैमाने पर इस घास की खेती करने का विचार किया, ताकि वह एक माचिस का कारखाना शुरू कर सके जो बाज़ार में पहले से मौजूद माचिसों की तुलना में लगभग आधी कीमत पर और कहीं बेहतर गुणवत्ता वाली माचिस बनाएगा।

उसने बड़ी मात्रा में बीज प्राप्त किए, मानसून की पहली बारिश के साथ अपनी ज़मीन जोती और बीज बो दिए। घास खूब उगी। एकड़ो में फैली घास। ज़मीन बिल्कुल नई थी और घास पाँच फीट या उससे भी ज़्यादा ऊँची हो गई। मुझे याद है, हवा में लहराती और झुकती घास को देखना। लेकिन ह्यूगी की घास के पूरी तरह पकने से पहले ही हिरणों के झुंड, खासकर चीतल, और जंगली सूअरों के बड़े-बड़े समूह आ गए। हिरण तो घास खा ही गए, जबकि जंगली सूअरों ने उसे अपना घर बना लिया और जगह-जगह से खोदकर उसे काफी नुकसान पहुँचाया, हालाँकि ज़्यादातर उन्होंने घास में छोटी-छोटी सुरंगों का जाल बना लिया, जो इधर-उधर हर जगह जाती थीं। इन सुरंगों में वे छिपते रहे और इतनी तेज़ी से बढ़े कि ह्यूगी सोचने लगा कि क्या उसे माचिस का कारखाना चलाना जारी रखना चाहिए या हैम और बेकन का कारोबार शुरू करना चाहिए!

सबसे अच्छी बात यह थी कि हिरणों और सूअरों के साथ-साथ बाघ और तेंदुए भी उन्हें खाने के लिए आ गए। बल्कि मुझे कहना चाहिए कि तेंदुओं की तुलना में बाघ अधिक थे, क्योंकि बाघ इतनी बड़ी संख्या में आए कि उन्होंने न केवल हिरणों और सूअरों की आबादी को खत्म कर दिया, बल्कि तेंदुओं को भी मारकर खा लिया, जिससे समय के साथ-साथ छोटी बिल्लियाँ घास से दूर रहना सीख गईं।

अब ह्यूई ने स्वेज़ा (डी'सूज़ा का बिगड़ा हुआ नाम) नाम के एक सहायक को काम पर रखा, जो भारत के पश्चिमी तट पर स्थित मंगलौर से आया था। स्वेज़ा एक

बहुत ही बहुमुखी प्रतिभा का धनी व्यक्ति था: वह ह्यूई के लिए सब कुछ करता था, जिसकी समस्याओं को वह न केवल जानता था बल्कि उनका अनुमान भी लगा लेता था।

एक बार उसने अपने मालिक के बारे में मुझसे कहा, 'मुझे समझ नहीं आता कि मालिक ज़्यादा पैसा कमाने के लिए इतना पैसा क्यों खर्च करता है। मालिक के पास मौज-मस्ती करने के लिए बहुत पैसा है। लेकिन नहीं; वह माचिस की तीलियाँ बनाना चाहता है, बबूल की छाल से टूथ पाउडर बनाना चाहता है, हाथियों के गोबर में जंगली बीजों को मिलाकर खाद बनाना चाहता है, ज़मीन के नीचे पानी खोजने का कोई यंत्र बनाना चाहता है, ज़मीन खोदकर पत्थर निकालना चाहता है, मालिक कहता है कि उसमें लोहा है, और न जाने क्या-क्या। बस पैसा खर्च करता है। क्यों? यह बहुत अच्छी जगह है। मालिक को मजे करने चाहिए। यहाँ बहुत लड़कियाँ हैं। जवान लड़कियाँ; यहाँ पर्याप्त पति नहीं हैं। मैंने मालिक को बताया। वह बहुत गुस्सा हो गया। उसने कहा, "स्वेज़ा, तू कमीना बदमाश, तूने पहले ही एक पत्नी और तीन और औरतें रख ली हैं। मैंने तुझे एक और पत्नी से बचाया। अब तू मुझे भी उसी मुसीबत में डालना चाहता है!"'

लेकिन स्वेज़ा एक नेक इंसान था, हर काम के लिए तैयार और बेहद उत्साही। और वह खूब खाता-पीता था! उसका तोंद और उसकी हंसमुख मुस्कान इस बात का सबूत थी।

एक ईस्टर के अवसर पर, स्वेज़ा को लगा कि उसके मालिक और उसे भुना हुआ सूअर का मांस या हिरण का मांस खाने का पूरा अधिकार है। इसलिए उसने ह्यूगी को अपने इरादे के बारे में बताकर अपने मालिक की छोटी बोर वाली राइफल उधार ली और शिकार की तलाश में उस घास में घुस गया, जो अब गर्मी से कुछ हद तक मुरझा गई थी और पतली हो गई थी। स्वेज़ा अभी ज़्यादा दूर नहीं गया था कि उसने घास के तनों के बीच से एक मध्यम आकार के जंगली सूअर की थूथन को गंभीर संदेह भरी निगाहों से उसे घूरते हुए देखा। उसने गोली चला दी। सूअर गिर गया, फिर उठा और गायब हो गया। स्वेज़ा उसके पीछे तेज़ी से चलने लगा।

तभी, जहाँ सुअर गायब हुआ था, वहाँ घास में ज़ोरदार सरसराहट हुई, एक गुर्राहट सुनाई दी और एक मरते हुए जानवर की चीख सुनाई दी। स्वेज़ा तेज़ी से पीछे हटा और अपने मालिक को बताया।

ह्यूगी अपनी एक भारी तोप लेकर बाहर आया और स्वेज़ा उसे उस जगह ले गया जहाँ उसने सुअर पर गोली चलाई थी, और सुअर के भागने की दिशा भी बताई। ह्यूगी आगे बढ़ गया और स्वेज़ा उसके पीछे-पीछे चलने लगा, लेकिन ह्यूगी ने बड़ी समझदारी से इसका विरोध किया। वह स्वेज़ा की तोप की गोली अपनी पीठ में नहीं खाना चाहता था। इसलिए उसने अपने नौकर को वापस खुले में जाकर उसका इंतज़ार करने को कहा।

ह्यूगी उस जगह पर पहुँचा जहाँ सुअर मारा गया था, लेकिन उसके शरीर का कोई निशान नहीं था। हत्यारा उसे उठाकर ले गया था। सूखी घास के मुड़े और टूटे तने उस दिशा का संकेत दे रहे थे जहाँ से वह अपना बोझ लेकर गया था। सावधानी से आगे बढ़ते हुए, वह लगभग सौ गज ही चला था कि अचानक सामने से एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी, जिससे उसे पता चला कि हत्यारा कहीं आगे चर रहा है और उसके दखल से नाराज़ है। लेकिन हेलस्टोन ने कई बाघों को देखा और मारा था, इसलिए वह गुर्राहट से डरने वाला नहीं था। वह चुपके से आगे बढ़ा और बाघ और भी ज़ोर से गुर्राया। ह्यूगी जानता था कि हमला किसी भी क्षण हो सकता है।

कुछ देर बाद बाघ ने हमला कर दिया। वह सूखी घास के बीच से उछल-कूद करते हुए आया। हेलस्टोन तब तक इंतजार करता रहा जब तक कि उसे बाघ का विकृत चेहरा साफ दिखाई न दे जाए, जब तक कि आखिरी छलांग में वह जानवर सीधे उसके ऊपर न आ गिरे। फिर उसने गोली चला दी। इस तरह तलवाड़ी के आदमखोर का जन्म हुआ! ह्यूगी की गोली बाघ के चेहरे पर लगी। गोली लगने से वह रुकने की कोशिश कर रहा था, लेकिन पीछे से शरीर के भार ने उसे आगे धकेल दिया, जिसके परिणामस्वरूप बाघ कुछ ही गज दूर पलटी खा गया। ह्यूगी ने दूसरी गोली चलाने के लिए अपनी राइफल का बोल्ट तेजी से चलाया। लेकिन मैगज़ीन जाम हो गई।

उसके बाद उसने सही काम किया। वह मुड़ा और भाग गया।

जाहिर तौर पर बाघ की आंखों की रोशनी कुछ समय के लिए चली गई थी या शायद वह इतना घायल था कि पीछा नहीं कर पा रहा था। वह घास में छटपटा रहा था, दर्द से कराहते हुए जमीन में बड़े-बड़े गड्ढे खोद रहा था और अपने पंजों और दांतों से जमीन को नोच रहा था।

ह्यूगी दूसरी राइफल लेने के लिए बंगले के अंदर भागा, स्वेज़ा उसके पीछे दौड़कर पूछने लगी कि क्या हुआ था। लेकिन जब तक हेलस्टोन एक-एक कदम बढ़ाते

हुए दोबारा घटनास्थल पर पहुँचा, बाघ गायब हो चुका था, और ज़मीन पर खून और लार के छींटे इस बात का स्पष्ट प्रमाण थे कि उसे मुँह या गले के क्षेत्र में गंभीर चोट लगी थी।

कुछ शिकारियों में यह आम धारणा है कि घायल बिल्ली का तुरंत पीछा नहीं करना चाहिए। इतना समय दिया जाना चाहिए कि संभवतः जानवर खून बहने से मर जाए। कम से कम, घाव इतने सख्त हो जाएंगे कि जानवर दूर तक हिलने-डुलने से कतराएगा, या हो सकता है कि वह हिलने-डुलने में असमर्थ हो जाए। लेकिन एक अन्य विचारधारा भी है जो तुरंत पीछा करने की वकालत करती है। इस मामले में सिद्धांत यह है कि घायल जानवर को अपने घावों के सदमे और दर्द तथा तत्काल भय से उबरने का समय नहीं दिया जाना चाहिए। इस सिद्धांत के समर्थकों का मानना है कि समय बीतने और लंबे समय तक दर्द सहने से घायल जानवर हिंसक और बदला लेने पर आमादा हो जाता है, जबकि घायल होने के तुरंत बाद वह केवल भागने की कोशिश करता है। वे यह भी तर्क देते हैं कि मानवीय आधार पर किसी जानवर को घंटों तक असहनीय पीड़ा सहने देना बहुत क्रूरता है, जबकि उसका कोई महत्वपूर्ण अंग गोली लगने से क्षतिग्रस्त हो गया हो।

अब मैं इन सिद्धांतों पर अपनी राय नहीं दूंगा, बस इतना कहूंगा कि दोनों ही सिद्धांत आंशिक रूप से सही और आंशिक रूप से गलत हैं। प्रत्येक जानवर की अपनी विशेषताएं और विशेष स्वभाव होता है और वह अपनी तरह से प्रतिक्रिया करता है। ह्यूगी दूसरे सिद्धांत का पक्का समर्थक था और उसने तुरंत इस पर अमल करना शुरू कर दिया।

लंबी घास में खून के निशान साफ़ दिख रहे थे। ये निशान ह्यूगी की ज़मीन से निकलकर जंगल में चले गए, जहाँ मामला थोड़ा और पेचीदा हो गया। ह्यूगी को अपनी क्षमताओं पर भरोसा करना पड़ा क्योंकि स्वेज़ा, जो दूसरी राइफल लेकर पीछे-पीछे चल रहा था, कोई शिकारी नहीं था। उन्होंने एक सूखी खाई को पार किया, जहाँ बाघ लेट गया था, और फिर आगे बढ़ते हुए दूसरी तरफ समतल ज़मीन पर पहुँच गए। बाघ के लेटने से संकेत मिलता था कि वह बुरी तरह घायल था, और ह्यूगी ने तुरंत उसका पीछा किया था, इसलिए जानवर ज़्यादा दूर नहीं हो सकता था। शायद उसने ह्यूगी और स्वेज़ा की आवाज़ सुन ली थी और झाड़ियों में छुप रहा था। तीसरी जानकारी यह थी कि यह जानवर डरपोक लग रहा था; उसे खाई में मौजूद छुपने की जगह और

इलाके का फ़ायदा उठाकर दोनों आदमियों पर हमला कर देना चाहिए था।

अब तक खून बहना कम हो गया था और एक और फर्लांग समतल रास्ता पार करने के बाद पगडंडी ढलान की ओर जाने लगी, जहाँ ज़मीन पथरीली होती जा रही थी। ह्यूगी को अपनी गति धीमी करनी पड़ी और खून की अगली एक-दो बूँदों की तलाश में इधर-उधर देखना पड़ा। जल्द ही यह भी बंद हो गया और वह आगे नहीं जा सका। उस कठोर ज़मीन पर किसी भी तरह के पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे।

कुछ अज्ञात कारणों से मुडियानूर क्षेत्र के वनक्षेत्रों में जंगली जनजातियाँ या आदिवासी आबादी बिल्कुल नहीं पाई जाती। ऐसा माना जाता है कि यह स्थिति मैसूर के मुस्लिम शासक टीपू सुल्तान के आक्रमण के समय से है, जब उसने आसपास के क्षेत्रों पर आक्रमण किया और सब कुछ अपने नाम कर लिया। इसलिए ह्यूगी के पास बाद में लौटकर बाघ का पीछा करने का कोई अवसर नहीं था, क्योंकि उस पूरे क्षेत्र में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसे बाघों के निशान पहचानने की जानकारी हो।

तलाईमलाई गाँव मुडियानूर से लगभग दो मील दक्षिण में स्थित है, जहाँ ह्यूगी का खेत था। यह एक छोटा सा गाँव है जो उपजाऊ भूमि से घिरा हुआ है। लगभग दो महीने बाद, इस गाँव के एक निवासी ने अपने पड़ोसी से ज़मीन का एक टुकड़ा खरीदा, या यूँ कहें कि खरीदने का इंतज़ाम किया, क्योंकि इस लेन-देन से संबंधित विक्रय विलेख पर हस्ताक्षर करके उसे उप-पंजीयक के कार्यालय में पंजीकृत कराना आवश्यक था और क्रेता द्वारा विक्रेता को राशि का भुगतान उस प्रतिष्ठित व्यक्ति की उपस्थिति में किया जाना था, जिसका मुख्यालय मुडियानूर से सात मील उत्तर में स्थित तलावड़ी नामक एक बड़े गाँव में था। इसलिए विक्रेता और संभावित क्रेता, जिनके पास ज़मीन के लिए देय राशि, जो विक्रय विलेख से संबंधित आकस्मिक खर्चों सहित 400 रुपये थी, थी, तलाईमलाई और तलावड़ी के बीच नौ मील की दूरी पैदल तय करने के लिए एक साथ चल पड़े।

वे इस दूरी का दो-तिहाई हिस्सा तय कर चुके थे जब उन्हें एक छोटी सी धारा मिली जिसमें थोड़ा पानी था। यहाँ वे एक बड़े पेड़ के नीचे रुक गए और दोपहर के भोजन के लिए अपने साथ लाए रागी के आटे के करी वाले गोले खाए। फिर खरीदार पानी पीने और नहाने के लिए धारा में चला गया जबकि उसका साथी उसे नींद भरी आँखों से देखता रहा।

अचानक नदी के दूसरे किनारे से कोई विशालकाय चीज़ पानी पी रहे आदमी पर

झपटी और फिर नदी के उस पार जाकर उतनी ही तेज़ी से गायब हो गई जितनी तेज़ी से आई थी, सिवाय इसके कि उस बेचारे खरीदार का कोई निशान नहीं था। वह उस भयानक आकृति के साथ गायब हो गया था!

अब पूरी तरह जाग चुका वह विक्रेता उछलकर खड़ा हो गया और जितनी तेज़ी से हो सकता था, तलावड़ी की ओर भागा। उसने तीन मील की दूरी रिकॉर्ड समय में तय कर ली। वहाँ पहुँचकर उसने कार्यालय में बैठे उप-पंजीयक और क्लर्कों के सामने अपनी कहानी सुनाई। यह सब कुछ असामान्य होने के कारण उप-पंजीयक ने उस व्यक्ति को पुलिस स्टेशन भेज दिया, जहाँ पूरी कहानी दोहराई गई।

प्रभारी कांस्टेबल की राय में इस कहानी में कुछ भी असामान्य नहीं था। उनके तर्क के अनुसार, यहाँ A रिपोर्ट कर रहा है कि वह B को 400 रुपये में कुछ ज़मीन बेच रहा है। A और B बिक्री का पंजीकरण कराने के लिए निकले, B के पास 400 रुपये थे। रास्ते में, A का कहना है कि जंगल से कोई अजीब प्राणी प्रकट हुआ और B को अपने साथ लेकर गायब हो गया। A का कहना है कि वह आधी नींद में था और वह उस अजीब प्राणी का वर्णन नहीं कर सकता। लेकिन तथ्य यही है कि B गायब हो गया है, उसके साथ 400 रुपये भी गायब हो गए हैं, और ज़मीन अभी भी A की है।

बिना देर किए, हेड कांस्टेबल ने उस बदकिस्मत विक्रेता को गिरफ्तार कर थाने की एकांत कोठरी में बंद कर दिया। फिर उसने एक लंबी रिपोर्ट लिखी, जिसमें उसने बताया कि उसे क्यों शक है कि उसने एक हत्यारे को पकड़ा है। उसने यह भी लिखा कि सत्यमंगलम के सब-इंस्पेक्टर, जो पुलिस और वन विभागों का मुख्यालय था और जहाँ कैदी को भेजा जाना था, कृपया रिपोर्ट पढ़ते समय ध्यान रखें कि हेड कांस्टेबल की यह विनम्र प्रार्थना है कि पदोन्नति बहुत समय से लंबित थी और एक खतरनाक हत्यारे और चोर की इस बहादुर और नाटकीय गिरफ्तारी से मामला तुरंत सुलझ जाए और बिना देरी किए पदोन्नति हो जाए। उसने रिपोर्ट का समापन यह कहते हुए किया कि वह सब-इंस्पेक्टर के दीर्घायु और समृद्धि के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करता है।

तलावड़ी पुलिस स्टेशन में तैनात चौथा कांस्टेबल एक सप्ताह बाद छुट्टी से लौटा। तब हेड कांस्टेबल ने सोचा कि दो पुलिसकर्मियों से काम चल जाएगा, जबकि उसने बाकी दो को कैदी और उसकी रिपोर्ट के साथ चालीस मील दूर सत्यमंगलम भेज दिया, जहाँ सब-इंस्पेक्टर रहते थे। उन्हें वहाँ तीन दिन में पहुँचना था, क्योंकि उन्हें पूरी दूरी पैदल तय करनी थी।

हेलस्टोन अपने खेत के प्रवेश द्वार पर खड़ा था, जो तलवाड़ी से सत्यमंगलम जाने वाले रास्ते से सटा हुआ था। तभी उसने दो पुलिसकर्मियों को एक कैदी को हथकड़ी पहनाकर आते देखा। बातचीत के दौरान उसने पूछा कि उस आदमी ने क्या गलती की है और उसे कहाँ ले जाया जा रहा है। राहत पाकर पुलिसकर्मियों ने कहा कि वे एक हत्यारे को ले जा रहे हैं, जबकि बेचारा विक्रेता फूट-फूटकर रोने लगा और अपनी बेगुनाही और अपनी कहानी नए सिरे से सुनाने लगा।

ह्यूई ने अपने कान खड़े कर लिए।

'रोना बंद करो, बेवकूफ,' उसने नरमी से लेकिन दृढ़ता से कहा। 'अगर तुम मुझसे मदद चाहते हो, तो बस एक सरल प्रश्न का उत्तर दो। वह अजीब सी चीज क्या थी जो तुम्हारे साथी को अपने साथ ले गई? कम से कम, वह कैसी दिखती थी?'

'दोराई,' उस आदमी ने खुद को काबू में रखते हुए जवाब दिया, 'मैंने अपने दोस्त को पानी पीने के लिए झुकते देखा। उसी पल मुझे नींद आ गई होगी। मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया, लेकिन ऐसा लगा जैसे कोई विशाल, लंबा शरीर जंगल से नदी के उस पार कूदा और फिर वापस कूद गया। तभी मुझे एहसास हुआ कि वह आदमी गायब हो गया था! मैं जागा और भागकर तलावड़ी तक पहुंचा। अब ये पुलिसवाले कह रहे हैं कि मैंने अपने दोस्त की हत्या कर दी है और उसके पैसे ले लिए हैं।'

फिर अपनी दुर्दशा के बारे में सोचकर वह एक बार फिर रोने लगा।

ह्यूगी को दो महीने पहले घायल किए गए बाघ की याद आ गई। वह अक्सर उसके बारे में सोचता था और सोचता था कि क्या वह जानवर मर गया होगा या अपने घाव से उबर गया होगा। और अगर वह उबर गया होता, तो ह्यूगी जानता था कि देर-सवेर उसे उस जानवर के बारे में फिर से सुनने को मिलेगा। क्या यह वही हो सकता है?

'क्या वह बाघ जैसा दिखता था?' उसने अचानक पूछा।

पुलिसवालों ने उसे हैरानी से देखा, लेकिन हथकड़ी पहने उस आदमी ने तुरंत जवाब दिया, 'सोचो तो सही, हो सकता है वो कोई बाघ रहा हो। जैसा कि मैंने कहा, मैं आधी नींद में था और सब कुछ इतनी जल्दी हो गया। लेकिन मेरे साथी को ले जाने वाला कोई इंसान नहीं था, इस बात का मुझे पूरा यकीन है। वो कोई लंबी और बड़ी चीज थी।'

ह्यूगी ने पुलिसकर्मियों को सलाह दी, 'इस बेचारे आदमी को सत्यमंगलम मत ले

जाओ। अपना समय और मेहनत बचाओ, क्योंकि यह हत्यारा नहीं है। मुझे लगता है कि मुझे पता है कि असल में क्या हुआ था।'

लेकिन दुनिया भर में कानून व्यवस्था के अधिकारी अपने मकसद को लेकर अडिग रहते हैं, खासकर जब कोई हथकड़ी में हो। पुलिसकर्मी अपने कैदी को लेकर सत्यमंगलम की ओर चल पड़े, जबकि ह्यूगी अपनी कार से तलावड़ी चला गया। उसे यह जानकर बेहद निराशा हुई कि मुख्य कांस्टेबल से पूछताछ करने पर पता चला कि घटना स्थल के बारे में कैदी के अलावा किसी को ठीक से पता नहीं था, क्योंकि किसी ने भी इस मामले की जांच-पड़ताल करने या घटनास्थल का मुआयना करने की जहमत नहीं उठाई थी।

हेलस्टोन ने घायल बाघ के बारे में हेड कॉन्स्टेबल को बताने का सोचा, लेकिन फिर ऐसा न करने का फैसला किया। उसके स्वभाव का, एकतरफा सोच वाला आदमी कुछ भी कर सकता था। वह हेलस्टोन को जेल में भी डाल सकता था! इसलिए उसने बिना देर किए पुलिस स्टेशन छोड़ दिया और सत्यमंगलम के लिए निकल पड़ा। मुडियानूर से लगभग दस मील आगे जाकर उसने दोनों पुलिसकर्मियों और उनके कैदी को पकड़ लिया। लिफ्ट मिलने से खुश होकर तीनों लोग कार में बैठ गए और नब्बे मिनट से भी कम समय में वे सब-इंस्पेक्टर के पास पहुँच गए।

सब-इंस्पेक्टर ने हेड कांस्टेबल की रिपोर्ट पढ़ी और फिर ह्यूगी की बात सुनी।

ह्यूगी द्वारा यह बताए जाने पर कि हेड कांस्टेबल ने त्रासदी स्थल का दौरा करने की जहमत तक नहीं उठाई, उसने टिप्पणी की, 'और यह आदमी पदोन्नति चाहता है।' 'मैं इसे वापस उसी पद पर भेज कर देखूंगा! कृपया मुझे अपनी गाड़ी में तलावड़ी ले चलो।'

वे पाँचों वापस गए और तलवाड़ी के हेड कांस्टेबल को उसकी ज़िंदगी का सबसे भयानक झटका दिया। फिर विक्रेता उन्हें उस जगह ले गया जहाँ संभावित खरीदार और उसका पैसा गायब हो गया था। हेड कांस्टेबल को भी साथ ले जाया गया।

एक सप्ताह से अधिक समय बीत चुका था, लेकिन जब वे किनारे के ऊपर तक रेंगकर पहुँचे तो उन्हें उस स्थान पर बाघ के पदचिह्न मिले जहाँ से वह अपने बोझ, उस अभागे संभावित खरीदार को लेकर वापस लौटा था। चारों ओर देखने पर, थोड़ी दूरी पर, रेत में अभी भी दिखाई दे रहे थे, बाघ के हमले से पहले के धुंधले पदचिह्न।

ह्यूगी अपनी राइफल नहीं लाया था। सब-इंस्पेक्टर ने घबराकर पूछा कि क्या

बाघ अभी भी वहीं है। हेलस्टोन ने 'नहीं' कहा और छहों आदमी आसपास के इलाके में शिकार के अवशेषों की तलाश करने लगे। हैरानी की बात यह थी कि अब जंजीरों से मुक्त हो चुका विक्रेता ही कुतरे हुए हड्डियों के ढेर पर ठोकर खा गया। घास और झाड़ियों में हवा से बिखरे कुछ चिथड़े और दस-दस रुपये के नोटों ने इस बात की पुष्टि कर दी कि ये अवशेष वास्तव में खरीदार के ही बचे हुए थे। हड्डियाँ बहुत कम थीं, क्योंकि बाघ के शिकार के बाद शव पर आए गिद्धों, सियार और लकड़बग्घों ने अधिकांश हड्डियाँ खा ली थीं।

आदमखोर ने लगभग एक महीने बाद दूसरी बार हमला किया। यह घटना नागलूर गाँव में हुई, जो ह्यूगी के घर और नीलगिरी जिले की सीमा बनाने वाली मोयार नदी के बीच लगभग आधे रास्ते पर स्थित है। तीसरा शिकार एक बूढ़ा व्यक्ति था जो तलाईमलाई गाँव से कुछ मील पीछे, पुराने सुल्तान बैटरी रोड पर अपने दो बेटों के पीछे चल रहा था। यह हत्या दिनदहाड़े, दोपहर के समय हुई।

तीनों आदमी तलाईमलाई से नागलूर के लिए एक साथ निकले थे, जहाँ दूसरे पीड़ित को ले जाया गया था। कुछ दूर तक उनका रास्ता उसी पुरानी सड़क पर था जिसका मैंने ज़िक्र किया है, जो उस क्रूर मुस्लिम विजेता के ज़माने की निशानी थी जिसने बहुत पहले इस क्षेत्र में आतंक फैलाया था। वे ज़्यादा दूर नहीं गए थे कि उन्हें एक विशाल जंगली आम का पेड़ दिखाई दिया। बंदरों ने कुछ पके फल गिरा दिए थे और तीनों आदमी उन्हें खाने के लिए रुक गए। जब वे फिर से चलने लगे तो पिता पीछे रह गए थे, और वहीं से वे उन्हें नागलूर जाने के अपने काम के बारे में बताते रहे।

उन्होंने उन्हें याद दिलाया था कि देर हो रही है और वे सभी तेज़ी से चलने लगे थे, तभी अचानक एक कर्कश चीख सुनकर दोनों बेटे पीछे मुड़े और देखा कि एक विशालकाय बाघ अपने जबड़े से उनके पिता का गला जकड़े हुए सड़क के दोनों ओर फैली झाड़ियों में छलांग लगाने की कोशिश कर रहा था।

वह जानवर कहाँ से आया था, यह वे कभी नहीं जान पाए। उसने कोई आवाज़ नहीं निकाली थी, यहाँ तक कि गुर्राहट या घुरघुराहट भी नहीं, जो कि काफी असामान्य था, क्योंकि हमला करने वाले बाघ आमतौर पर हमला करने से पहले अपनी हिम्मत बढ़ाने के लिए दहाड़ते हैं या किसी तरह की आवाज़ निकालते हैं। इस मामले में, उन्होंने केवल अपने पिता की आखिरी साँस सुनी थी। तब तक हमलावर गायब हो चुका था और दोनों लड़के अपनी जान बचाने के लिए तेज़ी से भागते हुए

तलाईमलाई की ओर लौट गए।

गांववालों में दहशत फैल गई और आदमखोर, मानो यह भलीभांति जानता हो कि उसके नाम से इलाके में दहशत फैल गई है, ने अपने हमलों की संख्या बढ़ा दी और अपना दायरा बढ़ा दिया। उसने उत्तर में सत्यमंगलम को मैसूर राज्य के बड़े शहर चामराजनगर से जोड़ने वाली मुख्य सड़क तक हत्याएं कीं। उसने पूर्व में दिंबुम तक हत्याएं कीं, जो सत्यमंगलम के मैदान को देखते हुए पहाड़ों की ढलान पर बसा एक छोटा सा गांव है। उसने मोयार नदी पार की और दक्षिण में नीलगिरी जिले में चला गया, और पश्चिम में उसने मैसूर राज्य के बांदीपुर क्षेत्र में घुसपैठ की।

दुर्भाग्यवश, लगभग इसी समय ह्यूगी, जो हमेशा से एक चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति थे, बीमार पड़ गए। यह अचानक और अप्रत्याशित था। मैं जानता हूँ कि जो कुछ हुआ था और हो रहा था, उससे वे बहुत दुखी थे, क्योंकि वे खुद को बाघ को घायल करके उसके आदमखोरी के अभियान की शुरुआत करने के लिए जिम्मेदार मानते थे, और उस बीमारी से भी परेशान थे जिसने उन्हें बाघ का पीछा करने से रोक दिया था, जबकि अन्यथा वे निश्चित रूप से ऐसा करते। इसलिए उन्होंने मुझे पत्र लिखा, और उसी पत्र के कारण मैं अपनी स्टडबेकर कार से मोयार वैली रेंच गया।

स्वेज़ा ने मुझे द्वार पर मिला और मैंने ह्यूगी को उसके बरामदे में एक कैनवास की कुर्सी पर सोता हुआ पाया। उसने मेरी कार की आवाज़ नहीं सुनी थी। पिछली बार जब हम मिले थे तब से उसके रूप में आया बदलाव लगभग डरावना था। एक हट्टा-कट्टा आदमी, वह अपने सामान्य आकार का आधा रह गया था और थका हुआ और बहुत बीमार लग रहा था। उसने मुझे घर से दूर ले जाने के लिए माफ़ी मांगी और फिर, जब मैं उसके बगल में बैठकर चाय पी रहा था और उसकी ज़मीन पर उगने वाले सबसे स्वादिष्ट आम खा रहा था, ह्यूगी ने मुझे वही कहानी सुनाई जो मैंने यहाँ बताई है, खुद को भी नहीं बख्शा और न केवल बाघ को घायल करने के लिए बल्कि उसके बाद उसे खत्म न करने के लिए भी आत्म-आलोचना से भरा हुआ था।

'ऐसी चीजें होती रहती हैं, ह्यूगी,' मैं उसे बस इतना ही दिलासा दे सका। 'अब तुम्हें खुद को संभालना होगा और मेरे साथ मिलकर इसे खत्म करना होगा।'

उसने व्यंग्य भरी निगाहों से मेरी ओर देखा और कहा, 'केनेथ, मेरे शिकार के दिन खत्म हो गए हैं। मेरा अगला शिकार किसी सुखद शिकारगाह में होगा—अगर ऐसी कोई जगह है तो!'

दरअसल, उन्होंने फिर कभी शिकार नहीं किया। इस घटना के कुछ ही समय बाद वे हवाई जहाज से इंग्लैंड चले गए। उन्होंने वहाँ पहले से ही एक घर खरीद रखा था, जो ग्रामीण इलाके में एक सुंदर जगह थी। लेकिन वे इसका आनंद नहीं ले सके, क्योंकि वहाँ पहुँचे कुछ ही दिन हुए थे कि वे सीढ़ियों से फिसलकर गिर गए और बुरी तरह घायल हो गए। इसके कुछ ही समय बाद दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई।

हालांकि, अब हमने इस बात पर चर्चा की कि क्या किया जाना चाहिए। यह स्पष्ट था कि नागलूर, तलाईमलाई और अन्य उन स्थानों पर जाना जहाँ बाघ ने शिकार किया था, और लोगों से जानवर की आदतों और विशेषताओं के बारे में पूछताछ करना मेरे लिए व्यर्थ होगा। ह्यूगी बीमार पड़ने से पहले ही यह सब कर चुका था और उसने मुझे अपनी सारी खोजों के बारे में बताया था। सबसे पहले, इसमें शायद ही कोई संदेह था कि जिस जानवर को उसने घायल किया था, वही अब आदमखोर बन गया था। जिन कुछ लोगों ने उसे स्पष्ट रूप से देखा था, विशेष रूप से सुल्तान बैटरी रोड पर अगवा किए गए बूढ़े व्यक्ति के दो बेटों ने, इस बात की पुष्टि की कि बाघ के चेहरे की जो झलक उन्हें मिली थी, उससे पता चलता है कि उसमें कुछ गंभीर गड़बड़ी थी। चेहरा बुरी तरह से दागदार और विकृत था। दूसरे, हर बार जब भी उसके हमले का कोई गवाह होता था, तो जानवर की अजीब चुप्पी यह साबित करती थी कि या तो वह स्वभाव से ही बहुत अजीब जानवर था, या उसके स्वर यंत्रों में कुछ गड़बड़ थी। इसके अलावा, किसी को भी इस बाघ की दहाड़ सुनने की याद नहीं थी।

बेशक, उस इलाके में बाघ अक्सर दहाड़ते थे। यह स्वाभाविक था, क्योंकि वह इलाका बाघों से भरा हुआ था। लेकिन जिस भी इलाके में इंसानों की हत्या हुई थी, या कम से कम उस हत्या से कुछ दिन पहले या बाद में, जंगल में किसी बाघ ने दहाड़ नहीं मारी थी। इसी वजह से यह अफवाह फैली कि आदमखोर बाघ गूंगा है।

आदमखोर बाघ का शिकार करने की सामान्य प्रक्रिया जितनी नीरस लगती है, उतनी ही विरोधाभासी भी। शिकारी भैंस की बछियों या बछड़ों के रूप में तीन या चार जीवित चारे खरीदता है और उन्हें पहले से तय किए गए मचानों पर बांध देता है, इस उम्मीद में कि बाघ उनमें से किसी एक को मार डालेगा। फिर शिकारी अगली रात मचान में बैठकर बाघ के दूसरे भोजन के लिए लौटने पर उसे गोली मारने का इंतजार करता है।

यह सुनकर कि आदमखोर आदमियों को खाते हैं, आप सोच रहे होंगे कि किसी जानवर को चारा बनाकर क्यों रखा जाता है। क्या कोई आदमखोर उसे मारना चाहेगा? इसका जवाब यह है कि आदमखोर सिर्फ इंसानी मांस ही नहीं खाते। वे बस दूसरे मांस के मुकाबले इंसानों का मांस पसंद करते हैं। शायद इंसान को ढूंढना आसान होता है। उसका पीछा करना और उसे मारना तो निश्चित रूप से आसान होता है। शायद इंसानी मांस में कुछ ऐसा आकर्षण होता है। लेकिन खैर, किसी इंसान को चारा बनाकर रखना तो आसान है।

ह्यूगी के प्रभाव और स्वेज़ा की मदद से मैंने तलाईमलाई गाँव से चार जवान बैल खरीदे। जिन दो लड़कों के पिता की हत्या कर दी गई थी, उन्होंने जानवरों को बाँधने और मचान बनाने में मेरी मदद करने की पेशकश की, इसलिए मैंने उन्हें और दो अन्य लोगों को भी सहायता के लिए रख लिया। ह्यूगी और स्वेज़ा के साथ मिलकर हमने सात लोगों की एक समिति बनाई, जब हम यह तय करने बैठे कि अपने चारे कहाँ बाँधे जाएँ। अजीब बात है कि अब यह रिवाज बन गया है कि जहाँ शिकार हो चुका हो, उसके जितना हो सके पास ही चारा बाँधा जाए। मुझे सच में नहीं पता कि ऐसा क्यों है। यह सोचना बिल्कुल गलत है कि आदमखोर, हत्यारे की तरह, दोषी अंतरात्मा से पीड़ित हो सकता है और अपने अपराध स्थल पर वापस आ सकता है। आदमखोर के लिए उसका कृत्य कोई अपराध नहीं है। यह तो बस उसका भोजन है।

मैं मानता हूँ कि मुझे भी यह आदत पड़ गई है, लेकिन अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि यह व्यवहार गलत तर्क पर आधारित है। वास्तव में, एक आदमखोर जानवर अपने पहले के शिकार स्थल पर दोबारा जाने की बजाय वहाँ जाने से बचना पसंद करेगा, क्योंकि उसे पता होता है कि उस घटना से कितनी प्रसिद्धि मिली थी और उसके बाद से कितने लोग उस जगह पर आ चुके हैं।

जैसा कि मैंने पिछली कहानियों में बताया है, सबसे कारगर तरीका यह है कि इलाके का नक्शा देखकर और उस पर हर हत्या के स्थान और घटना की तारीख अंकित करके यह पता लगाने की कोशिश की जाए कि हत्यारा किस रास्ते पर चल रहा था। जब बाघ लंबे समय से आदमखोर रहा हो और उस पर कई अपराधों का आरोप हो, तो इस तरह के अध्ययन से पता चलता है कि वह एक ही तय रास्ते पर बार-बार लौटता रहा है, और कुछ हफ्तों या महीनों में एक बार उन्हीं जगहों पर वापस आता रहा है (लेकिन ठीक उसी जगह पर नहीं) जहां उसने पहले शिकार किया था।

शिकार की भाषा में, इस आदत या अभ्यास को 'आदमखोर का रास्ता' कहा जाता है।

मुझे लगता है कि एक तरह से यह उस सवाल का जवाब देता है जो पहले पूछा गया था कि किसी इंसान की हत्या वाली जगह के पास चारा बांधना एक आम चलन क्यों बन गया है। उम्मीद की जाती है कि चारा बाघ के इलाके में होगा और वह फिर से आएगा। लेकिन ऐसा कई हफ्तों या महीनों तक नहीं हो सकता, क्योंकि हर आदमखोर बाघ एक तय इलाके में नहीं आता। ज़्यादातर आते हैं, लेकिन कुछ अपवाद भी होते हैं। और वैसे भी, ऐसा इलाका सिर्फ़ लंबे समय से शिकार कर रहे आदमखोर बाघ के साथ ही तय किया जा सकता है। जिस बाघ का मैं पीछा कर रहा था, उसने हाल ही में शिकार करना शुरू किया था और अब तक उसकी हत्याएं बेतरतीब थीं।

इन सब बातों से मुझे फिर से वही बात याद आ गई कि हमारे लिए यह तय करना मुश्किल था कि ठीक कहाँ पर बत्तख बाँधी जाए और इस बारे में बहुत मतभेद थे। दोनों लड़कों ने सुल्तान की बैटरी रोड पर कोशिश करने की वकालत की, जहाँ उनके पिता मारे गए थे। मेरे साथ मदद के लिए रखे गए अन्य दो लोगों ने कहा कि तलाईमलाई से तलावड़ी जाने वाला रास्ता सबसे अच्छा रहेगा, क्योंकि उस पर लगभग हर दिन बाघ के पदचिह्न दिखाई देते थे। ह्यूगी ने सुझाव दिया कि तलाईमलाई से दो-तीन मील दक्षिण में, जहाँ ज़मीन अचानक मोयार नदी की घाटी की ओर ढलान पर जाती है, चारों चारे एक-दूसरे से एक मील की दूरी पर और एक सीधी रेखा में बाँधे जाएँ। स्वेज़ा ने ह्यूगी के घास के मैदान में कहीं बत्तख बाँधने का सुझाव दिया, जहाँ बाघ सबसे पहले घायल हुआ था, क्योंकि उसे लगता था कि बाघ वहाँ चित्तीदार हिरण और जंगली सूअर खाने के लिए वापस आएगा, जो अभी भी बहुतायत में थे।

इन सभी सुझावों में से, मैंने अंतिम सुझाव को सबसे कम सफल पाया। आदमखोर बाघ उस जगह पर कभी वापस नहीं लौटेगा जहाँ उसे इतनी बुरी तरह चोट लगी हो। इसलिए हमने इसे खारिज कर दिया। बाकी सभी सुझाव समान रूप से अच्छे थे और यह भाग्य की बात लग रही थी कि बाघ अगली बार कहाँ और कब दिखाई देगा।

अंततः हमने एक चारा सुल्तान बैटरी रोड पर, दूसरा तलाईमलाई-तलवाड़ी मार्ग पर, और तीसरा और चौथा चारा तलाईमलाई के दक्षिण में मोयार नदी के किनारे स्थित दो सबसे संभावित स्थानों पर लगाने का निर्णय लिया, जैसा कि ह्यूगी ने सुझाव दिया था। मुझे लगा कि शिकार, यदि और जब हुआ, तो इन्हीं दो चारे में से किसी एक

पर होगा, क्योंकि बाघ नीलगिरी के जंगलों से तलाईमलाई अभ्यारण्य तक इसी पहाड़ी से होकर आते-जाते थे। हालांकि, चूंकि उस क्षेत्र में एक से अधिक बाघ थे, इसलिए हमें यह पता नहीं चल सकता था कि शिकार आदमखोर बाघ ने किया है या किसी निर्दोष बाघ ने, और एकमात्र विकल्प यही था कि उसे गोली मार दी जाए, इस उम्मीद में कि वह आदमखोर बाघ ही निकले। प्रत्येक चारा लगाने के लिए सटीक स्थान का चयन करने का कार्य मुझे सौंपा गया था।

मैंने अपने चार सहायकों से कहा कि वे अगले दिन भोर में आठ और आदमियों के साथ लौटें, ताकि कुल मिलाकर बारह लोग हो जाएं, जिससे चारा बांधने से पहले लगाए जाने वाले चारों मचानों में से प्रत्येक को खड़ा करने के कार्य के लिए पर्याप्त आदमी उपलब्ध हो सकें।

मैंने पाया है कि पहले मचान खड़ा करना और उसके बाद ही उपयुक्त निशाने पर चारा बांधना समझदारी भरा तरीका है। फिर, जब शिकार हो जाता है, तो शिकारी अपनी जगह लेने के लिए तैयार रहता है। इसके विपरीत, चारा मारे जाने के बाद मचान बांधने से बहुत गड़बड़ी होती है, और यदि बाघ आसपास के क्षेत्र में छिपा हो तो वह आमतौर पर वापस नहीं आता।

उस समय मैं जिस मचान का इस्तेमाल करता था, और जिसे मैं आज भी सबसे अच्छा मानता हूँ, वह एक साधारण चारपाई थी जिसके चारों पैर छोटे कर दिए गए थे। आपमें से जो लोग नहीं जानते कि चारपाई क्या होती है, उनके लिए मैं समझा दूँ कि इसमें लकड़ी या बाँस के चार टुकड़ों से बना एक आयताकार ढाँचा होता है, जो लगभग छह फीट लंबा और तीन फीट चौड़ा होता है। इस ढाँचे पर रस्सी या चौड़ी सूती पट्टी बाँधी जाती है, और चारों कोनों पर चार-चार पैर लगाकर चारपाई को पूरा किया जाता है। ज़्यादातर गाँव वाले ज़मीन पर सोते हैं, लेकिन कुछ जगहों पर जहाँ साँप और बिच्छू बहुत ज़्यादा होते हैं, वहाँ चारपाई ही एकमात्र पसंदीदा विकल्प है, क्योंकि ये गाँवों में ही बनाई जाती हैं और रस्सी समेत इनकी कीमत लगभग पाँच रुपये प्रति चारपाई होती है। जहाँ ज़्यादा आराम के लिए सूती पट्टी या जाली का इस्तेमाल किया जाता है, वहाँ कीमत ज़्यादा से ज़्यादा दोगुनी हो जाती है।

मेरी मचान इसी तरह की एक चारपाई थी। इसके चारों पैरों को एक-एक फुट छोटा कर दिया गया था, ताकि चारपाई को पेड़ की शाखाओं से बांधा जा सके। चारपाई को दो हिस्सों में काटकर दो कब्जों पर मोड़ा गया था ताकि इसे आसानी से

ले जाया जा सके। इसके फायदे स्पष्ट हैं; यह कम वजन और कम शोर के साथ अधिकतम आराम देती थी, अगर मुझे हिलना-डुलना पड़े, जो कि वैसे तो बैठे-बैठे कभी नहीं करना चाहिए!

ह्यूगी को एक अलग तरह की मचान पसंद थी, जो कि एक तह करने वाली कैनवास की कुर्सी होती थी, जिसमें पैर रखने के लिए एक फुटरेस्ट लगा होता था ताकि पैर नीचे लटकें नहीं। इस पर बैठने से मुझे हमेशा असुरक्षा का भाव आता था—ऐसा लगता था कि या तो मैं इससे गिर जाऊँगा, या फिर पूरी संरचना किसी भी क्षण ढह जाएगी। बेशक, यह सिर्फ़ मेरा डर था, क्योंकि असल में ऐसा कोई खतरा नहीं था और मैं ह्यूगी का आभारी था जब उसने मुझे अपनी कैनवास की कुर्सी-मचान उन चार जगहों में से एक पर इस्तेमाल करने के लिए दी, जिन्हें हमने चुना था। इसका मतलब यह था कि बाकी दो मचानों को जंगल से काटी गई बांस और लकड़ी से वहीं बनाना पड़ेगा।

अगले दिन काम पूरी लगन से शुरू हुआ, जब बारह आदमी अपने तेज चाकू लेकर पहुंचे। ह्यूगी ने हमें जरूरत की सारी रस्सी मुहैया करा दी, इसलिए मैंने चारे के तौर पर जो बैल खरीदे थे, उनमें से चार आदमियों ने उन्हें आगे बढ़ाया और हम जल्द ही तलाईमलाई-तलावड़ी सड़क पर पहुंच गए, जहां हमें पहला मचान बांधना था।

हम इस रास्ते पर मुश्किल से एक चौथाई मील ही चले थे कि हमें नरम मिट्टी पर साफ-साफ एक बाघ के ताज़े पदचिह्न दिखाई दिए। यह बाघ सड़क पार करने वाले एक छोटे नाले के तल से नीचे आया था। बाघ सुबह तड़के यहाँ से गुजरा था, जिसका पता इस बात से चला कि रास्ते के किनारों पर जमी बारीक धूल अभी तक बाघ के पदचिह्नों से बने गड्ढों में नहीं बैठी थी। कुछ घंटों के बीतने और हवा के चलने से, अगर ये पदचिह्न छह घंटे से अधिक पुराने होते, तो निश्चित रूप से ऐसा हो जाता।

सड़क के उस पार नाले के बाईं और दाईं ओर चलते हुए, हमें कई पुराने पदचिह्न दिखाई दिए, जिनसे पता चलता है कि इस सूखे नाले का इस्तेमाल या तो उस बाघ ने किया होगा जिसके पदचिह्न हमने अभी देखे थे, या फिर आस-पास के अन्य बाघों ने। दुर्भाग्यवश, पुराने होने के कारण, इन पदचिह्नों की पहचान सड़क के किनारे बने नए पदचिह्नों से निश्चित रूप से नहीं की जा सकी, जो निस्संदेह औसत आकार से बड़े किसी वयस्क नर बाघ द्वारा बनाए गए थे।

नाले के उस पार, सड़क पार करने से ठीक पहले, एक बरगद का पेड़ था, और

सभी इस बात पर सहमत थे कि यह पहली मचान के लिए आदर्श स्थान होगा। यह एक पुराना पेड़ था, और इसकी ऊपरी शाखाओं से ज़मीन पर लटकी हुई कई जड़ें वर्षों के दौरान खुद ही जड़ पकड़ कर छोटे पेड़ों के तनों की मोटाई में समा गई थीं। जड़ों और तनों के इस जाल में हमारे लिए एक छोटी सी मचान लगाना आसान होगा, और मैंने अपनी चारपाई और ह्यूगी की कुर्सी को किसी और जगह के लिए बचा कर रखने का फैसला किया, जहाँ प्राकृतिक निर्माण इतना आसान न हो। हमने नब्बे मिनट में वह मचान पूरी कर ली, और एक सुविधाजनक जगह पर पहला चारा बाँधने के बाद, हम अपने दूसरे स्थान के लिए निकल पड़े, जो आपको याद होगा कि सुल्तान की बैटरी रोड थी।

जिस बुजुर्ग की हत्या हुई थी, उसके बेटों ने मुझे वह स्थान दिखाया जहाँ यह त्रासदी घटी थी। उस स्थान से कुछ ही फर्लांग की दूरी पर, और जहाँ एक नाला सड़क को पार करता था, हमने दूसरा मचान खड़ा किया। इसे भी उसी स्थान पर बनाया गया, लेकिन इसे बनाने में बहुत अधिक समय लगा, इसलिए दोपहर होने तक हम दो मील दूर स्थित उस पहाड़ी की ओर रवाना हुए, जहाँ से मोयार घाटी और नीलगिरी के जंगल दिखाई देते थे, जहाँ से आमतौर पर बाघ आते थे।

हमारे मार्गदर्शक, जो जीवन भर इसी क्षेत्र में रहे थे, ने पहले एक और फिर दूसरा पगडंडी मार्ग दिखाया जो हमारे दक्षिण में स्थित घाटी से ऊपर की ओर जाता था। दूर से ही मोयार नदी बहती हुई दिखाई दे रही थी, जिसके किनारे पर विशाल वृक्षों की घनी पट्टी से उसका मार्ग आसानी से पहचाना जा सकता था। जिस ऊंचाई पर हम खड़े थे, वहां से मोयार नदी एक विशाल हरे अजगर की तरह जंगल में रेंगती हुई दिखाई दे रही थी।

सुविधाजनक पेड़ों पर हमने अपनी बची हुई मचानें बाँध दीं, पहले मेरी चारपाई और आखिर में ह्यूगी की कैनवास की कुर्सी। चौथे बदकिस्मत बैल के शिकार को बाँधने के साथ ही दिन का काम समाप्त हो गया। पश्चिम में बांदीपुर के जंगलों में सूरज डूब रहा था, तभी हम ह्यूगी के खेत की ओर वापस चलने लगे, जो लगभग पाँच मील दूर था। दिन लंबा था और हम बहुत थके हुए थे, लेकिन चारों काम पूरे करने से मुझे बहुत संतुष्टि मिली। अब मुझे बस दिन में जंगल की दूसरी दिशाओं में तलाश करनी थी, इस उम्मीद में कि शायद गलती से आदमखोर बैल मिल जाए। इस बीच, मैं रात में ह्यूगी के घर पर चैन से सोता, जब तक कि मेरा कोई शिकार न हो जाए।

मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि क्या होने वाला है।

उस बूढ़े आदमी के दोनों बेटों और मेरी मदद करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए पहले दो आदमियों को निर्देश दिया गया था कि वे अगली सुबह और उसके बाद हर सुबह चारों चारागाहों पर जाएँ और शिकार होने तक उन्हें चारा और पानी दें। उन्हें सबसे दूर वाले चारागाहों से शुरुआत करनी थी, यानी पश्चिमी पहाड़ी पर हमने जिन दो जानवरों को बाँधा था, उनसे शुरू करके पूर्व की ओर सुल्तान की बैटरी रोड तक जाना था और अंत में तलाईमलाई-तलावड़ी मार्ग पर पहले चारागाह तक जाना था, जो ह्यूगी के खेत के सबसे करीब था।

अगली सुबह साढ़े दस बजे मैंने उन्हें उत्साह से बातें करते हुए ड्राइववे पर आते सुना और मैं समझ गया कि किसी जानवर का शिकार हुआ है। लेकिन जो खबर वे लाए थे वह चौंकाने वाली और परेशान करने वाली थी! पिछली शाम हमने जो आखिरी चारा बांधा था—जो ह्यूगी के कैनवास की कुर्सी वाले मचान के नीचे था—उसे मार दिया गया था और आधा खा लिया गया था, और नाले और तलाईमलाई-तलावड़ी सड़क के संगम पर मिले पहले जानवर को भी मार दिया गया था और लगभग आधा खा लिया गया था।

एक ही रात में दो शिकार, कम से कम पाँच मील की दूरी पर। इससे साफ पता चलता है कि दो बाघ थे। अब इनमें से आदमखोर कौन था और मुझे किस मचान पर बैठना चाहिए?

एक और विचार-विमर्श हुआ, लेकिन इस बार हम सब एकमत थे। खेत के सबसे नज़दीक वाले पहले शिकार को मारने वाला बाघ ही आदमखोर होने की अधिक संभावना रखता था, क्योंकि उसके पदचिह्नों से संकेत मिला था कि वह तलाईमलाई-तलवाड़ी सड़क को पार करने वाले नाले के किनारे पर घूमता था, जहाँ पहले ही एक इंसान की हत्या हो चुकी थी और जहाँ अक्सर लोग आते-जाते थे। पहाड़ी पर हुई दूसरी हत्या एक बहुत ही कम इस्तेमाल होने वाली जगह पर हुई थी, जहाँ लोग शायद ही कभी जाते थे, लेकिन नीलगिरी जिले से आने वाले या वहाँ लौटने वाले बाघ उस जगह का इस्तेमाल करते थे। इसलिए, वहाँ हत्या करने वाला बाघ निश्चित रूप से आदमखोर नहीं था। अतः यह तय किया गया कि मैं उस रात नाले के किनारे पर बैठूँ।

यह सब तय हो जाने के बाद, अगला काम कुछ घंटे सोना था।

ह्यूगी ने मुझे दोपहर एक बजे भरपेट भोजन के लिए बुलाया और रात के लिए

सैंडविच का एक पैकेट दिया, जो एक बहुत ही सुखद उपहार था। ढाई बजे तक मैं मचान पर था और नीचे अधखाए हुए युवा बैल को देख रहा था, जबकि मेरे चार सहायक उन शाखाओं को हटा रहे थे जिनसे उन्होंने सुबह गिद्धों से बचाने के लिए शव को ढका था।

उनके जाने के बाद सन्नाटा छा गया और जैसा कि उम्मीद थी, उस सड़क पर कोई यात्री नहीं गुजरा। आदमखोर बाघ की मौजूदगी लोगों को, खासकर शाम के समय, उस रास्ते का इस्तेमाल करने से रोक रही थी, जिस पर वह पहले ही एक आदमी को मार चुका था। इसलिए, शाम पांच बजे के कुछ समय बाद तलाईमलाई गांव की तरफ से आती आवाजें सुनकर मैं चौंक गया और जब मैंने अपने ही चार सेवकों को, जिनके साथ स्वेजा बंदूक लिए था, पहचाना तो मैं दंग रह गया। वे मुझे यह बताने आए थे कि आदमखोर बाघ ने एक महिला को मार डाला है, जब वह सत्यमंगलम-चमराजनगर मार्ग पर सत्रह मील दूर स्थित दिंबुम गांव के पास एक कुएं से पानी ला रही थी। ह्यूगी ने उन्हें यह खबर देकर भेजा था, क्योंकि उसे लगा कि मैं शायद रात भर जागकर उस बाघ को गोली मारने को उचित न समझूं, जो स्पष्ट रूप से आदमखोर बाघ नहीं हो सकता। कोई बाघ जिसने पिछली रात आधा बैल खा लिया हो, वह अगली सुबह सत्रह मील चलकर किसी महिला को नहीं मारेगा।

ह्यूगी के संदेश से मैं पूरी तरह सहमत था और मचान से नीचे उतर आया। जहाँ तक मेरा सवाल था, नाले में मंडराने वाले बाघ को अपने भोजन का बचा हुआ आधा हिस्सा खाने की छूट थी। वापस आकर ह्यूगी ने सुझाव दिया कि मैं तुरंत दिंबुम जाऊं और बैठने के लिए कोई जगह ढूंढूं, चाहे कुएं के पास हो या उस जगह पर जहां उस महिला की हत्या हुई थी। इसमें कोई शक नहीं कि उसके परिवार ने शव को दाह संस्कार के लिए ले लिया होगा, लेकिन यह भी मुमकिन था कि आदमखोर बाघ रात में अपने शिकार के शव की तलाश में उस जगह पर लौट आए। मैं मान गया और तुरंत चल पड़ा, ज़रूरत पड़ने पर अपने चार सहायकों को भी साथ ले गया।

तलाईमलाई गाँव से निकलते समय लगभग अंधेरा हो चुका था और मैंने स्टुडेबेकर की हेडलाइट्स चालू कर दीं। बस एक मील आगे, सड़क तेज़ी से नीचे उतरती हुई कई आपस में मिलती धाराओं में से पहली धारा को पार करने लगी, जो साल के इस समय सभी सूखी थीं, और इस धारा के दूसरी ओर सड़क के उस पार, मेरी लाइटों की रोशनी को प्रतिबिंबित करते हुए, बाइसन के झुंड की आँखें दिखाई दे

रही थीं! जब मैंने धारा पार करने के लिए गियर बदला तो शोर से परेशान होकर झुंड सरपट भाग गया—यानी, झुंड के नर बाइसन को छोड़कर, जो सड़क के ठीक बीच में खड़ा था, उसका सिर थोड़ा झुका हुआ था और वह ज़मीन पर पैर पटक रहा था, जो स्पष्ट रूप से आक्रामक और धमकी भरा लग रहा था।

बाइसन आमतौर पर काफी हानिरहित जानवर होते हैं और इंसानों की हल्की सी भी आहट या आवाज सुनते ही भाग जाते हैं। लेकिन यहाँ उनमें से एक कुछ अलग ही व्यवहार कर रहा था। शायद उसे लगा कि मैं झुंड के लिए खतरा हूँ। या शायद कार की हेडलाइट्स देखकर वह भ्रमित हो गया और उसे पता ही नहीं चला कि उसके पीछे इंसान हैं। खैर, मैं हमले के परिणामों का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। इसका मतलब था बैल को गोली मारना—जो मैं बिल्कुल नहीं चाहता था—और वह भी जल्दी, क्योंकि अगले कुछ ही सेकंड में हमले के स्पष्ट संकेत मिल रहे थे। अगर वह सफल हो जाता, तो मुझे पता था कि मेरी स्टडबेकर कार, साथ ही अंदर बैठे हममें से कुछ, या शायद सभी, लोग पूरी तरह से नष्ट हो जाते। मैंने अपनी आँखों से नीलगिरी के जंगलों में तिप्पाकाडु रोड पर एक लदे ट्रक को हमलावर बाइसन द्वारा पलटते हुए देखा है; ट्रक के नीचे दबकर ड्राइवर की मौत हो गई थी, जबकि बाइसन ने उसके सहायक और सफाईकर्मी को सींगों से मारकर और कुचलकर अधमरा कर दिया था।

ये अप्रिय विचार तेज़ी से मेरे मन में कौंध गए। राइफल चलाने से पहले बस एक ही मौका बचा था, और मुझे उसे तुरंत इस्तेमाल करना था। वह मौका स्टडबेकर की विंडशील्ड पर मेरे दाहिनी ओर लगे पुराने हॉर्न में था। मैंने इसी पुराने हॉर्न से कई हाथियों को डराया था! इसकी तेज़, कर्कश आवाज़ ने उन्हें घोर भय से भागने पर मजबूर कर दिया था। इसलिए मैंने इसे फिर से आजमाया। मैंने उस पुराने हॉर्न के स्प्रिंग लीवर को ज़ोर से और बार-बार दबाया। एक भयानक आवाज़ ने जंगल के सन्नाटे को चीर दिया। बैल ने अपना झुका हुआ सिर उठाया, उसकी आँखें डर से चौड़ी हो गईं, मानो मानो नरक टूट पड़ा हो, और अगले ही पल वह बाँस की झाड़ियों में घुस गया और आँखों से ओझल हो गया।

उसके बाद मुझे काफी सारे जानवर दिखाई दिए, जो सुबह-सुबह के लिए काफी असामान्य था, और संयोग से शिकार से जुड़े अंधविश्वासों के हिसाब से यह एक 'शुभ संकेत' था। चित्तीदार हिरण और दो सांभर एक-एक करके सड़क पार कर गए, एक सुस्त भालू सड़क किनारे खुदाई कर रहा था जिससे मेरी रोशनी की वजह से उसकी

आंखें चौंधिया गईं, और एक पैंथर मेरे होनाथेट्टी वन लॉज से आगे निकलने के एक फर्लांग बाद बाईं से दाईं ओर छलांग लगाता हुआ दिखाई दिया, जब मैं दो पहाड़ियों के बीच की घाटी से गुजर रहा था, जो डिंबुम से मात्र सात मील दूर थी।

हम रात 8 बजे से कुछ ही पहले अपनी मंज़िल पर पहुँच गए, जो कि बहुत बढ़िया रहा, क्योंकि रास्ता न केवल ढलानदार और घुमावदार था, बल्कि कई जगहों पर लंबी घास से पूरी तरह ढक गया था। उस घास में छिपे हुए बड़े-बड़े पत्थर थे, जो किसी भी क्रैंककेस या डिफरेंशियल के निचले हिस्से को फाड़ सकते थे। ऐसी जगहों पर मुझे कछुए की चाल से चलना पड़ा, और दो आदमियों के पीछे धीरे-धीरे चलना पड़ा जो कुछ गज आगे कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे थे ताकि मुझे छिपे हुए पत्थरों के बारे में चेतावनी दे सकें, इससे पहले कि कार का कोई अगला पहिया उनसे टकरा जाए। फिर हम सब मिलकर उन्हें एक तरफ हटा देते, या अगर वे इतने बड़े होते कि उन्हें हटाया नहीं जा सकता, तो मैं रास्ते से हटकर उनसे बच निकलता।

डिंबुम मैसूर शहर से निकलने वाली मुख्य सड़क पर स्थित एक छोटा सा गाँव है, जो चामराज नगर कस्बे से होते हुए मैदानी इलाके में स्थित एक अन्य बड़े कस्बे सत्यमंगलम की ओर जाता है। सत्यमंगलम उस क्षेत्र के पुलिस और वन विभागों का मुख्यालय हुआ करता था। यहाँ से पचास मील आगे कोयंबटूर शहर स्थित है।

दिंबुम में बस कुछ झोपड़ियाँ और एक चाय की दुकान थी, जिसके मालिक एक मोपला थे। मोपला किसी अरब व्यापारी के वंशज थे, जो सदियों पहले व्यापार के लिए भारत के पश्चिमी तट पर आए थे, लेकिन वहीं बस गए और कई हिंदू मलय महिलाओं से शादी कर ली। इन लोगों ने वर्षों से अपनी व्यापारिक कुशलता बरकरार रखी है और शायद ही कोई ऐसा व्यापार हो जिसमें उनमें से कई कुशल न हों। दिंबुम की चाय की दुकान मोपला और उनकी तीन पत्नियों द्वारा चौबीसों घंटे खुली रखी जाती थी। सोलह मील दूर सत्यमंगलम से खड़ी घाट-सड़क पर चढ़ने वाले थके हुए ट्रक चालकों को दिन या रात किसी भी समय गरमागरम चाय या कॉफी का एक बड़ा मग, साथ ही करी और चावल का गर्म भोजन मिल जाता था। इस जलपान के साथ एक और आवश्यक वस्तु मुफ्त में मिलती थी: लंबी चढ़ाई के बाद भाप के बादल के साथ पहुँचने पर उनके उबलते रेडिएटर्स के लिए ठंडा पानी।

यात्रियों के लिए एक विश्राम गृह भी है, जो ढलान के किनारे पर खूबसूरती से स्थित है और नीचे हजारों फीट गहरी घाटी का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। ढलान के

निचले हिस्से में स्थित घाटी का निकटवर्ती भाग घने जंगलों से आच्छादित है, लेकिन सड़क जंगल से होकर गुजरती हुई दिखाई देती है और अंत में दूर क्षितिज तक फैले कृषि क्षेत्रों में जाकर समाप्त होती है। कुछ दूरी पर सत्यमंगलम स्थित है, जबकि दक्षिण-पश्चिम दिशा में दूर क्षितिज पर कोयंबटूर शहर दिखाई देता है।

पहाड़ी की तलहटी में स्थित वे जंगल मुझे उस बाघ के कारनामों की याद दिलाते हैं जिसे मैंने 'राजनगर का हमलावर' नाम दिया था,* क्योंकि वहीं मैंने कुछ रोमांचक दिन उसकी तलाश में बिताए थे, लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली थी।

इस विश्राम गृह से संध्याकाल में मैदानों को देखना किसी परीलोक में झांकने जैसा है। असंख्य बिजली की बूँदें, जिनमें रंग-बिरंगी बत्तियाँ भी बिखरी हैं, काले आकाश में एक अलग ही चमक बिखेरती हैं। दक्षिण-पश्चिम दिशा में क्षितिज पर एक तीखी चमक दिखाई देती है: यह बादलों से ढके आकाश में कोयंबटूर की रोशनी का प्रतिबिंब है, जो इतनी दूर है कि सीधे दिखाई नहीं देती।

मैं मोपलाह की चाय की दुकान पर गया, क्योंकि मुझे पता था कि मुझे जो भी जानकारी चाहिए, उसका स्रोत वही होगा। महत्वाकांक्षी दुकानदार अब्दुलकुन्नी मुझे अच्छी तरह जानता था। दरअसल, ह्यूगी के खेत जाते समय मैं उसके यहाँ चाय पीने के लिए रुका था और उसे अपने आने का कारण बताया था। उसने अब ज़ोर से मेरा अभिवादन किया और अपनी तीखी, उत्साहित आवाज़ में अपनी खबरें बताने लगा।

साहब, आप अपने बाघ को ढूंढने तलाईमलाई क्यों जा रहे हैं, जबकि वह यहीं है? आज सुबह उसने इस चाय की दुकान के ठीक पीछे कुएँ पर एक औरत को मार डाला। वाकई, बहुत मुसीबत है! हमें यहाँ बहुत पानी चाहिए, चाय बनाने के लिए और उन सौ से ज़्यादा ट्रकों के रेडिएटर्स के लिए जिन्हें रोज़ पानी की ज़रूरत होती है। इसके लिए कुएँ पर कई बार जाना पड़ता है और कई बाल्टियाँ पानी भरना पड़ता है। मेरी तीनों पत्नियों ने खबर सुनने के बाद से वहाँ जाने से मना कर दिया है। तीनों ही आज्ञाहीन और निकम्मी हैं! मैंने उन्हें घर से निकालने की धमकी दी है। यहाँ तक कि उनकी पिटाई भी की है। लेकिन सबने एकमत से मुझे खुद जाने को कहा। क्या कोई मुझे इन औरतों से छुटकारा नहीं दिला सकता? अब मैं आपसे पूछता हूँ, साहब, क्या मैं चाय की दुकान छोड़ सकता हूँ? इसलिए मुझे आज से दिहाड़ी पर एक नौकरानी रखनी पड़ी है। इसमें पैसे लगते हैं और वैसे भी वह एक आलसी और बदचलन औरत है! देखिए साहब, एक अच्छे मुसलमान होने के नाते यह मेरी प्रथा नहीं है कि मैं

अजनबियों को अपनी महिलाओं से बात करने दूं। लेकिन आप मेरे मित्र हैं, महोदय। कृपया मेरी पत्नियों से बात करें और उन्हें पानी लाने की सलाह दें।

यह वाकई एक मुश्किल काम था! वैसे भी, मेरे पास बूढ़े अब्दुलकुन्नी की पत्नियों को आत्महत्या के लिए मनाने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम थे। क्योंकि आदमखोर सांप के साथ कुएँ पर जाने से उनका यही अंजाम होता। मैं महिलाओं को हड़ताल पर जाने के लिए दोष नहीं दे सकता था। बूढ़े अब्दुलकुन्नी को अपनी पत्नियों से ज़्यादा अपने पैसों की फ़िक्र थी, लेकिन मैंने उन्हें यह बात नहीं बताई। इससे उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचती।

मैंने इसके बजाय कहा, 'मैं बाघ को गोली मारने आया हूँ, अब्दुलकुन्नी, इसलिए यदि आप मेरी मदद करेंगे, तो आपकी समस्या हल हो जाएगी। समय बर्बाद न करें, बल्कि मुझे ठीक-ठीक बताएं कि उस महिला की हत्या कैसे हुई।'

साहब, अब क्या कहूँ। वो पानी लेने गई थी। पानी लेकर लौट रही थी कि तभी शैतान बाघ झाड़ियों से निकला और उसे उठाकर जंगल में ले गया। वो ज़ोर से चीखी, लेकिन बाघ ने सिर्फ़ गुर्राया। एक और औरत भी पानी लेने जा रही थी और घटना के समय वो बस कुछ ही गज दूर थी। उसने सब कुछ सुना और देखा। वो दौड़कर यहीं वापस आई और हमें बताया। उस समय मेरे यहाँ पाँच-छह ग्राहक थे। हमने दरवाज़े बंद कर दिए और लगभग दो घंटे तक अंदर बंद रहे। इससे हमारा एक और कारोबार का नुकसान हुआ। जब दूसरे ड्राइवर आए और दरवाज़ा खटखटाया, तब जाकर हमने दरवाज़ा खोला। फिर हममें से कई लोग कुएँ पर गए। उस औरत का कोई अता-पता नहीं। उसका टूटा हुआ घड़ा वहीं पड़ा है जहाँ से उसके हाथों से गिरा था। अब आपको बताने के लिए कुछ नहीं है।

'क्या इस इलाके में पहले भी बाघ देखे जाने की कोई खबर आई है, अब्दुलकुन्नी? क्या किसी और ने भी उसे देखा है? क्या किसी ने उस जानवर में कुछ खास देखा?' मैंने फटाफट सवाल पूछ डाले।

लेकिन बूढ़ा आदमी सिर्फ हँसा। उसने पूछा, 'बाघ में ऐसी क्या खास बात हो सकती है? सब एक जैसे ही दिखते हैं, एक सिर, चार पैर और एक पूंछ। वैसे भी, तुम मुझसे ऐसे बेवकूफी भरे सवाल क्यों पूछते हो? क्या मैंने तुम्हें पहले ही नहीं बताया कि पानी भरने के लिए कुएँ पर जा रही उस दूसरी औरत के अलावा किसी ने भी बाघ को नहीं देखा था? उसने कहा था कि वह एक विशालकाय जानवर था और शैतान जैसा

दिखता था।'

मैंने आखिरी सवाल पूछा, इस उम्मीद के साथ कि शायद अगले दिन मैं पीड़ित के अवशेषों के ऊपर बैठ सकूं। 'क्या उस महिला का शव मिल गया है?'

अब्दुलकुन्नी की व्यंग्यात्मक मुस्कान और चौड़ी हो गई। 'उसे खोजने कौन है, साहब? क्या आपको लगता है कि हम पागल हैं? हम अभी जीवित हैं। वह महिला मर चुकी है। अगर हम उसके शव की तलाश में गए और बाघ ने हमें ढूंढ लिया, तो हम भी मर जाएंगे। और इससे उसे कोई मदद नहीं मिलेगी!'

मैंने कितनी बार ये शब्द पहले नहीं सुने थे, इतनी अलग-अलग भाषाओं में, जब मैं यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि क्या किसी आदमखोर जानवर का शिकार या उसके अवशेष मिले हैं!

यह स्पष्ट था कि मोपला मेरी और कोई मदद नहीं कर सकता था। मुझे खुद ही सब कुछ करना होगा और कोई योजना बनानी होगी। इसलिए मैंने अपने लिए दो मग चाय मंगवाई, और तलाईमलाई से कार में लाए गए दोनों आदमियों के लिए एक-एक मग मंगवाया, और उस गंदी चाय की दुकान के कोने वाली मेज को चुनकर, आगे की सबसे अच्छी रणनीति पर विचार करते हुए अपनी पाइप निकालकर पीने लगा।

सबसे पहले तो अब्दुलकुन्नी से पीछा छुड़ाना था, जिसने दोबारा बोलना शुरू कर दिया था। मैंने उससे साफ-साफ कहा कि मुझे अकेला छोड़ दे क्योंकि मैं कोई योजना बनाना चाहता था।

उस दिन बूढ़े आदमी का व्यवहार विशेष रूप से चिड़चिड़ाने वाला था। एक शरारती मुस्कान के साथ उसने कहा, 'अगर तुम्हें बाघ चाहिए, तो उसे बुला क्यों नहीं लेते?' फिर वह चाय परोसने चला गया।

डिंबुम में, चाय की दुकान के ठीक सामने, चार रास्ते मिलते हैं। या यूँ कहें कि, उनमें से दो पगडंडियाँ हैं, जबकि अन्य दो मुख्य सड़क हैं जो गाँव से होकर गुजरती हैं, उत्तर की ओर मैसूर और दक्षिण की ओर सत्यमंगलम की ओर जाती हैं। मैंने जानबूझकर इस एक मुख्य सड़क को दो रास्तों के रूप में गिना है क्योंकि, जहाँ तक बाघ की खोज का सवाल है, वह डिंबुम के उत्तर में इसे पार कर सकता था, या घाट की सड़क से होते हुए दक्षिण की ओर सत्यमंगलम की ओर जा सकता था। तीसरा रास्ता वह था जिस पर मैं अभी-अभी चला था, जो तलावड़ी और तलाईमलाई से आता था, और चौथा रास्ता जंगल में जाता था और मुश्किल से दिखाई देता था। यह

विश्राम गृह के ठीक पीछे से शुरू होता था और फिर जंगल से होते हुए पूर्व की ओर दस मील या उससे अधिक दूरी तक जाता था, डिंबुम एस्केपमेंट के किनारे-किनारे चलता था, जहाँ से पूर्व में पचास मील दूर कावेरी नदी के जलविभाजक तक के मैदान दिखाई देते थे।

चारों रास्तों में सबसे कम इस्तेमाल होने वाला यह आखिरी रास्ता ही था, जिस पर सबसे ज़्यादा जानवर, खासकर बाइसन और सांभर, दिखाई देते थे। काफ़ी संख्या में भालू ढलान पर चढ़ते थे और बाघ अक्सर पचास मील से ज़्यादा पूर्व की ओर घने जंगल और पहाड़ी इलाकों से होते हुए कावेरी नदी तक की अपनी लंबी यात्रा में छिपे हुए, दुर्गम रास्तों से इसे पार करते थे। लगभग दस मील के बाद यह रास्ता एक पतले से पैदल मार्ग में बदल जाता था, जो घने बाँस के जंगलों से होकर गुज़रता था। यहाँ बाघों की तुलना में हाथी, बाइसन और सांभर ज़्यादा दिखाई देते थे। क्योंकि यह इलाका टिक्स से भरा हुआ है, और बाघों को टिक्स बिल्कुल पसंद नहीं होते!

बाहर घोर अंधेरा था; जानवरों की तलाश में स्पॉटलाइट का इस्तेमाल करने के लिए यह एक आदर्श रात थी।

मैं लगभग पाँच मील तक मैसूर की ओर सड़क पर गाड़ी चलाकर वापस आ सकता था, अपनी टॉर्च जलाकर इस उम्मीद में कि आदमखोर सांप संयोग से सड़क पार कर जाए। फिर मैं यही प्रक्रिया विपरीत दिशा में घाट रोड पर दोहरा सकता था। मैं तलाईमलाई से जिस सड़क से आया था, उसी पर गाड़ी चलाकर जा सकता था। लेकिन पूर्व की ओर जाने वाले चौथे रास्ते पर गाड़ी चलाना उचित नहीं था। यहाँ मुझे पैदल ही चलना पड़ता। क्योंकि यह रास्ता न केवल बहुत खराब हालत में था, बड़े-बड़े पत्थरों से भरा हुआ और गड्ढों से लबालब था, बल्कि यह टेढ़ा-मेढ़ा और तीखे ढलानों से भरा हुआ था। इसमें बहुत ज्यादा गियर बदलने पड़ते और शोर होता, जिससे आदमखोर सांप और आसपास के किसी भी जानवर को देखने से पहले ही वह भाग जाता।

कहां से शुरू करना है, यह किसी की भी पसंद थी और मैंने पहले पूर्वी रास्ते पर चलने का फैसला किया, क्योंकि मैं अभी भी तरोताजा था और इसमें सबसे ज्यादा समय लगेगा।

चाय खत्म करके मैंने अब्दुलकुन्नी को पैसे दिए और अपने चारों आदमियों से कहा कि वे जितना हो सके सो लें, जबकि मैं पूर्वी रास्ते पर टहलने चला गया। चूंकि वे

मेरे पुराने परिचित नहीं थे, इसलिए उन्हें लगा कि मैं पागल हो गया हूँ। अब्दुलकुन्नी, जिसने बातचीत सुन ली थी और जो मुझे काफी समय से जानता था, बोला: 'तुम्हें लगता है कि वह पागल है, है ना? यह कोई नई बात नहीं है! मैं तो उसे बहुत समय से पागल जानता हूँ।'

उस शाम न जाने किस वजह से वह बूढ़ा बदमाश मुझे और भी ज़्यादा परेशान कर रहा था। मैंने अपनी .405 राइफल की टॉर्च और उस अतिरिक्त पाँच सेल वाली टॉर्च की जाँच की, जिसका इस्तेमाल मैं असल टोही के लिए करने वाला था, क्योंकि टॉर्च जलाने के लिए राइफल की नली को बार-बार घुमाना बहुत थका देने वाला काम होता। फिर मैं विश्राम गृह गया, कुछ मिनटों के लिए बरामदे के चबूतरे पर खड़ा होकर सत्यमंगलम की टिमटिमाती रोशनी को एक बार फिर निहारने लगा, और अंत में बंगले के पीछे से शुरू होने वाले पूर्वी रास्ते पर चल पड़ा। कुछ ही गज की दूरी पर आए पहले मोड़ पर ही, चाय की दुकान के सामने लटकी पेट्रोमैक्स लालटेन की दोस्ताना रोशनी और अंदर से आ रही आवाज़ों से मेरा संपर्क टूट गया।

आदमखोर बाघ अपने शिकार को लेकर गायब हो गया था और पता नहीं था कि वह उसे कहाँ ले गया है। बाघ अपने शिकार को आधा मील या उससे भी ज़्यादा दूर तक ले जाने के लिए जाने जाते हैं, हालाँकि आम तौर पर वे इतनी दूर नहीं जाते। उसने उस महिला को उसी सुबह मार डाला था और निस्संदेह उसका कुछ हिस्सा खा लिया था। बाकी बचा हुआ हिस्सा खाने के लिए उसे अंधेरा होने के बाद वापस आना पड़ता। अब रात के 9:30 बज चुके थे, और बाघों की आदतों के अनुसार, आदमखोर बाघ को अब तक अपने दूसरे भोजन के लिए वापस आ जाना चाहिए था और इस समय उसका आनंद ले रहा होता, या बहुत संभव है कि वह अब तक उसे खत्म कर चुका होता। आखिर, आधे खाए हुए मानव शव में ज़्यादा मांस नहीं होता!

अगर उसका पेट भर गया होता, तो वह पानी की तलाश करता, और मुझे पता था कि उसके लिए ऐसा करने के तीन संभावित स्थान थे। सबसे नज़दीक एक पानी का गड्ढा था जो ठीक उसी रास्ते के किनारे था जिस पर मैं चल रहा था और जो मुश्किल से एक फर्लांग आगे था। दूसरा, एक नियमित धारा के पास था जो लगभग दो मील दूर मैसूर जाने वाली सड़क को पार करती थी। तीसरा एक और धारा थी जिसके पास से मैं उस शाम कार से गुज़र चुका था और जो तलाईमलाई रोड पर डिंबुम से लगभग तीन मील दूर थी। जिस पानी के गड्ढे की ओर मैं बढ़ रहा था, उसके

अलावा आदमखोर इन दोनों धाराओं के पूरे मार्ग में कहीं भी पानी पी सकता था, और पानी के पास उससे मिलने की संभावना बहुत कम थी।

ये विचार मन में लिए मैं पानी के स्रोत की ओर बढ़ रहा था, और उसके नज़दीक होने का पहला संकेत नीले-हरे रंग की रोशनी की एक कतार थी, जो मेरी टॉर्च की तेज़ रोशनी में चमकती हुई ऊपर-नीचे झिलमिला रही थी। चित्तीदार हिरण! यहाँ हिरणों का झुंड था, जो या तो पानी के स्रोत की ओर जा रहा था या वहाँ से लौट रहा था।

मैंने अचानक गाड़ी रोक दी और बत्ती बुझा दी ताकि हिरणों को चुपचाप चले जाने का मौका मिल सके। अगर उनमें से किसी को भी मेरी बत्ती के पीछे से इंसान की गंध आती, तो वह ज़रूर अपने साथियों को चेतावनी देने के लिए चीखता। अगर बाघ आस-पास होता, तो वह भी उस चीख से सतर्क हो जाता, और मैं ऐसा नहीं चाहता था।

रात घोर अंधेरी थी और चित्तीदार हिरणों की ओर से मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। सन्नाटा गहरा था। यहाँ तक कि एक झिंगुर भी नहीं बोला। मुझे यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। यह डरावना था।

मैंने टॉर्च जलाई। रोशनी के टिमटिमाते बिंदु गायब हो गए थे। हिरण पूरी खामोशी से गायब हो गए थे। यह अच्छा था, क्योंकि उन्होंने कोई शोर नहीं मचाया था। मैंने कुछ मिनट और इंतज़ार किया ताकि वे काफी दूर चले जाएं, ताकि वे मेरी गंध न सूंघ सकें या मेरी टॉर्च की रोशनी न देख सकें। फिर मैं चुपचाप रास्ते पर आगे बढ़ने लगा। अगला मोड़ मुझे बाईं ओर स्थित पानी के गड्ढे तक ले जाएगा।

तभी मुझे पानी के छपछपाने, गड़गड़ाहट और तेज़ सरसराहट की आवाज़ें सुनाई दीं। एक हाथी पानी के गड्ढे पर नहा रहा था। मैं फिर रुक गया। उसकी मौजूदगी एक परेशानी थी, क्योंकि हाथी, ज़्यादातर इंसानों की तरह, नहाना पसंद करते हैं। एक बार शुरू हो जाए तो वे न सिर्फ़ गड़गड़ाहट करते हैं, पानी पीते हैं, नहाते हैं और उछल-कूद करते हैं, बल्कि पानी में लेटकर खेलते भी हैं, चाहे अकेले ही क्यों न हों, कभी-कभी एक घंटे तक लगातार। मैं इतना समय उस जानवर के अपने आप चले जाने का इंतज़ार करने में बर्बाद नहीं कर सकता था। दूसरी ओर, अगर मैं आगे बढ़ता और वह मुझे देख लेता या उसकी गंध महसूस कर लेता, तो संभावना थी कि वह खतरे की चेतावनी में चिंघाड़ता और इससे आदमखोर हाथी को, अगर वह आस-पास होता, तो यह पता चल जाता कि जंगल में कुछ अजीब चीज़ घूम रही है, कुछ ऐसा असामान्य

जो हाथी को परेशान कर सकता है। इसी कारण से हाथी को डराने के लिए शोर मचाना मूर्खता होती।

फिर मुझे एक विचार आया। मैंने टॉर्च की रोशनी पेड़ों की ऊँची चोटियों की ओर, पानी के गड्ढे की दिशा में डाली, इस उम्मीद में कि शायद हाथी उसे देख ले और वहाँ से हट जाए। ज़ाहिर है, मैं पहले बहुत दूर था, क्योंकि उसे रोशनी दिखाई नहीं दी। फिर मैं आगे बढ़ा और रास्ते के मोड़ के पास पहुँच गया, उसके बाद मैंने दोबारा कोशिश की। इस बार मैं सफल रहा। उस बेहद सुखद स्नान की सारी आवाज़ें अचानक बंद हो गईं।

जैसे ही हाथी ने अपना विशाल शरीर कीचड़ से बाहर निकाला, एक ज़ोरदार आवाज़ आई, फिर उसके भारी कदमों की लयबद्ध छप-छप की आवाज़ गूंजी, जैसे वह धीरे-धीरे पानी में से होते हुए किनारे की ओर बढ़ रहा हो। इसके बाद भाप निकलने जैसी फुफकार की आवाज़ें बार-बार सुनाई दीं। मेरी रोशनी से भले ही हाथी थोड़ा विचलित हुआ हो, लेकिन वह रेत में नहाने के अपने आखिरी आनंद को रोकना नहीं चाहता था, और उस समय वह यही कर रहा था; वह अपने ऊपर रेत उछाल रहा था।

मैंने उसे थोड़ा समय दिया, और उसे परेशान करने के लिए लगातार पेड़ों की चोटियों पर टॉर्च की रोशनी डालता रहा। आखिरकार फुफकार बंद हो गई। थोड़ी देर बाद हल्की चटकने की आवाजें सुनाई दीं, जब वह जानवर पानी के गड्ढे के किनारे घनी झाड़ियों से होते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा। फिर से सन्नाटा छा गया। हाथी आगे बढ़ चुका था और तभी एक शाखा के टूटने की तेज आवाज ने मुझे बताया कि वह चरने के लिए रुका था, लेकिन इतनी दूर था कि मेरे गुजरने से घबराया नहीं।

मैंने रास्ते के मोड़ को पार किया और मेरे सामने एक निर्मल और गहरे रंग का पानी का कुंड दिखाई दिया, जिसकी गर्म सतह से कुछ भाप की हल्की फुहारें तेज़ी से ठंडी होती रात की हवा में उठ रही थीं। मेरी टॉर्च की रोशनी में सैकड़ों चमकीले लाल बिंदु, पानी पर बिखरे छोटे-छोटे माणिकों की तरह चमक रहे थे, और कुंड के किनारे से मेंढकों की आवाज़ें आ रही थीं। मेरे आने से घबराकर वे बड़ी संख्या में किनारे से कूद पड़े थे। अपने पिछले पैरों को ज़ोर से धकेलते हुए वे कुंड के बीच में आ गए, जहाँ वे मेरी ओर घूम गए, उनकी छोटी-छोटी आँखें हज़ारों माणिकों की तरह चमक रही थीं।

मैंने हाथी को अपने आने पर शोर मचाने से रोकने के लिए बहुत सावधानी बरती थी, लेकिन अंततः मुझे उन सबसे तुच्छ जीवों—मेंढकों—के हाथों एक अनोखी हार

का सामना करना पड़ा। बाघ ने उनकी आवाज़ सुनी, क्योंकि वह संयोगवश वहीं मौजूद था, और उसने मुझे और मेरी बत्ती को एक साथ देख लिया होगा।

सौभाग्य से, वह तालाब के दूसरे किनारे पर था, जहाँ वह पानी पीने आया होगा, न कि रास्ते पर, वरना हालात कुछ और ही होते। ऐसी ही परिस्थितियों में, कोई भी सामान्य बाघ चुपचाप चला जाता और मुझे उसकी मौजूदगी का पता भी नहीं चलता। लेकिन यह बाघ गुर्राया, और गुर्राता रहा, वह भयावह आवाज़ दूसरे छोर पर अंधेरे से आती हुई, तालाब के उस पार से मुझ तक पहुँची, जब मैं अचानक और अनिश्चित रूप से रुक गया।

सतह पर तैरते मेंढकों की नन्ही-नन्ही लाल आँखें मानो गायब हो गईं, मानो किसी स्विच ने बिजली काट दी हो, जब वे उस भयानक आवाज़ से बचने के लिए पानी के नीचे गोता लगाने लगे। जिस तरफ से गुर्राहट की आवाज़ आ रही थी, उसके ठीक विपरीत किनारे पर ज़बरदस्त हलचल मच गई, क्योंकि पानी के किनारे ठंडी रेत पर आराम कर रहे असंख्य मेंढक सुरक्षा के लिए तालाब में कूद पड़े और अपने नन्हे पैरों से बीच की ओर बेतहाशा दौड़ने लगे।

गुर्राहट जितनी अचानक शुरू हुई थी, उतनी ही अचानक बंद भी हो गई। मेंढक भी एकदम शांत हो गए। फिर मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी झाड़ियों और घनी वनस्पति पर डाली जो दूसरी तरफ पानी के किनारे तक फैली हुई थी। क्या मुझे रोशनी में बाघ की आंखें चमकती हुई दिखाई देंगी? मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया और कुछ भी सुनाई नहीं दिया। मेरी रोशनी केवल जंगल पर पड़ी और चारों ओर सन्नाटा पसरा रहा था।

बाघ गायब हो गया था। क्या वह भाग गया था? एक सामान्य बाघ तो ऐसा ही करता है, लेकिन कोई सामान्य बाघ मेरी टॉर्च की रोशनी देखकर गुर्राता नहीं। यह जानवर सामान्य से बहुत अलग था। वह गुस्से में था, और उसे मनुष्य के आने का कोई डर नहीं था। क्या यह आदमखोर बाघ था?

मैंने घबराकर चारों ओर नज़र घुमाई। मेरा सामने का हिस्सा सुरक्षित था। उस दिशा से हमला करने के लिए बाघ को पानी से होकर गुज़रना पड़ता और मुझे पता था कि वह ऐसा करने की संभावना बहुत कम थी। बल्कि, वह तालाब के चारों ओर घूमकर मुझ पर दोनों तरफ से या पीछे से हमला करता। अगर वह किनारे से हमला करता, तो उसे किनारे या पगडंडी के साथ-साथ दौड़ना पड़ता, या तो उस दिशा से

जहाँ से मैं अभी आया था या उस विपरीत छोर से जहाँ पगडंडी तालाब को छोड़ती थी। ज़्यादा संभावना यही थी कि वह पीछे से हमला करता, जहाँ जंगल पगडंडी के किनारे से मिलता था और जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से दो गज से भी कम दूरी पर। तब मेरे पास बचने का कोई मौका नहीं होता।

मेरे पास करने के लिए बस एक ही काम था और मैंने उसे बहुत जल्दी कर दिया। मैं ढलान वाले किनारे से पानी में उतर गया और हर कदम पर रास्ता महसूस करते हुए, जितनी जल्दी हो सके तालाब के बीचोंबीच पहुँच गया। मुझे पता था कि यह ज़्यादा गहरा नहीं है और वहाँ मैं किसी भी दिशा से हमले से सुरक्षित रहूँगा। कोई भी बाघ—यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी, कम से कम मेरे अनुभव में तो नहीं—पानी के ऊपर से हमला नहीं करेगा, और अगर उसने किया भी, तो बाज़ी पूरी तरह मेरे पक्ष में पलट जाएगी। बाघ के मुझ तक पहुँचने से बहुत पहले ही, वह खुले में होगा और पूरी तरह मेरी दया पर होगा।

पानी मेरे घुटनों से थोड़ा ऊपर तक ही पहुँचा था कि बाघ फिर दहाड़ा। इस बार दहाड़ बहुत तेज़ थी, मानो गर्जना कर रहा हो। और यह दहाड़ पगडंडी के किनारे वाले जंगल से आ रही थी, ठीक उसी दिशा से जहाँ से मुझे हमले की आशंका थी। अगर मैं समय रहते तालाब में शरण न लेता, तो बाघ मुझ पर झपट पड़ता। अब वह मुझे अपनी पहुँच से बाहर पाकर क्रोध से दहाड़ रहा था।

लेकिन क्या मैं सचमुच उसकी पहुँच से बाहर था? अगले कुछ पल इस सवाल का जवाब दे देंगे। एक बात में मुझे कोई शक नहीं था: मैं आदमखोर बाघ से निपट रहा था, कोई साधारण बाघ नहीं। उसके व्यवहार में दिख रही घृणा से यह स्पष्ट था। ह्यूगी की गोली ने इस जानवर को एक दरिंदा बना दिया था।

मेरा इंतज़ार व्यर्थ गया। बाघ प्रकट नहीं हुआ। उसकी गुर्राहट उतनी ही अचानक बंद हो गई जितनी अचानक शुरू हुई थी, और एक बार फिर मैं चारों ओर सन्नाटे में डूब गया। मैं धीरे-धीरे घूमते हुए अपनी टॉर्च की रोशनी हर दिशा में घुमाता रहा, इस उम्मीद में कि शायद मुझे रोशनी में चमकती उसकी आँखें दिख जाएँ, या फिर झाड़ियों के बीच से सरकते हुए उसके धारीदार शरीर की एक झलक मिल जाए। लेकिन मुझे कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया।

हाथी के आने से, फिर मेरे आने से और अंत में बाघ के आने से, उस भयानक रात का सामना कर चुके असंख्य मेंढक, मेरे पानी में उतरते ही सतह के नीचे चले गए।

लेकिन वे ज़्यादा देर तक डूबे नहीं रह सके और साँस लेने के लिए ऊपर आने लगे। एक-एक करके वे चुपचाप सतह पर आए, हवा भरने के लिए, और जल्द ही मेरी टॉर्च से निकली रोशनी के विशाल घेरे के नज़दीकी किनारे पर सैकड़ों छोटी-छोटी लाल आँखें एक बार फिर मुझे भय से घूरती हुई दिखाई दीं।

चाय की दुकान से निकले हुए काफी समय बीत गया था, ऐसा लग रहा था, लेकिन घड़ी पर एक नज़र डालने से पता चला कि रात के केवल 10:30 बजे थे। बाघ के हिलने-डुलने का मुझे कितनी देर इंतजार करना पड़ेगा, अगर वह हिलेगा भी तो?

पानी में खड़े-खड़े मैं थकने लगा था। पानी ठंडा होता जा रहा था और तालाब की सतह से भाप के गुबार उठ रहे थे, जिससे आसपास का जंगल धुंधला हो रहा था और मेरी टॉर्च की रोशनी भी ठीक से नहीं पहुँच पा रही थी। उसी समय मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं वापस रास्ते पर चला गया तो आदमखोर भालू के रहमो-करम पर आ जाऊँगा, अगर वह रास्ते में कहीं भी घात लगाकर मुझ पर हमला कर दे। मुझे पूरा यकीन था कि वह गया नहीं था, बल्कि मेरे पानी से बाहर आने का इंतज़ार कर रहा था।

आधी रात हो चुकी थी और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी! अब मुझे समझ आ गया था कि मुझे टॉर्च लगातार नहीं जलानी चाहिए, क्योंकि उसकी पांचों बैटरी खत्म हो जाएंगी और किसी भी हालत में मैं राइफल से लगी दूसरी टॉर्च की बैटरी खत्म होने का जोखिम नहीं उठा सकता था, क्योंकि मेरी निशानेबाजी उन्हीं पर निर्भर थी। इसलिए मैंने टॉर्च बुझा दी और अचानक अंधेरा छा गया। तभी मैंने देखा कि रात बादलों से घिरी थी और आसमान में एक भी तारा नहीं दिख रहा था।

हालांकि, जब तक मैं पानी में था, तब तक कोई खतरा नहीं था। मेरी सुनने की क्षमता मुझे किसी भी जानवर के आने की चेतावनी दे देती।

कुछ ही देर में वही हुआ। एक हाथी आया, शायद वही जिसे मैंने पहले परेशान किया था। शायद कोई दूसरा। मैं वहीं खड़ा रहा और उसने मुझे न तो सुना और न ही देखा। हवा उसकी तरफ से मेरी ओर बह रही थी, इसलिए वह मेरी गंध नहीं सूंघ सका। मुझे लगा कि मैं सुरक्षित हूँ, क्योंकि वैसे भी उसकी दृष्टि इतनी कमजोर थी कि पूरे तालाब पर घने कोहरे की चादर छाई हुई थी, और वह मुझे देख नहीं पाता।

मैंने उसकी सूंड से हवा निकालते हुए तेज़ 'फूफ-फूफ-फूफ' की आवाज़ सुनी, और फिर पानी अंदर खींचते और उसे अपने मुंह में और शरीर पर छिड़कते हुए चूसने

जैसी आवाज़ें सुनीं। वह पीता रहा, पीता रहा, मानो अनगिनत गैलन पानी पी गया हो।

आखिरकार उसने नहाने का फैसला किया और जैसे ही वह पानी में चलते हुए तालाब के बीचोंबीच पहुंचा, उसके बड़े-बड़े पैरों की ज़ोरदार छप-छप की आवाज़ मुझे सुनाई दी। मैंने सोचा, यह ठीक नहीं है। इसलिए मैंने टॉर्च की रोशनी सीधे उसके चेहरे पर डाली।

वह रात मेरे लिए ऐसी थी मानो मेरा सामना विचित्र व्यवहार वाले जानवरों से होना तय था। खेल के सभी नियमों के अनुसार, हाथी को मेरी तेज रोशनी से डरकर दुम दबाकर भाग जाना चाहिए था, लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने तीखी आवाज में चिंघाड़ा, अपनी सूंड को कुंडली बनाकर मेरी ओर दौड़ा।

मैं अचंभित हो गया और पांच सेल वाली टॉर्च को जल्दी से अपनी बेल्ट के बाईं ओर बने पाउच में रखने के बजाय, ताकि मेरे दोनों हाथ राइफल चलाने के लिए खाली रहें, पाउच को भूलकर टॉर्च को पानी में गिरा दिया। वह बह गई।

उसे वापस लेने का समय नहीं था। हमलावर हाथी खतरनाक रूप से करीब आ गया था। मैंने अपनी .405 पिस्तौल को कंधे पर टिकाया और साथ ही अपने बाएं अंगूठे से उसके बैरल पर लगी छोटी टॉर्च का बटन दबाया। जैसे ही मैंने हाथी के सिर से एक फुट ऊपर निशाना साधा, उसकी रोशनी अंधेरे को चीरती हुई निकली और मैंने उस हमले को रोकने की कोशिश में गोली चला दी।

वन विभाग द्वारा किसी भी हाथी को हिंसक घोषित नहीं किया गया था, इसलिए जहाँ तक संभव हो, मुझे इस जानवर को मारने से बचना चाहिए था। उसे अपने बहुत करीब आने देना मेरी गलती थी और मुझे टॉर्च की रोशनी सीधे उसके चेहरे पर नहीं डालनी चाहिए थी।

ये सारे विचार मेरे मन में उमड़ रहे थे और मैं उस निवारक गोली के परिणाम का इंतज़ार कर रहा था। अगर वह फिर भी आगे बढ़ता, तो मुझे अपनी अगली गोली से उसे रोकना ही पड़ता, वरना वह मुझे मार डालता। इसमें कोई शक नहीं था।

सौभाग्य से यह कारगर साबित हुआ। विशालकाय जानवर ने अपने चारों पैर कीचड़ में मजबूती से जमाकर अचानक ब्रेक लगा दिया। भागने की वजह से वह आगे बढ़ता रहा और कीचड़ में बुरी तरह फिसलते हुए अंत में सर्कस के हाथी की तरह अपने पिछले पैरों पर बैठ गया। उसकी हिम्मत टूटते देख मैंने दूसरी बार गोली चलाई, फिर से उसके सिर के ऊपर। हाथी मुड़ा और भाग गया।

शोर और हंगामा शांत होने पर मुझे घृणा हुई, लेकिन साथ ही राहत भी मिली। मेरे दो शॉट्स ने आदमखोर सांप को भगा दिया होगा। मेरी सफलता की उम्मीद खत्म हो गई थी। लेकिन अब मैं भी सुरक्षित था और आखिरकार पानी से बाहर निकल सकता था।

ठंड से कांपते हुए, मैंने दिंबुम की ओर वापस चलना शुरू किया। मुझे पता था कि मुझे बस थोड़ी ही दूरी तय करनी है, लेकिन यह खतरा हमेशा बना रहता था कि मेरी गोलियों की आवाज से तालाब के आसपास से भागा हुआ आदमखोर सांप रास्ते में कहीं छिपा हो सकता है और मुझ पर हमला कर सकता है।

अंततः सत्यमंगलम की जगमगाती रोशनी, जो मेरे नीचे मैदानों के काले सन्नाटे में चमक रही थी, ने मेरी चिंता को समाप्त कर दिया। मैं विश्राम गृह में पहुँचा, अपनी गीली पतलून उतारी और, क्योंकि मैं अपने साथ कपड़े नहीं लाया था, उन्हें पहने ही सो गया।

दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक से मेरी नींद खुल गई। मैंने सभी खिड़कियाँ बंद कर रखी थीं और अंदर अँधेरा था, लेकिन घड़ी पर नज़र डालते ही मैं चौंक गया। सुबह के 9:30 बज रहे थे।

मैंने दोबारा अपनी पैंट पहनी। वो अब भी गीली थी। दरवाजे पर फिर से दस्तक होने लगी, इस बार और भी ज़ोर से, और मुझे बरामदे में लोगों की धीमी आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

मैंने सामने का दरवाजा खोला। मेरे सामने खुद अब्दुलकुन्नी, उनकी तीन पत्नियां और चार-पांच अन्य लोग खड़े थे, सभी बेहद उत्तेजित अवस्था में थे। जाहिर है, चाय की दुकान बंद कर दी गई थी। कोई बहुत गंभीर घटना जरूर घटी होगी।

'जल्दी आइए, साहब,' उत्तेजित मोपला ने पुकारा। 'बाघ उस लड़की को उठाकर ले गया है जिसे हमने पानी लाने के लिए रखा था।'

मैंने अपनी राइफल और कुछ कारतूस उठाए और समूह के साथ चाय की दुकान की ओर तेजी से बढ़ा, जबकि वह जल्दी से कहानी सुनाने लगा।

लगभग तीस मिनट पहले ही वह लड़की चाय की दुकान के पीछे कुएँ पर खाना पकाने के बर्तनों की टोकरी धोने गई थी। उसने सोचा था कि इस तरह धोना इमारत तक पानी के घड़े ले जाने से ज़्यादा आसान होगा। एक पत्नी पीछे के दरवाज़े से उस पर नज़र रख रही थी ताकि वह काम में ज़्यादा देर न लगाए। लगभग अठारह साल की

वह लड़की झुकी हुई अपने काम में मग्न थी, तभी पीछे से कुछ हलचल हुई जिस पर नज़र रखने वाली महिला की नज़र पड़ी। उसने उस दिशा में देखा और डर के मारे काँप उठी जब उसने देखा कि एक बाघ ज़मीन पर पेट के बल लेटा हुआ, चुपके से उस भोली नौकरानी पर पीछे से हमला करने आ रहा है। महिला ने चीखकर चेतावनी दी। लड़की ने सुना और उछल पड़ी। लेकिन बाघ ने अपना हमला जारी रखा। वह अपने शिकार पर झपटा और उसे मारने का इंतज़ार किए बिना, उस बेचारी लड़की को अपने मुँह में उठाया और झाड़ियों में छिप गया। बाघ और शिकार के आँखों से ओझल हो जाने के काफी देर बाद तक भयानक चीखें सुनाई देती रहीं।

पत्नी की चीख-पुकार और दूर से आती रोने की आवाज़ सुनकर अब्दुलकुन्नी और घर के बाकी सदस्य शोर का कारण जानने के लिए पीछे के दरवाजे की ओर दौड़े। फिर वे सब एक साथ विश्राम गृह में आ गए। आदमखोर ने सुबह नौ बजे एक और शिकार को मार डाला था, और ठीक उसी जगह पर जहाँ उसने कुछ घंटे पहले ही किसी को मारा था! आदमखोरों के इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

सबको घर के अंदर रहने को कहकर मैं कुएँ की ओर भागा। बिखरे हुए बर्तन, कुछ धुले हुए और कुछ नहीं, यह दर्शाते थे कि लड़की अपने काम में मग्न थी तभी उस पर अचानक हमला हुआ था। एक अकेला पंजों का निशान यह बता रहा था कि बाघ ने अपने शिकार को पकड़ने के लिए दौड़ना कहाँ रोका था और उस गीली ज़मीन पर फिसल गया था जहाँ लड़की कपड़े धो रही थी। आसपास की ज़मीन पर कोई और निशान नहीं थे, जो दिन भर पानी भरने आने वाले लोगों के पैरों से रौंदी हुई थी और सूरज की किरणों से तप रही थी। ज़मीन इतनी सख्त थी कि उस पर पंजों के निशान नहीं टिक सकते थे, जबकि लड़की को इतनी जल्दी पकड़ा गया था कि खून का कोई निशान नहीं था।

हत्या की चश्मदीद गवाह, अब्दुलकुन्नी की दूसरी पत्नी, ने दरवाज़े से मुझे आवाज़ दी और उस दिशा की ओर इशारा किया जिधर आदमखोर बाघ अपने शिकार को लेकर गया था, और मैं उसके पीछे चल पड़ा। जिस खुले मैदान में कुआँ था, वह अचानक लैंटाना झाड़ियों की दीवार में जाकर खत्म हो जाता था, जो जंगल के किनारे तक फैली हुई थीं। कोई भी बाघ अपने शिकार को लेकर इस घनी झाड़ी से निकलने की हिम्मत नहीं कर सकता था। किसी भी जानवर के लिए यह नामुमकिन था। कोई और रास्ता ज़रूर होगा और मैं उसे खोजने लगा। आखिरकार मुझे वह मिल ही गया,

एक जंगली जानवरों का रास्ता, ज़मीन के करीब, लैंटाना की निचली शाखाओं के बीच से चार फीट से भी कम ऊँचाई पर सुरंग की तरह बना हुआ। इसे जंगली सूअरों ने बरसात के मौसम में बनाया था, जब वे उस खुले मैदान में दलदल खोदने और उसमें जड़ें निकालने आते थे, जो उस मौसम में कुएँ के चारों ओर होता था। कई जगहों पर बाघ को अपने शिकार को घसीटते हुए इस सुरंग में रेंगना पड़ा था, और मैंने भी ऐसा ही किया, नीचे झुककर और कभी-कभी हाथों और घुटनों के बल।

कुछ ही गज की दूरी पर मुझे त्रासदी का पहला सबूत मिला। साड़ी के कुछ फटे हुए टुकड़े और लैंटाना के पत्तों पर खून के धब्बे, जो शिकार के रास्ते पर बिखरे हुए थे। संभवतः पीड़िता खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रही थी और यहीं बाघ ने उसे मार डाला।

उसके बाद खून का एक नियमित निशान बन गया, और साड़ी के और टुकड़े लैंटाना झाड़ी में फंस गए। सुरंग में एक मोड़ आया और यहाँ लड़की के कपड़ों के अवशेष एक कंटीली झाड़ी में फंस गए। आदमखोर ज़रूर क्रोधित हो गया होगा और उसने अपने शिकार को छुड़ा लिया होगा, क्योंकि साड़ी और स्कर्ट के टुकड़े उसके शरीर से अलग होकर कंटीली झाड़ी पर लटक रहे थे। उसके सारे कपड़े उतर जाने से खून सीधे ज़मीन और पत्तों पर गिरा, जिससे सुरंग में एक भयानक लाल निशान बन गया।

मुझे नहीं पता था कि बाघ अपने शिकार को कितनी दूर तक ले गया होगा। शायद चाय की दुकान से आ रही चीख-पुकार ने उसे भोजन शुरू करने से पहले किसी शांत जगह पर जाने का फैसला करने पर मजबूर कर दिया होगा। कम से कम, मैं तो यही उम्मीद कर रहा था। क्योंकि अगर वह आस-पास कहीं भी होता और पीछे से मुझ पर हमला कर देता, तो इस जानलेवा सुरंग में मैं पूरी तरह से उसकी दया पर निर्भर होता।

इस विचार ने मुझे बार-बार रुककर सुनने पर मजबूर कर दिया। कहीं वह गुर्राकर अपनी मौजूदगी का पता न चलने दे। पीछा किए जाने पर बाघ अक्सर ऐसा करते हैं। कुछ गुस्से में, कुछ चेतावनी के तौर पर, लेकिन अक्सर अपने साहस को बढ़ाने के लिए। क्योंकि उनका पूरा जीवन भागते हुए शिकार का पीछा करने में बीता होता है और किसी भी बाघ के लिए यह एक असामान्य और भयानक अनुभव होता है जब उसे एहसास होता है कि वह खुद पीछा किए जाने का निशाना है। मुझे कोई आवाज़

नहीं सुनाई दी। उस घुमावदार सुरंग में पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था।

अंततः लैंटाना की झाड़ियाँ छंटने लगीं और जंगल शुरू हो गया। सुरंग का अंत हो गया और मैं सीधा खड़ा हो सका। वहाँ घास का एक खुला मैदान था जहाँ से खून का निशान जाता था, फिर वह बबूल और बॉक्स-फ्लावर की झाड़ियों से भरे एक पार्क जैसे जंगल में मिल जाता था, जिनके बीच घास थी। मैंने अनुमान लगाया कि अब मुझे बाघ से मिलने के लिए ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा, जिसने शायद अपना शिकार शुरू कर दिया होगा। यानी, अगर उस आदमखोर ने मुझे सुना न हो और उसे पता न चल गया हो कि कोई उसका पीछा कर रहा है। अगर ऐसा हुआ होता, तो वह या तो पूरी तरह से भाग जाता या अपने शिकार के पास किसी जगह पर मेरा इंतज़ार करता। वह मुझे रोकने के लिए आगे भी बढ़ सकता था, या मुझे दोनों तरफ से या पीछे से घेरकर हमला कर सकता था।

तभी मुझे कुछ दूरी पर एक कौवे की कांव-कांव सुनाई दी। मैंने ध्यान से सुना, और उस लगातार कांव-कांव की आवाज में कोई संदेह नहीं था। कौवा बाघ को उसके शिकार के साथ देख रहा था और उत्तेजित होकर अपने साथियों को बुला रहा था ताकि वे जल्द ही शुरू होने वाले भोज का आनंद ले सकें।

जंगल में आवाज़ों और उनके स्रोत का सही पता लगाना और अनुमान लगाना मुश्किल होता है। हवा का बहाव, पेड़ों की सघनता और भूभाग, ये सभी मुश्किलें पैदा करते हैं। समतल इलाकों में हालात इतने खराब नहीं होते, लेकिन इस तरह के पहाड़ी इलाकों में आवाज़ों और दूरियों का सही अंदाज़ा लगाना अक्सर असंभव होता है।

मुझे लगा कि कौआ लगभग साठ से सत्तर गज दूर था, और धीरे-धीरे, बहुत सावधानी से, अपने सामने की ज़मीन को ध्यान से देखते हुए ताकि किसी सूखी टहनी या पत्थर पर पैर न पड़ जाए और मेरी पहचान उजागर न हो जाए, मैं कदम-दर-कदम आगे बढ़ा। मुझे नहीं पता कि मैं कितनी दूर चला गया था कि मुझे दावत की पहली आवाज़ सुनाई दी। हड्डी के टूटने की तेज़ आवाज़, उसके बाद चबाने और फाड़ने की आवाज़।

कौआ अब भी उत्साह से कांव-कांव कर रहा था। मुझे लगा कि मैं अब तीस गज की दूरी पर था, शायद उससे भी काफी कम। मैं रुका और सोचने लगा।

उस समय बाघ से ज़्यादा खतरा कौवे से था। क्योंकि वह पेड़ पर बैठा था और ऊँचाई का फ़ायदा उठा रहा था। मुझे पता था कि अगर वह मुझे देख लेता तो तुरंत

कांव-कांव बंद कर देता। हो सकता है वह उड़ भी जाता। आदमखोर बाघ, अपने भोजन में मग्न, जानता था कि कौवा उसे देख रहा है, लेकिन उसने पक्षी और उसकी कांव-कांव को अनदेखा कर दिया था। कौवे की कांव-कांव का अचानक बंद होना और कौवे का अचानक उड़ जाना बाघ को तुरंत बता देता कि किसी बात ने पक्षी को डरा दिया है, कि उस पर कोई खतरा मंडरा रहा है। क्योंकि कौवे किसी दूसरे पक्षी से नहीं डरते और जंगली जानवरों की मौजूदगी को नज़रअंदाज़ करते हैं। वे सिर्फ़ इंसानों से डरते हैं।

लेकिन मैंने अभी तक कौवे को सचेत नहीं किया था। कछुए की चाल से, अत्यंत सावधानी से, मैं आगे बढ़ा, ज़मीन पर झुककर, धीरे-धीरे आगे बढ़ते और फिर रुकते हुए, कोई भी हरकत करने से पहले अपने सामने की ज़मीन को देखता रहा, दाएं-बाएं देखता रहा और यहां तक कि जब चीरने और कुचलने की आवाज़ें एक पल के लिए बंद हुईं तो पीछे भी देखता रहा। जब तक मुझे वे आवाज़ें सुनाई देती रहीं, मुझे पता था कि बाघ मेरे सामने है। जब वे आवाज़ें बंद हो गईं, तो मुझे पता नहीं चल पाया कि वह कहां है। सबसे बड़ा खतरा यहीं था, क्योंकि वह पीछे से मुझ पर हमला कर सकता था। आदमखोर बाघ आमतौर पर इसी तरह अपने शिकार को पकड़ लेते हैं।

अचानक चारों ओर एक अजीब सी खामोशी छा गई। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ। फिर मुझे कारण पता चला। कौआ कांव-कांव करना बंद कर चुका था! ज़रूर कुछ गड़बड़ थी। तभी मैंने कौए को देखा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उसने मुझे पहले देख लिया था। मानो ज़ोर से फड़फड़ाते हुए वह दूसरे पेड़ पर उड़ गया।

और मैं सही था: आदमखोर कौआ शक करने लगा था। वह हिलने-डुलने लगा था। क्या वह मुझसे दूर जा रहा था या मेरी तरफ? क्या वह भागने की कोशिश कर रहा था या हमला करने की? ये सारे सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे, तभी मेरी नज़र के कोने से मैंने कौए को फिर उड़ते देखा। इस बार वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया।

मैं वहीं जम गया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। चालाक कौआ वापस आकर जाँच करने लगा और लगभग उसी जगह पर बैठ गया जहाँ मैंने उसे पहली बार देखा था। उसने मुझे बेहतर ढंग से देखने के लिए अपना सिर एक तरफ घुमाया, कांव-कांव किया और सिर हिलाया। उसे यकीन हो गया कि मैं उसके लिए खतरा हूँ, इसलिए उसने अपने पंख फड़फड़ाए और फिर एक दूसरे पेड़ पर जाकर मुझे देखने लगा।

मैंने कौवे को देखना बंद कर दिया और चारों ओर की झाड़ियों को घूरने लगा। फिर मैं पीछे मुड़कर अपनी पिछली झाड़ियों को देखने लगा। मेरी गर्दन के पिछले हिस्से में एक अजीब सी चुभन महसूस हुई। मेरे शरीर की हर कोशिका ने मुझे आगाह किया कि मैं बड़े खतरे में हूँ। मुझे पता था कि आदमखोर सांप मुझ पर झपटने ही वाला है।

लेकिन मैं उसे देख ही नहीं पा रहा था, चाहे मैं चारों ओर घनी झाड़ियों को कितना भी घूरता रहूँ। जंगल सन्नाटे में डूबा हुआ था। न कोई टहनी टूटी, न कोई पत्ता हिला। पक्षी और कीड़े-मकोड़े शांत थे, झाड़ियाँ और पेड़ों के बीच उगने वाली लंबी घास भी खामोश थीं। मैंने व्यर्थ ही किसी शाखा या घास के तिनके के हिलने, किसी नन्हे पेड़ के तने के झुकने की तलाश की, जिससे नीचे किसी जीव के रेंगने का आभास हो सके।

लेकिन कहीं कोई हलचल नहीं थी, कोई आवाज़ नहीं थी। मैं जानता था कि बाघ अपनी आखिरी कोशिश में पूरी कुशलता का इस्तेमाल कर रहा था ताकि दुश्मन को अचानक चौंका सके।

फिर मुझे वह दृश्य याद आ गया जो मैंने कई साल पहले चांदनी रात में, दूर घने जंगल के बीचोंबीच एक तालाब के किनारे देखा था। एक सांभर हिरणी सावधानी से पानी के कुंड की ओर आ रही थी। चारों ओर सन्नाटा था। अचानक, बिना किसी कारण के, वह शोर मचाते हुए मुड़ी और तेजी से भाग गई। तब यह चाल कारगर साबित हुई, क्योंकि कुछ गज आगे घात लगाकर उसका इंतजार कर रहा बाघ घबरा गया। उसने सोचा कि उसका शिकार भागने वाला है और वह उसके पीछे दौड़ पड़ा। लेकिन हिरणी को काफी बढ़त मिल गई थी और वह सुरक्षित रूप से भाग निकली।

अब मैंने भी वही किया। लेकिन मैं मुड़कर वापस नहीं भागा, क्योंकि मुझे आगाह हो गया था कि आदमखोर सांप वहाँ पहले से ही मौजूद है। मैंने ज़ोर से पैर पटका और तिरछे आगे भागा, लेकिन केवल चार कदम ही चला। फिर रुक गया।

कई साल पहले उस चांदनी रात की तरह, वह सरल चाल फिर से कारगर साबित हुई। आदमखोर दहाड़ा और मेरे पीछे से झपटा। उसने दो छलांगें लगाईं और फिर आश्चर्य से झुककर रुक गया, क्योंकि उसके सामने खड़ा वह अजनबी आदमी भागने के बजाय मुड़ा और ताबड़तोड़ गोलियां चलाने लगा।

उसके बाद बाघ को कुछ याद नहीं रहा, लेकिन मुझे पता है कि अगर मैंने अपने

पीछे उसकी बेहद करीबी मौजूदगी की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया होता, या अगर मैं आगे बढ़ने के बजाय पीछे की ओर भागा होता, तो मैं आज यह कहानी सुनाने के लिए यहां नहीं होता।

---

* नरभक्षी और जंगल के हत्यारे, अध्याय 8 देखें।

पाँच

वायनाड का हत्यारा

मैसूर शहर के दक्षिण-पश्चिम में काकनकोट के घने जंगलों का इलाका स्थित है, जो सदियों से जंगली हाथियों के कई झुंडों का घर रहा है। ये हाथी इस जिले में उगने वाले जंगलों के लिए विशेष रूप से अनुकूल हैं। यहाँ भारी वर्षा होती है और वनस्पति घनी है। विशाल बांस, लंबी घास और बड़े-बड़े पेड़ घनी आबादी में एक साथ उगते हैं, और हाथियों और बड़े एवं हानिरहित बाइसन को छोड़कर, जंगल से होकर गुजरना लगभग असंभव है। सांभर और भौंकने वाले हिरण कम घने क्षेत्रों में पाए जाते हैं, लेकिन जैसे-जैसे कोई दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ता है और वर्षा तथा जंगल का घनत्व एक दूसरे के अनुपात में बढ़ता जाता है, हिरणों की संख्या कम होती जाती है, और इस तरह संकरी सड़क से देखने पर जो प्राचीन, अछूता जंगल प्रतीत होता है, उस पर हाथियों और बाइसन का लगभग पूर्ण अधिकार हो जाता है।

आगे चलकर काबिनी नदी आती है, जो उत्तर-पूर्व में मैसूर राज्य और दक्षिण-पश्चिम में केरल राज्य के बीच प्राकृतिक सीमाओं में से एक है। मेरी राय में, भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिम में स्थित केरल राज्य की प्राकृतिक सुंदरता हिमालय के बाद दूसरे स्थान पर है, हालांकि यह उससे काफी अलग है। यह घने जंगलों, चाय, कॉफी, दालचीनी, रबर और टैपिओका के उपजाऊ बागानों और समुद्र तट से सटे क्षेत्रों में पन्ना-हरे खेतों की भूमि है; यहाँ अनगिनत नदियाँ और जलमार्ग हैं जो धीरे-धीरे बहते हैं, जिन पर ताड़ के पत्तों से बनी नावें नारियल के पेड़ों के बीच से गुजरती हैं, जिन पर हरे नारियल के बड़े-बड़े गुच्छे लदे होते हैं, और एक अद्वितीय समुद्र तट है, जो प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर प्रसिद्ध केप कोमोरिन बीच पर समाप्त होता है।

सीमा के केरल की ओर स्थित मनंतोड्डी शहर पश्चिमी घाट पर बसा है, जो भारत के पश्चिमी तट पर मुंबई से लेकर सुदूर दक्षिण तक फैली पर्वत श्रृंखला है, जिसकी औसत समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 4,000 फीट है। इस जिले को उत्तरी वायनाड के नाम से जाना जाता है, ताकि इसे कुछ मील दक्षिण में स्थित उस क्षेत्र से अलग किया जा सके, जो नीलगिरी पर्वत से सटा हुआ है और दक्षिणी या नीलगिरी वायनाड के नाम से जाना जाता है। दोनों क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ हैं, यहाँ भारी वर्षा होती है और यहाँ कई बागान हैं, जिनमें हर तरह की फसलें उगाई जाती हैं।

अन्य सभी दृष्टियों से ये क्षेत्र सुखद तो हैं, लेकिन साल भर इनमें जोंक बहुतायत में पाई जाती हैं, और बरसात के मौसम में इनकी संख्या बहुत बढ़ जाती है। इसके अलावा, सूखे जंगलों का अभिशाप, यानी टिक, यहाँ भीतरी इलाकों के जंगलों की

तुलना में कहीं अधिक आराम से पनपता है—दोनों ही तरह की हैं: बड़ी केकड़ा टिक, जो अधिक संख्या में काटने पर टिक-बुखार पैदा कर देती है, और सूक्ष्म जंगली या घास टिक, जो पिन की नोक से भी छोटी होती है और जहाँ भी यह खून चूसती है, वहाँ एक छोटा सा घाव बना देती है। चूंकि यह पूरे शरीर पर, सैकड़ों जगहों पर काटती है, इसलिए आप सचमुच बहुत दर्द से ग्रस्त हो जाते हैं, घावों से भरा शरीर कई महीनों तक बना रहता है। आप दिन-रात खुजली करते रहते हैं, जिससे मानसिक और शारीरिक रूप से आप पूरी तरह टूट जाते हैं।

जोंक और टिक न केवल मनुष्यों का, बल्कि जानवरों का भी खून चूसते हैं। यहां तक कि बाइसन भी इनसे पीड़ित होते हैं, जबकि बाघ, तेंदुआ और हिरण इनसे, विशेष रूप से टिक से, पूरी तरह ढक जाते हैं, जिससे ये खून से लथपथ जानवरों के शरीर के कोमल हिस्सों से छोटे अंगूरों के गुच्छों की तरह लटकते रहते हैं।

इसी कारण वायनाड के जंगलों में मांसाहारी जानवर या हिरण बहुत कम पाए जाते हैं। कभी-कभार कोई भटका हुआ जानवर गर्मी के सूखे महीनों में कष्ट सहते हुए यहाँ आ जाता है, लेकिन बारिश शुरू होते ही वे पश्चिमी घाट की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं या पूर्वी काकनकोट के शुष्क क्षेत्रों में चले जाते हैं ताकि सर्दियों के आगमन के साथ मानसून के शांत होने तक जोंक और कीड़ों से बच सकें।

इस प्रकार, जब काकनकोट से मनंतोड्डी जा रहे एक यात्री को शहर के बाहरी इलाके से कुछ ही सौ गज की दूरी पर एक बाघ ने काट लिया, तो इसे एक असामान्य घटना माना गया। इन इलाकों में बाघ देखे तो गए थे, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम थी, और जहाँ तक किसी को याद था, किसी इंसान को बाघ ने नुकसान नहीं पहुँचाया था। यह घटना जल्द ही भुला दी गई और कई महीने बीत गए।

फिर, सीमा पार मैसूर राज्य में, अगले खेद्दा अभियान की तैयारी शुरू हो गई, जिसमें कई जंगली हाथियों को पकड़ा जाना था। सैकड़ों कुलियों को एक मजबूत लकड़ी का बाड़ा बनाने में लगाया गया, जिसमें बाद में हाथियों को धकेल कर बाड़ा गिरा दिया जाएगा और घबराए हुए हाथियों को पकड़ लिया जाएगा। बहुत सारा प्रारंभिक कार्य आवश्यक था; लकड़ी काटनी थी, जंगल साफ करना था, बांस इकट्ठा करके बांधना था और फिर उन्हें बाड़े के लिए चुने गए स्थान पर ले जाना था। इसके लिए न केवल कड़ी मेहनत बल्कि अनुभवी श्रमिकों की भी आवश्यकता थी। जंगल में रहने वाली जनजातियों, करुम्बा और शोलागा के पुरुषों ने अधिकांश श्रमिकों की भर्ती

की, क्योंकि वे न केवल पेड़ काटने और बांस बांधने में अनुभवी थे, बल्कि हाथियों के व्यवहार, उन्हें बाड़े में ले जाने और बाद में उन्हें रस्सी से बांधने और जंजीरों से जकड़ने और वश में करने में भी माहिर थे।

तभी बाघ ने दूसरी और तीसरी बार हमला किया, इससे पहले कि लोगों को एहसास होता कि उनके बीच एक आदमखोर जानवर मौजूद है।

तीन दिनों के अंतराल में दो करुंबा लापता हो गए और पहले करुंबा के अधखाए अवशेषों से पता चला कि उसे बाघ ने खा लिया था। दूसरे करुंबा का शव, मनंतोड्डी जाने वाले यात्री की तरह, फिर कभी नहीं मिला।

मैसूर शहर से मनंतोड्डी पहुँचने का एक और रास्ता है, और वह है कूर्ग होते हुए, जो कई वर्षों तक एक स्वतंत्र राज्य था लेकिन हाल ही में मैसूर में शामिल हुआ है। यह थोड़ा घुमावदार मार्ग है, लेकिन यहाँ का नज़ारा और भी मनमोहक है। काकनकोट सड़क की तरह, यह मार्ग भी घने जंगलों से होकर गुजरता है जहाँ हाथी और बाइसन रहते हैं, और जहाँ बाघों का दिखना लगभग न के बराबर है, जिसके कारण पहले ही बताए जा चुके हैं।

कूर्गी लोग बहुत ही मेहनती और जीवंत स्वभाव के होते हैं। पुराने समय में अंग्रेजों ने उन्हें एक विशेष सम्मान दिया था, जो भारत में कहीं और प्रचलित नहीं था। अपने राज्य की सीमा में रहने वाले प्रत्येक कूर्गी को शस्त्र रखने का लाइसेंस रखने की आवश्यकता नहीं थी, चाहे उसके पास कितने भी हथियार हों। मेरा मानना है कि यह विशेषाधिकार आज भी भारतीय सरकार द्वारा बरकरार रखा गया है। यह एक सराहनीय कदम था, लेकिन इसका एक बुरा परिणाम भी निकला। कूर्गियों ने कभी भी अपने इस विशेषाधिकार का दुरुपयोग एक-दूसरे या अन्य लोगों के खिलाफ हथियार चलाने के लिए नहीं किया, लेकिन उन्होंने अपने सुंदर छोटे से राज्य के जीव-जंतुओं के खिलाफ इसका इस हद तक इस्तेमाल किया कि हिरण लगभग विलुप्त हो गए।

मैं कई कूर्गी परिवारों को जानता हूं, जिनमें से अधिकांश कॉफी के बागान मालिक हैं, जिनके पास विशाल संपदाएं हैं जहां कॉफी की फसल उत्तम रूप से फलती-फूलती है, और संतरे एक लाभदायक द्वितीयक फसल के रूप में उगाए जाते हैं, और मैं संयोगवश इन्हीं परिवारों में से एक के यहां अतिथि था जब आदमखोर सांप के बारे में खबर फैली।

जिस एस्टेट में मैं ठहरा हुआ था, वह सिदापुर और विराजपेट कस्बों के लगभग बीच में स्थित था, और मनंतोड्डी और काकनकोट दोनों से काफी दूर था, जहाँ तीनों हत्याएँ हुई थीं। इसके अलावा, मैं बैंगलोर से अपनी राइफल साथ नहीं लाया था, क्योंकि मुझे पता था कि कूर्ग में शिकार की कोई सुविधा नहीं है, कम से कम उस तरह का जिसमें मेरी रुचि थी। इसलिए, जब मेरे दोस्त ने एक सुबह नाश्ते के समय मुझे यह खबर दी, तो मैंने उसे तटस्थ भाव से सुना, और उसकी तरह ही सोच रहा था कि एक आदमखोर बाघ इतने दुर्गम इलाके में कैसे पहुँच गया, जहाँ सामान्य बाघ और तेंदुआ लगभग न के बराबर हैं। लेकिन मेरा दोस्त उत्साहित हो गया और उसने सुझाव दिया कि हम उसका पीछा करें।

मैंने उससे कहा कि मुझे यह विचार कुछ खास नहीं लगा। मेरे विचार से वह जानवर पक्का आदमखोर नहीं था, बल्कि शायद कोई बीमार या घायल बाघ था, या हो सकता है कि वह देश भर में घूमने वाले कई छोटे सर्कसों में से किसी एक से भाग निकला हो और घने जंगलों के कारण वहाँ भटक गया हो। मुझे लगा कि या तो वह अपनी बीमारी या घावों से मर जाएगा, या जल्द ही इन प्रतिकूल जगहों को छोड़कर बाघों के प्राकृतिक इलाकों में चला जाएगा, जहाँ उसे अपना प्राकृतिक भोजन भरपूर मात्रा में मिल जाएगा, और तब वह खुद ही आदमखोरी छोड़ देगा। इसके अलावा, जैसा कि मैंने उसे याद दिलाया, मैं अपनी राइफल नहीं लाया था।

मेरे मेज़बान का नाम तिमय्या था, और उसने शर्त लगाई कि मैं गलत हूँ। उसने कहा कि बाघ वहीं रहेगा। और हाँ, उसके पास पाँच राइफलें थीं, जिनमें से मैं अपनी पसंद की राइफल चुन सकता था।

मैंने अपने दोस्त को याद दिलाया कि ऐसा करना गैरकानूनी होगा। उसके हथियार बिना लाइसेंस के थे। यह उस शर्त का हिस्सा था कि एक कूर्गी होने के नाते, उसे अपने बिना लाइसेंस वाले हथियार किसी गैर-कूर्गी को उधार देने की मनाही थी। और वैसे भी, किसी के लिए भी, यहाँ तक कि मेरे जैसे लाइसेंस धारक के लिए भी, किसी दूसरे व्यक्ति का हथियार उधार लेना नियमों के विरुद्ध था।

तिमय्या मुझ पर हँसा और बोला, 'क्या बकवास है!' फिर मज़ाक में उसने मुझसे दस रुपये की शर्त लगाई कि बाघ सप्ताह समाप्त होने से पहले फिर से किसी को मार डालेगा। उसकी बातों पर थोड़ा चिढ़कर मैंने उससे शर्त लगा ली।

तिमय्या ने वह शर्त जीत ली; क्योंकि तीसरे दिन हमें खबर मिली कि बाघ ने

फिर से शिकार किया है। इस बार शिकार एक महिला थी। वह केरल राज्य की सीमा के भीतर, काबिनी नदी के दूसरे किनारे पर कपड़े धो रही थी। और तिमय्या का निजता लाइसेंस केरल राज्य में मान्य नहीं था।

मेरे दोस्त ने इस बाघ का पीछा करने का पक्का इरादा कर लिया था। मुझे लगता है कि उसके लिए यह एक असामान्य घटना होने के कारण ज़रूरी हो गया था, और उसने साफ तौर पर कहा कि मैं भी उसके साथ चलूँ।

सच कहूँ तो, मेरी कोई खास इच्छा नहीं थी; लेकिन मना करते रहने से हमारे रिश्ते खराब हो जाते। मैं तिमय्या को बहुत समय से जानता था, दरअसल हम साथ-साथ स्कूल में पढ़े थे, और जिद्दीपन हमेशा से उसकी कमजोरी और खूबी दोनों रहा था! जब उसने वह संपत्ति सस्ते में खरीदी थी, तो पड़ोसियों ने उसे पूरी तरह बेकार समझा था। कहा जाता था कि मिट्टी अच्छी नहीं है, वहाँ उगने वाली कॉफी की किस्म अच्छी नहीं है, छायादार पेड़ अच्छे नहीं हैं, और भी बहुत कुछ! लेकिन तिमय्या खरीदने के लिए दृढ़ था। उसने खरीदा; उसने कड़ी मेहनत की; और उसने खूब तरक्की की।

तो मैंने एक शर्त पर मान लिया। मैं अपनी .405 राइफल लेने के लिए बैंगलोर वापस जाऊंगा और अपनी .450/400 राइफल को स्पेयर राइफल के रूप में साथ ले आऊंगा। वह मेरे साथ आएगा। फिर हम मैसूर शहर लौटेंगे, जहां से हम सीधे काकनकोट और केरल सीमा के लिए कार से जाएंगे। मैंने इस बात पर जोर दिया कि मैं दो राज्यों की पुलिस के साथ हथियार लाइसेंस विवाद में पड़ने की बजाय 240 मील की अतिरिक्त यात्रा का खर्च उठाना ज्यादा पसंद करूंगा।

तिमय्या मान गया, अपने हथियार वहीं छोड़ दिए और उसी रात मेरे साथ बैंगलोर आ गया। हमने अगला दिन सीमावर्ती जंगलों में पंद्रह दिन के शिविर के लिए राशन खरीदने में बिताया, जहाँ हमें पता था कि हमारे सभ्य खान-पान के हिसाब से कोई भी खाद्य पदार्थ उपलब्ध नहीं होगा। तिमय्या ने एक जार पेटेंट क्रीम और जोंक और कीड़ों से बचाव के लिए डी.डी.टी. का एक बड़ा डिब्बा खरीदा। हम मच्छरदानी, मेरा छोटा सा तंबू, एक पोर्टेबल चारपाई मचान, बैटरी और टॉर्च, और मेरी दो राइफलें भी साथ ले गए। तिमय्या ने कहा कि वह गोली नहीं चलाना चाहता, बल्कि मज़ा देखना चाहता है। उसे अच्छी तरह जानने के कारण, मुझे एहसास हुआ कि यह बात पूरी तरह सच नहीं थी।

हम दूसरे दिन दोपहर को काकनकोटे पहुँचे और फिर बाघ के बारे में जानकारी

जुटाने के लिए खेद्दा स्थल की ओर चल पड़े। जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, वहाँ से कुछ खास पता नहीं चला। परियोजना पर इतने सारे मजदूर काम कर रहे थे कि किसी को भी ठीक से पता नहीं था कि बाघ ने अपने दो शिकार कब और कहाँ किए थे। लेकिन अफवाहें और चारों ओर डर का माहौल था। वे लोग अचानक गायब हो गए थे और लगभग दो दिनों तक किसी ने उनकी अनुपस्थिति पर ध्यान नहीं दिया था। तब भी, महज़ संयोग से, सड़ते हुए मांस की दुर्गंध से आकर्षित होकर कुछ यात्री जाँच करने गए और उन्हें कुछ अवशेष मिले।

उस इलाके में आदमखोर बाघ की मौजूदगी को लेकर कई लोगों के पास अलग-अलग सिद्धांत थे, लेकिन उनमें से किसी ने भी उस जानवर को नहीं देखा था। उनकी बातों का सार यही था कि जंगल में एक बुरी आत्मा बाघ का रूप धारण करके सक्रिय है। इससे कुलियों में और भी ज़्यादा डर बैठ गया, इतना कि हम जानते थे कि अगर उनमें से एक और मारा गया तो खेद्दा अभियान रुक जाएगा। ऐसा होना, या यहाँ तक कि तारीख में देरी होना भी, स्थानीय सरकार के लिए एक बड़ी आपदा होती, जिसने इस अभियान में कुछ खास मेहमानों को आमंत्रित किया था।

अगली सुबह, हम कार से केरल सीमा तक थोड़ी दूरी तय करके काबिनी नदी के दूसरे किनारे पर स्थित उस छोटे से गाँव में पहुँचे जहाँ से कपड़े धो रही महिला को ले जाया गया था। एक बार फिर, किसी ने भी बाघ को नहीं देखा था। नदी किनारे पर उसके पदचिह्न, घसीटकर ले जाए गए किसी चीज़ के निशान और पत्तों व ज़मीन पर खून की कुछ बूँदों से ही पता चला था कि वहाँ एक आदमखोर बाघ आया था।

हम मनंतोड्डी गए और उस छोटे से कस्बे में पहले पीड़ित, काकनकोटे से आ रहे यात्री के बारे में पूछताछ की। यहाँ भी किसी को कुछ पता नहीं था। वन रेंज कार्यालय के पास अपने क्वार्टर लौट रहे एक वन रक्षक को सड़क किनारे एक अजीब सी चप्पल मिली। चूंकि वह अच्छी चप्पल थी और लोग आमतौर पर अपने जूते-चप्पल नहीं फेंकते, इसलिए वह उसे देखने के लिए रुक गया। तभी उसकी नज़र सड़क के समानांतर बहने वाली एक छोटी नदी के ढलान पर पड़ी दूसरी चप्पल पर पड़ी। वह उसे भी देखने के लिए नीचे गया और नदी किनारे उगी झाड़ियों में फंसी एक पगड़ी देखी। फिर उसने ज़मीन पर देखा और कीचड़ में बाघ के पदचिह्न देखे। वे कीचड़ में गहरे धंसे हुए थे, जिससे पता चलता था कि जानवर का वज़न ज़्यादा था, जबकि फर्न के पत्तों पर लगे कुछ गहरे लाल रंग के धब्बों ने सच्चाई उजागर कर दी।

खून! बाघ चप्पल और पगड़ी पहनने वाले को उठाकर ले जा रहा था।

हमने उस गार्ड का इंटरव्यू लिया और उससे खुद उसकी कहानी सुनी। और यहीं पर हमारी खोज का अंत हुआ। हमें और कुछ पता नहीं चल पाया, और हमें समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करें। तिमय्या ने कबूल किया कि उसे इस बात का अफसोस है कि उसने मुझे इस व्यर्थ की खोज में धकेल दिया था।

मनंतोड्डी एक खूबसूरत जगह है और हमने निरीक्षण बंगले में रात बिताई, जो सौभाग्य से खाली था। अन्य राज्यों के अधिकांश बंगलों के विपरीत, यह आरामदायक बिस्तरों और फोम के गद्दों से पूरी तरह सुसज्जित है, इसमें नियॉन लाइटें और बिजली के पंखे लगे हैं, और यह एक पहाड़ी पर एक पुराने ब्रिटिश आवासीय घर के खंडहरों के सामने स्थित है, जिसमें अपना निजी कब्रिस्तान भी था।

यह जुगनुओं की भूमि है। अंधेरा होने के बाद हजारों की संख्या में ये निकलते हैं, और इनकी टिमटिमाती रोशनी सैकड़ों छोटे मेंढकों के समूह के लिए एक उपयुक्त पृष्ठभूमि बनाती है, जिन्हें 'वायनाद' या 'टोक-टोक' मेंढक के नाम से जाना जाता है, और 'रथ-की-रानी' के फूलों की मनमोहक, कभी न भूलने वाली सुगंध, जो केवल अंधेरा होने के बाद ही खिलते हैं। हम आरामकुर्सियों पर लेटे हुए, शांति से सिगरेट पीते हुए मेंढकों की अंतहीन 'टोक-टोक-टोक-टोक-टोक' की आवाज सुन रहे थे। कभी-कभी कोई जुगनू खुली खिड़की से कमरे में आ जाता, उसकी छोटी सी रोशनी कमरे को रोशन करने वाली नियॉन ट्यूब की चमक में फीकी पड़ जाती।

अगली सुबह हमने इत्मीनान से अपनी यात्रा शुरू की, हमारा इरादा कूर्ग राज्य के विराजपेट तक सीधे रास्ते से मोटर वाहन से जाने का था, और फिर वहां से तिमय्या के बागान तक, जहां मैं उसे छोड़ दूंगा, खुद एक दिन रुकूंगा, और फिर मैसूर शहर होते हुए वापस बैंगलोर आ जाऊंगा।

हम मनंतोड्डी से दस मील से अधिक का सफर तय कर चुके थे और कबिनी नदी के केरल तट पर घने जंगल (ज्यादातर बांस के जंगल) से गुजर रहे थे, तभी हमने कुछ लोगों को अपनी ओर आते देखा, जो एक पालकी लेकर आ रहे थे। और यहीं से मेरी कहानी शुरू होती है, क्योंकि पालकी पर एक आदमी था, जिसके फटे-पुराने कपड़े खून से लथपथ थे।

सामान ढोने वालों ने हमें बताया कि वे बांस काटने वाले थे और नदी किनारे, एक मील से कुछ अधिक दूरी पर, ठेके पर काम कर रहे थे, जब उस सुबह भोर के

कुछ ही समय बाद, बिना किसी चेतावनी के, एक बाघ ने अचानक उनमें से दो पर हमला कर दिया, बाकी लोगों के सामने ही, और एक को कंधे से पकड़कर नीचे गिरा दिया और उसे घसीटते हुए ले जाने लगा।

लेकिन वे दोनों भाई थे, और जिसे बाघ ने नजरअंदाज किया था वह बहुत बहादुर था। वह उस जानवर के पीछे उस बड़े घुमावदार चाकू से भागा था जिसका इस्तेमाल वह बांस काटने के लिए कर रहा था।

पीछा किए जाने पर आदमखोर बाघ अपने शिकार को लिए हुए ही सरपट भागने लगा। पीछा करने वाले बाघ को जब एहसास हुआ कि अपने भाई को बचाने के लिए बाघ को पकड़ने की कोई उम्मीद नहीं है, तो उसने हताशा में भागते हुए जानवर पर चाकू फेंक दिया। किस्मत ने उसका साथ दिया और चाकू उसके पेट में जा लगा। दर्द या डर के मारे आदमखोर बाघ ने अपने शिकार को गिरा दिया और बाँस के झुरमुटों में जा घुसा।

इस घटनाक्रम का नायक, जो स्ट्रेचर ले जाने वाले पुरुषों में से एक था, ने बिखरे हुए बांस काटने वालों को इकट्ठा किया और उन्हें एक टीम में संगठित किया ताकि वे अपने गंभीर रूप से घायल भाई को निकटतम अस्पताल, जो कि मनंतोड्डी में था, तक ले जाने में मदद कर सकें।

समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था और हमने तुरंत कार्रवाई की। घायल व्यक्ति को, उसकी मदद के लिए आए दो अन्य लोगों के साथ, स्टुडेबेकर में बिठाकर, मैंने तिमय्या को गाड़ी मोड़कर जितनी जल्दी हो सके अस्पताल ले जाने को कहा, जहाँ वह घायल व्यक्ति को छोड़ सके। फिर वह अपने साथ आए दो लोगों के निर्देशानुसार बांस काटने वालों के शिविर में वापस चला जाएगा, जबकि मैं बाकी लोगों के साथ पैदल आगे बढ़कर बाघ को खोजने की कोशिश करूंगा।

जब तिमय्या अभी गाड़ी मोड़ ही रहा था कि मैं शिविर की ओर दौड़ पड़ा। मेरा बहादुर भाई, जिसका नाम मुझे बाद में येगा पता चला, मेरे बगल में दौड़ रहा था और बाकी लोग मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। एक मिनट भी गंवाने का समय नहीं था। संभवतः आदमखोर सांप तब तक मीलों दूर जा चुका था, लेकिन इस बात की बहुत कम संभावना थी कि वह अभी भी आसपास कहीं मंडरा रहा हो।

हम समय पर शिविर में पहुँच गए, लेकिन तब तक नहीं रुके जब तक हम उस जगह पर नहीं पहुँच गए जहाँ बाघ ने अपने शिकार को गिराया था। ज़मीन पर घनी

झाड़ियाँ थीं जिन पर बाघ के पैरों के निशान नहीं थे, लेकिन चमकदार हरे पत्तों पर लाल रंग के धब्बे थे—ताज़ा खून जो अभी सूखा नहीं था। यह खून येगा के भाई का था, जिसे यहाँ गिराया गया था, या आदमखोर बाघ के पेट में चाकू से लगे घाव का, यह हम उस समय नहीं बता सकते थे।

इस जगह पर मैंने पीछे आए लोगों को रोका और फुसफुसाकर उनसे अपने शिविर में लौटने को कहा। येगा और मैं मिलकर इस काम को पूरा करेंगे। अगर आदमखोर सांप अभी भी आसपास हो तो इतने सारे लोगों की मौजूदगी उसे डराकर भगा देगी।

झाड़ियों के झुके हुए सिर उस दिशा को दर्शा रहे थे जिसमें आदमखोर अपने शिकार को गिराने के बाद भागा था, और मैं येगा के पीछे-पीछे चल रहा था, किसी भी क्षण और किसी भी दिशा से, विशेष रूप से पीछे से, अचानक हमले के लिए सतर्क था। वह सिर झुकाए दबे पांव आगे-आगे चल रहा था, घनी झाड़ियों के हरे तनों के बीच से दिखाई देने वाली काली कपास-मिट्टी जैसी मिट्टी की झलक का निरीक्षण कर रहा था।

येगा अपनी छुरी ढूंढ रहा था। हम यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उसके भारी हथियार से बाघ को सचमुच चोट लगी है या नहीं। अगर सच में चोट लगी होती, तो हम उम्मीद कर सकते थे कि जानवर का व्यवहार उस स्थिति से बिल्कुल अलग होता जब छुरी का वार मामूली होता। संभवतः, अगर बाघ घायल होता, तो वह दहाड़ता और काफी दूर से हम पर हमला करता; लेकिन अगर घायल नहीं होता, तो आदमखोर या तो तभी हमला करता जब हम उसके काफी करीब आते, या फिर चुपके से भाग जाता।

अब मेरी ज़िम्मेदारी थी कि मैं जंगल पर पहले से कहीं ज़्यादा सावधानी से नज़र रखूँ, आगे और पीछे दोनों तरफ, ताकि अचानक होने वाले हमले से खुद को बचा सकूँ। मैं येगा की खोज में उसकी मदद नहीं कर सकता था।

फिर हमें चाकू मिला। उसकी धार एकदम साफ थी, उस पर खून का कोई निशान नहीं था। बाघ को कोई चोट नहीं आई थी और जिस खून के धब्बे हमने देखे थे, वह घायल आदमी का ही था।

हम कुछ दूर तक दबे पांव आगे बढ़े और रुक गए। तभी येगा ने धीरे-धीरे अपना सिर अगल-बगल हिलाया। आदमखोर ने दौड़ना बंद कर दिया था।

हम एक और फर्लांग तक उसका पीछा करते रहे, जब हमारे शिकार के निशान गायब हो गए। यहाँ जानवर लेमनग्रास के एक क्षेत्र से गुज़रा था, जो सुगंधित किस्म की घास है जिसकी पत्तियों का उपयोग मुख्य रूप से एक आवश्यक तेल निकालने के लिए किया जाता है। इस घास के लंबे, कठोर तने होते हैं जो आदमखोर के गुजरने से झुक गए थे और फिर अपनी जगह पर वापस आ गए, जिससे अब उसके जाने की दिशा का कोई निशान नहीं बचा था। इस लेमनग्रास के बड़े-बड़े गुच्छों के बीच की ज़मीन सड़ते हुए तनों और पौधों की एक मोटी परत से ढकी हुई थी, जिस पर उसके पैरों के निशान का हल्का सा भी निशान नहीं था।

अपनी गति बढ़ाते हुए, हम सीधे लेमनग्रास के उस क्षेत्र को पार कर गए जो लगभग एक चौथाई मील तक फैला हुआ था, जहाँ से जंगल फिर से शुरू हो जाता था। लेकिन बाघ के पदचिह्न फिर से नहीं मिले और हमें यह निष्कर्ष निकालना पड़ा कि हम उसे खो चुके हैं।

साहस के अलावा, दृढ़ता भी इस नन्हे बांस काटने वाले की एक और प्रबल खूबी थी। उसने हार मानने से इनकार कर दिया और फुसफुसाते हुए कहा कि हमें तब तक आगे बढ़ते रहना चाहिए जब तक कि हमें बाघ न मिल जाए। उसकी इस लगन से प्रेरित होकर, मैं भी शिकार के जोश में आ गया और हम कई मील तक आगे बढ़ते रहे, और उस दिन के लगभग सारे घंटे इसी में बीत गए। हमने बाइसन के दो झुंड और जंगली हाथियों का एक परिवार पार किया और दोपहर के 3 बज चुके थे, तब जाकर हम आखिरकार बांस काटने वालों के शिविर की ओर वापस लौटे। हम अंधेरा होने के बाद, शाम 7:30 बजे वहाँ पहुँचे। मेरा शरीर जोंक और जूँ के काटने से भरा हुआ था, और मैं असहनीय रूप से थका हुआ था, हालाँकि इस बात से खुश था कि आखिरकार हम आदमखोर बाघ को पकड़ने में कामयाब हो गए थे और येगा जैसा बहादुर साथी हमारी मदद के लिए मौजूद था।

तिमाय्या कई घंटे पहले कार से लौट आया था और बेसब्री से हमारी खबर का इंतजार कर रहा था। दुर्भाग्य से, मेरे पास उसे देने के लिए कोई खबर नहीं थी।

हमने रात बिताने के लिए मनानटोड्डी स्थित निरीक्षण बंगले में लौटने का फैसला किया, जो केवल ग्यारह मील दूर था, और अगली सुबह बांस काटने वालों के शिविर में जाने का निर्णय लिया। उनके साथ रात बिताना, जमीन पर लेटना, मच्छरों और अन्य कष्टों का सामना करना, इतना भयावह था कि इसकी कल्पना भी नहीं की जा

सकती थी।

यहीं मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई। क्योंकि जब हम अगली सुबह वहाँ पहुँचे तो हमने देखा कि छोटा सा शिविर बुरी तरह अस्त-व्यस्त था और सभी बाँस काटने वाले एक ही झोपड़ी में दुबके हुए थे। येगा के नेतृत्व में वे सब बाहर निकले और बताया कि आदमखोर रात के अंधेरे में लौट आया था। वह चुपके से आया और झोपड़ी की दीवारों के नीचे से उनमें से एक को उठा ले गया!

अब आप सोच रहे होंगे कि एक बाघ ऐसा कैसे कर सकता है, लेकिन इसका स्पष्टीकरण सरल है। बांस काटने वालों द्वारा बनाई गई झोपड़ियाँ जंगल में अस्थायी आश्रय थीं, जिन्हें वे काम खत्म होते ही छोड़ देते थे। ये झोपड़ियाँ फटे हुए बांस और पत्तियों से बनी थीं, और इनकी दीवारों को कभी भी ज़मीन से छूने नहीं दिया जाता था। क्योंकि अगर वे ज़मीन को छूतीं, तो दीमक—या सफेद चींटियाँ, जैसा कि उन्हें बेहतर जाना जाता है—कुछ ही घंटों में दीवारों पर चढ़ जातीं और पूरी झोपड़ी पल भर में नष्ट हो जाती। इसलिए झोपड़ी के चारों ओर एक खाली जगह छोड़ी जाती थी, और जिन बांसों को ज़मीन में गाड़ना ज़रूरी होता था, उनके सिरों को पहले तारकोल की परत से सुरक्षित किया जाता था।

आदमखोर ज़रूर भूखा रहा होगा। शायद पिछले दिन अपने शिकार से वंचित रहने ने उसकी भूख और बढ़ा दी थी। वह सुबह तड़के लौटा और सोए हुए शिविर में छाई खामोशी का फायदा उठाकर चारों झोपड़ियों तक पहुँच गया। वहाँ, उनमें से एक की दीवार के नीचे की दरार से उसने एक सोते हुए आदमी को देखा। भूखे और साहसी जानवर के लिए बाकी का काम आसान था। वह झोपड़ी तक रेंगता हुआ गया और अपना पंजा दरार के नीचे डालकर सोते हुए आदमी पर अपने पंजे गड़ा दिए। आदमी मदद के लिए चिल्लाया, लेकिन किसी ने कुछ करने की सूझबूझ नहीं दिखाई और आदमखोर अपने शिकार को झोपड़ी से बाहर घसीट ले गया, इस प्रक्रिया में उसने एक दीवार का निचला हिस्सा तोड़ दिया।

पीड़ित येगा के लिए दुर्भाग्य की बात यह थी कि वह एकमात्र व्यक्ति जो उसकी मदद कर सकता था, उस झोपड़ी में नहीं बल्कि सबसे दूर वाली झोपड़ी में था, जिससे बाघ को आसानी से भागने का मौका मिल गया। बाँस काटने वालों ने भयावह ढंग से बताया कि बाघ द्वारा झोपड़ी से बाहर घसीटने के बाद उन्हें बेचारे आदमी की चीखें बहुत देर तक सुननी पड़ीं। हैरानी की बात यह थी कि चीखने-चिल्लाने के बावजूद बाघ

ने उसे मारा नहीं, जैसा कि आम तौर पर आदमखोर बाघ अपने शिकार के शोर मचाने पर करते हैं। यह जानवर उसे चीखते-चिल्लाते हुए ले गया और उसके साथियों ने सुना कि जैसे-जैसे बाघ उसे ले जा रहा था, उसकी चीखें धीरे-धीरे धीमी होती जा रही थीं।

येगा ने तुरंत मेरे साथ चलने की पेशकश की, लेकिन बाकी कुली पूरी तरह से हतोत्साहित थे। वे एक समूह में huddled होकर भगवान से मदद की प्रार्थना कर रहे थे और बाघ को गालियां दे रहे थे। येगा को छोड़कर वे नौ लोग थे। इसलिए मैंने तिमय्या से कहा कि वह उन्हें स्टडबेकर में किसी तरह बिठा ले, चाहे इसके लिए कुछ लोगों को फुटबोर्ड पर खड़ा होना पड़े, और उन्हें बिना देरी किए मनंतोड्डी सुरक्षित स्थान पर वापस ले जाए। फिर उसे शिविर स्थल पर लौटकर मेरा इंतजार करना था, लेकिन इस दौरान उसे किसी भी हालत में गाड़ी नहीं छोड़नी थी। वैसे भी, उसके पास मेरी .405/400 राइफल थी, इसलिए खुद की रक्षा करने में असमर्थ होने का कोई खतरा नहीं था।

इसके बाद येगा और मैंने उस आदमखोर का पीछा करना शुरू किया।

झोपड़ियों के बाहर की ज़मीन नरम थी और आम तौर पर उगने वाली खरपतवारों को साफ कर दिया गया था ताकि कीड़े-मकोड़े और जोंक दूर रहें। इससे हमें बाघ के पदचिह्न ढूंढने में मदद मिली, जब वह झोपड़ी के पास आया था और जब वह अपने शिकार को साथ लेकर चला गया था। बेचारे आदमी के शरीर का जो भी हिस्सा बाघ ने पकड़ा था, वह स्पष्ट रूप से कोई महत्वपूर्ण अंग नहीं था, क्योंकि शिकार ने संघर्ष किया था और ज़मीन पर लात मारी थी, जैसा कि निशानों से पता चलता है। एक जगह उसने एक छोटे पेड़ के तने को पकड़ा था और उसे मजबूती से पकड़े रखा होगा। बाघ ने उसे सचमुच खींचकर छुड़ाया था, जैसा कि आदमी की हथेलियों की त्वचा के उन टुकड़ों से पता चलता है जो अभी भी तने से चिपके हुए थे और उस जगह ज़मीन और पत्तियों पर खून की बढ़ी हुई मात्रा से भी। निस्संदेह यह बाघ द्वारा अपने शिकार को घसीटकर छुड़ाने के दौरान घाव के बढ़ने का परिणाम था।

अब हम आसानी से निशान का पीछा कर पा रहे थे। बेचारे आदमी का शरीर बुरी तरह से खून से लथपथ था और झाड़ियों, घास और पत्तियों पर खून के छींटे उस रास्ते को दर्शा रहे थे जहाँ से बाघ गुजरा था। रात के अंधेरे में जंगल के उस भयानक दृश्य की कल्पना करते ही मुझे एक अजीब सी घबराहट होने लगी, और उस पीड़ित की यह अनुभूति याद आ गई कि उसे खा लिया जाएगा, कोई भी उसे बचा नहीं सकता, और

वह अपनी पत्नी और बच्चों को फिर कभी नहीं देख पाएगा।

अंततः हम उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ बाघ को लगा होगा कि वह अपने शिकार की चीखों और संघर्षों से तंग आ चुका है। यहाँ उसने उस आदमी को ज़मीन पर गिरा दिया और अपनी पकड़ ढीली करके तब तक बार-बार काटा जब तक कि उसकी चीखें हमेशा के लिए शांत नहीं हो गईं।

ये सब बातें ज़मीन पर बने निशानों और उन आखिरी भयंकर और घातक हमलों से बहे खून के तालाब में लिखी हुई थीं। इसके बाद आदमखोर ने अपनी यात्रा जारी रखी।

हम एक और फर्लांग तक उसका पीछा करते रहे, और आखिरकार यहाँ बाघ ने अपना भोजन शुरू करने का फैसला किया। वह संकरे रास्ते को छोड़कर घास, झाड़ियों और फर्न से घिरी एक छोटी सी खोखली जगह में घुस गया, जहाँ उसने बेचारे बांस काटने वाले को खाना शुरू कर दिया। जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, जानवर भूखा रहा होगा, क्योंकि आदमी का सिर, हाथ और पैर, और सीने का एक छोटा सा हिस्सा, जिसमें पसलियों की हड्डियाँ मांस से रहित थीं, के अलावा कुछ भी नहीं बचा था। आंतें फाड़कर एक तरफ घसीट ली गई थीं। पीड़ित के श्रोणि से मांस निकाल लिया गया था, जिससे हड्डी दिखाई दे रही थी, और जांघों को भी खा लिया गया था, यहाँ भी केवल हड्डियाँ ही उस भव्य दावत का सबूत थीं।

उस बेचारे आदमी का एक चौथाई से भी कम हिस्सा बचा था, लेकिन यह बाघ को उस रात दूसरे भोजन के लिए वापस आने के लिए काफी था, बशर्ते हम चतुराई से काम लें और उसकी शंकाओं को न जगाएं।

येगा और मैंने चारों ओर देखा और यहीं हमें पहली बाधा का सामना करना पड़ा। कम से कम अस्सी गज के दायरे में कोई पेड़ नहीं था, जो कि बहुत अधिक दूरी थी, जैसा कि मैं अपने पिछले अनुभव से अच्छी तरह जानता था, रात में टॉर्च की रोशनी में गोली चलाने का जोखिम उठाने के लिए।

जो लोग इस बारे में नहीं जानते, उन्हें यह अतिशयोक्ति लग सकती है। दिन के उजाले में अस्सी गज की दूरी शायद मामूली लगे। लेकिन जो लोग रात में जंगल में मचान पर बैठे हैं, वे मेरी बात समझेंगे। झाड़ियाँ, पत्ते, घास के तिनके और पत्थर, ये सब इतनी दूरी पर रुकावट पैदा करते हैं, और बाघ के लौटने पर बेहतर दृश्य सुनिश्चित करने के लिए इन्हें हटाने की कोशिश करने से उसका संदेह बढ़ सकता है और वह

वापस ही न आए। याद रखिए, मैं उसे घायल करने का जोखिम नहीं उठा सकता था। मुझे उसे गोली मारकर ही मारना था।

बाघ, तेंदुआ और विशेष रूप से आदमखोर जानवर अपने शिकार के पास लौटते समय बहुत सतर्क रहते हैं। वे प्रकट होने से पहले शिकार स्थल के आसपास के रास्तों का लंबे समय तक जायज़ा लेते हैं, और यदि उन्हें कुछ भी संदिग्ध लगता है, जैसे कि कटी हुई शाखाएँ बिखरी हुई हों, झाड़ियाँ, पत्थर या पत्तियाँ हटाई गई हों, या ऐसे पत्ते या शाखाएँ डाली गई हों जिनमें कोई छिपा हुआ दुश्मन हो, तो वे उस स्थान से दूर चले जाते हैं और फिर कभी वापस नहीं आते। हालाँकि बाघ में सूंघने की शक्ति नहीं होती, लेकिन वह अपनी असाधारण सतर्कता और शिकारी के मन को लगभग पढ़ लेने और उसकी हर हरकत का अनुमान लगाने की क्षमता से इस कमी को पूरा कर लेता है।

मानो लकड़हारे के अवशेषों से निकटतम पेड़ की दूरी की भरपाई करने के लिए, बाघ घास का एक घना पैच उस छोटे गड्ढे के किनारे पर था जिसमें बाघ उसे अपना भोजन शुरू करने से पहले ले गया था, और यह पैच मुश्किल से पंद्रह फीट दूर था।

अगर मैं उस घास में छिप सकूँ और आदमखोर बाघ को मेरी मौजूदगी का पता न चले, तो वह मेरे लिए एकदम सीधा निशाना बन जाएगा। चाँद जल्दी निकल आएगा, और हालात मेरे पक्ष में होंगे, बशर्ते बाघ को मेरी मौजूदगी का पता न चले। क्या यह मुमकिन होगा? क्योंकि अगर उसे पता चल गया, तो मेरे लिए हालात बेहद खराब हो सकते हैं।

जैसा कि मैं भली-भांति जानता था, सभी बाघ, विशेषकर आदमखोर बाघ, जो अपनी प्रजाति की स्वाभाविक सावधानी से भी कहीं अधिक शातिर चालाक प्रतीत होते हैं, अपने शिकार के अवशेषों पर दूसरे भोजन के लिए लौटते समय हर प्राकृतिक आवरण का लाभ उठाने की आदत रखते हैं। बाघ घास का वह झुंड जिसमें मैंने खुद को छिपाने का विचार किया था, आदमखोर के लौटने के सीधे रास्ते में था और उसके शिकार के इतना करीब था कि यह लगभग निश्चित था, यदि निश्चित नहीं, कि वह अपने आने को छिपाने के लिए इसका उपयोग करेगा। और मैं चाहे कितना भी चुप रहूँ, मैं यह अच्छी तरह जानता था कि उसका आना भी कितना ही खामोश होगा। यदि आदमखोर मुझे उससे पहले देख लेता, तो कुछ ही घंटों में बांस काटने वाले की हड्डियों के साथ किसी और की हड्डियाँ भी मिल जातीं। यह एक जोखिम भरा जुआ था, जो मुझे खेलना ही था।

घास को अनावश्यक रूप से रौंदकर उसे नुकसान न पहुँचाने के लिए, मैंने समस्या के सभी पहलुओं पर विचार करते हुए उसके चारों ओर चक्कर लगाया। अगर मैं उस घास में छिप जाता, तो मुझे दो विपरीत दिशाओं में सतर्क रहना पड़ता: पीड़ित के अवशेषों पर और उस दिशा पर भी जहाँ से आदमखोर के आने की आशंका थी, जो लगभग निश्चित रूप से घास के इसी हिस्से से होकर आता। यह मैं नहीं कर सकता था; शरीर को स्थिर रखते हुए भी मुझे कम से कम अपना सिर इधर-उधर घुमाना पड़ता। इसका मतलब होता हिलना-डुलना, और किसी भी तरह की हलचल जानलेवा होती।

अगर बाघ को मेरी मौजूदगी का पता चल जाता, तो दो बातें हो सकती थीं: या तो वह डरकर गायब हो जाता, या फिर वह जानबूझकर मेरा पीछा करता और मेरे शक होने से पहले ही मुझ पर झपट पड़ता। सच कहूँ तो, मुझे वह भयानक विकल्प बिल्कुल पसंद नहीं था।

इस समय येगा के दिमाग में एक शानदार विचार आया। हम दोनों घास में पीठ सटाकर बैठेंगे, हममें से एक बांस काटने वाले के अवशेषों को देखेगा जबकि दूसरा उस सरसराहट को सुनेगा जो आदमखोर के उसी घास के गुच्छे में प्रवेश करने का संकेत देगी, तब तक वह हमसे पांच या छह फीट से अधिक दूर नहीं होगा।

आगे क्या होता, यह इस बात पर निर्भर करता कि मैं शिकार के अवशेषों को देख रहा था या घास के बीच से बाघ को आते हुए। अगर मैं अवशेषों को देख रहा होता और येगा घास को, तो उसे मुझे धक्का देकर चेतावनी देनी पड़ती, और मुझे गोली चलाने के लिए एक पल में मुड़ना पड़ता। और मुझे सटीक निशाना लगाना होता। लेकिन अगर मैं घास के बीच से बाघ को आते हुए देखता और येगा को शिकार की निगरानी करने के लिए छोड़ देता, और आदमखोर बाघ किसी और दिशा से बाघ की ओर आता, तो मुझे भी वैसी ही प्रतिक्रिया देनी पड़ती, बस फर्क इतना होता कि स्थिति इतनी खतरनाक नहीं होती। कम से कम, बाघ पाँच-छह फीट से ज़्यादा दूर होता और मुझे गोली चलाने का बेहतर मौका मिलता।

मुझे येगा की जान जोखिम में डालना बिल्कुल पसंद नहीं था। और अपनी जान को भी खतरे में डालना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन यही हमारा एकमात्र मौका था और मैंने सहमति में सिर हिला दिया।

आश्चर्य की बात है कि वायनाड वन क्षेत्र में गिद्धों की संख्या दक्षिण भारत के

शुष्क जंगलों की तुलना में बहुत कम है। फिर भी, हमने यह जोखिम नहीं लिया कि वे अवशेषों को खोज लें और हड्डियों पर बचे हुए थोड़े से मांस को भी खा जाएं। इसलिए येगा ने अस्सी गज दूर उगे पेड़ से कुछ छोटी शाखाएँ काटीं और उन्हें हमने उस व्यक्ति की हड्डियों और आंतों के ऊपर रख दिया ताकि ऊपर मंडरा रहे किसी भी गिद्ध की नज़र उन पर न पड़े। फिर हम सुनसान शिविर में लौट आए।

तिमय्या को मनंतोड्डी से कार में वापस आने में पंद्रह मिनट और लग गए। मैंने उसे अपनी खोज और आगे की योजना के बारे में बताया। फिर दोस्तों के बीच कभी-कभी होने वाली एक अजीब स्थिति उत्पन्न हो गई। तिमय्या ने साफ-साफ कहा कि वह येगा की जगह मेरे साथ बैठेगा, मेरी अतिरिक्त राइफल लेकर, लेकिन मैं उसके इस फैसले से खुश नहीं था। मैं अपने दोस्त की जान को खतरे में नहीं डालना चाहता था।

दूसरी बात, सच कहूँ तो और शायद स्वार्थवश, क्योंकि मेरी अपनी जान भी दांव पर लगी थी, मुझे शक था कि टिम्मी बाघ पर उतनी कुशलता से नज़र रख पाएगा जितना येगा, अपने जीवन भर के जंगल के अनुभव के साथ, रख सकता था। मैंने ये बातें अपने दोस्त को यथासंभव विनम्रता से बताईं। टिम्मी गुस्सा हो गया—और बदतमीज़ी भी करने लगा।

'अरे यार, मैं तो बागान मालिक हूँ,' उसने कहा, 'तुम्हारे जैसे शहरवासी नहीं। तुम्हें क्या लगता है? अगर तुम्हें मेरे साथ बैठने का मन नहीं है, तो कम से कम मुझे 405/400 फ़ोन उधार दे दो और... तुम खुद वापस मनंतोड्डी चले जाओ। बाकी मैं कर लूँगा।'

उसकी आंखों में बेहद घृणित भाव था।

मैंने कंधे उचका दिए। 'ठीक है टिम्मी, तुम जीत गए,' मैंने कहा। 'हम साथ बैठेंगे।'

वह अप्रिय भाव गायब हो गया और उसकी जगह खुशी और उत्साह की चमक ने ले ली।

जब येगा को योजना में बदलाव के बारे में पता चला तो वह बेहद निराश हो गया। अब बारी उसकी थी मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखने की। मैंने उसकी नज़रों से बचते हुए स्टुडेबेकर के एक टायर को ध्यान से देखा।

हम दोपहर के भोजन के लिए येगा को साथ लेकर मनंतोड्डी लौट आए। दोपहर

के भोजन के बाद हमने कुछ घंटे आराम किया ताकि आगे आने वाली लंबी, नींदविहीन रात की निगरानी के लिए हमें ताकत मिल सके। तीन बजे हम तैयार थे। टिम्मी ने सुझाव दिया कि हम अपने साथ चाय और सैंडविच ले जाएं, जिस पर मैंने सहमति जता दी, लेकिन साथ ही उसे याद दिलाया कि इन जलपान का आनंद हम अगली सुबह ही ले सकते हैं। आदमखोर के लौटने की प्रतीक्षा करते समय हम किसी भी प्रकार की आवाज या हलचल का जोखिम नहीं उठा सकते थे।

हमने येगा को मनंतोड्डी में ही छोड़ दिया, क्योंकि हमारे बैठने की जगह तक अकेले जाना और फिर वापस लौटना उसके लिए खतरनाक होता। इसके अलावा, हमें उसकी किसी भी तरह की ज़रूरत नहीं थी। साढ़े तीन बजे तक हम लकड़हारों के सुनसान शिविर में पहुँच गए। यहाँ हमने अपनी स्टुडेबेकर कार झोपड़ियों के पास खड़ी की और चार बजे से पहले ही हम बाघ घास के मैदान में पहुँच गए।

येगा और मैंने पहले बांस काटने वाले के बिखरे हुए अवशेषों को गिद्धों से बचाने के लिए जिन छोटी टहनियों से ढका था, उन्हें हटाकर मैं उन्हें काफी दूर एक जगह ले गया। दोपहर का समय गर्म और धूप वाला था और लकड़हारे का जो कुछ भी बचा था, भले ही वह बहुत कम था, उससे बदबू आने लगी थी, खासकर उसकी आंतों से, जिन्हें आदमखोर बाघ एक तरफ खींच लाया था। लेकिन बाघ के लौटने पर उसका शक पैदा होने के डर से हमने उन्हें हटाने की हिम्मत नहीं की।

मैंने टिमी से पहले ही शर्त लगा ली थी कि मैं उस तरफ मुंह करके बैठूंगा जहां से बाघ घास के बीच से आ सकता है, जबकि वह लकड़हारे के अवशेषों की तरफ मुंह करके बैठेगा। सौभाग्य से, उसने इस बारे में कोई आनाकानी नहीं की और आसानी से मान गया। हम विश्राम गृह से बैठने के लिए दो फोम-रबर के कुशन लाए थे। ये न केवल आराम देंगे, बल्कि हमारे हिलने-डुलने से होने वाली किसी भी आवाज़ को भी दबा देंगे। इन्हें ज़मीन पर रखकर, हम पीठ से पीठ मिलाकर, पहले बताई गई दिशाओं में मुंह करके बैठ गए। मैंने अपने पैर मोड़े और चुपचाप बैठ गया, क्योंकि जंगल में कई वर्षों के अनुभव के बाद मैंने खुद को इस मुद्रा में बैठने का अभ्यस्त कर लिया था। टिमी ने धीरे से कहा कि वह इस तरह आराम से नहीं बैठ सकता और उसने अपने दोनों पैर फैला दिए। तुरंत मेरे मन में एक बेचैन करने वाला विचार आया: टिमी कब तक बिना हिले-डुले इस तरह बैठ पाएगा? मुझे यह शारीरिक रूप से असंभव लग रहा था, और मैं जानता था कि सूर्यास्त से पहले वह बेचैन हो जाएगा।

वायनाड और पश्चिमी घाट के जंगलों में वन जीवन शुष्क क्षेत्रों से काफी अलग है। यहाँ जानवरों और सरीसृपों की संख्या कम है, लेकिन पक्षियों और कीड़ों की भरमार है। हमें इसका एहसास जल्दी ही हो गया, क्योंकि हमारे पहुँचने और कुछ ही मिनटों में जब वातावरण शांत हुआ, तो हमें चारों ओर से पक्षियों की चहचहाहट सुनाई देने लगी, साथ ही झींगुरों की आवाज़ भी। इन क्षेत्रों के झींगुर मैदानी इलाकों के झींगुरों से भिन्न होते हैं: मैदानी इलाके के झींगुर, जिनसे मैं परिचित था, एक तीखी और लगातार ऊँची आवाज़ निकालते हैं, लेकिन पहाड़ी झींगुर, जो यहाँ बहुतायत में पाए जाते थे, एक कर्कश और उतार-चढ़ाव वाली आवाज़ निकालते हैं। यह लगभग धीमी हो जाती है और फिर एक ऐसी लय में पहुँच जाती है जो नसों को झकझोर देती है, फिर धीरे-धीरे कम हो जाती है, और फिर से तेज़ हो जाती है।

जैसे ही शाम ढलने लगी, दूर से आते जंगली मुर्गे और चिड़िया अपने सामान्य घोंसले से पहले के गायन में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने लगे, साथ ही बीच-बीच में एक मोर की कर्कश, दर्द भरी आवाज सुनाई देने लगी, जो बहुतायत से उगे विशाल बांस के गिरे हुए बीजों के बीच भोजन कर रहा था, या सड़ते हुए पत्तों और फफूंद की मोटी परत को खरोंचकर इल्लियों की तलाश कर रहा था। हमारे चारों ओर, घास से ही तरह-तरह के कीड़ों की धीमी और अस्पष्ट आवाजें आ रही थीं: टिड्डे, अनगिनत किस्मों के भृंग और कई अन्य जीव। एक हरा और पतला मैंटिस, जो कम से कम आठ इंच लंबा रहा होगा, मेरे ठीक सामने प्रकट हुआ, इतनी अद्भुत रूप से छिपा हुआ था कि अगर वह मेरे घुटने पर न चढ़ता तो मैं उसे देख भी नहीं पाता। उसका शरीर दुर्बल और बेहद नाजुक था, मानो बांस की पतली टहनी हो और मोटाई में सोलहवें इंच से भी कम। उसके पंख पारदर्शी ऊतक के बने थे और पत्तियों की तरह शिराओं से युक्त थे, जो उसकी पीठ पर इस तरह मुड़े हुए थे मानो किसी महत्वहीन हरे बाह्यदल का रूप धारण कर लें। प्रकृति का छलावरण इतना अद्भुत और निष्पक्ष है कि जो जीव स्वभाव से दूसरों का शिकार करते हैं और जो शिकार होने से बचने की कोशिश करते हैं, वे दोनों ही एक-दूसरे से समान रूप से छिपे रहते हैं। यह दिखने में हानिरहित मैंटिस, जो दो हरी पत्तियों से सजी एक पतली टहनी जैसा दिखता था, अपने कीट जगत में उतना ही मांसाहारी और क्रूर था जितना कि आदमखोर बाघ, जिसके लौटने का हम इंतजार कर रहे थे, भयभीत जंगलवासियों के लिए था।

पक्षियों की चहचहाहट लगभग तुरंत ही शांत हो गई और अंधेरा छा गया। हमारे

चारों ओर घास में छिपे कीड़ों की सरसराहट तेज़ होती चली गई। हमें उनकी हलचल चारों ओर, यहाँ तक कि हमारे शरीर पर भी महसूस हो रही थी। वे हमारे ऊपर चढ़ गए और हमारे कपड़ों के अंदर घुस गए, जिससे इतनी खुजली होने लगी कि हमें हिलने-डुलने और खुजली करने से रोकने के लिए अपने पूरे आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता पड़ी, ताकि हम एक पल की राहत पा सकें।

मुझे मैदानी जंगलों के अपने पुराने दोस्तों, नाइटजार पक्षियों की याद आई और कुछ पल उनके बारे में सोचा। वे गोधूलि बेला के इस समय सक्रिय होते थे, चुपचाप, भूतिया अंदाज़ में इधर-उधर उड़ते रहते थे, अपने शाम के भोजन की तलाश में। वे दिन के उन कीड़ों में से एक होते थे जो देर से सोने जा रहे होते थे, और रात के उन कीड़ों में से एक होते थे जो भोजन की तलाश में जल्दी आ जाते थे।

इससे मेरे विचार जीवन की मूलभूत प्रवृत्तियों की ओर मुड़ गए - भोजन की खोज और संतानोत्पत्ति की इच्छा, जो जंगल में रहने वाले सभी जीवों को नियंत्रित करती हैं; मनुष्य और उसकी सभ्यता, और धन की खोज, जो भोजन और शक्ति, सुख और हमारी इच्छाओं को लगभग हर तरह से पूरा करने का साधन प्रदान करती है; और इसी तरह के कई विचारों में उलझ गए, एक विचार दूसरे को जन्म देता रहा। लेकिन अंततः मैं एकदम चौंककर उठा, यह जानकर कि अब घोर अंधेरा हो चुका था और मैं आदमखोर के बारे में और वह मेरे कितने करीब हो सकता है, यह सब भूल चुका था।

दिनभर तेज धूप में पड़े मानव अवशेषों से आने वाली दुर्गंध अब बेहद भयानक हो गई थी। उन पर अनगिनत मक्खियाँ रात भर के लिए बस गई थीं।

साधारण नीली मक्खी को हर जगह एक घिनौना कीड़ा माना जाता है, जिसका संबंध केवल गंदगी, मैल और सड़े-गले मांस से होता है। फिर भी, रात में निगरानी करने वाले शिकारी के लिए यह एक बेहतरीन और गुप्त मित्र हो सकती है; क्योंकि हजारों की संख्या में ये मक्खियाँ रात में किसी मृत शरीर को ढँकती हैं, और आराम करते हुए भी सतर्क रहती हैं। कोई भी प्राणी जो पास आता है, भले ही वह मृत शरीर को न छुए, उसकी उपस्थिति सतर्क और बेचैन मक्खियों को महसूस हो जाती है, जो एक साथ सरसराहट करती हैं। और वह सरसराहट अंधेरे में निगरानी करने वाले को स्पष्ट रूप से सुनाई देती है, बशर्ते वह बहुत दूर न हो, पर्याप्त सतर्क हो, उसकी सुनने की क्षमता अच्छी हो, और सबसे बढ़कर, वह इसके महत्व को समझता हो। नीली

मक्खियाँ अब शांत थीं और मुझे इस बात का संतोष हो गया कि न तो बाघ, न ही कोई और जीव, मृत शरीर के आसपास कहीं भी था।

मेरे दोस्त की पीठ मेरी पीठ से कसकर, असहज रूप से टिकी हुई थी, जिससे मेरे स्वेटर के बावजूद गर्मी निकल रही थी। मैं उसकी घबराहट को महसूस कर सकता था क्योंकि वह अंधेरे में अपनी आँखें गड़ाए बैठा था। आदमखोर हिरण का शिकार करने के लिए जमीन पर बैठकर अपनी जान जोखिम में डालने वाले शिकारी के लिए यही सबसे खतरनाक समय होता है: गोधूलि बेला से लेकर तारों की हल्की रोशनी दिखने तक के पंद्रह से तीस मिनट का संक्षिप्त समय।

हमारा सबसे बड़ा खतरा उस दिशा में था जिस ओर मैं देख रहा था, घास के उस झुंड के ठीक विपरीत छोर पर जिसके बीच हम छिपे हुए थे। अगर आदमखोर वहाँ से आता, तो उसकी तेज़ नज़र, उस अँधेरे में भी, हमें दूर रहते हुए ही देख लेती। फिर वह और करीब आने की ज़हमत नहीं उठाता। वह क्या करता, यह उसके स्वभाव पर निर्भर करता; वह पंद्रह फीट की दूरी से झपट्टा मारकर पलक झपकते ही हम पर हमला कर सकता था, या अगर वह कायर होता, जैसा कि कई आदमखोर होते हैं, तो चुपचाप खिसक जाता।

फिर मुझे बड़े डर के साथ याद आया कि इस बाघ को कायर कहना नामुमकिन था। कुछ ही घंटे पहले वह लोगों से भरी एक झोपड़ी में घुस आया था और एक इंसान को घसीटकर ले गया था। व्याकुल मन से और कान चौकन्ने करके, मैं सामने से आदमखोर के आने की आहट देने वाली घास की हल्की सी सरसराहट या चरमराहट सुनने के लिए कान लगाए बैठा था, साथ ही पीछे से उसके आने की सूचना देने वाली चिड़ियों की भिनभिनाहट पर भी ध्यान दे रहा था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। तीन चीजें लगभग एक साथ घटीं, जिससे तत्काल खतरा टल गया। मेरी आँखें अँधेरे में अभ्यस्त हो गईं और मैं अपने आसपास की चीजों को पहचानने लगा। असंख्य तारे निकल आए और उनकी चमक से ऐसा लगा मानो अभी हाल ही में गुज़रे धुंधले प्रकाश के पल वापस आ गए हों। और सबसे बढ़कर, वायनाड के जुगनुओं ने अपनी रात की आतिशबाजी शुरू कर दी, जो सुबह के शुरुआती घंटों तक जारी रहेगी, जब तक कि कोहरा और ओस उन छोटे-छोटे जुगनुओं को ठंडा नहीं कर देंगे और उन्हें पत्तों की ओट में शरण लेने के लिए मजबूर नहीं कर देंगे।

हमारे आस-पास कुछ ही गज की दूरी पर हजारों की संख्या में ये छोटे जीव

मौजूद थे, जो बेचैनी से इधर-उधर उड़ रहे थे। उनकी संयुक्त रोशनी से ऐसी विकिरण उत्पन्न हुई जिसने टॉर्च की रोशनी की तरह अंधेरे को दूर कर दिया, और फिर असंख्य अलग-अलग प्रकाश तरंगों में बिखर गई जो अंधेरे में चमक रही थीं।

सन्नाटा पसरा हुआ था। जंगल में अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। सांभर या चित्तीदार हिरण की कोई दोस्ताना आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। रात में चहचहाने वाले पक्षियों की भी कोई आवाज नहीं थी। बस हमारे आस-पास की घास में कीड़ों की हल्की-हल्की हलचल सुनाई दे रही थी, जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल था। और हमारे शरीर पर इन कीड़ों के कहर के साथ-साथ अब मच्छर भी अपना कहर बरपाने लगे थे। अब तक तो उन्होंने हमें ज्यादा परेशान नहीं किया था, शायद इसलिए कि उन्हें हमारी मौजूदगी का पता नहीं चला था; लेकिन अब पता चल जाने पर उन्होंने इसका पूरा फायदा उठाने का फैसला कर लिया था। मेरी हिम्मत नहीं हुई कि मैं बाघ को अपनी मौजूदगी का पता चलने दूं, जो शायद उसी पल हमारी तरफ आ रहा हो। मुझे अपने पीछे टिमी की हल्की-हल्की आवाज सुनाई दे रही थी, जो मच्छरों को भगाने की कोशिश कर रहा था।

ठीक उसी क्षण मुझे गुस्से में व्याकुल नीली मक्खियों की हल्की सरसराहट सुनाई दी। लकड़हारे के अवशेषों के पास कुछ था। टिम्मी ने भी इसे सुना था, क्योंकि मैंने महसूस किया कि मच्छरों पर फूँक मारना बंद करते हुए वह मेरी पीठ से सट गया। पूर्व निर्धारित संकेत के रूप में उसकी कोहनियाँ मुझमें धँस गईं और वहीं टिकी रहीं, जबकि उसने अपनी गोद में 450/400 राइफल को कसकर पकड़ रखा था।

मक्खियाँ फिर से भिनभिनाने लगीं, जैसे ही वे उन हड्डियों और आंतों से कुछ इंच ऊपर उठीं जिन पर वे बैठी थीं। थोड़ी देर भिनभिनाने के बाद वे फिर से बैठ गईं और भिनभिनाहट बंद हो गई। घुसपैठिया, चाहे जो भी हो, अभी तक शिकार तक नहीं पहुँचा था, वरना मक्खियाँ कभी वापस नहीं बैठतीं। वह पास आ रहा था।

अवशेषों के पार से एक हल्की सी आवाज़ आई और फिर दूर से किसी पत्थर के पलटने की आहट सुनाई दी। निस्संदेह नरभक्षी आ चुका था। वह इलाके का जायज़ा ले रहा था और जल्द ही अपने भोज के अवशेषों की ओर बढ़ेगा।

या फिर वह चुपके से हम पर हमला कर रहा था?

मैंने सारी सावधानी को दरकिनार करते हुए तेज़ी से मुड़कर अपनी विनचेस्टर पिस्तौल को कंधे पर रखा और लगभग एक ही झटके में अपने बाएं अंगूठे से बैरल पर

लगे टॉर्च बटन को दबा दिया। तेज़ रोशनी ने अंधेरे को चीरते हुए प्रकाश की एक लकीर खींच दी और दो भयानक आँखों से टकराकर परावर्तित हुई। लेकिन उनका रंग चमकीले सफ़ेद-लाल की बजाय कुछ अधिक लाल-सफ़ेद था। और वे एक-दूसरे के बहुत करीब स्थित थीं।

कुत्ते की तरह अपने पिछले पैरों पर बैठा हुआ पैंथर टॉर्च की रोशनी में अपने होंठ चाटते हुए दिखाई दिया। हम उसकी जीभ का लाल रंग उसके थोड़े से खुले हुए मुंह पर फैलते हुए देख सकते थे।

क्या वह आदमखोर जानवर असल में एक पैंथर हो सकता है? यह ख्याल आते ही मैंने इसे खारिज कर दिया, क्योंकि मैंने उस रास्ते पर आदमखोर जानवर के पदचिह्न देखे थे जिस पर हम चले थे। वे निश्चित रूप से बाघ के ही थे। इसके अलावा, येगा और कुछ अन्य लकड़हारों ने भी उसे देखा था। यह पैंथर महज़ संयोग से वहाँ था। वहाँ से गुज़रते हुए वह शिकार पर ठोकर खा गया था। वह वहाँ असमंजस में बैठा सोच रहा था कि आखिर यह सब कैसे हुआ और क्या वह जोखिम उठा सकता है।

उसी क्षण पैंथर को टॉर्च की रोशनी का एहसास हुआ जो सीधे उसकी आंखों में पड़ रही थी।

वह खड़ा हुआ, गुर्राया, मुड़ा और चला गया। उसकी हर हरकत में घृणा झलक रही थी। ज़ाहिर है, वह ऐसी जोखिम भरी स्थिति में नहीं पड़ना चाहता था। मैंने टॉर्च को जितनी जल्दी हो सके बुझा दिया। क्या आदमखोर आसपास था? अगर हाँ, तो उसने मेरी रोशनी ज़रूर देखी होगी। इससे वह भाग सकता था। या फिर, हमारी मौजूदगी और ठिकाने का पता चलने पर, वह उसी क्षण हम पर हमला कर सकता था। लेकिन पैंथर के हावभाव ने जल्द ही इस चिंताजनक विचार को दूर कर दिया। वह बिल्कुल बेपरवाह लग रहा था। अगर उसका खानदानी और कट्टर दुश्मन, एक बाघ, आसपास होता, तो वह शायद ही इतना उदासीन होता।

नीली मक्खियाँ शांत हो गईं और हम भी, एक लंबे और नीरस इंतज़ार में, जबकि जुगनुओं ने हमारा साथ देते हुए इस भयावह दृश्य में एक अलग ही जादू भर दिया। ठंड बढ़ने लगी, और फिर और भी बढ़ गई। हमारे आस-पास घास में मौजूद कीड़े-मकोड़े अपनी बेचैन हरकतें बंद कर चुके थे। शायद उन्हें भी ठंड लग रही थी। मच्छर भी कम सक्रिय हो गए और जुगनुँ गायब होने लगे।

बाघ को तो बहुत पहले ही लौट आना चाहिए था। उसे तो पैंथर से भी पहले

प्रकट होना चाहिए था। ऐसा लग रहा था मानो आदमखोर बाघ का वापस आने का कोई इरादा ही नहीं था।

समय धीरे-धीरे बीतता गया। मुझे नींद आने लगी और शायद मैं थोड़ा लापरवाह भी हो गया। क्योंकि, हालांकि मैंने एक-दो बार वह आवाज़ सुनी, पर तुरंत ध्यान नहीं दिया। फिर अचानक, मैं पूरी तरह जाग गया और सतर्क हो गया।

जिस घास में हम छिपे थे, उसके पास कुछ आया था। सीधे सामने से नहीं, बल्कि मेरे बाईं ओर से। हल्की सी सरसराहट हुई और फिर किसी भारी चीज़ के घास पर पड़ने की तेज़ आहट सुनाई दी। उसके बाद हल्की लेकिन स्पष्ट रूप से पेड़ों की टहनियों के टूटने और चटकने की आवाज़ आई।

और वह चीज, जो भी थी, अब रुक गई थी।

क्या आदमखोर बाघ को हमारी मौजूदगी का पता चल गया था, जैसा कि उसे यकीनन हो गया होगा? क्या वह आखिरी हमले के लिए घात लगाए बैठा था? इसका जवाब अगले ही पल मिल गया जब बाघ गुर्राया। वह हमसे दस फीट से ज़्यादा दूर नहीं था।

मैंने टॉर्च का बटन दबाया।

प्रकाश की किरण से घास के तने बेतहाशा हिलते हुए दिखाई दिए। मुझे भूरे रंग की कोई चीज़ दिखाई दी जो तेज़ी से पीछे की ओर उछली और गायब हो गई। फिर जंगल से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी।

जैसे ही आदमखोर भालू ने लगातार दहाड़ मार कर अपना प्रदर्शन शुरू किया, मैंने टॉर्च बंद कर दी। वह बहुत गुस्से में था, लेकिन डरा हुआ भी था। मैंने टॉर्च थोड़ी जल्दी जला दी थी। नहीं तो वह और भी आक्रामक हो जाता। शायद मैंने सही ही किया। एक बार हमला शुरू हो जाने के बाद, उसे रोकने में शायद बहुत देर हो जाती।

तिम्मया तेज़ी से घूमी और मेरी तरह ही उस दिशा की ओर मुँह करके खड़ी हो गई जहाँ से बाघ दहाड़ रहा था। वह जानवर हमारे चारों ओर चक्कर लगाने लगा, और भयानक गुर्राहट और दहाड़ मार रहा था। यह एक तरह का मानसिक संघर्ष था। या तो वह हमला करने के लिए पर्याप्त साहस जुटाने की कोशिश कर रहा था, या फिर हमें डराने की। मुझे लगा कि वह दूसरी योजना पर अमल कर रहा था।

हमने कुछ देर इंतज़ार किया, इस उम्मीद में कि वह हमला करने का फैसला करेगा; लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। अब दहाड़ें धीमी होकर गुर्राहट में बदल गईं,

लेकिन बाघ के चक्कर लगाने के कारण ये गुर्राहटें अलग-अलग दिशाओं से आ रही थीं। ऐसा लग रहा था कि वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि उस घास में कितने इंसान छिपे हैं। क्या वहाँ सिर्फ़ एक ही इंसान था, जिसे वह आसानी से काबू कर सकता था, या वहाँ कई लोग थे?

यह सिलसिला पंद्रह मिनट तक चलता रहा। लेकिन कुछ नहीं हुआ। बाघ ने न तो हमला किया और न ही पीछे हटा। यह धैर्य का खेल था और मुझे लगता है कि बाघ ही जीत गया।

मैंने उसे उकसाकर हमला करवाने का फैसला किया। मैंने तिम्मया से कहा कि वह वहीं रुका रहे, जबकि मैं उठकर शिविर की ओर वापस चलने लगा, जो कुछ ही दूरी पर था। बाघ शायद मेरे पीछे आएगा। दूसरी ओर, वह यह भी सोच सकता है कि उस घृणित प्रकाश वाले आदमी को जाने देना और खुद शिकार के बचे हुए हिस्से को लेने वापस जाना बेहतर होगा। इससे तिम्मया को निशाना लगाने का मौका मिल जाएगा।

मेरे दोस्त ने पुरजोर विरोध करते हुए फुसफुसाते हुए कहा, 'मूर्ख मत बनो!'

लेकिन, उसके कंधे पर संयमित हाथ रखकर, मैं धीरे-धीरे अपने पैरों पर खड़ा हुआ, कुछ सेकंड के लिए वहीं खड़ा रहा ताकि मेरा रक्त संचार सामान्य हो सके, और फिर जानबूझकर लकड़हारे की सुनसान झोपड़ियों की ओर चलने लगा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि इतनी दूरी तय करने में एक आदमी द्वारा अपेक्षित मात्रा में आवाज हो।

आदमखोर बाघ पर इसका असर तुरंत हुआ। वह फिर से दहाड़ने लगा; और फिर मेरे पीछे आ पड़ा। आपको यह ध्यान रखना होगा कि तारों की रोशनी के अलावा चारों ओर घना अंधेरा था। मैंने जानबूझकर मशाल बुझा रखी थी ताकि बाघ डर न जाए, लेकिन स्थिति बेहद अप्रिय हो गई थी।

मैंने लगभग पच्चीस गज की दूरी तय की ही थी कि आदमखोर सांप ने हिम्मत जुटाकर मुझ पर हमला कर दिया। मुझे याद है कि मैंने मन ही मन सोचा था कि अच्छा हुआ कि उसने चुपचाप और छिपकर हमला करने के बजाय शोर मचाना चुना, क्योंकि तब मुझे पता ही नहीं चलता कि वह किस दिशा से आ रहा है।

फिर वही जानी-पहचानी 'व्रूफ़! व्रूफ़! व्रूफ़!' की आवाज़ आई और उसने हमला शुरू कर दिया। मैंने राइफल को कंधे पर टिकाए हुए तेज़ी से घूमकर अपने बाएं अंगूठे

से टॉर्च का बटन फिर से दबा दिया। तेज़ रोशनी की किरण अंधेरे को चीरते हुए उस क्रोधित आदमखोर की गुस्से से भरी आँखों पर पड़ी, जो मेरी ओर ऊपर-नीचे होते हुए तेज़ी से बढ़ रहा था।

उनकी आंखों को हिलते-डुलते देखना मुश्किल हो रहा था, और जब यह विचार मेरे मन में कौंधा, तभी कुछ ऐसा हुआ जिसकी मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। अचानक तेज रोशनी से मेरी आंखें चौंधिया गईं, जिससे बाघ और बाकी सब कुछ मेरी नजरों से ओझल हो गया! तिम्मया ने अपनी टॉर्च जला ली थी और सीधे मेरे चेहरे पर रोशनी डाल रहा था।

सहज ही मैंने अपनी बांह उठाकर अपनी आंखों को ढँक लिया और चकाचौंध से बचने की कोशिश में पीछे की ओर कूद गया।

अगले ही पल सब कुछ घोर अंधेरे में डूब गया। मेरी उंगली बटन से हटी और मेरी टॉर्च बुझ गई, जबकि मेरे दोस्त की टॉर्च की रोशनी मुझसे दूर चली गई।

अंधेरे को चीरते हुए रोशनी सीधे बाघ पर पड़ी, जो मुझसे मुश्किल से चार फीट की दूरी पर एक हास्यास्पद मुद्रा में जमीन पर बैठा था। उसका सिर नीचे की ओर झुका हुआ था, लगभग जमीन के स्तर तक, अगले पंजे फैले हुए थे, पिछला हिस्सा हवा में ऊपर उठा हुआ था, उसकी मुड़ी हुई पूंछ अकड़ी हुई थी, और टिमी की रोशनी से वह एकदम रुक गया था। वह काफी मूर्ख लग रहा था।

यह बिल्कुल सही समय पर हुआ, क्योंकि वह मुझ पर हमला करने ही वाला था कि पीछे से टिमी की अचानक आई रोशनी ने उसे रोक दिया।

एक कान फाड़ देने वाली जोरदार आवाज आई और मैंने देखा कि दुबका हुआ बाघ किसी अदृश्य शक्ति द्वारा धकेला जा रहा था, तभी टिम्मी द्वारा चलाई गई मेरी .450/400 राइफल की गोली उसके बगल में कहीं जा लगी।

उस क्षण मैं सीधे उसके रास्ते में खड़ा था, उसका सबसे निकटतम शत्रु, और वह अपनी पूरी घृणा और गति से मेरी ओर बढ़ा। मेरी मशाल की रोशनी ने उसे पूरी तरह से अंधा कर दिया होगा जब मैंने सीधे उसके खुले मुंह में गोली मारी, और जैसे ही वह मेरे पैरों के पास गिरा, मैंने दूसरा शॉट दागा और मैं एक तरफ हट गया।

तभी टिमी ने दोबारा गोली चलाई। उसकी गोली बाघ के ऊपर से गुज़री और लगभग मेरे पैरों के पास ज़मीन पर जा गिरी, जिससे धूल का गुबार उठा। सब कुछ खत्म हो चुका था जब मैंने खुद को अविश्वसनीय गति से पीछे की ओर भागते हुए

पाया ताकि बाघ से दूर भाग सकूँ जो ज़मीन पर लोट रहा था।

टिम्मी ने ही उस आदमखोर बाघ को मार गिराया था। उसकी पहली गोली बाघ के बगल में लगी और मुझे झपटने से ठीक पहले ही उसे रोक दिया। इसके अलावा, उसने दूसरी गोली चलाई जो सीधे उसके बाएं कंधे के पीछे जा लगी। उस अफरा-तफरी में मुझे दूसरी गोली की आवाज सुनाई ही नहीं दी। मेरी गोली बाघ के सिर के पिछले हिस्से को उड़ा ले गई, जबकि मेरी दूसरी गोली भी उसके सिर पर लगी, लेकिन मेरे पास ही जमीन पर जा गिरी और निशाना चूक गई।

टिम्मी खुशी से झूम उठा और गिरे हुए दुश्मन के चारों ओर युद्ध नृत्य करने लगा। हालाँकि खाल, और विशेष रूप से सिर, मेरी दो शक्तिशाली राइफलों की गोलियों से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके थे, इसलिए वे किसी ट्रॉफी के लायक नहीं थे, फिर भी वह बार-बार यही दोहराता रहा कि उसने कभी किसी आदमखोर को इतनी असामान्य परिस्थितियों में मारे जाने के बारे में नहीं सुना था।

कहने की जरूरत नहीं कि हालांकि मैं उतना उत्साहित नहीं था, लेकिन मैं टिमी की भावनाओं से पूरी तरह सहमत था। अगर मुझे टिमी की जगह पर होने का मौका मिले तो मुझे वही अनुभव दोबारा पाने में कोई आपत्ति नहीं होगी। लेकिन उस जगह पर नहीं जहां मैं था!

छह

तलाइनोवु का पुरुष-विरोधी

पूर्व में कोयंबटूर जिले के कोललेगल तालुक में, जो ब्रिटिश शासन के समय मद्रास प्रेसीडेंसी का हिस्सा था, तलैनोवु नामक एक छोटा सा गाँव है। अब ब्रिटिश शासन समाप्त हो चुका है और उनके साथ मद्रास प्रेसीडेंसी भी समाप्त हो गई है, और मद्रास राज्य ने उसका स्थान ले लिया है; इसका क्षेत्रफल पूर्व प्रेसीडेंसी के क्षेत्रफल का लगभग आधा है, क्योंकि इसका अधिकांश भाग पड़ोसी राज्यों आंध्र प्रदेश, मैसूर और केरल में चला गया है।

इन हस्तांतरित क्षेत्रों में कोललेगल तालुक और इसके साथ ही तलैनोवु गांव भी शामिल हैं। ये अब मैसूर राज्य का हिस्सा बन चुके हैं। खेती और इमारतों का विस्तार हो चुका है, और तलैनोवु से लेकर ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों से होते हुए कावेरी नदी की घाटी तक फैले खूबसूरत वन क्षेत्रों का निर्दयतापूर्वक वध कर दिया गया है, जबकि जो बचा है उसमें वन्यजीव लगभग न के बराबर हैं।

लेकिन मुझे तलैनोवु नाम का छोटा सा गाँव, जैसा कि मैं उसे बहुत पहले जानता था, दो कारणों से हमेशा याद रहेगा। पहला, तमिल भाषा में 'तलैनोवु' शब्द का अर्थ 'सिरदर्द' होता है; दूसरा, कावेरी नदी के किनारे, गाँव से लगभग दस मील दूर एक गहरी घाटी में रहने वाले चालाक पैंथर ने मुझे वहाँ से निपटने की कोशिश करते समय सचमुच सिरदर्द दिया था।

दक्षिण भारत में आदमखोर तेंदुआ बहुत कम पाए जाते हैं और हमेशा से ऐसा ही रहा है। यह तेंदुआ असल मायने में आदमखोर नहीं था। बल्कि, यह मनुष्य से घृणा करता था, मानव जाति के प्रति गहरी दुश्मनी रखता था, और इस घृणा को संजोकर रखता था और अपने जीवन भर के शत्रु से अपने अंतिम दिन तक बदला लेता रहा।

शुरुआत से शुरू करें तो, तलाइनोवु गाँव से दक्षिण की ओर दस मील दूर एक

पहाड़ी पर एक पैंथर रहती थी। वहाँ से छह फर्लांग उत्तर की ओर एक गहरी घाटी थी जहाँ पहाड़ी कावेरी नदी के तल तक खड़ी ढलान पर उतरती थी। पूर्व की ओर जंगल मीलों तक फैला हुआ था, जो सलेम जिले की सीमाओं में और उसके पार, कावेरी नदी के मोड़ों और घुमावों के साथ-साथ फैला हुआ था। लेकिन पश्चिम की ओर यह लगभग छह मील तक ही फैला था, जहाँ से यह कोल्लेगल कस्बे से एक पुल पार करके उत्तर की ओर मद्दूर और बैंगलोर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे फैली छोटी झाड़ियों में विलीन हो जाता था।

यह पैंथर एक युवा जानवर थी, और जब उसने अपने पहले तीन शावकों को जन्म दिया, तो वह एक गर्वित और खुश माँ थी, जो अपने बच्चों के प्रति समर्पित थी और उनकी रक्षा के लिए अपनी जान देने को भी तैयार थी। बहुत बाद में मुझे मिली रिपोर्टों और सुनी-सुनाई बातों के अनुसार, कुछ ऐसी परिस्थितियाँ थीं, जिनके बारे में हम नहीं जानते, जिनके कारण पैंथर ने अपने शावकों को उस गुफा से बहुत पहले बाहर निकाल लिया, जहाँ वे पैदा हुए थे, जबकि वे अभी भी इतने छोटे थे कि सुरक्षित रूप से चल-फिर नहीं सकते थे। शायद उनके पिता की उन पर बुरी नज़र थी और वह उन्हें खा जाना चाहता था, जैसा कि नर बाघ और पैंथर अक्सर करते हैं। शायद कोई भालू उनकी गुफा में घुस आया था। शायद उस इलाके में भोजन की कमी थी।

तो पैंथर अपने शावकों को पहाड़ी से नीचे ले आई और उन्हें कावेरी नदी के किनारे बांस के घने जंगल में छिपा दिया। निस्संदेह यह एक अस्थायी उपाय था, जब तक कि माँ उनके लिए कोई बेहतर घर, शायद कोई दूसरी गुफा, न ढूंढ ले। लेकिन उस सुबह किस्मत ने उसके साथ नाइंसाफी करने का फैसला किया। उसने शावकों को जंगल में छोड़ दिया था और शायद पूरी रात शिकार पर निकली थी। जब पैंथर अपने शावकों को छिपाने वाले बांस के जंगल से एक मील दूर थी, तब तक सूरज नदी के प्रवाह को दर्शाने वाली समानांतर पहाड़ियों के ऊपर आ चुका था और उसके उफनते, झागदार पानी पर चमक रहा था।

और फिर वह अचानक रुक गई, क्योंकि दूर से उसे एक आवाज़ सुनाई दी, लगातार टैप-टैप-टैप की आवाज़! इंसान! और ठीक उसी जगह पर जहाँ उसने अपने तीन छोटे शावकों को असुरक्षित छोड़ दिया था।

पैंथर मादा ने निस्संदेह अपने बच्चों की सुरक्षा की चिंता करते हुए, बीच की दूरी को जितनी तेज़ी से हो सके तय करने के लिए दौड़ लगाई। लेकिन जब वह उनसे कुछ

ही दूरी पर थी, तो उसने उनकी गुर्राहट सुनी होगी, और वह समझ गई कि क्या हुआ है। नफरत करने वाले इंसानों ने उसके बच्चों को ढूंढ लिया था।

जब पैंथरी वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि लगभग आधा दर्जन या उससे अधिक लगभग नग्न काले शरीर, पसीने से तरबतर, उसके शावकों को घेरे हुए थे। ये शावक ज़मीन पर पीठ से पीठ मिलाकर लेटे हुए थे, और छोटे होने के बावजूद घुसपैठियों को चुनौती देते हुए गुर्रा रहे थे। पुरुष आपस में बड़बड़ा रहे थे, बाँस काटने के लिए इस्तेमाल होने वाले नुकीले, घुमावदार चाकुओं से शावकों की ओर इशारा कर रहे थे, हर चेहरे पर गर्व और उत्साह का भाव था, लेकिन उन तीन प्यारे फर के गोलों को देखकर कोई खुशी नहीं थी जिन्होंने इतनी बहादुरी से उन्हें चुनौती दी थी, न ही उनकी बेबसी पर कोई दया थी।

उसकी आँखों के सामने ही, बाँस काटने वालों में से एक ने अपना कोइथार (एक प्रकार का चाकू) उठाया और पास के ही एक शावक पर वार किया। घुमावदार ब्लेड ने उसके कोमल शरीर को चीर दिया। शावक हवा में उछलकर कुछ फीट दूर जा गिरा, लगभग दो टुकड़ों में कट गया था लेकिन फिर भी जीवित था। उसके खून से घास लाल हो गई और वह धीरे से कराह उठा।

यह बाकी बांस काटने वालों के लिए बचे हुए दो शावकों को नष्ट करने का संकेत था, और उन्होंने बिना किसी देरी के ऐसा करना शुरू कर दिया। उनकी तेज चाकुओं के कुछ ही वार से सब कुछ खत्म हो गया। जहाँ पहले तीन जीवित प्राणी थे, वहाँ अब मांस के तीन टुकड़े बिखरे पड़े थे।

शायद जंगली जानवरों के प्रति जन्मजात भय, यहाँ तक कि खूंखार आदमखोर बाघ और सबसे क्रूर हाथी के प्रति भी, शोकग्रस्त माँ को रोके हुए था, लेकिन अपने मृत शावकों को देखकर वह अब पागल हो गई। छोटी-छोटी, तीखी दहाड़ों के साथ, उसने खुद को आदमियों पर झपट डाला।

पहले आदमी को कुछ समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है, क्योंकि पैंथर ने अपने नुकीले पंजों से उसके चेहरे पर वार करते हुए उसकी आँखें नोच डालीं। वह ज़मीन पर गिर पड़ा, और पैंथर उसके ऊपर से कूदकर दूसरे आदमी की छाती पर काटने लगी। वह भी गिर पड़ा, उसकी चीखें उस अंधे आदमी की चीखों में मिल गईं जो ज़मीन पर छटपटा रहा था। बाकी बचे हुए लोग, सभी कोइथार से लैस, रुके नहीं। दहशत भरी चीखों के साथ वे सभी दिशाओं में भाग गए।

पैंथरी उनका पीछा करने लगी, लेकिन फिर रुक गई, क्योंकि उसकी नज़र ज़मीन पर तड़पते हुए दो आदमियों पर पड़ी। ठंडे गुस्से से भरी हुई वह उन दोनों पर टूट पड़ी और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

फिर, अपने तीनों शावकों के मृत शरीरों को सूंघते हुए, उसने उनमें से सबसे कम क्षतिग्रस्त शावक को उठाया और शोक में उसे अपने साथ ले गई।

यहीं से सब कुछ शुरू हुआ।

जब बांस काटने वाले अपने गाँव लौटे, तो उन्होंने एक भयानक कहानी सुनाई कि कैसे एक विशालकाय, खूंखार पैंथर ने बिना किसी उकसावे के उन पर हमला कर दिया था। उन्होंने घटना में अपनी भूमिका का ज़िक्र नहीं किया—कम से कम उन्होंने तो नहीं—और यह भी नहीं बताया कि कैसे उन्होंने बेरहमी से शावकों को मार डाला और माँ को क्रोधित कर दिया। यह बात उन्होंने बाद में स्वीकार की। स्वाभाविक रूप से, हंगामा मच गया। लोग जंगल के उस हिस्से से दूर रहने लगे जहाँ हत्याएँ हुई थीं, या जिन्हें जाना ही पड़ता था वे कुल्हाड़ी और बंदूक लेकर जाते थे, और जितना हो सके उतने लोगों के समूह में जाते थे।

उसके बाद कुछ हफ्तों तक पैंथरी (एक प्रकार की कुतिया) न तो दिखाई दी और न ही उसके बारे में कुछ सुना गया। लोग जल्द ही उस घटना को भूल गए और उदासीनता या आलस्य के कारण अपने हथियार वहीं छोड़ दिए। लाइसेंस प्राप्त बांस काटने वाले और लकड़ी बेचने वाले, साथ ही शिकारी भी जंगल में चले गए; पहले वाले दिन में अपनी दिनचर्या पूरी करने के लिए, और दूसरे वाले, जो इन्हीं वस्तुओं को चुराकर और बेचकर अपना जीवन यापन करते थे, चांदनी रातों में बांस और लकड़ी काटने और चुराई गई सामग्री को नदी के पार बहाने का अपना काम फिर से शुरू कर दिया।

लेकिन प्रतिशोध की भावना से भरी पैंथरेस भूली नहीं थी। यह उसके लिए दूसरी बार वार करने का मौका था।

चंदन की लकड़ी का एक कुख्यात अवैध शिकारी, जिसके बारे में वन विभाग और पुलिस को वर्षों से पता था कि वह अवैध रूप से यह काम कर रहा है, लेकिन जिसे वे कभी पकड़ नहीं पाए थे, एक चांदनी रात में अपने बेटे के साथ जंगल में गया। उन्होंने चंदन काटने, उसे नदी में लगभग एक मील तक बहाकर एक ऐसे स्थान पर ले जाने की योजना बनाई थी जहाँ पानी शांत हो और कोई जलधारा न हो, और फिर

कटी हुई लकड़ी को बांस और भैंस की खाल से बनी गोलाकार नाव का उपयोग करके नदी के उस पार उत्तरी किनारे तक ले जाने की योजना बनाई थी, जो मैसूर राज्य के अधीन था। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने नदी में हमेशा के लिए एक नाव छिपा रखी थी। एक बार जब वे नदी के मैसूर किनारे पर पहुँच जाते, तो उन्हें पता था कि वे मद्रास किनारे पर तैनात अधिकारियों द्वारा पीछा किए जाने से सुरक्षित रहेंगे और उनसे कोई अप्रिय प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

दोनों चोरों ने चंदन के उन छोटे पेड़ों को काटना शुरू कर दिया, जिन्हें उन्होंने पहले की यात्रा में इसी उद्देश्य से चिह्नित किया था, और पैंथर मादा को काटने की वह भयानक आवाज़ सुनाई दी। संभवतः लकड़ी के कटने की वह आवाज़ उसे, सोच-विचार के बजाय सहज भावना से, उस दिन की याद दिला रही थी जब उसके शावकों को उसकी आँखों के सामने टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था। घृणा उसके मन में भर गई होगी और वह उस आवाज़ की ओर बढ़ने लगी, उसके मन में बस एक ही विचार था—जिन्होंने यह आवाज़ निकाली है, उन्हें मिटा देना।

पिता को पता ही नहीं चला कि क्या हुआ जब मादा पैंथर ने पीछे से उन पर झपट्टा मारा और अपने नुकीले दांत उनके गले में गाड़ दिए। वे मदद के लिए चीख भी नहीं सके, बल्कि पीठ पर अचानक पड़े भार से ज़मीन पर गिर पड़े। अठारह वर्षीय बेटे ने यह सब देखा, लेकिन उसे अपने पिता की जान की चिंता नहीं थी, इसलिए उसने अपनी कुल्हाड़ी गिरा दी और तेज़ी से भाग गया।

पैंथरी को उस आदमी को मारने में कुछ ही सेकंड लगे और इस तरह लड़का उसी भाग्य से बच गया। जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ते हुए वह नाव तक पहुँचा, उसमें कूद गया और नदी पार करने के लिए बेतहाशा चप्पू चलाने लगा। जब वह अपनी झोपड़ी में वापस आया और अपनी माँ के पास पहुँचा, तो उसने अपने पिता के साथ हुई घटना के बारे में बताया।

गांववाले बहुत पहले सो चुके थे, लेकिन मां-बेटे के एक साथ रोने की आवाज से वे जाग गए। उन्होंने बत्तियां जलाईं और पूरी कहानी सुनी, लेकिन अगले दिन तक कुछ न करने का फैसला किया। आखिर, सबको पता था कि बाप-बेटा दोनों चोर थे।

सूरज ढल चुका था जब बंदूकों, कुल्हाड़ियों, चाकुओं और भालों से लैस ग्रामीणों का एक बड़ा दल, शिकारी के बेटे के नेतृत्व में, घटनास्थल पर लौटा। वहाँ उन्होंने बूढ़े चोर को अपने ही खून के तालाब में पड़ा पाया, उसका गला फटा हुआ था

और उसका पूरा शरीर बुरी तरह से कटा-फटा था। लेकिन यह बात साफ थी कि मांस का कोई भी टुकड़ा नहीं खाया गया था। हत्यारे को निश्चित रूप से आदमखोर नहीं कहा जा सकता था। क्षत-विक्षत अवशेषों को भयभीत होकर देखने वाले लोगों को शिकारी पर हमला बिना किसी कारण या उकसावे के ही लगा होगा, क्योंकि उस समय बहुत कम लोग कहानी की शुरुआत जानते थे।

एक बार फिर अफरा-तफरी मच गई और लोग समूहों में ही निकले, वो भी हथियारों से लैस होकर। इस बार दहशत लंबे समय तक बनी रही, लेकिन समय बीतने और लोगों की सामान्य उदासीनता ने धीरे-धीरे स्थिति को शांत कर दिया। अंततः, पैंथर को भुला दिया गया और लोग अपने सामान्य जीवन में लौट आए।

फिर सप्ताह बीत गए, और फिर चांदनी रातें आ गईं, भारत के जंगलों में सबसे ज्यादा शरारत इसी समय होती है। क्योंकि इसी समय शिकारी पानी के गड्ढों और नमक के टीलों पर बैठकर सांभर, चित्तीदार हिरण और अन्य जानवरों का शिकार करते हैं जो वहां अपनी प्यास बुझाने या नमकीन मिट्टी चाटने के लिए आते हैं, वहीं चंदन, सागौन, मुठी, विशाल बांस आदि चुराने वाले लकड़ी चोर जंगल में जाकर पेड़ों को काटते हैं, उन्हें सुविधाजनक लंबाई में काटते हैं और लकड़ी को नदी में बहा देते हैं या चुपके से बैलगाड़ियों में भरकर ले जाते हैं, या जब वे काफी साहसी होते हैं तो ट्रकों में भरकर ले जाते हैं।

चांदनी रात का फायदा उठाने वाले एक तीसरे प्रकार के चोर भी होते हैं: मछली पकड़ने वाले। वे मछली पकड़ने के लिए छड़ियों या जालों का इस्तेमाल नहीं करते, क्योंकि पकड़ बहुत कम होगी और काम बहुत कठिन और धीमा होगा। इसके बजाय, नदी के उन तालाबों में, जहाँ वे जानते हैं कि बड़ी मछलियाँ रात में सोने या भोजन करने के लिए इकट्ठा होती हैं (प्रजाति के अनुसार), ये लोग कच्चे बारूद और फ्यूज से गुप्त रूप से बनाए गए अपने घर के बने बमों को विस्फोटित करते हैं। भारत की नदियों पर आम तौर पर इस्तेमाल होने वाली भैंस की खाल से ढकी बांस की फ्रेम वाली गोलाकार नावों में धीरे-धीरे नदी में बहते हुए, ये शिकारी नदी में लगभग पाँच मील की दूरी तक हर तालाब का दौरा करते हैं। फ्यूज को जलाकर बम को पानी पर बहा दिया जाता है।

विस्फोट से भले ही कोई सामान्य क्षति न हो, लेकिन पानी में हुए झटके से बड़ी मछलियाँ अचेत हो जाती हैं और आसपास के कई गज क्षेत्र में हजारों छोटी मछलियाँ

और उनके बच्चे मर जाते हैं। ये मृत मछलियाँ सतह पर आ जाती हैं, जहाँ बड़ी मछलियों को डंडों से जुड़े जालों की सहायता से तुरंत छोटी नावों में पकड़ लिया जाता है। हजारों छोटी मरी हुई मछलियाँ, जिनमें उनके बच्चे भी शामिल हैं, बेकार पड़ी रहती हैं और नदी में बहकर सड़ जाती हैं, जिन्हें अन्य मछलियाँ और मगरमच्छ खा जाते हैं।

और इस तरह यह प्रक्रिया एक तालाब से दूसरे तालाब तक दोहराई जाती है। इस समय तक शिकारी नाव में उसकी क्षमता से कहीं अधिक मछलियाँ भर चुके होते हैं, जबकि हजारों की संख्या में मूल्यवान छोटी मछलियों और कई प्रजातियों की मछलियों के अंधाधुंध विनाश की कल्पना की जा सकती है।

आम तौर पर कई लोग इस काम में शामिल होते हैं, जिसके लिए वे दो नावों का इस्तेमाल करते हैं - एक से बम फेंके जाते हैं और दूसरी से मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। अक्सर शिकारियों को पर्याप्त मछलियाँ इकट्ठा होने से पहले ही दूसरी नाव लगभग डूबने लगती है। इसके अलावा, उनके बीच एक अलिखित नियम है कि वे शिकारियों के अगले समूह के क्षेत्र में घुसपैठ नहीं करेंगे, क्योंकि उनका समूह वहीं से शुरू होता है जहाँ वे अपना काम खत्म करते हैं। ऐसा करने से झगड़ा हो सकता है और कोई न कोई समूह वन विभाग के अधिकारियों या पुलिस के पास चुपके से पहुँच जाएगा। सब खुश रहते हैं, मछलियाँ पकड़ी जाती हैं और स्थानीय अधिकारी कुछ नहीं कर सकते। इसके अलावा, सुरक्षा को और पुख्ता करने के लिए, हर आदमी को हर अभियान के बाद एक टोकरी भरकर मछलियाँ मिलती हैं। अगर वे बदकिस्मत साबित होते हैं और कानून के किसी प्रतिनिधि द्वारा पकड़े जाते हैं, तो शिकारियों को बस अपने द्वारा पकड़ी गई सबसे बड़ी मछलियों में से आधा दर्जन अधिकारी को पेश करनी होती हैं और सब ठीक हो जाता है।

मछलियों से लदी छोटी नाव को पाँच मील का सफर तय करने के बाद किनारे पर लाया जाता है। यहाँ पकड़ी गई मछलियों को साफ करके उनके पेट से गंदगी निकाली जाती है और उन्हें अपने साथ लाए बोरे में भर दिया जाता है। हर आदमी एक बोरा कंधे पर रखता है, जबकि दो आदमी छोटी नावों को उठाकर उल्टा अपने कंधों पर लाद लेते हैं। बाकी बचे लोगों में से एक हल्के चप्पू संभाल लेता है। अब पाँच मील पैदल चलकर वापस उसी जगह पर जाना शुरू होता है जहाँ से उन्होंने शुरुआत की थी, क्योंकि नदी की तेज़ धाराओं के विपरीत इस भारी-भरकम, गोल नाव को चलाना नामुमकिन है। यही इस पूरे काम का सबसे मुश्किल हिस्सा है।

इसके बाद चांदनी रातों में भी यही प्रक्रिया दोहराई जाती है, जब तक कि फिर से अंधेरी रातें नहीं आ जातीं, तब शिकारी दो सप्ताह तक आराम करते हैं और सुस्ती से समय बिताते हैं, जब तक कि चांदनी वापस नहीं आ जाती।

बेहद सुनसान इलाकों में, जहाँ वन रक्षक या अन्य कोई दखलंदाज़ मौजूद नहीं होता, तालाबों पर बमबारी दिनदहाड़े की जाती है। हालाँकि, जिस दौर के बारे में मैं लिख रहा हूँ, उस समय कुछ हद तक रोक लगी हुई थी, क्योंकि वन विभाग ब्रिटिश अधिकारियों के नियंत्रण में थे। अफसोस, अब वह रोक हट गई है। स्वतंत्रता के बाद, शिकारी अब रात में काम नहीं करते।

लेकिन अब वापस अपनी कहानी पर आते हैं: चांदनी रातें फिर से लौट आईं और मछली पकड़ने वालों का एक दल व्यवस्थित रूप से एक के बाद एक तालाबों पर हमला करता रहा और बेहोश मछलियों को जाल में फंसाकर दूसरी नाव में भरता रहा, जिसे एक ही व्यक्ति चला रहा था ताकि उसमें ज़्यादा जगह रहे। वे आधी रात के बाद तक लगातार काम करते रहे, फिर उन्होंने किनारे पर जाकर अपने साथ लाए नाश्ते का आनंद लेने का फैसला किया।

ऐसा हुआ कि दूसरी नाव, जो मछलियों से भरी हुई थी और जिसे एक अकेला नाविक चला रहा था, किनारे के करीब थी जब उसके साथियों ने उसे पुकारा:

'भाई, किनारे पर आ जाओ। हमने बहुत मेहनत की है और बहुत कुछ पकड़ा है। चलो थोड़ी देर आराम करते हैं और अपने साथ लाया हुआ खाना खाते हैं और थोड़ी ठंडी कॉफी पीते हैं।'

अकेले नाविक ने इस पुकार का स्वागत किया, क्योंकि वह अकेला था। उसने चप्पू के डंडे को दोनों हाथों से पकड़कर पानी में गाड़ दिया, पहले दाईं ओर और फिर बाईं ओर, तेज़ और छोटे-छोटे स्ट्रोक लगाते हुए, उस भारी-भरकम नाव को तेज़ धारा के पार धकेलने की कोशिश की, जो इस जगह पर विशेष रूप से तेज़ थी, क्योंकि हाल ही में हुई बारिश से नदी उफान पर थी।

अंततः वह किनारे पर पहुँच गया और कूदकर किनारे पर आ गया। उसके एक हाथ में नाव के बांस के तले से बंधी रस्सी का सिरा था, ताकि वह उसे किसी पेड़ की जड़ या तने से बांध सके। लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो सका। दूसरी नाव में सवार उसके साथी, जो संयोगवश यह सब देख रहे थे, उन्होंने पानी के किनारे मेहंदी की झाड़ियों के पीछे से कुछ लंबा और धूसर सा प्रकट होते देखा। उन्होंने एक कर्कश

गर्जना सुनी और अपने मित्र के काले शरीर को पानी में डूबते देखा, जिसके ऊपर एक अजीब धूसर आकृति थी। उन्होंने उसकी चीख सुनी और फिर देखा कि उसकी नाव, उसके हाथों से छूटी रस्सी को घसीटते हुए, तेज धारा में बह रही थी।

नाव चला रहे नाविक ने बेतहाशा भागती हुई छोटी नाव को पकड़ने की पूरी कोशिश की। लेकिन अपनी नाव में सवार लोगों की अधिकता के कारण वह असमर्थ रहा। धारा के तेज बहाव में नाव की गति बढ़ती गई और वह गोल-गोल घूमते हुए नदी के मध्य की ओर खिंची चली गई, जहाँ चट्टानों से बने एक छोटे झरने के ऊपर तेज चाँदनी में पानी में बुलबुले उठ रहे थे और झाग बन रहा था।

पीछा कर रहा नाविक लगभग अपनी नाव को उन खतरनाक पानी में उतारने ही वाला था कि उसके साथियों ने उसे रोक लिया। वे हताशा से देखते रहे कि बिना चालक वाली नाव चट्टानों से टकराकर बुरी तरह डगमगाई, इधर-उधर उछली और फिर पलट गई, जिससे उनका सारा माल नदी में बह गया। तब वे किनारे की ओर मुड़े और अपने साथी को रस्सी छूटने की मूर्खता के लिए कोसने और पीटने लगे। अरे, जिस तरह की नाव उन्होंने अभी खोई थी, उसे बनाने में सौ रुपये लगते हैं और खरीदने में उससे कहीं ज्यादा, नदी में खोई मछलियों की कीमत तो अलग ही थी। मूर्ख को देखकर वे उसे खूब पीटेंगे!

लेकिन किनारे पर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। तभी उन्हें चांदनी में दिखाई देने वाली धुंधली आकृति, सुनी हुई गर्जना और अपने दोस्त के लड़खड़ाकर गिरने का दृश्य याद आया। वे भागती हुई नाव को रोकने में इतने मशगूल थे कि उन्होंने अपने साथी की दुर्दशा पर ध्यान ही नहीं दिया था।

कुछ लोगों ने किनारे जाकर जाँच करने की इच्छा रखने वाले नाविक को किसी भी हालत में ऐसा न करने का आदेश दिया। शायद वहाँ कोई बुरी आत्मा छिपी हुई थी। उसने उनके दोस्त को मार डाला था और अगर वे ज़्यादा पास गए तो वह उन सबको भी मार सकती थी। काफी देर तक किसी ने भी पैंथर के बारे में नहीं सोचा। फिर किसी को याद आया और उसने बाकी सबको याद दिलाया। तब सब इस बात पर सहमत हुए कि उन्होंने जो धूसर आकृति देखी थी, वही छिपा हुआ जानवर था। उसने उनके साथी को मार डाला था और निश्चित रूप से उस समय उसे खा रहा था।

एक ही चप्पू का इस्तेमाल करते हुए, वे लोग बारी-बारी से अपनी भारी नाव को नदी के विपरीत दिशा में धकेल रहे थे, क्योंकि वे किनारे पर जाने की हिम्मत नहीं कर

रहे थे। उन्होंने ऐसा लगभग आधा मील तक किया और फिर पाया कि वे आगे नहीं जा सकते। इसलिए वे नदी के किनारे की ओर बढ़े, जहाँ हर आदमी दूसरे को पहले किनारे पर कूदने के लिए उकसा रहा था। आखिरकार, वे सब एक साथ कूद पड़े, क्योंकि उन्हें संख्या का भरोसा था। ताकि उन्हें वापस अपने शुरुआती बिंदु तक भारी नाव का बोझ न उठाना पड़े, उन्होंने उसे किनारे पर कुछ गज आगे खींच लिया और अपने गाँव की ओर जितनी तेज़ी से हो सके, एक समूह में चल पड़े, और पैंथर को दूर रखने के लिए ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे।

अगले दिन, जब सूरज पूरी तरह से निकल चुका था, पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। पुरुषों ने यथासंभव हथियारबंद होकर यह पता लगाने की कोशिश की कि लापता व्यक्ति का क्या हुआ। उन्हें उसका शव मेहंदी की झाड़ियों के पीछे मिला। उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे, लेकिन जहाँ तक देखा जा सकता था, उसके शरीर का कोई भी हिस्सा खाया नहीं गया था।

और यह सिलसिला चलता रहा, पैंथरी जहाँ भी संभव होता हमला करके मार डालती, लेकिन अपने शिकारों को कभी नहीं खाती। उसके किए का असर हर लाश पर बेरहमी से किए गए काटने और खरोंचने के तरीके से साफ दिख रहा था, जो शिकार को मारने के लिए ज़रूरी से कहीं ज़्यादा था। ऐसा लग रहा था मानो वह हर शरीर को लगभग पहचान से परे क्षत-विक्षत करने में क्रूर आनंद ले रही हो।

जिस नदी के किनारे ये घटनाएँ घटीं, वह जगह अवैध शिकार के बावजूद भारतीय मछलियों के राजा, महान महासीर को पकड़ने के लिए एक पसंदीदा स्थान थी। लेकिन मछली पकड़ने में मेरी कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही। मुझे इसमें बिल्कुल भी रुचि नहीं है। फिर भी मेरे कई दोस्त इसके शौकीन हैं और कभी-कभी मैं उनमें से किसी एक को दो-तीन दिनों के लिए इस नदी पर ले जाता था।

ये यात्राएँ बहुत कम और अनियमित ही हो पाती थीं, क्योंकि तलाइनोवु से जंगल होते हुए नदी तक का ऊबड़-खाबड़ रास्ता बहुत ही खड़ी चढ़ाई वाला और अचानक मोड़ों से भरा था, जिन पर मेरी स्टडबेकर कार चल नहीं सकती थी। मेरे ज़्यादातर दोस्तों के पास अंग्रेज़ी कारें थीं, और वे भी इस काम के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त थीं। इसलिए हमारी यात्राएँ केवल उन्हीं मौकों तक सीमित थीं जब हमें कोई जीप वाला मिल जाता था या फिर जब हम सौभाग्य से कोई जीप उधार ले पाते थे या किराए पर ले पाते थे।

खैर, एक दिन हमें ऐसा ही एक मौका मिला, और इस बार तो ऐसा लगा मानो ये हमेशा के लिए ही आया हो। मेरे बेटे डोनाल्ड ने एक जीप खरीदी थी! आंध्र प्रदेश से आई एक खस्ताहाल गाड़ी, चमकीले नीले रंग की, और हर मुमकिन पुर्जे में खराबी थी। लेकिन डॉन ने ठान लिया, और काफी खर्च और बड़ी मेहनत से उसने खराब पुर्जों की जगह अच्छे पुर्जे लगा दिए, जिससे आखिरकार हमारे पास एक ऐसी गाड़ी हो गई जो कहीं भी जा सकती थी।

फिर वो दिन आ गया जब हम तलाइनोवु मछली पकड़ने के मैदानों के लिए रवाना हुए। डोनाल्ड गर्व से अपनी जीप चला रहा था जिसे उसने बड़ी मेहनत से ठीक किया था। उसके बगल में टाइनी सेडन बैठा था, जो एक महान 'महसीर' मछुआरा था, न केवल मछली पकड़ने की अपनी क्षमता में बल्कि अपने कद-काठी में भी महान था। पीछे हम तीन लोग थे; डोनाल्ड का एक पुराना दोस्त और सहपाठी, जिसका नाम मेरवान चमार-बौघवाला था; थंगावेलु, जो कभी मेरा शिकारी हुआ करता था और हमारे यहाँ टेबल-बॉय, मोटर-क्लीनर, हमारे पालतू जानवरों और कई जंगली जानवरों को खाना खिलाने वाला और हर काम में माहिर था, इस यात्रा में उसका खास काम कैंप कुक का था। और अंत में, मैं एक असुविधाजनक कोण पर फंसा हुआ था, जहाँ हिलने-डुलने की भी बहुत कम गुंजाइश थी।

बैंगलोर में हमारे घर से कावेरी नदी के किनारे स्थित शिविर स्थल तक की दूरी ठीक निन्यानवे मील है, जो तलाइनोवु गाँव से लगभग दस मील आगे है, जहाँ हमने मछली पकड़ने का इरादा किया था। हम बैंगलोर से काफी देर से निकले थे, और जब यात्रा समाप्त हुई तो सूरज लाल रंग की लपटों की तरह डूब रहा था, जिसके पीछे नारंगी, सिंदूरी और नीला रंग छाया हुआ था। हम नदी के किनारे से कुछ ही गज की दूरी पर, विशाल मुथी, इमली और जुमलम के पेड़ों के झुरमुट के नीचे रुके, जिसके नीचे हम हमेशा अपना शिविर लगाते थे।

एक साथ तीन काम निपटाने थे, और दल के प्रशिक्षित सदस्य—डॉन, थंगावेलु और मैं—तुरंत उन पर जुट गए। डॉन ने चारों ओर हाथियों के ताज़े पदचिह्नों की जल्दी से जाँच की, ताकि हमें यकीन हो जाए कि आस-पास कोई हाथी नहीं है जो हमारी मौजूदगी से नाराज़ होकर हम पर हमला कर दे। मैंने दोनों पैरों का इस्तेमाल करते हुए, छह-सात गज के घेरे में सूखी पत्तियों, पत्थरों और लकड़ियों को हटाना शुरू कर दिया, जिनमें बिच्छू, खासकर छोटे लाल बिच्छू, छिपे हो सकते थे। ऐसे बिच्छू का डंक अगले

आठ घंटे या उससे भी ज़्यादा समय तक आपका ध्यान बाकी सभी समस्याओं से, यहाँ तक कि आयकर अधिकारियों की मांगों से भी, पूरी तरह से हटा देगा। थंगावेलु जल्दी से सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा करने लगा, जिसमें डॉन भी जल्द ही उसकी मदद करने लगा, ताकि रात भर आग जलती रहे, अगर सोते समय कोई हाथी हमारे रास्ते में आ जाए तो उसे जलाए रखा जा सके।

नन्हा सेडन पानी में आधा डूबी एक चट्टान पर कूद गया और घूमते हुए भंवरों को ध्यान से देखने लगा। निस्संदेह वह अगली सुबह मछली पकड़ने की शुरुआत कहाँ से करनी है, इसके लिए प्रेरणा की तलाश कर रहा था। मेरवान चमार-बौघवाला उस ज़मीन पर लेट गया जिसे मैंने अभी-अभी साफ़ किया था और कहा कि जीप की तुलना में यह कितनी आरामदायक है।

हममें से किसी ने भी पैंथर के बारे में नहीं सोचा था—क्योंकि इस क्षण तक हममें से किसी को भी इसके बारे में पता नहीं था!

चाँद देर से निकलेगा। हमने मेरवान की लाई हुई चिकन बिरयानी और पोर्क विंदालू खाई, जो बहुत स्वादिष्ट लेकिन कुछ ज़्यादा ही भारी थी। जब थंगावेलु चाय बना रहा था, तब हमने नदी के नल से पानी पिया। यानी हम सबने, सिवाय टिनी के, जिसे पूरा यकीन था कि नदी के पानी में हैजा, टाइफाइड और हर तरह के बैक्टीरिया हैं। उसने कहा कि वह चाय का इंतज़ार करेगा। फिर थंगावेलु ने रात भर जलने वाली आग को हवा दी और हम लेट गए, सिगरेट पीते रहे, कहानियाँ सुनाते रहे और अपने सिर के ऊपर पत्तों की घनी छाया के पार तारों भरे आकाश को निहारते रहे। हम खुद को भाग्यशाली मानते थे कि हमें ऐसा आनंद मिल रहा है, जो दुनिया भर के घुटन भरे शहरों में रहने वाले हमारे कई साथी प्राणियों को अपने नीरस जीवन में एक दिन के लिए भी नहीं मिला। और इस तरह हम सो गए।

मुझे नहीं पता कि मैं अचानक क्यों जाग गया। मेरी घड़ी में तीन बजकर कुछ मिनट हो रहे थे। कैंप फायर बुझकर कुछ सुलगते अंगारों में तब्दील हो चुकी थी, क्योंकि थंगावेलु, जिसने इसे जलाए रखने का जिम्मा लिया था, बहुत पहले ही सो गया था। मेरे बाईं ओर डोनाल्ड ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था। मेरे दाईं ओर क्रमशः मरवान और टिनी ने मच्छरों और ओस से बचने के लिए अपने सिर चादरों से ढक रखे थे और गहरी नींद में सो रहे थे।

मुझे आश्चर्य हुआ कि अचानक मेरी नींद कैसे खुली। शायद जंगल की कोई

आवाज़। शायद कोई हाथी ऊपर की कोमल पत्तियों को खाने के लिए डालियाँ तोड़ रहा हो। मैंने और ध्यान से सुना और कुछ देर तक मुझे डॉन के शोरगुल भरे खर्राटों के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

तब मुझे पता चला कि मुझे किस चीज ने जगाया था, क्योंकि पास ही मुझे एक कर्कश, खुरदरी आवाज सुनाई दी: 'हा-आह! हा-आह! हा-आह!' एक भूखे पैंथर की पुकार!

जंगल में रहने वाले पैंथर आमतौर पर बिल्कुल हानिरहित जानवर होते हैं। सिवाय तब जब वे आदमखोर बन जाते हैं, जो कि बहुत ही दुर्लभ होता है, या जब वे घायल हो जाते हैं। वे शर्मीले और डरपोक जानवर होते हैं जो इंसानों से दूर रहते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि जो जानवर अब आवाज लगा रहा था, हालांकि वह देखने में काफी करीब लग रहा था, उसने अभी तक हमारी आग की चिंगारियां नहीं देखी थीं। जैसे ही वह देखेगा, पूरी संभावना है कि वह जितनी जल्दी हो सके भाग जाएगा। कम से कम मैं यही सोच रहा था, और नींद में डूबा हुआ उस आवाज को सुनता रहा।

फिर से आवाज़ आई, और इस बार तेज़। भूखा पैंथर ज़रूर बहुत पास था। उसने अब तक हमारी आग देख ही ली होगी, है ना? मुझे बहुत नींद आ रही थी और आराम भी महसूस हो रहा था। धिक्कार है उस जानवर पर, मैंने सोचा। यह मुझे सोने क्यों नहीं देता?

तभी मैंने पैंथर की गुर्राहट सुनी! मैंने सोचा, आखिरकार इसने हमें देख लिया; अब यह गायब हो जाएगा। लेकिन पैंथर ने फिर से गुर्राहट की, लंबी और भयावह।

अजीब बात है, मैंने सोचा, नींद से मेरी आँखें आधी बंद थीं। यह या तो बहुत जिज्ञासु पैंथर है या फिर बहुत गुस्सैल और साहसी। मैंने सोचा; लेकिन चिंता क्यों? मैं समूह के बीचोंबीच सुरक्षित था। टाइनी एक छोर पर था, डॉन दूसरे छोर पर, और थंगावेलु आग से थोड़ी दूर अकेला बैठा था।

पैंथर ने फिर से धीमी और लंबी गुर्राहट की, और मैं अचानक उठ बैठा, तकिए के पास रखी टॉर्च को ढूंढने लगा। नींद से जागने के लिए पलकें झपकाते हुए, मैंने टॉर्च की रोशनी उस गुर्राहट की ओर डाली जो तेज़ होती जा रही थी।

मैंने देखा कि थंगावेलु से कुछ ही फीट की दूरी पर एक पैंथर ज़मीन पर दुबका हुआ था और स्पष्ट रूप से उस पर हमला करने की तैयारी कर रहा था। उसकी मुद्रा में कोई संदेह नहीं था: मैं उसकी पूंछ को इधर-उधर हिलते हुए देख सकता था, जो उसके

खतरनाक इरादों का स्पष्ट संकेत था। मैंने अपनी राइफल को टटोला, जिसे मैंने अपने पास ज़मीन पर लोड करके रखा था।

और फिर थंगावेलु ने सब कुछ बर्बाद कर दिया।

मुझे लगता है कि उसकी जंगली प्रवृत्ति ही इसके लिए ज़िम्मेदार थी। इसने उसे सचेत तो किया, लेकिन काफ़ी देर से, उस बड़े खतरे के प्रति जो मंडरा रहा था। वह अचानक उठ बैठा और ऐसा करते हुए उसने उस बर्तन को लात मारकर गिरा दिया जिसमें टिनी के पीने के लिए पानी उबाला गया था। शायद उसकी खड़खड़ाहट, या थंगावेलु की हरकत, या ज़्यादा संभावना है कि मेरी टॉर्च की रोशनी ने पैंथर को आश्वस्त कर दिया कि उसकी उपस्थिति का पता चल गया है, और इससे पहले कि मैं राइफल से कुछ कर पाता, क्योंकि मेरे दाहिने हाथ में टॉर्च थी, वह दरिंदा एक तरफ कूद गया और पास की झाड़ी के पीछे गायब हो गया।

इस पूरे समय थंगावेलु किसी भी खतरे से पूरी तरह बेखबर था। अभी भी आधी नींद में होने के कारण उसने पैंथर को न तो सुना था और न ही देखा था। मैंने बाकी लोगों को जगाया और उन्हें सारी घटना बताई।

पहले तो वे चौंक गए। फिर डॉन ने कहा, 'पिताजी, आपको बुरा सपना आया है। मरवान की चिकन बिरयानी और पोर्क विंदालू इसकी वजह हैं। मैंने पूरी रात कोई आवाज़ नहीं सुनी और मुझे शक है कि मीलों दूर तक कोई पैंथर भी है।'

बाकी लोग हंस पड़े और मुझे थोड़ी झुंझलाहट हुई। डॉन कैसे कह सकता है कि उसने कोई आवाज़ नहीं सुनी, जबकि वह पूरी रात खर्राटे ले रहा था? मैं टॉर्च और राइफल पकड़े हुए ही खड़ा हो गया।

'आओ और इसे देखो,' मैंने टॉर्च की रोशनी जमीन पर डालते हुए और उस जगह की ओर बढ़ते हुए कहा जहाँ पैंथर लेटा हुआ था। लेकिन वहाँ की ज़मीन सख्त थी और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

डॉन ने व्यंग्यपूर्वक पूछा, 'देखो क्या?' वहीं मेरवान विलाप करते हुए बोला, 'तुमने मुझे बेवजह क्यों जगाया?'

थंगावेलु समेत सभी लोग अपने-अपने स्थानों पर लौट गए और दोबारा सो गए। किसी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया था। लेकिन मुझे पता था कि जिस खतरे ने हमें, और विशेष रूप से नौकर को, धमकाया था, वह बहुत वास्तविक था और किसी सपने या मेरी कल्पना का हिस्सा नहीं था।

मैंने थंगावेलु द्वारा पिछली शाम को इकट्ठा की गई लकड़ियों से आग फिर से जलाई। फिर अपनी राइफल और टॉर्च लेकर मैं रात भर बिस्तर पर पीठ टिकाकर जागता रहा। मुझे पूरा यकीन था कि मैंने जो पैंथर देखा था वह आदमखोर था और थंगावेलु ऐन मौके पर बच गया था। उसकी आवाज़ों से पता चला कि वह भूखा था। हो सकता है वह वापस आ जाए।

एक घंटे बाद, आधा मील दूर पहाड़ी पर एक सांभर की आवाज सुनाई दी। कुछ देर तक आवाज आती रही, फिर चित्तीदार हिरणों को खतरे का स्रोत दिखाई दिया या उसकी गंध महसूस हुई। तब वे भी आवाज करने लगे। स्पष्ट था कि पैंथर पहाड़ी से पीछे हट रहा था।

इस समय तक अर्धचंद्राकार चंद्रमा निकल आया था, जिससे आसपास का इलाका हल्का-हल्का दिखाई दे रहा था। नदी का पानी चट्टानों के ऊपर से बहते हुए एकरसता से कलकल कर रहा था और मुझे बहुत नींद आ रही थी। आखिरकार भोर हुई, और टिनी सबसे पहले जागा। उसने मुझे देखा।

'कहीं तुम पूरी रात जागते तो नहीं रहे?' उसने पूछा।

मैंने बस इतना ही जवाब दिया, 'थांगवेलु को जगाओ और उससे चाय बनाने को कहो।' फिर पानी उबलने से पहले ही मैं सो गया।

टिनी ने सारा दिन मछली पकड़ी। उसने एक दस पाउंड की महसीर, दो सात पाउंड की और कुछ छोटी मछलियाँ पकड़ीं। डॉन ने भी कोशिश की, लेकिन मेरी तरह वह भी जल्दबाज़ था और उसे कुछ नहीं मिला। मेरवान ने कहा कि उसे नहाना है, और मछली पकड़ने में खलल न डालने के लिए, वह अपने कंधे पर तौलिया डाले नदी के किनारे-किनारे चलने लगा। मुझे उस आदमखोर सांप की याद आई जिसे देखकर किसी को यकीन नहीं हुआ कि मैंने देखा है; और मैंने उसे आवाज़ दी, 'एक मिनट रुको, मैं भी तुम्हारे साथ आता हूँ।' अपनी राइफल उठाकर और तौलिया घुमाते हुए, मैं उसके पीछे चल दिया।

उस दोपहर हम सभी को नींद आ रही थी, खासकर मुझे, और शिविर में एक बार फिर सन्नाटा छा गया। लेकिन ज्यादा देर तक नहीं। हमें धीरे-धीरे पास आती हुई खोखली आवाज़ें सुनाई दीं, 'बूम्प! बूम्प! बूम्प!'

शिकारी! वे नदी में अंधाधुंध बमबारी कर रहे थे और दिन दहाड़े अपना काम कर रहे थे, जाहिर तौर पर पकड़े जाने के डर के बिना। थोड़ी देर में, नदी के मोड़ पर हमेशा

की तरह दो छोटी नावें दिखाई दीं, पहली में आदमी भरे थे और दूसरी में मछलियाँ। हमारी टोली को देखते ही वे धारा के विपरीत तेज़ी से चप्पू चलाकर दूसरी तरफ पहुँचने की कोशिश करने लगे।

इस हरकत ने हमें कार्रवाई करने के लिए उकसाया। डॉन ने हवा में एक गोली चलाई। फिर उसने चिल्लाकर कहा, 'इधर आओ, वरना अगली गोली तुम पर होगी।'

चप्पू चलाना बंद हो गया और दोनों छोटी नावें धारा के साथ बहने लगीं। स्पष्ट था कि अंदर बैठे लोग आपस में बहस कर रहे थे कि आत्मसमर्पण करें या भाग निकलें। तभी मेरवान ने अंग्रेज़ी में चिल्लाया, जिसे वे समझ नहीं पाए। 'इधर आओ, कमीनों, वरना हम तुम्हें डुबो देंगे।'

धीरे-धीरे वे लोग अपनी छोटी नावों को हमारी ओर लाने लगे, लेकिन तट से कुछ गज की दूरी पर आकर रुक गए। किनारे पर थोड़ी ऊंचाई पर स्थित होने के कारण, हम दूसरी नाव में पड़ी सैकड़ों मछलियों को नीचे देख सकते थे।

फिर एक बेतुकी और मूर्खतापूर्ण बहस शुरू हुई। डॉन ने उन्हें उनके गलत काम के लिए कभी धमकाया तो कभी फटकारा। उन लोगों ने जवाब दिया कि उन्हें इसमें कुछ भी गलत नहीं लगता। मछलियाँ किसी की निजी संपत्ति नहीं हैं। तो फिर सरकार को नियम क्यों बनाने चाहिए या मछली पकड़ने के लाइसेंस क्यों मांगने चाहिए? और हम कौन होते हैं दखल देने वाले? और इसी तरह की बहस चलती रही।

उस समय हमारे दल में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति थंगावेलु ने कहा, 'हमें अपनी सबसे अच्छी और सबसे बड़ी दो मछलियाँ दे दो। फिर, जाओ और खुद को उड़ा लो, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता!'

इन सबके बीच मैंने पूछा, 'देखो, क्या इन इलाकों में कोई आदमखोर पैंथर है?'

वहाँ सन्नाटा छा गया। तभी उनमें से एक आदमी ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, मानो वह नहीं चाहता था कि कोई सुन ले, "जी हाँ, दोराई, है। इसने बहुतों को मार डाला है। कुछ ही दिन पहले इसने हमारे एक साथी को मार डाला, जिसका नाम बालू था। इसीलिए हम अब दिन के उजाले में मछली पकड़ रहे हैं। आम तौर पर हम यह काम केवल चांदनी रातों में ही करते थे, लेकिन अब सूर्यास्त के बाद कोई भी बाहर नहीं निकलता।"

तो आखिरकार मैं सही ही था!

डॉन उत्साहित था। 'इधर आओ। किनारे पर आओ,' उसने आमंत्रित किया।

'मछलियों की परवाह मत करो। हम तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। मैं इस पैंथर के बारे में और जानना चाहता हूँ। हम शिकारी हैं। हमें इसमें दिलचस्पी है और हम इसे गोली मारने की कोशिश करेंगे।'

एक रस्सी जुड़ जाने पर, मछुआरे अपनी छोटी नावों को किनारे पर लाए और उन्हें रस्सियों से पेड़ों की जड़ों से बांध दिया। फिर वे किनारे पर उतरे और हमारे चारों ओर समूह बनाकर बैठ गए। डॉन और मैंने उनसे कई सवाल पूछे और उनके जवाबों से हमने वह कहानी जोड़ी जो मैंने पहले ही बताई है। उन लोगों ने माना कि पैंथर सही मायने में आदमखोर नहीं था। अब तक उसने अपने किसी भी शिकार को खाया नहीं था, बल्कि उन्हें बुरी तरह से घायल और क्षत-विक्षत करके ही संतुष्ट था। जाहिर है, वह जानवर मादा थी, असाधारण बुद्धि और असाधारण याददाश्त वाली, क्योंकि ज्यादातर जंगली जानवर अतीत को बहुत जल्दी भूल जाते हैं। इस पैंथर को जाहिर तौर पर अपने शावकों की हत्या याद थी और मानव जाति के प्रति उसकी नफरत आज भी उतनी ही ताजा थी जितनी उस दिन थी। कहानी सुनने के बाद, हमारी सहानुभूति उस पीड़ित जानवर के साथ थी।

अंततः नाविकों ने हमसे विदा लेने का अनुरोध किया। सूरज तेज़ हो जाएगा और मछलियों को इतनी आसानी से पकड़ना संभव नहीं होगा, क्योंकि वे गहरे पानी में तैर जाएँगी। हमने नाराज़गी से उन्हें वहाँ से चले जाने को कहा, लेकिन इससे पहले थंगावेलु ने हमारे लिए दो सबसे बड़ी और बेहतरीन मछलियाँ चुन ली थीं।

'तो देखा दोस्तों, मैं सपना नहीं देख रहा था,' दोनों नावों के दूर जाने पर मेरी पहली टिप्पणी यही थी। उस दिन मछली पकड़ने के बारे में सोचने वाला केवल टिनी ही था। हम बाकी सब, थंगावेलु समेत, इस पैंथर को कैसे मारें, इस पर आपस में चर्चा करने लगे। डॉन और मेरवान विशेष रूप से उत्सुक थे। जहाँ तक मेरी बात है, मेरा मानना था कि पैंथर के पास शिकार करने का ठोस आधार था।

शुरू से ही, बाकी लोगों को लग रहा था कि हमारे सामने एक नियमित आदमखोर बाघिन न होने के कारण एक बड़ी समस्या है। इस बात से मैं सहमत नहीं था। मेरे विचार में, अगर समय मिले तो इस पैंथरी से निपटना कहीं ज़्यादा आसान होगा, क्योंकि इंसानों से नफ़रत से भरी होने के कारण वह हम पर हमला करने की पूरी कोशिश करेगी। मेरी समझ में, हमें उसे ढूंढने के लिए अकेले ही काम करना चाहिए। इससे हमें चार के मुकाबले एक मौका मिलेगा। इसी तरह, पैंथरी हममें से

किसी को भी अकेला देखकर उस पर हमला ज़रूर करेगी, हालांकि मछुआरों के अनुसार, उसने लोगों के पूरे समूह पर हमला करने में कोई संकोच नहीं किया था। यह योजना मुझे थंगावेलु द्वारा प्रस्तावित योजना से कहीं ज़्यादा सफल लग रही थी, जिसमें जीप से तलाइनोवु जाकर दो युवा बैल या भैंसा खरीदकर उन्हें चारे के रूप में इस्तेमाल करना था। फिर उन्हें पैदल शिविर स्थल तक ले जाना था और बांधने से पहले उपयुक्त स्थान चुनना था। मुझे पता था कि इन सबमें काफी समय लगेगा और मौजूदा हालात को देखते हुए, पैंथर द्वारा हम में से किसी एक पर हमला करने की संभावना की तुलना में हमारे किसी भी चारे पर हमला करने की संभावना कहीं कम थी।

सौभाग्य से, डॉन अपनी .423 माउज़र राइफल और .12 बोर की शॉटगन साथ लाया था, जबकि मेरे पास भी मेरी .405 और .12 बोर की बंदूकें थीं। इस तरह हमारे पास दो राइफल और दो शॉटगन हो गईं, जो हम चारों के लिए पर्याप्त थीं।

हमने जल्दी दोपहर का भोजन करने का फैसला किया, जिसके बाद टिनी, मेरी घातक गोलियों से भरी शॉटगन लेकर, लगभग दो घंटे तक नदी के किनारे-किनारे नीचे की ओर चलेगा और फिर वापस लौट आएगा। मेरवान भी डोनाल्ड की बंदूक लेकर ऊपर की ओर यही करेगा। डॉन और मैं, अपनी-अपनी राइफलों से लैस होकर, अलग-अलग दिशाओं में जंगल में खोज करेंगे। थंगावेलु पास ही कहीं एक पेड़ पर चढ़कर हमारे लौटने का इंतजार करेगा, साथ ही जीप और हमारे कैंप के सामान पर भी नज़र रखेगा जो इधर-उधर बिखरा पड़ा था। यह तय किया गया कि सभी को शाम 5 बजे तक कैंप में वापस आ जाना चाहिए।

हमने ऐसा ही किया और एक-दूसरे को अचानक हमले से बचने के लिए सतर्क रहने की चेतावनी देते हुए, योजना के अनुसार अलग-अलग जगहों पर चले गए, हर कोई इस उम्मीद में कि शायद उसे पैंथर देखने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए। मुझे नहीं लगता कि हममें से किसी को भी अकेले होने तक यह एहसास हुआ होगा कि वह क्या करने निकला था, और वास्तव में क्या कर रहा था, वह खुद को अगले चार घंटे या उससे अधिक समय के लिए एक बेहद खतरनाक जंगली जानवर के लिए चारा बना रहा था, जिसके पास जमीन और आवरण का पूरा लाभ था।

मैंने उस दिशा में जाने का फैसला किया था जहाँ मैंने पिछली रात सांभर की आवाज़ सुनी थी। शायद यह रास्ता किसी गुफा की ओर जाता हो और जंगल में यूँ ही

भटकने की तुलना में सफलता की बेहतर संभावना प्रदान करता हो। नदी से कुछ ही मिनटों की दूरी पर मुझे एक पशु-पगडंडी मिली जो उसी पहाड़ी के उत्तर-पूर्वी ढलान की ओर जा रही थी जिससे जीप तलाइनोवु से नीचे आई थी। यह एक स्पष्ट पगडंडी थी, जिसका उपयोग सांभर और अन्य जानवर गर्मियों के महीनों में नदी में पानी पीने के लिए आते थे, और हिरण और भालू के हालिया निशानों से पता चलता था कि पिछली रात की अपेक्षाकृत शांति के बावजूद यहाँ काफी संख्या में जानवर मौजूद थे।

रास्ता तिरछे ऊपर की ओर जाता था, पत्थरों और घनी झाड़ियों से सुरक्षित दूरी बनाए रखते हुए, जैसा कि हिरण परिवार के जानवर अक्सर किसी मांसाहारी जानवर के चट्टान या झाड़ी के पीछे छिपे होने के डर से बनाते हैं। यह मेरे लिए फायदेमंद था, हालांकि मैं जानता था कि एक पैंथर किसी भी तरह की आड़ में खुद को छिपा सकता है। मेरे मन में बेचैनी थी और थोड़ी देर बाद मुझे डॉन और हमारे बाकी दो दोस्तों की चिंता होने लगी। मुझे उम्मीद थी कि वे भी मेरी तरह ही सावधान होंगे।

बहुत रात हो चुकी थी और चिड़ियों की चहचाहट के लिए बहुत गर्मी थी, इसलिए मैं असहज चुप्पी में आगे बढ़ता रहा, दाएं-बाएं हर तरफ पैनी नजर रखता रहा और सामने की हर आड़ को ध्यान से देखता रहा। असली खतरा तो पीछे से था, जैसा कि मैं जानता था, क्योंकि पैंथर और लगभग सभी बाघ, भले ही वे इंसानों पर हमला करने के आदी हो गए हों, फिर भी इंसान से अपना डर पूरी तरह नहीं खोते और ज्यादातर मामलों में अपने शिकार पर पीछे से हमला करते हैं।

इसलिए मैं बार-बार पीछे मुड़कर देखता, ताकि पत्ते या घास की हल्की सी भी हलचल पकड़ सकूँ, जिससे पैंथरी के हमले की तैयारी का पता चल सके। जैसा कि उम्मीद थी, कई बार झूठी चेतावनी मिली। मेरी पैनी नज़र ने एक टहनी को संदिग्ध रूप से हिलते हुए देखा, या घास की एक पत्ती को अचानक सीधा होते हुए देखा, जहाँ वह किसी छिपी हुई शक्ति के भार से दबी हुई थी। कभी-कभी मुझे सरसराहट सुनाई देती, या सूखी टहनी के टूटने की स्पष्ट आवाज़, अक्सर मेरे पीछे और कई बार दूसरी दिशाओं में। फिर मैं जम जाता, अपनी .405 पिस्तौल को आधा ऊपर उठाता, और उस आवाज़ की ओर ध्यान से देखता, किसी भी क्षण उस चित्तीदार आकृति को अपनी ओर आते हुए देखने की उम्मीद करता। कुछ नहीं हुआ। सरसराहट या टहनी के टूटने की आवाज़ दोबारा नहीं आई, और जंगल अजीब तरह से शांत रहा। या तो वह टहनी फिर से हिलने लगी, या घास की पत्ती हवा में लहराती रही। फिर मेरे भीतर का

तनाव खत्म हो गया, गर्दन के पीछे के बाल ढीले पड़ गए, और मुझे एहसास हुआ कि डरने की कोई बात नहीं है। इस प्रकार मैं कुछ दूर तक चलता रहा, तभी किसी अन्य हलचल ने मुझे फिर से भयभीत कर दिया।

कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा, जब तक मुझे एहसास नहीं हुआ कि मेरी घबराहट मुझ पर हावी हो रही है और मैं एक नौसिखिए की तरह व्यवहार कर रहा हूँ। संभवतः पैंथर बहुत दूर थी। मैं चलते-चलते अपने विचारों में खोया रहा, सतर्कता के क्षण कभी लापरवाही और उदासीनता के क्षणों में बदलते रहे। समय बिना किसी घटना के बीतता गया, और मुझे लगने लगा कि हालात उतने बुरे नहीं थे जितना शिकारियों ने बताया था। निस्संदेह, सभी ग्रामीणों की तरह, उन्होंने भी मामले को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया था।

मैं पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा और दूसरी ओर घने बाँसों से भरी हरी-भरी घाटी में उतरने लगा। पत्तों की हल्की सरसराहट और फिर एक पत्ते के टूटने की तेज़ आवाज़ ने केवल एक ही बात का संकेत दिया। एक हाथी!

मैं रुक गया और उस जगह को निहारने लगा जहाँ से आवाज़ आई थी। बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता था कि वह अकेला जानवर था या झुंड का हिस्सा। अगर वह अकेला था, तो उसके बहुत करीब जाने पर मुसीबत हो सकती थी। अगर मैं किसी झुंड के पास पहुँच गया होता, तो लगभग निश्चित था कि मेरी मौजूदगी का पता चलते ही वे भाग जाते। जिस रास्ते पर मैं चल रहा था, वह सीधे आवाज़ के स्रोत की ओर जा रहा था। अगर मैं अब हाथी से बचने के लिए रास्ता छोड़ देता, तो मुझे पता था कि मैं ज़्यादा दूर नहीं जा पाऊँगा, क्योंकि बहुत जल्द मैं बाँस और कंटीली झाड़ियों में फँस जाऊँगा, जहाँ किसी गुस्सैल पैंथर या उतने ही गुस्सैल हाथी का सामना करना नामुमकिन होगा। इसलिए मैंने रास्ते पर ही बने रहने का फैसला किया।

पीछे से तेज़ हवा चल रही थी और सामने बांसों के बीच से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। मैंने कुछ देर इंतज़ार किया, लेकिन सन्नाटा बना रहा। इससे संकेत मिला कि हाथी को मेरी मौजूदगी का एहसास हो गया था, शायद उसने मेरी गंध सूंघ ली थी। या तो वह दूर चला गया था, या फिर मेरे पास आने का इंतज़ार कर रहा था।

नहीं, अगर वह दूर चला जाता तो शायद मैं उसकी आवाज़ सुन लेता, क्योंकि ये विशालकाय जीव लगभग बिना आवाज़ किए चल सकते हैं, लेकिन उस घनी झाड़ी में उसके चलने की हल्की-फुल्की आवाज़ तो ज़रूर आती। इसलिए मैंने यही सोचा कि

वह मेरे आने का इंतज़ार कर रहा था। मैं दस मिनट और रुका रहा, इस उम्मीद में कि हाथी अपना इरादा बदल लेगा और मुझसे सामना नहीं करेगा। लेकिन वह हिला तक नहीं। शायद वह भी यही सोच रहा था।

मुझे और इंतजार करना चाहिए था, लेकिन मैं अधीर हो गया और उस राक्षस को भगाने का फैसला कर लिया। यह एक गलत कदम था, और लगभग विनाशकारी परिणाम देने वाला था।

मुझे लगा कि मेरी बेपरवाही भरी हरकत उसे डरा देगी, इसलिए मैंने ज़ोर से सीटी बजानी शुरू कर दी और निडर होकर शिकार के रास्ते पर आगे बढ़ गया। नतीजा तुरंत सामने आया। हाथी ने मुझ पर हमला कर दिया। हमला करते समय सभी हाथियों की तरह वह चीखा, कुछ तो अपने साहस को बढ़ाने के लिए और कुछ अपने शिकार में दहशत पैदा करने के लिए, और बांसों को चीरता हुआ सीधे मेरी ओर आ गिरा। घनी झाड़ियाँ ज़ोर से हटीं और एक विशालकाय सिर दिखाई दिया, जिसमें चमकीले दांत थे, सूंड उनके बीच अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और कान खोपड़ी से कसकर चिपके हुए थे।

मैंने तुरंत सोचा। इस इलाके में किसी भी आवारा हाथी के होने की घोषणा नहीं की गई थी। इसलिए, इस विशालकाय हाथी को गोली मारना वन विभाग के लोगों के साथ मेरे लिए अंतहीन मुसीबत का कारण बन सकता था। भागने का मतलब था पीछा किया जाना और थोड़ी ही दूरी पर पकड़ा जाना। उसे घायल करके रोकने की कोशिश करना, हो सके तो घुटने में, क्रूरता होगी और उसे अंतहीन पीड़ा पहुंचाएगी।

बस एक ही संभावना थी। बहुत ही कम संभावना थी, लेकिन मैंने उसे चुना। ज़ोर से चिल्लाते हुए, मैंने राइफल को उसके सिर के ऊपर निशाना साधा और हवा में एक गोली चलाई। अगर इससे भी वह नहीं रुका, तो मुझे पता था कि अगर मुझे ज़िंदा रहना है तो अगली गोली हाथी पर ही चलानी पड़ेगी।

यह कारगर साबित हुआ! उस विशालकाय जानवर ने अपने चारों पैर ज़मीन पर जमाकर ज़ोर से ब्रेक लगाया। उसके रुकते ही धूल और गिरे हुए पत्तों का बादल उठ खड़ा हुआ। यह जानते हुए कि उसका साहस जवाब दे चुका है, मैंने तीन-चार कदम आगे बढ़कर हवा में दूसरी गोली चलाकर इस मौके का फायदा उठाया।

वह विशालकाय जानवर मुड़ा। उसकी चीख में क्रोध का स्वर गायब हो चुका था, लेकिन फिर उसने तीखी आवाज़ में चिंघाड़ा, इस बार भय के स्वर में। वह असमंजस

में डगमगाया और फिर भाग निकला; उसकी छोटी पूंछ, जो सभी हमलावर हाथियों की तरह पीछे निकली हुई थी, अब उसके पिछले पैरों के बीच किसी पिटे हुए कुत्ते की पूंछ की तरह थी। उसके जाने की आवाज़ थम गई और मैं पास के एक पत्थर पर उदास होकर बैठ गया।

मुझे खुशी थी कि मुझे हाथी पर गोली चलाने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ा, लेकिन मुझे खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि मैंने धैर्य क्यों नहीं रखा और आगे बढ़कर हमले को उकसाने के बजाय वहीं रुका रहा। उन पहाड़ियों में मेरी राइफल की गोलियों ने भयानक शोर मचा दिया था। पैंथरेस के दिखने या मुझ पर हमला करने की जो उम्मीद मैंने पाल रखी थी, वह अब खत्म हो चुकी थी। शिविर छोड़े हुए अभी सिर्फ आधा घंटा ही बीता था। क्या नदी की ओर वापस लौटने से पहले बचे हुए नब्बे मिनट तक उसी रास्ते पर चलते रहना मेरे लिए फायदेमंद होगा?

कुछ पल सोचने के बाद मुझे एहसास हुआ कि बीती बातों पर पछताने का कोई फायदा नहीं। इसलिए मैं उठा और पगडंडी पर आगे बढ़ गया। अगले दस मिनट तक पैंथर से कोई खतरा नहीं था। राइफल की गोलियों की आवाज से वह डर गई होगी। हाथी और उसके जैसे दूसरे हाथी अब बहुत दूर जा चुके होंगे। मैं कावेरी नदी के बेसिन से ऊपर उठते ही बांस के घने जंगल से तेजी से आगे बढ़ा, जो धीरे-धीरे कम होते गए। वनस्पति में थोड़ा बदलाव आया और मैं बबूल, बोरम और बौनी इमली के पेड़ों से भरे एक पार्क में पहुंचा, जिनके बीच-बीच में लंबी घास के मैदान थे। यहीं पर वह दोस्ताना पगडंडी, जिसका मैं बड़ी नदी से अब तक पीछा कर रहा था, खत्म हो गई। बल्कि, वह इस पार्क में फैली अनगिनत दूसरी पगडंडियों में खो गई, जो जाहिर तौर पर हिरणों का पसंदीदा चरागाह था।

हर जगह गोबर के छोटे-छोटे गोले बिखरे पड़े थे, बड़े गोले सांभर के और छोटे गोले चित्तीदार हिरणों के। मेरे दाहिनी ओर अंजीर के पेड़ के नीचे छोटे-छोटे गोलों का एक बड़ा ढेर था, जो अब रसीले लाल फलों से लदा हुआ था। इनमें से हजारों अंजीर जमीन पर गिर पड़े थे, जिन्हें दिन में बंदरों और तरह-तरह के पक्षियों ने गिरा दिया था, और रात में विशाल फल खाने वाले चमगादड़ों ने, जिन्हें भारत में 'उड़ने वाली लोमड़ी' कहा जाता है। गोबर के इन छोटे-छोटे गोलों का बड़ा ढेर बनाने वाला एक जंगली भेड़ थी, जिसे हम 'काकर' या 'मंटजैक' कहते हैं।

ये खूबसूरत जानवर, जो एक छोटी भेड़ जितनी ऊँचाई के होते हैं और एकसमान

लाल-भूरे रंग के होते हैं, बहुत ही आकर्षक आकार के होते हैं। नर हिरणों के छोटे, दो भागों में बँटे सींग होते हैं। इन्हें अंजीर और अन्य जंगली फल बहुत पसंद होते हैं। विशेष रूप से नर हिरणों की यह आदत होती है कि वे हर दूसरे दिन एक चुनी हुई जगह पर आकर गोबर त्यागते हैं। सभी शिकारी, चाहे इंसान हों या जानवर, इस आदत को जानते हैं, इसलिए जब भी उन्हें ऐसी कोई जगह दिखाई देती है, तो उन्हें बस खुद को अच्छी तरह से छिपाना होता है और नर हिरण के लौटने का इंतज़ार करना होता है।

मांसाहारी जानवर हिरण परिवार और अपने शिकार बनने वाले सभी छोटे जानवरों की आदतों और गतिविधियों से भली-भांति परिचित होते हैं। अगर उन्हें भोजन चाहिए तो यह जानकारी होना अनिवार्य है। इसलिए, हिरणों से भरा यह सुंदर पार्क पैंथर को देखने के लिए एक बहुत ही उपयुक्त स्थान हो सकता था, और मैंने उसे खोजने के अपने प्रयासों को और भी तेज कर दिया।

मैं कुछ दूर चला ही था कि मेरे सामने, दाहिनी ओर से मुझे पक्षियों जैसी आवाज़ें सुनाई दीं। जैसे-जैसे वे पास आते गए, आवाज़ें तेज़ होती गईं। जंगली कुत्ते! उनका एक झुंड किसी शिकार का पीछा कर रहा था और वे मेरी ओर आ रहे थे। मैं जल्दी से पास के एक इमली के पेड़ के तने के पीछे छिप गया।

भारतीय जंगलों का जंगली कुत्ता सभी शिकारियों में सबसे चतुर और हर जीवित प्राणी का कट्टर दुश्मन होता है। एक बार जब इन जानवरों का झुंड किसी हिरण को सूंघ लेता है या देख लेता है और उसका पीछा करना शुरू कर देता है, तो उसका भाग्य तय हो जाता है। वे बेरहमी और चतुराई से उसका शिकार करते हैं। कुत्तों का मुख्य समूह अपने शिकार के पीछे दौड़ता है, शिकार के लिए ऐसी चीख निकालता है जो किसी पक्षी की तेज आवाज से मिलती-जुलती है, जबकि कुछ कुत्ते भयानक गति से आगे बढ़कर शिकार के दोनों किनारों पर दौड़ते हैं। ये किनारे वाले कुत्ते फिर शिकार पर घात लगाकर हमला करते हैं और उसे तब तक परेशान करते हैं, जब तक कि मुख्य समूह उन तक नहीं पहुंच जाता और काम पूरा नहीं कर देता। मैंने एक सांभर मादा को इन किनारे वाले कुत्तों द्वारा परेशान किए जाने पर एक सूखे नदी के किनारे को पार करते हुए देखा है, उसकी आंतें कई गज तक रेत में घिसट रही थीं, उसकी दोनों आंखें नोची हुई थीं, और कुत्ते अपने दांतों से उसके गले और किनारों को पकड़े हुए थे।

मुझे लकड़ी पर सींगों के टकराने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी और एक शानदार

सांभर हिरण प्रकट हुआ। उसके मुँह से झाग निकलकर उसकी गर्दन और कंधों तक फैल गया, और उसकी आँखें भय से चौड़ी हो गईं, जैसे ही वह तेज़ी से भागने लगा। अगले ही पल एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और एक विशाल धारीदार आकृति हवा में उछली और सीधे सांभर की पीठ पर जा गिरी।

मेरी पहले की आशंका सही साबित हुई। एक बाघ शिकार की तलाश में पार्क में गश्त लगा रहा था। उसने जंगली कुत्तों के आने की आहट सुनी और समझ गया कि वे किसी शिकार का पीछा कर रहे हैं जो उसकी ओर आ रहा है। आम तौर पर, बाघ जंगली कुत्तों से दूर रहते हैं और उनकी बेखौफ बहादुरी, बुद्धिमत्ता और संख्या के कारण उनसे डरते हैं। शायद यह बाघ भी उनसे दूर ही रहता, लेकिन संयोग से शिकार और उसका पीछा करने वाले कुत्ते उसी दिशा में आ रहे थे। इसलिए इससे पहले कि वह पूरी तरह समझ पाता कि उसे क्या करना चाहिए, उसने निर्णायक कदम उठा लिया।

इसी कारण बाघ को मेरे पीछे से आने का पता नहीं चला। उसकी तेज़ सुनने की शक्ति ने जंगली कुत्ते की शिकार की आवाज़ मुझसे पहले ही उसे सुना दी थी और वह उसी दिशा में ध्यान से सुन रहा था, इसलिए उसने मेरी हल्की-फुल्की आवाज़ों को नहीं सुना।

बाघ के अचानक भार से सांभर की पीठ झुक गई और वह भय से कर्कश दहाड़ उठा। उनके आपस में उलझे शरीर लंबी घास में ओझल हो गए। मैंने रीढ़ की हड्डी के टूटने की तीखी आवाज़ सुनी, जैसे बाघ ने कुशलता से उसे तोड़ दिया हो, और हिरण के खुरों की ज़मीन पर धमक सुनाई दी, क्योंकि उसके चारों पैरों की फड़कती मांसपेशियां और नसें भागने के आखिरी संकेत का जवाब दे रही थीं। इस दृश्य पर, अगले ही पल, भौंकते और गुर्राते जंगली कुत्तों का झुंड टूट पड़ा!

खुद को पहले ही रोके जाने पर क्षणिक आश्चर्य से उबरते हुए, वे तुरंत संभल गए। पलक झपकते ही उन्होंने बाघ और उसके शव को घेर लिया, जिसे वे अपना मान रहे थे। मैंने उनमें से नौ को गिना।

कुछ ही क्षण पहले झुंड से आ रही चिड़ियों जैसी शिकार की पुकार अचानक लंबी और दर्द भरी आवाज़ों में बदल गई। मैंने ये पुकारें कई साल पहले चमाला घाटी के सुदूर जंगलों में सुनी थीं। वहाँ जंगली कुत्तों का एक झुंड एक बाघ का पीछा कर रहा था और यह अजीब सी नई पुकार ठीक वैसी ही थी जैसी उन कुत्तों ने उस समय

की थी। वे मदद के लिए बुला रहे थे। मीलों दूर तक फैले सभी जंगली कुत्ते उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़ते। ऐसा लगता था मानो यह उनकी प्रजाति का एक अलिखित नियम हो जिसका कोई भी सदस्य उल्लंघन करने की हिम्मत न करे।

बाघ धमकी भरे अंदाज़ में खड़ा हो गया और मैं उसे साफ़ देख सका। उसने धीरे-धीरे अपना शरीर घुमाया ताकि वह देख सके कि कितने दुश्मन उसे घेरे हुए हैं। उसका चेहरा भयानक रूप से विकृत हो गया था, वह अपनी पूरी ताकत से गुर्राया और दहाड़ा, और उसकी पूंछ अनियमित रूप से इधर-उधर फड़फड़ा रही थी, जो घबराहट, क्रोध, संदेह और इन शांत, निर्दयी और क्रूर रूप से चालाक दुश्मनों के प्रति एक अकथनीय भय का स्पष्ट संकेत था।

कुत्तों का झुंड स्थिर खड़ा था, टांगें मजबूती से लेकिन थोड़ी फैली हुई थीं, झुंड का हर सदस्य अब मदद के लिए ज़ोर-ज़ोर से पुकार रहा था। बाघ की दहाड़ और नौ जंगली कुत्तों की चीखें मिलकर कोलाहल मचा रही थीं। जंगल इस शोर से गूंज रहा था।

बाघ को एहसास हुआ कि अब हर एक सेकंड उसके दुश्मनों के पक्ष में जा रहा है। दो छलांगों में ही उसने अपने रास्ते में आ रहे कुत्ते पर सीधा हमला कर दिया। कुत्ता फुर्ती से एक तरफ हट गया, जबकि उसके पीछे वाले कुत्ते पीछे से हमला करने के लिए आगे बढ़ गए। बाघ ने इसे भांप लिया और घूमकर अपने दोनों अगले पंजों से दाएं-बाएं बेतहाशा वार करने लगा। उसके शक्तिशाली पंजों की पहुंच में आए कुत्ते इधर-उधर गिर पड़े, लेकिन एक कुत्ता बहुत धीमा था। बाघ के नुकीले पंजों ने कुत्ते के पिछले हिस्से पर वार किया, उसका शरीर हवा में उछल गया और उसका एक पैर लगभग टूट गया, और बाघ के पीछे वाले कुत्ते आगे बढ़कर उसकी बगलों से मांस के टुकड़े नोचने लगे। बाघ एक बार फिर घूमा, एक बार फिर उसके दुश्मन उसके सामने तितर-बितर हो गए, जबकि पीछे और दोनों तरफ के कुत्ते उसे जहां भी मौका मिला, नोचने के लिए आगे बढ़ गए।

बाघ ने छुरा घोंपते हुए दो चक्कर लगाए और उसके पीछे से आगे बढ़े कुत्ते वापस नहीं मुड़ सके। बाघ के शक्तिशाली अगले पैरों के जोरदार प्रहार से उनके पंजे बुरी तरह घायल हो गए। दो ही वार में दो और कुत्ते टुकड़े-टुकड़े हो गए। उनमें से एक ने खुद को घसीटकर दूर ले जाने की कोशिश की, लेकिन बाघ के इतने करीब होने के कारण बाघ ने एक गलत चाल चल दी, जिससे बाघ को अपने चतुर दो चक्कर से

मिली बढ़त तुरंत ही खत्म हो गई। बाघ ने उस घायल जंगली कुत्ते पर झपट्टा मारा और अपने दांत उसके शरीर में गाड़ दिए।

पीछे से और दोनों ओर से कुत्ते उस पर टूट पड़े और उसके शरीर को घेर लिया, उसके शरीर से मांस के टुकड़े नोचने लगे। बाघ बार-बार दहाड़ा, लेकिन अब हर दहाड़ में डर का भाव था।

हमलावर जानवरों का झुंड बिखर गया और बाघ ने कुछ पल के लिए खुद को आज़ाद कर लिया। अब उसके चारों ओर केवल छह कुत्ते थे, जिनमें से कुछ घायल थे। लेकिन बाघ को कई घाव लगे थे जिनसे बहुत खून बह रहा था। वह हांफ रहा था। कुत्ते शांत नहीं हुए। चारों ओर से उन्होंने फिर से हमला शुरू कर दिया, भौंकते और झपटते हुए। बाघ फिर से दहाड़ा, लेकिन पहले जितना ज़ोर से नहीं। लड़ने की इच्छा कम होती जा रही थी। वह निश्चित रूप से डरा हुआ था।

तभी उस अफरा-तफरी के बीच एक और आवाज सुनाई दी: दूर से आती जंगली कुत्तों की आवाजें, एक दिशा से नहीं, बल्कि कई दिशाओं से, एक साथ। अतिरिक्त सैनिक आ गए थे।

घबराए हुए बाघ ने भी उनकी आवाज़ सुन ली, और उसका लड़ने का हौसला पस्त हो गया। वह पीछे मुड़ा और छह कुत्तों के साथ तेज़ी से भाग निकला, भले ही वे घायल और थके हुए थे।

एक मिनट के भीतर ही अतिरिक्त बल पहुँचने लगा। पहले तीन कुत्ते, फिर एक और, और फिर एक और। वे युद्ध स्थल पर एक पल के लिए रुके और खून से सनी घास और तीनों घायल कुत्तों को सूंघा। इससे वे उग्र हो गए और गुर्राने और दहाड़ने लगे। फिर वे भागते हुए बाघ और उसके छह पीछा करने वालों के पीछे दौड़ पड़े।

कुछ ही देर में लगभग एक दर्जन कुत्तों का एक बड़ा झुंड वहाँ पहुँच गया। कुछ ही सेकंड में उन्होंने स्थिति का जायज़ा लिया और अपने से पहले आए पाँच कुत्तों के पीछे चल दिए। उस बाघ का भाग्य तय हो चुका था, क्योंकि अब दो दर्जन जंगली कुत्ते उसके पीछे लगे हुए थे। वे तब तक उसका पीछा नहीं छोड़ेंगे जब तक उसे पकड़कर टुकड़े-टुकड़े न कर दें।

पीछा करने की आवाज़ दूर तक धीमी पड़ती जा रही थी, तभी मैं इमली के पेड़ के पीछे से निकलकर तीन मरे हुए कुत्तों और लड़ाई के मैदान को देखने लगा। बाघ द्वारा मारा गया सांभर हिरण कुछ ही दूरी पर अछूता पड़ा था। बाघ को मार गिराने के

बाद, बचे हुए कुत्ते निस्संदेह वापस आकर पेट भर खाएंगे।

मेरे पहुँचने तक टिनी लौट चुकी थी और उसके कुछ ही देर बाद मेरवान भी आ गया। उन दोनों ने कुछ भी देखा या सुना नहीं था। डोनाल्ड जब लौटा तो काफी देर हो चुकी थी। उसे एक पैंथर के पदचिह्न मिले थे और थोड़ी देर बाद वह एक गुफा के पास से गुजरा था। दोनों को जोड़कर देखते हुए, डोनाल्ड ने गुफा में पत्थर फेंके, इस उम्मीद में कि पैंथर बाहर निकलेगा। लेकिन, एक सुस्त भालू अपने दो शावकों को पीठ पर बिठाकर तेजी से बाहर निकला। वह परेशान होने से बहुत नाराज़ थी और अगर वह डोनाल्ड को देख लेती तो आत्मरक्षा में उसे गोली मार देता। सौभाग्य से, ऐसा नहीं हुआ। भालू अंधाधुंध जंगल की ओर भागा, और यहीं पर कहानी का अंत हो गया। कोई भी पैंथर भालुओं के परिवार के साथ गुफा में नहीं रह सकता था, और इसलिए डोनाल्ड की मृत्यु हो गई।

हैरानी की बात यह थी कि दल में से किसी ने भी हाथी को डराने के लिए मेरे द्वारा चलाई गई गोलियों की आवाज नहीं सुनी थी और सभी लोग बाघ और जंगली कुत्तों के बीच हुई लड़ाई के मेरे विवरण में बहुत रुचि रखते थे।

इस बार हम सबने अलाव जलाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करने में मदद की और दो-दो घंटे की बारी-बारी से पहरा देने का इंतज़ाम किया। फिर जल्दी खाना खाया, उसके बाद सिगरेट पी और बातें कीं। धीरे-धीरे हमारी बातचीत थमने लगी क्योंकि एक-एक करके हम सबको नींद आने लगी। अभी नौ बजे ही थे, सोने का समय हो गया था। हमने थंगावेलु को पहले दो घंटे पहरा देने के लिए चुना था। हमने जानबूझकर ऐसा किया था, क्योंकि बाद में उसे वैसे भी नींद आ ही जाती। उसके बाद मेरवान की बारी आई, फिर मेरी, डोनाल्ड की और टाइनी की। मेरवान ने टाइनी के साथ बारी बदलने की बहुत कोशिश की, लेकिन टाइनी उससे ज़्यादा चालाक था।

जब मुझे नींद आ रही थी, तभी पहाड़ी के उस पार कहीं से एक बाघ दहाड़ने लगा, जहाँ मैं उस दिन था। मैंने मन ही मन सोचा कि यह उस जानवर का साथी होगा जिसका जंगली कुत्तों ने पीछा किया था और निश्चित रूप से उसे मार डाला था।

जब थंगावेलु ने रात ग्यारह बजे मेरवान को जगाया, तो वह नहीं उठा और उनके बीच हुई बहस ने मुझे परेशान कर दिया। मैंने थंगावेलु से कहा कि वह उस पर ठंडा पानी डाल दे, लेकिन थंगावेलु को लगा कि नौकर का ऐसा व्यवहार गलत समझा जा सकता है। इसलिए मुझे खुद उठकर पानी डालना पड़ा। मेरवान झटके से उठ बैठा

और बहुत नाराज़ था, लेकिन उसने रात एक बजे, जब मुझे जगाने का समय आया, तो ठंडे पानी से अपना बदला लिया। मेरवान ऐसा ही है!

उसने मुझे बताया कि आधी रात के कुछ मिनट बाद उसने एक पैंथर के चीं-चीं करने की आवाज़ सुनी थी, जो ज़ाहिर तौर पर हमारे पीछे पहाड़ी पर काफ़ी दूर थी। फिर उसने मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताई। मुझे जगाने से कुछ ही मिनट पहले, एक पक्षी, जो उसके अनुसार जंगली मुर्गा रहा होगा, ने ज़ोर से चहचहाया और तेज़ी से पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गया। यह काफ़ी नज़दीक से गुज़रा था। मेरवान ने कहा कि वह इस घटना का ज़िक्र करना लगभग भूल ही गया था; उसे लगा कि वैसे भी यह कोई खास बात नहीं है!

जब वह सोने से पहले खुद को ढक रहा था, तो मैंने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मैं जानता था कि मामला वाकई बहुत गंभीर था। एक जंगली मुर्गे को इतना डर क्यों लगना चाहिए कि वह चिल्लाए और उस सुरक्षित जगह को छोड़कर भाग जाए जहाँ वह पिछली शाम आराम कर रहा था, अंधेरे में अपना ठिकाना बदलने और उड़ने का जोखिम उठाए? वे ऐसा तब तक नहीं करते जब तक कि कोई संभावित खतरा बहुत करीब से न गुजरा हो। शायद कोई अजगर भोजन की तलाश में था। शायद कोई जंगली बिल्ली या पेड़ पर रहने वाला सिवेट। शायद कोई पैंथर भी।

जैसे-जैसे मैं इसके बारे में सोचता गया, मुझे यकीन होता गया कि यही वह जानवर है जिसकी हम तलाश कर रहे थे, कि वह जानबूझकर हममें से एक या अधिक लोगों का पीछा करके उन्हें मारने के इरादे से हमारे शिविर में लौट आया है। मैंने आग में एक और लकड़ी डाली ताकि रोशनी बढ़ जाए और मैं देख सकूँ। फिर मैंने अपनी स्थिति बदली और पानी से कुछ ही फीट दूर उगे मुथी के पेड़ की ओर पीठ करके बैठ गया। इससे मैं जंगल की ओर मुंह करके बैठ सका, मेरे साथी मुझसे थोड़ा आगे और दाईं ओर थे, और मैं पीछे से होने वाले हमले से सुरक्षित था। फिर मैं ध्यान से सुनने और देखने के लिए बैठ गया।

दो बजे तक कुछ नहीं हुआ। चट्टानों पर से गिरती नदी की कलकल ध्वनि इतनी तेज़ थी कि मैं जंगल की हल्की आवाज़ें नहीं सुन पा रहा था। एक मछली ज़ोर से पानी में गिरी, उसके बाद उससे भी ज़ोरदार छपछपाहट हुई, शायद कोई बड़ी मछली, या फिर कोई मगरमच्छ पहली मछली का पीछा कर रहा हो। नदी के दूसरे किनारे पर एक बगुला दर्द भरी आवाज़ में रोया, और तारों से जगमगाते आसमान की हल्की रोशनी में

एक काली परछाई ने मेरा ध्यान खींचा: एक विशाल सींग वाला उल्लू, जो जंगलों में ही पाया जाता है और खरगोशों समेत छोटे स्तनधारियों को खाता है।

तभी मुझे एक हल्की सी सरसराहट और खुरदरी आवाज़ सुनाई दी। बहते पानी की तेज़ आवाज़ के कारण मैं उसे ठीक से समझ नहीं पाया। आवाज़ रुकी और फिर दोबारा सुनाई दी, बिल्कुल पास से, मेरे सोए हुए साथियों से थोड़ी दूर झाड़ियों के एक झुंड के पास से, जहाँ जंगल सबसे घना और अंधेरा था। मैंने वह आवाज़ पहले भी सुनी थी और उसे तुरंत पहचान लिया।

तब मुझे पता चला कि पैंथर मादा उस झाड़ी में छिपी हुई थी जो डॉन और बाकी लोगों के सोने की जगह के सबसे करीब थी, और वह हमले के लिए हिम्मत जुटा रही थी। कुछ ही सेकंड में वह उन पर झपटने के लिए तैयार हो जाएगी।

मुझे वह दिखाई नहीं दी। बस घनी झाड़ियों का अंधेरा छाया हुआ था। अगर मैं अब उस अंधेरे पर टॉर्च की रोशनी डालता, तो शायद पैंथर दिख जाती या शायद नहीं —यह इस बात पर निर्भर करता कि वह किसी झाड़ी या पौधे के पीछे छिपी है या नहीं। अगर वह किसी झाड़ी या पौधे के पीछे छिपी होती, तो मुझे अच्छी तरह पता था कि रोशनी देखते ही वह गायब हो जाएगी। इसलिए मैंने थोड़ा और इंतजार करने का फैसला किया।

लेकिन पैंथरेस ने अब और इंतजार न करने का फैसला किया। उसने तुरंत कार्रवाई की।

अपनी प्रजाति के आक्रमणकारियों की तरह छोटी, तीखी दहाड़ें निकालते हुए, वह झाड़ियों से उछलकर सो रहे आदमियों से कुछ ही फीट की दूरी पर जा गिरी। अगले ही पल वह उनके बीच होगी।

मैं इसी का इंतजार कर रहा था और सौभाग्य से राइफल मेरे कंधे पर थी और मेरा अंगूठा लाइट स्विच पर था।

टॉर्च की रोशनी अंधेरे को चीरती हुई चाकू की तरह चमकी और पैंथर की धधकती आँखों को प्रतिबिंबित किया। वह एक पल के लिए झिझकी, पूरी तरह से आश्चर्यचकित और रोशनी से चकाचौंध हो गई। मैं ट्रिगर दबाने ही वाला था कि एक जोरदार धमाका हुआ, जिसके तुरंत बाद दूसरी गोली चली।

'मैंने आपसे पहले ही कर दिया, पिताजी!' डॉन चिल्लाया, जैसे ही वह जागा और जमीन पर लेटे-लेटे ही अपनी दो गोलियां चलाकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

फिर बाकी सोए हुए लोग जाग गए, और उनका आश्चर्य वाकई हास्यास्पद था। थंगावेलु तो बस चिल्ला उठा। टिनी एकदम सीधा बैठ गया और आधी नींद में बोला, 'माँ प्यारी!' लेकिन मेरवान तो उनसे भी आगे निकल गया; वह ऐसे लोटपोट होने लगा जैसे उसे खुद गोली लग गई हो।

फिर उन्होंने मरी हुई पैंथरी को देखा, या यूँ कहूँ कि लगभग मरी हुई। क्योंकि वह अभी भी हांफ रही थी और छटपटा रही थी, जबकि मेरी टॉर्च की रोशनी में उसकी आँखों से जीवन धीरे-धीरे मिटता जा रहा था। वे ठंडी, पानी जैसी नीली हो गईं और स्थिर हो गईं। तब मुझे पता चला कि पैंथरी मर चुकी है।

हम सब उसके चारों ओर जमा हो गए और उसका निरीक्षण किया। एक बेहतरीन मादा। सच कहूँ तो उस रात मेरा मन काम में नहीं लग रहा था और उसकी कहानी सुनने के बाद से ही उसे पकड़ने में मैंने जो भी भूमिका निभाई, उस पर मुझे पछतावा हो रहा था। मैंने खुद को यह सोचकर दिलासा दिया कि जो करना था वो हो चुका है, और बात वहीं खत्म कर दी, लेकिन डॉन को उसकी बहादुरी के लिए मेरी बधाई दिल से थी, जितना उसने कभी सोचा भी नहीं होगा।

सात

शेर खान और बेट्टामुगलम नरभक्षी*

कई साल पहले, एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश प्रशासक, जो उन दिनों कलेक्टर के नाम से लोकप्रिय थे, ने सलेम जिले में गुथरायन पर्वत श्रृंखला की उत्तरी ढलानों पर 300 एकड़ वनभूमि अधिग्रहित कर ली थी, जहाँ उन्होंने एक शानदार बंगला बनवाया था। उन्होंने इसे पूरी तरह से पत्थर से और एक महल की तर्ज पर बनवाया था।

इस व्यक्ति को जंगल से बहुत प्रेम था और उसने भारी कीमत चुकाकर इसे संरक्षित किया। उसने कंटीली झाड़ियों और लैंटाना के पौधों को काटने के लिए मजदूरों की एक सेना को काम पर लगाया, जो उन वर्षों में दक्षिण भारत के जंगलों को घेरना शुरू कर रहे थे।

तब से लैंटाना तेजी से बढ़ा है और अब हजारों एकड़ आरक्षित वन भूमि को ढक चुका है। वन विभाग सहित विभिन्न सरकारी विभागों ने इस समस्या को जड़ से खत्म करने के व्यर्थ प्रयास किए हैं। विषैले घोल का छिड़काव स्पष्ट रूप से सीमित पैमाने पर ही किया जा सकता है। एक सफेद कीट पाया गया है जो लाखों की संख्या में बढ़ता है; यह लैंटाना की झाड़ियों को ढक लेता है, तने, शाखाओं और सभी पत्तियों को काला कर देता है और शायद एक या दो एकड़ भूमि में उगे सभी लैंटाना को नष्ट कर देता है। फिर कीटों के साथ भी कुछ होता है: वे कुछ ही दिनों में लैंटाना से कुछ विष अवशोषित कर लेते हैं और मर जाते हैं, इस प्रकार लैंटाना अंततः विजयी हो जाता है।

जंगल में समय-समय पर आग लगती रहती है, खासकर गर्मी के मौसम में। लैंटाना के पौधे जलकर राख हो जाते हैं, लेकिन बारिश आने पर अपनी ही राख से पोषित होकर फिर से उग आते हैं और फलते-फूलते हैं।

वैसे, इस पौधे की कुछ ताज़ी कुचली हुई पत्तियों का रस त्वचा पर खरोंच या घाव पर मलने से घाव पूरी तरह से भर जाता है। यह आयोडीन टिंचर जितना ही प्रभावी है, और इसका अतिरिक्त लाभ यह है कि इससे जलन नहीं होती।

लेकिन ब्रिटिश कलेक्टर और उनकी 300 एकड़ ज़मीन की बात पर लौटते हैं: उन्होंने अपनी जगह का नाम बेट्टामुगलम एस्टेट रखा, जो स्थानीय उप-तालुक क्षेत्र का नाम था, और अपने पत्थर के घर को 'जंगली किला' कहा। गला घोंटने वाली लैंटाना झाड़ियों से मुक्त होने के बाद, प्राकृतिक जंगल तेज़ी से बढ़ने लगा। पेड़ों के बीच की खुली जगहों में उगने वाली घास ने बाइसन और हिरणों को आकर्षित किया, जो बदले में अपने प्राकृतिक दुश्मनों, बाघों, तेंदुओं और उनसे भी ज़्यादा खूंखार जंगली कुत्तों को ले आए।

फिर हालात बदलने लगे। ब्रिटिश कलेक्टर की मृत्यु हो गई और जंगली महल सहित बेट्टामुगलम एस्टेट को एक एंग्लो-इंडियन ने खरीद लिया, जिसके पास पूर्व मालिक के स्तर तक इसे बनाए रखने के साधन नहीं थे। एक बार फिर लैंटाना घास के मैदानों पर अतिक्रमण करने लगी, और परिणामस्वरूप बाइसन और हिरणों की संख्या कम हो गई। लेकिन मांसाहारी जानवर वहीं रहे और उनकी भूख बढ़ती गई।

फिर उस एंग्लो-इंडियन की भी मृत्यु हो गई, और कोई कानूनी मालिक सामने नहीं आया। जंगली किला जर्जर अवस्था में पहुँच गया। गाँव वाले चाँदनी रातों में बैलगाड़ियों में आते और दीवारों को तोड़कर ग्रेनाइट के तराशे हुए पत्थर चुरा लेते थे। क्योंकि ये पत्थर, विशेषकर जब मुफ्त में मिल जाते थे, तो उनकी झोपड़ियों की दीवारें बनाने के लिए बेहतरीन सामग्री उपलब्ध कराते थे।

इस समय तक बाइसन गायब हो चुके थे, और हिरणों के झुंड लगभग लुप्त हो गए थे। हिरणों को खाने के लिए इकट्ठा होने वाले बाघ, तेंदुआ और जंगली कुत्ते भी उनके पीछे-पीछे चले गए। केवल जंगली मुर्गे, चिड़िया और मोर ही बचे थे जिनकी संख्या बढ़ती जा रही थी, क्योंकि लैंटाना की घनी झाड़ियाँ उन्हें आदर्श आश्रय प्रदान करती थीं। अन्यथा, पूरा इलाका वीरान सा लग रहा था। कभी-कभार कोई बाघ या तेंदुआ उस रास्ते से गुजरता, इस उम्मीद में कि कहीं कोई चित्तीदार हिरण या जंगली भेड़ न मिल जाए, लेकिन आमतौर पर उसकी उम्मीदें व्यर्थ ही पूरी होतीं। वह आमतौर पर बहुत भूखा होता था, लेकिन उसे कुछ भी खाने को नहीं मिलता था।

अब, यहाँ से लगभग चार मील दूर अय्यूर गाँव में, लगभग पच्चीस वर्ष का एक व्यक्ति रहता था, जिसका नाम गुरप्पा था। गुरप्पा ने अपने जाति और सामाजिक स्थिति के हिसाब से बहुत देर से विवाह किया था, क्योंकि लड़कों के लिए सामान्य आयु सत्रह से अठारह वर्ष और लड़कियों के लिए तेरह से चौदह वर्ष होती है। लेकिन

गुरप्पा के पिता अपने बेटे का विवाह जल्दी नहीं करवा सके, क्योंकि उनका परिवार गरीब था, और हर संभावित दुल्हन के माता-पिता अपनी बेटी का विवाह एक साधारण से देहाती, और वह भी इतने गरीब पिता के बेटे से करने से मना कर देते थे। लेकिन अंततः एक लड़की मिल ही गई। मुझे बताया गया कि वह जन्म से ही बहरी थी और लंगड़ाकर चलती थी। संभवतः इन्हीं कमियों के कारण उसके माता-पिता ने गुरप्पा से विवाह के लिए सहमति दी होगी, क्योंकि वह बहुत गरीब था।

अब एक और समस्या सामने आ गई। दूल्हे के पास घर नहीं था। उसके पिता ने वह झोपड़ी बेच दी थी जिसमें परिवार रहता था। भारत में भी ऐसा नहीं हो सकता कि कोई दूल्हा शादी के दिन अपनी दुल्हन को बिना घर के घर लेकर आए!

इसलिए गुरुप्पा ने जल्दी से एक किला बनाने का फैसला किया। सच है, उसके पास पैसे नहीं थे, लेकिन सौभाग्य से जंगली किले के काफी सारे पत्थर अभी भी बचे हुए थे, हालांकि उनमें से सबसे अच्छे और सबसे बड़े पत्थर पहले ही चोरी हो चुके थे।

चांदनी रात का इंतजार करने की बजाय, होने वाले दूल्हे ने गांव के मुखिया से उसकी गाड़ी उधार देने की विनती की। फसल कटाई के समय गुरुप्पा से मुफ्त मजदूरी लेने की दीर्घकालिक नीति को ध्यान में रखते हुए, गांव के मुखिया ने सहमति दे दी।

जब कोई अपराध करने निकलता है, तो गवाहों का न होना ही बेहतर होता है। गुरप्पा यह बात जानता था, इसलिए दोपहर का भोजन करने के बाद वह अकेले ही निकल पड़ा, उसका इरादा था कि वह पत्थर इकट्ठा करके सूर्यास्त तक वापस आ जाएगा। अकेले काम करना हमेशा ही बहुत कठिन होता है, जैसा कि उसे जल्द ही पता चल गया। ढहती दीवारों से पत्थरों को निकालने के लिए उसने जो छोटी सी छड़ लाई थी, उससे पत्थरों को निकालना और हर पत्थर को उठाकर बैलगाड़ी पर लादना, बहुत ऊर्जा और समय लेता था, जिसके लिए उसे कई बार आराम करना पड़ा। सूरज पश्चिम की पहाड़ियों के पीछे डूब चुका था और जिस रेतीले रास्ते से बैलगाड़ी आई थी, उस पर चिड़ियाएं चहचहाने लगी थीं, तभी गुरप्पा ने आज का काम यहीं खत्म करने और पहली खेप लाने का फैसला किया। कल वह किसी और की बैलगाड़ी उधार लेकर दूसरी खेप लाएगा।

इसलिए उसने टूटे हुए बांस के टुकड़े से उन दुबले-पतले बैलों को पीटा। वे उदास होकर घर की ओर चलने लगे, क्योंकि उस अजनबी ने, जो उनका मालिक नहीं

था, उन्हें दिन भर न तो खाना खिलाया था और न ही पानी पिलाया था। गुरप्पा आराम से उनके पीछे-पीछे चल रहा था, उसका मन उस पल शांत था। अब तक दूल्हे को परेशान करने वाली कोई बात नहीं हुई थी। उसे कोई ऐसी आवाज नहीं सुनाई दी थी जिससे उसे बेचैनी हो।

उसे देखकर घात लगाए बैठे बाघ को बहुत भूख लगी होगी, शायद भुखमरी की कगार पर ही होगा, तभी उसने ऐसा व्यवहार किया। संभवतः वह बीमार या घायल था और अपने प्राकृतिक शिकार का शिकार करने में असमर्थ था। निश्चित रूप से वह आदमखोर बाघ नहीं था, क्योंकि इस क्षेत्र में काफी समय से किसी बाघ ने किसी को नहीं मारा था।

बैल गाड़ी को बबूल के पेड़ के पास से खींचकर ले गए, जिसका निचला आधा हिस्सा लैंटाना से ढका हुआ था। बाघ शायद उसी लैंटाना के भीतर छिपा हुआ था, क्योंकि वहीं से उसने छलांग लगाई थी। जब मैं एक वन क्षेत्र अधिकारी, कई गार्ड, पुलिस उप-निरीक्षक और एक कांस्टेबल के साथ चौबीस घंटे बाद घटनास्थल पर पहुँचा, तो लैंटाना की कुछ शाखाएँ अभी भी जानवर के भार से झुकी हुई थीं, क्योंकि वह गुरुप्पा की प्रतीक्षा में घात लगाए बैठा था।

शायद गुरुप्पा को तब तक पता ही नहीं चला कि क्या हुआ था, जब तक कि एक बाघ उन्हें उठाकर ले जाने लगा। तब उन्होंने ज़रूर संघर्ष किया होगा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए होंगे, क्योंकि बैल डर गए और भारी माल से लदी गाड़ी को खींचते हुए भागने लगे। वे ज़्यादा दूर नहीं जा पाए, क्योंकि आगे रास्ते में एक मोड़ था, जहाँ रास्ता कुछ निचले इलाके से होकर गुज़रता था। मोड़ लेते ही गाड़ी रास्ते से उतरकर खाई में जा गिरी और बैलों को भी अपने साथ ले गई।

चमत्कार अक्सर होते हैं, बैलगाड़ियों के साथ भी। बैलगाड़ी को काफी नुकसान पहुंचा था, लेकिन किसी भी बैल को कोई चोट नहीं आई। जुए से मुक्त होकर, वे डरे हुए लेकिन सुरक्षित रूप से, सूरज डूबने के काफी देर बाद, ऐयूर वापस लौट आए।

ऐयूर गांव के पास ही वन विभाग का एक विद्यालय है, जहां विभाग में कार्यरत अधिकारी और आवश्यक परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके छात्र वन विज्ञान का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। विद्यालय में एक रेंज अधिकारी, दो या तीन वरिष्ठ वन अधिकारी और कई गार्ड एवं वॉचर तैनात रहते हैं, जो नर्सरी और विभागीय भवनों की देखरेख करते हैं।

मुखिया इस बात से घबरा गया कि उसका साथी बिना गाड़ी के लौट आया था। उसने सोचा कि किसी हाथी ने हमला करके गाड़ी को तोड़ दिया होगा और इस प्रक्रिया में गुरप्पा भी मारा गया होगा। आधे गाँव के लोग उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, इसलिए उसने रेंज ऑफिसर से जंगल में खोज दल भेजने की अनुमति मांगी। अनुमति तुरंत मिल गई, लेकिन ग्रामीणों में स्वेच्छा से मदद करने की कोई इच्छा नहीं थी। आखिरकार चार-पाँच लोग मदद के लिए राजी हो गए, लेकिन तब तक अंधेरा हो चुका था। दिन के उजाले में भी किसी जंगली हाथी को, जिसने किसी आदमी को मार डाला हो, देखना कोई भी ग्रामीण नहीं चाहेगा। घोर अंधेरे में इस तरह के मुठभेड़ के बारे में सोचना भी असंभव है। इसलिए खोज अगले दिन सुबह तक के लिए टाल दी गई। मुखिया ने अपनी गाड़ी के बारे में सोचते हुए पूरी रात जागकर बिताई होगी, और गुरप्पा को अपनी बदकिस्मती का कारण मानते हुए उसे कोसता रहा होगा।

अगले दिन सुबह-सुबह खोज दल निकल पड़ा। उन्हें खुद के तल में गाड़ी ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा, लेकिन गुरुप्पा का कोई निशान नहीं मिला। नरम रेत में गाड़ी के पहियों और बैलों के बने निशानों से पता चलता है कि जानवर तेज़ी से मोड़ पर दौड़े थे; इसीलिए यह दुर्घटना हुई। आखिर उन्होंने ऐसा क्यों किया?

अब भी उन्हें शक था कि इसमें हाथी का हाथ है, इसलिए ग्रामीणों ने पीछे मुड़कर देखा और जल्द ही उन्हें असली कारण पता चल गया। पूरी कहानी पगडंडी की सूखी, मुलायम रेत पर खुदी हुई थी। वहाँ खून था, बाघ के पैरों के निशान थे, और शिकार के किसी हिस्से के ज़मीन पर घिसटने का एक स्पष्ट निशान था। तब उन पर भय छा गया। एक हिंसक हाथी का सामना करना वैसे भी खतरनाक था। लेकिन वे संख्या में बहुत थे और एक हाथी से इतनी बड़ी टोली पर हमला करने से पहले हिचकिचाने की उम्मीद की जा सकती थी। लेकिन आदमखोर बाघ ऐसा नहीं कर सकता था। वह किसी भी क्षण, कहीं से भी, भयानक परिणाम लेकर प्रकट हो सकता था।

बिना और देरी किए समूह अय्यूर लौट गया। गुरुप्पा की मृत्यु निर्विवाद थी। उसे खोजने से क्या लाभ हो सकता था?

संयोगवश, उस दिन मैं शिवानीपल्ली में डेरा डाले हुए था। यह छोटा सा गाँव अय्यूर से लगभग पाँच मील पश्चिम में स्थित है। यह मेरी पसंदीदा जगह है, और बैंगलोर से पचास मील से कुछ अधिक दूरी पर होने के कारण, मैं अक्सर सप्ताहांत में

वहाँ जाता हूँ। संयोगवश, यह उस स्थान को भी चिह्नित करता है जहाँ इस क्षेत्र में अब तक देखे गए एकमात्र काले पैंथर का शिकार किया गया था, जिसका विस्तृत विवरण एक अन्य कहानी में दिया गया है।*

शिवानीपल्ली का वन रक्षक, जो अपने वरिष्ठ अधिकारी, रेंज ऑफिसर से मिलने ऐयूर गया था, दोपहर के करीब लौटकर मुझे बताया कि दुर्भाग्यपूर्ण दूल्हे, गुरप्पा के साथ क्या हुआ था। खबर सुनते ही मैं टॉर्च और स्वेटर लेकर, जेब में सूखे बिस्कुट और रात के खाने के लिए चाय की थर्मस लेकर ऐयूर के लिए निकल पड़ा, ताकि देरी होने पर काम आ सके।

रेंज अधिकारी ने पहले ही उत्तर में आठ मील दूर स्थित छोटे से कस्बे डेनकनिकोटा में वन विभाग के मुख्यालय को सूचना दे दी थी, इसलिए मेरे पहुंचने के कुछ ही समय बाद पुलिस उप-निरीक्षक अपनी मोटरसाइकिल पर एक कांस्टेबल को पीछे बैठाकर वहां पहुंच गए। इस प्रकार, दो पुलिस अधिकारी, रेंज अधिकारी, कुछ गार्ड और मैं उस बबूल के पेड़ की तलहटी में स्थित लंतना की झाड़ियों में पहुंचे, जहां से लगभग चौबीस घंटे पहले बाघ ने दुर्भाग्यपूर्ण गुरप्पा पर हमला किया था, जब वह चोरी के पत्थरों से लदी बैलगाड़ी के पीछे चल रहे थे। इस कहानी की प्रस्तावना, जैसा कि मैंने इसे बताया है, मैंने पहले ही दोनों अधिकारियों और उनके सहायकों के साथ हुई बातचीत के टुकड़ों से जोड़-तोड़ कर तैयार कर ली थी। पुलिस के सब-इंस्पेक्टर, जो ब्राह्मण और भाग्यवादी थे, ने कई बार पुराने ब्रिटिश कलेक्टर (जो बहुत पहले मर चुके थे और बेट्टामुगलम एस्टेट और जंगली कैसल के मालिक थे) और आज के दूल्हे गुरप्पा (जिसके पास घर नहीं था और जो घर बनाने की कोशिश कर रहा था) के बीच भाग्य के जाल में संबंध की ओर इशारा किया। मुझे उनकी बात पूरी तरह समझ नहीं आई, इसलिए मैंने चुटकी लेते हुए कहा कि शायद इस बात में भी कुछ सच्चाई हो कि भाग्य ने हालात को भांप लिया हो और मरे हुए को लूटने वाले को सज़ा देने का फैसला किया हो। मैंने यह मज़ाक में कहा था, लेकिन मेरी बात को लोगों ने इतनी गंभीरता से ले लिया, यह देखकर मैं हैरान रह गया। अंधविश्वासी ब्राह्मण और थोड़े घबराए हुए रेंज ऑफिसर ने मेरी बात को पूरी तरह मान लिया।

गुरुप्पा के अवशेषों की खोज करने में किसी की दिलचस्पी नहीं थी।

जैसा कि मैंने बताया, मुझे लैंटाना झाड़ी में वह जगह मिल गई जहाँ बाघ अपने शिकार पर झपटने से पहले छिपा हुआ था। घसीटने का निशान अभी भी हल्का-हल्का

दिखाई दे रहा था, हालाँकि रात भर हवा के चलने और रेत, घास और पत्तियों के हिलने-डुलने तथा चींटियों और अन्य कीड़ों की गतिविधियों के कारण वह काफी हद तक मिट गया था।

हालांकि, हम लगभग सौ गज तक उसका पीछा कर पाए, तभी अचानक हमारी खोज समाप्त हो गई। यहाँ एक 'हवाई जहाज' का पेड़ उग रहा था—जिसे स्थानीय तमिल निवासी इस नाम से जानते थे क्योंकि यह अपने बीजों को एक अद्भुत और अनोखे तरीके से गिराता है। प्रत्येक बीज दो तीन इंच लंबे पत्तों जैसे ब्लेड के जोड़ पर स्थित होता है, जो बिल्कुल हवाई जहाज के दोहरे प्रोपेलर के लघु रूप जैसे दिखते हैं। ये ब्लेड मूल पेड़ से गिरते हैं और हवा के साथ घूमते हुए बीज सहित अविश्वसनीय दूरी तक उड़ते हैं, फिर जमीन पर गिरते हैं। इस पेड़ की छाया में घास अभी भी हरी थी, और इस घास से मानो हमें बुला रहा हो, एक मानव भुजा और हाथ निकला हुआ था, जिसकी पाँचों उंगलियाँ फैली हुई ऊपर की ओर इशारा कर रही थीं।

आखिरकार हमें गुरप्पा मिल ही गया—उसका जो भी अवशेष बचा था!

आश्चर्य की बात यह थी कि उसके शरीर के ऊपरी हिस्से, छाती से सिर तक, अछूते थे। एक हाथ ऊपर की ओर फैला हुआ था, जबकि दूसरे हाथ की उंगलियां मुंह में ठूंसी हुई थीं, मानो चीख को दबाने की कोशिश कर रही हों। आंखों के गड्ढे खाली थे, क्योंकि काली चींटियां पहले ही आंखों की पुतलियों को खा चुकी थीं। फिर लाल चींटियां आईं, और अब वे चेहरे और त्वचा पर झुंड बनाकर फैल गईं। कई जगहों पर काली बाहरी त्वचा खा ली गई थी, जिससे सफेद और लाल मांस के धब्बे दिखाई दे रहे थे, जो अब नीचे सड़ रहे थे। लकड़बग्घे और सियार ने अब तक इन स्वादिष्ट हिस्सों को क्यों नहीं छुआ था, इसका कारण आसानी से समझा जा सकता था। लाल चींटियां अपने आक्रामक स्वभाव और दर्दनाक डंक के लिए कुख्यात हैं।

लेकिन गुरप्पा के शरीर का छाती के नीचे लगभग कुछ भी नहीं बचा था। बाघ पेट भर खा चुका था, जबकि रात के समय बचे हुए मांसाहारी जानवर उसे खा गए थे।

'हवाई जहाज' के पेड़ की पत्तियों ने गिद्धों से वह सब कुछ छिपा दिया था जो बाघ और अन्य लोग छोड़ गए थे, क्योंकि यदि ये पक्षी हमसे पहले आ जाते, तो कुछ भी नहीं बचता।

शाम की खामोश हवा में मौत और सड़न की दुर्गंध फैली हुई थी। आसपास की घास की टहनियों पर असंख्य मक्खियाँ बैठी थीं, जिन्हें लाल चींटियों की सेना ने सड़े

हुए मांस पर बैठने से रोक रखा था, क्योंकि चींटियाँ पहले ही उनके रिश्तेदारों को भगा चुकी थीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो दोनों प्रजातियों के बीच भयंकर युद्ध हुआ हो, क्योंकि गुरप्पा के सिर और भुजाओं के चारों ओर एक गज के दायरे में दोनों ही प्रकार के बड़ी संख्या में मृत शरीर बिखरे पड़े थे। बीच-बीच में, दोनों विरोधी सेनाओं में से किसी एक का बुरी तरह घायल सदस्य खुद को घसीटते हुए दूर ले जाने की कोशिश करता था।

बाघ बचे हुए थोड़े से भोजन को खाने के लिए निश्चित रूप से वापस नहीं आएगा। उसने उसे पहले क्यों छोड़ा था, यह समझ से परे था; लेकिन वह लाल चींटियों से दूर ही रहेगा।

सब-इंस्पेक्टर ने अपने अधीनस्थ को शव को हटाने का आदेश दिया। फिर उसने एक अनावश्यक रूप से लंबा-चौड़ा बयान लिखा, जिस पर मुझे गवाह के रूप में हस्ताक्षर करने को कहा गया। जब हम अय्यूर स्थित वन विश्राम गृह लौटे, तब तक अंधेरा हो चुका था। रेंज अधिकारी ने मुझे रात के लिए अपने बंगले में ठहरने की पेशकश की, लेकिन जेब में रखे सूखे बिस्कुटों के ख्याल ने मुझे शिवानीपल्ली स्थित अपने शिविर में लौटने और वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहे भुने हुए मांस का आनंद लेने का निर्णय लेने पर मजबूर कर दिया। मेरे पास टॉर्च थी, और आख़िरकार बाघ आदमखोर तो नहीं होता।

तो मैंने चलना शुरू किया, जिससे दोनों अधिकारी निराश हो गए। उन्होंने मेरे पीछे से चेतावनी देते हुए चिल्लाया कि मैं शायद कभी शिवानीपल्ली न पहुँच पाऊँ। रास्ता ज्यादातर ढलान वाला था, लैंटाना, झाड़ियों और बिखरे हुए बबूल के पौधों के बीच से गुजरता हुआ, जैसे-जैसे नीचे का इलाका आता गया, पेड़ ऊँचे होते गए और उनके बीच भारी बांस के झुंड उग आए। अंधेरा घना हो गया, जिसमें से मेरी टॉर्च की रोशनी केवल एक पतली सी किरण की तरह निकल रही थी।

अचानक मुझ पर एक गहरी बेचैनी छा गई—बल्कि, एक तरह का जानलेवा डर। समझ नहीं आ रहा था क्यों? मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी, न ही जंगल में हिरणों या अन्य जीवों की कोई चेतावनी भरी चीख सुनाई दी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। बस मेरे रबर के जूतों की हल्की चरमराहट सुनाई दे रही थी, और कभी-कभार टहनी के टूटने या पत्ते के सरसराने की आवाज़ आ रही थी जब मैं उस पर पैर रख रहा था।

मैं अचानक रुक गया और पीछे मुड़ गया, मुझे पूरी उम्मीद थी कि बाघ मेरा पीछा कर रहा होगा। लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया, जुगनू की एक हल्की सी चमक भी नहीं। कुछ भी सुनाई नहीं दिया; यहाँ तक कि किसी झींगुर की चहचहाहट भी नहीं।

तब मुझे समझ आया कि मैं इतना डरा हुआ क्यों था: यह घोर अकेलेपन का डर था। आस-पास कोई भी जीवित प्राणी नहीं था जो मेरे साथ जो कुछ हुआ उसे देख सके। कुछ भी नहीं, और कोई भी मदद करने वाला नहीं। और, हालांकि मैं उसे उस अंधकार में देख नहीं पा रहा था, न ही उसकी आवाज़ सुन पा रहा था, उस पूर्ण सन्नाटे में भी, मुझे बाघ की उपस्थिति का उतना ही यकीन था जितना कि खुद की उपस्थिति का।

मैंने पाया है कि जंगल में घोर खतरे के समय, मनुष्य की सहज प्रतिक्रिया दो तरह से होती है। कभी-कभी, हमलावर हाथी की चिंघाड़ या बाघ या तेंदुआ की कर्कश दहाड़, पीड़ित को तुरंत भागने पर मजबूर कर देती है, या फिर वह भय से इतना व्याकुल हो जाता है कि एक ही स्थान पर जड़वत जम जाता है और हिलने-डुलने में असमर्थ हो जाता है। वास्तव में, पीड़ित के लिए यह सोचना तो दूर, स्पष्ट रूप से यह सोचना भी दुर्लभ है कि उसे उस परिस्थिति में क्या करना चाहिए, या क्या कर सकता है। सोचने का समय ही नहीं होता।

लेकिन इस बार मेरे सामने न तो कोई चीखता हुआ हाथी था, न ही कोई दहाड़ता हुआ बाघ। बस सन्नाटा था, और यह पक्का एहसास कि आदमखोर बाघ वहीं मौजूद है। और मेरे मन में जो सहज प्रतिक्रिया हुई, वह थी भागने की, और जितनी तेज़ी से भाग सकता था, उस भयानक जगह से दूर भागने की। मुझे खुद को रोकना बहुत मुश्किल हो रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैंने भागना शुरू कर दिया, तो बाघ यही चाहेगा। क्योंकि तब वह हमला कर देगा। सभी बाघ, आदमखोर बाघों समेत, जानते हैं कि हर दूसरा प्राणी उनसे डरता है। वे अपने शिकार के दिलों और दिमाग में दहशत पैदा करने के आदी होते हैं, और इसी ज्ञान से उन्हें वह आत्मविश्वास मिलता है जो उन्हें इतनी सफलता से शिकार करने में सक्षम बनाता है।

उस पल मुझे समझ आ गया कि बाघ से बचने का एकमात्र उपाय यही है कि मैं कुछ और ही करूं। वह कहीं घात लगाकर बैठा था, मुझे देख रहा था और मेरा इंतज़ार कर रहा था। शायद वह मेरे पीछे था, शायद आगे, या हो सकता है किसी एक तरफ,

मुझ पर हमला करने के अवसर की तलाश में। अगर मेरी टॉर्च और अंधेरे को चीरती हुई तेज़ रोशनी न होती, तो वह बहुत पहले ही हमला कर चुका होता। इससे वह घबरा गया था। अगर मैं चाहता कि वह मुझ पर हमला करे, तो मुझे बस टॉर्च बुझाकर भागना था। फिर वह आ जाता।

मैंने तुरंत सोचा। और मैं एक निश्चित गति से चलता रहा, टॉर्च को पीछे, दोनों ओर और फिर आगे की ओर चमकाता रहा। रास्ता संकरा था, ज़्यादा से ज़्यादा छह फीट से ज़्यादा चौड़ा नहीं था।

रास्ता एक मोड़ पर मुड़ा और मेरे सामने रोशनी में बाईं ओर लगभग सौ गज की दूरी पर एक चट्टान दिखाई दी। यह एक ढलान वाली चट्टान थी और लगभग छह से आठ फीट ऊंची लग रही थी। मुझे लगा कि अगर मुझे पर्याप्त लंबी छलांग लगाने का मौका मिले तो मैं आसानी से दौड़कर उस पर चढ़ सकता हूँ। क्योंकि मेरे मन में एक विचार आया था। यह आदमखोर को प्रकट होने के लिए लुभाने की कोशिश करने के लिए एक उपयुक्त जगह थी।

मैं इस विचार पर मन ही मन सोचता रहा और आगे बढ़ता रहा। सौ गज की दूरी टकराव का जोखिम उठाने के लिए बहुत ज़्यादा थी। दौड़ते हुए बाघ की गति अद्भुत होती है और उसे देखकर ही विश्वास किया जा सकता है। लेकिन जब चट्टान पचास गज दूर रह गई, तो मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया।

अपनी राइफल को ठीक से लोड करने और चट्टान की स्थिति को अपने दिमाग में स्पष्ट रूप से तय करने के बाद, मैंने अचानक मशाल बुझा दी और जितनी तेजी से और जितनी ताकत से हो सकता था, भागा।

जब टॉर्च बुझी, तो अंधेरा इतना घना था कि मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। इसीलिए मैंने टॉर्च बुझाने और दौड़ना शुरू करने से पहले चट्टान की ओर मुंह करके उसकी स्थिति को ध्यानपूर्वक निर्धारित किया था।

बाघ को होश में आने और यह समझने में कुछ सेकंड लग गए कि उसके शिकार ने वही किया है जिसका वह इंतज़ार कर रहा था। जैसे ही मैं भागा, मैं सोचने ही लगा था कि शायद वहाँ कोई बाघ था ही नहीं और मेरी घबराहट ने मुझे मूर्ख बना दिया था, तभी पीछे से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और आदमखोर ने हमला कर दिया। मैंने वह दहाड़ सुनी, लेकिन मैं और तेज़ नहीं भाग सकता था।

जब मैं चट्टान पर पहुँचा तो बाघ से बस कुछ ही कदम आगे था, फिर मैं ढलान

पर दौड़ पड़ा। तभी मैं तेज़ी से घूमा, राइफल को कंधे पर उठाया और अपने बाएँ अंगूठे से टॉर्च का स्विच एक साथ दबा दिया। आदमखोर बाघ चट्टान के आधार तक पहुँच चुका था और ऊपर चढ़ने के लिए झुक रहा था, तभी राइफल लगभग एकदम नज़दीक से चल गई। धमाके की गड़गड़ाहट के साथ ही वह पीछे की ओर पलट गया, जबकि मैंने .405 राइफल के अंडरलीवर को चलाकर दूसरी गोली ब्रीच में डाल दी। फिर मैंने ट्रिगर दबा दिया।

कुछ नहीँ हुआ।

कुछ ही क्षण बाद, एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ बाघ बाईं ओर उछला और वहाँ उगी लंबी घास में गायब हो गया। मैंने फिर से अंडरलीवर को काम में लाते हुए, जो कारतूस गलत दिशा में चला गया था उसे बाहर निकाला और अगली गोली उसी स्थान पर दागी जहाँ बाघ अभी-अभी गायब हुआ था।

जब मैंने पहली गोली चलाई तो मैं बहुत डरा हुआ था, लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि दूसरी गोली की गूंज गुलहट्टी पहाड़ी की ढलानों से टकराकर गूंज रही थी, जिसे मैं अंधेरे में देख नहीं पा रहा था, लेकिन जो उस चट्टान से एक मील के भीतर है जिस पर मैं खड़ा था।

गुर्राहट बंद हो गई थी। क्या मेरी दूसरी गोली निशाने पर लगी थी? क्या बाघ मेरी पहली गोली के असर से गिर पड़ा था? शायद दोनों गोलियों का असर हुआ था। या फिर मेरा निशाना पूरी तरह चूक गया था? इससे भी बुरा, शायद मैंने उस जानवर को सिर्फ घायल किया था।

जिस झाड़ी में बाघ गायब हुआ था, उस पर टॉर्च की रोशनी अभी भी पड़ रही थी। मैं चट्टान पर बैठ गया ताकि अपने बिखरे हुए होश संभाल सकूँ और अपनी साँसों पर काबू पा सकूँ। मुख्य रूप से, सोचने की कोशिश कर रहा था। तभी मुझे एहसास हुआ कि मैं बाल-बाल बचा था। अगर बाघ मेरे ठीक पीछे, या मेरे अगल-बगल या आगे होता, तो चट्टान तक पहुँचने से पहले ही वह मुझे रोक सकता था। इसके अलावा, अगर मेरी राइफल की मैगज़ीन में जो कारतूस चला था, वह एक नंबर आगे होता, तो वह अहम मौके पर नाकाम हो जाता और आदमखोर बाघ निश्चित रूप से अपनी छलांग पूरी कर लेता।

जब मैं थोड़ा शांत हुआ तो सोचने लगा कि उस आदमखोर का क्या हुआ होगा। यह बात समझ से परे थी कि इतनी नज़दीक से गोली चलाने पर भी मैं उसे चूक गया।

फिर मुझे याद आया कि मैं तेज़ी से दौड़ रहा था और आखिरी क्षण में चट्टान पर चढ़ा था। डर, उत्तेजना और थकान के कारण मेरी साँसें तेज़ चल रही थीं और शायद इसी वजह से मैंने अनजाने में ट्रिगर दबा दिया, जिससे गोली पूरी तरह चूक गई या शायद मैंने जानवर को सिर्फ़ घायल किया।

उस अंधेरे में उसका पीछा करना मेरे लिए नामुमकिन था। अगर मैं उसे देख नहीं पाता, तो वह डरकर पूरी तरह भाग जाता। अगर वह घायल हो जाता, तो अगर मैं शिवानीपल्ली की ओर अपना रास्ता जारी रखता, तो आदमखोर सांप के दोबारा मेरा पीछा करने की संभावना बहुत कम थी। इसलिए कुछ देर बाद मैंने वहीं रुकने का फैसला किया और अगली सुबह वापस आकर उसके निशानों का पता लगाने का सोचा।

मैं बिना किसी घटना के शिवानीपल्ली पहुँच गया और अपने छोटे से तंबू में लेट गया, अभी भी सोच रहा था कि अगले दिन क्या करना है। तभी मेरी जेब में रखे सूखे बिस्कुटों ने मुझे भूख का एहसास दिलाया और मैं चाय बनाने और मांस के डिब्बे को खोलने के लिए उठा, जो इस पूरी घटना का कारण था।

शिवानीपल्ली में कोई पुजारी या आदिवासी ट्रैकर नहीं थे, लेकिन वहाँ शेर खान नाम का एक शख्स था, जिसने एक रंगीन जीवन जिया था और उस समय उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष रही होगी। वह मुसलमान था, शिकार करता था, लकड़ी चुराता था और कई छोटी-मोटी डकैतियों का संदिग्ध आरोपी था, जिनमें डेनकनिकोटा और अनचेटी गांवों में अनाज की बोरियां ले जा रही बैलगाड़ियों को रात में रोककर लूट लिया गया था। डकैती का तरीका जितना सरल था, उतना ही कारगर भी।

समय बचाने के लिए गाड़ियाँ रात में चलती थीं। आम तौर पर, लगभग आधा दर्जन गाड़ियाँ एक के पीछे एक चलती थीं, ताकि उन्हें साथ मिल सके और जंगली जानवरों, विशेषकर हाथियों, और निश्चित रूप से हर जगह मौजूद बुरी आत्माओं से सुरक्षा मिल सके। उस समय तक, राजमार्ग पर लूटपाट की कोई घटना नहीं होती थी।

पुलिस को पहली सूचना पांच बैलगाड़ी चालकों ने दी, जो अंचेटी से डेनकनिकोटा जा रहे थे। घटना के समय वे घाट की सड़क पर थे, अपनी मंजिल से नौ मील दूर। रात के 1 बजे थे और बैल ढलान पर बोझ ढोते हुए ज़ोर लगा रहे थे। हर चालक अपनी-अपनी गाड़ी में बैठा था, लगभग आधा सोया हुआ। अचानक सड़क के अंधेरे में से एक आवाज़ आई। वह कर्कश और तेज़ थी। उन्हें कोई आदमी दिखाई नहीं

दिया, लेकिन आवाज़ ने कहा कि डाकुओं का एक गिरोह सड़क के किनारे छिपा हुआ है। उनके पास बंदूकें भरी हुई हैं और अगर वे आदेश मान लें तो सब ठीक हो जाएगा। फिर उन्होंने आदेश मान लिया। आदेश बहुत सरल थे।

'तुम पाँचों अपनी गाड़ियों से उतर जाओ और पूरा एक मील पैदल वापस चलो। जब तुम दसवें मील के पत्थर पर पहुँच जाओ, तो सुबह बैठ जाना। आग जलाकर सुबह तक वहीं इंतज़ार करना। उजाला होने पर अपनी गाड़ियों में वापस लौट जाना। याद रखना, हममें से कुछ लोग तुम्हारे पीछे-पीछे आएंगे और सुबह तक तुम पर नज़र रखेंगे। अगर तुममें से कोई भी अवज्ञा करने की हिम्मत करेगा, तो उसे बिना किसी चेतावनी के गोली मार दी जाएगी। यह भी याद रखना कि हम वादा करते हैं कि हम तुम्हारी गाड़ियों या जानवरों को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। तुम गरीब लोग हो और हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहते। हमें तो अमीरों का सामान चाहिए, जो तुम्हारी गाड़ियों में रखा है।'

गाड़ीवालों ने बात मान ली। वे शुक्रगुजार थे कि वे बच गए। अगली सुबह तड़के उन्होंने अपनी गाड़ियाँ वहीं खड़ी पाईं जहाँ उन्हें छोड़ा गया था। कुछ खाने-पीने का सामान चोरी हो गया था, लेकिन सारा नहीं। केवल कीमती सामान ही चोरी हुआ था। गिरोह बहुत बड़ा नहीं रहा होगा, वरना वे सब कुछ ले जाते।

डेनकनिकोटा और अनचेटी की ओर जाने वाली अन्य सड़कों और पगडंडियों पर भी ऐसा दो-तीन बार हुआ, इससे पहले कि रात में बैलगाड़ियों का चलना बंद हो गया और उनकी जगह पुलिस गश्ती दल ने ले ली। शेर खान समेत कई संदिग्धों को पकड़ा गया। उन्हें पीटा गया और जेल में बंद कर दिया गया। लेकिन उन सभी ने हमेशा अपनी पूरी बेगुनाही का दावा किया और उन सभी के पास अपने-अपने सबूत थे कि वे उस समय कहीं और थे।

शेर खान से मेरी पहली मुलाकात इसी तरह हुई थी। वह ऐसी ही एक पिटाई के बाद शिवानीपल्ली लौट रहा था और उसने दुनिया में व्याप्त अन्याय के बारे में खुलकर शिकायत की। लेकिन बोलते समय उसकी आँखों में एक शरारती, कपटपूर्ण चमक थी।

जैसा कि मैंने बताया, वह मुसलमान थे, और उनके नाम का शाब्दिक अनुवाद 'शेरों का सरदार' है। वह थोड़े बदमाश किस्म के थे, लेकिन बेहद मिलनसार थे, और इसी वजह से वह मेरे दोस्त बन गए। जब भी मैं शिवानीपल्ली में होता, मैं उनके छोटे से घर जाकर उनसे चाय ज़रूर पीता था, और वह भी मेरा फोन ज़रूर उठाते थे।

इसलिए अपने उस साहसिक कार्य के बाद, मैं सुबह-सुबह शेर खान के पास गया और उससे मदद मांगी। मुझे पूरा विश्वास था कि जब मैंने बिल्कुल करीब से गोली चलाई थी, तो बाघ का निशाना नहीं चूका था। मुझे पता था कि गोली उसे ही लगी होगी। इसका मतलब था जंगल में घायल बाघ का पीछा करना, और इसके लिए दो लोगों का होना ज़रूरी था। झाड़ियों, पत्तों और पथरीली ज़मीन पर खून के निशान का पीछा करने के लिए दृष्टि और मन की एकाग्रता की आवश्यकता होती है। खून की एक बूंद, पत्ते के नीचे का निशान, या किसी तने या चट्टान पर खून का हल्का सा धब्बा ढूंढने के लिए हर जगह देखना पड़ता है। जब आप इस तरह देख रहे होते हैं, तो घायल बाघ शायद आपके ठीक आगे आपका इंतज़ार कर रहा हो, या वह दाईं या बाईं ओर घास के गुच्छे, बांस के झुंड, पेड़ के तने या दीमक के टीले के पीछे छिपा हो, और आपके आने का इंतज़ार कर रहा हो। एक तीसरी संभावना यह भी है कि जब आप उसे ढूंढ रहे हों, तब भी वह आपका पीछा कर रहा हो। लेकिन आप उसकी मौजूदगी से पूरी तरह बेखबर हैं, क्योंकि आपका ध्यान ज़मीन पर, उसके पदचिह्नों का पीछा करने में लगा हुआ है। दूसरी ओर, अगर आप घायल जानवर पर नज़र रखने की कोशिश करेंगे, तो जल्द ही आप उसका पदचिह्न खो देंगे। आप दोनों काम एक साथ कुशलता से नहीं कर सकते, इसलिए दूसरे व्यक्ति का होना ज़रूरी है। आप में से एक बाघ के खून के निशानों और पदचिह्नों का पीछा करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि दूसरा आगे, दाएं, बाएं और पीछे भी पैनी नज़र रखता है। इस दूसरे व्यक्ति के हाथों में न केवल उसकी अपनी जान है, बल्कि उसके साथी की जान भी है।

शेर खान ने बिना किसी झिझक के मदद करने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि रवाना होने से पहले मैं उनके साथ चाय का एक कप ज़रूर पी लूँ। उन्होंने ताली बजाई और उनकी चार पत्नियों में से एक ने जवाब दिया। उन्होंने उससे कहा, 'अत्चा-चा-फर्स्ट क्लास!' साहब के लिए चाय बनाओ।

मुसलमान होने के नाते, उन्हें चार कानूनी पत्नियां रखने की अनुमति थी—और उन्होंने रखीं भी। हममें से अधिकांश लोगों के लिए एक पत्नी का पालन-पोषण करना

ही मुश्किल होता है, लेकिन उन्होंने चारों पत्नियों का पालन-पोषण बड़ी आसानी से किया! और उन्होंने यह कैसे किया, यह जानिए।

शेर खान अपनी चारों पत्नियों में से किसी के प्रति कोई विशेष पक्षपात नहीं दिखाते थे—न तो सबसे छोटी, न सबसे नई, न ही सबसे सुंदर। उन सभी को सख्ती से गोशा में रखा जाता था—अर्थात्, जब वे सार्वजनिक स्थानों पर जाती थीं तो उन्हें अपना चेहरा बुर्का से ढकना अनिवार्य था। किसी भी पुरुष को उन्हें देखने की अनुमति नहीं थी। मैं, एक विशेष मित्र होने के नाते, उनके घर जाने पर उनके चेहरे देखने और उनसे बात करने का सौभाग्य प्राप्त कर सका—लेकिन यह बात बहुत कम ही कही गई।

शेर खान ने घरेलू कामों को अपनी चार पत्नियों के बीच साप्ताहिक आधार पर बाँटने की प्रथा बना रखी थी। एक सप्ताह के लिए, उनमें से एक खाना पकाने की ज़िम्मेदारी लेती थी, दूसरी उसकी सहायक होती थी; तीसरी बर्तन धोने की ज़िम्मेदारी लेती थी; चौथी झाड़ू लगाना, कपड़े सिलना, कपड़े धोना आदि जैसे घरेलू काम करती थी। अगले सप्ताह, यह क्रम बदल जाता था, और इसी तरह सप्ताह दर सप्ताह काम चारों पत्नियों में समान रूप से बँट जाता था। शेर खान स्वयं घरेलू काम में हाथ नहीं बँटाता था। वह बाज़ार जाता था—यदि उसकी कुटिल गतिविधियों को बाज़ार कहा जा सकता है—और कमाई घर लाता था, या पैसा, आप जो भी कहना चाहें। उस सप्ताह सबसे अधिक मेहनत करने वाली पत्नी, यानी रसोइया, के साथ वह सप्ताह में दो दिन सोता था, शेष तीन पत्नियाँ एक-एक दिन। शुक्रवार और रविवार इस तरह के कामों से 'छुट्टी के दिन' होते थे। जैसा कि वह उन्हें 'आराम के दिन' कहता था।

वे एक गरीब परिवार थे, लेकिन अनुशासित, सुखी और संतुष्ट थे। स्त्रियाँ कभी उनसे झगड़ा नहीं करती थीं और आपस में भी शायद ही कभी करती थीं। क्योंकि अगर वे ऐसा करतीं, तो उन्हें मार पड़ती थी; निष्पक्ष, समान और बिना किसी भेदभाव के, हर विद्रोही पत्नी को अपराध की प्रकृति के अनुसार बराबर संख्या में कोड़े या घूंसे पड़ते थे। और उन पर अक्सर पड़ने वाले अत्यधिक दबाव के बावजूद, उनकी कोई संतान नहीं थी।

चाय पीते ही हम चल पड़े। शेर खान ने बताया कि उसके पास बंदूक नहीं है और वह अपने साथ एक जंग लगी तलवार लाया है। उसने कहा कि यह तलवार उसके पिता की थी, और उसके परदादा के परदादा की भी, जो मैसूर के शेर कहे जाने वाले

महान टीपू सुल्तान के अधीन एक सैनिक थे। यह पता लगाने की गणितीय प्रक्रिया कि क्या इस व्यक्ति के परदादा टीपू के जीवनकाल में जीवित रहे होंगे, मेरे लिए कुछ ज़्यादा ही जटिल है। इसी बीच, हम उसकी सभी पत्नियों की पहुँच से दूर चले गए और मैंने एक अनौपचारिक प्रश्न पूछा, शायद हवा से ही: 'अंधेरे से एक आवाज़ आती है और कई गाड़ीवालों को गोली मारने की धमकी देती है। फिर भी वहाँ कोई बंदूक नहीं है। यह कैसे हो सकता है, शेर खान?'

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। फिर उसने जवाब दिया, 'आप चाहें तो मुझे झूठा कह सकते हैं, साहब। लेकिन ठीक यही हुआ था। उस समय न तो कोई बंदूक थी, न ही कोई और। मेरे पास कभी बंदूक नहीं थी और आज भी नहीं है। और उस गिरोह में मैं और तीन पत्नियां थीं, साहब। चौथी बहुत बूढ़ी है। लेकिन वह समझदार थी, और यह सब उसी का विचार था।'

और मैंने उसकी बात पर विश्वास किया।

हम लगभग अपनी मंज़िल पर पहुँच चुके थे। वहाँ वही ढलान वाली चट्टान थी जहाँ से मैंने पिछली रात आदमखोर बाघ पर गोली चलाई थी। इस बार वह मेरे दाहिनी ओर थी। हम चुपचाप आगे बढ़े और ज़मीन की ओर देखा। कहीं खून नहीं दिख रहा था और ज़मीन इतनी सूखी और सख्त थी कि उस पर किसी के पैरों के निशान नहीं थे। बिना कुछ बोले, मैंने रास्ते के किनारे उगी झाड़ियों की ओर इशारा किया जहाँ बाघ नज़रों से ओझल हो गया था।

मैं फिलहाल आगे-आगे चल रहा था, मेरा मुस्लिम दोस्त ठीक मेरे पीछे था। चारों ओर फैली शुष्कता के बावजूद, यह स्पष्ट था कि हाल ही में कोई भारी शरीर यहाँ से गुजरा था। कुछ टूटी हुई टहनियाँ ढीली लटक रही थीं, जो अभी भी बाहरी छिलके से अपनी मूल शाखा से जुड़ी हुई थीं। एक-दो गज आगे बढ़ते ही हमने लगभग एक साथ देखा: खून!

ज़मीन पर बिछी सूखी, भूरी पत्तियों की चादर पर चमकीले लाल रंग का एक धब्बा था। मैंने उसे अपनी तर्जनी उंगली से छुआ और अंगूठे से रगड़ा। वह गाढ़ा और जमा हुआ था, और इससे मुझे पता चल गया कि पिछली रात लगी गोली ने सिर्फ़ ऊपरी घाव नहीं किया था, बल्कि वह बहुत गहराई तक घुस गई थी।

अब हमने अपनी जगह बदल ली और मैंने शेर खान को अपने आगे कर दिया। वह खून के निशानों का पीछा करने पर पूरा ध्यान केंद्रित करेगा, जबकि मैं उसे और

खुद को चारों दिशाओं से कवर करूंगा।

मुस्लिम जन्मजात शिकारी नहीं था, लेकिन आदिवासी होने के नाते उसमें जो क्षमता की कमी थी, उसकी भरपाई उसने अपनी बुद्धिमत्ता से कर ली। वह इधर-उधर भटकता रहा और किसी भी जंगली कबीले के सदस्य की तुलना में कहीं अधिक समय लेता रहा, लेकिन अंततः उसे खून के कई धब्बे मिल गए। बाघ का खून अब पहले से कहीं अधिक बह चुका था। उसके घावों के कारण हुए परिश्रम ने निस्संदेह घाव को खोल दिया था। रास्ते भर खून के छींटे और धब्बे फैले हुए थे, जिससे रास्ता खोजना आसान हो गया।

मुझे आगे हल्की सी हलचल दिखाई दी और मैंने शेर खान को हल्के से हाथ से छुआ। पूर्व निर्धारित संकेत पर वह रुक गया और स्थिर हो गया। कंधे पर राइफल रखे मैं उस जगह पर नज़र रखता रहा जहाँ से हलचल हुई थी। मैंने दोनों ओर भी देखा और पीछे भी एक नज़र डाली। क्योंकि घायल बाघ घात लगाकर बैठने या अपने दुश्मनों पर पीछे से चुपके से हमला करने में माहिर होते हैं।

फिर हलचल हुई। हमारे ठीक कुछ फीट आगे एक छोटी सी शाखा खतरनाक ढंग से हिलने लगी। मैं हमले के लिए तैयार हो गया। हाथ बढ़ाकर मैंने शेर खान को कंधे से पकड़ा और उसे बिना किसी औपचारिकता के अपने पीछे खींच लिया।

शाखा फिर से हिलने लगी। मैंने एक मिनट तक उसे देखा। और फिर मुझे राहत मिली। शायद यह एक भ्रम था। मैंने देखा कि हिलती हुई शाखा पर लगे सारे पत्ते उल्टे थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि उसे किसी हाथी ने तोड़ दिया था और वह टूटी हुई जगह से कुछ मजबूत लताओं के तनों से लटक रही थी जो उसका भार सहने में सक्षम थीं।

ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार की बातचीत नहीं होनी चाहिए, इसलिए मैंने पीछे की ओर हाथ बढ़ाया, शेर खान को पकड़ा और उसे फिर से आगे कर दिया। फिर मैंने उसे आगे बढ़ने का संकेत देने के लिए सिर हिलाया। हम धीरे-धीरे आगे बढ़े और लटकती हुई शाखा को पार कर गए।

एक झाड़ी के नीचे हमने देखा कि सूखी घास खून से बुरी तरह रंगी हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो खून पूरे इलाके में फैला हुआ था, झाड़ी की पत्तियों और तनों पर भी। बाघ यहाँ लेटा होगा। शायद वह ज़मीन पर लोटा होगा। हो सकता है उसने अपने घायल चेहरे को अपने पंजों से ढका हो और वे भी खून से लथपथ हो गए हों। इसी वजह से हमारे सामने झाड़ी के नीचे इतना खून फैला हुआ था।

मैंने शेर खान को रोकने के लिए उसे फिर से छुआ, और हम पूरे पाँच मिनट तक सुनते रहे। लेकिन हमें कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। हम जिस सावधानी और खामोशी से चल रहे थे, उस सूखे इलाके की झाड़ियों में हम दोनों की आवाज़ ज़रूर सुनाई देती। अगर बाघ आस-पास होता, तो उसने हमें ज़रूर सुना होता। तब वह या तो चेतावनी देते हुए गुर्राता, हमला करता, या चुपचाप खिसक जाता। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

खून का निशान अचानक बाईं ओर मुड़ गया और हम समझ गए कि बाघ पहाड़ियों के किनारे बहने वाली एक छोटी सी धारा की ओर जा रहा है। घाव का असर दिखने लगा था और प्यास उसे पानी के लिए वहाँ खींच लाई थी। साल के उस समय धारा सूखी रहती थी, बस कहीं-कहीं पानी के छोटे-छोटे तालाब थे। बाघ इन्हीं तालाबों में से किसी एक की ओर जा रहा था और संभावना यही थी कि जब वह वहाँ पहुँचेगा तो वहीं पड़ा रहेगा जब तक कि उसका घाव ठीक न हो जाए या फिर वह तड़प-तड़प कर, भूख से तड़प-तड़प कर, एक दर्दनाक मौत मर जाए।

मुझे किसी जानवर को घायल करना कतई पसंद नहीं और अगर मैं ऐसा कर दूं, तो उसे ढूंढकर उसकी पीड़ा खत्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। बाघ के शरीर से बहे खून की मात्रा और प्रकृति को देखकर ऐसा लग रहा था मानो मेरी गोली ने उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया हो, जिससे ठीक होने की उम्मीद बहुत कम थी। एक बार फिर मुझे उस भयानक दर्दनाक मौत का ख्याल आया जो इस जानवर का इंतजार कर रही थी, जब तक कि मैं उसे ढूंढने में कामयाब नहीं हो जाता।

मैंने शेर खान को रोका और हम कुछ मिनटों तक दबी आवाज़ में बातचीत करते रहे। मुझे नदी के तल पर एक तालाब के बारे में पता था जो मेरे अनुमान से कम से कम दो मील दूर था, लेकिन शेर खान ने कहा कि एक छोटा तालाब पास ही है, जिसमें साल भर पानी रहता है, वह नदी में थोड़ा ऊपर है और जहाँ हम अभी खड़े थे वहाँ से एक मील से भी कम दूरी पर है। इसलिए हम खून के निशान का पीछा करते रहे, और जैसा कि उस मुसलमान ने अनुमान लगाया था, थोड़ी दूर जाने के बाद निशान बाईं ओर मुड़ गया और छोटे तालाब की ओर बढ़ गया, जो अब सीधे हमारे सामने था।

जैसे-जैसे हम नदी के किनारे पहुँचते गए, ज़मीन ढलानदार होती गई और नदी के निकट होने का आभास मुझे जंगली मुर्गों की बार-बार आती आवाज़ों से हुआ, जो दोनों किनारों पर घने पेड़ों और झाड़ियों में छिपे हुए थे। गर्मियों में ये मुर्गियाँ पानी से

पोषित होती थीं, जो आँखों से ओझल था लेकिन सूखी रेत के नीचे बहता रहता था। कुछ ही मिनटों में, धूप से मुरझाई छोटी सूखी घास की जगह लंबे हरे तने उग आए, पेड़ों की घनी छाया ने सूरज की गर्मी और रोशनी को रोक दिया, और मैं समझ गया कि हम नदी के किनारे पहुँच गए हैं।

खून का निशान सीधे आगे बढ़ रहा था; हमें नदी के सूखे रेतीले तल का दृश्य दिखाई दे रहा था, जो दाएं और बाएं दोनों ओर फैला हुआ था। मैं उस घायल जानवर की पीड़ा की कल्पना कर सकता हूँ जो कल रात या आज सुबह तड़के यहाँ पानी की तलाश में आया होगा, ताकि अपनी प्यास बुझा सके, और उसे इस जलविहीन क्षेत्र का सामना करना पड़ा होगा।

लेकिन शेर खान ने फुसफुसाते हुए कहा कि तालाब बस हमारे बाईं ओर कोने के पास ही है, अब बस कुछ ही कदम दूर, और पगडंडी अचूक रूप से उसी दिशा में जा रही थी। एक बार फिर मैंने अपने दोस्त से जगह बदली और आगे चलने लगा। अब पीछा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि घायल बाघ स्पष्ट रूप से तालाब की ओर जा रहा था और मुझे लगा कि हम उसे वहीं पा लेंगे। हम एक मोड़ पर मुड़े लेकिन मुझे कोई तालाब दिखाई नहीं दिया। मैं चुपचाप असमंजस में रुक गया, तभी शेर खान पीछे से आया और उसने एक सपाट चट्टान की ओर इशारा किया जो नदी की रेत के ऊपर से मुश्किल से दिखाई दे रही थी और दूसरे किनारे से कुछ ही फीट की दूरी पर थी।

एक चिड़िया चट्टान से उड़कर हवा में चिल्लाई, 'क्या तुमने किया! क्या तुमने किया! क्या तुमने किया!', और मैं समझ गया कि उस चट्टान के खोखले भाग में पानी मेरी नज़रों से छिपा हुआ है। धारा वहाँ संकरी हो गई थी और दोनों किनारे एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए थे। झाड़ियाँ घनी थीं, और जंगल हमारे चारों ओर और ऊपर उस ज़मीन से, जो नीचे नदी के तल तक जाती थी, भयावह रूप से मंडरा रहा था।

हम फिर रुक गए। चारों ओर सन्नाटा था और बाघ की मौजूदगी का कोई संकेत नहीं था। मैंने नीचे देखा तो खून का कोई निशान नहीं दिखा। जाहिर है, वह रेतीले रास्ते से नहीं आया, बल्कि किनारे पर उगी झाड़ियों की आड़ में ही छिपा रहा।

हम एक बार फिर आगे बढ़े। आखिरकार हम वहाँ पहुँच गए, और उस छोटे से तालाब के पानी और उस तक जाने वाली ढलान वाली चट्टान में एक भयावह कहानी छिपी थी! पानी खून से लाल था, और चट्टान खून से लथपथ थी, जहाँ बाघ दर्द से

कराहते हुए अपना सिर पानी में डुबोकर अपनी प्यास बुझाने और घाव के दर्द को कम करने की कोशिश कर रहा था। चट्टान पर कई जगहों पर उसके पैरों के निशान दिखाई दे रहे थे, जो उसके अपने खून से सने हुए थे। अंत में वह किनारे की शरण में चला गया था और मैं जानता था कि मैं उसे वहीं पाऊँगा; सभी घायल जानवरों की तरह झाड़ियों की ठंडी छाँव में लेटा हुआ, वह धैर्यपूर्वक अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा होगा।

फिर मुझे याद आया कि इस जानवर ने एक इंसान की हत्या की थी, जहाँ तक पता चला, बिना किसी स्पष्ट कारण के। अगर उसे सज़ा नहीं मिलती, तो वह निःसंदेह समय के साथ एक पक्का आदमखोर बन जाता। शेर खान को वहीं रुकने का इशारा करके मैं उससे मिलने और उसे खत्म करने के लिए आगे बढ़ा।

मुझे अपने पीछे हल्की सी आहट सुनाई दी और मैंने चारों ओर देखा। शेर खान मेरा पीछा कर रहा था। शायद वह इस नाटक के अंतिम दृश्य का साक्षी बनना चाहता था। शायद वह अकेले रह जाने से घबरा गया था। हम पेड़ों की घनी झाड़ियों में आगे बढ़े और नज़रों से ओझल हो गए।

अब तक जो सन्नाटा छाया हुआ था, वह अचानक एक भयानक गर्जना से टूट गया, मानो वह मेरे पैरों के ठीक नीचे की ज़मीन से आ रही हो, और घटनाएँ तेज़ी से घटने लगीं। क्षण भर के लिए झाड़ियाँ ज़ोर से हिल उठीं और फिर एक विशालकाय आकृति मेरे ऊपर से गुज़रते हुए लगभग मेरे ऊपर से निकलकर शेर खान की ओर बढ़ गई, जो मुझसे दो फीट से भी कम दूरी पर था।

मुस्लिम चिल्लाया और उसने अपनी जंग लगी तलवार को बेतहाशा घुमाया। तलवार की कुंद धार उछलते हुए बाघ के भारी शरीर से टकराई और दोनों के प्रहार से तलवार जानवर के पार्श्व भाग में धंस गई। शेर खान चीखता हुआ नीचे गिर पड़ा और बाघ उसके ऊपर गिर पड़ा।

सौभाग्य से, शेर खान ने सूझबूझ दिखाते हुए बाघ के काटने पर अपने सिर और चेहरे को दोनों हाथों से ढक लिया। आगे झुककर, मैंने राइफल को बाघ की गर्दन के पीछे रखा, यह सुनिश्चित करते हुए कि गोली मेरे दोस्त को खतरे में न डाले, और ट्रिगर दबा दिया।

मैंने एक बार फिर गोली चलाई, तभी शेर खान झट से खड़ा हुआ और मरते हुए जीव के पंजों की पहुंच से बाहर कूद गया। फिर नाटक समाप्त हो गया।

हैरानी की बात यह थी कि मेरे दोस्त को मामूली खरोंचों के अलावा लगभग कोई चोट नहीं आई थी, और इसका कारण यह था कि पिछली रात चलाई गई मेरी गोली उसके तालू के ऊपरी हिस्से में घुसकर नाक के ऊपर से निकल गई थी। उसकी पूरी नाक की हड्डी मांस से लटकी हुई थी, एक भयानक घाव जिससे बेचारा कभी उबर नहीं पाया।

सौभाग्यवश, मेरे मित्र ने अपने पूर्वजों की जंग लगी तलवार से बाघ पर जो वार किया, वह निशाने पर लगा, क्योंकि मैं ठीक उसके सामने था। अगर वह चूक जाता, तो मैसूर के शेर टीपू और उसके पुराने साथी, शेर खान के पूर्वज, एक और शिकार कर लेते! उस वार की ताकत से मेरा सिर धड़ से अलग हो जाता।

बाद में जब मैंने शेर खान को यह बताया तो वह हँस पड़ा। उसने कहा कि मैंने अपना बदला ले लिया, क्योंकि मेरी गोली बाघ की गर्दन में लगी और उसके सिर से बस कुछ इंच ऊपर से निकल गई। उसने मुझसे पूछा कि क्या वह उस जानवर की खाल को हमारी मुठभेड़ की यादगार के तौर पर रख सकता है, और मैंने खुशी-खुशी उसे दे दी। क्योंकि, अपनी कई कमियों और धूर्तता के बावजूद, शेर खान एक बहादुर और बेहद मिलनसार व्यक्ति है। सबसे बढ़कर, मैं जिस तरह से वह अपनी चार पत्नियों का ख्याल रखता है, उसकी प्रशंसा करता हूँ। ईश्वर करे कि वे उसे और वह उन्हें लंबे समय तक स्वस्थ रखें।

उससे विदा लेने से पहले हम अलाव के पास बैठे और एक-दूसरे को कहानियां सुनाने लगे। उसने मुझे अपने कुछ कारनामों के किस्से सुनाए, और मैं पाइप पीते हुए सुनता रहा। पत्तों के पार सब कुछ जंगल की रात के अंधेरे में खो गया था। बीच-बीच में चिंगारियों का एक गुच्छा आसमान की ओर उठता, जब हममें से कोई आग को तेज जलता रखने के लिए उसमें एक नई लकड़ी डालता।

उसकी झोपड़ी के पीछे से अचानक सियार झुंड का जंगल का मधुर गायन सुनाई दिया: 'ऊऊऊ-ऊऊऊह; ऊऊऊ-कहाँ? ऊऊऊ-कहाँ? यहाँ! यहाँ! ही-येह! हीईई-येह! याह! याह! याह!'

उसके बाद अचानक सन्नाटा छा गया। एक गहरा, सर्वव्यापी सन्नाटा। आप उसे सुन सकते हैं, महसूस कर सकते हैं, जान सकते हैं। यह वह सन्नाटा है जो किसी अनहोनी का संकेत देता है। ऐसा सन्नाटा मानो अचानक कोई स्विच बंद कर दिया गया हो।

फिर, पहाड़ी के उस पार दूर से दूसरी लहर लुढ़कती हुई हमारी ओर आई, जो जंगल को भेदती हुई नीचे घाटी में पेड़ों की चोटियों के ऊपर से गुजरी।

'ऊ-ऊ-ऊ-न-ऊ-ऊ-न! आ-ऊंग - गाह! आ-ऊंग - गाह! ओह—उघ! हाँ - उघ!'

एक बाघ दहाड़ रहा है।

---

* मानचित्र के लिए, अध्याय 1 देखें।
* शिवानीपल्ली के ब्लैक पैंथर को देखें।

बहुत समय पहले के जंगल

परिचय

किताबें लिखने के सुखों में से एक हैं लेखकों को दुनिया भर के पाठकों से मिलने वाले पत्र। इनमें से कुछ पत्र बेहद प्रशंसा भरे होते हैं और लेखक के गौरव को बढ़ाते हैं, क्योंकि इनमें उनकी कहानियों से प्राप्त आनंद के घंटों का वर्णन होता है। कुछ पत्र प्रश्न पूछते हैं और शीघ्र उत्तर की मांग करते हैं, जबकि अन्य किसी न किसी तरह से लेखक को मुश्किल में डालने का प्रयास करते हैं।

हाल ही में मुझे इंग्लैंड से एक पत्र मिला जिसमें मुझसे पूछा गया था कि मैं अपनी लगभग सभी पुस्तकों में पशु संरक्षण का उपदेश क्यों देता हूँ, जबकि मेरी अधिकांश कहानियाँ उनके शिकार के बारे में हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मेरे अधिकांश पाठक मेरी बात पर विश्वास करेंगे और समझेंगे जब मैं कहता हूँ कि मैंने कभी भी आनंद के लिए किसी को नहीं मारा, कम से कम बचपन से तो नहीं। मैं अपने बचपन के पापों के लिए दोषी हूँ; लेकिन अंधाधुंध हत्या करने की इच्छा मुझमें अपेक्षाकृत जल्दी ही समाप्त हो गई; तब से मैं केवल आवश्यकता पड़ने पर ही जानवरों को मार पाता हूँ।

मैंने एक बार अपने प्रकाशक मैल्कम बार्न्स से कुछ कहा था, जिसे उन्होंने मेरी पिछली पुस्तक, 'टेल्स ऑफ द इंडियन जंगल' की प्रस्तावना में शामिल किया था। इसी वजह से मुझे कई पत्र मिले हैं जिनमें मुझसे लेखन जारी रखने का आग्रह किया गया है, कम से कम इसलिए ताकि भारत के जंगलों और बचे हुए वन्य जीवन में लोगों की रुचि बढ़े। इसलिए मैंने यही करने का फैसला किया है, लेकिन इस नई पुस्तक में आदमखोरों के शिकार या किसी भी अन्य जानवर के शिकार की कोई कहानी नहीं है। इसके बजाय, आपको बहुत पहले जंगल में किए गए रोमांच के संस्मरण मिलेंगे। हमने तब जो कुछ किया था, उनमें से कुछ व्यर्थ थे; कुछ तो बिलकुल पागलपन भरे थे और आज, जब मैं, उम्मीद है, एक समझदार इंसान बन चुका हूँ, तो उनमें से कुछ को

दोबारा करने की हिम्मत मुझमें नहीं होगी। इसमें गुप्त विद्या पर एक अध्याय और वन चिकित्सा पर एक अध्याय भी है।

ये सभी यादें स्मृतियों की एक लंबी श्रृंखला में अनमोल रत्नों की तरह हैं; ऐसे अनमोल रत्न जो मेरे लिए चमकते हैं जब मैं उन्हें निहारता हूँ और उन्हें फिर से याद करता हूँ, उन अद्भुत दिनों और रातों को फिर से जी उठता हूँ जब हमने हर रोमांचक पल को बड़ी खुशी से, पूरी तरह से बिताया, बिना इस बात की चिंता किए कि क्या हो सकता था या क्या हो सकता है। वर्तमान ही सब कुछ था और हमने हर पल को पूरी तरह से जिया।

वो वो समय था जब कोई समस्या नहीं थी, कोई निराशा नहीं थी, भविष्य की कोई चिंता नहीं थी। हम जंगल के थे और जंगल में ही रहते थे, और बस यही मायने रखता था—दिन में हमारे चारों ओर पेड़, जानवर और धूप होती थी, और रात में चाँद, तारे, जुगनू, मेंढकों की टर्राहट और झींगुरों की चहचहाहट होती थी। हम संतोष के स्वर्ग में थे। डरे हुए हिरणों की पुकार और सियारों के झुंड का समूह वो संगीत था जिसके बीच हम अपनी आग की राख के पास सो जाते थे। जिसे बीच-बीच में पहरेदार जलाता रहता था, जब वह लकड़ियों का गट्ठा या एक छोटा लट्ठा डालता था, तो चिंगारियाँ आसमान में उछलती थीं और उनके पीछे धुएँ का गुबार उठता था।

शिविर का जीवन हर मायने में आरामदायक था; लेकिन हम दो घंटे के लिए 'पहरेदारी' के कर्तव्यों के बारे में बहुत सख्त थे, जो कि प्रत्येक दल के सदस्य को शिविर की रक्षा में बिताने के लिए बाध्य समय था, और जिसके लिए हमने पिछली शाम को लॉटरी निकाली थी।

'पहरेदार' का काम आग जलाए रखना और हाथियों, विशेषकर एक नर हाथी के आने पर सतर्क रहना था। साथ ही, रात के समय आने वाली आवाज़ों और चीखों को सुनना भी ज़रूरी था, जिससे उसके साथी जंगल में सोते समय हुई घटनाओं के बारे में जान सकें। जो पहरेदार अपनी ड्यूटी पर ऊंघते हुए पकड़ा जाता था, वह न केवल तीखी टिप्पणियों का पात्र बनता था, बल्कि उसे अगली रात दुगनी ड्यूटी भी करनी पड़ती थी।

तो अब कल्पना कीजिए कि आप इस आग के सामने बैठे हैं। आप एक विशाल जंगल के खुले मैदान में हैं; ऊँचे-ऊँचे पेड़ आपको घेरे हुए हैं, जो घने काले आवरण में लिपटे हैं, जिसे अनगिनत उष्णकटिबंधीय जुगनुओं की जगमगाहट तोड़ रही है। अपनी

आँखें बंद कीजिए और बाघों, रोमांच और रहस्य की मेरी कहानियाँ सुनिए, जैसे जंगल की ठंडी हवा आपके माथे को छूते हुए जंगली फूलों की रात की सुगंध बिखेर रही हो, और याद रखिए कि आप एक ऐसी भूमि में हैं जहाँ समय का कोई महत्व नहीं है और 'जल्दी' शब्द कभी बोला ही नहीं जाता।

एक

स्पाइडर वैली में एक रात

इस कहानी में अहम भूमिका निभाने वाले एरिक न्यूकोम्बे मेरे साथ स्कूल में पढ़ते थे। हम बहुत अच्छे दोस्त थे, और इसका एक कारण यह था कि एरिक की एक बहुत खूबसूरत बहन थी।

दुर्भाग्य से, वह उन लोगों में से एक था जिनसे कभी-कभार ही सामना होता था

और जो मुसीबतों की ओर खिंचे चले आते थे। सीधे शब्दों में कहें तो, अगर आप एरिक के साथ होते तो निश्चित रूप से कुछ बुरा होने की आशंका रहती। यह लगभग तय था।

कभी-कभी, लड़कपन में, हम बागों पर धावा बोलते थे, या रात में भूतों या रेड इंडियनों का वेश धारण करके लड़कियों के स्कूल पर छापा मारते थे, या कॉन्वेंट के छात्रावासों में ननों की चहल-पहल से कई बार बचते हुए निकल जाते थे; फिर भी हम हमेशा बच निकलते थे, सिवाय तब जब एरिक हमारे साथ होता था। क्योंकि हमने उसके साथ फिर से वही सब करने की कोशिश की। पुराने जमाने के 'योमन' (मज़दूरों) के वेश में—मुझे याद है, एरिक 'गाइ फॉक्स' बना था—हमने एक बार कॉन्वेंट में लड़कियों को उनके बिस्तरों में डरा दिया था और हम भाग रहे थे, कई ननें छतरियों के साथ हमारा पीछा कर रही थीं, लेकिन दीवार फांदकर आज़ादी हासिल करते हुए, आपको क्या लगता है हम किसके पैरों पर गिरे? कोई और नहीं बल्कि हमारे अपने प्रधानाध्यापक, जो देर रात की पार्टी से लौट रहे थे, जिसके बारे में उन्होंने बात न करने का पूरा ध्यान रखा था।

एरिक इतना गंवार था कि जिस लड़की से उसके माता-पिता सख्त तौर पर नाराज़ थे, उससे प्यार करने के बाद भी वह संतुष्ट नहीं हुआ और उससे मिलने के लिए जिस दीवार पर चढ़कर गया था, उससे गिर पड़ा और इस प्रक्रिया में उसका हाथ टूट गया। और जब हम 'जलाहल्ली के हत्यारे' नाम के एक घायल पैंथर की तलाश में थे, जिसकी कहानी मैं पहले ही बता चुका हूँ*, तो मेरे साथ मौजूद एरिक को भी जाकर खुद को घायल करवाना पड़ा। कुछ समय बाद हम एक सर्कस देखने गए और एरिक को पिंजरे में बंद एक पैंथर को सहलाने का ख्याल आया। जैसा कि उम्मीद थी, पैंथर को यह नज़दीकी पसंद नहीं आई और उसने उसके हाथ पर बुरी तरह से खरोंच मार दी। मैं यह भी बताना चाहूँगा कि इन दोनों हादसों का सारा दोष उसकी पत्नी ने मुझ पर डाला, क्योंकि दीवार से गिरने के कुछ साल बाद ही उसने उस लड़की से शादी कर ली थी।

फिर एक रात हम गुलहट्टी में जंगली सूअर का शिकार करने गए। ज़ोरदार बारिश हो रही थी। हम सूअर का इंतज़ार करते हुए एक खेत में बैठे थे, लेकिन मैंने हार मानकर जंगल वाले बंगले में वापस लौटने का फैसला किया। पर एरिक ने ऐसा नहीं किया। उसने पूछा, थोड़ी सी बारिश से क्या फर्क पड़ता है? वह हर हाल में सूअर का

शिकार करके ही रहेगा। लेकिन उसे निमोनिया हो गया, और उसकी पत्नी ने इसके लिए भी मुझे ही दोषी ठहराया!

मैंने आपको इन घटनाओं के बारे में इसलिए बताया ताकि आप समझ सकें कि जब जोनाह ने जंगल में रात के समय रोमांच की तलाश में जाने का सुझाव दिया, तो मैं बहुत उत्साहित नहीं था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमें किसी न किसी रूप में रोमांच मिले, उसने ज़ोर देकर कहा कि हम निहत्थे जाएं, लेकिन टॉर्च और खाने-पीने का सामान साथ ले जाएं। कम से कम इतना तो ठीक था। वह इतना सनकी था कि अगर उसने टॉर्च और खाने के बिना जाना अनिवार्य कर दिया होता, तो मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं होता।

एरिक बेहद मिलनसार, अत्यंत प्रेरक, प्रकृति और वन्य जीवन से बेहद प्यार करने वाला, एकदम सरल और पूरी तरह से गैरजिम्मेदार व्यक्ति था। उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसके कुछ कार्यों से उसे और उसके दुर्भाग्यशाली साथियों को कितनी परेशानी हो सकती है। मुझे रोमांच हमेशा पसंद है, लेकिन जब मुझे एहसास हुआ कि यह रोमांच इस मिलनसार व्यक्ति के साथ होगा, तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे मन में काफी संदेह पैदा हुआ।

आपमें से जिन लोगों ने बाघ के साथ मेरे कारनामों को 'द नोविस ऑफ मांची'* नाम दिया है और मेरी पिछली कहानी 'द मारौडर ऑफ केम्पेकेराई'** पढ़ी है, उन्हें वह घाटी याद होगी जिसका मैंने उन कहानियों में वर्णन किया है और जिसे मैंने 'स्पाइडर वैली' कहा था। यह सलेम जिले में स्थित एक गहरी और घने जंगलों वाली घाटी है, जो अयूर नामक एक छोटे से गांव से दक्षिण की ओर लगभग बीस मील तक फैली हुई है और दो ऊंचे पर्वतों के बीच स्थित है।

यह घाटी एक जलधारा का तल है, और एक संकरा पैदल मार्ग जलधारा के साथ-साथ चलता है, और जलधारा के दाएं-बाएं मुड़ने पर इसे बार-बार पार करता है, ताकि कुल दूरी कम हो सके। पश्चिम और पूर्व की पर्वत श्रृंखलाएं घाटी के तल से ऊपर उठती हैं, कभी-कभी इतनी निकटता से कि यात्री को ऐसा लगता है जैसे वह किसी घने जंगल में है। गुथेरायन शिखर की ढलानों पर, 4,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर, घाटी के पूर्व में स्थित एक रमणीय वन लॉज, जिसे कोडकराई बंगलो के नाम से जाना जाता है, से उस दृश्य का मनोरम दृश्य दिखाई देता है, जहां जलधारा और घाटी दस मील दूर चिनार नदी में मिल जाती हैं, जो स्वयं दक्षिण भारत की सबसे

बड़ी नदी कावेरी की एक सहायक नदी है।

हमने कई कारणों से 'स्पाइडर वैली' को घूमने के लिए चुना (घूमना हिंदुस्तानी शब्द है जिसका अर्थ है 'भटकना' या 'टहलना')। यह एक बहुत घना जंगल था और उन दिनों यहाँ हाथी, बाइसन, बाघ, पैंथर और भालू बहुतायत में पाए जाते थे। पहाड़ी भूभाग और आस-पास की पर्वत श्रृंखलाओं के कारण चित्तीदार हिरणों की तुलना में सांभर और जंगली भेड़ें अधिक संख्या में थीं। कहा जाता था कि यहाँ अजगर कहे जाने वाले चट्टानी सांप बड़ी संख्या में मौजूद थे, और छोटे जीव-जंतु भी प्रचुर मात्रा में थे। ऊँचे, लहराते बांस और नम झाड़ियाँ लाखों जुगनुओं के साथ-साथ एक चमकदार भृंग और तीन प्रकार के 'ग्लो-वर्म' का घर थीं। अंत में, मुझे पता था कि यह सलेम जिले का एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जहाँ सदाबहार जंगल की नमी के कारण हमाद्र्याड (किंग कोबरा) देखने को मिल सकता है।

शुरुआती दिनों में मेरे पास मॉडल टी फोर्ड कारों का एक बेड़ा था, एक समय में तो तेरह कारें थीं और सभी चलने की हालत में थीं। मैंने इन्हें अलग-अलग सैन्य नीलामियों से कबाड़ के रूप में खरीदा था, जिनकी कीमतें 50 रुपये से 250 रुपये (2.50 पाउंड से 12.50 पाउंड) तक थीं। मैंने इनमें कुछ बदलाव किए और इन्हें जंगल की यात्राओं के लिए फिर से चालू कर दिया। सबसे सस्ता सौदा एक इंजन था, जो चेसिस और पहियों के साथ 12 रुपये (लगभग 60 पेंस) में मिला था। इस चेसिस पर मैंने एक बॉडी लगाई, जिसमें दोहरे उद्देश्य वाला एक बॉक्स मचान था, जिसे पेड़ पर लगाया जा सकता था या जमीन में खोदे गए गड्ढे के ऊपर रखा जा सकता था। हैंडल की मदद से इस मचान को पेड़ से बांधा जाता था, जबकि किनारों पर बने छेद जमीन में खोदे गए गड्ढे को ढकने के लिए इस्तेमाल करते समय फायरिंग के लिए छेद प्रदान करते थे। जैसा कि मैंने बताया है, इस पूरे उपकरण को मॉडल की चेसिस से कसकर जोड़ा जाता था, जिससे एक उल्टा डिब्बा बन जाता था जिसमें मैं अपने औजार, भोजन, पानी और बिस्तर रखता था। पेट्रोल टैंक के ऊपर रखी एक आरामदायक बेंत की कुर्सी, ड्राइविंग सीट का बढ़िया विकल्प थी। मडगार्ड तो थे ही नहीं। विंडशील्ड भी नहीं थी। धूल-मिट्टी से बचने के लिए मैंने काले चश्मे पहन रखे थे।

यह सच है कि यात्रा के अंत तक मैं धूल से लथपथ हो जाता था, या बरसात के दिन कीचड़ से सना हुआ होता था, लेकिन इससे मज़ा और बढ़ जाता था। अगर कोई साथी होता, तो वह मेरे बाईं ओर इसी तरह की बेंत की कुर्सी पर बैठा होता, और मैं

बड़ी कुशलता से इस वाहन के बाएं आगे के पहिये को बारिश के पानी के गड्ढों या गोबर के ढेरों से गुजारने का आनंद लेता था, और जब वह कीचड़ या उससे भी बदतर स्थिति में सन जाता था तो हँसता था।

एरिक को इस वाहन से बहुत लगाव था जिसे वह 'अचानक मौत' कहता था और वह इस बात पर अड़ा हुआ था कि हमें अपनी यात्रा इसी में करनी चाहिए, या यूं कहें कि इसी पर, जो कि ज्यादा सटीक शब्द होगा, अन्य किसी भी मॉडल टी की तुलना में।

मैं आपको बता दूं कि चेसिस को नियमित परिवहन साधन के रूप में इस्तेमाल करना पहले भी गैरकानूनी था और आज भी गैरकानूनी है। कानून के अनुसार किसी भी वाहन पर किसी न किसी प्रकार का नियमित ढांचा होना अनिवार्य है। इसलिए 'सडन डेथ' का पंजीकरण और उसके लिए नंबर प्राप्त करने का प्रश्न हल करना आवश्यक था। आपको याद होगा कि इसे कबाड़ के रूप में बेचा गया था और उस समय इसका कोई नंबर नहीं था। इसलिए मैंने अपनी एक अन्य मॉडल टी कार से नंबर प्लेट निकाली और उस वाहन को पंजीकरण कार्यालय ले गया। भरे जाने वाले आवेदन पत्र में 'सडन डेथ' का इंजन नंबर और चेसिस नंबर दोनों दर्ज किए गए। प्रतिस्थापन के रूप में उपयोग किए गए वाहन के इंजन और चेसिस नंबरों को शेलैक की परत से ढक दिया गया था जिससे वे अपठनीय हो गए; इसे बाद में खुरचकर और कुछ बूंद पेट्रोल डालकर हटाया जा सकता था। 'सडन डेथ' का विधिवत पंजीकरण किया गया और उसे एक नया नंबर दिया गया। वह भी उसके अपने इंजन और चेसिस सीरियल नंबरों के तहत। उसके बाद कानून मुझे अनियमित ढांचे वाली गाड़ी चलाने के लिए अभियोजित करने में असमर्थ था, क्योंकि पोर्टेबल मशीन को आधिकारिक तौर पर मशीन नहीं माना जा सकता था। शेलैक कोटिंग हटाने के बाद जब गाड़ी का नंबर वापस लगाया गया, तो उसकी जगह पेश की गई गाड़ी ने अपनी पहचान फिर से हासिल कर ली।

'सडन डेथ' के बारे में दो और खास बातें हैं जिन्हें मुझे अभी दर्ज करना बाकी है। पहली बात यह है कि मैंने इसमें एक खास कार्बोरेटर लगाया है—जो मुझे कबाड़ में मिला था—जिसकी मदद से मैं इंजन को पेट्रोल पर स्टार्ट कर सकता था और गर्म होने पर केरोसिन पर स्विच कर सकता था। मॉडल टी एक गैलन में लगभग चौबीस मील चलती थी। उन दिनों पेट्रोल की कीमत चौदह आना प्रति गैलन (लगभग £0.05) थी,

और केरोसिन 8 आना प्रति गैलन, यानी लगभग आधी कीमत पर मिलता था। इसलिए केरोसिन पर गाड़ी चलाना वाकई किफायती था। इंजन ऑयल साढ़े तीन रुपये या £0.20 प्रति गैलन था, जबकि नए टायर लगभग 15 रुपये या £0.70 प्रति टायर थे।

'सडन डेथ' की एक और खासियत थी इसका रुक्सटेल बैक एक्सल। इससे हर मॉडल टी में पैडल से चलने वाले दो ट्रांसमिशन गियर के अलावा एक बहुत लो और एक बहुत हाई गियर मिलता था। इसलिए, अपने 22 हॉर्सपावर इंजन और हल्के वजन के कारण 'सडन डेथ' लगभग दीवार पर भी चढ़ सकती थी, और समतल सड़क पर यह केरोसिन से इतनी तेज रफ्तार पकड़ सकती थी कि कई नई कारें इसके सामने कछुए जैसी लगने लगती थीं। स्पार्क प्लग खराब होने की बात करें तो, मैंने कभी स्पेयर रखने की जहमत नहीं उठाई। जब भी समय मिलता, मैं उसे साफ कर लेता था, बस सिलेंडर हेड से निकालना ही काफी होता था, और फिर 'सडन डेथ' तीन सिलेंडरों पर ऐसे चलती थी जैसे उसमें चौथा सिलेंडर हो ही न!

चूंकि हमें पूरी रात घूमना था, इसलिए हमने सबसे हल्के कपड़े पहनने का फैसला किया, यानी खाकी रंग के कपड़े, जबकि मैंने घुटने तक लंबे, अल्पाका ऊन से बने, रबर के तले वाले बूट पहने जो मैं आमतौर पर ऐसी यात्राओं पर पहनता था। ये बूट हल्के, बिना आवाज़ वाले और मुलायम होते हैं, लेकिन इतने मोटे होते हैं कि झाड़ियों में छिपे किसी भी रसेल वाइपर या कोबरा के दांतों को झेल सकें, जिन पर गलती से पैर पड़ जाए। एरिक ने रबर के तले वाले बूट पहने थे और अपनी पैंट के किनारों को उनमें फंसा रखा था। रात में सांप सबसे बड़ा खतरा होते हैं, हाथी या भालू से टकराने से कहीं ज्यादा। बाघ और तेंदुआ, जब तक कि वे आदमखोर न हों, घायल न हों या संभोग न कर रहे हों, तब तक उनसे कोई खतरा नहीं होता।

'सडन डेथ' हमें बिना किसी घटना के ऐयूर फॉरेस्ट लॉज ले गई। यहाँ हमने रात का खाना खाया। फिर, अपने पीठ पर थैलों में खाना और कपड़े रखकर, और प्रत्येक के पास टॉर्च की अतिरिक्त बैटरी का एक बैग लेकर, हम स्पाइडर वैली के लिए निकल पड़े, जो लगभग तीन मील दूर थी। मेरे पास एक कपड़े के डिब्बे में पाँच बैटरी वाली टॉर्च लटकी हुई थी, जबकि मैं तीन बैटरी वाली टॉर्च का इस्तेमाल कर रहा था, जो देखने में ज़्यादा सुविधाजनक थी। एरिक के पास तीन बैटरी वाली दो टॉर्च थीं।

लॉज से दक्षिण-पूर्व दिशा में जंगल से होकर एक आग-रोधी मार्ग जाता है।

लगभग एक मील चलने के बाद यह एक जलकुंड के किनारे से होकर गुजरता है, फिर पश्चिम की ओर मुड़ जाता है और कुछ समय बाद गुलहट्टी नामक स्थान पर एक पहाड़ी पर स्थित दूसरे वन लॉज की ओर जाने वाले रास्ते से मिलता है।

इस जलकुंड पर हमारा पहला रोमांच शुरू हुआ। हमारी टॉर्च की रोशनी में तालाब के दूसरी ओर दो नुकीले हरे रंग के दो प्रकाश स्तंभ दिखाई दिए, जो हमारी टॉर्च की तेज रोशनी से बचने के लिए बेचैनी से ऊपर-नीचे हिल रहे थे। चित्तीदार हिरणों का एक झुंड पानी पी रहा था!

मैं उन्हें देखने के लिए घुटनों के बल बैठ गया, लेकिन एरिक हमारे रास्ते से हटकर पानी की ओर बढ़ गया। यह एक गलती थी, क्योंकि उसके कपड़े तालाब के चारों ओर उगे कांटों में फंस गए। खरोंच लगने के अलावा, उसने काफी शोर मचाया और एक और गलती कर दी। वह मेरी टॉर्च की रोशनी में आ गया, जिससे हिरणों को पता चल गया कि जिन चमकदार चीजों को वे इतनी देर से घूर रहे थे, लेकिन पहचान नहीं पा रहे थे, उनका संबंध उनके सबसे बड़े दुश्मन—मनुष्य—से था। खुरों की थपथपाहट के साथ झुंड जादू की तरह गायब हो गया। लेकिन उसकी जगह एक कहीं अधिक भयावह आवाज सुनाई दी।

'वूफ़! वूफ़! वूफ़्ल!' एक भालू पानी पीने आया था। और उसने भी अप्रत्याशित काम कर दिया।

वह शायद उसी रास्ते पर चल रहा था जिस पर हम चल रहे थे और उसने पानी पीने का फैसला किया। इसलिए वह एरिक से ठीक आगे तालाब के पास चला गया। कम सुनाई देने और कम दिखाई देने के कारण, भालू ने पहले तो हमारी आवाज़ नहीं सुनी और न ही हमारी टॉर्च की रोशनी देखी। शायद वह अपना सिर नीचे करके पानी पी रहा था। लेकिन जब एरिक उछल-कूद करने लगा और मेरी रोशनी में दिखाई देने लगा, और चित्तीदार हिरण डर के मारे भाग गया, तब भालू को एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ है और कोई उसके ठीक पीछे है।

अपनी प्रजाति के बाकी लोगों की तरह, जब उन्हें खतरा महसूस हुआ, तो उसने सोचने का समय नहीं लिया। भागने का ख्याल भी उसके मन में नहीं आया। इसके बजाय, वह घुसपैठिए की ओर तेज़ी से दौड़ा। घुसपैठिए की असलियत जानने के लिए उसके पास बाद में काफी समय था। इसलिए वह पूरी गति से एरिक की ओर दौड़ा, और एरिक उस पल उसके कांटों में फंस गया!

इस नाजुक मौके पर उसने क्या किया! उसने अपनी तीन सेल वाली टॉर्च सीधे सामने से आ रहे भालू की ओर फेंकी, जो उससे कुछ ही फीट दूर था। ऐसा करना सिर्फ वही कर सकता था।

एक भालू रोशनी की ओर तेज़ी से दौड़ता हुआ आ रहा था, तभी अचानक रोशनी भी तेज़ी से उसकी ओर आ गई! किस्मत से टॉर्च ब्रुइन के चेहरे पर कहीं लगी, और नतीजा यह हुआ कि जितनी जल्दी उसने हमला करने का मन बनाया था, उतनी ही जल्दी उसने भागने का मन बना लिया। बाईं ओर मुड़कर वह झाड़ियों के टूटने और ज़ोरदार भौंकने की आवाज़ के बीच गायब हो गया! एरिक काँटों में फँस गया, उसके कुछ कपड़े वहीं अटके हुए थे, वह दौड़कर मेरे पास आया, जहाँ मैं जड़वत खड़ा था, और बोला, 'भालू!'

मैं चुप रह गया।

हम कुछ देर पश्चिम की ओर चले और फिर एक संकरे रास्ते पर दक्षिण की ओर मुड़ गए। यही वह मार्ग था जिस पर हमें बीस मील तक चलकर चिनार नदी तक पहुँचना था। यह रास्ता ढलान की ओर जाता था और हम स्पाइडर घाटी में प्रवेश कर गए। चारों ओर घनी वनस्पति उग आई थी; लाल, गुलाबी और नारंगी रंग के फूलों के गुच्छों वाली लैंटाना की झाड़ियाँ, जो हमारी टॉर्च की रोशनी में दिखाई दे रही थीं, तेजी से घने बांस के झुंडों में तब्दील होती जा रही थीं।

फिर हमें हाथियों की आवाज़ सुनाई दी: एक ज़ोरदार आवाज़ आई जब इन विशालकाय हाथियों में से एक ने बांस के एक डंठल को तोड़ डाला, और फिर एक अजीब सी 'व्हींक' की आवाज़ आई जब उन्होंने बांस की कोमल ऊपरी पत्तियों और बाहरी छिलकों को छील दिया, जो हाथियों को बहुत पसंद होते हैं। अंत में, मोटे तने को फेंक दिया गया। वाकई, ये कितने फिजूलखर्ची करने वाले जीव हैं; कोमल पत्तियों और छिलकों से भरी एक टोकरी के लिए, उन्होंने बांस का पूरा विशाल डंठल नष्ट कर दिया।

क्या यह जानवर अकेला था, या जिस घाटी की ओर हम जा रहे थे, उसके शीर्ष पर हाथियों का पूरा झुंड चर रहा था? हम और सबूतों की प्रतीक्षा में ज़मीन पर बैठ गए, और कुछ देर तक एकदम सन्नाटा छाया रहा। फिर हमें हाथी की सरसराहट सुनाई दी, जिसने अपनी सूंड के सिरे पर पत्तियों का एक गुच्छा इकट्ठा किया था और उसे अपने मुंह में भरने की तैयारी में ज़मीन पर पटक रहा था।

फिर सन्नाटा छा गया, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं: 'फुट! फुट! फुट! फुट!', जिसके बाद एक लंबी 'हवा की सरसराहट' की आवाज आई।

वह हमारे अनुमान से कहीं अधिक करीब था, क्योंकि इन आवाजों से पता चला कि वह शौच कर रहा था। यह भी स्पष्ट हो रहा था कि वह शायद अकेला था।

वह हमारे ठीक आगे था और हवा हमारी तरफ से उसकी दिशा में बह रही थी, इसलिए कुछ ही मिनटों में, या शायद कुछ सेकंडों में ही, उसे हमारी गंध मिल सकती थी। फिर तीन में से एक बात हो सकती थी।

सामान्यतः, मनुष्य की गंध मिलते ही हाथियों को जंगल में गायब हो जाना चाहिए था, जैसा कि हाथियों की आदत होती है, चाहे उनका आकार कितना भी बड़ा क्यों न हो। दूसरी ओर, वह बिल्कुल स्थिर, पत्थर की तरह स्थिर खड़ा रह सकता था, इस उम्मीद में कि हम या तो उसे देखे बिना ही आगे बढ़ जाएँगे, या यदि वह शरारत करने के मूड में हो, तो हमें इतना करीब आने देगा कि वह हम पर हमला कर सके। तीसरा, लेकिन सबसे कम संभावना वाला विकल्प था, बिना किसी झिझक के हम पर हमला कर देना। हाथी, चाहे वे मस्त में हों या किसी भी अन्य चिड़चिड़े मूड में हों, ऐसा करने की संभावना नहीं रखते। अधिकांश हाथी कार्रवाई करने से पहले एक या दो मिनट तक सोचते हैं।

मैं एरिक को पकड़कर बाईं ओर मुड़कर उस जानवर से बचने के लिए एक लंबा चक्कर लगाने ही वाला था कि तभी हमारे कानों में एक नई आवाज सुनाई दी: 'क्विंक! क्विंक! क्विंक!' एक नन्हे हाथी के अपनी माँ से लिपटकर प्यार जताने की आवाज।

अब हमें पता चल गया था कि हम पहले से कहीं कम खतरे में हैं: जब तक कोई ऐसे बच्चे के बहुत करीब न जाए, हाथियों का झुंड आम तौर पर इंसानों से दूर रहता है। सावधान रहने की जरूरत अकेले हाथी से ही होती है।

कम से कम, चीजें इसी तरह होनी चाहिए थीं।

लेकिन कुछ और कारण भी थे। एक तो रात का समय था; दूसरा, हमारी टॉर्च की रोशनी हाथियों को डरा सकती थी, यहाँ तक कि उन्हें परेशान भी कर सकती थी। हमने जानबूझकर अंधेरी रात चुनी थी, क्योंकि हालाँकि चाँदनी में जंगल देखने में बहुत ही सुंदर और दिव्य लगता है, लेकिन ऐसी रोशनी में घूमना असली अंधेरे की तुलना में कहीं ज़्यादा जल्दी स्थिति का पता लगा देता है। इसके अलावा, चाँदनी में हमारी टॉर्च

की रोशनी ज़्यादा दूर तक नहीं पहुँचती और जानवर की आँखों का प्रतिबिंब घोर अंधेरे की तुलना में कहीं कमज़ोर होता।

हम पहले ही कम से कम बात करने पर सहमत हो चुके थे, इसलिए मैंने अपनी टॉर्च बुझा दी और अपने दूसरे हाथ से एरिक की टॉर्च भी पकड़कर बुझा दी। एक पल के लिए अंधेरा घना था, फिर जैसे ही हमारी आँखें उस धुंधलेपन की आदी हुईं, अंधेरा कम हो गया और तारों की टिमटिमाहट ने हमारे आसपास काफी रोशनी बिखेर दी।

सन्नाटा गहराता चला गया। यह घुटन भरा हो गया। इसने हमें व्याकुल कर दिया। अंततः यह अशुभ लगने लगा क्योंकि हमें महसूस होने लगा कि कोई हमें देख रहा है।

हमारे दाहिनी ओर से दूर से आती हुई गरज जैसी धीमी और लगातार गड़गड़ाहट सुनाई दी। लेकिन आसमान साफ और तारों से भरा हुआ था, इसलिए यह आवाज़ बारिश का संकेत तो हो ही नहीं सकती थी। आखिर यह आवाज़ कहाँ से आ रही थी?

जब हमें दोबारा गड़गड़ाहट सुनाई दी तो एरिक दाईं ओर टकटकी लगाए देख रहा था। मैं समझ गया कि वह थोड़ा घबराया हुआ था। आखिरकार उसने मेरे कान के पास आकर फुसफुसाते हुए पूछा, 'क्या तुम्हें वह आवाज़ सुनाई दे रही है? क्या वह बाघ हो सकता है?'

मैंने चुप रहने का इशारा करते हुए अपनी उंगली मुंह पर रखी, दूसरे हाथ से अपना पेट सहलाया और तर्जनी उंगली उस दिशा में चुभोई जहाँ से हमने पहली बार हाथियों की आवाज़ सुनी थी। तारों की रोशनी इतनी तेज़ थी कि हम एक-दूसरे को देख पा रहे थे और एरिक ने मेरी हरकत समझ ली। मैं उसे यह बताने की कोशिश कर रही थी कि वह गड़गड़ाहट की आवाज़ हाथी के पेट की पाचन क्रिया से आ रही थी।

रात में छिपकर शिकार करने वाले को पाँच बुनियादी बातें सीखनी चाहिए, चाहे वह हमारी तरह छिपकर शिकार कर रहा हो या किसी 'दुश्मन' की अग्रिम पंक्ति की जासूसी कर रहा हो। पहली बात यह है कि किसी भी हालत में बात न करें, यहाँ तक कि फुसफुसाएँ भी नहीं। दूसरी बात यह है कि किसी भी जानवर या दुश्मन को देखते या सुनते ही 'स्थिर' हो जाएँ। तीसरी बात यह है कि छाया में रहें और खुले स्थानों को पार करने से बचें। चौथी बात यह है कि अपने पैर रखने में सावधानी बरतें, क्योंकि भले ही देखने के लिए बहुत अंधेरा हो, काँटों पर गलत कदम रखने या सूखे पत्तों को हिलाने से आपकी स्थिति का पता चल जाएगा। ऐसे मौकों पर आपको यह आदत

डालनी चाहिए कि सामान्य चलने की तरह घुटना उठाकर पैर नीचे लाने के बजाय, सैनिकों की तरह औपचारिक परेड में धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ें। बेशक, इसके लिए थोड़े अभ्यास की आवश्यकता होती है, लेकिन उससे भी अधिक सचेत पूर्वचिंता की आवश्यकता होती है, रात में छिपकर शिकार करते समय 'ग्लाइड-स्टेप' का उपयोग करना याद रखें, न कि भूलकर अपनी सामान्य चाल में वापस चले जाएँ।

पांचवीं और सबसे कम महत्वपूर्ण बात जो हमेशा याद रखनी चाहिए, खासकर जब आप 'जम' जाएं, तो वह यह है कि सचमुच 'जम' जाएं और इधर-उधर हाथ-पैर न हिलाते रहें, मच्छरों को न मारें, खुजली न करें, अपने हाथों को अपने चेहरे पर न उठाएं और इस तरह की हरकतें न करें।

यह कभी न भूलें कि रात के सन्नाटे में धीमी फुसफुसाहट भी सुनाई देती है, और ज़रा सी भी हरकत किसी चौकन्ने जानवर या दुश्मन का ध्यान खींच लेती है और आपकी पोल खोल देती है। अगर आपको कभी रात में घूमने निकलना पड़े, या किसी और परिस्थिति में, अगर आप दुश्मन की गोली को अपनी ओर नहीं आने देना चाहते, तो इन पाँचों बातों का हमेशा ध्यान रखें। एरिक ने मुझसे फुसफुसाकर इनमें से पहली बात तोड़ी थी और पास के हाथी ने उसे सुन लिया था।

एक पल बाद ही धरती को हिला देने वाली 'त्रि-आ-अंक! त्रि-आ-अंक' की आवाज सुनाई दी—यह एक डरी हुई महिला की चेतावनी भरी चीख थी।

ये विशालकाय जीव लगभग अप्रत्याशित होते हैं। आप कभी नहीं कह सकते कि वे बिल्कुल समान परिस्थितियों में भी कैसे प्रतिक्रिया करेंगे, हालांकि जंगल में उनके साथ व्यापक अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि आमतौर पर, कुछ निश्चित परिस्थितियों में, आप उनमें से किसी एक के इस या उस तरह से व्यवहार करने की उम्मीद कर सकते हैं।

उस चेतावनी भरी आवाज के बाद, कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गई। फिर चारों ओर से चीखों का शोर गूंज उठा: 'कक्क! कक्क! कक्क!' जैसे ही माताओं ने अपने बच्चों को पुकारा, और साथ ही 'क्विंक! क्विंक! क्विंक!' की आवाज के साथ एक दर्जन हाथी के बच्चे अपनी माताओं के पेट के नीचे शरण लेने के लिए दौड़ पड़े। इससे भी ज्यादा डरावनी बात यह थी कि नदी के तल से एक लंबी गर्जना सुनाई दी, जो अब हमारे ठीक सामने कुछ ही गज की दूरी पर थी।

'आह-आ-आ-आ-आह! आह-आ-आ-आ-आह!' एक नर हाथी, जो शायद झुंड

का मुखिया था, ने अपने साथियों का खतरे का संकेत सुन लिया था; उसने उनकी मदद के लिए दौड़ते हुए उन्हें दिलासा देते हुए दहाड़ लगाई, जबकि एक और नर हाथी, जो इस बार हमारे बाईं ओर लेकिन थोड़ी दूरी पर था, ने भी दहाड़ के साथ जवाब दिया। फिर पहला नर हाथी, हमारी ओर तेज़ी से आता हुआ, पानी में छप-छप करता हुआ आया। जैसे ही वह नदी पार कर रहा था, हमने पानी की आवाज़ सुनी, और वह दहाड़ता हुआ आ रहा था।

याद रहे, हम निहत्थे थे और पैदल थे। मैंने एरिक की कोहनी पकड़ ली। हम मुड़े और तेज़ी से रास्ते पर वापस भागे। अब सावधानी से चलने का समय नहीं था। बल्कि, हम दौड़ते-दौड़ते दौड़ने लगे।

इसी बीच, हमारे पीछे मौजूद बैल, जो अब भी दहाड़ रहा था, उन मादाओं के पास लौट आया जिन्होंने पहले खतरे की घंटी बजाई थी। अब उसने दहाड़ना बंद कर दिया था। केवल बच्चों की चीखें और चहचहाहट तथा माताओं की खाँसी भरी 'कक्क! कक्क!' की आवाज़ें ही सुनाई दे रही थीं। दूसरा बैल, जो पहले दहाड़ रहा था, शायद वह भी उनके साथ मिल गया था, क्योंकि उसकी दहाड़ भी बंद हो गई थी।

अगर दोनों सांडों में से कोई एक या दोनों अब हमारा पीछा करने का फैसला करते हैं, तो संभवतः वे पहले चुपचाप दौड़ेंगे और हमें देखते या सूंघते ही हमले की चीख जैसी तेज आवाज निकालेंगे। यह आवाज डरी हुई गाय की पहले निकली चीख से बिल्कुल अलग होगी। हमले की आवाज ऊंची और लंबी होती है। इस आवाज में घृणा, क्रोध और धमकी का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है, जबकि खतरे की चीख धीमी और कम समय की होती है, जो शायद ही कभी लगातार दो बार से ज्यादा निकलती है।

इसके बजाय, हमें तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं जो हमारे पीछे छूटती हुई प्रतीत हो रही थीं। बच्चों की हलचल रुक गई थी। ज़ाहिर है, सरदार ने समझदारी दिखाते हुए अपने साथियों को साथ ले जाने का फ़ैसला कर लिया था। अब कई छप-छप की आवाज़ों से पता चला कि जानवर नदी पार कर रहे हैं। हम दौड़ना बंद करके बैठ गए और सुनने लगे।

कुछ क्षण बाद, दूर से आती हुई 'पोंक! पोंक! पोंक!' की आवाज के अलावा पूर्ण सन्नाटा छा गया, क्योंकि हमारे दाहिनी ओर पहाड़ी पर काफी ऊंचाई पर बैठी एक सांभर हिरणी ने नीचे हो रहे शोर को सुनकर यह अनुमान लगाया कि शायद कोई

खतरा मंडरा रहा है और उसने भी अपनी चेतावनी भरी आवाज निकाली।

एरिक ने अपने होंठ फिर से मेरे कान के पास लाए और फुसफुसाते हुए कहा, 'अब क्या?'

मैंने कंधे उचकाए, हथेली उठाकर इशारा किया कि हमें थोड़ा रुकना चाहिए और फिर अपनी तर्जनी उंगली से घाटी की ओर इशारा करते हुए कहा कि हम अपनी यात्रा जारी रखेंगे। एरिक मेरी बात समझ गया। एक बार शुरू कर देने के बाद, हम कुछ हाथियों के लिए वापस नहीं जा सकते थे।

हमने लगभग पंद्रह मिनट तक हाथियों के झुंड को रास्ते से हटने दिया। फिर हम उठे और घाटी में सावधानीपूर्वक आगे बढ़ने लगे। थोड़ी ही देर में हम नदी के पास पहुँच गए। इस जगह पर नदी लगभग बीस गज चौड़ी थी। पानी लगभग एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैला हुआ था, जिसकी वजह से हाथियों के नदी पार करते समय हमें इतनी ज़ोरदार छप-छप की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन पानी घुटनों तक ही गहरा था, जैसा कि हमें खुद तब पता चला जब हमने पहली बार नदी को पार करने वाले रास्ते पर चलना शुरू किया।

नदी के दूसरे किनारे पर झाड़ियाँ बहुत घनी थीं। यहाँ लैंटाना कम थी और उसकी जगह वेल्लारी की झाड़ियाँ बहुतायत में थीं, जबकि विशाल तनों वाले बड़े-बड़े पेड़ ऊपर तक फैले हुए थे, जिनकी शाखाएँ घनी होकर तारों की रोशनी को पूरी तरह से ढक रही थीं। नदी के दोनों किनारों पर बांस के बड़े-बड़े झुंड बहुतायत में उगे हुए थे।

अंधेरा घना था और पीछे से घाटी में बहती हुई तेज़ हवा के कारण बांस चरमरा रहे थे, उनके तने आपस में बुरी तरह झुक रहे थे और आपस में टकरा रहे थे। यह हवा हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण थी; हमें यह बिल्कुल पसंद नहीं थी। पीछे से आने के कारण यह हमारी गंध को दूर-दूर तक फैला देती और आगे के जानवरों को हमारे आने की आगाह कर देती। मांसाहारी जानवरों की सूंघने की शक्ति बहुत कम होती है, इसलिए उनके लिए इसका कोई खास महत्व नहीं था, लेकिन हिरण और हाथी हमारे आने से बहुत पहले ही जान जाते। हमें हिरण तो बहुत कम दिखाई देते, जबकि हाथी, अगर शरारत करने के इरादे से न हों, तो हमसे दूर ही रहते। साथ ही, हवा का शोर इतना ज़्यादा था कि हमें कुछ और सुनाई ही नहीं दे रहा था।

मैं आगे-आगे चल रहा था और अपनी तीन सेल वाली टॉर्च जला रहा था, जबकि

एरिक मेरे पीछे-पीछे चल रहा था। मैंने उसे पहले ही चेतावनी दी थी कि वह अपनी टॉर्च का इस्तेमाल न करे, क्योंकि उसकी रोशनी मुझ पर पड़ेगी और मेरी मौजूदगी का पता चल जाएगा। इसके अलावा, पीछे से आती दूसरी टॉर्च की रोशनी कई कारणों से आगे चल रहे व्यक्ति का ध्यान भटकाती है।

हाथियों का झुंड किसी और दिशा में चला गया था, और फिलहाल तो उनका न तो कोई निशान दिखाई दे रहा था और न ही उनकी कोई आवाज सुनाई दे रही थी, हालांकि हमें घाटी में उनकी हालिया उपस्थिति के पर्याप्त सबूत मिले, जैसे कि टूटी हुई शाखाएं, चबाए हुए बांस के टुकड़े और रास्ते भर बिखरे हुए गोबर के बड़े-बड़े गोले।

कुछ ही देर में कोई चिपचिपी और लसलसी चीज़ मेरे चेहरे से चिपक गई। टॉर्च जल रही थी फिर भी मैं उसे देख नहीं पा रहा था। तभी मुझे समझ आया कि वह क्या है: मैं उन विशालकाय मकड़ियों में से एक के जाले में फँस गया था जो इस घाटी में बड़ी संख्या में रहती हैं, और इसी वजह से मैंने इसे 'मकड़ी घाटी' नाम दिया था। ये मकड़ियाँ बहुत बड़ी होती हैं, अक्सर इनके पैरों की लंबाई एक सिरे से दूसरे सिरे तक दस इंच तक होती है। हालाँकि, यह मकड़ी आकार में इतनी बड़ी नहीं थी; शायद एक बड़े कंचे के बराबर। इसका पेट और छाती काले रंग की थी जिस पर पीले रंग की चमकीली धारियाँ बनी हुई थीं। इसकी आँखें बड़ी और गहरे लाल रंग की थीं और टॉर्च की रोशनी को ऐसे प्रतिबिंबित कर रही थीं मानो दो बड़े माणिक हवा में अगल-बगल लटके हों। इसके पैर लंबे, चिकने, काले और मजबूत थे, मानो तार के बने हों।

मैंने दिन के उजाले में इन जीवों को जाले बुनते देखा था। वे एक ऊँची शाखा पर चढ़ते हैं और वहाँ से खुद को नीचे गिरा देते हैं, अपने पीछे एक धागा छोड़ते हुए। जब उन्हें लगता है कि वे काफी नीचे गिर चुके हैं, तो वे आगे का धागा न छोड़कर गिरने को नियंत्रित कर लेते हैं। इस स्थिति में, सिर नीचे की ओर करके, वे तब तक लटके रहते हैं जब तक कि हवा का एक झोंका धागे को किसी पत्ते या शाखा के पास न ले आए, जिससे वे तुरंत चिपक जाते हैं और धागे को जोड़ लेते हैं। यदि कुछ समय के भीतर हवा नहीं चलती है, तो मकड़ी उसी जाले के धागे पर चढ़ जाती है जिससे वह नीचे उतरी थी, और अधिक अनुकूल स्थिति से फिर से कोशिश करती है।

अपने जाले की पहली डोरी को एक तरह से आधार बनाकर, यह दूसरे पेड़ की चोटी पर चढ़ जाता है और वहीं से नीचे उतरते हुए अपने पेट से निकले जाले की लंबाई को तब तक समायोजित करता है जब तक कि वह जाले की पहली डोरी से न

मिल जाए, जिससे यह नया धागा जुड़ जाता है। हवा के चलने का इंतज़ार करते हुए, यह नीचे उतरकर ज़मीन से कुछ फीट ऊपर और उस पहले पेड़ से थोड़ी दूरी पर पहुँच जाता है जहाँ से इसने अपना काम शुरू किया था।

मकड़ी ने अब एक विशाल X का आकार बना लिया है, जो लगभग पंद्रह से बीस फीट चौड़ा है। अब वह उसी बिंदु पर लौटती है जहाँ से उसने शुरू किया था और X के चारों कोनों को आपस में जोड़ना शुरू करती है। वह X की भुजाओं पर ऊपर-नीचे चलती है जब तक कि वह केंद्र में X के साथ एक विशाल आयत न बना ले।

बाकी सब आसान है; मकड़ी गोल-गोल घूमती है और समानांतर रेखाओं में, लगभग आधा इंच की दूरी पर, जाले बुनती रहती है। यह सब बहुत मेहनत का काम है, लेकिन जिस मकड़ी को मैंने एक सुबह इस घाटी से गुजरते हुए देखा, वह अपना जाला बुनना शुरू ही कर रही थी, और जब मैं उसी शाम देर से वापस लौटा, तब तक उसने अपना जाला पूरा कर लिया था: अपने आकार के एक कीट के लिए यह सटीक इंजीनियरिंग का एक अद्भुत नमूना था।

ये जीव अपने जालों में फंसने वाली हर चीज को खा जाते हैं, चाहे वो तितलियाँ हों, पतंगे हों, भृंग हों या छोटी चिड़ियों का खून पीना हो। इनके जालों के रेशे, हालांकि सबसे पतले धागे से भी पतले नहीं होते, फिर भी बहुत लचीले और अविश्वसनीय रूप से मजबूत होते हैं। तनाव पड़ने पर भी एक रेशा भी आसानी से नहीं टूटता। इसके अलावा, जिस पदार्थ से ये रेशे बनते हैं, वह बहुत चिपचिपा होता है।

काम पूरा होने के बाद, मकड़ी अपने पैर फैलाकर जाले के बीचोंबीच बैठ जाती है। इस स्थिति में, अपने रंग के कारण, यह हवा में लटकी हुई किसी पत्ती या किसी अन्य छोटी सी वस्तु जैसी दिखती है। यह स्थिर लटकी रहती है, लेकिन पूरी तरह सतर्क रहती है। जैसे ही कोई जीव गलती से जाले से टकराता है, जाले की चिपचिपी सामग्री उस पर चिपक जाती है। जीव फड़फड़ाता और छटपटाता है, जिससे अन्य चिपचिपी सांचें भी गंदी हो जाती हैं।

तुरंत ही, जाले के बीच में मौजूद मकड़ी हरकत में आ जाती है। वह अपने शिकार की ओर झपटती है और उसके चारों ओर तेजी से चक्कर लगाती है, लगातार धागे छोड़ती रहती है जब तक कि शिकार पूरी तरह से उसके जाल में फंस न जाए।

फिर आता है अंतिम दुखद दृश्य। मकड़ी अपने असहाय शिकार के पास पहुँचती है, उसे काटती है और उसका सारा खून और शरीर का रस चूसना शुरू कर देती है,

इस प्रक्रिया में वह खुद भी मोटी होती जाती है, यहाँ तक कि अक्सर उसका आकार दोगुने से भी अधिक हो जाता है। दूसरी ओर, शिकार एक खाली खोल की तरह ढह जाता है, या अगर शिकार कोई भृंग हो तो एक खाली खोल की तरह। जब सब कुछ समाप्त हो जाता है, तो मकड़ी संघर्ष में अपने जाले को हुए नुकसान की मरम्मत करती है; वह यह काम तुरंत करती है, किसी और अवसर के लिए टालती नहीं है। फिर वह अपने अगले शिकार के आने की प्रतीक्षा में केंद्र में अपनी जगह पर लौट जाती है। मकड़ियाँ बहुत लालची होती हैं और ऐसा लगता है कि उनकी भूख कभी तृप्त नहीं होती।

यह मकड़ी बहुत ही लड़ाकू होती है और अपने ही जैसे किसी भी मकड़ी से, जो इसके जाले में घुसने की कोशिश करे, जान की बाज़ी लगाकर लड़ती है। मैंने वर्षों पहले स्वयं यह देखा था, जब मैंने जानबूझकर इसी प्रजाति की एक मकड़ी को अपने साथी मकड़ी के जाले पर रख दिया था। फिर एक भयंकर लड़ाई छिड़ गई, जिसमें दोनों ही मकड़ियों के पैर फट गए। अंत में, जाले में घुसने वाली मकड़ी हार गई, क्योंकि उसके पाँच पैर जाले की मालकिन मकड़ी ने काट डाले थे और मकड़ी ने भी लड़ाई में अपने दो पैर खो दिए थे। हालाँकि, जो पैर बचे थे, वे जाले में घुसने वाली मकड़ी को मजबूती से जकड़ने के लिए काफी थे, फिर खून चूसने की प्रक्रिया शुरू हुई, और यहीं पर मैंने अपना अवलोकन समाप्त किया।

मैंने अपने चेहरे से जाला हटाया और आगे बढ़ गया। रास्ता संकरा होता गया और दोनों ओर जंगल घना होता चला गया। मेरी टॉर्च की रोशनी एक धूसर पेड़ के तने से दूसरे पर पड़ती रही; उन पर जमी काई और लाइकेन ऐसे लग रहे थे मानो हजारों बूढ़े आदमियों की दाढ़ी ज़मीन तक लटक रही हो।

अचानक जंगल में सन्नाटा छा गया, एक ऐसी खामोशी जिसे महसूस किया जा सकता था और सुना भी जा सकता था। एरिक ने भी इसे महसूस किया और अपने कदम तेज़ कर दिए। उसके पैर की उंगलियां मेरी एड़ियों से टकराईं और अनजाने में उसने मेरी कोहनी को छू लिया। मैं वहीं रुक गई और वह मुझसे टकरा गया। मैंने टॉर्च बुझा दी और घुटनों के बल बैठ गई। जंगल में, ज़मीन के जितना करीब होते हैं, उतना ही बेहतर सुनाई देता है। एक पल के लिए एरिक को आश्चर्य हुआ कि मैं कहाँ हूँ और उसने अपने हाथों से मेरे आस-पास अंधेरे में टटोला। फिर उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'स्कॉची?'

यह मेरा स्कूल का उपनाम था, हालाँकि आज मैं इसे बहुत कम सुनता हूँ। मेरे पुराने सहपाठी लगभग गायब हो चुके हैं। कई विदेश चले गए हैं, जबकि बड़ी संख्या में लोग उस अंतिम यात्रा पर चले गए हैं जो हम सभी को करनी पड़ती है। यह सोचकर कभी-कभी मुझे अकेलापन महसूस होता है।

मैं सोचने लगा कि उस सन्नाटे का, उस लगभग महसूस होने वाली खामोशी का क्या कारण हो सकता है जो हमारे चारों ओर छाई हुई थी। तर्क ने मुझे बताया कि इसके कई कारण हो सकते हैं। अंधेरे में जिस पहाड़ी ढलान को हमने पार किया था, उसके कारण पीछे से आ रही हवा अचानक रुक गई हो; या फिर रात में हमारे सामने फैली विशाल दरार से उत्तर की ओर बहती हुई विपरीत हवा; तूफान से पहले का सन्नाटा, एक ऐसा क्षण जब प्रकृति आने वाले भीषण तूफान के लिए अपनी सांस रोक लेती है।

अंधेरा घना था और उदासी छंटने का नाम ही नहीं ले रहा था। ऊपर देखने पर भी पेड़ों की चोटियाँ धुंध में खोई हुई थीं और कुछ पल पहले तक पत्तों के बीच से जो तारे कहीं-कहीं दिखाई दे रहे थे, वे अब पूरी तरह गायब हो चुके थे। तभी मुझे चारों ओर छाए इस अजीब सन्नाटे का कारण समझ आया। दरअसल, एक तूफान आ रहा था!

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में ऐसी घटना को देखना अविस्मरणीय होता है, चाहे ज़मीन पर हो या समुद्र में; लेकिन घने जंगल में ज़मीन पर इसका सामना करना कोई सुखद अनुभव नहीं होता। लोग कभी-कभी बारिश से बचने के लिए पेड़ के नीचे शरण लेते हैं, लेकिन भारत में, विशेषकर जंगलों में, ऐसी बारिश नहीं होती, और यह निश्चित रूप से कोई सुरक्षित स्थान नहीं होता, क्योंकि बिजली गिरने से पेड़ दो टुकड़ों में टूट सकता है या तेज़ हवा से उसकी जड़ें उखड़ सकती हैं।

कुछ ही क्षण बाद आसमान में एक तेज रोशनी चमकी। ऐसा लगा मानो पेड़ों की चोटियों को चीरते हुए एक ही चमकीली रोशनी से अंधेरा छंट गया हो। तूफान का केंद्र इतना करीब था कि मानो एक पल के अंश में ही गरज की भयानक गड़गड़ाहट सुनाई दी, मानो हजारों तोपें एक साथ दागी गई हों। जिस धरती पर हम खड़े थे, वह कांप उठी और पेड़ों की लटकती हुई पत्तियां गरज की गूंज से हिल उठीं; मानो पूरा ब्रह्मांड कांप रहा हो।

ज़मीन पर दुबकने के अलावा कोई चारा नहीं था। खड़े रहना गिरती शाखाओं से

चोट लगने का खतरा था। हम सब मिलकर पास के एक पेड़ के तने की ओर बढ़े। मैंने यह सुनिश्चित किया कि वह मध्यम ऊँचाई का पेड़ हो, न कि कोई बहुत ऊँचा पेड़ जिसकी चोटी जंगल की ऊपरी शाखाओं तक पहुँचती हो, क्योंकि पेड़ जितना ऊँचा होगा, बिजली गिरने का उतना ही अधिक खतरा होगा, जो इस तरह के भयंकर तूफानों में कभी भी गिर सकती है।

सन्नाटा और अंधेरा फिर लौट आया, लेकिन क्षणिक। एक और तेज़ बिजली चमकी, जिसके बाद उससे भी ज़ोरदार गरज सुनाई दी। तीसरी बिजली चमकना नामुमकिन था। मानो आकाश से आग का कोई विशालकाय सर्प निकला हो, बिजली जंगल में कहीं एक विशाल पेड़ पर गिरी और उसके बाद जो गरज सुनाई दी, उसकी तीव्रता से मानो हमारे कान के पर्दे फट गए और हम सुन्न हो गए।

अगले ही पल हमें घाटी से हमारी ओर आती हुई एक ज़बरदस्त, गड़गड़ाहट सुनाई दी, मानो सौ लहरें एक साथ किसी पथरीले किनारे से टकरा रही हों। यह हवा थी और जैसे-जैसे यह करीब आती गई, ऐसा लगा मानो जंगल के पेड़ इस भीषण प्रहार के लिए खुद को तैयार कर रहे हों।

अब तूफान लगभग हम पर आ ही चुका था, और इस भयानक, गर्जनापूर्ण ध्वनि के साथ-साथ हमें सैकड़ों शाखाओं के चटकने की आवाज सुनाई दे रही थी, जो भीषण आंधी में माचिस की तीलियों की तरह टूट रही थीं। हवा के तेज झोंकों के ऊपर हमें गिरती शाखाओं और पेड़ों के धमकने और टूटने की तेज आवाजें सुनाई दे रही थीं, और लकड़ी के टूटने, फटने और बिखरने की आवाजें भी। जगह-जगह, असाधारण ऊंचाई या विशालता वाले पेड़, अपने भारी वजन और हवा के प्रतिरोध के कारण, जड़ से उखड़कर जोरदार आवाज़ के साथ गिर रहे थे, और अपने साथ कई छोटे पेड़ों और पौधों को भी गिरा रहे थे जो दुर्भाग्यवश नीचे शरण लिए हुए थे।

कुछ मिनटों तक तेज हवा चलती रही और फिर उतनी ही अचानक थम गई जितनी अचानक शुरू हुई थी। पेड़ फिर से खड़े हो गए, उनमें से कई पेड़ों के आधे पत्ते झड़ चुके थे। घाटी में हवा के धीरे-धीरे कम होते जाने की गर्जना के अलावा कुछ देर के लिए सब शांत हो गया।

कुछ ही देर में एक नई आवाज़ सुनाई देने लगी, जो नज़दीक आते ही तेज़ी से तेज़ होती गई: भाप के निकलने जैसी लगातार, सरसराहट की आवाज़। बारिश।

अब बारिश शुरू हो चुकी थी। पल भर पहले जो सूखी ज़मीन और पेड़-पौधे थे,

वो पलक झपकते ही कीचड़ और हरियाली के दलदल में बदल गए थे। इतनी तेज़ बारिश में बेहतरीन छाते और रेनकोट भी काम नहीं आते, और वैसे भी हमारे पास छाते या रेनकोट थे ही नहीं। हम तो पूरी तरह भीग चुके थे, साथ ही हमारी पीठ पर रखा थोड़ा-बहुत सामान और खाना भी पूरी तरह से भीग गया था। पानी हमारे शरीर से बहकर हमारी पैंट से नीचे आ रहा था और हमारे जूतों में, यहाँ तक कि मेरे कीमती अल्पाका-लाइन वाले बूटों में भी, लबालब भर गया था। ये जूते वाटरप्रूफ होने की गारंटी के साथ बेचे गए थे। अब ये विज्ञापन की बात को सच साबित कर रहे थे, लेकिन उल्टे तरीके से। इनमें भरा पानी वहीं रुका रहा और बाहर निकलने से इनकार कर दिया।

बारिश लगातार होती रही।

वह छोटी सी धारा, जो कभी चिकने, काई लगे पत्थरों पर कलकल और लहरें बनाती हुई इधर-उधर बहती थी, अब ऐसा कुछ नहीं कर रही थी। वह अपने रास्ते में आने वाली चट्टानों से टकराती, उन्हें चीरती और तोड़ती हुई बह रही थी, साथ ही बाढ़ में बहकर आई टूटी शाखाओं और पेड़ों के तनों के घिसने और रगड़ने की आवाज़ भी गूंज रही थी। पानी ऊपर चढ़ता गया और अपने रास्ते में आने वाली चट्टानों और पत्थरों को ढक लेता गया; वह एक उग्र, निरंतर प्रवाह बन गया, जिसके ऊपर बहकर आई चीज़ें और कचरा जमा हो गया था, जो उग्र बाढ़ की बेकाबू पकड़ में असहाय रूप से घूम रहा था और उछल रहा था।

जिस ज़मीन पर हम खड़े थे, वह एक फुट गहरी कीचड़ से भरी थी और बारिश रुकने का कोई आसार नहीं था। लेकिन यह सिर्फ़ एक घंटे से थोड़ा ज़्यादा चली और फिर उतनी ही तेज़ी से गुज़र गई जितनी तेज़ी से इससे पहले वाली हवा गुज़री थी।

अब हमारे चारों ओर लाखों तरह की आवाजें थीं, पत्तियों से टपकने की आवाज, धारा के बहने की कलकल ध्वनि, और किनारों से बार-बार आने वाली 'प्लॉप' की आवाज, क्योंकि बारिश से भीगी और उग्र जलधारा से कमजोर हुई मिट्टी का एक बड़ा हिस्सा बाढ़ में ढह जाता था।

हम सचमुच बहुत दुखी थे। अनकहे विचार घर की ओर, बिस्तर के आराम और गर्म कंबलों की ओर, एक कप गरमागरम चाय की ओर, एक पाइप की सुकून भरी चुस्की की ओर और एक अच्छी किताब की ओर घूम रहे थे। आखिर किस पागलपन भरे विचार ने हमें इस तरह की यात्रा शुरू करने और खुद को ऐसी मुश्किल में डालने

के लिए मजबूर किया? फिर आत्म-निंदा शांत हुई। हमने खुद को मुस्कुराने के लिए मजबूर किया और सोचने लगे कि अब आगे क्या करना चाहिए। हमारे पास या तो वापस जाने का विकल्प था या आगे बढ़ने का। और भला कौन गंभीरता से वापस जाने के बारे में सोचेगा?

एक बात तो तय थी: हम भीगे हुए कपड़ों में आगे नहीं बढ़ सकते थे। जैसे-जैसे पानी भाप बनकर उड़ने लगता, हमारे कपड़े शरीर पर और ठंडे होते जाते। बिना कपड़ों के ठंड लगना तो लाज़मी था, पर कम से कम ठंड तो बढ़ती नहीं। चाहे यह तर्क कितना भी तर्कसंगत लगे या न लगे, हमने अपने सारे कपड़े उतार दिए, जूतों से पानी निकाला और उन्हें फिर से पहन लिया। हमने अपने गीले कपड़ों को बांस के टुकड़ों से बांध दिया, जिन्हें हमने अपने सामान के साथ कंधे पर लाद लिया।

अब हम आगे बढ़ने के लिए तैयार थे, लेकिन यकीन मानिए, हम बिल्कुल भी सहज नहीं थे। बांस हमारी त्वचा में चुभ रहा था और हमारे किटबैग के पट्टे भी; कांटे हमारी चमड़ी को खरोंच रहे थे और हमारे नंगे पैर बूटों में बेतरतीब ढंग से लटक रहे थे; इसके अलावा, आधी रात हो चुकी थी और कड़ाके की ठंड थी।

जल्द ही एक और मुसीबत सामने आ गई। हम कीचड़ और दलदल में फिसलते-फिसलते गिर पड़े। भीगे हुए रास्ते पर और उसके दोनों ओर झाड़ियों में लड़खड़ाते हुए चलने से जो शोर मच रहा था, उससे जंगल में एक फर्लांग तक हमारी हलचल सुनाई दे रही थी। खैर, भारी बारिश के बाद शायद ही कोई जानवर इधर-उधर घूम रहा होगा। यहाँ तक कि हाथी भी दिन भर का काम - या यूँ कहें कि रात का काम - खत्म करके किसी सुरक्षित जगह पर दुबक गए होंगे। हर प्राणी शांत पड़ा होगा; सिवाय साँपों के! वे तो जाग रहे होंगे, शिकार कर रहे होंगे और उन मेंढकों को खा रहे होंगे जिन्होंने इस रात को उनके लिए खुशी का मौका बना दिया था।

हमारे चारों ओर इन जीवों की टर्राहट सुनाई दे रही थी, खासकर उफनती नदी के किनारों पर। 'कोर! कोर! कोर! क्वैक! क्वैक! क्वैक!' हजारों मेंढकों के गले से एक जैसी आवाज आ रही थी। हवा उस शोर से गूंज रही थी। स्पाइडर वैली के सारे मेंढकों की खुशी की आवाज़ से हवा कांप रही थी।

क्योंकि यह मिलन का समय था, और जंगल की ज़मीन पर प्रेम करते हुए दबे हुए जोड़ों के शव बिखरे पड़े थे, जिन पर अंधेरे में पैर रखने से हम बच नहीं सकते थे।

क्षण भर के लिए मुझे रास्ते के बीचोंबीच कुछ सफेद सा दिखाई दिया। फिर वह

गायब हो गया। दोबारा थोड़ी देर के लिए दिखाई दिया और फिर गायब हो गया। मुझे वह ज़मीन दिखाई दे रही थी जहाँ वह गायब हुआ था और मुझे कुछ हलचल का आभास हुआ, हालाँकि मैं यह नहीं पहचान पाया कि वह क्या था।

मैं रुक गया और टॉर्च की रोशनी को उस हलचल पर स्थिर कर दिया। एरिक मेरे पीछे रुक गया। कुछ सेकंड तक मैं समझ नहीं पाया कि रास्ते पर क्या है, फिर अचानक मुझे पता चला कि वह क्या था: एक साँप!

मैंने अपनी गति बढ़ा दी और एरिक को वहीं रुकने का इशारा किया। साँपों के कान नहीं होते, लेकिन वे सुनने की कमी को अपनी तीव्र स्पर्श क्षमता से पूरा कर लेते हैं। उनके पेट पर मौजूद खुरदरी त्वचा, जो ज़मीन से सटी रहती है, के ज़रिए वे किसी भी हिलती-डुलती चीज़ से होने वाले खतरे को भांप लेते हैं, क्योंकि वे उस हलचल से उत्पन्न कंपन को महसूस कर लेते हैं।

मैंने जो जूते पहने थे उनके सोल मुलायम रबर के थे और मैं बिना किसी को पता चले उसके पास पहुँचने में कामयाब रहा। मेरी टॉर्च की रोशनी सीधे उस सरीसृप पर पड़ रही थी, लेकिन वह ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। पीछे से आने के कारण टॉर्च की रोशनी साँप की दृष्टि सीमा से बाहर थी। साँपों की आँखें पलकहीन और स्थिर होती हैं, और वे अगल-बगल या पीछे की ओर नहीं घूम सकतीं। न ही मेरे आने का एहसास उस सरीसृप के दिमाग में हुआ, जो उस समय पूरी तरह से अपने काम में मग्न था - एक बहुत बड़े मेंढक को एक ही बार में निगलना।

अब मैं इतना करीब था कि सारी चीज़ें साफ़-साफ़ देख सकूँ। साँप के जबड़े आपस में जुड़े हुए नहीं थे, इसलिए वे अजीब तरह से फैले हुए थे और उसका गला भी बेहिसाब फूला हुआ था। बेचारे मेंढक का सिर और एक अगला पैर पहले ही उस रास्ते से नीचे जा चुका था, जबकि बाकी तीन पैर और शरीर बाहर लटके हुए थे। आम तौर पर, ऐसे जीव को बचने के लिए छटपटाना और संघर्ष करना चाहिए, लेकिन यह मेंढक पूरी तरह से मर चुका था, और इसका कारण स्पष्ट था। वह साँप एक कोबरा था। उसके ज़हर ने कुछ ही सेकंड में मेंढक को मार डाला था।

कोबरा ने न तो डर से और न ही गुस्से से अपना फन उठाया था, क्योंकि उसे अभी तक मेरे आने का पता नहीं था, लेकिन उसके गले में मौजूद मेंढक के भारी भरकम टुकड़े ने उस जगह की त्वचा को इतना फैला दिया था कि उसका विशिष्ट V-आकार का निशान साफ दिखाई दे रहा था। उस समय मैं साँपों का शौकीन संग्राहक

था, और मेरे सामने मौजूद साँप का आकार बहुत बड़ा था। मैंने उसे पकड़ने का फैसला किया।

दुर्भाग्यवश, मैं इसी उद्देश्य से जो मोटा कपड़ा थैला लाया था, वह मेरी पीठ पर किट बैग के साथ था। किट बैग को पीठ से उतारने से पहले मुझे बांस और अपने गीले कपड़े नीचे रखने पड़े, और इस सारी हलचल में कोबरा को हमारी मौजूदगी का एहसास हो गया। उसने आधा निगला हुआ मेंढक बाहर निकाल दिया, मेरी ओर मुड़ा और क्रोध से कांपते हुए अपना फन उठा लिया।

वह एक शानदार नमूना था, लेकिन अगर मैं उसे लड़ने के लिए उकसाने में नाकाम रहा तो वह पल भर में रेंग कर भाग जाएगा। इसलिए मैंने उससे कुछ फीट दूर ज़मीन पर ज़ोर से पैर पटका। कोबरा ने जवाब में खुद को और ऊपर उठाया और फिर उसी जगह ज़मीन पर वार किया जहाँ कुछ ही पल पहले मेरा पैर था।

इसी बीच मैं अपने कंधों से किट बैग उतारने, ज़िप खोलने और उसमें मौजूद कई तरह की चीज़ों के बीच उस सांप वाले थैले को ढूंढने में जी-जान से जुट गया। इस काम में काफी समय लग गया। एक तो थैला बाहर से पूरी तरह भीगा हुआ था और मैं एक हाथ से काम कर रहा था, क्योंकि मुझे कोबरा पर नज़र रखनी थी, इसलिए मैं थैले को ढूंढ नहीं पा रहा था।

आखिरकार मुझे वह मिल गया, मैंने उसे जल्दी से बाहर निकाला और सांप की ओर बढ़ा, जिसने पूरी तरह से घूमकर मेरी ओर मुंह कर लिया।

एक बार जब आप कोबरा का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं, तो उसे पकड़ना वास्तव में बहुत आसान होता है। मुश्किल तब आती है जब वह तेज़ी से हरकत कर रहा हो, और इस काम में काफ़ी जोखिम भी होता है। इस स्थिति में, मैंने अपने दाहिने हाथ से कपड़े का थैला पकड़कर साँप के सिर के पास ले गया। वह गुस्से से काँप उठा, ज़ोर से फुफकारा और थैले पर झपटा। तभी मैंने थैला पीछे खींच लिया, जिससे कोबरा ने अपना फन पूरी तरह फैलाकर दूसरी बार अपना सिर ज़मीन पर पटका।

इस समय तेज़ी से काम करना ज़रूरी है, लेकिन इसमें कोई मुश्किल नहीं है। तेज़ी से काम करने की कला अभ्यास से आती है। मेरे बाएं हाथ में वो बांस का टुकड़ा था जिस पर मैंने अपने गीले कपड़े टांगे थे। अब वो काम आया। मैंने जल्दी से सांप की गर्दन पर, उसके सिर के पीछे और फन के ऊपर, बांस के सिरे से लगभग छह इंच की दूरी पर दबाव डाला। ज़मीन गीली थी, इसलिए मुझे ध्यान रखना था कि कहीं

उसका सिर फिसल न जाए। एरिक मेरी कोई मदद नहीं कर पाया। मैंने देखा कि वो मुझसे दस गज दूर चला गया था। मैंने उसे जल्दी से बुलाया और कहा कि आकर मेरी टॉर्च पकड़ ले। वो हिचकिचाते हुए आगे आया और मुझसे टॉर्च ले ली।

'रोशनी को स्थिर रखो,' मैंने चेतावनी दी। फिर मैं नीचे झुका, कपड़े का थैला नीचे गिराया और अपने दाहिने हाथ के अंगूठे और तर्जनी से सांप की गर्दन के पीछे से पकड़ लिया। फिर मैंने बांस हटा दिया। सांप मेरे हाथ और बांह के चारों ओर लिपट गया, लेकिन मैंने अपने बाएं हाथ से उसे खोल दिया और एरिक को थैला उठाने के लिए कहा।

वह हिचकिचाया और मैंने दोहराया, 'जल्दी करो; इसे उठाओ और खोलो।'

मुझे ऐसा लगा मानो एरिक को यह करने में बहुत ज़्यादा समय लग रहा हो, लेकिन आखिरकार थैला अपनी जगह पर टिक गया और मैंने साँप के कुंडलियों को उसमें धकेल दिया। अंत में मैंने साँप का सिर अंदर डाला, अपने बाएँ हाथ की उंगलियों को थैले की गर्दन पर पकड़े रखा, साँप का सिर छोड़ा और अपना दायाँ हाथ बहुत तेज़ी से थैले से बाहर खींच लिया। लगभग एक ही झटके में, मैंने अपने बाएँ हाथ की उंगलियों और अंगूठे से थैले की गर्दन बंद कर दी।

कोबरा पकड़ने का बस यही तरीका है। कुछ लोगों ने मुझसे कहा है कि इसके लिए हिम्मत चाहिए। इस बात पर यकीन मत करना। मेरी राय में तो बात बिल्कुल उलट है। हिम्मत बिल्कुल नहीं होनी चाहिए, या कम से कम होनी चाहिए। क्योंकि अगर घबराहट हुई तो सांप पकड़ने वाला उसे पकड़ ही नहीं पाएगा। और इससे भी बुरा यह होगा कि वह बीच में ही हिचकिचा जाए, और यह उसके लिए बहुत बुरा होगा! तब सांप उसकी उंगली या हाथ पर काट लेगा।

मैंने बैग के गले को बहुत मजबूती से बांध दिया और फिर उसे अपने किटबैग में वापस डाल दिया। कुछ मिनट बाद हम फिर से अपने रास्ते पर चल पड़े।

अगले तीस मिनट तक गीले और ठंडे मौसम के कारण हमारी बेचैनी बढ़ती गई। रुककर आग जलाकर अपने कपड़े और खुद को सुखाना अच्छा होता, लेकिन पूरा जंगल पानी से भीगा हुआ था और ऐसा करना नामुमकिन था। फिर भी हम जवान थे और रोमांच के लिए बेताब थे। मन हर बाधा को पार कर लेता है और हम शारीरिक तकलीफों को भूलकर आगे बढ़ते रहे। घाटी के ऊपरी हिस्से में हाथियों से मिलने के अलावा हमें कोई मज़ा नहीं आया था और हम कुछ रोमांचक होने की उम्मीद कर रहे

थे।

अब धारा खड़ी चट्टानों के बीच तेज़ी से बहने लगी; ज़मीन सख्त हो गई और पेड़-पौधे छोटे और कम घने हो गए। आसमान का विशाल विस्तार दिखाई देने लगा और हमने देखा कि बादल छंट गए थे। अनगिनत तारे हमारे ऊपर टकटकी लगाए हुए थे और तेज़ी से चमक रहे थे।

दक्षिण की ओर चलते हुए, हमारे दाईं और बाईं ओर फैली समानांतर पर्वत श्रृंखलाएँ क्रमशः नदी के पश्चिमी और पूर्वी किनारों से मेल खाती थीं। अब हमने देखा कि वे एक-दूसरे की ओर अभिसरित होती प्रतीत हो रही थीं, जबकि घाटी संकरी होकर एक गहरी खाई में तब्दील हो रही थी। हम दोनों ओर की चोटियों और पर्वत शिखरों की गहरी, अखंड रूपरेखा देख सकते थे, जो तारों से जगमगाते आकाश में ऊपर की ओर उठती हुई प्रतीत हो रही थीं।

'अयंघ! आ-उ-उंग! ऊँ-ऊँ न्घ! ऊ-ऊ-न्घ! 'ऊँ-ऊँ-ऊँ!'

उस अद्भुत ध्वनि को पहचानते ही हम थम गए। जिस घाटी में हम खड़े थे, वह गूंज उठी।

यह बाघ की पुकार थी! जानवर हमारे बाईं ओर और बिल्कुल सामने था। वह पूर्वी पर्वत श्रृंखला से नीचे आया था और नदी पार करने ही वाला था। हमने अपनी मशालें बुझा दीं और उसे रोकने की कोशिश में तेजी से आगे बढ़े।

'उह! उह! उघा!उघा! ऊऊ-ह! ऊँ-ऊँ! ऊँ-ऊँ-निकट! औंघ-हा! उह!उह'!

अब आवाज लगभग लगातार आ रही थी। बाघ बहुत शोर मचा रहा था। क्या यह अधीरता का संकेत था? मुझे उसमें एक दबंगई झलकती हुई महसूस हुई। फिर मुझे याद आया कि यह फरवरी का महीना था। बेशक फरवरी का महीना थोड़ा देर से शुरू हुआ था, लेकिन फिर भी फरवरी ही था—यह प्रजनन का मौसम था या उसका आखिरी दौर!

हमें जो लगातार अर्ध-दहाड़ें सुनाई दे रही थीं, उनका यही कारण था। वह जानवर बाघ नहीं, बल्कि एक बाघिन थी। वह अपने साथी को बुला रही थी, और इस मनोदशा में एक बाघिन निहत्थे व्यक्ति के लिए सामना करने लायक प्राणी नहीं होती।

जैसा कि मैंने कई बार कहा है, बाघों से मिलना आम तौर पर काफी सुरक्षित होता है, यहाँ तक कि निहत्थे व्यक्ति के लिए भी, सिवाय तीन अपवादों के—एक आदमखोर बाघ, एक घायल बाघ, या एक बाघ जो संभोग के मूड में हो या संभोग कर

रहा हो। उस समय इनमें से कोई भी स्थिति पूरी तरह से मौजूद नहीं थी, लेकिन तीसरी स्थिति लगभग वैसी ही थी।

बाघिन लगातार पुकार रही थी। वह अब हमसे थोड़ी ही दूरी पर थी और नदी के हमारे किनारे पर ही थी। हम उसी किनारे पर तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। नदी हमारे दाहिनी ओर थी। हाल ही में आए तूफान से आई बाढ़ का पानी काफी हद तक कम हो गया था, लेकिन नदी कम से कम तीन या चार फीट गहरी तो थी ही। अगर बाघिन को नदी पार करनी थी, तो उसे तैरना ही पड़ता।

आम तौर पर बाघों को पानी पसंद होता है। खासकर आंध्र प्रदेश के गर्म जंगलों में, मैंने उन्हें छायादार तालाबों में लेटे हुए देखा है, जहाँ तापमान 110 डिग्री से ऊपर पहुँच जाता है, तब वे खुद को ठंडा करते हैं। लेकिन यह कहना मुश्किल था कि यह बाघिन उस धारा को पार करने का साहस कर पाएगी या नहीं, जो दोनों ओर के जंगलों से आने वाली अनगिनत छोटी धाराओं के अतिरिक्त पानी से अभी भी झागदार थी।

उसी क्षण मेरी अटकलों में एक नई आवाज़ से बाधा उत्पन्न हुई: 'व्र्-उंग! अर-उंग! अर-उंग! ऊ-ऊन!'

यह बाघिन द्वारा मचाई गई आवाज और पानी की गर्जना से कहीं अधिक तेज थी।

एक बाघ! उसने साथी की पुकार सुनी और उसका जवाब दिया। बाघिन ने भी उसे सुना। उसने खुशी से ज़ोरदार 'उह! आह-हा-हा-हा!' की आवाज़ निकाली।

अभी भी अंधेरा था। टॉर्च जलाने से हमारी मौजूदगी का पता चल जाता। संभवतः दोनों बाघ गायब हो जाते, जब तक कि उन्हें हमारी मौजूदगी से कोई खास आपत्ति न हो। तब हालात इतने सुखद नहीं होते। लेकिन अगर हम अंधेरे में ही रहते तो शायद हमारी मौजूदगी का पता नहीं चलता, क्योंकि बाघों में सूंघने की शक्ति नहीं होती, और नदी की आवाज़ अनजाने में होने वाली किसी भी आवाज़ को दबा देती।

तारों की रोशनी में हमारी आँखें अभ्यस्त हो चुकी थीं, तभी हम रुक गए और पगडंडी के किनारे लगे एक पेड़ के पीछे खड़े हो गए। हमारे दाहिनी ओर कुछ ही फीट की दूरी पर नदी का किनारा था। उसके आगे और बाईं ओर, घना जंगल था, जो हजारों टिमटिमाती, चलती रोशनी से जगमगा रहा था - जुगनू जो लगातार इधर-उधर भागते रहते थे। गिरते पानी में अनगिनत तारे प्रतिबिंबित हो रहे थे, और कहीं-कहीं हमें

किनारे पर झाड़ियों या मोटी घास के गुच्छों की धुंधली आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं। किसी भी प्रकार की हलचल हमें दिखाई नहीं दे रही थी।

दोनों बाघों ने अब आवाज लगाना बंद कर दिया था। उनके मिलने के लिए, दोनों में से किसी एक को बीच में बहने वाली नदी को पार करना पड़ता। सवाल यह था कि कौन नदी पार करेगा? अगर बाघिन पार करती, तो हम सुरक्षित होते। अगर बाघ आता, तो दोनों जानवर हमारे बहुत करीब होते और अगर उन्हें हमारी मौजूदगी का पता चल जाता, तो वे निश्चित रूप से नाराज़ होते।

बाघिन ने एक बार फिर पुकार कर मामले को अपने पक्ष में कर लिया। इस बार उसकी आवाज़ लगभग म्याऊं जैसी थी, मानो कोई बहुत कर्कश और खुरदरी बिल्ली हो। अपनी स्थिति में सभी मादाओं की तरह, वह अपनी लाभप्रद स्थिति का आनंद ले रही थी और नर बाघ को अपने पास आने के लिए लुभा रही थी; वह स्वयं उसके पास जाने को तैयार नहीं थी। क्या बाघ इस प्रलोभन का विरोध कर पाएगा?

वह दहाड़ा और बार-बार दहाड़ा। यह एक साथ चुनौती और अवज्ञा का दहाड़ था। स्पष्ट रूप से वह अन्य सभी बाघों को अपनी नई साथी से दूर रहने की चेतावनी दे रहा था। बाघिन, जो अभी भी हमारे किनारे पर थी, अपनी मोहक म्याऊं करती रही।

जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, बाघ अब और विरोध नहीं कर सका। दूसरे किनारे पर घने जंगल की काली दीवार से एक लंबी, काली आकृति उभरी, कुछ सेकंड के लिए झिझकी और फिर नदी के पानी में समा गई।

मैंने पहले ही कहा है कि यह जलमार्ग न तो चौड़ा है और न ही गहरा, और इसे पार करने में उसे बहुत कम समय लगा। जैसे ही वह पानी में आगे बढ़ा, उसकी आकृति एक ठोस धूसर रूप में बदल गई और फिर वह किनारे पर आ गया, शायद लगभग पचास गज दूर।

इतने समय तक बाघिन ने अपना रूप नहीं दिखाया था। अब वह छलांग लगाकर बाहर निकली, स्वयं भी एक भूरे रंग की आकृति की तरह, ज़ोरदार दहाड़ के साथ बाघ की ओर बढ़ी और अपने पिछले पैरों पर खड़ी होकर उसकी गर्दन पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। बाघों के बीच होने वाली नकली लड़ाई शुरू होने वाली थी। दोनों में से कोई भी जानवर दूसरे को चोट पहुँचाना नहीं चाहता, लेकिन अक्सर इस लड़ाई के दौरान, उत्तेजना या किसी अनजाने काटने या खरोंच के कारण, गुस्सा बढ़ जाता है और बाघिन हमेशा ही आक्रामक हो जाती है। बाघ तब तक सहन करता है जब तक

कि वह हद पार नहीं कर देती। फिर वह अपना आपा खो बैठता है और पूरी गंभीरता से उस पर हमला कर देता है।

बार-बार संभोग करने के बाद दोनों जानवर बुरी तरह से खरोंच और काटने से घायल हो सकते हैं और काफी खून बह सकता है, लेकिन दोनों जानवर इस नियमित प्रक्रिया का आनंद लेते हुए दिखाई देते हैं, जल्द ही अपने मतभेदों को भूल जाते हैं और शावकों के जन्म तक एक जोड़े के रूप में साथ रहते हैं। जन्म के समय, बाघिन अपने नर साथी से कुछ समय के लिए अलग हो जाती है, इस डर से कि कहीं वह शावकों को खा न जाए। इसके बाद वे लगभग एक वर्ष के लिए अपने शावकों के साथ फिर से मिल जाते हैं, और फिर अगले मौसम में नए साथी की तलाश में अलग हो जाते हैं, जो पिछले मौसम के लगभग दो साल बाद होता है। हालांकि, कभी-कभी शावक कुछ महीनों तक अपनी माँ के साथ और भी रह जाते हैं।

जब तक बाघ नदी पार नहीं कर लेता, तब तक पीछे हटने का हमारा मौका हाथ से निकल चुका था। अब वह हमसे कुछ ही गज दूर था, और साथ ही बाघिन भी उसके साथ थी, इसलिए हमारी ज़रा सी भी हरकत से दोनों जानवरों में से किसी एक को हमारी मौजूदगी का पता चल जाता। अगर ऐसा हुआ, तो हमारी जान जाने की पूरी संभावना थी, क्योंकि दोनों बाघिनें, और खासकर नर बाघ, हमें उनके मिलन की छुपकर बातें सुनने नहीं देते। यह भी उतना ही संभव था कि मिलन की उत्तेजना में डूबी बाघिन हमारी मौजूदगी से नाराज़ हो जाती। वैसे भी, अब कुछ भी करने का समय नहीं था। हमारे पास एकमात्र रास्ता यही था कि हम उस पेड़ के तने के पीछे ज़मीन में धंस जाएं जो हमें छिपाए हुए था और उम्मीद करें कि मिलन कर रहे जानवर हमारी तरफ न बढ़ें।

अगले एक घंटे तक हमें दोनों जानवरों के बीच चल रहे प्रेमालाप के दौरान निकलने वाली कर्कश आवाज़ों, गुर्राहट, दहाड़ों, लंबी म्याऊँ-म्याऊँ और अन्य कई तरह की आवाज़ों को सुनना पड़ा। हर पल उनकी मनोदशा और स्वभाव के अनुसार आवाज़ें बदलती रहती थीं। जैसे-जैसे संभोग चरम पर पहुँचता गया, प्रेमालाप और भी उग्र होता गया, यहाँ तक कि एक समय ऐसा आया जब वे लगभग एक-दूसरे से जी-जान से लड़ रहे थे। संभोग के दौरान बाघ मादा की गर्दन पर काटता है और उसे नीचे दबाकर रखता है। फिर वे थोड़ी देर के लिए अलग होते हैं और आराम करते हैं, उसके बाद फिर से शुरू करते हैं।

कई बार, उछल-कूद और हाथापाई के दौरान, वे इधर-उधर भागे और कई बार तो हमसे दस गज की दूरी तक आ गए। कभी-कभी हमें लगा कि हम पकड़े गए हैं और भागने की तैयारी करने लगे, हालाँकि हम जानते थे कि ऐसा करने से हमारी मौत और भी जल्दी हो जाएगी। जिस पेड़ के नीचे हम छिपे थे, वह इतना घना था कि उस पर चढ़ना असंभव था, और अगला पेड़ बीस फीट दूर था, लेकिन हम उस पर एक साथ नहीं चढ़ सकते थे। जो पहले उस पेड़ तक पहुँचता, शायद बच जाता, बशर्ते बाघ उसका पीछा न करते, लेकिन दूसरे का तो मरना तय था। इसलिए हम वहीं रुके रहे।

अंततः दोनों बिल्लियाँ अपने प्रयासों से थक गईं। बाघिन बिल्ली की तरह आराम करने के लिए सिकुड़ गई, जबकि बाघ उसके बगल में बैठकर आराम करने लगा। और हमें आश्चर्य हुआ कि क्या वे कभी वापस नहीं जाएँगे।

शांत वातावरण अचानक किनारे से आती एक दहाड़ से टूट गया। एक और बाघ, नर, ने आनंद की आवाज़ें सुनी थीं और यह देखने आया था कि क्या उसे भी इसमें शामिल होने का मौका मिल सकता है। पहला बाघ तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हो गया और नए आने वाले को चुनौती देते हुए दहाड़ मारी। बाघिन सीधी हुई, अपने चारों पैरों पर खड़ी हुई, अपनी पूंछ को अगल-बगल हिलाया और फिर अपने पिछले पैरों पर बैठ गई। स्पष्ट रूप से वह इस स्थिति का आनंद ले रही थी, निस्संदेह दो नर बाघों को अपने लिए एक भयंकर मुकाबले में शामिल होते देखकर वह बेहद खुश थी।

किनारे पर मौजूद बाघ ने भी दहाड़ते हुए चुनौती का जवाब दिया। फिर वह छिपने की जगह से बाहर निकला और सबके सामने आ गया। अब दोनों नर बाघ आमने-सामने थे, उनके बीच नदी थी। बाघिन अभी भी अपने पिछले पैरों पर बैठी थी, हल्की सी गुर्राहट, म्याऊं और खुशी से लगभग गुर्रा रही थी। यह स्पष्ट था कि वह आनंद ले रही थी। इससे पहले बाघ का गुस्सा भड़क उठा। ज़ोर से 'व्हॉफ! व्हॉफ! व्हॉफ!' की आवाज़ करते हुए वह नदी में उतरा और अपने प्रतिद्वंद्वी पर झपटा। पानी का स्तर काफी कम हो गया था, क्योंकि इस बार वह पूरी दूरी नदी में तैरकर पार करने में सक्षम था।

चुनौती देने वाला बाघ खांसते और दहाड़ते हुए उसके आने का इंतजार कर रहा था। पहला बाघ दूसरे किनारे पर पहुंचा, एक पल के लिए नीचे झुका और फिर अपने प्रतिद्वंद्वी पर झपटा।

लेकिन आखिरी क्षण में कुछ ऐसा हुआ जिसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी।

अब तक तो नए आए बाघ ने हर तरह से यह संकेत दिया था कि वह नदी के उस पार खड़ी खूबसूरत मादा बाघिन के लिए डटकर मुकाबला करने को तैयार है, लेकिन जैसे ही उसका पहला प्रेमी अपनी आखिरी छलांग लगाने के लिए झुका, उसका साहस पानी में मिल गया। वह तेज़ी से मुड़ा और अपनी जान बचाने के लिए भागा। यह देखकर और जोश में आकर पहले बाघ ने विजयी दहाड़ों की गड़गड़ाहट के साथ उसका पीछा किया।

हमारे किनारे पर बैठी मादा पक्षी, इस बात से निराश थी कि अब उसके प्रति आकर्षण के लिए कोई लड़ाई नहीं होने वाली थी, लेकिन अब अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए उत्सुक थी, उसने एक बार खांसा और जंगल के अंधेरे में गायब हो चुके दो नर पक्षियों का पीछा करने के लिए नदी पार करके सरपट दौड़ पड़ी।

तभी एरिक और मैंने जरा भी देर नहीं की। हम तीनों बाघों के इलाके से दूर भागने लगे ताकि उन्हें उनकी प्रेम-संबंधी समस्याओं को सुलझाने के लिए अकेला छोड़ दें। हम लगभग आधा मील तक अंधेरे में लड़खड़ाते हुए चले, फिर हमने दोबारा टॉर्च जलाने का जोखिम उठाया, क्योंकि हम उन तीनों जानवरों का ध्यान आकर्षित करने की हिम्मत नहीं कर रहे थे जो नदी के उस पार ऊँची जगह पर चले गए थे और किसी भी क्षण लौट सकते थे।

आकाश में उभरती आस-पास की पर्वत श्रृंखलाओं की आकृति से मुझे पता चल गया था कि हम केम्पेकेराई गाँव के पास पहुँच रहे हैं। यहीं मैंने उस बाघ का शिकार किया था जिसे मैंने 'मंची का नौसिखिया' नाम दिया था। इस बिंदु पर, जिस रास्ते पर हम चल रहे थे वह एक नाले को पार करता था और हम पानी में से होकर गुजरे जो अब हमारे घुटनों से थोड़ा ऊपर तक था। पगडंडी गाँव की ओर एक ढलान पर जाती है, और हम उस पर चलते हुए केम्पेकेराई की मिट्टी की झोपड़ियों तक पहुँच गए।

एक कुत्ता भौंका, लेकिन अंदर रहने वालों में से कोई भी हिला तक नहीं। बार-बार पुकारने पर ही एक बिखरे बालों वाला और नींद से भरा सिर थोड़ा सा खुले दरवाजे से बाहर निकला। मेरी टॉर्च की रोशनी में उसकी आधी बंद आँखें झपकीं। वह सिर और आँखें मेरे पुराने दोस्त बायरा पुजारी की थीं, जिनके बारे में मैंने आपको दूसरी कहानियों में बताया है। साल के अधिकांश समय यह आदमी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ चिनार नदी के ऊंचे किनारों पर खोदी गई 'गैवीज़' नामक एक मांद में लगभग नग्न अवस्था में रहता था। जब बारिश आती थी और चिनार नदी उफान पर

होती थी और 'गैवीज़' की मिट्टी इतनी नरम हो जाती थी कि वह ढहकर मांद को बंद कर सकती थी, तो पूरा परिवार किसी धनी किसान के यहाँ मवेशी चराने का काम करता था। वह किसान अपने मवेशियों के झुंड को बारिश के बाद उगने वाली लंबी घास चरने के लिए आरक्षित जंगलों में भेज देता था।

किसान को अपने पशुओं को चराने के लिए सरकार को लाइसेंस शुल्क देना पड़ता था। उन दिनों यह शुल्क पाँच महीने की चराई अवधि के लिए प्रति पशु चार आना (लगभग चार पेंस से थोड़ा कम) होता था। सामान्य प्रक्रिया यह थी कि लगभग पचास पशुओं के लिए लाइसेंस खरीदा जाता था और सरकार को चराई शुल्क के रूप में साढ़े बारह रुपये (एक रुपये के मुकाबले सोलह आना) दिए जाते थे, लेकिन 200 या उससे भी अधिक पशुओं को जंगल में ले जाया जा सकता था। वन रक्षक को पाँच रुपये का छोटा सा दान देकर शेष 150 बिना लाइसेंस वाले पशुओं के चराई शुल्क का भुगतान किया जाता था।

इन 200 पशुओं की देखभाल के लिए, बायरा और उसके परिवार को एक पट्टी बनानी पड़ती थी, जो जंगल में एक छोटा सा साफ़ किया हुआ स्थान होता था। इस स्थान के भीतर कांटों की एक छोटी गोलाकार बाड़ बनाई जाती थी, ताकि रात में मवेशियों को जंगली जानवरों से बचाया जा सके। यह अफ़्रीकी 'बोमा' की शैली में बनी होती थी, बस फ़र्क़ इतना था कि दक्षिण भारत में शेर नहीं होते, इसलिए कांटों की बाड़ एक गज से ज़्यादा ऊँची और मोटी नहीं होती थी। बाघ और तेंदुए कांटों की बाड़ को फांदकर अपने शिकार को नहीं ले जाते, जैसा कि अफ़्रीका के साहसी शेर झुंड में शिकार करते हैं।

केम्पेकेराई की छोटी सी बस्ती कई पशुपालन क्षेत्रों का एक समूह मात्र थी, जिसमें न केवल बायरा और उसका परिवार, बल्कि कई अन्य परिवार भी रहते थे, जो सभी अलग-अलग मालिकों के मवेशियों के अलग-अलग झुंडों की देखभाल में लगे हुए थे। परिणामस्वरूप, इन सभी पशुपालन क्षेत्रों में रहने वाले पशुओं की संख्या, वन विभाग से लाइसेंस के तहत उस क्षेत्र में चरने की अनुमति प्राप्त मवेशियों की निर्धारित संख्या से कम से कम पाँच गुना अधिक थी; सरकार को मवेशी लाइसेंस से अपेक्षित राजस्व का एक-पाँचवाँ हिस्सा भी प्राप्त नहीं हुआ; वन रक्षक को रिश्वत के रूप में कम से कम उसके आधिकारिक वेतन के बराबर या उससे अधिक राशि प्राप्त हुई; पशुओं के झुंडों के मालिकों ने अच्छी व्यवस्था कर रखी थी; जंगल के एक बड़े हिस्से

में घास, झाड़ियाँ और कुछ किस्मों के रसीले पेड़ों के पौधे चर कर नष्ट हो गए थे; चरने की इतनी जगह न मिलने से हिरणों को भारी नुकसान हुआ। गाँव के मवेशियों में फैली 'फुट-एंड-माउथ' बीमारी ने जंगल में हिरण, बाइसन और जंगली सूअरों की संख्या में भारी वृद्धि की। इससे सभी जानवर खुश थे, यहाँ तक कि इलाके के बाघ और तेंदु भी, जिन्हें शिकार करना आसान हो गया था और वे पालतू मवेशियों का शिकार करके खूब सारा भोजन प्राप्त कर रहे थे। सबसे ज़्यादा खुश सियार, लकड़बग्घे और गिद्ध थे, जो बीमारी या अन्य जंगली जानवरों द्वारा मारे गए मवेशियों को खा रहे थे।

यह वास्तव में उन पुराने दिनों की स्थिति का एक सच्चा चित्रण है, जब तक कि सरकार द्वारा एक घातक जहर को कीटनाशक के रूप में पेश नहीं किया गया और फसलों को कीटों से बचाने के लिए किसानों को लगभग मुफ्त में उपलब्ध नहीं कराया गया।

फिर एक किसान ने पाया कि इल्लियों, भृंगों और अन्य कीटों को मारने के लिए बनाया गया कीटनाशक घरेलू पशुओं पर हमला करने वाले बाघों और तेंदुओं को भी मार देता था, और इससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह अवांछित सास-सास, वास्तव में सभी उम्र और लिंग के सभी ससुराल वालों को बिना किसी भेदभाव के मार देता था, साथ ही गुप्त प्रेमियों, प्रतिद्वंद्वियों, पिता की मृत्यु के बाद संपत्ति हड़पने वाले बड़े भाइयों और अन्य कई अवांछित लोगों को भी। संक्षेप में कहें तो, किसी न किसी रूप में असंतुष्ट लोगों के लिए अवसर भरपूर थे।

बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे गए मवेशियों के शवों में सुनियोजित तरीके से छेड़छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों बिल्लियाँ मर गईं और दक्षिण भारत में लगभग विलुप्त हो गईं। इनके साथ ही सियार, लकड़बग्घे और गिद्ध, जो इन शिकारों में भागीदार थे, भी बड़ी संख्या में मारे गए। ससुराल वालों और अन्य असुविधाजनक लोगों की संख्या में भी अचानक, रहस्यमय तरीके से और बढ़ती संख्या में तीव्र पेट दर्द और अन्य खतरनाक लक्षणों के कारण मौत होने लगी। जीवन सस्ता है और किसी ने भी अनावश्यक चिंता नहीं की, जबकि सांख्यिकीविदों को 'जनसंख्या विस्फोट और परिवार नियोजन' की पेचीदा समस्या से संबंधित दूसरे ग्राफ में थोड़ा सा मुआवजा मिल गया, जो जहर के आगमन के साथ मेल खाता था।

आज भी, बिना लाइसेंस वाले पशुओं की संख्या लाइसेंस वाले पशुओं की संख्या से कई गुना अधिक है। मालिक लाइसेंस शुल्क में इतनी बचत कर लेते हैं, वन रक्षकों

को उनकी मौजूदा तनख्वाह से अधिक वेतन मिलता है, सरकार को उससे कहीं अधिक नुकसान होता है, और फिर भी सभी खुश हैं। पुराने दिनों से बस इतना ही फर्क है कि अब इस खुशी में शामिल होने के लिए बाघ, तेंदुआ, लकड़बग्घा, सियार या गिद्ध भी नहीं बचे हैं। लगभग सभी मर चुके हैं—ज़हर से।

संयोगवश, ग्रामीण परिवार नियोजन कार्यक्रमों को लेकर बहुत उत्साहित नहीं थे। वास्तव में, उनमें से अधिकांश लोग इस पूरी बात से बेहद नाराज़ थे। एक ओर, उन्हें खेती के तरीकों को मशीनीकृत करने और अपने पूर्वजों के पारंपरिक, पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले लकड़ी के हल छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था। वहीं दूसरी ओर, जीवन यापन की लागत और सभी वस्तुओं की कीमतें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थीं। मानसून कभी सही समय पर आता था और कभी गलत समय पर। दोनों ही स्थितियों में उनकी फसलें बर्बाद हो जाती थीं। जमींदार और साहूकार दोनों ही अधिक लालची हो गए थे। सरकार ने पुराने तरीकों से खेती करने वाले किसानों की सहायता के लिए हर संभव प्रयास किया और हर परिवार को मुफ्त में जमीन, बैल और हल वितरित किए; लेकिन धन, जो हर बुराई की जड़ है, एक प्रलोभन था, और बैल और हल वितरण के कुछ ही समय बाद बिक गए या गिरवी रख दिए गए। जमीन भी उसी राह पर चल पड़ती, लेकिन अचल संपत्ति होने के कारण इतना बड़ा जोखिम उठाना उचित नहीं था।

अंततः, केरोसिन की कीमतें तेजी से बढ़ रही थीं। देर रात तक जागना अव्यावहारिक हो गया था। जल्दी खाना खाना और जल्दी सोना ही जीवन का सुनहरा नियम बन गया।

इन तमाम मुसीबतों के बीच बेचारे किसान के पास बस एक ही सहारा बचा था—उसकी प्रिय पत्नी। कम से कम वह उसकी अपनी तो थी, जिसके साथ वह जो चाहे कर सकता था। बढ़ती महंगाई, मिट्टी के तेल की कमी, जल्दी खाना और जल्दी सोना—इन सब के चलते उसके पास कम से कम कुछ राहत तो थी। वही एक ऐसी चीज़ थी जो पूरी तरह उसकी अपनी थी। लेकिन तभी ये परिवार नियोजन वाले लोग अपने बेतुके सुझावों के साथ आ गए, ऐसे अजीबोगरीब नुस्खे पेश करने लगे जिनके बारे में उनके पूर्वजों ने कभी सुना भी नहीं था, और इस मुश्किल दौर में बेचारे किसान के लिए उपलब्ध इकलौते सुख और मनोरंजन को भी छीनने लगे।

इसलिए सांख्यिकीविदों को जनसंख्या के लगातार बढ़ते ग्राफ पर चिंता थी,

हालांकि उन्हें इस बात से थोड़ी राहत भी मिली कि इसमें कहीं-कहीं एक मामूली मोड़ आ जाएगा, जो कुछ ससुराल वालों और अन्य लोगों की असमय मृत्यु के कारण होगा, जिन्हें रात के खाने के तुरंत बाद अचानक, अस्पष्ट और असहनीय पेट दर्द हुआ था।

इन सब बातों से हम फिर से जंगल में रहने वाले अपने पुराने दोस्त, पुजारी बायरा की याद में लौट आते हैं। बायरा को जब पता चला कि इतनी सुबह आने वाला आगंतुक कोई और नहीं बल्कि मैं ही हूँ, तो वह बहुत खुश हुआ। वह अपनी झोपड़ी के संकरे दरवाजे से बाहर निकला और मेरे सामने जमीन पर माथा टेककर पुजारियों की प्रथागत अभिवादन किया। फिर हम बैठ कर बातें करने लगे और मैंने उसे अपने आने का कारण बताया।

जंगल में रहने वाला वह व्यक्ति हमें निहत्था देखकर आश्चर्यचकित और थोड़ा चिंतित भी था। उसे लगा कि हम बहुत बड़ा जोखिम उठा रहे हैं, खासकर हाथियों के साथ। उसने हमें यह परेशान करने वाली खबर दी कि घाटी के उस हिस्से में, जहाँ से हमें अभी गुजरना था, एक विशेष रूप से 'खतरनाक' हाथी घूम रहा था। हालाँकि इस हाथी को अभी तक 'बदमाश' घोषित नहीं किया गया था, क्योंकि इसने वास्तव में किसी को मारा नहीं था; लेकिन यह एक ऐसा जानवर था जो देखते ही हमला कर देता था और केवल केम्पेकराई के पुजारियों की फुर्ती और जंगल के ज्ञान ने ही उन्हें, कम से कम अभी तक, बचाया था। बायरा को संदेह था कि क्या हमारे पास वह फुर्ती या ज्ञान है और उसने हमें उस रात अपनी यात्रा जारी न रखने की सलाह दी।

'सुबह होने का इंतज़ार करो,' उसने सलाह दी। 'कम से कम तब तो तुम देख पाओगे कि जब वह तुम्हारा पीछा करेगा तो तुम कहाँ भाग रहे हो, हालाँकि मुझे संदेह है कि इससे तुम्हें कुछ खास फायदा होगा।'

बायरा के हमारे पास हथियार न होने से नाराज़ होने का दूसरा कारण यह था कि उसे उम्मीद थी कि वह हममें से किसी एक को अपने परिवार और खुद के खाने के लिए सांभर या चित्तीदार हिरण का शिकार करने के लिए मना लेगा। मांस के प्रति उसकी यही एक कमजोरी थी। हर बार जब हम मिलते, यही बात होती। वह मुझे हिरण या सांभर का शिकार करने के लिए परेशान करता, और मैं उतनी ही दृढ़ता से मना कर देता। मैं उसे पैसे देने को तैयार था, लेकिन मैंने सौ बार समझाया था कि मुझे हिरण और सांभर मारना पसंद नहीं है। हालाँकि वह मुझे इस बात पर मनाने में कभी

सफल नहीं हुआ, बायरा बार-बार कोशिश करता रहता है। शायद वह सोचता है कि वह मुझे आखिरकार मना लेगा, इसलिए हर बार मिलने पर यह प्रारंभिक संघर्ष होना जरूरी है।

एरिक और मैंने खाने का फैसला किया और अपने सैंडविच निकाले। दुर्भाग्य से उनमें गोमांस था, जो दक्षिण भारत के लगभग सभी लोगों के लिए वर्जित है, यहाँ तक कि सबसे साधारण वनवासियों के लिए भी। गाय पवित्र है, और उसका मांस खाना घोर और अकल्पनीय पाप है। इसलिए, हालाँकि हमने उसे गोमांस देने की गलती नहीं की, फिर भी बायरा के सीधे-सादे चेहरे पर स्पष्ट रूप से नापसंदगी का भाव था। गोमांस खाना उन दो बातों में से एक थी जिसके लिए वह मुझे दोषी मानता था; दूसरी बात का जिक्र मैं अभी कर चुका हूँ। बाकी सभी मामलों में वह हमें दोस्त मानता था, या बोलचाल की भाषा में कहें तो, 'पक्के पक्के दोस्त'।

स्कूल न जाने के बावजूद, यह आदिवासी व्यक्ति विभिन्न वृक्षों और जड़ी-बूटियों के फूलों, फलों, पत्तियों, जड़ों और छालों से प्राप्त जंगली औषधियों का ज्ञाता था। वह आसपास के पुजारी समुदाय का 'चिकित्सक' था और आपात स्थिति में हर तरह की बीमारियों के इलाज के लिए उसे बुलाया जाता था। उसके पास सांप के काटने का एक गुप्त नुस्खा था और उसका दावा था कि उसने एक भी मामला नहीं खोया था। मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है कि जब उसके समुदाय में हैजा की भयानक महामारी फैली थी, तब उसने हैजा के दो मामलों का इलाज किया था और जैसा कि मैंने अपनी एक किताब में उल्लेख किया है, उसने अपनी पत्नी के प्रसव के दौरान उसकी प्रसव पीड़ा को भी कम किया था।

मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा है और उनका तरीका बहुत सरल था। उन्होंने पास की नदी के किनारे रेत में एक छोटा सा गड्ढा खोदा और उसमें हरे पत्तों की मोटी परत बिछा दी। उनकी पत्नी उस गड्ढे में पीठ के बल लेट गईं। फिर उन्होंने साड़ी का एक फटा हुआ टुकड़ा लिया और उसका एक सिरा उनकी पत्नी के पैरों के तलवों से बाँध दिया। यह कपड़ा केवल उनके घुटनों तक ही पहुँचता था। बायरा ने पत्नी को यह सिरा दोनों हाथों से पकड़ने के लिए दिया, और ऐसा करने के लिए पत्नी को अपनी जांघें और घुटने अलग करने पड़े, जिन्हें उन्होंने ज़मीन से ऊपर उठा लिया। फिर बायरा ने पत्नी को उस सिरे को ज़ोर से खींचने के लिए कहा, जिसके बाद, बिना कुछ बोले, बच्चे का जन्म हुआ और बायरा ने उसे एड़ियों से उठाकर और पीठ थपथपाकर इस

दुनिया में स्वागत किया। उनके पास कैंची नहीं थी, इसलिए उन्होंने एक पत्थर या सीप के नुकीले सिरे (जो अधिकांश नदियों के किनारे मिल जाते थे) को एक सपाट पत्थर पर रगड़कर गर्भनाल काट दी।

नाल दिखने के आधे घंटे के भीतर ही पत्नी उठी, अपने शिशु को दूध पिलाया और चली गई। फिर बायरा ने गड्ढे में रेत तब तक डाली जब तक वह पूरी तरह भर नहीं गया।

चाय के प्रति मेरी कमजोरी को जानते हुए बायरा ने पहले ही आग जला दी थी, और मैंने नदी के पानी से भरी अपनी पानी की बोतल उस पर रख दी। पानी बहुत मैला था और उससे बनी चाय कुछ खास अच्छी नहीं थी। मैंने पुजारी को नदी के ऊपरी हिस्से में तीन बाघों से हुई हमारी मुलाकात के बारे में बताया, और उन्होंने कहा कि उस समय वहाँ केवल यही तीन बाघ थे। एक और मादा बाघिन थी, लेकिन वह कुछ महीने पहले कहीं चली गई थी और वापस नहीं लौटी थी। उन्होंने आगे बताया कि अक्सर इन तीनों बाघों में से कोई न कोई जंगल में चर रही गायों पर हमला कर देता था और एक गाय को मार डालता था।

उसने पुष्टि की कि बाघिन हाल ही में काफी आवाजें निकाल रही थी। गाँव के पुजारियों ने उसे दो रात पहले ही सुना था। तीनों जानवर मवेशी चुराने वाले थे, लेकिन उनमें से किसी ने भी चरवाहों पर हमला करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई थी, जो अक्सर उन्हें उनके शिकार से दूर भगा देते थे ताकि खालों को सुखाकर बेच सकें। उसने आगे बताया कि नदी के दूसरी ओर तेंदुओं का एक जोड़ा भी रहता था जो मौका मिलते ही कभी-कभार किसी भटकी हुई गाय को मार देता था। एक महीने पहले, इनमें से एक तेंदुआ एक बछड़े को नीचे गिराकर मार रहा था, तभी एक बाघ झाड़ियों से निकला, तेंदुआ को भगा दिया और बछड़े को अपनी पीठ पर लादकर ले गया।

हम जाने के लिए खड़े हुए, तभी बायरा ने एक बार फिर उस 'खतरनाक' हाथी के साथ चल रहे बड़े खतरे के बारे में चेतावनी दी। हालांकि, पूरी रात पट्टी में शरण लेना जंगल में घूमना नहीं था, और घूमना ही तो इस यात्रा का उद्देश्य था। हमने पुजारी को यह बात समझाई और अपना सामान कंधों पर उठाया, लेकिन इससे पहले मैंने यह सुनिश्चित कर लिया कि कोबरा अभी भी सुरक्षित रूप से बंधा हुआ है।

'ठीक है, तो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ,' उस छोटे आदमी ने कहा। 'सूरज उगने पर मैं लौट आऊँगा। तब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और अपनी पूरी शक्ति से तुम्हारी रक्षा

करूँगा। मुझे नहीं लगता कि तुम इस बात को समझते हो कि इस अंधेरे में हाथी से सामना होने पर तुम कितने बड़े खतरे में पड़ जाओगे,' उसने ज़ोर देकर कहा, 'क्योंकि वह जानवर तुम्हें देखते ही देखते तुम पर टूट पड़ेगा और तुम्हें कुचल कर रख देगा।'

कानों में ये अशुभ शब्द गूंजते हुए हम केम्पेकेराई से निकलकर नदी की ओर ढलान पर चल पड़े। मैं टॉर्च जलाते हुए आगे-आगे चल रहा था; बायरा मेरे पीछे-पीछे आ रही थी, जबकि एरिक सबसे पीछे था। हम नदी तक पहुँचे और उसे पार करके अपने सामने बने संकरे रास्ते से जंगल की भूलभुलैया में प्रवेश कर गए। कड़ाके की ठंड थी और बाँसों के बीच बांग देते एक जंगली मुर्गे ने हमें याद दिलाया कि सुबह के दो बज रहे थे। अपने चचेरे भाइयों, पालतू मुर्गों की तरह, जंगली मुर्गे भी जंगलों में वही आदतें अपनाते हैं जहाँ मनुष्य या जंगली बिल्लियाँ ज्यादा दखल नहीं देतीं। वे सुबह दो और चार बजे, और भोर होने के ठीक बाद, आमतौर पर छह बजे से पहले बांग देते हैं।

हम मुश्किल से आधा मील ही चले थे कि बायरा पीछे से आया और मेरा हाथ पकड़कर मुझे रोक दिया। उसने टॉर्च बुझाने के लिए हाथ बढ़ाया। तभी एरिक, जो अब अधनी नींद में था, हमारे रुकने का एहसास होने से पहले ही हमसे टकरा गया। मैंने कान लगाकर सुनने की कोशिश की, लेकिन कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। जंगली मुर्गा हमारी सुनने की सीमा से बाहर निकल चुका था।

तारों की रोशनी जंगल पर चांदनी से बिलकुल अलग थी। यह एक कोमल और अलौकिक प्रकाश था जो अंधेरे में अपना प्रभाव बिखेरने में कामयाब रहा, लेकिन अपना प्रभुत्व नहीं भंग किया। हमारे चारों ओर फैला जंगल अथाह गड्ढे की तरह काला था, तारों की रोशनी इतनी ही थी कि हम एक-दूसरे को और अपने आसपास के कुछ गज के दायरे को ही देख पा रहे थे।

मैंने बायरा की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखा। उसने अपने बाएं हाथ की तर्जनी और अंगूठे से अपनी नाक को छुआ और साथ ही अपने दाहिने हाथ को कोहनी से नीचे की ओर दाएं और बाएं घुमाया।

हाथी! बायरा को उसकी गंध आ रही थी! वह वाकई बहुत पास होगा, वरना पुजारी ने अपना संदेश मेरे कान में फुसफुसा दिया होता।

मैंने गंध को महसूस करने की कोशिश में अपनी नाक सिकोड़ी। साथ ही मैंने अपना सिर एक तरफ घुमाया, एक गाल उस दिशा में जहाँ हम जा रहे थे और दूसरा

उस दिशा में जहाँ से हम आए थे। मुझे लगा कि मैं एक अजीब सी गंध महसूस कर रहा हूँ, जिसे कुछ ही सेकंड में मैंने हाथी की उपस्थिति से जोड़ना शुरू कर दिया। ये जानवर पास आने पर बहुत तेज़ गंध देते हैं। लेकिन शायद यह मेरी कल्पना ही थी।

मेरे गालों से पता चल रहा था कि किसी भी दिशा से हल्की-सी हवा भी नहीं चल रही थी, जो न अच्छी बात थी और न बुरी। अगर हवा हमारे पीछे से चल रही होती, तो हाथी—अगर आगे कोई हाथी होता—अब तक हमारी गंध पहचान लेता। अगर हवा उसकी तरफ से हमारी ओर चल रही होती, तो हम पूरी सावधानी बरतते हुए उसके पास से चुपके से निकल सकते थे। लेकिन अभी, किसी भी दिशा से लगभग न के बराबर हवा होने के कारण, हमारी स्थिति गतिरोध वाली थी। हाथी—अगर आगे कोई हाथी होता—ने अभी तक हमारी मौजूदगी का पता नहीं लगाया था। लेकिन अगर हम और करीब जाते, तो वह ज़रूर हमारी मौजूदगी का पता लगा लेता। भले ही वह हमारी गंध न पहचान पाए, लेकिन उस सन्नाटे में वह हमें ज़रूर सुन लेता।

बायरा बहुत पहले ही इसी निष्कर्ष पर पहुँच चुका था। उसने अपनी दाहिनी हथेली कमर के स्तर तक उठाई। इशारा स्पष्ट था मानो उसने कहा हो: 'रुको!' हम तनाव में बिल्कुल स्थिर खड़े रहे।

पल बहुत धीरे-धीरे बीत रहे थे। कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। मुझे अभी भी वह अजीब सी गंध आ रही थी, लेकिन मैं उसे हाथी से जोड़ नहीं पा रही थी। शायद बायरा गलत थी और हमारे सामने कोई हाथी था ही नहीं।

फिर सन्नाटा टूट गया। हमें सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी, जो धीरे-धीरे तेज़ और भारी होती जा रही थी और उस रास्ते पर आगे बढ़ रही थी जिस पर हम खड़े थे। बायरा सही थी। आगे एक हाथी था, और वह झाड़ियों के बीच से हमारी ओर बढ़ रहा था। कुछ ही सेकंड में वह रास्ते पर आ जाएगा।

बायरा ने हमें पीछे हटने का इशारा किया और मुड़कर, जिस रास्ते से हम अभी आए थे, उसी पर दबे पांव चलने लगी। एरिक उसके पीछे-पीछे चला और मैं सबसे पीछे रह गया।

उसी क्षण हवा ने अपना रुख बदल लिया। घाटी में एक तेज़ हवा का झोंका आया, जो हमारे ऊपर से गुज़रते हुए सीधे हाथी की ओर बढ़ा। अब राज़ खुल चुका था!

हाथी ने हमारी गंध पहचान ली और अगले ही पल झाड़ियों को चीरता हुआ आगे

बढ़ गया। वह मेरे पीछे पगडंडी पर आ निकला। पीछे हटते हुए हम तीनों ने मुड़कर देखा। अब हम उसका विशाल काला शरीर देख सकते थे, मानो पगडंडी पर एक बड़ा सा काला पत्थर पड़ा हो। उस कालेपन के बीच सफेद रंग की दो लंबी धारियाँ उभरी हुई थीं। उसके दांत!

कुछ ही क्षणों में हमें पता चल गया कि यह वही 'बुरा' हाथी था जिसके बारे में बायरा ने हमें चेतावनी दी थी। जैसे ही उस जानवर ने हमें देखा, उसने हमें अपने कट्टर दुश्मन—मनुष्यों—के रूप में पहचान लिया। उसने घृणा से चीखते हुए हमारी ओर आक्रमण किया, हर पल वह और भी काला और बड़ा होता जा रहा था।

भागने की कोशिश बेकार थी। इतनी कम दूरी पर कोई भी आदमी दौड़ते हुए हाथी से बच नहीं सकता था। एरिक या मैं, हम दोनों अपने-अपने बोझ से दबे हुए थे, इस राक्षस का शिकार बन जाते। वह हममें से जिसे भी पहले पकड़ता, उसे चूर-चूर कर देता। अंधेरे के कारण दाएं या बाएं झाड़ियों में छिपने की कोशिश भी बेकार थी। ऐसा लग रहा था मानो सिर्फ बायरा ही बच पाएगी।

मैंने उस परिस्थिति में जो एकमात्र संभव काम था, वही किया। मैंने एक बहुत ही जोखिम भरा कदम उठाया। मैं रुका, पीछे मुड़ा। उसी समय मैंने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया।

तेज रोशनी की किरण सीधे उस विशालकाय जीव पर पड़ी, जो लगभग दस फीट दूर था। मैंने बड़े ही उदासीन और उत्सुक भाव से देखा कि जानवर ने अपनी सूंड समेट ली थी, उसका सिर ऊपर उठा हुआ था जिससे उसका आधा खुला मुँह दिखाई दे रहा था, और उसके नुकीले दाँत उसकी छोटी, चमकती, दुष्ट आँखों के सीध में थे। उसने अपना सिर नीचे किया ताकि उसके दाँत मेरे सामने आ जाएँ और मशाल की रोशनी पूरी तरह उसकी आँखों में पड़ जाए। अगले ही पल धूल के बादल ने ज़मीन और हाथी के पैरों को ढक लिया।

मैं अभी चीख ही रही थी कि मुझे एहसास हुआ कि वह क्रूर जानवर अचानक रुक गया है। अचानक ब्रेक लगाने और अपने चारों विशाल पैरों को ज़मीन पर जमा देने से धूल उड़ गई।

तब मुझे पता नहीं था, लेकिन मुझ पर मंडराते खतरे को देखकर बायरा रुका, मुड़ा और मेरी मदद के लिए आगे आया। मुझे अचानक एहसास हुआ कि वह भी चीख रहा था; हाथी, उसके सभी साथियों और उसके पूर्वजों के लिए वह बेतुकी, घिनौनी

गालियाँ दे रहा था। एरिक उससे आगे निकल गया था और अभी भी पूरी रफ्तार से भाग रहा था। उसका इरादा मुझे अकेला छोड़ने का नहीं था, लेकिन उसे यह एहसास नहीं था कि हाथी इतना करीब आ गया था कि मुझे मुड़कर उसका सामना करना पड़ा।

अगले कुछ पल बेहद तनावपूर्ण थे। आगे क्या होने वाला था, यह जीवन और मृत्यु का सवाल था। क्या वह हाथी अपना हमला जारी रखेगा, या बायरा और मैं उसे काबू में करने में सफल होंगे?

मेरा दिल बैठ गया और मुझे बायरा की चेतावनी भरी बातें याद आ गईं, जो उसने कुछ ही देर पहले कही थीं। एक बार हमला करने के बाद इस हाथी को कोई नहीं रोक पाएगा।

राक्षस ने मेरी टॉर्च की तीखी रोशनी से बचने के लिए अपना सिर कई बार दाएं से बाएं और फिर वापस दाएं हिलाया, क्योंकि मेरी टॉर्च की रोशनी सीधे उसकी आंखों में पड़ रही थी। लेकिन मैं अपनी टॉर्च से उसकी हरकतों का पीछा करता रहा और जोर-जोर से चिल्लाता रहा।

वह दरिंदा अपनी जगह पर डटा रहा। तभी मैंने आखिरी मौके का फायदा उठाया। पागलों की तरह चिल्लाते हुए, मैं तेज़ी से आगे बढ़ा और बीम को सीधे उसकी छोटी, दुष्ट आँखों में डाल दिया। तब उसका साहस टूट गया, वह आधा घूम गया और उसका विशाल शरीर, सामने की ओर, संकरे रास्ते पर आ गया।

एक-दूसरे से बात किए बिना, बायरा और मैं जानते थे कि अब करो या मरो। एक साथ चिल्लाते हुए, हम उस राक्षस की ओर दौड़े, मेरी टॉर्च अभी भी सीधे उसके सिर पर चमक रही थी। हाथी घबराया हुआ था। सभी बड़े दबंगों की तरह, उसे हमला करने और अपने दुश्मनों को हवा में भूसे की तरह बिखरते देखने की आदत थी। इससे पहले कभी किसी छोटे जीव ने उस पर हमला करने की हिम्मत नहीं की थी।

ठीक यही अभी हो रहा था। उसकी आँखों से वो चकाचौंध भरी रोशनी हट ही नहीं रही थी और हमारी बेमेल चीखें उसे और भी परेशान कर रही थीं। इसलिए वो लड़खड़ाते हुए हमसे दूर रास्ते पर चलने लगा, बायरा और मैं उसके पीछे-पीछे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए चल रहे थे। हमें पीछे छोड़ने के लिए उसने अचानक बाईं ओर गाड़ी मोड़ी और झाड़ियों में जा घुसा।

बायरा और मैं रुक गए। हमने उसे खदेड़ दिया था। अब हमें जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकलना था। एक बार फिर मुड़कर हम उसी रास्ते पर वापस चल पड़े

जिससे हम आए थे। दौड़ना ठीक नहीं था, क्योंकि इससे हाथी वापस आ सकता था। हमें एरिक का कोई सुराग नहीं मिला!

केम्पेकेराई लौटने के लिए हमें जिस जगह से नदी पार करनी थी, वह मात्र आधा मील दूर थी, लेकिन एरिक उस जगह को नहीं जानता था। शायद वह उस जगह से आगे निकल गया था और रास्ते पर आगे बढ़ गया था।

बायरा उसे पकड़ने की कोशिश में तेज़ी से दौड़ने लगी, जबकि मैं तेज़ी से चलता रहा। मेरी तबीयत ठीक नहीं थी। दरअसल, मैं बहुत बीमार महसूस कर रहा था और मुझे लग रहा था कि मैं बुखार की तरह कांप रहा हूँ और रुक नहीं पा रहा हूँ। मैं पूरी तरह भीगा हुआ था—पसीने से, हालांकि मुझे इतना पसीना आना याद नहीं था। मैंने कुछ देर बैठने का सोचा, लेकिन फिर मुझे लगा कि कहीं वो काला शैतान अपना इरादा न बदल दे और फिर से हमला न कर दे। इसलिए मैं और तेज़ चलने लगा। थोड़ी ही देर में मैं केम्पेकेराई जाने वाले घाट पर पहुँच गया, और वहाँ एरिक या बायरा का कोई अता-पता नहीं था।

मैं नदी में छप-छप करते हुए आगे बढ़ा और घुमावदार रास्ते से होते हुए छोटे से गाँव की ओर चढ़ गया। झोपड़ियों तक पहुँचकर मैंने जी मिचलाने की कोशिश में खुद को ज़मीन पर गिरा दिया, क्योंकि जी मिचलाना अभी भी जारी था।

कुछ समय बाद बायरा और एरिक वहाँ पहुँचे। पुजारी ने मुझे बताया कि मेरा दोस्त एक अच्छा धावक था। उसे एरिक को पकड़ने के लिए लगभग दो मील तक उसका पीछा करना पड़ा। एरिक का कहना था कि जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो उसे न तो बायरा दिखाई दी और न ही मैं, तब उसने सोचा कि हाथी हम दोनों को पकड़ ले गया है। इसी वजह से वह और भी तेज़ भागा।

बायरा हमारी हालिया घटना से बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ। उसके लिए यह जंगल में रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा था। उसने चाय बनाने का सुझाव दिया। बायरा को किसी चीज़ का बहुत शौक था, और वो थी चाय। मुझे भी, लेकिन आज मेरा चाय पीने का मन नहीं था। अपना थैला नीचे फेंककर मैंने बायरा और एरिक से कहा कि वे खुद चाय पी लें। फिर मैं ज़मीन पर लेट गया और सो गया।

जब मैं जागा तो सूरज खूब चमक रहा था। एरिक पास ही में गहरी नींद में सो रहा था, हल्के कंबल से ढका हुआ अपनी चादर पर आराम से लेटा हुआ था। बायरा एक छोटी सी आग के पास लगभग गेंद की तरह सिकुड़ा हुआ था, जो काफी देर

पहले बुझ चुकी थी। उसका सिर उसके घुटनों को छू रहा था।

ठंड से मेरे दांत किटकिटा रहे थे। बिना किसी ओढ़े ज़मीन पर लेटने से हालत और भी खराब हो गई थी। सुबह की ठंड में, जब उत्साह आमतौर पर कम होता है, मैं सोच रहा था कि पिछली रात हमने जो जोखिम उठाए थे, क्या वे जायज़ थे। मुझे याद आया कि मैंने कहीं किसी लेख में पढ़ा था कि जब कोई पहली बार जागता है, तभी अवचेतन मन का प्रभाव सबसे प्रबल होता है, और उस समय मिलने वाले विचार सबसे बुद्धिमानी और सर्वोत्तम सलाह देते हैं। लेख में आगे कहा गया था कि यदि कोई इस सलाह का पालन करे, तो वह समृद्ध होगा और जीवन की कठिनाइयों से बचेगा। लेकिन अच्छे विवेक के ये कुछ पल बहुत जल्दी बीत जाते हैं, और व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगतता और सोचने का तरीका हावी हो जाता है, और फिर वह अपने ही पुराने विचारों में वापस लौट जाता है।

मुझे डर है कि मेरे साथ भी यही हुआ, क्योंकि मैंने कुछ पल के लिए समझदारी को दरकिनार कर दिया। मैंने एरिक और बायरा को जगाया, और जब बायरा ने चाय बनाने के लिए आग दोबारा जलाई, तो मैं और एरिक ठंडे पानी से नहाने और तरोताज़ा होने के लिए नदी किनारे चले गए। पहाड़ की नदी में नहाने से दिमाग की सुस्ती दूर हो जाती है, मांसपेशियों में दर्द होता है और नींद की कमी से आँखें भारी हो जाती हैं, यह वाकई अद्भुत है।

जब हम वापस लौटे, तब तक बायरा ने न केवल पानी उबालकर चाय बना ली थी, बल्कि आधी से ज़्यादा चाय खुद ही पी ली थी। उसने बहाना बनाते हुए कहा कि उसे बुखार आ रहा है, और जैसा कि दोराई (पारंपरिक माओरी) अच्छी तरह जानते हैं, बुखार से बचने का एकमात्र उपाय है खूब चाय पीना। मैंने जवाब दिया कि दोराई को यह बात पता नहीं थी, लेकिन अगली बार चाय बनाते समय वे कम सामग्री देंगे। फिर एरिक और मैंने बची हुई चाय खत्म कर दी।

ठंडे नाश्ते के बाद, सिगरेट पीने और कुछ बेमतलब की बातचीत के बाद, बायरा ने पूछा कि हम आगे क्या करने वाले हैं। मैंने जवाब दिया कि हम उस दिन ज़्यादातर सोएंगे और सूर्यास्त होते ही फिर से चलना शुरू करेंगे ताकि उस जगह पर अपनी यात्रा पूरी कर सकें जहाँ यह नाला चिनार नदी से मिलता है। हमें उम्मीद थी कि हम लगभग आधी रात तक वहाँ पहुँच जाएँगे। थोड़ी देर आराम करने के बाद, हम वापस लौटना शुरू करेंगे और इस बार दिन के उजाले में ही यात्रा पूरी कर लेंगे। हमें उम्मीद

थी कि हम अगली शाम सूर्यास्त तक ऐयूर पहुँच जाएँगे, जहाँ से 'सडन डेथ' हमें रात के खाने के समय तक बैंगलोर वापस पहुँचा देगी।

पुजारी हमारी योजनाओं के बारे में जानकर खुश नहीं थे। उन्होंने एक गधे से अप्रत्यक्ष तुलना करते हुए कहा कि हम हाथी के हाथों से सबक नहीं सीख पाए हैं, क्योंकि हम अंधेरा होने के बाद फिर से उसके क्षेत्र से गुजरना चाहते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि हम दोपहर लगभग दो बजे निकलें, जब सभी हाथी किसी घने पेड़ के झुंड की छाया में सोकर आराम करते हैं, ताकि रात होने तक हम उन जगहों से काफी दूर हो जाएं जहां पिशाच (शैतान) आमतौर पर रहते हैं। बेशक, अगर हमारी किस्मत खराब रही, तो वह और दूर जा सकते थे, ऐसी स्थिति में भी हम उनसे मिल सकते थे, लेकिन कम से कम यह जोखिम अंधेरा होने के बाद निकलने की तुलना में उतना बड़ा नहीं था। बायरा ने भी चिनार नदी तक और वापस हमारे साथ चलने पर जोर दिया, और कहा कि जब तक हम केम्पेक्राई और अयूर के बीच वापसी यात्रा में कम से कम पांच मील आगे नहीं बढ़ जाते, जहां हमने कार छोड़ी थी, तब तक वह हमें नहीं छोड़ेंगे।

हमने इस मामले पर चर्चा की और समझदारी भरी, हालांकि कम जोखिम भरी, सलाह मानी गई। हमने बायरा की योजना का पालन करने का फैसला किया और, क्योंकि करने के लिए कुछ बेहतर नहीं था, हम सो गए। दोपहर के कुछ ही समय बाद हमने ठंडा खाना खाया, फिर चाय पी और ठीक दो बजे हम फिर से अपने रास्ते पर चल पड़े, उसी संकरे रास्ते पर वापस लौट रहे थे जिस पर हम पिछली रात जल्दबाजी में निकले थे। लेकिन इस बार हम अपने चारों ओर देख सकते थे और हवा की दिशा का अंदाजा लगाकर और हाथी के संकेतों पर पैनी नजर रखकर हर संभव सावधानी बरत सकते थे।

शुरुआत से ही हमारी बदकिस्मती थी। उत्तर से दक्षिण की ओर तेज़ हवा चल रही थी, यानी हमारे पीछे से नदी के बहाव की दिशा में और उसी तरफ जहाँ हम जा रहे थे। अगर वह बदमाश कहीं आगे होता, तो उसे हमारे आने की आहट मिल जाती।

संकरे रास्ते की नम मिट्टी पर, हम स्पष्ट रूप से अपने पैरों के निशान देख सकते थे: एरिक के रबर के जूतों के धुंधले निशान, मेरे अल्पाका-अस्तर वाले बूटों द्वारा बनाए गए बड़े निशान, बायरा के नंगे पैरों के निशान, और उन सभी पर उस हाथी के भारी, लगभग थाली के आकार के पदचिह्न अंकित थे जिसने पिछली रात हमारा पीछा किया था।

बायरा आगे चल रहा था। वह बीच-बीच में रुककर ज़मीन से घास की कुछ पत्तियाँ तोड़कर कंधे की ऊँचाई से गिराकर हवा की दिशा का अंदाज़ा लगाता था। वे पत्तियाँ धीरे से हमारे आगे ज़मीन पर तिरछे कोण पर गिरती थीं। हवा अभी भी पीछे से बह रही थी।

बायरा रुक कर सुनने लगी। हम भी रुक गए और सुनने लगे। जंगल जीवन से भरपूर था। चारों ओर पक्षी चहचहा रहे थे। हमें दाएं और बाएं पहाड़ियों से उनकी दूर की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। तरह-तरह के टिड्डे और झींगुर अलग-अलग लय में चहचहा रहे थे। मैदानी टिड्डे की तीखी गूंज यहाँ पहाड़ी टिड्डे की उठती-गिरती आवाज़ के साथ मिल रही थी, जो आकार में निचले इलाकों में रहने वाले अपने चचेरे भाई से छोटा था लेकिन कहीं ज़्यादा तेज़ आवाज़ निकाल सकता था। फिर अनगिनत आकार के झींगुर, पत्तों के नीचे या सड़ते हुए लकड़ी के लट्ठों के नीचे छिपे हुए, कीटों की चहचहाहट में शामिल हो गए, जिससे हवा में जीवन की धड़कन की गूंज भर गई।

हमसे काफी आगे एक भौंकने वाले हिरण को हमारे आने का आभास हो गया। घाटी में बहती हवा ने उसे बताया। 'खर्र!' वह चिल्लाया, और बार-बार 'खर्र! खर्र!'

पहाड़ियों की ऊँची ढलानों पर मौजूद लंगूर बंदरों ने उसकी आवाज़ सुनी। 'हूम्प! हूम्प! हूम्प!' वे खुशी से चिल्लाते हुए एक डाल से दूसरी डाल और एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदने लगे। लेकिन छोटा सा भौंकता हुआ हिरण अपनी चेतावनी भरी आवाज़ निकालता रहा।

इससे लंगूर घबरा गए। उनकी खुशी की चीखें थम गईं। अब वे चुप थे। मैं लंगूर-पहरेदार की कल्पना कर सकता था, जो पेड़ की चोटी पर बैठा नीचे घाटी में टकटकी लगाए उस खतरे का पता लगाने की कोशिश कर रहा था जिसने उस छोटे हिरण को डरा दिया था। उसके गोल काले चेहरे पर घनी भौंहें चिंता और अनिश्चितता से सिकुड़ी हुई होंगी; उसकी बड़ी, गोल, काली आँखें नीचे नदी के तल और उस ऊँचाई से दिखाई देने वाले शिकार के रास्तों को दुश्मन को देखने की कोशिश में गूँज रही होंगी। वह अपने आस-पास मासूमियत से खेल रही अनगिनत मादा बंदरों और उनके बच्चों की सुरक्षा और जान की ज़िम्मेदारी का बोझ था। अगर वह खतरे की सूचना न देकर अपने कर्तव्य में विफल हो जाता, तो उनमें से कोई एक मर जाता। निस्संदेह वह सोच रहा होगा कि किसी भी क्षण उसे झाड़ी से झाड़ी में छिपते हुए बाघ की धारियाँ या पैंथर का चित्तीदार शरीर दिखाई देगा।

उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, क्योंकि हम अभी भी बहुत दूर थे।

फिर भी, उस छोटे हिरण ने, जिसकी सूंघने की तीव्र क्षमता ने उसे कुछ ऐसा बता दिया था जिसे लंगूर नहीं देख सकता था, लगातार भौंककर, 'खर्र! खर्र! खर्र!' कहकर हमारे आने की सूचना दी।

लंगूर पहरेदार की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। यह किस तरह का दुश्मन था, जो पास तो आ रहा था लेकिन दिखाई नहीं दे रहा था?

अंततः वह अनिश्चितता के तनाव को और सहन नहीं कर सका। उसे कबीले को चेतावनी देनी ही थी। 'हर्र! हा!' उसने कर्कश स्वर में चिल्लाया, और फिर तुरंत ही, 'हर्र! हा! हर्र! हा!'

अलार्म का असर तुरंत हुआ। हालाँकि हम उन्हें देख या सुन नहीं सकते थे, फिर भी सौ से ज़्यादा आवाज़ें सुनाई दीं, जब लंगूर माताएँ अपने बच्चों को सीने से लगाकर ऊँची-ऊँची पेड़ों की चोटियों पर सुरक्षा के लिए छलांग लगाती हुई भागीं। कुछ अन्य चट्टानों पर चढ़ गईं या पहाड़ी ढलानों पर दौड़ पड़ीं। सौ काले चेहरे चिंता से अपने पहरेदार की ओर मुड़े। उसने किस दुश्मन को देखा था? उसकी अगली हरकत से उन्हें पता चल जाएगा।

यदि कोई बाघ या तेंदुआ पास आ रहा होता, तो चौकीदार निश्चित रूप से अपने पेड़ की चोटी से दूसरे पेड़ पर छलांग लगा देता। वह अपने दोनों पैरों पर खड़ा हो जाता, संतुलन बनाए रखने के लिए अपनी लंबी पूंछ को सीधा रखता, नीचे की ओर देखता और लंगूर भाषा में दुश्मन को गालियां देता।

चौकीदार ने इनमें से कुछ भी नहीं किया। उसने हमें अभी तक नहीं देखा था। इसलिए वह लगातार 'हर्र! हा!' और फिर 'हर्र! हा!' चिल्लाता रहा। हमारे बाईं ओर पहाड़ की ढलान पर कहीं ऊँची घास के बिस्तर पर आराम कर रहे एक सांभर हिरण ने शोर सुना। वह उछलकर खड़ा हो गया और 'धंक! धंक! हॉन्क!' चिल्लाया। जंगल के विभिन्न निवासियों द्वारा दिए गए खतरे के ये संकेत व्यर्थ नहीं गए थे। उन्हें सुनने और समझने वाले कानों ने सुना था। वाकई, गंभीर कानों ने। क्योंकि ठीक उसी क्षण हाथी ने फिर हमला कर दिया।

दशकों पुराना और जंगल के तौर-तरीकों में पारंगत, वह चुपचाप छुपकर सब कुछ सुन रहा था। उसने भौंकने वाले हिरण की चेतावनी भरी आवाज, लंगूर पहरेदार की पुकार और परेशान सांभर हिरण की घंटी की आवाज सुनी थी। निस्संदेह उसने

हमारी गंध भी महसूस की होगी, क्योंकि वह बहुत करीब खड़ा था और जानता था कि वही घृणित मानव शत्रु फिर से लौट आया है।

उसने तुरंत फैसला कर लिया। इस बार वह अपने मकसद में नाकाम नहीं होने वाला था। उसका मकसद था अपने दो पैरों वाले दुश्मनों में से एक को खत्म करना। वह चुपचाप तब तक इंतजार करेगा जब तक हम उसके बिल्कुल पास न आ जाएं। तब और केवल तभी वह हमला करेगा। इस तरह वह हममें से किसी एक को जरूर पकड़ लेगा।

हमें उसकी मौजूदगी का कोई आभास नहीं था और न ही उसके बुरे इरादों का। अपने विशाल आकार के बावजूद, वह हमारे बाईं ओर एक चट्टान के पीछे छिपा रहा, जहाँ उसने अपना ठिकाना बनाया था। एक बार तो बायरा, जो जंगलों का आदमी था और बचपन से ही जंगल के ज्ञान में पारंगत था, और जिसकी अनगिनत पीढ़ियाँ जंगल में रही थीं, धोखे में आ गया। एरिक और मैं उसके पीछे हल्के कदमों से चल रहे थे, और बायरा सावधानी से आगे बढ़ता रहा।

बायरा ने अपने बाईं ओर एक बड़ी चट्टान देखी और उसे ध्यान से देखने के लिए रुक गया। हमने भी उसे देखा और देखने के लिए रुक गए। वह एक बड़ी, ऊँची, रोटी के आकार की चट्टान थी, जिसका रंग लगभग काला था, सिवाय उसकी सतह पर उगने वाली भूरे रंग की लाइकेन की दो बड़ी परतों के। एक अंजीर का पेड़ उसके एक किनारे से सटा हुआ था। हमने देखा कि इस पेड़ की कुछ जड़ें चट्टान पर फैली हुई थीं। एक जड़ किनारे से नीचे की ओर जा रही थी, जो जमीन में जाती हुई एक लंबी, मोटी, हल्के रंग की साँप जैसी लग रही थी।

हमने यह सब देखा। लेकिन हमें वह हाथी नहीं दिखा जो उस चट्टान के पीछे छिपा हुआ था, क्योंकि उसने न तो कोई आवाज़ की और न ही कोई हरकत की।

बायरा को इस बात का संतोष हो गया कि कोई खतरा नहीं है और आगे बढ़ना सुरक्षित है। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। हम उसके पीछे-पीछे चले।

अब हम चट्टान के बिल्कुल सामने खड़े थे। अब हम उसे पार करने लगे। हाथी को पता था कि एक पल में हम उसे देख लेंगे। उसे यह भी पता था कि अब हम इतने करीब आ गए हैं कि वह हममें से कम से कम एक को तो पकड़ ही लेगा। उसने मन बना लिया।

कान फाड़ देने वाली चीख ने सन्नाटा तोड़ दिया: 'त्रि-आ-आ-अंक!'

फिर वह हम पर टूट पड़ा। इस बार वह पूरी तैयारी के साथ आया था, क्योंकि उसने एक भी आवाज़ नहीं निकाली। चट्टान के पीछे से उसका काला रूप प्रकट हुआ। उसका विशाल धड़ एक विशालकाय साँप की तरह अंदर की ओर मुड़ा हुआ था, उसके ऊँचे उठे हुए सिर और चपटे कानों के पीछे। उसका मुँह आधा खुला हुआ था।

मेरे आगे चल रहा एरिक मुड़ा और भाग गया। मैं भी भागा। बायरा सहज रूप से जानता था कि अगर वह उसका पीछा करेगा तो पकड़ा जाएगा, क्योंकि वह दो लोगों के पीछे दौड़ने वाला तीसरा व्यक्ति होगा, जो उसे रोक देंगे। उसने रास्ता बदलकर ढलान से नीचे की ओर दौड़कर और उस नाले को पार करके भागने की कोशिश की जो हमारे रास्ते के समानांतर बह रहा था।

उसके पास बचने का कोई मौका नहीं था। हाथी उस पर टूट पड़ा था। उसने एक छोटी और दबी हुई सी चीख निकाली, जिसके ऊपर मुझे बायरा की हताशा भरी चीख सुनाई दी। फिर 'सरसराहट' की आवाज़ आई और उसके बाद धड़ाम से गिरने की आवाज़ हुई।

फिर हाथी ने बार-बार चिंघाड़कर अपना क्रोध प्रकट किया: 'त्रि-आआ-अंक! त्रि-आआ-अंक! त्रि-आआ-अंक!'

मैं अपने भारी-भरकम जूतों की बदौलत जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ रहा था। उम्र में छोटा, दुबला-पतला और नरम जूते पहने एरिक मुझसे आगे निकल गया और गायब हो गया। मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है कि मैं दौड़ता रहा। मुझे पता है कि मुझे रुककर बायरा की मदद करनी चाहिए थी। मुझे बस यही तसल्ली थी कि निहत्था होने के कारण मैं कुछ नहीं कर सकता था, और हाथी पूरी तरह से क्रोधित था, इसलिए मेरी चीखें उसे रोक नहीं पातीं। पिछली रात, अंधेरे में मेरी टॉर्च की रोशनी ने उसे भ्रमित कर दिया था। अब वह मुझे भी खत्म कर देगा।

हाथी रुक गया था। मुझे अब भी उसकी चीखें सुनाई दे रही थीं। शायद वह बेचारे बायरा को कुचलकर अधमरा कर रहा था।

मैं नदी पार करने वाली जगह पर पहुँच गया। एरिक नदी के दूसरी ओर था। थोड़ी दूरी पर ही केम्पेकेराई और सुरक्षा थी। हमने जितनी जल्दी हो सके गाँव के सभी पुजारियों को इकट्ठा किया। लकड़ी और घास से मशालें बनाई गईं। उन्हें जलाने के लिए अंगारे टूटे हुए बर्तनों में भरकर लाए गए। हम लगभग दो दर्जन लोग नदी पार करके वापस गए, मशालें जलाईं और पूरी टोली जोर-जोर से चिल्लाते हुए अपने बेचारे

दोस्त के बचे हुए अवशेषों को इकट्ठा करने के लिए निकल पड़ी।

हाथी चुप था, हालांकि हमें किसी भी क्षण उसके प्रकट होने की आशंका थी। क्या वह हमारे दल पर हमला करेगा?

मुझे ऐसा नहीं लगा। हम बारह लोग थे और हम बहुत शोर मचा रहे थे।

अगले ही पल हमने उसे देखा। वह पगडंडी पर सीधा खड़ा था। चिड़चिड़ाते हुए वह अपना सिर इधर-उधर हिला रहा था, और उसकी बड़ी सूंड भी हिल रही थी। उसके कान आगे की ओर फड़फड़ा रहे थे। हम उसकी लाल छोटी आँखों को हमारी ओर घूरते हुए देख सकते थे। स्पष्ट रूप से वह तय नहीं कर पा रहा था कि हमला करे या पीछे हट जाए।

उस दिन हमारे दल के हर सदस्य ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। हर कोई पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्ला रहा था, मानो ऐसा संभव हो। हाथी हिचकिचाता रहा। फिर उसका हौसला पस्त हो गया। वह मुड़ा; फिर उसने दोबारा मुँह फेरा। अचानक, वह हमारी बाईं ओर पहाड़ी पर चढ़ गया। हम सावधानी से आगे बढ़ते रहे और चिल्लाते रहे।

हर पल हमें यही आशंका रहती थी कि कहीं हमें बदकिस्मत बायरा का कुचला हुआ शव न मिल जाए। मेरे सामने उस छोटे से आदमी की छवि बन रही थी, उसके चेहरे पर कान से कान तक फैली मुस्कान और हँसी से चमकती उसकी दो काली छोटी आँखें। यह दृश्य मेरे लिए घुटन भरा था। मैं अब और चिल्ला नहीं सकता था। उस छोटे से आदमी ने हमें बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी थी। अगर वह बच जाता, तो हाथी उसका पीछा करता और हममें से किसी एक को मार डालता। मेरे बगल में चल रहा एरिक गंभीर दिख रहा था, हालाँकि वह बाकी लोगों के साथ चिल्लाता रहा।

लेकिन हमने हर जगह खोजबीन की, फिर भी हमें बायरा के अवशेष नहीं मिले। क्या वह भाग निकला होगा?

हम चारों ओर फैलकर तलाश करने लगे, लेकिन फिर भी कोई सुराग नहीं मिला। हममें से हर किसी के मन में उम्मीद की किरण जागने लगी। तभी मुझे एक धीमी सी कराह सुनाई दी। मेरे पास खड़े कुछ पुजारियों ने भी उसे सुना। हम सब सुनने के लिए रुक गए, लेकिन कोई और आवाज नहीं थी।

मेरे साथी, जो हमेशा अंधविश्वासी थे, डरने लगे। हम तीनों ने वह कराहने की आवाज़ साफ़ सुनी थी। ज़रूर किसी आत्मा ने वह आवाज़ निकाली होगी। शायद

बायरा की आत्मा। आवाज़ सुनने वाले दोनों ने डर भरी नज़रों से मेरी तरफ देखा। कुछ पल और, शायद वे भी भाग जाते।

फिर मुझे 'दोराई' शब्द साफ सुनाई दिया। आवाज़ बहुत धीमी थी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था। पर कहाँ से? चारों ओर घास और पेड़ों के सिवा कुछ नहीं दिख रहा था—और बस एक बड़ी काली चट्टान थी।

समाधान पलक झपकते ही मिल गया। बायरा ज़िंदा था, और वह उस चट्टान के ऊपर था। वह वहाँ कैसे पहुँचा? ज़ाहिर है, हाथी ने उसे वहाँ फेंक दिया था!

मैंने अपने दोनों साथियों को खुशखबरी सुनाई। देखते ही देखते वे चट्टान की खड़ी ढलानों पर चढ़ गए, और फिर हमने उनकी खुशी भरी चीखें सुनीं: 'वह ज़िंदा है! बायरा ज़िंदा है!'

हम सब उस चट्टान के चारों ओर जमा हो गए, तभी ऊपर खड़े दो आदमियों ने बताया कि बायरा ने कहा था कि हाथी ने उसे हवा में उछाल दिया था। सौभाग्य से, वह चट्टान के ऊपर गिरा था, जहाँ से वह जानवर उस तक दोबारा नहीं पहुँच सकता था। अगर वह ज़मीन पर गिर जाता, तो निश्चित रूप से कुचल जाता।

फिर बुरी खबर आई: 'डोराई, उसका पैर टूट गया है। जांघ से टूट गया है।'

अपने भारी-भरकम बूट उतारकर, मैं अपने दो साथियों की मदद से, जो ऊपर से खींच रहे थे और कुछ नीचे से धक्का दे रहे थे, किसी तरह चट्टान पर चढ़ पाया। मैंने बायरा को टूटी हुई जांघ के साथ पाया, लेकिन वह फिर भी मुस्कुरा रहा था!

शायद हाथी ने उसे पैर से पकड़कर फेंक दिया था और हड्डी तोड़ दी थी। हो सकता है कि कठोर चट्टान पर गिरने से ऐसा हुआ हो। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि बायरा अभी भी जीवित था। हमने शाखाओं, जंगली लताओं और मुलायम, हरे पत्तों से एक स्ट्रेचर बनाया। जितना हो सके कोमलता से हमने उसे उस पर रखा। इसी बीच मैंने केम्पेकेराई से रस्सियाँ मंगवाईं। उन्हें स्ट्रेचर के सिरों से बांधकर हमने उसे चट्टान से जितना संभव हो सके धीरे से नीचे उतारा। फिर हम उसे वापस गाँव ले आए।

बायरा को बैंगलोर के अस्पताल ले जाने के लिए मनाना मेरे लिए एक मुश्किल काम था। वह तब तक केम्पेकराई में ही रहना चाहता था जब तक उसकी टूटी हुई जांघ की हड्डी के दोनों सिरे जुड़ न जाएं।

जंगल की कई औषधियों और पत्तियों में अद्भुत औषधीय गुण होते हैं। इसमें

कोई शक नहीं कि टूटी हड्डी का सिरा जुड़ जाएगा। लेकिन क्या वे सीधे जुड़ेंगे? क्या बायरा फिर से सामान्य रूप से चल पाएगा? मैंने इन बातों पर ज़ोर दिया और उससे अस्पताल ले जाने की विनती की, लेकिन रात होने से पहले मुझे उसकी सहमति नहीं मिली। जंगल के लोग हमारे अस्पतालों से बहुत डरते हैं।

हम सुबह होते ही अय्यूर के लिए निकल पड़े, हिम्मत से स्ट्रेचर उठाए हुए, लेकिन मेरी 'अचानक मौत' बन चुकी मॉडल टी फोर्ड कार के खुले ढांचे पर स्ट्रेचर बांधना बहुत मुश्किल था। आखिरकार यह काम हो गया और धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए, कई गड्ढों से बचते हुए, हमें बैंगलोर के अस्पताल पहुंचने में काफी समय लग गया।

वहाँ हमने सनसनी मचा दी। वहाँ मौजूद हर डॉक्टर, नर्स और वार्ड-बॉय, और हर वो मरीज़ जो लंगड़ाकर चल सकता था और मौत के कगार पर नहीं था, उस विचित्र दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़ा। ऐसा अक्सर नहीं होता कि किसी को बिना शव वाली, बिना मडगार्ड या ड्राइविंग सीट वाली कार मिले, जिसके पीछे केवल एक खुला बक्सा बंधा हो, और उस खुले बक्से पर जंगल की लकड़ी, लताओं और पत्तियों से बना एक नाजुक स्ट्रेचर बड़ी मुश्किल से टिका हो, जिस पर लगभग नग्न अवस्था में एक छोटा आदमी, जिसकी जांघ टूटी हुई हो, रखा हो।

चार महीनों में बायरा पहले की तरह चलने लगा। उसकी टूटी हुई जांघ की हड्डी पूरी तरह जुड़ गई थी। डॉक्टर ने कहा कि वह एक अच्छा मरीज़ था। मुझे पता है कि इस दर्द और कठिनाई के दौर में उसे केवल अपने प्रिय जंगलों, पहाड़ों और झरनों की यादों ने ही सहारा दिया था।

वह बड़ा सुखद दिन था जब मैं उसे कार से ऐयूर वापस ले गया और उसके साथ केम्पेकेराई तक पैदल चला। हमें धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए जाना पड़ा। इस बार आप निश्चिंत रहें कि मैं एरिक को साथ नहीं ले गया। एक तो मैं उस अपशगुन को आजमाना नहीं चाहता था जो मेरे स्कूली दिनों के इस दोस्त के साथ जुड़ा हुआ लगता था।

मैं बताना लगभग भूल ही गया था कि दो रात पहले जब हम बायरा को कार में ले जा रहे थे, तब मुझे उस कोबरा को छोड़ना पड़ा जिसे मैंने पकड़ा था। यह यात्रा में एक अतिरिक्त बोझ और परेशानी बन जाता।

* देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।
* देखें: बाघ दहाड़ता है।
** देखें: आदमखोर और जंगल के हत्यारे।

दो

भारत का चिकित्सा ज्ञान

दक्षिण भारत के गरीब लोग अपनी बीमारियों के इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाने का खर्च वहन नहीं कर सकते, इसका बहुत अच्छा कारण यह है कि एक ही मुलाकात में उनकी एक सप्ताह की कमाई का एक बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है।

एक उदाहरण से समझिए: मान लीजिए किसी व्यक्ति को उंगली या पैर में घाव

है या हाल ही में चोट लगी है, तो डॉक्टर का शुल्क क्या होगा? आमतौर पर, किसी प्रकार का इंजेक्शन लगाया जाएगा, शायद एंटी-टेटनस या पेनिसिलिन का कोई इंजेक्शन। फिर पट्टी बांधनी होगी और साथ में सल्फा की गोलियां भी देनी होंगी। इंजेक्शन की कीमत कम से कम 1.50 रुपये होगी। पट्टी और गोलियों की कीमत एक और रुपये होगी। डॉक्टर की पेशेवर फीस लगभग 3.50 रुपये होगी, यानी कुल बिल लगभग छह रुपये होगा। यह रकम तीन दिन की कमाई के बराबर है, अगर मरीज कोई अकुशल मजदूर या खेत मजदूर है, तो दो रुपये प्रतिदिन के हिसाब से, और अगर वह कुशल है, तो पूरे दिन की कमाई के बराबर है। इसलिए आम आदमी डॉक्टर के पास जाने से पहले कई बार सोचेगा।

तो वह क्या करता है? वह बस सड़क किनारे चला जाता है, जहाँ कुछ ही गज की दूरी पर और एक-दो मिनट में उसे गोबर का एक चिकना, गर्म, चपटा ढेर मिल जाता है, जो हाल ही में सड़कों और ग्रामीण इलाकों में बेफिक्र घूमने वाले कई मवेशियों में से किसी एक ने डाला होगा। हमारा मरीज़ अपनी एक-दो उंगलियाँ उस ढेर में डालता है और गोबर का एक गीला, चिपचिपा गोला निकालता है, जिसे वह घाव पर लगाता है और उसे तब तक थपथपाता है जब तक कि वह पूरी चोट को एक छोटी प्लेट के आकार में ढक न ले।

बस इतना ही। क्या यह कारगर है? आश्चर्यजनक रूप से, अधिकांश मामलों में यह कारगर होता है। यदि किसी कारणवश उपचार विफल हो जाए और घाव ठीक न हो, या और बिगड़ जाए, तो इसका कारण (रोगी के लिए) बिल्कुल स्पष्ट और सरल है। जिस गाय ने गोबर किया था, उसमें कुछ गड़बड़ थी, इसलिए गोबर के दूसरे नमूने के साथ उपचार दोहराया जाता है।

'लेकिन टिटनेस के कीटाणु गाय के गोबर में रहते हैं!' आप हैरानी से कहते हैं। 'चिकित्सा की किताबों में तो यही लिखा है।' बेशक, किताबों में लिखा तो होगा, लेकिन मरीज़ को यह बात समझाना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा। पहली बात तो यह है कि वह आपकी एक शब्द भी नहीं मानेगा। दूसरी बात, उसे यह विश्वास ही नहीं होगा कि कीटाणु जैसी कोई चीज़ भी होती है। जब आप उसे बताते हैं कि वे इतने छोटे होते हैं कि वह उन्हें अपनी आँखों से नहीं देख सकता, तो वह सोचेगा कि यह कहानी आपकी कल्पना या अज्ञानता की उपज है, जो आपने जानबूझकर उसे डराने और डॉक्टर के पास ले जाने के लिए सुनाई है। शायद आप खुद भी डॉक्टर ही हों।

जमीन में बने छेदों में रहने वाली मकड़ी की प्रजाति के जाले, और छोटी झाड़ियों की शाखाओं के बीच जाले बुनने वाली प्रजाति के जाले, जहां उगते सूरज की किरणें उन पर जमा ओस पर पड़ने पर बहुरंगी प्रकाश के गुच्छों की तरह चमकते हैं, ताजा इकट्ठा करके और बहते हुए घावों में लगाने पर बेहतरीन उपचार साबित होते हैं।

ताजा तोड़ी हुई लहसुन की कलियों का रस मच्छरों के काटने से होने वाली जलन को शांत करता है, वहीं आंखों की किसी भी समस्या के लिए रोगी को उगते सूरज की ओर मुंह करके खड़े होकर संतरे के छिलके को आंखों में निचोड़ना चाहिए। रात में आंखों में बराबर मात्रा में नील के बीज और तंबाकू के पत्तों का बारीक पाउडर डालने से मोतियाबिंद ठीक हो जाता है, हालांकि रोगी को थोड़ी जलन महसूस होने की चेतावनी दी जाती है।

बोतल चिड़िया या भारतीय वृक्ष गौरैया अपनी लंबी, बोतल जैसी आकृति को घनी बुनाई वाले रेशों से बनाकर खजूर के ऊंचे पेड़ से एक ही रेशे से लटकाकर अद्भुत वास्तुकला और कारीगरी का प्रदर्शन करती है। अंडे देने के बाद, मादा बोतल चिड़िया शाम के समय, जब वह आमतौर पर अपने घोंसले में सुरक्षित होती है, आसपास के क्षेत्र में जुगनू की तलाश करती है, या अगर भाग्यशाली हो तो एक से अधिक जुगनू की। जुगनू को इतना घायल करके कि वह भाग न सके, लेकिन इतना गंभीर रूप से नहीं कि तुरंत मर जाए, यह चतुर चिड़िया अब उसे घोंसले के निचले सिरे पर बने चतुराई से निर्मित प्रवेश द्वार से घोंसले में प्रवेश कराती है।

शाम को देर से घर लौटते समय हमारे गांववाले को अगर किसी घोंसले के बीच से जुगनू की रोशनी दिखाई दे, तो वह क्या करता है? वह रुककर तुरंत पेड़ पर चढ़कर घोंसला तोड़कर जुगनू को निकालने नहीं जाता। इसमें बहुत समय लग जाएगा। उसे पहले ही देर हो चुकी है और जल्द ही अंधेरा हो जाएगा। ऊपर से वह अकेला भी है। यही वह समय होता है जब शैतान कब्रों के नीचे, नीम और बरगद के पेड़ों के तनों से और जमीन में बने छेदों से अपने बिलों से बाहर निकलने लगते हैं। दरअसल, मिनीस्पुरम नाम के जुगनू ऊंचे पेड़ों पर रहते हैं। या फिर, अगर वह किसी जंगल के पास है, तो जंगली जानवर से सामना होने की भी संभावना रहती है। इसलिए वह उस पेड़ की जगह नोट कर लेता है जिस पर घोंसला झूल रहा है और उसके अंदर एक छोटा सा जुगनू है, और फिर वह जल्दी से अपने रास्ते पर चल पड़ता है।

अगली सुबह वह वापस आ जाता है। खजूर के पेड़ों पर चढ़ना बेहद मुश्किल

होता है क्योंकि उनके तने कांटेदार होते हैं और पत्तियों के सिरे नुकीले होते हैं। इसलिए हमारा देहाती आदमी गांव से एक लंबा बांस का डंडा साथ लाता है, या अगर आसपास कहीं बांस के डंडे उगते हैं तो वह उन्हें काटकर उपयुक्त लंबाई का बना लेता है।

इसके साथ ही वह एक टहनी से बंधे हुए एकमात्र धागे को पीटकर घोंसले को नीचे गिरा देता है, और फिर बिना देर किए जुगनू को बाहर निकाल लेता है। वह नन्हा सा टिमटिमाना अब चकाचौंध भरी धूप में दिखाई नहीं दे रहा है, लेकिन ग्रामीण जानता है कि सूरज ढलने और अंधेरा छाने पर वह फिर से चमक उठेगा।

वह इसे सौभाग्य के लिए रख सकता है! या वह इसे खा भी सकता है, क्योंकि उसका मानना है कि प्रकाश उसके अंदर भी चमकेगा, ठीक वैसे ही जैसे घोंसले में चमका था, और उसकी आंतों के हर कोने को रोशन करेगा ताकि उसकी देखभाल करने वाली अच्छी आत्मा किसी भी गड़बड़ी को देख सके और उसका इलाज कर सके।

यदि घोंसले में छोटे पक्षी या अंडे हों, तो वह उन्हें घोंसले के बाकी हिस्सों के साथ फेंक देगा, या यदि वह निचली जाति का है तो वह उन छोटे पक्षियों को खा भी सकता है।

इस देश के कुछ जंगली जीव औषधि के रूप में अत्यधिक मांग में हैं और अगर वे बच निकलने में कामयाब नहीं होते हैं, तो उन्हें देखते ही मार दिया जाता है। काले चेहरे वाला धूसर लंगूर बंदर शायद इस सूची में सबसे ऊपर है। कभी पूरे देश में आम रहा यह बंदर दक्षिण भारत में इतना निर्दयता से मारा गया है कि अब उसकी कुछ ही प्रजातियाँ बची हैं और वे जंगल के भीतरी हिस्सों में सिमट गई हैं। वहाँ भी, सरकार द्वारा उनके शिकार पर प्रतिबंध होने के बावजूद, शिकारी गिरोह उन्हें गोली मार देते हैं। यह सब इस विश्वास के साथ किया जा रहा है कि लंगूर बंदर का मांस किसी भी नपुंसक पुरुष के लिए सबसे प्रभावी कामोत्तेजक पदार्थों में से एक है।

एक और दुर्भाग्यपूर्ण प्राणी जिसे इसी उद्देश्य से दवा बनाने के लिए बलि चढ़ाया जाता है, वह है सुंदर भारतीय स्लिम लोरिस, जिसे गलती से 'स्लॉथ' कहा जाता है। यह एक छोटा, प्यारा बंदर है, जिसकी बनावट नाजुक होती है, पूंछ नहीं होती और दो बड़ी, निर्मल भूरी आंखें होती हैं जो मशाल की किरणों को ऐसे प्रतिबिंबित करती हैं मानो वे लाल आग के कुंडों से बनी हों। धीमी गति से चलने के कारण, इस बेचारे

प्राणी को आसानी से पकड़ लिया जाता है। फिर जीवित रहते हुए ही इसकी दोनों आंखें निकाल ली जाती हैं ताकि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए एक अद्भुत कामोत्तेजक औषधि बनाई जा सके जिसने अपना पूरा जीवन स्त्री-भोग में बिताया हो और अब उस अवस्था में पहुंच गया हो जहां वह स्त्री-भोग नहीं कर सकता। लोरिस, जो अभी भी जीवित है लेकिन अपनी दोनों आंखों से वंचित और पूरी तरह अंधा है, उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जाता है। दुर्भाग्य से, इन छोटे जानवरों में काफी जीवन शक्ति होती है और वे कई दिनों तक जीवित रहते हैं, अंततः भूख से मर जाते हैं।

एक बार मुझे एक बंदर इसी हालत में मिला। मैं उसे घर ले आया, उसकी फटी हुई आँखों का यथासंभव इलाज किया और उसे दूध पिलाया। भयानक घावों के बावजूद वह छोटा बंदर ठीक हो गया।

लंबे समय तक इसने मुझ पर भरोसा नहीं किया, न ही मुझे इसे छूने दिया, और बुरी तरह से काटा। लेकिन इंसानों के हाथों झेली गई भयानक यातना के बाद भला कोई इस नन्हे जीव को इंसानों पर अविश्वास करने के लिए कैसे दोषी ठहरा सकता है? आखिरकार, इस नन्हे जानवर को समझ आ गया कि मेरा इरादा इसे कोई नुकसान पहुँचाने का नहीं है और मैं इससे दोस्ती करने की कोशिश कर रहा हूँ। उस पल से इसका मेरे प्रति रवैया बदल गया। मैंने आज तक इतना स्नेही और कोमल नन्हा जीव कभी पालतू नहीं रखा।

दक्षिण भारत में एक और स्तनधारी जीव, जिसे एक ऐसी मान्यता के कारण भारी पीड़ा झेलनी पड़ती है जिसका आधार निराधार हो भी सकता है और नहीं भी, वह है बड़ा भारतीय फल चमगादड़ जिसे आमतौर पर 'उड़ने वाली लोमड़ी' कहा जाता है। इस स्तनधारी जीव का मांस अस्थमा के लिए एक बहुत ही कारगर औषधि माना जाता है, और चूंकि उष्णकटिबंधीय जलवायु के बावजूद यह समस्या इस क्षेत्र में व्यापक रूप से फैली हुई है, इसलिए उड़ने वाली लोमड़ी को मौका मिलते ही गोली मार दी जाती है या जाल में फंसा लिया जाता है। हालांकि, इस मामले में इस स्तनधारी जीव को लंगूर बंदर की तरह ही सीधे मार दिया जाता है और उसका मांस पकाया जाता है, और इस प्रकार यह उस भयानक भाग्य से बच जाता है जो पतले लोरिस का होता है।

गैर-विषैले साँपों का भी बुरा हाल होता है। विषैले साँपों को मारकर जला दिया जाता है (ताकि वे दोबारा जीवित न हो सकें), लेकिन बड़े और हानिरहित साँपों, जैसे

कि धमन या 'चूहा-साँप', की खाल ज़िंदा ही उतार ली जाती है और फिर फेंक दी जाती है। बेचारे सरीसृप को, बिना बाहरी खाल के, तड़पते और छटपटाते देखना बहुत भयानक होता है। बाहरी खाल को नमक और कॉपर सल्फेट से थोड़ा सा सुखाकर कुछ रुपयों में बेल्ट या पर्स बनाने के लिए बेच दिया जाता है, क्योंकि पूरी तरह से सुखाए बिना यह जूते बनाने के लिए अनुपयुक्त होती है।

एक अन्य प्रकार के डॉक्टर 'रत्न चिकित्सा' में विशेषज्ञता रखते हैं, जिसे वे गर्व से इसी नाम से पुकारते हैं। यह अर्ध-कीमती पत्थरों के उपयोग से बीमारियों को ठीक करने की कला है। इसे तीन तरीकों से किया जाता है:

1. कुछ पत्थरों को जलाकर राख कर दिया जाता है और इस राख को जीभ पर या पानी में मिलाकर ग्रहण किया जाता है। आयुर्वेद में इस विधि का प्रयोग होता है, लेकिन यह केवल अत्यंत धनी लोगों द्वारा ही अपनाई जाती है।
2. एक या कई रत्नों को एक सप्ताह तक पानी में भिगोकर रखा जाता है, और फिर इस पानी को आधा औंस की मात्रा में दवा के रूप में दिया जाता है। विशेष रूप से ग्यारह रत्नों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें हीरा, माणिक, पन्ना, नीलम (नीला और सफेद दोनों), मूनस्टोन, मूंगा, कैट्स-आई, गोमेद, मोती, एमेथिस्ट और पुखराज शामिल हैं। बारहवां रत्न, ओपल, केवल आंखों की बीमारियों के इलाज में उपयोग किया जाता है। इन रत्नों के मिश्रण को एक सप्ताह तक पानी में भिगोकर रखा जाता है। फिर इस पानी को कम मात्रा में उन मामलों में दिया जाता है जिनमें रोग का इलाज मुश्किल होता है।
3. रत्न चिकित्सा का जो रूप सबसे उन्नत माना जाता है, वह विकिरण और कंपन के सिद्धांत पर आधारित है। जब किसी बीमारी का निदान हो जाता है और उपचार के लिए उपयुक्त रत्नों का चयन कर लिया जाता है, तो रोगी को एक बिजली के पंखे के ठीक सामने बैठाया जाता है, जिसके ब्लेडों पर जालीदार छोटी थैलियों में आवश्यक रत्न या कई रत्न बंधे होते हैं। फिर करंट चालू किया जाता है और ब्लेडों को पंद्रह या बीस मिनट तक तेज गति से घुमाया जाता है। इसका उद्देश्य यह है कि पंखे के ब्लेडों पर बंधे रत्न या रत्नों से ब्रह्मांडीय रंग-बल का विकिरण सीधे रोगी पर पड़ता है। दावा किया जाता है कि यह चिकित्सा पद्धति कुछ ही हफ्तों में अधिकांश पुरानी बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति को ठीक कर देती

है।

इस चिकित्सा पद्धति का प्रयोग दूर-दूर तक फैले रोगी पर, यहाँ तक कि विश्व के दूसरे छोर पर स्थित रोगी पर भी किया जा सकता है। ऐसे मामलों में, व्यक्ति से निकटता से जुड़ी किसी वस्तु का उपयोग किया जाता है, जैसे कि कोई तस्वीर, सोख्ता कागज पर खून की एक बूंद, बालों का एक गुच्छा, नाखून या रुमाल। इस वस्तु को 'नमूना' कहा जाता है और इसे एक लकड़ी के फ्रेम से जोड़ा जाता है, जिसे बिजली के पंखे के ठीक छह इंच आगे रखा जाता है। पंखे के ब्लेडों पर पहले से ही जालीदार छोटी थैलियों में रत्न रखे होते हैं। बिजली चालू कर दी जाती है और ब्लेडों को कई घंटों तक तेज गति से घूमने दिया जाता है, जबकि रोगी की उपस्थिति में यह गति केवल पंद्रह से बीस मिनट तक ही रहती है। आश्चर्यजनक रूप से ठीक होने के मामले सामने आए हैं।

लेकिन हम सभी ने तिब्बती प्रार्थना-चक्र के बारे में सुना है, जो प्रार्थना या मनोकामना को मन में रखकर लगातार घूमता रहता है, और प्रार्थना करने वाला उस पर ध्यान केंद्रित करता है। उसे विश्वास होता है कि उसकी मनोकामना पूरी हो जाएगी, और अक्सर ऐसा होता भी है। बेशक, इस साधारण घूमते हुए प्रार्थना-चक्र और बिजली के पंखे के घूमते हुए ब्लेड के बीच कोई संबंध हो सकता है, और शायद उनके जालीदार थैलों में रखे रत्न केवल ध्यान केंद्रित करने में सहायक कारक हों।

जहां बिजली के पंखे के ब्लेड विकिरण के सिद्धांत पर काम करते हैं, वहीं बिजली के वाइब्रेटर या रेडियो लाउडस्पीकर में कंपन का उपयोग किया जाता है। रोगी को वाइब्रेटर के ठीक सामने बैठाया जाता है, जिस पर चयनित रत्न रखे जाते हैं और करंट चालू किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि वाइब्रेटर से ब्रह्मांडीय किरणें कंपन के माध्यम से रोगी तक पहुंचती हैं। दूरस्थ उपचार भी बिजली के पंखे की तरह ही किए जाते हैं। रोगी के नमूने को वाइब्रेटर के छह इंच आगे रखे फ्रेम से जोड़ा जाता है। कुछ मामलों में, नमूने को रत्नों के साथ उनके जालीदार थैलों में रखकर कंपन कराया जाता है, फिर उन्हें वाइब्रेटर पर या लाउडस्पीकर के शंकुओं के केंद्र में रखकर करंट चालू किया जाता है। दूरस्थ उपचारों के लिए, बिजली के पंखे की तरह ही, वाइब्रेटर को कुछ घंटों तक चलाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि कंपन उत्पन्न करने वाला यंत्र रत्नों की ब्रह्मांडीय रंग-शक्ति को रोगी या उसके 'नमूने' में स्थानांतरित कर देता

है।

ये 'नमूने' रोगी का प्रतिनिधित्व करते हैं और हर तरह से उससे जुड़े होते हैं, चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो, और उन पर पड़ने वाले विकिरण या कंपन सीधे रोगी पर पड़ने वाले विकिरण या कंपन के समान होते हैं।

कभी-कभी प्रार्थनाएँ या तीव्र इच्छाएँ कागज़ के एक टुकड़े पर लिखकर उसे कुछ घंटों तक तेज़ गति से चलने वाले पंखे के ब्लेड पर घुमाया जाता है या किसी वाइब्रेटर पर रखा जाता है। ये प्रार्थनाएँ या इच्छाएँ हमेशा पूरी हो जाती हैं। हर बार, प्रार्थना या इच्छा लिखी हुई कागज़ का वह टुकड़ा, जिस पर ब्रह्मांडीय किरणें पड़ती हैं या कंपन होता है, उसे अवशोषित कर लेता है। क्योंकि ये वस्तुएँ वास्तविक व्यक्ति या वास्तविक इच्छा का प्रतिनिधित्व करती हैं, इसलिए रोगी ठीक हो जाता है, चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो, या प्रार्थना पूरी हो जाती है।

यहां विस्तृत जानकारी देने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है, लेकिन मैं इस प्रणाली का एक संक्षिप्त सारांश देना चाहूंगा:

हीरा। ऊर्जा के लिए। बांझपन, यौन रोग, ल्यूकोरिया, शराबखोरी, वृद्धावस्था और सभी प्रकार की दुर्बलता की स्थिति में निर्धारित।

रूबी। हृदय रोग, सिरदर्द, अपच, स्प्रू, आंखों की बीमारियों, भूख न लगना और मानसिक समस्याओं के मामलों में निर्धारित दवा है।

पन्ना। हकलाने, बचकानेपन, पेट संबंधी विकारों, झूठ बोलने की आदत, बुद्धि की कमी, उन्माद, चोरी, गूंगेपन और बहरेपन के मामलों में निर्धारित।

मोती। मधुमेह, तपेदिक, जलोदर, दस्त, मूत्राशय के रोग, पीलिया, बेचैनी, सभी प्रकार के दुर्गुणों और कमजोर मन के मामलों में निर्धारित।

कोरल। यह दवा लीवर और रक्त संबंधी रोगों, खसरा, उच्च रक्तचाप, बवासीर, दांत दर्द, अंडकोष की सूजन, जोड़ों के रोगों और मूत्र संबंधी समस्याओं के लिए निर्धारित है।

पुखराज। यह मुख्य रूप से मानसिक और व्यक्तिगत विकारों जैसे फिजूलखर्ची, पाखंड, बातूनीपन, मुकदमों के प्रति लगाव, पागलपन, पक्षाघात, गठिया, गले या तालू और यकृत के रोगों, मोटापा और ट्यूमर के लिए निर्धारित किया जाता है।

नीलमणि। तंत्रिका दर्द, विकृति, बढ़े हुए तिल्ली, जलोदर, हिस्टीरिया, मिर्गी और सभी प्रकार के तंत्रिका विकारों के मामलों के लिए।

गोमेद। मानसिक भय, आत्महत्या की प्रवृत्ति, गर्भाशय संबंधी समस्याओं, कब्ज, मस्तिष्क और ग्रंथियों के रोगों, ट्यूमर और यकृत फोड़े के लिए।

कैट्स-आई। फोड़े-फुंसी, त्वचा रोग, कैंसर के घाव, खुजली और चेचक के लिए।

ओपल। मुख्य रूप से आंखों से संबंधित सभी समस्याओं के लिए।

पाठक को यह विचार निश्चित रूप से मनोरंजक लगेगा कि रत्न किसी भी प्रकार का इलाज कर सकते हैं, विशेष रूप से यह सिद्धांत कि 'विकिरण' या 'कंपन' का उपयोग हजारों मील दूर बैठे किसी भी रोगी के लिए किया जा सकता है। लेकिन असलियत तो प्रयोग से ही पता चलती है, और इसमें कुछ हद तक औचित्य भी प्रतीत होता है।

प्रारंभ से ही भारत सरकार ने देश में प्रचलित चिकित्सा की अनेक प्रणालियों में से किसी पर भी प्रतिबंध नहीं लगाया है, न ही किसी विशेष पद्धति को आधिकारिक रूप से प्राथमिकता दी है। यह नीति इसलिए अपनाई गई क्योंकि यहाँ अनेक जातियाँ और धर्म हैं, जिनमें से कुछ किसी विशेष चिकित्सा प्रणाली को विशेष रूप से पसंद करते हैं। पश्चिमी चिकित्सा प्रणालियों में एलोपैथी और होम्योपैथी शामिल हैं, जिनसे इलेक्ट्रोहोम्योपैथी और डॉ. शुस्क्लर की 'बारह ऊतक उपचार' की जैव रासायनिक प्रणाली जैसी उपशाखाएँ निकली हैं।

मानक हिंदू चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद है, जिसमें औषधियाँ जड़ी-बूटियों, पौधों और वृक्षों के पत्तों, छाल, जड़ों, बीजों या फूलों से तैयार की जाती हैं। इसकी सहयोगी पद्धति सिद्ध है, जो व्यावहारिक रूप से समान है लेकिन मुख्य रूप से दक्षिण भारत में प्रचलित है। मैं इन दोनों पद्धतियों की प्रभावकारिता की पुष्टि कर सकता हूँ, जिन्होंने उन अनेक मामलों में सफलता प्राप्त की है जहाँ अन्य सभी पद्धतियाँ विफल रही हैं।

यूनानी चिकित्सा पद्धति मुस्लिम समुदाय में अधिक प्रचलित है और इसके अवयवों में न केवल पौधे, बल्कि खनिज और बहुमूल्य पत्थर भी शामिल होते हैं। रंग चिकित्सा पद्धति का पालन कई लोग करते हैं, विशेष रूप से हैदराबाद राज्य (अब आंध्र प्रदेश) में। यह एक सरल प्रणाली है, जिसमें उपचार के लिए लाल, गहरा नीला, आसमानी नीला, हरा, पीला और इनके मध्यवर्ती रंगों का उपयोग किया जाता है। इन रंगों का प्रयोग दो तरीकों से किया जाता है। विभिन्न रंगों की कांच की बोतलों को उनकी क्षमता के तीन-चौथाई भाग तक सादे पानी से भरकर दो दिनों तक तेज धूप में

रखा जाता है। इस पानी का एक औंस दवा की प्रत्येक खुराक बनाता है। इस आंतरिक खुराक के साथ, मानव शरीर के प्रभावित हिस्से को बीस से तीस मिनट तक रंगीन सूर्य के प्रकाश में रखा जाता है, सूर्य की किरणें आवश्यक रंग के कांच के एक टुकड़े के माध्यम से उस हिस्से पर पड़ती हैं।

आजकल कांच की बोतलें और यहां तक कि मनचाहे रंगों या उनके मिश्रणों वाली कांच की चादरें या टुकड़े मिलना मुश्किल है, इसलिए इस समस्या को दूर करने के लिए आमतौर पर अलग-अलग रंगों के पारदर्शी सेलोफेन जैसे कागज खरीदे जाते हैं, जिनका इस्तेमाल सजावट के लिए किया जाता है। इस रंगीन कागज को सफेद कांच की बोतल के चारों ओर रंग की गहराई के अनुसार एक, दो या तीन बार लपेटा जाता है। रंगों के मिश्रण बनाने के लिए, पहले एक रंग का कागज और फिर दूसरे रंग का कागज बोतल के चारों ओर लपेटा जाता है; उदाहरण के लिए, बैंगनी रंग बनाने के लिए पहले लाल और फिर नीला कागज। रंगीन कांच की चादरों के स्थान पर, मनचाहे रंग का कागज सीधे प्रभावित हिस्से पर रखा जाता है, और फिर उसे तेज धूप में रखा जाता है।

आपको शायद लगेगा कि क्रोमोपैथी पूरी तरह बकवास है, लेकिन मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि ऐसा नहीं है।

हम सभी ने मधुमेह के कारण होने वाले फोड़े के बारे में सुना है और यह भी कि उनका इलाज कितना मुश्किल होता है, और अक्सर उन्हें चीरकर ही ठीक करना पड़ता है। लेकिन अपने फोड़े पर दिन में दो बार तीस मिनट के लिए नीले कांच या कागज के माध्यम से धूप पड़ने दें, और साथ ही चार औंस नीला पानी पिएं (नीले कांच की बोतल में या पारदर्शी नीले कागज में लिपटी बोतल में धूप में रखा हुआ पानी)। धूप में रखने का समय दोपहर 12 बजे और दोपहर 3 बजे का होना चाहिए, जब दिन सबसे गर्म होते हैं।

यदि आप एनीमिया से पीड़ित हैं, तो तीन बड़ी सफेद कांच की बोतलें लें, प्रत्येक बोतल पर चमकीले लाल रंग का पारदर्शी सेलोफेन दो बार लपेटें और लाल धागे से सेलोफेन को बांध दें। प्रत्येक बोतल को तीन-चौथाई शुद्ध पानी से भरें और दो दिनों के लिए तेज धूप में रखें। बोतलों के ढक्कनों पर क्रमशः A, B और C अक्षर अंकित करें।

तीसरे दिन, बोतल A की सामग्री को चार या पाँच बार में पूरा पी लें। बोतल को तुरंत फिर से भरें और अगले दिन उसे धूप में रख दें। इस दौरान, दूसरी बोतल (B) की

सामग्री पी लें। उसे भी भरें और तीसरे दिन तीसरी बोतल (C) को पूरा पी लें। उसे भी भरें और धूप में रख दें। चौथे दिन, पहली बोतल (A) का फिर से उपयोग करें, और इसी तरह आगे बढ़ते रहें। एक से दस दिनों में आपका एनीमिया धीरे-धीरे ठीक होने लगेगा और इलाज का खर्च केवल तीन पारदर्शी कागज़ों की कीमत के बराबर होगा।

मस्से या मस्सों के समूह को ठीक करने के लिए, एक आवर्धक लेंस लें, उसके चारों ओर पारदर्शी पीले रंग का सेलोफेन लपेटें और सूर्य की रोशनी को मस्से पर इस तरह डालें कि वह त्वचा को जला न दे। दिन में दो बार दस से पंद्रह मिनट के लिए उस हिस्से को धूप में रखें, इससे मस्सा सिकुड़ जाएगा।

जिसे 'मूत्र प्रणाली' के नाम से जाना जाता है, वह मुख्य रूप से गुजरात राज्य में प्रचलित है। उपचार का आधार यह है कि रोगी को कम आहार पर रखा जाता है, जो कुछ मामलों में लगभग पूर्ण उपवास के समान होता है, और उसे केवल उसका अपना मूत्र पीने के लिए दिया जाता है। पानी, दूध या अन्य कोई तरल पदार्थ वर्जित है। यह प्रणाली सभी रोगों के लिए निर्धारित है और कुछ मामलों में इसकी अत्यधिक अनुशंसा की जाती है जहाँ एलोपैथी और अन्य उपचार विफल रहे हों। पूर्व भारतीय राजनेता श्री मोरारजी देसाई इस प्रणाली के प्रबल समर्थक हैं।

हैदराबाद में उत्पन्न 'डी चाने प्रणाली' एक अत्यंत कुशल चिकित्सक द्वारा एलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेद के सिद्धांतों का कुशलतापूर्वक संयोजन है। इसके नाम कुछ आश्चर्यजनक उपचार दर्ज हैं।

विद्युत चुम्बकों या स्थायी चुम्बकों और पेंडुलम के उपयोग से, या केवल अंतर्ज्ञान के आधार पर, रोगों का निदान व्यापक रूप से प्रचलित है। रोगी की अनुपस्थिति में, दूर स्थित रोगी से प्राप्त नमूने, जैसे रक्त का धब्बा, बालों का एक गुच्छा, चांदी का टुकड़ा या नाखून, एक तस्वीर या व्यक्तिगत वस्त्र का एक टुकड़ा, रोगी के विकल्प के रूप में कार्य करते हैं। चिकित्सक न केवल रोगी को देखे बिना इन विकल्पों से रोग का सही निदान कर लेता है, बल्कि रोगी द्वारा पसंद की जाने वाली चिकित्सा पद्धति के अनुसार निदान का संकेत भी देता है।

योगिक व्यायाम, प्राणिक श्वास, विश्राम और ध्यान के माध्यम से उपचार प्रचलित है, जबकि हमारे पास चुंबकीय उपचार करने वाले भी हैं जो स्पर्श और हाथों को रखकर, या आत्मसुझाव और रोगी के जीन और शरीर की कोशिकाओं को सीधे मौखिक आदेश देकर उपचार करते हैं।

मैंने उपरोक्त पद्धति का प्रयोग करते हुए एक चिकित्सक को गंभीर पेचिश से पीड़ित एक मरीज का इलाज करते हुए देखा है। एक हाथ मरीज के पेट पर और दूसरा उसकी पीठ के निचले हिस्से पर रखकर, चिकित्सक ने लगभग चिल्लाते हुए आंतों की उन कोशिकाओं को अपना काम ठीक से करने के लिए कहा, जो ठीक से काम नहीं कर रही थीं, और साथ ही जीनों को भी विनम्रतापूर्वक समझाते हुए, उनसे कहा कि वे उन अनियंत्रित कोशिकाओं को अपना कर्तव्य ठीक से निभाने का निर्देश दें। चौबीस घंटे के भीतर पेचिश ठीक हो गई।

मंत्रों का जाप, जादुई अनुष्ठान करना, रोग मुक्ति होने पर किसी संत को धन या अन्य उपहार देने की शपथ लेना, ये सभी आत्म-सुझाव के रूप हैं जो स्व-सम्मोहन के समान हैं। यह सम्मोहन विज्ञान की एक बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रभावी शाखा है, जो अवचेतन मन से संपर्क स्थापित करने की एक विधि है। अवचेतन मन ही हम सभी का वास्तविक केंद्र है। यह किसी भी उचित इच्छा को पूरा कर सकता है।

भारत में काला जादू अधिकतर विनाशकारी उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है, लेकिन कभी-कभी इसका उपयोग उपचार के लिए भी किया जाता है। यह उन लोगों पर हमेशा कारगर साबित हुआ है जो इस पर विश्वास करते हैं।

'चमत्कारी' उपचार के मामले, जिनमें मैं धार्मिक उपचार को भी शामिल करता हूं, अक्सर सुनने को मिलते हैं, और भारत के चार महान धर्म - हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म और बौद्ध धर्म - लगभग समान संख्या में सफलता का दावा करते हैं।

भारत में प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की इस संक्षिप्त समीक्षा में मैंने सभी पद्धतियों को शामिल नहीं किया है। अभी भी कई पद्धतियाँ हैं जो अनेक बीमारियों के इलाज का दावा करती हैं। उदाहरण के लिए, एक साधारण सा गाँव का ज्योतिषी, जो अफ्रीका के किसी गाँव के वैद्य के समान है। यह व्यक्ति मुखिया और पटेल से लेकर सबसे निचले दर्जे के मोची, सफाईकर्मी और कूड़ा बीनने वाले तक, सभी का विश्वासपात्र होता है। बीमार होने पर उसे बुलाया जाता है, साँप या पागल कुत्ते के काटने पर मवेशियों का इलाज करता है, या रानीखेत रोग से पीड़ित मुर्गियों को छुड़ाता है। वह सूखे की भविष्यवाणी करता है, मानसून की बारिश कब शुरू होगी और यहाँ तक कि बाढ़ आने की संभावना कब होगी, यह भी बताता है। फसल खराब होने पर सलाह देता है। विवाह कराने, ज़मीन को लेकर झगड़े सुलझाने, भागी हुई पत्नियों को ढूँढ़ने और घरेलू समस्याओं को हल करने में मदद करता है। यह जिज्ञासु व्यक्ति

गाँव के हर व्यक्ति के बारे में जानता है। उसकी इस व्यापक सफलता का कारण क्या है? क्या वह वास्तव में किसी गुप्त विज्ञान या कला का ज्ञाता है? या फिर क्या वह असाधारण रूप से बुद्धिमान, कुशल मनोवैज्ञानिक, मन और चरित्र को पढ़ने वाला, कुछ हद तक सम्मोहनकर्ता और उससे भी कहीं अधिक निपुण वक्ता है? या फिर वह बस एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास भरपूर समझदारी है और वह जानता है कि उसका उपयोग कैसे करना है? लेकिन हर ग्रामीण उसे अपना 'गुरु' (शिक्षक) मानेगा।

क्या ऐसी कोई जादुई औषधियाँ होती हैं जो अच्छा स्वास्थ्य, सामान्य बीमारियों से मुक्ति, या शायद कुछ विशेष कष्टों से भी मुक्ति दिला सकती हैं? क्या कोई ऐसी औषधि भी है जो दीर्घायु प्रदान कर सकती है? आज के समय में अधिकांश लोगों को इस पर विश्वास करना कठिन लगेगा, और 'दीर्घायु' के विषय पर मैं कोई बहस नहीं करना चाहता, क्योंकि इस विषय पर मेरे अपने विचार हैं। लेकिन मैं आपको इतना ज़रूर बता सकता हूँ, और यह जानकारी बहुत प्राचीन ग्रंथों से ली गई है। भारत में उगने वाली तीन जड़ी-बूटियाँ और चीन में उगने वाली एक जड़ी-बूटी के बारे में कहा जाता है कि वे यही काम करती हैं। इतना ही नहीं, मेरे बगीचे में तीनों भारतीय किस्में उग रही हैं, जबकि चीनी पौधा, या यूँ कहें कि उससे बना अर्क, कलकत्ता में उपलब्ध है। लेकिन मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूँ कि ऐसी जड़ी-बूटियाँ हैं जो बीमारियों को दूर रखती हैं, हृदय को स्वस्थ रखती हैं, रक्तचाप को कम (या बढ़ा) सकती हैं, धमनीकाठिन्य से बचाती हैं, अस्थमा, मधुमेह, कुष्ठ रोग, ल्यूकोडर्मा, गठिया और कई अन्य बीमारियों का इलाज करती हैं, और आपको सर्दी-जुकाम से पूरी तरह बचाती हैं।

मेरे पास एक गोल टिन का डिब्बा है जिसमें छोटी-छोटी नीली कांच की बोतलें भरी हैं। हर बोतल में एक 'गुप्त' जड़ी बूटी पाउडर के रूप में है: मैं सुबह जल्दी और रात को सोने से पहले हर बोतल से एक चुटकी भर लेता हूँ और जहाँ तक हो सके इस टिन के डिब्बे को अपने साथ हर जगह ले जाता हूँ। जिन लोगों ने मुझे ये 'दवाएँ' निगलते हुए देखा है, वे इनकी संख्या देखकर हैरान रह गए हैं। उन्होंने मेरा मज़ाक भी उड़ाया है, लेकिन मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। भगवान की कृपा से (या मेरे टिन के डिब्बे की कृपा से), मुझे कभी सर्दी-जुकाम नहीं होता। मेरे घर के सभी सदस्य, सिवाय मेरे, साल में कम से कम दो बार फ्लू से बीमार पड़ जाते हैं। उन्हें बुखार और तरह-तरह के दर्द होते हैं, खासकर जब वे मानसून की बारिश में भीग जाते हैं। मैं भीग

जाता हूँ और मुझे अच्छा लगता है। मैं 63 साल का हूँ (1972) और अब भी दिन में बीस मील तक चल सकता हूँ, खासकर जंगल में जानवरों के बीच, और कुछ और चलने की क्षमता रखता हूँ।

इन सभी चीजों के लिए, जिनमें टिन का डिब्बा और उसके अंदर की सामग्री भी शामिल है, मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूं।

तीन

गुप्त विद्या और अन्य मामले

दक्षिण भारत के लोग रहस्यमय और अदृश्य विषयों को उतना ही स्वाभाविक मानते हैं जितना कि वे भौतिक वस्तुओं को। किसी भी प्रकार की बीमारी, विपत्ति, आर्थिक हानि या दुर्भाग्य, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, सभी को दो कारणों में से एक से जोड़ा

जाता है। पहला कारण दिन का 'बुरा समय' (जिसे राहुकालम कहा जाता है), या शायद पीड़ित व्यक्ति का 'बुरा समय'; दूसरा कारण किसी दुष्ट शत्रु की जानबूझकर की गई साजिश है जिसमें काला जादूगर का इस्तेमाल करके जादू किया जाता है। इन परिस्थितियों में, काला जादूगरों, जादू हटाने वालों (और जादू करने वालों), ज्योतिषियों और हर तरह के भविष्यवक्ताओं की बहुत मांग होती है, और उनकी उपलब्धता कभी भी पर्याप्त नहीं लगती।

बड़े शहरों में, शाम के समय आप इन लोगों को फुटपाथों पर लंबी कतारों में एक-दूसरे से सटकर बैठे हुए पाएंगे। ये तरह-तरह के ज्योतिषी होते हैं। कुछ तोते या चिड़िया का इस्तेमाल करते हैं, जो मालिक के आदेश पर ताश के पत्तों के पैक में से कुछ खास पत्ते चुनते हैं या फिर ऐसे पत्ते जिन पर छोटे अक्षरों में भविष्यवाणियां लिखी होती हैं।

फिर ऐसे ज्योतिषी भी हैं जो सीधे ताश के पत्तों से या पासे फेंककर अपना धंधा चलाते हैं। हस्तरेखा विशेषज्ञों का भी अच्छा-खासा दंपत्ति है। कुछ विशेषज्ञ रेत में रेखाएँ देखकर, फुटपाथ पर कोयले के निशान देखकर या दोपहर में ग्राहक की परछाई देखकर भविष्य बताते हैं। उनके तरीके चाहे जो भी हों, ग्राहकों की कमी नहीं दिखती, और परामर्श के लिए एक रुपये से तीन रुपये तक की फीस होने के कारण, ये ज्योतिषी अच्छी खासी कमाई करते हैं।

इन ग्राहकों को अपना पैसा बर्बाद करने से रोकने की कोशिश करना व्यर्थ होगा। वे आपको मूर्ख या अज्ञानी समझेंगे। भारतीय मानसिकता भाग्य के प्रभाव में प्रबल होती है, और तोता या चिड़िया, ताश के पत्ते, परछाईं और अन्य सभी ऐसी चीजें हैं जो एक कुशल गुरु के मार्गदर्शन में भविष्य बता सकती हैं।

अधिकांश बीमारियों का कारण बुरी आत्माओं का प्रकोप माना जाता है, और हर उस मरीज़ के लिए जो किसी योग्य डॉक्टर से सलाह लेता है, कम से कम एक और —शायद उससे भी कहीं ज़्यादा—ऐसे लोग होते हैं जो 'तांत्रिकों' के पास जाते हैं। मैं ऐसे कई मामलों का प्रत्यक्ष गवाह रहा हूँ और उनका तरीका लगभग हमेशा एक जैसा ही होता है। मैं युवा निकलास (असल में निकोलस, लेकिन कोई भी उस शब्द का सही उच्चारण नहीं कर पाता था) का उदाहरण देना चाहूँगा।

वह शायद उन्नीस साल का था, कद में छोटा, सांवला, आकर्षक और हंसमुख चेहरा, लंबे घुंघराले काले बाल और दो पंक्तियों में सजे हुए दांत जो उसके मुस्कुराने

पर साफ दिखाई देते थे, और वह अक्सर मुस्कुराता था। एक मिलनसार और मेहनती लड़का, वह अपने पिता की अचानक मृत्यु होने तक सबका चहेता था।

पिता, 'टिच', भारत में 'लाइनमैन' कहलाते थे। वे विद्युत विभाग में कार्यरत थे और उनका कर्तव्य था कि वे कुछ निश्चित समय पर मौजूद रहें ताकि अचानक खराब हो जाने वाली बिजली की व्यवस्थाओं से संबंधित आपातकालीन कॉलों का जवाब दे सकें। ऐसी कॉलों का जवाब देना और समस्या को ठीक करना टिच का काम था।

एक गुरुवार की रात को देर से एक कॉल आया और टिच ने जवाब दिया। दुर्भाग्य से, वह गुरुवार महीने का पहला दिन था और टिच ने दिन में पहले ही अपनी तनख्वाह ले ली थी। उससे भी ज्यादा दुर्भाग्य की बात यह थी कि टिच ने शराब पी रखी थी। बहुत ज्यादा तो नहीं, लेकिन जितनी पीनी चाहिए थी उससे थोड़ी ज्यादा, क्योंकि टिच हमेशा तनख्वाह मिलने पर चार-पाँच शॉट अराक पीकर जश्न मनाता था। इसमें ज्यादा खर्च नहीं होता था—लगभग एक शिलिंग में दो ड्राम।

लगभग एक घंटे पहले तेज़ आंधी आई थी और एक पेड़ की शाखा ऊपर से गुज़र रहे तारों पर गिर गई थी, जिससे शॉर्ट सर्किट हो गया और कुछ नुकसान हुआ। जब टिच खंभे पर चढ़ा, तब घना अंधेरा था और विभाग द्वारा दी गई लगभग खत्म हो चुकी बैटरी वाली दो सेल की टॉर्च की धुंधली रोशनी में भी उलझे हुए तार मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। तभी ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई और हवा के एक तेज़ झोंके ने उलझे हुए तारों को उनकी लटकती जगह से हटा दिया, और बारिश के पानी ने चालकता में मदद की। एक तार टिच की गर्दन पर गिर गया और दूसरा उसके नंगे पैरों से बाल-बाल बचा। बाल-बाल—लेकिन पूरी तरह नहीं! सात हज़ार वोल्ट बिजली उसके शरीर से गुज़री और टिच तारों को अपने साथ खंभे से गिरा दिया। दो घंटे बाद जब आंधी थम गई और उसे उठाया गया, तो उसकी हालत भयानक थी। उसकी गर्दन पर फंसा तार उसके मांस में धंस गया था और वह मर चुका था।

इस घटना से निकलास परेशान हो गया, लेकिन उसकी माँ के उसी महीने के व्यवहार से वह और भी ज़्यादा परेशान हो गया। उसकी माँ एक हफ़्ते के लिए अपने पड़ोसी, एक युवा कुंवारे व्यक्ति के साथ रहने चली गई, और फिर पड़ोसी ने बेशर्मी से निकलास के पिता टिच के घर में घुसकर विधवा एंथोनीअम्मा के साथ खुलेआम रहना शुरू कर दिया। इन सब बातों से युवा निकलास को गहरा सदमा लगा और उसने मौका मिलते ही अपनी माँ से इस बारे में बात की। क्या उसकी माँ अपने दिवंगत पति, अपने

पिता के नाम और स्मृति का इसी तरह सम्मान करती थी? एंथोनीअम्मा ने अपने प्रेमी से शिकायत की, जिसने निकलास को उस घर से निकाल दिया जो सही मायने में उसका था और उसे जान से मारने की धमकी दी, अगर उसने वापस आने की हिम्मत की तो।

बेचारा निकलास अपने चाचा अरोकियास्वामी के पास शरण लेने भागा, और अगली ही रात उसका सामना एक ऐसे व्यक्ति से हुआ जो शैतान के अलावा और कोई नहीं हो सकता था; पड़ोसियों का यही कहना था। जब मैंने उससे इस बारे में पूछा, तो निकलास ने मुझे यकीन दिलाया कि उसने उस व्यक्ति को ठीक वैसे ही देखा और उससे बात की, जैसे वह उस समय मुझे देख और मुझसे बात कर रहा था।

घर में शौचालय न होने के कारण, निकलास पास की झाड़ी के पीछे चला गया था, जैसा कि परिवार के सभी सदस्य, पुरुष और महिला, प्राकृतिक क्रिया के लिए करते थे। यह रात के लगभग नौ बजे का समय था, जब चारों ओर घना अंधेरा था। आम तौर पर वह इस समय तक सो जाता, लेकिन उस रात किसी कारणवश उसे नींद नहीं आ रही थी। निकलास ने बताया कि वह विशेष रूप से सावधान था, क्योंकि एक घंटे पहले बारिश हुई थी और सभी जानते थे कि बारिश के बाद कोबरा मेंढकों का शिकार करने के लिए जमीन में बने अपने बिलों से बाहर आ जाते हैं।

जब निकलास घुटनों के बल बैठा था, तभी उसके सामने पूरी तरह सफेद वस्त्र पहने एक लंबा आदमी प्रकट हुआ। उस आदमी ने उसे नाम से पुकारा और अपने पीछे आने को कहा। उस समय अपनी स्थिति के बावजूद, युवा निकलास आज्ञा मानने के लिए विवश हो गया और उस सफेद वस्त्रधारी व्यक्ति के पीछे चल पड़ा, जो निकलास के बार-बार पकड़ने की कोशिश करने के बावजूद उससे बारह कदम की दूरी बनाए हुए था। उसने एक और बात पर ध्यान दिया कि वह व्यक्ति लगातार लंबा होता जा रहा था, लेकिन जमीन को छू नहीं रहा था।

वे आधे फर्लांग की दूरी पर उग रहे विशाल बरगद के पेड़ तक पहुँचे, सफेद वस्त्र पहने वह आकृति अभी भी आगे-आगे चल रही थी, फिर वह अचानक रुक गई। इससे निकलास को अंततः उसके पास पहुँचने का मौका मिल गया। उसे ठीक से याद नहीं कि आगे क्या हुआ। एक पल के लिए वह आकृति पुराने बरगद की लटकती जड़ों में सीधी ऊपर उठती हुई दिखाई दी। फिर वह उसे देख नहीं पाई। उसे बस इतना याद है कि उसकी गर्दन के पीछे ज़ोरदार थप्पड़ पड़ा, जिसके बाद उसे कुछ याद नहीं रहा।

जब निकलास वापस नहीं लौटा, तो उसकी चचेरी बहन ने अपनी माँ और चाचा को इस बारे में बताया। उन्हें कुछ असामान्य नहीं लगा, इसलिए उन्होंने कुछ समय तक इस पर ध्यान नहीं दिया। फिर तीनों लापता लड़के की तलाश में निकल पड़े। निकलास ने जो सफेद कमीज और पैंट पहनी हुई थी, उसी पर उसकी चाची की नज़र पड़ी, और उन्होंने उसे एक पुराने बरगद के पेड़ के नीचे पड़ा हुआ पाया और उसे घर ले आए। वह पेड़ सैकड़ों साल पुराना था और माना जाता था कि उसमें भूत-प्रेत का वास है; इसलिए उन्होंने अनुमान लगाया कि लड़के की यह हालत किसी बुरी आत्मा या शक्तियों के कारण हुई है।

उस समय से निकलास को रहस्यमय दौरे पड़ने लगे, कम से कम दिन में एक बार, और कभी-कभी तीन या चार बार तक। ये दौरे मिर्गी के नहीं थे, क्योंकि निकलास कभी बेहोश नहीं होता था। वास्तव में वह स्पष्ट रूप से बोलता था, लेकिन एक ऐसी भाषा में जिसे कोई समझ नहीं पाता था, हालांकि ऐसा लगता था कि यह उसकी माँ और उसके प्रेमी से संबंधित थी। इसके अलावा, इन दौरों के दौरान वह भयंकर क्रोध में प्रतीत होता था, क्योंकि उसकी आँखें चमकती थीं और वह दाँत किटकिटाता था। वह इतना हिंसक हो जाता था कि घर के तीनों सदस्यों के संयुक्त प्रयास भी उसे काबू में नहीं कर पाते थे। कभी-कभी वह उन पर हमला करता या काटने की कोशिश करता। कभी-कभी वह ज़मीन पर लोटता, मुँह से झाग निकालता और अपने आस-पास के सभी लोगों पर चिल्लाता। प्रत्येक दौरा दस से पंद्रह मिनट तक चलता था। फिर निकलास धीरे-धीरे सामान्य हो जाता था। उसे शांत होने में लगभग आधा घंटा लगता था। कुछ ही दिनों में इन दौरों की तीव्रता बढ़ गई, वे अधिक बार और अधिक समय तक चलने लगे, जबकि निकलास और भी हिंसक होता चला गया।

एक रात काफी देर हो चुकी थी जब मेरे नौकरों ने बताया कि निकलास को बुलाया गया है, जो असामान्य रूप से हिंसक हो गया था। वह लड़का उसका कोई दूर का रिश्तेदार था, लेकिन भारत में लगभग हर कोई रिश्तेदार होता है, चाहे रिश्ता कितना भी दूर का क्यों न हो। इसके अलावा, कोई भी दूसरों के मामलों में दखल देने का मौका नहीं छोड़ता, खासकर जब रिश्तेदार होने जैसा अच्छा बहाना मिल जाए।

'मालिक आना चाहेंगे?' मेरे सेवक ने पूछा। 'आज रात देबिल वाला शहर के बाज़ार से चलकर इस पेय (बुरी आत्मा) को भगाने आया है। मेरी माँ की बहन के पति

के भाई की बेटी के बेटे ने उसे पचास रुपये दिए हैं ताकि वह बेचारे निकलास से देबिल को भगा दे। निकलास मेरे चचेरे भाई के ससुर के बड़े भाई की दूसरी शादी से हुआ बेटा है, और इसलिए मेरा करीबी रिश्तेदार है।'

निकलास और मेरे नौकर के बीच के असली रिश्ते को सुलझाने की कोशिश के ख्याल से ही मेरे होश उड़ गए, लेकिन मुझे लगा कि अगर पूरी लगन से काम किया जाए तो यह मुमकिन है। वैसे तो मुझे रहस्यमयी विद्याओं में हमेशा से दिलचस्पी रही है और यहाँ कुछ खास देखने का मौका था। ऐसा नहीं था कि मैं इसे सचमुच किसी आत्मा के वश में होने का मामला समझ रही थी। इसके कई और कारण हो सकते थे, और वो भी आम से। निकलास नाटक कर रहा हो सकता है। मुझे पता था कि वह अपनी माँ के नए प्रेमी से नफरत करता था। शायद जब वह उसके साथ एक ही छत के नीचे रहता था, तब वह उससे डरता था। हो सकता है वह अपनी माँ को उस आदमी को ज़हर देने के लिए उकसा रहा हो, या खुद उस आदमी को ज़हर दे रहा हो, या फिर उस चाचा को ज़हर दे रहा हो जिसने उससे दोस्ती की थी। शायद यह सिर्फ एक तरह का उन्माद था। फिर भी, इसमें कुछ और भी हो सकता है।

'मैं भी चलूंगा,' मैंने घोषणा की और जल्द ही हम दोनों उस छोटे से घर के दरवाजे पर खड़े थे जिसमें चाचा अरोकियास्वामी और उनका परिवार रहता था।

वह जगह लोगों से खचाखच भरी थी और अनगिनत बीड़ियों (पीपल के पत्तों में लिपटी छोटी देसी सिगरेट) से तंबाकू के धुएं की बदबू फैली हुई थी। पुरुष और महिलाएं निकलास के चारों ओर एक तंग घेरे में बैठे थे, यह देखने के लिए उत्सुक थे कि आगे क्या होने वाला है। तभी लड़का पूरी तरह होश में आया। उसने मुझे कमरे में प्रवेश करते देखा, आदरपूर्वक अभिवादन किया और मुझे अपने पास बैठने के लिए आमंत्रित किया। बड़ी मुश्किल से मैं निकलास के बगल में जमीन पर बैठा और उससे उसका हालचाल पूछकर बातचीत शुरू की।

निकलास ने जवाब दिया कि वह बिल्कुल ठीक है। तभी 'शैतान आदमी' के आने से बातचीत रुक गई, जिसे बुरी आत्मा को भगाना था।

वह लंबा, दुबला-पतला, बेहद काला व्यक्ति था, जिसकी धँसी हुई आँखों में असामान्य रूप से बड़ी-बड़ी आँखें थीं और उसके सिर पर घने काले बाल थे जो ऊनी टोपी की तरह लिपटे हुए थे। उसने ज़मीन तक पहुँचने वाला एक बहता हुआ काला चोगा पहना हुआ था। निकलास को देखते-देखते उसकी नज़र मुझ पर पड़ी और वह

वहीं रुक गया। उसकी नज़रों और उसके होठों से निकले शब्दों में शत्रुता झलक रही थी।

'डोराई को यहाँ क्या चाहिए?' उसने घमंड से पूछा। 'अगर वह उपदेशक है और प्रार्थना करना चाहता है, तो उसे करने दो। अगर वह डॉक्टर है और दवा लाया है, तो उसे देने दो। मैं चलता हूँ।' ये कहकर वह दरवाजे की ओर मुड़ा, तभी कई लोगों ने उसे जाने से रोकने के लिए आवाज़ उठाई।

मैं खड़ा हुआ और पुकार कर बोला: 'दुष्ट आत्माओं को भगाने वाले को शांति से अपना काम करने दो। मैं तो बस उस लड़के को देखने आया था, और देखकर वापस चला जाऊंगा।'

काला जादूगर (वह एक काला जादूगर ही था और कहानी के बाकी हिस्से में मैं उसे इसी रूप में संबोधित करूंगा) शांत प्रतीत हुआ: 'अगर डोराई चाहे तो उसे रहने दो और मुझे आत्मा को भगाते हुए देखने दो। मैं जानता हूं कि सभी श्वेत पुरुष ऐसी चीजों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। बस उसे शब्दों या कार्यों से मुझे परेशान नहीं करना चाहिए।'

'मैं ऐसा नहीं करूँगा,' मैंने वादा किया और निकलास के बगल में अपनी पिछली जगह पर बैठ गया।

काला जादूगर आगे बढ़ा, निकलास के ठीक सामने बैठ गया और अपने चाचा अरोकियास्वामी, जो एक दुबले-पतले अधेड़ व्यक्ति थे, को काले मुर्गे और अराक की बोतल लाने के लिए बुलाया, जिन्हें समारोह के लिए पहले ही मंगवा लिया गया था।

जब शराब और बंधा हुआ मुर्गा उसे सौंप दिया गया, तो जादूगर ने अपने कपड़ों की आड़ से एक गंदा सा दिखने वाला जेब चाकू निकाला, ब्लेड को खोला और उसके कुंद किनारे से उस बेचारे पक्षी का गला काटना शुरू कर दिया। मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाने लगा, लेकिन जादूगर तब तक काटता रहा जब तक कि उसने उसका सिर धड़ से पूरी तरह अलग नहीं कर दिया। धड़ से बहता गाढ़ा लाल खून मुर्गे के काले पंखों के साथ बहुत ही अलग दिख रहा था। जादूगर ने इस खून की थोड़ी सी मात्रा एक छोटे से एल्युमिनियम के पीने के मग में बहने दी, जबकि बाकी खून झोपड़ी के सूखे मिट्टी के फर्श पर टपक गया और सोख लिया गया।

उसने अपनी जेब से कागज में लिपटा हुआ सूखा रालयुक्त पाउडर निकाला और उसे फर्श पर गिरा दिया। जादूगर ने मुझसे माचिस ली और कई कोशिशों के बाद

पाउडर में आग लगा दी। वह हरे रंग की लौ के साथ जलने लगा। फिर उसने एल्युमिनियम का मग उठाया और उसे कुछ सेकंड के लिए उस लौ के ऊपर रखा, इस दौरान उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और लयबद्ध स्वर में मंत्र बुदबुदाने लगा। मैंने देखा कि हरी लौ बहुत जल्दी बुझ गई, लेकिन जादूगर अपने मंत्रों का जाप करता रहा।

आखिरकार उसने अपना काम खत्म किया, आँखें खोलीं और मग उठाकर निकलास को पीने का आदेश दिया। लड़का किसी सम्मोहन जैसी अवस्था में लग रहा था। उसकी आँखें खुली थीं, लेकिन ऊपर की ओर मुड़ी हुई थीं, जिससे मुझे आँखों का सफेद भाग दिखाई दे रहा था। उसका निचला जबड़ा ढीला और थोड़ा खुला हुआ था, और वह जादूगर की धीमी आवाज़ की लय पर आगे-पीछे हिल रहा था। उसने आज्ञाकारी भाव से अपना हाथ बढ़ाया और जादूगर ने वह मग उसके हाथ में रख दिया, और लड़के की उंगलियों को बर्तन पर कसकर बंद कर दिया ताकि वह उसे गिरा न दे।

एक बार फिर उसने 'पियो' का आदेश दिया, और निकलास ने एक ही घूंट में गर्म लाल खून पी लिया।

जादूगर ने अब लड़के की दाहिनी कलाई को अपने बाएं हाथ से और बाईं कलाई को अपने दाहिने हाथ से पकड़ लिया और ऊँची आवाज़ में चिल्लाते हुए, लड़के के भीतर मौजूद दुष्ट आत्मा को अकल्पनीय गालियाँ देने लगा, उसे अनगिनत अपशब्द कहने लगा और उसे तुरंत चले जाने का आदेश देने लगा।

निकलास छटपटाने और मुड़ने लगा और फिर उसे पकड़े हुए आदमी से हिंसक रूप से संघर्ष करने लगा, लेकिन जादूगर ने उसकी कलाई पकड़ ली और उसके भीतर के राक्षस पर और अधिक गालियां बरसाते हुए उसे तुरंत बाहर आने का आदेश दिया।

निकलास और भी हिंसक हो गया; फिर वह ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा। लेकिन उसकी चीखें स्पष्ट थीं: 'यहाँ से चले जाओ। तुम हमें क्यों सता रहे हो? हमारे पास रहने की कोई जगह नहीं है और तुम हमें उस इकलौते आश्रय से बाहर निकाल रहे हो जिसे हमने इतने लंबे समय से पाया है।'

शब्द लगभग विनती में बदल गए। जादूगर ने निकलास की कलाई छोड़ दी ताकि वह बोतल से कच्ची शराब निकालकर एल्युमिनियम के मग को पूरा भर सके और उसे अपने गले से नीचे उतार सके। उसने जल्दी से यही क्रिया दोहराई, फिर मग नीचे रख दिया, लड़के की कलाई फिर से पकड़ ली और राक्षस को निकलास को

छोड़कर जाने का आदेश देना शुरू कर दिया।

वह लड़का बुरी तरह छटपटाने लगा, इतना कि जादूगर को सभा में मौजूद कुछ लोगों को मदद के लिए बुलाना पड़ा। इसी दौरान उसने और अधिक अराक पीकर खुद को और भी मजबूत कर लिया। कुछ ही देर में स्थिति और बिगड़ गई जब निकलास ने एक तीखी चीख मारी, उसे पकड़े हुए कई हाथों के बावजूद वह उछलकर खड़ा हुआ और फिर जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से मारा हो, वैसे ही ज़मीन पर गिर पड़ा। उसने कुछ देर तक बेतरतीब ढंग से लात मारी, अपने शरीर को कसकर खींचा और दांत पीसे (जिसकी आवाज़ हम सभी सुन सकते थे), फिर अपने हाथ सिर के ऊपर उठाकर वह हिलना-डुलना बंद कर दिया।

दर्शकों में से एक धीमी सी विलाप की आवाज आई। स्पष्ट रूप से उनमें से अधिकांश को लगा कि लड़का मर चुका है, लेकिन जब मैंने उसकी छाती पर नजर डाली तो मुझे उसकी सांसों का उतार-चढ़ाव महसूस हुआ।

जादूगर अब नाटकीय अंदाज़ में कमरे के उस कोने की ओर इशारा कर रहा था जहाँ दीवार पर कील से लटके तेल के दीपक की रोशनी मुश्किल से पहुँच पा रही थी। 'क्या तुम्हें वे दिख रहे हैं?' वह काँपती हुई आवाज़ में बोला। 'एक आत्मा नहीं, बल्कि दो। एक पुरुष और एक स्त्री।'

सभी ने उस दिशा में देखा जिधर वह इशारा कर रहा था। बेशक, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन उस कोने के सबसे नजदीक बैठे लोग झट से उठ खड़े हुए और पीछे हट गए।

स्थिति पर अपना नियंत्रण महसूस करते हुए, जादूगर ने उन आत्माओं के साथ एक अस्पष्ट बहस शुरू कर दी जिन्हें केवल वही देख और सुन सकता था।

'नहीं, तुम वापस नहीं आओगे,' वह चिल्लाया। 'नहीं, चाहे तुम मुझे एक हजार रुपये ही क्यों न दे दो। ये गरीब लोग हैं। इन्होंने मेरी सेवाओं के लिए जो मामूली अग्रिम राशि दी है, वह तो बस नाममात्र की है। मुझे पता है कि मेरे जाने से पहले ये मुझे इससे कहीं अधिक देंगे, इसलिए मैं तुम्हारे द्वारा दिए जा रहे एक हजार रुपये का एक भी हिस्सा नहीं लूंगा।'

'एक तरफ हट जाओ,' उसने आदेश दिया। 'द्वार से दूर हट जाओ। वे दोनों आत्माएँ अभी जा रही हैं। क्या तुम उन्हें नहीं देख सकते? एक पुरुष और एक स्त्री; दोनों पूरी तरह नग्न हैं। स्त्री बहुत सुंदर है। वह गहनों से सजी है। उसका चेहरा बहुत

प्यारा है और शरीर भी आकर्षक है, लेकिन वह दुष्ट है—बहुत, बहुत दुष्ट। क्योंकि वह स्त्री एक शैतान है, यह तुम्हें जानना चाहिए।'

'एक तरफ हट जाओ,' उसने आगे कहा, जबकि भीड़, और विशेषकर पुरुष, इस सुंदर, नग्न लड़की की एक झलक पाने की उम्मीद में स्तब्ध होकर उसे घूरने लगे। 'मैं कहता हूँ, हट जाओ। क्योंकि अगर वह तुम्हारे करीब आ गई तो हो सकता है कि वह जाने का इरादा बदल दे और तुम्हारे साथ संबंध बना ले, और तब तुम्हें सब पता चल जाएगा।'

कमरे के दूसरी तरफ भगदड़ मच गई, जो पहले से ही लोगों से भरा हुआ था, जिससे काफी धक्का-मुक्की हुई। उसी क्षण मेरी नज़र जादूगर पर पड़ी। मुझे लगा मानो उसकी आँखों में हल्की सी हंसी थी। मानो वह मुझसे कह रहा हो: 'अगर लोग इतनी आसानी से मूर्ख बनना चाहते हैं, तो मुझे ही उन्हें मूर्ख बनाने दो। मैं मज़ा किरकिरा नहीं करूंगा।' इसलिए मैं चुपचाप देखता रहा।

'आह, अब वे जा रहे हैं,' जादूगर ने कहा। फिर, कुछ क्षण बाद, 'वे चले गए। अब कम से कम आधे घंटे तक किसी को भी बाहर नहीं जाना चाहिए ताकि आत्माएं पूरी तरह से चली जाएं।' परिणामस्वरूप, मुझे उस भीड़ भरे कमरे में तीस मिनट और रुकना पड़ा। पहले निकल जाना और जादूगर को निराश करना उचित नहीं होता।

यह शुरू से अंत तक एक नाटक ही रहा होगा; मैं सहमत हूँ। निकलास या तो एक साथी था और उसने अपनी भूमिका बखूबी निभाई, या यह केवल हिस्टीरिया का मामला था, क्योंकि उसकी माँ के व्यवहार ने उसे बहुत परेशान कर दिया था। और चूंकि निकलास को नाटक करने से कुछ भी हासिल नहीं हुआ, इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि निकलास का अवचेतन मन, अपने ही घर से निकाले जाने की अत्यधिक निराशा में, अपनी माँ द्वारा अपने प्रेमी के साथ बसाए गए नए घर में अपनी दयनीय स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता था। हालांकि, सच्चाई यह है कि उस समय से निकलास पूरी तरह से ठीक हो गया। उसे फिर कभी दौरे नहीं पड़े और इसका सारा श्रेय उस काले जादूगर, बुरी आत्माओं को भगाने वाले को जाता है, जिसने अद्भुत प्रदर्शन किया। हम पूरे प्रदर्शन को एक चालाकी भरा काम मान सकते हैं, लेकिन इन क्षेत्रों में रहने वाला कोई भी अन्य व्यक्ति इससे सहमत नहीं होगा: उनके लिए यह स्पष्ट रूप से बुरी आत्मा के कब्जे का मामला था।

अब मैं मारिया की कहानी सुनाती हूँ, जिसे समझाना कहीं अधिक कठिन है।

बेशक, मैं आपको उस महिला का असली नाम नहीं बता सकती, लेकिन मारिया नाम से काम चल जाएगा। वह अधेड़ उम्र की एक एंग्लो-इंडियन महिला थी, जिसका विवाह अच्छे परिवार में हुआ था और उसके चार बच्चे थे। एक अच्छी गृहिणी और मेहनती महिला होने के नाते, उसे नौकरों से कोई लगाव नहीं था, क्योंकि वह उन्हें मदद से ज़्यादा बाधा मानती थी। और वह भिखारियों से घृणा करती थी।

अब अगर भारत किसी चीज़ के लिए बदनाम है, तो वो हैं यहाँ के भिखारी; ये हर जगह भरे पड़े हैं। सड़कों पर इनकी भीड़ लगी रहती है, बाज़ार में ये आपको घेर लेते हैं, और मानो इतना ही काफी नहीं, ये आपके घर के दरवाजे पर दस्तक देते हैं और तब तक नहीं जाते जब तक आप इन्हें भीख न दे दें।

कई ऐसे भिक्षु मारिया के घर आते-जाते रहते थे, और उनमें से एक ऐसा था जो उसे बेहद परेशान करता था। वह लंबा, गहरे काले रंग का आदमी था, जिसके लंबे बाल और घनी काली दाढ़ी थी जो उसकी छाती तक लटकती थी। उसकी काली आँखें इतनी तीखी थीं जितनी मारिया ने पहले कभी नहीं देखी थीं। यह आदमी आमतौर पर योगी का पहनावा पहनता था; ज़मीन तक पहुँचने वाला एक लंबा केसरिया चोगा। वह बिल्कुल भी साफ नहीं होता था, और न ही उसके सिर पर ढीली-ढाली पगड़ी की तरह लिपटा हुआ केसरिया कपड़ा साफ होता था। उसके माथे पर सफेद और लाल रंग के जाति चिह्न, बड़े-बड़े अंबर मोतियों का हार और एक मजबूत लाठी उसके पहनावे को पूरा करते थे। वह हमेशा नंगे पैर रहता था।

मारिया उस आदमी से दो कारणों से नफरत करती थी। पहला, भीख मांगने का उसका घमंडी तरीका। उसे देखकर ऐसा लगता था मानो वह कोई भिखारी नहीं, बल्कि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी भीख मांगना जरूरी है, वरना... दूसरा कारण थोड़ा पेचीदा था। उस आदमी की तीखी काली आँखें मारिया को हर बार देखते ही ऐसा लगता था मानो वह उसे निर्वस्त्र कर रही हो। उसे ऐसा महसूस होता था मानो उसके कपड़े—वह हमेशा ही सलीके से कपड़े पहनती थी—उसके नग्न शरीर को छुपाने में कोई काम नहीं आते, तो उन्हें उतार फेंकना ही बेहतर होगा।

एक दिन मारिया बहुत व्यस्त थी और भिखारी भी बहुत ज़्यादा माँग कर रहा था, जिसके चलते उसने उसे बाहर जाने का आदेश दिया। इस पर नाराज़ होकर भिखारी ने बहस शुरू कर दी, और इस गर्म देश में रहने वाले लगभग सभी अंग्रेज़ी-भारतीयों की आदत के अनुसार, मारिया ने उसे बेबाकी से गालियाँ देना शुरू कर दिया।

इसका जवाब बिलकुल अप्रत्याशित था। आगंतुक ने एक शब्द भी नहीं कहा, बस उसे घूरता रहा, और उसकी भयानक आँखें मानो और बड़ी होती गईं और करीब आती गईं। अब वे बस कुछ इंच दूर दिखाई दे रही थीं, और जैसे ही मारिया अपनी जगह पर जड़वत खड़ी रह गई, वे और करीब आ गईं और अगले ही पल उसके भीतर समा गईं। या कम से कम ऐसा ही लगा।

अब एक धीमी, कोमल आवाज़ उससे बात कर रही थी। यह जादूगर की गहरी और सुरीली आवाज़ नहीं थी। यह एक तीखी, कर्कश आवाज़ थी, वैसी आवाज़ जैसी आठ साल के बच्चे की होती है। और यह हमेशा कुछ भी बोलने से पहले हँसती थी। मारिया को इसका खामियाजा बहुत जल्द भुगतना पड़ा। शब्दों से पहले हमेशा वही तीखी, कर्कश, कर्कश हँसी।

'आखिरकार,' उस मासूम सी आवाज़ में खिलखिलाहट हुई, 'मैं एक इंसान के शरीर में वापस आ गया हूँ। इतने साल बीत गए, इतने लंबे साल। लेकिन आखिरकार मैं कामयाब हो गया। तुम मेरी हो, मारिया, और मैं तुम्हें कभी जाने नहीं दूँगा।' शब्द ऊँचे स्वर में गूंज उठे। 'मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा, और न ही तुम्हें मुझे छोड़ने दूँगा, मारिया। आज से हम दोनों एक हो जाएँगे। पति-पत्नी, मेरी प्यारी। कितना लंबा समय बीत गया है।'

बाद में मारिया ने मुझे यह कहानी सुनाई और बताया कि उस पल से उसकी निजता का सारा एहसास छिन गया। उसे कभी भी, किसी भी क्षण, अकेलापन महसूस नहीं हुआ। 'वह आवाज़', जैसा कि वह उसे कहती थी, दिन-रात उसके साथ रहती थी और खासकर रातें उसके लिए सबसे डरावनी होती थीं।

समय बीतने के साथ-साथ, उसके भीतर का यह शैतान और भी ज़्यादा हावी होने लगा। वह हमेशा अपनी तीखी, कर्कश आवाज़ में उससे बातें करता रहता और बेहद अश्लील बातें करता। इससे भी बुरा यह था कि वह हमेशा हँसता रहता। जब वह कपड़े उतारती या नहाती, तो वह खुशी से चीखता और चिल्लाता, 'मैं तुम्हें देख सकता हूँ! मैं तुम्हें देख सकता हूँ!' जब वह रात को सोने के लिए लेटती, तो वह उससे सबसे गंदी बातें कहता और सबसे अश्लील सुझाव देता, और अंत में कहता, 'मैं तुम्हें चाहता हूँ। मुझे तुम्हें पाना ही है।'

हालात और भी बदतर होते चले गए क्योंकि उस आवाज़ की मांगें लगातार बढ़ती जा रही थीं। मारिया अचानक चौंककर जाग जाती, मानो उस पर कोई भारी

बोझ पड़ा हो, जैसे कोई उसके ऊपर लेटा हो। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि किसी मजबूत अदृश्य भुजाओं ने उसे कसकर जकड़ रखा है।

धीरे-धीरे मारिया के व्यवहार और स्वभाव में बदलाव आने लगा। वह हमेशा से एक नेक और अच्छे चरित्र वाली महिला थी, लेकिन मुझे लगता है कि लगातार मिलने वाले अश्लील सुझावों और उनसे उपजे कार्यों ने मारिया को इतना कमजोर कर दिया कि वह खुद उन लगातार उकसावों को स्वीकार करने लगी और अंततः उनका अनुसरण करने लगी। इस समय तक जो लोग उसे जानते थे और जिन्होंने उसके इस बदलाव को देखा था, वे इसके बारे में बातें करने लगे और हमारे कस्बे में अफवाहें तेजी से फैल गईं।

इस तरह मुझे मारिया के बारे में पता चला, और चूंकि मुझे हमेशा से ऐसे मामलों में दिलचस्पी रही है, इसलिए मैंने उस दोस्त के माध्यम से उससे संपर्क करने में जरा भी देर नहीं की जिसने मुझे उसके बारे में बताया था।

मारिया को कभी-कभी उस आवाज़ के उकसावे से थोड़ी देर के लिए राहत मिलती थी, हालाँकि ऐसा बहुत कम होता था और न ही ज़्यादा देर तक। सौभाग्य से, ऐसे ही एक मौके पर मेरी उससे पहली मुलाकात हुई और मुझे उसका विश्वास जीतने और उसकी कहानी सुनने का समय मिल गया, इससे पहले कि वह आवाज़ अचानक वापस आ गई और उसे अपने वश में कर लिया। इसमें कोई शक नहीं था, क्योंकि मारिया अचानक बीच वाक्य में ही मुझसे बात करना बंद कर दिया और उसकी आवाज़ लगभग बच्चों जैसी तुतलाहट में बदल गई: 'आपका आना बहुत अच्छा लगा। कृपया पास आकर बैठें, हम दोनों के लिए बहुत अच्छा होगा।'

मारिया दिखने में सुंदर और कद-काठी में आकर्षक थी, और यह समझना आसान था कि उसकी आदतों में आया बदलाव और उसका नया अंतरंग और कामुक व्यवहार उसे बड़ी मुसीबत में डालने वाला था। जिन दोस्तों ने मुझे उसके बारे में बताया था, और शायद लगभग सभी जिन्होंने यह कहानी सुनी थी, वे आश्वस्त थे कि यह भूत-प्रेत के प्रभाव का स्पष्ट मामला था। जिस भिक्षु को मारिया ने अचानक भगा दिया था, उसने उस पर एक श्राप दिया था, जो पूर्व में किसी पर भी डाला जा सकने वाला सबसे बुरा श्राप था: किसी बुरी शक्ति या आत्मा द्वारा वश में किए जाने का श्राप। लाखों लोग इस तरह की बातों पर विश्वास करते हैं। घटनाएँ स्पष्ट रूप से इसी ओर इशारा कर रही थीं। वे कहते थे कि इसका कोई और स्पष्टीकरण संभव नहीं हो

सकता।

मैंने अपने जीवनकाल में भारत में बहुत यात्रा की है, और इस दौरान मैंने अपने सामने आने वाली हर गुप्त घटना की यथासंभव जांच करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। मैंने इन विषयों पर बहुत कुछ पढ़ा है, कई काले जादूगरों से मुलाकात की है और उनसे बातचीत की है, और जितना हो सके इस मामले की गहराई से पड़ताल की है। वास्तव में, मैं काले जादूगरों के संप्रदाय में दीक्षा लेने तक चला गया, जिसके लिए मैंने कुछ अनुष्ठान किए हैं, जिन्हें गोपनीयता की शपथ के कारण मैं प्रकट नहीं कर सकता।

जो भी इन मामलों का गहराई से अध्ययन कर लेता है और पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लेता है, उसमें एक अजीब सी सहज समझ विकसित हो जाती है कि उसके सामने आने वाला मामला वास्तव में किसी काले जादूगर के जादू का परिणाम है या नहीं। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, भारत में होने वाली लगभग हर असामान्य घटना को तंत्र-मंत्र और काले जादू से जोड़ा जाता है, लेकिन मेरे जैसे जिन लोगों ने इस विषय का अध्ययन किया है, उनके लिए यह बात बिल्कुल सच नहीं है। अचानक अजीब व्यवहार करने वाले लोगों में से काफी प्रतिशत लोग ऐसा बिल्कुल स्वाभाविक कारणों से करते हैं। पूर्वी भारत में लोगों के जीवन में, पुरुषों और महिलाओं दोनों में, हिस्टीरिया की एक बड़ी भूमिका होती है, लेकिन विशेष रूप से महिलाओं में मासिक धर्म और रजोनिवृत्ति के समय यह अधिक देखने को मिलता है।

फिर भी, पूर्वी देशों के लोग पश्चिमी देशों के लोगों की तुलना में कहीं अधिक भावुक होते हैं। उन्हें लगी छोटी-मोटी चोटें भी बहुत बड़ी लगने लगती हैं, और वे अपने साथ हुए अन्याय पर इतना सोचते रहते हैं कि अक्सर उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। हम सभी के मन में समझदारी और पागलपन के बीच बहुत ही कम अंतर होता है, और इस छोटे से अवरोध को टूटने और किसी व्यक्ति के पागल हो जाने में बहुत समय नहीं लगता, कम से कम कुछ हद तक या कुछ तरीकों से। इसलिए किसी भी बात को तांत्रिक प्रभाव से जोड़ने से पहले, हमें यह अवश्य विचार करना चाहिए कि क्या सुझाव और आत्म-सुझाव ने संबंधित व्यक्ति को किसी विशेष तरीके से कार्य करने के लिए प्रभावित करने में भूमिका निभाई हो सकती है। किसी भी सामान्य व्यक्ति के अवचेतन मन पर बार-बार और शक्तिशाली सुझाव देने से वह व्यक्ति जल्द ही इच्छित तरीके से कार्य करने लगता है, जबकि सम्मोहन, जो कि सुझाव का ही एक

सुव्यवस्थित रूप है, निस्संदेह एक बहुत शक्तिशाली कारक के रूप में कार्य करता है।

सम्मोहन, जो शक्तिशाली और लगभग तात्कालिक होता है, भारत में कुछ छद्म-योगियों और अन्य इच्छुक व्यक्तियों द्वारा व्यापक रूप से प्रचलित एक कला है, और मुझे पूरा विश्वास था कि मारिया का मामला पूरी तरह से इसी श्रेणी में आता है। उसने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया था कि भिक्षु की भेदक काली आँखें मानो उसे भेद रही थीं, मानो उसे निर्वस्त्र कर रही हों, जैसा कि उसने कहा, इस हद तक कि उसे कपड़े पहनना व्यर्थ लग रहा था। उसकी निगाह और उसकी एकाग्र चुप्पी ने निस्संदेह उसे उसके सम्मोहन के प्रभाव में ला दिया था, और वह व्यवहार में केवल उन्हीं सुझावों का पालन कर रही थी जो उसने उस पर थोपे थे।

एकमात्र उपाय उस सम्मोहन को तोड़ना था, लेकिन ऐसा करने के लिए अप्रत्यक्ष तरीका अपनाना ज़रूरी था। मैं जानता था कि उसे यह बताना व्यर्थ होगा कि उसे सम्मोहित किया गया था और मैं उस सम्मोहन के प्रभाव को दूर करने की कोशिश करूँगा। निस्संदेह, सम्मोहन के प्रभाव में उसके आगंतुक ने उसे जो पहला आदेश दिया था, वह यह था कि वह इस बात का विरोध करे कि वह उसे प्रभावित कर रहा है। मुझे उसे बिना उसकी जानकारी के स्वयं सम्मोहित करना होगा, और फिर भिक्षु के आदेशों को बेअसर करने के लिए आवश्यक प्रति-सुझाव देने होंगे।

सौभाग्य से मैंने अपनी भारी चांदी की अंगूठी पहनी हुई थी, जिसमें एक नीला पत्थर जड़ा हुआ था, जो मुझे घाना की एक करीबी दोस्त ने उपहार में दी थी, इसलिए मैंने मारिया के इस स्पष्ट विश्वास का फायदा उठाने का फैसला किया कि उस पर जादू किया गया था और इसी विश्वास का उपयोग करके उसे सम्मोहित करने का सोचा।

'मारिया,' मैंने कहना शुरू किया, 'मैंने एक अंगूठी पहनी है जो अफ्रीका के घाना से आई है। यह एक बहुत शक्तिशाली तांत्रिक की है जिसने इसे मुझे दिया है। अब, यदि तुम अपनी आँखें बंद किए बिना इस अंगूठी पर लगे नीले पत्थर को देखोगी, तो मैं अंगूठी में निहित जादू का आह्वान करके तुम्हें हमेशा के लिए तुम्हारी परेशानियों से मुक्त कर दूंगा।'

मारिया एक सीधी-सादी महिला थी, जाहिर तौर पर ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी, और भिखारी की आवाज़ के रूप में उसका सुझाव कई मिनटों तक लगातार कर्कश और हर बार एक अश्लील सुझाव देता रहा, जबकि मैं अपनी जादुई अंगूठी के साथ लगा रहा। लेकिन आखिरकार वह शांत हो गई और अंगूठी देखने के लिए राजी हो

गई। मैंने अंगूठी को अपनी उंगली से उतारकर एक छोटी मेज पर रख दिया, जिसे मैंने उसके सामने ही रखा था।

मैंने उससे कहा कि वह बिना पलक झपकाए उसे देखती रहे। फिर मारिया ने वैसा ही करना शुरू कर दिया जैसा मैंने कहा था।

पहले तो उसकी निगाहें इधर-उधर भटकती रहीं, लेकिन मैंने हर बार उन्हें वापस उसी नीले पत्थर पर टिका दिया, जब तक कि आखिरकार मैं उसका ध्यान उस पर केंद्रित करने में सफल नहीं हो गया। धीरे-धीरे मैंने उसे सोने का संकेत दिया और आश्चर्यजनक रूप से कम समय में ही मारिया मेरे सम्मोहन के प्रभाव में गहरी नींद में सो गई।

बाकी सब आसान था। मैंने भिक्षु के पहले के आदेशों को निरस्त करने के लिए आवश्यक प्रतिवाद किए और कुछ समय तक ऐसा करता रहा, जब तक मुझे यह महसूस नहीं हुआ कि मेरे आदेशों ने भिक्षु के पहले के बुरे आदेशों को निरस्त कर दिया है। मैंने उससे कहा कि अब उसे उस आवाज़ से कभी परेशानी नहीं होगी। वह केवल उसकी कल्पना थी। उसने कभी ऐसी कोई आवाज़ नहीं सुनी थी। कोई आवाज़ थी ही नहीं। वह एक बुरा सपना था। पूरी तरह से उसकी अपनी कल्पना। आवाज़ जैसी कोई चीज़ नहीं होती! फिर मैंने उसे जगा दिया।

जैसा कि मैंने आपको बताया है, वह महिला मूल रूप से एक अच्छी महिला थी और मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि उस क्षण से वह पूरी तरह ठीक हो गई थी। अब उसे वह तीखी, कर्कश आवाज़ सुनाई नहीं देती थी (जो संयोगवश, सम्मोहन के प्रभाव में उसकी अपनी ही आवाज़ थी), जो उसे अश्लील बातें करने और बोलने के लिए उकसाती थी। अब वह आवाज़ उसे दिन-रात परेशान नहीं करती थी। मारिया मुक्त हो चुकी थी और न तो शैतान और न ही किसी बुरी आत्मा ने उसके शरीर में प्रवेश किया था।

फिर भी, मुझे आत्माओं के वश में होने के कुछ पुख्ता मामले मिले हैं और अब मैं आपको उनमें से एक के बारे में बताऊंगा। मैंने अपनी पिछली किताब, द कॉल ऑफ द मैन-ईटर में ओस्सी ब्राउन के मामले का विस्तार से उल्लेख किया है। कहानी मारिया की कहानी की तरह ही शुरू होती है। पीले वस्त्र पहने एक फकीर हर महीने की पहली तारीख को उस जगह के वेतन काउंटर पर आता था जहाँ ओस्सी काम करता था और वेतन लेते समय उससे और अन्य कर्मचारियों से भीख मांगता था।

कुछ समय बाद, ओस्सी को ओस्सी का यह कठोर रवैया बुरा लगा और उसने उस आदमी को पुलिस के हवाले करने की धमकी दी। दोनों के बीच तीखी बहस हुई, जिसका अंत फकीर द्वारा ओस्सी को गाली देने और यह कहने से हुआ कि वह मेरे दोस्त के शरीर में किसी को डाल देगा जो वहीं डेरा डाले रहेगा और मृत्यु तक वहीं रहेगा।

उसी रात ओस्सी को अचानक यह एहसास हुआ कि वह अकेला नहीं है। उसने आँखें खोलीं तो मच्छरदानी के बाहर एक काली आकृति दिखाई दी। वह आकृति उसके करीब आती गई और मानो उसके अंदर समा गई हो। इसके बाद ओस्सी काम पर अजीब व्यवहार करने लगा। उसकी आवाज़ और व्यवहार बदल जाता था। ऐसा लगता था मानो उसे पता ही नहीं था कि वह कहाँ है या कौन है। वह रूखेपन से पूछता कि वह यहाँ कैसे आया। फिर वह कमरे से बाहर चला जाता। कभी-कभी वह तीस मिनट या एक घंटे बाद लौटता, उसे अपने व्यवहार या काम की जगह छोड़ने के बारे में कुछ भी याद नहीं होता था। कभी-कभी वह बेहोश होकर गिर पड़ता, जैसे उसे दौरा पड़ा हो। जब वह होश में आता, तो वह बिल्कुल सामान्य होता और अपने व्यवहार के बारे में सुनकर बहुत हैरान होता।

लगभग इसी समय, मैंने बड़ी नादानी से ओस्सी को जंगल की सैर पर चलने का न्योता दिया। उस रात हमने एक बड़ी नदी के किनारे, इंसानी बस्तियों से दूर, डेरा डाला। जंगली हाथियों का एक झुंड पास ही चर रहा था। हम उनकी चिंघाड़ और पेड़ों की डालियाँ तोड़ने की आवाज़ सुन सकते थे, और हमने एक बड़ी सी आग जला ली ताकि कोई भी हाथी हमारे रास्ते में न आ जाए। अचानक, एक अजीब सी कर्कश आवाज़ ने मुझे पुकारा और पूछा कि मैं कौन हूँ। यह आवाज़ ओस्सी की थी, लेकिन जब मैंने उसकी तरफ देखा तो मुझे लगा कि कोई और ही मुझे देख रहा है। आँखें, चेहरा, सब कुछ अलग था। उस शख्स ने अपना सवाल दोहराया। मैं कौन हूँ? हम कहाँ हैं?

मैंने ओस्सी को यह कहकर शांत करने की कोशिश की कि हम शिकार करने निकले हैं, जिस पर उसने मुझसे मेरी बंदूक माँगी। सौभाग्य से, उसने ध्यान नहीं दिया कि मेरी राइफल ठीक उसके पीछे एक पेड़ से टिकी हुई थी। मुझे पता था कि अगर उसे राइफल मिल जाती तो वह मुझे गोली मार सकता था। इसलिए, उसका ध्यान हाथी की ओर भटकाते हुए, मैं हथियार पर झपटा और उसे धमकी दी कि अगर वह

और करीब आया तो मैं उसे गोली मार दूंगा।

मेरी धमकी के बावजूद, वह मेरी ओर बढ़ा। मैं भली-भांति जानता था कि शारीरिक संघर्ष में मैं इस व्यक्ति का मुकाबला नहीं कर पाऊंगा, चाहे वह दुष्ट आत्मा ही क्यों न हो। मुझे अपने मित्र को गोली मारकर कम से कम घायल करना ही पड़ेगा, और .405 कैलिबर की भारी राइफल से ऐसा करना आसान नहीं होगा।

जब वह मुझसे मात्र पाँच फीट दूर था, तभी मुझे उपाय सूझा। मैंने राइफल से गोली चलाई और गोली उसके सिर के ऊपर से निकल गई। ओस्सी अचानक रुक गया, काँप उठा और थके हुए अंदाज़ में अपना हाथ माथे पर फेरा। अगले ही पल वह प्रेतात्मा गायब हो गई और मेरा दोस्त मुझसे अपनी सामान्य आवाज़ में बोलने लगा।

इस कहानी का अगला भाग यह है कि ओस्सी कलकत्ता गया, जहाँ एक दिन उसने एक इमारत की दूसरी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। मेरे लिए यह मामला आत्मा के वश में होने का एक स्पष्ट उदाहरण था। आप देखेंगे कि यह मारिया के मामले से एक महत्वपूर्ण तथ्य में भिन्न था। मारिया को ऐसा लगता था कि उसके मन में एक आवाज़ उसे कुछ करने के लिए कह रही है। उसमें कोई बदलाव नहीं आया और न ही उसका व्यवहार बदला। मेरा मतलब है कि उसका व्यक्तित्व वैसा ही रहा। ओस्सी के मामले में, परिवर्तन उसके स्वयं में हुआ, शारीरिक रूप से भी और बाहरी रूप से भी। उसका व्यवहार, रूप-रंग और आवाज़ सब पलक झपकते ही बदल गए। दूसरा, मारिया को हमेशा याद रहता था कि उसे प्रेरित करने वाली आंतरिक आवाज़ ने क्या कहा था। ओस्सी के मामले में, वह अपने साथ घटी हर बात से पूरी तरह अनजान था और उसे कुछ भी याद नहीं था।

अंतर का कारण स्पष्ट प्रतीत होता है। मारिया का चेतन और अवचेतन मन भिक्षु के आदेशों से प्रभावित था, जो उसे सम्मोहन की अवस्था में और उसके नियंत्रण में रहते हुए दिए गए थे। फिर भी, मारिया का चेतन और अवचेतन मन एक बाहरी व्यक्ति के आदेशों के अधीन कार्य कर रहा था, जिसने एक मासूम, पतली आवाज़ वाले व्यक्ति का रूप धारण किया हुआ था। ओस्सी के मामले में, उसका चेतन और अवचेतन मन न केवल नियंत्रित था, बल्कि अस्थायी रूप से एक बिल्कुल अलग पहचान द्वारा वश में कर लिया गया था, इस बार एक निराकार सत्ता द्वारा, जो फकीर के आदेशों के अधीन थी, जो एक शक्तिशाली माध्यम होने के साथ-साथ काले जादू का उस्ताद भी रहा होगा। परिणामस्वरूप, ओस्सी का चेतन और अवचेतन मन उस

समय बिल्कुल भी कार्य नहीं कर रहा था और इसलिए उसे उस समय घटी किसी भी घटना की कोई याद नहीं थी।

आज भारत में ऐसे कई लोग रहते हैं जो प्रतिदिन, और कभी-कभी दिन के दौरान कई बार, उस चमत्कार को अंजाम देते हैं जिसे आध्यात्मिक शब्दावली में 'अपोर्ट्स की घटना' के रूप में जाना जाता है।

अंधेरे में, या प्रेतात्माओं से संपर्क करने वाले कमरे की मंद लाल रोशनी में, अध्यात्मवादी दावा करते हैं कि फूल या अन्य छोटी-छोटी वस्तुएँ आत्माएँ उनके पास लाती हैं और उनकी गोद में रख देती हैं, भले ही सभी दरवाजे और खिड़कियाँ बंद हों। भारत के रहस्यवादी इससे कहीं आगे जाते हैं। सबसे पहले तो, वे दिन के उजाले में, खुले स्थान पर, कभी-कभी सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में भी, अपनी साधना करते हैं।

साईं बाबा, जिन्हें आमतौर पर सत्य साईं के नाम से जाना जाता है, मेरे बचपन के दोस्त हैं और दावा करते हैं कि वे मूल महान साईं बाबा के पुनर्जन्म हैं, जिनका निधन कई साल पहले हो गया था। एक बार उन्होंने मेरे सामने अपना हाथ बढ़ाया और एक छोटी सी धातु की मूर्ति पर हाथ रख दिया, जो मानो प्रकट हो उठी और उनकी उंगलियां उस पर कसती जा रही थीं! बाबा, जैसा कि उनके परिचित उन्हें प्यार से बुलाते हैं, ने वह मूर्ति मुझे स्मृति चिन्ह के रूप में दे दी और मैंने उस छोटी सी मूर्ति को अपने पर्स में रख लिया।

कई साल बाद, जब मैं बैंगलोर से व्हाइटफील्ड जाने वाली आखिरी रात की बस में चढ़ रही थी, जो बारह मील दूर था और जहाँ मैं उस समय रह रही थी, तब एक जेबकतरे ने मेरा पर्स चुरा लिया, जिसमें मेरे पैसे और मूर्ति भी थी। उस समय मुझे चोरी का कुछ पता नहीं चला, लेकिन अपनी मंज़िल से लगभग आधे रास्ते में कंडक्टर टिकट इकट्ठा करने आया। मैंने अपना पर्स निकालने के लिए जेब में हाथ डाला।

वह गायब हो गया था! इससे भी बुरी बात यह थी कि मेरे पास दूसरा सिक्का भी नहीं था।

फिर भी उस जेब के कोने में कुछ छोटा और सख्त सा था। मैंने फिर से टटोला और बाबा द्वारा दी गई छोटी सी मूर्ति निकाली। वह गायब हुए पर्स के एक खाने में रखी थी। पर्स तो गायब हो गया था। वह छोटी सी मूर्ति जेब में वापस कैसे आ गई?

कंडक्टर मुझे घूर रहा था। जब मैंने अपना हाथ पीछे खींचा, तो उसके चेहरे पर शक के भाव उभर आए। हाथ में उंगलियों के बीच एक छोटी सी उंगली के अलावा

कुछ नहीं था। कंडक्टर ने बस रोकने के लिए रस्सी खींची। हम व्हाइटफील्ड से लगभग सात मील दूर थे और आधी रात होने में पाँच मिनट बाकी थे। ऊपर से बारिश भी हो रही थी। मुझे अब लंबी पैदल यात्रा करनी थी।

मैंने बताया कि मेरी जेब कट गई है। कंडक्टर ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा, 'यह बात मरीन को बताओ।' लेकिन, चूंकि उसने मरीन के बारे में कभी सुना ही नहीं था, इसलिए उसने उसकी जगह एक दूसरा नाम इस्तेमाल किया, एक बहुत ही अभद्र शब्द जिसका बहुत ही गंदा अर्थ था, जिसे मैं दोहरा नहीं सकता। फिर उसकी नज़र उस मूर्ति पर पड़ी। उसका व्यवहार बदल गया। उसने रस्सी को दो बार खींचा, जो ड्राइवर के आगे बढ़ने का संकेत था।

उन्होंने कहा, 'हम जोखिम उठाएंगे। इस समय रात में कोई निरीक्षक आने की संभावना नहीं है।'

बस से उतरते ही मैंने उस कंडक्टर को धन्यवाद दिया। उसने बताया कि वह बाबा का भक्त है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि क्या बाबा ने उस दिन जब हवा से वह मूर्ति निकाली और मुझे दी, तो उन्हें पता था कि इससे मुझे आधी रात को लंबी, भीगी हुई पैदल यात्रा से बचाने में कितना नेक काम हुआ।

दूसरी बार जब मैं बाबा के पास गया, तब मैं सचमुच बहुत बड़ी मुसीबत में था। इससे पहले कि मैं उनसे कुछ पूछता, उन्होंने मुझे मेरी मुसीबत बता दी। उन्होंने मुझे इसके परिणाम भी बता दिए। उन्होंने मुझे यह जवाब लगभग तेरह साल पहले दिया था और उनकी कही हर बात सच हो गई। विदा लेते समय उन्होंने मुझसे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। ऐसा करते समय मैंने देखा कि उन्होंने अपनी उंगलियों को किसी चीज़ पर बंद कर लिया था। फिर उन्होंने मुझे राख का एक छोटा सा टुकड़ा दिया।

उन्होंने सलाह दी, 'इसे एक छोटे से डिब्बे में सावधानी से रखें। अगर कभी कोई परेशानी या समस्या आए, तो डिब्बा खोलकर राख को देखें। राख में मेरा चेहरा देखें। मुझे लगता है कि आपकी परेशानी या समस्या, जो भी हो, उसके तुरंत बाद दूर हो जाएगी।'

मैंने बाबा के कहे अनुसार ही सब कुछ किया। मैं यह तो नहीं कह सकती कि मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। लेकिन जो भी परेशानियाँ आईं, वे छोटी-मोटी ही निकलीं। और मेरे पास अभी भी राख वाला वह डिब्बा है।

खैर, यह विषयांतर है। सवाल यह है कि बाबा जैसे लोगों को ये शक्तियां कैसे मिलती हैं? इसके दो ही समाधान प्रतीत होते हैं। पहला तो स्पष्ट है। छल-कपट, हाथ की सफाई के रूप में। ऐसा कुछ जो हमारे पिता, दादा और परदादाओं ने वर्षों से मंच पर देखा है। दूसरा समाधान समझ से परे है।

चलिए पहले छल-कपट पर विचार करते हैं। क्या बाबा ने चुपके से, मेरी नाक के नीचे ही, मूर्ति और राख मुझ पर इस तरह रख दी कि मुझे पता ही नहीं चला? मैं इससे इनकार करता हूँ, पर बहस करने का क्या फायदा? तो चलिए मैं आपको उनके द्वारा घटित कुछ अन्य घटनाओं के बारे में बताता हूँ। तब आप बेहतर ढंग से समझ पाएंगे कि क्या छल-कपट संभव था।

एक बीमार लड़की को उनके पास लाया गया। वह महीनों से लगातार सिरदर्द से पीड़ित थी। बाबा ने अपनी कृपा से एक छोटी सी सुगंधित मरहम की बोतल निकाली। इस मरहम को उसके माथे पर लगाते ही उसका सिरदर्द पूरी तरह ठीक हो गया।

एक बार बाबा को एक खुली हवा में आयोजित चाय पार्टी में आमंत्रित किया गया था। मेजें बड़े और सुंदर आम के पेड़ों के झुरमुट के नीचे लगी हुई थीं। महीना नवंबर का था। नवंबर में आम के पेड़ों पर फल नहीं लगते। भारत में आमों का मौसम अप्रैल से जून तक का होता है।

किसी ने कहा, 'कितनी अफ़सोस की बात है कि अब आम नहीं हैं।' इस पर बाबा ने उत्तर दिया, 'लेकिन हैं तो सही।' उनके हाथ में एक डंठल था, जिस पर तीन पके आम और कुछ पत्ते लगे हुए थे।

एक और घटना। बाबा बैंगलोर से अपने स्थायी निवास पुट्टपर्थी के लिए कार से यात्रा कर रहे थे। गंतव्य से लगभग पचास मील पहले कार रुक गई। चालक ने टैंक में पर्याप्त पेट्रोल नहीं डाला था। अब या तो उन्हें किसी गुजरते ट्रक से पेट्रोल मांगना पड़ता, या बाबा को बाकी का सफर बस से तय करना पड़ता।

बाबा गाड़ी से बाहर निकले, पीछे की ओर गए और पेट्रोल टैंक पर अपनी हथेली फैलाई। फिर वे वापस बैठ गए। 'गाड़ी चलाओ,' उन्होंने निर्देश दिया। 'अब हमारे पास यात्रा पूरी करने के लिए पर्याप्त पेट्रोल है।' और उनके पास वाकई पर्याप्त पेट्रोल था।

तो, अगर ये सब काम जादू-टोने से नहीं होते, तो फिर कैसे होते हैं? कम से कम भारत में लोग इन्हें किस तरह से होते हुए देखते हैं?

इसके दो प्रचलित स्पष्टीकरण हैं। मूलतः, दोनों का अर्थ एक ही है, हालांकि

कार्यप्रणाली में काफी भिन्नता है। आम राय यह है कि ये शक्तियां 'कुट्टी शैतानों' के माध्यम से स्वामी तक पहुंचाई जाती हैं। ये छोटे-छोटे प्रेत होते हैं, जो आमतौर पर अदृश्य होते हैं, लेकिन कभी-कभी छह इंच से अधिक ऊँचाई वाले, नग्न, गहरे काले रंग के छोटे-छोटे मनुष्यों का रूप धारण कर लेते हैं, जो पुरुष या महिला दोनों हो सकते हैं। स्वामी की सेवा करने वाले समूह में कुट्टी शैतानों की संख्या स्वामी की तांत्रिक शक्ति पर निर्भर करती है और यह संख्या एक से लेकर दो दर्जन तक हो सकती है।

इन नन्हे परियों में से एक या अधिक पर नियंत्रण पाने के लिए विस्तृत विधियाँ बताई गई हैं, लेकिन कहा जाता है कि एक बार इनसे संपर्क हो जाए तो ये बेहद खतरनाक साबित होती हैं। समस्या यह है कि जब आप इनमें से एक या अधिक को अपने वश में करने का प्रयास करते हैं, तो वे भी आपको अपने वश में कर लेती हैं और यह अनुबंध जीवन भर के लिए होता है; आप इसे किसी भी समय रद्द नहीं कर सकते, और यदि आप ऐसा करने का प्रयास करते हैं तो आपको घोर दुर्भाग्य, बीमारी और अंततः मृत्यु के रूप में भयानक परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इसके अलावा, ये परियाँ आपकी सेवा निःशुल्क नहीं करतीं: वे आपकी आज्ञा का पालन करेंगी और आपको वह सब कुछ देंगी जो आप चाहते हैं, बशर्ते आप उनकी शर्तों को स्वीकार करें और उन्हें वह दें जो वे चाहते हैं। और उनकी शर्तें और इच्छाएँ हमेशा भयावह प्रकृति की होती हैं।

सप्ताह में एक बार, अधिकतर शुक्रवार को, लेकिन कुछ जादूगर गुरुवार को भी, आधी रात को एक विशेष कमरे में इन छोटी आत्माओं को ये भुगतान करने के लिए समय निर्धारित करते हैं। अक्सर रक्त की मांग की जाती है: सुअर का रक्त, काले मुर्गे का रक्त, आपकी या किसी और की बांह की नस से निकाला गया मानव रक्त, या मासिक धर्म का रक्त। निम्न कोटि की आत्माएं आपसे आपके अपने धर्म के विरुद्ध सबसे बड़ा अपवित्र कार्य करने की मांग करती हैं, चाहे वह कोई भी धर्म हो, जिसमें ऐसी बातें कहना, ऐसे कार्य करना और धार्मिक वस्तुओं को ऐसे कृत्यों के अधीन करना शामिल है जो सबसे अधिक ईशनिंदापूर्ण हों।

बात यहीं खत्म नहीं होती। कोई भी स्वामी विवाह नहीं कर सकता। यदि वह किसी स्त्री के साथ सहवास करना चाहता है, तो उसे पहले अपने कुट्टी शैतानों से अनुमति लेनी होगी। यह अनुमति भारी दंड भुगतने के बाद ही दी जाती है। आर्थिक

रूप से, स्वामी कभी भी समृद्ध नहीं हो सकता। उसे केवल इतना ही धन मिलेगा जिससे वह सामान्य सुख-सुविधाओं का आनंद ले सके। वह कभी भी धनी नहीं बन सकता।

इन प्रेतों में से किसी एक को प्राप्त करने के लिए, पहले उसे काला जादूगर बनना होगा, जिसके अनेक प्रकार होते हैं। वास्तव में, प्रेत को पकड़ने के लिए उसे अमावस्या की रात को आधी रात में भैंसों के बाड़े में जाना होता है, जो महीने की सबसे अंधेरी रात होती है, पूर्णिमा और अगली अमावस्या के ठीक बीच में। उसे आधी रात से कम से कम एक घंटा पहले पहुँचकर भैंसों के साथ बाड़े के एक कोने में छिप जाना चाहिए। जब समय आता है और घड़ी बजती है, यदि वह ध्यान से देखे तो उसे आमतौर पर भैंसों की पीठ पर एक बड़े पतंगे या छोटे चमगादड़ जैसी कोई चीज उड़ती हुई दिखाई देगी। साधक को चुपचाप उसके पास जाना चाहिए और अपने हाथों और बाहों से झपटने जैसी हरकतें करनी चाहिए, मानो वह उस उड़ते हुए जीव को पकड़ने की कोशिश कर रहा हो।

बेशक, वह कभी भी किसी परी को सचमुच पकड़ नहीं पाएगा। उसकी हरकतें केवल प्रतीकात्मक हैं और सफलता पाने की उसकी प्रबल इच्छा और इरादे को दर्शाती हैं।

तब वह जिन्न, या कुट्टी शैतान, उससे बात करेगा, आमतौर पर मौखिक बातचीत के बजाय मानसिक बातचीत के माध्यम से।

यह पूछेगा, 'आप क्या करने की कोशिश कर रहे हैं?'

'मेरा इरादा तुम्हें पकड़ने का है,' तलाश करने वाला जवाब देगा।

'क्यों? तुम मुझसे क्या चाहते हो?' परी पूछेगी।

'मैं तुम्हें पकड़ना और जीतना चाहता हूँ। मैं तुम्हें अपना सेवक बनाना चाहता हूँ; ताकि तुम मेरी आज्ञा का पालन करो और मेरी हर इच्छा पूरी करो।' साधक को इस कथन में अत्यंत दृढ़ और संकल्पित होना आवश्यक है।

वह प्रेत पहले तो विरोध कर सकता है, या सीधे सौदेबाजी शुरू कर सकता है। अक्सर वह अपनी सेवाओं के बदले बेहद कठिन, बल्कि लगभग असंभव शर्तें रख सकता है। साधक को सलाह दी जाती है कि वह तुरंत इनकार कर दे और फिर यथासंभव कठिन सौदेबाजी करने का प्रयास करे, क्योंकि उसे याद रखना चाहिए कि एक बार समझौता हो जाने पर वह जीवन भर के लिए पक्का हो जाता है। इसे कभी

तोड़ा, त्यागा या रद्द नहीं किया जा सकता। ऐसे कई उदाहरण दर्ज हैं जिनमें काले जादूगरों ने किसी न किसी कारण से, लेकिन मुख्य रूप से विवाह करने के लिए, अपने कुट्टी-शैतानों के साथ किए गए समझौतों को या तो सीधे त्याग या छल द्वारा रद्द करने का प्रयास किया है। उन्हें विपत्ति, बीमारी, दृष्टि या अंगों की हानि, या यहाँ तक कि मृत्यु के रूप में भयंकर दंड भुगतना पड़ा है। इसलिए आपको इस प्रकार के किसी भी समझौते में प्रवेश करने से पहले दो बार सोचना चाहिए, भले ही यह आपका स्वयं का स्वभाव ही क्यों न हो जो आपको इतनी सारी अच्छी चीजें दिला सकता है।

एक और प्रचलित मान्यता है, जो दक्षिण भारत की तुलना में उत्तर भारत में अधिक प्रचलित है, कि जो साथी आपके लिए आध्यात्मिक अनुभव लेकर आता है और जिसे हमजाद के नाम से जाना जाता है, वह वास्तव में आपका ही सूक्ष्म स्वरूप है, जो रूप-रंग, व्यवहार और यहां तक कि वस्त्रों सहित हर तरह से आपसे मिलता-जुलता है। ऐसा माना जाता है कि हमजाद पलक झपकते ही पृथ्वी के छोर तक यात्रा कर सकता है, भारी भार उठा सकता है और आपके लिए कुछ भी कर सकता है और आपकी हर इच्छा पूरी कर सकता है। यह सर्वविदित है कि हमजाद द्वारा लाई गई हर वस्तु यात्रा के दौरान अदृश्य हो जाती है और जब वह उसे अपने स्वामी को प्रस्तुत करता है तो वह फिर से अपने वास्तविक रूप में आ जाती है।

अपने हमजाद की सेवाएँ प्राप्त करने से पहले आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। यह कुछ विशेष गुप्त विधियों का पालन करके किया जाता है। कुट्टी-शैतान की तरह, सेवा प्रदान करने के लिए साधक और उसके हमजाद के बीच एक द्विपक्षीय समझौता होना आवश्यक है और यह समझौता जीवन भर के लिए अनिवार्य है। यदि मनुष्य साथी इस समझौते को तोड़ता है, तो उसे अत्यंत भयावह दंड भुगतना पड़ता है, जिसमें साधक का हिंसक अंत भी शामिल है।

पश्चिमी काले जादू और भारतीय काले जादू के बीच कुछ मूलभूत अंतरों के साथ-साथ कुछ बुनियादी समानताओं पर ध्यान देना दिलचस्प हो सकता है।

मुख्य अंतर इस तथ्य में निहित प्रतीत होता है कि यूरोपीय काले जादूगर, जिन्हें आमतौर पर जादूगर और चुड़ैल के रूप में जाना जाता है, कमोबेश खुले तौर पर लूसिफ़र, सुबह की आत्मा, और शैतान के पर्यायवाची अन्य शब्दों, या अधिक सामान्यतः, शैतान के साथ समझौते करते हैं; भारतीय काले जादूगर इस बात से दृढ़तापूर्वक इनकार करते हैं कि शैतान (हिंदी में 'शैतान' और तमिल में 'पेय' या

'पिसाची' नाम) इस सौदे में किसी भी तरह की भूमिका निभाता है। कुट्टी-शैतान, या हमज़ाद, या कभी-कभी एक विशेष आत्मा जिसे दक्षिण भारत में 'मिनिस्पुरम' और पश्चिम भारत में 'रक्षा' के रूप में जाना जाता है, इस उद्देश्य के लिए आह्वान की जाने वाली शक्तियाँ हैं और उन्हें किसी भी तरह से शैतान नहीं माना जाता है, न ही वे किसी भी तरह से शैतान से मिलते-जुलते हैं। भारतीय संत का दृढ़ विश्वास है कि वे एक या एक से अधिक अत्यंत शक्तिशाली आत्माओं से निपट रहे हैं, जो निश्चित रूप से दुष्ट स्वभाव की नहीं हैं, यद्यपि वे कभी-कभी अत्यंत क्रोध, प्रतिशोध या घोर द्वेष के आवेश में आ सकती हैं। वे इस बात से पूरी तरह इनकार करेंगे कि उनका शैतान से कोई संबंध है और यदि आप इस बात पर ज़ोर देते हैं तो वे अत्यंत क्रोधित हो जाएंगे।

साथ ही, यह देखते हुए कि दोनों संप्रदायों के उद्देश्य लगभग एक जैसे हैं और परिणाम भी लगभग समान हैं, यह सवाल उठना लाज़मी है कि क्या वास्तव में इसमें शैतान या किसी अन्य आत्मा का कोई हाथ है। पश्चिमी लोग तो यही कहेंगे कि शैतान और मिनिस्पुरम या आत्मा एक ही हैं। वहीं भारतीय इसका पुरज़ोर खंडन करेंगे: उनका मिनिस्पुरम शैतान से कोसों दूर है।

लेकिन शायद, इस सब से बदनाम शैतान और बेहद भयभीत करने वाले मिनीस्पुरम का कोई लेना-देना न हो, और यह काले जादूगर या चुड़ैल का अवचेतन मन ही हो जो इस पूरे मामले की जड़ में है, जो अपने मालिक को संतुष्ट करने के लिए शैतान या मिनीस्पुरम की भूमिका निभा रहा है?

यह ध्यान देने योग्य है कि हर मामले में सौदा अनिवार्य है। एक ओर काला जादूगर और दूसरी ओर उस शक्ति की ओर से इस प्रतिज्ञा के बिना कोई सौदा नहीं हो सकता, कोई समझौता नहीं हो सकता। ऐसा क्यों है? धार्मिक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति दावा करेगा कि इस प्रकार का समझौता करके शैतान चुड़ैल की आत्मा को अपने वश में कर लेगा, जिससे अंततः उसे नरक में जाना पड़ेगा। भारत का काला जादूगर कहेगा कि उसके शिष्य को स्वाभाविक रूप से अपने स्वामी के लिए किए गए परिश्रम का कुछ न कुछ पुरस्कार और संतुष्टि अवश्य मिलेगी।

क्या यह भी एक तथ्य नहीं हो सकता कि किसी समझौते का अस्तित्व जादूगर को दूसरी दुनिया, शैतान या आत्मा से उसके संपर्कों की याद दिलाता रहता है, जो उसके प्रति बाध्य है और जिसके प्रति वह दिन-रात हर पल ऋणी रहता है? यह समझौता चेतन और अवचेतन मन का ध्यान हर समय केंद्रित रखता है।

काला जादू तभी कारगर होता है जब उसके चेतन और अवचेतन मन में यह प्रबल जागरूकता होती है कि उसने किसी अलौकिक शक्ति से सौदा किया है, जो उसके लिए निश्चित सफलता के साथ काम करने और उसकी इच्छा पूरी करने में सक्षम और इच्छुक है, और बदले में उसे स्वयं को सौंप देती है। इस प्रकार जादूगर और वह शक्ति एक हो जाते हैं, और यह विचार उसके मन में हमेशा बना रहता है, जिससे उसे आत्म-जागरूकता और आत्मविश्वास का ऐसा बल मिलता है जो सामान्यतः उसमें नहीं होता।

इसके विपरीत, भारत में किसी पीड़ित व्यक्ति का आत्मविश्वास और आत्म-दृढ़ता पूरी तरह से गायब हो जाती है, भले ही स्वभाव से उसमें ये गुण हों, जब वह किसी काले जादूगर के सामने खड़ा हो जाता है। पीढ़ियों से चली आ रही परवरिश और बचपन से उसे सुनाई गई डरावनी कहानियों के कारण वह पूरी तरह से आश्वस्त हो जाता है कि वह जादूगर के सामने बिल्कुल असहाय है और पूरी तरह से उसके वश में है।

इस प्रकार हमारे सामने एक ऐसा व्यक्ति है जो अलौकिक शक्ति पर पूर्ण विश्वास रखता है और मानता है कि वह दिन-रात उसकी सहायता कर रही है, वहीं दूसरी ओर एक ऐसा व्यक्ति है जो बचपन से जानता है कि अलौकिक सहायता प्राप्त शत्रु के सामने वह असहाय है। परिणाम स्पष्ट है और जादूगर की ही जीत होती है।

भारत में जादू-टोने करने और उन्हें दूर करने में गुप्त सम्मोहन की अहम भूमिका होती है। सभी ने 'मंत्र' और 'मंत्रम' के बारे में सुना है, ये शब्द विभिन्न प्रकार के जादुई सूत्रों के संदर्भ में प्रयोग किए जाते हैं। इन शब्दों का अर्थ एक ही है और ये प्राचीन संस्कृत या स्थानीय भाषा (ध्यान रहे कि भारत और पाकिस्तान में लगभग तीन सौ स्थानीय भाषाएँ बोली जाती हैं) में बोले गए सुसंगत वाक्यों से लेकर निरर्थक और अर्थहीन वाक्यांशों तक, हर चीज़ पर लागू होते हैं। मंत्रों का प्रयोग सौभाग्य, रोजगार, जीवनसाथी, पुत्र प्राप्ति, बीमारी या खतरे से सुरक्षा, किसी भी बीमारी के इलाज और अन्य अनेक उद्देश्यों के लिए किया जाता है। वास्तव में, इनका प्रयोग व्यावहारिक रूप से ताबीज के प्रयोग के समान ही है, लेकिन कहीं अधिक व्यापक रूप से।

किसी मंत्र का बार-बार जाप करने से ही ध्यान किसी विशेष उद्देश्य पर केंद्रित होता है। इससे मन उस उद्देश्य से भटकता नहीं है। इस प्रकार दृढ़ संकल्प और आत्म-सुझाव की प्रबल क्षमता प्राप्त होती है, जो अपने आप में आत्म-सम्मोहन ही है।

एक तीसरा कारक भी मौजूद है; प्रबल इच्छाशक्ति, जो गहन व्यक्तिगत भावनाओं से जुड़ी होती है। व्यक्ति अपने पूरे अस्तित्व से उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहता है जो वह चाहता है। इस प्रकार, यहाँ किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक तत्व मौजूद हैं। पहला, दृढ़ संकल्प, जो सबसे बड़ा प्रेरक तत्व है; दूसरा, उसे प्राप्त करने की प्रबल इच्छा, एक प्रकार की तीव्र आवश्यकता; तीसरा, यह विश्वास या आस्था कि जिसके लिए प्रयास किया जा रहा है वह प्राप्त होगा; और चौथा, मन और नसों को सक्रिय रखने के लिए प्रबल भावना।

इसलिए, पूर्व के मंत्र 'जीवन में अपनी मनचाही चीज़ें कैसे प्राप्त करें' के चारों महान नियमों को व्यवहार में लाने का एक बहुत ही चतुर तरीका है, और किसी भी सामान्य व्यक्ति को यह इससे अधिक कुछ नहीं लगेगा।

लेकिन क्या यह स्पष्टीकरण हर मामले पर लागू होता है? चलिए मैं आपको एक सच्ची कहानी सुनाता हूँ, जिसकी गवाही भारत में रहने वाले हजारों लोग देंगे।

श्री नरसिया आंध्र प्रदेश राज्य में दक्षिणी रेलवे के पोलरेड्डीपालयम स्थित एक छोटे से रेलवे स्टेशन के विनम्र स्टेशन मास्टर थे। लेकिन इस सरल और निस्वार्थ व्यक्ति ने सैकड़ों लोगों की जान बचाई, जिन्हें कोबरा, वाइपर और घातक करैत जैसे जहरीले सांपों ने काट लिया था। भारत में कहीं भी किसी को जहरीला सांप काट ले, तो पीड़ित व्यक्ति का नाम और पता लिखकर श्री नरसिया को उनके स्टेशन पर एक टेलीग्राम भेजना ही काफी था। उस क्षेत्र के लोग बेहद गरीब हैं और उनमें से अधिकांश के लिए एक्सप्रेस टेलीग्राम का खर्च उठाना मुश्किल होता है। इसे ध्यान में रखते हुए, पूरे क्षेत्र के टेलीग्राम ऑपरेटरों के बीच एक अलिखित समझौता है। जब ऐसा कोई संदेश आता है, तो संदेश को संभालने वाला हर व्यक्ति, साथ ही उसे प्राप्त करने वाला टेलीग्राम ऑपरेटर भी, अन्य सभी टेलीग्रामों, यहां तक कि 'एक्सप्रेस' संदेशों, चाहे वे कितने भी महत्वपूर्ण क्यों न हों, से अधिक प्राथमिकता देता है। इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि श्री नरसिया को टेलीग्राम जल्द ही मिल जाएगा। फिर भी, कोबरा का डंक इतनी तेजी से असर करता है कि मरीज वैसे भी मौत के करीब पहुंच जाएगा।

पोलरेड्डीपलयम रेलवे स्टेशन के इकलौते प्लेटफार्म के एक कोने में एक छोटा सा पेड़ खड़ा है। यह वाकई एक अनोखा पेड़ है, बाकी सभी पेड़ों से अलग। क्योंकि यह एक पवित्र पेड़ है और इसी के सहारे हजारों मील दूर भी कोबरा के शिकार को मौत से

बचाया जा सकता है। इस छोटे से पेड़ को सफेद कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों से सजाया गया है, जो इसके हर संभव हिस्से पर बंधे हैं। सफेद कपड़े के ये छोटे-छोटे टुकड़े श्री नरसिया की धोती के कोनों से फाड़े गए हैं, क्योंकि स्टेशन मास्टर आम पश्चिमी शैली की पतलून नहीं पहनते। वे उच्च जाति के ब्राह्मण हैं और उनके माथे पर जाति चिह्न हैं। यहाँ का मौसम गर्म है और वे हमेशा नंगे बदन रहते हैं, लेकिन उनकी कमर पर कसकर बंधी और टखनों तक लंबी धोती ही उनका सबसे भरोसेमंद हथियार है, जिसका इस्तेमाल वे सांप के काटने के मामलों में इलाज करने के लिए करते हैं।

श्री नरसिया को जब भी सांप के काटने का टेलीग्राम मिलता है, वे तुरंत उस छोटे से पवित्र वृक्ष के पास जाते हैं, अपनी धोती के निचले कोने से लगभग छह से आठ इंच का एक टुकड़ा फाड़कर वृक्ष की एक शाखा से बांधते हैं और धीमी आवाज़ में एक गुप्त मंत्र का जाप करते हैं। कहा जाता है कि अगर सांप पहले से मरा न हो, तो वह उसी क्षण मर जाता है। नरसिया फिर अपने छोटे से दफ्तर में स्टेशन मास्टर के रूप में अपने काम पर लौट जाते हैं, मानो कुछ हुआ ही न हो। शायद हज़ार मील दूर, ज़मीन पर बेहोशी की हालत में पड़ा मरीज़, जिसके मुंह के कोनों से लार टपक रही हो और जिसके पास जीने के लिए बस कुछ ही पल बचे हों, अचानक अपनी आँखें खोलता है, बैठ जाता है और फिर सीधा खड़ा हो जाता है। वह पूरी तरह से ठीक हो गया है!

ध्यान रहे कि पीड़ित बेहोश था, मृत्यु के कगार पर था। वह निश्चित रूप से सम्मोहन का अभ्यास नहीं कर सकता था और न ही उसे सम्मोहित किया जा सकता था। न ही वह आत्म-सुझावों में लिप्त हो सकता था, प्रार्थना भी नहीं कर सकता था। वास्तव में, वह अपनी सहायता के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था।

दूर स्थित पोलरेड्डपालयम में, श्री नरसिया ने अपने कर्तव्यों में बाधा आने पर भी, ऐसे किसी भी अभ्यास में समय बर्बाद नहीं किया। वे सीधे पेड़ के पास गए, अपनी धोती के निचले सिरे से एक पट्टी फाड़ी और मंत्र का जाप करते हुए उस पट्टी को पेड़ से बांध दिया। फिर वे अपने कर्तव्यों पर लौट गए। और रोगी ठीक हो गया!

अगर आप श्री नरसिया से पूछें कि यह कैसे किया गया, तो मुझे नहीं लगता कि वह आपको बताएंगे।

अपने जीवन के एक दौर में मैंने लगभग तेरह वर्षों तक टेलीग्राफ विभाग में काम किया और श्री नरसिया को ऐसे कई संदेश भेजे। अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए,

मैंने बाद में संकट संदेश में दिए गए पते पर सांप के शिकार व्यक्ति को टेलीग्राम भेजा। हर बार वह व्यक्ति ठीक हो चुका था! इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे स्वयं एक कोबरा ने काट लिया था और मेरी ओर से श्री नरसिया को एक टेलीग्राम भेजा गया था।

मैं अभी-अभी ड्यूटी से लौटा था। दोपहर के लगभग 3 बज रहे थे। अचानक हमारे एक किरायेदार ने शोर मचाना शुरू कर दिया। 'सांप!' वह चीखी। फिर, जब उसने चश्मा पहने हुए नकाबपोश को देखा, तो वह बोली, 'कोबरा! कोबरा!'

मैं आठ साल की उम्र से ही सांप पकड़ता आ रहा था, इसलिए मुझे इसमें कोई हैरानी नहीं हुई। मैंने बड़ी आसानी से कोबरा की पूंछ पकड़कर उसे काबू में कर लिया, साथ ही उसके सिर के पिछले हिस्से पर एक डंडा रख दिया। पूंछ को झट से छोड़ते ही मैंने अपनी पकड़ कोबरा की गर्दन के पिछले हिस्से पर बना ली। फिर मैंने उसे ऊपर उठा लिया। सांप पूरी तरह से बेबस था। मैं उसे उस डिब्बे तक ले गया जिसे मैं आमतौर पर ऐसी स्थितियों के लिए तैयार रखता हूँ और उसे उसमें फेंकने ही वाला था कि सांप ने अपनी पूंछ का दूसरा सिरा मेरी दूसरी बांह पर लपेट लिया। एक कोबरा के हिसाब से वह काफी लंबा था। अगर मुझे सही याद है तो वह मादा थी।

क्योंकि सांप ने मेरी हरकतों को रोक रखा था, इसलिए मैं डिब्बे का ढक्कन नहीं खोल पा रहा था, इसलिए मैंने अपने नौकर (जिसे 'चोकरा' कहा जाता है) को बुलाया ताकि वह मेरी बांह के चारों ओर लिपटी हुई सांप की पूंछ को हटा दे।

जब कोबरा ने अपनी पूंछ के कुंडल लड़के की कलाई पर लपेटे तो कोबरा धीरे-धीरे ऐसा करने लगा। लड़का घबरा गया, उसने अपनी कलाई छुड़ाने के लिए ज़ोर से झटका दिया और ऐसा करते हुए कोबरा का सिर उसकी उंगलियों के बीच से खींच लिया। वह सरीसृप बहुत फुर्तीला था, और इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, उसने अपने दांत मेरे अंगूठे के तलवे में गाड़ दिए।

मैंने उस बेचारे कोबरा को डिब्बे में फेंक दिया, ढक्कन बंद कर दिया, और चूंकि मुझे मंत्रों और मार्गदर्शकों पर ज्यादा भरोसा नहीं था, इसलिए मैं अपनी कार से स्थानीय अस्पताल के लिए एंटीवेनस इंजेक्शन लगवाने के लिए तेजी से निकल गया।

लेकिन घर पर मेरे लोगों को श्री नरसिया पर पूरा भरोसा था, और चूंकि टेलीग्राफ कार्यालय केवल दो फर्लांग की दूरी पर था, इसलिए मेरे अस्पताल पहुंचने से पहले ही उनके लिए टेलीग्राम रवाना हो चुका था।

जब मैंने आपातकालीन विभाग की नर्स को घटना के बारे में बताया तो काफी अफरा-तफरी मच गई। उसने कहा कि मुझे ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर से मिलना चाहिए और वह उन्हें ढूंढने चली गई। डॉक्टर उसके साथ वापस आए और पूछा कि क्या हुआ था। मैंने उन्हें सब कुछ बताया। उन्होंने पूछा कि क्या मुझे यकीन है कि यह सांप ही था। अंत में, वे सीरम की तलाश में चले गए।

वह परेशान सा चेहरा बनाकर लौटा। जाहिरा तौर पर अस्पताल में दवा खत्म हो गई थी। उसने मुझे जल्दी से दूसरे अस्पताल जाने को कहा जो दो मील से भी ज्यादा दूर था। तब तक मुझे चक्कर आने लगे थे और अंगूठे व हाथ में दर्द हो रहा था। मैं गाड़ी में बैठा और दूसरे अस्पताल के लिए निकल पड़ा, जहाँ मुझे 10 सीसी एंटीवेनिन सीरम नसों में इंजेक्शन के जरिए दिया गया।

लेकिन मेरे लोगों ने श्री नरसिया को एक टेलीग्राम भेजा था, जिसका उन्होंने जवाब दिया था, 'चिंता मत करो। मरीज़ ठीक हो गया है। साँप मर गया है।' अस्पताल ने मुझे करीब चार घंटे तक रोक कर रखा ताकि मेरी हालत का जायज़ा लिया जा सके। सीरम प्रतिक्रिया के कारण गंभीर पित्ती को छोड़कर, मुझे ज़्यादा कुछ महसूस नहीं हुआ। चक्कर आना बंद हो गया था और काटने वाली जगह पर कोई दर्द नहीं था।

अंततः मैं घर लौटा और मुझे नरसिया का जवाब मिला। मैंने उसे पढ़ा और सीधे उस डिब्बे की ओर गया जिसमें मैंने कोबरा रखा था। मैंने डिब्बा खोला। अंदर सांप बिल्कुल मरा हुआ था। इतना ही नहीं, वह अंदर कुंडली मारकर इस कदर जकड़ा हुआ था मानो धातु का बना हो।

वह कोबरा कैसे और क्यों मरा? उसे न तो मैंने और न ही किसी और ने चोट पहुंचाई थी। साथ ही, मरे हुए सांप को इतना सख्त होने में कम से कम चौबीस घंटे लगते हैं। इस मामले में तो केवल चार घंटे ही बीते थे, फिर भी कोबरा इतना सख्त हो गया था कि मैं कोशिश करने के बावजूद उसे दोबारा सीधा नहीं कर पाया।

यह कहना गलत नहीं होगा कि मामला बहुत अच्छा नहीं था, क्योंकि मुझे टेलीग्राम भेजे जाने के बाद इंजेक्शन दिया गया था। मुझे स्टेशन मास्टर के आने का इंतज़ार करना चाहिए था। लेकिन उस स्थिति में भला कौन ऐसा करता? खैर, कोबरा मरा क्यों? इतनी जल्दी अकड़ क्यों गया?

भारत में कुछ समय तक रहने वाला लगभग हर व्यक्ति आपको काले जादू के उदाहरण बता सकता है। यह देश के हर कोने में व्याप्त है।

सैमी सोन्स मेरे दोस्त थे। वे मूल रूप से गोवा से आए थे, जो उस समय पुर्तगालियों के अधीन था। उन्होंने एक छोटी सी संपत्ति खरीदकर बैंगलोर में अपना घर बसा लिया था। मालाबार के एक सज्जन ने बगल वाला घर खरीद लिया और अपने बड़े परिवार के साथ वहाँ रहने लगे। सैमी के परिवार और पड़ोसियों के बीच झगड़े शुरू हो गए। मेरा दोस्त शांत स्वभाव का था और किसी के मामलों में दखल नहीं देता था, लेकिन ये झगड़े इतने बढ़ गए कि उसे पुलिस में शिकायत दर्ज कराने के साथ-साथ कानूनी कार्रवाई भी करनी पड़ी।

अब उसका पड़ोसी, मालाबार का रहने वाला वह आदमी, हालांकि हाल ही में आया था, काले जादू के लिए कुख्यात हो चुका था। उसने सैमी को उन दोनों की संपत्तियों को अलग करने वाली पत्थर की दीवार के पास बुलाया और साफ-साफ कहा कि अगर उसने उसके खिलाफ दोनों मामले तुरंत वापस नहीं लिए, तो वह (पड़ोसी) सैमी को जीवन भर के लिए बिस्तर पर डाल देगा।

सैमी उस पर हँस पड़ा। मालाबार का वह आदमी मुड़ा और चला गया।

जैसा कि मैंने कहा, सैमी एक नेक दिल इंसान था। वह कुछ ही घंटों में उस घटना को भूल गया और उस रात हमेशा की तरह जल्दी सो गया। लेकिन अगली सुबह वह जल्दी नहीं उठ सका। वह बिस्तर से बिल्कुल भी नहीं उठ पाया, क्योंकि वह खुद को उठा नहीं पा रहा था। उसकी कमर के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया था।

पिछले दिन की घटनाओं को याद करते ही सैमी घबरा गया। पड़ोसी की धमकियाँ सुन चुकी श्रीमती सोएन्स ने अपने पति से विनती की कि उन्हें मालाबार के उस आदमी से माफी मांगने की अनुमति दे दें। शायद वह दयालु होकर उसे माफ कर दे। तब सैमी एक बार फिर बिस्तर से उठ पाएगा।

शांत स्वभाव वाले लोगों में एक अजीब सी खूबी होती है। आप उन्हें एक हद तक तो परेशान कर सकते हैं, लेकिन अचानक एक ऐसा मोड़ आ जाता है जहाँ उन्हें और परेशान करना नामुमकिन हो जाता है। पड़ोसी की धमकियाँ उसी हद तक पहुँच चुकी थीं। सैमी ने माफी मांगने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उसने तुरंत नम्बोद्रीपाद को बुलाया, जो भारत के पश्चिमी तट से ही था, उसका निजी मित्र था और कुछ साल पहले ही बैंगलोर में बस गया था।

सैमी के मित्र कृष्णन ने तुरंत सूचना दी और कहा कि पड़ोसी ही सैमी के लकवे

का कारण है। उन्होंने कुछ विचार करने के बाद कहा कि सैमी को इस हालत में लाने के लिए किया गया जादू एक शक्तिशाली यक्ष का काम था। वह यक्ष इतना शक्तिशाली था कि उनका अपना साथी भी उसे निष्क्रिय नहीं कर सका और सैमी को फिर से खड़ा नहीं कर सका। लेकिन वह पड़ोसी पर ऐसा ही जादू कर सकता था, जिससे वह भी लकवाग्रस्त हो जाए और बिस्तर पर ही पड़ा रहे।

सैमी ने इसकी अनुमति दे दी और उसी शाम पड़ोसी अचानक खड़े होने की शक्ति खो बैठा और एक घंटे के भीतर ही वह कमर के नीचे का हिस्सा हिला भी नहीं पा रहा था। इससे उस दुष्ट पड़ोसी और सैमी के नम्बोद्रिपाद मित्र (जो सैमी की ओर से काम कर रहा था) के बीच जादू-टोने की होड़ मच गई, जिसमें नम्बोद्रिपाद की बुरी तरह हार हुई। सैमी को तेज बुखार हो गया, वह कुछ खा-पी नहीं पा रहा था और लकवे का असर कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। उसे नसों के ज़रिए खाना खिलाना पड़ रहा था। दूसरी ओर, पड़ोसी नम्बोद्रिपाद के जादू से उबर चुका था और फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया था।

इसी समय, श्रीमती सोएन्स ने अपने पति की जानकारी के बिना, पड़ोस में रहने वाले काले जादूगर से क्षमा मांगने के लिए उससे मुलाकात की। जब उसने दरवाजा खोलकर उन्हें अंदर आने दिया, तो उसने कहा, 'मुझे पता था कि तुम आओगी। यह तो बस समय की बात थी।'

यह आदमी बहुत अभिमानी था और उसने लंबे समय तक उसकी माफी को ठुकरा दिया। आखिरकार वह जादू हटाने और सैमी को स्वस्थ करने के लिए पांच सौ रुपये की राशि के बदले में सहमत हो गया, पूरी राशि नकद और अग्रिम रूप से दी जानी थी।

श्रीमती सोन्स को ज़रा भी शक नहीं था कि वह अपनी शर्तों पर कायम रहेगा। लेकिन अपने पति की जानकारी के बिना वह पाँच सौ रुपये कहाँ से ला सकती थी? तभी उन्हें अपने स्टील के संदूक के नीचे पड़ी भारी सोने की चेन याद आई। साथ ही दो सोने के कंगन भी, जो उन्होंने वर्षों की कड़ी मेहनत और बचत के बाद खरीदे थे।

वह उस वस्तु को लेकर स्थानीय साहूकार बोरिलाल के पास गई। वस्तु की कीमत दो हजार रुपये से अधिक थी, लेकिन बहुत मिन्नतें करने के बाद, उस कंजूस ने उसे छह सौ रुपये उधार देने पर सहमति जताई, हालांकि उसने वास्तव में उसे यह राशि नकद में नहीं दी। बल्कि, उसने एक महीने का पूरा ब्याज, जो उसके दावे के

अनुसार केवल एक सौ रुपये था, अग्रिम रूप से काट लिया और शेष पांच सौ रुपये अपनी ग्राहक को दे दिए।

श्रीमती सोएन्स जल्दी से अपने पड़ोसी के घर गईं और डरते-डरते उसके दरवाजे पर दस्तक दी। थोड़ी देर बाद काले जादूगर ने उनकी पुकार सुनी। उसने औपचारिकतावश सिर हिलाया और उन्हें अंदर आने दिया। फिर उसने रूखे स्वर में आदेश दिया, 'मुझे पैसे दो।'

श्रीमती सोएन्स ने विनम्रतापूर्वक पांच सौ रुपये के नोट सौंप दिए। उस व्यक्ति ने पैसे गिने। फिर उसने उन्हें अशिष्टता से यह कहते हुए विदा कर दिया, 'आप जा सकती हैं। आपके पति आज शाम तक उपलब्ध रहेंगे।'

श्रीमती सोन्स ने कोई सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की, बल्कि उस भयानक उपस्थिति से लगभग भाग ही गईं। उस शाम जैसे ही सूरज डूबा, सैमी ने अचानक अपनी पत्नी से कहा कि वह फिर से ठीक महसूस कर रहा है, और अपनी बात को साबित करने के लिए वह झट से खड़ा हो गया। श्रीमती सोन्स ने उसे अपनी चेन और कंगन के बारे में कभी नहीं बताया था। वह इतनी गरीब थीं कि उन्हें छुड़ा नहीं सकती थीं, इसलिए उन्हें चोरी का झूठा नाटक करना पड़ा और कहना पड़ा कि वे चोरी हो गए हैं। सैमी ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया।

यह कहानी सच है। मैं सैमी सोएन्स को कई सालों से व्यक्तिगत रूप से जानता था और जब वे लकवाग्रस्त थे, तब उनसे मिलने गया था। उस समय उन्होंने मुझे अपने पड़ोसी द्वारा किए गए जादू और अपने मित्र (नाम्बोद्रिपाद) द्वारा उन्हें मुक्त कराने के असफल प्रयासों के बारे में बताया था। श्रीमती सोएन्स ने बाद में मुझे बाकी की बातें गोपनीय रूप से बताईं।

मैं अपनी बात दोहराना नहीं चाहता, लेकिन मेरा अपना एक किस्सा है जिसका जिक्र मैंने अपनी पिछली किताब में किया है। इस कला को जानने वाले एक व्यक्ति को मुझसे नफरत हो गई। नतीजतन, कई दिनों तक मैं रात करीब 3 बजे इस एहसास के साथ जागता रहा कि मेरे सीने पर भारी वजन रखा है और मेरा दम घुट रहा है। मुझे खिड़की के बाहर कदमों की आहट भी सुनाई देती थी, लेकिन वहां कभी कोई नहीं होता था। अचानक ही मैंने अपने कस्बे के एक मशहूर जादूगर से सलाह ली। मेरे कुछ बोलने से पहले ही उन्होंने मुझे मेरे आने का असली मकसद बता दिया। उन्होंने मुझे घर जाकर खिड़की से एक निश्चित दूरी नापने और जमीन में एक निश्चित गहराई तक

खोदने के लिए कहा। मुझे वहां जो कुछ भी मिले उसे नष्ट करना था, जिसके बाद मुझे शांति मिल जाएगी।

मैंने बताई गई दूरी नापी, उतनी गहराई तक खुदाई की और मुझे बालों से सजी एक छोटी सी मूर्ति मिली। वे बाल बिल्कुल मेरे अपने बालों जैसे दिखते थे। मैंने मूर्ति को नष्ट कर दिया और उसके बाद मुझे फिर कभी कोई परेशानी नहीं हुई।

मैं इस तरह की और भी कई कहानियाँ सुना सकता हूँ, लेकिन वे उबाऊ हो जाएँगी। इतना कहना ही काफी है कि भारत के लोग, और विशेषकर इस प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में रहने वाले लोग, बचपन से ही काले जादू को एक सर्वमान्य तथ्य के रूप में मानते हुए बड़े होते हैं। कोई भी इस वास्तविकता पर सवाल उठाने या संदेह करने की हिम्मत नहीं करता; काला जादू इस देश के रोजमर्रा के जीवन में इतना रचा-बसा है कि पश्चिमी लोगों को छोड़कर, जिन्हें वैसे भी किसी भी चीज़ में विश्वास न करने वाला माना जाता है, शायद ही कोई वयस्क पुरुष रात के नौ या दस बजे के बाद सुबह लगभग पाँच बजे तक अकेले बाहर जाता है, क्योंकि माना जाता है कि उस समय तक बुरी आत्माएँ विश्राम कर चुकी होती हैं।

सूर्यास्त के बाद कच्चा या पका हुआ सूअर का मांस ले जाना बुरी शक्ति के प्रकोप को न्योता देना है। नंगे पैर चलने पर यह खतरा और भी बढ़ जाता है। हालांकि, अगर आप अपने साथ कोयले का एक टुकड़ा भी रखें तो सूअर का मांस ले जाना सुरक्षित है। तब शैतान आपको अकेला छोड़ देगा।

कुछ जनजातियों और समुदायों के सदस्यों के बारे में माना जाता है कि वे बचपन से ही जादू-टोने में पारंगत होते हैं और आम भारतीय ऐसे व्यक्ति से दूर रहना पसंद करते हैं, मानो उसे कोई बीमारी हो। इनमें से तीन समुदाय (वास्तव में ये मूल निवासियों की विशेष जनजातियों का हिस्सा हैं जो मानो आदिम काल से इस भूमि पर बसे हुए हैं) मेरे दिमाग में आते हैं। ये सभी तेलुगु बोली बोलते हैं और वर्तमान में आंध्र प्रदेश राज्य में स्थित हैं, जो दक्षिण भारत के मध्य में है। ये जनजातियाँ हैं थेली मराजा, जो उर्दू भी बोलते हैं, कोया मामा और दावा-लोकी (दावा का अर्थ है दवा और 'लोकी' का अर्थ है लोग। इसलिए 'दवा देने वाले लोग', शाब्दिक रूप से 'चिकित्सक')।

इन तीनों जनजातियों ने पीढ़ियों से अपने चारों ओर एक मजबूत अंधविश्वास का ताना-बाना बुना है। जब वे किसी गांव की गली में चलते हैं, तो बच्चे अंदर भाग जाते हैं और वयस्क अपने दरवाजे बंद करके ताला लगा लेते हैं। ये सभी भिक्षु की तरह जीवन

यापन करते हैं, लेकिन इनमें एक अंतर है। ये लोग विनम्रता से भोजन, वस्त्र और धन की भीख नहीं मांगते। वे इन चीजों की मांग करते हैं और यदि मांग पूरी नहीं होती तो प्रतिशोध की धमकी के साथ अपनी मांगें रखते हैं, इसलिए कुछ ही लोग उन्हें मना करने की हिम्मत करते हैं।

थेयली मराजा लोग घुटनों तक लंबी ढीली जब्बार (कमरबंद) पहनते हैं, जिसके ऊपर प्रत्येक पैर पर अलग-अलग धोती लपेटी होती है। वे सिर के ऊपर एक सजावटी पंखे के आकार की पगड़ी पहनते हैं, जिसका दूसरा सिरा उनकी पीठ पर लटका रहता है। कमरबंद के ऊपर, आगे और पीछे दोनों तरफ, कंधे से टखनों तक पहुंचने वाला एक प्रकार का एप्रन होता है। वे छोटे, दो तारों वाले वायलिन रखते हैं, जो टिन या डिब्बे के ढांचे से बने होते हैं और उनमें बांस का एक हिस्सा लगा होता है। टिन या डिब्बे को कौड़ियों से खूबसूरती से सजाया जाता है। इस वाद्य यंत्र में धनुष नहीं होता और इसे बजाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका उद्देश्य संगीत उत्पन्न करना नहीं है, बल्कि इसके स्वामी के आगमन की सूचना देना है, जो अपने नाखूनों से तारों को छेड़ता है। इससे निकलने वाली 'टिंग-टिंग' की ध्वनि से पता चलता है कि एक थेयली मराजा आया है, और लोग उसे जल्द से जल्द जाने के लिए अनाज या पैसे के रूप में कुछ देने की जल्दी करते हैं।

ये लोग पेशेवर हस्तरेखा विशेषज्ञ हैं और उपहारों के बदले में आश्चर्यजनक सटीकता के साथ भविष्य बताते हैं। वास्तव में, वे इतने कुशल हैं कि अधिकतर लोग बीमारी या शीघ्र मृत्यु के डर से अपना भविष्य जानने से कतराते हैं। इसके बजाय वे जल्दी से अपने उपहार प्रस्तुत करते हैं और विचरण कर रहे महाराजा को अपने मार्ग पर चलने का निमंत्रण देते हैं।

कोया मामा एक लंबा, गहरे रंग का, दुबला-पतला पुरुष समुदाय है जिसकी आंखें कोयले जैसी काली और भेदक होती हैं। वे लंबे बाल रखते हैं जिन्हें सिर पर लपेटकर एक कुंडल में बांधते हैं और मोर के पंखों या लंबे दांतों वाली कंघी से सजाते हैं। वे हमेशा नंगे बदन रहते हैं, रंग-बिरंगे कांच के मोतियों की माला पहनते हैं और एक लंबी, कसी हुई धोती को स्कर्ट की तरह धारण करते हैं। इस समुदाय का एक अन्य भाग देश के जंगली इलाकों से आता है। इसके प्रतिनिधि बहुत कम या न के बराबर कपड़े पहनते हैं, सिवाय एक छोटी सी लंगोटी के। ये लोग अपनी बाहों को ताबीज और कंगन से सजाते हैं जो पेड़ों की जड़ों से बने होते हैं या हड्डियों से तराशे जाते हैं,

और जंगली पौधों और पेड़ों के रंगीन बीजों से बने हार पहनते हैं। भीख मांगते समय वे बहुत मांग करते हैं और भीख मांगते समय दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में रगड़ने की कला जानते हैं, साथ ही तेजी से कहते हैं: 'देखो, यह जल्द ही आ रहा है... देखो, यह रास्ते में है... जल्द ही, अब। बहुत जल्द यह यहाँ होगा... आह, मैं इसे अभी देख सकता हूँ; बस वहीं। अरे, इधर आओ।

जिन लोगों से वे भीख मांग रहे हैं, जब वे ये शब्द सुनते हैं, तो वे इस बात को बहुत महत्व देते हैं कि कोया मामा द्वारा उल्लिखित 'यह' क्या हो सकता है, और जल्दी से उसे एक उपहार देते हैं, और उसे बगल वाले पड़ोसी के घर जाकर मिलने के लिए आमंत्रित करते हैं।

कोया मामाओं की एक और खास तरकीब है कि वे हथेलियों को आपस में रगड़ते समय उनके बीच घोड़े के बाल का एक टुकड़ा रख देते हैं। इस बाल से एक छोटा सा ताबीज जुड़ा होता है; ज़ोर से रगड़ने पर यह टुकड़ा खुलने लगता है, जिससे वह ताबीज कोया मामा की हथेली पर नाचने लगता है। अगर आप उन्हें एक रुपया देंगे, तो वे आपको यह ताबीज (घोड़े के बाल हटाकर) एक शुभ स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट करेंगे।

दावा लोकी जनजाति में आम तौर पर महिलाएं भीख मांगने के लिए बाहर जाती हैं, जबकि यह काम पुरुषों के लिए भी अनुचित और बेहद श्रमसाध्य समझा जाता है। ये महिलाएं जैकेट नहीं पहनतीं, बल्कि नंगे बदन और एक रंग की सूती साड़ियों में घर-घर जाती हैं। उनका 'चिकित्सक का थैला' एक रजाईदार कपड़ा होता है जिसके चारों कोने एक छोटी सी छड़ी पर जुड़े होते हैं, जिसे वे बंदूक की तरह अपने कंधों पर रखती हैं। कपड़े के अंदर छोटी-छोटी डिब्बियों में तरह-तरह की जड़ें, जड़ी-बूटियां और पाउडर रखे होते हैं। यही उनका औषध भंडार होता है। ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसका इलाज उनके पास न हो, और वे सामने वाले को प्रभावित करने के लिए उससे अलग भाषा में जवाब देने की कोशिश करती हैं। यदि कोई व्यक्ति उस दूसरी भाषा से परिचित हो और उसी बोली में जवाब दे, तो वैद्य महिला तीसरी कोशिश करती है।

ये घुमंतू वैद्याएँ आपके दरवाजे पर आकर अपने आगमन की सूचना एक विचित्र लयबद्ध स्वर में देती हैं, जिसमें वे बार-बार 'दवा लोके' शब्द दोहराती हैं। वास्तव में वे भिखारी नहीं हैं, क्योंकि वे अपनी जड़ी-बूटी वाली दवाइयाँ बेचकर अपना जीवन यापन

करती हैं। संबंधित व्यक्ति की समझदारी के आधार पर, उनके द्वारा बेची जाने वाली कुछ जड़ें, पत्तियाँ और पाउडर अत्यंत कारगर साबित हो सकते हैं।

भारत में हर विवाहित दंपत्ति संतान प्राप्ति की इच्छा रखता है। इसके दो कारण हैं। पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि निःसंतान पत्नी को बांझ और संतानोत्पत्ति में असमर्थ मानकर समाज में एक बड़ा कलंक माना जाता है। बहुत कम लोग इस बात पर विचार करते हैं कि शायद इसके लिए पुरुष ही दोषी हो, न कि स्त्री, क्योंकि यह मान लिया जाता है कि स्त्री बांझ है, और भारत में बांझपन एक घोर पीड़ा है। ऐसा माना जाता है कि देवता ऐसी स्त्री के प्रति प्रतिकूल हैं; शायद वह अनैतिक है और संतानोत्पत्ति की क्षमता खो चुकी है, या शायद वह किसी बीमारी से ग्रसित है। लेकिन कारण चाहे जो भी हो, सारा दोष स्त्री पर ही मढ़ा जाता है और उसे, उसके पति को नहीं, दया और तिरस्कार की मिली-जुली दृष्टि से देखा जाता है, और उसे अपने संतानोत्पत्ति वाले पड़ोसियों के बीच श्रेष्ठता की भावना का भी सामना करना पड़ता है।

निःसंतानता के इस भय का दूसरा कारण निश्चित रूप से परिवार को आगे बढ़ाने की इच्छा है, और इसी कारण पुत्र की इच्छा होती है, पुत्री की नहीं।

भारत में पुत्र और पुत्री होने में बहुत बड़ा अंतर है, और यदि कोई पुरुष कई पुत्रों का पिता बनने के लिए भाग्यशाली होता है, तो उसे विश्व का सबसे भाग्यशाली माना जाता है। प्रत्येक पुत्र के विवाह के समय दहेज दिया जाता है। यह दहेज आम तौर पर कुछ हजार रुपये या उससे अधिक, गहने, जमीन, घर या फिर कार, रेडियो सेट या ट्रांजिस्टर, या शायद सोने की अंगूठियों का एक जोड़ा या स्वचालित सोने की घड़ी के रूप में होता है।

दूसरी ओर, यदि किसी पुरुष का दुर्भाग्यवश एक पुत्री हो और उसे उसके लिए वर ढूंढना पड़े, तो उसकी स्थिति बिल्कुल विपरीत हो जाती है। क्योंकि उसे ही दूल्हे को दहेज देना पड़ता है, जबकि वर बदले में कुछ नहीं देता। और यदि वह पुरुष कई पुत्रियों का पिता हो, तो उसकी स्थिति और भी खराब हो जाती है, क्योंकि उसे उतनी ही पुत्रियाँ दहेज में देनी पड़ती हैं जितनी उसकी पुत्रियाँ हैं। पुत्रियों को अविवाहित रखकर भी वह इस समस्या से बच नहीं सकता। एक पुत्री का अविवाहित रहना भी घोर कलंक माना जाता है, क्योंकि हर कोई कहेगा कि वह बुरी लड़की है, कुंवारी नहीं; इसलिए कोई उससे विवाह नहीं करेगा। कई अविवाहित पुत्रियाँ होना तो समाज में

प्रतिष्ठा में सबसे निचले स्तर पर पहुँचने के समान है। किसी भी लड़की को तब तक विवाह करने की अनुमति नहीं होती जब तक उसकी बड़ी बहन का विवाह उससे पहले न हो जाए। इसलिए, अगर पिता गरीब है और दहेज देने में असमर्थ है, तो उसकी कोई भी बेटी शादी नहीं कर सकती और उन्हें वेश्या कहा जाता है, क्योंकि आम आदमी के लिए किसी भी लड़की के अविवाहित रहने का केवल एक ही कारण होता है। वरना, कोई न कोई उससे शादी करने के लिए आगे आ जाता। इसका कारण यही हो सकता है कि लड़की और संभवतः उसका पूरा परिवार अनैतिक है। पिता के दहेज देने में असमर्थ होने की संभावना को आसानी से नजरअंदाज कर दिया जाता है।

इस प्रथा के फलस्वरूप, हर लड़के के माता-पिता उसके लिए ऐसी पत्नी ढूंढने की कोशिश करते हैं जो सबसे अधिक दहेज ला सके। वहीं दूसरी ओर, लड़की के माता-पिता को ऐसे लड़के की तलाश करनी पड़ती है जिसके माता-पिता लड़की के माता-पिता की सामर्थ्य के अनुसार कम से कम दहेज स्वीकार करने को तैयार हों। और अंत में, दोनों पक्षों के माता-पिता को ही सौदेबाजी और लेन-देन करना पड़ता है। लड़के और लड़की को अपने जीवनसाथी के चुनाव में कोई दखल नहीं होता।

भारत में, और वास्तव में पूरी दुनिया में, धन का महत्व इतना बढ़ गया है कि लड़के की शादी करना अपेक्षाकृत आसान है, जबकि लड़की की शादी करना उतना ही मुश्किल है। अधिकांश अन्य देशों की तरह, भारत में भी लड़कियों की जन्म दर या जीवित रहने की दर लड़कों की तुलना में अधिक है, इसलिए उन दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए स्थिति और भी कठिन होती जा रही है, जिनके परिवार में केवल बेटियाँ ही होती हैं।

कुल मिलाकर देखा जाए तो, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, लोग संतानहीन नहीं रहना चाहते, इसलिए सरकार और परिवार नियोजन संगठनों का काम बेहद मुश्किल हो जाता है। जनसंख्या विस्फोट के खतरे का महत्व आम भारतीय किसान और गरीब व्यक्ति को बिल्कुल भी समझ नहीं आता।

आज गरीबी इतनी भीषण है और जीवनयापन की लागत इतनी अधिक है कि विवाहित दंपत्ति किसी भी प्रकार के शौक या मनोरंजन के बारे में सोच भी नहीं सकते, चाहे वह कितना भी सरल क्यों न हो। न ही वे अपने घरों को सजा सकते हैं और न ही जीवन की कोई भी सुख-सुविधा खरीद सकते हैं, भोजन की तो बात ही छोड़ दें। यह तंगहाल जीवन एक घातक दिनचर्या को जन्म देता है। पति और पत्नी दोनों केवल एक

बहुत ही साधारण नाश्ता कर पाते हैं, जिसमें एक छोटी सी चावल की रोटी और एक घूंट कॉफी होती है। फिर दोनों काम पर निकल जाते हैं। दोपहर का भोजन भी उतना ही साधारण होता है, और शाम को लौटने पर पत्नी को रात का खाना बनाना पड़ता है, जो फिर से बहुत ही साधारण होता है और उसमें केवल थोड़ी सी करी और चावल होते हैं। इसके बाद दंपत्ति रात को सो जाते हैं। वे पढ़ते नहीं हैं, क्योंकि वे निरक्षर हैं। यदि वे पढ़ भी सकते, तो भी वे इतने गरीब हैं कि अपने छोटे कमरों को रोशन करने के लिए आवश्यक बिजली या केरोसिन का खर्च नहीं उठा सकते, जिनमें से कई कमरे झोपड़ियों से भी बदतर हैं।

आखिर उनके पास झूठ बोलने और चर्चा करने के लिए बचा ही क्या है? खाने की कमी? बढ़ती महंगाई? जीवन की समस्याएं, और भी समस्याएं? इन गरीब लोगों के लिए एकमात्र मनोरंजन है यौन संबंध। इसमें कुछ खर्च नहीं होता। इसके अलावा, यह कुछ हद तक विस्मृति, संतुष्टि और एक निश्चित आनंद भी देता है। तीसरा, जब दोनों को काम पर लालची मालिकों द्वारा सताया जाता है, जो उनसे दिन भर काम करवाते हैं और बदले में मामूली वेतन देते हैं, तो यौन संबंध ही वह क्षेत्र है जिसमें पुरुष, और बहुत कम मामलों में महिला, कम से कम अपने निराश अहंकार को संतुष्ट करने का साहस कर सकते हैं। वे सचमुच बिना किसी डर के खुद को मुक्त कर सकते हैं।

अब, इस निराशाजनक माहौल के बीच, एक ऐसा समूह सामने आता है जो यह उपदेश देता है कि इस एकमात्र बचे सुख को भी त्याग देना चाहिए। ये लोग परिवार नियोजन केंद्र के सदस्य हैं, जिसे सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संगठन (जो वैसे भी सभी विदेशी हैं) के कहने पर स्थापित किया है। ये लोग कहते हैं कि विवाहित जोड़े को बच्चे नहीं होने चाहिए, या ज़्यादा से ज़्यादा दो बच्चे होने चाहिए, इससे ज़्यादा नहीं। ये लोग कहते हैं कि दुनिया बच्चों से भरी पड़ी है, और जल्द ही पुरुषों और महिलाओं से भी भर जाएगी, और सबके लिए पर्याप्त भोजन नहीं होगा। मानो अभी भी पर्याप्त भोजन हो! परिवार नियोजन के समर्थकों का कहना है कि इससे बचने का उपाय यह है कि प्रत्येक पुरुष और महिला का ऑपरेशन किया जाए। वैकल्पिक रूप से, महिला एक लूप पहन सकती है, या समय-समय पर एक गोली खा सकती है, या किसी अन्य प्रकार के उपकरण का उपयोग कर सकती है।

तो गाँव वाले खुद से पूछते हैं: आखिर जीवन किस ओर जा रहा है? हमारे पिता,

हमारे दादा, हमारे परदादा, सभी ने यौन सुख का आनंद लिया! हम भी यौन सुख का आनंद लेते हैं! अब ये लोग हमें ये सब बातें बता रहे हैं। ये हमसे वो एकमात्र सुख छीनने की कोशिश कर रहे हैं जो हमारे पास बचा है। हमारे पास यौन क्रिया के अलावा आनंद लेने के लिए कुछ और नहीं है। क्या हमें इसे भी छोड़ देना चाहिए? क्योंकि एक दिन, कुछ वर्षों बाद, दुनिया पुरुषों और महिलाओं से इतनी भर जाएगी कि खाने के लिए भोजन नहीं बचेगा! तब हम कहाँ होंगे? हम अभी भी भूखे मर रहे हैं, और शायद हम पाँच साल भी न जी पाएँ। शायद एक साल भी नहीं। निश्चित रूप से बीस या तीस साल तक तो नहीं? इसलिए हमें शांति से उस एकमात्र सुख का आनंद लेने दो जो बचा है। अपने काम से काम रखो और हमें भी अपने काम से काम रखने दो। अरे, अभी कुछ दिन पहले जब हम कॉफी शॉप में एक घूँट पीने गए, तो हमने वहाँ सभी लोगों को दिल खोलकर हँसते सुना। 'क्या बात इतनी मज़ेदार है?' हममें से कुछ ने पूछा, 'चलो मज़ाक बाँटते हैं।'

कुछ देर तक किसी को बोलने का मौका ही नहीं मिला। आखिरकार एक महिला ने कहा, 'याद है वो परिवार नियोजन डॉक्टर जो हमें रोज़ाना उपदेश देता था? और याद है वो नर्स जो हमारी महिलाओं को गर्भनाल लगाती थी और उन्हें गोलियां बांटती थी? खैर, उसी ने उसे गर्भवती कर दिया है और अब वो मातृत्व अवकाश पर है।'

'हो! हो! हो! हा! हा! हा! उसका अपना पाश गिर गया होगा!'

दूसरी ओर, मेरा दोस्त 'सामियार' (धार्मिक सम्मान का एक शब्द), जो सलेम जिले में पेन्नाग्राम के पास मेरी जमीन से कुछ ही दूरी पर एक छोटी सी पहाड़ी पर रहता है, एक अधिक लोकप्रिय और कहीं अधिक लाभदायक व्यापार करता है।

पांच फुट से कुछ अधिक लंबे, नन्हे सामियार (जो अब उम्रदराज हो चुके हैं) अपने सिर पर कई लच्छेदार काले नकली बाल लगाकर अपनी कद-काठी को और भी बढ़ाते हैं। उनकी आंखें चमकीली और भेदक काली हैं और वे बड़े-बड़े झुमके पहनते हैं। धार्मिक अवसरों पर वे अपने माथे पर सफेद और लाल रंग के जाति चिह्न लगाते हैं। चालीस वर्षों से अधिक समय से, जब से मैं उन्हें जानता हूं, बांझ महिलाओं को संतान प्राप्ति कराने वाले वैद्य के रूप में सामियार की ख्याति लगातार बढ़ती ही जा रही है। सैकड़ों महिलाएं उनके पास लाई जा चुकी हैं, और उतनी ही महिलाएं अपनी मर्जी से भी आई हैं।

सामियार इस सेवा के लिए बहुत कम पेशेवर शुल्क लेता है; एक गरीब महिला

से मात्र दस रुपये और एक अमीर महिला से पचास रुपये। दूसरी शर्त यह है कि महिला को दिन के उजाले में उसकी झोपड़ी में उसके साथ अकेले रहना होगा। (इस शर्त को रात के अंधेरे तक बढ़ाना शर्मनाक होगा, है ना? लेकिन सूरज की रोशनी में कुछ भी गलत नहीं हो सकता, और आखिर वह एक 'सामियार' है, है ना?) कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लगभग आधी महिलाएं गर्भवती हो जाती हैं, लेकिन इससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि गर्भवती होने वाली अधिकांश महिलाओं के पति बीमार या किसी अन्य तरह से अक्षम होते हैं।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, मैं सामियार को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि वह एक शक्तिशाली सम्मोहनकर्ता है; साथ ही साथ एक नंबर का बदमाश भी है, हालाँकि वह बेहद हंसमुख और मिलनसार बदमाश है। सबसे अजीब बात यह है कि इनमें से कई बच्चे बड़े होकर बदमाश बन जाते हैं, लेकिन हंसमुख और मिलनसार बदमाश, और उन सभी की चमकदार, भेदक, काली आँखें होती हैं।

मैंने अपना पूरा जीवन इस देश में, इसके जंगलों में, इसके गांवों में बिताया है। मैं यहां के सैकड़ों सबसे गरीब लोगों से मिला हूं और उनसे बातचीत की है। मैंने जो कुछ लिखा है, वह केवल उनके द्वारा अपने शब्दों में कही गई बातें हैं। बेशक, मैं 'जनसंख्या विस्फोट' के खतरे को समझता हूं। मैं जानता हूं, और परिवार नियोजन इकाइयों के प्रयासों की सराहना करता हूं। लेकिन मुझे बहुत डर है कि यह कारगर नहीं होगा। गरीब भारतीय, बाकी सभी की तरह, गरीब होने के बावजूद इंसान है। वह अपने लिए कुछ ठोस चाहता है, अभी और यहीं, और भविष्य में क्या होगा, यहां तक कि बीस या तीस साल बाद क्या होगा, इसमें उसकी कोई खास दिलचस्पी नहीं है। वह खुद इतने लंबे समय तक जीने की उम्मीद नहीं करता। और उस समय जीवित लोगों का क्या होगा, इसकी उसे जरा भी परवाह नहीं है।

चूंकि उसके पास मनोरंजन का कोई वैकल्पिक साधन नहीं है, चूंकि जीवन की परिस्थितियां कठिन और मुश्किल बनी रहेंगी, और दिन-प्रतिदिन और भी कठिन होती जाएंगी, इसलिए वह (और वह) अपने एकमात्र बचे हुए मनोरंजन - 'यौन क्रिया' - को छोड़ने या किसी भी तरह से कम करने वाले नहीं हैं।

भारत में हर महीने हज़ारों की संख्या में अलग-अलग देशों के युवा आ रहे हैं। रूसियों को छोड़कर, हमें अमेरिका, पश्चिमी यूरोप और यहाँ तक कि जापान के लोग

भी हमारे शहरों और कस्बों की गलियों में घूमते नज़र आते हैं। इनमें से कुछ 'हिप्पी' हैं, लेकिन ज़्यादातर नहीं, हालाँकि आपको सामान्य पश्चिमी पोशाक में उन्हें ढूँढ़ना मुश्किल होगा। इसके विपरीत, कुछ योगी के भगवा वस्त्र और भारी मालाएँ, भारतीय मज़दूर की छोटी धोती और नंगे बदन, उत्तरी भारतीयों की ढीली पैंट और ऊपर कमीज़ जैसे पहनावे अपनाते हैं। उनके केशविन्यास लंबे बालों और घनी दाढ़ी से लेकर बीच के सभी चरणों से गुज़रते हुए सिर और चेहरे पर बिल्कुल बाल न होने तक भिन्न-भिन्न होते हैं। ज़्यादातर उन्हें हवा में लहराते बालों के साथ देखा जा सकता है, और कुछ मामलों में जटिल केशविन्यास में बालों को सिर के चारों ओर लपेटे हुए देखा जा सकता है। इन समूहों की महिलाएं भी उतनी ही विचित्र दिखती हैं: कुछ साड़ियों को बड़े ही बेढंगे तरीके से लपेटा गया है, जो किसी भारतीय महिला की शालीनता को नहीं दर्शाता, जबकि अन्य उत्तरी भारतीय महिलाओं की तरह 'कमीज़' और 'कल्वा' (कमरबंद और तंग पतलून) पहने हुए हैं। कुछ बेहद छोटी स्कर्ट में नज़र आती हैं, जबकि कई इसके बिल्कुल विपरीत, टखने तक लंबी ऐसी पोशाकें पहने हुए हैं जिन्हें परिभाषित करना मुश्किल है।

जिज्ञासावश मैंने इन आगंतुकों से बात की ताकि उन्हें समझ सकूँ, और इतना तो मैंने जान लिया कि लगभग सभी ने यही स्वीकार किया है कि उन्हें दुनिया में भारत जैसा कोई और स्थान नहीं मिला। उनमें से कुछ ने व्यापक यात्रा की है, और सभी अपना शेष जीवन भारत में बिताना चाहते हैं। मैंने उनसे पूछा कि उन्हें भारत में ऐसा क्या आकर्षित लगा, लेकिन इस प्रश्न के मुझे अनेक उत्तर मिले। कुछ का कहना है कि यह देश बहुत शांत है, लोग बहुत अच्छे हैं, जलवायु सुहावनी है, धूप शानदार है, और भोजन और जीवन यापन बहुत सस्ता है। वहीं कुछ अन्य का कहना है कि उनके मन में आध्यात्मिक मामलों के लिए एक तीव्र इच्छा है जिसे वे अपने देश में पूरा नहीं कर पाते, जहाँ भागदौड़ और शोरगुल बहुत अधिक है। सभी एक बात पर सहमत हैं। भारत में समय का कोई महत्व नहीं है; किसी भी चीज़ की कोई जल्दी नहीं है और हमेशा एक नया दिन होता है।

इनमें से बड़ी संख्या में लोग इस प्रायद्वीप के विभिन्न हिस्सों में स्थित आश्रमों या व्यक्तिगत योगियों से जुड़ गए हैं। प्रमुख केंद्रों में से एक पांडिचेरी में है, जहाँ विभिन्न जातियों के पुरुष और महिलाएं श्री अरबिंदो आश्रम में शामिल हुए हैं, इस उम्मीद के साथ कि वे पहले से नियोजित और निर्माणाधीन अंतरजातीय बस्ती ऑरोविल में बस

जाएंगे। यह बस्ती आदर्शवादी होने का वादा करती है, जहाँ सभी देशों, रंगों और धर्मों के लोग शांति और सद्भाव से एक साथ रह सकेंगे—एशिया में अपनी तरह की एकमात्र बस्ती। कई अन्य लोग व्हाइटफील्ड में पुनर्जन्मित साई बाबा के अनुयायियों में शामिल हो गए हैं। वे आत्मा की शांति, मन की शांति और जीवन की शांति की खोज में प्रसन्न हैं।

लेकिन ये सभी पर्यटक एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात भूल जाते हैं; वास्तव में, सबसे महत्वपूर्ण बात यही है। उनके अपने देशों से उन्हें पैसा भेजा जाता है, और अगर ये पैसा न होता तो वे भारत में रह ही नहीं पाते, चाहे आश्रम में रहें या कहीं और, क्योंकि पर्यटक और विदेशी होने के नाते उन्हें काम करने और उसके लिए वेतन पाने की अनुमति नहीं है। उनके लिए यह बेहतर होगा कि वे इस तथ्य को हमेशा ध्यान में रखें, और अपने देश के खिलाफ इतनी कड़वी बातें न करें जितनी उनमें से कुछ करते हैं। क्योंकि मैं दोहराता हूँ, यह उनका अपना देश ही है जो उन्हें वह पैसा देता है जिससे वे भारत में इतने सुख से रह पाते हैं। यदि किसी भी कारण से ये पैसा आना बंद हो जाए, तो इन पर्यटकों को अपने देशों में वापस जाना होगा और उस भागदौड़ भरी जिंदगी में फंसना होगा जिससे वे भागे हैं। और उन्हें बहुत जल्दी वापस जाना होगा, क्योंकि हर दिन की देरी उन्हें और भी ज्यादा भूखा बना देगी।

लेकिन हमारे पास एक अलग तरह के विदेशी पर्यटक भी हैं, जो मेजबान देश के सभी कानूनों को तोड़ना चाहते हैं और दूसरे देश के नागरिक होने के नाते परिणामों से बच निकलते हैं। मुझे यकीन है कि ये लोग अपने देश में कभी ऐसा व्यवहार करने के बारे में नहीं सोचेंगे जैसा कि उनमें से कुछ भारत में करते हैं। निस्संदेह, अपेक्षाकृत आसान जीवन, समय की कमी, और इस बात की संभावना कि वे दस में से नौ बार, बल्कि सौ में से निन्यानवे बार भी, बच निकलेंगे, उन्हें इस तरह व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। वे यह नहीं समझते (या परवाह नहीं करते) कि उनका यह कृत्य उन पर ही, भारत आने की इच्छा रखने वाले उनके अपने देशवासियों पर, और अंत में मुझ जैसे दुर्भाग्यशाली लोगों पर उल्टा पड़ता है जिन्होंने भारत में रहने और इसे अपना घर बनाने का फैसला किया है। ऐसे मनमानी भरे व्यवहार के कारण, हमें भी उनके साथ अवांछित, भारत में रहने के लिए अनुपयुक्त, और जहाँ से भी हम या हमारे पूर्वज आए हैं, वहाँ वापस चले जाना चाहिए, जैसे हानिकारक श्वेत लोगों की श्रेणी में रखा जाता है। लापरवाह आगंतुकों द्वारा उत्पन्न तनावपूर्ण परिस्थितियों में, भारतीयों के

लिए यह भूल जाना स्वाभाविक है कि हममें से कुछ ऐसे प्रवासी, जिनके परिवार पीढ़ियों से इस भूमि पर बसे हुए हैं, अपने जीवन और अनुभव के बल पर उतने ही भारतीय हैं, बल्कि उनसे कहीं अधिक भारतीय हैं। हमने भारत को आज के स्वरूप में ढालने में योगदान दिया है।

लेकिन चलिए अब भारतीय मुद्दों पर लौटते हैं, जिनसे मैं कुछ भटक गया हूँ। मेहनतकश वर्ग के शायद ही किसी भारतीय पुरुष या महिला को अपनी उम्र या जन्मतिथि पता हो। इस घटना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, हालांकि मृत्यु की बरसी हमेशा मनाई जाती है। इसका कारण यह है कि मृतक की बरसी पर हर साल कई रस्में अदा करनी पड़ती हैं। हालांकि, जन्मदिन को कोई महत्व नहीं दिया जाता। लेकिन उच्च वर्गों के मामले में ऐसा नहीं है। उनके यहाँ न केवल जन्मतिथि दर्ज की जाती है, बल्कि समय भी मिनट तक लिखा जाता है। इसका कारण यह है कि मध्यम वर्ग या उससे ऊपर के प्रत्येक पुरुष और महिला के लिए कुंडली बनवाना अनिवार्य है। माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों के लिए कुंडली बनवाएं, और भारत में कुंडली बनाकर अच्छी कमाई करने वाले ज्योतिषियों को सही कुंडली बनाने के लिए जन्म के समय और स्थान की सटीक जानकारी होना जरूरी है।

हमारे देश के लिए एक अभिशाप मानी जा सकने वाली बात जाति व्यवस्था है, जिसे आजादी के समय से ही सरकार ने जड़ से मिटाने की पूरी कोशिश की है और आज भी कर रही है, हालांकि इसमें उसे बहुत कम सफलता मिली है। यह व्यवस्था केवल हिंदुओं पर लागू होती है, इस विशाल देश में रहने वाले अन्य समुदायों पर नहीं। सरल शब्दों में इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक जीवित हिंदू, चाहे वह पुरुष हो, स्त्री हो या बच्चा, हिंदू समुदाय को बनाने वाली असंख्य जातियों में से किसी एक से संबंधित होना चाहिए। वे किसी भी जाति के हों, वे उस जाति के माता-पिता से जन्म लेने के कारण ही उस जाति के होते हैं।

कोई भी व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में अपनी जाति नहीं बदल सकता। चाहे वह कितना भी गुण-संपन्न हो या कितनी भी उपलब्धियाँ हासिल कर ले, वह कभी भी उच्च जाति में पदोन्नत नहीं हो सकता। वह उसी जाति का है क्योंकि उसके माता-पिता उसी जाति के थे, उनसे पहले उसके दादा-दादी, उनसे पहले उसके परदादा-परदादी, और इसी तरह आगे भी। उसकी जाति ब्रह्मांड के नियमों की तरह अटल है। इनमें से कुछ जाति वर्गीकरण व्यक्ति के व्यवसाय पर निर्भर करते हैं। यह स्पष्ट है कि

उसके पिता, दादा आदि ने भी उससे पहले वही व्यवसाय किया होगा।

उदाहरण के लिए, सफाईकर्मी, जैसा कि उन्हें कहा जाता है, जाति व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर हैं। मोची, जिन्हें 'क्लकलर' कहा जाता है, उनसे थोड़ा ऊपर हैं, और इसी तरह आगे बढ़ते हुए योद्धा जाति और सबसे उच्च श्रेणी, पुरोहित या ब्राह्मण तक पहुंचते हैं।

जाति व्यवस्था किस प्रकार कार्य करती है, इसका अंदाजा लगाने के लिए, मैं आपको एक वास्तविक उदाहरण देता हूँ। मेरे गृहनगर बैंगलोर से लगभग चौदह मील दक्षिण में बैनरघट्टा नामक एक जंगली और पहाड़ी इलाका है, जहाँ मेरा एक फार्महाउस है जिसमें एक सुसज्जित घर, एक पत्थर से बना कुआँ और पाँच एकड़ जमीन है, जिसे मैंने 10,000 रुपये (लगभग £556) से कम में खरीदा था। इस फार्महाउस से आधा मील दूर दो बस्तियाँ हैं। एक का नाम संपिगेहल्ली है और दूसरी का नाम बायराप्पनहल्ली है। प्रत्येक में 200 से कम घर हैं। इनमें से लगभग दो-तिहाई इमारतें ईंट और मिट्टी की बनी हैं, और शेष एक-तिहाई घास-फूस की झोपड़ियाँ हैं। प्रत्येक बस्ती की आबादी 1,000 से कम है। फिर भी, इन दोनों बस्तियों में कम से कम सात जातियाँ हैं। इनमें ब्राह्मण और लिंगायत सर्वोच्च स्थान पर हैं; इसके बाद वकालगिरि आते हैं, और फिर कुरुबा, मालोले, वड्डार और मदीगोल आते हैं।

सरकार ने दोनों जगहों पर सभी निवासियों के उपयोग के लिए कुएँ बनवाए हैं। लेकिन क्या आपको लगता है कि हर किसी को पानी निकालने की अनुमति है? बिलकुल नहीं। निचली जातियों को सख्ती से रोका गया है। संयोगवश, मुझे भी पानी निकालने से मना किया गया है, जबकि मैं हिंदू नहीं हूँ और किसी जाति से संबंध नहीं रखता। कारण यह है कि मैं गोमांस खाता हूँ। गोमांस खाने वाले के रूप में, मुझे मनुष्य की सबसे निचली श्रेणी का माना जाता है, अगर संभव हो तो मदीगोल से भी नीचा। क्या गाय पवित्र पशु नहीं है? और मैं उसे खाने की हिम्मत करता हूँ।

फिर, ज़ाहिर है, पुरुष कभी पानी नहीं भरते। घर में ऐसा काम पति के लिए, जो घर का मुखिया होता है, अशोभनीय समझा जाता है। गाँव के कुएँ पर केवल महिलाएँ ही जाती हैं। फिर भी, यदि किसी निम्न जाति की महिला को पानी की आवश्यकता हो, तो वह घड़ा लेकर कुएँ पर जा सकती है, लेकिन वह इससे अधिक कुछ नहीं कर सकती। उसे तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कोई उच्च जाति की महिला न आ जाए; तब वह उस महिला से अपने लिए एक घड़ा पानी भरने की कृपा करने का

अनुरोध कर सकती है। यदि महिला ऐसा करती है, तो अच्छी बात है। यदि महिला बहुत जल्दी में हो और समय न निकाल पाए, तो निम्न जाति की महिला को तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कोई उच्च जाति की गृहिणी, जिसके पास समय हो और जो कृपा करके उसकी मदद करे, उसके लिए पानी न भर दे।

मेरे फार्महाउस में काम करने वाले नौकरों में से एक का नाम रामैया है। वह एक बूढ़ा आदमी है और मदीगोल जाति का है। वह अपने बेटे, बहू और दो पोते-पोतियों के साथ बायराप्पनहल्ली गांव की एक झोपड़ी में रहता है। एक रात भयंकर तूफान आया, तेज हवाएं चलीं और मूसलाधार बारिश हुई। आधी रात के करीब रामैया की झोपड़ी गिर गई। क्या आपको लगता है कि परिवार अपने किसी पड़ोसी की झोपड़ी या घर में शरण ले सकता था? नहीं! वे मदीगोल थे, यानी सबसे नीची जाति के! इसलिए रामैया, उसका बेटा, बहू और पोते-पोती पूरी रात अपनी गिरी हुई झोपड़ी के मलबे के बीच मूसलाधार बारिश में बैठे रहे और अगले दिन दोपहर तक वहीं बैठे रहे, तब तक सूरज की रोशनी से वे और जमीन पर बिखरा हुआ फूस थोड़ा सूख चुका था। फिर वे रात होने से पहले अपनी झोपड़ी का जितना हिस्सा बचा सकते थे, उसे फिर से बनाने में जुट गए। उनके पास कोई और विकल्प नहीं था अगर उन्हें एक और रात खुले में बैठने से बचना था।

संपिगेहल्ली और बायराप्पनहल्ली की बस्तियाँ आज भी मौजूद हैं और ये रीति-रिवाज आज भी जारी हैं। सरकार ने इन्हें मिटाने के लिए बहुत प्रयास किए हैं। लेकिन ये रीति-रिवाज सदियों पुराने हैं और जैसा कि सर्वविदित है, पुरानी आदतें आसानी से नहीं छूटतीं, विशेष रूप से जातिगत आदत, क्योंकि उच्च जाति के प्रत्येक व्यक्ति को अपने से नीचे की सभी जातियों का शोषण करने का भरपूर अवसर मिलता है।

सरकार ने किसानों की मदद करने की कोशिश भी की है। उसने कई किसानों को प्रति व्यक्ति दो एकड़ जमीन, एक हल और दो मवेशी दिए हैं, साथ ही झोपड़ी बनाने के लिए कर्ज भी दिया है। अक्सर ऐसा होता है कि ये उपहार पाने वाले लोग हल और बैल मिलने के एक महीने के भीतर ही बेच देते हैं और जमीन को भी बेचने या गिरवी रखने की कोशिश करते हैं। हालांकि, यह कुछ ज्यादा ही हो जाता है, और किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं होती कि वह जमीन खरीदकर इस आखिरी सौदे को पूरा करे।

किसानों को अपनी ज़मीनों के मालिकाना हक के दस्तावेज़ गिरवी रखकर बैंकों

से उदार ऋण लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। इस पैसे का उद्देश्य कुएँ खोदकर, खेतों में खाद डालकर आदि कार्यों द्वारा ज़मीन को कृषि योग्य बनाना है। ऋण पर ब्याज दर बहुत कम है, यह दस वर्षों के लिए है और इसे आसान किश्तों में चुकाया जा सकता है। लेकिन दस वर्ष बीत जाते हैं और न तो कोई किश्त, चाहे आसान हो या मुश्किल, चुकाई जाती है और न ही ब्याज। न तो ज़मीनों में खाद डाली जाती है, न ही उन्हें विकसित किया जाता है, न ही कुएँ खोदे जाते हैं। किसान ने पैसा अपनी बेटी के दहेज और शादी पर या खुद मौज-मस्ती में खर्च कर दिया है। बैंकों के लॉकर लोगों के मालिकाना हक के दस्तावेज़ों से भरे पड़े हैं और बैंक सोच रहे हैं कि वे इनका क्या करेंगे।

भारत में संगठित अपराध बहुत कम होते हैं। हत्याएं तो आम हैं, लेकिन आमतौर पर इनके पीछे बेवफाई, ईर्ष्या या जमीन विवाद जैसे कारण होते हैं। आत्महत्याएं भी आम हैं और लोग हर संभव कारण से आत्महत्या कर लेते हैं। यहां के लोग भावुक और चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं, और आत्महत्या अक्सर किसी साधारण सी रोजमर्रा की समस्या के बाद हो जाती है जिसे आसानी से हल किया जा सकता था।

अपराध की श्रेणी में जेब कतरना, छोटी-मोटी धोखाधड़ी और चोरी करना काफी नीचे आते हैं। आखिरी दो श्रेणियों में तो कोई सीमा ही नहीं है; यह मान लिया जाता है कि अगर आपके पड़ोसी को मौका मिला तो वह आपको धोखा देगा, बशर्ते आपने उसे पहले धोखा देने में चतुराई न दिखाई हो।

कुल मिलाकर, अमीर वर्ग बेहद अमीर है और गरीब वर्ग बेहद गरीब। इन दोनों चरम सीमाओं के बीच एक विशाल मध्यम वर्ग है, जो लगभग जनसंख्या का एक तिहाई हिस्सा है। बेहद गरीब लोग शेष दो तिहाई हैं, जबकि अमीर लोग पूरी जनसंख्या का एक छोटा सा अंश मात्र हैं। ये अमीर लोग—जमींदार, व्यवसायी, फिल्म सितारे आदि—बेहद गरीबों से बहुत कम संबंध रखते हैं और आमतौर पर उनके प्रति जरा भी सहानुभूति नहीं रखते। गरीब, जो जनसंख्या का बड़ा हिस्सा हैं, जीवन भर और पीढ़ियों से गरीब रहे हैं, क्योंकि उनके पूर्वज हमेशा से गरीब रहे हैं। 1947 में स्वतंत्रता से पहले, सैकड़ों वर्षों तक उन पर विदेशियों के साथ-साथ उनके अपने ही सगे-संबंधियों, जैसे महाराजाओं, सरदारों, राजकुमारों, जमींदारों, जमींदारों और साहूकारों द्वारा शासन और अत्याचार किया गया था। वे अपने अतीत को नकारते हैं,

अपने वर्तमान को बेहद खराब मानते हैं और अपने भविष्य को आशाहीन समझते हैं।

गरीबी, दुख और व्यापक निराशा की इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, हमें उन छोटी-मोटी खामियों और कमजोरियों पर ज्यादा सख्ती नहीं बरतनी चाहिए जो पीढ़ियों के शोषण और प्रबल हीन भावना का स्वाभाविक परिणाम हैं। आशा है कि वह समय आएगा जब भारत के लोग अंततः यह महसूस करेंगे कि वे एक स्वतंत्र राष्ट्र हैं, न कि केवल इसके बारे में बातें करते रहेंगे।

भारत एक खूबसूरत देश है, जहाँ अच्छे और मिलनसार लोग रहते हैं, जिनकी सराहना विदेशी लोग स्वयं से कहीं अधिक करते हैं। अधिकांश भारतीय राष्ट्रीयता के बजाय जाति, धर्म और समुदाय के संकीर्ण दृष्टिकोण में सोचते हैं। शासक उन्हें सुधारने और राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं, लेकिन उनके सामने एक कठिन चुनौती है। उन्हें कई प्राचीन रीति-रिवाजों और पूर्वाग्रहों को दूर करना है—जिनमें सबसे प्रमुख जाति व्यवस्था है—और स्वार्थी लोगों की भीड़ को हराना है। पुरानी आदतें आसानी से नहीं छूटतीं, और इस मामले में जाति व्यवस्था के पुराने डर को मिटाना विशेष रूप से कठिन है, क्योंकि लाखों उच्च जाति के लोग इसी से अपना जीवन यापन करते हैं और लाभ उठाते हैं, जैसे उनके पूर्वज अनगिनत पीढ़ियों से करते आ रहे हैं। यह स्वाभाविक ही है कि वे उस जीवनशैली को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं जो उनके लिए हर क्षेत्र में—रोजगार, आधिकारिक, सामाजिक, वित्तीय और घरेलू स्थिति में—लाभदायी रही है और आज भी है, केवल देश के सुधार के आदर्श को पूरा करने के लिए, जबकि वे भली-भांति जानते हैं कि जाति व्यवस्था के समाप्त होने पर उनकी स्थिति इतनी अच्छी नहीं रहेगी।

चार

कुछ भारतीय वन्यजीव अभयारण्य

मुझे उत्तरी भारत के पाँच वन्यजीव अभयारण्यों का दौरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन पाँचों अभयारण्यों और कई अन्य अभयारण्यों का निर्माण सरकार ने उपमहाद्वीप के कुछ सबसे उत्कृष्ट जानवरों को विलुप्त होने से बचाने के अंतिम प्रयास में किया है। इनमें एशियाई शेर शामिल है, जो केवल गुजरात राज्य के गिर वन में पाया जाता है, एक सींग वाला गैंडा जो देश के उत्तर-पूर्वी छोर पर असम राज्य और नेपाल में रहता है, भारतीय जंगली भैंस जो लगभग एक सींग वाले गैंडे के आसपास के क्षेत्रों में पाई जाती है, और दलदली हिरण, जिसे कभी-कभी बारह सींगों वाला हिरण भी कहा जाता है, क्योंकि इस शानदार जानवर के बारह सींग होते हैं, जिनमें से छह-छह सींग प्रत्येक सींग पर होते हैं।

मैंने अपने दो अमेरिकी मित्रों और एक कनाडाई मित्र के साथ पाँच अभयारण्यों का दौरा शुरू किया, और चूंकि मैं हर दिन की घटनाओं का रिकॉर्ड रख रहा था, इसलिए बेहतर होगा कि मैं तथ्यों को उसी रूप में प्रस्तुत करूं जैसे वे घटित हुए थे। मेरे लिए, यात्रा 3 मार्च, 1970 की सुबह बैंगलोर हवाई अड्डे से बॉम्बे के लिए उड़ान भरने के साथ शुरू हुई। यह एक सुगम और तेज़ उड़ान थी, जिसमें देखने लायक कुछ खास नहीं था। हम बेलगाम के ऊपर से उड़े और जल्द ही पुणे और बॉम्बे के बीच घाटों पर लगी कई जंगल की आग से उठता धुआँ दिखाई दिया।

ठीक डेढ़ घंटे बाद हम बॉम्बे के सांता क्रूज़ हवाई अड्डे पर उतरे, जहाँ से मैं टैक्सी से नटराज होटल गया, जो दल के अन्य सदस्यों के साथ निर्धारित मिलन स्थल था,

जिनका विमान हालांकि पंद्रह घंटे की देरी के बाद ही पहुंचा।

आखिरकार एक सुबह हम गुजरात राज्य के छोटे से हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए, जहाँ से हवाई यात्रियों को गिर के घने जंगल के बीचोंबीच ले जाया जाता है। हमने वहाँ एक विशाल वन लॉज में कमरे बुक किए थे, जहाँ आमतौर पर यात्रियों को ठहराया जाता है। विमान—एक शानदार ढंग से सजा हुआ डकोटा विमान, जो उड़ान भरने की बेहतरीन स्थिति में था—हमें अरब सागर की उस छोटी सी पट्टी के ऊपर से ले गया जो मुंबई शहर को सौराष्ट्र प्रायद्वीप से अलग करती है, जो गुजरात राज्य का पश्चिमी भाग है। हमने कई स्टीमर देखे और लहरों से डॉल्फ़िन के झुंडों को उछलते हुए देखा।

केशोद हवाई अड्डा तट से कुछ मील अंदर स्थित है। वहाँ हमें वह वैन मिली जो हमें शेरों के जंगल के बीचोंबीच स्थित 55 मील दूर सासन गिर बस्ती तक ले जाने वाली थी। रास्ते में हम वेरावल बंदरगाह से गुजरे, जहाँ प्राचीन सोमनाथ मंदिर स्थित है। यहाँ एक किंवदंती प्रचलित है कि जब मोहम्मद ग़ज़नी ने 1026 में इस मंदिर को नष्ट करने की योजना बनाई, तो दो हज़ार ब्राह्मणों ने गंगा नदी से लाया गया पवित्र जल मूर्तियों पर उंडेला और दिन-रात फूल चढ़ाए, ताकि देवताओं की कृपा प्राप्त हो और विपत्ति टल जाए। मोहम्मद ग़ज़नी कभी भी मंदिर को नष्ट नहीं कर सका।

सड़क सूखी और धूल भरी थी, और जब हम जंगल पहुँचे तो वह भी उतना ही सूखा, खुला और बबूल के पेड़ों से भरा हुआ था, जिनमें बौने सागौन के पेड़ भी थे और कांटेदार झाड़ियाँ भी बहुत कम थीं। सागौन के पेड़ों को छोड़कर, पूरा दृश्य अफ्रीका की याद दिलाता था।

वन में बने इस लॉज को भव्य नाम 'गेस्ट हाउस' दिया गया था। यह आरामदायक ढंग से सुसज्जित था और खानसम्मा (रसोइया-बटलर-टेबलबॉय) ने स्वागतपूर्ण भोजन परोसा। हमें वन विभाग के अधिकारी अत्यंत विनम्र और सहयोगी लगे।

जिसे आम तौर पर 'शेरों का शो' कहा जाता है, उसका आयोजन उस शाम पांच बजे किया गया था। लगभग आठ मील दूर एक जीवित भैंस को चारा बनाकर बांधा गया था और आसपास मौजूद शेरों के झुंड को वास्तव में कनिष्ठ वन अधिकारियों द्वारा बुलाया गया था, जिनका पद दक्षिण भारत के वन रक्षकों के बराबर था, लेकिन गिर में उन्हें शिकारी या चौकीदार के नाम से जाना जाता था। उनमें से कई काफी उम्रदराज हैं

और वन विभाग में तब से कार्यरत हैं जब गिर वन जूनागढ़ राज्य का हिस्सा था और उस पर एक मुस्लिम राजकुमार का शासन था। भारत द्वारा उसके क्षेत्रों पर कब्जा करने के बाद वह राजकुमार पाकिस्तान भाग गया, और इस तरह गिर वन गुजरात राज्य के सौराष्ट्र प्रांत का हिस्सा बन गया। इन शिकारियों और चौकीदारों का तबादला गुजरात सरकार में कर दिया गया, लेकिन उनमें से कई आज भी अपनी वर्दी पर पीतल से जड़े J. F. (जूनागढ़ वनों के लिए) अक्षर गर्व से प्रदर्शित करते हैं।

वैसे तो, शेरों द्वारा भैंस के शिकार को मारते हुए देखने की अनुमति किसी भी आगंतुक को नहीं है। अधिकारियों का मानना है कि इससे जानवरों को मारने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। लेकिन शिकार को मारने के बाद शेरों को उसे खाते हुए देखने में कोई आपत्ति नहीं है। शिकार की कीमत 150 रुपये है, और स्टिल या सिने कैमरे इस्तेमाल करने के लिए भी शुल्क लगता है।

शिकारी और चौकीदारों को जंगली शेरों को पुकारते देखना वाकई दिलचस्प होता है। आमतौर पर दो लोग मौजूद होते हैं, और वे अपने मुंह से 'खिक! खिक! खिक!' की आवाज़ निकालते हैं, जिसके बाद वे अपने होंठों से 'क्रू! क्रू! क्रू!' की आवाज़ करते हैं। जंगली शेर इन पुकारों का जवाब देते हुए दिखाई देते हैं, बशर्ते वे पुकारने वाले को पहचान न पाएं और वास्तव में पुकारने वाले के काफी करीब आ जाएं।

सुरक्षा के लिहाज़ से, पहरेदारों के पास .12 बोर की सिंगल बैरल वाली बंदूकें थीं, जिनमें छर्रे भरे हुए थे। मैंने शेरों को बुलाने वाले आदमियों के हथियार देखे और पाया कि वे उतने ही पुराने थे जितने कि वे खुद, यकीनन पुराने जूनागढ़ के जंगलों के ज़माने के। फिर मैंने उन आदमियों से पूछा कि वे ये हथियार क्यों रखते हैं, तो उनमें से बड़े ने जवाब दिया कि कभी-कभी, हालांकि बहुत कम ही, जवान शेर को कैमरे लिए बड़ी संख्या में मौजूद दर्शक पसंद नहीं आते, जो उसके और झुंड के बाकी सदस्यों के खाने के दौरान इधर-उधर घूमते रहते हैं। तब वह जानवर आक्रामक हो जाता है, गुर्राने लगता है और बाकी झुंड को उत्तेजित कर देता है। फिर कुछ भी हो सकता है।

'मैं बचपन से ही शेरों से निपटता आ रहा हूँ, साहब,' उन्होंने हिंदुस्तानी से कहा, 'मुझसे पहले मेरे पिता, उनके पिता और उनसे पहले उनके पिता भी। साहब, हमेशा पूंछ पर नज़र रखें, फिर आँखों पर। और जानवर की हर आवाज़ पर ध्यान दें। जब पूंछ फड़कने लगे और पीठ से ऊपर उठने लगे, जब उसकी बड़ी-बड़ी हरी आँखें गोल न रहें

और आधी बंद होने लगें, जब उसकी धीमी सी आवाज़—या शायद वह कोई आवाज़ न करे, या शायद वह सिर्फ़ गुर्रा रहा हो—गड़गड़ाहट में बदल जाए, तो समझ लीजिए कि वह आप पर हमला करने वाला है। तब अपनी जान बचाकर भागें, अगर आपको लगता है कि आप भाग सकते हैं। वैसे तो यह बेकार होगा, क्योंकि आप ज़्यादा दूर नहीं भाग पाएंगे। अगर इनमें से कुछ भी न हो, तो आप सुरक्षित हैं, भले ही यह सिर्फ़ कुछ पल के लिए ही हो। आप कभी नहीं बता सकते कि ये शैतान लोग कब अचानक क्रोधित हो जाएँ। आपको हमेशा देखते रहना चाहिए, देखते रहना चाहिए, देखते रहना चाहिए। साहब, पूंछ पर और उन बड़ी-बड़ी हरी आँखों पर!'

ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन तोप और उसमें भरी छर्रों का उद्देश्य आवश्यकता पड़ने पर हवा में गोली चलाना था, न कि किसी उत्तेजित जानवर पर गोली चलाना। मेरे मुखबिर ने बताया कि गोली की आवाज़ से जानवर हमेशा शांत हो जाता था। व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि इन पुरानी तोपों का मुख्य उद्देश्य उन्हें चलाने वालों का मनोबल बढ़ाना था।

जब हम शाम पांच बजे के कुछ देर बाद वहाँ पहुँचे, तो छह शेरों का एक झुंड शिकार पर बैठा था। इसमें दो वयस्क शेरनियाँ और चार अधेड़ शावक थे, जिनमें से प्रत्येक शेरनी के दो-दो शावक थे। बाघों और अधिकांश अन्य जानवरों के विपरीत, सभी शेर आपस में दोस्ताना व्यवहार कर रहे थे और उनमें किसी तरह के झगड़े के कोई संकेत नहीं थे।

जैसे-जैसे हमारा साहस बढ़ता गया, हम और करीब जाते गए, यहाँ तक कि हम दावत उड़ा रहे जानवरों से तीस फीट की दूरी पर पहुँच गए। मेरे दोस्त, जिनके पास कैमरे थे, जितनी जल्दी हो सके तस्वीरें खींच रहे थे। एक समय शेरनियों में से एक, शायद हमारी नज़दीकी से नाराज़ होकर, शिकार को पिछले पैर से पकड़कर इतनी ज़ोर से खींचने लगी कि रस्सी टूट गई। वह मरे हुए भैंसे को घसीटकर ले जाने लगी।

फिर एक अद्भुत घटना घटी। दोनों चौकीदार आगे दौड़े, मरे हुए जानवर को उसके अगले पैर से पकड़ लिया और उसे उल्टी दिशा में खींचने लगे। यह एक अविश्वसनीय दृश्य था। दो इंसानों और एक जंगली शेरनी के बीच रस्साकशी, पाँच अन्य शेर और दर्शकों की भीड़ के बीच। अगर किसी ने मुझे बताया होता तो मैं कभी विश्वास नहीं करता। शेरनी के सामने वनकर्मी बेबस थे, और शेरनी उन्हें भी शिकार के साथ घसीटने लगी। फिर, आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने जिस पैर को खींच रहे थे उसे

छोड़ दिया और पूरी ताकत से चिल्लाते हुए शेरनी की ओर दौड़े। शेरनी ने अपनी पकड़ छोड़ दी, पीछे की ओर छलांग लगाई और दोनों आदमियों को उदास निगाहों से देखने के लिए सीधी खड़ी हो गई।

बाकी पाँच शेर उत्सुकता से यह दृश्य देख रहे थे। हम भी विस्मय से देखते रहे। जल्दी से, और काफी मशक्कत के बाद, दोनों आदमियों ने चारे को वापस उसी पेड़ पर खींचकर रख दिया जहाँ उसे बाँधा गया था, और उसे दोबारा बाँध दिया। तब गिर के शेरों की क्रूरता के प्रति मेरा सम्मान खत्म हो गया। मानो कुछ हुआ ही न हो, सभी शेर अपने भोजन पर लौट गए, और एक घंटे से भी कम समय में भैंस का केवल कंकाल ही बचा था।

मांस से तृप्त हो चुके शावकों ने हमारी ओर रुचि दिखाना शुरू कर दिया। उनकी माताएँ भी तृप्त होकर करवट बदलकर सो गईं। पश्चिम क्षितिज में सूर्य ढल रहा था।

पहली बार माता-पिता के दखल से मुक्त होकर, दो शावक चंचल भाव से हमारी ओर दौड़े और म्याऊं जैसी कर्कश आवाजें निकालने लगे। स्पष्टतः वे गुर्रा रहे थे, जैसा कि शेर के शावक आमतौर पर करते हैं।

'पीछे हटिए साहब! पीछे हटिए!' बड़े चौकीदार ने धीमी आवाज़ में चेतावनी दी और साथ ही हाथ से इशारा करते हुए हमें पीछे हटने को कहा। शावकों के आने पर उनकी अचानक चिंता देखकर हम थोड़े हैरान हुए, फिर भी हमने उनकी बात मान ली।

उसने स्पष्टीकरण देते हुए कहा, 'अगर माँ जाग गई और उन्हें तुम्हारे पास देख लिया, तो वह सोचेगी कि तुम उन्हें नुकसान पहुँचाने वाले हो। फिर तो हंगामा मच जाएगा। तुम्हें पता चल जाएगा कि शैतान असल में कैसे होते हैं।'

कुछ ही देर में दोनों शेरनियां जाग उठीं और शिकार के अवशेषों के पास लौट आईं, जो जैसा कि मैंने बताया, अब मुख्य रूप से हड्डियों से बने थे। दर्शकों में से एक, ऑस्ट्रिया का एक पेशेवर फोटोग्राफर, चौकीदारों से शेरनियों को कुछ देर के लिए पीछे हटाने को कहा, जबकि उसने उस पेड़ की एक शाखा पर माइक्रोफोन लटका दिया जिसके नीचे हड्डियां पड़ी थीं। फिर उसने हड्डियों को छेड़ती शेरनियों की तस्वीरें खींचीं और साथ ही आवाज़ें रिकॉर्ड कर लीं।

लगभग इसी समय एक शेरनी का अपने एक शावक से हल्का-फुल्का झगड़ा हो गया, जो उसे परेशान कर रहा था। ऑस्ट्रियाई व्यक्ति ने इसे भी रिकॉर्ड कर लिया। फिर उसने टेप को दोबारा चलाया। अपनी ही दहाड़ और गुर्राहट सुनकर शेरों के चेहरों

के भाव देखना बहुत मनोरंजक था।

अचानक शेरों का झुंड खाना बंद कर दिया। शावकों समेत सभी शेरों ने एक साथ कुछ गज दूर बहते नाले की ओर सिर घुमा लिए। हमें कुछ दिखाई नहीं दिया, कुछ सुनाई नहीं दिया। अगले ही पल, चुपचाप, सागौन और बबूल के तनों के बीच से, अपनी जवानी में एक शानदार शेर निकला, उसकी गर्दन के बाल उसके अफ्रीकी चचेरे भाई से थोड़े ही कम घने थे। इतनी दूरी से और धुंधली रोशनी में भी, हम उसके अगले पैरों की कोहनियों से निकले बालों के गुच्छे देख सकते थे।

हमारे चौकीदार घबरा गए। वे अपने समूह से पीछे हट गए और हमें अपने पीछे आने का इशारा किया। हमने वैसा ही किया और पचास गज पीछे हटकर उस वैन तक पहुँचे जो हमारा इंतज़ार कर रही थी। हम अंदर बैठ गए।

'यह तो दुष्ट शेर है, साहब,' बूढ़े वनपाल ने कहा। 'जब वह आता है, तो शेरों का तमाशा तुरंत बंद करना पड़ता है। क्योंकि वह न तो दर्शकों को बर्दाश्त करता है और न ही गाड़ियों या इंसानों का लिहाज करता है। देखिए, दूसरे शेर भी उससे डरते हैं।'

हमने मुड़कर देखा तो छहों जानवर इधर-उधर बिखर गए। तभी एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी जब नया जानवर हड्डियों के पास आया, उन्हें सूंघा और गुस्से भरी निगाहों से हमारी ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया।

रोशनी कम थी, लेकिन दल के फोटोग्राफर शेर की तस्वीर लेने के लिए वहीं रुकना चाहते थे। हालांकि, दोनों चौकीदार अड़े हुए थे। वहां रुकना मुसीबत मोल लेना था, बल्कि त्रासदी को न्योता देना था। उन्होंने ड्राइवर से गाड़ी स्टार्ट करके चले जाने का आग्रह किया। जब हमने शिकायत की तो बड़े चौकीदार ने जवाब दिया, 'साहिब, हम आप सबकी सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। वह जानवर साक्षात शैतान है। अगर उसने हमला करने का मन बना लिया होता, तो हमारे पास मौजूद ये प्राचीन हथियार उसे रोक नहीं पाते। खुद अल्लाह ही जानता है कि कारतूस चलेंगे या नहीं, क्योंकि वे बहुत पुराने हैं। जब वह दिखाई देता है तो हम उससे काफी दूर रहते हैं। बाकी शेर भी ऐसा ही करते हैं, जैसा कि आप खुद देख सकते हैं।'

शाम ढल रही थी जब हमने उस खूंखार शेर को पूरी तरह से नियंत्रण में छोड़कर वापसी की यात्रा शुरू की। लगभग एक मील आगे हमें कुछ चित्तीदार हिरण, कुछ देर से आने वाले मोर और एक चार सींग वाला मृग दिखाई दिया और फिर, जैसे ही अंधेरा इतना गहरा होने लगा कि कुछ दिखाई न दे, हमें रास्ते से कुछ ही कदम दूर एक शेर

की दहाड़ सुनाई दी।

बड़े चौकीदार ने वैन के ड्राइवर को रुकने का इशारा किया, फिर अपने हाथ से धातु के दरवाजे पर जोर से मारा और मुंह से 'खिक-खिक!' और होंठों से 'क्रू-क्रू!' की आवाज निकाली। कुछ ही मिनटों में, अधेड़ उम्र का एक शेर अंधेरे से बाहर निकला, रुका और वैन को उम्मीद भरी निगाहों से देखने लगा। साफ था कि वह जिंदा शिकार की तलाश में था। हमने कुछ मिनट तक उसे देखा, फिर गाड़ी से बाहर निकल गए, जिसके बाद शेर अंधेरे में गायब हो गया।

गेस्ट हाउस लौटते ही हमारा और भी रोमांच इंतजार कर रहा था। शेर के शो से संतुष्ट न होकर, प्रभारी रेंज ऑफिसर ने पैंथर का शो भी आयोजित किया था। रात के खाने के बाद हमें इस शो को देखने के लिए आमंत्रित किया गया। इसके लिए हमें बंगले से झाड़ियों वाले जंगल से होते हुए लगभग 300 गज दूर एक जगह पर जाने वाले रास्ते पर चलना था। शाम को एक बकरी को खंभे से बांधकर एक पैंथर ने मार डाला था। ऐसा लगता था कि पैंथर उस जगह का नियमित आगंतुक था, क्योंकि उसे लगभग हर दूसरे दिन आसानी से भोजन मिल जाता था ताकि आगंतुक उसे खाते हुए देख सकें। भैंस और शेरों के शो की तरह, दर्शकों को शिकार होते हुए देखने की अनुमति नहीं थी, लेकिन बकरी को मारने के बाद पैंथर को खाते हुए देखने में कोई बुराई नहीं थी। संयोग से, उस बकरी के लिए हमें लगभग 60 रुपये देने पड़े।

सब कुछ तैयार था। पैंथर ने कुछ देर पहले एक काली बकरी को मार डाला था, और फिर उसे भगा दिया गया था। मृत बकरी के पास बैठा एक चौकीदार बड़ी लाठी से उसे रोके हुए था। अंधेरा हो चुका था, इसलिए दृश्य छिपी हुई फ्लडलाइटों की हल्की रोशनी से जगमगा रहा था। जिस रास्ते पर हम चले, वह एक बड़े, गोलाकार लोहे की सलाखों वाले पिंजरे में जाता था, जो सर्कस में दिखने वाले पिंजरे जैसा था, लेकिन एक अंतर था। सर्कस में जानवर पिंजरे के अंदर होते हैं और दर्शक बाहर। यहाँ, हम पिंजरे के अंदर थे और पैंथर बाहर।

जब हम सब इकट्ठा हो गए, तो बड़ी लाठी लिए चौकीदार, जो पैंथर को शिकार से दूर रख रहा था, अपनी लाठी लेकर अपनी चौकी से उठा और हमारे साथ लोहे के पिंजरे में प्रवेश कर गया। फिर उसने अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया।

पैंथर इस पल का इंतज़ार कर रहा था। ज़ाहिर है, वह इस प्रक्रिया में माहिर था और शायद अक्सर मन ही मन सोचता होगा कि आखिर ये सब क्या है। शायद वह

समझदार था और सोचता होगा कि इंसान कितने मूर्ख हैं जो उसे खाते हुए देखने के लिए इतनी मेहनत करते हैं।

कुछ ही क्षणों में वह दौड़कर आया और बड़े चाव से बकरी पर झपटा। फ्लडलाइट्स की तीव्रता धीरे-धीरे बढ़ाई गई, और लगभग दस मिनट में पूरा दृश्य जगमगा उठा। पैंथर को इसका एहसास हुआ और वह शायद असहज महसूस कर रहा था, क्योंकि उसने बकरी को खींचकर ले जाने की एक-दो कोशिशें कीं। लेकिन रस्सी मजबूती से बंधी रही, और अंततः पैंथर ने तेज फ्लडलाइट में भोजन करने का निश्चय कर लिया।

एक नीरस प्रदर्शन होने की संभावना थी, लेकिन सौभाग्यवश एक लकड़बग्घे के अचानक आगमन से उसका अंत हो गया। शायद इस जानवर ने सोचा कि उसे भी अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलना चाहिए। वह चुपके से पीछे से आया, लेकिन पैंथर ने उसे देख लिया। एक गुर्राहट के साथ पैंथर ने अपना शिकार छोड़कर लकड़बग्घे का पीछा किया। लकड़बग्घा पैंथर के पीछे भागता हुआ तेजी से निकल गया और रोशनी मंद कर दी गई।

कुछ ही देर में पैंथर लौट आया, और थोड़ी देर बाद लकड़बग्घा भी। एक और ज़ोरदार गुर्राहट और एक और पीछा। पैंथर वापस आया, उसके पीछे लकड़बग्घा भी था, जो और भी साहसी होकर सामने आ गया। इस बार पैंथर ने खूब गुर्राया और घुरघुराया, और लकड़बग्घा चीखा, लेकिन उनके बीच कोई वास्तविक लड़ाई नहीं हुई। स्पष्ट था कि पैंथर को अपनी मनमानी नहीं करनी थी।

इसी बीच चौकीदार, जो इस बार एक नौजवान था और पहले भी कई बार इस सब से गुज़र चुका था और साफ़ तौर पर ऊब चुका था, उसे याद आया कि घर पर उसकी जवान पत्नी है और उसे लगा कि उसे उसकी ज़रूरत होगी। उसने ज़ोर से खांसा और ताली बजाई। उसी समय फ्लडलाइट्स बंद कर दी गईं।

पैंथर का शो समाप्त हो चुका था। अंधेरे में लोहे के पिंजरे से बाहर निकलने का रास्ता हमें मुश्किल से ही मिल रहा था, लेकिन आखिरकार हम आलीशान वन लॉज में वापस आ गए और वहाँ के बिस्तरों पर लगे फोम-रबर के गद्दों और तकियों का आनंद लिया।

आधी रात को मैं बरामदे में गया। मेरे साथी गहरी नींद में सो रहे थे। दूर से एक शेर की दहाड़ सुनाई दी। सामने की नीची पहाड़ियों से जवाब में कई दहाड़ों की गूंज

सुनाई दी: 'आउउउंग! आउउउंग! आउउंग! आउउंग! आउंग! आउंग! आउंग! आउंग! आउंग!' ये मनमोहक आवाज़ें धीरे-धीरे खामोशी में घुल गईं। मैं सोचने लगा कि क्या वह 'दुष्ट' शेर डरे हुए शेरों के झुंड को पुकार रहा था।

अगली सुबह छह बजे से पहले ही हम वैन से लगभग छह मील दूर स्थित एक जंगली झील की ओर रवाना हो गए और समय पर पहुँचकर पूर्व दिशा में घने जंगलों से ढकी पहाड़ियों पर उगते खूबसूरत सूर्योदय का नजारा देखा। ग्रीष्म ऋतु के मध्य में और भारत के शुष्क क्षेत्रों में होने के बावजूद सुबह सुहावनी ठंडी थी।

झील के किनारे एक चित्तीदार हिरण ने चुनौती भरी आवाज लगाई और कुछ ही क्षणों में हमने उसे झाड़ियों से बाहर निकलते और पानी पीने के लिए पास आते देखा। साफ पानी पर उगते सूरज की सुनहरी किरणों से बनी एक धुंधली आकृति उसकी परछाई की तरह दिख रही थी। लगभग बीस मोरों का एक झुंड एक के बाद एक उस चित्तीदार हिरण के पास तक आया, जहाँ वह अभी भी पानी पी रहा था, और उसी क्षण एक जादुई आवाज हवा में गूंज उठी। सड़क के उस पार एक नीची घाटी में एक शेर दहाड़ा और थोड़ी दूरी पर एक और शेर ने उसका जवाब दिया।

उन दहाड़ों को सुनकर एक सांभर हिरण ने दूर पहाड़ी की चोटी से अपनी चेतावनी भरी आवाज निकाली। मैं बहुत उत्साहित था, शायद अपने तीन विदेशी मित्रों से भी ज़्यादा। क्योंकि मैं बाघों की आदतों से परिचित हूँ जो शेरों से बिल्कुल अलग होती हैं, और शेरों की दहाड़ें मुझे मंत्रमुग्ध कर देती हैं। मैं आवाज़ की दिशा में पहाड़ी से नीचे भागा और मेरे मित्र भी मेरे पीछे-पीछे आए।

कुछ ही देर में हम एक रेतीली धारा के पास पहुँच गए। धारा के दूसरे किनारे की नरम मिट्टी पर बड़े-बड़े पदचिह्न स्पष्ट रूप से अंकित थे। और ये पदचिह्न किसी बाघ के नहीं थे—क्योंकि गिर के जंगल में बाघ नहीं पाए जाते। ये पदचिह्न शेर के थे।

हम तेज़ी से आगे बढ़े और ठीक समय पर हमने उस जानवर को झाड़ियों में छलांग लगाते और गायब होते देखा। ज़ाहिर है, उसे पता चल गया था कि हम अजनबी हैं, चौकीदार नहीं, जिनसे वह शायद परिचित था। शेर ने हमें जो कुछ पल दिए, उनमें हम उसकी गर्दन के बाल ठीक से नहीं देख पाए। वह शायद एक जवान जानवर था; निश्चित रूप से वह 'बुरा' शेर नहीं था, जो अच्छा ही हुआ।

जब हम कार तक वापस पहुँचे तब तक सूरज निकल चुका था। सड़क एक पहाड़ी के चारों ओर घूमती थी और हम नीचे पानी के एक विशाल क्षेत्र को देख पा रहे

थे। उस पर कई जगहों पर लकड़ी के लट्ठे जैसे कुछ तैर रहे थे, जिन्हें मैंने मगरमच्छ के रूप में पहचाना। फिर हमने वापसी की यात्रा शुरू की, रास्ते में हमें कई चित्तीदार हिरण और मोर दिखाई दिए। साथ ही जंगली सूअरों का एक छोटा झुंड भी दिखा।

जंगल का रास्ता कई छोटे-छोटे गांवों से होकर गुजरता था, जहां मालधारी समुदाय के लोग रहते थे। मालधारी इस क्षेत्र में रहने वाले एक चरवाहा समुदाय का नाम है, जो अपने मवेशियों को चराने के लिए गिर के जंगल में लाते हैं। ये लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं। पुरुष ढीली-ढाली जैकेट और बड़ी-बड़ी पतलून, रंगीन कपड़े की पगड़ी या हेडबैंड, बड़े-बड़े गहनों से जड़ा धातु का हार, कभी-कभी हड्डी की चूड़ियाँ पहनते हैं और हमेशा लकड़ी की लाठियाँ लिए रहते हैं। महिलाएं भारतीय खानाबदोशों की तरह कपड़े पहनती हैं, जिनमें चमकीली साड़ियाँ, चुस्त-दुरुस्त जैकेट होती हैं, जिनसे उनका आकर्षक शरीर निखरता है, और चांदी के हार, चूड़ियाँ, झुमके, मोती और नकली हाथीदांत के गहने होते हैं। वे बेहद खूबसूरत होती हैं। बच्चे अपने बड़ों की छोटी-छोटी प्रतिकृतियाँ लगते हैं, लेकिन उनसे भी ज्यादा चमकीले कपड़े पहने होते हैं।

पुराने समय में गिर के जंगल में पानी और घास प्रचुर मात्रा में थे। जानवर भी बहुतायत में थे। शेरों को उनका प्राकृतिक शिकार मिल जाता था और वे मालधारियों के पालतू पशुओं को खाने में ज्यादा रुचि नहीं रखते थे। मालधारी भैंसों की एक प्रजाति होती थी, जो आकार में बड़ी और घुमावदार सींगों वाली होती थी, जिसे किसान ज्यादातर सफलतापूर्वक बचा लेते थे।

मालधारी लोग गरीब थे, लेकिन जंगल में अपनी भैंसों के साथ सुखी जीवन व्यतीत करते थे। वे भैंसों का दूध और दूध उत्पाद स्थानीय साहूकारों को बेचते थे, जिनसे उन्होंने कर्ज लिया हुआ था। लेकिन पुराने जूनागढ़ राज्य के पतन के साथ ही अप्रत्याशित समस्याएं उत्पन्न हो गईं। सौराष्ट्र और कच्छ के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में मवेशी जंगल में लाए जाने लगे, जिनकी संख्या प्रति वर्ष लगभग 48,000 थी। इसके अतिरिक्त, स्थानीय मालधारियों के पास 21,000 मवेशी थे, जो दक्षिण भारत के जंगलों में पाए जाने वाले मवेशी बस्तियों के समान 129 छोटे-छोटे गांवों में बसे हुए थे। गिर का जंगल तब एक विशाल मवेशी शिविर बन गया, जिससे पानी और चरागाह की भारी कमी हो गई, जिसके लिए मालधारियों को अब लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी। मवेशियों की संख्या में निरंतर वृद्धि के साथ-साथ मवेशियों से संबंधित बीमारियां भी फैलने लगीं, जो वन्य जीवों में भी फैल गईं। चरागाह की कमी ने वन्य

जीवों की संख्या में भी कमी ला दी, और इसी कारण अंधाधुंध शिकार में भी वृद्धि हुई।

इन सभी बदलावों का असर शेरों पर भी पड़ा; वे मालधारियों के मवेशियों और भैंसों को पहले से कहीं ज़्यादा संख्या में मारने लगे। महंगाई बढ़ने से मालधारी और भी गरीब हो गए; वे अपने पशुओं को खिलाने के लिए कपास और मूंगफली की खली भी नहीं खरीद पाते थे। नगरपालिका करों के कारण उनके दूध उत्पादों की बिक्री मुश्किल हो गई और शहरी न होने के कारण उन्हें मक्खन और घी की बिक्री पर मिलने वाली कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता था।

हताशा में, मालधारी, जो आम तौर पर बंदूकें प्राप्त करने में असमर्थ थे, ने अपने पशुओं को मारने वाले शेरों को मारने के लिए मारे गए पशुओं के मांस में जहर मिलाना शुरू कर दिया। जब शेर दूसरी बार भोजन करने लौटे, तो उन्होंने जहर खा लिया और दर्दनाक मौत मर गए।

इसी तरह की घटनाओं के कारण दक्षिण भारत में बाघ, तेंदुआ और यहाँ तक कि लकड़बग्घे भी लगभग विलुप्त हो चुके हैं। लेकिन गिर में स्थिति और भी बदतर है; क्योंकि जहाँ बाघ और तेंदुआ लगभग हमेशा अकेले शिकार करते हैं और इसलिए एक-एक करके ज़हर से मारे जाते हैं, वहीं गिर के शेर, अपने अफ्रीकी रिश्तेदारों की तरह, झुंड में शिकार करते हैं और भोजन करते हैं और इस प्रकार बड़ी संख्या में ज़हर से मारे जाते हैं। हमें बताया गया कि हाल ही में नौ शेरों को इसी तरह ज़हर दिया गया था। यह चौंकाने वाली खबर थी, यह देखते हुए कि गिर के शेर पूरे एशिया में अपनी प्रजाति के एकमात्र प्रतिनिधि हैं।

गिर जंगल के चारों ओर खेती-बाड़ी के कारण अतिक्रमण हो चुका है, जिसके चलते अब इस जंगल का क्षेत्रफल मात्र 1,300 वर्ग किलोमीटर या 576 वर्ग मील रह गया है। 1955 में पैरों के निशान नापकर और गिनकर इस जंगल में बचे हुए शेरों की जनगणना की गई, जिसमें लगभग 247 शेर पाए गए। 1968 में हुई अगली जनगणना में केवल 177 शेर ही बचे, यानी लगभग चालीस प्रतिशत की कमी आई। गिर शेरों का भविष्य सचमुच खतरे में है।

एक शताब्दी पूर्व, गिर के जंगलों का क्षेत्रफल वर्तमान क्षेत्रफल से तीन गुना अधिक था। हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि अभयारण्य के आसपास की 63 प्रतिशत भूमि पर खेती हो रही है। जंगलों की कटाई और मवेशियों की बढ़ती संख्या के साथ-साथ शिकारियों की मौजूदगी और शिकार किए गए जानवरों को जहर देने के

कारण, गिर के महान शेर विलुप्त होने के कगार पर हैं।

अब अनुमान है कि अभयारण्य में वन्यजीवों की आबादी अपनी मूल संख्या के पच्चीस प्रतिशत से भी कम रह गई है, जिसके कारण शेरों को भोजन के लिए लगभग पूरी तरह से मालधारी समुदाय के भैंसों पर निर्भर रहना पड़ता है। उनके लिए पर्याप्त भोजन प्राप्त करना बेहद मुश्किल हो गया है। हालांकि यह जानवर स्वभाव से रात्रिचर है, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों के कारण इसे दिन में शिकार करना पड़ता है क्योंकि मालधारी समुदाय सूर्यास्त के समय अपने पशुओं को बाड़े में बंद कर देता है।

उस सुबह वैन में जिन मालधारी बस्तियों से हम गुज़रे, वे छोटी-छोटी मिट्टी की झोपड़ियाँ थीं, जिनकी छतें लकड़ियों और पत्तों से बनी थीं। मवेशियों के लिए खाली जगह छोड़ते हुए, हर झोपड़ी के चारों ओर मज़बूत, ऊँची काँटेदार बाड़ लगी थी, जो अफ़्रीकी चरवाहों के काँटेदार बाड़ों की याद दिलाती थी, या कुछ जगहों पर पत्थर और मिट्टी की दीवारें थीं। वास्तव में, जंगल का पूरा नज़ारा अफ़्रीका के काँटेदार झाड़ियों वाले जंगलों जैसा था, सिवाय बीच-बीच में उगने वाले बौने सागौन के पेड़ों के।

यदि कोई शेर इन बाड़ों या दीवारों में से किसी एक को फांदकर भैंस को मार भी डाले, तो उसका प्रयास व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि वह अपने शिकार को स्वतंत्रता की बाधा के पार नहीं ले जा सकता। यदि कोई शेर जंगल में झुंड के किसी जानवर को मारने में सफल भी हो जाता है, तो आमतौर पर वह अधिकांश मांस खो देता है क्योंकि मालधारी चरवाहे मिलकर उसे भगा देते हैं ताकि उसकी खाल को बचा सकें।

वैसे, दक्षिण भारत में भी ऐसा ही होता है जब चरवाहे किसी बाघ या तेंदुआ को उसकी गाय से दूर भगा देते हैं, जिसे उसने अभी-अभी मारा होता है। कभी-कभी बाघ या तेंदुआ इस दखलंदाजी से नाराज होकर चरवाहे पर हमला कर देता है, उसे बुरी तरह घायल कर देता है, और कभी-कभी तो उसे मार भी डालता है। इसके चलते अक्सर बाघ या तेंदुआ आदमखोर बन जाता है। मुझे बताया गया कि गिर में भी ऐसा ही हुआ है, हालांकि बहुत कम। कभी-कभी शेर आदमियों को मारकर खा जाता है; तब उसे गोली मारनी पड़ती है।

अनुमान है कि अभयारण्य के भीतर मारे गए पालतू पशुओं में से पचास प्रतिशत शेरों द्वारा मारे जाते हैं और अभयारण्य के बाहर, यह आंकड़ा अस्सी प्रतिशत तक है। शेष पशुओं का शिकार पैंथर करते हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, इस क्षेत्र में बाघ नहीं हैं।

क्योंकि शेर को अक्सर अपने शिकार से वंचित कर दिया जाता है, या तो शिकार करने के तुरंत बाद या जब वह शव के पास लौटता है तो देखता है कि मालिक ने खाल उतार दी है, इसलिए शेर को मजबूरन उससे कहीं अधिक बार शिकार करना पड़ता है जितना कि अगर उसे मन भरकर खाने की छूट होती। आंकड़े बताते हैं कि 23 प्रतिशत शिकार बिल्कुल नहीं खाए जाते, जबकि 20 प्रतिशत शिकारों से शेर मुश्किल से 10 किलोग्राम मांस ही खा पाते हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के इस चक्र ने गिर वन के शेरों को मालधारियों के साथ संघर्ष में ला खड़ा किया है, जिन्होंने अभयारण्य में फैले 129 बाड़ों पर कब्जा कर रखा है, साथ ही हजारों आने-जाने वाले मवेशियों के मालिकों के साथ भी। क्रोधित चरवाहे ऐसे शेरों को गोली मारने या जहर देने से नहीं हिचकिचाते, अगर उन्हें पता न चले।

सरकार अभयारण्य के बाहर शेर द्वारा मारे गए जानवर के मालिक को मुआवजा देती है, लेकिन अभयारण्य के अंदर मारे गए जानवर के मामले में नहीं। यह पर्याप्त नहीं है। एशियाई शेरों की सुरक्षा के लिए मुख्य रूप से स्थापित इस अभयारण्य को अपने उचित कार्य करने और जिस उद्देश्य के लिए इसे स्थापित किया गया था, उसे पूरा करने की अनुमति नहीं दी जा रही है।

प्राकृतिक वन्य जीवों में से तीन-चौथाई विलुप्त हो चुके हैं। अभयारण्य की अधिकांश उपजाऊ घाटियों में खेती की जा चुकी है और खेती की एक निरंतर पट्टी ने अभयारण्य को लगभग दो भागों में बांट दिया है। पेड़ों की कटाई - मुख्य रूप से सागौन - जारी है, जबकि पालतू पशुओं की भीड़ नए पौधों को उगने से रोक रही है। अभयारण्य से प्रति वर्ष लगभग दो मिलियन किलोग्राम घास का चारा निकाला जाता है। अभयारण्य एक विक्षिप्त, कृत्रिम और अत्यधिक शोषित क्षेत्र में तब्दील हो गया है। बचे हुए कुछ एशियाई शेरों की उपस्थिति ने ही विश्वव्यापी रुचि जगाई है, लेकिन इस अंतिम समय में केवल भारत सरकार ही स्थिति को संभाल सकती है।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि केंद्र सरकार ने इस अवसर पर सकारात्मक कदम उठाते हुए गुजरात सरकार को 'गिर शेर अभयारण्य परियोजना' नामक एक योजना सौंपी है, जो जनवरी 1972 में शुरू हुई थी। गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमान नारायण ने दोहरे लक्ष्य निर्धारित किए थे, जिनमें से पहला उद्देश्य विशेष रूप से गिर के शेरों के साथ-साथ अन्य वन्यजीवों को अवैध शिकार, जहर और

खतरनाक बीमारियों से बचाना था। दूसरा उद्देश्य मालधारियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाना था।

कई बैठकें हुईं और प्रस्ताव पारित किए गए, जिसके परिणामस्वरूप गुजरात सरकार द्वारा औपचारिक आदेश जारी किए गए: (1) प्रवासी मवेशियों द्वारा चराई के लिए अभयारण्य को स्थायी रूप से बंद करना। (2) पूरे क्षेत्र को एक प्रभावी भौतिक अवरोध से घेरना। (3) अभयारण्य के बाहर 129 बस्तियों में रहने वाले मालधारियों को भूमि आवंटित करना और उन्हें उनके परिवारों और पशुधन सहित चरणबद्ध तरीके से अभयारण्य से बाहर स्थानांतरित करना। यह देखना बाकी है कि ये लक्ष्य कितने हद तक पूरे होते हैं। एक बात निश्चित है। यदि कार्यक्रम लागू नहीं किया गया, तो गिर शेर अगले दशक के भीतर विलुप्त हो जाएगा। कितनी भी बैठकें और प्रस्ताव, कागजों पर मौजूद आदेशों के ढेर, उच्च अधिकारियों के भाषण, रेखाचित्र, योजनाएँ और सांख्यिकीय आंकड़ों द्वारा समर्थित योजनाएँ शेर को नहीं बचा पाएंगी। आवश्यकता है कार्रवाई की, और वह भी शीघ्र।

यह जानकर निराशा होती है कि पूरा एक साल बीत जाने के बाद भी मालधारी लोग वहीं हैं जहाँ वे हमेशा से रहे हैं, अभयारण्य के भीतर अपने घरों में।

नाश्ते के बाद, लगभग दस बजे, हम वैन में बैठकर वन लॉज से निकले और धूल भरी सड़कों पर गाड़ी चलाते हुए पुराने मुस्लिम शासक की राजधानी जूनागढ़ की ओर चल पड़े, जो प्राचीन मुस्लिम मकबरों और मस्जिदों से भरा हुआ है। सर्किट हाउस में जल्दी से दोपहर का भोजन करने के बाद हम फिर से निकल पड़े, इस बार वांकानेर के शाही महल के लिए, जहाँ हमें महाराजा और राजकुमार युवराज वांकानेर के अतिथि के रूप में एक रात और एक दिन बिताना था। सस्सान गिर से महल की सड़क दूरी 105 मील है।

पेट्रोल की समस्या के कारण हमें देरी हुई, लेकिन जब हम शाम 5:30 बजे महल पहुंचे तो हम लगभग समय पर थे, जहां महाराजा और राजकुमार ने पुराने जमाने के शिष्टाचार के साथ हमारा स्वागत किया और मेरे दोस्तों की विशेष प्रसन्नता के लिए हमें माला पहनाई।

अगली सुबह राजकुमार हमें एक पर्यटक गाड़ी में बिठाकर अपने पिता के लगभग 3,800 एकड़ के निजी जंगल में ले गए, जो लगभग छह मील दूर स्थित था। यह इलाका नीची, लहरदार पहाड़ियों से बना था; मिट्टी बहुत सूखी थी और बौने बबूल

के पेड़ों से ढकी हुई थी। युवराज ने शिकायत की कि वांकानेर के लोग उनके पिता के जंगल में घुसपैठ करते हैं, और मौका मिलते ही कम मात्रा में मौजूद पेड़ों को जलाऊ लकड़ी के लिए काट लेते हैं और अवैध शिकार भी करते हैं।

हम एक चारदीवारी वाले मकान के पास पहुँचे जहाँ महाराजा के यहाँ कार्यरत एक निजी वेतनभोगी रेंज अधिकारी और दो वन रक्षक रहते थे। उन्होंने बाहर आकर युवराज और हमें सलामी दी।

एक गार्ड को साथ लेकर हम पहाड़ियों के चारों ओर और कभी-कभी, यदि ज़मीन अनुमति देती, तो पहाड़ियों के ऊपर से गुज़रने वाले ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर गाड़ी से आगे बढ़े। रास्ते में हमें सोलह नीलगाय (नीलगाय का बोलचाल का नाम) छोटे-छोटे समूहों में दिखाई दिए, जिनमें सबसे बड़ा समूह पाँच सदस्यों का था, सभी नर थे। हमने दो चिंकारा (जो काले हिरण से छोटे आकार के मृग की एक प्रजाति है), एक अकेली लोमड़ी और कई सारे सैंड ग्राउज़ को भी देखा। युवराज ने हमें बताया कि मानसून के दौरान काले तीतर और सैंड ग्राउज़ बड़ी संख्या में इस क्षेत्र में आते हैं, लेकिन गर्मी के आगमन के साथ चले जाते हैं। पूरा इलाका साही के खोदे हुए बिलों और बिलों से भरा हुआ था।

युवराज ने हमें एक और दिन रुकने और उनके साथ कच्छ के प्रसिद्ध जंगली गधों को देखने के लिए आमंत्रित किया। गधे परिवार के ये जानवर, जो खच्चरों जितने ऊँचे होते हैं, वांकानेर से लगभग सौ मील उत्तर में स्थित इस शुष्क भूमि के एक क्षेत्र में रहते हैं। दुर्भाग्य से, हमारा कार्यक्रम बहुत व्यस्त था और हमारे पास समय नहीं था। महल लौटते समय, हम बड़ी संख्या में जंगली मोरों को देखकर दंग रह गए, जो इधर-उधर इतराते हुए एक-दूसरे को पुकार रहे थे। महल का विशाल मैदान भी उनसे भरा हुआ था। गुजरात में कोई भी इन खूबसूरत पक्षियों का शिकार नहीं करता। 'मोर! मोर!', उनकी आवाज़ें चारों ओर गूंज रही थीं।

युवराज, जिन्होंने स्वयं को हमारा मार्गदर्शक नियुक्त किया था, हमें वांकानेर कस्बे के बाहरी इलाके में स्थित अपने निजी फार्म पर ले गए, जहाँ उन्होंने हमें एक सुंदर अतिथि गृह दिखाया जिसका वे जीर्णोद्धार कर रहे थे, जिसमें उत्कृष्ट फर्नीचर और सबसे बढ़कर, एक आधुनिक स्विमिंग पूल था, जो इस शुष्क भूमि में अनसुनी बात है।

पास ही में एक प्राचीन कुआँ था, जिसकी शुद्ध संगमरमर की सीढ़ियाँ कुएँ के

किनारों पर बनी दो छतों तक जाती थीं। कुएँ के बीच से पानी का फव्वारा फूटता था जो ऊपर वाली छत तक पहुँचता था और फिर नीचे गिरकर नीचे वाली छत के कुछ हिस्से समेत सब कुछ एक महीन फुहार से ढक देता था। हमें सुखद ठंडक का एहसास हुआ, मानो हम किसी वातानुकूलित बरामदे में खड़े हों।

दोपहर के भोजन के बाद हम 140 मील दूर राजधानी अहमदाबाद के लिए मोटरगाड़ी से रवाना हुए। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया में आ गया हूँ, क्योंकि यहाँ का ग्रामीण इलाका दक्षिण भारत से बिलकुल अलग था। यह एक सूखा, अर्ध-रेगिस्तानी इलाका था, और सड़क पर हमें जो ऊँटों की कतारें दिखीं, उनसे यह बात और भी स्पष्ट हो गई। कभी-कभी तो उनकी संख्या किसी कारवां जैसी लगती थी। इन ऊँटों पर कुछ अजीब से दिखने वाले पुरुष और महिलाएं बैठे थे। कुछ ऊँटों पर घरेलू सामान, चारपाइयाँ, हर आकार के बर्तन, कपड़ों के गट्ठे और अन्य कई ऐसी चीज़ें लदी थीं जिन्हें पहचानना मुश्किल था। दोपहर बेहद गर्म थी। जैसे-जैसे हम अहमदाबाद के पास पहुँचे, आसपास का इलाका थोड़ा हरा-भरा होता गया। शाम होते-होते हम अपने गंतव्य पर पहुँचे।

अगली सुबह हमारे कार्यक्रम का एक हिस्सा नल सरोवर झील का दौरा करना था, जो एक पक्षी अभयारण्य और पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग है, लेकिन इसे रद्द करना पड़ा। लगातार दो भीषण गर्मियों में मानसून के विफल होने के कारण झील पूरी तरह सूख गई थी। इसलिए हमने इसके बजाय स्थानीय चिड़ियाघर का दौरा किया, जहाँ हमने विभिन्न प्रकार के जानवर और दुनिया भर के पक्षियों का एक अद्भुत संग्रह देखा। मुझे विशेष रूप से काले कोबरा से भरा साँपों का बाड़ा बहुत पसंद आया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्थानीय मिट्टी के गहरे रंग के कारण, जिसे इन क्षेत्रों में 'काली कपास-मिट्टी' के नाम से जाना जाता है, प्रकृति ने इस पर रहने वाले जीवों को भी गहरे रंग का बना दिया है ताकि वे आसानी से दिखाई न दें, अन्यथा ऐसा नहीं होता।

बाघों और तेंदुओं के झुंड और अफ्रीका के दो शेरों के बीच, एक गिर शेर और दो शेरनियां थीं। हमने पाया कि यह शेर गिर में मिले सभी जंगली शेरों से कहीं अधिक खूंखार था, यहाँ तक कि 'बुरे शेर' को भी शर्मिंदा कर रहा था। वह बार-बार अपने रखवाले और हम पर हमला करता रहा, बस अपने पिंजरे की सलाखों तक ही रुकता था। यहाँ तक कि अफ्रीकी शेर भी इतना आक्रामक नहीं था। निश्चित रूप से, जंगली अवस्था में ये बड़ी बिल्लियाँ कहीं अधिक शांत स्वभाव की होती हैं।

उस दोपहर हम विमान से उदयपुर के लिए रवाना हुए, जहाँ पचपन मिनट की बेहद उबड़-खाबड़ उड़ान के बाद हम उतरे। संभवतः इसका कारण गर्म, लगभग रेगिस्तानी, बंजर, पथरीली और ऊपर से देखने में अप्रिय भूमि के ऊपर से उड़ान भरना था। हवाई अड्डे से हम मोटरबोट से एक विशाल और भव्य झील के किनारे तक गए, एक मोटर-लॉन्च में सवार हुए और पानी में बिखरे द्वीपों की श्रृंखला में से एक द्वीप की ओर चल पड़े। लेकिन यह द्वीप बाकी द्वीपों से अलग था, क्योंकि इस पर एक खूबसूरत होटल बना हुआ है, जिसे लेक पैलेस होटल के नाम से जाना जाता है, जिसमें पैंसठ कमरे हैं, जिनमें से अधिकांश से सीधे पानी का नजारा दिखता है। इमारत के अंदर एक खुला बगीचा है, जो पेड़ों और फूलों की झाड़ियों से भरा हुआ है। यह उदयपुर के महाराणा की निजी संपत्ति है, जो हाल तक भारत के महत्वपूर्ण शासक राजकुमारों में से एक थे। उन्होंने इसे एक पर्यटक होटल में परिवर्तित कर दिया है और इसका संचालन स्वयं कर रहे हैं।

शाम को हम नाव से पास के एक द्वीप पर गए, जहाँ महाराणा का एक महल है जिसे बीस कमरों वाले गेस्ट हाउस में बदला जा रहा है, जिसमें एक शानदार स्विमिंग पूल भी है। इस महल में हमने जो नक्काशी देखी, वह अद्भुत थी, जो प्राचीन मुगल और राजपूत कलाकृतियों का नमूना थी। महाराणा का मुख्य भूमि पर भी एक विशाल महल है, और एक और महल पास की एक पहाड़ी की चोटी पर है। जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से पहाड़ी की चोटी पर बना महल लगभग दुर्गम लग रहा था, शिखर पर चट्टानों पर चील के घोंसले की तरह टिका हुआ, डूबते सूरज की किरणों में वह हल्के गुलाबी रंग में चमक रहा था।

राजकुमार के पास झील के चारों ओर फैली पहाड़ियों के निचले झाड़ीदार जंगल में बिखरे हुए कई शिकारगाह भी हैं। उदयपुर शहर के चारों ओर एक निरंतर दीवार के अवशेष हैं, जिसे कभी महान मुगल विजेताओं की आक्रमणकारी मुस्लिम सेनाओं से शहर की रक्षा के लिए बनाया गया था।

जब सूरज पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे डूबने लगा और झील के पानी पर लाल-सुनहरे रंग की लहरें पड़ने लगीं, तो हमें कर्कश आवाजें सुनाई दीं और एक अनोखा नजारा देखने को मिला। हजारों-हजारों हरे तोते झील के उस पार हर दिशा से झुंड बनाकर द्वीप पर उगे विशाल पेड़ों पर बसेरा करने आ गए। अनुमान है कि पचास मील से भी अधिक दूर के इलाकों से 10,000 से अधिक पक्षी हर शाम यहाँ बसेरा करने

आते हैं। हर सुबह वे भोजन करने के लिए वापस उड़ जाते हैं, लेकिन अगली शाम ठीक समय पर लौट आते हैं। यह सिलसिला सदियों से चला आ रहा है, क्योंकि लगातार महाराणाओं के आदेशों के अनुसार कोई भी तोतों को परेशान नहीं कर सकता; इसी संरक्षण के कारण उनकी संख्या हर साल बढ़ती जा रही है।

उस रात मुख्य भूमि पर सियार के झुंडों की दहाड़ सुनाई दे रही थी: यह जानी-पहचानी और सुखद आवाज़ थी, जिसने दूर दक्षिण में जंगलों में बिताई रातों की सैकड़ों यादें ताज़ा कर दीं। झुंड एक किनारे से दूसरे किनारे तक एक-दूसरे को पुकार रहे थे और जवाब दे रहे थे: 'यहाँ! यहाँ! यहाँ! ही-हा! ही-याह! ही-याह! ही-याह! याह! याह!'

फिर अगली सुबह हम नाव से तट की ओर रवाना हुए, जहाँ से एक कार हमें महाराणा के मुख्य महल तक ले गई। यह महल सफेद और काले संगमरमर से बना एक अद्भुत भवन था, जिसमें रंगीन कांच की खिड़कियाँ, शानदार नक्काशी और पुराने कवच और तलवारों का एक दुर्लभ संग्रह था। पास ही एक प्राचीन मंदिर था। दोपहर में हम जैसमल झील और वन्यजीव अभ्यारण्य के लिए निकल पड़े, जो पैंतीस मील दूर था। रास्ते में हम पहाड़ी क्षेत्र के शुष्क जंगल से होकर गुजरे।

एक घंटे से कुछ अधिक समय में हम झील पर पहुँच गए, जो पानी का एक विशाल विस्तार थी। महाराणा के यहाँ दो और महल हैं, जो विपरीत किनारों पर स्थित हैं। झील मछलियों से भरी हुई प्रतीत हो रही थी, और हम उन्हें पानी से बाहर उछलते और वापस गिरते हुए देख सकते थे। शाम सुहावनी और धूप से भरी थी।

हम पास के जैसमल वन्यजीव अभ्यारण्य के भीतरी हिस्से में पाँच मील की दूरी तय करके एक अनोखे प्रकार का पैंथर शो देखने गए। जंगल काफी घना था, लेकिन बहुत सूखा था। रास्ते में हमें चित्तीदार हिरणों के दो झुंड दिखाई दिए, जिनमें से कुछ नर हिरणों के सिर बेहद खूबसूरत थे। हमारा गंतव्य एक परित्यक्त निगरानी मीनार थी, जिसे एक पूर्व महाराणा ने बनवाया था और उनके वंशज ने उसे शिकारगाह में बदल दिया था। यह पत्थर से बनी तीन मंजिला मीनार थी, जिसकी दीवारों में संभवतः गोली चलाने के लिए छेद थे। यह एक छोटे किले जैसी दिखती थी और एक संकरी, ढलान वाली घाटी पर नज़र रखती थी, जिसके बीच से एक सूखी नदी बहती थी। इस घाटी के दूसरी ओर एक हल्की ढलान वाली पहाड़ी थी। पेड़ों और छोटी झाड़ियों के बीच हमें छोटे-छोटे खुले मैदान साफ दिखाई दे रहे थे।

शिकारगाह से लगभग पचास गज आगे, लगभग पाँच फुट ऊँचा एक लकड़ी का चबूतरा खड़ा किया गया था। यह चार पैरों पर टिका हुआ था और लगभग स्थायी ढाँचा था। इस बार भूरे रंग की एक बदकिस्मत बकरी को इसके ऊपर बाँधा गया था और नीचे पानी से भरा एक कुंड था।

हमें पत्थर के बने टावर में प्रवेश करने का निमंत्रण मिला, जहाँ पहले से ही चार कारें खड़ी थीं। हमें टावर के निचले हिस्से में बने एक छोटे से दरवाज़े से अंदर जाना था और एक संकरी सीढ़ी चढ़कर तीसरी मंज़िल पर जाना था। वहाँ हमें लोगों की भीड़ मिली; वे सभी उपलब्ध खिड़कियों के सामने कुर्सियों पर बैठे थे, जहाँ से चबूतरा और उसकी बकरी दिखाई दे रही थी। इस समूह में एक फिल्म स्टार और उसके दोस्त भी थे। वे सभी बातें कर रहे थे, सिगरेट पी रहे थे, इधर-उधर घूम रहे थे और एक-दूसरे को ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ दे रहे थे।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि दर्शकों की संख्या इतनी अधिक थी कि अगर हमें कुछ देखना था तो हमें नीचे की मंजिल पर जाना होगा। हमने ऐसा ही किया और और लोगों के आने से पहले चार गुप्त रास्ते चुन लिए।

मैं इस बात को रोक नहीं पाया कि ऑपरेशन के प्रभारी, मिलनसार वन रेंज अधिकारी (एफआरओ) से पूछ लूँ कि क्या अधिकारियों को लगता है कि हमें पैंथर द्वारा बकरी को मारते हुए देखने की अनुमति देने से कोई नुकसान हो रहा है। मैंने उन्हें बताया कि गिर में हमें 'शो' से पहले न तो शेरों द्वारा भैंस को मारते हुए और न ही पैंथर द्वारा बकरी को मारते हुए देखने की अनुमति दी गई थी, क्योंकि इसे जीवन को बढ़ावा देना माना जाता था। एफआरओ ने तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'हम राजपूत हैं। वे लोग गुजराती हैं।'

फिर वह सीढ़ियों से ऊपर उस जगह गया जहाँ फिल्म स्टार और उसकी सहेलियाँ इकट्ठा थीं, और जल्द ही सारी बातचीत बंद हो गई। उसने वहाँ मौजूद लोगों को यह ज़रूर समझा दिया होगा कि यह कोई रिहर्सल नहीं थी।

खिड़की के छेद से झांकते हुए, मुझे कुछ दूरी पर सूखी धारा के पार एक चित्तीदार हिरणी दिखाई दी, जिसके तुरंत बाद मोरों का एक झुंड दिखाई दिया। फिर झाड़ियों के बीच से कुछ काली आकृतियाँ छनकर आईं: जंगली सूअरों का एक समूह। तभी सामने की एक झाड़ी के पीछे हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा। मैंने गौर से देखा। एक पैंथर ज़मीन के करीब दुबका हुआ था। मैंने उसे आते हुए नहीं देखा था।

किसी ने भी नहीं देखा था। शाम के 6:15 बज रहे थे। पैंथर बिना हिले-डुले वहीं लेटा रहा। ज़ाहिर है, उसे लोगों के देखने का एहसास था और उसने खुद को दिखाने से पहले ज़्यादा अंधेरा पसंद किया।

शाम 6:30 बजे वह थोड़ा हिला, लेकिन फिर भी उसने हमले का जोखिम नहीं उठाया। सात बज चुके थे और काफी अंधेरा हो रहा था, तभी पैंथर अपनी भूख को और नहीं रोक सका। जहां वह दुबका हुआ था, वहां से चित्तीदार बिल्ली फुर्ती से चबूतरे पर कूदी, शांत भाव से उस बकरी के पास गई जो अपने हमलावर का सामना करने के लिए मुड़ गई थी और अपनी रस्सी से पीछे की ओर खिंच रही थी, और लगभग बेपरवाही से उसका गला पकड़ लिया। बकरी एक बार मिमियाई और कमजोर तरीके से लात मारी। फिर उस बिल्ली ने अपने शिकार का सिर चबूतरे पर दबा दिया और उसे तब तक वहीं दबाए रखा जब तक उसकी जान नहीं निकल गई।

बढ़ते अंधेरे में हमें कुछ भी देखना मुश्किल होता जा रहा था, तभी रेंजर ने स्पॉटलाइट चालू करने वाला स्विच दबाया, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। बिजली चली गई थी।

हम मुश्किल से ही देख पा रहे थे कि पैंथर बकरी का गला फाड़कर उसकी गर्दन की नस से खून चूस रहा था। कुछ मिनट बाद वह चबूतरे से नीचे कूदा और पानी के कुंड से जी भरकर पानी पिया। साफ था कि यह पैंथर पहले भी कई बार ऐसा कर चुका था और उसे पता था कि उसे क्या करना है। फिर अंधेरा इतना बढ़ गया कि कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

फिल्म स्टार ने मैदान की संकरी सीढ़ियों पर आगे बढ़ते हुए हमें एक मनमोहक मुस्कान दी, और जल्द ही हम उदयपुर की ओर चल पड़े।

अगले दिन दोपहर तक कोई काम नहीं था, फिर हम हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए। हमें नागपुर जाना था, जो एक दूर का शहर है, जहाँ से हमें कार से कान्हा राष्ट्रीय उद्यान जाना था। लेकिन रास्ते में कई बार देरी हुई, जिसका कुछ कारण खराब मौसम था और कुछ दिल्ली में पायलट और एक यात्री के बीच हुई कहा-सुनी, जो इंजन चालू होने के बाद वहाँ पहुँचा था। इसलिए हम अगली सुबह जल्दी ही नागपुर पहुँच पाए। बारिश अभी भी हो रही थी।

लेकिन हमें सुबह सात बजे फिर उठना था और कार से 210 मील की यात्रा शुरू करनी थी। हमारे काफिले में दो वाहन थे: एक कार यात्रा के लिए और एक लैंड

रोवर अभयारण्य में इस्तेमाल के लिए, जहाँ कुछ रास्ते, खड़ी पहाड़ियों पर, आम कार से पार नहीं किए जा सकते थे। इस बीच, लैंड रोवर में कैंपिंग किट, एक रसोइया, एक बटलर, एक टेबल-बॉय और हमारे लिए हर तरह का खाना भरा हुआ ट्रेलर था। साथ ही मेरे अमेरिकी दोस्तों के लिए कोका-कोला की कई बोतलें भी थीं। ये बोतलें एक बड़े आइस बॉक्स में बर्फ पर रखी थीं, जैसे परेड में सैनिक कतारों में खड़े हों। नागपुर महाराष्ट्र राज्य में है, जबकि कान्हा मध्य प्रदेश में है। इस प्रकार हमें एक अंतरराज्यीय सीमा पार करनी पड़ी और इसके लिए हमें एक फॉर्म पर हस्ताक्षर करने पड़े। हमारे किट और खाने-पीने की चीजों की भी बड़ी सावधानी से जाँच की गई। यह स्पष्ट नहीं है कि तलाशी लेने वाले क्या खोज रहे थे, लेकिन उन्होंने जो देखा होगा, वह उन्हें निश्चित रूप से हैरान कर गया होगा। उन्होंने बिना किसी और बहस के हमें आगे जाने दिया।

मंज़िल से चालीस मील पहले ही हमारी कार कीचड़ में फंस गई। करीब एक घंटा पहले भारी बारिश हुई थी और सड़क पूरी तरह से कीचड़ से भर गई थी। हम मदद के लिए बाहर निकले तो पता चला कि हमारी कार का टायर भी पंचर हो गया है। उस कीचड़ में कार को जैक से उठाना बहुत मुश्किल था। अब लैंड रोवर के आने का इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं दिख रहा था।

सौभाग्यवश, वह जल्द ही दिखाई दिया। हम गाड़ी में चढ़ गए और रसोइए व दो अन्य नौकरों से जगह बदल ली, जिन्हें हमने कार में बिठा दिया। हमने उन्हें कीचड़ में फंसे ड्राइवर की मदद करने के लिए वहीं छोड़ दिया।

हाल ही में हुई भारी बारिश के कारण सड़क की हालत बेहद खराब थी और यह सफर काफी मुश्किल भरा था, यहाँ तक कि लैंड रोवर के लिए भी, जिसके पीछे भारी ट्रेलर लगा हुआ था। हम लगातार तीन वन चौकियों से गुज़रे, जिनमें से प्रत्येक पर अवैध शिकार और अन्य अपराधों के खिलाफ चेतावनी वाले कई नोटिस बोर्ड लगे हुए थे। हर चौकी पर हमसे किसी न किसी प्रकार का शुल्क या कर वसूला गया। अंत में हम गेस्ट हाउस पहुँचे, क्योंकि वहाँ काफी संख्या में गेस्ट हाउस थे।

जब हमने ट्रेलर से सामान उतारा और हमारे लिए लाए गए सारे खाने को देखा, तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। यह खाना दक्षिण की मेरी यात्राओं के खाने से कितना अलग था! वहाँ, दूसरे दिन के बाद, मेरा आहार हमेशा सूखी चपाती ही होता था, अक्सर बिना मक्खन के। भुना हुआ गोमांस एक विलासिता थी, लेकिन केवल पहले

दिन। उसके बाद केवल चपाती ही मिलती थी, और हाँ, ढेर सारी चाय। यहाँ हमारे पास टर्की, बत्तख, चिकन, मटन, मछली, हर तरह के फल थे। मुझे कहीं भी एक भी चपाती नहीं दिखी, न ही गोमांस का कोई नामोनिशान!

तो हम लैंड रोवर में जंगल की ओर चल पड़े, ड्राइवर के बगल में एक वन रक्षक बैठा था जो उसे रास्ता दिखा रहा था। एक फर्लांग के भीतर ही हमें चित्तीदार हिरणों के झुंड ही झुंड दिखाई दिए, जिनमें से कुछ नर हिरणों के सींग अद्भुत थे। इन जानवरों के साथ-साथ, और कभी-कभी अकेले भी, काले हिरणों के झुंड चर रहे थे। बीच-बीच में हम लगभग काले रंग के वयस्क नर हिरण को उसकी सफेद तोंद के साथ देख पाते थे, लेकिन अधिकतर नर हिरण युवा थे। मादा हिरण अपने बच्चों के साथ काफी संख्या में थीं। मोर बहुतायत में थे, और हमने दो लाल जंगली मुर्गे देखे। एक हमारे आगे रास्ते के पार उड़ गया जबकि दूसरा कुछ देर सड़क के किनारे दौड़ता रहा और फिर झाड़ियों में छिप गया।

मध्य और उत्तरी भारत का लाल जंगली मुर्गा दक्षिण भारत के चांदी जैसे रंग वाले पक्षी से बिल्कुल अलग है। दोनों प्रजातियों का आवास एक ही जगह रहता है: मध्य और उत्तरी भारत का पक्षी थोड़ा छोटा, गहरे रंग का और जंग लगे लाल पंखों वाला होता है, और इसकी बांग कुछ-कुछ घरेलू मुर्गे जैसी होती है। दक्षिणी भारत का पक्षी बड़ा होता है, इसके गर्दन के पंख चांदी जैसे भूरे रंग के होते हैं, और इसके पंख ऐसे दिखते हैं मानो उन पर गाढ़े तेल के रंगों से गहरे भूरे रंग की किनारी और गहरे धब्बे बनाए गए हों। चांदी जैसे भूरे पंखों के अलावा, गर्दन के पंखों पर भी इसी तरह के पंख लगे होते हैं। इसकी आवाज़ बहुत ही अनोखी होती है: 'व्हीव! कुक! क्या! क्या! खुखम!' यह दोनों प्रजातियों में कहीं अधिक सुंदर है।

सूर्यास्त के समय हम गेस्ट हाउस लौटे तो देखा कि रसोइए ने चमत्कार कर दिया था और हमारा खाना तैयार था। भोजन कक्ष बरामदे से सटा हुआ था, इसलिए खाना खाते समय हम जंगल की सभी आवाज़ें सुन पा रहे थे। जल्द ही हमें कई अजीब आवाज़ें सुनाई दीं, ऐसी आवाज़ें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। तेज़, तुरही जैसी चीखें, कुछ-कुछ चित्तीदार हिरण की रेंकने जैसी, लेकिन नर सांभर की चेतावनी भरी आवाज़ की तरह कर्कश गूंजती हुई: 'आह-ह-हर्म! आह-ह-हर्म! आह-ह-हर्म! आह-ह-हर्म!'

यह नर बारहसिंगा की आवाज़ थी! कागज़ पर उस यादगार आवाज़ की नकल करना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन जब आप उसे सुनते हैं, तो वह बिल्कुल अलग होती

है। और यह सोचकर दुख होता है कि कुछ ही सालों में यह आवाज़ सुनाई देना बंद हो जाएगी। बारहसिंगा, या बारह सींगों वाला हिरण, अपने बारह सींगों वाले शानदार सिर से अपना नाम पाता है, जिसमें प्रत्येक तरफ छह सींग होते हैं। हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी में 'बारा' शब्द का अर्थ बारह होता है। यह आकार में सांभर से थोड़ा ही छोटा होता है, लेकिन सांभर के भूरे-धूसर रंग से अलग, इसका रंग गहरा भूरा होता है। सांभर की तरह, बारहसिंगा के शरीर के किनारों और गर्दन व गले के आसपास मोटे, लंबे बाल होते हैं, जो लगभग अयाल जैसे दिखते हैं। ये चित्तीदार हिरणों से कहीं बड़े होते हैं।

दुर्भाग्य से, ये जीव कुछ हद तक मूर्ख प्रतीत होते हैं, इनमें सांभर और चित्तीदार हिरण जैसी सतर्कता का अभाव होता है। ये धीरे-धीरे, भारी और सुस्ती से चलते हैं, और खतरे को जल्दी नहीं पहचान पाते, प्रतिक्रिया देने में धीमे होते हैं, भागने में भी धीमे होते हैं। न ही ये सांभर जितनी तेज़ी से दौड़ सकते हैं, हालांकि सांभर आकार में बड़ा होता है। नर हिरणों की आदत नीलगाय या नीले बैल जैसी ही होती है: वे बिना किसी मादा हिरण के, लगभग आधा दर्जन के छोटे झुंड में इकट्ठा होते हैं।

इन विशेषताओं के कारण ही इनका पतन हुआ है, क्योंकि ये शिकारियों के आसान शिकार बन जाते हैं, जो इनके प्रमुख शत्रु हैं। इसके अलावा, बाघ और तेंदु, जंगली कुत्ते और यहां तक कि लकड़बग्घे भी इनका शिकार होते हैं। भारत में कभी बहुतायत में पाए जाने वाले बारहसिंगा अब लगभग विलुप्त हो चुके हैं। विशेष रूप से इनकी सुरक्षा के लिए बनाए गए कान्हा अभयारण्य में इन खूबसूरत जानवरों की केवल पचपन संख्या ही बची है। काजीरंगा और कुछ अन्य अभयारण्यों में इनकी संख्या कुछ अधिक है; लेकिन हर जगह इनकी संख्या चिंताजनक रूप से कम है। भारत में इनका भविष्य, पूर्वोत्तर के गिर के शेर और काजीरंगा के एक सींग वाले गैंडे के साथ, वास्तव में बहुत अंधकारमय है।

उस रात मुझे अभी नींद भी नहीं आई थी कि मैंने एक बाघ की दहाड़ सुनी। वह गेस्ट हाउस से लगभग आधा मील दूर रहा होगा। उस यादगार आवाज़ को फिर से सुनना कितना सुखद था: 'ऊ-ऊंग! आ-ऊ-ऊंग! आउंग! ऊ-ऊ-ऊंग!'

अगली सुबह साढ़े छह बजे हम निकल पड़े और बहुत जल्द हमें बारहसिंगाओं का वह झुंड मिल गया जो पिछली रात से आवाज़ लगा रहा था: पाँच नर बारहसिंगा, सभी एक साथ झुंड में थे। मुश्किल से एक मील आगे जाने पर हमें चार मादा

बारहसिंगा मिलीं, ये भी अकेले झुंड में थीं। उनसे कुछ ही दूरी पर हमें काले हिरणों के तीन झुंड और चित्तीदार हिरणों के कई झुंड दिखाई दिए, जिनमें से एक झुंड में सौ से अधिक जानवर थे। मोरनियों के झुंड और कुछ नर मोर हमारे दाएं और बाएं बिखरे हुए थे। यह एक शांत दृश्य था जब तक कि हमने पास ही घास में दो सियार को रेंगते हुए नहीं देखा, जो जंगल के जीवों को किसी भी क्षण अचानक आ जाने वाली मृत्यु की मूक याद दिला रहे थे।

हिरणों के निवास स्थान, पार्क जैसे इलाके को छोड़कर, लैंड रोवर हमें चारों ओर फैली नीची पहाड़ियों में ले गई। जल्द ही हमने ऊँचे साल के पेड़ों के नीचे से दो बाइसन को हमारी ओर घूरते देखा। कान्हा के जंगल दक्षिण भारत के जंगलों से बहुत अलग हैं। यहाँ साल के ऊँचे, सीधे और हरे-भरे विशाल पेड़ छाए रहते हैं। लैंटाना की झाड़ियाँ और सेगई काँटेदार झाड़ियाँ यहाँ नहीं हैं, जो दक्षिण भारत में घूमना-फिरना कई बार मुश्किल बना देती हैं। यह और जंगली हाथियों की अनुपस्थिति, जो खतरनाक होते हैं और पैदल चलने वाले अनुभवहीन शिकारी या नौसिखिए प्रकृतिवादी के लिए एक बड़ा खतरा होते हैं, कान्हा को घूमने-फिरने के लिए स्वर्ग बना देती है। कुल मिलाकर, मैं कहूँगा कि मैंने जितने भी जंगल देखे हैं, उनमें से कान्हा के जंगल इस उद्देश्य के लिए सबसे अच्छे हैं।

अगली सुबह हम घने जंगलों से होते हुए लगभग तीस मील से अधिक के ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके को पार करते हुए एक ऊँची पहाड़ी पर पहुँचे, जहाँ प्राकृतिक सागौन के पेड़ एक विस्तृत मैदान या नीची घास के मैदान में खुलते थे, जो पूरी तरह से जंगल से घिरा हुआ था।

हमें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि भारत सरकार का पर्यटन विभाग इस क्षेत्र को नागपुर से डकोटा विमान सेवा संचालित करने के लिए पर्याप्त बड़े लैंडिंग ग्राउंड में परिवर्तित करने की योजना बना रहा है, जिससे विदेशी पर्यटकों और स्थानीय दर्शनीय स्थलों की यात्रा में आसानी होगी और नागपुर से 210 मील की लंबी कार यात्रा से मुक्ति मिलेगी।

यह पठार एक प्रसिद्ध पूर्व शिकार क्षेत्र, बांडला ब्लॉक को देखता है, जिसका नाम आज भी वही है। मध्य प्रदेश (जिसे पहले मध्य प्रांत के नाम से जाना जाता था) में अपना प्रारंभिक जीवन बिताने वाले कई पुराने शिकारी इस क्षेत्र को स्नेहपूर्वक याद करते हैं, क्योंकि यहीं पर कुछ सबसे शानदार बाघ पैदा हुए थे, जिनके लिए ये जंगल

विश्व प्रसिद्ध थे। वापसी यात्रा में हमें एक साथ सात सांभर दिखाई दिए, जो आमतौर पर अकेले चरने वाले जीवों के लिए एक असाधारण संख्या है; साथ ही लंगूर बंदरों के कई परिवार और बड़ी संख्या में लाल जंगली मुर्गे, और छोटे भौंकने वाले हिरण या मुंटजैक भी दिखाई दिए। निचले इलाकों और ग्रामीण क्षेत्र में लौटते हुए, हमें चित्तीदार हिरण और काले हिरण के सामान्य परिवार दिखाई दिए।

सुबह हम फिर से लैंड रोवर में सवार होकर निकले और एक बार फिर चित्तीदार हिरणों और काले हिरणों के बड़े झुंड, अनगिनत मोर और कुछ बारहसिंगा देखे। हताशा में, अधिकारी अब बारहसिंगा को उनके प्राकृतिक शत्रुओं, बाघ, तेंदुआ और जंगली कुत्ते, और निश्चित रूप से शिकारियों से बचाने के लिए, कुछ वर्ग मील के क्षेत्र में घनी जाली वाली ऊंची तार की बाड़ लगाने की योजना बना रहे हैं। उम्मीद है कि यह योजना सफल होगी, हालांकि इसके बाद इन जानवरों को शायद ही पूरी तरह से जंगली अवस्था में रहने वाला कहा जा सकेगा। फिर भी, मुझे लगता है कि बाड़ के अंदर पचास बारहसिंगा होना, बिना बाड़ और बिना बारहसिंगा के होने से बेहतर है!

इस समय तक हम लैंड रोवर में घूमते-घूमते थक चुके थे। वन विभाग के तीन हाथी किराए पर उपलब्ध थे, इसलिए हमने हाथियों की पीठ पर सवार होकर कुछ नालों के किनारों पर बाघ या तेंदुआ देखने की उम्मीद में खोजबीन शुरू की। लेकिन हमें केवल बारहसिंगा और काला हिरण ही दिखाई दिए।

लगभग चार बजे हम बाघों को देखने के लिए फिर से लैंड रोवर लेकर निकले, लेकिन हमें केवल चित्तीदार हिरण, मोर, लाल जंगली मुर्गे और लंगूर बंदर ही दिखाई दिए। न्यूजीलैंड के एक दंपति, जिन्होंने उस शाम के लिए हाथी बुक किए थे, अधिक भाग्यशाली रहे। वे अपने-अपने हाथियों पर अलग-अलग गए थे, और जब पति जैक डून लौट रहे थे, तो उन्हें एक चित्तीदार हिरण अपनी पीठ पर तड़पता हुआ दिखाई दिया। कुछ ही गज की दूरी पर वह पैंथर दुबका हुआ था जिसने उस पर हमला किया था, और भागने की कोशिश कर रहा था। हिरण बुरी तरह घायल था और उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई थी। जैक जिस हाथी पर सवार थे, वह हाल ही में कान्हा आया था। एक घबराई हुई मादा हाथी, हिरण और उसके हमलावर को देखकर दो बार भाग गई। जब महावत आखिरकार उसे काबू में करने और वापस लाने में सफल हुआ, तो जैक ने पैंथर को फिर से देखा और लगभग तीस मिनट तक उसकी तस्वीरें लीं, इस दौरान वह एक पेड़ पर चढ़ा, फिर नीचे कूदा और फिर एक छोटी चट्टान पर चढ़ गया। मार्गरेट

डून, दूसरे हाथी पर लौटते समय, एक मृत चित्तीदार हिरण के बच्चे को देखा। किसी कारणवश उसके शिकारी ने शिकार छोड़ दिया था और अब हिरण के बच्चे को सियार का एक झुंड खा रहा था।

उस रात गेस्ट हाउस में आए एक अधिकारी ने ज़िद की कि हम उनके साथ रात नौ बजे चलें और उनकी स्पॉटलाइट से बाइसन या बाघ देखने की कोशिश करें। दरअसल, कान्हा में स्पॉटलाइट वाले वाहनों से ऐसी यात्राएं सख्त मना हैं, लेकिन खुद बॉस होने के नाते और हमारी खातिर उन्होंने छूट दे दी। हमें एक बहुत बड़ा नर बाइसन दिखा, जिसके पीछे कुछ कदम की दूरी पर एक मादा बाइसन थी, लेकिन बाघ नहीं दिखा; और लौटते समय हमें चित्तीदार हिरणों और काले हिरणों के हमेशा की तरह झुंड मिले और बंगले के पास ही दो सांभर भी दिखाई दिए।

अगली सुबह भोर होते ही अधिकारी हमें फिर से बाहर ले गए, इस बार हमारी अपनी लैंड रोवर में, जिसे उन्होंने खुद चलाया। हम एक प्राकृतिक नमक के टीले पर गए, जहाँ एक मीनार बनी हुई थी, जिस पर एक सीढ़ी लगी हुई थी जो एक ढके हुए चबूतरे तक जाती थी। इस मीनार से जंगल में बने एक बड़े तालाब का नजारा दिखता था, जिसका पानी सुंदर गुलाबी पंखुड़ियों वाले कमलों से आंशिक रूप से ढका हुआ था। इस तालाब से कुछ ही गज की दूरी पर जमीन में बने एक गड्ढे में नमक का टीला था। नमक के टीले पर बैठा एक सांभर हिरण हमारे पास आते ही दहाड़ते हुए भाग गया, जबकि तालाब से असंख्य पंखों के फड़फड़ाने की आवाज आई और चित्तीदार चोंच वाली और ब्राह्मणी बत्तखों के झुंड उड़कर पंखों की फड़फड़ाहट के साथ हवा में चक्कर लगाने लगे। गोल-गोल उड़ते हुए वे खतरे की तीखी आवाजें निकाल रहे थे।

हमने कुछ अन्य जीवों को भी परेशान किया: लगभग पंद्रह वयस्क बाइसन का एक झुंड, जिसमें आधा दर्जन बच्चे भी थे, और उन सभी का नेतृत्व एक विशालकाय नर बाइसन कर रहा था। वे वॉचटावर के सामने एक छोटे तालाब में पानी पी रहे थे और हमने उन्हें पहले नहीं देखा था। यह तालाब उस रास्ते के पश्चिम में था जिस पर हम गाड़ी चला रहे थे, और पार्क जैसे इलाके में था, जबकि वॉचटावर, झील और नमक चाटने की जगह, जो जंगल से घिरी हुई थी, पूर्व में थी। इस प्रकार, वह रास्ता दो प्रकार के इलाकों के बीच एक तरह की प्राकृतिक सीमा बना रहा था। नर बाइसन और उसके साथियों ने हमें देखा और जंगल में वापस जाने के लिए रास्ते को पार करने की कोशिश की। हमने लैंड रोवर को आगे बढ़ाकर या जरूरत पड़ने पर पीछे करके

उन्हें ऐसा करने से रोका, ताकि बाइसन हमेशा हमारे वाहन को अपने और जंगल के बीच पा सकें।

लगभग एक दर्जन बार हमने गाड़ी को पूरी रफ्तार से आगे या पीछे किया, तब तक हम देख सकते थे कि झुंड बेचैन हो रहा था और सरदार बैल स्पष्ट रूप से नाराज़ था। बाइसन हमसे तीस गज से भी कम दूरी पर थे; उन्होंने बार-बार रास्ते को पार करने की कोशिश की। फिर बैल ने एक तीखी, सीटी जैसी आवाज़ निकाली और ज़मीन पर पैर पटका, बढ़ते गुस्से के साथ अपने विशाल सींगों को हमारे ड्राइवर की ओर हिलाया। फिर हमने उसे जाने दिया। जब झुंड आखिरकार गर्जना करते हुए पार हुआ तो वह एक भव्य दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

सुबह की धुंध अभी छटी भी नहीं थी कि थोड़ी दूर आगे जाकर हमें एक सांभर हिरण खुले मैदान में चरता हुआ दिखाई दिया, और उससे भी आगे दो बारहसिंगा हिरण ठीक इसके विपरीत करना चाहते थे—खुले मैदान को पार करना चाहते थे।

दोनों ही मामलों में हमारे अधिकारी ने एक ही रणनीति अपनाई, लैंड रोवर को आगे-पीछे चलाकर उन्हें रोकने की कोशिश की। इससे मेरे साथियों को कुछ अच्छी तस्वीरें लेने का मौका मिल गया। अंत में हम आगे बढ़ गए और हिरणों को अपनी मर्जी से जाने दिया।

चित्तीदार हिरणों और काले हिरणों के झुंड हर जगह दिखाई दे रहे थे, उनके साथ मोरों के परिवार भी थे, और नाश्ते के समय तक हम सभी बहुत खुश थे। दोपहर के भोजन पर हमारे मित्र ने हमें एक सुखद आश्चर्य दिया। उन्होंने बताया कि एक बाघ ने उस भैंस को मार डाला था जिसे उन्होंने कल बांधने का आदेश दिया था। इसलिए हमारे अधिकारी ने पूछा कि क्या हम उनके साथ हाथी पर बैठकर बाघ को देखने जाना चाहेंगे, और हम सभी सहमत हो गए। इसके बाद उन्होंने तीनों हाथियों को तैयार करने का आदेश दिया, एक हमारे लिए, एक उस सुबह आए आगंतुकों के एक अन्य समूह के लिए, और तीसरा एक युवा जर्मन और उसकी पत्नी के लिए जो अभी-अभी आए थे।

हमने हाथियों को आगे भेज दिया और आधे घंटे बाद अपनी लैंड रोवर में उनके पीछे-पीछे चले। वन विभाग की दो जीपों में बाकी लोग भी थे। हमने देखा कि हाथी जंगल के एक छायादार हिस्से में हमारा इंतज़ार कर रहे थे और हमें वहाँ ले जाया गया। हमारे अधिकारी सबसे बड़े हाथी पर हमारे साथ सवार हुए। तीनों हाथी एक

कतार में चलते हुए भैंस के शिकार की ओर बढ़े।

अक्सर ऐसा ही होता है, शव उस जगह नहीं था जहाँ उसे होना चाहिए था, और जहाँ वह कुछ घंटे पहले पड़ा था जब वन विभाग के एक कर्मचारी ने उसे देखा और उसकी मृत्यु की सूचना देने आया था। संभवतः बाघ ने भी उस कर्मचारी को देख लिया था, और जैसे ही वह आदमी वहाँ से गया, बाघ भैंस की रस्सी तोड़कर मृत जानवर को घसीटकर ले गया। ज़मीन पर सूखे पत्तों की मोटी परत बिछी हुई थी, लेकिन हाथी पर बैठे होने के कारण मुझे घसीटने का कोई निशान नहीं दिखाई दिया। ऐसा लग रहा था मानो बाघ अपने शिकार को घसीटकर नहीं ले गया था, बल्कि उसे अपनी पीठ पर लादकर इधर-उधर ले गया था।

कुछ बाघ इस रणनीति को तब अपनाते हैं जब वे विशेष रूप से गुप्त रहना चाहते हैं, ताकि कोई निशान न छूटे। अन्य बाघ इसे अधिक सुविधाजनक मानते हैं क्योंकि यह शिकार को ज़मीन पर घसीटने और झाड़ियों व कांटों में फंसने से बचाने में मददगार होता है। पहले मामले में, उनकी सहज प्रवृत्ति उन्हें बताती है कि घसीटे गए शिकार की तुलना में उठाकर ले जाए गए शिकार का पता लगाना अधिक कठिन होता है, जबकि दूसरे मामले में यह पूरी तरह से सुविधा का मामला है।

इस जगह पर कांटे और झाड़ियाँ न के बराबर थीं, इसलिए यह स्पष्ट था कि बाघ अपने शिकार को इसलिए दूर ले गया ताकि आसपास मंडरा रहे जासूस उसे ढूंढ न सके। एक और संभावित कारण भी हो सकता था: कान्हा अभयारण्य में खाल चुराने वालों का होना (गिर अभयारण्य की तरह), जो मांसाहारी जानवरों द्वारा मारे गए जानवरों की खाल बेच देते हैं। शायद इस बाघ ने पहले भी इसी तरह अपने कुछ शिकार खो दिए थे और वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।

प्राकृतिक रूप से मारे गए जानवरों को हटाने की प्रथा के विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। जब शिकारी जानवर डरकर भाग जाता है, तो वह अपने शिकार के पास वापस नहीं आता। इस प्रकार उसे सामान्य से कम भोजन मिलता है और वह किसी अन्य जंगली जानवर या पालतू जानवर (जैसा कि गिर में अक्सर होता है) को अनावश्यक रूप से मारने के लिए मजबूर हो जाता है, जिससे मालिक क्रोधित हो जाता है और उस मांसाहारी जानवर के खिलाफ प्रतिशोध लेता है। इसके अलावा, खाल उतारने के बाद, खाल उतारने वाले को जंगल में खुले पड़े कच्चे शव में जहर मिलाने का प्रबल प्रलोभन होता है। घातक जहर—फोलिडोल के रूप में—बहुत

आसानी से मिल जाता है, इस बहाने से कि यह फसलों के कीटों से बचाव के लिए आवश्यक है, जिसके लिए सरकार द्वारा इसकी प्रचुर मात्रा में आपूर्ति की जाती है। साथ ही, यह बहुत सस्ता भी होता है। गाय का मालिक तर्क देता है कि उसके जानवर पर समय और बहुत पैसा खर्च हुआ है, और जहर खाने के बाद शिकारी जानवर दूर तक भटक नहीं पाएगा और जल्द ही मर जाएगा। फिर चरवाहा बाघ की खाल भी ले जाएगा, और उससे प्राप्त धन से दूध देने वाली गाय की मृत्यु से हुए नुकसान की भरपाई करने में मदद मिलेगी।

खैर, अपने शिकार, खासकर भैंस को ले जाने के लिए, यह बाघ निश्चित रूप से विशाल और शक्तिशाली रहा होगा। कोई शावक, और बहुत कम बाघिनें, ऐसा काम कर सकती हैं।

मैंने ज़मीन का मुआयना करने के लिए हाथी से उतरकर देखा। कमर से थोड़ा ऊपर एक ताज़ा टूटा हुआ पत्ता और उससे थोड़ी दूरी पर लगभग उतनी ही ऊँचाई पर एक टूटी हुई हरी टहनी ने इस बात की पुष्टि कर दी कि बाघ भैंस को सचमुच उठाकर ले गया था। ज़मीन पर सूखे पत्तों की मोटी परत बिछी होने के कारण कोई पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे; अगर बाघ अपने शिकार को घसीटकर ले गया होता तो सूखे पत्ते उसे उजागर कर देते।

बाघ सीधे ढलान की ओर चला गया था। अधिकारी ने दबे स्वर में बताया कि एक छोटी सी धारा, जिसमें कुछ जगहों पर पानी भरा हुआ था, उस पहाड़ी के आधार के चारों ओर घूमती हुई बह रही थी जहाँ हम अभी खड़े थे। यह लगभग एक फर्लांग दूर थी। इसमें कोई संदेह नहीं था कि बाघ धारा की ओर ही गया था।

मैं हाथी पर दोबारा सवार हो गया, और एक-दूसरे से सौ गज की दूरी पर फैलते हुए, तीनों हाथी अपने-अपने साथियों के साथ धीरे-धीरे एक कतार में ढलान की ओर बढ़ने लगे। जिस हाथी पर मैं और मेरा दोस्त सवार थे, वह बीच में था; जर्मन और उसकी पत्नी हमारे दाहिनी ओर थे, और दूसरा समूह हमारे बाईं ओर। घने हरे पेड़ों की एक कतार से नदी का नज़ारा दिखाई दिया, और जैसे ही हम नदी के किनारे बने ऊँचे तट पर पहुँचे, हमें दाहिनी ओर से एक धीमी सी गुर्राहट सुनाई दी और ठीक उसी समय हमने एक बाघ को पूरी ताकत से भागते हुए देखा, जिसकी पूंछ हवा में लहरा रही थी। जर्मन दंपति ने भी गुर्राहट सुनी, और दाहिनी ओर स्थित होने के कारण उन्हें नदी के किनारे दौड़ता हुआ बाघ साफ दिखाई दिया। अगले ही पल बाघ ने उन्हें देखा,

अचानक दिशा बदली, और नाले के दूसरे किनारे पर चढ़ गया और आँखों से ओझल हो गया।

नीचे, नदी के सूखते तल में बने एक छोटे से तालाब के ठीक बगल में, मरे हुए भैंस के आधे खाए हुए अवशेष पड़े थे। बाघ का न तो हमें कोई आभास हुआ और न ही वह दिखाई दिया। बेहद निराश होकर हम उस जगह लौट आए जहाँ हमने लैंड रोवर और दोनों जीपें छोड़ी थीं, उनमें सवार हुए और जल्द ही गेस्ट हाउस पहुँच गए। दोपहर में हम नागपुर वापस जाने के लिए निकल पड़े।

अपनी यात्रा के दौरान हम एक बड़े तालाब के पास पहुँचे जो सूखने की कगार पर था। हालाँकि नागपुर और कान्हा में बारिश हुई थी, लेकिन मध्य मार्ग का इलाका सूखे से ग्रस्त प्रतीत हो रहा था। पूरे गाँव के लोग इकट्ठा हो गए थे और सभी उम्र के पुरुष, महिलाएं और बच्चे एक फुट गहरे पानी में खड़े होकर असहाय मछलियों को अपनी टोकरियों में भर रहे थे। इनमें से कुछ मछलियाँ काफी बड़ी थीं, जिनका वजन चार से पाँच पाउंड था।

सुबह के दो बज रहे थे जब हल्की बारिश में हमने नागपुर से कलकत्ता जाने वाली फ्लाइट पकड़ी। यात्रा के इस चरण में कलकत्ता में रुकने का कोई कार्यक्रम नहीं था; हमें अगली फ्लाइट से जोरहाट जाना था, जो उत्तर-पूर्वी असम में स्थित एक कस्बा है, जिसे उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी के नाम से जाना जाता है। वहां से हमें कार से भारत के सबसे बड़े वन्यजीव अभ्यारण्य काजीरंगा जाना था, जहां हमें प्रसिद्ध एक सींग वाले गैंडे को उसके जंगली रूप में देखना था, साथ ही जंगली भैंस, बारहसिंगा, बाघ और हाथी भी देखने थे।

मैंने इस विमान में अपनी सीटों की पुष्टि करने और अपने सामान की बुकिंग कराने के लिए बुकिंग क्लर्क से संपर्क किया, तो उसने मुझे बड़े ही भाव से बताया कि संबंधित अधिकारी यह काम सुबह 6.15 बजे ही करेंगे। जोरहाट जाने वाली उड़ान सुबह 7.05 बजे निर्धारित थी।

कोलकाता हवाई अड्डे की एकमात्र ठीक-ठाक चीज़ उसका भोजन कक्ष था। हमने वहाँ चाय पी और क्लर्क के आने का इंतज़ार किया। उसने एक सूची देखी और कहा कि जोरहाट जाने वाली उड़ान के यात्रियों की सूची में हमारा नाम नहीं है। उसने माना कि हमारी 'बुकिंग' हो चुकी थी, लेकिन यह काफ़ी नहीं था; हमारे नाम 'पुष्टि' नहीं हुए थे। उसने कहा कि केवल बुकिंग होना ही काफ़ी नहीं है। कोई भी क्लर्क आपका

नाम 'बुक' कर सकता है। लेकिन एयरलाइन अधिकारियों को यह 'पुष्टि' करनी होती है कि विमान में आपके लिए जगह है। हमारे मामले में यह नहीं हुआ था। और विमान पहले से ही भरा हुआ था।

उन्होंने हमें लगभग पंद्रह मिनट और इंतज़ार करने की सलाह दी। एयरलाइन की बस शहर से आ रही थी, जो नौ मील दूर था, और उसमें इस उड़ान के यात्री सवार थे। शायद हमारी किस्मत अच्छी हो। हो सकता है चार लोगों ने अपनी उड़ानें रद्द कर दी हों, ऐसे में हमारे लिए जगह हो।

बस सुबह 6:30 बजे आ गई। और इससे भी अच्छी बात यह थी कि चार सीटें खाली थीं! फिर एक अधिकारी ने हमसे हमारे 'परमिट' दिखाने को कहा।

'किस चीज की अनुमति है?' हमने एक साथ पूछा।

'कौन से परमिट?' उसने दोहराया। 'क्या आप नहीं जानते कि आप सभी विदेशी हैं? भारत सरकार के किसी अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित परमिट के बिना विदेशियों को एन.ई.एफ.ए. क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है, क्योंकि जोरहाट नागालैंड सीमा के निकट है, जहां विदेशियों का प्रवेश वर्जित है।'

हमें पता नहीं था, और हमने गुस्से में यही कहा। हम काजीरंगा में गैंडों को देखने जाना चाहते थे, और हमें एन.ई.एफ.ए. या नागालैंड से कोई लेना-देना नहीं था। उसने कंधे उचकाए और कहा कि हम विमान में नहीं चढ़ सकते। फिर वह मुँह फेरकर चला गया।

हमारे अमेरिकी दोस्तों में से एक, जो, एक पेशेवर फोटोग्राफर थे। वे जानवरों पर लेखों की एक श्रृंखला में तस्वीरें खींचने और उन्हें प्रकाशित करने के लिए भारत आए थे। उनके लिए हर पल पैसों के लिहाज से महत्वपूर्ण था। खबर सुनकर वे बुरी तरह भड़क उठे। एयरलाइन अधिकारी ने बस मुस्कुरा दिया। उन्होंने आगे कहा, 'आप आज शहर में स्थित असमिया कार्यालय नहीं जा पाएंगे। दरअसल, आम हड़ताल चल रही है और आपको टैक्सी नहीं मिलेगी। सभी वाहन यातायात ठप्प है।'

उन्होंने आगे कहा, 'आप नौ मील पैदल चल सकते हैं, लेकिन हड़ताल के कारण कार्यालय निश्चित रूप से बंद रहेगा।'

फिर भी, उसने जो निराशाजनक तस्वीर पेश की थी, उसके बावजूद हमें थोड़ी सी किस्मत का साथ मिला। हमें शहर जाने के लिए एक वाहन मिल गया। वह हमें कलकत्ता के सबसे बड़े और बेहतरीन होटलों में से एक में ले गया, जहाँ हमें सौभाग्य

से रहने की जगह मिल गई। जिस हड़ताल की धमकी दी गई थी, वह तो नहीं हुई, लेकिन एक हड़ताल (जो लगभग वही बात है) चल रही थी। हमने किसी तरह एक टैक्सी ली और अपने परमिट लेने के लिए असम सरकार के प्रतिनिधि के कार्यालय में तुरंत पहुँच गए। वहाँ हमारे पासपोर्ट नंबर नोट किए गए और कुछ सवाल पूछे गए। हमें बताया गया कि ज़रूरी परमिट देने से पहले कुछ जाँच-पड़ताल में एक-दो दिन लगेंगे। जो फिर से भड़क उठा। हम किसी तरह उसे समय रहते कार्यालय से बाहर निकालने में कामयाब रहे। कुछ सेकंड और देर हो जाती, तो हमें वे परमिट कभी नहीं मिलते।

हमने प्रतीक्षा के दौरान कलकत्ता को जितना हो सके उतना देखने का निर्णय लिया। इससे जोरहाट से लौटते समय हमें यहाँ रुकने की आवश्यकता नहीं होगी।

सबसे पहले हमने चिड़ियाघर का दौरा किया। वहाँ हमने तीन प्रसिद्ध सफेद बाघ और उनके तीन अधेड़ उम्र के सफेद शावकों को देखा। हल्के भूरे रंग के, लगभग सफेद रंग के, वे वाकई अनोखे थे। उनमें से एक बाघ तो विशालकाय था। छहों जानवरों को अलग-अलग बाड़ों में रखा गया था। फिर वहाँ एक गयाल था, जो बाइसन के शरीर वाला एक बड़ा जानवर है, लेकिन उसके सींग सीधे होते हैं। यह पूर्वी असम और बर्मा की सीमा से आता है। इसके अलावा, भारतीय गैंडा और कई गिर और अफ्रीकी शेर भी थे। चिड़ियाघर की एक खास बात इसकी सीमा के भीतर स्थित एक बड़ी झील है, जहाँ हिमालय के पार से आने वाली विभिन्न प्रकार की जंगली बत्तखें बड़ी संख्या में आती हैं और साल के चार महीने बिताती हैं।

फिलहाल जो खुश था और काजीरंगा पहुंचने में हुई देरी से उसकी झुंझलाहट दूर हो गई थी। लेकिन उसकी खुशी क्षणिक थी, क्योंकि शाम 5:30 बजे जब हम होटल वापस लौटे तो हमें बुरी खबर मिली कि पश्चिम बंगाल सरकार के इस्तीफे के कारण तत्काल प्रभाव से एक और हड़ताल बुलाई गई है, जिसके चलते इंडियन एयरलाइंस ने कलकत्ता से आने-जाने वाली अपनी सभी उड़ानें रद्द कर दी हैं।

यह खबर सुनकर जो बेहद क्रोधित हो गया। वह काजीरंगा जाने के लिए एक विशेष विमान किराए पर लेना चाहता था या कार से जाना चाहता था। चूंकि इनमें से कोई भी संभव नहीं था, इसलिए वह चिड़चिड़ा और उदास हो गया। स्थिति काफी अप्रिय हो गई।

यह सब सोमवार, 16 मार्च, 1970 को हुआ था। रात के खाने से पहले हमें आखिरी बार यही सुनने को मिला था कि अगर स्थानीय सरकार अपनी समस्या

सुलझा ले, तो हम बुधवार, 18 तारीख को सुबह 7.05 बजे की उड़ान से जोरहाट जा सकते हैं—बशर्ते तब तक परमिट मिल जाएं।

मंगलवार (17 तारीख) का दिन शांतिपूर्ण रहा। सुबह हमने टैक्सी से कुछ जगहों का भ्रमण किया और कुछ दुकानों पर गए। लेकिन दोपहर तक राजनीतिक स्थिति बिगड़ चुकी थी; टैक्सियाँ सड़कों से गायब हो गईं और उनकी जगह सशस्त्र पुलिसकर्मियों से भरी ट्रकें सड़कों पर गश्त करती नजर आने लगीं। हमें होटल से बाहर निकलने की कोशिश न करने की चेतावनी दी गई थी। कलकत्ता में डेढ़ मिलियन से अधिक बेघर लोग फुटपाथों पर रहते हैं। वे वहीं खाना बनाते हैं, खाते हैं, सोते हैं और जाहिर है, उन्हें नहाने का मौका भी मुश्किल से ही मिलता है। किसी भी तरह की राजनीतिक अशांति के समय पैदल सड़कों पर निकलना असुरक्षित है, क्योंकि ये फुटपाथवासी मौका मिलते ही फायदा उठाने में जरा भी देर नहीं लगाते और कानून-व्यवस्था बिगड़ने पर राहगीरों को चाकू मार देते हैं। उन्हें किसी भी राजनीतिक गुट से कोई लेना-देना नहीं है।

उस दोपहर हमें जो एकमात्र उम्मीद की किरण दिखाई दी, वह हमारे चार परमिटों के रूप में थी। सच कहूँ तो, मुझे इनके आने की उम्मीद बहुत कम थी। हमने जल्दी खाना खाया और सो गए, ताकि सुबह 5 बजे से पहले उठकर सात बजे की हवाई यात्रा के लिए तैयार हो सकें।

मुझे अपना सूटकेस और एयरबैग तीसरी मंजिल से सीढ़ियों से खुद ही नीचे लाना पड़ा, क्योंकि लिफ्ट काम नहीं कर रही थी। इस होटल में नौकर भी मदद करने को तैयार नहीं थे, क्योंकि यहाँ टिप न लेने का नियम था। एयरलाइंस का दफ्तर पूरी तरह से अव्यवस्थित था। किसी ने हमारी तरफ ध्यान नहीं दिया और यह पता लगाना नामुमकिन था कि क्या हम सुबह 7:05 बजे वाली फ्लाइट में जा सकते हैं या वह फ्लाइट उड़ान भरेगी भी या नहीं। हवाई अड्डा भी पूरी तरह से अव्यवस्थित था। किसी को नहीं पता था कि यात्रियों की सूची में हमारा नाम है या नहीं।

सात बज गए, फिर आठ और आखिर में दोपहर के तीन बज गए। हम अभी भी धरती पर ही थे। हममें से किसी ने दोपहर का खाना नहीं खाया था और हम सब थक चुके थे—एक तरफ जो को ये सब करना था, दूसरी तरफ अदालत में रिफंड का दावा करना था, भारत के राष्ट्रपति को प्रधानमंत्री और अमेरिकी दूतावास को प्रतियां भेजकर टेलीग्राम भेजना था, और दूसरी तरफ हमारे आसपास के बंगालियों की

लगातार बकबक थी, जिससे मुझे बैंगलोर में मेरे घर के आसपास के ऊंचे पेड़ों पर शाम को लौटकर बैठने वाली हजारों मैनाओं के शोर की याद आ गई। यह एक बेहद तनावपूर्ण अनुभव था।

किसी को भी यह नहीं पता था कि जोरहाट के लिए हमारी उड़ान किस समय होगी; वास्तव में, किसी को यह भी नहीं पता था कि विमान उड़ान भरेगा या नहीं। स्थिति और भी बदतर हो गई जब अधिकारियों को अचानक उनके यूनियन से 'काम बंद' करने के निर्देश मिले, जबकि कुलियों को 'पूर्ण हड़ताल' पर जाने के लिए कहा गया।

अंततः, दोपहर 3:15 बजे, लाउडस्पीकर में खराबी आई, किसी ने खांसा, और घोषणा हुई कि उड़ान संख्या 211 रद्द कर दी गई है! हम भाग्यशाली थे कि हमें एक टैक्सी मिल गई जो हमें वापस ले गई और उस होटल तक पहुँचा दिया जहाँ से हमने उस सुबह जल्दी यात्रा शुरू की थी।

मैं थोड़ा जिद्दी स्वभाव का था, इसलिए उसी शाम अकेले ही एयरलाइंस कार्यालय चला गया, और आखिरकार हमारी किस्मत पलट गई। हम चारों को अगली सुबह, गुरुवार 19 तारीख को सुबह 6:10 बजे की फ्लाइट नंबर 249 में टिकट मिल गया था। विजयी होकर होटल लौटते ही मुझे पता चला कि मेरा पुराना कमरा गायब हो गया था; किसी और ने उसे ले लिया था।

अगली सुबह हम 4:45 बजे रवाना हुए तो दमदम हवाई अड्डे पर वही हड़ताल और अफरा-तफरी का माहौल था। उड़ान संख्या 249 का भविष्य अधर में लटका हुआ था। हालांकि, बड़ी चतुराई, मेहनत और कुछ गुप्त रिश्वत के दम पर हम किसी तरह उड़ान संख्या 205 और 249 की संयुक्त उड़ान, विस्काउंट विमान में स्थानांतरित होने में कामयाब हो गए। हवाई अड्डे के अधिकारियों और निश्चित रूप से हमें भी आश्चर्यचकित करते हुए, वह विमान आखिरकार सुबह 9:30 बजे उड़ान भर गया। शहर को पीछे छोड़ते हुए हममें से किसी ने भी कलकत्ता की ओर एक नजर नहीं डाली।

पाँच

अनाइबिद्दाहल्ला बाघिन

'अनैबिडहल्ला' का शाब्दिक अर्थ बोलचाल की भाषा में 'वह खोखला स्थान जिसमें हाथी गिर गया' होता है।

तमिलनाडु के सलेम जिले (पूर्व में मद्रास प्रेसीडेंसी) में पेन्नागरम शहर के उत्तर में स्थित पहाड़ी वन क्षेत्र में केम्पेकेराई नामक वन बस्ती के पास से एक धारा दक्षिण दिशा में बहती है। यह धारा एक स्थान पर तीव्र गति से नीचे गिरती है। लगभग दो सौ फीट की ऊंचाई से गिरने वाली यह धारा ग्रेनाइट चट्टानों वाले क्षेत्र में स्थित है, जिसके कारण हजारों वर्षों के दौरान पानी के टकराने से नदी तल में गहरी खाइयां बन गई हैं।

बरसात के मौसम में पानी इस गड्ढे को भर देता है और तेज़ी से बहने लगता है, लेकिन गर्मी में, जब नदी का प्रवाह रुक जाता है, तो गड्ढे में शांत, गहरे और भयावह पानी का एक बड़ा कुंड भर जाता है। इसकी सटीक गहराई किसी को नहीं पता। शायद यह तीस फीट से भी अधिक है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है और ताप बढ़ता है, कुंड का जलस्तर नीचे उतरता जाता है, और चारों ओर चिकनी चट्टान की एक सीधी, गोलाकार दीवार बन जाती है, जो काई और कीचड़ से ढकी होती है। कुंड में गिरी कोई भी चीज़ उस पर चढ़कर सुरक्षित वापस नहीं आ सकती।

इसी से इस जगह को इसका नाम मिला। दरअसल, एक हाथी गर्मी के मौसम में पानी की तलाश में यहाँ आया। वह तालाब के पास पहुँचा और उसने शायद पानी पीने के लिए अपनी सूंड बढ़ाई होगी। संभवतः पानी उसकी पहुँच से थोड़ा दूर था। हाथी ने अपनी सूंड बहुत आगे बढ़ा दी, फिसलन भरी सतह पर गिर गया और तालाब में जा

गिरा।

हाथी बेहतरीन तैराक होते हैं, लेकिन मछली के अलावा कोई भी चीज़ हमेशा के लिए तैरती नहीं रह सकती। पास की सड़क से मुत्तूर जा रहे कुछ गाड़ीवानों ने हाथी की चीखें और डर व घुटन भरी आवाज़ें सुनीं। वे अपनी गाड़ियाँ छोड़कर तालाब के चारों ओर चट्टानों पर बैठ गए और डूबते हुए जानवर के बचने के प्रयासों पर खुशी मनाने लगे।

कहा जाता है कि हाथी ने इन फिसलन भरी चट्टानों पर पैर जमाने के लिए अथक प्रयास किए, लेकिन वे व्यर्थ साबित हुए। हर बार वह फिसलकर वापस गिर जाता था।

गाड़ीवान इतने उत्सुक थे कि उन्होंने चट्टानों पर आग जला ली और पूरी रात वहीं डेरा डाले रहे। आखिरकार, सुबह तड़के हाथी एक आखिरी चीख और गड़गड़ाहट के साथ पानी के नीचे गायब हो गया। पेट में पर्याप्त गैस जमा होने और शव को सतह पर तैरने में दो सप्ताह से अधिक का समय लगा। तब तक दुर्गंध बहुत भयानक हो चुकी थी, और जैसे-जैसे मोटी खाल और मांस सड़ने लगे और सड़े हुए मांस के बड़े-बड़े टुकड़े दिखने लगे, दुर्गंध और भी बढ़ती गई।

उसके बाद बहुत लंबे समय तक कोई भी प्राणी उस तालाब के पास नहीं आया। यानी कम से कम तीस वर्षों तक नहीं, जब तक कि उस इलाके में घूम रहा एक बाघ, जिसने मनुष्यों पर हमला करना शुरू कर दिया था, ने वही हरकत दोहराई और तालाब में ही उतर गया। लेकिन यह एक अलग कहानी है।

इस क्षेत्र में बाघ शायद ही कभी लंबे समय तक रहते थे, फिर भी वास्तव में यह बाघों के नियमित मार्ग का मोड़ था जो बाईं ओर से रखे जाने पर एक चौड़े अक्षर U जैसा दिखता था, यानी जिसका मुख बाईं ओर हो। निचला भाग चिनार नदी के तल को दर्शाता है, उस बिंदु से जहाँ यह विशाल कावेरी नदी में मिलती है और इसके प्रवाह में लगभग सात मील आगे तक फैला हुआ है। उत्तर से आने वाली वह धारा, जिसके किनारे अनाइबिद्दाहल्ला का गहरा कुंड स्थित है, किस बिंदु पर चिनार नदी में मिल जाती है?

बाघ कभी-कभी कावेरी नदी तैरकर पार कर लेते थे और चिनार नदी के किनारे-किनारे इत्मीनान से आगे बढ़ते हुए, रास्ते में मिलने वाले चित्तीदार हिरण, सांभर या सूअर का शिकार करते थे। वे पानापत्ती और मुत्तूर के मवेशी बाड़ों में कभी-कभार

बछिया या भैंस का भी शिकार कर लेते थे। फिर वे अनाइबिद्दाहल्ला नदी के किनारे-किनारे उत्तर की ओर मुड़ जाते, बड़े तालाब के किनारे से होते हुए उसके ऊपर पहाड़ी पर चढ़ जाते। इसके बाद वे लगभग सात मील और आगे बढ़ते, जब तक कि वे एक अन्य नदी के तल तक नहीं पहुँच जाते, जिसे 'तालावड़ी नदी' के नाम से जाना जाता है, हालाँकि वास्तव में यह एक गहरी और पथरीली नाली मात्र है। यह नदी पश्चिम की ओर लगभग पंद्रह मील बहती है और कावेरी नदी में उस बिंदु पर मिल जाती है जो चिनार नदी के कावेरी में मिलने के स्थान से लगभग सात मील ऊपर है। तालावड़ी नदी को अक्षर U के ऊपरी भाग से दर्शाया जाता है, जो बाईं ओर रखा हुआ है।

जैसा कि मैंने बताया है, कावेरी नदी के उस पार से भटकते हुए ये बाघ चिनार नदी के किनारे पूर्व की ओर टहलते हुए जाते थे, फिर अनाइबिद्दाहल्ला धारा के किनारे उत्तर की ओर मुड़ते थे और अंत में तलावड़ी नाले के किनारे पश्चिम की ओर लौटकर कावेरी नदी तक पहुंचते थे और एक बार फिर तैरकर दूसरी तरफ कोललेगल तट पर पहुंच जाते थे।

यह देखना दिलचस्प था कि बाघ हमेशा इसी रास्ते पर चलते थे और कभी विपरीत दिशा से नहीं आते थे—यानी तलवाड़ी से अनाइबिद्दाहल्ला धारा होते हुए चिनार नदी तक और फिर वापस कावेरी नदी तक। मैंने कई वर्षों तक इस क्षेत्र में घूमकर देखा और पाया कि यह हमेशा ऐसा ही होता है। मैंने उन पुजारियों से भी पूछा जिन्होंने अपना पूरा जीवन इन जंगलों में बिताया है, और उन्होंने भी यही बात कही। यह जंगल के उन रहस्यों में से एक है जिनका स्पष्टीकरण देना असंभव लगता है।

ये बिल्ली जैसे शिकारी हमेशा से हानिरहित रहे हैं, और अगर उन्हें जंगली शिकार नहीं मिलता था, तो वे अपने इलाके में मौजूद मवेशियों के बाड़ों पर अचानक हमला करके भाग जाते थे।

जिसे बाद में 'अनाईबिद्दाहल्ला बाघिन' कहा जाने लगा, वह भी अपवाद नहीं थी। दरअसल, वह बाघ नहीं, बल्कि एक बाघिन थी। वह लगभग हर चार महीने में इस मार्ग पर आती थी। कभी-कभी अंतराल इससे भी लंबा हो जाता था। कावेरी नदी के किनारे मिट्टी और टहनियों से बनी झोपड़ियों में रहने वाले लोगों ने मुझे बताया कि उसे यह यात्रा पूरी करने में एक महीने से छह सप्ताह का समय लगता था। फिर वे उसके पदचिह्न पथरीले तलवाड़ी जलमार्ग से नीचे आते हुए पाते थे, जो नदी के किनारों पर उगने वाली ठंडी रेतीली जगहों का लाभ उठाते हुए, सरकंडों और मुथुर घास के ऊंचे-

ऊंचे झुंडों से होकर गुजरती थी, जब तक कि वह फिर से कावेरी के तट पर नहीं पहुंच जाती थी। यहां, जैसा कि उसके पदचिह्नों से पता चलता है, उसने जरा भी संकोच नहीं किया था। पदचिह्न सीधे नदी के किनारे तक जाते थे, जहां चाहे मौसम सूखा हो और पानी कम हो, या मानसून आ गया हो और कावेरी में बाढ़ आ गई हो, वे आंखों से ओझल हो जाते थे। बाघिन निश्चित रूप से एक कुशल तैराक रही होगी।

स्पष्टतः, उसका घर कोललेगल नदी के किनारे पर था, संभवतः नदी के किनारे से अचानक सीढ़ीनुमा उठते पहाड़ों में से किसी एक सुनसान स्थान पर किसी गुफा में। उसका साथी भी निश्चित रूप से वहीं था, क्योंकि अचानक वह अपने पुराने ठिकाने पर नहीं लौटी और पूरा एक साल बीत गया। वास्तव में, एक साल से भी अधिक समय बीत गया।

फिर बाघिन लौट आई। एक बार फिर उसके जाने-पहचाने पदचिह्न चिनार नदी के रेतीले किनारों पर दिखाई दिए, जो पानापत्ती के मवेशी बाड़े से होकर बहती थी, और इस बार वह अकेली नहीं थी। उसके साथ पग कुत्तों के दो जोड़े थे, एक-एक जोड़ी दोनों ओर। वे छोटे पग कुत्ते थे, लगभग उतने ही बड़े जितने बड़े अल्सेशियन कुत्तों के पदचिह्न होते हैं। बाघिन अपने दो शावकों को भी साथ लाई थी।

यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण था कि उसने ऐसा किया, क्योंकि इससे मवेशियों, उनकी देखभाल करने वाले चरवाहों और अंततः स्वयं बाघिन और उसके शावकों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

अब तक बाघों और तेंदुओं जैसे मांसाहारी जानवरों द्वारा मारे गए मवेशियों की संख्या बहुत कम थी, और उनकी देखभाल करने वाले चरवाहों ने इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया था। वे मालिक को यह कहकर झूठ बोल देते थे कि जानवर अचानक बीमार पड़ गया या फिसलकर किसी खाई या गहरी नाले में गिर गया और उसकी गर्दन टूट गई।

लेकिन इस बाघिन ने जब मवेशियों की संख्या अधिक और उनकी सेहत अपेक्षाकृत अच्छी पाई, तो अपने दो शावकों के साथ वहीं बसने का फैसला किया। मीलों भटककर भोजन की तलाश करने और फिर शायद कुछ न मिलने की बजाय, किसी मोटी बछिया या भैंस के बछड़े का शिकार करके उसे खिलाना कहीं अधिक आसान था: उसे भूखे पेट सोना पड़ता और उससे भी बुरा, उसके शावकों को भी। उसे अनुभव था कि जब वे इतने बड़े हो जाते, तब भी वे उससे दूध पीने की कोशिश करते

और यह बहुत कष्टदायक अनुभव होता। क्योंकि शावकों के लंबे और नुकीले पंजे थे जो उसके पेट के फर और त्वचा को फाड़ देते थे, और उनके दांत भी नुकीले और मजबूत हो गए थे जो उसके थनों को काट लेते थे।

अब शिकार लगातार होने लगे थे, लगभग हर तीसरे दिन, क्योंकि शावकों को बहुत भूख लगती थी। लापता जानवरों के लिए अब बीमारी या दुर्घटना का बहाना नहीं चल सकता था। उनकी संख्या बहुत अधिक हो गई थी। इसलिए, पनापत्ती में बाड़े में रखे गए विभिन्न प्रकार के मवेशियों और भैंसों की देखभाल करने वाले पुजारियों और अन्य निम्न जाति के ग्रामीणों ने मेरे शिकारी और साथी रंगा को मदद के लिए पुकारा, जो लगभग आठ मील दूर पेन्नागरम नामक छोटे कस्बे में रहता है।

मैंने आपको रंगा के बारे में पिछली कहानियों में बताया है। वह, बायरा नाम का एक पुजारी और मैं कई सालों तक इन जंगलों में मीलों तक घूमते रहे, और इनमें से शायद ही कोई कोना ऐसा था जो हममें से किसी एक या सभी से अनजान हो। बायरा एक शिकारी था, और वह अपनी मृत्यु तक शिकारी ही रहा। रंगा कहीं अधिक बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। एक शिकारी के रूप में शुरुआत करके, वह तरक्की करते हुए गाड़ीवान, शिकारी, किसान और अंत में एक छोटे जमींदार के पद तक पहुँच गया। उसने अपनी पहली पत्नी को मारने की कोशिश की और पकड़े जाने की गलती के कारण जेल चला गया। इस अनुभव से सबक लेते हुए, उसने अपनी दूसरी पत्नी की हत्या कर दी, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह पकड़ा न जाए, उसने उसके चाचा को एक जटिल सुराग दे दिया। इसके बाद, यह महसूस करते हुए कि तीसरी पत्नी की हत्या करके हैट्रिक बनाने का प्रयास बहुत जोखिम भरा होगा, उसने चौथी पत्नी से शादी करके समस्या का समाधान कर लिया, और दोनों महिलाओं को एक-दूसरे पर नियंत्रण रखने के लिए छोड़ दिया, जबकि वह पाँचवीं पत्नी के साथ उलझ गया।

विवाह समारोहों के इस स्थल को फिलहाल छोड़कर बाघिन के विषय पर लौटते हुए, रंगा को मदद के लिए पुकार सुनाई दी और उसने इसे गंभीरता से लिया। उन दिनों उसके पास एक पुरानी मजल-लोडर बंदूक थी। लेकिन यह एक अच्छा हथियार था, क्योंकि गर्मियों में उसने एक पानी के गड्ढे के पास घात लगाकर कई सांभर हिरणियों का शिकार किया था, उसी गड्ढे पर पानी पीने आए कई चित्तीदार हिरणों, हिरणी या उनके बच्चों को मारा था, और चांदनी रात में पेन्नागरम के पास गन्ने के खेतों में भटकने वाले कई जंगली सूअरों को भी मार गिराया था। रंगा को पूरा विश्वास

था कि वह अपनी भरोसेमंद बंदूक से बाघिन का आसानी से सफाया कर सकता है।

उसने अपने बुलावे पर आए आदमियों के ज़रिए संदेश भेजा कि चरवाहे बाघिन द्वारा मारी गई अगली गाय या भैंस के अवशेषों को पेड़ों की शाखाओं से सावधानीपूर्वक छिपा दें ताकि गिद्ध उन्हें ढूंढकर खा न जाएं, और फिर उसे तुरंत बुलाएं। वह तुरंत आएगा, शव की रखवाली करेगा और जैसे ही बाघिन दूसरे भोजन के लिए लौटेगी, उसे मार डालेगा।

योजना कुछ हद तक कारगर रही। बाघिन ने एक भैंस को मार डाला और अपने दो शावकों के साथ मिलकर उसका लगभग आधा हिस्सा खा लिया। चरवाहों ने बचे हुए हिस्से को पास के पेड़ों से काटी गई शाखाओं के नीचे छिपा दिया और रंगा को बुलवाया। रंगा बिना देर किए अपनी भरोसेमंद बंदूक लेकर आ गया।

बस एक ही दिक्कत थी कि शव के पास कोई ऐसी शाखा नहीं थी जिस पर बैठकर बाघिन को आराम दिया जा सके। वहाँ सिर्फ एक ही शाखा थी, और वो बिल्कुल सही जगह पर थी। लेकिन पनापत्ती के मूर्ख चरवाहों ने शव को ढकने के लिए उसकी पत्तियाँ और छोटी शाखाएँ लेने के लिए उसे काट डाला! क्या वे पत्तियाँ कहीं और से नहीं ला सकते थे? इस काम के लिए पूरा जंगल उनके सामने पड़ा था। वे बहुत आलसी थे। जब पास में ही एक सुविधाजनक शाखा मिल गई थी, तो इतनी दूर क्यों जाना?

इसलिए रंगा को अपनी मचान के लिए दूसरी जगह ढूंढनी पड़ी। उसे वह जगह मिल गई। एक और पेड़ पर एक और शाखा थी। लेकिन वह अस्सी से सौ गज दूर थी। इतनी दूरी मजल-लोडर के लिए काफी ज़्यादा थी, खासकर रात के समय जब सब कुछ धुंधला दिखाई देता है। इनमें से कुछ पुरानी बंदूकें इतनी दूरियों पर भी कमाल की असरदार होती हैं जहाँ शॉटगन का कोई काम नहीं होता। लेकिन अंधेरी रात में, जब टॉर्च की रोशनी में भी सही निशाना लगाना मुश्किल होता, तो रंगा के लिए हालात बहुत मुश्किल थे।

बाघिन अपने शावकों के साथ आई। रंगा ने उनके आने की आहट सुन ली थी। जल्द ही उसे पता चल गया कि बाघिन ने खाना शुरू कर दिया है; वह माँ और उसके बच्चों की गुर्राहट सुन सकता था क्योंकि वे मांस के लिए आपस में झगड़ रहे थे।

तभी उसने अपनी पिस्तौल की नली से रस्सी से बंधी बिजली की टॉर्च का बटन दबाया। शायद गोलियां लगभग खत्म हो चुकी थीं, क्योंकि रंगा ने कहा कि वह

मुश्किल से ही उन आंखों को देख पा रहा था जो उसकी ओर सफेद-लाल रंग में चमक रही थीं। किस्मत पर भरोसा करते हुए उसने ट्रिगर दबा दिया।

विस्फोट की सामान्य गर्जना हुई, जलते हुए काले बारूद की तेज रोशनी चमकी, और धुएं का घना गुबार उस डाल को ढक लिया जिस पर वह बैठा था। रंगा जानता था कि उसका निशाना नहीं चूका। वह बाघिन की तेज और गुस्से भरी दहाड़ सुन सकता था।

अँधेरे में, जल्दबाजी में बनाए गए और अस्थिर चबूतरे पर बड़ी मुश्किल से संतुलन बनाए रखते हुए, पिस्तौल को दोबारा लोड करना आसान नहीं था, लेकिन आखिरकार उसने कर ही लिया। जब उसने डरते हुए टॉर्च का स्विच दूसरी बार दबाया तो गर्जना बंद हो गई थी, लेकिन अब उसे जमीन पर पड़े शव के धुंधले, काले निशान के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। न तो बाघिन का और न ही शावकों का कोई निशान था।

जब सुबह हुई, तो मेरे साथी और चरवाहे, जिन्होंने रात में गोली चलने की आवाज़ सुनी थी और अपनी झोपड़ियों से बाहर आए थे, ने देखा कि बाघिन को गोली लगी होगी। ज़मीन पर खून की बूँदें थीं, और बाद में सावधानीपूर्वक पीछा करते हुए, उन्होंने घास और पत्तों पर खून के धब्बे और निशानों से भरा रास्ता ढूँढ़ा। यह रास्ता ढलान से नीचे चिनार नदी की ओर जाता था, जिसमें साल के इस समय मुश्किल से एक फुट गहरा पानी बहता था।

दूसरी तरफ पहुँचने पर, घनी झाड़ियों से पता चला कि बाघिन और उसके दो शावक कहाँ से गुज़रे थे। हरी टहनियों पर खून के धब्बे इस बात का संकेत दे रहे थे कि बाघिन को दाहिनी तरफ कहीं चोट लगी थी। उसके दाहिने कंधे या जांघ पर चोट के कोई सबूत नहीं थे, क्योंकि नरम रेत में उसके पदचिह्नों से लंगड़ाने का कोई संकेत नहीं मिला, और घाव भी गंभीर नहीं लग रहा था, क्योंकि खून का निशान अपेक्षाकृत हल्का था। झाड़ियों के बाद, बाघिन और उसका परिवार एक छोटी कंटीली पहाड़ी को पार कर गए, जिसके दूसरी तरफ निशान गायब हो गया था। या तो घाव से खून बहना धीरे-धीरे बंद हो गया था, या वसा या चमड़ी की एक परत घाव के ऊपर चढ़कर खून बहना रोक दिया था।

भारतीयों के हमेशा के आशावादी स्वभाव के अनुसार, रंगा और उसके साथियों ने आपस में बधाई दी कि उन्होंने मिलकर इस मुसीबत लाने वाले जानवर से छुटकारा

पा लिया है। उन्हें कोई शक नहीं था कि वह जंगल में कहीं अपने ज़ख्मों से मर जाएगा या फिर कमज़ोर हालत में कावेरी नदी पार करने की कोशिश में डूब जाएगा। उसके दो शावकों के भाग्य के बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं और न ही उन्हें इसकी परवाह थी।

लगभग दो महीने बाद, एक अंधेरी रात थी, जब बैलगाड़ियों की एक कतार अनाइबिद्दाहल्ला तालाब के ऊपर पहाड़ी की ऊँची चोटियों से उस हरे-भरे घाटी की ओर जाने वाले रास्ते के तीन तीखे मोड़ों से लड़खड़ाती हुई नीचे उतरी, जहाँ से छोटी सी धारा चिनार नदी की ओर बहती हुई बह रही थी। इस घाटी में वनस्पति घनी थी, और हाथी, भालू, सांभर और जंगली भेड़ें बहुतायत में पाई जाती थीं। बिल्लियाँ और चित्तीदार हिरण ज्यादातर थोड़ी ऊपर स्थित खुले जंगल में ही रहते थे; हिरण इसलिए क्योंकि वे घनी वनस्पति में जाना पसंद नहीं करते थे जहाँ मांसाहारी जानवर और उनसे भी अधिक खतरनाक जंगली कुत्ते आसानी से उन पर हमला कर सकते थे, और बिल्लियाँ इसलिए क्योंकि घाटी कीटों से भरी हुई थी और उन्हें बड़े-बड़े कीड़े, मच्छर और, अजीब बात है, छोटे-छोटे पिस्सू बिल्कुल पसंद नहीं थे जो इस जंगल की विशेषता थे।

सबसे आगे चल रही बैलगाड़ी पर दो भैंसों के जुए से एक हल्की जलती हुई लालटेन लटक रही थी; यह लालटेन उनके पिछले पैरों के ठीक पीछे लटकी हुई थी। इसका एक कारण था। पालतू भैंसें असामान्य रूप से मूर्ख जानवर होती हैं। अगर लालटेन उनकी गर्दन या चेहरे के पास कहीं भी लटकी होती, तो वे गाड़ी खींचने से मना कर देतीं। कोई नहीं जानता था कि ऐसा क्यों होता था। शायद गाड़ी खींचने वाले जानवरों ने सोचा होगा कि वे घर पहुँच गए हैं, तो आगे क्यों जाएँ? पीछे रोशनी और आगे अंधेरा देखकर उन्हें लगा होगा कि अभी उन्हें आगे जाना है। मैं मानता हूँ कि यह तर्क कुछ अतार्किक है, लेकिन शायद भैंसें अतार्किक प्राणी होती हैं। गाड़ी खींचने वालों को सामान्य बैलों के बजाय भैंसों का इस्तेमाल करना पड़ता था, क्योंकि कटे हुए बांसों का बोझ असामान्य रूप से भारी था और रास्ता पथरीला और ढलान वाला था। भैंसों में बैलों से ज़्यादा ताकत होती है।

यह सच है कि रोशनी को आगे के बजाय पीछे लगाने का एक स्पष्ट नुकसान था। भैंसों समेत कोई भी आगे का रास्ता नहीं देख पा रहा था। और जब एक दर्जन बैलगाड़ियों के पूरे काफिले के लिए सिर्फ एक ही लालटेन थी, तो उससे कोई मदद

नहीं मिली। लेकिन शायद बेहतर यही था कि ज्यादा न देखा जाए, इस सिद्धांत पर कि बुराई को न देखना ही बुराई को न जानना है। मेरा मतलब है, एक हाथी शायद कोने के पास या रास्ते से थोड़ा हटकर खड़ा हो। आम तौर पर, वह रात में दिखाई नहीं देता। और आम तौर पर, जब तक वह कोई 'बुरा' हाथी न हो, वह बैलगाड़ियों के गुजरते काफिले पर ध्यान नहीं देता। तो फिर उसे बेवजह देखकर घबराने की क्या जरूरत?

लेकिन यह तरीका हमेशा कारगर नहीं होता था। अगर हाथी थोड़ा भी अच्छा न हो, या ज़रा सा भी बिगड़ा हुआ हो, तो उसे अपनी निजता में यह दखलअंदाज़ी पसंद नहीं आती थी। फिर भी गाड़ीवान कुछ कर नहीं सकते थे। वे पीछे तो हट ही नहीं सकते थे। ज़रा सोचिए, घोर अंधेरी रात में एक संकरे रास्ते पर, ग्यारह और गाड़ियाँ और उनके ग्यारह साथी आपके पीछे चल रहे हों, तो एक बैलगाड़ी को जल्दी से घुमाना कितना मुश्किल होगा। बेशक, वे सब रुक सकते थे; कम से कम मुखिया तो रुक ही सकता था। दूसरा उससे टकराकर रुक जाता। तीसरा दूसरे से टकराता और इसी तरह चलता रहता। क्या इससे कोई फ़ायदा होता? बेहतर है कि चलते रहें। अगर वह खूंखार हाथी बहुत पास आ जाए, तो अपने पीछे वाली गाड़ी में रखे खाली केरोसिन के डिब्बे को पीटें, जो इसी काम के लिए वहाँ रखा होता है। इससे वह रुक जाना चाहिए। और अगर फिर भी न रुके? गाड़ी से कूदकर पीछे वाली गाड़ियों की कतार में भाग जाएँ। लेकिन घबराकर जंगल में न भागें; वहाँ कोई दूसरा हाथी भी हो सकता है। जब तक हाथी आपकी गाड़ी को चकनाचूर कर दे, अपनी उमंग में आपके एक या दोनों भैंसों को हवा में उछाल दे और फिर दूसरी गाड़ी की ओर मुड़ जाए, तब तक आपके पास सुरक्षित निकलने का काफी समय होगा। इसके अलावा, आपके पीछे ग्यारह और लोग हैं। जब तक वे जागेंगे और समझेंगे कि कुछ गड़बड़ है, तब तक हाथी खूब दहाड़ चुका होगा। सबसे ज़रूरी है अपनी जान बचाना।

लेकिन सांप का क्या? सड़क पार करते हुए जहरीले सांपों का क्या? हो सकता है कोई भैंस उनमें से किसी एक पर पैर रख दे; ऐसे में, दो घंटे के भीतर केवल एक भैंस कम हो जाएगी।

गाड़ीवान को हमेशा गाड़ी में ही बैठना चाहिए, हाथियों के डर से उसके पीछे नहीं चलना चाहिए। एक गाड़ीवान ने इस नियम का पालन नहीं किया। इसी रास्ते पर, लगभग सात मील आगे, उसकी मुलाकात हाथियों के झुंड से हुई थी। शाम का समय था और वह गाड़ी में अकेला था; इसलिए वह बांस काटने वालों के शिविर में लौट

आया, ताकि अगली सुबह भोर से पहले निकल सके। इस बार वह गाड़ी के पीछे चला, ताकि अगर हाथी से टक्कर हो जाए तो वह बिना किसी की नज़र में आए गायब हो सके।

हालांकि, भैंसें रास्ते में एक कोबरा पर पैर रखने से बच गईं, लेकिन गाड़ी के एक पहिये से उसकी पीठ टूट गई। कोबरा ने देखते ही उस आदमी का पैर काट लिया। गाड़ी वाला लगभग एक मील और चला और सुबह होते-होते मुत्तूर वन बंगले पर पहुँचा, जहाँ मैं ठहरा हुआ था। मैंने घाव को काटकर खून निकाला और उसे खूब दौड़ाया।

सब व्यर्थ गया। बेचारा दो घंटे में मर गया, और पुलिस ने दो दिन तक मुझे खूब परेशान किया। जाहिरा तौर पर, मेरे द्वारा चाकू से उसका पैर काटकर खून बहाने की बात बेहद संदिग्ध थी। शायद अगर मैंने किसी कुंद हथियार से ऐसा किया होता और खून छुपा दिया होता तो सब ठीक होता। मैं उन्हें कारण समझा ही नहीं पाया। मुझे लगता है मैंने यह कहानी कहीं और भी सुनाई है, लेकिन इसे दोहराना उचित नहीं है क्योंकि इसका सीधा संबंध रात में जंगलों से गुजरने वाली बैलगाड़ियों से है।

हालांकि, किसी हाथी ने इस विशेष काफिले पर हमला नहीं किया। लेकिन एक बेहद भूखी बाघिन ने अपने दो उतने ही भूखे शावकों के साथ ऐसा किया। उन्होंने काफिले को जाने दिया, सिवाय एक के। उन्होंने आखिरी गाड़ी पर हमला कर दिया।

जब यह घटना घटी, तब चालक गहरी नींद में सो रहा था, लगाम के तौर पर इस्तेमाल की जा रही रस्सी के टुकड़ों पर झुका हुआ था और एक मोटे काले कंबल में लिपटा हुआ था। वह अचानक चौंककर जागा, मानो अंतरिक्ष में गिर रहा हो, क्योंकि गाड़ी सड़क के किनारे एक नाले में पलट गई। उसे कान फाड़ देने वाली आवाज़ें सुनाई दे रही थीं; उसकी अपनी दो भैंसों की गुर्राहट, दहाड़ और गर्जना। उसे उस समय पता नहीं था, लेकिन उनमें से एक की पीठ पर, जिसके गले में उसके नुकीले दांत गड़े हुए थे, एक बाघिन बैठी थी। एक शावक, जो लगभग अधेड़ ही था, उसकी बगल में बेबस सा चिपका हुआ था, जबकि दूसरा शावक दूसरी भैंस के पिछले हिस्से से चिपका हुआ था।

गाड़ी और उस अफरा-तफरी में शामिल सभी जानवर धड़ाम से नाले की तलहटी में जा गिरे, जो सौभाग्य से ज्यादा गहरा नहीं था। गाड़ी चलाने वाला उछलकर दूर जा गिरा, जबकि भैंसों को बांधने वाला जुआ टूट गया। एक शावक के हमले का शिकार

हुई भैंस भाग निकली और नाले में तेजी से बहने लगी। उसका घबराया हुआ शावक अपनी माँ और दूसरे शावक के साथ मिल गया, जो बची हुई भैंस पर हमला कर रहे थे। दो मिनट के भीतर ही वह मर गया।

गाड़ीवान ने जैसे ही खुद को उलझे हुए कंबल से जल्दी से निकाला, उसे छटपटाते काले साये दिखाई दिए और भयानक आवाजें सुनाई दीं। तारों की रोशनी में वह नाले के किनारे चढ़कर उस रास्ते पर वापस आ गया जिस पर काफिला चल रहा था। दूर से उसे दूसरे ठेलों के खड़खड़ाने और धमकने की आवाज सुनाई दी, जो घटनास्थल से तेजी से भाग रहे थे। जो चालक जाग रहे थे और अपने पीछे मचे हंगामे को सुन चुके थे, उन्होंने अनुमान लगाया कि उनके साथी के साथ कुछ भयानक हो रहा है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि किस साथी के साथ, न ही वे यह जानने के लिए रुके; ठेलों से जुते भैंसों को अपनी गति बढ़ाने के लिए उकसाने की जरूरत नहीं थी। वे बाघ की दहाड़ को पहचान लेते थे! एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में एक-दूसरे के पीछे सरपट दौड़ते हुए, काफिला खतरनाक रास्ते पर उछलता और धमकता हुआ नीचे जा रहा था, जबकि अपनी जान बचाने के लिए भागता हुआ, बदकिस्मत चालक, जिसके ठेले पर हमला हुआ था, उन्हें पकड़ने के लिए पीछे दौड़ पड़ा।

इस घटना की खबर दूर-दूर तक फैल गई और बैलगाड़ियों का रात का सफर बंद हो गया। इससे बाघिन की हालत और बिगड़ गई, वह और भूखी हो गई और उसे अपने शावकों के साथ-साथ खुद को भी खिलाना पड़ा। उस समय किसी को पता नहीं था, लेकिन उसका दाहिना कंधा बुरी तरह घायल हो गया था; दरअसल, एक पुरानी बंदूक की गोली से उसकी हड्डी टूट गई थी। यह नुकसान रंगा की बंदूक से हुआ था।

भूख से बेहाल बाघिन दिन के उजाले में ही मवेशियों पर हमला करने लगी। उसके शावक भी इसमें उसका साथ देने लगे, जो शिकार करने की कला को तेजी से सीख रहे थे, हालांकि उनके तरीके अनुभवहीनता के कारण कच्चे और अनाड़ी थे। उनकी माँ भी कुछ खास नहीं कर पा रही थी, क्योंकि उसका कंधा बुरी तरह क्षतिग्रस्त था। इस प्रकार, इन तीनों जानवरों द्वारा किया गया प्रत्येक शिकार एक भयावह दृश्य प्रस्तुत करता था, जिसमें मांस के टुकड़े-टुकड़े हो जाते थे, खाल और हड्डियाँ फट जाती थीं, और शिकार को आधा जिंदा ही खा लिया जाता था। यह एक सामान्य बाघ द्वारा किए गए शिकार से बिलकुल अलग था; एक बाघ जो बड़ी सफाई से शिकार की गर्दन तोड़ देता है और कम से कम खून बहाता है।

ये हमले लगभग छह महीने तक जारी रहे, इस दौरान शावकों का तेजी से विकास हुआ। अब उन्हें किसी सहायता की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि वे स्वयं ही कुशलतापूर्वक शिकार कर सकते थे। आश्चर्य की बात यह थी कि वे अपनी घायल माँ के साथ ही रहे, जबकि लगभग एक वर्ष की आयु में शावक अपनी माँ से अलग होकर अपना बचाव स्वयं करने लगते हैं। जैसे-जैसे शावक बड़े और मजबूत होते गए और उनकी भूख बढ़ती गई, वैसे-वैसे गायों और भैंसों की हत्याएं भी बढ़ती गईं।

अगर चरवाहा मारियाप्पा, सभी समझदार चरवाहों की तरह जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भागने के बजाय, अपने खेत के किनारे तीन बाघों के हमले के समय अपनी दुधारू गाय की रक्षा के लिए न दौड़ा होता, तो शायद इससे ज़्यादा रोमांचक कुछ नहीं होता। अगर हमलावर एक ही जानवर होता तो शायद वह सफल हो जाता, लेकिन संख्या से साहस मिलता है, चाहे इंसान हो या बाघ।

अगर आप जंगल में घूम रहे हों—यानी जानवरों को देखने की उम्मीद में इधर-उधर भटक रहे हों—या फिर आपको बाघों का जोड़ा या शावकों वाली बाघिन दिख जाए (वैसे तो आजकल ऐसा होने की संभावना बहुत कम है), तो रुक जाइए और सबसे ज़रूरी बात, हिलिए-डुलिए मत। भागने की कोशिश मत कीजिए, क्योंकि इससे बाघों का ध्यान आपकी ओर आकर्षित होगा, जो आपके कुत्ते की तरह ही भागने वाली चीज़ों का पीछा करना पसंद करते हैं। अगर आपको पता हो तो बिना इधर-उधर हाथ-पैर मारे और अपनी मौजूदगी का पता लगाए बिना, हर हाल में छुप जाइए। सबसे ज़रूरी बात, बिल्कुल स्थिर रहिए। और मैं आपको सलाह देता हूँ कि कभी भी उनका पीछा करने की कोशिश न करें कि वे कहाँ जा रहे हैं। एक बाघ या दो तेंदुओं के साथ आप ऐसा पूरी तरह सुरक्षित रूप से कर सकते हैं। लेकिन जब बाघों का जोड़ा हो या शावकों वाली माँ हो, तो संभावना बहुत कम है। बाघों को अपनी पारिवारिक निजता में दखल पसंद नहीं होता, और संख्या में ज़्यादा होने से उनका साहस बढ़ जाता है। हाथियों के मामले में स्थिति बिल्कुल उलट है। अगर 'जंबो' अकेला है तो उसे अकेला छोड़ दें, और बछड़े वाली मादा से दूर रहें, हालांकि आप लगभग बिना किसी डर के तीस जानवरों के झुंड को मवेशियों की तरह हांक सकते हैं, भले ही आप अकेले हों।

मारियाप्पा ने एक बड़ी गलती की, जब वह उस प्यारी गाय के ऊपर लेटे तीन बाघों की ओर दौड़ा, जिसे उन्होंने अभी-अभी मारा था। शायद उसने सोचा होगा कि वह उसे बचा लेगा। उसकी बहादुरी तो बड़ी थी, लेकिन उतनी ही मूर्खता भी। अगले ही

पल उसकी मौत हो गई। उन तीन बाघों में से किसने उसे मारा, यह कोई नहीं जानता।

छह

बहुत समय पहले एक जंगल में

यह सब कई साल पहले पानापत्ती में हुआ था। जैसा कि मैंने पिछली कहानियों में बताया है, 'पत्ती' का अर्थ 'पशु शिविर' होता है, और पानापत्ती ऐसा ही एक शिविर था। यह चिनार नदी के दक्षिणी तट पर, दक्षिण भारत की सबसे बड़ी नदी कावेरी में इसके संगम से लगभग साढ़े तीन मील की दूरी पर स्थित है। चिनार नदी में केवल मानसून के दौरान ही पानी रहता है, और संभवतः उसके बाद कुछ महीनों तक। साल के बाकी छह महीने यह एक सूखा नाला रहता है, हालांकि इसके दोनों किनारे, जहां से यह बड़ी नदी में गिरती है, वहां से बारह मील या उससे अधिक दूरी तक घने जंगल से ढके हुए

हैं, जिनमें कई एकड़ में फैले बांस के पेड़ हैं, और इनके बीच में मुथी, इमली, जुमलम और अन्य कई प्रकार के पेड़ भी हैं।

मानसून समाप्त होते ही भारत में वनस्पति तेजी से सूख जाती है। परिणामस्वरूप, खेतों से काटी गई घास और चोल्लम, रागी और चावल की बालियाँ, जो अनाज की बालियाँ निकालने के बाद पशुओं को खिलाई जाती हैं, भी सूख जाती हैं और घरेलू पशुओं के लिए खाने को कुछ नहीं बचता। तब पशुपालक लालची निगाहों से जंगलों की ओर मुड़ते हैं, जहाँ घास अभी भी उगती है और कुछ प्रकार के पत्ते और झाड़ियाँ चरने के लिए उपलब्ध होती हैं।

वन विभाग से चराई के लाइसेंस खरीदे जाते हैं और हजारों घरेलू मवेशियों को जंगल में ले जाया जाता है, जहां उन्हें अगली मानसूनी बारिश तक रखा जाता है। मानसूनी बारिश के बाद जब घास और फसलें उगने लगती हैं और स्थानीय चराई संभव हो जाती है, तो उन्हें वापस गांव ले जाया जाता है। चूंकि यह एक वार्षिक आयोजन है, इसलिए सभी जंगलों में नियमित शिविर स्थल बन गए हैं जहां गर्मियों के महीनों में मवेशियों को रखा जाता है। दक्षिण में स्थित इन स्थलों को 'पट्टियां' कहा जाता है।

पनापत्ती, तमिलनाडु राज्य के सलेम जिले में स्थित है, जो पहले मद्रास प्रेसीडेंसी हुआ करता था; इसके बीस मील के दायरे से बाहर शायद ही कोई इसके अस्तित्व के बारे में जानता या सुना हो। मेरी जानकारी के अनुसार, पनापत्ती में केवल दो बार ही किसी न किसी रूप में हलचल मची। इनमें से पहली घटना एक हाथी के आने से हुई, जिसने कुछ लोगों को मार डाला, जिनमें उसका पीछा करने आया एक शिकारी भी शामिल था। इस जानवर को 'पनापत्ती का दुष्ट हाथी' के नाम से जाना जाने लगा। मैंने यह कहानी अपनी पिछली पुस्तक में बताई है।*

उसके बाद कई वर्षों तक शांति छाई रही। फिर 'प्रतिशोधी आत्मा' के आगमन के साथ उस छोटे से शिविर में दूसरी बार बदनामी छा गई, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यह आत्मा कोई मानव प्रेत नहीं थी, बल्कि एक बाघ था जो अचानक कहीं से प्रकट हुआ, एक रहस्यमयी प्रसिद्धि अर्जित की और फिर उतनी ही रहस्यमयी ढंग से गायब हो गया जितनी रहस्यमयी ढंग से वह आया था।

पनापत्ती में बाड़े में रखे गए अधिकांश पशुओं के मालिक धनी जमींदार थे, जो

लगभग अट्ठाईस मील दूर स्थित बड़े शहर धर्मपुरी में रहते थे। तीन-चार कम महत्वपूर्ण जमींदार मात्र दस मील दूर स्थित छोटे शहर पेन्नागरम से थे। पनापत्ती में रहने के दौरान जिन चरवाहों को पशुओं की देखभाल का जिम्मा सौंपा जाता था, वे पेन्नागरम के सबसे निचले तबके के ग्रामीण थे, जिनमें कुछ पुजारी भी शामिल थे। पुजारी एक आदिवासी जनजाति के वनवासी थे, जो साल भर जंगल में रहते थे और छोटी-छोटी फूस की झोपड़ियों या चिनार नदी के किनारों पर खोदी गई खोखली जगहों में आश्रय लेते थे। ये खोखली जगहें उन स्थानों पर बनी होती थीं जहाँ नदी पहाड़ी इलाकों से होकर बहती थी और किनारे ऊँचे और ढलानदार होते थे। इससे उन्हें कावेरी नदी पार करके रात के अंधेरे में चिनार नदी के किनारे चलने वाले हाथियों से सुरक्षा मिलती थी।

कैयारा एक ऐसा ही पुजारी था। वह कई वर्षों से नियमित रूप से उन चरवाहों में से एक था जो गर्मियों के महीनों में पानापत्ती आने वाले पशुओं के झुंडों की देखभाल करते थे। औसतन, पशु साल में लगभग छह महीने इस शिविर में रहते थे, और कैयारा की मजदूरी पूरे समय के लिए दस रुपये (लगभग 50 पेंस) थी, साथ ही चावल, चोल्लम या रागी का साप्ताहिक भत्ता भी मिलता था। ध्यान रहे, यह सब एक साथ नहीं दिया जाता था, क्योंकि यह बहुत अधिक भुगतान होगा। लगभग दस पौंड प्रति सप्ताह, जो भी अनाज उस समय बाजार में सबसे सस्ता उपलब्ध होता था।

जब कैयारा ने कई साल पहले पहली बार नौकरी शुरू की थी, तब उनके साथ उनकी पत्नी और एक इकलौती बेटी, मार्डी थी। फिर करैत सांप आ गया। वह रात बहुत गर्म थी और गर्दन और पीठ पर कहीं-कहीं सफेद निशान वाला पतला, गहरा काला सांप उस छोटे से परिवार की घास-फूस की झोपड़ी में घुस आया और पीने के पानी वाले गहरे मिट्टी के बर्तन के चारों ओर कुंडली मार बैठा। निस्संदेह, वह सरीसृप भी गर्मी से परेशान था और बर्तन की ठंडक का आनंद ले रहा था।

कैयारा की पत्नी के बाल बहुत लंबे थे। रात को जब वह झोपड़ी के फर्श पर लेटती थी, तो अक्सर उसके बाल उलझ जाते थे या उसके चेहरे पर गिरकर उसे परेशान करते थे। इसलिए उस समय उसने अपने बालों को उस काले कपड़े की पट्टी से बांधने का फैसला किया, जिसे वह इसी काम के लिए रखती थी।

लेकिन वह कपड़ा कहाँ था? पानी के घड़े के पास। अपने पति से बात करते हुए, महिला झुकी और उसकी उंगलियाँ उस चीज़ पर जा लगीं जिसे वह कपड़ा समझ रही थी। दुर्भाग्य से, उसने एक सांप को पकड़ लिया था।

सांप ने जिसे दुश्मन समझा उस पर हमला किया और अपने छोटे-छोटे दांत उसकी कलाई के ठीक ऊपर गड़ा दिए। फिर वह खुद को छुड़ाकर पानी के बर्तन के पीछे सरक गया और झोपड़ी की दीवार तोड़कर बाहर जंगल में चला गया।

महिला को ठीक से पता ही नहीं चला कि उसे किसने काटा था। उसे लगा कि कोई ठंडी और काली चीज है, और फिर वह गायब हो गई। उसने अपने पति को बुलाया और उसे दिखाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। कैयारा ने देखा तो उसकी पीठ की त्वचा पर खून की दो छोटी-छोटी बूंदें थीं। वे लगभग आधा इंच की दूरी पर थीं। पुजारी ने उन निशानों को पहचान लिया, वे किसी विषैले सांप के दांतों से बने घाव थे।

वह जुट गया। 28 मील के दायरे में न तो कोई डॉक्टर था, न विषनाशक इंजेक्शन, न ही कोई अस्पताल। केवल उसका गंदा कपड़े का थैला, जिसमें कुछ जड़ी-बूटियों और जड़ों का पाउडर था, ही उसकी मदद कर सकता था।

कैयारा को घाव को चीरकर खून निकालने के बारे में कुछ भी नहीं पता था। इसलिए वह बाहर गया, थोड़ा सा गोबर उठाया, अपने थैले में से कुछ पाउडर मिलाकर पेस्ट बनाया और उसे घाव पर अच्छी तरह से मल दिया। फिर वह बार-बार एक मंत्र का जाप करने लगा।

तीस मिनट के भीतर ही उसकी पत्नी ने कलाई में तेज दर्द की शिकायत की। साथ ही पेट में भी तेज दर्द हो रहा था। उसने कहा कि उसे चक्कर आने लगे हैं। तीस मिनट बाद वह बोल नहीं पा रही थी। आखिरी बार उसने यही कहा था कि उसके पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है। उसके मुंह के कोनों से लार टपक रही थी। उसकी सांसें भारी चल रही थीं। तीस मिनट बाद तो सांस लेने का नामोनिशान भी नहीं था। महिला ठंडी और बेजान हो गई थी। उसकी आंखें अपनी जगह से ऊपर चढ़ गई थीं। कुछ ही मिनटों में उसकी मृत्यु हो गई। काइयारा अपनी छोटी बेटी मर्डी की देखभाल के लिए अकेला रह गया।

वर्ष बीतते गए। मर्डी अब एक सुंदर युवती बन चुकी थी। वह पूर्ण रूप से परिपक्व और सुविकसित स्त्रीत्व की अवस्था में थी। एक पुजारी आदिवासी होने के नाते वह बेहद आकर्षक भी थी। वह अपने पिता की सहारा थी और उनकी अच्छी देखभाल करती थी, खाना बनाती थी और अपने छोटे से घर के सारे काम करती थी। वह सुबह-सुबह मवेशियों के साथ बाहर जाती और सूर्यास्त तक उन्हें चराती, और शाम

को जब सूरज चिनार नदी के किनारे पश्चिम की ओर स्थित ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों के पीछे डूबता, तो मवेशियों के झुंड के साथ घर लौट आती थी।

कई गरीब चरवाहे और कुछ पुजारी उससे प्रेम करने की इच्छा रखते थे और विवाह का प्रस्ताव लेकर कैयारा आए। अपने प्रस्ताव को मजबूत करने के लिए, कुछ लोग दहेज न देने को भी तैयार थे, जो हर पिता को बेटी के विवाह से पहले दूल्हे और उसके परिवार को देना पड़ता था। लेकिन मर्डी ने सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया। कम उम्र में ही वह दृढ़ निश्चयी थी; उसे आम चरवाहों या पुजारियों से कोई वास्ता नहीं था।

फिर एक दिन सत्यनारायण पानापत्ती आए। वे धर्मपुरी के गोपालस्वामी के सबसे बड़े पुत्र थे, जो एक धनी जमींदार और व्यापारी थे और पानापत्ती में दो सौ से अधिक मवेशी चराते थे। सत्यनारायण विवाहित थे और उनकी पत्नी और एक छोटा बेटा था। लेकिन जब वे अपने पिता के मवेशियों का निरीक्षण करने पानापत्ती आए, तो वे धर्मपुरी में ही रह गए। सत्यनारायण सुबह लगभग नौ बजे पहुंचे, जब मवेशियों को चराने के लिए ले जाया जा चुका था। मवेशियों को तब चरने के लिए ले जाया गया था जब सूर्य की किरणें पूर्व में चार मील दूर स्थित मुत्तूर पर्वतमाला के ऊपर से निकल रही थीं, जिससे चिनार घाटी और उसके दोनों किनारों पर ढलान वाली भूमि को ढके घने कोहरे का पर्दा छंट रहा था, जंगली हाथी घने बांसों में शरण ले रहे थे और सांभर पहाड़ियों की ओर जा रहे थे।

उन्होंने अपनी कार मुख्य सड़क पर अपने ड्राइवर के पास छोड़ दी और दो मील लंबे जंगल के रास्ते से होते हुए उस पथरी तक पैदल चले। सत्यनारायण ने सोचा कि यह रास्ता बहुत गंदा था; ज़मीन पर कई इंच मोटी गोबर की परतें जमी हुई थीं, जो वर्षों से गायों और भैंसों के झुंडों द्वारा जमा की जाती रही थीं। उन्होंने संभलकर कदम रखे और हाल ही में जमा हुए गोबर के ढेरों से बचते हुए अपने जूते गंदे होने से बचा।

कुछ ही देर में वह कैयारा की झोपड़ी के द्वार पर खड़ा हुआ और ज़ोर से खांसा; फिर उसने थूका। झोपड़ी में रहने वाले को नाम से पुकारना उसकी गरिमा के घोर विरुद्ध था। पुजारी ने अपने मालिक के बेटे को आते हुए देखा था। वह छोटे से द्वार से रेंगकर अंदर आया और हाथों और घुटनों के बल ज़मीन पर सिर रखकर प्रणाम किया, जो पुराने समय में पुजारी का पारंपरिक अभिवादन था।

'क्या खबर है?' युवक ने संक्षिप्त स्वर में पूछा।

'सब ठीक है, स्वामी जी,' पुजारी ने खड़े होते हुए उत्तर दिया। 'देवताओं की कृपा

से, आपके पूज्य पिता के किसी भी पशु को इस जंगल में रहने वाले खूंखार जंगली जानवर नहीं ले गए हैं और न ही उन्हें उस शापित पैर-मुंह रोग ने प्रभावित किया है। मैं प्रतिदिन देवताओं को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद देता हूँ। पशुओं को मेरी अयोग्य पुत्री की देखरेख में चरने के लिए छोड़ दिया गया है।'

'तो क्या इसी तरह तुम अपना गुजारा चलाते हो?' सत्यनारायण ने तीखे लहजे में पूछा। 'तुम अपनी झोपड़ी में सोते हो और मवेशियों को एक लड़की के भरोसे बाहर भेज देते हो। अगर कोई जंगली जानवर हमला कर दे तो वो क्या कर सकती है?'

पिता चुप रहे, फिर उन्हें एक शानदार बहाना सूझा: 'महामहिम, मुझे कल रात बुखार था, पेट में दर्द था और दस्त हो रहे थे, वरना मैं खुद भी भेड़ों के झुंड के साथ चला जाता।'

'तुम झूठ बोल रहे हो!' मकान मालिक के बेटे ने आरोप लगाया। 'हालांकि, चूंकि मैं जानवरों को खुद देखने आया हूं, इसलिए अब आपको मुझे उस जगह ले जाना होगा जहां आपकी बेटी उन्हें ले गई है।'

इस तरह सत्यनारायण ने पहली बार मर्दी को देखा और उस पर बुरी तरह मोहित हो गया। वह उससे तुरंत बात नहीं कर सका। यह उसके रुतबे के खिलाफ होता, खासकर उसके पिता की मौजूदगी में। उसे किसी बेहतर मौके की तलाश करनी पड़ी।

उस दिन के बाद से उस युवक को अपने पिता के पशुओं के झुंड में बहुत रुचि हो गई। उसके पिता यह देखकर अचानक आश्चर्यचकित रह गए कि उनका बेटा, जिसने अब तक उनके व्यवसाय में ज़रा भी रुचि नहीं दिखाई थी और पशुओं में तो बिलकुल भी नहीं, अचानक ज्ञान की प्यास से भर उठा था। इसलिए उन्होंने मुस्कुराते हुए अपने बेटे को प्रोत्साहित करने का फैसला किया। शायद यह महज़ एक क्षणिक शौक था और जल्द ही खत्म हो जाएगा, जब लड़का पहले की तरह ही निकम्मा हो जाएगा। बेशक, सत्यनारायण की पत्नी इस पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकीं। भारत में महिलाओं को अपने पतियों के आने-जाने पर सवाल उठाने की अनुमति नहीं है।

सत्यनारायण अपने दौरे का समय ऐसे चुनते थे जब जानवर जंगल में चर रहे होते थे। इसके अलावा, वे पट्टी से बचते हुए सीधे चरागाह पर जाते थे। इस तरह उनकी मुलाकात मरदी से दूसरी, तीसरी, चौथी बार और उसके बाद कई बार हुई।

हालांकि वह अभी बच्ची ही थी, लेकिन उसकी सहज प्रवृत्ति ने उस पुजारी को

बता दिया कि वह युवक उससे प्यार करने लगा है, और वह युवक उसे छोटे-छोटे पैसों के उपहार देकर उसके प्यार को और भी बढ़ावा देने में जरा भी देर नहीं कर रहा था। मर्डी का सपना हमेशा से ऊँचा था, स्थानीय चरवाहों और पुजारियों से कहीं ऊपर, और आखिरकार उसके सपनों का जवाब मिल गया। एक बेहद अमीर युवक; और तो और, उसके मालिक का इकलौता बेटा!

सत्यनारायण ने उसे बहकाने में जरा भी देर नहीं की। जंगल में इसके लिए पर्याप्त अवसर थे और मर्डी गर्भवती हो गई। बेशक, प्रेमियों को लगा कि उनके गुप्त संबंध के बारे में किसी को पता नहीं है। वास्तव में, पट्टी में हर कोई इसके बारे में जानता था। चरवाहों ने दूर से देख लिया था। पुजारियों ने तो एक कदम आगे बढ़कर प्रेमियों का पीछा किया और उनके अंतरंग क्षणों को करीब से छुपकर देखा। फिर वे वापस भागे और कैयारा को सब बता दिया।

बूढ़ा आदमी दंग रह गया। ऐसी बात तो उसने कभी सुनी ही नहीं थी; ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। उसके मालिक का बेटा सबसे ऊँची जाति का ब्राह्मण था। इतना ही नहीं, उसकी अपनी पत्नी और बेटा भी थे। उसकी अपनी बेटी मर्डी, जो पुजारी थी, सबसे नीची जाति की थी! भला ये कैसे हो सकता था? अगर उसने उस युवक से सवाल किया होता, तो बात फैल जाती और उसका मालिक, पिता, निश्चित रूप से कैयारा को नौकरी से निकाल देता। इसलिए उसने पाँच महीने तक ये बात अपने तक ही रखी, जब तक कि ये स्पष्ट नहीं हो गया कि उसकी बेटी गर्भवती है। उसने लड़की से पूछताछ की। उसे ये देखकर बहुत निराशा हुई कि वह ज़रा भी शर्मिंदा नहीं थी। उसने स्वीकार किया कि सत्यनारायण ही बच्चे का पिता है और बताया कि वह उससे प्यार करता है और उससे शादी करने का वादा किया है।

अगले ही मौके पर काइयारा ने हिम्मत जुटाकर उस युवक से सवाल किया।

सत्यनारायण भयंकर क्रोध से भड़क उठे। 'तुम क्या बकवास कर रहे हो?' वे गरजते हुए बोले। 'क्या मैं तुम्हारी बेटी, जो तुम्हारी ही तरह नीची जाति की वेश्या है, के साथ अपने आप को अपवित्र करूँगा? तुम्हें यह बेतुकी कहानी किसने सुनाई?'

'उसने खुद मुझे बताया,' बूढ़े आदमी ने सपाट लहजे में जवाब दिया।

सत्यनारायण ने तेवर चढ़ाए, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। वह पीठ फेरकर चले गए।

अगली सुबह मार्डी अपने पशुओं को चराने के लिए फिर से बाहर ले गई। यह

स्पष्ट था कि वह पिछली रात सोई नहीं थी। उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे और वे लाल थीं। वह रोई थी। यह समझा जा सकता था, क्योंकि उसके पिता ने बताया था कि उस युवक ने उसे छूने से इनकार किया था और उसे नीच किस्म की वेश्या कहा था।

उस शाम जब झुंड वापस लौटा, तब तक सूरज डूब चुका था। वे दो-तीन के समूह में आए, और कुछ तो बिल्कुल भी नहीं आए। और मार्डी का तो कोई अता-पता ही नहीं था।

कैयारा को पूरी तरह समझ आने से पहले ही अंधेरा छा गया। उसने बाकी लोगों से अपनी बेटी की तलाश में साथ चलने की गुहार लगाई। कुछ मान गए, जबकि अन्य ने अस्वस्थता का बहाना बनाया।

पट्टी में कोई लालटेन नहीं थी। न ही किसी के पास बिजली की टॉर्च थी। हर छोटी झोपड़ी में बस एक छोटी सी तेल की बत्ती थी, तेल से भरे एक छोटे से मिट्टी के कटोरे में तैरती हुई एक पतली सी मोमबत्ती। चांदनी भी नहीं थी, क्योंकि अमावस्या का समय था, महीने का सबसे अंधेरा समय। इसके अलावा, यह रात में बाहर निकलने का सबसे अशुभ और खतरनाक समय भी होता है, वह समय जब हर तरह के शैतान बेखौफ घूमते हैं: बुरी आत्माएं जो कभी पुरुष और स्त्री के रूप में, कभी हाथी, बाघ और अन्य जंगली जानवरों के रूप में, और अक्सर आकाश तक पहुंचने वाले ऊंचे सफेद खंभों के रूप में प्रकट होती हैं। जब वे निहत्थे मनुष्यों को मारने के लिए पाते हैं तो वे अपवित्र हंसी के साथ खिलखिलाते और चिल्लाते हैं।

इस खौफनाक माहौल में छोटा सा दल आगे बढ़ा, जंगल में चरते मवेशियों द्वारा छोड़े गए रास्तों पर कदम रखते हुए। एकमात्र रोशनी घने पत्तों से छनकर आते तारों से मिल रही थी। चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था। कोई राक्षस कहीं भी हो सकता था, पेड़ के तने या झाड़ी के पीछे, और किसी भी क्षण हमला कर सकता था। कोई बाघ या तेंदुआ किसी भी कोने में घात लगाए बैठा हो सकता था। यहाँ तक कि एक हाथी भी तीन कदम दूर हो सकता था और उस अंधकार में पूरी तरह छिपा हुआ होता। आदमी एक साथ झुंड बनाकर चल रहे थे, किनारे पर चल रहे लोग कांटों से टकराते हुए काफी शोर मचा रहे थे और इस प्रक्रिया में उनकी खाल बुरी तरह छिल गई थी क्योंकि कोई भी कतार में सबसे पीछे नहीं रहना चाहता था।

यह सर्वविदित था कि बाघ, तेंदुआ या हाथी के हमले का शिकार हमेशा आखिरी

आदमी ही होता था। कम से कम, अगर ऐसा होता तो वह चिल्लाकर दूसरों को चेतावनी दे देता, जिससे उन्हें भागने का मौका मिल जाता। लेकिन अगर कोई राक्षस उस पर हमला करता तो वह चुपचाप गायब हो जाता। किसी को पता भी नहीं चलता। फिर अगला आखिरी आदमी गायब हो जाता, और फिर अगला, और इसी तरह चलता रहता। जब तक सब गायब नहीं हो जाते, किसी को कुछ पता नहीं चलता।

इस तरह छोटा सा दल धीरे-धीरे आगे बढ़ा, लड़खड़ाया और फिर रुक गया। हर सदस्य घोर भयभीत हो चुका था और यह भय संक्रामक था। आपसी सहमति से वे रुक गए।

'मर्डी!' उसके पिता ने हताशा में चिल्लाते हुए कहा। 'मर्डी, मर्डी, मेरी बच्ची तुम कहाँ हो?'

घाटी में बहती जंगल की हवा की सरसराहट के अलावा कोई जवाब नहीं आया। दूर कहीं एक बाघ दहाड़ा। ठीक आगे एक हाथी ने दहाड़ सुनी और चुनौती देते हुए चिंघाड़ा। चिनार नदी के दूसरे किनारे पर बैठा एक सांभर हिरण इंसानों की गंध से जाग उठा और खतरे की घंटी बजाने लगा। एक बार, दो बार और कई बार। पहाड़ी पर ऊँचाई पर बैठा एक लंगूर बंदर इन शोरों से जाग गया और अपने कबीले के अन्य सदस्यों को बार-बार चेतावनी देने लगा।

खोज दल अब और नहीं हिचकिचाया। वे मुड़े और तेज़ी से पट्टी की ओर चल पड़े। वास्तव में, वे इतनी तेज़ी से चल रहे थे कि एक साथ चलना असंभव था। किसी न किसी को तो पीछे रहना ही था। लेकिन इस बार भगवान मेहरबान थे: न तो किसी जंगली जानवर ने उस पर हमला किया और न ही किसी राक्षस ने उसे मार गिराया। वे सभी पट्टी पर वापस पहुँच गए, लेकिन मर्डी उनके साथ नहीं था।

दिन दहाड़े लड़की के गायब हो जाने से सबको लगा कि उसे बाघ ले गया होगा। अगर उसे हाथी या तेंदुआ ने मारा होता, तो उसका कोई न कोई सुराग ज़रूर मिल जाता। लेकिन कैयारा और पट्टी के हर निवासी ने एक हफ्ते तक आसपास के जंगल में छानबीन की, फिर भी लापता लड़की का कोई सुराग नहीं मिला।

फिर एक सुराग मिला। एक अकेला गाड़ीवाला, जो जंगल से होते हुए पेन्नागरम जाने वाले मुत्तूर मार्ग की खड़ी चढ़ाई पर अपनी गाड़ी को चढ़ाने के लिए संघर्ष कर रहा था, उसे याद आया कि एक बड़ी कार पीछे से आकर उससे आगे निकलने की कोशिश कर रही थी और उसने उसे सड़क से हटाकर खाई में धकेल दिया था। ढलान

के कारण, सभी गाड़ियाँ भैंसों द्वारा खींची जाती थीं, क्योंकि वे बैलों की तुलना में अधिक मजबूत और अधिक स्थिर होती थीं। दुर्भाग्य से, वे अधिक मूर्ख भी थीं। जब कार पीछे से आई, तो गाड़ीवाले ने देखा कि अजीब बात यह थी कि चालक ने एक बार भी हॉर्न नहीं बजाया था। इसके बजाय, उसने चुपचाप तेजी से गाड़ी को ओवरटेक करने की कोशिश की, जिसके परिणामस्वरूप भैंसें डरकर सड़क के किनारे खड़ी खाई में गिर गईं और बांस से लदी गाड़ी को पलट दिया। सौभाग्य से, गाड़ीवाला बच गया, और जमीन पर गिरते ही उसने ऊपर देखा कि इस निर्दयी व्यवहार के लिए कौन जिम्मेदार था।

यह गाड़ी सत्यनारायण की थी। गाड़ी वाला उसे देखते ही पहचान गया। गाड़ी कोई और चला रहा था, लेकिन उसने पीछे की सीट पर सत्यनारायण को पहचान लिया। वह एक महिला को पकड़े हुए था। गाड़ी जब तेज़ी से गुज़री, तो उसने एक लाल साड़ी देखी। उसने कहा कि वह उस महिला को नहीं जानता। लेकिन मर्दी ने जिस दिन वह गायब हुई थी, उस दिन लाल साड़ी पहनी हुई थी। धीरे-धीरे पहेली के टुकड़े जुड़ने लगे।

आम तौर पर, सुबह-सुबह मुत्तूर का रास्ता सुनसान रहने की उम्मीद की जाती थी। लेकिन वहां कारवाले की मौजूदगी अप्रत्याशित थी। अगर कोई कार करादिमेडु (भालू की चक्की) नामक पथरीली पहाड़ी के चारों ओर घूमते हुए रास्ते के मोड़ पर खड़ी होती, तो मालिक जंगल से होकर एक शॉर्टकट ले सकता था जो उसे लगभग बीस मिनट में उस चरागाह तक पहुंचा देता जहां मर्दी मवेशियों को ले गया था।

इस पूरे मामले से दो ही निष्कर्ष निकलते प्रतीत होते थे। या तो प्रेमियों ने मिलने का समय तय किया था, जिसका फायदा उठाकर उस धनी युवक ने लड़की का अपहरण कर लिया, शायद बाद में उसकी हत्या करने के इरादे से; या फिर, उसकी जानकारी के बिना, वह चुपके से उसके पास आया और उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे अपने साथ ले गया।

कैयारा ने अपने एक-दो भरोसेमंद साथियों की मदद से मन ही मन इन सब बातों का हिसाब लगाया। लेकिन खुलेआम बोलने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। हर तरफ मुखबिर थे और किसी को नहीं पता था कि किस पर भरोसा किया जा सकता है। खबर उस नौजवान या उसके पिता गोपालस्वामी तक पहुंच जाएगी। फिर कैयारा को नौकरी से निकाल दिया जाएगा। यही सबसे बुरा अंजाम होगा। उसे याद था कि उसका

सामना पैसे वाले लोगों से है। वे गुंडों को पैसे देकर उसे पिटवा सकते हैं, शायद उसकी हत्या भी करवा सकते हैं। या फिर वे उस पर चोरी या किसी और चीज़ का झूठा आरोप लगा सकते हैं। उसे पुलिस स्टेशन में बंद कर दिया जाएगा और बेरहमी से पीटा जाएगा। उसके साथियों ने उसे सलाह दी कि वह इस मामले को छोड़ दे। इसे ईश्वर की इच्छा समझे और भूल जाए।

लेकिन कैयारा एक पिता थे। इसके अलावा, पनापत्ती में चरवाहों और उनके साथी पुजारियों के बीच उनकी यह प्रतिष्ठा थी कि वे एक शक्तिशाली जादू करने वाले काले जादूगर थे, और अगर उन्होंने कुछ नहीं किया तो उनकी यह प्रतिष्ठा हमेशा के लिए धूमिल हो जाएगी। उन्हें पाखंडी, कायर कहकर तिरस्कृत किया जाएगा। उनके साथी आपस में कहेंगे: वे खुद को काला जादूगर कहते हैं, लेकिन अब उनका जादू कहाँ है? अगर वे सचमुच वही होते जो वे दावा करते हैं, तो वे इस अपराध को करने वाले व्यक्ति पर जादू कर देते और वह व्यक्ति बहुत बीमार पड़कर मर जाता। क्योंकि पनापत्ती में हर किसी ने अपने-अपने मन में यह बात समझ ली थी कि क्या हुआ था, हालाँकि किसी ने भी इस मामले पर खुलकर बोलने की हिम्मत नहीं की।

कुछ दिनों बाद, अमावस्या की रात फिर आ गई, जो महीने की सबसे काली रात होती है, जब बुरी आत्माएं सक्रिय होती हैं और जादूगर अपने सबसे शक्तिशाली जादू करते हैं। जब शाम के भोजन के बाद पानापत्ती में अलाव धीमी गति से जल रहा था और चरवाहे रात के लिए अपनी झोपड़ियों में जाने से पहले कुछ मिनटों के लिए बातचीत करने के लिए बैठे थे, तब कैयारा उनके बीच आया और उन्हें संबोधित किया। उसने इस अवसर के लिए स्वयं को सजाया था। लाल और सफेद निशानों ने उसके चेहरे को एक भयानक रूप दे दिया था। उसकी दाहिनी कोहनी के ऊपर एक चांदी का बाजूबंद उसके काले जादूगर होने की पहचान बताता था। उसके गले में औदर्रचामणि पौधे के बड़े दांतेदार बीजों का एक हार था, और दूसरा बड़े, काले, कांच के मोतियों का।

उसने गला साफ किया और बोलना शुरू किया: 'भाइयों, जैसा कि आप सब जानते हैं, किसी दुष्ट व्यक्ति ने मेरी बेटी को बहकाया है। उसने न केवल अन्याय किया है, बल्कि उसे अगवा कर लिया है और शायद उसकी हत्या भी कर दी है। दिन बुरे हैं और हम गरीब हैं। मदद के लिए हमारे पास कोई नहीं है। कोई हमारी सहायता के लिए हाथ नहीं बढ़ाएगा, क्योंकि हमारे पास पैसा नहीं है, जबकि इस काम को करने

वाला दुष्ट व्यक्ति बहुत अमीर है। लेकिन मेरे पास एक ऐसी शक्ति है जिसे न तो वह और न ही उसका सारा धन, प्रभाव और मित्र मुझसे छीन सकते हैं। यह शक्ति है उसे और उसके परिवार को जीवितों के लोक से लेकर मृतकों के लोक तक श्राप देने की। मैं अपनी प्यारी बेटी की खोज में जाऊंगा। शायद मैं उसे पा लूं, शायद नहीं। शायद, मैं खुद वापस न लौटूं। यदि इस दुष्ट व्यक्ति के हाथों मुझे कोई हानि पहुंचे, तो मैं चाहता हूं कि आप गवाह रहें कि मैं अब उसे और उसके परिवार को श्राप देता हूं। उसका जीवन, और उसके प्रियजनों का जीवन, मेरी प्यारी बेटी और मेरे जीवन के बदले में निगल लिया जाएगा। मैं उसे श्राप देता हूं! मैं उसे श्राप देता हूं! मैं उसे श्राप देता हूं!' इस तीन बार दोहराए गए श्राप से, जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही होगा।'

अगली सुबह कैयारा पट्टी से निकल गया। केवल उसके करीबी साथियों को ही पता था कि वह साहसपूर्वक धर्मपुरी गया है ताकि अपने मालिक, धनी व्यापारी और पशुपालक को बता सके कि सत्यनारायण ने उसकी बेटी के साथ क्या किया था।

कैयारा कभी वापस नहीं आया। उसे फिर कभी नहीं देखा गया! चरवाहे जल्द ही उसे और उसके कहे शब्दों को भूल गए। शायद उसके खास दोस्तों ने इस बारे में सोचा होगा और उन्हें अफसोस हुआ होगा। पुजारी ने मानो अपना सिर बाघ के मुंह में डाल दिया था, यह उसकी मूर्खता थी।

छह महीने बीत गए। पोंगल का त्योहार था और सभी लोग खूब आनंद मना रहे थे। गाँव में बैलों के सींगों को लाल, नीले, हरे और चमकीले पीले रंगों से रंगा गया था। उनके माथे पर गेरू के लंबे लाल और सफेद निशान भी बने हुए थे। खेल आयोजित किए जाते थे और कभी-कभी पुरुषों और बैलों के बीच नकली लड़ाई भी होती थी।

सत्यनारायण, उनकी पत्नी और बेटे, अपने पिता के साथ, धर्मपुरी से पेन्नागरम होते हुए उस बिंदु तक कार से गए, जहां उन्हें कार चालक के भरोसे छोड़कर पनापत्ती तक पैदल जाना पड़ा।

दरअसल, यह यात्रा पूरी तरह से पिता के मनमाने विचार से हुई थी। सत्यनारायण अब कभी भी पानापत्ती नहीं जाना चाहते थे। उस जगह से उनकी कई बुरी यादें जुड़ी हुई थीं। उस अभागी पुजारी ने उनकी बातों पर विश्वास कर लिया था। उसने सचमुच उन झूठी कहानियों पर यकीन कर लिया था जो उन्होंने उसे सुनाई थीं कि वह उससे शादी करेंगे और उसे एक सभ्य महिला बनाएंगे। हालात और भी बदतर हो गए जब वह लड़की गर्भवती हो गई, और हद तो तब हो गई जब उसने अपने पिता

को सब कुछ बता दिया। इस मामले में उन्हें एक हजार रुपये खर्च करने पड़े, जो उन्हें ड्राइवर दास को देने पड़े ताकि वह उस दिन के बारे में चुप रहे जब उन्होंने उस कुतिया का अपहरण किया था। सौभाग्य से दास को भी नहीं पता था कि उन्होंने उसके शव का क्या किया। उन्होंने ड्राइवर को गाड़ी से उतार दिया ताकि कोई गवाह न रहे।

मानो इतना ही काफी नहीं था, उस लड़की के बाप ने अपनी बेटी के बारे में पूछताछ करने के लिए धर्मपुरी स्थित अपने पैतृक घर तक आने की हिम्मत दिखाई। सौभाग्य से, उसके बाप एक दिन पहले मद्रास गए हुए थे। उस घटना में उन्हें एक हजार रुपये का और नुकसान हुआ। इस बार दास को सब पता था, क्योंकि देर रात को खाली गाड़ी में शव को ले जाने वाला दास ही था। उसने और ड्राइवर ने शव को पत्थरों से भारी किया और ड्राइवर ने उसे गाड़ी से बाहर खींचकर चालीस मील दूर, सलेम जाने वाली सड़क पर एक बड़े टैंक में फेंक दिया।

लेकिन इन सब बातों से यह स्पष्ट हो गया कि दास को बहुत कुछ पता था। पिछले हफ्ते ड्राइवर ने उससे पाँच सौ रुपये की माँग की थी। सत्यनारायण ने मना करना शुरू ही किया था कि ड्राइवर के चेहरे पर आई उस मुस्कान को देखकर वह रुक गया, क्योंकि वह मुस्कान सब कुछ बयां कर रही थी।

फिर सत्यनारायण ने एक योजना बनाई। पोंगल के तुरंत बाद वह एक बड़े शिकार पर जाएगा और दास को अपने साथ ले जाएगा। वहाँ एक दुर्घटना होगी और ड्राइवर मारा जाएगा! बेशक, पुलिस कई अटपटे सवाल पूछेगी, लेकिन वह जानता था कि उसका पिता पैसों से भरे थैले लेकर सामने आएगा और सवाल पूछने वाले चुप हो जाएंगे।

आखिर इतनी सारी जगहों में से, उसके पिता पोंगल त्योहार के लिए पनापत्ती क्यों जाना चाहते थे? सत्यनारायण ने बूढ़े आदमी को समझाने की बहुत कोशिश की थी। लेकिन जैसा कि सब जानते हैं, बूढ़े लोग बहुत जिद्दी होते हैं। उसके पिता इस बात पर बहुत गुस्सा हो गए थे। उन्होंने तो उस नौजवान को भी खूब खरी-खोटी सुनाई थी, जिसे पनापत्ती में मवेशियों के झुंड में उसकी अचानक दिलचस्पी खत्म होने पर बहुत निराशा हुई थी। और इस तरह वे चारों जंगल से होते हुए पनापत्ती की ओर चल पड़े, दास को गाड़ी की देखभाल के लिए छोड़कर। ड्राइवर ने जाते समय सत्यनारायण की ओर देखते हुए फिर से वही घिनौनी मुस्कान बिखेरी। सत्यनारायण ने ठान लिया कि उसे बिना देर किए उस शिकार यात्रा और उससे होने वाली दुर्घटना को अंजाम

देना ही होगा। दास बहुत खतरनाक होता जा रहा था।

चारों आगंतुक उस स्थान पर पहुँचे जहाँ चरवाहों और कुछ पुजारियों ने उनके स्वागत की तैयारी कर रखी थी। चूंकि ये प्रतिष्ठित अतिथि उच्च जाति के थे, इसलिए उनके द्वारा किसी भी प्रकार का कोई भी भोजन तैयार नहीं किया जा सकता था और न ही भेंट करने से पहले उनके अपवित्र हाथों से होकर गुजर सकता था। इसलिए उपहार के रूप में हरे नारियल दिए गए, जिन्हें पानी पीने से पहले तोड़ना पड़ता था, और बड़े-बड़े मीठे नींबू जिन्हें 'साठगुड़ी' कहा जाता था, जिनकी बाहरी त्वचा को गूदा निकालने के लिए हटाना पड़ता था। इस प्रकार के उपहार सहर्ष स्वीकार किए जाते थे, क्योंकि इनमें सामग्री के दूषित होने की कोई संभावना नहीं थी।

रंग-बिरंगे और भड़कीले ढंग से सजाए गए मवेशियों को प्रदर्शित किया गया और पुरुषों और बैलों के बीच कुछ नकली लड़ाइयाँ भी दिखाई गईं। जानवरों को रस्सियों से बांधकर दोनों तरफ से लगभग आधा दर्जन आदमियों ने काबू में रखा हुआ था, इसलिए ये मुकाबले हास्यास्पद थे और शायद उनमें भाग लेने वालों के अलावा किसी को भी रोमांचित नहीं कर पाए। शाम का समापन हमेशा की तरह शुभकामनाओं के साथ हुआ और नारियल पानी पीने के बाद आगंतुक जाने की तैयारी करने लगे। उन्होंने चरवाहों से यह सुनिश्चित कर लिया था कि आसपास कोई हाथी न हो, इसलिए वे सामान्य समय से अधिक देर तक रुके रहे। एक बार फिर चिनार नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों के पीछे सूरज डूब रहा था, लेकिन सामान्य गति से चलते हुए वे सूर्यास्त से पहले मुख्य सड़क पर पहुँच जाएँगे जहाँ उनकी गाड़ी उनका इंतज़ार कर रही होगी।

यह घटना पट्टी और मुख्य सड़क के बीचोंबीच कहीं घटी। सत्यनारायण और उनके पिता आगे चल रहे थे, शायद किसी व्यापारिक सौदे पर चर्चा कर रहे थे। युवक की पत्नी, जैसा कि सभी सम्मानित और कर्तव्यनिष्ठ भारतीय विवाहित महिलाओं का कर्तव्य होता है, कुछ कदम पीछे चलने के लिए बाध्य थी। वह अपने छोटे बेटे का हाथ पकड़कर चल रही थी। बच्चा पूरी प्रक्रिया से थक चुका था और ऊब चुका था। वह रो रहा था।

जंगल में किसी भी प्राणी के बच्चे का रोना अच्छा नहीं होता। जंगल में असहाय और नाज़ुक प्राणियों के लिए दया का कोई नियम नहीं होता, केवल 'योग्यतम की उत्तरजीविता' का नियम चलता है, जिसमें निश्चित रूप से बच्चे शामिल नहीं होते।

अचानक एक गुर्राहट सुनाई दी; उसी समय कहीं से काले धारियों वाला एक विशाल भूरा शरीर प्रकट हुआ और रोते हुए बच्चे को अपने जबड़ों में जकड़ लिया। माँ ने यह देखा और सहज ही अपने बच्चे को बचाने के लिए जानवर के सिर पर झपटी। आगे खड़े दोनों आदमियों ने गुर्राहट सुनी और मुड़कर देखा। उन्होंने देखा कि बच्चे को मुँह में लिए बाघ उछला और अपने अगले पंजों से माँ पर वार किया। वे बस देखते रह गए।

सत्यनारायण, जो उम्र में छोटा था, सबसे तेज़ दौड़ा और सबसे पहले कार तक पहुँच गया। उसके पिता थकान से कई बार गिर पड़े, तब जाकर वे भी कार तक पहुँच पाए। फिर दास मदद लेने के लिए कार को बहुत तेज़ गति से पेन्नागरम की ओर ले गया। उस समय कोई मदद नहीं मिल सकी, क्योंकि रात का अंधेरा छा चुका था। अगली सुबह हथियारों से लैस लोगों की एक विशाल भीड़ भागते हुए लोगों का पीछा करते हुए उस भयानक घटना स्थल पर पहुँची।

माँ और बेटा एक-दूसरे से एक गज की दूरी पर पड़े थे। बाघ के बड़े-बड़े दाँतों ने छोटे लड़के को बुरी तरह से काट डाला था। उसकी माँ को बाघ ने दो ज़ोरदार वारों से मार डाला था। दोनों में से किसी के भी शरीर से मांस का एक टुकड़ा भी नहीं खाया गया था। कठोर ज़मीन पर बाघ के पंजों के निशान भी नहीं थे।

जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, पेन्नागरम और आसपास के गांवों और वन बस्तियों में अफरा-तफरी मची हुई थी। सौ मील के दायरे में किसी आदमखोर बाघ या तेंदुआ के दिखने की कोई खबर नहीं थी। वास्तव में, उस समय पनापत्ती के चरवाहों और उत्तैमलाई, होगेनैकल और कावेरी नदी के दूसरे किनारों पर बसे अन्य गांवों के मछुआरों ने पुष्टि की कि क्षेत्र में किसी भी प्रकार के मांसाहारी जानवर नहीं थे। शुष्क मौसम होने के कारण, और इस वर्ष विशेष रूप से भीषण गर्मी होने के कारण, सांभर पहाड़ों की ओर चले गए थे और चित्तीदार हिरण कम शुष्क क्षेत्रों में चले गए थे। जो थोड़े-बहुत मांसाहारी जानवर बचे थे, वे भी उनके साथ चले गए थे।

हत्यारा कहाँ से आया था, यह कोई नहीं बता सकता था। उसने हत्या क्यों की और फिर उसे खाया क्यों नहीं, यह और भी बड़ा रहस्य था।

जब यह सब हुआ, तब मैं अपने खेत, एंचेटी, जो उसी जंगल में स्थित एक छोटा सा गाँव है और लगभग बीस मील उत्तर में है, पर गया हुआ था, लेकिन एंचेटी तक अभी तक कोई खबर नहीं पहुँची थी। बाद में मैं एंचेटी से निकलकर गुंडालम नामक एक अन्य गाँव तक पैदल गया, और फिर 'गुप्त नदी' कहे जाने वाले एक नाले के

किनारे-किनारे सोलह मील चलकर कावेरी नदी में उसके संगम तक पहुँचा। वहाँ से मैं दस मील और चलकर उत्तमलाई पहुँचा, जहाँ पनापत्ती के पास हुई घटनाओं के बारे में सुनकर मछुआरे बहुत उत्साहित थे।

पहाड़ियों के बीच से एक छोटा रास्ता जाता है, जिससे मैं पनापत्ती से दो फर्लांग नीचे चिनार नदी के किनारे पहुँच गया। मैंने देखा कि चरवाहे और पुजारी एक पेड़ के नीचे इकट्ठा होकर हाल की घटना पर चर्चा कर रहे थे। पिछले दो दिनों से वे अपने मवेशियों को चराने के लिए जंगल में नहीं ले गए थे, क्योंकि उन्हें डर था कि हत्यारा उन पर या जानवरों पर हमला कर सकता है—यानी, एक-दो चरवाहे जिन्हें ऐसा लग रहा था कि ऐसा हो सकता है, और वे अल्पसंख्यक थे।

सभी पुजारी और बाकी चरवाहों का यही मत था कि वे और उनके पशु पूरी तरह सुरक्षित हैं। जिस बाघ ने शिकार किया था, वह आदमखोर नहीं था, क्योंकि उसने मारे गए स्त्री और बच्चे के शवों को छुआ तक नहीं था! न ही वह शिकार करने वाला था, क्योंकि उन्हें सांभर या चित्तीदार हिरण की कोई हड्डियाँ या शव नहीं मिले थे। गिद्ध भी लंबे समय से आकाश में नहीं मंडरा रहे थे और न ही शिकार के अवशेषों पर आपस में झगड़ रहे थे।

दरअसल, यह कोई बाघ या तेंदुआ नहीं था—कम से कम, साक्षात प्राणी तो बिल्कुल नहीं! यह पुजारी कैयारा की आत्मा थी, जिसने अपनी इकलौती बेटी और स्वयं की हत्या का बदला लिया था। पुजारी ने घमंडी सत्यनारायण पर लगाए गए अपने श्राप को पूरा करने के लिए बाघ का रूप धारण किया था।

'और यह अंत नहीं है, दोराई,' पट्टी पर मौजूद पुजारियों में सबसे बड़े और कैयारा के खास करीबी रहे पुजारी ने दबी आवाज़ में मुझसे कहा। 'बिल्कुल नहीं। यह तो श्राप का आधा हिस्सा है। बल्कि छोटा हिस्सा। दो असली दोषी तो अभी मरने बाकी हैं, हत्यारा सत्यनारायण और वह बदमाश कार-चालक जिसने उसकी मदद की।'

किसी भारतीय के लिए पश्चिमी मूल के व्यक्ति से अपने अंतर्मन की बातें साझा करना एक दुर्लभ बात है। दूसरे रंग और नस्ल के लोगों के प्रति एक अलिखित और अलिखित निषेध मौजूद है, जिनके साथ किसी भी महत्वपूर्ण गुप्त जानकारी को साझा करना अत्यंत अनुचित माना जाता है। आम धारणा यह है कि पश्चिमी लोग अत्यंत मूर्ख, बेहद निर्दयी, अविश्वासी और वास्तव में पांच भौतिक इंद्रियों से सीधे संबंधित मामलों को छोड़कर अन्य सभी मामलों में घोर अज्ञानी होते हैं। यह पूर्वाग्रह पूरे देश में

व्याप्त है और शायद गांवों और जंगलों के सीधे-सादे लोगों के मन में सबसे अधिक प्रबल है। मुझे उस बुजुर्ग व्यक्ति से वे तथ्य निकलवाने में दो घंटे से अधिक समय लगा, जिनका मैंने इस कहानी में पहले ही उल्लेख किया है। इसके अलावा, यह देखते हुए कि मैं बचपन से ही जंगलवासियों और ग्रामीणों के साथ रहा हूँ, मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे वे सभी तथ्य मिल सके जो मैंने अंततः एकत्र किए।

मेरे लिए तो यह सब बस जंगल की बातें थीं, वैसी ही बातें जो अंधविश्वासी लोग ही करते हैं। मेरी राय में, बाघ बस एक बाघ था, और कुछ नहीं। शायद वह घायल था और दर्द में था जब उसने औरत और बच्चे को देखा और गुस्से में आकर उन पर हमला कर दिया। हो सकता है बच्चे के रोने की आवाज़ ने उसे आकर्षित किया हो या उसे चिढ़ाया हो। शायद और भी सौ कारण हो सकते हैं, लेकिन आखिर वह एक जीता-जागता बाघ ही था। इसी से मेरे मन में यह ख्याल आया कि भले ही किसी अनजान वजह से उसने अपने किसी भी शिकार को नहीं खाया था, लेकिन वह कभी भी दोबारा हमला कर सकता है। इसलिए मैंने उसे गोली मारने की योजना बनाई। उस समय मैं काम नहीं करता था, इसलिए समय की कोई परवाह नहीं थी और मुझे शहर लौटने की कोई जल्दी नहीं थी।

जैसा कि मैंने अपनी अन्य पुस्तकों में बताया है, अधिकांश आदमखोर जानवर अपने क्षेत्र में एक नियमित मार्ग का अनुसरण करते हैं। मेरा तात्पर्य यह है कि वे एक जंगल क्षेत्र से दूसरे जंगल क्षेत्र में जाने के लिए एक निश्चित मार्ग का अनुसरण करते हैं, जिसमें विशिष्ट गाँव, नदियों के किनारे या उनके पार, या शिकार के रास्तों और आग की रेखाओं का अनुसरण करना शामिल है। एक बार इस मार्ग से गुजरने और एक-दो मनुष्यों को मारकर खाने के बाद, वे कुछ समय बाद उन्हीं रास्तों से वापस लौट आते हैं और यह प्रक्रिया बार-बार दोहराते हैं। इसलिए, धैर्य और सावधानी से ऐसे आदमखोर जानवर के मार्ग का मानचित्रण करना और काफी सटीकता के साथ यह अनुमान लगाना संभव है कि कब और कहाँ घात लगाकर उसका इंतजार किया जाए, या उसे चारा डालकर या किसी अन्य तरीके से लुभाने का प्रयास किया जाए।

यह सब इस मामले में लागू नहीं होता था। इस जानवर ने मीलों दूर तक किसी भी इंसान को नहीं मारा था। जैसा कि मैंने कहा, इसने किसी भी झुंड में किसी भी गाय पर हमला नहीं किया था, और न ही इसने किसी हिरण या सूअर को मारा था, जहाँ तक इसकी जानकारी थी।

मैंने पट्टी में रहने वाले पुजारियों और चरवाहों की मदद ली और चिनार नदी के तल को ऊपर और नीचे, कई मील तक हर दिशा में छान मारा ताकि उसके पदचिह्न मिल सकें और पता चल सके कि वह नर था या मादा। हमने खूब खोजबीन की, लेकिन हमें कहीं भी कोई पदचिह्न नहीं मिला।

यह बाघ पूरब से आया होगा, जहाँ अपेक्षाकृत खुला मैदान था, झाड़ियों वाला जंगल था जो मीलों तक फैले खेतों में बदल जाता था। ऐसे हालात में कोई बाघ न तो जीवित रह सकता था और न ही छिप सकता था। उसे जंगल से ही आना पड़ा होगा। बाघ खेतों में नहीं रहते!

मैंने चरवाहों को मनाकर सत्यनारायण के पिता के झुंड से चार मवेशी उधार ले लिए, और वादा किया कि अगर कोई मवेशी मारा गया तो मैं उसका मुआवज़ा दे दूंगा। मुझे पता था कि मालिक को इस स्थिति में कोई आपत्ति नहीं होगी, फिर भी मैंने एक चरवाहे को धर्मपुरी भेजकर मालिक को अपनी योजना की सूचना दे दी।

मैंने देखा कि पट्टी में मौजूद पुजारी इस प्रक्रिया में आगे सहयोग करने के इच्छुक नहीं थे। उनमें से सबसे बुजुर्ग ने साफ-साफ कह दिया कि मैं उनसे और उनके कबीले के सदस्यों से यह उम्मीद नहीं कर सकता कि वे उनके मृत साथी को पकड़ने के लिए जाल बिछाने में मेरी मदद करेंगे, जब वह बाघ के रूप में प्रकट होगा—वैसे भी वह इतना मूर्ख नहीं होगा कि मेरे द्वारा बांधे गए किसी भी चारे को मार डाले या खुद को गोली लगने दे। यह सर्वविदित था कि सीसे की गोली किसी आत्मा को भेद नहीं सकती। फिर भी, मेरी मदद करने के उनके उद्देश्य से ही उनका मूल्यांकन किया जाएगा। वे इस बाघ को मारने के मेरे प्रयास में मेरी सहायता नहीं कर सकते थे और न ही करेंगे।

पैसा बोलता है, इसलिए मैं उन चरवाहों को भी अपने साथ लाने में कामयाब रहा जो पुजारी नहीं थे। काफी पूछताछ और इधर-उधर भटकने के बाद, मैंने चार जगहों को बाघ के आने की सबसे अधिक संभावना वाली जगह के रूप में चुना। अब मेरे पास बस यही विकल्प था कि मैं निश्चिंत होकर इंतजार करूं कि कोई चारा मुझ पर पड़ जाए।

इस बीच खाली बैठने के बजाय, मैंने चिनार नदी के किनारे-किनारे बाघ के पगडंडियों की तलाश में सुबह से शाम तक जंगल छान मारा। पनापत्ती के चरवाहे और पुजारी मेरी मदद करने को तैयार नहीं थे, इसलिए मैंने अपने पुराने दोस्त बायरा को

बुलवाया, जो खुद एक पुजारी था और लगभग पंद्रह मील दूर अनाइबिद्दाहल्ला नामक एक अन्य बस्ती में रहता था। साथ ही मैंने रंगा को भी बुलवाया, जो कई अभियानों में मेरा साथ दे चुका था। ये दोनों ही माहिर खोजी थे और आसपास के कई मील के इलाके से अच्छी तरह वाकिफ थे। लेकिन हम तीनों की खोज व्यर्थ रही: हमें बाघ का एक भी पगडंडी नहीं मिला। हत्यारा जितनी खामोशी और अचानक आया था, उतनी ही खामोशी से गायब हो गया था।

समय कम पड़ गया और बैंगलोर लौटने का दिन आ गया। मैंने उधार लिए हुए चारों चारे लौटा दिए, साथ ही थोड़ी सी भेंट भी दी। आम तौर पर इस तरह का समझौता संभव नहीं होता और शिकारी को अपने चारे सीधे खरीदने पड़ते हैं। लेकिन यह मामला अपवाद था क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि चारे को कोई नुकसान नहीं होगा। भला भला कैसे, जब वहाँ कोई बाघ ही नहीं था जो उन्हें नुकसान पहुँचा सके?

लगभग दो महीने बीत गए और ड्राइवर दास, साठ मील दूर स्थित सलेम शहर से अपनी बड़ी पारिवारिक कार में अकेले धर्मपुरी लौट रहा था। वह सत्यनारायण के पिता को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए अस्पताल में भर्ती कराने ले गया था। दास ने बुजुर्ग को वहीं छोड़ दिया था और रात के खाने के लिए जल्दी में वापस आ रहा था। धर्मपुरी स्थित अपने घर पहुँचने के लिए उसे चालीस मील का सफर तय करना था। सड़क एक बड़े गहरे तालाब के घुमावदार बांध को पार करने के लिए संकरी हो गई। दूर-दूर तक कोई यातायात दिखाई नहीं दे रहा था और दास ने गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दी।

फिर स्टीयरिंग में कुछ गड़बड़ हो गई होगी, या शायद आगे का टायर फट गया होगा। कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता। घटना के एकमात्र गवाह दो ग्रामीण थे जो जल्दी-जल्दी अपने घर लौट रहे थे और उन्होंने पूरी घटना देखी। कार अचानक सड़क के बाईं ओर मुड़ने वाले मोड़ पर सड़क से उतर गई, सीधे सामने बने बांध की पतली ईंट की दीवार को तोड़ते हुए सीधे टैंक में जा घुसी।

दास ने खिड़कियां बंद कर रखी थीं। वह कार में फंस गया था और उसका शव एक हफ्ते बाद तब बरामद हुआ जब पुलिस ने वाहन को बाहर निकाला।

क्या यह महज़ संयोग था कि उसकी मृत्यु उसी तालाब में हुई जिसमें उसने अपने स्वामी के बाद कैयारा का शव फेंका था और पुजारी की हत्या करके शव को पत्थर से बांध दिया था? सत्यनारायण को यह खबर सुनकर गहरा सदमा लगा। पहले

उसका इकलौता बेटा, फिर उसकी पत्नी। अब उसका चालक दास।

सत्यनारायण को अपने सामने बूढ़े पुजारी और उसकी बेटी की हत्या याद आ गई। उसे बूढ़े पुजारी द्वारा उस पर लगाए गए श्राप के बारे में कई कहानियां सुनाई गई थीं और उसे यकीन हो गया था कि अब उसकी बारी है। उसी क्षण सत्यनारायण को एहसास हुआ कि उसे मरना ही होगा। इस प्रकार उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। उसके पिता अस्पताल से लौटे तो उन्होंने अपने बेटे को पागल पाया। बूढ़े ने कोई कसर नहीं छोड़ी। वे सत्यनारायण को सलेम ले गए और वहां के सबसे अच्छे डॉक्टरों से सलाह ली। लड़का अपनी बड़बड़ाहट में बार-बार कैयारा और मर्डी का नाम दोहराता रहा, लेकिन डॉक्टर उसे ठीक नहीं कर सके।

इसके बाद सत्यनारायण को मद्रास ले जाया गया और एक मानसिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। मनोचिकित्सक ने पाया कि यह उन्माद उस पागल व्यक्ति के मन में उन दो व्यक्तियों के साथ किसी प्रकार के संबंध से उत्पन्न हुआ था, जिनके नाम वह बार-बार बुदबुदाता रहता था। हालांकि, कोई भी उपचार कारगर नहीं हुआ और पिता ने यह स्वीकार कर लिया कि उनका पुत्र और उत्तराधिकारी स्थायी रूप से पागल हो गया है। युवक को घर लाया गया, जहां उसकी देखभाल के लिए दिन-रात दो पुरुष सेवक दिए गए। उसके पिता को आशा थी कि समय के साथ उसकी हालत में सुधार होगा।

इस मामले में उसे निराशा ही हाथ लगी। उसका बेटा और भी बदहाल हो गया और हिंसक हो गया, जबकि पहले वह सिर्फ बड़बड़ाता हुआ पागल था। बूढ़े ने अनिच्छा से फैसला किया कि उसे मद्रास के पागलखाने में स्थायी रूप से भर्ती कराना पड़ेगा। लेकिन ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि कैयारा के श्राप का पूरा असर अभी बाकी था—या कम से कम लोग तो यही कहते थे!

एक सुबह जब नौकर नाश्ता लेकर आया तो सत्यनारायण अपने कमरे में नहीं थे। पिछली शाम वे वहीं थे। पूरे कस्बे में उनकी तलाश की गई, लेकिन किसी को भी उन्हें कहीं देखने की याद नहीं आई। वे युवक काफी मशहूर थे और किसी न किसी ने तो उनकी गतिविधियों पर ध्यान दिया ही होगा। चार दिन बाद, पनापत्ती में मुख्य सड़क से मवेशी बाड़े की ओर जाने वाले रास्ते के ऊपर गिद्ध आसमान में चक्कर लगाने लगे। वे बड़े-बड़े घेरे बना रहे थे, जो संख्या में तेजी से वृद्धि होने के साथ-साथ संकरे होते गए। फिर, एक के बाद एक, वे धरती पर झपटे, हवा में उड़ते हुए उनके पंखों से तेज

खड़खड़ाहट की आवाज आ रही थी।

बायरा ने गिद्धों को देखा और उनकी आवाज़ सुनी। उसी साल उसने पनापत्ती में चरवाहों के बीच काम करना शुरू किया था और मवेशियों के झुंड को चराने के लिए जंगल ले जा रहा था। उसे पता था कि गिद्धों ने किसी शिकार को देख लिया है, और बचपन से ही शिकारी होने के कारण वह जाँच करने गया। शायद उसे खाने के लिए कुछ मांस मिल जाए।

शिकार को ढूंढना आसान था। गिद्धों की कर्कश चीख ने उसे सीधे शिकार तक पहुंचा दिया। पक्षी एक घेरे में इकट्ठा थे और उन्होंने अभी तक खाना शुरू नहीं किया था। क्योंकि वे डरे हुए थे!

उस भय का कारण यह था कि जिस मृत वस्तु पर वे विचार कर रहे थे वह एक मानव शरीर था। वह सत्यनारायण था, और उसे एक बाघ ने मार डाला था। लेकिन उसके शरीर का कोई भी हिस्सा खाया नहीं गया था।

अगली बार जब हम मिले तो बायरा ने मुझे बताया कि उसने और अन्य पुजारियों और चरवाहों ने पूरे इलाके में जानवरों के पैरों के निशान ढूंढे थे, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। फिर उसने कंधे उचकाते हुए पूछा, 'हम कैसे पता लगा सकते थे? क्योंकि उस सूअर को किसी बाघ ने नहीं मारा था! कैयारा ने तो कमाल कर दिया।'

---

* देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।

THE KENNETH ANDERSON **OMNIBUS**

**Brought together for the first time,
three of Kenneth Anderson's most well-loved books.**

THE BLACK PANTHER OF SIVANIPALLI

The author, more famous for hunting man-eating tigers, finds in a wily panther a real challenger to his hunting acumen. There are thrills, failures, disappointments, and at long last, the elusive success. He tells a real-life adventure story set in the deep jungle, with snakes, bisons and of course tigers, with the unique verve and colour which only Anderson is capable of.

THE TIGER ROARS

Hailed as the best of all of Anderson's books, the celebrated author reminisces about the man-eating tigers he had tracked down, a ferocious panther fond of human blood, the aging elephant meeting a sad end, and his own adventurous hours spent in the primeval jungles of India.

JUNGLES LONG AGO

Taking a holiday from big game hunting, Anderson lovingly reminisces about his exciting days and star-lit nights spent amidst the simple folks inhabiting the fringes of dark forests.

There is Byra the poojari, who taught him jungle lore, Ranga the shikari, happy with his gun and game, Mumptyvayan the bandit, betrayed and murdered by a woman, and many others. An altogether new Anderson with human compassion to match his hunting passion.

RUPA

www.rupapublications.com

Created by Aperture Design Studio

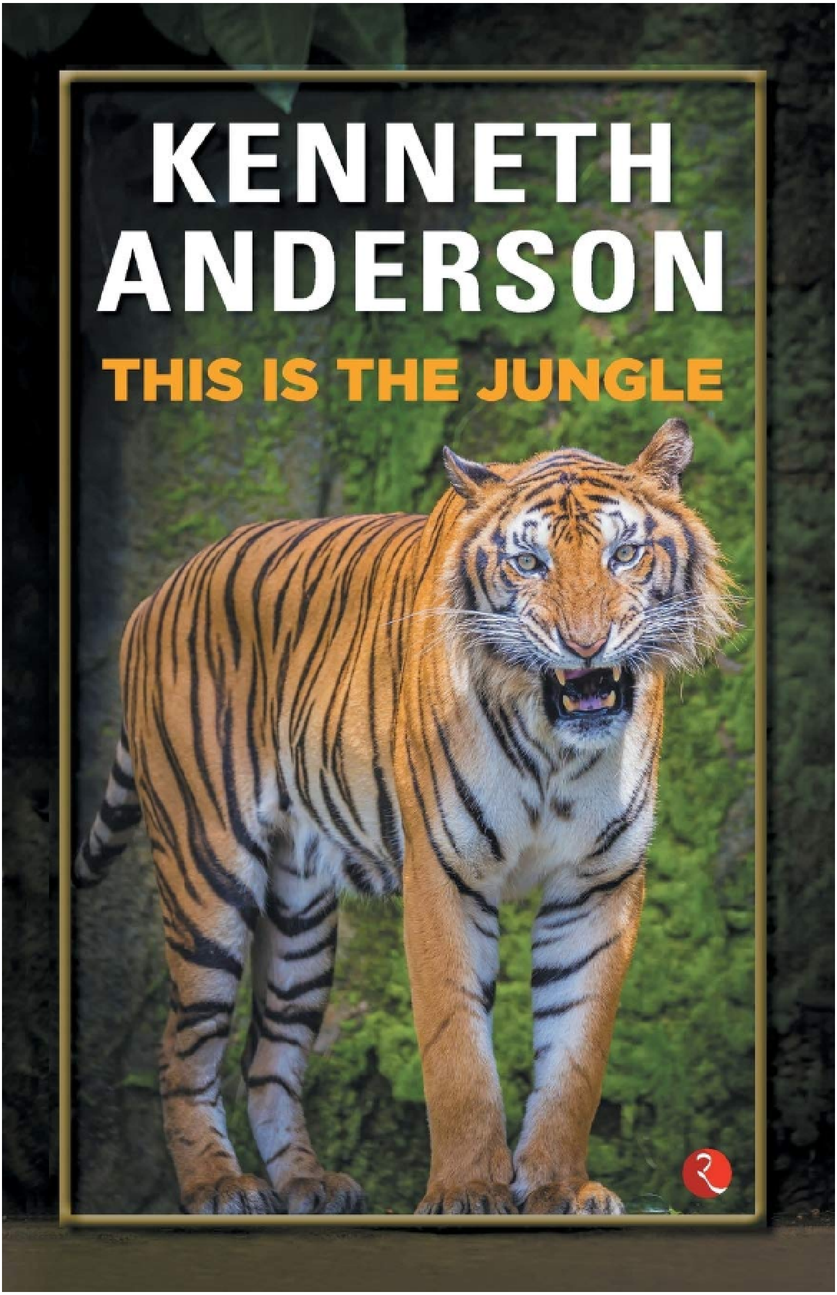
KENNETH
ANDERSON
THIS IS THE JUNGLE

परिचय

पृथ्वी के अधिक दुर्गम स्थानों में रहने वाले या अक्सर वहां जाने वाले लोग, चाहे वे उत्तरी या दक्षिणी गोलार्ध में स्थित पुरानी दुनिया में हों या नई दुनिया में, जाति, रंग या पंथ की परवाह किए बिना एक विचित्र भाईचारा बनाते हैं।

ये लोग स्वप्नदृष्टा होते हैं, आमतौर पर ज्यादा बात नहीं करते; और इसी वजह से इन्हें सनकी और असामाजिक माना जाता है। ये लोगों की संगति से दूर रहते हैं। इनके विचार असामान्य, बल्कि विचित्र होते हैं, और ये दूसरों के साथ आसानी से घुलमिल नहीं पाते। इन्हें जरा सा भी मौका दीजिए, ये मैदानों, पहाड़ों, रेगिस्तानों, दूर-दराज के द्वीपों या विशाल और सुनसान जंगलों में निकल पड़ते हैं। इन्हें किसी शहर में ले आइए - उन्हें चकाचौंध भरी रोशनी, चहल-पहल, थिएटर, सिनेमा और डांस हॉल दिखाइए - और ये एकदम उदास हो जाते हैं। मैं भी इसी अटपटी, असभ्य और अर्ध-सभ्य प्रजाति का हिस्सा हूँ।

अब मैं आपके सामने जो कहानियां प्रस्तुत कर रहा हूं, उनमें मैंने उबाऊपन से बचने का प्रयास किया है। केवल शिकार के लिए शिकार का वर्णन करना अक्सर नीरस हो जाता है: यह मात्र रक्तपिपासु हत्यारों की डायरी बनकर रह जाता है। यहां मैंने अपनी शिकार की कहानियों में प्रकृति के कुछ पहलुओं को शामिल करने का प्रयास किया है, और गंभीर और हास्यपूर्ण घटनाओं के बीच एक बाघ की जीवनी को भी प्रस्तुत किया है।

बाघ की इस कहानी को प्रस्तुत करने के मेरे दो उद्देश्य रहे हैं। पहला, ऐसे समय में जब प्रकृति और बचे हुए जीव-जंतुओं और पक्षियों के जीवन का अध्ययन करने का समय बहुत कम लोगों के पास है, जो हर साल विलुप्त होने के खतरे में है, मैंने वर्तमान परिस्थितियों में एक बाघ के सामान्य जीवन-वृत्तांत को दर्ज करने का प्रयास किया है, जब तक कि मनुष्य के हस्तक्षेप से उसका स्वभाव विकृत नहीं हो गया। उसके बाद बाघ ने जो कुछ किया और जो अपराध किए, वे उसकी अपंगता के कारण बदली हुई परिस्थितियों का परिणाम थे। जिन प्राणियों ने उसे अपंग किया, उनसे

बदला लेने की भावना भी हो सकती है, लेकिन फिर भी, उसे कौन दोषी ठहरा सकता है?

मेरा दूसरा उद्देश्य इस कहानी में बाघ की आदतों से संबंधित कुछ तथ्यों को शामिल करना रहा है, जो सभी जानवरों में सबसे शानदार जानवर है, और जिसका अस्तित्व भारत और कुछ अन्य देशों में सबसे बड़े विध्वंसक - ईश्वर द्वारा निर्मित मनुष्य - के कारण मिटने के खतरे में है!

इस और अन्य कहानियों में मैंने उन स्थानों के जीवन और परिस्थितियों का चित्रण करने का प्रयास किया है जिनसे मुझे बेहद लगाव है - भारतीय वन। अधिक कुशल लेखकों ने अपनी सरल कलमों से उनकी सुंदरता और आनंद का बखान किया है, जबकि कुछ ने अफ्रीका और भारत के वन्य जीवन के शानदार चित्रों वाली पुस्तकें संकलित करके सर्वकालिक महान सेवा की है। इन योगदानों के अतिरिक्त, मेरी कहानियाँ भारत, अफ्रीका, मलाया और श्रीलंका में वर्ष की प्रत्येक रात उन शानदार वन्य जीवों के बीच हो रहे अंधाधुंध, व्यर्थ और आपराधिक विनाश के विरुद्ध बढ़ते विरोध में कुछ हद तक योगदान दे सकती हैं, जिनसे ये देश संपन्न हैं। अंधेरा होते ही इन जीवों को मार गिराया जाता है, और भोर तक मशाल की रोशनी, रिपीटिंग राइफलों, मजल-लोडिंग बंदूकों और कई मामलों में खेतों में छिपी छोटी बारूदी सुरंगों की सहायता से इनका शिकार किया जाता है।

1. यह जंगल है

एक युवा के रूप में, मुझे चांदनी रात में जंगल में घूमने में, या चांद न होने पर मशाल की रोशनी में उसके अंधेरे रास्तों पर चलने में शांति, आकर्षण और असीम आनंद मिलता था। मेरी मशाल की रोशनी से परावर्तित होती आंखों की चमक से मैं उस प्राणी की पहचान का अनुमान लगा पाता था, जबकि वह अभी भी इतनी दूर होता था कि उसका आकार स्पष्ट दिखाई नहीं देता था। यह सब बहुत रोमांचकारी था, और उस रोमांच को बढ़ाने के लिए मैं ये सैर अकेले और निहत्थे ही करता था। इन प्राणियों ने

शायद ही कभी मुझे नुकसान पहुंचाने की कोशिश की हो।

दरअसल, अगर मेरी अचानक मुलाकात हो जाती तो सिर्फ़ दो ही जानवर मुझ पर हमला कर सकते थे। सबसे खतरनाक तो हाथी होता, खासकर अगर वो अकेला हो या अपने बच्चे के साथ हो। दूसरा जानवर जिससे अकेले में अचानक मिलना खतरनाक हो सकता था, वो है भारतीय सुस्त भालू - जिसे प्यार से बूढ़ा भालू कहते हैं। जंगल का ये मसखरा, बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता है। उसकी नज़र कमज़ोर है, और सुनने और सूंघने की शक्ति भी ज़्यादा अच्छी नहीं है। हो सकता है उसे आती हुई टॉर्च की रोशनी तब तक समझ न आए जब तक टॉर्च जलाने वाला कोने से न आ जाए। उसे तो ज़रूर बुरा लगेगा।

चांदनी रात हो या अंधेरा, ऐसी सैर के दौरान बचे हुए खतरे ज़हरीले सांप होते हैं जो कभी-कभी रास्तों पर घात लगाए बैठे रहते हैं। भारत में इनकी पाँच प्रजातियाँ पाई जाती हैं, और ये जंगलों में उतने अधिक नहीं होते जितना लोगों को बताया जाता है। फिर भी, वे वहाँ मौजूद होते हैं। इसलिए, सांपों से बचाव के लिए मैं घुटनों तक ऊँचे जूते पहनता था, जिनके तलवे क्रेप रबर के बने होते थे ताकि आवाज़ न हो। ज़ाहिर है, आदमखोर बाघ या तेंदुआ, या हिंसक हाथी से भरे जंगल में इस तरह घूमना सरासर आत्महत्या के समान होता। मैं ऐसी सैर तभी करता था जब इन खतरों की कोई खबर न होती। पानी के कुंडों और नमक के कुंडों पर रात में पहरा देना, या शिकार के रास्तों और नदियों के किनारे पेड़ों पर बैठना, या चट्टानों पर चढ़ना, या वास्तव में हर तरह की जगहों पर किसी भी संभव और अनुकूल अवसर पर, ये सैर लंबे समय से मेरा सबसे बड़ा आनंद और मनोरंजन रही हैं। दिन के समय भी मैं किसी मित्रवत इमली या मुट्ठी के पेड़ की छाँव में बैठकर कबूतरों की गुटरगू, हरी बारबेट चिड़िया की चहचहाहट या मैना की 'टोंक' की आवाज़ सुनता हूँ। भोर और शाम के समय जंगली मुर्गे की मधुर बांग, स्पूर-फाउल की झगड़ालू आवाज़ और मोर की कराह कानों में पड़ती है, और अंधेरा छाने पर ये आवाज़ें नाइटजार की चहचहाहट और सींग वाले उल्लू की अजीब सी दूर से आती हुई हूट में सुनाई देने लगती हैं। जंगल में जानवर हमेशा चुप रहते हैं और अपनी उपस्थिति का पता नहीं चलने देते। अगर वे ऐसा करते, खासकर छोटे शाकाहारी जीव, तो वे ज़्यादा दिन जीवित नहीं रह पाते। इसलिए मैं किसी सांभर हिरण की अचानक 'धंक-ऊंक!' की आवाज़ सुन सकता हूँ, लेकिन केवल तभी जब

वह सतर्क हो या उसने किसी दुश्मन की गंध महसूस की हो। चीतल या चित्तीदार हिरण की तेज़ 'आओ!' और कर्कश 'खर्र!' की आवाज़ भी सुनाई देती है। जंगली भेड़ों की आवाजें भी इसी तरह की परिस्थितियों में सुनाई देती हैं।

बाघ और तेंदुआ प्रजनन के मौसम को छोड़कर शायद ही कभी आवाज निकालते हैं। उस समय, अपने साथी की तलाश में बेचैन बाघिन की धीमी, लंबी कराह पहाड़ियों, घाटियों और घने जंगलों वाली नम खाइयों में गूंजती है। 'ऊंग! ऊंग! आउंग! आउंग!' वह चिल्लाती है। कोई नर बाघ उसकी पुकार सुनकर उससे मिलने और प्रेम करने के लिए दौड़ पड़ता है, जबकि अन्य सभी जीव डर के मारे मुड़कर भाग जाते हैं और खतरे की अलग-अलग आवाजें निकालते हैं। तेंदुआ की कर्कश आवाज शिकार के रास्तों पर गूंजती है, 'आह हा! आह-हा! आह-हा!'। लेकिन इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, सिवाय पेड़ की चोटी पर बैठे सतर्क लंगूर बंदर के। वह एक शाखा हिलाता है और 'हर-हर-हर!' चिल्लाकर अपने समूह को सचेत करता है।

अगर आप शांत बैठे रहें, तो चांदनी में भालू का भारी-भरकम शरीर दिखने से पहले ही आपको उसकी दूर से आती आहट सुनाई दे सकती है। अंधेरी रात में आप उसे बिल्कुल नहीं देख पाएंगे। लेकिन जब तक आप खुद स्थिर हैं, तब तक चिंता की कोई बात नहीं है। सुस्त भालू बहुत शोर मचाने वाला जीव है। उसकी सिसकियाँ, गुर्राहट, कराहें और एक अजीब सी गुनगुनाहट, जो मधुमक्खियों के झुंड की आवाज़ और बैगपाइप की आवाज़ का मिला-जुला रूप लगती है, भालू के पास होने का संकेत देती हैं। यह गुनगुनाहट बताती है कि वह दीमकों को उनके टीलों से चूसने की कोशिश कर रहा है, या फिर अपने पंजे या जांघ के अंदरूनी हिस्से को चूस रहा है। अगर आप उसे बहुत पास आने से पहले ही भगा दें, तो डरने की कोई बात नहीं है।

यह सब बेहद मनमोहक है। हर ध्वनि अपनी एक कहानी कहती है। भय की ध्वनियाँ हैं, प्रेम और मिलन की ध्वनियाँ हैं, भूख की पुकार है, और कभी-कभी साथ की चाहत की पुकार भी है। समय और अनुभव के साथ आप इन सभी को पहचानना सीख जाते हैं।

मरते हुए जानवर की तीखी चीख और धरती पर अपना खून बहाते हुए उसकी कर्कश, अस्पष्ट साँसें शायद ही कभी आप तक पहुँच पाएँगी। जंगल के शिकारी इसके लिए

बहुत कुशल होते हैं। शिकार को चीखने से पहले ही ज़मीन पर गिरा दिया जाता है, और उसके गले पर मौत की पकड़ इतनी मज़बूत और निर्दयी होती है कि ज़रा सी भी आवाज़ नहीं निकल पाती। जीवन के तेज़ी से थमते जाने के दौरान ज़मीन पर खुरों की हल्की लेकिन व्यर्थ सी आवाज़ ही हिरण की मृत्यु की सूचना दे सकती है।

लिखते समय ये सब यादें मेरे मन में उमड़ रही हैं। क्षितिज पर दूर-दूर तक फैले पहाड़ों के वो अद्भुत दृश्य, जिनकी चोटियाँ आकाश में एक दाँतेदार रेखा की तरह दिखती हैं, कभी-कभी तो उन्हें पहाड़ पहचानना मुश्किल हो जाता है और वे दूर कहीं इकट्ठे हो रहे बादलों की तरह लगती हैं। पास ही प्रकाश और छाया का अद्भुत नजारा है। वो चमकीला हरा रंग, जो गहरे हरे रंग से कितना अलग है; पत्तियों में पीले और भूरे रंग के छींटे; घने जंगलों के नीचे छिपी ठंडी, गहरी छायाएँ; चमकीली तितलियों के साथ सूरज की रोशनी की चकाचौंध। एक बोरम के पेड़ से दूसरे बोरम के पेड़ तक भारी-भारी उड़ान भरते 'गोल्ड-बुंडू' की भिनभिनाहट; छोटे पक्षियों की चहचहाहट; बड़े पक्षियों की सुहावनी, तेज़ आवाज़ें। गर्म चट्टान का धूसर रंग, जिसकी सतह से परावर्तित ऊष्मा की लहरें उठती हैं; धरती का लाल-भूरा रंग; नदी-तल की मुलायम रेत; घास का पन्ना हरा रंग, जो गर्मी बढ़ने और सूरज की किरणें तेज़ होने के साथ सूखकर देहाती भूरे रंग का हो जाता है। अचानक हुई बारिश के बाद नम मिट्टी की ताज़ा खुशबू। हर जगह जीवन की प्रचुरता; पक्षी, कीट, सरीसृप, पशु, वनस्पति। ये मेरे लिए जीवन की अच्छाई और सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी और सर्वत्र व्याप्त सृष्टिकर्ता की महानता और निर्विवाद सर्वव्यापकता के संकेत हैं। जो कोई भी इससे अलग सोचता हो, मैं उसे जंगल में चुपचाप अवलोकन करने की सलाह दूंगा। वहाँ वह जो भी अद्भुत चीजें देख और सुनेगा, वे महज़ संयोग से नहीं हो सकतीं।

तो आइए कुछ देर के लिए इन एकांत क्षेत्रों पर नज़र डालें जहाँ मनुष्यों की आवाज़ें सुनाई नहीं देतीं और प्रकृति का ही राज है। ऊपर घने जंगलों से ढकी पहाड़ियों और उनके ऊपर स्थित पर्वत की ओर देखें: ये राजसी सांभर हिरण और चंचल छोटे मुंटजैक, या जंगली भेड़, जैसा कि उसे बेहतर जाना जाता है, का घर हैं। इन चट्टानी टीलों में कई सुस्त भालू रहते हैं, प्रत्येक माँ अपने दो शावकों को अपनी घनी, लंबे बालों वाली पीठ से चिपकाए रखती है जब वह यात्रा करती है, और दिन भर आराम करने पर उसके बगल में चंचलता से खेलते हैं। नीचे बांस और घास के जंगल हैं, जो

हाथी और बाइसन का घर हैं। घास के मैदान चित्तीदार हिरण और चार सींग वाले मृगों से भरे हुए हैं। गहरी घाटियाँ नीचे तक फैली हुई हैं, जो पहाड़ी चोटियों की लंबाई तक जाती हैं। एक पहाड़ी जलधारा प्रत्येक घाटी को दो भागों में बांटती है, और प्रत्येक छोटी नदी शुष्क गर्मी के महीनों में कई जंगली त्रासदियों का गवाह बनती है। क्योंकि जंगल में बचे हुए कुछ ठंडे, ताजगी भरे स्थिर जल के कुंडों में, भयभीत जानवर रात में चुपके से अपनी प्यास बुझाने आते हैं।

लेकिन शिकारी, चाहे इंसान हों या जानवर, यह बात जानते हैं और तालाब के किनारे या उस तक जाने वाले शिकार के रास्ते पर घात लगाकर बैठे रहते हैं। घात लगाए बैठे बाघ या तेंदुआ का हमला पानी पीने की चाह रखने वाले कई लोगों की जान ले लेता है, जबकि बंदूक की गूंजती आवाज शिकारी की मौजूदगी का पता दे देती है।

भोर की गुलाबी छटाएँ दूर जाकर सिंदूरी, नीले, बैंगनी और नीले-हरे रंगों में घुल जाती हैं। बारह घंटों के भीतर ये रंग सूर्यास्त के नारंगी-लाल रंग से प्रतिस्पर्धा करेंगे, जो गहराकर रक्तमय लाल रंग में तब्दील हो जाएगा, मानो उसी रात घटित होने वाली त्रासदियों का पूर्वाभास दे रहा हो, मानो किसी घायल जानवर के फटे गले से बहने वाले रक्त से मेल खाने की कोशिश कर रहा हो।

जंगल में शाम का समय सैर के लिए बेहद सुहावना होता है। सूरज ढलने के साथ ही धरती तेज़ी से ठंडी होने लगती है। दिन भर की गर्मी में चुप रहने वाले कई पक्षी अचानक चहचहाना शुरू कर देते हैं। अगर आप पहाड़ों में हैं, तो इनमें सबसे प्रमुख होगा सबसे मधुर गायक, भारतीय ब्लैकबर्ड, जिसे 'सीटी बजाने वाला स्कूली बच्चा' के नाम से जाना जाता है। उसकी निरंतर, निरंतर बदलती और दिल को छू लेने वाली आवाज़ें मानो किसी खुश स्कूली बच्चे की तरह लगें जो घर लौटते समय जीवन की खुशियों में सीटी बजा रहा हो। अगर आप निचले जंगल में हैं, तो मैगपाई-रॉबिन सीटी बजाने वाले स्कूली बच्चे का एक बेहतरीन विकल्प है। लगभग उसी तरह की मधुर और आनंदमयी आवाज़ वाला, काले-सफेद रंग का मैगपाई-रॉबिन पहाड़ों में रहने वाले अपने चचेरे भाई की तरह ही मधुर गीत गाता है। दाईं और बाईं ओर, चित्तीदार धूसर कबूतर धीरे से "क्रू-ऊ! क्रू-ऊ!" की फुसफुसाहट करते हैं।

'व्हीव! कुक-क्या-क्या-खुकम!' की चौंका देने वाली आवाज़ के साथ, चांदी जैसे पंखों

वाले जंगली मुर्गे का दिन के अंत में अभिवादन सुनाई देता है, जिसके बाद घोंसले में बैठे मोरों की उदास और दूर से आती 'म्याऊँ-म्याऊँ-ऐओव!' की आवाज़ आती है। घनी झाड़ियों में, वे छोटे-छोटे लड़ाकू पक्षी, 'कुकराया वैक! कुकेरा-वैक!' की लगातार आवाज़ों के साथ, अपनी अंतहीन लड़ाइयाँ लड़ते रहते हैं। घास के मैदानों में, तीतर सुबह और शाम को 'की-कूक-कूक-कूक! की-कूक-कूक-कूक! की-कूक-कूक कूक!' की आवाज़ लगाते हैं।

सूरज क्षितिज के नीचे डूब जाता है, लाल और नारंगी रंग अचानक फीके पड़ जाते हैं और उनकी जगह गहरे स्लेटी-धूसर रंग छा जाते हैं। आप यह देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि जहाँ कुछ ही देर पहले डूबते सूरज की किरणें दूर-दूर तक फैले बादलों की चोटियों को रोशन कर रही थीं, वहाँ अब अचानक ही तारे टिमटिमाने लगते हैं। फिर अचानक ही भयानक अंधेरा छा जाता है। दिन के पक्षी आराम करने चले जाते हैं और रात के पक्षी दूर-दूर तक अपनी मधुर आवाज़ों और दर्द भरी चीखों के साथ गाना शुरू कर देते हैं। यही वह क्षण है जब जंगल सचमुच जीवंत हो उठता है। फुदकती हुई नाइटजार पक्षी धरती पर उतरती है और 'चक! चक! चक! चक! चक-ऊऊऊऊ!' की आवाज़ निकालती है, जैसे सड़क किनारे पड़ा कोई भूरा पत्थर। विशाल सींग वाला उल्लू ऊपर से उड़ता हुआ किसी पेड़ की चोटी या ऊँचे पत्थर पर बैठ जाता है; फिर उसके गले से एक गहरी आवाज़ निकलती है, 'हू-ऊऊऊ! हू-ऊऊऊ! हू-ऊऊऊ!'। अब चरवाहे का बच्चा दूर घाटी में पुकारता है, 'ऊऊऊ!-ऊऊऊल-ऊऊऊ!', उसकी आवाज़ दिन के समय चरवाहों द्वारा अपने मवेशियों को पुकारने की आवाज़ से मिलती-जुलती है। जैसे-जैसे रात बढ़ती है, जंगल, जो दिन में बड़े जानवरों से अजीब तरह से खाली लगता था, जीवंत हो उठता है। रात के जीव जाग उठते हैं; वे घूमने, खाने, लड़ने, प्यार करने और जीने या मरने के लिए निकलते हैं, जब तक कि अगले दिन की सुबह उन्हें फिर से आराम करने के लिए शांत नहीं कर देती। आपके चारों ओर रहस्यमय सरसराहट सुनाई देती है। ये आवाज़ें घनी झाड़ियों में घूमते हुए छोटे-बड़े जीवों से आती हैं, जिन्हें रात के अंधेरे में पहचानना मुश्किल है; झाड़ियों में रेंगते सरीसृपों से; झाड़ियों में हर तरह के कीड़ों से। असंख्य पतंगे, बड़े और छोटे, और पंखों वाले भृंग, विशाल और नन्हे, गुजरते हुए आपके चेहरे को छूते हैं, जबकि मच्छरों की धीमी भिनभिनाहट आपको याद दिलाती है कि जंगल का सबसे बड़ा कीट हरकत में है। कभी-कभी, दूर से ही, जंगल में हिरण चौंक कर चिल्लाते हैं, जब उन्हें किसी खतरे का

आभास होता है या वे कुछ देख या सूंघ लेते हैं। इस तरह की लगातार चीखें हमेशा इस बात का संकेत देती हैं कि जंगल का राजा हरकत में है। एक तेंदुआ की उपस्थिति से चीख कम और कम समय के लिए सुनाई देती है। शायद वह शिकार करने में अधिक कुशल है; हो सकता है कि पकड़े जाने पर वह जल्दी ही गायब हो जाए। हालांकि वह अपने बड़े चचेरे भाई की तरह शिकारी है, लेकिन वह बाघ की तरह सभी जीवित प्राणियों के प्रति घृणा नहीं रखता। लेकिन जब बाघ वास्तव में भूखा होता है, तो वह खतरे की कोई आवाज नहीं निकालता; वह अपनी उपस्थिति छिपाने और बिना देखे-सुने शिकार करने का पूरा ध्यान रखता है। किसी शिकार की अचानक मृत्यु ही उसके निकट होने का पहला संकेत होती है। दूर से छाल के छिलने और शाखाओं के टूटने की आवाज, या शायद किसी गिरे हुए पेड़ की धमक, आपको बता देगी कि हाथियों का एक झुंड जंगल में चर रहा है, शाखाओं को तोड़ रहा है या अपने भारी वजन और जबरदस्त ताकत से पूरे पेड़ों को गिरा रहा है ताकि वे और उनके बच्चे सबसे ऊपरी शाखाओं की कोमल कोंपलों को खा सकें। हाथियों का झुंड बहुत शोर मचा रहा है, छोटे हाथी सूअर के बच्चों की तरह अपनी माताओं के पास चहचहा रहे हैं। अक्सर दूर से आती गड़गड़ाहट जैसी आवाज सुनाई देती है। लेकिन कोई अचानक तूफान आने वाला नहीं है। यह आवाज हाथियों के विशाल पेट में मौजूद गैसों से आ रही है।

लेकिन पास से आती कोई हल्की सी, बार-बार होने वाली खुरचने की आवाज़, जैसे कोई झाड़ू से ज़मीन साफ़ कर रहा हो, और शायद बीच-बीच में पत्तों की सरसराहट भी सुनाई दे, तो आपको सतर्क हो जाना चाहिए। ध्यान से सुनें। हवा को अपने गालों पर महसूस करके देखें, या अगर चाँदनी हो तो सबसे ऊपर वाले बाँस के पत्तों या पास की घासों के झुकाव को ध्यान से देखें। और यह सब बहुत जल्दी करें, इससे पहले कि इन रहस्यमयी आवाज़ों का स्रोत और पास आ जाए। फिर चुपचाप वहाँ से हट जाएँ, हवा के साथ उस आती हुई आवाज़ से दूर चले जाएँ। क्योंकि यह निस्संदेह एक अकेला हाथी है; और एक अकेला हाथी अंधेरी रात में, या यहाँ तक कि चाँदनी रात में भी, एक निहत्थे आदमी के लिए बहुत खतरनाक हो सकता है, जो सीधे उसके रास्ते में किसी झाड़ी के पीछे छिपा हो, अगर हवा का एक झोंका भी उसकी मौजूदगी का पता लगा दे।

घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है और आपको दूर भागने की भी ज़रूरत नहीं है। बस कुछ कदम चलें। चुपचाप चलें। चाहे कुछ भी हो जाए, आवाज़ करने वाले को अपने और हवा की दिशा के बीच रखें। फिर किसी झाड़ी के पीछे चुपचाप बैठ जाएं या किसी पेड़ के तने के पीछे खड़े हो जाएं। वह आपको नहीं देख पाएगा, क्योंकि उसकी दृष्टि बहुत कमज़ोर है। उसकी सूंघने और सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, इसलिए जब तक वह आपकी मौजूदगी को सूंघ नहीं पाता और आप कोई आवाज़ नहीं करते और स्थिर रहते हैं, वह कुछ ही गज की दूरी से आपके पास से गुज़र जाएगा और उसे कुछ पता भी नहीं चलेगा।

शायद आपको पेड़ों की चोटियों के क्षितिज से चंद्रमा उगता हुआ दिखाई दे। भव्यता से वह आकाश में विचरण करती है, और उसके उदय का सुनहरा रंग धीरे-धीरे चांदी जैसे प्रकाश में बदल जाता है। अंत में वह अपने सामान्य आकार में आ जाती है और आसपास के जंगल को एक अलौकिक, चमकदार रोशनी से नहला देती है, बड़े पेड़ों के नीचे गहरी, काली, रहस्यमयी छायाएँ बनाती है... ऐसी छायाएँ जिनमें आप कल्पना करते हैं कि कोई बाघ या तेंदुआ ज़मीन के करीब घात लगाए बैठा है, कान खोपड़ी से चिपके हुए हैं, और आँखें भूख से आपकी हर हरकत पर नज़र रख रही हैं। लेकिन यह केवल आपकी कल्पना है। न तो कोई बाघ और न ही कोई तेंदुआ आपको नुकसान पहुँचाएगा, जब तक कि वह आदमखोर न हो।

अगर रात में चाँद न हो तो आपकी नसें बेकाबू हो जाएँगी। क्योंकि तब अँधेरा इतना घना होगा कि आप अपने सामने छह इंच तक भी नहीं देख पाएँगे, सिवाय पत्तों और शाखाओं के बीच से छनकर आती आसमान की हल्की सी आकृति के। इतना घना अंधेरा होगा कि अनगिनत तारों की रोशनी भी उस पत्तों के आश्रय में नहीं पहुँच पाएगी जिसमें आप दुबके हुए हैं, लेकिन आप हज़ारों जुगनुओं को देख पाएँगे, अँधेरे की परियों को, जो अपने छोटे-छोटे फॉस्फोरसेंट लैंप हवा में लहराती हैं। वे चमकती हैं, टिमटिमाती हैं, झिलमिलाती हैं और दमकती हैं; वे झिलमिलाती हैं, टिमटिमाती हैं, दमकती हैं और दमकती हैं; कभी यहाँ, कभी वहाँ और अचानक हर जगह। कभी-कभी उनकी जगमगाती रोशनी के छोटे-छोटे बिंदु एक साथ चमकते हैं, और तब ऐसा लगता है जैसे किसी छिपे हुए फोटोग्राफर ने अपनी तस्वीर के लिए फ्लैश-बल्ब का इस्तेमाल किया हो, क्योंकि अनगिनत छोटे-छोटे कीड़े एक साथ अपने लैंप जलाते हैं तो

अचानक निकलने वाली रोशनी इतनी तीव्र और चमकदार होती है। लेकिन ऐसा कभी-कभार ही होता है, जब प्रत्येक जुगनू स्वतंत्र रूप से हवा में उड़ते हुए अपनी छोटी सी रोशनी बिखेरता है। यह एक बेचैन नन्हे प्राणी का प्रेम-प्रकाश और प्रेम-संकेत है, उस सबसे बड़ी इच्छा का संकेत है, मिलन और प्रजनन की प्रेरणा।

घने जंगलों के विशाल वृक्षों के तने, जो दूर-दूर तक कतारों में फैले हुए हैं, मोटी और पतली लताओं से लिपटे हुए हैं; कुछ गांठदार, कुछ कांटेदार, कुछ चिकनी; सभी आकाश की छतरी और जीवनदायिनी सूर्य की गर्मी की ओर बढ़ते हैं। जंगल के फूल और ऑर्किड नम, काईदार मिट्टी के किनारों को सजाते हैं, या मनमोहक रंगों के गुच्छों में लटकते हैं। सभी प्रकार और आकार की मधुमक्खियाँ सुंदर फूलों से पराग लाने-ले जाने में लगी रहती हैं। पेड़ पर रहने वाली चींटियों के विशाल घोंसले, जो आपस में चिपकी पत्तियों से बने होते हैं और चार फुटबॉल के आकार के होते हैं, जमीन पर बने दीमक के ऊंचे टीलों से शायद ही तुलना कर सकते हैं, जो कभी-कभी दस फीट ऊंचे होते हैं। चींटियों की अन्य किस्में, छोटी और बड़ी; लाल, भूरी, धूसर और काली, प्रत्येक अपनी-अपनी कॉलोनियों में निरंतर काम कर रही हैं। कभी-कभी वे छह या अधिक की कतारों में एक साथ मार्च करते हुए या एक मील या उससे अधिक की दूरी तक एकल कतार में चलते हुए दिखाई देती हैं। वे एक चुने हुए नेता के पीछे-पीछे उद्देश्यपूर्ण ढंग से चलती हैं। क्या वे नए घर की तलाश में हैं? क्या वे भोजन की खोज में हैं? या वे युद्ध के लिए आगे बढ़ रहे हैं? शायद वे पास के चींटियों के घोंसले पर छापा मारने जा रहे हैं। कभी-कभी सीधी पंक्तियों में करीने से बिछी मृत चींटियों की कब्रें इस बात का सुराग देती हैं कि क्या हुआ है।

भारत बहुत गरीब हो जाएगा, पूरी दुनिया गरीब हो जाएगी - जब इस धरती और इस भूमि के जंगली इलाके अपने पशु जीवन से वंचित हो जाएंगे, और मनुष्य इतना भौतिकवादी हो जाएगा कि एकांत और ध्यान के शांत, मधुर क्षण उससे हमेशा के लिए खो जाएंगे।

जो लोग इन कहानियों को पढ़ते हैं और धरती के शांत कोनों और उनमें रहने वाले विनम्र जीवों से प्रेम करते हैं, वे समय रहते अपने कठोर साथियों के मन और अंतरात्मा में इन सुंदर स्थानों और उनके निवासियों के प्रति सम्मान की भावना जगाने का भरसक प्रयास करें, ताकि ये स्थान अपने प्राकृतिक परिवेश में निश्चिंत और उत्पीड़ित

रहे। इनमें से कई खूबसूरत स्थान, जिन्हें हम बीते दिनों में जानते थे, अब लकड़हारों की कुल्हाड़ी की धौंकनी से गूंज रहे हैं। वे अब अस्तित्व में नहीं हैं और बंजर भूमि बन गए हैं, मानव और औद्योगिक विस्तार के लालची जाल के शिकार। कुछ वर्ष पूर्व बाघों की दहाड़ और हाथियों की चिंघाड़ से गूंजने वाली घाटियाँ अब वन जीवन से पूरी तरह विरक्त हैं। उन लोगों के लिए कितना दुखद है जो उन्हें उनके पुराने स्वरूप में जानते थे, कि वे ऐसे स्थानों पर फिर से जाएँ!

लगभग बहुत देर हो चुकी है, लेकिन अभी भी थोड़ा समय और कुछ छिपे हुए क्षेत्र बचे हैं। यदि भारत और दुनिया के शेष देशों के लोग, जिनके पास अभी भी यह समृद्ध विरासत है, इसके प्रति जागरूक नहीं होते और जो कुछ बचा है उसकी रक्षा और संरक्षण के लिए तत्काल कदम नहीं उठाते, तो बहुत जल्द बहुत देर हो जाएगी और यह बहुमूल्य धरोहर हमेशा के लिए खो जाएगी।

मेरी दिली इच्छा है कि आप सभी पाठकों के मन में जंगल और उसके जानवरों के प्रति प्रेम जागृत हो, जिससे जनमानस को इन जानवरों की अंधाधुंध कटाई और हत्या से सुरक्षा के लिए कानून बनाने की प्रेरणा मिले। यदि यह पुस्तक, या मेरी कोई भी पिछली कहानी, इस उद्देश्य को थोड़ा सा भी पूरा कर पाती है, तो मैं वास्तव में एक सार्थक मिशन को पूरा कर लूंगा।

2. क्रिसेंट पर्वतों का नरभक्षी

मैसूर राज्य के कदुर जिले में, बिरूर रेलवे स्टेशन से कुछ ही दूरी पर और शिमोगा जाने वाली रेलवे लाइन के पश्चिम में, होगरखान नामक एक विशाल पर्वत श्रृंखला है। यह बाबा बुदंस नामक ऊंचे, अर्धचंद्राकार पर्वतों के समूह का हिस्सा है, जिन्हें कभी-कभी अर्धचंद्राकार पर्वत भी कहा जाता है। पश्चिम की ओर मुड़ी हुई इस श्रृंखला के भीतर, जागर घाटी के नाम से जाना जाने वाला एक विस्तृत क्षेत्र नम, घना, सदाबहार वन फैला हुआ है।

यह घाटी बड़ी संख्या में बाइसन और सांभर, लाखों की संख्या में टिक्स और जोंक का

घर है, और यहाँ सालाना सैकड़ों इंच से कहीं अधिक वर्षा होती है, जिससे यह एक घना, नम, अंधेरा क्षेत्र बन जाता है जहाँ दोपहर में भी मेंढक टर्राते हैं और झींगुर और सिडाडा लगातार चहचहाते रहते हैं, और रात में उनके बाद और भी तेज, लगातार नीरस जंगली झींगुरों की आवाज आती है।

होगारखान अर्धचंद्राकार पर्वत श्रृंखला के पूर्व में, घने जंगलों से घिरे लेकिन साफ धूप वाले क्षेत्र में स्थित है, जो ऊँची पर्वत श्रृंखला द्वारा भारत के पश्चिमी तट से साल के तीन महीनों तक चलने वाली मानसून की अधिकांश तबाही से सुरक्षित है।

इस पहाड़ी की तलहटी में एक छोटा सा गाँव बसा है, जिसमें क्षेत्र के लाल बलुआ पत्थर से निर्मित एक भव्य मंदिर है। गाँव का नाम काफी हद तक पास की पहाड़ी से लिया गया है और इसे होगारेहल्ली के नाम से जाना जाता है।

गाँव के दक्षिण में एक विशाल झील है, जिसे भारत के इस भाग में तालाब कहा जाता है। गाँव से दो पैदल रास्ते निकलते हैं और इस तालाब से होकर गुजरते हैं, एक रास्ता होगारखान पहाड़ी की ओर जाता है जहाँ चोटी पर कुछ छोटे कॉफी बागान हैं, और दूसरा रास्ता तालाब से लगभग साढ़े तीन मील आगे एक नहर तक जाता है, जिसे हम जलमार्ग कहते हैं, जो एक विशाल झील से निकलती है जिसे मद्दक तालाब के नाम से जाना जाता है, जो पहाड़ों और पहाड़ियों से घिरी एक घाटी में बनी है।

पश्चिम में घनी और रिसती हुई जागर घाटी से लेकर, अर्धचंद्राकार पर्वतमाला से होते हुए पूर्व में होगारखान तक, जिसमें होगारेहल्ली, येम्मैदोड्डी नहर के नाम से जानी जाने वाली नहर और मद्दक टैंक शामिल हैं, यह पूरा क्षेत्र पश्चिम से पूर्व तक लगभग पचास मील और उत्तर से दक्षिण तक तीस मील के क्षेत्र में फैला हुआ है।

इस दुर्गम और पर्वतीय भूभाग में एक खूंखार बाघ रहता था, जिसे अर्धचंद्राकार पर्वतों का आदमखोर कहा जाने लगा। वह अचानक प्रकट हुआ। कुछ लोगों का कहना है कि उसने जागर घाटी को इसलिए छोड़ दिया क्योंकि घने सदाबहार जंगल, दलदल और कीड़े-मकोड़े उसे परेशान करते थे, और वह बाबा बुदंस की चोटी पर चढ़कर धूप से भरी पूर्वी ढलानों पर उतर गया। वहीं, कुछ अन्य लोगों का तर्क है कि यह जानवर लक्कावल्ली और लालबाग नामक एक बहुत दूर के क्षेत्र से भटककर यहाँ आ गया, क्योंकि भद्रा नदी पर बन रहे एक विशाल बांध के कारण वहाँ के जंगल में अशांति

फैली हुई थी।

उसके आने का कारण चाहे जो भी हो, वह अचानक और मानव जाति के प्रति द्वेष से भरा हुआ आया, क्योंकि उसने पुट्टम्मा नामक एक सुंदर लम्बानी युवती को, उसकी शादी के पखवाड़े भर के भीतर ही, उस समय अगवा कर लिया जब वह होगारखान पहाड़ी की ऊपरी ढलानों पर कॉफी के फल तोड़ रही थी।

जब पुट्टम्मा उस शाम घर नहीं लौटीं, तो उनके पति बहुत क्रोधित हुए। एक तो वे नवविवाहित थे; भला हनीमून पर आया कोई पति शाम ढलने पर पत्नी के देर से लौटने को कैसे बर्दाश्त कर सकता है? उनके मन में कई तरह के संदेह पैदा हो गए। शायद पुट्टम्मा बेवफा थीं या किसी गुप्त प्रेमी के साथ भाग गई थीं! आखिर उनकी शादी, भारत में लगभग सभी शादियों की तरह, उनके माता-पिता द्वारा तय की गई थी। शादी से पहले वे एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे।

आधी रात तक पति रामैया गुस्से से आग बबूला हो चुका था। उसने ठान लिया कि भोर होते ही वह किसी भी तरह उनका पीछा करेगा, भागने वाले जोड़े को पकड़ेगा, गुप्त प्रेमी को चाकू मारेगा, पुट्टम्मा को चाकू मारेगा और अंत में खुद को भी चाकू मार लेगा! कम से कम उस मनहूस लड़की की वजह से हुए अपमान के बाद समस्या का समाधान करने का यह एक सम्मानजनक तरीका तो होगा। आखिर वह बाहर निकलकर अपना चेहरा भी नहीं दिखा पाएगा। लोग उस पर हँसेंगे, उस ठुकराए हुए पति पर!

सुबह होते ही रामिया उस छोटे से बागान के लिए निकल पड़ा जहाँ उसकी पत्नी कॉफ़ी तोड़ने का काम करती थी। दल के प्रभारी मिस्त्री ने उसे बताया कि उसकी पत्नी पिछली शाम बाकी मजदूरों के साथ नहीं लौटी थी, और उसने कुछ अन्य मजदूरों से पूछताछ करने की पेशकश की।

कुछ देर बाद एक और लड़की ने बताया कि वे दिन भर साथ-साथ बेर तोड़ रही थीं। पुट्टम्मा लगभग पूरे समय उससे बातें कर रहा था। वह बहुत खुश लग रही थी। दरअसल, लड़की ने शरमाते हुए मुस्कान और रामिया की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए कबूल किया कि पुट्टम्मा ने उसे पति के रूप में अपनी खूबियों के बारे में एक-दो निजी बातें बताई थीं, जिन्हें सुनकर अविवाहित लड़की को उसकी संपत्ति से ईर्ष्या होने

लगी थी।

बेहद हैरान होकर वे सब उस जगह गए जहाँ कल दोनों लड़कियाँ काम कर रही थीं, यह देखने के लिए कि आखिर हुआ क्या होगा। और वहीं पर पहेली सुलझ गई। उन्हें पुट्टम्मा की लाल बेरों से भरी टोकरी ज़मीन पर एक तरफ पड़ी मिली, जो आधी खाली थी, लेकिन उसका कोई निशान नहीं था। पैरों के निशान या पगडंडी का कोई सुराग नहीं था, क्योंकि ज़मीन पर सड़ी हुई पत्तियों की मोटी परत बिछी हुई थी, जिसे हर फार्म में झाड़ियों के लिए खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

इधर-उधर खोजते हुए, उस युवती ने, जो पिछले दिन पुट्टम्मा की साथी थी, त्रासदी का पहला सबूत पाया। उसे पुट्टम्मा की साड़ी का एक टुकड़ा मिला। वह टुकड़ा दो कॉफी की झाड़ियों की शाखाओं में फंसकर फट गया था, जो उस स्थान पर बहुत पास-पास उगी हुई थीं।

साड़ी के उस टुकड़े पर खून लगा हुआ था।

इस खोज के कारण उन्होंने और अधिक सावधानी से जांच की, और जल्द ही उन्हें खून का एक स्पष्ट निशान मिला, जबकि दबी हुई, गीली पत्तियों की कालीन निशान के साथ-साथ उखड़ी हुई प्रतीत हो रही थी, मानो कोई भारी चीज वहां चली हो या कुछ घसीटती हुई गई हो।

वे अचंभित थे। उस छोटे से इलाके में ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी थी। वे बेतहाशा खून के निशान और बिखरे पत्तों का पीछा करते हुए आगे बढ़े।

एक जलधारा जागीर को दो भागों में बांटती थी, और उसी में उन्हें पुट्टम्मा मिलीं - या यूं कहें कि उनका जो भी अवशेष बचा था: फटी हुई साड़ी, एक सुडौल जांघ और टांग, अलग हुआ सिर जिस पर चेहरे पर एक विचित्र शांति और संतोष का भाव था, और चारों ओर बिखरी हुई रीढ़ की हड्डियां और पसलियां। दूसरी टांग और बांहों का कोई निशान नहीं था।

नाले की रेतीली सतह पर एक विशाल बाघ के पदचिह्न थे, और उन पर कहीं-कहीं एक या शायद दो लकड़बग्घों के छोटे-छोटे पदचिह्न भी थे। इसी वजह से एक पैर और दो हाथ गायब थे। बाघ के खाकर चले जाने के बाद लकड़बग्घे आए थे और गायब पैर

और हाथ अपने साथ ले गए थे। क्योंकि आदमखोर जानवर इंसानी शरीर के इन हिस्सों को शायद ही कभी खाते हैं।

दूसरी मानव हत्या से पहले दो-तीन सप्ताह का सन्नाटा छाया रहा; इस बार भी एक महिला, जो लम्बानी जनजाति की थी, मद्दक तालाब के किनारे छोटे केकड़े पकड़ रही थी। इस बार लकड़बग्घे बीच में नहीं आए और सिर, हाथ-पैर को छोड़कर उसका पूरा शरीर लकड़बग्घे ने खा लिया।

इसके बाद एक के बाद एक कई हत्याएं हुईं; एक आदमी, एक औरत, क्रेसेंट पर्वतमाला की पूर्वी ढलानों और तलहटी में फैले विशाल क्षेत्र में। एक चरवाहा शाम को होगारेहल्ली गांव के ठीक बाहर स्थित छोटे तालाब पर अपने मवेशियों को पानी पिलाने जा रहा था, तभी वह गायब हो गया। एक लंबानी शिकारी मद्दक तालाब की ओर जाने वाले रास्ते पर लटके एक छोटे पेड़ पर बैठा था। उसे उम्मीद थी कि जल्द ही कोई सांभर या चित्तीदार हिरण आएगा। लेकिन इसके बजाय, शिकारी आया और लंबानी शिकारी कभी वापस नहीं लौटा।

लम्बानी ने बाघ को गोली क्यों नहीं मारी, यह कभी पता नहीं चल पाया। वह इससे ऊपर नहीं चढ़ सकता था, क्योंकि उसने एक बौना पेड़ चुना था; उसे अपनी रक्षा के लिए कुछ प्रयास करना चाहिए था। अगले दिन नरम छाल पर पंजे के निशान से पता चला कि बाघ उसके पीछे गया, उसे नीचे गिराया और जंगल में ले गया। उसे फिर कभी नहीं देखा गया। शायद उसकी बंदूक में कुछ खराबी आ गई थी, जैसा कि कभी-कभी मुंह से भरी जाने वाली बंदूकों में होता है, और वह उसे चला नहीं पाया। यह अकल्पनीय है कि उसने गोली चलाई और निशाना चूक गया और बाघ फिर भी आगे बढ़ गया। फिर भी, यही कहानी विश्वसनीय हो गई और पूरे क्षेत्र में दूर-दूर तक फैल गई। कहा जाता था कि आदमखोर बाघ निडर और अजेय था, हथियारों से बेपरवाह और भयभीत नहीं था।

इस घटना के बाद, लंबे समय तक इंसानों की हत्याएं बंद रहीं। संभवतः बाघ जागर घाटी में अपने पुराने ठिकानों पर लौट गया था, या जहाँ से भी वह आया था। इस अनुमान की पुष्टि करने वाला कोई सबूत नहीं है, क्योंकि इनमें से किसी भी स्थान से इंसानों की हत्या की कोई रिपोर्ट नहीं मिली। लेकिन सभी लोग बाघ के चले जाने से

खुश थे, तनाव कम हुआ और जीवन जल्द ही सामान्य हो गया।

फिर बाघ लौट आया। उसने एक बार फिर हत्याओं का अपना अभियान शुरू किया, और एक बार फिर उसने इसकी शुरुआत एकांत होगरखान पहाड़ी की ढलानों से की। एक लिंगायत लड़का, जो एक जागीर के मिस्त्री का रिश्तेदार था, बिरूर जाते समय पहाड़ी से नीचे उतरते हुए बाघ के हमले का शिकार हो गया और उसे अगवा कर लिया गया।

उसके बाद और भी लोग गायब हो गए और पूरे इलाके में मजदूरों, ग्रामीणों और पशुपालकों पर एक बार फिर भयानक भय छा गया। सूर्यास्त से बहुत पहले ही सभी ने अपने घरों में सुरक्षित रूप से ताला लगा लिया और सुबह तक, चाहे कुछ भी हो जाए, कोई भी बाहर नहीं निकला। मजदूरों ने कॉफी तोड़ने से इनकार कर दिया, ग्रामीणों ने खेतों में हल चलाने से मना कर दिया और मवेशी अपने बाड़ों में बिना चारा खाए ही रहे, क्योंकि उन्हें खेतों या जंगल में चराने के लिए ले जाने का विचार भी आत्महत्या के समान माना जाता था।

इसी समय के आसपास एक जर्मन मित्र, जो यूरोपीय चिड़ियाघरों के लिए जानवरों और सरीसृपों का संग्रह करता था, और दुनिया भर के निजी संग्राहकों के लिए कीड़े और तितलियों जैसी चीजों का संग्रह करता था - वास्तव में, कोई भी असाधारण जीवित चीज - ने मेरे बेटे डोनाल्ड और मुझसे कुछ मगरमच्छ के बच्चे लाने की कोशिश करने के लिए कहा, क्योंकि उसके एक चिड़ियाघर को नमूनों की आवश्यकता थी।

एक समय कावेरी नदी में इन सरीसृपों की भरमार थी, जहाँ वे स्थानीय और सरकारी तौर पर आयातित मछलियों सहित विभिन्न प्रकार की मछलियों को भारी नुकसान पहुँचा रहे थे। इसी कारण अधिकारियों ने भारतीय मगरमच्छों (जिन्हें स्थानीय भाषा में 'मगर' कहा जाता था) के विनाश को प्रोत्साहित किया था।

बड़ी संख्या में मगरमच्छ शिकारी, खाल की तलाश में, सरकार द्वारा सरीसृपों को मारने की दी गई स्वतंत्रता का लाभ उठाने के लिए नदी पर आ गए थे। उन्हें गोली मारना बहुत समय लेने वाला और परेशानी भरा काम था। इसलिए शिकारियों ने एक अधिक चतुर तरीका ईजाद किया था।

उन्होंने एक विशेष प्रकार का हुक बनाया, जिसमें लगभग छह इंच लंबे तीन बड़े लोहे

के मछली पकड़ने वाले हुक एक दूसरे से 120 डिग्री के कोण पर आपस में जुड़े हुए थे। इस हुक में नदी के किनारे बसे बड़े कस्बों के बूचड़खानों से प्राप्त मृत जानवरों की आंतें, अंदरूनी अंग और खालें चारा के रूप में लगाई जाती थीं। हुक में एक छल्ला लगाकर इसे छह फुट लंबी चेन से जोड़ा जाता था, जिसे बारह फुट लंबे हरे बांस के तने में एक सिरे से लगभग चार फुट की दूरी पर बने छेद से गुजारा जाता था।

फिर बड़ी संख्या में ऐसे बांस, जिनमें से प्रत्येक में जंजीर और चारा लगे कांटे लगे थे, नदी के किनारे-किनारे कई मील तक फेंक दिए गए।

मगरमच्छों ने चारा लगे कांटे निगल लिए, जो उनके गले और पेट में धंस गए। घबराहट में वे नदी की तलहटी में गोता लगाने लगे, और अपने साथ लंबे, मोटे, हरे बांस भी घसीटते चले गए। लेकिन बांस के तैरने के बल ने अंततः संघर्षरत सरीसृपों को सतह पर आने के लिए मजबूर कर दिया।

मगरमच्छ बार-बार पानी में गोता लगाते, लेकिन हर बार उन्हें ऊपर आने के लिए मजबूर होना पड़ता, जब तक कि वे थककर पानी की सतह पर न लेट जाते, जहाँ उन्हें आसानी से गोली मारकर या भाले से मारकर खत्म किया जा सकता था। इस तरह कावेरी नदी में लगभग सभी मगरमच्छ विलुप्त हो गए थे।

चूंकि युवा नमूनों को प्राप्त करने की संभावनाएं उज्ज्वल नहीं थीं, कम से कम कावेरी नदी के संबंध में, इसलिए डॉन और मैंने अन्यत्र पूछताछ शुरू की, और अंततः पता चला कि शायद कुछ युवा मुगर मछलियों को अंडों से निकलने के तुरंत बाद पकड़ा जा सकता है, जो किनारों पर या रेत के नीचे छिपे हुए थे, एक बड़ी झील में, जिसका नाम इओनकेरे था, जो मद्दक टैंक से लगभग छह मील पश्चिम में स्थित थी।

हमारे मुखबिर ने हमें एक विचित्र कहानी सुनाई कि अगर कोई सही समय पर, यानी जब सूरज की गर्मी से अंडे फूट रहे हों, इओनकेरे नदी के किनारे जाए, तो ज़मीन के नीचे मगरमच्छों के बच्चों के चलने की आवाज़ सुनाई देती है। यह कहानी अनोखी लगी और डॉन को भी इसमें दिलचस्पी हुई, इसलिए उसने यह देखने के लिए कि इसमें कितनी सच्चाई है, सप्ताहांत में कार से यात्रा करने का सुझाव दिया।

हम ठीक समय पर लोनकेरे झील पर पहुँचे और एक लंबानी गाइड के साथ झील के किनारे-किनारे घूमे। गाइड ने पुष्टि की कि यह बात सच थी और छोटे मगरमच्छों की

आवाज़ें रेत से बाहर निकलकर झील के पानी में प्रवेश करने से पहले ज़मीन के नीचे सुनाई देती थीं। डॉन और मैं चलते रहे, लेकिन हमें ज़मीन के नीचे किसी मगरमच्छ की आवाज़ नहीं सुनाई दी। हमारे लंबानी गाइड ने हमें बताया कि मद्दक तालाब से कुछ मील उत्तर में एक आदमखोर बाघ आ गया है। उसने लोनकेरे झील के पास किसी को नहीं मारा था, इसलिए यहाँ के लोग खुद को उस खतरे से पूरी तरह सुरक्षित मानते थे जो उनके भाइयों को कुछ ही दूरी पर धमका रहा था।

लम्बानी ने हमें आदमखोर मगरमच्छ की करतूतों का अस्पष्ट और उलझा हुआ ब्योरा दिया, जबकि हम लोनकेरे के किनारों पर घूमते रहे और छोटे मगरमच्छों की भनभनाहट सुनने की कोशिश करते रहे, जो किसी न किसी कारण से भनभना नहीं रहे थे। शायद हम ध्यान से नहीं सुन रहे थे। मैं मानता हूँ कि मैंने भूमिगत मगरमच्छों की संभावना से ज़्यादा लम्बानी की आदमखोर मगरमच्छ की कहानी सुनी, और मुझे पता है कि डोनाल्ड ने भी ऐसा ही किया।

शाम तक हमें छोटे मगरमच्छों का कोई निशान नहीं मिला, हालांकि हमने झील में दूर तैरते हुए कई बड़े मगरमच्छ देखे थे और किनारों की कीचड़ और दलदल पर उनके पदचिह्न भी देखे थे। हम तीनों ने पानी के किनारे एक पेड़ के नीचे डेरा डाला। शाम ढलने के कुछ ही देर बाद पूर्व में लाल और चमकीला चाँद निकला, जिससे उन पहाड़ियों की आकृति उभर आई जिन्हें हम 'बड़ी सिग्ने' और 'छोटी सिग्ने' के नाम से अच्छी तरह जानते थे। कई साल पहले, यहीं मैंने बाघों की आदतों के बारे में बहुत कुछ सीखा था, जिसमें एक माँ और उसके तीन शावकों की लगभग पूरी जीवन कहानी भी शामिल थी, जो 'छोटी सिग्ने' पर पैदा हुए और बड़े होने तक वहीं रहे। उनमें से एक शावक बाद में आदमखोर बन गया था। लेकिन यह एक अलग कहानी है।

अलाव के चारों ओर जल्दी भोजन करने के बाद, जिसके दौरान हमारे लम्बानी मित्र, जो एक उत्कृष्ट कहानीकार थे, ने न केवल जंगल और बाघों के बारे में बल्कि अपने स्वयं के लम्बानी खानाबदोशों की आदतों और रीति-रिवाजों के बारे में भी कुछ आकर्षक कहानियां सुनाईं, चमकीली चांदनी का आकर्षण इतना प्रबल हो गया कि हम उसका विरोध नहीं कर सके, और हमने कहानीकार को सुझाव दिया कि हम सभी आदमखोर बाघ के बारे में और अधिक जानने के लिए मद्दक तालाब के किनारे तक छह मील की पैदल यात्रा करें।

इस योजना के प्रति उनमें कोई उत्साह नहीं था। वास्तव में, वे स्पष्ट रूप से अनिच्छुक थे। मान लीजिए कि हमें बाघ मिल गया? तो और भी अच्छा; हम दोनों ने एक साथ कहा, बिल्कुल यही तो हम चाहते थे! दरअसल, हमने उन्हें बताया कि लंबी पैदल यात्रा का सुझाव हमने इसीलिए दिया था। तो हम मद्दक गए, लेकिन हमें कोई बाघ नहीं दिखा। हमने जंगल के बीचोंबीच स्थित एक काफी बड़े मवेशी बाड़े के चरवाहों को जगाया और उनसे पता चला कि आदमखोर बाघ और भी उत्तर में, अधिक आबादी वाले इलाकों में सक्रिय है। उन्होंने उसके बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन उस खूंखार बाघ का कोई निशान नहीं देखा था, और न ही वे हमारे लम्बानी गाइड की तरह परेशान दिखे।

हम चांदनी रात में लोनकेरे (समुद्री झील) लौट आए और भोर होते ही उसके किनारे पर पहुँच गए। अगले दिन हम बैंगलोर पहुँचे, कार की डिक्की में कोई मगरमच्छ का बच्चा नहीं था और आदमखोर मगरमच्छ की कहानियों के अलावा हमारी जिज्ञासा और भी बढ़ गई थी।

लगभग चार महीने बाद मुझे एक बेहद गंदा लिफाफा मिला, जिसमें कन्नड़ भाषा में लिखा एक पत्र था। डाक टिकट से पता चला कि इसे बिरूर से भेजा गया था। पत्र को अपनी जेब में लेकर मैं बैंगलोर में अपने घर के पास स्थित पुलिस स्टेशन गया, ताकि उसमें लिखी बातों का अर्थ समझ सकूँ, क्योंकि मैं कन्नड़ भाषा पढ़ नहीं सकता था।

एक हेड-कांस्टेबल मेरी मदद करने के लिए सहमत हो गया और उसने पत्र को स्वयं पढ़ने के बाद, हालांकि उसे पढ़ने में कठिनाई हुई क्योंकि उसने कहा कि यह स्पष्ट रूप से किसी कम पढ़े-लिखे व्यक्ति द्वारा लिखा गया था, खुलासा किया कि यह मेरे मित्र, मुडलियारगिरिअप्पा, होगारेहल्ली के पटेल, की ओर से था, जिनसे मैंने बहुत पहले उनके गांव के पास आधा एकड़ जमीन का एक शिविर स्थल खरीदा था।

यह पत्र एक तत्काल बुलावा था जिसमें वहां जाकर एक आदमखोर बाघ को मारने में मदद करने के लिए कहा गया था, जिसने कई लोगों को मार डाला था और कुछ ही दिन पहले यममयदोड्डी नहर के किनारे एक खेत में काम करते समय मुडलियारगिरिअप्पा के ही एक आदमी को अपने साथ ले गया था, जो साढ़े तीन मील दूर था।

मैंने डोनाल्ड को पत्र दिखाया, जो बहुत उत्साहित था और तुरंत रवाना होना चाहता था। मैंने कहा, 'तुम जाओ, डॉन'; जिस पर उसने जवाब दिया, 'आप भी आइए, पिताजी'। और इस तरह हम अगली सुबह डॉन की खस्ताहाल प्लाईमाउथ टू-सीटर कार में निकल पड़े और दोपहर करीब दो बजे होगारेहल्ली पहुँचे, जो बैंगलोर से सड़क मार्ग से लगभग 140 मील दूर है।

जब हम पहुँचे तो मुडलियारगिरिअप्पा अपने घर के संकरे बरामदे में रस्सी से बने पलंग पर गहरी नींद में सो रहे थे। वे मुस्कुराते हुए उठे, जाहिर तौर पर हमारे निमंत्रण पर तुरंत प्रतिक्रिया देने से थोड़ा आश्चर्यचकित थे, लेकिन उन्होंने अपनी हैरानी छुपाने के लिए एक विनम्र मेज़बान का रूप धारण कर लिया। उन्होंने हमें पीतल के बड़े मग भरकर कॉफी पीने के लिए कहा, जबकि हमारे लिए चावल और गरमा गरम सब्जी की करी तैयार की जा रही थी।

मना करना बहुत असभ्यता होती, और सच तो यह है कि उस लंबी, धीमी यात्रा के बाद हमें भूख भी लग रही थी। इसलिए हमने करी और चावल खाना शुरू किया और सब खा लिया। खाना खत्म होने के बाद, हम सामुदायिक कुएँ पर गए, बाल्टियों में ठंडा पानी भरा, और बारी-बारी से बाल्टियों के पानी से एक-दूसरे को भिगोकर नहलाया।

जब हम वापस लौटे, तब तक बूढ़े मुडलियारगिरिअप्पा ने बहुत सारा दूध मिलाकर चाय बना ली थी। मैं पेट भरकर खाता हूँ; डॉन मुझसे लगभग तीन गुना ज़्यादा खाता है; लेकिन इस रफ़्तार से इतना सारा खाना खाने का ख्याल हम दोनों को डरावना लगने लगा। किसी बाघ का शिकार करने या उसके बारे में और कुछ सुनने से पहले ही, हमें लगा कि हम फट जाएँगे!

हमने भी बूढ़े मुडलियारगिरी को धन्यवाद सहित लेकिन दृढ़ता से कहा कि हम थोड़ी सी चाय पीने की कोशिश करेंगे, लेकिन यह आखिरी बार होगा। हम अब और कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकते, चाहे वह ठोस हो या तरल।

मुस्कुराते हुए उन्होंने सहमति जताते हुए कहा कि उन्होंने हमारे लिए उस रात का खाना पहले ही तैयार करवा दिया है, और जब तक हम होगारेहल्ली में रहेंगे, हम उनके मेहमान हैं, और यह उनका फर्ज है कि वे हमें अपनी सीमित क्षमता के अनुसार सादा

भोजन और आतिथ्य प्रदान करें। और हम तो घर से भुना हुआ बड़ा सा कूबड़, ठंडी जीभ, स्वादिष्ट उबले आलू, रोटी, मक्खन और जैम भी लाए थे!

लेकिन अगर हमें मुडलियारगिरी के बार-बार परोसे जाने वाले भोजन को भी खाना पड़ता, जिसे बनाने में उन्हें बहुत आनंद आता था, तो उन्हें खाना नामुमकिन हो जाता। इसके अलावा, वे हमारे साथ बैठकर हमें बार-बार भोजन परोसते और यह सुनिश्चित करते कि हम भरपेट खाएं। इस बात से बचने का कोई रास्ता नहीं था: उन्हें मना करना अपमानजनक माना जाता।

हालात निराशाजनक थे। दबी आवाज़ में हमने तय किया कि अंधेरे में, हमें अपना सारा अच्छा खाना होगारेहल्ली के आवारा कुत्तों को खिलाना होगा। उदास मन से डॉन ने सुझाव दिया कि हम आलू और कूबड़ को छिपा दें और शायद कभी-कभार उनमें से एक-दो खा लें। मैंने कुछ देर इस विचार पर सोचा, फिर उदास होकर सिर हिला दिया। उस गर्म मौसम में ये ज़्यादा दिन नहीं टिकेंगे। आलू चिपचिपे हो जाएँगे, मांस खराब हो जाएगा, रोटी पत्थर जैसी सख्त हो जाएगी और मक्खन पिघल जाएगा। नहीं, होगारेहल्ली के कुत्तों को ही सब कुछ खाना होगा।

पूर्वी क्षेत्र का निवासी हमेशा किसी भी बैठक के मुख्य उद्देश्य पर चर्चा को बिल्कुल अंत तक टाल देता है, और इसलिए हमारे पहुँचने के लगभग दो घंटे बाद ही हम आदमखोर बाघ के बारे में गंभीरता से बात करने बैठे। मुडलियारगिरिअप्पा ने लगभग वही विवरण बताया जो मैंने इस अध्याय की शुरुआत में दिया है, और जब उन्होंने अपनी बात पूरी की, तो हमें पता चला कि इस जानवर को पकड़ने की संभावना बहुत कम थी। सबसे पहले तो हमारे सूचनादाता ने यह पता लगाने की जहमत ही नहीं उठाई कि क्या आदमखोर बाघ किसी नियमित मार्ग का अनुसरण करता है, जबकि इस बाघ का कार्यक्षेत्र विशाल था - वास्तव में, लगभग 1500 वर्ग मील! हमें लगा कि हम एक व्यर्थ खोज में जुट गए हैं, और इस विशेष बाघ को खोजने की हमारी संभावना भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जितनी ही थी। हमें समझ ही नहीं आ रहा था कि शुरुआत कहाँ से करें।

स्थिति के सभी पहलुओं पर लंबी चर्चा के बाद, जिसका कोई निष्कर्ष नहीं निकला, मुडलियारगिरी ने कहा कि उन्होंने हमारे लिए एक कमरा तैयार कर रखा है जो

संयोगवश एक मित्र के घर में खाली था। हमें होगारेहल्ली में अपने सभी दिन-रात उसी कमरे में बिताने थे। भीषण गर्मी में, जैसा कि अब था, एक छोटे से कमरे में रात गुजारने का मतलब था पूरी रात नींद न आना, पसीने से तरबतर रहना और मच्छरों का काटना। हमने उस बुजुर्ग सज्जन की दयालुता की सराहना की, लेकिन अब दृढ़ निर्णय लेने का समय आ गया था।

इसलिए हमने उनकी दूरदर्शिता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन गर्मी और मच्छरों का हवाला देते हुए, हमने दृढ़ता से कहा कि हम उस कैंपिंग ग्राउंड पर रात बिताना पसंद करेंगे जिसे मैंने कुछ साल पहले उनसे खरीदा था।

मैं यहां यह समझा सकता हूं कि मेरे ये सारे कैंपिंग ग्राउंड कैसे अस्तित्व में आए।

जब से मेरे पिता ने मुझे अकेले बाहर जाने की अनुमति दी है, तब से मैं दक्षिण भारत के जंगलों और सुदूर इलाकों की यात्रा करता आ रहा हूँ। ऐसी यात्राओं में आम तौर पर रात या तो यात्रियों के बंगलों में बिताई जाती थी, जिन्हें डाक बंगले भी कहा जाता है; ये बंगले सरकार द्वारा मेरे जैसे यात्रियों के लिए किराए पर उपलब्ध कराए जाते हैं। अन्यथा मैं वन बंगले में ठहरता था, जो लगभग वैसा ही था, बस फर्क इतना था कि वह वन विभाग का था और वहाँ जाने के लिए कलेक्टर या संबंधित क्षेत्र के जिला वन अधिकारी से पूर्व अनुमति लेनी पड़ती थी।

घुमंतू बंगलों और वन बंगलों पर कब्ज़ा करने के लिए दो बहुत सख्त शर्तें थीं। पहली, इन परिसरों में सामान्यतः एक ही व्यक्ति 48 घंटे से अधिक समय तक नहीं रह सकता था, और दूसरी, पूर्व अनुमति प्राप्त होने पर भी, यदि कोई वरिष्ठ सरकारी अधिकारी उस क्षेत्र में आता और परिसर का उपयोग करना चाहता, तो घुमंतू को तुरंत परिसर खाली करना आवश्यक था। इन सामान्य नियमों के अतिरिक्त, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, वन बंगले में प्रवेश करने से पहले जिला कलेक्टर की पूर्व अनुमति आवश्यक थी।

इन स्थायी आदेशों ने मुझे बहुत परेशान किया। पहले आदेश के अनुसार, शिकार यात्रा कम से कम एक सप्ताह या एक महीने तक चल सकती थी, जबकि दो दिन बाद ही मुझे रहने की जगह नहीं मिलती थी। दूसरे नियम और पूर्व अनुमति के प्रश्न के संबंध में, अक्सर मैं अनुमति लेने की कोशिश करता था, कभी-कभी एक महीने पहले तक,

लेकिन जैसे ही मैं अनुमति लेता, कोई वन क्षेत्र अधिकारी या पुलिस उप-निरीक्षक, कभी-कभी देर रात को आकर मुझे तुरंत वापस जाने के लिए कह देता था क्योंकि कोई वरिष्ठ वन अधिकारी या पुलिस अधिकारी, या स्वयं कलेक्टर, रास्ते में होते थे।

ऐसे मौकों पर मुझे हमेशा गुस्सा आता था। मैं क्यों छोड़ूँ? मुझे बंगले का इस्तेमाल करने की पूरे एक महीने पहले से लिखित अनुमति मिली हुई थी! यह एक बड़ी इमारत थी और अधिकारी और मेरे लिए पर्याप्त जगह थी! ज़रूरत पड़ने पर मैं बरामदे के एक कोने में, या यहाँ तक कि रसोई, गोदाम या गैराज में भी सोने को तैयार थी!

कोई बात नहीं! रेंजर या सब-इंस्पेक्टर मुझे तिरस्कार भरी नज़रों से देखते हुए दीवार पर टंगे नियमों की ओर उंगली उठा देते। क्या मैंने कभी सोचा था कि बड़े साहब या महत्वपूर्ण दोराई मेरे जैसे निकम्मे लोगों के बरामदों या परिसर में इधर-उधर पड़े रहने पर बंगले में ठहरेंगे? क्या वे सुरक्षित भी रहेंगे? फिर उनकी तिरस्कार भरी नज़र शक में बदल जाती।

या तो मुझे शान से और जल्दी निकल जाना चाहिए, वरना मुझे निकाल दिया जाएगा! मुझे कई साल पहले चित्तूर जिले के नागपतला वन बंगले में घटी एक घटना याद है। मैंने जिला कलेक्टर से दस दिनों के लिए उस जगह पर रहने की विशेष अनुमति ली थी, और दिनभर जंगल में मीलों पैदल चलने के बाद देर रात के खाने के लिए वापस आया था। फिर मैं सो गया, तभी देर रात दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई। नींद में ही मैंने दरवाजा खोला, तो देखा कि चार-पाँच छोटे अधिकारी, खाकी वर्दी से पहचाने जा सकते थे, लालटेन और लंबी लाठियाँ लिए खड़े थे, शायद साँपों से बचाव और आक्रमण के लिए हथियार के तौर पर।

मैंने पूछा, वे क्या चाहते थे?

उन्होंने जवाब दिया, "कलेक्टर दोराई सुबह होते ही यहाँ आ जाएँगे। अभी-अभी खबर आई है और उनके लिए व्यवस्था करनी पड़ी है। इसलिए मुझे तुरंत निकलना होगा!"

मैंने पूछा, मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए? मुझे वहाँ रहने की लिखित अनुमति मिल चुकी थी, जिस पर इसी कलेक्टर दोराई के हस्ताक्षर थे। बंगले में कई कमरे हैं और मुझे सिर्फ एक कमरा चाहिए था - सबसे छोटा वाला। बाकी कमरे कलेक्टर रख सकते थे।

नहीं, नहीं, उन्होंने जवाब दिया। कलेक्टर को पूरा बंगला चाहिए!

मैंने सुझाव दिया, "खैर, गैराज, रसोई या बाहरी कमरे; यहाँ तक कि परिसर में एक पेड़ भी चलेगा। इनमें से कोई भी जगह मेरे लिए ठीक रहेगी।"

वे क्रोधित हो गए। उन्होंने पूछा, क्या मुझे साधारण तमिल या अंग्रेजी समझ नहीं आती? हमने कहा, तुम्हें यहाँ से तुरंत निकलना होगा; और हम इस बात पर कायम हैं!

मुझे भी गुस्सा आ गया। कलेक्टर भाड़ में जाए। भाड़ में जाए वो, और तुम भी! मैं इस घटिया बंगले का आधा हिस्सा अपने कब्जे में ले लूंगा, और जो भी पहला आदमी मेरे कमरे में कदम रखेगा, उसे गोली मार दूंगा! कलेक्टर पर भी यही लागू होता है!

मैंने एक हाथ से अपनी राइफल पकड़ी, बहुत दृढ़ निश्चय के साथ, और दूसरे हाथ से दरवाजा जोर से बंद कर दिया, साथ ही सारे बोल्ट भी लगा दिए।

उसके बाद मुझे नींद नहीं आई। बरामदों में भारी जूतों की आवाज़ गूंज रही थी; लोग खांस रहे थे और थूक रहे थे; मुझे बहुत फुसफुसाहट और गुप्त सलाह-मशविरा सुनाई दे रहा था। निस्संदेह वे सोच रहे थे कि क्या करें। अगर वे मुझे हटाने की कोशिश करते, तो किसी को गोली लग सकती थी। अगर वे मुझे रहने देते, तो कलेक्टर उन्हें बर्खास्त कर देता।

नतीजा यह हुआ कि उन्होंने मुझे वहीं रहने दिया। कलेक्टर एक श्वेत व्यक्ति था और मैं भी। बाकी श्वेत व्यक्तियों की तरह, वे दोनों पागल थे। उन्हें अपने मतभेद खुद सुलझाने दो, बेवजह गोली क्यों खानी पड़े?

अगली सुबह कलेक्टर अपनी कार में आए। मैं उन्हें देखने के लिए अपने कमरे के दरवाजे पर आलस से खड़ा रहा। मुझे देखे बिना ही वे बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ गए। फिर वे एकदम रुक गए। वे मुझे घूरने लगे।

पीछे मुड़कर, उसने अपनी कार के पास खड़े खाकी वर्दी पहने छह चिंतित लोगों पर हिंदुस्तानी में चिल्लाते हुए कहा: "क्या आपको मेरे आने की खबर नहीं मिली? आपने बंगला खाली क्यों नहीं रखा? दरवाजे पर खड़ा यह सनकी कौन है?"

फिर विनती भरी आवाजों का शोरगुल सुनाई दिया।

“महोदय, आपकी यात्रा की सूचना मिलते ही हम कल रात यहाँ आए और इस खूंखार आदमी से जाने को कहा। उसने इनकार कर दिया। उसने हमें गोली मारने की धमकी दी। उसने आपको भी गोली मारने की धमकी दी। हम डर गए थे, महोदय। हम क्या कर सकते थे? आखिर वह हथियारबंद है, वह एक गोरा आदमी है - बिल्कुल आपकी तरह।”

‘गोरे आदमी! मुझे गोली मार दो!’ कलेक्टर गरजते हुए मेरी तरफ घूरने लगा। फिर उसने कहा, ‘क्या तुम्हें नियम नहीं पता? जब कोई वरिष्ठ अधिकारी दौरे पर आता है, तो बंगले में रहने वाले हर व्यक्ति को बाहर निकलना पड़ता है। कृपया ऐसा ही करें।’

मैंने बेपरवाही से अपनी जेब से एक पत्र निकाला। मैंने घोषणा की, 'इस मामले में नियम लागू नहीं होते, क्योंकि मुझे कलेक्टर से यहां दस दिन रहने की लिखित अनुमति मिली है, और मैं ऐसा ही करूंगा।'

‘मैं कलेक्टर हूं,’ उसने चिल्लाकर कहा।

मुझे पता है,' मैंने जवाब दिया।

“देखो, क्या तुम्हें अंग्रेज़ी समझ नहीं आती?” उसने पूछा। “नियमों में लिखा है कि जब कोई वरिष्ठ अधिकारी ----“

मैंने पलटकर पूछा, 'क्या आपको अंग्रेज़ी समझ नहीं आती? क्या आप अपनी खुद की लिखावट नहीं पढ़ सकते? कलेक्टर ने कहा है कि मैं यहाँ दस दिन रह सकता हूँ। आप ही तो कलेक्टर हैं, है ना? मैं यहाँ दस दिन रहूँगा। मैं बंगले के आधे हिस्से में रह रहा हूँ। आप दूसरा आधा हिस्सा ले सकते हैं। बात इतनी ही सरल है।'

ग्रीष्म ऋतु का मध्य था और बहुत भीषण गर्मी थी। वह रात बड़ी मुश्किलों भरी और सांस रोक देने वाली थी। लगभग आठ बजे मैंने एक अद्भुत दृश्य देखा। बरामदे के दूसरे हिस्से में उस महान व्यक्ति के भोजन के लिए मेज उनके चपरासी ने लगाई थी, जाहिर है क्योंकि अंदर बहुत गर्मी थी। मेज पर बर्फ जैसे सफेद कपड़े, चमचमाते चम्मच-कांटे और फूलों से भरा एक कांच का फूलदान था। चपरासी ने मुख्यालय से बड़ी समझदारी से ये फूल लाए होंगे, क्योंकि नागपतला में ऐसे फूल नहीं उगते थे।

फिर कलेक्टर रात के खाने पर आए। यकीन मानिए, भीषण गर्मी के बावजूद उन्होंने

फॉर्मल सूट पहना हुआ था, जिसमें उबली हुई कमीज, टाई वगैरह सब कुछ शामिल था! वहीं मैंने अपनी सबसे पुरानी और फटी हुई खाकी कमीज और फटी हुई पैंट पहनी और बरामदे के दूसरे छोर पर फर्श पर बैठकर सूखी चपातियाँ चबाने लगा। कलेक्टर, जो अकेले शान से बैठे थे, उन्होंने मेरी तरफ एक पल के लिए ही देखा। शायद उन्होंने कुछ ऐसा देखा जो बिल्ली ने पिछली रात दरवाजे पर छोड़ दिया होगा, क्योंकि उसके बाद उन्होंने फिर कभी ऊपर नहीं देखा।

उस घटना के बाद, मुझे लगा कि अब मुझे इस तरह की चीज़ों से तंग आ जाना चाहिए और मैंने फिर कभी इन जगहों पर न जाने का फैसला किया। मैं अपने पसंदीदा जंगलों के पास अपने खुद के कैंप-साइट खरीद लूँगा। आपको लग सकता है कि यह एक महंगा फैसला है। लेकिन असल में ऐसा नहीं था, क्योंकि उन दिनों दूरदराज के इलाकों और जंगलों के पास की ज़मीन बेहद सस्ती थी।

समय बीतने के साथ-साथ मैंने बिना ज्यादा मोलभाव किए कई सौदे किए। बेशक, मैं केवल कैंपिंग के लिए उपयुक्त छोटे भूखंडों की तलाश में था। आधा एकड़ मेरे उद्देश्य के लिए पर्याप्त था। लेकिन कभी-कभी मुझे बड़े भूखंड खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ा, जब मालिक ने इससे छोटा भूखंड बेचने से इनकार कर दिया।

मामंदुर में मैंने सत्रह रुपये आठ आना (लगभग एक पाउंड सात शिलिंग स्टर्लिंग) में एक पौंड तीन एकड़ जमीन खरीदी। मेरा सबसे बड़ा भूखंड सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे स्थित दसमपट्टी में है। वहाँ मुझे सौ रुपये में बारह एकड़ जमीन मिली, जो लगभग सात पाउंड पंद्रह शिलिंग के बराबर है। औसतन, प्रति एकड़ कीमतें पच्चीस से चालीस रुपये या दो से तीन पाउंड के बीच थीं। सबसे महंगा भूखंड एक चौथाई एकड़ का था, जिसकी कीमत पचहत्तर रुपये थी: लगभग पाँच पाउंड (लगभग पाँच पाउंड), जो उन दिनों में बहुत ही अधिक कीमत थी।

समय बीतने के साथ, और कभी-कभी बिना यह सोचे कि ऐसा क्यों, मैंने ऐसे अठारह शिविर स्थल जमा कर लिए, जिनमें सबसे बड़ा उपर्युक्त बारह एकड़ का था, और इसके अलावा दो और तीन एकड़ के कई भूखंड भी थे।

पुराने ज़माने में, मैं उन पर बैठकर कलेक्टरों और आम तौर पर सरकारी दफ्तरों में आने-जाने वालों का मज़ाक उड़ाता था। कलेक्टर तो अब चले गए। लेकिन सरकारी

दफ्तरों में आने वाले लोग अभी भी हमारे साथ हैं, और पहले से कहीं ज़्यादा संख्या में हैं; और कभी-कभार, अगर मुझे उनकी याद आती है, तो मैं उन पर भी मज़ाक उड़ाता हूँ, जो कि बहुत कम होता है! एक सुंदर भृंग कहीं ज़्यादा दिलचस्प होता है, और अक्सर उसमें ज़्यादा समझदारी भी होती है!

इसके अलावा, और मेरी ओर से बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से, जमीन की कीमतें आसमान छू रही हैं। मामंदुर में एक और तीन-चौथाई एकड़ जमीन, जिसके लिए मैंने लगभग सत्ताईस शिलिंग का भुगतान किया था, अब मुझे 250 रुपये की पेशकश की गई है, जो लगभग 19 पाउंड के बराबर है। दसमपट्टी में बारह एकड़ जमीन, जिसकी कीमत 1936 में 7 पाउंड 15 शिलिंग थी, अब मुझे 3,000 रुपये के तीन पक्के प्रस्ताव मिले हैं, जो लगभग 230 पाउंड के बराबर है!

दरअसल, मुझे उस कलेक्टर का बहुत-बहुत धन्यवाद देना है, जिन्होंने लगभग अट्ठाईस साल पहले उस रात नागपटला बंगले के बरामदे में बड़े ही शानदार तरीके से भोजन कराया था। अब वे बूढ़े हो चुके होंगे। लेकिन अगर वे जीवित हैं और ये पंक्तियाँ पढ़ रहे हैं, तो मैं उनका धन्यवाद करता हूँ और अपने उस व्यवहार के लिए, जो शायद थोड़ा असभ्य था, बिना किसी शर्त के क्षमा मांगता हूँ।

लेकिन ज़मीन की कीमतों में उछाल के बावजूद, मैंने अपने किसी भी कैंप-साइट को नहीं बेचा है, और उम्मीद है कि कभी नहीं बेचूंगा। हर एक कैंप-साइट बीते दिनों और कभी न भूलने वाली घटनाओं की यादें ताज़ा कर देता है। हर एक कैंप-साइट एक ऐसे जंगल की सीमा पर स्थित है जिसकी अपनी एक अलग ही खूबसूरती है। मैं कभी-कभी वहां जाता हूं, सिर्फ बीते दिनों और बाघों की यादों को ताज़ा करने के लिए, और उन कलेक्टरों की यादों को भी जो अब इस दुनिया में नहीं हैं।

विषयांतर करने से पहले, मैं आपको बता रहा था कि कैसे डोनाल्ड और मैंने बूढ़े मुडलियारगिरिअप्पा के कमरे के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था और इसके बजाय होगरेहल्ली गाँव के पास जंगल के किनारे पर बने मेरे शिविर में रात बिताने का फैसला किया था। पटेल हैरान रह गए। क्या मैं पागल हो गया था? या शायद सिर्फ अज्ञानी या बहरा? वह मुझे आदमखोर साँप के बारे में बता रहे थे, और हम जंगल के किनारे सोना चाहते थे!

लेकिन अंत में हमारी जीत हुई। डॉन अपने साथ एक अनोखी चीज़ लाया था, जो उसकी कार के पीछे लिपटी हुई थी; एक छोटा सा तंबू, जिसे हमने शिविर स्थल पर लगा दिया। फिर हमने जल्दी खाना खाया, और कुछ और करने को न होने के कारण, हमने छह मील तक मोटरबाइक से वापस जाने का फैसला किया, जब तक कि हम बिरूर कस्बे से तीन मील दूर येम्मैदोड्डी नहर को पार नहीं कर लेते। वहाँ हम कार छोड़ देंगे, और फिर नहर के किनारे-किनारे मद्दक झील तक पैदल चलेंगे, जो दस मील का रास्ता था। चाँद साढ़े सात बजे निकल आएगा, और रात साफ थी, और हालाँकि हम अपनी इलेक्ट्रिक टॉर्च लाए थे, फिर भी शायद ही उन्हें इस्तेमाल करने की ज़रूरत पड़ेगी।

जब हम येम्मायदोड्डी रोडब्रिज पर प्लाईमाउथ कार छोड़कर नहर के किनारे बने संकरे रास्ते पर चलने लगे, तब बिरूर के दूर स्थित नारियल के बागों के ऊपर चाँद निकल रहा था। समय ठीक सात बजकर चालीस मिनट था। धीरे-धीरे आने-जाने और झील के किनारे दो घंटे झपकी लेने के बाद, हम दस घंटे में यानी भोर के ठीक बाद कार तक पहुँच जाएँगे। रात बहुत सुहावनी थी और बीस मील की पैदल यात्रा को लेकर हमें कोई चिंता नहीं थी।

गर्मी का मौसम होने के कारण नहर में पानी बहुत कम था, और जिस रास्ते पर हम चल रहे थे वह धूल भरा और सूखा था: बेशक, पैरों के निशान दिखाने के लिए आदर्श था, लेकिन टॉर्च के बिना उन्हें देखना बहुत मुश्किल था क्योंकि वहाँ बहुत अंधेरा था। हम जानते थे कि लगभग एक मील का रास्ता, जहाँ तक सरकंडों से ढका एक तालाब था, पैंथरों का इलाका था। उसके बाद जंगल घना हो जाता था, जहाँ पैंथर कम ही जाते थे, लेकिन वहीं से बाघों का इलाका शुरू होता था और मद्दक झील तक फैला हुआ था।

बेशक, बिना टॉर्च जलाए उनकी आँखें देखे, चाँदनी में किसी भी जानवर को देखना बहुत मुश्किल होता, चाहे चाँदनी कितनी भी तेज़ क्यों न हो, जब तक कि वे बिल्कुल हमारे सामने न आ जाएँ। लेकिन हम सिर्फ़ उस नरभक्षी की तलाश में थे, जिसके बारे में हम जानते थे कि अगर वह आस-पास हुआ तो वह बिना किसी कोशिश के खुद ही अपनी मौजूदगी का एहसास करा देगा।

और इसलिए हम कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगे, हमारी मशालें तैयार थीं लेकिन जली हुई नहीं थीं।

आदमखोर बाघों वाले इलाके में एक कतार में चलना हमेशा ही नासमझी होती है। दो आदमी एक साथ चलने पर अचानक और अप्रत्याशित हमले से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहते हैं। आमतौर पर बाघ इस तरह से चलने पर हमला नहीं करता। अगर वह हमला करता भी है, तो पहले गुर्राएगा या दहाड़ेगा, ताकि उसका साहस बढ़ जाए। लेकिन एक कतार में चलने वाले दो आदमी बड़े खतरे में होते हैं - कम से कम, पीछे वाला आदमी तो ज़रूर। आदमखोर बाघ कहीं ज़्यादा साहसी होगा; वह चुपचाप और बिना किसी चेतावनी के हमला करेगा। और पीछे वाला आदमी इससे पहले कि उसे या उसके साथी को पता चले, गायब हो जाएगा। चाहे वे कितने भी सतर्क क्यों न हों, हमला, अगर हुआ भी, तो पूरी तरह से चुपचाप और बिना किसी चेतावनी के होगा; इससे पहले कि पीछे वाले आदमी को पता चले, इससे पहले कि आगे वाला आदमी मदद कर सके। आगे वाला आदमी हमले से काफी हद तक सुरक्षित रहेगा। अपनी जान जोखिम में डालने वाला उसका साथी होता है।

हम तीन मील से अधिक का सफर तय कर चुके थे कि तभी दाहिनी ओर नहर के उस पार एक छोटी पहाड़ी पर एक बाघ ने दहाड़ मारी। यह अजीब था, और हम रुक गए। जैसा कि मैंने बताया, यह ग्रीष्म ऋतु का मध्य था, और आम तौर पर बाघ साल के उस समय दहाड़ नहीं मारते।

हमने सुना। उसने फिर पुकारा, इस बार बहुत करीब से।

हम संकरी नहर को पार करते हुए पानी में छपछपाते हुए दूसरी तरफ बने निचले किनारे पर चढ़ गए और नहर के किनारे उगी झाड़ियों को चीरते हुए आगे बढ़ते हुए लगभग सौ गज तक फैले हरे-भरे पार्क जैसे इलाके में पहुँच गए। अब हमें जल्दी से छिपना होगा, वरना विपरीत दिशा से आ रहा बाघ हमें देख सकता था।

हम दोनों लगभग चालीस फीट की दूरी पर एक पेड़ के तने के पीछे छिप गए; फिर मैंने बाघ की तरह दो बार, जल्दी से दहाड़ा।

हम बेसब्री से इंतजार करते रहे, लेकिन कुछ नहीं हुआ। कहीं कोई आवाज नहीं; टहनी के टूटने की हल्की सी भी आवाज नहीं।

दोबारा आवाज़ लगाना उचित नहीं था। अगर मान लें कि बाघ हमारे आगे बढ़ते रहने के दौरान लगातार हमारे करीब आ रहा था, तो अब वह बहुत नज़दीक आ गया होगा। मेरी पहली दो आवाज़ों से उसकी जिज्ञासा तो ज़रूर जागी होगी, लेकिन शायद उसे शक नहीं हुआ होगा। तीसरी आवाज़ से जानवर को आवाज़ का पता लगाने में मदद मिल जाएगी। उसे शक हो जाएगा और शायद वह पूरी तरह गायब हो जाएगा। बेहतर यही था कि धैर्य से इंतज़ार किया जाए और बाघ को खुद उस रहस्यमय आवाज़ लगाने वाले को ढूंढने दिया जाए।

मुझे ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। अचानक, डॉन की टॉर्च की रोशनी चाँदनी को चीरती हुई मेरे पीछे एक जगह पर पड़ी। मैंने जल्दी से मुड़कर देखा कि वह क्या था।

एक झाड़ी के पीछे, मुझसे लगभग उतनी ही दूरी पर, जितनी दूरी पर डॉन खड़ा था, एक बाघ था। जाहिरा तौर पर हमने दूसरी बार उसकी आवाज़ लगाते समय उसकी दूरी या उसकी गति का गलत अनुमान लगाया था; दरअसल, जब मैंने आवाज़ लगाई थी, तब वह हमसे आगे निकल चुका था और नहर के पास पहुँच रहा था। बाघ ने पीछे मुड़कर देखा और मुझे देख लिया, लेकिन डॉन को नहीं। मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। डॉन को इसका पता कैसे चला, यह मैं समझ नहीं पा रहा था।

अब मैंने अपनी टॉर्च बाघ पर भी चमकाई, और हम दोनों में से किसी ने भी कोई आवाज़ नहीं की। संयुक्त रोशनी में, बाघ अचंभित होकर एक रोशनी से दूसरी रोशनी की ओर मुड़ने लगा।

मुझे पता था कि इस इलाके में कई बाघ हैं, सिर्फ़ आदमखोर बाघ ही नहीं, और हम दोनों में से कोई भी गलत जानवर को गोली मारना नहीं चाहता था। डोनाल्ड और मेरे बीच ज़रूर कोई टेलीपैथिक संदेश का आदान-प्रदान हुआ होगा, क्योंकि न तो हमने कुछ बोला और न ही कोई इशारा किया, फिर भी हम दोनों ने एक ही क्षण में अपनी टॉर्च बुझा दीं।

दो बत्तियों की तेज रोशनी के बाद, चांदनी में मेरी आंखों को फिर से अभ्यस्त होने में एक-दो सेकंड लगे। फिर मैंने देखा कि बाघ अभी भी वहीं था। यह पता लगाने का एकमात्र तरीका था कि वह आदमखोर है या नहीं, उसे परखना। इसलिए, डॉन से थोड़ा करीब होने के कारण, मैं पेड़ की आड़ से बाहर निकला।

बाघ पर इसका असर बहुत ही नाटकीय था - लगभग पल भर में। ज़ोरदार 'वूफ़! वूफ़!' की आवाज़ के साथ वह दुम दबाकर तेज़ी से भाग गया। ज़ाहिर है, वह आदमखोर नहीं था, बल्कि एक असाधारण डरपोक था। मुझे खुशी थी कि हम दोनों में से किसी ने भी गोली नहीं चलाई थी।

'पिताजी, आपको क्या हुआ?' डॉन ने पास आते हुए पूछा। 'क्या आपने उसे सुना नहीं? मैं सोच रहा था कि आप अपनी टॉर्च कब जलाएंगे। फिर मुझे लगा कि शायद आपने उसे सुना न हो और वह आप पर हमला कर दे, इसलिए मैंने जल्दी से अपनी टॉर्च जला ली।'

'धन्यवाद, डॉन,' मैंने जवाब दिया। 'मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया!'

'यह तो बुरा है,' उन्होंने गंभीर स्वर में फटकारा। 'तुम्हारी सुनने की शक्ति कम हो रही है। एक पत्ता सरसराया, और फिर वह उस झाड़ी से टकरा गया। मैंने दोनों आवाज़ें साफ़ सुनीं। और तुम कहते हो कि तुमने कुछ नहीं सुना! पिताजी, बेहतर होगा कि आप इस तरह की हरकतें करना छोड़ दें। आप बूढ़े हो रहे हैं।'

इससे यही साबित होता है कि आवाज़ें कितनी मायावी होती हैं, या फिर इंसानी इंद्रियां कितनी अविश्वसनीय होती हैं; या फिर दोनों ही! शायद हवा के झोंके ने आवाज़ों को मुझसे दूर कर दिया हो। शायद मेरी सुनने की शक्ति अब पहले जैसी नहीं रही। और जैसा कि डोनाल्ड कहता है, मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। लेकिन मैं जंगल में घूमने का शौक कैसे छोड़ सकता हूँ? अगर डॉन ने आवाज़ न सुनी होती, तो बाघ ज़रूर पास आ जाता। कायर निकला, मुझे यकीन है कि वो हमला नहीं करता।

हम वापस रास्ते पर आ गए और मद्दक झील की ओर चलना जारी रखा। एक जगह पर, एक मील से ज़्यादा आगे, ज़मीन में थोड़ी ऊँचाई होने के कारण नाला मुड़ जाता है। जिस रास्ते पर हम चल रहे थे, वह पहाड़ी को पार करता है। हम दूसरी तरफ उतर रहे थे कि तभी हम दोनों को ज़मीन पर खुरों की स्पष्ट लेकिन दूर से आती हुई आवाज़ सुनाई दी। हम सुनने के लिए रुक गए। जैसा कि मैंने अभी बताया, नाला पहाड़ी के आधार के चारों ओर घूमता था, इसलिए बहते पानी की आवाज़ अब सुनाई नहीं दे रही थी। रात के सन्नाटे में हमें वह आवाज़ फिर से साफ़ सुनाई दी। कठोर ज़मीन पर सरपट दौड़ते किसी खुर वाले जानवर की हल्की सी धमक की आवाज़। आवाज़ जारी

रही। यह वाकई अजीब था! धमक की लय से लग रहा था कि जानवर तेज़ी से दौड़ रहा है; फिर भी, धमक लगातार आती रही। अगर जानवर भाग रहा होता, तो वह हमारी सुनने की सीमा से बाहर चला गया होता। लेकिन हम उसे सुन सकते थे, एक जानवर के दौड़ने की आवाज़। लेकिन एक ही जगह पर बिना आगे बढ़े दौड़ रहा था!

हमने जांच करने का फैसला किया। पगडंडी छोड़कर, डॉन और मैं बाईं ओर जंगल में चले गए, दोनों ने टॉर्च जला रखी थी और हम उन रहस्यमयी आवाज़ों की ओर बढ़ने लगे जो तेज़ होती जा रही थीं। जल्द ही रहस्य सुलझ गया, और इसका हल जितना सरल था उतना ही अजीब भी। एक हिरणी ज़मीन से तीखे कोण पर उगे दो छोटे पेड़ों के बीच से कूद गई थी और उनके तनों के बीच बने प्राकृतिक 'वी' आकार में फंस गई थी। जो खुरों की आवाज़ हम सुन रहे थे, वह उस बेचारी जानवर की थी जो खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रही थी, लेकिन सफल नहीं हो पा रही थी, जबकि उसके आगे और पीछे के पैरों ने दोनों सिरों पर सख्त ज़मीन में दो गड्ढे खोद दिए थे।

हमने देखा कि वह काफी समय से बंदी थी, क्योंकि उसके पार्श्व भाग, जो छोटे पेड़ों से कसकर जकड़े हुए थे, छिले और खून से लथपथ थे, जबकि पेड़ों की छाल चमड़ी और बालों से भरी हुई थी। हमने यह भी देखा कि वह काफी गर्भवती थी। हम उसके पीछे गए; डॉन ने उसका एक पिछला पैर पकड़ा और मैंने दूसरा, और हमने उसके पिछले हिस्से को इतना ऊपर उठाया कि वह उस 'वी' आकार के गड्ढे से निकल गई जिसमें वह इतने लंबे समय से फंसी हुई थी। उसने बकरी जैसी खुशी की आवाज निकाली और चली गई।

वापस पटरी पर आते ही हम जल्द ही नहर के पास पहुँच गए। एक मील और चलने पर हम एक पुराने संतरे के बागान में पहुँचे, जो वर्षों पहले दो अंग्रेजों के स्वामित्व में था और एक फलता-फूलता व्यवसाय था। पुरानी यादों में खोकर मैंने डोनाल्ड को उन दिनों के बारे में बताया - जब वह पैदा भी नहीं हुआ था - कि एक शाम मैं इसी रास्ते से आया था, उन दो अंग्रेजों से मिला था और उनके छोटे से ईंटों से बने बंगले में चाय पीने के लिए आमंत्रित किया गया था।

एक कप से बात कई कप तक पहुंच गई और उन्होंने मुझे अपने साथ रात बिताने के लिए मजबूर कर दिया, जिस पर मैं खुशी-खुशी सहमत हो गया। सूर्यास्त के समय,

हम झोपड़ी के बाहर नीची कुर्सियों पर बैठे थे, तभी संतरे के बागान के प्रवेश द्वार से ठीक पहले रास्ते को पार करने वाली नदी के किनारे से एक मरते हुए जानवर की कर्कश चीख सुनाई दी।

मैंने अपनी राइफल उठाई और अपने मेजबानों के साथ, जिनमें से एक के पास शॉटगन थी, जाँच करने चला गया। नदी पार करते समय हमें एक बाघ नदी के किनारे दौड़ता हुआ मिला, जिसकी पीठ पर एक चित्तीदार हिरण लटका हुआ था, जिसका एक लंबा सींग ज़मीन पर घिसट रहा था। मुझे वह दृश्य आज भी ऐसे याद है जैसे कल ही हुआ हो!

कई शिकारी इस बात से इनकार करते हैं कि बाघ अपने शिकार को, विशेषकर बड़े आकार के शिकार को, अपनी पीठ पर उठाकर ले जा सकते हैं। लेकिन यहाँ इसका प्रमाण मेरी आँखों के सामने था।

उन दिनों मैं खुद एक हत्यारा था - और यह एक ऐसा शॉट था जो कोई भी बच्चा ले सकता था - मैंने उस बाघ को मार गिराया।

अंग्रेजों के पास कोई नौकर नहीं थे, और चूंकि उस समय संतरे का मौसम नहीं था, इसलिए जागीर में कोई कुली भी नहीं थे।

हम तीनों हिरण को उठाकर बंगले तक लाए और लालटेन की रोशनी में बाघ की खाल उतारने के लिए वापस लौटे। वह शाम बहुत ही लाभदायक रही।

मैं उदास मन से उस जागीर के पास से गुजरा, और संतरे के पेड़ों पर उग आए जंगल पर एक नजर डाली। अंग्रेज तो बहुत पहले ही इंग्लैंड लौट चुके थे; बंगला खंडहर में तब्दील हो रहा था, और कीड़ों के हमले से संतरे के पेड़ एक-एक करके सूखते जा रहे थे।

अब हम मद्दक झील तक आधे से ज़्यादा रास्ता तय कर चुके थे। दोनों ओर का जंगल घना होता जा रहा था, पेड़ ऊँचे और पास-पास होते जा रहे थे। चाँदनी, जो खुले में दिन के उजाले जैसी तेज़ थी, घनी शाखाओं के बीच से होकर नीचे की अंधेरी गलियों तक नहीं पहुँच पा रही थी। अब पगडंडी के समानांतर बहने वाली नहर संकरी और गहरी होती जा रही थी; और आगे रास्ते की पतली पट्टी को छोड़कर, जो चाँदनी और

छाया के धुंध में गायब हो रही थी, दोनों ओर का जंगल काला और भयानक हो गया था। हम जानते थे कि अब हमें बहुत सतर्क रहना होगा, क्योंकि हम आदमखोर जानवरों के नियमित रूप से आने वाले इलाकों में से एक के पास पहुँच रहे थे।

हालांकि कुछ नहीं हुआ, और अंततः हम एक पथरीली धारा को पार कर गए जो मैडक झील के ऊंचे बांध तक पहुंचने से कुछ ही पहले पगडंडी को पार करती थी। यह धारा, जिसे सूखा होना चाहिए था, या ज़्यादा से ज़्यादा बस एक पतली धारा होनी चाहिए थी, शुष्क मौसम के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से लगभग कमर तक गहरी थी; इसे पार करने के लिए हमें अपनी पैंट, जूते और मोज़े उतारने पड़े।

अंततः हम ऊंचे बांध पर बनी खड़ी पत्थर की सीढ़ियों पर चढ़े और नीचे फैले उस विशाल जलाशय के मनोरम दृश्य को देखा। साफ, बादलों से रहित आकाश से आती चांदनी की किरणें पानी पर चांदी जैसी चमक बिखेर रही थीं, जो दूर किनारे पर फैली धुंध में कहीं खो गई।

हम तटबंध पर बैठे थे, तभी डॉन ने अपनी जेब में ठूंसे हुए बिस्कुट का आधा पैकेट निकाला। उस समय एक कप गर्म चाय कितनी अच्छी लगती! लेकिन अफसोस! हमारे पास चाय नहीं थी। फिर हम तटबंध से नीचे उतरकर झील के किनारे अपने हाथों से पानी पीने चले गए।

डॉन ने कहा कि उसे नींद आ रही है, और मुझे भी। बांध का ऊपरी हिस्सा आदमखोर सांप से सुरक्षित लग रहा था, इसलिए थोड़ी देर झपकी लेना ठीक लगा। हम फिर से ऊपर चढ़ गए, तेज चांदनी में एक-दूसरे के बगल में लेट गए, एक-दूसरे को एक घंटे में जगाने का वादा किया और गहरी नींद में सो गए।

हमने एक-दूसरे को नहीं जगाया। आदमखोर ने हम दोनों को जगाया। या यूँ कहें कि उसके कृत्य ने हमें जगाया। क्योंकि वह एक ऐसे व्यक्ति को ले जा रहा था जिसकी मदद के लिए चीखों ने हमें एक साथ कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया!

झील का पानी नहर में जहाँ से बहता था, वह जगह हमारी नींद से लगभग दो सौ गज दूर थी। उस जगह पर बांध को काटकर एक रास्ता बनाया गया था और उसे बड़े-बड़े पत्थरों से पक्का किया गया था। झील के किनारे, पत्थर की सुरंग के प्रवेश द्वार पर, जंग लगी जंजीरों से चलने वाला एक गेट था जो नहर में जाने वाले पानी की मात्रा को

नियंत्रित करता था। सुरंग के दूसरे छोर पर जस्ता की चादरों से बनी एक छोटी सी झोपड़ी थी, जिसे शायद उन लोगों के लिए बनाया गया था जो समय-समय पर गेट को चलाने या उसकी जाँच करने आते थे। यह झोपड़ी विशाल जंगली आम के पेड़ों के झुरमुट में थी। दोपहर के समय भी वह जगह अंधेरी रहती थी।

डॉन और मैं उस छोटी जस्ता की झोपड़ी के बारे में जानते थे। लेकिन मैंने और उसने भी इस जगह का जितनी बार दौरा किया था, हमने कभी भी उस झोपड़ी को खाली नहीं देखा था, और इसी वजह से हमने इस बार वहां जाने की जहमत नहीं उठाई।

लेकिन जाहिर तौर पर वहां कोई मौजूद था, या शायद बाहर सो रहा था, क्योंकि मदद के लिए चीखें उसी दिशा से आ रही थीं। संभवतः अंदर रहने वाला कोई शराब तस्कर था, जो कि बहुत संभव था, क्योंकि कई लोगों ने बबूल के पेड़ की छाल से अवैध शराब बनाने को एक लाभदायक पेशा बना लिया था।

डोनाल्ड और मैं चीखों की आवाज़ की ओर दौड़े, हालाँकि अब वे बंद हो चुकी थीं। जस्ता की शेड के पास से गुज़रते हुए, हमने अपनी टॉर्च की रोशनी में हमेशा की तरह देखा कि दरवाज़ा बंद था। वह आदमी, चाहे जो भी हो, इतनी खतरनाक जगह पर, आदमखोर साँप के आसपास, निहत्थे बाहर सोने की हिम्मत ज़रूर की होगी। आम के पेड़ों के नीचे घने अंधेरे में हमें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। हम रुककर सुनने लगे, लेकिन सुरंग से बहते पानी की हल्की आवाज़ के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दिया। उसने ज़रूर बहुत ज़ोर से चीखा होगा, तभी तो हमारी नींद खुली।

हम सब रुक गए और एक साथ चिल्लाए, उम्मीद थी कि वह आदमी फिर से कुछ कहेगा। लेकिन सिर्फ पानी के बहने की आवाज़ सुनाई दी। आदमखोर जा चुका था और अपने शिकार को भी साथ ले गया था। और इससे हमें एक ऐसी बात याद आई जिसे हम पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर चुके थे। शायद, अपनी मौजूदगी से उस आदमी ने हम दोनों में से एक या दोनों की जान बचाई थी। अगर वह अपने शिकार को वहाँ न देखता जहाँ वह देखा था, तो शायद आदमखोर बांध पर चढ़कर हमें ऊपर देख लेता। वह निश्चित रूप से हमला करता, और हम गहरी नींद में सो रहे थे, इसलिए उस पल हम दोनों में से एक या दोनों ज़िंदा नहीं होते।

हम बेचैनी से टॉर्च लेकर पगडंडी की तलाश करने लगे, लेकिन कुछ नहीं मिला,

क्योंकि ज़मीन खरपतवारों और गिरे हुए पत्तों से ढकी हुई थी। तभी मुझे नहर के किनारों का निरीक्षण करने का ख्याल आया, जहाँ किनारों पर गीली मिट्टी से शायद कोई सुराग मिल जाए।

हमने बड़ी सावधानी से खोजबीन की, लेकिन पानी के किनारे तक उगी घनी वनस्पति ने हमारे द्वारा खोजे जा रहे पदचिह्नों को पूरी तरह से छिपा दिया। हम कुछ नहीं कर सकते थे, और हमें सुबह तक इंतजार करना पड़ा।

यह समझना मुश्किल था कि हमारी नाक के नीचे एक त्रासदी घटित हुई थी; एक इंसान को आदमखोर भालू उठा ले गया था, और हम मदद करने में पूरी तरह से असमर्थ थे।

हम फिर से बांध के ऊपर सो गए, लेकिन इस बार हम बारी-बारी से एक-एक घंटे के लिए पहरा देते रहे, जब तक कि भोर की धुंधली रोशनी और चारों दिशाओं से सैकड़ों जंगली मुर्गों और मोरों की चीखों ने हमें यह नहीं बता दिया कि सुबह के शुरुआती घंटों में हुई त्रासदी के बारे में कुछ करने का समय आ गया है।

छोटे से जस्ता के शेड से बाहर की ओर बढ़ते हुए घेरे में व्यवस्थित रूप से खोज करते हुए, डॉन ने कुछ दूरी पर एक घास पर खून का एक धब्बा सबसे पहले देखा। मुझे पुकारते हुए, हम उस खोज में शामिल हो गए जो मेरे द्वारा किए गए सबसे कठिन ट्रैकिंग कार्यों में से एक बनने वाला था। बेशक, आदिवासियों के लिए रास्ता बिल्कुल खुला होता, लेकिन जंगल में हमारे सभी अनुभव के बावजूद, हमारी सभ्य आँखें उन सूक्ष्म विवरणों को देखने की क्षमता खो चुकी हैं जो पीढ़ियों से जंगलों में रहने वाले लोगों में स्वाभाविक रूप से होती हैं।

अंततः हमें वह स्थान मिल गया जहाँ बाघ पीड़ित को लेकर नहर पार कर गया था। दोनों किनारों पर बिखरे हुए कुछ छोटे जलीय पौधे और घास के लंबे तिनके, जो अभी तक अपनी सीधी स्थिति में नहीं आए थे, इस बात का संकेत दे रहे थे कि हत्यारे ने उस व्यक्ति को कहाँ घसीट कर नदी पार कराई थी। पानी के तेज़ बहाव के कारण खून के निशान ढूँढना व्यर्थ होता, इसलिए हम छायादार किनारे की ओर बढ़ते हुए और नदी के उस पार उगे घने बाँस के जंगल से होकर आगे बढ़े।

यहां भी निशान ढूंढना बेहद मुश्किल था। अगर आप कभी बांस के जंगलों में गए हों,

तो आपको पता होगा कि ऐसी जगहों पर पतली, गिरी हुई, सड़ती हुई पत्तियों की मोटी चादर जमीन को ढक लेती है, और उन पर किसी भी तरह के निशान या छाप दिखाई नहीं देती - यहां तक कि विशाल हाथी के पदचिह्न भी नहीं।

इस बिंदु तक, बाघ ने स्पष्ट रूप से अपने द्वारा उठाए गए व्यक्ति पर अपनी पकड़ ढीली नहीं की थी, इसलिए रक्त के निशान बहुत कम थे। बाघ के दांत अपने शिकार के मांस में मजबूती से धंसे हुए थे, जिससे उनके द्वारा बनाए गए छेद बंद हो गए थे और रक्त का प्रवाह रुक गया था।

हमारी किस्मत का पहला साथ तब मिला जब आदमखोर ने अपने शिकार को बांस के एक बड़े झुंड के पीछे लिटा दिया, शायद स्थिति का जायजा लेने और यह देखने के लिए कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। जब उसने आदमी को दोबारा उठाया और चलना शुरू किया, तो उसने उसके शरीर के किसी दूसरे हिस्से को फिर से पकड़ लिया था। हमें यह इस बात से पता चला कि खून के निशान अचानक बहुत ज़्यादा और साफ़ दिखने लगे थे। उनका पीछा करना आसान था।

बाघ बांसों को पार करके घने जंगल में प्रवेश कर चुका था। अब वह लगभग एक फर्लांग लंबे एक पशु मार्ग का अनुसरण करते हुए चढ़ाई करने लगा। एक नाला, जो ऊँची भूमि से नीचे उतरता हुआ, इस बिंदु पर पशु मार्ग को पार कर रहा था, और हमने देखा कि बाघ नाले का अनुसरण करने लगा था। स्पष्ट रूप से वह भूखा और बेचैन था, और भोजन करने के लिए एकांत स्थान की तलाश कर रहा था।

हमने बड़ी चतुराई से वह जगह ढूंढ ली जिसे उसने इस उद्देश्य के लिए चुना था। हम बड़ी सावधानी से नाले में साथ-साथ चढ़ रहे थे, क्योंकि इस बात की पूरी संभावना थी कि आदमखोर बाघ अपने शिकार के अवशेषों के पास सो रहा हो, या शायद उनकी रखवाली कर रहा हो। मैं दाहिनी ओर और डॉन बाईं ओर था, हम दोनों नाले के ढलान वाले किनारों पर उगी हर झाड़ी, हर चट्टान, हर घास के गुच्छे का बारीकी से निरीक्षण कर रहे थे। क्योंकि बाघ, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, इनमें से किसी भी चीज के पीछे छिपने में सक्षम होता है, और अगर उसे हमारे आने की आहट सुनाई देती, जैसा कि निश्चित था, तो वह हमारे करीब आने तक घात लगाकर बैठा रहता।

मजबूरीवश, इस नाले के तल में हमारा दृश्य सीमित था। यह अपेक्षाकृत संकरा नाला

था, तल पर शायद बारह फीट चौड़ा। यहाँ से किनारे काफी तेज़ी से ऊपर की ओर ढलानदार थे, और बहुत जल्द हमारे सिर की ऊँचाई से ऊपर हो गए। इसका मतलब यह था कि अगर आदमखोर बाघ अभी भी अपने शिकार के साथ लेटा हुआ था, तो वह कहीं हमारे सामने ही होगा। दूसरी ओर, उसने अब तक भरपेट खा लिया होगा, ऐसी स्थिति में, बाघ संभवतः दोनों किनारों में से किसी एक के ऊपर अपनी जगह ले चुका होगा, जहाँ से उसे न केवल नीचे नाले के तल पर अपने शिकार के अवशेषों की रक्षा करने का लाभ मिलेगा, बल्कि ऊपर से किसी भी दुश्मन के आने से बचाव करने का भी।

जैसा कि मैंने कहा, ये किनारे अब हमारे सिर के ऊपर थे और अगर बाघ इनमें से किसी भी किनारे पर छिपा होता तो हम उसे देख नहीं पाते। यहाँ तक कि डॉन, जो मुझसे लंबा है, वह भी ऊपर से नहीं देख सकता था। ये एक ऐसी अंधेरी जगह थी जहाँ से हम पर किसी भी क्षण हमला हो सकता था।

इन बातों को सोचते हुए मुझे बहुत डर लगा और साथ ही इस बात की बहुत खुशी भी हुई कि मैं अकेला नहीं आया था।

हम नाले में कुछ दूर आगे बढ़ चुके थे कि तभी मेरी नज़र नाले के ठीक बीचोंबीच एक बड़े पत्थर पर पड़ी। ज़ाहिर था कि वह हमारे बाईं ओर की पहाड़ी से लुढ़क कर नीचे आ गया था। मैंने डॉन को कोहनी से हल्का सा धक्का दिया और साथ ही अपनी चाल भी धीमी कर दी। मुझे अंदर से महसूस हुआ कि नरभक्षी उस पत्थर के पीछे छिपा है!

नाले की तलहटी नरम थी। बीचोंबीच रेत की एक पट्टी थी और दोनों किनारों पर घनी घास थी। इससे हमारा आगे बढ़ना खामोश रहा और हम धीरे-धीरे, कंधे से कंधा मिलाकर, उस भयावह चट्टान की ओर बढ़ते गए। नीचे देखे बिना ही, मुझे घास में किसी चीज़ से टकराने का एहसास हुआ। वह हिली: कोई ऐसी चीज़ जो पत्थर नहीं हो सकती थी, क्योंकि वह नरम थी और मेरे पैर मारने पर कोई आवाज़ नहीं हुई। मैंने एक पल के लिए नीचे देखा। मेरी ओर घूरता हुआ एक इंसान का सिर था!

आखिरकार हमें आदमखोर का शिकार मिल गया, या कम से कम उसका कुछ हिस्सा। जब मैं रुका, तो डॉन भी रुक गया। फिर उसने भी सिर देखा! हमने जल्दी से चारों ओर देखा। घास पर खून था, काफी सारा, लेकिन कुतरे हुए हड्डियां नहीं थीं, और न

ही उन इंसानी टुकड़ों का कोई निशान था जिन्हें आमतौर पर आदमखोर हमेशा अछूता छोड़ देता है - अपने शिकार के हाथ और पैर।

इसका स्पष्टीकरण सरल था, लेकिन निश्चित रूप से काफी विचित्र था। किसी कारणवश, बाघ ने शव को नीचे रखा, सिर को काट डाला और फिर बाकी के हिस्से को खा गया।

मुझे अब भी लग रहा था कि हम जिस चीज़ की तलाश कर रहे थे, वह हमें उस चट्टान के पीछे मिल जाएगी, जो अब पचास गज से ज़्यादा दूर नहीं थी। लेकिन बाघ ने ऐसा अजीब काम क्यों किया था? उसने सिर क्यों अलग कर दिया था? मैंने उस भयानक चीज़ पर फिर से नज़र डाली। मेरी ओर देख रहा था एक अधेड़ उम्र के आदमी का चेहरा। आँखें बुरी तरह से बाहर निकली हुई थीं और होंठ ऐसे मुड़े हुए थे मानो हमेशा के लिए एक व्यंग्य भरी मुस्कान हो। लेकिन उस सिर में कुछ अजीब तरह से घिनौना, अवर्णनीय रूप से घृणित भी लग रहा था, जिसका कारण मुझे काफी देर तक समझ नहीं आया। एक तो वह अजीब, धब्बेदार काला था। वह फूला हुआ और सूजा हुआ लग रहा था, और होंठ घिनौने थे! मैं करीब से देखने के लिए झुका; फिर थोड़ा बीमार महसूस करते हुए सीधा खड़ा हो गया।

मोटे, टेढ़े-मेढ़े, मुस्कुराते हुए होंठ, जो आंशिक रूप से दुकानों से ढके हुए थे। वह आदमी कुष्ठ रोगी था!

रहस्य सुलझ गया। कोई भी समझदार प्राणी बाघों से भरे इस इलाके में, उन घने, ऊंचे आम के पेड़ों के नीचे, उस सुनसान जस्ता की झोपड़ी के बाहर रात में अकेले सोने की हिम्मत नहीं करता। यह बेचारा विक्षिप्त प्राणी, शायद दर्द से तड़प रहा था, अपने साथियों द्वारा त्यागा हुआ था, और जानता था कि मौत बस सामने ही खड़ी है, चाहे बीमारी से हो या उपेक्षा और भुखमरी से, या दोनों से, उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि उसके साथ क्या होगा। फिर भी जब उसे एहसास हुआ कि बाघ उसे उठाकर ले जा रहा है, तो वह सहज ही भय से जोर से चिल्ला उठा।

शायद इसी से यह बात भी समझ में आ गई कि बाघ ने सिर क्यों काट दिया था। संभवतः, आदमखोर बाघ भी उन घिनौने घावों और उनसे आने वाली दुर्गंध को सहन नहीं कर पाया होगा। मैंने होठों की ओर इशारा किया, लेकिन कुछ नहीं कहा, क्योंकि

मुझे लगा कि बाघ अभी भी उस चट्टान के पीछे या आसपास कहीं छिपा हुआ है।

डॉन ने देखा, और मैंने उसके चेहरे पर घबराहट के भाव देखे। फिर मैंने उसे दोबारा कोहनी मारी, और सिर हिलाकर इशारा किया कि हमें चट्टान की ओर चलना चाहिए।

बहुत जल्द हम लगभग वहाँ पहुँच ही गए थे। दो तरफ से चट्टान को घेरने के लिए सेना को विभाजित करने के बजाय, जिसमें बाघ के अचानक हमला करने पर एक-दूसरे को गोली मारने का बड़ा खतरा होता, मैंने डोनाल्ड को अपने साथ खींच लिया, और हमने चट्टान से यथासंभव दूरी बनाए रखी, और सावधानीपूर्वक दाहिनी ओर से उसे पार किया।

वहाँ कोई बाघ नहीं था, हालाँकि मेरी आशंका पूरी तरह निराधार नहीं थी। क्योंकि यहीं पर आदमखोर बाघ अपना भोजन करने बैठा था। कुष्ठ रोगी का केवल अवशेष ही वहाँ था: पसलियों के सिरे निकले हुए सीने का एक छोटा सा हिस्सा, नितंब, पैर और हाथ।

हमने पैरों और हाथों को देखा: लगभग सभी उंगलियां गायब थीं और पैर की उंगलियां लगभग न के बराबर बची थीं! अब असली समस्या सामने आई; अब हमें आगे क्या करना चाहिए? इस शिकार की एक खास बात यह थी कि यह एक सुनसान जगह पर हुआ था; बाघ ने अपने शिकार को बिना किसी बाधा के उठाकर खा लिया था; और अगर वह पानी पीने गया हो या किसी दूर जगह पर आराम कर रहा हो और उसे पता न हो कि डॉन और मैं उसके पीछे आए हैं, तो अगर वह वापस आता है तो उसे इंसानी दखल का कोई डर नहीं होगा।

यह एक बहुत बड़ा फायदा होता। अधिकतर मामलों में शिकार के बाद, आदमखोर बाघ, या यहाँ तक कि एक साधारण बाघ भी, मची अफरा-तफरी और शिकार की तलाश में उमड़ी भीड़ से इतना घबरा जाता है कि वह अक्सर वापस लौटता ही नहीं, बल्कि भाग जाता है। लेकिन इस स्थिति के नुकसान ये थे: आदमखोर बाघ के लौटने का इंतज़ार करते समय बैठने के लिए एक भी पेड़ नहीं था, न ही छिपने के लिए एक भी झाड़ी। सुबह तक गाड़ी तक पहुँचने की उम्मीद में, हम अपने साथ खाना-पानी नहीं लाए थे। अगर हमें बाघ पर घात लगाकर हमला करना था, तो हमें पूरे दिन वहीं रहना पड़ता और हिलने-डुलने की कोशिश भी नहीं करनी पड़ती, क्योंकि कोई भी हरकत हमारी मौजूदगी का पता लगा देती और हमारे पक्ष में मौजूद अचानक हमला करने का

एकमात्र फायदा भी खत्म हो जाता। अंत में, जब गाड़ी होगारेहल्ली नहीं लौटी, तो बूढ़े मुदतियारगिरिअप्पा सोचेंगे कि हमारे साथ कोई दुर्घटना हो गई है। वे शायद यह भी सोच सकते थे कि हमने बैंगलोर लौटने का फैसला कर लिया है; लेकिन अगर उनके मन में कभी ऐसे विचार आए भी हों, तो वे जल्द ही दूर हो जाएंगे जब उन्हें खबर मिलेगी कि हमारी कार येम्मैदोड्डी सड़क के मुहाने पर बने पुल के पास खड़ी है। हालांकि हमने उन्हें मद्दक झील तक रात में पैदल जाने और वापस आने के अपने इरादे के बारे में नहीं बताया था, लेकिन पुल पर कार मिलने से यह साबित हो जाएगा कि हम उस रास्ते गए थे। शायद यह सोचकर कि हम भी आदमखोर सांप का शिकार हो गए हैं, बूढ़े पटेल ने आखिरकार हमें ढूंढने के लिए एक बड़ी खोज टीम भेजी। वे मद्दक झील के तटबंध तक तो पहुँच गए, लेकिन वहाँ क्या हुआ था, इसकी जानकारी न होने के कारण, हमारे वर्तमान स्थान तक हमारा पीछा करना उनके लिए मुश्किल था।

लेकिन कोई नहीं जानता था। पुराने मुडलियारगिरी से भेजे जाने वाले लम्बानी खोजी दल के पहरेदारों की नज़रें बहुत तेज़ होती थीं। वे निःसंदेह हमारे पैरों के निशान और नहर के उस पार खून के हल्के निशान देख लेते, सोचते कि हममें से किसी एक को बाघ उठा ले गया है जिसका पीछा दूसरा कर रहा था, और हमारा पीछा करते हुए यहाँ तक आ जाते, शायद ठीक समय पर आकर सब कुछ बिगाड़ देते और बाघ को सचेत कर देते। हम बस यही उम्मीद कर सकते थे कि ग्रामीणों की स्वाभाविक उदासीनता खोज को एक और दिन के लिए टाल देगी।

लेकिन हमें अपने फैसले पर कभी कोई संदेह नहीं था। डॉन और मैं, दोनों ही आदमखोर सांप को गोली मारने का यह मौका हाथ से जाने नहीं दे सकते थे, खासकर तब जब उसके आने-जाने का दायरा इतना बड़ा था कि शायद हमें दोबारा ऐसा मौका न मिले। संयोग से, यह हमारी खुशकिस्मती ही थी कि उसने कुष्ठ रोगी को ठीक उसी समय मार डाला जब हम उसके इतने करीब थे। इसलिए हमने वहीं रुकने का फैसला किया।

सबसे पहले दो काम करने थे। पहला, बाघ के पदचिह्नों से यह पता लगाने की कोशिश करना कि वह किस दिशा में गया है। शायद, लेकिन निश्चित रूप से नहीं, इससे उसके लौटने का रास्ता पता चल सकता था। दूसरा, यह पता लगाने की कोशिश करना कि जिस नाले के किनारे हम खड़े थे, उसके ऊपर किस तरह की झाड़ियाँ थीं। मैंने

आपको पहले ही बताया है कि वे किनारे इतने ऊँचे थे कि बिना ऊपर चढ़े हम देख नहीं सकते थे, और अगर हम ऊपर चढ़ते, तो हमें बहुत सावधान रहना पड़ता कि बाघ हमें न देख ले, अगर वह आस-पास कहीं भी हो। हमारी सफलता की एकमात्र उम्मीद, हालाँकि बहुत कम थी, अचानक हमला करने में थी, और हमें इसे किसी भी कीमत पर खोना नहीं था।

पहले सवाल का जवाब तुरंत मिल गया। खाना खाने के बाद, नाले के बीचोंबीच रेत में उसके पैरों के निशान मिले, जो बाद में घास में गायब हो गए। इन निशानों से पता चला कि आदमखोर सांप तिरछे बाईं ओर चला और फिर उसी दिशा में नाले के किनारे पर कूद गया। आपको बता दूं कि यह किनारा नाले के पश्चिमी हिस्से में था, जहां से नाला उत्तर से दक्षिण की ओर ढलान पर बहता था, ऊंचे पहाड़ों से होते हुए हमारे पीछे स्थित मद्दक झील तक।

दूसरे प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए, डॉन नीचे झुक गया और मैं उसके कंधों पर चढ़कर पश्चिमी किनारे से बड़ी सावधानी से झाँकने लगा। मुझे दूर तक कुछ दिखाई नहीं दिया। आस-पास की झाड़ियों ने मेरा नज़ारा धुंधला कर दिया, जबकि उनके पीछे घना जंगल एक छोटी पहाड़ी की ओर ऊपर की ओर जाता था। आगे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हमने पूर्वी किनारे के उस पार देखने के लिए यही तरीका दोहराया, और हमें वही चीज़ मिली, झाड़ियों और जंगल के सिवा कुछ नहीं, हालाँकि इस बार कोई पहाड़ी नहीं थी। ज़मीन धीरे-धीरे नीचे की ओर ढलान वाली थी, उसी रास्ते की ओर जिसका अनुसरण करते हुए हम रात में मद्दक झील तक पहुँचे थे।

चट्टान के दूसरी ओर लौटकर, जहाँ से हमें वे भयानक, रोगग्रस्त हाथ-पैर दिखाई नहीं दे रहे थे, हम पीठ सटाकर बैठ गए और दबी आवाज़ में चर्चा करने लगे कि बाघों के लौटने का इंतज़ार करते हुए क्या करें। इस दबी आवाज़ में हुई चर्चा से दो योजनाएँ बनीं। पहली, डॉन की, हताशा भरी थी। दूसरी, मेरी, अपेक्षाकृत अधिक सतर्कता भरी थी।

डॉन ने सुझाव दिया कि हमें चट्टान के इस तरफ पीठ करके वहीं बैठे रहना चाहिए। बाघ को दोबारा खाना शुरू करने के लिए नाले में छलांग लगानी पड़ेगी, और वह चाहे जिस भी दिशा से आए, उसके उतरने की आवाज़ से उसके आने का पता चल जाएगा,

जबकि चांदनी उसे उजागर कर देगी। यह सब तभी संभव था, जब वह सूर्यास्त के बाद आए।

मेरी योजना यह थी कि हम नाले के पूर्वी किनारे पर चढ़ें और पास की झाड़ी के पीछे पेट के बल लेट जाएँ, अगल-बगल, लेकिन विपरीत दिशाओं में मुँह करके। हममें से एक खाई के तल और नीचे दबे मानव अवशेषों पर नज़र रखेगा, साथ ही पश्चिमी किनारे के ऊपरी भाग को भी देख सकेगा, जबकि दूसरा पीछे से या पूर्वी तरफ से होने वाले किसी भी संभावित हमले से बचाव करेगा।

मेरी नज़र में बाघ अब पश्चिम दिशा की ओर कहीं था। अगर हम नाले के पूर्वी किनारे पर छिप जाते, तो हम इस हद तक सुरक्षित थे कि आदमखोर बाघ को हम तक पहुँचने से पहले पश्चिमी किनारे से पूर्वी किनारे तक लगभग पंद्रह फीट की दूरी तय करनी पड़ती।

या फिर, उसे पश्चिमी किनारे से नाले की तलहटी तक छलांग लगानी होगी, और फिर पूर्वी किनारे से वापस ऊपर चढ़कर हम तक पहुंचना होगा।

डोनाल्ड की योजना में एक बड़ी खामी थी। नरभक्षी सांप हमें पश्चिमी किनारे के ऊपरी हिस्से से देख सकता था, क्योंकि हम नाले के तल पर पीठ सटाकर बैठे थे, जबकि हमें पता भी नहीं चल रहा था कि वह हमें देख रहा है। फिर वह हमारे ऊपर छलांग लगा सकता था, इससे पहले कि हमें खतरे का जरा भी आभास होता।

मेरी योजना में भी एक खामी थी; लेकिन अलग तरह की। पूर्वी किनारे पर झाड़ी के पीछे छिपे हम दोनों बाघ की नज़र में आ जाते, जब वह नाले के पश्चिमी किनारे से सटी छोटी पहाड़ी से नीचे आता। हम पूर्वी किनारे पर और भी सुरक्षित छिपने की जगह बनाकर अपनी मौजूदगी का खुलासा नहीं कर सकते थे, न ही अचानक हमला करने का मौका गंवा सकते थे; बाघ पहाड़ी की चोटी से हमारी गतिविधियों पर नज़र रख सकता था। मेरी योजना के अनुसार, अगर बाघ हमें देख भी लेता, तो वह पूरी तरह गायब हो सकता था या नाले को ऊपर किसी जगह से पार करके पीछे से हम पर हमला करने की कोशिश कर सकता था, हालांकि योजना में पहले से ही इस तरह की स्थिति से निपटने का इंतज़ाम था, क्योंकि हम विपरीत दिशाओं में लेटे थे।

बात यहाँ तक पहुँच गई: डॉन की योजना में अचानक हमले का खतरा था, जबकि मेरी

योजना में उसके हमें पहले से देख लेने और भाग जाने का खतरा था। ऐसे में, हम दोनों अपनी किस्मत का फायदा उठाकर उस खतरे का अंत करने के लिए बेताब थे जिसने कई जानें ली थीं, तो हमें कौन सी योजना अपनानी चाहिए थी? ज़ाहिर है, डॉन की; क्योंकि खतरे का सामना करने से हमें कम से कम उस बदमाश को पकड़ने का मौका तो मिल जाता, चाहे कुछ भी हो जाए।

नौ बजने के कुछ मिनट बाद हमने अपना मन बना लिया। भोजन या पानी के लिए वापस लौटने का तो सवाल ही नहीं था, और हम जानते थे कि हमें बेवजह इधर-उधर नहीं घूमना चाहिए, कहीं बाघ हमें देख या सुन न ले। यह भी संभव था कि वह किसी भी समय वापस आ जाए। यह कम संभावना थी, क्योंकि बाघ केवल रात में ही अपने शिकार के पास दोबारा भोजन करने लौटते हैं, लेकिन पूरे इलाके के सुनसान होने और इंसानों की पूरी तरह अनुपस्थिति को देखते हुए, यह संभव था कि आदमखोर बाघ रात होने से पहले वापस लौटना सुरक्षित समझे।

एक सवाल यह भी था कि बाघ ने अपने शिकार के बिखरे हुए अवशेषों को गिद्धों से छिपाने की जहमत क्यों नहीं उठाई; चाहे उन्हें चट्टान के सहारे छिपाकर या घास में छुपाकर। यह एक बुरा संकेत था, जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि उसका लौटने का कोई इरादा नहीं था। दूसरी ओर, हो सकता है कि वह केवल थोड़ी देर के लिए पानी पीने गया हो और गिद्धों के आने से पहले जल्द ही वापस आने का इरादा रखता हो।

इससे हमें एहसास हुआ कि किसी भी तरह की आड़ बनाने का समय नहीं था। आड़ तो न केवल आसानी से दिख जाती, बल्कि पूरी तरह से बेकार भी होती, क्योंकि पश्चिमी किनारे के ऊपर अपनी ऊँची जगह से बाघ हमें साफ देख लेता, जब तक कि वह नाले के और ऊपर न आ जाए और वहाँ से कूद न जाए। उस स्थिति में, हमारे और उस बदकिस्मत कुष्ठ रोगी के अवशेषों के बीच की चट्टान हमें उससे छिपा देती।

बिना देर किए हम अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए, नरम रेत पर एक चट्टान के पीछे पीठ सटाकर, पैर मोड़कर और राइफलें गोद में रखकर। मौन सहमति से, मैंने पूर्वी किनारे की ओर मुंह कर लिया, जिससे डॉन को बाघ को गोली मारने का बेहतर मौका मिल गया, जो लगभग निश्चित रूप से उसी दिशा से आएगा जिस दिशा में वह गया था, यानी पश्चिम से। डॉन बाएं कंधे से गोली चलाता है, जबकि मैं दाएं कंधे से।

इसलिए, अगर आदमखोर अचानक बाईं ओर की चट्टान के पीछे से दिखाई दे, तो वह मुझसे ज़्यादा तेज़ी से और तीखे कोण से गोली चला सकेगा। मुझे उसे देखने से पहले दाईं ओर आधा मुड़ना पड़ेगा।

मुझे यह बताना चाहिए था कि यह चट्टान अंडाकार आकार की थी, जो अनगिनत वर्षों पहले पश्चिम की ओर पहाड़ी से लुढ़क कर आई थी। अनुमानतः, इसकी लंबाई लगभग दस फीट और ऊंचाई उससे आधी थी।

इसी प्रकार, यदि बाघ चट्टान के दाहिनी ओर से हमला करता है, तो मुझे फायदा होगा।

अगले छह घंटों में जो कुछ हुआ, उसे मैं आज भी याद नहीं करना चाहता। सूरज की गर्मी बढ़ती गई और जिस रेत पर हम बैठे थे, वह भी गर्म होती चली गई। दोपहर हो गई, लेकिन बाघ का कोई अता-पता नहीं था। तभी एक गिद्ध, जो बहुत ऊँचाई पर उड़ रहा था, ने शव के अवशेषों को देखा और ज़मीन पर झपटा। हवा उसके लंबे-लंबे पंखों को चीरती हुई तेज़ी से नीचे उतरने की सरसराहट भरी आवाज़ हमने सुनी। संकरी घाटी में होने के कारण इस पहले पक्षी को शिकार को ढूंढने में काफ़ी समय लगा होगा। उसे शिकार को देखने के लिए ठीक ऊपर होना ज़रूरी था; किसी और स्थिति से देखने पर नाले के किनारे शव को पूरी तरह से छिपा देते।

उसके बाद दूसरे गिद्ध तेज़ी से आ गए। पहला पक्षी अभी ज़मीन पर उतरा भी नहीं था कि हमें दूसरे की आहट सुनाई दी, जो फिर से उसके पंखों से होकर गुज़रती हवा की सरसराहट से ज़ाहिर हुई। सबसे पहले उतरने वाला गिद्ध सबसे आम प्रजाति का था - बिना पंखों वाली गर्दन वाला, मटमैला भूरा। वह पूर्वी किनारे पर मेरी ओर मुँह करके बैठ गया, और जल्द ही उसके पीछे दूसरा गिद्ध आ गया, जो उससे कहीं बड़ा और दूसरी प्रजाति का था। वह एक किंग गिद्ध था, लगभग काला, जिसकी लंबी और बिना पंखों वाली चमकदार लाल गर्दन टर्की मुर्गे के आकार की थी और देखने में कुछ हद तक उसी पक्षी से मिलती-जुलती थी।

किंग गिद्ध पहले आए गिद्ध से एक गज की दूरी पर आकर बैठ गया और उसने सबसे पहले अपनी लाल गर्दन फैलाकर भूरे गिद्ध को चोंच मारी। भूरा गिद्ध भड़क उठा, सांप की तरह फुफकारा, उड़ने के लिए अपने पंख थोड़े फैलाए, लेकिन फिर अपना इरादा बदल लिया और आधी खुली हुई नुकीली चोंच के साथ बैठ गया, जबकि गिद्ध

आक्रामक चेतावनी देते हुए फुफकारता और चीखता रहा।

एक-एक करके और गिद्ध आते गए, और एक घंटे से कुछ अधिक समय में नाले के किनारे उनकी दो कतारें बन गईं, जहाँ से वे कुष्ठ रोगी के बिखरे हुए अवशेषों को, हमें और एक-दूसरे को घूर रहे थे। एक अकेला कौआ, जो यह जानने आया था कि क्या हो रहा है, अपने साथियों को आकर्षित करने के लिए ज़ोर-ज़ोर से कांव-कांव कर रहा था। लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी, और इस तरह कौए को एहसास हो गया कि वह अकेला है।

इन सब बातों के बावजूद, उस अकेले कौवे में सभी गिद्धों से कहीं अधिक बुद्धि थी। वह खाई की तलहटी में उतर गया, और गिद्ध भी उसके पीछे-पीछे चलने लगे। हम जानते थे कि अगर हमने जल्द ही कुछ नहीं किया, तो उस कुष्ठ रोगी का केवल कंकाल ही बचेगा।

इसलिए कुछ-कुछ अंतरालों पर, डोनाल्ड या मैं आगे बढ़कर मुट्ठी भर रेत उठाते और उसे चट्टान के पार उस आदमी के अवशेषों की ओर फेंक देते; फिर गिद्ध, उस परेशान करने वाले कौवे के साथ, आलस्य से दोनों किनारों की चोटियों पर वापस उड़ जाते, और फिर नियमित अंतरालों पर लौट आते, जिनका नेतृत्व कौवा ही करता।

हम जानते थे कि नाले के किनारों पर उड़ते गिद्धों की हलचल पश्चिम दिशा में किसी ऊँची जगह पर बैठे आदमखोर की नज़र में आ जाएगी, चाहे वह किसी और दिशा से ही क्यों न आ रहा हो। वह सोचेगा कि पक्षियों को क्या परेशान कर रहा है, और या तो पूरी तरह से चला जाएगा या फिर कारण जानने के लिए पास आने का फैसला करेगा। लेकिन हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। अगर हम पक्षियों को भगा नहीं देते, तो वे हड्डियों से मांस का एक-एक टुकड़ा नोच कर खा जाते।

जल्द ही कौआ इतना चालाक हो गया कि उसने खुद ही अपना विनाश कर लिया। याद होगा कि बाघ ने कुष्ठ रोगी का सिर काट दिया था और फिर उसके शरीर को इस चट्टान के पीछे, लगभग पचास गज दूर ले गया था। कौए ने सिर को खोज निकाला और उसे नोचने लगा, जिससे उसके साथी, जो अब उसके प्रतिद्वंद्वी बन गए थे, उस स्थान पर आ गए। उन्हें भगाने के लिए उड़ान भरना पड़ता, क्योंकि यह बहुत दूर था, इसलिए हमने उस बहादुर कौए को देखा जब वह अपने चारों ओर जमा हुए बड़े-बड़े

नुकीले चोंच वाले राक्षसों के झुंड से लड़ने की कोशिश कर रहा था। उनमें से, हमने पीले सिर वाले सफेद गिद्धों की एक छोटी प्रजाति देखी; वे आम तौर पर शहरों के बाहरी इलाकों में कचरे पर भोजन करने के लिए आते हैं, और जंगल में शायद ही कभी दिखाई देते हैं।

कौआ एक गिद्ध पर झपटा, उसकी पीठ पर सवार हो गया और उसकी लाल गर्दन को ज़ोर-ज़ोर से नोचने लगा। गिद्ध चीखा, अपने बड़े पंख फड़फड़ाए और दूर हट गया। इसी बीच एक भूरा गिद्ध कुष्ठ रोगी के सिर को नोचने लगा। कौआ उसकी पीठ पर सवार हो गया और उसके सिर पर चोंच मारने लगा। लेकिन गिद्ध ने दूसरी तरकीब अपनाई। वह ज़मीन पर लोटने लगा ताकि अपने नुकीले पंजों और बड़ी चोंच दोनों का इस्तेमाल कर सके। उसने अपने छोटे से हमलावर पर हमला कर दिया।

बहादुर कौआ समय रहते तीसरे गिद्ध से भिड़ने के लिए निकल पड़ा, लेकिन तब तक लगभग आधा दर्जन बड़े, बिना गर्दन वाले गिद्ध उस छोटे से जीव के चारों ओर जमा हो चुके थे। उन्हें एहसास हुआ कि कौआ उनका साझा दुश्मन है और वह अकेला है। तभी एक गिद्ध ने अपनी गर्दन आगे बढ़ाई और कौए का एक पंख पकड़ लिया। कौआ खुद को छुड़ाने के लिए छटपटाया, लेकिन गिद्ध उसे और करीब खींच लाया। फिर दूसरे गिद्ध ने अपनी नुकीली, टेढ़ी चोंच से कौए का सिर जकड़ लिया; इसके बाद ज़ोरदार चीख-पुकार और काले पंखों की फड़फड़ाहट हुई और बहादुर कौआ मर गया।

आपस में लड़ते और फुफकारते हुए, गिद्धों ने कौवे को नोंच डाला और फिर कुष्ठ रोगी की खोपड़ी से आंखें और मांस नोचकर निकाल लिया, और मात्र आधे घंटे में उसे सूर्य के प्रकाश में सफेद चमकीला छोड़ दिया।

इसी बीच नीली मक्खियाँ झुंड में आने लगीं। वे कुष्ठ रोगी के अवशेषों पर जमा हो गईं और फिर हमारे हाथों, चेहरों और होठों पर उड़ने लगीं। घृणा से हमने उन्हें भगाया, लेकिन वे फिर लौट आईं। हमें कुष्ठ रोग होने का डर सताने लगा। और भी गिद्ध आ गए, और हमें उन पर रेत फेंकने के लिए बार-बार आगे झुकना पड़ा, जिससे हमारे सामने बड़े-बड़े गड्ढे बन गए, जिनमें रेत की मात्रा दिखाई दे रही थी। और कोने में रेत फेंकते हुए हमने देखा कि चींटियाँ भी आ गई थीं। बड़ी-बड़ी काली चींटियाँ कुष्ठ रोगी के अवशेषों पर रेंग रही थीं। इन सबके ऊपर सूरज की चिलचिलाती गर्मी भी थी।

हमारे आसपास की रेत इतनी गर्म हो गई थी कि उसे छूना लगभग नामुमकिन था, सिवाय उस जगह के जहाँ हम बैठे थे, और वह जगह भी असहनीय रूप से गर्म थी। हम भूखे-प्यासे थे और पसीने से लगभग पूरी तरह से प्यासे हो गए थे। स्थिति निराशाजनक थी और हम हार मानने के बारे में सोचने लगे।

डॉन ने ठीक वही बात फुसफुसाई, जो मेरे मन में भी आई थी। "यह बेकार है, पिताजी; कोई बाघ वापस नहीं आएगा और चींटियों ने सब कुछ खा लिया होगा।"

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। दोपहर के तीन बजकर दस मिनट हो रहे थे। हमारी सबसे बड़ी परेशानी अब खत्म हो चुकी थी, और एक घंटे में मौसम ठंडा हो जाएगा। वैसे भी, चींटियाँ आमतौर पर शिकार किए गए जानवरों को ज्यादा नहीं खातीं।

मैंने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, 'चलो डटे रहते हैं; यह हम दोनों के लिए एक नया अनुभव है। देखते हैं इसका क्या नतीजा निकलता है। बाघ शायद लौट आए।'

यह वाकई एक नया अनुभव था। बाद में डॉन ने स्वीकार किया कि यह उसका सबसे बुरा अनुभव था। मैं ठीक ऐसा तो नहीं कह सकता, लेकिन यह ऐसा अनुभव था जिसे मैं दोबारा कभी नहीं करना चाहता।

जैसे-जैसे शाम ढलती गई, हालात कुछ कम खराब होते गए। गर्मी कम हो गई, लेकिन मक्खियाँ और चींटियाँ अभी भी मौजूद थीं। गिद्ध, जो खोपड़ी से सारा मांस खा चुके थे, नाले के दोनों किनारों पर अपने-अपने ठिकानों पर लौट आए थे। कभी-कभार कोई एक नीचे आता, जिसे हम भगा देते। फिर, समय बीतने के साथ, उन्हें अब कुछ और मिलने की उम्मीद कम होती गई और वे एक-दो करके उड़ गए। शाम छह बजे से पहले वे सब गायब हो गए।

इस समय तक चींटियाँ भी लगभग गायब हो चुकी थीं, हालाँकि मक्खियाँ वहीं मौजूद थीं। वास्तव में, उनकी संख्या में वृद्धि ही हुई प्रतीत हो रही थी।

तापमान में तेजी से गिरावट आई, जबकि जंगल, जो दिन भर की गर्मी में झींगुरों की नीरस 'किर्र! किर्र! किर्र!' की आवाज से गूंज रहा था, अब पक्षियों की तरह-तरह की आनंदमय आवाजों से गूंज उठा, जो दिन भर गर्मी से बचने के लिए आश्रय ले रहे थे और सूर्यास्त से पहले के ठंडे समय का आनंद लेने के लिए बाहर निकल आए थे।

लेकिन कुष्ठ रोगी के अवशेषों से दुर्गंध आने लगी थी।

‘को-एल! को-एल! को-एल!’ एक काली चिड़िया अपनी चितकबरी साथी के साथ चीखी; भारत में इसका नाम इसकी आवाज़ से पड़ा है। कोयल, कोयल परिवार का सदस्य है। यह कौवे के घोंसलों में अंडे देती है, और कौवे अपने बच्चों के साथ कोयल के बच्चों का पालन-पोषण करते हैं।

पश्चिम दिशा के एक पेड़ से ‘टोक! टोक! टोक!’ की आवाज़ आई। नहीं, यह कठफोड़वा नहीं, बल्कि एक हरा बारबेट पक्षी था, जो उसी परिवार का है और ऐसी आवाज़ निकालता है। हरे और नीले तोतों का एक झुंड तेज़ी से नाले को पार करके पश्चिमी पहाड़ी की ओर उड़ गया। मैनाएं नज़रों से ओझल होकर चहचहा रही थीं, जबकि बुलबुलें दोनों किनारों पर लैंटाना की झाड़ियों में चहचहा रही थीं। पूर्व की घाटी में कहीं, एक हरे कबूतर ने धीमी सी सीटी बजाई, ‘व्ही-सी! व्ही-ई!’। पास की मद्दक झील से शाम की हवा में स्पूर-फाउल, जंगली फाउल और मोर-फाउल की सामान्य आवाज़ें गूंज रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो सैकड़ों पक्षी हों, और उनका समूह शाम के समय सुनने में एक बेहद मधुर जंगल का संगीत लग रहा था। पश्चिम की ओर पहाड़ी के पीछे सूरज बहुत पहले ही छिप चुका था, जिसकी चोटी पर एक मस्तिष्क-बुखार से पीड़ित पक्षी अपनी तीव्र चीखें मार रहा था, जो चरम सीमा तक पहुँचती जा रही थी, बढ़ती जा रही थी, तीव्र होती जा रही थी और अवर्णनीय रूप से विकराल होती जा रही थी: मस्तिष्क-बुखार! मस्तिष्क-बुखार! मस्तिष्क-बुखार!

अब अंधेरा छाने लगा था। तारे एक-एक करके चमकने लगे और बादलों से रहित आकाश तारों से भर गया। जल्द ही पूरी तरह अंधेरा हो गया। हममें से प्रत्येक को तारों से भरे आकाश की पृष्ठभूमि में अपने सामने स्थित तटबंध की चोटी की रूपरेखा दिखाई दे रही थी। बाकी सब कुछ काला शून्य था।

‘क्रीच-ए-क्रीच! क्रीच-ए-क्रीच! क्रीप-ए-क्रीच!’

चौंका देने वाली आवाज़ में, जिस दिशा में मैं देख रहा था, उसी दिशा में कहीं से अचानक तीखी आवाज़ों का एक समूह फूट पड़ा - तीखी, रुक-रुक कर आने वाली आवाज़ों का एक समूह, जो एक-एक करके शुरू होकर एक कर्कश शोर में समाप्त हो रहा था। क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया, और फिर एक और आवाज़ ने पहली

आवाज़ का जवाब दिया, इस बार मेरे पीछे की पहाड़ी से: 'क्रीच-ए-क्रीच! क्रीच-ए-क्रीच! क्रीच-ए-क्रीच!'

ये विचित्र आवाजें चीखने वाले उल्लुओं के दो परिवारों द्वारा निकाली जाती हैं, जो छोटे उल्लुओं की एक प्रजाति है और पुराने पेड़ों के तनों और शाखाओं में बने छेदों में समूहों में रहते हैं। हालांकि इनकी लंबाई केवल छह इंच होती है, लेकिन इनकी आवाज आधा मील दूर तक सुनी जा सकती है।

तब तक कुष्ठ रोगी के अवशेषों से भयानक दुर्गंध आने लगी थी।

अचानक, अशुभ संकेत के साथ, हमें पास ही की एक छोटी पहाड़ी से फिर से एक आवाज़ सुनाई दी: 'दिमाग! दिमाग! दिमागी बुखार! दिमागी बुखार! दिमागी बुखार!!!'

यह उसी पक्षी की चीख थी जिसे हमने पहले उसी पहाड़ी पर सुना था। लेकिन अब यह अलग थी। यह उत्तेजना और भय से कांप रही थी। एक ऐसा पक्षी जो दिन-रात कभी नहीं सोता, वह छोटा सा जीव उन्मादी हो गया था, उसकी आवाज बार-बार सन्नाटे को तोड़ रही थी: दिमागी बुखार! दिमागी बुखार!! दिमागी बुखार!!

'वह आ रहा है, पिताजी!'

डॉन की धीमी फुसफुसाहट में मुझे उत्साह सुनाई दे रहा था, और मेरे मन में कृतज्ञता का भाव कौंध गया: ईश्वर उस मस्तिष्क-बुखार वाले पक्षी को आशीर्वाद दे, वह अनेक वर्षों तक जागृत रहे! क्योंकि उसने हमें स्पष्ट शब्दों में कहा था: 'सावधान! खतरा! एक बाघ गुजर रहा है!' और मस्तिष्क-बुखार वाला पक्षी रात में, लंगूर बंदर की तरह, जो दिन-रात पहरेदार की तरह रहता है, कभी गलत नहीं होता।

अकेला पक्षी लगातार घबराकर चेतावनी देता रहा, लेकिन जंगल के अन्य निवासियों की ओर से कोई आवाज नहीं आई, जो कि अजीब था, क्योंकि सतर्क हिरण को अब तक उस मांसाहारी जानवर की गंध महसूस हो जानी चाहिए थी।

लेकिन अंत में, हवा की दिशा में उड़ती हुई एक जंगली भेड़ कर्कश आवाज में 'खर्र! खर्र! खर्र!' चिल्लाई और फिर ढलान पर चढ़ते हुए चुप हो गई। दिमागी बुखार से पीड़ित पक्षी अभी भी बोल रहा था; बाकी सब फिर से शांत हो गया था। जंगल को मिली दो चेतावनियों पर प्रतिक्रिया करते हुए एक झींगुर की आवाज भी सुनाई नहीं दे

रही थी। मुझे हवा में ही खतरे का आभास हो रहा था। सौ कान चौकन्ने थे, और हर जगह निगाहें उस खूंखार जंगल के राजा के आने का इंतजार कर रही थीं।

मेरी नसें तनाव से चूर थीं, और रात का अंधेरा और भी गहराता जा रहा था। तारों की हल्की रोशनी भी नाले के तलहटी में छाए अंधकार को दूर नहीं कर पा रही थी। चाँद अभी तक नहीं निकला था। हम अकेले थे, बस कुष्ठ रोगी की हड्डियाँ ही हमारे साथ थीं।

फिर चारों ओर खतरे की घंटी बज उठी। घाटी में एक सांभर हिरण ने खतरे की चेतावनी देते हुए दहाड़ा: 'पोंक! अव्ही-ओंक! धंक! धंक!' मद्दक झील के किनारे से चित्तीदार हिरणों ने भी उसी तरह की आवाज निकाली: 'ऐओ! ऐओ! ऐओ!' जंगल सतर्क हो गया था।

निस्संदेह, बाघ एक-दो मिनट में पश्चिमी किनारे पर, उस तटबंध पर दिखाई देगा, जिसके सामने डोनाल्ड खड़ा था। वह पहाड़ी से नीचे आ रहा था जब उस सनकी पक्षी ने उसे पहली बार देखा और खतरे का संकेत दिया। अब वह नाले के बहुत करीब होगा।

लेकिन मुझे अपने बेटे पर पूरा भरोसा था। मुझे पता था कि मैं उसकी सुनने की क्षमता और सतर्कता पर विश्वास कर सकती हूँ। खतरे की उस घड़ी में वह असफल नहीं होगा। मैंने मन ही मन प्रार्थना की और अपने सामने पूर्वी तट की परछाई पर एक नज़र डाली। तारों से भरे आकाश की हल्की रोशनी में सब कुछ एकदम काला दिखाई दे रहा था।

वह आकृति सीधी रेखा में फैली हुई थी और फिर, मेरी आँखों के सामने ही, वह सीधी रेखा अब सीधी नहीं रही। एक बिंदु पर, मेरे बाईं ओर थोड़ा हटकर, वह फूलती और ऊपर उठती हुई प्रतीत हुई। ऊपर उठा हुआ हिस्सा बाकी भाग से अलग हो गया और एक बड़ी गेंद की तरह बन गया, जो नाले के किनारे पर टिकी हुई थी।

तब मुझे पता चला कि मैं आदमखोर का सिर देख रहा था! वह हमारे ऊपर नाले को पार कर चुका था और पूर्वी किनारे के ऊपरी हिस्से पर रेंगता हुआ हमारे पास आ गया था, जबकि हम पश्चिम से उसका इंतजार कर रहे थे।

मैंने अपनी बाईं कोहनी से डॉन को दो बार जोर से धक्का दिया और धीरे-धीरे अपनी राइफल को कंधे पर उठा लिया। फिर मैंने टॉर्च का बटन दबाया।

प्रकाश की किरण एक धारीदार, शैतानी चेहरे पर पड़ी, जो भयानक रूप से गुर्राहट में फटा हुआ था, लेकिन बाघ ने मुझे गोली चलाने का मौका नहीं दिया। एक दहाड़ के साथ वह नाले में कूद गया, जहाँ कुष्ठ रोगी के अवशेष बिखरे पड़े थे, और चट्टान के दूसरी ओर आँखों से ओझल हो गया।

अब हम बड़े खतरे में थे। बाघ तीन तरह से हमला कर सकता था; वह चट्टान के ऊपर से छलांग लगा सकता था, या डॉन की तरफ से हमला कर सकता था, या मेरी तरफ से हमला कर सकता था।

मेरी टॉर्च अभी भी जल रही थी, मैं जल्दी से अपने घुटनों के बल रेंगते हुए बाईं ओर की चट्टान को पकड़ने के लिए आगे झुका, और नरभक्षी सांप को खोजने के लिए चट्टान के चारों ओर देखने लगा। लेकिन डोनाल्ड मुझसे पहले ही वहाँ पहुँच गया था। मुझे वहाँ एक और किरण दिखाई दी, मेरी किरण से पहले। एक गोली चली, और फिर दूसरी!

एक गुर्राहट भरी दहाड़ सुनाई दी, जिसके बाद लगातार कर्कश गड़गड़ाहट की आवाजें आईं। दर्द से कराहते हुए बाघ ने रेत उछाली, जिससे चारों ओर धूल का बादल छा गया। मैंने उसे कलाबाजी करते हुए देखा और वह अपने हाथ-पैर फैलाकर लेट गया, उसकी चमकती आँखों में मेरी टॉर्च की रोशनी पड़ रही थी। मैंने उन दोनों के बीच गोली चलाई, और दूसरा शॉट लगाने के लिए अपनी 405 राइफल के निचले लीवर को बेताब होकर इस्तेमाल किया। लेकिन चट्टान के दूसरी तरफ से डॉन की 470 राइफल की और भी तेज दहाड़ सुनाई दी।

आदमखोर की आँखों की सफेद-लाल चमक तेज़ी से फीकी पड़कर हल्के हरे रंग में बदल गई। वह अब भी मेरी रोशनी की ओर घूर रहा था, लेकिन मैं जानता था कि वह मर चुका है। हमने कुछ मिनट तक देखा, लेकिन सब कुछ खत्म हो गया, और मैंने कहा, 'शाबाश, डॉन। तुमने उसे बढ़िया तरीके से मार गिराया।'

वह युवक बेहद खुश था। उसने अपनी .470 राइफल को चट्टान से टिकाया और खुशी से गोल-गोल नाचने लगा। फिर उसने अपनी राइफल दोबारा उठाई, उसे प्यार से

थपथपाया और बोला, 'मेरी प्यारी 470। तुमने मुझे कभी निराश नहीं किया!'

उसकी नज़र से बचते हुए, क्योंकि मुझे पता था कि वह मेरा मज़ाक उड़ाएगा, मैंने अपने हाथों में मौजूद उस सम्मानित 405 विंचेस्टर पिस्तौल पर एक नज़र डाली। मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन मन ही मन सोचा: 'तुम भी, बूढ़े! तुमने भी अपना काम कर दिया!'

हमें भूख और प्यास लगी थी, लेकिन हम जानते थे कि अगर हम बाघ को छोड़कर होगारेहल्ली लौट जाते, तो हमारे लौटने से पहले ही गिद्ध खाल, मांस और हड्डियाँ पूरी तरह से साफ कर चुके होते। इसलिए हम जलधारा तक गए, खूब पानी पिया और चट्टान पर लौट आए, जहाँ हमने सोने की कोशिश की।

थोड़ी देर में हमें अपना स्थान बदलकर नाले के थोड़ा आगे, लेकिन मृत बाघ के नज़ारे के पास ही, दूसरी जगह पर जाना पड़ा। हम ज़्यादा दूर जाने की हिम्मत नहीं कर रहे थे, क्योंकि हम जानते थे कि उस कुष्ठ रोगी के सड़ते हुए अवशेषों की दुर्गंध रात में लकड़बग्घे और सियार को आकर्षित कर लेगी। अगर हम बाघ के शव से दूर सो जाते, तो हमारे जागने से पहले ही उसकी खाल टुकड़े-टुकड़े हो चुकी होती।

अगली सुबह हमने बाघ की खाल उतारी। डॉन ने सिर और खाल को एक गठरी में बांधकर अपने कंधे पर उठाया, जबकि मैंने दोनों राइफलें उठाईं। जब हम कार तक पहुँचे तब तक वह खून से लथपथ हो चुका था, लेकिन पूरे रास्ते सीटी बजाता रहा।

जब बूढ़े मुडलियारगिरी और होगारेहल्ली के लोगों ने हमें अपनी ट्रॉफी के साथ लौटते देखा, और डोनाल्ड कार से बाहर निकला तो उसका पूरा शरीर बाघ के सिर और खाल से टपकते खून से लाल था। उन्हें लगा कि उस पर किसी बाघ ने हमला कर दिया है और वे घबराकर हमारे चारों ओर जमा हो गए। लेकिन जब हमने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, तो सबने खूब खुशी मनाई और नाचने-गाने लगे।

सुंदर लम्बानी गांव की कई लड़कियों सहित सैकड़ों लोगों ने डोनाल्ड को बधाई देने के लिए उनकी पीठ थपथपाई।

टैंक में नहाने के बाद, हमने पेट भरकर भोजन किया, जो गर्वित पटेल और आभारी ग्रामीणों ने उदारतापूर्वक उपलब्ध कराया। फिर हमने वापसी यात्रा के लिए सामान

समेटना शुरू किया।

'तुम कहाँ जा रहे हो?' मुडलियारगिरी ने पूछा।

‘बेशक, बैंगलोर वापस जाना है,’ मैंने जवाब दिया। ‘समय समाप्त हो गया है, और हमें वापस लौटना होगा।’

‘अरे नहीं,’ उन्होंने जोर देकर कहा, ‘आज रात के भव्य भोज में आप दोनों हमारे विशिष्ट अतिथि होंगे।’

गली में चलते हुए उसने जोर से चिल्लाकर कहा कि हम उन्हें छोड़कर जाने वाले हैं, और उसने ग्रामीणों से हमें रोकने का आह्वान किया।

उसके बाद होगारेहल्ली में सचमुच हंगामा मच गया। पचास लोगों ने मिलकर कार को मवेशियों के बाड़े में धकेल दिया।

‘अब देखते हैं तुम कैसे बचकर निकल पाते हो!’ बूढ़े व्यक्ति ने शरारती खुशी से कहा और आगे बोला, ‘इसका विचार ही कितना अद्भुत है!’

हमने खूब दावत की और खूब शराब पी - हालांकि उस रात हमने कॉफी से थोड़ा ज्यादा ही पी लिया था, यह बात हम स्वीकार करते हैं। आखिरकार हम बड़े धूमधाम से होगारेहल्ली से निकले, लेकिन अगले दिन काफी देर हो चुकी थी।

3. रात में घूमना और दिन में पीछा करना

हम एक भारतीय जंगल में हैं। रात हो चुकी है। हमारे ठीक ऊपर का आकाश पीपल के पेड़ की हल्की सरसराहट करती पत्तियों से पूरी तरह ढका हुआ है, जिसके नीचे हम छोटी, विरल घास पर बैठे हैं, जिसकी पत्तियां और तने पानी रहित गर्मी की गर्म हवाओं से सुनहरे भूरे रंग के हो गए हैं।

ऊपर आसमान में हजारों पीपल के पत्ते फड़फड़ाते और कांपते हैं मानो पीड़ा में हों,

गर्म हवा की धाराओं से हिलते हुए जो एक दूसरे को पार करती हैं या आपस में मिल जाती हैं क्योंकि वे चट्टानी पहाड़ी की ऊंची चोटियों से नीचे बहती हैं, जो लगभग दो मील दूर 300 फीट की ऊंचाई तक एक गढ़ की तरह उठती हैं, हमें घने पेड़ों वाली घाटी के एक भयावह अर्धवृत्त में घेर लेती हैं।

इस चट्टान और ऊपर पेड़ के किनारे के बीच हमें साफ आसमान दिखाई देता है, जिसका रंग बैंगनी-धूसर है, एक जगमगाता आवरण जो असंख्य तारों की टिमटिमाहट के कारण निरंतर गति में प्रतीत होता है।

अगले चार घंटे तक चंद्रमा नहीं उगेगा।

पीपल के पेड़ के तने के सहारे हमारी बुझती हुई आग के अंगारे सुलग रहे हैं, जो बीच-बीच में मंद-मंद चमक रहे हैं। आग के पास तीन पत्थर हैं जहाँ हमने इसे जलाया था। आग के दोनों ओर हमारे पलंग बिछे हैं, और पेड़ से अलग-अलग मोटाई की रस्सियों और डोरियों से लटके हुए कई थैले हैं जिनमें खाने-पीने की कुछ चीज़ें हैं जो हम सभ्यता से लाए थे ताकि शिविर में थोड़े समय के लिए हमारा काम चल सके। इन्हें ज़मीन पर नहीं रखा गया है; अगर रखा जाता तो चींटियों का झुंड इन्हें खा जाता। हमने इस शानदार पेड़ को शिविर स्थल और इस सूखे मौसम में छत दोनों के रूप में चुना है, ताकि एक मील से ज़्यादा दूर बने वन लॉज या तंबू का इस्तेमाल न करना पड़े और खुले जंगल में प्रकृति के जितना हो सके करीब रहने का आनंद ले सकें। एक फर्लांग दूर स्थित कीचड़ भरे पानी के गड्ढे से भरी हमारी पानी की बोतलें आग से दूर ज़मीन पर एक साथ रखी हैं, ताकि पानी थोड़ा ठंडा रहे। इस बात का प्रमाण कि यह विचार आंशिक रूप से सफल साबित हुआ है, उस अकेले मेंढक की उपस्थिति से मिलता है जिसने हमारे रहस्य को खोज लिया है और अब दो डिब्बों के बीच संतुष्टिपूर्वक बैठा है, शायद शारीरिक रूप से हमसे कहीं अधिक सहज महसूस कर रहा है।

हमने जल्दी खाना खा लिया है और खाकी कमीज़ और पैंट पहन ली हैं, घुटनों के नीचे रबर के तलवों वाले ऊँचे बूट भी पहन लिए हैं, क्योंकि हमारा इरादा चाँद निकलने से पहले के चार घंटे अंधेरे में बिजली की टॉर्च लेकर जंगल में घूमना है, ताकि इस हरी-भरी घाटी में बहुतायत में पाए जाने वाले कुछ जानवरों की एक-दो झलक मिल सके।

ये ऊँचे बूट बेहद ज़रूरी हैं, कहीं ऐसा न हो कि हममें से कोई लंबी घास में ज़हरीले साँप पर पैर रख दे। दिन के उजाले में हमने जो कई पदचिह्न देखे, उनसे पता चलता है कि यह दूरस्थ स्थान दक्षिण भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक है जहाँ आज भी वन्यजीवों की भरमार है, और इसी के अनुरूप हमारी उम्मीदें भी बहुत हैं।

'घूमना' शब्द हिंदुस्तानी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है 'भटकना', और जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है, हम जंगल में एक लंबी सैर पर निकलने वाले हैं, अपनी शक्तिशाली पांच-सेल वाली टॉर्च जलाकर उन जीवों की तलाश में जो रात के अंधेरे में आश्रय से बाहर निकलते हैं।

जैसे ही हम शुरू करेंगे, आप शायद उत्सुकता से मुझसे पूछेंगे, 'क्या आपको लगता है कि हमें बाघ देखने को मिलेगा?' और आपकी उम्मीदें बहुत ज़्यादा न बढ़ाते हुए, मैं जवाब दूंगा, 'मुझे डर है कि इसकी संभावना कम है। बाघ बेहद शर्मीले होते हैं, और वे हमारी टॉर्च की रोशनी देख लेंगे, और हमें सुन भी लेंगे, इससे पहले कि हम उनके पास पहुँच सकें। फिर भी, हमेशा एक मौका होता है और आप भाग्यशाली हो सकते हैं, इसलिए उम्मीद बनाए रखें।'

मैं आगे-आगे चलता हूँ और एक टॉर्च जलाता हूँ। आप मेरे ठीक पीछे-पीछे चलते हैं, दूसरी टॉर्च आपके बाएँ हाथ में तैयार रहती है, जबकि आपके दाएँ हाथ में एक छोटी, दो सेल वाली टॉर्च होती है जिसे आप कठिन रास्तों को पार करते समय समय-समय पर जलाते हैं, ताकि अंधेरे में ठोकर न लगे। कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि इससे अनावश्यक शोर होगा। आपसी सहमति से, हम कोई हथियार नहीं रखते हैं।

हम उस जलस्रोत की ओर बढ़ते हैं जिससे हमें अपनी पानी की बोतलों में भरा हुआ धुंधला पानी मिला था, और जैसे ही हम उसके पास पहुँचते हैं, जोड़े में छह छोटे-छोटे प्रकाश बिंदु मेरी टॉर्च की रोशनी को प्रतिबिंबित करते हैं। ये प्रकाश चमकीले हरे रंग के हैं, और कुछ क्षण बाद वे झटके से ऊपर-नीचे, कभी इधर-उधर, कभी दाएं-बाएं हिलने लगते हैं।

ये हरकतें हिरण परिवार की विशेषता हैं। हम स्थिर खड़े रहे। कुछ देर बाद हिरणों की रुचि मेरी टॉर्च की रोशनी में कम होती दिखाई दी और वे पूरी रोशनी में चरने के लिए

झाड़ियों से बाहर निकल आए। हमने चित्तीदार हिरणों के एक छोटे झुंड को देखा, जो भारतीय जंगलों के सबसे सुंदर जानवरों में से एक हैं। जहाँ तक हमारी नज़र जाती है, वहाँ चार मादा हिरण हैं, जिनमें से आखिरी के पीछे एक अधविकसित हिरण का बच्चा है। अपने छोटे झुंड के सबसे पीछे सुरक्षित रूप से नर हिरण खड़ा है, जो झुंड का नेतृत्व कर रहा है, एक शानदार नमूना जिसके सींग सुंदर और सममित हैं। कृत्रिम रोशनी में भी हम देख सकते हैं कि उसका शरीर बहुत गहरा, लगभग काला है, और उस पर सफेद धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। यह एक अपेक्षाकृत बूढ़े जानवर का संकेत है, और इसलिए अनुभव से चतुर है। यही कारण था कि वह पीछे रहता है और मादा हिरणों को अपने आगे भेजता है। यदि कोई खतरा होता है, तो उनमें से एक उसका शिकार बन जाती है और उसे भागने का मौका देती है, इस प्रकार जंगल के दो प्रमुख नियमों को प्रदर्शित करती है, 'हर प्राणी अपनी रक्षा करे' और 'योग्यतम की उत्तरजीविता'।

हम कुछ देर हिरणों को देखते हैं और फिर टॉर्च की रोशनी से पानी के गड्ढे के किनारों का चक्कर लगाते हुए देखते हैं कि क्या हाल ही में किसी जानवर ने वहाँ प्यास बुझाई है। जाहिर तौर पर नहीं, क्योंकि उथले पानी के किनारे न तो कोई अतिरिक्त कीचड़ के निशान हैं और न ही किनारे पर कोई ताजे पदचिह्न। अभी सुबह का समय है और जो छोटा झुंड हमने देखा, शायद वही तालाब के पास आने वाले पहले जानवर हैं। किनारे पर बैठे मेंढक अब पानी की सतह पर सरकते हुए तालाब के बीचोंबीच सुरक्षित पहुँच जाते हैं।

हम थोड़ा आगे बढ़ते हैं और दाईं ओर एक सपाट चट्टान देखते हैं। उस पर तिरछी पड़ी एक दरार में एक अकेली झाड़ी उगी है, और उस झाड़ी के सामने से कई चमकदार रोशनी के जोड़े मेरी टॉर्च की रोशनी में चमक रहे हैं। रोशनी लाल हैं और वे न तो हिलती हैं, न इधर-उधर जाती हैं और न ही खुद को छिपाने की कोशिश करती हैं। वे बस निडरता से हमारी ओर घूर रही हैं; मानो क्रूर रोशनी हों, किसी भी घुसपैठिए से बेखौफ।

आप भाग्यशाली हैं, क्योंकि लगभग तुरंत ही आपने कुछ ऐसा देखा है जो कई शिकारियों ने वर्षों से नहीं देखा है: जंगली कुत्तों का एक झुंड, उस चट्टान की गर्मी का आनंद ले रहा है जिस पर वे लेटे हुए हैं, क्योंकि उस चट्टान में अभी भी दिन भर की

धूप की गर्मी बरकरार है।

आप सोच रहे होंगे कि जंगली कुत्तों का यह झुंड चित्तीदार हिरणों के इतने करीब होने के बावजूद उन पर हमला क्यों नहीं कर रहा है। हवा में सन्नाटा होने के बावजूद, उन्होंने झुंड की गंध जरूर महसूस की होगी! फिर उन्होंने उनका पीछा क्यों नहीं किया, ताकि अंततः उस शांत छोटे परिवार के किसी एक सदस्य को पकड़कर बेरहमी से नोंचकर जिंदा ही खा न जाएं?

इसका जवाब इस तथ्य में छिपा है कि रात गहरी है और चाँद अभी तक नहीं निकला है। आमतौर पर, ये निर्दयी शिकारी चाँदनी रात में अपना पीछा करना छोड़ देते हैं। चाँद निकलने से पहले उस चालाक बूढ़े हिरण को अपने परिवार को बहुत दूर ले जाना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो ये बेरहम हत्यारे उसका पीछा करेंगे, और जब ऐसा होगा, तो उन खूबसूरत हिरणों में से एक निश्चित रूप से अगले दिन का उजाला नहीं देख पाएगा।

जब हम आगे बढ़े तो जंगली कुत्ते अब भी हमें घृणा से घूर रहे थे। मैंने टॉर्च को पीछे की ओर, आपके कंधे के ऊपर घुमाया। वे अब भी देख रहे थे! सौभाग्य से, ये कुत्ते इंसानों पर हमला नहीं करते। साहसी जानवर, उन्हें कोई डर नहीं होता; निहत्थे होने के कारण, अगर उनका स्वभाव अलग होता तो हम उनके सामने टिक नहीं पाते। हम आगे बढ़े, और कुछ दूर तक हमें इक्का-दुक्का खरगोश के अलावा कुछ नहीं दिखा, जिसे हम भारत में 'खरहा' कहते हैं। अक्सर चूहे हमारे रास्ते से भागते हुए निकल जाते और रात में उड़ने वाले चिड़ियों की आकृतियाँ अचानक हमारे सामने आ जातीं। ऐसा लगता है मानो वे हमारे पैरों के पास की ज़मीन से ही उछलकर निकली हों, कुछ गज आगे उड़ती हों और फिर ज़मीन पर बैठकर बेजोड़ छलावरण में हमारी नज़रों से ओझल हो जाती हों, और जैसे ही हम उनके बसेरे पर पहुँचते, वे फिर से उड़ जाती हैं। जंगल मानो उनसे भरा हुआ है।

अब हम एक खुले, पार्क जैसे इलाके से गुज़र रहे हैं, जहाँ सूखी घास और झड़ चुके पत्ते हैं, ताकि गर्मी की असहनीय, पानी रहित तपती धूप को झेल सकें। तभी नीले रंग की एक हल्की सी हलचल हमारी नज़र खींच लेती है। हम रुक जाते हैं और मैं टॉर्च की रोशनी को धीरे से एक छोटे से चाप में घुमाता हूँ। जी हाँ, फिर से हलचल दिखाई

देती है। हलचल रुक जाती है और दो नीली आँखें रोशनी में चमक उठती हैं। जानवर स्थिर खड़ा रहता है, मानो खाली नज़र से हमें देख रहा हो। उसकी हल्की नीली आँखें न झपकती हैं, न हिलती हैं, न ही उनका भाव या कोण बदलता है। कुछ पल के लिए हम सोचते हैं: आखिर यह प्राणी क्या हो सकता है?

मेरा बायां हाथ पीछे की ओर टटोलता हुआ तुम्हें इशारा करता है और हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, कोशिश करते हैं कि लंबी घास में कम से कम शोर हो। लेकिन हमेशा याद रखना, मेरे दोस्त, कि घास बहुत सूखी और नाजुक है। जो आवाज़ें हमारे सभ्य कानों को मुश्किल से सुनाई देती हैं, जंगल के जीवों की तीव्र श्रवण शक्ति के लिए वे शोर हैं जो हमारी उपस्थिति का स्पष्ट और ज़ोरदार ऐलान करते हैं।

जो प्राणी हमें इतनी देर से घूर रहा था, वह अचानक एक तरफ मुड़ गया और फिर हमारी ओर मुँह करके घूम गया। लेकिन उस फुर्तीली और सहज हरकत ने उसकी पहचान उजागर कर दी और हम दोनों ने देखा कि उन खाली, नीले रंग की आँखों का मालिक एक लकड़बग्घा है, जो इन जंगलों में प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपयोगी सफाईकर्मियों में से एक है। अब जब वह फिर से मुड़ा, तो हम उसे स्पष्ट रूप से देख पाए; उसके सीधे खड़े, चमगादड़ जैसे कान, मजबूत गर्दन, ढलान वाली पीठ जो उसके कमजोर, बेमेल पिछले पैरों पर जाकर खत्म होती है।

वह घबरा जाता है, और उसकी पीठ पर लटके लंबे बाल अचानक रीढ़ की हड्डी की तरह खड़े हो जाते हैं। फिर वह डर जाता है! वह दहशत में आ जाता है! घबराहट भरी 'अफूफ!' की आवाज़ के साथ वह मुड़ता है और तेज़ी से आँखों से ओझल हो जाता है। पिटर-पटर, पिटर-पटर! सूखी घास में उसके दूर जाते कदमों की आहट साफ़ सुनाई देती है। दूर से वह तिरस्कारपूर्वक 'ची! ची!' कहता है और चुप हो जाता है।

अगर आप अमेरिकी हैं, तो विदाई के वो शब्द आपके अपने मुहावरे, 'भाड़ में जाओ!' के बराबर होंगे। इसके बाद हम कुछ दूर तक बिना कुछ देखे चलते रहे। फिर हम एक मोड़ पर मुड़े और मेरी टॉर्च की रोशनी सड़क से कुछ गज बाईं ओर एक दीमक के टीले पर पड़ी, जो बीच में खड़े एक बेल के तने से आंशिक रूप से छिपा हुआ था। दीमक के टीले के पास कुछ काला सा खड़ा था और हिल रहा था। हम पेड़ को पार करने के लिए कुछ कदम और आगे बढ़े, और फिर देखा कि वो काला साया सीधा

खड़ा है। फिर से वो हिलने लगा, और रहस्य खुल गया। एक सुस्त भालू टीले के सहारे सीधा खड़ा था। उसने ऊपर एक छेद बनाया था और अपना सिर अंदर डाला हुआ था, जहाँ वो तेज़ी से हवा और दीमकों को अंदर खींच रहा था। इसी वजह से उसने मेरी टॉर्च की रोशनी नहीं देखी।

उसे देखने का यह एक दुर्लभ अवसर है, इसलिए हम चुपचाप घुटनों के बल बैठ जाते हैं जबकि मैं टॉर्च की रोशनी लगातार भालू पर टिकाए रखता हूँ। हमें तरह-तरह की अजीब आवाज़ें सुनाई देती हैं - गड़गड़ाहट भरी साँसें और एक अजीब सी भिनभिनाहट, जो बीच-बीच में गुर्राहट, फुफकार और घरघराहट भरी साँसों से बाधित होती रहती है।

यह स्पष्ट है कि ब्रुइन मज़े कर रहा है और दीमक के टीले में रहने वाले अन्य जीव मुश्किल में हैं, तभी अचानक कुछ ऐसा होता है जो सुस्त भालू को चेतावनी देता है कि बाहर सब कुछ ठीक नहीं है। ज़ोर से पीछे की ओर झटका खाते हुए और शरीर को हिलाते हुए, वह अपना सिर पीछे खींचता है, अपने चारों ओर अजीब सी चमक देखता है, और अभी भी अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर हमारी ओर मुड़ जाता है। हम देखते हैं कि गीली मिट्टी का एक ढेला अभी भी उसकी नाक से चिपका हुआ है, और उसकी छाती पर चौड़ा सफेद वी-चिह्न है।

लेकिन भालू हमारे बहुत करीब आ चुका था, और एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे स्थिति अधर में लटक रही हो, जब उसने अपने दोनों पंजों को आगे की ओर फड़फड़ाया और हिलाया, मानो हमें भगा रहा हो। फिर वह चारों पैरों पर नीचे बैठ गया, मशाल की रोशनी से बचने की कोशिश में अपना सिर इधर-उधर हिलाया, और हमारी ओर बढ़ने लगा।

मैंने फुसफुसाते हुए कहा, 'बड़ी टॉर्च जलाओ! जल्दी करो!'

और सही समय पर, आपने जवाब दिया। ब्रुइन कुछ ही सेकंड में हम पर हमला कर सकता था, लेकिन दूसरी रोशनी ने उसे घबरा दिया। वह एक तरफ मुड़ा और ज़ोरदार 'वूफ़! वूफ़!' की आवाज़ के साथ नज़रों से ओझल हो गया। हम खुशकिस्मत हैं, आप और मैं! अगर वह और करीब आ जाता तो हमारे लिए हालात अच्छे नहीं होते!

हम आगे बढ़ते रहे और थोड़ी देर बाद तीन जंगली सूअर हमारे सामने झाड़ियों से बाहर

निकले और पगडंडी पार करके दूसरी तरफ गायब हो गए। टॉर्च की रोशनी भी उन्हें नहीं रोक पाई और वे अपने रास्ते पर चलते रहे। जंगली सूअरों की यही एक खासियत है। वे शायद ही कभी रोशनी का सामना करते हैं। वे बस चलते रहते हैं।

जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं, वह काफी स्पष्ट है। यह रास्ता अचानक नीचे उतरकर एक संकरी, सूखी धारा को पार करता है, तभी कोई चीज़, जो देखने में दुनिया के सबसे पुराने समय की लगती है, रास्ते पर इधर-उधर लुढ़कती हुई दिखाई देती है। यह चीज़ पूरी तरह से कवच से ढकी हुई है और लगभग चार फीट लंबी है। यह आगे की ओर एक संकरे, नुकीले सिर की ओर तेज़ी से पतली होती जाती है, जबकि पीछे की ओर यह धीरे-धीरे पतली होती हुई लगभग अठारह इंच लंबी एक चौड़ी, कवच से ढकी पूंछ में तब्दील हो जाती है।

यह विचित्र प्राणी पैंगोलिन है, जो ज़मीन के ऊपर बहुत कम दिखाई देता है; यह सतह से दस से पंद्रह फीट नीचे एक गहरी मांद में रहता है। यह अपनी लुढ़कती हुई चाल को तेज़ करता है और हम देखते हैं कि चलते समय इसके पैर अंदर की ओर मुड़े होते हैं।

लेकिन यह एक धीमी गति से चलने वाला जानवर है। हम पीछे से दौड़कर उसके पास पहुँचे और मैंने उसे पैर से लात मारी। तभी एक अजीब घटना घटी, जो इस प्राणी की हर दूसरी अजीब बात की तरह ही विचित्र थी। पैंगोलिन चलना बंद कर देता है और खुद को एक गेंद की तरह समेट लेता है!

हम झुककर उसे बेहतर ढंग से देखने लगे और गौर किया कि उसकी चौड़ी, कवच जैसी पूंछ उसके सिर को पूरी तरह से ढक कर छिपा लेती है। उसकी पीठ पर मौजूद हर शल्क हथेली के आकार का है। हमने उस जीव को छुआ और पाया कि उसके शल्कों के किनारे तेज़ हैं, लगभग चाकू जितने तेज़। पैंगोलिन सांप की तरह फुफकारता है!

पैंगोलिन को कैद में रखना मुश्किल होता है। इनका प्राकृतिक भोजन दीमक है, और इनकी जीभ आठ से दस इंच लंबी होती है, जिसका इस्तेमाल ये छिपकलियों की तरह करते हैं। जीभ झट से बाहर निकलती है और उसके सिरे पर एक दीमक चिपकी हुई वापस आती है। देखने में भले ही पैंगोलिन डरावना लगे, लेकिन यह पूरी तरह से हानिरहित और हानिरहित जानवर है, क्योंकि इसके दांत बिलकुल नहीं होते; इसके

एकमात्र हथियार रक्षा के लिए होते हैं, जिनमें इसके कवचनुमा आवरण और इसके लंबे, मजबूत पंजे शामिल हैं, जिनसे यह धरती में काफी गहराई तक छेद खोदता है।

दुर्भाग्यवश, स्थानीय लोग पैंगोलिन को एक बेहद स्वादिष्ट व्यंजन मानते हैं और वे रात के अलावा शायद ही कभी जमीन के ऊपर दिखाई देते हैं।

अब हम ढलान पर उतर रहे हैं, घाटी में बहने वाली एक छोटी सी नदी की ओर। अचानक हमें टॉर्च की रोशनी में चमकती हुई हरी आँखों के चार जोड़े दिखाई दिए। वे ठीक वैसे ही व्यवहार कर रहे थे जैसे हमने पहले चित्तीदार हिरण या चीतल को करते देखा था, ऊपर-नीचे और अगल-बगल हिल रहे थे, लेकिन ये आँखें बड़ी थीं, ज़मीन से थोड़ी दूर और एक-दूसरे से थोड़ी अधिक दूरी पर थीं।

ये सांभर की आंखें हैं, जो हमारे भारत के सबसे बड़े हिरणों में से एक है। दुर्भाग्य से, हमें कभी इन जानवरों को देखने का मौका नहीं मिलता; चीतल की तुलना में कहीं अधिक शर्मीले होने के कारण, वे हमारी गंध मिलते ही भाग जाते हैं।

घाटी में वनस्पति घनी होती जाती है और पेड़ ऊँचे होते जाते हैं। इस वजह से हम दूर तक नहीं देख पाते, और हमारा रास्ता भी संकरा होता चला जाता है। अचानक, मानो किसी घनी झाड़ी के बीच से हमें घूर रही हों, लेकिन वास्तव में उसके ऊपर से, दो बहुत बड़ी नीली आँखें चमकती हुई दिखाई देती हैं। वे दूर-दूर हैं और बिना पलक झपकाए घूर रही हैं। उनके आकार, ज़मीन से उनकी ऊँचाई और एक-दूसरे से उनकी दूरी से हम समझ सकते हैं कि वे किसी विशाल जानवर की हैं। उनका चमकीला नीला रंग सचमुच अद्भुत है।

फिर प्रकाश दो पीले रंग की वस्तुओं पर पड़ता है जो उन अद्भुत गोलों के ऊपर अर्धवृत्त बनाती हुई प्रतीत होती हैं। ये क्या हो सकती हैं? जैसे ही हम करीब से देखते हैं, रहस्य सुलझ जाता है। वह अर्धवृत्त हमारे सामने खड़े विशालकाय बैल बाइसन के सींगों से बना है। लेकिन डरने की कोई बात नहीं है, क्योंकि बाइसन एक बिल्कुल हानिरहित जानवर है, सिवाय तब जब वह घायल हो या अपने बच्चों की रक्षा कर रहा हो। जैसे ही हम उसे देखते हैं, उसके सींग और आंखें गायब हो जाती हैं, झाड़ियों में ज़ोरदार हलचल होती है, और बाइसन गायब हो जाता है।

वनस्पति और भी घनी हो जाती है और टॉर्च की रोशनी कुछ ही फीट आगे जाकर छिप

जाती है। अब हमें सावधान रहना होगा और मोड़ जल्दी नहीं लेने होंगे; क्योंकि हाथी इस धारा के आसपास रहना पसंद करते हैं, जहाँ चारा और पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अब हमें छोटी नदी की आवाज़ सुनाई दे रही है, जो अपने रास्ते में आने वाले पत्थरों के बीच से बहती हुई तेज़ी से बह रही है। आपने शायद ध्यान दिया होगा कि धारा की दिशा से हल्की हवा हमारी ओर बह रही है। इससे हाथी को हमारे आने का पता नहीं चलेगा, और वैसे भी वह टॉर्च की रोशनी तब तक नहीं देखेगा जब तक वह सीधे उस पर न पड़े।

ये अप्रिय विचार मन में आते ही वे साकार हो उठते हैं। हम सावधानी से एक मोड़ मुड़ते हैं, और वहाँ, लगभग तीस फीट की दूरी पर, एक विशालकाय आकृति सड़क के किनारे खड़ी है। एक नर हाथी! उसका सिर हमारी ओर मुड़ा हुआ है और उसके दाँत खतरनाक रूप से सफेद चमक रहे हैं!

अभी बोलना घातक होगा, क्योंकि बोलने से यह ज़ाहिर हो जाएगा कि मनुष्य उसका सामना कर रहे हैं, और मनुष्य उन दो प्राणियों में से एक है जिनसे वह घृणा करता है - दूसरा प्राणी बाघ है! वह उस क्षण हमें मिटाने का फैसला कर सकता है। वैसे भी वह हमें देख नहीं सकता, क्योंकि हम प्रकाश के पीछे हैं और उसकी दृष्टि कमज़ोर है।

हम एकदम स्थिर खड़े रहे और टॉर्च की रोशनी सीधे उसके सिर पर डाली।

उसकी दो छोटी-छोटी चमकीली आँखें तेज रोशनी को भयानक ढंग से प्रतिबिंबित करती हैं, मानो ज़मीन से लगभग दस फीट ऊपर लटके हुए खून जैसे लाल रंग के दो दीपक हों। वह घबराकर अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर ज़ोर से पटकता है, जिससे एक तेज़, धातु जैसी आवाज़ आती है, और फिर तेज़ी से अपने शरीर का बाकी हिस्सा हमारी ओर घुमा लेता है। स्थिति नाजुक है! यह पल बहुत ही महत्वपूर्ण है - जीवन और मृत्यु का सवाल - क्योंकि यही तय करेगा कि वह हम पर हमला करेगा या भाग जाएगा। उसकी सूंड ऊपर उठती है और वह हास्यास्पद ढंग से उसके अगले हिस्से को अपनी आँखों के सामने क्षैतिज रूप से मोड़ने की कोशिश करता है, मानो कोई बड़ा हाथ हो, ताकि तेज़ रोशनी से उन्हें बचा सके। उसकी सूंड पर नज़र रखें; साथ ही उसके कानों और पूंछ पर भी! वे आपको बता देंगे कि उसने क्या करने का फैसला किया है।

यदि उसकी सूंड अंदर की ओर, मुँह की तरफ कसकर मुड़ी हुई हो, कान सिर के किनारों से चिपके हुए हों और पूंछ बाहर निकली हुई हो, तो समझो वह हमला करने ही वाला है। भागना व्यर्थ है, क्योंकि वह संकरे रास्ते पर जल्द ही हमें पकड़ लेगा, जबकि दोनों ओर की वनस्पति एक दीवार की तरह है, जिसे भेदना असंभव है, और हमारे लिए किसी पेड़ के पीछे छिपकर भागने का कोई रास्ता नहीं बचता।

इसके अलावा, अगर उस क्षण की अफरा-तफरी में टॉर्च बुझ जाए, तो हम अंधेरे में रह जाएंगे, जबकि हाथी हमें साफ-साफ देख पाएगा।

ये विचार हमारे मन में तब आते हैं जब हमें एहसास होता है कि हाथी की प्रतिक्रिया, जो अगले एक या दो सेकंड में हो सकती है, आदिम प्रवृत्ति का परिणाम है न कि तर्क का, और यही तय करने वाली है कि हम मरेंगे या नहीं।

हाथी की सूंड हमारी ओर बढ़ती है, हवा का एक झोंका आता है जिसे हम इतनी दूरी से भी महसूस कर सकते हैं - गर्म और चिपचिपा, और हाथी एक तीखी चीख निकालता है। उस एक तीखी आवाज़ में हम दहशत को महसूस कर सकते हैं, जैसे ही उसका विशालकाय शरीर घूमता है और रास्ते के किनारे उगी घनी वनस्पति को चीरता हुआ तेज़ी से आगे बढ़ता है।

उसके बाद उस हाथी का कोई अता-पता नहीं चला - न ही उसकी कोई आवाज। शुक्र है भगवान का! वह तो डरपोक निकला। इतना बड़ा शरीर इतनी खामोशी से कहाँ चला गया, यह एक रहस्य ही है।

आपसी सहमति से और बिना बोले, हम इस मौत के जाल से निकलने और नदी और उसके चारों ओर फैली घनी वनस्पति से काफी दूर जाने तक अपने कदमों के निशान पर वापस लौटने का फैसला करते हैं। फिर हम एक दूसरे रास्ते पर चलते हैं, जो थोड़ा चौड़ा है और लगभग नदी के समानांतर चलता है।

लेकिन इस रास्ते पर हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता, जब तक कि हम घाटी से बाहर निकलना शुरू नहीं कर देते, एक घुमावदार रास्ते से जो हमें वापस शिविर तक ले जाएगा। घने जंगल में हम एक खुले मैदान से गुज़रते हैं, और लगभग आधे रास्ते में हमें अपने बाईं ओर कुछ गज की दूरी पर ज़मीन पर पड़ा एक गिरा हुआ पेड़ का तना दिखाई देता है। उस तने के ठीक ऊपर, हमारी ओर झाँकती हुई, विचित्र रंग की दो

बेहद चमकदार आँखें हैं। वे लाल-सफेद रंग की हैं। जैसे ही जानवर फिर से नीचे झुकता है, वे आँखें गायब हो जाती हैं, जबकि हम उस जगह पर टॉर्च की रोशनी डालने के लिए खड़े होते हैं जहाँ हमने उन्हें आखिरी बार देखा था।

एक क्षण बाद, मशाल की रोशनी के घेरे का किनारा जहाँ अंधेरे में विलीन हो रहा था, ठीक दाईं ओर एक हलचल ने हमारा ध्यान खींचा। मैंने तेज़ी से मशाल की किरण को पेड़ के तने पर घुमाया और हम ठीक समय पर एक पैंथर को घास में गायब होते हुए देख पाए, जो गिरे हुए पेड़ की पूरी लंबाई के पीछे रेंगते हुए हमसे सफलतापूर्वक बच निकला था।

हम ऊँची जगह पर पहुँचते हैं और एक चौड़े मोड़ से होते हुए अपने शिविर और अपने प्रिय पीपल के पेड़ की ओर मुड़ते हैं। हम उस पानी के गड्ढे को पहचान लेते हैं जिसके पास से हम तीन घंटे पहले अपनी यात्रा शुरू करते समय गुजरे थे। लेकिन इस बार यह सुनसान नहीं है।

किनारे के दूसरे छोर पर स्थित सबसे ऊपरी हिस्से से, दो बेहद चमकीली, दमकती आँखें बिना पलक झपकाए हमारी ओर घूर रही हैं। इन आँखों का रंग पैंथर जैसा है, लेकिन ये लाल-सफेद की बजाय सफ़ेद-लाल हैं। और ये कहीं ज़्यादा बड़ी, कहीं ज़्यादा चमकीली और एक-दूसरे से काफ़ी दूर हैं। इतना ही नहीं, ये निडर और अडिग हैं! हमारी नसें काँप उठती हैं और उत्तेजित होकर टॉर्च की रोशनी मेरे हाथों में थोड़ी डगमगा जाती है। क्योंकि सहज रूप से हम जानते हैं कि आख़िरकार हम एक बाघ को देख रहे हैं! लेकिन डरने की कोई बात नहीं है और हम वहीं जड़वत खड़े रह जाते हैं जबकि मैं टॉर्च की रोशनी को उन अद्भुत आँखों पर चमकने देता हूँ।

कुछ ही क्षणों में बाघ घास के पीछे से बाहर निकलता है, जहाँ वह किसी जानवर के पानी के गड्ढे पर पानी पीने आने का इंतजार कर रहा था, और हम उसे उसकी पूरी भव्यता में देख पाते हैं, उसके भूरे रंग के कोट पर बनी काली धारियाँ उसकी छाती, गले और पेट के सफेद रंग में धुंधली सी हो जाती हैं।

वह लगभग पांच मिनट तक हमारी ओर देखता रहता है। इस दौरान टॉर्च की तेज रोशनी से बचने के लिए उसकी पलकें मुश्किल से एक पल के लिए ही बंद होती हैं।

फिर बाघ थक जाता है। वह धीरे-धीरे नदी के किनारे नीचे उतरता है, पानी पीने के

लिए झुकता है लेकिन फिर अपना इरादा बदल देता है। वह सोचता है कि उसके सामने की तेज़ रोशनी का यहाँ कोई काम नहीं है। यह उसके लिए खतरा हो सकती है। कम से कम, यह असुविधाजनक और परेशान करने वाली तो है ही। वह वहाँ से चले जाने का फैसला करता है।

एक छलांग में वह वापस उसी किनारे पर आ जाता है जहाँ हमने उसे पहली बार देखा था, फिर उस पर से फिसलते हुए आँखों से ओझल हो जाता है। वहाँ रुकने का कोई फायदा नहीं; वह वापस नहीं आएगा। कुछ ही मिनटों में हम शिविर में वापस आ जाते हैं। वहाँ हम आग जलाते हैं और चार कप ताज़गी भरी चाय के लिए गर्म पानी बनाना शुरू करते हैं।

वास्तव में, आप असाधारण रूप से भाग्यशाली रहे हैं, क्योंकि आपने दस दिवसीय यात्रा में दूसरों की तुलना में अधिक जानवर देखे हैं, और साथ ही एक बाघ भी देखा है।

एक घंटे बाद चाँद निकलता है और पूरा नज़ारा बदल देता है। जहाँ पहले घोर अंधकार छाया हुआ था, अब चाँद जंगल पर चाँदी की चादर ओढ़े हुए है, दो मील दूर स्थित ऊँची चट्टान की धुंधली आकृतियाँ, दूर तक फैली पर्वत श्रृंखलाएँ और पास के पेड़ों की चोटियाँ एक कोमल, पारदर्शी चमक में नहा रही हैं। उसकी किरणें पत्तों के आवरण से छनकर नीचे घनी वनस्पति में विलीन हो जाती हैं, और इस तरह जंगल की ज़मीन पर प्रकाश और छाया, चाँदी-धूसर रंग और भयानक कालेपन का एक सुंदर मिश्रित पैटर्न बिछ जाता है।

ठंड बढ़ने के कारण हम अपने कंबल में खुद को लपेट लेते हैं और सो जाते हैं।

जब हम जागे तो सूरज अभी-अभी निकला था, लेकिन हम कुछ और मिनटों तक अपने कंबल में लिपटे रहे और चारों ओर से आती जंगली मुर्गों, मोरों और चील-फाड़ की मधुर आवाज़ सुनते रहे, साथ ही उस पीपल के पेड़ के ठीक पीछे झाड़ियों में अनगिनत छोटे पक्षियों की चहचहाहट भी सुनाई दे रही थी जिसके नीचे हम लेटे हुए थे। कुछ पल आराम से बिस्तर पर पड़े रहना और हजारों पक्षियों के गीत सुनना एक बड़ा सुख है। लेकिन हमें उठना होगा। काम करना है। याद है, तुमने मुझसे ट्रैकिंग और

स्टिल हंटिंग के बारे में कुछ सिखाने के लिए कहा था?

ये ऐसे हुनर हैं जिन्हें सीखने और अभ्यास करने में सालों लग जाते हैं, तब जाकर किसी हद तक निपुणता हासिल होती है। फिर भी, शिकारी कभी भी पूर्ण नहीं होता। वह हमेशा सीखता रहता है। लेकिन इसमें कोई बुराई नहीं कि आप इन दोनों की बुनियादी बातें न सीखें। अभ्यास और अनुभव दोनों ही अपरिहार्य हैं।

तो, दृष्टि भी उतनी ही उत्तम है। आज सुबह सबसे पहले मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ थोड़ी दूर उस घाटी में चलें, जहाँ ज़मीन इतनी नरम है कि आपके पैरों के निशान आसानी से पड़ जाएँगे। अब स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ें, लगभग 200 कदम गिनते हुए। फिर हम वापस वहीं लौटेंगे जहाँ से आपने चलना शुरू किया था, बिना आपके पदचिह्नों पर पैर रखे। अब अपने पदचिह्नों का अनुसरण करें, एक-एक करके नहीं, बल्कि व्यापक दृष्टि से, जिसमें आपके सामने के एक-दो पदचिह्न, मध्य दूरी से लगभग 50 फीट आगे तक के पदचिह्न और दूर के पदचिह्न भी शामिल हों। समझे? यह आसान लगता है, लेकिन इसमें महारत हासिल करने में कुछ दिन का अभ्यास लगेगा। इसका उद्देश्य यह है कि जब आप जंगल में ट्रेकिंग करें, तो आप न केवल पदचिह्नों का अनुसरण कर सकें, बल्कि अपने सामने और अपने चारों ओर की हर चीज़ के प्रति भी सजग रहें।

कई दिनों तक लगातार इसका अभ्यास करें और हर बार अपने पुराने पदचिह्नों को देखें। उनकी तुलना अपने हाल के पदचिह्नों से करें; ध्यान दें कि समय बीतने के साथ वे कैसे खराब होते जाते हैं; किनारों से टूटते हैं, पुराने दिखाई देते हैं। थोड़े से अभ्यास से आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि आपकी नज़र कितनी तेज़ी से पदचिह्नों को पकड़ लेती है, एक नहीं बल्कि कई एक साथ, और दूर से ही उन्हें पहचानते हुए नए और पुराने को अपने आप अलग कर लेती है।

जैसे-जैसे आप अभ्यास में निपुण होते जाएं, अधिक ठोस और चुनौतीपूर्ण ज़मीन पर आगे बढ़ें, जहाँ आपको कई बाधाओं का सामना करना पड़े। हमेशा जितना संभव हो सके आगे देखने का प्रयास करना न भूलें। पदचिह्नों का पता लगाने का अर्थ केवल प्रत्येक पदचिह्न को ध्यान से देखना और उसकी ताजगी या पुरानेपन को अपने मन में दर्ज करना ही नहीं है, बल्कि आगे और आसपास की ज़मीन का एक सामान्य सर्वेक्षण

करना भी है, साथ ही रास्ते में अचानक आए किसी भी मोड़ या रास्ते के समाप्त होने या वापस मुड़ जाने की स्थिति को भी अनदेखा नहीं करना है। पदचिह्न ज़मीन की सामान्य आकृति से स्पष्ट रूप से उभरने चाहिए, मानो वे खुद को दर्शा रहे हों।

अपने पैरों के निशानों का अध्ययन, और बाद में जानवरों के पैरों के निशानों का अध्ययन, आपको उनमें अंतर करने और कई चीजों को समझने में सक्षम बनाएगा। हो सकता है कि पूरा निशान हो या आंशिक निशान, जो खुर के किनारे की रूपरेखा से पहचाना जा सके। कठोर जमीन पर, खुर का निशान हल्के रंग के खरोंच के रूप में दिखाई देगा, जबकि पगमार्क बिल्कुल भी दिखाई नहीं देगा। दौड़ते हुए जानवर के खुर का निशान चट्टान से रगड़ खा सकता है। फिर घास और खरपतवारों के तने और सड़ी हुई पत्तियों के निशान होते हैं, जो उन पर कदम रखने वाले जानवर के वजन से बनते हैं। ये निशान बाघ जैसे कोमल पैरों वाले जानवरों के गुजरने का भी संकेत देते हैं। यदि घास या खरपतवार अभी भी चपटे हैं, तो जानवर हाल ही में गुजरा है। यदि घास और खरपतवार उग आए हैं, तो एक दिन बीत चुका है। जब रास्ते के किनारे और अंदर की टूटी हुई मिट्टी वाष्पीकरण से सूख जाती है; जब पगडंडी के अंदर धूल-मिट्टी, रेत, टहनियाँ, सूखे पत्ते या मकड़ी के जाले के कण मौजूद हों, तो वह पुरानी पगडंडी होती है। यदि पगडंडी पानी के ऊपर से गुजरती है, तो उस पर बने धुंधले निशान यह दर्शाते हैं कि वह हाल ही की है। यदि ऐसा नहीं है, तो वह पुरानी है।

जमीन पर चलते समय, घास और खरपतवारों के तनों पर चलने से उनके मुड़े या अलग हो जाने, सूखे पत्तों और टहनियों को हटाने या लात मारने, किसी पत्थर या गिरी हुई टहनी के पलट जाने, और विशेष रूप से ऐसे पत्थरों, पत्तों और टहनियों के नीचे की नमी के सूखने की मात्रा से पगडंडी की उम्र का पता चलता है।

सुबह-सुबह ज़मीन पर पड़ी ओस भी किसी जानवर के गुज़रने का संकेत देती है। यहाँ तक कि घास में धीरे-धीरे कदम रखने वाला कोई कमज़ोर जानवर भी, ओस के कारण घास के रंग में आए बदलाव से अपने गुज़रने का पता लगा लेता है। ओस से भीगी घास की हल्की पृष्ठभूमि पर एक संकरा, गहरा, घुमावदार रास्ता बना होता है। यहाँ, साथ ही पलटे हुए पत्तों और पत्थरों के नीचे बची नमी, रास्ते की ताज़गी का स्पष्ट संकेत देती है।

किसी रास्ते का रंग भी उसकी उम्र का पता लगाने में सहायक होता है। हवा, धूल, झाड़ियों और हवा से उड़ने वाली धूल, कीड़े-मकोड़ों, चींटियों और पक्षियों की निरंतर आवाजाही, और वातावरण की शुष्कता, ये सभी चीजें स्पष्ट रूप से बताती हैं कि आप एक पुराने रास्ते को देख रहे हैं। साथ ही, जानवरों का मल-मूत्र भी, जो ताजा होने पर नम होता है, कुछ ही घंटों में सूख जाता है।

जमीन का इस तरह से अध्ययन करना सीखें कि पटरियां साफ दिखाई देने लगें, साथ ही अपने आसपास की गतिविधियों पर भी ध्यान रखें। केवल जमीन को देखना और कहीं और न देखना न केवल व्यर्थ है बल्कि खतरनाक भी!

इसे सीखते समय, आपको विभिन्न जानवरों के पदचिह्नों में अंतर करना भी सीखना होगा। सामान्यतः, बाइसन और हिरण के खुर नुकीले होते हैं और आपस में कसकर जुड़े रहते हैं, सिवाय दौड़ते समय या घायल होने की स्थिति में। जंगली सूअरों के खुर हमेशा दूर-दूर होते हैं। लकड़बग्घे और जंगली कुत्तों के पंजों के नाखून नुकीले दिखाई देते हैं, लेकिन तेंदुओं या बाघों के नहीं।

मनुष्य की निरंतर आक्रामकता के कारण, वन के जानवर हर जगह अधिक सतर्क होते जा रहे हैं। इसलिए, शिकार करने और जानवरों का पता लगाने में आपकी सहायता के लिए, पहले से ही इलाके की भौगोलिक स्थिति जानना आवश्यक है; स्थायी जल स्रोतों का पता, नमक के टीलों का पता, पहाड़ियों और घाटियों की दिशा, प्रचलित हवाओं का रुख, सूर्य का कोण, ढलान, मिट्टी और वनस्पति की प्रकृति और उन दुर्गम कंटीली झाड़ियों का पता जहाँ लैंटाना की बाड़ें मौजूद हैं। आपको इन सभी बातों की जानकारी होनी चाहिए। ज़मीन से परिचित होना ज़रूरी है। तभी आप अपने शिकार की गतिविधियों का कुछ हद तक अनुमान लगा सकते हैं।

तस्वीरों में दिखाई देने वाले जानवरों, यहाँ तक कि हाथी को भी, देखने की उम्मीद न करें। हाथी का जो भी हिस्सा आपको दिखाई दे, वह शायद किसी पक्षी की तरह हिलता हुआ कान हो; या उसकी सूंड या पूंछ का सिरा, जो किसी साँप जैसा दिखता है। भूरे, काले या सफेद रंग का कोई धब्बा जो पत्थर जैसा दिखता है, वह हिरण या बाघ भी हो सकता है।

हवा की दिशा के प्रति सतर्क रहें। मांसाहारी जानवरों को छोड़कर, जंगली जानवरों की

सूंघने की शक्ति बहुत तीव्र होती है और यदि आप उनके विपरीत दिशा में हों तो वे आपको सूंघ लेंगे। इससे वे दृष्टि या ध्वनि की तुलना में कहीं अधिक तेज़ी से भाग जाएंगे। हाथियों में सूंघने की क्षमता अत्यंत विकसित होती है। इसलिए, हवा की दिशा का परीक्षण करने के लिए घास की कुछ पत्तियां या रेत के दाने हवा में गिराकर देखें कि वे किस दिशा में उड़ते हैं; या अपने गाल या गीली उंगली पर हवा का स्पर्श करके देखें।

अगला नंबर है सुनने की क्षमता का। लगभग हर जंगली जानवर, यहाँ तक कि मांसाहारी जानवर भी, इस क्षमता को बहुत अच्छी तरह से विकसित कर लेते हैं। हिरणों में यह क्षमता बहुत तेज़ होती है। इसलिए हमेशा जितना हो सके चुपचाप चलें। जंगल में ज़मीन पर लेटकर उन आवाज़ों को सुनें जो आप सुन सकते हैं। ऐसा लगता है कि इस तरह आप ज़्यादा आवाज़ें सुन पाएंगे - इंसानों के कदमों की धीमी आहट, कपड़ों से पत्तों के टकराने या रगड़ने की आवाज़, और हिलते हुए शरीर से टकराने के बाद टहनियों के वापस उछलने की सरसराहट। जंगली जानवर हाथी द्वारा शाखा तोड़ने, बंदरों के एक डाल से दूसरी डाल पर कूदने की आवाज़, गिलहरी के उछलने की हल्की आहट, और इंसान द्वारा टहनी तोड़ने या उसके पैरों के नीचे पत्तों के कुचलने की आवाज़ में अंतर कर सकते हैं। वे गरज, गिरे हुए पेड़ की आवाज़, संतुष्ट हाथी के पेट की गड़गड़ाहट जब वह अपना भोजन पचा रहा होता है, और भूखे बाघ या तेंदुआ की दहाड़ में अंतर जानते हैं।

लेकिन जिज्ञासा कभी-कभी उनके लिए मुसीबत बन जाती है, खासकर हिरणों के मामले में। वे अक्सर यह पता लगाने के लिए उठ खड़े होते हैं या रुक जाते हैं कि आवाज़ कहाँ से आ रही है और किस कारण से आ रही है।

यदि कोई व्यक्ति जंगल में बिल्कुल स्थिर खड़ा या बैठा रहे और जानवर विचलित न हो, तो वह व्यक्ति, बशर्ते उसने खल या धूसर वस्त्र पहने हों, सफेद नहीं, दिखाई नहीं देगा। संभवतः उसे पेड़ का ठूंठ या पत्थर समझ लिया जाएगा। यह तब भी लागू होता है जब जानवर आपकी ओर आ रहा हो। लेकिन आपकी थोड़ी सी भी हलचल, विशेषकर यदि जानवर पहले से ही भयभीत हो, तो वह तुरंत आपकी उपस्थिति का पता लगा लेगा। भारत के मैदानी इलाकों में रहने वाले हिरणों की दृष्टि अन्य अधिकांश वनवासियों की तुलना में कहीं अधिक विकसित होती है।

जंगल में मनुष्यों की सूंघने की क्षमता काफी हद तक कमज़ोर हो जाती है। हमारी सुनने की क्षमता भी औसत दर्जे की होती है। जानवरों का पीछा करने और छिपकर शिकार करने में हमें अपनी दृष्टि पर ही सबसे अधिक निर्भर रहना पड़ता है। किसी जानवर की आकृति को एक ही बार में देख पाना बहुत मुश्किल होता है। जंगल में बदलती रोशनी, झाड़ियों का आवरण और कई अन्य कारक केवल भूरे या सफेद रंग का एक धब्बा, झाड़ी में धुंधलापन, पहाड़ी या टीले पर थोड़ा सा धूसर या पीलापन, पेड़ों, लट्ठों या चट्टानों के बीच कोई धब्बा, एक टांग या कान ही दिखा पाते हैं। छिपकर शिकार करने में सफलता का मूल तत्व जानवर को उसके देखने से पहले ही देख लेना है। जो भी विचित्र चीज़ आपको दिखाई दे, उसे ध्यान से देखें, उसका गहराई से लेकिन शीघ्रता से अध्ययन करें और उस पर विचार करें।

चित्तीदार हिरण और सांभर की आदतें काफी हद तक उनकी मनमर्जी पर निर्भर करती हैं। अक्सर खास झुंड खास इलाकों में पाए जाते हैं। वे जंगल के बड़े हिस्से में जल्दी या धीरे-धीरे चर सकते हैं; वे किसी खास झाड़ी को लंबे समय तक चर सकते हैं या कुछ सेकंड के लिए ही कुतर सकते हैं, यह मौसम, सूखे या गीले जंगल, वनस्पति और खासकर उस इलाके में मौजूद खतरे पर निर्भर करता है। चरने के बाद, हिरण थोड़ी देर खड़े रहते हैं, आपस में खेलते हैं, अपनी गर्दन और सींगों को छोटे पौधों से रगड़ते हैं, अपनी पूंछ हिलाते हैं और चारों ओर देखते हैं। फिर वे आगे बढ़ते हैं, फिर से स्थिर खड़े हो जाते हैं और एक-दो टहनियाँ कुतरते हैं। वे सुबह की धूप में टहल सकते हैं या छाया में शरण ले सकते हैं, शांत इलाकों में भोजन करने के बाद पानी की ओर बढ़ते हैं, जहाँ पेट भरा होने पर वे कम सतर्क हो जाते हैं। अंत में, वे दिन भर के लिए छाया में या लंबी घास में आराम करते हैं। लेकिन हमेशा उनकी नाक कांपती रहती है, उनके बड़े कान फड़कते रहते हैं, उनकी आँखें चौकस रहती हैं; वे सूंघते, सुनते और उस खतरे को देखते रहते हैं जो लगातार उनके जीवन को खतरे में डालता रहता है।

साल में कुछ ऐसे समय होते हैं जब जानवरों के निशान देखकर और चुपचाप शिकार करना असंभव हो जाता है। गर्म मौसम, जब जंगल की ज़मीन सूखे पत्तों से ढकी होती है और झाड़ियाँ मुरझाकर छूने पर चटकने लगती हैं, ऐसा ही एक समय होता है। ऐसी स्थिति में शिकार करने की कोशिश करना नामुमकिन है। पत्ते आपके पैरों के नीचे ज़ोर से चूर-चूर हो जाएँगे, हर टहनी और झाड़ी सरसराहट करेगी, और ज़मीन इतनी सख्त

और घास इतनी सूखी होगी कि कोई निशान दिखाई नहीं देगा। ऐसे दिनों में घर पर ही रहें जब आप बिना आवाज़ किए चल न सकें और ज़मीन इतनी सख्त हो।

बारिश शुरू होने के तुरंत बाद का समय शिकार के लिए अच्छा होता है। हर पदचिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई देता है और जंगल में नए पत्ते इतने घने नहीं हुए होते कि उसमें से गुजरना लगभग असंभव हो जाए और आपकी दृष्टि कुछ ही गज तक सीमित हो जाए।

भोर होने से ठीक पहले जब सुबह का तारा धुंधलाने लगे, तब जंगल में रहें। जंगल में भोर की सुंदरता अपने आप में एक अलग ही अनुभव है। फिर ध्यान दें कि हवा किस दिशा में बह रही है। यदि हवा इतनी शांत हो कि आपको पत्तों और घास की हलचल भी सुनाई न दे, तो अपनी पूरी तर्जनी उंगली मुंह में डालकर गीला करें, फिर रुकें और उसे अपने सामने ऊपर उठाएं, महसूस करें कि क्या एक तरफ दूसरी तरफ से थोड़ी ठंडी है।

जंगल में चलने के लिए केवल रबर के तले वाले जूते या बूट ही पहनें। झाड़ियों से रगड़ खाने या कांटों से जबरदस्ती निकलने से बचें। टहनियों को छूने से पहले उन्हें हाथ से हटा दें और कपड़ों में चुभने वाले कांटों को धीरे से निकाल दें। झाड़ियों और घनी वनस्पतियों से गुजरते समय कोई आवाज न करें; सरसराहट या टूटने की आवाजें न करें। इसी तरह, सूखे पत्तों, सूखी टहनियों और ढीले पत्थरों पर पैर रखने से बचें; आगे बढ़ने से पहले अपने पैरों से रास्ता महसूस करें; ठीक वैसे ही जैसे एक बाघ अपने शिकार का पीछा करते समय करता है।

बैलगाड़ी की गति से थोड़ी धीमी गति से चलना सीखें, जैसे कि डेढ़ मील प्रति घंटा। चलते समय अपना सिर झुकाकर केवल अपने रास्ते को ही न देखें, बल्कि चारों ओर नज़र घुमाएँ और दूर-पास, दोनों ओर की हर चीज़ को ध्यान से देखें। समय के साथ यह सब आपको आ जाएगा, हालाँकि इसके लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है। हमेशा अपने सामने पूरी तरह से विकसित जानवर देखने की उम्मीद न करें। ऐसा नहीं होगा। इसके बजाय, प्रकाश के असामान्य धब्बों को देखें। वे गहरे भूरे या काले, हल्के भूरे, धूसर या सफेद हो सकते हैं। पेड़ के ठूंठ, चट्टान के टुकड़े, गिरे हुए लट्ठे या झाड़ियों के गुच्छे जैसी दिखने वाली चीज़ों का निरीक्षण करें। अपनी आँखों से घनी झाड़ियों के भीतर देखने का प्रयास करें। ध्यान से देखें; एक बार, दो बार और यहाँ

तक कि तीन बार भी। ज़मीन पर नीचे, झाड़ियों के बीच, पेड़ों के बीच देखें। असामान्य आकृतियों और रंगों को देखें। हो सकता है कि आप जिस चीज़ को देख रहे हैं वह किसी जानवर का ही हिस्सा हो - सींग का सिरा, खुर, कान या पूंछ। यह एक हाथी या एक चट्टान हो सकती है; एक बाघ या सूखी घास का एक गुच्छा हो सकता है।

चलते समय ज़मीन का भी ध्यान से निरीक्षण करें। जल्दी से पैरों के निशान और मल-मूत्र देखें, उन्हें तुरंत पहचानने और वर्गीकृत करने का प्रयास करें। कौन से जानवर यहाँ से गुज़रे हैं और कब? कुछ पैरों के निशान और मल-मूत्र पहचानना मुश्किल हो सकता है। कोई बात नहीं, उन्हें याद रखें कि वे कैसे दिखते हैं। समय के साथ आप सीख जाएंगे।

एक और महत्वपूर्ण सबक जो आपको सीखना चाहिए वह यह है कि किसी जानवर को देखते ही 'स्थिर' हो जाएं - सचमुच। आप उस समय चाहे जिस भी स्थिति में हों, उसी स्थिति में बने रहने की कोशिश करें। सभी जंगली जानवरों की आंखें बहुत सतर्क होती हैं और वे जरा सी भी हलचल को पकड़ लेती हैं। जानवर को ध्यान से देखें। जैसे ही वह नीचे या कहीं और देखे, आप तुरंत अधिक आरामदायक स्थिति में आ सकते हैं।

कभी-कभी आगे बढ़ने के लिए आपको झुकना पड़ सकता है; कभी-कभी आपको रेंगना पड़ सकता है। किसी पेड़ के तने, दीमक के टीले या पहाड़ी की चोटी के आसपास देखते समय, अपना आधा शरीर न दिखाएं, बल्कि सावधानी से चारों ओर देखें। दूर, पास और अगल-बगल, सब कुछ ध्यान से देखें। यदि आप शिकारी हैं, तो धूप में अपनी राइफल या बंदूक की नली की चमक से सावधान रहें। हथियार को नीचे रखें। यदि आप हाथों और घुटनों के बल हैं, तो आगे बढ़ते समय बंदूक को धीरे से जमीन पर घसीटते हुए आगे बढ़ाएं।

यदि आपको कोई जानवर दिखाई दे और वह आपकी उपस्थिति का आभास देते हुए अचानक गायब हो जाए, तो एक पल रुककर सोचें। आपने अपनी मौजूदगी का पता कैसे लगाया? क्या उसने आपको सूंघा? क्या आपने अपनी मौजूदगी का एहसास कराया या बहुत शोर मचाया? गलती चाहे जो भी हो, उसे सुधारना सीखें। वही गलती दोबारा न दोहराएं।

कभी-कभी दूर से देखने पर आपको जानवर जैसे दिखने वाले दृश्य मिलते हैं, लेकिन वे पेड़ के ठूंठ, टेढ़ी-मेढ़ी झाड़ियाँ या यहाँ तक कि पत्थर भी हो सकते हैं। बहुत दूर या असंभव दूरी पर या संदिग्ध वस्तुओं पर जल्दबाजी में गोली न चलाएँ। पहले उनकी जाँच-पड़ताल करने की कोशिश करें। अगर आपको लगे कि आप मूर्ख बन रहे हैं तो चिंता न करें। निराशा से हतोत्साहित न हों। अगर इन असफलताओं के कारण आप इतनी जल्दी हार मान लेते हैं, तो शायद यह अच्छा ही है, क्योंकि आप कभी भी ट्रैकिंग या स्टिक-हंटिंग की कला में महारत हासिल नहीं कर पाते। यह कला दृढ़ता और धैर्य पर आधारित है।

चार मुख्य नियम हैं जिनका पालन करना अनिवार्य है। शोर न करें; हवा की दिशा में आगे न बढ़ें; सूर्य की रोशनी आंखों में न पड़ने दें; कुछ भी दिखाई देने पर हिलें-डुलें नहीं। इसके कारण स्पष्ट हैं और उन पर टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। जब सूर्य आपके पीछे हो और जानवर पर पड़ रहा हो, तो आप उसे बेहतर देख सकते हैं। इसके विपरीत, वह छाया में होगा और आप दिखाई देंगे। याद रखें, जंगल रेगिस्तान नहीं है जहाँ आप डूबते सूरज की रोशनी में क्षितिज पर वस्तुओं को देख पाते हैं। और जब आप हिलते हैं, तो जानवर आपको देखता है, और जब आप स्थिर रहते हैं, तो आप उसे देखते हैं।

एक और सलाह: शॉर्टकट लेने की कोशिश न करें। आप कांटों में फंस जाएंगे। उनके चारों ओर से घूमकर निकलें; आप चुपचाप उनके बीच से नहीं निकल सकते।

पक्षियों और जानवरों की चेतावनी भरी आवाज़ों को सुनें। मोर की चेतावनी भरी पुकार, किसी पक्षी की चौंककर की गई चीख, छोटे पक्षियों की चहचहाहट, सात बहनों के झुंड की चहचहाहट, नीलकंठ की तीखी आवाज़, लंगूर बंदरों और हिरणों की चेतावनी भरी पुकारें, ये सभी स्पष्ट रूप से बताती हैं कि कोई बाघ या तेंदुआ पास से गुज़र रहा है। इन्हें समझना और इनकी व्याख्या करना सीखें। खतरे का कारण जानने के लिए तेज़ी से पास जाने की कोशिश करें, लेकिन ऐसा करते समय अपने चारों ओर ध्यान से, गहराई से देखना सीखें। झाड़ियों में छिपा जानवर आपसे बेहतर देख सकता है।

जैसे-जैसे आप जंगल के ज्ञान और शिकार करने की कला में निपुण होते जाएंगे,

आपको अपने आप पर गर्व और खुशी का अनुभव होगा। इस तरह से प्राप्त ट्रॉफी वास्तव में एक ट्रॉफी है। किसी भी रूप में अवैध शिकार करके प्राप्त ट्रॉफी हत्या है। आसान तरीके से प्राप्त ट्रॉफी तो बिल्कुल भी ट्रॉफी नहीं है!

ट्रॉफी की बात करते समय एक और बात याद आती है। ढलान पर निशाना लगाते समय, अपने लक्ष्य से आगे न निकलें। जानवर पर थोड़ा नीचे निशाना लगाएं और बहुत ज्यादा फोरसाइट का इस्तेमाल न करें। ठीक इसका उल्टा भी लगभग सही है। चढ़ाई पर निशाना लगाते समय, अक्सर निशाना नीचे लग जाता है। फिर से, जब आप उत्साहित हों या तेज दौड़ के बाद थकान से लड़खड़ा रहे हों, तो फोरसाइट का इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। फोरसाइट का इस्तेमाल करने के कारण निशाना ऊपर लगने का एक और आम कारण सीधे सूर्य की ओर निशाना लगाना है। स्वाभाविक रूप से आप फोरसाइट का अधिक इस्तेमाल करना चाहते हैं - और वह अधिक फोरसाइट भी बहुत ज्यादा हो सकती है! इन बातों का ध्यान रखें।

कभी-कभी जंगल में कोई अनोखा नज़ारा देखने को मिल जाता है। ऐसा बहुत कम होता है, लेकिन कभी-कभी हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक ही या अलग-अलग प्रजातियों के दो जानवरों के बीच लड़ाई। अगर आप फोटो खींचने की अपनी इच्छा को काबू में रख सकें, तो ऐसे दृश्यों को देखना ज्ञानवर्धक हो सकता है। फोटो खींचने के बजाय, एक तस्वीर खींचने की कोशिश करें। यह एक ज़्यादा मूल्यवान और स्थायी रिकॉर्ड होगा।

भारतीय जंगलों में हिरण अपनी-अपनी प्रजातियों के अनुसार अलग-अलग स्थानों पर पाए जाते हैं। जंगली भेड़ या मुंटजैक, खड़ी ढलानों पर घनी झाड़ियों में रहते हैं। सांभर अपेक्षाकृत अधिक ऊंचाई पर, जंगली भेड़ों के इलाकों में और निचले स्तरों पर भी पाए जाते हैं, लेकिन वहां हमेशा कुछ पहाड़ियाँ और बहुत सारे पेड़ होने चाहिए। चित्तीदार हिरण लगभग पूरी तरह से निचले स्तरों पर ही रहते हैं। चलते हुए हिरण, या यहाँ तक कि स्थिर खड़े हिरण, या इन सभी प्रजातियों में से कोई भी, और विशेष रूप से पहली प्रजाति, को देखना हमेशा मुश्किल होता है और उन पर नज़र बनाए रखना तो और भी कठिन होता है। वे आसपास के जंगल में घुलमिल जाते हैं और घनी

झाड़ियों, बांस, लकड़ियों और लताओं में अदृश्य हो जाते हैं।

शिकार का पीछा करते समय बिल्कुल भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। डरा हुआ हिरण, अन्य जानवरों के विपरीत, बार-बार पीछे मुड़कर देखता है कि उसे किसने डराया है, कौन सा दुश्मन पास आ रहा है, और एक बार डर लगने पर वह काफी देर तक घबराया हुआ रहता है, पीछे के रास्ते को देखता रहता है। इसलिए उसके पीछे जल्दीबाजी करने से मामला और बिगड़ जाएगा। बस यूं ही आगे बढ़ने के बजाय, आगे और आसपास दोनों तरफ देखना सीखें, और ध्यान रखें कि आपका शिकार भी ऐसा ही कर रहा है। और मैं फिर से दोहराता हूं, जितना हो सके कम शोर करें। हवा का हमेशा ध्यान रखें। हवा की दिशा के विपरीत दिशा से ही शिकार के पास जाएं, कभी भी हवा के विपरीत दिशा से न जाएं, जब तक कि वह बाघ या तेंदुआ न हो, जिनकी सूंघने की शक्ति बहुत कम होती है, और यह भी न भूलें कि हवा की दिशा अचानक बदल सकती है।

कभी भी शिकार के सीधे पास न जाएं, क्योंकि ऐसा करने से वह भाग जाएगा। मान लीजिए आप किसी पहाड़ी पर हैं और नीचे घाटी में कुछ दिखाई देता है। सीधे पहाड़ी से नीचे की ओर जाना घातक हो सकता है। नीचे जाते समय आप ऊपर जाने की तुलना में अधिक दिखाई देते हैं, आपकी गति तेज़ होती है, आप छिप नहीं सकते और कभी-कभी रुक भी नहीं सकते। किसी अजीब कारण से, घाटी में रहने वाले जानवर ऊपर की हलचल को पहाड़ी की ढलानों पर नीचे की हलचल की तुलना में अधिक ध्यान से देखते हैं। नीचे जाते समय आप अपने शिकार को नज़र से ओझल कर देते हैं, लेकिन वह फिर भी आपको देख और सुन सकता है।

इसलिए, किनारे से अप्रत्यक्ष रूप से आगे बढ़ें, या पहाड़ी के साथ-साथ चलते रहें; फिर पहाड़ी की आड़ में छिपकर घाटी के दूसरे छोर पर स्थित निचले इलाके में उतर जाएँ। लेकिन आगे बढ़ने से पहले उस पेड़, झाड़ी या जगह को अच्छी तरह से चिह्नित कर लें जहाँ आपने आखिरी बार अपने शिकार को देखा था। निचले इलाके में पहुँचने पर सभी पेड़, झाड़ियाँ और जगहें एक जैसी दिखती हैं। इसी कारण, जब तक आप उस विशेष स्थान को पहचान नहीं लेते जहाँ आपने जानवर को देखा था, ऊँची जगह से प्राप्त लाभ अक्सर व्यर्थ हो जाता है।

बहुत घना न हो, पार्क जैसा शांत जंगल हो और झाड़ियाँ कम हों, तो यह खोज करना कहीं बेहतर विकल्प है। हिरणों की तलाश में, अगर जंगल घना न हो, तो घाटी पार करते समय आसपास की पहाड़ियों की निचली ढलानों पर नज़र रखना कभी-कभी सफलता दिला सकता है। संकरी घाटियों, नालों और संकरी जगहों को खोजें जो मुख्य घाटी में मिलती हैं। हवा आमतौर पर ऐसी जगहों की ओर बहती है और आपके लिए अनुकूल होगी। दो घाटियों को अलग करने वाली छोटी पहाड़ी का किनारा कभी-कभी अच्छा स्थान होता है, क्योंकि जानवर इसी रास्ते से एक घाटी से दूसरी घाटी में जाते हैं। किसी पूरे जानवर को देखने की उम्मीद न करें, बल्कि रंगों की विभिन्नताएँ, धब्बे, प्रकाश की छटाएँ और अजीब आकार की वस्तुओं को देखें। हो सकता है कि वे बाद में जानवर बन जाएँ। मैं इस बात पर कितना भी ज़ोर दूं, कम है, भले ही यह बार-बार दोहराया जा रहा हो। देखें, और फिर से देखें। अगर संदेह हो, तो रुकें, ठहरें, और ध्यान से देखें। अगर फिर भी संदेह हो, तो इंतज़ार करें। अगर वह जानवर है, तो वह अजीब वस्तु जो आप देख रहे हैं, देर-सवेर हिलेगी; पेड़ का ठूंठ जीवित हो उठेगा।

जानवरों के पदचिह्नों का पता लगाने का तरीका सीखने के लिए पानी का स्रोत या नमक चाटने की जगह एक अच्छा विकल्प है। ऐसी जगहों पर जानवरों के पदचिह्नों से पता चलता है कि कौन आया और गया, कब आया और किस दिशा में गया, कितने जानवर आए और उस जंगल में कौन-कौन से जानवर हैं। पानी के स्रोत के चारों ओर ध्यान से घूमें। सीखने के लिए बहुत कुछ है। पदचिह्नों का अध्ययन करें। उनकी पहचान करें। अलग-अलग पदचिह्नों और पैरों के निशानों की उम्र का अनुमान लगाने की कोशिश करें और अपने उत्तरों के लिए कारण बताएं। अंधाधुंध अनुमान न लगाएं, बल्कि अपने निष्कर्षों को पुख्ता तथ्यों से पुष्ट करें। उन जीवों की कल्पना करने की कोशिश करें जिन्होंने ये पदचिह्न बनाए हैं; उनका आकार और लिंग क्या था।

एक नर बाघ या तेंदुआ मादा की तुलना में बड़े और गोल पदचिह्न छोड़ता है, विशेष रूप से अगले पंजों और उन पदचिह्नों में मौजूद 'पैड' के संबंध में।

कभी-कभी आपको दोनों दिशाओं में ताज़े पदचिह्न दिखाई देते हैं, और सवाल उठता है: इनमें से कौन से ज़्यादा ताज़े हैं और जानवर इस समय कहाँ है? इसका जवाब आसानी से मिल जाता है। अगर एक तरफ पानी का गड्ढा या नमक चाटने की जगह है, तो जानवर वहाँ गया था और वापस आ गया है। समान रूप से ताज़े दिखने वाले

पदचिह्नों में, खुले मैदान की बजाय झाड़ियों वाले इलाके की ओर जाने वाले पदचिह्न आम तौर पर ज़्यादा ताज़े होते हैं, जैसे कि सड़कों और शोरगुल वाली जगहों से दूर या ऊँची ज़मीन की ओर जाने वाले पदचिह्न, या वे पदचिह्न जो सड़कों और मवेशियों के रास्तों के किनारों पर फैले होते हैं, न कि उन्हें पार करते या उनके साथ-साथ चलते हैं।

ताज़ा पटरियों का एक निशान किसी छोटी घाटी, खोखले स्थान या झाड़ियों वाले इलाके में जा सकता है। उस इलाके का चक्कर लगाएँ और पता लगाने की कोशिश करें कि क्या वही निशान किसी और दिशा में भी जाते हैं। अगर आपको ऐसा कोई निशान नहीं मिलता, तो आप लगभग निश्चित हो सकते हैं कि आपका शिकार अभी भी खोखले स्थान या झाड़ियों के बीच ही है। उसे बाहर निकालने के लिए उसका पीछा करना मूर्खता होगी। वह आपको ज़रूर सुन लेगा। इसलिए किसी ऊँची जगह, जैसे कि किसी बड़े पत्थर, पेड़ या ज़मीन के थोड़े से उठे हुए हिस्से पर बैठने की कोशिश करें। फिर चुपचाप, बिना हिले-डुले बैठे रहें। देर-सवेर आपका शिकार खुद को दिखाएगा, और आप उसे पा लेंगे! लेकिन अगर आप अधीर हो जाते हैं और झाड़ियों में उसके पास जाकर जल्दबाजी करने की कोशिश करते हैं, खासकर अगर घास सूखी हो, डालियाँ और पत्तियाँ कुरकुरी हों, तो आप खुद को भेद खोल देंगे। वह आपको सुन लेगा और गायब हो जाएगा। किसी भी जानवर को झाड़ियों में से आती हुई सरसराहट या सरसराहट की आवाज़ से ज़्यादा कोई चीज़ डराती नहीं है। वह इसे तुरंत बड़े खतरे से जोड़ता है। चेनचू जनजाति के लोग कहते हैं, 'जब जंगल बहुत शोरगुल भरा हो, तो तब तक प्रतीक्षा करो जब तक हिरण स्वयं अपनी मर्जी से हिलने न लगे।'

अगर आपको घनी झाड़ियों से होकर गुजरना पड़े, तो उनमें घुसने से पहले उन्हें हाथों से हटा दें। बेहतर होगा कि आप झाड़ियों से बचने के लिए बने रास्तों का इस्तेमाल करें। अगर मुमकिन हो, तो किसी ऊंचे पेड़ पर चढ़ जाएं जहां से आपको ऊपर का नजारा दिख सके। हो सकता है आपका लक्ष्य दूसरी तरफ ही हो। जबरदस्ती घुसने की कोशिश न करें; यह बिल्कुल बेकार है!

हिरण पहाड़ियों के मध्य और निचले ढलानों, तलहटी और घाटियों में, और निश्चित रूप से समतल जंगलों में पाए जाते हैं जहाँ वे उपलब्ध होते हैं। और यहीं पर आपको बाघ या तेंदुआ मिल सकता है, क्योंकि वे भी संभावित स्थानों को आपकी तरह ही जानते हैं।

शिकार करते समय धैर्य एक ऐसा गुण है जिसे आपको वास्तव में विकसित करना सीखना चाहिए। जल्दबाजी न करें, बल्कि सोच-समझकर काम करें। जल्दीबाजी और झटके से न चलें। यह न सोचें कि झाड़ियों के किसी विशेष क्षेत्र में कुछ दिखाई न देने का मतलब है कि वहां कुछ भी नहीं है। वहां कुछ हो सकता है - कई चीजें - यहां तक कि एक हाथी भी किसी छोटे पेड़ के पीछे रहस्यमय ढंग से खड़ा हो सकता है। अनुभवहीन व्यक्ति की नज़र में वह लगभग अदृश्य होता है।

सुबह-सुबह, सांभर और सुस्त भालू आमतौर पर दिन बिताने के लिए निचली पहाड़ियों की ओर चढ़ना शुरू कर देते हैं। यदि आपको इन जानवरों द्वारा बनाया गया कोई पुराना रास्ता दिखाई दे, तो सुबह-सुबह सांभर या सुस्त भालू पर घात लगाकर हमला करना संभव है, बशर्ते आप रास्ते के पास किसी ऊँची जगह पर सुबह 4:30 से 5 बजे के बीच घात लगाकर बैठ जाएं और जैसे ही वह ऊपर आए, उसे पकड़ लें।

चरते हुए चित्तीदार हिरण का पीछा करना मुश्किल है, क्योंकि आपको न केवल सभी नियमों का पालन करना होता है, बल्कि उस झाड़ी या जगह को भी ध्यान से चिह्नित करना होता है जहाँ आपने उसे आखिरी बार देखा था। क्योंकि सभी झाड़ियाँ और जगहें एक जैसी लगती हैं, और अक्सर, बड़ी मेहनत से पीछा करने के बाद, आप पाते हैं कि आप अपने शिकार की दिशा खो चुके हैं, और साथ ही अपनी भी। और कभी भी जल्दबाजी में यह न मान लें कि आपका शिकार वहाँ नहीं है, वह चला गया है। वह अगले मोड़ के पीछे - या अगली झाड़ी के पीछे हो सकता है! धुंधली, अस्पष्ट, अधूरी दिखाई देने वाली वस्तुओं पर दूर से निशाना लगाने का जोखिम कभी न लें। आप हमेशा बुरी तरह चूक जाएंगे। या आप जानवर को घायल कर सकते हैं और फिर उसे खो सकते हैं। यह खेल नहीं, क्रूरता है! और आप किसी बाघ या तेंदुआ को आदमखोर बनने के लिए उकसा सकते हैं!

शाम के समय और साथ ही सुबह-सुबह, अगर आप शोर मचाते हुए इधर-उधर भटकने के बजाय किसी चट्टान, पहाड़ी या किसी ऊंचे स्थान पर स्थिर होकर आसपास के जंगल को दूर-दूर तक देखते रहें, तो आपको सभी प्रकार के जानवर देखने को मिल सकते हैं।

एक बार, आंध्र प्रदेश की चमाला घाटी में पुलिबोनू के ऊपर स्थित मंकी हिल की

ढलानों पर, मैं बैठकर एक बाघिन को अपने तीन शावकों के साथ थोड़ी नीचे, लगभग सौ गज की दूरी पर स्थित एक विशाल चट्टान पर धूप सेंकते हुए देख रहा था। आधे घंटे से अधिक समय तक मैं उन्हें देखता रहा और उन्हें इस बात का जरा भी आभास नहीं हुआ कि मैं वहाँ हूँ, क्योंकि मैं बिल्कुल भी नहीं हिला।

यदि आपको हिलना-डुलना ही पड़े, तो बहुत धीरे-धीरे हिलें, इतना धीरे कि कोई हलचल दिखाई ही न दे; तेज गति से हिलने-डुलने से तुरंत ध्यान आकर्षित होगा और आपकी उपस्थिति का पता चल जाएगा।

किसी जानवर का पीछा करते समय, इस सलाह को याद रखें। यदि आवश्यक हो, तो कोहनियों और पंजों के बल रेंगते हुए आगे बढ़ें, घास के हर गुच्छे, झाड़ी, चट्टान, टीले या पेड़ के ठूंठ का लाभ उठाएं जो आपको आगे बढ़ने में छुपकर रख सकें। हर कदम से पहले अपनी राइफल को धीरे से आगे बढ़ाएं, अपनी टोपी और दूरबीन जैसी चीज़ें जो ज़मीन से टकराकर आवाज़ कर सकती हैं, उन्हें पीछे छोड़ दें। लेकिन जिस जगह आपने उन्हें छोड़ा है, उस जगह को अच्छी तरह से याद रखें, ताकि आप उन्हें फिर से ढूंढ सकें। अन्यथा, आप उन्हें पूरी तरह से खो देंगे, और दूरबीन, टोपी की तरह, महंगी होती है!

अगर आपका शिकार नज़र आ रहा हो, तो उस पर लगातार नज़र रखें। जैसे ही वह अपना सिर उठाए, हिलना-डुलना बंद कर दें और स्थिर लेट जाएं। उसे किसी भी तरह की हलचल का पता न चलने दें। आराम से काम करें। अगर आपका शिकार आपकी तरफ पीठ कर ले या किसी रुकावट के पीछे छिप जाए, तो ही तेज़ी से आगे बढ़ें। हाथों और घुटनों के बल तेज़ी से रेंगें या झुककर आगे बढ़ें, लेकिन याद रखें, अगर वह आपकी तरफ देखे, तो तुरंत रुक जाएं और स्थिर हो जाएं। आप जिस भी स्थिति में हों, उसी स्थिति में स्थिर रहें, जब तक कि आपका शिकार फिर से नज़र न हटा ले। आपकी कमर में दर्द हो सकता है, लेकिन जब तक वह देख रहा हो, हिलें नहीं। जल्दी से गोली चलाने के लिए कभी भी अचानक खड़े न हों।

कभी-कभी जानवर डरा हुआ प्रतीत हो सकता है जबकि वास्तव में वह डरा हुआ नहीं होता। इसलिए, जब तक वह दोबारा नीचे न देखे, तब तक हिलें-डुलें नहीं। यदि कोई जानवर किसी आवाज़ से भाग रहा है, तो उसी दिशा से आने वाली कोई भी और

आवाज़ उसे और तेज़ भगा देगी। लेकिन किसी दूसरी दिशा से आने वाली हल्की सी आवाज़ उसे जिज्ञासावश रोक देगी, बशर्ते कि वह उस आवाज़ का कारण न देखे या किसी इंसान की मौजूदगी की गंध न महसूस करे। यह बात ध्यान में रखने योग्य है यदि आप किसी मित्र के साथ शिकार पर निकले हों। घाटी में गोली लगने पर अगर जानवर को निशाना बनाया जाए और वह चूक जाए, तो अक्सर वह डर के मारे स्थिर खड़ा रहता है और भागता नहीं है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि राइफल की गोली की गूंज घाटी में इतनी फैल जाती है कि वह भ्रमित हो जाता है और उसे पता ही नहीं चलता कि गोली कहाँ से आई है।

हिरणों में जिज्ञासा एक जानी-मानी आदत है, खासकर मृगों में। मेरे एक परिचित बुजुर्ग ने बताया कि वे खुले मैदान में काले हिरण का शिकार करने के लिए अपने टखने पर लाल कपड़ा बांध लेते थे, झुंड का पीछा करते हुए जितना दूर जा सकते थे, जाते थे और फिर पीठ के बल जमीन पर लेट जाते थे। वे लाल कपड़े वाले पैर को कूल्हे से ऊपर-नीचे हिलाते रहते थे, ताकि वह झुंड को थोड़ी-थोड़ी देर में दिखाई दे। उन्होंने बताया कि काला हिरण बाकी काम खुद कर लेता था - वह उनके पास आकर इस अजीब घटना का कारण जानने की कोशिश करता था! मैंने खुद कभी यह तरीका नहीं आजमाया है, और यह जंगल में तो बिल्कुल भी कारगर नहीं होगा, लेकिन इससे मेरी बात स्पष्ट हो जाती है। हिरण बहुत जिज्ञासु होते हैं और कभी-कभी तो बंदूक की आवाज सुनकर भी रुक जाते हैं।

यदि जानवर चलना शुरू कर दे, तो पीछे से सीधे उस पर हमला करके उसे पकड़ना मुश्किल होगा। इसके बजाय, तिरछी दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ने की कोशिश करें। यदि वह नदी की ओर ढलान पर आ रहा हो, तो वहाँ पहले पहुँचने का प्रयास करें।

किसी पहाड़ी के पार से हिरण के आने का अनुमान लगाते हुए आगे बढ़ें, और अगर वह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ता हुआ दिखे तो तुरंत उसके चारों ओर दौड़ें। उसे रोकने के लिए उस घाटी या झाड़ियों के दूसरे छोर पर चले जाएं जिसमें आपने उसे प्रवेश करते देखा है। ऐसा करते समय, घाटी के किनारे-किनारे दौड़ें लेकिन नज़र से ओझल रहें और हवा की दिशा का ध्यान रखें। कभी-कभी जानवर के पीछे रहने की तुलना में उसके आगे या बगल में रहकर निशाना लगाना आसान होता है।

ऊपर की ओर दौड़ता हुआ जानवर थोड़ी देर बाद रुक जाता है। समतल ज़मीन पर उसके रुकने की संभावना बहुत कम होती है। ढलान पर तो वह बिल्कुल नहीं रुकेगा। इसी तरह, अगर सिर्फ़ किसी आवाज़ ने उसे चौंकाया है, तो वह धीरे-धीरे अपनी गति कम कर लेगा। लेकिन अगर उसने आपको देख लिया है या आपकी गंध महसूस कर ली है, तो वह निश्चित रूप से आपकी ओर दौड़ना शुरू कर देगा।

अभ्यास से जैसे-जैसे आप कुशल होते जाएंगे, किसी निशान का सीधा पीछा न करें। उसके थोड़ा इधर-उधर रहें। चाहे आप अपने शिकार के पीछे हों, उसके साथ-साथ हों या उससे आगे हों, अगर वह अभी भी झाड़ियों वाले इलाके या छोटी घाटी में है, तो उसके पीछे जाने की कोशिश करने के बजाय बैठ जाएं या लेट जाएं और धैर्यपूर्वक उसके बाहर आने का इंतजार करें। वह देर-सवेर बाहर जरूर आएगा। कम से कम वह किसी खुले स्थान पर तो दिखाई देगा ही। जबकि, अगर आप ऐसी घनी झाड़ियों में चले जाते हैं, तो आप न केवल उसे देख नहीं पाएंगे, बल्कि वह दूसरे छोर से भाग जाएगा।

यदि आपको कोई जानवर अपने से काफी आगे दिखाई दे, तो उसका पीछा करने से पहले कुछ सेकंड रुककर यह पता लगाएँ कि वह क्या कर रहा है और कहाँ जा रहा है। ऐसा करना फायदेमंद होगा। हो सकता है वह चर रहा हो और अंततः आपके करीब आ जाए, या किसी ऐसी जगह की ओर जा रहा हो जहाँ आप पहले से जाकर छिप सकते हैं। हो सकता है वह चलते-चलते थोड़ी देर के लिए रुक गया हो। जैसे ही वह फिर से चलने लगे, आपको निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि वह किस दिशा में जा रहा है। या हो सकता है वह दिन भर आराम करने की तैयारी कर रहा हो, जिससे आपको आगे बढ़ने की योजना बनाने और सावधानीपूर्वक उसे अंजाम देने के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा।

यदि आप किसी लेटे हुए जानवर के पास जा रहे हैं, तो याद रखें कि वह आपको सूंघ सकता है, सुन सकता है और शायद आपको देख भी सकता है - यहां तक कि केवल आपके पैर भी - झाड़ियों के बीच से, इससे बहुत पहले कि आप उसे देख पाएं क्योंकि आप चल रहे होते हैं जबकि शिकार स्थिर होता है।

बीच-बीच में झुककर झाड़ियों के नीचे झांकते रहो। शायद तुम्हें कुछ दिख जाए।

अंत में, और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, जैसा कि मैंने आपको बाघ और तेंदुआ जैसे शिकार की उपस्थिति और ठिकाने के बारे में चेतावनी देने के लिए पक्षियों और जानवरों की चेतावनी भरी आवाजों और चीखों को सुनने के लिए कहा है, उसी प्रकार पक्षियों और जानवरों को अनावश्यक रूप से सचेत न करें। क्योंकि आपकी उपस्थिति से उत्पन्न उनकी चेतावनी भरी आवाजें और चीखें उस बाघ या तेंदुआ को सचेत कर देंगी जिसका आप शिकार कर रहे हैं। सभी मांसाहारी जानवर ऐसी चेतावनी भरी आवाजों को ध्यान से सुनते हैं, उनका अर्थ समझते हैं और उनके अनुसार दिशा-निर्देश प्राप्त करते हैं।

हो सकता है कि आप एक सुबह कैंप से निकले हों और अपनी घड़ी भूल गए हों! खुद को शर्मिंदा करने और घड़ी लेने के लिए वापस जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। सूरज चमक रहा है और आपको समय बता देगा। अगर दोपहर का समय है, तो उत्तर दिशा की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं, जहां तक आपको पता हो कि उत्तर दिशा क्या है, सूरज को अपने दाहिनी ओर रखें। अगर दोपहर का समय है, तो दूसरी दिशा की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं, जहां तक संभव हो दक्षिण की ओर, सूरज फिर से आपके दाहिनी ओर होगा।

अपनी बाईं बांह को कोहनी से मोड़कर आगे की ओर क्षैतिज रूप से रखें, जहां कोहनी आपकी नाभि को छू रही हो। हथेली आकाश की ओर ऊपर की ओर रखें, अंगूठा और सभी उंगलियां आपस में सटी हुई हों। इस स्थिति में, आपकी बाईं बांह जमीन के समानांतर होनी चाहिए, और बांह और हथेली का पिछला हिस्सा जमीन की ओर होना चाहिए।

अब अपनी दाहिनी मुट्ठी को कसकर बंद करें, चारों उंगलियों को अंदर की ओर मोड़ें, लेकिन अपने दाहिने अंगूठे को पूरी तरह से बाहर और ऊपर की ओर रखें।

इस स्थिति में, दाहिनी उंगलियों को अंगूठे को ऊपर की ओर रखते हुए मुट्ठी में बंद रखते हुए, दाहिने अंगूठे के आधार को, जिसे लंबवत ऊपर की ओर रखा गया है, बाएं हाथ की छोटी उंगली के आधार से स्पर्श कराएं, जो बाएं हाथ की अन्य उंगलियों और अंगूठे के साथ एक साथ जमीन के समानांतर और हथेली ऊपर की ओर रखते हुए हो।

जब आप सही स्थिति में होते हैं, तो दाहिने हाथ का पिछला हिस्सा, मुड़ी हुई उंगलियों

और फैले हुए अंगूठे के साथ, सीधे सूर्य की ओर होगा, चाहे दोपहर हो या शाम, इस बात पर निर्भर करता है कि आप उत्तर की ओर देख रहे हैं या दक्षिण की ओर।

अब आप देखेंगे कि आपके सीधे खड़े दाहिने अंगूठे की छाया आपके बाएं हाथ की क्षैतिज रूप से समानांतर उंगलियों के आधार पर पड़ती है। दोपहर के समय, जब यह छाया आपकी बाईं तर्जनी उंगली पर पड़ती है, तो समय लगभग 8 बजे होता है; बाईं दूसरी उंगली पर, लगभग 9 बजे; बाईं तीसरी उंगली पर, लगभग 10 बजे; बाईं छोटी उंगली पर, लगभग 11 बजे; और जब कोई छाया नहीं पड़ती, तो लगभग दोपहर का समय होता है। बाएं हाथ की चारों उंगलियों के जोड़ इन समयों के बीच के आधे घंटे दर्शाते हैं। छाया न पड़ने का मतलब दोपहर है; दोपहर बाद बाईं छोटी उंगली पर छाया पड़ने का मतलब लगभग 1 बजे; बाईं तीसरी उंगली पर छाया पड़ने का मतलब लगभग 2 बजे; बाईं दूसरी उंगली पर छाया पड़ने का मतलब लगभग 3 बजे; बाईं तर्जनी उंगली पर छाया पड़ने का मतलब लगभग 4 बजे होता है; उंगलियों के जोड़ आधे घंटे दर्शाते हैं।

नीलगिरी पर्वतमाला की एक आदिवासी जनजाति समय देखने के लिए इस विधि का उपयोग करती है क्योंकि वे इतने गरीब हैं कि घड़ियाँ नहीं खरीद सकते। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि यह एक बेहतरीन तरीका है, क्योंकि मैंने इसे आजमाया है। और यह कारगर है!

अब मैंने आपको घात लगाकर शिकार करने, पीछा करने और छिपकर शिकार करने के बारे में कुछ जानकारी दे दी है। बाकी आप पर निर्भर है। लेकिन इस बात से तसल्ली रखिए कि इन चीजों में किसी भी स्तर की निपुणता प्राप्त करना कोई जन्मजात, विशेष प्रतिभा नहीं है, जो केवल कुछ चुनिंदा लोगों के पास होती है। कई अन्य चीजों की तरह, ये भी कलाएं हैं, जो निरंतर अभ्यास और कड़ी मेहनत से विकसित होती हैं। वास्तव में, 90 प्रतिशत मेहनत पसीने बहाने से ही आती है।

सिद्धांत तो अच्छा है, लेकिन अभ्यास से ही पूर्णता आती है। जंगल या मैदान में बिताया एक दिन आपको सौ किताबों से भी ज़्यादा सिखा देगा। लेकिन साथ ही, इन कलाओं का सिद्धांत और जो बातें मैंने आपको बताई हैं, वे महत्वपूर्ण हैं; ये मेरे अपने व्यापक अभ्यास और अनुभव का परिणाम हैं और निस्संदेह आपके लिए उपयोगी

होंगी। लेकिन वास्तव में आपके दो ही गुरु हो सकते हैं: पहला जंगल और दूसरा आप स्वयं!

4. वलाइथोथु के स्वामी

आपमें से जो लोग इन कहानियों को पढ़ते हैं और भारत जा चुके हैं, वे जानते होंगे कि तमिल शब्द स्वामी, जो ब्रह्मांड के सर्वोच्च सत्ता के रूप में ईश्वर के प्रति श्रद्धा का भाव व्यक्त करता है, हिंदू धर्म के अनेक देवताओं के लिए प्रयोग किया जाता है और साथ ही किसी पवित्र या धर्मनिष्ठ व्यक्ति का वर्णन करने के लिए भी इस्तेमाल होता है। बोलचाल की भाषा में, यह केवल एक सम्मानित सज्जन के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

वैलाइथोथु उसी भाषा का एक और शब्द है, और इस कहानी के संदर्भ में इसका अर्थ 'केले का बागान' है।

लेकिन 'वलाइथोथु के स्वामी' न तो देवता थे और न ही केले के बागान में रहने वाले मनुष्य। वे नीलगिरी पर्वतमाला की तलहटी में रहने वाले एक बाघ थे, जो ऊटाकामंड से महज बारह मील दूर स्थित केले के विशाल बाग के किनारे से गुजरने वाली सड़क, आग से बचाव के लिए बनाई गई कतारों और जंगल की धारा में घूमते रहते थे।

इस अनुपयुक्त से प्रतीत होने वाले नाम पर उनका दावा लगभग एक दशक पहले शुरू हुई विचित्र और स्पष्ट रूप से असंबंधित परिस्थितियों की एक श्रृंखला के माध्यम से सामने आया।

उस समय एक साधु या फकीर शाम को सड़क पर भटकता हुआ आया और केले के बागान के मालिक की घास-फूस की झोपड़ी में पहुँचकर आश्रय माँगा। उसने बताया कि वह भारत में पैदल यात्रा पर है, जो 'बर्फ की भूमि' हिमालय से शुरू हुई है और प्रायद्वीप के सबसे दक्षिणी छोर पर समाप्त होगी। उसने यह भी कहा कि वह ऊटाकामंड जाने के लिए नीलगिरी पर्वतमाला पर चढ़ने से पहले एक-दो दिन आराम

करेगा।

कंथा नाम का केला उत्पादक अत्यंत सम्मानित और प्रसन्न था। उसने सोचा कि इस संत के आगमन से उसे और उसके बागान को सौभाग्य और भरपूर समृद्धि प्राप्त होगी। उसने फकीर से कम से कम एक सप्ताह रुकने का सुझाव दिया, ताकि आगे आने वाली खड़ी घाट की चढ़ाई शुरू करने से पहले वह अपने थके हुए शरीर को आराम दे सके। उसने अपने आगंतुक को स्वादिष्ट केलों से भरी एक बड़ी थाली भेंट की, जिस पर गाढ़ी ताजी मलाई लगी थी और खूब सारी चीनी छिड़की हुई थी।

घुमंतू साधु को फल और मलाई इतनी पसंद आई कि वे न केवल एक सप्ताह के लिए, बल्कि उसके बाद भी कई सप्ताहों तक वहीं रुके रहे। संक्षेप में, वे वहीं स्थायी निवासी बन गए और केले के किसान से वादा किया कि अगर उनके लिए एक सुंदर झोपड़ी बनाई जाए और केले, मलाई और चीनी उनके दैनिक भोजन का नियमित हिस्सा हों, जो हर सुबह ताज़ा परोसे जाएं, तो वे अपना आशीर्वाद और भरपूर फसल देंगे। किसान ने बदले की कार्रवाई के डर से सहमति दे दी, और साधु अपनी नई घास की झोपड़ी में आराम, ध्यान और ताज़े फल और मलाई के सुखमय जीवन में रम गए।

बागान में काम कर रहे कुछ इरिला कबीले के लोगों को यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि नव-आगंतुक साधु एक विचित्र व्यक्ति थे। शाम का भोजन पकाने और खाने के बाद, वे जल्दी ही अपनी झोपड़ी में चले जाते थे, और उनके निवास की दीवारों को बनाने वाले बांसों के बीच से दिखाई देने वाली तेल के दीपक की हल्की टिमटिमाती लौ देर रात तक, और कभी-कभी पूरी रात जलती रहती थी।

एक बार जब उस साधु को अंदर जाते हुए देखा गया, तो एक जिज्ञासु व्यक्ति ने दीवारों तक रेंगते हुए जाकर एक छेद से अंदर झाँकने की कोशिश की कि अंदर क्या चल रहा है। लेकिन कुटिया खाली थी!

इसके बाद जासूस ने यह मानकर कि फकीर चुपके से फिर बाहर चला गया होगा, और उसे लौटते ही रंगे हाथों पकड़ने की उम्मीद में, जल्दी से केले के पौधों की घनी झाड़ियों के बीच छिप गया, और सुरक्षित दूरी पर जमीन पर बैठकर फकीर के आने का इंतजार करने लगा ताकि वह देख सके कि वह क्या देख सकता है।

कुछ मिनट बीत गए, तभी साधु की कुटिया के ठीक आगे जंगल में एक बाघ ने ज़ोर

से दहाड़ मारी। पहरेदार भयभीत होकर उठ बैठा और जल्दी से अपने कमरे की ओर भागने लगा। लेकिन डर के मारे वह मुड़ा, उसे उम्मीद थी कि बाघ उसका पीछा करते हुए केले के बागानों और जंगल को अलग करने वाले छोटे से खुले मैदान को पार कर रहा होगा, लेकिन उसे घोर आश्चर्य हुआ जब उसने साधु को उसी दिशा से निडरता से आगे बढ़ते देखा जहाँ से बाघ दहाड़ रहा था।

ठंडे मैदानों में जल्दी से लौटकर जासूस ने अपनी कहानी सुनाई। इरिला जनजाति ने सोचा, यह कैसा आदमी है जो रात ढलने पर बाघों के साथ घूमता है? इसके बाद उन्होंने देखा कि रात में साधु की कुटिया के आसपास और पूरे बागान में बाघ अक्सर दहाड़ता था। उसकी आवाज से स्पष्ट था कि वह नर बाघ था। आसपास के जंगल में अन्य बाघ भी बहुतायत में थे, नर और मादा दोनों, और उनकी आवाजें भी कभी-कभी, आमतौर पर दूर से सुनाई देती थीं।

लेकिन यह जानवर स्पष्ट रूप से इस क्षेत्र में नया था और ऐसा प्रतीत होता था कि उसने केले के बागान की सीमा से कुछ ही दूर जंगल में अपना ठिकाना बना लिया था। सुबह अक्सर उसके ताज़े पदचिह्न मिलते थे। वे हर जगह थे: ऊटाकामंड से नीचे आने वाली सड़क पर और उसके किनारे, नदी के किनारों पर, बागान के चारों ओर फैले लगभग आयताकार खुले मैदान में, जो इसे जंगल से अलग करता था, यहाँ तक कि केले के पेड़ों के बीच नम मिट्टी में भी, और अक्सर फकीर की झोपड़ी के आसपास भी।

बाघ लगभग हर रात, विशेषकर अमावस्या के अवसर पर, दहाड़ता था और लोग अंधेरा होने के बाद घर से बाहर निकलने से डरते थे। लेकिन बाघ की निकट और निरंतर उपस्थिति के तमाम सबूतों के बावजूद, दिन के समय किसी ने भी उसे कभी नहीं देखा था।

उस समय जंगल मजदूरों से भरा हुआ था; कुछ बांस काट रहे थे, कुछ इमली के पके फल इकट्ठा कर रहे थे और कुछ सड़क मरम्मत का काम कर रहे थे। मजदूरों के अलावा, कई इरिला चरवाहे भी थे जो पूरे इलाके में फैले अलग-अलग पशु बाड़ों में रहते थे। ये चरवाहे ऊटाकामुंड के अमीर बडागा जमींदारों के मवेशियों और भैंसों के बड़े झुंडों को चराने का काम करते थे। इन जमींदारों ने चराई के लाइसेंस खरीद रखे थे

और अपने झुंडों को आसान और किफायती चारे के लिए जंगल में भेज देते थे। ये मजदूर दिन भर जानवरों के साथ रहते थे और उन्हें नीलगिरी की तलहटी में फैली हरी-भरी घासों में चराते थे। चारों ओर उन्हें उस अकेले नर बाघ के विशाल, तश्तरी जैसे पदचिह्न दिखाई देते थे जो लगभग हर रात जोर-जोर से दहाड़ता था, और वे हर पल अपने झुंडों पर होने वाले हमले के डर में जीते थे, जो उन्हें पता था कि निकट भविष्य में कभी भी हो सकता है।

लेकिन हमला नहीं हुआ। कम से कम दिन के उजाले में तो बिल्कुल नहीं, जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी, जब मवेशी जंगल में होते हैं। क्योंकि उस समय वे सबसे ज़्यादा असुरक्षित होते हैं, झाड़ियों, घास, पेड़ों और बांसों के घने जंगल में बिखरे हुए। इसके बजाय, बाघ ने उन्हें मारने का कठिन रास्ता चुना। उसने ऐसा रात में किया, जब वे अपने बाड़ों में सुरक्षित माने जाते थे।

इन बाड़ों की दीवारें जमीन में गाड़े गए लकड़ी के खंभों की एक घनी पंक्ति से बनी थीं, जो लगभग पांच फीट की ऊंचाई तक जमीन के ऊपर खड़ी थीं, और बाहर की तरफ जंगल से काटे गए कांटों के बंडलों से मजबूत की गई थीं।

एक सुबह इरिला जनजाति के बूदिया ने देखा कि उसकी देखरेख में रखी गायों के झुंड में से एक अच्छी, मोटी और दूध देने वाली गाय गायब है। लकड़ी की बाड़ तो बिल्कुल सही-सलामत थी, लेकिन उसके आसपास की नरम ज़मीन पर अकेले नर बाघ के बड़े-बड़े पदचिह्न थे। इन पदचिह्नों से पता चलता है कि बाघ बाड़े के चारों ओर घूमा था, जानबूझकर ऐसी जगह चुनी थी जहाँ बाड़ा कुछ इंच नीचे था, फिर उस पर से कूदकर गाय को मार डाला और उसी जगह से वापस कूद गया, अपने शिकार को साथ लेकर। इन अनुमानों के पुख्ता सबूत बाड़े के अंदर उस जगह पर मिले जहाँ बाघ ने गाय को मारा था: उसके खुरों के निशान ज़मीन पर थे और ज़मीन पर खून था जो उसके गले से रिस रहा था। साथ ही, बाड़े का ऊपरी हिस्सा बाहर की ओर टूट गया था, क्योंकि जब बाघ अपने बोझ के साथ कूदा तो मरी हुई गाय का शरीर खंभों से टकरा गया, जिससे उसे उसे छुड़ाने और अपने साथ लाने के लिए ज़ोर लगाना पड़ा। बाहर धरती पर बने गहरे निशान इस बात का संकेत दे रहे थे कि बाघ और उसका शिकार अंततः कहाँ उतरे थे।

बूदिया ने जो कुछ हुआ था, उसके बारे में अन्य चरवाहों को बताने में जरा भी समय नहीं गंवाया, और वह दिन सभी चरवाहों के लिए व्यस्त रहा, जिन्होंने अपने-अपने चरागाहों के चारों ओर बाड़ की ऊंचाई बढ़ाने के लिए दिन के उजाले के सभी उपलब्ध घंटों का उपयोग किया।

यह एक बड़ा काम था, क्योंकि हर बाड़े की देखभाल के लिए दो या तीन इरिला ही होते थे। इनमें से एक को मवेशियों को चराना पड़ता था, जबकि दूसरा आदमी - और शायद उसकी मदद के लिए एक और - नए खंभों को सही आकार में काटते, उन्हें बाड़े तक ले जाते और मौजूदा कतार के भीतर ज़मीन में गाड़ देते। बहुत कहा-सुनी और बहस होती थी, क्योंकि हर कोई मवेशियों को चराने का आसान काम पसंद करता था।

जब तक इलाके के सभी बाड़ों में नई, ऊंची और मजबूत बाड़ लगाई गई, तब तक वहां रहने के लिए आ चुके उस अवांछित बाघ ने विभिन्न झुंडों से चार और मवेशियों को चुरा लिया था। उसने सभी को रात में उसी तरह चुराया जैसे पहले वाले को चुराया था। भैंसों को उसने हाथ नहीं लगाया, जाहिर है क्योंकि वे लकड़ी की बाड़ के ऊपर से उठाने के लिए बहुत भारी थीं।

इन घटनाओं से इरिला समुदाय में आक्रोश फैल गया, क्योंकि उनमें से सबसे बुजुर्ग व्यक्ति की स्मृति में भी किसी बाघ ने कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया था। पीढ़ियों से जंगल में रहने के कारण वे इस मांसाहारी जानवर के हर तौर-तरीके से भली-भांति परिचित थे। हर साल हमलावर बाघ और तेंदु उनके झुंडों में से जानवरों को मार गिराते थे, और कभी-कभार ही कोई आदमखोर बाघ दिखाई देता था। तब तक दहशत उनका निरंतर साथी बनी रहती थी, जब तक कि किसी न किसी तरह उस आदमखोर बाघ का शासन समाप्त नहीं हो जाता था। लेकिन जिन बाघों ने उनके मवेशियों को मारा था, वे सभी दिन के उजाले में हमला करते थे, जब झुंड चरने के लिए बाहर ले जाए जाते थे। कभी-कभार दिखने वाले आदमखोर बाघ सुनसान रास्तों पर या जंगल के फल इकट्ठा करते समय अपने शिकार पर टूट पड़ते थे, लेकिन ये हमले हमेशा दिन के उजाले में ही होते थे।

लेकिन यहाँ एक बाघ था जो जाहिरा तौर पर केवल अंधेरे में ही चलता था। रात के हर समय उसकी आवाज़ सुनाई देती थी और हर सुबह उसके पदचिह्न दिखाई देते थे,

लेकिन उसे किसी ने कभी देखा नहीं था। रात में बाड़ के ऊपर से उठाए गए पाँच मवेशियों ने उसके अस्तित्व को पूरी तरह से साबित कर दिया।

अन्य बाघों की तरह उसने दिन के उजाले में हमले क्यों नहीं किए? और इसी के साथ एक भयानक विचार मन में आया; अगर यह बाघ कभी आदमखोर बन गया, तो उनकी जान सचमुच खतरे में पड़ जाएगी। उसके हमले और शिकार को मारने का तरीका यह साबित करता है कि वह एक बेहद चालाक और निडर जानवर था।

जब ये सब चल रहा था, तब तरह-तरह की बातें चल रही थीं। ज़ाहिर है, वे सब फुसफुसाकर ही बातें कर रहे थे और हर तरफ़ बार-बार देख रहे थे ताकि कोई सुन न ले। क्या वह अजीब साधु उस धूर्त बाघ के साथ दोस्ताना संबंध रखता था? क्या यह संभव था कि उसी ने चुपके से उस जानवर से मुलाक़ात की हो और उसे वह चालाकी सिखाई हो जिसके कारण वह झुंडों पर इस तरह से हमला करता था?

कुछ ही समय में, मैसूर राज्य की सीमा तक, जो पंद्रह मील से अधिक दूर है, उस क्षेत्र के सभी मवेशी बाड़ों की बाड़ को औसतन दस फीट या उससे अधिक ऊँचाई तक खड़ा कर दिया गया था, और चरवाहे बेसब्री से यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि अकेला बाघ अब उसके सामने आने वाली समस्या से निपटने के लिए क्या करेगा।

फिर कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने इरिला समुदाय के अंधविश्वासी लोगों के मन में और भी अधिक भय पैदा कर दिया। उसी समय एक जंगली नर हाथी ने केले के बाग में दो-तीन बार घुसपैठ की और चारों ओर तबाही मचा दी। हालांकि हाथियों का शिकार करना सख्त मना है, फिर भी केले के मालिक कंथा ने अपने बाग की रक्षा करने का कम से कम एक प्रयास करने का फैसला किया। उन्होंने हाथी के अगली बार हमला करने पर अपनी पुरानी बंदूक से कुछ गोलियां चलाईं। उस समय चांदनी होने के कारण, वह हाथी को देख सकेंगे और सुरक्षित दूरी से गोली चलाकर उसे अपने केलों से दूर भगा सकेंगे, और संभवतः उसे दोबारा आने से रोक सकेंगे।

तदनुसार, कंथा ने बागान के उस दूर कोने में अपने पेड़ों के बीच खुद को छिपा लिया, जहां हाथी हमला कर रहा था, और उस भारी भरकम लुटेरे के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

लेकिन उस रात कोई हाथी नहीं आया। इसके बजाय, पास ही में एक अकेला बाघ

दहाड़ा, और फिर दोबारा दहाड़ा। थोड़ी देर बाद, चाँद की तेज़ रोशनी में, कंथा की नज़र जंगल से उसकी ज़मीन की सीमा को अलग करने वाले खुले मैदान में एक हल्की सी हलचल पर पड़ी। उसने गौर से देखा; और वहाँ, सचमुच, घनी झाड़ियों से एक बाघ चुपके से निकलता हुआ दिखाई दिया।

कांथा ने फिर से देखा। इसमें कोई संदेह नहीं था। उसके सामने बाघ की रेंगती हुई आकृति थी - वही बाघ जिसने अभी-अभी दहाड़ा था - वही अकेला नर बाघ जो सारी गड़बड़ी कर रहा था और जिसे अब तक उसके सिवा किसी ने नहीं देखा था। इरिलाओं की नज़रों में अपनी प्रतिष्ठा को आसमान तक पहुँचाने का कितना सुनहरा अवसर उसके हाथ में था!

थूथन से चलने वाली बंदूक से गोली चलाने के लिए दूरी काफी अधिक थी। काश उसके पास राइफल होती। फिर भी, चांदनी रात में यथासंभव सटीक निशाना साधते हुए और लक्ष्य की हलचल को ध्यान में रखते हुए, बागान के मालिक ने गोली चलाई, इस उम्मीद में कि यही वह गोली होगी जो उसे नायक बना देगी।

उस घटना के दूरगामी परिणाम तो हुए, लेकिन इससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी या घटी, यह एक विवादास्पद मुद्दा है।

उस रात उसके पुराने हथियार से निकले सीसे के कुछ अनियमित टुकड़े निशाने पर ज़रूर लगे, क्योंकि बाघ ने ज़ोरदार दहाड़ मारी, जिसके बाद एक भयानक चीख सुनाई दी, जिसे बाद में उस सदमे में डूबे व्यक्ति ने डरावनी बताया, और वह एक छलांग लगाकर गायब हो गया। कहने की ज़रूरत नहीं, बिना देर किए, कंथा जल्दी से अपनी झोपड़ी में गया और दरवाज़ा कसकर बंद कर लिया। अगली सुबह, जब झोपड़ी के मालिक का लगभग सत्रह वर्षीय बेटा साधु को केले और मलाई का रोज़ाना का प्रसाद लेकर आया, तो वह झोपड़ी का दरवाज़ा अंदर से बंद देखकर हैरान रह गया। दहलीज पर और उसके रास्ते में जंग लगे भूरे रंग की बूँदें थीं। वे ज़मीन में समा गई थीं, लेकिन लड़के को उन्हें खून के रूप में पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई!

झिझकते हुए उसने बूढ़े साधु को पुकारा। पहले तो कोई जवाब नहीं आया। फिर एक धीमी सी आवाज़ ने उसे चले जाने को कहा। लड़के ने जवाब दिया कि वह फल और मलाई लाया है, और फकीर ने कहा कि वह बीमार है और उस दिन कुछ भी खाना

नहीं चाहता।

जिज्ञासावश, उस लड़के ने पूछा कि क्या वह किसी प्रकार की सहायता कर सकता है, उसने बताया कि उसने दरवाजे पर खून देखा है और यह भी पूछा कि क्या साधु को चोट लगी है। इसके जवाब में उसे केवल क्रोध भरे शब्द ही मिले, 'निकल जाओ! निकल जाओ!'

अपने नेक इरादे से किए गए प्रस्ताव पर मिली इस अजीबोगरीब ठंडी और कृतघ्न प्रतिक्रिया पर आश्चर्यचकित होकर, लड़का अपने माता-पिता को बताने के लिए जल्दी से वापस चला गया।

पिछली रात बाघ पर गोली चलाने के अंजाम से भयभीत होकर, कंथा ने अपनी पत्नी के अलावा किसी को भी घटना के बारे में नहीं बताया था। अब अपने बेटे की बातों ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया, और वह भी बहुत गहराई से!

आधे घंटे तक समस्या पर गहन चिंतन करने के बाद, उसने एक चतुर योजना बनाई जिससे उसे यह पता चल सके कि उसके मन में पनप रहे गंभीर संदेह का कोई आधार है या नहीं। वह जल्दी से फकीर की झोपड़ी की ओर बढ़ा और नंगे पैर चुपचाप प्रवेश द्वार के पास पहुँचा। उसने धीरे से उसे धक्का दिया और ऐसा करते समय उसने जमीन पर खून की सूखी बूंदों को देखा।

दरवाजा अंदर से मजबूती से बंद कर दिया गया था।

दाहिनी ओर कुछ कदम बढ़ाते हुए, वह घुटनों के बल बैठ गया और अपनी एक आंख को बांसों के बीच बने एक पर्याप्त चौड़े छेद के पास ले गया, जिससे वह अंधेरी झोपड़ी के अंदर देख सके।

तभी उसके बाईं ओर से हल्की सी आवाज़ आई, जिससे उसने ऊपर देखा। झोपड़ी का दरवाज़ा खुल गया था। भयानक गुस्से से भरे चेहरे के साथ, वह रहस्यमय साधु उस पर नीचे घूरता खड़ा था। उसकी बाईं बांह, बाइसेप्स के पास से, कपड़े से कसकर बंधी हुई थी, और एक जगह से सूखा हुआ जंग लगा भूरा धब्बा रिस रहा था।

कंथा अपराधबोध से भर कर खड़ा हुआ और हकलाते हुए बोला, 'मैंने अपने पुत्र से सुना कि आप बीमार हैं, हे परम पूज्य, और मैं यह देखने आया हूँ कि क्या मैं आपकी

कोई सहायता कर सकता हूँ।'

“क्या अब समझ में आया कि तुम झोपड़ी में क्यों झाँक रहे थे, ऐ झूठे, जो ठीक से झूठ भी नहीं बोल सकते?” फकीर गरजते हुए बोला। फिर, “चले जाओ, इससे पहले कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो जाए,” फुफकारते हुए उसने हैरान कंथा के चेहरे पर दरवाजा पटक दिया।

केले की खेती करने वाला किसान जल्दी से उठ खड़ा हुआ और तेजी से पैर पटका, उसके मन में काले जादू और साधु के भयानक प्रतिशोध के विचार कौंध गए।

लगभग एक सप्ताह बाद, उस अकेले बाघ ने एक बाड़े से अपनी अगली गाय को शिकार बना लिया। जैसा कि मैंने बताया है, बाड़ को इतना ऊंचा कर दिया गया था कि अब किसी भी बाघ के लिए बाड़ों में कूदना असंभव था, और शिकार के भार से लदे हुए वापस जंगल में कूदना तो और भी असंभव था।

तो उस विचित्र बाघ ने अगला स्वाभाविक कदम उठाया। उसने अपने शक्तिशाली पंजों से कुछ खंभों को हटाकर खंभों के बीच से अपना रास्ता बनाया। लेकिन इस बार वह अपने शिकार को मारने के बाद वापस नहीं ला सका। बाघ ने ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन शव खंभों के बीच फंस गया और उसे उसे वहीं छोड़ना पड़ा।

इसके बाद बाघ और भी निडर हो गया, जबकि उस क्षेत्र में रहने वाले इरिला लोग और भी डरपोक हो गए। इस समय, ऐसा प्रतीत होता है कि जिन मनुष्यों से उसका संपर्क हुआ, उनके प्रति पूर्णतः अनादर दिखाते हुए और उनमें पैदा हुए भय को पहचानते हुए, बाघ ने अपनी रणनीति बदल दी। पहले की तरह केवल रात होने पर ही सक्रिय रहने के बजाय, अब उसे अक्सर दिन के उजाले में भी देखा जाने लगा, वह नदी के किनारे या बागान के पास से गुजरने वाली आग की कतार के किनारे-किनारे चलता रहता था। लगातार अधिक विद्रोही होते हुए, उसने इरिला लोगों द्वारा जंगल में चराने के लिए ले जाए गए मवेशियों के झुंडों पर हमला करना शुरू कर दिया।

इस जानवर के दुराचार के अगले दो चरण अपरिहार्य थे। आम तौर पर, चरवाहे, जो अकेले बाघ के अस्तित्व को वलाइथोथु में रहने वाले स्वामी के अस्तित्व से घनिष्ठ रूप से जोड़ते थे, उस बागान से बहुत दूर रहते थे और न ही हमले के दौरान अपने किसी भी घायल झुंड की सहायता करने का प्रयास करते थे।

लेकिन हर नियम का कोई न कोई अपवाद ज़रूर होता है। एक दिन, चरागाह में चर रहे एक लड़के के सामने ही बाघ ने भैंस पर झपट्टा मारा। भैंस ने अपने हमलावर को हटाने की कोशिश में छटपटाना शुरू कर दिया, जबकि दूसरी भैंसें, जैसा कि अक्सर भैंसें करती हैं, घबराकर इधर-उधर जमा हो गईं और अपने घायल साथी की मदद करने लगीं।

अपने साथियों के प्रयासों से प्रेरित होकर, चरवाहा लड़का अपनी लाठी लेकर उनके बीच दौड़ा और सीधे बाघ के चेहरे पर वार किया। एक गुर्राहट के साथ, बाघ भैंस को छोड़कर लड़के पर झपटा, जो अपने हमलावर के ऊपर गिर पड़ा।

सौभाग्य से, इससे बाकी भैंसों को वह मौका मिल गया जिसका वे इंतजार कर रही थीं, और घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी की तरह उन्होंने बाघ पर हमला कर दिया, जो अब पूरी तरह से खुला हुआ था और उनके शक्तिशाली सींगों की मारक क्षमता के दायरे में था। बाघ लड़ने के लिए नहीं रुका। वह भाग निकला, और भैंसों की पूरी कतार उसके पीछे दौड़ पड़ी। अपने इस कृत्य से उन्होंने चरवाहे की जान अस्थायी रूप से बचा ली, हालांकि, उसे कुचलकर उन्होंने बाघ के दांतों और पंजों से पहले से ही लगी चोटों में अपनी ओर से भी कुछ और घाव कर दिए।

उस रात वह बदनसीब लड़का जंगल में अकेला पड़ा रहा, उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था, लेकिन उसकी भैंसें बाघ के वापस आने से बचाने के लिए उसके चारों ओर पहरा देती रहीं। अगली सुबह आस-पास के कुछ चरवाहों ने मिलकर उसकी तलाश शुरू की। आखिरकार उन्हें लड़का मिल गया, लेकिन उसकी कई चोटों और घंटों तक खुले में रहने का असर उस पर भारी पड़ चुका था। ऊटाकामंड के अस्पताल तक उसे ले जाने के लिए कोई वाहन मिलने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

अगली त्रासदी से पहले अपेक्षाकृत लंबे समय तक शांति छाई रही। विभिन्न विद्वानों पर हमलों में कुछ समय के लिए विराम आ गया था; वास्तव में, कई लोगों का मानना था कि बाघ अपनी मर्जी से जंगल के किसी अन्य हिस्से में चला गया था।

लेकिन एक सुबह एक इरिला ने देखा कि जिस रास्ते पर वह चल रहा था, उसके किनारे उगी घास के एक बड़े गुच्छे के पीछे से एक मोरनी अचानक हवा में उछली और ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गई। उसके मन में तुरंत यह विचार आया कि

शायद वहाँ कोई घोंसला हो और कुछ अंडे या खाने के लिए कुछ मोर के बच्चे हों, और इरिला तेज़ी से उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ से मोरनी गई थी।

लेकिन जिस वजह से पक्षी भयभीत हुआ था, उसका कारण अकेला बाघ था, और वह और इरिला घास के गुच्छे के ठीक परे आमने-सामने मिले।

बाघ के लिए यह एक बेहद परेशान करने वाला आश्चर्य था, खासकर इरिला के लिए, जो धरती पर अकेला बचा था। बिना किसी स्पष्ट कारण के, बाघ ने उस पर हमला किया और उसे मार डाला। फिर, शायद बाद में सोचे-समझे या महज़ जिज्ञासावश, उसने उस आदमी के सीने का एक छोटा सा हिस्सा खाया और उसकी जांघ को कुतर दिया। बाघ को मांस का स्वाद अच्छा लगा और इस तरह उस दिन एक और आदमखोर अस्तित्व में आ गया। अकेले बाघ की बढ़ती हुई हिम्मत के साथ जो चिंता धीरे-धीरे बढ़ रही थी, वह अब दहशत में बदल गई। डर के मारे लोग तरह-तरह की बातें करने लगे और यह धारणा फैल गई कि वलैथोथु में रहने वाला स्वामी इस घटना और खुद बाघ से जुड़ा हुआ है।

बाद वाले पहलू के बारे में अलग-अलग मत थे। कई लोगों का मानना था कि फकीर और आदमखोर बाघ में परिवर्तित हुए अकेले बाघ के बीच घनिष्ठ संबंध थे। वहीं कुछ अन्य लोगों का मानना था कि मनुष्य और जानवर एक ही थे; साधु जब चाहे बाघ का रूप धारण कर सकता था। ऐसा स्पष्टीकरण उन सभी रहस्यमय घटनाओं की व्याख्या करता प्रतीत होता था जो घटित हुई थीं; साधु के आगमन के साथ ही बाघ का आना; कंठा द्वारा जानवर को घायल करना और फकीर की कुटिया के सामने खून की बूँदें गिरना, तथा उस व्यक्ति का खून से सना हुआ, पट्टी बंधा हुआ हाथ; फकीर की कुटिया के आसपास बाघ की बार-बार आवाज और पदचिह्न; पहले उसके द्वारा चरागाहों से मवेशियों को चुराने के चतुर और असामान्य तरीके और अब इरिला को मारकर उसका कुछ हिस्सा खा जाना।

संयोगवश, क्या यह महज एक संयोग था कि इरिला, जिसका यह भयावह और स्पष्ट रूप से अप्रत्याशित अंत हुआ, वही व्यक्ति थी जिसने सबसे पहले फकीर से पूछताछ की थी और उसे बाघ से जोड़ने वाली अफवाहें फैलाई थीं? निश्चित रूप से, साधु ने अपना बदला ले लिया था।

कुछ दिनों बाद इनला जनजाति के लोग हिम्मत जुटाकर स्वामी के पास एक प्रतिनिधिमंडल के साथ गए, जिसका नेतृत्व केले के बागान के मालिक कंथा ने किया। उन्होंने स्वामी के चरणों में प्रणाम किया, क्षमा मांगी और उनसे अपने साथी बाघ से उनकी जान बख्शने की विनती करने को कहा; या यदि वे स्वयं बाघ हों, तो उन्हें और न मारने की विनती की। इरिला जनजाति ने सुझाव दिया कि यदि मनुष्य वास्तव में उनके भोजन का आवश्यक हिस्सा हैं, तो घाट मार्ग से एक-दो मील ऊपर बडागा बस्तियाँ या उत्तर में मात्र दस मील दूर, मैसूर राज्य की सीमा के पास करुंबा बस्तियाँ उनकी भूख मिटाने के लिए पर्याप्त हैं।

स्वामी ने प्रतिनिधिमंडल की बात धैर्यपूर्वक सुनी, कुछ देर सोचा और फिर कहा कि यदि इरिला जनजाति उन्हें चावल, घी, सब्जियों और पहले की तरह केले, मलाई और चीनी के निर्धारित हिस्से के अलावा हर महीने सौ रुपये का मामूली वजीफा देने को तैयार हो जाए, तो वे इरिला जनजाति के बजाय बडागा या करुम्बा जनजाति, या दोनों के यहाँ जाने पर विचार करेंगे।

बात पक्की हो गई, वे मान गए। क्या उन्होंने यह नहीं कहा था कि वे अपना ध्यान कहीं और लगाने पर विचार करेंगे? बेशक स्वामी जी स्वयं ही शेर थे! लेकिन सौ रुपये, घी, चावल और सब्ज़ियाँ कहाँ से और कैसे जुटाएँगे? वे आपस में कानाफूसी करने लगे, फिर पचास रुपये में सौदेबाजी करने की कोशिश की। स्वामी जी अड़े रहे। वे चुपचाप निकल गए; सौ रुपये बहुत बड़ी कीमत थी।

चार दिन बाद बाघ ने एक और इरिला को पकड़ लिया। उसे उसकी झोपड़ी से एक फर्लांग की दूरी पर दोपहर के समय अगवा कर लिया गया। इसके अलावा, महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों में से एक था।

मैं मानता हूँ कि इस कहानी की भूमिका लंबी हो गई है; लेकिन मैं भारतीय जंगलों में रहने वाले आदिवासियों के सरल, अंधविश्वासी मन की एक स्पष्ट तस्वीर पेश करना चाहता था, और मुझे लगा कि ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका पूरी कहानी को उसी रूप में बताना है, जैसे कि मुझे नदी के किनारे अलाव के पास, वैलाइथोथु उपवन से एक मील नीचे, अलाव के पास सुनाई गई थी।

मेरे सूचनादाता बूरा नाम के एक छोटे कद के, सफ़ेद बालों वाले बूढ़े इरिला थे, जिन्होंने पहले भी शिकार के दौरान मेरी मदद की थी। आदिवासी आमतौर पर अजनबियों से बहुत कम बात करते हैं और उनसे घुलने-मिलने का हुनर सीखना पड़ता है, तभी वे अपनी स्वाभाविक झिझक छोड़कर खुलकर बातचीत शुरू करते हैं। यह हुनर मुख्य रूप से उस जंगली व्यक्ति को पूरी तरह सहज महसूस कराने में निहित है, इतना स्वाभाविक व्यवहार करना कि उसे लगे कि आप उसके साथ बिल्कुल सहज हैं। फिर वह भी सहज हो जाता है, और अगर आप अच्छे वक्ता हैं, तो आप उसे जंगल, उसके जानवरों, उसके लोगों, आदिवासियों और उनकी आदतों, लोककथाओं और अंधविश्वासों के बारे में कई रोचक बातें बताने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

मुझे जंगल में उस रात की बात अच्छी तरह याद है, जब एक विशाल आम के पेड़ के नीचे बूरा ने अपनी अनोखी कहानी सुनाई थी। हमने जंगली हाथियों द्वारा विशाल बांस के तनों को तोड़ते हुए तेज़ आवाज़ सुनी थी। इस आवाज़ और ज़ाहिर तौर पर आदमखोर हाथी की मौजूदगी के कारण हमने एक बड़ी आग जलाई और उसे जलते रहने दिया। हमने सूर्यास्त से पहले सूखी लकड़ियों का एक बड़ा ढेर इकट्ठा किया था, जिससे आग में और लकड़ी डाली जा रही थी। बहुत ठंड थी - लपटों के बावजूद। हम सब एक-दूसरे से सटकर बैठे थे, बूरा बीच-बीच में आग में लकड़ी डालता जा रहा था, जबकि मैं जलते हुए अंगारों के ढेर पर पड़ी चटकती लकड़ियों को टकटकी लगाए देख रहा था।

ऊटाकामंड में रहने वाले मेरे एक करीबी दोस्त, मार्टिन सैटसेल ने मुझे बाघ के बारे में casually लिखा था और सुझाव दिया था कि मैं पहले उनसे मिलने जाऊं, ऊटी में एक दिन बिताऊं और फिर बारह मील लंबे घाट मार्ग से चलकर केले के बाग तक जाऊं और खुद जाकर हालात का जायजा लूं। मैंने ठीक वैसा ही किया और दोपहर करीब चार बजे केले के बाग पहुंचा। पास में ही रहने वाले बूरा ने मुझे काफी समय बाद देखकर खुशी जाहिर की और हमने छोटी नदी के किनारे लगे एक बड़े जंगली आम के पेड़ के नीचे आग के पास रात बिताने का फैसला किया। आग की लपटों से निकल रही हल्की रोशनी के घेरे से परे घने जंगल के अंधेरे में चुपके से देखते हुए, सांस रोककर और मानो ऊपर किसी के होने से डरते हुए, बूरा ने मुझे पूरी कहानी सुनाई, ठीक वैसे ही जैसे मैंने आपको सुनाई है। फिर, तमिल में बोलते हुए, उन्होंने

अपनी कहानी इस तरह समाप्त की: 'शायद मुझे तुम्हें यह सब नहीं बताना चाहिए था, दोराई।' ऐसा कहा जाता है कि स्वामी-बाघ और उसकी रक्षा करने वाली आत्मा, जैसा कि जंगल में हर आदमखोर की रक्षा करती है, हर जगह कान लगाए रहती है और फुसफुसाहट की सबसे धीमी आवाज़ भी सुन सकती है, यहाँ तक कि मनुष्य के मन की बात भी उसके बोलने से पहले ही पढ़ सकती है। ऐसे में, पवित्र आत्मा सचमुच क्रोधित हो जाएगा और मेरी जान निश्चित रूप से चली जाएगी।

जैसे उसके शब्दों का भयावह जवाब देते हुए, उसी क्षण नदी के उस पार से एक बाघ ज़ोर से दहाड़ा, जो मेरी समझ से मात्र एक फर्लांग की दूरी पर था: 'ऊ-ऑन-घ! आ-ऊंग! आउंग-हा! आउंग-हा! उघ! उघ!' बूरा मेरे बगल में अकड़ गया और फिर एक तंबू के पेड़ की तरह कांपने लगा। उसके गले में शब्द अटक गए और वह लड़खड़ाते हुए बोला, 'दोराई, यह वही है! यह शैतान बाघ है! स्वामी - पवित्र - ने मेरी बातें सुन ली हैं। मैं बर्बाद हो गया!'

मेरी गर्दन के पिछले हिस्से में एक अजीब सी झुनझुनी और चुभन महसूस हो रही थी, वहाँ के छोटे-छोटे बाल सीधे खड़े थे, और मुझे पूरे शरीर पर पसीना आ रहा था। लेकिन बेपरवाही का दिखावा करते हुए मैंने कहा: 'बकवास, बूरा, तुम्हारी बातें सिर्फ़ अंधविश्वास हैं। वह तो बस एक साधारण बाघ था, हाड़-मांस का बना हुआ। हो सकता है वह आदमखोर ही क्यों न हो। लेकिन निश्चित रूप से वह कोई पुनर्जन्म लिया हुआ या रूपांतरित मनुष्य, आत्मा या शैतान नहीं था।'

अनायास ही मैंने अपनी भरी हुई 405 पिस्तौल को अपने घुटनों पर रख दिया और अपनी तीन सेल वाली टॉर्च उठाकर, पुकारों की दिशा में अंधेरे में रोशनी डाली। आग की चमक से फीकी पड़ चुकी रोशनी का वह घेरा उस घोर अंधकार में दयनीय सा लग रहा था।

हम चुपचाप इंतजार करते रहे। कुछ देर बाद, बाघ ने फिर आवाज लगाई। इस बार उसी नदी के किनारे से, जहाँ से हम थे, और हमारे पीछे से। वह उथले पानी को पार करके अर्धवृत्ताकार होकर हमारे पास आया था।

मैंने आग में लकड़ी का एक और टुकड़ा फेंक दिया, यह सोचकर कि क्या हमारा ईंधन सुबह तक चलेगा। हमने पर्याप्त मात्रा में लकड़ी जमा कर रखी थी, लेकिन बाघ की

मौजूदगी के कारण हमें अनुमान से अधिक लकड़ी का इस्तेमाल करना पड़ेगा।

उस दूसरी दहाड़ के बाद सन्नाटा छा गया। गहरा, लंबा और रहस्यमय। हम बाघ की दोबारा दहाड़ सुनने के लिए तरसे हुए। कम से कम, अगर वह दहाड़ता, तो हमें उसके लगभग ठिकाने का पता चल जाता। इस तरह, बिना किसी आवाज के, वह जानवर एक मील दूर या पास की झाड़ी के पीछे, कुछ ही गज की दूरी पर हो सकता था।

रात के समय हर जंगल में सुनाई देने वाली दबी-दबी सरसराहट, हमारी आग की मंद लपटों से निकलने वाली रोशनी के घेरे से परे से हम तक पहुँची, और हमने कल्पना की कि कोई भयानक आदमखोर हमारा पीछा कर रहा है, धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है, इंच-इंच करके करीब आ रहा है, जब तक कि वह हम पर हमला करने की दूरी तक न पहुँच जाए। फिर कुछ पल की पीड़ा और उसके बाद विस्मृति!

हम अचानक होने वाले हमले का इंतज़ार कर रहे थे, जो अपेक्षित था। डर से कांपते हुए बूरा लगभग अस्पष्ट बड़बड़ाहट कर रहा था। बीच-बीच में मुझे 'बदला' और 'हममें से कोई भी सूर्योदय देखने के लिए जीवित नहीं रहेगा' जैसे शब्द सुनाई दे रहे थे।

मेरे साथी से सुनी कहानी और उसके तुरंत बाद बाघ की दहाड़ से मेरा तनाव और बढ़ गया, और मैं लगभग इरिला पर चिल्लाने ही वाला था कि वह चुप हो जाए। लेकिन जाहिर है, वह चुप नहीं हुआ और उसकी अस्पष्ट बड़बड़ाहट जारी रही।

नदी के किनारे एक सांभर हिरण ने ज़ोर से दहाड़ लगाई, "व्ही-ओंक! ऊ-ओंक! धंक! धंक!" हर दहाड़ के बीच कुछ सेकंड का अंतराल था। वह स्पष्ट रूप से बहुत उत्तेजित था और उसने या तो बाघ को पास ही देख लिया था या उसकी गंध महसूस कर ली थी।

कुछ मिनटों बाद, एक नर हाथी ने घृणा से भरी चीख के साथ अपने आंसू बहाए: 'ट्र-ई-आ-आंक! ट्र-ई-आ-आ-आंक!', और झुंड के छोटे हाथी सूअर के बच्चों की तरह चीखने लगे, 'क्विंक! क्विंक! क्विंक!', क्योंकि प्रत्येक अपनी माँ के भारी भरकम शरीर के नीचे शरण लेने की कोशिश कर रहा था।

बाघ हमारे चारों ओर चक्कर लगा रहा था। उसे पता था कि कुछ ही गज की दूरी पर कुछ आदमी हैं, लेकिन हमारी गोलियों की रोशनी ने उसे पास आकर जाँच-पड़ताल

करने से रोक दिया।

फिर, जिस दिशा से सांभर ने आखिरी बार पुकारा था, उस दिशा से लगातार एक भयानक चीख सुनाई दी। अपनी पूरी सतर्कता के बावजूद, हिरण पर्याप्त सतर्क नहीं रह पाया था। बाघ उसे मार रहा था!

सांभर की मरणासन्न चीखों के थमने के साथ ही चारों ओर छाए गहरे सन्नाटे में, हाथियों का झुंड, जो अपने बच्चों को बीच में रखकर अचानक हमलावर के हमले से बचाव के लिए एक साथ इकट्ठा था, चुपचाप गायब हो गया। इसके बाद आधी रात तक तनाव का एक भयावह दौर चला, जब उगते चाँद ने नदी के दोनों किनारों पर फैले विशाल वृक्षों के नीचे छाए घने अंधेरे को कुछ हद तक दूर किया।

चाँदी जैसी चाँदनी की बूँदें ज़मीन और आसपास की हरियाली पर पड़ रही थीं, जैसे ऊपर घनी शाखाओं के बीच से छनकर आ रही हों। अब अँधेरा उतना घना नहीं था और हम कम से कम थोड़ा-बहुत देख पा रहे थे। बाघ का भी कोई निशान नहीं था, बूरा और मैं कुछ हद तक शांत हो गए। लेकिन वह अकेले पहरा देने की ज़िम्मेदारी संभालने की हालत में नहीं था, इसलिए मैंने पूरी रात नींद नहीं ली। नदी के पत्थरों पर से बहते पानी की कलकल और बुलबुले उठती आवाज़ मुझे नींद की ओर खींच रही थी, जिससे लड़ने के लिए मैंने बहुत संघर्ष किया।

चांदनी रात में भी हल्की रोशनी के साथ झूठी सुबह हुई, जिससे एक अकेला जंगली मुर्गा भ्रमित हो गया और सोचने लगा कि दिन निकल आया है। 'वाह! कूक-क्या-क्या-कुकम!' उसने एक बार बांग दी और फिर चुप हो गया, मानो अपनी गलती पर शर्मिंदा हो।

फिर असली भोर हुई, जिसकी आहट चारों दिशाओं से सुनाई दे रही थी, और वह भी जोश से उनकी पुकारों में शामिल हो गया। सुबह की पहली किरणें अवर्णनीय रूप से सुंदर थीं। घाटी में मोर 'मी-आओ-इआओ! आइओ-आओ-इआओ!' चिल्ला रहे थे। झाड़ियों में बैठा झगड़ालू छोटा सा चिड़िया पानी के लिए ताना मारते हुए 'कुक-खेरा-वैक! कुक-खेरा-वैक!' चिल्ला रहा था। एक काले-सफेद रंग का दयाल पक्षी पेड़ की चोटी पर बैठा, तने के खोखले भाग में अपने अंडों पर बैठी अपनी साथी को जोर-जोर से और खुशी से पुकार रहा था; और बुलबुल सैकड़ों की संख्या में चहचहाते और पंख

फड़फड़ाते हुए लैंटाना झाड़ियों के खुरदुरे पत्तों के बीच दिखाई देने वाले छोटे काले बेरों के गुच्छों को कुतर रहे थे।

पूर्वी आकाश, जो धीरे-धीरे उजाला हो रहा था, समुद्री हरे रंग में रंग गया। क्षितिज पर मंडराते बादलों द्वारा उगते सूरज की किरणों के परावर्तन और अपवर्तन से यह रंग अनेक रंगों की परतों में घुलमिल गया। बैंगनी रंग के मनमोहक शेड्स गहरे नीले रंग में समाहित हो गए, उसके नीचे सफेद रंग की एक चौड़ी पट्टी ने फिरोजी हरे रंग की एक पट्टी को अलग कर दिया। जंगल के पेड़ों की नुकीली कतार के ठीक ऊपर, जिनमें से कुछ पेड़ जंगल की नम ज़मीन से उठने वाली घूमती हुई धुंध की हल्की परतों में आंशिक रूप से छिपे हुए थे, कैनरी पीले रंग के शेड्स धधकते नारंगी रंग में घुल गए और फिर उग्र रक्त लाल रंग की एक पट्टी में विलीन हो गए।

रंगों का यह खेल क्षणिक रूप से ही चला और जितनी तेज़ी से बना था उतनी ही तेज़ी से लुप्त हो गया, तभी वृक्षों के ऊपर से एक प्रचंड प्रकाश की किरण निकली - सूर्य! एक नए दिन का जन्म हुआ।

मुझे नींद आ रही थी, और मुझे इस बात पर गुस्सा आ रहा था कि मैंने लापरवाही से खुद को ऐसी स्थिति में डाल दिया था जहाँ मैं कुछ नहीं कर सकता था। लेकिन भला किसने सोचा होगा कि ऐसी अजीब कहानी सुनने को मिलेगी? और किसने सोचा होगा कि अकेला बाघ इतनी जल्दी अपनी मौजूदगी का एहसास तो नहीं करा पाएगा, लेकिन इतनी जल्दी करा देगा?

आश्चर्य की बात यह थी कि मुझे बाघ पर गुस्सा नहीं आया; लेकिन निश्चित रूप से मुझे खुद पर और उस साधु पर गुस्सा आया जिसने इन सीधे-सादे वनवासियों को इतना डरा दिया था, और मैंने जल्द से जल्द उसकी कुटिया में जाकर उस साधु का सामना करने का निश्चय किया।

थोड़ी सी चाय बनाकर, जिसे मैंने ऊटाकामंड में मेरे दोस्त सत्सेल द्वारा दिए गए सैंडविच खाते हुए पिया, मैंने बूरा से साफ-साफ कहा कि ऐसी कहानियों पर विश्वास करना उसकी मूर्खता है, और मैं जल्द ही दिखा दूंगा कि वह साधु किस तरह का बदमाश है। इस पर बूरा ने सरल शब्दों में उत्तर दिया: "अब तक, दोराई, हममें से केवल एक ही पवित्र बाघ के हाथों मारे जाने वाला था। वह मैं था। अब, आपके शब्दों

के बाद, दो हैं, दोराई। दूसरा आप हैं!"

इससे मेरा गुस्सा और भी बढ़ गया।

सुबह के ठीक सात बजे थे जब मैं फकीर की घास की झोपड़ी के बंद दरवाजे के सामने खड़ा था, बूरा शर्मिंदा होकर मेरे पीछे खड़ा था, और मैंने जोर से और आक्रामक ढंग से पुकारा: 'खुल जाओ, हे पवित्र बाघ; यानी, अगर तुम रात भर की सैर के बाद अभी भी जाग रहे हो।'

मानो उन्हें मेरे आने की उम्मीद थी, साधु ने दरवाजा खोल दिया और मेरे सामने खड़े हो गए। वे केसरिया रंग के लंगोट वस्त्र में लिपटे हुए थे, उनके शरीर पर केवल एक भारी आमेर मोतियों का हार था, और उनकी लंबी और अंडाकार दाढ़ी और घनी मूंछों ने उनके चेहरे की शोभा बढ़ा दी थी। उनके चेहरे पर बुद्धिमत्ता और दृढ़ संकल्प झलक रहा था।

शांत और मधुर स्वर में फकीर ने उत्तर दिया: "दरअसल, मैं अभी-अभी जागा हूँ, मेरे मित्र। मुझे उम्मीद थी कि वह गोरा आदमी मुझसे मिलने आएगा, क्योंकि उसने उस सियार की कहानी सुनी होगी जो अब तुम्हारे पीछे दुबका हुआ है। मैंने तुम दोनों को कल रात नदी किनारे आग के पास देखा था और तुममें से किसी एक को खाने का मन कर रहा था, लेकिन सांबर की आवाज़ जल्दी नहीं गई, इसलिए मैंने उसे खा लिया।"

सच कहूँ तो, मैं दंग रह गया! वह आदमी ऐसे बोल रहा था मानो उसने पिछली रात के नाटक में कोई भूमिका निभाई हो। मुझे पता था कि कहीं न कहीं कोई चाल ज़रूर है। कोई भी इंसान जानवर बनकर फिर वापस इंसान नहीं बन सकता, हालाँकि मैंने जंगल के आदिवासियों से ऐसी बातें कई बार सुनी थीं; मैंने अफ्रीका की कहानियों में भी ऐसी ही घटनाओं के बारे में पढ़ा था। यहाँ तो मानो सचमुच ऐसा ही हो रहा था।

मैंने सख्त रवैया अपनाने और साधु को सबक सिखाने का फैसला किया।

‘सुनो, हे पाखंडी, बदमाश और झूठे, पवित्र वस्त्र पहने हुए,’ मैंने क्रोधित होकर कहना शुरू किया। ‘तुम्हारी ये बेतुकी कहानियाँ हम भोले-भाले इरिलाओं को डरा सकती हैं, लेकिन मुझ पर इनका कोई असर नहीं होता। तुम नीच स्वभाव के व्यक्ति हो, तुमने

इन विनम्र और ईमानदार लोगों के आतिथ्य का बदला झूठी धमकियों और लालच भरी ब्लैकमेल से चुकाया है। सुन लो, हे धोखेबाज, जिसका खेल अब खुल गया है। कल रात जो बाघ पुकारा था, वह कम से कम एक सज्जन तो था; तुम तो बस एक सूअर हो!'

वह हँसा। "शिकारी इतना क्रोधित क्यों है? क्या इसलिए कि वह जानता है कि वह असहाय है?" फिर उसका मिजाज बदल गया और उसके सुंदर चेहरे पर गुस्से का भाव आ गया। "अपने काम से मतलब रखो, गोरे आदमी, और उन मामलों में दखल मत दो जिनका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है और जिन्हें तुम समझते नहीं हो। क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया, तो तुम्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। मैंने कह दिया है!"

उस बदमाश को तुरंत सबक सिखाने की एक बेकाबू इच्छा मुझ पर हावी हो गई। मुझे समय रहते याद आ गया कि वह एक नेक इंसान माना जाता था और ऐसा करने से मैं निश्चित रूप से मुसीबत में पड़ जाता। इसलिए मैंने कहा, "हे झूठ बोलने वाले, यह मान लो कि मैं दखल दूंगा; और जब तू शेर बन जाए, तो ध्यान रखना कि तू मेरी राइफल की नज़र में न आए। क्योंकि अगर तूने ऐसा किया, तो मैं वादा करता हूँ कि तू सचमुच मरा हुआ शेर होगा।"

'या फिर तुम एक मरे हुए शिकारी,' उसने तुरंत जवाब दिया।

फिर फकीर ने मेरे मुंह पर झोपड़ी का दरवाजा जोर से बंद कर दिया। तब मैं तुरंत मुड़ा और तेजी से वहां से चला गया।

मेरे बगल में खड़ी बूरा ने हताशा भरे स्वर में बाघ के पंजों के कई नए निशानों की ओर इशारा किया। वे उस झोपड़ी से मुश्किल से आधा फर्लांग की दूरी पर थे जिसे मैंने अभी-अभी छोड़ा था।

मैं आगे-आगे उस जंगली आम के पेड़ की ओर चल पड़ा जहाँ हमने पिछली रात बिताई थी, अपना बिस्तर खोला, जिसका मैंने इस्तेमाल नहीं किया था, और कुछ घंटे सोने का फैसला किया। लेकिन वह एक बेचैन, नीरस नींद थी, जो साधु के सिर वाले बाघ के सपनों से व्याकुल थी।

दोपहर के कुछ ही समय बाद मैं जागा, ओटाकामंड से लाई हुई बासी चपातियों के बचे

हुए टुकड़ों के साथ कुछ डिब्बाबंद सार्डिन खाईं, और जब तक चाय के लिए गर्म पानी उबल रहा था, मैं पेड़ से पीठ टिकाकर बैठ गया और स्थिति पर विचार करने लगा।

हालाँकि साधु के बारे में बताई जा रही अजीबोगरीब कहानियों पर मुझे ज़रा भी यकीन नहीं हुआ, फिर भी मुझे मानना पड़ा कि मेरे सामने घटनाओं का एक बेहद विचित्र क्रम था। साधु ने कहा था कि पिछली रात उसने बूरा और मुझे बाघ के रूप में देखा था, और अगर सांभर का हिरण उसके रास्ते में न आता तो वह हम में से किसी एक को मार डालता। और सच में पिछली रात एक सांभर मारा गया था। मैंने खुद हिरण की चीख सुनी थी। उस बूढ़े शैतान को यह सब कैसे पता चला? ज़ाहिर है, वह बाघ का रूप नहीं ले सकता था। कोई भी इंसान ऐसा नहीं कर सकता। इसके केवल तीन ही संभावित स्पष्टीकरण थे। पहला, किसी ने उसे बताया होगा। दूसरा, वह देख-सुन रहा था और उसने खुद देखा-सुना होगा। तीसरा - और यह विचार मेरे मन में आते ही मैंने छोड़ दिया - बाघ ने उसे सूचना दी होगी। यह भी बेतुका था।

किसी ने भी उस साधु को नहीं बताया होगा, क्योंकि आदमखोर बाघ के दहाड़ते हुए पास में होने पर रात के समय जंगल में बाहर निकलने की हिम्मत कोई नहीं करता, जंगली हाथियों की तो बात ही छोड़िए। बूरा ने सुन लिया था; लेकिन बूरा तो पूरी रात मेरे साथ ही था।

अब बस एक ही उपाय बचा था। साधु हमें देख रहा था और उसने सांभर की मरणासन्न चीख सुन ली थी। अगर सच में ऐसा था, तो मुझे मानना पड़ेगा कि वह वाकई बहादुर आदमी था। निहत्थे जंगल में छिपकर, हम पर नज़र रखते हुए, जबकि आदमखोर चारों ओर मंडरा रहा था, वाकई असाधारण साहस की बात थी।

मुझे सही निष्कर्ष पर पहुँचने में ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी। यही एकमात्र तर्कसंगत व्याख्या थी। साधु एक अवसरवादी था, बस इतना ही; हालाँकि वह काफ़ी चतुर और साहसी था। निस्संदेह, जब उसे रिलास से पता चला कि उसके आने के तुरंत बाद एक विशेष रूप से निडर बाघ वहाँ आ गया है, तो उसने बड़ी चतुराई से इन दोनों घटनाओं को जोड़कर ऐसी परिस्थितियाँ और हालात पैदा कर दिए जिससे यह लगे कि वह और बाघ आपस में घनिष्ठ संबंध रखते हैं, जिससे उस क्षेत्र में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई और उसे जीवन भर मुफ्त भोजन और आवास मिलता रहा।

फिर भाग्य ने उसके पक्ष में खेल खेला और ऐसी घटनाएँ घटीं जिनसे उसका उस अकेले नर बाघ से और भी घनिष्ठ संबंध हो गया जो वहाँ रहने आया था। साधु या तो संयोगवश घायल हो गया था जब केले के बाग के मालिक कंथा ने बाघ को घायल कर दिया था, या शायद उसने बाघ को घायल नहीं किया था, या फिर फकीर को किसी तरह बाघ पर चलाई गई गोली की खबर मिल गई थी, और उसने जानबूझकर अपनी बांह पर मामूली चोट पहुँचाई थी, जिससे खून निकल आया और इस कहानी का जन्म हुआ कि वह और बाघ एक हैं, और वह अपनी इच्छा से मनुष्य से पशु और फिर वापस मनुष्य रूप में बदल सकता है। ऐसी प्रतिष्ठा ने जीवन भर भय, सम्मान और एक ऐसा दर्जा सुनिश्चित किया जिस पर कभी कोई सवाल या निंदा नहीं हो सकती थी, साथ ही निश्चित रूप से इस विशिष्टता से मिलने वाले सभी अपरिहार्य भौतिक लाभ भी।

तब बाघ आदमखोर बन गया था। साधु ने इस स्थिति का भी चतुराई से फायदा उठाते हुए इरिलास को शांति से रहने देने के बदले सौ रुपये और कई वस्तुएं वसूलना शुरू कर दिया। उसे इस बात का पूरा अंदाजा था कि अगर बाघ और इरिलास को मार डालेगा, तो वह नकद और वस्तु दोनों रूप में अपनी मांगें बढ़ा सकेगा। वलैथोथु में उसकी आर्थिक स्थिति वाकई उज्ज्वल दिख रही थी!

इन सब बातों से यह समझना आसान था कि मेरे आने से उस साधु के सौभाग्य के चक्र में एक गंभीर बाधा उत्पन्न हो गई थी, जो अब तक उसका साथ दे रहा था और ऐसा लग रहा था कि जब तक आदमखोर आसपास रहेगा, तब तक उसका साथ देता रहेगा। क्योंकि अगर मैं उस आदमखोर को जीवित रहते मार गिराने में सफल हो जाता, तो इरिलाओं का यह विश्वास हमेशा के लिए टूट जाता कि वह और वह मांसाहारी एक ही हैं। इतना ही नहीं, साधु को फिर कभी यहाँ या कहीं और ऐसे अनुकूल हालात मिलने की उम्मीद नहीं रहती। यह उसकी प्रतिष्ठा को गंभीर आघात होता और अंततः उसके धन और पेट दोनों पर असर पड़ता। लोग उसे कुछ भी नहीं देते, न ही उसे भोजन देते। निस्संदेह, केले का किसान उससे डरना छोड़ देता और उसे उस घास-फूस की झोपड़ी से निकाल देता जिसमें वह रह रहा था। और उसे फिर कभी ऐसे स्वादिष्ट केले कहाँ से मिलते, जिन पर ताज़ी मलाई और ढेर सारी चीनी लगी होती?

वास्तव में, हर बात से यही संकेत मिल रहा था कि मुझे किसी न किसी तरह से हर

हाल में रास्ते से हटाना ही होगा। फकीर ने मेरी बातों से उसी सुबह यह जान लिया था कि उसकी धमकियों से मैं डरकर भाग नहीं जाऊँगा। इसलिए मैं उम्मीद कर सकता था कि वह और भी सीधा कदम उठाएगा।

काश, मेरे साथ कुछ हो पाता, तो उसकी प्रतिष्ठा के लिए कितना बड़ा वरदान होता! उसकी प्रतिष्ठा आसमान छू जाती! पूरे जिले के लोग उस भयानक साधु की शक्तियों पर आश्चर्य करते, जो इच्छा से खुद को आदमखोर बाघ में बदल सकता था, और जिसके जादू से एक श्वेत शिकारी का भी खात्मा हो गया था।

मुझे एहसास हुआ कि मेरा सामना दो कट्टर दुश्मनों से था: एक आदमखोर बाघ और एक निर्दयी इंसान, जो किसी भी हद तक जा सकता था। और मैं जानता था कि इन दोनों में से इंसान कहीं ज़्यादा खतरनाक था क्योंकि वह सोच सकता था। वह मेरे कार्यों का तर्क कर सकता था और उनका अनुमान लगा सकता था, और इरिला अनजाने में मेरी गतिविधियों की जानकारी देकर उसकी मदद कर रही थीं। दूसरी ओर, आदमखोर बाघ के पास भरोसा करने के लिए केवल उसकी सहज प्रवृत्ति और जंगल का कौशल था। उसमें तर्क करने की क्षमता नहीं थी।

मैं यह भी जानता था कि धूर्त बाघ और उससे भी अधिक धूर्त साधु को फंसाने के लिए चाहे जो भी योजना बनाई जाए, उसे मुझे अकेले ही गुप्त रूप से बनाना और अंजाम देना होगा। मैं इरिला परिवार के किसी भी सदस्य को अपने विश्वास में नहीं ले सकता था, यहाँ तक कि अपने साथी बूरा को भी नहीं; क्योंकि यद्यपि मैं जानता था कि वे मेरे प्रति वफादार रहेंगे, फकीर के प्रति उनका अंधविश्वास और गाँव-जंगल के सीधे-सादे लोगों की स्वाभाविक ज़ुबान के कारण वे ज़रा सी भी बात पर बकबक कर देंगे और मेरे कारनामों का खुलासा अपने दोस्तों के सामने कर देंगे। दरअसल, फकीर को जल्द ही मेरी योजनाओं का पता चल जाएगा।

कुछ सोचने के बाद, मुझे लगा कि फकीर और उसके संभावित कार्यों की परवाह किए बिना, सबसे पहले आदमखोर बाघ के खिलाफ कार्रवाई शुरू करना ही बेहतर होगा; क्योंकि अगर मैं बाघ को मारने में सफल हो जाता, तो फकीर की प्रतिष्ठा अपने आप ही धूमिल हो जाती। अपनी बनाई हुई चाय खत्म करके, बूरा मेरे पीछे-पीछे आ रहा था, और मैं पास के एक खेत की ओर चल पड़ा ताकि रात को बाघ को फंसाने के

लिए दो भैंसें खरीद सकूँ।

तभी मुझे भगवा वस्त्रधारी पाखंडी के दुष्प्रभाव का वास्तविक अर्थ समझ में आया। निःसंदेह उसने मेरी चाल का पूर्वाभास कर लिया था और इरिला समुदाय के अंधविश्वासों का लाभ उठाकर मुझे रोकने की योजना बना ली थी। क्योंकि चरवाहों ने एक भी जानवर उधार देने, किराए पर देने या बेचने से साफ इनकार कर दिया था।

मैंने उन्हें समझाने की पूरी कोशिश की कि आख़िरकार, आदमखोर को मारने के मेरे प्रयास उनके अपने हित और सुरक्षा के लिए ही थे। जब मैंने इस बारे में बात की, तो उन्होंने सीधे तौर पर कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अस्पष्ट रूप से कहा कि अगर उन्होंने उस बाघ रूप धारण किए हुए इंसान को मारने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति की मदद की, तो उन पर और उनके झुंडों पर तुरंत प्रतिशोध लिया जाएगा।

आगे बहस करना व्यर्थ देखकर, हमने इलाके के तीन और चरवाहों से मुलाकात की, लेकिन हर बार चरवाहों ने मदद करने से इनकार करते हुए वही बहाना दोहराया। आखिरी चरवाहे ने मुझे गुस्से में मुँह फेरते देख अपने साथी को बुलाया और उसे झोपड़ी के अंदर कोई मामूली काम करने का आदेश दिया। जैसे ही वह आदमी नज़र और आवाज़ से ओझल हुआ, वह बूढ़ा तेज़ी से मेरे पास आया और बोला, 'दोराई, अगर तुम्हें सच में ज़िंदा चारा चाहिए, तो सड़क से पाँच मील आगे मासिनीगुडी गाँव जाओ और वहाँ से ले आओ, क्योंकि यहाँ कोई भी तुम्हारी मदद के लिए एक भी जानवर देने की हिम्मत नहीं करेगा, हालाँकि हम ऐसा करना चाहते हैं।'

मुझे उनकी बातों का महत्व समझ आ गया और मैंने बड़े गुस्से में जाने का नाटक किया, ठीक उसी समय उनका साथी लौट आया। मेरे लिए एकमात्र उपाय यही था कि मैं उस बूढ़े व्यक्ति की सलाह मान लूँ, जो उन्होंने मुझे इतनी गुप्त रूप से दी थी। लेकिन उस दिन मासिनीगुड़ी जाकर अंधेरा होने से पहले वापस आना संभव नहीं था। मुझे एक और रात आलस में ही गुजारनी पड़ेगी। बाघ का शिकार करने के लिए मैं बिलकुल गलत समय पर आया था, क्योंकि चाँद सुबह तड़के ही निकलेगा। बिना चारा के अंधेरे में पेड़ पर बैठना व्यर्थ था। इसलिए, जब तक मैं मासिनीगुड़ी से चारा नहीं ला पाता, तब तक पुराने आम के पेड़ के नीचे आग के पास बैठकर रात गुजारने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

इस बार, बूरा और मैंने जल्दी शुरुआत की और शाम तक हमने सूखी शाखाओं और गिरे हुए लट्ठों के रूप में काफी मात्रा में जलाऊ लकड़ी जमा कर ली थी, जिससे हम अपनी कैंप फायर को जलाते रहे और यह सुनिश्चित कर सकें कि सुबह तक आग जलती रहे।

जैसे ही शाम ढलने लगी, हमने आग जला ली, क्योंकि आदमखोर जानवर शायद पहले ही निकल चुका था, और उस धुंधली रोशनी में वह बांस की विशाल पत्तियों, नदी के किनारे लगे ऊंचे मुथी, जुमलम, जंगली आम और इमली के पेड़ों की आड़ में रेंगता हुआ हमारे पास तक आ सकता था। उसके बाद वह झपट्टा मारता, और हम जानते थे कि हम उसे आते हुए नहीं देख सकते थे।

इस बार घोंसले में बैठे पक्षियों की आवाजें मेरे कानों को हमेशा की तरह सुकून नहीं दे पाईं, क्योंकि मैं सुन ही नहीं रहा था। मेरा ध्यान रात के अंधेरे के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करने और इस बात की निराशा में बँटा हुआ था कि साधु ने मुझे धोखा दिया है और मुझे एक और रात बिना किसी जीवित शिकार के आलस्य में बिताने के लिए मजबूर कर दिया है।

‘चक; चक! चक! चक! चक-ऊऊऊऊ!’ अंधेरे में अदृश्य हो चुका नाइटजार पक्षी नदी के दूसरे किनारे से पुकार रहा था, और उसके जैसे कई पक्षी जल्द ही चारों दिशाओं से कर्कश स्वर में उसकी आवाज़ में शामिल हो गए। ऐसा लग रहा था मानो स्कूली बच्चों का एक पूरा समूह जंगल में छोड़ दिया गया हो और वे जानबूझकर कांच के फर्श पर कंचे फेंक रहे हों, हर कंचा चार बार उछलने के बाद फिसलकर रुक जाता हो।

दूर से आती हुई एक रात के बगुले की कर्कश चीख से पक्षियों का मधुर संगीत थम गया, और फिर कुछ ही दूरी से 'चरवाहे' पक्षी की लगभग मानवीय सी आवाज़ सुनाई दी। 'ऊऊऊ! ऊऊऊ! ऊऊऊ!' की आवाज़ निकालते हुए, वह चरवाहों की आवाज़ की हूबहू नकल कर रहा था, जो अपने मवेशियों को आश्रय स्थल की ओर ले जा रहे थे, जबकि सूरज को पश्चिम में नीलगिरी पर्वत की ऊँची चोटियों के पीछे डूबने में अभी काफी समय था।

लगभग आठ बजने वाले थे कि अचानक जंगल में सन्नाटा छा गया। यहाँ तक कि झींगुरों की 'सिज़! सिज़! सिज़!' की गूंज भी थम सी गई। वहाँ कोई आवाज़ नहीं थी।

हर तरफ अगाध सन्नाटा छाया हुआ था। बूरा और मेरे अलावा जंगल में कोई जीवन नहीं था। यह रहस्यमय सन्नाटा एक ऐसी घटना की शुरुआत थी जो मेरे अब तक के अनुभवों में सबसे भयावह और अप्रत्याशित थी। अचानक दक्षिण दिशा में एक नाले के किनारे अंधेरे में बाघ ने तीन बार कराहते हुए कहा, 'ऊ-ओंग ह! ऊ-ऊ ऊ-ऊ ओंग! आ-ऊंग!'

फिर सन्नाटा छा गया, लेकिन मुश्किल से एक मिनट के लिए। फिर हमारे पश्चिम से, उस दिशा में जहाँ ऊटाकामंड से मासिनीगुडी जाने वाली सड़क जाती थी, एक अजीब सी कर्कश आवाज आई, तेज नहीं, लेकिन साफ; 'आआ-हा-हा-हा-हा! आआ-हा-हा-हा-हा! आआ-हा-हा-हा-हा!'

मेरे बगल में बैठा बूरा डर से कांप उठा, और उस भयानक आवाज़ से मेरे सिर में सिहरन दौड़ गई। तभी अचानक सब कुछ बदल गया। मैंने टॉर्च और राइफल उठाई और उछलकर उस अजीब सी आवाज़ की तरफ भागा। अलौकिक बातों का ख्याल मेरे दिमाग से गायब हो गया। मुझे समझ आ गया कि साधु ने अपनी पहचान बताकर बहुत बड़ी गलती कर दी है। नदी के उस पार से जो बाघ आवाज़ लगा रहा था, वह इतनी कम समय में सड़क तक की दूरी कैसे तय कर सकता था?

फकीर मुझे डराने की कोशिश कर रहा था। बाघ की आवाज आते ही उसने जोर-जोर से हंसना शुरू कर दिया, मानो वह मांसाहारी जानवर इंसान का रूप धारण कर चुका हो। उसने अपनी पोल खोल दी थी, और मैं उसे रंगे हाथों पकड़ने का इरादा रखता था।

अपनी टॉर्च की टिमटिमाती रोशनी का पीछा करते हुए, मैं संकरे रास्ते पर दौड़ पड़ा जो जल्द ही सड़क पर जाकर मिल गया। वहाँ पहुँचकर मैं बाईं ओर मुड़ा और केले के बागान और संयोगवश थोड़ी ही दूरी पर स्थित फकीर की झोपड़ी की ओर तेज़ी से बढ़ा, इस उम्मीद में कि बदमाश के वहाँ पहुँचने से पहले ही मैं उसे पकड़ लूँगा।

लेकिन जाहिर है कि फकीर मुझसे कहीं ज्यादा तेज दौड़ सकता था, क्योंकि आखिरकार मैं झोपड़ी तक पहुँच गया, जो घोर अंधेरे में डूबी हुई थी, और मुझे उसका एक भी अता-पता नहीं चला। मैंने बंद दरवाजे को खोलने की कोशिश की। दरवाजा खुल नहीं पाया और मैंने घनी बुनी हुई बांस की सतह पर हथेली से जोर से मारा।

कुछ देर की झुंझलाहट के बाद, मैंने बांस की दरारों से अंदर जलते दीपक की हल्की

रोशनी देखी। रोशनी पास आई और रुक गई, और कुछ पल ऐसे बीते, शायद दरवाजे की कुंडी खोली जा रही थी। फिर दरवाजा खुल गया, और मेरे सामने एक साधु खड़ा था। इस बार उसने केसरिया वस्त्र नहीं पहना था। वह नग्न था, बस एक छोटी सी धोती और गले में लटकती मोतियों की माला थी।

मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी सीधे उसके चेहरे पर डाली।

उसने एक पल के लिए भी रोशनी से बचने के लिए अपनी आँखें बंद नहीं कीं, बल्कि उसके होंठों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान थी जब उसने कर्कश स्वर में कहा: 'वह आदमी अपनी उम्र के हिसाब से अभी भी अच्छी तरह दौड़ सकता है, लेकिन क्या उसने सोचा था कि जब बाघ उस पर हँस रहा था तो उसकी आत्मा को पकड़ना संभव था?'

खुद को बड़ी मुश्किल से काबू में रखते हुए मैंने जवाब दिया, 'तुम तो बूढ़े आदमी के लिए भी और तेज़ दौड़ते हो। लेकिन सावधान रहो, हे छल करने वाले, कहीं ऐसा न हो कि नरभक्षी एक दिन तुम्हें खाकर इस नाटक का अंत कर दे।'

इससे पहले कि वह कुछ जवाब दे पाता, मैं मुड़कर जाने लगा और बूढ़े बूरा से टकरा गया, जो मुझे नहीं जानता था और अकेले रह जाने के डर से मेरे पीछे-पीछे आ रहा था। बिना कुछ कहे और गहरी निराशा में, मैं अपने शिविर-अग्नि की ओर वापस चल पड़ा, मेरा सेवक मेरे पीछे-पीछे था। आदमखोर साँप का कोई ख्याल मेरे मन में नहीं आया; बस इस बात पर गुस्सा था कि साधु ने एक बार फिर मुझे कितनी बेइज्जती की थी।

हमने एक और रात बिना सोए बिताई, जिसमें कुछ भी नहीं हुआ, और अपनी थकान के बावजूद, सूर्योदय के तुरंत बाद मासिनीगुडी के लिए निकल पड़े, इस घोषित इरादे से कि तीन जीवित शिकार खरीदेंगे, जिन्हें मैं बाघ के लिए बांधने का इरादा रखता था।

काफी मशक्कत और सौदेबाजी के बाद, मैं दो जवान भैंसें और एक अधेड़ भूरा बैल हासिल करने में कामयाब रहा, जिन्हें हम बिना किसी देरी के अपने शिविर स्थल पर ले आए। दोपहर के एक बज रहे थे और दो रातों की नींद हराम होने के कारण मैं बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था। एक और रात जागना नामुमकिन था, इसलिए आदमखोर भालू के संभावित खतरे की परवाह किए बिना, हमने अपने तीनों जानवरों

को पुराने आम के पेड़ के नीचे बांध दिया और उनके बीच सो गए।

मैं ठीक चार बजे जागा। तीन घंटे की छोटी सी नींद ने मुझ पर छाए सुन्न कर देने वाले थकावट के एहसास को दूर कर दिया था, और मैंने ठान लिया कि दिन के उजाले के केवल ढाई घंटे बचे होने के कारण मुझे उस रात बाघ का बराबरी से सामना करने की कुछ तैयारी करनी होगी।

अब मैं चाहता हूँ कि आप कुछ देर तक मेरा ध्यानपूर्वक अनुसरण करें ताकि आप यहाँ की भौगोलिक स्थिति को अच्छी तरह समझ सकें, क्योंकि इसका आगे घटित होने वाली घटनाओं पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ेगा। नीलगिरी पर्वत श्रृंखला का मुख्य भाग हमारे दक्षिण में स्थित था, लेकिन पहाड़ियों की एक निचली श्रृंखला पश्चिम की ओर निकली हुई थी। इस श्रृंखला के आधार पर और इसके समानांतर, ऊटाकामंड से दक्षिण से उत्तर की ओर मासिनीगुड़ी जाने वाली सड़क थी। फिर झाड़ियों का एक घना जंगल था, जिसकी चौड़ाई कुछ स्थानों पर कुछ सौ गज से लेकर एक मील तक भिन्न थी, जो सड़क को उस धारा से अलग करती थी जो नीलगिरी पर्वत श्रृंखला के तल से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से बहती हुई उत्तर-पूर्व में दस मील से अधिक दूर स्थित मोयार नदी में मिल जाती थी। नदी के किनारे और उसके पार घना जंगल था। वलाइथोथु वृक्षारोपण नीलगिरी पर्वत श्रृंखला के मुख्य भाग के आधार पर और नदी के निकट स्थित था, और जैसा कि मैंने कहा, आदमखोर सांप का घर इसी क्षेत्र में कहीं प्रतीत होता था। यह आम चर्चा थी, जिसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि पिछली दो रातों में उसकी पहली दहाड़ इसी दिशा से आई थी।

इसलिए, यदि मैं अपने चारे इस प्रकार बांधूं कि उनमें से एक केले के बाग से गुजरने के तुरंत बाद सड़क के दृश्य में आ जाए, दूसरा नदी के किनारे के दृश्य में और सड़क तथा मेरे पहले चारे के पूर्व में हो, और तीसरा पश्चिम में सड़क के समानांतर चलने वाली पहाड़ियों की निचली श्रृंखला के आधार पर हो, तो बाघ चाहे जिस भी दिशा से आए, वह निश्चित रूप से इनमें से किसी एक में फंस जाएगा।

इस योजना में एकमात्र चूक यह थी कि उस समय की स्थिति के अनुसार, मेरे पास उस रात एक से अधिक चारा लगाने और सूर्यास्त से पहले एक से अधिक मचान बनाने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। इसलिए, मुझे बिना देरी किए इन तीन स्थानों में

से एक का चयन करना होगा और उसके पास ही एक जल्दबाजी में मचान बनाना होगा। बाकी दो जानवरों को मैं बूरा से अपने साथ वापस ले जाने और उस रात अपने घर के बाहर बांधने के लिए कहूंगा, ताकि हम अगले दिन उनका उपयोग कर सकें।

अब सवाल यह था कि चारा लगाने के लिए सबसे उपयुक्त जगह कौन सी थी? पिछली दो रातों से बाघ नदी किनारे आ रहा था। एक शिकारी होने के नाते, यह संभव नहीं था कि वह लगातार तीन रातों तक एक ही तरीका अपनाए। इस बार वह संभवतः या तो सड़क के किनारे से आएगा, जो उसे साधु की कुटिया के पास ले आएगी, या फिर वह पश्चिम की ओर से समानांतर पहाड़ी श्रृंखला की दिशा से आएगा।

मुझे याद आया कि परसों की सुबह, बूरा और मैंने फकीर की झोपड़ी से लगभग आधा फर्लांग की दूरी पर बाघ के पंजे देखे थे। पिछली रात वह उस रास्ते से नहीं आया था।

ऊपर दिए गए सभी तथ्यों को मिलाकर यही लगता था कि उस रात बाघ के पश्चिम दिशा से आने की पूरी संभावना थी। बेशक, इसकी कोई निश्चितता नहीं थी, क्योंकि वह साधु की कुटिया के पास वाली सड़क से भी आ सकता था। यह पूरी तरह से एक जुआरी का दांव था, जिसमें थोड़ी-बहुत समझदारी भी शामिल थी, लेकिन मुझे लगता था कि सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि मैं पश्चिम की ओर, पहाड़ियों की तलहटी में, अपनी रस्सी बांध दूं।

मैंने तुरंत फैसला लिया और बूरा के साथ तीन घोड़ों वाली गाड़ी में उसकी झोपड़ी तक गया। उसकी झोपड़ी मिट्टी और टहनियों से बनी थी, जो केले के बागान से दो फर्लांग की दूरी पर स्थित एक छोटे से गांव में थी, जिसमें लगभग आधा दर्जन ऐसी ही झोपड़ियां थीं। हमने वहां दो भैंसों को छोड़ दिया और भूरे रंग के बछड़े को चुना, क्योंकि हमें लगा कि वह बाघ को सबसे ज्यादा आकर्षित करेगा। हम उसे अपने साथ पश्चिम की ओर पहाड़ियों की तलहटी तक ले गए, जो उस समय लगभग एक मील से थोड़ी कम दूरी पर थी।

हम अपने लक्ष्य तक पहुँच गए, एक नाला जो पहाड़ी से नीचे बहता हुआ पूर्व दिशा में मुड़कर उस नदी में मिल जाता था जिसे हमने अभी-अभी छोड़ा था। इस सूखे नाले के तल पर उतरकर, जो कहीं भी दस फीट से अधिक गहरा नहीं था, हमने नरम रेत में अकेले बाघ के कई पदचिह्न स्पष्ट रूप से देखे। लेकिन उनमें से कोई भी चार-पाँच दिन

से कम पुराना नहीं था। ये पदचिह्न दोनों दिशाओं में जा रहे थे, जिससे यह सिद्ध होता था कि यह नाला आदमखोर बाघ का पसंदीदा रास्ता था, जिसका उपयोग वह शिकार के दौरान जानवरों की तलाश में करता था, और इन संकेतों ने मुझे उस रात उसके द्वारा नाले को चुनने के बारे में अधिक आशावादी बना दिया।

इस खाई के एक किनारे पर एक पेड़ उगता था जिसे आमतौर पर 'इंडियन-ओक' कहा जाता है। इसके पत्ते बड़े-बड़े होते हैं और जोड़े में लगते हैं, जिन पर चपटे, सेम जैसे बीज गुच्छों में होते हैं। यह पेड़ मचान बांधने के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इसमें कांटे नहीं होते, लेकिन इसकी छाल खुरदरी होती है जिससे मचान को बांधने वाली रस्सियाँ मजबूती से पकड़ बना लेती हैं। हमने बछड़े को इस पेड़ के आधार से लगभग पंद्रह फीट की दूरी पर, लेकिन खाई के किनारे के पास बांधने का फैसला किया, ताकि नीचे दस फीट की दूरी पर नाले के तल पर चल रहे या ऊपर घात लगाकर बैठे किसी भी बाघ को वह साफ दिखाई दे।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, बड़े पत्तों के कारण मचान को छिपाने के लिए किसी जटिल छलावरण की आवश्यकता नहीं थी। यह मचान ज़मीन से लगभग दस फीट ऊपर एक सुविधाजनक शाखा पर आसानी से और सौभाग्य से उपलब्ध था, जहाँ पेड़ की तीन मुख्य शाखाएँ तने से अलग होती थीं। शाखाओं के अलग होने वाले स्थान पर थोड़ी सी ताज़ी पत्तियों से गड्ढा भर दिया गया ताकि हिलने पर भी सरसराहट न हो। साथ ही, पेड़ की ऊपरी शाखाओं से तोड़ी गई कुछ बड़ी पत्तियों की टहनियों और लताओं को तीनों उभरी हुई शाखाओं के बीच बुनकर एक जल्दबाज़ी में बनाया गया मचान तैयार हो गया, हालाँकि यह पूरी तरह से सही नहीं था।

लेकिन तब तक साढ़े पाँच बज चुके थे और हम अब और देर नहीं कर सकते थे। एक तो बूरा को निहत्थे और अकेले ही बस्ती वापस जाना था। दूसरा, उस समय भी, अगर वह पश्चिम की पहाड़ियों पर कहीं भी छिपा होता, तो अपनी ऊँची जगह से बाघ हमें पेड़ के पास घूमते हुए साफ़ देख सकता था। अगर उसने देख लिया, तो इसके दो बिल्कुल विपरीत परिणाम हो सकते थे। अगर वह साहसी होता, जैसा कि वह दिख रहा था, तो वह सीधे उस जगह पर आता यह देखने के लिए कि क्या उसे रात के खाने के लिए कोई इंसान मिल सकता है। दूसरी ओर, अगर उसमें लगभग हर आदमखोर बाघ की तरह कायरता और गहरा संदेह होता, तो वह उस जगह से बहुत दूर रहता और

उस रात या उसके बाद कई रातों तक उसके आस-पास भी नहीं आता।

बूरा ने भूरे बैल को उस जगह से तीस फीट की दूरी पर एक सुविधाजनक ठूंठ से बांध दिया जहां मैं दुबका हुआ था, विदाई की सामान्य रस्म अदा की, जानवर के सामने लेटकर और अपने माथे से तीन बार जमीन को छूकर उसकी मृत्यु में अपनी भूमिका के लिए क्षमा मांगी, और फिर जल्दी से अपने रास्ते चला गया।

पश्चिम की पहाड़ियों के पीछे सूरज काफी देर पहले ही छिप चुका था, और शाम छह बजे तक अंधेरा छाने लगा था। मैं पहाड़ियों की ओर मुंह करके बैठा था, क्योंकि मुझे लग रहा था कि बाघ वहीं से आएगा। मेरे पीछे, नदी के किनारे से एक हाथी ने धीमी सी आवाज़ में चिंघाड़ा, शायद वह शाम की सैर का आनंद ले रहा था। इस विशालकाय साथी से बेखौफ, लेकिन उनके लिए बिलकुल हानिरहित, जंगली मुर्गे, तोते और मोर नदी के दूसरे किनारे पर बहुतायत से उगे बांस के झुरमुटों से लगातार आवाज़ें निकाल रहे थे। मेरे ठीक ऊपर, सामने वाली पहाड़ी पर, काले चेहरे वाले, लंबी पूंछ वाले लंगूर बंदरों का एक झुंड जीवन के आनंद में झूम रहा था।

‘वूम्प! वूम्प! वूम्प!’ नर पक्षियों की हर्षोल्लास भरी आवाज से ढलानें गूंज उठीं, जिसके बीच-बीच में मादा पक्षियों और बच्चों की तीखी और दबी हुई आवाजें ‘चीक! चीक! चीक!’ सुनाई दे रही थीं।

उस पल मुझे उन बंदरों से कितनी ईर्ष्या हुई! उनके लिए तो जीवन केवल खेल-कूद था, कोई ज़िम्मेदारी नहीं। वे निडर होकर एक पेड़ से दूसरे पेड़ की चोटी पर उछल-कूद कर रहे थे, अपने हर पल चौकस दुश्मनों, नीचे छिपे किसी तेंदुआ या बाघ की परवाह किए बिना। वे अपने पहरेदार, सबसे ऊंचे पेड़ की चोटी पर तैनात अकेले लंगूर की तेज़ नज़रों और सजग इंद्रियों पर भरोसा कर रहे थे, जो नीचे जंगल में होने वाली किसी भी संदिग्ध हलचल पर नज़र रखता था - चाहे वह गहरी छाया हो जो किसी छुपकर आने वाले शिकारी का भेद खोल दे - या फिर कंटीली झाड़ियों की हल्की सी सरसराहट जो किसी चित्तीदार या धारीदार शिकारी के दबे पांव आने का संकेत दे।

और यह वही लंगूर चौकीदार था जिसने सूरज डूबने से पहले ही पहली चेतावनी दी। ठंडी हवा में तैरती हुई उसकी कर्कश, दिल दहला देने वाली, चेतावनी भरी पुकार आई: 'हा-आह! हर्र! हर्र!.. हा-आह! हर्र! हर्र!'

उस बंदर-पहरेदार ने शानदार काम किया, क्योंकि उसने न केवल अपने बंदरों के झुंड को सतर्क किया, जिन्होंने तुरंत अपनी उछल-कूद बंद कर दी, बल्कि उसने घाटी में चर रहे चित्तीदार हिरणों को 'आओ! आओ! आओ!' की तेज आवाजों से इधर-उधर आश्रय की ओर भगा दिया।

और उसने मुझे आगाह कर दिया। मुझे पता था कि आदमखोर आ रहा है, और मैंने उसके आने के रास्ते का सही अनुमान लगाकर खुद को बहुत खुश किया।

या कम से कम मुझे तो यही लगा था!

बाघ ने अपनी उपस्थिति की पुष्टि कर दी। 'आह! आउंग-हा! आउंग-हा!' वह मेरे सामने पहाड़ी से कराह रहा था।

लेकिन वह नहीं आया, और पंद्रह मिनट तक लगातार चीखने-चिल्लाने के बाद, लंगूर पहरेदार चुप हो गया और चित्तीदार हिरणों की चीखें भी बंद हो गईं। अंधेरा तेजी से छा रहा था, और बिल्कुल स्थिर बैठे हुए, मैं बढ़ती हुई धुंध में अपनी आँखें गड़ाए बैठा रहा, इस उम्मीद में कि किसी भी क्षण मुझे नाले में रेंगते हुए बाघ की आकृति दिखाई दे जाएगी।

कुछ ही मिनटों के भीतर एक जानवर तेजी से, लड़खड़ाते हुए कदमों से खाई से नीचे उतरा, लेकिन वह केवल एक सुस्त भालू था, जो पूर्व की ओर झाड़ीदार जंगल में गिरे हुए, पके हुए बोरम फल तक पहुंचने में इतना मग्न था कि उसने एक पल के लिए भी बाघ के बारे में नहीं सोचा, और निश्चित रूप से उसने मुझे भारतीय ओक के पेड़ पर बैठे हुए नहीं देखा।

फिर रात हो गई। जिस घाटी में मैं बैठा था, दिन भर की धूप से गर्म हवा ऊपर उठने लगी और पहाड़ों से ठंडी हवा नीचे आकर उस खाली जगह को भरने लगी। ठंड असहनीय हो गई। मैं सुन्न और बेचैन हो गया, और मेरे दांत किटकिटाने लगे। अचानक, मुझे अपने पीछे हल्की सी हलचल महसूस हुई। हाँ, वह फिर से आ गया! मुझे साफ-साफ अपनी कोहनी के ऊपर और फिर गर्दन पर एक छोटी, परी जैसी उंगली का स्पर्श महसूस हुआ। वह चीज, जो भी थी, मेरे कंधे पर बैठी थी!

मैंने झट से अपना सिर घुमाकर देखा कि किस बौने जैसे आगंतुक ने मुझे छूने की

हिम्मत की है। दो इंच चौड़े एक छोटे से सिर से बड़ी-बड़ी, भावपूर्ण आँखें मेरी आँखों में झाँक रही थीं। एक छोटा सा, इंसान जैसा शरीर, जो मुश्किल से छह इंच लंबा था, लेकिन जिसकी भुजाएँ और पैर अनुपातहीन रूप से लंबे थे, मेरे कंधे पर आराम से बैठा था।

लेकिन मेरा नया साथी कोई सुंदर प्राणी नहीं निकला, जो मुझे आने वाले खतरे से आगाह करने आया हो; वह तो बस एक 'पतला लोरिस' था, एक नाजुक बंदर जैसा जानवर, जो पूरी तरह से निशाचर होता है और दक्षिण भारत के जंगलों और बंजर भूमि में रहता है।

वैसे तो, इन बेचारे छोटे जीवों को कुछ अज्ञानी आदिवासियों द्वारा बहुत सताया जाता है, जो मानते हैं कि इनकी बड़ी और चमकदार आँखों में यौन रोगों को ठीक करने की अद्भुत शक्ति होती है। बेचारे जानवरों को पकड़ा जाता है और फिर उनकी आँखें जीवित रहते ही निकाल ली जाती हैं। इसके बाद, उन्हें मारकर खा लिया जाता है, जो इलाज का एक और हिस्सा है। लेकिन वास्तव में कारगर होने के लिए, जंगलवासी मानते हैं कि आँखें जानवर के जीवित रहते ही निकालनी चाहिए। सचमुच, जंगल के कुछ बेचारे जीव मनुष्यों के हाथों बहुत कष्ट झेलते हैं!

जब मैंने अपना सिर हिलाया तो लोरिस डर गया। झट से वह मेरे बगल वाली एक शाखा पर चढ़ गया और गायब हो गया। कुछ मिनट बाद, जब नन्हे लोरिस को पता चला कि वह खतरे से बच नहीं पाया है, तो उसने चीख-चीख कर खतरे की चेतावनी देने का फैसला किया। 'की-ई-ई-ई! की-ई-सी!' ऊपर पेड़ की चोटी से आवाज़ आई। नन्हा बंदर सचमुच चिंतित था: वह पेड़ पर चढ़ा था, लेकिन उसे पता चला कि नीचे उतरे बिना और मेरे ऊपर से दोबारा गुजरे बिना वह बच नहीं सकता।

उस असाधारण रूप से शांत रात में घंटे धीरे-धीरे बीत रहे थे। पहाड़ों से नीचे आती ठंडी हवा के तेज झोंकों की सरसराहट के अलावा, जंगल में जीवन के अधिकांश रूप नदारद प्रतीत हो रहे थे। रुक-रुक कर, घाटी में कहीं से एक जंगली झींगुर चहचहाता था, और एक बार एक बैल बाइसन मेरे पीछे एक फर्लांग या उससे अधिक दूरी पर सीटी बजाता हुआ निकला, जैसे हवा का एक झोंका मेरी मानवीय गंध को उसकी तेज नाक तक ले गया हो।

आकाश बादलों से रहित था, लाखों तारों से जगमगा रहा था, एक ऐसा नज़ारा जिसे अनुभव करना और हमेशा याद रखना असंभव था, कलम या ज़बान से उसका वर्णन करना नामुमकिन था। आकाशीय पिंडों के संयुक्त प्रकाश ने अंधकार को दूर कर दिया और मेरे चारों ओर और ऊपर फैले जंगल और पहाड़ी क्षेत्र पर हल्की सी चमक बिखेर दी।

अंततः, घाटी की ओर बहने वाली निचली भूमि से आती हुई, नदी के घुमावदार रास्तों के बीच से आती हुई, विभिन्न प्रकार की बेमेल ध्वनियों के मिश्रण ने सन्नाटा तोड़ दिया; 'ऊऊऊ-ऊह! वूऊ-ओह! ऊ-कहाँ? ऊ-कहाँ? यहाँ! हीरे! ही-ये! ही-याह! याह! याह!'

यह सियार के झुंड की पुकार थी, जो चुपके से भोजन की तलाश कर रहे थे। सरदार ने अपनी अजीब सी आवाज निकाली, और बाकी सियार उसके पीछे-पीछे चलते हुए उसकी नकल करने लगे।

फिर, अचानक, एक गीत के चरम पर पहुंचते ही, पूरा समूह रोना बंद कर दिया। न कोई सिसकी, न कोई आवाज़। ऐसा क्यों हुआ? मैं सोचने लगा।

कारण अगले पांच सेकंड में ही सामने आ गया, मेरे पीछे से एक आवाज़ आई, ठीक उसी दिशा से जहाँ कुछ क्षण पहले सियार ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे।

'उह-हा! ऊ-ऊंघ! आ-ऊंघ!'

बाघ पहाड़ी से नीचे उतरकर चौड़ी पत्तियों वाले भारतीय ओक के पेड़ पर मेरी स्थिति के पास से गुजरा। उसकी दहाड़ों से लग रहा था कि वह अब शायद सड़क पर या उसके पास, और केले के बाग के करीब... और साधु की कुटिया के पास था!

मुझे इस बात का अफसोस था कि समय की कमी के कारण मैं भैंस के बच्चे को सड़क के किनारे बांध नहीं सका, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। तभी मेरे दिमाग में एक बिल्कुल ही अजीबोगरीब विचार आया। ऐसा क्यों हुआ, इसका कोई औचित्य नहीं है। बस हो गया।

अब जब बाघ फकीर की झोपड़ी के पास दहाड़ रहा था, तो मुझे पेड़ से उतरकर जितनी जल्दी हो सके वहाँ पहुँचने की तीव्र इच्छा हुई। शायद मैं बूढ़े बूरा की अजीब

कहानी पर थोड़ा-बहुत विश्वास करने लगा था और खुद देखना चाहता था कि साधु घर पर हैं या नहीं। जैसे ही मैं पेड़ से उतरा और झोपड़ी की ओर दौड़ा, बाघ की दहाड़ अभी भी सुनाई दे रही थी। झोपड़ी एक मील से भी कम दूरी पर थी, लेकिन जब तक मुझे बाघ की दहाड़ सुनाई दे रही थी, मुझे पता था कि मैं अचानक हमले से सुरक्षित हूँ। लगभग एक घंटे पहले चाँद का एक टुकड़ा निकल आया था, और उसकी हल्की रोशनी में, मैं उस पगडंडी पर अपने कदमों के निशान ढूंढ पाया जिस पर चलकर मैं उस शाम नाले की ओर गया था।

मैं पश्चिम से झोपड़ी की ओर बढ़ा, तभी पूर्व दिशा में सड़क के पास कहीं आदमखोर भालू की दहाड़ सुनाई दी। झोपड़ी में अंधेरा छाया हुआ था।

क्या फकीर अंदर था? मैं दबे पांव उसके पास पहुंचा और बुनी हुई बांस की दीवार पर कान लगाकर अंदर से कोई आवाज सुनने की कोशिश की। लेकिन मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। गहरी नींद में सोए हुए आदमी की सांसों की आवाज भी नहीं आ रही थी। झोपड़ी खाली लग रही थी।

तभी बाघ ने एक बार फिर दहाड़ मारी। वह अब बहुत करीब था। संभवतः वह सड़क के किनारे-किनारे चल रहा था, घने केले के पेड़ों की आड़ में छिपा हुआ, पूर्व दिशा में एक फर्लॉन्ग से भी कम दूरी पर।

उस रात दूसरी बार, अचानक मेरे मन में एक विचार आया, और उसके गुणों पर विचार किए बिना, मैंने उस पर अमल किया।

मैंने अपने फेफड़ों में हवा भर ली और अपने हाथों से अपना मुंह ढक लिया, फिर मैंने बाघ की आवाज की नकल करते हुए जवाब दिया, ठीक उसी तरह जैसे मैंने अपने पुराने दोस्त और प्रशिक्षक, पुजारी बायरा के कुशल मार्गदर्शन में अभ्यास किया था।

'आ-आ-आउंग! आ-आ-आ-आउंग! ओ-ओ-ओ-ओंग!' मैंने गहरी आवाज में पुकारा।

फिर मैं चुपचाप बांस की झोपड़ी के कोने के पीछे दुबक गया, राइफल को कंधे पर आधा उठाए हुए, बाएं अंगूठे का निचला हिस्सा मेरी भरोसेमंद .405 पिस्तौल की नली पर लगी तीन सेल वाली इलेक्ट्रिक टॉर्च के बटन को हल्के से छू रहा था। बाघ ने फिर कभी दहाड़ नहीं मारी। वह सीधे उसी आवाज़ की ओर चल पड़ा जो उसने सुनी

थी। मुझे पता था कि वह आ रहा है।

चारों ओर गहरी खामोशी छा गई। यह एक घुटन भरी खामोशी थी जिसे महसूस किया जा सकता था, और एक अजीब, अनसुलझी आशंका मुझ पर हावी होने लगी। ऐसा क्यों हुआ, यह मैं नहीं बता सकता था, क्योंकि स्वामी की कुटिया के कोने में अपनी सुरक्षित स्थिति में मैं पूरी तरह से सुरक्षित था। चांदनी मेरे चारों ओर जंगल पर हल्की पड़ रही थी, इतनी ही तेज कि चीजों को स्पष्ट रूप से दिखाए बिना उन्हें दृश्यमान बना सके।

एक-दो मिनट बाद ही अप्रत्याशित घटना घटी। केले के पेड़ों की घनी झाड़ियों से एक इंसान निकला, ठीक उसी दिशा से जहाँ से बाघ पुकार रहा था, और मेरी ओर दौड़ता हुआ आया।

वह एक आदमी था, और पहली नजर में वह बिल्कुल नग्न लग रहा था, लेकिन करीब आने पर मुझे पता चला कि उसने एक काली धोती पहन रखी थी।

तब मुझे एहसास हुआ कि वह आदमी मेरी तरफ नहीं, बल्कि झोपड़ी की तरफ दौड़ रहा था, क्योंकि मैं कोने में छिपकर उसके लिए बिल्कुल अदृश्य हो जाता। और वह आदमी खुद फकीर था!

मेरी सांसें थम गईं जब मैंने अपनी आंखों के सामने हो रही इस घटना का महत्व समझा। कुछ ही मिनट पहले मैंने सड़क किनारे एक बाघ की दहाड़ सुनी थी। अब यहाँ फकीर ठीक उसी जगह से आ रहा था जहाँ से बाघ दहाड़ रहा था!

मैं सच कह रहा था! मैं एक ऐसा विचित्र और अद्भुत दृश्य देख रहा था जैसा कोई भी व्यक्ति अपनी आँखों से देख सकता था। लेकिन अगले ही पल, रहस्य बेरहमी से टूट गया और काला जादू गायब हो गया!

क्योंकि, तेज दहाड़ के साथ, बाघ भागते हुए व्यक्ति के पीछे से झपटा और दो ही छलांग में उसे पकड़ लिया। उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति की चीख आज भी मेरे कानों में गूंजती है: 'ऐ-यो-ऊ-ऊ-ऊ!' वह चिल्लाया, और बस इतना ही।

जैसे ही आदमखोर बाघ उस पर झपटा, बाघ और वह आदमी हल्की चांदनी में लंबी घास में ओझल हो गए। सब कुछ इतना अप्रत्याशित था कि मैं वहीं जम गया था। अब

वह सन्नाटा टूटा और मैं जोर से चिल्लाते हुए जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा। शायद मैं स्वामी को बचाने के लिए समय पर पहुँच जाऊँ, शायद मेरी चीख बाघ को डराकर भगा दे। मुझे मुश्किल से चालीस गज ही जाना था। दौड़ते हुए मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया, लेकिन केवल पंद्रह गज की दूरी से ही रोशनी बाघ की चमकती आँखों पर पड़ी, जो लंबी घास में अपने शिकार के ऊपर झुका हुआ था।

बिना सोचे समझे, मैं अचानक रुक गया और उन भयानक आँखों के बीचोंबीच गोली चला दी। बाघ आधा उठा, और मैंने उस खूनी सिर पर बार-बार गोली चलाई। वह गिर पड़ा, और एक भयानक बुखार से व्याकुल होकर उसका पूरा शरीर कांप उठा।

तभी मुझे एहसास हुआ कि आदमखोर बाघ अपने शिकार के ऊपर गिर पड़ा था और उसे लगभग नज़रों से ओझल कर दिया था। इससे भी ज़्यादा भयानक बात यह थी कि उस छोटी दूरी से दागी गई मेरी तीन तेज़ रफ़्तार गोलियों में से कोई भी बाघ को भेद सकती थी, या फिर उसे चूककर नीचे लेटे हुए फकीर को लग सकती थी।

मैं बाघ के पास गया, जो अभी भी बुरी तरह फड़फड़ा रहा था। मैं घुटनों के बल बैठा और दो गज की दूरी से उसकी खोपड़ी के पिछले हिस्से में चौथी गोली मारी, जो पहले की गोलियों से पहले ही चकनाचूर हो चुकी थी। एक मिनट बाद ही उसका फड़फड़ाना बंद हुआ। फिर, बड़ी मुश्किल से, मैंने मरे हुए बाघ को उस आदमी से अलग किया जिस पर वह पड़ा था। फकीर खून से लथपथ था और मुझ पर एक भयानक भय छा गया। मुझे यकीन था कि मैंने ही उसे गोली मारी है। वह ज़मीन पर औंधा पड़ा था, और साँस लेने या किसी भी तरह की हरकत का कोई संकेत नहीं था। जल्दी से अपनी टॉर्च को राइफल की नली से निकालकर, मैंने गोली के छेद, या शायद छेदों को खोजना शुरू किया, जिनके बारे में मुझे पूरा यकीन था कि मुझे मिल जाएँगे। मैंने काफ़ी ध्यान से देखा, हालाँकि मेरे हाथ बुरी तरह काँप रहे थे। कोई छेद नहीं था। फिर मैंने स्वामी को पलट दिया। शायद मुझे दूसरी तरफ़ वही मिल जाए जिसकी मुझे तलाश थी।

तभी फकीर ने अपनी आँखें खोलीं। मशाल की रोशनी में उसकी आँखें आदमखोर से भी कहीं अधिक घृणा से चमक रही थीं। उसके होंठ हल्के से हिले और मैं उसके शब्दों को सुनने के लिए रुक गया। उसके शब्द अस्पष्ट और रुक-रुक कर निकले, लेकिन

मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से सुना।

‘तुम जीत गए, गोरे आदमी; लेकिन आज रात किस्मत मेरे खिलाफ थी। बाघ ने मेरी जान ले ली; लेकिन तुम भी मरोगे और मैं किसी दूसरे बाघ के जबड़ों में तुम्हारी मौत का इंतजार करूंगा!’

फिर वलाइथोथु के स्वामी का देहांत हो गया, ठीक वैसे ही जैसे कुछ मिनट पहले उनके समकक्ष, नरभक्षी का देहांत हुआ था।

घटनाक्रम का स्पष्टीकरण काफी सरल प्रतीत होता था। सतर्क गतिविधियों के कारण, फकीर को उस रात मेरे ठिकाने का पता नहीं चला था। जब आदमखोर बाघ ने दहाड़ना शुरू किया, जो सड़क की दिशा में कहीं से आ रहा था, तब साधु बाघ की आवाज सुनकर अपनी कुटिया से चुपके से बाहर निकला, यह जानते हुए कि जब तक आदमखोर दहाड़ता रहेगा और उसे जानवर के ठिकाने का पता रहेगा, तब तक वह सुरक्षित है। निस्संदेह, वह यह जानने की उम्मीद कर रहा था कि मैं कहाँ छिपा हूँ और मुझे किसी तरह से धोखा देने की कोशिश कर रहा था, जैसा कि उसने दो रात पहले किया था।

इस बीच, उसे पता भी नहीं था, मैं अपना मचान पहाड़ी पर छोड़कर चुपके से इस झोपड़ी में आ गया था और मैंने तीन बार बाघ की दहाड़ की नकल की थी। फकीर उस समय सड़क के आसपास कहीं रहा होगा। दो अलग-अलग दहाड़ें सुनकर और यह मानते हुए कि दो अलग-अलग बाघ हैं, एक उसके आगे और एक पीछे, और यह न जानते हुए कि उनमें से आदमखोर कौन है, निःसंदेह साहसी उस व्यक्ति ने आखिरकार हिम्मत हार दी और जल्दी से अपनी झोपड़ी की सुरक्षा में वापस भाग गया, जिससे असली आदमखोर उसका पीछा करने लगा और वह अपने ऊपर विपत्ति का शिकार हो गया।

मैं बस्ती की ओर चला, जहाँ मैंने बूरा को अभी भी जागते हुए पाया।

मैंने घोषणा की, 'मैंने बाघ को मार गिराया है।' उसने सांस रोककर पूछा, 'पवित्र व्यक्ति कहाँ है, दोराई?'

मैंने कंधे उचकाए और उसकी दहलीज पर बैठ गया। 'वह भी मर चुका है,' मैंने

बुदबुदाया।

बूरा ने लगभग संतुष्टि से आह भरी। "क्या अब तुम विश्वास करते हो?" उसने मुझसे पूछा।

मैंने हंसते हुए कहा, "मेरे गोली चलाने से पहले ही बाघ ने उसे मार डाला!"

कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया क्योंकि बूरा ने हैरानी भरी चौड़ी आँखों से मेरी ओर देखा।

‘क-क्या?’ वह बुदबुदाया, ‘क्या तुम्हारा मतलब यह है कि वे दो हैं; दो मृत शरीर, स्वामी और बाघ!’

‘बिल्कुल,’ मैंने उत्तर दिया।

'क्या आपको यकीन है कि वहां सिर्फ एक ही शव नहीं है - या तो बाघ का, या पवित्र व्यक्ति का?'

‘बिल्कुल निश्चित; जैसे हम दो लोग हैं - तुम और मैं,’ मैंने चिड़चिड़े स्वर में उत्तर दिया।

बूरा ने आसपास की झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को यह खबर जोर-जोर से सुनाना शुरू कर दिया, और एक-दो मिनट में ही डरी हुई इरिलास की एक दर्जन लड़कियां हमारे चारों ओर खड़ी हो गईं।

‘भाइयों, क्या पता, मेरे दोराई ने बाघ और स्वामीजी दोनों को मार गिराया है,’ उसने घोषणा की।

मैं सिहर उठा, फिर अचानक बुदबुदाया, 'धिक्कार है, मैंने तुमसे कहा था कि बाघ ने स्वामी को मार डाला है और मैंने बाघ को गोली मार दी।'

'देखते हैं,' उन सभी ने उत्साहपूर्वक एक साथ पूछा।

कुछ देर बाद हम त्रासदी स्थल पर वापस पहुँच गए, और उत्साहित इरिलास खुशी से झूम उठीं। क्योंकि उस रात उनके दो सबसे बड़े दुश्मन मारे गए थे: वह आदमखोर जिसने उन्हें खा लिया था, और वह फकीर जिसने उन्हें लगभग मौत के घाट उतार दिया था।

जब बूरा ने स्वामी की अभी भी खुली हुई आँखों में देखा, तो वह बुदबुदाया: 'तुम...!' और वह बस इतना ही कह सका। फिर उसने दो बहुत ही अपशब्द कहे।

5 बाघ

मंद प्रकाश गुफा के भीतरी हिस्सों में छनकर आ रहा था, और उसके आगे अंधेरा छाया हुआ था।

यह एक छोटी गुफा थी, बीस फीट चौड़ी और लगभग उतनी ही लंबी। प्रवेश द्वार के पास कुछ बड़े-बड़े पत्थर पड़े थे जिनके बीच घास के गुच्छे थे। गुफा का फर्श भी दीवारों की तरह ही ग्रेनाइट चट्टान से बना था।

दो चट्टानों के बीच उगी घास में से कुछ रोएँदार, लाल-भूरे रंग का, हल्के काले निशानों वाला और शरीर के बाकी हिस्सों के अनुपात से कहीं अधिक बड़ा सिर लिए हुए प्रकट हुआ। उसकी चमकदार आँखें आश्चर्य और जिज्ञासा से भरी दुनिया को निहार रही थीं।

क्योंकि यह पहली बार था कि बाघ का बच्चा बाघ उस गुफा के प्रवेश द्वार तक आया था जिसमें वह रहता था। उसकी दोनों बहनें पीछे एक कोने में दुबकी हुई थीं, बिल्कुल उसी की तरह फर के दो गोले, लेकिन कम होशियार, कम साहसी।

शायद बाघ को अपने पिता तिमोर की कुछ जोशीली फुर्ती और बिल्ली जैसी बहादुरी विरासत में मिली हो, जिसने उसे जंगल का राजा बनाया था।

क्योंकि उसका पिता एक भयंकर और निडर बाघ था, जिसके विरुद्ध हाथी भी अपनी शक्ति का प्रयोग करने से हिचकिचाता था।

बाघ को तिमोर की कोई याद नहीं थी, क्योंकि उसकी माँ सीता अपने तीनों शावकों को उनके जन्म स्थान से इस गुफा में ले आई थी; वह स्थान जिसे बाघ और उसकी बहनें दोनों ही याद नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि उस समय उनकी आँखें बंद थीं। सीता ने इसलिए ऐसा किया था क्योंकि वह जानती थी कि उसके साथी तिमोर पर भरोसा

नहीं किया जा सकता। लापरवाही के एक पल में वह उनमें से किसी एक को कुचल सकता था, शायद अपने भारी वजन से उसकी छोटी सी पीठ या टांग तोड़ सकता था। गुस्से में आकर वह किसी दूसरे को हल्के से थप्पड़ मार सकता था, और वह थप्पड़, भले ही उसके लिए बहुत हल्का सा इशारा हो, शावक को हमेशा के लिए कुचलने के लिए काफी होता। और अंत में, हमेशा यह खतरा बना रहता था कि तिमोर एक दिन अत्यधिक भूखा हो जाए, इतना भूखा कि वह अपने ही किसी बच्चे को हल्का-फुल्का भोजन बना ले, जो अगले असली भोजन के आने तक भूख बढ़ाने के लिए काफी हो।

इस समय शावक अकेले थे, क्योंकि सीता गुफा से बाहर चली गई थी। यह बिल्कुल असामान्य था, क्योंकि वह दिन के उजाले में उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ती थी। वह गुफा की पूरी लगन से रखवाली करती थी, केवल अंधेरे में ही अपने लिए भोजन की तलाश में बाहर जाती थी, जिसमें जंगल के अन्य जानवर और मवेशी जैसे पालतू जानवर शामिल होते थे, जिन्हें वह ढूंढ पाती थी।

सीता के शावकों के लिए अब तक ताज़ा मांस कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि वे अभी भी अपने बच्चों को दूध पिलाते थे जो उसके पेट पर उगे बालों में से अपना रास्ता बनाते हुए उसके स्तनों तक पहुँचते थे और वहाँ उनका पेट भर जाता था। लेकिन सीता के लिए ताज़ा मांस बहुत ज़रूरी था, क्योंकि उसे न केवल अपनी ताकत बनाए रखनी थी, बल्कि उन तीन नन्हे जीवों की ताकत भी बनाए रखनी थी जो उस पर निर्भर थे।

लेकिन सीता ने एक आवाज़ सुनी - इंसानों की आवाज़ - और उस आवाज़ ने उसे भय और क्रोध के मिले-जुले भावों के साथ गुफा से बाहर निकाल दिया। भय इस बात का था कि दो पैरों पर चलने वाली घृणास्पद प्रजातियों में से कुछ उसके परिवार को नुकसान पहुँचाने या नष्ट करने आए हैं; क्रोध इस बात का था कि इस तुच्छ जाति के सदस्य उस गुफा के इतने करीब आने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं जिसमें उसके बच्चे हैं। सभी जंगली जानवर दूर ही रहे।

सीता गुफा के किनारे स्थित ऊंचे स्थान से पहाड़ी की ओर सरकती हुई नीचे उतरी। उसके कदमों की आहट शांत थी और उसका शक्तिशाली, सुंदर धारीदार शरीर

लचीला और आकर्षक था, जैसे ही वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान को पार करती हुई, प्राकृतिक आवरण के हर इंच का लाभ उठाती हुई, विचलित करने वाली आवाज़ों के स्रोत के और करीब पहुँचती गई।

तभी उसने उन्हें देखा। लकड़हारों का एक दल पहाड़ी की ढलान से होते हुए घाटी की ओर एक कतार में चल रहा था। यहाँ वे अगले कुछ घंटे सरकारी वन विभाग और पास के एक लकड़ी व्यापारी के बीच हुए अनुबंध के अनुसार लकड़ी काटने में बिताने वाले थे। वे एक-दूसरे के पीछे चलते हुए खुशी-खुशी बातें कर रहे थे, उनके कंधों पर कुल्हाड़ियाँ थीं, और वे उस बाघिन से बिल्कुल बेखबर थे जो अभी भी उन्हें देख रही थी।

सीता के मन में उथल-पुथल भरे विचार उमड़ रहे थे। आधी बंद आँखों से वह जंगल में गिरे एक पेड़ के तने को देख रही थी, उसके कान कसकर खोपड़ी से चिपके हुए थे, और वह डर और क्रोध की दबी हुई भावनाओं से बुरी तरह कांप रही थी। उसका सिर आगे के फैले हुए पंजों के बीच झुका हुआ था और पिछले पैर पेट के नीचे सिमटे हुए थे, मानो वह अपने दुश्मनों पर हमला करने के लिए तैयार हो। उसकी पूंछ ज़मीन पर फैली हुई थी; केवल उसका सिरा ही रुक-रुक कर, घबराहट से फड़क रहा था, जो उसकी बढ़ती उत्तेजना को दर्शा रहा था।

जैसे-जैसे लकड़हारे जंगल से होकर गुजरने वाले घुमावदार रास्ते पर आगे बढ़ते गए, वे करीब आते गए। सीता पेड़ के तने के पीछे अपनी जगह पर डटी रही, उसकी मांसपेशियां कसी हुई थीं और वह तुरंत हमले के लिए तैयार थी, जबकि उसके बिल्ली जैसे दिमाग में अभी भी कई तरह के विचार दौड़ रहे थे। उन पांचों आदमियों को कभी पता नहीं था कि उस दिन उनका भाग्य दांव पर लगा था, एक ऐसा पलड़ा जो किसी भी क्षण पलट सकता था और उन पर एक भयंकर, दहाड़ता हुआ राक्षस टूट पड़ सकता था। लेकिन उनका कर्म उनके पक्ष में था; उनका समय अभी नहीं आया था; सीधे शब्दों में कहें तो, वे भाग्यशाली थे।

अंतिम क्षण में सीता के मन में मानव जाति के प्रति अंतर्निहित भय ने उन्हें नष्ट करने की उसकी इच्छा पर विजय प्राप्त कर ली। वह अब भी चुपचाप, कांपती हुई, लेकिन निष्क्रिय अवस्था में बैठी रही। और फिर खतरे का क्षण टल गया; क्योंकि पुरुष पीछे

हट रहे थे और उनकी आवाजें जंगल की हवाओं में घुलती हुई धीमी होती गईं। वे रास्ते के एक मोड़ पर मुड़े और दृष्टि से ओझल हो गए।

सीता खड़ी हुई, उसने गुस्से और राहत से भरी एक धीमी, कर्कश आवाज निकाली। वह मुड़ी और उसी रास्ते से पहाड़ी पर चढ़ने लगी जिससे वह आई थी।

बाघ की चौड़ी और विस्मयकारी आँखें भारतीय शरद ऋतु की धूप में टकटकी लगाए हुए थीं, तभी उसने कुछ हिलता-डुलता और पास आता देखा। छोटा होने के कारण वह कांपते हुए अपने घुटनों के बल पीछे की ओर झुक गया, उसके कान उसकी छोटी खोपड़ी से चिपक गए। उसकी चमकदार आँखें, जो कुछ ही क्षण पहले इतनी बड़ी और उज्ज्वल थीं, क्रोध और संदेह से आधी बंद हो गईं; उसके नन्हे चेहरे पर एक हास्यास्पद गुर्राहट फैल गई, और उसने गुस्से में भरी बिल्ली की तरह सामने से आ रहे दुश्मन पर थूका, जो अब उसके सामने विशालकाय दिखाई दे रहा था।

लेकिन यह तो सीता ही थी जो अपनी गुफा में लौट रही थी। वह उसके पास रुकी और अपना विशाल सिर झुकाकर उसे अपनी खुरदरी जीभ से प्यार से चाटने लगी। यह भाव, हालांकि मातृत्व प्रेम से भरा था, लेकिन उसमें इतनी अचेतन शक्ति थी कि शावक अपनी पीठ के बल लुढ़क गया, जहाँ वह अपने चारों पैर हवा में उठाकर लेटा रहा, उसके छोटे पंजे रक्षा में धमकी भरे अंदाज़ में फैले हुए थे। सीता ने एक और चाट से उसे पलटा और अपने शक्तिशाली नुकीले दांतों से उसकी गर्दन को धीरे से पकड़ लिया। उसने उसे कोमलता और प्यार से ज़मीन से उठाया और गुफा के पिछले हिस्से में ले गई, उसके पैर उस शक्तिशाली लेकिन कोमल पकड़ में असहाय रूप से लटक रहे थे। वहाँ उसने उसे उस जगह पर छोड़ दिया जहाँ उसकी दोनों बहनें, मीना और लीला, अभी भी आश्चर्य से देख रही थीं कि क्या हो रहा है, लेकिन अपनी माँ के लौटने से उन्हें राहत मिली थी।

सीता ने तीनों को ज़ोर से चाटा, उनके छोटे-छोटे मुलायम फर को साफ किया और संवारा। क्योंकि वयस्क बाघ के शरीर पर अभी तक इतने मुलायम और महीन बाल नहीं आए थे और लगभग चार महीने बाद ही आने वाले थे।

फिर वह उनके बगल में पथरीली ज़मीन पर लेट गई और अपनी पीठ के बल चारों पैर

फैलाकर लुढ़क गई। यह उसके बच्चों के लिए एक निमंत्रण था। एक साथ ही वे रेंगते हुए उसके पास आ गए, हर छोटा मुँह स्तन को ढूँढ़ रहा था, जबकि उनके तीन जोड़ी अगले पंजे उसके पेट के लंबे बालों में घुस गए, रगड़ते हुए और दूध को उन तीन उत्सुक छोटे मुँहों में प्रवाहित करने के लिए प्रेरित करते रहे।

¤

बाग उत्साह से झूम उठा। ऐसा लग रहा था मानो आज कुछ खास होने वाला है।

वह उम्र में बड़ा हो गया था। चार महीने बीत चुके थे और उसके बचपन के बाल अब एक वयस्क बाघ के लाल-भूरे और काले बालों में बदल गए थे। इसके अलावा, वह अपनी दोनों बहनों से काफ़ी बड़ा और भारी हो गया था। उसका सिर तो पहले से कहीं ज़्यादा विशाल था, जबकि उसके पंजे भी उनके पंजों से कहीं ज़्यादा बड़े थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह ज़्यादा साहसी, ज़्यादा खूंखार और ज़्यादा गहरी दहाड़ वाला हो गया था।

अब तक तीनों शावक गुफा के धुंधलके में मौज-मस्ती कर रहे थे। एक-दो बार वे बाहर गिर पड़े थे। पहले तो सीता ने धीमी, गुर्राती हुई आवाज़ निकालकर उन्हें वापस बुलाकर उनकी शरारतों को रोका। जो भी शावक उसकी बात नहीं मानता, सीता उसे अपने अगले पंजे से ज़ोरदार थप्पड़ मारती, जिससे वह भटकता हुआ शावक जितनी तेज़ी से भाग सकता था, गुफा के अंदर चला जाता।

लेकिन आज शाम सब कुछ कुछ अलग था। सीता गुफा से बाहर निकलीं और पीछे मुड़कर उन्हें देखा, उनके गले से एक म्याऊं जैसी आवाज़ निकली। वे हिचकिचाते हुए उनके पास आए थे, उन्हें डांट पड़ने का डर था। लेकिन वह फिर कुछ कदम आगे बढ़ीं। फिर उन्होंने पीछे मुड़कर देखा और एक बार फिर। वे फिर उनके पीछे चल पड़े। तीसरी बार, वह आगे बढ़ीं और उन्हें पुकारा, और वे उनके पीछे चल दिए। इस प्रकार, रास्ता दिखाते हुए, सीता उन्हें जंगल की अपनी पहली यात्रा पर ले गईं - पहाड़ियों और घाटियों, वादियों और पहाड़ों का वह विशाल विस्तार; विशाल, लताओं से लिपटे पेड़ों और घनी झाड़ियों का; घास के मैदानों और क्रिस्टल-स्पष्ट धाराओं का, जहाँ पानी कंकड़ों पर और चट्टानी शिलाओं के बीच तथा कई पौधों की टेढ़ी-मेढ़ी जड़ों के बीच कलकल करता हुआ बहता था। वह जंगल, जो अंधेरी रातों में इतना काला और

भयावह लगता था जब जुगनू विशाल पेड़ों के तनों के बीच परी जैसे दीयों की तरह उड़ते थे; चांदनी रातों में, जब रात्रि की रानी आकाश के तारों से जगमगाते सागर में अपनी राजसी यात्रा करती है, तो वह दृश्य कितना अलग दिखता है; तूफानी रातों में वह कितना अद्भुत हो सकता है, जब गरज की गड़गड़ाहट से वह गूंज उठता है, और चमकीली बिजली बारिश से लदे बादलों पर नक्शे पर विशाल नदियों की तरह लकीरें बनाती है, और बादल पानी की मोटी चादरों में बदल जाते हैं, जिससे बहती छोटी धाराएँ उग्र धाराओं में बदल जाती हैं। वह जंगल जो इतना शांत होते हुए भी इतना शोरगुल भरा हो सकता है, जब वह बाघ तिमोर की दहाड़ या उसके मरते हुए शिकार की दर्द भरी चीख से गूंज उठता है; जो इतना अकेला दिखता है, फिर भी उसमें छिपी हुई जिंदगी धड़कती है; जो इतना क्रूर होते हुए भी इतना दयालु हो सकता है; वह इन तीन शावकों के लिए असीमित स्वतंत्रता का स्थान होगा, जहाँ वे अपनी इच्छा से घूम सकते हैं; वह उनका घर होगा!

उस शाम सीता उन्हें ज़्यादा दूर नहीं ले गई। शायद बस कुछ सौ गज। लेकिन इतना काफ़ी था कि उनके चंचल मन में यह बात बैठ जाए कि एक बड़ी दुनिया भी है, जहाँ शायद सिर्फ़ उछल-कूद, खेलना, खाना और सोना ही नहीं, बल्कि और भी बहुत कुछ करने को है, जैसा कि वे जन्म से करते आ रहे थे।

अगली शाम को वह उन्हें फिर से बाहर ले गई, और इस बार काफी दूर तक ले गई, और शाम ढलने के समय उन्हें वापस उनके पथरीले घर ले आई।

तीसरा दिन उनके जीवन का एक यादगार दिन था। इस बार सीता उन्हें गुफा से पहले की तुलना में बहुत देर से बाहर लेकर आई। पश्चिम की ओर ऊबड़-खाबड़ पहाड़ के पीछे सूरज डूब रहा था और वह धीरे-धीरे ढलान पर उतर रही थी। उसके कंधों की मांसपेशियां हर कदम पर सिकुड़ती और फैलती थीं, और तीनों शावक उसके पीछे पत्थरों पर लड़खड़ाते और गिरते जा रहे थे। फिर वे पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे और ज़मीन समतल हो गई।

सीता उन्हें एक संकरे, घुमावदार रास्ते पर ले गई। जंगल ने उन्हें दोनों ओर से घेर रखा था। वह अक्सर रुक जाती, मानो कुछ सुन रही हो या किसी चीज़ का इंतज़ार कर रही हो। सहज प्रवृत्ति के चलते उसके पीछे एक कतार में चल रहे तीनों शावक भी रुक

गए। ज़ाहिर है, उन्होंने अभी सुनना नहीं सीखा था। वैसे भी, उन्हें पता नहीं होता कि क्या सुनना है। लगभग एक मील चलने के बाद वे एक छोटे से कीचड़ भरे पानी के गड्ढे के पास पहुँचे। चारों ओर पेड़ और लंबी घास उगी हुई थी।

सीता उन्हें कुछ गज दूर पगडंडी से हटकर ले गई। फिर वह नींबू घास के एक बड़े से गुच्छे के पीछे ज़मीन पर लेट गई। शावक उसके पास दुबक गए।

बाघ ने दूध पीने का अच्छा मौका समझा और अपनी माँ के पेट के नीचे अपनी छोटी सी गीली नाक घुसाकर थन खोजने लगा। तभी माँ ने लगभग धीमी सी गुर्राहट की और अपने दाहिने अगले पंजे से बाघ को ज़ोर से मारा। यह वार मामूली था, लेकिन बाघ को गिरा दिया और वह लंबी घास में पीठ के बल गिर पड़ा, अचानक हुए इस हमले से वह अचंभित और घायल था। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से वह आश्चर्य से माँ को देखता रहा। सीता को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह फिर से एकाग्र होकर ध्यान से देख रही थी, और पता नहीं किस बात का इंतज़ार कर रही थी।

बाघ धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ। हिचकिचाते हुए और क्षमा मांगते हुए वह वापस रेंगकर अपनी मां के पास बैठ गया।

वे काफी देर तक इसी तरह एक साथ huddled होकर बैठे रहे।

फिर सीता ने खुद को और भी करीब जमीन पर समेट लिया, उसका विशाल सिर फैले हुए अगले पंजों के बीच धंस गया।

उसी समय, उसने अपने पिछले पैरों को अपने नीचे समेट लिया, जबकि उसकी फैली हुई पूंछ का ऊपरी हिस्सा झटके से ऊपर-नीचे हिलने लगा। एक पल के लिए बाघ का मन हुआ कि वह उससे खेले।

शावक अपनी माँ को देखते रहे और उसकी हर हरकत की नकल करते रहे। तभी उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी: बहुत धीमी, लेकिन फिर भी साफ़ सुनाई देने वाली। कहीं कोई छोटा पत्थर लुढ़क गया था और दूसरे पत्थर से हल्की सी खनक सुनाई दी। आखिर किस चीज़ ने उस पत्थर को हिलाया होगा?

कुछ ही सेकंड बाद उन्हें किसी भारी चीज के धीरे-धीरे और सावधानीपूर्वक झाड़ियों के बीच से गुजरने की हल्की सी आवाज सुनाई दी, जो उस रास्ते को ढक रही थी जिससे वे अभी-अभी आए थे।

सीता ने अपने पिछले पैरों को और भी कसकर अपने नीचे समेट लिया। उसकी पूंछ का सिरा अगल-बगल लहरा रहा था और उसका पूरा लचीला शरीर धीरे-धीरे कांप रहा था।

सरसराहट की आवाज़ नज़दीक आती गई। अब वह लगभग उनके छिपने की जगह के ठीक सामने थी। सीता ने अपना शरीर ज़मीन से थोड़ा सा ऊपर उठाया। फिर वह धीरे-धीरे आगे-पीछे हिलने लगी। यह एक सुंदर, बिना आवाज़ वाली, लयबद्ध गति थी। शावकों को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह आने वाले हमले के लिए अपने शरीर को संतुलित कर रही थी।

फिर, मानो किसी विशाल स्प्रिंग से धकेली जा रही हो, उसका धारीदार शरीर हवा में तेजी से उड़ने लगा।

चित्तीदार हिरण—वही जानवर था जो पानी के कुंड की ओर बढ़ रहा था—कुंड तक पहुँचने में विशेष रूप से सतर्क था। वह चारों ओर फैली घनी झाड़ियों में छिपे अनेक खतरों से भलीभांति परिचित था। उसकी प्रजाति के कई जानवर पहले ही बाघों के भूखे जबड़ों, तेंदुओं के क्रूर पंजों, जंगली कुत्तों की अतृप्त क्रूरता और मानव शिकारियों की चालाकी का शिकार हो चुके थे, जो समय-समय पर झाड़ियों में छिपकर रास्ते में उन पर हमला करते थे।

कुछ देर से हिरण खतरे की आहट सूंघ रहा था, पर कोई आहट नहीं दिख रही थी। सच था कि दक्षिण-पश्चिम से तेज़ हवा चल रही थी, जो आने वाले मानसून का संकेत थी और शिकार के रास्ते के पूर्व में छिपे किसी भी दुश्मन की गंध को बिखेर देती। चित्तीदार हिरण को लगता कि अगर वह उस खतरनाक पूर्वी तरफ के तालाब को पार कर पाता तो वह कहीं अधिक सुरक्षित होता। लेकिन झाड़ियाँ घनी थीं, और वह अपने चित्तीदार शरीर को भी उस उलझी हुई बाधा को पार नहीं कर सका।

इसलिए उसने जानबूझकर झाड़ियों से अपना शरीर रगड़कर शोर मचाया, इस उम्मीद में कि कोई छिपा हुआ मांसाहारी जानवर या दुश्मन उस पर हमला कर दे, ताकि उसके

पास मुड़कर सुरक्षित भागने का पर्याप्त समय हो। लेकिन कुछ नहीं हुआ। न तो कोई हमला हुआ और न ही कोई ऐसा संकेत मिला जिससे उसे चिंता हो।

इसलिए हिरण को तसल्ली हुई कि तत्काल कोई खतरा नहीं है। वैसे भी, उसे बहुत प्यास लगी थी। दिन बहुत गर्म और सूखा था, और उसने पिछली रात लगभग पाँच मील दूर एक दूसरे तालाब में पानी पीने के बाद से पानी नहीं पिया था। इसलिए वह कीचड़ भरे किनारे की ओर कुछ और छोटे-छोटे कदम बढ़ाए।

अचानक सब कुछ तहस-नहस हो गया। एक ज़ोरदार शोर हुआ। लगातार गर्जनाएँ उस पर बरस पड़ीं, जिससे उसके फड़कते कान सुन्न हो गए। हिरण मुड़ा और भागने लगा। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

इससे पहले कि वह गति पकड़ पाता, भूरे और काले रंग की धारियों वाला एक लंबा-चौड़ा जीव झाड़ियों से निकला और हवा में तेज़ी से उड़ता हुआ ज़ोरदार आवाज़ के साथ उसकी पीठ के बल ज़मीन पर गिरा। लंबे, क्रूर नुकीले दांतों वाला एक विशाल जबड़ा उसकी गर्दन और गले में धंस गया, जबकि दो विशाल पंजों पर लगे पंजे उसके दोनों कंधों को जकड़े हुए थे।

'आह! आह! ऐ-ईई!' वह भय और दर्द से चीख उठा और अपने ऊपर पड़े भारी वजन के कारण जमीन पर गिर पड़ा।

पिस्तौल जैसी आवाज़ आई और उसकी गर्दन मरोड़कर सूखी टहनी की तरह टूट गई। मदद के लिए उसकी आखिरी दयनीय गुहार, एक लंबी और दर्द भरी 'आ-आ-र्रह!' अनसुनी रह गई और उसके गले में ही दहक गई, जैसे ही हिरण का जीवन उस जंगल के शून्य में समा गया जहाँ से वह आया था। पहले से ही मृत पैरों ने खुरों की एक तेज़ आवाज़ निकाली जो फिर कभी उन वन घाटियों पर नहीं चलेंगी जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे। फिर जंगल में सन्नाटा छा गया। सीता ने झटपट और साफ-सुथरा शिकार कर लिया था।

बाघ और उसकी दोनों बहनें घटनाओं के इस तीव्र क्रम को देखकर स्तब्ध रह गईं। एक पल पहले उनकी माँ उनके साथ थीं; अगले ही पल उन्होंने उस अदृश्य वस्तु पर झपट्टा मारा जिसकी आवाज़ उन्होंने जंगल के रास्ते पर सुनी थी। फिर एक शरीर के ज़मीन पर ज़ोर से गिरने की आवाज़ आई, दर्द भरी चीखों का सिलसिला चला, किसी चीज़

के ज़मीन पर तेज़ी से टकराने की धप-धप-धप की आवाज़ आई, और फिर सन्नाटा छा गया।

शावक एक साथ झुंड बनाकर दुबक गए, कांपते हुए, भयभीत समूह में छिप गए। शायद उनकी माँ के साथ कुछ भयानक घटित हुआ था। तभी सीता ने अपनी धीमी, कर्कश लेकिन लगातार आवाज़ में उन्हें पुकारा।

वे हिचकिचाते हुए खुद को छुड़ाकर धीरे-धीरे और डरते हुए आगे बढ़े। उन्होंने सीता को एक गिरे हुए जानवर के ऊपर खड़े देखा, उसके थूथन और जबड़े से कुछ लाल रंग का पदार्थ टपक रहा था - ताजा बहे खून का लाल रंग!

तीनों शावकों में अचानक एक बदलाव आ गया। एक पल पहले वे डर से कांप रहे थे। अब वे तीन छोटे शैतान बन गए थे, मरे हुए हिरण की चित्तीदार खाल पर लगे गाढ़े लाल खून को देखकर और उसकी गंध से दहाड़ते हुए। वे एक-दूसरे पर गुर्राए और थूके। तभी बाघ, जो अपनी दोनों बहनों से भारी और साहसी था, अचानक तीनों में सबसे छोटी लीला पर झपटा, जो मरे हुए जानवर की ओर बढ़ रही थी। अपने पंजे पूरी तरह फैलाकर, उसने लीला के चेहरे और थूथन पर अपने पंजों से लगातार दाएं, दाएं और बाएं वार किए, और इससे पहले कि वह अपने आश्चर्य से उबर पाती, उसने अपने नुकीले दांतों से उसके कान पर बेरहमी से काट लिया।

शावक आपस में शरारती खेल खेलने के आदी थे, लेकिन नन्ही लीला को पहली बार एहसास हुआ कि यह कोई खेल नहीं था। यह उसके क्रोधित भाई का एक क्रूर और जानबूझकर किया गया हमला था। वह पीछे हट गई और कुछ गज दूर एक झाड़ी के पीछे छिप गई, जहाँ उसे आगे के हमले से सुरक्षा मिली। लेकिन बाघ ने लीला में रुचि खो दी क्योंकि उसने अपनी दूसरी बहन मीना को गिरे हुए हिरण की ओर आते देखा। उसने बदले में मीना पर झपट्टा मारा और उसकी गर्दन पर काट लिया, जबकि उसके बाएं पिछले पैर के नुकीले पंजे उसके दाहिने हिस्से को खरोंच रहे थे। लेकिन मीना लीला से कहीं अधिक मजबूत थी। अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए वह उसके नीचे घूम गई, अपनी पीठ के बल लेट गई, अपने पिछले पैरों को बाघ के पेट के नीचे समेट लिया और अपनी पूरी ताकत से ऊपर और पीछे की ओर धकेला। बाघ दर्द से चीख उठा क्योंकि उसके पंजों ने उसके पेट पर सुरक्षात्मक सफेद फर को चीरते हुए नीचे

की कोमल त्वचा में गहरे समानांतर खरोंच बना दिए। अब बाघ की बारी थी कि वह छिप जाए और अपनी बहन मीना को फिलहाल स्थिति का पूरा नियंत्रण सौंप दे।

सीता अपने घुटनों के बल बैठी हुई थी और बारी-बारी से मरे हुए हिरण और अपने झगड़ते हुए शावकों को देख रही थी। अब वह शिकार के पिछले हिस्से की ओर चली गई। अपना सिर उसकी जांघों के बीच रखकर, उसने एक ज़ोरदार झटके से उसकी बाहरी खाल फाड़ दी। एक चीरने जैसी आवाज़ आई और हिरण की आंतें हरी घास पर बिखर गईं। मल, जो पहले से ही गोलों में जमा हो चुका था और निकलने ही वाला था, फटी हुई आंतों से बाहर गिर पड़ा। सीता ने अपना सिर नीचे किया और कुछ सेकंड तक उस गंदगी को सूंघा। उसकी सूंघने की शक्ति कम होने के बावजूद, घृणा से उसका चेहरा सिकुड़ गया। फिर वह ज़मीन पर बैठ गई और अपना दाहिना अगला पंजा उस छेद में डाला जो उसने बनाया था। उसने अंदर टटोला और अपने लंबे नुकीले पंजों से पेट और ऊपरी आंतों को ढूँढ़ा। व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण ढंग से उसने उन्हें मरे हुए जानवर से बाहर निकाला और अपने सामने ज़मीन पर पड़ी आंतों और मल के साथ मिला दिया। पेट फट गया और आधा पचा हुआ घास और मांस बाहर निकल आया। घाव से खून धीमी धारा के रूप में रिसकर घास पर एक छोटा सा तालाब बना दिया और जल्दी ही सूखी मिट्टी में समा गया।

लेकिन सीता अभी भी संतुष्ट नहीं थी, क्योंकि सभी बाघों की तरह वह भी शिकार को अच्छी तरह साफ करती थी। अपने पंजों और दांतों से उसने बिखरे हुए मांस को इकट्ठा किया और उसे कुछ दूर तक ज़मीन पर घसीटा। फिर, यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह उसके रास्ते में नहीं है, वह शिकार के पास लौट आई और खाने लगी। अपने बनाए हुए गड्ढे में सिर रखकर, जो अब काफी बड़ा हो चुका था, उसने एक जांघ पकड़ी और मांस और चमड़ी का एक बड़ा टुकड़ा फाड़कर बड़े-बड़े घूंटों में निगलना शुरू कर दिया।

तीनों शावक अब अपने हाल के मतभेदों को भुला चुके थे और ताज़ा मांस और खून की गंध से आकर्षित होकर अलग-अलग दिशाओं से आगे बढ़ रहे थे। उत्तेजित, भूखे और खून की प्यास से व्याकुल, वे एक-दूसरे पर और सीता पर अंधाधुंध गुर्राते, घुरघुराते, खरोंचते और काटते हुए टूट पड़े। बाघ पर अपनी हालिया जीत से उत्साहित मीना ने अचानक मांस और खाल के उस टुकड़े के एक सिरे पर अपने जबड़े गड़ा दिए जिसे सीता खा रही थी। गुर्राते और थूकते हुए, उसने सीता की पकड़ को दूसरे सिरे से

छुड़ाने के प्रयास में अपना सिर ज़ोर से हिलाया।

लेकिन उसने एक बड़ी और बुनियादी गलती कर दी थी। कोई भी जानवर, यहाँ तक कि शावकों वाली बाघिन भी, स्वेच्छा से अपना भोजन किसी दूसरे जानवर को, यहाँ तक कि अपने ही शावक को भी, नहीं देती। एक छोटी और भयानक दहाड़ के साथ, सीता ने अपने शक्तिशाली पंजे से मीना पर झपट्टा मारा, शावक के सिर के किनारे पर वार किया और उसे दूर धकेल दिया। वार की ताकत से वह आधा अचेत हो गया था, लेकिन उसे जंगल का एक बुनियादी नियम हमेशा के लिए समझ आ गया: भोजन कर रहे बाघ के बहुत करीब जाने का जोखिम कभी न लें।

और इस प्रकार सीता ने तब तक खाया जब तक उसका पेट पूरी तरह भर नहीं गया और हिरण की क्षत-विक्षत हड्डियाँ, उसके चारों पैर, गर्दन और सिर, जो अभी भी अपने शानदार सींगों से जगमगा रहा था, शेष रह गईं।

फिर वह उठी, कुछ कदम आगे बढ़ी और जमीन पर लेट गई, और अपने सामने के दृश्य को आधी बंद आंखों से देखने लगी।

वह क्रिया उन तीनों युवाओं के लिए एक मौन सहमति थी कि अब उन्हें भोज में भाग लेने की अनुमति मिल गई है। उन्हें दोबारा अनुमति मांगने की आवश्यकता नहीं थी।

गुर्राते और दहाड़ते हुए वे हिरण के अवशेषों पर टूट पड़े; खून, मांस और हड्डियों के बीच संघर्ष करते, मरोड़ते और छटपटाते रहे, जब तक कि उनकी धारीदार युवा खालें जल्द ही मैली और अस्त-व्यस्त नहीं हो गईं, और उनके छोटे चेहरे और सिर, जो हाल ही में शावकता की मासूमियत से सुंदर थे, राक्षसी दिखने लगे।

वह पहला बड़ा साहसिक अनुभव था और यह उनके नासमझ छोटे मन में काफी लंबे समय तक बसा रहा। इसने उन्हें दिखाया कि उनकी माता सीता को उनके भोजन के लिए मारना पड़ता था; इसने उन्हें ताजा बहे गर्म रक्त की गंध और स्वाद दिया, और उस शरीर के अभी भी गर्म मांस का स्वाद दिया जिससे जीवन की चिंगारी अभी-अभी निकल गई थी; और इसने उनके भीतर स्वयं मारने, किसी का वध करने, उसके जीते हुए मांस को खाने और उसके अभी भी बहते रक्त को पीने की लालसा पैदा कर दी।

उसके बाद सीता हर शाम अपने तीन शावकों को शिकार पर ले जाती थी। कभी-कभी

उन्हें सफलता नहीं मिलती थी और वे देर रात या सुबह तड़के थके-हारे और भूख से बेहाल होकर अपनी सुनसान छोटी गुफा में लौट आते थे। खाली पेट होने के कारण कोई न कोई शावक भोजन की तलाश में सीता के उस पुराने स्रोत की ओर दौड़ पड़ता था जहाँ से वे भोजन प्राप्त करते थे - सीता के अब सूखे हुए थन। लेकिन बाघिन इस प्रयास को नापसंद करती और निर्दयता से शावक को लात मारती, थप्पड़ मारती या यहाँ तक कि काट भी लेती थी। क्योंकि उनके दांत लंबे और नुकीले हो गए थे, और उनके पंजे असहनीय रूप से शक्तिशाली हो गए थे। दूध की तलाश में वे सीता के पेट की कोमल त्वचा को चोट पहुँचाते और थनों को खरोंचते थे।

इन शिकारों के परिणामस्वरूप उनके आहार में प्रोटीन की मात्रा बढ़ने से शावकों का शारीरिक विकास और शिकार करने का कौशल दोनों ही तेजी से बढ़ा। दो महीने बाद, बाघ ने अपना पहला स्वतंत्र शिकार किया। बेशक, अब तक वह अपने रास्ते में आने वाले छोटे-छोटे जीवों का पीछा करके उन्हें मारता रहा था, कुछ को भोजन के लिए, कुछ को मनोरंजन के लिए या सिर्फ इसलिए कि वे उसे परेशान करते थे: बड़े टिड्डे और तितलियाँ, कई मेंढक, बाँस के चूहे और झाड़ी के चूहे, गिलहरी और छोटे पक्षी जो अभी ठीक से उड़ नहीं सकते थे, और अन्य छोटे कीड़े और सरीसृप जो उसे मिले थे। एक बार, जब सीता का ध्यान कहीं और था, उसने एक साही का बिल ढूँढ़ लिया और उसमें रहने वाले को खोदकर बाहर निकालने की कोशिश की। साही को यह दखलंदाजी बुरी लगी और वह पीछे की ओर झपटा, अपने नुकीले कांटों से बाघ को बुरी तरह घायल कर दिया और कुछ कांटे उसके चेहरे में धंस गए। उसकी दाहिनी आँख बाल-बाल बच गई, और कुछ दिनों बाद कांटे अपने आप ढीले होकर गिर गए। उस समय से वह हर प्रकार के बिलों से दूर रहने लगा, चाहे वे साही के हों या किसी अन्य प्राणी के।

भोली-भाली लीला ने दोपहर में घास के एक झुंड के नीचे आराम कर रहे एक रसेल विषैले सांप को परेशान कर दिया था। उसने घास पर पैर रखा और फुफकारने की आवाज़ सुनी: उसका अनुमान सही निकला, आवाज़ पीठ पर गहरे भूरे रंग के हीरे के आकार के निशानों की तीन पंक्तियों वाले एक बड़े, मोटे सांप से आ रही थी। विषैले सांप ने ज़ोरदार प्रहार किया, लेकिन उसकी सहज प्रवृत्ति ने समय रहते लीला को सचेत कर दिया। जैसे ही कुदाल के आकार के उस भयानक सांप का सिर, खुले जबड़े

और ज़हरीले दांत खड़े हुए, उस जगह पर लगा जहाँ वह कुछ पल पहले खड़ी थी, लीला झट से एक तरफ हट गई। विषैले सांप ने परेशान किए जाने पर बार-बार फुफकार कर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की, जबकि लीला उसे जिज्ञासा और एक तिरछी नज़र से देखती रही - लेकिन अब सुरक्षित दूरी से। फिर उसने फैसला किया कि यह कोई अजीब चीज़ है जो खतरनाक प्रतीत होती है और इसलिए इसे अकेला छोड़ देना ही बेहतर है, और वह दौड़कर परिवार के बाकी सदस्यों के पास वापस चली गई।

उस दूसरे यादगार दिन तक उन सभी के साथ ऐसी कई छोटी-छोटी घटनाएं घटित हो चुकी थीं - वह दिन जब बाघ ने अपना पहला असली शिकार किया। उसका शिकार एक पूर्ण विकसित मोर था!

मोर सचमुच बहुत शर्मीले पक्षी होते हैं और जंगल के सबसे सतर्क रखवालों में गिने जाते हैं। उनकी दृष्टि अद्भुत होती है और उनमें ऐसी सहज प्रवृत्ति होती है जो उन्हें किसी भी छिपे हुए दुश्मन की मौजूदगी का एहसास करा देती है, चाहे वह किसी भी प्रकार का हो। आम तौर पर, बाघ जैसे अनुभवहीन शावक के लिए बिना देखे आसपास आने का कोई मौका नहीं होता। लेकिन यह मोर घायल था। लगभग एक सप्ताह पहले, वह कुछ मील दूर स्थित गाँव के खेतों में उड़कर गया था और वहाँ उगने वाले रागी और ज्वारी के दाने खा रहा था। अगर यह उत्तरी भारत होता, तो पक्षी सुरक्षित होता, क्योंकि सभी मोरों को पवित्र माना जाता है और किसी को भी उन्हें नुकसान पहुँचाने की अनुमति नहीं है। लेकिन दक्षिण में उन्हें यह सुरक्षा नहीं मिलती। देश के इस हिस्से के ग्रामीण, विशेषकर वन क्षेत्रों में रहने वाले, कम संकोची होते हैं और चावल या रागी के गोलों के अपने अपेक्षाकृत कम और कुछ हद तक नीरस भोजन में एक बड़ा, मोटा, रसीला भुना हुआ मोर जोड़ने के अवसर का स्वागत करते हैं।

मोर रामदास के खेत में आकर बैठ गया, और मोर के लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह थी कि रामदास उसी खेत के एक कोने में अपनी पुरानी, भरी हुई और तैयार पिस्तौल के साथ छिपा हुआ था। निशाना दूर था, लेकिन रामदास ने जोखिम उठाया और गोली चला दी। सीसे के दो नुकीले टुकड़े पक्षी के दाहिने पंख की हड्डी को भेदकर चकनाचूर कर गए। मोर ने उड़ने की कोशिश की, लेकिन यह असंभव था। उसके भारी वजन के कारण उसे दौड़कर शुरुआत करनी पड़ती और हवा में उड़ने से पहले दोनों पंखों का

पूरा इस्तेमाल करना पड़ता। इसलिए उसने दूसरा सबसे अच्छा विकल्प चुना। वह खेत से सटे जंगल की ओर तेज़ी से भागा और रामदास के दोबारा पिस्तौल भरने से पहले ही गायब हो गया।

उसके बाद का सप्ताह बहुत कठिन रहा। उसे ज़मीन पर मिलने वाले थोड़े से भोजन से ही गुज़ारा करना पड़ा और रात में पेड़ों की चोटियों पर शरण लेने के बजाय झाड़ियों की ओट में छिपना पड़ा, जहाँ उसके साथी रात के अंधेरे में सुरक्षित रहने के लिए इकट्ठा होते थे।

बदकिस्मती से, उस शाम मोर एक कैक्टस की झाड़ी के खून जैसे लाल, गूदेदार फल खा रहा था, तभी उसे बाघों के परिवार के आने का आभास हुआ। एक पल के लिए वह भूल गया कि वह पास के पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं पर उड़कर अपनी जान नहीं बचा सकता। लेकिन उस गलती और उस एक पल की देरी ने उसकी जान ले ली। क्योंकि पगडंडी के एक मोड़ पर बाघ ने उसे देख लिया और उसका पीछा करने लगा। बहुत देर हो चुकी थी, मोर को याद आया कि वह उड़ नहीं सकता और वह ज़मीन पर रेंगता हुआ झाड़ियों या जो भी आड़ मिले, उसमें छिपने की कोशिश करने लगा। लेकिन बाघ जवान और फुर्तीला था। साथ ही, वह एक बड़ा शिकार करने के लिए बेताब था और भागते हुए मोर में उसने अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने का मौका देखा। वह उसका पीछा करता रहा और आखिरकार जब मोर एक लैंटाना झाड़ी के नीचे गायब हो रहा था, तब उसने उसकी पूंछ पकड़ ली।

बाघ ने अपने दाँतों से कसकर पकड़ रखा था और फड़फड़ाते हुए मोर को झाड़ियों से बाहर खींच लाया। फिर, पूंछ से अपनी पकड़ छोड़ते हुए, बाघ ने झट से उसकी पतली गर्दन को पकड़ लिया, जो पन्ना और गहरे नीले रंग के छोटे-छोटे चमकदार पंखों से ढकी हुई थी। उसके नुकीले सफेद दाँतों की एक ही चोट से चमकीला लाल खून उन खूबसूरत रंगों में घुल गया। वह गर्दन, जो कुछ ही पल पहले इतनी कोमल और पतली थी, अब शक्तिशाली काटने से हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं और पीछे की ओर गिर पड़ीं। पैर बेतहाशा छटपटाए, एक पंख हताशा में कुछ बार फड़फड़ाया। लेकिन मोर पहले ही मर चुका था, उसकी चोंच खुली हुई थी और उसके चकनाचूर शरीर से जीवन की चिंगारी निकल चुकी थी।

बाघ ने अपना पहला शिकार कर लिया था और उसे बहुत गर्व हो रहा था। लेकिन वह इस खुशी का आनंद ज्यादा देर तक नहीं ले सका। मीना और लीला ने यह सब देख लिया था। ईर्ष्या से भरी निगाहों से उन्होंने बाघ के मुंह से लटके उस बड़े पक्षी को देखा। वे दोनों एक साथ उस पर टूट पड़ीं और पक्षी को उससे छीनने की कोशिश करने लगीं। एक भयंकर लड़ाई छिड़ गई, जबकि थोड़ी दूरी पर पीछे से सीता धैर्य और गर्व से अपने बेटे और दोनों बेटियों के उस पर किए गए हमले को देख रही थी।

¤

उस समय से बाघ और उसकी दोनों बहनों ने शिकार करने और अपने प्राकृतिक शिकार को मारने की कला में बड़ी तरक्की की, और जल्द ही वे निडरता और सफलता से बड़े जीवों का सामना करने में सक्षम हो गए। विशाल सांभर हिरण और खूंखार बूढ़े जंगली सूअर को अभी भी बहुत शक्तिशाली और युद्धप्रिय माना जाता था; जबकि बूढ़ा ब्रुइन, गुस्सैल काला सुस्त भालू, हालांकि वास्तव में काफी डरपोक था, अगर कोई उसके पास आता तो वह चीखता और इतना शोर मचाता कि उस शोर से ही वे भाग जाते।

इसके बाद शावक तेजी से बढ़ने लगे और लगभग अपनी माँ सीता के बराबर बड़े हो गए। तब तक वे शिकार करने में माहिर हो चुके थे और शक्तिशाली बाइसन और राजसी हाथी को छोड़कर लगभग सभी प्रकार के जानवर किसी न किसी समय उनके कौशल का शिकार बन चुके थे। सीता ने शुरू में कुछ मुठभेड़ों में उनकी मदद की थी, लेकिन बहुत जल्द वे स्वयं अपना बचाव करने और सीता द्वारा बार-बार सिखाए गए तरीके से गर्दन तोड़कर अपने शिकार को कुशलतापूर्वक मारने में सक्षम हो गए।

इसमें समय लगा था और इस कला में निपुण होने के लिए उसने काफी मेहनत की थी। बाघिन ने शुरुआत में एक ही झुंड के तीन-चार मवेशियों को एक साथ मारकर शिकार करना शुरू किया, जबकि शावक उसके पास दौड़ते हुए उसे शिकार करते हुए देखते थे। शावकों ने देखा - और इस अवलोकन में उन्हें अपनी माँ को सीधे देखने की बजाय सहज प्रवृत्ति से अधिक सहायता मिली - कि वह शिकार की पीठ पर छलांग लगाती थी, और अपने दोनों शक्तिशाली अगले पंजों से उसके कंधों को मजबूती से पकड़कर, अपने विशाल जबड़ों से उसका गला पकड़ लेती थी। फिर वह उसे ऊपर

और गोल घुमाती थी। इस ज़ोरदार झटके के साथ-साथ बाघिन का भार और शिकार का भार मिलकर जानवर का संतुलन बिगाड़ देते थे, और वह पलटकर शिकारी के साथ ज़मीन पर गिर जाता था। इस अचानक पलटने की गति, और हमलावर और शिकार के संयुक्त भार के कारण शिकार की रीढ़ की हड्डियों पर इतना ज़ोर पड़ता था कि शरीर के ज़मीन पर गिरते ही गर्दन टूट जाती थी। जानवर की तुरंत मौत हो जाती, हालांकि सीता पूरी तरह से सुनिश्चित होने के लिए एक या दो मिनट तक उसके गले पर अपनी पकड़ बनाए रखती।

इस कला में निपुणता प्राप्त करने से पहले शावकों को कई चरणों से गुजरना पड़ा था। छोटे शिकारों पर किए गए उनके शुरुआती प्रयास मात्र अपरिपक्व और बेतरतीब तरीके थे। अक्सर वे गड़बड़ कर देते थे और जानवर बुरी तरह से घायल होकर भाग जाता था, शावकों के पंजों से बुरी तरह से कटा हुआ। कई बार वे उसे काटकर मार डालते थे। जैसे-जैसे उनका अनुभव बढ़ता गया, वे पैंथर की तरह शिकार को मारने लगे, यानी शिकार का गला पकड़कर तब तक कसकर पकड़े रहते थे जब तक कि उसका दम घुटकर मौत न हो जाए। गर्दन तोड़ने की कला उन्हें शायद अठारह महीने की उम्र के बाद ही आई, जब उनका शरीर इतना भारी हो गया था और पकड़ इतनी मजबूत हो गई थी कि वे शिकार को पकड़ सकें।

लेकिन अंततः वे सफल हो गए, और यही वह समय था जब जंगल के नियमों और सर्वज्ञानी प्रकृति के प्रावधानों के अनुसार, वह स्थिति आ गई जब एक परिवार के रूप में उनका अस्तित्व समाप्त हो गया और उन्होंने अपना भरण-पोषण स्वयं करना शुरू कर दिया।

¤

अक्टूबर का आखिरी हफ्ता था। मानसून का सबसे भीषण दौर बीत चुका था और दक्षिण-पश्चिम से आने वाले तूफ़ानी, बारिश से लदे बादल अब आसमान में मंडराकर जंगल को मूसलाधार बारिश से नहीं भिगो रहे थे। दरअसल, अब हवाएं विपरीत दिशा से चल रही थीं, जिससे उत्तर-पूर्व से कभी-कभार हल्की बारिश हो रही थी। इन कुछ बरसाती दिनों के बीच मौसम सुहाना था, सूरज की किरणें खिल रही थीं और जंगल के हर पेड़, झाड़ी और यहां तक कि लंबी और तेज़ सुगंध वाली लेमनग्रास पर भी नए पत्ते

उग आए थे। रंग-बिरंगे ऑर्किड, हल्के हरे रंग की दाढ़ी जैसी काई और कभी नंगी चट्टानों को ढकने वाली फीकी, धूसर लाइकेन, सब कुछ ताज़ा और साफ-सुथरा दिख रहा था।

शरद ऋतु का मौसम था, और भारतीय जंगलों के मांसाहारी जीवों के प्रजनन का भी समय शुरू हो रहा था। बाघ और तेंदुआ भी अपने साथी की तलाश में जुट गए थे, और इस तलाश में वे अधीर और मांग करने वाले बन गए थे।

इन जानवरों में, मादा ही सबसे पहले यौन इच्छा महसूस करती है और खुलकर जंगल में यह ऐलान कर देती है कि उसे साथी चाहिए। बाघिन की बुलंद आवाज़ और पैंथर की धीमी लेकिन लगातार चीं-चीं, आस-पास के नर जानवरों को खुला निमंत्रण देती है कि मादा को प्रेमी की सख्त ज़रूरत है। पालतू बिल्लियाँ भी ऐसा ही करती हैं, और जैसे ही आस-पास के नर बिल्लियाँ जवाब देने के लिए दौड़ती हैं, उनके बड़े और जंगली भाई भी मादा की इच्छा पूरी करने के लिए तुरंत पहुँच जाते हैं।

सीता के मन में पिछले अठारह महीनों से यह इच्छा दबी हुई थी। एक तो उसका सारा ध्यान शावकों पर था। उसे उनकी देखभाल और शिक्षा पूरी करनी थी। दूसरे, एक वयस्क बाघ, विशेषकर प्रेमालाप के समय, अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों, चाहे वे बड़े हों या छोटे, की उपस्थिति को बर्दाश्त नहीं कर पाता। उसका प्रेमी तो उसके शावकों को खा ही जाता।

अब वे पहले से बड़े हो गए थे, लेकिन फिर भी इतने बड़े नहीं थे कि एक पूर्ण विकसित बाघ के सामने अपनी शक्ति का परीक्षण कर सकें। सीता जानती थी कि नया प्रेमी लाने से पहले उसे अपने वर्तमान परिवार से अलग होना पड़ेगा, और उसने इसके लिए उनके साथ यथासंभव बुरा बर्ताव करना शुरू कर दिया, ताकि उन्हें जल्द से जल्द भगा सके।

बाघ और उसकी दोनों बहनें अपनी माँ के व्यवहार में आए इस बदलाव से हैरान थीं। जो माँ पहले उनके प्रति इतनी दयालु थी, अब अगर वे किसी जानवर के पास जाने की हिम्मत करते, तो वह गुर्राती और बेरहमी से काटती थी। यहाँ तक कि जब तीनों बच्चों में से कोई शिकार करता और सीता आस-पास होती, तो वह मरे हुए जानवर पर झपट पड़ती और अगर उसके बच्चे पास जाने की हिम्मत करते, तो वह अपने पंजों से उन

पर बेरहमी से वार करती।

मीना और लीला अपनी मां के इस बदले हुए रवैये से दुखी थीं और उन्होंने बार-बार सुलह करने की कोशिश की। वे अपनी कर्कश आवाज़ में दयनीय ढंग से म्याऊं-म्याऊं करती रहीं, यहाँ तक कि पीठ के बल लेटकर सीता को उन्हें काटने और खरोंचने का मौका भी देती रहीं। बाघ, जो नर था, उसने भी पहले तो अपनी मां को शांत करने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही उसने पलटवार करना शुरू कर दिया और दोनों के बीच हल्की-फुल्की झड़पें होने लगीं।

एक दिन स्थिति चरम पर पहुँच गई। सीता एक बड़ी सांभर हिरणी को मारने में सफल हो गई थी और अपना भोजन शुरू करने ही वाली थी कि बाघ दूसरे छोर से आया, इस उम्मीद में कि उसे भी हिस्सा मिलेगा। लेकिन सीता उस पर झपटी और गुस्से से उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा, उसके नुकीले पंजे बाघ के कोमल मांस में धंस गए। दर्द से बाघ क्रोधित हो गया और उसने अपनी माँ पर हमला करके बदला लिया। भयंकर लड़ाई शुरू हुई, जिसमें सीता ने ज़रा भी रहम नहीं दिखाया। उसने अपने शक्तिशाली दांतों और पंजों से अपने शावक को कई गहरे घाव दिए, जिनका जवाब बाघ ने भी अपनी पूरी ताकत से दिया। लेकिन अधिक वजन और अनुभव का असर दिखने लगा और लगभग दस मिनट तक चले भीषण संघर्ष के बाद, वह बुरी तरह घायल होकर लड़ाई से पीछे हट गया, और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उसकी माँ अब उसका साथ नहीं चाहती। हालाँकि, उसके कुछ दिनों बाद भी बाघ तीनों मादा बाघों के आसपास ही रहा, हालाँकि थोड़ी दूरी पर। मीना और लीला अपनी माँ के साथ ही रहीं, लेकिन उसकी क्रूरता और भी स्पष्ट होती जा रही थी।

लगभग इसी समय सीता ने अपनी मिलन की पुकार शुरू की, जिसकी गूंज जंगल और गहरी घाटियों में पहाड़ियों तक सुनाई देती थी। विशेषकर रात में वह अपनी शक्तिशाली पुकार भेजती थी, जिसे मीलों दूर तक सुना जा सकता था।

इसके कुछ ही समय बाद, वास्तव में लगभग तीन दिन बाद, एक शाम शावकों ने उसके निमंत्रण का जवाब सुना।

पहले तो उन्हें उस आवाज़ का महत्व समझ में नहीं आया, क्योंकि उन्होंने पहले भी अपने जैसे बाघों की आवाज़ सुनी थी और एक वयस्क बाघ की आवाज़ को पहचानना

सीख लिया था। लेकिन इस बार दहाड़ें और करीब आती गईं, और एक घंटे बाद एक बड़ा नर बाघ उस खुले मैदान में आ गया जहाँ सीता अपने पिछले पैरों पर बैठी पूंछ हिला रही थी, जबकि मीना और लीला कुछ दूरी पर एक साथ लेटी हुई थीं। बाघ भी वहीं था, लेकिन वह मैदान के दूसरे छोर पर दुबका हुआ था क्योंकि अपने गंभीर हमले के बाद वह अपनी माँ के पास दोबारा नहीं गया था।

एक भव्य नर बाघ, जो नया आया था, इत्मीनान से खुले मैदान को पार करते हुए सीता के सामने आकर रुक गया। सीता अपनी जगह से उठी और पूंछ सीधी करके बाघ पर हल्के से गुर्राई। बाघ उसके करीब आया और उसका चेहरा चाटने की कोशिश की, जिसके जवाब में सीता ने उसकी गर्दन पर ज़ोरदार प्रहार किया।

लेकिन यह शत्रुता या घृणा का कार्य नहीं था, क्योंकि बाघों में प्रेम-क्रीड़ा अत्यंत उग्र होती है। बल्कि इसका उद्देश्य नर बाघ को बाघिन को रिझाने के लिए और अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करना था, इस सिद्धांत पर कि सर्वोत्तम चीजें सबसे कठिन से प्राप्त होती हैं। वह करीब आया और अपने प्रयास तेज कर दिए।

मीना और लीला ने नए मेहमान को देखकर खुद को रोक लिया, क्योंकि तब तक सीता ने किसी भी अजनबी बाघ को उनके पास आने की इजाज़त नहीं दी थी। अब, जिज्ञासावश और शायद शरारत में भी, वे दोनों यह पता लगाने के लिए आगे बढ़ीं कि यह अजनबी कौन हो सकता है। इस बार उनके नेक इरादे का नतीजा चौंकाने वाला और कठोर निकला। सीता और बाघ दोनों उन पर टूट पड़े और बेरहमी से काट लिया।

अपने आत्मसमर्पण के सामान्य तरीके से, वे जमीन पर लोटने लगे, लेकिन वयस्क बाघों ने उन पर जरा भी रहम नहीं दिखाया, जब तक कि वे डर और दर्द की चीखों के साथ अपने पैरों पर खड़े होकर जंगल में भाग नहीं गए।

बाघ मूक साक्षी बना रहा और उसने उसके मन में इस तथ्य की पुष्टि कर दी कि सीता अब अपने नए परिवार से कोई संबंध नहीं रखना चाहती थी। उसने जल्द ही लीला और मीना को झाड़ियों में दुबके हुए, दुखी होकर अपने घावों को चाटते हुए पाया, जबकि सीता और उसके नए साथी का प्रेम-क्रीड़ा और भी शोरगुल भरा और उग्र होता चला गया, जो यौन इच्छा के चरम पर पहुँचने के साथ ही दहाड़ों, गुर्राहटों और घुरघुराहटों के एक भयानक कोलाहल में परिणत हुआ।

कुछ समय बाद बाघ घूमने चला गया और लीला और मीना भी उसके साथ चली गईं। वे अभी भी अपने पुराने पारिवारिक बंधनों को पूरी तरह से तोड़ नहीं पाई थीं, और कुछ हफ्तों तक वे एक साथ शिकार करती रहीं और पहले की तरह ही मिलकर भोजन करती रहीं।

लेकिन यह ज़्यादा समय तक नहीं चला। शावक तेज़ी से आकार, अनुभव और स्वार्थ में बढ़ रहे थे, और खुद का ख्याल रखने की सहज इच्छा ने जल्द ही पुरानी यादों को भुला दिया। बाघ सबसे पहले पूरी तरह से अलग हो गया, जो उसने एक दिन दूसरे शिकार को लेकर हुए झगड़े के बाद किया, जिसमें लीला और मीना उसके खिलाफ़ हो गईं थीं। तब से वह अकेला था और किसी के प्रति जवाबदेह नहीं था। उसके लिए सिर्फ़ खुद का ख्याल था, और उसका मुख्य उद्देश्य अपना पेट भरना था।

जिस जंगल में बाघ रहते थे, वह शिकार से भरपूर था और सीता की शिक्षा भी अच्छी थी, इसलिए बाघ को अपना पेट भरने में अपेक्षाकृत कम कठिनाई होती थी। फिर भी, एक दिन उससे एक गलती हो गई जब उसने एक मोटे-ताज़े जंगली सूअर को एक पेड़ के तने पर जड़ें खोदते देखा, जिसकी सबसे ऊपरी शाखाओं तक एक लता फैली हुई थी। सूअर जानता था कि उस लता की कंदयुक्त जड़ें खाने में स्वादिष्ट होती हैं और वह उन्हें खाने के लिए दृढ़ था। इसी कारण वह बाघ के चुपचाप पास आने से बेखबर रहा, तभी एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ युवा बाघ उसकी पीठ पर कूद पड़ा।

हमले की ज़ोरदार ताकत से सूअर ज़मीन पर गिर पड़ा, लेकिन सूअर किसी तरह उठ खड़ा हुआ। उसके खुरों की मार से बाघ कुछ पल के लिए विचलित हो गया। यह एक बड़ी गलती थी और युवा बाघ के लिए इसके बहुत दर्दनाक परिणाम हुए। जैसे ही सूअर उठा, उसने अपने नुकीले दांतों से हमला कर दिया, जिनमें से एक दांत बाघ के बगल में जा लगा। सूअर ने अपना सिर ऊपर उछाला और दांत ने युवा बाघ की कोमल त्वचा को चीरते हुए एक गहरा घाव बना दिया, जिससे खून बहने लगा और उसके दुश्मन की नाक गहरे लाल रंग से रंग गई। हैरानी और दर्द से बाघ पागलों की तरह आगे बढ़ा। लेकिन वह अभी अनुभवहीन था और उसने एक और गलती कर दी, उसने क्रोधित सूअर पर सीधा हमला कर दिया। बाघ के तेज़ पंजों से बुरी तरह घायल होने के बावजूद, सूअर ने फिर से हमला किया, इस बार बाघ की छाती पर, और एक और भयानक घाव करने में सफल रहा।

बाघ ने लड़ाई रोकने के लिए पीछे की ओर छलांग लगाई और भारी साँस लेते हुए जमीन पर लेट गया, ताकि वह अपने बिखरे हुए होश को समेट सके और इस भयानक प्रतिद्वंद्वी से निपटने के तरीके पर विचार कर सके।

लेकिन जंगली सूअर भारतीय जंगल के सबसे साहसी जानवरों में से एक है, और अब जब सूअर का खून खौल रहा था, तो उसे सोचने का समय नहीं चाहिए था। सिर झुकाए और चमकते दांतों के साथ, वह पराजित बाघ पर सीधे झपटा। बाघ ने उसे आते देखा, और उसके खून से लथपथ थूथन और खुद के घावों से बहते खून से सने उस भयानक चेहरे को देखकर बाघ ने फैसला किया कि विवेक ही वीरता का दूसरा रूप है। दुम दबाकर वह जंगल में भाग गया, जबकि सूअर ने लगभग सौ गज तक उसका पीछा करने का साहस दिखाया, और इस मुठभेड़ का गौरवशाली और निर्विवाद विजेता बना।

बाघ ने एक उपयोगी सबक सीखा था, हालांकि यह बहुत दर्दनाक था। भविष्य में वह जानता था कि एक बार दुश्मन पर पकड़ बना लेने के बाद, उसे किसी भी परिस्थिति में नहीं छोड़ना चाहिए। दूसरा, जंगली सूअर एक दुर्जेय प्रतिद्वंद्वी साबित हुआ था और उसे दूसरे से मुकाबला करने से पहले दो बार सोचना होगा। और तीसरा सबक जो बाघ ने उस दिन सीखा, वह यह था कि कभी भी ऐसे जानवर पर सीधे हमला करने की गलती न करें जिसमें पलटवार करने का साहस और प्राकृतिक हथियार हों।

फिर एक और दिन बाघ को एक और कड़ा सबक मिला। भोर का समय था और सूरज अभी उगा नहीं था। वह ओस से भीगी झाड़ियों और झुके हुए पेड़ों की छाँवों के बीच से गुज़रते हुए एक पगडंडी पर टहल रहा था, जहाँ चारों ओर अभी भी अंधेरा छाया हुआ था। पगडंडी एक छोटी पहाड़ी की तलहटी में जाकर एक उभरी हुई चट्टान के आधार को पार करती थी। अचानक बाघ ने अपने सामने एक काली वस्तु देखी, जो उसी रास्ते पर चलती हुई दूर जा रही थी। इतनी दूरी से वह एक अजीब प्राणी लग रहा था जो पगडंडी के दोनों ओर इधर-उधर भाग रहा था और बीच-बीच में रुक रहा था। बाघ ने तय किया कि जो भी हो, वह उसके अगले भोजन के लिए काफी अच्छा है। तीन छलांगों में उसने उस प्राणी को पकड़ लिया, जो जाहिर तौर पर उसके पीछे से आने से अनजान था, और उस पर झपट पड़ा। तभी उसे एक ज़बरदस्त झटका लगा। यह अजीब प्राणी - जो एक साही निकला - बाघ के लिए बिल्कुल भी अनजान नहीं

था, क्योंकि वह सीता और अपनी बहनों के साथ रहते हुए पहले भी इसके साथियों से मिल चुका था और पहले भी कष्ट झेल चुका था। सीता ने शावकों के साथ रहते हुए कभी साही पर हमला नहीं किया था, लेकिन चूंकि साही अपेक्षाकृत छोटा जीव था, बाघ को लगा कि वह स्थिति को उचित तरीके से संभाल सकता है। साथ ही, वह बदला लेने के लिए बेताब था। क्या साही ने उसे पहले कभी चोट नहीं पहुंचाई थी?

लेकिन बाघ ने अपने छोटे से प्रतिद्वंद्वी को बुरी तरह कम आंका था और उसे एक अप्रिय आश्चर्य का सामना करना पड़ा। ठीक आखिरी क्षण में, होश या सहज प्रवृत्ति, या शायद दोनों ने, साही को चेतावनी दी कि उस पर पीछे से खतरा मंडरा रहा है। भागने के बजाय, जैसा कि कोई भी जानवर करता, और बाघ को भी यही उम्मीद थी, साही ने ठीक इसके विपरीत किया। आश्चर्यजनक रूप से, वह और बड़ा हो गया और जैसे ही उसने अपने कांटे उठाए और पीछे की ओर दौड़ा, बाघ के चेहरे पर जा लगा, जो उसकी ओर उछल रहा था।

बाघ के लिए यह प्रहार बेहद घातक साबित हुआ। हालाँकि उसने अपने अगले पंजे से उस जीव पर प्रहार किया, लेकिन परिणाम यह हुआ कि उसके कांटे निकलकर उसके चेहरे और गर्दन में धंस गए, जबकि अन्य उसके पंजों के तलवों में धंस गए। दूसरी बार, एक कांटा उसकी आँख के पास से गुजरा और ठीक उसके नीचे जा लगा, जबकि दूसरा उसके तालू में अटक गया।

पहले हमले के बाद साही ने खुद को संभाला और दूसरे हमले की तैयारी में एक तेज़ खड़खड़ाहट की आवाज़ आई। लेकिन बाघ का सब्र टूट चुका था। दर्द से कराहते हुए वह जितनी तेज़ी से हो सकता था भाग गया।

उसके बाद तीन महीने तक वह नुकीले कांटों से हुए घावों को चाटता और काटता रहा। सौभाग्यवश ही वह उन्हें निकालने में कामयाब रहा, सिवाय उस कांटे के जो उसकी आंख के नीचे धंस गया था। वह कांटा टूट गया, जिसका लगभग दो इंच हिस्सा मांस के नीचे रह गया। समय के साथ यह घाव मवाद से भर गया और अंततः एक मवादयुक्त घाव में बदल गया।

इस बीच, बाघ सामान्य रूप से शिकार करने में असमर्थ था। वास्तव में, जब तक वह अपने पंजों में धंसे कांटों को निकालने में सफल नहीं हो गया, तब तक वह मुश्किल से

चल पा रहा था। वे वाकई कठिन दिन थे, जब वह अपनी घायल अवस्था में जो कुछ भी पाता, उसे खा लेता था। सौभाग्य से, जंगल के उस हिस्से में एक बड़ा पानी का गड्ढा था। यह पानी के गड्ढे से कहीं अधिक एक छोटे तालाब जैसा था और इसमें कई मेंढक रहते थे। ये मेंढक और कुछ केकड़े जिन्हें वह पकड़ पाता था, उन भयानक दिनों में उसका भोजन थे। घोंघे और टिड्डे भी कुछ न होने से बेहतर थे क्योंकि उसका शरीर और ताकत तेजी से कम हो रही थी।

अंततः वह अपने अगले पंजों में फंसे कांटों से छुटकारा पाने में कामयाब हो गया। प्रकृति एक अद्भुत उपचारक है और बाघ के घाव तेजी से भर गए, हालांकि उसकी आंख के नीचे फंसा कांटा अभी भी उसे परेशान कर रहा था। फिर भी, वह दोबारा शिकार करने में सक्षम हो गया और उसने अपने पिछले भयानक दिनों की भरपाई शिकार करके और जमकर खाकर की, जब तक कि धीरे-धीरे उसकी ताकत वापस नहीं आ गई। फिर फोड़ा हुआ और असहनीय दर्द और सूजन के कारण उसकी आंख पूरी तरह से बंद हो गई। लेकिन एक बार फिर प्रकृति उसकी मदद के लिए आगे आई, और जब फोड़ा फूटा, तो उसमें से निकले मवाद के साथ कांटा का दो इंच का टूटा हुआ टुकड़ा भी बाहर आ गया।

एक और महीना बीत गया, तब जाकर बाघ पूरी तरह ठीक हुआ। उसने वाकई एक कठिन दौर झेला था। लेकिन उसने एक दूसरा और भी महत्वपूर्ण सबक सीख लिया था। अगली बार जब उसने किसी साही को देखा, तो साही नहीं बल्कि बाघ भाग गया।

इन सब के बीच, बाघ न केवल अपनी बहनों, मीना और लीला से पूरी तरह बिछड़ गया था, बल्कि उन्हें पूरी तरह भूल भी चुका था। उसकी माँ की यादें धुंधली सी बची थीं, लेकिन वे भूले हुए अतीत की मात्र परछाइयाँ थीं। अब उसके लिए बस इतना ही मायने रखता था कि वह संतुष्ट होकर जिए, खाए और शिकार में बिताई रातों के हर पल का आनंद ले, जिसके बाद वह किसी छायादार पेड़ के नीचे आलस भरी नींद सोता था।

इस तरह डेढ़ साल और बीत गया। बाघ अब लगभग तीन साल का हो चुका था और एक वयस्क बाघ बन गया था। परिवार के बिखरने के बाद से वह अकेला ही रहता और शिकार करता था, और उसके मन में कभी किसी साथी की चाहत नहीं आई थी।

¤

एक बार फिर शरद ऋतु का मौसम आ गया था और जंगल मानसून के बाद की अपनी पूरी रौनक में लौट आया था। हाल ही में हुई बारिश के बाद सब कुछ ताज़ा और हरा-भरा था और जीवन सचमुच आनंदमय था।

बाघ को तब एक अभूतपूर्व और अकथनीय बेचैनी का अनुभव होने लगा। लेकिन प्रकृति उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही, और जब कभी-कभार उसका सामना किसी बाघ से हो जाता, तो वह उससे मुंह फेरकर अपने काम में लग जाता। इसके बजाय वह उसे बार-बार देखता और थोड़ा और करीब भी चला जाता। ऐसी जिज्ञासा का सामान्य परिणाम बाघ की गहरी दहाड़ होती, जो चेतावनी भरी गुर्राहट होती। फिर भी, बाघ वहीं रुककर उसे फिर से देखता। उसे पता भी नहीं था कि उसकी सहज प्रवृत्ति हावी हो रही थी और यौन इच्छाएं उसे साथी की तलाश करने के लिए उकसा रही थीं।

फिर एक दिन उसने एक आवाज़ सुनी: एक तेज़, लगातार और दंभपूर्ण कराह। यह एक बाघिन की पुकार थी। बाघ ने इसे उन आवाज़ों से नहीं जोड़ा जो सीता ने अठारह महीने पहले उस यादगार दिन निकाली थीं जब उसने अपने नए साथी की तलाश की थी और अपने शावकों से इतनी बेरहमी से विदा ली थी। अंतर्ज्ञान के अलावा, उसे जवाब में दहाड़ने और आवाज़ के स्रोत की ओर दौड़ने का कोई कारण नहीं था। वह तेज़ी से आगे बढ़ा और फिर एक झाड़ी के पीछे, उसने कराहती हुई बाघिन को अपने पिछले पैरों पर बैठे हुए देखा, जो ठीक वैसे ही पुकार रही थी जैसे उसकी अपनी माँ पुकारती थी, जबकि उसकी पूंछ लगातार पीछे की ओर फड़फड़ा रही थी, मानो पुकार का जवाब मिलने की प्रतीक्षा कर रही हो।

बाघ अगले कुछ दिनों तक अपनी नई साथी के साथ इश्कबाज़ी करता रहा। ऐसा लगता था कि वह उसे पसंद करने लगी थी, क्योंकि प्रेम-क्रीड़ा और बार-बार संभोग के दौरान दोनों के बीच होने वाली सामान्य उग्रता के अलावा, उसने अपनी पुकार बंद कर दी और उसके प्रेम-प्रदर्शनों से संतुष्ट दिखाई दी। एक बाघिन के लिए, यह कहा जा सकता है कि उसने अपने प्रेमी के प्रति थोड़ी सी स्नेहता दिखाई।

लेकिन बाघ की बाघिन से मुलाकात के लगभग चार दिन बाद, जब वे दोनों एक-दूसरे

को प्यार से सहला रहे थे, काट रहे थे, खरोंच रहे थे और कभी-कभी चाट भी रहे थे, तभी एक और नर बाघ उनके अंतरंग दृश्य में घुस आया। वह काफी बूढ़ा था, अपने पीले और कम बालों वाले शरीर को देखकर लगता था कि उसकी जवानी ढल चुकी है, लेकिन फिर भी वह काफी बड़ा था।

वह तब तक उस दृश्य को देखता रहा जब तक कि प्रेम में डूबे जोड़े को उसकी उपस्थिति का एहसास नहीं हो गया। बाघ ने धमकी भरे स्वर में गुर्राया। मादा ने भी धमकी भरे स्वर में गुर्राया। लेकिन नवागंतुक ने उससे भी अधिक धमकी भरे स्वर में गुर्राया।

सहज प्रवृत्ति ने उसे पहली नज़र में ही स्थिति का आकलन कर लिया था। उसने देखा कि बाघिन अपनी जवानी में थी, पर अभी युवा थी, उसका साथी भी युवा था और शायद प्रेमालाप की कला में अनुभवहीन था। वह स्वयं लगभग दस वर्ष का था और इस युवा प्राणी को अपना साथी बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित था, उसे पूरा विश्वास था कि यदि लड़ाई हुई तो वह बाघ को हरा देगा। शायद उसने सोचा होगा कि यदि वह पर्याप्त रूप से उग्र प्रदर्शन करे, तो वह युवा नर को डराकर भगा देगा।

इसके बाद बूढ़ा बाघ ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने और भयानक गुर्राने लगा। साथ ही, वह बाघ की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा, मन ही मन यह आशा करते हुए कि यदि वह पर्याप्त समय दे, तो बाघ का साहस कमज़ोर पड़ जाएगा, और वह विवेक को वीरता का बेहतर हिस्सा मानते हुए मैदान बूढ़े बाघ के लिए छोड़ देगा।

लेकिन इस बार अनुभवी बाघ गलत साबित हुआ। बाघ बहुत ही साहसी था। धमकियों से तो वह और भी उग्र हो गया। इसके अलावा, वह तीन-चार दिनों से प्रेम-प्रसंग में मग्न था और इन सुखों को किसी प्रतिद्वंद्वी के लिए छोड़ने को तैयार नहीं था। पीछे हटने के बजाय, उसने अपने कान पीछे कर लिए और आगे बढ़ते हुए नए प्रतिद्वंद्वी की तरह ही भयानक दहाड़ मारी। लड़ाई का माहौल बन चुका था।

आने वाले खतरे को भांपते हुए, बाघिन जल्द ही बाघ के प्रति अपना स्नेह भूल गई और फुर्ती से मैदान के एक किनारे जाकर घटनाक्रम देखने लगी। निस्संदेह, वह भी उसी गर्व और उत्साह से भरी हुई थी, जैसा कि मानव जाति में अपनी ही जाति की अन्य महिलाओं में दो योद्धाओं के बीच युद्ध देखने पर होता है।

बूढ़ा बाघ कुछ ही गज की दूरी पर था जब बाघ दहाड़ते हुए और हिमस्खलन की गति से उस पर झपटा। लेकिन उसका प्रतिद्वंद्वी एक चालाक जानवर था जो इस तरह की लड़ाइयों का पहले भी सामना कर चुका था। वह फुर्ती से एक तरफ कूद गया, और जैसे ही बाघ उसके पास से गुजरा, उसने अपने दाहिने पंजे से उसे खरोंच दिया और फिर अपने अस्थायी लाभ का फायदा उठाते हुए बाघ पर झपटा और अपने जबड़े से उसकी गर्दन को जकड़ लिया। यह एक जानलेवा पकड़ थी और अगर बाघ जवान और ताकतवर न होता तो शायद यह लड़ाई उसके लिए एक छोटा और अपमानजनक अंत साबित हो जाती।

वह सिर के बल पलटा और उस फुर्तीले और कुशल दांव से उसने सारी बाज़ी पलट दी। बूढ़ा बाघ उसकी पीठ के ऊपर से उछलकर ज़मीन पर ज़ोर से गिरा, हालाँकि उसके दाँत बाघ की गर्दन में गड़े रहे। शायद गिरने की वजह से बाघ की साँस थोड़ी फूल गई थी, क्योंकि उसे लगा कि बाघ की पकड़ थोड़ी ढीली हो गई है। उसने अपनी गर्दन में गहरे घाव और दुश्मन के दाँतों के बीच फंसी त्वचा के एक हिस्से की कीमत पर खुद को छुड़ा लिया।

अब उस नौजवान का खून खौल रहा था और इससे पहले कि नया दावेदार संभल पाता, बाघ ने उस पर हमला कर दिया और अपने प्रतिद्वंद्वी के कान और गले को पकड़ लिया। दोनों जानवर बेरहमी से एक-दूसरे को काटते और खरोंचते रहे, जिससे एक-दूसरे के शरीर पर कई जगह घाव हो गए। लेकिन बाघ की अपने प्रतिद्वंद्वी की गर्दन पर पकड़ इतनी मज़बूत थी कि वह ढीली नहीं पड़ रही थी। हालांकि उस बूढ़े जानवर ने ज़ोरदार संघर्ष किया और अपने पिछले पैरों से बाघ पर बार-बार वार किए, लेकिन वह खुद को छुड़ा नहीं सका और न ही अपने प्रतिद्वंद्वी को पलटवार कर सका, क्योंकि उसका सिर उस मज़बूत पकड़ में जकड़ा हुआ था।

दोनों बाघों के भूरे रंग की धारीदार खाल खून से लाल हो गई थी और संघर्षरत जानवर पैर जमाने के लिए लड़ रहे थे और एक-दूसरे की ताकत के खिलाफ जोर लगा रहे थे, जिससे आसपास की झाड़ियाँ और घास उड़ रही थीं।

इस पूरे समय वह महिला बड़ी सहजता से देखती रही, कभी प्रतियोगियों के चारों ओर दूर से चक्कर लगाती तो कभी घुटनों के बल बैठी रहती। उसने हस्तक्षेप करने का

कोई प्रयास नहीं किया और ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी स्त्रीत्व की भावना दोनों पुरुषों के बीच चल रहे इस भयंकर संघर्ष का भरपूर आनंद ले रही थी।

धीरे-धीरे, बुढ़ापा जवानी की अदम्य सहनशक्ति के आगे झुकने लगा। बूढ़े जानवरों के अनुभव के बावजूद, यह स्पष्ट था कि वह थकने लगा था। लेकिन अंततः, वह खुद को छुड़ाने में कामयाब हो गया, हालांकि उसकी खोपड़ी और जबड़े का कुछ हिस्सा, जहां से मांस फट गया था, दिखाई दे रहा था; और बाघ, पहले से कहीं अधिक उग्र होकर, अपने दुश्मन को जान से मारने पर तुला हुआ था, जो उसकी हांफती आवाज़ों से स्पष्ट रूप से गिरने की कगार पर था। उसका बेकाबू संघर्ष अब किसी जीतने की कोशिश करने वाले योद्धा का नहीं था, न ही किसी ऐसे जीव का था जो पागलों की तरह भागकर अपनी जान बचाने का प्रयास कर रहा हो।

अंततः, वह लड़ाई रोकने में कामयाब हो गया और उसी क्षण अपमानजनक ढंग से भागने के लिए मुड़ गया। लेकिन बाघ ने अपनी स्थिति भांप ली और उसका पीछा करते हुए लड़खड़ाते हुए अपने दुश्मन पर झपटा और उसे बार-बार काटने लगा। बूढ़े जानवर ने भी पूरी ताकत से पलटवार किया और उनकी हाथापाई के दौरान, वे लुढ़कते हुए पास के एक नाले के रेतीले तल पर जा गिरे। सौभाग्य से, वहाँ सूखे सरकंडों का एक झुंड उग आया था और वह उसमें लुढ़कने में कामयाब हो गया, बाघ भी उसका पीछा करता रहा, अभी भी उसे मारने की मंशा से।

ठीक उसी क्षण, लड़ाई शुरू होने के स्थान पर पीछे छूटी हुई मादा बाघिन ने धीमी आवाज़ में पुकारा। बाघ ने वह पुकार सुनी। उत्तेजित होकर, यह सोचकर कि कोई दूसरा साथी आ गया है, उसने बूढ़े बाघ को छोड़ दिया और नाले के किनारे से कूदकर अपनी साथी के पास पहुँच गया, नए दुश्मन से भिड़ने के इरादे से। साँस फूलते हुए और सौ घावों से खून बहते हुए, हारे हुए बाघ ने इस अवसर का लाभ उठाकर भागने का प्रयास किया।

उसके बाद बाघ की साथी बनने के लिए किसी और चाहने वाले ने चुनौती नहीं दी, और तीन सप्ताह तक वह उसकी निर्विवाद प्रेमिका बनी रही। फिर मादा में संभोग की इच्छा कम होने लगी। अब वह उसके अभद्र प्रस्तावों का कठोर लेकिन इच्छुक जवाब नहीं देती थी। अब अगर वह फिर से प्रेम निवेदन करने की कोशिश करता, तो वह उसे

काटने और नोचने लगती थी, और एक सप्ताह के भीतर दोनों सामान्य जानवर बन गए: दोस्त, लेकिन प्रेमी-प्रेमिका नहीं।

अगले चार महीनों तक वे साथ रहे, फिर यह स्पष्ट हो गया कि बाघिन गर्भवती है और उसकी अंतरात्मा ने उसे आगाह किया कि अब समय आ गया है कि वह अपने रक्षक से अलग हो जाए, क्योंकि जन्म के बाद वह उसके बच्चों के लिए खतरा बन सकता है। इसलिए एक दिन, उसने अपना साथ तोड़ दिया और जंगल की एक चट्टानी पहाड़ी की चोटी पर स्थित किसी गुफा की तलाश में अकेले ही निकल पड़ी, जहाँ वह शांति से बच्चे पैदा कर सके और अपने परिवार को जन्म दे सके।

¤

बाघ अब एक विशाल और पूर्ण विकसित नर बन चुका था, जो अपने आप पर और किसी भी अन्य जानवर के मुकाबले अपनी ताकत पर पूरी तरह आश्वस्त था। वह निर्भीक होकर जंगलों में घूमता था, जहाँ और जब चाहे शिकार करता और खाता था। उसका पुराना दुश्मन, जंगली सूअर, अब उसके लिए भय का विषय नहीं था, क्योंकि उसने अचानक हमला करने की कला सीख ली थी और अपनी पुरानी गलतियों को नहीं दोहराया था। लेकिन फिर भी वह साही से दूर ही रहता था।

अब तक उसने बाइसन और हाथियों को छोड़कर बाकी सभी जीवों पर हमला किया था। अपने विशाल आकार के कारण ये दोनों ही उसे बेहद ताकतवर लगते थे, लेकिन अपने बढ़े हुए आत्मविश्वास और आक्रामकता में उसने एक दिन बाइसन से मुकाबला करने का फैसला किया।

इस क्षेत्र में इन जानवरों के कई झुंड थे, क्योंकि तलहटी और गहरी घाटियों में भरपूर चारागाह थे और बारहमासी जलधाराएँ बहती थीं जो हर मौसम में पानी की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करती थीं। बाइसन को पानी और वह भी भरपूर मात्रा में चाहिए होता है। वे ऐसे जंगलों में नहीं रहते जहाँ गर्मी के मौसम में जलधाराएँ सूख जाती हैं।

इन झुंडों में बारह से लेकर पचास तक जानवर होते थे, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक विशाल बैल करता था, जिसकी सहायता लगभग समान आकार के अन्य बैल करते थे। इसके अलावा, सहज प्रवृत्ति ने बाइसन को सिखाया था कि वे किसी

सामान्य शत्रु के हमले के विरुद्ध एकजुट हो जाएं, और मानव जाति के अलावा बाघ ही उनके एकमात्र शत्रु थे।

इसलिए बाघ को यह एहसास हुआ कि अगर उसे बाइसन को मारना है, तो उसे मादा या बच्चे बाइसन को शिकार के रूप में चुनना होगा, और उसे यह काम ऐसी जगह करना होगा जहां बाइसन के बाकी झुंड को इसकी जानकारी न हो, अन्यथा पूरा समूह घुड़सवार सेना की पंक्ति की तरह एक साथ उस पर टूट पड़ेगा।

जल्द ही उसे इन जानवरों का एक झुंड मिल गया और वह दो दिन तक उनके बाहरी इलाके में मंडराता रहा, इस उम्मीद में कि कोई जानवर पीछे छूट जाए। दूसरे दिन उसकी किस्मत चमकी और उसे एक मादा बाइसन अकेली चरती हुई मिली। बाघ उस पर झपटा और उसके अपेक्षाकृत बड़े आकार के बावजूद, यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह उसके कुशल हमले का आसानी से शिकार बन गई और उसकी गर्दन टूट गई। बाघ को इस बात का एहसास नहीं था कि वह अपेक्षाकृत युवा और अपरिपक्व जानवर थी। उस दिन के बाद, इन विशालकाय जानवरों के प्रति उसका सम्मान कम होने लगा और कई अन्य जानवरों को मारने के बाद, वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि बाइसन से बिल्कुल भी डरने की जरूरत नहीं है।

अब झुंडों पर उसके हमले संख्या और दुस्साहस में बढ़ गए थे, और एक दिन उसने एक मादा पर झपट्टा मारा जो अपने चरते साथियों से मुश्किल से सौ गज की दूरी पर थी। जैसे ही वह उस पर कूदा और उसका गला पकड़ लिया, उसे दर्द से चीखने का ही समय मिला, इससे पहले कि उसकी गर्दन के टूटने की तेज आवाज ने घोषणा कर दी कि वह मर चुकी है। लेकिन वह मरणासन्न चीख झुंड तक पहुँच गई थी और बड़ा बैल, जो झुंड का नेता था, उस संकट की पुकार को पहचानकर चरना बंद कर दिया और क्रोध से गुर्राते हुए उस जगह की ओर दौड़ पड़ा जहाँ से चीख आई थी। आस-पास के कुछ युवा बैल भी खतरे को भांपते हुए और अपने नेता के व्यवहार को देखकर उसके पीछे चल दिए।

इस प्रकार, विशाल बैल और लगभग उतने ही बड़े दो अन्य बैल उस स्थान पर टूट पड़े जहाँ मादा जमीन पर पड़ी थी, उसके पिछले पैरों की नसें और मांसपेशियां फड़क रही थीं, जिससे उसके पैर फड़क रहे थे, जबकि बाघ उसके ऊपर फैला हुआ था, उसकी

गर्दन पर उसकी पकड़ अभी भी ढीली नहीं हुई थी, और वह अपने वध के कृत्य में रंगे हाथों पकड़ा गया था।

उसे तब तक अपने अपराध के पकड़े जाने का पता नहीं चला जब तक उसने गुस्से भरी गुर्राहट और ज़मीन पर खुरों की गड़गड़ाहट नहीं सुनी। उसने ऊपर देखा और वहाँ लगभग एक सीध में, तीन विशालकाय बैल एक साथ उसकी ओर बढ़ रहे थे।

यह उसके साहस और आत्मविश्वास का एक बड़ा प्रमाण है कि बाघ के मन में एक क्षण के लिए भी भागने का विचार नहीं आया।

इसके बजाय, उसमें अपने शिकार की रक्षा करने का दृढ़ संकल्प था। एक पल के लिए भी उसकी पशु प्रवृत्ति ने उसे यह सोचने नहीं दिया कि वह हमलावर था और झुंड के किसी सदस्य का बदला लेने का उनका उद्देश्य जायज़ था। इसलिए वह शव से कूद गया और क्रोधित सांडों के आक्रमण का सामना करने के लिए पलटवार किया। यह वास्तव में एक शानदार प्रयास था, लेकिन फिर भी बहुत मूर्खतापूर्ण था। जब वे सिर झुकाए और सींग फैलाए उस पर टूट पड़े, तो वह हवा में उछला और सबसे बड़े सांड, यानी झुंड के नेता की पीठ पर चढ़ गया। उसके हमले के तरीके के कारण, बाघ का सिर विशाल सांड के पिछले हिस्से की ओर था और उसने अपने सभी पंजों से उसकी धड़कती हुई पसलियों को जकड़ लिया, जबकि वह उसके कूल्हे पर गहराई से काट रहा था। उस क्षण उसकी स्थिति भाग्यशाली रही, क्योंकि विशाल सांड और उसके साथी कुछ नहीं कर सके।

असहनीय पीड़ा और क्रोध से भैंसा दहाड़ उठा। उसने अपना उग्र आक्रमण रोक दिया और बाघ को गिराने के व्यर्थ प्रयास में अपना सिर और सींग हिलाए, जबकि बाघ लगातार उसे काटता रहा। अन्य दो बैल भी रुक गए और अपने सरदार की ओर मुड़ गए, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, क्योंकि सींगों से बाघ को गिराने का प्रयास करने से उनके सरदार को चोट लग सकती थी।

असहनीय पीड़ा से पीड़ित बाइसन गोल-गोल दौड़ने लगा और अपने ऊपर बैठे शैतान को गिराने के प्रयास में आस-पास के पेड़ों के तनों से टकराने लगा। यदि वह जमीन पर गिरकर अपनी पीठ के बल लुढ़क जाता, तो वह आसानी से ऐसा कर सकता था। लेकिन लड़ाई में जंगली जानवरों की प्रवृत्ति अपने पैरों पर खड़े रहने की होती है।

आखिरकार बैल को एक नीची टहनी दिखाई दी और वह उसके नीचे से झपट पड़ा। टहनी ने बाघ को पीछे से पकड़ लिया और उसे बाइसन की पीठ से अलग कर दिया। बाघ ज़मीन पर धड़ाम से गिरा और बिजली की तरह बाइसन और उसके दो साथी उस पर टूट पड़े। एक छोटे बैल के सींग बाघ के शरीर के नीचे आ गए और उसने तेज़ी से अपना सिर झटककर बाघ को हवा में उछाल दिया, जो ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा। दूसरा बैल उस पर दौड़ा और अपने नुकीले खुरों से उसे कुचल दिया। फिर बड़े बैल की बारी आई कि वह अपने ऊपर से भी कुछ वार करे। बाघ के संभलने से पहले ही उसने बाघ को टक्कर मार दी और उसका सींग बाघ की बाईं जांघ के मांस में घुस गया, जिससे एक छेद हो गया और खून बहने लगा। बाकी दो बैल भी उस पर टूट पड़े और बाघ छह सींगों के वार का केंद्र बन गया।

उसे सबक मिल चुका था। जान बचाने के लिए बेताब बाघ किसी तरह एक भैंस की पीठ पर चढ़ गया और झाड़ियों में छिप गया। क्रोधित भैंसें भी उसके पीछे दौड़ीं, लेकिन उनका भारी-भरकम शरीर उसके लिए नुकसानदायक साबित हुआ और फुर्तीले भैंस को पकड़ नहीं पाया। इस तरह बाघ बच निकला।

बाघ ने सात सप्ताह तक अपने दर्दनाक घावों, विशेषकर जांघ में बने गहरे घाव की देखभाल की। सौभाग्य से, सींग की नोक केवल हड्डी को छूकर निकल गई थी, उसे तोड़ा नहीं था, और अपनी खुरदरी जीभ से लगातार चाटने से बाघ अपने घाव को साफ रखने और कीड़े-मकोड़ों व संक्रमण के कई स्रोतों से बचाने में कामयाब रहा, जो उसकी मृत्यु का कारण बन सकते थे।

अंततः घाव भर गया, लेकिन इस घटना ने घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला की शुरुआत कर दी जिसने इस बाघ को क्षेत्र का एक कुख्यात आतंक बना दिया। बाघ के बाएं पिछले पैर में एक स्पष्ट लंगड़ापन आ गया। वह पैर अकड़ गया और शिकार करने में बहुत बाधा उत्पन्न करने लगा, जिससे उन जानवरों का पीछा करना उसके लिए मुश्किल हो गया जो अब तक उसके लिए आसान शिकार हुआ करते थे।

जब बाघ का पैर ठीक हो रहा था, तो उसे एक बार फिर जंगल में मिलने वाले आपातकालीन राशन, जैसे केकड़े, मेंढक और अन्य ऐसे जीव-जंतुओं से ही काम चलाना पड़ा जो भाग नहीं सकते थे, ठीक वैसे ही जैसे साही के घावों से उबरते समय

हुआ था। हालांकि, इस बार वह जल्दी ठीक हो गया, क्योंकि क्रोधित बैल बाइसन द्वारा बनाया गया घाव बड़ा और गहरा था और उससे बहुत अधिक खून बह रहा था, लेकिन कम से कम वह साफ घाव था, उन छोटे लेकिन अधिक खतरनाक घावों के विपरीत जो साही के कांटों से हुए थे जो उसके शरीर में धंस गए थे।

इन दो हादसों, या शायद सिर्फ दूसरे हादसे ने, बाघ को यह एहसास दिलाया कि दुनिया आम तौर पर एक बेरहम जगह है। तब तक, जीवन एक मनमोहक अनुभव रहा था। उसे जंगल की आज़ादी में खुशी मिली थी, जहाँ वह अपनी मर्ज़ी से घूमता था, जब, जहाँ और जैसे चाहे, पेट भर खाता था; लेकिन बाइसन ने सब कुछ बदल दिया था। अब वह जान गया था कि उसकी ताकत और दिलेरी की भी एक सीमा है, और वह अपनी मर्ज़ी से किसी को नहीं मार सकता। उसके दिल में गुस्सा भरा हुआ था। यह गुस्सा अंदर ही अंदर सुलग रहा था और कोई भी उकसावा इसे आग में बदल सकता था। यह सब संयोग से और बहुत जल्द हुआ।

बाघ अब काफी दुबला हो चुका था और लंगड़ाते हुए चल रहा था जब वह एक पगडंडी पर पहुँचा जो ढलान से नीचे एक नाले की ओर जा रही थी। पहाड़ी की ढलान बाँसों से ढकी हुई थी और नीचे अँधेरा था, जहाँ सूर्य की सीधी किरणें पत्तों से ढके तनों से ढकी हुई थीं। उसे हल्की सी एक नए बाँस के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। उसने तुरंत अपनी चाल धीमी कर दी और हमेशा की तरह सतर्क होकर शिकार करने लगा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कहीं वह किसी सूखे पत्ते या टहनी पर पैर न रख दे जो सरसराहट करके उसकी मौजूदगी का पता दे दे।

इस प्रकार आगे बढ़ते हुए बाघ एक मोड़ पर मुड़ा जहाँ रास्ता बांस के एक बड़े झुंड के चारों ओर से होकर गुजरता था। वहाँ वह रुक गया। रास्ते पर उसकी पीठ की ओर मुंह करके खड़ा एक छोटा हाथी, गिरी हुई बांस की शाखा की कोमल कोंपलों से खेल रहा था। स्पष्ट रूप से वह बहुत छोटा जानवर था, क्योंकि उसके गुलाबी-भूरे रंग की कोमल त्वचा पर अभी भी लंबे बाल थे। बछड़ा खुशी से चहचहाने लगा और तने पर प्रहार करते हुए उसकी पत्तियों को तोड़ने की कोशिश करने लगा।

बागली भूखा था, और यहाँ उसे ऐसा भोजन मिल गया जिससे उसका पेट कम से कम कुछ दिनों तक भर जाएगा। हाथी के बच्चे को देखते ही वह कुछ ही सेकंड में आगे

बढ़ा। लगभग खामोशी से, वह उस पर झपटा और उसकी गर्दन पकड़ ली। विशालकाय बाघ के ऊपर ज़मीन पर गिरते ही हाथी का बच्चा डर से चीख उठा।

लेकिन जल्दबाजी में बाघ एक बुनियादी बात भूल गया था। हाथी के बच्चे जंगल में अकेले नहीं घूमते। उनकी माताएँ हमेशा उनके साथ रहती हैं। इस मामले में, माँ बाँस के झुंड के दूसरी तरफ खड़ी थी और इसलिए बाघ को उस रास्ते पर चलते हुए दिखाई नहीं दी।

अपने बच्चे की चीख सुनकर माँ ने पीछे मुड़कर देखा तो एक बाघ उसे मार रहा था। उसकी आँखों में अचानक क्रोध की चमक आ गई और सूंड को अंदर की ओर मोड़कर वह जोर से चिंघाड़ते हुए अपने बच्चे की जान बचाने के लिए उस पर टूट पड़ी।

बाघ के लिए स्थिति और भी बदतर थी क्योंकि माँ और उसका बच्चा एक बड़े झुंड का हिस्सा थे। आस-पास चर रहे अन्य हाथियों ने बच्चे की संकट की पुकार और माँ की क्रोध भरी चीख सुनी। नर हाथी चारों ओर से चिंघाड़ते हुए बचाव के लिए दौड़ पड़े।

चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। बाघ ने बछड़े के गले पर अपनी पकड़ ढीली कर दी और जोर से दहाड़ने के लिए अपना सिर उठाया, यह सोचकर कि ऐसा करने से वह माँ को डरा देगा। लेकिन माँ को रोकना नामुमकिन था और उसने अपनी सूंड से बाघ को पकड़कर बछड़े से अलग कर दिया।

बाघ किसी तरह खुद को छुड़ाकर हाथी के चेहरे पर कूद पड़ा और उसके माथे पर बेरहमी से काटने लगा। अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए उसने अपने अगले पंजों से उसकी खुरदरी खाल में गहरे घाव कर दिए। दर्द और डर से पागल हो चुकी हाथीनी ने उसे हटाने की कोशिश में अपना माथा बाँस के एक झुंड से रगड़ा, जहाँ नुकीले बाँस बाघ के शरीर में चारों ओर चुभ गए थे।

तभी एक विशाल नर हाथी वहाँ आ पहुँचा। उन दो बाइसनों के विपरीत, जिन्हें बाघ के उसकी पीठ पर कूदने पर अपने स्वामी की सहायता करने का कोई तरीका नहीं सूझा था, यह नर हाथी कहीं अधिक चतुर था। जैसा कि सर्वविदित है, हाथियों में असाधारण बुद्धि होती है।

उसने अपनी सूंड फैलाई और बाघिन के चेहरे से बाघ को खींचकर अलग कर दिया।

बाघ उसकी पकड़ से बुरी तरह छटपटाने लगा, जबकि बैल ने उसे ऊपर उठाया और फिर ज़मीन पर पटक दिया।

सांस फूलते देख भयभीत बाघ ने ऊपर देखा तो पाया कि क्रोधित बैल उसे कुचलने के लिए उस पर झपट रहा है। बैल के ठीक पीछे बदला लेने वाली उसकी माँ थी। वे लगभग उसके पास पहुँच ही गए थे कि बाघ लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ और पसलियों में असहनीय दर्द के साथ बाघ बाँस के झुंड की ओर भागा और फिर जंगल में गायब हो गया।

अब उसका अपमान पूर्ण हो चुका था। वह अब वह अभिमानी और निडर वनराजा नहीं रहा था जो जंगल की गलियों में बेखौफ होकर घूमता था, किसी भी जीवित प्राणी से नहीं डरता था। उसका साहस टूट चुका था। उसके अहंकार को गहरा आघात लगा था। अब वह जानता था कि विशाल भैंस और उससे भी अधिक शक्तिशाली हाथी आकार और शक्ति में उसके स्वामी थे और वह उस निडर साहस को जानता था जिससे वे अपने परिवार की रक्षा करते थे। और उसके अवचेतन मन में अब भी वह शर्मनाक स्मृति दबी हुई थी कि एक छोटे से साही ने भी उसे बुरी तरह हराया था। अपने जीवन में पहली बार बाघ ने भय का अनुभव किया और उसके साथ ही उसके भीतर थोड़ी कायरता भी जन्म ले ली। अब वह हमला करने से पहले दो बार सोचेगा और केवल उन्हीं प्राणियों से भिड़ेगा जो पूरी तरह निहत्थे हों।

इस सूची में सबसे पहले उन मवेशियों का नाम आता था जो जंगल से सटे गांव के चारागाहों में चरते थे और जिन्हें उनके मालिक गर्मियों के महीनों में जंगल में चराने के लिए लाते थे जब खेतों और आसपास के मैदानों में घास सूख जाती थी।

उस समय ग्रीष्म ऋतु थी, और बाघ एक-एक करके उन बैलों और गायों को मारने और उनका मांस खाने लगा, जो हर दिन जंगल में आते थे। वह अब भी एक बड़ा और शक्तिशाली बाघ था, हालांकि हाल की असफलताओं से वह काफी डरा हुआ था। उसके पिछले पैर में लंगड़ापन होने के बावजूद, वह इन पालतू जानवरों का पीछा करने और उन्हें खत्म करने से नहीं रुकता था, क्योंकि उनमें जंगल के आम निवासियों की तरह सावधानी बरतने की प्रवृत्ति नहीं थी।

फिर बारिश आई और पशुओं के झुंड को जंगल में नहीं ले जाया गया। बाघ जिस

आरक्षित वन में रहता था, उसके आसपास के छोटे-छोटे गांवों में फैली बंजर भूमि पर फिर से भरपूर घास उग आई।

लेकिन बाघ की भूख अभी भी मिटनी बाकी थी। इसके अलावा, उसे न केवल एक नई आदत पड़ गई थी, बल्कि उसे कच्चा गोमांस का स्वाद भी अच्छा लगने लगा था। इसलिए उसके पास मवेशियों के झुंड का पीछा करते हुए उन चरागाहों में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था जहाँ वे चरते थे, फिर उन पर हमला करके उन्हें मार डालना और फिर उनके शवों को जंगल की सुरक्षा में ले जाना जहाँ वह शांति से भोजन कर सके। बाघ के लिए यह अपेक्षाकृत आसान था, और वह फिर से जीवन से और अपने भोजन की आसान प्राप्ति से बहुत संतुष्ट हो गया, जो उसे भरपूर मात्रा में और जितनी बार चाहे उतनी बार मिल रहा था। अब उसे जंगल के अधिक चालाक और मायावी जानवरों का पीछा करने और उन्हें मारने के लिए मेहनत करने की आवश्यकता नहीं थी, और प्रतिशोध का कोई खतरा भी नहीं था।

लेकिन, पशुओं के मालिक खुश नहीं थे। वास्तव में वे बहुत परेशान थे। भारतीय किसान अमीर नहीं होता, और अक्सर उसके कुछ ही पशु उसकी एकमात्र संपत्ति होते हैं। उसकी पूंजी नकद में नहीं, बल्कि खेतों या पशुओं में होती है, और एक बछड़े की मृत्यु भी उसके लिए एक बड़ा आर्थिक झटका होता है जिससे उबरना उसके लिए मुश्किल होता है। जब ये मौतें बार-बार होने लगती हैं और बाघों के हमले के कारण होती हैं, तो किसान की स्थिति बेहद खराब हो जाती है और उसे लगता है कि मानो स्वयं भगवान ने उस पर विपत्ति डाली हो।

आम तौर पर किसान अपने दयनीय भाग्य पर विलाप करने के अलावा कुछ नहीं करते। कभी-कभार वे मदद की गुहार लगाते हैं और बाघ को मार डालने की विनती करते हैं। बहुत ही कम बार कोई किसान अत्याचारी को मारने का प्रयास करके स्वयं की सहायता करने का निर्णय लेता है।

लेकिन हर नियम के कुछ अपवाद होते हैं, और इसी तरह एक गरीब चरवाहे गुंडप्पा ने फैसला किया कि जब कोई उसकी मदद के लिए आगे नहीं आया, तो वह खुद बाघ का खात्मा करने का प्रयास करेगा। गुंडप्पा पहले ही बाघ के भयानक भूख के कारण तीन कीमती जानवर खो चुका था - दो अच्छी-खासी मोटी गायें और एक जवान बैल।

इस तरह की एक और विपत्ति उसे बर्बाद कर देती।

हालांकि, कई मुश्किलें थीं। पहली बात तो यह कि गुंडप्पा के पास किसी भी तरह की बंदूक नहीं थी। दूसरी बात, जहर देना तो नामुमकिन था, क्योंकि एक साधारण ग्रामीण होने के नाते वह अपने मकसद के लिए पर्याप्त मात्रा में असरदार जहर नहीं खरीद सकता था। आम जनता को ऐसे जहर बेचना सख्त नियमों के तहत था और इसके लिए सर्टिफिकेट की जरूरत होती थी। जहरीली पत्तियों और छालों से बने काढ़े बाघ को मारने के लिए काफी असरदार नहीं होते। पिसा हुआ कांच एक लोकप्रिय तरीका था, जिसका इस्तेमाल अक्सर स्थानीय स्तर पर ईर्ष्यालु पति-पत्नी अपने बेवफा जीवनसाथी से छुटकारा पाने के लिए करते थे। लेकिन बाघ जैसे विशाल जानवर को मारने के लिए इसकी बहुत बड़ी मात्रा देनी पड़ती। कांच के पाउडर से उपचारित शिकार का मांस खाने पर बाघ को शक जरूर होता, मात्रा की बात तो अलग है।

दूसरा एकमात्र उपाय बाघ को फंसाना था, लेकिन गांव में कोई बना बनाया स्टील का जाल नहीं था और गुंडप्पा को लगा कि लकड़ी का पिंजरा बनाना सफल नहीं होगा। बाघ इतना चालाक होगा कि वह उसमें प्रवेश ही नहीं करेगा।

उसने गाँव के दोस्तों से सलाह ली और उनमें से एक ने अपने चचेरे भाई से एक बड़ा, लोहे के जबड़े वाला जाल उधार देने की पेशकश की। उसका चचेरा भाई जंगल के विस्तार से सटे एक गाँव में रहता था, जो लगभग पच्चीस मील दूर था। उसने कहा कि वह जाल ले आएगा, बशर्ते गुंडप्पा उसे लाने के लिए एक बैलगाड़ी दे दे, क्योंकि जाल बहुत बड़ा और भारी था। दुखी चरवाहे ने तुरंत सहमति दे दी। अगर जाल से बाघ मरता नहीं, तो उन्हें उम्मीद थी कि वह उसे तब तक रोके रखेगा जब तक पूरा गाँव इकट्ठा होकर भाले और लाठियों से उसे मार न डाले।

उनमें से कोई भी इतना समझदार नहीं था कि एक संभावित विकल्प का अनुमान लगा सके, कि बाघ भाग सकता है, शायद किसी तरह से जीवन भर के लिए अपंग होकर। और उनमें से किसी ने भी इसके भयानक परिणामों पर दूर-दूर तक विचार नहीं किया। बल्कि, वे सभी एक जटिल समस्या के आदर्श समाधान के लिए खुद को और एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे।

तदनुसार, जाल को गाड़ी में भरकर लाया गया। यह एक अत्यंत भयावह यंत्र था,

जिसमें विशाल इस्पात के जबड़े लगे थे, जो पूरी तरह खुलने पर लगभग एक गज व्यास को घेर लेते थे और उन्हें अलग रखने के लिए चार आदमियों की आवश्यकता होती थी। वे बेसब्री से उस क्षण का इंतजार कर रहे थे जब बाघ अपना अगला शिकार करेगा ताकि वे अपने इस क्रूर यंत्र का परीक्षण कर सकें।

जल्द ही किस्मत ने उनका साथ दिया और बाघ ने भी। दो दिन बाद, उसने जंगल की सीमा पर ही एक बड़ी गाय को मार डाला। षड्यंत्रकारी बहुत खुश हुए। पहली बात तो यह थी कि गाय उनमें से किसी की नहीं थी। दूसरी बात यह थी कि बाघ को एक निवाला से ज्यादा खाने का समय नहीं मिला था। वे जानते थे कि जब वह खाने के लिए वापस आएगा, तो सबसे पहले वह उस कोमल थन को खाएगा, जो सभी मांसाहारी जानवरों को सबसे ज्यादा पसंद होता है, न केवल उसके मुलायम मांस के लिए, बल्कि उस दूध के लिए भी जिसे वे बड़े चाव से पीते हैं।

उन्होंने काम शुरू किया, मृत गाय के निचले हिस्से पर जाल के फैले हुए जबड़े सीधे रख दिए, जो एक तरफ लेटी हुई थी, और लोहे के खंभे से एक छोटी मजबूत जंजीर बांधने के बाद, स्टील को घास और पत्तियों से ढक दिया। उन्हें उम्मीद थी कि गाय के निचले हिस्से तक पहुँचने की कोशिश में बाघ का सिर या पंजा जाल में फंस जाएगा, और जब तक वे आकर उसे मार नहीं देते, तब तक वह दहाड़ता और छटपटाता रहेगा। उस शाम जब वे शव को छोड़कर गए, तो उन्हें इस बात का पूरा एहसास था कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है।

और वे आ गए थे। बाघ उस रात अपना चारा खाने आया। वह भूखा था। साथ ही, उसे याद आया कि उसने एक दूध देने वाली गाय को मार डाला था। बाघ को दूध बहुत पसंद था। वास्तव में, वह मारने के बाद उस दूध को पीना चाहता था; लेकिन जब आस-पास के बाकी मवेशी भाग गए, तब चरवाहों को उसके इस काम का पता चल गया था। ये चरवाहे दूर खड़े होकर चिल्ला रहे थे और लाठियाँ लहरा रहे थे। उनमें से कुछ ने तो पत्थर फेंकने की भी हिम्मत की थी। कुल मिलाकर, यह बहुत ही परेशान करने वाला था। इसलिए बाघ गाय को कुछ दूर घसीटकर ले गया और उसे एक सुरक्षित जगह समझकर छिपा दिया, यह सोचकर कि वह उस रात शांति से दूध पीने और मांस खाने के लिए वापस आएगा।

लेकिन उसे यह नहीं पता था कि चरवाहों ने बाद में शव द्वारा छोड़े गए घसीटने के निशान का पीछा किया और उस जगह का पता लगा लिया जहां उसने उसे छिपाया था।

बाघ ने बड़ी सावधानी से अपने शिकार के पास जाकर कुछ पल उसे निहारा। फिर वह आकर्षक थन के पास गया, उसके सामने पेट के बल लेट गया और दूध पीने की पूरी उम्मीद से गर्दन आगे बढ़ाकर मुलायम, सफेद मांस को काटने लगा।

उसी क्षण उसका मुंह घास से ढकी किसी कठोर चीज़ से छू गया, और झट से किसी ऐसे राक्षस के दांत, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था, उसकी गर्दन के दोनों ओर गड़ गए। वह दर्द, क्रोध और भय से चीखता रहा, बुरी तरह छटपटाता रहा और अपने चारों पैरों का इस्तेमाल करते हुए उस भयानक चीज़ से छुटकारा पाने की कोशिश करता रहा जिसने उसके शरीर को जकड़ रखा था।

वह झंझरा इतना शक्तिशाली था कि उसे पार करने के लिए चार लोगों की ताकत चाहिए थी, लेकिन बाघ चार आदमियों से कहीं अधिक बलवान था। कुछ ही मिनटों में वह उससे मुक्त हो गया, हालांकि जाल के नुकीले दांत उसके चेहरे पर रगड़ खाने से उसकी एक आंख सॉकेट से बाहर निकल गई थी।

पीड़ा और भय से चीखते हुए बाघ भाग निकला। वह पागलों की तरह जंगल में घुस गया; कहीं भी, बस उस असहनीय दर्द से छुटकारा पाने के लिए जो उसे तड़पा रहा था। लेकिन वह उससे बच नहीं सका। यह दर्द आने वाले कई दिनों और हफ्तों तक उसे सताता रहेगा।

बाघ को तीसरी बार जबरन भुखमरी का सामना करना पड़ा। हालाँकि उसके चारों पैर प्रभावित नहीं हुए थे, लेकिन उसकी बाईं आँख पूरी तरह से चली गई थी, उसके बाएं कान का एक हिस्सा फट गया था, और उसका चेहरा और गर्दन बुरी तरह से ज़ख्मी थे, जबकि उसका दाहिना ऊपरी नुकीला दांत बीच से टूट गया था।

जंगली जीवों में इतनी सहनशक्ति होती है कि बाघ इस कष्ट से भी उसी तरह उबर गया जैसे वह अपनी पिछली मुसीबतों से उबरा था। हर मुसीबत ने उसे एक सबक सिखाया था। साही से मुठभेड़ ने उसे छोटे और निहत्थे जीवों पर हमला करने से सावधान कर दिया था। बैल बाइसन ने उसे भारी जीवों, खासकर बड़ी संख्या में मौजूद

जीवों से युद्ध छेड़ने की मूर्खता का एहसास कराया था। दो हाथियों ने पहले वाले सबक को और भी स्पष्ट कर दिया था। अंत में, एक मरा हुआ जानवर, जिसे उसने खुद दिन में पहले मारा था, किसी तरह जीवित हो उठा और उसे बुरी तरह घायल कर दिया। एक बार फिर दुनिया उसे निर्दयी लगने लगी, जिसमें अगर उसे जीवित रहना है तो उसे अत्यंत सावधानी और सतर्कता बरतनी होगी।

लेकिन उनके मन के किसी कोने में इस अजीब घटना का संबंध मृत गाय के मालिक से था।

जब बाघ स्वस्थ हो रहा था, तो उसे मजबूरन छोटे-छोटे जीवों को पकड़कर खाना पड़ा। यह स्थिति ज़्यादा समय तक नहीं चली, क्योंकि वह अभी भी जवान और स्वस्थ था; लेकिन यह स्थिति इतनी लंबी चली कि उसकी सुंदरता कुछ हद तक कमज़ोर हो गई। उसके चेहरे पर पड़े निशान, बाईं आँख का न होना, फटा हुआ कान और टूटा हुआ दाँत मिलकर उसे एक भयानक रूप दे रहे थे। कभी सुंदर और सर्वशक्तिमान बाघ अब एक राक्षस जैसा बदसूरत और विकृत दिख रहा था।

समय ने जल्द ही यह साबित कर दिया कि यह बाघ न केवल साक्षात शैतान जैसा दिखता था, बल्कि सचमुच शैतान बन चुका था। यह खूबसूरत प्राणी अब एक छुपकर शिकार करने वाला, चालाक और हताश जानवर बन गया था, जिसका एकमात्र उद्देश्य विनाश करना, जल्दी से भोजन प्राप्त करना और उतनी ही तेजी से भाग निकलना था ताकि दूर सुरक्षित क्षेत्रों में जाकर वह यही काम दोहरा सके।

इन घटनाओं का चरमोत्कर्ष दुर्घटना के तुरंत बाद घटित हुआ, बाघ के घावों से पूरी तरह उबरने से पहले ही। चूंकि वह केवल छोटे जीवों का ही शिकार कर पाता था, जो संख्या और आकार में उसके पेट भरने के लिए अपर्याप्त थे, इसलिए एक दोपहर वह बुरी तरह भूखा था। वह उत्तर में स्थित जंगलों को दक्षिण में स्थित गांव के खेतों से अलग करने वाली वन रेखा के किनारे-किनारे चुपके से चल रहा था।

दोपहर का समय बाघ के शिकार पर निकलने का सामान्य समय नहीं होता। आमतौर पर उसे किसी जंगल की छोटी नदी के किनारे गहरी नींद में सो जाना चाहिए, ताकि वह रात के भारी भोजन को पचा सके। लेकिन अफसोस, वो अच्छे दिन अब बीत चुके थे। बाघ में अभी भी ताकत थी, लेकिन उसके पिछले पैर के घिसटने और एक आँख

न होने के कारण शिकार करने की उसकी क्षमता लगभग खत्म हो चुकी थी। सबसे बढ़कर, उसका आत्मविश्वास खत्म हो चुका था, और उसका पूरा चेहरा एक डरे हुए, सजग व्यक्ति की तरह दिखता था।

वह भूखा था, असहनीय रूप से भूखा था, और दोपहर की झुलसा देने वाली गर्मी भी उसे ठंडी छाया में तब तक नहीं रोक पाई जब तक कि सूरज पश्चिम में डूब नहीं गया और शाम नहीं हो गई, जब रात के शिकारी आलस से जागते और शिकार के घंटों की तैयारी में संतुष्टि से अंगड़ाई लेते। लेकिन यह शिकारी तब तक इंतजार नहीं कर सकता था; वह बहुत भूखा था।

बहुत दूर से बाघ को एक आवाज़ सुनाई दी - चरने के लिए छोड़े गए बैलों और गायों के गले में बंधी लकड़ी की पट्टियों की खोखली आवाज़। झुंड को आग की रेखा के साथ-साथ ले जाया जा रहा था, शायद दसमचेरुवु नामक छोटे तालाब की ओर, जो लगभग छह फर्लांग दूर और आग की रेखा के ठीक उत्तर में जंगल के भीतर स्थित था। ये साधारण लकड़ी की 'घंटियाँ' चरवाहों को घने जंगल में प्रवेश करने पर अपने पशुओं का पता लगाने में मदद करने के लिए थीं, जहाँ उन्हें ढूँढना मुश्किल हो सकता था। इसके अलावा, लकड़ी की पट्टियों के आपस में टकराने की खोखली आवाज़ किसी भी मांसाहारी जानवर को हमला करने से रोक सकती थी, और आमतौर पर ऐसा ही होता था।

लेकिन यह एक अपवाद था। बाघ को ज़बरदस्त भूख लगी थी। उसके आधे खुले जबड़े से लार टपक रही थी; वह गर्मी से हांफ रहा था, क्योंकि उसके पेट में खालीपन और भूख के मारे कुछ भरने का ही ख्याल उसके दिमाग में घूम रहा था।

वह झुंड के पीछे, आग बुझाने वाली पंक्ति में, लगभग एक फर्लांग की दूरी पर आ गया। वे अभी-अभी एक ऊँची जगह से ऊपर चढ़े थे और दूसरी तरफ नीचे उतर रहे थे। बाघ उन्हें देख नहीं पा रहा था, लेकिन घंटियों की लयबद्ध आवाज़ से उसे यकीन हो रहा था कि वे अभी भी आगे बढ़ रहे हैं। बाघ उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

जब वह भी पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, तो मवेशी एक समतल ज़मीन पर पहुँच चुके थे और झुंड बनाकर उससे दूर जा रहे थे। उसने राहत की सांस लेते हुए देखा कि वहाँ केवल एक ही व्यक्ति प्रभारी था, और वह भी कद में छोटा था।

दरअसल, वह चरवाहा मात्र बारह वर्ष का एक लड़का था। मवेशियों के साथ भेजा गया वयस्क एक विशाल बरगद के पेड़ की छाया में सो गया था और उसने लड़के को निर्देश दिया था कि वह मवेशियों को दसमचेरुवु नामक तालाब तक ले जाए और वहाँ उन्हें पानी पिलाए और आग की रेखा के पास लगभग एक घंटे तक चराए, जिसके बाद उसे उन्हें वापस बरगद के पेड़ के पास ले जाना था और सोए हुए व्यक्ति को जगाना था, जो उन्हें गाँव ले जाएगा।

उसे नहीं पता था कि उसमें किसी जानवर पर छलांग लगाने का साहस होगा या नहीं। फिर भी वह चट्टान पर चढ़ गया और घात लगाकर बैठ गया। उसने पाया कि सीधी धूप पड़ने से पत्थर असहनीय रूप से गर्म हो गया था; इतना गर्म कि उसे अपना पेट चट्टान से थोड़ा ऊपर उठाना पड़ा ताकि वह सीधे सतह के संपर्क में न आए, और अपने शरीर का भार अपने चारों पैरों पर समान रूप से बाँट लिया जो उसके नीचे मुड़े हुए थे।

कुछ ही देर में उसे मवेशियों के आने की आहट सुनाई दी। फिर सबसे आगे चलने वाला जानवर दिखाई दिया, एक लंबा और दुबला-पतला बैल जिसके सींग इतने लंबे थे कि सिरे लगभग आपस में मिल जाते थे और हथियार के तौर पर बिल्कुल बेकार थे। बाकी झुंड उसके पीछे-पीछे चल रहा था। रास्ता यहाँ काफी संकरा था, और पानी तक पहुँचने की जल्दी में जानवर एक-दूसरे से टकराते और लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे। कोई भी अपने पड़ोसी को रास्ता देने को तैयार नहीं था और वे एक साथ आगे बढ़ते गए, उनकी गर्दन से लटके लकड़ी के टुकड़े आपस में टकरा रहे थे, और उनके खुर एक-दूसरे और चट्टान से टकरा रहे थे। उनकी पसीने से तर पीठों के ऊपर धूल का बादल उठ रहा था, जो चलते हुए जानवरों पर कफ़न की तरह छाया हुआ था।

कुछ ही देर में झुंड का मुख्य हिस्सा आगे निकल गया। कुछ जानवर पीछे छूट गए। ये दो बिल्कुल अलग-अलग तरह के थे; एक वे जो बीमार और कमजोर थे और बाकी के साथ नहीं चल पा रहे थे, और एक-दो गर्भवती गायें। सबसे आखिर में एक जवान गाय थी, जो बहुत गर्भवती थी। उसका बछड़ा एक-दो दिन में पैदा होने वाला था। उसके पीछे मवेशियों की देखभाल करने वाला अकेला लड़का बड़े-बड़े कदम रखते हुए चल रहा था और अपने पैरों को उन सैंडल में रखने की कोशिश कर रहा था जो साफ तौर पर उसके साइज से कई साइज बड़ी थीं। इसमें कोई शक नहीं कि उसने चुपके से

बरगद के पेड़ के नीचे सो रहे आदमी से सैंडल उधार ली थीं, लेकिन मालिक के जागने से पहले उन्हें उतनी ही चुपके से लौटाने का उसका पूरा इरादा था। क्योंकि जमीन पर बहुत सारे कांटे थे और दोपहर की धूप में सूखी जमीन बहुत गर्म थी। रामू नाम के लड़के को चुपके से सैंडल लेने में कोई बुराई नहीं लगी, क्योंकि वह जानता था कि झुंड को तालाब तक ले जाने की इजाजत देकर वह सो रहे आदमी पर बहुत बड़ा एहसान कर रहा है। अगर उसने ईमानदारी से चप्पलें माँगी होतीं, तो भी उसे मना ही कर दिया जाता। उसके कंधे पर टिकी हुई, और दोनों सिरों पर उठे हाथों से टिकी हुई, पाँच फुट लंबी लाठी थी, जो भारत में चरवाहे का प्रतीक और एकमात्र रक्षक है। बड़े चरवाहे ने सोने से पहले उसे यह लाठी उधार दी थी।

गर्भवती गाय आती हुई लगभग बाग के नीचे पहुँच गई थी। आगे के लगभग सभी जानवर रास्ते के मोड़ से मुड़ चुके थे। मवेशी चराने वाला लड़का धीरे-धीरे 'गोरी गोरी' धुन गुनगुना रहा था। भारतीय संगीत के लिहाज़ से यह धुन काफ़ी नई थी, और उसने इसे हाल ही में थाली कस्बे में आए एक गाँव के सिनेमाघर में सुना था, जहाँ वह अपने माता-पिता के लिए महीने भर का राशन खरीदने गया था।

कुछ ही सेकंड और बीत जाते तो गर्भवती गाय सीधे छलांग की सीमा से बाहर निकल जाती। बारह वर्षीय लड़के द्वारा दर्शाए गए उसके हालिया अनुभव और मनुष्यों के प्रति अंतर्निहित भय ने उसके बुरी तरह से घायल मस्तिष्क में भूख की पीड़ा के विरुद्ध एक जबरदस्त संघर्ष छेड़ दिया।

भूख की जीत हुई!

अचानक आसमान से एक बाघ नीचे आया और उसका भारी वजन पहले से ही बोझ से दबी गाय की पीठ पर ज़ोर से पड़ा। वह गिर पड़ी। और इससे पहले कि उसे कुछ समझ आता, एक ताकतवर जबड़े ने पीछे से उसका गला जकड़ लिया। वह उठने की कोशिश करती रही, और यही उसकी मौत का कारण बना।

अपने विशाल दांतों से उसका गला जकड़े हुए और अगले पंजों से उसके कंधों को पकड़े हुए, बाघ ने अपना भार उसके दाहिनी ओर डाल दिया। उसके भार के साथ-साथ उसके भार के कारण वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ी।

ऐसा करते ही एक तेज़ चटकने की आवाज़ आई, जैसे कोई मोटी छड़ी टूट रही हो।

बाघ ने अपने और गाय के वज़न का इस्तेमाल करके उसकी गर्दन तोड़ दी थी।

रामू, जो अब भी मन ही मन 'गोरी गोरी' गुनगुना रहा था, लगभग घायल गाय से टकरा गया, जो उसके सामने रास्ते पर पड़ी थी और उसके ऊपर बाघ बैठा था। वह अचानक रुक गया और उसने अपनी लाठी को अर्धवृत्त में घुमाया।

यह एक अविवेकी हरकत थी, जो निस्संदेह आत्मरक्षा में की गई थी और बाघ को डराने या उस पर हमला करने के इरादे से नहीं की गई थी।

लेकिन बाघ अब पूरी तरह उत्तेजित हो चुका था। ताजा गर्म खून का स्वाद, उसके नीचे कांपता हुआ शव, उसके पीछे मंडराता वह छोटा सा नन्हा प्राणी, जो अपनी तुच्छ छड़ी से उसकी पीठ को धमका रहा था, और यह आशंका कि आखिरी क्षण में वह कुछ ऐसा कर सकता है जिससे उसका मुश्किल से हासिल किया हुआ शिकार उससे छिन जाए, जबकि वह बहुत भूखा था - इन सब बातों ने मिलकर उसे इतना उत्तेजित और उग्र कर दिया था कि वह सावधानी की सीमा पार कर चुका था।

गाय के गले पर अपनी पकड़ थोड़ी देर के लिए छोड़ते हुए, बाघ मुड़ा और लड़के के सिर पर ज़ोरदार प्रहार किया। रामू की खोपड़ी अंडे के छिलके की तरह चटक गई, जिससे ज़ोरदार आवाज़ हुई।

गिरते ही बाघ ने पलटकर फिर से गाय का गला पकड़ लिया। उसकी अंतरात्मा ने उसे बताया कि शायद गाय अभी भी जीवित हो और भाग जाए। उसने ठान लिया था कि वह ऐसा होने नहीं देगा।

आगे चल रहे मवेशी, झगड़े की आवाज सुनकर और खतरे को भांपकर, बिना किसी परवाह के तालाब के पास से सरपट दौड़ पड़े और जंगल में इधर-उधर बिखर गए।

बाघ अभी भी बेजान गाय का गला पकड़े हुए था। एक-दो मिनट बाद वह थोड़ा शांत हुआ। फिर उसने गला छोड़ दिया और सीधा खड़ा होकर अपने शिकार को निहारा। इससे उसे कम से कम तीन वक्त का खाना मिल जाएगा।

लेकिन वह चिंतित था। पीछे पड़े उस छोटे से इंसान जैसे प्राणी का क्या होगा? उसने पहले भी कई इंसानों को देखा था और हमेशा उनसे बचता रहा था - क्योंकि वह उनसे डरता था। उसके अविकसित दिमाग में, उसने जाल को इंसानों की करतूत से जोड़ा,

और पूरी मानव जाति के प्रति उसके मन में सम्मान था, जिसे वह खुद को नुकसान पहुंचाने में सक्षम समझता था। क्या इतने सालों से वह गलत था? क्या उसके पंजे का एक ही वार किसी इंसान को गिराने के लिए काफी था? क्या यह सच हो सकता है कि आखिरकार, उसके लिए इन दो पैरों वाले प्राणियों को मारना किसी चार पैरों वाले जानवर से आसान था? यह अविश्वसनीय लग रहा था! निश्चित रूप से उसे उस गाय को मारने में कहीं अधिक मेहनत करनी पड़ी थी जो अब उसके नीचे मृत पड़ी थी।

और अगर ऐसा होता, तो क्या मनुष्य भी खाने के लिए उतना ही अच्छा होता? उसने सोचा, ऐसा होना तो मुश्किल है। लेकिन फिर भी, हो सकता है। शायद महज़ संयोग से, उसे भोजन का एक नया स्रोत मिल गया हो।

बाघ को संदेह था और वह बहुत भूखा भी था। इसलिए वह गाय के पिछले हिस्से के पीछे दुबक गया, जगह बनाने के लिए उसकी पूंछ काट दी, और फिर मलाशय में गहराई तक काटकर मांस का एक बड़ा टुकड़ा फाड़ दिया। इस तरह बने टेढ़े-मेढ़े छेद से खून रिसने लगा, बाघ ने उसमें अपना दाहिना अगला पंजा डाला। उसने अपने पंजों से अंदर टटोला और आंत का एक बड़ा हिस्सा बाहर निकाल लिया। फिर से टटोलते हुए, उसने मरी हुई गाय के पेट समेत बाकी बचे हुए हिस्सों को साफ करना जारी रखा। इस गंदगी को वह कुछ फीट दूर घसीटकर ले गया और फिर गाय के शव के पीछे बैठकर अपना भोजन शुरू कर दिया।

ऐसा करते हुए, उसकी पीली-हरी आँखें अपने शिकार के झुके हुए हिस्से पर टिक गईं और ठीक उसके पीछे चरवाहे के शव पर उनकी नज़र पड़ी। एक बार फिर उसे एहसास हुआ कि उसने इस छोटे से जीव को कितनी आसानी से मार डाला था, और एक बार फिर उसके मांस का स्वाद चखने की लालसा जाग उठी। बाघ कुछ पल के लिए झिझका, यह सोचते हुए कि वह सामने खड़ी गाय पर हमला करे या उसके ठीक पीछे पड़े लड़के पर। उस अजीब मांस को चखने की लालसा और भी प्रबल होती जा रही थी।

वह गाय के शव के ऊपर से गुजरा और अपने दूसरे शिकार की ओर चल पड़ा।

यह अपेक्षाकृत छोटा शिकार था, और गाय की तरह पहले आंतें और पेट निकालने की इच्छा बाघ को इस बार प्रेरित नहीं कर रही थी। शायद मानव शव की आकृति का

इससे कुछ संबंध था।

बाघ ने अपना सिर झुकाया और मृत लड़के के धड़ को सूंघा। वह उसका अंतिम परीक्षण करना चाहता था। फिर उसने गले को सूंघा और कुछ देर वहीं रुका रहा।

चरवाहा कमर पर केवल एक लंगोटी पहने हुए था। लंगोटी का एक सिरा हवा में लहरा रहा था, जिससे बाघ चिढ़ गया। बाघ ने धीमी, क्रूर गुर्राहट के साथ लंगोटी को अपने दांतों के बीच पकड़ लिया और ज़ोर से खींचा। लंगोटी में गांठ बंधी थी, जिससे वह आसानी से नहीं निकली। इससे बाघ और क्रोधित हो गया। फिर से गुर्राते हुए, बाघ ने लंगोटी को तब तक नोचा जब तक कि वह उसे काटकर लड़के की कमर से पूरी तरह अलग नहीं कर दिया।

अगले ही पल, बाघ ने लड़के के जननांगों को जोर से काटा और एक निवाला फाड़कर निगल लिया। फिर वह जमीन पर बैठ गया, एक पंजा शव पर रखा, और छाती और पेट को व्यवस्थित रूप से खाने लगा।

उस समय, यह मृत शरीर एक भूखे बाघ के लिए महज एक और भोजन का प्रतीक था; लेकिन वास्तव में यह उसके करियर में एक मील का पत्थर था।

एक आदमखोर बाघ का जन्म हुआ था; एक ऐसा आतंक जिसने चालीस मनुष्यों की जान ले ली थी, और लोग उसे 'बाघ' कहने से भी डरते थे, इस डर से कि कहीं वह बुरी आत्मा, जो सभी आदमखोर बाघों की पीठ पर सवार होकर उन्हें उनके मानव शिकार तक ले जाती है, उनकी बातें सुन न ले और बोलने वाले को अपना अगला शिकार न बना ले। धुएँ से भरी आग के पास, लोग अपनी झोपड़ियों के बंद दरवाजों के पीछे, रात के सन्नाटे में, फुसफुसाते हुए उसे 'महाराजा' कहते थे, जबकि वे जंगल की अंधेरी गलियों में गूंजती उसकी कराहती हुई आवाज सुनते थे।

बाघ ने चरवाहे को जमकर खाया। वह लड़का भले ही बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन बाघ बहुत बड़ा और भूखा था। जब वह अंत में शव के ऊपर से उठा और पानी पीने के लिए तालाब की ओर जाने लगा, तो लड़के का केवल सिर और चारों अंगों के कुछ हिस्से ही बचे थे।

इसी बीच, झुंड सहज रूप से जंगल के उस हिस्से में फिर से इकट्ठा हो गया जहाँ वे

अव्यवस्थित रूप से दौड़ रहे थे। वे कुछ देर इधर-उधर भटकते रहे और फिर उन्हें वर्षों से खुद और अन्य मवेशियों द्वारा बनाए गए कई रास्तों में से एक रास्ता मिल गया। वे उसी रास्ते पर चलते हुए धीरे-धीरे जंगल और खेतों को अलग करने वाली वन रेखा पर पहुँच गए। वे सब एक साथ रेखा पार करके खेतों में पहुँचे और पास की एक छोटी पहाड़ी पर बसे गाँव की ओर चल पड़े।

जब जानवर अपने रखवालों के बिना घर लौटे, तो उनके न दिखने पर बहुत हैरानी हुई। साथ ही गुस्सा और गाली-गलौज भी हुई। क्या वे दोनों लापरवाह और गैर-जिम्मेदार नहीं थे कि अपने रखवालों को इस तरह छोड़कर अकेले चले गए? मवेशी कीमती संपत्ति थे, जबकि वह आदमी और लड़का नहीं थे, और मालिक ने ठान लिया कि जब वे लौटेंगे तो उन्हें खूब पीटेगा; उस रात उन्हें खाना नहीं मिलेगा और उन पर तीन दिन की मजदूरी का जुर्माना लगाया जाएगा।

बरगद के पेड़ के नीचे लेटा बूढ़ा चरवाहा सूरज के पश्चिम की ओर डूबने और शाम की परछाइयों के लंबे होने तक गहरी नींद सोता रहा। फिर वह जागा, उठ बैठा, जम्हाई ली, बाहें फैलाईं और कुछ देर सोचता रहा कि उसे नींद कैसे आ गई। आखिरकार उसे याद आया। आखिर उस झुंड और उस बदमाश लड़के का क्या हुआ होगा जिसे उसने सौंपा था? शायद वह लड़का उसे पूरी तरह भूल गया होगा। या शायद, उसे जानवरों को वापस बरगद के पेड़ तक ले जाने में आलस आ रहा था और वह उन्हें सीधे गाँव ले गया होगा। कितना आलसी लड़का है!

वह व्यक्ति गांव की ओर जाने के इरादे से उठ खड़ा हुआ।

अचानक उसे अपनी चप्पलें याद आईं। सोने से पहले उसने उन्हें अपने पास ही रखा था। अब वे कहीं नहीं मिल रही थीं। ज़रूर रामू नाम के लड़के ने उन्हें पहन लिया होगा, और वो भी बिना उसकी इजाज़त के, जब वह भेड़ों को पानी के कुंड तक ले गया था। धिक्कार है उस बदतमीज़ बच्चे पर! ज़रा इंतज़ार करो जब वो उसे देखेगा। चरवाहा गोविंद उसे सबक सिखाएगा!

इन गुस्से भरे विचारों के साथ, चिंतित चरवाहा नंगे पैर गाँव की ओर चल पड़ा। उसके मालिक को पता नहीं चलना चाहिए कि वह लड़के को झुंड सौंपकर सो गया है। अगर उसे पता चल गया, तो वह शायद उसे पीटेगा, जुर्माना लगाएगा, या दोनों करेगा।

इसलिए उसने अपने कदम तेज़ कर दिए, इस उम्मीद में कि वह गाँव पहुँचकर रामू को चेतावनी देगा कि वह किसी को न बताए। संयोगवश, उसने तय कर लिया कि वह उस बदमाश को एक थप्पड़ मारेगा और उस रात उसका खाना खा जाएगा। दूसरी ओर, अगर वह वादा करे कि वह चोरी-छिपे कुछ नहीं करेगा, तो उसे छोड़ना भी पड़ सकता है!

जब गोविंद मालिक की झोपड़ी पर पहुँचा, तो मवेशियों को बाड़े में बंद देखकर वह निराश हो गया। वहाँ एक बेहद क्रोधित अज़मान भी था, जिसने उसे जमकर अपशब्द कहे। 'अरे, माँ का बेटा! इतने समय से कहाँ था? और लड़का कहाँ है? आश्चर्य की बात नहीं कि तुम दोनों अपने पिताओं को नहीं पहचानते, क्योंकि तुम मेरे मवेशियों की देखभाल करने के लिए भी भरोसेमंद नहीं हो। मेरी जवान, गर्भवती गाय गायब है! शायद उसने कहीं बछड़ा दिया हो और अपने बछड़े के साथ वहीं रह गई हो। या हो सकता है कि उसे किसी जंगली जानवर ने मार डाला हो या इन दुष्ट लंबानी खानाबदोशों ने चुरा लिया हो। जाओ और उसे ढूंढो।'

मालिक की आवाज़ गुस्से से भड़क उठी। 'जाओ और उसे ढूंढो, मैं कहता हूँ। और अगर उसे कोई नुकसान पहुँचा है, तो मैं तुम्हें ज़िंदा छील दूँगा और तुम्हारे नाजायज़ अवशेष सियार के सामने फेंक दूँगा - यानी, अगर सियार उन्हें छूने की कृपा करें तो!'

चरवाहे के पास कोई जवाब नहीं था। उसे धीरे-धीरे महसूस होने लगा कि कुछ गड़बड़ हो गई है। वैसे भी, जल्द ही अंधेरा होने वाला था, और यह धनी सूअर उसे लापता गाय को खोजने के लिए जंगल में जाने का आदेश दे रहा था। यह आश्चर्य की बात थी कि उसे लापता लड़के को भी खोजने के लिए नहीं कहा गया था। रात जल्द ही होने वाली थी, जब जंगली जानवर अपने मांदों से बाहर निकलेंगे। ऐसे समय में उसे एक खूंखार गाय को खोजने के लिए कहना कतई अजीब बात है! इन धनवानों की यही समस्या थी। वे इतने अविवेकी और स्वार्थी थे। वे केवल अपने और अपनी संपत्ति के बारे में सोचते थे। भला उस जैसे गरीब आदमी की परवाह कौन करेगा?

इन आशंकाओं और मन में पनप रहे विद्रोह के बीज लिए चरवाहा जंगल की ओर वापस चल पड़ा। फिर उसकी आशंकाएँ और बढ़ गईं और डर में बदल गईं। अब उसके मन में विद्रोह के लिए कोई जगह नहीं बची थी। क्योंकि जैसे-जैसे उष्णकटिबंधीय शाम

की बैंगनी छाया शांत, गंभीर पेड़ों के बीच फैलती गई, उसका मन डर से भरता चला गया - ऐसा डर जिसने उसे इतना बेचैन कर दिया कि वह हर झाड़ी को घूरता हुआ आगे बढ़ने लगा। काश, वह जंगल में प्रवेश करने से बच पाता!

तभी उसके मन में एक विचार आया। शायद उस नन्हे शैतान ने उसके निर्देशों का पालन करते हुए झुंड को दस्समचेरुवु तालाब पर पानी पिलाया होगा। अगर ऐसा होता, तो वे इसी रास्ते से गुज़रे होते। ढलते सूरज की रोशनी में सूखी ज़मीन को ध्यान से देखने के लिए वह घुटनों के बल बैठ गया।

जी हाँ, बिल्कुल; पशुओं का झुंड गुजर चुका था। कठोर धरती पर पशुओं के निशान उसे साफ दिखाई दे रहे थे। आखिरकार पशुओं को तालाब तक ले जाया गया था। लेकिन कृष्ण के नाम पर, भूरी गाय और लड़का कहाँ गए? खैर, तालाब पास ही था और गोविंद ने वहाँ तक जाने का फैसला किया, लेकिन इससे आगे नहीं। शायद वह बेचारा लड़का पानी के किनारे सो गया हो, हालाँकि इससे गर्भवती गाय के गायब होने का कारण स्पष्ट नहीं होता।

और इस तरह वह उसी चट्टान के नीचे से गुज़रा, जिस पर बाघ कुछ घंटे पहले दुबका हुआ था। उसने देखा और वहीं जम गया। उसके सामने मरी हुई गाय पड़ी थी; लेकिन उससे भी करीब, लगभग उसके पैरों के पास, रामू नामक बालक के कुछ बिखरे हुए अवशेष पड़े थे, जो कुछ ही पल पहले तक जीवित था।

गोविंद की सोचने-समझने की क्षमता आम तौर पर इतनी तेज़ नहीं थी, लेकिन धीरे-धीरे उसे समझ आ गया कि यह किसी जंगली जानवर का काम है। भला यह बाघ के अलावा और कौन सा जानवर हो सकता था? और तो और, वही बाघ आस-पास ही कहीं घात लगाए बैठा हो सकता था। सच में, किसी भी क्षण वह उस पर झपटकर उसे मार सकता था। गोविंद मुड़ा और भाग गया।

और वह तब तक दौड़ता रहा जब तक कि वह अधिपति के घर से सटी हुई बाड़ में घुसकर उसके पैरों पर गिर पड़ा और हांफने लगा।

उस अधिकारी ने उसे देखा, तुरंत समझ गया कि कुछ बहुत गलत हुआ है, उसे केवल अपनी मोटी जवान गाय का ख्याल आया और उसने चिल्लाकर पूछा, "क्या हुआ है, मूर्ख? मुझे जल्दी बताओ!"

लेकिन गोविंद के होठों पर तब तक शब्द नहीं निकले जब तक मालिक ने दोबारा चिल्लाकर नहीं कहा, 'बोलो बेवकूफ, इससे पहले कि मैं तुझे पीट दूं!'

फिर गोविंद के मुख से भयानक खबर निकली, 'मालिक, वह और रामू दोनों एक बड़े बाघ के हाथों मारे गए हैं। मैंने देखा। उसने मुझे मारने की कोशिश की। उसका सिर इतना बड़ा है,' और यहाँ उसने दोनों बाँहें फैलाकर बाघ के सिर का आकार दिखाया, जो अगर उसका इशारा सही होता तो कान से कान तक चार फीट से भी अधिक होता। 'बाघ ने न केवल उन दोनों को मारा है, बल्कि रामू को पूरी तरह से खा गया है।'

अधिकारी कुछ पल के लिए इतना स्तब्ध रह गया कि कुछ बोल नहीं पाया। फिर उसने कांपती हुई आवाज में पूछा, 'क्या आपको यकीन है कि गाय मर चुकी है?'

और इस तरह बाघ को जंगल के सबसे खूंखार जीवों में से एक, आदमखोर बाघ के रूप में जाना जाने लगा!

इसके बाद, आस-पास के गांवों और जंगल से बीस मील दूर तक फैले छोटे-छोटे गांवों से पुरुष और महिलाएं धीरे-धीरे गायब होने लगे। शुरू में घटनाएं बहुत कम और छिटपुट थीं, इसलिए छह महीने से अधिक समय बीत गया, तब जाकर इलाके के लोगों को एहसास हुआ कि उनके बीच आदमखोर जानवर सक्रिय है। भारत में लोग गायब हो जाते हैं, और हमेशा ऐसा नहीं होता कि उनकी असमय मृत्यु हो। कुछ लोग इतना भारी कर्ज ले लेते हैं कि उन्हें चुकाने की उनकी कल्पना भी नहीं होती। अगर वे बच भी जाते हैं, तो कर्जदार उन्हें पकड़कर पीटते हैं, या शायद उन्हें मुआवजे के तौर पर कुछ समय के लिए नौकरानी का काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। कभी-कभी कोई पुरुष किसी दूसरी जाति की स्त्री से मिलता है जिससे वह कानूनी तौर पर कभी शादी नहीं कर सकता; या शायद किसी दूसरे पुरुष की पत्नी से। अंतरजातीय विवाह वर्जित हैं, और तलाक जैसी कोई चीज नहीं है। इसलिए प्रेमी-प्रेमिकाएं गायब हो जाते हैं और दूर कहीं नई जिंदगी शुरू करते हैं, जहां उन्हें कोई नहीं जानता। या हो सकता है कि किसी पुरुष का अपनी पत्नी या माता-पिता से झगड़ा हो गया हो; वह ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में रहना नहीं चाहता। आत्महत्या का विचार सबसे पहले मन में आता है, लेकिन अपनी जान लेने के लिए एक साहसी व्यक्ति की

आवश्यकता होती है; रातोंरात गायब हो जाना कहीं अधिक सरल और आकर्षक विकल्प है।

इन सभी कारणों और कई अन्य कारणों से, पुरुष, और बहुत कम मामलों में महिलाएं, अपने गांवों से गायब हो जाते हैं और कोई इसकी परवाह नहीं करता, सिवाय शायद उन कुछ गिने-चुने लोगों के जो सीधे तौर पर इससे जुड़े होते हैं। इसलिए जब बाघ ने हत्याएं शुरू कीं और उसके शिकार गायब होने लगे, तो किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया, जब तक कि रामू लड़के की तरह उसके अवशेष नहीं मिले और यह पुष्टि नहीं हुई कि हत्यारा एक बाघ था - कोई साधारण बाघ नहीं, बल्कि आदमखोर बाघ! तब गांव-गांव दहशत फैल गई।

इसके बाद कोई भी अकेले जंगल में जाने की हिम्मत नहीं करता था। जंगल से सटे गांवों में मिट्टी और टहनियों से बनी झोपड़ियों के दरवाजे रात में बंद कर दिए जाते थे। मवेशी चराने और लकड़ी काटने का सारा काम रोक दिया गया था। जिन्हें यात्रा करनी होती थी, वे केवल दिन में और बड़े समूहों में ही चलते थे। शिकारी, जो हर रात अनाज के खेतों या पानी के गड्ढों और नमक के स्रोतों के पास छिपकर, उन स्थानों पर आने वाले अनजान हिरणों का शिकार करने के लिए अपनी बंदूकों से लैस रहते थे, उन्होंने कुछ समय के लिए मांसाहारी भोजन छोड़ दिया और पूरी तरह शाकाहारी बन गए। खेतों को बिना देखभाल के छोड़ दिया गया, क्योंकि वे ज्यादातर जंगल के बहुत करीब थे, जहां से आदमखोर जानवर अचानक निकलकर किसी अनजान व्यक्ति को अपना शिकार बना सकते थे।

सप्ताह धीरे-धीरे बीतते गए। बीस मील के दायरे में बसे उन छोटे-छोटे गाँवों में रहने वाले लोग, जहाँ बाघ ने पहली बार इंसानों को मारना शुरू किया था, जैसे-जैसे अधिक सतर्क होते गए, बाघ के लिए अपने शिकार जुटाना और भी मुश्किल होता गया। इसका दोहरा परिणाम हुआ: वह और भी साहसी हो गया और दूर-दूर तक भटकने लगा। आदमखोर बाघों और तेंदुओं के मामले में कारण और प्रभाव का चक्र हमेशा एक दूसरे को प्रभावित करता है। इस मामले में, बालक रामू के पहले शिकार बनने के बाद से एक साल से थोड़ा अधिक समय बीत चुका था, लेकिन इस दौरान बाघ सत्ताईस पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को मार चुका था, और लगभग 400 वर्ग मील के जंगल और विरल आबादी वाले क्षेत्र में उसकी उपस्थिति का आतंक गहराई से

महसूस किया जा रहा था।

पूरे क्षेत्र के छोटे-छोटे गांवों में घेराबंदी जैसी स्थिति बनी हुई थी। लोग शाम पांच बजे अपने घरों में बंद हो जाते थे और सुबह आठ बजे तक वहीं रहते थे। चूंकि अधिकांश ग्रामीण परिवार बहुत बड़े होते हैं, जिनमें तीन पीढ़ियों के सदस्य होते हैं, और उनकी संख्या भी काफी अधिक होती है, और स्वच्छता की कोई व्यवस्था न होने के कारण, यह कल्पना की जा सकती है कि सुबह होने से पहले प्रत्येक घर का भीतरी भाग कितनी गंदगी से भर जाता होगा।

इस दौरान बाघ को खत्म करने के कई प्रयास किए गए। उसके शिकारों को आर्सेनिक, स्ट्राइकिन और साइनाइड से जहर दिया गया था, लेकिन उसने कभी जहर नहीं खाया। कुछ शिकारी मचान पर बैठकर उस पर निशाना साधते हुए गोली चलाने की कोशिश करते रहे, लेकिन चूक गए। इन घटनाओं और उसके पिछले अनुभवों ने बाघ को पहले से कहीं ज्यादा सतर्क कर दिया था। वह अपने किसी भी शिकार, चाहे जानवर हो या इंसान, के पास कभी नहीं लौटा और न ही कभी दिखाई दिया। उसकी मौजूदगी का एकमात्र सबूत जंगल से निकलने वाले रास्तों पर उसके पदचिह्न थे, और यह तथ्य कि लोग एक निश्चित नियमितता के साथ गायब होते रहे। महीने बीतते गए। खतरा बना रहा। ऐसा लग रहा था मानो आदमखोर बाघ यहीं रहने के लिए आया हो।

शिकारी रात में उसका इंतज़ार करते रहते थे; जाल बिछाए जाते थे; उसके शिकार के अंदर चालाकी से देसी बम छिपाए जाते थे; जिन संकरे रास्तों से वह कभी-कभार गुज़रता था, उन पर जाल बिछाने वाली बंदूकें लगाई जाती थीं; ज़हर का बेधड़क इस्तेमाल किया जाता था; लेकिन आदमखोर बाघ अपना शिकार करता रहता था और कभी भी अपने पुराने शिकार के पास नहीं लौटता था। वह अजेय प्रतीत होता था।

सूरज डूबने ही वाला था कि एक लंबा आदमी जंगल और खेतों को अलग करने वाली वन रेखा के बीचोंबीच से चलकर आया। आसपास कोई और नहीं था, क्योंकि शाम हो चुकी थी और सभी जानते थे कि बाघ, जिसे अब सर्वत्र 'महाराजा' कहा जाता था, अक्सर इंसानों की तलाश में इस रास्ते से गुजरता था।

क्या वह आदमी पागल था? शायद उसे पता ही नहीं था कि आसपास कोई आदमखोर जानवर घूम रहा है!

लेकिन ऐसा होना असंभव था। किसी ने उसे ज़रूर बताया होगा! साथ ही, वह आदमी पागलों जैसा व्यवहार नहीं कर रहा था, क्योंकि वह अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे से वाकिफ लग रहा था। वह बहुत धीरे और सावधानी से चल रहा था, आग की लपटों से घिरी कतार के ठीक बीच में चल रहा था और हर कदम पर चारों ओर ध्यान से देख रहा था। ज़ाहिर है, वह डरा हुआ था, क्योंकि वह हर झाड़ी के पास पहुँचने से पहले उसे ध्यान से देख रहा था और बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था।

बीच-बीच में कोई चट्टान, कोई बड़ा पेड़, या कोई घनी झाड़ी या घास का मैदान आग की सीमा रेखा के किनारे आ जाता था। जैसे ही वह ऐसे स्थानों के पास पहुँचता, वह और भी धीरे और सावधानी से चलने लगता, और यथासंभव आग की सीमा रेखा के दूसरी तरफ रहने की कोशिश करता।

वह कुछ दूर तक इसी तरह चलता रहा। फिर उसने अपनी कलाई घड़ी देखी। समय छह बजने के कुछ ही देर बाद का था। वह वापस लौटने के लिए मुड़ा। अज्ञानी या पागल, वह आदमी जानता था कि उसे यह नहीं दिखता कि असली अंधेरा कब होता है और उसे उससे पहले ही लौट जाना चाहिए।

वह आदमी लगभग आधा फर्लांग ही पीछे लौटा था कि अचानक रुक गया। उसे कुछ चिंता सता रही थी, उसके बाईं ओर घास का एक बड़ा सा गुच्छा। शायद उसे खतरे का आभास हुआ या कोई आवाज़ सुनाई दी। उसने घास को टकटकी लगाकर देखा।

एक मंद-मंद देहाती आभा सुनाई दी और घास हट गई, जिससे बाघ का भयानक चेहरा प्रकट हुआ, जो अपनी कुरूपता में बेहद भयावह था। उसका सिर ज़मीन पर था, क्योंकि बाघ छलांग लगाने ही वाला था।

वह आदमी रुक गया। उसने अपनी बंदूक कंधे पर उठाई। दो जोरदार धमाकों ने गोधूलि बेला की शांति भंग कर दी और बिल्ली दहाड़ उठी।

धारीदार शरीर अपने आप ही आगे लुढ़क गया, आधे मिनट तक ज़मीन पर बेतहाशा लात मारता और पंजे मारता रहा, फिर वहीं रुक गया। महान तिमोर और सीता का पुत्र, मर गया!

कुछ देर बाद वह आदमी उस जानवर के पास गया जिसे उसने गोली मारी थी। उसने

उसकी बाईं आंख गायब, कान फटा हुआ और चेहरा बुरी तरह से ज़ख्मी देखा और सोचा कि इंसान इतना मूर्ख कैसे हो सकता है कि ऐसी हरकतें करे जो बाद में दूसरों के लिए, और शायद खुद उसके लिए भी, इतनी मुसीबत का कारण बन जाएं।

अंततः बाघ, 'महाराजा', की मृत्यु हो गई; लेकिन जिस व्यक्ति ने उसे मारा था, वह उस प्राणी के प्रति थोड़ी सहानुभूति महसूस करने से खुद को रोक नहीं सका, जिसे मारने के लिए वह विवश था।

6. विंडी वैली का खलनायक

कोयंबटूर जिले के कोललेगल तालुक में एक ऐसा इलाका है जहाँ साल भर, चाहे गर्मी हो या सर्दी, मौसम शुष्क हो या तूफानी, लगभग हर रात एक विचित्र और मुझे बेहद सुखद लगने वाली घटना घटती है। यह विचित्र घटना ठीक रात 10 बजे शुरू होती है और सुबह तीन बजे अचानक समाप्त हो जाती है।

जिस घटना का मैं जिक्र कर रहा हूं, वह एक तेज हवा है, जो लगभग हल्की आंधी के बराबर होती है, जो पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, पश्चिम में बिलिगिरी-रंगन पर्वत की ठंडी ऊंचाइयों से, जिसे रंगा की नीली पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है, एक आने वाले तूफान की तरह हिंसक रूप से नीचे उतरती है और जंगल, सड़क और खेती योग्य भूमि के एक विस्तृत मैदान को पार करती है, और फिर पूर्व में कावेरी नदी की घाटी में पहाड़ों और घने जंगलों में फिर से विलीन हो जाती है।

आप शायद पूछेंगे, 'हवा के चलने में ऐसी क्या अजीब बात है?' दरअसल, एक बात तो यह है कि आप लगभग इसकी शुरुआत और अंत का समय बिल्कुल सटीक बता सकते हैं। दूसरी बात, कल्पना कीजिए पहाड़ों, घाटियों, जंगलों और मैदानों पर छाई एक सर्वव्यापी शांति, जो हर रात एक निश्चित समय पर अचानक एक चीख से टूट उठती है, जो चीख में बदल जाती है। फिर हवा चलने लगती है। यह पाँच घंटे तक चलती रहती है, फिर अचानक, मानो किसी स्विच को बंद कर दिया गया हो, उस समय के अंत में रुक जाती है। इस अनोखी घटना को अनुभव करने पर ही इस पर

विश्वास किया जा सकता है।

इसमें कोई शक नहीं कि इसका कोई प्राकृतिक कारण होगा, लेकिन मुझे नहीं पता। फिर भी यह एक अद्भुत अनुभव है, जो दिनभर चिलचिलाती धूप में मीलों पैदल चलने के बाद थके-हारे शिकारी को बेहद सुकून देता है।

इसमें कोई शक नहीं कि हमारे खलनायक ने भी यही सोचा होगा, क्योंकि वह पश्चिम में बिलिगिरी-रंगन पर्वतमाला की तलहटी में स्थित जंगलों में, विंडी वैली में बस गया, जहाँ से वह एक विस्तृत क्षेत्र में अपनी दुष्टता को अंजाम देता था, न केवल उस समय जब आंधी अपने चरम पर होती थी, बल्कि दिन-रात, जब भी उसे मौका मिलता था।

जैसा कि आप अब तक समझ ही गए होंगे, यह खलनायक एक बाघ था, और इस कहानी का स्थान कोयंबटूर जिले का एक क्षेत्र है, जो उत्तर में कोललेगल कस्बे के बाहरी इलाके से लेकर दक्षिण में डिंबुम ढलान तक लगभग पचपन मील की दूरी में फैला हुआ है, और पश्चिम में रंगा की नीली पहाड़ियों से लेकर समतल जंगल और मैदान को पार करते हुए, और फिर पूर्व की ओर बेहद ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र से होते हुए कावेरी नदी तक लगभग उतनी ही दूरी पर स्थित है।

इस समतल क्षेत्र के केंद्र में, पश्चिम में वन भूमि और पूर्व में कृषि भूमि के बीच, लोककनहल्ली और बैलूर नामक दो गाँव स्थित हैं। पहला गाँव कोललेगल से सत्रह मील दक्षिण में है, और दूसरा लोककनहल्ली से लगभग सोलह मील दक्षिण में है। ये गाँव रात के तूफ़ानों के क्षेत्र के बीच में स्थित हैं, और इन्हीं गाँवों के आसपास और बीच में बाघ ने अपने कुकर्मों का सिलसिला शुरू किया था, और अंततः यहीं उसका अंत हुआ जब उसे अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ा।

खलनायक का जन्म पश्चिम की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में हुआ था। इस पर्वत श्रृंखला के शिखर पर, लगभग 5,000 फीट की ऊँचाई पर, कई कॉफी बागान हैं, जिनकी स्थापना वर्षों पहले एक महान अंग्रेज शिकारी ने की थी। उन्होंने प्राचीन वनभूमि के बीचोंबीच इन्हें काटकर दक्षिण भारत के सबसे लाभदायक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में बदल दिया था। उन दिनों जंगल में जंगली जानवरों की भरमार थी; हाथी, बाइसन, बाघ, पैंथर और सभी प्रकार के हिरण। हिरण इतने अधिक थे कि मांसाहारी जानवरों के पास खाने के लिए पर्याप्त से अधिक था, और वे लगभग पूरी तरह से हिरण के

मांस और जंगली सूअर पर ही निर्भर थे।

फिर सभ्यता का आगमन हुआ। जंगलों को बेरहमी से काटा गया, सड़कें बनीं, और इसके साथ ही गाड़ियाँ, जीपें, टॉर्च और दिन-रात अंधाधुंध अवैध शिकार का प्रचलन भी बढ़ गया। सैकड़ों हिरणों का वध किया गया, और उनकी संख्या में भारी कमी के कारण जंगली जानवरों का प्राकृतिक शिकार भी तेजी से दुर्लभ होता चला गया।

जंगलों की कटाई और सड़कों के निर्माण के साथ-साथ घास के मैदानों का विशाल क्षेत्र विकसित हो गया, जिससे पालतू गायों और भैंसों के बड़े-बड़े झुंड आकर्षित हुए। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है, और इन पालतू झुंडों के आगमन के साथ, मीलों दूर तक फैले बाघ और तेंदु, जो तब तक शायद ही कभी गायों का शिकार करते थे, अब पक्के तौर पर गाय-भक्षक बन गए, और अब वे हिरण का शिकार उतनी ही दुर्लभता से करते थे जितनी दुर्लभता से वे पहले गाय या भैंस का शिकार करते थे।

इस क्षेत्र के बाहरी इलाकों में बसे छोटे-छोटे गांवों में रहने वाले शोलागा आदिवासी अक्सर बताते थे कि उन्हें पगडंडियों और पुराने शिकार के रास्तों पर एक बाघिन के पैरों के निशान मिलते थे, जिनके साथ उसका अधेड़ शावक भी होता था। इन दोनों जानवरों के पदचिह्न सुबह-सुबह दिखाई देते थे, जबकि शाम को देर से लौटने वाले अन्य शोलागा लोगों का कहना था कि उन्होंने सूर्यास्त के समय अपने पालतू मवेशियों और भैंसों के खुरों के निशानों के ऊपर मां और बेटे के पैरों के निशान देखे थे।

इसका मतलब यह था कि दोनों बाघ गोमांस के आदी नहीं थे, लेकिन फिर भी वे इसे चखने का साहस जुटा रहे थे।

यह इच्छा अपेक्षा से कहीं अधिक जल्दी और पूरी तरह से पूरी हो गई, जब कुछ ही हफ्तों में, घरेलू बैल, गाय और भैंसें, बढ़ती संख्या में, दोनों बाघों का शिकार बनने लगीं।

अपनी गतिविधियों पर बिना किसी रोक-टोक के, ये जानवर एक टीम के रूप में मिलकर काम करते थे, एक साथ शिकार करते, मारते और खाते थे।

समय बीतने के साथ-साथ नर शावक - जिसे डरे हुए शोलागा लोगों ने जल्द ही 'खलनायक' का उपनाम दे दिया - आकार और कौशल में बढ़ता गया। शायद उसकी

माँ और उसने मिलकर जो एक शिकार किया था, उससे मिला मांस हम दोनों के लिए पर्याप्त नहीं था। हो सकता है वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता हो। कारण जो भी हो, युवा बाघ ने अकेले ही शिकार करना शुरू कर दिया और उसके बाद अधिकांश शिकार खुद ही करने लगा, बस अपनी माँ को पुराने समय की याद में थोड़ा-बहुत मांस खाने को दे देता था।

इस पूरे समय वह बढ़ता ही रहा, और जब वह पूर्ण परिपक्व हो गया, तो उसने अपनी माँ के प्रति अपने दायित्वों को जल्द ही भुला दिया, जो वैसे भी उससे छोटी थी और अब उस पर अपना अधिकार नहीं जमा सकती थी। अगर उसकी माँ उसके शिकार के पास आने की हिम्मत करती, तो वह गुर्राता और काट लेता।

अपने बच्चों के रवैये में आए इस बदलाव ने बाघिन को स्वयं शिकार करने के लिए मजबूर कर दिया, जिसे वह अपनी अधेड़ उम्र और शारीरिक क्षमता के कारण बखूबी कर सकी। शोलागा जनजाति के पालतू पशुओं पर होने वाली मौतों की संख्या पहले से दोगुनी हो गई।

इन लगातार हो रहे अत्याचारों ने अंततः स्थानीय लोगों के क्रोध को इस हद तक भड़का दिया कि उन्होंने इनके खिलाफ कुछ करने का निश्चय किया। पीढ़ियों से वन-विज्ञान में निपुण होने के कारण, शोलागा लोग अपने जंगलों में रहने वाले जानवरों की आदतों से भली-भांति परिचित थे और उन्होंने जल्द ही अपने उत्पीड़कों को नष्ट करने का एक चतुर तरीका खोज निकाला।

पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित लोककनहल्ली गाँव में रहने वाले एक वृद्ध विशेषज्ञ की सलाह और सक्रिय सहायता से, परामर्श लेने आए पहाड़ी लोगों ने एक कच्चा बम बनाया, जिसकी विनाशकारी शक्ति उसमें भरे लोहे और सीसे के टुकड़ों में निहित थी। इस अधूरे ढंग से बने बम को उन्होंने उचित अवसर आने तक सावधानीपूर्वक सहेज कर रखा।

आखिरकार वो पल आ ही गया जब उनके नौ और मवेशी उन दो बाघों का शिकार बन चुके थे। दसवां शिकार, जिसे उस युवा बाघ ने मारा था जिसे दोनों हमलावरों में सबसे ज्यादा खूंखार माना जाता था, ठीक उसी तरह का शिकार निकला जिसका इंतजार शातिर बम बनाने वाले इतने समय से कर रहे थे। वह एक सुंदर, तंदुरुस्त, दूध देने

वाली गाय थी जो अपनी जवानी के चरम पर थी!

उसके मालिक, तीन साहसी चरवाहे जो अपने मवेशियों के साथ थे जब बाघ ने गाय पर हमला किया और जानवर भगदड़ मचाने लगे, वे सब मिलकर घटनास्थल की ओर दौड़े। वहाँ उन्होंने एक विशाल बाघिन को अपने शिकार के शव के पास दुबकी हुई देखा। चिल्लाते हुए और अपने डंडे लहराते हुए, तीनों शोलागाओं ने बड़ी बहादुरी से हत्यारे को भगाने की कोशिश की।

हमलावरों को देखकर बाघिन घबरा गई, दहशत में आ गई और झाड़ियों में कूद गई, फिर नज़रों से ओझल हो गई। दो चरवाहे शव के पास ही रुके रहे ताकि सुबह होते ही हत्यारे के वापस आने से उसकी रक्षा कर सकें, जबकि तीसरा शोलागा घटना की जानकारी बम बनाने वालों को देने के लिए तुरंत चला गया।

खुशी से खिलखिलाते हुए, विध्वंस दल अपने यंत्र के साथ उस जगह की ओर दौड़ा जहाँ युवा गाय लेटी हुई थी। जी हाँ, पीड़ित पर एक संक्षिप्त नज़र डालने के बाद वे सहमत हुए, इससे बेहतर और क्या हो सकता था? एक दुधारू गाय ही वह थी जिसकी उन्हें अपनी चतुर योजना को अंजाम देने के लिए आवश्यकता थी। उनका लंबा इंतजार आखिरकार सफल हो गया था।

उन्होंने बड़ी कुशलता से थन को चीरा, जिससे दूध निकलने लगा, क्रिकेट गेंद के आकार के बम को अंदर डाला और सुई-धागे से उसे फिर से सिलना शुरू कर दिया। आखिरकार उन्होंने काम पूरा कर लिया और उन्हें लगा कि उन्होंने अच्छा काम किया है।

बाघिन ने थन को काट लिया और घर में बना बम, जो कि आम तौर पर इस्तेमाल होने पर नाकाम हो जाता है, विनाशकारी प्रभाव के साथ फट गया। इसने बाघिन के जबड़े को चीर दिया, जिससे थूथन और नाक की जगह एक बड़ा छेद हो गया, लेकिन बेचारी बाघिन तुरंत मरी नहीं।

घायल बाघिन दहाड़ नहीं पा रही थी और बताया गया कि अगले तीन दिनों तक उसके क्षत-विक्षत चेहरे और सिर से भयानक गड़गड़ाहट की आवाजें आती रहीं। वह जहां भी लड़खड़ाती, झाड़ियों और जंगल की घास को खून से लथपथ कर देती। चौथे दिन वह भयानक आवाजें और कराहें शांत हो गईं। सौभाग्य से, बाघिन मर चुकी थी।

दो दिन बाद, गिद्ध आकाश में चक्कर लगा रहे थे और उनके पंखों से हवा के सरसराहट की आवाज़ सुनकर वे ज़मीन पर गिर पड़े। इस आवाज़ ने शोलागाओं का ध्यान खींचा और उन्हें सड़ते हुए शव का पता लगाने में मदद की। जंगल में रहने वाले लोगों को शव मिला, लेकिन उन्हें यह जानकर हैरानी हुई कि यह बाघिन थी, न कि वह युवा नर बाघ, जिसे उनके बनाए गए अचूक बम से मार डाला गया था।

शायद जब बम उसकी माँ के मुँह में फटा था, तब बाघ अपनी माँ के साथ ही था। उसने तीन दिनों तक उसकी पीड़ा के दौरान उसे देखा या सुना होगा। यह निश्चित है कि उस घटना के बाद वह बेहद चालाक हो गया। वह शायद ही कभी दिखाई देता था, केवल झुंड के बाहरी किनारों पर चर रहे या पीछे छूट गए अकेले मवेशियों या भैंसों का ही शिकार करता था। और जब वह शिकार करता था, तो वह वहीं पर अपने शिकार का जितना हो सके उतना हिस्सा निगल जाता था और फिर कभी दोबारा भोजन के लिए नहीं लौटता था।

जल्दी-जल्दी खाए गए ये भोजन, जिनके दौरान बाघ चरवाहों के अचानक लौटने के डर से लगातार सतर्क रहता था, उसकी भूख को पूरी तरह से शांत करने के लिए अपर्याप्त थे। और चूंकि वह अपना भोजन पूरा करने के लिए कभी वापस नहीं लौटता था, इसलिए वह कभी तृप्त या संतुष्ट नहीं होता था। इस कारण उसे अधिक बार शिकार करना और मारना पड़ता था, जिससे आसपास के शोलागा गांवों के पशुओं के झुंडों को भारी नुकसान होता था।

स्थानीय निमरोड्स द्वारा, मुंह से लोड होने वाले हथियारों से लैस होकर, इस क्षेत्र को धूर्त और अवांछित आगंतुक से मुक्त कराने के कुछ छिटपुट प्रयास किए गए, लेकिन उसे चकमा देने के जितने अधिक प्रयास किए गए, वह उतना ही चालाक होता गया और ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने उन शिकारियों के समान दूरदर्शी और धूर्त मस्तिष्क विकसित कर लिया था जिन्होंने उसे घेरने का प्रयास किया था।

वह न केवल शिकार के पास कभी नहीं लौटता था, बल्कि अपने लिए बांधे गए किसी भी जीवित शिकार को छूने से भी पूरी सावधानी बरतता था। वह हर शिकार के प्रयास से बच निकलता था। भागने के बजाय, वह शिकारियों की पंक्ति पर पूरी ताकत से दहाड़ते हुए हमला कर देता था, जिससे वे पास के पेड़ों पर चढ़ जाते थे।

जल्द ही लोग सिर हिलाकर उसे 'खलनायक' कहने लगे - तमिल में 'त्रिथू पुल्ली' और हिंदुस्तानी में 'बदमाश बाघ' - दोनों ही शब्दों का अर्थ था कि बाघ बेहद दुष्ट था। लेकिन फिर भी वह मवेशी चोर ही बना रहा और अपनी कहानी के इस पड़ाव तक उसने किसी भी इंसान को नुकसान नहीं पहुँचाया था।

तो हुआ यूं कि पर्वत श्रृंखला की चोटी पर और कॉफी बागानों के बीच रहने वाले शोलागा लोगों के लिए उसकी बढ़ती हुई परेशानी के अलावा, किसी ने भी 'खलनायक' के बारे में ज्यादा चिंता नहीं की और अधिकारियों ने तो उसके अस्तित्व पर ध्यान भी नहीं दिया। या कम से कम बारिश आने तक तो यही स्थिति थी!

दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ ही, तूफानी बादल ऊंचे पहाड़ों की ढलानों पर जमा होकर टूट पड़े और लगातार मूसलाधार बारिश के रूप में बरसने लगे। कड़ाके की ठंड पड़ गई और लगातार हल्की बूंदा-बांदी के साथ घने कोहरे ने ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों को घेर लिया। शोलागा लोग अपनी झोपड़ियों में ही रहे और अपने मवेशियों को अपने साथ ही रखा।

इन सब बातों के कारण खलनायक उदास और बेचैन हो गया, अंततः उसने अपना पुराना ठिकाना छोड़ने का फैसला कर लिया। उसे ठंड लग रही थी, वह भीगा हुआ था और उसे बहुत भूख भी लगी थी।

इसलिए वह पहाड़ों से नीचे एक पगडंडी के रास्ते आया जो उसे लोककनहल्ली और बैलूर नामक दो छोटे गांवों के बीच लगभग मध्य में स्थित मुख्य सड़क और इंडी घाटी के क्षेत्र में ले आई।

पश्चिम में स्थित पर्वत श्रृंखला की सुरक्षा के कारण, वहां मानसून का प्रकोप कम था; कोहरा और ठंड नहीं थी, और सबसे अच्छी बात यह थी कि स्थानीय लोग खुद को और अपने मवेशियों को घरों के अंदर बंद नहीं करते थे और उन्हें उस खतरे का अंदाजा नहीं था जो उन पर मंडरा रहा था।

खलनायक ने अपनी जानी-पहचानी छुपकर हत्याएं करना शुरू कर दिया। यहाँ पशुओं की संख्या पहाड़ों की चोटियों की तुलना में कहीं अधिक थी, इसलिए वह खूब मोटा-ताज़ा और संतुष्ट हो गया। बहुत जल्द ही वह अपना बचपन का घर भूल गया।

लेकिन जानवरों में भी, मनुष्यों की तरह, अत्यधिक भोग-विलास और मोटापा दुष्परिणाम लाता है। बाघ मवेशियों पर हमला करने में आलसी और अतिआत्मविश्वासी हो गया और अपने पहले के सतर्क स्वभाव से भटक गया। उसने सोचा, जब पेट भर खाना संभव नहीं है तो अच्छा भोजन क्यों बर्बाद करें? वह अगली रात लौटकर बचा हुआ भोजन खत्म कर देगा।

मैदानी इलाकों के शोलागा जनजाति के लोगों ने पहाड़ियों में रहने वाले अपने रिश्तेदारों से एक बेहद चालाक बाघ की गतिविधियों के बारे में सुना था। जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि अगर यह वही जानवर था, तो इसने अपनी आदतें पूरी तरह बदल ली थीं; या फिर यह कोई दूसरा ही जानवर था। खैर, बाघ लगातार और भी निडर होता जा रहा था।

शोलागा जनजाति में मारिकेन नाम का एक ग्रामीण था, जिसके पास अपनी खुद की एक बैरल वाली .12 कैलिबर की बंदूक थी। उसके कई पड़ोसियों के पास मुख से लोड होने वाली बंदूकें थीं, कुछ के पास लाइसेंस था और अधिकांश के पास नहीं, लेकिन मारिकेन की बंदूक ब्रीच-लोडर थी और पूरी तरह से लाइसेंसशुदा थी! इससे खेल जगत में उसका एक विशेष स्थान था, और इस प्रकार उस पर पशुपालकों को परेशान करने वाले इस खतरे को खत्म करने की जिम्मेदारी आ गई।

रात की हवा पूरे बल से बह रही थी और भारी बारिश के बादल आधी रात के आकाश में मंडरा रहे थे, तभी मारिकेन अपने एक दोस्त के साथ मचान पर दुबक कर बैठा था, जहाँ से वह एक सफेद और भूरे रंग के बैल के आधे खाए हुए शव को देख रहा था, जो लोककनहल्ली के पटेल या मुखिया के स्वामित्व वाले लगभग पचास जानवरों के झुंड का गौरव था।

लेकिन पटेल एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, इसलिए मारिकेन कभी भी खुद को ऐसी प्रतिकूल स्थिति में नहीं फँसने देता, क्योंकि वह केवल चिड़ियों और खरगोशों का शिकार करता था। उसने आज तक केवल एक ही बड़ा जानवर मारा था, वह थी एक हिरणी, जिसका दो साल पहले जंगली कुत्तों के झुंड ने पीछा किया था। अपने दुश्मनों से बचने के लिए हिरणी गाँव के बाहरी इलाके से कुछ दूर स्थित एक छोटी झील में कूद गई थी। लड़के दौड़ते हुए मारिकेन के पास आए और उसे सांभर की दुर्दशा के

बारे में बताया, और उसने तुरंत जाकर उस बेचारे जानवर को मार गिराया।

पटेल ने ज़िद की थी कि मारिकेन को अपने बैल का बदला लेना चाहिए। मारिकेन ने बदले में अस्वस्थता का बहाना बनाया - उसने कहा कि उसे पेट में तेज़ दर्द हो रहा है। लेकिन पटेल अपनी बात पर अड़ा रहा।

इस प्रकार वह बेहद खराब मौसम वाली रात में मचान पर आ गिरा था। वह किसी इच्छुक शिकारी को अपनी बंदूक देकर इस स्थिति से बच सकता था, लेकिन ऐसा करना संभव नहीं था। वह पटेल, बाघ, हवा और मौसम को कोस रहा था, और बाघ के आने और किसी भी क्षण होने वाली भारी बारिश का इंतजार कर रहा था।

वे एक साथ आए - बाघ और बारिश! बारिश की बूंदों की हल्की फुहार और रात की तेज़ हवा के बावजूद, जो पेड़ों की चोटियों को बेतहाशा हिला रही थी, मारिकेन नीचे विशाल बाघ को अपने शिकार की हड्डियाँ चबाते हुए सुन सकता था। रात घोर काली थी।

अगर मारिकेन ने अपनी इच्छा का पालन किया होता, जो कि बाघ को न देख पाने के कारण कुछ न करना था, तो यह बुद्धिमानी होती और संयोगवश कई लोगों की जान भी बच जाती। लेकिन उसका साथी उसे लगातार उकसाता रहा। मारिकेन जानता था कि अगर उसने कम से कम एक गोली भी नहीं चलाई, तो यह दुष्ट व्यक्ति अगले दिन पूरे गाँव को बता देगा। वे उसका मज़ाक उड़ाएँगे और कहेंगे कि वह गोली चलाने से इतना डर गया था! इसलिए उसने उस परिस्थिति में एकमात्र संभव काम किया। उसने अपनी बंदूक को अपने नीचे अंधेरे में, हड्डियों के टूटने की आवाज़ की दिशा में, निशाना साधा और गोली चला दी।

इसके बाद सुनाई देने वाली ज़ोरदार दहाड़ों और झाड़ियों को रौंदते हुए एक विशालकाय जानवर के छटपटाने की आवाज़ से पेड़ पर बैठे डरे हुए लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि कम से कम एक गोली बाघ को लग गई है और वह घायल हो गया है। शोर धीरे-धीरे शांत हो गया, लेकिन शिकारियों को कड़ाके की ठंड और मूसलाधार बारिश में सुबह होने तक इंतजार करना पड़ा। सुबह होते ही वे पेड़ से नीचे उतरे और जल्दी से लोककनहल्ली के लोगों को यह खबर देने पहुंचे कि बाघ का पता चल गया है।

शव की तलाश में एक बड़ा दल वापस घटनास्थल पर आया। मारिकेन ने उन्हें आश्वासन दिया कि शव कहीं आस-पास ही पड़ा होगा।

लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मिला, क्योंकि पिछली रात की लगातार बारिश ने खून के अधिकांश निशानों को मिटा दिया था, सिवाय पत्तों के नीचे कहीं-कहीं लगे धब्बों के।

इसके बाद पूरे छह सप्ताह तक कोई भी मवेशी नहीं मारा गया। इससे बैलूर और लोककनहल्ली के चरवाहे बेहद प्रसन्न हुए और एक आभारी पटेल ने मारिकेन को दस रुपये का अच्छा इनाम दिया।

फिर पहाड़ की चोटी पर रहने वाली एक शोलागा महिला, जो कॉफी बागानों के बाहर, ऊंचे इलाकों में बहुतायत से उगने वाली लंबी बाइसन घास का एक गट्ठा काटने गई थी, दोपहर के भोजन के लिए वापस नहीं लौटी। दोपहर में उसके रिश्तेदार उसे ढूंढने निकले। आखिरकार उन्हें वह घास मिल गई जो उसने काटी और इकट्ठा की थी, और पास ही उसकी दरांती भी मिली, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। लंबी घास के कारण किसी भी तरह के पैरों के निशान दिखाई नहीं दे रहे थे, और गहन खोजबीन में खून के धब्बे या अन्य कोई सबूत नहीं मिला।

इसके दो सप्ताह बाद, एक कॉफी बागान में काम से लौट रहे एक युवक के लापता होने की घटना सामने आई। अगले दिन उसकी तलाश करने पर पता चला कि एक घाटी पार करते समय बाघ ने उस पर घात लगाकर हमला किया था। बाघ किनारे से उस पर झपटा और उसे घाटी से घसीटते हुए एक घने जंगल में ले गया। खोजकर्ताओं को बाघ के पदचिह्नों का पीछा करने से डर लगा, जो पीड़ित के शरीर से गिरे सूखे खून की बूंदों से संकेतित थे। ये निशान ढलान वाली घाटी में फैले जंगल में जगह-जगह बिखरे हुए थे, जो लगभग पर्वत श्रृंखला की तलहटी तक जाते थे। इसलिए इस युवक का शव भी कभी नहीं मिला।

तीसरा संभावित शिकार ज़्यादा भाग्यशाली था और बच गया। वह एक पेड़ के सहारे पीठ टिकाकर बैठा था, उसके भैंसों का झुंड उसके आसपास चर रहा था, तभी एक बैल की चेतावनी भरी फुफकार ने उसका ध्यान खींचा। लड़के ने ऊपर देखा तो पाया कि भैंसें बेहद उत्तेजित थीं। वे झुंड में इकट्ठा होकर, उस झाड़ी की ओर देख रही थीं जो लगभग उस जगह तक फैली हुई थी जहाँ वह बैठा था।

शोलागा महिला के लापता होने और हाल ही में एक युवक की बाघ के हमले में मौत की खबर सुनकर चरवाहा घबरा गया। उसे अपने ऊपर खतरा महसूस हुआ और वह अपने पीछे के पेड़ पर चढ़ने लगा। वह अभी कुछ ही कदम चढ़ा था कि नीचे झाड़ियों से एक बाघ निकला और उसे नीचे खींचने लगा।

सौभाग्यवश, भैंसों का झुंड, जो अब तक पूरी तरह सतर्क हो चुका था, ने घुसपैठिए को देख लिया और जंगल में पली-बढ़ी भैंसों की तरह, एक साथ बाघ पर हमला कर दिया। अपने पीछे कई खुरों की धमक सुनकर, बाघ को अपनी विकट स्थिति का एहसास हुआ और वह झाड़ियों की ओट में कूदकर गायब हो गया।

इस तीसरी घटना के साथ ही शोलागाओं को यह अहसास हो गया कि भारतीय जंगलों का सबसे बड़ा अभिशाप अब उन पर आ पड़ा है। एक आदमखोर बाघ! वे जानते थे कि उनमें से कई लोग उसके विनाश को देखने के लिए जीवित नहीं रह पाएंगे, क्योंकि उससे पहले ही वे मारे जाएँगे। और पूर्वी सभ्यता के विशिष्ट भाग्यवाद के साथ उन्होंने अपनी नियति को स्वीकार कर लिया।

इसी बीच, पर्वत श्रृंखला की तलहटी में, बैलूर और लोककनहल्ली के गांवों और उनके आसपास के छोटे-छोटे गांवों तक, पर्वत की चोटी से हांफते हुए धावकों द्वारा ताजा घटनाओं की सूचना पहुंचाई जा रही थी। मैदानी इलाकों के लोग समझ गए थे कि शिकार किए गए जानवर देर-सवेर पर्वत श्रृंखला से नीचे उतरेंगे और उनकी बारी भी शिकार होकर खाए जाने की आएगी। विंडी वैली के छोटे मंदिरों की घंटियां बज उठीं क्योंकि आने वाले प्रकोप से मुक्ति के लिए पूजा-अर्चना की जा रही थी। पटेल और दुर्भाग्यशाली मारिकेन भी जानते थे कि अप्रत्यक्ष और अनजाने में ही वे उन दो मौतों के लिए जिम्मेदार थे जो पहले ही हो चुकी थीं और कई और मौतें निश्चित रूप से आगे भी होंगी।

कॉफी बागानों में काम करने वाले कुली सबसे पहले मुसीबत में फंसे। कॉफी तोड़ने और इकट्ठा करने का उनका काम उन्हें घनी झाड़ियों में ले जाता था, जहाँ आदमखोर उनका इंतजार कर रहा होता था। एक दिन बीतता गया, कभी कोई औरत तो कभी कोई मर्द गायब हो जाता था। जल्द ही कुलियों ने कॉफी तोड़ने का काम बंद कर दिया और काम ठप हो गया। वे अपनी झोपड़ियों में निष्क्रिय बैठे रहे और धमकी दी कि

अगर उनके जीवन में आए इस खतरे को तुरंत दूर नहीं किया गया तो वे सामूहिक रूप से बागान छोड़ देंगे। पहाड़ियों पर रहने वाले शोलागा लोगों ने खुद को और अपने मवेशियों को घरों में बंद कर लिया, और मवेशी जल्द ही भूख से मरने लगे।

इन एहतियाती उपायों ने आदमखोर के लिए शिकार करना मुश्किल बना दिया। जैसे-जैसे जागीरों में भोजन कम होता गया, वह मैदानों की ओर चला गया, यह भूलकर कि वहीं उसकी बाईं जांघ के ऊपरी हिस्से में वह घाव लगा था, जिसने उसके शिकार करने में बहुत बाधा उत्पन्न की थी। समय बीतने के साथ, वह खूंखार, जैसा कि अब उसे हर जगह जाना जाता था, विंडी वैली के पूरे क्षेत्र में अपनी गतिविधियाँ फैलाता गया, और हर हफ्ते उसके द्वारा मारे गए लोगों की संख्या बढ़ती गई।

हत्यारे की खबर दूर-दूर तक फैल गई, और आखिरकार मुझे भी अखबारों में इसकी खबर मिली, और संयोग से ठीक इसी समय मुझे उसे बेनकाब करने का एक मौका मिल गया। मुझे मलेरिया का गंभीर दौरा पड़ा था और डॉक्टर ने मुझे दस दिनों तक पूरी तरह आराम करने और काम से छुट्टी लेने का आदेश दिया था। डॉक्टरों की आदत के अनुसार, उन्होंने कपड़े बदलने की सलाह भी दी।

मैंने तुरंत फैसला ले लिया। जंगल में घूमने से बेहतर छुट्टी के और भी तरीके हो सकते थे। भले ही डॉक्टर के लिए आराम का मतलब कुछ और ही होता, लेकिन उन्हें यह बताने का कोई ठोस कारण नहीं था कि मैं कहाँ गया था। इसलिए मैंने उन्हें नहीं बताया।

जब मैं अपनी स्टुडेबेकर कार से लोककनहल्ली पहुँचा, तो गाँव वाले हर संभव जानकारी देने के लिए तैयार थे। लेकिन इससे कुछ खास फायदा नहीं हुआ। ज़ाहिर है, बाघ किसी तय रास्ते पर नहीं चलता था। वह जहाँ और जब भी शिकार मिलता, उसे झपट लेता था। लोककनहल्ली, बैलूर और पूर्व में हनूर और रामपुरम के आसपास की बस्तियों में रहने वाले शोलागा समुदाय के लोगों ने बाघों द्वारा शिकार किए जाने की सूचना दी थी। यहाँ तक कि पहाड़ियों की चोटियों पर भी, जहाँ कॉफी बागानों में काम करने वाले मजदूरों ने अपनी सतर्कता थोड़ी कम कर दी थी, वहाँ भी कभी-कभार कोई न कोई बाघ बाघों का शिकार कर जाता था।

मैंने पटेल और मारिकेन से, और बाद में कुछ स्थानीय शिकारियों से बातचीत की,

ताकि इस जानवर की आदतों के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी जुटा सकूँ। लेकिन सभी तरफ से एक ही जवाब मिला। बाघ बेहद चालाक जानवर लगता था, और एक ऐसा आवारा जो आदमखोरों की तरह नियमित रूप से किसी खास जगह पर जाने की आदत को अपनाए बिना, पूरे इलाके में बेधड़क घूमता रहता था।

उस रात मैंने लोककनहल्ली के ठीक दक्षिण में स्थित छोटे तालाब के किनारे डेरा डाला, जहाँ बहुत समय पहले मारिकेन ने उस सांभर का शिकार किया था जो जंगली कुत्तों से बचने के लिए पानी में शरण लिए हुए था। रात दस बजे जब हवा चलने लगी तो मैंने विंडी वैली की ठंडी हवा का भरपूर आनंद लिया। इसने मुझे सुहावनी और ठंडी नींद में सुला दिया, और मैं सुबह 3 बजे अचानक जाग गया। चारों ओर एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। सुबह का समय होने के बावजूद, मुझे अपेक्षाकृत गर्मी महसूस हो रही थी। हवा रुक चुकी थी। क्या यही मेरी नींद का कारण था?

लेकिन कुछ ही क्षणों में मुझे असली जवाब पता चल गया। गाँव के पश्चिम से, जहाँ पर्वत श्रृंखला की तलहटी, दो मील से भी कम दूरी पर, भूभाग को कई खाइयों और घने जंगलों वाली घाटियों में विभाजित करती थी, शिकार की तलाश में निकले एक बाघ की कराहती हुई आवाज सुनाई दी: 'ऊ-ऊन-घ! आ-ऊन-घ! औंग-हा! उघ! उघ!'

उसके बाद मुझे नींद नहीं आई। क्योंकि मैंने वह चुनौती स्वीकार कर ली थी और मेरा दिमाग उस मायावी बाघ से मिलने के संभावित तरीकों के बारे में सोचने में व्यस्त था।

मैं उस इलाके की प्रकृति से परिचित था जहाँ अभी भी जानवर शिकार की पुकार कर रहे थे, क्योंकि मैंने अपने युवावस्था के उन दिनों में, जब मैं कहीं अधिक खून-खराबे का शौकीन था, इस क्षेत्र में सुस्त भालुओं का शिकार किया था। मानसून के बाद ऊँची ढलानों से बहता हुआ बारिश का पानी धरती में कई जलधाराएँ बना चुका था, जो घनी झाड़ियों से भरी हुई थीं। यह भालुओं के शिकार के लिए आदर्श जगह थी, लेकिन बाघ के लिए यह एक बेहद मुश्किल चुनौती थी।

अगली सुबह मैंने पटेल को बताया कि मैंने बाघ की आवाज़ सुनी है और उनसे इलाके में बांधने के लिए तीन जीवित बाघ खरीदने में मदद मांगी। वे इस प्रस्ताव को लेकर बहुत आश्वस्त नहीं थे और उन्होंने कहा कि यह सरासर पैसे की बर्बादी है, क्योंकि आदमखोर बाघ केवल इंसानों का शिकार करता है और किसी युवा बैल या भैंस की

बछिया की ओर देखता भी नहीं है।

लेकिन मेरी सोच अलग थी। हालाँकि उसने कई लोगों को मार डाला था, बाघ को अन्य भोजन पर भी निर्भर रहना पड़ता था। यही वह कारण था जिसने उसे आदमखोरों की सामान्य आदत अपनाने से रोक रखा था: यानी एक निश्चित मार्ग का अनुसरण करना जो सौ मील तक फैला हो सकता है, लेकिन हमेशा एक ही पैटर्न का पालन करता है, हर बार उसी स्थान पर और उसी दिशा से लौटता है।

पटेल के प्रभाव के बावजूद, मुझे ये जानवर - सभी युवा भैंसें - प्राप्त करने में सुबह के 9 बज गए और मैं अपने साथ चारा लेकर उन पहाड़ियों की तलहटी की ओर पुरुषों के एक दल के साथ निकल पड़ा, जहाँ बाघ बुला रहा था।

अंततः हमें पदचिह्न मिल ही गए - एक जवान नर बाघ के स्पष्ट पदचिह्न - और काँटों और झाड़ियों में भटकते और रेंगते हुए, हमने अंततः प्रत्येक बछिया को बाँधने के लिए तीन उपयुक्त स्थान चुने। ये तीनों स्थान ऐसे थे जहाँ दो या दो से अधिक खाइयाँ मिलती थीं, ताकि बाघ जब किसी भी खाई के किनारे भटकता, तो उसे भैंस को देखने का बेहतर मौका मिलता। उस क्षेत्र में बड़े पेड़ कम थे और संयोग से, जिन स्थानों को मैंने बाँधने के लिए चुना था, वहाँ कोई पेड़ नहीं था; इसलिए मैंने मचान या छिपने की जगह बनाने का निर्णय बाघ के शिकार करने के बाद के लिए छोड़ दिया। यह एक बड़ी गलती थी और अपने अनुभव के आधार पर मैं इसे टाल सकता था।

चारा बांधते समय मचानों (या कम से कम उनके लिए उपयुक्त स्थानों) के बारे में अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिए। लेकिन बड़े पेड़ों की अनुपस्थिति, और शायद थोड़ी लापरवाही और अति आत्मविश्वास के कारण, मैंने इस बार एक ऐसी बुनियादी गलती कर दी जो एक नौसिखिए से भी शायद ही होती, और जिसके लिए कोई वास्तविक बहाना भी नहीं था।

उस रात कुछ नहीं हुआ और अगली सुबह सारे चारे ज़िंदा थे। संयोगवश, इस आराम ने मुझे बेहतर जगहें चुनने का भरपूर समय दिया जहाँ पहले से ही मचान या किसी तरह के छिपने के ठिकाने बनाए जा सकते थे, लेकिन शायद मैं आलस के कारण इसका फायदा नहीं उठा पाया।

दूसरी सुबह हमने देखा कि एक भैंस को मार कर खा लिया गया था। नाले की तलहटी

पर मिले पदचिह्नों से पता चला कि हत्यारा वही बाघ था जो दो दिन पहले आवाज लगा रहा था। इन पदचिह्नों से यह भी संकेत मिला कि जानवर ने अपने शिकार को उस जगह से घसीटकर ले जाने की कोशिश की थी, लेकिन जिस रस्सी से हमने भैंस को बांध रखा था, वह मजबूती से बंधी रही, और सौभाग्य से बाघ ने उसे काटकर तोड़ने की कोशिश नहीं की।

लेकिन अगली रात मैं हत्यारे के लौटने का इंतज़ार करने के लिए कहाँ बैठता? कोई पेड़, छोटा या बड़ा - यहाँ तक कि एक छोटी झाड़ी भी - उपलब्ध नहीं थी!

मेरी दयनीय स्थिति देखकर, हमारे साथ आए पटेल को एक शानदार विचार आया। बम बनाने वालों की मदद क्यों न ली जाए? अगर एक मरी हुई गाय के थन में बम छिपाया जा सकता है, तो निश्चित रूप से किसी मरी हुई भैंस की आंतों में भी दूसरा बम छिपाया जा सकता है?

मैंने उसे घूरकर जो जवाब दिया, उससे उसका सवाल उसके होठों पर ही रुक गया; लेकिन उसने मुझे जिस खुले तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, उससे मैं उसके विचार स्पष्ट रूप से समझ गया। अगर वह इतना बड़ा मूर्ख था कि उसने उस परिस्थिति में उपलब्ध सबसे आसान और सबसे अच्छे समाधान को ठुकरा दिया, तो वह सचमुच एक बड़ा मूर्ख था!

मैंने आपको बताया था कि हमने तीनों बछियों को उन जगहों पर बांधा था जहाँ दो या दो से अधिक खाइयाँ मिलती थीं। इस विशेष बछिया को एक ऐसी जगह पर बांधा गया था जहाँ तीन नालियाँ मिलती थीं। इनमें से दो काफी बड़ी नालियाँ थीं जो सीधे पश्चिम की पहाड़ियों से आती थीं। लगभग, संगम बिंदु पर वे एक दूसरे के साथ लगभग तीस डिग्री का कोण बनाती थीं। तीसरी नाली काफी छोटी थी, एक खाई जैसी, और लगभग चार फीट गहरी थी। यदि आप अन्य दो नालियों की ओर मुंह करके खड़े होते, तो यह उथली नाली दाईं ओर, या उत्तरी दिशा से आती हुई दिखाई देती। इसके बनने का कारण उस दिशा में कुछ दूरी तक जमीन का ऊपर उठना था। इस ढलान से बहते हुए बारिश के पानी ने वर्षों से मिट्टी को काट-छाँट कर एक नाली का निर्माण कर दिया था।

नरम मिट्टी में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हत्यारे के पदचिह्नों से पता चलता है कि वह पश्चिम से आने वाले दो गहरे नालों में से एक के तल पर चला था, उसने बछिया को देखा और उसे मार डाला, फिर उसे घसीटकर ले जाने की कोशिश की। अपने उद्देश्य में सफल न होने पर, वह वहीं बैठ गया और अपने शिकार का एक बड़ा हिस्सा खा गया और फिर उसी नाले से वापस चला गया।

इसलिए संभावना यही थी कि जब वह अगले भोजन के लिए लौटेगा, तो उसी नाले से होकर आएगा। एक बात निश्चित थी। पेड़ न होने के कारण, मुझे हत्यारे के लौटने का इंतज़ार ज़मीन पर बैठकर करना पड़ेगा, जिसके लिए हमें एक तरह का आश्रय बनाना होगा। अब तय करना था कि कहाँ बैठें?

मुझे पता था कि अगर हम बाघ के लौटने के रास्ते में ही कोई भी छिपने की जगह बनाते, तो संभावना यही थी कि वह मुझे उसके पास आने का पता चलने से बहुत पहले ही उसे देख लेता। अपने शिकार के पास लौटते समय बाघ अंधाधुंध नहीं भटकते, बल्कि बहुत सावधानी से आगे बढ़ते हैं। यह आदत निस्संदेह आत्मरक्षा की प्रवृत्ति के कारण होती है, और कुछ हद तक पानी के स्रोतों और शिकार के रास्तों पर घात लगाकर शिकार करने की उनकी आदत से प्रेरित होती है। इसलिए नाले पर कहीं भी छिपने की जगह बनाना उचित नहीं था। इससे तीन विकल्प बचते थे। पहला, तीस डिग्री के कोण पर मुड़ने वाले नाले के दूसरे किनारे पर, जहाँ नाले मिलते हैं, वहाँ छिपना। दूसरा, नीची खाई के संगम पर छिपना। तीसरा, ज़मीन पर, तीनों नालों के ऊपर और उन पर नज़र रखने वाली जगह।

तीसरे प्रस्ताव में ऊँचाई का लाभ था, जिससे मैं खाई के तल पर पड़ी बछिया के अवशेषों और उस तक पहुँचने वाले सभी रास्तों पर नज़र रख सकता था। लेकिन ज़मीन पर बैठने से मैं आसानी से दिख जाता, अगर बाघ किसी खाई के तल पर चलते हुए ऊपर देखता। मैं क्षितिज के सामने एक परछाई की तरह दिखाई देता। इसलिए मुझे पूरी रात शिकार की ओर मुँह करके, पहाड़ियों की ओर पीठ करके लेटना पड़ता, जहाँ से बाघ निश्चित रूप से आएगा। मुझे यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था।

इसलिए चुनाव पहले दो विकल्पों में से एक को चुनने के बीच था, और मैंने अंत में दूसरा विकल्प चुना। मैं नीची खाई के मुहाने पर बैठूंगा। मुझे अब याद आया कि मैंने

दूसरा विकल्प इसलिए नहीं चुना था क्योंकि मुझे लगा था कि बाघ शायद दूसरी बड़ी नाली से नीचे आ सकता है, जिसके बारे में मैंने बताया है कि वह तीस डिग्री के कोण पर मुड़ती है, ठीक उसी रास्ते से जिससे वह पिछली रात पीछे हटते समय आया था, और ऐसे में वह मेरी उपस्थिति का पता लगा सकता है।

अब बारी थी एक ऐसी चालाकी भरी छिपने की जगह बनाने की, जिससे बाघ को तब धोखा दिया जा सके जब वह मृत भैंस के अवशेषों वाले स्थान पर पहुंचे। यह बहुत ही चतुराई भरा काम होना था, क्योंकि मैं जानता था कि बाघ अपना भोजन करने से पहले आसपास के क्षेत्र का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करेगा।

किसी भी प्रकार का मचान या छिपने की जगह बनाते समय एक महत्वपूर्ण नियम का ध्यान रखना चाहिए। यह आसपास के वातावरण की भौगोलिक स्थिति से यथासंभव मेल खाना चाहिए। उदाहरण के लिए, झाड़ी के रूप में छिपने की जगह ऐसी जगह पर मूर्खतापूर्ण होगी जहाँ झाड़ियाँ कम हों। मचान या छिपने की जगह को ढकने वाले पत्ते आसपास के पेड़ों या पौधों के ही होने चाहिए, और उन्हें उल्टा नहीं लगाना चाहिए, जिससे उनका निचला हिस्सा दिखाई दे। मचान, चाहे कितना भी छिपा हुआ हो, अगर कम पत्तों वाले पेड़ पर बनाया जाए तो भद्दा लगेगा। इसके विपरीत, पत्तों वाले पेड़ पर खुला और बिना ढका मचान अपनी मौजूदगी का स्पष्ट संकेत देगा।

जैसा कि मैंने बताया है, मैंने जिस नाले का चयन किया था, वह उत्तर की ओर ऊँची ज़मीन से बहते बारिश के पानी से खोखला हो गया था। इसके मार्ग में जगह-जगह चट्टानें अलग-थलग पड़ी थीं और इसके दोनों किनारों पर मेहंदी और वलारी की झाड़ियाँ फैली हुई थीं।

हम इस नाले के किनारे-किनारे लगभग 200 गज तक चले, जहाँ मैंने पाँच बड़े आकार के पत्थर और कुछ मेहंदी और वलारी की झाड़ियाँ चुनीं। फिर हम इन पत्थरों को दो नालों के संगम स्थल तक ले गए, इसके लिए हमें तीन चक्कर लगाने पड़े, और चौथी बार वापस आकर मैंने चुनी हुई झाड़ियों को उनके किनारों से काट लिया।

मैंने पाँचों पत्थरों को यथासंभव प्राकृतिक ढंग से व्यवस्थित किया, उनके बीच झाड़ियों को रखते हुए, ताकि दस गज से भी कम दूरी पर पड़े बछिया के अवशेषों के सामने एक अस्थायी आवरण बन सके। इस व्यवस्था को सावधानीपूर्वक और कलात्मक रूप

से करना पड़ा ताकि एक स्पष्ट दीवार जैसा न लगे, और साथ ही पर्याप्त गोपनीयता भी बनी रहे।

इस सब में काफी समय लग गया, इसलिए जब तक हमने काम खत्म किया तब तक दोपहर के लगभग एक बज चुके थे। गिद्धों से बछिया के अवशेषों को छिपाने के लिए कुछ और झाड़ियाँ काटकर, मैं दोपहर के भोजन के लिए लोककनहल्ली लौट आया, और फिर हम जल्दी से गाँव वापस आ गए।

मेरा मानना है कि शिकार के समय जितना जल्दी हो सके उठकर बैठ जाना चाहिए, न कि आखिरी क्षण में पहुंचना चाहिए। बेशक इससे नीरसता बढ़ जाती है, लेकिन मुझे जंगल में चुपचाप बैठना कभी उबाऊ नहीं लगता। देखने को इतना कुछ है, सुनने को इतना कुछ है, सीखने को इतना कुछ है कि घंटे मेरी इच्छा से भी तेज़ी से बीत जाते हैं।

जो शोलागा लोग सुबह मेरे साथ आए थे, उन्होंने दोबारा मेरे साथ जाने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि मुझे छिपने की जगह पर छोड़ने के बाद उन्हें अकेले लौटना पड़ेगा, और यह खतरनाक होगा। मान लीजिए कि आदमखोर सांप हमारी गतिविधियों पर नज़र रख रहा था और निहत्थे लौटते समय उन पर हमला कर दिया?

मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता था, इसलिए मैं अकेला ही लौट आया और दोपहर 3:30 बजे तक शिकार स्थल पर पहुँच गया। वहाँ मैंने सबसे पहले उन झाड़ियों को हटाया जिनसे हमने भैंस के शव को छिपाया था, और उन्हें वापस उसी जगह से दो सौ गज दूर पानी के किनारे ले गया जहाँ से हमने उन्हें पहले काटा था। कटी हुई शाखाएँ या झाड़ियाँ कभी भी शिकार के आसपास नहीं छोड़नी चाहिए। बाघ छोटी से छोटी चीज़ पर भी शक करते हैं, और ऐसी वस्तुएँ उन्हें मनुष्यों की उपस्थिति का आगाह कर देती हैं, और वे उस जगह पर वापस नहीं आते जहाँ उन्हें घात लगने का संदेह होता है। यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी, हालाँकि वे मनुष्यों को खाते हैं, स्वभाव से ही मानव जाति से भयभीत होते हैं और उस स्थान पर आने से हिचकिचाते हैं जहाँ उन्हें लगता है कि मनुष्य छिपे हो सकते हैं। यदि उसे लगता है कि उसका शिकार किया जा रहा है, तो एक सामान्य आदमखोर बाघ भी डरपोक बन जाता है और भागने की पूरी कोशिश करता है।

हुआ यूं कि इस बार सुबह जल्दी उठकर अभ्यास करने का मुझे एक अप्रत्याशित घटना से पुरस्कृत किया गया। अभी एक घंटा भी नहीं बीता था कि मेरे सामने वाले दूसरे नाले के किनारे उग रही घास में हलचल मेरी नज़र में आई - वही नाला जिसका इस्तेमाल बाघ ने नहीं किया था। ध्यान से देखने पर मुझे घास के गुच्छे के पीछे दो छोटी, सीधी आकृतियाँ उभरी हुई दिखाई दीं। एक बात जो मुझे विचित्र लगी, वह यह थी कि वे हमेशा एक-दूसरे से बराबर दूरी पर थीं। जब एक हिलती, तो दूसरी भी हिलती, हमेशा एक ही तरह से, हमेशा एक ही दिशा में। कभी वे थोड़ी ऊपर उठतीं, और कभी घास के पीछे छिप जातीं, फिर अचानक ऊपर उठतीं। ऐसा लग रहा था मानो वे मुझे उतनी ही ध्यान से देख रही हों जितना मैं उन्हें देख रहा था।

ये दो विचित्र प्राणी आखिर क्या हो सकते हैं?

मैंने पूरे आधे घंटे तक उन दो वस्तुओं को देखा। पहले तो मुझे लगा कि वे दो छोटे पक्षी हैं। वाकई अजीब पक्षी हैं, जो हमेशा एक साथ चलते हैं, हमेशा एक ही दूरी पर रहते हैं!

तभी मेरे दिमाग में समाधान कौंध गया। कोई जानवर मुझे देख रहा था, और मैं उसकी कानों की नोकों को देख रहा था।

क्या यह आदमखोर हो सकता है? ज़रूर होगा! मैं बढ़ती उत्तेजना के साथ अपनी भरी हुई राइफल को कसकर पकड़ लिया, जासूसी के इस अजीब खेल में अगली चाल का इंतजार कर रहा था।

अगले दस मिनट तक कुछ नहीं हुआ। मैं बिलकुल स्थिर रहा, साँस लेने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी। आखिरकार, घास के ऊपर वे दो बिंदु उभरने लगे। मैंने सिर का वह हिस्सा देखा जहाँ दोनों कान जुड़े हुए थे। फिर दो भयानक आँखें मुझे घूरने लगीं।

लेकिन देखने वाला कोई बाघ नहीं था। वह तो एक पैंथर था!

मैंने सोचा, ये कैसे हो सकता है? क्या शोलागा लोग पूरी तरह गलत थे? शायद आदमखोर बाघ नहीं, बल्कि एक पैंथर ही था! लेकिन बछिया को तो साफ तौर पर बाघ ने ही मारा था। उसके पैरों के निशान और उसे खाने का तरीका दोनों ही इसकी पुष्टि करते थे।

अंततः पैंथर सीधा खड़ा हो गया, और अब भी मेरी ओर घूर रहा था। फिर वह घास से होते हुए किनारे से नीचे उतरकर दूसरे नाले के तल पर चला गया। वह अब भी मेरी छुपकर देख रहा था। मैं चुपचाप बैठा रहा।

पैंथर अब बछिया के अवशेषों के ठीक बगल में था। वह कुछ देर रुका, अपना सिर शव की ओर घुमाया। फिर वह उसके पास चला गया।

लेकिन उसने कुछ नहीं खाया। वह घबराया हुआ बार-बार मेरी तरफ और फिर अपने चारों ओर देख रहा था। यहाँ तक कि उसने पीछे मुड़कर भी उस रास्ते को ध्यान से देखा जिससे वह आया था। उसकी घबराहट भरी हरकतों से मैं उसके मन के विचार समझ गया।

मेरी छुपने की जगह को लेकर उसे कुछ चिंता सता रही थी। या तो वह मुझे देख सकता था या उसे पत्थरों और झाड़ियों के पीछे मेरी मौजूदगी का शक था। शायद उसने ध्यान दिया होगा कि पिछली बार जब वह इस रास्ते से गुजरा था तब ये चीजें यहाँ नहीं थीं। इसके अलावा, उसकी इधर-उधर और पीछे की ओर चोरी-छिपे नज़रें साफ दिखा रही थीं कि वह जानता था कि वह अपने मालिक - एक बाघ - के शिकार को चुराने वाला है! वह यह भी जानता था कि अगर वह रंगे हाथों पकड़ा गया तो उसकी जान चली जाएगी!

चारों ओर एक और नजर डालने के बाद, पैंथर ने आखिरकार खाने के लिए अपना सिर झुकाया। लेकिन आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। उसने धीमी सी गुर्राहट निकाली और पीछे हट गया।

जानवर आधा मुड़ा, शायद जाने के इरादे से, तभी उसे मेरी खाल फिर से दिखाई दी। उसने मेरी ओर पहले से कहीं अधिक ध्यान से देखा। बदले में, मैं भी बिना हिले-डुले बैठा रहा, यहाँ तक कि अपनी साँस भी रोक ली।

इस समय पैंथर की जिज्ञासा उस पर हावी हो गई। वह जाँच-पड़ताल करने के लिए मेरे पास आया। मैंने कुछ नहीं किया, बस अपनी राइफल को और कसकर पकड़ लिया। वह मेरे बेहद करीब, लगभग दो गज की दूरी तक आया, और अंत में उसने मुझे देख लिया।

उसकी प्रतिक्रियाएँ मज़ेदार और डरावनी दोनों थीं! उसकी आँखों में हैरानी, गुस्सा, डर और फिर दहशत साफ़ झलक रही थी। वह गुर्राया। वह ज़मीन पर बैठ गया, सिर अपने पंजों के बीच दबाए, पिछला हिस्सा अजीब तरह से ऊपर उठा हुआ था, और उसकी पूंछ उससे भी ऊपर उठी हुई थी।

मुझे लगा कि वह हमला करने वाला है, इसलिए मैंने राइफल को कंधे पर टिकाकर उसकी आँखों के बीच निशाना साधा। मेरी उंगली ट्रिगर दबाने ही वाली थी। ठीक उसी क्षण पैंथर का साहस दूसरी बार बुरी तरह टूट गया। वह पीछे की ओर पलटी, संभला और भाग गया। दो ही छलांग में वह गायब हो गया! सच में, मुझे खुशी थी कि मैं उस दोपहर जल्दी आ गया था, क्योंकि यह एक अनोखा अनुभव था और मैंने इससे बहुत कुछ सीखा।

पहली बात तो यह कि जिस छुपने की जगह पर मैं बैठा था, वह साफ़ तौर पर नाकाम थी। पैंथर ने इसे शुरू से ही देख लिया था। दूसरी बात, मुझे बिल्कुल स्थिर बैठने का महत्व एक बार फिर समझ में आ गया था। पैंथर मेरे छह फीट के करीब आ चुका था, लेकिन उसकी पैनी नज़रें मुझे देख नहीं पाईं। तीसरी बात, मैंने एक दिलचस्प नज़ारा देखा जिसमें एक पैंथर अपने बड़े चचेरे भाई, बाघ से साफ़ तौर पर डर रहा था। उसकी डरी हुई निगाहें जो उसने इधर-उधर और पीछे डाली थीं, उससे यह बात साफ़ ज़ाहिर हो रही थी। चौथी बात, मुझे इस बात का स्पष्ट प्रमाण मिल गया था कि एक आम पैंथर भी इंसान से डरता है, यहाँ तक कि नज़दीक से भी।

पांचवीं बात, मैंने खुद को कोसते हुए कहा कि मैं कितना मूर्ख था कि मैंने अपने चारे ऐसी जगहों पर नहीं बांधे जहाँ शिकार होने पर मचान लगाने के लिए सुविधाजनक पेड़ मौजूद हों। अब मुझे पूरी रात ज़मीन पर बैठकर एक आदमखोर बाघ के लौटने का इंतज़ार करना था, एक ऐसी जगह पर जो इतनी आसानी से पहचानी जा सकती थी कि एक निर्दोष तेंदुए ने उसे शुरू से ही देख लिया था और उस पर शक किया था। लेकिन वह आदमखोर बाघ कैसी प्रतिक्रिया देगा?

मुझे खुशी भी हुई और घृणा भी!

शाम धीरे-धीरे ढलती चली गई। चारों ओर झाड़ियों वाला जंगल जंगली पक्षियों की चहचहाहट से जीवंत प्रतीत हो रहा था। तीतर चारों दिशाओं में चहचहा रहे थे, और

बटेरों के झुंड नालों में इधर-उधर भागते हुए नरम, गर्म रेत में कीड़े-मकोड़े खोद रहे थे। एक घबराया हुआ खरगोश खाई के किनारे तक दौड़ा, नीचे बिखरे हुए बछिया के अवशेषों को देखा, मुड़ा और तैरता हुआ चला गया। असली जंगल पहाड़ियों की तलहटी से शुरू होता था, जो आधा मील दूर थी, और ऊपर की ऊंचाइयों से बहने वाली ठंडी हवाएं अपने साथ बसेरा करते मोरों की आवाजें और दूर-दूर तक फैले जंगली फूलों की सुगंध लेकर आ रही थीं।

पश्चिम की विशाल पर्वत श्रृंखला के पीछे सूरज बहुत पहले ही छिप चुका था और शाम छह बजे तक अंधेरा छा गया। आधे घंटे में रात हो गई। बदकिस्मती से चाँद नहीं निकला, हालाँकि तारे एक-एक करके निकले और जल्द ही नीले-काले आकाश को अनगिनत टिमटिमाते प्रकाश बिंदुओं से भर दिया।

एक सहज प्रवृत्ति, एक खामोश आवाज, मुझे तुरंत चेतावनी देने लगी। मैं खतरे को गहराई से और गंभीरता से महसूस कर सकता था, हालांकि जाहिर तौर पर ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा था जिससे मुझे घबराने की जरूरत हो। सब कुछ कब्र की तरह शांत था।

और फिर अचानक मुझे समझ आया: मेरी आशंका का कारण। चारों ओर अचानक छाई खामोशी अस्वाभाविक थी। यहाँ तक कि एक झिंगुर भी नहीं चहचहा रहा था।

इसका केवल एक ही कारण हो सकता था। कोई चीज़ वहाँ से गुज़र रही थी। कोई ऐसी चीज़ जिसने दुनिया के सभी छोटे जीवों को भयभीत कर दिया और वे सन्नाटे में आ गए।

वह चीज तो बाघ ही हो सकती है!

मैंने कान लगाकर हल्की सी भी आवाज़ सुनने की कोशिश की और आँखों से अपने सामने नाले के किनारे पर मंद रोशनी को टटोला। न कोई आवाज़ सुनाई दी, न कोई वस्तु हिली-डुली।

घाटी की हल्की रेतीली पृष्ठभूमि पर बछिया का शव एक धुंधले काले धब्बे के रूप में दिखाई दे रहा था; उससे भयानक बदबू आने लगी थी। मैंने उसे ध्यान से देखा।

मिनट बीतते गए। ऐसा लगा जैसे घंटे बीत रहे हों। आसन्न खतरे का एहसास बढ़ता

जा रहा था, जो मुझे चीख-चीखकर चेतावनी दे रहा था। मेरे अंदर एक तीव्र इच्छा जागृत हुई कि मैं अपने छिपने की जगह से निकलकर इस भयानक और खतरनाक स्थान से जितनी जल्दी हो सके उतनी दूर भाग जाऊं।

बड़ी मुश्किल से मैंने अपने आप को काबू में किया। मुझ पर छाए इस अजीब डर का कोई कारण नज़र नहीं आ रहा था। सब कुछ शांत और सुकून भरा था। सुबह का समय भी था; मेरी घड़ी में केवल शाम के 7:50 बज रहे थे।

मैंने पैंथर के व्यवहार के बारे में सोचा और यह भी कि उसने मेरी छुपने की जगह का पता कैसे लगाया या किसी तरह उसे इसका एहसास कैसे हुआ। इस विचार ने मुझे और भी डरा दिया। क्या बाघ ने भी मुझे उसी तरह खोज निकाला था? क्या वह अब भी आखिरी छलांग लगाने के लिए आगे बढ़ रहा था?

कुछ ही गज पीछे से एक भयानक दहाड़ सुनाई दी, जिसके बाद एक तीखी चीख और झाड़ियों में भारी शरीरों के छटपटाने और हाथापाई करने की आवाज़ आई। चीख फिर से गूंजी, साथ ही बाघ की भयानक गुर्राहट और दहाड़ें भी सुनाई दीं, क्योंकि उसने अपना निर्दयी हमला जारी रखा।

पलक झपकते ही मुझे समझ आ गया कि क्या हो रहा है। आदमखोर सांप सचमुच अपने शिकार की ओर बढ़ रहा था, लेकिन एक बिल्कुल अप्रत्याशित रास्ते से! वह उसी खाई के किनारे से आ रहा था जिसमें मैं छिपा हुआ था और कुछ ही सेकंड में मेरे पीछे पहुँच जाता। मेरी छठी इंद्री, जिसने मुझे अक्सर गंभीर खतरे से आगाह किया था, एक बार फिर अपना संदेश देने की कोशिश कर रही थी। लेकिन मेरी भौतिक इंद्रियाँ उस चेतावनी को सही ढंग से समझने में बहुत कमजोर थीं - कम से कम, जहाँ तक आने वाले खतरे की स्थिति का सवाल था।

रास्ते में जिस जानवर से मेरा सामना हुआ था - और जिसकी मौजूदगी ने निस्संदेह मेरी जान बचाई थी - उसकी मरणासन्न चीखें अब भी सुनाई दे रही थीं, लेकिन बहुत धीमी, क्योंकि वह बाघ के जबड़ों के बीच अपनी जान गंवा रहा था! एक जंगली सुअर, शायद मादा सुअर। निस्संदेह, वह पहाड़ियों से सड़क के किनारे खेती की ज़मीन की ओर आ रही थी, जब दुर्भाग्य से, लेकिन मेरे लिए सौभाग्य से, उसका सामना बाघ से हो गया!

सन्नाटा छा गया, फिर थोड़ी देर बाद हड्डियों के चटकने की आवाज़ आई और बाघ की संतुष्टि भरी गुर्राहट सुनाई दी, जैसे वह अपना भोजन कर रहा हो। जाहिर तौर पर दावत मेरे बैठने की जगह से पचास गज की दूरी पर चल रही थी, फिर भी मैं कुछ कर नहीं पा रहा था और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

हिलने-डुलने की कोशिश करना, कातिल को मेरी मौजूदगी का तुरंत पता चलने जैसा होता। चाहे मैं कितनी भी सावधानी बरतूँ, किसी न किसी तरह की आवाज़ तो ज़रूर होती। अगर चाँदनी होती, तो शायद पंजों के बल खड़े होकर गर्दन उठाकर बीच की झाड़ियों के ऊपर से बाघ को देखने का कुछ मौका होता, लेकिन मौजूदा हालात में ऐसा मुमकिन नहीं था। मैं बस इतना ही कर सकता था कि चुपके से, धीरे-धीरे, पूरी सावधानी से, उस दिशा की ओर मुड़ जाऊँ जहाँ से आवाज़ें आ रही थीं। जब तक वो आवाज़ें आती रहीं, मैं सुरक्षित था। आवाज़ें बंद होते ही मुझे सावधान होना पड़ता। क्योंकि तब बाघ उथले पानी के रास्ते पर आगे बढ़ने का फैसला कर सकता था, ताकि अपने पहले शिकार - मरी हुई बछिया - की जाँच कर सके और शायद सूअर के मांस की दावत के बाद मिठाई के तौर पर एक-दो कौर चख सके।

मुझे पता था कि अगर बाघ ने इस रास्ते पर चलने का फैसला किया तो वह मरे हुए भैंस तक पहुँचने से पहले ही मुझे ढूंढ लेगा। तब पूरी संभावना थी कि मैं ही रेगिस्तान बन जाऊँगा!

दावत दो घंटे तक चली, और जब अचानक सारी आवाज़ें बंद हो गईं, तब भी वह चल ही रही थी। ठीक दस बज रहे थे और विंडी वैली की हवाएँ चलने लगी थीं। ठीक समय पर, वह अजीब और मेरे लिए समझ से परे घटना, जिसका मैंने अक्सर स्वागत किया था और आनंद लिया था, फिर से शुरू हो गई। लेकिन उस समय मैं उसका आनंद नहीं ले पा रहा था और न ही ले सकता था!

पहाड़ियों से नीचे आते हुए, दूर से आती हुई उस भयानक आवाज़ को मैंने सुना, जो पेड़ों की चोटियों से होते हुए तेज़ होती जा रही थी। वह और करीब आती गई और पल भर में मेरे ऊपर आ गिरी, चीखती-चिल्लाती, दौड़ती-भागती, दहाड़ती हुई हिंसा। विंडी वैली अपने नाम को सार्थक कर रही थी, और इसी वजह से मैं अब बाघ की आवाज़ नहीं सुन पा रहा था, और अगले पाँच घंटों तक - सुबह तीन बजे तक - भी नहीं सुन

पाऊँगा! वह मीलों दूर हो या कुछ ही गज की दूरी पर; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मैं उसे या किसी और की आवाज़ को लंबे समय तक नहीं सुन पाऊँगा।

इससे भी कहीं बुरी बात यह थी कि मैं बाघ और हवा की दिशा के बीच में बैठा था, इसलिए भले ही वह मुझे सूंघ न सके, उसकी सुनने की तीव्र क्षमता मेरे द्वारा की गई किसी भी आवाज़ को अवश्य सुन लेगी। कुल मिलाकर, मैं एक बेहद मुश्किल स्थिति में था।

वह हवा लगातार चलती रही। मुझे बस उसकी निरंतर, सम्मोहक ध्वनि सुनाई दे रही थी, जो उस टूटी-फूटी घाटी को ढके हुए घनी झाड़ियों में गूंज रही थी जहाँ मैंने अपना ठिकाना बनाया था। मिनट धीरे-धीरे बीत रहे थे, और हर पल मुझे डर सता रहा था कि कहीं आदमखोर सांप मेरी मौजूदगी का पता न लगा ले और मुझे मार न डाले। ठंड बढ़ती जा रही थी। मेरे दांत बजने लगे और मैं जानता था कि यह एक और संकेत है जो मेरी पोल खोल सकता है। मानसिक पीड़ा और भय के वे घंटे बीतते जा रहे थे, और मैं बार-बार अपनी घड़ी देख रहा था।

अंततः ग्यारह बज गए और मानो एक अनंत काल के बाद आधी रात हो गई। मैं पहले से कहीं अधिक सतर्क हो गया।

कुछ देर बाद, आसपास की घास में हवा की सरसराहट और शोर के बीच, मुझे झाड़ियों के सरसराने की आवाज़ थोड़ी तेज़ सुनाई दी, मानो कोई बड़ा जानवर उनके बीच से गुज़र रहा हो। मैंने अपनी राइफल कसकर पकड़ी और उस अँधेरे में टकटकी लगाकर देखा जहाँ बाघ चर रहा था। तभी मैंने ध्यान दिया कि आवाज़ मेरे बाईं ओर से आ रही थी।

आपको याद होगा कि मैं खाई और मरी हुई बछिया की ओर मुंह करके खड़ा था और जब मैंने अपने दाहिनी ओर बाघ को जंगली सूअर को मारते हुए सुना, तो मैं चुपके से उस तरफ मुड़ गया था। अब यह अजीब सी सरसराहट की आवाज़, जो निस्संदेह तेज़ होती जा रही थी, मुख्य खाई और मरी हुई बछिया की दिशा से आ रही थी, जो अब मेरे बाईं ओर थे, न कि उस जगह से जहाँ बाघ दावत कर रहा था।

मैंने चुपके से सिर घुमाकर देखा, और घाटी की रेत में तारों की रोशनी प्रतिबिंबित हो रही धुंधली सी चमक को घूरने के बाद, मैंने एक काली परछाई को तेजी से उस नाले

की ओर बढ़ते देखा, जहाँ से बाघ कल ऊपर की ओर भागा था। लेकिन यह परछाई तो एक चट्टान जितनी बड़ी थी! तभी अचानक मुझे समझ आया: यहाँ एक हाथी था!

हाथी करीब आता गया और आखिरकार कुछ ही फीट की दूरी से गुजर गया। मैंने अपना सिर पूरी तरह घुमा लिया था और अब मैं अपने दाहिने कंधे के ऊपर से देख रहा था। मुझे उसके दांत पीछे शरीर की काली छाया में मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। लेकिन, इतना करीब होने के बावजूद, वह हवा की विपरीत दिशा में था और मेरी निकटता से पूरी तरह अनजान था। अगर हवा विपरीत दिशा में बह रही होती, तो वह निश्चित रूप से मेरी गंध पहचान लेता।

लेकिन बाघ को जल्द ही हाथी की मौजूदगी का पता चल गया। वह गुर्राया और दहाड़ा, और हवा के तेज शोर के बीच भी मुझे उसकी आवाज सुनाई दे रही थी।

हाथी भी ऐसा ही कर सकता था। वह मेरे पास से मुश्किल से गुजरा ही था कि बाघ गुर्राने लगा। हाथी अचानक रुक गया, आवाज की तरफ मुड़ा और अपनी सूंड को दो बार जमीन पर पटका, फिर उसे कसकर अंदर की ओर मोड़कर खतरे से बचा लिया।

अब भी भयभीत होकर पीछे मुड़कर देखते हुए, मैं सब कुछ देख सकता था। हजारों तारों की शांत रोशनी में, जो उस विचित्र दृश्य पर नीचे देख रहे थे, खाई की हल्के रंग की रेत पर उस विशालकाय जानवर का काला दैत्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

हाथी ने अपने अगले पैर को रेत पर ज़ोर से रगड़ा, जिससे धूल का गुबार उठ गया; उसके कान फड़फड़ाना बंद हो गए और सिर से कसकर चिपक गए, जबकि उसकी पूंछ पीछे की ओर अकड़ी हुई थी। मेरे लिए संकेत स्पष्ट थे। हालांकि हाथी और बाघ आमतौर पर एक-दूसरे से दूर रहते हैं, लेकिन यह हाथी किसी भी बाघ द्वारा अपमानित होकर भगाए जाने को तैयार नहीं था, जो उसे चुनौती देने की हिम्मत करता।

मेरी स्थिति अब बेहद नाजुक हो गई थी। अगर विनाश के ये दो राक्षस आपस में लड़ने का फैसला करते, तो मैं ठीक बीचोंबीच होता। अपने क्रोध में वे एक-दूसरे पर अंधाधुंध हमला करते। मुझे या तो हाथी के पैरों तले रौंदा जाने का, या बाघ के हाथों पकड़े जाने का, और उसके गुस्से में टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाने का भयानक खतरा था।

इस तरह के सारे विचार बाघ ने तुरंत दूर कर दिए। ज़ोरदार 'वूफ़! वूफ़!! वूफ़!!!' की

आवाज़ के साथ, वह झाड़ियों से कूदता हुआ तेज़ी से आगे बढ़ा और खाई तक पहुँच गया, जो उसकी दो ऊपरी शाखाओं के संगम से कुछ ही फीट नीचे थी, और उस जगह पर जहाँ अधखाई गई बछिया के अवशेष पड़े थे। ज़ाहिर है, सूअरनी को खाते समय वह अपने पहले शिकार को नहीं भूला था, और पास में हाथी की आवाज़ सुनकर उसने यह निष्कर्ष निकाला कि घुसपैठिया उसकी संपत्ति में दखल दे रहा है। निस्संदेह, इसी वजह से उसने पहले गुर्राया और घुरघुराया, और जब हाथी ने चुनौती का जवाब दिया, तो वह इतनी तेज़ी से बाहर भागा।

बाघ एक बार फिर मेरे बाईं ओर, लगभग बीस फीट की दूरी पर था, जबकि हाथी, जो खाई में नीचे उतर रहा था, लगभग मेरे पीछे खिसक गया था, बाघ से लगभग पचास से साठ फीट की दूरी पर। मैं दोनों जानवरों को एक साथ नहीं देख सकता था, इसलिए मैंने बाघ पर ध्यान केंद्रित किया। वह अपने पेट के बल लेट गया, भयानक ढंग से गुर्रा रहा था और उसकी पूंछ उसके पीछे अगल-बगल हिल रही थी।

अगले ही पल कुछ होने वाला था। या तो बाघ या हाथी हमला करने का साहस जुटा लेंगे; शायद दोनों ही। जो भी हो, मैं सीधे युद्ध के मैदान में खड़ा होऊंगा।

मुझे पता था कि बाघ हाथी की हर हरकत पर नज़र रख रहा है, और मुझे यह भी पता था कि हाथी बाघ पर नज़र रख रहा है। यही मेरा आखिरी और एकमात्र मौका था। कुछ क्षणों के लिए यह नज़दीकी निगरानी का खेल जारी रहेगा, और फिर दोनों में से कोई एक या दोनों ऐसे मोड़ पर पहुँच जाएँगे जहाँ से लौटना असंभव होगा और वे ऐसा हमला करेंगे जो निश्चित रूप से मुझे उस हमले के अंतिम दृश्य के प्रत्यक्षदर्शी के रूप में मिटा देगा।

मेरी राइफल का बट पहले से ही मेरे कंधे से लगा हुआ था और मैंने अपने बाएं अंगूठे से टॉर्च का बटन दबाया। तेज रोशनी बाघ पर पड़ी, जिससे वह चौंक गया और मौन आश्चर्य से मेरी ओर घूरने लगा।

फिर मैंने गोली चलाई, और जैसे ही वह विशालकाय बिल्ली धूल में लोटने लगी, मैंने अपनी राइफल के निचले लीवर को तेजी से चलाया और ट्रिगर को दो बार और दबाया। मैं एक घायल आदमखोर के साथ कोई जोखिम नहीं उठा सकता था।

बाघ लगभग उसी जगह पर पड़ा था जहाँ मेरी पहली गोली लगी थी। वह कमजोर तरीके से पैर पटक रहा था, तभी मुझे अपने पीछे हाथी की याद आई और मैंने अपना सिर तेज़ी से बाईं ओर घुमाया। लेकिन वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हाथी भाग गया था।

जब मैंने दोबारा उसकी तरफ देखा, तब तक बाघ ने लात मारना बंद कर दिया था और मैं समझ गया था कि वह मर चुका है। दो घंटे से अधिक समय तक चले लगातार मानसिक तनाव के कारण मुझे उल्टी जैसा महसूस हो रहा था और सिरदर्द भी तेज हो गया था।

लेकिन अब विंडी वैली की हवाएँ सचमुच मेरी मदद के लिए आईं। उनकी तेज़, ठंडक देने वाली गर्माहट ने जल्द ही मेरे सिरदर्द को दूर कर दिया, और मैं संतुष्टि से बैठकर उनकी ताजगी का आनंद लेने लगा, और ऊपर आकाश में बिखरे तारों की भव्यता को फिर से देखने लगा, जो झाड़ियों और घाटी की तलहटी पर, और मृत बाघ के धुंधले रूप पर अपनी हल्की रोशनी बिखेर रहे थे।

मुझे नींद आ गयी।

मैं अचानक चौंककर जाग उठा। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। तारे गायब हो चुके थे, काले बादलों की चादर के पीछे छिपे हुए थे। मैं सोचने लगा कि आखिर हुआ क्या, सब कुछ इतना अजीब तरह से शांत क्यों था। फिर मैंने अपनी घड़ी देखी और मुझे जवाब मिल गया। तीन बजकर दस मिनट हो चुके थे और वो अजीब हवाएँ उतनी ही अचानक रुक गई थीं जितनी अचानक शुरू हुई थीं।

थोड़ी देर में बारिश शुरू हो गई, इसलिए मैं उठा और गांव की ओर चलने लगा, रास्ते में आने वाली कई खाइयों और नालों और उनके बीच उगने वाली झाड़ियों को पार करते हुए अपनी टॉर्च की रोशनी का अनुसरण करता हुआ।

जब मैं लोककनहल्ली पहुँचा तो मैं पूरी तरह भीगा हुआ था, लेकिन मैं बहुत खुश भी था, क्योंकि सौभाग्य से मैंने कुछ ही घंटों में अपना मिशन पूरा कर लिया था। अब मैं सचमुच आराम कर सकता था, जैसा कि मेरे डॉक्टर ने सलाह दी थी।

जब मैं दोबारा जागा तो नौ बज रहे थे और सूरज खूब चमक रहा था। लेकिन अब मैं

उतना खुश नहीं था, क्योंकि जागते ही मेरे मन में एक ख्याल आया: कहीं मैंने आदमखोर बाघ का सही अंदाज़ा ही तो नहीं लगाया था? शायद जिस बाघ को मैंने गोली मारी थी, वह बस एक हानिरहित जानवर था। क्योंकि उसने एक बछिया और फिर एक जंगली सूअर को मार डाला था। मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वही आदमखोर बाघ था।

जब हम बाघ को अंदर ले आए, तो दोपहर के समय शोलागा लोग उसे देखने के लिए गांव में उमड़ पड़े और उन्होंने पुष्टि की कि वह जानवर वास्तव में विंडी वैली का खलनायक था। लेकिन फिर भी मेरे पास कोई सबूत नहीं था और मैं पूरी तरह से संतुष्ट नहीं था।

एक दिन बाद, मैं बैंगलोर लौट आया, और उसके बाद छह महीनों तक उन सभी क्षेत्रों में कोई मानव हत्या नहीं हुई जहाँ वह मायावी बाघ सक्रिय था। तो, शायद अंततः उस रात का अनुभव मुझे इसलिए हुआ क्योंकि मैं उस संघर्ष का अंत देखने का सौभाग्य प्राप्त कर पाया, जबकि मेरी अक्सर यह इच्छा रही है कि मुझे उस लड़ाई का अंत देखने का अवसर मिलता जिसे शुरू होने से पहले ही समाप्त करने के लिए मैं दुर्भाग्यवश विवश हुआ।

7 कुप्पा गुड्डा पहाड़ी का अकेला पैंथर

यह कहानी मेरे बेटे डोनाल्ड और पैंथरों के साथ उसके कारनामों के बारे में है, या यूँ कहें कि उनमें से एक खास पैंथर के बारे में, जिसे हमने 'अकेला पैंथर' नाम दिया है क्योंकि बेचारा जानवर अकेला था, और कहानी में जो कुछ भी हुआ वह इसी बात से उपजा। इसके अलावा, डोनाल्ड ने ही उसे अकेला कर दिया था, क्योंकि डोनाल्ड ने ही उसके साथी को गोली मार दी थी।

मेरे बेटे को, जिसके बारे में मैंने पिछली किताबों में कुछ घटनाओं का जिक्र किया है, पैंथर का शिकार करने का विशेष शौक है। अब तक उसने लगभग सत्तर पैंथर मारे हैं, और लगता है कि वह इससे कभी नहीं थकता। यह एक ऐसा विषय है जिस पर मैंने

उसे कई बार समझाया है, लेकिन मुझे डर है कि मेरी नसीहत बंजर जमीन पर अच्छे बीज के गिरने का एक और उदाहरण है।

इन पैंथरों के लिए उसका विशेष परिचालन क्षेत्र क्लोज़पेट नामक छोटे शहर के पश्चिम, उत्तर और पूर्व में लगभग दस मील के दायरे में है, जिसका नाम हाल के वर्षों में मैसूर सरकार द्वारा बदलकर रामनगरम कर दिया गया है।

यह जगह बैंगलोर से काफी करीब है, सिर्फ तैंतीस मील दूर, और तेजी से विकसित हो रही है। इसकी बढ़ती आबादी, बैंगलोर की निकटता और डॉन के उन्हें मारने के अथक प्रयासों को देखते हुए, मुझे आश्चर्य होता है कि इस इलाके में अभी भी कुछ पैंथर बचे हैं! लेकिन डॉन के अनुसार, उनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। जैसे ही वह एक पैंथर को मारता है, दूसरा उसकी जगह ले लेता है! पैंथरों की यह निरंतर संख्या हमारे पड़ोस में इन शानदार जानवरों की संख्या, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवित रहने, प्रजनन करने और बढ़ने की उनकी क्षमता, और निश्चित रूप से आसपास के इलाके की प्रजनन और भोजन के लिए उपयुक्तता को दर्शाती है।

यदि आपको बैंगलोर के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र का नक्शा मिल जाए, तो आपको इसका कारण समझ आ जाएगा। यह एक विशाल, उबड़-खाबड़ इलाका है, जो हजारों खाइयों और नालों से विभाजित है, जो सैकड़ों पथरीली पहाड़ियों की ढलानों और घाटियों से नीचे बहते हैं; यह चट्टानों, गुफाओं और गहरे छिपे स्थानों से भरा पड़ा है, और पूरा क्षेत्र वनस्पति जगत के अभिशाप - लैंटाना झाड़ी - की चादर से ढका हुआ है, जो मनुष्य, पशु और पक्षी सभी के लिए लाभकारी है। इसके पत्तों का रस किसी भी प्रकार के बाहरी रक्तस्राव को रोकने का एक अद्भुत उपाय है, साथ ही यह एक शक्तिशाली एंटीसेप्टिक भी है; इसके काले बेर जानवरों और पक्षियों द्वारा समान रूप से खाए जाते हैं; और इसके सुंदर, छोटे-छोटे गुच्छे, सफेद से लेकर लाल, नारंगी, गुलाबी और पीले रंग के, रंग-बिरंगे फूलों से पहाड़ियों को एक सुंदर पैटर्न में ढक देते हैं, मानो प्रकृति ने लापरवाही से इस परिदृश्य पर एक पैचवर्क कंबल बिछा दिया हो।

लेकिन रंगों के उस विशाल सागर में, और लगभग पाँच से छह फीट ऊँचे लैंटाना झाड़ियों के तनों के बीच, जानवरों ने सुरंगें और रास्ते खोद रखे हैं जहाँ मनुष्य बिल्कुल नहीं पहुँच सकते। यहाँ चूहे-हिरण, साही और सूअर तेज़ धूप में आराम करते हैं और

रात में खेतों में लौटकर अपनी फसल काटते हैं। यहीं पैंथर उनके पीछे रेंगते हुए आते हैं, उन्हें खाते हैं और उन्हें नष्ट करने के तमाम प्रयासों के बावजूद फलते-फूलते हैं, जिनमें, जैसा कि मैंने कहा, डोनाल्ड अभी भी बहुत सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

मुझे लगता है कि हर कोई अपनी कहानी सुनाना पसंद करता है, इसलिए मैं डॉन को यहीं से आगे बढ़ने दूंगा और वह अपने शब्दों में उस पैंथर के बारे में बताएगा जिसे उसने पहले 'लोनली' कहा था:

एक दिन रामनगरम से मेरे शिकारी चौधरी आए और बताया कि पिछली शाम क्यलांचे गाँव से एक मील के भीतर एक तेंदुए ने एक बछड़े को मार डाला था। क्यलांचे गाँव रामनगरम से लगभग छह मील पूर्व में स्थित है। बछड़े के मालिकों ने चौधरी से मुझे इस घटना की सूचना देने को कहा था, क्योंकि उन्होंने मुझे पहले भी उस इलाके में तेंदुए का शिकार करते देखा था। सौभाग्य से, जब उन्हें बछड़ा मिला, तो उन्होंने समझदारी दिखाते हुए उसके बचे हुए हिस्से को झाड़ियों से ढक दिया और फिर चौधरी को मुझे बुलाने के लिए भेजा। ऐसा लगता है कि तेंदुए ने रात भर में बछड़े का बहुत बड़ा हिस्सा खा लिया था, क्योंकि उन्होंने बताया कि शव का केवल एक तिहाई हिस्सा ही बचा था। फिर भी, उन्हें लगा कि अगले दिन रात को हत्यारे के वापस आने के लिए पर्याप्त मांस बचा है, और उन्होंने बचे हुए हिस्से को, जैसा कि मैंने बताया, भोजन की तलाश में रहने वाले गिद्धों की नज़रों से छिपा दिया था। अगर इन लालची पक्षियों को अवशेष दिख जाते, तो वे आधे घंटे के भीतर ही सारा मांस चट कर जाते।

चौधरी ने अपने भाई की साइकिल ली और रामनगरम तक छह मील का सफर तय किया, जहाँ उन्हें सौभाग्य से एक लॉरी में लिफ्ट मिल गई जो उन्हें बैंगलोर ले आई। वह ठीक नौ बजे से कुछ मिनट पहले वहाँ पहुँचे, जब मैं बाहर जा रहा था।

उसकी कहानी सुनने के बाद, मैंने उसे और अपने शूटिंग किट को, जिसे मैं हमेशा ऐसी अचानक आने वाली स्थितियों के लिए तैयार रखता हूँ, अपनी कार में रखा और कुछ ही मिनटों में हम रवाना हो गए।

हम क्यालांचे पहुँचे, जहाँ मैंने कार खड़ी की और चौधरी तथा बछड़े के मालिक के साथ उस स्थान की ओर तेज़ी से बढ़ा जहाँ अवशेष पड़े थे। वह एक मील का रास्ता तीन मील के बराबर लंबा निकला, लेकिन हम समय पर पहुँच गए।

मालिक ने बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहा था। बछड़े का ज़्यादा हिस्सा बचा नहीं था, लेकिन इतना ज़रूर था कि पैंथर को वापस आने के लिए लुभा सके। दरअसल, मैंने देखा है कि पैंथर अपने शिकार के पास तब भी लौट आते हैं जब वे सब कुछ खा चुके होते हैं, यहाँ तक कि उन शवों के पास भी जो काफी हद तक सड़ चुके होते हैं और कीड़ों से भरे होते हैं। उन्हें थोड़ा-थोड़ा खाना पसंद होता है। बाघ कभी ऐसा नहीं करते।

मचान के लिए कोई पेड़ नहीं था, केवल कहावत के अनुसार लैंटाना का पौधा था, और इसका मतलब यह था कि मुझे 'छिपने की जगह' में जमीन पर बैठना होगा।

असली चुनौती यह है कि छिपने की जगह को इतनी चतुराई से बनाया जाए कि पैंथर को पता ही न चले कि आप वहाँ हैं। घनी झाड़ियों के कारण, छिपने की जगह शिकार के पास ही बनानी पड़ती है, कभी-कभी तो बहुत पास। वरना शव दिखाई ही नहीं देगा। यहीं से परेशानी शुरू होती है; क्योंकि पैंथर अपने शिकार के पास जाने में बेहद सतर्क रहते हैं। एक कारगर छिपने की जगह बनाने का रहस्य यही है कि उसे आसपास मौजूद सामग्री से ही बनाया जाए।

चूंकि इस जगह पर केवल लैंटाना ही उगता था, और कुछ नहीं, इसलिए 'छिपने की जगह' भी केवल लैंटाना से ही बनानी होगी। किसी भी अन्य प्रकार की वनस्पति लाना उचित नहीं था—एक पत्ता भी नहीं!

मैंने ऐसे मामलों में सबसे अच्छा तरीका यह पाया है कि लैंटाना के झुंड या झाड़ी के बीच के हिस्से को खोखला कर दिया जाए। इसके लिए बीच की शाखाओं को ज़मीन के स्तर से काट दिया जाए, जिससे बैठने के लिए पर्याप्त जगह बन जाए। फिर कटी हुई शाखाओं को झाड़ी के चारों ओर इस तरह रख दिया जाए, साथ ही कुछ और लैंटाना की टहनियाँ भी लगाई जाएँ, जिन्हें दूर की झाड़ियों से काटकर लाया जाए, और किसी भी हालत में पास की झाड़ियों से न लाया जाए, ताकि अंदर बैठे व्यक्ति को किसी की नज़र से छिपाया जा सके। शिकार की ओर एक खुला हिस्सा छोड़ना चाहिए, जो इतना चौड़ा हो कि समय आने पर गोली चलाई जा सके, लेकिन बहुत बड़ा न हो। यह सामान्य विचार है। बेशक, इसके बारीक पहलू इतने सरल नहीं हैं। ये अभ्यास और अनुभव से आते हैं।

उस 'छिपने की जगह' को बनाने में हमें काफी समय लगा, इस बात का विशेष ध्यान

रखते हुए कि अंदर रहने वाले व्यक्ति - यानी मुझे - को हर तरफ से पूरी तरह छिपाया जा सके, साथ ही साथ इसे बहुत ज्यादा बड़ा और ध्यान खींचने वाला न बनाया जाए, जिससे पैंथर को शक न हो। ऐसी स्थिति में वह अपने बचे हुए भोजन पर हमला करने से पहले काफी देर तक इधर-उधर ताक-झांक करता रहता।

जब हमारा काम खत्म हुआ तब तक लगभग तीन बज चुके थे। मुझे पता था कि पैंथर पाँच बजे के बाद ही लौटेगा, इसलिए उनके पास करने को कुछ नहीं था, तो मैंने चौधरी और मवेशी चराने वाले को वापस गाँव भेज दिया। दोपहर का खाना छूट जाने के कारण मुझे भूख लग रही थी, इसलिए मैं अपने छिपने की जगह पर बैठ गया और घर से जल्दी में लाए हुए सार्डिन सैंडविच खाने लगा।

इसमें ज्यादा समय नहीं लगा। सैंडविच काफी नहीं थे और खत्म होने के बाद भी मुझे भूख लग रही थी। पैंथर के लौटने में अभी काफी समय था, इसलिए मैं ख्यालों में खो गया।

आस-पास की झाड़ियाँ पक्षियों से भरी हुई थीं, जिनमें अधिकतर बुलबुल और 'सेवन-सिस्टर्स' थीं। ये पक्षी लैंटाना के काले बेर खा रहे थे या फिर उन कीड़ों को खा रहे थे जो उन्हें खाने आते थे, जिनमें मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और पतंगे शामिल थे जो फूलों के गुच्छों में छिपे अमृत की तलाश में आते थे। इसलिए मुझे पता था कि मुझे पैंथर पर बहुत ध्यान देने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि उसके आने का पता चलने से बहुत पहले ही आस-पास की झाड़ियों में बैठे पक्षी मुझे उसकी हलचल के बारे में बता देंगे।

तो पैंथर के आने से पहले, मैं आपको जल्दी से इन बुलबुलों और 'सात बहनों' के बारे में कुछ बता दूं जो मेरे चारों ओर चहचहा रही थीं।

पहाड़ी बुलबुल की कई किस्में हैं, जिनमें एक हल्के हरे रंग की प्रजाति भी शामिल है, लेकिन दक्षिण भारत में मुख्य रूप से पाई जाने वाली दो किस्में हैं: पहाड़ी बुलबुल और मैदानी बुलबुल। पहाड़ी बुलबुल एक फुर्तीला पक्षी है, जिसका आकार रॉबिन पक्षी जितना होता है, जिसके पंख और पीठ लगभग काले और छाती सफेद होती है। इसके सिर के ऊपर लगभग एक इंच लंबी नुकीली कलगी होती है, और चेहरे के दोनों ओर दो लाल धब्बे होते हैं, जो प्राकृतिक गुलाबी गालों की तरह दिखते हैं, साथ ही पूंछ के सिरे पर लाल रंग का एक निशान होता है। मैदानी बुलबुल का रंग बिल्कुल पहाड़ी

बुलबुल जैसा ही होता है, लेकिन उसमें नुकीली कलगी या गुलाबी गाल नहीं होते। दोनों किस्में तेज आवाज में सीटी बजाने वाली, सर्वाहारी होती हैं, और इन्हें अक्सर पिंजरे में पाला जाता है और बाजार में सैकड़ों की संख्या में पिंजरे वाले पक्षियों के रूप में बेचा जाता है।

'सेवन सिस्टर्स' नाम इन्हें इसलिए दिया गया है क्योंकि ये हमेशा परिवारों में पाई जाती हैं, माना जाता है कि प्रत्येक परिवार में सात सदस्य होते हैं। यह बात सही है या नहीं, मैं इसकी गारंटी नहीं दे सकता, क्योंकि मैंने कभी किसी परिवार में पक्षियों की गिनती नहीं की है; लेकिन मैं जानता हूँ कि आपको कभी भी कोई 'सेवन सिस्टर' अकेली नहीं मिलेगी। वे हमेशा कई संख्या में मौजूद होंगी। बचपन में, मैंने एक बार एक अधविकसित 'सेवन सिस्टर' को पकड़ा और उसे पिंजरे में रखने की कोशिश की, लेकिन कुछ ही दिनों में वह मर गई। जाहिर है, वह अपने साथियों के लिए तड़प रही थी। एक समान फीके स्लेट रंग की यह चिड़िया बुलबुल से डेढ़ गुना बड़ी होती है। ये कीड़े खाती हैं और लगातार शोर मचाती हैं, खासकर जब वे झाड़ियों में किसी जीव को आते हुए देखती हैं या महसूस करती हैं।

कई साल पहले अहमदाबाद से आए एक दोस्त से मैंने सुना था कि 'सॉरस क्रेन', एक बड़ा भूरा पक्षी जो उन इलाकों में बहुतायत में पाया जाता है, हमेशा जोड़े में रहता है। लोग इन्हें खाने के लिए मारते हैं, और मेरे दोस्त ने बताया कि अगर एक भी पक्षी, नर या मादा, मारा जाए तो दूसरा कुछ ही दिनों में अकेलेपन से मर जाता है। इसलिए, उस इलाके के अंग्रेज़ी भाषी लोग जहाँ ये पक्षी पाए जाते थे, इन्हें 'आदर्श प्रेमी' और कभी-कभी 'डार्बी और जोन' भी कहते थे।

झाड़ियों की अचानक सरसराहट और डरे हुए पक्षियों की आवाज़ ने मेरा ध्यान खींचा। मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि समय कितनी तेज़ी से बीत गया था। शाम के 5:20 बज रहे थे, और झाड़ियों में हुई इस अप्रत्याशित हलचल से केवल एक ही बात समझ में आ रही थी। पैंथर आ रहा था!

अपने शरीर को हिलाए बिना, मैंने अपनी छुपी हुई जगह के छेद से बाहर झाँका, जहाँ से मुझे अपने सामने ज़मीन पर पड़े मृत बछड़े के क्षत-विक्षत अवशेष दिखाई दिए। वह

अकेला था और उसके आस-पास कहीं भी कोई हलचल या सन्नाटा नहीं था।

सातों बहनें अब एक साथ चहचहा रही थीं; बुलबुलों की चहचहाहट तेज होती जा रही थी; और एक नीलकंठ, जो अब तक अदृश्य और शांत थी, चीखती हुई आसमान में उड़ गई। यह सब मृत बछड़े के पीछे हो रहा था और लैंटाना के घने जंगल ने हलचल का कारण छिपा रखा था; लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था कि पैंथर लैंटाना के तनों के बीच से रेंगता हुआ अपने शिकार की ओर लौट रहा था, हमेशा की तरह सावधानी से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, लेकिन जंगल के संकेतों से परिचित व्यक्ति के लिए यह सब व्यर्थ था क्योंकि पक्षियों ने अपनी इंद्रियों और आंखों से जरा सी भी हलचल को भांपकर उसे देख लिया था।

तभी अचानक एक और हलचल सुनाई दी, इस बार बिलकुल विपरीत दिशा से और मेरे पीछे। फिर से झाड़ियों की फड़फड़ाहट और डरे हुए पक्षियों की आवाज़। फिर से चहचहाहट और चहचहाना, लेकिन इस बार सात बहनों और बुलबुलों के एक बिलकुल अलग परिवार से, हालांकि अब खतरे की पुष्टि करने के लिए कोई नीलकंठ नहीं था।

इसमें कोई शक नहीं था। पैंथर मेरे पीछे से आ रहा था।

मैंने सोचा, ये तो अजीब बात है। अभी एक मिनट पहले ही तो ये ठीक मेरे सामने से आ रहा था। इससे पता चलता है कि ये चालाक जानवर कितनी तेज़ी और खामोशी से चल सकते हैं।

मैंने एक बार फिर अपनी छुपने की जगह में बने छेद से मृत बछड़े पर नज़र डाली। लेकिन इस बार वह अकेला नहीं था। उसके बगल में खड़ा, और मेरी ओर घूरता हुआ, एक मध्यम आकार का चमकीला पैंथर खड़ा था। शरीर के बाकी हिस्सों के अनुपात में अपेक्षाकृत छोटी खोपड़ी, और पतले, हल्के-फुल्के बनावट वाले चेहरे से पता चलता था कि हत्यारा एक मादा थी।

मुझे पता था कि अगर मैंने अब ज़रा सी भी हरकत की, पलक झपकाने जितनी भी, तो पैंथरेस उसे देख लेगी और एक छलांग में भाग जाएगी। ज़ाहिर है, हमने 'छिपने की जगह' बनाने में जो अथक परिश्रम और मेहनत की थी, उसके बावजूद आगंतुक को कुछ संदेह ज़रूर हुआ होगा।

तो मैं एकदम जम गया!

शायद पांच मिनट धीरे-धीरे बीत गए, जब पैंथरेस मेरी ओर अपनी अविचल निगाहें टिकाए रही और मैंने भी उतनी ही अविचल निगाहों से उसका जवाब दिया।

तनाव कम हो गया। एक पल के लिए उसने नज़रें हटाईं, फिर अपने शिकार पर नज़र डाली। मुझे पता था कि गोली चलाने का समय आ गया है, इसलिए मैंने बहुत धीरे से अपनी राइफल का बट उठाया और उसे अपने कंधे पर टिका लिया।

मेरे द्वारा कान के पीछे लगी गोली से वह नीचे गिर पड़ी और ज़मीन पर बेतहाशा लात मारने लगी। फिर वह छटपटाने लगी, कांपने लगी और शांत हो गई।

पैंथरेस मर चुकी थी, और यहीं से मेरी असली कहानी शुरू होती है।

कोई बड़ी और भारी चीज़ पीछे से मेरी पीठ पर कूद पड़ी, और लैंटाना की शाखाएँ और टहनियाँ जिन्हें हमने बड़ी मेहनत से कलात्मक ढंग से सजाया था, काँप उठीं और मेरी पीठ पर गिर पड़ीं, जिससे मैं आगे की ओर झुक गया और मेरा सीना मेरी मुड़ी हुई टांगों पर आ गया। एक भयानक दहाड़ ने मुझे बहरा कर दिया और मैंने यह देखने के लिए अपना सिर घुमाया कि आखिर हो क्या रहा है।

दो फीट की दूरी पर, मेरी पीठ पर टिकी लैंटाना की घनी झाड़ी के ऊपर, मुझे एक पैंथर का गुर्राता हुआ चेहरा दिखाई दिया, जिसकी आँखें मुझे घूर रही थीं। जैसे ही वह क्रूर जानवर अपने फैले हुए पंजों से मुझ तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था, खुरचने और सरसराहट की आवाज़ आ रही थी, वह बीच में फैली लैंटाना की शाखाओं और टहनियों को चीरते हुए आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा था।

उस जानवर का विशाल चौकोर सिर अब सचमुच मेरे ऊपर फैला हुआ था, जिससे एक नर पैंथर दिखाई दे रहा था, जो निस्संदेह उस मादा पैंथर का साथी था जिसे मैंने अभी-अभी गोली मारी थी, और बदला लेने पर तुला हुआ था। इसी दूसरे पैंथर की मौजूदगी ने मेरे पीछे बैठे पक्षियों को डरा दिया था। उन्होंने कुछ क्षण पहले ही मुझे उसके आने की चेतावनी दी थी, लेकिन मैं इतना नासमझ था कि समझ नहीं पाया। अब मैं उसकी दया पर था, क्योंकि लाख कोशिश करने के बावजूद मैं खुद को सीधा नहीं कर पा रहा था ताकि राइफल को उसकी ओर घुमा सकूँ। मेरी पीठ पर इतना

भारी भार था कि वह मुझे लगातार आगे की ओर धकेल रहा था। मैं जानता था कि कुछ ही क्षणों में उसके पंजे, बदला लेने के लिए बेताब होकर, अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएँगे और मेरी पीठ के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।

फिर मैंने उस परिस्थिति में जो दो काम संभव थे, वही किए। मैं जोर से चिल्लाया और अपने पेट पर दबाव डालते हुए अपने दाहिने हाथ से राइफल के बोल्ट को बेताब होकर चलाने लगा। फिर मैंने ट्रिगर दबा दिया।

गोली घनी लैंटाना झाड़ियों को चीरती हुई मेरे सामने लगभग एक गज की दूरी पर ज़मीन में जा धंस गई, जिससे रेत और पत्तों की बौछार मेरे चेहरे पर पड़ी। उस क्षण के भय में, मैंने वही क्रिया दोहराई और पहली गोली के साथ दूसरी गोली चला दी।

इतनी नज़दीक से हुई दो गोलियों की गड़गड़ाहट पैंथर के लिए कान फाड़ देने वाली रही होगी। नतीजा वही निकला जो वह चाहता था। एक ज़ोरदार गुर्राहट हुई, और अगले ही पल, वह भयानक चेहरा मेरी नज़रों से ओझल हो गया। मुझे पता था कि मैं सुरक्षित हूँ। कम से कम एक भयंकर हमले से तो मैं बाल-बाल बच गया, भले ही नर पैंथर के हाथों तुरंत मारे जाने से नहीं, जो मेरे ठीक पीछे रहा होगा जब मैंने गोली चलाई जिससे उसकी साथी की मौत हुई और मेरी मौजूदगी का पता चल गया।

मुझे उस रोमांच से उबरने में कुछ मिनट लग गए। फिर मैं सावधानी से छिपने की जगह से बाहर निकला, इस आशंका से कि किसी भी क्षण वह भयानक धब्बेदार आकृति एक बार फिर मुझ पर झपट पड़ेगी। लेकिन कुछ नहीं हुआ।

मैंने जिस महिला को गोली मारी थी, उसके बेजान शरीर पर एक नजर डाली और फिर सावधानीपूर्वक झाड़ियों के बीच से वापस उस रास्ते पर चल पड़ा जो गांव की ओर जाने वाले मवेशियों के रास्ते पर था।

चौधरी और अन्य ग्रामीणों को मेरी इतनी जल्दी वापसी की उम्मीद नहीं थी, और जब मैंने उन्हें घटना के बारे में बताया, तो उनमें से एक बूढ़े दाढ़ी वाले व्यक्ति ने अपना सिर हिलाया और मुझे तिरस्कार भरी नजरों से देखा।

'उसकी साथी को मारकर तुमने पैंथर के क्रोध को भड़का दिया है, दोराई। निस्संदेह वह गर्भवती थी और इसीलिए वह उससे इतना लगाव रखता था। अब तुम बैंगलोर

लौट जाओ जहाँ से तुम आए हो, और हमें और हमारे मवेशियों को उसके क्रोध और प्रतिशोध का सामना करने के लिए छोड़ दो।'

उन भयावह शब्दों के साथ, उसने जमीन पर थूका, मुझे गुस्से से देखा और उस छोटे से गांव की मुख्य गली में ऐसे चला गया जैसे कोई प्राचीन पैगंबर अपना श्राप सुनाकर चला गया हो।

वह बूढ़ा आदमी सही था। जब हम मादा पैंथर का शव लेने लौटे तो हमने पाया कि उसकी खाल गीली थी। पैंथर वापस आया था और अपनी साथी को चाट रहा था, उसे जगाने और उसे फिर से जीवित करने की कोशिश कर रहा था। और जब हमने बाद में गाँव में उसकी खाल उतारी, तो हमने पाया कि वह गर्भवती थी। तीन पूरी तरह से विकसित छोटे पैंथर अपनी माँ के साथ मर गए थे।

मुझे अपने किए पर काफी शर्म महसूस हुई।

तीन दिन बाद, मुझे चौधरी को फिर से अपने दरवाजे पर देखकर आश्चर्य हुआ। सुबह के छह बज चुके थे और मैंने अनुमान लगाया कि कोई महत्वपूर्ण घटना हुई होगी जिसके कारण वह इतनी जल्दी वहाँ आया था।

और मैं सही था। उसने सुबह करीब चार बजे मैसूर से रामनगरम स्टेशन पर चलने वाली यात्री ट्रेन पकड़ी थी। वह यह बताने आया था कि पैंथर पिछले तीन रातों से लगातार अपनी मरी हुई साथी की तलाश में रात भर रोता और कराहता रहा है, और पिछली शाम उसने गांव के बाहरी इलाके में चर रही एक बड़ी गाय को मार डाला था।

सूर्यास्त से कुछ देर पहले जब गाय वापस नहीं लौटी, तो उसके मालिक, जो संयोगवश दो भाई थे, उसकी तलाश में निकल पड़े। उन्हें पता था कि गाय उस गाँव के पास ही चर रही थी जहाँ उन्होंने उसे बाँधा था, और उन्हें लगा कि शायद कुछ मील दूर एक शिविर में रह रहे खानाबदोश लंबानी जिप्सियों के किसी समूह ने उस जानवर को उठा लिया हो।

जब वे उस बंजर खेत में पहुँचे जहाँ उन्होंने उस दोपहर अपनी गाय को छोड़ा था, तो उन्होंने नरम घास में संघर्ष के निशान देखे, और कुछ गज की दूरी पर सूखा खून और गोबर का धब्बा था जो गाय के अपने हमलावर की जानलेवा पकड़ से खुद को छुड़ाने

के अंतिम छटपटाते प्रयासों में निकला था।

तब उन्हें पता चला कि उसे एक पैंथर ने मार डाला था और वे घास के बीच से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे घसीटने के निशान का पीछा करने लगे, जो खेत के उस पार जमीन में एक गड्ढे की ओर जा रहा था।

वे खोखले स्थान पर पहुँचे और जल्द ही उन्हें अपने कीमती जानवर के आंशिक रूप से खाए हुए अवशेष मिले। वह एक बड़ी गाय थी, और यद्यपि पैंथर ने उसे भरपेट खाया था, फिर भी वह अपने शिकार का आधा हिस्सा भी खत्म नहीं कर पाया था, जिससे उसके अगले भोजन के लिए एक अच्छा-खासा हिस्सा बच गया था।

इस समय, घाटी में थोड़ी दूर स्थित लैंटाना झाड़ियों से आती एक भयानक गुर्राहट ने दोनों भाइयों की आगे की गतिविधियों को अचानक रोक दिया। एक पल में ही वे समझ गए कि हत्यारा लौट आया है और उन्हें देख रहा है। शायद वह हर समय वहीं था। वह उनके दखल से क्रोधित था, और वे निहत्थे थे। बिना देर किए, दोनों भाई भाग गए।

गांव लौटकर उन्होंने चौधरी को तुरंत बैंगलोर भेजा ताकि वह मुझे बुलाए, क्योंकि उन्होंने साफ तौर पर कहा कि उनकी इस हानि का कारण मैं ही हूं। उन्होंने चौधरी का सुबह की यात्री ट्रेन का किराया भी चुका दिया और उसे हिदायत दी कि वह मुझसे किराया वसूल कर उन्हें वापस कर दे।

बीस मिनट के भीतर चौधरी और मैं अपने रास्ते पर निकल पड़े और कुप्पा गुडा नामक एक छोटी पहाड़ी से एक मील की दूरी पर स्थित क्यलांचे नामक छोटे से गाँव में सुबह आठ बजे से कुछ ही पहले पहुँच गए। दोनों भाइयों से मिलने के बाद मैंने सबसे पहले पूरी गंभीरता से उन्हें एक रुपया और कुछ आने का ट्रेन किराया सौंप दिया, जो उन्होंने चौधरी के बैंगलोर के टिकट के लिए अग्रिम रूप से दिया था।

फिर हम चारों उस खोखले स्थान की ओर बढ़े जहाँ पिछली शाम को वे गाय के घसीटने के निशान का पीछा करते हुए पहुँचे थे। वहाँ पहुँचकर हमने पाया कि पैंथर ने दूसरी बार भरपेट भोजन करने के बाद रात में गाय के अवशेष हटा दिए थे। इस बार घसीटने का कोई निशान नहीं था, क्योंकि जो अवशेष बचे थे वे ज़मीन पर घिसटने के लिए पर्याप्त नहीं थे। पैंथर अवशेषों को अपने मुँह में उठाकर ले गया था। इस तथ्य से

कि उसने दो बार में इतनी बड़ी गाय का इतना मांस खा लिया था, और निश्चित रूप से उन कुछ डरावने पलों से जब उसने अपने पंजों से मुझ तक पहुँचने की कोशिश करते हुए मुझे घूरकर देखा था, यह स्पष्ट था कि यह वास्तव में एक विशाल पैंथर था, जो गाँव के झुंडों पर हमला करने वाले सामान्य पैंथर से कहीं अधिक बड़ा था।

मुझे पता था कि उस रात कोई नया चारा लगाना शायद ही फ़ायदेमंद होगा। क्योंकि पैंथर न केवल मांस से भरा हुआ था, बल्कि पिछली रात का बचा हुआ हिस्सा भी खाने के लिए उसके पास था। फिर भी, उसे दोबारा लुभाने का यही एकमात्र तरीका लग रहा था।

इसलिए मैंने एक पेड़ चुना, उस पर एक मचान बांधा, और उसके नीचे एक अधविकसित बकरी को बांध दिया, जिसके बारे में मुझे पता था कि जैसे ही उसे अकेला छोड़ा जाएगा वह मिमियाने लगेगी।

मैं शाम पाँच बजे मचान पर चढ़ा, जिसके बाद चौधरी ने बकरी को उस खूंटे से बाँध दिया जिसे हमने पहले ही ज़मीन में गाड़ दिया था। फिर वे मचान बनाने में मदद करने वाले आदमी से ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए चले गए। बकरी को बाँधने से पहले ही मैं पेड़ पर चढ़ गया था, इसलिए जानवर को मेरी मौजूदगी का पता नहीं चला और जैसे ही उसे लगा कि उसे अकेला छोड़ दिया गया है, वह ज़ोर-ज़ोर से मिमियाने लगा।

वह जो शोर मचा रहा था, उसे देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। निःसंदेह, इस स्थान से एक मील के दायरे में घूमने वाला कोई भी पैंथर उस आवाज़ को सुनकर संभावित भोजन की ओर तेज़ी से बढ़ जाता।

और ठीक यही हुआ। एक पैंथर ने आवाज़ सुनी और तेज़ी से मेरी ओर बढ़ा। बस एक ही गड़बड़ थी कि वह वह विशाल नर पैंथर नहीं था जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था। वह एक छोटा सा पैंथर था - असल में एक मादा पैंथर। मैं उसके छोटे सिर और दुबले-पतले शरीर से यह बात साफ़ समझ गया।

उसके गर्भ में पल रहे कुछ और शावकों की कल्पना करते हुए, मैंने उस लालची प्राणी को बकरी को मारने से पहले ही भगा दिया। उसके चेहरे पर व्याप्त भय और उसकी भयभीत गुर्राहट से स्पष्ट था कि वह प्रतिशोधी नर बकरी द्वारा हाल ही में प्रदर्शित साहस दिखाने में पूरी तरह असमर्थ थी।

मैं पूरी रात उस मचान पर बैठा रहा, इस उम्मीद में कि शायद कभी न कभी वह बड़ा पैंथर आ जाए जिसकी मुझे तलाश थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सात बजे तक बकरी मिमियाते-मिमियाते थक गई। उसकी आवाज़ धीमी फुसफुसाहट में बदल गई और उसके बाद वह बिलकुल भी आवाज़ नहीं निकाल पाई। आखिरकार उसने अकेलेपन को स्वीकार कर लिया, ज़मीन पर सिकुड़कर लेट गई और सो गई।

मैंने शोकग्रस्त नर की कराहने की आवाज़ पहली बार लगभग दस बजे सुनी। वह तब काफी दूर था। मुझे लगा कि वह कुप्पा गुड्डा पहाड़ी की चोटी से पुकार रहा होगा। उस पहाड़ी पर कई भूमिगत गुफाएँ हैं, जो एक के ऊपर एक बनी हुई हैं और संकरी सुरंगों से जुड़ी हुई हैं, जो जाहिरा तौर पर पहाड़ी के बिल्कुल भीतरी हिस्से तक जाती हैं। मैंने पिछले पाँच वर्षों में कुप्पा गुड्डा पर सात तेंदुओं का शिकार किया था, और अब मुझे कोई संदेह नहीं था कि जिस नर की मैं तलाश कर रहा था, उसने भी पुराने तरीके का पालन करते हुए इन्हीं गुफाओं या सुरंगों में से किसी एक में अपना ठिकाना बना लिया था। शायद वह गाय के अवशेषों को उसी जगह ले गया होगा, जहाँ उसने उन्हें खाकर बाकी दिन सो लिया होगा। इसी वजह से वह देर से जागा होगा, जबकि आम तौर पर उसे शाम को बहुत पहले उठ जाना चाहिए था।

इस बात की संभावना बहुत कम थी कि वह उस रात मेरे पास आएगा और संयोगवश मेरी सोई हुई बकरी को देख लेगा, इसलिए मैंने अगले दिन दोपहर के सबसे गर्म समय में, जब वह निष्क्रिय होगा और ज्यादा लड़ाई दिखाने से हिचकिचाएगा, उसे उसकी गुफा से या पहाड़ी पर जहाँ भी वह छिपा होगा, बाहर निकालने की कोशिश करने का फैसला किया।

रात के समय पैंथर पहाड़ी से नीचे आया और एक समझदारी भरी परिक्रमा करता रहा, गाँव के किनारे-किनारे घूमता रहा और उसके चारों ओर फैली झाड़ियों से ढकी नीची पहाड़ियों पर ही चलता रहा, लेकिन वह कभी मेरे रास्ते में नहीं आया। और जैसे-जैसे वह चलता रहा, वह लगातार अपनी बिछड़ी साथी, अपने शावकों की माँ के लिए एक धीमी, कराहती हुई पुकार लगाता रहा, वह दर्द भरी पुकार जिसे मैं जानता था कि वह कभी उसकी पुकार का जवाब नहीं दे पाएगी।

मुझे एक बार फिर उस गोली चलाने का पछतावा हुआ जिसने इस वफादार जोड़े को

अलग कर दिया था। हालांकि, नुकसान तो हो ही चुका था। शायद समय के साथ पैंथर अपने अकेलेपन से उबर जाए और कोई दूसरा साथी ढूंढ ले। लेकिन यह भी संभव था कि इस बार प्रकृति मेरी मदद न करे। शायद पैंथर इतनी आसानी से अपने साथी को न भूले और किसी दूसरे की तलाश न करे। शायद इस मामले में प्रकृति उस खालीपन को न भरे। अगले कुछ हफ्तों में नर पैंथर और भी उदास हो सकता है। वह प्रतिशोधी हो सकता है, अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अधिक से अधिक मवेशियों को मार सकता है और अंततः उन मनुष्यों को भी मार सकता है जो स्वाभाविक रूप से उसे भगाकर उनकी रक्षा करने की कोशिश करेंगे।

तब मुझे पता चल गया कि अगले दिन किसी भी कीमत पर उसे खत्म करने की कोशिश करना मेरी जिम्मेदारी थी, और इसके लिए मुझे कुप्पा गुड्डा पहाड़ी की गुफाओं में उसकी तलाश करनी थी जहाँ वह छिपा हुआ था।

मैं सुबह करीब दो बजे सो गया और सुबह छह बजे उठा। ओस की वजह से मेरा शरीर जकड़ा हुआ था और हड्डियां तक ठंड से कांप रही थीं। बकरी खूंटी के पास उदास खड़ी थी, ठंड से थरथरा रही थी और बेहद निराश दिख रही थी। जब मैं उसे खोलने के लिए उसके पास गया, तो उसका चेहरा खिल उठा, उसने अपनी छोटी पूंछ हिलाई और अपना मुंह भरोसे से मेरी बांह की गर्मी से सटा लिया। उसे खोलते और गांव वापस ले जाते समय मुझे खुद पर शर्म आई।

वहाँ मैंने कई गिलास गर्म कॉफी पी, एक गरमा गरम डोसा (तले हुए चावल के आटे और चटनी से बना एक चपटा केक) खाया और चौधरी की झोपड़ी में एक-दो घंटे के लिए सो गया, जब तक कि सूरज बहुत तेज नहीं हो गया और पैंथर की तलाश शुरू करने का समय नहीं हो गया।

ठीक दोपहर के समय, चौधरी और मैं कुप्पा गुड्डा पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। यह एक छोटी सी पहाड़ी है, जिसकी ऊँचाई लगभग 400 फीट है, जो क्यालांचे गाँव से लगभग एक मील पूर्व में और रामनगरम से कनकपुरा नामक एक अन्य कस्बे की ओर जाने वाली संकरी सड़क से लगभग एक चौथाई मील दक्षिण में स्थित है, जो लगभग सोलह मील दूर है। यह पूरा इलाका पैंथरों से भरा हुआ है, क्योंकि आसपास के सैकड़ों छोटे-छोटे लैंटाना से ढके पहाड़ों में इनकी संख्या घने जंगलों के बीच पाए जाने

वाले बड़े जंगली जानवरों, जिनमें बाघ भी शामिल हैं, की तुलना में कहीं अधिक है। इस क्षेत्र में पैंथर का वर्चस्व है। उसका बड़ा चचेरा भाई, बाघ, जो कभी यहाँ भी हुआ करता था, या तो मारा गया है या दूर के जंगलों की दुर्गम जगहों में भाग गया है। इसलिए पैंथर का एकमात्र प्रतिद्वंद्वी मनुष्य ही है। लैंटाना झाड़ियों के विशाल आवरण, सैकड़ों चट्टानी, पत्थरों से भरी पहाड़ियों, इन पहाड़ियों पर मौजूद कई दरारों, गुफाओं और सुरंगों, और जंगली सूअर, घरेलू मवेशियों और बकरियों, साही, मोर और चूहे-हिरण के रूप में भोजन की प्रचुर आपूर्ति द्वारा प्रदान किया गया आवरण, इस क्षेत्र को पैंथरों के लिए स्वर्ग बनाता है।

मैंने कुप्पा गुड्डा पहाड़ी का कई बार भ्रमण किया था और मुझे पता था कि चोटी से लगभग सौ फीट नीचे, उत्तर-पश्चिम दिशा में, दो भूमिगत मार्ग हैं जो सीधे पहाड़ी में धंसे हुए हैं। साथ ही, उत्तर-पूर्वी तरफ, लेकिन उससे थोड़ा ऊपर, एक छोटी गुफा है जो एक ऐसे मार्ग में जाकर मिलती है जो थोड़ा नीचे की ओर ढलान बनाते हुए धरती के भीतरी भाग में जाता है। संभवतः यह मार्ग उत्तर-पश्चिम में स्थित उन दो भूमिगत मार्गों में से एक या दोनों से जुड़ा हुआ था, जिनकी सीधी दूरी लगभग चार सौ फीट से अधिक नहीं थी, जो पश्चिम से पूर्व तक पहाड़ी की चोटी की चौड़ाई के लगभग बराबर थी, और उत्तर से दक्षिण की ओर लगभग दोगुनी थी।

मैंने पहले भी कई बार इन तीनों रास्तों का जायज़ा लेने की कोशिश की थी, लेकिन जब रास्ते बहुत संकरे हो गए और मुझे पेट के बल रेंगना पड़ा, तो मैंने हिम्मत हार दी। क्योंकि, मेरे पिता के विपरीत, मुझे साँपों से नफ़रत है, और कुप्पा गुड्डा में कई तरह के साँप हैं, साथ ही छह से आठ इंच लंबे बड़े काले चट्टानी बिच्छू भी हैं, जो ढीली चट्टानों के नीचे छिपे रहते हैं और अगर कोई अँधेरे रास्ते में पेट के बल रेंग रहा हो और उनसे बचने का कोई रास्ता न हो, तो उनका सामना करना बहुत खतरनाक हो सकता है। ये रेंगने वाले जीव मुझे परेशान और disgusted करते हैं, और मैं तो इनमें से किसी एक से मिलने की बजाय एक पैंथर से मिलना ज़्यादा पसंद करूँगा।

खैर, जैसा कि मैं कह रहा था, ये तीन रास्ते थे और यह बिल्कुल स्पष्ट था कि अगर अकेला पैंथर इस पहाड़ी पर था भी, तो वह इनमें से किसी एक में ही होगा। लेकिन, कौन से में?

स्थिति पर विचार करने के बाद, चौधरी और मैंने पहाड़ी के आधार का चक्कर लगाया ताकि पैंथर हमें सीधे ऊपर चढ़ते हुए न देख सके। इसलिए हम कुप्पा गुड्डा पर दक्षिणी तरफ से चढ़े, जहाँ मुझे पता था कि कोई गुफाएँ नहीं हैं। फिर हम पहाड़ी की चोटी के साथ-साथ उत्तर की ओर चलते रहे, जब तक कि हम सीधे उस स्थान के ऊपर नहीं पहुँच गए जहाँ से रास्ते खुलते थे। पहाड़ी के किनारे तक, पहले उत्तर-पश्चिम की ओर और फिर उत्तर-पूर्व की ओर चलकर, हम तीनों रास्तों के मुहाने देख पाए।

क्योंकि यह एक पथरीली पहाड़ी थी, इसलिए कहीं भी कोई पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे, और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि नीचे से ऊपर देखने की तुलना में हम समस्या के समाधान के करीब भी नहीं पहुँच पाए थे। यह पता लगाने का एकमात्र तरीका था कि क्या पैंथर उनमें से किसी एक में है, अंदर जाकर देखना। मैंने उत्तर-पश्चिम की ओर जाने वाले दो रास्तों से शुरुआत करने का फैसला किया।

चौधरी को अपनी योजना बताते हुए मैंने उसे निर्देश दिया कि वह उसी रास्ते से वापस लौट जाए जिससे हम ऊपर आए थे और सड़क पर जाकर वहीं से आगे की स्थिति का इंतज़ार करे। हो सकता है कि पैंथर मेरे पास से तेज़ी से गुज़र जाए और मैं उसे घायल कर दूं, तभी उसे निहत्था चौधरी रास्ते में मिल जाए और वह उसे झट से मार डाले। या फिर शायद मुझे पैंथर का पीछा करना पड़े और चौधरी उड़ती हुई गोली की चपेट में आ जाए। उसे रास्ते से हटा देना ही बेहतर था।

चौधरी ने मेरे निर्देशों का कड़ा विरोध किया। उसने कहा कि यह एक मूर्खतापूर्ण योजना है और वह मदद के लिए मौजूद रहना चाहता है। लेकिन कोई बेहतर योजना नहीं थी, इसलिए मैंने उसे जाने का आदेश दिया। फिर भी वह ज़ोरदार विरोध करता रहा और मेरी ओर बार-बार विनती भरी निगाहें डालता रहा, और अंततः दक्षिण की ओर पहाड़ी की चोटी के नीचे गायब हो गया।

उसके बाद मैंने पंद्रह मिनट तक इंतज़ार किया, ताकि मैं उसे पहाड़ी की तलहटी से सड़क की ओर जाते हुए देख सकूँ, जहाँ मैंने उसे जाने को कहा था। लेकिन दस मिनट और इंतज़ार करने के बावजूद कोई नहीं आया, और मुझे आखिरकार यही निष्कर्ष निकालना पड़ा। उस मूर्ख, ज़िद्दी लेकिन दृढ़ निश्चयी जीव ने मेरी बात न मानने का फैसला कर लिया था। निस्संदेह, वह पहाड़ी के दक्षिणी हिस्से में कहीं किसी चट्टान के

पीछे बैठा होगा, इस उम्मीद में कि मेरे करीब रहकर वह ज़रूरत पड़ने पर मेरी कुछ मदद कर सके। यह एक साहसी कार्य था, लेकिन इससे मुझ पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी आ गई, क्योंकि अगर मैंने उसे घायल कर दिया तो पैंथर मेरी तरफ दौड़ सकता था।

मैं सौ फीट नीचे उतरकर उत्तर-पश्चिमी गुफाओं में से पहली गुफा के प्रवेश द्वार तक पहुँचा। प्रवेश द्वार पत्थरों के ढेर से बना था। पत्थरों के बीच की मिट्टी पर मैंने पदचिह्नों की तलाश की और मुझे वे मिले। लेकिन वे किसी भी तरह से ताजे नहीं थे।

हालांकि, मुझे पता था कि इस खोज का कोई महत्व नहीं है। पैंथर शायद हमेशा वहीं रहता हो। हो सकता है कि हाल के कुछ मौकों पर वह चट्टानों के ऊपर से गुजरते हुए गुफा के पास आया हो और चला गया हो, जिससे उनके आधार पर जमीन पर कोई ताजा निशान न छूटे हों।

मैं सावधानी से पत्थरों पर रेंगता हुआ आगे बढ़ा और फिर चुपचाप उस ढलान वाली चट्टान पर उतर गया जो अंधेरे द्वार की ओर जाती थी। मेरे रबर के तले वाले जूतों से चट्टान पर कोई आवाज़ नहीं हुई, जैसे-जैसे मैं संकरे रास्ते पर इंच-इंच करके आगे बढ़ता गया। देखते ही देखते मैं कमर झुकाकर चलने लगा क्योंकि शाफ्ट की दीवारें चारों ओर से मुझ पर कसती जा रही थीं। फिर मुझे हाथों और घुटनों के बल नीचे उतरना पड़ा। कुछ और कदम चलने पर मुझे पेट के बल रेंगना शुरू करना पड़ता।

अचानक मुझे बहुत डर लगने लगा! अगर पैंथर अचानक से बाहर आ जाता, तो उसके पास मुझे पार करने की कोई जगह नहीं होती, और न ही कोई गोली उसकी दौड़ को रोक पाती, इससे पहले कि वह मुझे बुरी तरह घायल कर देता या यहाँ तक कि मुझे मार डालता।

तभी मेरे दिमाग में एक योजना आई, इतनी सरल कि मैंने खुद को पहले इसके बारे में न सोचने के लिए कई तरह से मूर्ख समझा। इसलिए मैं उसी रास्ते से वापस रेंगने लगा, ढलान वाली चट्टान पर पीछे हटते हुए और रास्ते के प्रवेश द्वार पर मौजूद बड़े पत्थर को फांदते हुए आगे बढ़ा।

मैं चट्टान के पीछे छिप गया और फिर अपनी सरल योजना को अमल में लाने लगा। मैंने वैसी ही कर्कश, आरी जैसी आवाज़ निकाली जैसी पैंथर पुकारते समय निकालता है। मैंने तीन बार आरी चलाई, और फिर चौथी बार, अपने सामने सुरंग के अंधेरे मुँह

को देखते हुए और किसी भी हल्की सी आवाज़ को सुनने के लिए ध्यान से कान लगाए।

वहाँ कोई नहीं था, न ही कुछ हिला। मैंने पंद्रह मिनट तक पुकारा; अब और ज़ोर से, लेकिन कुछ नहीं हुआ। स्पष्ट था कि पैंथर इस गुफा में नहीं था।

पत्थरों के बीच वापस चढ़ते हुए, मैं लगभग पंद्रह गज की दूरी तक उन पर रेंगता हुआ दूसरे मार्ग के प्रवेश द्वार तक पहुँचा, जो थोड़ा छोटा था। मैंने इस सुरंग में प्रवेश करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि गुफा के प्रवेश द्वार का स्पष्ट दृश्य प्रदान करने वाले दो पत्थरों के पीछे लेटकर, जहाँ वे एक-दूसरे को छूते थे, मैं फिर से एक पैंथर की तरह रास्ता बनाने लगा। तभी मुझे एहसास हुआ कि अगर पैंथर इस दूसरी गुफा में होता, तो उसने मुझे पहली गुफा में पुकारते हुए ज़रूर सुना होता।

फिर भी, मैं बीस मिनट तक लगातार पुकारता रहा, जब तक मेरी आवाज़ बैठ नहीं गई। कुछ भी हलचल नहीं हुई; मेरे पीछे लेटे हुए दो पत्थरों के बीच से बहती हवा की सीटी की आवाज़ के अलावा कोई आवाज़ नहीं आई। पैंथर भी इस सुरंग में सहज महसूस नहीं कर रहा था।

जिस खामोशी से मैं आया था, उसी खामोशी से मैं वापस चला गया, पहाड़ी पर चढ़ गया और कुछ देर तक अपनी गर्दन को आराम देने के लिए चोटी पर बैठ गया। या तो पैंथर उत्तर-पूर्व में बची हुई गुफा में था या फिर वह पहाड़ी पर था ही नहीं।

आसमान साफ था और सूरज की तेज रोशनी पड़ रही थी, और जिस चट्टान पर मैं बैठा था वह इतनी गर्म थी कि थोड़ी देर में ही मुझे उठना पड़ा। इससे मेरी बेचैनी बढ़ गई और मैंने गुफा के बाकी हिस्से को भी निपटाने का फैसला किया।

मैंने आपको बताया था कि इस गुफा का प्रवेश द्वार पहाड़ी पर काफी ऊपर था, लेकिन मुझे वहां तक पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा।

यहां एक सामान्य गुफा थी, जिसका प्रवेश द्वार लगभग आठ फीट ऊंचा और शायद एक दर्जन फीट चौड़ा था। प्रवेश द्वार पर छिपने के लिए कोई बड़े पत्थर नहीं थे, लेकिन इसके विशाल आकार के कारण मैं कम से कम बीस फीट तक गुफा के अंदर स्पष्ट रूप से देख सकता था, जिसके बाद गुफा संकरी हो जाती थी और आगे देखना

असंभव हो जाता था।

पत्थरों की अनुपस्थिति में, मैंने प्रवेश द्वार के एक तरफ, अंदर से दिखाई न देने वाली जगह पर बैठने का फैसला किया और फिर से पुकारना शुरू किया। अगर आप मेरी तरह आधे घंटे से ज़्यादा समय तक पैंथर की कर्कश आवाज़ की नकल करते हैं, तो आप समझ जाएंगे कि मेरी आवाज़ क्यों बैठ गई थी, और अब मेरे मुंह से निकलने वाली आवाज़ किसी पैंथर की आवाज़ से ज़्यादा मगरमच्छ की आवाज़ जैसी क्यों लग रही थी। लेकिन मैंने अपनी पूरी कोशिश की, हालांकि मुझे इतना भरोसा नहीं था कि वे किसी भी पैंथर को, यहाँ तक कि एक अनुभवहीन शावक को भी, स्वीकार करेंगे।

हालांकि, मैं बीच-बीच में यह आवाज़ निकालता रहा, और पहले से कहीं ज़्यादा उत्सुकता और उम्मीद से गुफा के मुहाने पर झाँकता रहा। बस यही था; पैंथर यहीं होना चाहिए, वह ज़रूर बाहर आएगा।

लेकिन कुछ नहीं हुआ। न कोई आवाज़, न कोई हलचल, बिलकुल कुछ नहीं। तब मैं निराश हो गया। उस अकेले पैंथर ने मुझे चकमा दे दिया था; आखिर वह कुप्पा गुड्डा पर था ही नहीं।

उसी क्षण मुझे एक बहुत हल्की सरसराहट सुनाई दी। मैंने गुफा के अंदर अच्छी तरह देखने के लिए अपना सिर कोने से थोड़ा और बाहर निकाला। अंदर कुछ भी नहीं हिला और आवाज़ बंद हो गई थी। फिर मुझे वह आवाज़ दोबारा सुनाई दी। बहुत हल्की, लेकिन एक स्पष्ट सरसराहट।

मुझे अचानक ही समाधान सूझा और मैं तेज़ी से मुड़ा। वहाँ, मेरे पीछे, कुछ ही फीट की दूरी पर, अकेला पैंथर था, छलांग लगाने के लिए उसके पिछले पंजे उसके नीचे इकट्ठे थे, उसकी आँखों में घृणा की चमक थी और उसके होंठ एक खामोश गुर्राहट में खुले हुए थे।

घुटनों के बल रेंगते हुए, मैंने उस क्रोध से भरे चेहरे पर हड़बड़ी में गोली चलाई। पैंथर थोड़ी दूर आगे सरका, तब तक मैं उठ खड़ा हुआ और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में एक और गोली मार दी। दो भारी .470 गोलियों का, जो एक-दूसरे के इतने करीब और इतनी कम दूरी से लगीं, विनाशकारी प्रभाव पड़ा और उसका सिर खून से लथपथ होकर मस्तिष्क, हड्डी और मांस के ढेर में बदल गया।

और इस तरह अकेला पैंथर बिना कोई आवाज किए और बदला लेने का मौका मिलने से पहले ही मर गया। घास पर उसकी सरसराहट की उन दो हल्की आवाजों ने ठीक समय पर उसके आने का संकेत दे दिया था।

शायद, आखिरकार, उसने मुझ पर हमला नहीं किया होगा। आज तक मुझे नहीं पता कि उस गर्म दोपहर में वह कहाँ से आया था। हो सकता है कि वह उत्तर-पश्चिम की ओर जाने वाले किसी रास्ते में छिपा हुआ था, उसने मुझे देखा हो लेकिन जब मैं प्रवेश द्वार पर पुकार रही थी तो उसने खुद को प्रकट नहीं किया। फिर, मेरे जाने के बाद, शायद वह मेरे पीछे आया हो और मेरे द्वारा की जा रही अजीब आवाज़ों से आकर्षित होकर, जाँच करने के लिए पहाड़ी की चोटी पार कर गया हो।

दूसरी ओर, हो सकता है उसने अचानक हमला किया हो। नफरत और बदले की भावना से भरा हुआ, वह जानबूझकर मौके की तलाश में रहा हो। लेकिन कुल मिलाकर, जो कुछ हुआ उससे मैं खुश नहीं था, जिसकी शुरुआत उस मादा पैंथर को गोली मारने से हुई जो बच्चे देने वाली थी, और उसके बाद उसके अकेले साथी की हत्या से। काश मैंने इस वफादार जोड़े को अलग करने में कभी कोई भूमिका न निभाई होती। शायद मैं अपने पिता की तरह थोड़ा नरम दिल होता जा रहा हूँ!

8. 'वाइल्ड हेरिटेज' का एक पैर वाला डच व्यक्ति

मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों है, लेकिन लगभग हर डच व्यक्ति जिसे मैं जानता हूं या जिसके बारे में मैंने सुना या पढ़ा है, जिसने साहसिक जीवन जिया है, उसका केवल एक ही पैर है, क्योंकि उसने अपना दूसरा पैर अपने कारनामों के दौरान खो दिया है।

शायद आपने भी उनके चित्र या पेंटिंग देखी होंगी, एक पैर वाले डच समुद्री डाकू जिनकी मूंछें और दाढ़ी लंबी और भयंकर होती हैं, और उनसे भी लंबी, घुमावदार तलवारें होती हैं, जिन्हें वे खोपड़ी और हड्डियों वाले काले झंडे के नीचे लहराते हैं।

हाल ही में मैंने एक प्रसिद्ध एक पैर वाले डच व्यक्ति के बारे में पढ़ा, जिसकी

अड़तालीस पत्नियाँ थीं - मुझे लगता है कि यही संख्या थी! और तो और, वह काफी बूढ़ा था, जबकि उसकी सभी पत्नियाँ जवान थीं! अब मुझसे यह मत पूछिए कि इसका क्या नतीजा निकला, क्योंकि मुझे यकीन है कि मुझे नहीं पता। खैर, कहानी पर वापस आते हैं। हॉलैंड सरकार को उसका यह परिवार पसंद नहीं था और उसने उस व्यक्ति से कहा कि या तो वह अपनी सैंतालीस पत्नियों को छोड़ दे या देश छोड़ दे। इस अल्टीमेटम का जवाब तुरंत दिया गया। डच व्यक्ति ने कहा कि वह देश छोड़ देगा - और अपनी अड़तालीस पत्नियों को भी साथ ले जाएगा! खुशहाल परिवार कनाडा चला गया, जहाँ वे और भी खुश हो गए। उसने कुछ और पत्नियों से शादी की - और कुछ रेड इंडियन महिलाओं से भी - और कुल मिलाकर उनके तीन सौ से अधिक बच्चे हुए!

इस कहानी में मैं जिस डच व्यक्ति के बारे में बताने जा रहा हूँ, उसका केवल एक पैर है - लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, उसकी पचास पत्नियाँ और सैकड़ों बच्चे नहीं हैं। इसके अलावा, वह न तो कोई समुद्री डाकू है और न ही कोई साहसी व्यक्ति, बल्कि एक बहुत ही सम्मानित सज्जन, श्रीलंका का एक चाय बागान मालिक है। वह दक्षिण भारत में उन अनेक विदेशी पर्यटकों, वन्यजीव प्रेमियों और शिकारियों की लंबे समय से चली आ रही इच्छा को पूरा करने आया था, जो इस देश में एशियाई जंगलों के राजा - बाघ - को उसके अपने क्षेत्र में देखने, सुनने और उसका शिकार करने के लिए आते हैं, साथ ही यहाँ पाए जाने वाले अन्य शानदार जंगली जानवरों की प्रजातियों को भी देखना चाहते हैं।

कैप्टन जॉनक्लास को जंगल के बीचोंबीच एक शानदार झोपड़ी बनाने का अद्भुत विचार आया, जहाँ वह पश्चिम से आने वाले आगंतुकों का शाही अंदाज में स्वागत करते हैं, उन्हें बेहतरीन भोजन, परिवहन, ट्रैकर, चारा, मचान और सबसे बढ़कर बाघ से निपटने के तरीके पर अपने अद्वितीय अनुभव और मार्गदर्शन का लाभ प्रदान करते हैं।

यह झोपड़ी पूरी तरह से विशाल बांसों से बनी है, जिसमें बुनी हुई चटाई और छप्पर की छत है। जॉनक्लास अपनी जगह को 'जंगली विरासत' कहते हैं, और मुझे इससे बेहतर नाम नहीं सूझता। क्योंकि आसपास का वातावरण वाकई में काफी जंगली है, और वह अपने मेहमानों को अपने प्रवास के दौरान जो विरासत प्रदान करते हैं, वह ऐसी

विरासत है जिसके लिए शहर की नीरस जिंदगी में जीवन भर कैद रहने वाले कई दुर्भाग्यशाली लोग तरसते रहते हैं - खुले मैदान, जानवर, पक्षी, फूल और पेड़, दिन में जंगल की सुगंध और रात में उसकी गुप्त पुकार - बाघ की दहाड़, जंगली नर हाथी की चिंघाड़, और भयभीत सांभर और चित्तीदार हिरणों की डर से भरी चेतावनी भरी आवाजें।

ये विचार पश्चिमी आगंतुक के मन में तब आते हैं जब वह रात में अपनी खिड़की के पास खड़ा होकर अंधेरे में देखता है, जो केवल हजारों जुगनुओं की टिमटिमाहट से रोशन होता है, और सोचता है कि उन भयानक आवाजों के स्रोत कितने करीब हो सकते हैं।

'वाइल्ड हेरिटेज' में जंगली पौधों और झाड़ियों से सजा एक सुंदर छोटा सा बगीचा है; चांदनी रात में छप्पर वाले बरामदे के नीचे आरामदायक बेंत की कुर्सी पर बैठे हुए, शायद आपको दो सौ गज दूर नदी की ओर बढ़ते हुए जंगली हाथियों का एक विशालकाय झुंड दिखाई दे, या शायद वे जॉनक्लास के बगीचे में घुसपैठ करने की तैयारी में उसकी बांस की बाड़ को तोड़ने में व्यस्त हों। लेकिन अगर आपने पहले कभी चांदनी में हाथी नहीं देखा है, तो आपको ध्यान से देखना होगा; क्योंकि जो आप देखेंगे वह हाथी जैसा बिल्कुल नहीं लगेगा। आपको लगेगा कि अचानक बगीचे में कुछ बड़े-बड़े पत्थर फेंक दिए गए हैं, या शायद आपको लगेगा कि झाड़ियाँ उस रहस्यमयी और चमकदार रोशनी में हिल रही हैं।

'वाइल्ड हेरिटेज' नीलगिरी पर्वतमाला की तलहटी में बसे खूबसूरत छोटे से गांव महवनहल्ला में स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 3,000 फीट की ऊंचाई पर एक पठार पर स्थित है और ऊटाकामंड हिल स्टेशन से महज पंद्रह मील दूर है। यह इलाका घने जंगल से घिरा हुआ है, जो दक्षिण में मुख्य पर्वत श्रृंखला से निकला हुआ है और पश्चिम दिशा में बाघ, बाइसन और जंगली भेड़ों के शिकार के लिए बेहतरीन जगह है। वहीं, ऊंची चट्टानों पर चालाक आइबेक्स, जिसे अक्सर 'सैडल-बैक' कहा जाता है, पाया जाता है, जो शिकारी के शिकार कौशल को चुनौती देता है। महवनहल्ला के पूर्व में सेगुर नदी है, और उससे आगे मोयार नदी तक और फिर उत्तरी कोयंबटूर जिले के जंगलों तक मीलों तक लगभग अछूता जंगल फैला हुआ है।

यह हाथी, बाघ और तेंदुआ का घर है, और उनके शिकार, सांभर, चित्तीदार हिरण, सूअर और जंगली भेड़ों के कई झुंड यहाँ बहुतायत में पाए जाते हैं। वास्तव में 'वन्य विरासत' रोमांच या शांति की तलाश करने वाले आगंतुकों के लिए हर मायने में एक स्वर्ग है, जहाँ वे धैर्यपूर्वक जानवरों का पीछा कर सकते हैं, उन्हें देख सकते हैं, उनकी तस्वीरें खींच सकते हैं या उनका शिकार कर सकते हैं।

मैं आपको जो कहानी सुनाना चाहता हूँ, वह कप्तान के उन कारनामों से संबंधित है जब वह महवनहल्ला के धूर्त स्त्रीद्वेषी, एक अकेले नर बाघ को मारने के लिए निकला था, जो वर्षों से सेगुर नदी और पश्चिम से उसमें मिलने वाली छोटी महवनहल्ला धारा के किनारे मंडराता रहता था, और कैसे उसकी मुलाकात एक दांत वाले दुष्ट हाथी से हुई जिसने बाद में नीलगिरी पर्वतमाला में किलकोटागिरी के एक प्रसिद्ध बागान मालिक हेंडरसन को कुछ कोटा आदिवासियों के साथ मार डाला।

जॉनक्लास, अपनी गंभीर शारीरिक अक्षमता के बावजूद, कृत्रिम पैर की सहायता से अच्छी तरह से अपना काम चला लेते हैं। यह पैर लकड़ी का है या एल्युमिनियम का, यह मुझे नहीं पता, और मैंने उनसे पूछने में हमेशा संकोच किया है। लेकिन इसकी बदौलत वे जंगल के दुर्गम रास्तों पर भी अपनी स्टैंडर्ड कार चला पाते हैं।

अगर कार से जाने का कोई रास्ता नहीं होता, तो जॉनक्लास अपने 'वाइल्ड हेरिटेज' अस्तबल में रखे दो रोएंदार टट्टुओं में से एक पर सवार होकर जंगल में निकल जाता है, शायद पूरी रात और दिन के लिए - या शायद दो रात और दिन के लिए! वह कहाँ जाता है? मुझे नहीं पता, लेकिन जब कप्तान वहाँ पहुँचता है तो टट्टू की हालत देखकर लगता है कि उसने काफ़ी लंबी दूरी तय की है।

जंगल में कई तरह की सीढ़ियाँ बनाई जाती हैं जिनका इस्तेमाल शिकारी पेड़ों पर ऊँचे बनाए गए मचानों तक पहुँचने के लिए करते हैं। बेशक, हम संभव हो तो ऐसी किसी सहायता के बिना सीधे पेड़ पर चढ़कर मचान तक पहुँच जाते हैं। लेकिन यह हमेशा संभव नहीं होता, खासकर तब जब पेड़ का तना काफी दूर तक सूखा हो, शाखाएँ न हों, या उसका आधार चौड़ा हो, या वह काँटेदार हो, या बाँसों का झुंड हो, जो कि हाथियों के जंगल में मचान बाँधने के लिए सबसे खराब जगहों में से एक है।

जब हम सीढ़ी का इस्तेमाल करते हैं, तो बड़ी चतुराई से करते हैं! हममें से कुछ लोग

रस्सी की सीढ़ी साथ रखते हैं - सूती रस्सी के समानांतर टुकड़े जिन पर नौ इंच चौड़े और एक फुट की दूरी पर लकड़ी के डंडे लगे होते हैं। हममें से कुछ लोग मौके पर ही सीढ़ी बना लेते हैं, खासकर बांस के जंगल में, बस एक विशाल तना काटकर उससे निकली हुई पत्तियों को अलग कर देते हैं। फिर आपको बस इतना करना होता है कि तने के मोटे सिरे को ज़मीन पर मज़बूती से टिका दें और दूसरे सिरे को अपनी मचान (सीढ़ी) के सहारे रखें और फिर बंदर की तरह ऊपर चढ़ जाएं, पत्तियों के छोटे तनों पर हाथ-पैर रखकर।

लेकिन कप्तान विकलांग थे, इसलिए वे अपने इरिला ट्रैकर्स से दो बांस के तनों को काटकर और रस्सियों व जंगली लताओं से कुशलतापूर्वक जोड़कर एक असली सीढ़ी बनवाते थे। जब सीढ़ी बनकर तैयार हो जाती, तो वे उनमें से एक पर चढ़कर पूरी रात बैठे रहते, अपने कटे हुए पैर की तकलीफ के बावजूद, मचान में सिकुड़े हुए, लेकिन किसी मूर्ति की तरह शांत और स्थिर, जब तक कि भोर नहीं हो जाती, जंगली मुर्गों की बांग उन्हें नीचे उतरने और लंगड़ाते हुए अपनी गाड़ी तक जाने का न्योता नहीं देती, जिसे उन्होंने पिछली शाम को छिपाया था, शायद आधा मील दूर। या, यदि इलाका बहुत दुर्गम होता, तो कप्तान एक सेवक के साथ पिछली शाम को टट्टू पर सवार होकर मचान पहुँच जाते, फिर टट्टू को ट्रैकर को यह निर्देश देकर भेज देते कि वह सुबह होते ही उसे लेकर वापस आए।

सीलोन में अपने चाय बागान के कारोबार से छुट्टी लेकर संयोगवश महवनहल्ला घूमने आए कप्तान को वह जगह इतनी पसंद आ गई कि उन्होंने हर साल सर्दियों के अंत में वहाँ जाकर अपने वार्षिक बाघ का शिकार करने की आदत बना ली। वे मुझे बताते हैं कि सीलोन के जंगल हर तरह से खूबसूरत हैं, लेकिन उनमें सिर्फ एक चीज की कमी है। मेरे जैसे जंगल प्रेमी के लिए, यही कमी उन्हें सही मायने में जंगल कहलाने से रोकती है - वहाँ बाघ नहीं हैं!

इस नाटक के एक मुख्य पात्र और उस स्थान से आपका परिचय कराने के बाद, जहाँ यह घटना घटी, मैं अब आपको दूसरे मुख्य पात्र के स्वभाव और कार्यों के बारे में कुछ जानकारी दूंगा, जिसे जॉनक्लास ने 'महवनहल्ला का स्त्रीद्वेषी' कहा था।

वह एक बाघ था जिसने लगभग हर तीन महीने में एक बार, या ज़्यादा से ज़्यादा एक

या दो सप्ताह कम समय में, महावनहल्ला आने की आदत बना ली थी, जो उसके 'बीट' का हिस्सा था, और कप्तान आस-पास के इरिला और बडागा तथा कुछ मील उत्तर में करुम्बा लोगों से जो जानकारी जुटा सका, उसके अनुसार उसका क्षेत्र काफी विस्तृत था।

यह जानवर मोयार नदी के किनारे स्थित मुदुमलाई वन्यजीव अभ्यारण्य में सक्रिय देखा गया था। अभ्यारण्य का केंद्र उत्तर में लगभग आठ मील दूर स्थित तिप्पाकाडु की छोटी वन चौकी थी। यहाँ से वह मोयार नदी की घाटियों के साथ पूर्व की ओर बढ़ता, हुंडी नामक स्थान पर बने बांध के किनारे से होते हुए, उसी नदी के साथ आगे बढ़ता जो यहाँ नीलगिरी पर्वतमाला को कोयंबटूर जिले के जंगलों से अलग करती थी, और बेनूर नामक गाँव तक जाता था। यह उसकी क्षेत्र की सबसे पूर्वी सीमा प्रतीत होती थी। बेनूर से, वह नीलगिरी पर्वतमाला के आधार के निकट से होते हुए, अनाइकुट्टी वन लॉज, सेगुर में केले के बागान से गुजरता हुआ, उत्तर-पश्चिम दिशा में सेगुर नदी के किनारे-किनारे महवनहल्ला तक वापस आता था, जहाँ बाघ दस दिनों से लेकर पखवाड़े भर तक डेरा डालता था, और फिर मुदुमलाई अभ्यारण्य में अपने शुरुआती बिंदु पर वापस जाने के लिए यात्रा का अंतिम चरण पूरा करता था। यह अंतिम चरण महवनहल्ला धारा के किनारे-किनारे था, जो कि जैसा कि मैंने कहा है, सेगुर नदी की एक सहायक नदी थी, और फिर मासिनीगुडी के बड़े कस्बे के बाहरी इलाके से होकर गुजरता था, जो मुदुमलाई अभयारण्य में तिप्पाकाडु चौकी से पांच मील से भी कम दूरी पर स्थित है, और यह चौकी लगभग इस बाघ के क्षेत्र की पश्चिमी सीमा बनाती है।

मुझे इस बात का पूरा एहसास है कि जब मैं बाघ के शिकार के रास्ते का इतना विस्तृत वर्णन करता हूँ, तो कई पाठक सोचेंगे कि मैं इतना सटीक कैसे हो पाया। खैर, जहाँ तक मेरा सवाल है, इसका जवाब आसान है। कप्तान ने मुझे बताया था। लेकिन उनके लिए, या किसी भी अन्य शिकारी के लिए, यह जानकारी जुटाना बेहद मुश्किल रहा होगा, जिसके लिए जंगल में स्थायी रूप से रहने वाले दर्जनों आदिवासियों से धैर्यपूर्वक पूछताछ और जिरह करनी पड़ी होगी - इस मामले में, इरिला चरवाहे और यात्री जो मासिनीगुडी कस्बे में हर रविवार को लगने वाले साप्ताहिक मेले, जिसे 'शैंडी' कहा जाता था, में इकट्ठा होते थे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रत्येक रविवार को यह बाजार लगने से कप्तान को अपने

काम में मदद मिली, क्योंकि पंद्रह मील के दायरे में रहने वाले लगभग हर पुरुष, महिला और बच्चे यहाँ आते थे; वे चावल और अन्य अनाज, भंडार और हर संभव प्रकार की आवश्यक वस्तुओं के अपने साप्ताहिक भंडार के लिए आते थे।

इसलिए जॉनक्लास खुद रविवार को शराबखाने जाते, दिन भर लंगड़ाते हुए घूमते और हर किसी से बाघ, उसकी आदतों और ठिकाने के बारे में पूछते। किसी अपराधी का पीछा करने वाला कोई भी जासूस कप्तान से ज़्यादा मेहनती नहीं हो सकता था, और इसी वजह से वे इस जानवर और उसकी आदतों के बारे में काफ़ी जानकारी इकट्ठा कर पाए, और तीन महीनों में चक्कर पूरा करके वापस शुरुआती बिंदु पर लौटने के दौरान तय किए गए रास्ते का काफ़ी सटीक नक्शा बना पाए।

मैंने पिछली कहानियों में बताया है कि बाघ आम तौर पर भोजन की तलाश में एक विस्तृत क्षेत्र में लगभग एक निश्चित मार्ग पर घूमते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में 'बाघ-क्षेत्र' कहा जाता है। उनके भोजन में जंगली जानवर - उनका प्राकृतिक शिकार - घरेलू मवेशी, जिन्हें वे आसानी से विकल्प के रूप में खा लेते हैं जब शिकार कम या अनुपलब्ध होता है, और मनुष्य शामिल हो सकते हैं, जो उनका प्राकृतिक भोजन नहीं हैं, लेकिन असाधारण या विवश परिस्थितियों में वे उन पर भी हमला करना सीख सकते हैं।

इस विस्तृत क्षेत्र में बाघ के रहने का कारण स्पष्ट है। यदि बाघ एक ही स्थान पर रहता, तो जल्द ही उसके लिए खाने को कुछ नहीं बचता। कुछ भोजन तो खत्म हो जाता; और जो बचता वह इतना सतर्क होता कि उसे सोते हुए पकड़े जाने का डर रहता। बाघों द्वारा एक निश्चित क्षेत्र का अनुसरण करने का कारण भी उतना ही स्पष्ट है, और कई मामलों में तो वे एक ही रास्ते, पगडंडी, आग की लकीरें और नदी के मार्ग का भी अनुसरण करते हैं। इस विधि से वह इलाके की भौगोलिक स्थिति को समझ लेता है। वह इन चीजों को याद रखता है, और परिचित स्थानों का भूगोल उसे शिकार में मदद करता है। यदि किसी बाघ को ऐसे जंगल में छोड़ दिया जाए जहाँ वह पहले कभी नहीं गया हो, तो उसे उस जंगल और उन स्थानों को समझने में काफी समय लगेगा जहाँ शिकार या मवेशी पाए जाते हैं।

शिकार करना, बाकी सब चीजों की तरह, जब अभ्यास किया जाता है और पूर्णता

प्राप्त कर ली जाती है, तो एक ललित कला बन जाता है, और बाघ निश्चित रूप से एक पूर्णतावादी है।

कप्तान को इस बाघ के बारे में कुछ ऐसी बातें पता चलीं जो बाघों में काफी असामान्य थीं। मासिनीगुडी में उन्होंने जिन इरिला और केशवा समुदाय के लोगों से पूछताछ की, उनमें से कई ने बताया कि इस बाघ की आदत थी कि वह अपनी ही प्रजाति के दूसरे बाघों, विशेषकर युवा बाघिनों से लड़ता था और उन्हें मारकर खा जाता था। मैसूर राज्य की सीमा के ठीक भीतर, तिप्पाकाडु से तीन मील दूर कोयला जलाने का काम करने वाले एक करुंबा और उनकी पत्नी ने बताया कि एक रात दो बाघों के बीच लड़ाई शुरू हुई और लगभग दो घंटे तक चलती रही। अगली सुबह उन्हें अपनी झोपड़ी से एक फर्लांग की दूरी पर एक मृत बाघिन का शव मिला। उसे एक बाघ ने मारा था और उसका कुछ हिस्सा खा लिया था, जिसके बड़े-बड़े पदचिह्न शव के चारों ओर हर जगह दिखाई दे रहे थे।

दूरदराज के बेनूर से इरिला और केशवा ने लगभग एक जैसी कहानी सुनाई, जबकि अनाइकुट्टी स्थित वन बंगले के चौकीदार ने बताया कि एक शाम जब वह बंगले वाली पहाड़ी से नीचे नदी में अपना पानी का घड़ा भरने गया, जो पहाड़ी के आधार के चारों ओर घूमती है, तो वह एक बाघिन को देखकर चौंक गया जो विपरीत किनारे पर झाड़ियों से निकल आई और उस पर जरा भी ध्यान दिए बिना पानी पीने लगी।

वह इतना भयभीत था कि उसे डर था कि उसकी जरा सी भी हरकत उसकी उपस्थिति का भेद खोल देगी, इसलिए वह पेड़ के तने के पीछे पत्थर की तरह खड़ा रहा, तभी अचानक एक बाघ ने पीछे से पानी पी रही मादा पर झपट्टा मारकर उसकी समस्या का समाधान कर दिया।

क्रोधित बिल्लियाँ एक-दूसरे पर गुर्रा रही थीं, काट रही थीं और जानलेवा लड़ाई में एक-दूसरे को कुचल रही थीं, जिससे चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। उनकी इस व्यस्तता का फायदा उठाते हुए चौकीदार भागकर बंगले में वापस चला गया और अपने घर जैसे दिखने वाले बाहरी कमरे में खुद को बंद कर लिया। बंद और कसकर बंद खिड़की से लड़ाई की आवाजें सुनाई दे रही थीं, और आधे घंटे के भीतर ही एक बिल्ली के मरने की आवाज सुनाई दी।

अगले दिन सुबह वह जीवित बचे व्यक्ति से मिलने के डर से बाहर नहीं निकला, लेकिन अगले दिन, जब गिद्धों का एक झुंड ऊपर आकाश में उड़ने और चक्कर लगाने लगा, और उसने उनके पंखों से टकराती हवा की सरसराहट और खड़खड़ाहट सुनी क्योंकि वे दावत के लिए तेजी से नीचे उतर रहे थे, तो चौकीदार समझ गया कि उन बिल्लियों में से एक मर चुकी है।

वह डरते-डरते आगे बढ़ा, आकाश के सफाईकर्मी जहां इकट्ठा हो रहे थे, उस स्थान की ओर सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाते हुए, और वहां उसे बाघिन के फटे-पुराने अवशेष मिले, जो उस बाघ द्वारा तीन-चौथाई से अधिक खा लिए गए थे जिसने उसे मार डाला था।

इन कहानियों को सुनकर कप्तान ने तुरंत बाघ को 'महवनहल्ला का स्त्रीद्वेषी' उपनाम दे दिया, जो वास्तव में बहुत उपयुक्त था, हालांकि वह जानवर किसी भी तरह से उस छोटे से गांव तक ही सीमित नहीं था।

अपनी ही प्रजाति की मादाओं को मारकर खा जाने की प्रवृत्ति को छोड़कर, यह बाघ बिल्कुल आदर्श प्रतीत होता था। उसने किसी भी इंसान को नुकसान नहीं पहुँचाया; वास्तव में, जंगल में या किसी सुनसान सड़क या पगडंडी पर उससे मिलने वाले कुछ लोगों की मौजूदगी को उसने पूरी तरह से अनदेखा कर दिया। उसने गायों और भैंसों को बड़ी संख्या में नष्ट किया, लेकिन कुछ मौकों पर जब चरवाहों ने हिम्मत जुटाकर उसे मारे गए जानवर से दूर भगाने की कोशिश की, तो उसने एक ज़ोरदार दहाड़ मारी जिससे वे तुरंत भाग गए, और उन्हें अपने भोजन में शामिल करने का कोई प्रयास नहीं किया।

'वाइल्ड हेरिटेज' के दौरों के दौरान यह सारी जानकारी हासिल करने के बाद, और अपने कई सूत्रों से मिली सटीक तारीखों के साथ इलाके के नक्शे पर बाघ के क्षेत्र को सावधानीपूर्वक अंकित करने के बाद, जॉनक्लास बाघ के अगले आगमन की संभावित तारीख का लगभग दो सप्ताह का सटीक अनुमान लगाने में सक्षम हो गए। इसी आगमन पर उन्होंने बाघ को गोली मारने का निश्चय किया। नक्शे के अध्ययन से पहले ही निकाले गए 28 दिनों के अतिरिक्त (लगभग) समय को ध्यान में रखते हुए, जॉनक्लास ने 'वाइल्ड हेरिटेज' में पूरी व्यवस्थित तरीके से अपना अभियान शुरू किया।

उसने अपनी आक्रमण योजना की शुरुआत चार युवा भैंसों को खरीदकर की और उन्हें 'वाइल्ड हेरिटेज' से लगभग दो मील के दायरे में चारों दिशाओं में चारा के रूप में बांध दिया। प्रत्येक भैंस के ऊपर कप्तान की व्यक्तिगत देखरेख में एक मचान खड़ा किया गया था।

उत्तर की ओर वाली बछिया को महवनहल्ला नाले के किनारे बांधा गया था, जो कि जैसा कि मैंने आपको बताया है, सेगुर नदी की एक सहायक नदी है। पूर्व की ओर वाली बछिया को एक रेतीले नाले के तल पर बांधा गया था, जिसमें इस और अन्य बाघों के पदचिह्न अक्सर पाए जाते थे। तीसरी बछिया को कप्तान की झोपड़ी के ठीक दक्षिण में, लगभग बारह फर्लांग की दूरी पर, एक घास के मैदान के किनारे पर रखा गया था, जो एक तरफ सेगुर नदी और दूसरी तीन तरफ से घने बांस के जंगल से घिरा हुआ था। चौथी और आखिरी बछिया को महवनहल्ला के पश्चिम में पहाड़ियों की निचली ढलानों पर बांधा गया था, और यह चारों में सबसे दूर थी, कम से कम दो मील दूर।

उस रात कप्तान सो नहीं सका, क्योंकि उसे अपनी योजनाओं की सफलता और चारों स्थानों में से कम से कम एक पर शिकार मिलने की प्रबल आशा थी। लेकिन सुबह निराशा ही हाथ लगी, जैसा कि अक्सर जीवित चारे और बाघों के मामले में होता है।

चारों बछियाएँ जीवित थीं।

डच लोग आम तौर पर बेहद जिद्दी होते हैं, और जॉनक्लास भी इसका अपवाद नहीं था। वह रात-रात भर अपनी भैंसों को पूर्वनिर्धारित स्थानों पर बांधे रखता था और बछियों को भी बदलता रहता था। उसका विचार था कि अगर कोई बाघ चुपके से किसी भैंस के पास आता और उसे दूर से देखता रहता, लेकिन बांधे हुए भैंस को देखकर शक के चलते उसे मारता नहीं, तो कम से कम हर बार उसे एक अलग जानवर तो मिलेगा। कप्तान का मानना था कि इससे बाघ का शक कुछ हद तक कम हो जाएगा और आखिरकार वह उनमें से किसी एक को मारकर खा लेगा।

इसके अलावा, कप्तान ने हर रात बारी-बारी से अलग-अलग मचानों में जागने का निश्चय किया, ताकि वह उन चारों मचानों से अच्छी तरह परिचित हो सके और उस बहुप्रतीक्षित दिन का इंतज़ार कर सके जब वह बाघ, जिसकी वह तलाश कर रहा था,

आखिरकार शिकार करने का फैसला करेगा। इसी उद्देश्य से, वह एक दोपहर लगभग तीन बजे अपने एक टट्टू पर सवार होकर 'वाइल्ड हेरिटेज' के दक्षिण में बने मचान की ओर चल पड़ा, जहाँ, जैसा कि मैंने आपको बताया है, एक तरफ सेगुर नदी बहती थी और दूसरी तीन तरफ बाँस का जंगल था।

मुझे लगता है कि उस यादगार रात की घटना को सुनने में आपको अधिक रुचि होगी यदि मैं कैप्टन जॉनक्लास को खुद उस कहानी को अपने शब्दों में बताने दूं:

'जैसा कि आप जानते हैं, एंडरसन, चारा और मचान लगाने के लिए कोई विशेष स्थान चुनना और यह निश्चित रूप से कहना बहुत मुश्किल है कि बाघ वहीं शिकार करेगा। यह काफी हद तक भाग्य की बात है, बाकी सब बाघ की मर्जी पर निर्भर करता है। लेकिन मेरे अनुभव के अनुसार, या कम से कम नीलगिरी क्षेत्रों में मैंने जो पाया है, मचान को बार-बार बदलना एक गलती है। मैंने खुद भी एक बार ऐसा किया था, और मैंने पाया कि मचान को दूसरी जगह ले जाने के ठीक बाद, एक-दो दिन में पगचिह्नों से पता चल जाता था कि जिस पेड़ के नीचे मैं बैठा था, उसके ठीक नीचे से एक बाघ गुजरा था।'

'बात कुछ इस तरह हुई कि, बाकी सभी मचानों पर कई रातों तक जागने के बाद, मैं दोपहर लगभग तीन बजे "वाइल्ड हेरिटेज" से एक टट्टू पर सवार होकर चेडर पट्टी के पास वाले मचान के लिए निकल पड़ा, जो मेरी पहली पसंद थी। मैं टट्टू को वापस लाने के लिए बंता, जो कि एक ट्रैकर है, को अपने साथ ले गया।'

पिछली बार जब मैं इस मचान पर आया था, तो मैंने अपनी स्टैंडर्ड कार का इस्तेमाल किया था, क्योंकि एक फर्लांग तक का रास्ता मोटरगाड़ी के चलने लायक था। उसके बाद मैंने कार को चेडर पट्टी और नदी के नीचे उस ऊंचे बबूल के पेड़ के आसपास उगने वाली छोटी बोरम झाड़ियों के बीच छिपा दिया था, जहां दो साल पहले तुमने और मैंने शाम को मादा भालू और उसके बच्चे को चरते हुए तस्वीरें ली थीं। वहां से मैं मचान तक पैदल गया। रात में हाथियों का एक झुंड नदी पार कर रहा था, और मेरी जगह से मैं उन्हें डालियाँ तोड़ते और बोरम झाड़ियों को कुचलते हुए सुन सकता था, क्योंकि वे उस जगह की ओर चर रहे थे जहां मैंने स्टैंडर्ड कार खड़ी की थी। उसका रंग भद्दा सैल्मन था, इसलिए मुझे पता था कि वे उसे देख ही लेंगे, और पूरी संभावना थी

कि सुबह तक वह कार की बजाय पिचकी हुई सार्डिन के डिब्बे जैसी दिखेगी। यह मुझे याद दिलाता है; मुझे उस घटिया चीज़ को खाकी, या हरे, या दोनों रंगों में रंगवाना होगा, ताकि वह कम दिखाई दे। जंगल में छलावरण, तुम्हें पता है!

'मैं कार के टुकड़े-टुकड़े होने की आवाज़ सुनकर बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, लेकिन यह जानकर आश्चर्य हुआ कि हाथियों ने उसे नहीं छुआ, हालांकि वे सौ गज की दूरी तक आ गए थे। इसीलिए मैंने इस बार टट्टू का इस्तेमाल किया।'

खैर, आगे बढ़ते हैं। बंता ने इस मचान को बांस के एक झुंड पर ज़मीन से लगभग बीस फीट ऊपर बांध रखा था। आपकी तरह मुझे भी बांस के झुंड पर बने मचान पसंद नहीं हैं, लेकिन इस मचान को बनाने के लिए उस आदमी की तारीफ करनी ही पड़ेगी। सबसे पहले तो, इस तक जाने वाली सीढ़ी बड़ी ही खूबसूरती से बनाई गई थी, उसके पायदान एक-दूसरे के काफी करीब थे, जिससे मुझे एक पैर से ऊपर-नीचे जाने में कोई दिक्कत नहीं हुई। और मचान पर कम से कम चार लोगों के बैठने की जगह थी। यह बहुत आरामदायक था।

'लगभग ग्यारह बजे तक कुछ नहीं हुआ, तभी नदी के दूसरी ओर एक बाघ दहाड़ने लगा। आवाज से अंदाजा लगाया जा सकता था कि वह मेरे बैठने की जगह से कुछ सौ गज की दूरी पर था।'

लगभग तुरंत ही, एक हाथी ने चिंघाड़ना शुरू कर दिया—आप जानते हैं, क्रोध और भय की वह तीखी आवाज जो वे तब निकालते हैं जब वे तय नहीं कर पाते कि क्या करना है। और हर बार जब बाघ दहाड़ता, तो हाथी जवाब में चीखता।

यह मनोरंजक और रोमांचक भी था, क्योंकि हालांकि बाघ पास आता हुआ प्रतीत नहीं हो रहा था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि हाथी आ रहा था। बाघ लगातार दहाड़ रहा था और हाथी चीखता हुआ करीब आता जा रहा था, और उसके तुरंत बाद, मेरे पीछे बांसों के ज़ोरदार टूटने और सरसराहट के साथ, हाथी ने अपने आगमन की घोषणा कर दी।

'उसके बाद तो घटनाएँ घटने लगीं! यह हाथी बाघ की दहाड़ों से इतना परेशान क्यों हो गया, यह मेरी समझ से परे है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह या तो बाघ की धारियों से बुरी तरह डर गया था या फिर भयंकर क्रोध में था - शायद दोनों का

मिश्रण था।'

'वह बार-बार तुरही बजा रहा था, उसकी आवाज़ मेरे कान के पर्दों को चीर रही थी, जब वह उस बांस के झुंड के चारों ओर मंडरा रहा था जिस पर मैं बैठा था और फिर मेरे भैंस के शिकार के सामने आ गया! मैं देख सकता था कि उसका केवल एक ही दांत था, क्योंकि वह उसके गहरे रंग के शरीर के विपरीत एकदम सफेद चमक रहा था।'

'बेचारी भैंस बाघ की दहाड़ और हाथी के शोर से बुरी तरह डर गई होगी। मैंने एक दबी हुई सी रंभाने की आवाज और खुरों की पटकने की आवाज सुनी, क्योंकि वह रस्सी तोड़ने के लिए बेताब होकर छटपटा रही थी और संघर्ष कर रही थी।'

'तभी हाथी ने उसे देख लिया!'

'मैं आपको बताना भूल गया था कि यह पूर्णिमा के एक या दो दिन बाद की बात थी। मेरे नीचे जो दृश्य घटित हो रहा था, वह उस झुरमुट में बांस के हिलते हुए तनों की हल्की-हल्की छाया के बावजूद स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, जहाँ मैं बैठा था।'

अपनी उतावली जल्दबाजी में हाथी बछिया से टकराने ही वाला था कि उसे देख भी नहीं पाया। फिर उसने अचानक तेज़ी से मुड़कर ब्रेक लगाया और उसी समय पिछले पंद्रह मिनटों से निकल रही चीखों से भी कहीं ज़्यादा तीखी चीख निकाली।

उसके बाद उसका व्यवहार सचमुच असाधारण था। उसने अपने दाहिने अगले पैर से ज़मीन को तेज़ी से ऊपर-नीचे रगड़ा, अपनी सूंड से रेत इकट्ठा की और उसे बछिया की ओर फेंक दिया। वह तेज़ी से भैंस के पास दौड़ा, एक फुट की दूरी पर एकदम रुक गया, और फिर हास्यास्पद ढंग से पीछे हटते हुए पहले की तरह रेत उछालने लगा। उसने ऐसा दो-तीन बार किया, और मैंने तय कर लिया कि एक-दो मिनट के भीतर वह मेरे बेचारे शिकार को सींगों से मारकर या कुचलकर मार डालेगा।

'मैंने हाथी को गोली मारने के बारे में सोचा था, लेकिन इससे वन विभाग के साथ बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाती, क्योंकि उस समय वह प्रतिबंधित बदमाश नहीं था। मेरा लाइसेंस रद्द हो जाता और साथ ही भारी जुर्माना भी भरना पड़ता।'

अगले ही पल, समस्या मेरे हाथों से निकलकर एक बेहद अप्रत्याशित तरीके से हाथी

के हाथ में चली गई। क्योंकि बछिया के दूसरी तरफ झाड़ियों से बाहर कौन निकला, और वह था स्वयं बाघ!

'अगर हाथी पहले उत्तेजित था, तो अब वह पागलों की तरह हिंसक हो गया! उसने अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर तीन बार पटका, जिससे वैसी आवाज़ आई जैसी आपने सुनी होगी, मानो किसी जस्ता की चादर को तेज़ी से मोड़ा जा रहा हो, और फिर वह घूमकर बाघ की ओर मुड़ गया। बाघ आधा झुका हुआ था और बछिया और हाथी दोनों को देख रहा था। मैं लगभग समझ सकता था कि उसके दिमाग में क्या चल रहा था। वह भूखा था और भैंस को खाना चाहता था, लेकिन मांस के उस उन्मादी पहाड़ की नज़दीकी मौजूदगी ने उसे रोक दिया।'

कुछ क्षणों बाद बाघ ने इस अवांछित दर्शक को भगाने का फैसला किया और इतनी ज़ोरदार दहाड़ें मारीं कि जिस मचान पर मैं बैठा था वह भी हिल गया। जवाब में, जंबो मैदान के दूसरे छोर पर चला गया और अपनी पूरी ताकत से चीखा और चिंघाड़ा। आप कल्पना कर सकते हैं कि उसके बाद कितना शोरगुल हुआ होगा।

'इस पूरे समय मैं आसानी से बाघ को गोली मार सकता था, लेकिन मैंने ऐसा न करने का फैसला किया, क्योंकि जिस तरह से हालात बन रहे थे, उससे ऐसा लग रहा था कि दोनों जानवरों के बीच एक भयंकर लड़ाई होने वाली है, और मैं उसे बहुत देखना चाहता था।'

'सबसे पहले बाघ का गुस्सा फूट पड़ा। खांसते हुए दहाड़ के साथ उसने हाथी पर हमला कर दिया, लेकिन जैसे ही वह कुछ ही फीट की दूरी पर पहुंचा और उसके सिर या पीठ पर छलांग लगाने ही वाला था, हाथी सर्कसों की तरह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और फिर बाघ को अपने अगले पैरों के नीचे कुचलने या अपनी सूंड से पकड़ने की कोशिश में जमीन पर उतर आया।'

लेकिन स्ट्राइप्स बहुत फुर्तीला था! वह फुर्ती से एक तरफ कूद गया, बारी-बारी से अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया, और अपने आगे के पंजों के फैले हुए नाखूनों से हाथी की सूंड को तेजी से दाएं और बाएं घुमाने लगा।

जंबो चीख उठा, अपनी सूंड में दुबककर खतरे से बच गया, और फिर गुस्से में बाघ पर हमला कर दिया, उसे अपने इकलौते दांत से भेदने की कोशिश की।

लेकिन यह व्यर्थ की उम्मीद थी। बाघ एक बार फिर एक तरफ हट गया, और इस बार उस खतरनाक दांत के ऊपर से छलांग लगाकर सीधे हाथी के माथे पर जा गिरा, जहाँ वह कसकर चिपक गया, अपने दांतों और अगले पंजों के नाखूनों से हाथी की गर्दन की मोटी खाल को मजबूती से पकड़े रहा, जबकि उसके पिछले पैरों के पंजे उस बेचारे जानवर की सूंड के ऊपरी हिस्सों को खरोंचते रहे।

'लड़ाई वहीं खत्म हो गई थी, लेकिन अपनी गर्दन और सूंड पर हमला कर रहे घुसपैठिए से छुटकारा पाने की हताश कोशिश में हाथी ने सही काम किया। झुककर, वह लगभग अपने सिर के बल खड़ा हो गया, और अपने शरीर का भारी वजन बाघ पर डाल दिया।'

उस भयानक दबाव से बचने के आखिरी प्रयास में, बाघ ने हाथ छोड़ दिया और अब अपना सारा ध्यान नीचे से निकलने की कोशिश में लगा दिया। वह कुछ हद तक सफल हो गया और आधा मुक्त हो गया था, तभी हाथी के अगले पैरों में से एक उस पर आ गिरा।

अंततः अपने शिकार को अपने पैर के नीचे पाकर क्रोधित हाथी ने स्थिति का पूरा फायदा उठाया। उसने अपना सिर बाघ की ढीली पकड़ से छुड़ा लिया और साथ ही अपने बचे हुए अगले पैर को बाघ के शरीर के दूसरे छोर पर रख दिया। अब उसका शिकार असहाय होकर उसके नीचे कुचला हुआ था।

'बाघ की दहाड़ें भयानक, घुरघुराहट भरी हांफहटों में बदल गईं जब उस भयानक सूंड ने खुद को खोला, बाघ के शरीर के नीचे, उन दो सिरों के बीच में घुस गई जो उन शक्तिशाली पैरों के नीचे धरती से जकड़े हुए थे, और अचानक एक जबरदस्त झटके के साथ ऊपर की ओर उठी।'

अगले ही पल मैंने एक भयावह दृश्य देखा। उस हाथी का क्रोध और शक्ति इतनी प्रबल थी कि उसने बाघ के शरीर को तीन टुकड़ों में फाड़ दिया, सूंड के तहों में फंसा हुआ हिस्सा उसके पैरों के नीचे के दो सिरों से अलग हो गया और एक लाल, खून से लथपथ ढेर के रूप में दूर जा गिरा।

'पागलपन से चिल्लाते हुए और अपने सिर और गर्दन से खून बहते हुए, राक्षस ने बाघ

के मध्य भाग को ज़मीन पर ज़ोर से पटका, जबकि उसने अपने दोनों अगले पैरों को शेष दो भागों से हटाने का प्रयास नहीं किया। निस्संदेह उसे डर था कि वे फिर से जीवित हो उठेंगे और उसे और अधिक नुकसान पहुँचाएँगे।'

जब बीच के हिस्से का रेत से ढके टुकड़ों के गट्ठे के अलावा कुछ भी नहीं बचा, तो हाथी ने अपने अगले पैरों को एक-एक करके, प्रत्येक पैर के नीचे बाघ के एक टुकड़े के साथ, ज़मीन पर रगड़ना शुरू कर दिया, और बहुत जल्द ही दोनों हिस्सों को चूर-चूर कर दिया। वह भयंकर क्रोध में था क्योंकि उसके मृत प्रतिद्वंद्वी के काटने और खरोंचों से उसे बहुत दर्द हो रहा था, और उसने तब तक ऐसा किया जब तक कि बाघ के लगभग सभी निशान गायब नहीं हो गए। इतने से संतुष्ट न होकर, वह ज़मीन पर घुटने टेककर बैठ गया और अपने एक दांत को उन गूदेदार टुकड़ों में घुसा दिया, और उसे बाहर निकाला, जिसके सिरे से मांस और खून टपक रहा था।

'उसी क्षण उसने ऊपर देखा और उस दुर्भाग्यशाली बछिया को एक बार फिर से देखा।'

'जब वह चीखा तो मैं उसके दुष्ट दिमाग में छिपी दुर्भावना को पढ़ सकता था। लेकिन इस बार उसकी आवाज़ में डर नहीं था - केवल विजय की गूंज और नफरत का भाव था। अगर मैंने अपनी राइफल से जुड़ी टॉर्च जलाकर हवा में गोली न चलाई होती तो भैंस अगले ही पल टुकड़े-टुकड़े हो जाती।'

'एंडी, यहीं मुझसे गलती हुई। टॉर्च जलाकर। सिर्फ गोली चलाने से ही वह भाग जाता। लेकिन टॉर्च जलाना बेवकूफी थी। बाघों पर अपनी हालिया जीत से उत्साहित और घावों के दर्द से तड़पते हुए, उस हाथी ने बाकी सभी हाथियों से अलग ही प्रतिक्रिया दी। वह सीधे उस बांस के झुंड की ओर आया जिस पर मैं बैठा था और उसे व्यवस्थित तरीके से तोड़ना शुरू कर दिया।'

सौभाग्य से, उसके उस घातक तने में से जो पहली टहनी उसने पकड़ी, वह मेरी मचान को सहारा देने वाली टहनी नहीं थी। उसने उसे झटके से अपनी ओर खींचा और वह ज़ोरदार आवाज़ के साथ टूट गई। मुझे पता था कि अगली टहनी जो वह तोड़ेगा, उससे मेरी मचान गिर जाएगी। मेरे पास उस दरिंदे को गोली मारने और वन विभाग के लोगों के साथ अंतहीन झंझट मोल लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

'अंतिम उपाय के तौर पर, मैंने हाथी के ऊपर से दोबारा गोली चलाने की कोशिश की।

लेकिन इस बार मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ और गोली चलाते ही मैंने टॉर्च बुझा दी, जिससे एक के बाद एक दो गोलियां चलीं।'

सौभाग्य से, इससे उसका इरादा बदल गया। उसने चुनौती भरे स्वर में दहाड़ा, लेकिन विवेक ने वीरता पर विजय प्राप्त कर ली और वह जंगल में घुस गया। उसके जाने की आवाज़ मुझे काफी देर तक सुनाई देती रही। उसकी चीखें, और पेड़ के गिरने या शाखा के टूटने की आवाज़, जब उसने अपना क्रोध उजाड़ा, उस भयानक राक्षस के जाने का संकेत थीं, जब तक कि अंत में सन्नाटा छा गया और मैं सहमी हुई बछिया और उस विशाल बाघ के टूटे-फूटे टुकड़ों के साथ अकेला रह गया। यह एक ऐसा वाकया है जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा।

कुछ महीनों बाद, इसी हाथी ने किल्कोटागिरी में हेंडरसन को सींगों से मारकर मौत के घाट उतार दिया, इससे पहले उसने हेंडरसन की जागीर में कई मजदूरों को मार डाला था। तब तक उसे 'बदमाश' घोषित कर दिया गया था और अंततः उसे गोली मार दी गई, लेकिन काश मैंने उसे उसी रात मार दिया होता जिस रात उसने बाघ को मारा था। इससे हेंडरसन की जान बच जाती।

कप्तान ने आगे कहा, 'लेकिन बाघ हमेशा इस बाघ की तरह उतावली व्यवहार नहीं करते। मैं आपको एक और घटना के बारे में बताता हूँ जो मैंने दिन के उजाले में देखी थी और जो बाघ की सोचने-समझने की क्षमता पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। इस कहानी का एक अप्रत्याशित अगला भाग है और यह तब घटी जब मैं उस "स्त्री-द्वेषी" के मेरे चार जालों में से एक को फँसाने का इंतज़ार कर रहा था।'

हर रात मचान में बैठने से हटकर, एक दोपहर जल्दी खाना खाने के बाद मैं एक टट्टू पर सवार होकर पश्चिम की ओर उस पहाड़ी की चोटी से होते हुए घाटी में चला गया। सीधी रेखा में यह लगभग चार मील की दूरी पर था। वहाँ मैंने एक खुले मैदान के किनारे एक मचान बनाया, जहाँ से नीचे फैली घाटी और मैदान का विस्तृत दृश्य दिखाई देता था। मैं बाइसन और चित्तीदार हिरणों के झुंडों की तस्वीरें लेना चाहता था, जिनके बारे में इरिला के खोजकर्ताओं ने बताया था कि वे खुले मैदान के किनारों पर एक साथ चरते हैं। मैंने अपने साथ आए व्यक्ति के साथ टट्टू को यह निर्देश देकर भेज दिया कि वह उसे ठीक शाम 5:30 बजे वापस ले आए।

'मुझे लगता है कि मैं वहां एक घंटे से था, जब मैंने 150 गज के भीतर जंगल से एक विशालकाय बैल बाइसन की काली आकृति को निकलते हुए देखा और वह खुले मैदान में आ गया, और पूरे समय शांति से चरता रहा। मैं उसकी प्रशंसा कर रहा था और मूवी-कैमरा तैयार कर रहा था, तभी मेरी नज़र दूर किसी हलचल पर पड़ी।'

यह जानने के लिए कि वह क्या है, मैं ध्यान से घूर रहा था और एक और बाइसन देखने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने एक बाघ को मैदान के किनारे आधा छिपा हुआ देखा, जो बाइसन की हर हरकत पर नजर रख रहा था। बाइसन स्पष्ट रूप से बाघ से पूरी तरह अनजान था, जो हवा की विपरीत दिशा में था, और चरते समय उसने अपना सिर नीचे ही रखा हुआ था।

'मुझे पता था कि आम तौर पर एक बाघ इतने दुर्जेय प्रतिद्वंद्वी पर हमला नहीं करेगा, इसलिए मैंने बाघ को गोली मारने का विचार छोड़ दिया और आगे क्या होगा यह देखने और तस्वीरें लेने का मन बना लिया।'

"वाह, उस बाघ ने तो कमाल कर दिया। उसने जानबूझकर अपने छिपने की जगह छोड़ी, खुले मैदान में एक-दो कदम चलकर आया और वहीं खड़ा हो गया, उसकी पूंछ उसके पीछे अगल-बगल हिल रही थी।"

'नर बाइसन ने उसे अच्छी तरह देख लिया था, या शायद अपनी आंख के कोने से उसकी हरकत को भांप लिया था। वह मुड़ा, बाघ की ओर मुँह किया और वैसी ही तीखी सीटी जैसी आवाज निकाली जैसी बाइसन खतरे के समय निकालते हैं।'

बाघ वहीं स्थिर रहा। उसकी ओर से एकमात्र हरकत उसकी बेचैन, लहराती पूंछ का लगातार फड़फड़ाना था।

बाइसन ने गुर्राते हुए अपने एक अगले पैर से ज़मीन को खरोंचना शुरू कर दिया। मैं उसके हाव-भाव साफ़ समझ गया। वह हमला करने की तैयारी कर रहा था। और अगले ही पल उसने हमला कर दिया। सिर झुकाए और सींग फैलाए, वह सीधे बाघ की ओर बढ़ा।

'वह जानवर एकदम स्थिर खड़ा रहा। मैं चकित रह गया। लेकिन जब बैल लगभग उसके पास पहुँच ही गया, तो वह फुर्ती से एक तरफ कूद गया, जबकि बाइसन खुद

को रोक नहीं पाया और सीधे पीछे एक पेड़ के तने से टकरा गया।'

'हैरान लेकिन साहसी बाइसन घूम गया और अपने दुश्मन को उलझन भरी निगाहों से ढूंढने लगा। बाघ मानो भाग रहा हो, मैदान के दूसरे छोर की ओर छलांग लगा रहा था। लेकिन जैसे ही वह वहाँ उग रहे एक विशाल पेड़ के नीचे पहुँचा, वह रुक गया, फिर से बाइसन की ओर मुड़ा और पहले की तरह ही स्थिर खड़ा हो गया, सिवाय उसकी बेचैन, फड़फड़ाती पूंछ के।'

बाइसन ने घूरकर देखा, अपना सिर नीचे किया, फुफकारा और हमला कर दिया। एक बार फिर बाघ ने ऐन मौके पर एक तरफ हटकर खुद को बचा लिया, और एक बार फिर बैल बाघ के पीछे मौजूद पेड़ से टकरा गया।

मानो या न मानो, एंडी, वो बाइसन बेवकूफ था! उसने दो बार बाघ को बेवकूफ बनने दिया, और दोनों बार हमले के अंत में एक पेड़ से टकरा गया। मैं इस अजीबोगरीब लड़ाई का नतीजा देखने के लिए बहुत उत्सुक और उत्साहित था, इसलिए मैंने बाघ को गोली नहीं मारी। लेकिन यार, मैंने पूरी फिल्म देखी! वो तस्वीरें हजारों डॉलर की हैं!

'चौथी टक्कर के अंत में, बाइसन की हालत दयनीय थी। उसका माथा और चेहरा खून से लथपथ था और वह स्पष्ट रूप से थका हुआ और चक्कर खा रहा था, भारी साँस ले रहा था और लगभग अपने पैरों पर लड़खड़ा रहा था।'

और फिर बाघ ने हमला बोल दिया। पलक झपकते ही वह बाइसन के पीछे पहुँच गया, और अपने दाँतों और पंजों के बल पर उसने उस बदकिस्मत लेकिन बहादुर जानवर को पलक झपकते ही पंगु बना दिया। एक खोखली, दर्द भरी कराह के साथ वह विशालकाय शरीर पीछे की ओर गिर पड़ा और विजयी, चालाक बाघ बाइसन के गले को नोंचते हुए उस पर झपटा।

'एंडी, यह मेरे लिए असहनीय था! मैं वह भयानक दृश्य सहन नहीं कर सका! मैंने उस दरिंदे को गोली मार दी और फिर मरते हुए बाइसन को उसकी पीड़ा से मुक्ति दिला दी। जब मेरा साथी टट्टू लेकर लौटा, तो वह उन दो विशालकाय जीवों को अगल-बगल लेटे देखकर दंग रह गया।'

और अब मेरी कहानी का अंत निराशाजनक है। मैंने व्यर्थ ही उस 'स्त्रीद्वेषी' का इंतज़ार किया कि वह मेरे किसी साथी को मार डाले। उसने ऐसा कभी नहीं किया! और न ही वह फिर कभी महवनहल्ला आया! क्योंकि जिस बाघ को मैंने गोली मारी थी, वही असल में 'स्त्रीद्वेषी' था, हालाँकि उस समय मुझे इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था।

'बाद में, जब उस क्रूर प्राणी ने अपना सामान्य रूप नहीं दिखाया, तब मैंने सब कुछ समझ लिया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा। मुझे लगता है कि मैं सही हूँ। क्योंकि आप भी सहमत होंगे कि वह बाघ एक बैल-बाइसन से निपटने के लिए असाधारण रूप से आक्रामक जानवर था। लेकिन उसका तरीका निस्संदेह चतुराई भरा था। और यह ठीक उसी समय हुआ जब वह "स्त्री-द्वेषी" महवनहल्ला पहुँचने वाला था।'

कैप्टन से विदा लेने से पहले, मैं आपको 'वाइल्ड हेरिटेज' के पास घटी एक और असामान्य घटना के बारे में संक्षेप में बताना चाहता हूँ, जैसा कि उन्होंने मुझे एक और दिन बताया था।

'एंडी, क्या तुम जानते हो,' उसने कहना शुरू किया, 'जंगल में निहत्थे घूमने की तुम्हारी आदत को तुम्हें छोड़ देना चाहिए। कम से कम इस खास इलाके के मामले में तो ज़रूर। मुझे पता है कि बाघ आम तौर पर बिल्कुल हानिरहित होते हैं। लेकिन यहाँ उनमें से कुछ अप्रत्याशित हैं। क्या मैंने तुम्हें बताया कि मेरे बेटे रॉडनी के साथ क्या हुआ था?'

वह लगभग एक साल पहले छुट्टी मनाने "वाइल्ड हेरिटेज" आया था, मेरे साथ एक महीना बिताने के लिए।

एक दिन खबर आई कि एक बाघ ने पास के इरिला के एक चरवाहे के बैल को मार डाला और उसे एक नाले के रास्ते घसीटकर दूसरे छोर पर घनी झाड़ियों में ले गया। वह जगह शिकार के लिए आदर्श थी, और मेरे बेटे ने वहाँ शिकार करने का फैसला किया।

नाले के दोनों किनारों के ऊपरी हिस्से पर अवरोध लगाकर, उसने लगभग बीस आदमियों का एक दल ऊपर से नाले की ढलान को खोदने और नीचे नाले के तल तक काम करने के लिए भेजा। वह स्वयं नाले के उस छोर पर, जहाँ एक और भी बड़ी खाई एक दूसरे से मिलती थी, एक जल्दी से तैयार किए गए मचान पर बैठा था।

सब कुछ योजना के अनुसार ही हुआ, सिवाय दो बातों के। लेकिन वे दो बातें बहुत महत्वपूर्ण थीं! पहली बात यह थी कि रॉडनी ने जिस जगह पर अपना मचान बनाने का फैसला किया था, वहाँ कोई बड़ा पेड़ नहीं था। वहाँ केवल एक छोटा सा पौधा ही था, इसलिए उसका मचान ज़मीन से केवल आठ या नौ फीट ही ऊपर रह गया। दूसरी बात जो हुई, उसके बारे में मैं आपको अभी बताऊंगा।

'मारपीट शुरू हुई, और जैसे ही चिल्लाते हुए आदमी पास आए, रॉडनी ने पहले एक और फिर दूसरे को उस पेड़ की शाखा पर कुल्हाड़ी मारते सुना, जिस पर वह बैठा था, ताकि बाघ नाले के तल में तब तक आगे बढ़ता रहे जब तक कि वह बड़े नाले के संगम तक न पहुँच जाए, जहाँ रॉडनी बैठा था। मेरे बेटे को पता था कि बाघ आ रहा है और उसने आसान निशाना लगाने की तैयारी कर ली।'

'खैर, बाघ अचानक प्रकट हो गया। रॉडनी ने निशाना साधा और ट्रिगर दबा दिया।'

लेकिन कुछ नहीं हुआ! एंडी, योजना में दूसरी गड़बड़ी यही हुई। एक चूक!

'तभी बाघ ने एक अजीब हरकत की। उसने स्ट्राइकर की क्लिक की आवाज़ सुनी, तेज़ी से ऊपर देखा, रॉडनी को देखा और एक ही झटके में उस पर झपट पड़ा। जैसा कि मैंने आपको बताया, मेरा बेटा ज़मीन से आठ या नौ फीट से ज़्यादा ऊपर नहीं था।'

'लेकिन तब वह मेरे बेटे को नहीं जानता था,' कप्तान ने गर्व से कहा। 'रॉडनी उसके लिए तैयार था। सौभाग्य से उसके पास दो बैरल वाली बंदूक थी, और दूसरे बैरल से निकली गोली बाघ की आंखों के ठीक बीचोंबीच लगी, और वहीं उसका अंत हो गया।'

फिर कप्तान ने शरारती मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा और मेरी जांघ पर एक थप्पड़ मारा।

'अगर वह तुम्हारी वह प्राचीन एक-बैरल वाली ब्लंडरबस होती, एंडी, जिसे मैंने तुम्हें अक्सर पास के संग्रहालय को भेंट करने की सलाह दी है, तो कहानी बिल्कुल अलग होती!'

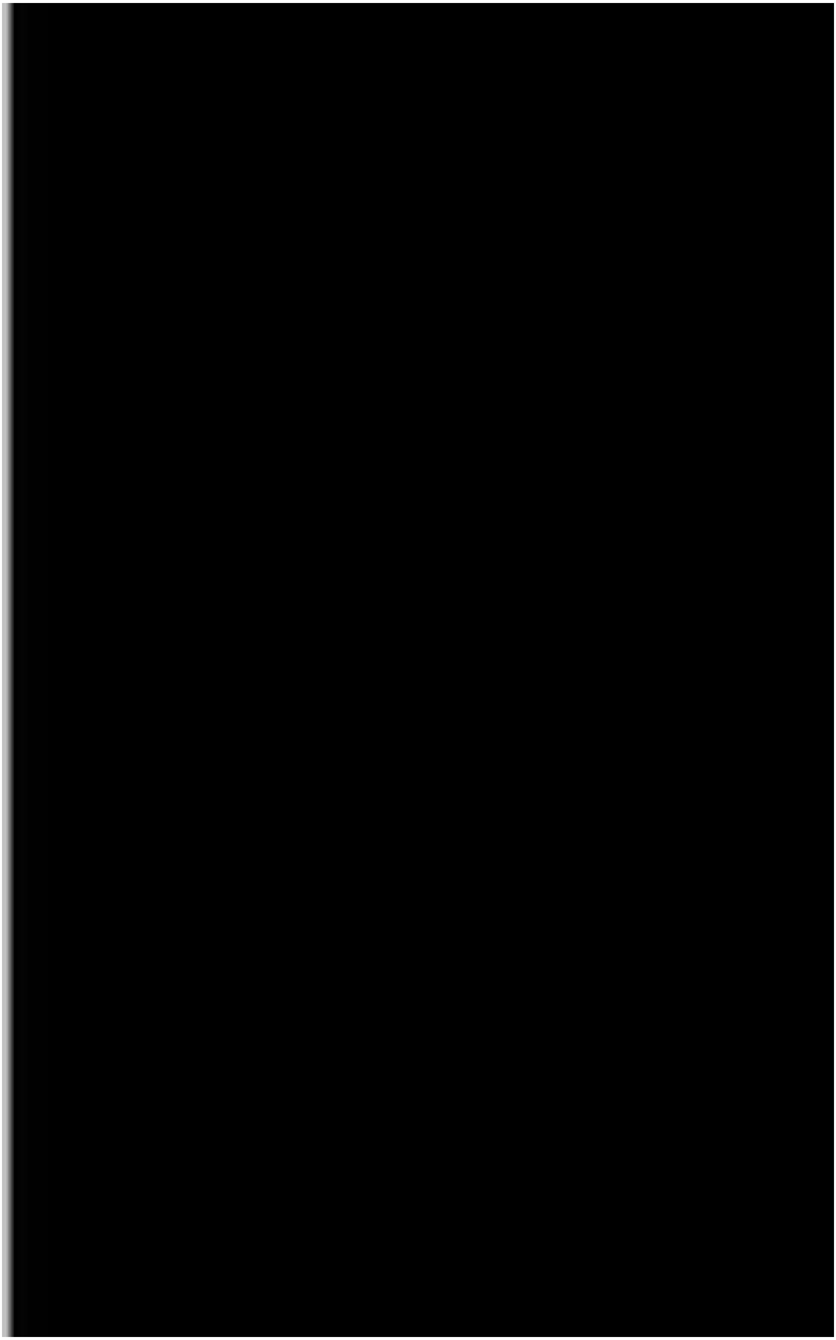

कवर: अक्षय शेट्टी

इस पुस्तक में चित्रित सभी पात्रों के नाम पूरी तरह से काल्पनिक हैं और जीवित या मृत व्यक्तियों से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश और अनजाने में है।
यदि आप केनेथ एंडरसन के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो फेसबुक पर उनके लिए समर्पित समूह में शामिल होने में संकोच न करें।

https://www.facebook.com/groups/kennethanderson/

यदि आपके कोई प्रश्न, टिप्पणी या प्रतिक्रिया हो, तो आप joshuamathew@gmail.com पर लिख सकते हैं।

माइकल लुडग्रोव द्वारा एक परिचय

केनेथ एंडरसन में मेरी रुचि बैंगलोर में मेरे पिता के प्रारंभिक जीवन पर मेरे शोध के साथ ही उत्पन्न हुई, एक ऐसा शहर जिसे मैंने हाल ही में जाना है। मेरे संग्रह में 1930 के दशक के आरंभिक बिशप कॉटन बॉयज़ स्कूल के पुनर्मिलन के दो बड़े समूह चित्र हैं। इनमें मेरे पिता, डोनाल्ड लुडग्रोव और उनके भाई, चार्ल्स शामिल हैं। कुछ समय पहले, एक मित्र ने तस्वीरों में कुछ अन्य लोगों की पहचान की। उसने दोनों तस्वीरों में मेरे पिता के बगल में खड़े केनेथ एंडरसन को पहचाना। वे दिखने में एक जैसे थे, लिनेन के सूट पहने हुए और धूप से बचाव के लिए टोपी लिए हुए। मैंने अनुमान लगाया कि वे एक-दूसरे को जानते होंगे और उनका सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ हद तक समान रही होगी। मैंने केनेथ एंडरसन और आदमखोर बाघों की उनकी जंगल की कहानियों के बारे में सुना था। मैंने सोचा कि अगर मैं एंडरसन के बारे में कुछ जानता हूँ, तो यह बैंगलोर में मेरे पिता के जीवन के प्रारंभिक वर्षों से भी संबंधित होगा।
मैंने क्रिस्टीज़ फाइन आर्ट ऑक्शनियर्स में दुर्लभ पुस्तकों और पांडुलिपियों के विशेषज्ञ के रूप में एक लंबा करियर बिताया है, जिसमें 15 साल उनके लंदन नीलामी कक्ष में और फिर 8 साल सिडनी और मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया के नीलामी कक्षों में काम किया। लंदन और दुर्लभ पुस्तकों के अंतर्राष्ट्रीय जगत से अपने जुड़ाव के कारण मेरे पास एंग्लो इंडियन स्मृति चिन्हों का एक बड़ा संग्रह है, और मैंने एंग्लो इंडियंस के इतिहास पर एक पुस्तक भी लिखी है, जो अभी प्रकाशित होनी बाकी है। मेरे पास केनेथ एंडरसन की जंगल की कहानियों की सभी पुस्तकों के प्रथम संस्करण हैं। लेकिन उनकी जंगल की पुस्तकें उनके व्यक्तित्व और पृष्ठभूमि पर बहुत कम प्रकाश डालती हैं। फिर मैंने उनकी सबसे कम ज्ञात पुस्तक, 'द फायर्स ऑफ पैशन' की खोज की। तब जाकर सब कुछ स्पष्ट होने लगा।
केनेथ एंडरसन दक्षिण भारत के जंगलों, विशेष रूप से पूर्व रियासत मैसूर के जंगलों में बंदूक और कैमरे से शिकार करने और तस्वीरें खींचने पर लिखी गई अपनी पुस्तकों के

लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं। वनवासियों, उनके जीवन और संस्कृति का उनका विस्तृत और महत्वपूर्ण वर्णन है, क्योंकि दक्षिण भारत का यह पहलू अब काफी हद तक लुप्त हो चुका है। उनकी सबसे लोकप्रिय पुस्तकें वे आठ पुस्तकें हैं जो उन्होंने 1950 और 1960 के दशक में आदमखोर बाघों और तेंदुओं के पीछा करने और शिकार करने पर लिखी थीं; उन्होंने हाथियों, गौर, जंगली कुत्तों, भालुओं, सांपों और वनवासियों की कहानियाँ भी सुनाईं। उनकी तुलना जिम कॉर्बेट (1875-1955) से की जाती है, जिन्होंने भारत के उत्तर में कुमाऊं और गढ़वाल की हिमालयी तलहटी के जंगलों के लिए वही किया जो एंडरसन ने दक्षिण भारत के वन जीवन के लिए किया। अपनी जंगल संबंधी रोमांचक पुस्तकों में से एक, 'द टाइगर रोअर्स' की प्रस्तावना में एंडरसन कहते हैं, 'मैं केवल उनके संरक्षण के लिए एक निवेदन करना चाहता हूं, कि उनके वन्यजीव और उनकी सुंदरता जीवित रहे... ताकि आने वाली पीढ़ियां भी उनका आनंद उसी तरह ले सकें जैसे मैंने लिया है।'

एंडरसन की सबसे कम ज्ञात रचना 'द फायर्स ऑफ पैशन' है। हालांकि, उनके लिए यह शायद सबसे महत्वपूर्ण रचना रही होगी। 1961-1963 के बीच अपने प्रकाशकों, जॉर्ज एलन एंड अनविन (अब बर्कशायर, इंग्लैंड के रीडिंग विश्वविद्यालय में संग्रहित) के साथ पत्राचार में, उन्होंने इसे अपना "सपनों का उपन्यास" बताया, जिस पर उन्होंने दो प्रयास किए थे। दुर्भाग्य से, उनके अंग्रेजी प्रकाशकों ने इसमें उतनी रुचि नहीं दिखाई जितनी उनकी गैर-काल्पनिक शिकार संबंधी पुस्तकों में दिखाई थी। वे पुस्तकें कई तस्वीरों, चित्रों और आकर्षक कवर के साथ प्रकाशित हुई थीं। कुछ पुस्तकों का विदेशी अनुवाद भी हुआ, जिनमें उनके अपने चित्र भी शामिल थे। उनके प्रकाशक, एलन एंड अनविन ने 'द फायर्स ऑफ पैशन' की पांडुलिपि रॉबर्ट हेल एंड पुटनाम सहित अन्य अंग्रेजी प्रकाशकों को भी भेजी, और जाहिर तौर पर, उन सभी ने इसे अस्वीकार कर दिया। अंततः, यह 1969 में दिल्ली के जैको द्वारा भारत में प्रकाशित हुई। उनकी अन्य रचनाओं के विपरीत, यह साधारण कागज के कवर में छोटे आकार (6.5 x 4.5 इंच) में प्रकाशित हुई, जिसमें 32 संक्षिप्त अध्याय 241 पृष्ठों में फैले हुए थे। उनकी अन्य शिकार संबंधी कहानियों के विपरीत, इस पुस्तक का कभी पुनर्मुद्रण नहीं हुआ है। इसका पहला संस्करण अब अत्यंत दुर्लभ है और इसे प्राप्त करना मुश्किल है।

इसका महत्व इस बात में निहित है कि यह उपन्यास के रूप में एक अर्ध-आत्मकथा है।

एंडरसन की सामाजिक पृष्ठभूमि और उनका अपना व्यक्तित्व पुस्तक के कुछ पात्रों के माध्यम से झलकता है। 'द फायर्स ऑफ पैशन' के ज़रिए एंडरसन ने उस समुदाय को पहचानने और उसका विश्लेषण करने का प्रयास किया है जिससे वे संबंधित थे - एंग्लो-इंडियन। द हिंदू अखबार द्वारा प्रकाशित भारतीय पत्रिका 'फ्रंटलाइन' के अंक 27 (वॉल्यूम 27 - अंक 6: 13-26 मार्च, 2010) में विकार अहमद सईद का एक लेख छपा था। उन्होंने एंडरसन को "स्कॉटिश मूल के छठी पीढ़ी के एंग्लो-इंडियन" के रूप में वर्णित किया है, जिनके शाही वर्ग से संबंध बहुत कमज़ोर या बिल्कुल न के बराबर थे। उनके कम चर्चित उपन्यासों में से एक, 'द फायर्स ऑफ पैशन', भारत में एंग्लो-इंडियन दुविधा पर चर्चा करता है और वे एंग्लो-इंडियन को एक मध्य-भूमि में रहने वाले और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों और भारतीयों दोनों द्वारा तिरस्कृत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह एक घिसा-पिटा वाक्यांश है, जो अपने व्यापक सामान्यीकरण में काफी गलत है, लेकिन लेखकों द्वारा भारत में एंग्लो-इंडियन की जटिल स्थिति को संदर्भ देने के लिए इसका आसानी से उपयोग किया जाता है।

भारत में एंग्लो-इंडियन समुदाय, अपने इतिहास के किसी भी दौर में, भारत के अन्य समुदायों, चाहे वे यूरोपीय हों या भारतीय, का एक जटिल मिश्रण रहा है। एंग्लो-इंडियन शब्द मूल रूप से अठारहवीं शताब्दी में उन अंग्रेजों के लिए प्रयोग किया जाता था जिन्होंने भारत में काफी समय बिताया था। बाद में, इसे आधिकारिक तौर पर भारत के मिश्रित नस्ल समुदाय द्वारा अपनाया गया। इससे पहले, उन्हें यूरेशियन, ईस्ट इंडियन और विवादास्पद रूप से हाफ-कास्ट जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता था। यह समुदाय मुख्य रूप से मिश्रित अंग्रेज और भारतीय मूल का था, हालांकि एंग्लो-इंडियन शब्द का प्रयोग अन्य यूरोपीय मूल के लोगों, जैसे फ्रांसीसी, जर्मन, इतालवी, डच, पुर्तगाली आदि के लिए भी किया जाने लगा। एंडरसन के काल में, 'डोमिसाइल्ड यूरोपियन' शब्द का भी प्रयोग किया जाता था, जो लंबे समय से स्थापित ब्रिटिश व्यापारियों और भारत में रहने की अनुमति प्राप्त ब्रिटिश सैनिकों के लिए था। इस प्रकार, दक्षिण भारत के एंग्लो-इंडियन एसोसिएशन को दक्षिण भारत के एंग्लो-इंडियन और डोमिसाइल्ड यूरोपियन एसोसिएशन के रूप में जाना जाता था। एंडरसन के काल में, विशेष रूप से महानगरीय बैंगलोर में, जो 1791 से ब्रिटिश छावनी नगरी रहा था, इन विभिन्न शब्दों का प्रयोग अक्सर एक दूसरे के स्थान पर किया जाता था। अक्सर, इन शब्दों के बीच स्पष्ट अंतर करना मुश्किल होता था; सामाजिक संरचनाएं

और सांस्कृतिक मूल्य अक्सर आपस में मेल खाते थे और उनमें अंतर करना असंभव हो जाता था। सामान्यतः, एंग्लो इंडियन राज समाज के निचले तबके से संबंधित थे, लेकिन ब्रिटिश होने की उनकी प्रबल भावना अक्सर भारत के प्रति उनके गहरे लगाव के साथ जुड़ी होती थी। बैंगलोर और एंडरसन की दुनिया में, ब्रिटिश और एंग्लो इंडियन समाजों के अलावा, त्रावणकोर (केरल) के सीरियाई ईसाई, मालाबार तट के मंगलौरवासी, अर्मेनियाई, पारसी, यहूदी, गोवावासी, भारतीय ईसाई, साथ ही बहुसंख्यक हिंदू और मुस्लिम भी शामिल थे, जिनकी अपनी-अपनी जातियां और धर्म थे।

भारत की आसन्न स्वतंत्रता के दौरान इन समुदायों के परस्पर विरोधी रवैये और भी तीव्र हो गए, जब किसी एक पक्ष के प्रति निष्ठा की भी परीक्षा हुई। 1946 के युद्धोत्तर और स्वतंत्रता-पूर्व भारत में रचित 'द फायर्स ऑफ पैशन' भारतीयों, अंग्रेजों और अन्य लोगों के बीच इन तनावों की कहानी बयां करती है। एंडरसन कहते हैं, "एक तीसरा समुदाय भी इन विरोधी और परस्पर विरोधी भावनाओं के चित्र में प्रमुखता से शामिल था। भारतीय जनसंख्या की तुलना में संख्या में नगण्य होने के बावजूद, वे पूरे देश में अंग्रेजों से कहीं अधिक थे। वे एंग्लो-इंडियन थे, जो प्रारंभिक अंग्रेज़ बसने वालों के वंशज थे। इन अग्रदूतों के कुछ परिवारों ने आपस में ही विवाह कर लिया था। उनकी संतानें श्वेत रंग की रहीं। अधिकांश ने या तो भारतीय महिलाओं से विवाह किया था या उन्हें अपने साथ रखा था, जिसके परिणामस्वरूप उनकी संतानें सांवली थीं। वे यूरेशियन थे। लेकिन उन कुछ परिवारों के साथ, जिन्होंने कमोबेश शुद्ध अंग्रेजी वंश को बनाए रखा था, सभी को एंग्लो-इंडियन के रूप में वर्गीकृत किया गया था। लेकिन सामाजिक रूप से औसत अंग्रेज एंग्लो-इंडियनों को, यहां तक कि श्वेत लोगों को भी, बहिष्कृत करता था।"

एंडरसन ने रूथ क्लीवलैंड के माध्यम से इस 'बहिष्कार' या नस्लवाद का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो हाल ही में इंग्लैंड से आई एक बागान मालिक की पत्नी है। वह वन रक्षक नेविल गार्डनर की एंग्लो-इंडियन बेटी जून गार्डनर से मिलती है और उससे पूछती है, "आप और श्रीमान गार्डनर - आप यूरेशियन हैं, है ना?" जून जवाब देती है, "हम एंग्लो-इंडियन हैं।" "क्या सच में?" रूथ सोचती है, "यूरेशियन और एंग्लो-इंडियन - आखिर अंतर क्या है?"... कुछ झिझक के बाद उसने समझाया, "यूरेशियन उन अंग्रेज़ लोगों के वंशज हैं जिन्होंने भारतीयों से शादी की, जबकि एंग्लो-इंडियन उन

अंग्रेज़ मूल के लोगों से आते हैं जो भारत में बस गए हैं और लंबे समय से यहीं रह रहे हैं - जैसे मेरे पिताजी और मैं।" ... "लेकिन आप सांवली कैसे हैं?" ... अनजाने में बोले गए ये शब्द जून के दिल को छू गए। शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया। उसकी आँखों में शर्म के आँसू भर आए। उसने जवाब देने की कोशिश की, लेकिन नहीं दे सकी।

रूथ एक खास तरह की औपनिवेशिक राज मेमसाहिब का प्रतीक है, जो अपने पति के काम से अलग होकर ऊबा हुआ, शराबी जीवन जीती है और उसके कई अन्य रिश्तेदार हैं। [लेखिका डोरिस लेसिंग ने अपने उपन्यासों में इस जीवन का सजीव वर्णन किया है, हालांकि उनके उपन्यास रोडेशिया के औपनिवेशिक समाज पर आधारित थे]। बाद में, रूथ के पति जॉन ग्रेस्टोन के साथ तीखी बहस में जून आरोप लगाती है, “चाहे उसने जानबूझकर किया हो या नहीं, उसने दिखा दिया है कि तुम अंग्रेज लोग हमारे प्रति कैसा भाव रखते हो। तुम हमें इसलिए तुच्छ समझते हो क्योंकि हम सांवले हैं। मैं आधी यूरेशियन लड़की हूँ। मेरी रगों में भारतीय खून है।” ग्रेस्टोन खुद दूसरी पीढ़ी का ‘श्वेत’ एंग्लो इंडियन है। उसके पिता ने वह बागान वाला घर बनवाया था जिसमें वह रहता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि ने तनाव को और भी बढ़ा दिया था। एंग्लो-इंडियनों के लिए यह समायोजन का एक बेहद कठिन दौर था, जिनमें से कई लोगों के लिए स्वतंत्र भारत छोड़ना उतना आसान नहीं था जितना उनके ब्रिटिश संरक्षकों के लिए था। ऐतिहासिक रूप से, वे हमेशा खुद को ब्रिटिश मानते आए थे; 'भारत में ब्रिटिश' का हिस्सा, अपने ब्रिटिश पूर्वजों की प्रमुख संस्कृति का हिस्सा। भारत में ब्रिटेन के सभी युद्धों और संघर्षों में, 1857 के विद्रोह से लेकर कलकत्ता के ब्लैक होल तक, एंग्लो-इंडियन ब्रिटिश पक्ष में थे, साम्राज्य के लिए काम कर रहे थे; ब्रिटिशों की तरह ही इसके लिए लड़े, कष्ट सहे और अपनी जान गंवाई। अब जब ब्रिटिश भारत छोड़ रहे थे, तो एंग्लो-इंडियन खुद को अलग-थलग और असुरक्षित महसूस कर रहे थे। शायद एंडरसन खुद को नेविल गार्डनर और जॉन ग्रेस्टोन के मिश्रण के रूप में देख रहे थे, और तेजी से रॉबर्ट निकोलसन के रूप में, जो जल्द ही सेवानिवृत्त होने वाले जिला पुलिस अधीक्षक थे और 'घर' लौटने की योजना बना रहे थे। उत्तर की ओर, पिछली पीढ़ी के ही एक व्यक्ति, जिम कॉर्बेट भी स्वतंत्रता के समय भारत छोड़ने की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने भारत के उत्तरी भाग में कुमाऊं और गढ़वाल की हिमालयी तलहटी

के जंगलों के लिए वही किया जो एंडरसन ने दक्षिण भारत के लिए किया था। कॉर्बेट ने स्वयं कहा था, "देखिए, हमारे सभी लोग जा रहे हैं, अगर हम यहां रहे तो हमें दफनाने वाला कोई नहीं बचेगा।" कॉर्बेट और उनकी बहन मैगी ने दिसंबर 1947 में भारत छोड़ दिया।

एंडर्सन पर सबसे अधिक प्रभाव और इस कृति की प्रेरणा जॉन मास्टर्स के 1954 में प्रकाशित उपन्यास 'भवानी जंक्शन' से मिली। यह उपन्यास भारत में एक ब्रिटिश अधिकारी के रूप में मास्टर्स के अनुभवों पर आधारित था। इस पुस्तक पर आधारित एक भव्य बजट की हॉलीवुड फिल्म 1955 में लाहौर और इंग्लैंड में फिल्माई गई थी, जिसे 1956 में पूरे भारत में रिलीज़ किया गया था। इस नाटकीय फिल्म में भारत के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर आधारित अंतरजातीय प्रेम, जुनून और षड्यंत्र की कहानी दिखाई गई थी। एंडर्सन ने कुछ वर्षों बाद 'द फायर्स ऑफ पैशन' पर काम शुरू किया, जिसका मानवीय नाटक आदमखोर बाघ के शिकार के इर्द-गिर्द घूमता है। एक अन्य जंगल एडवेंचर फिल्म 'हैरी ब्लैक एंड द टाइगर' भी भारत में फिल्माई गई थी, जिसमें स्टीवर्ट ग्रेंजर ने अभिनय किया था। एंडर्सन के बेटे, डोनाल्ड, ने फिल्म में ग्रेंजर के स्टंट डबल की भूमिका निभाई थी, जो 1958 में रिलीज़ हुई थी। जिम कॉर्बेट की 'मैन-ईटर्स ऑफ कुमाऊं' इससे पहले 1948 में एक हॉलीवुड फिल्म के रूप में रिलीज़ हुई थी। एक और, उससे भी पहले की खोज, मैसूर पैलेस के युवा महावत साबू की थी। उन्होंने 1930 और 1940 के दशक में हॉलीवुड की कई जंगल एडवेंचर फिल्मों में अभिनय किया। उनकी आखिरी फिल्म, 'ए टाइगर वॉक्स', उनकी मृत्यु के एक साल बाद, 1964 में रिलीज़ हुई थी। उस समय के कई युवा एंग्लो इंडियन लड़कों और पुरुषों की कल्पना पर टार्ज़न और जंगल जिम जैसे साहित्यिक, हास्य और जंगल एडवेंचर फिल्म पात्रों का भी प्रभाव था, जिनमें से जंगल जिम का उल्लेख 'द फायर्स ऑफ पैशन' के पृष्ठ 28 पर किया गया है। ये कहानियां पूरे भारत में स्कूल पुस्तकालयों और रेलवे स्टेशन के समाचार स्टालों पर आसानी से उपलब्ध थीं।

एंडरसन काफी समय से 'घर' लौटने की योजना बना रहे थे। उनके प्रकाशक रेनर अनविन ने 18 अक्टूबर 1961 को एंडरसन को लिखे पत्र में कहा, 'यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि आपने इंग्लैंड में घर खरीदने का फैसला किया है और निश्चित रूप से हम आपको आपकी जरूरत की रकम देंगे।' उन्होंने एंडरसन को 'कॉल ऑफ द मैन-ईटर' के लिए बकाया राशि का विवरण भी दिया। हालांकि, दो महीने बाद एंडरसन की

परिस्थितियां काफी बदल गईं। 4 दिसंबर 1961 को लिखे अपने पत्र में उन्होंने रेनर अनविन को बताया कि 'पिछली बार जब मैंने आपको पत्र लिखा था, तब से मेरे परिवार में कुछ अप्रत्याशित उथल-पुथल हुई है, जिसके कारण मुझे इंग्लैंड आने की अपनी योजना को कुछ समय के लिए स्थगित करना पड़ा है। डोनाल्ड और मुझे अब अपनी सभी व्यवस्थाओं में बदलाव करना होगा, और हम अपनी संपत्तियों को बेचकर हमेशा के लिए भारत छोड़ने की उम्मीद करते हैं। पहले की योजना के अनुसार, मुझे पहले आना था।'

'द फायर्स ऑफ पैशन' को अंग्रेजी प्रकाशक न मिलने और इस प्रकार व्यापक पहचान न मिलने से उन्हें बहुत निराशा हुई होगी। अस्वीकृत पांडुलिपि उन्हें सितंबर 1963 में लौटा दी गई थी। यह उनके पारिवारिक विघटन के कुछ ही समय बाद हुआ था, जिसके कारण वे इंग्लैंड नहीं जा सके और इससे उनकी असफलता की भावना और भी बढ़ गई होगी।

4 दिसंबर 1961 को रेनर अनविन को लिखे एंडरसन के पत्र के अंत में लिखे गए एक दिलचस्प हस्तलिखित परिशिष्ट से संकेत मिलता है कि लोकप्रिय बीबीसी प्रकृतिवादी डेविड एटनबरो के साथ एक संभावित परियोजना की योजना थी। एंडरसन लिखते हैं, 'कृपया मिस जॉय हिल को सूचित करें कि वे बीबीसी के श्री एटनबरो को मेरी योजनाओं में हुए बदलाव के बारे में बता दें, यदि वे भारत आते हैं।' यदि एटनबरो और एंडरसन के साथ भारत के दक्षिण भारतीय वन्यजीवों पर आधारित कोई टेलीविजन कार्यक्रम बन पाता, तो भारत के प्रति एंडरसन की विरासत, उनके अनुयायियों और उनकी पुस्तकों के पाठकों के लिए, नाटकीय रूप से भिन्न होती। दुर्भाग्य से, ऐसा नहीं हो सका। शायद यह वही बात है जो रॉबर्ट निकोलसन ने इंग्लैंड जाने से पहले अपनी पुस्तक 'द फायर्स ऑफ पैशन' में कही थी, 'मैं हमेशा के लिए घर लौटने के लिए तरस रहा था। लेकिन अब जब समय आ गया है, तो मुझे अपने भीतर एक अजीब सा खालीपन महसूस हो रहा है जिसका कारण मैं नहीं समझ पा रहा हूँ, क्योंकि... मैंने उससे [भारत से] प्रेम किया था, उससे हमेशा के लिए बिछड़ने की वास्तविकता ने मुझे स्वयं से और मेरे द्वारा बनाए गए भ्रम से रूबरू करा दिया है।' और अब उन्हें कैंसर भी हो गया था। केनेथ एंडरसन का निधन कुछ वर्षों बाद, 1974 में हुआ। उन्हें बैंगलोर के होसुर रोड कब्रिस्तान की शांत जगह में दफनाया गया है। यह एक निर्मल स्थान है, जहाँ कभी-कभार पक्षियों की चहचाहट और अपने किसी दिवंगत पूर्वज की

तलाश में आए एक-दो लोगों की उपस्थिति ही सुनाई देती है। यह उस भारत के जानवरों और वनवासियों से बहुत दूर है, जिससे उन्हें बहुत प्रेम था। लेकिन उनके साथ कुछ और भी है। उन्हें अपने ही लोगों - एंग्लो-इंडियन - के बीच दफनाया गया है।

माइकल लुडग्रोव, कला एवं पुरातन वस्तुओं के क्यूरेटर, मैसूर का शाही घराना,
बैंगलोर पैलेस, 1 सितंबर 2015

इस कहानी के बारे में

"Arre bhai! Bagh ku Khabardar! "

"भाई! बाघ से सावधान रहो! रात का अंधेरा छा गया है। आदमखोर बाघ तुम्हें पकड़ लेगा!"

ये खबर दबी आवाज़ में एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी तक पहुँचती है। कभी ज़ोर से नहीं बोली जाती। क्या आदमखोर बाघ के कान नहीं हैं जो हर जगह सुनते हैं? वे जंगल के पेड़ों में हैं, हवा में हैं, किसी आदमी के घर की चारदीवारी में हैं। अगर वे बाघ के कान नहीं हैं, तो वे उसके गुप्त दूतों के हैं, जंगल की आत्माओं के हैं। फिर उस आदमी या औरत पर भयानक बदला आएगा जिसने उसका नाम लेने की हिम्मत की। वह व्यक्ति निश्चित रूप से मरेगा।

भारत के जंगलों में आदमखोर बाघ से बड़ा कोई आतंक नहीं होता; और जब वह जानवर किसी बागान के पास अपना डेरा जमा लेता है और बार-बार वहां काम करने वाले मजदूरों को खा जाता है, तो हर जगह दहशत फैल जाती है। काम ठप हो जाता है।

यह सब पुनर्जागरण के दौर में भारत में घटित हुआ। इस धरती के असंख्य लोग दो शताब्दियों तक ब्रिटिश शासन के अधीन रहे थे और तब तक एकजुट नहीं हुए थे जब तक कि एक तुच्छ से छोटे व्यक्ति ने, विदेशी गुलामी से मुक्ति के एक हास्यास्पद सिद्धांत का प्रचार करते हुए, उन्हें एक साथ नहीं बांध दिया।

उनका नाम महात्मा गांधी था!

हर कोई उनकी प्रशंसा करता था; यहाँ तक कि उनके शत्रु, अंग्रेज भी! बाहरी तौर पर वे तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ उन्हें अर्धनग्न फकीर कहते थे। लेकिन आपस में वे उनके साहस को स्वीकार करते थे।

अन्य लोग इस नाटकीय दृश्य को देख रहे थे। कुछ देशभक्त थे, जो जोशीले उत्साह से भरे हुए थे। वे बलपूर्वक अपनी मातृभूमि को मुक्त कराना चाहते थे और

उस शापित श्वेत मनुष्य को उसी सागर में फेंक देना चाहते थे जहाँ से वह आया था। कुछ अन्य लोग हिंसा चाहते थे और उन्होंने उसे अपना लिया था। लेकिन अपने स्वार्थ के लिए। वे वास्तव में अवसरवादी थे, लेकिन खुद को कम्युनिस्ट कहते थे। उन्होंने रेलगाड़ियों को तहस-नहस कर दिया और हत्याएं कीं। अपनी वाक्पटुता से उन्होंने शांतिप्रिय लोगों की भीड़ को बहकाया और उनके आवेश को उग्र क्रोध में बदल दिया। भीड़ ने बाकी का काम कर दिया। लूटपाट हुई; हत्याएं और बलात्कार हुए; सब कुछ उनके नारों के नाम पर हुआ। "भारत को आजादी!" "विदेशियों को बाहर निकालो!" "हिंदुस्तान जिंदाबाद!" और "महात्मा गांधी जय जय!"

नन्हे महात्मा ने इन घटनाओं पर गहरा शोक व्यक्त किया और अपने देशवासियों से हिंसा से बचने का आग्रह किया। उन्होंने उनसे केवल शांतिपूर्ण तरीकों का पालन करने की विनती की। लेकिन बुराई की ताकतें बेकाबू हो चुकी थीं और पूरे भारत में खून बह रहा था।

इस अराजकता में, 350 से 1 से भी अधिक संख्या में कम होने के बावजूद, ब्रिटिश सैनिक आक्रोश, घृणा, भय और अनिश्चितता की दैनिक भावनाओं के बीच अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनमें से कुछ तो इस देश में कई वर्षों से रह रहे थे। यह एक अलग ही भारत था; शांतिपूर्ण आज्ञाकारिता और समर्पण की भूमि। विद्रोह के इस बवंडर का सामना करते हुए, वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें।

कुछ लोगों ने अपरिहार्य स्थिति को स्वीकार कर लिया। वे इस बात से सहमत थे कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी भूमि पर शासन करने का अधिकार है।

इस परस्पर विरोधी और परस्पर विरोधी भावनाओं की तस्वीर में एक तीसरा समुदाय भी शामिल था। भारतीय आबादी की तुलना में संख्या में नगण्य होने के बावजूद, वे पूरे देश में अंग्रेजों से कहीं अधिक थे।

ये एंग्लो-इंडियन थे, जो शुरुआती अंग्रेज़ बसने वालों के वंशज थे। इन अग्रदूत परिवारों में से कुछ ने आपस में ही शादी कर ली थी। उनकी संतानें गोरे रंग की रहीं। अधिकांश ने या तो भारतीय महिलाओं से शादी की थी या उन्हें अपने साथ रखा था, जिसके परिणामस्वरूप उनकी संतानें सांवली त्वचा वाली हुईं। ये यूरेशियन थे। लेकिन उन कुछ परिवारों के साथ, जिन्होंने कमोबेश अपनी शुद्ध अंग्रेज़ी वंशावली को बनाए रखा था, सभी को एंग्लो-इंडियन की श्रेणी में रखा गया था।

ये लोग अपने ब्रिटिश वंश पर गर्व करते थे। वे अंग्रेजी भाषा और जीवनशैली का

पालन करते थे और सम्राट राजा तथा उस इंग्लैंड के प्रति वफादार थे जहाँ से उनके पूर्वज आए थे।

महात्मा गांधी के समय से बहुत पहले और 1857 के महान भारतीय विद्रोह के बाद से ही, ब्रिटिश सरकार को यह एहसास हो गया था कि भारत एक बारूद का ढेर है, जो किसी भी क्षण फट सकता है। इसलिए उन्होंने देश की प्रमुख सेवाओं को श्वेत और अश्वेत दोनों ही एंग्लो-इंडियनों के लिए आरक्षित कर दिया, क्योंकि सरकार जानती थी कि यदि भारतीय विद्रोह करते हैं तो वे ब्रिटेन के प्रति वफादार रहेंगे। लेकिन सामाजिक रूप से आम अंग्रेज एंग्लो-इंडियनों, यहाँ तक कि श्वेतों को भी, बहिष्कृत करते थे। उनसे मेलजोल नहीं रखा जाता था। काम पर किसी व्यक्ति से बात करना जायज़ था। लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर उससे मिलना-जुलना या राजमार्ग पर उसे पहचानना या अभिवादन करना तो बिलकुल ही मना था। क्लब केवल अंग्रेजों के लिए आरक्षित थे। कोई भी एंग्लो-इंडियन आसानी से सदस्य नहीं बन सकता था।

भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई थी और वे उन्हें निर्दयी विदेशी शैतान मानते थे जो लगातार उनकी भूमि का शोषण करते थे। वे आम तौर पर एंग्लो-इंडियनों को चापलूस और चमचे समझते थे; जन्मजात नाजायज संतान; व्यभिचार और नाजायज संबंधों की संतान; अपनी मातृभूमि के गद्दार।

यह कहानी इन्हीं तत्वों और उन उथल-पुथल भरे दिनों की मिली-जुली भावनाओं और परिस्थितियों के बारे में है। इन सबके ऊपर एक आदमखोर शेरनी का साया मंडरा रहा है। राजनीति, जाति और रंग से परे, हर जीवित पुरुष और स्त्री उसका शिकार और उसके खाली पेट के लिए संभावित भोजन था।

अध्याय 1

मतभेद के बीज

लंबे कद के अंग्रेज ने अपने सामने सोफे पर लेटी महिला से कहा, "रूथ डार्लिंग, भारत में बागान के जीवन में ढलने में थोड़ा समय लगेगा। लेकिन समय के साथ आपको इसकी आदत हो जाएगी।"

"जॉन, कृपया इसे बार-बार दोहराना बंद करो," वह भड़क उठी। "तुम मुझे यह बात सौ बार पहले भी कह चुके हो और मैं इसे सुनकर तंग आ चुकी हूँ।"

पहले वक्ता, जॉन ग्रेस्टोन, जो रॉब रॉय एस्टेट नामक बागान के मालिक थे, एक खुली खिड़की के सामने खड़े होकर रात के अंधेरे में देख रहे थे। उनके एक हाथ में

व्हिस्की और सोडा का गिलास था, जिससे वे बीच-बीच में घूंट ले रहे थे। उनकी उम्र लगभग चालीस वर्ष थी, लंबाई लगभग छह फीट थी और उनका शरीर गठीला था। उनके चेहरे और चौकोर जबड़े पर गहरी टैन की हुई त्वचा कसी हुई थी, और बीच से मांग निकाले हुए लहराते काले बालों के नीचे उनकी धूसर-हरी आँखें उनके साफ-सुथरे चेहरे से मेल खाती थीं।

ग्रेस्टोन ने कुछ देर तक अपनी पत्नी को ध्यान से देखा और फिर एक लंबा घूंट लिया। अंत में उन्होंने कहा, "प्रिय, अगर तुम्हें खुश करने के लिए किसी खास चीज की जरूरत हो, तो मुझे बता देना, मैं उसे लाने की कोशिश करूंगा।"

"ऐसी बात नहीं है, जॉन। तुमने मुझे आराम देने के लिए सब कुछ दिया है," उसकी पत्नी ने स्वीकार किया। "बात ये है कि जब तुम दूर होते हो तो मुझे घंटों अकेले रहना पड़ता है; या शायद मुझे घर पर मिलने वाले नए चेहरों की याद आती है। अकेले रहना मुझे उदास कर रहा है।"

रूथ ग्रेस्टोन पच्चीस वर्ष की थीं। उनका गोल चेहरा रेशमी सफेद त्वचा से सुशोभित था। हल्के से खुले हुए चेरी जैसे लाल होंठों पर दो सीधी पंक्तियों में सजे हुए सुंदर दाँत दिखाई दे रहे थे। होंठों के ऊपर थोड़ी उठी हुई नाक उनकी गहरी आँखों को और भी आकर्षक बना रही थी, और पेंसिल से सँवारी हुई भौहें उनके ऊँचे माथे को घेरे हुए थीं, जिसके ऊपर काले घने बाल पोनीटेल में बंधे थे। सोफे पर फैली उनकी टांगें गोल-मटोल जांघों का आभास दे रही थीं और उनकी पिंडलियों की सुडौल आकृति को दर्शा रही थीं। रूथ ने लाल रंग की शाम की पोशाक पहनी थी, जो इतनी नीचे से कटी हुई थी कि उनकी सुडौल आकृतियाँ, जो उनकी तेज़ साँसों के साथ ऊपर-नीचे हो रही थीं, स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। उनके बगल में मेज पर जिन और बिटर का एक गिलास रखा था, जबकि एक लंबी, पतली, हाथीदांत की सिगरेट होल्डर, जिसमें एक सिगरेट दबी हुई थी, उनके दाहिने हाथ की पहली और दूसरी उंगली के बीच करीने से टिकी हुई थी।

अपना ड्रिंक लिए जॉन उसके बगल में सोफे पर बैठ गया। उसने प्यार से अपना एक हाथ उसकी जांघ पर रखा और झुककर उसके गाल पर चुंबन किया। रूथ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, बल्कि कोहनी के बल उठी और बची हुई जिन और बिटर ड्रिंक एक ही घूंट में पी गई।

जॉन ने हाल ही में इंग्लैंड में छुट्टियां मनाने के दौरान रूथ क्लीवलैंड से शादी की

थी और उसे अपने साथ रॉब रॉय एस्टेट ले आए थे। यह घटना लगभग छह महीने पहले हुई थी। तब से, रूथ दिन में जंगल में झींगुरों की चीख और रात में सियार की कर्कश आवाज से खुद को अभ्यस्त करने की कोशिश कर रही थी। मच्छरों के झुंड, चित्तीदार कीड़े खाने वाली छिपकलियां, एक विशाल मेंढक और बाथटब के पीछे उसका पीछा करते एक कोबरा, उसे बारी-बारी से परेशान और भयभीत कर रहे थे। सबसे ज्यादा, वह किसी के साथ की कमी महसूस कर रही थी और चिड़चिड़ी होती जा रही थी।

ग्रेस्टोन अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता था। शादी के कुछ ही महीनों में उसके लिए उसकी चाहत ज़रा भी नहीं बढ़ी थी। उसने उसे दोबारा चूमने के लिए झुका और तभी उसे अपने नथुनों में एक तेज़ स्त्री-सुगंध महसूस हुई। उसे अपनी पत्नी के उभरे हुए स्तनों के बीच की गहरी घाटी का भी एहसास हुआ और उसकी नज़रें नीचे की ओर कोमल मांस के उन मोहक उभारों पर टिक गईं। उसे उसकी नायलॉन ब्रा के कसे हुए घेरे से झांकता हुआ एक स्ट्रॉबेरी रंग का निप्पल का सिरा मुश्किल से दिखाई दिया। गहरी साँसें लेते हुए उसने उसके होंठों को छुआ और उसका चुंबन ठहर गया और चाहत से भर गया।

रूथ ने अपनी हथेली से उसे दूर रखा, उसकी गहरी आंखें बिना किसी प्रतिक्रिया के उसकी आंखों में देखती रहीं।

"क्या हम बॉम्बे या कलकत्ता में छुट्टियां मनाने नहीं जा सकते?" उसने पूछा, "किसी शहर में फिर से रहना कितना अच्छा लगेगा।"

जॉन ने उसे चूमना बंद कर दिया और सीधा खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर दिख रही तीव्र वासना की अभिव्यक्ति गायब हो गई।

"रूथ, तुम जानती हो कि यह नामुमकिन है," उसने जवाब दिया। "मानसून शुरू होने से पहले जागीर में बहुत काम करना है और हमारे पास मुश्किल से तीन महीने हैं। एक बार बारिश शुरू हो गई तो अगले तीन महीनों तक लगातार बरसती रहेगी। उसके बाद, हम जहाँ भी तुम चाहोगी, वहाँ चले जाएँगे।"

"और मानसून कब शुरू होता है?" उसने पूछा।

उन्होंने उत्तर दिया, "जून के मध्य के आसपास, बशर्ते कि सब कुछ तय कार्यक्रम के अनुसार हो।"

"अभी तो मार्च ही है; इतना लंबा इंतजार करना बहुत मुश्किल है," रूथ ने

चिढ़कर बीच में कहा।

"हाँ, बिल्कुल, प्रिये। लेकिन तुम हर दिन मेरे साथ क्यों नहीं आती? तुम्हें पता है, इस जागीर के कई हिस्से ऐसे हैं जो तुमने अभी तक नहीं देखे हैं।"

"ठीक है, मैं ऐसा कर सकती हूँ," उसने बिना किसी खास उत्साह के जवाब दिया।

उनकी नौकरानी चंद्र के चुपचाप कमरे में प्रवेश करने से उनकी बातचीत में बाधा उत्पन्न हुई।

"खाना तैयार है, हुजूर", उन्होंने घोषणा की। वे लंबे, गहरे रंग के, दुबले-पतले शरीर वाले, उभरी हुई आँखों वाले एक अधेड़ तमिल व्यक्ति थे।

जॉन अपनी पत्नी का हाथ थामे हुए उसे भोजन कक्ष में ले गया। सूरज बहुत पहले ही उत्तर से दक्षिण तक फैली पहाड़ियों के पीछे डूब चुका था, जो भारत के पश्चिमी तट पर फैली पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला का निर्माण करती हैं। यह ऊँची चोटियों की भूमि है, जो घने जंगलों से ढकी गहरी घाटियों से विभाजित हैं; यहाँ का हरा-भरा, सदाबहार जंगल भरपूर बारिश से सिंचित होता है। ऊँचे-ऊँचे पेड़, जिनकी जड़ें घनी झाड़ियों में छिपी हैं, धरती को हमेशा नम रखते हैं। दोपहर के समय भी चारों ओर धुंध छाई रहती है, जो जंगली झींगुरों की निरंतर चहचहाहट से गूंजती रहती है। पत्तियों और घास के तिनकों के नीचे लालची जोंकें छुपी रहती हैं, शिकार से चिपकने और खून चूसने के अवसर की प्रतीक्षा करती हैं।

यहां की मिट्टी बेहद उपजाऊ है, और इसी वजह से पूरे क्षेत्र में कई बागान फैले हुए हैं, जिनमें काली मिर्च, इलायची और अदरक की फसलें उगाई जाती हैं। वहीं, घाटों के पूर्वी ढलानों पर कॉफी के बागान हैं, जहां वे मानसून के प्रकोप से सुरक्षित रहते हैं। झींगुरों की चीख जंगल के पक्षियों की चहचाहट से गूंजती है; तोतों की चहचहाहट और ऊंचे पेड़ों पर बैठे भूरे लंगूर बंदरों की आनंदमयी आवाजें सुनाई देती हैं; जंगल की आवाज़ें साफ पानी की धाराओं की मधुर ध्वनि के साथ घुलमिल जाती हैं, जो काईदार चट्टानों और कंकड़-पत्थरों पर बहती हुई लहरें बनाती हैं।

उत्तर, दक्षिण और पश्चिम की ओर मखमली अंधेरा छाया हुआ था। केवल पूर्व दिशा में ही एक हल्की सी रोशनी दिखाई दे रही थी जो मानव बस्ती का संकेत दे रही थी। यह रोशनी ग्रेस्टोन के बंगले के बरामदे में रखे पेट्रोमैक्स लालटेन से आ रही थी।

इस जगह का निर्माण जॉन के पिता ने करवाया था। दीवारों पर उनके शिकार के

कई पुरस्कार टंगे हुए थे। एक खुले दरवाजे से होते हुए ड्राइंग रूम में प्रवेश होता था, जो अप्रत्याशित रूप से भव्य ढंग से सजा हुआ था, और फिर डाइनिंग रूम में।

खाना खाते समय जॉन ने कहा, "मैं तुमसे पूछना भूल गया था, प्रिय। क्या तुमने कल रात किसी बाघ की दहाड़ सुनी थी? या यूँ कहें, आज सुबह तड़के। यह 2 बजे के कुछ ही देर बाद की बात है। मैंने समय नोट कर लिया था!"

रूथ ने उसकी ओर देखा। "नहीं, मुझे लगता है मैं गहरी नींद में सो रही थी। क्या यहाँ बहुत सारे बाघ हैं?"

“आम तौर पर नहीं,” उसके पति ने जवाब दिया, “कभी-कभार ऐसा हो जाता है। मुझे उम्मीद है कि यह वह खूंखार आदमखोर सांप नहीं था जिसने पहले ही दो राहगीरों और मेरे दो कुलियों की जान ले ली है। आज उन आदमियों ने मुझे बताया कि उन्होंने कल रात अपनी झोपड़ियों से यह आवाज सुनी थी। असल में, वे आज सुबह काम पर नहीं जाना चाहते थे, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि यह आदमखोर सांप ही था और वह उनमें से किसी एक को मार डालेगा। मैं उनके डर को समझ सकता हूँ, बेचारे।”

बाघ के बारे में सोचते हुए ग्रेस्टोन चुप हो गया। अगर उसने फिर से किसी को मार डाला, तो उसके मजदूर काम करने से मना कर देंगे। रॉब रॉय एक विशाल मिश्रित कृषि बागान था। जिस पहाड़ी पर बंगला बना था, उसकी ऊपरी ढलानों पर अरेबिका कॉफी उगती थी। नीचे की ओर, रबर, काली मिर्च, इलायची और अदरक की प्रधानता थी। यह उसका घर था और इसकी हर एक इंच उसके लिए यादों और हकीकत में अनमोल थी।

खाना खत्म होने के बाद, वे ड्राइंग रूम में लौट आए जहाँ रूथ उस मेज पर गई जिस पर बोतलें रखी थीं और अपने लिए जिन और बिटर के दो गिलास भर लिए। फिर वह इसे लेकर सोफे पर अपनी पसंदीदा जगह पर बैठ गई।

गहरी, कर्कश आवाज़ में लेटी हुई वह "स्लीपी लैगून" गुनगुनाने लगी, जबकि ग्रेस्टोन लापरवाही से "ऑनलूकर" के एक पुराने अंक के पन्ने पलट रहा था।

रूथ ने गाना बंद कर दिया और जॉन की ओर सिर झुकाकर पूछा, "कृपया मुझे एक सिगरेट दे दीजिए।"

बागान मालिक कमरे में आगे बढ़ा, एक कांच की अलमारी खोली और उसमें से सिगरेटों से भरा चांदी का डिब्बा निकाला। उसने डिब्बा उसे दिया, अपने लिए एक

प्लेयर्स सिगरेट चुनी और दोनों को जला लिया।

रूथ ने धीरे-धीरे अपनी नाक से धुआं बाहर निकाला और अपने पसंदीदा विषय पर वापस लौटने का फैसला किया।

"काश यहाँ कुछ करने को होता, जॉन," उसने शिकायत करते हुए कहा, "कहीं जाने को होता, किसी से बात करने को होता, तो इतना बुरा नहीं होता। यह भयानक अकेलापन कभी-कभी मुझे डरा देता है।"

"हाँ, जान। मुझे पता है कि बदलाव के साथ तालमेल बिठाना मुश्किल है," उसने प्यार से सहमति जताते हुए कहा। "इंग्लैंड से कितना अलग है। लेकिन इसका सामना तो करना ही पड़ेगा, है ना? बागान मालिक का जीवन तो अकेलापन भरा होता है।"

"तुम सही कह रही हो। मैंने तो इसका खामियाजा भुगता है," रूथ ने कड़वाहट से कहा। फिर उसने तीखे स्वर में कहा, "सिर्फ एक बागान मालिक की जिंदगी ही नहीं, बल्कि उसकी पत्नी की जिंदगी भी।"

"आप जागीर और घर के कामों में रुचि क्यों नहीं लेते, या किसी तरह का शौक क्यों नहीं ढूंढ लेते?" जॉन अधीर होने लगा था।

"मुझे दिखावटी बागवानी से कोई खास लगाव नहीं है," रूथ ने तीखे लहजे में कहा, "और इस अंधकारमय जगह में भला कौन सा शौक हो सकता है?"

रूथ ने अपना पेय समाप्त किया और ऊंघते हुए जम्हाई ली, अपनी बाहों को ऊपर और पीछे की ओर फैलाया, इस दौरान जॉन ने कुछ नहीं कहा। उसकी इस सुस्त हरकत से उसका सुडौल शरीर पूरी तरह से निखर उठा। हालांकि उसके मन में द्वेषपूर्ण विचार उमड़ने लगे थे, लेकिन इस हरकत को देखकर उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक आ गई और उसने गहरी साँस ली।

"अगर तुम थक गई हो, तो हम सोने चलेंगे, डार्लिंग," उसने कहा।

वह सोफे की ओर बढ़ा जिस पर वह लेटी थी। ग्रेस्टोन ने उसे आसानी से अपनी मजबूत बाहों में उठा लिया। ऐसा करते समय, उसका एक स्तन उसके गाल से छू गया। उसने मुड़कर उस पर एक चुंबन दिया। इस प्रकार अपनी पत्नी को उठाए हुए, जॉन उस मेज के पास रुका जिस पर कमरे को रोशन करने वाला बड़ा दो बत्ती वाला तेल का दीपक रखा था। एक हाथ से उसका भार संभाले हुए, उसने दूसरे हाथ को क्षण भर के लिए हटाकर बत्ती को नीचे किया। फिर, आगे झुककर, उसने चिमनी पर जोर से फूँक मारी। रोशनी बुझ गई, और कमरा अंधेरे में डूब गया।

अध्याय दो

आदमखोर हमला करता है

"साहिब! साहब!" बार-बार आने वाली ये पुकारें जॉन के होश में गूंज रही थीं, और उसकी आँखें धीरे-धीरे खुल रही थीं। सुबह हो चुकी थी। रूथ उसके बगल में डबल बेड पर लेटी थी, उसकी रेशमी नाइट-शर्ट गले से खुली हुई थी।

“साहिब! साहब!” एक बार फिर आवाज़ आई। जॉन ने पहचान लिया कि यह उसके नौकर की आवाज़ है। पुकार में अत्यावश्यकता झलक रही थी। ऐसा होना ही चाहिए; नहीं तो वह आदमी उसे जगाने की हिम्मत ही न करता। बिस्तर पर बैठते हुए, ग्रेस्टोन ने अपने पायजामे वाले पैर ज़मीन पर रखे और चप्पलें ढूँढ़ने लगा। पैर चप्पलों में ठूँसते हुए, वह उठा और शयनकक्ष के दरवाज़े की ओर चल पड़ा। उसने दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और चंद्र के सामने आ गया।

"क्या हुआ है?" उसने हिंदुस्तानी में पूछा।

जवाब मिला, "बुरे बाघ ने एक कुली को खा लिया है।"

जॉन का शरीर अपने आप अकड़ गया। उस आदमखोर ने फिर से हत्या कर दी थी!

"यह खबर कौन लाया?" उसने पूछा।

"एक लंबानी, आपका एक कुली," चंद्र ने उत्तर दिया। "यह घटना नंदी पलाम के पास, लकड़हारों के शिविर में हुई, जो लकड़ी काटकर उसकी जगह नए रबर के पेड़ लगा रहे थे, जैसा कि आपको ज्ञात है।"

"उस आदमी से कहो कि वह इंतजार करे। मैं उसे लेकर वापस आता हूँ," जॉन ने अपने नौकर को जल्दी से निर्देश दिया।

नंद्या पलाम एक छोटी सी धारा का नाम था, जिसका उद्गम पश्चिम में एक पर्वत की चोटी से होता था और जो धीरे-धीरे ढलान से नीचे घाटी में बहती हुई एक बड़ी नदी, कराडी अर्र या 'भालुओं की नदी' में मिल जाती थी। यह एक एकांत इलाका था, जो उनकी ज़मीन के एकदम उत्तर-पश्चिमी कोने में स्थित था और अब तक घने जंगलों से आच्छादित था। इस धारा के किनारों पर बेर के पेड़ बहुतायत से उगते थे, और मानसून के मौसम में, जब हजारों बेर ज़मीन पर गिरकर बैंगनी रंग की चादर बिछा देते थे, तो आसपास के जंगलों से कई भालू यहाँ भोजन की तलाश में इकट्ठा होते थे। इसी कारण इस नदी का नाम पड़ा।

जॉन बाथरूम की ओर भागा और जल्दी से शौच करने लगा, तभी रूथ जाग उठी। उसे बेडरूम में रूथ के करवट बदलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, इसलिए उसने आधा खुला दरवाज़ा खोलकर झाग से सना चेहरा अंदर किया और कहा, "उस कमीने बाघ ने एक और कुली को मार डाला है। ये तीसरा है। मैं जाकर देखता हूँ, और अगर मुझे उस बेचारे का शव मिल गया तो मैं आज रात उसे खा जाऊँगा। वो दरिंदा शायद वापस आकर बाकी का काम भी पूरा कर दे।"

उन्हें आश्चर्य हुआ जब रूथ ने पूछा, "क्या मैं आपके साथ आ सकती हूँ?"

ग्रेस्टोन प्रसन्न हुआ और बोला, "ज़रूर, प्रिय; जल्दी करो और कपड़े पहन लो।"

कुछ ही देर में जॉन और रूथ ने झटपट नाश्ता कर लिया और तैयार हो गए। जॉन ने अपनी दो बैरल वाली .470 राइफल और दस नरम नोक वाले कारतूस उठा लिए। रूथ जीप में उसके बगल में बैठी थी और लम्बानी घोड़ा पीछे था। बागान मालिक उत्तर की ओर जाने वाले घुमावदार रास्ते पर चल पड़ा। यह रास्ता सड़क से ज़्यादा एक पगडंडी जैसा था और मानसून के दौरान पहाड़ियों से तेज़ी से बहते बारिश के पानी से बने कटावों से बुरी तरह से गड्ढों में बँटा हुआ था।

गाड़ी पहले और दूसरे गियर में तेज़ी से घुमावदार रास्ते पर आगे बढ़ रही थी, जिससे उसमें बैठे लोग बुरी तरह उछल-कूद रहे थे। लगभग दस मिनट की ड्राइव के बाद वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ जॉन ने जीप रोक दी। यहाँ से उन्हें जंगल से होते हुए उस छोटे से खुले मैदान तक पैदल जाना था जहाँ मज़दूर काम कर रहे थे। उस डेरे में लगभग आधा दर्जन झोपड़ियाँ थीं, जिनमें से प्रत्येक कटे हुए पेड़ों से तराशे गए दो खंभों से बनी थी और पत्तों की छत से ढकी हुई थी।

लगभग एक दर्जन पुरुषों, उतनी ही महिलाओं और उनसे दुगनी संख्या में हर उम्र के बच्चों की एक उत्साहित भीड़ उनका इंतजार कर रही थी। वे लकड़हारे और उनकी पत्नियां और परिवार थे। एक झोपड़ी से एक तेज और नीरस विलाप की आवाज आई। जॉन जानता था कि यह उस आदमी के रिश्तेदारों की आवाज थी जिसे आदमखोर सांप ने मार डाला था।

कई आवाज़ें एक साथ सुनाई देने लगीं। उसने उन्हें चुप रहने का इशारा किया और तमिल में लम्बानी से पूछा कि क्या हुआ था, और उनसे उन लोगों के बारे में बताने को कहा जो ठीक-ठीक जानते थे। लम्बानी ने चिन्नप्पन नाम के एक कुली की ओर इशारा किया, जो घटना का चश्मदीद गवाह था। चिन्नप्पन ने बताया कि पिछली

शाम को वह और नागराज नाम का एक और कुली दिन भर का काम खत्म करके शिविर लौट रहे थे। उसने अभी-अभी बीड़ी जलाई थी और उसका कश ले रहा था कि नागराज पेशाब करने के लिए कुछ कदम दूर चला गया और घुटनों के बल बैठ गया। बिना किसी चेतावनी के, चिन्नप्पन ने एक ज़ोरदार "हूफ़" की आवाज़ सुनी और एक बड़ा बाघ अचानक कहीं से प्रकट हो गया। दो छलांगों में ही वह नागराज तक पहुँच गया, जो उछलकर खड़ा हो गया। बाघ ने उसे नीचे गिरा दिया और कंधे से पकड़कर अपने मुँह में जकड़ लिया और उसे झाड़ियों में घसीटने लगा। नागराज मदद के लिए चिल्लाया और चिन्नप्पन से उसे बचाने की गुहार लगाई। लेकिन चिन्नप्पन भय से वहीं जम गया था, हिलने-डुलने या एक शब्द भी बोलने में असमर्थ। कुछ ही पलों में बाघ और नागराज घनी झाड़ियों में ओझल हो गए, हालांकि चिन्नप्पन को अब भी उसकी मदद की पुकार सुनाई दे रही थी। फिर नागराज की एक डरावनी गुर्राहट और आखिरी चीख सुनाई दी, जिसके बाद पूरी तरह सन्नाटा छा गया। इससे चिन्नप्पन को तुरंत कार्रवाई करने की प्रेरणा मिली और वह भागकर अपने शिविर में वापस आ गया। लम्बानी परिवार ने अगली सुबह जल्दी बंगले तक जाने का जोखिम उठाने की पेशकश की ताकि वे जॉन को सूचित कर सकें। उन्होंने पूरी रात एक बड़ी आग के चारों ओर बैठकर बिताई थी, जिसे उन्होंने बाघ के संभावित पुनरागमन से बचाव के लिए अंधेरे घंटों में जलाए रखा था।

ग्रेस्टोन ने कुछ देर सोचा कि सबसे अच्छा क्या करना होगा। शिविर के शोर और जलाई गई आग को देखते हुए, यह बहुत ही असंभव था कि बाघ ने आसपास कहीं भी अपने शिकार को खाने के लिए रुका हो। शायद वह शव को पहाड़ी पर ले गया हो, या शायद कराडी नाले की ओर। सबसे पहले उस आदमी के बचे हुए हिस्से को ढूंढना था और ग्रेस्टोन ने बाघ का पीछा करने में मदद के लिए स्वयंसेवकों को बुलाया। लम्बानी ने कहा कि उसे ट्रैकिंग के बारे में कुछ जानकारी है और वह आएगा। चिन्नप्पन भी आ गया क्योंकि नागराज उसका दोस्त था।

इतने समय तक रूथ को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है, हालांकि रोने-चिल्लाने की आवाज़ें सब कुछ बयां कर रही थीं और उसे काफी परेशान कर रही थीं। जॉन ने संक्षेप में स्थिति समझाई और कहा कि वह शव को ढूंढने जा रहा है।

"मेरे लौटने तक यहीं इंतजार करो," उसने अंत में कहा, "और भगवान के लिए, खुले मैदान को मत छोड़ो या जीप में वापस जाने की कोशिश मत करो।"

फिर वह उस झोपड़ी की ओर गया जहाँ से रोने की आवाज़ आ रही थी और शोक संतप्त परिवार को सांत्वना के कुछ शब्द कहे। अंत में, राइफल हाथ में लिए, बागान मालिक सावधानीपूर्वक उस स्थान की ओर बढ़ा जहाँ त्रासदी घटी थी, चिन्नप्पन आगे-आगे चल रहा था और लंबानी उसके पीछे-पीछे। जल्द ही वे अपने गंतव्य पर पहुँच गए। चिन्नप्पन ने उस दिशा की ओर इशारा किया जहाँ बाघ नागराज को लेकर भागा था। इस बिंदु से, पुरुषों ने अपनी जगह बदल ली और लंबानी आगे-आगे चलने लगा, जॉन उसके पीछे-पीछे चल रहा था, अचानक हमले से बचाव के लिए उसकी सुरक्षा कर रहा था।

झाड़ियाँ घनी थीं। कुछ पत्तियाँ इधर-उधर बिखरी हुई थीं, जिनमें से दो टूटी हुई टहनियों से लटक रही थीं, जो उस रास्ते का संकेत दे रही थीं जिस पर बाघ अपने शिकार को मुँह में लटकाए हुए चला था। लगभग पचास गज आगे बढ़ने पर उन्हें जंगल की हरी ज़मीन पर खून का एक धब्बा दिखाई दिया। निस्संदेह यही वह जगह थी जहाँ बाघ ने नागराज के कंधे से अपनी पकड़ छोड़ी थी और फिर उसे मार डाला था, जब नागराज ने वह आखिरी चीख मारी थी जिसे चिन्नप्पन ने सुना था। दोनों घावों से खून बह रहा था, और जंगल की घास और पत्तियों पर जमे हुए खून के छींटों ने आगे का रास्ता खोजना आसान बना दिया।

वे धीरे-धीरे और दबे पांव आगे बढ़ रहे थे, क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि बाघ कहीं वापस उसी रास्ते पर न आ गया हो और आगे घनी हरियाली में उनका इंतज़ार कर रहा हो। खून के धब्बे पूरब की ओर और ढलान पर जा रहे थे। इससे पुष्टि हुई कि हत्यारा अपने शिकार को कराडी अर्र की दिशा में ले गया था, जो जॉन के अनुसार लगभग तीन-चौथाई मील दूर था। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, घास लंबी होती गई और उनके कंधों तक पहुँच गई। फिर रास्ता एक छोटी सूखी नदी को पार करके अचानक खत्म हो गया। जंगली बेर की झाड़ी के पीछे नागराज के अवशेष छिपे हुए थे।

रात भर में आदमखोर ने खूब खाया था। बेचारे का बस सिर, हाथ का एक हिस्सा, जांघ से नीचे का एक पैर और थोड़ी दूरी पर बचा हुआ दूसरा पैर था, जो अभी भी कुतरे हुए पिंडली से जुड़ा हुआ था। आँखें खुली हुई थीं और एक मृत व्यक्ति की स्थिर नज़र से उन्हें घूर रही थीं। चेहरे पर एक अजीब सी शांति थी। शव की कमर और पसलियों की हड्डियाँ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, जो उस मांसाहारी के भरपेट भोजन का भयावह प्रमाण थीं।

ग्रेस्टोन और लम्बानी चुपचाप खड़े रहे और जंगल को ध्यान से निहारते रहे। उनके चारों ओर एक जीवंत सन्नाटा छा गया। एक पत्ता भी नहीं हिला, जबकि उन्हें हर पल यह आभास होता रहा कि कोई उन्हें देख रहा है। जॉन अपने मचान को बांधने के लिए एक उपयुक्त पेड़ की तलाश करने लगा, क्योंकि भले ही उसने बहुत कुछ खा लिया था, फिर भी उस रात आदमखोर के लौटने के लिए पर्याप्त बचा हुआ था।

दस गज की दूरी पर तीस फुट ऊँचा एक छोटा पेड़ उग रहा था। यह सबसे नज़दीकी पेड़ था, लेकिन उस समय लगभग पत्तों से रहित होने के कारण, इच्छित उद्देश्य के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं था।

जॉन और लम्बानी ने दबी आवाज़ में बात की और तय किया कि उस पेड़ पर ज़मीन से लगभग बारह फीट ऊपर एक मचान बाँधा जा सकता है। आदमखोर बाघ या किसी भी बाघ के लिए इतनी ऊँचाई पर बैठना सुरक्षित नहीं था, लेकिन अगर वह इस जानवर को मारने का मौका नहीं छोड़ना चाहता था तो उसके पास कोई और चारा नहीं बचा था। अब उन्हें ज़रूरी सामान और काम में मदद करने के लिए और आदमियों को लाने के लिए वापस जाना होगा।

जाने से पहले, तीनों आदमियों ने शव को छोटी-छोटी टहनियों से ढक दिया ताकि गिद्ध उसे ढूंढ न सकें और दोपहर तक उसका मांस नोच न लें। फिर वे तेजी से लकड़हारों के शिविर की ओर लौट गए।

जॉन ने अपनी पत्नी को बताया कि उन्हें क्या मिला है और कुलियों को लगभग छह फुट लंबे लकड़ी के टुकड़े काटने और तैयार करने का निर्देश दिया, जबकि वह मचान बांधने के लिए रस्सी और अपनी बिजली की टॉर्च लेने घर वापस चला गया। लम्बानी को वहीं छोड़कर, वे जीप की ओर वापस चले ताकि तेज़ी से घर की ओर रवाना हो सकें। जब तक वह वापस उस खुले मैदान में लौटा, कुलियों ने वैसा ही कर दिया था जैसा उसने कहा था। लम्बानी, चिन्नप्पन और तीन अन्य लोगों को लकड़ी ढोने और मचान बांधने में मदद करने के लिए अपने साथ चलने के लिए कहकर, जॉन दल को उस स्थान पर वापस ले गया जहाँ उन्हें नागराज के अवशेष मिले थे।

जितना संभव हो सके चुपचाप, मोटे टुकड़ों को जुमलम के पेड़ की सुविधाजनक शाखाओं से बांध दिया गया और बाकी टुकड़ों को आड़ा-तिरछा करके चबूतरा बना दिया गया। फिर पत्तियों वाली छोटी शाखाओं को काटकर डंडियों के ऊपर रख दिया गया और जितनी संभव हो सके उतनी पत्तियों को कुशलतापूर्वक उनमें लपेट दिया

गया। इस काम में डेढ़ घंटे से अधिक समय लगा, लेकिन अंत में जॉन परिणाम से काफी संतुष्ट था। छिपने की जगह अच्छी तरह से ढकी हुई थी और उसमें रहने वाला व्यक्ति बाघ को दिखाई नहीं देगा।

नागराज के क्षत-विक्षत शव को ढकने के लिए इस्तेमाल की गई शाखाओं को हटाने के बाद जब वह मचान पर पहुँचा तो चार बज चुके थे। जॉन आराम से बैठ गया, उसने अपने साथ लाया हुआ थर्मस और बिस्कुट एक कोने में और अपना ओवरकोट और टोपी दूसरे कोने में रख दी। फिर उसने टॉर्च में तीन नई सेल डालीं और बल्ब को जाँचने के बाद उसे अपनी राइफल की नली से जोड़ दिया। जॉन ने शिकार की ओर पत्तियों में बनाए गए छेद को भी आज़माया और पाया कि वह बिना किसी कठिनाई के मानव शव की दिशा में अपनी बंदूक तान सकता है।

जब सब कुछ तैयार हो गया, तो उसने कुलियों को अंतिम निर्देश देते हुए अपनी झोपड़ियों में लौटने के लिए कहा, "आज रात कोई शोर मत करना, और केवल अपनी सुरक्षा के लिए पर्याप्त आग जलाना"।

जैसे ही आखिरी आदमी घने पत्तों में ओझल हो गया, जॉन खुद को जंगल में अकेला और अपने विचारों में डूबा हुआ पाया। वह आदमखोर सांप और उसके द्वारा की गई पांच मौतों के बारे में सोचने लगा। उसने सोचा कि क्या वह वापस आएगा, और कब? इससे उसकी नज़र नीचे उस शव पर पड़ी जो कल तक एक तंदुरुस्त इंसान था, उसका अपना एक कुली। जहाँ वह बैठा था, वहाँ से ऐसा लग रहा था मानो कटे हुए सिर की चमकती आँखें उसे तिरस्कार भरी निगाहों से घूर रही हों। शायद नागराज के यही आखिरी विचार रहे होंगे जब उसकी इस भयानक तरीके से मृत्यु हुई। आखिर, वह लकड़हारा उसी जागीर में उसके अधीन काम करता था। क्या वह उस बेचारे की मौत के लिए ज़िम्मेदार था?

ये निराशाजनक आरोप जॉन के मन पर हावी होने लगे, अंततः उसने बड़ी मुश्किल से इन्हें अपने मन से निकाल दिया। जीवन एक जुआ था और मृत्यु अटल, चाहे वह किसी बाघ के चंगुल में आए या घर पर बीमार बिस्तर पर। उसने मृतक के परिवार को उचित मुआवज़ा देने का निश्चय किया। लेकिन क्या पैसा उस परिवार के मुखिया की कमी को पूरा कर सकता था जो अब इस दुनिया में नहीं था?

परिवार के बारे में सोचते हुए, उन्हें अपने परिवार की याद आने लगी। उनकी बूढ़ी माँ आइल ऑफ वाइट के काउज़ में रहती थीं। उनके कोई भाई-बहन नहीं थे, जो

शायद उनके लिए सौभाग्य की बात थी।

और हां, रूथ भी थी। उसे याद आया कि कुछ महीने पहले जब वह छुट्टी पर इंग्लैंड गया था, तब उसकी पहली मुलाकात रूथ से कैसे हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो कल की ही बात हो। उसकी मां के कुछ दोस्तों ने उसे अपने घर बुलाया था। यह एक अनौपचारिक पार्टी थी। रूथ क्लीवलैंड से उसका परिचय शाम को पहले ही हो गया था, और जब नाच शुरू हुआ तो उसने शायद उससे उम्मीद की होगी कि वह उसे नाचने के लिए कहेगा। उसने यह कहकर इस विचार को टाल दिया कि उसने भारत के जंगलों में इतने साल बिताए हैं कि वह नाच के बारे में जो थोड़ा-बहुत जानता था, वह भी भूल चुका है। रूथ ने अपनी उस प्यारी सी मुस्कान के साथ जवाब दिया,

"ठीक है, मैं तुम्हें सिखा दूंगा।"

फिर वे नाचे, और जब उसने खुद को उसके चारों ओर बाहों में भर लिया, तो जॉन को वह पल अच्छी तरह याद आ गया जब उसके शरीर का स्पर्श उसके शरीर से इतनी मजबूती से सटा हुआ था और वह रोमांचित हो गया था। उस दिन के बाद, ऐसा लगा जैसे वे एक-दूसरे के प्यार में पड़ गए हों। उसकी माँ उस सादे विवाह में खुशी और उदासी के मिले-जुले भावों से रोई थी, क्योंकि अब उसका इकलौता बेटा किसी और का हो गया था।

फिर भारत की यात्रा का समय आया। जॉन को वह उत्साह और आनंद याद था जो उसे हर बार तब महसूस होता था जब रूथ पूर्व में किसी नए दृश्य को देखकर खुशी व्यक्त करती थी। इसके बाद बागान में उनके जीवन की शुरुआत हुई और उसे यह एहसास होने लगा कि उसकी पत्नी अब बिल्कुल भी खुश नहीं थी।

इस तथ्य के प्रति धीरे-धीरे जागरूकता तब स्पष्ट होने लगी जब अंतरंग क्षणों में रूथ का वह उन्माद कम होने लगा, जिसके साथ वह पहले स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर देती थी। साथ ही, रूथ अक्सर सामाजिक जीवन की तलाश में भारत के किसी शहर की यात्रा करने की इच्छा व्यक्त करती थी। अंत में, जॉन को इस बात की गहरी चिंता होने लगी कि वह अत्यधिक शराब पीने लगी थी।

अचानक पास की झाड़ियों में बैठे एक भूरे रंग के जंगली मुर्गे की तेज़ आवाज़ से उसकी तंद्रा टूट गई। उसने अपनी कलाई घड़ी देखी और समय इतनी तेज़ी से बीत जाने पर आश्चर्यचकित रह गया। अब साढ़े पाँच बज चुके थे।

जंगली मुर्गे की दिनदहाड़ी चुनौती का जवाब जंगल के चारों ओर से आए उसके

जैसे ही एक दर्जन मुर्गों ने तुरंत दे दिया, जो आपस में कांव-कांव कर रहे थे। नर मुर्गों की यही सामान्य आवाजें थीं, जब वे मादाओं को अपने चित्तीदार पंख दिखाते थे या साथी के लिए एक-दूसरे को चुनौती देते थे: "व्ही-ई-ई-ईव! कुक-काया-क्या-कुक'म!" वे जोश से कांव-कांव कर रहे थे।

जंगली मुर्गे के बोलते ही छोटा भूरा चिड़िया भी उसमें शामिल हो गया। उनकी आवाज़ें जंगली मुर्गे की आवाज़ों में घुलमिल गईं; कम सुरीली, लेकिन फिर भी जीवन के आनंद और मिलन की पुकार से भरी हुई। वह सोचने लगा कि कैसे यौन इच्छा सभी जीवित प्राणियों में प्रेरक शक्ति है—जंगली मुर्गे में, चिड़िया में, और पुरुषों और महिलाओं में भी!

छह बज चुके थे। दिन की चमक धीरे-धीरे सूर्यास्त के शांत रंगों में घुलने लगी और पश्चिम का आकाश लाल, नारंगी और बैंगनी रंग से बदलकर गहरा लाल हो गया। पेड़ों पर बैठे मोरों की कराह कई दिशाओं से सुनाई देने लगी, तभी एक विशाल पक्षी, अपने पंख फड़फड़ाते हुए, उस पेड़ के ऊपर से उड़ गया जिस पर जॉन बैठा था, उसकी राजसी पूंछ हरे, नीले और सुनहरे रंग के एक जीवंत धूमकेतु की तरह उसके पीछे लहरा रही थी।

अंधेरा और गहराता गया और जंगली पक्षियों की आवाज़ धीरे-धीरे शांत हो गई। दिन के पक्षियों की चहचहाहट बहुत पहले ही थम चुकी थी। अब रात के पक्षियों ने उनकी आवाज़ दोहराना शुरू कर दिया। पास ही एक चिड़िया ने "चक-चक-चक-चकचुकू-ऊ-ऊ!" की आवाज़ लगाई और देखते ही देखते पूरा जंगल उनकी आवाज़ से भर उठा। वे उड़ते हुए आगे बढ़े और धरती पर स्थिर भूरे पत्थरों की तरह बैठ गए।

लगभग अंधेरा हो चुका था। रात में निकलने वाली चिड़ियाएं अभी भी अपनी विचित्र आवाजें निकाल रही थीं, जबकि लगभग आधा दर्जन बड़े चमगादड़ पेड़ की चोटी के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे और उड़ते हुए उन रात्रिचर कीड़ों को पकड़ रहे थे जो अभी-अभी जाग रहे थे। उनसे तीखी, चीखने जैसी आवाजें आ रही थीं।

फिर रात हो जाती है। एक भयानक, बेमेल चीख सन्नाटे को चीर देती है, जो धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और जंगल की गलियों में गूंज उठती है: "ऊऊऊ-ऊऊऊ-ऊह! ऊऊ-कहाँ? ऊऊ-कहाँ?" "यहाँ! यहाँ! ही-याह! हीई-याह!" यह सियार झुंड की पुकार है। आस-पास की वस्तुएँ नज़र से ओझल हो जाती हैं, सिवाय पड़ोसी पेड़ों की ऊँची शाखाओं के, जो तारों से भरे आकाश की हल्की रोशनी में काली परछाईं की तरह

दिखाई देती हैं। टिमटिमाते जुगनुओं की हल्की रोशनी उस भयानक अंधेरे को और भी जगमगा देती है।

जॉन ने अपनी कलाई घड़ी पर दोबारा नज़र डाली। रेडियम से बने अंक बिल्कुल स्पष्ट थे। समय सात बजकर पंद्रह मिनट हो चुका था और उसके सामने लंबी रात्रि की निगरानी शुरू हो चुकी थी। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। पहले तो घोर अंधकार धीरे-धीरे हल्की रोशनी में बदल गया।

ऊपर आकाश में टिमटिमाते और जगमगाते असंख्य तारों का प्रतिबिंब। समय ठहर सा जाता है, और पूर्वी क्षितिज पर एक हल्की सी चमक चंद्रमा के उदय का संकेत देती है। उसका गोला घने जंगलों की पेड़ों की कतारों के ऊपर से झाँकता है, आग के एक चमकते, रक्त-लाल गोले की तरह, जो जैसे-जैसे ऊपर चढ़ता जाता है, वैसे-वैसे फास्फोरस की तरह चमकते, जगमगाते वैभव के गोले में तब्दील हो जाता है।

जॉन को याद आया कि पूर्णिमा का चांद निकला हुआ था, अगर बाघ दिखाई दे तो बहुत मदद मिलेगी। अब नौ बज चुके हैं, फिर भी जंगल के बड़े जीवों की ओर से किसी मांसाहारी जानवर के आने का कोई संकेत नहीं मिला है।

पेड़ों के बीच से छनकर आती चांदनी की कोमल किरणें ज़मीन पर पड़े शव को अपनी चांदी जैसी चमक से नहला देती हैं। जैसे ही वह उसे घूरता है, उसे कटा हुआ सिर और बाकी अवशेष धुंधले धब्बों के रूप में ज़मीन पर दिखाई देते हैं। समय धीरे-धीरे बीतता रहता है।

तभी, दूर पहाड़ी पर, एक जंगली भेड़ अचानक कर्कश स्वर में भौंकती है, रुक-रुक कर आती आवाज़ों की एक श्रृंखला: "खर्र! खर्र!" किसी चीज़ ने छोटे हिरण को सचेत कर दिया है। जॉन रोमांच से भर उठता है क्योंकि वह आदमखोर की रेंगती हुई आकृति को अपने करीब आते हुए कल्पना करता है। लेकिन खक्कर की आवाज़ें धीरे-धीरे कम होती जाती हैं, और कुछ देर बाद बंद हो जाती हैं।

जंगल में एक बार फिर सन्नाटा छा जाता है; लेकिन ज्यादा देर तक नहीं। "आओ! आओ! आओ!" ये चित्तीदार हिरणों के झुंड की तीखी आवाजें हैं, जो खक्कर की तुलना में उसके बैठने की जगह के काफी करीब हैं। इस चेतावनी से चिंतित श्रोता को यकीन हो जाता है कि झुंड ने जंगल के खूंखार जानवरों में से किसी एक को देख लिया है या उसकी गंध महसूस कर ली है। उनकी चीखों में घोर आतंक का भाव साफ झलक रहा है। चित्तीदार हिरण अभी आवाज ही लगा रहे थे कि सौ गज दूर से एक

सांभर अपनी गड़गड़ाहट भरी दहाड़ लगाता है। "हूंक!" वह जोर से पुकारता है, बार-बार "हूंक! हूंक!"

जॉन उस गहरी आवाज़ से समझ गया कि यह एक हिरण है। सांभर अपनी गर्जना करता हुआ पहाड़ी पर चढ़ गया। घाटी में, कराडी अर्र की दिशा में, एक हिरणी की तेज़ और अधिक घबराहट भरी दहाड़ सुनाई दी। उसने उस राजसी हिरण की चेतावनी सुन ली थी। चेतावनी बिल्कुल स्पष्ट थी। यह आदमखोर के आने की घोषणा थी।

तभी बाघ दहाड़ता है: "आउंघ-आआ! आउंघाआ!"

वह बहुत जल्द प्रकट होगा। ग्रेस्टोन एकदम सीधा बैठ गया, उसकी गोद में रखी राइफल झाड़ियों के बीच से मचान को छुपाने वाले छेद की ओर इशारा कर रही थी। वह उत्तेजना से कांप रहा था।

लेकिन कोई बाघ नहीं आता। सांभर की आवाज़ें थम जाती हैं और सन्नाटे को तोड़ने वाली एकमात्र आवाज़ पेड़ की तलहटी में ज़ोर-ज़ोर से चहचहाते जंगली झींगुर की है। एक काली आकृति चुपचाप, प्रेत की तरह, ऊपर से गुज़रती है। पंख फड़फड़ाने की आवाज़ आती है और वह पास की एक शाखा पर बैठ जाती है।

"हू-हू! हू-हू! हू-हू!" जंगल में नए आए किसी भी व्यक्ति को डरा देने वाली एक विचित्र चीख सन्नाटे को तोड़ देती है। जॉन को पास ही बैठे विशाल सींग वाले उल्लू की मौजूदगी का ज़रा भी एहसास नहीं होता। वह खूंखार आदमखोर उल्लू के आने का इंतज़ार करने में इतना मग्न था।

लेकिन बाघ प्रकट नहीं हुआ। वह उस काले शरीर के अवशेषों को तब तक घूरता रहा जब तक उसकी आँखें जलने लगीं। उसकी घड़ी में दस बजकर दस मिनट हो चुके थे। आदमखोर बाघ को अब तक लौट आना चाहिए था। जॉन को लगने लगा था कि वह नहीं आएगा।

इस विचार में व्याकुल होकर, उसकी निगाहें झाड़ियों में इधर-उधर भटक रही थीं, जहाँ तेज चाँदनी पहुँचकर जंगल की ज़मीन पर हल्की और गहरी छायाओं के पैटर्न बना रही थी। घूरते हुए, ग्रेस्टोन ने अपने कुली के अवशेषों के पास एक झाड़ी के नीचे एक बड़ा पत्थर या लकड़ी का लट्ठा देखा। एक पल के लिए उसने उस पर ध्यान नहीं दिया और उसकी निगाहें चारों ओर घूमती रहीं। फिर अचानक उसे उस दृश्य का महत्व समझ में आया। नागराज का शरीर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था, लेकिन जब उसने दिन

के उजाले में उसे देखा था, तब आसपास कुछ भी नहीं था।

अब जो उसने देखा वह बाघ था, और चितकबरी चाँदनी की धुंधली किरणों में वह उसे पहचान ही नहीं पाया था! जॉन ने फिर से देखा। इस बार उसने आदमखोर बाघ को पिछली शाम के अपने शिकार के पास पेट के बल झुका हुआ साफ़-साफ़ देख लिया। उसके माथे से पसीना बह रहा था और चेहरे पर टपक रहा था। अजीब तरह से विचलित होकर जॉन ने महसूस किया कि पसीने का नमक उसकी आँखों में जलन पैदा कर रहा है।

उसे एक कर्कश आवाज सुनाई दी, मांस के चीरने की आवाज, फिर हड्डी के टूटने की आवाज। आदमखोर ने अपना खौफनाक भोजन शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे जॉन ने राइफल को अपने कंधे पर उठाया और निशाना साधने की कोशिश की। लेकिन मचान घने अंधेरे में था और चांदनी होने के बावजूद, निशाना दिखाई नहीं दे रहा था। उसे टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ेगा।

उसका दाहिना हाथ ट्रिगर पर था जबकि बायां हाथ स्विच बटन को ढूंढ रहा था। उसने उसे अपने अंगूठे के तलवे के नीचे महसूस किया, खुद को शांत करने के लिए गहरी सांस ली और बटन दबा दिया।

इससे पहले कि जॉन को अपनी अक्षम्य गलती का एहसास होता, दाहिनी ओर से प्रकाश की किरण चमक उठी। उत्तेजना में आकर उसने टॉर्च का चेहरा पत्तियों के बीच बने उस छेद से बाहर नहीं निकाला था, जिसके बीच से राइफल बाहर निकली हुई थी। प्रकाश पत्तियों की कुछ टहनियों से टकराकर बाघ पर पड़ने के बजाय परावर्तित हो गया, जिससे उसके लिए उनके पार देखना बिल्कुल असंभव हो गया।

अपनी गलती का एहसास होने पर, ग्रेस्टोन ने तेजी से हथियार को आगे बढ़ाया जब तक कि मशाल बाधा डालने वाली टहनियों को पार नहीं कर गई।

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। शुरुआती कुछ पल और वह तेज़ रोशनी आदमखोर बाघ को ऊपर मंडरा रहे खतरे से आगाह करने के लिए काफी थी। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ, वह जंगल की ओट में वापस कूद गया, जहाँ जॉन ने उसके गिरने की हल्की सी आवाज़ सुनी। उसके बाद बाघ ने कोई आवाज़ नहीं की। ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे पता चले कि वह अभी भी झाड़ियों में छिपा हुआ है या चुपचाप चला गया है।

पूरी रात वह मचान पर असहज स्थिति में बैठा रहा। सुबह 3 बजे के बाद पहाड़ों

से एक तेज़ ठंडी हवा चली, जिससे उसकी हड्डियाँ तक काँप उठीं। तापमान में इस अचानक गिरावट के कारण ज़ोरदार ओस गिरने लगी। जॉन ने पत्तियों से टपकती नमी को सुना, जिससे उसके कपड़े भीग गए।

ओस को रोकने के बावजूद उसका मोटा कोट उसे कड़ाके की ठंड से नहीं बचा सका। राइफल की नालें बर्फ़ जैसी ठंडी लग रही थीं। हवा के झोंकों से उठती नागराज के सड़ते हुए शव की दुर्गंध हर घंटे बढ़ती जा रही थी, जिससे जॉन को घिन आने लगी।

अंततः, जंगली मुर्गे की मधुर बांग ने एक निराशाजनक रात के अंत की घोषणा की। सूर्य लाल, पीले, नीले और गुलाबी रंगों में उदय हुआ, और भीगे हुए जंगल के ऊपर मंडरा रहे कोहरे के घेरे छंट गए।

तभी उसे दूर से कुलियों की आवाज़ सुनाई दी जो उसे पुकार रहे थे। जॉन ने उन्हें पास आने का इशारा किया और जब वे पेड़ के नीचे आ गए, तो उसने अपना कंबल और कोट नीचे गिरा दिया और खुद भी नीचे उतर गया। अपने आस-पास मौजूद चिंतित लोगों और उनके सवालों का जवाब उसे सच ही देना था। आदमखोर ने चालाकी से उसे चकमा दे दिया था।

जिस दैनिक खतरे में वे सभी जी रहे थे, वह जारी रहने वाला था।

अध्याय 3

रॉबर्ट निकोलसन ने दौरा किया

“हमारे साथ कोई और भी है, जॉन। क्या यह रॉबर्ट की कार नहीं है?”

जॉन ग्रेस्टोन के बंगले के पुराने जमाने के बरामदे की ओर जाने वाले रास्ते पर मुड़ी ब्यूक कार की विंडशील्ड पर सूरज की रोशनी चमक रही थी। रूथ ने इसे सबसे पहले देखा था।

उसके पति ने उसकी बात सुनकर ऊपर देखा। "तुम सही कह रही हो," उसने जवाब दिया, "काफी समय से उसने फोन नहीं किया था। आज रविवार है, इसलिए वह आया होगा, इसमें कोई शक नहीं।"

रॉबर्ट निकोलसन जिला पुलिस अधीक्षक थे। उनका मुख्यालय नीलांबुर में था, जो वहां से 45 मील दूर था। वे कभी-कभार उनसे मिलने जाते थे और एक सुखद साथी साबित हुए थे, हालांकि उनकी ये मुलाकातें बहुत कम होती थीं क्योंकि उनका जिला एक विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था।

गाड़ी रुकी और रॉबर्ट स्टीयरिंग व्हील से बाहर निकला। वह गोल-मटोल आदमी था, लगभग पाँच फुट आठ इंच लंबा, लाल रंग का, वैक्स की हुई मूंछों वाला और तीखी भूरी आँखों वाला। उसने खाकी रंग का शॉर्ट्स और कमीज़ पहनी हुई थी, और अपनी सोलर टोपी उतारकर अपने छोटे-छोटे भूरे बालों को दिखाया जो अब सफ़ेद हो रहे थे।

तभी जॉन और रूथ ने देखा कि उसके साथ एक साथी भी था, जिसकी उम्र लगभग 30 वर्ष से अधिक लग रही थी और वह रॉबर्ट से काफी लंबा और मांसपेशियों वाला, लेकिन दुबला-पतला था। उसने पुलिस की वर्दी पहन रखी थी जो उसके साफ-सुथरे चेहरे और नुकीले जबड़े पर खूब जंच रही थी। उसके सुनहरे, करीने से संवारे हुए बालों के नीचे उसकी नीली आँखें चमक रही थीं, और तभी उस अजनबी ने अपना हेलमेट उतार दिया।

"काफी समय बाद आपसे मिलकर खुशी हुई, रॉबर्ट," ग्रेस्टोन ने सौहार्दपूर्ण ढंग से अभिवादन किया।

"सुप्रभात, रूथ। आप कैसे हैं, जॉन?" निकोलसन ने जवाब दिया, "मैं आपको यह बताने आया था कि आखिरकार मुझे सेवानिवृत्ति से पहले लंबी छुट्टी के आदेश मिल गए हैं, और टेडी बेकर से आपका परिचय कराने आया था, जो मेरी जगह लेंगे।"

"आपका आना बहुत अच्छा लगा, रॉबर्ट, और आपका भी, मिस्टर बेकर," रूथ ने बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ने से पहले हाथ मिलाते हुए कहा, "मैं इस अकेलेपन से बहुत ऊब गई हूँ और एक नया चेहरा देखना वाकई बहुत अच्छा लग रहा है।" ये कहते हुए रूथ ने नए पुलिस अधिकारी की ओर तिरछी नज़र डाली।

वे बरामदे में रखी सिंगापुर की बेंत की कुर्सियों पर बैठ गए और जॉन ने जोर से कहा, "चंद्रा, कृपया व्हिस्की और सोडा ले आओ।"

उसका सांवला नौकर एक ट्रे में जॉन हेग की एक बोतल और चार गिलास लेकर लौटा और फिर प्रवेश द्वार में रखे केरोसिन से चलने वाले रेफ्रिजरेटर से एक सोडा लेकर आया।

“खैर, मुझे जाने का अफसोस नहीं है,” रॉबर्ट निकोलसन बोल रहे थे, “हालांकि मुझे आप दोनों की बहुत याद आएगी।”

जॉन ने उनके गिलासों में अच्छी मात्रा में व्हिस्की डाली और उसमें सोडा मिला दिया।

अपना गिलास भरने के बाद उसने कहा, "चीयर्स!" और उन चारों ने अपने गिलास ऊपर उठा लिए।

रॉबर्ट निकोलसन उस दिन उतने ही बातूनी साबित हुए जितने वे आम तौर पर कम बोलने वाले होते थे। उन्होंने पूछा, "रॉब रॉय कैसा है? क्या उसे कुली से कोई परेशानी हुई?"

“नहीं, मुझे कोई शिकायत नहीं है,” ग्रेस्टोन ने उत्तर दिया, “सैनिक काफी नियमित हैं और फिलहाल उन्हें कोई शिकायत भी नहीं है, हालांकि वह कुख्यात आदमखोर बाघ फिर से दिखाई दिया है, धिक्कार है उसे।”

"जी हां, मेरे दाफेदार ने कल ही एक रिपोर्ट भेजी थी, जिसमें बताया गया था कि आपके दस साथियों में से एक मारा गया है। क्या यह घटना एस्टेट में हुई थी?"

"ऐसा हुआ, और वह जानवर बेहद चालाक लग रहा था। मैं उसके लिए तैयार हो गया, लेकिन उसने मुझे गोली चलाने का मौका नहीं दिया। एक पत्ते ने मेरी टॉर्च की रोशनी को रोक दिया।"

टेड बेकर ने इस पूरे समय मुश्किल से ही कुछ बोला था, बल्कि वह अपनी ड्रिंक की चुस्की ले रहा था और बीच-बीच में रूथ की तरफ देख रहा था। जॉन द्वारा बाघ के बारे में बताई गई बातों ने उसकी दिलचस्पी जगा दी, और वह आगे झुककर पूछने लगा, "क्या सच में यहाँ कोई आदमखोर बाघ है, मिस्टर ग्रेस्टोन?"

इससे पहले कि जॉन जवाब दे पाता, रूथ ने बीच में ही कहा, "अरे, इतना औपचारिक मत बनो। वह जॉन है, और मैं रूथ हूँ; और तुम टेड हो," उसने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा।

बेकर ने तारीफ स्वीकार कर ली। "धन्यवाद, श्रीमती ग्रेस्टोन—मेरा मतलब है, रूथ," उन्होंने खुद को सुधारते हुए कहा। अपने मेज़बान की ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, "मुझे इसके बारे में विस्तार से बताइए। मैं बहुत उत्सुक हूँ, मैंने आदमखोर बाघों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है, लेकिन चिड़ियाघर के अलावा कभी किसी बाघ के पास नहीं गया।"

रॉबर्ट ठहाका लगाते हुए मज़ाकिया अंदाज़ में बोला, "बेशक तुमने नहीं देखा होगा"; और आगे कहा, "जैसा कि तुम्हें समझ आ गया होगा, टेड अभी-अभी घर से निकला है। वह उन खुशनसीब लोगों में से एक है जिसने परीक्षा दी, पास हुआ और सीधे डीएसपी बन गया। उसे मेरी तरह

मेहनत करके तरक्की नहीं करनी पड़ी।"

जॉन मुस्कुराया। उसने रॉबर्ट को अक्सर यही बात कहते सुना था, और लगता था कि रॉबर्ट को अपनी तरक्की की कहानी सुनाना बहुत पसंद था। उसने इंग्लैंड से बिना किसी व्यावहारिक अनुभव के सेना में भेजे गए कमीशन प्राप्त अधिकारियों के प्रति अपनी घृणा को भी नहीं छिपाया था। उसने संक्षेप में आदमखोर के बारे में बताया और अंत में इस बात का डर जताया कि इससे कुली हतोत्साहित हो जाएंगे।

"मैं खुद तो डर के मारे मर ही जाता," टेड ने स्वीकार किया, "आदमखोर शब्द का नाम सुनते ही मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ जाती है।"

"कितनी अफ़सोस की बात है कि तुम उस जानवर को मार नहीं पाए," उसने आगे कहा, "उससे तुम्हारी सारी मुसीबतें खत्म हो जातीं। वैसे भी, आखिरी क्षण में ऐसा होना बहुत निराशाजनक होता है। मुझे तुम लोगों से ईर्ष्या होती है, जो ऐसी जगह रहते हो जहाँ तुम्हें ऐसे रोमांच का अनुभव करने का मौका मिलता है, बजाय अपने घर की नीरस ज़िंदगी और लगातार बारिश के।"

“इतनी जल्दी मत बोलो, मेरे लड़के,” रॉबर्ट हँसते हुए बोला, “मुझे यकीन है वो दिन आएगा जब तुम अपने प्यारे पुराने इंग्लैंड को तरसोगे, चाहे वो कितना भी नीरस और ठंडा क्यों न हो। बाघ का शिकार करना बहुत रोमांचक हो सकता है, लेकिन इस देश में आजकल ऐसी चीज़ें हैं जो मुझे अपने जाने के दिन का बेसब्री से इंतज़ार करवाती हैं। तुम्हें अपने भाग्य पर शुक्रगुजार होना चाहिए कि तुम मेरी जगह एक शांत इलाके में आ रहे हो। यहाँ चोरियाँ अपेक्षाकृत कम होती हैं, कोई गुस्सैल पति ईर्ष्या में अपनी पत्नी के टुकड़े-टुकड़े कर देता है या उसके प्रेमी को ज़हर दे देता है। दक्षिण में तो डकैती का नामोनिशान नहीं है। लेकिन उत्तर में पुलिस के बेचारे लोग तो बड़ी मुसीबत में हैं। गांधी नाम के एक छोटे से अधनंगे साधु ने देश में आग लगा दी है, और बड़े शहरों में लगभग हर दिन दंगे होते रहते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि सरकार उस बदमाश को गोली मारकर क्यों नहीं छुटकारा दिला देती।”

उनकी आवाज़ में नाराज़गी थी, क्योंकि रॉबर्ट ने भारत में कई साल बिताए थे और ब्रिटिश राज के खिलाफ़ मूल निवासियों के इन विद्रोहों से उन्हें गहरी नाराज़गी थी, क्योंकि उनका मानना था कि ब्रिटिश राज अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है। उन्होंने अपनी ड्रिंक का एक घूंट लिया और उदास होकर अपने जूतों को घूरने लगे।

"महात्मा गांधी—आपका मतलब उस राष्ट्रवादी नेता से है? हमें इंग्लैंड में बताया गया था कि उनसे और उनके अनुयायियों से हमें परेशानी हो सकती है। फिर भी, मुझे उस साहसी व्यक्ति के लिए मन ही मन प्रशंसा है। मैंने सुना है कि वह बहुत बार जेल जा चुके हैं और फिर भी हमें चुनौती देते रहते हैं।" टेड ने ये शब्द अपने स्वर में स्पष्ट सम्मान के साथ कहे।

इस पर उम्रदराज पुलिस अधिकारी भड़क उठे और अपनी कुर्सी पर आगे झुकते हुए बोले, "सरकार में बहुत सारे मंदबुद्धि लोग भरे पड़े हैं। उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि वे एक बेहद खतरनाक व्यक्ति को पनाह दे रहे हैं जो भारत के लाखों लोगों को एकजुट कर रहा है और आगे चलकर क्रांति लाएगा।"

"अरे, चलिए राजनीति की बातें बंद करते हैं। ये भयानक गांधी नाम का आदमी; ये तो किसी भिखारी जैसा ही है, है ना जॉन?" रूथ ने चिढ़कर सवाल पूछा।

"वह किसी भी तरह से भिखारी नहीं हैं, मेरी प्रियतमा," उनके पति ने समझाया, "बल्कि एक बेहद प्रभावशाली और चतुर व्यक्ति हैं। उनकी कानूनी पृष्ठभूमि उनके लिए बहुत फायदेमंद साबित होती है, और वे भीड़ मनोविज्ञान के विशेषज्ञ हैं। रॉबर्ट बिल्कुल सही कहते हैं जब वह कहते हैं कि गांधी ने अपने लाखों देशवासियों के दिलों में जगह बना ली है, और मैं भी इस बात से सहमत हूं कि वह एक बेहद खतरनाक व्यक्ति हैं।"

फिर उनकी ओर मुड़कर उन्होंने आगे कहा, "एक और पेय लेना चाहेंगे?"

रॉबर्ट ने अनमने ढंग से सिर हिलाया, जबकि टेड ने कहा, "धन्यवाद"।

जॉन ने उनके गिलासों में व्हिस्की और सोडा का एक और राउंड

डाला।

"टेड, तुम्हें अक्सर आना चाहिए," रूथ ने आमंत्रित किया। "यहाँ बहुत नीरसता है। चूंकि तुम भारत में नए हो, इसलिए तुम्हें यहाँ के तौर-तरीके सिखाने के लिए किसी की ज़रूरत होगी।"

"हा हा, ये तो बढ़िया मज़ाक है," रॉबर्ट हँसते हुए बोला, "देखो कौन बोल रहा है! रूथ, तुम भी यहाँ ज़्यादा दिन से नहीं हो।"

"खैर, बस कुछ ही महीने हुए हैं, लेकिन मुझे एक अनुभवी की तरह महसूस होता है। इन जंगलों में रहने के बाद कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं खुद जंगल जिम हूं।"

अपनी पत्नी की बातें सुनते हुए जॉन ने एक व्यंग्यात्मक मुस्कान को मुश्किल से दबाया और उसे याद आया कि उसकी पत्नी को जागीर में, और विशेष रूप से जंगल में कितनी कम दिलचस्पी थी।

बातचीत दस मिनट तक चलती रही, फिर रॉबर्ट निकोलसन उठे और थोड़ा अंगड़ाई ली। "चलो बेटा, हमें चलना होगा। मैं तुम्हें हमारे कुछ और चौकियों (बाहरी चौकियों) पर घुमा दूंगा।"

ग्रेस्टोन परिवार की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, "मैं अलविदा कहने के लिए फिर से आऊंगा।"

वे चारों बरामदे की सीढ़ियों से उतरकर इंतज़ार कर रही कार तक पहुँचे, जहाँ दोनों पुलिसकर्मियों ने अंतिम विदाई के साथ कार में सवार हो गए। कुछ ही सेकंड बाद कार रॉब रॉय एस्टेट से दूर ढलान पर सरपट दौड़ने लगी, और रूथ और जॉन वापस अपनी पुरानी सीटों पर लौट आए।

"कितना प्यारा लड़का है!" उसने याद करते हुए कहा। "वह कितना तरोताज़ा और गुलाबी दिखता है। यही तो इंग्लैंड की जलवायु का फायदा है। यह उमस भरा मौसम जल्द ही उसकी ताजगी को मिटा देगा, जैसा कि मेरे साथ पहले ही हो चुका है।"

"खैर, भारत की जलवायु के अपने फायदे हैं," जॉन ने कहा, "मैं इसे यूरोप की लगातार ठंड और बारिश से कहीं बेहतर मानता हूँ।"

"तुम्हें तो ऐसा ही लगेगा," रूथ ने तीखी आवाज में बीच में ही टोकते हुए कहा। "तुम यहाँ इतने लंबे समय से हो कि खुद ही आधे स्थानीय

बन गए हो। तुम अपने मजदूरों के साथ पूरी तरह सहज हो और यह मत सोचो कि मुझे किसी की संगति चाहिए।"

"अपने मजदूरों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने जैसा कुछ नहीं, मेरे प्रिय," जॉन हँसते हुए बोला, "ऐसा कहा जाता है कि संतुष्ट मजदूरों से उतना काम मिल सकता है जितना कि किसी बागान मालिक के गुलामों की तरह व्यवहार करने पर नहीं मिलता। कम से कम मुझे तो अभी तक कोई परेशानी नहीं हुई है।"

"मजदूर, कुली, जागीर, कटाई और रोपण। दिन-रात तुम बस इन्हीं सब बातों के बारे में बात करते रहते हो। काश तुम कुछ और रोचक विषय पर बात करने की कोशिश करते।"

"सच में प्रिय, मुझे खेद है कि तुम ऐसा महसूस करती हो, लेकिन तुम्हें याद रखना चाहिए कि मैं एक बागान मालिक हूँ," ग्रेस्टोन ने सुधार करते हुए कहा, "और एक बागान मालिक के लिए उसकी जागीर ही सब कुछ मायने रखती है।"

"शायद ठीक है, पर मैं इससे ऊब रहा हूँ।" वह उसकी तरफ देखे बिना कमरे से बाहर चली गई, और जैसे ही उसकी सुडौल आकृति नज़रों से ओझल हुई, जॉन सोचने लगा कि वे कब तक ऐसे ही चलते रहेंगे। वह अपनी कुर्सी से उठा, सीढ़ियों से नीचे उतरकर बगीचे में गया, जहाँ उसने अपने हाथ पीठ पर बांधकर ऊपर के चमकीले नीले आकाश को ध्यान से देखा, जिस पर कुछ हल्के बादल तैर रहे थे।

उन्हें मानसून के लिए अभी लंबा इंतजार करना था।

अध्याय 4

अजनबी विद्रोह का आग्रह करता है

"भाइयों! सब एक साथ इकट्ठा हो जाओ और ध्यान से सुनो! मुझे तुमसे एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात करनी है।"

अजनबी ने ऊँची आवाज़ में पुकारा। रॉब रॉय एस्टेट के मज़दूरों के नीरस जीवन में उसका यह अनोखा निमंत्रण कुछ हटकर था। इतना ही नहीं, वह अचानक कहीं से प्रकट हो गया था। देखते ही देखते सभी पुरुष उसके सामने खड़े हो गए, साथ ही वे महिलाएं और बच्चे भी जो अपने घरों से यह जानने के लिए दौड़ पड़े थे कि आखिर

बात क्या है।

वक्ता रमन नायर कद में छोटे थे, उनकी उम्र लगभग चालीस के आसपास थी और उनके घने काले बाल करीने से संवारे हुए थे, जिनमें सफ़ेद बाल झलक रहे थे। वे कोचीन के रहने वाले थे और मलयाली समुदाय से थे। वे उस इलाके में कांग्रेस पार्टी के स्थानीय नेता भी थे। कम से कम वे यही दावा करते थे। लेकिन पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता था कि वे कम्युनिस्ट थे।

रमन नायर सभी गोरे लोगों से नफरत करता था; और इस सूची में सबसे ऊपर अंग्रेज थे। उस शाम कुली मिस्त्री ने पीतल का बड़ा सा सींग बजाकर बागान में दिन भर का काम खत्म होने का संकेत दिया था। शाम के 5 बज रहे थे जब कुली समूह में और अकेले-अकेले अपने-अपने क्वार्टरों की ओर लौटने लगे।

रमन नायर उनका इंतजार कर रहे थे, वे उनकी छोटी-छोटी झोपड़ियों के पीछे पवित्र पीपल के पेड़ के आधार के चारों ओर बने मिट्टी के चबूतरे पर खड़े थे।

जब काफी बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने बोलना शुरू किया, “यह देखकर मेरा दिल दुखता है कि तुम सुबह से लेकर देर शाम तक मेहनत करती हो ताकि उस गोरे आदमी को अमीर बना सको जिसने तुम्हें काम पर रखा है। तुम्हारी तरह मैं भी एक भारतीय हूँ। तुम मेरे अपने खून के हो। तुम्हें इस तरह गुलामी करते, धूल में लोटते देखकर मुझे बहुत दुख होता है। अपनी औरतों को देखो। अपने बेचारे बच्चों को देखो। मैं देखता हूँ कि उनमें से कुछ ने पुरानी और फटी हुई साड़ियाँ पहनी हुई हैं। तुम्हारे बच्चे फटे-पुराने कपड़ों में हैं। तुम भी फटे-पुराने कपड़ों में हो। तुम्हारे घर छोटे-छोटे झोपड़ियों में हैं। तुम्हारे पेट खाली हैं क्योंकि तुम इतनी गरीब हो कि अपने और अपने परिवार के लिए खाना नहीं खरीद सकती। तुम्हारा मालिक—वह लानत अंग्रेज—तुम्हें तुम्हारी मेहनत और पसीने, तुम्हारी जीवन-रक्त-सहन की कमाई के बदले में दिन में बस कुछ आने ही देता है। तुम रात को ठंड में काँपती हो। जब बारिश होती है, तब भी तुम्हें काम करना पड़ता है और भीगना पड़ता है, बदलने के लिए सूखे कपड़े भी नहीं होते। अगर तुम बीमार हो जाओ या एक दिन या कुछ घंटों के लिए भी अनुपस्थित रहो, तो वह तुम्हारी मजदूरी काट देता है, जबकि वह पहले से ही बहुत कम है।” यह और इससे भी कहीं अधिक बुराई वह तुम्हारे साथ करता है, जबकि वह अपनी कुप्रथा से उत्पन्न पत्नी के साथ आलीशान बंगले में ऐशो-आराम से रहता है। वह मोटरगाड़ी चलाता है, भरपेट खाता-पीता है और तुम्हारे खर्चे पर हजारों रुपये

कमाता है, जबकि तुम भूखे मरते हो।

मेरे भाइयों, मेरी बहनों, मेरे बच्चों, इस तरह का अन्याय जारी रहना उचित नहीं है। हमारी यह महान भूमि - भारत - गुलामी की बेड़ियों से, विदेशी जुए से, अंग्रेजों द्वारा छल से हम पर थोपी गई गुलामी से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रही है। अब बहादुरी से आगे बढ़कर भारत को मुक्त कराने में मदद करना हमारा, आपका और मेरा कर्तव्य है।

"हमारे पूरे देश में संघर्ष जारी है। हमारे हजारों निर्दोष देशवासियों, महिलाओं और बच्चों को क्रूर अंग्रेज सैनिकों द्वारा प्रतिदिन बेरहमी से मार डाला जा रहा है। लेकिन हमारी जीत का दिन निकट है, जब हम इस श्वेत व्यक्ति और उसकी पत्नी और भारत के सभी शापित श्वेत लोगों को समुद्र में धकेल देंगे।"

उस दिन को शीघ्र लाने के लिए, हमें लड़ना सीखना होगा। हम खुलेआम ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे पास हथियार नहीं हैं। गोरा आदमी इतना चालाक है कि वह ऐसा होने नहीं देगा, क्योंकि वह जानता है कि तब हम उसे वहीं मार डालेंगे। इसलिए हमें भी उतना ही चालाक होना होगा। हमें उसे उसी के खेल में हराना होगा। हमें हर तरह से उसका विरोध करना होगा। हमें हर मोड़ पर उसे रोकना होगा। जैसा कि आप जानते हैं, मजदूरों के बिना एक बागान मालिक बेबस होता है, क्योंकि वह अपनी जागीर में काम नहीं कर सकता और न ही अपनी फसल काट सकता है। उसे अपनी शक्ति का एहसास कराने के लिए, आपको बस काम पर नहीं जाना है। अधिक मजदूरी की मांग करें। वह आपको धमकाएगा और जुर्माने और बर्खास्तगी से डराने की कोशिश करेगा। यदि आप सभी एकजुट हो जाते हैं, तो वह बेबस हो जाएगा। वह आपको बर्खास्त करने की हिम्मत नहीं करेगा; क्योंकि यदि वह ऐसा करता है, तो वह अपनी जागीर बर्बाद कर देगा और खुद गरीब हो जाएगा। उसके पास आपकी मांगों को मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। जब वह ऐसा कर देगा, तो कुछ समय बाद हम और भी मांगें रखेंगे और उसे उन पर भी सहमत होने के लिए मजबूर करेंगे। अंत में, पूरे भारत में इस तरह की चीजें करके; संचार व्यवस्था को बाधित करके; ट्रेनों को तोड़कर; हम उन्हें हर जगह और हर तरह से परेशान करेंगे; हर मौके पर उनकी हत्या करेंगे; हम इन अंग्रेजों को इतना सताएंगे कि मैं आपसे वादा करता हूं कि एक समय ऐसा आएगा जब वे हमारे प्यारे देश की धरती से भागकर अपने देश लौटने में बेहद खुशी महसूस करेंगे।

रमन नायर ने अपना भाषण समाप्त किया और यह देखने के लिए चारों ओर देखा कि इसका क्या प्रभाव पड़ा है। उनकी वाक्पटुता ने उन्हें उत्तेजित कर दिया था और उन्होंने अपने भाषण को ऐसे उन्मादपूर्ण स्वर में समाप्त किया कि उनके चेहरे से पसीने की पतली-पतली धाराएँ बहने लगीं।

उनके भाषण का परिणाम निराशाजनक रहा, कम से कम अधिकांश लोगों के लिए तो यही था। वे शांत, सरल स्वभाव के लोग थे, शांतिपूर्ण जीवन शैली के आदी थे, और इस तरह की तीखी बातें उनकी समझ से परे थीं। उनमें से अधिकांश चुप रहे या उन्हें खाली निगाहों से देखते रहे। कुछ लोगों ने इधर-उधर सहमति या असहमति के स्वर में कुछ बुदबुदाया।

वह अभी अपनी बात जारी ही रखने वाला था कि तभी सभा के पीछे खड़े एक दुबले-पतले व्यक्ति की आवाज सुनाई दी, "यह सब तो ठीक है, लेकिन जब हम काम करना बंद कर देंगे और डोराई (सरकारी ठेकेदार) हमें भुगतान करना बंद कर देगा, तो हमारे परिवारों का पेट कौन भरेगा?"

यह वैसा ही सवाल था जो रमन नायर पहले भी सुन चुके थे और दोबारा सुनना उन्हें पसंद नहीं था। वास्तव में, वे इसका जवाब नहीं दे सकते थे, क्योंकि इसका कोई उपयुक्त उत्तर नहीं था।

सौभाग्य से, उनके विचारों से सहमत एक अन्य व्यक्ति ने भी अपनी राय व्यक्त करने का साहस दिखाया। उन्होंने एक नया दृष्टिकोण सामने रखा, जिसका लाभ उठाने में रमन नायर ने जरा भी देर नहीं की।

"आप जो कुछ कह रहे हैं, उसमें से अधिकांश सच है, हे अजनबी। और फिर हम पर एक और विपत्ति आ पड़ी है। एक खूंखार आदमखोर बाघ यहाँ आ गया है और कुछ सप्ताह पहले उसने मेरे चचेरे भाई नागराज को मार डाला। यह सच है कि सफेद दोराई ने उसे गोली मारने की कोशिश की, लेकिन वह असफल रहा और बाघ अभी भी हमारे बीच है। किसी भी दिन, किसी भी समय, हममें से कोई भी उसका शिकार बन सकता है।"

“सुनो, मेरे श्रोताओं! अपने भाई की बात ध्यान से सुनो!” रमन नायर ने बीच में ही बोलते हुए कहा। “उसने सचमुच बहुत समझदारी की बात कही है। अगर तुम इस बाघ के हाथों खा जाओ तो उस गोरे को क्या फर्क पड़ता है? अगर तुम सब एक-एक करके मर जाओ तो उसे क्या परवाह? जब तक वह अपने बड़े बंगले में आराम से बैठा

है, अच्छा खा रहा है, जीवन की सुख-सुविधाओं का आनंद ले रहा है और तुम्हारी मेहनत और जान की कीमत पर खूब पैसा कमा रहा है, उसे कोई परवाह नहीं। वह कठोर, निर्दयी और स्वार्थी है; बिल्कुल सभी अंग्रेजों की तरह। इसीलिए हमें उन्हें भगाना होगा। अगर तुम मुझे शरण दोगे और कुछ दिनों के लिए अपनी बस्ती में रहने दोगे, तो मैं एक ऐसी योजना बनाऊंगा जिससे हम इस निर्दयी गोरे सूअर को परेशान कर सकें।"

इस बार सभा में सहमति की गूंज सुनाई दी। निःसंदेह, इस साहसी अजनबी को आतिथ्य सत्कार देने में कोई बुराई नहीं थी।

और इस तरह रमन नायर कुली-पंक्ति के अतिथि बन गए।

अध्याय 5

टेड बेकर ने निमंत्रण स्वीकार किया

एक सप्ताह बाद, रूथ बरामदे में बेंत की कुर्सी पर बेचैनी से बैठी एक पत्रिका पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रही थी। सुबह के 10 बज रहे थे और जॉन जागीर के अपने दैनिक निरीक्षण के लिए जीप में जा चुका था। उसने बाहर देखा और तेज धूप से बचने के लिए अपनी पलकें झपकाईं। तभी उसे पास आती हुई कार की आहट सुनाई दी। एक पल के लिए उसे लगा कि उसका पति काम से लौट रहा है। फिर उसे याद आया कि वह दोपहर के भोजन से पहले नहीं लौटेगा। थोड़ी देर बाद कार दिखाई दी और उसने रॉबर्ट की ब्यूक कार पहचान ली। रूथ को निकोलसन पसंद नहीं था। वह हमेशा विनम्र रहा था, फिर भी उसे एहसास हुआ कि वह जानता था कि वह चीजों की सही तस्वीर में फिट नहीं बैठती। "उस बूढ़े मूर्ख को क्या चाहिए?", उसने सोचा।

जैसे ही कार पास आई, उसने देखा कि ड्राइवर टेड बेकर था। और तो और, वह अकेला था। कार बरामदे के नीचे आकर रुक गई और रूथ अपने मेहमान का स्वागत करने के लिए सीढ़ियों से नीचे उतरी।

"सुप्रभात, रूथ," पुलिस अधिकारी ने अभिवादन किया, "मुझे उम्मीद है कि मैं आपके समय में दखल नहीं दे रहा हूँ, लेकिन यहाँ से गुजरते हुए मैंने सोचा कि कुछ मिनटों के लिए आपसे बात कर लूँ।"

"ज़रूर, टेड; आपका स्वागत है। मुझे बहुत खुशी है कि आप आए। अंदर आइए और चाय पीजिए," उसने आमंत्रित किया। "मुझे लगता है कि आप पर उष्णकटिबंधीय

भारत का असर दिखने लगा है।" रूथ ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, जब नए सुपरिटेंडेंट उसकी खाली की हुई बेंत की कुर्सी पर बैठ गए और अपने पसीने से तर माथे को पोंछा।

"ले जाने वाले", उसने पुकारा, और चुपचाप उपस्थित हुए नौकर से कहा, "कृपया कुछ चाय और बिस्कुट ले आओ"।

चंद्र ने प्रणाम किया और उतनी ही खामोशी से गायब हो गया जितनी खामोशी से वह आया था।

"उस असुविधाजनक कुर्सी पर क्यों बैठे हो? आओ, इस सोफे पर बैठो। यह कहीं ज्यादा आरामदायक है," रूथ ने आगे कहा।

टेड उठा और कुछ ही फीट दूर रखे सोफे तक उसके पीछे गया, जहां वह उसके बगल में बैठ गया।

"आपको अपनी नौकरी और भारत कैसा लगता है? या मुझे इतनी जल्दी काम की बातें नहीं करनी चाहिए?" उसने पूछा।

"खैर, देखा जाए तो मुझे दोनों ही पसंद हैं। यहाँ का जीवन एक बड़ा बदलाव है। आपका क्या ख्याल है?"

"हम्म," उसने जवाब दिया, "मुझे यह देश, इसकी जलवायु और यहाँ के लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं। ये लोग मुझे बहुत परेशान करते हैं। खासकर नौकर, जो मानो कहीं से अचानक प्रकट हो जाते हैं।"

ये शब्द कहते ही रूथ चौंक उठी, क्योंकि उसके बगल में बिस्कुट और चाय से भरी ट्रे लिए खड़ा वेटर वहीं था। उस भारतीय की गहरी काली आँखें उसे घूर रही थीं, और उस नज़र में टेड को लगा कि उसने तिरस्कार और नापसंदगी का भाव देखा। उस आदमी ने ज़रूर उसकी बातें सुन ली होंगी।

"कृपया ट्रे को यहाँ मेज पर रख दीजिए," रूथ ने तीखे स्वर में कहा।

चंद्र ने आज्ञा का पालन किया और उतनी ही खामोशी से कमरे से बाहर निकल गई जितनी खामोशी से वह दो बार अंदर आई थी, उसके नंगे पैरों से पत्थर के फर्श पर कोई आवाज नहीं हुई। वह दो कप चाय मिलाने में व्यस्त हो गई और टेड को बिस्कुट दिए।

"धन्यवाद," उसने धीरे से कहा और खुद भी एक उठा लिया।

"मेरी उंगलियों को माफ करना," उसने बीच में टोकते हुए कहा और उसकी

तश्तरी के किनारे पर एक और बिस्कुट रख दिया।

"चिंता क्यों करें, इसका स्वाद और भी अच्छा लगेगा।" टेड ने ये शब्द महज परिस्थितिवश कहे थे, लेकिन उसने उसके जवाब में मिली शरारती नज़र को महसूस कर लिया।

वे कुछ देर चुपचाप चाय पीते रहे। अंत में, बेकर ने चुप्पी तोड़ी।

मुझे खेद है कि भारत के बारे में आपकी ऐसी राय है। मुझे लगता है कि यह एक अच्छा देश है। यह खूबसूरत है। और यहाँ के लोग दिलचस्प हैं। मैं स्वीकार करती हूँ कि मुझे यहाँ बहुत गर्मी लगती है। अपने देश में इस धूप के लिए हम क्या कुछ नहीं दे सकते, हालाँकि मैं मानती हूँ कि यहाँ थोड़ी उमस भरी गर्मी है!

"खैर, कम से कम तुम तो बाहर जाते हो, लेकिन मैं तो जॉन के बाहर रहने के दौरान सारा दिन इस घटिया बंगले में फंसा रहता हूँ। यह बहुत ही नीरस है।"

उन्होंने टिप्पणी की, "मुझे लगता है ऐसा ही है, लेकिन समय के साथ आपको इसकी आदत हो जाएगी।"

"अब तो तुम जॉन की तरह बात कर रही हो। मैं उसे कलकत्ता या बंबई ले जाने के लिए मना रही हूँ, लेकिन वो अपने बागान से इतना जुड़ा हुआ है कि कहता है मानसून खत्म होने तक नहीं जा सकता। भगवान ही जाने तब तक मैं कैसे सब्र करूँगी।" उसकी आवाज़ में नाराज़गी झलक रही थी।

तब तक उनके प्याले खाली हो चुके थे और रूथ ने उन्हें फिर से भर दिया।

"काश तुम अक्सर आते। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि किसी से बात करना कितना अच्छा लगता है।" ये शब्द भारी आवाज़ में बोले गए और रूथ ने उस युवक की आँखों में देखा। उसने पाया कि वह उसकी नज़रों से नज़रें नहीं मिला पा रहा था, और उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसकी नज़रें ज़मीन पर टिक गईं। वह थोड़ा और करीब आई और उसका बायाँ घुटना हल्के से उसकी जांघ से छू गया। वे इधर-उधर की बातों में बेपरवाह होकर बातें करते रहे। घड़ी में दस बज गए। जॉन को वापस आने में अभी एक घंटा और लगेगा। रूथ ने अपना हाथ उसकी बांह पर रखा और आगे झुककर पूछा,

"मुझे एक सिगरेट ला दो, और तुम भी एक पी लो, टेड। सिगरेट का डिब्बा उस शोकेस में रखा है। मुझे उठने में बहुत आलस आ रहा है।"

"ज़रूर," उसने जवाब दिया और उसकी बात मानने के लिए उठ खड़ा हुआ।

जब रूथ सिगरेट जलाने के लिए झुकी, तो वह उसकी ओर झुक गई और उसकी पोशाक का गला आगे की ओर झुक गया। उसकी निगाहें स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही गहरी दरार पर टिक गईं और लालसा से वहीं ठहर गईं। रूथ जानती थी कि उसने देख लिया है। उसका निचला होंठ थोड़ा कांपने लगा।

उसी क्षण एक कार की आवाज़ ने उनके कानों में हलचल मचा दी। रूथ के चिड़चिड़े स्वर में कहने पर बेकर सीधा खड़ा हो गया।

"यह जॉन है; वह आज सामान्य से बहुत पहले आ गया है।"

उसने अपनी सीट बदलकर बेंत की कुर्सियों में से एक पर बैठ गया, और कुछ ही सेकंड बाद ग्रेस्टोन ने अपनी कार के पीछे जीप रोक दी।

"हैलो, टेड," उसने अभिवादन किया; और फिर, यह देखकर कि उसका आगंतुक अकेला है, उसने पूछा, "क्या आप रॉबर्ट को साथ नहीं लाए?"

नहीं, वह मुख्यालय में अपनी अंतिम रिपोर्ट लिखने में व्यस्त हैं। दरअसल, उन्होंने मुझसे कहा है कि वह दो सप्ताह में घर के लिए रवाना होने वाले हैं और एक-दो दिन में आपसे और रूथ से मिलने आएंगे।

"क्या आप कुछ पीना चाहेंगे?" ग्रेस्टोन ने पूछा।

"नहीं, धन्यवाद," टेड ने उत्तर दिया, "मैं रूथ के साथ चाय पी रहा था और भारत के बारे में अपने विचारों की तुलना कर रहा था।"

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। जॉन कुछ सोच में डूबा हुआ लग रहा था। फिर उसने कहा, "कल शाम एक कांग्रेसी बदमाश मेरे कुली लाइन में आया और मेरे आदमियों को मेरे खिलाफ भड़का रहा है। आज सुबह मैंने उनमें एक अजीब बदलाव देखा और मुझे समझ नहीं आया कि वे इतने उदास क्यों हैं, जब तक कि मेरे मास्टर ने मुझे सब कुछ नहीं बताया। मुझे लगता है कि आप पुलिसवालों को भी ऐसी ही परेशानी हो रही होगी। आप लोग इसके बारे में क्या करने वाले हैं?" जॉन ने यह सवाल चिंता भरे लहजे में पूछा। वह अच्छी तरह जानता था कि मजदूरों की समस्या का क्या मतलब होता है और इसके क्या परिणाम हो सकते हैं।

"रॉबर्ट मुझे इस स्थिति से निपटने के लिए काफी कुछ बता रहा है और सुझाव दे रहा है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे इसमें इतना परेशान होने की कोई बात नहीं दिखती। वैसे भी, आजकल दुनिया भर में श्रम विवाद हो रहे हैं। तो अगर भारत में भी ऐसा होता है तो चिंता की क्या बात है, यह तो होना ही है।" टेड का यह कथन काफी

व्यावहारिक लग रहा था।

ग्रेस्टोन अचानक अपनी कुर्सी से उठ बैठा। वह स्तब्ध था और यह उसके चेहरे पर स्पष्ट दिख रहा था। अगर इस तरह के अधिकारी को इंग्लैंड से इन नाजुक समय में ऐसे देश में व्यवस्था बनाए रखने के लिए भेजा जा रहा था, जहां हालात दिन-प्रतिदिन तेजी से बिगड़ते जा रहे थे, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि साम्राज्य बिखर रहा था और ब्रिटिश नियंत्रण खो रहे थे।

वह आगे झुके और गंभीरता से बोलने लगे। "मुझे नहीं पता रॉबर्ट ने आपको क्या बताया, लेकिन मैं आपको एक सलाह देना चाहता हूँ। आप युवा हैं और अभी-अभी इंग्लैंड से आए हैं। आप पूरब या पूर्वी सोच को नहीं समझते। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि यह पश्चिमी तौर-तरीकों और विचारों से बहुत अलग है। मुझे पता है, क्योंकि मेरा जन्म और पालन-पोषण यहीं हुआ है। आप यह नहीं समझते कि यह सब हमें भारत से निकालने की एक बड़ी साज़िश का हिस्सा है। गांधी के कांग्रेसी नेताओं के अलावा, बोल्शेविकों द्वारा उकसाया जा रहा एक बड़ा कम्युनिस्ट तत्व भी है। वर्तमान स्थिति यह है कि देश के कुछ दूरदराज के इलाकों में एक श्वेत व्यक्ति का जीवन निरंतर खतरे में है। इसमें कोई शक नहीं कि आपको पुलिस रिपोर्ट मिलती होंगी। आप खुद देख सकते हैं कि उत्तर में हालात बेहद खराब होते जा रहे हैं। सरकार को इस बारे में कुछ करना होगा और जल्दी करना होगा, वरना देश में हंगामा मच जाएगा।"

"रॉबर्ट ने भी लगभग यही कहा था, लेकिन आखिर हम कर क्या सकते हैं?" टेड ने पूछा। "तुम्हें क्या लगता है कि इंग्लैंड जैसा छोटा देश भारत के लाखों लोगों को कब तक काबू में रख पाएगा? मुझे लगता है कि हमें उन्हें वो सब कुछ दे देना चाहिए जो वे मांग रहे हैं और बात खत्म कर देनी चाहिए।"

बागान मालिक अभी कुछ कहने ही वाला था कि रूथ अचानक बोल पड़ी, "फिर वही बात। अब महात्मा गांधी और उनके कांग्रेस समर्थकों की बात हो रही है। चलिए किसी और विषय पर बात करते हैं।"

"मुझे माफ करना प्रिय, लेकिन मैं टेड को उस उपद्रवी के बारे में बताना चाहता था जो कुली-लाइन में आया था।"

"उस बाघ का क्या हुआ?" बेकर ने विषय बदलते हुए बीच में कहा, "उस बदमाश के बारे में कोई खबर है? मैं उसे एक थप्पड़ मारना चाहता हूँ।"

नहीं, ऐसा लगता है कि वह गायब हो गया है, और मुझे उम्मीद है कि उसका जाना स्थायी है। कांग्रेस का वह नेता अपने आप में ही काफी बुरा है, ऊपर से उस आदमखोर द्वारा और हत्याएं हों तो और भी बुरा होगा। इससे संकट पैदा हो जाएगा। इन सब कारणों के बिना भी आजकल लेबर पार्टी को अपने पक्ष में करना बेहद मुश्किल है।

"तुम्हें यहाँ कुछ समस्या है," टेड ने स्वीकार किया। फिर उठते हुए उसने आगे कहा, "ठीक है, मुझे अब जाना होगा क्योंकि मुझे कुछ कागजातों पर हस्ताक्षर करने के लिए कार्यालय वापस जाना है। रॉबर्ट मुझे जल्द से जल्द काम पर लगाना चाहता है।"

"क्या आप दोपहर के भोजन के लिए रुकेंगे?" रूथ ने आमंत्रित किया, "मुझे खुशी होगी।"

"जी हां, कृपया करें," जॉन ने भी यही बात दोहराई।

"बहुत-बहुत धन्यवाद, मुझे किसी और समय आकर खुशी होगी। अभी तो मुझे वापस जाना ही होगा।"

ग्रेस्टोन दंपति उनके साथ ब्यूक कार तक गए और तब तक देखते रहे जब तक कि गाड़ी सड़क के किनारे गायब नहीं हो गई। फिर वे दोपहर का भोजन करने के लिए अंदर चले गए।

अध्याय 6

रॉबर्ट की विदाई सलाह

"बस, मेरे बेटे, बात यहीं खत्म होती है। तुम्हारे अधीन जो लोग हैं, वे अच्छे लोग हैं और आपात स्थिति में उन पर भरोसा किया जा सकता है।"

वक्ता रॉबर्ट निकोलसन थे, और समय इंग्लैंड जाने से एक दिन पहले का था। उन्होंने टेड बेकर को उनके सभी कर्तव्यों से अवगत कराया था। उन्होंने उन्हें अपने प्रशासन के क्षेत्र का भ्रमण कराया था, और अब उन्हें पूरा विश्वास था कि उनका युवा शिष्य उनके द्वारा छोड़े गए कार्यभार को संभालने के बाद काफी अच्छा काम करेगा।
"धन्यवाद महोदय। आपने मुझे ये सब बातें बहुत ही अच्छे से समझाईं और मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा," टेड ने उत्तर दिया। "मुझे उम्मीद है कि मैं आपका योग्य उत्तराधिकारी बनूंगा।"

बुजुर्ग व्यक्ति ने व्यंग्यात्मक मुस्कान दी। अपने साथी की चापलूसी से उन्हें

काफी प्रसन्नता हुई, लेकिन उनकी मुस्कान इस बात के सचेत ज्ञान से उपजी थी कि बीते वर्षों में उनके अथक प्रयासों के बावजूद वास्तव में कितना कुछ करना बाकी था।

"और हां, ढेरों कागजी कार्रवाई भी है," उन्होंने आगे कहा। “हमेशा उनसे कदम मिलाकर चलने की कोशिश करो और उन्हें कभी भी पीछे न रहने दो। क्योंकि एक बार ऐसा हो जाए तो फिर से बराबरी पर आना बहुत मुश्किल हो जाता है। वैसे तो मुझे यह सब करना ज़रूरी नहीं लगता”, उन्होंने सोचा, “मद्रास के आई.जी.पी. भूल ही गए हैं कि हम पुलिसकर्मी हैं और हमें ढेर सारा कार्यकारी काम करना है। इसके बजाय, वे हमें मेमो के ढेर में दबा देते हैं, अक्सर छोटी-छोटी बातों पर विस्तृत रिपोर्ट मांगते हैं। कई बार तो मैं सारा दिन चिट्ठियाँ लिखता रहता था जैसे किसी पत्राचार क्लब का सदस्य हो। हाल ही में हालात और भी बदतर हो गए हैं, जब से यह निकम्मा आदमी आया है जिसके पास करने को कुछ भी नहीं है। लेकिन वो अच्छे दिन अब चले गए। अगर मेरा बस चलता तो मैं इस गांधी के नाम के इस मुसीबत को सालों पहले ही खत्म कर देता। लेकिन हमेशा की तरह, अंग्रेज सुस्त और नरम दिल हैं—बहुत ही ज़्यादा नरम। अब संघर्ष शुरू हो गया है, और भगवान की कसम, यह अब यहीं रहेगा। इससे भी बुरी बात यह है कि यह बढ़ता जा रहा है; और मुझे नहीं पता कि यह कैसे और कहाँ खत्म होगा।”

टेड बेकर ने धैर्यपूर्वक अपने साथी की बात सुनी। कुछ हफ़्तों के अपने साथ रहने के दौरान ही वह रॉबी को बेहद पसंद करने लगा था, हालाँकि वह यह भी मानता था कि उस बुजुर्ग व्यक्ति के विचार स्पष्ट रूप से साम्राज्यवादी थे। टेड ने इस बात के लिए उसे क्षमा कर दिया, यह याद करते हुए कि वह पुराने ज़माने के उपनिवेशवादियों में से था, जिन्होंने देश में इतने साल बिताए थे कि वे बदलते समय के साथ खुद को ढालने में असमर्थ प्रतीत होते थे।

ऐसे व्यक्ति से इस प्रकार की गहरी नाराजगी की उम्मीद की जा सकती थी जिसने अपने पूरे जीवन में भारतीयों से दासता का अनुभव किया था, और अचानक पाया कि वह चाटुकारिता गायब हो गई थी।

निकोलसन की आवाज ने उन्हें उनके विचारों से वापस जगा दिया।

“मुझसे संपर्क में रहना, मेरे बेटे। मैंने जो पता दिया है उस पर चिट्ठी लिखना और मुझे सारी खबरें देना। धिक्कार है इस देश पर,” बूढ़े पुलिसवाले की आवाज़ भारी और कांपती हुई सुनाई दी, “मैंने इस देश को कोसा, इसकी जलवायु को कोसा, इसके

लोगों को कोसा, और लगभग हर उस चीज़ को कोसा जिसे मैं कोस सकता था; मैं हमेशा के लिए घर लौटना चाहता था। लेकिन अब जब वो समय आ गया है, तो मेरे अंदर एक अजीब सा खालीपन है जिसका मुझे कोई कारण समझ नहीं आ रहा, क्योंकि," और यहाँ उसकी आवाज़ और भी भारी हो गई और लगभग फुसफुसाहट में बदल गई, "हालाँकि मैंने भारत को कोसा, फिर भी मैं उससे प्यार करता हूँ। उससे हमेशा के लिए बिछड़ने की सच्चाई ने मुझे खुद से और अपने चारों ओर बनाए गए भ्रम से रूबरू करा दिया है।"

जब उन्होंने बोलना बंद किया तो उनकी आंखें असामान्य रूप से चमक रही थीं, और टेड को एहसास हुआ कि, अपने रूखे और सख्त बाहरी रूप के बावजूद, रॉबर्ट निकोलसन रो रहे थे - यानी, उतना रो रहे थे जितना एक अनुभवी बूढ़ा सैनिक खुद को रोने की अनुमति दे सकता है।

टेड के गले में एक गांठ सी आ गई और उसे बड़ी मुश्किल से निगलना पड़ा। उसने खुद को मजबूर करके खिड़की से बाहर देखा, क्योंकि एक मजबूत इंसान के दुख को देखकर भी विचलित न होना मुश्किल होता है। निकोलसन कुछ देर चुप रहा। फिर उसने अपनी मेज पर रखे ट्रिचिनोपोली सिगार के डिब्बे को खोला।

"खुद ले लो," उसने कहा और एक सिगार चुन ली। उसने उसे जलाया और जब उसका सिरा चमकने लगा तो उसने पांच-छह कश लिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सिगार समान रूप से जल रही है। संतुष्टि से धुआं अंदर खींचते हुए, उसने उसे नीले रंग की पतली धारा के रूप में बाहर निकाला और छत की ओर तैरते हुए देखा।

उन्होंने टिप्पणी की, "मुझे उम्मीद है कि मैं इन्हें इंग्लैंड में खरीद पाऊंगा।"

"चिंता मत कीजिए, महोदय," टेड ने हंसते हुए कहा। "मैं आपको नियमित रूप से इनके डिब्बे भेजता रहूंगा। यह मेरा वादा है।"

"धन्यवाद, टेड। और बदले में मैं तुम्हें घर से कुछ भेजूंगा। जो भी तुम्हें पसंद हो।"

दोनों व्यक्तियों ने बोलना बंद कर दिया और रॉबर्ट के पुराने दफ्तर की दीवार पर टंगी सस्ती सरकारी घड़ी ज़ोर-ज़ोर से सेकंड गिन रही थी। वह सोच रहा था। हर मिनट भारत से मेरी विदाई को और करीब ला रहा है।

फिर निकोलसन ने एक गहरी साँस ली। "मैं अब कुछ ऐसा कहने जा रहा हूँ जो मैं किसी और आदमी से कहने की हिम्मत भी नहीं करूँगा। लेकिन मैं तुमसे कहना चाहता हूँ, टेड, क्योंकि..." और यहाँ वह कुछ पल के लिए रुका, "क्योंकि मैं तुम्हें

पसंद करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें बुरा नहीं लगेगा। अगर मेरी कोई संवेदनशील बात चुभ जाए तो बेझिझक 'चुप रहो' कह देना, और मैं एकदम चुप हो जाऊँगा। क्या मैं कह सकता हूँ?" उसने बेकर की ओर देखा, उसकी तीखी भूरी आँखों ने उसके सवाल को ज़ाहिर कर दिया।

"ज़रूर आगे बढ़िए, महोदय," टेड ने उत्सुकता से कहा, "आपकी सलाह इतनी मूल्यवान है कि उसका विरोध करना ठीक नहीं होगा।"

"अच्छा, तो फिर चूंकि तुमने पूछा ही है, उस मनहूस ग्रेस्टोन औरत से दूर रहो।"

रॉबर्ट निकोलसन ने टेड बेकर को घूरकर देखा। बेकर का चेहरा लाल हो गया और वह हकलाते हुए इनकार करने लगा।

लेकिन रॉबर्ट ने उसकी बात बीच में ही काट दी। "देखो टेड, मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और मैंने ज़िंदगी देखी है। एक ज़माना था जब मैं तुम्हारी तरह जवान और जोशीला था। महिलाओं के साथ मेरे भी कुछ छोटे-मोटे अनुभव रहे हैं।"

बीते वर्षों की यादों में खोते हुए उनके झुर्रियों वाले चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। "मैं खुद भी प्रलोभन में पड़ चुका हूँ, और मैंने महिलाओं को पुरुषों को प्रलोभन देते देखा है। और रूथ ग्रेस्टोन भी ऐसी ही एक महिला है। यह बात इतनी स्पष्ट है कि वह तुम्हें अपने जाल में फंसाने की कोशिश कर रही है। मैंने तुम्हारी पहली मुलाकात में ही यह देख लिया था। सुनो। तुम्हें ऐसा कभी नहीं होने देना चाहिए, समझ रहे हो! जॉन ग्रेस्टोन इतने अच्छे इंसान हैं कि हममें से कोई भी उनकी पत्नी को बहका नहीं सकता, चाहे यह अनजाने में और अनिच्छा से ही क्यों न हो। जॉन एक अच्छा इंसान है; जबकि रूथ एक कुतिया है।"

टेड को यह सब सुनने के लिए मजबूर होने पर गुस्सा आने लगा। उसने सोचा, "सिर्फ इसलिए कि वह मुझसे बड़ा है और मेरा आधिकारिक वरिष्ठ है, इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे उसे ऐसी छूट देनी होगी।"

फिर भी, टेड बेकर ने कुछ नहीं कहा।

अध्याय 7

गार्डनर परिवार का परिचय

"पिताजी, मैं कल जंगल में घुड़सवारी करने जा रहा हूँ। आदमखोर भालू के डर से मैं हर दिन सुबह से शाम तक इस बंगले में बंद नहीं रह सकता।"

यह शनिवार की शाम थी और वक्ता, जून गार्डनर, जो वन रेंजर की बेटी थीं, ने

दृढ़ निश्चय के साथ ये शब्द कहे।

"बकवास, जूनी," नेविल गार्डनर झल्लाए, "अरे, ये तो सोचना ही बेतुका है। सोचो, आदमखोर के साथ घूमना! क्या तुम्हें नंदीयाल जिले में बेचारे मिस्टर वायट के साथ जो हुआ था, वो याद नहीं? दिगुवामेटा में? बेशक तब तुम छोटी बच्ची ही थी, लगभग तीन-चार साल की। लेकिन, तुम्हारे बाल कितने सुंदर थे! तुम्हारी बेचारी माँ उन्हें देखकर कितना खुश होती होगी!" वह यादों में खोते हुए थोड़ा रुके।

ग्रेस्टोन प्लांटेशन के आसपास के जंगल साइलेंट वैली रिजर्व की सीमा से लगे हुए थे, जो लगभग अभेद्य घने जंगल का एक विशाल क्षेत्र था। वन रक्षकों का तबादला हो चुका था और नेविल गार्डनर ने लगभग एक महीने पहले ही अपने पूर्ववर्ती से कार्यभार संभाला था। गार्डनर एक एंग्लो-इंडियन थे और उन्होंने वन विभाग में पच्चीस वर्ष बिताए थे। वे विधवा थे, श्रीमती गार्डनर का पाँच वर्ष पहले निधन हो गया था। उसके बाद वे पूरी तरह से अपनी इकलौती बेटी जून पर निर्भर हो गए थे, जो अब इक्कीस वर्ष की थी। अपने पिता के विपरीत, जो मध्यम कद के और गठीले शरीर वाले थे, जिनकी रंगत पीली थी, मूंछें झुकी हुई थीं और काले बाल बिखरे हुए थे जिन्हें वे शायद ही कभी कंघी करते थे, जून दुबली-पतली और लंबी थी, उसकी भूरी त्वचा धूप से चमकती हुई तांबे जैसी रंगत में बदल गई थी। उसके होंठ मोहक रूप से धनुषाकार थे और उसकी काली पलकों के बीच उसकी भूरी आँखें चमकती थीं। उसके काले रेशमी बाल उसके कंधों पर बिखरे हुए थे, जो उसके आकर्षक अंडाकार चेहरे को और भी सुंदर बनाते थे। उसकी ठुड्डी पर पड़ने वाला डिंपल उसकी मनमोहक मुस्कान को और भी निखारता था।

रेंजर का घर एक नीची, सफेदी की हुई ईंटों की इमारत थी, जिसके ऊपर पुराने जमाने की अर्ध-गोलाकार टाइलों की ढलानदार छत थी, जो दक्षिण भारत के सभी सरकारी आवासों की शैली के अनुरूप थी। इसमें तीन कमरे, एक लंबा बरामदा, एक स्नानघर और संलग्न रसोईघर था, और इसमें सादा फर्नीचर था।

नेविल गार्डनर अपनी पत्नी की यादों को दिल से संजोते थे। वह उनकी अच्छी साथी थीं और समय-समय पर उनके साथ हर उस जंगल में जाती थीं जहाँ उनकी तैनाती होती थी। लेकिन भारतीय जंगलों में व्याप्त मलेरिया ने धीरे-धीरे उनकी शक्ति को क्षीण कर दिया था और जब अचानक हैजा की महामारी ने उन्हें अपनी चपेट में लिया तो वह आसानी से इसकी शिकार हो गईं।

जून एक हृष्ट-पुष्ट लड़की बन चुकी थी, जिसका स्वास्थ्य अपने पिता जैसा था और वह मलेरिया के परजीवी से प्रतिरक्षित थी। इसके अलावा, अपनी स्त्री जाति के लिए अत्यंत असामान्य रूप से, उसे जंगल से प्रेम था। वह अपनी .3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल से अच्छी निशानेबाज़ थी और जंगल तथा उसके जीव-जंतुओं के बारे में सब कुछ जानती थी। वन विभाग द्वारा रेंज अधिकारियों को उनके आवश्यक उपकरणों के हिस्से के रूप में घोड़े उपलब्ध कराए जाते हैं, और ये उनके द्वारा अपने उत्तरदायित्व वाले दूरस्थ क्षेत्रों में लंबी गश्त तय करने का एकमात्र परिवहन साधन होते हैं।

नेविल गार्डनर सुबह तड़के निरीक्षण कार्य के लिए घोड़े पर सवार होकर अपने क्वार्टर से निकलते थे, अपने साथ करी और चावल से भरा एक टिफिन ले जाते थे जो उनका दोपहर का भोजन होता था और एक बोतल कॉफी भी होती थी। जून को यह भोजन तैयार करने के लिए हर सुबह चार बजे उठना पड़ता था।

गार्डनर परिवार रविवार को छुट्टी का दिन मानता था और जून को इसका बेसब्री से इंतज़ार रहता था। वह रात भर खाना पकाती और सुबह होते ही अपने पिता के घोड़े पर सवार होकर राइफल लेकर जंगल में निकल जाती। उसे जंगली जानवर बहुत प्यारे थे और वह कभी भी किसी भी हानिरहित जानवर पर गोली नहीं चलाती थी, वह हथियार सिर्फ अपनी सुरक्षा के लिए रखती थी।

यह वही जीवन था जिसकी जून को मालाबार के चेडलेथ में आदत थी, जो उसके पिता का अंतिम मुख्यालय था। नीलगिरी-वायनाद में स्थित यह एक रमणीय स्थान था, जहाँ भरपूर वन्यजीव पाए जाते थे, और जून को उस क्षेत्र के जंगलों में फैले ऊँचे सदाबहार वृक्षों और लहराते बांसों का सुंदर जंगल बहुत पसंद था। अब, अपने पिता के तबादले के कारण, वह उन परिस्थितियों से बहुत नाराज़ थी जिन्होंने जंगल में घुड़सवारी करने की उसकी नियमित रविवार सुबह की दिनचर्या को बाधित कर दिया था।

वन रक्षकों ने गार्डनर को आस-पास के इलाके में आदमखोर बाघ की मौजूदगी की सूचना दी थी। अकेले घोड़े पर सवार होकर बाहर जाना खतरनाक था और खबर मिलते ही उसके पिता ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया था। वह खुद अपनी पैराडॉक्स बंदूक लेकर गश्त पर निकल गए। बाघ की मौजूदगी के कारण इलाके में काम काफी धीमा पड़ गया था और ठेकेदारों को पेड़ काटने और अन्य कामों के लिए मजदूर जुटाने में बहुत मुश्किल हो रही थी।

रेंजर ने अपनी कहानी जारी रखी। "खैर, श्री वायट उन अधिकारियों में से एक थे जिनकी भर्ती सीधे इंग्लैंड में हुई थी। वे जिला वन अधिकारी बनकर आए थे।" वे एक पल रुके, फिर बोले। "दिगुवामेटा में एक आदमखोर बाघ था। उसने उस इलाके में रहने वाले चेंचु जनजाति के लगभग छह या सात लोगों को खा लिया था। मुझे शक है कि इस नौजवान ने इससे पहले कभी बाघ देखा भी होगा।"

एक सुबह वह अपने घोड़े पर सवार होकर जंगल में चला गया। सुबह के 9 बज चुके थे। मैंने उसे अकेले न जाने की सलाह दी, लेकिन उसने कहा कि वह जानवर को टहलाना चाहता है। उसने कहा कि सूरज निकल चुका है, इसलिए कोई बाघ बाहर नहीं आएगा। दरअसल, वह दिन काफी गर्म था।

लगभग एक घंटे बाद घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ वापस आया। उसके पिछले हिस्से पर बाघ के पंजों के निशान थे और वायट उस पर सवार नहीं था। हमने उसके खुरों के निशानों का पीछा करते हुए उसी दिशा में वापस चलना शुरू किया जहाँ से वह आया था और एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ वायट जिस जंगल के रास्ते पर सवार था, वह एक नाले से होकर गुजरता था। वहीं पर बाघ उसका इंतजार कर रहा था। वह एक टीले से घोड़े की पीठ पर कूद गया था और उसे काठी से नीचे खींच लिया था। रेत में कई निशान थे—घोड़े के खुरों के निशान, एक बड़े नर बाघ के पंजे के निशान, और एक घसीटने का निशान जो हमें पता था कि वायट के जूते के जमीन पर घिसटने से बना था जब बाघ उसे उठाकर ले जा रहा था। बस थोड़ा आगे जाकर हमें खून मिला। पहले कुछ बूँदें, और फिर ज़्यादा।

"हम चार लोग निकले थे; तीन गार्ड और मैं। उन दिनों मैं सिर्फ एक वनपाल था। मैं अपने साथ अपनी पैराडॉक्स बंदूक लाया था—वही बंदूक जो मेरे पास अब भी है। हमने खून के निशान का पीछा किया, सावधानी बरतते हुए, इस उम्मीद में कि शायद किस्मत से हम समय रहते बेचारे वायट की जान बचा सकें। मुझे याद है कि हम बहुत डरे हुए थे।"

"हम लगभग एक फर्लांग ही आगे बढ़े थे कि झाड़ियों के बीच से हमें कुछ सफेद सा दिखाई दिया। वो वायट ही था। लेकिन वो मर चुका था। बाघ ने उसके कपड़े फाड़ दिए थे और उसका काफी हिस्सा खा लिया था। यह एक भयानक दृश्य था, और आज भी जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ, तो वो दृश्य मेरी आँखों के सामने है। जंगल में, जहाँ आदमखोर बाघ हो, घुड़सवारी करने का यही नतीजा होता है, और यही

आपके साथ भी हो सकता है।"

नेविल गार्डनर ने अपनी कहानी को एक निर्णायक मोड़ पर समाप्त किया। कहानी सुनते ही उनकी बेटी अनजाने में सिहर उठी। लेकिन जून तो जून थी, और एक बेहद दृढ़ निश्चयी युवती। उसके मन में चाहे जो भी डर हो, वह उसे अपने पिता या किसी और को दिखाने वाली नहीं थी। जब उसने अगले शब्द कहे, तो उसके नुकीले छोटे चेहरे पर एक गंभीर भाव उभर आया, मानो वह किसी लंबी बहस को खत्म कर रही हो।

"जैसा आपने कहा, पिताजी, वह अभी-अभी इंग्लैंड से आया था। लेकिन मैं सावधान रहूंगा और सीमा रेखा पर ही रहूंगा, किसी भी संकरे रास्ते पर नहीं चलूंगा। मेरे पास मेरी .3006 पिस्तौल है और मैं कोई नौसिखिया नहीं हूं!"

उसके पिता ने जवाब दिया, ".3006 की गोली तुम्हें नहीं बचा पाएगी, क्योंकि आदमखोर सांप अपनी मौजूदगी का पता नहीं चलने देते। वो पलक झपकते ही तुम पर टूट पड़ेगा।"

"नहीं, नहीं, पिताजी; चिंता मत कीजिए। मैं अपना ख्याल खुद रख लूंगी।" जून की आवाज़ में वही जानी-पहचानी दृढ़ता थी और उसके पिता ने बहुत पहले ही यह बात मान ली थी कि जब बेटी कोई फैसला कर लेती है, तो उसे बदलने की कोशिश करना बेकार है। गार्डनर अपनी बेटी से बेहद प्यार करते थे।

इस जीवन में वही उसकी एकमात्र सहारा थी। और इसी वजह से वह बचपन से ही उसे खूब लाड़-प्यार करता आ रहा था। इसी वजह से अगली सुबह जून अपने पिता के घोड़े पर सवार होकर जंगल में निकली, उसकी .3006 राइफल उसकी पीठ पर टंगी थी, उसका पट्टा बाएं कंधे से होते हुए उसकी छाती के पार दाहिनी ओर जा रहा था, चमड़े की पट्टी उसके स्तनों के बीच कसी हुई थी और उसकी खाकी कमीज में उनकी खूबसूरती को और भी उभार रही थी।

अध्याय 8

क्रांति की आग

रॉबर्ट निकोलसन इंग्लैंड की यात्रा पर निकल चुके थे। जाने से पहले, ग्रेस्टोन के घर पर एक छोटा सा समूह इकट्ठा हुआ था, जहाँ उन्होंने उन्हें विदाई दी थी और टेड भी वहाँ मौजूद था। यह स्पष्ट था कि जॉन अपने पिता के जाने से दुखी थे और रॉबर्ट निकोलसन के अंतिम शब्द भावपूर्ण थे।

"अलविदा, मेरे प्यारे। भगवान तुम्हारा भला करे और मुझे उम्मीद है कि हम फिर मिलेंगे," उसने भारी आवाज में कहा था।

टेड बेकर अपने ऑफिस की मेज पर बैठे-बैठे इन बातों के बारे में सोच रहे थे। उन्हें अपने पुराने बॉस की अजीब सी याद आ रही थी। गलियारे में भारी कदमों की आहट ने उनके विचारों को भंग कर दिया और उन्होंने दरवाजे पर दस्तक सुनी।

टेड ने कहा, "अंदर आ जाओ।"

दरवाजा खुला और इंस्पेक्टर रामचंद्र राव अंदर आए, जो एक मोटे ब्राह्मण थे। उनके भारी बूटों की एड़ियों की जोरदार आवाज आई और उन्होंने सलाम किया। फिर वे उत्तेजित होकर बोलने लगे।

"ऊपरपेट चौकी से अभी-अभी एक संदेश आया है, महोदय। बताया गया है कि आज सुबह पुलिस स्टेशन के सामने एक बड़ी भीड़ जमा हो गई थी, जो अंग्रेज़ सरकार के खिलाफ़ भयंकर नारे लगा रही थी। जैसा कि आपको ज्ञात है, वहाँ केवल एक हवलदार और चार कांस्टेबल तैनात हैं। हवलदार ने भीड़ को वहाँ से चले जाने को कहा। बदमाशों ने पत्थर समेत बड़े-बड़े औजार फेंकना शुरू कर दिया। बेचारा हवलदार क्या कर सकता था? इसलिए वह और दो कांस्टेबल तुरंत पुलिस स्टेशन के लॉकअप में छिप गए। बाकी दो पुलिसकर्मी भागने की कोशिश करने लगे। तभी बदमाश भीड़ ने पुलिस स्टेशन में आग लगा दी, जिससे धुआँ और आग की वजह से छिपे हुए पुलिसकर्मी बाहर आ गए। फिर उस बदमाश भीड़ ने उन्हें बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। उन्होंने उन्हें लाठियों, पत्थरों और भारी वस्तुओं से पीटा। हवलदार बेहोश हो गया, उसका सिर फट गया। शायद उसकी मौत हो गई है। दोनों पुलिसकर्मी बुरी तरह घायल हो गए हैं। आशंका है कि उनके हाथ, पैर और सिर भी बुरी तरह से टूट गए हैं। सूचना तुरंत पहुँचा दी गई है।" ऊपरपेट से गुजर रहे एक ट्रक चालक ने मारपीट देखी। भीड़ के उसे पकड़ने से पहले ही वह भाग निकला और घटना की सूचना देने के लिए जुलाई में आया।

"हे भगवान!" टेड ने हैरानी से कहा।

उन्हें याद आया कि रॉबर्ट निकोलसन ने उनसे कहा था कि मुसीबत कभी न कभी तो आएगी ही। फिर उन्होंने तुरंत सोचा। नीलांबुर और ऊपरपेट के बीच कोई टेलीग्राफिक संचार नहीं था। उन्हें तुरंत कार्रवाई करनी होगी। वे जानते थे कि वे लगभग बीस कांस्टेबलों की एक टुकड़ी जुटा सकते हैं। इनमें से चार पूर्व सैनिक थे

और हथियार चलाना जानते थे। बाकी गांव से भर्ती किए गए थे। कानून के प्रावधानों के अनुसार, पुलिस द्वारा आत्मरक्षा में भी गोली चलाने से पहले भीड़ को चेतावनी देने और दंगा अधिनियम को जोर से पढ़ने के लिए मजिस्ट्रेट की उपस्थिति आवश्यक थी। टेड को कड़वाहट से याद आया कि यही कारण था कि पूरे भारत में कई पुलिसकर्मियों की जान गई थी। उन पर उपद्रवी भीड़ ने हमला किया था और उन्हें पीट-पीटकर मार डाला गया था या जिंदा जला दिया गया था, जबकि उनके साथियों को मजिस्ट्रेट की अनुपस्थिति में असहाय होकर देखना पड़ा था। विडंबना यह थी कि उन्होंने महसूस किया कि यह उस 'ब्रिटिश अन्याय' का हिस्सा था जिसके खिलाफ भारतीय आवाज उठा रहे थे।

"हम तुरंत ही हथियारों से लैस होकर ऊपरपेट जाएंगे," टेड ने तेज़ी से कहा। "सब-इंस्पेक्टर को बुलाओ और ड्यूटी पर तैनात सभी जवानों को तुरंत लाइन में लगने का आदेश दो। शस्त्रागार सार्जेंट को कहो कि प्रत्येक पूर्व सैनिक को पचास राउंड गोला-बारूद के साथ राइफलें जारी करे। सभी लोग स्टील के हेलमेट पहनेंगे और लाठी रखेंगे। साथ ही, जो भी वाहन उपलब्ध हो, उसे बुलाओ। मैं मजिस्ट्रेट को बुलाने जा रहा हूँ। स्थानीय फंड अस्पताल के डॉक्टर से कहो कि वह अपने सहायक को साथ लेकर हमारे साथ आए। गोलीबारी हो सकती है; इसलिए उसे स्ट्रेचर और प्राथमिक चिकित्सा किट लाने के लिए कहो।"

इंस्पेक्टर जल्दी से बाहर निकल गया, जबकि टेड ने अपनी मेज की दराज से अपना .38 कैलिबर का सर्विस रिवॉल्वर निकाला, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह भरी हुई है, उसने अपने अंगूठे से ड्रम को घुमाया और हथियार को अपनी बेल्ट से बंधी चमड़े की होल्स्टर में डाल दिया। पच्चीस गोलियों का एक डिब्बा उठाकर उसने उसे अपनी जेब में ठूंस लिया। अपना हेलमेट लेने के लिए रुककर, वह गलियारे से होते हुए पुलिस स्टेशन परिसर में चला गया, जहाँ उस समय तक चारों ओर काफी चहल-पहल थी, कांस्टेबल इधर-उधर भाग रहे थे, कुछ तो अभी भी अपनी वर्दी पूरी तरह से पहने हुए थे।

रॉबर्ट ने उसे ब्यूक कार बहुत कम दाम में बेच दी थी। टेड कार में कूदा और यार्ड से निकलकर मजिस्ट्रेट के बंगले की ओर चल पड़ा, जो लगभग पौने मील दूर था। मजिस्ट्रेट, श्री चौधरी, बंगाली थे। कलेक्टर होने के नाते, वे सबसे वरिष्ठ सरकारी अधिकारी थे और इसलिए टेड के वरिष्ठ थे। वे एक सफेद, दो मंजिला, ऊँची दीवार

वाले मकान में रहते थे। जैसे ही टेड अंदर पहुँचा, गेट पर खड़ा गोरखा अर्दली उछलकर खड़ा हो गया और सलाम किया। अगले ही पल टेड श्री चौधरी के बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। एक बंगाली नौकर बाहर आया और सलाम किया।

"कृपया मजिस्ट्रेट साहब को बता दें कि डीएसपी यहां हैं और उनसे अत्यंत अत्यावश्यक रूप से बात करना चाहते हैं।"

नौकर ने सिर झुकाया और चला गया। कुछ ही मिनटों में चौधरी नीले रेशमी गाउन में लिपटे और पैरों में चप्पल पहने हुए प्रकट हुए। बेकर ने संक्षिप्त शब्दों में उन्हें खबर सुनाई और अंत में कहा, "महोदय, मेरा सुझाव है कि आप मेरे साथ चलें। हम भीड़ को तितर-बितर करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे, लेकिन वे हिंसक हो सकते हैं। मेरे पास केवल चार ही ऐसे आदमी हैं जिन्हें राइफल चलाना आता है। अगर भीड़ हम पर हावी हो गई तो यह खतरनाक होगा।"

श्री चौधरी कद में छोटे और मोटे थे, जो आमतौर पर मौसम चाहे जैसा भी हो, ऊनी सूट पहनते थे। वे सिर पर तिरछी धूसर रंग की टोपी और पतली सोने की चेन से अपनी वेस्टकोट के बटनहोल में टंगे सोने के फ्रेम वाले चश्मे लगाते थे। उनका रंग गोरा था, चेहरा गोल, मांसल और साफ-सुथरा था, और वे आंशिक रूप से गंजे थे।

"ज़रूर," मजिस्ट्रेट ने सहमति जताते हुए कहा, "मैं आपके साथ ज़रूर चलूँगा। यह बहुत ज़रूरी है। कृपया प्रतीक्षा कीजिए।" वह घर के अंदर चले गए और कुछ ही देर में अपने सामान्य कपड़ों में वापस आ गए।

चौधरी टेड के बगल में बैठा था जब वे जल्दी से पुलिस स्टेशन वापस जा रहे थे, जहाँ उन्होंने देखा कि कांस्टेबल दो पंक्तियों में खड़े थे। एक सब-इंस्पेक्टर पहली पंक्ति के एक छोर पर खड़ा था। इंस्पेक्टर दस्ते के आगे खड़ा था। उसके बड़े पेट के कारण उसने जो खाकी शॉर्ट्स पहन रखे थे, वे उसके सामने उभरे हुए दिख रहे थे और उसकी पीठ पर कसकर खिंचे हुए थे।

गाड़ी आकर रुकी और टेड तथा मजिस्ट्रेट एक साथ उतरे। इंस्पेक्टर ने पुलिस दल को सावधान की मुद्रा में खड़े होने का आदेश दिया और सलामी दी। मजिस्ट्रेट ने भी अपनी दाहिनी हथेली को अपनी टोपी के किनारे तक उठाकर सलामी का जवाब दिया।

टेड ने पूछा, "इंस्पेक्टर, क्या आपने प्रत्येक राइफलधारी को पचास-पचास राउंड जारी किए हैं?"

“जी साहब,” ब्राह्मण ने उत्तर दिया, “और दल को ले जाने के लिए एक बस की व्यवस्था कर दी गई है। डॉक्टर और उनके सहायक भी यहाँ मौजूद हैं।”

"अच्छा; क्या हम शुरू कर सकते हैं, महोदय?" टेड ने चौधरी की ओर मुड़कर कहा।

मजिस्ट्रेट ने सिर झुकाया। बेकर ने पुलिस दल की कमान संभाली। उनमें से अधिकांश को थोड़ी-बहुत अंग्रेजी आती थी, और उन्होंने संक्षेप में उनसे उसी भाषा में बात की।

“मैं चाहता हूँ कि आप सब शांत रहें, एकजुट रहें और आदेशों का पालन करें।” राइफलधारियों से उन्होंने कहा, “किसी भी हालत में मजिस्ट्रेट साहब के आदेश के बिना गोली न चलाएँ।”

पुलिस की टुकड़ी इंतज़ार कर रही बस में सवार हो गई, जो अठारह मील दूर स्थित ऊपरपेट चौकी के लिए रवाना हुई। टेड और मजिस्ट्रेट कार में उनके पीछे-पीछे चल रहे थे और मंज़िल के नज़दीक आते ही वे आगे निकल गए। सब कुछ शांत लग रहा था और जब तक वे उस छोटे से कस्बे के पास नहीं पहुँचे, तब तक किसी अप्रिय घटना का कोई संकेत नहीं था। तभी उन्होंने ऊपर की ओर उठता हुआ काला धुआँ देखा और जैसे ही वे कस्बे से गुज़रने वाली मुख्य सड़क पर पहुँचे, उन्हें अपने सामने पुलिस चौकी के सुलगते हुए खंडहर दिखाई दिए।

पुलिस चौकी से सटे गांव के चौक में लोगों की भारी भीड़ जमा थी, सभी जोर-जोर से चिल्ला रहे थे और बातें कर रहे थे। उन्होंने एक आकृति देखी जो देखने में चिथड़ों और भूसे से बंधी हुई प्रतीत हो रही थी, जिसके ऊपर खाकी रंग का कुर्ता और पुलिसकर्मी की पगड़ी पहनाई गई थी। भीड़ उसे आग लगाने की कोशिश कर रही थी। बीच में किसी ने एक लंबा बांस उठा रखा था, जिसके अंत में एक छोटा झंडा लहरा रहा था, जो राष्ट्रवादी पार्टी, कांग्रेस का प्रतीक था। इसमें तीन रंग थे: नारंगी, सफेद और हरा।

टेड ने अपनी कार रोकी और मजिस्ट्रेट और वह बाहर निकले। पुलिसकर्मियों वाली बस तुरंत पीछे आकर रुकी और पुलिसकर्मी जल्दी से नीचे उतरे। उसी समय भीड़ ने उन्हें देखा और धमकी भरे नारे लगाते हुए और अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए एक साथ आगे बढ़ गई।

टेड ने अपने आदमियों को जल्दी से दो पंक्तियों में खड़े होने का आदेश दिया,

और प्रत्येक किनारे पर दो-दो राइफलधारियों को आगे तैनात कर दिया। मजिस्ट्रेट और वह केंद्र में, उनसे कुछ कदम आगे, अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गए।

चौधरी ने भीड़ की ओर हथेली फैलाकर हाथ बढ़ाया और पुकारा, "रुको! कानून के नाम पर!"

भीड़ लड़खड़ाते हुए भागी, लेकिन फिर भी खतरनाक ढंग से आगे बढ़ती रही। पीछे से किसी ने एक बड़ा पत्थर फेंका। वह कांस्टेबलों के सिर के ऊपर से निकल गया और धड़ाम से पीछे गिर पड़ा। यह और भी पत्थर फेंकने का संकेत था और उन्होंने पूरी ताकत से ऐसा किया। इस बार ईंट-पत्थर, सोडा-पानी की बोतलें और पत्थर फेंके गए। कई पत्थर पुलिसकर्मियों के बीच गिरे और एक कॉर्पोरल के चेहरे से खून बहने लगा। एक पत्थर टेड के बाएं कंधे के ठीक नीचे लगा और उसे वहीं हल्का दर्द महसूस हुआ। चौधरी दंगा अधिनियम पढ़ रहे थे कि तभी एक और पत्थर उनके सिर को छूकर निकल गया और उनकी बेदाग फेल्ट टोपी उड़ गई। वह टोपी हास्यास्पद रूप से गायब हो गई।

भीड़ करीब आने लगी और टेड को एहसास हुआ कि अगर वे और करीब आए तो उसका दल पूरी तरह से घिर जाएगा। वे सब मारे जाएंगे।

"लोड करो!" उसका आदेश स्पष्ट और तीखा सुनाई दिया, और चारों हथियारबंद लोगों की राइफलों के बोल्ट एक साथ खुल गए। खुजली से व्याकुल उंगलियों ने प्रत्येक ब्रीच में पांच कारतूसों की एक-एक क्लिप ठोक दी, और राइफलों के बोल्ट फिर से खुल गए। टेड ने अपना रिवॉल्वर निकाल लिया।

चौधरी अभी भी पढ़ रहे थे; लेकिन भीड़ के शोर में उनकी आवाज़ दब गई। भीड़ के आगे खड़े लोगों ने पुलिस की कार्रवाई देखी और रुक गए, लेकिन पीछे से आ रही भीड़ के दबाव ने उन्हें आगे धकेल दिया। चौधरी ने पढ़ना समाप्त किया। जैसे ही वह वापस मुड़ने लगे, एक टूटी हुई बोतल उनके गले पर लगी। वह घुटनों के बल गिर पड़े और फिर उठे। टेड उन्हें बचाने के लिए आगे बढ़ा और अपनी रिवॉल्वर से हवा में दो गोलियां चलाईं। क्षण भर के लिए भीड़ थम गई।

मैजिस्ट्रेट को नुकीले कांच से गहरा घाव लगा था जिससे खून बह रहा था, और उनका लाल खून उनके साफ-सुथरे भूरे कोट पर साफ दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था मानो इससे भीड़ और भड़क उठी हो, जो उन्माद में चिल्ला रही थी। पीले पड़े चेहरे के साथ उन्होंने टेड की ओर मुड़कर औपचारिक आदेश दिया, जिसके बाद

मामला उन्हीं के हाथों में था।

"सुपरिटेंडेंट, अगर वे और आगे बढ़ते हैं, तो उन्हें देखते ही गोली मार देना," उसने आदेश दिया।

चीख-पुकार तेज हो गई और पत्थर गिरने लगे। फिर, पाँच हज़ार की संख्या में उमड़ी भीड़ ने पुलिस पर हमला कर दिया।

"निशाना लगाओ!" टेड ने पुकारा; और फिर आदेश आया, "गोली चलाओ!"

चारों राइफलों की आवाज़ एक साथ गूंजी, जबकि टेड ने अपनी रिवॉल्वर एक विशालकाय काले दाढ़ी वाले आदमी पर तान दी, जो "इन सबको मार डालो" के नारे लगाकर भीड़ को आगे बढ़ने के लिए उकसा रहा था और अब पत्थर फेंक रहा था। उसने ट्रिगर दबा दिया। वह आदमी अचानक ज़मीन पर बैठ गया और अपना सीना पकड़ लिया। हमलावरों में से चार अन्य लोग भी ज़मीन पर गिर पड़े। टेड द्वारा गोली मारे गए आदमी की उंगलियों के बीच से खून बह रहा था। उसने अपना सीना पकड़ रखा था और गोल, तिरस्कार भरी आँखों से दोषारोपण भरी निगाहों से घूर रहा था।

चीख-पुकार अचानक थम गई। एक पल के लिए भीड़ वहीं जम गई, जो कुछ हुआ था उसकी भयावहता को देखकर अचंभित रह गई। फिर भीड़ चारों दिशाओं में बिखर गई, और गोली लगने से घायल हुए पाँचों लोग वहीं गिर पड़े रह गए।

टेड ने मजिस्ट्रेट की ओर देखा। वह पीछे खड़े थे और अपने गले के पीछे रेशमी रुमाल रखे हुए थे। रुमाल खून से लथपथ था। फिर उन्होंने अपने पुलिसकर्मियों को देखा। जिस कॉर्पोरल के चेहरे पर चोट लगी थी, वह ज़मीन पर झुका बैठा था, उसका सिर हाथों में दबा था। खून नीचे रिसकर एक गहरे धब्बे की तरह जम गया था, जो प्यासी रेत में तेज़ी से सूख रहा था। उसकी पीतल की लाठी उसके बगल में पड़ी थी। मोटा ब्राह्मण इंस्पेक्टर अपनी जांघ पकड़े हुए था, जिससे खून बह रहा था। एक राइफलधारी समेत पाँच कांस्टेबल किसी न किसी तरह से घायल थे।

भीड़ छंट चुकी थी।

घायल पुलिसकर्मियों को बस में चढ़ाया गया, या उन्हें बस में चढ़ाने में मदद की गई। जब टेड द्वारा गोली मारे गए दाढ़ी वाले व्यक्ति को वाहन तक ले जाया जा रहा था, तब तक दम घुटने लगा था। बाकी चार में से एक की मौके पर ही मौत हो गई थी, दो के पेट में गोली लगी थी, और चौथे व्यक्ति के कंधे में ऊपरी हिस्से में गोली आई थी।

डॉक्टर और उसका सहायक मॉर्फिन के इंजेक्शन लगाने और पट्टियाँ बाँधने में जुट गए। टेड, एक राइफलधारी और दो लाठीधारी कांस्टेबलों के साथ, चौकी के जले हुए ढाँचे की ओर यह देखने के लिए बढ़ा कि वहाँ तैनात पाँच पुलिसकर्मियों का क्या हुआ। उन्होंने उनमें से एक को बाहर पड़ा पाया, जिसका सिर एक बड़े पत्थर से बुरी तरह कुचला गया था। वह पत्थर शरीर के पास पड़ा था, जिस पर अभी भी उसके इस्तेमाल के सबूत मौजूद थे। चौकी का प्रभारी हवलदार—या उसका जो भी अवशेष बचा था—उसे एक लकड़ी के खंभे से बाँधकर इमारत के साथ जला दिया गया था। तीसरा कांस्टेबल पीठ के बल पड़ा था, उसका पेट चीरकर उसकी आँतें बाहर निकली हुई थीं और उसके बगल में रेत पर ढेर थीं। बाकी दो पुलिसकर्मियों का कोई पता नहीं चला।

पुलिस दल के चले जाने के बाद उन आदमियों को भीड़ के प्रकोप में छोड़ने से टेड बहुत दुखी था। अगर वे अभी भी ज़िंदा थे, तो उन्हें हर हाल में ढूंढना उसका फर्ज था। समय बर्बाद करना उसके लिए नामुमकिन था। उसकी टुकड़ी, जो शुरू से ही संख्या में कमज़ोर थी, अब बुरी तरह से बिखर चुकी थी और अगर भीड़ फिर से इकट्ठा होकर उन्हें घेर लेती, तो वह उनका सामना नहीं कर पाती। उसके पास बस जल्दी कार्रवाई करने का ही मौका था।

अपने तीन आदमियों के साथ पास के मकानों की कतार की ओर बढ़ते हुए उन्होंने एक बंद दरवाजा तोड़ दिया। अंदर एक बूढ़ा आदमी और औरत, और एक लड़का और लड़की छिपे हुए थे, वे चारों कोने में दुबके बैठे थे। लड़के और लड़की पर रिवाल्वर तानते हुए टेड ने राइफलधारी को आदेश दिया कि वह बूढ़े आदमी और औरत को बता दे कि अगर उन्होंने उसे बाकी बचे दो पुलिसकर्मियों के बारे में नहीं बताया तो वह गोली मार देगा।

सफेद दाढ़ी वाला आदमी चुप रहा, उसके चेहरे पर घृणा के भाव थे, लेकिन धमकी के आगे बूढ़ी औरत टूट पड़ी। कांपती हुई आवाज़ में उसने कहा कि पुलिसवालों ने भागने की कोशिश की थी, लेकिन उनका पीछा किया गया और उन्हें पकड़ लिया गया। उन्हें सड़क के अंत में एक कुएँ में फेंक दिया गया था; लेकिन उस समय वे जीवित थे या नहीं, यह उसे नहीं पता था।

टेड ने कुएँ के बारे में पूछा और वह महिला उसे दिखाने के लिए आगे आई। वह उन्हें मुख्य सड़क पर कुछ गज आगे ले गई और फिर दाहिनी ओर एक गली में मुड़

गई। किसी भी क्षण घात लगाकर हमला होने के खतरे को भांपते हुए, चारों आदमी उसके साथ तब तक चले जब तक वे कुएँ तक नहीं पहुँच गए। उन्होंने अंदर देखा। यह एक प्राचीन, अप्रयुक्त ढाँचा था और गहरे, हरे, भयावह पानी के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन ऊपर तैरती हुई गिरी हुई पत्तियों की मैल अब एक परत में नहीं थी। यह दरारों में बँटी हुई थी जहाँ पानी की सतह बिल्कुल साफ थी। इससे संकेत मिलता था कि हाल ही में इसमें कुछ डाला गया था। टेड को इस बात पर संदेह करने का कोई ठोस कारण नहीं था कि वह कुछ और नहीं बल्कि वे दो बदकिस्मत पुलिसकर्मी थे, और उस बूढ़ी औरत ने उन्हें सच बताया था। उसके साथ आए तीनों कांस्टेबल भी इस बात से सहमत थे।

उस बंदूकधारी ने अपने भीतर के क्रोध को उजाड़ दिया। बूढ़ी औरत की ओर मुड़कर उसने दांत पीसते हुए कहा।

"वेश्या की माँ और वेश्या की बेटी, क्या तुम हज़ारों की संख्या में मौजूद कायर ग्रामीणों, इसी तरह पाँच निहत्थे पुलिसकर्मियों की हत्या करते हो जो सरकार के सेवक हैं और अपना कर्तव्य निभा रहे हैं? वे तुम्हारे अपने ही देशवासी हैं, क्या तुम्हें समझ नहीं आता? कांग्रेस वाले साहब-लोगों को देश से बाहर निकालने का दावा करते हैं, लेकिन तुम्हारे और मेरे जैसे भारतीयों की हत्या करते हैं। अब मैं भी तुम्हारे साथ यही करूँगा।" इतना कहते हुए उसने राइफल का मुंह पकड़ा और बट उठाकर उस बुढ़िया को बुरी तरह पीट दिया। उसकी टूटी हुई आवाज़ एक कमज़ोर, कर्कश चीख में बदल गई।

टेड ने अपना हाथ उस आदमी की छाती पर रखकर उसे रोक लिया। एक पल के लिए, उस आदमी की काली आँखों में विद्रोह की आग भड़क उठी, उसका अनुशासन धराशायी हो गया। टेड ने उसकी भावनाओं की गहराई को समझा और उसकी आवाज़ शांत और सुलह भरी थी।

मैं आपके गुस्से को समझता हूँ और आपसे सहमत भी हूँ। लेकिन वह बूढ़ी और असहाय है। साथ ही, उसने ये घिनौने कृत्य नहीं किए हैं। ऐसा कभी न कहा जाए कि आपने एक असहाय, निर्दोष बूढ़ी महिला की हत्या की है।

उनकी सूझबूझ और तर्क का असर हुआ। क्रोधित पुलिसकर्मी ने थोड़ा चिढ़कर ही सही, अपना हथियार नीचे कर लिया। बेकर ने महिला और उसके परिवार के सदस्यों के नाम संभावित गवाहों के रूप में नोट कर लिए और फिर बस में वापस चले

गए।

डॉक्टर अपनी वापसी में देरी से अधीर हो गए थे और उन्होंने यह बात कहने में कोई संकोच नहीं किया।

"सुपरिटेंडेंट, आप इतने समय से कहाँ थे? क्या आपको पता नहीं है कि जहाज पर कुछ लोग खून बहने से मर रहे हैं और मेरे पास उन्हें बचाने का कोई साधन नहीं है? उन्हें अस्पताल ले जाना होगा।"

टेड ने पलटकर जवाब दिया, "बेशक मुझे पता है। लेकिन क्या तुम नहीं समझते कि मैं चौकी के हवलदार और उसके आदमियों को भीड़ के हाथों मारे जाने के लिए छोड़कर उन्हें ढूंढने की कोशिश किए बिना नहीं जा सकता था? जैसा कि हुआ, वे सब मर चुके हैं।"

डॉक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया।

पुलिसकर्मियों की एक टीम ने उस कांस्टेबल के अवशेषों को इकट्ठा किया जिसका सिर बुरी तरह कुचला गया था, और दूसरे कांस्टेबल के शरीर को भी इकट्ठा किया, जिसकी आंतें, रेत समेत, उसके पेट में वापस धकेल दी गई थीं। हवलदार का शव बुरी तरह जल गया था और उसे हिलाया नहीं जा सका। उन्होंने कोशिश की, लेकिन नतीजा इतना भयावह था कि उन्होंने प्रयास करना बंद कर दिया। पका हुआ मांस उनके हाथों में आ गया।

बस का मंजर बेहद भयावह था। वह सचमुच खून से लथपथ थी। डॉक्टर द्वारा दी गई मॉर्फिन के असर से बाहर आए लोगों के मुँह से रुक-रुक कर कराहें और सिसकियाँ निकल रही थीं। जिस आदमी को टेड ने गोली मारी थी, उसकी मौत हो चुकी थी। उसकी खुली हुई बेजान आँखें सुपरिटेंडेंट को दोषारोपण भरी निगाहों से घूर रही थीं। सुपरिटेंडेंट के लिए उस भयानक नज़र का सामना करना नामुमकिन था।

चौधरी टेड की कार की पिछली सीट पर दुबके बैठे थे, उनके गले पर अभी भी लाल रेशमी रुमाल लिपटा हुआ था। उन्होंने कुछ नहीं कहा। डीएसपी ने बस चालक को गाड़ी चलाने का आदेश दिया और खुद कार में आगे बढ़ते हुए दोनों वाहन निलंबूर की वापसी यात्रा पर निकल पड़े।

नीचे के पहिए मानो इस सब की निरर्थकता को दोहरा रहे थे—निर्दोष लोगों की हत्या, जिसके कारण अन्य निर्दोष लोगों की भी हत्या हुई, जो शायद असल में अपराधी थे ही नहीं। इसी वजह से उसने उस दिन एक आदमी को गोली मार दी थी!

क्या वह हत्या थी? शायद अगर उसने उस आदमी को पहले न मारा होता, तो वह आदमी उसे मार डालता।

तब तो निस्संदेह यह हत्या होती। क्यों?

शायद इसलिए कि वह डीएसपी था। निश्चित रूप से इसलिए कि वह एक श्वेत व्यक्ति था। तो क्या यह हत्या थी? या केवल आत्मरक्षा का न्यायसंगत मामला? खैर, जिसकी हत्या हुई थी वह डीएसपी नहीं था। इसके अलावा, वह श्वेत व्यक्ति नहीं था। वह एक अश्वेत व्यक्ति था।

क्या यही वह बात थी जिसने फर्क पैदा किया?

सरकार और राष्ट्रवादी नेताओं के बीच कोई समझौता क्यों नहीं हो पाया? देश खून-खराबे में डूबा हुआ था। क्या भारतीयों द्वारा स्वयं शासन करने का अधिकार माँगना गलत था?

जब टेड बेकर आखिरकार मुख्यालय पहुंचे तो वे बेहद थके हुए थे। बस सीधे अस्पताल गई ताकि उसमें सवार घायल, मरणासन्न और मृत लोगों को उतारा जा सके। मजिस्ट्रेट भी वहीं उतरे। फिर टेड घटनाक्रम की जानकारी अपने वरिष्ठ अधिकारी, कालीकट के पुलिस महानिदेशक को देने के लिए टेलीग्राफ कार्यालय गए और रिपोर्ट की एक प्रति मद्रास के पुलिस महानिरीक्षक को टेलीग्राम से भेजी।

अध्याय 9

नदी किनारे मौत

क्षितिज पर फैली पेड़ों की लहरदार कतार के ऊपर से सूरज ने अपना सुनहरा गोला झाँका, जबकि उसकी गर्म किरणें जंगल की नम, ओस से भीगी हरियाली पर मंडराने वाले कोहरे को दूर करने लगीं, तभी जून अपने पिता के घोड़े पर सवार होकर उस सड़क पर आगे बढ़ी जो अभयारण्य से होकर दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाती थी।

चित्तीदार हिरणों का एक झुंड उसके सामने कुछ ही गज की दूरी पर दौड़ता हुआ निकला, मादा हिरणों के साथ अलग-अलग आकार के बच्चे भी थे। वे पगडंडी पार करके दूसरी तरफ रुक गए और धीरे-धीरे रसीली घास चरने लगे। उनके पीछे दो मध्यम आकार के नर हिरण थे और फिर झुंड का सरदार। वह देखने में भव्य था; परिपक्व, गहरे भूरे रंग का, और उसके सींग चालीस इंच की लंबाई तक सममित वक्रों में फैले हुए थे। उसके शरीर के किनारों पर सफेद धब्बे जंगल की पृष्ठभूमि के विपरीत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, जिससे उसका चित्तीदार रूप भव्य और सुंदर लग रहा

था।

उसने घोड़े को देखा और बीच रास्ते में ही रुक गया, सिर को तेज़ी से जून की ओर घुमाया, गला और थूथन थोड़ा ऊपर उठा हुआ था, और उसकी नाकें सुबह की हवा को सूंघने के लिए कांप रही थीं और फैल रही थीं। फिर उसकी पूरी ताकत से निकली चेतावनी की आवाज़ गूंजी, "आओ!" और फिर "आओ! आओ!" पल भर में हिरणियाँ और उनके बच्चे गायब हो गए, साथ ही नर हिरण भी, और चारों ओर सन्नाटा छा गया। कोई सरसराहट सुनाई नहीं दे रही थी।

जून ने संतुष्टि भरी मुस्कान बिखेरी और अपने हाथ में पकड़ी लगाम ढीली करते हुए, अपने घोड़े टोनी को घुटनों से हल्का धक्का देकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वह जीवन के आनंद से परिपूर्ण थी।

सड़क के बाईं ओर फैले घने पेड़ों से, जो एक हरी-भरी घाटी की ओर ढलान बनाते हुए नीचे उतरते थे, चांदी जैसे पंखों वाले जंगली मुर्गों की बांग ने उगते सूरज का स्वागत किया। उनकी बांगें, स्पूर-फाउल की तीखी और लगातार उत्तेजित करने वाली चीखों के साथ घुलमिल गईं। दूर कहीं मोर की कर्कश आवाजें एक-दूसरे का जवाब दे रही थीं, जो जंगल के संगीत की एक उपयुक्त पृष्ठभूमि बना रही थीं। बड़े और छोटे पक्षी हर जगह चहचहा रहे थे। गुलाबी गालों वाली बुलबुल लैंटाना की झाड़ियों में चहचहा रही थीं, दो लंबे पंखों वाली पूंछ वाला एक सफेद पैराडाइज बर्ड आगे उगे बांस के कुछ झुंडों में उड़ गया, जबकि एक लाल फ्लाई-कैचर पक्षी एक पल के लिए ऊपर फड़फड़ाता हुआ दिखाई दिया।

सब कुछ शांत था और जून रास्ते के बीचोंबीच चलते हुए आगे बढ़ रही थी। जंगल में बने बंगले से दूरी बढ़ने के साथ-साथ, उसे आदमखोर के ख्याल से घबराहट होने लगी। कहीं वह दरिंदा अचानक जंगल से निकलकर किसी भी तरफ से हमला न कर दे तो क्या होगा?

वह शायद तीन मील ही चली थी कि सड़क दो भागों में बँट गई, एक हिस्सा बाईं ओर मुड़ गया और दूसरा दाईं ओर चढ़ाई पर जाने लगा। वहाँ कोई संकेत-चिह्न दिखाई नहीं दे रहा था। जून को बताया गया था कि आस-पास कहीं कोई जागीर है, लेकिन वहाँ जाने वाला रास्ता कौन सा है, यह उसे नहीं पता था। अचानक ही उसने बाईं ओर जाने वाले रास्ते पर चलने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि वह जागीर तक न ले जाए। कुछ दूर चलने के बाद रास्ता ढलान पर जाने लगा और थोड़ी देर बाद वह एक

नाले के किनारे पहुँच गई।

साल के उस समय में पानी की एक पतली सी धारा बहती थी, जो बड़े-बड़े पत्थरों के बीच से कलकल करती और छोटे पत्थरों पर से बहती हुई नीचे जाती थी। उसका घोड़ा उस पार गया, उसके खुर ढीले कंकड़ों पर छप-छप करते और खड़खड़ाहट करते हुए आगे बढ़े। फिर रास्ता ऊपर की ओर मुड़ गया और दूसरे किनारे पर पहुँच गया।

“आह-ऊ-रोंग!”

जैसे ही टोनी इस पर चढ़ रहा था, एक भयानक, रोंगटे खड़े कर देने वाली दहाड़ ने सन्नाटे को चीर दिया। फिर दाईं ओर जंगल से एक भयावह चीख सुनाई दी।

"अर-री-ई-आह! अर-री-ई-आह!"

घोड़ा एक पल के लिए रुका और ज़ोर से हिनहिनाया, डर से कांपते हुए उसने अपने कान पीछे की ओर कर लिए। चीख पहले से कहीं अधिक पीड़ादायक, विनतीपूर्ण और दयनीय थी, जो अंत में घुरघुराहट और हांफने की आवाज़ों की एक श्रृंखला में बदल गई। फिर गहरी, चिंताजनक गुर्राहट की एक श्रृंखला सुनाई दी।

जून का घोड़ा बेकाबू होकर भाग गया।

उसने टोनी को रोकने की कोशिश की, लेकिन उसके प्रयास व्यर्थ रहे। डरा हुआ घोड़ा बेतहाशा आगे बढ़ा ताकि वह उस भयानक आवाज़ से जितना हो सके दूर हो जाए, जिसे सुनकर टोनी की अंतरात्मा को लगा कि वह आवाज़ जंगल के सबसे खूंखार जानवर—एक बाघ—की है!

और जून जानती थी कि एक बाघ ने ही ये निशान बनाए हैं क्योंकि उसने किसी दुर्भाग्यपूर्ण जानवर पर हमला किया था, शायद एक सांभर पर, जिसका खून उस क्षण जंगल की घास पर बह रहा था, जबकि वह उस अचानक, क्रूर हमले में भयानक पीड़ा से मर रहा था।

उन्हें पता नहीं था कि वे कितनी दूर आ गए हैं, तभी उन्हें घोड़े की धीमी गति का आभास हुआ। उसी क्षण, उन्हें एहसास हुआ कि जंगल की घनी झाड़ियों की जगह अब घनी कतारों में कॉफी की झाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं, जो समानांतर पंक्तियों में लगे सिल्वर ओक के पेड़ों के बीच उगी थीं, जिन्हें उन्हें छाया प्रदान करने के लिए लगाया गया था। जून को समझ आ गया कि उन्होंने गलत मोड़ ले लिया था और वे उसी बागान की ओर जा रही थीं जिसके बारे में उन्हें बताया गया था।

तभी एक जीप उसके आगे से मुड़ी और टूटी-फूटी सड़क पर लड़खड़ाती हुई उसकी ओर बढ़ने लगी। वह और करीब आ गई। कीचड़ से सनी तिरपाल की छत के नीचे से जूनो ने एक यूरोपीय व्यक्ति को अपनी ओर घूरते हुए देखा। उसने खाकी रंग के कपड़े पहने थे और उसकी आँखें इतनी चमकीली थीं जितनी उसने पहले कभी नहीं देखी थीं।

जॉन ग्रेस्टोन ने घोड़े की बेकाबू आँखों और उसकी त्वचा से रिसते पसीने के धब्बों को देखा। उसने उस पर सवार युवती को भी देखा, जिसकी कमीज़ गले से थोड़ी टेढ़ी थी। उसकी चौड़ी किनारी वाली खाकी टोपी सिर से फिसल गई थी और ठुड्डी की पट्टी से पीछे की ओर लटकी हुई थी, जो अब उसके गले पर टिकी हुई थी। जॉन ने उसके कंधे पर टंगी राइफल भी देखी।

जैसे ही वह जीप के पास पहुँचा, उसने उसे रोक दिया और बाईं ओर सिर घुमाकर मधुर स्वर में "सुप्रभात" कहा। जून अपने सामने उस आदमी को देखकर आश्चर्यचकित रह गई।

जब उसने उसका अभिवादन सुना, तो उसने लगाम को और जोर से खींचा, और उसका घोड़ा, सवार के आकर्षण के बजाय, उनसे मिले मानव संगति के कारण रुक गया।

"सुप्रभात," उसने विनम्रता से उत्तर दिया।

अजनबियों की संगति में रहने की आदत न होने के कारण, वह काफी शर्मीली महसूस कर रही थी।

जॉन ने यह देखा और बातचीत शुरू करने की कोशिश की। "मैं उत्सुक हुए बिना नहीं रह सकता। इन सड़कों पर किसी महिला को अकेले सवारी करते देखना बहुत ही असामान्य है, भले ही वह हथियारबंद हो।" उसकी नज़र हथियार पर पड़ी और वह मुस्कुराया। फिर उसने कहा, "मुझे नहीं लगता कि आपको पता होगा कि इस इलाके में आदमखोर भालू है।"

जून को वह बेहद विनम्र और नेक इंसान लगा। इसके अलावा, वह निसंदेह बेहद आकर्षक भी था।

"मैं नए फॉरेस्ट रेंजर की बेटी हूँ," उसने बताया। "हमने इस आदमखोर घोड़े के बारे में सुना था और जब मैं आज सुबह घुड़सवारी करने निकली तो पापा काफी चिंतित थे। लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी। टोनी," उसने सिर हिलाकर इशारा

किया कि घोड़े का नाम टोनी था, "एक नदी के किनारे से गुजरते ही डर गया," और जून ने आगे की सारी घटना बताई।

उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "मुझे आश्चर्य होता है," और जॉन उसके शरीर में आई कंपकंपी को देख सकता था, "कि क्या वह आदमखोर सांप हो सकता था।"

ग्रेस्टोन का चेहरा गंभीर हो गया। "हे भगवान! शायद वही था!" वह चिल्लाया। "एक बाघ तो ज़रूर है और उसने मेरे कई कुलियों को मार डाला है। सभी रिपोर्टों के अनुसार, वह इस इलाके का इकलौता बाघ है। मुझे खुशी है कि उसे कुछ शिकार मिल गया, वरना...वरना..." वह हिचकिचाया और फिर बोल पड़ा, "हो सकता है उसने तुम्हें मार डाला हो।"

जून ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी भूरी त्वचा के नीचे चेहरे की पीली रंगत से संकेत मिलता था कि वह उसके शब्दों का महत्व समझ चुकी थी।

“वैसे,” जॉन ने आगे कहा, “मुझे आपका नाम जानने का सौभाग्य नहीं है। मैं जॉन ग्रेस्टोन हूँ, इस बागान का मालिक। इसका नाम रॉब रॉय एस्टेट है।”

जून ने उत्तर दिया, "मेरा नाम जून गार्डनर है"।

“क्या आप बंगले तक चलकर मेरी पत्नी से मिलना चाहेंगे?” उसने पूछा। “मुझे यकीन है कि रूथ बहुत खुश होंगी। आप टोनी को भी आराम दे सकते हैं। दरअसल,” उसने गंभीर स्वर में कहा, “मुझे आपको आपके घर तक वापस छोड़ देना चाहिए और घोड़े को बाद में भेजा जा सकता है। अकेले वापस जाना मूर्खता होगी, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”

जून की शर्म ने उसे मना करने के लिए मजबूर कर दिया। लेकिन घने जंगल से घिरी उस भयानक नदी को पार करके टोनी के साथ वापस लौटने का ख्याल वाकई डरावना था, जहाँ शायद बाघ अभी भी घात लगाए बैठा हो; और वैसे भी, वह किसी दूसरी महिला से मिलना चाहती थी। अजीब बात यह थी कि उसे इस बात से थोड़ी नाराज़गी भी हुई कि वह महिला इस भले आदमी की पत्नी थी।

"मैं आऊंगी," उसने सरलता से उत्तर दिया।

"यह तो बढ़िया है," जॉन ने खुद को कहते हुए सुना, "हमारा बंगला यहाँ से बस एक मील दूर है। अगर आप आगे निकल जाएँ, तो मैं जीप में धीरे-धीरे आपके पीछे आ जाऊँगा।"

जून ने टोनी को सरपट दौड़ने के लिए मना लिया। खुद को सुरक्षित महसूस करते हुए घोड़े ने अपना संयम वापस पा लिया और कुछ ही देर बाद वह घर के प्रांगण में प्रवेश कर बरामदे के बाहर घोड़े से उतर गई। जॉन उसके पीछे-पीछे आया और घोड़े की लगाम जून के हाथ से लेने के लिए आगे बढ़ा।

इसी बीच, रूथ ने उनके आने को देखा और कुछ आश्चर्य के साथ उनसे मिलने के लिए सामने की सीढ़ियों से नीचे आई।

"मेरी पत्नी - रूथ। ये हैं मिस जून गार्डनर," जॉन ने परिचय कराते हुए बताया कि वह जून से कैसे मिले थे।

"कितना रोमांचक!" रूथ ने कहा। "अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो डर के मारे मेरी जान निकल जाती और मैं घोड़े से गिर जाती। अंदर आओ और मुझे इसके बारे में और बताओ।"

"जी हां, जरूर आइए मिस गार्डनर," जॉन ने कहा, "मैं टोनी का ध्यान रखूंगा।"

दोनों महिलाएं बरामदे में गईं, जहां जून एक बड़ी बेंत की कुर्सी पर बैठ गई और अपनी साथी को अपने साहसिक कारनामे का ब्योरा देने लगी। कुछ ही मिनटों में जॉन भी उनके पास आ गया।

जून के बोलने के बाद उन्होंने कहा, "हमें मिस गार्डनर और उनके पिता को कभी चाय पर आमंत्रित करना चाहिए। वह आपके लिए अच्छी साथी होंगी और मैं मिस्टर गार्डनर से मिलना चाहूंगा। एक वन अधिकारी होने के नाते, मुझे यकीन है कि उनके पास सुनाने के लिए कई रोमांचक कहानियां होंगी।"

जब उसका पति बोल रहा था, तब रूथ उस लड़की को ध्यान से देख रही थी।

"क्या आप और आपके पिता जंगल में बिल्कुल अकेले रहते हैं?" उसने पूछा।

जून ने बताया, "जब से मेरा जन्म हुआ है, तब से। माँ की हैजा से मृत्यु हो जाने के बाद, पिताजी की देखभाल करने वाला कोई नहीं था, इसलिए मैंने उनकी जगह ले ली।"

"लेकिन क्या आपको बेहद अकेलापन महसूस नहीं होता?" रूथ ने जोर देकर पूछा, "क्या आपको किसी न किसी रूप में सामाजिक जीवन की, किसी न किसी तरह की संगति की चाह नहीं होती?"

जून मुस्कुराई, "नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। इसके विपरीत, हम खुश और संतुष्ट हैं। दरअसल, अगर अचानक मेरी मुलाकात बहुत सारे पुरुषों और महिलाओं से हो

जाए तो मुझे समझ नहीं आएगा कि मैं कैसा व्यवहार करूं। देखिए, मुझे उनकी आदत नहीं है।"

जून की स्पष्टवादिता ने रूथ को हैरान कर दिया। एक ऐसी लड़की जो अकेले रहना पसंद करती थी, जबकि वह साथ की कमी महसूस कर रही थी।

किस चीज ने फर्क पैदा किया?

तब रूथ को लगा कि उसे समाधान मिल गया है।

"मुझे भारत आए ज़्यादा दिन नहीं हुए हैं, इसलिए कृपया मेरे इस प्रश्न के लिए मुझे क्षमा करें। आप और श्री गार्डनर—आप यूरेशियन हैं, है ना?"

शायद यही बात मायने रखती थी।

जून के चेहरे पर हल्की सी लाली आ गई और उसने झट से जवाब दिया, "हम एंग्लो-इंडियन हैं।"

"क्या सच में?" रूथ ने सोचा, और थोड़ी देर रुकने के बाद, "यूरेशियन और एंग्लो-इंडियन—इनमें आखिर अंतर क्या है?"

जून इन सवालों से उलझन में पड़ गई। क्या यह महिला सिर्फ जिज्ञासु थी या अज्ञानी? या उसके लहजे में कोई छिपा हुआ व्यंग्य था?

कुछ हिचकिचाहट के बाद, उसने समझाया, "यूरेशियन उन अंग्रेज़ लोगों के वंशज हैं जिन्होंने भारतीयों से शादी की, जबकि एंग्लो-इंडियन उन अंग्रेज़ मूल के लोगों से आते हैं जो भारत में बस गए और लंबे समय से रह रहे हैं - जैसे कि मेरे पिताजी और मैं।"

"मैं समझ गई," श्रीमती ग्रेस्टोन ने टिप्पणी की। "जून, मुझे फिर से माफ़ करना। लेकिन तुम सांवली कैसे हो? क्या भारत में लंबे समय तक रहने वाले अंग्रेज़ों का रंग सच में धूप से ऐसा हो जाता है? अगर यही वजह है, तो मुझे भी अपने रंग-रूप का ध्यान रखना होगा।"

अनजाने में बोले गए उन शब्दों का गहरा असर हुआ। जून शर्म से लाल हो गई। शर्म से उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने जवाब देने की कोशिश की, लेकिन बोल नहीं पाई। वह झट से खड़ी हुई और सीढ़ियों से नीचे भागी, बरामदे को पार किया और सीधे सड़क के रास्ते पर पहुँच गई।

जॉन ने अपनी पत्नी की बात सुनी। वह गुस्से से लाल हो गया। "तुम्हारी यह हरकत सरासर बेवकूफी थी। मैंने उस लड़की को यहाँ बुलाया था, यह सोचकर कि वह

तुम्हारी साथी बन सकती है, क्योंकि तुम हमेशा अकेलेपन की शिकायत करती रहती हो।"

"तो तुम मेरे लिए एक यूरेशियन साथी लाए हो? वाकई, यह तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी है!" रूथ ने गुस्से में ये शब्द उस पर कहे।

जॉन ने कोई जवाब नहीं दिया। वह जून के पीछे बगीचे में गया और उसे एक बबूल के पेड़ के नीचे चुपचाप सिसकते हुए पाया।

पास आकर उसने दबे स्वर में खांसा और धीरे से कहा, "मिस गार्डनर, मेरी पत्नी के असभ्य व्यवहार के लिए मुझे बहुत खेद है। देखिए, वह भारत में नई आई है और इन बातों को नहीं समझती। यकीन मानिए, उसे अपने कहे शब्दों से होने वाली पीड़ा का एहसास नहीं था।"

जून गुस्से से मुट्ठी भींचकर घूमी, उसकी उंगलियों के जोड़ भूरी त्वचा के विपरीत सफेद रंग में चमक रहे थे। उसकी काली पलकों पर आंसू चमक रहे थे और गालों से बहकर खाकी कमीज पर गिर रहे थे, जिससे कपड़ा दागदार हो गया था।

हे भगवान! जॉन को एहसास हुआ, यह लड़की कितनी सुंदर है! वह देखने में दुख और दया की पात्र लग रही थी। फिर भी उसके मजबूत कंधों और दृढ़ निश्चय में एक अलग ही भव्यता थी।

चाहे उसने जानबूझकर कहा हो या नहीं, उसने दिखा दिया है कि आप अंग्रेज लोग हमारे प्रति कैसा महसूस करते हैं। आप हमें इसलिए तुच्छ समझते हैं क्योंकि हम सांवले हैं। मैं आधी यूरेशियन और आधी भारतीय हूँ। मेरी रगों में भारतीय खून बहता है।

जॉन को वह और भी अधिक सुंदर प्रतीत हुई।

जून ने गुस्से में आगे कहा, "और मुझे इस पर गर्व है। मुझे तुम्हारे जैसे लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं।"

जब वह सांस लेने के लिए रुकी, तो उसने कहना शुरू किया, "सुनिए, मिस गार्डनर, मुझे बहुत खेद है और मैं क्षमा चाहता हूँ..."

"अपनी तरह के लोगों के लिए माफी मांगना छोड़ दो," उसने अचानक बीच में टोकते हुए कहा, "कृपया मुझे दिखाओ कि तुमने मेरा घोड़ा कहाँ रखा है।"

"हे भगवान! कहीं आप अकेले ही वापस तो नहीं जा रहे! बाघ का क्या होगा?"

जून ने झल्लाकर कहा, "बाघ को फांसी दे दो! कम से कम वो घमंडी तो नहीं है।

और तो और, शुक्र है कि वो भारतीय भी है!"

जब जून उसके पास से गुज़री और बंगले के पिछले हिस्से की ओर चली गई, तो जॉन ने कोई जवाब नहीं दिया। वहाँ उसने टोनी को मोटर-शेड में बंधा हुआ देखा। जून ने लगाम खोली, घोड़े पर सवार हुई और बिना पीछे मुड़े ही ड्राइववे पर आगे बढ़ गई।

जब वह गुजरी तो जॉन ने उसे पीछे से पुकारा, "वैसे, मिस गार्डनर; मेरा जन्म भी भारत में हुआ था।"

लगभग एक घंटे बाद टोनी उस जगह पर पहुँचा जहाँ उस सुबह बाघ की दहाड़ ने उन्हें डरा दिया था। जून ने लगाम कसकर पकड़ रखी थी। मन ही मन वह भयभीत थी, लेकिन बाहर से वह बहुत खुश थी क्योंकि उसने उस घिनौने अंग्रेज़ जोड़े को दिखा दिया था कि वह उनकी बदतमीज़ी भरी संगत में एक मिनट भी और रहने की बजाय उस खूंखार बाघ से मुठभेड़ का जोखिम उठाना बेहतर समझती है।

यह अफसोस की बात थी कि उसने ग्रेस्टोन को एक अच्छा आदमी समझा था - और सुंदर भी, जिसकी भूरी-हरी आंखें बहुत प्यारी थीं।

लेकिन कोबरा भी देखने में सुंदर होते हैं, उसने मन ही मन सोचा और इस विचार पर भौंहें चढ़ा लीं।

जून को किसी आदमखोर जानवर का सामना नहीं करना पड़ा।

अध्याय 10

और जुनून की आग

टेड बेकर अपने दफ्तर में बैठकर सिगरेट पी रहे थे। वे पहले ही कैपस्टन के दो पैकेट खत्म कर चुके थे और एक नए पैकेट की चौथी सिगरेट उनके होठों के बीच लटक रही थी। वे उदास और चिड़चिड़े थे।

ऊपरपेट में हुई घटनाओं के बारे में आधिकारिक रिपोर्टों का तुरंत असर देखने को मिला। पचास सशस्त्र रिजर्व पुलिसकर्मियों को तुरंत वहाँ भेजा गया। पचास अन्य पुलिसकर्मी एक काली मारिया गाड़ी में निलंबूर पहुँचे और उन्होंने पुलिस स्टेशन के विशाल परिसर में अपने टेंट लगा दिए।

उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि गोलीबारी के समय चौधरी वहाँ मौजूद थे। कलेक्टर स्वयं घायल हुए थे, है ना? फिर उस घिनौनी घटना के बारे में और सवाल क्यों पूछे जाने चाहिए? क्या उनका वरिष्ठ अधिकारी वहाँ स्पष्टीकरण देने के लिए मौजूद नहीं था? या फिर यह इसलिए था क्योंकि वह अंग्रेज थे जबकि चौधरी भारतीय

थे? क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? क्या कांग्रेस पार्टी इसका फायदा उठाने की कोशिश करेगी?

धिक्कार है, अगर पुलिस ने उस समय गोली न चलाई होती तो वे सब मारे गए होते। मजिस्ट्रेट, डॉक्टर और पुलिस दस्ते समेत करीब पच्चीस भारतीयों के बीच वह अकेला श्वेत व्यक्ति होता जो मारा जाता। क्या उन मूर्खों ने इस बारे में सोचा भी था?

टेड को उस पल किसी से बात करने की ज़रूरत महसूस हुई ताकि उसके मन का बोझ हल्का हो सके। काश रॉबी यहाँ होता। बूढ़े आदमी के जवाब की कल्पना करते हुए वह मन ही मन मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।

"सिर्फ पांच को ही मार पाए, मेरे लड़के? एकदम घटिया निशानेबाज़ी! मैं तो अपनी रिवॉल्वर भीड़ पर खाली कर देता। कम से कम एक दर्जन कमीने तो ढेर हो जाने चाहिए थे।"

बेचारा रॉबी। उसे खुद को सख्त दिखाना बहुत पसंद था। लेकिन टेड उसे अंदर से बेहतर जानता था; भावुक, मददगार और बेहद मानवीय।

बेकर उठ खड़ा हुआ और चमड़े की बेल्ट पहनी जिसमें उसकी भरी हुई रिवॉल्वर का होल्स्टर लगा था। देश भर में व्याप्त अशांति के कारण सभी पुलिस अधिकारियों को हथियार रखने का आदेश दिया गया था। हमला कभी भी और कहीं से भी हो सकता था। अपने खाकी रंग की टोपी को सिर पर ठूंसते हुए, वह दफ्तर से निकलकर पास के पीपल के पेड़ की छांव में खड़ी अपनी कार की ओर बढ़ा, उसमें बैठा और सेल्फ-स्टार्टर का बटन दबाया। इंजन गर्जना करते हुए चालू हुआ और धूल का गुबार उड़ाते हुए वह थाने के परिसर के चौड़े गेट के खंभों को पार करते हुए धूल भरी सड़क पर निकल पड़ा।

रॉब रॉय एस्टेट तक का रास्ता लंबा था, लेकिन वहाँ उसे सुखद संगति मिलेगी। उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और देखा कि समय 8:45 बज रहा था। शायद जॉन बागान में होगा और रूथ अकेली होगी। अगर ऐसा है तो...

टेड ने एक्सीलरेटर पर थोड़ा और जोर से दबाया और ब्यूक ने उसकी इच्छा का जवाब ऐसे दिया जैसे कोई जीवित प्राणी उसकी भीतरी इच्छा को समझता हो - एक ऐसी इच्छा जिसे वह खुद से भी स्वीकार करने से डरता था।

रूथ ग्रेस्टोन ब्यूक कार को पहचानकर बेहद खुश हुई। जॉन हमेशा की तरह मजदूरों की देखरेख करने बाहर गया हुआ था और वह अकेली थी।

टेड का दिमाग अभी भी असमंजस में था जब उसने उसे सामने के दरवाजे के बाहर खड़े देखा।

"हैलो, टेड। आपसे मिलकर अच्छा लगा," उसने अभिवादन किया।

"सुप्रभात रूथ," उसने कार से बाहर निकलते हुए और दरवाजा जोर से बंद करते हुए कहा, "क्या जॉन घर पर है?"

"नहीं। वह बागान में है। आप अंदर आ जाइए।"

इस बार वह उसे बरामदे से आगे ले जाकर ड्राइंग रूम के ठंडे कोने में ले गई। "वहाँ सोफे पर बैठो। मैं ड्रिंक्स मिलाते ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी।"

"मेरे लिए एक व्हिस्की बना दीजिए। इस समय मेरा मूड बहुत खराब है, इसलिए मुझे एक व्हिस्की की सख्त जरूरत है।"

"क्या हुआ?" उसने नीचे उसकी ओर देखते हुए पूछा, उसकी गहरी आँखें उसके चेहरे को निहार रही थीं। "कोई बुरी खबर है क्या?"

"कृपया वह पेय लाओ, मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताऊँगा।"

उसने टेड को पेय परोसा और उसके बगल में बैठ गई, अपना गिलास अपनी गोद में टिका लिया। टेड को लगा कि गुलाबी फूलों वाली सूती फ्रॉक में वह बहुत आकर्षक लग रही थी।

"दरअसल, मैं बहुत परेशान हूँ और आपसे और जॉन से बात करने यहाँ आया हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, निलंबूर के पास रहने वाले आप ही इकलौते अंग्रेज हैं, और यह एक ऐसा अवसर है जब मुझे अपने जैसे लोगों की संगति की जरूरत है।"

"लेकिन चलिए शुरुआत से शुरू करते हैं," और टेड ने ऊपरपेट में हुई हाल की घटनाओं का वर्णन किया।

जब उसने अपनी बात खत्म की तो रूथ ने हैरानी से कहा, "कितना भयानक! हमने इसके बारे में कुछ सुना था। उन पांच पुलिसकर्मियों को मारना तो सोचो! दोषियों को उनकी करनी का फल मिलना ही चाहिए था।"

"लेकिन संभवतः जिन लोगों को हमने गोली मारी, उनका हत्या से कोई लेना-देना नहीं था," टेड ने आगे कहा। "वे बस संयोगवश सामने खड़े थे। मिली जानकारी से पता चलता है कि इस घटना को दो अज्ञात व्यक्तियों ने अंजाम दिया था, जिन्होंने लोगों को हिंसा के लिए उकसाया और फिर गायब हो गए।"

"क्या आप उनके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त नहीं कर पाए हैं?"

"हमें उन बदमाशों का अधूरा सा विवरण दिया गया है। जिस कार में वे यात्रा कर रहे थे, उस पर कालीकट की नंबर प्लेट थी, लेकिन किसी को भी उस पर लिखे अंक याद नहीं हैं।"

"दरअसल, दंगे की खबर हर जगह फैल जाएगी और अब हमें कहीं भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। मुझे उम्मीद है कि जॉन को अपने मजदूरों के साथ कोई दिक्कत नहीं होगी। अधिकारियों को भी यही लगता है, क्योंकि उन्होंने सौ सशस्त्र पुलिसकर्मियों को भेजा है। कहने की जरूरत नहीं है कि बड़े अधिकारी मुझसे अनगिनत सवाल पूछकर मुझे परेशान कर रहे हैं, जबकि मैं बार-बार घटना की रिपोर्ट दे रहा हूं।"

रूथ कुछ देर चुप रही। "बेचारा टेड," वह लगभग खुद से ही बुदबुदाई; फिर ऊपर देखकर उससे कहा, "खैर, इसे लेकर ज़्यादा परेशान मत हो। ये बहुत दुख की बात है कि तुम्हारे जैसा अच्छा लड़का इंग्लैंड में नहीं है, बल्कि इस बदहाल देश में अपनी जान के खतरे में है। काश मैंने कभी यहाँ कदम ही न रखा होता।"

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। टेड अपने जूतों की ओर देखने लगा, सोच में डूबा हुआ उसका माथा सिकुड़ गया; वहीं रूथ उसे निहारती रही, अपनी आँखों से उसके चेहरे को निहारने की कोशिश करती रही।

फिर उसने चुप्पी तोड़ी। "मेरे पास एक शानदार विचार है। चलो मुझे ड्राइव पर ले चलो, टेड। इससे दिमाग की उलझन दूर हो जाएगी और हम दोनों तरोताज़ा महसूस करेंगे, साथ ही इस अप्रिय विषय से तुम्हारा ध्यान भी हट जाएगा।"

"ज़रूर," उसने जवाब दिया, "आप कहाँ जाना चाहेंगे?"

"ओह, बस कहीं भी, बस थोड़ी देर के लिए बाहर निकलने के लिए।" वे दोनों उठे, बरामदे की सीढ़ियों से नीचे उतरे और रूथ को अपने बगल में बिठाकर, उन्होंने अपनी ब्यूक कार उसी सड़क पर चला दी जिस पर वे अभी-अभी आए थे।

इस सड़क पर तीन मील आगे उत्तर की ओर एक शाखा मार्ग था। सात मील आगे जाकर यह एक समतल पहाड़ी की चोटी पर समाप्त होता था। उस स्थान से आसपास के क्षेत्र का सुंदर दृश्य दिखाई देता था, जिसमें उत्तर में पर्वत श्रृंखलाएँ और चारों ओर घने जंगलों से ढकी पहाड़ियाँ और घाटियाँ शामिल थीं।

टेड ने एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे कार रोकी और वे दोनों उतर गए। वह जगह सुनसान थी क्योंकि इस रास्ते से बहुत कम यात्री गुजरते थे।

उसने रूथ को एक सिगरेट दी और उसे जलाकर उसे दे दी। फिर वे टहलते हुए उस जगह गए जहाँ ढलान वाली झाड़ियों के ऊपरी किनारे पर लगे लगभग आधा दर्जन छोटे पेड़ थे, जो उन्हें और अधिक एकांत और चिलचिलाती धूप से ठंडी छाया प्रदान कर रहे थे, जो साफ आसमान में चमक रही थी।

"अभी तक मानसून का कोई नामोनिशान नहीं है," रूथ घास पर बैठते हुए बड़बड़ाई और टेड को अपने बगल में बैठने का इशारा करते हुए बोली, "जॉन हर सुबह निकलने से पहले आसमान को देखते हुए यही कहता है। मुझे आश्चर्य है कि जब मानसून आएगा तो कैसा होगा। मैंने मानसून के बारे में इतना कुछ सुना है कि मुझे इसका अनुभव करने से डर लग रहा है।"

"मुझे नहीं लगता कि हालात उतने बुरे होंगे जितना बताया जा रहा है," टेड हँसते हुए बोला।

"ज़रा सोचो, हम दोनों साथ में," रूथ ने धीरे से कहा, "इस वीरान ज़मीन पर एक अंग्रेज़ लड़का और लड़की।" उसने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

कुछ क्षण बाद उन्होंने उत्तर दिया, "जैसा कि मैंने आपको बताया है, मुझे भारत काफी पसंद है, अगर मेरी पुलिस ड्यूटी न होती, खासकर वर्तमान समय में, तो मुझे लगता है कि मैं यहां बहुत खुश रह सकता था।"

मैं आपकी बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं हूँ। मुझे इंग्लैंड की बहुत याद आती है। इस मामले में जॉन से मुझे ज़रा भी तसल्ली नहीं मिलती। जन्म से अंग्रेज़ होने के अलावा, वह यहाँ पूरी तरह सहज महसूस करता है; जबकि मैं—मैं बहुत अकेलापन और उपेक्षित महसूस करती हूँ।

उसने उसे लालसा और चिंतन से देखा। यह स्त्री की सदियों पुरानी, खामोश और मोहक नज़र थी, जो स्पष्ट रूप से किसी रक्षक की सहानुभूति बटोरने की कोशिश कर रही थी।

टेड ने उस निगाह को महसूस किया और अपनी उलझन छिपाने के लिए हेलमेट उतार दिया। उसने हेलमेट घास पर रख दिया और रूथ की ओर मुड़ गया। अपने भरे हुए लाल होंठों, गोरे चेहरे और गहरी आँखों के साथ, काले बालों को हमेशा की तरह पोनीटेल में बाँधे हुए, वह कितनी मोहक लग रही थी। कितनी पतली—बिल्कुल एक स्त्री जैसी। उसके परफ्यूम की खुशबू— 'इवनिंग इन पेरिस'— उसकी नाक तक पहुँची।

टेड समझ गया कि इस पल वह क्या चाहती है; और उसे अचानक एहसास हुआ कि वह उसे यह इच्छा पूरी करने की गुप्त उम्मीद में ही वहाँ आया था। वह झुका और अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए, और जैसे ही उसने अपनी बाहों को उसके इच्छुक शरीर के चारों ओर लपेटा, उसने भी बदले में उसे कसकर पकड़ लिया, एक कोमल हाथ धीरे से, मोहक ढंग से उसकी तड़पती कनपटी पर बिखरे बालों को सहलाया, उसका मुँह इच्छा से नम और आधा खुला हुआ था।

टेड की सांसें तेज़ हो गईं, उसके भीतर तीव्र लालसा उमड़ रही थी और उसने रूथ की नम, भूखी आँखों में वही भाव देखा। उसने आवेश में आकर उसे अपने से लगा लिया और दोनों एक-दूसरे से लिपटकर घास पर गिर पड़े। रूथ ने महसूस किया कि उसका हाथ उसके स्वेटर के नीचे सरक गया और उसकी उंगलियाँ उसके स्तन को थाम लिया। फिर उसकी हथेली ने उसे कसकर दबा दिया।

"ओह टेड!" वह हांफते हुए बोली, "तुम मुझे चोट पहुंचा रहे हो।"

लेकिन अब वह उसका जम्पर उसकी गर्दन तक खींच रहा था। वह छटपटाकर पीठ के बल लेट गई और घुटने मोड़ने का नाटक किया, तभी उसने उसकी स्कर्ट के हुक खोल दिए और उसे उसके पैरों से नीचे खींच दिया। फिर वह उस पर टूट पड़ा, उसके घुटनों को अलग करते हुए, उसकी उंगलियाँ उसकी जांघों के बीच थीं। रूथ की टांगें उसे ग्रहण करने के लिए खुल गईं और वह आनंद से ऊपर की ओर उठ उठी।

हांफते हुए उसने उससे आग्रह किया, "आगे बढ़ो; आगे बढ़ो।"

प्राकृतिक हरियाली ने दृश्य को छुपा लिया, जैसे-जैसे उनके जुनून की लय बढ़ती गई और अंततः चरम पर पहुँच गई। वे दोनों एक-दूसरे की बाहों में थके-हारे पड़े रहे, जब तक कि समय ने उनके भीतर के जुनून को फिर से जगाकर उन्हें प्रेम के उन्माद में दोबारा नहीं डाल दिया।

एक घंटा धीरे-धीरे बीत गया। फिर वे उठे, थके हुए थे लेकिन इस एहसास के साथ कि उन्होंने अपनी आपसी इच्छाओं की आग को पूरी तरह से बुझा दिया है।

धीरे-धीरे वे ब्यूक कार की ओर लौट गए।

जब टेड और रूथ बंगले पर पहुंचे तब तक जॉन अपना दोपहर का भोजन समाप्त कर चुका था।

अध्याय 11

दबे स्वर में बोलने वाले आगंतुक

दरवाजे के लकड़ी के फ्रेम में जहां दरवाजा फिट होता था, उस छेद के पास अपना मुंह रखकर उस आदमी ने धीरे से पुकारा,

“रमन! रमन!” उसने धीरे से हाथ से दरवाजा हिलाते हुए ये शब्द कहे।

आधी रात होने ही वाली थी और रॉब रॉय एस्टेट की मज़दूरों की कतारें एकदम शांत थीं। कभी-कभार कोई कुत्ता बाहर धीमी आवाज़ में भौंकता या रोता था। चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था और कहीं भी रोशनी की कोई किरण नहीं दिख रही थी।

रमन नायर, सिर से पैर तक चेकदार कंबल से ढके हुए, उस झोपड़ी के फर्श पर गहरी नींद में सो रहे थे, जिसे समुदाय के सम्मानित अतिथि के रूप में उनके लिए किराए पर दिया गया था। वे खर्राटे ले रहे थे, जिसकी आवाज़ बंद कमरे में गूंज रही थी।

हल्की-हल्की खटखटाहट जारी रही। बाहर खड़ा व्यक्ति, जो एक लंबे भूरे कंबल में लिपटा हुआ था, अधीर होता जा रहा था। वह आस-पास की झोपड़ियों में रहने वालों को परेशान किए बिना सो रहे व्यक्ति को जगाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसके प्रयास व्यर्थ थे और अंदर से आ रही गहरी खर्राटे की आवाज़ और भी तेज़ होती जा रही थी।

वह लगातार थपथपाता रहा जब तक कि नायर चौंककर जाग नहीं गया और उसने अपने सिर से कंबल हटा दिया। झोपड़ी में घोर अंधेरा था और उसने बाहर से धीमी, लेकिन बेचैन आवाज़ में फुसफुसाते हुए शब्द सुने, "रमन नायर! रमन नायर!"

"तुम कौन हो?" उसने घबराकर पूछा।

झुंझलाहट भरी एक हल्की सी आवाज आई और फिर आवाज ने जवाब दिया, "पार्टी के नाम पर दरवाजा खोलो; और जल्दी करो! पड़ोसी हमें सुन लेंगे।"

पार्टी? पार्टी? कौन सी पार्टी? तभी नींद से व्याकुल नायर के दिमाग में अचानक ज्ञान की किरण जगी। जल्दी से उठकर उसने फर्श पर पड़े धुएँ से सने लालटेन को जलाया और अंदर से दरवाजे को बंद करने वाली लकड़ी की छड़ को खींचा।

उसे ज़रा भी समय दिए बिना, कंबल ओढ़े हुए वह व्यक्ति कमरे में घुस आया, रमन को एक तरफ धकेल कर दरवाज़ा बंद कर दिया। वह प्रवेश द्वार की ओर पीठ करके खड़ा हो गया और कर्कश स्वर में बोला, "क्या तुम इतना खाते हो कि इतनी गहरी नींद सोते हो; या शायद तुमने नारियल की ताड़ी का एक बड़ा घूंट पी लिया है?

मैं तुम्हें पंद्रह मिनट से जगाने की कोशिश कर रहा हूँ, इतना शोर मचा रहा हूँ कि आधी बस्ती परेशान हो गई है। तुम तो वाकई आराम की ज़िंदगी जी रहे हो। क्या तुम अकेले हो या तुम्हारे साथ कोई औरत भी है?"

रमन नायर स्तब्ध रह गए। फिर वे बेहद क्रोधित हो गए। उनके शब्द मलयालम में थे और दाँत भींचकर गुस्से की धारा में बह निकले, "तुम खुद को क्या समझते हो, महोदय, जो मुझसे, पार्टी के नेता के पद पर आसीन आदरणीय रमन नायर से, इस तरह अभद्र तरीके से बात कर रहे हो?"

"चुप रहो, और इतनी ज़ोर से मत बोलो," उनके रहस्यमय आगंतुक ने जवाब दिया, "तुम्हें किसने सम्मानित नेता कहा? तुम तो बस इस महान उद्देश्य के सेवक हो, जैसे मैं हूँ।" और फिर, अधिक सुलह भरे लहजे में उन्होंने कहा, "कालीकट से कॉमरेड पापाचेन और चाको तुम्हें तुरंत बुला रहे हैं। वे सड़क पर एक कार में इंतज़ार कर रहे हैं।"

"पापाचेन और चाको? ये कौन हैं? रात के इस समय मुझे क्यों फोन कर रहे हैं? और आप कौन हैं?" आश्चर्यचकित रमन के मुँह से एक के बाद एक कई सवाल निकल पड़े।

"मुझे कैसे पता चलेगा कि वे कौन हैं!" आगंतुक ने चिढ़कर जवाब दिया। "पार्टी में ज्यादा सवाल नहीं पूछने चाहिए। मुझे खुद नहीं पता कि वे कौन हैं या वे तुम्हें क्यों चाहते हैं। और वैसे भी, मेरे नाम से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

रमन नायर एक पल के लिए हिचकिचाया और फिर चुपचाप झोपड़ी का दरवाजा बंद करने से पहले अपने चप्पल पहने। वह उस लंबे अजनबी के पीछे-पीछे रात के अंधेरे में उस रास्ते पर चल पड़ा जो सड़क की ओर जाता था।

थोड़ी दूर जाने पर रमन की जिज्ञासा जागी और उसने पूछा, "तुम्हें मेरा नाम और मेरी झोपड़ी कैसे पता चली?"

"चुप रहो और बेवकूफी भरे सवाल मत पूछो," रहस्यमय जवाब आया।

अंततः वे सड़क पर पहुँच गए। उनके सामने एक काली आकृति दिखाई दी। जब नायर वहाँ पहुँचे तो उन्होंने पाया कि वह एक मोटर कार थी। कार का कवर ऊपर उठा हुआ था और उन्हें स्टीयरिंग व्हील पर झुका हुआ एक व्यक्ति दिखाई दिया। पहले तो वे यह पता नहीं लगा पाए कि पीछे की सीट पर कोई बैठा है या नहीं, लेकिन उनके संदेह तब दूर हो गए जब अँधेरे में से एक धीमी आवाज़ ने पूछा नहीं बल्कि कहा,

"आप पार्टी के रमन नायर हैं, है ना?"

रमन ने उत्तर दिया, "मैं हूँ। और तुम कौन हो?"

"यह तुम्हारा काम नहीं है, कॉमरेड," जवाब आया। "बस इतना कहना काफी है कि पार्टी को लगता है कि तुम यहाँ काफी समय से हो और कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अगर पार्टी की कोई एक मांग है, तो वह है कार्रवाई।"

रमन नायर स्तब्ध रह गया। वह क्रोधित भी था। पहले अजनबी ने उससे ऐसे बात की थी मानो वह कोई मामूली इंसान हो। अब कोई दूसरा भी वही कर रहा था। उसने ठान लिया कि वह पता लगाएगा कि यह दूसरा कौन हो सकता है।

इसी उद्देश्य से वह कार के पिछले दरवाजे के पास पहुंचा। तभी उसने देखा कि अंदर एक नहीं, बल्कि दो लोग बैठे हैं। कार के बाईं ओर उसके सबसे पास बैठा व्यक्ति सेना का ओवरकोट पहने हुए था और उसका सिर मफलर से ढका हुआ था। दूसरा व्यक्ति सिर से पैर तक कंबल में लिपटा हुआ था, और आगे की सीट पर बैठा कार का ड्राइवर भी कंबल में लिपटा हुआ था।

आवाज फिर सुनाई दी, और रमन ने गौर किया कि बोलने वाला व्यक्ति एक भारी कोट पहने हुए आकृति थी।

"लगभग तीन दिन पहले ऊपरपेट गांव के ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने पुलिस चौकी को जला दिया और सभी पुलिसकर्मियों को मार डाला। अब पार्टी का आदेश है कि आप इस इलाके में तुरंत हड़ताल करें। उसके बाद, कहीं और कुछ और किया जाएगा। हमें इन सफेद कुत्तों को तब तक चैन से नहीं बैठने देना चाहिए जब तक कि वे हमारी जमीन से भगा न दिए जाएं।"

"हां, मुझे ऊपरपेट में हुए दंगों की खबर मिली थी," नायर ने स्वीकार किया। "मुझे बताया गया था कि ये दंगे कालीकट के दो अजनबियों के कारण हुए थे, जिन्होंने खुद को मालाबार कांग्रेस संगठन के स्वतंत्रता कार्यकर्ता बताया था।"

“क्या आप वही हैं?” रमन ने सीधे-सीधे सवाल पूछा।

"अगर हम हैं या नहीं हैं तो क्या फर्क पड़ता है? क्या इससे आपको कोई फर्क पड़ता है?" कोट पहने उस शख्स ने झल्लाकर कहा।

फिर उसके साथी ने पहली बार बोलना शुरू किया, उसकी आवाज़ कंबल के अंदर से आई। स्वर कोमल और रेशमी था—पर अजीब तरह से भावहीन था। "हम पार्टी के सदस्य हैं। इतना जानना ही आपके लिए काफी है। और हमें आपसे कार्रवाई

चाहिए—अगले अड़तालीस घंटों के भीतर! इसका इंतज़ाम कीजिए, और आपको पैसे मिलेंगे। दूसरी ओर, अगर कुछ नहीं हुआ—तो भाई, यह आपके लिए अच्छा नहीं होगा।"

उसकी आवाज़ और भी कोमल, और भी रेशमी हो गई। लेकिन अब उसमें भावहीनता नहीं थी। उसके बोले गए अंतिम वाक्य के शब्दों में भयावह अर्थों का भंडार छिपा था।

रमन चुप रहा। उसके भीतर गहरी नाराजगी उमड़ रही थी, लेकिन उस व्यक्ति के बोलने का शांत आत्मविश्वास, उसकी फुफकारती और द्वेषपूर्ण आवाज़ का उस पर असर हुआ। उसने महसूस किया कि वह एक शक्तिशाली व्यक्तित्व के सामने है। उसकी बढ़ती हुई नाराजगी उस शक्ति के सामने मिट गई।

"मैं पूरी कोशिश करूंगा, महोदय," नायर ने दबी आवाज़ में हकलाते हुए कहा, और फिर वह थोड़ा घबराते हुए बोला, "लेकिन इन आत्मसंतुष्ट लोगों को उस हद तक उत्साहित करना मुश्किल है। एक तो वे अज्ञानी हैं; और दूसरे वे सीधे-सादे लोग हैं।"

उसके शब्दों और हावभाव से अगर उसे उम्मीद थी कि कार में बैठे लोगों पर कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, तो इसका बिल्कुल उल्टा असर हुआ। वह आदमी अपने साथी के ऊपर झुककर, खड़े रमन के ऊपर से थूकने लगा। उसकी कोमल आवाज़ में अब कोई मिठास नहीं रही और वह कठोर और धमकी भरी हो गई।

"साथी, हमें आपकी समस्या की मुश्किलों से कोई मतलब नहीं है। हमें सिर्फ़ नतीजों से मतलब है। अड़तालीस घंटों के भीतर इस जागीर में किसी न किसी तरह का विद्रोह होना ही चाहिए—बेचारे मज़दूरों को उस क्रूर श्वेत ज़ालिम के खिलाफ़ उठ खड़ा होना चाहिए जो उन्हें कुचल रहा है—वे उसे और उसकी पत्नी को मार सकते हैं—या कम से कम उसका घर जला सकते हैं—या..." यहाँ उसने अपना चेहरा और करीब किया, और कंबल की तहों में से रमन ने एक दुबला-पतला, साफ़-सुथरा, लंबा और सलीकेदार चेहरा देखा, जिसकी दो गहरी आँखें उस अँधेरे में भी चमक रही थीं... "आपको पार्टी का सामना करना पड़ेगा।" ये आखिरी शब्द फुसफुसाते हुए उसके कानों में पड़े।

फिर वक्ता ने राहत की सांस ली। रमन को लाने वाले व्यक्ति की ओर एक हाथ से इशारा करते हुए, जो अब तक एक शब्द भी नहीं बोला था, उन्होंने कहा, "अंदर बैठो"; और आगे झुककर, झुके हुए ड्राइवर की पीठ पर धक्का देते हुए आदेश दिया,

"चालू करो; और आगे बढ़ो"।

ड्राइवर ने खुद को संभाला और इंजन चालू किया, वहीं रमन के साथ मौजूद व्यक्ति उसके बगल वाली सीट पर बैठ गया और दरवाजा बंद कर लिया। हेडलाइट्स की रोशनी से अंधेरा छंट गया और गाड़ी रात के अंधेरे में आगे बढ़ गई, रमन को सड़क किनारे अकेला छोड़कर।

वह कुली-पंक्ति की ओर वापस मुड़ा, यह सोचते हुए कि वह इस नए काम को कैसे अंजाम देगा। दंगा भड़काए; साहब और मेम-साहिब को मार डाले; बंगला जला दे! बस अंगूठे और उंगली को एक साथ हिलाने जितना आसान! क्या यह इतना आसान था? और क्या ये वही अहिंसा के सिद्धांत थे जिनका महात्मा गांधी प्रचार कर रहे थे?

और फिर रमन नायर को अपने ही विचारों का एहसास हुआ। नहीं! ये बिल्कुल भी अलग विचार नहीं थे। बल्कि ये वही विचार थे जिनका प्रचार वे स्वयं कर रहे थे; और अब उन्हें अड़तालीस घंटों के भीतर इन्हें अमल में लाना था!

सचमुच, रमन नायर अपने ही जाल में फंस गए थे। अचानक उनके मन में एक और विचार आया। यह बहुत डरावना था।

आदमखोर!

उन्हें बताया गया था कि वह भयानक जानवर इसी इलाके में रहता है। खबर थी कि वह यहाँ, वहाँ और हर जगह मौजूद है। हाल की घटनाओं के उत्साह में उन्होंने इस खौफनाक खतरे के बारे में सोचा तक नहीं था। अब उन्हें याद आया।

वह अकेला था! आधी रात का काफी समय बीत चुका था! वह घोर अंधेरे में था, चारों ओर घनी कॉफी की झाड़ियाँ थीं जहाँ आदमखोर छिपा हो सकता था।

रमन नायर घबरा गया। वह बेतहाशा दौड़ने लगा और तब तक नहीं रुका जब तक उसने अपनी झोपड़ी का दरवाजा झट से खोलकर अंदर छलांग नहीं लगाई और लकड़ी के डंडे को कसकर बंद नहीं कर दिया।

सचमुच, वह एक बेहद दुर्भाग्यपूर्ण रात थी।

अध्याय 12

चिका, जंगल का आदमी

चिक्का करुंबा जनजाति से थी, जो नीलगिरी पर्वतमाला और आसपास के वन क्षेत्रों के घने, सदाबहार जंगलों में रहने वाली आदिवासी जनजाति है। करुंबा जनजाति

की उत्पत्ति के बारे में किसी को ठीक से पता नहीं है। वे द्रविड़ मूल के हैं, तमिल और कन्नड़ भाषाएँ बोलते हैं और एकांत जीवन जीते हैं। वे कद में छोटे, सांवले और मजबूत शरीर वाले होते हैं, जिनके चेहरे की बनावट खुरदरी होती है। महिलाएं अपनी साड़ियाँ छाती के ऊपर बाँधकर जमीन तक लटकाती हैं, जो एक लंबी सारोंग की तरह दिखती है।

चिका एक जवान आदमी था, पर उसे अपनी उम्र का पता नहीं था। कोई भी आदिवासी यह नहीं जानता। उसके लंबे, काले, उलझे हुए बाल थे जिन्हें वह धोना नहीं चाहता था क्योंकि धोने में कंघी करने और सुखाने की मेहनत लगती थी। उसे अपने बालों में बसी जूँओं की भीड़ ज़्यादा पसंद थी। उसकी ठुड्डी पर कुछ छोटे-छोटे बाल थे जो समय के साथ दाढ़ी बनने का वादा करते थे। उसकी नाक सीधी थी और उसकी दो चमकदार, उत्सुक और ईमानदार काली आँखें थीं। उसके शरीर पर केवल एक गंदा सा कपड़ा था जो उसके सामने के नंगे शरीर को ढके हुए था और उसके नितंबों के बीच से ऊपर आकर उसी कमरबंद से बंधा हुआ था जिससे वह आगे से बंधा हुआ था। उसके पास केवल एक तेज़ धार वाली, छोटे हैंडल की कुल्हाड़ी और एक खुरदुरे कंबल के टुकड़े थे।

वह एक महीने पहले रोजगार की तलाश में थाला गांव में अपना घर छोड़कर निकला था और टेढ़े-मेढ़े रास्तों से एक सुबह रॉब रॉय एस्टेट में दाखिल हुआ। उसे उम्मीद थी कि यहाँ उसे नौकरी मिल जाएगी।

जैसे ही चिका बागान से होकर गुजरने वाले संकरे रास्ते पर एक मोड़ पर मुड़ा, उसे एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। कई कुली एक समूह में इकट्ठा होकर आपस में बातें कर रहे थे। उनके बीच एक श्वेत व्यक्ति खड़ा था। स्पष्टतः, दोराई उस जीप में आए थे जो रास्ते के किनारे खड़ी थी। करुम्बा ने उन आदमियों के पैरों के बीच जमीन पर एक आकृति को लेटा हुआ देखा।

उसका पहला विचार था कि वह कॉफी की झाड़ियों में छिपकर चुपचाप देखता रहे। लेकिन फिर उसे ख्याल आया कि ऐसा करने से वह अपने उद्देश्य में कभी सफल नहीं हो पाएगा। शायद यह गोरे आदमी से मिलने और सीधे काम मांगने का सुनहरा अवसर था। इसलिए वह हिम्मत करके आगे बढ़ा और समूह में शामिल हो गया।

फिर भ्रम की वजह सामने आई। एक कुली को कोबरा ने काट लिया था। साहब, जो उस जागीर के मालिक निकले, अपनी जीप से वहाँ से गुजर रहे थे और बाकी

कुलियों ने उन्हें आवाज़ दी। ज़ाहिर है, किसी को भी ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

"उसे कब काटा गया था?" ग्रेस्टोन ने समूह से पूछा। शायद घाव को चीरा लगाकर और पट्टी बांधकर उस आदमी की जान बचाने की कुछ संभावना थी।

लेकिन जवाब ने सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। "एक घंटे से भी ज़्यादा समय पहले, डोराई... दरअसल, यह घटना यहाँ से कुछ दूरी पर घटी थी और हम उसे मज़दूरों के लिए ले जा रहे थे जब आप वहाँ आ गए।"

जॉन को एहसास हो गया था कि बेचारे की जान बचाना नामुमकिन है। उसका अंत निश्चित था। सांप के काटने के असर को खत्म करने वाली दवा वाला सबसे नज़दीकी अस्पताल डेढ़ सौ मील से भी ज़्यादा दूर था और उस आदमी के पास जीने के लिए साठ मिनट से भी कम समय बचा था।

उन्होंने उदास होकर उनसे कहा, "मेरे पास कोई दवा नहीं है।"

नियतिवाद के चलते उन्होंने बेहोश पड़े आदमी को अपने कंधों पर उठाया और अपनी यात्रा जारी रखी। जल्द ही उनकी बड़बड़ाहट शांत हो गई और गोरा आदमी और जंगली आदमी अकेले रह गए।

चिका ने आदरपूर्वक अभिवादन करते हुए अपनी दोनों हथेलियों को माथे से तब तक मिलाया जब तक कि उसके अंगूठे माथे को छू न लें। जॉन ग्रेस्टोन ने दोस्ताना अंदाज़ में सिर हिलाकर और मुस्कुराकर इस भाव का जवाब दिया।

कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया क्योंकि वे एक-दूसरे को समझने की कोशिश कर रहे थे।

तब जॉन ने पूछा, "तुम कौन हो और कहाँ से आए हो?"

जवाब बिल्कुल सटीक था। "मैं चिका हूँ, बांदीपुर के पास थला गाँव का रहने वाला करुम्बा। मुझे पीटा गया और घर से निकाल दिया गया क्योंकि मैंने उस लड़की से शादी करने से इनकार कर दिया था जिसे मेरे पिता ने मेरे लिए चुना था। मैं किसी और से प्यार करता हूँ। अब मैं नौकरी की तलाश में हूँ।"

वे तमिल में बातचीत कर रहे थे। जॉन ने पूछा, "आप यहाँ कैसे आए?"

"मैं पैदल चला", यही सीधा सा जवाब था।

"क्या आपको इस जगह पर मंडराने वाले आदमखोर बाघ या किसी जंगली राक्षस से डर नहीं लगा?"

मुझे बाघों से डर नहीं लगता। वे मेरे साथी हैं। जहाँ तक राक्षसों की बात है; मैं केवल उन्हीं राक्षसों को जानता हूँ जो मांस और रक्त से बने होते हैं और जिनके दो पैर होते हैं।

जॉन इस अटपटे जवाब पर हँस पड़ा। चिका की ओर मुड़कर उसने कहा, "जीप में बैठ जाओ। हम पीछे-पीछे चलेंगे और देखेंगे कि घायल आदमी की हालत कैसी है।"

इंजन गरजते हुए चालू हुआ और जॉन कुली लाइन की ओर गाड़ी चलाने लगा।

"आप किस तरह का काम कर सकते हैं?" उसने पूछा।

"माननीय महोदय, आप मुझे जो भी काम देना चाहें, मैं दे सकता हूँ," यह तुरंत जवाब आया। फिर, "शायद मैं बाघ का शिकार करने में आपकी सहायता कर सकूँ।"

ग्रेस्टोन उस चतुर जवाब पर मुस्कुराया। वह जानता था कि नौकरी पाने के लिए चिका इससे बेहतर प्रलोभन नहीं दे सकता था।

"ठीक है, मैं तुम्हें एक मौका दूंगा," वह मान गया।

करुम्बा ने सीधी निगाहों से उसकी ओर देखते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा, "लेकिन महाराज, आपको पहले यह जान लेना चाहिए कि मैंने अपनी प्रेमिका को गर्भवती किया है।" उसकी आवाज़ में चिंता थी, क्योंकि उसे नहीं पता था कि इस खबर पर क्या प्रतिक्रिया होगी।

इस बार जॉन खुलकर हँस पड़ा। वह इस छोटे से आदमी की सीधी-सादी और स्पष्टवादी सोच की तारीफ किए बिना नहीं रह सका और बोला, "यह सब तुम्हारे मेरे नौकर बनने से पहले हुआ था। इसलिए, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन अगर तुमने मेरे यहाँ रहते हुए यह गलती दोहराई, तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा। तब तक, मैं तुम्हें अपना निजी शिकारी नियुक्त करता हूँ।"

वह फिर से हँसा और नन्हे करुंबा के चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कान को देखा।

कुली लाइन तक पहुँचने से कुछ ही देर पहले उन्होंने साँप के काटे हुए आदमी को ले जा रहे समूह को पीछे छोड़ दिया। जॉन आगे बढ़ा और पीपल के पेड़ के नीचे बने ऊँचे चबूतरे के पास जीप रोक दी। उसने देखा कि एक छोटा, सांवला आदमी वहाँ उकड़ू बैठा है, जिसने सफेद सूती बनियान पहनी है और कमर पर धोती बाँधी है। उस आदमी ने जॉन को सलाम करके अभिवादन करने की कोशिश भी नहीं की, न ही वह खड़ा हुआ जैसा कि मालिक के आने पर आम तौर पर होता था। वह घुटनों के बल बैठा रहा और उसे घूरता रहा। ग्रेस्टोन उसे बड़े अनमने ढंग से देखता रहा, क्योंकि उस

समय उसके सारे विचार उस कुली के बारे में थे जिसे कोबरा ने काटा था। बेचारा, उसने सोचा, बिना किसी चिकित्सा सहायता के मरना पड़ेगा। कोई कुछ नहीं कर सकता।

इसी बीच कुछ लोग वहाँ पहुँचे। घटना की खबर फैल गई और पीड़ित की बूढ़ी माँ, पत्नी और दो छोटे बच्चे बेहोश कुली के चारों ओर जमा होकर रोने-धोने लगे। पत्नी अपनी झोपड़ी में भागी और कुछ ही क्षणों में गर्म दूध का लोटा लेकर लौटी और उसने अपने पति के कसे हुए दाँतों के बीच जबरदस्ती दूध पिलाने की कोशिश की।

इस समय तक, पीपल के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर खड़ा अजनबी एक शब्द भी नहीं बोला था। रमन नायर—वास्तव में वही था—एक अवसरवादी था। वह एक ऐसे ठोस कारण की तलाश में दिमाग खपा रहा था जिससे कुली अपने मालिक और उसकी पत्नी की हत्या करने और उनका घर जलाने के लिए उकसाए जा सकें। उसे शाम तक वह कारण ढूंढना ही था क्योंकि उसने शाम छह बजे कुलियों के साथ एक और बैठक तय की थी।

पहले तो उन्होंने ग्रेस्टोन के आगमन को एक दुर्भाग्यपूर्ण व्यवधान समझा। अब उनके चतुर और धूर्त दिमाग को इसमें ईश्वर प्रदत्त अवसर दिखाई दिया। रमन नायर खड़े हो गए। स्पष्ट और बुलंद स्वर में उन्होंने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया।

"मेरी बात सुनो, भाइयों! याद है मैंने तुम्हें उस दिन क्या कहा था? "यहाँ के गोरे आदमी की वजह से यह दुर्भाग्य आया है। तुम्हारा अपना खून, तुम्हारा अपना भाई, यह कुली, उस विदेशी शैतान के लिए काम कर रहा था, जब उसे कोबरा ने काट लिया। अब आगे क्या होने वाला है?"

उसने अपने चारों ओर मौजूद हैरान भीड़ से चीखते हुए सवाल पूछा और फिर खुद ही जवाब देने के लिए दौड़ पड़ा। "अरे, बेचारा तो ज़रूर मर जाएगा। फिर उसकी पत्नी, उसके दो बच्चों, उसकी बूढ़ी माँ को कौन खिलाएगा? कोई नहीं! और उनका क्या होगा? वे भूख से मर जाएँगे! और उस गोरे आदमी का क्या होगा? कुछ नहीं! हा, और उसकी पीली-सी पत्नी, और उसके सारे लालची लोग ज़मीन की दौलत पर जीते रहेंगे, हम बेचारे भारतीयों का खून चूसते रहेंगे, उन शापित जोंकों की तरह जोंक की तरह जोंक की तरह, जबकि तुम बेचारे लोग और तुम्हारी प्यारी पत्नियाँ और छोटे बच्चे दुख सहते रहेंगे, भूख से मरते रहेंगे और मरते रहेंगे।"

रमन नायर अपने विषय में पूरी तरह से मग्न हो गए। उन्होंने आगे कहा, "यह

सब क्यों हो रहा है? इस सवाल का जवाब देना आसान है। क्योंकि हम भारतीयों में लाखों की संख्या में एकजुट होकर इन गोरे लोगों को अपनी ज़मीन से बाहर निकालने—उन्हें सीधे समुद्र में धकेलने—या उन्हें वहीं मार डालने का साहस नहीं है।"

उसकी आवाज ऊंची होती चली गई और अंत में शुद्ध घृणा की उन्मादी चीख में बदल गई क्योंकि वह अपने ही उग्र आवेश में बह गया था।

जॉन चुपचाप सुनता रहा। वह इतना अचंभित और चकित था कि बीच में टोकने का ख्याल भी नहीं आया।

अध्याय 13

साज़िश का गहरा जाना

आधी रात का समय होने के बावजूद हवा गर्म और उमस भरी थी। झींगुरों की तेज आवाज और वन रक्षक के क्वार्टर के पीछे बहने वाली छोटी नदी से आती एक मेंढक की हल्की सी आवाज ही उस सन्नाटे भरे जंगल को भंग कर रही थी।

जून अपनी संकरी चारपाई पर जागती रही। हरे रंग की मच्छरदानी से ढकी उसकी लेटी हुई काया से उत्पन्न अतिरिक्त गर्मी के कारण उसे बहुत पसीना आ रहा था। उसने मेंढक की आवाज़ सुनी और जानती थी कि समय के साथ उसकी एकल आवाज़ एक समूह में बदल जाएगी, जिसे सैकड़ों मेंढक गाएंगे जो आने वाले मानसून के कारण उफनती हुई नदी के उग्र रूप में बहने पर उसके किनारे खड़े होंगे।

उसके पिता बगल वाले कमरे में सो रहे थे और उनकी गहरी साँसें उसके विचारों में खलल डाल रही थीं। बीच के दरवाजे पर एक लालटेन मंद रोशनी में जल रही थी, जिससे सामने वाली दीवार पर लंबी मखमली काली परछाइयाँ पड़ रही थीं, जो पर्दे की जाली से डरावनी लग रही थीं।

जून परेशान थी। पता नहीं क्यों, उसके मन में बार-बार एक चेहरा उभर रहा था, जिसमें धूसर-हरे रंग की आंखें उसे घूर रही थीं। वह चेहरा एक जीप चला रहे आदमी का था—जॉन ग्रेस्टोन का—उस भयानक अंग्रेज़ औरत के पति का।

जब वह सोच रही थी, तभी उसे एक गाड़ी के चलने की आवाज़ सुनाई दी और वह सोचने लगी कि इसे कौन चला रहा होगा। शायद यह जीप हो। शायद जॉन ग्रेस्टोन उससे मिलने आ रहा हो। यह एक सुखद विचार था और वह कुछ देर तक इसी में डूबी रही।

इंजन की गड़गड़ाहट तेज़ होती गई और नज़दीक आती गई। उसे ब्रेक की

चरमराहट सुनाई दी। फिर भारतीय वनपाल और पाँच वन रक्षकों के क्वार्टर से पुरुषों की दबी आवाज़ें सुनाई दीं, जो रेंजर के बंगले के बगल में अपने परिवारों के साथ रहते थे।

जून ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की, लेकिन पर्दे और बिस्तर से खिड़की की दूरी के कारण आवाज़ें अस्पष्ट थीं। कुछ पल वह इसी तरह लेटी रही, सोचती रही कि रात के इस समय ये आगंतुक कौन हो सकते हैं और वे क्या चाहते होंगे। फिर जिज्ञासावश वह बिस्तर से उठी और खिड़की की ओर चल पड़ी।

अंधेरा इतना घना था कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ शब्द इधर-उधर से उसके कानों तक पहुँचे, और तमिल भाषा की जानकारी होने के कारण उसे उनका अर्थ समझने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

वनपाल बोल रहा था, "लेकिन आप जो करने को कह रहे हैं, वह नामुमकिन है। हम ब्रिटिश राज के सेवक हैं। अगर हम आपकी बात मानेंगे, तो हम गंभीर मुसीबत में पड़ जाएँगे। रेंजर साहब हमारी शिकायत कर देंगे और हमें बर्खास्त कर दिया जाएगा, या फिर जेल में डाल दिया जाएगा। हमारी पेंशन भी चली जाएगी। हमारे परिवारों का पेट कौन भरेगा? आप भरेंगे या फिर वे लोग जिनका आप प्रतिनिधित्व करते हैं?"

आधे मिनट तक सन्नाटा छाया रहा।

एक अजीब सी आवाज जवाब देने लगी—जिसकी लय विचित्र थी—वह सीटी जैसी थी और उसमें एक अजीब सी बेसुरी, द्वेषपूर्ण कोमलता थी। ऐसा लग रहा था मानो बोलने वाला सांप की तरह फुफकार रहा हो।

"तुम्हारे जैसे चूहों की वजह से, जो उन नीच गोरे लोगों की सेवा करते हो, हम भारतीयों को, जो अपने देश की आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं और सब कुछ कुर्बान कर रहे हैं, आगे बढ़ने में मुश्किल हो रही है। क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि इस महान भूमि के लाखों लोग एकजुट हो रहे हैं और जल्द ही विदेशियों को बाहर निकाल देंगे? तब तुम कहाँ रहोगे? अगर तुम अभी हमारे साथ जुड़ जाओ, तो नई सरकार में तुम्हारा तरक्की और जिम्मेदारी का पद तुम्हारा इंतजार कर रहा है। लेकिन अगर तुम नहीं जुड़ते; अगर तुम अंग्रेजों के प्रति वफादार रहते हो; तो जब वे भारत छोड़ेंगे तो तुम क्या करोगे? बिल्कुल यकीन मानो, वे तुम्हें अपने साथ नहीं ले जाएंगे। वे तुम्हें हमारे साथ छोड़ देंगे! उस दिन हम तुमसे बदला लेंगे। हम तुम्हें मातृभूमि के गद्दार मानेंगे!"

बहस की आवाजें लगातार उठती रहीं। जून के मन में सबसे पहले यही ख्याल आया कि वह अपने पिता को जगाए और उन्हें सब कुछ बताए। वह जानती थी कि महात्मा गांधी और कांग्रेस पार्टी के गुप्त एजेंट हर जगह मौजूद थे, सरकार के खिलाफ, अंग्रेजों के खिलाफ और आम तौर पर गोरे लोगों के खिलाफ विद्रोह भड़का रहे थे। उसके पिता की सहानुभूति भी उसकी अपनी ही थी; और प्रायद्वीप भर में रहने वाले दस लाख से अधिक एंग्लो-इंडियनों की तरह, उनकी सहानुभूति भी अंग्रेजों के प्रति प्रबल थी।

अगर जून ने यह बातचीत कुछ घंटे पहले सुनी होती, तो वह जानती थी कि उसकी प्रतिक्रिया अपने पिता को जगाकर अजनबियों को भगा देने की होती, ज़रूरत पड़ने पर बंदूक का इस्तेमाल भी करती। लेकिन उसी सुबह कुछ ऐसा हुआ था। कुछ चौंकाने वाला। यह उसके लिए एक गहरा सदमा था। फिर भी, इसने उसे खुद से रूबरू करा दिया था।

एक श्वेत महिला—एक अंग्रेज महिला—जो शासक वर्ग की सदस्य थी और जिसके प्रति उसने हमेशा अपनी अटूट निष्ठा दिखाई थी, ने उसे निराश कर दिया था।

उस समय वह गुस्से में थी। वह नाराज़ थी। वह रोई भी थी। अब अचानक उसे सच्चाई का एहसास हुआ। अंग्रेज़ महिला ने जो कहा था, वह सच था। गोरे लोग उसके और उसके पिता जैसे लोगों से नफ़रत करते थे। वे उन्हें इसलिए नीचा समझते थे क्योंकि वे काले थे; क्योंकि वे यूरेशियन थे।

आखिरकार, वह खुद भी एक भारतीय थी!

ईश्वर की कसम, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं था! तो फिर उसकी सहानुभूति अंग्रेजों के साथ क्यों होनी चाहिए थी? बल्कि, उसकी सहानुभूति तो बाहर के अजनबियों और उनके जैसे लोगों के साथ होनी चाहिए थी, जो इस देश को, जो उसका भी उतना ही अपना था जितना उनका, ब्रिटिश शासन के बंधन से मुक्त कराने की कोशिश कर रहे थे; उन श्वेत विदेशियों के जुए से मुक्त कराने की कोशिश कर रहे थे जो भारतीयों और अंग्रेज़-भारतीयों दोनों को समान रूप से तुच्छ समझते थे!

बाहर खड़े लोग गद्दार नहीं थे जैसा कि वह पहले उन्हें समझती थी। वे देशभक्त थे। दबी हुई आवाज़ें एक बार फिर उसके कानों तक पहुँचीं। वही आदमी फिर बोल रहा था।

क्या आपको पता है कि कुछ दिन पहले ऊपरपेट के लोगों ने पुलिस स्टेशन को

जला दिया था, जिसमें सरकार के प्रति वफादार पांचों पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी गई थी? अगर उन लोगों ने अंग्रेजों का विरोध किया होता और स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल हो गए होते, तो वे आज जीवित होते। लेकिन वे मूर्ख थे और उन्होंने ऐसा नहीं किया। अब वे मर चुके हैं। क्या अंग्रेज उन्हें फिर से जीवित करेंगे? क्या ब्रिटिश राज उनके परिवारों का पेट भरेगा? क्या आप चाहते हैं कि आपके साथ भी ऐसा ही हो? इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, हमारे साथ जुड़ें। अगले अड़तालीस घंटों के भीतर कॉफी बागान के मजदूर विद्रोह करने वाले हैं। वे उस बंगले को जला देंगे जिसमें एक श्वेत व्यक्ति और उसकी पत्नी मौजूद हैं, ताकि इन विदेशी कुत्तों को चेतावनी दी जा सके कि वे हमारे देश से निकल जाएं, इससे पहले कि उनका भी यही हाल हो। इस पर गंभीरता से विचार करें। हम जल्द ही लौटेंगे। तब आपको हमारे साथ जुड़ना होगा—और कार्रवाई करनी होगी!

बड़बड़ाहट बंद हो गई और जून ने कार को जंगल की रात में आगे बढ़ते हुए सुना। जल्द ही इंजन की आवाज़ दूर होती चली गई। उसके विचार उलझन से भरे हुए थे। उसने अभी-अभी बागान मालिक और उसकी पत्नी के लिए आने वाले भयानक भाग्य के बारे में सुना था। जॉन ग्रेस्टोन, वही भूरे-हरे रंग की आँखों वाला आदमी जो उससे उस सुबह मिला था और जिसे उसने बहुत अच्छा समझा था; और उसकी पत्नी रूथ, जिसने उसे निराश कर दिया था। यह योजना अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की एक बहुत बड़ी साजिश का मात्र एक हिस्सा थी—वही भारत जो उसकी मातृभूमि थी!

उसे इस बारे में क्या करना चाहिए?

अध्याय 14

श्वेत व्यक्ति को मार डालो और उसका घर जला दो

ऐसा लग रहा था मानो किस्मत जॉन ग्रेस्टोन के साथ बुरा बर्ताव करने पर तुली हुई हो। जब वह रमन नायर का जोशीला भाषण सुन रहा था, तभी एक आदमी दौड़ता हुआ आया और खबर दी कि आदमखोर ने फिर हमला कर दिया है। एक और शिकार हो चुका था—इस बार एक महिला—जो एस्टेट के एक सुनसान कोने में काम करने वाले मजदूरों में से थी।

इस खबर ने मलयाली को उसके तीखे वाक्यों में से एक के बीच में ही रोक दिया। लेकिन वह केवल एक पल के लिए ही रुका।

आँखों में चमक लिए उसने मुड़कर ग्रेस्टोन की ओर उंगली उठाई और चिल्लाते हुए कहा, "यही वह आदमी है जो इस औरत और उससे पहले की कई औरतों की मौत के लिए ज़िम्मेदार है। वह उसके लिए काम करती थी। बाघ ने उसे मार डाला और खा लिया। अब भी वह टस से मस नहीं हुआ है और कुछ नहीं कर रहा है।"

उसके शब्दों का असर वहां मौजूद मजदूरों और उनके परिवारों पर दिखने लगा। गुस्से और आरोप-प्रत्यारोप की फुसफुसाहट सुनाई देने लगी। भीड़ उमड़ पड़ी और ग्रेस्टोन को घेर लिया।

कुछ लोगों ने पूछा, "तुम्हें क्या कहना है?" "क्या तुम उसके परिवार को मुआवज़ा दोगे?" कुछ अन्य लोगों ने गुस्से में कहा, "निकल जाओ! भारत छोड़ दो!"

इस व्यवधान के कारण सांप के काटे हुए व्यक्ति की ओर ध्यान नहीं दिया गया, जबकि उसके साथी नई घटना को सुनने के लिए इकट्ठा हो गए। रमन नायर की पैनी नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी जो ज़मीन पर पड़ा था और उन्होंने मामले को अपने हाथ में लेने का फैसला किया।

"आज न केवल एक गरीब महिला इस अजनबी की सेवा में मर गई, बल्कि हमारा एक और साथी मौत के मुंह में पड़ा है।" उसने नाटकीय अंदाज़ में बेहोश पड़े आदमी की ओर इशारा किया।

भीड़ ने उसकी ओर और लेटे हुए व्यक्ति की ओर देखा। चारों ओर से धमकियाँ सुनाई दे रही थीं। फिर वे मरणासन्न व्यक्ति के चारों ओर एकत्रित हो गए। उनमें से दो ने उसका मुँह जबरदस्ती खोला और उसकी पत्नी द्वारा लाए गए दूध से भरे पीतल के लोटे का किनारा उसके मुँह में डाला, और दूध उसके गले में उंडेल दिया गया। वह व्यक्ति बुरी तरह तड़पने लगा और हाँफने लगा। उसके होंठों पर झाग आ गया। उसके मुँह के खुलने और बंद होने के साथ ही उसके गले से एक कर्कश गड़गड़ाहट की आवाज़ अनियमित गति से निकलने लगी।

कुछ देर बाद ही उसकी मौत हो गई!

"हमारी धरती पर गोरों की मौजूदगी का एक और शिकार," रमन नायर की आवाज चीखी।

जैसे ही भीड़ जीप के चारों ओर जमा हुई, चारों दिशाओं से धमकी भरे नारे सुनाई देने लगे।

ग्रेस्टोन स्टीयरिंग व्हील पर कोहनी टिकाए, बिना हिले-डुले बैठा रहा। वह घटित

घटनाओं से स्तब्ध प्रतीत हो रहा था और उसे अपने खतरे का एहसास नहीं था।

एक व्यक्ति ने अपना संयम बनाए रखा। वह था चिका। उसने जॉन के कंधे को ज़ोर से हिलाया और दबी आवाज़ में कहा, "यहाँ से जल्दी निकल जाओ। एक मिनट में बहुत देर हो जाएगी। वे तुम्हें मार डालेंगे!"

ग्रेस्टोन को होश आया। अपनी जान खतरे में देखकर उसने इग्निशन ऑन किया और स्टार्टर बटन दबाया। सौभाग्य से इंजन तुरंत स्टार्ट हो गया। उसी समय भीड़ उसके चारों ओर जमा हो गई। जॉन ने पहला गियर लगाया और गाड़ी को तेज़ी से आगे बढ़ाया। जैसे ही जीप कुली-लाइनों से दूर ढलान वाले रास्ते पर तेज़ी से आगे बढ़ी, लोग चारों दिशाओं में बिखर गए, और पीछे से हैरानी, गुस्से और निराशा की चीखें सुनाई दीं।

रमन नायर इस घटना से बेहद खुश था। उसकी किस्मत वाकई अच्छी थी। साथ ही, उसे यह भी एहसास हुआ कि पचास से अधिक लोग मौजूद होने के बावजूद, वे सभी श्रमिकों का मात्र एक छोटा सा हिस्सा थे। उसके नापाक इरादे को पूरा करने के लिए उसे और अधिक लोगों की आवश्यकता थी।

"काम बंद करो और अपने भाइयों को बुलाओ। हम आज ही उन सफेद कुत्तों को मार डालेंगे और उनका घर जला देंगे," उसने चिल्लाकर कहा।

एक घंटे के भीतर ही लगभग तीन सौ लोगों की भीड़ जमा हो गई। इस भीड़ का नेतृत्व करते हुए रमन नायर ग्रेस्टोन बंगले की ओर चल पड़े।

इसी बीच जॉन चिका के साथ लौट आया। उसने जल्दी से रूथ को स्थिति समझाई और उसे सलाह दी कि वह कुछ ज़रूरी सामान जल्दी से अपने सूटकेस में पैक कर ले। फिर वह घबराकर बरामदे में इधर-उधर घूमने लगा, पाइप से ज़ोर-ज़ोर से कश लेते हुए उसके पीछे नीले धुएं के गुबार उठ रहे थे। अब उसे आगे क्या करना चाहिए? रूथ के साथ भाग जाना चाहिए? वापस जाकर मज़दूरों से बात करने की कोशिश करनी चाहिए? या टेड बेकर को बुलाना चाहिए? क्या पुलिस कुछ कर सकती थी? वे इस समय पहले से ही बहुत व्यस्त थे और उसका स्वागत नहीं करेंगे।

सीढ़ियों पर दौड़ते हुए माली की आकृति को देखकर वह रुक गया।

"वीरन, तुम क्या चाहते हो?" उसने चिढ़कर पूछा।

"दोराई, जैसा कि तुम जानते हो, मेरा छोटा भाई मजदूरों के बीच काम करता है। वह अभी-अभी आया है और उसने बताया है कि मजदूरों ने हड़ताल कर दी है और

एक अजनबी आदमी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में यहाँ आ रहे हैं, ताकि तुम्हें और दोराईसानी को मार डालें और इमारत में आग लगा दें। मुझे तुम्हारी जान का खतरा है। समय रहते गाड़ी में बैठकर भाग जाओ।"

उसी समय उसने अपने पीछे किसी की आवाज सुनी और कुछ कदम दूर खड़े वाहक को देखने के लिए मुड़ा।

"साहिब," चंद्र ने टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में जल्दी से कहा, "मालिक को तुरंत जाना होगा—एकदम—जान बचाने के लिए। बड़ी भीड़ घर में आग लगाने और मालिक को मारने आ रही है। चंद्र की बात सुनो। मुझे मालिक पसंद हैं; इसलिए झूठ मत बोलना।"

उन सभी को पता नहीं था कि रूथ बरामदे की ओर जाने वाले दरवाजे पर आकर सुन रही थी। उसे माली की तमिल में कही बात समझ नहीं आई थी, लेकिन चंद्र की चेतावनी उसने समझ ली थी।

"तो जॉन, तुम्हारे प्यारे कुली आखिरकार भरोसे के लायक नहीं हैं, है ना? ज़रा सोचो, एक नौकर हमें अपना ही घर छोड़कर भागने का सुझाव दे रहा है! काश मैं मर्द होता और बंदूक चला पाता, तो मैं इन काले सूअरों में से कुछ को गोली मार देता और काम तमाम कर देता।"

चंद्र ने उसकी ओर देखा, उसकी आँखों में घृणा झलक रही थी। उसने कहा, "मेम-साहिब को याद रखना चाहिए। शायद कुछ ही लोगों को मार पाएँ। लेकिन बहुत से लोग बचे हैं, और वे देश के सभी गोरे पुरुषों और महिलाओं को मार डालेंगे। आपके लिए, साहब," उसने जॉन की ओर मुड़ते हुए कहा, "चंद्र को आप बहुत पसंद हैं। मैं कहता हूँ, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, चले जाओ! बाकी गोरे लोगों के लिए," और फिर उसने रूथ की ओर इशारा करते हुए कहा, "चंद्र चाहता है कि वह उन सभी को मरा हुआ देखे!"

अचानक उसने उनकी ओर पीठ फेर ली और बिना कुछ कहे घर के अंदर चला गया। अगले कुछ पल खामोशी में बीत गए। फिर उन्हें दूर से आती भीड़ की गर्जना सुनाई दी।

जॉन ने जल्दी से कहा, "कुली आ रहे हैं। मुझे लगता है मैं उन्हें समझा-बुझाकर शांत कर सकता हूँ, लेकिन बेहतर होगा कि तुम जीप में बैठकर जितनी जल्दी हो सके निकल जाओ। नीलांबुर जाने वाली सड़क पकड़ो। टेड कुछ कर पाएगा। मैं तुमसे जल्द से जल्द संपर्क करूँगा।"

रूथ जीप की ओर गई, जॉन उसके साथ था। उसे गाड़ी चलाना आता था, लेकिन भारत आने के बाद से उसने गाड़ी नहीं चलाई थी। इसके अलावा, यह गाड़ी लेफ्ट-हैंड ड्राइव थी और उसे यकीन नहीं था कि वह इसे चला पाएगी या नहीं। उसने इंजन स्टार्ट किया, जॉन के बताने पर गियर को पहले स्थान पर लगाया और क्लच छोड़ दिया।

जीप झटके से इधर-उधर लहराते हुए निलंबूर रोड की ओर जाने वाली ढलान पर चढ़ रही थी, तभी कुलियों की भीड़ के अग्रदूत कुली-पंक्ति से आने वाले रास्ते से अचानक निकल आए।

वे बेतहाशा चिल्लाते हुए बंगले की ओर दौड़े, जहाँ जॉन ग्रेस्टोन बरामदे की सबसे ऊपरी सीढ़ी पर उनका इंतजार कर रहा था, उसके हाथ पतलून की जेब में थे, उसके दांतों के बीच उसका पाइप दबा हुआ था, जिससे तंबाकू के धुएं का नीला गुबार निकल रहा था।

अध्याय 15

दुश्मन के चंगुल में

जून ने बेचैनी भरी रात नींद के लिए तरसी, लेकिन नींद नहीं आई। वह चिंतित थी। अगर उसके पिता को पता चल जाए कि उसने क्या सुन लिया है, तो वे क्या कहेंगे? उसे न जगाने के लिए वे उसे क्या कहेंगे? उसके मन में चल रहे गुप्त विचारों के बारे में वे क्या सोचेंगे?

उसके मन में ऐसे सौ सवाल उमड़ रहे थे, लेकिन मच्छरदानी की घुटन भरी गर्मी में करवटें बदलते हुए उसे उनके जवाब नहीं मिल रहे थे। आखिरकार वह बेचैन नींद में सो गई और भोजन कक्ष में पिता के इधर-उधर घूमने की आवाज़ से जाग उठी। उसने सुना कि वह सुबह की कॉफी के लिए गर्म पानी बनाने के लिए प्राइमस स्टोव चला रहे थे। जून बिस्तर से उठी और उनकी मदद करने के लिए जल्दी से उनके पास गई।

"माफ़ कीजिए पापा, मैं देर तक सोई रही," उसने माफी मांगते हुए कहना शुरू किया, "कल रात बहुत गर्मी थी और मैं सुबह तड़के तक बेचैन थी।"

"कोई बात नहीं, जुनी," उसके पिता ने विनम्रता से जवाब दिया, "मैं कभी-कभार कॉफी बना सकता हूँ। गर्मी से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई और मैं अच्छी नींद सोया, हालाँकि मुझे रात में किसी समय एक कार के गुजरने की आवाज़ सुनाई दी। क्या तुम्हें भी सुनाई दी?"

जून एक पल के लिए हिचकिचाई, फिर टालमटोल करते हुए बोली, "नहीं...नहीं पापा, मैंने कुछ नहीं सुना। शायद आपने सपना देखा हो।"

"शायद," बूढ़े गार्डनर ने हंसते हुए जवाब दिया, "लेकिन मुझे संदेह है। वैसे भी, यह कोई सपना तो नहीं है।"

नाश्ता खत्म होने के बाद, जून ने अपने पिता से पूछा कि क्या वह उस सुबह टोनी का इस्तेमाल कर रहे थे, और जब उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें कुछ कागजी काम निपटाने हैं, तो उसने कहा कि वह घूमने जाना चाहती है।

"मुझे पता है कि आप इसके बारे में कैसा महसूस करते हैं, पिताजी," उसने आगे कहा, "और मैं बहुत सावधान रहूंगी।"

खाकी शर्ट और पैंट पहने, हमेशा की तरह सजी-धजी और राइफल लिए हुए, जून टोनी पर सवार हो गई और उसे उस सड़क पर धीरे-धीरे चलने दिया जो उस जगह के विपरीत दिशा में जाती थी जहां बाघ के साथ उसका रोमांचक अनुभव हुआ था।

कुछ समय बाद उसे अपने आस-पास के वातावरण का एहसास हुआ। टोनी बेफिक्र होकर सड़क पर टहल रहा था, जबकि जंगल दोनों ओर से उन्हें घेरे हुए था। रास्ता पूरब दिशा में जा रहा था और वह इससे पहले कभी उस रास्ते से नहीं गुजरी थी।

अचानक उसकी नज़र नीचे ज़मीन पर एक कार के टायरों के निशानों पर पड़ी। जून सोचने लगी कि क्या यह वही कार थी जिसके अंदर बैठे लोगों की आवाज़ उसने पिछली रात सुनी थी। ज़रूर वही होगी। अचानक ही उसने कार का पीछा करने का फैसला किया।

टोनी एक मील और आगे बढ़ा, तभी एक मोड़ आया और रास्ता जंगल के एक छोटे से खुले मैदान में जाकर मिला। जून ने देखा कि एक जर्जर टूरिस्ट कार किनारे खड़ी है, जो झाड़ियों से आंशिक रूप से छिपी हुई है। टोनी को रोककर उसने आगे क्या करना है, इस पर विचार किया।

वह बिल्कुल भी डरी नहीं थी और जिज्ञासा ने उसे कुछ और जानने के लिए प्रेरित किया। उसने टोनी को कार के पास जाने दिया। कार में कोई नहीं था, और न ही उसे आसपास कोई दिखाई दिया और न ही किसी की आवाज़ सुनाई दी। जून घोड़े से उतरी, टोनी को एक पेड़ से बांधा और कार की ओर चल पड़ी। उसने देखा कि कार पर कालीकट की नंबर प्लेट लगी हुई थी।

जंगल में कार को लावारिस छोड़ना अजीब लग रहा था। ड्राइवर ज़रूर कहीं न कहीं होगा। यही सोचते हुए वह खुले मैदान को पार करके दूसरी तरफ पगडंडी पर थोड़ी दूर तक चलती रही।

कुछ ही कदमों में वह एक बरगद के पेड़ के पास पहुँची और उसके नीचे दो छोटे, शंकु के आकार के तंबू देखकर आश्चर्यचकित रह गई। किसी खतरे की परवाह न करते हुए, जून उनके पास गई। उसे कुछ फुसफुसाहटें सुनाई दे रही थीं और वह और करीब गई, इस उम्मीद में कि वह समझ पाएगी कि क्या कहा जा रहा है।

तभी सफेद धोती के ऊपर ढीली कमीज पहने एक भारतीय बाहर निकला। उस आदमी ने उसे देखा और अचरज से घूरने लगा। किसी कारणवश, उसका चेहरा उसे अजीबोगरीब रूप से हास्यास्पद लगा और वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

मलयालम में उसने जोर से पुकारा, जाहिर तौर पर तम्बू में मौजूद किसी दूसरे व्यक्ति को संबोधित करते हुए, "जल्दी आओ, चाको। लगता है हमारे पास कोई मेहमान आया है।"

तुरंत ही एक और भारतीय उसके साथ आ गया। दुबला-पतला, तीखे नैन-नक्श और तेज़ आँखों वाला वह व्यक्ति, एक पल भी नहीं हिचकिचाया, बल्कि जून की ओर बढ़ा और एक हाथ से उसकी कलाई कसकर पकड़ ली। दूसरे हाथ से उसने जून के कंधे से राइफल छीन ली और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। इससे पहले कि जून कुछ समझ पाती, उसने खुद को दो तंबुओं में से छोटे वाले तंबू में घसीटते हुए पाया।

"तो, तुम जासूस हो?" दूसरे व्यक्ति ने फुफकारते हुए कहा, "और हमारी बातें सुन रही हो। यह वाकई दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि अब हम तुम्हें मार डालेंगे।" वह व्यक्ति एकदम सही अंग्रेजी बोलता था और उसकी आँखें उस पर गुस्से से भरी हुई थीं।

पता नहीं क्यों, जून को डर नहीं लग रहा था। वह सोच रही थी कि उसे क्या करना चाहिए। पिछली रात उसने लगभग इन देशभक्तों का साथ देने का फैसला कर लिया था। लेकिन अब वह पूरी तरह आश्वस्त नहीं थी। क्या वह इन लोगों को अपना मित्र—अपने देशवासी मान सकती थी?

जून ने गुस्से से इनकार करते हुए कहा, "मैं जासूस नहीं हूँ। मैं यहाँ घूमने आई थी और गलती से इस रास्ते पर मुड़ गई। एक सुनसान कार देखकर मैं सोच रही थी कि यह किसकी हो सकती है, तभी मेरी नज़र आपके तंबू पर पड़ी और मैं जाँच-पड़ताल करने आ गई।"

"तुम कौन हो?" चाको ने चिड़चिड़ाते हुए पूछा, "तुम्हारे जैसे किसी प्राणी का जंगल में अकेले घूमना अजीब बात है।"

"मेरा नाम जून गार्डनर है। मैं उस रेंज ऑफिसर की बेटी हूं जो वन क्वार्टर में रहता है।"

"तो!" चाको ने फिर से वही एक शब्द धीरे से कहा, लेकिन उसकी आवाज में संदेह और शंका थी, जबकि उसके चेहरे पर घृणास्पद भाव आ गया।

"तो क्या हुआ?" जून ने चुनौती भरे लहजे में पूछा। "दरअसल, मैंने कल रात आपको वन रक्षकों से बात करते हुए सुना था।"

चाको ने उसे कंधे से ज़ोर से पकड़ लिया। उसका हाथ काँप रहा था, "और मुझे लगता है कि तुमने अपने पिता को इसके बारे में बता दिया होगा?"

"आप गलत हैं। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया, क्योंकि...क्योंकि..." जून अचानक रुक गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस अजनबी के सामने अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करे।

"किस वजह से?" दोनों पुरुषों ने एक साथ पूछा।

कुछ पल हिचकिचाने के बाद उसने उन्हें बताने का फैसला किया। लेकिन ऐसा करने से पहले, जून ने अपनी बात मनवाने का निश्चय किया। उसे इस तरह असभ्य तरीके से पूछताछ किए जाने पर आपत्ति थी। सबसे बढ़कर, उसे धक्का-मुक्की और बदसलूकी किए जाने पर बहुत गुस्सा आ रहा था।

"अगर आप सज्जन हैं, तो आप एक महिला को बैठने के लिए कहेंगे और मुझसे पूछताछ करते हुए मुझे खड़ा नहीं रखेंगे। जब आपको तमीज़ आ जाएगी, तब मैं आपको अपने पिता को आपके आने के बारे में न बताने का कारण बताऊंगी।"

"मैं समझ गया। तो तुम अब एक सभ्य महिला बन गई हो?" चाको की आवाज़ में घोर तिरस्कार था। "यह चमत्कार कब हुआ?"

जून के चेहरे पर खून सी दौड़ गया जब उसे उसके शब्दों का अर्थ समझ आया। उस आदमी ने साफ-साफ बोल दिया था। उसका इरादा जानबूझकर उसे अपमानित करने का था। दूसरे शब्दों में, यह भारतीय वही बात कह रहा था जो रूथ ग्रेस्टोन ने ठीक एक दिन पहले कही थी। वह पूछ रहा था कि जून गार्डनर, जो एक यूरेशियन और मिश्रित नस्ल की थी, अचानक एक महिला कैसे बन गई और खुद को महिला कहने की हिम्मत कैसे कर पाई।

यह विचार मन में बैठते ही उसकी आंखें आंसुओं से भीग गईं।

"तुम्हें धिक्कार है, तुम काले सूअर!" ये शब्द जून के मुंह से तेज़ी से निकले, जैसे ही उसने अपना कंधा उस आदमी की पकड़ से छुड़ाया।

चाको उसे घूर रहा था, वह इतना स्तब्ध था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था। दबी हुई क्रोध की भावना से उसके माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें आ गईं।

फिर उसने उसे थप्पड़ मारा। एक बार, दो बार और तीन बार। ज़ोर से।

प्रहारों की तीव्रता से जून लड़खड़ाकर तम्बू की दीवार से जा टकराई। उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और फूट-फूटकर रोने लगी।

अध्याय 16

पलायन

"तुम आधी जाति की कुतिया हो!"

चाको, सहमी हुई लड़की के ऊपर काफी लंबा खड़ा था।

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे काला सूअर कहने की! मेरा मन कर रहा है तुम्हें जान से मार दूं।" और ये कहते हुए उसने जून के चेहरे पर मुट्ठी से एक और जोरदार प्रहार किया।

एक धीमी, कांपती हुई कराह के साथ वह बेहोश हो गई। दूसरा व्यक्ति इस दृश्य का मूक साक्षी बना रहा, और उसने अपनी क्रोधित साथी को रोकने का प्रयास भी नहीं किया।

जब लड़की बेहोश हो गई, तो उसने पूछा, "हम इसके साथ क्या करेंगे? हम इसे छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकते। अगर हमने ऐसा किया, तो यह अपने पिता के पास जाकर उन्हें बता देगी। थोड़ी देर में पुलिस यहाँ आ जाएगी। क्यों न तुम काम पूरा करके इसे मार डालो?"

चाको ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। वह अब भी जून को घूर रहा था, और उसकी छाती भावनाओं के उफान से ऊपर-नीचे हो रही थी।

वह तेज़ी से सोच रहा था। सचमुच, उसके साथी का नाम पापाचेन था और उसने बुद्धिमानी से बात की थी। वह इस कुटिल स्त्री को रिहा करने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

“आप सही कह रहे हैं,” उन्होंने स्वीकार किया, “डी.एस.पी. खुद आएंगे। हमें भागने पर मजबूर होना पड़ेगा।”

इस समय वे ऐसा करने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। वे वहां पार्टी मुख्यालय द्वारा बनाई गई गुप्त योजनाओं को ले जाने के विशिष्ट उद्देश्य से गए थे।

उसे मारना और लाश ठिकाने लगाना बहुत आसान होगा। नरभक्षी के बारे में सोचते हुए चाको मन ही मन मुस्कुराया। इससे किसी को भी दुश्मन से छुटकारा पाने का शानदार मौका मिल जाएगा। लापता व्यक्ति की तलाश में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

या फिर वो उसका गला घोंटकर उसे मार सकता है! जब वो बेहोश पड़ी होगी, तब वो तकिए से उसका दम घोंट देगा। बस तकिया उसके मुंह पर रख देगा और उस पर बैठ जाएगा। उसे मरने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। वो उसका गला घोंटकर भी मार सकता है।

वह कल्पना कर सकता था कि उसकी उंगलियाँ उसके कोमल मांस में धंस रही हैं, जैसे-जैसे वह उसका गला दबाता जा रहा है, हवा की आपूर्ति रोक रहा है और उसे धीरे-धीरे मरने के लिए मजबूर कर रहा है। यह कल्पना उसे कई मायनों में सुखद अनुभूति कराती।

सचमुच, चाको उस लड़की की जान अपने नंगे हाथों में थामे हुए था। उस पर ज़रा भी दया नहीं होगी। वह उसे दबाता रहेगा, दबाता रहेगा, दबाता रहेगा। उसकी कोमल देह उसकी पकड़ में सिकुड़कर पिघल जाएगी! कोमल देह!...कोमल देह!

चाको ने अपने पैरों के पास लेटी हुई लड़की की आकृति पर नज़र डाली। वह कितनी मोहक और आकर्षक लग रही थी! उसका शरीर आधा मुड़ा हुआ था, निचला हिस्सा एक तरफ फैला हुआ था। उसकी घुड़सवारी की पैंट, जो पिंडलियों और जांघों को कसकर जकड़े हुए थी, उसके कूल्हों और नितंबों के उभार को और भी उभार रही थी, और टांगें चौड़ी फैली हुई थीं। कमर से लड़की का शरीर इस तरह मुड़ा हुआ था कि ऊपरी हिस्सा पीठ के बल था। इससे उसकी आकृति बेहद खूबसूरत लग रही थी। जब वह उसे तंबू के अंदर घसीटकर लाया, तो उसकी कमीज़ गर्दन के पास से खुल गई थी। बाद में, जब उसने उसे पकड़ा, तो दूसरा बटन भी टूट गया। लड़की ने कोई चोली नहीं पहनी थी। ब्रा का एक जोड़ा आंशिक रूप से दिखाई दे रहा था, और चाको की क्रोध से भरी गहरी साँसें वासना की छोटी, तेज़ साँसों में बदल गईं, जब उसकी नज़रें असहाय रूप से उजागर हुए दो सुडौल उभारों पर टिक गईं। उसने कल्पना में नीचे की कोमल त्वचा के स्पर्श को देखा और महसूस किया।

चाको के प्रहार से जून की टोपी गिर गई थी। उसके बाल, जिन्हें वह हमेशा पीठ पर खुला रखती थी, अब उसके सिर पर बिखरे पड़े थे, और उनका गहरा काला रंग उसकी कोमल त्वचा के चॉकलेट-भूरे रंग के साथ खूबसूरती से घुलमिल रहा था। वह बेहद खूबसूरत और मोहक लग रही थी।

वह उसे निर्वस्त्र करना कितना पसंद करेगा! जी हाँ, उसे पूरी तरह नंगा करके उसके इस खूबसूरत शरीर का आनंद लेना चाहेगा, जो पूरी तरह से उसका होगा। बिल्कुल उसका, और जो उसका विरोध करने में पूरी तरह असमर्थ होगी।

काश वह अकेला होता और यह दखलंदाजी करने वाला साथी, पापाचेन, वहाँ न होता। मानो अपनी अवांछित उपस्थिति को और भी स्पष्ट करने के लिए, पापाचेन ने उससे फिर बात की।

"अच्छा, हम उसके साथ क्या करेंगे? आपने सवाल का जवाब नहीं दिया।"

चाको की आँखों में वासना की एक धुंध छा गई थी, लेकिन समय रहते ही उसे एहसास हो गया कि पार्टी के किसी अन्य सदस्य के सामने ऐसी कमजोरी दिखाना ठीक नहीं होगा। खासकर इस आदमी के सामने। वह दूसरों को बता देगा कि क्या हुआ था और महान चाको ने कैसा व्यवहार किया था। उसकी प्रतिष्ठा का क्या होगा?

चाको ने तेजी से सोचा।

वह इस लड़की को बंदी बनाकर रखेगा। उसी दिन बाद में; नहीं, यह दिन में तो संभव नहीं था क्योंकि वे छिपे हुए थे; यह उसी रात को ही करना होगा—वह पापाचेन को किसी न किसी मिशन पर गाड़ी में भेजेगा। इससे उसे लड़की को अपने कब्जे में लेने के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा।

उन्होंने कहा, "हम उसे बांधकर तंबू में तब तक कैदी बनाकर रखेंगे जब तक उससे छुटकारा पाने का कोई बेहतर समय नहीं आ जाता।"

"अभी क्यों न करें?" पापाचेन ने सीधे-सीधे पूछा।

चाको अचानक वक्ता की ओर मुड़ा, उसकी आँखों में हताशा और तीव्र इच्छा की आग जल रही थी। एक पल के लिए उसका मन हुआ कि वह इस उपद्रवी को कह दे कि वह अपने काम से मतलब रखे।

लेकिन चाको ने खुद पर काबू रखा। किसी भी हालत में उसे अपने गुस्से पर काबू रखना था और अपने साथी को शक में नहीं डालना था। बेहतर यही होगा कि वह धैर्य रखे और नरमी से जवाब दे। जैसे ही उसे पापाचेन को भेजने का बहाना मिलेगा,

उसे मौका मिल जाएगा।

तो उसने बड़े ही सहज लहजे में कहा, "अभी उसे मारना खतरनाक होगा। अगर हमने ऐसा किया तो हमें तुरंत यहाँ से भागना पड़ेगा और दिन दहाड़े गाड़ी में बैठे हुए हमें कोई भी देख लेगा। जैसा कि आप जानते हैं, पुलिस हमारे पीछे पड़ी है और हमारा हुलिया हर जगह फैला हुआ है। कोई भी ताक-झांक करने वाला हमें या गाड़ी को पहचान लेगा और पुलिस को सूचना दे देगा। कौन जाने, हम पकड़े भी जाएँगे। यह बहुत ही जोखिम भरा काम है।"

पापचेन को इस निस्संदेह तार्किक तर्क से सहमत होना पड़ा, हालाँकि उसकी तीक्ष्ण बुद्धि और अवलोकन शक्ति ने चाको के चेहरे पर लड़की को देखते हुए बदलते भावों को देख लिया था और उनका कारण भी समझ लिया था। उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, बल्कि दूसरे तम्बू में गया और तीन मजबूत रस्सियाँ लेकर लौटा।

उन्होंने लड़की को पेट के बल लिटाया और उसकी कलाइयाँ पीछे की ओर बाँध दीं, फिर उसके पैर भी बाँध दिए। उसके घुटनों को पीछे की ओर मोड़ते हुए, उन्होंने रस्सी के तीसरे टुकड़े से उसकी दोनों टखनों को उस रस्सी से जोड़ दिया जिससे उसकी कलाइयाँ बंधी थीं, जिससे वह धनुष की तरह झुक गई। जून अभी-अभी होश में आने लगी थी कि चाको ने उसके मुँह में सूती रुमाल ठूँसकर उसे उसके सिर के पीछे बाँध दिया।

उन्होंने आखिरी बार यह देखने के लिए नजर डाली कि उसके बंधन सुरक्षित हैं या नहीं, और फिर दोनों आदमी बाहर निकले और बड़े तंबू की ओर चल दिए।

हालांकि जून को इस बात का पता नहीं था, लेकिन जिस तंबू में उसे बंदी बनाया गया था, वह कार के ड्राइवर का था। पिछली रात साजिशकर्ताओं ने उसे वन रक्षकों के क्वार्टर के पास छोड़ा था, जहाँ उसे उनमें से एक, कुंजी नायर नाम के एक मलयाली से संपर्क करना था, जो पहले से ही पार्टी का एक अधीनस्थ सदस्य था। यह व्यक्ति आने वाली घटनाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला था। ड्राइवर अगले दो-तीन दिनों तक वापस नहीं लौटा।

पहले तो वह दहशत से भर उठी और चिल्लाने की कोशिश की, लेकिन मुंह पर पट्टी बंधी होने के कारण वह ऐसा नहीं कर पाई। अपनी बेवजह की जिज्ञासा के लिए वह खुद को कोसने लगी। आखिरकार, एक स्त्री की तरह, वह फिर रोने लगी जब उसे अपने ऊपर फेंके गए अपमानजनक शब्द और उसे लगे वार याद आए। उसके पिता

कितने चिंतित होंगे जब वह वापस नहीं लौटी। वे सोचेंगे कि उसे और टोनी को आदमखोर ने मार डाला है। और टोनी का क्या हुआ होगा, वह सोचने लगी।

लेकिन ये विचार क्षणिक ही थे। जून एक बहादुर लड़की थी और जल्द ही उसने सच्चाई का सामना किया और दोषारोपण करना बंद कर दिया। वह बदमाशों के चंगुल में फंस गई थी, और पिछली रात उसने जो बातचीत सुनी थी, उससे स्पष्ट था कि वे निर्दयी लोग थे जो किसी भी हद तक जा सकते थे। निःसंदेह, ये दोनों ही वे लोग थे जिन्होंने ऊपरपेट में दंगा भड़काया था।

जून को लगा कि वह ज़िंदा रहने के लिए बेहद भाग्यशाली है। वह जानती थी कि वे उसे आसानी से मार सकते थे। उसे बंदी बनाया जाना स्पष्ट रूप से दर्शाता था कि उनका कोई ऐसा मकसद था जिसमें दया का कोई स्थान नहीं था।

फिर उसे अपने भविष्य का आभास हुआ। इसके बाद, वह जानती थी कि उसकी हत्या निश्चित है। व्यर्थ के पछतावे में डूबने के बजाय, जून ने भागने का रास्ता खोजने पर ध्यान केंद्रित करने का निश्चय किया।

जिस असहज स्थिति में वह लेटी थी, उसके कारण उसकी जांघों की मांसपेशियों में दर्द होने लगा। उसके कंधे भी दुखने लगे। सौभाग्य से, दोनों विद्रोहियों ने उसे किसी चीज से बांधा नहीं था और न ही उसकी आंखों पर पट्टी बांधी थी। इसी वजह से वह तंबू के एक छोर से दूसरे छोर तक लुढ़क सकी और उसे दिखाई देने लगा।

हताशा में, जून ने अपने आस-पास के वातावरण को निहारना शुरू किया, अपनी बेड़ियों को तोड़ने का कोई तरीका ढूंढने लगी; कुछ ऐसा जिससे वह खुद को मुक्त कर सके। छोटे से तंबू में बीच में रखे कैनवास के पलंग के अलावा कोई फर्नीचर नहीं था। तंबू छोटा होने के कारण, वह पलंग से सटकर लेट गई। उसकी नज़र उसके नीचे रखे चमड़े के सूटकेस पर पड़ी। मालिक ने उसमें बेतरतीब ढंग से कपड़े भर रखे थे और सूटकेस का ढक्कन खुला हुआ था, जिससे अंदर रखी चीजें दिखाई दे रही थीं।

जैसे ही जून ने देखा, उसकी नज़र सूटकेस के एक कोने में एक छोटे हरे रंग के टिन के डिब्बे पर पड़ी। उसका दिमाग बिजली की तरह तेज़ी से चलने लगा।

क्या उस छोटे से डिब्बे में सेफ्टी रेज़र हो सकता है? यह बिल्कुल उसके पिता के रेज़र जैसा दिखता था। और अगर उस डिब्बे में सेफ्टी रेज़र था, तो क्या उसके साथ ब्लेड भी थे?

जून रेंगते हुए इस तरह आगे बढ़ी कि उसका सिर सूटकेस के कोने के पास

पलंग के नीचे चला गया। मुंह पर पट्टी बंधी होने के कारण वह अपने दांतों का इस्तेमाल नहीं कर पा रही थी, लेकिन उसने अपने दाहिने कंधे पर सहारा लिया और फिर अपनी गर्दन को ऊपर और आगे की ओर तब तक झुकाया जब तक उसकी नाक टिन के डिब्बे को छू न ले। एक झटके से उसने उसे नीचे की ओर पलट दिया और डिब्बा बिना आवाज किए घास के मैदान पर गिर गया। अपनी ठुड्डी और गर्दन के बीच उसे मजबूती से पकड़कर, वह पलंग के नीचे से पीछे की ओर रेंगने लगी।

जून ने डिब्बा छोड़ा और धीरे-धीरे फर्श पर ऊपर की ओर खिसकी, यहाँ तक कि वह उसकी नाभि के सीध में आ गया। फिर वह पीठ के बल लेट गई और करवट लेकर तब तक सरकी जब तक उसे अपने नीचे डिब्बा महसूस नहीं हुआ। कुछ ही क्षणों में, उसने उसे अपनी उंगलियों के बीच पकड़ लिया। अपने कंधों पर भार डालते हुए, जून ने तेज़ी से काम करना शुरू कर दिया।

डिब्बा आसानी से खुल गया, और अंदर उसे एक सेफ्टी रेज़र महसूस हुआ। फिर उसकी उंगलियों ने कागज़ के आवरण में लिपटे कई ब्लेड खोजे, जो डिब्बे में बने एक छोटे से खांचे में रखे हुए थे।

उसने पलक झपकते ही अपने नाखूनों से एक ब्लेड को बाहर निकाल लिया, और थोड़ी मशक्कत के बाद वह कागज़ के लिफाफे से स्टील का टुकड़ा निकालने में कामयाब हो गई। अब ऑपरेशन का मुश्किल हिस्सा शुरू हुआ। जून ने पाया कि अपने दाहिने हाथ के अंगूठे और तर्जनी के बीच ब्लेड के एक सिरे को पकड़कर वह अपनी कलाई को बांधने वाली डोरियों में से एक तक पहुँचने में कामयाब हो सकती है।

उसे पता था कि उसे जल्दी काम करना होगा, क्योंकि आदमी किसी भी क्षण लौट सकते थे। वह सेफ्टी रेज़र वाले डिब्बे पर लेटी हुई थी, लेकिन अगर उन्हें पता चल जाता कि वह क्या कर रही है तो वे उसे निश्चित रूप से मार डालते। ब्लेड पर जितना दबाव वह डाल सकती थी, डालते हुए लड़की ने उसकी धार को रस्सी पर रगड़ना शुरू कर दिया, ऊपर-नीचे काटते हुए।

कलाई काटते समय वह कई बार दर्द से कराह उठी और अपनी उंगलियों और ब्लेड पर खून की नमी महसूस की। इससे ब्लेड फिसलन भरा हो गया। इस वजह से ब्लेड एक बार उसके हाथ से गिर गया और जमीन पर उग रही घास की टहनियों के बीच उसे ढूंढने में कीमती पल बर्बाद हो गए। आखिरकार उसे ब्लेड मिल गया और उसने फिर से आरी चलाना शुरू कर दिया।

अचानक उसे लगा कि रस्सी टूट गई है। लेकिन उसकी कलाइयाँ अभी भी मुक्त नहीं हुई थीं और जून ने फिर से कोशिश शुरू की, दूसरी रस्सी को काटने लगी।

तभी उसे बगल वाले तंबू से आवाज़ें सुनाई दीं। चाको मलयालम में बोल रहा था और जून उसके हर शब्द को समझ सकती थी। उसने यह भाषा उन तीन वर्षों के दौरान सीखी थी जब उसके पिता चेडलेथ में तैनात थे।

मुझे आश्चर्य है कि क्या वह मूर्ख रमन नायर आज जागीर के कुलियों को अंग्रेज और उसकी पत्नी की हत्या करने के लिए उकसाने में सफल होगा।

"जिस किसी ने भी उसे चुना, उसने गलत तरह के आदमी को चुना," पापाचेन ने टिप्पणी की। "वह दिल से कायर लगता है और उसमें कोई जोश नहीं है।"

"अच्छा," जवाब आया, साथ ही एक ज़ोरदार हंसी भी सुनाई दी जिसे जून स्पष्ट रूप से सुन सकती थी, "हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हर कोई तुम्हारे और मेरे जैसा हो, मेरे दोस्त। अगर वे ऐसे होते, तो देश में एक भी गोरा आदमी ज़िंदा नहीं बचता।"

जून को दूसरी रस्सी के टूटने का एहसास हुआ। कुछ देर मशक्कत के बाद, उसे पता चला कि उसकी एक कलाई आज़ाद हो गई है। अब वह पहले से कम जकड़ी हुई थी, और उसने ब्लेड को और मज़बूती से पकड़कर उस रस्सी को काट दिया जिससे उसकी दूसरी कलाई उसके पैरों से बंधी हुई थी। जब उसने आखिरकार रस्सी काट दी, तो उसे शारीरिक रूप से बहुत राहत मिली और वह अपने उन पैरों को सीधा कर पाई जो अब तक पीछे की ओर मुड़े हुए थे।

जून उठ बैठी और अपने पैरों को बांधे रखने वाले बचे हुए बंधनों को तेज़ी से काटने लगी। कुछ ही पलों में वह पूरी तरह से आज़ाद हो गई। वह लड़खड़ाते हुए खड़ी हुई, लेकिन लगभग फिर गिर ही गई। रक्त संचार बहाल होने में कुछ मिनट लग गए। आखिरकार वह चलने में सक्षम हो गई।

बगल वाले तंबू से अभी भी बातचीत की हल्की आवाज़ आ रही थी। वह दबे पांव फर्श पार करके तंबू के पर्दे से झाँकी। वहाँ, लगभग सौ गज की दूरी पर, कार खड़ी थी, और उसके पास ही उसका प्रिय टोनी ठीक उसी जगह पर था जहाँ उसने उसे छोड़ा था।

अब उसके मन में एक भयानक ख्याल आया। अगर वह टोनी तक पहुँचने और उसे अपने साथ ले जाने में कामयाब भी हो जाती, तो भी वे लोग उसकी आवाज़ सुन

लेते। वे निश्चित रूप से कार से उसका पीछा करते। बेचारे टोनी के बचने की क्या उम्मीद थी?

तभी जून की नज़र तंबू के कोने पर पड़ी उसकी .3006 पिस्तौल पर पड़ी, जिसे चाको ने भूलवश वहीं छोड़ दिया था। उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं। अब उसके पास आत्मरक्षा के लिए कुछ होगा, अगर वे लोग उसे दोबारा पकड़ने की कोशिश करें।

अपनी राइफल और टोपी उठाकर जून तंबू से बाहर निकल गई। बाहर आते ही वह टोनी की ओर दौड़ी।

वह उसके पास पहुँची और घबराकर पीछे मुड़ी। शुक्र है कि उसके भागने का किसी को पता नहीं चला। पीछा करने का कोई संकेत नहीं था। जून जानती थी कि अगर वह तुरंत घोड़े पर सवार होकर भागने लगती, तो उसके खुरों की आवाज़ सुनाई दे जाती। इसलिए वह उसे लगभग पचास गज दूर ले गई, जब तक कि रास्ता बाईं ओर मुड़कर टेंटों से ओझल नहीं हो गया।

फिर वह घोड़े पर सवार हुई और रकाब में ऊपर उठकर आगे झुकी और घोड़े के कान में फुसफुसाते हुए बोली, "टोनी, अब जितनी तेज़ी से दौड़ सकते हो दौड़ो। कृपया।" उसी समय उसने लगाम को हल्के से झटका दिया और अपनी एड़ियों से घोड़े के पार्श्व भाग पर प्रहार किया।

जैसे कि उसे समझ आ गया हो कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है, टोनी ने जवाब दिया। कुछ देर बाद वे उस मोड़ से गुज़रे जो उसके पिता के क्वार्टर की ओर जाता था, और जून न तो रुकी और न ही धीमी हुई। जून जानती थी कि वह कहाँ जा रही है, लेकिन अगर उससे पूछा जाता तो वह संतोषजनक कारण नहीं दे पाती। वह तेज़ी से घोड़े दौड़ाती रही ताकि अंग्रेज को आने वाले खतरे से आगाह कर सके।

अध्याय 17

जीवन और मृत्यु का जुआ

शोर मचाती भीड़ ग्रेस्टोन बंगले की सीढ़ियों के सामने आकर रुक गई और उसके मालिक की अकेली आकृति को देखने लगी, जो बरामदे के एक खंभे से हाथ टिकाकर शांति से अपनी पाइप पी रहा था।

उन्हें उम्मीद थी कि बागान मालिक डर के मारे भाग जाएगा। कई लोगों ने अनुमान लगाया था कि वह घुटनों के बल गिरकर अपनी जान की भीख मांगेगा। कुछ

लोगों ने किसी न किसी तरह के प्रतिरोध की आशंका जताई थी, इसलिए वे पीछे रहने में सावधानी बरत रहे थे। वे जानते थे कि गोरे आदमी के पास हथियार हैं, लेकिन किसी ने भी ग्रेस्टोन से यह उम्मीद नहीं की थी कि वह ऐसा व्यवहार करेगा मानो दुनिया में कुछ भी गलत नहीं हुआ हो।

सौ आवाजों की गड़गड़ाहट धीरे-धीरे कुछ फुसफुसाहटों में तब्दील हो गई। फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। इतनी खामोशी थी कि पिन गिरने की आवाज भी सुनाई दे सकती थी।

रमन नायर उनका नेतृत्व कर रहे थे और बंगले की ओर जाने वाले रास्ते पर सबसे पहले वही दिखाई दिए। लेकिन वे उन लोगों में से भी थे जिन्हें बागान मालिक के विरोध की उम्मीद थी। इसलिए, मानो संयोगवश, वे पीछे हट गए और भीड़ के बीच कहीं खड़े हो गए।

अब जब उसने देखा कि ग्रेस्टोन निहत्था है, तो वह भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ा और बरामदे की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ गया।

"हम तुम्हें मारने आए हैं, अंग्रेज़ कुत्ते। तुमने अपने मज़दूरों पर बहुत अत्याचार किया है और उनका खून चूसा है। तुमने उन्हें गरीबी में रखा जबकि तुम खुद धन-दौलत के इस महल में मजे करते रहे। अब वो दिन खत्म हो गए हैं। तुम हमारे सामने शक्तिहीन हो। हम तुम अंग्रेज़ों में से हर एक को मार डालेंगे। नालियाँ तुम्हारे खून से लाल हो जाएँगी।"

रमन नायर सांस लेने के लिए रुक गए। उनके मुंह के कोनों पर झागदार लार की बूंदें उनके भाषण की तीव्रता को दर्शा रही थीं।

"ये सब बातें कौन कह रहा है? ग्रेस्टोन जानता था कि यह पल कितना नाजुक था। ज़रा सी भी गलती, डर को दर्शाने वाली पलक का एक हल्का सा भी हिलना, अनिर्णय का संकेत देने वाली छोटी सी हरकत भी, इस उन्मादी भीड़ के हाथों उसकी तत्काल मौत का कारण बन सकती थी। इसलिए उसने अपने मुंह से पाइप निकालने के अलावा कोई हरकत नहीं की।"

किसी ने जवाब नहीं दिया, जबकि जॉन के शांत स्वभाव ने मलयाली को और भी अधिक क्रोधित कर दिया।

“मैं कौन हूँ?” वह चिल्लाया, “क्यों, मैं तुम्हें बताता हूँ। मैं भारत का सच्चा सपूत हूँ और मैं अपनी मातृभूमि को उन बेड़ियों से मुक्त कराने आया हूँ जिनमें पिछले

दो सौ वर्षों से तुम शापित अंग्रेजों ने उसे जकड़ रखा है।”

ग्रेस्टोन को मजदूरों की भीड़ से आ रही सहमति की गड़गड़ाहट सुनाई दी। उसकी स्थिति बेहद नाजुक थी। खंभे से लापरवाही से टिके हुए जॉन ने अपनी पाइप नीचे की, प्याली को अपने जूते की एड़ी पर खाली किया और फिर उसे व्यवस्थित ढंग से भर लिया। उसने माचिस जलाई और जैसे ही तंबाकू के ऊपर रोशनी फैली, उसने गहरी साँस ली, जिससे धुएं के बादल उठे और पाइप में आग लग गई।

फिर उसने दोबारा बोलना शुरू किया, "क्या कोई आगे आकर बताएगा कि मैंने उसे किस तरह सताया या नुकसान पहुँचाया है?" कुली एक-दूसरे की ओर देखने लगे। पीछे खड़े लोग दूसरों के सिर के ऊपर से झाँकने के लिए अपने पंजों पर खड़े हो गए, यह उम्मीद करते हुए कि आगे की पंक्ति से कोई स्वयंसेवक बोलेगा। आगे खड़े लोगों ने पीछे से किसी की बात सुनने के लिए अपना सिर घुमाया।

लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा।

रमन नायर फिर से चिल्लाने लगा, "हम यहाँ तक आ गए हैं..."

"चुप रहो!" ग्रेस्टोन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "मैं अपने कर्मचारियों से बात कर रहा हूँ, तुमसे नहीं। जब मुझे बोलने की ज़रूरत होगी, मैं तुमसे पूछूंगा।"

उनके शब्दों का प्रभाव कोड़े की मार के समान था।

रमन नायर स्तब्ध रह गए।

मलयाली के संभलने से पहले ही, ग्रेस्टोन ने दूसरी बार कुलियों को संबोधित किया। "तो, कोई भी आगे नहीं आया! क्या इससे यह साबित नहीं होता कि मैंने आप में से किसी पर भी अत्याचार नहीं किया है, जैसा कि यह झूठा कह रहा है?" फिर उन्होंने सभा में उपस्थित लोगों से बात की। "अब, क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी मैंने अतीत में मदद की है, कृपया बताएं?"

फिर से फुसफुसाहट की आवाज़ें गूंज उठीं, लोग सिर घुमाकर देखने लगे और गर्दन उठाकर इधर-उधर देखने लगे। कुछ देर बाद पीछे से एक व्यक्ति ने पुकारा, "जब मेरा बेटा बहुत बीमार था, तब आपने मेरी मदद की थी। आप उसे, मेरी पत्नी और मुझे अपनी जीप में बिठाकर निलंबूर ले गए और वहाँ उसे अस्पताल में भर्ती कराया... और आपने सारा खर्च भी उठाया।"

ये शब्द सुनकर रमन नायर गुस्से से आग बबूला हो गया। "मूर्ख!" वह चिल्लाया, "क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि वह तुम्हें गुमराह कर रहा है? क्या तुम्हें दिखाई नहीं

देता कि वह ये सब बातें सिर्फ खुद को मरने से बचाने के लिए कह रहा है? चलो, ये सब बातें बंद करते हैं। इस सूअर का खात्मा कर देते हैं।"

अपनी बातों को अमल में लाते हुए, वह धमकी भरे लहजे में ग्रेस्टोन की ओर दौड़ा। लेकिन वह मलयाली चालाक भी था। उसका इरादा हत्या में सक्रिय रूप से भाग लेने का नहीं था, इसलिए वह निहत्था आया था। भविष्य में अगर कोई परेशानी खड़ी होती, तो वह साबित कर सकता था कि अपराध किसी और ने किया है।

जिस व्यक्ति को अभी-अभी फटकार लगाई गई थी, उसने अब दूसरी बार बोलना शुरू किया। उसने पूछा, "तुम मुझे मूर्ख कहने वाले कौन होते हो? अगर दोराई की मदद न होती तो मेरा बच्चा आज जीवित न होता। इसलिए मैं कहता हूँ कि उसे और उसकी पत्नी को नहीं मारा जाना चाहिए।"

ये कहकर वह मुड़ा और चला गया। रमन नायर और ग्रेस्टोन दोनों समझ गए थे कि क्या हो रहा है, और उनमें से जो भी उस सुबह भीड़ की भावनाओं पर अपना प्रभाव जमा सकेगा, वही जीत हासिल करेगा।

ग्रेस्टोन के मामले में बस एक ही अंतर था। दांव बहुत बड़ा था; जितना बड़ा हो सकता था उतना बड़ा! अगर वह असफल होता, तो उसकी जान को इसकी कीमत चुकानी पड़ती।

रमन नायर ने अपनी रणनीति बदल दी। "भले ही आपमें से कोई भी खुलकर यह स्वीकार करने की हिम्मत न करे कि इस गोरे आदमी ने आपको कितना सताया है, लेकिन याद रखिए कि जब आप मामूली तनख्वाह के लिए गुलामी कर रहे हैं, तब आपको सांप मार रहे हैं और बाघ खा रहे हैं। आपके परिवारों को जो मुआवजा दिया जाता है, अगर दिया भी जाता है, तो वह उस धन के मुकाबले कुछ रुपये मात्र है जो वह जमा कर रहा है।"

यह मनोविज्ञान की एक चतुर चाल थी। रमन नायर ने बड़ी कुशलता और चतुराई से हमले की रणनीति को दूसरे कोण पर मोड़ दिया था और बचाव की योजना बनाने के लिए बहुत कम समय बचा था। भीड़ फिर से बेचैन हो गई। कई लोगों ने चिल्लाकर कहा, "हाँ, इसके बारे में क्या? वह बिल्कुल सही कह रहा है। आपको हमारी परवाह नहीं है।"

जॉन ग्रेस्टोन ने बहुत तेज़ी से सोचा। फिर उन्होंने अपने जीवन का सबसे बड़ा जोखिम उठाया। उन्होंने चुप रहने का इशारा किया, और आश्चर्यजनक रूप से शोरगुल

बंद हो गया। "श्रमिकों," उन्होंने तमिल में भीड़ को संबोधित करते हुए कहा, "इस अजनबी ने पहली बार समझदारी से बात कही है। मेरे लिए काम करते हुए आप आदमखोर से खतरे में पड़ें, यह उचित नहीं है।"

"तुम्हें पता है, मैंने इस जानवर को गोली मारने की कोशिश की, जबकि यह आदमी कुछ नहीं कर रहा था। सिर्फ बातें करने के बजाय, उसे मेरी कोई भी बंदूक चुनने दो और मुझे उसे गोली मारने में मदद करने दो। यह एक व्यावहारिक योजना होगी।"

"जब तक इसे मार नहीं दिया जाता, मैं आपके काम की निगरानी में समय नहीं लगाऊंगा। यह मैं आपके कर्तव्यबोध पर छोड़ता हूं।"

"उसे अपनी ओर से मेरे खिलाफ और अधिक परेशानी खड़ी करने में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।"

जब तक जॉन बोल रहा था, सभा में सन्नाटा छा गया था। उनके चेहरों के भावों से यह स्पष्ट था कि कुली अपने-अपने विचारों में बंटे हुए थे। जॉन ने मनोवैज्ञानिक दांव अच्छा खेला था और फिलहाल उसकी जान को खतरा टल गया था।

पीछे से किसी ने पुकारा, "क्या कहते हो, हे अजनबी? क्या तुम डोराई की चुनौती स्वीकार करने के लिए तैयार हो?"

एक और आवाज ने चिल्लाकर कहा, "यह तो ठीक ही लगता है। अपना हथियार चुनो और हमारे लिए बाघ को मारने की कोशिश करो।" लेकिन तीसरे आदमी ने सुझाव दिया, "शायद यह सिर्फ एक चाल है।"

अगर हमने उसे हथियार निकालने दिए तो डोराई हम पर गोली चला देगा।

रमन नायर की आँखें गुस्से से लाल हो उठीं। उन्होंने देखा कि जिस नेतृत्व को उन्होंने इस अज्ञानी भीड़ पर बड़ी मुश्किल से हासिल किया था, वह उनके हाथ से फिसल रहा है। उन्होंने आखिरी वक्ता द्वारा उठाए गए संदेह का फायदा उठाने का निश्चय कर लिया। "भाइयों, यह महज़ एक बहाना है," वे चिल्लाए। "गोरा आदमी अंदर जाकर अपनी बंदूकें लाने का मौका चाहता है। अगर आप उसे ऐसा करने देंगे, तो वह हम सबको गोली मारकर अपना असली रंग दिखाएगा।"

भीड़ जॉन को देखने और जॉन के उन्हें जवाब देने में इतनी मग्न थी कि किसी ने घोड़े के खुरों की आवाज़ नहीं सुनी और न ही अकेले सवार को देखा, जब तक कि जून टोनी को भीड़ के बीच से धकेलते हुए बरामदे की सीढ़ियों के नीचे नहीं उतर गई।

तब सबकी निगाहें उस पर टिक गईं। जॉन को एहसास हुआ कि उसके सामने वही लड़की खड़ी है जिसने कुछ देर पहले उसे खरी-खोटी सुनाई थी।

"मिस गार्डनर," वह आश्चर्य से हांफते हुए बोला, "आप यहाँ क्यों आई हैं, और वह भी ऐसे समय में? जब तक मौका है, यहाँ से चली जाइए।"

जून ने सीधे-सादे शब्दों में जवाब दिया, "विस्तार से बताने का समय नहीं है। मुझे आप पर हमले की योजना के बारे में पता चला था और मैं आपको चेतावनी देने आई थी। मुझे लगता है कि मैं बहुत देर हो चुकी हूँ।"

जॉन मुश्किल से इतना ही कह पाया, "भगवान के लिए, यहाँ से चले जाओ", और उसने जून को दृढ़ता से अपना सिर हिलाते हुए देखा, जब रमन नायर भीड़ को संबोधित करता रहा।

"यह एक चाल है," उसने दोहराया, "उसे अंदर जाकर अपनी बंदूकें लाने मत दो।"

एक बार फिर, कुलियों ने जॉन को संदेह भरी निगाहों से देखा।

किसी ने चिल्लाकर कहा, "अगर ऐसा है तो चलो उसे मार डालते हैं।"

एक पल बाद, चिका की छोटी सी आकृति अपने स्वामी के बगल में खड़ी हो गई। रमन नायर की ओर मुड़कर, उस जंगली आदमी ने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी तर्जनी उंगली से इशारा करते हुए कहा, "हे झूठों के बाप! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई दोराई पर ऐसे इरादों का आरोप लगाने की! ठीक है, यह तो आसानी से सुलझ गया। उसे एक तरफ हटने दो। मैं हथियार निकालता हूँ। अगर तुममें चुनौती स्वीकार करने का साहस है तो।"

रमन नायर का आपा पूरी तरह से टूट गया। "बंदर की औलाद! इस मामले में अपनी नाक मत डालो वरना मैं तुम्हें लात मारूंगा।"

"कोशिश मत करो," छोटी चिका ने जवाब दिया, "तुम अब अपने पैरों पर खड़ी हो। जब मैं तुमसे निपट लूंगी, तो तुम्हें अपने ठूंठों पर रेंगना पड़ेगा।"

नन्ही करुंबा की इस तरह बोलने की धृष्टता पर हल्की हंसी गूंज उठी।

एक और आवाज ने चिल्लाकर कहा, "यह फिजूल की बहस बंद करो। हम तुम दोनों में से किसी को भी बंदूकें लाने नहीं देंगे। नौकर को ही बंदूकें लाने दो।"

"मैं इससे सहमत हूँ," जॉन ने तुरंत कहा और मुड़कर दरवाजे पर खड़ी चंद्रा को पुकारा।

कृपया मेरी दोनों राइफलें और शॉटगन ले आइए।

प्रतीक्षा करते हुए, जॉन ने अपनी पाइप से राख झाड़कर उसे दूसरी बार भरा। उसने आराम से माचिस जलाई और नई पाइप को जलाने के लिए कश लेने लगा।

जून ने अपने आगमन का कारण बताने के बाद कुछ नहीं कहा था। उसने आश्चर्य से उस अकेले अंग्रेज की ओर देखा जो इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी इतने शांत भाव से व्यवहार कर रहा था, जबकि उसका जीवन इतने बड़े खतरे में था।

कुछ ही देर में चंद्र अपने कंधे पर राइफल टांगे और दोनों हाथों में अन्य हथियार लिए वापस आ गया।

इससे पहले कि वह पास आ पाता, जॉन ने बरामदे के दूसरे छोर की ओर इशारा करते हुए कहा, "उन्हें वहाँ ले जाओ"।

फिर उसने अपने सामने मौजूद भीड़ को संबोधित किया। "इस आदमी ने आपको मुझ पर शक करने पर मजबूर कर दिया है। क्या आपको एहसास है कि जब मैंने आपको आते हुए सुना, तो मेरे पास इन हथियारों को लेने और आपके खिलाफ उनका इस्तेमाल करने के लिए काफी समय था?"

"मैंने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि तुम मेरे अपने कर्मचारी हो। मैं जानता हूँ कि तुम अच्छे लोग हो। इस उपद्रवी ने अपने झूठ से तुम्हें भड़काया है और जो कुछ हुआ है उसके लिए मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहराता। अब उसे जाने दो और जो हथियार वह चाहे चुन ले।"

सभी की निगाहें रमन नायर पर टिक गईं।

"लेकिन मुझे बाघ कहाँ मिलेगा?" उसने दुखी स्वर में पूछा।

“कहाँ?” ये तो तुम्हारी समस्या है। तुम्हें ही उसे ढूंढना होगा। ये मुश्किल नहीं होना चाहिए।” करुंबा के व्यंग्य ने कुलियों के बीच और भी हंसी पैदा कर दी।

अब बागान मालिक ने मामले में हस्तक्षेप किया।

"सुनो दोस्तों," उसने कहा, "अब वह कह रहा है कि उसे नहीं पता कि बाघ कहाँ मिलेगा। ठीक है। मैं उसके लिए उसे ढूंढ भी दूंगा। क्या यह ठीक रहेगा?"

आगे की पंक्ति में खड़े एक व्यक्ति ने कहा, "यह बिल्कुल उचित है, दोराई।" वहाँ मौजूद सभी लोगों ने सहमति में हल्की फुसफुसाहट की।

और इस बीच, मेरी कही बात याद रखना। तुम्हें मुझसे दो वादे करने होंगे। पहला, कि जब तक हम बाघ को मार नहीं देते, तब तक तुम इस आदमी को और

कोई गड़बड़ नहीं करने दोगे। दूसरा, कि मेरी अनुपस्थिति में तुम अपना काम करोगे।

"हम वादा करते हैं, दोराई," कई आवाजों ने जवाब दिया।

"धन्यवाद। और याद रखना; जब मुझे बाघ मिल जाए, तो यह सुनिश्चित करना कि यह साथी मुझे गोली चलाने में मदद करे," जॉन ने उन्हें मजाक करते हुए याद दिलाया।

"बिल्कुल," कई पुरुषों ने कहा।

"लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि समय आने पर आप मुझे सबसे खराब हथियार नहीं देंगे?" रमन नायर ने शिकायत करते हुए कहा।

"अब आप जो चाहें चुन लीजिए," जॉन ने कहा, "साथ में बीस कारतूस भी। मेरे पास एक .470 राइफल है। यह सबसे शक्तिशाली है। इसके बाद .450/400 राइफल आती है। और मेरी .12 बोर की शॉटगन भी है। ये सभी दो बैरल वाली बंदूकें हैं। अपनी पसंद चुन लीजिए।"

मलयाली ने रूठते हुए उत्तर दिया, "मुझे सबसे शक्तिशाली राइफल चाहिए—यानी .470।"

"बेशक इसका इस्तेमाल करो," जॉन ने सहमति जताई।

उसके कुछ मिनट बाद वहाँ एक भी कुली नज़र नहीं आया। न ही रमन नायर। भीड़ जितनी तेज़ी से आई थी, उतनी ही तेज़ी से गायब हो गई थी।

जॉन ने जून की ओर मुड़कर गंभीरता से कहा, "इतने बड़े जोखिम उठाकर मुझे चेतावनी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। यह आपका बहुत साहसी कदम था। आपने ऐसा क्यों किया? आपको इस मुसीबत के बारे में कैसे पता चला?"

जून का सांवला चेहरा उसकी बातें सुनकर लाल हो गया। उसने उसके पहले सवाल का जवाब तो नहीं दिया, लेकिन चाको और पापाचेन से अपनी गिरफ्तारी और भाग निकलने की कहानी सुनाई।

जॉन की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।

"तुम वाकई एक बहादुर लड़की हो," उन्होंने टिप्पणी की।

इसके बाद कुछ मिनटों तक उनके बीच सन्नाटा छाया रहा।

फिर ग्रेस्टोन ने कहा, "कृपया अंदर आइए और चाय पीजिए। या अगर आप चाहें तो कोई पेय भी ले लीजिए। आपने जो कुछ झेला है, उसके बाद आप इसके हकदार हैं। आपको बहुत प्यास लगी होगी। रूथ शायद पुलिस के साथ वापस आएगी। फिर मैं

आपको घर छोड़ दूंगा। अकेले वापस जाना सुरक्षित नहीं है। वे दोनों बदमाश आपको कार में रोक सकते हैं। इस बार वे आपको चुप कराने के लिए मार डालेंगे।"

जैसे सपने में हो, जून ने खुद को उसकी योजना से सहमत होते हुए महसूस किया।

अध्याय 18

टेड बचाव के लिए आता है

जैसे ही रूथ को जीप चलाने का अनुभव हुआ, उसने एक्सीलरेटर पर अपना पैर और जोर से दबा दिया और जॉन से निकलने के पचहत्तर मिनट के भीतर ही वह निलंबूर के बाहरी इलाके में पहुँच गई और डीएसपी के कार्यालय में थी।

"हैलो रूथ। आपको देखकर खुशी हुई," टेड बेकर ने सौहार्दपूर्ण ढंग से अभिवादन किया। "बैठ जाइए।"

उसने उत्तेजित होकर कहा, "कुलियों ने हमारे बंगले पर हमला कर दिया है। जॉन को बस इतना समय मिला कि वह मुझे आपको बताने के लिए भेज सके। मुझे नहीं पता कि उन्होंने उसे अब तक मार डाला है या नहीं।"

टेड ने शब्दों में समय बर्बाद नहीं किया। बरामदे के अंत तक पहुँचकर उसने इंस्पेक्टर को बुलाया।

"ब्लैक मारिया में मेरे पीछे-पीछे सशस्त्र रिजर्व के एक दर्जन जवानों को भेजो। मिस्टर ग्रेस्टोन के कुलियों ने उन पर हमला कर दिया है। तुम जीप में हमारे साथ आओ। जल्दी करो!" उसने आग्रह किया।

फिर वह अपने कार्यालय लौटकर बेल्ट, रिवॉल्वर और हेलमेट पहनने लगा। कुछ मिनट बाद टेड जीप में आगे-आगे चलने लगा और उसके ठीक पीछे ब्लैक मारिया कार थी। युद्ध के दौरान ऐसी ही एक गाड़ी चलाने के कारण वह उससे अच्छी तरह वाकिफ था और उसने तेज़ गति से गाड़ी चलाई। एक घंटे के भीतर वे सड़क के उस आखिरी हिस्से पर पहुँच गए जो जॉन के बंगले के बरामदे की ओर जाता था। सब कुछ शांत लग रहा था। दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था।

क्या वे बहुत देर कर चुके थे? यह सोचकर टेड मन ही मन परेशान हो गया। अचानक, वह रुक गया, और कुछ गज पीछे खड़ी ब्लैक मारिया कार के चालक ने ब्रेक लगाते ही ज़ोरदार चीख मारी।

भीतरी कमरे से दो लोग बाहर आए, बरामदा पार किया और उनसे मिलने के

लिए सीढ़ियों से नीचे उतरे। वे जॉन ग्रेस्टोन और खाकी रंग की घुड़सवारी पोशाक पहने एक एंग्लो-इंडियन लड़की थी, जो ठुड्डी की पट्टी से अपनी चौड़ी किनारी वाली टोपी को घुमा रही थी।

डीएसपी कूदकर बाहर निकला और तेजी से जॉन की ओर बढ़ा।

“भगवान का शुक्र है कि आप सुरक्षित हैं,” उसने अभिवादन किया। “क्या हुआ?”

जॉन ने पुलिस अधिकारी और फिर ब्लैक मारिया की ओर देखते हुए व्यंग्यात्मक मुस्कान बिखेरी। "आपका इतनी जल्दी आना बहुत अच्छा लगा। बहुत-बहुत धन्यवाद। कुली रूथ और मुझे जान से मारने के इरादे से आए थे, लेकिन मैं उनसे बातचीत करके उन्हें रोकने में कामयाब रहा और हम अच्छे संबंध बनाकर अलग हो गए।"

"बहुत अच्छी समझ! जॉन, तुम्हारा मतलब क्या है?" रूथ ने अविश्वास से सवाल पूछा।

उसके पति की मुस्कान और चौड़ी हो गई। तभी उसे अचानक याद आया कि उसने जून का परिचय अधीक्षक से नहीं कराया था। "माफ़ कीजिएगा," उसने कहा, "मिलिए मिस गार्डनर से। ये नए वन क्षेत्र अधिकारी की बेटी हैं।" जून की ओर मुड़कर उसने समझाया, "ये श्री एडवर्ड बेकर हैं, डीएसपी। ये भी इस क्षेत्र में नए हैं।"

टेड ने हाथ आगे बढ़ाते हुए झुककर जून का हाथ थाम लिया। फिर जॉन ने जून को उसके साथ घटी घटना के बारे में ठीक वैसे ही बताया जैसे जून ने उसे बताया था।

"हम इन्हीं लोगों की तलाश कर रहे हैं!" पुलिस अधिकारी ने हैरानी से कहा।

उसने इंस्पेक्टर को बुलाया और दोनों ने जून द्वारा चाको और पापाचेन के बारे में दिए गए विवरण और उनके शिविर तक पहुंचने के निर्देशों को ध्यान से सुना।

“रामचंद्र राव, जल्दी से उनके पीछे जाओ,” उसने आदेश दिया, “तुम्हारे लौटने तक मैं यहीं रुकूंगा।” इंस्पेक्टर जल्दी से ब्लैक मारिया में वापस चला गया और सशस्त्र दल तेजी से वहां से निकल गया।

अपनी पिछली बातचीत पर वापस आते हुए, बेकर ने पूछा, "मैं यह जानने के लिए बेहद उत्सुक हूं कि आपने कुलियों के साथ किस तरह की सहमति बनाई।"

जॉन ने समझाया, "वे अच्छे लोग हैं, लेकिन उस अजनबी आदमी के बहकावे में आ गए जिसके बारे में मैंने आपको कुछ दिन पहले बताया था और वे अत्यधिक उत्तेजित हो गए।" आगे उन्होंने पूरी घटना का विवरण दिया और अंत में अपने

कर्मचारियों के साथ हुए समझौते के बारे में बताया।

"हे भगवान! क्या आपको सच में लगता है कि वे अपना वादा निभाएंगे?"

जॉन ने बिना किसी झिझक के कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि वे ऐसा करेंगे, और जब बाघ मिल जाएगा, तो वे उस अजनबी को मेरे साथ मिलकर उसे गोली मारने के लिए मजबूर कर देंगे।"

"यह उपद्रवी अब कहाँ है?" टेड ने पूछा।

वह मजदूरों की कतार में खड़ा है।

"तो मैं उसे गिरफ्तार करने के लिए वहीं जा रहा हूँ," टेड ने जीप की ओर मुड़ते हुए दृढ़ता से कहा।

"अरे नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे!" जॉन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "मैं उसके खिलाफ गवाही नहीं दूंगा।"

टेड और रूथ आश्चर्य से देखते रह गए।

"आपका क्या मतलब है?" डीएसपी ने पूछा।

जॉन ने समझाया, "सुनो टेड। इसे इस तरह समझो। यह कुलियों के प्रति मेरे वचन का मामला है। अगर तुम उसे इस समय गिरफ्तार कर लेते हो, तो वे सोचेंगे कि मैं बेईमान था और यह सब एक साजिश का हिस्सा था और वे मुझ पर कभी भरोसा नहीं करेंगे। समझे?"

रूथ ने चिढ़कर कहा, "हमें क्या फर्क पड़ता है कि वे क्या सोचते हैं।"

"लेकिन मुझे परवाह है; और बहुत ज्यादा। मैं अपने वादे निभाने में विश्वास रखता हूं," जॉन ने उसे याद दिलाया।

"और तुम उस आदमखोर को कैसे ढूंढोगे?" टेड ने पूछा।

जवाब में, ग्रेस्टोन मुड़ा और जोर से पुकारा, "चिका!"

कुछ ही देर में वह छोटा आदमी उसके सामने खड़ा हो गया। उसने आगे कहा, "यह आदमी करुंबा है—एक आदिवासी। मैंने इसे बाघ का पता लगाने में मदद के लिए अपनी सेवा में लिया है। ये लोग जंगल के ज्ञान में माहिर हैं।"

टेड ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि चिका को उदास निगाहों से देखता रहा।

फिर उसने कहा, "मुझे नहीं लगता कि तुम समझदारी दिखा रही हो। मान लो कि वह उपद्रवी फिर से कुलियों को भड़का दे और वे वापस आकर तुम्हारी और रूथ की हत्या कर दें? मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि मैं कुछ पुलिसकर्मियों को कुछ

दिनों के लिए तुम्हारी सुरक्षा के लिए यहाँ छोड़ दूं।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद," जॉन ने जवाब दिया, "मैं बहुत आभारी हूं, लेकिन इसकी आवश्यकता नहीं होगी और न ही यह उचित होगा।"

"क्यों नहीं?" डी.एस.पी. ने चिढ़कर पूछा। यह स्पष्ट था कि वह नाराज थे।

"कुली सोचेंगे कि मुझे उन पर भरोसा नहीं है," जॉन ने समझाया।

"तुम बिलकुल बेवकूफी कर रहे हो," रूथ ने बीच में टोकते हुए कहा। "मैं टेड से सहमत हूँ। उस नेता को सबक सिखाया जाना चाहिए। तुम्हारे साथ यहाँ रहने से मुझे जो खतरा है, उसका क्या?"

जून में खबर आई, "मुझे लगता है कि मिस्टर ग्रेस्टोन सही हैं। याद रखिए, वह पूरी तरह से उनकी दया पर निर्भर थे। वे उन्हें मार सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने उनकी शर्तें मान लीं और स्वाभाविक रूप से मिस्टर ग्रेस्टोन अपना वादा निभाना चाहते हैं।"

"यह कितना बेतुका विचार है!" रूथ ने रूखेपन से टिप्पणी की।

सूरज डूब चुका था और हल्की उष्णकटिबंधीय शाम ढलने लगी थी। उसके बाद कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, लेकिन रूथ और अधीक्षक ने इस मामले पर आगे कोई बहस नहीं की।

टेड की नजरें अपनी ओर खींचते हुए, ग्रेस्टोन ने पूछा, "क्या आपको एक घंटे के लिए रूथ के साथ रुकने में कोई आपत्ति होगी, जब तक मैं मिस गार्डनर को घर नहीं छोड़ देता?"

जून की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, "टोनी को आज रात यहीं छोड़ दो। मैं उसे कल तुम्हारे कमरे में भिजवा दूँगा। तुम्हारे पिता तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित होंगे। तुम आज सुबह ही घर से निकली हो, है ना?"

जून मान गई। "हाँ; पिताजी बहुत परेशान होंगे। उन्हें लगेगा कि बाघ ने मुझे मार डाला है।" जो कुछ हुआ था, उसके उत्साह में वह अपने पिता के बारे में पूरी तरह भूल गई थी।

जॉन ने जीप स्टार्ट की और जून उसके बगल में बैठ गई।

उसने पुकारा, "शुभ रात्रि, श्रीमती ग्रेस्टोन! शुभ रात्रि, श्री बेकर!"

टेड ने जवाब दिया, "शुभ रात्रि, मिस गार्डनर!" रूथ ने कोई जवाब नहीं दिया।

कुछ देर बाद जीप मुख्य सड़क से दाईं ओर मुड़ गई और कॉफी की झाड़ियों के

बीच से होते हुए उस रास्ते पर आगे बढ़ी, जहाँ बाघ ने सांभर का शिकार किया था।

"मुझे एक बार फिर आपका धन्यवाद करना चाहिए, मिस गार्डनर, आपने अपनी जान जोखिम में डालकर मुझे चेतावनी दी।"

इस टिप्पणी पर जून ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन कुछ मिनट बाद उसने जॉन से एक आश्चर्यजनक प्रश्न पूछा।

"आपकी पत्नी मुझे क्यों पसंद नहीं करतीं, मिस्टर ग्रेस्टोन?"

बागान मालिक ने स्पष्टीकरण देने का प्रयास किया।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं कहूंगा," उसने जवाब दिया, "रूथ इन सब घटनाओं के एक के बाद एक घटने से परेशान है। इसके अलावा, यह अकेलापन उसे उदास करने लगा है। वह इंग्लैंड के शहरी जीवन की आदी है।"

"या फिर इसलिए कि मेरा रंग सांवला है?" जून ने लगातार यही सवाल पूछा।

ग्रेस्टोन ने उसकी आवाज में कंपन महसूस किया और समझ गया कि वह एक संवेदनशील विषय पर बात कर रहा है। उसने इसे हल्के में लेने की कोशिश की।

"बकवास! आखिर तुम्हें ऐसा बेवकूफी भरा विचार कैसे आया!"

लेकिन जून इस विषय पर खुलकर चर्चा करने के मूड में थी।

"यह बकवास नहीं है, मिस्टर ग्रेस्टोन," उसने धीमी लेकिन स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया, "जब हम पहली बार मिले थे, तब उसने लगभग यही कहा था, याद है?"

जॉन ने महसूस किया कि वह दुख से पीड़ित थी।

"मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप गलतफहमी में हैं," उसने जोर देकर कहा। फिर, "चलिए, किसी और विषय पर बात करते हैं। मुझे अपने और अपने पिता के बारे में और बताइए। क्या आपको कभी-कभी अकेलापन महसूस नहीं होता?"

जून ने जवाब दिया, "मुझे जंगल बहुत पसंद है और मैं शहर में रहना बिल्कुल नहीं चाहूंगी।"

अब चुप रहने की बारी ग्रेस्टोन की थी। वह चाहता था कि उसकी पत्नी भी ऐसा ही महसूस करे।

धीरे-धीरे, उसने खुद को बोलते हुए सुना। "मिस गार्डनर, मेरे पिता ने इस जागीर की स्थापना की थी। उन्होंने इसे जंगल काटकर बनाया था। पिताजी बंगले से एक फर्लांग दूर एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे दफन हैं। उन्हें वह पेड़ बहुत प्रिय था और शाम को अपने पुराने आरामकुर्सी पर बैठकर, सिगरेट पीते हुए या बस सपने

देखते हुए, उन्हें जो थोड़ा-बहुत फुर्सत का समय मिलता था, वे वहीं बिताते थे। उन्होंने मुझसे वादा लिया था कि मैं उन्हें वहीं दफनाऊँगी और मैंने वह वादा निभाया। उन दिनों मृतकों को मान्यता प्राप्त कब्रिस्तानों में दफनाने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं था। मैं सप्ताह में एक बार उस विशाल पेड़ और उनकी कब्र पर जाती हूँ और पिताजी को याद करती हूँ। उन्हें यह जागीर बहुत प्यारी थी; इसका हर एक कोना।"

"मेरा जन्म यहीं हुआ था और मैंने अपना पूरा जीवन बागान में ही बिताया है, सिवाय तीन बार इंग्लैंड जाने के जब मैं अपनी माँ से मिलने गई थी, जो अपने परिवार के पास लौट गई थीं। आखिरी बार, मेरी मुलाकात रूथ से हुई और मैंने काउज़ में उससे शादी कर ली। उसने कहा कि वह भारत आना चाहती है और मैं उसे ले आया। लेकिन अब जब वह यहाँ है, तो ऐसा लगता है कि उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।"

जॉन सोच में डूब गया और चारों ओर केवल इंजन की धीमी आवाज़ और जीप के जंगल के रास्ते पर लड़खड़ाते पहियों की घरघराहट सुनाई दे रही थी। फिर उसने आगे कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपको ये सब बातें क्यों बता रहा हूँ, मिस गार्डनर। मुझे पता है कि मुझे आपको अपने मामलों से परेशान नहीं करना चाहिए। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। लेकिन शायद इसलिए कि आप भी मेरी तरह ही जंगल से प्यार करती हैं। किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना अच्छा लगता है जो समझ सके।"

जून ने कुछ नहीं कहा। उसकी कहानी सुनते हुए उसके मन में अपार खुशी उमड़ी और उसका दिल एक गर्मजोशी से भर गया। यह एक ऐसा श्वेत व्यक्ति था जिसे इस देश को अपना कहने में कोई शर्म नहीं थी।

जंगल से गुजरते समय जीप के अंदर अंधेरा था। हेडलाइट्स की तेज रोशनी ने अंदर के अंधेरे को और भी गहरा कर दिया था। जॉन उसकी ओर झुका, मानो उसके चेहरे को देखकर सांत्वना पाना चाहता हो।

जून ने देखा कि वह उसे देख रहा है और उसने अपना सिर दूसरी तरफ घुमा लिया।

अनायास ही उसने अपना दाहिना हाथ स्टीयरिंग व्हील से हटाया और अंधेरे में जून का नन्हा बायां हाथ पाया। उसकी बड़ी हथेली और उंगलियां जून के छोटे हाथ पर टिक गईं और वहीं ठहर गईं। जून ने खुद को छुड़ाने की कोशिश नहीं की। जून को शब्द बोलने में कठिनाई हो रही थी।

अंततः वे आए और बोले, "वह आपकी पत्नी हैं। आपको उनके प्रति वफादार

रहना होगा, मिस्टर ग्रेस्टोन। आपको ऐसा करना ही होगा।"

जीप ने ट्रैक के अगले मोड़ को पार किया और दूर से टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी। उनमें से एक तेज़ रोशनी थी जो अंधेरे में एक विस्तृत चाप में प्रकाश फैला रही थी। वह जानती थी कि यह उसके पिता के कमरे के बरामदे की छत से लटकती पेट्रोमैक्स लालटेन थी।

जल्द ही जॉन ने गाड़ी को उनके गंतव्य पर रोक दिया। परिसर में खाकी वर्दी पहने चार आदमी आपस में बातचीत कर रहे थे। उनमें से एक के पास दोधारी बंदूक थी। जैसे ही जून जीप से उतरी, वह आदमी तेजी से जीप की ओर बढ़ा और पेट्रोमैक्स की रोशनी में पता चला कि वह उसका पिता था।

वन रक्षक ने कहा, "जूनी! भगवान का शुक्र है कि तुम वापस आ गई! कहाँ थी तुम? मैं दिन भर तुम्हारे बारे में चिंतित रहा। हमने जंगल में तुम्हारी तलाश की और टोनी के पैरों के निशान देखे जो यहाँ से दूर जा रहे थे और फिर सरपट दौड़ते हुए वापस आ गए। लेकिन पीछा करते हुए किसी बाघ के पदचिह्न नहीं मिले, इसलिए मुझे समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है।"

जून ने जल्दी से अपने पिता की बांह पर हाथ रखा और कहा, "अंदर आइए, पापा; मैं आपको इसके बारे में सब कुछ बताऊंगी।"

जॉन ग्रेस्टोन की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "कृपया आप भी आइए, मिस्टर ग्रेस्टोन। मैं चाहती हूँ कि आप पिताजी से बात करें।" जब वे बैठक कक्ष में दाखिल हुए, तो जून ने आगे कहा,

"पिताजी, ये श्री ग्रेस्टोन हैं, जो पड़ोस के कॉफी बागान के मालिक हैं।"

फिर उसने सामने का दरवाजा बंद किया और जॉन को एक कुर्सी पर और अपने पिता को दूसरी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। उसने अपने लिए एक तीसरी कुर्सी खींची और उसे इस तरह रखा कि वह उन दोनों के बीच में बैठ सके।

बूढ़ा रेंज ऑफिसर कुछ हैरानी से उसकी हरकतों को देख रहा था। खासकर उसने दरवाजा बंद करते हुए देखा था। वह अपनी जिज्ञासा को और रोक नहीं सका और पूछा, "यह सब रहस्य क्यों? आखिर हुआ क्या है?"

"सुनो," उसने शुरू किया। पिछली रात दो साजिशकर्ताओं के रहस्यमय आगमन से शुरुआत करते हुए, जून ने पूरी कहानी सुनाई। "बात यह है," उसने निष्कर्ष निकाला, "कि हमें किसी भी समय हमले के लिए तैयार रहना चाहिए।"

रेंजर ने दृढ़ता से कहा, "वे मेरी लाश पर से गुजरकर ही सफल होंगे। जब तक मेरा पैराडॉक्स बोल सकता है, जो भी कोशिश करेगा, भगवान उसकी मदद करे।"

जून जब अपनी रोमांचक कहानियाँ सुना रही थी, तब जॉन चुप था। अब उसने कहा, "डी.एस.पी. मेरे बंगले पर हैं, मिस्टर गार्डनर। अगर आप चाहें, तो मेरे वापस आने पर मैं उनसे आपकी मदद करने के लिए कह सकता हूँ।"

गार्डनर गंभीर दिख रहे थे। उन्होंने अपनी दाहिनी मुट्ठी बंद की और उसे अपनी जांघ पर पटका। "धन्यवाद, लेकिन कृपया उन्हें परेशान न करें। जब तक मैं जीवित हूँ, यह न कहा जाए कि नेविल गार्डनर सरकार की संपत्ति की रक्षा करने में असमर्थ थे।"

जॉन ने बूढ़े आदमी के सांवले चेहरे की ओर देखा। उसे जून और उसके पिता पर बहुत गर्व महसूस हुआ। दोनों ने यह साबित कर दिया था कि वे कितने नेक इंसान हैं।

कुछ देर बाद ग्रेस्टोन उठे, उन्हें शुभ रात्रि कहा और घर लौटने के लिए अपनी जीप में बैठ गए।

ओल्ड गार्डनर के अंतिम शब्द थे, "मेरी जूनी को सुरक्षित वापस लाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद"।

जून ने प्यारी सी मुस्कान दी।

रास्ते में जॉन के सामने दो चेहरे बार-बार दिखाई देते रहे।

एक तस्वीर सांवली लड़की की थी; और दूसरी एक गोरी महिला का चेहरा था—जो उसकी पत्नी थी।

उसके वापस आने के कुछ ही समय बाद, इंस्पेक्टर और सशस्त्र पुलिसकर्मियों से भरी ब्लैक मारिया कार खाली हाथ लौट आई। षड्यंत्रकारी पहले ही भाग चुके थे।

अध्याय 19

मृत्यु का झरना

अगली सुबह जॉन जल्दी उठ गया। पूर्व दिशा में दूर स्थित वन से ढकी पहाड़ियों की श्रृंखला के ऊपर भोर की लालिमा और बैंगनी रंग की चमक थी, और गुलाबी गालों वाले बुलबुल, जिनकी काली कलगी नुकीली थी, बंगले के बगीचे के चारों ओर लैंटाना की बाड़ में झुंड में चहचहा रहे थे। हजारों फीट ऊपर आकाश में, चांदी जैसे सफेद बादलों की लंबी लकीरें रेशमी धागे की तरह दौड़ रही थीं। वे दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक फैली हुई थीं और जॉन खुश था, क्योंकि वे बेसब्री से प्रतीक्षित मानसून के आगमन के संकेत थे।

इमारत के पीछे जाकर उसने एक बाहरी कमरे के लकड़ी के दरवाजे पर दस्तक दी। लगभग तुरंत ही करुंबा बाहर आ गया। जॉन ने उससे तमिल में कहा, "तैयार रहो, चिका, आधे घंटे के भीतर हम दोनों को जंगल के लिए निकलना होगा ताकि आदमखोर का पता लगा सकें। मैंने इस बारे में सोचा है। अगर हम कराडी अर्र नदी के तल का पीछा करें, तो हमें उसके पदचिह्न मिलने की संभावना है, और अगर वे ताज़े हैं तो हमें अंदाज़ा हो जाएगा कि वह आम तौर पर किस दिशा में जाता है। इससे हमें उसके छिपने की जगह का पता लगाने में मदद मिल सकती है। एक बार जब हमें वह जगह मिल जाए, तो हम कई जीवित शिकारों को बांधकर शिकार की उम्मीद कर सकते हैं। फिर तुम मेरे लिए एक मचान खड़ा कर देना और जब वह दूसरी बार भोजन के लिए लौटेगा तो मैं उसे गोली मारने का एक और प्रयास करूंगा।"

लेकिन चिका ने धीरे-धीरे अपना सिर अगल-बगल हिलाया। यह स्पष्ट था कि वह प्रभावित नहीं हुआ था। "तुम्हारी योजना में दो कमियाँ हैं, दोराई। पहली बात तो यह है कि मैं अकेले ही कंटीली झाड़ियों और घने जंगल को भेद सकता हूँ। तुम्हारे साथ, मुझे बाधा होगी। दूसरी बात, शैतान-बाघ किसी जानवर के चारे पर उतनी जल्दी प्रतिक्रिया नहीं देगा जितनी जल्दी वह किसी इंसान को देखकर देता। क्योंकि वह आदमखोर है। तुम्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।"

जॉन ने उसे तीखी नजरों से देखा। "क्या तुम्हारा मतलब यह है कि मुझे खुले में उसके आने का इंतजार करना चाहिए?" उसने पूछा।

"नहीं दोराई," करुम्बा ने उत्तर दिया, "मैं प्रतीक्षा करूँगा, जबकि तुम उसे मचान से गोली मारोगे।"

"तुम पागल हो!" जॉन भड़क उठा! "मैंने अपनी जिंदगी में कभी ऐसी बात नहीं सुनी! यह एक बेवकूफी भरी योजना है! अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा।"

"अकेले उसका पीछा करने की तुम्हारी योजना भी मूर्खतापूर्ण है। अगर मैं वहाँ हूँ, तो मैं तुम्हारी सुरक्षा कर सकता हूँ। लेकिन अगर तुम अकेले हो..." जॉन ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

"डोराई को पता होना चाहिए कि मेरा जन्म जंगल में हुआ था। मैं जंगल में उतना ही सहज महसूस करता हूँ जितना कोई बाघ।"

"अरे नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे," बागान मालिक ने विरोध किया। "जब तुम

अपने सामने ज़मीन पर निशान ढूंढ रहे होगे, तब वह पीछे से तुम पर हमला कर देगा। मैं ऐसी बेवकूफी भरी योजनाओं को बर्दाश्त नहीं करूंगा।"

"मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ और हम मिलकर इस जानवर के पदचिह्न खोजने की कोशिश करेंगे। यही मेरा अंतिम आदेश है।"

जॉन ने मक्खन लगे टोस्ट खाए और साथ में कॉफी पी, खाकी कमीज और लंबी पैंट पहनी, और चलते समय आवाज न करने के लिए रबर के तले वाले जूते पहने। रूथ को अपने गंतव्य के बारे में बताकर, उसने .470 राइफल कंधे पर टांगी और जेब में कुछ कारतूस रखकर, वह और चिका कराडी बंदरगाह की ओर चल पड़े।

एक घंटे के भीतर, वे नदी के रेतीले तल पर खड़े थे। पानी की एक पतली सी धारा, मुश्किल से एक गज चौड़ी, बीचोंबीच बहती हुई जा रही थी या कभी-कभी बीच में चट्टानों, पत्थरों या पिछले साल मानसून के दौरान बाढ़ के पानी से बहकर आए सड़े हुए पेड़ों के तनों से अवरुद्ध होने पर एक या दूसरे किनारे के पास मुड़ जाती थी।

रेत साफ और बारीक थी, और उस पर उन सभी जीवित प्राणियों के पदचिह्न थे जो नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक गए थे या पानी पीने के लिए वहाँ आए थे। सांभर, चित्तीदार हिरण और जंगली भेड़ों के खुरों के निशान हर दिशा में फैले हुए थे। वहाँ एक पैंथर का निशान भी था जो दो रात पहले किनारे पर दुबका हुआ था, निस्संदेह इस उम्मीद में कि प्यास बुझा रहे किसी जानवर पर हमला कर सके।

जॉन और चिका भूतों की तरह खामोशी से आगे बढ़ रहे थे, उस छोटी नदी के किनारे-किनारे चल रहे थे जो अपने रेतीले रास्ते पर मुड़ती, घूमती और बहती जा रही थी। अचानक करुंबा रुका और उसने अपनी दाहिनी ओर इशारा किया।

नरम मिट्टी में बाघ के पदचिह्न स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। ये पदचिह्न पूर्व की ओर नदी के किनारे से शुरू होकर, जहाँ जानवर घने जंगल से बाहर निकला था, नदी के पार तिरछे होकर पश्चिम की ओर जा रहे थे। लेकिन बहते पानी के किनारे पर ये पदचिह्न साफ़ दिखाई दे रहे थे। जहाँ पदचिह्न नदी में विलीन हो रहे थे, वहाँ न तो कीचड़ था और न ही गाद के कोई निशान। सख्त मिट्टी पर गिरे हुए पत्ते और नन्हे मकड़ियों द्वारा बनाए गए जाले गड्ढों को भर रहे थे। इन संकेतों से पता चलता था कि यह पदचिह्न पुराना था।

जॉन और करुम्बा चलते रहे। थोड़ी दूर आगे जाकर उन्हें बाघ के पैरों के निशान मिले, जो कुछ दिन पुराने थे। ये निशान विपरीत दिशा में जा रहे थे। अगले आधे मील

में उन्हें बाघ के और भी पदचिह्न मिले, लेकिन उनमें से कोई भी कम से कम तीन दिन पहले का नहीं था।

नदी के पश्चिमी किनारे पर पेड़ों की चोटियों के बीच से एक छोटी पहाड़ी की चोटी दिखाई दे रही थी। लगभग दो-तिहाई दूरी तक यह घास और झाड़ियों से ढकी हुई थी। शेष एक-तिहाई भाग पत्थरों से भरा था। नदी की ओर मुख किए पहाड़ी की चोटी का एक हिस्सा अचानक एक खड़ी चट्टान में बदल जाता था, और नदी के तल से वे पेड़ों और पत्थरों के ऊपर से इस चट्टान की सतह पर बनी कई खुरदरी दरारें और छोटी-छोटी खाइयाँ देख सकते थे।

चिका ने एक मिनट तक शिखर का निरीक्षण किया। फिर उसने जॉन से कहा, "दोराई, उन गुफाओं में से एक में एक बाघ रहता है। यह तो निश्चित है। वह शाम को इस धारा को पार करके पूर्वी किनारे के जंगल में जाता है और भोर में लौट आता है। लेकिन वह आदमखोर है या नहीं, यह कौन कह सकता है?"

"और ये सभी पुराने रास्ते हैं। साथ ही, हम पहाड़ी से दूर होते जा रहे हैं। चलिए वापस लौटते हैं और विपरीत दिशा में चलते हैं। वहाँ पहाड़ी नदी के करीब है। शायद हमें कोई नया रास्ता मिल जाए।"

वे मुड़े और करादी अर्र नदी से मिलने वाले स्थान पर वापस चले गए और छोटी नदी के किनारे आगे की ओर अपनी खोज जारी रखी। चिका सही साबित हुई, क्योंकि दो फर्लांग के भीतर ही उन्हें पश्चिमी किनारे की ओर जाते हुए बाघ के ताज़े पदचिह्न मिले। नदी के बहाव के बावजूद, जहाँ ये पदचिह्न पानी के किनारे से मिलते थे, वहाँ अभी भी थोड़ी कीचड़ थी, और बाघ के पैरों से बने गड्ढों में न तो सूखे पत्ते थे और न ही मकड़ी के जाले। जिन घास के छोटे-छोटे तिनकों पर बाघ ने पैर रखा था, वे अभी भी जानवर के भार से झुके हुए थे और अपनी सामान्य स्थिति में वापस नहीं आ पाए थे।

चिका रुका और झुककर पगडंडी को ध्यान से देखने लगा। उसने कहा, "डोराई, बाघिन तीन-चार घंटे पहले यहाँ से गुजरी थी। और हाँ, वह बाघिन नहीं बल्कि बाघिन है। वह वयस्क है और अपनी उम्र के हिसाब से काफी बड़ी है।"

जॉन रेत पर साफ दिखाई दे रहे पदचिह्नों का अध्ययन कर रहा था। उसने इस बात की पुष्टि कर ली कि ये पदचिह्न किसी बाघिन के ही हैं, क्योंकि ये नर बाघ द्वारा छोड़े गए बड़े और गोल निशानों से भिन्न थे। उसने बेमन से सिर हिलाते हुए कहा,

"सवाल यह है कि क्या ये निशान आदमखोर बाघिन ने छोड़े हैं या किसी साधारण बाघिन ने? अब तक तो सभी का कहना है कि आदमखोर बाघिन एक नर बाघ है!"

चिका ने ठंडे दिमाग से तर्क देते हुए जवाब दिया, "इसका पता लगाने का एकमात्र तरीका इस जानवर को गोली मारना है। अगर उसके बाद कोई भी इंसान गायब नहीं होता, तो आपने आदमखोर को मार दिया है। अगर कोई दूसरा इंसान गायब हो जाता है, तो आपने गलत बाघ को मार दिया है।"

जॉन उस नन्हे जंगली आदमी के सरल लेकिन सही तर्क पर मुस्कुराया और सोचने लगा कि काश कोई आसान तरीका होता। उस समय उसे यह नहीं पता था कि अगले 12 घंटों के भीतर उसकी यह इच्छा नाटकीय रूप से पूरी हो जाएगी।

"पहाड़ी के दोनों ओर, जहाँ झाड़ियाँ खत्म होती हैं और चट्टानें शुरू होती हैं, वहाँ दो ज़िंदा चारे बाँधना समझदारी होगी," चिका ने सुझाव दिया। "तुम एक तरफ बैठ जाओ और बड़े वाले चारे को दूसरे चारे के साथ दूसरी तरफ रख दो। मेरा मानना है कि बाघिन ज़रूर इसी रास्ते से वापस आएगी और तुम्हें निशाना लगाने का मौका मिलेगा। लेकिन हमें इस बात पर ज़ोर देना होगा कि वह दूसरे चारे के साथ ही बैठा रहे। कम से कम, सुबह होते-होते वह डर के मारे मर जाएगा।"

जॉन को उस छोटे आदमी की बात अच्छी लगी और उसने पूरी तरह से सहमति जताई। फिर वे कराडी अर्र से निकलकर कुली-पंक्ति की ओर चल पड़े। उन्हें अपने गंतव्य तक पहुँचने में लगभग दो घंटे लग गए। वहाँ पहुँचते ही सबसे पहले उन्हें रमन नायर दिखे, जो पवित्र पीपल के पेड़ के नीचे बने ऊँचे चबूतरे पर बैठे थे। जॉन और चिका के पास आते ही उन्होंने ऊपर देखा और गुस्से से घूरने लगे।

बिना किसी भूमिका के, बागान मालिक ने मलयालम में कहा, "हमने बाघ का पता लगा लिया है और अब उसे गोली मारने का समय आ गया है। आज रात हम दोनों जागेंगे। तुमने वह राइफल चुनी है जो मैं अभी लिए हुए हूँ। तुम अपना चारा और बैठने की जगह खुद चुन सकते हो। मैं मजदूरों को बुलाकर आधे दिन की छुट्टी घोषित करने जा रहा हूँ।"

रमन नायर का चेहरा पीला पड़ गया। वह तीखे स्वर में विरोध करने लगे। "मुझे कैसे पता न चले कि यह कोई चाल है? मान लीजिए कि राइफल न चले? मान लीजिए..."

लेकिन जॉन सुन नहीं रहा था। उसने अपनी झोपड़ी के द्वार पर खड़े मिस्त्री को

इशारा किया और उसे पीतल का लंबा, घुमावदार सींग बजाने को कहा, जिससे जागीर के सभी कोनों से मजदूर आ सकें।

तीन बार तुरही बजाई गई, जिससे एक लंबी, पीड़ादायक कराह निकली, मानो कोई विशालकाय जीव संकट में हो। थोड़ी देर में कुली आने लगे और एक घंटे से भी कम समय में वे सभी उपस्थित हो गए।

तमिल में बोलते हुए, जॉन ने उन्हें बताया कि चिका और उसने पता लगाया था कि कराडी अर्र के पश्चिम में पहाड़ी की चोटी के पास चट्टान में स्थित गुफाओं के बीच एक बाघिन रहती है।

उन्हें यह जानने का कोई साधन नहीं था कि यह जानवर आदमखोर है या नहीं, लेकिन वे कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे और बाघिन को मारना ही था। इसलिए उन्होंने उन्हें इकट्ठा किया और बताया कि आज रात समझौते के अनुसार, वह और मलयाली रमन नायर, दोनों पहाड़ी के विपरीत किनारों पर जीवित चारे लेकर बाघिन का इंतजार करेंगे।

इस मौके पर कुलियों ने ज़ोरदार समर्थन जताया, लेकिन तभी रमन नायर ने तीखे विरोध के साथ अपनी आपत्ति जताते हुए कहा, "मुझे कैसे पता न चले कि यह किसी गोरे आदमी की साज़िश है? ट्रिगर दबाने पर राइफल चलनी नहीं चाहिए।"

जॉन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "वह नए सिरे से चुनाव कर सकता है और अपनी पसंद का कोई भी हथियार ले सकता है, और जैसा कि मैंने कहा, वह अपना चारा चुनने और अपने मचान को अपनी इच्छानुसार किसी भी स्थान पर बैठाने के लिए भी स्वतंत्र है।"

कुली अपने मालिक का ज़ोरदार समर्थन करने लगे। एक तेज़ आवाज़ आई, "आओ, खेल खेलो। मालिक अपना वादा निभाने को तैयार है, तुम्हें भी अपना वादा निभाना होगा।"

"मुझे कैसे पता चलेगा कि कोई गड़बड़ी नहीं होगी?" रमन विलाप करते हुए बोला।

"हम इसका ध्यान रखेंगे," वे सब एक साथ बोले, "हम आएंगे और तुम्हारा और उसका मचान भी लगा देंगे।"

"मान लीजिए कि राइफल नहीं चलती?" उसने फिर से पूछा।

"अभी एक गोली चलाकर राइफल को आज़मा लो और उसे अपने पास रख

लो," जॉन ने सुझाव दिया। "मैं तुम्हें ग्यारह गोलियां दूंगा, जिन्हें तुम अपने पास रख सकते हो।"

राइफल और ग्यारह गोलियां रमन नायर के हाथों में थमा दी गईं और किसी ने लगभग पचास कदम दूर एक पेड़ की शाखाओं के बीच एक टूटा हुआ पानी का घड़ा रख दिया।

"आओ, हे मलयाली; राइफल चलाकर देखो", भीड़ ने एक साथ कहा।

रमन नायर ने दोनों बैरल में गोलियां भरीं, सावधानीपूर्वक निशाना साधा और उनमें से एक गोली दाग दी। गोली बिल्कुल सटीक निशाने पर लगी और टूटे हुए पानी के घड़े को चकनाचूर कर दिया।

कुलियों की ओर से "शाबाश!" की एक जोरदार आवाज सुनाई दी।

इससे वह खुश हो गया और उसने ज़िद की कि उसे दूसरे बैरल को किसी और लक्ष्य पर आज़माना चाहिए। थोड़ी देर खोजने के बाद, एक लड़के ने कूड़े के ढेर से एक पुरानी बाल्टी उठाई। वह भी उसी जगह पर संतुलित थी जहाँ पानी का घड़ा रखा था।

रमन नायर ने इस धुन को कुछ देर तक बजाने का लक्ष्य रखा था। दूसरी नली से निकली गोली ने बाल्टी को घुमाते हुए पीछे लंबी घास में गिरा दिया।

भीड़ खुशी से झूम उठी। किसी ने चिल्लाकर कहा, "वाह! तुमने तो कमाल का निशानेबाज हो!"

रमन नायर ने सीना तानकर खुद को एक अलग इंसान महसूस किया। आदमखोर का उसका डर गायब हो गया था।

"क्या राइफल ठीक है?" जॉन ने पूछा।

"हाँ, हे श्वेत पुरुष," मलयाली ने आडंबरपूर्ण ललक से उत्तर दिया, "और मुझे अब और कारतूसों की आवश्यकता नहीं है। इन नौ गोलियों से, जो बची हैं, मैं, रमन नायर, अकेले ही आज रात उस आदमखोर को मार गिराऊँगा।"

सभी ने चिल्लाकर कहा, "ऐसा ही हो", और जॉन और चिका ने भी जयकार में साथ दिया।

जॉन ने .470 पिस्तौल मलयाली के पास छोड़ दी और कुली-मास्टर को निर्देश दिया कि वह रमन नायर को, साथ ही दो भैंसों को (जिनके मारे जाने पर वह उनका भुगतान करेगा) और दो मचानों को बांधने में मदद करने के लिए कुछ मजदूरों को

ठीक 1 बजे बंगले पर लाए। जॉन उनसे मिलकर कराडी अर्र के लिए रवाना होगा और दोपहर 2 बजे तक वहां पहुंच जाएगा। उसका अनुमान था कि जब तक वे बैठने की जगहें चुन लेंगे और दो मचान बना लेंगे, तब तक 4 बज चुके होंगे।

फिर वह और चिका दोपहर के भोजन के लिए बंगले में लौट आए।

दोपहर 1 बजे के कुछ ही समय बाद, रामन नायर और लगभग पच्चीस कुलियों के साथ मिस्त्री दो भैंस के बछड़ों को लेकर पहुंचे।

जॉन ने अपने दूसरे सबसे अच्छे हथियार के तौर पर अपनी 450/400 जेफ्रीज़ पिस्तौल को तैयार रखा था। उसने नायर को दो इलेक्ट्रिक टॉर्च चुनने का विकल्प दिया, जिनमें से प्रत्येक में तीन सेल थे। जब मलयाली ने एक टॉर्च चुन ली, तो उसने उसे .470 पिस्तौल पर लगाने के लिए क्लैंप का एक जोड़ा दे दिया। खुद के लिए, उसने उसी तरह के क्लैंप की मदद से बची हुई टॉर्च को अपनी 450/400 पिस्तौल पर लगा दिया।

फिर चिका समेत पूरा दल छोटी नदी की ओर चल पड़ा। ग्रेस्टोन उन्हें उन ताज़े पदचिह्नों तक ले गया जो उसने और करुंबा ने उस सुबह देखे थे, और रमन नायर को चारा बाँधने और झाड़ियों के अंत और चट्टानों के आरंभ बिंदु पर बैठने की अपनी योजना बताई। उसने अनुमान लगाया कि बाघ संभवतः उसी रात उसी रास्ते से लौटेगा, लेकिन उसने मलयाली को बैठने के लिए अपनी पसंद की जगह चुनने का विकल्प दिया।

रमन नायर ने कुछ देर तक पहाड़ी की ओर ऊपर की ओर देखा और कहा, "तुम इस तरफ बैठो। मैं पहाड़ी के दूसरी तरफ जाता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि बाघ उस तरफ से आएगा।"

बागान मालिक तुरंत सहमत हो गया, और मन ही मन मुस्कुराते हुए उस चतुर तरीके की सराहना कर रहा था जिससे मलयाली ने बाघिन से उसके वापस लौटते समय मिलने की कम संभावना को चुना था।

रमन नायर ने एक बछड़े को चुना और कुली दो इकाइयों में बंट गए, एक जॉन के साथ गई और दूसरी, नायर, उनके लिए मचान बांधने के लिए गई।

जॉन और चिका, अपने दल के साथ बचे हुए बछड़े को लेकर नदी के उस पार छोटी पहाड़ी पर चढ़ने लगे। जब वे पथरीले हिस्से पर पहुँचे, तो उन्होंने अनुमान लगाया कि पहाड़ी का वह दूसरा किनारा, जहाँ रमन नायर ने बैठने का फैसला किया था,

लगभग एक चौथाई मील दूर होगा।

जिस स्थान पर वह खड़ा था, वहाँ इतने ऊँचे पेड़ नहीं थे कि मचान खड़ा किया जा सके। वहाँ केवल झाड़ियाँ, घास और बड़े-बड़े पत्थर थे।

चिका ने भी यह बात देखी और कहा, "डोराई, तुम्हारे पास इसके अलावा कोई चारा नहीं है कि या तो तुम किसी ऊंचे पत्थर के ऊपर पेट के बल लेट जाओ, या फिर अपनी पीठ किसी एक पत्थर से टिकाकर बैठ जाओ और उस भैंस के बच्चे की ओर मुंह करो जिसे हम तुम्हारे सामने लगभग तीस फीट की दूरी पर बांध देंगे।"

“और अगर आप मेरी बात मानें,” उन्होंने आगे कहा, “तो मैं आपको सलाह दूंगा कि आप किसी चट्टान की ओर पीठ करके बैठें। इससे बाघिन पीछे से हमला नहीं कर पाएगी। वह केवल सामने से या दोनों ओर से ही आ सकती है, और आप तीनों दिशाओं पर नज़र रख सकते हैं। यहाँ की चट्टानें ज़्यादा ऊँची नहीं हैं, और अगर आप किसी चट्टान के ऊपर लेट जाएँ तो आप बाघिन की आसान पहुँच में होंगे, जो शायद आपको पहाड़ी की चोटी से देख लेगी।”

ग्रेस्टोन सहमत हो गया, और साथ ही सोचने लगा कि रमन नायर कौन सा विकल्प चुनेगा। यह लगभग निश्चित था कि इस पथरीली पहाड़ी के दूसरी ओर भी कोई बड़ा पेड़ नहीं होगा। उसे या तो इन्हीं विकल्पों में से एक चुनना होगा या बाघिन के सामने बैठने से इनकार करके कुलियों के सामने शर्मिंदा होना पड़ेगा।

चिका और वह एक उपयुक्त चट्टान की तलाश करने लगे, और तभी उन्हें वह चट्टान मिल गई। पहाड़ी पर एक संकरी जलधारा बह रही थी, जिससे पहाड़ी की ढलान कटी हुई थी। यह नाला शिखर के पास से शुरू होकर लगभग सीधी रेखा में तेजी से नीचे की ओर पहाड़ी की तलहटी तक जाता था, जहाँ यह करादी नदी में मिल जाता था।

उन्होंने जो चट्टान देखी, वह उनके खड़े होने की जगह से लगभग पचास गज ऊपर पहाड़ी पर, जलधारा के दूसरे किनारे पर स्थित थी। मानसून के दौरान पहाड़ी से नीचे गर्जना करते हुए आने वाले पानी के बल से उसका आधार घिसकर खोखला हो गया था।

जॉन इस बात से सहमत था कि अगर वह चट्टान की ओर पीठ करके उस खोखले स्थान पर बैठ जाए तो वह बाघिन के किसी भी हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहेगा। साथ ही, अगर वह भैंस का चारा उस छोटी सी नाली के तल पर और जहाँ वह

बैठा था वहाँ से 25 से 30 गज की दूरी पर बाँध दे, तो वह बाघिन को पहाड़ी पर कहीं से भी साफ़ दिखाई देगा।

एक अतिरिक्त लाभ यह होगा कि चिका अपने सामने कांटों का एक छोटा सा जरेबा खड़ा कर दे, जिसे पत्तियों और घास से छिपा दिया जाए, ताकि वह नजरों से छिप जाए।

जॉन और चिका ने सुरक्षा के इन विभिन्न पहलुओं पर हर कोण से विचार किया और फुसफुसाते हुए उन पर चर्चा की।

ग्रेस्टोन चयन से पूरी तरह संतुष्ट थे और वे इस बात पर सहमत थे कि पानी से घिसी हुई चट्टान के नीचे उनकी स्थिति किसी भी तरफ से अप्रत्याशित हमले से अपेक्षाकृत सुरक्षित थी।

कुली मचान बनाने के लिए लकड़ी काटने के उद्देश्य से अपनी कुल्हाड़ियाँ लाए थे। चिका ने दबे स्वर में उन्हें नई योजना बताई और उन्हें नीचे की ढलानों पर उगने वाले कांटे, पत्ते, घास और लताओं को इकट्ठा करने का काम सौंपा। चिका की मदद से और जॉन के निर्देशों के अनुसार, कुलियों ने इन कांटों से लगभग तीन फुट ऊँची और दो फुट मोटी दीवार बनाई, जो उस खोखली चट्टान के प्रवेश द्वार के आर-पार थी जिसे जॉन ने अपने सामान के साथ आराम से बैठने के लिए पर्याप्त पाया। कांटों के बीच चिका ने कुशलता से लताओं, घास और पत्तों को इस तरह लपेटा कि मचान जलधारा के किनारे बहुतायत में उगने वाली प्राकृतिक झाड़ियों जैसा दिखने लगा।

यह काम एक सामान्य मचान की तुलना में बहुत पहले ही पूरा हो गया था और अभी 4 बजे भी नहीं बजे थे जब भैंस के बच्चे को एक मोटी झाड़ी के तने से काटकर बनाई गई लकड़ी की खूंटी से बांध दिया गया था।

कुछ मिनट बाद ग्रेस्टोन ने करुंबा और कुलियों को विदाई निर्देश देकर विदा किया कि वे सुबह होते ही उससे मिलने आएं, लेकिन नदी के तल से अधिक करीब न आएं, जहां से उन्हें पुकारना था।

जैसे-जैसे दोपहर ढलकर शाम में बदल रही थी, चट्टान की छाया के बावजूद अंदर घुटन हो रही थी। पहाड़ी से नीचे, भैंसों के बाड़े के पार, जॉन करादी नदी का तल देख सकता था और दूर से तीतरों की आवाज़ सुन सकता था, "की-कोक! कोक! कोक! की-कोक! कोक! कोक!" नदी का अधिकांश भाग नदी के किनारों पर घने पेड़ों से ढका हुआ था, लेकिन कभी-कभी पत्तों के बीच से उसे नदी की सुनहरी भूरी रेत

और उस पर बहते पानी की पतली धारा से पड़ने वाली चांदी जैसी चमक दिखाई देती थी।

उसके कानों में दिन भर के पक्षियों की विदाई की आवाज़ें गूंज रही थीं, जो अपने घोंसलों में जा रहे थे। एक कठफोड़वा सूखी डाल पर चोंच मार रहा था, "टोक! टोक! टोक! टोक!" और पास ही एक हरा बारबेट पक्षी ज़ोर से चहचहा रहा था, "कोट-टूरू! कोट-टूरू!"

शाम छह बजे तक चट्टान के नीचे काफी अंधेरा हो गया था, हालांकि खुले में शांति से चर रही बछिया को देखते हुए जॉन अभी भी नीचे धारा के किनारे लगे बड़े पेड़ों द्वारा धारण किए गए हरे रंग के विभिन्न रंगों को पहचान सकता था।

मच्छरों ने अभी तक उसे नहीं देखा था, लेकिन आगे बढ़ रही बड़ी-बड़ी काली चींटियों की एक कतार ने उसे अपने रास्ते में पा लिया। ऐसे समूहों से आगे चलने वाले जासूस जल्दी से वापस गए और कुछ गज पीछे चल रही कतार को संदेश दिया, और चींटियों ने अपना रास्ता बदलकर उससे बच निकलीं। वे कांटों की दीवार के दूसरी ओर नाले से नीचे उतर गईं। उसके बाद दो घंटे तक वह उन लाखों छोटी-छोटी चींटियों के कदमों की अस्पष्ट, घिसने वाली, हल्की-हल्की आवाज़ें सुनता रहा, जो अपने तय लक्ष्य की ओर बढ़ती रहीं।

रात दस बजे उस सन्नाटे में सन्नाटा टूट गया जब पहाड़ी के दूसरी ओर एक हिरण ने अपनी तीखी आवाज से खतरे की चेतावनी दी। वह लगातार पुकारता रहा, मानो जंगल के अन्य जीवों को खतरे का आभास दे रहा हो। क्या उस नन्हे जानवर को बाघिन की गंध आ गई थी?

पहाड़ी की चोटी से कहीं एक मस्तिष्क ज्वर से ग्रस्त पक्षी ने चौंककर चीख मारी। "मस्तिष्क ज्वर! मस्तिष्क ज्वर! मस्तिष्क ज्वर!" वह बढ़ती हुई, तीव्र होती हुई चीखों की श्रेणी में आ गया, मानो उन्माद की चरम सीमा पर पहुँच गया हो। नीचे नदी के तल से एक रात के बगुले की भयावह चीख जंगल की चेतावनी को गूंज रही थी।

जॉन ने मन ही मन सोचा, "कितनी बुरी किस्मत है! वो दरिंदा दूसरी तरफ चला गया। पता नहीं वो मलयाली उसे गोली मारेगा या नहीं। अगर उसने ऐसा किया, तो वो मुर्गे की तरह जोर से बांग देगा।"

उसके मन में यह विचार अभी आया ही था कि उसे एक लंबी, तीखी चीख सुनाई दी। यह भयावह और अमानवीय लग रही थी और ऐसा लग रहा था मानो बहुत

दूर से आ रही हो। इसकी कोई दिशा नहीं थी। चीख बस आई, कुछ देर तक गूंजी और अचानक रुक गई।

जॉन को अपनी गर्दन के पिछले हिस्से के बाल खड़े होने का एहसास हुआ।

आखिर किस चीज ने वह भयानक आवाज निकाली होगी?

क्या यह किसी जानवर की अंतिम सांस के साथ निकली चीख थी, जब बाघिन ने उसे मार डाला? यह आवाज़ किसी भी ऐसे प्राणी की आवाज़ से अलग थी जो उसने पहले कभी सुनी थी।

क्या यह इंसान था? ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था।

क्या यह अलौकिक था? वह भूतों और प्रेतों में विश्वास नहीं करता था।

तो फिर यह क्या हो सकता था?

कुछ देर बाद जॉन को लगा कि उसे हल मिल गया है। ज़ाहिर है, रात का कोई विचित्र पक्षी यहाँ भटक गया था और उसी से वह अजीब सी आवाज़ निकली थी।

इस गड़बड़ी के बाद पूरी रात कोई और आवाज नहीं सुनाई दी।

सुबह करीब 3 बजे ठंड बढ़ गई, और एक घंटे बाद भारी ओस गिरने लगी जिससे जॉन ठंड से कांपने लगा, पसीने से तरबतर हो गया और चिड़चिड़ा हो गया। नींद की कमी से उसकी आँखें जल रही थीं, और वह नीचे नदी पर जंगली मुर्गों की सुबह की बांग सुन रहा था जो भोर की सूचना दे रही थी।

उगते सूरज की पहली किरणें पेड़ों पर पड़ी ओस की बूंदों को छूते ही हरे पेड़ों की चोटियाँ नाजुक हल्के गुलाबी और फ़िरोज़ी नीले रंग में बदल गईं। एक नए दिन का जन्म हुआ।

कुछ देर बाद जॉन ने कराडी अर के तल से चिका की तीखी आवाज में 'हल्लोआ' सुना। वह अकड़कर खड़ा हुआ और चिल्लाकर उसे पास आने को कहा क्योंकि कोई खतरा नहीं था।

जब चिका और उसके साथी पहुंचे, तो जॉन ने करुंबा को अपनी राइफल सौंपने के बाद आगे बढ़कर अंगड़ाई ली। फिर उसने उन्हें पिछली रात सुनी हुई अजीब आवाज के बारे में बताया।

“वह देवी थी जो आदमखोर की गर्दन पर सवार थी,” एक कुली ने दावा किया। “वह जानवर को खतरे की चेतावनी देने के लिए जोर-जोर से चिल्ला रही थी। यही कारण था कि वह चारा के पास कभी नहीं आया।”

वे सभी पहाड़ी से नीचे उतरने लगे, आखिरी आदमी बछड़े को उसकी गर्दन में बंधी रस्सी से घसीट रहा था। वे लगभग नदी के पास पहुँच ही गए थे कि पीछे पहाड़ी पर झाड़ियों से कई आवाज़ें उनके कानों में पड़ीं। उन्हें रुकने के लिए पुकार और चीख-पुकार सुनाई दे रही थी।

वे रुक गए।

एक मिनट बाद दौड़ते हुए आदमियों की एक अनियमित कतार दिखाई दी और चिका और कुलियों ने दूसरे समूह को पहचान लिया जो रमन नायर को लाने गए थे।

दौड़ने वालों में सबसे आगे चल रहे व्यक्ति ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, "जल्दी आओ। मलयाली को आदमखोर ने मार डाला है और उसका कुछ हिस्सा खा लिया है।" जॉन के साथ मौजूद कुली उनकी ओर दौड़ने लगे। दोनों मिले और खूब बातें और इशारे होने लगे। तब तक चिका और ग्रेस्टोन भी आ चुके थे और पूरा समूह तेज़ी से उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ हादसा हुआ था।

रमन नायर का शरीर लगभग आठ फुट ऊँचे एक विशाल सपाट पत्थर के नीचे पीठ के बल पड़ा था। उसके कपड़े फटे हुए थे और छाती व एक जांघ क्षत-विक्षत थी। मृत्यु के क्षण में भी उसकी आँखें जॉन को दोषारोपण भरी निगाहों से घूर रही थीं, मानो वह पहले से ही जानता हो कि यह सब उसकी मृत्यु को छिपाने का एक छल मात्र है। भय से उसकी आँखें चौड़ी खुली हुई थीं और उसके चेहरे पर वही उदास और चिड़चिड़ी भाव-भंगिमा थी जो जीवन में हमेशा रहती थी।

जॉन ने अपनी .470 राइफल को चारों ओर ढूंढा, लेकिन उसका कोई निशान नहीं मिला। तब उसे समझ आया कि क्या हुआ होगा। जब बाघ ने उस पर हमला किया था, तब वह मलयाली ज़मीन पर नहीं बैठा था। वह उनके बगल में खड़े एक सपाट पत्थर पर लेटा हुआ था। बाघिन या बाघ, जो भी आदमखोर था, उसने उस पर वहीं हमला किया और उसे नीचे गिरा दिया। राइफल अभी भी उस पत्थर के ऊपर ही होगी।

"चिका, इस चट्टान पर चढ़ो और देखो कि मेरी राइफल वहां है या नहीं," उसने अपने सेवक से कहा।

करुम्बा बंदर की तरह ऊपर चढ़ गया। अगले ही पल उसने अपने दाहिने हाथ में जॉन का हथियार और बाएं हाथ में सात पीतल के कारतूस पकड़े। ऊपर से उसने राइफल को बट के बल नीचे जॉन को थमा दिया।

बंदूक पूरी तरह से भरी हुई थी और उसमें दो गोलियां भरी हुई थीं। जाहिर है, रमन नायर को इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आदमखोर बाघिन उसका पीछा कर रही है। उसे बस इतना ही समय मिला था कि वह चीख-पुकार मचा सके, जो जॉन ने तब सुनी थी जब बाघिन उसे मार रही थी। मलयाली के इस व्यवहार के बावजूद, जॉन को यह सोचना अच्छा लगता था कि उसकी मृत्यु अचानक और बिना दर्द के हुई थी। क्योंकि उसका अंत सचमुच बहुत भयानक था।

ग्रेस्टोन के निर्देश पर, कुलियों ने झाड़ियों से छोटे पौधे काटे और एक कच्चा अर्थी बनाई, जिस पर उन्होंने उस उग्र आंदोलनकारी के क्षत-विक्षत अवशेषों को लुढ़का दिया। फिर उनमें से चार ने अर्थी को अपने कंधों पर उठाया और ढलान से नीचे की ओर चलने लगे।

जैसे ही उन्होंने कराडी अर्र की ठंडी, मुलायम और नम रेत पर कदम रखा, ठीक नीचे एक विशाल बाघिन के पदचिह्न दिखाई दिए। उसने कुछ ही घंटे पहले, अंधेरा होने से पहले, वहीं पानी पिया था।

और वह पश्चिम की पहाड़ी से आई थी, उस जगह से जहां रमन नायर की हत्या की गई थी और उसके शरीर का कुछ हिस्सा खा लिया गया था।

अब इसमें कोई संदेह नहीं था; आदमखोर बाघिन ही थी!

अध्याय 20

रूथ ने अपना उद्देश्य प्राप्त कर लिया

रूथ सोफे पर पैर मोड़कर लेटी हुई सिगरेट पी रही थी। वह कई तरह की भावनाओं से घिरी हुई थी, और उनमें से कोई भी सुखद नहीं थी।

सात बज रहे थे और बाहर लगभग अंधेरा हो चुका था। जिस कमरे में वह बैठी थी, उसके बीचोंबीच मेज पर रखा बड़ा तेल का दीपक पहले ही जल चुका था। पंद्रह मिनट पहले चंद्र चुपचाप अंदर आया था और उसने यह काम किया था, और उतनी ही खामोशी से चला गया था। उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं था।

यह शाम का वह समय था जब रूथ सबसे ज़्यादा उदास महसूस करती थी। घंटे मानो अंतहीन लग रहे थे। जॉन दोपहर 1 बजे के कुछ ही देर बाद मलयाली और कुलियों के साथ आदमखोर भालू का इंतज़ार करने के लिए निकल गया था। उसने रूथ से कहा था कि वह सुबह से पहले न आए। उसे बंगले में अकेले रात बिताने की आशंका सता रही थी और वह बेहद घबराई हुई थी।

वह जानती थी कि उसके लिए अपने पति के लिए चिंतित होना उचित होता। लेकिन रूथ को हल्का-फुल्का एहसास था कि उसके मन में ऐसी कोई भावना नहीं थी। वह एक पत्नी के रूप में व्यवहार नहीं कर रही थी, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि वह खुद को एक पत्नी की तरह सोचने के लिए मजबूर नहीं कर पा रही थी।

क्या उसका इतना निर्दयी और स्वार्थी होना गलत था?

कुछ समय तक रूथ ने ईमानदारी से जवाब खोजने की कोशिश की। लेकिन उसके स्वार्थी स्वभाव ने उसका साथ दिया। बिलकुल नहीं; वह अपनी उदासीनता के लिए खुद को दोष नहीं दे सकती थी। यह सब जॉन की गलती थी। उसने ही उसे ऐसा बनाया था। क्या वह एक पल के लिए भी यह उम्मीद करता था कि जब वह जागीर में बाहर हो तो एक युवती घंटों तक अकेली रहे? क्या वह उम्मीद करता था कि जब वह बाघों का शिकार कर रहा हो तो वह उदास शाम के समय अकेली रहे?

काश, कोई यहाँ होता जो उससे बात करता—इस नीरस शाम को किसी के साथ बिताने में उसकी मदद करता! तब उसे इतना अकेलापन—इतना असहायता—इतनी उपेक्षा महसूस नहीं होती।

और अगर युवा डी.एस.पी. आ जाएं तो और भी अच्छा होगा। रूथ ने यूं ही कमरे के सामने वाले दरवाजे से बाहर बरामदे की ओर देखा और रात के अंधेरे में खो गई। पूरब की ओर जंगल में जंगली झींगुरों की चहचहाहट और सामने की ओर घनी कतारों में उग रही कॉफी की झाड़ियों की आवाज़ से हवा गूंज रही थी।

मानो उसकी अनकही इच्छा का जवाब देते हुए, उसने दूर से आती हुई एक कार की दोहरी हेडलाइट्स को अचानक टिमटिमाते हुए देखा, जो वाहन के करीब आने के साथ-साथ और भी चमकदार और बड़ी होती जा रही थीं।

रूथ को दिलचस्पी होने लगी और वह अंदाज़ा लगाने लगी। क्या वह सचमुच बंगले में आ रहा था? क्या वह टेड हो सकता है?

अंततः कार परिसर में प्रवेश कर बरामदे के पास पहुंची। कुछ मिनट बाद वह रुक गई और बत्तियां बुझ गईं। अंधेरा इतना घना था कि वह न तो वाहन को और न ही उसके चालक को स्पष्ट रूप से देख पाई।

दूसरी तरफ से एक आकृति निकली, उसने दरवाजा जोर से बंद किया और पूछा, "घर पर कोई है क्या?" यह टेड बेकर की आवाज थी।

खुशी से झूमते हुए रूथ सोफे से उठी और बरामदे की ओर चली गई। "हाय टेड!

मुझे खुशी है कि तुम आ गए," उसने अभिवादन किया।

"शुभ संध्या रूथ," उसने उत्तर दिया, "मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए मैं यह देखने आया कि हाल की हलचल के बाद आप और जॉन कैसे हैं।"

"जॉन घर पर नहीं है," उसने कहा, "लेकिन कृपया बैठ जाइए, मैं आपके लिए एक पेय तैयार करती हूँ।"

टेड उसके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में गया और सोफे पर बैठ गया। रूथ कोने में रखी मेज के पास गई और डबल व्हिस्की डाली।

"क्या आप एक आइस सोडा लेना चाहेंगे?" उसने पूछा।

"धन्यवाद, यह अच्छा होगा," उसने स्वीकार किया।

रूथ पीछे की ओर जाने वाले दरवाजे तक कुछ कदम चली और पुकार कर बोली, "चंद्रा! कृपया इधर आओ।"

किसी प्रेत की तरह, वह व्यक्ति कमरे में सरकते हुए प्रवेश करता हुआ प्रतीत हुआ।

जब भी वह ऐसा करता, वह थोड़ा चौंक जाती थी, और इस आदत से वह छुटकारा नहीं पा सकी थी। अब वह फिर चौंक गई। क्या यह बेचारा नौकर इस बात से वाकिफ था कि उसके चुपचाप प्रकट होने का उसकी नसों पर कितना असर पड़ रहा था, इसीलिए वह बार-बार ऐसा कर रहा था? ऐसा ही लग रहा था।

उसने खुद को बेपरवाह होकर बोलने के लिए मजबूर किया।

"क्या आप फ्रिज से एक बोतल ठंडी सोडा ला सकते हैं?"

सामान ढोने वाले ने कोई जवाब नहीं दिया। वह उतनी ही खामोशी से गायब हो गया जितनी खामोशी से वह आया था।

रूथ टेड के बगल में सोफे पर बैठ गई, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ और कह पाती, चंद्रा कमरे में वापस आया और अपने दाहिने हाथ में सोडा की तीन बोतलें लिए शराब की मेज की ओर बढ़ा। उसने वहाँ से व्हिस्की की एक पूरी बोतल उठाई, उसे दो गिलास और सोडा की तीन बोतलों के साथ एक ट्रे पर रखा, उसमें बोतल खोलने और कॉर्क कसने वाला एक उपकरण जोड़ा, और ट्रे को उठाकर उसके बगल वाली मेज पर रख दिया।

रूथ ने भौंहें चढ़ाईं। उसके इस काम का मतलब साफ था। उसने सोडा की एक बोतल मांगी थी, लेकिन वह तीन बोतलें और स्कॉच की एक पूरी बोतल ले आया था।

उसे याद आया कि जब भी वह उससे कोई भी शराब लाने को कहती, वह हर बार यही करता था। मानो उसने ये शब्द कहे हों, रूथ जानती थी कि वह मन ही मन सोच रहा था: "लो, बेशर्म औरत; जी भर के पी जाओ।"

उसका हाथ, जिसमें अभी भी डबल व्हिस्की से भरा गिलास था जो उसने टेड के लिए डाला था, अनियंत्रित गुस्से से स्पष्ट रूप से कांप रहा था।

अगले ही पल चंद्रा कमरे से गायब हो गई। रूथ ने गिलास अधीक्षक को सौंप दिया।

"कृपया सोडा की बोतल खोलें और खुद ही ले लें," उसने कहा। और फिर बोली, "मेरे लिए भी एक डबल सोडा डाल दें; बस थोड़ा सा सोडा मिला दें।"

डीएसपी ने व्हिस्की की बोतल खोली और जैसा उसने कहा था वैसा ही किया, उसने थोड़ी सी सोडा से भरा एक गिलास उसे दिया और दूसरा गिलास लगभग खुद के लिए भर लिया।

"चीयर्स!" रूथ ने कहा और अपना गिलास उठाया।

"ये लो तुम्हारी आंख में कीचड़!" उसने मजाक में जवाब दिया।

वे कुछ देर चुपचाप बैठकर अपने पेय पदार्थों की चुस्कियां लेते रहे।

"जॉन कहाँ है?" टेड ने अपनी आवाज़ को सहज और बेपरवाह दिखाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"उसने बाघ की मांद का पता लगा लिया है और उस उपद्रवी के साथ उसे गोली मारने चला गया है। उसने कहा कि वह सुबह से पहले वापस नहीं आएगा। आपका आना वाकई अच्छा हुआ। मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा था।"

बेकर सोफे पर आगे की ओर झुककर बैठ गया, बड़ी उत्सुकता से। "हे भगवान, काश मैं पहले आ गया होता," उसने जवाब दिया, "मैं जॉन से ज़िद करता कि वह मुझे भी साथ ले जाए।"

उसके विचारों की प्रवृत्ति रूथ से छिपी नहीं थी, लेकिन अगर उसे उन विचारों से कोई आपत्ति थी भी तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। मन ही मन उसने ठान लिया कि वह इस आदमी को फिर से लुभाएगी और उसके मन को उन बातों की ओर मोड़ेगी जो उसकी कहीं अधिक रुचिकर होंगी।

धीरे से वह उसके करीब आई और फुसफुसाते हुए बोली, "और आज रात मुझे बिल्कुल अकेला छोड़ दोगे?"

उसके शब्द और उनमें निहित निमंत्रण टेड को स्पष्ट रूप से समझ आ गए थे। लेकिन फिलहाल उसकी इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह सिर्फ बाघ के बारे में सोच रहा था।

"काश जॉन ने मेरी बात को गंभीरता से लिया होता और मुझे उसे एक घूंसा मारने का मौका दिया होता," उसने दोहराया। "मुझे इस आदमखोर को गोली मारने के रोमांच का आनंद मिलता।"

रूथ चुपचाप सुनती रही। फिर उसने जवाब दिया, "जॉन ने इसे बहुत गंभीरता से ले लिया है, तुम्हें पता है। खासकर वह बात कि उसे और उस भयानक आदमी को अकेले बैठकर बाघ का शिकार करना चाहिए। मुझे शक है कि वह इस मौके पर तुम्हारे साथ जाने के लिए उत्सुक होता।"

"मुझे लगता है कि आप सही कह रहे हैं," टेड ने स्वीकार किया, "स्वाभाविक रूप से वह नहीं चाहेंगे कि मैं बीच में दखल दूं और व्यवस्था को बिगाड़ दूं।"

"लेकिन क्या यह इतना ही महत्वपूर्ण है?" उसने बीच में ही टोकते हुए कहा। "जब तक बाघ मारा जाता है, तब तक क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि उसे कौन मारता है?"

"मुझे डर है कि ऐसा ही है, रूथ," उसने जवाब दिया, "देखो, जॉन अपने कुलियों को यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि उसने इस दूसरे आदमी को आदमखोर को मारने का बराबर मौका दिया था और वह ऐसा करने में असफल रहा।"

"मान लीजिए कि यह आदमी इसे मार देता है - जॉन नहीं। तब क्या होगा?" उसने पूछा।

बेकर ने कुछ सेकंड के लिए अपने होंठ सिकोड़े। "यह जॉन के लिए अच्छा नहीं होगा," उसने अंत में अपना गिलास खाली करते हुए कहा।

रूथ कुछ देर पहले ही अपना पेय समाप्त कर चुकी थी और इसी का इंतज़ार कर रही थी। "चलो, एक और पीते हैं," उसने आमंत्रित किया, "तुम भी ले लो और मैं भी।" गिलास लेने के लिए आगे झुकते हुए रूथ उसके और करीब आ गई।

उसने जल्दी से अपना पेय समाप्त किया, खाली गिलास को साइड टेबल पर रखा और कहा, "अब बाघ के बारे में और बात न करें। चलो अपने बारे में बात करते हैं।"

टेड ने उस पर एक नज़र डाली और उसकी आँखों में मोहक आकर्षण देखा।

उसने रूथ की बिना आस्तीन वाली जर्सी पर ध्यान दिया जो उस पर एकदम फिट बैठ रही थी। रूथ ने देखा कि वह उसे देख रहा है और जानबूझकर अपने पैर क्रॉस कर लिए, लापरवाही से अपनी ड्रेस ऊपर खींच ली। उसने मोज़े नहीं पहने थे और टेड ने नंगे घुटने के ऊपर उसकी जांघ की मुलायम सफेद गोलाई को उभरते हुए देखा। उसके शरीर में खून दौड़ने लगा और कनपटी की त्वचा इच्छा से फूल गई और फड़कने लगी।

उसने खुद को संभालने की कोशिश की और अपने मन में उस बूढ़े रॉबी निकोलसन का चेहरा याद किया जिसने उसे इस मोहक स्त्री से इतनी सख्ती से सावधान किया था। अब उसे पूरी तरह समझ आ गया था कि उसका पूर्व प्रमुख कितना सही था और उसके बगल में बैठी यह स्त्री कितनी नीच थी।

यह सोचकर वह रूथ की ओर मुड़ा। इससे पहले कि वह अपना आपा खो दे, उसने दोनों में बची हुई आत्मसम्मान की भावना को जगाने का फैसला किया।

"रूथ," उसने कहा, "जॉन के साथ न्याय करो। मैं उससे अभी हाल ही में मिला हूँ, लेकिन मुझे वह पसंद है। और वह तुम्हारा पति है। अगर हम फिर से अपनी भावनाओं के आगे झुक गए, तो हमारे बीच यह रिश्ता और गहरा जाएगा और हम इसे कभी रोक नहीं पाएंगे।"

"तो फिर इसे बढ़ने दो!" रूथ ने जोश से कहा और उनके गिलासों में लगभग दो इंच व्हिस्की भर दी, इस बार उसने सोडा नहीं मिलाया। "जॉन कब तक मेरी उपेक्षा झेल सकता है? क्या उसे एहसास नहीं है कि मैं एक औरत हूँ और मुझे एक ऐसे पुरुष की ज़रूरत है जो मेरे साथ रहे, मेरी देखभाल करे और मुझे प्यार से दुलार करे?"

टेड में बची हुई ईमानदारी की आखिरी निशानी ने उसे अपने पति के बचाव में जवाब देने के लिए प्रेरित किया।

"मुझे लगता है कि वह जागीर में काफी व्यस्त होंगे," उन्होंने जवाब दिया। "यह बहुत बड़ा इलाका है और इसमें बहुत निगरानी की जरूरत होती है। और अब तो इस आदमखोर और उन लानत कांग्रेसी लोगों की वजह से हालात और भी बदतर हो गए हैं, उनके पास तो पहले से ही बहुत काम होगा। क्यों न आप थोड़ा सब्र करके उन्हें आराम करने दें?"

रूथ ने गुस्से से उसकी ओर देखा। एक पल के लिए उसका मन हुआ कि वह उसे जवाब दे दे। फिर उसके भीतर की मोहक शक्ति ने उसे आश्वस्त किया कि यह आदमी कमजोर पड़ रहा है। उसने जो शब्द कहे थे, वे उसे प्रभावित करने के लिए

नहीं, बल्कि अपनी कमजोर होती प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने के लिए कहे थे। उसने ठान लिया कि वह अपनी कला का भरपूर इस्तेमाल करके उसे जीत लेगी—उस पर अपना अधिकार जमा लेगी—उसे अपना गुलाम बना लेगी।

"बेचारे टेड," उसने स्नेहपूर्वक उत्तर दिया, "मैं जॉन के प्रति वफादार रहने के तुम्हारे प्रयासों की सराहना करती हूँ। लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि तुम भी मेरी तरह इंसान हो; कि तुम भी मुझे चाहते हो, जैसे मैं तुम्हें चाहती हूँ; और इस प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकते।"

उसने निर्लज्जता से अपनी पीली जर्सी की गर्दन पर लगी ज़िप को सरका दिया, जो उस पर बहुत कसकर फिट थी। ज़िप खुलते ही पता चला कि उसने ब्रा के अलावा कुछ नहीं पहना था, जो अब साफ दिखाई दे रही थी और उसके स्तनों को जकड़े हुए थी, जो उसकी बढ़ती कामुकता के कारण स्पष्ट रूप से ऊपर-नीचे हो रहे थे।

"चलो एक और ड्रिंक लेते हैं, और इस बार एक बहुत बड़ी वाली," उसने आमंत्रित किया।

बिना किसी क्रिया के टेड ने लगभग आधा भरा हुआ व्हिस्की का गिलास उठाया और उसे गटक लिया। उसने रूथ को भी ऐसा ही करते देखा। जैसे ही उसने रूथ की ओर देखा, उसकी आँखें धुंधली हो गईं और उन पर नशे का भाव आ गया। उसके होंठ नशे में धुत्त होकर तिरस्कार भरी मुस्कान में अजीब तरह से मुड़ गए। उसने अपने दाहिने हाथ से अपनी ब्रा को नीचे से पकड़ा और ज़ोर से ऊपर की ओर झटका दिया। पहले उसका बायाँ स्तन, फिर दायाँ स्तन, दोनों उसके सामने नग्न अवस्था में थे।

टेड ने अपना बचा हुआ पेय एक ही घूंट में खत्म कर दिया, तेज़ शराब से उसकी सांसें अटक गईं। उसकी निगाहें गुलाबी मांस के उन उभरे हुए हिस्सों पर टिक गईं, जिनमें से प्रत्येक पर बैंगनी रंग का निप्पल और उभरा हुआ स्तन था, जो हल्के स्ट्रॉबेरी लाल रंग का था। बिना देखे, खाली गिलास लिए उसका बायां हाथ साइड टेबल की ओर बढ़ा, उसे पाया और गिलास नीचे रख दिया। उसकी आंखें बढ़ती हुई वासना से लाल हो गईं। गहरी सांस लेते हुए, वह आगे झुका और अपने हाथ फैलाकर उसके मोहक शरीर को थामने लगा। समर्पण की आह भरते हुए रूथ चौड़े सोफे की मुलायम सतह पर उसके नीचे सरक गई।

अगले आधे घंटे तक वे वासना के उन्माद में डूबे रहे, जिसे पी गई व्हिस्की ने और भी भड़का दिया था। सही-गलत की परवाह किए बिना, टेड ने खुद को उस कामुक

महिला को संतुष्ट करने के काम में लगा दिया, जो उसके नीचे हांफती हुई लेटी थी और लगातार और अधिक की मांग कर रही थी। अपनी वासनाओं के चरम पर पहुंचकर, वह खुद को और अपने आसपास के माहौल को पूरी तरह से भूल गया, और उसे वह सब कुछ देने के लिए दृढ़ संकल्पित था जिसकी वह उससे अपेक्षा करती थी।

और इसलिए, वे दोनों उस व्यक्ति के काले चेहरे से पूरी तरह अनजान थे जो खिड़की पर लटके कढ़ाईदार मलमल के पर्दे के पीछे से उन्हें देख रहा था।

उस चेहरे पर घृणा, तिरस्कार और आश्चर्य के भाव थे।

फिर उसके चेहरे पर कामुक इच्छा का भाव आ गया जब उसने अपने सामने घटित हो रहे दृश्य के विवरण और सोफे पर एक-दूसरे से लिपटे हुए वासना से भरे पुरुष और महिला की कामुक और बेकाबू हरकतों को गौर से देखा।

वह आदमी सोच रहा था। क्या यही पति के प्रति पत्नी की वफादारी है? काश मैं इस आदमी की जगह होता और इस गोरी औरत को पूरी तरह से अपने पास रख पाता?

वह उन्हें तब तक देखता रहा जब तक कि उनकी समाप्त हो चुकी ऊर्जा से उत्पन्न अत्यधिक थकावट के कारण वे अंततः निष्क्रिय और निर्जीव अवस्था में नहीं आ गए।

समय बीतने का एहसास सबसे पहले टेड को हुआ। पुलिसवाला सोफे पर बैठ गया और अपनी खाकी कमीज़ को सीधा करने लगा, तभी वह आदमी धीरे-धीरे गायब हो गया। उसने दीवार पर लगी घड़ी पर नज़र डाली। उसमें नौ बजकर पाँच मिनट हो रहे थे। फिर उसने रूथ की तरफ देखा। वह गहरी नींद में सो रही थी, मानो किसी नशे में धुत्त और संतुष्ट महिला हो। टेड को लगा कि उसे जगाना जायज़ नहीं था।

वह लड़खड़ाते हुए उठा, थोड़ा डगमगाया और फिर बरामदे से होते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरकर पोर्टिको और अपनी ब्यूक कार तक पहुंचा।

उसने इग्निशन से छेड़छाड़ की और सेल्फ-स्टार्टर पर पैर रख दिया। इंजन के स्टार्ट होते ही एक कर्कश आवाज आई, इंजन लड़खड़ाया और फिर चालू हो गया। एक मिनट बाद उसकी कार निलंबूर की ओर सड़क पर चल पड़ी।

रूथ अभी भी सोफे पर उसी अस्त-व्यस्त हालत में सो रही थी, जिस हालत में टेड उसे छोड़कर गया था। वह आदमी उसे निहार रहा था और उसके मन में फिर से वासना जागृत हो रही थी। लेकिन उसके मन की घृणा ने उसकी शारीरिक इच्छा पर

काबू पा लिया।

अध्याय 21

चिका के पास एक योजना है

उस सुबह करीब दस बज रहे थे जब जॉन अपने बंगले पर वापस लौटा। उसने रमन नायर के शव को मज़दूरों के अड्डे तक ले जाने का निर्देश दिया था और निलंबूर पुलिस को तुरंत मलयाली की मृत्यु की सूचना भेजने का इंतज़ाम किया था। पुलिस इस मामले की जांच करना चाहेगी।

जब वह सीढ़ियाँ चढ़कर आया, तब रूथ सामने वाले बरामदे में बेंत की कुर्सियों में से एक पर बैठी थी। ग्रेस्टोन उसके पास गया और उसके सिर के ऊपर चुंबन किया। फिर अपनी दोनों राइफलों को एक कोने में टिकाकर, वह उसके बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया और चंद्रा को बुलाया।

"कृपया मेरे लिए एक कड़क कॉफी और कुछ बिस्कुट ले आइए। मुझे बहुत भूख लगी है।"

रूथ की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "कल रात हमारा प्रयास एक त्रासदी में समाप्त हुआ, प्रिय।" और फिर उसने उसे बताया कि क्या हुआ था।

रूथ आश्चर्य से आगे झुकी और बोली, "क्या आपका सचमुच यही मतलब है कि सूअर को मार दिया गया है?"

"बिल्कुल सही," जॉन ने जवाब दिया; फिर जोड़ा, "किस्मत का कितना अजीब खेल है, है ना?"

"वाह, नरभक्षी!" रूथ ने स्पष्ट प्रसन्नता के साथ कहा, "आखिरकार तुमने कुछ वाकई उपयोगी काम किया है।"

"आपकी कॉफी और बिस्कुट, साहब।"

चंद्र हमेशा की तरह चुपचाप वापस आया और अपने मालिक के बगल में विनम्रतापूर्वक खड़ा हो गया, उसने नाश्ते से भरी एक ट्रे को प्राथमिकता दी।

जॉन ने धन्यवाद देने के लिए ऊपर देखा। सामान ले जाने वाले के चेहरे पर शैतानी भाव थे और वह रूथ को घृणा से घूर रहा था। ग्रेस्टोन ने जल्दी से अपनी पत्नी की ओर देखा। लेकिन वह खिड़की से बाहर देख रही थी और उसने कुछ भी नहीं देखा था।

जॉन ने कुछ अकड़कर कहा, "धन्यवाद। कृपया ट्रे यहीं मेज पर रख दीजिए। जी

हाँ, बस।"

चंद्र के चेहरे से घृणा का भाव गायब हो गया। अब उसके चेहरे पर वही शांत भाव था। उसने अपना सिर थोड़ा झुकाया, मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया।

हे भगवान! उसने रूथ की बातें सुन लीं, ग्रेस्टोन ने मन ही मन सोचा। धीमी आवाज़ में उसने अपनी पत्नी से कहा, "मुझे लगता है चंद्र ने तुम्हारी बातें सुन लीं। अभी उसके चेहरे पर जानलेवा भाव थे।"

"किसे परवाह है," उसने तिरस्कारपूर्वक उत्तर दिया, और फिर बोली, "काश तुम उस आदमी से छुटकारा पा लेते, जॉन। वह मुझे डरा देता है, जिस तरह से वह चुपके से घूमता है, मानो कोई खूंखार भूत हो।"

उनकी बातचीत चिका के आने से बाधित हो गई, जो बरामदे की सीढ़ियों के नीचे अलग तरह से खड़ा था। जॉन ने उसे देखा, उठा और उसकी ओर चल पड़ा।

"क्या बात है, चिका?" उसने पूछा।

"कल सुबह जब मैंने अकेले बाघ की तलाश करने की पेशकश की," करुम्बा ने उत्तर दिया, "महामहिम ने अपने दयालु हृदय से मेरे साथ चलने पर जोर दिया।"

"खैर, जो हो गया सो हो गया। निस्संदेह उस बूढ़े बड़बोले का मरना तय था। क्या डोराई मुझे दो दिन की छुट्टी दे सकती हैं ताकि मैं इस बाघिन को मारने की अपनी योजना को अंजाम दे सकूँ? लेकिन मैं यह काम अकेले ही कर सकता हूँ, डोराई के साथ नहीं।"

"यह योजना क्या है?" ग्रेस्टोन ने पूछा।

करुम्बा कुछ देर तक झिझका। फिर उसने कहा, "महाराज, शायद उसके पास डायनामाइट की छड़ें हों जिनका इस्तेमाल वह जागीर में चट्टानों को उड़ाने के लिए करता है? मैं अभी तब तक खोजूंगा जब तक मुझे वह मांद न मिल जाए जिसमें यह आदमखोर रहता है। फिर आप दिन दहाड़े, जब वह अंदर सो रही हो, तब मांद के प्रवेश द्वार को इस तरह उड़ा दें कि चट्टानें गिर जाएं और वह जिंदा दफन हो जाए।"

"लेकिन इसका क्लोन बनाने से पहले, जैसा कि मैंने अभी कहा, उसके ठिकाने का पता लगाना होगा। यह एक ऐसा काम है जिसे केवल मैं, अकेले ही पीछा करते हुए, पूरा कर सकता हूँ।"

यह योजना मूर्खतापूर्ण और असंभव लग रही थी, और जॉन ने इस बात को स्पष्ट शब्दों में कहा। वह इस छोटे से जंगली आदमी को अकेले, और वह भी निहत्थे,

आदमखोर के ठिकाने की तलाश में जाने के भयानक जोखिम में डालने की अनुमति देने को उचित नहीं समझता था।

"चिका, मुझे लगता है तुम्हारा विचार बेतुका है। पहली बात तो यह है कि बाघिन तुम्हारे पास पहुँचने से पहले ही तुम्हें मार डालेगी। कम से कम तुम मेरी भारी राइफल और कुछ कारतूस अपने साथ ले जाओ तो बेहतर होगा।"

चिका ने सिर हिलाया। "नहीं, डोराई, यह बेकार होगा। मुझे हथियार चलाना नहीं आता।"

"आप कब से शुरू करने का इरादा रखते हैं?" जॉन ने पूछा।

"दोपहर के समय, जैसे ही मैं अपना भोजन कर लूँगा," करुम्बा ने उत्तर दिया।

अगला सवाल था, "और आप कब तक लौटने की उम्मीद करते हैं?"

चिका कुछ मिनटों तक चुप रहा। फिर वह ज़ोर से मुस्कुराया। "अगर मैं कल सूर्यास्त तक आपके सामने उपस्थित नहीं हुआ, तो आप मेरी चिंता न करें। आप बाघिन को मारने और अपने लिए एक और शिकारी लाने की व्यवस्था कर सकते हैं।"

जॉन ने फैसला किया कि वह बिल्कुल निर्भीक, घूरता हुआ और पागलों जैसी हरकतें कर रहा था।

"अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारी जान या यों कहें कि तुम्हारी मौत के लिए मैं ही जिम्मेदार होऊंगा," ग्रेस्टोन ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"नहीं, स्वामी जी, आप ऐसा नहीं करेंगे," उस छोटे आदमी ने तुरंत कहा, "क्योंकि मैं अभी इसी क्षण आपकी सेवा छोड़ रहा हूँ। लेकिन अगर आप मुझे वापस नौकरी पर रख लें और अगर मैं खुद वापस आने में भाग्यशाली रहा, तो मैं कल शाम को पुनः नौकरी के लिए आवेदन करूँगा।"

इन शब्दों के साथ, मानो बातचीत समाप्त करने के लिए, उसने जल्दी से 'सलाम' किया और चला गया।

एक घंटे बाद, जॉन ने अपने ड्रेसिंग रूम की खिड़की से उस छोटे से व्यक्ति को जंगल की ओर जाते देखा। उसके पास एकमात्र हथियार उसकी कुल्हाड़ी थी।

अध्याय 22

समय के साथ एक दौड़

दोपहर का समय बीत चुका था और नीले-भूरे आकाश में कुछ नन्हे बादल तैर रहे थे जब चिका कराडी अर्र को पार करते हुए उस सपाट चट्टान की ओर जा रहा था,

जिसके शिखर पर बाघिन ने मलयाली पर हमला किया था।

अब उसे पता था कि उसकी जान उसके हाथों में है। सूरज की तेज़ किरणों से ज़मीन सूखकर सख्त हो गई थी और चट्टानों के बीच घास के गुच्छे बिल्कुल सूखे थे। पिछले चार-पाँच महीनों से बारिश नहीं हुई थी और उस पथरीले इलाके में निशान ढूंढने की कोई उम्मीद नहीं थी। उसे बाघिन की मांद तक पहुँचने के लिए दूसरे तरीके और दूसरे सुरागों का सहारा लेना होगा।

चट्टान की छाया में दुबककर, उसकी पैनी निगाहें पहाड़ी की चोटी पर स्थित उस चट्टान को निहार रही थीं, जो लगभग तीस फीट नीचे अचानक ढलान पर गिरती थी। वहाँ कोई गुफा नज़र नहीं आ रही थी। जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से चट्टानी टीलों के बीच-बीच में बड़े-बड़े पत्थर चट्टान की तलहटी तक ऊपर की ओर फैले हुए थे। यह लगभग निश्चित था कि वहाँ कोई बाघ नहीं रहता होगा। एक तो वहाँ हरियाली नहीं थी। दूसरा, वहाँ बहुत ज़्यादा गर्मी थी। वह जानता था कि बाघ ठंडी और छायादार जगहें पसंद करते हैं। अपने छोटे चचेरे भाई, पैंथर के विपरीत, वे गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकते।

इसलिए, अगर कोई गुफा थी भी, तो वह निश्चित रूप से इस तरफ या दोनों किनारों पर नहीं थी, जो उसे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे और दोनों ही तरफ वनस्पति से पूरी तरह रहित थे। शायद वह किसी प्राकृतिक आवरण के पास दूसरी तरफ थी। या शायद वे सब गलत थे और बाघिन इस पहाड़ी पर रहती ही नहीं थी।

चुपके से, चिका ऊपर चढ़ने लगा, अत्यंत सावधानी बरतते हुए कि उसके नंगे पैर किसी भी पत्थर को न हिला दें जिससे उसके आने का पता चल सके। हर गर्म पत्थर को छूते ही उसके तलवों में असहनीय जलन होने लगी।

कुछ देर बाद वह चट्टान के तल पर खड़ा था। पीछे मुड़कर देखने पर उसे वह सपाट चट्टान साफ दिखाई दे रही थी जिस पर रमन नायर अपनी हत्या के समय लेटा हुआ था, और उसके नीचे फैली झाड़ियों का जंगल भी, जो पहाड़ी की तलहटी से होकर बहने वाली कराडी नदी तक फैला हुआ था।

अब यह बात स्पष्ट हो गई कि मलयाली पर हमला क्यों हुआ था, और चिका ने जॉन को एक चट्टान के नीचे बैठने की सलाह देने पर खुद को बधाई दी। क्योंकि इतनी ऊंचाई पर खड़ा कोई भी बाघ नीचे चट्टान पर लेटे रमन नायर को साफ देख सकता था।

चिका उस पहाड़ी की तलहटी के साथ-साथ चलती रही जो धीरे-धीरे उत्तर की ओर मुड़ती थी।

अचानक उसके सामने एक भूरे रंग की आकृति उछली और बड़ी आसानी से पहाड़ी की ओर दौड़ पड़ी। वह सिर्फ एक लंगूर बंदर था, लेकिन उसने उसे बुरी तरह चौंका दिया।

वह सावधानी से आगे बढ़ा और उसे और भी लंगूर मिले। उनमें से कुछ उसके आने पर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए जबकि अन्य नीचे की ओर दौड़ पड़े।

चिका को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। उनकी अचानक हरकतों से काफी शोर हो रहा था और इससे बाघिन जाग सकती थी और घबरा सकती थी। कहीं वह उनके पीछे बाहर न आ जाए और उसे देख न ले!

कुछ हिचकिचाहट के साथ वह थोड़ा आगे बढ़ा। एक और लंगूर एक बड़े पत्थर के पीछे से निकला और चट्टान के किनारे-किनारे उससे दूर भागने लगा। लेकिन यह अचानक रुक गया, एक पल के लिए ठहर गया, और लगभग उसके ऊपर वापस उछलने के लिए मुड़ा। फिर उसने अपना रास्ता बदल लिया और ढलान से नीचे की ओर छलांग लगा दी।

चिका भी रुक गई। बंदर ने इतना अजीब व्यवहार क्यों किया था?

क्या बाघिन कहीं आगे छिपी हुई थी?

डर से कांपता हुआ छोटा करुंबा वहीं स्थिर खड़ा रहा, जबकि ये प्रश्न और उनके संभावित उत्तर उसके दिमाग में तेज़ी से कौंध रहे थे। उसके बाद, वह धीरे-धीरे दबे पांव आगे बढ़ा।

वह उस स्थान पर पहुंचा जहां लंगूर अचानक रुक गया था।

आगे ही कोने में चट्टान के तलहटी में एक खुला रास्ता था।

यह एक गुफा का प्रवेश द्वार था।

इसमें कोई शक नहीं कि बाघिन अंदर थी, और इसी वजह से बंदर घबरा गया था।

चिका जल्दी से पीछे हटकर उस भयावह गुफा से अपनी नज़रें हटा लीं। उसने नीचे की ओर नज़र डाली ताकि उसे कुछ ऐसे निशान दिखें जिनसे वह नीचे से गुफा का पता लगा सके। छोटी पहाड़ी की तलहटी से करादी नदी बह रही थी, जिसके दोनों किनारों पर पेड़ों की दोहरी कतारें थीं। इनमें से एक प्रमुख पेड़ उसकी नज़र के

नज़दीक किनारे पर था, जिसकी सूखी डालियाँ आसमान की ओर फैली हुई थीं और उसे आसानी से पहचान में आ रही थीं। वह जानता था कि अगर वह उस सूखे पेड़ की तलहटी तक जाकर ऊपर की ओर देखेगा, तो उसे वहाँ से गुफा दिखाई देगी।

सूरज की गर्मी से चट्टानें और पत्थर अभी भी गर्म थे, जब चिका चुपचाप अपने कदमों के निशान पर लौटता हुआ एक से दूसरे पर कूदता गया। अंत में वह नदी की ठंडी, नम रेत पर पहुँचा, और उसके नंगे पैरों के छालों से भरे तलवों को इससे बहुत आराम मिला।

उसकी सावधानीपूर्वक की गई खोज में अनुमान से अधिक समय लग गया था, क्योंकि वह जल्दी नहीं लौट रहा था। अब शाम ढल चुकी थी और सूरज पश्चिमी क्षितिज के करीब पहुँच रहा था। एक घंटे में बाघिन शाम की सैर पर निकल आएगी।

वह झट से मुड़ा और सूखे पेड़ की तलाश में नदी के विपरीत दिशा में चलने लगा। लगभग एक फर्लांग चलने के बाद उसे वह पेड़ मिल गया, जो पश्चिमी किनारे पर ठीक उसी तरह उग रहा था जैसा उसने पहाड़ी की चोटी से देखा था।

चिका पेड़ की तलहटी तक गया और पहाड़ी की ओर देखा। वहाँ, चट्टान के नीचे, उसे गुफा का प्रवेश द्वार स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। अंततः वह सफल हो गया था। उसने आदमखोर के ठिकाने का पता लगा लिया था।

करुम्बा ने देखा कि वह नदी के उस हिस्से में पहुँच गया था जहाँ वह और उसका गुरु दो दिन पहले पटरियों की खोज करते समय नहीं गए थे। वह हिस्सा नदी के और नीचे की ओर था। जहाँ वह अब खड़ा था, वहाँ से बंगले तक लौटने के लिए उसे जंगल से होते हुए तिरछी दिशा में चलना होगा ताकि वह उस पगडंडी तक पहुँच सके जिस पर वे पहली बार चले थे, जो बंगले से सीधे कराडी अर्र तक जाती थी।

चिका लगभग आधा मील का रास्ता तय कर चुका था कि उसे आगे से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। वह आवाज़ लगाने ही वाला था कि तभी उसके मन में एक विचार आया: ये लोग कौन हो सकते हैं जो आदमखोर भालू के खुलेआम घूमते रहने और सूर्यास्त के समय जंगल में रहने की हिम्मत कर रहे हैं? इस विचार ने उसे और छानबीन करने का निश्चय दिलाया और वह चुपचाप उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ से आवाज़ें आ रही थीं।

जंगल में एक खुले स्थान पर पहुँचकर वह छोटा आदमी रुक गया। धुंधली रोशनी में, उसे एक छोटे से घेरे में बैठे लगभग आधा दर्जन आदमियों की आकृतियाँ दिखाई

दीं। वे मलयालम में बात कर रहे थे और वह उनकी बातें स्पष्ट रूप से सुन सकता था।

उनमें से दो व्यक्ति जमीन पर ढेर की गई सूखी शाखाओं के एक बड़े गट्ठे से आग जलाने की प्रक्रिया में व्यस्त थे।

उनमें से एक कह रहा था, "उस मूर्ख ने खुद को बाघ के हाथों मरवा लिया। गोरे आदमी के साथ मिलकर गोली चलाने की चुनौती स्वीकार करना कितना बड़ा कारनामा है!"

"लेकिन क्या वह कहानी सच है?" दूसरे ने अविश्वास से पूछा।

“मुझे यह बात एक कुली से पता चली,” पहले वक्ता ने आगे कहा। “बागान मालिक को मारने और उसके बंगले को जलाने के बजाय, रमन नायर ने गोरे आदमी को कुलियों को उनके इरादे से रोकने के लिए राजी कर लिया और उसे यह चुनौती देने की अनुमति दे दी। इसलिए, वह मूर्ख चुनौती स्वीकार करने से खुद को रोक नहीं पाया, क्योंकि इन मूर्ख कुलियों को इसमें बहुत मज़ा आ रहा था। मुझे लगता है कि उनके मालिक के कहने पर उन्होंने उस पर दबाव डाला कि वह मान जाए।”

"चाको, हम उसकी मूर्खता के बारे में बात करके समय क्यों बर्बाद करें?" तीसरे वक्ता ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "वैसे भी, इस बाघ-ग्रस्त जगह पर रहकर हम खुद को खतरे में डाल रहे हैं। हम वन विभाग की इमारतों को जलाने के लिए कब निकलेंगे?" बोलते हुए उसने घबराकर जंगल की ओर देखा।

"शेर से मत डरो," चाको नाम से पुकारे जाने वाले व्यक्ति ने आश्वासन दिया, "जब तक हम छह लोग साथ रहेंगे और आग जलती रहेगी, वह हम पर हमला करने की हिम्मत नहीं करेगा। हम ठीक आधी रात को यहाँ से निकलेंगे। पापाचेन बागान मालिक के बंगले से एक मील आगे, ठीक रात 1 बजे हमें अपनी गाड़ी में ले जाएगा। हम लगभग 1:30 बजे वन चौकी पहुँच जाएँगे। गार्डों में से एक, कुंजी नायर, गाड़ी से मिलेगा और हमें चंदन के भंडार तक ले जाएगा, जहाँ हम आग लगा देंगे।"

"क्या पापाचेन अपने साथ पेट्रोल ला रहा है?" एक नई आवाज ने पूछा।

"हाँ; आठ गैलन", चाको ने उत्तर दिया और आगे कहा, "दो जेरी-कैन में"।

चिका को लगा कि उसने काफी कुछ सुन लिया है। सावधानी से वह अपने छिपने की जगह से बाहर निकला और जल्दी से उस रास्ते की ओर भागा जो उसे बंगले तक ले जाता ताकि वह अपने मालिक को सूचना दे सके।

जॉन और रूथ जल्दी खाना खाने के लिए बैठने ही वाले थे कि तभी करुम्बा

अचानक प्रकट हो गया।

“दोराई,” उसने तमिल में धीमी आवाज़ में पुकारा, “मुझे आपसे अकेले में मिलने की बहुत तीव्र इच्छा है। यह अत्यंत आवश्यक है।”

उनकी आवाज में निहित आदेशात्मक लहजे को सुनकर ग्रेस्टोन ने कहा, "एक मिनट के लिए मुझे माफ करना, रूथ।"

वह बरामदे की सीढ़ियों से नीचे उतरा। चिका ने बड़ी गंभीरता से उसे बगीचे में बुलाया। वहाँ उसने बाघिन की मांद मिलने और षड्यंत्रकारियों के सामने आने तथा उनकी बातचीत सुनने की कहानी सुनाई।

ग्रेस्टोन जानता था कि चाको और पापाचेन वही दो आदमी थे जिन्होंने जून को बंदी बनाया था और ऊपरपेट में दंगा भड़काया था। उसने आगे सोचा। बूढ़ा गार्डनर उन्हें रोकने की कोशिश करेगा। अगर ऐसा हुआ, तो वे उसे और जून को भी मारने में ज़रा भी संकोच नहीं करेंगे!

जून गार्डनर का ख्याल आते ही जॉन ग्रेस्टोन हरकत में आ गया। उसने अपनी कलाई घड़ी पर नज़र डाली। उसमें शाम के 7:45 बज रहे थे।

जॉन जल्दी से भोजन कक्ष में लौटा और वहाँ उसने रूथ को चिका की सारी बातें दोहराईं। फिर उसने आगे कहा, "मैं जीप से मिस्टर गार्डनर को चेतावनी देने और निलंबूर से पुलिस को बुलाने जा रहा हूँ। रूथ, तुम भी मेरे साथ चलो। यहाँ अकेले रहना तुम्हारे लिए सुरक्षित नहीं होगा।"

रूथ और चिका उसके पीछे-पीछे गैराज तक गईं। थोड़ी ही देर में जीप अंधेरे में तेज़ी से आगे बढ़ गई, और दूरी बढ़ने के साथ-साथ पीछे छूटती लाल बत्ती धुंधली होती चली गई।

चंद्रा बरामदे से चुपचाप उन्हें देखता रहा।

जितनी तेज़ी से हो सकता था, गाड़ी चलाते हुए जॉन को गार्डनर के घर तक जाने वाले 10 मील के ऊबड़-खाबड़ रास्ते को तय करने में बीस मिनट से ज़्यादा का समय लग गया। वह और तेज़ जाना चाहता था, लेकिन जीप बुरी तरह से हिल रही थी।

पिता और बेटी खाना खा रहे थे तभी उसने गाड़ी को उनके बरामदे के सामने रोक दिया।

रूथ से "कृपया यहीं प्रतीक्षा करें" कहते हुए, वह बिना किसी औपचारिकता के

उनके बीच घुस गया।

रेंजर ने हैरानी से ऊपर देखा जबकि जून ने मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया। लेकिन जॉन ने इस पर ध्यान नहीं दिया। तेज़ी से बोलते हुए, उसने उन्हें वह सब बताया जो चिका ने सुना था। फिर आगे कहा, "और कृपया मेरे साथ आइए, मिस गार्डनर। आपकी उपस्थिति यहाँ स्थिति को और बिगाड़ देगी।"

नेविल गार्डनर को सब कुछ अच्छी तरह समझ आ गया था। लेकिन जून जिद्दी थी।

उसने दृढ़ता से कहा, "मेरी जगह पापा के बगल में है, मैं उन्हें नहीं छोड़ूंगी।"

"जाओ जुनी; कृपया जाओ," उसके पिता ने विनती की।

“जी हां, आइए मिस गार्डनर। आपका यहां रहना बुद्धिमानी नहीं है। चाको और पापाचेन नाम के उन दोनों बदमाशों को पता चल जाएगा कि आपने ही पुलिस को सूचना दी है। वे आपको मार भी सकते हैं”, ग्रेस्टोन ने बीच में कहा।

बूढ़े आदमी ने फिर कोशिश की, "जूनी; मैं तुमसे विनती करता हूँ। जाओ!"

जून अपनी बात पर अड़ी रही। उसने कुछ ठंडेपन से जॉन की ओर देखा। फिर उसकी नज़र नरम पड़ गई। शांत लेकिन दृढ़ स्वर में उसने उससे कहा,

"मैं आपके प्रस्ताव की सराहना करती हूँ, लेकिन क्या मैं पापा को छोड़ सकती हूँ? अगर उन्हें कुछ हो गया तो क्या मैं कभी खुद को माफ कर पाऊँगी? आपको यह नहीं भूलना चाहिए," और फिर वह शांत भाव से मुस्कुराई, "हम दोनों मिलकर दो बंदूकें बनाते हैं। अकेले, वह सिर्फ एक बंदूक बनाते हैं।"

जॉन को एहसास हुआ कि इस तरह की बहस का कोई जवाब नहीं था। मन ही मन उसने सोचा कि काश उसकी पत्नी वहाँ मौजूद होती और यह सब सुन पाती, और वह मदद के लिए जीप की ओर तेज़ी से भागा।

ठीक रात के 8:45 बज रहे थे।

नीलांबुर जाने वाला सीधा रास्ता 12 मील आगे जाकर मुख्य सड़क से मिल जाता था, जिससे कुल दूरी 50 मील हो जाती थी। पहले बारह मील के खराब रास्ते के कारण जॉन को अपनी मंजिल तक पहुंचने में रात के 10:45 बज गए और टेड से मिलने में 10:50 बज गए।

एक बार फिर, स्टील के हेलमेट पहने और पूरी तरह से हथियारों से लैस एक दर्जन पुलिसकर्मी उस ब्लैक मारिया में सवार हो गए जो हमेशा तैयार रखी जाती थी,

और ठीक रात 11:05 बजे, पुलिस दल, जिसका नेतृत्व जीप कर रहे जॉन, उनके बगल में टेड और पीछे रूथ और चिका कर रहे थे, ने वापसी की यात्रा शुरू की।

चिका के अनुसार, चाको और उसके पाँच साथियों को जॉन के बंगले से एक मील आगे रेंजर के क्वार्टर की ओर जाने वाले रास्ते पर, सुबह ठीक 10 बजे कार में पेट्रोल लेकर पापाचेन से मिलना था। इससे आग लगाने वालों को केवल 9 मील की दूरी तय करनी थी, ताकि वे चौकी पहुँचकर लगभग 1:30 बजे चंदन के भंडार में आग लगा सकें।

जॉन को जीप में 50 मील की दूरी तय करने में दो घंटे लगे थे। क्या अधिक चौड़ी और अधिक भार से लदी मारिया उन दो हत्यारों और उनके बदमाश साथियों द्वारा हमला किए जाने से पहले बचे हुए 2 घंटे 25 मिनट में यह यात्रा पूरी कर पाएगी?

वन चौकी तक पहुंचने की दौड़ बेहद करीबी होगी। जॉन जानता था कि बदमाशों के आने से पहले वे चौकी तक नहीं पहुंच पाएंगे। लेकिन क्या वे आगजनी और हत्या, या इससे भी बदतर किसी घटना को होने से रोकने के लिए समय पर पहुंच पाएंगे?

उसने एक्सीलरेटर पर और जोर से पैर दबाया और जीप उसकी इस हरकत के चलते बेतहाशा उछल पड़ी। स्पीडोमीटर पर 50 मील प्रति घंटा की रफ्तार दिखाई दे रही थी और पीछे दिख रही ब्लैक मारिया की बत्तियाँ दूर होती नज़र आने लगीं।

जॉन जानता था कि अब तेज गति से गाड़ी चलाना जरूरी होगा ताकि सड़क के उस आखिरी 12 मील के खराब हिस्से पर उनकी बेहद धीमी प्रगति की भरपाई की जा सके, जहां वे मुश्किल से 10 मील प्रति घंटे की औसत गति से चल पा रहे थे, और इसलिए उसने अपना पूरा ध्यान अपने सामने मौजूद काम पर केंद्रित कर लिया।

अध्याय 23

आधी रात का हमला

जॉन ग्रेस्टोन के चले जाने के बाद, गार्डनर और जून ने संभावित परिस्थितियों का सामना करने के लिए खुद को तैयार कर लिया।

वन रक्षकों में से एक पहले ही भाग चुका था। अब केवल वनपाल और चार अन्य ही बचे थे। वनपाल एक तमिलियन था। वह अपेक्षाकृत वृद्ध, सौम्य स्वभाव का और सेवानिवृत्ति की ओर अग्रसर था।

स्वयं नेविल गार्डनर का अपने अधीनस्थों पर कोई खास प्रभाव नहीं था। चार

गार्डों में से एक मुस्लिम, दूसरा भारतीय ईसाई और शेष दो कनारा के रहने वाले थे, जो कोंकण मूल के थे।

पहला हमला चंदन के भंडारगृह पर किया जाना था, जो लगभग साठ फुट चौकोर एक विशाल गोदाम जैसी संरचना थी, जिसकी छत गोल टाइलों की और फर्श दीमकों से बचाव के लिए पत्थर का बना था। आसपास के जंगलों से काटा गया चंदन सरकार के लिए बहुत मूल्यवान था, क्योंकि इसका उपयोग एक विशेष तेल निकालने के लिए किया जाता था, जो कई प्रकार के शौचालय उत्पादों का आधार बनता था। यह कहना गलत नहीं होगा कि उस समय भंडार में रखी लकड़ी का मूल्य लगभग एक लाख रुपये था!

इसीलिए विद्रोही इसे जलाना चाहते थे, उनका उद्देश्य सरकार को नुकसान पहुंचाना था, और नेविल गार्डनर और उनकी बेटी ने किसी भी कीमत पर इस विनाश को रोकने का निश्चय किया।

रेंज ऑफिसर ने फॉरेस्टर और चारों गार्डों को अपने बरामदे में बुलाया और सीधे-सीधे पूछा कि क्या वे चंदन के जंगल को नष्ट होने से बचाने में उनकी मदद करने को तैयार हैं। पहले तो कोई जवाब नहीं आया क्योंकि पाँचों लोग चुपचाप चंदन को बचाने के फायदे और नुकसान पर विचार कर रहे थे। उनके मन में बस यही सवाल था। देश भर में चल रहे इस संघर्ष में कौन सी पार्टी विजयी होगी? क्या यह ब्रिटिश सरकार होगी या राष्ट्रवादी पार्टी?

यदि उन्होंने आग लगाने वाले की मदद की और सरकार को जीत मिली, तो उन्हें बर्खास्तगी या जेल का सामना करना पड़ सकता था। कम से कम, यदि उन्होंने सरकार की मदद की लेकिन अंततः ब्रिटिश सत्ता से बेदखल होकर देश छोड़ देते, तो वे क्रांतिकारियों के रहमो-करम पर छोड़ दिए जाते और संभवतः अपनी नौकरी खो बैठते, भले ही उनकी जान न जाती।

अंततः मुस्लिम और भारतीय ईसाई ने मदद करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए, लेकिन वनपाल और शेष दो लोगों ने कुछ और हिचकिचाहट के बाद कहा कि यह बहुत खतरनाक होगा।

गार्डनर ने इन तीनों व्यक्तियों को अपने कमरों में जाकर खुद को अंदर बंद करने का आदेश दिया, साथ ही चेतावनी दी कि यदि उसने उन्हें चंदन में आग लगाने आ रहे लोगों की सहायता करते हुए देखा, तो वह यह सुनिश्चित करेगा कि उन्हें कड़ी सजा दी

जाए।

बिना कुछ कहे वे अपने-अपने घरों की ओर चल दिए। दस बज चुके थे और विद्रोहियों के आने में अभी साढ़े तीन घंटे बाकी थे। गार्डनर अपनी पैराडॉक्स राइफल और जून अपनी स्प्रिंगफील्ड राइफल लेकर आए और दो वफादार वन रक्षकों के साथ गोदाम के सामने अपनी-अपनी जगह पर तैनात हो गए।

ठीक रात 1:20 बजे उन्हें एक कार की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, जो थोड़ी दूरी पर रुक गई। इससे कार में बैठे लोगों की पहचान का पता चल गया। अगर पुलिस होती, तो वे सीधे चौकी तक पहुँच जाते। आग लगाने वाले आ तो गए थे, लेकिन वे अपनी मौजूदगी का पता नहीं चलने देना चाहते थे, क्योंकि वे हमले को पूरी तरह से अचानक अंजाम देना चाहते थे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अब तक गद्दार गार्ड कुंजी नायर दल से मिल चुका होगा और उन्हें उनके लक्ष्य की ओर ले जा रहा होगा।

दस मिनट तक पूर्ण सन्नाटा छाया रहा।

फिर तीन आकृतियाँ उस खुले मैदान की सीमा पर लगे पेड़ों की दीवार से अलग हो गईं, जिसमें भंडारगृह बनाए गए थे, और चुपके से उस छोटी इमारत की ओर बढ़ने लगीं।

"रुको! वरना मैं गोली मार दूंगा," गार्डनर ने अंग्रेजी में चिल्लाते हुए कहा, और साथ ही साथ अपने पास मौजूद इलेक्ट्रिक टॉर्च का बटन भी दबाया।

प्रकाश की किरण चमकी और बदमाशों का स्पष्ट रूप से पता चल गया। उनका नेता लापता वन रक्षक था।

"कुंजी नायर, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" रेंजर ने मलयालम में बोलते हुए पूछा। "तुम्हारा खेल खत्म हो गया है और हमें तुम्हारी सारी साजिश का पता चल गया है। मैं तुम्हें इसके लिए जेल भिजवाऊंगा।"

गार्ड ने कोई जवाब नहीं दिया। वह वहीं खड़ा रहा जबकि उसके दोनों साथी हिचकिचा रहे थे।

"तुरंत यहाँ आओ," गार्डनर ने आदेश दिया।

भयभीत व्यक्ति आगे बढ़ने लगा। कुछ ही फीट की दूरी पर आकर वह रुक गया।

"इन लोगों को इस जगह पर लाने का तुम्हारा क्या मतलब है?" रेंजर गरज उठा।

"क्या तुम्हें नहीं पता कि सरकार की संपत्ति की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है?"

कुंजी नायर ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसी क्षण, बूढ़े व्यक्ति का ध्यान उनके अपने कमरे से आ रही एक लाल रोशनी की ओर आकर्षित हो गया।

उसी समय जून ने इसे देखा।

"पिताजी, किसी ने हमारे घर में आग लगा दी है," वह हांफते हुए बोली और आग की लपटों की ओर बढ़ने लगी।

लेकिन नेविल गार्डनर ने उसे रोक दिया। "मत जाओ," उसने जल्दी से कहा, "यह हमें यहाँ से दूर ले जाने की एक चाल है। यह गोदाम ही उनका असली मकसद है।" "यह हमें अलग करने की भी एक चाल हो सकती है," उसने हड़बड़ी में कहा। "अगर हमले के समय हम साथ रहे तो हम उन्हें रोक सकते हैं। हमारे घर की परवाह नहीं, लेकिन हम यहाँ से हिलने की हिम्मत नहीं कर सकते।"

इसमें कोई शक नहीं कि उसके पिता सही थे और उन्होंने समय रहते ही उसकी चालाकी भरी चाल को समझ लिया था।

तेज रोशनी बढ़ती गई और खुले आसमान में फैल गई। घने पेड़ों की कतार के बीच परछाईं अजीबोगरीब ढंग से नाच रही थी।

उसी क्षण, आगे के अंधेरे से एक आवाज ने चिल्लाकर आदेश दिया, "गोली चलाओ"।

उन्होंने राइफल की गोलियों की एक अनियमित बौछार सुनी और फिर सन्नाटा छा गया, सिवाय लपटों की चटकने की आवाज और चिंगारियों के आसमान की ओर बरसने से आने वाली चटकने की आवाज के।

पुलिस उनकी मदद के लिए आ गई थी!

उन्होंने आधा मील दूर से ही आग की लपटों की चमक देखी थी। टेड ने जीप को एक फर्लांग दूर रोक दिया और अपने पुलिसकर्मियों के साथ आगे बढ़ा। आग की टिमटिमाती रोशनी में, उसने विद्रोहियों को इधर-उधर घूमते हुए और नई आग लगाते हुए देखा और अपनी जिम्मेदारी पर उन पर गोलियां चला दीं।

जून और दोनों गार्ड जलते हुए बंगले की ओर दौड़े, जबकि गार्डनर अपने तीन कैदियों के साथ उनके पीछे-पीछे गया। वहां जॉन ग्रेस्टोन, डीएसपी और पुलिसकर्मी भी उनसे मिल गए।

उन्होंने मिलकर गार्डनर परिवार के बचे हुए सामान को आग में फेंक दिया। ऐसी आपात स्थिति से निपटने के लिए वहां कोई अग्निशामक यंत्र या अन्य उपकरण मौजूद नहीं थे। रेंज ऑफिसर और जून के निजी उपयोग के लिए जो पानी जमा किया गया था, उसे आग पर डाला गया, जबकि तीन पुलिसकर्मी पास के कुएं से बाल्टी-बाल्टी करके पानी भरते रहे। जैसे ही पानी बाल्टी भरता, उसे बाथरूम से लाए गए जस्ता के टब में खाली कर दिया जाता और मुट्ठी भर रेत के साथ आग पर डाल दिया जाता।

इन आदिम तरीकों से अंततः आग पर काबू पा लिया गया, लेकिन इससे पहले गार्डनर के आधे से अधिक घर जलकर खाक हो चुके थे।

जॉन जून के पास गया और पूछा, "जून, क्या तुम ठीक हो?", और उसके पिता से पूछा, "और आप भी, मिस्टर गार्डनर?"

उसे थोड़ी सी खुशी का एहसास हुआ कि उसने पहली बार उसे उसके पहले नाम से पुकारा था। लेकिन शायद उसका कोई खास इरादा नहीं था। वह उत्साहित था और बस जो शब्द उसके मन में आए, वही बोल दिए।

रेंज ऑफिसर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "हम ठीक हैं। हमारी मदद के लिए आने के लिए आपका और श्री बेकर का धन्यवाद।"

आग लगाने वालों के बारे में सोचने के लिए हर कोई बहुत व्यस्त था और यह मान लिया गया था कि पुलिस द्वारा गोली चलाने पर वे भाग गए थे। जाहिर तौर पर, किसी को गोली नहीं लगी थी।

कुंजी नायर ने सारी बात साफ-साफ बता दी और कहा कि चाको ने तीन दिन पहले उसके पास एक दूत भेजा था, जिसमें चंदन के भंडारगृह तक आग लगाने में उसकी मदद करने का अनुरोध किया गया था। उसने स्वीकार किया कि बाद में उसे बूढ़े गार्डनर की हत्या करने और उसकी बेटी का अपहरण करने में मदद करने के लिए कहा गया था। लेकिन कुंजी नायर को लगा कि यह योजना पार्टी के सदस्यों की नहीं थी। जिस तरह से चाको ने उसे एक तरफ बुलाकर यह बात बताई, उससे उसे लगा कि यह नेता की अपनी योजना थी।

उसने स्वीकार किया कि अंग्रेजों को सत्ता से बेदखल किए जाने पर उसे पदोन्नति का वादा किया गया था, लेकिन रेंज ऑफिसर की हत्या और जून के अपहरण में उसकी सहायता के कारण उसे पदोन्नति नहीं मिली।

चाको ने उसे सौ रुपये देने की पेशकश की थी। वैन में सशस्त्र पुलिसकर्मियों के

दल के साथ आए इंस्पेक्टर ने कुंजी नायर के सभी बयानों को सावधानीपूर्वक दर्ज किया। उसे उसके साथ आए दो लोगों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और आगे की पूछताछ के लिए निलंबूर ले जाने के लिए मारिया गाड़ी में बिठा दिया गया।

अध्याय 24

रूथ के पास एक विचार है

वन चौकी की घटनाओं के बाद अगले कुछ दिनों तक स्थिति शांत रही, हालांकि माहौल में आशंका का भाव व्याप्त था। अगला वार कहाँ होगा; किस पर होगा; इसका अनुमान लगाना असंभव था।

बुराई की ताकतें हर जगह मौजूद थीं और हर तरफ खतरा मंडरा रहा था। विद्रोही नेता भूमिगत हो गए थे, लेकिन वे कभी भी फिर से प्रकट होकर एक और विद्रोह भड़का सकते थे।

और इन सबके ऊपर, आदमखोर का साया मंडरा रहा था!

टेड बेकर ने आधिकारिक निरीक्षण कार्य के तहत नेविल गार्डनर के छोटे बंगले, या कहें कि उसके बचे हुए हिस्से, जहाँ वे और जून रह रहे थे, का दो बार दौरा किया। वह अक्सर ग्रेस्टोन स्थित घर जाते थे, जिसका बहाना यह होता था कि सब कुछ सुरक्षित है और बागान मालिक से थोड़ी बातचीत कर लें।

कम से कम, यही वह कारण था जो वह खुद को समझाने की कोशिश कर रहा था कि यही उसका वहाँ जाने का मकसद था। लेकिन भीतर ही भीतर वह जानता था कि वह झूठ बोल रहा है। उसने इस विचार को दबाने की कोशिश की; उसने इसे स्वीकार न करने की कोशिश की। लेकिन जब वह होश में आया और उसने खुद को संभाला, तो उसे पता चला कि वह रूथ ग्रेस्टोन के लिए ही वहाँ जा रहा था।

उसने खुद से पूछा कि क्या उसे उससे प्यार हो रहा है। उसने इस सवाल के जवाब के बारे में खुलकर सोचा।

लेकिन वह कोई ईमानदार जवाब नहीं दे सका। क्या वह रूथ से प्यार करता था? या सिर्फ उसके शरीर से?

जॉन ग्रेस्टोन और चिका ने कराडी अर्र के तल पर एक उपयुक्त पेड़ के नीचे एक बछिया को चारे के रूप में बांध दिया था, जिस पर जरूरत पड़ने पर मचान बनाया जा सके। दूसरी बछिया को उन्होंने पहाड़ी के आधे रास्ते पर, उस गुफा की सीध में बांध दिया था जिसे उस छोटे आदमी ने खोजा था, और एक चट्टान के पास बांध दिया था

जहाँ जॉन बाद में छिपकर बाघिन को गोली मारने की कोशिश कर सकता था।

उस बुधवार की सुबह, वह अकेले ही चारे का निरीक्षण करने गया था, और रूथ अकेली थी, तभी लगभग 10 बजे टेड बेकर अपनी कार में आया।

इस समय तक रूथ और पुलिसकर्मी दोनों एक-दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं को स्वीकार कर चुके थे।

जब वह नीचे उतरा तो उसने बरामदे के नीचे उसका स्वागत किया।

"डार्लिंग, तुम्हें देखकर मुझे खुशी हुई। जॉन अपने चारे की जाँच करने गया है, इसलिए हम कम से कम दो घंटे अकेले रहेंगे।"

टेड उसके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में गया और चौड़े सोफे के किनारे पर बैठ गया। वह घबराया हुआ और असहज लग रहा था।

"चलो, एक ड्रिंक लेते हैं," रूथ ने कहा, "व्हिस्की?"

"आज नहीं, धन्यवाद। मेरा मन नहीं है," उसने जवाब दिया। कुछ देर हिचकिचाने के बाद उसने कहा, "सच कहूँ तो, मुझे अपनी चिंता है।"

"चिंतित हो? किस बात को लेकर?" उसने हैरानी से पूछा, हल्की सी हंसी के साथ, "बताओ तो सही। तुम्हें क्या परेशान कर रहा है?"

"अच्छा," उसने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए जवाब दिया, "बात ये है। तुम जानते हो कि हमारे बीच क्या हुआ है। मुद्दा ये है कि हम इसके बारे में क्या करने वाले हैं?"

"किस बारे में?" रूथ ने पूछा।

टेड ने झुंझलाहट में अपने पैर हिलाए और नाक के किनारे को खुजलाया। उसने सोचा, ये औरत इतनी अड़ियल क्यों हो रही है? या ये सच में बेवकूफ है? ज़रूर ये समझ रही होगी कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ। इतनी बेवकूफ तो हो नहीं सकती। उसने अपनी बात समझाने की कोशिश की।

"आप अच्छी तरह जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है। क्या हम जॉन के साथ न्याय कर रहे हैं? यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह हम पर पूरी तरह भरोसा करता है। ऐसे में, इस तरह से उसे धोखा देना हमारे लिए बहुत ही घटिया हरकत होगी। मैं मुश्किल से उसकी आंखों में आंखें डालकर बात कर पा रहा हूं।"

फिर उसने अपनी आवाज़ को बिल्कुल धीमी करते हुए फुसफुसाहट में बदल दिया और उसकी ओर झुकते हुए कहा, "मुझे यकीन है कि तुम्हारा वह नौकर सब कुछ

जानता है। उसने हमें किसी मौके पर देखा होगा। मैंने उसे एक-दो बार तुम्हें घूरते हुए पकड़ा है, और यकीन मानो, अगर नज़रें जान ले सकतीं, तो तुम बहुत पहले ही मर चुकी होतीं।"

"वह तुमसे इतनी नफरत क्यों करता है, रूथ?"

"मुझे यकीन है कि मैं नहीं जानती," उसने हल्के से जवाब दिया, "शायद वह दरिंदा मुझसे इसलिए नफरत करता है क्योंकि मैं उससे नफरत करती हूँ। उसने गोरे लोगों से घृणा करने की बात कभी नहीं छिपाई। उसने एक बार खुलेआम ऐसा कहा भी था, हालाँकि मुझे यह मानना पड़ेगा कि जॉन के लिए उसके मन में गहरा सम्मान है, भले ही स्नेह न हो।"

"एक और बात जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है, वह है उसकी अचानक प्रकट होने और गायब हो जाने की भयानक आदत। इससे मुझे बहुत गुस्सा आता है और डर लगता है।"

खैर, बात ये है रूथ। अगर तुम्हें पता है कि वो तुमसे उतनी ही नफरत करता है जितना तुम कहती हो, और मुझे लगता है कि वो हम पर कड़ी नजर रखता है और कई बार हमें देख चुका है, तो उसे जॉन से एक शब्द भी कहने से कौन रोक सकता है? मैं नहीं चाहती कि उसे पता चले। ये कहना कि हम उसे निराश कर रहे हैं, बहुत हल्की बात होगी।

रूथ अधीर होती जा रही थी, "कहीं तुम पीछे तो नहीं हट रहे, टेड?" उसने तीखे स्वर में पूछा।

बेकर ने झट से ऊपर देखा, उसका चेहरा फीका ईंट जैसा लाल था। वह परेशान था।

"यह डर का मामला नहीं है। काश तुम इतनी लापरवाही से न बोलते," उसने चिड़चिड़ेपन से कहा, "यह एक-दूसरे के प्रति कर्तव्यनिष्ठा से व्यवहार करने का मामला है।"

रूथ को समय रहते एहसास हो गया कि उसका मज़ाक उड़ाने की कोशिश करके उसने गलती कर दी है। टेड ऐसा व्यक्ति था जिसे धक्का देना पसंद नहीं था, और उससे भी ज़्यादा उसका मज़ाक उड़ाना। उसे मनाने के लिए दूसरे तरीके अपनाने पड़ते।

रूथ इन अन्य तरीकों का इस्तेमाल करने में माहिर थी। उसने अतीत में भी कई

बार इन तरीकों को उस पर आजमाया था और वह हमेशा सफल रही थी।

"चलो अब इस बारे में और बात नहीं करते, डार्लिंग," उसने अपनी रणनीति बदलते हुए कहा, "लो, एक ड्रिंक ले लो और हम किसी और विषय पर बात करेंगे।"

"मेरे लिए नहीं, धन्यवाद," टेड ने हठपूर्वक जवाब दिया, अभी भी नाराज़ था। और फिर, "मुझे सच में नहीं पता कि बात करने के लिए क्या है।"

यह भांपते हुए कि इससे उसे बुरा लग सकता है, रूथ ने खुद पानी नहीं पिया। इसके बजाय, वह सोफे पर उसके और करीब बैठ गई।

"मुझे लगता है मैं तुम्हें समझ गई हूँ," उसने सुलह भरे लहजे में कहा। "हम एक-दूसरे के लिए इतने मायने रखते हैं कि मैं जॉन की वजह से तुम्हें भूल ही नहीं सकती। लेकिन तुम्हारे लिए मैं जॉन को बहुत आसानी से भूल सकती हूँ," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

टेड चुप रहा। फिर उसने गंभीरता से पूछा, "क्या तुम सचमुच ऐसा कह रहे हो, या मेरी चापलूसी करने के लिए कह रहे हो?"

"बिल्कुल, मेरा यही मतलब है," उसने जवाब दिया।

अधीक्षक ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि उदास भाव से कालीन को घूरते रहे।

धीरे-धीरे रूथ ने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उसकी उंगलियों से खेलने लगी। उसके शरीर की निकटता से वह प्रतिरोध टूटता हुआ प्रतीत हुआ जिसे वह इस सुंदर प्राणी के विरुद्ध बनाए रखने की पुरजोर कोशिश कर रहा था, जो उसे विनाश की ओर खींच रही थी।

टेड ने उसके काले घने बालों की ओर देखा और अपना दाहिना हाथ उसके कंधे पर रख दिया। उसकी नज़र को भांपते हुए रूथ ने अपनी आँखें उठाकर उसकी आँखों में देखा। उसने उसकी आँखों की गहराई में छिपे आमंत्रण को समझ लिया। रूथ ने भी उसकी नीली आँखों में दृढ़ निश्चय की ठंडक को पिघलते हुए देखा और अपना चेहरा उसके करीब ले आई। ऐसा करते हुए उसने उसका बायाँ हाथ, जो उसके हाथ से दुगना था, पकड़ लिया और उसकी हथेली को अपनी जांघ पर, घुटने के ऊपर रख दिया, जिससे उसके पैर थोड़े खुल गए और उसकी उंगलियाँ अब सवालिया अंदाज़ में टटोलने लगीं।

टेड ने अपना सिर झुकाकर उसके गले को चूमा और रूथ ने अपने कोमल स्तनों को उसके गाल से ऐसे सटा लिया मानो उसे कोई उपहार दे रही हो। उसने उसका

दाहिना हाथ अपने कंधे पर रखा और अपनी उंगलियों से उसे अपने दाहिने स्तन के चारों ओर बंद कर लिया, उसे अपने स्तन से ढक लिया और कसकर दबाया।

आवेश के अचानक आवेश में आकर, टेड ने कोमल मांस को निर्दयता से कुचल दिया और उसे क्रूर आनंद के साथ मरोड़ने लगा।

रुथ की आँखों में आँसू आ गए और वह भावुक होकर बोली, "आह! तुम्हें दर्द हो रहा है!" लेकिन उन आँसुओं में असीम जुनून और परमानंद का प्रकाश छिपा था।

उन्माद भरी कराह के साथ, उसने खुद को उस पर झपट डाला और उसे सोफे पर वापस अपने नीचे धकेल दिया।

कुछ समय बाद, टेड को याद आ गया कि वह कहाँ था।

उसे छोड़कर, उसने दोनों हाथों से उसे मजबूती से पीछे धकेल दिया, और अपनी तीव्र लालसा से लगभग सिसकते हुए स्वर में कहा, "प्रियतम, यहाँ नहीं, इस तरह खुले में फिर से नहीं। अगर नौकर हमें देख ले तो?"

बड़ी मुश्किल से रूथ ने खुद को संभाला। बुरी तरह कांपते हुए वह उसके बगल में अपनी जगह पर वापस बैठ गई, उसकी सांसें तेज और सुनाई दे रही थीं।

"मुझे करना ही होगा, टेड, मुझे करना ही होगा," उसने धीमी, भारी आवाज़ में विनती की, "कृपया मुझे मना मत करो। मुझे परवाह नहीं कि हमें कौन देख रहा है या अब क्या होगा। मैं यह चाहती हूँ। कृपया। कृपया।"

बड़ी मुश्किल से टेड सोफे पर सीधा बैठा और उसे एक तरफ धकेल दिया। उसने अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया था। शांत स्वर में, पूरी तरह से सहज होकर उसने कहा, "बंगले में नहीं, रूथ। हमें कहीं और मिलना होगा।"

अपनी इच्छा पर काबू पाने के लिए संघर्ष करते हुए उसकी आँखों में निराशा झलक रही थी।

उसने पूछा, "तो मुझे निलंबूर चलने दीजिए। मैं जॉन को बता दूंगी कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है और मुझे डॉक्टर को दिखाना है। वह मना नहीं कर सकता क्योंकि यहाँ कोई डॉक्टर नहीं है। उसे मनाने में कुछ दिन लग सकते हैं। वह इस समय जागीर छोड़कर मेरे साथ नहीं आना चाहेगा। मैं निराश होने का नाटक करूंगी लेकिन उसे बता दूंगी कि मैं अकेले जा रही हूँ। किसी बहाने से मैं निलंबूर में रात रुक जाऊंगी। फिर...." और उसकी आवाज़ धीमी होकर उम्मीद से भर गई।

"जी हां, ऐसा ही करो प्रिये," टेड मान गया, "मैं तुम्हारे लिए मूसाफरखाना

(यात्री बंगला) में एक कमरा बुक करवा दूंगा। वहां काफी एकांत रहेगा क्योंकि उसका इस्तेमाल बहुत कम होता है और अगर मैं रात में तुमसे मिलने आऊं तो किसी को पता भी नहीं चलेगा।"

अपने इस गुप्त मिलन को पक्का करने के लिए, टेड आगे झुका और उसे फिर से चूमा।

अगले ही पल वे जल्दी से वापस बैठ गए। चंद्र कमरे में दाखिल हुआ और एक तरफ खड़ा हो गया। उसकी गहरी आँखें अथाह थीं, वह बारी-बारी से टेड और रूथ को देख रहा था, लेकिन उसके होंठों पर उपहास का भाव था - या शायद यह केवल तिरस्कार था।

“क्या मैडम चाहती हैं…” उसने बात शुरू की।

रूथ ने चिड़चिड़ाते हुए उसे बीच में ही रोक दिया, "अरे यार, लोगों के बात करते हुए कमरे में घुसने से पहले दरवाजे पर दस्तक क्यों नहीं देते?"

"माफ़ कीजिए महोदया। अब ऐसा दोबारा नहीं होगा," चंद्र ने माफ़ी मांगते हुए कहा और मुड़कर जाने लगा। फिर वह रुका और पीछे मुड़कर देखा। एक भौंह घमंड से ऊपर उठी हुई थी जब उसने कहा, "मुझे नहीं पता था कि आप और अधीक्षक साहब...बातें कर रहे थे।" आखिरी शब्द से पहले कुछ देर का विराम था। चंद्र ने आगे कहा, "मैं वादा करता हूँ, यह आखिरी बार है। ऐसा दोबारा नहीं होगा महोदया; नहीं, कभी नहीं! बस यही आखिरी बार है!"

और इतना कहकर वह कमरे से बाहर चला गया।

टेड गुस्से से लाल होकर उछल पड़ा। "धिक्कार है उस बदतमीज़ शैतान पर," उसने रूथ से कर्कश स्वर में कहा, "क्या तुमने ध्यान दिया कि 'बातचीत' शब्द बोलने से पहले वह कितना हिचकिचाया? और वह बार-बार दोहरा रहा था कि ऐसा दोबारा कभी नहीं होगा। मुझे समझ नहीं आ रहा कि उसका मतलब क्या था? अगर उसका इरादा माफ़ी माँगने का था, तो उसने इसे धमकी की तरह पेश किया।"

रूथ बैठी रही लेकिन उसने अपना हाथ उठाकर उसकी बांह को मजबूती से पकड़ लिया। "वह भयानक आदमी, जो परछाई की तरह प्रकट और गायब होता रहता है, मुझे सचमुच डरा देता है। मैंने जॉन से कई बार शिकायत की है, लेकिन वह कहता है कि यह तो बस उस आदमी की आदत है और मेरी बातों पर ध्यान नहीं देता।"

"अब तो वो पूरी तरह से हमारे इशारों पर नाच रहा है," टेड ने उदास स्वर में

कहा। "उसने हमें किस करते हुए देख लिया और मुझे पक्का यकीन है कि वो उस दिन भी हमें देख रहा था जब हम....", और उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। "वो जॉन को बताकर ब्लैकमेल करने की कोशिश भी कर सकता है। मुझे हैरानी है कि क्या उसने सुना कि हम अभी नीलांबुर में मिलने के बारे में क्या कह रहे थे?"

रूथ ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे ऐसा नहीं लगता।" उसने जवाब दिया, "शायद वह हमेशा की तरह चुपचाप कमरे में आया होगा और संयोग से हम वहां आ गए होंगे।"

“ओह,” और फिर उसने टेड की ओर सवालिया निगाहों से देखा, “क्या तुम्हें सच में लगता है कि उसने हमें उस दिन सोफे पर देखा था? तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? तुमने पहले कभी इसका जिक्र नहीं किया?”

"शायद मैं गलत हूं," टेड ने स्वीकार किया, "मैं पूरी उम्मीद करता हूं कि ऐसा ही हो; लेकिन अंत में मुझे ऐसा महसूस हुआ कि कोई हमें देख रहा है।"

वह झुककर ज़मीन से अपना हेलमेट उठाने लगा। "मैं अब चलता हूँ, जानम, जॉन के लौटने से पहले। शायद बेहतर यही होगा कि वह हमें अक्सर अकेले न देखे। कहीं उसके मन में कुछ विचार न आने लगें। तुम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना, और अगर तुम निलंबूर पहुँचने में सफल हो जाती हो, तो तुम्हारे आने की खबर मिलते ही मैं मूसाफरखाना में तुम्हारे लिए आरक्षण करवा दूँगा।"

"और बेहतर होगा कि आप शहर के किसी डॉक्टर से मिलें, भले ही आप उनकी दवा न लें।" टेड ने मुस्कुराते हुए मज़ाकिया लहजे में कहा, "एक अच्छे पुलिसवाले के तौर पर, मैं आपको अपने सबूत मिटाने के तरीके भी बता सकता हूँ।"

रूथ उसके साथ बरामदे तक गई, जहां वह एक पल के लिए मुड़ा, उसकी ठोड़ी को हल्के से खींचा और फिर अपनी ब्यूक कार की ओर सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

जैसे ही वह कार के पास पहुंचा, डीएसपी ने अचानक गाड़ी रोक दी।

उसकी ओर मुड़कर उसने पूछा, "क्या तुम्हें यकीन है कि तुम मेरे लिए जॉन को भूल सकती हो?"

"बिल्कुल, प्रियतम। मैंने जो कहा, वही मेरा मतलब था।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बस उसे हाथ हिलाकर इशारा किया और तेज़ी से गाड़ी चलाकर चला गया। रूथ ने आधी बंद आँखों से गाड़ी को धीरे-धीरे छोटा होते देखा, उसके मन में निलंबूर में होने वाली घटना को लेकर तरह-तरह के विचार दौड़ रहे

थे।

अध्याय 25

और सिरदर्द की शिकायत करता है

ग्रेस्टोन अपने बंगले के परिसर में दाखिल हुए, जहाँ कॉफी की झाड़ियों को छाया देने वाले सिल्वर-ओक के पेड़ खत्म होते थे और बगीचे का खुला क्षेत्र शुरू होता था। दोपहर के लगभग 12:45 बज रहे थे। सूरज की गर्मी बहुत तेज़ थी और हवा उमस से भरी हुई थी।

कॉफ़ी की झाड़ियों के बीच छिपा हुआ वह व्यक्ति अचानक बाहर निकला और जॉन के पास आया। वह व्यक्ति जॉन से काफी देर तक गंभीरता से बातें करता रहा। जो कोई भी पास से देख सकता था, भले ही वह सुनने के लिए पर्याप्त करीब न हो, उसे ऐसा प्रतीत होता कि दोनों व्यक्ति बेहद गंभीर थे।

श्रोता के चेहरे पर कई बदलते भाव उभरे। पहला भाव अविश्वास का था, जो वक्ता के प्रति आक्रोश से मिला हुआ था। जैसे-जैसे वह व्यक्ति बोलता गया और अपनी बात की सत्यता साबित करता प्रतीत हुआ, ग्रेस्टोन के सुंदर चेहरे पर अन्य भाव भी उभरने लगे।

पहले अविश्वास भरी हैरानी हुई, फिर दर्द भरी झुंझलाहट। उसके बाद आक्रोश का प्रकाश। अंत में, ठंडे गुस्से और बदले की भूख से भरी नज़र। और सबसे आखिर में एक ऐसा भाव था जिसे समझना मुश्किल था। वह गहरी चालाकी और अत्यधिक क्रूरता से भरा प्रतीत होता था। उस आदमी ने उसे जो भी बताया हो, एक बात निश्चित थी। जॉन ग्रेस्टोन को यह सुनना अच्छा नहीं लगा था। इससे वह बुरी तरह परेशान हो गया था।

"मैंने कभी सोचा भी नहीं था," उसने धीरे से खुद से कहा, और फिर ज़ोर से बोला, "बताने के लिए धन्यवाद।" वह आदमी उसी कॉफी में समा गया जहाँ से वह आया था।

जब जॉन बंगले में दाखिल हुआ, तब दोपहर के 1 बज चुके थे, और इमारत के अंदर भी उमस भरी हवा थी। उसकी खाकी कमीज़ पर बगल में पसीने के दो गहरे धब्बे और कंधों के बीच में एक धब्बा साफ दिख रहा था, जहाँ कमीज़ उसके शरीर से चिपकी हुई थी। जैसे ही उसने अपनी टोपी उतारी, पसीना उसके दोनों गालों और माथे से बहने लगा। उसके बाल पसीने से तरबतर थे और उसके शरीर से एक अजीब सी

दुर्गंध कमरे में फैल गई।

उफ़! कितनी भीषण गर्मी है! उसने कहा, "मैं बुरी तरह पसीने से भीग रहा हूँ और इस हालत में दोपहर का खाना भी नहीं खा सकता। लगता है पहले ठंडे पानी से नहा लूँ। रूथ, तुमने खाना खा लिया है क्या?"

उनकी पत्नी सोफे पर लेटी हुई थीं। यही उनकी रोज़ की जगह थी। लेकिन इस बार कुछ अलग था। उनके माथे पर एक रुमाल रखा था जिससे उनकी दोनों आँखें ढकी हुई थीं। रुमाल इत्र से पूरी तरह भीगा हुआ था और उसकी खुशबू उस घुटन भरे वातावरण में गहरी फैली हुई थी।

धीमी आवाज़ में उसने बुदबुदाते हुए कहा, "मुझे दोपहर का खाना नहीं खाना है, जॉन। मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है।"

उसके पति ने स्नेहपूर्वक सोफे की ओर कदम बढ़ाया और अपने दाहिने हाथ का पिछला हिस्सा उसके गाल पर रखा। नहीं; उसकी त्वचा बिल्कुल ठंडी थी। उसे बुखार का कोई लक्षण नहीं दिख रहा था। अपनी बात की पुष्टि करने के लिए, जॉन ने रूथ का हाथ उठाया और उसकी नब्ज़ जाँची।

उसे बिल्कुल भी बुखार नहीं था।

"पेट कैसा है?" उसने पूछा। "ठीक है?"

अपना सिर हिलाए बिना और गीला कपड़ा हटाए बिना, रूथ ने उत्तर दिया, "हाँ"।

"क्या तुमने कुछ असामान्य खाया? कुछ अपचनीय?" उसने पूछा।

"नहीं," उसने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया, "मैंने वही खाया जो आपने खाया था, कल रात के खाने में भी और आज सुबह के नाश्ते में भी।"

"शायद मौसम की वजह से है। मैं आपके लिए लिवर सॉल्ट्स की एक खुराक बना देता हूँ," उन्होंने सुझाव दिया। "आधे घंटे बाद, एक कप गर्म चाय के साथ एस्प्रो की दो गोलियां निगल लें। इससे फायदा होगा। शाम तक आप ठीक हो जाएंगे।"

वह दवाइयों को मिलाने के लिए उस भंडारगृह में गया जहाँ दवाइयाँ रखी थीं। जैसे ही उसके कदमों की आहट धीमी हुई, रूथ के चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान आ गई।

क्या यह एक अजीब संयोग था कि जब जॉन पेंट्री में व्यस्त था, तब उसके चेहरे पर भी वैसी ही मुस्कान थी?

नमक, एस्प्रो क्रीम और गर्म चाय पीने के बावजूद रूथ का सिरदर्द रत्ती भर भी

कम नहीं हुआ। उसने दोपहर के भोजन और शाम की चाय में कुछ नहीं खाया और रात के खाने के बजाय एक गिलास भर गर्म ओवलटाइन पी लिया।

आधी रात तक वह जॉन को जगाए रखती रही, धीमी आवाज़ में कराहती रही और अपने सिरदर्द की शिकायत करती रही। "मुझे यकीन है कि यह मेरी आँखों की वजह से है," उसने बुदबुदाते हुए कहा, "मुझे इनकी जांच करवानी होगी।"

थोड़ी देर बाद उसे एक विचार आया। "शायद ये मेरी आँखों की समस्या नहीं है, जॉन। हो सकता है कि मैं ट्यूमर के इलाज के लिए आई हूँ।"

तीन बजे तक रूथ बेचैन थी। तकिये के नीचे से उसने पुकारा, "जॉन, मुझे याद है मैंने कहीं पढ़ा था कि टाइफाइड बुखार की शुरुआत असहनीय सिरदर्द से होती है। मुझे लगता है शायद मुझे इसी के लिए अस्पताल आना पड़ेगा।"

उसके पति का रवैया अजीब तरह से उदासीन प्रतीत हुआ।

बाद में उन्होंने कहा, "संभवतः यह सिरदर्द मलेरिया के दौरे का अग्रदूत है।"

ग्रेस्टोन ने केवल हल्की सी आवाज़ निकाली।

जब रूथ का कोई उद्देश्य होता था और उसे लगता था कि यह प्रयास सार्थक है, तो वह ठीक-ठाक अभिनय कर सकती थी। और इस बार उसका एक उद्देश्य अवश्य था।

अगली सुबह उसने कहा, "मुझे अभी भी सिरदर्द है। यह बहुत तेज है और मेरी दाहिनी आंख और कनपटी से लेकर सिर के ऊपरी हिस्से तक फैला हुआ है। यह कल से बेहतर नहीं है; बल्कि और भी बदतर हो गया है।"

उनकी तबीयत इतनी खराब थी कि वे अपने पति के साथ नाश्ते की मेज पर बैठ भी नहीं पाईं और न ही दोपहर के भोजन के लिए जब वे जीप से घर आए। उन्होंने कुछ खाया भी नहीं। चंद्र ने उन्हें चाय परोसी और उन्हें यह कहते हुए सुना, "प्रिय जॉन, अगर आज रात तक मेरा सिरदर्द ठीक नहीं हुआ, तो कृपया मुझे कल सुबह जीप दे दीजिए। मैं नीलांबुर जाकर अपना इलाज करवा लूंगी, चाहे मुझे एक-दो दिन वहीं रुकना पड़े।"

"पर मेरी चिंता मत करो, मेरी प्यारी। मुझे पता है कि तुम अभी बागान छोड़कर नहीं जा सकती। जब मैं वापस आऊंगी तब तक मैं ठीक हो जाऊंगी।"

ये शब्द सुनकर जॉन ग्रेस्टोन को बहुत खुशी हुई। वह सोच रहा था कि उसके साथ जाने से कैसे बचा जाए। ऐसी यात्रा उसके मन में बनी योजना के बिल्कुल

विपरीत थी। उसे खुशी थी कि रूथ ने उसकी समस्या का समाधान कर दिया था।

"क्या आपको लगता है कि आप जीप को इतनी दूर तक चलाने के लिए पर्याप्त रूप से फिट होंगे?" उसने पूछा।

"हाँ," उसने उससे कहा, "शायद ताजी हवा और गाड़ी चलाने पर ध्यान केंद्रित करने से मेरा ध्यान इस भयानक सिरदर्द से हट जाएगा। मुझे यकीन है कि मेरी आँखें ही इसके लिए ज़िम्मेदार हैं।"

"लेकिन आपको एक हफ्ते से कम समय में चश्मा नहीं मिल पाएगा," उसने उसे याद दिलाया। "लेंस के लिए डॉक्टर को कालीकट भेजना पड़ सकता है।"

रूथ ने मौका देखा और उसे लपक लिया। "अगर ऐसी नौबत आई तो मैं खुद कालीकट चली जाऊंगी। या फिर लेंस आने तक कुछ दिन निलंबूर में ही रुक जाऊंगी।" कुछ देर रुककर उसने कहा, "ज़रूर, मैं जल्द से जल्द आपके पास वापस आने की पूरी कोशिश करूंगी।"

"मुझे पता है तुम करोगे," जॉन ने रहस्यमय ढंग से कहा।

उन्होंने बात यहीं खत्म कर दी।

शाम होते-होते रूथ ने शिकायत की, "यह और भी बदतर होता जा रहा है और फैलता जा रहा है। मुझे पूरे शरीर में ऐंठन वाले दर्द महसूस हो रहे हैं। ये आते-जाते रहते हैं, लेकिन उस लगातार दर्द की तरह नहीं हैं जो मेरे सिर के दाहिने हिस्से को बुरी तरह से जकड़ लेता है। शायद यह सिर्फ नसों की सहानुभूति है।"

उसने फिर से रात का खाना नहीं खाया, लेकिन ओवलटाइन पी और कैपस्टन सिगरेट का आधा पैकेट पिया; ब्रांडी और सोडा के साथ ली गई दो एस्प्रो सिगरेट से उसे ज्यादा राहत नहीं मिली।

कॉफी परोसते समय, चंद्र अनजाने में अपने स्वामी को यह कहते हुए सुन बैठा, "जी प्रिय, तुम्हारी हालत को अब और नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। क्या तुम वाकई नहीं चाहोगी कि मैं तुम्हें कल निलंबूर ले जाऊँ?" और उसने रूथ को जवाब देते हुए सुना,

"जॉन, ऐसे समय में तो बिलकुल नहीं। ये तो सरासर बेतुका विचार है। तुम अभी नहीं जा सकते। मैं अकेले जाऊंगी और ठीक रहूंगी। लेकिन अगर थोड़ी देर हो जाए तो चिंता मत करना। डॉक्टर शायद मुझे एक-दो दिन रुकने के लिए कहें।"

जैसे-जैसे चंद्र के मन में एक विचार आकार लेने लगा, उसकी आँखों में

विचारशील चालाकी की एक चमक उभर आई।

अध्याय 26

अंधकार में आकृति

ग्रेस्टोन निवास के बाहर घोर अंधेरा था, क्योंकि समय रात के 2:30 बज रहे थे और आसमान में बादल छाए हुए थे, चाँद नहीं निकला था। एक तरफ इमारत की छोटी सी आकृति और दूसरी तरफ ऊँचे-ऊँचे सिल्वर-ओक के पेड़ों ने अंधेरे को और भी गहरा बना दिया था।

बंगले के पिछले हिस्से से अचानक प्रकट हुई धुंधली आकृति उस अंधकार में मुश्किल से दिखाई दे रही थी। यह कहना असंभव था कि वह आकृति किसी श्वेत व्यक्ति की थी या किसी आदिवासी की। उसमें कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। वह व्यक्ति कमीज और लंबी पतलून पहने हुए प्रतीत हो रहा था। गैराज की ओर चलते हुए उसने कोई आवाज नहीं की। यह भी स्पष्ट नहीं था कि वह नंगे पैर था या हल्के, रबर के तले वाले जूते पहने हुए था।

दरवाजे पर पहुँचकर वह आदमी एक पल के लिए रुका और अपनी पतलून की जेब में कुछ टटोला। फिर उसने हाथ में कुछ निकाला। चुपचाप उसे ताले में डाला और लीवर घुमा दिया। दरवाजा लगभग तुरंत खुल गया।

उस आदमी ने चारों ओर देखा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है। कोई भी जीवित प्राणी नहीं हिला। उसने दरवाजा इतना खोला कि वह अंदर जा सके और फिर उसे अपने पीछे बंद कर लिया।

जो भी घुसपैठिया था, उसका इरादा निश्चित था और वह जानता था कि उसे क्या करना है। उसने अपनी जेब से एक छोटी सी इलेक्ट्रिक टॉर्च निकाली और बटन दबाया, फिर रोशनी की किरण का पीछा करते हुए गाड़ी के आगे की ओर बढ़ा और रेडिएटर के सामने पहुँच गया। वहाँ रुककर वह एक घुटने पर बैठ गया और टॉर्च के स्विच बटन को दूसरी स्थिति में दबा दिया ताकि वह जलती रहे। अज्ञात व्यक्ति ने अंधेरे को चीरती हुई रोशनी की किरण को सीधे उस बोल्ट और नट पर डाला जो आगे के पहियों से जुड़े दो टाई-रॉड को जोड़ते थे।

उस व्यक्ति ने अपनी पतलून की प्रत्येक जेब से, जहाँ उसने उन्हें आपस में टकराने और शोर मचाने से बचाने के लिए अलग-अलग रखा था, एक काटने वाला प्लायर और एक समायोज्य रिंच निकाला। उसने अपनी पतलून की बेल्ट से एक छोटा

स्क्रू-ड्राइवर निकाला। इन तीनों औजारों के साथ वह चोर व्यवस्थित ढंग से काम पर लग गया।

सबसे पहले, उसने उस स्प्लिट-पिन को हटाया जो बड़े नट को ढीला होने से रोक रही थी। फिर, उसने रिंच से नट को ढीला करना शुरू किया और तब तक ढीला करता रहा जब तक कि वह पूरी तरह से निकल नहीं गया। उसने अपनी उंगलियों से नट को वापस लगाया और धीरे-धीरे और सावधानीपूर्वक उसे दाईं ओर आधा चक्कर घुमाकर कस दिया।

अज्ञात व्यक्ति ने ऐसे चार आधे चक्कर गिने और रुक गया। अब नट केवल दो धागों से ही टिका हुआ था। उसने स्प्लिट-पिन को अपनी कमीज़ की जेब में डाल दिया और औजारों को वैसे ही वापस रख दिया जैसे वह लाया था।

फिर वह आदमी एक बार फिर झुका और ज़मीन पर पड़ी जलती हुई मशाल को उठाया, और बटन को बंद कर दिया। गैराज का अंदरूनी हिस्सा एक बार फिर अंधेरे में डूब गया।

टॉर्च की तेज रोशनी के बाद अंधेरे में आंखों को अभ्यस्त होने के लिए पूरा एक मिनट का समय देने के बाद, वह व्यक्ति चुपचाप दरवाजे की ओर बढ़ा, उसे कुछ इंच खोला और बाहर झांका। जब उसे कोई दिखाई नहीं दिया, तो वह झट से बाहर निकला और जल्दी से दरवाजा बंद कर दिया, और स्प्रिंग लॉक को कील पर दबा दिया।

अंत में, उसने अपनी कमीज़ की जेब में हाथ डाला, एक पिन निकाली और उसे बाईं ओर फैली लंबी घास में जितनी दूर फेंक सकता था, फेंक दिया। उसने टॉर्च को वापस उसी जेब में रख लिया।

उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी जब वह आकृति चुपके से बंगले के पिछले हिस्से की ओर वापस चली गई और नजरों से ओझल हो गई।

अध्याय 27

दुर्घटना या हत्या?

सुबह के समय जॉन और रूथ गैराज की ओर चल पड़े। भीगी हुई घास पर ओस की बूँदें ऐसे चमक रही थीं मानो किसी उदार हाथ ने हीरे बिखेर दिए हों।

जॉन ने अपनी पतलून की जेब से चाबी निकालकर ताला खोला और दोनों दरवाज़े खोल दिए। जीप की ड्राइवर सीट पर बैठकर उसने सेल्फ-स्टार्टर दबाया और

इंजन को कुछ मिनटों तक धीरे-धीरे चलने दिया ताकि वह गर्म हो जाए। फिर उसने धीरे-धीरे गाड़ी को पीछे किया और उसे आधा वृत्त में घुमाकर बंगले के सामने की ओर कर दिया।

"क्या तुम अपने साथ कुछ सामान नहीं ले जा रही हो, रूथ, अगर तुम एक-दो दिन के लिए रुक जाओ तो?" उसने पूछा।

रूथ ने अचानक ऊपर देखा। उसे यकीन था कि उसके सवाल में व्यंग्य का भाव था। फिर उसने सोचा कि उसका दोषी अंतरात्मा उसे बेवजह संवेदनशील बना रहा है। निस्संदेह, यह सवाल चिंता की भावना से प्रेरित था।

"ओह जी हाँ, जॉन," उसने झटपट जवाब दिया, "मैंने उन्हें कल रात अपने सूटकेस में पैक करके रखा था। मैं अभी ले आती हूँ।" फिर उसे अपनी गलती का एहसास हुआ।

"तुमने मुझे यह नहीं बताया कि तुम्हारा सिरदर्द कैसा है," उसके पति ने कहा, "कल रात तुमने जो सामान पैक किया था, उससे तो मुझे यही लगता है कि यह ठीक नहीं हुआ है, है ना? तुम्हें कैसा लग रहा है?"

एक बार फिर, रूथ ने खुलेआम उसकी ओर देखा। वह खुद को कोस रही थी! हाँ, पिछली रात को पैकिंग करके उसने बहुत बड़ी गलती कर दी थी। इससे किसी भी मूर्ख से मूर्ख को भी समझ आ जाता कि उसने निलंबूर जाने का मन बना लिया था, चाहे उसका सिरदर्द ठीक हो या न हो।

उसने बात संभालने की कोशिश करते हुए कहा, "कल तो बहुत बुरा हाल था, डार्लिंग। मुझे पहले से ही अंदाज़ा था कि आज सुबह हालत और भी खराब हो सकती है, इसलिए मैंने एहतियात के तौर पर सामान पैक कर लिया था, कहीं ऐसा न हो कि सिरदर्द इतना बढ़ जाए कि मैं सोच ही न पाऊं कि मुझे क्या साथ ले जाना है। सच कहूं तो, हालत बहुत ही खराब है।"

"मैं समझ गया, प्रिय," उसके पति ने जवाब दिया और आगे कहा, "यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ और आशा है कि इससे आपको गाड़ी चलाने में कोई परेशानी नहीं होगी। ज़रा सावधानी बरतें। ढलान के पहले दस मील में कुछ बहुत ही खतरनाक मोड़ हैं। सड़क को सहारा नहीं दिया गया है और दोनों ओर गहरी खाइयाँ और नाले हैं।"

रूथ में उसकी सलाह सुनने का धैर्य बिल्कुल नहीं था। वह मुड़ी और घर के अंदर चली गई।

जॉन ने जीप को ध्यान से देखा। वह उसके पास गया, स्टीयरिंग व्हील को पकड़ा और मैकेनिज़्म को परखने के लिए उसे तेज़ी से दाएं-बाएं झटका दिया। आगे के पहिए बिल्कुल सामान्य रूप से प्रतिक्रिया करते हुए प्रतीत हुए। उसने उसे दो-तीन बार और ज़ोर से, चिड़चिड़ाते हुए, घुमाया।

रूथ सूटकेस लेकर लौटी। जॉन ने उससे सूटकेस लेकर जीप के पीछे फर्श पर रख दिया। उसने रूथ को चूमा और रूथ ने भी बदले में उसे चूमा।

फिर वह गाड़ी में बैठी और इंजन स्टार्ट किया।

जॉन ने पुकारा, "अलविदा प्रिय; अपना ख्याल रखना। और सिरदर्द से पूरी तरह ठीक होकर जल्दी वापस आना। मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा।"

इंजन के शोर के कारण रूथ कुछ कह पाई, जो वह सुन नहीं पाया। उसने रूथ को हाथ हिलाकर इशारा किया, क्योंकि जीप पहले गियर में आगे बढ़ रही थी और ज़ोरदार आवाज़ कर रही थी। फिर रूथ ने उसे दूसरे गियर में बदल दिया और मुख्य सड़क की ओर जाने वाली ढलान पर चढ़कर पहाड़ी पार कर गई।

जॉन तब तक देखता रहा जब तक वह पेड़ों के बीच ओझल नहीं हो गया। उसके बाद भी उसे कुछ देर तक इंजन की हल्की आवाज़ सुनाई देती रही। बागान मालिक बंगले में प्रवेश करने के लिए मुड़ा तो वह चिंतित लग रहा था, लेकिन जल्द ही उसके चेहरे से चिंता गायब हो गई और राहत के भाव उभर आए।

चंद्र की निगाहें भी जाते हुए वाहन का पीछा कर रही थीं, और उनमें घृणा और उल्लास दोनों के भाव थे।

रूथ ने जीप को टॉप गियर में डाला और एक्सीलरेटर को और दबा दिया। वह जानती थी कि उचित गति बनाए रखने से ही इंजन को ढलान पर चढ़ने के लिए पर्याप्त गति मिल पाएगी। अन्यथा उसे अधिकांश रास्ते दूसरे गियर में ही गाड़ी चलानी पड़ती।

उसने पहले पाँच मील का सफर तय किया, जो उसे घाट की चोटी तक ले जाने वाले नौ घुमावदार मोड़ों में से सबसे निचले मोड़ तक ले गया। इसके बाद, शेष यात्रा में ढलान बहुत कम थी। जल्द ही वह निलंबूर पहुँच जाएगी और उसे उम्मीद थी कि वह टेड बेकर की बाहों में होगी।

रूथ ने पहले मोड़ को पार करने के लिए स्टीयरिंग व्हील को तेज़ी से बाईं ओर घुमाया। जीप ने मोड़ तो आसानी से पार कर लिया, लेकिन उसकी रफ़्तार धीमी पड़

गई और उसे मजबूरन दूसरे गियर में डालना पड़ा, साथ ही अगले मोड़ को पार करने के लिए स्टीयरिंग को विपरीत दिशा में घुमाना पड़ा। उस मोड़ के तुरंत बाद उसने एक्सीलरेटर को पूरी तरह दबा दिया। इंजन ने धीरे-धीरे रफ़्तार पकड़ी, जिससे वह गाड़ी को वापस टॉप गियर में डाल सकी।

एक बार फिर, तीसरे मोड़ के लिए उसने तेज़ी से बाईं ओर मोड़ लिया। जीप हल्के से फिसलते हुए मोड़ पार कर गई, जबकि रूथ ने चौथे मोड़ के पास पहुँचते ही उसे पूरी गति से चलाए रखा। बारी-बारी से बाएँ और दाएँ मुड़ते हुए वह सातवें हेयरपिन मोड़ को पार कर गई और सड़क के अपेक्षाकृत समतल हिस्से पर पहुँच गई, जो कुछ दूरी तक चलता रहा और फिर आठवें मोड़ पर तेज़ी से ऊपर की ओर चढ़ने लगा। यह सभी मोड़ों में सबसे तीखा और ढलान सबसे ज़्यादा था। यहाँ उसे दाईं ओर एक मुश्किल मोड़ लेना पड़ा।

जीप मोड़ के पास पहुंची और रूथ ने स्टीयरिंग व्हील घुमाते हुए एक्सीलरेटर पैडल पर अपना पैर मजबूती से दबाए रखा। लेकिन इस बार गाड़ी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। दाईं ओर मुड़ने के बजाय वह सीधे आगे बढ़ती रही।

अचानक ड्राइवर को एहसास हुआ कि सिस्टम में कुछ बहुत बड़ी गड़बड़ी हो गई है। उसने झट से एक्सीलरेटर से पैर हटाया और ब्रेक पैडल पर जोर से पैर रख दिया।

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

वह इतनी तेज़ गति से गाड़ी चला रही थी कि संकरी सड़क पर कम दूरी में रुक पाना उसके लिए नामुमकिन था। ब्रेक लगाने से पहले ही गाड़ी की गति धीमी नहीं हो पाई और वह सड़क पार करके बाईं ओर उगी झाड़ियों में जा घुसी।

बिना किसी चेतावनी के, रूथ को अचानक नीचे दूर तक खाली जगह और पेड़ दिखाई दिए, जब जीप का सबसे भारी हिस्सा होने के कारण इंजन आगे और नीचे की ओर गिर गया और पिछले पहिए हवा में बेतुके ढंग से घूमने लगे क्योंकि जीप तीन सौ फीट नीचे घाटी की तलहटी में गोता लगा रही थी।

वह दो बार जोर से चीखी, और उसकी तीसरी चीख अचानक खामोशी में बदल गई जब वाहन जमीन से टकराया, ऊपर उछला, पलटा और एक और जोरदार धमाके के साथ रुक गया।

दम घोंटने वाली नारंगी रंग की धूल के घने बादल ने सब कुछ ढक लिया, जिससे मलबा नज़र से ओझल हो गया। कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, जिसे

चटकने की आवाज़ों ने तोड़ दिया। जैसे-जैसे आग मुड़ी हुई धातु को चाटती गई, चटकने की आवाज़ें तेज़ी से बढ़ती गईं। उलटे हुए टैंक से निकला पेट्रोल आग पकड़ चुका था।

एक घंटे बाद, शायद उससे भी ज़्यादा, हल्की सी झनझनाहट सुनाई दी। दो बैलगाड़ियाँ नज़र आईं, जिन पर लगे बैलों की गर्दन पर घंटियाँ मधुरता से बज रही थीं। वे ढलान पर नीचे जा रही थीं और उस दिशा के विपरीत जा रही थीं जिस दिशा में जीप चल रही थी।

इस प्रकार, ड्राइवरों ने उस स्थान को देखा जहां सड़क के किनारे लगी झाड़ियों को तोड़कर कोई बड़ी चीज बाहर निकली हुई थी।

आदमी गाड़ी से उतरे और हर एक ने अपनी गाड़ी के पहियों के आगे पत्थर रख दिए ताकि बैल उसे लेकर भाग न जाएं। फिर वे जाँच करने गए। उन्होंने धूल में टायरों के निशान देखे और समझ गए कि कोई मोटरगाड़ी यहाँ से कूदकर अपनी मौत को गले लगा चुकी है। टूटी-फूटी झाड़ियों को हटाते हुए वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए।

घाटी में काफी नीचे जीप के जले हुए अवशेष सुलग रहे थे। वे जल्दी से मलबे की ओर नीचे उतरे। आग की गर्मी से धातु मुड़ चुकी थी, हालांकि आग अब पूरी तरह बुझ चुकी थी, फिर भी वे वाहन को जीप के रूप में पहचान सके।

और तभी उन्हें रूथ का शव मिला, जो बुरी तरह से विकृत, खंडित और लगभग पहचान से परे झुलसा हुआ था। उसने जींस और कमीज पहनी हुई थी, इसलिए पहले तो गाड़ीवालों को लगा कि वे किसी पुरुष के अवशेष देख रहे हैं। उसके अधिकांश कपड़े और मांस जलकर राख हो गए थे, लेकिन लंबे बाल अभी भी उसकी खोपड़ी से चिपके हुए थे। चेहरे की कुछ त्वचा और धड़ और एक जांघ की कुछ त्वचा, हालांकि बुरी तरह से फफोलेदार और कच्ची थी, फिर भी जगह-जगह दिखाई दे रही थी।

चारों ओर अधपके, भुने हुए मांस की दुर्गंध फैली हुई थी। गाड़ी वाले उस सड़क के उस हिस्से से नियमित रूप से गुज़रते थे। उन्होंने पहले भी कई बार बागान मालिक और उसकी पत्नी को जीप में देखा था।

उनमें से एक ने दूसरे से कहा, "ग्रेस्टोन डोराई मारा गया है"।

लेकिन उसके साथी ने जवाब दिया, "जीप तो उसकी है, पर शरीर नहीं। यह एक औरत का शरीर है। क्या तुम इतने मूर्ख हो कि औरत का शरीर देखकर भी पहचान नहीं सकते? देखो उसके लंबे बाल। क्या किसी सफेद डोराई (एक प्रकार की औरत)

के इतने लंबे बाल होते हैं? और देखो वहाँ। त्वचा उतर गई है, फिर भी क्या तुम औरत के स्तन को देखकर पहचान नहीं सकते? देखो उसकी जांघ। किसी पुरुष की जांघ इतनी सुंदर और बाल रहित नहीं होती।"

"नहीं, मेरे दोस्त, ये दोराई का शव नहीं है। ये एक दोराइसानी (महिला) का शव है। शायद उसकी पत्नी का। उसने बिना ठीक से समझे गाड़ी चलाने की कोशिश की होगी। इसीलिए वो खाई में गिर गई। यहाँ कोई और शव नहीं है, इसलिए वो अकेली ही रही होगी।"

“गोपाल, तुम सही कह रहे हो,” पहले आदमी ने जवाब दिया, “अब मुझे दिख रहा है कि यह एक औरत है। बेशक, तुम ही तो इसे पहचानोगे, क्योंकि तुम तो औरतों के पीछे पड़े रहते हो। मुझे पूरा यकीन है कि अगर किसी लाश को छह महीने तक दफनाकर पूरी तरह सड़ा दिया जाए, तब भी तुम बता पाओगे कि वह औरत की है। इस मामले में तुम मुझसे आगे हो। चलो, दोराई को खबर सुनाते हैं। हम उसके बंगले के पास से गुजरेंगे। शायद वह हमें बख्शीश दे दे।”

वे ढलान पर चढ़कर सड़क तक पहुंचे, अपनी गाड़ियों के पहियों से पत्थर हटाए और अपनी भयानक खोज की खबर देने के लिए जल्दी से निकल पड़े।

जब बैलगाड़ी चालक वहाँ पहुँचे, तब ग्रेस्टोन अपने बरामदे में बेंत की कुर्सी पर बैठे हुए थे।

दोनों में से बड़े, गोपाल नाम के व्यक्ति ने बेपरवाही से कहा, "दोराई की जीप का एक्सीडेंट हो गया और वह एक खाई में गिर गई। वह दोराईसानी के साथ जलकर राख हो गई।"

"हे भगवान!" जॉन उछलकर खड़ा हो गया, "तुम क्या कह रहे हो?"

गाड़ी वाले ने अपनी बात दोहराई, और इस बार युवक ने भी इसमें शामिल होकर बताया कि उन्हें कैसे पता चला कि कोई दुर्घटना हुई है।

एक पल के लिए जॉन के पास शब्द नहीं थे। फिर उसने लगभग चिल्लाते हुए पूछा, "क्या आपको यकीन है कि डोराइसानी मर चुकी है? हो सकता है वह सिर्फ घायल हो?"

"वह तो पूरी तरह से मर चुकी है; उसका लगभग कुछ भी अवशेष नहीं बचा है।"

जॉन ने पूछा, "यह घटना कहाँ हुई?"

“लगभग सात मील दूर,” बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, “घाट से नीचे आते हुए

दूसरे मोड़ पर।”

"चंद्र!" जॉन ने हड़बड़ी में चिल्लाया।

वाहक प्रकट हुआ।

"मेरे साथ आओ। ये ठेले वाले कह रहे हैं कि जीप का एक्सीडेंट हो गया है और मैडम की मौत हो गई है। हमें पैदल ही जाना पड़ेगा।"

ग्रेस्टोन सड़क पर तेज़ी से चलने लगा, मानो दौड़ रहा हो, जबकि चंद्र उसके ठीक पीछे-पीछे चल रहा था। दुर्घटनास्थल पर पहुँचते-पहुँचते वे पसीने से तरबतर हो चुके थे।

जॉन चंद्रा के साथ ढलान से नीचे उतरा। फिर वह रुक गया और कुछ घंटे पहले जो उसकी पत्नी थी, उसे निहारने लगा। वह इतना स्तब्ध था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था और चुपचाप अपने सामने देखता रहा।

लेकिन चंद्र ऐसा नहीं था। अपनी दिवंगत प्रेमिका के अवशेषों पर एक नजर डाले बिना, वह जीप के बचे हुए हिस्से का जायजा लेने के लिए आगे बढ़ा। जीप गहरी खाई के तल पर पड़ी थी, उसके चारों पहिए हवा में थे।

कुछ क्षण बाद, उसने अपने स्वामी को धीरे से पुकारा, और उत्तेजना में आकर हिंदुस्तानी के बजाय टूटी-फूटी अंग्रेजी में बोला।

"साहिब, ये लोहे के टुकड़े निकल रहे हैं। शायद मैडम इसे संभाल नहीं पाईं।" फिर उन्होंने रहस्यमय लहजे में कहा, "शायद ये ईश्वर और किस्मत का खेल है या शायद इंसान का।"

"तुम्हारा मतलब क्या है?" जॉन लगभग चिल्लाते हुए बोला।

चंद्र ने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली से ढीली रस्सियों की ओर इशारा करते हुए कहा, "बंदोबस्त को मोड़ने में कुछ गड़बड़ हो गई है, साहब। क्या लोहे के टुकड़े हमेशा इसी तरह ढीले रहने चाहिए? उन्हें तो कसकर फिट होना चाहिए, है ना?"

जॉन तेजी से आगे बढ़कर टाई-रॉड को देखने लगा। बीच में लगा बोल्ट और नट निकल गया था!

नौकर के शब्द उसके दिमाग में कौंध गए। चंद्र ने इतनी जल्दी इस बात पर ध्यान क्यों दिया?

“हे भगवान!” बस इतना ही वह बुदबुदा पाया।

दोनों पुरुषों की निगाहें अनायास ही मिल गईं। उस एक नज़र में, दोनों एक-दूसरे

के मन की बात जान गए। यह कोई संयोग नहीं था।

हत्या हो चुकी थी!

जॉन ने चुप्पी तोड़ी। "चंद्रा, तुम थोड़ी देर यहीं रुको। मैं जल्दी वापस आऊंगा।"

"मुझे पता है आप कहाँ जा रहे हैं, साहब," सामान उठाने वाले ने बेपरवाही से जवाब दिया, "खोई हुई चीज़ें ढूंढने। मैं आपके साथ चलता हूँ। मेरी आँखें आपकी आँखों से कहीं बेहतर हैं।"

वे वापस सड़क पर चढ़ गए और साथ-साथ ढलान पर चलने लगे। जॉन एक तरफ खोज रहा था और चंद्र दूसरी तरफ।

उस खतरनाक मोड़ से थोड़ा नीचे अखरोट नौकर को मिला। उसने उसे छुआ नहीं, बल्कि अपने मालिक को पुकारा, "आइए साहब; अखरोट यहाँ है।"

जॉन ने सोचा; चंद्र ने इसे क्यों नहीं उठाया?

शायद वह चाहता था कि मैं देखूं कि वह अखरोट सचमुच सड़क के बीचोंबीच पड़ा हुआ था!

ग्रेस्टोन ने अखरोट को अपने दाहिने हाथ में लिया, कुछ देर तक उसका अध्ययन किया और उसे अपनी खाकी पैंट की जेब में डाल दिया।

तभी चंद्र सड़क किनारे नाले की ओर दौड़ा और कुछ और निकाला, जिसे उसने जॉन को सौंप दिया। वह गायब बोल्ट था। बागान मालिक ने उसे नट के साथ अपनी जेब में रख लिया।

“वापस नीचे जाओ और मैडम के शव के पास रहो,” उसने कहा। “मैं बाकी के चार मील पैदल चलकर उस जगह तक जाऊंगा जहां यह सड़क फॉरेस्ट चौकी से दूसरी सड़क से मिलती है। वहां से मैं नीलांबुर जाने वाली बस पकड़ूंगा और डीएसपी साहब को इस मामले की सूचना दूंगा।”

"मैं आज्ञा मानता हूँ, महोदय," चंद्र ने इस बार हिंदुस्तानी में उत्तर दिया और अचानक मुड़कर अपने कदम पीछे हटाते हुए घाटी की तलहटी तक ढीली बजरी पर फिसलते हुए चला गया।

मलबे से लगभग पच्चीस गज पहले वह रुक गया, एक छोटे से पत्थर पर चढ़ गया और उस पर बैठ गया, अपने घुटनों को आगे की ओर मोड़कर अपनी ठुड्डी को उन पर टिका दिया।

उस स्थिति में वह मृत महिला के अवशेषों को शांतिपूर्वक निहारता रहा, और

जैसे-जैसे वह देखता रहा, सूरज की गर्मी बढ़ती गई और पहले एक चींटी और एक मक्खी, फिर और भी चींटियाँ और मक्खियाँ अवशेषों के पास आ गईं। मक्खियाँ झुंड बनाकर शरीर के चारों ओर भिनभिनाने लगीं और उस पर बैठ गईं।

लेकिन चंद्र ने कुछ नहीं किया।

पहले जो आसमान में एक छोटा सा धब्बा जैसा दिख रहा था, वह धीरे-धीरे बड़ा होता गया। एक राजा गिद्ध, अपनी उड़ान की ऊँचाई से मौत को भांपते हुए, दावत की ओर नीचे उतरने लगा। उसके पीछे-पीछे दूसरे गिद्ध भी आ गए। वे सब ज़मीन पर एक घेरे में बैठ गए, अपनी भद्दी, नंगी, मांसल गर्दनें ऊपर उठाकर अधजले अवशेषों को संदेह भरी निगाहों से देखने लगे।

उन्होंने मृत्यु को कई रूपों में देखा था - बुढ़ापे, बीमारी और हिंसा से। लेकिन उन्होंने कभी ऐसी मृत्यु नहीं देखी थी जिसमें भयानक ज्वालाओं ने भूमिका निभाई हो। इसलिए, वे कुछ देर तक झिझकते रहे।

फिर भी चंद्र ने इस बारे में कुछ नहीं किया।

फिर राजा गिद्ध, शायद इस शव को सबसे पहले देखने के कारण, अनाड़ीपन से कुछ कदम आगे बढ़ा और जिज्ञासावश शव को चोंच मारी।

इस बार चंद्र ने कुछ किया। उसने एक छोटा पत्थर फेंका।

वह पत्थर पर उछला और राजा गिद्ध को चौंका दिया, जो मुड़कर वापस दूसरे पक्षियों के साथ मिल गया। पक्षियों ने पत्थर फेंकने वाले को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा।

"घिनौना पक्षी," चंद्र ने मानो मन ही मन बुदबुदाया, "तुम जितने घिनौने हो, उस भोजन का सेवन मत करो जो तुमसे भी कहीं अधिक घिनौना है।"

मृत शरीर को नोचने से हतोत्साहित होकर, गिद्ध उड़े नहीं। वे अपने घेरे में ही मंडराते रहे और बारी-बारी से रूथ के अवशेषों और चंद्र की ओर देखते रहे, मानो वे अपने भयानक भोज को शुरू करने के लिए उसकी अनुमति की प्रतीक्षा कर रहे हों।

लेकिन चींटियों और मक्खियों ने शव को ढक लिया और चंद्र ने उनके बारे में कुछ नहीं किया।

जॉन चौराहे पर आधे घंटे तक बस का इंतज़ार करता रहा। बस एक पुरानी शेवरले थी, जो जर्जर हालत में थी और कई वेल्डिंग और जोड़ों के सहारे टिकी हुई थी। ड्राइवर ने उसे चढ़ने के लिए बस रोकी। पहले से ही ठसाठस भरी हुई बस में बैठे यात्री

और भी पास-पास बैठ गए ताकि जगह बन सके और गाड़ी अपनी धीमी गति से आगे बढ़ गई।

नीलांबुर तक 34 मील की दूरी तय करने में लगभग दो घंटे लगे।

टेड ने जॉन की थकी हुई सूरत और पसीने से भीगे हुए कपड़ों को देखकर अनुमान लगाया कि वह कोई बुरी खबर लेकर आया है।

"आपको देखकर खुशी हुई, जॉन," उसने बात शुरू की, और फिर पूछा, "कोई परेशानी तो नहीं? आप थके हुए लग रहे हैं।"

"रूथ मर गई!" बागान मालिक ने घोषणा की, "जीप दुर्घटना में उसकी मौत हो गई।"

"हे भगवान!" डीएसपी ने चीखते हुए कहा, उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह बुरी तरह लड़खड़ाने लगा। "मर गया, क्या तुमने कहा?" उसने अविश्वास से दोहराया, "मर गया! हे भगवान! ऐसा नहीं हो सकता!"

इसमें जरा भी संदेह नहीं था कि रूथ और उस आदमी के बीच दोस्ती से कहीं अधिक भावनाएं थीं।

जॉन को उसकी मौत से खुशी हुई।

"यह कैसे हुआ?" टेड पूछ रहा था।

बागान मालिक के होंठों के कोनों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान की झलक दिखी। उसने कहा, "उसे पिछले दो दिनों से सिरदर्द की शिकायत थी और उसने मुझसे जीप इस्तेमाल करने के लिए कहा ताकि वह यहाँ डॉक्टर को दिखा सके। वह आज सुबह जल्दी चली गई।"

"यह घटना कहाँ हुई?" अधीक्षक ने बीच में ही टोकते हुए पूछा।

"आठवें हेयर-पिन मोड़ पर, बंगले से लगभग सात मील की दूरी पर"।

"दुर्घटना का कारण क्या था?"

“मैं इसी ओर आ रहा था,” जॉन ने जवाब दिया। “जब मैं रूथ के शव को देख रहा था, तब चंद्र, जो मेरे साथ घटनास्थल पर आया था, ने दुर्घटनास्थल का मुआयना किया। टाई-बार ढीले थे। उन्हें पकड़ने वाला नट निकल गया था। दरअसल, हमने नट की तलाश की और चंद्र को वह मिल गया, सड़क के बीचोंबीच, उस जगह से थोड़ी दूरी पर जहाँ जीप गहरी खाई में गिरी थी। बोल्ट लुढ़ककर नाली में चला गया था।”

"ये रहे," उसने अपनी जेब से बोल्ट नट निकालकर टेड को देते हुए कहा।

"हे भगवान!" बेकर ने हैरानी से कहा, "क्या आपको सच में लगता है कि यह दुर्घटना इस नट के गिरने के कारण हुई थी?"

"निस्संदेह," ग्रेस्टोन ने स्पष्ट रूप से कहा, "लेकिन यह अपने आप ढीला होकर गिर गया या किसी ने जानबूझकर इसे गिराने के इरादे से ढीला किया, यह आपको पता लगाना होगा। दरअसल, चंद्र ने यही कहा था, साथ ही दुर्घटना को किस्मत की मर्जी या कुछ इसी तरह की बात भी कही थी। दुर्भाग्य से, रूथ उसे पसंद नहीं करती थी और अक्सर यह दिखाती भी थी, और मैं जानता हूँ कि वह भी उसे पसंद नहीं करता था।"

"हां, मुझे पता है," टेड ने सहमति जताई।

"तुम्हें यह कैसे पता चला?" जॉन ने पूछा। उसका सवाल बेहद तीखा था।

“मैंने…मैंने अभी-अभी इसे देखा,” डी.एस.पी. ने बेतुके ढंग से झूठ बोला। फिर उसने पूछा, “नौकर अब कहाँ है?”

"मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और बस से आकर आपको इस मामले की सूचना दी," ग्रेस्टोन ने समझाया।

अधीक्षक ने मानो खुद पर काबू पा लिया था और वे एक संभावित हत्या की जांच के प्रभारी पुलिस अधिकारी बन गए थे। "ठीक है," उन्होंने जवाब दिया और दरवाजे की ओर सिर उठाकर चिल्लाए, "पहरेदार! इंस्पेक्टर साहब को जल्दी बुलाओ।"

इंस्पेक्टर आया और बेकर ने कहा, "एम्बुलेंस बुलाओ और डॉक्टर को भी बुलाओ। एक दुर्घटना हुई है और श्रीमती ग्रेस्टोन की मृत्यु हो गई है।"

कुछ देर बाद, जॉन को अपने बगल में बैठाकर, वह ब्यूक कार को दुर्घटनास्थल की ओर ले गया। एम्बुलेंस में डॉक्टर, इंस्पेक्टर और दो स्ट्रेचर उठाने वाले मौजूद थे।

टेड और जॉन दोनों ने एक-दूसरे से बात नहीं की, क्योंकि दोनों ही अपने-अपने विचारों में डूबे हुए थे।

जब ब्यूक और एम्बुलेंस उस मनहूस मोड़ पर पहुँचे, तो उनमें सवार लोगों ने नीचे की ओर देखा और चंद्र को मलबे के ऊपर एक चट्टान पर बैठे हुए पाया। लेकिन जैसे ही वे नीचे उतरे, राजा गिद्ध और उसके साथी कुछ कदम लड़खड़ाते हुए चले और फिर भारी पंखों के साथ चारों दिशाओं में उड़ गए।

चंद्र उनका अभिवादन करने के लिए उठ खड़ा हुआ।

फिर उन्होंने चींटियों और मक्खियों को देखा। यूहन्ना ने उससे क्रोधपूर्वक कहा, "इसका क्या मतलब है? क्या तुम कम से कम मक्खियों को तो भगा सकते थे?"

"मरे हुए शरीर को छूना मेरी जाति के खिलाफ है, साहब," चंद्र ने संयम से अंग्रेजी में जवाब दिया, जाहिर तौर पर टेड को सुनाने के लिए।

डॉक्टर और स्ट्रेचर उठाने वालों ने रूथ के बचे हुए हिस्से को स्ट्रेचर पर उठाया और फिर बोझ ढोते हुए पहाड़ी पर चढ़ गए। टेड ने इंस्पेक्टर को वहीं छोड़ दिया और वादा किया कि वह जल्द ही निलंबूर से पुलिसकर्मियों को भेजकर उनकी जगह ले लेगा।

जब वह अपने कार्यालय वापस लौटे, तो डीएसपी ने खुद को अंदर बंद कर लिया।

वह सोच रहा था। उसने मुझे बताया कि वह निलंबूर आएगी, लेकिन उसे उम्मीद थी कि जॉन की सहमति मिलने में कुछ दिन लगेंगे। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वह मान जाएगा। अजीब बात है कि उसने कोई आपत्ति नहीं जताई! मुझसे बात करते समय उसका रवैया अजीब था। क्या चंद्र ने हमारी योजना सुन ली थी? क्या उसने सबको बता दिया?

अध्याय 28

उस शैतान बाघिन ने मुझे ढूंढ लिया—इससे पहले कि मैं उसे देख पाती।

रूथ की हत्या को दो सप्ताह बीत चुके थे। औपचारिकता के तौर पर एक जांच हुई थी और डॉक्टर ने दुर्घटना के कारण लगी कई चोटों और आग से जलने से हुई मौत का फैसला सुनाया था।

ग्रेस्टोन ने अपना काम जारी रखने की पूरी कोशिश की।

नेविल गार्डनर और जून एक बार उनसे शोक व्यक्त करने के लिए मिलने गए। दोनों ने उनके चेहरे में आए बदलाव को महसूस किया, हालांकि जून की सहज प्रवृत्ति ने गहराई से समझने में मदद की और उसे पता चला कि जॉन किसी बात को लेकर बहुत चिंतित थे। उसे लगा कि उनके चेहरे पर डर के भाव थे।

कुछ दिनों बाद डी.एस.पी. गार्डनर के घर गए और कहा कि वे यह जानने आए हैं कि वन विभाग के अधीनस्थों के साथ कोई नई घटना या परेशानी के संकेत मिले हैं या नहीं। उन्होंने कई सवाल भी पूछे। क्या उन्होंने हाल ही में जॉन और रूथ के एक-दूसरे के प्रति व्यवहार में कुछ असामान्य देखा था? क्या वे अक्सर झगड़ते रहते थे?

अगर टेड को किसी भी तरह की जानकारी मिलने की उम्मीद थी तो वह निराश हुआ होगा। लेकिन सवालों की प्रकृति से जून को यह संकेत मिला कि पुलिस अधिकारी जॉन ग्रेस्टोन और उसकी पत्नी के बीच के रिश्ते को अच्छी तरह से नहीं जानता था।

इससे वह सोचने लगी। क्या इस मामले में कोई और भी शामिल था? अगर हां, तो वह कौन हो सकता है? उसे पता था कि डीएसपी खुद वहां अक्सर जाया करता था।

जून सोचने लगी। क्या वह पुलिस अधिकारी वही आदमी था? क्या जॉन को पता चला था कि उसकी पत्नी उसके साथ बेवफाई कर रही है?

क्या उसने उसकी हत्या की थी?

सबने कहा कि दुर्घटना स्टीयरिंग मैकेनिज्म के किसी हिस्से से नट के गिरने के कारण हुई थी। लेकिन क्या वह सचमुच गिरा था; या उसे गिराया गया था?

वह खुद भी बहुत चिंतित होने लगी।

इन सब के चलते, ग्रेस्टोन लगभग उस आदमखोर के बारे में भूल ही गया था।

लेकिन करुम्बा जनजाति के चिका ने ऐसा नहीं किया। वह प्रतिदिन जंगल और कराडी अर्र में घूमता रहता था ताकि बाघिन के पदचिह्नों से यह पता लगा सके कि क्या वह अभी भी धारा के पास घूमती है और क्या वह अभी भी उस गुफा में रहती है जिसे उसने खोजा था।

और इस तरह, एक सुबह तड़के, संयोग से उसे उसके ताज़े पदचिह्न दिखाई दिए। वह पहाड़ी से नीचे आई थी, करादी अर्र की गीली रेत पार की थी, और एक सहायक नदी पर चल पड़ी थी जो नाले के पूर्वी किनारे पर जाकर मिलती थी। अचानक, चिका ने इन पदचिह्नों का पीछा करने का फैसला किया, यह देखने के लिए कि वे कहाँ ले जाते हैं।

हालांकि नदी पूरी तरह से सूखी थी, लेकिन सहायक नदी का तल रेतीला था, जिससे बाघिन के पदचिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। चिका अत्यंत सावधानी से, खतरे के किसी भी संकेत के प्रति सतर्क रहते हुए, उनका पीछा करने लगा। कुछ दूरी तय करने के बाद, उसने देखा कि जिन पदचिह्नों का वह अनुसरण कर रहा था, उनका स्वरूप अचानक बदल गया था।

इस बिंदु तक बाघिन बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर घूम रही थी। उसने मुख्य

धारा की गीली रेत और सहायक नदी के सूखे तल पर अपने चारों पैरों के निशान छोड़ दिए थे।

अचानक, ऐसा प्रतीत हुआ कि केवल दो पैरों के ही पदचिह्न दिखाई दिए, पहले की तरह चारों पैरों के नहीं। एक नौसिखिए के लिए, यदि वह इसे देख भी पाता, तो यह बदलाव समझ से परे होता। लेकिन चिका जैसे अनुभवी ट्रैकर के लिए इसका केवल एक ही अर्थ था। बाघिन अब हर कदम आगे बढ़ाते समय अपने पिछले पैरों को ठीक उसी स्थान पर रख रही थी जहाँ से उसके अगले पैर, चाहे दाएँ हों या बाएँ, अभी-अभी हटे थे।

वह ऐसा सिर्फ एक ही कारण से करेगी।

वह किसी चीज़ का पीछा कर रही थी और चुपचाप आगे बढ़ना चाहती थी। उसका शिकार कोई इंसान था या जानवर, चिका को इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। इसलिए वह उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

कुछ ही समय बाद पटरियों से संकेत मिला कि बाघिन सहायक नदी को पार कर चुकी थी और उसके पदचिह्न उस जंगल में उगने वाली पथरीली जमीन और घास पर दिखाई देना बंद हो गए, जिसमें वह गायब हो गई थी।

चिका मुड़ने ही वाला था कि तभी ऊपर उग रहे एक पेड़ पर किसी काली चीज़ की हलचल ने उसका ध्यान खींचा; ढलान वाला किनारा जो सूखी धारा की ओर नीचे जाता था, उस पर उसकी नज़र पड़ी। वह घुटनों के बल बैठ गया और जम गया।

वह चीज़ महज़ एक कौआ निकली। लेकिन यह कौआ बड़े अजीब तरीके से व्यवहार कर रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर में वह नीचे की डालियों पर उड़कर बैठ जाता था। जिस पेड़ पर कौआ बैठा था, वह चिका को साफ़ दिखाई दे रहा था, शायद पचहत्तर गज दूर। उसने देखा कि वह रेशम-कपास का पेड़ था जिसने मानसून की बारिश के लिए अपने पत्ते गिरा दिए थे। इस जगह से कौआ अपनी गर्दन और शरीर को नीचे झुकाकर कांव-कांव करता और बेचैनी से अपने पंख फड़फड़ाता रहा। फिर जैसे वह डर गया, वह फिर से ऊपर की डालियों में से एक पर उड़ गया।

कुछ देर बाद, आत्मविश्वास हासिल करते हुए, कौवे ने इस करतब को दोहराया, लेकिन इन प्रदर्शनों के बाद वह हिम्मत हार गया और पेड़ की एक ऊँची शाखा पर तेजी से वापस चला गया, जहाँ वह अपने घबराहट के हमले से उबरने की कोशिश कर रहा था।

"पक्षी को किस बात से डर लग रहा था?"

अंततः वह रेशम-कपास के पेड़ को छोड़कर पास के एक अपेक्षाकृत छोटे पेड़ पर उड़ गया, और यहाँ से उसने फिर से अपनी कष्टदायक कांव-कांव और पंखों को लगातार फड़फड़ाना शुरू कर दिया।

चिका को लगा कि उसने एक हल्की सी गुर्राहट सुनी है।

कौआ निश्चित रूप से बुरी तरह डर गया था, क्योंकि वह तेजी से वापस रेशम-कपास के सबसे ऊपरी हिस्से पर उड़ गया।

जब वह देख रहा था, चिका को पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी और एक गिद्ध अनाड़ीपन से कौवे के पास पेड़ की चोटी पर बैठ गया। गिद्ध ने कई बार नीचे देखा और सुबह की धूप में अपने पंखों को सुखाने के लिए आधा फैलाया। लेकिन उसने नीचे आने की कोशिश नहीं की।

एक और गिद्ध आया और पहले वाले के साथ मिल गया। उसने भी पेड़ पर नीचे बैठने या जमीन पर बैठने का साहस नहीं किया।

इन सभी संकेतों से नन्ही चिका के जंगल में पले-बढ़े दिमाग को पक्की जानकारी मिल गई। बाघिन ने बड़े पेड़ के नीचे किसी जानवर को मारा था। ठीक उसी समय वह या तो उसे खा रही थी या शायद पेट भरकर खा चुकी थी और शव के पास सो गई थी ताकि खाना पचा सके। लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि वह वहीं थी।

कौवे और गिद्धों ने उसे जगा दिया था। इसीलिए वे ज़मीन पर उड़ने या शिकार के पास आने से डर रहे थे। उनके अजीब व्यवहार से संकेत मिलता था कि वे ऊँचाई से बाघिन को देख सकते थे। कौवा लगातार कांव-कांव करके और अपने पंख फड़फड़ाकर बाघिन को परेशान और विचलित करने की कोशिश कर रहा था ताकि वह कुछ मिनटों के लिए वहाँ से भाग जाए और खुद कुछ शिकार बटोर सके। लेकिन बाघिन अपने भरपेट भोजन के बाद इतनी तृप्त थी कि उसने ऊपर डालियों पर हो रही छोटी-मोटी हलचलों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया।

इससे चिका सोचने लगा। अगर वह चुपके से बिना अपनी मौजूदगी का पता चले बाघिन को भगा दे, तो पूरी संभावना थी कि वह वहीं पड़ी रहेगी और कम से कम एक-दो घंटे तक वहीं रहेगी। इससे उसे अपने मालिक को बुलाकर बाघिन को गोली मारने का पर्याप्त समय मिल जाएगा।

चुपचाप, और जंगल में काम करने के अपने सारे ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए,

चिका धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। वह कौवे और गिद्धों को ध्यान से देखता रहा। वह जानता था कि घनी झाड़ियों के बीच ज़मीन पर बैठी बाघिन उसे नहीं देख सकती, जबकि पक्षी देख सकते थे। अगर वे उसे देख लेते, तो वे घबरा जाते। बाघिन तुरंत उस घबराहट को पहचान लेती। वह या तो तुरंत गायब हो जाती, या फिर यह पता लगाने का फैसला करती कि आखिर पक्षियों को क्या डरा रहा है। और अगर वह बाद वाला रास्ता चुनती, तो उसे जल्द ही उसकी मौजूदगी का पता चल जाता। फिर उसकी तुरंत और भयानक मौत हो जाती!

तो चिका कौवे और गिद्धों को देखता रहा। हर बार जब वे अपना सिर दूसरी तरफ घुमाते, तो वह तेज़ी से आधा दर्जन या उससे अधिक कदम पीछे हट जाता। फिर जब वे उसकी ओर दोबारा देखते, तो वह वहीं स्थिर खड़ा हो जाता।

इस तरह वह एक आड़ में झाड़ी के पास पहुंचा। झट से वह उसके पीछे छिप गया और अपने और उस पेड़ के बीच झाड़ी को रखते हुए, जिस पर तीनों पक्षी बैठे थे, चिका वहां से ओझल हो गया।

जैसे ही वह पक्षियों और बाघिन की नज़र और आवाज़ से ओझल हुआ, उसने दौड़ना शुरू कर दिया और तब तक दौड़ता रहा जब तक कि वह जॉन के बंगले के बरामदे की ओर जाने वाली सीढ़ियों के नीचे नहीं पहुँच गया, उसकी छाती हांफती हुई सांसों से ऊपर-नीचे हो रही थी, जबकि उसके नंगे धड़ पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं।

"डोराई! डोराई! जल्दी आओ; मुझे बाघिन मिल गई है," उसने जोर से पुकारा।

जॉन अपनी डेस्क पर बैठकर खातों की जाँच कर रहा था तभी उसने चिका की आवाज़ सुनी। वह तुरंत उसके पास आया।

करुम्बा ने तीखे स्वर में कहा, "अपनी राइफल लेकर जल्दी आओ, दोराई। बाघिन अपने शिकार के साथ है और मुझे लगता है कि तुम्हारे पास उसे गोली मारने का मौका है।"

जॉन ने और कुछ सुनने का इंतजार नहीं किया। उसने दो बैरल वाली .470 पिस्तौल उठाई और कारतूसों से भरी मुट्ठी भर कारतूस अपने पहने हुए खाकी रंग के बुश कोट की जेब में ठूंस ली।

उसने सामान ढोने वाले को बुलाकर जल्दी से कहा, "चिका ने बाघिन को ढूंढ लिया है और मैं उसे गोली मारने जा रहा हूँ। मेरे लौटने तक तुम यहीं रहो।"

चंद्र ने सिर झुकाते हुए कहा, "ईश्वर आपको सौभाग्य प्रदान करें, साहब।"

चिका आगे-आगे चल रही थी और जॉन तेज़ी से उसके पीछे-पीछे आ रहा था। जब वे करादी अर्र के तल पर पहुँचे, तो करुंबा ने उस बाघिन के ताज़े पदचिह्नों की ओर इशारा किया, जिनका पीछा उसने दिन में पहले किया था।

फिर वह रुका और जॉन से फुसफुसाते हुए बोला, "चलो अब अपने हमले की योजना बनाते हैं, दोराई। एक बार जब हम सहायक नदी के किनारे चलना शुरू कर दें, तो हमें बिल्कुल भी नहीं बोलना चाहिए, फुसफुसाहट में भी नहीं। दोनों ओर खड़ी ढलानें हैं। हमारी आवाज़ घाटी में ही दब जाएगी; और शैतान बाघिन के कानों तक पहुँच सकती है।"

उन्होंने आगे कहा, "मेरे पास एक विचार है और मुझे लगता है कि मौजूदा परिस्थितियों में यही एकमात्र व्यवहार्य विचार है।"

"हम चुपचाप सहायक नदी के किनारे-किनारे उस जगह तक रेंगेंगे जहाँ मैंने कौआ और गिद्ध देखे थे। वहाँ तुम्हें एक पेड़ के पीछे छिप जाना, उस तरफ जहाँ बाघिन लेटी है, उसके ठीक विपरीत दिशा में।" "मैं सहायक नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ूंगा और घूमकर किनारे पर चढ़ूंगा और उसके पीछे और ऊपर से निकल आऊंगा।"

जब मुझे लगेगा कि मैं सही जगह पर पहुँच गया हूँ, तो मैं छुपकर दो पत्थरों को धीरे से आपस में टकराऊँगा। मैं ज़्यादा शोर नहीं करूँगा और न ही पत्थरों को बार-बार टकराऊँगा। क्योंकि अगर मैं ज़ोर से आवाज़ करूँगा तो बाघिन डर जाएगी और भाग जाएगी।

मैं उसे जगाने और परेशान करने के लिए पर्याप्त शोर करूंगा, लेकिन उसे डराऊंगा नहीं। इससे वह अपना शिकार छोड़कर शोर के स्रोत से दूर खिसक जाएगी।

"जब मैं पहाड़ी पर उसके ऊपर रहकर पत्थरों को आपस में टकराऊंगा, तो वह तुम्हारी ओर नीचे आएगी क्योंकि बड़ी पहाड़ी पर स्थित उसकी गुफा तक जाने का उसका प्राकृतिक रास्ता सहायक नदी और कराडी अर्र से होकर गुजरता है। साथ ही, दोनों धाराओं के किनारों पर उगने वाले पेड़ों की आड़ भी बाघिन को शोर से बचने के लिए आकर्षित करेगी। इन सब बातों से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि वह तुम्हारी दिशा में ही आएगी।"

"और जब तुम गोली चलाओ, तो जान से मारने के इरादे से गोली चलाओ,

गुरुजी," उसने अंत में कहा।

"यह बहुत खतरनाक है, चिका! मेरा मतलब है, तुम्हारे लिए! तुम निहत्थी हो, और बाघिन पहाड़ी पर ऊपर से तुम्हारी आवाज सुन सकती है। जिज्ञासावश वह खुद ही खटखटाहट की आवाजों का कारण पता लगाने की कोशिश कर सकती है। याद रखना, मैं तुम्हारी मदद नहीं कर पाऊँगी, क्योंकि नदी के किनारे से मैं तुम्हें या बाघिन को देख नहीं पाऊँगी।"

"मेरे लिए चिंता मत करो, डोराई," चिका ने मुस्कुराते हुए आश्वासन दिया, "मैं अपना ख्याल रख सकती हूँ। खुद को अच्छे से छुपा लो ताकि जब वह नदी की ओर उतरे तो तुम्हें न देख पाए।"

एक बार फिर चिका ने आगे बढ़कर नेतृत्व संभाला और वे सहायक नदी के सूखे तल पर रेंगते हुए आगे बढ़े। जॉन को बाघिन के पदचिह्न और करुंबा के नंगे पैरों के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, क्योंकि वह कुछ देर पहले ही नाले पर ऊपर-नीचे चला था।

अंततः वे उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ से चिका ने पेड़ पर पक्षियों को देखा था। कौआ तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन गिद्ध अभी भी वहीं थे। अब तक आधे दर्जन से अधिक गिद्ध इकट्ठा हो चुके थे और सभी रेशम-कपास के पेड़ पर बैठे थे। यह तथ्य कि वे बाघिन द्वारा खाए जा रहे किसी भी मृत प्राणी को खाने के लिए ज़मीन पर नहीं उतरे थे, यह दर्शाता था कि बाघिन अभी भी वहीं थी।

करुम्बा ने जॉन की बांह को हल्का सा धक्का दिया और अपने दाहिने हाथ से कुछ गज आगे विपरीत किनारे पर उग रहे एक विशाल मुथी पेड़ के तने की ओर इशारा किया।

ग्रेस्टोन समझ गया था कि उस छोटे आदमी का मतलब था कि बाघिन को परेशान करने के बाद उसे रोकने के लिए उसे उस पेड़ के पीछे छिप जाना चाहिए। वह दबे पांव मुथी के तने तक गया और उसके पीछे छिप गया, जबकि चिका चुपके से नाले के ऊपर की ओर बढ़ता गया और झाड़ियों और घास में छिप गया क्योंकि सहायक नदी अपने रास्ते में टेढ़े-मेढ़े रास्तों से बहती जा रही थी।

जॉन लगभग एक घंटे तक करुंबा नदी की आवाज़ सुनने का इंतज़ार करता रहा। दोपहर हो चुकी थी और नदी के किनारे की रेत पर गर्मी की लहरें नाच रही थीं और झिलमिला रही थीं, हालांकि मुथी के पेड़ के नीचे ठंडक और छाया थी, जहाँ

उसने अपना कंधा उसके चिकने तने से टिका रखा था।

आखिरकार वह दस्तक सुनाई दी जिसका उसे लंबे समय से इंतज़ार था। सीधी रेखा में, चिका अब उससे एक फर्लांग से भी कम दूरी पर थी, और बाघिन बागान मालिक की तुलना में उसके कहीं अधिक करीब थी।

जॉन ने पहली दो आवाज़ें स्पष्ट रूप से सुनीं, जो जंगल में रहने वाले व्यक्ति द्वारा पत्थर के दो टुकड़ों को आपस में टकराने से हुई थीं।

क्लैक, क्लैक की आवाज आई; थोड़ी देर का विराम; और फिर से क्लैक, क्लैक की आवाज।

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। फिर वही आवाज दोबारा सुनाई दी; खट-खट; थोड़ी देर का विराम; और फिर खट-खट।

जॉन ने चुपचाप सेफ्टी कैच को आगे धकेलकर अपनी .470 पिस्तौल को पूरी तरह से लोड कर लिया। वह पेड़ से टिका रहा और उसकी निगाहें सामने वाले किनारे पर उगने वाली हर झाड़ी और घास के गुच्छे पर घूमती रहीं, मानो वह तेज धूप और गहरी छायाओं के बीच प्राकृतिक छलावरण को भेदने की कोशिश कर रहा हो, ताकि वह उस चमक और अंधेरे, भूरे और हरे पत्तों, घास और जमीन के मिश्रण में, लाल रंग की पृष्ठभूमि पर काली धारियों वाली बाघिन की भयावह आकृति को देख सके, जो उसकी ओर रेंगती हुई आ रही थी।

कुछ भी नहीं हिला, न ही उसे हल्की सी भी सरसराहट सुनाई दी।

फिर से, चिका ने अपने हाथ में पकड़े पत्थरों को आपस में पटका।

क्लैक, क्लैक; एक मिनट बाद फिर से क्लैक, क्लैक की आवाज।

फिर भी उसके सामने झाड़ियों, घास और घनी वनस्पति में कोई हलचल नहीं थी। पत्थरों के आपस में टकराने की आवाज भी अब बंद हो गई थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि करुम्बा ने यह निर्णय लिया था कि उसने सो रही बाघिन को जगाने और उसे अनावश्यक रूप से भयभीत किए बिना नाले और जॉन के तल की ओर चुपके से नीचे की ओर जाने के लिए पर्याप्त शोर मचा दिया था।

शायद दस मिनट बीत गए; हो सकता है पंद्रह मिनट।

फिर अचानक, मानो अधीर हो गया हो, चिका ने पत्थरों को एक बार फिर आपस में टकराया - खट-खट।

अगले ही पल जॉन के कानों में उसके सामने ऊंचे किनारे से एक तेज "आह!

आह!" की आवाज सुनाई दी, जिसके बाद एक भयानक मानवीय चीख सुनाई दी।

चीख फिर से सुनाई दी, और कुछ घुटती हुई आवाज़ें भी। जॉन को लगा कि वह पहले "डोराई" और फिर "मदद! मदद!" सुन पाया।

उसके बाद पूरी तरह सन्नाटा छा गया।

वो चीखें चिका की ही थीं। निःसंदेह उस आदमखोर ने उसे मार डाला था!

हताशा के आवेश में जॉन ने उस बाघिन को डराने के लिए अपनी .470 पिस्तौल की दोनों नालें हवा में चला दीं, जिस पर उसने हमला किया था।

वह चिल्लाया, "मैं आ रहा हूँ", और दौड़ते हुए अपनी बंदूक में कारतूस भरते हुए, अपने सामने खड़ी ढलान पर लड़खड़ाते हुए चढ़ने लगा।

जमीन पर, खून और हड्डियों के ढेर में, एक सांभर हिरण का तीन चौथाई खाया हुआ शव पड़ा था।

जॉन को यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि बाघिन के हमले के समय करुंबा कहाँ छिपी हुई थी, और न ही उसे यह पता था कि हमले के बाद वह उसे कहाँ ले गई थी। इसलिए, वह घबराकर भागते हुए पुकारने लगा, "चिका! तुम कहाँ हो?" लेकिन कोई जवाब नहीं आया, बस एक भयानक, डरावनी खामोशी छाई रही।

जैसे-जैसे जॉन ऊपर चढ़ता गया, वह लगभग उन्मादी होकर जोर-जोर से चिल्लाया, "चिका! मुझे जवाब दो! तुम कहाँ हो?"

हताशा में, वह झाड़ियों में इधर-उधर हाथ-पैर मारता रहा, परिश्रम और मन के भय से हांफता रहा और बार-बार अपने सेवक को पुकारता रहा।

आखिरकार उसे पास ही कहीं से कराहने जैसी आवाज़ सुनाई दी। जॉन वहीं रुक गया और घबराकर चिल्लाया, "चिका! चिका! क्या तुम हो? जवाब दो! कुछ बोलो ताकि मैं तुम्हें ढूंढ सकूँ।"

धीमी आवाज में जवाब आया, "मैं यहीं हूँ; एक झाड़ी के नीचे।"

जॉन ने उस दिशा का पता लगा लिया जहाँ से आवाज़ आई थी और आगे बढ़ने लगा, हर कदम पर झाड़ियों में खोजते हुए वह पुकार रहा था, "मैं तुम्हें सुन रहा हूँ, चिका। मैं अभी आ रहा हूँ। हिम्मत रखो; हौसला बनाए रखो।"

उसे करंबा एक झाड़ी के नीचे मिला, जहाँ बाघिन ने उसे छोड़ दिया था क्योंकि जॉन की दो राइफल गोलियों की आवाज़ से वह चौंक गई थी।

ग्रेस्टोन उस छोटे आदमी की जांच करने के लिए घुटनों के बल बैठ गया।

चिका के सीने पर गहरे घाव थे, और उसके बाएँ हिस्से में बड़े-बड़े छेद थे जहाँ बाघिन ने उसे अपने जबड़ों में जकड़कर ले गई थी। खून धीरे-धीरे, लाल रंग की धारा के रूप में ज़मीन पर बह रहा था।

उन भयानक घावों को देखकर जॉन ग्रेस्टोन को समझ आ गया था कि उसका छोटा शिकारी ज्यादा दिन नहीं जिएगा। चिका ने मुरझाई मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया। बहुत धीमी, रुक-रुक कर फुसफुसाहट में उसने कहा, "तुम सही कह रही थी डोराई, 'पिशाशी पिल्ली' (शैतान बाघिन) ने मुझे ढूंढ लिया - इससे पहले कि मैं उसे देख पाता!"

फिर वह बेहोश हो गया।

जॉन के मन में यह विचार घर कर गया था—एक जुनून की तरह—कि अगर इस बहादुर छोटे आदमी की मौत हो गई तो वह ज़िम्मेदार होगा। हर हाल में उसे उसे अपने बंगले तक ले जाना था, और वहाँ से निलंबूर के अस्पताल तक।

उसने अपनी राइफल एक छोटे पेड़ के सहारे टिका दी, घुटनों के बल बैठकर चिका को बाहों में उठाया और बेहोश चिका को अपने बाएं कंधे पर लाद लिया। फिर उसने अपने दाहिने हाथ में राइफल उठाई और लड़खड़ाते हुए पहाड़ी से नीचे उतरने लगा। ढलान बहुत तेज थी और वह कई बार गिरने से बाल-बाल बचा।

अंततः वह सहायक नदी के किनारे पहुँच गया और नन्हे करुंबा के बेजान शरीर को अपने कंधे पर लादे हुए, करादी अर्र की ओर यथासंभव तेज़ी से चलने लगा। लेकिन जॉन अभी वहाँ पहुँचा भी नहीं था कि उसने महसूस किया कि चिका तड़पी, थोड़ा छटपटाई और फिर बेजान हो गई।

उसने अपना बायां हाथ करुंबा के खून से लथपथ हिस्से को छूने के लिए मोड़ा, लेकिन उसे वहां कोई हलचल या सांस महसूस नहीं हुई।

जैसे ही जॉन ने शव को सहायक नदी के रेतीले तल पर रखा, उसे पता चल गया कि उसका साथी मर चुका है।

कुछ मिनट बाद उसने उसे फिर से उठाया, शव को अपने कंधे पर लादा और करादी अर्र स्थित अपने बंगले की ओर चल पड़ा। उसकी खुरदरी त्वचा पर आंसू बह रहे थे।

जब वह अपने घर के आसपास खुले मैदान में पहुँचा तो दो लोगों ने उसे देखा। एक जून थी। वह अपने पिता के निमंत्रण पर अगले दिन दोपहर के भोजन के लिए

आई थी। दूसरा चंद्र था, जो उसे बता रहा था कि उसका मालिक और चिका बाघिन के पीछे गए हैं।

इतनी दूरी से, पीड़ित के खून से लथपथ वह बागान मालिक एक भयावह दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। जून और चंद्र दोनों यह देखने के लिए दौड़ पड़े कि मामला क्या है।

चंद्र ने शव को उस गोदाम तक ले जाने में मदद की, जहाँ चिक्का रहता था, और वहाँ उन्होंने शव को उसकी चारपाई पर रख दिया। जॉन ने मन ही मन उदास भाव से कहा, "अब उसकी जाति उसे रोक नहीं सकती।"

ग्रेस्टोन ने संक्षेप में जो कुछ हुआ था उसका वर्णन किया और अंत में कहा, "मैंने देखा कि रेशम-कपास के खेत के बगल में एक बरगद का पेड़ है जिसकी कई नीची शाखाएँ हैं। मैं अब गिद्धों के लौटने से पहले वापस जा रहा हूँ और इस बरगद पर पूरी रात बैठूंगा। शायद बाघिन चिका को ढूंढने या बचे हुए सांभर को खाने के लिए वापस आ जाए। इसकी संभावना बहुत कम है, हालाँकि पूरी संभावना यही है कि मेरी राइफल की गोलियों ने उसे पूरी तरह से डराकर भगा दिया होगा।"

"लेकिन तुमने माचन नहीं बांधा है, जॉन," जून ने घबराकर उसे याद दिलाया, और खुद को उसका पहला नाम लेकर संबोधित करते हुए पाकर वह शरमा गई।

बागान मालिक ने एक पल के लिए उसकी ओर देखा। जाहिर है, उसने भी यह बात नोटिस कर ली थी। फिर उसने जवाब दिया, "मचान की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह काफी घना बरगद है और मैं कहीं न कहीं आराम से बैठ जाऊंगा। मैं अपने साथ एक तकिया ले जाऊंगा ताकि थोड़ा और आराम मिल सके।"

जून का चेहरा दृढ़ता से तन गया। लगभग चुनौती भरे लहजे में उसने बुदबुदाते हुए कहा, "हम दो तकिए लेंगे, जॉन; क्योंकि मैं तुम्हारा साथ देने आ रही हूँ।"

ग्रेस्टोन ने ऊपर देखा। इस लड़की के साथ रहने से उसकी गतिविधियों में बाधा आएगी। यह सुरक्षित नहीं होगा। उसे ऐसा होने नहीं देना चाहिए।

फिर उसने उसकी गहरी काली आँखों में देखा। उसने उसके कंधों पर लटकते काले बाल देखे; उसने .3006 राइफल की पट्टी देखी जो उसके स्तनों के बीच से गुज़रती हुई उनकी सुडौल बनावट को उभार रही थी। और उसने कोई विरोध नहीं किया।

जून ने बोलना शुरू किया। चंद्र को संबोधित करते हुए उसने हिंदुस्तानी में पूछा,

"क्या आप मेरे पिता को संदेश भेजकर सारी बात बता देंगे? कृपया उन्हें सूचित कर दीजिएगा कि मैं कल सुबह ही लौट आऊंगी।"

चंद्र ने उसका संदेश पहुंचाने का वादा किया।

"मुझे ये खून से सने कपड़े उतारने के लिए पंद्रह मिनट का समय दो," जॉन ने उससे कहा। "इस बीच, चंद्रा तुम्हें चाय और बिस्कुट परोस देगी।"

फिर उसने कुछ ऐसा किया जिससे जून का दम घुट गया। वह चारपाई पर पड़े क्षत-विक्षत शरीर के पास गया, अपना हाथ कोमलता से उसके माथे पर रखा और तमिल में बोला, उसकी आवाज़ धीरे-धीरे भारी होती जा रही थी: "निश्चिंत रहो मेरे प्यारे दोस्त, शांति से आराम करो; मैं तुम्हारा बदला लूंगा।"

अध्याय 29

देह का प्रलोभन

बीस मिनट बाद जॉन ग्रेस्टोन और जून कराडी अर्र की ओर तेज़ी से चलने लगे, दोनों अपने साथ एक-एक तकिया और कंबल लिए हुए थे ताकि रात ठंडी होने पर काम आ सके। शाम के चार बज चुके थे और उनके सारे विचार छोटी चिका के बारे में थे, जो अब उनके कमरे में चारपाई पर ठंड से बेहाल पड़ी थी।

वे सहायक नदी के पास पहुँचे और उसका अनुसरण करने के लिए अपना मार्ग बदल लिया। उनकी बंदूकें भरी हुई थीं और वे आसपास की झाड़ियों में हलचल के किसी भी संकेत की तलाश में थे। जल्द ही वे रेशमी कपास के पेड़ और शिकार की ओर चढ़ने लगे। जून ने चिका से टपके खून के धब्बे देखे जो पत्तियों पर पड़े थे।

कुछ गिद्ध, जो अब ज़मीन पर बैठे थे, उन्होंने सांभर का वह हिस्सा खा लिया था जिसे जॉन पत्तों से ढकने का समय न मिलने के कारण खा नहीं पाया था। उन्हें देखकर, विशाल पक्षी तेज़ी से फड़फड़ाते हुए उड़ गए।

उसने हिरण की ओर देखा। बाघिन के वापस आने को उचित ठहराने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त मांस बचा था, लेकिन जॉन जानता था कि उन्हें जोखिम उठाना ही होगा, क्योंकि वे आदमखोर को मारने की जरा सी भी उम्मीद को खोने नहीं दे सकते थे।

बाघिन की गुफा यहाँ से मुश्किल से तीन-चौथाई मील दूर थी, इसलिए हो सकता है कि वह मांसाहारी जानवर वापस आ जाए। फिर उसने पास के बरगद के पेड़ को ध्यान से देखा। जहाँ से बड़ी शाखाएँ दो भागों में बँटती थीं, वह जगह ज़मीन से

लगभग पंद्रह फीट ऊपर थी। ठीक ऊँचाई, उसने सोचा, तभी उसके मन में एक विचार आया। शाम हो चुकी थी और उन्हें जल्दी काम करना होगा।

“एक कंबल में जितनी हो सके उतनी सूखी पत्तियां भरकर मुझे दे दो”, उसने जून को निर्देश दिया। ये कहते ही जॉन पेड़ पर चढ़ गया और पत्तियों को ऊपर धकेलने लगा।

जून ने उसे पेड़ की शाखाओं के बीच बने गड्ढे में डाल दिया। एक और गठरी ने उस गड्ढे को भर दिया। जॉन ने पत्तियों को कुचलकर गड्ढे में अच्छी तरह दबा दिया। उसने दोनों तकियों को पत्तियों पर रखा और उन पर बैठकर सांभर के शव को साफ़ देखा। फिर वह पेड़ पर और ऊपर चढ़ गया और कुछ शाखाएँ तोड़ लीं जिन्हें उसने पास रख लिया ताकि बैठने के बाद उन्हें अपने चारों ओर रख सके।

शाम के 5:30 बज रहे थे जब जॉन ने कहा, "मेरा हाथ पकड़ो, जून," और उसे अपने पास खींच लिया। सब कुछ काफी आरामदायक था सिवाय इसके कि वे एक-दूसरे से कसकर चिपके हुए थे। जॉन ने बरगद की शाखाओं के बीच से निकली जगह में टूटी हुई कुछ टहनियों को लगा दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मृत हिरण के दृश्य में कोई बाधा न आए।

मचानों के लिहाज से, यह एक बेहद अपूर्ण व्यवस्था थी जो उनकी उपस्थिति को मुश्किल से ही छिपा पाती थी। लेकिन उपलब्ध परिस्थितियों और सीमित समय में वे इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे।

उसके बाद शाम का अंधेरा तेज़ी से छा गया, जैसा कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अक्सर देखने को मिलता है। कराडी अर्र में कुछ जंगली पक्षियों ने चहचहाया और जॉन और जून जहाँ बैठे थे, वहाँ से उन्हें सुन सकते थे। भूरे लंगूर बंदरों का एक परिवार रात को सोने जा रहा था, और पश्चिम में ऊँचे पेड़ों के पीछे डूबते हुए लाल होते सूरज को अपनी "वूम्प! वूम्प! वूम्प!" की आवाज़ों से विदाई दे रहा था, जो जंगल में गूँजती हुई कराडी अर्र से सटी पहाड़ी तक पहुँची, जहाँ चिका को बाघिन की मांद मिली थी।

चाँद देर से, लगभग 10 बजे ही निकलेगा। अगर आदमखोर सांप वापस आता है, तो शायद उससे पहले ही आ जाएगा और ग्रेस्टोन को गोली चलानी पड़ेगी क्योंकि जून की राइफल में टॉर्च नहीं थी।

लेकिन कुछ नहीं हुआ और उन्हें नीचे एक नेवले की सरसराहट के अलावा कोई

आवाज नहीं सुनाई दी, जो सांभर की आंतों को कुतर रहा था।

घंटे धीरे-धीरे बीतते गए। चाँद निकला, लेकिन आधी रात बीत जाने के काफी बाद तक उसका आंशिक प्रकाश पत्तियों के बीच से छनकर हल्की रोशनी बिखेरने लायक ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाया। नीचे पड़े हिरण के अवशेषों की आकृति भी ठीक से दिखाई नहीं दे रही थी।

आसमान साफ था। इससे तेजी से विकिरण हुआ और तापमान में काफी गिरावट आई। जून ने सिर्फ अपनी पतली खाकी कमीज और जॉधपुर्स पहनी हुई थी, जबकि जॉन जल्दबाजी में अपने और जून के लिए कोट लाना भूल गया था। उन्हें ठंड लगने लगी और उन्होंने कंबल ओढ़ लिए।

ठंड के कारण ही जॉन को अपने पास बैठी उस लड़की के गर्म शरीर का एहसास हुआ, जो सांभर के शिकार के सामने कंधे से कंधा मिलाकर बैठी थी। ठंडी हवा के झोंके जून के काले बालों की लटों को उसकी गर्दन और चेहरे पर बिखेर रहे थे। उसकी नाक में उसके शरीर की ताज़ा, स्वच्छ सुगंध समा रही थी।

अनजाने में ही, और लाख कोशिश करने के बावजूद भी, उसके मन में ये विचार आने लगे। उसे ये गंध रूथ की अक्सर शराब से भरी सांसों और उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पाउडर और इत्र की गंध से मिलने लगी। जॉन ने इन विचारों को काबू में रखने की पूरी कोशिश की। उसे लगा कि ये विचार रूथ की याद के प्रति विश्वासघात हैं। और ऐसे समय में जब वे चिका की मौत का बदला लेने के लिए आदमखोर के लौटने का इंतज़ार कर रहे थे, उसे पता था कि वह छोटी करुंबा के साथ भी विश्वासघात कर रहा है। उसका पूरा अस्तित्व उसके खिलाफ विद्रोह कर रहा था।

लेकिन जॉन ग्रेस्टोन भी आखिर एक पुरुष ही था। ये विचार उसके मन में बने रहे और बढ़ते गए। सुबह होते-होते कड़ाके की ठंड पड़ गई। ओस से भीगे उनके नम कंबलों ने उसकी बेचैनी और बढ़ा दी। जॉन ने अपनी साथी को कांपते हुए महसूस किया और उसके दांत किटकिटाने की आवाज सुनी। उसने संशय से अपना दाहिना हाथ अपनी राइफल के बर्फीले ठंडे बट से हटाया और धीरे से उसकी पतली कमर पर रख दिया।

जून ने न तो विरोध किया और न ही उससे दूर हटी। बल्कि, एक-दो मिनट बाद, उसने महसूस किया कि वह और करीब आ गई है।

वह सोचने लगा। क्या ठंड की वजह से उसने ऐसा किया या फिर कोई और

भावना थी?

उसके दिमाग में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे, और उनमें से एक विचार इतना प्रबल हो गया कि वह सर्वोपरि हो गया। यह एक जुनून बन गया। उसका विचार था कि सूर्योदय से पहले उसे खुद यह पता लगाना होगा कि जून ठंड के कारण उससे लिपट गई थी या किसी और प्रबल भावना के कारण।

धीरे से जॉन ग्रेस्टोन ने लड़की के शरीर को और करीब खींच लिया। वह जानता था कि लड़की को उसकी हरकत का पता चल ही जाएगा। अगर उसे यह पसंद नहीं आया, तो वह उसके द्वारा डाले जा रहे दबाव का विरोध करेगी।

जून एक जोशीली लड़की थी, जिसने अपनी उम्र और स्त्रीत्व से जुड़ी सारी भावनाएं और इच्छाएं पीछे छोड़ दी थीं। इतने सालों तक अपने पिता के साथ जंगलों में बिताए जीवन ने उसे इन भावनाओं को दबाने के लिए मजबूर कर दिया था। उसे कभी कोई ऐसा पुरुष नहीं मिला था जिससे उसे प्यार हो सके। इसलिए उसने उन भावनाओं को अंदर ही दबाकर रखा था जो कभी-कभी उसे परेशान करती थीं।

पिछले नौ घंटों से उस आदमी का शरीर उसके शरीर के इतने करीब था कि उसका संयम टूट रहा था। जब जॉन ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा, तो उसे एक ऐसा रोमांच महसूस हुआ जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। लाख कोशिश करने के बावजूद, वह उससे लिपट गई। वह अपने शरीर में हो रही उस तीव्र कंपकंपी को रोक नहीं पा रही थी, न ही अपनी सांसों की तेज़ और तीव्र आवाज़ को, जो जॉन तक पहुँच रही थी।

उसने संकेतों को सही ढंग से समझा और जान गया कि उसके बगल में खड़ी लड़की अब महज लड़की नहीं रही। वह दबी हुई इच्छाओं से व्याकुल एक स्त्री थी, जो अब विद्रोह की कगार पर थी। धीरे-धीरे, कोमलता से, लेकिन दृढ़ता से, वह इस सुंदर स्त्री को अपने वश में करने और उसके शरीर पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ा। इस तरह के प्रभुत्व के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, उसने पुरुषत्व के सभी छल-कपटों का प्रयोग किया।

जॉन ने उसके सिर के ऊपरी हिस्से पर धीरे से चुंबन किया, अपने होठों को उसकी गर्दन के पिछले हिस्से तक ले गया, और अपने मुंह को उसके लंबे बालों के बीच से मखमली त्वचा तक ले जाकर उसके कोमल कान के लोब को चूम लिया। उसने उसे भी चूमा और धीरे से फुसफुसाया, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, डार्लिंग"।

"जॉन, ओह जॉन," वह बुदबुदाई, और बढ़ती हुई भावनाओं के कारण वह और भी अधिक कांपने लगी।

उसने अपना सिर झुकाकर उसके गाल, नाक और होंठों को चूमा। जब वह होंठों तक पहुँचा तो पाया कि वे थोड़े खुले हुए थे, क्योंकि वह हाँफ रही थी। अब उत्सुकता और जोश से उसने बारी-बारी से अपने होंठ उसके होंठों पर रखे, और बड़ी नरमी से उसके निचले होंठ को अपने दाँतों के बीच लेकर इतना सा काटा कि उसे हल्का सा दर्द हुआ और उसकी बढ़ती हुई इच्छाएँ चरम पर पहुँच गईं।

जून छटपटाने लगी, उसकी गर्म काली आँखें वासना से नम हो गईं। फिर उसने अपनी जीभ उसके मुंह में डाली और उसे चारों ओर घुमाने लगा।

जून ने अपनी सारी झिझक खो दी और चुंबन के बदले चुंबन देने लगी; उसकी अपनी पतली, नम जीभ उसकी जीभ से मिलने के लिए तेजी से आगे बढ़ी।

ऊपर फैली दो शाखाओं के बीच बनी दरार में अपनी और उसकी राइफल रखकर, जॉन ने दोनों हाथों से चालाकी से उसकी कमीज़ के बटन खोले और उन्हें एक-एक करके उसकी ब्रा के नीचे सरकाते हुए उसके स्तनों को थाम लिया। विजयी पुरुष के अहंकार से भरा वह उसके कसे हुए, उभरे हुए निप्पल्स के स्पर्श और उसकी धीमी, मंद आहों के साथ उठने वाली उमंग भरी सनसनी से आनंदित था। अपना सिर झुकाकर उसने उसके एक स्तन को अपने होठों के बीच दबा लिया।

आदमखोर बाघिन के सारे ख्याल गायब हो गए। आवेश में आकर उसने उसे अपनी गोद में उठा लिया और उसे घुमाकर अपने सामने कर लिया।

"मुझे तुम चाहिए, जून," उसने अचानक कहा, "अभी! अभी!"

"मैं भी तुम्हें चाहती हूँ," उसने उसका जवाब सुना।

उस सुबह के शेष तीन घंटों के लिए वे उस बाघिन के बारे में पूरी तरह से बेखबर थे जो शायद नीचे घात लगाए बैठी हो; और उन्होंने एक-दूसरे को पूरी तरह से निचोड़ते हुए अपनी अनियंत्रित इच्छाओं की बार-बार की उत्तेजना का भरपूर आनंद लिया।

जॉन को अपनी तीव्र इच्छाओं को व्यक्त करने का एक ऐसा सहज और कामुक माध्यम मिल गया था जैसा उसने रूथ की कृत्रिमता में कभी अनुभव नहीं किया था, जबकि जून को आनंद के उस स्वर्ग में ले जाया गया था जिससे वह अपने पूरे जीवन वंचित रही थी।

वे अपने कंबलों में लिपटे सो रहे थे, जब भोर हुई, धूसर और ठंडी, जंगली मुर्गों

की तेज बांग और मोर और कुम्हारों की आवाजों से आस्त हुई, जैसे ही सूरज निकला और रात के दौरान ओस की पतली, रेशमी धुंध की चादर को हटा दिया।

नदी के किनारे कहीं उग रहे ऊंचे पेड़ों में से एक पेड़ से एक वर्षा-पक्षी ने तेजी से पुकारा: "को-एल!" "को-एल!" "को-एल!" "को-एल!" ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सारी सृष्टि बारिश के आने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही हो।

बाघिन शिकार के पास वापस नहीं लौटी थी। जॉन को आदमखोर की खाल से कहीं अधिक कीमती चीज मिली थी। उसे एक ऐसा नया और गहरा प्यार मिला था जैसा उसने पहले कभी नहीं जाना था।

जून लड़खड़ाते हुए पेड़ से नीचे उतरी। वह मुश्किल से चल पा रही थी। लेकिन, हालांकि उसके हावभाव से लग रहा था कि वह हार मान चुकी है, फिर भी उसके चेहरे पर जीत का वो भाव था जो एक पूर्णतः संतुष्ट महिला के चेहरे पर हमेशा दिखाई देता है।

अध्याय 30

नरभक्षी ने फिर से कमाल किया

अगले शुक्रवार की सुबह-सुबह नेविल गार्डनर टोनी पर सवार होकर लगभग तीस एकड़ की एक नर्सरी का दौरा करने के लिए निकले, जहाँ दक्षिणी भारत के जंगलों में चंदन के पेड़ों के बीच "स्पाइक-सिकनेस" नामक बीमारी पैदा करने वाले कीट को नष्ट करने के लिए एक एजेंट की खोज पर प्रयोग किए जा रहे थे।

यह मार्ग अधिकतर घने जंगल से होकर गुजरता था, सिवाय बीच में एक चौथाई मील के उस हिस्से के जहाँ रास्ता एक पहाड़ी के किनारे से होकर जाता था। यहाँ वनस्पति घनी झाड़ियों से बनी थी, जिसमें कांटेदार जंगली बेर प्रमुखता से उगते थे, और इनके बीच-बीच में ऊँची बाघ घास और बौने जंगली खजूर के गुच्छे दिखाई देते थे।

गार्डनर ने अपने पैराडॉक्स को घुड़सवार सेना की शैली में, मुंह नीचे की ओर लटकाकर, टोनी की बगल में काठी से बंधी चमड़े की म्यान में रखा हुआ था।

घोड़ा और उसका सवार घने जंगल के पहले हिस्से को पार करके झाड़ीदार जंगल के एक हिस्से में आ गए।

चारों ओर सन्नाटा पसरा था, कोई भी जीव-जंतु नज़र नहीं आ रहा था। टोनी शांति से दौड़ रहा था, रेंज ऑफिसर का शरीर उसकी चाल के साथ लयबद्ध ढंग से

हिल रहा था। वे झाड़ियों की पट्टी के लगभग बीचोंबीच पहुँच चुके थे।

गार्डनर के दाहिनी ओर पहाड़ी ऊपर की ओर उठती थी, जबकि दूसरी ओर यह एक उथली खाई में गिरती थी, जो बारिश से धुल गई थी और लैंटाना और जंगली बेर की झाड़ियों से भरी हुई थी, जो आपस में घनी तरह से उलझी हुई थीं।

अचानक, बाघ घास के एक ऊंचे गुच्छे के पीछे से नारंगी, काले और सफेद रंग की एक लंबी आकृति हवा में तेजी से आई और सीधे टोनी की छाती की ओर बढ़ी।

घोड़ा अचानक पीछे की ओर उछल पड़ा और भयंकर भय से चीखने लगा। उसका एक पैर पटरी से उतरकर बाईं ओर ढलान पर फिसल गया। टोनी का संतुलन बिगड़ गया और उसके पिछले पैर लड़खड़ा गए, जिससे उसका सवार लैंटाना और जंगली बेर से ढकी खाई में जा गिरा।

अगले ही पल बाघिन घोड़े की पीठ पर सवार हो गई, उसके चारों पंजों के नाखून उसके कांपते हुए मांस में मजबूती से धंस गए, जबकि उसने टोनी के गले तक पहुंचने के लिए अपनी गर्दन आगे की ओर झुकाई।

उसने उसे ढूंढ लिया और बेरहमी से उसकी गर्दन पर काट लिया। साथ ही, उसने अपने शरीर को उसकी पीठ से बाईं ओर सरकाया और अपने दांतों से उसका गला ऊपर की ओर खींच लिया। बाघिन की इस दोहरी हरकत से घोड़ा ज़मीन पर गिर पड़ा। यह पूरी क्रिया, जो हज़ारों पूर्वजों से विरासत में मिली सहज प्रवृत्ति के अनुसार की गई थी, मानो शैतानी सटीकता और चालाकी से योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दी गई हो। बाघिन के शरीर और घोड़े के भारी वज़न के संयुक्त भार ने टोनी की गर्दन की रीढ़ की हड्डियों पर उस जगह पर अत्यधिक दबाव डाला जहाँ बाघिन की जकड़ में उसका गला जकड़ा हुआ था।

पिस्तौल की गोली जैसी तेज़ आवाज़ हुई और टोनी की गर्दन टूट गई, वह ज़मीन पर गिर पड़ा, मानो किसी बाघ द्वारा किए गए हत्या के सिद्ध कौशल का एक उदाहरण हो। उसके बाद केवल कुछ ही सेकंड के लिए हलचल हुई, उसके खुरों की ज़मीन पर थपथपाहट, क्योंकि उसकी मांसपेशियां और नसें अंतिम बार ऐंठन के साथ काम कर रही थीं।

गार्डनर गिरने से बुरी तरह हिल गया था। कांटों ने उसके शरीर को बुरी तरह से चीर दिया था, जहाँ वह गिरा था, लेकिन उन्होंने ज़मीन पर गिरने के झटके को भी काफी हद तक कम कर दिया था। अपने वजन के कारण वह दो-तीन फीट तक कांटों

के गड्ढों में धंस गया और कांटे उसे जकड़ लिया। कई घाव देने के साथ-साथ, उन्होंने उसे बाघिन से भी छिपा लिया, और बाघिन टोनी को मारने में इतनी मशगूल थी कि उसे इस बात की परवाह ही नहीं थी कि उसका सवार कहाँ गिरा है।

रेंज ऑफिसर ने अपने वफादार घोड़े की अंतिम चीखें सुनीं, जिसके बाद कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। फिर शक्तिशाली जबड़ों के बीच मांस के चीरने और हड्डियों के चटकने की आवाज सुनाई दी, जब बिल्ली ने अपना भोजन शुरू किया।

गार्डनर काफी देर तक बेसुध पड़ा रहा, साँस लेने की भी हिम्मत नहीं कर पा रहा था। उसे पता था कि अगर उसने ज़रा सी भी हरकत की तो बाघिन ज़रूर सुन लेगी और कारण जानने के लिए आ जाएगी। वह उसे ढूँढ़ लेगी और निश्चित रूप से मार डालेगी। वैसे भी, आदमखोर बाघिन ने घोड़े पर हमला क्यों किया, उस पर क्यों नहीं, यह एक रहस्य ही बना रहा।

गार्डनर ने खुद को मूर्ख समझा कि उसने खुद को अचानक हमले का शिकार होने दिया। उसका विरोधाभास मृत घोड़े के साथ उसकी पहुँच से बाहर पड़ा था, जबकि वह पूरी तरह निहत्था था।

समय बीतता गया और दावत का शोर जारी रहा। अचानक, दूर से उसे पुरुषों की आवाज़ें और उनके साथ चल रहे मवेशियों के गले में बंधी घंटियों की झंकार सुनाई दी।

बाघिन ने भी यह आवाज सुनी। उसने अचानक खाना बंद कर दिया और चारों ओर सन्नाटा छा गया।

एक पल के लिए नेविल गार्डनर को लगा कि वह आने वाले मवेशी चराने वालों के दल को चेतावनी देने के लिए चिल्लाए, लेकिन उसे एहसास हुआ कि अगर उसने ऐसा किया तो वे भाग जाएंगे और वह शेरनी के रहमो-करम पर रह जाएगा। इसलिए, वह चुपचाप लेटा रहा।

आवाजों की संख्या से अंदाजा लगाया जा सकता है कि पास आ रहा समूह काफी बड़ा था और उनके साथ बहुत सारे मवेशी भी थे। शायद इसी वजह से बाघिन ने उन पर हमला करने से पहले थोड़ा संकोच किया होगा।

वह उसके ऊपर दहाड़ते हुए धमकी भरी आवाज में बोली, लेकिन वे लोग इतनी दूर थे कि उसकी आवाज नहीं सुन सके। वे आगे बढ़ते रहे और उनकी आवाजें स्पष्ट होती गईं, वे जोर-जोर से चर्चा कर रहे थे कि उनमें से एक को अपने बड़े बेटे की शादी

पड़ोसी की बेटी से करने के लिए कितनी दहेज की मांग करनी चाहिए।

उसी क्षण बाघिन का साहस टूट गया। गुर्राते हुए, वह उस गड्ढे के ऊपर से कूद गई जिसमें गार्डनर गिरा था और भाग गई।

मोड़ मुड़ते ही उन्होंने देखा कि घोड़ा पटरी के किनारे पड़ा हुआ है। उन्होंने उसके फटे हुए मांस, हड्डियों और खून को देखा और तुरंत समझ गए कि उसे उसी खूंखार बाघ ने मारा होगा जिसके बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुना था।

दल भागने के लिए मुड़ा, तभी रेंज ऑफिसर ने जोर से आवाज लगाकर और खुद को उलझाने वाले, जकड़ने वाले कांटों से निकालने की कोशिश करके अपनी उपस्थिति का एहसास कराया।

शरीर पर सैकड़ों कट और खरोंच लगे होने के बावजूद, वह खाई से रेंगकर बाहर निकलने में कामयाब रहा, जिससे वहां मौजूद चरवाहे पूरी तरह से अचंभित रह गए। अभी-अभी लगे भयानक भय के तुरंत बाद उसका बाहर आना उन्हें वहीं जड़वत कर गया।

वे एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा कर रहे पशुपालक निकले। आदमखोर बाघ के डर से, उन्होंने अपनी और अपने पशुओं की सुरक्षा के लिए तीस से अधिक लोगों का एक बड़ा समूह बनाया था और वे भीषण गर्मी में जंगल से गुजर रहे थे, ताकि उस खूंखार बाघ से किसी भी तरह का सामना न हो।

गार्डनर ने पूरी घटना समझाई। फिर वह घायल घोड़े के पास गया और उस दुर्भाग्यपूर्ण जानवर के अवशेषों को बड़े दुख से देखने लगा। "बेचारा टोनी," उसने लगभग ऊँची आवाज़ में कहा, "कितना भयानक अंत हुआ!"

झुककर उसने पैराडॉक्स की बट पकड़ी और उसे होल्स्टर से बाहर निकालकर जल्दी से उसकी जांच करने लगा। उसे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि हथियार को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था। रेंजर ने अपने साथियों की मदद से आसपास की झाड़ियों से कुछ छोटी टहनियाँ तोड़ीं और उन्हें शव के ऊपर रख दिया ताकि उसे गिद्धों से छिपाया जा सके। उसने जून को सारी बात बताने का फैसला किया और फिर टोनी के अवशेषों के पास बैठने के लिए वापस जाने का निश्चय किया।

जब रेंज ऑफिसर अपने क्वार्टर में पहुंचा, तो उसकी बेटी उसका स्वागत करने के लिए बाहर आई। उसके फटे-पुराने कपड़े और खून से लथपथ शरीर को देखकर उसकी आंखें भय से फटी रह गईं।

"हे भगवान, पापा! क्या हुआ?" उसने घबराहट में पूछा, "क्या आप गिर गए थे? टोनी कहाँ है?"

अपनी बेटी के लगातार पूछे जा रहे सवालों के जवाब में रेंजर ने धीमी आवाज़ में कहा, "टोनी मर गया है। बाघिन अचानक झाड़ी से हम पर झपट पड़ी," और फिर उसने अपने साथ घटी घटना का वर्णन किया।

जून गार्डनर फूट-फूटकर रोई। वह उस बूढ़े घोड़े को अपने पिता से भी ज़्यादा प्यार करती थी। उसके पिता उसे कितनी ही बार घुड़सवारी पर ले गए थे।

जब उसने खुद पर काबू पा लिया, तो उसने कहा, "पिताजी, मैंने आपसे पहले कभी कुछ नहीं मांगा, लेकिन अब मैं मांगने जा रही हूं, और आपको मना नहीं करना चाहिए।"

"मुझे टोनी के शव के ऊपर बैठने दो। मैं उसका बदला लेकर संतुष्टि पाना चाहता हूँ। वास्तव में, मैं तब तक चैन से नहीं बैठूंगा जब तक मैं इस भयानक दरिंदे को गोली न मार दूं जिसने इतने लोगों को मार डाला है, और अब मेरे बेचारे टोनी को भी।"

घोड़े का नाम सुनते ही वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी। गार्डनर को अपनी बेटी की सुरक्षा को लेकर बहुत डर था, इसलिए उसने अपनी सहमति दे दी। लेकिन वह उसकी दृढ़ प्रकृति को जानता था। इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया, और उसकी चुप्पी ने जून को बता दिया कि वह सहमत हो गया है।

उसने टॉर्च और क्लैंप के साथ उसका पैराडॉक्स उधार लिया, क्योंकि अगर बाघिन लौटती तो उसे देखने में मदद करने के लिए चांदनी नहीं होती। उसे केवल अपनी सुनने की क्षमता से ही काम चलाना पड़ता।

आखिरी क्षण में, गार्डनर को अपनी बेटी की योजना पर सहमति न देने का पछतावा होने लगा। उन्होंने कहा, "जून, मुझे नहीं लगता कि मुझे तुम्हें यह अकेले करने देना चाहिए। यह बहुत खतरनाक है और मैं बहुत चिंतित हो जाऊँगा। मुझे अकेले जाने दो; या अगर तुम ज़िद करती हो, तो हम दोनों साथ बैठ सकते हैं।" "नहीं पिताजी, आपकी नज़र पहले जैसी नहीं रही," उसने जवाब दिया, "आप बहुत बूढ़े हो गए हैं और ज़ोर भी बहुत ज़्यादा पड़ेगा। जहाँ तक हम दोनों के साथ बैठने की बात है, तो शायद बहुत शोर होगा। कृपया मुझे यह काम अकेले करने दीजिए।"

इसी वजह से, घबराहट में आकर और अपनी बेटी को बिना बताए, गार्डनर ने विभागीय काम में लगे चार कुलियों को जॉन ग्रेस्टोन के पास भेजा ताकि वे उसे घटना

के बारे में बता सकें और उन लोगों को निर्देश दिया कि वे एक साथ रहें ताकि आदमखोर से संभावित मुठभेड़ से खुद को बचा सकें।

कुली अपने मिशन पर निकल पड़े और थोड़ी देर बाद जून और उसके पिता तीन वन रक्षकों के साथ एक रस्सी से बंधी चारपाई (लकड़ी का पलंग जिसे मचान के रूप में इस्तेमाल किया जाना था) लेकर उस जगह के लिए रवाना हुए, जहाँ टोनी की हत्या हुई थी, जो लगभग दो मील दूर थी। दोपहर के लगभग 2 बज रहे थे और सूरज तेज चमक रहा था।

वे एक घंटे में उस स्थान पर पहुँच गए। जब गार्डों ने घोड़े के शरीर पर रखी हुई डालियाँ हटाईं तो जून फिर से रोने लगी। निर्भीक होकर वह टोनी के सिर के पास घास पर घुटने टेककर बैठ गई और उसके माथे को प्यार से चूमा—ठीक उसी जगह पर जहाँ टोनी अपने जीवनकाल में हमेशा उसे चूमना पसंद करता था।

आँखों में आँसू भरे हुए वह चारपाई बाँधने के लिए उपयुक्त पेड़ की तलाश करने लगी। सौभाग्य से उसे एक पेड़ मिल गया, एक इमली का पेड़। वह पेड़ टोनी के रास्ते से लगभग पचास गज आगे, थोड़ी दूरी पर था। लेकिन आसपास वही एक पेड़ था, बाकी वनस्पति काँटेदार जंगली बेर के ऊँचे झाड़ियाँ और छोटे पेड़ थे।

जून ने पेड़ पर लगभग अठारह फीट की ऊंचाई पर, पेड़ की दो-तिहाई दूरी पर एक जगह चुनी और पहरेदारों को वहाँ चारपाई लगाने का आदेश दिया। काम पूरा होने तक वह और उसके पिता नीचे बैठे रहे और उसी इमली के पेड़ की टहनियों से चारपाई को छिपाने का काम देखते रहे, ताकि अगर बाघिन गलती से ऊपर देखे तो उसे शक न हो।

उनमें एक छोटा सा छेद बनाया गया था जिसके माध्यम से जून मृत घोड़े की दिशा में पैराडॉक्स को स्वतंत्र रूप से इंगित कर सकती थी।

अंततः, काम पूरा हो गया और जून को लगा कि वह अच्छी तरह से छिप गई है। वह मचान पर चढ़ गई, अपने ऊपर से पत्तियों को हटाकर कुछ अंतिम रूप दिया और यह सुनिश्चित किया कि सामने का गैप इतना चौड़ा हो कि साफ शॉट लिया जा सके।

जिस चारपाई पर वह बैठी थी, उसकी रस्सियों से चबूतरे को एक लचीला प्रभाव मिलता था और वह आरामदायक थी, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसके अनजाने में होने वाली किसी भी हरकत से वे चरमराती नहीं थीं।

शाम 4:30 बजे उसने अपने पिता और तीनों गार्डों को विदा कर दिया और रात

भर पहरा देने के लिए तैयार हो गई। जून इस बार किसी भी कीमत पर बाघिन को मारना चाहती थी।

इसी बीच, तेज गति से चलते हुए, चारों कुली ठीक 4 बजे से पहले ग्रेस्टोन के बंगले पर पहुंचे और रेंजर का संदेश पहुंचाया।

उनकी बात पूरी होने का इंतज़ार किए बिना, जॉन ने अपनी .470 पिस्तौल और कुछ कारतूस उठाए और कुछ ही मिनटों में कुलियों के साथ वन विभाग की चौकी की ओर तेज़ी से चल पड़ा। उसे पता था कि अगर वह तेज़ी से चलेगा तो सूर्यास्त के समय शाम 6:30 बजे तक क्वार्टर पहुँच जाएगा।

अध्याय 31

लक्ष्य

टेड बेकर थका हुआ और बीमार लग रहा था। उसे पक्का पता था कि रूथ का खून किसने किया था और वह घृणा से भरा हुआ था।

सारी बातें चंद्र की ओर इशारा कर रही थीं, जो सारी परेशानी की जड़ था। उसे पूरा यकीन था कि नौकर ने रूथ और उसे प्रेम करते हुए देख लिया था। नौकर की वजह से ही उन्हें रूथ को नीलांबुर लाने की योजना बनानी पड़ी थी।

सामान्य तौर पर, जॉन को कभी कुछ पता नहीं चलता। लेकिन हालात सामान्य नहीं थे, और दुर्घटना की सूचना देने के लिए आने पर जॉन के हालिया व्यवहार से पता चलता है कि वह अपने और रूथ के बीच के रिश्ते के बारे में सब कुछ जानता था।

जॉन को कैसे पता चला? उसने तो उन्हें देखा तक नहीं था। इसका जवाब देना मुश्किल नहीं था। चंद्र ने ही उसे बताया होगा।

टेड को याद आया कि नौकर कितनी बार चुपचाप ड्राइंग रूम में घुस आता था और रूथ और उसे चौंका देता था। उसने ऐसा तब किया था जब वे दोनों एक-दूसरे को चूम रहे थे।

निःसंदेह, उन्होंने इससे कहीं अधिक देखा था।

रूथ ने अक्सर कहा था कि वह इस आदत के कारण उस वाहक से नफरत करती है और उसने जॉन से उसे हटाने के लिए कहा था।

लेकिन जॉन ने ऐसा नहीं किया था।

क्यों? मालिक और नौकर के बीच ऐसा कौन सा अजीब रिश्ता था कि उसके पति ने उसकी विनती को अनसुना कर दिया? आम तौर पर भारत में, अगर मेम-

साहिब नौकर को बर्खास्त करने के लिए कहती हैं, तो साहब बिना किसी झिझक के नौकर को बर्खास्त कर देते हैं। लेकिन ग्रेस्टोन ने खुद को अपवाद साबित कर दिया था।

क्या यह अजीब नहीं था? क्या इसका अपना कोई महत्व नहीं था?

टेड का चिंतित मन बेचैन और क्रोधित होने लगा। उसने तरह-तरह के कारण गढ़े और कल्पनाएँ कीं और सोचने लगा कि क्या जॉन ने चंद्रा को इसलिए नहीं हटाया क्योंकि उसने नौकर को विशेष रूप से अपनी पत्नी की जासूसी करने और टेड के साथ उसके व्यवहार की रिपोर्ट उसे देने का काम सौंपा था।

इसमें कोई शक नहीं था। नौकर रूथ से नफरत करता था और निश्चित रूप से उससे भी नफरत करता था, कम से कम इसलिए कि वह ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधि था।

इन सभी जटिल तर्क-वितर्कों से एक तथ्य उनके मन में स्पष्ट रूप से उभर आया। चंद्र से बदला लेना उनका परम कर्तव्य था। यह विचार उनके लिए एक अप्रतिरोध्य प्रेरणा बन गया और शाम तक उन्होंने अपना निर्णय कर लिया। वे चंद्र को संदेह के आधार पर गिरफ्तार करेंगे।

शाम के 5 बज चुके थे जब, अपनी भरी हुई रिवॉल्वर और हथकड़ी लेकर, टेड अपने मकसद को अंजाम देने के लिए निलंबूर से रॉब रॉय बंगले के लिए निकला, और शाम के 7 बजने से आधा घंटा पहले उसने बरामदे पर कार रोकी, बाहर निकला और बागान मालिक को पुकारा।

सामान उठाने वाला व्यक्ति औपचारिक सलाम करने के लिए बाहर आया और टूटी-फूटी अंग्रेजी में बोला, "मालिक, वह माली की पत्नी के साथ वन चौकी के पास आदमखोर बाघ का शिकार करने गया है। बाघ ने रेंजर साहब के घोड़े को मार डाला है। मालिक कल सुबह वापस आ जाइए।"

"मैं समझ गया," टेड बेकर ने बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए और नौकर की ओर बढ़ते हुए उत्तर दिया, "जैसा कि होता है, मैं आपके मालिक से नहीं, बल्कि आपसे मिलने आया हूँ। मैं आपको आपकी मेम-साहिब की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर रहा हूँ।"

बोलते-बोलते टेड ने अपनी जेब से हथकड़ी निकाली और चंद्रा का हाथ पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन नौकर उससे कहीं ज़्यादा फुर्तीला था। अचानक झुककर

वह पुलिसवाले के हाथ के नीचे से निकल गया और इससे पहले कि टेड उसे रोक पाता, वह बरामदे के चारों ओर बनी ईंटों की नीची रेलिंग को फांदकर बाहर बगीचे में कूद गया। बिना रुके वह परिसर के उस पार पीछे जंगल की दीवार की ओर दौड़ पड़ा।

टेड ने चमड़े के होल्स्टर से अपनी रिवॉल्वर निकाली और पीछे हटते हुए उस आकृति पर एक गोली चलाई, जो उसे बढ़ते अंधेरे में तेजी से धुंधली होती हुई सफेद रेखा के रूप में दिखाई दी। लेकिन उसका निशाना चूक गया।

फिर वह खुद रेलिंग के ऊपर से कूद गया और चंद्र के पीछे जितनी तेजी से हो सकता था, भागा।

अपने स्कूली दिनों में बेकर एक प्रतिभाशाली एथलीट थे और उन्होंने अल्प दूरी की दौड़ में कई पुरस्कार जीते थे। अब उन्होंने भगोड़े को पकड़ने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी।

उसने नौकर को पेड़ों की घनी छाया में ओझल होते देखा, और व्यर्थ गोलीबारी में समय बर्बाद करने के बजाय, टेड पूरी तेज़ी से उसके पीछे भागा, उसके दाहिने हाथ में रिवाल्वर अभी भी थी। जल्द ही वह भी घनी झाड़ियों तक पहुँच गया और जंगल ने उसे घेर लिया।

बेकर एक पल के लिए रुका और भागने की आवाज़ों से अपने शिकार की दिशा का पता लगाने की कोशिश की। जी हाँ, चंद्र के जंगल में तेज़ी से भागते समय उसे आगे झाड़ियों के चटकने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी।

टेड ने बेपरवाही से पीछा करने के लिए खुद को झोंक दिया, चाहे उसके यूनिफॉर्म, चेहरे और हाथों को चुभने वाले कांटे हों या लटकती लताएँ जो अक्सर उसे ठोकर मारकर जमीन पर गिरा देती हों।

वह बीच-बीच में रुककर सुनने लगा। कुछ देर तक टेड को झाड़ियों में से अपने शिकार के भागने की आवाज़ सुनाई देती रही, लेकिन आवाज़ धीरे-धीरे कम होती गई और फिर पूरी तरह बंद हो गई। क्या इसका मतलब यह था कि सामान ढोने वाला उससे आगे निकल गया था और भाग गया था? शायद उसने ऐसा किया ही न हो, बल्कि छल का सहारा लिया हो। हो सकता है वह घनी झाड़ियों में कहीं छिप गया हो और अपने पीछा करने वाले के गुजरने का इंतजार कर रहा हो। तब नौकर को बस बंगले की ओर वापस जाना था और भाग जाना था, जबकि टेड गोल-गोल भटकता रहता।

इसके साथ ही एक और विचार मन में आया, जो चिंताजनक था। शायद चंद्र भागने की कोशिश ही न करे, बल्कि अंधेरे में घात लगाकर उसकी हत्या करने का प्रयास करे। उसे क्या पता, हो सकता है कि हथियारबंद व्यक्ति के पास चाकू या कोई अन्य हथियार हो।

पेड़ों के बीच अब घोर अंधेरा था और वह किसी भी हमलावर का आसान शिकार बन सकता था, चाहे वह किसी भी तरफ से हमला करे या पीछे से आ जाए। वह पूरी तरह से अचानक हमले का शिकार हो जाएगा और अपने हमलावर की दया पर निर्भर हो जाएगा।

यह सोचते ही बेकर अचानक रुक गया और सुनने लगा। लेकिन उसे केवल अपनी तेज़ साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

उसने सांस वापस आने तक इंतजार किया। अब चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था—गहरा और पूर्ण सन्नाटा। एक भी झिंगुर की आवाज नहीं सुनाई दे रही थी और पेड़-पौधे और झाड़ियाँ उसे चारों ओर से घेरे हुए थीं।

टेड ने चारों ओर देखा, लेकिन उसकी नज़रें किसी भी दिशा में घने अंधेरे को भेद नहीं पाईं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस घने जंगल से बाहर निकलने के लिए उसे किस रास्ते जाना चाहिए। निलंबूर से निकलने की इतनी जल्दी में वह टॉर्च या माचिस की डिब्बी भी साथ लाना भूल गया था।

चंद्र को खोने के अलावा, वह खुद भी जंगल में खो गया था। डीएसपी ने पीछे मुड़कर उस दिशा में यथासंभव चुपचाप चलना शुरू किया, जहाँ से उसे लगा कि चंद्र आया होगा। चलते हुए उसने अपनी रिवॉल्वर तैयार रखी, ताकि अगर भारतीय उस पर हमला करने की कोशिश करे तो वह तुरंत उसका इस्तेमाल कर सके।

बेकर को जल्द ही एहसास हो गया कि तमाम कोशिशों के बावजूद, पेड़ों की जड़ों, पत्थरों और जंगल की ज़मीन पर बिछी लताओं पर ठोकर खाते हुए चलने से काफ़ी शोर हो रहा था। जितना हो सके सावधानी बरतते हुए वह अपने तय रास्ते पर चलता रहा। लेकिन वह बंगले तक नहीं पहुँचा और न ही उसके आस-पास भी आया। अंदाज़े से उसने सोचा कि रुकने और पीछा छोड़ने से पहले वह मुश्किल से एक मील ही दौड़ा होगा। लेकिन तब से वह एक घंटे से ज़्यादा चल चुका था और कम से कम दो मील या उससे ज़्यादा का सफ़र तय कर चुका था। अँधेरे में चमकती उसकी घड़ी में रात के 8:40 बज रहे थे। जंगल अब पहले से कहीं ज़्यादा घना हो गया था और पेड़

पहले से कहीं ज़्यादा ऊँचे और डरावने लग रहे थे।

तभी उसे यह बात पूरी तरह समझ आ गई; उसे कोई शक नहीं था कि वह पूरी तरह से रास्ता भटक गया है। टेड सोचने लगा। क्या उसे बैठ कर सुबह होने का इंतज़ार करना चाहिए? या फिर उसे तब तक चलते रहना चाहिए जब तक उसे कोई पगडंडी न मिल जाए जो उसे जंगल से बाहर निकाल दे?

अचानक उसे आदमखोर की मौजूदगी याद आ गई!

यह सोचकर ही उसके पसीने छूटने लगे कि कहीं वह बिल्ली जैसी प्राणी उस पल भी उसका पीछा न कर रही हो। वह अपने चारों ओर फैले काले अंधेरे को भेदने की कोशिश कर रहा था, साथ ही साथ वह बाघिन के दबे पांव उसकी ओर आने की हल्की सी भी आहट सुनने के लिए अपने कान चौकन्ने रखे हुए था।

जब टेड पूरी तरह से सतर्क था, तभी उसने पहली बार धीमी आवाज़ में फुसफुसाहट सुनी, जो दबी हुई थी। एक पल के लिए उसे लगा कि यह उसका भ्रम है, या शायद पेड़ों में रात की हवा की हल्की सरसराहट। जैसे ही उसने ध्यान से सुनना शुरू किया, उसे वह आवाज़ फिर से सुनाई दी।

टेड को अपने दाहिनी ओर कहीं से दबी आवाज़ में कुछ लोगों के बात करने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह सोच रहा था कि वे कौन हो सकते हैं। यह अजीब लग रहा था कि कोई इंसान रात में जंगल में डेरा डाले, जहाँ एक आदमखोर बाघिन ने इतने लोगों की जान ली थी। उसके मन में ख्याल आया कि शायद वे उसे बाहर निकलने का रास्ता दिखा दें, जिससे उसे कल सुबह तक घंटों इंतज़ार करने की थकान से छुटकारा मिल जाएगा। इसलिए, वह उस जगह की ओर चलने लगा जहाँ से आवाज़ें आ रही थीं।

कुछ ही क्षणों में, उसके सामने पेड़ों की शाखाओं के बीच, उसे आग की एक हल्की सी लौ दिखाई दी और उसकी नाक में पत्तों और लकड़ी के जलने की तीखी गंध समा गई। वह एक छोटे से खुले मैदान के किनारे पर पहुँचा और उस खुले स्थान के बीचोंबीच एक छोटी सी चट्टान दिखाई दी।

चट्टान पर तीन आदमी एक छोटी सी आग के चारों ओर बैठे थे। समय-समय पर उनमें से दो लोग अपने पीछे रखे लकड़ियों के बड़े ढेर से आग में लकड़ी डाल रहे थे। तीसरा आदमी आग में लकड़ी नहीं डाल रहा था। वह बातें कर रहा था।

इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात यह थी कि वह वही आदमी था जिसका पीछा

टेड बेकर कर रहा था—नौकर चंद्र। वे मलयालम में बात कर रहे थे, एक ऐसी भाषा जिस पर टेड की पूरी पकड़ तो नहीं थी, लेकिन जिसके कुछ शब्द उसने इधर-उधर से सीख लिए थे।

उसने रूथ का नाम सुना और जीप के बारे में कुछ बातें सुनीं। फिर ग्रेस्टोन, रेंजर के घोड़े और बाघ के बारे में कुछ चर्चा हुई। आखिर में, टेड ने खुद को पुलिस अधीक्षक कहते हुए सुना, जिस पर चंद्रा थोड़ा हँसी और उसने नाचती हुई आग की रोशनी में चमकते हुए दूसरे आदमियों में से एक के दाँतों की चमक देखी, जो मज़ाक में शामिल हो गया। दोनों आदमी थोड़ी देर आपस में बात करते रहे, और टेड ने उनमें से पतले आदमी को अपने मोटे साथी को पापाचेन कहते हुए सुना, जिसने बदले में उसे चाको कहा।

इन नामों का ज़िक्र सुनते ही बेकर चौकन्ना हो गया। ये उन लोगों के नाम थे जिन्होंने ज़िले में हुई सारी गड़बड़ को अंजाम दिया था। पुलिस अधिकारी उत्साह से भर उठा। कितनी अच्छी किस्मत! उसके सामने वे तीन लोग बैठे थे जिन्हें वह सबसे ज़्यादा पकड़ना चाहता था। चाको नाम का आदमी बोलने लगा। टेड को भाषा न समझ पाने पर बहुत गुस्सा आया।

उसके मन में यह विचार आया कि वे उसे कोई ऐसा रास्ता दिखा सकते हैं जिससे कल सुबह तक घंटों की थका देने वाली प्रतीक्षा से बचा जा सके। इसलिए, वह उस जगह की ओर चलने लगा जहाँ से आवाज़ें आ रही थीं।

उसने रूथ का नाम दोबारा सुना और जीप तथा अंग्रेज़ी शब्द "स्टीयरिंग नट" के बारे में कुछ सुना। इस पर चंद्र ने इनकार में ज़ोर से सिर हिलाया। यह स्पष्ट था कि वह जिस बात का खंडन कर रहा था, उस पर उन लोगों को शायद ही विश्वास हो रहा था, क्योंकि दोनों ने सवाल दोहराया, और यद्यपि वे ऐसी भाषा का प्रयोग कर रहे थे जो टेड के लिए अपरिचित थी, फिर भी उसने उनके लहजे का स्पष्ट रूप से अविश्वासपूर्ण और मज़ाकिया लहजा पकड़ लिया।

एक बार फिर, चंद्र ने उनके आरोपों या उनके बारे में कही जा रही हर बात को नकार दिया। इस बार, उन्होंने न केवल दृढ़ता से सिर हिलाकर इनकार किया, बल्कि अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए एक अपशब्द का प्रयोग किया, जिसे टेड ने कभी-कभी अपने पुलिसकर्मियों के बीच सुना था।

अगले ही क्षण बेकर उस पेड़ के तने के पीछे से बाहर निकला, जिसके पीछे वह

बातचीत सुन रहा था, उसके हाथ में उसकी सर्विस रिवॉल्वर थी।

पापाचेन नाम के व्यक्ति ने उसे सबसे पहले देखा और उसका चेहरा भावहीन हो गया।

टेड ने अंग्रेजी में कहा, "तुम तीनों गिरफ्तार हो। अगर भागने की कोशिश करोगे तो मैं गोली मार दूंगा।"

चाको ने आश्चर्य से अपना सिर घुमाकर वक्ता की ओर देखा। चंद्र उछलकर खड़ा हो गया।

टेड की .38 पिस्तौल की नली उन तीनों पर मजबूती से टिकी हुई थी। जलती हुई आग की रोशनी में उसका पीला-सा चेहरा बेहद गंभीर दिख रहा था। पूरे आधे मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, फिर चाको ने बेपरवाही से जलते हुए ढेर पर लकड़ियों का एक और मुट्ठी भर हिस्सा फेंक दिया, जिससे चटकने की आवाज़ आई और आग भड़क उठी।

"ऐसा मत करो!" टेड ने कर्कश स्वर में कहा।

चाको हँसा, "क्यों नहीं, पुलिसवाले?" उसने अंग्रेज़ी में पूछा। "अगर मैं आग को हवा नहीं दूंगा तो वह बुझ जाएगी। और अगर बुझ गई, तो तुम सीधा निशाना कैसे लगा पाओगे?"

और वह अपने ही मजाक पर थोड़ा और जोर से हँसा।

“चलो, जल्दी चलो,” टेड ने आदेश दिया, “मेरी कार ग्रेस्टोन बंगले पर है। मैं तुम तीनों को निलंबूर ले जा रहा हूँ।”

चाको ने उपहास भरे लहजे में आगे कहा, "हम निश्चित रूप से आपके साथ चलेंगे, बशर्ते आप हमें बागान मालिक के घर का रास्ता दिखा दें। मतलब, अगर आपको पता हो तो।"

फिर दूसरे व्यक्ति ने बीच में दखल दिया। उसकी अंग्रेजी और लहजा तो बिल्कुल सही थे, लेकिन उसकी आवाज में एक अजीब सी कर्कशता थी।

उन्होंने कहा, "आप पुलिस अधीक्षक तो हैं, लेकिन मजिस्ट्रेट द्वारा हस्ताक्षरित वारंट के बिना हमें गिरफ्तार करने का अधिकार आपके पास नहीं है। यदि आपके पास वारंट है, तो कृपया मुझे दिखाएं?"

लेकिन टेड बेकर कानूनी दांव-पेच में नहीं पड़ना चाहते थे। उन्होंने धमकी भरे अंदाज में एक कदम आगे बढ़ाया और अपनी रिवॉल्वर सीधे वक्ता की ओर तान दी।

“हम इस बारे में बाद में बात करेंगे,” उसने दृढ़ता से कहा। “अभी के लिए, मैं आपको चलने के लिए एक मिनट का समय देता हूँ। चंद्र को रास्ता पता है। उस एक मिनट के बाद मैं गोली चलाऊँगा और जान से मारने के लिए गोली चलाऊँगा। आप दोनों ऊपरपेट में पाँच निर्दोष पुलिसकर्मियों की हत्या के लिए ज़िम्मेदार हैं, और मुझे आपातकालीन परिस्थितियों में हत्यारों को गिरफ्तार करने के लिए वारंट की आवश्यकता नहीं है।”

एक पल के लिए पापाचेन की गहरी निगाहें डीएसपी के चेहरे पर टिक गईं। वहाँ जो कुछ उन्होंने देखा, उससे उन्हें यकीन हो गया कि बेकर अपनी धमकी को अंजाम देने में जरा भी संकोच नहीं करेगा। जाहिर तौर पर वह मान गया, क्योंकि जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज में पहले जैसी भयावहता कुछ कम हो गई थी।

"आपकी मर्जी, अधीक्षक," उन्होंने कंधे उचकाते हुए सहमति जताई, "मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कांग्रेस पार्टी को इस अत्याचार की सूचना दी जाएगी। मैं बीमार हूं, बुखार से पीड़ित हूं, और मुझे चलने के लिए मजबूर करके आप मेरे स्वास्थ्य और जीवन को खतरे में डाल रहे हैं।"

"तुम बहुत बीमार नहीं हो सकते, वरना रात में जंगल में नहीं होते," टेड ने व्यंग्य से कहा। "तुम्हारी कांग्रेस पार्टी के बारे में मैं बाद में देख लूंगा। अभी जाओ!"

पापाचेन उठ खड़ा हुआ, उसके पीछे-पीछे चाको भी खड़ा हो गया। वे एक-दूसरे को अर्थपूर्ण ढंग से देख रहे थे।

पूर्व व्यक्ति ने आगे कहा, "मुझे पहले दवा की एक खुराक निगलने की अनुमति दी जानी चाहिए, इसमें एक पल भी नहीं लगेगा और न ही मैं भागने की कोशिश करूंगा।"

ये कहते हुए वह आग के पास पड़े एक बड़े खाली प्याले को उठाने के लिए झुका। फिर उसने अपनी कोट की जेब से एक बोतल निकाली, जिस पर दूर से भी टेड को किसी औषधालय का लेबल दिखाई दिया, और उसका एक बड़ा हिस्सा प्याले में डाल दिया। उसने बोतल को वापस जेब में रख लिया और प्याले को अपने होठों से लगाया।

"रुको!" टेड बेकर का आदेश कोड़े की मार की तरह गूंज उठा, "यह दवा जैसा नहीं लग रहा है। तुम कोई चाल चल रहे हो। शायद यह ज़हर है।"

पापाचेन हँसे, "इतने भावुक मत होइए, सुपरिंटेंडेंट। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि मैं आत्महत्या करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ। देखिए, खुद ही देख लीजिए कि कहीं यह कुनैन का मिश्रण तो नहीं है।"

ये कहते हुए उसने अपने दाहिने हाथ में पकड़ा हुआ कप बेकर को दिखाने के लिए आगे बढ़ाया।

उसी क्षण, चाको को खांसी का एक ऐसा जोरदार दौरा पड़ा जिससे वह लगभग झुक गया।

टेड बेकर ने यह जानने के लिए उसकी ओर देखा कि मामला क्या है, और पापाचेन ने अपने साथी द्वारा टेड का ध्यान भटकाने के अवसर का फायदा उठाते हुए, कप का सारा तरल पदार्थ सीधे पुलिस अधिकारी के चेहरे पर फेंक दिया।

सहज ही टेड ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपना सिर तेज़ी से पीछे की ओर झुका लिया। गाढ़ा सल्फ्यूरिक एसिड उसकी ठुड्डी और गले पर गिरा और रिसकर उसकी छाती तक पहुँच गया।

दर्द से बेहाल होकर उसने अपनी आँखें खोलीं और ठीक उसी समय देखा कि चाको ने अपनी लंबी कमीज़ के नीचे कमरबंद से चाकू निकाला। दर्द से पागल होकर टेड ने उसकी छाती में गोली मार दी, और जैसे ही चाको ज़मीन पर गिरा, उसने मुड़कर पापाचेन पर दो और गोलियाँ चलाईं।

उसने उस आदमी के माथे पर दो छेद उभरते हुए देखे, और उसके पास उस लगभग मूर्खतापूर्ण भाव को देखने का समय था जो पापाचेन के मरते ही उसके चेहरे पर आ गया था।

लेकिन बेकर अपने तीसरे प्रतिद्वंदी चंद्र के बारे में भूल गया था।

अगले ही पल हथियारबंद व्यक्ति तेज़ी से पास आया और कहीं से निकाली हुई चाकू की धार टेड के पेट में घोंप दी। जैसे ही उसने अधीक्षक की आंतों से चाकू निकालने की कोशिश की, वह उसे घुमाने लगा, तभी टेड ने अपनी बंदूक का मुंह भारतीय के दिल के ऊपर उठाया और ट्रिगर दबा दिया; एक बार, दो बार और तीन बार।

चंद्र की मृत्यु हो गई जब उसका शरीर टेड के कंधे से टिका हुआ था, और बेकर ने बड़ी मुश्किल से उसे उससे दूर धकेला। बेजान नौकर ज़मीन पर गिर पड़ा। टेड नशे में लड़खड़ाता हुआ खड़ा था। उसकी रिवॉल्वर ज़मीन पर गिर गई, और उसने दोनों

हाथों से उस चाकू के हैंडल को पकड़ लिया जो अभी भी उसके पेट में धंसा हुआ था।

उसने उसे बाहर निकालने के लिए बहुत संघर्ष किया। लेकिन ब्लेड उसकी आंतों में मजबूती से धंसा हुआ था और हिल नहीं रहा था, और उसकी उंगलियों के बीच से बहते खून से उसके हाथ लाल और गर्म हो गए थे।

तेज जलन से ठुड्डी और गले में हो रही जलन असहनीय थी। पीड़ा से तड़पते हुए उसने चाकू का हैंडल छोड़ दिया और अपनी गर्दन को खरोंचने लगा।

और उसी क्षण बेकर को पता चल गया कि वह मर रहा है। वह दर्द से चीख उठा और घुटनों के बल गिर पड़ा, और उसके पेट में हो रहे भयानक दर्द को कम करने के लिए लोग झुक गए।

मृत्यु के अंतिम क्षणों में ही टेड बेकर अचानक स्पष्ट रूप से सोचने में सक्षम हो गया। उसने बूढ़े रॉबी निकोलसन का दयालु चेहरा देखा और उसके शब्द याद किए, "उस शापित ग्रेस्टोन औरत से दूर रहना"।

अपनी नोटबुक और पेंसिल को टटोलते हुए, वह बुझती हुई आग की टिमटिमाती रोशनी में लगभग अपठनीय लिखावट में कुछ लिखने लगा, जबकि पृष्ठ उसके खून से लथपथ होकर लाल हो गया।

फिर वह बेहोश होकर आगे की ओर गिर पड़ा और फिर कभी होश में नहीं आया, क्योंकि उसका खून धीरे-धीरे उसके चारों ओर जंगल की घास पर एक गहरे, चिपचिपे तालाब के रूप में रिसता रहा।

चाको की आँखें एक पल के लिए झपकीं और एक तीव्र कंपकंपी के साथ उसका शरीर काँप उठा। उसने अपना सिर उठाया और मरते हुए अंग्रेज को देखा। उसके होठों से धीमी और कर्कश आवाज़ में केवल दो शब्द निकले, "जय हिंद!"। फिर उसकी मृत्यु हो गई।

अगले दिन लकड़हारों का एक दल चार आदमियों के शव देखकर भयभीत हो गया, जिनमें से एक श्वेत व्यक्ति था—पुलिस का साहब। उसके शव के पास उन्हें एक छोटी सी नोटबुक मिली और उन्हें लगा कि अगर वे अपनी खोज के बारे में बताएंगे तो उन्हें इनाम मिलेगा।

अध्याय 32

बारिश का आगमन

जब जॉन फॉरेस्ट चौकी पहुंचा और नेविल गार्डनर से मिला, तब तक लगभग

अंधेरा हो चुका था।

ग्रेस्टोन चिंतित था। "यह बाघिन बहुत चालाक जानवर है, श्रीमान गार्डनर। चिका पर हमला तब हुआ जब उसने उसे देखा भी नहीं था। वह कूदकर या चढ़कर जून को उसके मचान से बाहर खींचने की कोशिश कर सकती है। याद है, उसने उस चट्टान पर छलांग लगाई थी और मलयाली को मार डाला था। आपने कहा था कि वह कितनी ऊंचाई पर बैठी है? क्या आपको लगता है कि बाघिन पेड़ पर चढ़ सकती है?"

रेंजर ने जवाब दिया, "मचान जमीन से लगभग अठारह फीट ऊपर है, बाघिन के लिए छलांग लगाने के लिए यह बहुत ऊंचा है।"

वह चढ़ाई करने की कोशिश कर सकती है। लेकिन इससे जून को मौका मिलने के लिए काफी समय मिल जाएगा।

"क्या वह अपनी .3006 पिस्टल का इस्तेमाल कर रही है?" जॉन ने पूछा।

"नहीं। उसने मेरा पैराडॉक्स ले लिया," गार्डनर ने जवाब दिया, "यह एक बहुत ही कारगर हथियार है और मेरी बेटी एक बहादुर लड़की है।"

"यह बात मुझे अच्छी तरह से पता है," जॉन ने उत्तर दिया, "लेकिन फिर भी मैं चिंतित हूँ।"

कुछ क्षण बाद, उसने फिर उस बुजुर्ग व्यक्ति से कहा, "देखिए, मेरा सुझाव है कि हम जून जहाँ बैठी है, वहाँ से लगभग एक मील की दूरी पर जाकर इंतज़ार करें। अगर हमें गोली चलने की आवाज़ सुनाई देती है, तो हम आवाज़ लगाकर पूछ सकते हैं कि क्या उसे सहायता की आवश्यकता है। कम से कम हम उसे मचान से नीचे उतारने के लिए वहाँ मौजूद रहेंगे।"

रेंज ऑफिसर तुरंत मान गया और जून की .3006 राइफल और कुछ कारतूसों के साथ पेट्रोमैक्स लाइट लेकर अंदर चला गया। वह आगे-आगे चलने लगा और गार्डनर के बताए स्थान पर पहुँचने तक वे तेज़ी से चलते रहे और मुश्किल से ही कुछ बोले। रुककर उसने फुसफुसाते हुए कहा, “हम यहाँ पहुँच गए हैं। चलो पेट्रोमैक्स को इस पेड़ के पीछे छिपाकर चुपचाप इंतज़ार करते हैं।” समय 8 बजने से कुछ मिनट पहले का था।

इमली के पेड़ पर बैठी जून शाम भर लगभग स्थिर बैठी जंगल की आवाज़ें सुनती रही। उसके सामने घाटी से एक चितकबरी कबूतर की गुटरगू सुनाई दी, "कू-क्रू! कू-क्रू! कू-क्रू!" जैसे ही अंधेरा छाने लगा, वह ज़रा सी भी सरसराहट या दबे पांव

की आहट के लिए सतर्क हो गई, जो उसे आदमखोर के आने की चेतावनी दे सकती थी।

अंधकार के कारण टोनी का शव दिखाई नहीं दे रहा था। उसे पूरी तरह से अपनी सुनने की शक्ति पर निर्भर रहना पड़ा। समय बीतता गया और जंगल का घना अंधेरा उसे चारों ओर से घेरता चला गया। लंबी घास में झींगुर मधुर स्वर में चहचहा रहे थे और घाटी में एक उल्लू उदास स्वर में बोल रहा था। दूर आकाश में बिजली चमक रही थी, जिससे जंगल की रात के अंधकार में एक हल्की सी चमक फैल रही थी।

एक मिनट बाद उसे सूखी पत्तियों पर तेज़ कदमों की टप-टप की आवाज़ और घास की सरसराहट सुनाई दी। एक धीमी सी गुर्राहट हुई, जिसके बाद तिरस्कारपूर्ण स्वर में "ची! ग्रो-ऊ! ग्रो-ऊ! ग्रो-ऊ!" सुनाई दिया।

जून को पता था कि एक भटकता हुआ लकड़बग्घा नीचे से गुजर रहा था, जो घोड़े के अवशेषों से आने वाली हल्की दुर्गंध से आकर्षित हुआ था।

अचानक, ढलान वाली पहाड़ी के पश्चिम में स्थित घाटी से एक लंगूर बंदर के रखवाले की चौंकी हुई आवाज आई, "आह-हार! हर्र! हर्र!" वह चिल्लाया।

जंगल में, बंदरों का प्रत्येक समूह अपने एक वरिष्ठ सदस्य को एक समय में छुपकर हमला करने वाले पैंथर या बाघ के अचानक हमले से उनकी रक्षा करने के लिए नियुक्त करता है, और पहरेदार दिन-रात बारी-बारी से सतर्क रहते हैं ताकि किसी भी हमलावर से सावधान रहें।

लंगूर का रखवाला लगातार पुकारता रहा। इसमें कोई संदेह नहीं था कि बाघिन और बंदर दोनों ही आगे बढ़ रहे थे।

अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से, जून ने पैराडॉक्स पर लगे सेफ्टी-कैच को आगे की ओर सरका दिया, उसके शरीर का हर हिस्सा सतर्क था जबकि उसकी आंखें उस धुंधलेपन में उस जगह पर दर्द से टिकी हुई थीं जहां वह जानती थी कि टोनी लेटा हुआ है।

चौकस बंदर ने रोना बंद कर दिया था जब उसे अपने ठीक नीचे हल्की सी सरसराहट सुनाई दी, उसके बाद एक धीमी, भारी आह जैसी आवाज आई और फिर एक अजीब सी कोमल, कर्कश आवाज सुनाई दी। क्या लकड़बग्घा लौट आया था?

लेकिन जंगली जानवरों की आदतों से अच्छी तरह वाकिफ होने के कारण, जून जानती थी कि टोनी के शव के ऊपर खड़ी बाघिन खुद को चाट रही थी।

दो या तीन मिनट बाद उसे हड्डी के टूटने की पहली तेज आवाज सुनाई दी, जिसके बाद मांस के फटने की आवाज आई।

उस विशाल बिल्ली ने खाना शुरू कर दिया था।

बढ़ती उत्तेजना को काबू में रखते हुए, जून ने खुद को पांच मिनट और इंतजार करने के लिए मजबूर किया। तब तक मांस के चीरने और हड्डियों के टूटने की आवाज़ें एक निरंतर ध्वनि में विलीन हो गईं, क्योंकि बाघिन अपने भोजन में मग्न हो गई थी।

जून को लगा कि अब टोनी का बदला लेने के लिए घातक गोली चलाने का समय आ गया है। धीरे-धीरे, लगभग अदृश्य गति से, उसने बंदूक उठाई और बट को मजबूती से अपने दाहिने कंधे पर टिका दिया।

फिर उसने गहरी सांस ली, उसे रोके रखा और धीरे-धीरे अपने बाएं अंगूठे के निचले हिस्से को तीन सेल वाली टॉर्च के बटन पर दबाया जो बैरल से जुड़ी हुई थी।

अगले ही पल तेज रोशनी से टोनी के ऊपर झुकी हुई बाघिन दिखाई दी, उसका सिर उस क्षण अदृश्य था, क्योंकि उसने टोनी के पेट में जो घाव किया था, उसमें उसका सिर धंसा हुआ था। तभी जून ने एक गलती की। सिर और गर्दन के पूरी तरह दिखाई देने का इंतजार किए बिना, उसने बाघिन के बाएं कंधे पर निशाना साधा और ट्रिगर दबा दिया।

एक जोरदार धमाका हुआ और पैराडॉक्स एक खच्चर की तरह लात मारने लगा।

उस बिल्ली ने एक भयानक दहाड़ के साथ जवाब दिया, जो तब शुरू हुई जब उसका सिर अभी भी टोनी के पेट के अंदर ही था। उसी समय उसने खुद को पीछे की ओर पटका और घास के एक गुच्छे में छिपकर ढेर हो गई।

जब बाघिन पीछे की ओर लुढ़की तो जून ने अपनी दूसरी बंदूक चलाई, लेकिन हथियार से निकली नुकीली शंकु के आकार की गोली अपने लक्ष्य से चूक गई।

उसने तुरंत अपनी बंदूक में दोबारा गोलियां भर लीं। हालांकि, उसकी छठी इंद्री ने उस आदमखोर को पहले ही चेतावनी दे दी थी कि यहाँ कोई असहाय कुली नहीं है। छिपने की जगह से वह दस फीट की दूरी पर एक बड़े बेर के झाड़ पर कूद पड़ी। उसके पीछे वह पूरी तरह से नजरों से ओझल हो गई।

जून ने उसकी दहाड़ें सुनीं, क्योंकि अपने घाव के दर्द से पागल होकर बाघिन बेर के पेड़ के पीछे की झाड़ियों को नोंच रही थी, अपनी पीड़ा और क्रोध में जमीन को काट रही थी और खरोंच रही थी, और फिर खुद को घसीटते हुए दूर चली गई।

लगभग पंद्रह मिनट बाद ही वह पहाड़ी पर कुछ दूरी पर टिमटिमाती हुई एक छोटी सी रोशनी देखकर आश्चर्यचकित रह गई, जिसके तुरंत बाद धीमी आवाज़ में उसका नाम पुकारा जाने लगा, "जून! जून! क्या तुम ठीक हो?" और उसने पहचान लिया कि ये आवाज़ें उसके पिता और जॉन ग्रेस्टोन की थीं।

उसने जितना जोर से हो सकता था, कहा, "हाँ। लेकिन बाघिन घायल है। यहाँ मत आओ; यह खतरनाक है!"

फिर भी, प्रकाश धीरे-धीरे निकट आने लगा क्योंकि आवाजें बारी-बारी से उत्साहवर्धक शब्द बोल रही थीं।

"हम एक मिनट में वहाँ पहुँच जाएँगे", और "जब तक हम आप तक न पहुँच जाएँ, तब तक आप वहीं रहें"।

अपने पिता और जॉन पर मंडरा रहे गंभीर खतरे को भांपते हुए वह फिर से जोर-जोर से चिल्लाई।

"रुको! पास मत आओ! बाघिन घायल है! मैं ठीक हूँ।"

इन सबके साथ-साथ रोशनी आगे बढ़ती रही। थोड़ी देर में दोनों आदमी बाघिन से मिले बिना इमली के पेड़ की तलहटी तक पहुँच गए। कुछ मिनट बाद जून उनके पास पहुँच गई और उन्हें उत्साह से सारी घटना बताने लगी।

"चिंता मत करो मेरी प्यारी," उसके पिता ने दिलासा देते हुए कहा, "भगवान का शुक्र है कि तुम सुरक्षित हो। अभी हम बाघिन के बारे में कुछ नहीं कर सकते; लेकिन हम कल सुबह लौटेंगे और उसके खून के निशान का पीछा करने की कोशिश करेंगे।"

गार्डनर पेट्रोमैक्स पकड़े हुए आगे-आगे चल रहा था और वे फॉरेस्ट चौकी के लिए निकल पड़े। टोनी के अवशेषों को आखिरी बार छोड़ते हुए जून की आँखों में फिर से आँसू भर आए। वह जानती थी कि सूर्योदय से पहले सियार और लकड़बग्घे उसे नोंच-नोंच कर खा जाएँगे।

रेंज ऑफिसर ने कहा, "हमें कल बाघिन को पकड़ना होगा, हो सकता है कि वह अपने घाव से न मरे, और अगर वह ठीक हो जाती है तो वह पहले से दस गुना ज्यादा खतरनाक हो जाएगी।"

जब वे अपने गंतव्य पर पहुँचे, तो रेंजर ने रम की एक बोतल निकाली और उन दोनों के लिए एक-एक बड़ा पैग डाला। फिर उसने जॉन को अपनी एक तेज़, काली सिगार दी और खुद भी एक सिगार पी ली। उन्होंने अपनी सिगार जलाई और आम तौर

पर बाघों और विशेष रूप से आदमखोर बाघों के बारे में बातें करने लगे।

जून कॉफी बनाने के लिए अंदर चली गई।

जब वे बातें कर रहे थे, तभी उन्हें एक ज़ोरदार सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी जो हर पल तेज़ होती जा रही थी। यह आवाज़ दक्षिण-पश्चिम से आ रही तेज़ हवा के कारण थी जो लाखों पेड़ों की चोटियों से टकराती हुई गुज़र रही थी। यह बंगले तक पहुँची और इमारत से ज़ोर से टकराई, जिससे अर्धगोलाकार टाइलों के नीचे सीटी जैसी आवाज़ गूंजने लगी। रात घोर अंधेरी थी क्योंकि आसमान में बादलों के ढेर लगे हुए थे और एक दूसरे पर चढ़े जा रहे थे।

बीच-बीच में बिजली की तेज चमक दिखाई देती थी, जिसके बाद हर कुछ सेकंड में दूर से आती गरजने वाली भयावह आवाज सुनाई देती थी।

जॉन ने कहा, "भगवान का शुक्र है कि इस साल मानसून समय पर आया है। कुछ ही घंटों में बारिश शुरू हो जाएगी। लेकिन अगर आज रात बारिश हुई तो खून के निशान मिट जाएंगे।"

नेविल गार्डनर अपनी कुर्सी से उठे और बरामदे की सीढ़ियों से उतरकर बगीचे में चले गए। उन्होंने छत पर हुक से लटकी हुई तूफान-रोधी लालटेन की तेज रोशनी से अपनी आँखों को बचाते हुए आकाश की ओर देखा और अगली बिजली की चमक का इंतजार करने लगे। बिजली चमकी और आसमान की वह क्षणिक झलक ही उनके लिए काफी थी। रेंजर बरामदे में लौट आए और अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

उन्होंने जोर देकर कहा, "आज रात बारिश नहीं होगी। बादल अभी भी बहुत ऊंचे हैं। मेरे अनुभव के अनुसार, कल शाम तक मानसून आ जाना चाहिए।"

"काफी अच्छा है," जॉन ने कहा, "जब तक हमारे पास बाघिन को खत्म करने का समय है।"

जून एक ट्रे लेकर आई जिस पर कॉफी का एक बर्तन और तीन कप रखे थे। उन्होंने थोड़ी देर और बात की और फिर रेंज ऑफिसर ने जॉन के सोने के लिए बरामदे में अपना फोल्डिंग कैनवास कैंप-चारपाई निकाला, जिस पर तकिए के लिए कुर्सी का कुशन रखा था।

थका हुआ होने के बावजूद, ग्रेस्टोन ने अपने जूते उतारे और जैसे ही उसका सिर तकिए पर लगा, वह सोने के लिए लेट गया।

सुबह के 5 बज रहे थे जब गार्डनर ने उसे जगाया। जून सुबह का नाश्ता बना रही

थी, और जॉन को प्यालों में चम्मचों की खनक सुनाई दी। सूरज अभी उगा भी नहीं था जब वे उसी रास्ते से वापस लौटे जिससे वे पिछली रात आए थे। इस बार उन्होंने अपने चारों ओर चहचहाते पक्षियों की मधुर आवाज़ का आनंद लिया।

जैसा कि उन्हें पहले से ही पता था, जंगल के रात के जानवरों ने अपना काम बखूबी कर दिया था। टोनी का शव अब न तो शव था और न ही कंकाल। बस कुछ हड्डियाँ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। और जब सूरज निकला और गिद्ध आए, तो ये भी गायब हो गईं। वे घास के झुंड तक पहुँचे और फिर उस जंगली बेर की झाड़ी के पीछे, जिसके पीछे बाघिन ने छलांग लगाई थी। यहाँ निशान साफ़ था। बाघिन का बहुत खून बह चुका था और ज़ाहिर तौर पर उसे बुरी तरह चोट लगी थी। दर्द से कराहते हुए उसने ज़मीन खोद दी थी और झाड़ियों को कुतर कर कुचल दिया था।

वे खून के निशानों का पीछा करते हुए एक घाटी में पहुँचे, रेंजर ने आगे रहने पर ज़ोर दिया। ग्रेस्टोन ने उससे वह स्थान छीनने की कोशिश की, लेकिन बूढ़े व्यक्ति ने उसे बांह से पकड़कर ज़ोर से पीछे धकेल दिया।

उसने फुसफुसाते हुए कहा, "जब मैं ज़मीन पर खोजबीन कर रहा हूँ, जून मेरे पीछे-पीछे आए और आगे ध्यान से देखती रहे। तुम पीछे रहो और दोनों तरफ नज़र रखो। बाघिन मर भी सकती है या ज़िंदा भी। वह बिना किसी चेतावनी के किसी भी दिशा से हम पर हमला कर सकती है। मैं एक ही समय में निशान का पीछा नहीं कर सकता और चारों ओर भी नहीं देख सकता। तुम दोनों को मेरी रक्षा करनी होगी।"

उन्होंने एक साथ सिर हिलाया और उसके निर्देशानुसार कार्य किया। अगले दो-तीन सौ गज के दौरान उन्होंने पाया कि उनका शिकार दो बार आराम करने के लिए लेट चुका था। जमे हुए खून के छींटे और धारियाँ पत्तियों और घास पर फैली हुई थीं और सूखी मिट्टी पर भी दिखाई दे रही थीं।

लेकिन फिर भी वह चलती रही।

वे अब तक एक मील से अधिक दूरी तय कर चुके थे और यह स्पष्ट हो गया था कि आदमखोर सांप मरने की कगार पर नहीं था, हालांकि जगह-जगह खून की बूँदें दिखाई दे रही थीं, लेकिन रक्तस्राव कम होने लगा था। शायद जून की गोली से बने छेद पर चर्बी या त्वचा की एक परत चढ़ गई थी; या हो सकता है कि बाहरी बालों पर लगा खून जम गया हो।

अंततः वे ढलान वाली पहाड़ी की तलहटी में स्थित घाटी में पहुँच गए। बीचोंबीच

एक सूखी नदी बहती हुई नीचे की ओर जा रही थी। उसकी मुलायम रेत पर जगह-जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, जबकि दोनों किनारे घने पेड़ों से आच्छादित थे: बेंत-बांस, मुथी, जुमलम और इमली।

बाघिन नदी के बहाव की दिशा में चल पड़ी थी। ज़ाहिर है, वह घाव से हुए बुखार के कारण भड़की प्यास को बुझाने के लिए पानी की तलाश में बेताब थी, लेकिन उपलब्ध जानकारी से आगे कुछ दूरी तक किसी भी जलस्रोत के मिलने की कोई संभावना नहीं दिख रही थी। उसे या तो नदी के किनारे-किनारे चलते हुए अपनी खोज जारी रखनी होगी या फिर प्रयास छोड़कर जंगल में भाग जाना होगा।

रेत पर बने पदचिन्हों और जगह-जगह खून की बूंदों से जल्द ही पता चल गया कि उसने पहले वाला रास्ता अपनाने का फैसला कर लिया था। गार्डनर अभी भी आगे थी, और तीनों आगे बढ़ते रहे।

वे दो मील और चले। सूरज असहनीय रूप से गर्म होता जा रहा था और वे जानते थे कि उनका शिकार कहीं आश्रय लेने के लिए लेटेगा। हालांकि घाव से खून बहना लगभग बंद हो चुका था, फिर भी पानी की तलाश जारी रखने से यह साबित होता था कि उसे काफी आंतरिक दर्द हो रहा था।

कुछ ही क्षणों में नदी की रेत समाप्त हो गई और उसकी जगह बड़े-छोटे पत्थरों का इलाका आ गया, क्योंकि नदी का तल ढलानदार होता गया और घाटी में तीव्र ढलान आ गई। यहाँ नंगी चट्टानों पर किसी के पैरों के निशान नहीं दिख रहे थे और नेविल गार्डनर को खून की एक बूंद या धब्बे को खोजने के लिए बड़ी सावधानी से छानबीन करनी पड़ी।

वे इन चट्टानों पर सौ कदम और आगे बढ़े ही थे कि एक पक्षी, जिसे आमतौर पर भारतीय प्लोवर कहा जाता है, चीखते हुए हवा में उछल पड़ा।

"क्या-क्या-क्या-क्या-तुमने-किया-है!" प्लोवर पक्षी ने घबराहट में तीखी चीख मारी।

तीनों एक साथ रुक गए। क्या वे आखिरकार पानी के किसी कुंड तक पहुँच गए थे? ये पक्षी दिन के गर्म घंटों के दौरान अक्सर ऐसे ही कुंडों में पाए जाते थे।

वे सावधानी से दबे पांव उस स्थान की ओर बढ़े जहां से प्लोवर पक्षी अचानक प्रकट हुआ था।

लेकिन वहां पानी नहीं था।

किस बात ने चिड़िया को डरा दिया था? क्या हत्यारा आस-पास ही कहीं था? अगर चालाक प्लोवर कहीं आस-पास लेटी होती, तो उसके ज़मीन पर बैठने की संभावना बहुत कम थी।

क्या वह नदी छोड़कर जंगल में चली गई थी?

ये और अन्य सवाल पीछा करने वालों के दिमाग में तेजी से दौड़ रहे थे, जैसे-जैसे वे चुपचाप आगे बढ़ रहे थे।

लगभग चार फीट ऊँचा और लगभग आठ फीट लंबा एक चट्टानी टुकड़ा उनके आगे बढ़ने के रास्ते के समकोण पर स्थित था। गार्डनर उसके बाईं ओर चला गया जबकि जून दाईं ओर चली गई।

"अर-अर-अरूफ़!"

तभी नरभक्षी भालू खांसते हुए दहाड़ के साथ उस पर झपटा। वह चट्टान के पीछे घात लगाए बैठा था। लड़की पूरी तरह से अचंभित रह गई और भयभीत होकर वहीं खड़ी रह गई। उसके पिता उसकी मदद नहीं कर सके। वे पहले ही दूसरी तरफ जा चुके थे।

लेकिन सौभाग्य से जॉन सतर्क रहा।

उसने गर्जना सुनी और अपनी निगाहें दाहिने किनारे से, जहाँ वह देख रहा था, जून की ओर घुमा लीं।

हवा में ही उसने देखा कि बाघिन उस पर झपटने ही वाली है। .470 पिस्तौल उठाने का भी समय नहीं था।

उसने अपनी कमर से ट्रिगर दबा दिया।

भारी गोली सीधे उस विशाल बिल्ली की छाती में जा लगी। गोली के प्रभाव से वह मानो सिकुड़ गई।

जून ने सहज रूप से समय रहते खुद को एक तरफ फेंक दिया ताकि उस विशालकाय वस्तु से बच सके जो ठीक उसी जगह पर गिरी थी जहां वह एक सेकंड पहले खड़ी थी।

जैसे ही बाघिन अपनी मृत्यु की पीड़ा में छटपटाने लगी, जॉन ने .470 कैलिबर की बंदूक की दूसरी नली से उसके सिर में बेहद करीब से गोली मार दी।

फिर वह जून की ओर दौड़ा और उसे अपनी बाहों में भर लिया, जबकि उसके पिता, दोनों तरफ से आ रही आवाजें सुनकर, चट्टान के दूसरी ओर से दौड़ते हुए आए।

दोपहर बीत चुकी थी जब वे आदमखोर सांप के शव को वापस लाने के लिए आदमखोरों, एक डंडे और रस्सियों के साथ लौटे।

उस शाम, सूर्यास्त के समय, जब जून के पिता अपने कमरे के बरामदे में आए, तो उन्होंने एक अजीब दृश्य देखा और एक अजीब बातचीत सुनी। जॉन और जून बगीचे में एक-दूसरे की बाहों में लिपटे खड़े थे।

"क्या तुम मुझसे शादी करोगी, मेरी प्यारी? मैं तुमसे प्यार करता हूँ," वह पूछ रहा था, "हम जीवन भर इसी जागीर में रहेंगे, क्योंकि भारत मेरा घर है, और तुम्हारा भी।"

और उसका जवाब, "हां जॉन", मुश्किल से सुनाई दिया, क्योंकि वह गरज की तेज आवाज और भारी बारिश की बूंदों की आवाज में दब गया था।

दक्षिण-पश्चिम मानसून टूट गया था!

लेकिन प्रेमियों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। वे मूसलाधार बारिश से बेखबर, एक दूसरे को अटूट आलिंगन में चूमते रहे।

नेविल गार्डनर चुपचाप बरामदे में खड़े थे। उनके चेहरे पर अपार खुशी की चमक थी और हृदय में कृतज्ञता का भाव। उनकी प्यारी जुनी को आखिरकार वह मिल गया था जिसके लिए उन्होंने हमेशा प्रार्थना की थी—एक अच्छा पति!

और सूखे जंगल को आखिरकार लंबे समय से प्रतीक्षित बारिश मिल गई।

उसी क्षण, तेज़ रोशनी वाली हेडलाइट्स कोने से घूमकर आईं और कुछ ही पलों में ब्लैक मारिया उनके सामने आकर रुक गई। मोटा इंस्पेक्टर गाड़ी से उतरा और बारिश में लड़खड़ाते हुए बरामदे की ओर चल पड़ा।

"मिस्टर ग्रेस्टोन, मेरे पास आपके लिए एक संदेश है," उसने घोषणा की, जिसके बाद जॉन और जून उसके पीछे-पीछे आए।

उसने अपनी जेब से एक छोटी सी नोटबुक निकाली, उसे खून से सने एक पन्ने पर खोला और जॉन को सौंप दिया।

बागान मालिक ने नोट को सरसरी तौर पर देखा, "हे भगवान!" कहा और फिर उसे जोर से दोबारा पढ़ा।

"जॉन ग्रेस्टोन को। मैंने तुम्हें मारने और रूथ से शादी करने के लिए जीप का नट ढीला कर दिया था। हे भगवान—तुम दोनों—मुझे क्षमा कर दो। टेड बेकर।"

"मुझे चंद्र पर शक था," जॉन ने बुदबुदाते हुए कहा, मानो खुद से ही कह रहा हो।

जून के महीने में मन को अपार शांति मिली। अंतिम संदेह भी दूर हो गया था।

क्योंकि उसे जॉन पर शक था।

"तो चिका ने सच कहा था," ग्रेस्टोन ने लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में कहा, "उसने खिड़की से उन दोनों को देखा और एक दोपहर मुझे बताया। लेकिन मुझे उस पर मुश्किल से ही विश्वास हुआ।"

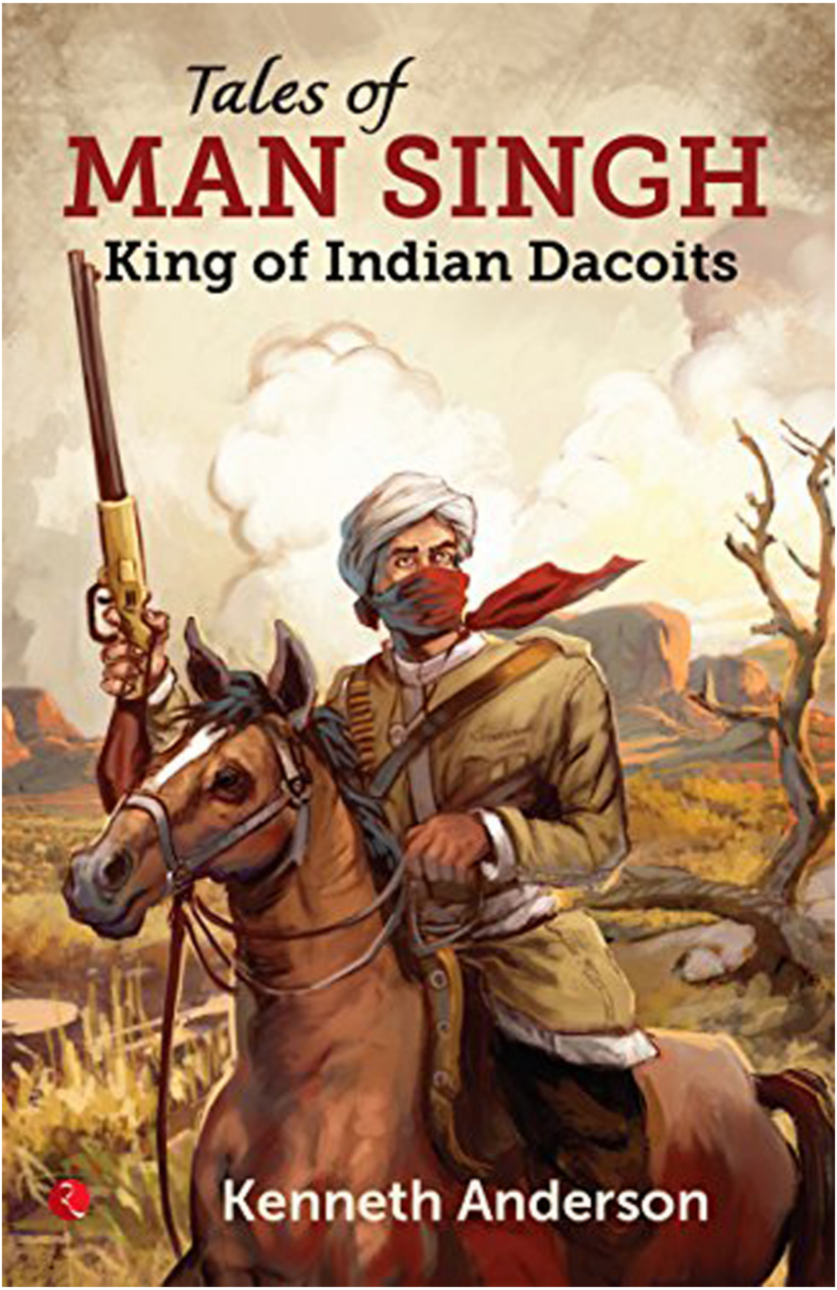
Tales of
MAN SINGH
King of Indian Dacoits
Kenneth Anderson

Tales of
MAN SINGH

केनेथ एंडरसन (1910-74) एक शिकारी, प्रकृति प्रेमी और साहसिक कार्यों के शौकीन थे। जंगल के जीवों के प्रति उनके प्रेम ने वन्यजीवों पर कुछ बेहतरीन साहित्य को जन्म दिया और उनकी पुस्तकें क्लासिक्स के रूप में प्रशंसित हैं। उन्होंने लगभग आठ पुस्तकें और साठ लघु कथाएँ लिखीं, जिनमें दक्षिण भारत के जंगलों में उनके वास्तविक जीवन के कई रोमांच और शिकार संबंधी कारनामों का वर्णन है।

एंडरसन एक स्कॉटिश परिवार से थे जो छह पीढ़ियों से भारत में बसा हुआ था। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बेंगलुरु में बिताया, जहाँ वे एक विमानन कंपनी में कार्यरत थे। भारत में शिकार साहित्य में उनका अमूल्य योगदान आज भी असंख्य वन्यजीव प्रेमियों को प्रेरित करता है।

Tales of MAN SINGH
King of Indian Dacoits

Kenneth Anderson

RUPA

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2018
7/16, Ansari Road, Daryaganj

नई दिल्ली 110002
बिक्री केंद्र:
इलाहाबाद बेंगलुरु चेन्नई
Hyderabad Jaipur Kathmandu
Kolkata Mumbai
संस्करण का कॉपीराइट © रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2018 के पास सुरक्षित है।
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, पुनरुत्पादित, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
ISBN: 978-81-291-0000-0
पहली छाप 2018
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1
लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।
सांवी ग्राफिक्स, नोएडा द्वारा टाइपसेट किया गया
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।

यह पुस्तक साहसिक भावना को समर्पित है, और उन सभी जोशीले युवाओं और पुरुषों को समर्पित है जो हर देश में उसका अनुसरण करते हैं।

अंतर्वस्तु

परिचय
पावती
अध्याय *1*
    सीआईडी का छोटा सिंह।
अध्याय दो
    Jhani and Lotibai
अध्याय *3*
    इनाम की तलाश में निकले पुलिसकर्मी
अध्याय *4*
    घाटी साम्राज्य पर आक्रमण
अध्याय *5*

धनी जमींदार और गरीब युवती
अध्याय 6
तीन यात्री और अमेरिकी पत्रकार
अध्याय 7
मान सिंह का इतिहास
उपसंहार

परिचय

स्वतंत्र भारत के युवा कई मायनों में वाकई सौभाग्यशाली हैं। उन्हें एक खूबसूरत देश मिला है, जो दुनिया में बेजोड़ है। एक ऐसा देश जहाँ उन्हें हर तरह की भौगोलिक सुंदरता और प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं, जो कहीं और नहीं मिलते। दुनिया के कुछ सबसे ऊँचे पर्वत; विशाल, लहरदार मैदान; दलदली भूमि; रेगिस्तानी भूमि; भव्य नदियाँ और सुंदर समुद्र तट। उन्हें हर तरह की जलवायु का अनुभव होता है; बर्फीले कश्मीर की जमा देने वाली ठंड से लेकर मध्य भारत के कुछ जिलों की चिलचिलाती, बेमिसाल गर्मी तक। कश्मीर में वेनिस जैसा सुंदर स्थान, मालाबार में झीलें और जलमार्ग, शानदार जंगल जहाँ जंगल का राजा - बाघ - आज भी आज़ादी से घूमता है; मनमोहक झरने; और लोककथाओं और इतिहास से समृद्ध प्राचीन शहर।

भारतीय इतिहास के पन्ने अद्वितीय व्यक्तित्वों से सुशोभित हैं। इनमें लंगड़े तैमूर जैसे बेहद बुरे योद्धा से लेकर महान अकबर जैसे बेहद अच्छे योद्धा शामिल हैं। शिवाजी (मराठा योद्धा) और मैसूर के शेर कहे जाने वाले टीपू सुल्तान जैसे योद्धाओं ने अपने नाम अमर कर दिए; गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी जैसे शांतिदूतों ने प्रेम के सिद्धांतों से दुनिया को झकझोर दिया; और प्राचीन और आधुनिक काल में भारत के लिए अपना रक्त बहाने वाले शहीद हुए, जिनमें पूर्व की जोन ऑफ आर्क कही जाने वाली झांसी की रानी भी शामिल हैं।

भारतीय इतिहास के इन व्यक्तित्वों में, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, एक बात समान है। व्यक्तित्व के रूप में वे अद्वितीय, बेजोड़ और अद्वितीय हैं। भारत में पढ़ने की क्षमता रखने वाले किसी भी लड़के या लड़की को रोमांचक कहानियों के लिए विदेश जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनकी अपनी धरती पर ऐसी कहानियों की भरमार है। मंच तैयार है, नायकों और नायिकाओं से भरा हुआ है, और ऐसे कारनामों से भरा हुआ है जो रोंगटे खड़े कर देते हैं; बस उन्हें दर्ज करने के लिए और अधिक

लेखकों की आवश्यकता है, और देश के युवाओं को पढ़ने की।

डाकुओं के सरदार मान सिंह का व्यक्तित्व अद्वितीय था। एक ऐसा व्यक्ति जिसमें परस्पर विरोधी गुण समाहित थे; वह एक ही समय में हत्यारा और चोर था, उदार परोपकारी और गरीबों का रक्षक भी। क्रूर, धूर्त और कपटी होने के साथ-साथ वह शेर के समान साहसी भी था। वर्षों तक न्याय से भागा रहने के बावजूद, उसने अपने साथियों के प्रति सच्ची न्यायसंगतता का परिचय दिया।

इन कहानियों का उद्देश्य किसी भी तरह से मान सिंह और उनके आदर्शों का महिमामंडन या प्रशंसा करना नहीं है। ये मात्र रोमांच की कहानियाँ हैं, जिनसे मुझे पूरी उम्मीद है कि पढ़ने वालों को कुछ आनंद मिलेगा। यही आनंद मेरे लिए पुरस्कार होगा।

तो आइए, अपनी कल्पना में, अलाव की टिमटिमाती रोशनी के चारों ओर बैठिए और मेरी कहानियों को ध्यान से सुनिए। धुआँ ऊपर की ओर उठकर असीम आकाश में टिमटिमाते तारों तक पहुँचता है। कभी-कभी आग चिंगारियों की बौछार के साथ भड़क उठती है और फिर बुझ जाती है।

दोस्त, लकड़ी का एक ताजा लट्ठा डाल दो। क्योंकि प्रकाश के इस संकरे घेरे के बाहर घोर अंधकार है, जिसमें दूर से आती झींगुरों की चहचहाहट और पास से आती मेंढक की टर्राहट सुनाई देती है।

दोस्त, अंधेरे में रहना खतरनाक है। क्योंकि वहां रहस्यमय और अज्ञात चीजें छिपी हुई हैं, घोर अंधकार में अदृश्य।

और डाकू!

लेखक

पावती

लेखक भारत के प्रमुख प्रकाशनों में से एक, 'द कारवां' के संपादक और प्रकाशक श्री विश्व नाथ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता है, जिन्होंने तपन घोष द्वारा लिखित 'राजा मान सिंह' नामक लेख में प्रकाशित मान सिंह के इतिहास को दर्ज करने में उपयोग किए गए अधिकांश डेटा का उपयोग करने की अनुमति दी।

अध्याय एक

सीआईडी का छोटा सिंह।

उनका असली नाम छोटा सिंह बिलकुल नहीं था। (जैसा कि आपमें से जो लोग भारत में रहे हैं, वे अच्छी तरह जानते हैं, छोटा हिंदी भाषा का एक विशेषण है, जिसका अर्थ है 'छोटा'; या शायद, 'लघु' या 'नाक्षरी'।) उनका असली नाम कतर सिंह था।

लेकिन बचपन से ही उन्हें 'छोटा' कहकर पुकारा जाता था, क्योंकि वे दुबले-पतले दिखते थे और अपनी उम्र के औसत लड़कों से काफी छोटे थे। और यह उपनाम उनसे चिपक कर उनके साथ तब तक रहा जब तक वे 19 साल की उम्र में एक साधारण कांस्टेबल के रूप में पुलिस बल में शामिल नहीं हो गए।

कतर सिंह, या उनके उपनाम 'छोटा' से, जिसका जिक्र हम आगे करेंगे, ने अपने कमजोर शरीर और छोटे कद (उनकी लंबाई लगभग 5 फीट 3 इंच थी) की भरपाई अपने सशक्त व्यक्तित्व और असाधारण बुद्धिमत्ता से की।

कहा जाता है कि जब छोटा ने युवावस्था में पुलिस बल में भर्ती होने के लिए आवेदन किया, तो अन्य आवेदकों के साथ जिला पुलिस अधीक्षक ने उनका विधिवत साक्षात्कार लिया। चूंकि वे ब्रिटिश राज के दिन थे, इसलिए यह अधिकारी एक यूरोपीय था—एक अंग्रेज जिसने भारत में पुलिस में कई वर्षों तक सेवा की थी।

भर्ती होने वालों को बारी-बारी से बुलाया गया। अंत में कतर सिंह डीएसपी के सामने खड़ा हुआ। पुलिस अधिकारी ने उसे कुछ तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखा और फिर कहा, 'हमें बल में 'बुरा आदमी' (मजबूत कद-काठी वाले) चाहिए, न कि 'छोटा आदमी' (तुम्हारे जैसे कमज़ोर और दुबले-पतले लोग)। घर जाओ, छोटे आदमी, और कहीं क्लर्क के पद के लिए आवेदन करो; पुलिसकर्मी के पद के लिए नहीं।'

इस तरह की अस्वीकृति किसी भी सामान्य आवेदक को किसी भी समय विचलित कर देती।

लेकिन छोटा एक सामान्य आवेदक से बिल्कुल अलग था।

उन्होंने बिना एक पल भी संकोच किए उत्तर दिया, 'लेकिन साहब, क्या "बुरा आदमी" हमेशा "बुरा अकुल" (महान बुद्धि) रखते हैं? यह विचारणीय विषय है, है ना?'

डीएसपी को गुस्सा आ गया। 'मतलब...' उन्होंने कहना शुरू किया।

'बिल्कुल वही जो मैं कहता हूँ, साहब।'

'तुम्हें क्या लगता है कि तुम इतने होशियार क्यों हो?' पुलिस अधिकारी ने गुस्से से लाल होते हुए पूछा।

‘इस बारे में आपको कोई संदेह नहीं होगा, बल्कि आप स्वयं जान लेंगे, साहब; और दो महीने के भीतर—यदि आप मुझे नियुक्त करते हैं।’

डीएसपी ने सोचा, "बेशर्म छोटा शैतान! खुद को हद से ज्यादा समझता है। घमंडी की हद पार कर चुका है।"

और फिर, ज़ोर से, उस छोटे आदमी से कहा, 'मान लो मैं तुम्हारी बात पर विश्वास कर लूँ और तुम्हें तुरंत भर्ती कर लूँ और रात की ड्यूटी पर परिवीक्षा पर रख दूँ। क्या तुम तब भी मुझे उन दो महीनों के भीतर राजी कर पाओगे?'

‘इसमें जरा भी संदेह नहीं है, हुजूर’, कतर सिंह ने तुरंत जवाब दिया।

और पूरी बातचीत के दौरान उन्होंने डीएसपी की आंखों में देखा, एक बार भी अपना सिर नहीं हटाया।

'धिक्कार है, मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ। लेकिन याद रखना, दो महीने पूरे होने के बाद तुम्हें निकाल दिया जाएगा, जब तक कि तुम अपनी काबिलियत साबित करने के लिए कुछ बहुत ही असाधारण काम न कर दो।'

‘बस यही मेरी विनती है, साहब,’ छोटा ने अपनी बात समाप्त की।

उस दिन के पांच सप्ताह के भीतर, कतर सिंह ने अकेले रात्रि ड्यूटी पर रहते हुए एक कुख्यात चोर को पकड़ा और उसे पकड़कर ले आए। अकेले ही।

पुलिस पिछले दो वर्षों से उस चोर की तलाश कर रही थी, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी।

और इसी तरह कतर सिंह, जिन्हें पुलिस बल में ऊपर से नीचे तक 'छोटा' के नाम से जाना जाता था, परिवीक्षा अवधि के बाद स्थायी हो गए, हालांकि उनकी मेडिकल रिपोर्ट में उनकी लंबाई, छाती के माप और वजन के संदर्भ में दर्ज आंकड़े 'पास' होने के लिए आवश्यक मानक से काफी कम थे।

वह तो केवल एक शुरूआत थी ।

छोटा में संक्षिप्त और सटीक रिपोर्ट प्रस्तुत करने की असाधारण क्षमता थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसमें साक्ष्य के रूप में महत्वपूर्ण तथ्यों को पहचानने और महत्वहीन बातों को त्यागने की स्वाभाविक प्रतिभा थी। सबसे बढ़कर, उसमें तर्क और निष्कर्ष निकालने की ऐसी क्षमता थी जो उसके वर्ग और स्तर के पुरुषों में बहुत कम पाई जाती है।

छह महीने के भीतर ही उनका तबादला यातायात शाखा में कर दिया गया; और

उस तारीख के एक साल के भीतर ही उन्होंने दोहरी उपलब्धि हासिल कर ली: एक तो उन्होंने अपने द्वारा लाए गए किसी भी मामले में हार का सामना नहीं किया था, और दूसरा शाखा के सदस्यों में सबसे अधिक अभियोजन उनके नाम दर्ज थे।

उस समय सरकार ने पुलिस बल के सभी प्रमुखों को एक परिपत्र जारी किया था कि वे अपने कुछ सर्वश्रेष्ठ अधिकारियों को आपराधिक जांच विभाग (सी.आई.डी.) में विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजें। मात्र डेढ़ वर्ष की सेवा वाले छोटा के पास अपने उन कई सहयोगियों की तुलना में अधिक अनुशंसाएँ और उनके लिए अधिक ठोस आधार थे, जिनकी सेवा 10 और 15 वर्ष की थी।

उनकी सफलता में एक महत्वपूर्ण कारक उनकी अंतर्निहित ईमानदारी और काम के प्रति उनकी लगन थी। एक ओर तो उन्होंने कभी रिश्वत नहीं ली, चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो। दूसरी ओर, उन्होंने लोगों के खिलाफ झूठे मामले नहीं गढ़े, न ही इस उम्मीद में कि बाद में उनसे आरोप वापस लेने के लिए पैसे मिलेंगे, या फिर प्रतिशोध या तुच्छ द्वेष के कारण ऐसा किया।

जब छोटा ने आरोप पत्र दायर किया, तो उसने केवल उसी व्यक्ति के खिलाफ ऐसा किया जिसने वास्तव में कुछ गलत किया था; और वह अपने अभियोजन में सफल रहा।

इसलिए उन्हें एक बेहद होनहार पुलिसकर्मी के रूप में जोरदार तरीके से पेश किया जाने लगा, जो सी.आई.डी. में तैनाती के लिए उपयुक्त थे।

उन्होंने निर्धारित वर्ष का प्रशिक्षण पूरा किया और काम में इतनी सहजता से रम गए जैसे कोई बत्तख पानी में रम जाती है, और परीक्षा में सफल उम्मीदवारों की सूची में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।

इसके बाद सी.आई.डी. में उनका करियर तेजी से आगे बढ़ा। अपेक्षाकृत कम समय में ही उन्हें हेड कांस्टेबल के पद पर पदोन्नत किया गया; और फिर उपलब्ध पहली रिक्ति पर ही उन्हें सब-इंस्पेक्टर बना दिया गया।

दो साल बाद वह सी.आई.डी. में इंस्पेक्टर कतर सिंह बन गए; लेकिन फिर भी अपने वरिष्ठों और दोस्तों के लिए 'छोटा' और उन लोगों के लिए 'छोटा साहब' थे, जिन्हें उन्होंने पीछे छोड़ दिया था और बहुत पीछे छोड़ दिया था।

छोटा जन्म से राजपूत था, हालांकि देखने में वह राजपूत जैसा नहीं लगता था। वह किसी भी तरह से योद्धा या युद्धप्रिय नहीं दिखता था; वह दुबला-पतला, मिलनसार

और सौम्य स्वभाव का था।

वह पूरी तरह से दाढ़ी-मूंछ साफ किए हुए थे और उनके बाल सिर तक छोटे-छोटे कटे हुए थे। उनकी ये विशेषताएं उनके परिवार और करीबी दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए निराशा का कारण थीं, जो उनके बदसूरत रूप से बेहद दुखी थे।

छोटा खुद अच्छी तरह जानता था कि उसने जानबूझकर ये सब क्यों किया। लेकिन उसने यह कारण किसी को नहीं बताया।

वह भेस बदलने में माहिर था और किसी भी किरदार को बड़ी कुशलता से निभा सकता था। छोटा जानता था कि साफ दाढ़ी और छोटे बालों वाला आदमी नकली दाढ़ी, मूंछ और विग पहन सकता है; जबकि लंबे बाल या दाढ़ी वाला आदमी भेस नहीं बदल सकता था—जब तक कि वह उन्हें मुंडवा न ले।

इसलिए, उन्होंने समझदारी से फैसला किया कि वे इन्हें शुरू में उगाएंगे ही नहीं। इससे इन्हें हटाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। इन्हें कभी भी आसानी से हटाया जा सकता था; लेकिन इन्हें उगने में काफी समय लगता था।

उनका गोल, मनमोहक चेहरा और सौम्य, भूरी आँखें उन्हें किसी भी प्रकार का भेष धारण करने में सक्षम बनाती थीं, जिससे उनकी पहचान उजागर होने का खतरा बहुत कम होता था। उनके चेहरे की कोई विशिष्ट पहचान नहीं थी।

छोटा पांच बोलियाँ धाराप्रवाह बोलता था, और उनमें से चार को पढ़ और लिख सकता था।

जब राजा मान सिंह और उसके साथियों की संख्या बढ़ने लगी और उनके अत्याचार तेजी से बढ़ने लगे, तो पुलिस ने उसे रोकने के उपाय खोजने शुरू कर दिए। यह सर्वविदित था कि डाकुओं का मुख्यालय चंबल की घाटियों में स्थित था, लेकिन ठीक कहाँ, यह कोई नहीं बता सकता था।

पुलिस यही बात बहुत जल्द और बेहद उत्सुकता से पता लगाना चाहती थी।

यह बेहद खतरनाक काम था। इन सवालों के जवाब खोजने की कोशिश में कई मुखबिरों और पुलिस जासूसों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी।

चंबल और कुंवारी नदियों के उफनते पानी से सिर कटी, फूली हुई, विकृत और सड़ी-गली लाशें निकाली गई थीं। वे इतने लंबे समय तक पानी में डूबी रही थीं कि उनका मांस नरम होकर सड़ने लगा था। जब ग्रैपल हुक से शवों को किनारे पर खींचने की कोशिश की गई तो मांस के टुकड़े-टुकड़े होकर अलग हो गए। कई शवों की

पहचान बिल्कुल नहीं हो पाई। कभी-कभी, किसी गहने या विशेष निशान की मौजूदगी से पुलिस को पता चल जाता था कि वे अपने किसी गुप्त एजेंट के शव को देख रहे हैं।

कई बार डाकू घनी झाड़ियों में बांस या कटे हुए तने पर शरीर के बिना सिर टांग कर छोड़ जाते थे। अक्सर सिर के दांतों के बीच एक कागज़ का टुकड़ा कसकर दबा होता था, जबकि बाकी मांस सड़ चुका होता था। कागज़ पर लिखा होता था, 'पुलिस एजेंटों और मुखबिरों को चेतावनी है कि जब हम उन्हें पकड़ेंगे तो उनका क्या अंजाम होगा।' संदेश के नीचे चार शब्द लिखे होते थे: 'राजा मान सिंह राठौर'।

इसलिए, इस कुख्यात अपराधी के बारे में जानकारी जुटाने का आदेश मिलना कोई लोकप्रिय कार्य नहीं था। पुलिस अधिकारी इसे एक प्रकार की आधिकारिक सजा, संभवतः अपनी मृत्युदंड के रूप में देखने लगे थे।

कुछ लोग बीमार होने का बहाना बनाकर इस मामले से बचने की कोशिश करते थे। काफी संख्या में लोगों ने इस कर्तव्य पर नियुक्त होने के बाद इस्तीफा देकर अपनी जान बचाई। कुछ लोग घबरा गए और भाग गए।

एक सुबह छोटा अपने वरिष्ठ अधिकारी, सहायक पुलिस अधीक्षक के पास गया। उसने बड़ी सहजता से पूछा, 'महोदय, कृपया अपने प्रभाव का इस्तेमाल करें और मुझे विशेष कार्य के लिए सिफारिश करें; मान सिंह को गिरफ्तार करने का कार्य।'

'फिर से कहो,' ए.एस.पी. ने पूछा, उसे अपने कानों पर मुश्किल से विश्वास हो रहा था।

छोटा ने फिर वही बात दोहराई।

एएसपी को आश्चर्य हुआ। क्या इस आदमी को पता था कि वह क्या मांग रहा है? शायद अपनी मौत को दावत दे रहा है। एएसपी ने उसे यह बात गोपनीय रूप से बताई।

छोटा ने बस इतना ही उत्तर दिया, 'मनुष्य को एक ही बार मरना निर्धारित है।'

उन शब्दों का ए.एस.पी. न तो कोई उपयुक्त उत्तर दे सका और न ही कोई प्रभावी उत्तर।

इसलिए उन्होंने यह सिफारिश की।

और महानिरीक्षक ने बड़ी उत्सुकता से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

छोटा को तीन महीने का वेतन अग्रिम रूप से दिया गया। उसे आकस्मिक खर्चों के लिए कुछ अतिरिक्त धनराशि भी दी गई। इसके बाद अगले नब्बे दिनों तक उसे

स्वयं ही अपना खर्च उठाना पड़ा।

छोटा ने मान सिंह द्वारा गरीबों की रक्षा करने, विशेष रूप से साहूकारों, जमींदारों और आम तौर पर अमीरों द्वारा सताए गए पुरुषों की रक्षा करने के बारे में प्रचलित सभी कहानियाँ सुनी थीं।

उसने तुरंत खुद को ठीक उसी तरह के एक गरीब आदमी के रूप में ढालने का प्रयास शुरू कर दिया, जिसके साथ ठीक उसी तरह का अन्याय हुआ था।

उसने भिखारी की तरह चिथड़े-चिथड़े कपड़े पहन लिए।

फिर वह 63 मील पैदल चलकर चंबल नदी के नज़दीकी किनारे पर स्थित और 'खड्डियों' से ज़्यादा दूर नहीं बसे धोवद गाँव पहुँचा।

वह दिनभर बाज़ार में बैठकर भीख मांगता रहता था। रात को सड़क किनारे धूल में सोता था। और दान में मिले थोड़े से पैसों से जो कुछ खरीद पाता था, वही खाता था।

उसने पता लगाया कि उस जगह का 'बनिया' (साहूकार) कौन था और वह उसकी 'दुकान' (दुकान या व्यापारिक परिसर) पर पहुँच गया।

‘गरीब आदमी के लिए भीख,’ उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

फटे-पुराने कपड़ों में लिपटे, गंदगी से सने, उलझे बालों (जो शायद कभी धोए नहीं गए थे), बिखरी दाढ़ी और लड़खड़ाते हुए घिसटते कदमों वाले उस दुबले-पतले और कमजोर शरीर को देखकर कोई भी उसे पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में नहीं पहचान पाता। उसका भेष पूरी तरह से बदल दिया गया था।

बनिया ने तुरंत उसे बाहर जाने का आदेश दिया।

‘मैं भूखा मर रहा हूँ, महाराज। मुझे एक टुकड़ा दे दीजिए,’ उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा, और वहाँ से जाने का कोई प्रयास नहीं किया।

‘अरे बदमाश!’ (ओह बदमाश!), साहूकार चिल्लाया, ‘अगर तुम अभी यहाँ से नहीं निकले तो मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा।’

‘हुजूर, दान कीजिए; एक गरीब, भूखे आदमी के लिए,’ उसने विनती की।

‘ओह, राम, देहू,’ बनिया ने अपने सेवकों को पुकारा, ‘इस प्राणी को तुरंत बाहर निकाल दो; यह मुझे परेशान कर रहा है।’

राम और देहू ने तुरंत, और सचमुच, उसे बाहर निकाल दिया।

लेकिन अगले दिन भिखारी फिर लौट आया। एक बार फिर उसने बनिया की

दुकान के सामने खड़े होकर चिल्लाकर कहा, 'इस गरीब आदमी के लिए एक तांबा दे दो।'

साहूकार ने चिढ़कर कहा, “तो तुम फिर आ गए! कल मैंने अपने नौकरों को तुम्हें बाहर निकालने का आदेश दिया था। आज मैं उन्हें तुम्हें बुरी तरह पीटने का आदेश दूंगा।”

‘मुझे एक आना दे दीजिए, हुजूर,’ यह शांत भाव से उत्तर दिया गया।

बनिया क्रोधित हो गया। उसने ताली बजाई और उसके दो गुर्गे उसके सामने हाजिर हो गए।

“निकम्मे कुत्तों,” उसने उनसे कहा, “क्या तुम मेरे लिए एक छोटा सा काम भी नहीं कर सकते? मुझे इस लगातार परेशान करने वाले भिखारी से छुटकारा दिलाओ जो मुझे हर दिन तंग करता है। उसे सबक सिखाओ और उसकी खूब पिटाई करो। कुछ भी करो; लेकिन यह सुनिश्चित करो कि वह फिर कभी यहाँ न दिखे।”

राम और देहू ने अपने संरक्षक की आज्ञा का पालन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने खुलेआम सड़क पर खड़े उस बेचारे भिखारी को बांस की लाठियों से खूब पीटा। इतना कि राहगीरों को भी उस पर दया आ गई और वे सब मन ही मन उस सूदखोर और उसके नौकरों द्वारा किए जा रहे इस निर्दयी व्यवहार पर दुख जताने लगे।

चोट के कारण छोटा दर्द से कराह रहा था। लेकिन उसे इस बात की संतुष्टि भी थी कि उसने एक गरीब भिखारी के रूप में, जिसे अमीरों द्वारा सताया और पीटा जा रहा था, अपना भेष बदलकर अच्छा प्रदर्शन किया था। वह जोर-जोर से रोया और विलाप किया कि भाग्य कैसे गरीबों के प्रति इतना निर्दयी हो सकता है कि एक धनी व्यक्ति के हाथों एक भिखारी के साथ ऐसा दुर्व्यवहार होने दे।

उस शाम वह बाज़ार में बैठा और वहाँ से गुज़रने वाले सभी लोगों को अपनी नंगी पीठ पर पड़े असली निशान दिखाता रहा; और कहानी सुनाते हुए वह बहुत रोया। ‘यद्यपि आप स्वयं देख लीजिए, कि इस देश में धनी लोग गरीबों पर किस प्रकार अत्याचार करते हैं।’

लेकिन उसे जिस परिणाम की उम्मीद थी, वह तुरंत नहीं मिला। छोटा ने अपनी बदकिस्मती को कोसा और दोबारा कोशिश करने का निश्चय किया।

दो दिन बाद वह एक बार फिर प्रकट हुआ, इस बार मानो संयोगवश उसी बनिया के घर पर जिसका नाम कुंजिलाल था। इस बार उसे न केवल पीटा गया बल्कि

घसीटकर पुलिस स्टेशन भी ले जाया गया। छोटा ने वहाँ अपनी पहचान नहीं बताई, इसलिए पुलिस ने उसे दोबारा बुरी तरह पीटा।

उस शाम बाज़ार में उनका विलाप कुछ अलग अंदाज़ में व्यक्त हुआ। 'क्या इस क्रूर देश में बेसहारा लोगों की मदद करने वाला कोई नहीं है? अगर कोई नेता होता, तो मैं सहर्ष उसका साथ देता और इन धनी कुत्तों को सबक सिखाता।'

सूर्यास्त के समय एक हट्टे-कट्टे ग्रामीण ने छोटा द्वारा अपने सामने सड़क पर बिछाए गए खुले रूमाल पर एक आना फेंक दिया।

'हुज़ूर, अल्लाह आपको बरकत दे,' उसने भावुक स्वर में कहा। 'काश, ज़मीन किसानों के पास ही रहती, तो हम कितने खुश होते। ये अमीर लोग, ये धनी ज़मींदार और बनिया ही हैं जो हम पर अत्याचार करते हैं। काश कोई हमें इनके खिलाफ़ नेतृत्व दे दे, तो इन्हें हमेशा के लिए उखाड़ फेंका जा सकता है।'

अपने रास्ते से तुरंत आगे बढ़ने के बजाय, लंबे कद के उस व्यक्ति ने उसे संदेह भरी निगाहों से देखा। छोटा को लगा जैसे उसे बारीकी से परखा जा रहा हो। उस अनजान व्यक्ति की गहरी आँखें मानो उसे भेद रही हों।

भिखारी ने अनदेखा करने का नाटक किया। वह झुका, आना उठाया और उसे अपनी धोती की कमर से निकाली हुई एक छोटी, गंदी कपड़े की थैली में डाल दिया।

अजनबी को यह देखने का समय मिल गया कि थैले में केवल कुछ छोटे तांबे के सिक्के ही थे।

फिर भिखारी ने थैली को वापस उसकी पुरानी जगह पर रख दिया, अपने पेट की नंगी त्वचा के पास, जहाँ वह धोती से घिरी हुई थी।

नए आए व्यक्ति ने कहा, 'मान लो, हे भिखारी, ऐसा कोई आदमी होता तो तुम क्या करते?'

छोटा ने ऊपर देखा, उसकी आँखों में कट्टरता की चमक थी। उसने जवाब दिया, "हुज़ूर, बस मुझे बता दीजिए कि वह कहाँ मिलेगा, मैं अभी इसी वक्त खुद को उसके हवाले कर दूंगा। मैं पूरी निष्ठा से उसकी सेवा करूंगा, बस इन अमीर कमीनों को सबक सिखाने के लिए। खुद देख लीजिए कि बनिया के नौकरों ने मुझे कहाँ पीटा था। इतने से भी संतुष्ट न होकर वे मुझे पुलिस के पास घसीटकर ले गए, जहाँ मुझे और भी पीटा गया।" और अपनी फटी हुई कमीज़ के किनारों को ऊपर खींचते हुए उसने अपनी पीठ घुमा ली ताकि अजनबी खुद उसके शरीर पर पड़े उन ज़ख्मों को देख सके जो उसे

मिली मार-पिटाई से बने थे।

लेकिन उस लंबे आदमी ने कुछ नहीं कहा। बस खांसा।

वह मुड़ा और चलने लगा।

छोटा निराश महसूस कर रहा था। क्या वह उस संपर्क को स्थापित करने में कभी सफल नहीं हो पाएगा जिसके लिए वह इतनी मेहनत कर रहा था?

फिर अजनबी कुछ फीट दूर रुक गया, काफी देर तक हिचकिचाया और फिर वापस लौट गया।

उसने छोटा से कहा, 'ऐसी अफवाहें हैं कि एक डाकू इन इलाकों में घूमता रहता है। कहा जाता है कि वह असल में चोर नहीं है। वह अमीरों को लूटकर गरीबों का पेट भरता है। क्या तुम ऐसे नेता के साथ जुड़ना चाहोगे?'

‘जी हां,’ छोटा ने उत्सुकता से जवाब दिया। ‘यदि आप मुझे बता दें कि वह कहां मिलेगा, तो मैं तुरंत उसके पास जाऊंगा।’

लंबे कद के आदमी ने हंसते हुए कहा, “भाई, बात इतनी आसान नहीं है। अगर मान सिंह को ढूंढना इतना आसान होता, तो अब तक तो मान सिंह का नामोनिशान भी नहीं होता।” और फिर वह रहस्यमयी मुस्कान के साथ बोला, “खैर, देखते हैं।”

उसने अपनी जेब में हाथ डाला और एक चांदी का रुपया निकाला, जिसे उसने सादगी से छोटा को दे दिया। भिखारी के चेहरे पर कृतज्ञता की चमक आ गई।

लेकिन छोटा की आँखों में कृतज्ञता से कहीं अधिक भाव झलक रहा था। उनमें उल्लास की चमक थी। एक प्रशिक्षित जासूस की अपार खुशी, जिसे आखिरकार पता चल गया है कि वह सही सुराग के करीब पहुँच गया है।

अगले दिन छोटा को वह लंबा आदमी कहीं नहीं दिखा। लेकिन वह अगली शाम सूर्यास्त के समय फिर आया और भिखारी को एक और रुपया दे दिया।

भिक्षु ने विनम्रता और प्रसन्नता से उसे धन्यवाद देना शुरू किया; लेकिन उस लंबे आदमी ने उसे बीच में ही रोक दिया।

उन्होंने रहस्यमय ढंग से कहा, "किसी शिष्य के गुरु से जुड़ने से पहले, उस शिष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं को गंभीर और सबसे बढ़कर, भरोसेमंद साबित करे।"

‘मैं किसी भी समय परीक्षा देने के लिए तैयार हूँ,’ छोटा ने निडर होकर उत्तर दिया। ‘मालिक मुझे जिस भी परीक्षा में डालना चाहें, डाल सकते हैं।’

लंबे कद के उस व्यक्ति ने कहा, “मैं इस तरह के सार्वजनिक स्थान पर किसी भिखारी से लंबी बातचीत नहीं कर सकता। लोग सोचेंगे कि आखिर बात क्या है। आधी रात को भिंड जाने वाले रास्ते पर दूसरे मील के पत्थर के पास सड़क के किनारे उगने वाले विशाल बरगद के पेड़ के नीचे मुझसे मिलो। तब शायद मुझे तुमसे कुछ कहना हो।”

वह दूर चला गया। छोटा ने भीख मांगने वाले की तरह खूब सलाम किया, मानो उसे अभी-अभी भीख मिली हो।

उस रात जब छोटा आधी रात से लगभग पंद्रह मिनट पहले पहुँचा, तो दूसरे मील के पत्थर के पास फैले हुए टेढ़े-मेढ़े बरगद के पेड़ की शाखाओं के नीचे घना अंधेरा था। वह जानबूझकर समय से पहले आया था, क्योंकि वह जानना चाहता था कि वह लंबा आदमी किस तरह और कहाँ से उसके पास आएगा। आख़िरकार, उसे लगा कि अगर किसी ने ध्यान भी दिया, तो उसके जल्दी आने पर किसी को शक नहीं होगा। एक भिखारी के पास घड़ी होने की उम्मीद तो नहीं की जा सकती। इसके अलावा, एक गरीब आदमी का किसी मुलाकात के लिए जल्दी आना, खासकर पैसे मिलने की उम्मीद में, इससे ज़्यादा स्वाभाविक और क्या हो सकता है?

लेकिन छोटा को इस बात की निराशा हुई कि उसे उम्मीद थी कि वह सबसे पहले पहुंचेगा।

बरगद की शाखाओं की छाया से छाए अंधेरे में से तीन आकृतियाँ निकलीं। उन्होंने उसे घेर लिया। छोटा अपनी लंबाई से समझ गया कि उनमें से एक उसका उपकारक था जिसने मुलाकात का इंतजाम किया था। उसके साथी अजनबी थे।

‘तुम समय से पहले आ गए हो, भिखारी?’

आवाज दूसरे आदमियों में से एक की थी। आवाज कठोर थी और उसमें संदेह की झलक थी।

'महोदय, मैं इस इलाके में अजनबी हूँ और इससे पहले कभी इस जगह पर नहीं आया हूँ। इसके अलावा, मेरे पास घड़ी भी नहीं है। जब गाँव की 'घड़ी' (सार्वजनिक स्थान पर हर घंटे बजने वाली घंटी) में ग्यारह बजे, तो मैं यहाँ आने के लिए निकल पड़ा ताकि मुझे लंबे-चौड़े सज्जन को इंतज़ार न कराना पड़े।'

‘मैं समझ गया,’ उस व्यक्ति ने जवाब दिया, जो इस सरल स्पष्टीकरण से संतुष्ट प्रतीत हो रहा था।

उन्होंने आगे कहा, ‘हमें बताया गया है कि गांव के बनिया और पुलिस ने तुम्हारी पिटाई की है। ऐसा क्यों हुआ?’

‘मैंने उसकी दुकान के सामने भीख मांगी,’ छोटा ने शिकायत भरे स्वर में कहा, ‘और उसने अपने नौकरों को मुझे पीटने का आदेश दिया। बड़ी मूर्खता से मैं दूसरी बार उसके घर गया, हालांकि तब मुझे इसका एहसास नहीं था। मुझे फिर से बुरी तरह पीटा गया और घसीटकर पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहां पुलिस ने मुझे और पीटा।’

वक्ता ने सपाट स्वर में पूछा, 'मुझे इन पिटाई के निशान दिखाओ।'

‘हुजूर, आप उन्हें स्वयं देख सकते हैं। लेकिन अंधेरा...’

छोटा की आगे की बातें अचानक रुक गईं जब अजनबी ने एक छोटी सी इलेक्ट्रिक टॉर्च का बटन दबाया, जिससे रोशनी की एक किरण सीधे उसकी आंखों में पड़ी। उसने पलकें झपकाईं।

फिर वह मुड़ा और अपनी फटी हुई कमीज को ऊपर खींचने लगा, जैसा कि वह पहले भी कई बार किया करता था।

'इसे पूरी तरह से उतार दो,' उसी आवाज ने रूखेपन से आदेश दिया।

छोटा ने तुरंत बात मान ली।

उसे महसूस हुआ कि तीनों आदमी उसकी पीठ को बारीकी से देख रहे हैं, और उसी क्षण उसने सचमुच इतनी मार झेलने पर खुद को बधाई दी। अगर ये निशान असली न होते, तो छोटा जानता था कि उसकी मौके पर ही बुरी तरह मौत हो जाती। जी हाँ, उसकी जान उन असली निशानों की वजह से ही बची थी। क्योंकि वे इस बात की गवाही दे रहे थे कि उसे सचमुच बहुत बेरहमी से पीटा गया था।

थोड़ी देर बाद उसे अपनी पीठ की नंगी त्वचा पर एक नम उंगली का स्पर्श महसूस हुआ। उंगली ज़ोर-ज़ोर से ऊपर-नीचे रगड़ने लगी। रगड़ने से घाव में जलन होने लगी क्योंकि पपड़ी टूट रही थी। तब उसे समझ आया कि वह आदमी क्या कर रहा है। उसने अपनी उंगली पर थूका था और उसे पीटने में इस्तेमाल किए गए बांस से बनी पपड़ी को रगड़ रहा था। अगर पपड़ी नकली होती और किसी रंग से बनाई गई होती, तो थूक उसे हटा देता और धोखा उजागर हो जाता।

दूसरी ओर, उंगली रगड़ने से उत्पन्न घर्षण ने घाव पर बन रही नई पपड़ी को फाड़ दिया और उससे खून बहने लगा। साथ ही, उसे तेज दर्द भी होने लगा।

छोटा को रगड़ती हुई उंगली के नीचे अधिक नमी महसूस हुई। इससे उसे अप्रिय गुदगुदी होने लगी। उसे अपनी पीठ पर कुछ हल्का सा बहता हुआ महसूस हुआ और उसे एहसास हुआ कि यह उसका खून है।

वह सोचने लगा कि आखिर यह आदमी आगे क्या करने वाला है? डाकू ज़रूर सतर्क होंगे, और वह मन ही मन मुस्कुराया।

रगड़ती हुई उंगली धीरे-धीरे दूसरे घाव पर काम करने लगी, यहाँ तक कि उससे भी खून निकलने लगा।

फिर तीसरे घाव पर। और उससे भी खून निकला।

छोटा ने मन ही मन सोचा, "तुम्हें धिक्कार है! क्या तुम मेरे सारे घाव खुरच कर मेरी पीठ को बुरी तरह से दर्द से भर दोगे? कमीने!"

लेकिन जब तीसरी पपड़ी से खून निकला तो वह आदमी संतुष्ट हो गया।

जब उन्होंने दोबारा छोटा से बात की तो उनकी आवाज में पहले से कहीं अधिक दोस्ताना लहजा था।

'भाई, तुम्हें फिर से दुख पहुंचाने के लिए मुझे क्षमा करें। लेकिन हम कोई जोखिम नहीं उठा सकते। यहाँ बहुत सारे पुलिस जासूस मौजूद हैं।'

छोटा ने 'भाई' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दिया। जाहिर तौर पर वह परीक्षा में सफल हो गया था और डाकू उसे अपने गिरोह में शामिल करने ही वाले थे।

आवाज जारी रही, ‘चलो इस पेड़ के नीचे बैठते हैं और धीरे से बात करते हैं। हमें कोई देख नहीं पाएगा।’

इस पूरे समय छोटा अंधेरे में अपनी आँखों से यह देखने की कोशिश कर रहा था कि वह किन लोगों से बात कर रहा है। शाम का उसका साथी, ज़ाहिर है, वह लंबे आदमी को जानता था। लेकिन वह बाकी दो को साफ़-साफ़ नहीं देख पा रहा था। जो आदमी लगातार बातें कर रहा था और निस्संदेह उनका नेता था, वह तीनों में सबसे छोटा था। उसकी कुछ मूंछें थीं, लेकिन बाकी दाढ़ी नहीं थी। तीसरा आदमी, जिसने अभी तक एक शब्द भी नहीं बोला था, थोड़ा लंबा और काफी हट्टा-कट्टा था। छोटा समझ गया कि उसकी दाढ़ी थी। उन सभी ने पगड़ी पहन रखी थी।

अंधेरे में वह बस इतना ही देख पाया।

वे जमीन पर बैठ गए और नेता ने उससे फुसफुसाते हुए बात करना शुरू कर दिया।

आपका नाम क्या है और आप कहाँ से आए हैं? क्या आप जीवन भर भिक्षु रहे हैं?

छोटा ने मान सिंह को पकड़ने के मिशन पर निकलने से बहुत पहले ही इस तरह के सवालों के जवाब सावधानीपूर्वक तैयार कर लिए थे। अब वे जवाब उसके मुंह से पूरी तरह तैयार थे।

उन्होंने कहा, 'मेरा नाम बापट राव है और मैं शोलापुर के दूरदराज के कस्बे से मराठा वंश का हूं। मेरे पिता और उनसे पहले मेरे दादा किसान थे। उस समय हमारे परिवार के पास कई एकड़ जमीन थी।'

लेकिन मानसून लगातार विफल रहा और लंबा सूखा पड़ गया। फसलें सूख गईं और अनाज नहीं बचा। फिर मवेशी बड़ी संख्या में मरने लगे। हमने जो थोड़ी-बहुत बचत की थी, उसे जानवरों के लिए चना और अपने लिए अनाज खरीदने में खर्च कर दिया, जो दूसरे जिलों से आयात किया जाता था। हमारे इलाके में कहीं भी हरी घास का एक तिनका भी दिखाई नहीं देता था।

'मेरे पिता ने हताशा में आकर हमारी जमीन स्थानीय बनिया मोहन लाल के पास गिरवी रख दी, इस इरादे से कि अगली मानसून में जब फसलें फिर से उगेंगी तो वे उसे छुड़ा लेंगे।'

लेकिन अगली मानसूनी बारिश नहीं हुई, महोदय; न ही फसलें दोबारा उगीं। कम से कम अगले साल तो नहीं, न ही उसके अगले साल। लगातार तीन वर्षों तक ईश्वर ने शोलापुर और उसके आसपास के सैकड़ों मील के क्षेत्र पर कहर बरपाया। मोहन लाल से उधार लिया सारा पैसा खर्च हो गया। मेरे पिता फिर से उसके पास गए और उस धूर्त साहूकार ने हमारे खेत पर और भी अधिक पैसा उधार दे दिया। और फिर तीसरा गिरवी रखना पड़ा।

चौथे वर्ष वर्षा हुई। परन्तु परमेश्वर अब भी हमसे क्रोधित थे। तीन वर्ष तक मानसून रोके रखने के बाद उन्होंने चौथे वर्ष वर्षा भेजी। परन्तु उन्होंने अत्यधिक वर्षा भेजी।

नदियों का जलस्तर बढ़ गया और बाढ़ आ गई। हमारे खेत, जो इतने लंबे समय से सूखे पड़े थे, अब पानी में डूब गए। और हमारा घर, जो ज्यादातर मिट्टी और कच्ची

ईंटों से बना था, पूरी तरह से ढह गया।

“महोदय, वह आखिरी आघात था जिससे मेरे बेचारे पिता कभी उबर नहीं पाए। निर्दयी मोहन लाल ने मुकदमा चलाया और हमारी जमीनों की नीलामी करके उन पर लिए गए गिरवी ऋण को चुकाया गया। मोहन लाल को तीनों ऋणों की मूल राशि और उस पर अर्जित ब्याज तथा अदालत में मुकदमे का खर्च चुकाने के बाद, कुछ दिनों के भोजन के लिए बस कुछ ही रुपये बचे थे।”

'हम भूमिहीन और बेघर थे और हमें सड़कों पर ला दिया गया था।'

‘उस आघात ने मेरी बेचारी माँ को दो महीने के भीतर ही मार डाला। वह हमेशा से ही कमज़ोर और बीमार रहने वाली, छोटे कद की महिला थीं—और इसीलिए मैं भी उन्हीं की तरह छोटा और कमज़ोर हूँ। रात में सड़क किनारे पेड़ों के नीचे, ठंड और ओस से असुरक्षित होकर सोने से उन्हें निमोनिया हो गया, जिसके कारण छह दिनों के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई।’

उसके बाद मेरे पिता लगभग पागल हो गए थे। हमारी माँ ही उनके सारे दुखों में उनका एकमात्र सहारा थीं। उनकी मृत्यु के बाद उन्हें लगा कि वे अब दुनिया का सामना नहीं कर सकते।

जिस दिन मेरी मां का निधन हुआ, उसी रात मेरे पिता ने उस महुआ के पेड़ की एक शाखा से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, जिसके नीचे हम सभी सो रहे थे।

“महाराज, अगली सुबह जब हम जागे तो हमारी हालत का आप अंदाज़ा लगा सकते हैं। हमारे सामने हमारे पिता का शव लटका हुआ था। कूदने से पहले उन्होंने अपने गले में जो रस्सी बाँधी थी और जिसका दूसरा सिरा ऊपर फैली एक शाखा से बाँधा था, वह हमारे बेचारे पिता के भार से बुरी तरह खिंच गई थी। उनकी आँखें भयानक ढंग से बाहर निकली हुई थीं; उनकी जीभ बाहर लटकी हुई थी और पूरी तरह काली पड़ गई थी। सुबह की उस भयानक हवा के झोंकों से उनका शरीर धीरे-धीरे उस कसकर खिंची हुई रस्सी पर झूल रहा था और घूम रहा था।”

जमीन पर हमारी प्यारी मां के अभी तक अधूरे दाह संस्कार किए हुए अवशेष पड़े थे। उनकी मृत्यु पिछली सुबह हुई थी। उस शाम तक उस गर्म मौसम में उनके अवशेष दुर्गंधित हो जाते। हमारे पास दो अंतिम संस्कार करने के लिए पैसे नहीं थे।

'मेरा छोटा भाई, मैं और मेरी बहन, जो मुझसे भी छोटी थी—एक सुंदर लड़की जिसकी उम्र अभी 14 साल भी नहीं हुई थी—हम तीनों को इस क्रूर और कठोर

दुनिया का सामना करने के लिए पीछे छोड़ दिया गया था, हम तीनों के पास एक भी आना नहीं था।'

'मुझे वह भयानक सुबह अच्छी तरह याद है, महोदय,' छोटा ने याद करते हुए कहा, उसकी आवाज में सिसकी झलक रही थी। 'कुछ देर तक हम चुप रहे, इतने सदमे में थे और इतने शब्दहीन थे कि बोल भी नहीं पा रहे थे। फिर मेरी बहन रोने लगी, और मैं और मेरा भाई भी उसके साथ रोने लगे।'

इसके बाद मेरे भाई ने, जो हम तीनों में सबसे बुद्धिमान था, एक बहुत ही भयानक काम किया। दबी हुई और भ्रमित क्रोध की आवेश में आकर, उसने हमारे मृत पिता के शव को, जो हवा में लटक रहा था, कोसना शुरू कर दिया।

"तुम दरिंदे," वह रोते हुए, चेहरे पर आंसू बहाते हुए और मुट्ठियां हवा में लहराते हुए जोर से चिल्लाया, "तुमने हमें इस हालत में पहुँचाया है। तुमने हमारी ज़मीन और घर गिरवी रख दिए। तुमने हमारी प्यारी माँ को भूखा रखा, जिससे वह इतनी कमज़ोर हो गई कि उस बीमारी का सामना नहीं कर पाई जिसने उसे जकड़ लिया था। और अब, हे धिक्कार है तू, तूने खुद को मार डाला क्योंकि तू इतना डरपोक (गिनी पिग के आकार का एक बहुत बड़ा चूहा) था कि तू उस बोझ को नहीं उठा सका जो तूने उस पर डाल दिया था। हम तेरे बच्चे हैं। तूने हमें जन्म दिया है। अब हम कैसे जिएंगे?"

उसकी आवाज उन्मादपूर्ण चीख में बदल गई। "बस वहीं खड़े मत रहो और अपनी उन भयानक उभरी हुई आँखों और बाहर लटकती जीभ से हमें घूरते मत रहो, बल्कि हमें जवाब दो," वह विलाप करते हुए बोला। "तुम, जो हमारे पिता थे; बोलो और हमें जवाब दो।"

और फिर, भयानक आँसुओं के साथ फूट-फूट कर, "तुम्हें धिक्कार है! और मैं बार-बार यही कहती हूँ। तुम, जो हमारे पिता थे; तुम्हें धिक्कार है! तुम्हें धिक्कार है! तुम्हें धिक्कार है!"

'उसके व्यवहार ने मेरी बहन और मुझे क्षण भर के लिए इतना चौंका दिया कि हम अपने आंसू रोक पाए।'

मैं पिताजी से बहुत प्यार करता था, और ईमानदारी से कहूँ तो हमारे ऊपर आई सारी विपत्तियों के लिए उन्हें पूरी तरह से दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। मेरे भाई, सिंजी राव के इस घृणित व्यवहार ने मुझे हद से ज़्यादा क्रोधित कर दिया।

'हाथों में उससे छोटा होने के बावजूद, मैं उस पर झपटा, दोनों हाथों से उसका

गला पकड़ लिया और लगातार दबाता रहा। दूर से मुझे अपनी बहन कमला की चीखें सुनाई दे रही थीं कि मैं उसे छोड़ दूं।'

लोग मेरी मदद के लिए दौड़े और मुझे मेरे भाई के ऊपर से खींचकर अलग किया। मैंने उसे नीचे गिरा दिया था और उसकी छाती पर बैठकर उसे अपने हाथों से गला घोंट रही थी। अगर वे मुझे वहां से न खींचते, तो मैं उसी सुबह उसकी जान ले लेती।

फिर पुलिस आ गई।

उस शाम, उनके द्वारा किए गए पोस्टमार्टम के बाद, हमारे गरीब माता-पिता के शवों का अंतिम संस्कार कर दिया गया। भारी भीड़ जिज्ञासावश वहाँ मौजूद थी, लेकिन उस भयानक त्रासदी को देखकर सब चुप हो गए थे।

उसके बाद कई दिनों तक जांच चलती रही। पुलिस को किसी भी बात से संतुष्टि नहीं मिली। ऐसा लग रहा था कि वे किसी ऐसे अपराध को उजागर करने पर तुले हुए थे जहां कोई अपराध हुआ ही नहीं था, बल्कि केवल एक भयानक त्रासदी हुई थी।

कुछ लोगों ने हमें थोड़ा खाना और पैसा दिया। लेकिन वह जल्द ही खत्म हो गया और हमें काम करना पड़ा।

उस दुखद सुबह के बाद मैंने अपने भाई से फिर कभी बात नहीं की। कुछ दिनों बाद वह काम की तलाश में पुणे चला गया। मुझे उसके बारे में आखिरी खबर यही मिली थी कि वह पागल हो गया था और एक पागलखाने में भर्ती था।

'मेरी बहन कमला एक खूबसूरत लड़की थी; उसकी बढ़ती हुई काया, सीधी मुद्रा और सुंदर चेहरे में जवानी का आकर्षण तेजी से उभरती हुई नारीत्व में तब्दील हो रहा था।'

'हमारे परिवार को पहुँचाए गए तमाम नुकसानों से संतुष्ट न होकर उस नीच मोहन लाल ने किसी तरह अपने एजेंटों के ज़रिए उसे अपने साथ रहने के लिए फुसला लिया। बाद में मुझे पता चला कि एक साल से ज़्यादा समय तक उसे अपने पास रखने के बाद उसने अचानक उसे घर से निकाल दिया और वह बंबई चली गई जहाँ वह एक वेश्या की तरह जीवन बिता रही है।'

'मैं खुद काम की तलाश में दिल्ली तक उत्तर की ओर गया, लेकिन मुझे कोई स्थायी रोज़गार नहीं मिला। लगता है हमारे परिवार का दुर्भाग्य मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा। और इसीलिए आज मैं आप सबके सामने एक भिखारी बनकर खड़ा हूँ! और

दूसरी बार मैं अमीरों और साथ ही एक साहूकार, गाँव के बनिया कुंजिलाल का शिकार बन गया हूँ।'

यह एक लंबी कहानी थी, और छोटा ने इसे बखूबी सुनाया था। दरअसल, इसे गढ़ने में इतना समय व्यर्थ नहीं लगा था। यह एक ऐसी कहानी होनी ही थी जो तुरंत सहानुभूति जगा दे।

छोटा को लगा कि वह सफल हो गया है और उसके सामने खड़े लोग प्रभावित हुए हैं।

वह सही था। नेता ने दोबारा बोलना शुरू किया, लेकिन उसकी आवाज़ पूरी तरह बदल चुकी थी। उसमें पहले जैसी रूखापन और संदेह का भाव नहीं था। अब वह विनम्र था। इसके अलावा, अब वह पुराने और भरोसेमंद दोस्तों के बीच होने वाले सौहार्दपूर्ण लहजे में बात कर रहा था।

"हाँ भाई," उन्होंने कहा, "तुम्हारी कहानी बहुत दुखद है। इसे सुनकर मेरी आँखों में लगभग आँसू आ गए। लेकिन अब हिम्मत रखो, हम तुम्हारे दोस्त हैं। आने वाले समय में तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो तुम्हारे लिए सबसे बड़ा मददगार साबित होगा। मैं हमारे अद्वितीय नेता, महान राजा मान सिंह राठौर की बात कर रहा हूँ।"

लेकिन अभी के लिए, चलिए काम की बात पर आते हैं। गाँव में रहने वाला यह साहूकार, जिसका नाम कुंजिलाल है। उसने न केवल आपको नुकसान पहुँचाया है, बल्कि राजा ने उसके अत्याचार, क्रूरता और गरीबों के प्रति उसके अत्याचारों की कई कहानियाँ सुनी हैं।

क्या आपको पता है कि वह अपने भाई के साथ बंबई में साझेदारी में है? वे वहाँ एक वेश्यालय चला रहे हैं जिसमें एक दर्जन से अधिक लड़कियाँ हैं। उनमें से लगभग आधी इसी गाँव की हैं; गरीब किसानों की बेटियाँ जो कर्ज में डूबी होने के कारण इस दुष्ट के चंगुल में फँस गई हैं। इन गरीब माता-पिता को अपनी बढ़ती हुई बेटियों को इस घिनौने मकसद के लिए उसे सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

उन्होंने आगे कहा, "दरअसल, यह कुंजिलाल वही काम कर रहा है जो आपके साहूकार मोहन लाल ने शोलापुर में किया था। जैसा कि उनके नामों से ही स्पष्ट है, वे एक ही अभिशापित वंश से हैं—मारवाड़ी (ब्याजखोरों की एक जाति)।"

'तो क्या आप उसे सबक सिखाने में हमारी मदद करेंगे?' और वक्ता रुक गया।

हालाँकि मोहन लाल की कहानी छोटा की कल्पना मात्र थी, लेकिन कुंजिलाल

बिल्कुल वास्तविक था। उसकी पीठ पर पड़े घाव, जिनमें असहनीय दर्द होता था, उसे हर थोड़े समय बाद इस बात की याद दिलाते थे। और बंबई के वेश्यालय में लड़कियों की कहानी ने छोटा को झकझोर दिया। अगर यह सच था, तो इस बदमाश कुंजिलाल को सबक सिखाना बहुत ज़रूरी था।

छोटा सोचने लगा कि मान सिंह आखिर किस तरह का इंसान था। अगर यह सच था कि वह अपना काफी समय कुंजिलाल जैसे बदमाशों को सजा देने में बिताता था, तो उसे लगा कि वह उससे जान-पहचान करना चाहेगा।

वह लगभग चौंकते हुए उस तन्मयता से बाहर निकला जिसमें वह डूब गया था।

'बिल्कुल,' उसने जवाब दिया; 'दरअसल, मैं अभी यही सोच रहा था कि अगर वह सिर्फ पांच मिनट के लिए मेरे साथ अकेला रह जाए तो मैं उसके साथ क्या करूंगा।'

अंधेरे में अजनबी के मुस्कुराने पर छोटा को उसके सामने सफेद दांतों की धुंधली सी आकृति दिखाई दी।

'मेरा नाम सुंदर है,' उसने कहा, 'गांव के बाजार में आपसे बात करने वाला लंबा आदमी दातार सिंह है। और यहां जो दूसरा आदमी है जिसने अभी तक कुछ नहीं कहा है, वह हैदर खान है।'

अंतिम व्यक्ति, जो अपने नाम से ही मुस्लिम था, ने विनम्रतापूर्वक 'सलाम-अलयकुम' (नमस्कार; अल्लाह आपके साथ हो) कहकर परिचय का अभिवादन किया।

सुंदर ने आगे बताया, "कुंजिलाल अपने घर में खाना खाता है, लेकिन कुछ शामों को, खासकर शनिवार को, रात के खाने के बाद लगभग नौ बजे, वह कस्बे के दूसरे हिस्से में स्थित अपनी एक झोपड़ी में जाता है, जहाँ वह किसी बदकिस्मत लड़की के साथ रात बिताता है जो उसके जाल में फंस गई होती है, या फिर गाँव की एक-दो वेश्याओं के साथ, जिनके साथ उसके नियमित संबंध होते हैं। उसकी पत्नी और परिवार इन संबंधों के बारे में जानते हैं, लेकिन उसे रोकने में असमर्थ हैं।"

"हम ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं कि हमारी जान-पहचान की एक बेहद खूबसूरत लड़की को मोहरे के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। उसे इस बदमाश से मिलवाया जाएगा। ज़ाहिर है, इसके बाद वह उसे तुरंत अपने गुप्त विला में आमंत्रित करेगा। उस रात उसके नौकर देहू और राम विला का दरवाजा खोलेंगे और लड़की को पहले से ही

वहाँ जाकर उसका इंतज़ार करने के लिए कहा जाएगा। हमेशा से यही तरीका रहा है,” उन्होंने आगे कहा।

‘इन नौकरों को काबू में करने में दातार सिंह और हैदर खान की मदद करना तुम्हारा काम होगा—लेकिन चुपचाप। किसी भी हालत में इन्हें मारना नहीं है। तुम तीनों को इन्हें बेहोश करना है; फिर इनके मुंह में कपड़ा ठूंस देना है। जब यह हो जाए, तो हैदर खान को मुझे बुलाने के लिए भेज देना। वह जानता है कि मैं कहाँ मिलूंगा।’

“इस बीच, कुंजिलाल जल्दी से विला पहुँच जाएगा। दातार सिंह और आपको उसे भी सुरक्षित करना होगा—और फिर से चुपचाप। इसमें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए,” उसने आगे कहा, “क्योंकि दातार सिंह बहुत शक्तिशाली व्यक्ति है।” अंधेरे में एक बार फिर छोटा ने उसकी मुस्कान की झलक देखी।

“लगभग एक बजे सुबह मैं हैदर खान के साथ आऊंगा और हम कुंजिलाल को चुपके से ले जाएंगे। उस जिम्मेदारी का कुछ हिस्सा मेरा है। यह ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए, क्योंकि गांव के सभी चौकीदार हमारे दोस्त हैं।”

'यह सब हो जाने के बाद आप हमारे साथ आ सकते हैं क्योंकि आपका गांव में रहना ठीक नहीं होगा।'

“ओह, वैसे। जब तुम तीनों मिलकर दोनों नौकरों को काबू में कर लो, तो उस लड़की को भी बांधकर उसके मुंह में कपड़ा ठूंस देना, ताकि अगली सुबह किसी को शक न हो कि वह इस योजना का हिस्सा थी। पुलिस को यह यकीन दिलाना होगा कि यह राजा मान सिंह द्वारा किए गए कई चालाक छापों में से एक था और उस महिला का इसमें कोई हाथ नहीं था।”

आइए अब प्रत्येक विवरण की सावधानीपूर्वक समीक्षा करें ताकि कोई गलती न हो।

छोटा खुद को गांव के साहूकार के अपहरण की इस योजना में उत्साहपूर्वक शामिल होते देखकर हैरान रह गया। उसे लगा जैसे वह एक तीर से दो निशाने साध रहा हो। एक तरफ तो वह जल्द ही कुख्यात डाकुओं के सरगना से मिलने की उम्मीद कर सकता था, वहीं दूसरी तरफ उस धूर्त बनिया को उसके कर्मों का फल मिलने वाला था। छोटा इस बात को सोचकर आनंदित हुए बिना नहीं रह सका।

योजना पूरी तरह से कारगर साबित हुई। दो शाम बाद, हट्टे-कट्टे दातार सिंह और छोटे कद के मुसलमान हैदर खान बाज़ार में देर रात तक बातें करते रहे। पास ही में,

छोटा ज़मीन पर बिछे अपने रुमाल के सामने खड़ा भीख मांग रहा था।

शाम 7.30 बजे के ठीक बाद, जब काफी अंधेरा हो चुका था, वह लड़की जो पूरी योजना की मुख्य कड़ी थी, और जिसे पिछले दिन दातार सिंह ने चुपके से छोटा को दिखाया था, विला की ओर जाते हुए उन तीनों के पास से गुजरी।

छोटा यह मानने से खुद को रोक नहीं पाई कि वह एक सुंदर युवती थी।

दातार सिंह और हैदर खान कुछ दूरी पर उसके पीछे-पीछे बेफिक्री से चल रहे थे। उनके ठीक पीछे, छोटा लंगड़ाता हुआ चल रहा था। जाहिर तौर पर, उसकी भीख मांगने की प्रक्रिया, कम से कम उस रात के लिए, समाप्त हो चुकी थी।

जब तक वे विला पहुंचे, तब तक लड़की को पहले ही दो नौकरों, राम और देहू द्वारा अंदर ले जाया जा चुका था, जो उसे अंदर आने देने और अपने मालिक की अय्याशी भरी रात के लिए जगह तैयार करने के लिए पहले से ही वहां मौजूद थे।

अंधेरे में छोटा और उसके दो साथी बाहर खड़े थे। फिर तीनों प्रवेश द्वार की ओर बढ़े, जिनमें दातार सिंह सबसे आगे था।

हैंडल को पकड़कर दातार सिंह ने इसे खोलने की कोशिश की।

जैसा कि उम्मीद थी, दरवाजा तेजी से बंद हो गया।

उसने दरवाज़ों पर ज़ोर से दस्तक दी। कुछ देर तक कोई जवाब नहीं आया। उसने फिर दस्तक दी।

दरवाजा धड़ाम से खुला और दहलीज पर राम दिखाई दिया।

'तुम कुत्तों को क्या चाहिए—', उसने कहना शुरू किया।

दातार ने खुले दरवाजे पर अपना पैर जमा दिया ताकि वह दोबारा बंद न हो सके, और वे तीनों अंदर की ओर दौड़ पड़े।

छोटा ने एहतियात के तौर पर उनके पीछे दरवाजा बंद कर दिया।

दातार ने अपनी जेब से निकाली किसी छोटी सी वस्तु से राम के सिर पर प्रहार किया, और राम ऐसे गिर पड़ा जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से मारा हो।

देहू, जो बचा हुआ नौकर था और बगल वाले कमरे में था, ने गिरने की आवाज़ सुनी और यह पता लगाने के लिए अंदर आया कि आवाज़ किस चीज़ की थी। हैदर खान ने पीछे से उस पर हमला किया और उसके हाथ पीछे की ओर जकड़ लिए। छोटा ने उस आदमी का मुंह बंद कर दिया। और दातार सिंह ने उसी चीज़ से उस पर वार किया जिससे उसने राम पर वार किया था, और ठीक वैसा ही नतीजा हुआ। देहू

ज़मीन पर ढेर हो गया। छोटा ने पहली बार देखा कि वह चीज़ छह इंच लंबी बांस की छड़ी पर लगी लकड़ी की गेंद थी।

अब तक सब ठीक चल रहा था। सब कुछ बहुत आसान था।

वह लड़की पूरे दृश्य की मूक दर्शक बनी रही।

चूंकि दोनों नौकरानियां बेहोश थीं, इसलिए दातार सिंह ने अब उससे बात की।

'आओ लड़की; हम तुम्हें अभी बांध देंगे, ताकि जब ये सुंदरियां होश में आएं और तुम्हें बंधी हुई, मुंह बंद की हुई और अस्त-व्यस्त हालत में देखें, तो वे सोचें कि तुम भी इस हमले की उतनी ही शिकार थीं जितनी वे खुद।'

उसने अपनी बड़ी जेब से रस्सी के कई बंडल निकाले। उन्होंने बिना किसी सख्ती के उसके हाथ-पैर बांध दिए; और फिर उसे अपने साथ लाए हुए रुमाल से उसका मुंह बंद कर दिया। अंत में उन्होंने उसकी साड़ी और जैकेट को जगह-जगह से फाड़ दिया ताकि लगे कि उसके साथ छेड़छाड़ की गई है।

जैसे ही उनका काम खत्म हुआ, राम ने धीमी सी कराह निकाली।

अगले दस मिनट के भीतर दोनों नौकर ज़मीन पर पड़े थे, उन्हें कुशलतापूर्वक बांधकर मुंह पर पट्टी बांध दी गई थी। और यह सी.आई.डी. के इंस्पेक्टर छोटा सिंह थे जिन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास किया कि मुंह पर बंधी पट्टियाँ और रस्सियाँ इतनी अच्छी तरह से बंधी हों कि पीड़ित किसी भी तरह से अकेले भाग न सकें या कोई शोर न मचा सकें।

कार्यवाही का यह भाग सफलतापूर्वक संपन्न होने पर, दातार सिंह ने हैदर खान को अपने नेता सुंदर को सूचित करने के लिए कहा कि अब तक सब कुछ योजना के अनुसार ही हुआ है। आठ बजने में कुछ ही मिनट बचे थे और दोनों व्यक्तियों का अनुमान था कि भरपेट भोजन कर चुके कुंजिलाल, वहाँ पहुँचने से पहले मुश्किल से साढ़े नौ बजे तक ही पहुँचेंगे, जब वे वहाँ मौजूद लड़की के साथ आनंद लेंगे।

वे लगभग सही थे। लगभग सवा नौ बजे दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई और कुंजिलाल की आवाज सुनाई दी, 'दरवाजा खोलो; मैं हूँ।'

दोनों व्यक्तियों ने सामने वाले कमरे में तेल का दीपक जलाए रखना उचित समझा था, ताकि अगर कमरा पूरी तरह अंधेरा हो जाए तो बनिया को शक न हो। लेकिन, जैसा कि हुआ, बनिया ऐसा नहीं चाहता था।

छोटा और दातार सिंह एक तरफ खड़े हो गए जब दातार ने सामने का दरवाजा

खोला। दरवाजे की वजह से वे तुरंत दिखाई नहीं दिए क्योंकि कुंजिलाल कमरे के अंदर चला गया।

वह नाराज़ था और कह रहा था, 'तुम दोनों बड़े मूर्ख हो। क्या मैंने तुम्हें स्पष्ट रूप से घर में अंधेरा रखने के लिए नहीं कहा था?'

तभी छोटा ने धीरे से सामने का दरवाजा बंद कर दिया, जबकि दातार सिंह ने अपने बनाए हथियार से बनिया के सिर पर वार किया। कुंजिलाल गिर पड़ा।

इंस्पेक्टर मन ही मन सोचने से खुद को रोक नहीं पाया, और सोचते हुए उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई, कि उस शाम लकड़ी की गेंद ने वाकई में अपना काम बखूबी निभाया था और एक के बाद एक तीन आदमियों को चुप करा दिया था।

लेटे हुए आदमी से उठ रही इत्र की गंध से दोनों को घिन आ गई। जाहिर है, बनिया ने विला में आने से पहले अपने पूरे शरीर पर इत्र छिड़क लिया था।

कुछ ही मिनटों में उन्होंने उसे उसी कुशलता से बांध दिया और उसके मुंह पर पट्टी बांध दी जैसे दोनों नौकरों ने की थी।

इसी बीच राम और देहू को होश आ गया था। असहाय होकर, भय से आँखें फाड़कर वे अपने स्वामी और दातार एवं छोटा को घूर रहे थे। छोटा में उन्हें वही भिखारी नज़र आया जिसे उन्होंने दो बार पीटा था। निस्संदेह अब वह उनके द्वारा पहुँचाई गई चोटों का बदला लेगा और उनका गला काट देगा। यह सोचकर उनके चेहरे पसीने से तर हो गए और वे बंधनों में जकड़े काँपने लगे।

लेकिन जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, उन्होंने खुद को जीवित पाया। कुंजिलाल को होश आने में काफी समय लगा। जब उसे होश आया तो मुंह पर पट्टी बंधी होने के कारण वह बोल नहीं पा रहा था। लेकिन उसकी राख जैसी पीली, ढीली त्वचा वाले गालों पर आंसू बह रहे थे।

लड़की अपने कोने में बंधी और मुंह पर पट्टी लगी हुई पड़ी थी। कुंजिलाल और उसके दो नौकरों ने उसकी फटी हुई जैकेट और साड़ी देखी, और तीनों ने यह निष्कर्ष निकाला कि उनके अपहरणकर्ताओं ने उन्हें तब अगवा किया था जब वे बेहोश थे।

इसी बीच, दातार सिंह और छोटा कमरे के दूसरे छोर पर फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे। उनका लंबा साथी छोटा को लगातार बीड़ी (तंबाकू के पत्ते में लिपटी छोटी सिगरेट) देता जा रहा था, और वह खुद भी उन्हें पी रहा था।

डाटर बोल रहा था। वह बातूनी मूड में लग रहा था और इंस्पेक्टर ने उसे बोलने

दिया ताकि वह उसके बारे में जितना हो सके उतना जान सके।

‘भाई, तुम्हारी तरह,’ दातार कह रहा था, ‘मैं भी कभी सुखी था। मैं एक छोटा-मोटा व्यवसाय चलाता था। भिंड कस्बे में मेरी एक आटा चक्की थी। उससे बड़ा मुनाफा तो नहीं होता था, लेकिन उससे मेरा और मेरे परिवार का गुजारा चलता था; मैं कहूँ, आराम से गुजारा होता था।’

फिर एक दिन कस्बे के एक धनी व्यक्ति ने, जो संयोगवश कस्बे की पंचायत (स्थानीय नगरपालिका) का अध्यक्ष भी था, एक और चक्की खरीद ली। मैं उसका इकलौता प्रतिद्वंदी था।

दरअसल, वह कस्बा हम दोनों के लिए एक ही तरह का कारोबार करने और उससे मुनाफा कमाने के लिए काफी बड़ा था। वह एक 'लखीर' था, जिसके पास जमीन-जायदों के अलावा लाखों रुपये की संपत्ति थी। मेरी चक्की से जो थोड़े-बहुत रुपये कमाए जाते, उसका उसके लिए कोई महत्व नहीं होता।

दूसरी ओर, मैं एक गरीब आदमी था। मेरी पत्नी, दो बच्चे और मैं अपने दैनिक भोजन के लिए पूरी तरह से हमारी चक्की से होने वाली पैदावार पर निर्भर थे। हमारे लिए वही हमारी रोजी-रोटी थी।

लेकिन यह धनी व्यक्ति, यह अध्यक्ष, जिसका नाम अर्जुन सिंह था, प्रतिस्पर्धा के विचार को सहन नहीं कर सका। उसने हमें और हमारी छोटी चक्की को पूरी तरह से खत्म करने का निश्चय कर लिया।

'पहले उपाय के तौर पर, उन्होंने ग्राम पंचायत सदस्यों पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए यह फरमान जारी करवाया कि जिस इमारत में चक्की स्थित थी वह ग्राम परिषद की है और अब इसकी आवश्यकता अन्य उद्देश्यों के लिए है।'

हमें बाहर निकाल दिया गया था, और जब तक हमारे उपयोग के लिए कोई अन्य इमारत उपलब्ध नहीं हो जाती, तब तक हम चक्की का संचालन नहीं कर सके।

इसलिए मैंने एक छोटा गोदाम किराए पर लिया और उसमें मशीनरी रख दी, जबकि मैं चक्की लगाने के लिए पर्याप्त जगह वाला कोई दूसरा कमरा ढूंढने की कोशिश कर रहा था। आपको यह समझना होगा कि उस समय गांव में मशीनरी रखने के लिए पर्याप्त जगह वाला कोई दूसरा खाली स्थान नहीं था।

एक रात कुछ लोगों ने छत पर लगी जस्ता की चादर हटाकर गोदाम में सेंध लगाई। उन्होंने मशीन का मोटर तोड़ दिया और कटर निकाल लिया।

मुझे यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि कोई भी साधारण व्यक्ति, चाहे वह कितना भी दुष्ट क्यों न हो, बिना किसी कारण के ऐसा काम नहीं करेगा। हमारी मशीन को स्पष्ट रूप से अर्जुन सिंह के उकसावे पर ही नुकसान पहुंचाया गया था।

उन दिनों मैं बहुत उग्र स्वभाव का था और मैंने सार्वजनिक रूप से उस पर आरोप लगाया। अध्यक्ष ने इसके जवाब में पंचायत से आदेश जारी करवाया कि मैं उस कस्बे में अपनी चक्की फिर कभी न चलाऊं, चाहे मैं उसकी मरम्मत करवा लूं और चक्की के लिए कोई इमारत किराए पर ले लूं। इस प्रकार यह दुष्ट और लालची व्यक्ति मुझे अपने प्रतिद्वंद्वियों से प्रतिस्पर्धा करने से पूरी तरह से रोकने के अपने उद्देश्य में सफल हो गया।

'उस कस्बे में अपनी चक्की चलाने के मामले में भाग्य से लड़ने की निराशा को महसूस करते हुए, मैंने टूटी हुई मशीन को कबाड़ समझकर बेच दिया और एक छोटी सी दुकान में सिगरेट, मिठाई और कुछ अन्य सामान बेचकर अपना व्यवसाय शुरू कर दिया।'

लेकिन अर्जुन सिंह सिर्फ आटा चक्की के मामले में मुझे अपने प्रतिद्वंद्वी के रूप में मिटाने से संतुष्ट नहीं था। उसने अब मुझे पूरी तरह से खत्म करने का लक्ष्य बना लिया। मैं वास्तव में आपको इसका कारण नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। शायद वह मुझसे इसलिए नाराज़ था क्योंकि मैंने सार्वजनिक रूप से उस पर मेरी मशीन को नुकसान पहुँचाने वाले लोगों के पीछे साज़िश रचने का आरोप लगाया था।

खैर, उसने मुझे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सौ अलग-अलग तरीकों से परेशान करना शुरू कर दिया। एक रात इसका नतीजा यह हुआ कि मेरी छोटी सी दुकान में आग लग गई और सारा सामान जलकर राख हो गया। अगली सुबह, मलबे के अंदर हमें दो गैलन पेट्रोल का एक डिब्बा मिला, जो आग की लपटों से मुड़ा हुआ और काला पड़ गया था, लेकिन फिर भी उसे पेट्रोल के डिब्बे के रूप में पहचाना जा सकता था। कोई छत के रास्ते अंदर आया होगा और उस पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी होगी। वह जलकर राख हो गया था।

मैं पूरी तरह से बर्बाद हो गया था और जीवन भर के लिए बर्बाद हो गया था।

फिर, अर्जुन सिंह के उकसाने पर, उस कमरे के मालिक मकान मालिक ने, जो मेरे सामान के साथ जल गया था, मेरे खिलाफ नुकसान के लिए कानूनी कार्यवाही

शुरू कर दी, यह कहते हुए कि आग के लिए मैं लापरवाही से जिम्मेदार था।

इन तमाम मुसीबतों के सामने हम कुछ नहीं कर सकते थे। आधी रात को मैं अपने परिवार के साथ उस शापित शहर से भाग निकला।

लेकिन विपत्ति लगातार हमारा पीछा करती रही। आग लगने के ठीक छह महीने बाद—ठीक उसी तारीख को—वह नौका जिसमें मैं और मेरा परिवार, साथ ही कई अन्य लोग यमुना नदी पार कर रहे थे, बीच धारा में डूब गई। नदी उफान पर थी। मेरी पत्नी और हमारे दोनों बेटों समेत कई लोग डूब गए। मुझे नदी के एक किनारे पर, नदी से एक मील नीचे की ओर मृत समझकर निकाला गया।

“उस दिन से, भाई, मैं अर्जुन सिंह के प्रति घृणा से भरे दिल के साथ इस भूमि पर भटकता रहा। वही हमारी सभी विपत्तियों का आरंभ था।”

'इतने समय से मुझे राजा मान सिंह की अद्भुत उपलब्धियों के बारे में कहानियां मिलती आ रही थीं, जो गरीबों की मदद करने वाले सज्जन डाकू थे। एक दिन मैंने उनसे मिलने का निश्चय किया।'

“मैंने इस महान व्यक्ति को कैसे पाया, इसमें शायद आपकी कोई दिलचस्पी न हो। लेकिन मैंने उन्हें पा लिया। मैंने उनके सहानुभूतिपूर्ण कान में अपनी दुखभरी कहानी सुना दी। अपनी मृत्यु तक मैं उनका जवाब कभी नहीं भूलूंगा।”

उन्होंने कहा, “हिम्मत रखो, दातार सिंह। शायद भगवान ने तुम्हें गरीबों की मदद करने के लिए चुना है। क्या तुम मेरे समूह में शामिल होना चाहोगे?”

मैं इतना खुश था कि मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। उसी क्षण मैं महान नेता बापट राव के साथ जुड़ गया, और मुझे आशा है कि आप भी जल्द ही उनके साथ जुड़ेंगे। और आज तक मुझे इसका कोई पछतावा नहीं है।

कुछ महीनों बाद, अर्जुन सिंह चंबल नदी के पार एक व्यापारिक यात्रा पर गए। मैं संयोगवश मान सिंह के कुछ डाकुओं के साथ था जब हमने एक काफिले पर छापा मारकर उसे पकड़ लिया। मुझे पूरा यकीन है कि हमारे सरदार को इसकी जानकारी थी और उसने जानबूझकर मुझे उस गिरोह में शामिल किया था, क्योंकि उस काफिले में मेरा पुराना दुश्मन अर्जुन सिंह भी था।

मैं उसे राजा के पास ले गया और कहा, “महाराज, याद है मैंने आपको एक दुष्ट व्यक्ति के बारे में बताया था जिसने मुझे और मेरे परिवार को नष्ट कर दिया था? देखिए, वही व्यक्ति आपके सामने साक्षात खड़ा है। मुझे बदला लेने दीजिए और उसे

मार डालने दीजिए।”

“नहीं, दातार सिंह, आपको अभी ऐसा नहीं करना चाहिए,” उन्होंने मुझे जवाब दिया था, “हर व्यक्ति को निष्पक्ष सुनवाई और अपना बचाव करने का मौका मिलना चाहिए। यह मेरी हमेशा से प्रथा रही है। फिर, अगर उस पर फैसला सुनाने वाले गिरोह के सदस्य उसे मौत की सजा देते हैं, तो उसे फांसी दी जा सकती है। लेकिन तब तक नहीं।”

अगले दिन मंडली के कुछ सदस्य इकट्ठा हुए, जिन्हें मैंने अपनी कहानी ठीक वैसे ही सुनाई जैसे मैंने आपको सुनाई है। अर्जुन सिंह को अपना बचाव करने के लिए कहा गया। उन्होंने यह कहकर स्पष्ट इनकार कर दिया कि उन्होंने मुझे पहले कभी नहीं देखा था।

'मान सिंह ने मुकदमे के बाद उसे बंदी बनाकर रखा और अपने कुछ एजेंटों को भिंड शहर भेजा ताकि पता लगाया जा सके कि हम दोनों में से कौन सच बोल रहा था। वे एजेंट पर्याप्त सबूत लेकर लौटे कि मैंने जो कहा था वह सच था, जबकि अर्जुन सिंह झूठ बोल रहा था।'

‘डाकुओं के गिरोह ने उसके खिलाफ फैसला सुनाया था। उसे मौत की सजा सुनाई गई थी। और मुझे उसे अपनी इच्छानुसार किसी भी तरीके से मारना था।’

बापट राव, मेरे भीतर वर्षों से सुलग रहा वह पुराना क्रोध और घृणा, उस दुष्ट अर्जुन सिंह के प्रति, जिसने मेरे घर को उड़ा दिया था और अप्रत्यक्ष रूप से मेरी पत्नी और दो बेटों की मृत्यु का कारण बना था, एक अनियंत्रित लहर बनकर मुझमें फिर से उमड़ पड़ा। मैंने अपने पास मौजूद चाकू की धार निकाली और उन सबके सामने अर्जुन सिंह का गला एक कान से दूसरे कान तक काट दिया।

'जैसे ही उसका गर्म खून मेरी उंगलियों के बीच से निकला, मेरा बदला पूरा हो गया।'

अर्जुन सिंह के सामान में हमें काफी धन और कुछ छिपाए हुए गहने मिले। मान सिंह ने यह सारा माल मुझे सौंपते हुए कहा, “यह सब तुम्हारा ही है, दातार सिंह, क्योंकि तुमने उसके हाथों बहुत अन्याय सहा है। इसे अपने पास रखो, या कुछ गरीबों को दे दो, जैसा तुम्हें ठीक लगे।”

मैंने उन्हें सब कुछ लौटाते हुए जवाब दिया, “महाराज, मुझे उस शापित सूअर की एक आना भी नहीं चाहिए। आप सब कुछ गरीबों को दे सकते हैं। मैं केवल इतना

चाहता हूँ कि आप जहाँ भी जाएँ, मैं आपका अनुसरण करूँ।”

“यह लगभग दो साल पहले की बात है, बापट राव। तब से मैंने इस अद्भुत नेता की निष्ठापूर्वक सेवा की है, और मुझे अपने इस निर्णय पर कभी पछतावा नहीं हुआ। मैंने उनकी वीरता और दयालुता को और अधिक देखा है। मेरा उनके प्रति प्रेम और भी बढ़ता जा रहा है। आज रात मैं उनकी जान बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर दूंगा।”

दातार सिंह चुप थे। उन्होंने अपनी मार्मिक कहानी का अंत कर दिया था।

छोटा ने कही गई हर बात पर लंबे समय तक गहन चिंतन किया। उसने सोचा, सचमुच, एक पुलिसकर्मी का जीवन कभी-कभी बहुत कठिन होता है। उसे सही और गलत के बीच सबसे मुश्किल फैसले लेने पड़ते हैं।

ठीक सुबह एक बजे उन्हें दरवाजे पर हल्की दस्तक सुनाई दी। दातार सिंह ने दीया नीचे करके कुंडी खोली और दरवाजा कुछ इंच खुला। बाहर दो दबे हुए चेहरे खड़े थे जिन्हें उन्होंने सुंदर और हैदर खान के रूप में पहचाना।

डाटर ने दरवाजा और चौड़ा खोल दिया; और वे दोनों अंदर चले गए।

सुंदर ने अब कहा, “भाइयों, आपने अपना काम बहुत ही बढ़िया तरीके से किया है। बाहर एक बंद गाड़ी खड़ी है। हम इस बदमाश को”—कुंजिलाल की ओर इशारा करते हुए, जो फिर से भयभीत होकर उन्हें घूर रहा था—“अंदर बिठाकर अपने साथ ले चलते हैं। चलो, अब चलते हैं।”

उन चारों ने बनिया के भारी-भरकम शरीर को अपने कंधों पर उठाया और उसे बाहर ले गए। सुंदर दहलीज पर रुककर उनके पीछे का दरवाजा बंद करने के लिए बस कुछ देर रुका। फिर वे उसे कुछ सीढ़ियाँ नीचे सड़क तक ले गए।

उनके सामने एक प्राचीन शैली की ब्यूक सेडान कार खड़ी थी।

उन्होंने कुंजिलाल को बांधकर सेडान कार की पिछली सीट पर बिठा दिया। फिर वे खुद भी कार में बैठ गए।

छोटा ने गली के कोने पर एक चुपचाप खड़े व्यक्ति को देखा। उस व्यक्ति ने उन्हें देखने का कोई संकेत नहीं दिया। उसे एहसास हुआ कि यह गाँव के उन चौकीदारों में से एक होगा जिनके बारे में सुंदर ने उसे बताया था कि वे अपराधियों के प्रति नरम रुख रखते हैं।

कार में बैठे ड्राइवर ने ऑटोमैटिक स्टार्टर का बटन दबाया और इंजन हल्की सी

आवाज के साथ चालू हो गया। वे चल पड़े और जल्द ही गांव को पीछे छोड़ गए।

बाहर इतना अंधेरा था कि कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन गाड़ी की हेडलाइट्स से आगे रोशनी की एक लकीर बन रही थी। थोड़ी देर में छोटा ने देखा कि वे झाड़ियों वाले जंगल से गुज़र रहे हैं। ठंड भी बढ़ने लगी थी, क्योंकि सेडान की खुली खिड़कियों से रात की ठंडी हवा अंदर आ रही थी।

लगभग डेढ़ घंटे बाद सड़क झाड़ियों के जंगल से निकलकर बाईं ओर मुड़ गई। कुछ ही मिनटों में वे सड़क के समानांतर बहती नदी के पास पहुँच गए। उन्होंने अनुमान लगाया कि वे धौड़ गाँव से चंबल नदी के संगम तक कम से कम 30 मील आगे आ चुके होंगे।

दस मिनट और बीत गए। फिर हेडलाइट्स की रोशनी में सामने सड़क पर कुछ आदमी खड़े दिखाई दिए। गाड़ी रुक गई।

सड़क किनारे खड़े एक व्यक्ति की दबी हुई आवाज में बुदबुदाहट सुनाई दी, 'कुछ उल्लू बुद्धिमान होते हैं।'

'कुछ लोग ऐसे ही हैं,' सुंदर ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया।

ड्राइवर ने इग्निशन बंद कर दिया।

'क्या सब ठीक है, भाई?' उसी आवाज ने पूछा।

सुंदर ने मधुर स्वर में कहा, 'सब ठीक है। अतिथि हमारे बीच यहीं बैठे हैं।'

दूसरे व्यक्ति ने धीरे से हँस दिया।

ठीक है, तो फिर। उसे बाहर निकालो और नाव में डाल दो। नाव यहीं किनारे पर है।

उन्होंने लेटे हुए कुंजिलाल को कार से बाहर निकाला और उसे कुछ कदम चलकर पानी के किनारे तक ले गए। वहाँ एक नाव तैर रही थी, जिसमें एक आदमी बैठा हुआ था।

सड़क किनारे खड़े चारों आदमी अब उनके साथ आ गए। उन्होंने मिलकर बनिया को नाव के निचले हिस्से में उतारा।

जैसे ही वे सभी कार में चढ़ गए, ड्राइवर ने कार का इंजन फिर से चालू किया और गाड़ी आगे बढ़ा दी।

नाव में दो आदमी, एक-एक तरफ, चप्पू चलाने लगे। नाव खामोशी से रात के अंधेरे में आगे बढ़ती चली गई। चारों ओर घना अंधेरा था, सिवाय तारों के प्रतिबिंब के,

जो पानी की चिकनी सतह पर प्रतिबिंबित हो रहे थे और नाव की लकड़ी की दीवारों से हल्की-हल्की आवाज़ करते हुए टकरा रहे थे। छोटा को ऐसा लग रहा था मानो वे किसी नदी को पार करने के बजाय किसी शांत तालाब पर तैर रहे हों।

कुछ देर बाद, आगे घना अंधेरा छाने लगा और छोटा समझ गया कि वे नदी के दूसरे किनारे की ओर बढ़ रहे हैं। हल्की सरसराहट के साथ, नाव का अगला हिस्सा वहाँ उगी लंबी सरकंडों को चीरता हुआ रेत पर सुचारू रूप से टिक गया।

जाहिर तौर पर उनकी उम्मीद की जा रही थी, क्योंकि अचानक पुरुषों का एक और समूह प्रकट हुआ, जिनकी आकृतियाँ अंधेरे में धुंधली सी दिखाई दे रही थीं।

नाव छोड़कर, दल बंधे हुए कुंजिलाल को लेकर किनारे की ओर पानी में चलकर पहुंचा।

फिर उन्होंने उसके पैर तो खोल दिए, लेकिन हाथ नहीं खोले। न ही उन्होंने उसके मुंह पर बंधी पट्टी हटाई।

'उठो और चलो, मोटे कुत्ते,' सुंदर ने अपनी चप्पल के अंगूठे से बनिया को जोर से धक्का देते हुए कहा।

लेकिन कुंजिलाल को इतने लंबे समय तक बांधकर रखा गया था कि उसके पैर सुन्न हो गए थे। जैसे ही उसके पैरों में खून का प्रवाह रुका, वह दर्द और बेचैनी से कराह उठा, जिससे उसके पैरों और पिंडलियों में चुभन जैसी सनसनी होने लगी। अब उसे लगभग पांच मिनट तक वहीं लेटे रहने देने के अलावा कोई चारा नहीं था।

जब वह समय बीत गया और उसके अपहरणकर्ताओं को लगा कि रक्त संचार बहाल हो गया है, तो कुंजिलाल को बिना किसी औपचारिकता के खड़ा किया गया। दोनों ओर एक-एक आदमी उसकी बगलों के सहारे खड़ा था और उसे आगे ले जाया गया, जबकि बाकी के लोग, जिनकी संख्या अब एक दर्जन से अधिक थी, एक कतार में उसके पीछे-पीछे चले।

पूर्वी आकाश में भोर हो रही थी। वे लगभग दो घंटे से बेहद ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चल रहे थे, अंधेरे में दिखाई देने वाली गहरी खाइयों को पार कर रहे थे, जिनकी दीवारें उनके ऊपर विशाल ऊंचाइयों तक फैली हुई थीं। बनिया थकान से लड़खड़ा रहा था, और पिछले आधे घंटे से उसे सहारा देने वाले दोनों आदमी उसे लगभग घसीट रहे थे। छोटा खुद नींद की कमी और शारीरिक परिश्रम से बुरी तरह थका हुआ था।

फिर जिस घाटी से वे गुजर रहे थे, उसके आधे रास्ते में, वे उस पहाड़ी की एक

शाखा के कारण बने मोड़ पर मुड़ गए, जिससे वे अभी-अभी उतरे थे। अचानक उनके सामने एक गुफा का प्रवेश द्वार दिखाई दिया।

जब वे सुरंग में दाखिल हुए तो अंदर काफी अंधेरा था, लेकिन दल के लोग एक के पीछे एक करके धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे।

छोटा जानता था कि वे किसी गुप्त मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं, जो पृथ्वी के गर्भ में जाता है, क्योंकि वह धीरे-धीरे लेकिन लगातार नीचे की ओर ढलान को महसूस कर सकता था।

रास्ता दो मोड़ों से होकर गुजरा और कम से कम कुछ सौ गज तक चलता रहा, जब वे एक विशाल अखाड़े में पहुँच गए, जो सुबह की गुलाबी रोशनी से जगमगाते खुले आसमान के नीचे था। चारों ओर एक वृत्त में पथरीली चट्टानें उनके ऊपर उठी हुई थीं, जिनकी दीवारें इस प्राकृतिक अखाड़े के तल से लगभग लंबवत ऊपर उठ रही थीं।

वे मानो एक विशाल बेलनाकार संरचना के भीतरी और निचले हिस्से में खड़े थे, जिसका ऊपरी भाग खुला था और जिसके चारों ओर लगभग दो सौ फीट की ऊँचाई तक फैली ऊँची चट्टानें थीं। अखाड़े का क्षेत्रफल काफी बड़ा था और भोर के धुंधले प्रकाश में लगाए गए एक अनुमान के अनुसार, छोटा लगभग दस एकड़ भूमि में फैला हुआ था और लगभग एक नियमित वृत्त का निर्माण कर रहा था।

इधर-उधर कुछ पेड़ उगे हुए थे। उनके नीचे फैले हुए, छोटा ने कई खानाबदोशों के तंबू देखे। बाकी ज़मीन पर मोटी घास उगी हुई थी, जिसके बीच-बीच में छोटे-बड़े पत्थर बिखरे हुए थे, जो शायद अलग-अलग समय पर ऊपर से लुढ़क कर नीचे आ गए थे।

पुलिस इंस्पेक्टर अतीत की यादों में खो गया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस कुख्यात डाकू का ठिकाना ढूंढना इतना मुश्किल साबित हुआ, जबकि उसके पास छिपने के लिए इतना प्राकृतिक और गुप्त स्थान मौजूद था। बाहर से देखने पर इलाका पहाड़ियों की एक अंतहीन श्रृंखला जैसा दिखता था। यहां तक कि हवाई जहाज से भी घाटी का महत्व तब तक पता नहीं चलता जब तक पायलट बहुत नीचे उड़ान न भर रहा हो। यह आसपास की घुमावदार पहाड़ियों और ऊबड़-खाबड़ जमीन की बनावट के अनुरूप एक सामान्य ग्रामीण इलाका प्रतीत होता था, जो इन खाइयों के साथ मीलों तक फैला हुआ था।

साथ ही, उसने सोचा कि अगर वह किसी तरह इस जगह का रास्ता जान ले

और फिर भाग निकले, तो वह एक हथियारबंद दल के साथ वापस आएगा जिसे ऊपर और आसपास की चट्टानों के बीच छिपाया जा सकता है, जबकि दूसरा दल गुप्त मार्ग के प्रवेश द्वार को सुरक्षित कर सकता है। तब डाकुओं का पूरा गिरोह, चूहों की तरह, इस प्राकृतिक अखाड़े में फंस जाएगा।

सी.आई.डी. के इंस्पेक्टर कतर सिंह के लिए यह एक शानदार अवसर प्रतीत हुआ कि वह कुख्यात मान सिंह और उसके डाकुओं के पूरे गिरोह का एक ही झटके में सफाया कर दें।

उन्होंने एक छोटी सी धारा को पार किया जो खुले मैदान से होकर घुमावदार रास्ते से बह रही थी और नीचे तंबू लगे पेड़ों के समूह के पास पहुंचे।

ऊपर की पहाड़ियों की ओर देखते हुए, छोटा अब उगते सूरज की नारंगी किरणों में, जो उन्हें सुनहरी चमक से नहला रही थीं, चट्टानों के पीछे दुबके हुए सशस्त्र पुरुषों की आकृतियों को देख सकता था।

उसने सोचा, "निस्संदेह संतरी ही होंगे। हालांकि वे उस छिपे हुए अखाड़े के अंदर मौजूद लोगों को स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, लेकिन बाहर से वे अदृश्य होंगे।"

जिस खुले मैदान से वे गुजर रहे थे, वह अभी भी छाया में डूबा हुआ था, क्योंकि उगते सूरज की किरणें अभी तक वहां नहीं पहुंची थीं।

छोटा ने मन ही मन सोचा, मान सिंह का यहाँ वाकई एक शानदार ठिकाना था। जिस छोटी सी धारा को वे अभी पार करके आए थे, उससे उसे पानी की भी कोई कमी नहीं होगी।

विभिन्न तंबुओं से निकले या शायद खुले में सो रहे लोगों से पेड़ों का झुरमुट चहल-पहल से भर गया। जैसे ही वे पेड़ों के किनारे पहुँचे, वे नए आने वालों का निरीक्षण करने के लिए मुड़ गए।

एक संक्षिप्त आदेश के साथ, सुंदर ने उन्हें रुकने और घास पर बैठने का इशारा किया। कुंजिलाल थकान से चूर होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। छोटा भी कृतज्ञतापूर्वक बैठ गया। सुंदर अकेले ही तंबुओं के समूह के केंद्र की ओर बढ़ गया।

इसके बाद वे उत्सुकता से इंतजार करने लगे।

लगभग दस मिनट बाद, छोटा ने तीन आदमियों को पास आते देखा। उसने अपना सारा ध्यान उनमें से पहले वाले पर केंद्रित कर दिया।

वह एक वृद्ध पुरुष थे, गरिमामय और लंबे कद के। उनका असामान्य रूप से

ऊंचा माथा कनपटी से कनपटी तक क्षैतिज सफेद चाक के निशानों से भरा हुआ था। उनके सिर पर चमकीले नीले मलमल की ऊंची पगड़ी थी। चमकीली, स्टील जैसी धूसर आंखें, जो रंग में धातु जैसी कठोर थीं, घनी भौहों से घिरी हुई थीं। पूरा चेहरा घनी मूंछों, उभरी हुई मूंछों और घनी दाढ़ी से ढका हुआ था, जिसके सारे बाल बर्फ जैसे सफेद थे। सफेदी ने उनके चेहरे की दृढ़ आकृति को और भी निखार दिया था, या यूं कहें कि दाढ़ी, मूंछों और मूंछों के बीच से जो भी दिखाई दे रहा था, उसे और भी आकर्षक बना दिया था।

यह राजा मान सिंह राठौर की उनकी पहली झलक थी, जो उस क्षेत्र में घूमने वाले कई डाकू गिरोहों का सरगना था।

राजा के पीछे एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति खड़ा था, जिसके दाहिने हाथ में एक टॉमी गन थी और कमर पर एक कटार का घुमावदार ब्लेड बंधा हुआ था।

वह अंगरक्षक होगा, जिसके बारे में उसने सुना था कि वह नेता के साथ दिन-रात रहता है।

आगे बढ़ते समूह के सबसे पीछे सुंदर था।

छोटा आदरपूर्वक खड़ा हो गया।

मान सिंह पास आया, रुका और बंधे हुए कुंजिलाल को घूरने लगा। सुंदर आगे बढ़ा और बोला।

उन्होंने अनावश्यक रूप से कहा, 'महाराजा, वही बनिया हैं।'

मान सिंह ने भावहीन मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'मैं देख सकता हूँ; और क्या यह वही दूसरा आदमी है, जिसके बारे में आपने मुझे बताया था?' उसने छोटा की ओर इशारा करते हुए कहा।

'महामहिम, मैं मराठा भिखारी बापट राव हूं,' सुंदर ने औपचारिक परिचय देते हुए पुष्टि की।

छोटा ने डाकू सरदार के सामने झुककर सलाम किया।

"हमारे शिविर और हमारे समूह में आपका स्वागत है," मान सिंह ने हार्दिक अभिवादन करते हुए कहा। "मुझे आशा है कि आपको यहां वह न्याय मिलेगा जो दुनिया ने आपसे छीन लिया है।"

चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए, उन्होंने आगे कहा, 'तो, हमारे सामने आरोप लगाने वाला और आरोपी आमने-सामने हैं, है ना? इससे निष्पक्ष सुनवाई होगी,

बिल्कुल।'

वे सब एक पल के लिए चुप हो गए।

तब मान सिंह मुड़ा और सुंदर से बोला, “कैदी के बंधन खोल दो और उसके मुंह पर बंधी पट्टी हटा दो। बेचारा बहुत तकलीफ में होगा। दोनों को आराम करने दो और खाना खिला दो। आज रात खाने के बाद बनिया का मुकदमा चलेगा।”

छोटा ने दोबारा सलाम किया, और डाकू सरदार ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। इसके बाद वह चला गया, लेकिन सुंदर कुंजिलाल को खोलने और उसके मुंह पर बंधे रुमाल को हटाने के लिए वहीं रुका रहा।

जैसे ही कुंजिलाल बोल पाया, वह छोटा के पास आया और उसके सामने घुटनों के बल गिर पड़ा, “हे प्रभु, मुझे बख्श दीजिए,” वह डर से लगभग ज़मीन पर लोटते हुए गिड़गिड़ाया। “आखिर मैंने आपको नहीं पीटा। यह मेरे नौकरों ने किया है। वे दोषी हैं। कृपया बूढ़े को मेरे बारे में कुछ मत बताइए। बस उन्हें मुझे छोड़ने के लिए मना लीजिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो जैसे ही हम वापस लौटेंगे, मैं आपको पचास हज़ार रुपये दूंगा। मैं अपनी इज्जत की कसम खाता हूँ।” शब्द उसके मुँह से झटपट निकल रहे थे।

छोटा ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। वह बस बनिया को पत्थर की तरह घूरता रहा, और उस निर्दयी नज़र में कुंजिलाल को न तो दया दिखाई दी, न ही कोई उम्मीद।

उन्होंने उस दोपहर भोजन किया और विश्राम किया।

सूर्यास्त के ठीक बाद, उन्होंने दोबारा खाना खाया।

फिर डाकू एक घेरे में इकट्ठा हो गए, उनके बीच इधर-उधर कुछ लालटेन जलाई गईं, और खुले आसमान के नीचे, चारों ओर फैली नुकीली पहाड़ियों की श्रृंखला के गवाहों के रूप में, मुकदमा शुरू हुआ।

मान सिंह घेरे के भीतर घुटनों के बल बैठा था। उसका सशस्त्र अंगरक्षक, टॉमी गन लिए तुरंत इस्तेमाल के लिए तैयार, ठीक उसके पीछे खड़ा था। उसके दाहिनी ओर और दस कदम आगे, अभियोक्ता छोटा बैठा था। बाईं ओर और ठीक दस कदम आगे, अभियुक्त कुंजिलाल बैठा था, जिस पर मुकदमा चल रहा था।

छोटा देख सकता था कि बनिया के माथे और भारी गालों पर पसीना फूट रहा था और लगातार धारा बनकर उसकी ठुड्डी तक बह रहा था। कुंजिलाल इतना भयभीत था कि उसने अपना चेहरा पोंछने के बारे में सोचा तक नहीं, बल्कि पसीने को अपनी

ठुड्डी से अपनी गोद में टपकने दिया, जिससे वहाँ गीलेपन का एक फैलता हुआ घेरा बन गया।

मान सिंह आरोपी से बात कर रहे थे और उसे संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पूछा, 'तुम्हारा नाम कुंजिलाल है और तुम साहूकार हो, है ना?'

‘ओह हाँ,’ बनिया ने हाँफते हुए कहा, ‘लेकिन मैं ब्याज की दर बहुत कम लेता हूँ...’

बूढ़े डाकू ने उसकी बात पूरी होने का इंतजार नहीं किया, बल्कि अपना अगला सवाल पूछा, 'क्या तुम इस भिखारी को जानते हो?'

‘माननीय न्यायाधीश, उनका चेहरा जाना-पहचाना है।’

क्या वह आपसे भिक्षा मांगने आया था?

'हां, मुझे अब याद आ गया। मुझे लगता है कि वह एक बार आया था।'

क्या आपने उसे एक से अधिक बार अपने नौकरों और पुलिस द्वारा पिटवाया था?

'हो सकता है मेरे नौकरों ने उसे पीटा हो, महोदय; लेकिन इसके लिए आप मुझे कैसे दोषी ठहरा सकते हैं?'

‘और पुलिस ने उसे क्यों पीटा?’

कोई जवाब नहीं।

क्या आपके नौकरों ने उसे पुलिस स्टेशन तक नहीं घसीटा?

'अगर उन्होंने ऐसा किया भी है, तो मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, महोदय।'

और आप आज रात यहां क्यों आए हैं?

यह सवाल इतना अप्रत्याशित था कि कुंजिलाल को समझ नहीं आया कि क्या जवाब दे। उसका मुंह खुला रह गया और वह कुछ देर तक चुप रहा। फिर उसने झट से कहा, 'महोदय, ये सभी लोग मेरे घर में घुस आए और मुझे अगवा कर लिया।'

उस समय आपके नौकर कहाँ थे?

उन्होंने शिकायत करते हुए कहा, 'उन पर पहले ही हमला किया जा चुका था और उन्हें बांध दिया गया था।'

‘क्या आपके और उन दो नौकरों के अलावा वहां कोई और भी था?’

कोई जवाब नहीं मिला।

क्या वहां एक युवती भी मौजूद नहीं थी?

अब भी कोई उत्तर नहीं।

‘आइए,’ मान सिंह ने कहा, ‘हमारे पास आपको सच बुलवाने के तरीके हैं, लेकिन अगर आप पूछताछ किए जाने पर स्वेच्छा से सच बोल दें तो हमें ज्यादा खुशी होगी।’

‘वह युवती वहां कैसे पहुंची?’

साहूकार ने हकलाते हुए स्वीकार किया, 'उसे मेरे पास एक वेश्या के रूप में भेजा गया था और मैंने उसके लिए उस घर में आकर मुझसे मिलने की व्यवस्था की थी।'

‘यह बिल्कुल ठीक है और हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है,’ मान सिंह ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘अगर कोई महिला स्वेच्छा से किसी पुरुष के पास आती है, तो यह पूरी तरह से उनका मामला है, हमारा नहीं।’

लेकिन मुझे बताओ,’ उसने आगे कहा, ‘क्या तुम्हें उन महिलाओं को, जो तुम्हारी ऋणी थीं या कर्ज में डूबी थीं, उसी घर में आने के लिए मजबूर करने की आदत नहीं थी जहाँ तुम उनके साथ पूरी रात बिताते थे?’

Kunjilal remained silent.

‘तुम्हारे खिलाफ और भी गंभीर आरोप हैं,’ बूढ़े व्यक्ति ने आगे कहा, ‘जो समय-समय पर मेरे कानों तक पहुंचते रहे हैं।’

क्या यह सच नहीं है कि 14 महीने पहले, जब राजेंद्र नाम के एक बैलगाड़ी चालक ने आपको दो सौ रुपये लौटाए, जिसके बदले उसने अपनी बैलगाड़ी और दो बैल आपके पास गिरवी रखे थे और आपको भारी ब्याज भी चुकाया था, तो आपने उससे पैसे ले लिए, और साथ ही गिरवीनामा लौटाने से इनकार कर दिया, जिससे आपने उसे बैलगाड़ी और बैलों के साथ-साथ दो सौ रुपये से भी वंचित कर दिया, और कर्ज को जारी रखा?

क्या यह सच नहीं है कि जब इस गाड़ीवान ने अपने निजी सामान के लिए आपके सामने घुटने टेककर विरोध किया और विनती की, तो आपने अपने दो नौकरों को उसे बुरी तरह पीटने का आदेश दिया, जबकि उसने आपको मूलधन और ब्याज सहित पूरी राशि चुका दी थी?

क्या यह सच नहीं है कि पिटाई के दौरान आपके एक नौकर ने उस बेचारे आदमी के सिर पर भारी बांस से वार किया था?

क्या यह सच नहीं है कि वह आपके पैरों पर बेहोश होकर गिर पड़ा था?

क्या यह सच नहीं है कि आपने पुलिस को रिश्वत देकर यह बात मनवाई कि उसे एक मोटर कार ने टक्कर मार दी थी जिससे उसकी खोपड़ी में गंभीर चोटें आई थीं?

क्या यह सच नहीं है कि वह कभी होश में नहीं आया, बल्कि दो दिन बाद गांव के स्थानीय निधि औषधालय में सिर में गंभीर चोट लगने से उसकी मौत हो गई?

'Are these charges true, or not, baniya Kunjilal?

क्या आप बिना किसी कारण के एक निर्दोष, सीधे-सादे, गरीब गाड़ीवान की लूट और हत्या के दोषी नहीं हैं?

क्या तुम्हारे पास प्रचुर मात्रा में धन नहीं है—तुम्हारे अपने लाखों रुपये, साथ ही कई घर और बहुत सी जमीन—कि तुम्हें उस गरीब आदमी की बैलगाड़ी और उसके बैलों का लालच करना चाहिए था?

और जब उसने आपको लिए गए ऋण का ब्याज और मूलधन दोनों सहित पूरा भुगतान कर दिया, तो क्या आपके लिए यह उचित था कि आपने उसे उसका बॉन्ड और उसकी संपत्ति वापस देने से इनकार कर दिया, और फिर जब उसने इसके लिए गिड़गिड़ाया तो उसकी पिटाई करवाई, जिससे उसकी मृत्यु हो गई?

'आखिरी बार तुमसे कह रहा हूँ, मुझे जवाब दो,' बूढ़े आदमी की आवाज निर्दयता से गरज उठी, 'तुम्हें क्या कहना है? तुमने ये सब क्यों किया, हे मनुष्यों में सबसे नीच?'

लेकिन कुंजिलाल कोई जवाब नहीं दे सका। वह मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा और रेंगते हुए कमजोर आवाज में सिर्फ एक शब्द बोला, 'दया करो'।

'तुम खुद दया की भीख मांगते हो,' मान सिंह ने ठंडे स्वर में कहा, 'लेकिन क्या तुमने उस बेचारे गाड़ीवाले पर दया दिखाई; या बापट राव पर, जो यहाँ भीख मांग रहा था; या उन अभागी बच्चियों पर, जिनके साथ तुमने बलात्कार किया जब उन्होंने तुमसे दया की भीख मांगी, और जिन्हें तुमने बाद में बंबई के एक वेश्यालय में भेज दिया जब तुम्हारा काम हो गया?'

कुंजिलाल एक औरत की तरह तीखी, उन्मादी आवाज में जोर-जोर से रोने लगा।

'आखिरी बार, मैं तुम्हें जवाब देने और अपना बचाव करने का मौका दे रहा हूँ,' डाकुओं के सरदार ने निर्दयता से कहा। 'तुम्हारे जैसे दुष्ट लोगों के मुकदमों में, उन्हें अपना बचाव करने का उचित मौका देना हमारी परंपरा है। इसलिए, बोलो। अगर तुम

चुप रहे, तो इसका मतलब होगा कि तुम्हारे पास बचाव करने के लिए कुछ नहीं है।'

लेकिन कुंजिलाल उन भयानक आरोपों का बचाव कैसे कर सकता था; खासकर जब वे सभी आरोप सच थे?

इसलिए वह कुछ भी नहीं बोला।

'ओह बच्चों,' मान सिंह ने अपने साथियों को संबोधित करते हुए कहा, 'तुमने आरोप सुन लिए हैं। हमने आरोपी को अपना बचाव करने का मौका दिया है। उसने ऐसा नहीं किया, जिससे लगता है कि उसके पास बचाव के लिए कुछ नहीं है। मेरे बेटों, तुम्हारा क्या कहना है? अब निष्पक्ष होकर बताओ। क्या वह दोषी है या नहीं? तुम्हारी राय में उसे सज़ा मिलनी चाहिए या नहीं? और कैसे?'

वहाँ एकमत होकर एक शब्द गूंजा, 'दोषी!' जिसके बाद छिटपुट रूप से 'उसे जला दो', 'उसे जिंदा दफना दो', 'उसके टुकड़े-टुकड़े कर दो', इत्यादि के नारे सुनाई दिए।

कुंजिलाल जमीन पर लोटता हुआ दया की भीख मांगते हुए जोर-जोर से चिल्ला रहा था।

एक आवाज ने सलाह दी, 'भिखारी को पहले उसे पीटने दो और फिर उसका गला काट देने दो।'

मान सिंह ने छोटा की ओर मुड़कर कहा, 'क्या आप इस सभा के फैसले को मानने के लिए सहमत हैं?'

छोटा को लगा कि वह अब एक गंभीर दुविधा में फंस गया है। अगर उसने इनकार किया, तो डाकू उसे कमज़ोर समझेंगे। वे उस पर शक भी करने लगेंगे। वहीं, अगर उसने हाँ कहा, तो उसे बनिया की बेरहमी से हत्या करनी पड़ेगी। कुंजिलाल से वह कितनी भी नफ़रत करता हो, वह ऐसा कर ही नहीं सकता था।

उसने तुरंत सोचा और उसे अचानक प्रेरणा मिल गई।

उन्होंने कहा, 'महाराज, आप स्वयं एक न्यायप्रिय व्यक्ति हैं। मेरे लिए उसे पीटना, जैसा उसने मुझे पीटा था, बिलकुल उचित होगा और मैं सहर्ष ऐसा करूँगा। परन्तु इस बनिया का गला काटना, जबकि उसने मेरे किसी सगे-संबंधी को नहीं मारा है, मुझे भय है कि आदरणीय महोदय, मेरे लिए एक अन्यायपूर्ण और अनुचित कार्य होगा, जिसके लिए मेरे पास कोई बहाना नहीं होगा।'

"बापट राव, आपने तो मानो भविष्यवाणी कर दी! शाबाश!" मान सिंह ने तुरंत

सहमति जताते हुए कहा, “मुझे लगता है आप मेरे जैसे ही हैं। इसलिए मैं आपसे वह करने को नहीं कहूंगा जो आपकी अंतरात्मा मना करती है। मैं किसी से भी ऐसा करने को नहीं कहता। तो फिर एक छड़ी उठाइए, जो लगभग उसी तरह की लकड़ी और मोटाई की हो जिससे आपको पीटा गया था; अगर आपको याद हो कि आपको कितने कोड़े पड़े थे, तो और भी अच्छा; और मारना शुरू कीजिए। अभी के लिए हम सजा के दूसरे हिस्से को स्थगित करते हैं।”

और इस पर वह दिल खोलकर हँसा। छोटा समझ गया कि बूढ़ा डाकू उसके दृष्टिकोण और न्याय की भावना की सराहना करता है।

उसे अच्छी तरह याद था कि उसे बांस से पीटा गया था। इसलिए उसने एक डाकू से बांस उधार लिया और डरे हुए कुंजिलाल के पास गया।

उन्होंने सलाह दी, 'एक बार तो मर्द बनो और अपनी सजा को मर्द की तरह स्वीकार करो।'

फिर उसने बाण से उसके नितंबों और मोटी जांघों पर ज़ोरदार प्रहार करना शुरू कर दिया। इसे और अधिक यथार्थवादी बनाने के लिए, उसने उसकी पीठ पर भी कुछ हल्के प्रहार किए।

कुंजिलाल दर्द से चीख उठा और दया की भीख मांगते हुए और भी जोर से चिल्लाने लगा। छोटा को लगने लगा कि उसे अपने इस काम में आनंद आ रहा है।

चारों ओर मौजूद डाकुओं की भीड़ ने जोरदार तालियां बजाईं।

बारह सटीक कोड़े मारने के बाद छोटा अचानक रुक गया। डाकू सरदार को संबोधित करते हुए उसने कहा, “महाराज साहब, लगभग उतने ही कोड़े लगे, शायद मुझे जितने लगे उससे एक-दो कम ही लगे; निश्चित रूप से ज़्यादा नहीं। लेकिन इस डरपोक को पीटने में मुझे ज़रा भी आनंद नहीं आ रहा।”

उसने बांस की छड़ी उसके मालिक को लौटा दी और चला गया।

‘आपमें न केवल न्याय का गुण है,’ मान सिंह ने कहा, ‘बल्कि दया का गुण भी है। मुझे ये दोनों गुण पसंद हैं,’ उन्होंने आगे कहा।

कुंजिलाल अपने घावों को सहलाता रहा और सिसकता रहा।

लेकिन घेरे में खड़े गुंडे संतुष्ट नहीं थे। एक आवाज आई, 'महाराज, उसने जो छोटा अपराध किया था, उसके लिए उसे उचित दंड मिल चुका है। लेकिन उस गाड़ीवाले की मौत का क्या? यह अजनबी, जो अभी-अभी आया है, न्याय की बहुत

बातें करता है। इस बारे में उसका क्या कहना है?'

एक बार फिर सबकी निगाहें छोटा पर टिकी थीं। मान सिंह उसे बड़े चाव से देख रहा था, निस्संदेह यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह इस चुनौती से खुद को कैसे निकालेगा।

'भाइयों,' भेस बदले पुलिसकर्मी ने जवाब दिया, 'मैंने तो बस इतना कहा था कि चूंकि इस साहूकार ने मेरे परिवार के किसी सदस्य की हत्या नहीं की है, इसलिए मुझे उसे मारने के लिए चुनना उचित नहीं होगा। अगर वह गाड़ीवाला यहाँ है, तो उसका कोई रिश्तेदार यह काम कर सकता है।'

एक गतिरोध उत्पन्न हो गया था और वे कुछ देर तक चुप रहे।

तभी एक और आकृति पास आई। वह एक लंबा आदमी था जिसकी हल्की दाढ़ी थी। उसके चेहरे की बनावट उस बूढ़े आदमी से मिलती-जुलती थी, और छोटा समझ गया कि वह डाकुओं के सरदार के बेटों में से एक को देख रहा है।

'तहसीलदार, मेरे बेटे,' मान सिंह ने कहा, 'यह एक विचित्र स्थिति है; आप क्या सलाह देंगे?'

फिर संक्षिप्त वाक्यों में उन्होंने अपने बेटे को स्थिति से अवगत कराया। छोटा ने देखा कि तहसीलदार सिंह ने एक-दो बार उसकी ओर देखा; और उसे लगा कि वे निगाहें न तो दोस्ताना थीं और न ही समझदारी भरी।

युवक ने अपने पिता के बोलने के समाप्त होने तक प्रतीक्षा की। फिर उसने बड़े सरल शब्दों में कहा, "पिताजी, मुझे तो इसका हल आसान लगता है। क्या आप मुझे इस समस्या को समाप्त करने की अनुमति देंगे?"

'तुमने किया है, मेरे बेटे,' नेता ने जवाब दिया।

तहसीलदार दो कदम पीछे हटे और अपने पिता के पीछे खड़े अंगरक्षक तक पहुँच गए। उन्होंने हाथ बढ़ाकर टॉमी गन को पकड़ लिया और लगभग उसे अंगरक्षक से छीन ही लिया। पल भर में चार-पाँच गोलियों की आवाज़ से सन्नाटा टूट गया और कुंजिलाल वहीं गिरकर मर गए।

तहसीलदार ने टॉमी गन वापस गार्ड के हाथों में थमाते हुए उससे कहा, 'इसे साफ करना मत भूलना।'

अपने पिता और बैंड के अन्य सदस्यों से उन्होंने संक्षेप में कहा, 'यही समाधान है; इस तरह के कीड़े-मकोड़े और परजीवी जीने के लायक नहीं हैं।'

बनिया की निर्मम हत्या देखकर छोटा स्तब्ध रह गया था। बेशक वह एक परजीवी था, फिर भी वह एक इंसान था।

और उनकी आंखों के सामने ही उनकी हत्या कर दी गई थी।

अगले कुछ दिनों तक कुछ खास नहीं हुआ और छोटा डाकुओं के शिविर में रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ढल गया। उसके आने के अगले दिन ही उसे बंदूक और राइफल जैसे आम हथियारों के इस्तेमाल और रखरखाव का गहन प्रशिक्षण दिया गया, जिनके बारे में उसने ऐसा दिखाया जैसे उसे कुछ पता ही नहीं है। तब उसे पता चला कि डाकुओं के गिरोह का अपना एक छोटा सा राइफल रेंज था, जहाँ चार .22 कैलिबर की निशानेबाज़ राइफलें लगभग रोज़ाना इस्तेमाल होती थीं, ताकि उसके जैसे नए सदस्यों को लोगों को निशाना बनाने की कला सिखाई जा सके—और वो भी सटीक निशाना लगाने की कला।

कुंजिलाल की हत्या के चौदहवें दिन, छोटा को डाकुओं के गिरोह के साथ अग्रिम मोर्चे पर गतिविधियों में शामिल होने का पहला कार्य सौंपा गया। यह एक कठिन कार्य था, और संयोगवश यही उसका आखिरी कार्य साबित हुआ।

लगभग 30 मील दूर एक गाँव में रहने वाले एक धनी जमींदार के घर पर छापा मारने की योजना बनाई गई थी। यह छापा स्वयं डाकू सरदार मान सिंह की देखरेख और नेतृत्व में अंजाम दिया जाना था। छोटा को पता चला कि बूढ़े मान सिंह की नीति थी कि वह अपने लेफ्टिनेंटों और आम सैनिकों के साथ जिम्मेदारियों और खतरों को समान रूप से साझा करे।

पीछा किए जाने की स्थिति में मुख्य दल को लूट का माल लेकर भागने देने के लिए, डाकुओं के एक छोटे समूह को पीछे से मोर्चा संभालने और पुलिस के आने पर उनका ध्यान भटकाने के लिए तैनात किया गया था। इस अलग टुकड़ी का एक कर्तव्य यह भी था कि आवश्यकता पड़ने पर जवाबी हमला करे और फिर पुलिस को मान सिंह और असली लुटेरों का पीछा करने से रोकने के लिए किसी दूसरी दिशा में पीछे हट जाए।

छोटा को इस अग्रिम पंक्ति के सदस्यों में से एक के रूप में चुना गया था। दरअसल, उसे खुद सुंदर ने चुना था। वह इस नए रंगरूट के साहस की परीक्षा लेना

चाहता था।

राजा के व्यक्तिगत नेतृत्व में छापे को अंजाम देने वाले मुख्य दल में उनके नेता सहित बीस लोग थे। छोटा और सुंदर के साथ पीछे की टुकड़ी में छह लोग थे और इसका प्रभार मान सिंह के उच्च लेफ्टिनेंटों में से एक देवी सिंह को सौंपा गया था।

हमले की तय रात से दो शाम पहले सूर्यास्त के बाद उन्हें योजना की विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने रात लगभग आठ बजे अपना भोजन किया और रात 9 बजे संयुक्त टुकड़ियाँ गुप्त मार्ग से होकर बाहरी दुनिया में निकल पड़ीं।

वे पूरी रात चलते रहे और भोर होते-होते 23 मील की दूरी तय कर चुके थे। अब वे उस गाँव से केवल 7 मील दूर थे जिस पर अगली रात छापा मारा जाना था।

दिनभर वे जंगल में छिपे रहे और अपने साथ लाई हुई पकी हुई चपातियाँ खाते रहे; और रात के नौ बजे वे शेष दूरी तय करने के लिए फिर से निकले।

जब वे गांव के बाहरी इलाके में पहुंचे तब तक ग्यारह बज भी नहीं चुके थे।

देवी सिंह अपने छह आदमियों के साथ गाँव के पूर्व की ओर एक पार्श्व दिशा में तैनात थे। मान सिंह के नेतृत्व में मुख्य सेना को ठीक आधी रात को हमला करना था। यदि सब कुछ ठीक रहा और गोलीबारी की आवाज़ें ज़्यादा नहीं सुनाई दीं, तो देवी सिंह और उनके साथियों को समझ आ जाएगा कि कोई खास प्रतिरोध नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में, उन्हें गोलीबारी बंद होने तक इंतज़ार करने और फिर यथासंभव 30 मील की दूरी तय करके मुख्यालय वापस लौटने का आदेश दिया गया था।

लेकिन अगर हमले के दौरान भारी गोलीबारी होती, तो उन्हें पता चल जाता कि ज़मींदार के अपने लोगों या पुलिस द्वारा ज़बरदस्त प्रतिरोध किया जा रहा है। तब उन्हें गाँव की पूर्वी सीमा पर बाहरी इलाके की ओर बढ़ना था और अपने हथियारों से गोलीबारी शुरू करनी थी ताकि बचाव करने वालों को लगे कि डाकू उस दिशा में भी सक्रिय हैं।

जैसे ही पुलिस, या जो भी जमींदार की रक्षा कर रहा था, देवी सिंह की टुकड़ी पर हमला करना शुरू करे, उन्हें मुख्य समूह से पीछा छुड़ाने के लिए दक्षिण की ओर पीछे हट जाना था, जो उसी तरह उत्तर की ओर पीछे हट जाएगा जैसे वे आए थे।

अंततः, पीछे से आने वाली टुकड़ी को गाँव को घेरकर उत्तर की ओर फैले घने जंगल की ओर पीछे हटना था। वहाँ से देवी सिंह और उनके साथी अपनी सूझबूझ से मुख्यालय तक वापस पहुँचने का प्रयास करेंगे।

देवी सिंह स्वयं एक भयंकर दिखने वाले राजपूत थे, जो ठेठ योद्धाओं जैसी मूंछें और दाढ़ी रखते थे। वे दुबले-पतले, बहुत ही तगड़े और असाधारण सहनशक्ति और ऊर्जा से संपन्न थे। सबसे बढ़कर, वे एक साहसी नेता थे, जिनमें अपार व्यक्तित्व और महान साहस था।

वह अपने छोटे से दल के साथ सोए हुए गांव से दो फर्लांग की दूरी पर एक आम के बाग में छिप गया, और आगे की घटनाओं का इंतजार करने लगा।

ठीक आधी रात होते ही उन्हें राइफल की गोलियों की आवाज सुनाई दी। आवाज तेजी से बढ़ती गई और जल्द ही उन्हें स्वचालित हथियारों के इस्तेमाल की आवाज और अन्य स्वचालित हथियारों की जवाबी फायरिंग सुनाई देने लगी।

इसका केवल एक ही मतलब हो सकता था। गांव में पुलिस या सैन्य गश्त चल रही थी; और वे मान सिंह के हमले का विरोध कर रहे थे।

देवी सिंह ने फुसफुसाते हुए कहा, 'चलो मेरे भाइयों; यह हमारा मौका है,' और उन्हें दो फर्लांग की दूरी पर गांव के पूर्वी किनारे तक दोगुनी गति से ले गए।

वहाँ उसने उन्हें रोक दिया, और उसके निर्देशों पर, उन्होंने हवा में पाँच या छह राउंड गोलियाँ चलाईं।

मुख्य हमले के स्थल पर गोलीबारी की आवाज लगातार आती रही। यह स्पष्ट हो गया कि वहां चल रही लड़ाई इतनी भयंकर थी कि किसी भी तरह के व्यवधान की गुंजाइश नहीं थी।

इसलिए देवी सिंह अपने छह आदमियों के साथ गांव की गलियों में आगे बढ़े और उस जगह की ओर बढ़ने लगे जहां लड़ाई भयंकर रूप से चल रही थी। युद्ध का शोर और भी तेज हो गया।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, 'साथ मिलकर रहो, मेरे पीछे-पीछे चलो।'

गोलीबारी की पहली आवाज सुनते ही ग्रामीण अपने घरों में शरण ले चुके थे। आसपास कोई नहीं था, इसलिए पीछे से जवाबी हमले या ग्रामीणों द्वारा प्रतिरोध का कोई खतरा नहीं था। आपात स्थिति में उनसे सहायता की उम्मीद भी की जा सकती थी। केवल जमींदार के अपने भाड़े के सैनिकों या उसकी रक्षा कर रहे पुलिसकर्मियों से ही सावधान रहने की जरूरत थी।

जब छोटा को यह योजना समझाई गई थी, तो उसने पहले सोचा था कि हमले के दौरान मौका मिलते ही वह भाग जाएगा। लेकिन बाद में उसने यह विचार छोड़

दिया। भला अब पुलिस के लिए उसका क्या फायदा, अगर वह भाग भी जाता? उसे अभी तक डाकुओं के छिपने की सही जगह का पता नहीं था, न ही उन घाटियों के जाल में उसकी दिशा का। वह पुलिस को सिर्फ इतना बता सकता था कि मान सिंह का मुख्यालय पहाड़ियों के बीच कहीं एक छिपे हुए जंगल में है। और यह बात पुलिस को पहले से ही पता थी।

इसलिए काफी सोच-विचार के बाद छोटा ने डाकुओं के साथ रहने और हमले के बाद उनके साथ वापस जाने का फैसला किया था।

उसके इस कदम से तीन परिणाम निकलेंगे। पहला, डाकुओं का उस पर भरोसा और विश्वास बढ़ेगा। दूसरा, अगली बार वे उसे और बड़ी ज़िम्मेदारी सौंप सकते हैं, जिसका लाभ उठाकर वह पुलिस की मदद कर सकता है। तीसरा, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह डाकुओं के साथ जितना अधिक समय बिताएगा, उतना ही अधिक वह जानकारी जुटा पाएगा, विशेष रूप से गिरोह के विभिन्न सदस्यों और उस गुप्त मार्ग के बारे में जो जंगल की ओर जाता है। यह अंतिम बिंदु सबसे महत्वपूर्ण था।

जैसे ही छोटा देवी सिंह और अन्य पांच डाकुओं का पीछा करते हुए गांव की गलियों से गुजरा, ये विचार एक बार फिर उसके मन में दौड़ने लगे।

वे एक मोड़ पर मुड़े और झड़प के स्थल पर पहुँच गए।

अब तक किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया था, सभी लड़ाई में मग्न थे। इस प्रकार वे वास्तविक स्थिति का जायजा ले सके, जो जल्द ही उनके सामने स्पष्ट हो गई।

स्पष्टतः मान सिंह और उसके मुख्य साथियों ने अलार्म बजने से पहले ही जमींदार के घर में प्रवेश करने में सफलता प्राप्त कर ली थी।

और, जब ऐसा हुआ, तो पुलिस ने उसे घेर लिया था।

अब पुलिसकर्मियों के समूहों को उनकी वर्दी से पहचाना जा सकता था और उन्हें इमारतों की दीवारों और कोनों के पीछे छिपते हुए देखा जा सकता था, जो घर की खिड़कियों पर गोलियां चला रहे थे, जहां से जवाबी फायरिंग की जा रही थी।

मान सिंह और उनके साथी जमींदार के घर में फंस गए थे!

छोटा के मन में एक बार फिर यह प्रलोभन प्रबल हो गया कि वह पुलिस की टुकड़ी छोड़कर अपने साथियों के साथ मिल जाए और उनका नेतृत्व करते हुए मान

सिंह को पकड़ ले या मार डाले।

लेकिन क्या वे इस मौके पर उस पर विश्वास करेंगे? डाकुओं के गढ़ में घुसपैठ करने का उसका काम पूरी तरह गुप्त रखा गया था। यहाँ गश्त कर रही पुलिस को इसके बारे में पता नहीं होगा। क्या उनके पास उसकी कहानी सुनने का समय होगा? पूरी संभावना है कि वे उसे देखते ही गोली मार देंगे, यह सोचकर कि वह कोई डाकू है जिसे उन्हें गुमराह करने या फंसाने के लिए भेजा गया है।

इसी बीच देवी सिंह ने अपने दल को कार्रवाई का आदेश दिया। 'कवर लो और पुलिस पर गोलियां चलाओ। जितना हो सके मार डालो। फिर मेरे पीछे आओ और आम के बाग में वापस भाग जाओ। ध्यान रखना कि हम साथ रहें। तैयार हो जाओ—गोली चलाओ!'

अगले कुछ ही सेकंडों में उस छोटे से दल ने उसके आदेशों का पालन कर लिया। उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। देवी सिंह और सुंदर के पास टॉमी गन थीं। छोटा ने देखा कि पुलिसकर्मी चारों दिशाओं में गिर रहे हैं, और उसने खुद भी गोली चलाना शुरू कर दिया—लेकिन व्यर्थ।

पीछे से घेर लिए जाने पर, पुलिस का इमारत पर हमला रुक गया। पहले तो पुलिसकर्मियों को पता नहीं चल पाया कि जवाबी हमला किस दिशा से होगा, और उन्होंने अंधाधुंध और सभी दिशाओं में गोलियां चलाना शुरू कर दिया।

इससे जमींदार के घर के अंदर मान सिंह के साथ मौजूद मुख्य समूह के निशानेबाजों और टॉमीगन चलाने वालों को, और इमारत की ऊपरी मंजिल से अपने साथियों के छोटे से दल के जवाबी हमले को देख रहे लोगों को, वह मौका मिल गया जो वे चाहते थे। उन्होंने गोलीबारी के बीच फंसे पुलिसकर्मियों को भारी नुकसान पहुंचाया।

कुछ मिनट बाद, छोटा ने देखा कि घर का पिछला दरवाजा अचानक खुला और अंदर छिपे डाकू भाग निकले।

पुलिस की कुछ गोलियां लगते ही एक दंपत्ति जमीन पर गिर पड़े। लेकिन पलक झपकते ही बाकी गोलियां गायब हो गईं।

इसका मतलब यह था कि मान सिंह के साथ आए डाकुओं का मुख्य दल भागने में सफल रहा। अग्रिम पंक्ति की टुकड़ी ने अपना काम सफलतापूर्वक पूरा कर दिया था।

छोटा को बस यही उम्मीद थी कि मरने वाले दंपतियों में मान सिंह भी शामिल रहा होगा।

लेकिन अब एक नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई। जमींदार के घर से अपने साथियों की गोलीबारी का सहारा न मिलने के कारण, छह डाकुओं और देवी सिंह की पिछली टुकड़ी को अब पुलिसकर्मियों के सीधे हमले का सामना करना पड़ा। पुलिसकर्मी भी जवाबी हमले के अचानक झटके से उबर चुके थे और तेजी से संगठित हो रहे थे।

जैसे-जैसे और पुलिसकर्मी अपनी स्थिति का पता लगाते गए, पुलिस की गोलीबारी तेज होती गई। उनके टॉमी-गन चलाने वाले भी हरकत में आ गए।

देवी सिंह को जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उनका छोटा सा दल संख्या और हथियारों के मामले में बुरी तरह से कमज़ोर है, और यदि वे पीछे नहीं हटे तो कुछ ही समय में वे सभी मारे जाएंगे।

जैसे ही उसने यह सोचा, डाकुओं में से एक ने अपने हाथ ऊपर उठाए और सिर में गोली लगने से वह जमीन पर गिर पड़ा।

बंदूकों की गड़गड़ाहट के बीच उसने चिल्लाकर कहा, 'मेरे पीछे आओ और भागो—आम के बाग की ओर।'

और अपने शब्दों के अनुरूप कार्य करते हुए, वह गांव की गली में भागा, गोलियों की बौछार से बचने के लिए वह टेढ़े-मेढ़े रास्ते से भागता रहा जो उसके पीछे चीखती हुई आ रही थीं।

एक-एक करके बाकी लोग भी उनके पीछे-पीछे चलने लगे।

छोटा एक पल के लिए झिझका। क्या उसे अभी भाग जाना चाहिए? यह आसान होगा। देवी सिंह सोचेगा कि वह मारा गया है। लेकिन फिर उसे याद आया कि उसके पास बताने लायक कोई खास जानकारी नहीं है। और वैसे भी पुलिस उसे गोली मार ही देगी।

इसलिए वह मुड़ा और भाग गया।

गली के अंत में पहुँचकर वह एक अन्य डाकू के शव से टकरा गया। उसने खुद को संभाला और दौड़ना जारी रखा।

कुछ देर बाद उसने पाया कि वह आम के बाग में पहुँच गया है। वहाँ केवल चार लोग थे—और देवी सिंह भी।

इसके बाद छिटपुट गोलियों की आवाज सुनाई दी, जिससे संकेत मिलता है कि

पुलिस उनका पीछा कर रही थी।

देवी सिंह ने कहा, 'चलो, मेरे पीछे आओ, गांव के दक्षिण की ओर।' वे फिर से उसके पीछे दौड़ पड़े, एक के पीछे एक, अंधेरे में अंधाधुंध भागते हुए, कंटीली झाड़ियों से टकराते हुए, पत्थरों और चींटियों के टीलों पर ठोकर खाते हुए जो वहां बहुतायत में मौजूद थे।

उनका पीछा करने वाले लोग यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि वे किस दिशा में गए हैं, इसलिए उनके पीछे मशालें चमकने लगीं।

तभी सुंदर ने वह गलती की जिसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी; और उनमें से कुछ लोगों को भी अपनी जान गंवानी पड़ी।

वह दौड़ना बंद करके मुड़ा और अपनी टॉमी गन से चमकती हुई मशालों में से एक पर गोलियों की बौछार कर दी।

टॉर्च अचानक बुझ गई क्योंकि उसे पकड़े हुए पुलिसकर्मी की हिंसक मौत हो गई।

लेकिन सुंदर ने नासमझी से उनकी स्थिति और उनके पीछे हटने की दिशा का खुलासा कर दिया था।

पुलिस की ओर से जवाबी फायरिंग की बौछार हुई। सुंदर अचानक रुक गया, धीरे से मुड़ा और ज़मीन पर गिर पड़ा।

अब उनमें से केवल तीन ही बचे थे—और देवी सिंह।

पीछा करने वालों के भागते कदमों की आहट और गोलियों की गड़गड़ाहट सुनकर वे बेखबर उसके पीछे लड़खड़ाते हुए चल पड़े। उनके पीछे कहीं से दो टॉमी गनों से भीषण गोलीबारी हुई और छोटा के साथ दौड़ रहा डाकू चीखते हुए गिर पड़ा, पेट खुजाते हुए बार-बार लुढ़कने लगा।

अब उनमें से केवल दो ही बचे थे और देवी सिंह भी।

लेकिन वह एक कुशल नेता थे और उन्होंने अपना संयम बनाए रखा। जब वे गाँव के ठीक दक्षिण में पहुँचे, तो वे कुछ पल के लिए रुके, जब तक कि उनके दोनों साथी उनके पास नहीं आ गए। फिर उन्होंने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, 'अब चुपचाप; हम गाँव के पश्चिम की ओर बढ़ेंगे। उन्हें लगेगा कि हम सीधे आगे बढ़ गए हैं। कोशिश करो कि कोई आवाज़ न हो।'

कमर झुकाकर वह अपने दो साथियों के साथ उत्तर-पश्चिम दिशा में दौड़ने लगा।

भागते हुए छोटा मन ही मन सोच रहा था कि अब भागने का समय नहीं आया था। अगर वह भाग भी जाता, और भले ही पुलिस उसे गोली न मारती, तब भी उसका कोई भला नहीं होता। मान सिंह संभवतः मुख्य बल के साथ भाग निकला था।

अब डाकुओं के साथ रहने और उनके मुख्यालय वापस जाने के अलावा कोई चारा नहीं था, ताकि वहां से और अधिक जानकारी प्राप्त की जा सके।

कुछ ही मिनटों में उन्हें एहसास हो गया कि पीछा करना बंद हो गया है क्योंकि उन्होंने गाँव के दक्षिणी छोर पर अपना रास्ता बदल लिया था। देवी सिंह की रणनीति सफल रही और उनका पीछा करने वाले स्पष्ट रूप से दक्षिण की ओर ही आगे बढ़ गए, यह मानकर कि वे उसी दिशा में भागे हैं। इसके बाद कोई गोली नहीं चली और न ही उन्हें कोई ऐसी आवाज सुनाई दी जिससे पता चले कि उनका पीछा किया जा रहा है।

अंततः वे गाँव की पश्चिमी सीमा पर पहुँचे। यहाँ देवी सिंह ने उन्हें कुछ मिनटों के लिए आराम करने दिया ताकि वे साँस ले सकें। फिर वे उन्हें उत्तर-पूर्व दिशा की ओर ले गए। उन्हें पता था कि इस दिशा में चलने से वे अंततः उसी रास्ते पर पहुँच जाएँगे जिससे वे उस दुर्भाग्यपूर्ण रात गाँव की ओर आते समय आए थे।

वे अब चुपचाप, एक कतार में चल रहे थे।

भोर के तीन बजने के कुछ ही समय बाद वे अंततः उस रास्ते पर पहुँचे। तीन घंटे पहले ही वे बड़े उत्साह से उस रास्ते को पार कर चुके थे। ऐसा लग रहा था मानो तीन दिन बीत गए हों। तब वे सभी जीवित और प्रसन्न थे। अब उनमें से कई लोग मृत पड़े थे।

लेकिन रास्ता सीधे उत्तर दिशा की ओर और सुरक्षा की ओर जाता था।

अब उन्होंने अपने कदम तेज़ कर दिए। जंगल की सुरक्षित शरणस्थली तक पहुँचने में अभी भी छह मील या उससे अधिक की दूरी बाकी थी।

सुबह के 4:30 बज रहे थे और सामने घना जंगल छाया हुआ था, तभी अचानक उनके सामने कहीं से गोली चलने की आवाज सुनाई दी।

देवी सिंह के ठीक पीछे, पंक्ति में दूसरे स्थान पर चल रहा डाकू वहीं मृत पड़ा रहा।

अब सिर्फ छोटा और देवी सिंह ही जीवित बचे थे। गोलियों की आवाजें गूंजीं और गोलियां उनके सिर के ऊपर से सनसनाती हुई निकल गईं।

उन पर घात लगाकर हमला किया गया था।

उसी समय, वह और देवी सिंह पेट के बल जमीन पर लेट गए और आगे क्या होगा, इसका इंतजार करने लगे।

ऊपर से गोलियों की सनसनाहट लगातार सुनाई दे रही थी। अंधेरा था और उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

फिर अंधेरे से एक आवाज आई, 'आत्मसमर्पण कर दो, वरना तुम सबको गोली मार दी जाएगी,' उसने आदेश दिया।

वह आवाज उनके थोड़ा दाहिनी ओर से आई थी।

देवी सिंह ने अपने हाथ में टॉमी गन तैयार रखी थी, जबकि अपने दाहिने हाथ से वह उस पत्थर को टटोल रहा था जिस पर वह गिरा था। उसके पेट में दर्द हो रहा था।

अचानक उसके मन में एक विचार आया। उसने अपने दाहिने हाथ से पत्थर को पकड़ा और पूरी ताकत से उसे बाईं ओर फेंक दिया। पत्थर कुछ गज दूर ज़मीन पर एक धीमी सी आवाज़ के साथ गिरा।

जैसे ही घात लगाकर बैठी पुलिस गश्ती दल ने उस दिशा में गोलीबारी शुरू की जहां से आवाज आई थी, रात के अंधेरे में तुरंत आग की लपटें फैल गईं।

देवी सिंह ने अपनी टॉमी गन का ट्रिगर दबाया और उसे दबाए रखा, फिर धीरे-धीरे बंदूक की नली को उस जगह की ओर घुमाया जहाँ से गोलियों की चिंगारियाँ आ रही थीं। जैसे ही उसकी गोलियाँ पुलिस दल के छिपे हुए सदस्यों पर लगीं, चीखें और दर्द भरी चीखें सुनाई दीं।

एक बार फिर, उनके सिर के ऊपर और चारों ओर गोलियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी।

उस अफरा-तफरी के बीच एक अजीब घटना घटित हुई।

काफी पास से और सामने के जंगल की दिशा में, एक सींगदार उल्लू ने निराशाजनक ढंग से एक बार और फिर दोबारा आवाज निकाली।

और उसके ठीक बाईं ओर स्थित देवी सिंह से, छोटा को एक और उल्लू की जवाबी आवाज सुनकर आश्चर्य हुआ, जो लगातार दो बार सुनाई दी।

तभी उसे संकेतों का महत्व समझ में आया।

मान सिंह और उसके मुख्य डाकू जंगल में पहुँचकर वहाँ छिप गए थे। पुलिस गश्ती दल उनका पीछा कर रहा था, तभी देवी सिंह और उसका छोटा सा दल गाँव की तरफ से दिखाई दिया। मुख्य दल ने गोलीबारी और जवाबी गोलीबारी की आवाज़ सुनी

और अनुमान लगाया कि उनके पीछे से लौट रहे साथियों को कोई परेशानी हो गई है। उन्होंने कई तोपों की आवाज़ें भी देखी होंगी। लेकिन उस अंधेरे में उन्हें यह पता लगाने का कोई तरीका नहीं था कि कौन सा दल कौन सा है।

इसलिए उन्होंने सींग वाले उल्लू की आवाज की नकल करके संपर्क स्थापित करने का संकेत दिया था। देवी सिंह ने संदेश समझ लिया था और जवाब दिया था। मान सिंह और मुख्य दल को अब पता चल गया होगा कि पुलिस दूसरे समूह में है।

अगले ही पल यह साबित हो गया कि उसका अनुमान सही था। जंगल से पुलिस पर ताबड़तोड़ गोलीबारी शुरू हो गई, जिसमें देवी सिंह ने भी अपनी स्वचालित बंदूक से जमकर ताबड़तोड़ जवाब दिया। छोटा ने भी अपनी राइफल से तेजी से गोलियां चलाईं, लेकिन उसकी गोलियां छिपे हुए पुलिसकर्मियों के ऊपर हवा में जा लगीं।

एक बार फिर, चारों ओर से आ रही गोलीबारी की चपेट में आकर और इस बार बुरी तरह से कम संख्या में होने के कारण, छोटी गश्ती दल के पुलिसकर्मी एक-एक करके मरने लगे।

उनकी जवाबी गोलीबारी लगभग बंद ही हुई थी कि छोटा को अचानक सीने में असहनीय दर्द महसूस हुआ। वह असमंजस में पड़ गया कि उसे क्या हो गया है। तभी उसे भाग्य की विडंबना का एहसास हुआ। उसे गोली लगी थी—और वो भी एक पुलिसवाले की!

उसके बाद विस्मृति छा गई।

अगले दिन जब उसे होश आया तो उसने खुद को जंगल में पड़ा पाया। मान सिंह उसके पास बैठा था और उसके होठों में पानी डालने की कोशिश कर रहा था। लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, वह फिर से कोमा में चला गया।

रात में वह एक अजीबोगरीब और सुखद हिलने-डुलने की अनुभूति से फिर जाग गया। उसे यह समझने में कुछ समय लगा कि वह एक अस्थायी स्ट्रेचर पर लेटा हुआ था जिसे चार डाकू अपने कंधों पर उठाकर ले जा रहे थे।

उसके सीने में असहनीय दर्द था। ऐसा लग रहा था मानो अंदर ही अंदर कोई गर्म चाकू घुमाया जा रहा हो। उसे तेज बुखार था और गला सूख रहा था।

छोटा ने बोलने की कोशिश की। लेकिन उसके होठों से केवल एक धीमी सी कर्कश आवाज निकली।

एक हाथ ने उसका हाथ थाम लिया और उसके माथे पर रख दिया; तभी एक

दयालु आवाज ने कहा, 'हिम्मत रखो बेटे; हम सुबह तक घर पहुँच जाएँगे।'

वह मधुर आवाज मान सिंह की थी। इससे पहले कि वह जवाब देने की कोशिश कर पाता, वह एक बार फिर गहरी बेहोशी में डूब गया।

छोटा तीसरी और आखिरी बार जागा। बाहर सूरज तेज चमक रहा था। वह एक तंबू के प्रवेश द्वार के ठीक अंदर एक गद्दे पर लेटा हुआ था।

डाकू उसे वापस मुख्यालय तक लाने में सफल हो गए थे। तेईस मील की लंबी दूरी तक वे उसे अपने कंधों पर उठाकर ले गए थे। यह एक साहसी और कठिन कार्य रहा होगा, क्योंकि वे थके हुए थे और खुद भी पीछा किए जाने के खतरे में थे।

इन सबके बावजूद उन्होंने उसे नहीं छोड़ा था।

छोटा ने उनके द्वारा किए गए कार्य की सराहना की और आश्चर्यचकित रह गया।

लेकिन इस सारी परेशानी का क्या फायदा? क्योंकि छोटा जानता था कि वह मर रहा है।

उसके सीने में असहनीय दर्द हो रहा था। फिर भी वह स्पष्ट रूप से सोच पा रहा था।

‘राजा मान सिंह को तुरंत फोन करो,’ उसने कमजोर आवाज में कहा।

एक भगोड़े ने यह सुना और मुस्कुराते हुए उसके ऊपर झुक गया। 'तो, आखिरकार तुम जाग गए, भाई? चिंता मत करो; तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे।'

‘उसे बुलाओ, क्या तुम सुन रहे हो? राजा को जल्दी बुलाओ—बहुत जल्दी! क्योंकि मैं मर रहा हूँ; लेकिन मुझे पहले उसे कुछ बताना है।’

वह आदमी गायब हो गया, और कुछ ही मिनटों में उसकी जगह मान सिंह खड़ा हो गया।

‘भाई बापट राव, आपको जागता हुआ देखकर मुझे खुशी हुई—’ उन्होंने कहना शुरू किया।

छोटा ने उसकी बात बीच में ही काट दी। ‘मेरी बात सुनिए, महाराज साहब,’ उसने धीमी आवाज़ में फुसफुसाते हुए कहा, ‘मुझे आपको कुछ बताना है। समय बहुत कम है—क्योंकि मैं मरने वाला हूँ।’

इसी बीच तहसीलदार सिंह और देवी सिंह भी आ गए। वे उत्सुकता से सुन रहे थे।

‘महाराज साहब,’ छोटा बड़ी मुश्किल से बोलते हुए, कमज़ोर आवाज़ में बोला,

'मैं बापट राव नहीं हूँ, वो भिखारी। मेरा असली नाम इंस्पेक्टर कतर सिंह है। मैं एक जासूस हूँ—एक पुलिस जासूस जो आपको फँसाने आया था। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंज़ूर था। मुझे माफ़ कर दीजिए—अगर आप कर सकते हैं, हे महानुभाव! लेकिन—लेकिन मैं तो बस अपना कर्तव्य निभा रहा था—ईमानदारी से—अपना कर्तव्य—अपना कर्तव्य...' यहाँ उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई और वह खामोश हो गया, और उसकी आँखें थकी हुई सी बंद हो गईं।

मान सिंह को लगा कि उसकी मृत्यु हो गई है।

लेकिन थोड़ी देर बाद छोटा ने अपनी आँखें खोलीं और बोलना जारी रखा। लेकिन अब उसकी आवाज़ और भी धीमी हो गई थी, इसलिए मान सिंह को उसकी बात सुनने के लिए उसके ऊपर झुकना पड़ा।

'मैंने तुम्हारा छिपने का स्थान ढूंढ लिया—लेकिन, भगवान का शुक्र है, मैंने इसके बारे में किसी को नहीं बताया।' यहाँ वह हल्का सा मुस्कुराया। फिर आगे बोला।

'धन्यवाद—मेरी मदद करने की कोशिश करने के लिए—मेरी गाड़ी के लिए—मुझे यहाँ तक वापस लाने के लिए। आपसे मिलकर मैं बहुत सम्मानित और प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। आप एक महान व्यक्ति हैं। ईश्वर आपको आशीर्वाद दे—राजा मान सिंह—रा—रा—राठौर।'

एक भयानक कंपकंपी से उस छोटे कद के इंस्पेक्टर का शरीर कांप उठा; फिर उसकी मृत्यु हो गई।

मान सिंह चुपचाप उस नन्हे शरीर को देखता रहा, जिसकी छाती खून के थक्के से लथपथ थी। उसकी आँखें अजीब तरह से चमक रही थीं।

फिर उसने बहुत ही धीमी आवाज़ में कहा।

'मैं आपको पूरी तरह से क्षमा करता हूँ, पुलिस निरीक्षक कतर सिंह। और मैं आपको सलाम करता हूँ, क्योंकि आप एक बहादुर व्यक्ति हैं। आपने अपना कर्तव्य निभाया और बहुत ही शानदार ढंग से निभाया। ईश्वर आपकी आत्मा को शांति दे।'

लेकिन तहसीलदार सिंह, उनके बेटे; और देवी सिंह, उनके लेफ्टिनेंट; ने उनकी बातें सुन ली थीं। वे हैरान थे कि इतने कठोर स्वभाव वाले बूढ़े व्यक्ति में अभी भी इतनी कोमल भावनाएँ कैसे हो सकती हैं।

और उन्होंने नन्हे इंस्पेक्टर का अंतिम संस्कार पूरे धार्मिक रीति-रिवाजों के साथ किया।

उस बहादुर छोटी सी अग्रिम पंक्ति की टुकड़ी में से, जिसने इतनी बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी, अब कोई भी जीवित नहीं बचा था।

देवी सिंह को छोड़कर!

अध्याय दो

Jhani and Lotibai

एक दिन एक छोटी बच्ची ने कहा, 'मेरे बाल मत खींचो, बदतमीज़ लड़के।' उसका नाम लोटीबाई था और वह भिंड कस्बे के एक धनी व्यापारी कुमार की इकलौती बेटी थी। जब उसने ये शब्द कहे तब वह मुश्किल से 10 साल की थी और यह घटना स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के सामने के मैदान में घटी, जहाँ भिंड के बच्चों को उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की जाती थी और अधिकांश माता-पिता स्कूल शुल्क के रूप में वहन करने में सक्षम थे।

युवक ने पूछा, 'क्यों नहीं? मुझे लड़कियों के बाल खींचकर उन्हें रुलाना अच्छा लगता है,' और उसने फिर से बाल खींचे।

वह लगभग 12 वर्ष का एक हंसमुख लड़का था, जिसकी काली आँखें चमकीली और सुंदर थीं। वह देखने में बहुत दुबला-पतला लगता था, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि उसकी लंबाई तेजी से बढ़ रही थी, और जो लड़के अचानक बढ़ते हैं वे दुबले-पतले ही लगते हैं। उसके लहराते काले बाल बिखरे हुए थे और दाहिनी कनपटी पर लटके हुए थे। उसके दाँत चमकते हुए सफेद थे और दोनों गालों पर एक-एक शरारती डिंपल था।

और उसका नाम झानी था।

'यह मत सोचो कि तुम लड़के हो और मैं लड़की, इसलिए तुम मुझे परेशान कर सकते हो,' लोतिबाई ने पलटवार करते हुए कहा, 'मैं अभी तुम्हारे चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मारूंगी।'

'सच में, आगे बढ़ो,' झानी हँसा, और अचानक उसका दाहिना हाथ एक बार फिर आगे बढ़ा, उसके बालों को एक और बार खींचने के लिए, 'शायद मुझे लड़कियों से थप्पड़ खाना पसंद है।'

लेकिन लोटीबाई रोने लगी थी।

झानी के चेहरे से मुस्कान अचानक गायब हो गई और उसने अपने बगल में बैठी

लड़की को आश्चर्य से देखा।

"औरतों के बारे में मुझे यही बात पसंद नहीं है," उन्होंने बड़ी गंभीरता से और ज्ञान भरी आवाज़ में कहा। "उनसे मज़ाक करने की कोशिश करो तो वो रोने लगती हैं। शुक्र है कि मैं लड़का पैदा हुआ।"

'यहाँ से चले जाओ, दुष्ट प्राणी!' लोटीबाई ने क्रोध से अपने छोटे नंगे पैर ज़मीन पर पटकते हुए कहा। 'कक्षा शुरू होते ही मैं शिक्षक को तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दूँगी।'

'तुम धूर्त हो', झानी ने तिरस्कारपूर्वक कहा।

तभी स्कूल की घंटी बजी, जिससे चारों ओर से आ रही अन्य बच्चों की कर्कश और तीखी आवाजों के बीच एक बेमेल सी आवाज गूंज उठी।

कक्षा में प्रवेश करने के लिए अफरा-तफरी मच गई।

शिक्षक, बूढ़े मुल्की राम, जो एक ब्राह्मण थे, एक सख्त और बेहद क्रूर व्यक्ति थे। वे देर से आने वाले बच्चों को पतली छड़ी से हथेलियों पर पीटते थे। अफवाह थी कि वह छड़ी सिरके में डुबोकर रखी गई थी।

इससे वाकई बहुत दर्द हुआ।

बच्चे कमरे में बिछी लंबी-लंबी मेजों पर अपनी-अपनी வழக்க की जगहों पर बैठ गए। झानी ने अपनी नजर के कोने से देखा कि लोटीबाई ने रोना बंद कर दिया था, हालांकि वह बीच-बीच में सिसकियाँ ले रही थी।

उसने यह भी देखा कि उसकी नाक की नोक, जो थोड़ी ऊपर की ओर उठी हुई थी, नम और बेहद लाल थी, जहाँ वह एक छोटे रंगीन रूमाल से उसे और अपनी आँखों को पोंछ रही थी।

झानी को लगा कि वह उस नाक को भी मरोड़ना चाहेगा।

उसे उम्मीद थी कि वह चुपके से ब्राह्मण मुल्की राम के पास नहीं जाएगी। अगर उसने ऐसा किया, तो उसे निश्चित रूप से कोड़े पड़ेंगे, और वो भी बहुत बुरी तरह।

बाकी सभी लड़के-लड़कियां उस पर हंसते थे।

दरवाजा खुला और मुल्की राम तेजी से चलते हुए कमरे में दाखिल हुई।

बच्चे एक साथ खड़े हो गए और एक लयबद्ध स्वर में बोले, 'सुप्रभात महोदय।'

इसी बीच मुल्की राम उस एक फुट ऊंचे चबूतरे पर चढ़ गए, जिस पर उनकी बड़ी मेज और कुर्सी रखी थी। वहां मौजूद बच्चों की ओर देखते हुए उन्होंने संक्षिप्त

स्वर में उत्तर दिया, 'सुप्रभात; बच्चों।'

वह अधेड़ उम्र से अधिक का था और उसके गाल लटके हुए थे जो ठुड्डी तक धंसे हुए थे, साथ ही उसकी आँखों के नीचे थैले भी थे। वह सींग के फ्रेम वाला, बेहद मोटे लेंस का चश्मा पहनता था। उसके सामने बैठे बच्चों की नज़र से देखने पर, उसकी आँखें बहुत बड़ी दिखाई देती थीं, जो किसी राक्षस जैसी लगती थीं, और उसकी शिकारी जैसी नाक और पतले होंठों ने उनकी इस भयावहता को और भी बढ़ा दिया था। वह देखने में उल्लू जैसा लगता था, और बच्चे उसे पीठ पीछे 'उल्लू' कहकर चिढ़ाते थे।

मुल्की राम का पूरा सिर मुंडा हुआ था, सिवाय पीठ के ऊपरी हिस्से से लटकते लंबे, भूरे बालों के एक गुच्छे के। यह गुच्छा और माथे के बीचोंबीच, आँखों के बीच से नाक तक खींचे गए सिंदूर से बने तीन समानांतर जाति चिह्न, सभी को यह स्पष्ट कर देते थे कि यह सचमुच एक ब्राह्मण है, जो शुद्ध अछूत वंश का है।

उन्होंने घोषणा की, 'मैं हाजिरी लूंगा, और फिर हम इतिहास का पाठ शुरू करेंगे। मुझे उम्मीद है कि आप सभी अपनी पाठ्यपुस्तकें लाए होंगे?'

एक बार फिर उन राक्षसी आँखों ने चारों ओर देखा, और झानी को लगा कि उनमें उत्सुकता भरी उम्मीद का भाव था। उस लड़के या लड़की का बुरा हाल होगा जो भूल गया हो।

झानी ने एक बार फिर मेजों की दो पंक्तियों के पार तिरछी नज़र से लोटीबाई को देखा। अब समय आ गया था। अगर उसे उसके बारे में बताना था, तो उसे अभी बताना होगा।

लोटीबाई को मानो उसकी निगाहों का आभास हो गया था। उसने धीरे से ऊपर देखा, फिर अपना सिर थोड़ा सा घुमाया और उसकी ओर पीछे मुड़कर देखा। उनकी आँखें मिलीं।

उसके होठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान दिखाई दी, और लोटीबाई ने झानी पर चुपके से नज़र नहीं डाली।

इसके बाद उनकी निगाहें इतिहास की किताबों पर टिक गईं।

सात साल बीत गए, लेकिन ऐसा लगा जैसे सात दिन ही बीते हों।

लोटीबाई अब सत्रह साल की थी और वह अपने पिता की आंखों का तारा थी।

वह वाकई एक खूबसूरत लड़की थी।

मध्यम कद की, काले घने बालों वाली, जो हमेशा उसकी पीठ पर लटकती दो लंबी लटों में बंधे रहते थे, उसका चेहरा समरूप अंडाकार था, उसकी त्वचा मखमल जैसी चिकनी और मलाईदार चॉकलेट रंग की थी। उसकी आँखें बड़ी और चमकदार थीं, और ऐसा लगता था मानो किसी चौंकी हुई हिरणी की मासूमियत और आश्चर्य से भरी नज़रों से दुनिया को देख रही हों। उसकी आँखें गहरे भूरे रंग की थीं, सुंदर लंबी, घुमावदार पलकें थीं, और स्वाभाविक रूप से धनुषाकार भौहें थीं। उसकी छोटी सी नाक, जो बचपन में थोड़ी ऊपर उठी हुई थी, अब आकर्षक रूप से चपटी हो गई थी। उसके गर्म, रसीले हल्के गुलाबी होंठ, उसके नीचे स्थित नुकीली ठुड्डी को और भी खूबसूरत बनाते थे, जो नाजुक लेकिन दृढ़ थी। उसकी आँखों के बीच माथे पर एक सुंदर लाल बिंदी चमकती थी—जो हिंदू महिलाओं का धार्मिक आभूषण है।

उसका शरीर एक नवोदित नारीत्व के पूर्ण अनुपात में ढल चुका था। उसने जो आसमानी नीले रंग की रेशमी साड़ी पहनी थी, वह खूबसूरती से फूली हुई थी और उसके नीचे पहनी हुई काली शिफॉन जैकेट को दर्शा रही थी, जो उसके स्तनों के दोनों उभारों को कसकर जकड़े हुए थी।

लोटीबाई प्रेम में थी; बहुत प्रेम में।

इस स्नेह का पात्र वही झानी था; जी हाँ, वही लड़का जिसने उस दूर की सुबह स्कूल शुरू होने से पहले उसके बाल खींचे थे।

पता नहीं कैसे, वे स्वाभाविक रूप से प्रेमी बन गए।

वे स्कूल के दिनों में हमेशा साथ खेलते थे और साथ में ही सो जाते थे।

इसके बाद, लोटीबाई सुबह के समय झानी को ज्यादा नहीं देख पाती थी क्योंकि वह अपने पिता, बूढ़े बालाजी के साथ खेतों में काम करने में व्यस्त रहता था।

झानी बालाजी का इकलौता बेटा था, ठीक वैसे ही जैसे लोटीबाई कुमार की इकलौती बेटी थी। लेकिन समानता यहीं खत्म हो जाती थी। बालाजी एक गरीब किसान थे, जो अपने बेटे के साथ मिलकर खेतों की जुताई करते और बीज बोते थे। उनके पास 12 एकड़ सूखी ज़मीन थी, जिससे वे बड़ी मुश्किल से गुज़ारा कर पाते थे, बशर्ते मानसून न आए, या बेमौसम बारिश न हो, या ज़रूरत से ज़्यादा बारिश न हो। जब भी ऐसी कोई विपत्ति आती, बूढ़े बालाजी और उनके बेटे झानी को उधार के पैसों

पर गुज़ारा करना पड़ता और अगले साल अच्छी फसल की उम्मीद करनी पड़ती।

लेकिन कुमार खूब तरक्की कर चुके थे। वे जिस भी चीज़ को छूते, वह सोने में तब्दील हो जाती थी। उनका व्यापार न केवल फलता-फूलता रहा, बल्कि उन्होंने एक नया काम भी शुरू कर दिया था - सरकार के ठेकेदार के रूप में - जो इलाके के सभी सैन्य चौकियों और स्थानीय पुलिस टुकड़ियों को उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरत की चीज़ें, खाने-पीने की चीज़ों से लेकर सेफ्टी पिन तक, मुहैया कराते थे। इससे उन्हें भारी मुनाफा हुआ और अब वे कई लाख रुपये के मालिक बन चुके थे।

लगभग हर शाम लोटीबाई और झानी बाजार में मिलती थीं, या सार्वजनिक पार्क में लगी छोटी बेंचों में से किसी एक पर बैठकर बातें करती थीं।

(पश्चिमी देशों के विपरीत, भारत के लड़के-लड़कियों को शादी से पहले विपरीत लिंग के बीच दोस्ती विकसित करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। आमतौर पर और हमेशा, विवाह माता-पिता द्वारा पहले से ही तय किए जाते हैं और केवल समारोह के दौरान ही लड़का और लड़की पहली बार एक-दूसरे को देखते हैं।)

इसलिए, लोटीबाई और झानी का एक-दूसरे से मिलना काफी असामान्य था, भले ही यह खुले बाजार में या पार्क में किसी बेंच पर, दिन के उजाले में कुछ मिनटों के लिए बातचीत करने के लिए ही क्यों न हो।

साथ में फिल्म देखने जाना, पिकनिक पर जाना या गांव की सीमा से बाहर टहलने जाना जैसी बातें तो सोची भी नहीं जा सकती थीं। दरअसल, उन्होंने खुद भी कभी ऐसा सपना नहीं देखा था।

किसी तरह, उनके पिता उनकी आपस की दोस्ती को एक सामान्य, हानिरहित बात मानने लगे थे। आखिर वे एक-दूसरे को सात साल से ज़्यादा समय से जानते ही तो थे? क्या वे साथ-साथ स्कूल में नहीं पढ़ते थे; यहाँ तक कि एक ही कक्षा में भी नहीं?

दरअसल, भिंड के लोग भी यही सोचते थे और उन्होंने इस बारे में ज्यादा कानाफूसी नहीं की; कम से कम ज्यादा तो नहीं। जब वह नौजवान जोड़ा वहां से गुजरा तो कुछ बुढ़ियाएं सिर झुकाकर और तिरछी निगाहों से फुसफुसा रही थीं, लेकिन वे सब हताश और चुगली करने वाली बुढ़ियाएं ही थीं; और किसी ने उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। वैसे भी, हताश लोगों को दुनिया भर में सहानुभूति नहीं मिलती।

झानी और लोटीबाई को खुद भी इस बात का एहसास नहीं था कि उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो गया है। अगर उन्हें पता होता, तो शायद वे बहुत डर जातीं। वे बस अच्छी सहेलियाँ थीं—स्कूल के दिनों से दोस्त—जो आज भी एक-दूसरे के साथ अच्छे से घुलमिल जाती थीं और एक-दूसरे की संगति का आनंद लेती थीं। सब कुछ बहुत मासूमियत भरा था। उन दोनों ने कभी भी अपने बारे में या एक-दूसरे के बारे में यौन दृष्टि से नहीं सोचा था।

यानी, उस दिन तक सब ठीक था जब तक तूफान नहीं आ गया।

एक शाम पार्क में अपनी पसंदीदा बेंच पर उसके बगल में बैठी लोटीबाई ने कहा, 'झानी, अभी एक मिनट में मूसलाधार बारिश होने वाली है। चलो, चलते हैं। अगर हम जल्दी चलें, तो शायद मुझे घर पहुँचने का समय मिल जाए।'

'लेकिन अभी तो सिर्फ पांच बजे हैं और हम अभी-अभी मिले हैं,' झानी ने अंधेरे होते आसमान की ओर देखते हुए नाराज़गी से जवाब दिया। 'छोड़ो सब कुछ; बारिश होने दो। हम सड़क के उस पार पुराने 'मूसाफरखाना' (यात्रियों के बंगले) में शरण ले सकते हैं।'

'और मान लीजिए कि यह नहीं रुकता?' लोटिबाई ने आशंका से पूछा।

'कितनी बेवकूफी वाली बात है। यह कभी न कभी तो रुक ही जाएगा। शायद शाम छह बजे के आसपास। तब तक दिन का उजाला रहेगा।'

लोटीबाई को वहां रुकने की बुद्धिमत्ता पर इतना यकीन नहीं था, लेकिन उसके बगल में बैठे लहराते बालों वाले युवक के प्रति उसकी पसंद ने उसकी सावधानी की भावना पर काबू पा लिया।

19 साल का झानी अब वह दुबला-पतला लड़का नहीं रहा था जो स्कूल के दिनों में हुआ करता था। लंबा, सुगठित और मांसपेशियों से भरा हुआ, ये दोनों गुण उसके पिता के खेतों में रोज़ाना की मेहनत का नतीजा थे, वह एक बेहद आकर्षक युवक बन गया था। उसके बिखरे हुए बाल अब स्वाभाविक रूप से लहरदार हो गए थे, हालांकि उनका एक सिरा आज भी उसी तरह उसके दाहिने कनपटी पर गिरता था जैसे कई साल पहले गिरता था। उसकी शरारती मुस्कान आज भी वैसी ही थी, जिससे उसके वही चमकदार सफेद दांत झलकते थे। उसकी गहरी आंखें आज भी जीवन की खुशी से चमक रही थीं।

लेकिन अब वह न तो उसके बाल खींचता था और न ही उसकी नाक मरोड़ता

था।

'अगर मैं भीग गई तो इसकी जिम्मेदारी तुम्हारी होगी, और मैं तुमसे कल शाम नहीं मिलूंगी,' लोतिबाई ने मुंह बनाते हुए कहा, उसकी आवाज़ में जो कोमलता थी वह उसके शब्दों में छिपे खतरे को पूरी तरह से झुठला रही थी।

झानी जानती थी कि वे अगली शाम मिलेंगे; और उसके बाद हर शाम मिलेंगे।

उनके ऊपर मंडराते काले बादल से गरजने की एक गर्जना सुनाई दी, जो धीरे-धीरे बढ़ती गई, मानो ऊपर कोई विशालकाय ढोलक बजाने वाला विशालकाय ड्रम बजा रहा हो।

'लोटीबाई ने डरी हुई हिरनी जैसी आँखों से आकाश की ओर देखते हुए कहा, 'यह आ रही है, क्या आपको लगता है कि बारिश शुरू होने से पहले मेरे घर पहुँचने के लिए पर्याप्त समय है?'

'तुम तो बिल्कुल डरपोक बिल्ली के बच्चे हो,' झानी ने बस इतना ही जवाब दिया।

फिर से गरज सुनाई दी; लेकिन अब ऐसा लग रहा था मानो आकाश फट पड़ा हो। गरज के बाद बारिश की पहली कुछ बूँदें गिरीं;—ये वैसी छोटी बूँदें नहीं थीं जो समशीतोष्ण जलवायु में दिखाई देती हैं, बल्कि बड़ी-बड़ी बूँदें थीं जो भारी-भारी होकर धरती पर गिरीं और धूप से तपती सूखी, कठोर ज़मीन पर नमी की एक हल्की सी छींटे छोड़ गईं।

'चलो, दौड़ते हैं,' झानी ने हल्के से कहा, अपने पैरों पर उछलते हुए और उसका छोटा हाथ अपनी बड़ी और मजबूत मुट्ठी में पकड़ते हुए, 'देखते हैं तुम कितनी तेजी से दौड़ सकती हो।'

और ये शब्द कहकर वह छोटे से पार्क के दूसरे छोर पर सड़क के पार स्थित पुराने मूसाफरखाने की ओर दौड़ पड़ा।

लोटीबाई ने उसके साथ चलने की कोशिश की, लेकिन उसकी साड़ी जांघों और पिंडलियों पर इतनी कसी हुई थी कि वह लंबे कदम नहीं उठा पा रही थी। उसका हर कदम छोटा और मजबूरी भरा था और झानी को लगा कि अगर वह उसे और जोर से खींचेगा तो वह लड़खड़ाकर गिर सकती है।

पुराने बंगले की ओर आधे रास्ते में ही बिजली की एक तेज़ चमक दिखाई दी, जो उनके चारों ओर छाए घने बादलों के कारण उत्पन्न अंधकार में स्पष्ट रूप से प्रकट

हुई। ये बादल अब पूरे आकाश को राख जैसे भूरे रंग की चादर से ढक चुके थे। बिजली के बाद एक और ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई, और फिर पिछले छह गर्म, प्यासे और पानीहीन महीनों से जमा हुआ सारा पानी उन पर बरस पड़ा। बारिश पानी की एक मोटी चादर की तरह बरसी, जिसने हर चीज़ को अपने अपारदर्शी आवरण में लपेट लिया।

बंगला सड़क के ठीक सामने, महज 50 गज की दूरी पर था। लेकिन जब तक वे उसके बरामदे तक पहुँचे, तब तक वे दोनों पूरी तरह भीग चुके थे।

एक क्षण के लिए वे बारिश की दीवार को देखने के लिए नीचे रुक गए, और पार्क में पेड़ अचानक आई तेज हवा के बल से झुक गए।

नम मिट्टी की सुगंध ज्ञानी की नाक को अवर्णनीय रूप से ताजगी दे रही थी। स्वयं एक किसान और कृषि प्रधान पूर्वजों के वंशज होने के नाते, वह जानते थे कि बारिश भारत के लाखों वर्ग मील भूमि और असंख्य लोगों के लिए जीवन, विकास, पोषण और जीविका का साधन है। बिना कुछ बोले, उन्होंने मन ही मन कहा, 'ईश्वर की स्तुति हो।'

फिर, बचकानी खुशी और कृतज्ञता के आवेश में, वह अचानक बारिश में बाहर भागा, दो बार गोल-गोल घूमा और वापस बरामदे के नीचे आ गया।

'ज्ञानी, गधी, क्या कर रही हो?' लोटीबाई ने पूरी तरह ध्यान देते हुए पूछा, और सात साल पहले की तरह ही गुस्से में एक बार फिर अपने पैर ज़मीन पर पटके। नाराज़गी ज़ाहिर करने की यह उसकी एक छोटी सी आदत थी।

इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, उसने आगे कहा, 'कभी-कभी मुझे लगता है कि तुम कभी बड़े नहीं होगे। तुम हमेशा वही छोटे स्कूली लड़के रहोगे जिसे मैं जानती थी।'

लेकिन एक बार फिर उसकी आँखों के भाव ने उसके लहजे की गंभीरता को झुठला दिया। उनमें असीम कोमलता थी। एक ऐसी कोमलता जो अपनी खामोशी में ही मानो ज़ोर से कह रही थी, 'ओह ज्ञानी; तुम हमेशा वही स्कूली लड़के रहोगे जिसे मैं जानती हूँ और बहुत प्यार करती हूँ।'

लेकिन ज्ञानी उस समय भावुक होने के मूड में नहीं था। उसने भीगे हुए स्पैनियल कुत्ते की तरह खुद को झटक दिया, जिससे उसके भीगे हुए कपड़ों से पानी चारों ओर और लोटीबाई पर फैल गया।

वह बेहद चिंतित थी। "तुरंत बरामदे के अंदर जाओ," उसने आदेश दिया, हर स्त्री के भीतर दबी मातृत्व की भावना अनायास ही प्रकट हो गई, "तुम्हें ज़ुकाम हो जाएगा और शायद निमोनिया से भी तुम्हारी मौत हो जाएगी। लो, मेरे रूमाल से अपना चेहरा और बाल पोंछ लो।"

झानी ने उसके द्वारा दिए गए छोटे से रूमाल को देखकर बड़ी सी मुस्कान बिखेरी; वह रूमाल रंग-बिरंगे कपड़े का मात्र छह इंच का चौकोर टुकड़ा था। उसने गंभीरता से उसे झानी के हाथ से लिया और उससे अपना चेहरा पोंछने और बालों में हाथ फेरने लगा।

देखते ही देखते छोटा सा रुमाल पूरी तरह भीग गया। झानी ने बनावटी गंभीरता दिखाते हुए भीगे हुए रुमाल को दोनों हाथों के बीच निचोड़ा और फिर से अपना सिर पोंछने लगा।

वे दोनों साथ-साथ बरामदे (जिसे भारत में आमतौर पर पोर्टिको कहा जाता है) से इमारत के बरामदे तक जाने वाली चार पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़े।

अपने समय में मूसाफरखाना एक लोकप्रिय निर्माण था।

सत्तर साल पहले अंग्रेजों द्वारा निर्मित, यह बंगला आसपास के कई मीलों तक फैला हुआ एकमात्र घुमंतू लोगों का बंगला था। इसीलिए यह दौरे और निरीक्षण के दौरान थके-हारे अधिकारियों के लिए एक सुरक्षित ठिकाना और आरामगाह हुआ करता था। ये अधिकारी सरकारी सेवा के सभी विभागों से आते थे; सेना, पुलिस, उत्पाद शुल्क, भू-राजस्व, वन विभाग, सर्वेक्षण विभाग, आदि; जो यहाँ आकर कुछ घंटों के लिए अपनी यात्रा रोककर आराम से डेरा डालते थे, और फिर तंबू जीवन की तमाम असुविधाओं और उतार-चढ़ावों का सामना करने से पहले कुछ समय के लिए यहाँ ठहर जाते थे।

ऐसी अफवाह थी कि एक बार कोई वायसराय वहां रुका था। निश्चित रूप से कई गवर्नर वहां रुके होंगे, जैसा कि पुराने बंगलों के रिकॉर्ड से साबित हो जाता अगर वे मौजूद होते।

लेकिन वे रजिस्टर तो बहुत पहले ही गायब हो चुके थे। कुछ तो चूर-चूर हो गए थे; कुछ दीमक और चूहों ने खा लिए थे। शायद कुछ रजिस्टर चौकीदारों की रसोई की आग जलाने के काम आ गए थे, जिन्हें बंगले का इस्तेमाल बंद होने के काफी समय बाद भी उसकी रखवाली के लिए रखा गया था।

अब तो चौकीदारों को भी हटा लिया गया था और पुराना मूसाफरखाना खंडहर में तब्दील हो रहा था।

किसी ने पता लगाया था कि इमारत में वास्तुशिल्प या निर्माण संबंधी खामी के कारण वह असुरक्षित थी—या कम से कम किसी ने ऐसा कहा था। सरकार ने जल्दबाजी में एक नई जगह चुनकर एक नया बंगला बनवा दिया। यह कोई नहीं बता सकता कि पुरानी इमारत की मरम्मत को उचित समझा गया था या नहीं, इस पर कितना विचार किया गया था।

सच्चाई यह है कि नई इमारत तेजी से अस्तित्व में आ गई जबकि पुरानी इमारत धीरे-धीरे गुमनामी में विलीन होती चली गई—ठीक वैसे ही जैसे कोई थका हुआ बूढ़ा व्यक्ति सड़क किनारे छोड़ दिया गया हो और शांतिपूर्वक बुढ़ापे से मरने के लिए छोड़ दिया गया हो।

लकड़ी के दरवाजे और खिड़कियाँ, अपने फ्रेम समेत, बहुत पहले ही हटा दिए गए थे; फिर रोशनदान भी हटा दिए गए, और फिर कई कमरों में लकड़ी के बीम और शहतीर भी हटा दिए गए, जिससे छत ढह गई। लेकिन पुरानी इमारत की मुख्य दीवारें अभी भी मजबूती से खड़ी थीं, और छत अभी भी दो-तीन सुनसान कमरों को ढके हुए थी, जो समय और मौसम के प्रकोप का सामना करने की निराशाजनक चुनौती से जूझ रही थी।

बरामदे की छत का एक हिस्सा ढह गया था, जबकि दूसरा हिस्सा बचा हुआ था।

झानी और लोटीबाई ने छत वाले हिस्से के नीचे शरण ली और बाहर के प्राकृतिक नजारों को देखने के लिए वहीं खड़ी हो गईं।

दो भागों में बंटी बिजली ने लगातार गहरे होते बादलों पर चमकती चांदी जैसी लकीरें बना दीं, मानो ऊपर आकाश में किसी नदी की विशाल आकृति दिखाई दे रही हो, मानो आसमान में नक्शे की तरह धरती की ओर बह रही हो। फिर वह दृश्य गायब हो गया, और कुछ ही सेकंड में गरज की तेज़ आवाज़ गूंज उठी। उन्हें लगा जैसे पुराने बंगले की दीवारें किसी बुखार से कांप रही हों। मूसलाधार बारिश और भी तेज़ हो गई, बरामदे की गिरी हुई छत से पानी अंदर घुस गया और पत्थर के फर्श पर पानी भर गया, जिस पर वे खड़े थे, और फर्श कुछ इंच पानी में डूब गया।

खुली खिड़की से सीधी बारिश अंदर आ रही थी; फुहारों की तरह सब कुछ भीग रहा था। बारिश, और बस बारिश। झानी भी प्रकृति की शक्ति के भय से अभिभूत

थी।

फिर हवा चलने लगी। दूर से आती हुई तेज़ हवा की कर्कश आवाज़ सुनाई दी, जो धीरे-धीरे करीब आती जा रही थी। और फिर वह उन पर टूट पड़ी। पुराने बंगले के सामने सड़क के किनारे लगे नीम के पेड़ों की कतार अचानक हवा के झोंके से झुक गई; डालियाँ और पत्ते टूटकर दूर जा गिरे। हवा हर खुले दरवाजे और खिड़की से, दीवारों और छत के छेदों और दरारों से होकर गुज़री। यह उनके भीगे हुए कपड़ों को चीरती हुई, ठंड से उन्हें सुन्न कर रही थी, जिससे उनके दांत बजने लगे।

बाहर हवा के तेज शोर और गिरती बारिश की फुफकार के बीच अपनी बात सुनाने के लिए झानी चिल्लाया, 'चलो और अंदर चलते हैं,' और उसने लोटीबाई की कोहनी पकड़कर उसे अपने आगे ले जाकर अपने शब्दों को क्रियान्वित किया।

वे खुले दरवाजे से होकर उस कमरे में दाखिल हुए जो कभी पुराने मूसाफरखाना के मुख्य कमरों में से एक हुआ करता था।

यहां छत तो अपनी जगह पर थी, लेकिन कई दरारों से पानी अंदर आ जाता था और नमी की धाराओं के रूप में दीवारों से नीचे बह जाता था।

‘वहाँ से,’ झानी ने इशारा करते हुए, अभी भी लड़की को उसकी कोहनी से धकेलते हुए कहा, ‘उस दरवाजे से अंदर जाओ। शायद उस कमरे से पानी कम टपकता हो।’

वे अंदर दाखिल हुए और खुद को किसी प्रतीक्षालय जैसी जगह पर पाया। अंदर लगभग अंधेरा था, क्योंकि कोई खिड़की नहीं थी, और अंदर जाने का एकमात्र रास्ता वही दरवाज़ा था जिससे वे अभी-अभी आए थे। इसी वजह से कमरे में हवा का झोंका कम आ रहा था और पानी भी ज़्यादा नहीं टपक रहा था। वे एक-दूसरे से सटकर गर्मी पाने के लिए दीवार से चिपक गए, झानी ने लोतिबाई को सुरक्षात्मक अंदाज़ में अपनी बांहों में जकड़ रखा था और कसकर पकड़े हुए थे।

जैसे-जैसे तूफान का प्रकोप कम होता गया, ऊपर आसमान में बार-बार गरज सुनाई दी। हर झटके के साथ पुरानी इमारत कांप उठी।

अचानक एक जोरदार धमाका हुआ जब चक्रवात के बल से तनों और शाखाओं को झुकाने के कारण अत्यधिक तनावग्रस्त नीम के पेड़ों में से एक की जड़ें जमीन से उखड़ गईं, जिससे पेड़ एक तरफ झुक गया और जमीन पर गिर गया।

उस शोर से लोटीबाई चौंक गई, उसे लगा जैसे छत गिर गई हो। उसने अपनी

दोनों भुजाएँ झानी के गले में डाल दीं और अपना चेहरा उसकी छाती में छिपा लिया।

'झानी, ओह झानी,' वह फुसफुसाई।

और उस पल झानी के लिए समय मानो थम सा गया। पलक झपकते ही, बाहर बिजली की चमक की तरह, उसके भीतर उस लड़की की एक नई छवि जन्म ले ली, जो उससे इतनी मजबूती से चिपकी हुई थी।

लोटिबाई, जो उनकी स्कूली सहेली, साथी और कई वर्षों की दोस्त थीं, अब इस दुनिया में नहीं रहीं।

उसकी जगह लोटिबाई खड़ी थी, वह स्त्री। वह स्त्री जिसे वह अब दुनिया में किसी भी चीज़ और किसी भी व्यक्ति से बढ़कर चाहता था।

उसकी भीगी हुई ब्लाउज और उसकी भीगी हुई कमीज़ भी उसके सीने पर उठ रही गर्माहट और दबाव को रोक नहीं पा रही थी, क्योंकि उसके स्तनों की कठोरता उसके शरीर से सट रही थी। उसका चेहरा उसकी ओर ऊपर उठा हुआ था, बाल उसके गीले सिर से चिपके हुए थे। उसकी आँखें बंद थीं, और उसके भरे हुए, नम होंठ मोहक ढंग से उसके करीब थे।

बाहर चल रहे तूफ़ान की तरह तीव्र जुनून की लहर ने झानी को झकझोर दिया। उसने आवेग में आकर अपनी दोनों बाहों से उसे कसकर गले लगा लिया। उसके होंठ एक लंबे और भावुक चुंबन में उसके होंठों से बेताबी से मिल गए।

‘लोटी डार्लिंग, मैं तुमसे प्यार करता हूँ,’ उसने कोमल स्वर में फुसफुसाया। ‘मुझे नहीं पता कब से ऐसा है। लेकिन अब मुझे पता है। मैं—मैं तुम्हें चाहता हूँ, मेरी प्रियतम। अभी।’

‘झानी,’ उसने कोमल स्वर में उत्तर दिया, ‘मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ। मैंने हमेशा तुमसे प्यार किया है, लेकिन इसे ज़ाहिर करने में हिचकिचाती रही। मैं इतने लंबे समय से बस तुम्हारे बताने का इंतज़ार कर रही थी।’

उन्होंने बार-बार एक-दूसरे को चूमा।

झानी में बैठे उस व्यक्ति को सहज रूप से पता था कि उसकी बाहों में तनी महिला का प्रतिरोध तेजी से कमजोर हो रहा है, और उसने निर्दयतापूर्वक, लगभग क्रूरता से, अपना फायदा उठाने की कोशिश की।

लोटी के होंठ थोड़े से खुले और उसकी सांसें जुनून और बढ़ती हुई इच्छा की छोटी-छोटी हिचकियों में निकलने लगीं।

झानी ने उसे लंबे समय तक और मोहक ढंग से चूमा, अपनी जीभ की नोक को उसके मुंह में जबरदस्ती घुसा दिया, जहां वह उसकी कांपती हुई जीभ से मिली जो तीव्र इच्छा से भरी हुई थी।

झानी ने अपने बाएं हाथ से उसे कसकर पकड़े हुए, अपना दाहिना हाथ उसके पीछे से हटाया और धीरे से अपनी उंगलियों को उसकी नंगी कमर से होते हुए पेट तक ले गया। फिर उसने अपनी उंगलियों को उसके ब्लाउज पर फेरा और गीले कपड़े के ऊपर से नीचे की ओर धकेलते हुए, अंत में अपनी हथेली से उसके स्तन को थाम लिया।

उसने आनंदपूर्वक महसूस किया कि उसकी निप्पल कस रही है और उसका शरीर बढ़ती कामुकता से कांप रहा है।

'ओह जानी, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए,' उसने कमजोर आवाज में कहा, 'यह गलत है; हमें ऐसा नहीं करना चाहिए।'

लेकिन उसकी आवाज़ में ज़रा भी दृढ़ विश्वास नहीं था।

उसे पता था कि उसने लगभग जीत हासिल कर ली है, और उसने पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करने के लिए आगे बढ़कर पूरा नियंत्रण स्थापित कर लिया।

उसका हाथ उसके नंगे स्तनों पर कस गया, और उसकी जीभ ने ज़बरदस्ती उसकी जीभों पर अपना स्पर्श किया। लोतिबाई के खुले होंठों से समर्पण की एक मंद सी आह निकली।

फिर सक्रिय वासना ने अपना बेकाबू रूप से प्रदर्शन किया।

उसने चिढ़कर, निर्लज्जता से अपने होंठ उसके होंठों पर और कसकर दबा दिए — ये होंठ आनंदित समर्पण से तर थे। उसकी जीभ उसके होंठों को पार करते हुए उसके मुंह में चली गई।

मानो आपस में चिपक गए हों, वे चुपचाप जमीन पर गिर पड़े।

समय बीतता गया, और बार-बार एक-दूसरे के साथ शारीरिक संबंध बनाने से उमड़ा जुनून धीरे-धीरे कम होता गया। लोटीबाई को सबसे पहले इसका एहसास हुआ। 'हे भगवान, प्रियतम,' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'कितना समय हो गया होगा?'

अब कमरे के अंदर घोर अंधेरा था।

झानी ने अपनी कलाई घड़ी के चमकदार डायल पर नजर डाली। 'हे भगवान!' वह चौंककर बोला, 'आठ बजने में पांच मिनट बाकी हैं।'

वे सब एक साथ उठ खड़े हुए। बाहर तूफान की सारी आवाजें थम चुकी थीं। वे अपने सिवा किसी और चीज से बेखबर थे।

वे एक-दूसरे का हाथ थामे हुए परिसर के प्रवेश द्वार पर बने पानी के कुंडों से होते हुए सड़क पर आ गए।

‘पिताजी चिंतित होंगे,’ लोतिबाई ने कहा, ‘वे सोचेंगे कि मुझे क्या हो गया है। मैं इतनी देर से कभी नहीं आई।’ तभी, और केवल तभी, उनके द्वारा किए गए कृत्य का पूरा महत्व और गंभीरता उनके दिमाग में उभर कर आई।

उसने भयभीत भाव से उसकी ओर देखा। लगभग विनती भरे लहजे में उसने पूछा, 'ओह झानी। झानी, हमने क्या कर दिया? हमने ऐसा क्यों किया?'

उस समय झानी भी अपने आप से ठीक यही सवाल पूछ रहा था।

लेकिन उसने उसे शांत करने की कोशिश में बहादुरी का परिचय दिया।

उसने उसके दाहिने हाथ की हथेली को अपने दोनों हाथों में लेकर, उसे आश्वस्त करने वाले और दिलासा देने वाले अंदाज में दबाया।

फिर उसने जवाब दिया, 'मुझे बहुत-बहुत खेद है, लोटी प्रिय। कृपया मुझे क्षमा कर दो। मुझे नहीं पता क्या हुआ, लेकिन मैं खुद पर काबू नहीं रख सका।'

‘सारा दोष खुद पर मत डालो, मेरी प्यारी झानी,’ उसने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया, ‘मेरी भी उतनी ही गलती थी’; और फिर बेमन से कहा, ‘ताली एक हाथ से नहीं बजती, तुम्हें पता है।’

वे कुछ कदम आगे बढ़े, दोनों अपने-अपने विचारों में खोए हुए थे।

तब लोतिबाई ने कुछ क्षमा याचना के भाव से पूछा, 'अब हम क्या करें?'

लेकिन झानी ने अपना हमेशा वाला उत्साह फिर से हासिल कर लिया था। उसने उसके सवाल पर हल्की सी हंसी दी।

‘कितनी बेवकूफी वाली बात है! आप क्या सोचते हैं? हम शादी तो जरूर करेंगे।’

लोटी उसकी बातों से रोमांचित हो गई और उसने उसकी बांह को कसकर अपनी छाती से लगा लिया।

झानी ने आगे कहा, 'आज रात तो ठीक नहीं रहेगा, लेकिन कल सुबह सबसे पहले मैं अपने पिताजी के साथ तुम्हारे घर आऊंगी और तुम्हारे पिताजी को बताऊंगी कि मैं तुमसे शादी करने जा रही हूं।'

लोटी बेहद खुश थी।

कुछ मिनट बाद वे उसके घर पहुंच गए।

लोटीबाई को इस बात की थोड़ी चिंता थी कि देर से लौटने पर उनके पिता कुमार का क्या हाल होगा। ड्राइंग रूम की दीवार पर लगी घड़ी में ठीक 8:20 बज रहे थे।

लेकिन किस्मत ने कम से कम उस रात के लिए प्रेमियों पर मेहरबानी करने का फैसला किया था। दरवाजा खोलने वाली नौकरानी ने उसे बताया कि उसके पिता तूफान शुरू होने से ठीक पहले फोन करने वाले एक दोस्त के साथ कार में बाहर गए थे और अभी तक घर नहीं लौटे थे।

पहली बाधा पार कर लेने पर कृतज्ञता की सांस लेते हुए, प्रेमी-प्रेमिकाओं ने नौकर के अंदर जाते ही एक-दूसरे को जल्दी से चूमा, और ज्ञानी अपने पिता को खुशखबरी देने के लिए घर जाने के लिए मुड़ गया।

बालाजी खुश थे; वे बेहद खुश थे।

वह बहुत खुश था क्योंकि बारिश ने न केवल उसकी बारह एकड़ जमीन को भरपूर पानी दिया था, बल्कि उसके आखिरी छोर पर खोदे गए छोटे तालाब को भी भर दिया था।

वह पानी उसके पास मौजूद लगभग सौ घरेलू बत्तखों के लिए वरदान साबित होगा। वे दिन भर उसमें तैरेंगी और रात में किनारे पर घास में अंडे देंगी।

और वह उन अंडों को बेच देता था।

अपने छोटे से घर के बरामदे में फर्श पर बैठे हुए, अपने पैरों को आड़ा मोड़कर अपने नीचे दबाकर, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और ख्यालों में खो गया।

उनसठ वर्ष की आयु में भी बालाजी को किसी भी प्रकार से बूढ़ा नहीं कहा जा सकता था। लंबे कद और सुगठित शरीर वाले बालाजी ने बचपन से ही एक स्वस्थ और सक्रिय जीवन व्यतीत किया था। उनके पिता की हैजा महामारी के दौरान अचानक मृत्यु हो गई थी और उन्होंने इस खेत की सारी जिम्मेदारी अकेले ही उन पर छोड़ दी थी। इसी स्वस्थ जीवन शैली ने उन्हें चुस्त-दुरुस्त, व्यस्त और खुश रखा था।

अचानक अपने दम पर सब कुछ संभालने के लिए मजबूर होने के बावजूद, उन्होंने उस दिन से ही साहसपूर्वक बोझ उठाया और जमीन पर कड़ी मेहनत की।

भाग्य के पहिये ने अक्सर उसके जीवन में विपत्तियाँ और मुसीबतें लांघी थीं। कभी-कभी उसके कुएँ का पानी सूख जाता था, कभी बारिश नहीं होती थी, या बेमौसम होती थी। कभी-कभी बहुत ज्यादा बारिश हो जाती थी। दो बार उसके खेत में कीटों का प्रकोप हुआ, जिससे उसकी आँखों के सामने ही फसल पकने से पहले ही नष्ट हो गई।

लेकिन उनके पिता ने उन्हें जो मजबूत, दृढ़ जबड़ा, भूरी-भूरी, स्पष्ट आंखें, हंसमुख, सौम्य चेहरा, आशावादी स्वभाव और हर चुनौती का सामना करने का अटूट दृढ़ संकल्प दिया था, वह व्यर्थ नहीं था। न केवल देखने में उनमें ये गुण दिखाई देते थे, बल्कि वे उनमें प्रचुर मात्रा में मौजूद थे।

कम उम्र में ही उन्होंने उस दुबली-पतली लड़की से शादी कर ली, जिसे उनके पिता ने उनके लिए चुना था, लेकिन वे उनकी शादी देखने के लिए जीवित नहीं रहे। वह एक किसान की बेटी थी, और इसलिए भारत में खेती करने वालों के कठिन जीवन में पूरी तरह ढल गई थी। उसने खुद को एक आदर्श जीवनसाथी, साथी और पत्नी साबित किया, जिसकी कोई भी पुरुष कामना कर सकता है।

मुसीबत और विपत्ति के समय में वह उसे दिलासा देती, सांत्वना देती और प्रोत्साहित करती थी। वहीं, जब सब कुछ ठीक चल रहा होता था, तो वह ज़मीन पर की गई उसकी मेहनत की प्रशंसा करती और बुरे समय के लिए कुछ बचाकर रखती थी।

झानी उनका इकलौता बच्चा था, और उन्होंने उसे गांव के सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया था।

लगभग चार साल पहले, एक रात, भाग्य ने बूढ़े बालाजी पर सबसे क्रूर प्रहार किया था, और संयोग से यह पहला और एकमात्र प्रहार था जिसके आगे वह लगभग हार मान चुके थे।

उनकी पत्नी मीराबाई शौच के लिए घर से बाहर गई थीं और नंगे पैर से एक कोबरा पर चढ़ गईं। कोबरा ने तुरंत उन्हें काट लिया।

उन दिनों आस-पास कोई ऐसा डॉक्टर नहीं था जो एंटीसीरम उपचार का महत्व जानता हो। न ही कोई एंटी-वेनिन सीरम उपलब्ध था।

यह घटना आधी रात के अंधेरे में घटी थी।

उसने गांव के जादूगर को बुलाया, जिसे 'मंत्रम-मैन' कहा जाता था, जिसने एक

तांत्रिक की शक्तियों का दावा किया और बालाजी को आश्वासन दिया कि वह जल्द ही रोगी को ठीक कर सकता है और करेगा।

जादूगर ने बालाजी की एक मुर्गी को पकड़ा, उसके गुदा के आसपास के पंख नोच लिए और उन पंखों को बारी-बारी से बालाजी के टखने के पास कोबरा द्वारा बनाए गए दो दांतों के निशानों पर लगा दिया।

उन्होंने दावा किया कि इस उपचार से विष बाहर निकल जाएगा।

फिर उसने कहा कि उसने देखा कि साँप के जहर के कारण मुर्गे का सिर काला पड़ रहा था। उसने मुर्गे का गला काट दिया। उसने कहा कि मुर्गे की बलि देने से देवता उस स्त्री को बचा लेंगे।

वह मंत्रों का जाप कर रहा था।

उसने सफेद पाउडर में आग लगा दी, जो तेज लपटों के साथ भड़क उठा। उसका मकसद बुरी आत्माओं को डराना था।

लेकिन फिर भी उनकी पत्नी मीराबाई का निधन हो चुका था।

उस समय बालाजी ने खेत में, अपने बेटे में, खुद में और जीवन में भी कुछ महीनों के लिए रुचि खो दी थी। उन्होंने अपने ही कुएं में कूदकर आत्महत्या करने का विचार किया था।

लेकिन उनके प्रभुत्वशाली स्वभाव ने एक बार फिर अपना प्रभाव दिखाया। उन्होंने जीत हासिल की, अपनी निराशा पर काबू पाया और संघर्ष जारी रखा।

अब हालात थोड़े आसान हो गए थे। उनका बेटा ज्ञानी बड़ा हो गया था और हर दिन खेत में उनकी मदद करता था। बालाजी इस बात से खुश थे कि लड़के ने स्वेच्छा से खेती-बाड़ी को अपना लिया था। आजकल उसकी उम्र के कई लड़के खेती से कतराते थे। वे बड़े शहरों में जाकर किसी औद्योगिक प्रतिष्ठान में काम करने के लिए बेताब रहते थे।

उन्होंने कहा था कि इससे अधिक धन आता है। बालाजी को यह बात भली-भांति पता थी कि इससे अधिक आराम मिलता है—और उस आराम के साथ-साथ अधिक मुसीबतें और बुरी आदतें भी आती हैं। लेकिन उनके ज्ञानी ने ये सब नहीं किया था। इसके विपरीत, उन्होंने भूमि पर जीवन जीने के लिए खुद को बहुत अच्छे से ढाल लिया था।

बालाजी को ज्ञानी पर बहुत गर्व था। वे उसे बहुत सम्मान देते थे।

बूढ़ा व्यक्ति अपने विचारों में खोया रहा, अपनी सोच को एकाग्र करने और उन्हें भटकने से रोकने के लिए उसने अपनी आँखें कसकर बंद कर रखी थीं।

झानी अब उन्नीस साल का हो चुका था। अब उसकी शादी का समय आ गया था। बालाजी को खुद ही उस लड़के के लिए एक उपयुक्त पत्नी ढूंढनी होगी।

और, भगवान की कसम, उसे सचमुच उसकी झानी के योग्य होना पड़ेगा।

पहली बात तो यह है कि उसे अपने साथ दहेज में भारी मात्रा में धन और आभूषण लाने होंगे। धन का उपयोग खेत के पुनर्निर्माण और एक और कुआँ खोदने के लिए किया जाएगा।

दूसरी शर्त यह थी कि वह खुद भी एक किसान की बेटी हो, ठीक वैसे ही जैसे उसकी प्रिय मीराबाई थी। तभी वह यह सुनिश्चित कर सकता था कि लड़की मेहनत-मजदूरी भरे इस जीवन में ढल सकेगी। वह झानी की शादी किसी शहरी लड़की से, किसी निकम्मे, रईसजादे की बेटी से नहीं होने देगा।

बालाजी इस बात को भलीभांति जानती थी कि जब किसी शहरी लड़की को जमीन पर कड़ी शारीरिक मेहनत का सामना करना पड़ता है तो उसकी कोई उपयोगिता नहीं रह जाती।

बाहर कीचड़ और पानी में अचानक कदमों की आहट सुनाई दी, और अंधेरे में से एक हंसमुख आवाज आई, 'हेलो पापा; क्या आप सो रहे हैं?'

बालाजी ने अपनी आँखें खोलीं। उनके चेहरे पर गर्व की हल्की सी मुस्कान थी।

क्योंकि वह आवाज झानी की थी।

कुछ ही देर बाद उनका बेटा एक ही छलांग में उनके बरामदे की ओर जाने वाली तीनों सीढ़ियाँ चढ़कर उनके सामने आकर खुशी से मुस्कुराते हुए रुक गया।

बालाजी को लगा कि उनका बेटा बारिश की वजह से खुश है।

उन्होंने कहा, 'बहुत अच्छी बारिश, एह, झानी?'

जिस पर झानी ने सहज भाव से जवाब दिया, 'बारिश की परवाह मत करो; मेरे पास तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छी खबर है।'

बालाजी ने स्पष्ट रूप से भौंहें चढ़ाईं।

‘बारिश भाड़ में जाए!’ उसने हैरानी से कहा। ‘अरे वाह, यह मूसलाधार बारिश तो आज की सबसे अच्छी बात हो गई है।’

‘बिल्कुल नहीं,’ झानी ने तुरंत जवाब दिया, ‘मेरे पास तुम्हारे लिए इससे भी

बेहतर और कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण खबर है। मेरी शादी होने वाली है।'

'शादीशुदा कह रहे हो?' बालाजी ने अविश्वास से पूछा। और फिर खुलेआम संदेह जताते हुए, 'शादीशुदा?'

'हां,' झानी ने उल्लास से कहा, 'दुनिया की सबसे प्यारी और बेहतरीन लड़की, लोटीबाई को।'

फिर झानी ने उत्साह से बोलना जारी रखा, और इससे पहले कि उसके पिता कुछ कह पाते, उसने कहा, 'क्या आप जानते हैं, पिताजी, आज एक अद्भुत घटना घटी? मैं हमेशा से इस लड़की से प्यार करता था, लेकिन मुझे खुद आज रात तक इसका एहसास नहीं था।'

बारिश शुरू हो गई और हमने पुराने मूसाफरखाने में शरण ली। फिर अचानक, मुझे—मुझे—; खैर, मुझे एहसास हुआ कि मैं उससे प्यार करता हूँ, और जल्द ही उससे शादी करने वाला हूँ।

उसके पिता ने अपने पैरों को सीधा करते हुए और धीरे-धीरे उठते हुए कहा, 'यह तो काफी असामान्य है, आखिर किस बात ने तुम्हें इतनी अचानक खोज करने के लिए प्रेरित किया?'

झानी का चेहरा भूरे रंग के नीचे शर्म से लाल हो गया। भला वो अपने पिता को ये सब कैसे बता पाता।

'मैं—मैं खुद भी नहीं जानती, पिताजी। देखिए, जैसा कि मैंने कहा, हम पार्क में बातें कर रहे थे कि अचानक बारिश शुरू हो गई। हम पुराने मूसाफरखाने में भागे, क्योंकि वही सबसे नज़दीकी इमारत थी। हम वहीं रुके रहे जब तक कि तूफान थम नहीं गया। इस बीच, हम बस—बातें कर रहे थे। लोतिबाई और मैंने एक-दूसरे से जो बातें कीं, उनसे हमें पता चला कि हम एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं और शादी करना चाहते हैं।'

"कल आप मेरे साथ आइए, पिताजी, ताकि हम बूढ़े कुमार से लोटी से शादी करने की अनुमति मांग सकें। यह तो बस एक औपचारिक अनुरोध होगा, क्योंकि वे मान ही जाएंगे। लेकिन हम चाहते हैं कि हमारे दोनों पिता मिलें और हमें अपना आशीर्वाद दें।"

'मैं समझ गया,' बालाजी ने सोच-विचार करते हुए कहा, 'मेरे समय में कोई लड़का और लड़की किसी सुनसान इमारत में तूफान से बचने के लिए शरण लेते

समय अचानक शादी करने का फैसला नहीं करते थे।’

उसने ऊपर की ओर देखा। झानी को लगा कि उसके पिता के होंठों के कोनों पर एक रहस्यमयी मुस्कान है। क्या बूढ़े व्यक्ति को पता चल गया था कि वास्तव में क्या हुआ था?

'उनके माता-पिता ने उनके मिलने से पहले ही उनकी शादी तय कर दी थी,' बालाजी ने आगे कहा।

फिर भी, मैं यह समझता हूँ कि समय बदल रहा है। न ही मैं कट्टरपंथी या संकीर्ण मानसिकता वाला हूँ। मुझे आपके अपने जीवनसाथी को चुनने पर कोई आपत्ति नहीं है।

लेकिन अहम सवाल, झानी, बस यही है। मैं जानता हूं कि लोटीबाई एक खूबसूरत लड़की है, एक अच्छी लड़की है, और एक सभ्य और सम्मानित लड़की है।

मुझे यह भी पता है कि उससे आपकी शादी से आपको काफी दहेज मिलेगा। उसके पिता, वह व्यापारी-ठेकेदार कुमार, बहुत धनी व्यक्ति हैं। मैं तो दहेज के लिए बहुत सख्ती से सौदेबाजी करूंगा, आप इस बात का पूरा यकीन रख सकते हैं।

लेकिन मेरे बेटे, सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है।

क्या लोटीबाई तुम्हारे जैसे किसान-पुत्र के लिए एक अच्छी पत्नी साबित होगी? क्या वह शहर में पली-बढ़ी लड़की नहीं है; अमीर, आलसी, उदासीन और शायद बेवफा भी? क्या वह अपने पति के साथ कठिन जीवन को सह पाएगी?

‘आपकी प्रिय माताजी, जिनकी स्मृति सदा बनी रहे, ने भी मेरे साथ यह सब सहा।’ फिर उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, ‘ईश्वर उनकी आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें।’

झानी अपने पिता की बातें बढ़ती बेचैनी के साथ सुन रहा था। उसे बूढ़े बालाजी के लिए ऐसे विचार रखना हास्यास्पद, बल्कि अपवित्र प्रतीत हो रहा था।

‘अरे पिताजी, इतनी नासमझी और दकियानूसी बातें मत कीजिए,’ वह चिढ़कर चिल्लाया, ‘मैं लोतिबाई को सालों से जानता हूँ। पहली बात तो यह है कि वह एक सीधी-सादी, भली-भांति लड़की है, जिसमें ज़रा भी दिखावा नहीं है। क्या हम सिर्फ इसलिए उसमें कोई खामी ढूंढने वाले हैं क्योंकि उसके पिता बहुत अमीर आदमी हैं?’

“इसके अलावा, हम एक-दूसरे से इतना गहरा प्यार करते हैं कि हममें से कोई भी कभी बेवफा होने के बारे में सोच भी नहीं सकता।” उसने ये शब्द निर्णायक स्वर

में कहे, मानो इस विषय पर आखिरी बात कह दी गई हो।

उसके बाद उन्होंने लगभग खामोशी से, अपने-अपने विचारों में मग्न होकर, बालाजी द्वारा तैयार की गई सब्जी की करी और चपातियाँ खाकर अपना शाम का भोजन किया।

बूढ़ा आदमी मन ही मन सोच रहा था: क्या यह बेहतर के लिए होगा या बदतर के लिए?

माँ के गुज़र जाने के बाद हम दोनों ने खेत का काम पिता-पुत्र से ज़्यादा दोस्तों की तरह संभाला। हमारे बीच पूरी समझदारी थी और कभी कोई मनमुटाव नहीं हुआ। झानी खेत में काम करता था और मैं घर के काम-काज संभालती थी। कभी-कभी हम काम बदल लेते थे; वह खाना बनाता था और मैं खेत में इधर-उधर घूमती रहती थी। दोनों ही स्थितियों में, हम दोनों को काम करने और काम खत्म होने के बाद बातचीत करने का समय ज़रूर मिल जाता था।

अब ये औरत आ रही है। ये दिन-रात उसका सारा समय और ध्यान अपनी ओर खींच लेगी। मुझे अकेले ही खेत का सारा काम संभालना पड़ेगा—और मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। इस उम्र में ये मेरे लिए बहुत बड़ा बोझ हो सकता है। काम बहुत मुश्किल साबित हो सकता है।

अगर मैं अपने बेटे को उससे दूर बुला लूँ, तो इस औरत को अच्छा नहीं लगेगा। वह उसके कान में मीठी-मीठी बातें फुसफुसाएगी और वह झटपट उसकी बाहों में लौट आएगा।

इससे भी बुरी बात यह है कि यह लोटिबाई उन 'उच्च वर्ग' के लोगों में से एक की संतान है - उन घृणित धनी लोगों की - जो हमारी तरह कभी पसीना बहाकर मेहनत नहीं करते, लेकिन फिर भी उनके पास पैसा ऐसे ही आ जाता है - मानो चुंबक से आकर्षित हो रहा हो।

क्या वह उनके झानी के लिए एक अच्छी पत्नी साबित होगी? क्या वह अपने पिता के महल में कुर्सियों पर बैठने की बजाय अपने छोटे से घर के फर्श पर बैठने की आदत डाल पाएगी? क्या वह ज़मीन पर सोएगी, या उसे अपना पलंग चाहिए होगा, जिस पर शायद रेशमी सूती कपड़े का गद्दा लगा होगा, जो पास के जंगल में उगने वाले रेशमी सूती पेड़ों की फलियों से इकट्ठा किया गया होगा? सबसे बढ़कर, क्या वह अपनी खूबसूरत साड़ियों और सलीके से सजे नाखूनों को रसोई में काम करते हुए या

फर्श पर बैठकर करी पीसने में गंदा कर देगी, जबकि भारत में गरीबों की रसोई में आमतौर पर ऐसे ही पत्थर और लंबे अंडाकार पत्थर के रोलर का इस्तेमाल होता है?

क्या वह ये सब काम करेगी?

बालाजी को इस बात पर संदेह था; और मन ही मन वह लोटीबाई के आगमन से, या यूं कहें कि अपने बेटे के लिए किसी भी महिला के पत्नी के रूप में घर में आने से नाराज़ थे।

लेकिन तभी उनके मन में एक और विचार आया। उनकी स्मृति में, विस्मृति के धुंध से ढकी हुई नहीं, बल्कि इतनी स्पष्ट रूप से जैसे वह ठीक उसी क्षण उनके सामने खड़ी हो, एक स्त्री का चेहरा उभरा; दुबली-पतली काया वाली, लेकिन चमकदार, स्पष्ट और ईमानदार भूरी आँखों वाली; एक छोटा सा, गुलाब की कली जैसा मुँह, उसके ऊपर उतनी ही छोटी नाक और एक मनमोहक गोल ठुड्डी जिसमें एक डिंपल था।

यह चेहरा उनकी प्रिय मीराबाई का था, ठीक वैसा ही जैसा वह उस दिन थीं जब उन्होंने उनसे शादी की थी।

उनकी बूढ़ी आँखों में आँसू भर आए और वे यादों के सैलाब में बह गए। बीते दिनों की मीठी यादें; वो बीते दिन जो उनके लिए बहुत प्यारे, बहुत कोमल थे; वो दिन जो हमेशा के लिए चले गए; जो कभी वापस नहीं आ सकते थे; लेकिन फिर भी ऐसी यादें लिए हुए थे मानो कल की ही हों; अनमोल पल जिन्हें उन्होंने फिर से जिया, संजोया और अपने जीवन के अंत तक अपने दिल में गहराई से छिपाकर रखा, जब तक कि वे फिर से अपनी प्रियतमा के साथ नहीं मिल गए; इस बार फिर से मिलन, कभी न बिछड़ने का मिलन।

बूढ़े बालाजी को उन दिनों की याद आ गई।

उन्हें याद था कि मीराबाई ने खेत में उनके काम में बाधा डालने के बजाय, वास्तव में अपने हाथों से खेत जोतने, बीज बोने और फसल काटने में उनकी मदद की थी। उन्होंने उनके हर काम में उन्हें प्रेरित किया था।

और उन्हें गर्मियों के आगमन पर अपनी सीमाओं के भीतर और आसपास के लगभग हर पेड़ और झाड़ी में बने पक्षियों के घोंसले भी याद थे। मादाएं अंडे सेती थीं जबकि नर अपनी मादाओं को भोजन कराते थे। जब बच्चे अंडों से बाहर आ जाते थे, तो माता-पिता दोनों मिलकर उस छोटे परिवार को भोजन कराते थे।

कई साल पहले, एक दिन दो बुलबुल कितनी दुखी थीं, जब एक बाज ने उनके

घोंसले पर हमला किया और उनके बच्चों को खा गया। उन्होंने मदद के लिए चीख-पुकार मचाई, लेकिन कोई नहीं आया। उनकी चीखें उनके आखिरी बच्चे के रोने की आवाज़ में घुलमिल गईं, जिसे बाज के क्रूर पंजों में जकड़ लिया गया था। वह घटना जीवन और अचानक मृत्यु की याद दिलाती थी।

उन्हें याद आया कि मीराबाई ने वे आवाजें सुनी थीं। उन्होंने वह छोटी सी त्रासदी अपनी आँखों से देखी थी। बहुत देर हो चुकी थी, जब वह शिकारी बाज को भगाने के प्रयास में घर से बाहर भागी थीं। फिर वह फूट-फूटकर रोई थीं।

यहां तक कि जिन कौवों से नफरत की जाती थी, उन्होंने भी घोंसला बनाने के समय अपने बच्चों और एक-दूसरे के प्रति प्रेम दिखाया।

तब बालाजी को यह अहसास हुआ कि यही जीवन का नियम है—सृष्टि का नियम। नर और मादा मिलते हैं; एक-दूसरे से प्रेम करते हैं; अपनी प्रजाति को जन्म देते हैं; और स्वयं मर जाते हैं। यह सृष्टि की शुरुआत से होता आ रहा है। और यह तब तक चलता रहेगा जब तक सृष्टि का अंत नहीं हो जाता।

बालाजी, वह मूर्ख, स्वार्थी बूढ़ा आदमी, भला किसे होता है अपने बेटे के लिए जीवनसाथी ढूंढने पर आपत्ति करने का? क्या वह खुद मीराबाई के प्यार में नहीं डूबा था?

जब झानी नहीं देख रही थी, तब बालाजी ने नाक पोंछी, अपने टेढ़े-मेढ़े दाहिने हाथ के पिछले हिस्से से अपनी आंखों के कोने को चालाकी से पोंछा और लगभग खुशी-खुशी अपनी करी और चपाती चबाने लगे।

अब उसने मन बना लिया था। वह निश्चित रूप से झानी की शादी उसकी पसंद की लड़की से करवाने में हर संभव मदद करेगा। बाकी सब भगवान के हाथ में था।

उस रात पिता और पुत्र देर रात तक जागते रहे, उनके बिस्तर उनके छोटे से बैठक कक्ष के फर्श पर बिछे हुए थे।

उस शाम आए तूफान के बाद जमीन के हर गड्ढे और खोखले हिस्से में पानी भर गया था, जिससे मेंढकों की कर्कश टर्राहट सुनाई दे रही थी।

यह एक असहनीय शोर था। मेंढकों की अलग-अलग आवाज़ें इतनी तेज़ हो गईं कि वे सैकड़ों चिपचिपे जीवों द्वारा गाए जा रहे सामूहिक स्वर से भी ऊपर सुनाई दे रही थीं। ये जीव पानी के किनारे कीचड़ में आधे धंसे हुए अपने छोटे-छोटे पिछले पैरों पर बैठे थे। आवाज़ धीरे-धीरे बढ़ती गई, फिर धीमी हुई और फिर तेज़ हो गई।

वे नन्हे-मुन्ने प्राणी अपने सृष्टिकर्ता को वर्षा और उसके साथ बरसने वाले जल के लिए धन्यवाद दे रहे थे, जिसमें वे इतने आनंद से समय बिता रहे थे।

बालाजी भी सोते समय कृतज्ञता व्यक्त कर रहे थे।

लेकिन झानी को नींद नहीं आ रही थी। उसे न तो मेंढकों की आवाज़ सुनाई दे रही थी और न ही बारिश की।

उसके मन में बस लोटी का खूबसूरत चेहरा ही गूंज रहा था, जो मूसाफरखाना के पुराने कमरे के अंधेरे में लगभग अदृश्य था; उसके पानी से भीगे बाल; उसके होठों के उसके होठों से लिपटते हुए उसके चुंबनों का जुनून; उसके स्तनों का सुडौल, रसीला उभार जो उसके उत्सुक, खोजपूर्ण और मांग भरे हाथों के दबाव में थे; उसके उभरे हुए निप्पल्स की कसी हुई स्थिति; और कामुक जुनून में हर चरम सुख प्राप्त करते हुए उसने उसके होठों, कानों और गालों पर जो छोटे-छोटे निशान छोड़े थे।

अगली सुबह नौ बजे झानी और उसके पिता कुमार के आलीशान घर के द्वार पर पहुँचे। आसमान बिल्कुल साफ था और सूरज खूब चमक रहा था। बारिश में भीगने के बाद पेड़ों के पत्ते हरे-भरे और ताज़े लग रहे थे। धरती से भी मनमोहक खुशबू आ रही थी और ऐसा लग रहा था मानो आने वाले समय में नई-नई हरियाली की उम्मीद जग रही हो।

बालाजी में जन्मजात किसान की प्रवृत्ति ने उसे बताया कि ऐसा साफ आसमान और तेज धूप अगली रात फिर से भारी बारिश लाएगी। यह सोचकर वह प्रसन्न हुआ।

फूलों की क्यारियों में खुदाई करने में व्यस्त माली ने उन्हें देखा, फाटक खोला और पूछा कि वे किसे बुलाना चाहते हैं।

लोटी ने भी उन्हें देखा; अपने पिता के घर की सामने वाली खिड़कियों की लोहे की सलाखों और कांच के शीशों के माध्यम से, जो हमेशा बंद रहती थीं - चोरों के आने के डर से बंद रहती थीं।

झानी की तरह, वह भी पिछली रात देर तक जागती रही, उस प्यार में डूबी हुई थी जिसे उसने अचानक खोज लिया था, लेकिन अब जानती थी कि वह हमेशा से उसके लिए उस प्यार को अपने दिल में रखती थी, उस दिन से, जब झानी ने स्कूल जाने से पहले उसके बाल खींचे थे और उसने उस पर छुपकर हमला नहीं किया था।

रात भर वह बार-बार उन जोशीले पलों को याद करती रही जो उन्होंने पिछली शाम एक साथ बिताए थे, तूफान की भयावहता और पुराने मूसाफरखाने की गिरती छत से उत्पन्न खतरे से बेखबर।

झानी और उसके पिता के लिए सामने का दरवाजा खोलते हुए और उन्हें बैठक कक्ष में आने का इशारा करते हुए, उसकी आँखों में स्वागत, प्रेम और वासना की चमक थी।

‘पिताजी, ये लोटी है, जिसके बारे में मैं आपको बताता आ रहा हूँ। दुनिया की सबसे प्यारी लड़की जिससे मैं शादी करने जा रहा हूँ।’ झानी ने अपने पिता से सरल शब्दों में बात की, लेकिन उसकी निगाहें केवल अपनी प्रेमिका पर टिकी थीं।

(लड़के और लड़की, या पति-पत्नी का सार्वजनिक रूप से या बड़ों के सामने, यहां तक कि अपने माता-पिता के सामने भी, एक-दूसरे को गले लगाना और चूमना बेहद अशोभनीय माना जाता है और भारतीय रीति-रिवाजों के खिलाफ है।)

बुजुर्ग व्यक्ति ने सिर झुकाकर और चौड़ी मुस्कान के साथ परिचय का अभिवादन किया। लोटी ने भी विनम्रतापूर्वक दोनों हाथों को जोड़कर, हथेलियों को अपने चेहरे के सामने रखकर, वैसा ही अभिवादन किया।

फिर उसने कहा, 'कृपया बैठ जाइए; मैं अपने पिता को बुलाती हूँ।'

झानी के लिए एक क्षणिक मुस्कान और उस पर एक मोहक नज़र डालते हुए, उसने अगले कमरे की ओर जाने वाले दरवाजे के प्रवेश द्वार पर लटके हुए रेशमी पर्दे को एक तरफ खींचा और दृष्टि से ओझल हो गई।

झानी ने अपने पिता को एक कुर्सी की ओर इशारा किया और खुद दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।

बालाजी बहुत धीरे और सावधानी से उस कुर्सी के किनारे पर बैठ गए, जिसकी ओर झानी ने उन्हें इशारा किया था, मानो उन्हें डर हो कि उस पर बैठना अपवित्र कार्य है, या उनके वजन से वह कुर्सी टूट सकती है।

यह बात स्पष्ट थी कि बुजुर्ग बालाजी को कुर्सियों पर बैठने की बिल्कुल आदत नहीं थी।

वह भी स्पष्ट रूप से घबराया हुआ था। वह बेचैनी से इधर-उधर हिल रहा था और बारी-बारी से कमरे के दूसरी तरफ टंगी बड़ी जापानी दीवार घड़ी और उस दरवाजे की ओर देख रहा था जिससे लड़की अभी-अभी गुजरी थी।

जिस कमरे में वे बैठे थे, वह एक भव्य कमरा था, जिसकी छत लकड़ी के पैनलों से बनी थी, जो लगभग एक शताब्दी पहले भारत में प्रचलित वास्तुकला शैली की झलक देती थी। बाहरी रूप से देखने पर तो घर का शेष भाग नवीनीकृत और आधुनिक बना दिया गया था। लेकिन किसी कारणवश, इस कमरे को फर्श को छोड़कर, जिसे पॉलिश की हुई सफेद टाइलों से बदल दिया गया था, वैसे ही रहने दिया गया था।

कमरे के एक छोर पर हरे मखमल से ढका एक सोफा था; उसके बगल में हरे रंग का एक सोफा और दो गद्देदार कुर्सियाँ थीं। बीच में सिंगापुर के बेंत से बनी और हरे रंग से रंगी तीन आरामदायक आर्मचेयर थीं। झानी इनमें से एक पर बैठी थी और बालाजी दूसरी पर।

कमरे के बीचोंबीच पीतल के शीर्ष और महोगनी की लकड़ी से बनी एक बेहद अलंकृत मेज रखी थी, जो त्रावणकोर से मंगाई गई थी। मेज पर पीतल का एक फूलदान था जिसमें बगीचे से तोड़े गए रंग-बिरंगे ज़ेनिया के फूल भरे हुए थे। ब्रोकेड के पर्दे के पास कोने में एक रेडियो रखा था, जो कार की बैटरी से चलता था।

लगभग दस मिनट बीत गए, फिर उन्हें पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। अचानक पर्दा हटा और कुमार कमरे में दाखिल हुए। लोटीबाई चुपचाप उनके पीछे-पीछे आईं।

अपनी बेटी की तरह मध्यम कद के कुमार ने अपनी उम्र (जो कि अड़तालीस वर्ष थी) को बखूबी संभाला था। उनकी चाल दृढ़ और फुर्तीली थी, उनका शरीर पतला लेकिन सुगठित था, उनके कंधे उनके कसे हुए काले रेशमी कोट के नीचे बिल्कुल सीधे थे, जिसमें घुटने से लेकर गर्दन तक बटनों की एक साफ-सुथरी कतार लगी हुई थी।

उसके सिर पर करीने से कंघी किए हुए काले बाल थे, जो बीच से बँटे हुए थे और कनपटी के पास हल्के भूरे रंग के थे। उसकी तीखी भौहें उठी हुई थीं, जो उसकी तीक्ष्ण भूरी आँखों के ऊपर थोड़ी प्रश्नवाचक लग रही थीं। उसकी नुकीली नाक; पतले, थोड़े कसे हुए होंठ; और दृढ़ ठुड्डी ने उसके साफ़-सुथरे चेहरे को एक संक्षिप्त, व्यावसायिक भाव दिया था।

उसके चमकदार पॉलिश किए हुए भूरे जूते, उसके घुटनों के ऊपर उभरे हुए, कसकर फिट होने वाले सफेद सूती जॉधपुर्स के नीचे से स्पष्ट रूप से चरमरा रहे थे।

लोटीबाई आगे बढ़ीं और अपनी मधुर आवाज में बोलीं, 'पिताजी, ये झानी के

पिता, श्री बालाजी हैं; और हां, झानी भी।’ फिर बालाजी और झानी से उन्होंने औपचारिक रूप से कहा, ‘कृपया मेरे पिता, श्री कुमार से मिलिए।’

बालाजी और झानी अपने-अपने स्थानों से उठे, हथेलियों को चेहरे के सामने जोड़कर थोड़ा झुककर सम्मान व्यक्त किया। कुमार ने उनके अभिवादन का जवाब देते हुए अपने दाहिने हाथ से उनकी कुर्सियों की ओर इशारा किया।

‘कृपया बैठ जाइए और आराम से रहिए,’ उन्होंने विनम्रता से कहा। फिर झानी से कहा, ‘तुम्हें तो मैं जानता ही हूँ, नौजवान, क्योंकि तुम मेरी बेटी के स्कूल के दोस्त हो। वो अक्सर तुम्हारे बारे में बात करती है, और बताती है कि तुम दोनों हर शाम बाजार में मिलते हो और बातें करते हो। क्या तुम कभी थकते नहीं?’

उन्होंने हल्की सी मुस्कान बिखेरी और लगभग उसी क्षण बालाजी से बात की।

श्री बालाजी, आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। सचमुच बहुत खुशी हुई।

‘क्या आप दोनों एक कप चाय पीना चाहेंगे?’

पिता और पुत्र निमंत्रण स्वीकार करने में हिचकिचा रहे थे। वे समाज के तौर-तरीकों से अपरिचित थे, क्योंकि वे केवल किसान थे।

कुमार ने एक नज़र में स्थिति का जायज़ा लिया। अपनी बेटी की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा, 'लोटीबाई, क्या तुम हमारे और अपने लिए वो स्वादिष्ट चाय के चार कप बना दोगी जो सिर्फ तुम ही बना सकती हो?'

जब वह कमरे से बाहर निकली तो वह उसे देखकर स्नेह और गर्व से मुस्कुरा रहा था।

इसके बाद उन तीनों के बीच कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। कुमार ने उम्मीद भरी निगाहों से अपने मेहमानों की ओर देखा। स्पष्ट था कि वे उनसे कुछ कहने या पूछने आए थे। वरना वे उनके घर कभी नहीं आते। शायद वे कर्ज मांगने आए थे।

झानी ने अपने पिता की ओर देखा। स्पष्ट रूप से, एक अभिभावक के रूप में बालाजी का यह कर्तव्य था कि वे उन्हें बुलाने का उद्देश्य बताएं।

बालाजी सुबह से ही और कुमार के घर जाते समय पूरे रास्ते इस बात की तैयारी कर रहे थे कि वे क्या कहेंगे। लेकिन अब वे अवाक रह गए थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कैसे करें।

पिता और पुत्र के बीच हो रही नज़रों के आदान-प्रदान को देखकर कुमार ने दबे स्वर में खांसा। फिर, तनाव कम करने और बातचीत शुरू करने में मदद करने के लिए,

उन्होंने विनम्रतापूर्वक पूछा, 'सज्जनों, इस मुलाकात से मुझे जो सुख मिला है, उसका क्या कारण है?'

बालाजी घबराए हुए लग रहे थे। कुमार और उनका बेटा दोनों ही उम्मीद भरी निगाहों से उनकी ओर देख रहे थे। उन्हें कुछ कहना ही पड़ेगा।

तो उन्होंने कहा, 'मैं—मतलब हम—आपसे पूछने—या यूँ कहें कि आपको बताने—आए थे,' और फिर वे चुप हो गए। कुछ सेकंड बाद उन्होंने क्षमा मांगते हुए पूछा, 'आशा है कि हम आपको परेशान नहीं कर रहे हैं या आपके किसी काम में बाधा नहीं डाल रहे हैं?'

कुमार ने धैर्यपूर्वक मुस्कुराया। वह जानता था कि बूढ़ा आदमी कुछ महत्वपूर्ण कहना चाहता है, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कैसे करे। चलो, उसे अपना समय लेने दो। अजीब बात यह थी कि वह इस समय व्यस्त नहीं था और इन दोनों देहाती लोगों को, जो उसके सामने इतने असहज बैठे थे, कुछ मिनट का समय दे सकता था ताकि वे सहज हो जाएं और अपने मन की बात कहने का साहस जुटा सकें।

लेकिन जब बूढ़े बालाजी ने आखिरकार यात्रा का उद्देश्य बता ही दिया, तो कुमार को अपने जीवन का सबसे बड़ा झटका लगा।

देश और धरती पर रहने वाले सभी लोगों की खासियत मानी जाने वाली सीधी-सादी बातचीत की शैली में, बालाजी ने धीरे-धीरे और स्पष्ट रूप से कहा...

'मेरा बेटा झानी आपकी बेटी से शादी करना चाहता है और मैं आपसे शादी की शर्तों पर बातचीत करने आया हूं।'

कुमार झटके से कुर्सी पर सीधा बैठ गया। उसके चेहरे और आवाज में गहरी हैरानी थी, और उसने अविश्वास से पूछा, 'आपने क्या कहा? फिर से कहिए?'

बालाजी थोड़े परेशान लग रहे थे। शायद उन्होंने इतनी जोर से नहीं बोला था कि वह आदमी सुन सके।

इसलिए उन्होंने वही बात दोहराई जो उन्होंने अभी कही थी, और इस बार गंभीर स्वर में कहा, 'मेरा बेटा आपकी बेटी से शादी करना चाहता है। मैं शर्तों पर बातचीत करने और व्यवस्था करने आया हूं।'

कुमार पूरी तरह से चौंक गया। उसने पिता और पुत्र की ओर देखा। झानी के स्पष्टवादी चेहरे में उसे अपने पिता के कथन की पुष्टि दिखाई दी।

जैसे स्वयं से बात कर रहे हों, कुमार ने सपाट स्वर में, चिंतन करते हुए दोहराया, 'आप शर्तों पर बातचीत करने और व्यवस्था करने आए हैं।'

और मानो उनसे यही सवाल पूछा गया हो, बालाजी ने तुरंत जवाब दिया, 'बिल्कुल सही। हम इसी के लिए तो आए हैं।'

कुमार ने बारी-बारी से उन सभी को देखा, उसका चेहरा गुस्से से भर गया। क्या वे सचमुच पागल थे? क्या वे उसका मज़ाक उड़ाने की कोशिश कर रहे थे?

शायद वे मूर्ख सचमुच गंभीर थे।

वह कुछ सेकंड के लिए और हिचकिचाया। फिर उसने अपना फैसला कर लिया।

चाहे वे पागल हों, मजाक कर रहे हों या गंभीर हों, जितनी जल्दी वह इन देहाती लोगों को सही राह दिखा दे और उनके सामने अपनी बात स्पष्ट कर दे, उतना ही बेहतर होगा।

कुमार अपनी कुर्सी पर आगे झुके और स्पष्ट और सोच-समझकर बोलने लगे। “अगर आप सचमुच वही पूछ रहे हैं जो आप कहना चाहते हैं और यह कोई मज़ाक नहीं है, तो इसका जवाब स्पष्ट रूप से “नहीं” है।”

अब पिता और पुत्र की बारी थी आश्चर्य व्यक्त करने की। इससे पहले कि वे संभल पाते, कुमार ने अत्यंत स्पष्टवादिता के साथ बोलना जारी रखा।

‘पहली बात तो यह है कि देखने में ही यह विचार बेतुका लगता है। मेरी बेटी एक सम्मानित परिवार से आती है—अगर आप समझ रहे हैं तो सभ्य परिवार से—वह एक महिला है। आपका बेटा और आप तो बस—ठीक है, बस किसान हैं।’

दूसरी बात, मेरी बेटी विलासितापूर्ण जीवन जीने की आदी है। वह खुद कोई काम नहीं करती। नौकर-चाकर ही सारा काम संभालते हैं। अगर उसकी शादी उसके दर्जे से नीचे के किसी गरीब किसान परिवार में हो जाए, तो उसे पूरी जिंदगी मेहनत करनी पड़ेगी। वह इस तरह के जीवन के लिए पैदा नहीं हुई है।

'तीसरा, मेरे मन में उसके लिए उच्च आदर्श और बड़ी योजनाएँ हैं। मेरा इरादा उसकी शादी किसी धनी जमींदार, या बड़े व्यापारी या व्यवसायी से कराने का है, जो न केवल उसे उस विलासिता और आराम के स्तर में रखेगा जिसमें वह जीवन भर पली-बढ़ी है, बल्कि अपने प्रभाव और धन के माध्यम से मुझे इस शहर और अन्य जगहों पर अपने व्यवसाय को और अधिक विस्तारित करने और बढ़ाने में प्रत्यक्ष सहायता भी करेगा।'

कुमार ने गहरी सांस लेने के लिए बोलना बंद कर दिया। वह स्पष्ट रूप से परेशान थे। फिर, जिस गंभीरता से उन्होंने उनसे बात की थी, उसी गंभीरता से उन्होंने दोबारा बोलना शुरू कर दिया, मानो वह खुद से ही बात कर रहे हों।

मैंने इस दोस्ती को महज एक सतही जान-पहचान के तौर पर देखा। एक स्कूली लड़के और लड़की की दोस्ती। मुझे कभी शक नहीं हुआ कि इसके पीछे कुछ और भी हो सकता है।

फिर झानी से उन्होंने पूछा, 'तुम दोनों कब से एक-दूसरे से प्यार करते हो?'

'क्यों, कल रात से ही,' झानी ने सच्चाई से जवाब दिया, 'तूफान...'

'बताओ, कल रात क्या हुआ था? उस तूफान का इससे क्या लेना-देना था?' अपनी घबराहट में कुमार कुर्सी पर आगे की ओर झुक गए।

'तूफान थम गया और हमने पुराने मूसाफरखाना में शरण ली। हम—खैर, हम बस बातें कर रहे थे और—और हमें—पता चला कि हम एक दूसरे से प्यार करते हैं, वास्तव में हमेशा से करते आए हैं, और शादी करना चाहते हैं।'

'तो,' कुमार ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, 'तूफान और पुराने मूसाफरखाने ने ही तुम्हें यह एहसास दिलाया कि तुम प्यार में हो, है ना?'

वह झट से खड़ा हो गया और झानी की ओर बढ़ा, और चुनौती भरे अंदाज में उसके ऊपर खड़ा हो गया।

'बताओ, नौजवान; और सच बताओ। वरना मैं तुम्हें मार डालूंगा। कल रात उस पुराने मूसाफरखाने में तुम दोनों के बीच और क्या-क्या हुआ था?'

बालाजी अपने बेटे और उस आदमी के बीच की बातचीत सुन रहे थे, लेकिन उन्हें ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। लेकिन जब कुमार झानी के पास गया और उसे जान से मारने की धमकी दी, तो अब तक शांत बैठा बूढ़ा किसान अपना आपा खो बैठा।

वह भी उछलकर खड़ा हो गया और कुमार की ओर मुड़ गया, उनके गुस्से से भरे चेहरे बस कुछ इंच की दूरी पर थे।

'क्या तुमने हत्या के बारे में कुछ कहा, हे कमज़ोर से आदमी?' उसने तिरस्कार भरे स्वर में पूछा। 'जब हत्या की बात आती है, तो केवल पुरुष ही कर सकते हैं। किसानों जैसे पुरुष। हम जैसे पुरुष। तुम्हारे जैसे बदबूदार छोटे चूहे नहीं, जो अमीर घरों में छिपकर कलम और ज़ुबान से बहादुरी से लड़ते हैं।'

तभी लोतिबाई एक ट्रे लेकर कमरे में लौटीं, जिस पर चांदी के चार जड़े हुए प्याले रखे थे, जो गर्म चाय से भरे हुए थे। दृश्य को एक नज़र में देखते ही वह अचानक रुक गईं।

कुमार ने उस पर हमला कर दिया।

‘कल रात उस पुराने मूसाफरखाने में उस बदमाश ने तुम्हारे साथ क्या किया?’ वह गरजते हुए बोला।

लोटी ने आश्चर्य से मन ही मन सोचा, उसके पिता को कैसे पता चला कि क्या हुआ था? क्या झानी सचमुच इतनी बेशर्म थी कि उसने उन्हें बता दिया कि पिछली रात उन्होंने और झानी ने क्या किया था?

उसने ट्रे पर से अपनी पकड़ छोड़ दी और वह पॉलिश किए हुए फर्श पर गिर पड़ी, जिससे कप चारों दिशाओं में बिखर गए, जिनमें गर्म चाय भी थी।

कुमार ने अडिग स्वर में चिल्लाते हुए कहा, 'मुझे बताओ।'

लोतिबाई ने शर्म से लाल हो चुके अपने चेहरे को दोनों हाथों से ढक लिया। फिर वह मुड़ी और अचानक कमरे से बाहर भाग गई।

कुमार ने अनुमान लगाया कि पिछली शाम उसकी बेटी के साथ क्या हुआ होगा, और उसका अनुमान सही था।

वह जानता था कि वह अब कुंवारी नहीं रही और एक अमीर और प्रभावशाली पति को आकर्षित करने के लिए दुल्हन के रूप में उसका विपणन मूल्य, जो सीधे तौर पर उसे - कुमार - को अपने व्यवसाय को और भी अधिक बढ़ाने में मदद कर सकता था, शून्य हो गया था।

बालाजी और झानी की ओर मुड़ते हुए, कुमार ने अपने दांत भींच लिए।

'तुम दोनों यहाँ से चले जाओ। तुमने मेरी बेटी का पूरा भविष्य बर्बाद कर दिया है। तुम उसे फिर कभी नहीं देख पाओगे।'

वे मुड़े और बिना पीछे देखे घर से निकल गए।

उस शाम झानी अपनी प्रेमिका का व्यर्थ ही इंतज़ार करता रहा। वह न तो बाज़ार में दिखी, न ही पार्क में उनके मिलने की जगह पर आई। सारा दिन वह उदास रहा। उस रात वह पागलों की तरह व्यवहार कर रहा था।

अगली सुबह तड़के कुमार अपनी बेटी को लेकर चला गया। उसने खुद ही गाड़ी चलाई जिसमें वह उसे ले जा रही थी। वे कहाँ गए, यह किसी को नहीं पता था। लेकिन जब वह पूरे एक हफ्ते बाद लौटा, तो वह अकेला आया था।

इस दौरान झानी दिन-ब-दिन उदास होता जा रहा था। अब वह खेत में पहले की तरह कोई काम नहीं करता था। उसे किसी भी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं रही—यहाँ तक कि खुद में भी नहीं।

बूढ़े बालाजी ने उसे समझाने की कई कोशिशें कीं, लेकिन वे पूरी तरह व्यर्थ रहीं।

'झानी, तुम इतनी परेशान क्यों हो? क्या मैंने तुम्हें इन उच्च वर्ग के लोगों से दूर रहने की चेतावनी नहीं दी थी? धनी लोग अपने धन पर घमंड करते हैं। जो उनके पास है उससे कभी संतुष्ट नहीं होते, वे हमेशा और अधिक पाने की कोशिश करते रहते हैं। घर-परिवार और सुख की परवाह न करते हुए, वे और अधिक धन कमाने के लिए कष्टदायी योजनाओं में लिप्त रहते हैं। उन्हें न तो ईमानदारी से किए गए परिश्रम से मिलने वाले सुख का ज्ञान है और न ही घर में स्त्री के स्थान का।'

'जानी, हिम्मत रखो। समुद्र में जितनी मछलियाँ हैं, उतनी ही मछलियाँ समुद्र से बाहर भी आई हैं। मैं तुम्हारे लिए एक सुंदर, सुडौल, देहाती लड़की ढूँढूँगा जो तुम्हारी अच्छी पत्नी और वफादार साथी बनेगी। इसके अलावा, वह मेहनत से भी नहीं डरेगी।'

'लेकिन पिताजी, मेरी लोटी तो ये सब कुछ थी और उससे भी कहीं बढ़कर थी,' झानी ने तर्क दिया था, 'अब जब वह चली गई है और मुझे नहीं पता कि कहाँ है, तो मैं उससे पहले से कहीं ज्यादा प्यार करता हूँ, और मैं किसी और महिला की तरफ देखना भी नहीं चाहता।'

पूरा एक महीना बीत गया, इस दौरान वह लगभग चुप ही रहा। शाम को घंटों अपने छोटे से घर के बरामदे की सीढ़ी पर बैठा रहता और रात के मखमली अंधेरे में डूबते आसमान को निहारता रहता। वह सोचता रहता, मेरी लोटी कहाँ है? बूढ़े बालाजी बड़ी मुश्किल से उसे खेत में कोई काम करने के लिए मना पाते थे। खाना बनाने में भी वह मदद नहीं करता था।

एक दिन भिंड कस्बे में बड़ा कोलाहल मच गया। पैदल सैनिकों के कदमों की आहट सुनाई दी और सशस्त्र पुलिस की एक पूरी टुकड़ी बाजार चौक में दाखिल हुई। उस रात उन्होंने कस्बे के उत्तर में, तालाब के तटबंध के किनारे उगे विशाल बरगद के

पेड़ों के नीचे डेरा डाला, जो कस्बे से एक मील से भी कम दूरी पर स्थित था।

जैसा कि उम्मीद थी, उस छोटे से कस्बे में उनकी उपस्थिति के कारण को लेकर तरह-तरह की अफवाहें और अटकलें लगने लगीं। धीरे-धीरे सच्चाई सामने आने लगी।

कुख्यात डाकू मान सिंह ने एक बार फिर छापा मारकर शहर से लगभग नौ मील दूर रहने वाले एक प्रमुख जमींदार को अगवा कर लिया था। उसने बंधक की वापसी के बदले पचास हजार रुपये की फिरौती मांगी थी। रकम चुका दी गई और जमींदार को सुरक्षित वापस भेज दिया गया।

इसके कुछ ही समय बाद, चरना नाम के एक अन्य डाकू ने, जो मान सिंह के प्रमुख लेफ्टिनेंटों में से एक था, एक जमींदार पर घात लगाकर हमला किया और उसे उस समय बंदी बना लिया जब वह अपनी विशाल जागीरों से वसूला गया किराया लेकर लौट रहा था।

किराए की सारी रकम लूटने से संतुष्ट न होकर, चर्ना ने मकान मालिक को बंधक बना लिया था और अपनी सुरक्षित वापसी के लिए उसके परिवार से तीस हजार रुपये की मांग की थी।

परिवार ने भुगतान करने में हिचकिचाहट दिखाई, और निर्धारित समय और स्थान पर फिरौती का भुगतान नहीं किया गया।

अगली सुबह जमींदार के घर के सामने एक धोबी का गधा शांति से चरता हुआ देखा गया। गधे की पीठ पर एक गठरी बंधी हुई थी।

राहगीरों ने बंडल में रखी किसी चीज से आ रही दुर्गंध को महसूस किया और आपस में इस बारे में चर्चा करने लगे। शाम होते-होते बदबू असहनीय हो गई।

अपने पड़ोसियों की तुलना में अधिक सहनशील किसी व्यक्ति ने गधे की पीठ से बंडल उतारा और उसे खोला।

मकान मालिक का सिर धड़ से अलग हो गया। किसी धारदार औजार से एक ही वार में बड़ी कुशलता से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया था।

इस चर्ना को पकड़ने के लिए पुलिस की एक टुकड़ी भेजी गई थी। लेकिन उसे चर्ना, यानी 'क्रूर', नाम यूं ही नहीं मिला था।

नदी किनारे रात में सोते समय पलटन को घेर लिया गया और उन पर हमला किया गया, इससे पहले पहरेदारों को काबू में कर लिया गया था।

उसके बाद उन सभी को मार डाला गया और उनके सिर काट दिए गए। शवों को

नदी में फेंक दिया गया था। पुलिसकर्मियों के सिरों को नुकीले बांसों पर टांगकर दो पंक्तियों में इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि उनका सार्जेंट सबसे आगे था।

इन अत्याचारों के परिणामस्वरूप, धनी वर्ग के लोगों में दहशत फैल गई थी, और लगभग सभी लोग इलाका छोड़कर भाग गए थे। डाकुओं के गिरोह के खिलाफ होने वाले व्यापक अभियान में अग्रिम पंक्ति के रूप में कार्य करने के लिए रणनीतिक चौकियों पर सशस्त्र पुलिस के दल तैनात किए गए थे।

लेकिन बाज़ार में और गरीब लोगों की जर्जर झोपड़ियों में, हमेशा एक ही बात सुनने को मिलती थी। हर तरफ डाकुओं के गिरोहों के प्रति सहानुभूति और प्रशंसा के शब्द सुनाई देते थे।

“हे भगवान! अगर भारत की इस धरती पर, जो इन धनी जमींदारों के अत्याचार से कराह रही है, मान सिंह और उसके साथियों जैसे और लोग होते, तो ऐसे नीच लोग खत्म हो जाते और गरीबों के लिए खूब जमीन उपलब्ध होती।”

एक मुसलमान ने जवाब दिया, “अल्लाह की कसम, यह मान सिंह एक न्यायप्रिय और बहादुर आदमी है। पिछले महीने उसने कोहलीबाद इलाके के मोटे जमींदार से पचास हजार रुपये फिरौती के तौर पर लिए और पिछले हफ्ते उसने उसमें से आधी रकम अलीपुर में अंधों के नए स्कूल को दान कर दी।”

झानी ने बाज़ार में ये कहानियाँ सुनीं और उसका सारा ध्यान उन पर केंद्रित हो गया। उन्हें सुनकर उसके रोंगटे खड़े हो गए। ये ऐसे लोग थे जो अमीरों से नफ़रत करते थे—ठीक वैसे ही जैसे अब वह खुद उनसे नफ़रत करता था! कुमार जैसे लोग, जिन्होंने उसकी और लोटी की ज़िंदगी तबाह कर दी थी! काश वह भी ऐसे लोगों में शामिल हो पाता। वह खुशी-खुशी अपनी बाकी ज़िंदगी इन धनवानों को सज़ा देने में लगा देता, जो गरीबों के साथ इतनी बेरहमी से पेश आते थे।

तो फिर वह उनके साथ क्यों न शामिल हो?

सैकड़ों लोग पहले ही ऐसा कर चुके थे। इसी वजह से डाकुओं के गिरोहों की संख्या इतनी तेज़ी से बढ़ी थी। और अगर दूसरे ऐसा कर सकते थे, तो वह क्यों नहीं कर सकता था?

उसी शाम झानी ने अपना मन बना लिया। वह डाकुओं के सरदार को ढूंढेगा, उसे अपनी वफादार सेवाएं देगा और अपना शेष जीवन अमीरों को मारने में व्यतीत करेगा।

गेहूं के दलिया, पनीर और चपाती के साथ उबली हुई फूलगोभी का भोजन करने

और चाय पीने के बाद, झानी ने अपने पिता, बूढ़े बालाजी से कहा।

पिताजी, मैं कुछ समय के लिए कहीं जा रही हूँ। मैं आपको यह नहीं बता सकती कि कहाँ। मुझे खुद भी नहीं पता। और न ही मैं आपको यह बता सकती हूँ कि मैं कब लौटूँगी; मतलब, अगर मैं कभी लौटी भी तो।

पिताजी, मुझे आपको अकेला छोड़कर जाने का बहुत दुख है। मुझे पता है कि आपको इस तरह निराश करने के बाद मैं आपका बेटा कहलाने लायक नहीं हूँ। लेकिन लोटी के चले जाने के बाद से मेरी जिंदगी में कोई दिलचस्पी नहीं बची है। अगर मैं इस जगह पर और रहा, जिसके हर कोने में उसकी प्यारी यादें बसी हैं, तो मुझे लगता है मैं पागल हो जाऊँगा। इसलिए, प्यारे पिताजी, मेरे लिए जाना ही बेहतर है।

प्रकृति के करीब रहने वाले सभी लोगों की तरह, बालाजी भी इस बात को भलीभांति समझते थे। उन्हें अपनी पत्नी मीराबाई, जो झानी की माता थीं, की मृत्यु के समय की अपनी भावनाएँ याद आ गईं। वे उस समय असहनीय रूप से दुखी थे। अब बालाजी को लगा कि झानी अपनी खोई हुई प्रेमिका को खोजने के लिए जा रही है।

'जाओ बेटे; ईश्वर तुम्हारे साथ रहे,' उन्होंने उत्तर दिया। 'ये सौ रुपये ले लो जो मैं अभी तुम्हें दूंगा। ये तुम्हारी यात्रा में सहायक होंगे। बस कभी-कभी मुझे और पुराने खेत को याद करना। याद रखना, हम हमेशा तुम्हारे लौटने का इंतजार करेंगे, बेटे। और उस दिन तक, अपना ख्याल रखना, मेरे बेटे। ईश्वर पर भरोसा रखो, वो तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगा।'

उसके बाद बूढ़ा आदमी फूट-फूटकर रोने लगा। झानी भी फूट-फूटकर रोई।

फिर भी, अगले दिन वह भोर होते ही उठ गया। उसने कुछ कपड़े बांधे और अपने पास बचाकर रखा हुआ एकमात्र पांच रुपये का नोट निकाला। डाकुओं से संपर्क होने तक यह उसके अस्थायी खर्चों के लिए पर्याप्त होगा।

हालांकि उनका हाथ बुरी तरह कांप रहा था, फिर भी उन्होंने हिम्मत दिखाते हुए और आंखों में आंसू न लाते हुए, सौ रुपये का वह नोट आगे बढ़ाया जिसे उन्होंने बुरे समय के लिए इतने लंबे समय तक छिपाकर रखा था।

झानी मुस्कुराई, लेकिन उसने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

'नहीं, धन्यवाद पिताजी। आपको इसकी ज़रूरत है और खेत को भी। मैं जवान और तंदुरुस्त हूँ और अपनी रोज़ी-रोटी खुद कमा सकता हूँ।' और फिर विदाई का

अंतिम क्षण आ गया। उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और दोनों गालों पर चुंबन किया।

दृढ़ता से झानी ने अपने कपड़ों का गट्ठा उठाया, उसे अपने कंधे पर डाला और बिना पीछे मुड़े चल पड़ा। क्योंकि अगर वह पीछे मुड़ता, तो बचपन से परिचित पुराने खेतों का दृश्य, खेतों की सीमा पर खड़े अपने शोकग्रस्त पिता का रोना, और उस कस्बे की हज़ारों यादें, जो उसकी प्रिय लोटी की अनमोल यादों से भरी थीं, उसे अंतिम क्षण में कमज़ोर कर सकती थीं और उसे अपने साहसिक और प्रतिशोध के इरादे को छोड़ने पर मजबूर कर सकती थीं।

ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। वह अपना पूरा जीवन अमीरों को दंडित करने, उन्हें कोड़े मारने, उन्हें लूटने और यातना देने, और उन्हें जान से मारने में लगा देगा; वह उनमें से जितने अधिक लोगों को मार सके, उतनी जल्दी और सबसे भयानक तरीके से मारेगा।

क्या उनमें से किसी ने उसका लोटी नहीं छीन लिया था?

उसके बाद झानी कई दिनों तक भटकता रहा, जहाँ भी काम मिलता वहाँ अपना गुजारा करता रहा और जब काम नहीं मिलता था तो भीख मांगता था।

एक सुबह उसने चंबल नदी पार की और खाइयों की ओर मुड़ गया।

जैसे ही झानी ने दूसरे किनारे पर कदम रखा, नाविक ने उत्सुकता से पूछा, 'भाई, तुम किसे ढूंढ रहे हो?'

'मैं मान सिंह और उसके आदमियों की तलाश में हूं,' झानी ने संक्षेप में जवाब दिया था।

नाविक अचरज से अपनी सांस रोक बैठा। फिर उसने कहा, 'या तो तुम बिल्कुल पागल हो, जो मुझे लगता है कि सच है; या तुम बहुत मूर्ख हो; या तुम बहुत बहादुर हो। मुझे सच में नहीं पता कि इनमें से कौन सा सच है।'

फिर उसने अपनी लंबी छड़ी को नदी के कीचड़ भरे तल में गाड़ दिया और धीरे-धीरे वापस लौटने की यात्रा शुरू कर दी।

रास्ता न जानने के कारण, झानी नदी के समकोण पर एक दिशा में आगे बढ़ गया।

रात के नौ बज चुके थे जब उसके सामने ज़मीन पर कुछ गिरा, जिससे धूल का गुबार उठा, और फिर वह एक भयानक, कर्कश आवाज़ के साथ आगे बढ़ गया। कुछ

ही पलों बाद, उसने राइफल की गोली चलने की आवाज़ सुनी।

झानी को पता था कि उस पर गोली चलाई गई थी, निस्संदेह किसी डाकू संतरी ने ही गोली चलाई थी।

वह न तो छिपा और न ही उसने किसी तरह खुद को बचाने की कोशिश की। वह बस स्थिर खड़ा रहा और दोनों हाथों को सिर के ऊपर उठाकर राजस्थानी में जोर से पुकारा, 'मुझे गोली मत मारो। मैं शांति से आया हुआ मित्र हूं, स्वेच्छा से आया हूं। मैं मान सिंह से मिलना चाहता हूं।'

एक और गोली ठीक उसी जगह पर गिरी जहां उससे पहले वाली गोली गिरी थी।

झानी जानता था कि जो निशानेबाज दो गोलियों को बिल्कुल एक ही जगह पर दागने का कारनामा कर सकता है, वह उसे निशाना बनाने से नहीं चूकता - जब तक कि उसने वास्तव में ऐसा करने का इरादा न किया हो।

इसमें कोई शक नहीं कि छिपे हुए स्नाइपर का मकसद उसे ठीक यही समझाना था, और यही दूसरी गोली चलाने का कारण था।

वह अपनी बाहों को ऊपर उठाकर और फैलाकर बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा, और उसी संदेश को चिल्लाता रहा जो वह पहले भी चिल्ला चुका था।

आगे कहीं से एक आवाज ने उसे पुकारा, 'अपने हाथ ऊपर उठाकर आगे बढ़ते रहो। अगर तुमने उन्हें नीचे करने की कोशिश की, तो तुम मारे जाओगे।'

झानी ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। उसे कोई दिखाई नहीं दे रहा था।

कुछ समय बाद उसकी भुजाओं में दर्द होने लगा, लेकिन वह जानता था कि उन्हें नीचे गिराने की हिम्मत नहीं कर सकता। स्नाइपर ने निस्संदेह इस पूरे समय उसे कवर किया हुआ था और अगर उसने उन्हें नीचे रखने की कोशिश की तो वह अपनी धमकी को पूरा करने में जरा भी संकोच नहीं करेगा।

दर्द बढ़ता गया और झानी जोर से चिल्लाने ही वाला था कि अब वह अपने हाथ ऊपर नहीं उठा सकता, तभी उसके दाहिनी ओर थोड़ी दूर झाड़ियों के बीच से एक अस्त-व्यस्त सा दिखने वाला व्यक्ति कंधे पर राइफल रखे, सीधे उसकी ओर ताने खड़ा हो गया। उस आदमी ने काली टोपी पहन रखी थी और फटी हुई खाकी कमीज और शॉर्ट्स पहने हुए था।

'तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?' उस आदमी ने पुकारा।

‘मित्र, मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगी। बस मुझे थोड़ी देर के लिए अपने हाथ नीचे करने की अनुमति दे दो। उनमें बहुत दर्द हो रहा है और मैं उन्हें अब और ऊपर नहीं रख सकती,’ झानी ने विनती की।

‘मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम कोई ‘पॉकेट-बंडूक’ (रिवॉल्वर) नहीं ले जा रहे हो?’ बदमाश ने पूछा।

‘मैं निहत्था हूँ और शांति से आया हूँ। मैं मान सिंह से मिलने आया हूँ ताकि उन्हें अपनी सेवाएँ दे सकूँ। लेकिन कृपया मुझे बात करते समय अपने हथियार नीचे रखने दें। इस तरह हथियार ऊपर रखने में मुझे बहुत तकलीफ हो रही है।’

‘ठीक है,’ उस उग्र दिखने वाले संतरी ने हार मानते हुए कहा, ‘लेकिन ऐसा करने से पहले, यह याद रखना। एक भी गलत कदम उठाया तो आज ही गिद्ध तुम पर टूट पड़ेंगे और कल रात सियार।’

लेकिन झानी ने पहले ही अपने हाथ नीचे कर लिए थे। उसने राहत की सांस ली।

‘तुम निःसंदेह पुलिस के जासूस हो,’ उस आदमी ने स्पष्ट स्वर में कहा। ‘इसीलिए तो तुम मुझसे मान सिंह का रास्ता पूछ रहे हो। क्या तुम्हें लगता है कि मैं इतना मूर्ख हूँ?’

'नहीं भाई, तुम बिल्कुल गलत हो। मैं यहाँ डाकुओं से जुड़ने आया हूँ क्योंकि मैं उन धनी लोगों से बदला लेना चाहता हूँ जिन्होंने मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है।'

‘तुम्हें यह कहानी मेरे सरदार को बतानी होगी,’ उसके बंदी बनाने वाले ने जवाब दिया। ‘तुम अभी महाराज से नहीं मिल सकते, लेकिन मैं तुम्हें अपने नेता के पास ले जाऊंगा।’

“मैं इस राइफल को लोड करके तुम्हारे पीछे चलूंगा,” उसने आगे कहा। “कोई भी चाल चलने की कोशिश की तो गोली तुरंत चल जाएगी। समझे? अब, चलो।”

इसलिए झानी आगे चल पड़ा और डाकू उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

उन्होंने दो खाइयों को पार किया और फिर तीसरी खाई की चोटी से एक आवाज ने उन्हें पुकारा। 'रुको,' उसने आदेश दिया, 'और पासवर्ड बताओ।'

उसके साथी ने पीछे से तुरंत चिल्लाकर कहा, 'सांप शाम के समय बाहर निकलते हैं।'

पहाड़ी की चोटी से दूसरे संतरी ने सलाह दी, 'धीरे-धीरे आगे बढ़ो,' और उसी

क्षण वह पहली बार प्रकट हुआ।

वे उस छोटी पहाड़ी की चोटी पर चढ़े, अगली घाटी को पार किया और चौथी पहाड़ी पर चढ़ गए।

जैसे ही वे शिखर पर पहुँचे, उन्होंने नीचे देखा तो लगभग तीन दर्जन लोग खुले मैदान में बैठे या लेटे हुए थे। झानी ने गौर किया कि यह स्पष्ट रूप से एक मोबाइल टुकड़ी थी, क्योंकि वहाँ तंबू या अन्य किसी उपकरण का कोई निशान नहीं था जिससे यह पता चले कि डाकू वहाँ लंबे समय तक डेरा डाले हुए थे।

काली दाढ़ी और घुमावदार मूंछों वाला एक लंबा-चौड़ा आदमी, मुख्य समूह से थोड़ा हटकर बैठा था। उसने ढीली सफेद सूती पतलून और एक गंदी धूसर कमीज़ पहनी हुई थी। उसके सिर पर भूरे कपड़े की एक कसकर बंधी हुई पगड़ी थी, जो उसके बाकी शरीर के मुकाबले छोटी लग रही थी।

अपनी राइफल की नली के सिरे से उसे कुरेदते हुए, संतरी ने उसे उस बड़े आदमी की ओर इशारा किया, जो झानी के पास आते ही खड़ा हो गया।

वह एक भारी-भरकम, मांसल और क्रूर व्यक्ति था, जिसकी लंबाई छह फीट से भी अधिक थी और वह झानी से थोड़ा लंबा था। उसकी आँखें क्रूर थीं, नाक लंबी और शिकारी जैसी थी, और होंठ लगभग एक सीधी रेखा में सिमटे हुए थे।

'तुम्हें क्या चाहिए?' उसकी आवाज ऊंची और कठोर थी, और उसमें वह दबंग लहजा था जो दर्शाता था कि उसका मालिक बिना किसी संदेह के आज्ञापालन का आदी था।

झानी के जवाब देने से पहले ही, उसके पीछे राइफल लिए खड़े व्यक्ति ने, जो निस्संदेह अपने द्वारा की गई गिरफ्तारी को सही ठहराने के लिए उत्सुक था, बीच में दखल दिया।

'मैंने अपने चौकी, चरना साहिब से इस आदमी को खाइयों की ओर भटकते हुए देखा। इसलिए मैंने उसे चेतावनी देने के लिए एक गोली चलाई। वह चिल्लाकर जवाब देने लगा कि वह हमारे महाराज से मिलना चाहता है और हमारे साथ जुड़ना चाहता है। इसलिए मैं उसे अंदर ले आया।'

जिस विशालकाय व्यक्ति को इस प्रकार संबोधित किया गया था, उसने संतरी को कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि कैदी को घूरता रहा।

झानी ने उस विशालकाय व्यक्ति का नाम सुन लिया था और वह जानता था कि

वह अत्यंत खूंखार चरना, जिसे 'क्रूर' कहा जाता था, के समक्ष खड़ा है; जो मान सिंह के सभी लेफ्टिनेंटों में सबसे भयानक था; एक ऐसा व्यक्ति जिसे अलौकिक साहस के लिए जाना जाता था, लेकिन उसमें दया का कोई गुण नहीं था। उसे डर लगने लगा।

“महोदय, मैं महान मान सिंह को अपनी विनम्र सेवाएँ अर्पित करने आया हूँ। एक धनी व्यक्ति ने मेरे साथ घोर अन्याय किया है, और मैं उससे और उसके पूरे वर्ग से बदला लेना चाहता हूँ।” क्रूर निगाहों का सामना करते हुए झानी ने आवेग में ये शब्द कहे।

'अगर आप पुलिस एजेंट हों तो क्या होगा?' चार्ना ने पूछा।

‘तो फिर तुम मुझे तुरंत मार डालो,’ झानी ने तुरंत जवाब दिया।

डाकुओं के सरदार ने कुछ मिनटों तक उसे ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसने पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा पेशा क्या है?'

'मेरा नाम झानी है। मैं एक किसान हूँ। मेरे पिता का नाम बालाजी है और भिंड कस्बे के पास हमारे पास बारह एकड़ जमीन है।'

'बैठ जाइए और मुझे अपनी कहानी सुनाइए,' चार्ना ने आमंत्रित करते हुए खुद कुछ गज की दूरी पर जमीन पर पालथी मारकर बैठ गया।

झानी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और फिर अपनी समस्या का विस्तृत विवरण देना शुरू कर दिया।

डाकू ने उसकी बात पूरी होने तक सुना, फिर खुलकर मुस्कुराया और साथ ही दोस्ताना भाव से झानी के कंधे पर हाथ रख दिया।

‘नासमझ लड़के,’ उसने कहा, ‘क्या यही तुम्हारी एकमात्र समस्या है? अरे, यह तो कोई समस्या ही नहीं है।’

उन्होंने आगे कहा, ‘किसानों के बारे में मुझे यही बात पसंद है, वे सरल और सीधे-सादे होते हैं। इन सब बातों पर इतना परेशान क्यों हो रहे हो? अरे, इसका हल तो आसान है। तुम्हारे जैसे अच्छे दिखने वाले लड़के को तो कितनी भी लड़कियाँ मिल जाएँगी।’

लेकिन झानी ने चुनौती भरे लहजे में अपना सिर हिलाया। उसने झट से कहा, 'मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ और उससे शादी करना चाहता हूँ।' फिर उसने निर्णायक स्वर में कहा, 'मुझे कोई और औरत पसंद नहीं है।'

यह सुनकर डाकू जोर से हंस पड़ा। उसने पूछा, 'तो, क्योंकि तुमने उसे खो दिया

है, इसलिए तुम मेरी तरह डाकू बनना चाहते हो?'

झानी ने जोर देकर कहा, 'मैं ऐसा करूंगा, और अमीरों को मार डालूंगा।'

'ठीक है, मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है,' चर्ना ने स्वीकार किया, 'लेकिन देखते हैं महाराजा क्या कहते हैं। हम उनसे कल मिलेंगे।'

उस दिन झानी को भोजन दिया गया और उसने आराम किया। शाम ढलते ही वह उन लोगों के समूह के साथ चल पड़ा, जिनके साथ वह गलती से शामिल हो गया था। वे लगभग दस मील पूर्व की ओर चले। वे झाड़ियों वाले जंगल में प्रवेश कर गए और रात लगभग 10 बजे उस जगह रुक गए जहाँ जंगल खत्म होकर खेत शुरू हो गए थे। वहाँ वे चुपचाप छिप गए।

आधी रात के कुछ देर बाद चार्ना ने उसे फोन किया और बताया कि उनका दल कार्रवाई के लिए तैयार है। उसे लगभग दो घंटे तक छिपकर रहने के लिए कहा गया, जब तक कि वे उसी स्थान पर उससे दोबारा न मिल जाएं।

इसके कुछ ही समय बाद वे लोग गायब हो गए और झानी अकेली रह गई।

कुछ देर बाद उसे गोलीबारी की आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ थोड़ी देर तक जारी रही और फिर शांत हो गई, जिसके बाद लगभग एक मील दूर क्षितिज पर एक लालिमा छा गई। झानी ने अनुमान लगाया कि यह निस्संदेह आग थी।

लगभग आधा घंटा बीत गया, और फिर डाकुओं का गिरोह चुपके से एक कतार में चलते हुए वापस आया। झानी ने देखा कि उनमें से कई लोगों के पास दो-तीन राइफलें थीं। उनमें से तीन-चार के पास टॉमी गन थीं जो उनके पास निकलते समय नहीं थीं। बाकी कई लोग अपने कंधों पर लादे बक्सों के बोझ तले लड़खड़ा रहे थे।

उसने सही अनुमान लगाया कि उन्होंने किसी सैन्य चौकी या पुलिस चौकी पर छापा मारा था और लूट का माल लेकर लौट रहे थे। निस्संदेह, उसने जो लाल चमक देखी थी, वह डाकुओं द्वारा किसी इमारत या शेड में आग लगाने के कारण उत्पन्न हुई थी।

उनके दोबारा उससे मिलने के बाद, समूह दूसरी दिशा में आगे बढ़ा, जो जंगल में और भी गहराई तक जाती हुई प्रतीत हो रही थी।

हमलावरों ने जाहिर तौर पर सही समय चुना था, क्योंकि थोड़ी देर से उगने वाले चंद्रमा ने उन्हें घने जंगल में पेड़ों और झाड़ियों के बीच अपना रास्ता खोजने में मदद की।

लगभग एक घंटे चलने के बाद वे जंगल के एक खुले मैदान में पहुँचे। इस खुले मैदान की सीमा पर झानी ने किसी की धीमी आवाज़ में चुनौती सुनी, जिसका जवाब चार्ना ने अपने कर्कश स्वर में दिया। फिर वे आगे बढ़े और जल्द ही एक शिविर में पहुँच गए जहाँ कई लोग मंद-मंद जलती आग के पास लेटे या बैठे थे। खुले मैदान के दूसरे छोर पर झानी को लगभग आधा दर्जन शंकु के आकार के तंबुओं की धुंधली आकृति दिखाई दी।

जिस दल के साथ वह अभी-अभी आया था, वह खुले मैदान के बीचोंबीच रुक गया, और जिन लोगों के पास दो-तीन बंदूकें थीं, उन्होंने उन्हें एक अलाव के सामने करीने से ढेर कर दिया। नए आए लोग दबी आवाज़ में अपने हाल के कारनामे का वर्णन कर रहे थे, और फुसफुसाहट और दबी हंसी की आवाज़ें आ रही थीं।

कुछ देर बाद झानी ने देखा कि तंबू लगे हुए दिशा से कुछ नए लोग उनकी ओर आ रहे हैं। एक बूढ़ा आदमी उस समूह का नेतृत्व कर रहा था, जिसके ठीक पीछे एक और आदमी टॉमी गन लिए चल रहा था। दो और युवा पुरुष सबसे पीछे थे।

जब प्रकाश उस बूढ़े व्यक्ति पर पड़ा, तो झानी ने उसके असामान्य रूप से ऊंचे माथे और भूरे रंग की दाढ़ी, मूंछें और विशाल मूंछों पर ध्यान दिया।

चरना ने नए आए व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा, “सलाम, महाराजा साहब। आज रात ईश्वर हम पर मेहरबान रहे और हमने एक भी जवान को खोए बिना तेरह राइफलें, तीन टॉमी गन, एक रिवॉल्वर और कुछ गोला-बारूद के बक्से जब्त कर लिए। हमने पुलिसकर्मियों को लालटेन की रोशनी में ताश खेलते हुए पकड़ा, बजाय इसके कि वे चौकसी करें, और इससे पहले कि उन्हें कुछ पता चलता, हमने संतरियों और सो रहे जवानों के मुख्य दल को मार गिराया। अंत में हमने चौकी में आग लगा दी।”

“बहुत बढ़िया काम किया, चरना साहब; मेरी बधाई हो,” बूढ़े व्यक्ति ने मधुर स्वर में हार्दिक भाव से उत्तर दिया। “आपने मुझे कभी निराश नहीं किया।”

फिर हंसते हुए उसने अपने लेफ्टिनेंट की पसलियों में हल्के से धक्का मारा और कहा, 'भगवान हमेशा तुम पर विशेष कृपा करते हैं, है ना? बदमाश!'

चार्ना ने एक प्रसन्न स्कूली लड़के की तरह खुश होकर मुस्कुराते हुए तारीफ को स्वीकार किया।

मान सिंह और चरना ने मिलकर लूटे गए माल का मुआयना किया और उसके

बाद कुछ देर तक आज के ज़माने की राइफलों और उनके गोला-बारूद की गुणवत्ता पर चर्चा की। अचानक चरना ने चारों ओर देखा और उसकी नज़र झानी पर पड़ी।

‘महाराज, मैं लगभग भूल ही गया था,’ उसने क्षमा मांगते हुए कहा, ‘हमें घाटियों में भटकता हुआ एक लड़का मिला जिसने कहा कि वह आपको ढूंढ रहा है। वह अमीरों को मारने के लिए हमारे साथ जुड़ना चाहता है, क्योंकि एक अमीर पिता ने अपनी बेटी को उस किसान लड़के से छीन लिया है जो उससे बहुत प्यार करता है।’

और 'सच्चे प्यार' नामक चीज़ की मूर्खता के बारे में सोचकर चर्ना फिर से मुस्कुराई।

मान सिंह की तीखी, कठोर निगाहें झानी को भेदती हुई प्रतीत हुईं। 'इधर आओ, लड़के,' उन्होंने नरम स्वर में आदेश दिया, 'और मुझे अपनी कहानी सुनाओ।'

झानी आगे बढ़ा और अपनी कहानी विस्तार से सुनाने लगा, जबकि बूढ़ा व्यक्ति सहानुभूतिपूर्वक सुनता रहा। कठोर स्वभाव वाले चर्ना के विपरीत, झानी के बोलने के बाद उसने उसका उपहास या मजाक नहीं उड़ाया, बल्कि चुपचाप विचारशील बना रहा। उसकी आँखों में एक दूर की, यादों से भरी झलक थी।

फिर उसने पूछा, ‘यह बूढ़ा आदमी, तुम्हारा पिता है। मुझे उसके और तुम्हारे खेत के बारे में और बताओ। तुमने उसका नाम क्या बताया था?’

‘बालाजी,’ झानी ने उत्तर दिया। फिर उसने डाकू सरदार को अपने पिता और उस बारह एकड़ के खेत के बारे में विस्तार से बताया जिस पर उसे बहुत गर्व था। विषय में मग्न होकर उसने अपनी माता मीराबाई के बारे में भी बताया कि कैसे उन्होंने कोबरा के काटने से अपनी असामयिक मृत्यु तक अपने पिता की सहायता की थी।

झानी के बोलते समय चरना मुँह फेरकर दूसरी तरफ देखने लगा और जब्त किए गए हथियारों की जाँच करने लगा। जाहिर है, कर्मठ और साहसी होने के कारण उसे ऐसी भावुक कहानियों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

लेकिन मान सिंह ने पूरी बात ध्यान से सुनी, और जब उसने अपनी बात समाप्त कर ली, तभी डाकू-सरगना ने टिप्पणी की, 'कितनी दुखद और सुंदर कहानी है।'

फिर उसने झानी की पीठ थपथपाई।

‘मेरे साथ आओ, बेटा,’ उसने तम्बुओं की कतार की ओर मुड़ते हुए कहा, ‘मैं तुम्हें एक कप चाय पिलाऊंगा और साथ ही तुमसे बात भी करूंगा।’

Jhani followed him.

मान सिंह अपने अंगरक्षक के साथ, जिसके पास टॉमी गन थी, उसे तंबू के अंदर ले गया। वहां एक लालटेन मंद रोशनी में जल रही थी।

डाकुओं के सरदार ने ताली बजाई और एक सेवक प्रकट हुआ।

उन्होंने संक्षेप में आदेश दिया, 'चाय लाओ।'

फिर वह ज़मीन पर बैठ गया और झानी को भी बैठने के लिए कहा। टॉमी गन वाला आदमी खड़ा ही रहा। उसने एक पल के लिए भी झानी से अपनी नज़र नहीं हटाई।

‘अब झानी,’ बूढ़े व्यक्ति ने आश्चर्यजनक कोमलता से कहा, ‘मैं तुमसे मन सिंह, चोर के रूप में नहीं, बल्कि एक पिता के रूप में और अपने ही बेटों में से एक की तरह बात करने जा रहा हूँ।’

“क्योंकि मेरे चार बेटे और एक बेटी भी है, यह तो आपको पता ही होगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि पिता का प्यार क्या होता है।”

'तुमने मेरे बदमाशों के गिरोह में शामिल होने की अनुमति मांगी है,' और यहाँ वह हंसमुख भाव से मुस्कुराया, 'क्योंकि तुम अमीरों पर युद्ध छेड़ना चाहते हो।'

'झानी, अपनी सेवाएं देने की पेशकश करके तुम मेरी प्रशंसा कर रही हो। मैंने आज तक किसी को भी मना नहीं किया है जिसने खुद को मेरे सामने पेश किया हो, सिवाय एक अपवाद के।'

और वह अपवाद तुम हो, झानी। क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देने वाला।

जब बूढ़े व्यक्ति ने मुड़कर झानी के चेहरे की ओर देखा तो वह आश्चर्य से चौंक उठा। घोर निराशा के कारण उसके पास शब्द नहीं थे। क्या उसने सही सुना था?

मान सिंह ने झानी के घुटने पर हाथ फेरते हुए कहा, 'परेशान मत हो, झानी। मैं समझता हूँ कि तुम कैसा महसूस कर रहे हो। मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं तुम्हें हमारे साथ क्यों नहीं आने दूंगा, और मैं तुम्हें यह सलाह देने की भी कोशिश करूंगा कि तुम्हारे लिए सबसे अच्छा क्या होगा।'

उनकी बातचीत में तभी नौकर के आने से खलल पड़ा, जो चाय की केतली और दो एल्युमिनियम के मग लेकर आया था। जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ा, मान सिंह ने उसे अपने अंगरक्षक के लिए तीसरा मग लाने का आदेश दिया।

बूढ़े आदमी ने झानी का कप भरा, फिर अपना कप भी भर लिया।

तभी नौकर एक तीसरा एल्युमिनियम का गिलास लेकर लौटा। मान सिंह ने खुद इसे भरा और अपने अंगरक्षक को सौंप दिया, जिसने खड़े-खड़े ही इसे पी लिया।

‘अब झानी, मेरी बात समझने की कोशिश करो,’ उन्होंने आगे कहा। ‘तुम एक अच्छे लड़के हो, किसी भी बुराई से अछूते हो, सिवाय इसके कि तुम्हें प्यार हो गया है, और यह कोई बुरी बात नहीं है। बल्कि, यह बहुत स्वाभाविक है।’

'अगर मैं तुम्हें हमारे साथ शामिल होने की इजाज़त देता हूँ, तो तुम चोर और हत्यारे बन जाओगे; हम सब की तरह एक आम डाकू। इसमें कोई शक नहीं कि तुम कुछ अमीर लोगों को मारकर अपने बदले की इच्छा पूरी कर लोगे, लेकिन इससे तुम्हें क्या मिलेगा?'

'तुम्हारे सिर पर इनाम रखा जाएगा, झानी। यह हिंसा और बहाए गए खून का इनाम होगा। अब यह हम सभी के सिर पर है।'

अंततः या तो तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी, या तुम्हें पकड़कर जेल में डाल दिया जाएगा।

इससे बूढ़े पिता का दिल टूट जाएगा। तुम्हारी प्यारी ज़मीनें तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाएंगी। और तो और, तुम अपनी प्रेमिका लोतिबाई से फिर कभी मिलने की उम्मीद भी नहीं कर सकते।

झानी, अगर मैं तुम्हें अपने साथ आने की इजाज़त दे देता, तो मैं तुम्हारे जैसे मासूम लड़के को कातिल बना देता; साथ ही तुम्हारे पिता और तुम्हारी प्रेमिका दोनों का दिल तोड़ देता। मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मेरा भी एक बूढ़ा पिता था और मैं जानता हूँ कि जब मैंने हत्या और हिंसा का यह रास्ता अपनाया, तो उन्हें कितना दुख सहना पड़ा। मैं भी तुम्हारी तरह किसान था। मुझे आज भी अपने खेत याद हैं और मैं कुछ मिनटों के लिए ही सही, वहाँ वापस जाने के लिए तरसता हूँ। लेकिन यह मुमकिन नहीं है, क्योंकि मैंने खुद को हमेशा के लिए भगोड़ा और समाज से बहिष्कृत बना लिया है।

‘इसीलिए मैंने तुम्हें मना किया था, लड़के। अब समझे?’

लेकिन अगर आप मेरी बात सुनना चाहें तो मैं आपको सलाह दे सकता हूं कि क्या करना चाहिए।

'मर्द बनो, झानी। अपनी जिम्मेदारियों को निभाओ। उनसे भागने की कोशिश मत करो, न ही उन्हें बदले की खून-खराबे में डुबो दो।'

एक पुरानी कहावत है, “बदला मीठा होता है”। लेकिन झानी, इस पर कभी विश्वास मत करना। बदला बहुत ही कड़वा होता है, और अपने पीछे केवल कड़वाहट और निराशा ही लाता है—हमेशा के लिए!

‘मैं जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ, झानी। बदले और नफरत की भावना से प्रेरित होकर ही, ठीक वैसे ही जैसे तुम अब करना चाहती हो, मैंने अपने पिता, खेत और घर को छोड़कर डाकू का रास्ता अपनाया। मुझे नहीं लगता कि ईश्वर ने मुझे अपने साथी मनुष्यों से नफरत करने और उन्हें मारने के लिए बनाया है। मुझे लगता है कि वह चाहते थे कि मैं उनसे प्रेम करूँ। इसीलिए आज भी मेरे हृदय में प्रेम की लौ जल रही है, ठीक वैसे ही जैसे इस समय तुम्हारे लिए जल रही है।’

लेकिन अपनी उस उग्र जवानी में मुझे सलाह देने या रोकने वाला कोई नहीं था, जैसा कि मैं अब आपको सलाह दे रहा हूँ और रोक रहा हूँ। मैं नफरत और बदले की इन भावनाओं में बह गया था। बिल्कुल आपकी तरह, मैं भी अपने दुश्मनों को मारना और उनसे बदला लेना चाहता था।

और मैंने ठीक वैसा ही किया।

‘झानी, इससे मुझे क्या मिला? हाँ, मैंने उन्हें मार डाला, यह सच है। लेकिन क्या उनकी हत्या से मुझे कोई स्थायी संतुष्टि मिली? नहीं; और मैं दोहराता हूँ, हज़ार बार नहीं! इसने मेरे हाथों पर सौ से अधिक लोगों का खून लगा दिया है और मेरे सिर पर मृत्युदंड का बोझ लाद दिया है।’

‘अब मेरे पास न घर है, न घर, न पिता, न ज़मीन, न खेत, जिन्हें मैं अपना कह सकूँ। रात को मैं पत्थर पर सिर रखकर सोता हूँ, यह जाने बिना कि शायद यह मेरी आखिरी रात हो, या फिर किसी गड्ढे, जंगल या बिल में छिप जाता हूँ। मैं एक सियार की तरह हूँ, हमेशा चौकन्ना, हमेशा भागता हुआ!’

'लोग सोचते हैं कि मैं खुश हूं; लेकिन मैं खुश नहीं हूं, मेरे बेटे।'

झानी, मेरे लिए यह बहुत ही बुरा होगा कि मैं तुम्हें मेरे नक्शेकदम पर चलने में मदद करूं। वास्तव में, यह मेरे खाते में एक और हत्या के बराबर होगा। तुम्हारी हत्या!

‘इसी वजह से मैं तुम्हें अपने बैंड के सदस्य के रूप में नहीं रखूंगा।’

लेकिन मेरी बात थोड़ी देर और सुनो, बेटा। मर्द बनो! अपनी परेशानियों से लड़ो, उनसे भागो मत!

वापस आते ही सेना में भर्ती हो जाओ। स्वतंत्र भारत के सिपाही बनो। यह एक

सम्मानजनक पेशा है।

हो सकता है भविष्य में कभी ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना सुन लें। तुम अपनी प्रेमिका लोतिबाई से फिर मिल सको। तब तुम्हारा जीवन में एक गौरवशाली स्थान होगा। तुम बिना किसी की परवाह किए उससे विवाह कर सकते हो। उसे तुम पर गर्व होगा। तुम्हारे पिता और तुम्हारी संपत्ति को तुम पर गर्व होगा। और मैं, अगर मैं जीवित रहा तो, तुम पर बहुत गर्व करूंगा।

'यही मेरी सलाह है, झानी। मैंने, राजा मान सिंह राठौर ने, बोल दिया है।'

झानी चुप था। उसकी आँखों में अनकहे आँसू चमक रहे थे, वह सोच रहा था। क्या उससे इस तरह बात करने वाला यह आदमी सचमुच वही डाकू-सरगना हो सकता है, जो हत्या, लूट और हिंसा के आरोप में चार राज्यों में वांछित था? अरे वाह, उसने तो असीम ज्ञान की बातें कह दी थीं, ऐसी कोमलता से जो उसके किसान पिता बालाजी की कठोर भाषा से कहीं अधिक थी।

झानी ने मन बना लिया था। वह बूढ़े आदमी की सलाह मानेगा।

वह उछलकर डाकुओं के सरदार के सामने झुक गया।

उन्होंने सरल शब्दों में कहा, 'महाराजा साहब, आपने मुझसे इस तरह बात की है जैसे मेरे माता-पिता ने मुझसे कभी नहीं की, और मैं आपके परामर्श का पालन करने के लिए बाध्य हूं।'

'शाबाश,' बूढ़े व्यक्ति ने उठते हुए कहा, 'मैं आज रात ही अपने दो आदमियों को तुम्हारे साथ दूसरे रास्ते से निकटतम गांव के बाहरी इलाके तक भेजने का इंतजाम कर दूंगा, जो छह मील दूर है।'

मुझे पता है कि तुम किसी को नहीं बताओगे कि तुम मुझसे या मेरे बैंड के किसी सदस्य से यहाँ मिले और बात की। तुम उस तरह के लड़के नहीं हो।

आप जल्द ही सैनिक बनें और शायद कुछ वर्षों में जनरल भी। कौन जाने? तब शायद इस बूढ़े डाकू, मान सिंह को उसके अनेक बुरे कामों के लिए गोली मारना आपका कर्तव्य बन जाए।

और वह अपने ही मजाक पर दिल खोलकर हँसा।

लेकिन झानी ने धीरे से कहा, 'भगवान न करे, महाराज। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती।'

कुमार अपनी बेटी लोटीबाई को बहुत दूर ले गया था। वह उसे अहमदाबाद शहर ले गया जहाँ उसकी दो बहनें रहती थीं।

उन्होंने स्वयं दो भाइयों से विवाह किया था, जो दोनों शहर के बाहरी इलाके में स्थित बड़े सूती मिलों के मालिक थे। उनके पास आलीशान घर थे और मुनाफे से उन्हें नियमित आय प्राप्त होती थी।

लेकिन उन दोनों की कोई संतान नहीं थी।

समय बीतने के साथ ही दोनों भाइयों का देहांत हो गया, जिससे दोनों बहनें काफी संपन्न जीवनयापन में रह गईं। संतानहीन होने के कारण, मिलों का स्वामित्व (भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार) उनके पतियों के परिवार को वापस मिल गया, जबकि दोनों बहनें अहमदाबाद में अपने नाम पर पहले से निवेशित बैंक पूंजी से प्राप्त अच्छी खासी मासिक आय और अपने-अपने अलग-अलग घरों के सहारे जीवनयापन करती रहीं।

कुमार लोटी को अपनी इन्हीं दो बहनों के पास ले गया। वह जानता था कि वह उन पर पूरी तरह भरोसा कर सकता है कि वे उस पर आए कलंक का राज़ किसी को नहीं बताएंगी। उसे यह भी विश्वास था कि अगर उस अभागे किसान-लड़के की संतान हुई, तो वे जन्म से पहले ही उससे छुटकारा पाने का कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगी। तीसरा कारण यह था कि लोटीबाई अहमदाबाद के लिए अजनबी थी, इसलिए उसे उम्मीद थी कि उसकी दोनों चाचियों के समर्थन और प्रभाव से शहर के धनी चक्की मालिकों में से कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाएगा जो स्वेच्छा से उससे शादी करने को तैयार हो जाए, भले ही वह कुंवारी न रही हो; वैसे भी यह बात उसे पहले ही बतानी थी।

भिंड नामक उस छोटे से कस्बे में, जहाँ वह रहता था और इतना प्रसिद्ध था, ऐसी शादी का आयोजन करना असंभव था। इसके विपरीत, यह अफवाह जंगल की आग की तरह फैल जाती और उसका नाम बाजार में हंसी का पात्र बन जाता।

दोनों चाचियाँ, लोटी के पिता कुमार की तरह, गंभीर स्वभाव की थीं और उनकी नुकीली आकृतियाँ और सुगठित शरीर कुमार से काफी मिलते-जुलते थे। दोनों में बड़ी, कुमारी, जो संयोगवश अपने भाई कुमार से दो साल बड़ी थीं, घर पर हमेशा अपने पति, जो चक्की मालिकों में से एक थे, पर हुकुम चलाती थीं। इसी कारण बेचारे

कुमार ने अपने जीवनकाल में चक्की में तानाशाही स्वभाव अपना लिया था, जहाँ वे अपने अधीनस्थों और आम तौर पर मजदूरों के बीच बेहद अलोकप्रिय थे।

भाग्य ने यही तय किया था कि कुमार से तीन साल छोटी बहन पार्वती का विवाह मिल मालिक भाइयों में से अधिक दबंग भाई से हो, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने घर की मुखिया नहीं बन पाई।

अब दोनों भाइयों की मृत्यु के बाद, कुमारी ने स्वतः ही अपनी छोटी बहन पार्वती पर लगभग माता-पिता जैसा, बल्कि स्पष्ट रूप से तानाशाही जैसा नियंत्रण अपना लिया था।

कुमार और लोटीबाई के अपनी बड़ी बहन कुमारी के घर पहुंचने के तुरंत बाद, पार्वती को बुलाया गया और उन तीनों के बीच हुई एक बैठक में, जिसमें लोटी को जानबूझकर बाहर रखा गया था, कुमार ने लोटी की स्थिति का गहरा रहस्य उजागर किया।

कुमारी, जिन्हें स्वयं की कोई संतान नहीं थी, अत्यंत आक्रोशित थीं।

'तुम क्या कर रहे थे, कुमार?' उसने गुस्से से पूछा। 'तुम्हें उस बदमाश को कोड़े से पीट देना चाहिए था।' पार्वती, जो इस सब के रोमांच से थोड़ी रोमांचित थी, ने पूछा, 'क्या वह सुंदर लड़का है?'

कुमारी उस पर ऐसे झपटी जैसे बाज अपने शिकार पर झपटता है। 'पार्वती, काश तुम इतना मूर्खतापूर्ण और बेतुका सवाल न पूछतीं। क्या वह सुंदर है? सच में! यह सोचकर ही अजीब लगता है! और मान लो कि वह सुंदर है? इससे क्या फर्क पड़ता है?'

'क्या इससे लोटी के प्रलोभन का कारण स्पष्ट नहीं हो जाता?' उसने यह सवाल बड़ी सहजता से पूछा।

'अरे, पार्वती, चुप रहो। उम्र बढ़ने के साथ-साथ तुम और भी बचकानी होती जा रही हो।'

उस फटकार के साथ कुमारी अपने भाई की ओर मुड़ी और बोली, 'लोटी को अंदर आने दो, ताकि हम उससे बात कर सकें।'

तदनुसार लोटीबाई को बुलाया गया, और कुमारी ने अपनी अभागी भतीजी के प्रति अपनी घृणा और भावनाओं को व्यक्त करने में जरा भी समय नहीं गंवाया।

'बेशर्म लड़की,' उसने गुस्से से कहा, 'तुम एक साधारण किसान लड़के को

अपने साथ ऐसा करने की इजाज़त कैसे दे सकती हो?'

लोटी रोने लगी थी।

कुमार अगले दिन अपनी कार में रवाना हो गया था, और उसे लोटीबाई के साथ क्या किया जाना है, इसके बारे में बेहद सख्त निर्देश दिए गए थे।

दोनों बहनें उस पर कड़ी नजर रखती थीं; कुमारी आलोचनात्मक सतर्कता के साथ और पार्वती उम्मीद के साथ, साथ ही एक गुप्त सहानुभूति के साथ, जिसे वह अपनी कठोर बहन को बताने की हिम्मत नहीं करती थी।

दो महीने बीत गए और यह स्पष्ट हो गया कि लोतिबाई गर्भवती थी।

कुमारी ने परिवार के डॉक्टर, जो एक बुजुर्ग व्यक्ति थे, को बुलाया और उनसे अत्यंत गोपनीय तरीके से उनकी राय पूछी।

डॉक्टर ने लोटिबाई की जांच की और बताया कि वह गर्भवती है।

पार्वती यह खबर सुनकर बहुत उत्साहित हो गई। काश, ऐसा उसके साथ भी होता!

लेकिन कुमारी ने डॉक्टर से धीमी आवाज में और काफी देर तक बरामदे के कोने पर बात की, उसके बाद डॉक्टर वहां से चले गए।

फिर उसने लोटिबाई को बुलाया।

"जैसा कि तुम अब तक जान चुकी होगी, बेटी," उसने तीखे व्यंग्य से बोलना शुरू किया, "तुम गर्भवती हो। यह हमारे परिवार में अब तक की सबसे शर्मनाक और कलंकित घटना है, खासकर तब जब बच्चे का पिता एक किसान मात्र है। हर हाल में इस बच्चे को नष्ट करना होगा। मैंने उस भले डॉक्टर से बात की है और वह इसके लिए तैयार हो गए हैं, लेकिन केवल एक विशेष कृपा के रूप में और इसलिए क्योंकि वह हमारे परिवार को कई वर्षों से जानते हैं।"

इस बार लोटी नहीं रोई। इसके विपरीत, उसने ठंडे और सधे हुए धैर्य के साथ अपनी चाची की बातें सुनीं।

फिर उसने बोलना शुरू किया, और उसकी आवाज़ धीमी और चुनौती भरी थी।

'सुनो, कुमारी चाची,' उसने कहा, 'मैं होने वाले बच्चे के पिता से प्यार करती हूँ और वह भी मुझसे प्यार करता है। वह अगली ही सुबह मुझसे विधिपूर्वक विवाह करने आया था, लेकिन पिताजी ने रोक दिया। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उसने मुझे निराश किया।'

'इसी वजह से, मैं इस बच्चे को जन्म देने जा रही हूं, चाहे पिता या आप इसके विपरीत कुछ भी सोचें, कहें या करें।'

और अगर आप मुझे गर्भपात कराने के लिए मजबूर करने की कोशिश करेंगे, तो मैं इसी वक्त पुलिस कमिश्नर के पास जाऊंगी और उन्हें बताऊंगी कि आप और आपके पारिवारिक मित्र, वह सम्मानित डॉक्टर, क्या कर रहे हैं।

'आपने कई लोगों को कई बार अपनी मर्जी के मुताबिक काम करने के लिए मजबूर किया होगा, आंटी कुमारी। लेकिन इस बार आप मुझे गर्भपात कराने के लिए मजबूर नहीं कर सकतीं। और तो और, आप यह जानती भी हैं।'

लोटी ने बोलना बंद कर दिया और चारों ओर एक मार्मिक सन्नाटा छा गया।

'बिल्कुल सही कहा, लोटी।'

ये शब्द एक शांत आवाज में निकले थे। कोमल पार्वती की आवाज।

कुमारी आंटी गुस्से से आग बबूला थीं। दबी हुई क्रोध से उनका शरीर कांप रहा था। अपनी मनमानी करने के आदी सभी लोगों की तरह, वह भी हार बर्दाश्त नहीं कर पा रही थीं, क्योंकि उन्हें सहज रूप से पता था कि इस बार, पहली बार, उन्हें ही जीत का सामना करना पड़ेगा।

लड़की ने आखिरी समय में उसे हरा दिया था।

फिर उसके क्रोध का सैलाब उमड़ पड़ा।

'अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी, तो बेशर्म कुतिया, तुम मेरे घर से तुरंत निकल जाओ। मेरा मतलब है, आज ही।' ये शब्द गुस्से की बाढ़ में निकले।

'मैं अभी कर दूंगी, कुमारी चाची,' लोटी ने उत्तर दिया और कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ गई।

'एक मिनट रुको, लोटी।' पार्वती की शांत आवाज फिर सुनाई दी। कुमारी की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, 'यह हमारी अपनी भतीजी है, कुमारी। याद रखना। यह हमारी अपनी संतान है। मैं इसे सड़कों पर नहीं फेंकूँगी।'

लेकिन कुमारी क्रोध से बौखला गई। वह उछलकर खड़ी हो गई और उसकी आवाज क्रोध से तीखी और उग्र हो गई।

'तो तुम दोनों यहाँ से चले जाओ और फिर कभी मेरे घर में कदम मत रखना।'

पंद्रह मिनट के भीतर लोटी ने अपना थोड़ा-बहुत सामान इकट्ठा कर लिया; और फिर, उसने अपनी बांह कमजोर, प्यारी पार्वती की कमर में डाल ली - वही छोटी

पार्वती जिसने अपने पूरे जीवन में आज तक मार खाई थी - और वे दोनों एक साथ इमारत से बाहर निकल गईं।

~

लोटीबाई ने एक बच्चे को जन्म दिया। एक सुंदर लड़का।

जब वह उसे प्रेम से निहार रही थी, तो उसकी चमकती आँखों में वही भाव दिखाई दिया जो उसने उसके पिता झानी की आँखों में देखा था और जिसे वह बहुत पसंद करती थी। नन्हे से बच्चे को भी दुनिया की कोई चिंता नहीं थी, क्योंकि बिना किसी आग्रह के, वह सहज रूप से अपनी नन्ही हथेलियों से उसकी भरी हुई छाती को थामने लगा। वह तब तक चूमता और सूंघता रहा जब तक कि उसे अपने छोटे से मुँह से निप्पल नहीं मिल गया और उसने लगन से अपना पहला भोजन किया।

पार्वती ने नीचे उसकी ओर देखते हुए संतोष भरी मुस्कान बिखेरी। भले ही ईश्वर ने उसे अपना बच्चा न दिया हो, फिर भी वह ईश्वर की आभारी थी कि उन्होंने उसे उस दिन अपनी बहन कुमारी का सामना करने का साहस दिया, जो परिवार के गौरव के नाम पर इस नन्हे शिशु की जान बेरहमी से ले लेती।

~

उसके लगभग एक साल बाद, नन्हा झानी, जैसा कि लोटी अपने बच्चे को बुलाने पर जोर देती थी, एक बहुत ही होशियार लड़का बन रहा था।

इतनी कम उम्र में भी वह शरारतों से भरा हुआ था, और लोटी उसकी सभी शरारतों को माफ कर देती थी क्योंकि यह उसे उसके प्यारे पिता की याद दिलाती थी, वह शरारती छोटा स्कूली लड़का जो उसके बाल खींचने पर अड़ा रहता था।

पार्वती मौसी भी नन्हे झानी को बहुत प्यार करती थीं। उस बच्चे ने उनके जीवन में उस खालीपन को भर दिया था जो उसके आने से पहले हमेशा से था। वास्तव में, वह उसे लगभग अपने बेटे की तरह मानती थीं और कभी-कभी इस बात से ईर्ष्या करती थीं कि उन्हें झानी के बचपन के स्नेह को उसकी माँ के साथ बाँटना पड़ता था।

लोटीबाई को ईश्वर और अपनी मौसी पार्वती का बहुत-बहुत धन्यवाद करना था। सर्वशक्तिमान की कृपा और अपनी दुर्बल छोटी मौसी के साहस और दयालुता के कारण ही वह बेघर हो गई थी।

लेकिन लोटीबाई मन ही मन गंभीरता से सोच रही थी। उसे लग रहा था कि यह उचित नहीं है कि वह जीवन भर उस नेक महिला पर निर्भर रहे जिसने मुश्किल समय में उसका साथ दिया था। अब जब उसकी मुसीबतें टल गई हैं, तो यही उचित होगा कि वह स्वयं कमाने के बारे में सोचे ताकि वह उस छोटे बच्चे का आत्मनिर्भरता से भरण-पोषण कर सके।

वह जितना ज्यादा सोचती गई, उतना ही दृढ़ होती गई कि उसे इस बारे में कुछ करना चाहिए।

और फिर भाग्य ने दूसरी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की जिसने उसे यह अवसर प्रदान किया।

मुंबई की एक फिल्म कंपनी गुजरात पर आधारित एक फिल्म के कुछ दृश्यों की शूटिंग के लिए अहमदाबाद आई थी और कुछ समय के लिए वहीं ठहरी थी।

उसकी एक सहेली, जिससे उसकी जान-पहचान हुई थी, कंपनी के एक निर्माता की रिश्तेदार थी। एक दिन उस सहेली ने उससे कहा, 'लोटी, तुम कितनी खूबसूरत हो। अहमदाबाद जैसी गंदी जगह में क्यों फंसी रहती हो? फिल्म स्टार क्यों नहीं बन जाती? अगर तुम किसी फिल्म कंपनी में आवेदन करो तो वो तुम्हें तुरंत काम दे देगी। अगर मैं इतनी बदसूरत न होती तो मैंने यह काम बहुत पहले ही कर लिया होता।'

‘देखिए, मेरे चाचा बॉम्बे एसोसिएटेड पिक्चर्स कॉर्पोरेशन में प्रोड्यूसर हैं। वे फिलहाल अहमदाबाद में अपनी गुजराती फिल्म की शूटिंग के सिलसिले में आए हुए हैं। अगर आप सहमत हों, तो मैं उनसे कुछ दिनों में मिलने का समय तय कर लूंगा और आपका उनसे परिचय करा दूंगा।’

लोटी के लिए यह विचार इतना रोमांचक था कि वह तुरंत इस पर फैसला नहीं कर पा रही थी। क्या उसके सफल होने की कोई संभावना थी? क्या कोई उम्मीद भी थी?

लोटीबाई ने अपनी सहेली से वादा किया कि वह इस मामले पर गंभीरता से विचार करेगी और उसे अगले दिन बताएगी।

उस शाम लोतिबाई ने हमेशा की तरह स्नान किया। स्नानघर से बाहर आकर वह अपनी अलमारी के दरवाजे पर लगे पूरे आकार के दर्पण के सामने खड़ी हो गई, उसके गीले शरीर पर अभी भी तुर्की स्नान तौलिया लिपटा हुआ था।

क्या वह इतनी खूबसूरत थी कि उसे किसी फिल्म कंपनी में काम मिलने का

मौका मिल सके?

लोटी ने बड़ी ध्यान से दर्पण में अपनी ही परछाई का अध्ययन किया, जो उसे वापस देख रही थी।

उसने निडरता से, लगभग निर्लज्जता से, स्नान तौलिये को अपने पैरों पर गिरने दिया, जबकि वह अपने सामने खड़ी नग्न लड़की का निहार रही थी।

उसके स्तन पहले की तरह ही भरे हुए और सुडौल थे। उसने लगभग प्रेम से उन्हें एक-एक हाथ में उठाया और संतुष्टि से शहतूत के रंग के निप्पल्स को देखा जो उसके सुडौल शरीर के उभारों पर हल्के गहरे रंग के एरिओला के विपरीत उभरे हुए थे।

उसने संतुष्टि के साथ उन सुडौल कंधों को देखा जो उसकी सांवली कमर तक सुंदर और समरूप रूप से नीचे की ओर संकरे होते गए, और फिर कमर उसके कूल्हों के आकार में तेजी से और चौड़ाई से उभरती गई।

उसने अपनी जांघों की गोलाई और दृढ़ता देखी और उस दृढ़ता को परखने के लिए उन्हें अपनी उंगलियों से दबाया। वे कितनी खूबसूरती से उभरी हुई थीं, और फिर घुटनों तक समान रूप से पतली होती गईं, और फिर से सुंदर पिंडलियों में फैल गईं, जो आकर्षक टांगों का प्रदर्शन कर रही थीं।

लोटीबाई ने अपना चेहरा निहारने के लिए आँखें ऊपर उठाईं। क्या सचमुच उसका चेहरा सुंदर था या उसकी सहेली ने उसकी सिर्फ़ तारीफ़ की थी? शायद था; शायद नहीं था। खैर, रोज़ाना कई बार आईने में अपना चेहरा देखने के बाद भी वह निश्चित नहीं कह सकती थी।

उस रात उसे नींद भी नहीं आई। वह फिल्म अभिनेत्री बनने के रोमांच के बारे में सोच रही थी।

अगली सुबह लोटी ने अपनी सहेली से संपर्क किया और उससे अपने चाचा के साथ साक्षात्कार की व्यवस्था करने के लिए कहा।

निर्माता ने संदेश भेजा कि उन्हें अगली शाम ठीक 4 बजे अपने कार्यालय में उनसे मिलकर खुशी होगी।

अगली दोपहर लोटी को तैयार होने में काफी समय लग गया। कुछ देर सोचने के बाद उसने नीले और सुनहरे बॉर्डर वाली अपनी सफेद शिफॉन साड़ी पहनने का फैसला किया। यह बहुत भड़कीली नहीं लगेगी। साथ ही, उसे पता था कि यह साड़ी उस पर खूब जंच रही है। पार्वती आंटी और उनकी सहेलियों ने भी यही कहा था।

लोटी बेहद खूबसूरत लग रही थी जब वह पीले रंग के ऑटो रिक्शा में बैठी, जो उसे उसकी सहेली सुरेंद्र के घर ले जाएगा। फिर वे दोनों साथ में उसकी सहेली के चाचा, जो निर्देशक-निर्माता हैं, के कार्यालय जाएंगी।

बॉम्बे एसोसिएटेड पिक्चर्स कॉर्पोरेशन के निर्माताओं में से एक रहे साठे को खुद पर गर्व था और वे खुद को एक स्व-निर्मित व्यक्ति मानते थे। वे जीवन के सबसे निचले स्तर से उठकर आज इस उच्च पद और धन-दौलत तक पहुंचे थे।

उसके पिता उससे पहले बैंक क्लर्क थे और साठे ने अपने पिता के नक्शेकदम पर चलना शुरू किया। लेकिन साठे को बैंकिंग से नफरत थी।

वे शाम को घर पर उपन्यास लिखते थे।

उनकी कई रचनाएँ प्रकाशकों द्वारा अस्वीकार कर दी गईं। लेकिन वे निराश नहीं हुए। उन्होंने लगातार प्रयास किया और और भी उपन्यास लिखकर भेजे।

और उनमें से एक को यह बात समझ में आ गई।

यह इतनी अच्छी कहानी थी कि एक फिल्म कंपनी ने इसे फिल्माने का फैसला कर लिया।

साठे को उनके उपन्यास पर आधारित फिल्म बनाने के लिए नियुक्त निर्देशक के सहायक के रूप में अनुबंध की पेशकश की गई थी। उन्होंने इतना अच्छा काम किया कि कंपनी ने उन्हें एक तरह के सहायक के रूप में अपने वेतन पर बनाए रखा।

फिर भारत की फिल्म कंपनियों पर मंदी का असर पड़ा। यह उनके शुरुआती वर्षों की बात है, जब वे ठीक से स्थिर या मान्यता प्राप्त नहीं कर पाई थीं।

उनमें से कई विफल हो गए, और साठे जिस कंपनी में काम करते थे उसे बंद करने का सवाल सावधानीपूर्वक विचार के लिए सामने आया।

यही वो समय था जब साठे ने कदम रखा और अपने जीवन की सबसे बेहतरीन फिल्म का निर्देशन किया। यह अब तक किसी भारतीय फिल्म कंपनी द्वारा बनाई गई सर्वश्रेष्ठ फिल्म थी।

इससे उनकी कंपनी को नई जान मिली। नए शेयरधारकों से नई पूंजी आई और बॉम्बे एसोसिएटेड पिक्चर्स कॉर्पोरेशन नाम की संस्था का गठन हुआ। उनकी समयोचित सेवाओं को देखते हुए, साठे को कंपनी में निदेशक-निर्माता बनाया गया।

वह कद में छोटा, लगभग पैंतालीस वर्ष का व्यक्ति था, हमेशा सलीके से, साफ-सुथरा और अच्छे कपड़े पहने रहता था। ऊर्जा से भरपूर, उसके सहायक उसे

अथक परिश्रमी मानते थे। ऐसा लगता था मानो उसने कभी 'नहीं कर सकता' शब्द सुना ही न हो; न ही उसे असफलता का अर्थ पता था। वह तब तक लगातार काम करता रहता जब तक कि वह अपना काम पूरा न कर ले और उसे सफलतापूर्वक संपन्न न कर ले।

उसके सिर पर लोहे जैसे भूरे रंग के बाल थे जो गोली के आकार के थे और ऊपर से थोड़े-थोड़े झड़ रहे थे। भूरी आँखें, नुकीली नाक, करीने से संवरी हुई मूंछें और भरे हुए होंठ, एक तीखे जबड़े के साथ मेल खाते थे जो थोड़ी नुकीली ठुड्डी पर समाप्त होता था।

श्री साठे को यह सोचकर गर्व होता था कि वे एक नजर में बता सकते हैं कि जिस पुरुष या महिला का वे साक्षात्कार ले रहे हैं, वह उस नौकरी के लिए उपयुक्त है या नहीं जिसके लिए उन्होंने आवेदन किया है और क्या वे योग्यता पूरी कर सकते हैं या नहीं।

उन्होंने ऊपर देखा और मुस्कुराए जब उनकी भतीजी, सुरेंद्र, उस शाम ठीक चार बजे उनके कार्यालय में दाखिल हुई, उसके पीछे एक बेहद खूबसूरत, सुडौल, मध्यम कद की लड़की सफेद साड़ी में थी जो उसके काले घने बालों के साथ एकदम विपरीत दिख रही थी।

'चाचा जी, यह लोटीबाई है, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था,' सुरेंद्र ने सरल शब्दों में परिचय कराया।

साठे खड़े हुए और उन्होंने दोनों युवतियों को अपनी मेज के उस पार, उनके सामने रखी लगभग आधा दर्जन कुर्सियों की ओर इशारा किया।

बैठने के बाद, उसने लोटी को गहरी निगाहों से देखा। लोटी को महसूस हुआ कि उसकी निगाहें ऊपर से नीचे तक घूम रही हैं, मानो उसे परख रही हों। ऐसा लग रहा था मानो वह उसे पूरी तरह से परख रहा हो।

फिर उन्होंने बोलना शुरू किया और उनके शब्दों में एक गहरी स्पष्टता थी। वे सीधे मुद्दे पर आए। 'मिस लोटिबाई, आपको फिल्मों में आने की प्रेरणा कहाँ से मिली? आपको ऐसा क्यों लगता है कि आप अभिनय कर सकती हैं?'

यह एक दोहरा प्रश्न था, और इसने उसे लगभग पूरी तरह से स्तब्ध कर दिया।

उसने बिना सोचे-समझे जवाब दिया।

'मैं बिल्कुल सच बोलूंगी, महोदय, और कुछ भी नहीं छिपाऊंगी,' उसने कहा।

‘अपनी आजीविका कमाने की मजबूरी मुझे इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित करती है। मेरी आवाज अच्छी है और मुझे संगीत पसंद है। और मुझे लगता है कि अगर मुझे मौका दिया जाए तो मैं अभिनय भी कर सकती हूं।’

अगला सवाल पूछने से पहले साठे ने अपने होंठ सिकोड़ लिए।

क्या आपने पहले कभी अभिनय किया है?

‘नहीं श्रीमान,’ लोटी ने सच्चाई से जवाब दिया, उसकी आँखों में निराशा के आँसू आ गए क्योंकि उसे अपने जवाबों की असंतोषजनक प्रकृति का एहसास हो गया था, ‘लेकिन कृपया, कृपया मुझे बस एक मौका दीजिए।’

साठे ने एक बार फिर अपने होंठ फुला लिए।

वह सोचता था कि ये लड़कियाँ फिल्म कंपनियों को क्या समझती हैं? क्या वे कोई धर्मार्थ संस्थाएँ हैं? अभिनय का कोई अनुभव न होने के बावजूद फिल्मों में आने की इतनी हिम्मत! यह एक तरह की धृष्टता थी, या यूँ कहें कि दिलेरी।

लेकिन साठे को हिम्मत पसंद थी। वह इसकी प्रशंसा करते थे। क्या उनमें खुद हिम्मत नहीं थी? एक समय बैंक क्लर्क रहे, फिल्म जगत में आने से पहले उन्हें फिल्मों के बारे में क्या पता था? धिक्कार है! यह तो उनकी हिम्मत और दृढ़ संकल्प ही थे जिन्होंने उन्हें आगे बढ़ाया और निर्माता के रूप में उनकी वर्तमान स्थिति तक पहुंचाया।

हाँ, उन्हें साहस और दृढ़ संकल्प पसंद था। क्योंकि उनमें स्वयं ये दोनों गुण प्रचुर मात्रा में थे।

और जाहिर तौर पर इस लड़की ने भी ऐसा ही किया था।

इसके अलावा, वह बेहद खूबसूरत और सुडौल भी थी। इसमें कोई शक नहीं था। उसने सफेद शिफॉन साड़ी के नीचे छिपी उसकी आकर्षक आकृति को पहले ही देख लिया था।

और वो रोने ही वाली थी। उसे ये अच्छा नहीं लगा। क्या उसके आंसू बनावटी थे या सच्चे थे?

अगर वे बनावटी थे—तो वह एक ऐसी शानदार अभिनेत्री थी जिसने उसके जैसे चालाक बूढ़े व्यक्ति को भी यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वे असली थे या नहीं।

अगर वे असली थे तो फिर क्या फर्क पड़ता है!

क्या इससे कोई खास फर्क पड़ता था? किसी ने उसे जीवन में एक मौका दिया था, और उसने उसे भुना लिया था।

उसे इस खूबसूरत युवती को अब मौका क्यों नहीं देना चाहिए?

‘ठीक है, मिस लोटिबाई,’ उसने कहा, ‘आपकी नियुक्ति हो गई है—कल से। ठीक नौ बजे यहाँ काम पर आ जाइए। हम देखेंगे कि हम आपसे क्या उम्मीद कर सकते हैं।’

लोटी ने हकलाते हुए धन्यवाद कहा। और इस बार उसने कोई बनावटीपन नहीं दिखाया। उसकी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे। बेकाबू होकर।

उस रात खाना खाने के बाद, लोटी और आंटी पार्वती ने छोटी ज्ञानी को बिस्तर पर सुलाया। फिर वे आखिरी कप कॉफी पीने के लिए भोजन कक्ष में गईं।

‘चाची, मुझे आपको कुछ बताना है,’ लोटीबाई ने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया। ‘मैंने इसे पूरे दिन गुप्त रखा है, और मुझे उम्मीद है कि आप मुझसे नाराज़ नहीं होंगी।’

'आप बहुत प्यारी हैं, पार्वती आंटी। मेरे लिए आप माता-पिता से भी बढ़कर हैं।'

लेकिन मैं अब और आपकी उदारता पर इस तरह से जीवन यापन नहीं कर सकती, और न ही व्यक्तिगत रूप से और न ही अपने और छोटी ज्ञानी के भरण-पोषण के संबंध में आप पर बोझ बन सकती हूँ।

‘तो आज मैंने मुंबई की एक फिल्म कंपनी में नौकरी के लिए आवेदन किया—और मुझे नौकरी मिल गई। मैं कल सुबह से काम शुरू कर दूंगा।’

पार्वती को गहरा सदमा लगा। पहले तो उन्हें अपनी भतीजी पर गुस्सा आया क्योंकि उसने यह सब उनसे छिपाकर रखा था।

लेकिन उसे यह भी लगा कि वह इसके पीछे का कारण समझती है। अगर वह लोटी की जगह होती, तो उसे भी अनिश्चित काल तक किसी और की कृपा पर जीने में बुरा लगता। वह भी लोटी की तरह ही नौकरी की तलाश करती।

पार्वती आंटी एक समझदार आत्मा थीं।

ऊपर देखते हुए, उन्होंने लोटी को प्यार से मुस्कुराते हुए कहा, 'बधाई हो, मेरी प्यारी, तुम एक मशहूर फिल्म अभिनेत्री बनो। लेकिन मेरी एक शर्त है। जब तक तुम खुद को स्थापित नहीं कर लेती, तब तक छोटी ज्ञानी को कम से कम कुछ महीनों के लिए मेरे पास रहने दो।'

लोटी जानती थी कि वह इस दयालु आत्मा को मना नहीं कर सकती, जो इतने लंबे समय से उसके साथ खड़ी रही थी, हालांकि उस छोटे बच्चे को पीछे छोड़ना उसके

लिए दिल तोड़ने वाला होगा।

मान सिंह के दो गुर्गों द्वारा उसे निकटतम गांव के बाहरी इलाके में छोड़ने के बाद, झानी धीरे-धीरे चरणों में आगे बढ़ते हुए पुणे पहुंचा, जहां सेना के लिए एक भर्ती केंद्र था।

उसने आवश्यक प्रपत्र भरे और विधिवत भर्ती अधिकारी के सामने उपस्थित हुआ।

सार्जेंट ने उसे उसी तरह घूरा जैसे दुनिया भर के सभी भर्ती सार्जेंट, चाहे वे किसी भी सेना, राष्ट्र, धर्म या रंग के हों, आम नागरिकों से आए नए रंगरूटों को घूरते हैं। उसकी आँखों में स्पष्ट तिरस्कार झलक रहा था।

‘अब तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि तुम एक अच्छे सैनिक बनोगे?’ उसने पूछा।

‘क्योंकि मैं ऐसा बनना चाहती हूं,’ झल्ली ने जवाब दिया था।

सार्जेंट ने टिप्पणी की, 'यह तो बहुत ही बढ़िया जवाब है। और नागरिक जीवन में आप क्या थे?'

'एक किसान,' स्पष्ट जवाब आया।

‘भगवान कृष्ण की कसम, किसान!’ सार्जेंट ने चिढ़कर कहा, ‘अब आगे क्या? नौसेना या वायु सेना में भर्ती क्यों नहीं हो जाते, और उन कमीनों को तुम्हें सैनिक बनाने की मुसीबत क्यों नहीं देते? तुम्हें दाएँ और बाएँ पैर का फर्क सिखाने में हमें बहुत मशक्कत करनी पड़ेगी। किसान! धिक्कार है!’

झानी ने भौंहें चढ़ाईं। उसने सोचा, इस आदमी को क्या हो गया है? हर रेलवे स्टेशन और गली के कोने पर मुझे ऐसे पोस्टर दिखते हैं जिनमें नौजवानों को सेना में भर्ती होने के लिए कहा जाता है। फिर भी जब मैं यहाँ आता हूँ, तो यह बेवकूफ मुझे अवांछित महसूस कराता है। मुझे उससे पूछना ही होगा।

और झानी ने अपने विचारों को शब्दों में व्यक्त करना शुरू कर दिया।

उन्होंने कहा, 'देखो सिपाही, हर जगह पोस्टर लगे हुए हैं, जो युवकों को सेना में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं।'

लेकिन जब मैं ऐसा करने आता हूँ, तो आप मुझसे पूछते हैं कि मैं सेना में क्यों शामिल होना चाहता हूँ। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने ऐसे पोस्टर क्यों लगाए हैं?

इस जवाब से सार्जेंट का चेहरा गहरे रंग के नीचे राख जैसा पीला पड़ गया। उसने कहा, 'बड़ा होशियार आदमी है, है ना?' 'ठीक है; उस दरवाजे से अंदर जाओ। डॉक्टर तुम्हारा मेडिकल परीक्षण करेंगे।'

झानी शारीरिक रूप से बहुत स्वस्थ पाई गई।

अगले दिन उन्होंने शपथ ली और भारतीय सेना में सिपाही या जवान बन गए।

दो दिन बाद उन्हें रेलवे वारंट दिया गया और जबलपुर जाने का आदेश दिया गया, जहाँ उन्हें उस रेजिमेंट में शामिल होना था जिसमें उन्हें सेवा के लिए तैनात किया गया था। यह राष्ट्रपति की लाइट इन्फैंट्री की पहली बटालियन थी।

अगले कुछ दिन उस किसान-लड़के के लिए बेहद व्यस्त रहे। खेत में काम करने, सुबह जल्दी उठने और दिन भर अपनी मर्जी से काम करने की दिनचर्या का आदी होने के कारण, उसे सेना में नए रंगरूट का जीवन बहुत अलग लगा; सिवाय सुबह जल्दी उठने के, जिसकी उसे अच्छी तरह से आदत थी।

जहां घर पर मुर्गे की बांग उसे जगा देती थी, वहीं यहां बिगुल बजाने वाले की तेज आवाज से दिनचर्या शुरू होती थी; एक ऐसी दिनचर्या जो पुराने फार्म की किसी भी दिनचर्या से कहीं अधिक कठिन थी।

यहां सब कुछ आदेशानुसार, समय पर और अनुशासन के साथ होता था। हर समय, हर पल, जल्दीबाजी और फुर्ती का माहौल रहता था। इसकी शुरुआत सुबह दांत साफ करने और नहाने से होती थी; फिर शौचालय की ओर भागना; नाश्ते के लिए भागना; फिर पूरी वर्दी पहनकर परेड में शामिल होने के लिए भागना। ये परेड अंतहीन और कई तरह की होती थीं। मार्चिंग ड्रिल, आर्म्स ड्रिल, राइफल ड्रिल। प्रशिक्षण पूरा होता था। छोटे हथियारों का प्रशिक्षण, स्वचालित हथियारों का प्रशिक्षण, सामरिक प्रशिक्षण, फील्ड प्रशिक्षण। निरीक्षण भी बहुत होते थे। किट निरीक्षण, बैरक-कक्ष निरीक्षण, हथियारों का निरीक्षण, और यहां तक कि स्वास्थ्य और शारीरिक जांच भी। फिर कर्तव्य निभाने होते थे। बैरक के कर्तव्य, शिविर के कर्तव्य, पहरेदारी के कर्तव्य।

यह सब उस सरल किसान के जीवन से बहुत अलग था जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था।

झानी को शुरू में सेना का जीवन पसंद नहीं था। लेकिन इसकी एक अच्छी बात यह थी कि इससे उसे आत्मनिरीक्षण करने का ज्यादा समय नहीं मिलता था। क्षण भर

के लिए वह लोटी की यादों में खो जाता। वह सोचता, इस समय वह कहाँ होगी?

कभी-कभी वह अपने बूढ़े पिता बालाजी और बारह एकड़ की उस कठोर भूमि के बारे में सोचता था जो उनके खेत और कृषि भूमि थी।

रेजिमेंट में शामिल हुए उसे एक महीना ही हुआ था कि उसने घर चिट्ठी लिखकर पिताजी को बताया कि वह सेना में भर्ती हो गया है। चिट्ठी लिखते समय झानी इस बात के लिए आभारी था कि पिताजी ने उसे शिक्षित करने के लिए पैसे खर्च किए ताकि वह चिट्ठी लिख सके। उसे यह भी चिंता सता रही थी कि उसके पिताजी इसे कैसे पढ़ेंगे, क्योंकि वे तो अनपढ़ थे।

फिर उसे बूढ़े पुश्तू की याद आई। जी हाँ, वह निःसंदेह पत्र अपने पड़ोसी बूढ़े पुश्तू को दे देगा। पुश्तू मोहल्ले में 'समझदार' माना जाता था। लोग अक्सर उसके पास पत्र पढ़ने या लिखने में मदद के लिए और निजी, पारिवारिक या अन्य समस्याओं पर सलाह लेने आते थे। बूढ़ा पुश्तू इस काम से कुछ पैसे भी कमा लेता था। वह पत्र पढ़ने के लिए आधा आना लेता था; पत्र लिखने के लिए एक आना से लेकर आठ आना तक लेता था, यह विषय, पत्र की लंबाई और पत्र के महत्व पर निर्भर करता था। सलाह के लिए दो आना से लेकर शायद दो रुपये तक लगते थे। छोटी-मोटी समस्याओं के लिए कम शुल्क लिया जाता था। दहेज लेने या न देने के लिए सौदेबाजी करने की सलाह के लिए एक रुपये से तीन रुपये तक लग सकते थे। राजस्व कर वसूलने वाले, आयकर अधिकारी और यहाँ तक कि पुलिस से बचने के तरीके जैसी गंभीर सलाह के लिए बूढ़े पुश्तू को गहन चिंतन करना पड़ता था। इस तरह की सलाह के लिए काफी पैसे लगते थे।

झानी के पत्र का उत्तर दो सप्ताह के भीतर आ गया। उसने गांव के मुंशी की लिखावट को पहचानते हुए मन ही मन मुस्कुराया।

पिताजी ने कहा, 'बेटे, यह सुनकर मुझे बहुत गर्व हुआ कि तुम सेना में भर्ती हो गए हो। जिस दिन से तुम गए थे और तुमसे कोई खबर नहीं मिली, तब से मैं तुम्हारी चुप्पी को लेकर बहुत चिंतित था, सोचता रहता था कि तुम कहाँ हो और क्या कर रहे हो।'

इस साल गेहूँ की फसल अच्छी हो रही है और कुआँ पानी से भरा है। हालाँकि, सब्जियाँ उतनी अच्छी नहीं हैं, खासकर गाजर। लगता है किसी कीड़े ने उन पर हमला कर दिया है। शायद पिछले साल जो खाद डाली थी, वह काफी नहीं थी। बत्तखें ठीक

हैं, हालाँकि हाल ही में मेरी चार बत्तखें मर गईं। एक सिवेट बिल्ली बाड़ के नीचे से सुरंग बनाकर अंदर घुस आई और उसने चारों बत्तखों के सिर काट दिए और फिर उनका खून पी लिया। वह भी एक ही रात में!

इसलिए मैंने सेवानिवृत्त पुलिस जमादार की बंदूक उधार ली और अगली रात भूसे के ढेर में छिपकर उस बदमाश का इंतजार किया। वह रात आठ बजे आया, शायद और बत्तखों को मारने के इरादे से। वह बंदूक वाकई कमाल की है। उसने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

"बेटा, अपना ख्याल रखना और ईश्वर को कभी मत भूलना। हो सके तो युद्धों में जाने से बचना। लेकिन अगर भेजा जाए तो बहादुरी से लड़ो और यश प्राप्त करो।"

और अंत में, बेटा, कृपया जल्द ही खेत पर वापस आने की कोशिश करो। मेरी ये बूढ़ी हड्डियाँ कभी-कभी चरमरा जाती हैं, और मुझे काम बहुत थकाने वाला लगता है। मेरे जाने के बाद इसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होगा और सारी बत्तखें मर जाएँगी। यह सब तुम्हारे लिए है, झानी मेरे बेटे। इसलिए, अपनी सैनिक सेवा पूरी करो और जल्दी वापस आ जाओ।

जब झानी ने वह पत्र पढ़ना समाप्त किया, तो उसके गले में एक बहुत ही दर्दनाक गांठ सी आ गई और उसकी आँखों की पलकें आँसुओं से नम हो गईं। उस पत्र ने उसे खेत और अपने बूढ़े पिता की याद दिला दी और उसे घर की बहुत याद सताने लगी।

पिताजी ने उस बहुमुखी पश्तू लेखक को इसे लिखने के लिए कम से कम चार आने जरूर दिए होंगे, उसने मन ही मन सोचा।

एक साल बीत गया। झानी अब लांस कॉर्पोरल बन चुका था। अधिकारियों, सार्जेंटों और जवानों द्वारा पसंद किया जाने वाला झानी सेना के जीवन में पूरी तरह से ढल चुका था।

छह महीने बाद उसने पहली छुट्टी ली और वारंट पर अपने पिता और खेत को देखने घर गया। खाकी वर्दी में बेहद आकर्षक दिख रहे अपने सिपाही बेटे को गले लगाते हुए बालाजी खुशी से रो पड़े। उन्होंने गर्व से उसे पड़ोसियों और बूढ़े पश्तू को दिखाया।

झानी ने देखा कि उसके पिता के बाल पहले से ज़्यादा सफ़ेद हो गए थे, और उनके मज़बूत, देहाती शरीर में अब हल्का सा झुकाव आ गया था। लेकिन यह बहुत

मामूली था।

खेत देखने में मध्यम रूप से समृद्ध लग रहा था, लेकिन जब झानी बाद में अच्छी तरह से याद की गई सीमाओं का चक्कर लगा रहा था, तो उसकी पैनी नज़र ने, जो अभी भी उतनी ही कुशल थी, यह बता दिया कि कुछ जगहों पर खेत की देखभाल नहीं हो पा रही थी और वह लगातार फैलती हुई कंटीली खरपतवारों से भर गया था। वह जानता था कि यह सारा काम उसके बूढ़े पिता के लिए अकेले करना निस्संदेह बहुत अधिक और थका देने वाला हो रहा था, और न ही उनके पास किसी को काम पर रखने के लिए पैसे थे।

इसके बाद झानी अपनी रेजिमेंट में लौट आए और जबलपुर स्थित मुख्यालय में पंद्रह महीने और बिताए। अब उनकी बांह पर तीन बैज इस बात का संकेत थे कि वे सार्जेंट के पद तक पहुंच चुके थे।

जबलपुर में एक सिनेमाघर था, जिसे 'गैरीसन थिएटर' के नाम से जाना जाता था, जो लगभग पूरी तरह से वहां तैनात सैन्य कर्मियों के लिए ही था। ब्रिटिश शासन के दिनों में यह एक लोकप्रिय मनोरंजन स्थल और शाम बिताने का एक अच्छा साधन हुआ करता था, जब अधिकांश स्थानीय बारों में जाना प्रतिबंधित था।

फिर टॉमी हमेशा के लिए भारत से चली गई और उसकी जगह जवान ने ले ली। सिनेमाघर सैन्य कर्मियों की ज़रूरतों को पूरा करते रहे, लेकिन अब वहाँ अंग्रेज़ी फ़िल्में बहुत कम दिखाई जाती थीं, क्योंकि हिंदी फ़िल्मों की बढ़ती मांग को देखते हुए हिंदी फ़िल्मों का चलन बढ़ गया था।

झानी खुद फिल्मों के बहुत शौकीन नहीं थे और कभी-कभार ही फिल्में देखने जाते थे। लेकिन जब वे सार्जेंट बन गए, तो उनके सामाजिक संपर्क बढ़ गए और वे अन्य सार्जेंटों के साथ अक्सर फिल्में देखने जाने लगे।

रेजिमेंट में एक नौजवान था, जो सार्जेंट भी था और उसका खास दोस्त बन गया था। इस नौजवान का नाम मूगन था।

एक शाम मोगन ने कहा, 'चलो आज शाम फिल्म देखने चलते हैं, झानी। 'रथ की रानी' नाम की एक फिल्म लगी है। इसमें बटलीबोई और नई अभिनेत्री लोटीबाई हैं। मैंने उसे पहले सिर्फ एक बार देखा है, और वो बहुत ही खूबसूरत है, मैं तुम्हें बता सकता हूँ।'

झानी की आँखों में एक उदास भाव छा गया। 'लोटीबाई'—उसकी लोटीबाई—

वह कहाँ हो सकती है? काश, वह उसे एक बार फिर साक्षात देख पाता।

‘अच्छा, तो इसके बारे में क्या?’ मूगन ने पूछा, ‘क्या तुम आओगे?’

लेकिन झानी को उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दी। उसे केवल बारिश की सरसराहट और गरज की आवाज़ सुनाई दी। जिस बैरक में वे खड़े थे, वह नज़रों से ओझल हो गया, और उसकी जगह एक पुरानी, जर्जर इमारत आ गई, जिसमें खिड़कियाँ नहीं थीं और जिसकी जर्जर दीवारों से नमी धारियों के रूप में टपक रही थी। अंदर लगभग अंधेरा था—और रात के ढलते ही हर पल अंधेरा और गहरा होता जा रहा था।

उसकी बाहों में एक प्यारी सी स्त्री थी, जिसके बाल और कपड़े बारिश से भीगे हुए थे, उसकी सुंदर आंखें बंद चेहरा उसकी ओर ऊपर की ओर था, उसके प्यारे होंठ आधे खुले हुए थे और उसकी कामुक वासना की भारी सांसें हांफते हुए और समर्पण की धीमी आहों के साथ निकल रही थीं।

‘तुम्हें क्या हो गया है?’ मोगन ने हैरानी से पूछा, ‘तुम दिवास्वप्न देख रहे हो!’

झानी ने अपना सिर हिलाया और खुद को वर्तमान में वापस लाने के लिए मजबूर किया।

'हां, मैं सपना देख रहा था,' उसने कहा, 'और यह एक खूबसूरत सपना था।'

फिर उन्होंने बस इतना कहा, 'मेरी पहली प्रेमिका का नाम - और संयोग से वही मेरी इकलौती प्रेमिका थी - लोटिबाई था।'

मोगन अपने दोस्त के गंभीर व्यवहार को देखकर थोड़ा आश्चर्यचकित होकर हँस पड़ा।

क्या आपका मतलब है कि आपकी सिर्फ एक ही गर्लफ्रेंड थी? अरे, मेरी तो आधी दर्जन गर्लफ्रेंड थीं, और उनमें से ज्यादातर के नाम मुझे याद नहीं हैं। खैर, चलो फिल्म देखने चलते हैं। जब आप अभिनेत्री लोटिबाई को देख रहे हों, तो अपनी पुरानी गर्लफ्रेंड के बारे में सोच सकते हैं, है ना? वैसे, उसका क्या हुआ?

लेकिन झानी ने उस सवाल का जवाब नहीं दिया। वे निर्धारित समय छह बजे से कुछ मिनट पहले सिनेमाघर पहुंचे, जब शो शुरू होने वाला था। हालांकि, शाम 6:05 बजे कहीं घंटी बजी और बत्तियां बुझ गईं।

पहला आइटम टाटा के 501 साबुन का विज्ञापन था। साबुन की टिकियाएं सार्वभौमिक शत्रु, गंदगी से लड़ती हैं और उसे हरा देती हैं, और इस सब के पीछे सबसे

जोशीले संगीत की धुनें बजती हैं।

फिर एक भारतीय समाचार रील आई, जिसमें देश के औद्योगिक विस्तार को दर्शाया गया था और चित्तरंजन में स्थित नए रेलवे इंजन निर्माण संयंत्र को दिखाया गया था।

इसके बाद एक 'मिकी माउस' कार्टून दिखाया गया, और उन दो फिल्मों के 'ट्रेलर' दिखाए गए जो अगले कार्यक्रम परिवर्तन के दौरान और उसके अगले सप्ताह इस थिएटर में दिखाई जाने वाली थीं।

घंटी फिर बजी, जिससे सभी को यह सूचना मिली कि शाम की मुख्य फिल्म शुरू होने वाली है।

ढोल की तेज थाप और भारतीय तार वाले वाद्ययंत्रों की झंकार के साथ इसकी शुरुआत हुई, जिसके बाद तुरहियों की गूंज के साथ मुख्य फिल्म का नाम स्क्रीन पर दिखाया गया।

‘Rath ki Rani’.

झानी ने फिल्म सेंसर का प्रमाण पत्र देखा जिसमें लिखा था कि फिल्म सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए पास हो गई है। इसके आगे लिखा था, 'कलाकार: बी. बटलिबोई और लोटीबाई'।

फिल्म का पहला दृश्य शुरू होते ही उस प्यारे नाम ने स्मृति के एक और तार को झकझोर दिया।

वह एक महिला की तस्वीर थी जो फूलदान में फूल सजा रही थी।

उस समय झानी ने बहुत ध्यान से देखा।

क्योंकि उस स्त्री का चेहरा—लोतिबाई का था!

वह अपनी कुर्सी की भुजा को कसकर पकड़े हुए सामने की स्क्रीन को घूर रहा था। क्या यह सच हो सकता है?

सिल्वर स्क्रीन पर दिख रही उस लड़की ने पहली बार बात की। उसने कहा, 'प्रसाद—क्या यह तुम हो?'

यह लोटिबाई की आवाज थी।

झानी अपनी सीट से उछल पड़ा, जिससे उसकी सीट का निचला हिस्सा एक जोरदार 'क्लैक' की आवाज के साथ वापस अपनी जगह पर आ गिरा।

वह स्क्रीन को देखते हुए ही बाहर निकलने की ओर बढ़ा, जिसके परिणामस्वरूप

वह उसी पंक्ति में बैठे अन्य लोगों के पैरों से टकराकर गिर गया।

‘ये क्या बकवास है!’ एक ने गुस्से से कहा।

'आराम से, सार्जेंट, आराम से,' रेजिमेंट के बुद्धिमान कॉर्पोरल ने सलाह दी।

लॉबी में पहुंचते ही झानी मैनेजर के दफ्तर की ओर बढ़ा। उसने बेपरवाही से दरवाजा खोला और अंदर घुस गया। मैनेजर—एक मोटे-ताज़े आदमी—अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर, पैर मेज पर रखकर, बड़े आराम से सिगार पी रहा था।

झानी ने जल्दी से पूछा, 'कृपया मुझे कुछ बताइए, यह तस्वीर जो अब दिखाई दे रही है - यह कहाँ से आई है?'

‘तुम्हारा मतलब क्या है—यह कहाँ से आता है?’ मोटे मैनेजर ने आश्चर्य से पलटकर पूछा।

‘मेरा मतलब है—इसे किन स्टूडियो ने प्रोड्यूस किया? उनका पता क्या है?’

झानी की अधीरता इतनी अधिक थी कि उसका मन कर रहा था कि वह उस भारी-भरकम आदमी को झकझोर दे।

‘ओह, मैं समझ गया,’ मैनेजर ने अपने पैर डेस्क से हटाते हुए जवाब दिया, ‘क्यों, बॉम्बे एसोसिएटेड पिक्चर्स कॉर्पोरेशन। वे बॉम्बे के मालाबार हिल में हैं। क्यों?…’

लेकिन सार्जेंट तो पहले ही गायब हो चुका था। मैनेजर ने सोचा, हद से ज़्यादा शराब पीने से इंसान का क्या हाल हो जाता है, यह वाकई भयानक था।

बीस मिनट के भीतर ही सार्जेंट झानी ने सावधान मुद्रा में खड़े होकर और शान से सलामी देते हुए ऑर्डरली ऑफिसर के कमरे में प्रवेश किया।

‘सर, मुझे एक काम करना है। बहुत ज़रूरी है। मुझे अभी से शुरू होने वाली एक हफ्ते की छुट्टी चाहिए, बॉम्बे जाने के लिए। यह बहुत ज़रूरी मामला है।’

वार्ड ऑफिसर ने अपने सामने खड़े युवा सार्जेंट को देखा। वह झानी को अच्छी तरह जानता था। उस आदमी का रिकॉर्ड बेदाग था। लेकिन इतनी जल्दबाजी क्यों?

उन्होंने विनम्रता से पूछा, 'क्या हुआ? कोई बुरी खबर? उम्मीद है नहीं।'

‘मैं—मैं आपको बता नहीं सकती, महोदय। मेरा मतलब है, मैं बताना नहीं चाहती—अगर आपको कोई आपत्ति न हो, महोदय,’ झानी ने मुश्किल से बोलते हुए कहा। ‘लेकिन कृपया, महोदय; मुझे इसकी बहुत ज़रूरत है। कृपया इसे प्रदान कीजिए।’

अधिकारी ने सीधे उसकी आँखों में देखा। सार्जेंट सचमुच सिर से पैर तक कांप रहा था। वह बहुत घबराया हुआ था—इसमें कोई संदेह नहीं था।

सेना में यह सब बहुत अनियमित था। छुट्टी के लिए पहले से ही उचित माध्यम से आवेदन करना पड़ता था और कमांडिंग ऑफिसर से मंजूरी लेनी पड़ती थी; सिवाय उस स्थिति के जब कोई अत्यंत अप्रत्याशित घटना हो।

लेकिन कैप्टन रत्ना अपने अधिकारी की वर्दी के नीचे एक बहुत ही मानवीय व्यक्ति थे। उन्होंने सार्जेंट की आँखों में छिपी विनती को पढ़ा और जवाब दिया।

ठीक है, सार्जेंट। मैं इसे एक विशेष मामले के रूप में मंजूरी दे देता हूँ। लेकिन सप्ताह के अंत तक वापस आ जाना। कोई एक्सटेंशन नहीं, है ना!

'धन्यवाद, धन्यवाद, महोदय,' झानी ने उत्साहपूर्वक कहा। फिर उसने सलाम किया, तेज़ी से मुड़ा और दरवाजे की ओर छलांग लगा दी।

'वापस आ जाओ, यार,' कप्तान ने पुकारा, 'तुम्हें क्या हो गया है? ये लो, ये कागज़ का टुकड़ा लो और कम से कम एक आवेदन तो लिख दो। और क्या तुम्हें यात्रा वारंट चाहिए?'

'इसके लिए समय नहीं है, सर,' सार्जेंट ने कहा।

झानी ने कप्तान का पेन उधार लिया और जल्दबाजी में आवेदन लिखा।

रत्ना ने थोड़ी चिंता के साथ उसकी ओर देखा।

झानी ने एक बार फिर सलाम किया और अगले ही पल दरवाजे से बाहर निकल गई।

रत्ना ने सोचा, "पता नहीं उस आदमी को क्या बात परेशान कर रही है। वह तो लगभग पूरी तरह से घबराया हुआ है।"

उसी रात बॉम्बे जाने वाली मेल ट्रेन को खींचने वाले 'एक्स.बी. क्लास' लोकोमोटिव के विशाल पहिए अधीर झानी के लिए पर्याप्त तेज़ी से नहीं घूम रहे थे। अगले दिन सुबह वह बॉम्बे के विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन पर थे।

लगभग दौड़ते हुए इमारत से बाहर निकलते हुए, उन्होंने एक टैक्सी ली और मालाबार हिल पहुँच गए, और एक घंटे के भीतर बॉम्बे एसोसिएटेड पिक्चर्स कॉर्पोरेशन के आलीशान स्टूडियो के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए। स्टूडियो अभी तक खुला नहीं था, क्योंकि सुबह के मात्र 8:15 बजे थे।

'तैरो! (रुको!),' उसने सिख टैक्सी चालक को आदेश दिया।

फिर वह तेजी से सामने की सीढ़ियों से होते हुए मुख्य द्वार तक पहुंचा।

यह बंद था।

रात का चौकीदार, जो एक गोरखा था, अभी-अभी ड्यूटी से जा रहा था। स्वयं एक पूर्व सैनिक होने के नाते, उसने आगंतुक की वर्दी पर सार्जेंट के बैज का अवलोकन किया।

झानी ने लगभग विनती भरे लहजे में उसकी ओर मुड़कर हिंदी में पूछा, 'वह अभिनेत्री—मिस लोटीबाई—कहां रहती हैं?'

गोरखा के मंगोलियाई चेहरे पर एक समझदारी भरी मुस्कान उभर आई। उसने जवाब दिया, 'सांता क्रूज़ में कहीं; लेकिन मुझे पता नहीं है।'

झानी एक बार फिर सीढ़ियों से नीचे उतरी, टैक्सी की ओर भागी और ड्राइवर को 'सांता क्रूज़' कहकर पुकारा।

उपनगर तक पहुँचने में एक घंटे से थोड़ा अधिक समय लगा। झानी ने छोटे से डाकघर में हड़बड़ी में पूछताछ की। वहाँ उसे पता दिया गया।

दस मिनट और, और वह एक छोटे से विला की घंटी बजा रहा था।

अंदर से कुंडी लगने की आवाज़ सुनने से पहले मानो अनंत काल बीत गया हो। आखिरकार दरवाजा खुल ही गया।

उसके सामने, साक्षात लोटिबाई खड़ी थी—उसकी लोटिबाई।

‘लोटी,’ वह चिल्लाया, ‘तुम हो; भगवान का शुक्र है।’

‘झानी, ओह झानी, मेरे प्यारे,’ उसने जवाब दिया और उसे स्नेहपूर्वक अपनी बाहों में भर लिया।

टैक्सी के सिख ड्राइवर ने कभी क्लासिक्स नहीं पढ़े थे। लेकिन जैसे ही झानी ने उसे किराया दिया और उसने गाड़ी स्टार्ट की, उसने एक बहुत प्रसिद्ध ग्रंथ उद्धृत किया:

'बेकार बात के लिये चहल पहल।'

जब वे एक-दूसरे को चूमने और सहलाने के बाद थक गए, तो लोटी ने झानी को अहमदाबाद में रहने वाले उसके बेटे के बारे में और खुद फिल्मों में आने के बारे में सब कुछ बताया।

उसने झानी को बताया कि वह मान सिंह से कैसे मिला था, और यह डकैत-सरगना की अच्छी सलाह ही थी जिसने उसे हत्यारा बनने से रोका और इसके बजाय एक सिपाही बना। फिर झानी ने बताया कि वह 'रथ की रानी' की तस्वीर देखने गया

था, जिसने उसे उसका पता लगाने में मदद की।

वे उस पूरी सुबह बहुत खुश थे।

दोपहर के भोजन के बाद झानी ने पूछा, 'लेकिन अब हम क्या करेंगे, लोटी? मुझे एक हफ्ते के भीतर जबलपुर वापस लौटना होगा, वरना मेरा कोर्ट मार्शल हो जाएगा।'

उसकी प्रेमिका की निगाहें उसे प्यार से देख रही थीं। फिर उसकी मधुर हंसी सुनाई दी; वह हंसी जिसे वह अच्छी तरह जानता था और जिसे उसने बहुत याद किया था।

'नासमझ झानी। याद है तुमने उस बरसात की शाम मूसाफरखाना से लौटते समय मुझे क्या जवाब दिया था? मैं तुम्हें अब वही जवाब दे रहा हूँ। अब बस एक ही रास्ता बचा है। हम कल या परसों रजिस्ट्रार कार्यालय में विशेष लाइसेंस से शादी कर लेंगे।'

'लेकिन आपके फिल्मी करियर का क्या?' उसने संदेह भरे लहजे में पूछा। लोटी ने मुंह बनाया। 'यह उस करियर के लिए रास्ता खोलता है जिसे मैं हमेशा से जीना चाहती थी,' उसने सरल शब्दों में कहा, 'आपकी पत्नी के रूप में।'

उस दोपहर वे समय पर पहुँच गए और विवाह पंजीकरण कार्यालय में विशेष शुल्क के साथ अपना आवेदन जमा करा दिया ताकि उनकी शादी जल्द से जल्द हो सके। शादी अगले दिन सुबह तय की गई।

उस शाम लोटी, झानी को अपने साथ लेकर श्री साठे से मिलने गई।

श्री साठे ने उनका बड़े ही सौहार्दपूर्ण ढंग से स्वागत किया। उन्होंने उस शाम अहमदाबाद में उन्हें काम पर रखकर जो जोखिम उठाया था, उसके सफल परिणाम पर वे लगातार खुद को बधाई दे रहे थे। यह स्पष्ट था कि उन्हें जो झटका लगने वाला था, उसके लिए वे बिल्कुल भी तैयार नहीं थे।

'श्री साठे,' लोटी ने अपने सीधे-सादे अंदाज़ में कहा, 'मैं आपके द्वारा मेरे लिए किए गए सभी कार्यों के लिए धन्यवाद देने आई हूँ, और साथ ही आपसे विनती करने आई हूँ कि कृपया मुझे मेरे अनुबंध की शेष अवधि से मुक्त कर दें। मैं यहीं झानी से शादी करना चाहती हूँ और जबलपुर में उसके साथ रहना चाहती हूँ।'

फिर उसने संक्षेप में उनके संबंध का वर्णन किया, और अंत में बताया कि झानी ने उसे कैसे पाया था।

श्री साठे ने इससे निकलने का रास्ता खोजने की कोशिश की।

‘क्या तुम मुझसे ये कहना चाहती हो कि तुम अपना पूरा फिल्मी करियर, जो एक शानदार करियर बनने की पूरी उम्मीद रखता है, सिर्फ एक... एक सार्जेंट से शादी करने के लिए कुर्बान करने जा रही हो?’ वो इतना बेबाक और यहाँ तक कि असभ्य होने से खुद को रोक नहीं पाया। वो चाहता था कि लोतिबाई को एहसास हो जाए कि वो एक अभिनेत्री के रूप में अपने उज्ज्वल भविष्य को बर्बाद करने जा रही है।

‘आपको याद रखना चाहिए, श्रीमान साठे,’ लोटी ने सहज भाव से उन्हें याद दिलाया। ‘वह मेरे बेटे के पिता हैं।’

श्री साठे को लगा कि वह समझ गए हैं, लेकिन उन्हें पूरी तरह से यकीन नहीं था।

उस रात जब झानी बिस्तर पर लेटा था, लोटी के सुगंधित बाल उसके बर्फीले सफेद तकिए पर भरपूर मात्रा में फैले हुए थे, और उसके पूरी तरह से नग्न शरीर का मलाईदार चॉकलेटी रंग उसके अपने नग्न और थोड़े गहरे रंग के शरीर से कसकर लिपटा हुआ था, तब झानी को कई वर्षों के बाद पहली बार यह एहसास हुआ कि जीवित रहना कितना अच्छा है।

तीसरे दिन दोपहर होते-होते वे पति-पत्नी बन गए। रजिस्ट्रार कार्यालय में समारोह संक्षिप्त था और उसमें केवल दो गवाह मौजूद थे।

इनमें से एक श्री साठे थे, जो अभी भी अपनी निराशा से पूरी तरह उबर नहीं पाए थे। दूसरी उनकी नौकरानी थी, जिसे लोटी इस उद्देश्य से सांता क्रूज़ स्थित अपने विला से अपने साथ लाई थी।

उसी रात लोटी बॉम्बे सेंट्रल स्टेशन से पश्चिमी रेलवे की गुजरात मेल ट्रेन में सवार होकर अहमदाबाद के लिए रवाना हुई, जहाँ से वह युवा झानी को पहली बार उसके पिता से मिलवाने के लिए जबलपुर लाएगी।

और उसी रात 'बड़े' झानी - जैसा कि लोटी अब अपने पति को प्यार से बुलाती थी - सेंट्रल रेलवे से विक्टोरिया टर्मिनस से जबलपुर में ड्यूटी पर वापस आने और अपनी पत्नी और बेटे के लिए जल्दी से आवास की व्यवस्था करने के लिए रवाना हो गए।

~

बड़ी झानी और छोटी झानी की मुलाकात लोटीबाई को जीवन भर याद रहेगी। इस

मुलाकात ने उन्हें अपार खुशी से रुला दिया था।

जब वह उस छोटे बच्चे को आंटी पार्वती के घर से लाई थी, तब उसने उससे कहा था कि वह उसे 'चू-चू ट्रेन' से एक लंबी यात्रा पर ले जा रही है, जिसके अंत में वह अपने पापा से मिलेगा।

नन्हे झानी ने अक्सर अपनी माँ को अपने पापा के बारे में यह कहते सुना था कि वे बड़े और प्यारे इंसान हैं, लेकिन उसने उन्हें कभी देखा नहीं था। पूरी यात्रा के दौरान वह उत्साह और उत्सुकता से भरा हुआ था।

अंततः ट्रेन यार्ड में बने पॉइंट्स पर से गुजरी और जबलपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँचते ही उसकी गति धीमी होने लगी। प्लेटफार्म पर बिछी चिकनी पत्थर की पटियाएँ धीरे से फिसलती हुई आगे बढ़ीं। फिर, ब्रेक के हल्के झटके के साथ वह रुक गई।

लोटी ने उत्सुकता से डिब्बे का दरवाजा खोला। वहाँ, लगभग उसके सामने, डिब्बों की खिड़कियों को बेचैनी से देखती हुई, 'बड़ी' झानी खड़ी थी—उसकी झानी।

‘Jhani,’ she hailed.

‘लोटी,’ प्रसन्नतापूर्वक उत्तर आया।

अगले ही पल, कुलियों और धक्का-मुक्की करते लोगों की उत्सुक निगाहों की परवाह किए बिना, झानी दरवाजे से अंदर कूद गया और लोटी को अपनी बाहों में उठा लिया। तभी उसे अपनी पतलून के घुटने पर एक हल्की सी खींच महसूस हुई और एक छोटी सी आवाज ने पूछा, 'पापा?'

अचानक उसे याद आ गया।

लोटी ने अपने बगल में खड़ी छोटी सी आकृति की ओर देखा और कहा, 'प्रिय, यह तुम्हारा बेटा है।'

बड़े झानी झुके और नन्हे बच्चे को गोद में उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। उन्होंने उसके गालों और माथे पर चूमते हुए कहा, 'बेटा—मेरे प्यारे बेटे—मेरे बेटे!'

उस छोटे बच्चे ने फिर कहा, 'पापा।'

सार्जेंट की आंखों में खुशी के आंसू थे। वे उसकी खुरदरी गालों से बहकर उसके होंठों के किनारों पर आ गए।

लोटी खुलकर रो रही थी—उसकी खुशी को व्यक्त करने का कोई न कोई तरीका तो होना ही था। ऐसा होना ही था; क्योंकि उसकी खुशी बहुत अधिक थी। वहाँ से गुजर रहे कुली और लोग रुक गए और उसे घूरने लगे।

उसके बाद वे आठ महीने तक उस छोटी सी कुटिया में खुशी-खुशी रहे जिसे झानी ने उनके लिए किराए पर लिया था।

लेकिन भाग्य, इन दो लोगों—इस पुरुष और इस महिला—के साथ पहले से खेले गए नाटक से न थकते हुए, एक बार फिर भाग्य और परिस्थितियों के पहिये को घुमाने और संयोगों का जाल बुनने का फैसला किया, सिर्फ यह देखने के लिए कि क्या होता है।

इस समय तक डाकुओं के सरगना राजा मान सिंह राठौर की गतिविधियां और प्रसिद्धि चंबल नदी के सुदूर किनारे पर स्थित उनकी घाटी में बने गुप्त ठिकाने की दुर्गम सीमाओं से कहीं दूर तक फैल चुकी थी।

यह खबर भारत के चारों कोनों तक पहुंच चुकी थी। मान सिंह की चर्चा इंग्लैंड, अमेरिका और यहां तक कि यूरोप में भी हो रही थी।

भारत में, उसे रोकने, पकड़ने और मार डालने की कोशिश करने के लिए हजारों पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया था।

वे सभी असफल हो गए थे।

अब इस मामले में सेना को हस्तक्षेप करने के लिए बुलाया गया।

बटेश्वर नाथ मंदिर में वार्षिक उत्सव ठीक दस दिन बाद होने वाला था। पुलिस जानती थी कि यह एक ऐसा समारोह था जिसमें डकैतों का सरगना हर साल अलग-अलग भेस बदलकर ज़रूर शामिल होता था। हर साल पुलिस बल भी वहाँ मौजूद रहता था। वे लगभग हर तीर्थयात्री की व्यक्तिगत रूप से जाँच करते थे; सैकड़ों लोगों से पूछताछ करते थे। मान सिंह का हुलिया प्रसारित किया गया था, हजारों पुलिसकर्मियों ने उसका अध्ययन किया था और उसे कंठस्थ कर लिया था। फिर भी वे उसे पकड़ नहीं पाए थे।

और उस पर पंद्रह हजार रुपये का इनाम था!

इस वर्ष पुलिस को पता था कि मान सिंह हमेशा की तरह त्योहार के दिन दर्शन के लिए मंदिर आएगा। उन्होंने उसे पकड़ने का एक बार फिर प्रयास करने का निश्चय किया।

कुछ बड़े अधिकारियों को लगा कि पुलिस की मदद के लिए सेना को बुलाना

एक अच्छा विचार होगा।

जबलपुर में तैनात राष्ट्रपति की लाइट इन्फैंट्री की पहली बटालियन की नंबर 1 कंपनी को इस कार्य के लिए चुना गया और उन्हें मंदिर के गंतव्य के रूप में एक सप्ताह पहले ही ट्रेन से रवाना कर दिया गया।

सार्जेंट झानी नंबर 1 कंपनी से संबंधित थे।

त्यौहार का दिन सुहाना और साफ आसमान के साथ शुरू हुआ। सुबह नौ बजे तक साफ आसमान से सूरज की तेज गर्मी पड़ने लगी।

मंदिर के आसपास और उसके बाहरी इलाके में हजारों तीर्थयात्री उमड़ पड़े थे जो दूर-दूर से इस उत्सव में शामिल होने आए थे। वे इधर-उधर घूम रहे थे; या चिलचिलाती धूप में बैठे, खा रहे या सो रहे थे। मिठाई, फल और ठंडे पेय बेचने वाले —जिनमें ज्यादातर लाल, हरे और नीले रंग का पानी था जिसमें चीनी मिलाई गई थी —का कारोबार खूब चल रहा था।

हजारों बेचैन लोगों के चलते कदमों से उड़ती हुई महीन धूल की पतली चादर ने हर चीज़ और हर व्यक्ति को ढक लिया था। भीड़ में आवारा कुत्ते अकेले और झुंड में घूम रहे थे, भूखे लोगों द्वारा दान में फेंके गए टुकड़ों को झपट रहे थे। कभी-कभी दो कुत्ते सूखे चपाती के एक ही छोटे टुकड़े के लिए झपट पड़ते। फिर कुत्तों की लड़ाई शुरू हो जाती। आस-पास के दूसरे आवारा कुत्ते भी उसमें शामिल हो जाते। आधा दर्जन खूंखार, काटने वाले कुत्तों का एक उग्र झुंड इधर-उधर दौड़ता, रास्ते में आने वाली हर चलती-फिरती चीज़ पर झपटता; चाहे वह आदमी हो, औरत हो, बच्चा हो या कोई दूसरा कुत्ता।

हर तरफ और हर समय, असंख्य नीली मक्खियाँ बेचैनी से भिनभिना रही थीं, और बिना किसी भेदभाव के मिठाई, फल, चपातियाँ, लोग, कुत्ते - और यहाँ तक कि भीड़ के बीच घूम रहे सशस्त्र पुलिसकर्मियों और सैनिकों पर भी बैठ रही थीं।

तीर्थयात्रियों के बीच घुलमिल रहे पुलिसकर्मियों और सैनिकों के अलावा, जिनका काम हर चेहरे को बारीकी से देखना और हर संदिग्ध व्यक्ति से बात करना था, सशस्त्र पुलिस और सैन्य चौकियों का एक दूर-दूर तक फैला घेरा था जिसने पूरे क्षेत्र को लोहे के घेरे में घेर रखा था।

मान सिंह का वर्णन उसके और नंबर 1 कंपनी के सभी जवानों के दिमाग में अच्छी तरह से बैठ गया था। लेकिन झानी को वह बात अच्छी तरह याद थी।

क्योंकि मान सिंह उनके संरक्षक थे।

अपनी सेवा के दौरान पहली बार, और एक नौसिखिया सैनिक के रूप में अपने दिनों के बाद पहली बार, झानी को सैनिक होने से नफरत हुई।

उसने अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान रहने की शपथ ली थी। फिर भी, क्या वह अपने उपकारक से मिलने पर उसे धोखा दे सकता था? उस व्यक्ति को जिसने वास्तव में उसे नया जीवन दिया था।

एक सार्जेंट के रूप में, झानी का काम हर समय सतर्क रहना था। उसे चौकियों की जाँच करनी होती थी और भीड़ के बीच घूम रहे अपने अन्य साथियों के साथ रहना होता था। उससे यह भी अपेक्षा की जाती थी कि वह डकैत-नेता से मिलते-जुलते किसी भी व्यक्ति पर कड़ी नज़र रखे।

और इस तरह दोपहर के समय, सार्जेंट उस समय की तात्कालिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए बनाए गए सार्वजनिक शौचालयों में से एक की ओर चल पड़ा।

यह महज एक 'अस्थायी' ढांचा था; इसका मतलब यह है कि चारों दीवारें अस्थायी रूप से बनाई गई थीं, जो बांस की चटाई से बनी थीं।

प्रत्येक शौचालय में दो भाग थे; एक पुरुषों के लिए और एक महिलाओं के लिए।

चूंकि अधिकांश तीर्थयात्री निरक्षर होते थे, इसलिए लिंगों के इस भेद को सभी के लिए हरे और सफेद रंग के भद्दे चित्रों द्वारा दर्शाया गया था; एक चित्र में सफेद कमीज और धोती पहने, हरे रंग की पगड़ी लगाए एक पुरुष को पुरुषों के शौचालय के प्रवेश द्वार पर बांस की चटाई से बांधा गया था; और दूसरे चित्र में हरे रंग की साड़ी पहने एक राक्षस जैसी दिखने वाली महिला को महिलाओं के शौचालय के प्रवेश द्वार पर दर्शाया गया था।

दोनों बाड़ों के मार्ग और फर्श को पानी और मल-मूत्र से मिट्टी भरने से रोकने के लिए जल्दबाजी में सीमेंट से पक्का कर दिया गया था। मल-मूत्र के लिए शौचालयों में बड़े-बड़े जस्ता के बर्तन लगाए गए थे।

झानी पुरुषों के शौचालय में घुस गई।

वह दस मिनट बाद बाहर आया। और फिर एक दुर्घटना हो गई।

किसी ने प्रवेश द्वार के ठीक बाहर सीमेंट के फर्श पर केले का छिलका फेंक दिया था।

झानी ने सेना के मानकों के अनुरूप बूट पहने हुए थे (जिन्हें भारत में कुछ हद तक तिरस्कारपूर्वक 'गोला-बारूद' बूट या 'कुट्टक' कहा जाता है)।

और जिस किसी ने भी कभी 'बारूद' वाले जूते पहने होंगे, वह जानता होगा कि एड़ी के बाहरी किनारे पर घोड़े की नाल के आकार का यू-आकार का लोहे का टुकड़ा लगा होता है, जबकि तलवों में कीलें ठोंकी जाती हैं।

उसने सीधे केले के छिलके पर पैर रख दिया।

अगले ही पल, झानी बुरी तरह फिसल गया और लगभग अपनी पीठ के बल फर्श पर गिर पड़ा।

अपना संतुलन वापस पाने के लिए उसने दोनों हाथों को हिंसक रूप से फैलाया और तिरछे फिसलते हुए एक बूढ़ी औरत से जा टकराया, जो लगभग कमर झुकाए लकड़ी के डंडे के सहारे लड़खड़ा रही थी और जो अभी-अभी बगल के महिला शौचालय से बाहर निकली थी।

झानी के दाहिने कंधे पर लगा पीतल का बैज उस पतली साड़ी के कपड़े में फंस गया, जिसने बुढ़िया के सिर और चेहरे का कुछ हिस्सा ढका हुआ था। जैसे ही झानी ने अपना वजन उस बुढ़िया पर डाला, बैज भी उसके साथ उछल पड़ा और कपड़ा हट गया, जिससे बुढ़िया का सिर नंगा हो गया।

अपना संतुलन संभालते हुए झानी ने माफी मांगने के लिए पीछे मुड़ा।

उसने खुद को मान सिंह की भेदक, इस्पात जैसी आंखों में टकटकी लगाए हुए पाया।

सार्जेंट का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। नहीं; इसमें कोई शक नहीं था। उसकी आँखों में वही चंचल चुनौती भरी चमक थी; गलतफहमी के डर से माफी मांगने का वही सूक्ष्म भाव; किसी को ठेस न पहुंचाने की गुहार; दया और सद्भावना से भरी वही अभिव्यक्ति।

न तो दाढ़ी थी, न मूंछें; लेकिन इसमें जरा भी संदेह नहीं था कि उनके उपकारक, राजा मान सिंह राठौर ही उनके सामने खड़े थे, जो इतनी कुशलता से भेष बदले हुए थे कि एक अप्रत्याशित दुर्घटना ने उनकी पहचान उजागर कर दी।

झानी ने जल्दी ही खुद को संभाल लिया।

अब उसके मन में अंतरात्मा की कोई पीड़ा नहीं थी। उसकी मौखिक शपथ की जगह एक कहीं अधिक पवित्र नैतिक शपथ ने ले ली थी, जिसने उसे इस व्यक्ति से

दृढ़तापूर्वक और पवित्रता से बांध दिया था। इस व्यक्ति ने ही उसे हत्यारा बनने से बचाया था; और इसी ने उसके लिए लोटी और उसके बेटे से सम्मानपूर्वक दोबारा मिलना संभव बनाया था।

‘महाराज साहब, शांति से जाइए। मैं आपको धोखा नहीं दूंगी,’ झानी ने धीमी आवाज़ में कहा, ‘नहीं; न तो किसी धन-संपत्ति के लिए और न ही इस धरती के सारे सोने के लिए।’

‘धन्यवाद, मेरे बेटे झानी। क्या मुझे पता नहीं था कि मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ?’ मान सिंह ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। ‘सैनिक बनने पर बधाई हो—और वो भी सार्जेंट बनने पर! मुझे तुम पर बहुत गर्व है।’

झानी खुद को रोक नहीं पाई और जल्दी-जल्दी कुछ वाक्य बोल पड़ी। ‘मैंने उसे पा लिया है, महाराजा साहब। अब हमारा वैवाहिक जीवन सुखमय है और हमारा एक बेटा भी है। और एक बात और, हे हमारे तीनों के इस सुख के लिए हम सब उनके ऋणी हैं और हम इसके लिए आपके अत्यंत आभारी हैं। मेरे पिता ने हमें पत्र लिखकर आमंत्रित किया है और दो सप्ताह में हम उनके साथ दो महीने बिताने के लिए फार्म पर जा रहे हैं।’

“यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई; भगवान आप सभी का भला करे,” जवाब आया। “और बालाजी को उनके पिता से कहना—देखिए, मुझे उनका नाम कितनी अच्छी तरह याद है—कि मुझे बहुत खुशी है कि मैंने उन्हें उस दुख से बचाया जो मैंने अपने पिता को दिया था। उन्हें यह संदेश डाकू राजा मान सिंह राठौर की ओर से देना।”

वह बूढ़ी औरत तीर्थयात्रियों के साथ फिर से मिल गई; और सार्जेंट अपने साथियों के साथ।

‘उस महान व्यक्ति ने मुझ जैसे साधारण व्यक्ति को भी पहचान लिया। उन्हें मेरा नाम याद था, यहाँ तक कि मेरे पिताजी का नाम भी। उन्होंने कहा कि उन्हें मुझ पर बहुत गर्व है। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी हुआ उससे वे बहुत खुश हैं।’

ये विचार झानी के मन में आनंदपूर्वक गूंज रहे थे।

उस त्यौहार के दिन अधिकारियों को एक बार फिर भारी निराशा हाथ लगी। क्योंकि वे एक बार फिर राजा मान सिंह राठौर को पकड़ने में असफल रहे थे।

अध्याय तीन

इनाम की तलाश में निकले पुलिसकर्मी

भिंड मध्य प्रदेश राज्य का एक भूभाग है, जो पुनर्जागरण काल के भारत का सबसे बड़ा राज्य था और लगभग हज़ार वर्ग मील में फैला हुआ है। इसका सबसे बड़ा शहर, जो राजधानी भी है, इसी नाम से जाना जाता है। यह ज़िला मुख्यतः घने जंगलों से आच्छादित है और यहाँ मानव बस्तियाँ बहुत कम और दूर-दूर तक फैली हुई हैं। यह लोककथाओं, कहानियों और भूत-प्रेतों की कहानियों की भूमि है, जो आग की टिमटिमाती रोशनी में सुनाई जाती हैं; यह अतीत के भारत के लगभग समान है। यहाँ लोगों की ज़रूरतें कम और सरल हैं, क्योंकि पैसा पाना मुश्किल है। और इसकी अत्यधिक अनुपलब्धता के कारण, लोग स्वतंत्र और सुखी हैं। इसके अलावा, वे भोले-भाले हैं और सभ्यता के दुष्परिणामों से काफी हद तक अछूते हैं।

भिंड के लोगों को संतुष्ट रहने के लिए भौतिक वस्तुओं की बहुत कम आवश्यकता होती है। गर्मी की तपती रातों में जब लोग सांस लेने के लिए हांफते हैं और सोते हुए व्यक्ति के सीने से पसीना रिसकर उसके माथे पर जमा हो जाता है, जहां एक बूंद दूसरी से मिलकर इतनी हो जाती है कि नीचे टपक कर उसके कठोर, गंदे तकिए को गीला कर देती है, तब ऊपर तारों से भरा आकाश ही उसके सिर के ऊपर एकमात्र छत हो सकता है, जो प्रकृति माता द्वारा अपने सभी पुत्रों को आश्रय के रूप में दिया गया एक निःशुल्क उपहार है। जब बारिश आती है और आसपास की उफनती धाराओं और तालाबों में लाखों मेंढक टर्राते हैं; और हजारों जंगली झींगुर चहचहाते हैं; और जुगनू अपनी टिमटिमाती रोशनी से रात को जगमगाते हैं; और सांप अपने बाढ़ग्रस्त बिलों से निकलकर मेंढकों को निगल जाते हैं और सूखे आवासों की तलाश करते हैं; और मच्छर सैकड़ों की संख्या में भिनभिनाते, झनझनाते, गोता लगाते और डंक मारते हैं; एक आदमी को मौसम और सांपों से कुछ हद तक सुरक्षा प्रदान करने के लिए घास की छत वाली टहनियों से बनी एक छोटी सी झोपड़ी की आवश्यकता होती है।

लेकिन मौसम चाहे सूखा हो या बरसात का, एक आदमी को खाना पकाने, साथी बनने और उसकी सांसारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए एक महिला, पत्नी या रखैल की उपस्थिति की आवश्यकता होती है।

फिर उसे अपनी चपाती बनाने के लिए प्रतिदिन कुछ आने की आवश्यकता होगी, जिससे वह गेहूं का आटा खरीद सके (चपाती चपटी, गोलाकार रोटी होती है,

जिसका व्यास लगभग एक फुट और मोटाई लगभग एक चौथाई इंच होती है)। यह उस क्षेत्र के लोगों द्वारा जानी जाने वाली रोटी का एकमात्र रूप है और उनका मुख्य आहार है।

कपड़े पहनना एक साधारण मामला है और इसमें कोई समस्या नहीं है। एक लंबी सूती कमीज, जो कमर पर बंधी और पैरों के बीच से गुज़रती सूती धोती के ऊपर लटकती है; सिर पर ढीली-ढाली लपेटी हुई पगड़ी; और खुरदुरे चमड़े के सैंडल ताकि नुकीले कांटे पैरों में न चुभें; ये ही वो चीज़ें हैं जो एक किसान पूरे साल पहनता है। एक मोटा काला कंबल एक अतिरिक्त वस्तु है, जिसका उपयोग नवंबर से जनवरी तक के सर्द सर्दियों के महीनों में किया जाता है।

खेती-बाड़ी कम है, मानसून अनिश्चित है और कृषि करना कठिन है। लोग कभी-कभी बेहद गरीब होते हैं, लेकिन सभी पूरी श्रद्धा से उस ईश्वर में विश्वास रखते हैं जो उनकी सभी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा, और शायद कुछ अतिरिक्त चीजें भी प्रदान करेगा।

लेकिन विलासिता का कोई नामोनिशान नहीं होता। कभी-कभी ऐसा लगता है मानो ईश्वर अपने निर्धन लोगों से क्रोधित हो गए हों। मानसून विफल हो जाता और उसके बाद पड़ने वाला सूखा सारी खड़ी फसलों को नष्ट कर देता। तब न अनाज होता, न पैसा, और परिणामस्वरूप, न भोजन। या फिर बीमारी की महामारी देश में फैल जाती और हजारों लोग इसके प्रकोप से मर जाते। ऐसे विपत्ति के समय में, सबसे साहसी हृदय भी भय से कांप उठते और लोग कभी-कभी सोचने लगते कि वे पैदा ही क्यों हुए थे।

हालात और भी बदतर हो जाते थे जब जमींदार या स्थानीय जमींदार के नौकर आकर उस जमीन का किराया मांगते थे जिससे कुछ भी पैदावार नहीं हुई थी, और धमकी देते थे कि अगर पैसा तुरंत नहीं चुकाया गया तो उन्हें बेदखल कर दिया जाएगा।

जब उनके पास चुकाने के लिए पैसे ही नहीं थे, तो वे कैसे चुकाते? उनकी फसलें बर्बाद हो चुकी थीं और उनके पास बेचने के लिए कुछ भी नहीं था। उनमें से कई लोग पहले से ही कर्ज में डूबे हुए थे, क्योंकि उन्होंने अपने खेतों में बोए गए बीज और डाले गए खाद का भुगतान नहीं किया था, और ये सब व्यर्थ ही हुआ था। ज़मींदार को उनकी दुर्दशा समझ में आनी चाहिए थी, है ना?

लेकिन जमींदार, उनके नौकर और जमींदार उन्हें परेशान करते, पीटते, बेदखल करने की धमकी देते; शायद उन्हें जबरदस्ती बाहर भी निकाल देते। उन्हें सड़क किनारे भुखमरी का सामना करना पड़ता, क्योंकि भीख मांगने पर भी कोई उन्हें कुछ नहीं देता था।

जी हाँ, बिल्कुल; अक्सर गरीब किसान सोचते होंगे कि उनका जन्म ही क्यों हुआ। अकाल और महामारी कभी-कभी देश में फैल जाती थी और उन्हें ऐसा सोचने और निराश होने पर मजबूर कर देती थी। वे आकाश की ओर देखते और रोते, और आशा करते कि ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली होगी।

लेकिन कहिए; क्या इस धरती पर उनके लिए मुक्ति की एक आखिरी उम्मीद भी नहीं बची थी? राजा मान सिंह के नाम पर; गरीबों, बेसहारा और जरूरतमंदों के प्रेमी; उपकारक और संरक्षक; संकट और संकट के समय उद्धारक और रक्षक। प्रिय मान सिंह, अपने डाकू गिरोह के सरदार और अज्ञानी और भूखे लोगों के सहायक।

पिछले साल रामपुर का छोटा सा गाँव अकाल और भुखमरी के कगार पर था। उसकी फसलें निर्मम धूप में सूखकर मर गई थीं, बारिश की एक बूँद भी नहीं गिरी थी। कर वसूलने वाले पहले से कहीं ज़्यादा चिड़चिड़े और ज़बरदस्ती करने वाले हो गए थे। जीवन में कोई उम्मीद नहीं बची थी, और रामपुर के लोगों ने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि उन्हें जल्द से जल्द अपने पास बुला लें और उन्हें धीमी भुखमरी, यातना और मृत्यु के कष्टों से बचाएँ।

फिर अचानक एक सुबह गांव में आठ बैलगाड़ियां गड़गड़ाती हुई आईं, जिन पर सवार बैल बोरियों के लदे बोझ को खींचते और खींचते हुए आगे बढ़ रहे थे। बोरियां गेहूं से भरी हुई थीं और बैलगाड़ियों के सरदार ने रामपुर गांव के ग्रामीणों को ये बोरियां सौंपते हुए एक सरल संदेश दिया, 'मान सिंह की ओर से उपहार'।

उस दान ने गाँव को आपदा से बचा लिया था। भोजन सामग्री के पूरी तरह खत्म होने से पहले ही सरकार की ओर से प्रचुर मात्रा में खाद्य सामग्री भेजकर राहत पहुँचाई गई। स्थिति अब नियंत्रण में थी, और अगली मानसून बारिश पिछली मानसून की तुलना में कहीं अधिक हुई। लेकिन रामपुर के निवासी मान सिंह और उनकी समयोचित सहायता को कभी नहीं भूले।

सरकार ने इस कुख्यात व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए 15,000 रुपये का इनाम घोषित किया था, जिस पर दो सौ से अधिक हत्याओं और अनगिनत डकैतियों का

आरोप था। फिर भी किसी ने इनाम का दावा नहीं किया। क्योंकि किसी ने भी प्रिय मान सिंह के खिलाफ कोई सूचना नहीं दी, या उसके साथ विश्वासघात नहीं किया।

आठों गाड़ीवानों से गहन पूछताछ की गई। उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति ने उन्हें एक सप्ताह पहले किराए पर लिया था ताकि वे अपनी गाड़ियों को 40 मील दूर रेलवे स्टेशन तक ले जाकर मालगाड़ी में अनाज की बोरियाँ लाद सकें। उसने उन्हें दो चक्करों के लिए 160 रुपये दिए थे, यानी प्रत्येक गाड़ी के लिए 20 रुपये। उसने उनके कान में मान सिंह का नाम भी फुसफुसाया था और कहा था कि अगर उन्होंने अपना वादा पूरा नहीं किया और अनाज की बोरियाँ एक सप्ताह के भीतर रामपुर नहीं पहुँचाईं, तो अगले सप्ताह के पहले दिन सूर्यास्त देखने के लिए उनमें से कोई भी जीवित नहीं बचेगा। इसलिए उन्होंने छठे दिन बोरियाँ पहुँचा दीं।

गाड़ीवानों ने यह भी बताया कि जब वे उस रेलवे स्टेशन पर पहुँचे जहाँ उन्हें जाने के लिए कहा गया था, तो वहाँ के स्टेशन मास्टर ने पुष्टि की कि दो दिन पहले गेहूँ की बोरियों से लदी एक मालगाड़ी आई थी और उसे उनके आने और माल उतारने की प्रतीक्षा में एक साइडिंग पर रखा गया था।

गाड़ी किसी ऐसे व्यक्ति के नाम पर बुक की गई थी जो खुद को मान सिंह कहता था। आखिर उस जिले में यह नाम काफी आम था।

गर्मी की एक शाम, सूरज पश्चिम क्षितिज तक फैले ऊंचे साल के पेड़ों की नुकीली चोटियों के पीछे खून जैसे लाल रंग के गोले में डूब गया। घने जंगल से होकर एक संकरी, धूल भरी सड़क गुज़र रही थी, जिसके दोनों ओर साल के पेड़ों के तने घनी कतारों में लगे थे। शाम ढलने के कारण पेड़ों के बीच दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। थम सी गई हवा में अभी भी बीते दिन की गर्मी महसूस हो रही थी।

सड़क पर तेज़ी से दौड़ते हुए दो आदमी सड़क के किनारे लगे एक बड़े पेड़ के नीचे रुक गए। उनमें से एक लंबा, दाढ़ी वाला आदमी था। दूसरा सामान्य कद का और हट्टा-कट्टा था। दोनों ने खाकी रंग की कमीज़ और शॉर्ट्स, पट्टियाँ, सर्विस बूट और खाकी पगड़ी पहन रखी थी। और दोनों के पास .303 राइफलें थीं। क्योंकि वे पुलिसकर्मी थे।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शाम का समय बहुत कम होता है, और इस घने जंगल वाले इलाके में तो बिलकुल भी नहीं होगा। कुछ ही मिनटों में उन पर घना अंधेरा छा जाएगा, और ऊपर नीले आसमान में केवल टिमटिमाते तारे ही दिखाई देंगे।

कोई नरम और भूरे रंग की गेंद उनके सिर के ऊपर से गुज़री, कुछ पल के लिए शांत पंखों पर फड़फड़ाती रही, लेकिन जल्द ही चुपचाप उनके सामने आकर सड़क की धूल में ओझल हो गई। एक मिनट तक सन्नाटा रहा, फिर एक अजीब सी आवाज़ निकली, जैसे किसी पत्थर को फेंककर उस पर उछाला जा रहा हो। आवाज़ कुछ ऐसी थी जैसे ‘चक—चक—चक—चक—चुकू’।

पुलिसकर्मियों ने आवाज़ और उसे निकालने वाले पक्षी को पहचान लिया। यह एक 'रात का चिड़िया' थी। दरअसल, अंधेरा छा चुका था और वे बहुत चिंतित थे।

और उनके पास चिंतित होने का पूरा कारण था। क्योंकि वे कुख्यात डाकू और लुटेरे सरदार मान सिंह राठौर के इलाके के ठीक बीचोंबीच थे। दरअसल, वे पुलिसकर्मियों के उन कई समूहों में से एक थे जिन्हें हथियारों से लैस होकर, दो-दो की जोड़ी में, उस कुख्यात डाकू के बारे में जानकारी जुटाने और संभव हो तो उसे पकड़ने के लिए भेजा गया था।

सबसे बुरी बात यह थी कि अतीत में इस खूंखार अपराधी और उसके साथियों ने बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को गोली मारी थी, चाकू से गोदकर मार डाला था या उनके गले काट दिए थे। अभी पिछले ही हफ्ते, नौ कांस्टेबल और एक सार्जेंट पर नदी किनारे सोते समय घात लगाकर हमला किया गया, उनके सिर काट दिए गए और उनके शव नदी में फेंक दिए गए। डाकुओं ने अपने आखिरी ठिकाने पर दस सिर छोड़ दिए थे, जो उनका पीछा कर रही पुलिस टीम के लिए एक उपहार थे।

दोनों पुलिसकर्मियों में से लंबे वाले ने अपनी राइफल कंधे से उतारकर पेड़ के तने पर टिका दी और अपने छोटे कद के साथी से कहा, ‘अरे भाई! रात हो गई!’ (मतलब, ‘अरे भाई! रात हो गई!’) हिंदुस्तानी में बोलते हुए उसने कहा, ‘हमें इस पेड़ की शाखाओं पर चढ़ जाना चाहिए। वहाँ हम जंगली जानवरों से सुरक्षित रहेंगे; और अगर हम अच्छी तरह छिप जाएँ, तो अगर शैतान मान सिंह और उसका लुटेरा गिरोह इस रास्ते से गुज़रे तो वे हमें देख नहीं पाएँगे। तुम्हारा क्या कहना है?’

दोनों पुलिसकर्मियों में से छोटे वाले ने ऊँचे पेड़ की लटकती शाखाओं की ऊँचाई और तुलनात्मक सुरक्षा का जायजा लेने के लिए ऊपर देखा। तेज़ी से गिरते अंधेरे में, पेड़ के पत्ते और शाखाएँ ऊपर के नीले आसमान के बीच काले रंग में गुच्छेदार दिख रही थीं, जिसमें उसने देखा कि तारे एक-एक करके टिमटिमाने लगे थे। फिर भी वह प्रभावित नहीं हुआ। उसने अपने लंबे साथी से बहस शुरू कर दी।

‘तुम्हारी बात मानने का यही नतीजा होता है, मूर्ख!’ उसने कड़वाहट से कहा। ‘जब मैंने आखिरी गाँव में डेरा डालने की सलाह दी थी, तब तुमने मुझे भरोसा दिलाया था कि कम्पामपोली शहर बस तीन-चार मील ही आगे है, जहाँ हमें अच्छी नींद, खाना और शायद कोई औरत मिल जाएगी। तब से हम कम से कम दस मील चल चुके हैं, और यह मनहूस सड़क खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही। चारों तरफ सिर्फ जंगल ही जंगल; न कोई निशान, न कोई झोपड़ी। और अब तुम चाहते हो कि मैं बंदर की तरह पेड़ पर रात बिताऊँ। तुम तो बिल्कुल बेवकूफ हो!’

लंबे कद का कांस्टेबल अपने साथी के उग्र रवैये को देखकर क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गया। फिर उसने विरोध करना शुरू कर दिया।

‘आओ भाई,’ उसने शांत करते हुए कहा, ‘तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? ऐसी कठिनाइयाँ तो पुलिसकर्मी होने के नाते हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। मैंने तो बस इतना ही कहा था कि रात में पेड़ पर रहना ज्यादा सुरक्षित है।’

“पिछला गाँव जितना सुरक्षित और आरामदायक हो सकता था, उतना सुरक्षित और आरामदायक तो यहाँ बिल्कुल नहीं था,” उस छोटे कद के आदमी ने जवाब दिया। “अगर मान सिंह या उसके गिरोह ने हमें अब ढूंढ लिया, तो हमारे सिर भी उन दस साथियों के साथ जुड़ जाएंगे जिन्होंने पिछले हफ्ते अपनी जान गंवाई।”

‘डरो मत,’ दास नाम के लंबे आदमी ने जवाब दिया। ‘मान सिंह हमारे आस-पास कहीं नहीं है। वह भी इस तरह के जंगल के बीचोंबीच पूरी रात नहीं रुकेगा।’

उनकी बातों से हरिराम, जो दोनों भाइयों में छोटा था, और भी चिढ़ गया। उसने हिंदुस्तानी में उतनी ही गंदी गाली दी जितनी कि उसका अंग्रेजी अनुवाद।

‘कौन डर रहा है, दास?’ वह लगभग चिल्लाते हुए बोला। ‘तुम, या मैं? इस मनहूस पेड़ पर चढ़ने का सुझाव सबसे पहले किसने दिया? तुमने, या मैंने? जंगली जानवरों और मान सिंह की बात किसने की? तुमने, या मैंने? तुम खुद पेड़ पर चढ़ सकते हो। मैं तो जा रहा हूँ। यह मनहूस सड़क आखिरकार हमें कहीं न कहीं तो ले ही जाएगी।’ इतना कहकर उसने अपनी राइफल कंधे पर टांगी और आगे बढ़ गया।

दास अपना आपा खो बैठा। अपनी प्रकृति के अधिकांश पुरुषों की तरह, जब उसकी योजना विफल हो जाती है, तो उसका क्रोध व्यक्तिगत गाली-गलौज और अपशब्दों के रूप में प्रकट होता है।

‘अरे छोटे, मोटे सूअर,’ उसने फुफकारते हुए कहा, ‘मैंने तुम्हारी घमंडी बातें बहुत

सुन ली हैं। हम दोनों कांस्टेबल हैं, लेकिन वरिष्ठ होने के नाते, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम सुबह होने तक मेरे साथ यहीं रहो। आखिर, अगर तुम्हें कुछ हुआ तो मैं ही जिम्मेदार होऊंगा, हालांकि सच तो यह है कि तुम्हारी लाश को तो गीदड़ भी नहीं छूते, मान सिंह की तो बात ही छोड़ो।'

हरिराम ने पलटवार करते हुए कहा, 'भाड़ में जाओ तुम।' ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कद में भले ही छोटा हो, लेकिन वजन और मांसपेशियों में वह इसकी भरपाई कर लेता है। 'तुम मेरे जैसे ही एक साधारण कांस्टेबल हो, मेरे वरिष्ठ नहीं। मैं जा रहा हूँ, और मैं देखना चाहता हूँ कि तुम मुझे रोकने की कोशिश करके दिखाते हो या नहीं।'

उनकी दुर्दशा ने दोनों पुरुषों को भय से भर दिया था; जंगल का आतंक, अंधेरा, जंगली जानवर और मान सिंह का डर। अभी-अभी जो झगड़ा हुआ था, वह उनके ध्यान को उनकी असली समस्या से हटाने का एक बहाना मात्र था, जो कि उनके साथ होने वाले संभावित दुर्व्यवहार का भय था।

वे एक-दूसरे के सामने खड़े थे, ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहे थे और उनके चेहरे गुस्से से भरे पुरुषों की तरह सख्त थे। अब काफ़ी अंधेरा हो चुका था। उनके चारों ओर फैली खामोशी और उदासी मानो हज़ारों खामोश ज़ुबानों से चेतावनी का संदेश चीख रही हो।

फिर उन्हें आवाजें सुनाई दीं। उनके सामने सड़क की धूल पर कदमों की आहट; उनके करीब आती हुई, लगातार करीब आती हुई।

क्या ये वही खूंखार डाकू और उसके साथी हो सकते हैं? लेकिन कदमों की आहट से पता चलता था कि उनकी ओर केवल दो या तीन लोग ही आ रहे थे, कोई बड़ा गिरोह नहीं था।

अब बहुत देर हो चुकी थी और अंधेरा भी बहुत गहरा था, इसलिए जल्दबाजी में पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करना नामुमकिन था। मानो आपसी सहमति से, पुलिसकर्मी पेड़ के तने के पीछे खड़े हो गए और बेसब्री से इंतज़ार करने लगे। उन्हें ज़्यादा देर इंतज़ार भी नहीं करना पड़ा। कुछ ही पलों में, अंधेरे में दो आकृतियाँ उभरीं और लगभग उनके सामने आकर रुक गईं।

'भाइयों, पेड़ के पीछे क्यों छुपे हो? बाहर आ जाओ, हम तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।' ये शब्द मधुर स्वर में कहे गए थे, जिनमें व्यंग्य और मनोरंजन का हल्का

सा पुट था।

दास पहले भी क्रोधित था। अब वह बेहद क्रोधित हो गया। वह पेड़ के पीछे से निकलकर उन दोनों आकृतियों की ओर बढ़ा। हरिराम उसके पीछे एक-दो कदम चलकर गया।

‘तुम्हारा कहने का क्या मतलब है कि हम छिप रहे हैं और डरे हुए हैं?’ उसने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा। ‘हम पुलिसवाले हैं और किसी से नहीं डरते!’

‘मैं समझ गया,’ उसी आवाज ने धीमी आवाज में उत्तर दिया। ‘तो फिर तुम पेड़ के तने के पीछे क्यों खड़े हो?’

जवाब देने से पहले दास ने दोनों आदमियों को गौर से देखा। अँधेरे में सब कुछ साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन जहाँ तक उसकी नज़र गई, बोलने वाला आदमी काफ़ी बूढ़ा लग रहा था। उसकी लहराती दाढ़ी, घनी मूंछें और दाढ़ी के बाल साफ़ नज़र आ रहे थे, और अँधेरे में भी वे पूरी तरह से सफ़ेद दिख रहे थे। उसने हमेशा की तरह लंबी कमीज़ और धोती पहनी हुई थी, और उसके सिर पर एक बड़ी पगड़ी थी। उसका साथी उससे छोटा, सीधा और लंबा था, और उसमें एक स्पष्ट फौजी अंदाज़ दिख रहा था। इन सब बातों को देखते हुए दास को लगा कि ज़रूरत पड़ने पर वह और हरिराम उस नौजवान से निपट सकते हैं। लड़ाई होने पर उस बूढ़े आदमी से निपटने का कोई फ़ायदा नहीं था।

‘अपनी बदतमीज़ी बंद करो,’ उसने गुस्से से कहा, ‘हमने कदमों की आहट सुनी और यह देखने के लिए पेड़ के तने के पीछे छिप गए कि कहीं ये आहट उस आदमी की तो नहीं है जिसकी हम तलाश कर रहे हैं। और...’

‘और आप किसे ढूंढ रहे हैं?’ बूढ़े व्यक्ति ने विनम्रता से पूछा।

दास ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही। यह बूढ़ा शैतान उसे परेशान कर रहा था, और उसे सबक सिखाना ही पड़ेगा।

‘छोड़ो कोई बात नहीं,’ उसने झल्लाकर कहा, ‘और तुम दोनों कौन हो?’

तुरंत जवाब आया, 'किसान।'

हरिराम ने अविश्वास से कहा, 'किसान? जंगल के बीचोंबीच, रात में! वाकई अजीब तरह के किसान! मुझे तो आप लोग संदिग्ध लग रहे हैं। किसान हैं, बिलकुल!'

ये शब्द सुनकर बूढ़ा आदमी हंसी से लोटपोट हो गया, जबकि उसके हट्टे-कट्टे साथी के पहले के पत्थर जैसे चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान फैल गई।

‘यह तो वाकई एक बढ़िया मजाक है,’ वह खिलखिलाकर हँसा, ‘तुम हमें संदिग्ध कह रहे हो, जबकि तुम खुद पेड़ों के पीछे छिपते हो! हा हा हा।’ वह खुशी से उछलने लगा।

“बस करो ये पागलपन भरी हंसी,” दास ने सख्ती से बीच में टोकते हुए कहा। “क्या मैंने अभी-अभी तुम्हें नहीं बताया कि हम इसलिए छिपे थे क्योंकि हमें लगा कि शायद तुम ही वो आदमी हो जिसकी हमें तलाश है?”

‘और वह कौन हो सकता है?’ दाढ़ी वाले बूढ़े व्यक्ति ने हांफते हुए पूछा।

‘वह बदमाश डाकू, मान सिंह।’

‘और तुम उसे क्यों चाहते हो? क्या उसने तुम्हें कोई नुकसान पहुंचाया है?’ लंबी दाढ़ी वाले ने चिड़चिड़ेपन से पूछा।

हरिराम ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'यह कितना मूर्खतापूर्ण सवाल है! क्या तुम अंधे हो कि हमारी वर्दी नहीं पहचान सकते? हम पुलिसवाले हैं, जबकि मान सिंह एक डकैत है। इन चारों राज्यों के सभी पुलिसवाले उसे ढूंढ रहे हैं।'

दास ने आगे कहा, “इसके अलावा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर पंद्रह हजार रुपये का इनाम है, और मुझे वह पैसा बहुत चाहिए। बताइए, क्या आप मुझे इस बदमाश के बारे में कोई जानकारी दे सकते हैं?”

'क्या आपको इस पैसे की इतनी जरूरत है कि आप इसके बदले में इस मान सिंह को भी सौंप देंगे, बशर्ते आपको पता चल जाए कि वह कहां मिल सकता है?'

उस पल दास को कोई जवाब नहीं सूझा। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई इस बूढ़े मूर्ख जितना बेवकूफ हो सकता है। फिर अचानक वह बोल पड़ा, “सुनो बूढ़े, मैं पूरी रात तुम्हारे बेवकूफी भरे सवालों के जवाब नहीं दे सकता। आखिरी बार मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैं मान सिंह और यहाँ तक कि अपने वरिष्ठ अधिकारी को भी पंद्रह हजार रुपये के बदले दे दूँगा। मुझे पैसों की सख्त जरूरत है। मेरी एक बेटी है जो अब जवान हो गई है, और मुझे उसके लिए वर ढूँढना है। कोई भी वर दहेज के बिना उससे शादी करने को तैयार नहीं है। और मैं एक गरीब आदमी हूँ जिसके पास पैसे नहीं हैं। अगर मुझे यह इनाम मिल जाए तो मैं अपनी बेटी से शादी करने वाले किसी भी व्यक्ति को उचित दहेज दे पाऊँगा और मेरे पास भी अच्छी रकम बच जाएगी।”

‘मैं समझ गया,’ बूढ़े व्यक्ति ने संतुष्ट होकर कहा।

वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, 'यहाँ आसपास के लोग कहते हैं कि मान सिंह

नाम के इस व्यक्ति ने आर्थिक तंगी से जूझ रहे कई लोगों की आर्थिक मदद की है। मुझे लगता है कि आपको उससे पूछना चाहिए।'

'अब मुझे पता चल गया कि तुम सचमुच पागल हो,' दास ने तिरस्कारपूर्वक उत्तर दिया। उसने अपनी कमीज की जेब से एक बीड़ी निकाली, उसका एक सिरा मुंह में डाला, दूसरे सिरे को माचिस से जलाया और कृतज्ञतापूर्वक धुआं फेफड़ों में भर लिया।

मज़ाक में उसने बूढ़े आदमी से कहा, "शायद आप मुझे बता दें कि यह आदमी कहाँ रहता है, ताकि मैं उससे पूछ सकूँ। वैसे भी, यह सब झूठ का पुलिंदा है। मुझे उस शैतान के कथित अच्छे कामों के बारे में सुनी जाने वाली इन कहानियों पर विश्वास नहीं है। व्यक्तिगत रूप से, मैं तो उसे एक धूर्त, हत्यारा सूअर समझता हूँ, बस इतना ही।"

अपनी निंदा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए, दास ने रेतीली सड़क पर गुस्से से थूका।

मैं मान सिंह हूँ।

दोनों पुलिसकर्मी एकदम चौंककर सीधे खड़े हो गए। अब तक कमज़ोर दिखने वाला वह बूढ़ा व्यक्ति अब कमज़ोर नहीं लग रहा था। मानो उनकी आँखों के सामने ही उसकी लंबाई और शरीर का आकार बढ़ गया हो। उसका साथी, जो पहले हट्टा-कट्टा दिखता था, मानो किसी दैत्य के समान विशालकाय हो गया हो।

तारों की रोशनी में एक हल्की सी चमक दिखाई दी जब उस दैत्य ने अपनी कमरबंद से एक फुट लंबे, भयावह दिखने वाले खंजर का नंगा ब्लेड निकाला और उसे धमकी भरे अंदाज में अपने दाहिने हाथ में पकड़ लिया, जिसका नुकीला सिरा दास के पेट के निचले हिस्से पर टिका हुआ था।

मान सिंह बेपरवाह बना रहा। दोनों पुलिसकर्मी इतने स्तब्ध थे कि कुछ बोल नहीं पा रहे थे। वे बस चुपचाप खड़े रहे। धीरे-धीरे उनकी आँखों में घोर भय के भाव उभर आए। वे डर से कांपने लगे और उन्हें पसीना आने लगा।

'कांस्टेबल, अपना नाम और पता बताओ, मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा कि मान सिंह किस तरह का आदमी है।' ये शब्द शांत और बिना क्रोध के बोले गए थे। लेकिन उनमें एक दृढ़ता थी जो किसी भी देरी की गुंजाइश नहीं छोड़ती थी।

'मेरा नाम गंगा दास है, मैं भिंड नगर पुलिस का कांस्टेबल नंबर 451 हूँ। मैं पुलिस लाइंस के ब्लॉक नंबर 276 में रहता हूँ।' ये शब्द पुलिसकर्मी के मुँह से लगभग

यंत्रवत रूप से निकल पड़े।

"दास, घर जाओ और अपनी बेटी के लिए वर ढूंढो। इस सप्ताह के अंत से पहले ही तुम्हें पुलिस क्वार्टर में तुम्हारे दरवाजे पर तीन हजार रुपये दे दिए जाएंगे। यह दहेज के लिए काफी होगा और इसमें से कुछ भी अपने पास मत रखना, समझे?"

अपने दोस्तों को बता देना कि मान सिंह कभी-कभी दयालु होते हैं। वरना हो सकता है कि तुम्हारे सिर और शरीर अचानक अलग हो गए होते।

और एक बात और। यह सारी रकम तुम्हारी बेटी के दहेज के लिए है। इसमें से तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं है। मैं बाद में पूछताछ करूंगा, और अगर तुमने इस आदेश का उल्लंघन किया तो तुम्हारी मौत निश्चित है! शुभ रात्रि।

अपने छोटे साथी की ओर मुड़ते हुए मान सिंह ने कहा, 'चलो बेटे, हम चलें। हमारा खाना ठंडा हो रहा होगा।'

अगले ही पल वे नजरों से ओझल हो गए। तीन-चार सेकंड बाद सड़क की धूल में उनके कदमों की आवाज धीरे-धीरे गायब हो गई।

दोनों कांस्टेबल एकदम भयभीत थे। उनकी सर्विस राइफलें उनके कंधों पर लटकी हुई थीं। प्रत्येक कांस्टेबल की थैलियों में 20 जिंदा कारतूस थे। फिर भी, मान सिंह पर गोली चलाने या उसे गिरफ्तार करने का ख्याल उनमें से किसी के मन में एक पल के लिए भी नहीं आया था।

अंततः जादू टूट गया। दास ने चीखते हुए कहा, 'शैतान का बच्चा!' और वह विपरीत दिशा में भाग गया।

हरिराम ने भी उसका अनुसरण किया। लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद वह अपने साथी धावक को पकड़ नहीं पाया। शायद उसकी लंबाई ज़्यादा होने के कारण उसके पैर लंबे थे।

या फिर हरिराम कुछ ज्यादा ही मोटा था?

दो दिन बचे थे और सप्ताह समाप्त हो जाता। मान सिंह ने अभी तक अपना वादा पूरा नहीं किया था। पैसे का भुगतान अभी तक नहीं हुआ था।

जब दास और हरिराम उस यादगार रात को अंतहीन मीलों तक दौड़ने के बाद आखिरकार एक गांव में पहुंचे, तो उन्होंने बिना सोचे-समझे हांफते हुए विभिन्न और

चकित श्रोताओं के सामने जो कुछ हुआ था उसका अस्पष्ट विवरण सुनाया।

हालांकि, उन्होंने तथ्यों को काफी हद तक बदल दिया था। उनके अनुसार, गिरोह के एक दर्जन सदस्यों ने उन्हें रास्ते में रोक लिया, उन पर काबू पा लिया, उनके हाथ-पैर बांध दिए और फिर मान सिंह ने उनसे पूछताछ की। उन्होंने बताया कि उन्होंने डाकू के सामने निडर होकर स्वीकार किया था कि वे इनाम पाने और उसमें हिस्सा बांटने के प्रयास में उसकी तलाश कर रहे थे। दास ने कहा था कि उसे अपनी बेटी की शादी में दहेज के रूप में देने के लिए इनाम की राशि का अपना हिस्सा चाहिए, जिस पर मान सिंह ने उसे एक सप्ताह के भीतर पुलिस क्वार्टर के पते पर 3000 रुपये भेजने का आश्वासन दिया था।

यह कहानी जंगल की आग की तरह फैल गई और अगले दिन पुलिस आयुक्त के कानों तक पहुंच गई।

उस अधिकारी को पता था कि मान सिंह ने अब तक कभी भी अपने वादे निभाने में चूक नहीं की थी और इसलिए वह निश्चित रूप से निर्धारित समय के भीतर दिए गए पते पर पैसे चुकाने का प्रयास करेगा।

उसने ठान लिया था कि ऐसा होने पर वह उसे पकड़ लेगा।

पुलिस लाइन्स के प्रवेश द्वार पर दिन-रात सशस्त्र गार्ड तैनात किए गए थे, जबकि चारों ओर पहरेदार तैनात थे जिन्हें निर्देश दिया गया था कि संदिग्ध परिस्थितियों में प्रवेश करने या बाहर निकलने वाले किसी भी व्यक्ति को या संतरी की चेतावनी का जवाब न देने वाले व्यक्ति को देखते ही गोली मार दी जाए। पुलिस क्वार्टरों के निवासियों को पास जारी किए गए थे।

सशस्त्र घेराबंदी जल्द ही पूरी हो गई। अगले एक सप्ताह तक किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति के लिए कड़ी निगरानी के बिना परिसर में प्रवेश करना या बाहर निकलना असंभव होगा।

पी.सी. दास का मूड खराब था।

इन सभी घटनाओं से मिली प्रसिद्धि का उसने खूब आनंद उठाया था। लेकिन अब उसे एहसास होने लगा था कि इस बारे में कुछ भी कहना उसकी मूर्खता थी। शायद राजा मान सिंह सचमुच अपना वादा निभाना चाहते थे और उन्हें वह बहुप्रतीक्षित 3000 रुपये की राशि देना चाहते थे। लेकिन अब अगर उनका इरादा भी यही होता, तो भी यह उनके लिए मानवीय रूप से असंभव था।

काश उसने पूरी घटना के बारे में चुप्पी साध रखी होती।

बेशक, उसने सारा भेद खोलने का दोष पी.सी. हरिराम पर डाला। हरिराम ने ही ज़्यादातर बातें की थीं, भले ही उस रात गाँव पहुँचते ही सबसे पहले उसने, यानी दास ने ही, इस बारे में बात की थी।

फिर एक और दिन बीत गया और केवल एक दिन बाकी रह गया। अगर मान सिंह ने उस रात आधी रात तक पैसे नहीं चुकाए, तो वह अपना वादा निभाने में असफल हो जाएगा।

उत्साह चरम पर था।

आयुक्त ने स्वयं उपस्थित रहने का निर्णय लिया, यदि डाकू-नेता अपने वचन को पूरा करने और स्वयं आने का साहस करे।

इसलिए उस शाम वह काम के घंटों के बाद भी काफी देर तक अपने कार्यालय में बैठा रहा, इस उम्मीद में कि कुछ तो होगा। पुलिस लाइन्स का प्रवेश द्वार बस एक फर्लांग की दूरी पर था।

पुलिस कांस्टेबल दास और हरिराम को पूरे दिन अपने-अपने क्वार्टर में रहने और आगे के निर्देश मिलने तक बाहर निकलने की कोशिश न करने का सख्त आदेश दिया गया था।

दास की 13 वर्षीय बेटी लक्ष्मी, जो हाल ही में वयस्क हुई थी और जो अनजाने में ही सारी परेशानी और हलचल का कारण बनी थी, उतनी खुश और उत्साहित नहीं थी जितनी उसे होना चाहिए था। इसका कारण यह था कि उसका पालतू कुत्ता, जिसका नाम 'टाइगर' था, दोपहर से लापता था। दरअसल, वह दोपहर का भोजन करने नहीं आया था; ऐसा भोजन जो उसने अपने पूरे जीवन में कभी नहीं छोड़ा था।

वह एक साधारण सा काला कुत्ता था, जिसके बाल लंबे और बिखरे हुए थे। लेकिन लक्ष्मी उससे बहुत प्यार करती थी और वह कुत्ता पहले कभी उसका साथ नहीं छोड़ता था। उस सुबह वह हमेशा की तरह उसके पीछे-पीछे बाजार गया था और वहाँ अचानक गायब हो गया। लक्ष्मी चिंतित हो गई और रोने लगी।

रात 8:30 बजे कमिश्नर के डेस्क पर रखा टेलीफोन ज़ोर से बज उठा। उन्होंने रिसीवर उठाया और कान से लगा लिया। एक मधुर आवाज़ हिंदुस्तानी में सुनाई दी। 'पुलिस कमिश्नर साहब, मैं मान सिंह बोल रहा हूँ। अपनी जीप से जल्दी क्वार्टर नंबर 276 पहुँचिए, ताकि आप कांस्टेबल दास को वादा की गई रकम के भुगतान के साक्षी

बन सकें।'

फिर दूसरी तरफ से लाइन कट गई।

कमिश्नर ने जोर से गाली देते हुए टेलीफोन के हैंडल पर पटका और फिर एक्सचेंज के ऑपरेटर से चिल्लाकर कहा, 'उस कॉल को तुरंत ट्रेस करो।'

फिर वह झट से खड़ा हुआ और अपने दफ्तर के दरवाजे की ओर भागा, दीवार में टंगी हुई खूंटी से उसने अपनी चमड़े की बेल्ट उतार ली। उस बेल्ट से उसका होल्स्टर जुड़ा हुआ था जिसमें उसकी .38 कैलिबर की रिवॉल्वर थी, जिसे उसने उसी शाम पहले ही लोड कर लिया था।

बाहर जीप खड़ी थी और उसका अनुशासित ड्राइवर स्टीयरिंग व्हील पर आराम से बैठा था। उसके होठों से एक जलती हुई बीड़ी लटक रही थी, जिसके धुएं की तीखी गंध पुलिस अधिकारी तक पहुँच रही थी।

तीन कदमों में ही कमिश्नर जीप तक पहुंच गए और ड्राइवर के दाहिनी ओर खाली सीट पर बैठ गए, ड्राइवर के पास अपनी बीड़ी फेंकने का ही समय था।

उसने चिल्लाते हुए कहा, 'जल्दी से पुलिस लाइन की ओर गाड़ी चलाओ और प्रवेश द्वार पर रुक जाओ।'

कुछ मिनट बाद वे वहां पहुंच गए।

कमिश्नर के अचानक आने पर संतरी को गार्ड को तैनात करने का समय नहीं मिला। उसने जल्दी से हथियार डाले और फिर हाजिरी लगाई।

'इन फालतू की औपचारिकताओं को छोड़ो,' क्रोधित पुलिस प्रमुख चिल्लाया, 'क्यों न तुम मुझे चुनौती दो और मुझसे मेरा पास दिखाने को कहो?'

संतरी अचंभित रह गया और उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे। ढलान वाली जगह पर खड़े होकर उसने शांत भाव से अपनी राइफल कंधे पर रखी और लगभग लापरवाही से पूछा, "रुको! कौन है वहाँ? कृपया अपना पास दिखाओ," और बाद में थोड़ा डरते हुए बोला, "सर।"

"अरे, भाड़ में जाओ," कमिश्नर गुर्राया और फिर जीप के ड्राइवर से कहा, "क्वार्टर नंबर 276 तक जितनी तेज़ी से हो सके गाड़ी चलाओ।"

उसके सहायक ने क्लच दबाया और जीप तेजी से आगे बढ़ गई।

संतरी दुविधा में था कि क्या उसे अब आदेशों का पालन करना चाहिए और कमिश्नर को गोली मार देनी चाहिए। क्योंकि उसे स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया था कि

जो भी व्यक्ति बिना पास दिखाए सीमा रेखा में प्रवेश करे या बाहर निकले, उसे देखते ही गोली मार देनी है। और कमिश्नर ने अभी-अभी यही किया था।

अचानक चीफ को अपने ही आदेश याद आ गए और उसने अनजाने में अपनी पीठ की मांसपेशियों को सिकोड़ लिया, मानो उसे लगा कि संतरी की गोली उसी जगह पर लगेगी। उसने सोचा, यह ठीक वैसा ही काम था जैसा कोई मंदबुद्धि संतरी, उस मूर्ख की तरह जिसे वह वहाँ खड़ा छोड़कर गया था—अपने ही कमिश्नर को गोली मार देना।

लेकिन सौभाग्य से कुछ नहीं हुआ और जीप धूल का गुबार उड़ाते हुए 276 नंबर पर पहुंची। कमिश्नर खुले सामने के दरवाजे से अंदर घुसते हुए चिल्लाए, 'पुलिस कांस्टेबल दास, तुम कहाँ हो?'

कांस्टेबल, जो अपने बिस्तर पर नग्न अवस्था में केवल धोती पहने लेटा हुआ था, झट से उठ खड़ा हुआ और सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया। 'यहाँ महोदय,' वह हकलाते हुए बोला।

‘क्या कुछ हुआ है? क्या पैसे मिल गए हैं? बोलो यार, और उल्लू की तरह मुझे घूरते मत रहो।’

‘कुछ भी नहीं हुआ है, महोदय,’ आश्चर्यचकित कांस्टेबल ने उत्तर दिया।

कमिश्नर को राहत मिली। शुक्र है कि यह सिर्फ एक अफवाह थी, हकीकत नहीं। अगर उनकी नाक के नीचे, तमाम सावधानियों के बावजूद, उसी रात पैसा दे दिया जाता, तो वे पूरे भारत में पुलिस बल के लिए हंसी का पात्र बन जाते। शायद शर्म के मारे उन्हें स्वेच्छा से सेवामुक्ति लेनी पड़ती, हालांकि उनके पास अभी कुछ साल बाकी थे।

तभी कमिश्नर के पीछे सामने के दरवाजे से एक साधारण सा काला आवारा कुत्ता अंदर आया। लक्ष्मी नाम की लड़की, जो पीछे वाले दरवाजे पर खड़ी थी और सोच रही थी कि आखिर यह सब हंगामा किस बारे में है, उसने कुत्ते को देखा और हाथ फैलाकर उसकी ओर दौड़ पड़ी।

‘टाइगर; तुम शरारती कुत्ते! सारा दिन कहाँ थे?’ उसने स्नेहपूर्वक अभिवादन किया।

जानवर रुक गया और प्यार भरी निगाहों से उसकी ओर देखने लगा, उसकी बेढंगी काली पूंछ तेजी से हिल रही थी और उसके पिछले हिस्से भी उसके साथ हिल

रहे थे।

'और तुमने अपने कॉलर पर क्या बांध रखा है?' लक्ष्मी ने पूछा, और उसने उस चीज़ की ओर इशारा किया जो छह इंच लंबा एक काला सिलेंडर जैसा दिख रहा था, जो कॉलर के दोनों सिरों से बड़े करीने से जुड़ा हुआ था।

कुत्ते के काटे जाने के खतरे की परवाह किए बिना, कमिश्नर ने कुत्ते को उसके गले के पट्टे से पकड़ा और काले सिलेंडर को जबरदस्ती निकालने की कोशिश की।

लेकिन इसे दोनों सिरों से मजबूती से जोड़ा गया था।

'इस घटिया कॉलर को उतारो', उसने चिढ़कर दास पर चिल्लाते हुए कहा।

कुछ मिनट बाद सिलेंडर मेज पर पड़ा था। यह पतली टिन का बना था और काले रंग से रंगा हुआ था। अपनी उत्तेजना में कमिश्नर ने नंगे हाथों से उसका ढक्कन उखाड़ दिया।

अंदर सौ रुपये के तीस नए नोट थे, और सिगरेट के कागज के एक टुकड़े पर पेंसिल से हिंदी में एक छोटा सा संदेश लिखा था। उसमें लिखा था, 'राजा मान सिंह राठौर हमेशा अपना वादा निभाते हैं।'

दास ने पैसों की ओर देखा। फिर उनकी आँखें बंद हो गईं, और अपने सबसे वरिष्ठ अधिकारी की निकट उपस्थिति के बावजूद, उनके होंठों से ये शब्द निकलते हुए सुनाई दिए, 'राम, राम; राजा मान सिंह साहब।'

महज दो महीने के भीतर ही उनकी बेटी की शादी हो गई। और उसे एक प्रतिष्ठित पति भी मिला। उसके साथ दी गई तीन हजार रुपये की दहेज राशि ने यह सुनिश्चित कर दिया।

और पुलिस कांस्टेबल दास ने उसमें से कुछ भी अपने पास नहीं रखा; क्योंकि किसी भी कीमत पर वह मरना नहीं चाहता था।

चौथा अध्याय

घाटी साम्राज्य पर आक्रमण

'वह बूढ़ा आदमी नरक मचा रहा है और इसके बारे में कुछ करना ही होगा।'

जिला पुलिस अधीक्षक (डी.एस.पी.) बोल रहे थे और उनकी आवाज में अंतिम निर्णय का भाव था।

जिस 'बूढ़े आदमी' का वह जिक्र कर रहा था, वह सचमुच बूढ़ा नहीं था। और इस

शब्द का प्रयोग किसी भी तरह से अनादरपूर्ण अर्थ में नहीं किया गया था। बल्कि, इसके प्रयोग में आशंका और सम्मान का भाव झलक रहा था।

डी.एस.पी. अपने तत्काल वरिष्ठ अधिकारी, उप महानिरीक्षक का जिक्र कर रहे थे, जिन्होंने उन्हें ठीक पिछले मंगलवार को तलब किया था। उस अधिकारी के शब्द उनकी स्मृति में इतने ताजा थे मानो उन्होंने उन्हें अभी-अभी कहा हो।

'यह सरासर शर्मनाक है, चंद्र,' उसने गरजते हुए अपने सामने ऑफिस की मेज पर दोनों हथेलियों से एक साथ प्रहार किया। 'एक अकेला आदमी वर्दी में कुछ गुमनाम बदमाशों का नेतृत्व कर रहा है; और लगभग तीन साल से लगभग दो हजार पुलिसकर्मी उसके पीछे पड़े हैं! और फिर भी वे उसे पकड़ नहीं पा रहे हैं।'

'अरे यार, क्या तुम्हें एहसास है?' उसने अपने विषय में जोश भरते हुए पूछा। 'पूरा भारत हम पर हंस रहा है। इस प्रायद्वीप के हर राज्य में, हर पुलिस बल में, हर पुलिस बल में, हर पुलिस वाला यही पूछ रहा है, 'चार राज्यों के दो हज़ार पुलिसवाले यहाँ क्या कर रहे हैं? वे एक भी बदमाश को नहीं पकड़ सकते!'

'हमारी बदनामी आसमान छू रही है। इन चारों राज्यों की सरकारें लगभग हर हफ्ते मुझे पत्र लिखकर हमारी प्रगति की पूरी रिपोर्ट मांगती हैं। प्रगति, धिक्कार है! मुख्यालय में बैठे इन कमीनों के पास करने के लिए और कोई काम नहीं है। वे बस अपनी डेस्क पर बैठे रहते हैं और अपने नाम की किसी निकम्मी को बेवकूफी भरे पत्र लिखवाते रहते हैं।'

लेकिन सच्चाई का सामना करो, चंद्र मेरे बेटे। हमारे पास उन्हें बताने के लिए कोई प्रगति नहीं है। हर हफ्ते मैं जिम्मेदारी दूसरों पर डालता हूँ और वही जवाब अलग शब्दों में लिखता हूँ: "जांच संतोषजनक ढंग से आगे बढ़ रही है और हमें उम्मीद है कि हम बहुत जल्द मान सिंह के मुख्यालय पर छापा मार सकेंगे।"

लेकिन कोई छापा नहीं पड़ता। क्योंकि पड़ ही नहीं सकता; इसका बचकाना कारण यह है कि हमें पता ही नहीं कि उस बदमाश का मुख्यालय कहाँ है।

डी.आई.जी. गुस्से से आग बबूला हो रहे थे। उनका नाम सेन गुप्ता था और वे बंगाली थे। कलकत्ता पुलिस के सबसे कुशल अधिकारियों में से एक, उन्हें मान सिंह और उसके डकैतों के गिरोहों को खत्म करने का विशेष कार्य सौंपा गया था, और इस कार्य को पूरा करने के लिए उनके अधीन 1700 पुलिसकर्मी और अधिकारी तैनात थे।

हालांकि, वह परिणाम साकार नहीं हो सका।

सेन गुप्ता एक बुद्धिमान व्यक्ति थे और एक ऐसे अधिकारी थे जो अपने अधीनस्थों से कठोर प्रतिक्रिया की अपेक्षा रखते थे और उन्हें वह मिलती भी थी। वे उन्हें तब तक प्रेरित करते और अपनी ज़ुबान से फटकार लगाते रहते थे जब तक कि वे कुछ कर न दें।

उनका बड़ा सा सिर छोटे, कड़े बालों से ढका हुआ था, पचास वर्ष की आयु होने के बावजूद उनमें सफ़ेद बालों का कोई नामोनिशान नहीं था। ये ऐसे बाल थे जो कंघी या ब्रश करने से कभी नहीं मानते थे, इसलिए वे उन्हें ऐसे ही छोड़ देते थे। उनके ऊपरी होंठ के ऊपर एक छोटी, काली मूंछ थी जो उनके गंभीर व्यक्तित्व को और बढ़ा देती थी। लगभग बिना बालों वाली भौंहों से उनकी धूसर-हरी आँखें चमकती थीं। एक लंबी नाक; पतले, स्वार्थी होंठ; और एक चौकोर, थोड़ी उभरी हुई ठुड्डी, मूंछ और कड़े बालों के साथ मिलकर उन्हें एक बेहद प्रभावशाली रूप प्रदान करती थी।

औसत से थोड़ी अधिक लंबाई के - उनकी लंबाई ठीक 5 फुट 10.5 इंच थी - वे एक मजबूत कद-काठी के व्यक्ति थे जिनका वजन 200 पाउंड था।

सबसे बढ़कर, वह बेहद गुस्सैल स्वभाव का था, और जब उसे गुस्सा आता तो वह बैल की तरह गुर्राता, हांफते हुए सांस लेता और अपनी बदकिस्मत मेज या जो भी फर्नीचर उसके हाथ के पास आता उस पर हथेलियों से प्रहार करता; और वह प्रहार करता ही रहता, और जोर-जोर से करता जाता।

वह अभी-अभी यही कर रहा था।

चंद्र लगभग निष्क्रियता से सोच रहा था कि इन दोनों में से कौन अधिक कष्ट झेल रहा है—डीआईजी के हाथ या डीआईजी की मेज।

सेन गुप्ता अचानक हांफना बंद कर दिया और शुष्क स्वर में, सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए बोलना जारी रखा।

चंद्र, क्या तुम्हें पता है, जब मैं कलकत्ता में स्कूल में पढ़ता था, तो मेरी दूसरी भाषा लैटिन थी। पता नहीं क्यों उन्होंने इसे पढ़ाया और क्यों मैंने इसे सीखा। मुझे वह पूरा विषय याद नहीं है, सिवाय एक वाक्य के जो मेरे दिमाग में अटक गया है। और उस एक वाक्य के लिए मैं सीज़र्स की भाषा का हमेशा आभारी रहूंगा।

यह मुहावरा है, “Faeces taurus sapientum sedit” और इसका अर्थ है, “बकवास दिमाग को चकरा देती है”।

और चंद्र, मेरे बेटे, मैं पिछले कई हफ्तों से अपनी रिपोर्टों में ठीक यही कर रहा हूँ। मुख्यालय में बैठे इन निकम्मों के दिमाग को चकरा रहा हूँ; मतलब, अगर उनके पास दिमाग है भी तो, जिस पर मुझे शक है—अपनी बेबुनियाद रिपोर्टों से।

लेकिन खेल खत्म हो चुका है और अब और नहीं चल सकता। यहाँ तक कि वहाँ के मंदबुद्धि लोगों को भी यह बात समझ आ गई है कि मेरे साप्ताहिक पत्र तोते की तरह दोहराए जाने वाले वाक्य हैं और उनका कोई मतलब नहीं है।

'नई दिल्ली के लोग हमें भारत के सभी पुलिसकर्मियों में सबसे मूर्ख समझते हैं। मुझे नहीं पता कि बाहरी दुनिया क्या सोचती है। लेकिन, अगर उन्हें पता चल गया है कि क्या हो रहा है, तो इन अभियानों के प्रमुख के रूप में मुझे डोनाल्ड डक के बराबर बुद्धि का समझा जाना चाहिए।'

पूरे भाषण के दौरान चंद्र ने एक शब्द भी नहीं कहा था। वह पहले भी इस तरह के कई भाषणों का सामना कर चुका था और जानता था कि अगर उसने बीच में टोकने की हिम्मत की तो बूढ़ा आदमी शायद भड़क उठेगा, उसकी नस फट जाएगी और उसकी मौत हो जाएगी।

इसलिए उसने बुद्धिमानी से चुप रहना ही उचित समझा।

सेन गुप्ता काफी देर तक एक ही ढर्रे पर बोलते रहे। चंद्र सोच रहा था: ये मोटा बदमाश तो बस बक-बक करता ही जा रहा है। मेरे कंधे पर रोने के बजाय खुद उठकर कुछ कर क्यों नहीं लेता?

चंद्र एक लंबा, दुबला-पतला और गहरे रंग का आदमी था। वह दक्षिण भारत के मद्रास शहर से आया था। जिला अधीक्षक के पद पर अपेक्षाकृत कम उम्र (35 वर्ष) का होने के बावजूद, उसने मद्रास पुलिस में अपने शुरुआती वर्षों में राज्य के आपराधिक गिरोहों के बीच सराहनीय सेवा दी थी; और बस्तर राज्य के आसपास के क्षेत्र और गोदावरी नदी के मध्य भागों में डाकुओं का पीछा करने में भी कुछ समय बिताया था, जहां भले ही छोटे-मोटे अपराधी पीढ़ियों से सक्रिय थे।

दरअसल, भारत भर में किसी भी प्रकार के डकैतों या अपराधियों, चाहे वे छोटे हों या बड़े, का पीछा करने का कुछ ज्ञान या अनुभव रखने वाले किसी भी पुलिस अधिकारी या पुलिसकर्मी को उस विशेष बल में भर्ती कर लिया गया था जिसे संगठित किया गया था और मान सिंह और उसके कुख्यात अनुयायियों को खत्म करने के लिए सेन गुप्ता के अधीन रखा गया था।

अंततः डी.आई.जी. चुप हो गए। अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के बाद, उन्हें कुछ हद तक राहत महसूस होने लगी। तभी चंद्र ने कहा, 'आप जो कुछ भी कह रहे हैं, वह सब सच है, महोदय। लेकिन आप क्या करने का सुझाव देते हैं?' यह एक असभ्य प्रश्न था, जो उनके हालिया गुस्से के तुरंत बाद पूछा गया था।

सेन गुप्ता एक बार फिर भड़क उठे।

'चंद्र, ये तो बिलकुल बेवकूफी भरा सवाल है,' उसने संक्षिप्त में कहा। 'सचमुच बेवकूफी भरा! यही तो मैं तुमसे पूछ रहा हूँ, यार। तो फिर मुझसे वही सवाल वापस पूछने का क्या फायदा? अरे, कुछ तो करो। तुम्हारे अधीन बहुत सारे आदमी हैं। चंबल नदी पार करो और दूसरी तरफ की हर घाटी को व्यवस्थित तरीके से छान मारो। वैसे देखा जाए तो ये काफी आसान है, है ना?'

चंद्र के गहरे रंग के भीतर गुस्सा पनप रहा था और उसका चेहरा कुछ पीला पड़ गया। उसने फिर सोचा, "क्या फर्क पड़ता है; मानो मान सिंह और उसका गिरोह दूसरी तरफ चुपचाप बैठे हों, बस हमारे आने और उन्हें पकड़ने का इंतजार कर रहे हों।"

उन्होंने बस इतना ही कहा, 'मैं इस पर एक प्रयास करूंगा, सर।'

बूढ़े व्यक्ति ने अपने कनिष्ठ अधिकारी की ओर देखने की जहमत तक नहीं उठाई। वह अपने सामने रखे पैड पर सोख्ता कागज के नए पन्ने को घूर रहा था।

फिर उसने अपनी मेज पर रखी कलम उठाई, उसे स्याही में डुबोया और सोख्ता कागज पर एक चेहरा उकेरा। यह एक ऐसा चेहरा था जिसकी मूंछें बेतुकी रूप से लंबी और घुमावदार थीं और दाढ़ी भी बहुत बड़ी थी।

हालांकि उसने इसे खुद बनाया था, लेकिन चेहरा मानो उपहासपूर्वक उसकी ओर घूर रहा हो।

सेन गुप्ता ने निब की नोक से चित्र पर प्रहार किया। 'रिलीफ' निब कागज पर लगी और नोक पीछे की ओर मुड़ गई। लेकिन व्यंग्यचित्र पहले की तरह ही मुस्कुराता हुआ प्रतीत हुआ।

डी.आई.जी. ने पेन को अपनी डेस्क पर फेंक दिया और चिल्लाया, 'ऑर्डरली! इधर हाओ! (इधर आओ)।'

एक पुलिस कांस्टेबल बेहद तेज गति से कार्यालय में दाखिल हुआ; उसने इतनी अचानक गति से खुद को रोका कि उसका शरीर चलने की गति के बल पर अपने ही पैरों पर आगे की ओर झुक गया, और उसने जोरदार सलाम किया, उसके दाहिने हाथ

की उंगलियां उसकी कनपटी के पास कांप रही थीं।

डी.आई.जी. ने आदेश दिया, 'चाय लाओ'; और फिर चंद्र से पूछा, 'क्या तुम एक कप चाय नहीं पियोगे?'

'नहीं, धन्यवाद महोदय,' चंद्र ने कुछ कड़े स्वर में उत्तर दिया; और फिर हिचकिचाते हुए कहा, 'अगर बस इतना ही है, तो मैं अपने लोगों के पास वापस जाकर देखूंगा कि क्या किया जा सकता है।'

डी.आई.जी. ने अनमने ढंग से सिर हिलाया।

और इस तरह साक्षात्कार समाप्त हुआ। चंद्र ने एड़ी टकराकर सलाम किया और फिर मुड़कर डीआईजी के विशाल और हवादार कार्यालय से बाहर निकल गए।

सेन गुप्ता ने बस एक बार फिर सिर हिलाकर सहमति जताई।

अब शनिवार का दिन था, और चंद्र एक और डेस्क पर बैठा था। यह डेस्क भिंड कस्बे में तैनात पुलिस इंस्पेक्टर की थी। इंस्पेक्टर का कार्यालय पुलिस स्टेशन का ही एक हिस्सा था। ऊपर लगा पंखा (गुंथी हुई टहनी या कस्कस की जड़ों से बना लंबा पंखा) एक नियमित लय में आगे-पीछे हिल रहा था, जिसे सामने की दीवार में बने एक छेद से होकर गुजरने वाली रस्सी से खींचा जा रहा था। पंखा चलाने वाला बाहर बरामदे में बैठा था। वह लगभग नग्न अवस्था में था।

अपने वरिष्ठ अधिकारी के प्रति आदर दिखाते हुए, इंस्पेक्टर ने अपनी कुर्सी चंद्र को सौंप दी थी, जो अब इंस्पेक्टर की मेज पर उस कुर्सी पर बैठा था। चंद्र मेज के दूसरे छोर पर डीएसपी के सामने लकड़ी के तले वाली एक अन्य कुर्सी पर बैठा था। चंद्र उसे डीआईजी के साथ हुई अपनी मुलाकात के बारे में बता रहा था और अपनी बात यह कहकर समाप्त की कि इस मामले में वाकई कुछ किया जाना चाहिए।

इंस्पेक्टर सहयोगी और कुशल दिखने के लिए उत्सुक थे। लेकिन वे चंद्र और डी.आई.जी. से भी अधिक समय से इस जिले में थे और समस्याओं से भली-भांति परिचित थे। उनका नाम गुलाब सिंह था, जो एक राजपूत थे और सेना में सेवा देने के बाद पुलिस में स्थानांतरित हो गए थे। लगभग 45 वर्ष की आयु के, झुर्रीदार चेहरे वाले और राजपूतों की पारंपरिक मूंछें और दाढ़ी रखे हुए, वे बेहद दृढ़ निश्चयी थे। अपने वर्तमान दो अधिकारियों के आने से पहले, वे कई बार चंबल नदी के पार पुलिस के दंडात्मक अभियानों में शामिल होकर घाटियों की तलाशी लेने गए थे। उन सभी अभियानों से वे खाली हाथ लौटे थे, और कई बार तो जितने पुलिसकर्मी निकले थे,

उससे भी कम लौटे थे। इनमें से कुछ पुलिसकर्मियों को चट्टानों के पीछे, गुफाओं में या घाटियों में मौजूद खड़ी चट्टानों के बीच छिपे स्नाइपरों ने गोली मार दी थी। कई बार तो पूरी टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया गया और खतरे का आभास होने से पहले ही कई लोग मारे गए। इसलिए, डीएसपी की कार्रवाई की उत्सुकता और डीआईजी की अधीर झुंझलाहट इंस्पेक्टर गुलाब सिंह में कोई खास उत्साह जगाने में सफल नहीं हुई।

‘हुजूर,’ उन्होंने चंद्र से हिंदी में कहा, ‘एक कहावत है, “मूर्ख कर्मों की लालसा रखते हैं और कभी-कभी बुद्धिमान लोग इसका खामियाजा भुगतते हैं।” दिन के समय बड़ी संख्या में लोगों के साथ घाटियों में जाना सरासर व्यर्थ है। यदि पुलिस बल बड़ा हो, तो डाकू गायब हो जाते हैं। यदि छोटा हो, तो हम पर गोलीबारी होगी और हममें से कुछ मारे जाएंगे। मैंने ऐसा बार-बार होते देखा है।’

चंद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। वह गहरी सोच में डूबा हुआ था। इंस्पेक्टर ने जो कहा था, वह बिलकुल सच था, और डी.आई.जी. की नाराज़गी के बावजूद उसे यह बात माननी ही पड़ी। दिन दहाड़े चंबल नदी के पार पुलिसकर्मियों के दल को ले जाने से कोई फायदा नहीं होगा। या तो उन्हें उस दिन कोई नहीं मिलेगा, या फिर उन पर अचानक गोलियां चलाई जाएंगी।

फिर भी, कुछ न कुछ तो करना ही था।

इसलिए डी.एस.पी. सोचते रहे, और इंस्पेक्टर उन्हें पत्थर की तरह देखते रहे, अपने ही विचारों में डूबे हुए।

अचानक चंद्रा अनायास ही अकड़ गया। उसके मन में एक विचार आया। एक अच्छा विचार। जितना वह इसके बारे में सोचता, उतना ही उसे यह अच्छा लगता। उसके होंठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

‘इंस्पेक्टर साहब,’ उन्होंने सोच-समझकर कहा। ‘आपने कहा था कि दिन के समय नदी पार करके घाटियों में सेना भेजना व्यर्थ था क्योंकि अपराधी हमें आते हुए देख लेंगे?’

‘जी हां, हुजूर,’ गुलाब सिंह ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया।

‘तो फिर क्या होगा अगर हम उन्हें रात के अंधेरे में चुपके से नदी पार करा दें और दिन में दूसरी तरफ छिप जाएं?’ इंस्पेक्टर की आंखें हैरानी से थोड़ी और चौड़ी हो गईं। यह कैसी बेवकूफी भरी योजना है, उन्होंने सोचा। ‘मान सिंह के जासूस हर जगह

हैं, महोदय। नदी पर रात में पहरा रहता है। वे हमें पार करते हुए देख लेंगे।’

‘ज़रूरी नहीं, इंस्पेक्टर, ज़रूरी नहीं,’ चंद्र ने नरमी से कहा। ‘हम इस काम के लिए अंधेरी रात चुनेंगे; और ऐसा समय जब लगभग सभी लोग सो रहे हों, चाहे वे दोस्त हों या दुश्मन।’ यहाँ चंद्र ने बड़े भरोसे से मुस्कुराते हुए अपने अधीनस्थ को यह जताने की कोशिश की कि वह दुनिया भर के पहरेदारों की हर तरह की हरकतों से वाकिफ है।

गुलाब सिंह ने कोई जवाब नहीं दिया।

कुछ देर बाद चंद्र ने आगे कहा, “गुलाब सिंह, कृपया मुझे वह दीवार कैलेंडर दीजिए, और साथ ही वह बड़ा नक्शा भी लाकर दीजिए जो सभी पुलिस थानों और चौकियों को भेजा गया है और दीवार पर टंगा होना चाहिए। वह कहाँ है?”

‘जी साहब,’ राजपूत ने अपनी कुर्सी से उठकर कहा और कमरे के उस पार कोने में रखी एक प्राचीन लकड़ी की अलमारी की ओर चल पड़ा। उसने अलमारी का कुंडा खोला और अलमारी का दरवाजा ज़ोर से खुल गया। इतनी दूरी से भी चंद्र को कब्ज़ों की चरमराहट सुनाई दी।

गुलाब सिंह ने अपना हाथ ऊपर उठाकर सबसे ऊपरी शेल्फ पर टटोला और लगभग एक गज लंबा कागज का एक रोल नीचे उतारा।

वह उसे मेज पर ले गया, वहाँ रखे कलम रखने के रैक और स्याही की बोतल को हटाकर खिड़की की चौखट पर रख दिया, और कागज का रोल चंद्र के सामने रख दिया। यह नक्शा था।

चंद्र ने उसे खोला।

नक्शे के किनारे फिर से मुड़ने लगे। इंस्पेक्टर ने यह देखा। वह खिड़की के पास वापस गया और कलम रखने का स्टैंड और स्याही की बोतल लेकर लौटा। उसने पेन स्टैंड को नक्शे के बाएँ किनारे पर और स्याही की बोतल को नक्शे के दाएँ किनारे पर रख दिया। उसने डेस्क का ढक्कन थोड़ा सा खोलकर, नक्शे के निचले किनारे को अंदर धकेलकर और ढक्कन को बंद करके दोनों निचले कोनों को मुड़ने से रोक दिया।

क्योंकि उनके दफ्तर में कोई पेपरवेट नहीं था।

इसके बाद इंस्पेक्टर कमरे के उस पार गया, अपनी मेज के सामने वाली दीवार पर कील से टंगे बड़े कैलेंडर को हटाया और उसे डी.एस.पी. के सामने रखे नक्शे पर रख दिया।

चंद्र चुपचाप कैलेंडर का अध्ययन करता रहा, जबकि गुलाब सिंह उसके सामने रखी लकड़ी की कुर्सी पर फिर से बैठ गया और चिंतन में डूब गया।

महीने की दस तारीख थी। अमावस्या पंद्रह तारीख को होगी।

उन्होंने पूछा, 'नदी के पास हमने कितने पुलिसकर्मियों को तैनात किया है जिन्हें अंधेरे की आड़ में जल्दी से स्थानांतरित किया जा सकता है?'

इंस्पेक्टर ने कुछ सेकंड तक प्रश्न पर विचार किया।

उन्होंने उत्तर दिया, 'राओटी में चौबीस सशस्त्र कांस्टेबल, दो सार्जेंट और एक सब-इंस्पेक्टर तैनात हैं, और यह नदी से साढ़े चार मील दूर है।'

'हम्म,' चंद्र ने सोचा। और फिर, 'बस इतना ही?'

गुलाब सिंह के जवाब देने से पहले ही उसने आगे कहा, "ज़्यादा नहीं; लेकिन फिर भी, बहुत कम भी नहीं। उन्हें काम करना ही होगा। दिन हो या रात, और ज़्यादा लोगों को मार्च पर भेजना सारा भेद खोल देगा। लोगों को पता चल जाएगा कि कुछ गड़बड़ है और पुलिस किसी तरह की कार्रवाई कर रही है। मान सिंह को भी सूचना मिल जाएगी।"

इसके बाद उन्होंने पूछा, 'इन सत्ताईस आदमियों के पास कौन से हथियार हैं?'

जैसा कि आप जानते हैं, हुजूर, इस क्षेत्र की सभी पुलिस टुकड़ियाँ विशेष रूप से प्रशिक्षित जवानों की हैं। वे या तो पूर्व-सैनिक हैं, या सशस्त्र रिजर्व से आते हैं। और प्रत्येक टुकड़ी के साथ दो टॉमी गनों से लैस एक स्वचालित हथियार इकाई होती है। बाकी जवानों के पास सर्विस राइफलें होंगी; और बेशक सब-इंस्पेक्टर के पास उनका रिवॉल्वर होगा।

अपने अधीनस्थ द्वारा दिए गए सावधानीपूर्वक उत्तर को देखकर चंद्र मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।

"और क्या हम नाव मालिकों को पहले से बताए बिना या उनकी अनुमति लिए बिना नदी पार करने के लिए नावों का इंतजाम कर सकते हैं? इंस्पेक्टर साहब, यही सबसे ज़रूरी है। जैसा कि आप जानते हैं, इस बदमाश के एजेंट हर जगह हैं; मुझे पूरा यकीन है कि नाविकों में भी होंगे। अगर उन्हें हमारी गतिविधियों की ज़रा सी भी भनक लग गई, तो वे उसे सूचना दे देंगे।"

गुलाब सिंह ने फिर सोचा। फिर उसने कहा, 'केनचेन नामक स्थान पर दो-तीन छोटी नावें हमेशा बंधी रहती हैं। यह नदी के ऊपरी भाग से आधा मील दूर है। नदी वहाँ

मुड़कर संकरी हो जाती है। आप मानचित्र में देख सकते हैं, महोदय।'

चंद्र ने अपने सामने मेज पर रखे नक्शे का अध्ययन करना शुरू किया।

फिर इंस्पेक्टर ने आगे कहा, 'लेकिन ये छोटी नावें हैं, हुजूर, और इनमें ज़्यादा से ज़्यादा दस आदमी ही आ सकते हैं—सत्ताईस तो बिल्कुल नहीं।'

चंद्र ने पूछा, 'वहां सामान्यतः कितनी नावें रखी जाती हैं?'

इंस्पेक्टर ने कहा, 'शायद दो या तीन। अगर माननीय महोदय चाहें तो मैं सटीक संख्या पता कर सकता हूँ।'

'छी! ऐसा मत करो,' चंद्र ने चिढ़कर जवाब दिया। 'तुम्हारी पूछताछ से शायद शक पैदा हो जाएगा। हमें अपनी किस्मत आजमानी होगी। अगर तीन से कम नावें मिलीं, तो हमें पीछे छूटे आदमियों को लेने वापस आना पड़ेगा। और सिर्फ सत्ताईस आदमी नहीं होंगे, गुलाब सिंह,' उसने अर्थपूर्ण लहजे में कहा, 'उनतीस होंगे। क्योंकि तुम और मैं इस छोटी सी यात्रा पर जा रहे हैं। मैं खुद इस यात्रा को पूरा करने का इरादा रखता हूँ।'

चंद्र बारी-बारी से नक्शे और कैलेंडर को देख रहा था, तभी एक बार फिर सन्नाटा छा गया।

'आज शनिवार, दस तारीख है,' उसने मन ही मन सोचते हुए कहा। 'कैलेंडर के हिसाब से गुरुवार, पंद्रह तारीख को अमावस्या आने में पाँच दिन बाकी हैं। तो हमें बारह, तेरह या चौदह तारीख को काम शुरू करना होगा, है ना? बूढ़े आदमी को जल्द ही काम चाहिए। दरअसल, जितनी जल्दी हो उतना अच्छा।'

'मान लीजिए कि हम 12 तारीख, सोमवार को तय करते हैं?' उसने अपने अधीनस्थ की ओर देखते हुए पूछा, मानो वह जवाब की उम्मीद कर रहा हो।

'आपके मन में क्या चल रहा है, महोदय?' इंस्पेक्टर ने मासूमियत से पूछा।

चंद्र के चेहरे पर क्षण भर के लिए झुंझलाहट के भाव झलक गए। फिर उसे याद आया कि वह गुलाब सिंह से नहीं, बल्कि खुद से ही सोच-विचार कर रहा था। इसलिए उसने अपनी योजना को ज़ोर से बताना शुरू कर दिया।

'अब ध्यान से सुनो, इंस्पेक्टर। इस योजना के बारे में किसी को भी पहले से नहीं बताया जाना चाहिए, समझे? यहां तक कि सब-इंस्पेक्टर और हमारे साथ आने वाले पुलिसकर्मियों को भी नहीं। उनकी ज़ुबान चल सकती है और जानकारी लीक हो सकती है। अगर ऐसा हुआ तो अभियान विफल हो जाएगा। इससे भी बुरा, हम पर

हमला हो सकता है,' और उसने अर्थपूर्ण ढंग से ऊपर देखा। 'इसलिए, इसके बारे में केवल आप और मैं ही जानते हैं, कोई और नहीं।'

"कल, यानी रविवार, 11 तारीख को, आप और मैं इस क्षेत्र की सभी चौकियों का निरीक्षण करने के लिए निकलेंगे। यह एक सामान्य निरीक्षण होगा, और कुछ नहीं। लेकिन हम इसे 'अचानक निरीक्षण' कहेंगे। हम सोमवार, 12 तारीख की दोपहर को रावती पहुँचने की व्यवस्था करेंगे। वहाँ हम गहन निरीक्षण करेंगे। हम जवानों, उनके उपकरणों, उनके शिविर, उनकी वर्दी की जाँच करेंगे और यहाँ तक कि उन्हें दिए जा रहे राशन की गुणवत्ता के बारे में भी पूछताछ करेंगे।"

'हम यह सब आराम से करेंगे। मैं बेहद सख्त रहूंगा और एक दर्जन सवाल पूछूंगा। आप भी ऐसा ही करें। हम दोनों मिलकर उस शाम अगले चौकी तक पहुंचने के लिए बहुत देर कर देंगे।'

इसलिए मैं सब-इंस्पेक्टर को बुलाऊंगा, उसे उन सभी गलतियों के लिए फटकार लगाऊंगा जो मैंने उजागर की हैं, और हमें हिरासत में लेने का कारण उसी को मानूंगा। मैं उससे कुछ इस तरह कहूंगा, "सब-इंस्पेक्टर, मैंने जो कुछ भी पाया है, उसके कारण इंस्पेक्टर और मेरे लिए आज रात आगे बढ़ना बहुत देर हो चुकी है। केवल आपकी वजह से ही हमें सुबह तक यहीं रुकना होगा। इसलिए, एक तंबू लगाइए जिसमें इंस्पेक्टर और मैं आज रात सोएंगे। और रात का खाना तैयार कीजिए, क्योंकि हमें भूख लगी है। और कल सुबह तड़के हमें जगाना मत भूलिएगा। हमें सूर्योदय से पहले निकलना होगा।"

उस बेचारे अधिकारी को असहज करने के लिए ये सब कहने के बाद, हम रात का खाना खाएंगे और जल्दी सो जाएंगे।

लेकिन सोना नहीं है, इंस्पेक्टर साहब।

ठीक आधी रात को मैं तुम्हें बुलाऊंगा। तुम बदले में एस.आई. को जगाकर हमारे तम्बू में ले आना। तब, और केवल तभी, मैं उसे बताऊंगा कि क्या होने वाला है।

'दो बजे तक हमारे सैनिक हथियारों और गोला-बारूद के साथ तैयार होने चाहिए और हमें आगे बढ़ने की तैयारी करनी चाहिए।'

'अगले तीन दिनों के लिए भोजन तैयार करना और साथ ले जाना वाकई पेचीदा मामला है, गुलाब सिंह। मेरा मतलब उन तीन दिनों से है जिनके लिए मैंने अभियान की योजना बनाई है। हम शिविर के रसोइए को रात भर में चपातियाँ बनाने के लिए

कहने की हिम्मत नहीं कर सकते। उसकी हरकतें संदेह पैदा कर सकती हैं और वह बात फैला सकता है। हम शायद यह उम्मीद कर सकते हैं कि रसोई में खाने के लिए कुछ तैयार मिल जाए। लेकिन वह एक तो बिल्कुल अपर्याप्त होगा; और इन रसोइयों को जैसा मैं जानता हूँ, मुझे संदेह है कि उनके पास खाने-पीने की कोई चीज होगी। आपको यह ध्यान रखना होगा कि सैनिकों को अगले दिन पूरे दिन खाइयों में छिपना होगा और रात में फिर से निकलना होगा। और अगले दो दिनों तक यही करना जारी रखना होगा।'

जी हां, इंस्पेक्टर साहब, भोजन का यह सवाल वाकई एक बड़ी समस्या है। क्या आपके दिमाग में इसका कोई समाधान आता है?

गुलाब सिंह ने खूब सोचा। कुछ मिनटों बाद उसने कहा, "महोदय, अब एक ही रास्ता नज़र आता है। हमें भिंड में मौजूद पुलिस रसोइयों से तुरंत चपातियाँ बनवानी होंगी—सैकड़ों चपातियाँ। तीन दिन के लिए उनतीस आदमियों के लिए पर्याप्त। ये चपातियाँ हमें कल जब हम निकलेंगे तो जीप के पीछे रखनी होंगी। हमें इन्हें आखिरी क्षण तक जीप में छिपाकर रखना होगा और फिर नदी पार करने के लिए निकलने से पहले इन्हें सभी आदमियों में बाँटकर उनके थैलों में रखवाना होगा।"

"साहिब, ये चपातियाँ बासी हो जाएँगी और टिन की प्लेटों की तरह सख्त हो जाएँगी। आदमी विद्रोह कर देंगे और शायद उन्हें फेंक देंगे, बजाय इसके कि वे तीन दिन बाद गत्ते जैसी लगने वाली चीज़ खाएँ।"

'इसके बाद तो तुम यकीनन पूरे भारत के सबसे अलोकप्रिय डीएसपी बन जाओगे।' गुलाब सिंह अपनी इस आखिरी बात को बेजान हंसी के साथ कहने से खुद को रोक नहीं पाए।

'मुझे पता है, इंस्पेक्टर साहब,' चंद्र ने गंभीरता से स्वीकार किया, 'आपका सुझाव बहुत अच्छा है और संयोगवश समस्या का एकमात्र समाधान भी है, जिसके लिए मैं आभारी हूं। दुर्भाग्य से, हम भारतीयों को डिब्बाबंद राशन पसंद नहीं है।'

"लेकिन चिंता मत करो," उन्होंने आगे कहा, "चलने से पहले मैं सभी जवानों को एक छोटा सा उत्साहवर्धक भाषण दूंगा, जिसमें मैं समझाऊंगा कि अगर हमें पूरी गोपनीयता बनाए रखनी थी तो इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं था। मैं प्रत्येक जवान को दुगुनी पदोन्नति देने का वादा करता हूं, और इस मान सिंह की गिरफ्तारी के लिए रखे गए पंद्रह हजार रुपये के इनाम को आप अट्ठाईस लोगों में बराबर बांटने का

भी वादा करता हूं।”

गुलाब सिंह ने अपने वरिष्ठ अधिकारी के अंतिम कथन में निहित अर्थ को अपने झुर्रीदार सिर को हल्के से हिलाकर और एक क्षणिक मुस्कान के साथ स्वीकार किया।

‘साहिब, रसोइयों को कितनी चपातियाँ बनानी हैं?’ उसने इसके बजाय पूछा।

चंद्र ने उत्तर दिया, ‘मैं भी आप सब की तरह ही खाना खाऊंगा। चलिए, थोड़ा हिसाब-किताब कर लेते हैं। उनतीस आदमी, तीन दिन तक, हर दिन दस चपाती खाकर। इसका कुल खर्च कितना आएगा?’

उसने मन ही मन कुछ गणना की।

‘आठ सौ सत्तर चपातियाँ; हे भगवान! क्या आपको लगता है कि रसोइये इतने कम समय में इतनी चपातियाँ बना पाएँगे? उन्हें तो जी तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी; और पूरी रात।’

“ज़रूर, साहब; और जितनी जल्दी हम उन्हें काम पर लगा दें, उतना ही अच्छा है। क्या रसोइयों को काम पर लगाने से पहले आप मुझे कोई और निर्देश देना चाहेंगे?”

चंद्र ने धीरे से कहा, 'मुझे एक मिनट सोचने दो।' 'हमारी योजना यही है कि उसी रात चंबल नदी पार कर लें; अगले दिन घाटियों में छिप जाएं और डाकुओं पर कड़ी नजर रखें; अगली रात फिर चुपके से आगे बढ़ें और अगले दिन फिर से छिप जाएं; और तीसरे दिन भी यही प्रक्रिया दोहराएं।'

तब तक, अगर हमारी किस्मत अच्छी रही, तो शायद हमें कुछ या कोई मिल जाए। भले ही हम उनके मुख्यालय को खोजने में सफल न हों, लेकिन अगर हम उनमें से किसी एक को पकड़ लें तो हम उसे रिश्वत दे सकते हैं—या, यदि आवश्यक हो, तो उसे मजबूर कर सकते हैं कि वह हमें उस जगह ले जाए जहाँ मान सिंह खुद छिपा हुआ है।

“लेकिन मुझे लगता है कि हम तीन दिन से ज़्यादा नहीं रुक पाएंगे, क्योंकि वो चपातियाँ दिन-ब-दिन सूखती जा रही हैं। ओह,” और फिर उसने ऊपर देखा, कुछ याद करते हुए, “जाने से पहले आदमियों से पानी की बोतलें भरवाना मत भूलना। उनकी ज़रूरत तो ज़रूर पड़ेगी। असल में, पानी की कमी भी हो सकती है।”

चंद्र ने बोलना बंद कर दिया और अपने रुमाल से अपने चेहरे से बहते पसीने को पोंछा।

‘धिक्कार है इस नरक जैसी जगह पर!’ उसने गुस्से में बुदबुदाया, ‘अगर अभी यही हाल है, तो गर्मी आने पर हमें क्या-क्या सहना पड़ेगा? काश मुझे इस खूनी जगह पर भेजा ही न गया होता।’

वास्तव में, बहुत ही असहनीय गर्मी थी।

गुलाब सिंह को अचानक कमरा बहुत उमस भरा लगने लगा। फिर उन्होंने देखा कि उनके सिर के ऊपर लगा पंखा हिलना बंद हो गया था।

‘पंखा बंद हो गया है, हुजूर,’ उन्होंने समझाया, ‘वह बेचारा शायद सो गया होगा।’

दोनों आदमी बरामदे में बाहर निकले। पंखा पहने हुए आदमी ने कमर पर सिर्फ एक लंगोटी बाँध रखी थी और वह नंगे पत्थर के फर्श पर गहरी नींद में सो रहा था।

‘उठो, सूअर!’ चंद्र ने लेटे हुए व्यक्ति को अपने जूते की नोक से धक्का देते हुए कहा। ‘क्या तुम इसी तरह अपना काम करते हो?’

वह आदमी उठ बैठा और बाहर सूरज की तेज रोशनी से बचने के लिए अपनी आँखें झपकाईं।

‘बलाह,’ गुलाब सिंह ने फटकार लगाते हुए कहा, ‘मैंने तुम्हें पहले भी कई बार चेतावनी दी है कि अपनी ड्यूटी पर मत सोओ। इसके लिए मैं तुम पर आठ आने का जुर्माना लगाऊंगा।’

उसने बड़ी सहजता से पंखे की रस्सी का सिरा दोनों हाथों से पकड़ा और पूरी ताकत से खींचने लगा। उसके चेहरे पर घायल मासूमियत का भाव था। खींचने की रस्सी चरमरा उठी और पंखा झटके से हिलने लगा।

चपातियाँ बनाने में अगले दिन दोपहर तक का समय लग गया। गुलाब सिंह ने उन्हें अखबार के पन्नों में लपेटा, फिर उन्हें तिरपाल की चादरों में लपेटकर बांध दिया।

उस सामान को रखने के लिए तीन छोटी तिरपाल की चादरें लगीं और जीप की पिछली सीट पूरी तरह से भर गई।

इसके बाद डीएसपी और वह निरीक्षण दौरे पर निकल पड़े। उनके रवाना होने तक लगभग दो बज चुके थे।

उन्होंने उस शाम दो चौकियों का निरीक्षण किया, रात एक खानाबदोशों के बंगले

में बिताई और अगली सुबह, यानी सोमवार, 12 तारीख को अपना निरीक्षण जारी रखा।

तीन और गाड़ियों की जाँच की गई। फिर सोमवार का दोपहर का भोजन हुआ। ठीक दोपहर 3:30 बजे जीप रावटी में आकर रुकी।

पुलिस इकाई के प्रभारी सब-इंस्पेक्टर अधनंगे कपड़ों में अपने तंबू से बाहर निकले और अपने वरिष्ठ अधिकारियों का अभिवादन किया। यह दौरा पूरी तरह से आश्चर्यजनक था।

‘शुभ दोपहर, सब-इंस्पेक्टर,’ चंद्र ने अपने अत्यंत औपचारिक लहजे में अभिवादन किया। ‘मैं अचानक निरीक्षण के लिए आया हूँ। आप और आपके साथी तैयार हो जाइए। मैं आपको दस मिनट का समय देता हूँ।’

‘लेकिन मुझे इस बात की कोई सूचना नहीं मिली कि आप आ रहे हैं,’ एस.आई. ने शिकायत की, उसके चेहरे के भावों में आक्रोश और आशंका स्पष्ट रूप से एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।

चंद्र ने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया, 'बिल्कुल, अभी जब मैंने "अचानक जाँच" कहा था, तो मेरा यही मतलब था। इसलिए, जल्दी करो।'

गुलाब सिंह ने अपनी मुस्कान छिपाने के लिए मुंह फेर लिया, जिसे वह मुश्किल से रोक पा रहा था। उनके अचानक आने पर सब-इंस्पेक्टर की स्पष्ट बेचैनी लगभग दयनीय थी।

दस मिनट बाद जवान अपनी राइफलों के साथ तीन पंक्तियों में खड़े हो गए। सब-इंस्पेक्टर उनके सामने खड़ा था।

"स्क्वाड, "दूर हटो!" उसने आदेश दिया।

पुलिसकर्मी एकदम सतर्क हो गए।

फिर, ‘ढलान वाली भुजाएँ!’; और अंत में;

‘हथियार तान दो!’

डीएसपी ने सलामी का जवाब दिया और जुलूस में शामिल लोगों के पास जाकर उचित तरीके से उनसे बातचीत की; इंस्पेक्टर गुलाब सिंह उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

सब-इंस्पेक्टर ने सलाम किया और चंद्र ने भी सलाम का जवाब दिया।

‘ठीक है, सब-इंस्पेक्टर,’ उसने आदेश दिया, ‘अब मैं इन लोगों का निरीक्षण करूंगा।’

‘स्क्वाड, स्लोप आर्म्स!’

सैनिकों ने हथियार डाल दिए और चंद्र अग्रिम पंक्ति में आगे बढ़ने लगा। उसके पीछे गुलाब सिंह चल रहा था; और उसके ठीक पीछे सब-इंस्पेक्टर।

ऐसी परिस्थितियों में, किसी भी अनुशासनप्रिय व्यक्ति के लिए गलती निकालना मुश्किल नहीं था। और चंद्र ने उस दिन सचमुच एक अनुशासनप्रिय व्यक्ति होने का प्रमाण दिया।

उसने एक कांस्टेबल से पूछा, 'आपने आखिरी बार अपने बटन कब पॉलिश किए थे?'

‘तुम किसकी वर्दी पहने हो? यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी है।’

‘जूते पॉलिश करने के लिए होते हैं। क्या आप कभी ऐसा करते हैं?’

पीछे की पंक्तियों की हालत तो और भी बदतर थी।

जब अंततः परेड समाप्त हो गई, तो चंद्र ने शस्त्रागार का निरीक्षण, किट का निरीक्षण, तंबू का निरीक्षण और अंत में राशन की जांच की।

पांच बज चुके थे जब आखिरकार उसका काम हो पाया। बेचारा सब-इंस्पेक्टर पिछले एक घंटे से यही सोच रहा था कि काश धरती फट जाए और उसे निगल ले; या इससे भी बेहतर, काश यह कमीना सब-इंस्पेक्टर मर जाए।

लेकिन इनमें से कोई भी स्थिति नहीं घटी।

‘बहुत ही घटिया प्रदर्शन; सचमुच बहुत ही घटिया,’ चंद्र ने होंठ सिकोड़ते हुए और थके हुए जासूस को तिरछी निगाहों से देखते हुए कहा। ‘इसीलिए मैं हमेशा अचानक निरीक्षण करता हूँ। इससे ऐसी कमियाँ सामने आ जाती हैं जो अन्यथा कभी उजागर नहीं होतीं।’

थके हुए सहायक ने कोई टिप्पणी नहीं की।

चंद्र ने अपनी घड़ी देखी और उसके चेहरे पर घबराहट के भाव स्पष्ट हो गए। उसने अपनी कलाई झटक दी और फिर घड़ी को अपने कान से लगा लिया।

‘हे भगवान!’ वह घबराकर बोला, ‘मेरी घड़ी में सवा पाँच बज रहे हैं! क्या यह सही है, इंस्पेक्टर?’

गुलाब सिंह ने बारी-बारी से अपनी घड़ी देखने का दिखावा किया। फिर उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, 'हुजूर, समय बिल्कुल सही है। निरीक्षण में वाकई बहुत समय लग गया।'

चंद्र ने तुरंत जवाब दिया, 'मुझे तो पक्का यही लगता है, क्योंकि हर चीज किसी न किसी रूप में गलत या अनुचित है।'

फिर वह सहायक जासूस की ओर मुड़ा और उसे घूरने लगा।

'सब-इंस्पेक्टर तुलक राम,' उसने तीखे स्वर में कहा, 'इस सारी देरी के कारण आज रात मेरे लिए आगे बढ़ना बहुत देर हो चुकी है; और इसके लिए पूरी तरह से आप ही जिम्मेदार हैं।'

'एक तंबू लगवा लो। इंस्पेक्टर और मैं उसमें साथ रहेंगे। और हम दोनों के लिए खाना तैयार कर लो। हम यहीं आराम करेंगे और कल सुबह भोर में निकल पड़ेंगे। मुझे शाम पांच बजे ज़रूर फोन करना।'

अगर पहले जासूस उदास दिख रहा था, तो अब उसके चेहरे पर निराशा के भाव साफ झलक रहे थे।

हे भगवान! वह सोच रहा था, क्या यह मनहूस आदमी आज रात यहीं रुकने वाला है?

'तो?' चंद्र के प्रश्न ने उसके विचारों को भंग करते हुए ठंडे स्वर में कहा।

तुलक राम ने अपनी हिम्मत जुटाकर खुद को संभाला।

अंत में उसने कहा, 'कोई अतिरिक्त तम्बू नहीं है,' और जल्दी से आगे बोला, 'लेकिन अगर आप और इंस्पेक्टर मेरे तम्बू में सोने की कृपा करें तो यह मेरी बड़ी मेहरबानी होगी, महोदय। मैं आज रात सार्जेंटों के साथ सोऊंगा। और खाना ज़रूर तैयार होगा।'

सब-इंस्पेक्टर को अपना सामान टेंट से निकालने में मुश्किल से दस मिनट लगे। गुलाब सिंह जीप लेकर आया और उसे प्रवेश द्वार के पास खड़ा कर दिया ताकि कोई भी ताक-झांक न करे और यह न सोचे कि पीछे लगे तिरपालों में क्या हो सकता है। फिर वह चंद्र के पीछे-पीछे टेंट में दाखिल हुआ।

'बेचारा,' बाद वाला दबी आवाज़ में कह रहा था, 'वह मुझसे बहुत नफरत कर रहा होगा।'

'मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि वह आपके मरने की कामना कर रहा होगा,' गुलाब सिंह ने एक सहज स्वर में टिप्पणी की।

और वे दोनों हंस पड़े।

रात का खाना ठीक आठ बजे तंबू में परोसा गया।

आधे घंटे बाद, तुलक राम विधिवत रूप से प्रवेश द्वार पर उपस्थित हुए।

उन्होंने घोषणा की, 'आप दोनों के लिए गर्म पानी का स्नान तैयार है, महोदय। क्या मैं अपने अर्दली को पीछे वाले बाथरूम में पानी लाने का निर्देश दे सकता हूँ?'

चंद्र ने शालीनता से कहा, 'धन्यवाद। तुलक राम, यह आपकी ओर से एक विचारशील और दयालु कदम था, लेकिन मुझे उम्मीद है कि यहां का पानी साफ होगा।'

सब-इंस्पेक्टर ने मुस्कुराकर भी धन्यवाद नहीं दिया; वहीं उसने डीएसपी को जिस तरह से देखा, उससे साफ पता चलता था कि वह शत्रुतापूर्ण रवैया अपना रहा था।

वे दोनों बारी-बारी से स्नान करते थे।

नौ बजने के कुछ ही देर बाद, सहायक जासूस फिर आया और पूछा कि क्या उन्हें और कुछ चाहिए। चंद्र ने कहा, 'नहीं, धन्यवाद।'

रात के 10 बजे पुलिस के बिगुल बजाने वाले ने 'लास्ट पोस्ट' बजाया और शिविर में अंधेरा छा गया।

तंबू में केवल एक ही पलंग था—सब-इंस्पेक्टर का—जिस पर चंद्र लेट गया। इंस्पेक्टर के लिए एक सार्जेंट से उधार ली गई रस्सी की चारपाई की व्यवस्था की गई थी।

‘गुलाब सिंह, थोड़ी देर सो जाओ,’ चंद्र ने दूसरी चारपाई पर बैठे अपने साथी से फुसफुसाते हुए कहा। ‘मुझे नींद नहीं आ रही है। मैं तुम्हें आधी रात को फोन करूंगा।’

इंस्पेक्टर थका हुआ था और लगभग तुरंत ही सो गया। उसे लगा जैसे मुश्किल से पाँच मिनट ही बीते हों कि किसी ने उसे कंधे से हिलाकर झटक दिया।

उसने अपनी आँखें खोलीं। चारों ओर घना अंधेरा था। तभी उसे याद आया कि वह कहाँ है। उसके ऊपर खड़े होकर उसे महसूस हुआ कि कोई उसे धीरे-धीरे लेकिन लगातार हिला रहा है।

यह चंद्र था, और वह कह रहा था, 'गुलाब सिंह, उठो; बारह बजने में दस मिनट बाकी हैं।'

इंस्पेक्टर चारपाई पर बैठ गया, जम्हाई ली और दोनों हाथ सिर के ऊपर फैला दिए।

अब दूसरे तंबू में जाओ और जासूस को बुला लाओ। और जब तुम यह कर रहे

हो, तो साथ में उन दो सार्जेंटों को भी बुला लो जो उसके साथ सो रहे हैं। उनके आने पर मैं उन तीनों को योजना के बारे में बता दूंगा।

गुलाब सिंह चारपाई से उठे। अंधेरे में कोबरा या सांप पर पैर रखने के डर से उन्होंने अपने जूते पहन लिए, लेकिन उनके फीते नहीं बांधे। फिर वे तम्बू से बाहर निकल गए।

वह कुछ गज की दूरी तय करके पास के उस तंबू से आगे बढ़ा, जिसमें सार्जेंट ठहरे हुए थे और जहाँ वह जानता था कि तुलक राम सो रहा है। वह अंदर गया, अपनी खाकी वर्दी की जेब से माचिस निकाली और एक माचिस जलाई।

उसे चारपाई पर सोता हुआ एक व्यक्ति दिखाई दिया। दो अन्य लोग फर्श पर लेटे हुए थे।

चारपाई पर बैठा आदमी किसी बुरे सपने से गुजर रहा था। वह तीखी आवाज में अस्पष्ट रूप से कुछ बुदबुदा रहा था। गुलाब सिंह को लगा कि उसने सब-इंस्पेक्टर की आवाज पहचान ली है।

शायद वह किसी राक्षस का सपना देख रहा था, जिसके पीछे डीएसपी का चेहरा उसका पीछा कर रहा था। यह सोचकर गुलाब सिंह मन ही मन मुस्कुराया।

उसकी उंगलियों के बीच पकड़ी हुई माचिस उसे जलाने लगी। उसने उसे नीचे फेंक दिया, दूसरी माचिस जलाई और सपने देखने वाले के पास पहुंचा।

टिमटिमाती रोशनी ने यह साबित कर दिया कि वह सही था। वह सचमुच तुलक राम ही था। और वह निस्संदेह एक बुरा सपना देख रहा था।

और फिर दूसरा मैच भी बाहर हो गया।

गुलाब सिंह ने नीचे झुककर सब-इंस्पेक्टर को धीरे से हिलाया। उन्हें जगाने में कुछ मिनट लगे।

फिर इंस्पेक्टर ने तीसरी माचिस जलाई और चकित तुलक राम के कान में फुसफुसाते हुए कहा कि डीएसपी चाहते हैं कि वह और दोनों सार्जेंट तुरंत उनके तम्बू में आएं।

जासूस अपना गुस्सा और नहीं रोक सका। वह ज़ोर से बुदबुदाया, 'क्या! आधी रात को! क्या ये कमीना सो भी नहीं सकता? ये असहनीय है। मैं कल सुबह इस कमीने को बताऊँगा कि ये नौकरी वहीं रखे जहाँ बंदर ने बेर रखा था। मैं इस्तीफा दे रहा हूँ; सुबह उठते ही।'

गुलाब सिंह जोर से हँस पड़ा।

‘ठीक है; ठीक है,’ उसने शांत भाव से कहा; ‘लेकिन पहले देखो कि वह क्या चाहता है। शायद उसके बाद तुम्हारा मन बदल जाए।’

‘बिल्कुल भी डरने की जरूरत नहीं,’ सब-इंस्पेक्टर ने गुस्से से भड़कते हुए कहा। ‘यह डीएसपी तो ऐसा आदमी है जिससे मैं किसी सुनसान सड़क पर अंधेरी रात में मिलना चाहूंगा। इसके बाद वो जल्दी में अपनी इस तरह की अचानक तलाशी के लिए तैयार नहीं होगा। धिक्कार है उसकी इन घटिया आँखों पर!’

लेकिन वह उठा और उसने एक-एक करके दोनों सार्जेंटों को जगाया।

वे चारों एक साथ डीएसपी के तंबू की ओर चल पड़े। लालटेन जलाई जा चुकी थी और मंद रोशनी से जगमगा रही थी।

उन्होंने चंद्र को शिविर की चारपाई के किनारे पर बैठा उनका इंतज़ार करते हुए पाया। तुलक राम ने मन ही मन गौर किया कि जिस लकड़ी की चारपाई पर डीएसपी बैठे थे, वह उनके भार से झुक रही थी और पल भर में दो टुकड़ों में टूटने के कगार पर थी। अगर यह चारपाई टूट गई तो क्या इस सूअर को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी? बिलकुल नहीं। मन ही मन उसने अधिकारी को फिर से कोसना शुरू कर दिया।

उन्होंने आधे मन से ही सही, सलाम भी किया।

'बैठ जाओ, बच्चों,' चंद्र ने सौहार्दपूर्वक कहा, 'जब तक मैं तुम्हें एक छोटा सा रहस्य बताता हूँ, तब तक तुम चाहो तो धूम्रपान कर सकते हो।'

तुलक राम मन ही मन सोच रहा था, "इस बदमाश को देखो। आधी रात को इंस्पेक्टर को भेजकर मुझे जगाने और बुलाने को कहता है, और फिर हिम्मत करके हमें सिगरेट पीने के लिए कहता है। आखिर सिगरेट लाने का ख्याल किसे आया था?"

मानो चंद्र को अपने अधीनस्थ के मन में उठ रहे शत्रुतापूर्ण विचारों का पूर्वाभास हो गया हो, उसने अपने बुश-कोट की जेब में हाथ डाला और गोल्ड फ्लेक सिगरेट का एक पैकेट निकाला, उसके बाद एक गोल, निकल-प्लेटेड आर्मी लाइटर निकाला और बारी-बारी से अपने अधीनस्थों को दे दिया।

उन सबने एक-एक सिगरेट निकाली। चंद्र ने भी एक सिगरेट ले ली। फिर लाइटर एक हाथ से दूसरे हाथ में पास होता रहा और एक मिनट के भीतर ही तंबू का संकरा हिस्सा तंबाकू के धुएं से भर गया।

असल बात तो यही है। कल दोपहर मेरा निरीक्षण दौरा कोई निरीक्षण था ही

नहीं। यह तो बस दोपहर बाद यहाँ आने और आपके साथ रात बिताने का बहाना बनाने के लिए किया गया था।

विशेष रूप से आपसे, उप निरीक्षक तुलक राम, आज दोपहर मेरे अभद्र व्यवहार के लिए मुझे क्षमा मांगनी चाहिए। लेकिन मुझे शिविर में गड़बड़ी का दिखावा करना पड़ा ताकि मेरा निरीक्षण इतना देर से शुरू हो सके कि जाने में बहुत देर हो जाए और मुझे यहीं रात बितानी पड़े। दरअसल, तुलक राम, आपने यहाँ बहुत अच्छा काम किया है और व्यवस्था को बहुत सराहनीय ढंग से संभाला है। मुख्यालय पहुँचते ही मैं इस संबंध में एक रिपोर्ट भेजूँगा।

'डीआईजी इस मान सिंह नाम के व्यक्ति को लेकर हंगामा मचा रहे हैं क्योंकि वह अभी भी फरार है और हम उसे पकड़ नहीं पा रहे हैं।'

'तो, जैसे ही मैं अब आपको योजना का विवरण बताकर समाप्त कर दूंगा, हम चुपचाप सैनिकों को जगाएंगे, हथियार और गोला-बारूद वितरित करेंगे, और एक अभियान शुरू करेंगे जो तीन दिनों तक चलेगा।'

'हम चंबल नदी तक जाएंगे और नावों से उसे पार करेंगे, जिन्हें इंस्पेक्टर ने मुझे बताया है कि नदी के मोड़ के स्थान पर बांधा जाएगा—केनचेन, है ना गुलाब सिंह?'

मंद रोशनी में इंस्पेक्टर ने सिर हिलाया और चंद्रा आगे बढ़ गया।

हम बहुत खामोशी से पार करेंगे और जितना संभव हो सके घाटियों में घुस जाएंगे। लेकिन भोर होते ही हम किसी घाटी या गुफा में छिप जाएंगे। उससे पहले, हम कुछ आदमियों को तैनात करेंगे जो अगले कुछ घंटों तक सावधानीपूर्वक निगरानी रखेंगे।

खुद को प्रकट किए बिना, उन्हें किसी भी दिशा में या किसी विशेष स्थान की ओर बढ़ रहे डाकुओं के गिरोहों पर सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए।

'हमारा पूरा मकसद उस ठिकाने का पता लगाना है जहां यह मान सिंह नाम का किरदार छिपा हुआ है, उस पर अचानक छापा मारना है और उसे पकड़ना या मार डालना है।'

"अगर पहले दिन कुछ नहीं हुआ, तो हम दूसरी रात को घाटियों में थोड़ा और आगे बढ़ेंगे और सुबह होते ही फिर से छिप जाएंगे। और तीसरी रात और तीसरे दिन भी ऐसा ही करेंगे।"

अगर इन तीन दिनों में हमें कोई नहीं दिखा या हमने किसी को पकड़ा नहीं, तो

हम चौथी रात को लौट आएंगे। तब गोपनीयता का कोई खास महत्व नहीं रहेगा। नदी तक पहुँचने पर हमें अपने दो-तीन आदमियों को नावों के साथ वापस लाने के लिए तैरकर नदी पार करानी पड़ेगी।

सामान्य तौर पर यही योजना है।

कुछ ऐसे विवरण हैं जिन पर अब हमें विचार करना होगा।

पहली बात तो ये है। आज रात हम सबके नदी पार करने के बाद, दो-तीन आदमियों को नावों के साथ वापस जाना होगा। अगली सुबह नाव मालिकों को ये देखकर अच्छा नहीं लगेगा कि उनकी नावें रात में रहस्यमय तरीके से नदी पार कर गई हैं। वे शोर मचाएंगे जो मान सिंह तक पहुँच सकता है, और वो इतना समझदार होगा कि जान जाएगा कि पुलिस की एक टीम नदी पार कर गई थी।

'इंस्पेक्टर, यह एक ऐसा बिंदु है जिसे हमने अब तक पूरी तरह से अनदेखा कर दिया था,' चंद्र ने गुलाब सिंह को संबोधित करते हुए कहा। 'चूंकि आपने कहा था कि एक नाव में दस से अधिक व्यक्ति नहीं आ सकते, इसलिए हमें तीन नावों की आवश्यकता होगी, और उन्हें वापस लंगरगाह तक लाने के लिए तीन व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। और हम दूर किनारे पर तीन व्यक्तियों के तैरकर वापस आने का इंतजार करने में समय बर्बाद नहीं कर सकते। इसलिए हमारा दल उतना बड़ा नहीं होगा जितना हमने पहले सोचा था, बल्कि केवल छब्बीस व्यक्ति ही होंगे।'

सब-इंस्पेक्टर की ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, "सुरक्षा कारणों से आपको पहले से सूचित करना उचित नहीं था, तुलक राम। भोजन तैयार करने और साथ ले जाने के संबंध में भी यही बात लागू होती है। इसलिए इंस्पेक्टर और मैं भिंड में पुलिस रसोइयों द्वारा तैयार की गई 870 चपातियाँ अपने साथ लाए हैं, जो आपको जीप के पीछे रखी मिलेंगी। यह पूरे तीन दिनों का राशन है और हम उनतीस लोगों में बाँटा जाना था। अब चूंकि केवल छब्बीस लोग ही बचे हैं, इसलिए हमारे पास दो-चार चपातियाँ और होंगी।"

मुझे पता है कि तीसरे दिन तक वे बहुत बासी और सूखे हो जाएंगे। लेकिन इसमें कुछ नहीं किया जा सकता।

"लेकिन मैं आपको इस बात का आश्वासन दे सकता हूँ, सब-इंस्पेक्टर। अगर हम अगले तीन दिनों के भीतर मान सिंह को पकड़ने या मारने में सफल हो जाते हैं, तो हम सभी को दुगुनी पदोन्नति मिलेगी। साथ ही, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मान

सिंह की गिरफ्तारी या उसके शव को सौंपने पर मिलने वाला 15,000 रुपये का इनाम आप अट्ठाईसों में बराबर बाँट दिया जाए।”

“अब, तुलक राम। आपको सबसे पहले उन तीन आदमियों को चुनना होगा जो आज रात नावों को वापस लाएंगे। और यह भी सुनिश्चित करना होगा कि बाकी तेईस आदमियों में से तीन अच्छे तैराक हों, क्योंकि उन तीनों आदमियों को नावों को हमारे लिए वापस लाने के लिए तैरकर जाना होगा ताकि हम वापस लौट सकें।”

सीमा पार करने वाले जवानों को हथियार और कम से कम 100 गोलियां बांट दें, जिनमें टॉमी गन यूनिट के जवान भी शामिल हैं जिनके पास पर्याप्त भंडार होना चाहिए। इंस्पेक्टर गुलाब सिंह आपको चपातियां देंगे, जो प्रति व्यक्ति 33 होनी चाहिए। और हर किसी को पानी की भरी बोतल साथ रखनी चाहिए। यह बहुत, बहुत ज़रूरी है।

'पुरुषों को जगाते समय कोई शोर नहीं करना है—कोई बात नहीं करनी है—कोई स्पष्टीकरण नहीं देना है—कोई रोशनी नहीं जलानी है—और जितना संभव हो उतना कम विलंब करना है।'

‘अब रात के 12:30 बज चुके हैं,’ चंद्र ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। सभी जवानों को कतार में लगकर दो बजे तक पूरी तरह से तैयार होकर मार्च करने के लिए तैयार रहना होगा। जो तीन लोग नावों को वापस लाएंगे, वे शिविर में लौटकर स्थायी चौकीदार की सहायता करेंगे और अभियान दल के लौटने तक यहाँ मौजूद चीजों की देखभाल करेंगे।

चंद्र ने आगे कहा, ‘मैं कुछ मिनटों के लिए जवानों को संक्षेप में संबोधित करूंगा और रवाना होने से पहले उन्हें पूरी बात समझा दूंगा। सब-इंस्पेक्टर, हमें ठीक 2:05 बजे निकलना होगा। इसलिए तुरंत जाइए; और आप, गुलाब सिंह, कृपया उनकी मदद कीजिए।’

हालांकि, रात के 2.10 बज चुके थे, जब तक कि डीएसपी ने इकट्ठे हुए कांस्टेबलों को धीमी आवाज में संबोधित करना और उन्हें पूरी योजना समझाना समाप्त नहीं किया।

उसके बाद वे शोर कम करने के लिए एक कतार में आगे बढ़े, प्रत्येक व्यक्ति अपने आगे वाले व्यक्ति के ठीक पीछे चल रहा था।

सब-इंस्पेक्टर सबसे आगे चल रहा था, क्योंकि उसे रास्ता पता था। उसके पीछे

डीएसपी, इंस्पेक्टर और दो टॉमी गनर एक सार्जेंट के साथ चल रहे थे। उसके बाद बाईस कांस्टेबल अलग-अलग कतारों में खड़े थे, जिनमें वे तीन लोग भी शामिल थे जिन्हें खाली नावों के साथ लौटना था। बाकी सार्जेंट सबसे पीछे थे।

वे सीधे नदी की ओर जाने के बजाय, केंचेन में अपने प्रस्थान बिंदु की दिशा में तिरछे होकर आगे बढ़े।

लगभग एक घंटे चलने के बाद, वे एक पगडंडी पर पहुँचे, जिसके बारे में तुलक राम ने फुसफुसाते हुए कहा कि यह लगभग पाँच मील दूर स्थित रावती गाँव से सीधे उस स्थान तक जाती है जहाँ से उन्हें नदी पार करनी थी, यानी केंचेन तक, जहाँ से वे जा रहे थे। इसके बाद आगे बढ़ना थोड़ा आसान और शांत हो गया।

बीस मिनट बाद ही जासूस ने उन्हें रोक दिया, और फिर खुद चुपचाप घाट की ओर रेंगते हुए आगे बढ़ा, यह पता लगाने के लिए कि वास्तव में वहां कितनी नावें बंधी हुई थीं, और क्या कोई उन्हें देख रहा था।

उसके दस मिनट बाद वह यह खुशखबरी लेकर लौटा कि कुल पाँच छोटी नावें किनारे पर बंधी हुई थीं और उनमें कोई भी नहीं था। यह नाव मालिकों और मान सिंह तथा उनके अनुयायियों के बीच विद्यमान अटूट विश्वास और सम्मान का एक उत्कृष्ट प्रमाण था।

चंद्र ने पूरे अभियान को गुप्त रखने के लिए बरती गई अत्यधिक सावधानियों पर खुद को बधाई दी - यहां तक कि पहले से ही 870 चपातियां तैयार करने और उन्हें भिंड से अपने साथ ले जाने जैसी हास्यास्पद हद तक की सावधानी भी बरती।

अगर स्थानीय लोगों और इस शातिर गैंगस्टर के बीच इतना सौहार्दपूर्ण संबंध होता, तो फिर बचने की क्या गुंजाइश होती? अगर उन्हें पुलिस दल की हर हरकत की जानकारी मिल जाती, तो वे उसे ज़रूर बता देते। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि पिछली मुहिमें नाकाम रहीं या बुरी तरह विफल हुईं! इसमें कोई शक नहीं कि जिन अधिकारियों ने इनकी योजना बनाई थी, उन्होंने इतनी बारीकी से और व्यक्तिगत रूप से ध्यान नहीं दिया होगा जितना उसने दिया था। उन्होंने आखिरी क्षण तक अपनी गतिविधियों को गुप्त रखने के लिए इतनी मेहनत नहीं की होगी।

चंद्र ने सोचा कि बूढ़ा आदमी उससे बहुत प्रसन्न होगा। और चंद्र स्वयं से बहुत प्रसन्न था।

दल लंगर डाले हुए नौकाओं के पास पहुंचा।

ये पाँचों नावें बनावट और क्षमता में एक जैसी थीं। साधारण नदी की नावें, जिन्हें जैसे-तैसे तख्तों को जोड़कर बनाया गया था। और निश्चित रूप से इनमें से प्रत्येक में दस से अधिक व्यक्ति नहीं बैठ सकते थे।

तीन नावों को खोलकर पानी में धकेल दिया गया, और उन्हें वापस लाने के लिए जिन तीन लोगों को नियुक्त किया गया था, उन्हें तदनुसार प्रत्येक नाव के लिए एक-एक करके तैनात किया गया।

फिर तीन पुलिस अधिकारी, एक सार्जेंट, दो टॉमी गनर और तीन कांस्टेबल उस नाव में सवार हो गए जो सबसे पहले पार करने वाली थी; नौ कांस्टेबल दूसरी नाव में सवार हो गए; और शेष सार्जेंट और सात आदमी तीसरी नाव में सवार हो गए।

इसी क्रम में उन्होंने नदी पार करना शुरू किया, प्रत्येक नाव को उसमें लगे लंबे बांस के डंडों की सहायता से चुपचाप आगे बढ़ाया जा रहा था। दोनों नावों के बीच की दूरी दस गज से भी कम थी।

वहां बहुत अंधेरा था, और पानी काला और भयावह दिख रहा था।

जब यह घटना घटी, तब वे शायद सामने वाले किनारे से बीस गज की दूरी पर थे, और यह सब अचानक और बिना किसी चेतावनी के हुआ।

ऐसा प्रतीत होता है मानो नदी की गहराइयों से ही एक विशाल ऑक्टोपस ऊपर की ओर बढ़कर अपनी कई सूंडों से प्रत्येक नाव को उसके बाईं ओर से पकड़ रहा हो।

और धारा उसी दिशा से बह रही थी।

कम से कम ऐसा ही प्रतीत हो रहा था, क्योंकि चंद्र ने एक पल के लिए देखा कि जिस नाव में वह सवार था वह खतरनाक तरीके से बाईं ओर झुक गई।

जैसे-जैसे उस तरफ नाव का किनारा नदी की सतह के और करीब आता गया, वैसे-वैसे उस दिखने वाले ऑक्टोपस का रहस्य सुलझ गया।

पानी से बाहर निकले हुए काले रंग के तंतु मानव भुजाएँ थीं। जैसे-जैसे नाव पानी के और करीब आती गई, नदी से एक कतार में तैरते हुए मानव सिर दिखाई देने लगे—प्रत्येक नाव पर लगभग बीस सिर थे।

पानी में कुछ लोग थे। वे सभी नावों के किनारों को खींच रहे थे—और एक ही तरफ, बाईं ओर। नावें एक या दो सेकंड में पलट जातीं।

डीएसपी के दिमाग में एक ही शब्द गूंज रहा था—वह था 'डाकू'!

चंद्र ने जल्दबाजी में अपनी रिवॉल्वर को होल्स्टर से निकाला और उनमें से एक

सिर पर बिलकुल करीब से गोली चला दी। वह सिर नदी की सतह के नीचे गायब हो गया।

और उसी समय जिस नाव में वे सवार थे वह पलट गई और वे पानी में गिर गए।

उसके बाद वास्तव में क्या हुआ, चंद्र को ठीक से याद नहीं था।

उसके चारों ओर दर्द भरी चीखें और गुस्से से भरी गालियाँ सुनाई दे रही थीं। पानी में हलचल मची हुई थी और झाग उठ रहा था। उसे स्टील की झलक दिखाई दी, जब चाकू हवा में चमके और नीचे गिरे तो दर्द भरी चीखें सुनाई दीं। फिर वारों की धीमी आवाज़ आई और इंसानी खोपड़ियों के टूटने की भयानक आवाज़ सुनाई दी।

कोई भारी चीज जबरदस्त ताकत से उसके सिर पर गिरी, और उसके बाद उसे कुछ याद नहीं रहा।

चंद्र को जब होश आया तब दिन का उजाला हो चुका था। उसके सिर के पिछले हिस्से में तेज दर्द हो रहा था। उसने यह जानने के लिए अपने हाथ उठाने की कोशिश की कि क्या हुआ है, लेकिन पाया कि वह ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि उसके दोनों हाथ पीछे बंधे हुए थे।

वह अकेला था और उसके साथियों का कोई अता-पता नहीं था।

चंद्र ने चारों ओर देखा। वह पेड़ों के एक झुरमुट के नीचे लेटा हुआ था, जिसके नीचे तंबू लगे हुए थे। कुछ लोग समूहों में बैठकर उनके बगल में बातें कर रहे थे। उसके चारों ओर, एक वृत्त में, चट्टानी पहाड़ियों और पत्थरों से भरी छोटी-छोटी पहाड़ियों की एक निरंतर श्रृंखला दिखाई दे रही थी।

फिर एक आवाज सुनाई दी।

'देखो भाइयों; पुलिसवाला जाग गया है।'

कुछ लोगों ने उसे घेर लिया, और वह तुरंत समझ गया कि वे कौन थे।

मान सिंह के गिरोह के डाकू।

जैसे ही उसने उन पर नजर डाली, उनके घेरे का एक छोर टूट गया और दो आदमी आगे बढ़े।

पहला व्यक्ति असाधारण व्यक्तित्व का धनी था। वह ऊंचे माथे वाला एक बूढ़ा आदमी था। उसकी घनी दाढ़ी, मूंछें और बड़ी-बड़ी मूंछें थीं।

चंद्र ने उस वस्तु के स्वामी का विवरण कई बार पढ़ा था, जिस पर अब उसकी निगाहें टिकी हुई थीं—और उसने बार-बार उसका अध्ययन और स्मरण किया था। वह

जानता था कि वह स्वयं महान राजा मान सिंह के सामने खड़ा है।

नेता के पीछे चल रहे दूसरे व्यक्ति ने अपनी दाहिनी बांह में सेना के मॉडल की टॉमी गन दबा रखी थी। इस दूसरे व्यक्ति में कुछ भी असामान्य नहीं था, सिवाय इसके कि वह पुलिस अधिकारी को गुस्से से घूर रहा था।

'सलाम, डी.एस.पी. साहब,' मान सिंह ने अपनी मधुर आवाज में अभिवादन किया। 'आप मुझसे मिलने के लिए बहुत तरस रहे थे, और मैं यहाँ हूँ।'

"वैसे साहब, आप मेरे गुप्त ठिकाने तक पहुँचने वाले दूसरे पुलिसकर्मी हैं। आप दोनों को बधाई; आप बहादुर आदमी हैं।"

'पहला व्यक्ति मारा गया; चाहे आप मेरी बात पर विश्वास करें या न करें, उसे एक पुलिसकर्मी ने ही गोली मारी थी, मेरे किसी आदमी ने नहीं। बेशक यह एक दुर्घटना थी। लेकिन मुझे वह आदमी पसंद आ गया। उसका नाम कतर सिंह था, वह सी.आई.डी. में इंस्पेक्टर था।'

"अब आपको भी मरना होगा, साहब; और आपके मामले में आपको मेरे अनुयायियों में से किसी एक के हाथों गोली मारनी होगी। क्योंकि किसी पुलिसकर्मी के लिए मेरे गुप्त मुख्यालय को देखना और जीवित रहना वर्जित है।"

लेकिन चूंकि आप एक अधिकारी और एक बहादुर व्यक्ति हैं जिन्होंने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया है, इसलिए आपको यातना नहीं दी जाएगी, साहब। आपको सीधे मार डाला जाएगा। आखिरकार, हममें से प्रत्येक को कभी न कभी मरना ही है, और मेरी बारी भी नियत समय पर आएगी। आप बस मेरे आगे जाइए, साहब; बस इतना ही।

'जाने से पहले, मैं आपको एक राज़ बता देता हूँ। आपकी योजनाएँ एकदम सटीक थीं, और निस्संदेह आप सोच रहे होंगे कि हमें उनकी जानकारी पहले से कैसे मिल गई और हम आपको घेरने में कैसे कामयाब हुए।'

तभी मान सिंह ने पलट कर दो बार जोर से पुकारा, 'बला! बला!'

एक बौना व्यक्ति घेरे हुए पुरुषों के समूह को चीरता हुआ निकला और दबे पांव आगे बढ़ा। उसने एक गंदी सूती कमरबंद पहनी हुई थी और वह नग्न था।

डीएसपी की ओर देखते हुए उन्होंने आदरपूर्वक सलाम किया।

बलाह ही था, जो आराम से पंखा चला रहा था, और उसने पंखा खींचना बंद कर दिया था क्योंकि उन्हें लगा कि वह सो गया है।

मानो किसी भी संदेह को दूर करने के लिए, लगभग नग्न उस छोटे कद के व्यक्ति ने कहा, 'इसीलिए मैं पंखा नहीं खींच सका, साहब; क्योंकि मैं दरवाजे पर खड़ा होकर सुन रहा था।'

चंद्र ने सोचा—तो, उसके जासूस पुलिस इंस्पेक्टर के दफ्तरों में तैनात हैं—शायद उनमें से एक डीआईजी के दफ्तर के पास भी हो!

लेकिन मन सिंह के साथ आए अंगरक्षक के हाथों में मौजूद टॉमी गन से हुई गोलीबारी ने आगे के चिंतन को बाधित कर दिया।

और चंद्र को अपने विचारों का जवाब कभी नहीं पता चला।

अध्याय पाँच

धनी जमींदार और गरीब युवती

उसका नाम ललिता था; और यह एक सुंदर नाम है, चाहे इसे किसी भी भाषा में बोला जाए। ललिता एक हिंदू लड़की थी, और वह अपने नाम की तरह ही सुंदर थी।

वह मात्र सोलह वर्ष की थी। लेकिन भारत में जलवायु के कारण लड़कियाँ जल्दी परिपक्व हो जाती हैं, अक्सर ग्यारह वर्ष की आयु में ही। (उनके माता-पिता तब उनके लिए जीवनसाथी की तलाश शुरू कर देते हैं और भावी दूल्हे के माता-पिता के साथ लंबी बातचीत करते हैं। इस प्रक्रिया में लड़के और लड़की का कोई हाथ नहीं होता। उनकी सहमति न तो पूछी जाती है और न ही ली जाती है। उन्हें केवल विवाह और जीवनसाथी के चुनाव के मामले में अपने-अपने माता-पिता के आदेशों का पालन करना होता है।)

जो लड़का इस प्रथा का विरोध करता है, उसे अपमानजनक ढंग से घर से निकाल दिया जाता है और वह हमेशा के लिए अपने परिवार से बहिष्कृत हो जाता है। जो लड़की इसका विरोध करती है, उसकी हालत और भी बदतर होती है। अक्सर, उसे पीट-पीटकर चुप करा दिया जाता है।

इस व्यवस्था की स्पष्ट कमियों के बावजूद, इसके अपने फायदे भी हैं। लड़के-लड़की के बीच छेड़छाड़ और अनैतिक प्रेम प्रसंग बहुत कम देखने को मिलते हैं। शादी से पहले और शादी के बाद भी, अगर जरूरत पड़े तो, कानूनी पत्नी के अलावा किसी भी पुरुष के लिए उपलब्ध एकमात्र महिला पेशेवर वेश्या ही होती है। और इस तरह की महिलाओं की संख्या, कुल महिला आबादी और देश की कुल जनसंख्या की तुलना

में बहुत कम है।

दूसरा, यह सुनिश्चित करता है कि शादी की रात पति को कुंवारी पत्नी मिले। अन्य देशों में अक्सर यह बात अनिश्चित होती है। भारत में, यदि हनीमून की रात पत्नी कुंवारी न पाई जाती है, तो पति उसे अगली सुबह घर से निकाल देता है।

तीसरा, दोनों पक्षों के माता-पिता, अपनी-अपनी संतानों के हित में, सामाजिक स्थिति, सम्मान, वित्तीय पृष्ठभूमि, व्यक्तिगत दिखावट, शिक्षा और सामान्य क्षमताओं के संबंध में उपलब्ध परिस्थितियों के अनुसार अपनी बेटी या बेटे के लिए सर्वोत्तम संभव साथी खोजने का लक्ष्य रखते हैं।

चौथी बात, शादी के बाद दंपति को यह एहसास होता है कि शादी से पहले की तैयारियों में कितनी मेहनत, खोज और बातचीत हुई थी, और शादी होने के बाद वे माता-पिता और दोनों परिवारों के बाकी सदस्यों को नाराज करने के डर से परिस्थितियों का सर्वोत्तम उपयोग करने का प्रयास करते हैं, और शादी को सफल बनाने के लिए मिलकर प्रयास करते हैं।

अलगाव और परित्याग बहुत दुर्लभ हैं, और तलाक तो लगभग न के बराबर ही होते हैं।

दुर्भाग्य से, पश्चिमी देशों में, जहाँ व्यक्तिगत विचार और कार्य की पूर्ण स्वतंत्रता है, स्थिति बिल्कुल अलग है; और टूटे हुए परिवार एक तेजी से आम होती जा रही समस्या बन रहे हैं।

भारत में घर को एकजुट रखने में एक और महत्वपूर्ण कारक यह है कि पति को घर का पूर्ण स्वामी माना जाता है और पत्नी उसकी इच्छाओं और आदेशों का पालन करती है। महिलाओं की मुक्ति वह खतरा नहीं बनी है जो अति-मुक्ति के कारण साबित हो सकती है! वास्तव में, बहुत कम ही ऐसी भारतीय गृहिणी देखने को मिलती हैं जो अपने पति के विचारों और आदेशों के विरुद्ध जाने का साहस करती हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि पश्चिमी पाठक, विशेषकर महिलाएं, जो इन पंक्तियों को पढ़ेंगी, घृणा से हाथ उठाएँगी और इन भारतीय रीति-रिवाजों के प्रति अपनी घोर असहमति और अस्वीकृति व्यक्त करेंगी। कृपया याद रखें, देवियों, मैं आपको भारत में जो कुछ भी है, उसके बारे में बता रहा हूँ, और इन प्रथाओं के सही या गलत, उचित या अनुचित होने के बारे में आपसे कोई बहस नहीं कर रहा हूँ। इसलिए, कृपया इस पर मुझसे झगड़ा न करें। आपको अपनी राय रखने का अधिकार है और भारतीयों को

अपनी। वैसे, मुझे भी अपनी राय रखने का अधिकार है। लेकिन वैसे भी, आपको मेरी राय में कोई दिलचस्पी नहीं होगी।

किसी को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि किसी लड़की या लड़के के माता-पिता द्वारा अपने बच्चे के लिए जीवनसाथी की तलाश में की जाने वाली बातचीत सरल और आसान होती है। बल्कि इसके विपरीत, यह बहुत जटिल होती है। इसमें बहुत सी बातों पर विचार करना पड़ता है।

लड़की के माता-पिता को अपनी बेटी के दहेज में धन, आभूषण या जमीन देने के लिए तैयार रहना पड़ता है। यह समझना मुश्किल नहीं है कि दहेज जितना अधिक होगा, वर उतना ही योग्य होना चाहिए, जिसके प्रति माता-पिता आकर्षित होते हैं। यदि लड़का सरकारी सेवा में है, तो उसे पति और दामाद के रूप में पाना बहुत वांछनीय होता है। एक तो, 55 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने पर उसे जीवन भर पेंशन मिलेगी। दूसरा, उसे बर्खास्त या छंटनी नहीं की जा सकती। सरकारी सेवा से बर्खास्तगी केवल दो परिस्थितियों में होती है। इनमें से पहली है बेईमानी। इस श्रेणी में गबन, डकैती, रिश्वत लेना और अन्य वित्तीय धोखाधड़ी शामिल हो सकती है। दूसरी है हिंसा सहित शारीरिक हमला करना। उदाहरण के लिए, यदि कोई सरकारी कर्मचारी अपने बॉस या सहकर्मी के सिर पर कार्यालय की कुर्सी से वार करता है, तो उसे बर्खास्त किया जा सकता है। फिर भी, देश का संविधान, जो कमजोर वर्ग को किसी भी रूप में शोषण से बचाने का प्रयास करता है, आरोप पत्र दाखिल करने और स्पष्टीकरण का अवसर देने जैसी विस्तृत प्रक्रिया प्रदान करता है। अगर अपराधी थोड़ी चतुराई से यह साबित कर दे कि मालिक कुर्सी पर गिरा था, न कि कुर्सी मालिक पर, तो उसे बरी होने का मौका मिल सकता है। इसलिए, दूल्हे के लिए सरकारी कर्मचारी होना वाकई एक शानदार 'मिलान' है।

लेकिन यदि ऐसा पुरस्कार आसानी से उपलब्ध न हो, तो उसके बदले में किसी ऐसे धनी व्यक्ति के पुत्र को चुना जाता है जो व्यवसायी हो, या जिसके पास मकान या जमीन हो।

जीवनसाथी चुनने में एक और महत्वपूर्ण कारक जाति है। पति और पत्नी दोनों का एक ही समुदाय और जाति का होना अनिवार्य है। यह एक बहुत ही व्यावहारिक दृष्टिकोण है, क्योंकि उच्च जाति की पत्नी अपने पति को नीचा समझेगी और इसके विपरीत भी।

फिर आती है कुंडली। प्रत्येक भारतीय बच्चे, चाहे वह लड़का हो या लड़की, के जन्म का सटीक समय बहुत सावधानीपूर्वक और सटीकता से दर्ज किया जाता है। जन्म के समय, दिन और महीने के अनुसार, पेशेवर विशेषज्ञ भारतीय ज्योतिष के सिद्धांतों और नियमों के अनुरूप कुंडली बनाते हैं। ऐसा माना जाता है कि ग्रह उस बच्चे के जीवन के हर पल को, जन्म से मृत्यु तक, प्रभावित करते हैं। उसके शुभ दिनों का पूर्वानुमान लगाया जाता है; पूरे भविष्य की सावधानीपूर्वक भविष्यवाणी की जाती है और उसे दर्ज किया जाता है। यह प्रक्रिया हर बच्चे के मामले में अपनाई जाती है; चाहे वह लड़का हो या लड़की; अत्यंत गरीब वर्ग को छोड़कर सभी वर्गों के बच्चों के लिए।

अब यह समझना मुश्किल नहीं है कि विवाह करने वाले जोड़े की कुंडली मिलनी चाहिए, क्योंकि ऐसे जोड़े का विवाह उचित नहीं होगा जिनके 'अच्छे' और 'बुरे' दिन अलग-अलग हों। वास्तव में, अगर पत्नी के सितारे उस समय बुलंद हों जब उसके पति के सितारे ढल रहे हों, तो यह कितना विकट होगा, है ना? भारतीय सचमुच व्यावहारिक लोग हैं!

लड़के की तरफ से, माता-पिता न केवल ऐसी दुल्हन ढूंढने की कोशिश करते हैं जो नकद या वस्तु के रूप में अधिकतम दहेज ला सके, बल्कि वे अपनी पसंद की लड़की में शिक्षा, गोरा रंग, सुंदर रूप, शालीनता, गृहस्थी की कुशलता और अन्य सभी गुणों का संयोजन भी तलाशते हैं। हर भारतीय लड़की को बचपन से ही खाना बनाना सिखाया जाता है, इसलिए खाना पकाने में कोई खास समस्या नहीं होती।

स्वाभाविक रूप से, इन सब चीजों के लिए दोनों पक्षों को कुछ न कुछ तलाशने और पाने की जरूरत होती है।

मैंने आपको अपनी कहानी के मुख्य विषय और प्यारी छोटी ललिता से बहुत दूर ले गया हूँ, लेकिन यह आवश्यक है कि आपमें से जो लोग इन पंक्तियों को पढ़ रहे हैं और कभी भारत में नहीं रहे हैं, वे लड़की के साथ परेशानी के मूल कारण को समझें और महसूस करें।

पश्चिमी मानकों के अनुसार ललिता में एक आकर्षक पत्नी बनने के सारे गुण थे। वह एक सुंदर लड़की थी, जिसकी चमकीली धूसर-हरी आँखें, मोहक पलकें और हल्के गुलाबी होंठ बेहद आकर्षक थे। उसके उभरते हुए युवा स्तन सूती जैकेट की जकड़न को तोड़ते हुए बेखौफ लग रहे थे, मानो किसी भी क्षण टूट पड़ेंगे। उनके कोमल, सुडौल और मांसल उभार और उभरे हुए टीलों के बीच की गहरी दरार राहगीरों को

रुककर देखने पर मजबूर कर देती थी; युवक आशा और उम्मीद से, और वृद्ध इस बात के अफसोस से कि समय ने उन पर इतनी सख्ती क्यों बरती है।

हर सुबह ललिता अपना भारी पीतल का घड़ा गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक कुएँ तक ले जाती, उसे भरती और फिर उसे अपनी कमर पर बड़ी सलीके से टिकाए रखती। एक लयबद्ध और लहराती हुई चाल से वह अपनी माँ और दो छोटी बहनों के साथ जिस छोटी सी झोपड़ी में रहती थी, वहाँ पहुँचती, घड़ा खाली करती और फिर दोबारा कुएँ से पानी भरने लौट आती। ऐसे सफर के दौरान युवक उसे हवस भरी निगाहों से देखते और स्त्रियाँ उसके स्वाभाविक आकर्षण और सुंदरता से ईर्ष्या करतीं।

इन सबसे बढ़कर, ललिता का स्वभाव जीवंत और दृढ़ था।

लेकिन भारतीय मानकों के अनुसार, कम से कम एक 'सम्मानजनक' विवाह के संदर्भ में, ललिता की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी।

सबसे पहले तो वह एक हरिजन थी, जो 'अछूत' या निम्न जाति समुदाय से आती है, जिन्हें हाल के वर्षों तक निम्न स्तर के सामाजिक बहिष्कृत माना जाता था, और जिन्हें अपनी स्थिति से ऊपर विवाह करने की अनुमति नहीं थी।

दूसरे, उसकी दो बड़ी बहनें थीं, और उनकी शादी के लिए आवश्यक दहेज देने में, उसके पिता ने एक छोटे से, बॉक्स-बूथ वाले स्टोर में एक मामूली व्यापारी के रूप में अपने सीमित संसाधनों को खर्च कर दिया था।

फिर उनकी मृत्यु हो गई, जिससे उनकी मां कर्ज में डूब गईं और वह और उनकी दो छोटी बहनें बेसहारा रह गईं, और जब उनकी शादी का समय आया तो उनके लिए मामूली दहेज देने के लिए भी पैसे की कोई उम्मीद नहीं बची।

ललिता को अच्छी तरह याद था कि उसकी माँ अपने पिता के मृत शरीर पर रो रही थी, उनकी अचानक मृत्यु पर विलाप कर रही थी और जोर-जोर से यह इच्छा व्यक्त कर रही थी कि काश वह खुद मर गई होती, बजाय इसके कि तीन बेटियों के साथ अकेली रह जाए और हर महीने मकान मालिक को किराया देना पड़े जबकि उसके पास कोई आमदनी न हो।

बुक्ती, जमींदार, एक धनी व्यक्ति था; जी हाँ, सचमुच बहुत धनी। आलमगढ़ गाँव में एक चौथाई से अधिक मकान और झोपड़ियाँ तो उसी की मिल्कियत थीं ही, साथ ही गाँव के आसपास सैकड़ों एकड़ ज़मीन भी उसी की थी। वह मकान और

ज़मीन गाँव वालों को किराए पर देता था और किराया वसूलने में वह बहुत सख्त था। अगर मानसून विफल हो जाता और फसलें बर्बाद हो जातीं और किसान किराया न दे पाते, तो वह कोई बहाना नहीं सुनता था। बुक्ती अपने नौकरों के गिरोह को बुलाता और उन्हें आदेश देता कि किराया न देने वाले को ज़बरदस्ती सड़क पर फेंक दें। इसके बाद किसान और उसके परिवार के भूख से मरने की उसे कोई परवाह नहीं होती थी।

उसके स्वामित्व वाले कई मकानों के किरायेदारों पर भी यही सिद्धांत लागू होता था। उनके प्रति कभी कोई नरमी या दया नहीं दिखाई जाती थी। यदि कोई किरायेदार किराया नहीं चुका पाता था, तो उसे किराया देय तिथि के ठीक अगले दिन ही घर से निकाल दिया जाता था। यदि वह शिकायत करने की हिम्मत करता, तो बुक्थी के नौकर उसे पीट-पीटकर अधमरा कर देते थे।

ललिता के पिता मेंढे की मृत्यु के बाद, घर का किराया बकाया हो गया था। उनके अंतिम संस्कार के बाद, उनकी माता सीता किसी तरह किराया चुकाने में सक्षम हुईं। इसके बाद, उन्होंने अपने देनदारों का बकाया चुकाने के लिए कड़ी मेहनत की, लेकिन धीरे-धीरे इस असमान प्रतिस्पर्धा में हार मान ली।

पिछले महीने, पहली बार, किराया बकाया हो गया था। बुक्थी किराया वसूलने आया था, और अब वह दरवाजे पर खड़ा था।

वह एक मोटा आदमी था, जी हाँ, बहुत मोटा। उसकी दोहरी ठुड्डी के कारण उसका छोटा सा सिर उसके तगड़े शरीर से सीधा जुड़ा हुआ प्रतीत होता था, मानो गर्दन की कोई आवश्यकता ही न हो। उसका विशाल पेट उसकी धोती की कमर से बाहर निकला हुआ था और उस पर लटकती हुई मांस की परतें थीं। उसके स्तन, जो एक औरत से भी बड़े थे, दो लटके हुए अंगों की तरह थे, उनके बीच काले बाल थे और पसीने से तरबतर थे, क्योंकि सुबह गर्म थी और बुक्ती किराए का भुगतान न होने से नाराज़ था। एक पतली, मलमल की धोती उसकी हाथी जैसी जांघों को घेरे हुए थी और उनके बीच लिपटी हुई थी। कपड़ा इतना महीन था कि तेज धूप में लगभग पारदर्शी था। उसके भारी-भरकम शरीर का गहरा आकार उस पतले कपड़े से बेशर्मी से दिखाई दे रहा था, क्योंकि यही एकमात्र वस्त्र था जो उसने पहना हुआ था। वह नंगे पैर था। उसके माथे पर एक के बाद एक क्षैतिज जाति चिह्न उसकी उच्च वंश और सामाजिक स्थिति का प्रमाण थे।

'ओह, अभागी स्त्री, तू कहाँ है?' वह छोटी सी ईंट और मिट्टी की झोपड़ी के

दरवाजे के बाहर खड़े होकर जोर-जोर से चिल्लाया।

सीता ने आवाज़ सुनी और पहचान ली, डर के मारे उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। क्या पति को खोना ही काफी क्रूरता नहीं थी, ऊपर से उसे बेसहारा छोड़ दिया गया? यह मोटा राक्षस अब उसे और उसकी तीन बेटियों को सड़क पर निकाल देगा। वह कांप रही थी और उसके घुटने कांप रहे थे, उसने अपना सिर दरवाजे की नीची चौखट के नीचे झुकाया और बाहर चली गई।

वह लगभग पचास वर्ष की दुर्बल महिला थीं; दुबली-पतली और बालों में सफ़ेद बाल बिखरे हुए थे। लेकिन उनकी लंबी, सुगठित नैन-नक्श और धूसर-हरी आँखें ललिता की सुंदरता के स्रोत को प्रकट करती थीं। एक साड़ी, जो कभी नीली थी लेकिन अब फीकी पड़कर राख के रंग की हो गई थी, उनके भव्य रूप को कम नहीं कर सकती थी, अगर उन्होंने बेहतर कपड़े पहने होते।

'तुम मुझे कुत्ते की तरह बाहर क्यों इंतजार करवा रहे हो?' बुक्ति गरजते हुए बोली। 'मैं तुमसे पिछले महीने का किराया लेने आई हूँ।'

'जब आपने पहली बार बुलाया था, मैं आ गई थी,' सीता ने माफी मांगते हुए कहना शुरू किया, 'लेकिन...' और उसकी आवाज निराशा में डूबकर रुक गई।

'मेरे साथ कोई 'लेकिन' नहीं चलता,' मोटे आदमी ने गरजते हुए कहा। 'या तो किराया चुकाओ, या बाहर निकलो। मैं कोई धर्मार्थ संस्था नहीं चला रहा हूँ।'

उस निर्धन स्त्री की आँखों में आँसू भर आए, उसकी मुरझाई हुई गालों पर छलक कर झुर्रीदार त्वचा पर बहने लगे। एक आँसू नमी की बूँद बनकर ज़मीन पर गिरा, जहाँ सूखी धरती ने उसे तुरंत सोख लिया।

अनजाने में ही उसके मन में यह विचार आया कि इस धरती की मिट्टी भी निर्दयी है। यह मेरे आँसुओं को पकड़ लेती है और और माँगती है। लेकिन धरती सूखी थी और उसे नमी की ज़रूरत थी। उसके सामने खड़े इस मोटे आदमी के पास लाखों रुपये थे; फिर भी वह उससे मात्र बारह रुपये माँग रहा था, जो उसका बकाया था।

'कृपा करके महोदय, हम पर दया कीजिए और हम पर रहम कीजिए,' उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा, उसकी आँखों से आँसू और तेज़ी से बहने लगे। 'जब मेरे पति मेंढे जीवित थे, तब वे हर महीने नियमित रूप से किराया देते थे और कभी भी किराया देने में चूक नहीं करते थे। अब मेरे पास आय का कोई साधन नहीं है। कृपया, कृपया मुझे एक महीने का और समय दीजिए ताकि मैं और मेरी बेटी काम की तलाश कर

सकें। फिर हम आपको दोनों महीनों का बकाया किराया चुका देंगे।'

बुक्थी के चेहरे पर शिकन और गहरी हो गई। यह स्पष्ट था कि वह दया दिखाने या उसकी बात सुनने के मूड में भी नहीं था।

'अरे बेचारे!' उसने लगभग थूकते हुए कहा। 'मुझे तुम्हारी या तुम्हारी परेशानियों और दुखों की क्या परवाह। मुझे पिछले महीने का किराया चाहिए, और उससे भी बड़ी बात, मुझे अभी चाहिए। अभी, समझे?' उसकी आवाज़ उन्मादी चीख में बदल गई, उसका मोटा पेट उसके शब्दों की तीव्रता से कांप रहा था, और उसके दोनों गाल अजीब तरह से कांप रहे थे जिसे वह खुद भी नियंत्रित नहीं कर पा रहा था। बुक्ति सचमुच किसी रंगमंच पर एक हास्यास्पद दृश्य होता, अगर इस पूरे मामले से जुड़ी परिस्थितियाँ वास्तविकता से कम दुखद होतीं।

सीता को उस आवेश का कोई जवाब नहीं सूझा। वह बेकाबू होकर रोने लगी।

ललिता अपना पीतल का घड़ा गाँव के कुएँ पर ले गई थी और उसे भरकर उसी क्षण लौट रही थी, हमेशा की तरह घड़े को अपने सुडौल दाहिने कूल्हे पर संतुलित किए हुए। ऐसा लग रहा था कि वह तेज़ चल रही थी या शायद घड़े को पूरा भर दिया था। जो भी हो, कुछ पानी उछलकर ऊपर आ गया और उसकी लाल बिंदियों वाली पतली सफेद जैकेट को गीला कर दिया। भीगा हुआ कपड़ा उसके उभरे हुए दाहिने स्तन से और भी कसकर चिपक गया और उसके उभारों को स्पष्ट रूप से दिखा रहा था।

ललिता ने बुक्ति की ऊंची आवाज और अपनी मां के रोने की आवाज उनके पास पहुंचने से बहुत पहले ही सुन ली थी। वह उस मोटे मकान मालिक को चेहरे और उसकी प्रतिष्ठा दोनों से जानती थी। उसे यह भी पता था कि बुक्ति जिसे घर कहता था, उस झोपड़ी का पिछले महीने का किराया नहीं दिया गया था। उसने अनुमान लगाया कि उसने उसकी मां को झोपड़ी खाली करने का आदेश दिया होगा, और अपने दृढ़ निश्चय और दृढ़ स्वभाव के कारण उसने उस घृणित मोटे आदमी को अपने मन की बात बताने का निश्चय कर लिया। वैसे भी उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं था, क्योंकि वह निस्संदेह उन्हें उसी क्षण बाहर निकाल देता।

ये विचार ललिता के सुंदर मस्तिष्क में तेज़ी से कौंध गए और तब तक वह अपनी माँ के पास पहुँच चुकी थी। उसने बड़ी सावधानी और सोच-समझकर पीतल के भारी पात्र को उसके अंदर रखी सामग्री के साथ ज़मीन पर उतारा और फिर धधकती

आँखों से बुक्ति की ओर मुड़ी।

‘मोटे बदतमीज़,’ उसने बिना किसी भूमिका के दांत भींचते हुए फुफकारा, ‘अगर तुम्हें कुछ कहना है तो मुझसे कहो। क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि मेरी बेचारी माँ पहले से ही बहुत थकी हुई और बीमार है, और तुम्हें उस पर चिल्लाना भी ज़रूरी लगता है, मोटे बदतमीज़।’

इस अप्रत्याशित और अनपेक्षित जवाबी हमले की उग्रता ने बुक्थी का मनोबल पूरी तरह से तोड़ दिया। कुछ क्षणों के लिए वह अवाक रह गया। उसका भारी जबड़ा लटक गया और उसका मुंह किसी फंसी हुई मछली की तरह खुला रह गया, मानो वह सांस लेने के लिए हांफ रहा हो।

यह दृश्य देखकर ललिता को हंसी आ गई। वह धीरे-धीरे हंसने लगी और फिर खुलकर खिलखिला उठी।

उसकी व्यंग्यात्मक हंसी ने बुक्थी को भयंकर क्रोधित कर दिया। उसकी आंखें मानो बाहर निकल आई थीं। 'अरे छोटी वेश्या,' वह हकलाते हुए बोला, 'अपने काम से मतलब रखो वरना मैं अभी तेरे ऊपर हाथ रखूंगा और तेरा गला तोड़ दूंगा।'

ललिता की हंसी गले में ही अटक गई। उसकी आँखों में आग सी भड़क उठी और उसका निचला होंठ गुस्से से रोने की तीव्र इच्छा और अपनी भावनाओं को व्यक्त न करने के दृढ़ संकल्प के कारण अनियंत्रित रूप से कांपने लगा।

झगड़े को देखकर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई थी और अब वे तीनों प्रतिभागियों को एक बड़े घेरे में घेरकर उत्सुकता से बातें कर रहे थे। उनमें काफी संख्या में बच्चे भी थे और वे हंस रहे थे।

बुक्थी ने अपना आपा पूरी तरह खो दिया और बेकाबू हो गया।

आगे बढ़ते हुए, उसने खुले हाथ से सामने खड़ी लड़की पर वार किया। एक स्त्री होने और वास्तविक लड़ाई से अपरिचित होने के कारण, ललिता वार को रोकने या उससे बचने में असमर्थ रही। वार उसके चेहरे पर ज़ोर से लगा और एक गहरा निशान छोड़ गया। उसके कानों में ज़ोरदार झनझनाहट हुई और एक पल के लिए उसकी आँखों के सामने सब कुछ गायब हो गया, और उसकी जगह लाल-सफेद धुंध छा गई।

फिर उसे याद आया कि क्या हुआ था। क्रोध से सिसकते हुए, उसने ऊपर हाथ बढ़ाया और अपने नुकीले नाखूनों से ऊपर खड़े उस मोटे, घूरते हुए चेहरे को नोंच डाला, बुक्ती की सांवली, मोटी त्वचा पर लाल निशान बना दिए। दोनों हाथों से उसने

नोंचा, खरोंचा और नोंच डाला। उसके चेहरे से खून बहने लगा। वह आत्मरक्षा में पीछे हट गया, जबकि ललिता ने अपना साहसी हमला जारी रखा।

वहाँ मौजूद दर्शक सामने हो रहे इस दृश्य को देखकर खुशी और उत्साह से चिल्ला रहे थे। उनमें से किसी को भी उस मोटे मकान मालिक से कोई हमदर्दी नहीं थी, और सोलह साल की लड़की द्वारा उसकी पिटाई का यह तमाशा वे सब खूब एन्जॉय कर रहे थे।

जैसे ही ललिता ने हमला किया, उसने अपने प्रतिद्वंदी को जमकर अपशब्द कहे। और न केवल उसे, बल्कि पूर्वी रिवाज़ के अनुसार, उसके सभी पूर्वजों को भी। चीखते हुए उसने कहा, 'भाड़ में जाओ, सूअर के बच्चे, सूअरों के वंशज! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक औरत को मारने की! मैं तुम्हें दिखाऊंगी कि मेरे जैसी स्त्री क्या कर सकती है। ये लो, ये लो, ये लो।'

भीड़ और भी जोर से हंस रही थी।

हताशा में बुक्ती ने अपने सामने उग्र रूप से हमला कर रही लड़की को पकड़ लिया। उसका हाथ उसके दाहिने स्तन पर जा लगा। उसने नीचे की कोमल त्वचा की धड़कन महसूस की, जो उसकी जैकेट के पतले गीले कपड़े से मुश्किल से ढकी हुई थी। इस बीच, उसके चेहरे पर लड़की के लंबे, नुकीले नाखूनों से बने गहरे खरोंचों से जलन हो रही थी। जवाबी कार्रवाई में उसने अपने हाथ से उसके स्तन के उभार को पकड़ा और पूरी ताकत से उसे खींचा।

ललिता दर्द से चीख उठी, और तनाव के कारण उसकी जैकेट का पतला कपड़ा फट गया, जिससे उसका पूरी तरह से नग्न स्तन दिखाई दिया, जिसके ऊपर उसके निप्पल का बेर के रंग का उभार था, जो उसके गहरे भूरे रंग के एरोला से घिरा हुआ था।

‘यहां क्या चल रहा है?’ एक अधिकारिक आवाज ने पूछा। और फिर पुलिस का सब-इंस्पेक्टर, जो अपनी साइकिल पर वहां से गुजर रहा था और भीड़ और शोरगुल से आकर्षित हो गया था, दर्शकों के घेरे को तोड़ते हुए आगे बढ़ा।

बुक्ति का चेहरा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त था और खून से लथपथ था। गुस्से के आंसू उसकी आंखों से बह रहे थे। ललिता भी रो रही थी, उसके मन में क्रोध, पीड़ा और शर्म का मिलाजुला भाव था।

भीड़ ने पुलिस अधिकारी को घटना के बारे में बताने की कोशिश की तो एक

दर्जन लोगों की जुबानें एक साथ चलने लगीं।

'चुप रहो,' उसने आदेश दिया; और फिर बुक्ति की ओर मुड़कर, जिसे वह पहले से जानता था और नापसंद करता था, कहा, 'अब सैत-जी, इस शर्मनाक दृश्य के लिए आपके पास क्या स्पष्टीकरण है?'

बुक्थी ने विनम्रतापूर्वक विनती करते हुए कहा, 'मैं तो बस अपना बकाया किराया मांग रही थी जो मुझे नहीं मिला था, तभी इस लोमड़ी ने मुझ पर हमला कर दिया और मुझे खरोंचने लगी।'

'यह झूठ है,' ललिता ने रोते हुए कहा, 'उसने मुझे पहले मारा था।' भीड़ में से एक आवाज आई, 'यह सच है, पुलिस साहब। मैंने खुद बुक्ती को उसे पहले मारते देखा था।'

सब-इंस्पेक्टर ने मकान मालिक की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि आप जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति एक साधारण लड़की के साथ सड़क पर झगड़ा कर रहे हैं। आप दोनों मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलें, जहाँ मैं आप दोनों के खिलाफ शांति भंग करने का मामला दर्ज करूँगा।'

बुक्थी को पुलिस द्वारा मामला दर्ज किए जाने पर अपने आगे होने वाली और भी अपमानजनक स्थिति का एहसास था। सड़क पर किसी महिला से झगड़ा करने के आरोप में मजिस्ट्रेट के सामने वह हंसी का पात्र बन जाएगा। इसके अलावा, उसे लगता था कि मजिस्ट्रेट उसे पहले से ही पसंद नहीं करता। दो बार उसने उन किरायेदारों पर मुकदमा चलाया था जिन्होंने उससे किराए पर ली गई जमीनों का पैसा नहीं चुकाया था। उन्हें भुगतान करवाने या दंडित करने के बजाय, मजिस्ट्रेट ने किसानों के प्रति नरमी दिखाते हुए उन्हें और समय दे दिया था। बुक्थी को यकीन था कि अगर यह मामला अदालत में गया, तो मजिस्ट्रेट इसे बहुत गंभीरता से लेगा।

सभी धौंस जमाने वालों की तरह, नाकाम होने पर वह अचानक बिखर गया।

'हे महोदय, कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए और मुझे छोड़ दीजिए। गलती उसकी है और मेरी कोई गलती नहीं है।'

सब-इंस्पेक्टर के होंठ तिरस्कार से सिकुड़ गए। 'तो, दोष उसका है, है ना?' उसने उपहास करते हुए कहा, 'और मुझे लगता है कि तुम बिल्कुल निर्दोष हो?'

फिर उसने ललिता की ओर देखा, जो रोना बंद कर चुकी थी। उस क्षण की उत्तेजना में वह अपने दाहिने स्तन के बारे में पूरी तरह भूल गई थी, जो अभी भी खुला

हुआ था। पुलिस अधिकारी ने उस पर एक पल के लिए नज़र डाली; फिर अपना सारा ध्यान उसी पर केंद्रित कर लिया।

कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उसने गहरी सांस ली।

‘सर,’ ललिता ने कहा, ‘इस मामले में हम दोनों बराबर दोषी हैं क्योंकि हमने सार्वजनिक रूप से लड़ाई की। उसने मुझे मारा और मैंने उसे मारा। इसलिए हम दोनों को थाने ले जाइए और हम दोनों को जेल में डाल दीजिए।’

सब-इंस्पेक्टर की आँखों में उमड़ रही वासना की धुंधली परत प्रशंसा की एक झलक से हट गई। 'वाह, लड़की!' उसने कहा। फिर बुक्ती की ओर मुड़कर उसने घोर तिरस्कार भरे स्वर में कहा, 'सचमुच, मोटे आदमी, तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए। तू न केवल एक औरत को सबके सामने पीटता है, बल्कि दया की भीख भी माँगता है और सारा दोष उस पर मढ़ने की कोशिश करता है। कम से कम वह तो अपनी गलती मानती है; लेकिन तुझमें तो वह भी नहीं। तू... कमीना!' उसने धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए, 'कमीने' शब्द को दोहराया और उसके आगे एक बहुत ही बुरा अपशब्द जोड़ा ताकि बुक्ती की असलियत को ठीक से बयां किया जा सके।

फिर उसने बोलना शुरू किया, 'या तो तुम मेरी मौजूदगी में और इस भीड़ के सामने, इस लड़की से माफी मांगो, या मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलो। मैं तुम्हें फैसला करने के लिए ठीक एक मिनट का समय दूंगा।'

बुक्थी हक्का-बक्का रह गया। भला वह, इतना बड़ा और धनी जमींदार, उस छोटी हरिजन शैतान औरत से कैसे माफी मांग सकता था जिसने उसका इतना अपमान किया था? लेकिन फिर उसे मजिस्ट्रेट का ख्याल आया, और यह भी कि उसके हाथों उसे और कितनी बेइज्जती झेलनी पड़ेगी।

‘खैर, समय समाप्त हो गया है,’ सब-इंस्पेक्टर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘मेरे साथ आइए; आप दोनों।’

बुक्ति ने झट से मन बना लिया। 'बस एक मिनट, महोदय; मैं माफी मांगता हूँ।' फिर ललिता की ओर मुड़कर उसने जल्दी से, बेढंगे ढंग से, 'मैं माफी मांगता हूँ' कहा।

इसके बाद उसने पुलिस अधिकारी की ओर देखा, जिसने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'बाहर निकलो।'

बुक्ति मुड़ा और तेज़ी से चला गया। शर्म, अपमान, क्रोध और हताशा की भावनाएँ उसे अंदर से झकझोर रही थीं और एक-दूसरे पर हावी होने के लिए ज़ोरदार

प्रतिस्पर्धा कर रही थीं।

लेकिन उन सबके बीच, उसे एक छोटी, उभरी हुई, गहरे बैंगनी रंग की, सीधी वस्तु दिखाई दी। यह ललिता के दाहिने स्तन का निप्पल था जो उसकी जैकेट फाड़ने पर सामने आ गया था। उसी क्षण उसने एक निश्चय किया। उसने मालिक को नीचा दिखाने का संकल्प लिया; उसे अपना बनाकर!

एक और महीना बीत गया, और हैरानी की बात यह है कि बुक्ति ने सीता और उसकी तीन बेटियों को बेदखल करने की अपनी धमकी पर कोई कार्रवाई नहीं की। वह उस झोपड़ी के पास तक नहीं गया जिसमें वे रहती थीं।

सीता ने अपने लिए रोज़गार ढूंढने की बहुत कोशिश की। हैरानी की बात यह थी कि पूरे गाँव में कहीं भी कोई रोज़गार नहीं था। यह बात बहुत अजीब लग रही थी, क्योंकि उससे उम्र में बड़ी दूसरी महिलाओं को उन घरों और जगहों पर नौकरियाँ मिल गई थीं, जिनके मालिकों ने उसे बताया था कि वहाँ कोई नौकरी खाली नहीं है। आखिरकार, उसने अपनी चिंता एक बूढ़ी सहेली को बताई।

एक शाम आमलबी ने कहा, “मैं इतनी बदनसीब क्यों पैदा हुई हूँ? मुझे नौकरी तक क्यों नहीं मिलती? मुझसे पहले और मेरे बाद के लोग नौकरी पाते हैं। लेकिन जब मैं पूछती हूँ, तो हमेशा एक ही जवाब मिलता है, ‘माफ़ कीजिए; कोई रिक्ति नहीं है।’”

आमलबी नाम की बूढ़ी औरत ने मुस्कुराते हुए कहा, 'तुम्हारी बदकिस्मती की वजह से तुम्हें नौकरी नहीं मिल रही है। ये उस बुढ़िया की वजह से है।' फिर वो सीता की ओर झुककर विश्वास से बोली, 'दो रात पहले ही दुकानदार रामदास यहाँ मेरे पति से बात कर रहा था। मैंने उसे ये कहते हुए सुना कि बुढ़िया ने खुलेआम ये हिदायत फैलाई है कि सीता और उसकी बेटी ललिता को न तो काम दिया जाए और न ही किसी तरह की आर्थिक मदद की जाए। सीता, मैं तुम्हें ये बात पहले बताना चाहती थी, लेकिन तुम्हारे दिल को ठेस पहुँचने के डर से नहीं बता पाई। उसी की वजह से तुम्हारा बहिष्कार हो रहा है और तुम्हें नौकरी नहीं मिल रही है।'

यह खबर सुनकर सीता स्तब्ध रह गईं। उन्होंने कुछ दिनों तक इस बारे में सोचा और फिर ललिता को बिना बताए सीधे बुक्ति से इस मुद्दे पर बात करने का फैसला किया।

अगली सुबह, वह बुकथी के निजी निवास वाले घर के मुख्य द्वार पर खड़ी रही। लगभग दस बजे, वह गले तक ऊँचे बटनों वाला एक चुस्त-दुरुस्त रेशमी कोट पहने हुए द्वार से बाहर आया। उसने हमेशा की तरह पतली मलमल की धोती और सिर पर एक छोटी काली टोपी पहन रखी थी।

सीता ने मन ही मन कहा, "अब नहीं तो कभी नहीं।" वह उनके पास गई, आदरपूर्वक सलाम किया और फिर अपने मन की बात कह दी। "हुज़ूर, आपने इतने लोगों को मुझे या मेरी बेटी को काम देने से मना क्यों किया है? बल्कि, अगर आप हमें काम दिलाने में मदद कर दें, तो मैं न केवल खुशी-खुशी आपके घर का किराया चुका दूंगी, बल्कि इस संबंध में आपका बकाया भी दे दूंगी।"

बुक्थी अचानक रुक गया। एक पल के लिए ऐसा लगा मानो वह भयंकर क्रोध से फट पड़ेगा। लेकिन उसके गुस्से का भाव धीरे-धीरे धूर्तता में बदल गया, मानो अचानक उसके मन में कोई विचार आ गया हो। आँखों में धूर्तता भरी चमक और बोलने में असाधारण सहजता के साथ उसने उत्तर दिया।

‘इतनी नादानी मत करो, बहन,’ और फिर बड़ी सहजता से, ‘तुम्हें यह किसने बताया? मैं तुम्हें काम पाने से क्यों रोकूँ? मुझे पता है कि तभी तुम मेरा किराया चुका पाओगी।’

वह कुछ देर रुका। फिर विनम्रता से बोला, ‘देखो। हमारे बीच जो झगड़ा हुआ, उसके लिए मुझे खेद है। मुझे लगता है कि मैंने अपना आपा खो दिया था। मुझे यकीन है कि यह मेरी बहुत बड़ी गलती थी। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। यह साबित करने के लिए कि मेरे मन में तुम्हारे लिए कोई दुर्भावना नहीं है और मुझे उस घटना का सचमुच पछतावा है, मैं न केवल मकान का किराया देने के लिए कुछ और समय तक इंतजार करूँगा, बल्कि मैं तुम्हें तुम्हारी वर्तमान कठिनाइयों से उबरने में मदद करने के लिए सौ रुपये बिना ब्याज के उधार भी दूँगा। तुम्हें यह कैसा लगेगा?’

सीता तो पूरी तरह से हैरान थी। क्या उसके कान उसे धोखा दे रहे थे? या बुक्ति पागल था, या नशे में धुत था?

उसने उसके चेहरे की ओर देखा, पूरी लगन से यह समझने की कोशिश की कि उसके मन में क्या चल रहा है और उसकी उन गहरी काली आँखों के पीछे क्या छिपा है। लेकिन पहली बार, उसकी स्त्री सहज प्रवृत्ति ने उसका साथ नहीं दिया। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

शायद इसका कारण यह था कि उसे याद करने और सोचने के लिए और भी कई दुर्भाग्य थे। वह न केवल किराया देने में असफल रही थी, बल्कि पूरे गाँव में उस पर भारी कर्ज था। एक दिन पहले ही उसने स्थानीय साहूकार से पाँच रुपये उधार लेने की कोशिश की थी। लेकिन जब उसने उससे पैसे मांगे तो साहूकार उस पर हँस पड़ा था।

‘क्या तुम्हें लगता है कि मैं पागल हूँ जो एक बेसहारा विधवा को बिना किसी उम्मीद के पैसे दे दूँ?’ उसने ताना मारते हुए कहा। ‘चलो, यहाँ से चले जाओ। अगर तुम्हें सच में पैसे चाहिए तो कुछ ज़मानत के तौर पर ले आओ, जैसे सोने की अंगूठी, नथनी, कान की बाली या कोई और गहना जिसकी कीमत कम से कम पंद्रह रुपये हो।’

“लेकिन मेरे पास अब कुछ भी नहीं बचा है,” वह विलाप करते हुए बोली। “मुझे भी यही लगा था,” उसने बीच में टोकते हुए कहा, “इसलिए, यहाँ से निकल जाओ; और बाहर ही रहो।”

और अब बुक्थी उसे बिना किसी गारंटी और बिना ब्याज के सौ रुपये का ऋण और अपने घर में कुछ और समय तक रहने की पेशकश कर रहा था।

यह अविश्वसनीय था।

लेकिन सवाल यह था कि क्या उसे स्वीकार करना चाहिए या नहीं।

वह दुविधा में डूबी हुई थी। एक तरफ तो उसे, ललिता को और दोनों छोटी बच्चियों को भुखमरी का सामना करना पड़ रहा था। दूसरी तरफ मन में एक संदेह भी था। क्या यह सचमुच सच हो सकता है?

बुक्थी ने विनम्रता से पूछा, 'अच्छा, तुम्हें पैसे चाहिए या नहीं? मुझे जल्दी बताओ। अगले दस मिनट में मेरी एक व्यावसायिक बैठक है।'

तत्काल आर्थिक राहत और उस रात अपने और अपनी तीन बेटियों के लिए भरपेट भोजन के प्रलोभन का सामना करते हुए, सीता सहमत हो गई।

बुक्थी ने कहा, 'कुछ मिनट के लिए मेरे घर चलो, मैं तुम्हें पैसे दे दूंगा।' उसने आज्ञाकारी होकर उसका अनुसरण किया और उसके अंदर जाने तक बरामदे में चुपचाप इंतजार करती रही।

हालांकि, वह जल्दी ही लौट आया। कुछ ही मिनटों में वह अपने बाएं हाथ में दस और पांच रुपये के नोट लिए हुए वापस आ गया। उसके दाहिने हाथ में किसी प्रकार

का मुद्रित प्रपत्र था।

‘यह तो बस एक औपचारिकता है,’ उसने विनम्रता से उससे कहा। ‘बस यहाँ हस्ताक्षर कर दीजिए,’ और उसने फॉर्म के अंत के पास एक जगह की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘और मैं इसमें यह जानकारी भर दूँगा कि मैंने आज आपको सौ रुपये बिना ब्याज के उधार दिए हैं, जिसे दो साल के भीतर चुकाना होगा।’ और फिर वह दयालुता से मुस्कुराया, ‘क्या यह समय पर्याप्त होगा?’

एक बार फिर, और आखिरी बार, सीता हिचकिचाई। भुक्ति क्रोधित प्रतीत हुआ। ‘कृपया मेरा समय बर्बाद न करें,’ उसने सीता को याद दिलाया। ‘मैं पहले ही देर हो चुका हूँ और एक पल भी और देरी नहीं कर सकता। क्या तुम्हें पैसे चाहिए या नहीं?’

इस डर से कि कहीं वह आखिरी क्षण में अपना मन न बदल ले, सीता ने जल्दी से बताए गए स्थान पर पार्कर 51 फाउंटेन पेन से अपने हस्ताक्षर कर दिए, जो उसने उसे इसके लिए दिया था। बुक्ति ने स्याही को सूखने के लिए कुछ पल का समय दिया, फॉर्म को मोड़कर अपने रेशमी कोट की बाईं जेब में रख लिया और कहा कि वह जल्दी में है इसलिए बाकी जानकारी बाद में भर लेगा।

फिर उसने दस रुपये के आठ और पांच रुपये के चार नोट गिने और उसे दे दिए।

सीता ने कृतज्ञतापूर्वक धन ग्रहण किया और धन्यवाद के रूप में झुककर सलाम किया। इसलिए उसने अपने झुके हुए सिर के ऊपर उसकी आँखों में आई संतुष्टि की चमक को नहीं देखा।

दो महीने और बीत गए, लेकिन सीता और ललिता को स्थायी रोज़गार मिलना अब भी बहुत मुश्किल था। उन्हें एक-दो अस्थायी नौकरियाँ ज़रूर मिलती थीं, जो कुछ दिनों तक चलती थीं, लेकिन फिर वे बेरोज़गार हो जाती थीं। इसी बीच, सीता ने बुक्ति से जो सौ रुपये लिए थे और जिनके बारे में उसने अपनी बेटी को ज़रा भी नहीं बताया था, वे तेज़ी से कम होते जा रहे थे।

एक और महीना बीत गया, और सारा पैसा खत्म हो गया।

एक बार फिर, घोर हताशा में, सीता ने बुक्ति से संपर्क किया, और इस बार, लगभग उतनी ही तत्परता से नहीं, लेकिन उसने पहली बार की तरह ही शर्तों पर उसे पचास रुपये उधार देने की पेशकश की। और एक बार फिर उसने सीता से एक खाली उधार पत्र पर हस्ताक्षर करवा लिए।

दो महीने और बीत गए और पचास रुपये भी गायब हो गए।

मां और बेटी को अब तक स्थिर रोजगार नहीं मिल पाया था, और दुर्भाग्य उनका पीछा करता नजर आ रहा था। और यही वह समय था जब बुक्थी ने अपना तुरुप का पत्ता खेलने का फैसला किया।

उसे पता चला था कि ललिता हर सुबह बहुत जल्दी पानी का घड़ा लेकर सामुदायिक कुएँ पर जाती है। एक दिन उसने अपने नौकर को आदेश दिया कि वह ललिता को वहीं रोके और उससे कहे कि वह उससे बात करना चाहता है। नौकर ने आदेश का पालन किया और संदेश पहुँचा दिया। ललिता, जिसे अपनी माँ द्वारा बुक्थी से लिए गए ऋणों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, ने तुरंत नौकर से कहा कि वह उसे नरक में जाने के लिए कह दे।

नौकरानी ने विधिवत अपना उत्तर दिया।

बुक्थी मन ही मन क्रोधित हो रहा था और गुस्से में बुदबुदा रहा था, 'जब मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, तब देखना, कमीनी। मैं तुम्हें दया की भीख मांगने पर मजबूर कर दूँगा और तुम पर जरा भी दया नहीं दिखाऊँगा।'

कुछ दिनों बाद, वह खुद उसका इंतज़ार करने लगा, गली के उस कोने पर जहाँ से चलकर उसे अपने परिवार के साथ नीचे वाले हिस्से में बनी झोपड़ी तक पहुँचना था। वह थोड़ी-थोड़ी देर में झाँककर देखता कि वह आ रही है या नहीं।

अंततः उसने उसे देखा; पीतल का घड़ा उसके कमर के दाहिनी ओर खूबसूरती से टिका हुआ था, और वह उसकी ओर बढ़ रही थी। वह दीवार की आड़ में तब तक छिपा रहा जब तक कि वह कोने से मुड़कर उसके सामने खड़ी नहीं हो गई।

‘खैर, मेरी प्यारी, हम फिर मिल रहे हैं,’ उसने मजाक करते हुए कहा। ‘मुझे तुमसे कुछ कहना है।’

‘दूर हट जा, मोटे सूअर,’ ललिता ने चुनौती भरे लहजे में बुदबुदाते हुए कहा, ‘इससे पहले कि मैं अपना घड़ा, उसमें रखी सामग्री समेत, तुम्हारे चेहरे पर फेंक दूं।’

बुक्थी ने झट से पीछे कदम बढ़ाया। वह इस चालाक औरत के हाथों पहले ही एक दर्दनाक अनुभव झेल चुका था और जानता था कि उत्तेजित होने पर वह करीब से क्या कर सकती है। वह दोबारा ऐसी स्थिति का जोखिम नहीं उठाना चाहता था।

उसने अपना हाथ अपनी जेब में डाला और दो छपे हुए फॉर्म निकाले।

‘सुनो, बेटी,’ उसने कठोर स्वर में कहा, ‘क्या तुम जानती हो ये क्या हैं?’ और

फिर, इससे पहले कि वह कुछ जवाब दे पाती, वह जल्दी से बोला, 'ये बेंत से बने 'प्रो-नोट' हैं। इनमें से एक से पता चलता है कि तुम्हारी माँ ने मुझसे एक हज़ार रुपये उधार लिए हैं। दूसरे से पता चलता है कि उसने पाँच सौ रुपये और उधार लिए हैं। कुल मिलाकर एक हज़ार पाँच सौ रुपये! जब उसने ये ऋण लिए थे, तब उसने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें इनके बारे में न बताऊँ। देखो, अगर तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा है, तो ये रहे उसके हस्ताक्षर।'

फिर, उस दुष्ट बिल्ली की हर संभव पहुँच से बाहर निकलने के लिए एक कदम और पीछे हटते हुए, उसने अपने बाएं हाथ में दस्तावेजों को ऊपर उठाया और अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली से उन पर सीता के हस्ताक्षर की ओर इशारा किया।

दूरी के बावजूद, ललिता अपनी माँ की लिखावट और हस्ताक्षर को स्पष्ट रूप से पहचान सकी। उसका दिल मानो एक पल के लिए रुक गया।

'अब, क्या तुम जानते हो कि मैं क्या करने वाला हूँ?' उसने कठोर स्वर में पूछा। 'मैं ये दोनों दस्तावेज़ अदालत को सौंपने जा रहा हूँ। तुम्हारी माँ को गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिया जाएगा क्योंकि उसने अपना कर्ज़ नहीं चुकाया है, साथ ही छह महीने का किराया भी बकाया है। मैं जेल में उसके भरण-पोषण का खर्च भी उठाऊँगा; लेकिन उसे जेल तो जाना ही होगा!'

बुक्थी ने एक मिनट इंतजार किया ताकि उसने जो धमकी दी थी, उसका पूरा महत्व इस विद्रोही लड़की के मन में बैठ जाए।

फिर उन्होंने आगे कहा, 'लेकिन उसे बचाने का एक ही तरीका है। और वह तरीका और वह एक ही व्यक्ति है, और वह आप हैं।'

ललिता को अभी भी पूरी तरह समझ नहीं आया था कि वह क्या कहना चाह रहा है। आश्चर्य से आधा मुंह खुला और आंखों में आंसू भरते हुए, वह उसकी बात सुनती रही।

अपनी जीत के हर पल का आनंद लेते हुए, बुक्थी ने स्पष्ट उत्साह के साथ उस नाटकीय घोषणा के रूप में चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ना जारी रखा, जो वह करने वाला था।

'मेरे साथ एक सप्ताह बिताओ। मुझे तुम्हारे शरीर का भरपूर आनंद लेने दो, अपनी संतुष्टि के अनुसार। मुझे इसके साथ जो चाहूँ वो करने दो। उस समय के अंत में, और यदि तुम मेरे प्रति बहुत ही दयालु रही हो और मेरी सभी इच्छाओं को पूरा

किया है, तो मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं न केवल तुम्हारी आँखों के सामने इन दोनों बंधनों को तोड़ दूँगा और तुम्हारी माँ द्वारा मुझे पहले से बकाया छह महीने के किराए को भूल जाऊँगा, बल्कि मैं तुम सभी को अपने घर में जीवन भर बिना किराए के रहने की अनुमति दूँगा।'

तभी ललिता के मन में उसके शब्दों और धमकी का महत्व पूरी तरह से समाहित हुआ।

उसकी आँखों में आग सी चमक रही थी, और आँसुओं की बूँदें तारों की तरह हर आँख के कोने में टिमटिमा रही थीं। उसके होठों से तीन शब्द निकले, 'तू घिनौना सूअर!'

वह पहले कभी इतनी खूबसूरत और इतनी आकर्षक नहीं लगी थी। बुक्ति ने आशा की उड़ान से बेतहाशा खुशी से खुद को गले लगा लिया।

उन्होंने आगे कहा, "मैं तुम्हें कल शाम तक यह तय करने का समय देता हूँ कि तुम अपनी माँ को जेल से बचाना चाहती हो या उसका बलिदान देना चाहती हो। आख़िरकार, मैं तुमसे, एक साधारण सी हरिजन लड़की से, इतनी बड़ी रकम और इतने सारे अन्य लाभों के बदले में कुछ भी नहीं माँग रहा हूँ। अपनी माँ या किसी और को एक शब्द भी मत बताना। अगर तुमने ऐसा किया, तो वह जेल चली जाएगी। उसे बताना कि तुम नौकरी की तलाश में अगले गाँव जा रही हो और कल रात ठीक आठ बजे मेरे घर आना। पीछे वाले दरवाज़े से आना, सामने वाले दरवाज़े से नहीं, ताकि पड़ोसी तुम्हें न देख सकें। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। और अंत में, याद रखना कि अगर तुम नहीं आई, तो अगली सुबह तुम्हारी माँ जेल चली जाएगी। मुझे बस इतना ही कहना है, सिवाय इसके कि मैं तुम्हें एक बार फिर याद दिला दूँ कि तुम, और केवल तुम ही, अपनी माँ को कारावास से बचा सकती हो।"

ये कहते हुए बुक्थी अचानक मुड़कर जाने लगा और ऐसा करते समय वह लगभग एक अपंग भिखारी से टकरा गया जो मानो कहीं से प्रकट हुआ था और उसके पीछे सड़क पर बैठ गया था।

'महाराज, एक गरीब अपाहिज के लिए भीख दीजिए,' उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। 'कृपया मुझे आधा आना दे दीजिए।'

बुक्थी ने चिढ़कर चिल्लाते हुए कहा, 'मेरे रास्ते से हट जाओ, बेवकूफ! मैं लगभग तुम्हारे ऊपर गिर ही गई थी।'

इतना कहकर वह भिखारी की ओर दोबारा देखे बिना उसके पास से गुजर गया और कोने में गायब हो गया।

वे दोनों अकेले थे। भिखारी और ललिता।

उसके सिसकने की सिसकियों के अलावा कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। वह इतनी भोली लड़की थी कि यह सोच भी नहीं पा रही थी कि बुक्थी अपनी धमकियों को अंजाम दे पाएगा या नहीं।

'डरिए मत, महिला,' अपाहिज ने धीरे से बीच में ही टोकते हुए कहा, 'आप बच जाएँगी। मैं राजा मान सिंह राठौर की कसम खाकर कहता हूँ। इस सब के बारे में अपनी माँ या किसी और को ज़रा भी मत बताना। और कल रात ठीक आठ बजे उनके घर के पिछले दरवाजे पर जाना, जैसा उन्होंने आपको बताया है। निडर होकर अंदर जाना। आपको कोई नुकसान नहीं होगा। मैं एक बार फिर राजा मान सिंह की कसम खाकर कहता हूँ। जाना मत भूलना।'

ये शब्द कहकर भिखारी बड़ी मुश्किल से खुद को घसीटते हुए सड़क पार करके आंखों से ओझल हो गया, बिना एक बार भी पीछे मुड़कर उसे देखे।

ललिता को अपार राहत महसूस हुई।

यहां तक कि वह, एक साधारण हरिजन लड़की होने के बावजूद, महान डाकू-राजा द्वारा अतीत में, सबसे कठिन समय में, अपने जैसे तुच्छ लोगों के प्रति दिखाई गई अनगिनत वीरता की कहानियों के बारे में जानती थी, और यह भी कि कैसे उन्होंने कई लोगों को आसन्न विपत्ति के चंगुल से बचाया था।

उसी क्षण उसने अपना निर्णय ले लिया और वह निर्णय अटल था। उसे इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि वह अपाहिज कौन था; वह कहाँ से आया था; उस भयानक रूप से अपंग अवस्था में वह जंगल में या घाटियों में स्थित अपने गुप्त ठिकाने में छिपे डाकू सरदार से इतनी दूर कैसे संपर्क कर सकता था; या अगली रात उस मोटे बुक्थी के चंगुल से उसे कैसे बचाया जाएगा, इससे पहले कि वह उसके साथ बलात्कार कर सके।

लेकिन वह बिना किसी हिचकिचाहट के वही करेगी जो उसे करने को कहा गया था। वह किसी को कुछ नहीं बताएगी; और जिस रात मकान मालिक ने उसे आने को कहा था, ठीक आठ बजे वह उसके घर के पिछले दरवाजे पर जाएगी।

अगली रात पौने आठ बजे थे जब ललिता बुक्ती के घर के पिछले दरवाजे के बाहर अनिश्चितता से खड़ी थी। रात में चाँद नहीं था, लेकिन आसमान में तारे शांत भाव से टिमटिमा रहे थे, मानो उन्हें उस क्रूर भाग्य का कोई आभास ही न हो जो उन बंद दरवाजों के पीछे उसका इंतजार कर रहा था।

आस-पास कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। सबसे नज़दीकी स्ट्रीट लैंप लगभग सौ गज की दूरी पर मंद रोशनी बिखेर रहा था। दरवाज़ा अंधेरा था और बंद था, हालाँकि अंदर से प्रकाश की एक किरण अंदर आ रही थी।

लगभग एक चौथाई मील दूर स्थित टाउन हॉल के टावर पर लगी घड़ी ने आठ बजने का समय बताया, तभी ललिता ने दबी आवाज़ में दरवाज़ा खटखटाया। दस्तक देते हुए उसने सड़क पर नज़र डाली और देखा कि एक अकेली बैलगाड़ी सड़क के मोड़ से मुड़ी, उसकी एकमात्र रोशनी एक मंद लालटेन की थी, और घर की ओर बढ़ रही थी।

जाहिर तौर पर बुक्थी को यकीन था कि वह आएगी और उसके आने का इंतजार कर रही थी, क्योंकि उसके दस्तक देने के कुछ ही सेकंड के भीतर दरवाजा खुल गया और उसने अंदर के कमरे की रोशनी में उसकी मोटी काया की परछाई देखी।

शुभ संध्या, ललिता, मुझे आपका ही इंतजार था। समय पर आने के लिए आपका धन्यवाद। अंदर आइए।

उनका लहजा सौम्य और सज्जनतापूर्ण था, और उन्होंने उसे अंदर आने देने के लिए एक तरफ हट गए।

वह अंदर चली गई।

बुक्थी ने अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया।

और फिर, पल भर में, उसका व्यवहार बदल गया। कुछ पल पहले का वह सभ्य और शालीन व्यक्ति गायब हो गया। उसके चेहरे पर तीव्र वासना का भाव उभर आया। उसकी जीभ मुंह से बाहर निकली हुई थी, और उत्तेजना में उसके होंठ गीले हो रहे थे। उसकी आँखें उसकी साड़ी में इस कदर गड़ी हुई थीं कि मानो वह उसे तब तक नंगा करती जा रही हो जब तक वह उसके सामने पूर्ण नग्न न हो जाए। दबी हुई वासना का पसीना उसके माथे के रोमछिद्रों से बह रहा था, जिससे उसका चेहरा चिकना और चमकीला लग रहा था।

उसने दोनों हाथों से उसके स्तनों को पकड़ लिया।

उसी क्षण ललिता को एहसास हुआ कि वह एक कामुक दरिंदे के साथ बिल्कुल अकेली है, और वह जोर से चीख पड़ी।

जैसे ही उसके हाथ उसे छूए, दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई और एक दबी हुई आवाज़ ने जल्दबाज़ी में कहा, 'टेलीग्राम।'

बुक्थी बीच रास्ते में ही रुक गया। वह तेजी से सांस ले रहा था और बेकाबू जुनून से कांप रहा था।

‘चले जाओ, दफा हो जाओ,’ वह चिल्लाया, ‘इसे सुबह फिर लेकर आना।’

‘नहीं कर सकता,’ दबी हुई आवाज़ में जवाब आया। ‘अत्यावश्यक टेलीग्राम है। आपको इसे अभी प्राप्त करना होगा।’

ऐसे समय में दखल देने पर भयंकर गाली देते हुए बुक्ति ने ललिता को कमरे के एक कोने में धकेल दिया और दरवाजा खोल दिया। बाहर एक ही टेलीग्राम संदेशवाहक के बजाय चार आदमी खड़े थे, जैसा कि उसने उम्मीद की थी। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, वे कमरे के अंदर आ गए थे और अपने पीछे दरवाजा बंद कर चुके थे।

बुक्ति ने विरोध करने के लिए अपना मुंह खोला ही था कि तभी अचानक सब कुछ बदल गया। चारों आदमियों में सबसे लंबा, एक विशालकाय आदमी, उस पर झपटा और उसके खुले मुंह में एक रुमाल ठूंस दिया। उसके तीनों साथियों ने उसके हाथों को पीछे की ओर बांध दिया और उन्हें एक रस्सी से जकड़ दिया, जिसे वे शायद इसी उद्देश्य से लाए थे। फिर उन्होंने उसके पैरों को भी बांध दिया।

उस दैत्य ने बुकथी के मुंह में जबरदस्ती ठूंसे गए रूमाल को झट से हटाकर उसकी जगह कपड़े का एक टुकड़ा रख दिया, जिसे उसके सिर के पीछे कसकर बांध दिया गया था।

उन्हें बिना किसी औपचारिकता के जमीन पर पटक दिया गया।

चारों व्यक्तियों ने चारों ओर देखा और नेता की नज़र एक कीमती फ़ारसी कालीन पर पड़ी। उसने उसे ज़मीन पर पड़े स्थान से उठाया और वे सब बुकथी को उस पर लपेटने लगे।

इस पूरे समय तक उन्हें कोई बाधा नहीं आई थी। जाहिर तौर पर ललिता को पूरी तरह से अपने वश में करने की शाम की उम्मीद में, बुक्ति ने अपने नौकरों को घर

भेज दिया था और वह घर में अकेला था।

जब उन्होंने मकान मालिक को उसके फ़ारसी कालीन में पूरी तरह लपेट दिया, तो लंबे कद के नेता ने सावधानी से दरवाजा खोला और बाहर झाँका। ज़ाहिर है, उसे कोई खतरा नहीं दिखा, क्योंकि कुछ ही सेकंड में उसने अपने तीन साथियों को इशारा किया। वे उस मोटे आदमी के भारी वज़न के नीचे लड़खड़ाते हुए उसे उसके ही कालीन में लपेटकर बाहर ले गए।

फिर, पहली बार, नेता ने ललिता पर ध्यान दिया और उससे बात की। 'चलो, बेटी। मैं तुम्हें राजा मान सिंह के नाम पर सुरक्षा प्रदान करता हूँ। जल्द ही तुम्हें सुरक्षित तुम्हारे घर पहुँचा दिया जाएगा। बिल्कुल भी डरने की कोई बात नहीं है।'

ललिता एक पल के लिए भी नहीं हिचकिचाई, क्योंकि उसे डाकू सरदार की प्रतिष्ठा पर अटूट विश्वास था। वह उन तीनों आदमियों के पीछे-पीछे, बोझ के नीचे लड़खड़ाते हुए, बाहर चली गई। उनके जाने के बाद वह विशालकाय आदमी उसके पीछे आया और घर का पिछला दरवाजा बंद कर दिया।

ललिता यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि सड़क के किनारे फुटपाथ के पास एक ढकी हुई बैलगाड़ी खड़ी थी। उसे दो बैल खींच रहे थे। उनके बीच से गुजरने वाले लकड़ी के डंडे से एक मंद रोशनी वाली लालटेन हल्की-हल्की टिमटिमा रही थी। गाड़ी के आगे गाड़ीवान की ढकी हुई आकृति बैठी थी।

अचानक उसे वह गाड़ी याद आ गई जो उसने घर में घुसते समय आते हुए देखी थी। मान सिंह के गुंडों ने बिल्कुल सटीक समय पर वहाँ पहुँच गए थे।

तब तक तीनों आदमियों ने कालीन को, उस पर लेटे हुए लोगों सहित, गाड़ी में धकेल दिया था। उनमें से एक उसके साथ गाड़ी में बैठ गया। लंबे कद के नेता ने बिना कुछ कहे ललिता को भी गाड़ी में बैठने का इशारा किया। ललिता ने भी वैसा ही किया।

अपनी जीभ से हल्की सी क्लिक की आवाज के साथ, बैलगाड़ी चालक ने बैलों को दौड़ाना शुरू कर दिया और गाड़ी चरमराती और गड़गड़ाती हुई सड़क पर आगे बढ़ गई, लंबा आदमी और उसके बाकी दो साथी उसके पीछे-पीछे कदम मिलाकर चलने लगे।

देखने वाले को यह एक साधारण बैलगाड़ी ही लग रही थी, जो एक सामान्य यात्रा पर आगे बढ़ रही थी। उसके अंदर यात्रियों के एक समूह के कुछ सदस्य बैठे थे।

बाकी लोग पीछे-पीछे चल रहे थे। सब कुछ इतनी सादगी से लेकिन कुशलता से व्यवस्थित किया गया था और देखने में बिल्कुल सामान्य लग रहा था।

ललिता ने राजा मान सिंह और उनके आदमियों की चतुराई की प्रशंसा की।

समय बीतने के साथ वे कस्बे को बहुत पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ते चले गए। इतनी रोमांचक यात्रा के बावजूद ललिता को नींद आने लगी। उसका सिर आगे की ओर झुक गया और वह अधूरी नींद में झपकी लेने लगी। लगभग हर घंटे पुरुष अपनी जगह बदलते रहते, एक व्यक्ति गाड़ी में बैठता जबकि बाकी तीन उसके पीछे पैदल चलते।

लगभग आधी रात को उन्हें कालीन के ढेर के अंदर से दबी हुई आवाज़ें सुनाई दीं। उन्होंने गाड़ी रोककर कालीन को खोला। ज़ाहिर है, उन्होंने सही समय पर ऐसा किया। बुक्ति दम घुटने से लगभग मर चुका था और उसके कपड़े पसीने से तरबतर थे, जो उसके चारों ओर लिपटे कालीन से पैदा हुई भीषण गर्मी के कारण था।

इसलिए नेता ने इसे बदलने का फैसला नहीं किया, बल्कि बुक्थी को बांधकर और मुंह पर पट्टी बांधकर गाड़ी के फर्श पर ही रखा।

कुछ ही देर बाद सड़क जंगल में प्रवेश कर गई और चारों ओर घना अंधेरा छा गया। विशाल वृक्ष, घनी कतारों में उग रहे थे, जिनके बीच छोटे वृक्ष भी थे, और ये सब लताओं और जंगली बेलों से इस तरह जुड़े और लिपटे हुए थे कि सड़क के दोनों ओर एक ठोस और अभेद्य किले की दीवार सी बन गई थी, जो पेड़ों की चोटियों तक फैली हुई थी। केवल ठीक ऊपर, और नीचे सड़क की आकृति का अनुसरण करते हुए, आकाश की एक पतली पट्टी थी, जो दोनों ओर के जंगल के काले घेरे से असंख्य तारों द्वारा स्पष्ट रूप से अलग थी, जो लगातार टिमटिमाते और झिलमिलाते हुए, अपनी चमक में स्पेक्ट्रम के सभी रंगों को बिखेर रहे थे। सड़क के दोनों ओर पत्तों के अंधेरे में अन्य टिमटिमाती रोशनी इधर-उधर मंडरा रही थी। लेकिन वे जीवंत रोशनी थीं; जुगनुओं के फास्फोरसेंट लैंप, जो अपनी परी जैसी चमक कभी यहाँ, कभी वहाँ; कभी अकेले, कभी सैकड़ों की संख्या में एक साथ चमक रहे थे; कुछ क्षणों के लिए पेड़ों की रूपरेखा को रोशन करता है, और अगले ही पल उन्हें फिर से एक गहरे, अधिक अभेद्य अंधकार में डुबो देता है।

जिस डंडे से दो बैल जुते हुए थे, उस पर लटकी लालटेन से मुश्किल से दो गज की दूरी तक ही हल्की रोशनी पड़ रही थी। बैलों के धीरे-धीरे चलते हुए पैरों से बन रही

परछाइयाँ मानो सजीव हों, मानो जंगल की रात के वो राक्षस हों जो उनकी यात्रा में उनका पीछा कर रहे हों; निरंतर, निर्दयतापूर्वक, एक आसन्न विनाश की ओर। गाड़ी के पीछे सटकर चल रहे तीनों आदमी भूतिया प्रेतों की तरह लग रहे थे, मानो गाड़ी में बैठे लोगों के भागने के किसी भी प्रयास को रोकने के लिए पहरा दे रहे हों।

सुबह के 3:30 बजे के कुछ ही देर बाद ललिता, जो फिर से ऊंघ रही थी, ने कुछ आवाज़ें सुनीं और महसूस किया कि जिस गाड़ी में वह बैठी थी, वह अचानक रुक गई। फिर उसने देखा कि पीछे चल रहे तीनों आदमी सम्मानपूर्वक एक तरफ हट गए क्योंकि दूसरे लोग पास आ रहे थे।

‘मोहन, क्या वे सब यहाँ हैं?’ एक मधुर आवाज ने पूछा। ‘मोटा आदमी और लड़की?’

'वे यहीं हैं, महाराज साहब,' तीनों आदमियों में से सबसे लंबे आदमी ने जवाब दिया, जिसे ललिता ने अपहरण के काम का प्रभारी व्यक्ति के रूप में याद किया था।

मधुर आवाज वाले व्यक्ति ने कहा, “मोहन, तुमने बहुत अच्छा किया। धन्यवाद।” फिर, गाड़ी की अंडाकार छत के कारण अभी तक दिखाई न देने वाले अपने अन्य साथियों की ओर मुड़ते हुए, वक्ता ने कहा, “इस मोटे सूअर को शिविर तक ले जाओ।”

ललिता को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'बेटी, तुम्हें किसी बात से डरने की जरूरत नहीं है। कृपया नीचे उतरो और मेरे पीछे आओ।'

सामान्यतः, ऐसी परिस्थितियों में कोई भी वयस्क महिला भयभीत हो जाती। उसे लगा कि वह डाकुओं के एक गिरोह के बीच है। लेकिन ललिता को ज़रा भी डर नहीं लगा। उसे पूर्ण सुरक्षा का एक अजीब सा आश्वासन मिला, साथ ही उस महान नेता के प्रति कृतज्ञता और सम्मान की भावना भी उमड़ आई जिसने उसे एक भयानक भाग्य से बचाया था।

क्या यह वाकई वही महान राजा मान सिंह हैं?

बिना कुछ कहे, वह गाड़ी के सख्त लकड़ी के फर्श से धीरे से उठी और जमीन पर आ गई।

फिर आदेश देने वाला रहस्यमय व्यक्ति आगे-आगे चलने लगा और ललिता को हाथ से इशारा करके अपने पीछे आने को कहा। ललिता ने वैसा ही किया। उसकी नज़र के कोने से उसने देखा कि चार आदमी बुक्थी को अपने कंधों पर उठाकर उसके

पीछे चलने लगे। उनके पीछे कुछ और आदमी थे। वे जंगल में एक कतार में चलने लगे, किसी ऐसे रास्ते पर जिसे नेता और उसके साथी अच्छी तरह जानते थे। कुछ ही पलों में बैलगाड़ी की धुंधली लालटेन पेड़ों के तनों के पीछे ओझल हो गई।

अब अंधेरा और भी गहरा हो गया। लाख कोशिश करने पर भी ललिता को अपने पैरों के नीचे का रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। वह लड़खड़ा गई। नेता रुका और पीछे मुड़ा। उस धुंध में ललिता को महसूस हुआ कि उसका हाथ उसकी ओर बढ़ रहा है। उसने उसका हाथ थाम लिया। वह आगे बढ़ता रहा और ललिता का हाथ थामे हुए उसे रास्ता दिखाता रहा।

उसे कभी पता नहीं चला कि उन्होंने कितनी दूरी तय की थी। लेकिन अचानक रास्ता मुड़ गया और वे जंगल के एक खुले मैदान में पहुँच गए। उसके चारों ओर लगभग आधा दर्जन शिविरों में जल रही आग की बुझती हुई चिंगारियाँ चमक रही थीं।

पार्टी अचानक रुक गई।

'ओह साथियों,' उस मधुर आवाज ने कहा, 'आग में लकड़ियाँ डालो, क्योंकि हम दरबार लगाने वाले हैं। लेकिन पहले, नए आने वालों को कुछ 'चा' परोस दी जाए।'

चारों आदमियों ने बुक्ति को, जिसके हाथ-पैर बंधे हुए थे और मुंह पर पट्टी बंधी थी, ज़मीन पर लिटा दिया और उसके चारों ओर बैठ गए। सरदार ने ललिता से कहा, "बैठ जाओ, लड़की, और चाय परोसे जाने तक आराम से बैठो।" फिर अपने एक साथी की ओर मुड़कर उसने कहा, "लड़की के लिए एक कंबल लाओ; उसे ठंड ज़रूर लगेगी।"

कहीं से उसे एक कंबल दिया गया। ललिता ने उसे अपने चारों ओर लपेट लिया और उसका एक सिरा अपने सिर पर रख लिया, क्योंकि रात की हवा काफी ठंडी थी और उसकी साड़ी ओस से पहले ही भीग चुकी थी।

फिर वह जमीन पर बैठ गई।

डाकू सरदार ने भी ऐसा ही किया।

इस समय तक उनके आसपास की आग फिर से भड़क उठी थी, जिसे बैंड के सदस्यों द्वारा अभी-अभी ढेर किए गए सूखे लकड़ी के लट्ठों ने और भी तेज कर दिया था।

टिमटिमाती रोशनी में, जो क्षण भर के लिए तेज हो रही थी, ललिता ने अपने

उपकारक की ओर मुड़कर देखा।

वह एक बुजुर्ग व्यक्ति थे, जिनका रंग गोरा था और दाढ़ी, मूंछ और दाढ़ी बर्फ़ जैसी सफ़ेद थी। उन्होंने हमेशा की तरह धोती और बंदी पहनी हुई थी। उसने गौर किया कि उम्र के बावजूद, वह सीधे बैठे थे और उनका हावभाव किसी ऐसे सैनिक जैसा था जिसने वर्षों का सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। उनका माथा आश्चर्यजनक रूप से चौड़ा था जिस पर चाक के चौड़े निशान लगे हुए थे। उनके गले में आमेर की मोतियों की एक भारी माला लटकी हुई थी।

लेकिन उसकी सबसे आकर्षक विशेषता उसकी आँखें थीं। वे लोहे की तरह कठोर और भेदक थीं। बाज की तरह क्रूर होते हुए भी, वे किसी माँ की तरह कोमल हो जाती थीं, जैसे कोई माँ अपने बच्चे को प्यार से निहारती है।

कुछ ही मिनटों में सभी को एनामेल मगों में गरमागरम चाय परोसी गई, ललिता को मुखिया के तुरंत बाद अपना हिस्सा मिल गया। बुक्ती को भी उसका हिस्सा तब मिला जब उसके मुंह से पट्टी हटाई गई और उसके हाथ-पैर खोल दिए गए।

जब उन्होंने पीना समाप्त कर लिया, तो बूढ़े व्यक्ति ने बोलना शुरू किया। बोलते समय वह मुस्कुरा रहे थे। एक विचित्र मुस्कान। वह शांत करने वाली, क्षमा मांगने वाली और फिर भी समझने की कोशिश करती हुई प्रतीत हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह एक सौम्य और दयालु न्यायाधीश हों; फिर भी वह जानते थे कि उन्हें एक अप्रिय कर्तव्य निभाना है और न्याय सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे।

उन्होंने कहा, "हम सभी कभी न कभी गलतियाँ और पाप करते हैं, क्योंकि गलती करना मानवीय स्वभाव है। अगर हमारे द्वारा किया गया पाप हमारे अपने विनाश का कारण बनता है तो यह बुरा है। लेकिन, अगर वह पाप किसी दूसरे व्यक्ति, विशेष रूप से यदि वह दूसरा व्यक्ति निर्दोष है, के विनाश के लिए सोची-समझी, शैतानी साजिश के तहत किया गया हो, तो वह पाप वास्तव में बहुत बड़ा है।"

अब हम यह तय करने के लिए अदालत लगाएंगे कि क्या हमारे भाई, बुक्थी नाम के व्यक्ति, जिस पर आरोप लगाया गया है, ने ऐसा पाप किया है; और यदि उसने किया है, तो क्या उसे दंडित किया जाना चाहिए या नहीं; और वह दंड किस रूप में होना चाहिए।

'यहाँ आप सभी उपस्थित हैं, जिनमें लड़की, आरोपी और मैं शामिल नहीं हैं। मैं इस मामले में कोई मत नहीं दूंगा। मैं चाहता हूँ कि आप निष्पक्ष रूप से और ईश्वर के

समक्ष निर्णय करें कि यह बुक्थी दोषी है या नहीं; उसे दंडित किया जाना चाहिए या बरी किया जाना चाहिए; और यदि आपको लगता है कि वह दोषी है, तो उसे किस प्रकार दंडित किया जाना चाहिए।'

मैं नहीं चाहता कि यहाँ कोई भी उसे दंडित करके मुझे प्रसन्न करने का प्रयास करे। मैं अभी और यहीं आपसे कहता हूँ कि ऐसा दंड मुझे ज़रा भी प्रसन्न नहीं करेगा। बल्कि, इससे मुझे दुःख होगा। लेकिन यदि आप ईमानदारी से यह निर्णय लेते हैं कि न्याय किया जाना चाहिए, तो निश्चित रूप से न्याय किया जाएगा।

अब मैं आरोपियों के खिलाफ एक-एक करके आरोप बताऊंगा। बुक्थी, तुम्हें अपना पक्ष स्पष्ट करने और यदि तुम चाहो तो आरोपों का खंडन करने का पूरा अवसर दिया जाएगा। तुम्हें केवल सच बोलना है, और कुछ नहीं। तुम्हें बिना किसी बाधा के धैर्यपूर्वक सुना जाएगा।

ठीक है, तो चलिए पहले प्रश्न से शुरू करते हैं। क्या आप एक मकान मालिक हैं, जिनके पास कई मकान और काफी एकड़ जमीन है? कृपया केवल "हां" या "नहीं" में उत्तर दें।

'हां,' बुक्थी की आवाज लगभग फुसफुसाहट से थोड़ी ही तेज थी।

क्या आप अपने किरायेदारों से किराया वसूलते हैं?

'हां,' मोटे आदमी ने फिर कहा।

"इस तरह से तुम महीने में कितना पैसा इकट्ठा करते हो? अब, जवाब देने से पहले, ध्यान रखो कि मुझे पहले से ही पता है। अगर तुम सच बोलोगे तो यह तुम्हारे पक्ष में होगा। अगर तुम झूठ बोलोगे, तो तुम्हारे पैर के तलवे पर जलता हुआ अंगारा रख दिया जाएगा।"

बुक्थी बुरी तरह कांपने लगी। फिर हकलाते हुए बोली, 'कुछ हज़ार।'

'हमें यह पहले से ही पता है, मोटे आदमी। लेकिन कितने हज़ार?'

जवाब आया, 'लगभग तीन हजार रुपये।'

'यह झूठ है, मेरे दोस्त। कुल मिलाकर आपको प्रति माह छह हजार सत्तर रुपये मिलते हैं। क्या मैं सही कह रहा हूँ?'

मकान मालिक चौंक गया। लगभग एक मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। फिर उसने कहा, 'जी हां।' 'क्या इस लड़की की मां ने आपको बकाया किराया चुका दिया है?'

‘नहीं,’ बुक्थी ने दृढ़ता से उत्तर दिया। फिर उसने पूरे जोश के साथ अपना पक्ष रखना शुरू किया। ‘माननीय न्यायाधीश, उसने छह महीने से किराया नहीं चुकाया है।’

“मैं ‘महामहिम’ नहीं हूँ,” बूढ़े व्यक्ति ने शांत स्वर में कहा; और फिर आगे बोला, “और वह आपको कुल कितना कर्जदार है? अब सच बोलना याद रखना, क्योंकि हमें जवाब पता है।”

बुक्ति ने गुस्से में कहा, 'बहत्तर रुपये। पिछले छह महीनों से बारह रुपये प्रति माह के हिसाब से, उस पर मेरे बहत्तर रुपये बकाया हैं।'

‘ठीक है; यह सही है, जैसा कि मुझे पहले से ही पता है। अब, यह बारह रुपये आपके मासिक वेतन के छह हजार से कुछ अधिक रुपये के अनुपात में क्या हैं?’

‘मुझे—मुझे नहीं पता,’ बुक्थी हकलाते हुए बोली।

‘आपको नहीं पता, है ना? लेकिन यह काफी छोटा अनुपात है, है ना?’

बुक्थी की ओर से कोई जवाब नहीं आया।

‘आओ, मित्र,’ बूढ़े व्यक्ति ने अधीरता से कहा। ‘यदि तुम एक सरल प्रश्न का उत्तर नहीं दोगे, तो शायद आग तुम्हें मजबूर कर देगी।’

'मुझे लगता है ऐसा ही है,' बुक्थी ने चिड़चिड़ेपन से स्वीकार किया।

‘क्या पहले नियमित रूप से वेतन मिलता था?’

'जी हां,' मकान मालिक ने तत्परता से जवाब दिया।

‘तो फिर उसने आपको पैसे देना क्यों बंद कर दिया?’ अगला सवाल आया।

‘मुझे कैसे पता चलेगा?’ बुक्थी का विद्रोही स्वभाव बढ़ता जा रहा था। ‘वैसे भी,’ उसने आगे कहा, ‘ये सब सवाल पूछने वाले तुम कौन होते हो? मैं इनका जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हूँ।’

‘मेरा नाम मान सिंह है,’ बूढ़े व्यक्ति ने कहा, ‘शायद आपने मेरे बारे में पहले सुना होगा।’

“हो सकता है आपने सुना हो कि मेरे पास लोगों से जवाब दिलवाने के तरीके हैं, अगर वे जवाब देने से इनकार करते हैं। मैं सचमुच उन्हें आप पर इस्तेमाल नहीं करना चाहता। इसलिए, मैं आपको दृढ़ता से सलाह देता हूं कि आप जवाब दें; और सच्चाई से जवाब दें।”

'अब वो आखिरी सवाल क्या था? ओह हाँ; उस लड़की की माँ ने आपको अचानक पैसे देना क्यों बंद कर दिया?'

बुक्थी ने इस शैतान को खुश करने का फैसला किया। इसलिए उसने कहा, 'अच्छा, उसने कहा था कि उसके पति की मृत्यु हो गई है और वह अपने पीछे कोई धन नहीं छोड़ गया है।'

'क्या वह सच है?'

‘उनकी मृत्यु तो ठीक हुई। लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि उन्होंने उसके लिए कोई पैसा नहीं छोड़ा?’

‘ठीक है,’ मान सिंह ने कहा, ‘आपकी बात सही है। हो सकता है कि वह किराया देने से बचने के लिए झूठ बोल रही हो। अब मुझे अगला सवाल पूछने दीजिए।’

क्या यह सच है कि आपने अपने दोस्तों को उकसाया था कि जब वे नौकरी या किसी भी तरह का काम मांगें तो उसे या उसकी बेटी को नौकरी न दें?

कोई जवाब नहीं मिला।

और क्या यह सच है कि आपने उसे सौ रुपये और बाद में पचास रुपये बिना ब्याज के उधार देने की कृपा की?

बुक्थी ने सहज भाव से कहा, 'बेशक।'

तब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ; लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

मान सिंह ने भीड़ में खड़े एक कद में छोटे, सांवले रंग के और दाढ़ी मुंडवाए हुए व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने के लिए उंगलियां चटकाईं और फिर उससे कहा, 'मुस्तफा, कृपया मुझे वे बंधन दिखाओ।'

संबोधित किए जा रहे छोटे कद के व्यक्ति ने अपनी लंबी कमीज के ऊपर पहने हुए काले कोट की जेब में हाथ डाला और कागज के दो टुकड़े निकाले, जिन्हें उसने बूढ़े डाकू को सौंप दिया।

बुक्ती और ललिता ने उन्हें तुरंत पहचान लिया। ये वही दो प्रो-नोट थे जिन पर सीता के हस्ताक्षर थे और जिनसे उसने कुछ दिन पहले सीता को धमकी दी थी। यह स्पष्ट था कि मोटे जमींदार के अपहरण के बाद, इन दस्तावेजों की तलाश में बदमाशों का एक और गिरोह उसके घर की तलाशी लेने के लिए भेजा गया होगा। ललिता ने मान सिंह की सतर्कता की प्रशंसा की, जबकि बुक्ती का फूला हुआ चेहरा पीला पड़ गया। उसकी आँखें डर से फटी रह गईं।

मान सिंह ने दस्तावेजों को खोला और कुछ देर तक दोनों पन्नों का अध्ययन किया।

'चूंकि आप स्वीकार करते हैं कि आपने उसे सौ रुपये और फिर पचास रुपये बिना ब्याज के उधार दिए, तो ये बांड क्रमशः एक हजार रुपये और पांच सौ रुपये के कैसे हैं?'

कोई जवाब नहीं।

‘मैं निवेदन करता हूँ कि आप धोखाधड़ी के दोषी हैं। मैं आप पर आरोप लगाता हूँ कि आपने पहले इस महिला को सौ रुपये उधार दिए, फिर पचास रुपये, और फिर प्रत्येक उधार में एक शून्य जोड़कर एक हजार रुपये और पाँच सौ रुपये के नोट लिखे, ताकि इस गरीब महिला और उसकी बेटी को अपने चंगुल में बुरी तरह फंसा सकें। क्या आप दोषी हैं या नहीं?’

मान सिंह की आवाज सपाट और स्वरहीन थी। लेकिन वह अत्यंत स्पष्ट और सटीक थी।

बुक्थी ने कोई जवाब नहीं दिया।

और परसों जब तुम उस लड़की से मिले थे, तो तुमने उससे क्या कहा था?

फिर भी कोई जवाब नहीं मिला।

“महान जमींदार, आपको अवश्य याद होगा? आपने जो कहा, उसका एक गवाह भी था। क्या आपको वह अपाहिज याद है जिस पर आप ठोकर खाकर गिरे थे? उसने आपकी बात स्पष्ट रूप से सुनी थी। और इससे भी महत्वपूर्ण बात, मेरे मित्र; मैं ही वह अपाहिज था।”

ललिता को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। आरोपी का मुंह मूर्खतापूर्ण ढंग से खुला हुआ था।

मान सिंह ने आगे कहा, 'हालांकि, चूंकि मैं आपके खिलाफ गवाही देकर इस मुकदमे में हिस्सा नहीं ले रहा हूं, तो आइए पहले खुद लड़की की बात सुनते हैं।'

उसने ललिता की ओर मुड़कर कहा, 'लड़की, उसने तुम्हें ठीक-ठीक क्या बताया?'

धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज में ललिता ने उन्हें सब कुछ बता दिया।

एक बार फिर, अधमरे से पड़े मोटे आदमी की ओर मुड़ते हुए, मान सिंह ने बिना रुके बोलना जारी रखा।

‘जब यह लड़की कल रात आपके घर आई, तो आपने क्या किया?’

‘कुछ नहीं,’ बुक्थी हकलाते हुए बोली।

‘लड़की, क्या यह सच है? तुम्हें बोलने में शर्म नहीं आनी चाहिए। हम यहाँ तुम्हारे दोस्त हैं।’

धीरे-धीरे, लेकिन स्पष्ट रूप से, ललिता ने कहा, 'जैसे ही मैं अंदर आई, उसने दरवाजा बंद कर दिया और मुझे परेशान करने लगा। वास्तव में, अगर आपके आदमी समय रहते न आते, तो मुझे यकीन है कि वह मेरा बलात्कार कर देता।'

सभा में कुछ मिनटों तक सन्नाटा पसरा रहा।

मान सिंह उठ खड़ा हुआ। ललिता ने गौर किया कि वह पहले जितना दिख रहा था, उससे कहीं ज्यादा लंबा लग रहा था। बैठे हुए लोगों के समूह को संबोधित करते हुए उसने कहा।

साथियों, आपने आरोप सुन लिए हैं। प्रत्येक आरोप के जवाब में आरोपी को अपना बचाव करने का अवसर दिया गया। अब, अपने निर्णय में निष्पक्ष रहें। आपका क्या कहना है? क्या वह "दोषी" है या "निर्दोष"?

बावन लोगों के गले से एकमत होकर 'दोषी' की आवाज निकली।

क्या उसे दंडित किया जाना चाहिए या नहीं?

उन्होंने स्वर में कहा, 'उसे दंडित किया जाना चाहिए।'

‘उसे किस प्रकार की सजा मिलनी चाहिए?’

इस प्रश्न पर विचारों में काफी मतभेद था।

एक ने सलाह दी, 'उसे टुकड़े-टुकड़े कर दो।' दूसरे ने सुझाव दिया, 'उसका गला काट दो।' तीसरे ने कहा, 'उसे जिंदा दफना दो।'

फिर एक छोटा, दुबला-पतला आदमी खड़ा हुआ। ललिता ने गौर किया कि उसकी चेहरे की बनावट तीखी थी जिससे वह बुद्धिमान प्रतीत होता था।

‘महाराज,’ उन्होंने बोलना शुरू किया, ‘मेरी राय है कि हमें उसे सीधे मार नहीं डालना चाहिए क्योंकि उसने अभी तक किसी की हत्या नहीं की है। इसके अलावा, अगर हम ऐसा करते हैं, तो किसी को भी उसके कुकर्मों के बारे में पता नहीं चलेगा। इसलिए, हमें उसे बिना मारे इस तरह से दंडित करना चाहिए जिससे उसके जैसे अन्य बदमाशों को भविष्य में ऐसे काम करने से सबक मिले। हमें पुलिस आयुक्त साहब को भी एक पत्र लिखना चाहिए, जिसमें उन आरोपों और कारणों की जानकारी दी जाए जिनके आधार पर हमने उसे दंडित किया है।’

भीड़ ने इस सुझाव का जोरदार और लगातार समर्थन किया।

'और हम उसे किस प्रकार दंडित करें, अली?' डाकुओं के सरदार ने पूछा।

'महाराज साहब, मैंने इस बारे में भी सोचा है,' चतुर अली ने उत्तर दिया। 'हमें उसकी जीभ का अगला हिस्सा काट देना चाहिए ताकि वह दोबारा इस तरह का झूठ न बोले; और हमें उसके दाहिने हाथ की उंगलियां जला देनी चाहिए, क्योंकि उसी ने कलम पकड़ी थी जिससे ये जाली दस्तावेज लिखे गए थे और जिससे बाद में इस असहाय लड़की के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश की गई थी।'

'शाबाश!' डाकुओं ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा, जबकि पीछे से कहीं से एक आवाज आई, 'अली, तुम्हें जज होना चाहिए था, चोर नहीं।'

इस दौरान जोरदार और देर तक तालियां बजती रहीं और लोग हंसते रहे।

मान सिंह चुप थे और सोच में डूबे हुए लग रहे थे। उन्होंने ललिता की ओर देखा; फिर सहमी हुई बुक्ती की ओर; और अंत में अली की ओर।

पूरी कार्यवाही के दौरान उनके चेहरे पर जो मुस्कान थी, वह अचानक गायब हो गई। उनका चेहरा गंभीर और कठोर हो गया। उन्होंने आरोपी की ओर रुख किया।

उन्होंने गंभीरता से कहा, 'मैं फैसला सुनाता हूँ। तुम्हारी जीभ का अगला हिस्सा काट दिया जाएगा और तुम्हारे दाहिने हाथ की उंगलियाँ आग में जला दी जाएँगी। अली, तुम सजा के क्रियान्वयन की निगरानी करना। लेकिन ध्यान रखना कि उसकी जीभ का अगला हिस्सा और दाहिने हाथ की उंगलियाँ ही काट दी जाएँ।'

बुक्थी की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "और मेरी ओर से, तुम इस लड़की या उसकी माँ से कभी किराया नहीं माँगोगे, न ही उन्हें दिए गए पैसे वापस लोगे। और तुम उन्हें अब और परेशान नहीं करोगे। मेरी अवज्ञा की, तो अगली बार तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।"

'दया करो, दया करो; मुझ पर दया करो,' दुखी कैदी जमीन पर लोटते हुए विलाप करने लगा। 'मैं उस औरत से कभी पैसे नहीं मांगूंगा, बस मुझे बख्श दो; कृपया, कृपया।'

'लड़की, मेरे साथ चलो,' डाकू सरदार ने आदेश दिया। उसने लड़की का हाथ मजबूती से, लेकिन नरमी से पकड़ा, जैसे ही वह उठी, और फिर उसे जंगल के अंधेरे में ले गया।

अगले पंद्रह मिनट तक उन दोनों के बीच एक भी शब्द का आदान-प्रदान नहीं हुआ।

ललिता ने बुक्ति की चीखें उसके गले में एक भयानक, गरगराहट भरी आवाज के साथ मरते हुए सुनीं।

कुछ ही देर बाद, अस्पष्ट कराहने की आवाज़ें फिर से सुनाई दीं और किसी चीज के जलने की गंध आई।

तब मान सिंह ने बस इतना कहा, 'न्याय होना ही चाहिए।'

वह उसे खुले मैदान के दूसरे हिस्से में ले गया, जहां उसे दो कंबल दिए गए और सोने के लिए कहा गया।

अगली सुबह ललिता को बुक्ति का कोई अता-पता नहीं था। उसे खाना दिया गया और आराम करने को कहा गया, साथ ही यह भी बताया गया कि उसे जल्द ही सुरक्षित वापस ले जाया जाएगा। तब तक उसे किसी भी हालत में भागने की कोशिश नहीं करनी थी। अगले तीन दिनों तक वह एक तरह से कैदी ही बनी रही।

चौथी रात उसे एक बैलगाड़ी में बिठाया गया जो उसे उसके कस्बे के बाहरी इलाके में ले गई। उसने देखा कि एक दूसरी गाड़ी उसके आगे चल रही थी।

सुबह के चार बजे थे जब दोनों गाड़ियाँ कस्बे से लगभग तीन मील दूर रुक गईं। उसे गाड़ी से उतरकर जल्दी से घर पैदल जाने को कहा गया। उसने ऐसा करना शुरू कर दिया।

ललिता ने अपने सामने सड़क पर एक और आकृति को चलते हुए देखा। वह एक बहुत मोटे आदमी की आकृति थी। लेकिन वह झुका हुआ प्रतीत हो रहा था, मानो बुढ़ापे या किसी गंभीर बीमारी के कारण।

बुक्थी अब स्पष्ट रूप से बोल नहीं पा रहा था। न ही वह दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए अपने दाहिने हाथ का दोबारा इस्तेमाल कर पा रहा था।

और एक बात और। उन्होंने सीता या ललिता से कभी भी घर का किराया या कोई पैसा वापस नहीं मांगा। वास्तव में, उसके बाद उन्होंने उन दोनों से कभी बात भी नहीं की।

अध्याय छह

तीन यात्री और अमेरिकी पत्रकार

भारत के दक्षिण में कहीं एक बड़ा औद्योगिक प्रतिष्ठान है जो तेजी से विस्तार कर रहा है। यह विमान बनाता है, रेलवे कोचों का निर्माण करता है और आधुनिक डिजाइन की

बसें भी बनाता है।

इस संगठन की भारत के कई हिस्सों में शाखाएं हैं, और कुछ समय पहले ही इसने कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में एक डिपो खोला था।

जिस घटना के बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूं, वह एक साधारण से निर्णय के कारण घटी - दक्षिण भारत में स्थित मूल संगठन द्वारा अपनी एक बस को श्रीनगर में अपने नवनिर्मित डिपो में भेजने का निर्णय - जो सड़क मार्ग से 2500 मील से अधिक की यात्रा थी।

वाहन चलाने के लिए एक नियमित ड्राइवर नियुक्त किया गया था, और कंपनी के एक अधिकारी को उसके साथ भेजा गया था। साथ ही, खराबी की स्थिति में सहायता के लिए और सामान्य सहायता प्रदान करने के लिए दो मैकेनिकों को भी बस के साथ भेजा गया था।

इस अधिकारी का नाम ओथी था। वह उत्तर भारतीय थे और पंजाब से आए थे। मिलनसार और नेक दिल के व्यक्ति होने के नाते, उन्हें लगा कि अकेले इस कार्य को करना कठिन होगा। इसलिए उन्होंने अपने दो घनिष्ठ मित्रों को, जो दोनों उसी संगठन में कार्यरत अधिकारी थे, कश्मीर की मनमोहक भूमि की मुफ्त बस यात्रा का निमंत्रण देने का निर्णय लिया।

बेशक, चूंकि ये दोनों अधिकारी कंपनी की ड्यूटी पर यात्रा नहीं कर रहे थे, इसलिए उन्हें इस अवसर के लिए छुट्टी के लिए आवेदन करना पड़ा और उन्होंने अपनी निजी और अनौपचारिक क्षमता में श्रीनगर जाने वाली बस में यात्रा करने के लिए विशेष अनुमति प्राप्त की।

दोनों अधिकारियों में से छोटा अधिकारी एक भारतीय ईसाई था; लंबा-चौड़ा, आकर्षक युवक जिसका नाम पर्सी राहु था। दूसरा अधिकारी अधेड़ उम्र का, गठीला, रूढ़िवादी दक्षिण भारतीय ब्राह्मण था, जो एक उच्च पदस्थ और सम्मानित परिवार से आता था। उसने शुरू से ही यह स्पष्ट कर दिया था कि वह इस साहसिक कार्य में पूरे मन से भाग लेने के लिए तैयार है, लेकिन एक सख्त शर्त पर; वह शर्त यह थी कि वह अपना भोजन स्वयं पकाएगा या केवल ब्राह्मण रेस्तरां में ही खाएगा। अन्य सभी मामलों में पूर्णतः विश्व नागरिक होने के बावजूद, वह अपने रूढ़िवादी ब्राह्मण रीति-रिवाज का कड़ाई से पालन करता था कि वह केवल अपनी जाति और समुदाय के व्यक्ति द्वारा बनाया गया भोजन ही खाएगा, अन्यथा वह स्वयं भोजन बनाएगा। इस

व्यक्ति का नाम शेषगिरी था।

ओथी का स्वभाव, जो निश्चिंत और जीवन का भरपूर आनंद लेना चाहती थी, राहु के स्वभाव से बिल्कुल मेल खाता था। राहु एक सुंदर युवक था, जिसकी नजर स्त्रियों पर रहती थी और वह मानता था कि जीवन एक ही बार मिलता है, इसलिए इसे पूरी तरह से जी लेना चाहिए। अतीत में शेषगिरि कभी-कभी उनके उत्साह पर अंकुश लगाने का काम करता था, लेकिन साथ ही ओथी और राहु यह भी समझते थे कि उनका यह गंभीर साथी दल के लिए एक मूल्यवान सदस्य साबित होगा, कम से कम इसलिए कि वह उन्हें कभी-कभी गंभीर मुसीबतों से बचा सके और उन्हें याद दिला सके कि उन्हें श्रीनगर में बस पहुंचाने का अपना वर्तमान कार्य समय पर पूरा करना है और फिर हवाई जहाज से समय पर अपने घर लौटना है।

हमें रास्ते में उनके कारनामों से कोई लेना-देना नहीं है, वह एक अलग कहानी है; लेकिन एक दोपहर बस चंबल नदी पर बने नौका घाट पर रुकी। समय दोपहर 3:45 बजे का था, और चपटी तल वाली, बेड़ा जैसी दिखने वाली नौका नदी के दूसरे किनारे पर थी, जो अभी-अभी यात्रियों को नदी पार कराकर आई थी।

इसके अलावा और कुछ नहीं करना था सिवाय नौका के लौटने का इंतजार करने के।

नदी पर बना सबसे नज़दीकी पुल पचास मील से भी ज़्यादा दूर था। दल बस से उस रास्ते जा सकता था और पुल से नदी पार करने का फ़ायदा उठा सकता था, लेकिन सभी लोग सड़कों से अनजान थे और भारत के इस हिस्से में पहले कभी नहीं आए थे। सड़क के संकेत बहुत कम और दूर-दूर थे, और वे लगातार रास्ता पूछते रहे। इसलिए उन्हें शॉर्टकट रास्तों से जाना पड़ा और अंत में वे वहीं रुक गए जहाँ सड़क खत्म हो गई थी और नदी उनके सामने से बहती जा रही थी।

'अब हम क्या करें?' शेषगिरी ने, जिसे उसके दोस्त संक्षेप में 'सेश' कहते थे, खालीपन से पूछा। 'यहाँ से नदी कैसे पार करें?' स्वभाव से वह हमेशा थोड़ा निराशावादी था।

'अरे बाबा, चिंता मत करो,' आशावादी ओथी ने कहा, 'कोई न कोई रास्ता जरूर होगा।' और फिर, गाड़ी चला रहे राहु की ओर मुड़कर उसने कहा, 'पर्सी, गाड़ी से उतरो और किसी को ढूंढो, और उससे पूछो कि हम इस नदी को कैसे पार करेंगे।'

पर्सी ने इग्निशन बंद किया, अपने लंबे पैर आगे फैलाए, पीछे की ओर झुककर

अपनी बाहों को फैलाया। पर्सी को चिंता करना बहुत मुश्किल था।

‘कुछ नहीं हो सकता, ओथी, मेरे दोस्त,’ उसने आखिरकार जवाब दिया। ‘मैं वैसे भी यह भाषा नहीं बोल सकता। तुम भारत के इस हिस्से से हो या कम से कम उत्तर से, इसलिए तुम ही ढूंढो और बात करो—बशर्ते कोई बात करने वाला मिल जाए। मुझे तो कहीं कोई नज़र नहीं आ रहा।’

‘अरे बाबा,’ ओथी ने फिर शिकायत की, और अपने भारी शरीर को दूसरी सीट से उठाकर ज़मीन पर बैठ गया। फिर उसने कहा, ‘यहाँ कोई नहीं है। मैं उस सौ गज दूर उस छोटी पहाड़ी पर चढ़कर देखता हूँ कि वहाँ कोई दिखाई देता है या नहीं।’

‘ठीक है, बेटा, ठीक है,’ पर्सी मान गया, ‘जब तक मैं और सेश थोड़ी देर झपकी लेते हैं। मैं पिछले दो सौ मील से इस भारी-भरकम खटारा गाड़ी को चला रहा हूँ और मुझे नींद आ रही है।’ ये कहते हुए वह ड्राइवर की सीट से नीचे उतरा, गाड़ी के पिछले हिस्से तक गया, फिर से अंदर बैठा और बस की पूरी लंबाई में बने बंक पर लेट गया।

नियमित ड्राइवर और दोनों मैकेनिक भी नीचे उतरे, नदी किनारे बैठ गए और बीड़ी पीने लगे।

शेषगिरि वाहन के आगे वाले हिस्से में अकेले ही बैठे रहे। कुछ मिनट बाद, वे मुड़े और लेटे हुए राहु को संबोधित किया।

‘पर्सी, मुझे ये बिल्कुल पसंद नहीं आया। वो मूर्ख ओथी कहाँ चला गया? क्या ये वही इलाका नहीं है जिसके बारे में हम अखबारों में अक्सर पढ़ते रहते हैं, जहाँ डाकुओं का बोलबाला है और जिस पर मान सिंह नाम के किसी व्यक्ति का राज है, जिसे ‘डाकुओं का बादशाह’ या ऐसा ही कोई नाम दिया गया है?’

लेकिन पर्सी सो गया था।

शेषगिरी ने ड्राइवर और दोनों मैकेनिकों की ओर मुँह किया, जो तीनों उसी की तरह दक्षिण भारतीय थे, और तमिल में पुकार कर कहा, 'क्या तुम जानते हो दोस्तों, कि यह इलाका डाकुओं से भरा हुआ है जो रात में छापा मारते हैं और किसी का गला कान से कान तक काट देते हैं?'

उस सवाल का जवाब देने के लिए किसी ने इंतजार नहीं किया। तीनों झट से उठे और जल्दी से बस में वापस चले गए और दरवाजा जोर से बंद कर दिया।

दरवाजे के जोर से बंद होने की आवाज से पर्सी की नींद खुल गई।

‘क्या तुम लोग एक आदमी को थोड़ी देर झपकी भी नहीं लेने दे सकते? बिना

उठे और फिर नीली पूंछ वाली मक्खियों की तरह वापस अंदर भागे। भगवान के लिए, अपना मन बना लो। अंदर रहो; या बाहर रहो।’

और ये कहते ही पर्सी करवट बदलकर दोबारा सोने की तैयारी करने लगा।

लेकिन शेष ने मौका देखकर अपना सवाल फिर से पूछा, 'जाग जाओ, पर्सी,' उसने आगे की सीट से पुकारा, 'क्या तुम्हें पता है कि हम उस इलाके में हैं जहां मान सिंह और उसके डाकू रहते हैं?'

‘वो क्या था?’ पर्सी ने नींद में बुदबुदाते हुए, बिना हिले-डुले कहा।

'जाग जाओ, आलसी कहीं के!' शेषगिरी ने एक बार फिर कहा, 'मैं तुम्हें तीसरी बार बता रहा हूँ कि यही वह इलाका है जहाँ मान सिंह और उसके खूंखार गुंडे रहते हैं।'

राहु उठ बैठा और अपने बिखरे बालों में हाथ फेरा। 'क्या तुम्हारा मतलब उस मान सिंह से है जिसके बारे में हमने अखबारों में इतना पढ़ा है?' उसने अविश्वास से पूछा।

'मैं बिल्कुल करता हूँ,' शेष ने जोर देकर उत्तर दिया, 'वही, और कोई नहीं।'

‘अरे वाह, क्या किस्मत है!’ पूरी तरह से जाग चुके पर्सी ने कहा। ‘काश मैं उस बदमाश से मिल पाता। यह एक दिलचस्प अनुभव होता। मुझे लगता है उसकी कई पत्नियां हैं।’

'तुम्हारा गला कौन काटेगा?' सेश ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

'यहाँ से—वहाँ तक,' पर्सी ने अपनी बात रखते हुए कहा।

उनकी आगे की बातचीत ओथी के लौटने से बाधित हो गई, जिसके साथ एक लंबा, बूढ़ा आदमी था। वह एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था, जिसका माथा ऊंचा था, लंबी दाढ़ी और मूंछें थीं, और एक बेहद आक्रामक दिखने वाली मूंछ थी। उसने ऐसी पतलून पहनी थी जो घुटनों के नीचे से तंग और ऊपर से ढीली थी। एक फीका भूरा सूती कोट उसकी गंदी कमीज को ढके हुए था। और उसकी आंखें भेदी थीं, जैसे स्टील-ग्रे रंग की।

ओथी ने विजयी भाव से घोषणा की, “मुझे यह आदमी पहाड़ी के दूसरी तरफ बैठा मिला। वह कहता है कि वह सिख है और एक नाव पूरी बस को पार ले जाएगी। उसने मुझे बताया कि नाव दूसरी तरफ जा चुकी है और आधे घंटे में लौट आएगी।”

फिर, उस बूढ़े सिख को संबोधित करते हुए, उसने पंजाबी में पूछा, 'आपने अपना नाम क्या बताया था, सिंह-जी?'

‘रणजीत सिंह,’ बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।

उनकी आवाज सुरीली थी और उनकी उम्र के हिसाब से आश्चर्यजनक रूप से दृढ़ थी।

‘अंदर आ जाइए, रणजीत सिंह जी,’ ओथी ने आतिथ्य सत्कार करते हुए कहा, ‘क्या आप चाय पीना चाहेंगे? थर्मस में थोड़ी सी चाय बची है।’ बूढ़े व्यक्ति ने विनम्रतापूर्वक चाय लेने से इनकार कर दिया, लेकिन बस में बैठ गए।

ओथी ने उसे पंजाबी में समझाते हुए कहा, 'मेरे सभी दोस्त दक्षिण भारत से हैं और इसलिए वे इस भाषा को नहीं समझ सकते।'

‘तो हम हिंदुस्तानी में बात करेंगे,’ उस बुजुर्ग व्यक्ति ने विनम्रतापूर्वक कहा, ‘क्या वे इसे समझते हैं?’

‘बिल्कुल,’ पर्सी ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘भारत के जिस हिस्से से हम आते हैं, वहां हम आम तौर पर तमिल और कन्नड़ बोलते हैं; और हां, अंग्रेजी भी। लेकिन हम सभी हिंदुस्तानी समझते हैं।’

बूढ़े व्यक्ति ने खुशी से मुस्कुराया।

फिर उन्होंने हिंदुस्तानी भाषा में पूछा, ‘अपने बारे में बताइए और आप यहाँ कैसे आए? जाहिर है आप इस इलाके के अजनबी हैं। क्या आप सरकार के सेवक हैं?’

इसके बाद ओथी ने संक्षिप्त विवरण देना शुरू किया और नौका पर उनकी उपस्थिति की परिस्थितियों को समझाया।

जैसे ही उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया, शेषगिरी ने लौटती हुई नौका को देखा और स्पष्ट रूप से राहत महसूस करते हुए अंग्रेजी में कहा, 'भगवान का शुक्र है, नौका लौट रही है।'

उसकी बात सुनकर पर्सी ने सिख को समझाया, 'मेरा दोस्त हमारी यात्रा जारी रखने के लिए बहुत उत्सुक है। उसने इन इलाकों में रहने वाले मान सिंह नाम के एक कुख्यात डाकू के बारे में कहानियां सुनी हैं और उससे मिलने से बहुत डरता है।'

फिर उसने बूढ़े आदमी से पूछा, 'क्या ये कहानियां सच हैं? क्या आपने कभी इस मान सिंह को देखा है?'

सिख की आँखों में एक चंचल चमक आ गई। लेकिन उसने सवाल का जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने एक और सवाल पूछा, जो उन तीनों से एक साथ पूछा गया था।

'मुझे बताइए, साहबों, क्या इस बदमाश डाकू की कहानियां सचमुच दक्षिण भारत तक पहुंच रही हैं?'

'हां,' शेषगिरी ने जवाब दिया, 'और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी। हम अक्सर अखबारों में उनके साहसिक छापों के बारे में पढ़ते हैं, और यह भी कि पुलिस वर्षों से उन्हें पकड़ने की कोशिश कर रही है, लेकिन असफल रही है।'

'आपके इलाके में लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं?' बूढ़े सिख ने पूछा। वह काफी उत्सुक लग रहा था।

'खैर,' पर्सी राहु ने हंसते हुए बीच में कहा, 'यह तो लोगों पर निर्भर करता है। मेरे दोस्त जैसे लोग,' उन्होंने सिर हिलाकर शेषगिरी की ओर इशारा किया, 'उसे देखते ही जान लेने वाला खूनी हत्यारा समझते हैं और उससे बहुत डरते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मैं उससे मिलना और बात करना चाहूंगा। मुझे नहीं पता कि मेरे दूसरे दोस्त ओथी का क्या विचार है, लेकिन आप उससे खुद पूछ सकते हैं।'

ओथी ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा, 'शानदार आदमी! बिलकुल मेरे जैसा। काश मैं भी उसके साथ शामिल हो पाता। मेरा मतलब सचमुच यही है। मैं कुछ लोगों को लूटना चाहता हूँ।'

'मुझे आश्चर्य है कि तुम कितने ईमानदार हो,' बूढ़े व्यक्ति ने धीमी आवाज़ में सोचा। बाकी सबने उसकी बात सुनी और चुपचाप उसके इस कथन के कारण पर विचार करने लगे।

इसी बीच नौका आ चुकी थी।

उन्होंने देखा कि इसका निर्माण सरल था, जिसमें लगभग पच्चीस फीट लंबा और आधा चौड़ा बांस से बना एक चबूतरा था, जो दो साधारण नदी-नावों के ऊपर रखा गया था, और ये नावें चबूतरे द्वारा एक दूसरे के समानांतर रखी गई थीं।

नौका को किनारे के करीब नहीं लाया जा सका, इसलिए उसे नदी में लगभग बीस फीट दूर रोक दिया गया। चालक दल में चार पुरुष और एक नेता शामिल थे। इनमें से दो पुरुषों ने नदी की तलहटी में कीचड़ में लंबे बांस के डंडे गाड़ दिए। बेड़ा का किनारा डंडों से टिका दिया गया, जिससे वह धारा के बल से नदी में बहने से रुक गया।

नेता पानी में कूद गया और तैरते हुए किनारे पर आ गया। फिर वह बस की ओर चल पड़ा।

ओथी और रणजीत सिंह फिर से बाहर आ गए थे। ओथी ने नाव के चालक दल के नेता को पंजाबी में संबोधित किया।

‘दोस्त, हमें जल्दी है और हम जल्द से जल्द दूसरी तरफ पहुंचना चाहते हैं। इस बस से दूसरी तरफ जाने का किराया कितना है?’

नेता ने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया, 'दस रुपये।'

‘ठीक है,’ ओथी ने सहमति जताते हुए कहा, ‘अब क्या किया जाए?’

उस आदमी ने पेशेवर अंदाज़ में बस को देखा, मानो उसका आकार और वज़न नाप रहा हो। फिर उसने कहा, 'नाव को किनारे के पास नहीं लाया जा सकता। पानी बहुत कम गहरा है और नावें रेत में फंस जाएंगी। आपको अपनी बस नदी में नाव तक ले जानी होगी। घबराइए मत; पानी मुश्किल से दो फुट गहरा है।'

इसी बीच बस के सभी यात्री उतर चुके थे और नदी किनारे खड़े होकर स्थिति का जायजा ले रहे थे।

ओथी ने पूछा, 'फेरी पर पहिए प्लेटफॉर्म पर कैसे चढ़ेंगे?'

नेता ने बड़े ही घमंडी लहजे में कहा, “हम पहले भी कई बसों और ट्रकों से नदी पार करा चुके हैं। मेरे पास दो तख्ते हैं। हम उनमें से प्रत्येक का एक सिरा नदी के तल में रेत में गाड़ देंगे और दूसरा सिरा बेड़ा पर रख देंगे। लेकिन ध्यान रखना कि तुम्हारे चारों पहिये तख्तों पर टिके रहें और फिसल न जाएं।”

ऐसा कहते हुए उसने नाव पर आलस्य से बैठे हुए अन्य दो नाविकों को चिल्लाकर बुलाया।

‘अरे दोस्तों! तख्ते ले आओ।'

जिन लोगों से बात की गई, उनमें से प्रत्येक व्यक्ति उस नाव में सवार हो गया जिस पर बेड़ा बना हुआ था और लकड़ी का एक तख्ता बाहर निकाला। जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से वे देख सकते थे कि प्रत्येक तख्ता लगभग आठ फीट लंबा था, लेकिन अठारह इंच से कम चौड़ा था।

नावों के मुखिया ने अपने पैरों से, अंगूठे से एड़ी तक, बस के आगे के पहियों के टायरों के केंद्र के बीच की दूरी नापी। फिर वह पानी में चलकर नाव के चबूतरे पर चढ़ा और फिर से उतनी ही दूरी, एड़ी से पंजे तक, ध्यान से नापी, और अपने शुरुआती और अंतिम बिंदु को चिह्नित किया।

उनके सहायकों ने तख्तों को उठाया और उनके सिरों को पानी में धकेल दिया,

इस बात का ध्यान रखते हुए कि प्रत्येक तख्ते की चौड़ाई (लगभग अठारह इंच) का मध्य भाग चिह्नित स्थानों से मेल खाए। इसके बाद, वे बारी-बारी से तख्तों पर खड़े हुए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके सिरे नदी के तल में रेत में मजबूती से धंस जाएं।

नेता ने बेपरवाही से घोषणा की, 'हम अब तैयार हैं, बाकी की जिम्मेदारी आपकी है।'

‘भगवान के लिए, ओथी, नियमित ड्राइवर को ही गाड़ी चलाने दो,’ पर्सी राहु ने समझदारी से सलाह दी। ‘फिर अगर वह गलती से गाड़ी नदी में फेंक दे, तो हम ज़िम्मेदार नहीं होंगे। अगर हममें से कोई उसे चलाए और कुछ गड़बड़ हो जाए, तो ड्राइवर मुख्यालय लौटते ही ज़रूर कहेगा कि हमने उसे गाड़ी नहीं चलाने दी। फिर सौ-एक सवाल पूछे जाएँगे।’

ओथी मान गई और ड्राइवर को पुकारते हुए बोली, 'सत्तार, तुम नियमित ड्राइवर हो। इसलिए गाड़ी की कमान संभालो और अपना काम करो।'

ड्राइवर सत्तार ने बस को देखा और फिर उन दो पतले तख्तों को देखा। इसके बाद उसने संदेह से अपनी ठुड्डी खुजलाई।

‘चलो भाई,’ ओथी ने कहा, ‘जल्दी करो। डरो मत। यह बहुत आसान है। मैं इसे खुद ही चुटकियों में कर सकता हूँ।’

‘तो फिर आप क्यों नहीं चलते, साहब?’ ड्राइवर ने तीखे लहजे में पूछा।

‘क्योंकि तुम नियुक्त ड्राइवर हो, सत्तार। मैं यह जिम्मेदारी क्यों लूं,’ ओथी ने थोड़ी झुंझलाहट भरी आवाज में जवाब दिया।

ड्राइवर ने एक बार फिर बस के पहियों और उसके सामने मौजूद लकड़ी के संकरे तख्तों के बीच की दूरी का जायजा लिया, जो फेरी के प्लेटफार्म की ओर जा रहे थे।

फिर वह ड्राइवर की सीट पर बैठ गया।

उसने सेल्फ-स्टार्टर दबाया, इंजन को कुछ क्षणों के लिए निष्क्रिय अवस्था में चलने दिया, और फिर उसे तेज़ गति से चलाया। इंजन को फिर से धीरे-धीरे चलने देने के बाद, उसने क्लच दबाया, पहला गियर लगाया, और इंजन को थोड़ा रेव करते हुए, धीरे से अपना पैर क्लच पैडल से हटा लिया।

धीरे-धीरे बस नदी में आगे बढ़ी और अंत में उसके आगे के पहिये दोनों तख्तों

तक पहुँच गए। दर्शकों ने देखा कि पानी दोनों तरफ के फुटबोर्ड तक आ गया था।

फिर आगे के पहिए दोनों तख्तों की ढलान पर चढ़ने लगे।

लेकिन ड्राइवर ने इंजन को पर्याप्त गति नहीं दी थी, जिसके कारण इंजन लड़खड़ाकर रुक गया और भार के कारण बंद हो गया। उसने क्लच छोड़ा और आगे के पहिए धीरे-धीरे तख्तों से लुढ़कते हुए पानी में जा गिरे।

'अगली बार और तेज़ी से दौड़ो, सत्तार,' ओथी चिल्लाई, 'अब फिर से कोशिश करो।'

ड्राइवर ने एक बार फिर इंजन चालू किया और पहला गियर लगाया। एक बार फिर आगे के पहिए तख्ते पर चढ़ गए। फिर इंजन बंद हो गया। ड्राइवर ने पैर से ब्रेक दबाया और बस को वहीं रोक दिया।

'आगे बढ़ो, इंजन को दौड़ाओ। डरो मत,' ओथी ने सलाह दी।

सत्तार ने तीसरी बार कोशिश की। लेकिन वह घबराया हुआ था और एक बार फिर गड़बड़ कर बैठा। इस बार ब्रेक पैडल से पैर हटाकर एक्सीलरेटर पर रखने में उसने समय बर्बाद कर दिया। जैसे ही उसने सेल्फ-स्टार्टर दबाया, आगे के पहिये पीछे की ओर पानी में चले गए। इंजन चालू हुआ और फिर बंद हो गया।

'अरे यार, तुम्हें क्या हो गया है?' ओथी ने हड़बड़ाते हुए कहा। 'देखो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।'

अपने जूतों और मोजों की परवाह किए बिना वह पानी में से होते हुए आगे बढ़ा, सत्तार को एक तरफ हटने का इशारा किया और उसकी जगह ड्राइवर की सीट पर बैठ गया।

इसके बाद ओथी ने इंजन स्टार्ट किया, क्लच दबाया, पहला गियर लगाया, इंजन को पूरी रफ्तार से दौड़ाया और क्लच छोड़ दिया।

बस झटके से आगे बढ़ी। उसके आगे के पहिये तख्तों पर चढ़ गए और बेड़ा के तल पर आ गए। पीछे के पहिये भी उसके पीछे आने लगे।

लेकिन किए गए कई प्रयासों में, और आगे के पहियों के आगे-पीछे हिलने के कारण, दाईं ओर का तख्ता टेढ़ा हो गया था। दाहिना पिछला पहिया उससे लुढ़क कर ज़ोरदार छपछपाहट के साथ पानी में गिर गया, और अपने साथ बाएँ पिछले पहिये को भी खींच ले गया, जो दूसरी छपछपाहट के साथ उसके पीछे आ गया।

बस के आगे के दोनों पहिये अब राफ्ट पर टिके हुए थे, जबकि पीछे के दोनों

पहिये पानी में थे। असमान वजन के कारण राफ्ट का नज़दीकी सिरा थोड़ा पानी में डूब गया, जबकि दूर वाला सिरा पानी की सतह से ऊपर उठ गया।

'अब तुमने कर ही दिया,' पर्सी ने अनावश्यक रूप से कहा।

ओथी ने इंजन को फिर से चालू करने की कोशिश की, जो एक बार फिर बंद हो गया था। लेकिन एग्जॉस्ट पाइप का सिरा पानी की सतह के नीचे था, और इसके कारण उत्पन्न बैक-प्रेशर ने इंजन को चालू होने से रोक दिया।

वह ड्राइवर की सीट से बाहर निकला, आगे के मडगार्ड के ऊपर से चढ़कर राफ्ट पर कूद गया, और वहीं से उसने स्थिति का जायजा लिया।

एक मिनट बाद उसने कहा, 'चलो लड़कों, तख्तों को वापस लगाओ और इस बस को ऊपर धकेलने की कोशिश करो।' उन्होंने ऐसा ही किया और पूरी ताकत से धक्का दिया। लेकिन बस का वजन और ढलान दोनों मिलकर उसे एक इंच भी हिला नहीं पाए।

समय ठीक शाम के 5.30 बजे का था।

ओथी ने बेड़ा चला रहे दल के नेता से बात की। 'क्या आस-पास कोई गाँव नहीं है? क्या आप कुछ और लोगों को मदद के लिए नहीं ला सकते? मैं आपको दस रुपये अतिरिक्त दूंगी।'

उस भले आदमी ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा, 'सबसे नज़दीकी गाँव सात मील दूर है, साहब। वैसे भी अब बहुत देर हो चुकी है, और हमें भी घर जाना चाहिए क्योंकि इस इलाके में अंधेरा होने के बाद कोई बाहर नहीं रुकता। यह एक खतरनाक इलाका है। मान सिंह यहीं पास में रहता है।'

और वह भावहीन हंसी हंसा।

पर्सी को लगा कि उसने उसे बूढ़े सिख के साथ नजरों का आदान-प्रदान करते हुए पकड़ लिया है।

फिर उन्होंने आगे कहा, ‘साहिब, हम कल सुबह वापस आएंगे और अपने साथ कुछ आदमियों को लाएंगे। लेकिन अपनी बस को नदी से निकालने में आपको दस रुपये नहीं, बल्कि सौ रुपये लगेंगे। और आपको यह जल्दी करना होगा। नहीं तो आपको और भी ज्यादा खर्च करना पड़ेगा; क्योंकि आपने हमारी नाव को रोक दिया है और हमारा कारोबार ठप हो जाएगा। अपने सौ रुपये तैयार रखें—यानी, अगर आप सब सुबह तक जीवित और यहाँ मौजूद रहे और पैसा आपके पास हो।’

इन शब्दों को सुनकर वह और उसके चारों साथी अर्थपूर्ण ढंग से हँस पड़े।

फिर वे पानी में चलकर किनारे की ओर बढ़ने लगे। ओथी ने उनके पीछे से पुकारा, 'वापस आओ तुम बदमाशो, चलो एक बार फिर बस को बेड़ा पर धकेलने की कोशिश करते हैं।'

नेता ने जवाब दिया, “हम काफी नहीं हैं और इसके लिए एक दर्जन और लोगों की जरूरत होगी। इसके अलावा, जैसा कि मैंने अभी आपको बताया है, जल्द ही अंधेरा हो जाएगा और उस समय बाहर जाना हमारे लिए ठीक नहीं होगा। साहबों, रात भर सतर्क रहना,” उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा, “और मेरी सलाह मानो—जागते रहो! यही सबसे जरूरी है।”

एक बार फिर उन सभी ने खिलखिलाकर हँसी हँसी और फिर वहाँ से चले गए। केवल बूढ़ा सिख रणजीत सिंह ही वहीं रह गया।

बस में आए छहों आदमी एक-दूसरे को खाली निगाहों से देखने लगे।

'साहिबों, मैं आपको रात में बस में रहने की सलाह नहीं देता।'

यह एक बूढ़े सिख की आवाज थी।

‘कई खतरे हैं। एक तो यह कि नदी का जलस्तर अचानक बढ़ सकता है और आप डूब सकते हैं। इसके अलावा, और भी खतरे हैं।’ उनकी आवाज धीमी होकर समाप्त हो गई।

‘क्या खतरे हैं?’ ओथी ने जानबूझकर पूछा।

रणजीत सिंह ने बस एक रहस्यमयी मुस्कान दी, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

'क्या आप मान सिंह और उसके डाकुओं की बात कर रहे हैं?' शेषगिरी ने घबराते हुए पूछा।

“शायद अपने डाकुओं को,” बूढ़े आदमी ने अस्पष्ट ढंग से उत्तर दिया। फिर वह ज़ोर से हँस पड़ा।

शेषगिरी ने अनमने ढंग से सोचा, आखिर वह कहना क्या चाह रहा है?

“अगर आप कृपा करके आज रात मेरी इस साधारण सी झोपड़ी में ठहर जाएँ, साहब, और मेरी सीमित मेहमाननवाज़ी में जो भी भोजन उपलब्ध है, उसे स्वीकार कर लें, तो कम से कम आप सुरक्षित तो रहेंगे। कल आप अपने रास्ते पर निकल पड़ेंगे। यहाँ से आपका रास्ता सिर्फ़ एक मील दूर है,” उन्होंने क्षमा मांगते हुए कहा।

‘पर्सी! ओथी!’ भयभीत शेषगिरी ने अंग्रेजी में बीच में ही टोकते हुए कहा,

'भगवान के लिए, चलो मान लेते हैं। इस भयानक जगह पर खुले में रात बिताना बहुत खतरनाक है।'

इसलिए उन्होंने अपने पलंग लपेटे, और उनमें से प्रत्येक छह लोग, अपना-अपना सूटकेस, बिस्तर और बस में छूटी हुई अन्य चीजें लेकर, उस बूढ़े व्यक्ति के पीछे चलने लगे, जो नदी के किनारे-किनारे नीचे की ओर चलते हुए आगे-आगे चल रहा था।

कम से कम दूरी के अपने अनुमान के मामले में तो वह काफी हद तक सही था, क्योंकि वे अभी एक मील ही चले थे कि उन्हें पानी के किनारे से लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक नीम का पेड़ दिखाई दिया। पेड़ के नीचे घास-फूस की एक झोपड़ी थी।

जैसे ही वे पास पहुँचे, झोपड़ी से एक आदमी निकला, जो दूर से देखने पर जितनी बड़ी लग रही थी, उससे कहीं अधिक बड़ी थी। वह व्यक्ति काफी युवा था, उसकी काली आँखें भेदक थीं, उसका चेहरा लंबा और अंडाकार था और दाढ़ी मध्यम आकार की थी। वह लंबा और गठीला था, सिखों जैसी पगड़ी और उसी तरह की पतलून पहने हुए था; लेकिन कोट नहीं था। उसकी पतलून के बाहर एक लंबी कमीज लटक रही थी, जो लगभग उसके घुटनों तक पहुँच रही थी।

'वह मेरा सेवक है,' रणजीत सिंह ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा। फिर उस व्यक्ति को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'गंगा, साहब और उनके सेवकों के लिए कुछ चाय तैयार करो।'

'यह पहले से ही तैयार है, हुजूर,' नौकर ने तुरंत उत्तर दिया।

झोपड़ी आयताकार थी, जिसकी छत घास की बनी थी और ज़मीन में गड़ी हुई लगभग दस फुट ऊँची एक लंबी बांस की टहनी पर टिकी थी, जिसके दोनों सिरे दो शाखाओं से बंधे थे। छत दोनों तरफ ढलानदार थी। देखने में झोपड़ी खाली लग रही थी, सिवाय एक छोटे से स्टील के बक्से और उसके ऊपर रखे कुछ कपड़ों के गट्ठों के, जो दूर वाले कोने में रखे थे।

नए आने वालों ने यह भी देखा कि पीछे की तरफ एक छोटी सी झोपड़ी थी। यह अब तक बड़ी इमारत के पीछे दिखाई नहीं दे रही थी। इस दूसरी झोपड़ी से खाना पकने की स्वादिष्ट खुशबू आ रही थी।

'अपना सामान अंदर उस कोने में रख दीजिए,' बुजुर्ग ने आमंत्रित किया। 'फिर आप नदी में जाकर हाथ-मुँह धो सकते हैं; या चाहें तो स्नान भी कर सकते हैं। यह

बिल्कुल सुरक्षित है; नदी के इस हिस्से में मगरमच्छ नहीं हैं। इसके बाद खाना परोसा जाएगा। यह थोड़ा सा ही भोजन है, साहब,' उन्होंने क्षमा मांगते हुए कहा, 'लेकिन जो भी भोजन मेरे पास है, आप सहभागी हो सकते हैं।'

'बहुत-बहुत धन्यवाद, सिंह जी,' ओथी ने उत्तर दिया। 'यह आपकी बहुत बड़ी कृपा है। मुझे वास्तव में डर है कि हम आपको बहुत असुविधा पहुँचा रहे हैं, साथ ही आपके भंडारित भोजन का भी उपयोग कर रहे हैं। कृपया चिंता न करें। हमारे पास कुछ डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ हैं जो इस अवसर के लिए पर्याप्त होंगे और हम आपसे निवेदन करते हैं कि कृपया उन्हें हमारे साथ साझा करें।'

पर्सी और सेश ने भी धन्यवाद व्यक्त किया।

उनके नए मित्र ने कहा, 'आप लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद, साहब, लेकिन जब तक आप रणजीत सिंह के मेहमान हैं, तब तक आप उनकी मेहमाननवाजी को अस्वीकार नहीं कर सकते।'

उन्हें समझ आ गया था कि अगर वे ऐसा करते रहे तो बूढ़े आदमी को दुख होगा, भले ही खुलकर अपमान न हो। इसलिए उन्होंने कृतज्ञता के साथ उनकी बात मान ली।

तभी पीछे वाली झोपड़ी से नौकर गंगा चाय की एक बड़ी केतली और सात संगमरमर के मग लेकर निकला। उसने सबसे पहले अपने मालिक को चाय परोसी; फिर ओथी, शेषगिरी और राहु को; और अंत में बस चालक और दोनों मैकेनिकों को।

चाय से भरपूर ताजगी पाकर वे छहों लोग साबुन और तौलिए लेकर नदी में नहाने के लिए चल दिए। आधे घंटे के भीतर ही वे वापस आ गए, और अब एक और सुखद आश्चर्य उनका इंतजार कर रहा था।

मुख्य झोपड़ी के सामने एक साफ चटाई बिछाई गई थी। जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता जा रहा था, एक लालटेन जलाकर चटाई के बीचोंबीच रख दी गई थी। एक तरफ एक बड़ी एल्युमीनियम की थाली पर ताज़ी बनी हुई चपातियों का ढेर लगा था—लगभग पचास चपातियाँ रही होंगी; और थाली के बगल में एक बड़ा देगची (एक गहरा एल्युमीनियम का बर्तन) रखा था, जिसमें कुछ और था। एक पल के लिए उन्हें पता नहीं चला कि वह क्या था, क्योंकि देगची ढका हुआ था।

'कृपया बैठ जाइए, साहबों,' रणजीत सिंह ने आमंत्रित किया; और फिर अपने सेवक से कहा, 'गंगा, सज्जनों के परिचारकों के लिए वहाँ एक और चटाई बिछा दो।'

बूढ़े आदमी ने डेगची का ढक्कन खोला तो उसके अंदर की सामग्री दिखाई दी—स्वादिष्ट दिखने वाली और स्वादिष्ट सुगंध वाली फूलगोभी और घर का बना पनीर, जिसे करी के रूप में बनाया गया था।

उन्होंने कहा, 'ये रही प्लेटें, लेकिन मुझे खेद है कि आपको हाथों से ही खाना पड़ेगा। मेरे पास करी परोसने के लिए एक बड़े चम्मच के अलावा कोई चम्मच नहीं है। और साहब, आप जितनी चाहें उतनी चपातियाँ ले लीजिए। रसोई में पीछे की तरफ और भी बहुत सारी हैं।'

करी स्वादिष्ट थी और चपातियाँ नरम और एकदम सही तली हुई थीं। अगले दस मिनट तक कोई नहीं बोला, क्योंकि सब लोग सामने परोसे गए भोजन में इतने मग्न थे। शेषगिरि बार-बार कहते थे कि वे अपने जैसे ब्राह्मण के हाथ का बना खाना ही खाएंगे, लेकिन फिर भी उन्हें इतनी भूख लगी थी कि उन्होंने अपने साथियों के साथ जी भरकर खाना खाया।

इसी बीच, नौकरानी गंगा ने ड्राइवर और दो मैकेनिकों को खाना परोसा, जो उसके द्वारा बिछाई गई दूसरी चटाई पर बैठ गए थे।

सिख बीच-बीच में ऊपर देखता और संतुष्टि भरी हल्की मुस्कान बिखेरता, क्योंकि वह अपने मेहमानों को करी और चपातियाँ बड़े चाव से खाते हुए देखकर तृप्ति से मुस्कुरा रहा था।

लगभग पंद्रह मिनट बाद, उन्होंने खाना धीमा कर दिया। लगभग सारी करी खत्म हो चुकी थी; और चपातियाँ भी। उन्होंने खाने का भरपूर आनंद उठाया था।

अंत में, हाथ में पानी से भरी बाल्टी लिए, गंगा ने कुछ ही दूरी पर खड़े होकर उन्हें इशारा किया। जैसे ही उसने उन पर पानी उछाला, उन्होंने एक-एक करके अपने हाथ धोए।

पेट भर जाने के बाद पर्सी सोच रहा था, और उसके विचारों ने उसे थोड़ा थका दिया था। एक-दो बार उसने रणजीत सिंह से बात करने का नाटक किया, लेकिन आखिरी क्षण में हिचकिचा गया। अंत में उसने अपने मन की बात कह ही दी।

'सिंह जी, मुझे बताइए,' उसने मासूमियत से हिंदुस्तानी में बूढ़े आदमी से पूछा, 'जब यहाँ सिर्फ आप और आपका नौकर ही हैं, तो आपके पास इतना सारा खाना और चाय कैसे तैयार रहती है? क्या आपके यहाँ अक्सर मेहमान या हमारे जैसे लोग आते-जाते रहते हैं?'

एक पल के लिए बूढ़े सिख के चेहरे से उनकी जानी-पहचानी हल्की मुस्कान गायब हो गई। लेकिन सिर्फ एक पल के लिए। फिर वह पहले की तरह ही सौम्य और सुखद होकर लौट आई।

नहीं, साहब; आप जैसे मेहमान बहुत कम आते हैं। लेकिन अक्सर कई बसें और ट्रकों के काफिले इस रास्ते से गुजरते हैं और फेरी के कारण रुक जाते हैं। ड्राइवर भूखे होते हैं और मेरा खाना खाने यहाँ आते हैं। ज़ाहिर है, तब मैं इसे बेचकर अपना धंधा शुरू कर देता हूँ।

पर्सी को याद था कि घाट पर नरम रेत में वाहनों के पदचिह्न अपेक्षाकृत कम थे। साथ ही, नौका चालक दल ने स्पष्ट रूप से कहा था कि इस क्षेत्र में अंधेरा होने के बाद बाहर रहना अत्यंत खतरनाक माना जाता है और ऐसा कभी नहीं किया जाता। क्या उनका मेज़बान जानबूझकर झूठ बोल रहा था? घाट पर यातायात बहुत कम था; उन्होंने पिछले एक घंटे से किसी भी प्रकार का वाहन नहीं देखा था।

'ठीक है, रणजीत जी,' ओथी ने बीच में ही कहा, 'तो आपको वास्तव में हमें उस बेहतरीन भोजन के लिए भुगतान करने की अनुमति देनी होगी जो आपने हमारे सामने परोसा और जिसका हमने दिल खोलकर आनंद लिया।'

बूढ़े आदमी ने विरोध में हाथ उठाया। 'नहीं, साहब। इस बार आप मेरे मेहमान हैं,' उसने समझाया, 'लेकिन शायद अगर आप फिर कभी इस रास्ते से गुजरें तो मैं आपसे थोड़ा ब्याज सहित शुल्क ले सकता हूँ,' और वह अपनी बात पर धीरे से हँस पड़ा, क्योंकि उसे वह एक अच्छा मजाक लगा।

हाथ धोने के बाद वे थोड़ी और चाय पीने के लिए बैठ गए।

फिर उस बूढ़े आदमी ने झोपड़ी के अंदर रखे स्टील के संदूक से एक सीधी और काफी काली पड़ चुकी मिट्टी की पाइप निकाली, साथ ही पिसे हुए तंबाकू से भरी एक छोटी कपड़े की थैली भी निकाली। उसने पाइप में तंबाकू भरा, उसे जलाया और संतुष्टि से कश लिया, जिससे उसकी नाक और होठों से नीले धुएं की एक धारा निकली।

उन्होंने उनसे कहा, 'साहिबों, अपने बारे में कुछ और बताइए। क्या आप सरकार के लिए काम नहीं करते? क्या आप सरकार के सेवक नहीं हैं?'

ओथी ने पंजाबी में बोलना शुरू किया और उस बूढ़े व्यक्ति को फिर से बताया कि वे दक्षिण भारत में एक निजी औद्योगिक संगठन के कर्मचारी हैं, और उन्हें श्रीनगर

में कंपनी द्वारा खोली गई नई शाखा तक बस चलाने का काम सौंपा गया था।

रणजीत सिंह ओथी की हर बात में बहुत रुचि दिखा रहे थे और उन्होंने कई सवाल पूछे कि जिस कंपनी से वे जुड़े थे वह दक्षिण में किस तरह का काम कर रही थी, वे क्या काम कर रहे थे, उनका वेतन और पद क्या था, इत्यादि। ओथी ने उनके सभी सवालों के जवाब विस्तार से दिए और इस बात से प्रसन्न हुए कि सिख उनकी बातों को इतने ध्यान से सुन रहे थे।

तब बूढ़े आदमी ने कहा, "कुछ देर पहले, नदी किनारे बस में बैठे हुए, आपने ज़िक्र किया था कि यह साहब," (यहाँ उन्होंने अपनी मिट्टी की पाइप की डंडी से शेषगिरी की ओर इशारा किया) "डाकू मान सिंह से बहुत डरते हैं। ऐसा क्यों है? दक्षिण भारत में उनके बारे में क्या अफवाहें फैल रही हैं?"

क्या यह उनकी कल्पना थी, या उनकी आवाज में पीड़ा का भाव था?

पर्सी ने प्रश्न सुना और फिर से सोचने लगा।

ओथी ने हंसते हुए जवाब दिया और शेष के घुटने पर हल्के से थपथपाया। "देखिए, सिंह जी, मेरा यह दोस्त अपने इलाके से कभी बाहर नहीं निकला। वह अखबारों का बहुत शौकीन है, जिनमें बताया गया है कि यह मान सिंह एक क्रूर और खून का प्यासा डाकू है जो पैसे के लिए हर किसी को मार डालता है। स्वाभाविक रूप से, जब हमारी बस नदी में गिरी, तो उसे डर था कि कहीं यह डाकू रात में आकर हम सबका गला न काट दे," और वह खिलखिलाकर हंसा।

लेकिन रणजीत सिंह बिल्कुल भी खुश नहीं दिखे। उनकी मुस्कान गायब हो गई और चेहरा गंभीर हो गया। अब उनके चेहरे पर एक अजीब सा भाव था। यह आक्रोश और दुःख का मिला-जुला भाव था; क्षमा का भाव, मानो कोई अपनी बात समझाने की पुरजोर कोशिश कर रहा हो; एक ऐसी पीड़ा की अभिव्यक्ति, जो अपने बचाव को व्यक्त करने और अपनी व्याख्या देने के लिए संघर्ष कर रही हो।

उस प्राचीन व्यक्ति की आंखों और चेहरे में बदलते भावों को देखकर, पर्सी पहले से कहीं अधिक गहराई से चिंतन करने लगा।

उसके मन में जो भी विचार आए, वे न तो संतोषजनक थे और न ही सुकून देने वाले। पर्सी ने चारों ओर नज़र घुमाई और पाया कि रात का घना अंधेरा छा चुका था और चटाई पर जल रही मंद और टिमटिमाती लालटेन की रोशनी के संकरे घेरे के ठीक बाहर से शुरू हो रहा था।

कुछ मिनट बाद, शेषगिरी ने कहा, 'साढ़े नौ बज गए हैं और मुझे नींद आ रही है। क्या आप लोग मुझे सोने दे सकते हैं? लेकिन आप लोग बातें करते रह सकते हैं। इससे मुझे कोई परेशानी नहीं होगी।'

हालांकि अब तक उन्होंने अंग्रेजी समझने या बोलने की क्षमता का कोई संकेत नहीं दिया था, फिर भी रणजीत सिंह ने स्पष्ट रूप से समझ लिया कि क्या कहा गया है। इसलिए उन्होंने बीच में ही कहा, 'अगर यह सज्जन या आप सभी थके हुए हैं, तो चलिए सोने चलते हैं।'

'मुझे लगता है यह एक बेहतरीन विचार है,' ओथी ने उठते हुए कहा।

वे सब उठ गए। इस बीच, अपना खाना खत्म करने के बाद, बस चालक और दोनों मैकेनिक दूसरी चटाई पर लेट गए थे और गहरी नींद में सो गए थे।

'साहिबों, आप सभी को झोपड़ी के अंदर सोना होगा। जी हाँ, आपके नौकर भी। मैं प्रवेश द्वार के सामने सोऊंगा और बाहर हल्की रोशनी में लालटेन जलाए रखूंगा।'

ओथी एक पल के लिए झिझका। फिर उसने कहा, 'सिंह जी, मुझे डर है कि साल के इस समय अंदर बहुत गर्मी होगी। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं यहीं बाहर इस चटाई पर सोना पसंद करूंगा। यहाँ ठंडक रहेगी।'

सिख ने कुछ अधीरता से उसकी ओर मुड़ते हुए कहा, 'कृपया मेरी बात मानिए, साहब; आपके लिए बाहर सोना सुरक्षित नहीं है। न ही आपके नौकरों के लिए। उन्हें भी आप तीनों के साथ झोपड़ी के अंदर सोना होगा। अंदर पर्याप्त जगह है।'

क्षण भर के लिए, ओथी को इस बात का विरोध करने का मन हुआ। वह इस तरह की गर्म गर्मी की रात में पाँच अन्य मनुष्यों के साथ एक झोपड़ी की चारदीवारी में बंद नहीं रहना चाहता था। लेकिन बूढ़ा सिख पहले ही मुँह फेर चुका था, मानो यह मानकर कि उसकी बात मान ली जाएगी। वह दूसरी चटाई पर सो रहे तीन आदमियों के पास गया और बारी-बारी से उनके कंधे को हल्के से हिलाकर उन्हें जगाया। जैसे ही वे तीनों नींद से उठ बैठे, उसने अपने दाहिने हाथ से घास की बड़ी झोपड़ी की ओर इशारा किया और हिंदुस्तानी में कहा, 'अंदर चलो'।

वे तीनों आज्ञाकारी होकर उठे और घास की झोपड़ी की ओर आए।

इसी बीच पर्सी ने ओथी की बाईं कोहनी पर हाथ रखकर उसके कान में अंग्रेजी में फुसफुसाया, "हमें उसकी बात सुननी होगी और अंदर सोना होगा। मुझे लगता है मैं कारण का अंदाजा लगा सकता हूँ, लेकिन अभी तुम्हें बताने का समय नहीं है। भगवान

जाने वह बूढ़ा शैतान अंग्रेजी समझता है या नहीं।”

इस समय तक रणजीत सिंह वापस आ रहे थे। उन्होंने जिस चटाई पर उन्होंने अभी-अभी भोजन किया था, उसे आयताकार झोपड़ी के एक तरफ बिछा दिया और इशारा किया कि तीनों उस पर सिर बीच में और पैर बाहर की ओर करके सोएं।

फिर उसने बस चालक को वह दूसरी चटाई लाने को कहा जिस पर वे अभी सो रहे थे। चालक ने उसकी बात मान ली। रणजीत सिंह ने कहा कि उसे आयताकार झोपड़ी के दूसरी तरफ बिछा दिया जाए और उन तीनों को उस पर सोने का निर्देश दिया, सिर बीच की ओर और पैर बाहर की ओर।

कुछ ही मिनटों में छहों पुरुषों ने अपनी-अपनी पलंगें दोनों चटाइयों पर बिछा लीं। फिर वे उन पर उसी स्थिति में लेट गए जिस स्थिति में बूढ़े व्यक्ति ने बताया था। पर्सी झोपड़ी के प्रवेश द्वार के सबसे पास था, शेषगिरी उसके बगल में और ओथी सबसे दूर।

इसी बीच रणजीत सिंह ने प्रवेश द्वार पर अपना साधारण पलंग बिछा दिया। लेटने से पहले उन्होंने लालटेन की बाती को धीमी कर दिया और उसे झोपड़ी के ठीक बाहर, अपनी पहुँच में रख दिया। रात को आराम से लेटते हुए उन्होंने सबको कहा कि वे निडर होकर चैन से सोएँ।

पर्सी बुरी तरह थका हुआ था और उसे नींद की बहुत तीव्र इच्छा हो रही थी। लेकिन उसने इस भावना से जूझते हुए खुद को जगाए रखने की पूरी कोशिश की। कुछ ही मिनटों में, दूर की तरफ सो रही ओथी खर्राटे लेने लगी—हर सांस के साथ एक तेज़, गड़गड़ाहट की आवाज़; और फिर एक गहरी, कर्कश सांस।

शेष की सांसें नियमित थीं, जिससे संकेत मिलता था कि वह भी सो गया था।

एक मैकेनिक नींद में बड़बड़ाने लगा। बाकी दो आदमियों या दरवाजे पर खड़े रणजीत सिंह की तरफ से कोई आवाज नहीं आई।

पर्सी सोचने लगा कि वह ओथी का शुक्रगुजार है कि वह इतना शोर मचा रहा है। इससे उसे जागते रहने में मदद मिलेगी। क्योंकि हर हाल में उसे जागते रहना चाहिए। इससे रम को मौका मिलेगा कि जब खतरा मंडराए तो वह बाकी दोनों को चेतावनी दे सके।

क्योंकि वह इस बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त था कि वे छह लोग वास्तव में बहुत बड़े खतरे में थे।

लेकिन थकी हुई प्रकृति हमेशा अपना प्रभाव दिखाती है। कम से कम उस रात तो ऐसा ही हुआ। लगभग आधे घंटे के व्यर्थ संघर्ष के बाद, पर्सी खुद गहरी नींद में सो गया।

उन्हें यह बताने का कोई साधन नहीं था कि उसके कितने समय बाद वे अचानक जाग गए, या क्यों। लेकिन वे जाग गए; एकदम अचानक और पूरी तरह से।

प्रवेश द्वार पर मंद-मंद जल रही लालटेन बुझ चुकी थी और चारों ओर घोर अंधेरा छाया हुआ था। पर्सी को आभास हुआ कि झोपड़ी में कोई खड़ा है।

फिर हल्की सी खरोंचने की आवाज आई और माचिस जलाई गई। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और सोने का नाटक किया, लेकिन यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है, उसने अपनी बाईं आँख की पलकों को थोड़ा सा खुला रखा।

और उसने रणजीत सिंह का चेहरा देखा, जिसके सिर के ऊपर माचिस की तीली उठी हुई थी और वह बारी-बारी से उन सभी को देख रहा था। फिर माचिस बुझ गई।

इस बार पर्सी ने जागते रहने में बेहतर प्रदर्शन किया और जागता ही रहा। सिख की ओर से कोई और आवाज़ नहीं आई। लेकिन उसे पल भर के लिए लगा कि किसी चाकू की धार उसके सीने में चुभ जाएगी, या शायद उसका किनारा उसके गले पर चल जाएगा। अनजाने में ही उसने अपनी ठुड्डी अंदर की ओर खींच ली।

उसके काफी समय बाद, पर्सी को पता नहीं कितना समय बीत गया, कुछ दूरी पर एक उल्लू की गहरी, गूंजती हुई 'हू-ओ-ओ' की आवाज सुनाई दी। उसने तीन बार हू हू किया और फिर चुप हो गया।

तुरंत ही एक दूसरे उल्लू ने जवाब दिया। लेकिन यह पक्षी झोपड़ी के बहुत करीब रहा होगा, युवा राहु ने सोचा। शायद यह छत पर ही बैठा था। जवाब में उसने दो बार अजीबोगरीब, उदास स्वर में आवाज निकाली, मानो कोई खोई हुई आत्मा अपने साथी को जवाब दे रही हो। फिर वह चुप हो गया।

मिनट धीरे-धीरे बीतते गए और पर्सी की घबराहट बढ़ती गई। एक गहरी भावना उसके दिमाग में बार-बार यह संदेश पहुंचा रही थी कि वे बहुत बड़े खतरे में हैं। उसने पहले शेषगिरी को जगाने और फिर ओथी को जगाने के बारे में सोचा; लेकिन उसे लगा कि उठने पर जो शोर होगा उससे सब कुछ उजागर हो जाएगा।

फिर उसने दबी हुई आवाज़ में फुसफुसाहट सुनी। ऐसा लग रहा था कि आवाज़ झोपड़ी के ठीक बाहर से आ रही है।

पर्सी ने बहुत धीरे से अपना सिर घुमाया, आँखें खोलीं और अँधेरे में देखने की कोशिश की। लेकिन उसे प्रवेश द्वार की धुंधली रूपरेखा के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

दो-तीन आदमी दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे। वह उनकी आवाज़ सुन सकता था। वे किसी ऐसी भाषा में बोल रहे थे जिसे वह नहीं जानता था। शायद पंजाबी; या हो सकता है कोई और बोली। उन छह लोगों में से, ओथी ही शायद एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो समझ सकता था कि क्या कहा जा रहा है।

लेकिन वह शेषगिरी के दूसरी तरफ सो रहा था, और वह फिर से खर्राटे ले रहा था।

पर्सी सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। तभी उसे एक विचार आया। वह घुटनों के बल बैठकर सो रही सेश के ऊपर से धीरे से गुजरा और ओथी के बगल में बैठ गया।

अब समस्या यह थी कि उसे बिना कोई आवाज किए कैसे जगाया जाए।

अपनी दाहिनी कोहनी पर आगे की ओर झुकते हुए, पर्सी ने अपने होठों को सिकोड़कर धीरे से लेकिन लगातार ओथी के चेहरे पर हवा फूंकी।

ओथी के लगातार खर्राटों की लय टूट गई। वह कराह उठा और खर्राटे लेने लगा। फिर वह उस परेशान करने वाली हवा से बचने के लिए अपनी दाहिनी ओर मुड़ गया और खर्राटे लेना जारी रखा।

पर्सी घुटनों के बल उठ बैठा, उस हट्टे-कट्टे आदमी की ओर झुका और सोते हुए के चेहरे पर धीरे-धीरे, लेकिन लगातार हवा फूँकता रहा। खर्राटे बंद हुए; फिर शुरू हो गए। ओथी नींद में गरगराहट और बड़बड़ाहट करता रहा।

क्या यह मोटा मूर्ख कभी जागेगा ही नहीं, पर्सी चिंतित होकर सोचने लगा? क्या वह पूरी रात खर्राटे लेता रहेगा?

इसलिए उसने पहले से कहीं ज्यादा जोर से फूंका।

खर्राटे अचानक बंद हो गए।

पर्सी को पता था कि ओथी आखिरकार जाग गई है।

और भी झुकते हुए, पर्सी ने बहुत धीमी आवाज़ में उसके कान में फुसफुसाया, 'ओथी, ओथी; उठो और सुनो। बाहर कुछ आवाज़ें फुसफुसा रही हैं। वे क्या कह रहे हैं?'

‘कहाँ? कौन? इतना अंधेरा क्यों है? हम कहाँ हैं?’ हालाँकि ओथी भी फुसफुसाते हुए बोल रहा था, लेकिन उसकी आवाज़ असामान्य रूप से तेज़ लग रही थी। स्पष्ट रूप से वह उलझन में था; और डरा हुआ भी।

पर्सी ने तसल्ली देते हुए उसका हाथ दबाया; फिर फुसफुसाते हुए कहा, 'चुप रहो! बहुत सावधान रहो। बिलकुल भी आवाज मत करो। सुनो; वे क्या कह रहे हैं?'

ओथी बेहतर ढंग से सुनने के लिए सीधी बैठ गई।

आवाजें पंजाबी में धीमी-धीमी थीं, और वह समझ सकता था कि क्या कहा जा रहा है। उसने कुछ देर चुपचाप सुना।

पर्सी, जो उनकी बात समझ नहीं पा रहा था, लगातार चिंतित और अधीर होता जा रहा था। अंत में उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'भगवान के लिए; वे क्या कह रहे हैं?'

ओथी ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, 'दो आदमी तीसरे से पूछताछ कर रहे हैं। उनका कहना है कि उन्होंने हमारी बस नदी के किनारे देखी थी और उसे आग लगाने ही वाले थे क्योंकि वह सरकारी वाहन लग रही थी। फिर उन्होंने बूढ़े आदमी से सलाह लेने का फैसला किया और इसलिए वे यहां आए।'

‘बूढ़ा आदमी कहाँ है?’ पर्सी ने पूछा।

‘वही उनसे बात कर रहा है। अब चुप रहो, मुझे सुनने दो।’

फुसफुसाहट जारी रही और ओथी ध्यान से सुनती रही।

फिर उसने उत्तेजित होकर कहा, 'पर्सी, वे डाकू हैं।'

मैंने अभी-अभी उन्हें ऐसा कहते सुना। शेषगिरि और हमारे आदमियों को जगाओ। हमें यहाँ से तुरंत निकल जाना चाहिए। जल्दी करो।’ राहु मुड़ा और शेषगिरि को जगाने के लिए उसके चेहरे पर हवा फूँकने लगा, जैसा उसने ओथी के साथ किया था।

शेष तुरंत नहीं जागा। फिर, बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से, उसने चिढ़कर और जोर से अंग्रेजी में कहा, 'तुम लोग आखिर करना क्या चाह रहे हो? मुझे सोने दो।'

बाहर की फुसफुसाहट तुरंत बंद हो गई, और उन्हें पास आते कदमों की आहट सुनाई दी।

कुछ ही सेकंड में उन्होंने दरवाजे पर रणजीत सिंह की लंबी आकृति देखी। इस बार उन्होंने बिजली की टॉर्च की रोशनी उनके चेहरों पर डाली। उन्होंने देखा कि वे तीनों जमीन पर बैठे हुए थे, और उन्होंने गौर किया कि पर्सी अब कहीं और था।

‘तो आप जाग रहे हैं, साहबों?’ उसने अपनी आवाज में शरारती मुस्कान के साथ पूछा, ‘और आप निश्चित रूप से सुन रहे होंगे, है ना?’

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

उन्होंने गंभीरता से आगे कहा, “कभी-कभी किसी के लिए ऐसी बातें सुनना बहुत खतरनाक हो सकता है जो उसे सुनने के लिए नहीं हैं; लेकिन इस बार ऐसा नहीं है। हम आपको माफ कर देते हैं।”

अपना सिर घुमाते हुए उसने पुकारा, 'ओह, मेरे भाइयों और बच्चों; हमारे मेहमान पूरी तरह से जाग गए हैं। क्या आप उनसे बात करना चाहेंगे?'

बाहर से अस्पष्ट सी आवाज आ रही थी जिसे वे समझ नहीं पा रहे थे।

रणजीत सिंह ने उनसे फिर कहा, ‘ठीक है साहबों; अपनी चटाई साथ ले आइए और बाहर आ जाइए। यहाँ ठंडक है और हम बातें करेंगे।’

अवज्ञा करने के बारे में सोचे बिना वे बाहर चले गए, शेषगिरी उस चटाई को अपने साथ ले जा रहा था जिस पर वे सभी लेटे हुए थे।

ऊपर साफ आसमान में अनगिनत टिमटिमाते तारों की परावर्तन रोशनी से पूरा दृश्य धुंधला सा दिखाई दे रहा था। उस मंद प्रकाश में उन्होंने अपने चारों ओर कई आकृतियाँ खड़ी देखीं।

‘सज्जनों, चटाई बिछाकर बैठ जाइए,’ रणजीत सिंह ने आमंत्रित किया।

उन्होंने बात मान ली।

“जी महोदय,” उन्होंने आगे कहा, “आज शाम आपमें से एक ने इस क्षेत्र के डाकुओं से मिलने का डर जताया था। आपमें से दूसरे ने कहा कि वह उनसे मिलना चाहेंगे। दरअसल, आपमें से दो ने यही कहा था। उनकी इच्छा पूरी हो गई है। आपके चारों ओर,” और यहाँ उनकी आवाज़ में एक नाटकीय, गर्व से भरी झलक दिखाई दी, “सभी डाकू हैं।”

‘और तुम कौन हो?’ यह सवाल सेश ने अचानक पूछ लिया।

‘मैं? खैर, मैं मान सिंह हूँ, बिल्कुल।’

ओथी और सेश दोनों अविश्वास और हैरानी से चौंक उठे। लेकिन पर्सी ने धीरे से कहा, 'मुझे लगा ही था। शायद मुझे पहले से ही पता था।'

मान सिंह ने गंभीरता से उससे कहा, “युवक, मुझे शुरू से ही तुम पर शक था। तुम्हारे हाव-भाव से ही मुझे पता चल गया था कि तुम्हें कुछ शंका है। फिर, जब मैं

आधी रात के बाद झोपड़ी में आया और यह देखने के लिए माचिस जलाई कि तुम सब सो रहे हो या नहीं, तो मैंने तुम्हें सोने का नाटक करते हुए आधी खुली एक आँख से मुझे देखते हुए पाया। उस पल मौत तुम्हारे बहुत करीब खड़ी थी, साहब। मुझे लगने लगा कि तुम पुलिस के जासूस हो सकते हो। फिर ऐसा मत करना, युवक। अगली बार शायद तुम इतने भाग्यशाली न हो। याद रखना, आदमी एक आँख बंद और एक आँख खुली रखकर नहीं सोते।"

"लेकिन मैंने आप सबकी जान बख्शने और आपको रिहा करने का फैसला किया है, क्योंकि मुझे लगता है कि आप सब निर्दोष और बेगुनाह हैं। साथ ही, मैं आपसे एक काम करवाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरा एक निजी संदेश ले जाएं, और जब आप वापस जाएं तो जितना हो सके उतने लोगों को वह बात बताएं जो मैं अब आपसे कहने जा रहा हूँ। सरकार को बताएं; बड़े लोगों को बताएं; अखबारों को बताएं; गरीबों को बताएं; अमीरों को बताएं; इसे दूर-दूर तक फैलाएं।"

दरअसल, मेरा संदेश पूरे भारत और पूरे विश्व तक पहुंचाएं।

मान सिंह की आवाज धीरे-धीरे बुलंद होती गई और उसमें गंभीरता झलकने लगी।

तो ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें यही संदेश देने जा रहा हूँ।

'डाकू मान सिंह राठौर भारत सरकार और भारत की जनता तथा विश्व की जनता को अपनी शुभकामनाएं और यह संदेश भेजता है।'

"वह एक ईमानदार, नेक इंसान थे, एक नेक परिवार से आते थे, जब तक कि कुछ दुष्ट लोगों ने उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल नहीं किया और उनके परिवार को कलंकित नहीं किया। कानून उस दुष्ट व्यक्ति को दंडित करने में असमर्थ था जिसने पहले इस निर्दोष व्यक्ति पर आरोप लगाया और उसके परिवार का नाम मिट्टी में मिला दिया। इसलिए मैंने, मान सिंह ने, जो स्वयं वह निर्दोष व्यक्ति था, उस अपराधी को उसके किए गए बुरे काम के लिए दंडित किया।"

"क्योंकि मैंने उसे और उसके आवारा गिरोह को नष्ट कर दिया, इसलिए कानून मुझे हत्यारा कहता है। उसने जो किया उसके लिए उसे दंडित क्यों नहीं किया गया? तब तो यह एक न्यायपूर्ण कानून होता। अब यह एक अन्यायपूर्ण कानून है; जो केवल अमीरों और शक्तिशाली लोगों को गरीबों और कमजोरों से बचाने का प्रयास करता है।"

मैं, मान सिंह, इस अन्यायपूर्ण कानून का विरोध करने के लिए यहाँ आया हूँ। मैं अमीर और शक्तिशाली लोगों के खिलाफ गरीब और कमजोर लोगों की मदद करना चाहता हूँ।

क्या मैं उतना बुरा आदमी था जितना लोग कभी-कभी कहते हैं? मैं अभी तुम सबको मार सकता था और लूट सकता था। मुझे पता है कि तुम सबके पास पैसे हैं। मैं तुम्हारी बस को भी जलाकर राख कर सकता था।

लेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि आपने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है और मेरा आपसे कोई झगड़ा नहीं है।

'जब आप यहां से विदा हों, साहबों, तो भारत की जनता से कहना कि मान सिंह भारत का सच्चा सपूत और उनका भाई है। वह देश से प्रेम करता है और भारतीय होने पर गर्व करता है; और वह उनसे भी प्रेम करता है। लेकिन वह किसी भी रूप में, किसी भी प्रकार के उत्पीड़न और अन्याय से घृणा करता है।'

इसलिए, मान सिंह ऐसे उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ अंत तक लड़ते रहेंगे जब तक कि वे उन पर विजय प्राप्त नहीं कर लेते; या शायद, जब तक वे उन पर विजय प्राप्त नहीं कर लेते; कौन जानता है?

'यही मेरा संदेश है, साहबों; और मैं आप तीनों को, सज्जनों के रूप में आपके सम्माननीय वचन पर, इसे भारत तक और भारत के माध्यम से शेष विश्व तक पहुंचाने का दायित्व सौंपता हूं।'

‘आज सुबह भोर होते ही, बेड़ा चलाने वालों के लौटने से पहले, मेरे आदमी आपकी बस को बेड़ा पर चढ़ा देंगे। राजा मान सिंह राठौर ने यह बात कही है।’

और फिर हुआ यूं कि जब बेड़ा चलाने वाले नेता और उसके चार सदस्य, गांव के कई अन्य लोगों के साथ, उस सुबह लगभग सात बजे पहुंचे, इस उम्मीद में कि फंसे हुए अजनबियों की बस को बेड़ा पर धकेल कर कम से कम सौ रुपये कमा लेंगे, तो वे यह देखकर आश्चर्य से दंग रह गए कि काम पहले ही पूरा हो चुका था और बस सुरक्षित रूप से बेड़ा पर थी, जिसमें यात्रा करने वाले सभी छह लोग बेफिक्र होकर अंदर बैठे सिगरेट पी रहे थे।

अब क्या उन छह में से कोई उन्हें बताएगा कि वह चमत्कार कैसे हुआ था?

और उन्हें अपने लिए केवल दस रुपये मिले, जो कि नदी के उस पार किसी भी बस या लॉरी को ले जाने का सामान्य शुल्क था।

यह घटना, जो अपने आप में विचित्र थी, एक और भी विचित्र परिणाम लेकर आई।

ओथी और उनके दो साथी श्रीनगर में बस छोड़ने के बाद हवाई जहाज से दक्षिण में स्थित अपने मुख्यालय लौट गए; चालक और दो मैकेनिक धीमी गति वाले ट्रेन मार्ग से यात्रा कर रहे थे।

वापस लौटने पर, जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी, उन सभी छह लोगों ने अपने वादे को निभाया और अपने साहसिक कार्य का व्यापक प्रचार किया, और मान सिंह का व्यक्तिगत संदेश दूर-दूर तक दोहराया गया।

अधिकांश लोगों को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ और उन्हें लगा कि उनकी कहानी मछुआरों की आम कहानियों का ही एक नया और चालाकी भरा रूप है। क्या यह संभव था कि कुख्यात हत्यारा मान सिंह, जिसने अपने जीवन के कई साल लोगों की गर्दनें काटने में बिताए थे, न केवल उन्हें बख्श दे, बल्कि उन्हें लूटने से भी परहेज करे और साथ ही उन्हें खाना खिलाए और उनकी गाड़ी को नाव पर सुरक्षित रख दे? यह बात अविश्वसनीय थी और इस पर आसानी से विश्वास नहीं किया जा सकता था!

लेकिन कहीं-कहीं, बहुत कम संख्या में, लोगों ने उन पर विश्वास किया और राजा मान सिंह की महानता की प्रतिष्ठा और भी बढ़ गई।

और इस तरह हुआ कि निजी तौर पर भारत का दौरा कर रहे एक अमेरिकी पत्रकार को यह कहानी सुनने का मौका मिला।

उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इस बात पर विश्वास करें या नहीं। इसलिए, अधिकांश अमेरिकियों की तरह, उन्होंने भी सामान्य ज्ञान और सीधी सोच का प्रयोग करने का निर्णय लिया।

उसने पहले उन लोगों से मिलने का फैसला किया जिन्होंने यह कहानी सुनाई थी, और खुद यह तय करने का निर्णय लिया कि वे भरोसेमंद लोग हैं या सिर्फ स्पष्ट झूठे।

और उन्होंने फैसला किया कि अगर उन्हें लगा कि वे सच कह रहे हैं, तो वे संभव हो तो स्वयं मान सिंह से मिलने जाएंगे और उनसे सीधे उनके मुंह से संदेश प्राप्त करके उसे संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों तक पहुंचाएंगे।

इसलिए उन्होंने इस कहानी की तह तक जाने का बीड़ा उठाया और ओथी, राहु

और शेषगिरि से मिले। तीनों ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे बिल्कुल सच बोल रहे थे, और उन्होंने बस चालक सत्तार और उनके साथ मौजूद दो मैकेनिकों को सबूत के तौर पर पेश किया।

पत्रकार संतुष्ट था। उसने यह जानने के लिए पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा की कि यह सब कहाँ हुआ था और उस नौका घाट तक पहुँचने का सबसे छोटा रास्ता क्या होगा जहाँ बस रुकी हुई थी।

फिर वह वहां पहुंच गया।

इस अमेरिकी की बहादुरी की जितनी तारीफ की जाए कम है। याद रखिए, वह भारत के लिए बिलकुल अजनबी था और उसे किसी भी स्थानीय बोली का एक शब्द भी नहीं आता था। फिर भी उसने चंबल की घाटियों के बीच स्थित मान सिंह के मुख्यालय में उनसे मिलने का प्रस्ताव रखा।

जॉनी कार्टर, जो उस अमेरिकी का नाम था, में लोगों, देश या भाषा की जानकारी न होने की कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त सूझबूझ और दृढ़ संकल्प था। साथ ही, सभी अमेरिकियों की तरह, उसके पास अच्छी खासी दौलत भी थी।

उसने तीन ऐसे दुभाषियों को काम पर रखा जो अंग्रेजी बोल सकते थे, और उनके माध्यम से उसने मान सिंह के बारे में प्रचलित सभी कहानियों और अफवाहों के बारे में जानकारी प्राप्त की, ताकि वह उस डाकू सरदार के बारे में यथासंभव जानकारी जुटा सके।

इस प्रकार, अन्य बातों के अलावा, उसे पता चला कि डाकुओं का सरदार अपने सैकड़ों जासूसों, मुखबिरों और गुप्त एजेंटों के माध्यम से उन सभी लोगों के लिए आसानी से सुलभ था, जो अच्छे और पर्याप्त कारणों से उससे मिलना चाहते थे।

इसके बाद, उसने अपने तीन सहायकों को इलाके के कस्बों के बाजारों और गांवों में भी जाने और सभी लोगों के बीच डाकू नेता तक उसका संदेश फैलाने के लिए कहा।

'राजा मान सिंह राठौर को बता दीजिए कि एक अमेरिकी पत्रकार उनसे मिलना चाहता है। इस अमेरिकी पत्रकार ने वह संदेश सुना और ग्रहण किया है जो राजा ने उन छह लोगों को दिया था जो बस से आए थे और नौका पर फंस गए थे, ताकि वे इसे भारत की जनता तक पहुंचा सकें। अमेरिकी साहब स्वयं राजा के मुख से यह संदेश सुनना चाहते हैं ताकि वे इसे अपने देश अमेरिका में लाखों लोगों तक विश्वासपूर्वक

पहुंचा सकें। इसके लिए अमेरिकी पत्रकार राजा पर अपना जीवन सौंपने और राजा के कहे अनुसार अकेले और निहत्थे आने के लिए तैयार हैं।'

अपने दुभाषियों के माध्यम से संदेश भेजने के बाद, जॉन कार्टर परिणामों की प्रतीक्षा करने के लिए एक निश्चित घुमंतू बंगले में डेरा डाले रहे।

ये खबर तीसरे दिन आई। उनके दुभाषियों में से एक ने यह खबर दी।

वह बहुत उत्साहित था। उसने कहा, 'कार्टर साहब, कल रात जिस कमरे में मैं सो रहा था, उसकी खिड़की पर किसी ने दस्तक दी। यह सोचकर कि कौन हो सकता है, मैंने घड़ी देखी। सुबह के एक बज रहे थे। मैंने खिड़की खोली, लेकिन कोई नहीं दिखा। तभी मेरे सामने अंधेरे में से एक आवाज़ आई, 'अमेरिकी साहब को बता दीजिए कि राजा को उनका संदेश मिल गया है और वे सहर्ष उनसे मिलेंगे। अगर वे सच बोल रहे हैं, तो उनके सिर का एक बाल भी नहीं कटेगा। अगर यह पुलिस का जाल है या वे झूठ बोल रहे हैं, तो वे अगली सुबह नहीं देख पाएंगे। उन्हें बता दीजिए कि वे कल रात आधी रात को भिंड कस्बे की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर चलना शुरू कर दें। उन्हें किसी को कुछ नहीं बताना है—एक भी व्यक्ति को नहीं। राजा अमेरिकी से संपर्क करने का अपना तरीका ढूंढ लेंगे। और एक बात और है। अगर इस संदेश के कारण कोई घात लगाकर हमला किया गया या जाल बिछाया गया, तो अमेरिकी और आप दोनों मारे जाएंगे। यह राजा मान सिंह राठौर का संदेश है।'

बस इतना ही, कार्टर साहब। भगवान के लिए सावधान रहें और मैंने जो कहा है, वह किसी और को न बताएं। अगर आपने बताया, तो हम दोनों निश्चित रूप से मारे जाएंगे।

जॉनी ने बड़ी खुशी से मुस्कुराया। वह किसी को नहीं बताएगा। और वह निश्चित रूप से तय समय पर आएगा।

अगले दिन आधी रात को वह उस दोस्ताना घुमंतू बंगले के द्वार से बाहर निकला। भिंड जाने वाली सड़क सीधे इमारत के सामने से गुजरती थी और पश्चिम की ओर जाती थी।

इसलिए जॉनी उस दिशा में मुड़ा और आगे बढ़ गया।

वह एक घंटे से अधिक समय तक चलता रहा और उसे पता नहीं था कि वह कितनी दूर आ गया है। अंधेरा इतना घना था कि उसे सड़क पर चलना भी मुश्किल हो रहा था। अगर दोनों ओर पेड़ न होते तो वह निश्चित रूप से रास्ते से भटक जाता।

अचानक ही कुछ घटित हो गया!

बिना किसी आवाज या चेतावनी के, जॉन ने खुद को दो जोड़ी शक्तिशाली बाहों में जकड़ा हुआ महसूस किया, जबकि एक काला कपड़ा उसके सिर पर गिर गया।

बस यही है, उसने सोचा; और उसने किसी भी तरह का प्रतिरोध नहीं किया।

कई हाथों ने मिलकर उसकी बाहों को पीछे की ओर रस्सी से बांध दिया और उसके पैरों को एक साथ जकड़ लिया। फिर उसे उठाकर कुछ दूर तक ले जाया गया।

सिर पर पड़े कपड़े के बीच से उसे लगा जैसे उसने घोड़े की हिनहिनाहट सुनी हो। उसका अनुमान सही था, क्योंकि थोड़ी देर बाद उसे ले जा रहे लोगों ने उसे नीचे उतारा और उसके पैर खोल दिए।

फिर उन्होंने उसे उठाया, लेकिन केवल इतनी देर के लिए कि उसका पैर घोड़े की काठी पर रख सकें। उसने अपने पीछे एक सवार की उपस्थिति महसूस की। मजबूत बाहों ने उसे पीछे से घेर लिया और लगाम पकड़ ली। घोड़ा धीमी गति से सरपट दौड़ने लगा। वह उनके साथ चल रहे अन्य घोड़ों के खुरों की आवाज सुन सकता था, एक घोड़ा उनके दोनों ओर था।

वे घंटों तक लगातार सवारी करते रहे। फिर तीनों घोड़ों को रोक दिया गया। जॉन कार्टर को नीचे उतारा गया और एक इमारत की दहलीज के पार ले जाया गया। अंदर पहुँचने पर, उसके हाथ खोल दिए गए और उसके सिर से पतला काला थैला हटा दिया गया।

उसने पलकें झपकाईं और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि दिन का उजाला हो गया था। दो आदमी, दोहरी नाल वाली शॉटगनों से लैस, उस दरवाजे पर खड़े थे जिससे वह अभी-अभी अंदर आया था।

उन्हें भोजन और गर्म चाय दी गई। फिर एक चटाई लाई गई और उन्हें उस पर लेटकर आराम करने का इशारा किया गया।

सिर पर थैला और हाथों में चुभने वाली रस्सियों की वजह से लंबे समय तक हुई असुविधा के बावजूद, जॉन काफी संतुष्ट था। उसकी उम्मीदें साकार हो रही थीं। इसी सोच के साथ वह सो गया।

रात होते ही यात्रा फिर से शुरू हुई। लेकिन तब तक उसके अपहरणकर्ताओं को यह यकीन हो चुका था कि इसमें कोई चाल नहीं है और उनका कैदी अकेला है और कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है। उन्होंने उसके सिर पर काला थैला नहीं डाला,

बल्कि उसे तौलिए से आंखों पर पट्टी बांध दी। न ही उन्होंने उसके हाथ पीछे बांधे।

एक बार फिर, अपने पीछे घोड़े पर सवार एक व्यक्ति के साथ, जॉन अज्ञात की ओर आगे बढ़ गया।

बाद में रात में घोड़ों को रोका गया और उसे घोड़े की पीठ से नीचे उतारा गया। दोनों हाथों से उसकी बाहों को पकड़कर उसे आगे ले जाया गया।

वे घंटों तक चलते रहे। रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ था और आंखों पर कपड़ा होने के कारण वह कई बार लड़खड़ा गया, और अगर दोनों तरफ से सहारा न मिलता तो वह गिर ही जाता। इलाका लगातार ऊपर-नीचे होता जा रहा था। कार्टर थकावट महसूस करने लगा।

अचानक, सन्नाटे में से एक चुनौती भरी आवाज़ सुनाई दी। उसके आसपास खड़े लोगों ने कुछ ऐसा जवाब दिया जो ज़ाहिर तौर पर जॉनी को समझ नहीं आया। फिर उसे आगे ले जाया गया। उसे सुबह की ठंड महसूस हुई और वह थोड़ा कांप गया।

अंततः वह अंतहीन पैदल यात्रा समाप्त हुई। उसने कुछ आवाज़ें सुनीं और उसके हाथों को पकड़े हुए हाथ छूट गए। उसने महसूस किया कि वे उसकी आँखों पर बंधी पट्टी की गाँठ खोल रहे हैं। अंत में वह पट्टी हटा दी गई।

उसके सामने एक लंबा-चौड़ा बूढ़ा आदमी खड़ा था, जिसका माथा असामान्य रूप से ऊंचा था और सिर पर एक लंबी पगड़ी थी। उसकी घनी सफेद दाढ़ी, मूंछें और एक बड़ी मूंछ थी। उसने गहरे लाल रंग की तंग जैकेट और रेशम की बनी सफेद पतलून पहनी हुई थी, जो घुटने के ऊपर ढीली और नीचे एकदम फिट थी।

उस बूढ़े व्यक्ति ने थोड़ा झुककर, अपने दाहिने हाथ को ऊपर उठाकर और हथेली को अंदर की ओर मोड़कर, अपनी उंगलियों से अपने माथे को छूकर, राजसी भारत के पुराने दिनों की परंपरा के अनुसार सलाम किया।

जॉन कार्टर ने आधुनिक भारतीय 'नमस्ते' से अभिवादन का जवाब दिया, जिसमें उन्होंने अपने दोनों हाथों को अपने चेहरे के सामने जोड़ा, हथेलियाँ और उंगलियाँ एक-दूसरे को छू रही थीं, ठीक उसी तरह जैसे उन्हें सिखाया गया था।

'मान सिंह के साधारण से घर में आपका स्वागत है,' बूढ़े व्यक्ति ने हिंदुस्तानी में कहा।

लेकिन जॉनी को कही जा रही बातों का एक भी शब्द समझ नहीं आया। इसके बजाय, वह उत्सुकता से अपने आसपास के वातावरण को देखने लगा।

ज़ाहिर तौर पर वे किसी गुफा में थे, क्योंकि वह जगह दीवारों पर अलग-अलग जगहों पर लटकी चार लालटेनों की रोशनी से जगमगा रही थी। मान सिंह और उसे लाने वाले दो आदमियों के अलावा, वहाँ दो और लोग मौजूद थे। इनमें से एक ने अपनी कोहनी में एक टॉमी गन दबा रखी थी। दूसरा एक लंबा-चौड़ा नौजवान था, जो बूढ़े आदमी का बेटा ही लग रहा था, क्योंकि उसका माथा भी वैसा ही ऊँचा था और आँखें भी वैसी ही तीखी और भेदक थीं।

मान सिंह ने देखा कि गोरे व्यक्ति को उनका स्वागत समझ में नहीं आया, और फिर उन्हें याद आया कि वह एक अमेरिकी थे और इसलिए संभवतः किसी भी भारतीय भाषा से परिचित नहीं होंगे।

उसने अपने बगल में खड़े युवक की ओर मुड़कर कहा, 'तहसीलदार, मेरे बेटे, पृथ्वी को बुलाओ। वह गोरे आदमी की भाषा समझता है और अमेरिकी साहब से बात कर सकता है।'

जिस युवक को इस प्रकार संबोधित किया गया, वह गुफा से बाहर चला गया। लगभग दस मिनट बाद वह वापस आ गया, उसके साथ एक छोटा, बहुत सांवला, लगभग 35 वर्ष का दुबला-पतला आदमी था, जिसकी नाक टेढ़ी थी और केवल एक ही आंख थी। बाईं आंख। वह पूरी तरह से दाढ़ी-मूंछ साफ किए हुए था।

मान सिंह ने नवागंतुक को संबोधित किया और कुछ देर तक बात की। फिर पृथ्वी ने भी जॉनी से अटपटी अंग्रेजी में बात की।

‘महाराज साहब, उन्होंने कहा कि उन्हें आपके आने की बहुत खुशी है। आपका स्वागत है। आप पहले कुछ खा लीजिएगा? हाँ, ना? चाय पीजिएगा? फिर आप महाराज साहब को बताइए कि आपको क्या चाहिए? हाँ, ना?’

जॉन कार्टर को इस बात की खुशी थी कि आखिरकार उन्हें उस मशहूर डाकू से बात करने का मौका मिल गया, भले ही यह बातचीत एक दुभाषिए के ज़रिए ही क्यों न हो रही हो, जैसे कि अब बात कर रहा व्यक्ति। उन्होंने पृथ्वी से कहा, 'कृपया राजा साहब को बता दीजिए कि मैं उनका बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे दर्शन दिए, और मुझे यहाँ आकर बहुत खुशी हुई है। उन्हें बता दीजिए कि मैंने वह संदेश सुना है जो उन्होंने भारत और दुनिया के लोगों को उन लोगों के ज़रिए भेजा था जिनकी उन्होंने नदी में फँसी बस में मदद की थी। अगर वे कृपा करके मुझे वह संदेश सीधे दे दें, तो मुझे बहुत गर्व और खुशी होगी कि मैं उसे यहाँ से हज़ारों मील दूर अमेरिका में अपने

लोगों तक पहुँचा सकूँ।'

पृथ्वी को अपने नेता को यह संदेश समझाने में कुछ समय लगा, लेकिन अंत में उसने बोलना समाप्त कर दिया।

वह खूबसूरत बूढ़ा डाकू जाहिर तौर पर बहुत खुश और उत्साहित था। और साथ ही साथ गर्व से भी भरा हुआ था। उसने कहा, "साहिब को बता देना कि आज वह मेरे मेहमान होंगे। पहले उन्हें आराम करने दो और मेरे साथ दावत करो। मैं उन्हें अपना शस्त्रागार और खजाना दिखाऊंगा। फिर आज रात मैं अपना संदेश पहुंचाऊंगा और उन्हें सुरक्षित वापस परलोक भेज दूंगा। यात्रा में हुई असुविधाओं के लिए मेरी माफी भी दे देना, लेकिन उन्हें समझ आ जाएगा कि मुझे एहतियात बरतनी पड़ी।"

पृथ्वी ने अपनी अनोखी शैली में जॉन को यह सब समझाया। अमेरिकी जॉन भावुक हो गया। उसने अनायास ही अपना दाहिना हाथ डाकू सरदार की ओर बढ़ाया। बूढ़े व्यक्ति ने उसका हाथ दोनों हाथों में लेकर गर्मजोशी से हिलाया।

फिर जॉन को गुफा की दीवार में बने एक मार्ग से ले जाया गया, जिसे पार करने के लिए उसे लगभग कमर झुकाकर दोगुने होकर गुजरना पड़ा, और वह बगल वाली गुफा में पहुंचा। वहां उसे भोजन और पानी दिया गया और उसने कुछ देर तक कालीन और रेशमी तकियों पर आराम किया, जो उसके लिए पहले से ही उपलब्ध कराए गए थे।

दोपहर के समय और खाना परोसा गया। पृथ्वी उसे लेकर आया और बोला, 'आप राजा साहब के यहाँ खाना खाने आए हैं? वो आपको सुंदर गहने दिखाएंगे; ढेर सारे, बहुत सारे। साथ ही 'बंदूकें' भी; उनके पास और भी बहुत सारी हैं।' फिर उसने अपने खास अंदाज में पूछा, 'हाँ, ना?'

जॉन ने परोसे गए सूखे तले हुए मांस को बड़े चाव से खाया, साथ ही घी में लथपथ कई पतली, ताज़ी पकी हुई स्वादिष्ट चपातियाँ भी खाईं। इसके बाद उसे एक बड़ा गिलास बकरी का दूध दिया गया, और फिर एक रसीला तरबूज। खाना खत्म करके और हाथ धोने के बाद, वह खड़ा हुआ और घोषणा की कि वह डाकुओं के सरदार से दोबारा मिलने के लिए उत्सुक है।

पृथ्वी उसे उसी रास्ते से ले गया जिससे वह पहले आया था और उसी गुफा में ले गया जहाँ उसकी पहली मुलाकात मान सिंह से हुई थी।

वह बूढ़ा डाकू तो वहीं था, लेकिन कार्टर ने गौर किया कि टॉमी गन वाला

आदमी बदल गया था। साथ ही, तहसीलदार का बेटा, जिससे वह पिछली बार मिला था, भी मौजूद नहीं था। उसकी जगह एक लंबा, थोड़ा उम्रदराज आदमी था जिसकी आंखें चमकती हुई काली थीं। उसने काली दाढ़ी और केसरिया पीले रंग की ऊंची पगड़ी पहन रखी थी।

मान सिंह ने जॉन कार्टर से दोबारा हाथ मिलाने के लिए अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए। फिर उन्होंने पृथ्वी के माध्यम से अपने साथी का परिचय कराया। 'यह मेरा प्रिय दूसरा पुत्र सूबेदार सिंह है,' और दबी आवाज़ में कहा, 'मेरा बड़ा पुत्र जसवंत सिंह वर्षों पहले पुलिस द्वारा मारा गया था।'

सूबेदार ने जॉन का गर्मजोशी से अभिवादन किया और गर्मजोशी से हाथ मिलाया।

'मैं सबसे पहले अमेरिकी साहब को अपना शस्त्रागार दिखाऊंगा,' मान सिंह ने घोषणा की।

उनके इशारे पर, उनके अंगरक्षक ने झुककर गुफा के फर्श पर बिछी भेड़ की खाल के नीचे छिपे एक गुप्त दरवाजे को खोला। मान सिंह आगे-आगे चले; अंगरक्षक उनके पीछे-पीछे आया। फिर सूबेदार सिंह ने जॉन को आगे जाने का न्योता दिया। वह तुरंत उनके पीछे-पीछे आया, और पृथ्वी सबसे पीछे था।

वे ज़मीन में खोदी गई छह-सात सीढ़ियाँ उतरकर एक छोटे, अंधेरे कमरे में पहुँचे, जो छत से लटकी दो लालटेनों से रोशन था। जॉन ने देखा कि उसके चारों ओर हथियार ही हथियार थे। कमरे के एक कोने में लकड़ी के राइफल रैक की कतारें थीं। उनमें करीने से .393 कैलिबर की सेना सेवा राइफलें रखी थीं। अगली दीवार के साथ एक और रैक था। इसमें हर प्रकार और पुराने हथियारों का एक विविध संग्रह था। इनमें कुछ आधुनिक बड़े शिकार के लिए इस्तेमाल होने वाली दो बैरल वाली राइफलें थीं, जिनमें एक जेफ्रीज़ .470 कॉर्डाइट राइफल और एक .500 ब्लैकपाउडर एक्सप्रेस शामिल थीं; कई .12 बोर की शॉटगनें थीं, जिनमें से कुछ हॉलैंड एंड हॉलैंड जैसे प्रसिद्ध निर्माताओं की और तीन ग्रीनर की थीं। कुछ एक बैरल वाली .12 बोर और .16 बोर की शॉटगनें भी थीं। तीसरी दीवार के साथ मजल-लोडर रखे थे; कुछ काफी आधुनिक और कुछ बहुत पुराने फ्लिंटलॉक हथियार। इनके बीच में हर तरह के आकार, प्रकार और प्रकार के रिवॉल्वर और पिस्तौलें थीं। शस्त्रागार की आखिरी दीवार पर संग्रह के सर्वश्रेष्ठ नमूने प्रदर्शित थे। इनमें ब्रिटिश सेना द्वारा जारी की गई

स्टेन गन और टॉमी गन, जापानी और इतालवी स्वचालित हथियारों के साथ मिश्रित थीं, जो स्पष्ट रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के अवशेष थे।

‘और भी नीचे जमीन में,’ मान सिंह ने दुभाषिए के माध्यम से इशारा करते हुए कहा, ‘हमारे पास हथगोले, कुछ बम और बारूद का भंडार है। लेकिन अभी जलती हुई लालटेन लेकर वहां जाना असुरक्षित है।’

वे मिट्टी की सीढ़ियों से ऊपर गुफा में चढ़ गए। वहाँ मान सिंह जॉन को एक कोने में अकेले खड़े मध्यम आकार के लोहे के तिजोरी के पास ले गया। उसने दरवाजा खोला।

तिजोरी के पीछे, एक-एक सौ रुपये के नोटों के गट्ठे बंधे हुए थे, जिन्हें कसकर एक के ऊपर एक रखा गया था। ऐसे कितने गट्ठे थे, यह उसने नहीं गिना।

नोटों के ढेर के सामने एक टिन का डिब्बा रखा था।

मान सिंह ने डिब्बा खोला ताकि जॉन उसमें रखी चीज़ें देख सके। वहाँ उसे सोने की घड़ियों की चेन, हीरे की अंगूठियाँ और पन्ना, माणिक और अन्य कीमती पत्थरों से जड़े सोने के हार दिखाई दिए; महिलाओं की सोने की नथें और बालियाँ; और हर तरह के छोटे-बड़े गहने। इस संग्रह में एक बहुत ही कीमती सोने की घड़ी थी, जो स्पष्ट रूप से पुराने यूरोपीय निर्माण की थी। मान सिंह ने उसे बाहर निकाला और जॉन को दिखाने के लिए ऊपर उठाया। फिर उसने उसे चाबी भरी और उसकी मधुर ध्वनि को सुनकर प्रसन्न हुआ, जब उसने घंटे की घंटी बजाई।

जब मान सिंह ने तिजोरी बंद कर दी, तो उसने अमेरिकी की ओर मुड़कर पृथ्वी के माध्यम से कहा, 'अब वापस जाइए और आराम कीजिए, साहब। आज रात आप मेरे साथ और कुछ मेहमानों के साथ भोजन करेंगे। उसके बाद मैं आपको आपके लोगों के लिए अपना संदेश दूंगा और आपको सुरक्षित वापस भेज दूंगा।'

वह भोज एक यादगार आयोजन था। मान सिंह ने जॉन को अपने बगल में गुफा के फर्श पर बाईं ओर बैठाया, जबकि उनके सशस्त्र अंगरक्षक पीछे खड़े थे। सरदार के दाहिनी ओर सूबेदार सिंह बैठे थे। जॉन के बाईं ओर तहसीलदार सिंह थे। वहाँ पाँच अन्य लोग भी उपस्थित थे, जिन्हें मान सिंह ने अलग-अलग तरह से अपने बड़े भाई नवाब सिंह और अपने चार लेफ्टिनेंट चरना, रूपा, लखन सिंह और देवी सिंह के रूप में पेश किया। भोज में अंतिम आमंत्रित व्यक्ति दुभाषिया पृथ्वी था।

भोजन में कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गए, जो अमेरिकी पत्रकार के लिए

पूरी तरह से अपरिचित थे। दावत के अंत में, एक्सशॉ ब्रांडी की एक बोतल खोली गई और सबने मिलकर पी ली। केवल मान सिंह ने ही एक बूंद भी नहीं पी।

अंत में इस पूरे अनूठे नाटक का समापन हुआ। मान सिंह ने जॉन कार्टर के लिए अपना संदेश दिया, जिसे उन्हें अमेरिकी जनता, इंग्लैंड और दुनिया तक पहुंचाना था, और पृथ्वी ने इसे अपने हास्यपूर्ण अंदाज में प्रस्तुत किया।

लेकिन यह इतना महान और अद्भुत संदेश है कि इसे पृथ्वी सिंह के कहे अनुसार दोहराकर इसे बिगाड़ना उचित नहीं होगा, हालांकि उन्होंने अंग्रेजी के अपने सीमित ज्ञान के बावजूद दुभाषिया के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। इसलिए, बेहतर होगा कि हम इसे मान सिंह द्वारा अपनी मातृभाषा, राजस्थान की बोली में कहे गए मूल रूप में ही प्रस्तुत करें।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति और जनता को; इंग्लैंड और ब्रिटिश साम्राज्य के संप्रभु और जनता को; और समस्त विश्व की जनता को; मैं, राजा मान सिंह राठौर, आपके माध्यम से, जॉन कार्टर, अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

मैं अपनी इच्छा या स्वभाव से चोर या डाकू नहीं हूँ। बुरे लोगों ने मुझे ऐसा बना दिया है।

"जिस प्रकार आपके सभी देशों के लोगों ने न्याय के लिए संघर्ष किया है और करते आ रहे हैं, उसी प्रकार मैं भी अब संघर्ष कर रहा हूँ। मुझे अपने देश भारत से प्रेम है; और मुझे इस देश का पुत्र होने पर गर्व है। मैं इस विरासत को किसी और चीज से नहीं बदलूंगा।"

लेकिन मुझे यहाँ अभी भी घटित हो रही बुराई पर गहरा दुख है, ठीक वैसे ही जैसे यह आपके देशों में घटित हो रही है। अपने सभी लोगों से कहो कि वे हमारे सभी देशों में, जहाँ कहीं भी इस प्रकार की दुष्ट प्रथाएँ मौजूद हों, गरीबों पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई में मेरा साथ दें।

तभी मेरा देश और आपके देश महान बनेंगे—और हमेशा के लिए महान बने रहेंगे!

"इस लड़ाई में हममें से कई लोग शहीद हो जाएंगे और अपनी स्वतंत्रता और यहाँ तक कि अपनी जान भी गंवा देंगे, क्योंकि बुराई की ताकतें व्यापक और शक्तिशाली हैं। लेकिन जो लोग इस उद्देश्य के लिए अपनी जान देंगे, वे अपने देश के लोगों के इतिहास और स्मृतियों में हमेशा के लिए अमर रहेंगे। क्या यह सार्थक नहीं

है? क्या यह किसी मनुष्य के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार नहीं है?”

“जॉन कार्टर, इस संदेश को ज़ोर से बोलो। इसे एक किताब में लिखो और दुनिया के सभी देशों को भेजो। क्योंकि तब तुम एक नेक और महान उद्देश्य की पूर्ति कर रहे होगे। और ईश्वर सदा तुम्हारे साथ रहे।”

‘मैं, राजा मान सिंह राठौर, बोल चुका हूँ।’

मान सिंह ने अपने दाहिने हाथ की तीसरी उंगली से एक सोने की अंगूठी निकाली, जिसमें एक गहरा लाल माणिक जड़ा हुआ था। उसने वह अंगूठी सीधे जॉन कार्टर को देते हुए पृथ्वी से कहा,

‘अमेरिकी साहब से कहिए कि वे इसे मेरी ओर से निजी उपहार समझकर स्वीकार करें; इसे संभाल कर रखें और मेरी याद में पहनें। उनसे कहिए कि यह मेरी अपनी अंगूठी है; किसी से चुराई नहीं है।’

और वह प्रख्यात वृद्ध व्यक्ति अपने ही मजाक पर हंसी से लोटपोट हो गया।

जॉन कार्टर ने उसी रात बाद में वापसी की यात्रा शुरू की। इस बार उन्हें न तो बांधा गया था और न ही उनके सिर पर काला थैला डाला गया था। उन्हें केवल आंखों पर पट्टी बांधी गई थी। और यह उनकी सहमति से और उनके अपने हित में किया गया था। क्योंकि तब वह अधिकारियों को सच-सच बता सकते थे कि उन्हें मान सिंह की गुप्त गुफा का रास्ता नहीं पता था।

इसके बाद क्या हुआ, यह भारत में ज्ञात नहीं है। लेकिन हम पूरी उम्मीद करते हैं कि जॉन ने उस दिन उन्हें सौंपा गया महान संदेश सफलतापूर्वक पहुंचा दिया होगा।

शायद, जब वह उस सोने की अंगूठी और उस खून जैसे लाल माणिक को देखता है, तो उसकी स्मृति में उस महान, दाढ़ी वाले योद्धा की छवि उभर आती है, जो उस उद्देश्य के गंभीर और महान सिद्धांतों से ओतप्रोत था जिसके लिए वह अपना प्राणों की आहुति देने और शहीद होने के लिए तैयार था - मान सिंह, वह सज्जन डाकू।

अध्याय सात

मान सिंह का इतिहास

भारत के डाकुओं के सरदार राजा साहब मान सिंह राठौर ने यह गौरव आसानी से या यूं ही हासिल नहीं किया था। यह महज़ एक नाम नहीं था, जो किसी साधारण व्यक्ति

को दिया गया हो। उन्होंने इस गौरवशाली और असाधारण उपाधि के हर अक्षर को अपनी मेहनत से अर्जित किया था। उनका इतिहास कल्पना से परे है, जिसका वर्णन करना असंभव है और जो शब्दों से परे, बेहद दिलचस्प है।

ज़रा सोचिए। एक अकेला आदमी, जिसका चार राज्यों के 1,700 पुलिसकर्मियों ने लगभग 8000 वर्ग मील के क्षेत्र में 15 वर्षों तक पीछा किया। उसने पुलिस के साथ 80 से अधिक मुठभेड़ों में जीत हासिल की। और उन अभियानों की लागत, जिनके कारण अंततः उसकी मृत्यु हुई, डेढ़ करोड़ रुपये थी। आंकड़ों में, यह 1,50,00,000 रुपये है। या, अगर आप इसे दूसरे तरीके से लिखना चाहें, तो पंद्रह मिलियन रुपये! सिर्फ एक आदमी को खत्म करने पर लगभग एक करोड़ एक-आठवें पाउंड स्टर्लिंग खर्च किए गए!

उसकी गिरफ्तारी या उसके शव के लिए कई इनामों की पेशकश की गई थी, जिनमें सबसे बड़ा इनाम 15,000 रुपये था - जो 1000 पाउंड स्टर्लिंग से कहीं अधिक था!

उसके कारनामों, लूटपाट और पीछा किए जाने से संबंधित अभिलेखों और दस्तावेजों का वजन एक टन से अधिक होने का अनुमान था। वह 200 से अधिक हत्याओं और एक हजार डकैती, लूटपाट, फिरौती और छापे की घटनाओं के लिए प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार था।

लेकिन उस पर लगाए गए सभी आरोपों, चाहे वे साबित हुए हों या न साबित हुए हों, की कुल राशि सरकार द्वारा उसे पकड़ने के प्रयास में खर्च की गई धनराशि के आधे के आसपास भी नहीं थी।

और प्रिय पाठकों, हमेशा याद रखें, यह केवल मनगढ़ंत कहानियां नहीं हैं। ये स्पष्ट, ठोस और सच्चे तथ्य हैं।

इस व्यक्ति में तुच्छता, नीचता, नीचता या अशिष्टता जैसी कोई बात नहीं थी। उनका हर गुण महान, साहसी, खेल भावना से भरपूर और भव्य था। न्याय एक ऐसी चीज थी जिसका वे न केवल उपदेश देते थे, बल्कि स्वयं भी उसका पालन करते थे।

मध्य भारत राज्य सरकार द्वारा 1953 में नियुक्त भिंड मोरेना अपराध जांच समिति ने इस अद्वितीय व्यक्तित्व के बारे में क्या कहा है, इसे पढ़ें:

'मान सिंह का मामला इस क्षेत्र की विशिष्ट समस्याओं का एक प्रतिनिधि उदाहरण है। कहा जाता है कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें कोई निजी दुर्गुण नहीं

है। उसकी प्रशंसा में दबी आवाज़ में कहानियाँ सुनाई जाती हैं कि कैसे वह अच्छे कार्यों में मदद करता है, मुखबिरों और पुलिसकर्मियों को केवल पीछा किए जाने पर ही मारता है, केवल कुछ ऐसे लोगों को उठाता है जिनके पास अतिरिक्त धन होता है, आशीर्वाद देने वाले ब्राह्मणों का सम्मान करता है, और कभी-कभी जमींदारों को स्कूल भवनों जैसी वांछनीय वस्तुओं के लिए दान देने के लिए मजबूर करता है।'

उनके प्रशंसक अक्सर कहते हैं कि वे डकैती के चरम को दर्शाते हैं, जिसे गरिमापूर्ण ढंग से अंजाम दिया जाता है। राजस्व, सीमा शुल्क और शिक्षा विभागों के अधिकारी बिना किसी डर के उनसे भिड़ सकते थे। वे हजारों लोगों की भीड़ वाले विवाह समारोहों में भी शामिल हो सकते थे। लेकिन अब वे फरार हैं। उनका मामला दर्शाता है कि कैसे जघन्य अपराधों के प्रति स्वाभाविक घृणा को चतुर तरीकों को अपनाकर कम किया जा सकता है। समिति की राय में, अपराध के प्रति जनता का रवैया उतना ही गंभीर मुद्दा है, यदि उससे अधिक गंभीर नहीं, जितना कि स्वयं अपराध का प्रचलन।

ध्यान रहे, ये शब्द किसी एक व्यक्ति या लेखक के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। ये शब्द सरकार द्वारा ऐसे अपराधों के कारणों और प्रकृति की जांच के लिए नियुक्त एक समिति के निष्कर्ष हैं।

कहा जाता है कि मान सिंह शराब का सख्त पाबंद और शाकाहारी था, जो प्रकृति के करीब रहकर अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन जीता था। उसके नैतिक मूल्यों पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता था। वह अमीरों को लूटकर गरीबों की मदद करता था।

वे अत्यंत धार्मिक थे और सूर्योदय होते ही नदी में स्नान करते थे, पवित्र गीत गाते हुए जल में विलीन हो जाते थे और दूर पहाड़ियों की श्रृंखला के ऊपर से झांकते हुए उगते सूरज को स्नान अर्पित करते थे। स्नान के बाद वे सीधे देवी काली के मंदिर जाते और श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करते थे। उनके गले में लटकी हुई बड़ी-बड़ी सुनहरे मोतियों की माला एक माला का काम करती थी। वे प्रार्थना करते समय उन्हें गिनते थे और वे माला दिन-रात हमेशा उनके साथ रहती थी।

अपने धार्मिक जीवन के एक भाग के रूप में, उन्होंने कई मंदिर बनवाए, जिनके लिए धन उन्होंने धनी लोगों को लूटकर प्राप्त किया था। आज भी कई मंदिरों में पीतल की बड़ी घंटियाँ लगी हुई हैं, जो उस साहसी राजा द्वारा दान की गई थीं। आपको उन

पर उनका नाम खुदा हुआ मिलेगा। उनका दृढ़ विश्वास था कि जब भी घंटी बजेगी, तो वह उनके लिए प्रार्थना करेगी, यदि वे जीवित हों; या उनकी आत्मा के लिए, यदि वे मर चुके हों।

उन्होंने लड़कों और लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा के लिए स्कूल भी दान किए; और वृद्धों, गरीबों, बेघरों और जरूरतमंदों के लिए 'चत्रम' (या मुफ्त आश्रय स्थल) भी बनवाए।

एक धार्मिक उत्सव ऐसा था जिसे वह कभी नहीं भूलते थे। यह उत्सव साल में एक बार, किसी पर्व के दिन, बटेश्वर नाथ मंदिर में मनाया जाता था, और मान सिंह उस दिन हमेशा उपस्थित रहते थे। कुछ समय बाद पुलिस को इसकी सूचना मिल गई, और उस अवसर पर वे वर्दीधारी पुलिसकर्मियों का घेरा बनाकर मंदिर को घेर लेते थे और वहाँ आने वाले हजारों तीर्थयात्रियों से गहन पूछताछ करते थे।

वे जानते थे कि उन हजारों लोगों में से एक वह व्यक्ति था जिसकी उन्हें तलाश थी।

वे तीर्थयात्रियों से बात करते और उनसे पूछताछ करते। हर साल, जिन लोगों से वे बात करते और सवाल पूछते, उनमें से कोई न कोई वही होता जिसकी उन्हें बेसब्री से तलाश थी - डाकुओं का सरदार, राजा मान सिंह। वे जानते तो थे, पर उन्हें यह नहीं पता था कि वह कौन है। भला कैसे पता चलता? वह इतना भेस बदले रहता था। और इस तरह, हर साल, वह उनकी पकड़ से फिसल जाता, और अगले साल फिर वही अंजाम भुगतता।

वह कई शामें किसी गांव में बिताता था, खुले मैदान में या किसी घर के दरवाजे पर बैठकर, मिट्टी का पाइप पीता था, जिसका सिरा वह अपने होठों से हथेलियों से लगाकर रखता था, और ग्रामीणों से बात करता था, उनकी समस्याओं पर चर्चा करता था, और जरूरत पड़ने पर उन्हें सलाह और पैसे से मदद करता था।

पुलिस को भी अपने एजेंटों से मिली जानकारी से यह बात पता थी। लेकिन जब तक वे मौके पर पहुंचते, मान सिंह वहां नहीं होता। जाहिर है, उसके जासूस—या शायद उसके शुभचिंतक—पुलिस वालों जितने ही कुशल थे। शायद उनसे भी ज्यादा। लेकिन वह हमेशा किसी न किसी तरह उनकी पकड़ से बच निकलता था।

भिंड गांव के ग्रामीणों के बीच उनके बारे में एक बहुत ही मानवीय कहानी प्रचलित है।

एक शाम, जब चपातियाँ पकाते समय गाँव की आग का धुआँ आसमान की ओर उठ रहा था, तब मान सिंह पटेल (मुखिया) के घर की सीढ़ी पर बैठे मुखिया और कई अन्य ग्रामीणों से बातें कर रहे थे।

सरकार ने पुलिस के माध्यम से मासिक वेतन पर जासूस और मुखबिर नियुक्त किए थे और उन्हें पूरे क्षेत्र के सभी गांवों में, दूर-दूर तक, बड़ी संख्या में तैनात कर दिया था। इन्हीं में से एक व्यक्ति को डाकू की मौजूदगी का पता चला और उसने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने गांव को घेर लिया और पटेल के घर पर धावा बोल दिया। लेकिन, जैसा कि उम्मीद थी, मान सिंह अचानक गायब हो गया।

कम से कम इतना तो कहा जा सकता है कि पुलिस दल के प्रभारी इंस्पेक्टर बेहद नाराज थे। उन्होंने गुस्से भरे चेहरे के साथ पटेल का सामना किया।

'मूर्ख, और पांच पीढ़ियों के मूर्खों के पुत्र, तुमने उसे हमारे आने तक क्यों नहीं रोका?'

'क्योंकि, महाराज, राजा मान सिंह को बंदी बनाने वाला व्यक्ति अभी तक पैदा ही नहीं हुआ है।' पटेल ने धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन उनके लहजे में दृढ़ता झलक रही थी।

"बकवास मत करो," पुलिस अधिकारी लगभग चीखते हुए बोला, गर्मी, परिश्रम और गुस्से से उसका चेहरा पसीने से तर था। वह हांफते हुए बोलने लगा, "मैं तुम्हें इस हत्यारे को पनाह देने के आरोप में जेल में डाल सकता हूँ। क्या तुम्हें नहीं पता कि अपराधियों की मदद करना और उन्हें उकसाना कानून के खिलाफ है?"

'मैं यह बात भली-भांति जानता हूँ, महोदय,' पटेल ने स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया, 'लेकिन मैं न तो उसकी सहायता कर रहा था और न ही उसे उकसा रहा था। बात बस इतनी थी कि मान सिंह अचानक मेरे घर आ गया और मुझसे बात करने लगा। मैं भला क्या कर सकता था, महोदय? क्या उसे गिरफ्तार कर लेता?'

फिर पटेल ने हैरानी भरे लहजे में पूछा, "आप कहते हैं कि राजा से बात करने पर मुझे कानूनन जेल में डाला जा सकता है। महोदय, मान लीजिए कि मैंने मान सिंह को हिरासत में लेने की कोशिश की होती और ऐसा करने में मेरी जान चली गई होती। क्या कानून मुझे दूसरा जीवन देता?"

इंस्पेक्टर लगभग भड़क उठा। तभी, ठीक समय पर, उसे याद आया कि वह सेवा से सेवानिवृत्ति की आयु के करीब पहुँच रहा है। पुलिस डॉक्टर ने उसे सलाह दी

थी कि सेवामुक्त होने से पहले बचे कुछ महीनों में वह आराम करे। उसे पहले से ही उच्च रक्तचाप की समस्या थी और उसका वजन भी सामान्य से कहीं अधिक था।

पटेल की बातों में कुछ तो सच्चाई थी, उसने सोचा। न तो सरकार और न ही कानून उसे दूसरा जीवन देंगे। दूसरी ओर, अगर वह अत्यधिक क्रोध के कारण समय से पहले आत्महत्या कर लेता है, तो सरकार उसकी पेंशन हड़प लेगी।

इन सब बातों के बावजूद, वह मान सिंह को बहुत बुरा-भला कहने से खुद को रोक नहीं सका।

अब, जब यह सब चल रहा था, गाँव वालों की हमेशा की तरह उत्सुक भीड़ सब कुछ देखने और सुनने के लिए इकट्ठा हो गई थी। उनमें एक युवा विधवा भी थी जिसका नाम जया था। कुछ ही समय पहले, मान सिंह ने अपने एक लेफ्टिनेंट के माध्यम से उसे कुछ पैसे भेजे थे ताकि वह अपने बड़े बेटे की परीक्षा फीस भर सके और उसे स्कूल की अंतिम परीक्षा में शामिल होने में सक्षम बना सके।

उसने वह अपशब्द सुना और उसे बहुत बुरा लगा। गुस्से में आकर, भीड़ के बीच से ही उसने इंस्पेक्टर को संबोधित करते हुए बोलना शुरू कर दिया।

“आप उन्हें नहीं जानते, महोदय, इसलिए आपको उन्हें उस नाम से पुकारने का कोई अधिकार नहीं है। दरअसल, वे गरीबों के हितैषी हैं। हालांकि मैंने उन्हें कभी देखा नहीं था, फिर भी उन्होंने उदारतापूर्वक मुझे मेरे बेटे की परीक्षा फीस भरने के लिए पैसे भेजे, जब मेरे घर में एक पैसा भी नहीं था। ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दें और आप जैसे लोगों से उनकी रक्षा करें।”

जया ने जल्दबाजी में ये शब्द कहे और फिर चुप हो गई, क्योंकि उसे इस उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारी के प्रति अपने किए गए अपराध की गंभीरता का एहसास हो गया था। भीड़ में सन्नाटा छा गया और वे यह देखने के लिए इंतजार करने लगे कि आगे क्या होगा।

इंस्पेक्टर ने अपनी सर्विस कैप का ऊपरी हिस्सा ऊपर की ओर धकेला और टोपी को सिर के पीछे की ओर झुकाया। उसने विधवा को ध्यान से देखा।

वह अधेड़ उम्र की और काफी लंबी थीं, फिर भी उनका चेहरा सुंदर था। उनके जबड़े की दृढ़ता उनके सुगठित चेहरे पर खूब जंचती थी, और वह सीधी खड़ी थीं, जिससे उनकी शारीरिक बनावट का अंदाजा लगता था कि जवानी में वह वाकई बेहद खूबसूरत रही होंगी।

‘तुम्हारे जैसे लोगों की वजह से ही हम इस बदमाश को पकड़ नहीं पा रहे हैं। उसे ढूंढने का पता बताने के बजाय, तुम उसे कानून के शिकंजे से भागने में मदद कर रहे हो?’

‘पुलिस अधिकारी,’ उसने धीरे और स्पष्ट स्वर में कहा, ‘हो सकता है कि वह आपके लिए एक बदमाश हो; लेकिन मेरे लिए वह एक भाई है; एक बहुत ही प्यारा भाई।’

इंस्पेक्टर समझ नहीं पा रहा था कि अब क्या करे। उसके चारों ओर मुस्कुराते चेहरे थे। वे उसकी परेशानी पर हंस रहे थे। उसे स्पष्ट रूप से पता था कि इस गांव की पूरी आबादी, पटेल से लेकर नीचे तक, डाकू सरदार के पीछे खड़ी थी और उसे शरण और समर्थन दे रही थी। वे पुलिस दल की इस परेशानी पर खुलकर खुशी मना रहे थे। वह उनमें से हर एक को पीट-पीट कर सबक सिखाना चाहता था। लेकिन, चूंकि ऐसा करना संभव नहीं था, इसलिए सबसे अच्छा यही लगा कि जितना संभव हो सके चुपचाप वहां से निकल जाए।

‘टुकड़ी, कतार में लग जाओ!’ उसने आदेश दिया। सभी जवान तीन पंक्तियों में कतार में लग गए। ‘बाएँ मुड़ो; बाएँ से, तेज़ी से आगे बढ़ो।’ और पुलिस चली गई।

एक बूढ़ा आदमी, जिसकी सफेद दाढ़ी, मूंछें और दाढ़ी के बाल थे, सौ गज से भी कम दूरी पर एक भूसे के ढेर में लेटा हुआ था, और जाते हुए पुलिसकर्मियों को सौम्य भाव से देखते हुए अपनी दाढ़ी और चेहरे से भूसे के रेशे निकाल रहा था।

विधवा पास ही एक झोपड़ी में रहती थी। गांव की मुख्य सड़क पर चलते हुए बाईं ओर तीसरा मोड़ था; और उसकी झोपड़ी बाईं ओर छठी थी।

अगले दिन दिवाली का त्योहार था। उस रात, उसके दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। इतनी रात को कौन आ रहा है, यह सोचकर उसने झिझकते हुए दरवाजा खोला, तो देखा कि एक लंबा और गरिमामय व्यक्ति उसके दरवाजे पर खड़ा है, जिसका सुंदर चेहरा सफेद दाढ़ी, मूंछों और बड़ी मूंछों से आंशिक रूप से ढका हुआ है।

‘मैं मान सिंह हूँ,’ उसने बिना किसी झिझक के घोषणा की। ‘कल मैंने आपको उस हट्टे-कट्टे पुलिसवाले से मुझे अपना भाई कहते हुए सुना। मैं आपको उसके लिए धन्यवाद देने आया हूँ और यह बताने आया हूँ कि अब मैं आपको अपनी बहन मानता हूँ। कृपया मेरे आदर और स्नेह के प्रतीक के रूप में यह छोटा सा उपहार स्वीकार करें। अब से, मेरी मृत्यु तक, चाहे मैं उस समय कितनी भी दूर क्यों न रहूँ, मैं दिवाली की

रात आपसे मिलने आऊँगा, मेरी बहन।'

ये कहते हुए उसने कुछ मुड़े हुए कागज उसके हाथों में थमा दिए।

जया ने कागज को नीचे झुकाकर खोलने की कोशिश की ताकि देख सके कि उसमें क्या है।

मान सिंह ने उसे सौ रुपये के पांच नोट दिए थे।

उसने आंखों में आंसू भरे हुए ऊपर देखकर उसे धन्यवाद दिया।

लेकिन वह जा चुका था।

इसके बाद, अपनी मृत्यु तक, हर दिवाली की रात, मान सिंह विधवा जया से मिलने का अपना वादा निभाता रहा, जो उसे अपना भाई कहती थी। और हर बार वह उसे पाँच सौ रुपये देता था।

गांववाले दबी आवाज़ में कहते हैं कि मरने के बाद भी मान सिंह दिवाली की रात को जया गांव आते हैं। वे आत्मा बनकर आते हैं, लेकिन जो पैसा छोड़ जाते हैं, वह असली होता है।

मान सिंह ने अपने अनुयायियों के गिरोहों को कुशलतापूर्वक, उदारतापूर्वक और न्यायपूर्ण ढंग से संगठित और शासित किया। और उनमें हमेशा अनुशासन बना रहा।

उन लोगों को अपने नेता के नेक स्वभाव का पता था। वे कोई भी ऐसा काम करने से डरते थे जिससे राजा की और इस तरह गिरोह की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचे।

हिसाब-किताब सख्ती से रखा जाता था और लूटी गई सारी संपत्ति समान रूप से बांटी जाती थी।

बहुत समय बाद पुलिस के साथ हुई एक झड़प में, डकैतों के सरदार के तीसरे बेटे तहसीलदार सिंह को पकड़ लिया गया। उसके पास से एक डायरी मिली, जिससे पता चला कि वह गिरोह का प्रबंधक था, क्योंकि उसमें उनके सभी दैनिक खर्चों का हिसाब-किताब दर्ज था। डायरी पढ़ने पर पुलिस यह देखकर हैरान रह गई कि डकैत अपने खाने का सारा पैसा खुद देते थे, न कि उसे लूटते थे। गिरोह द्वारा खरीदी गई हर वस्तु के लिए प्रत्येक व्यापारी को नकद भुगतान किया गया था।

तो क्या इसमें कोई आश्चर्य की बात है कि यह अद्भुत व्यक्तित्व जहाँ भी गया, उसका अत्यंत सम्मान और हार्दिक सलाम के साथ स्वागत किया गया? हर किसी ने उसकी मदद की, और कोई भी ग्रामीण उसके ठिकाने या गतिविधियों के बारे में जानकारी देने या धोखा देने से बचता रहा।

उनके बारे में बताई गई कुछ कहानियाँ शायद बढ़ा-चढ़ाकर कही गई हों। अफवाहें अक्सर ऐसी ही होती हैं। लेकिन उन पर कभी किसी गरीब आदमी के प्रति दुर्व्यवहार का आरोप नहीं लगा, यहाँ तक कि पुलिस ने भी नहीं। वास्तव में, वे दलितों के मित्र और सहायक थे।

इंग्लैंड के शेरवुड फॉरेस्ट के मशहूर रॉबिन हुड की तरह, मान सिंह भी कुलीन परिवार से थे। वे राजपूत थे (जो हिंदुओं का एक योद्धा समुदाय है), और उनका जन्मस्थान आगरा से कुछ ही दूरी पर स्थित राठौर खेड़ा गाँव था। उनका जन्म वर्ष 1890 था।

मान सिंह को बचपन से ही प्रकृति और उससे जुड़ी हर चीज़ से प्रेम था। उन्हें अपने खेतों की जुताई और बुवाई में बहुत आनंद आता था, और फसल कटाई का समय उनके लिए खुशी और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का क्षण होता था, जब वे गेहूं के सुनहरे दानों को इकट्ठा करते थे। यही उनकी मेहनत का फल था। उन्हें मिट्टी का हर इंच प्यारा था। उष्णकटिबंधीय सूरज की धूप में नंगे बदन मेहनत करते हुए भी उनकी तगड़ी युवा मांसपेशियां उनके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं थीं। हर रात वे सोने के लिए लेटते थे, कभी-कभी दिन भर की धूल से सने हुए भी, और तुरंत सो जाते थे; थके हुए, लेकिन बेहद खुश।

अपने थोड़े-बहुत खाली समय में, जो बहुत कम मिलता था, वह अपने खेतों के किनारे बसे जंगल में टहलने चला जाता था। वहाँ वह एक विशाल अंजीर के पेड़ के नीचे एकांत में बैठता और जंगली पक्षियों के मधुर संगीत को अपने मन में सुकून भर देता; मोर की दर्द भरी पुकार, 'दिमागी बुखार' पक्षी की चुभती और परेशान करने वाली आवाज़, सुबह-शाम को जंगली मुर्गे की चहचहाहट, शाम ढलते समय चिड़ियों की अनोखी आवाज़ और रात में विशाल सींग वाले उल्लुओं की रहस्यमय और डरावनी आवाज। जीवन से उसे इन चीजों के अलावा और कुछ नहीं चाहिए था। वह सरल था; वह संतुष्ट था; और वह खुश था।

उनके पिता बिहारी सिंह गांव के मुखिया या पटेल थे। वे धनी थे और अपने दो बेटों, बड़े बेटे नवाब सिंह और मेहनती, शांतिप्रिय किसान युवक मान सिंह के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करते थे।

अन्य भारतीय लड़कों की तरह, मान सिंह के सरल जीवन में भी प्रेम और विवाह का आगमन बहुत कम उम्र में ही हो गया था। उनके पिता ने कम उम्र में ही उनका

विवाह एक सुंदर राजपूत कन्या से करवा दिया था। उनसे उन्हें चार पुत्र हुए—जसवंत सिंह, सूबेदार सिंह, तहसीलदार सिंह और धूमन सिंह; और एक प्यारी पुत्री, जिसका नाम उन्होंने रानी रखा।

महज 24 वर्ष की आयु में ही वे अपने गाँव के मुखिया चुने गए और आगरा जिला बोर्ड के सदस्य बने। प्रथम विश्व युद्ध के अंधकारमय दिनों में एक नेक और सम्मानित नागरिक के रूप में उनके बहुमूल्य सहयोग से तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को काफी लाभ हुआ। वे हमेशा एक ईमानदार व्यक्ति थे।

लेकिन अपनी विशाल भूमि की खेती करने से बढ़कर उसे किसी और चीज से खुशी नहीं मिलती थी, और उससे प्राप्त होने वाली आय उसकी कड़ी मेहनत का भरपूर प्रतिफल देती थी।

उनकी असाधारण रूप से लंबी कद-काठी, मिलनसार व्यक्तित्व और बचपन से रखी हुई दाढ़ी ने उन्हें हर जगह प्रसिद्ध और सम्मानित बना दिया था; चाहे वे मुखिया के रूप में ग्राम विवादों का निपटारा करते थे या जिला बोर्ड के सक्रिय सदस्य के रूप में। उनका माथा असाधारण रूप से ऊंचा था और वे सिर पर एक बड़ी और ऊंची पगड़ी पहनते थे। इससे उनकी शारीरिक ऊंचाई और बढ़ जाती थी और उन्हें एक गरिमापूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त होता था।

फिर भाग्य ने अपने एक विचित्र खेल में यह तय किया कि इस सुखी और संतुष्ट परिवार के साथ सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है और उसने ऐसी घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू कर दी जिसने अंततः भारत के इस नेक बेटे को देश के सबसे खूंखार और कुख्यात डाकुओं में से एक बना दिया। भाग्य ने इससे भी आगे बढ़कर इस व्यक्ति को वीरता और रक्तपात के विचित्र मिश्रण में अपना इतिहास लिखने को मजबूर कर दिया, जिससे वह देश का सर्वकालिक महानतम और साथ ही साथ सबसे परोपकारी डाकू बन गया।

बिहारी सिंह के पिता का तलफी राम नामक एक व्यक्ति के साथ जमीन को लेकर कानूनी विवाद चल रहा था। तलफी राम एक धूर्त और षड्यंत्रकारी ब्राह्मण था जो बिहारी सिंह की संपत्ति और मान सिंह की बढ़ती लोकप्रियता और पद से ईर्ष्या करता था।

बड़े भाई नवाब सिंह पहले ही परिवार छोड़कर जा चुके थे और उस समय जंगलों में शांतिपूर्ण खानाबदोश जीवन व्यतीत कर रहे थे।

अचानक गांव में डकैती हो गई। डकैती का अर्थ है लूट और हिंसा के साथ किया गया हमला। इस मामले में रात में एक बनिया (साहूकार) के घर पर हमला किया गया, बनिया को चाकू मारा गया लेकिन उसकी जान नहीं ली गई और कुछ पैसे लूट लिए गए।

दुष्ट तलफी राम ने पुलिस को झूठी सूचना दी कि खानाबदोश बड़े भाई नवाब सिंह ने यह कृत्य किया था, जिसमें उसके पिता बिहारी सिंह ने उसकी सहायता और शरण दी थी। बिहारी सिंह बनिया को पसंद नहीं करता था क्योंकि वह तलफी राम का मित्र था। उसने यह भी कहा कि नवाब सिंह के भाई मान सिंह को इस छापे के बारे में सब पता था और उसने इसमें सक्रिय रूप से सहयोग किया था।

पुलिस ने, जैसा कि दुनिया भर की पुलिस करती है, बिहारी सिंह और मान सिंह दोनों को थाने बुलाया, लापता नवाब सिंह के बारे में उनसे गहन पूछताछ की और उन्हें अच्छे व्यवहार की चेतावनी दी। इससे अधिक कुछ नहीं किया गया, क्योंकि कुछ भी साबित नहीं हो सका। कोई सबूत नहीं था।

लेकिन बूढ़े बिहारी सिंह, जो इस आरोप से निर्दोष थे, ने इस घटना को अपने परिवार के मान-सम्मान पर एक अपूरणीय कलंक मानते हुए दिल पर गहरा प्रहार किया। नौजवान सिंह ने अपने पिता का पूरे दिल से समर्थन किया। उनके भीतर राजपूती भावना उमड़ रही थी और उन्होंने दुष्ट ब्राह्मण तलफी राम और उसके पूरे परिवार से बदला लेने का निश्चय कर लिया था।

यह 1928 का वह दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष था जब मामला चरम पर पहुंच गया और अंतर्निहित दुश्मनी खुले संघर्ष में तब्दील हो गई।

मान सिंह अपने चार बेटों, रूपा नामक एक रिश्तेदार और बड़ी संख्या में मित्रों और शुभचिंतकों के साथ जंगल में गए। वहां वे अपने भाई नवाब सिंह से मिले, जिन पर तलफी राम ने मूल डकैती का आरोप लगाया था।

एक रात संयुक्त दल ने तलफी राम के घर पर धावा बोल दिया। ब्राह्मण को हमले की आशंका थी और उसने अपनी रक्षा के लिए कुछ भाड़े के सैनिकों को काम पर रखा था। एक खूनी लड़ाई हुई, जिसमें अंततः मान सिंह और उसके दल को जीत मिली। उनके कई विरोधी मारे गए और कई घायल हो गए।

इस एक घटना ने मान सिंह का नाम एक सम्मानित, उपयोगी और कानून का पालन करने वाले नागरिक के रूप में हमेशा के लिए मिटा दिया। इसके बजाय, अब

उसका नाम खून और हत्या के अक्षरों में दर्ज हो गया, मान सिंह डकैत के रूप में, जिसे बाद में सभी डकैतों का राजा कहा जाने लगा।

इसके बाद पुलिस ने तेजी से और सराहनीय कार्रवाई की और मान सिंह और उसके पूरे दल को गिरफ्तार कर लिया गया; केवल उसका भाई नवाब सिंह, उसका सबसे बड़ा बेटा जसवंत सिंह और एक भतीजा दर्शन सिंह ही भागने में सफल रहे।

मान सिंह को अपने जीवन में पहली और आखिरी बार कारावास की सजा मिली। उन पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

समय बीतने और तनाव कम होने के साथ, तीनों भगोड़े, नवाब सिंह, जसवंत सिंह और दर्शन सिंह, कभी-कभार छुपकर बूढ़े बिहारी सिंह के घर उनसे मिलने जाते थे। तलफी राम को इन गुप्त मुलाकातों की भनक लग गई। उसने अपनी हालिया हार का बदला लेने की कसम खाई थी और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने चुपचाप अपनी सेना और मित्रों को फिर से इकट्ठा कर लिया था।

एक दिन, जब तीनों आदमी बूढ़े पिता के साथ घर में इकट्ठा थे, तभी तलफी राम और उसके गिरोह ने जवाबी हमला कर दिया और गोलीबारी शुरू हो गई। उसी समय, तलफी राम ने बड़ी चतुराई से पुलिस को मदद के लिए संदेश भेजा और बताया कि तीनों भगोड़े शहर में हैं और मुसीबत आने वाली है।

पुलिस ने गोलीबारी की आवाज सुनी और यह निष्कर्ष निकालते हुए कि तीनों वांछित व्यक्ति ही हमलावर थे, सशस्त्र दल के रूप में मौके पर पहुंची। इस बीच, तलफी राम और उसके साथी चालाकी से घटनास्थल से गायब हो गए, तीनों भगोड़ों को घर के अंदर और पुलिस को बाहर छोड़कर।

नादानी में आकर नवाब सिंह और अन्य दो लोगों ने सशस्त्र पुलिस पर गोलीबारी कर दी। लेकिन वे संख्या और हथियारों के मामले में कमज़ोर थे। सबसे बड़े बेटे जसवंत सिंह और भतीजे दर्शन सिंह की गोली लगने से मौत हो गई। नवाब सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया, उन पर मुकदमा चलाया गया और हत्या के आरोप में उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

तलफी राम अपने त्वरित और बेहद सफल प्रतिशोध पर गर्व महसूस कर रहा था।

मान सिंह के रिश्तेदारों में एक गद्दार था। खेम सिंह नाम का उसका एक दूर का

चचेरा भाई, उसका साथ छोड़कर उस ब्राह्मण के पास चला गया था जिसने उसे धोखे के बदले पैसे दिए थे। दरअसल, इसी व्यक्ति ने तलफी राम को बताया था कि तीनों भगोड़े बिहारी सिंह के साथ घर में हैं, और इसी ने जवाबी हमले को अंजाम दिया था। पुलिस को बुलाने का काम भी इसी व्यक्ति ने किया था।

मान सिंह ने दस वर्षों तक अपने हृदय में प्रतिशोध की भावना पाली। उसका घर तहस-नहस हो चुका था, उसके पिता बिहारी सिंह और पूरे परिवार का नाम कलंकित हो चुका था। अब वे ऐसे परिवार नहीं रहे थे जिनका सम्मान किया जाता था। वे केवल लुटेरों और हत्यारों का परिवार बनकर रह गए थे। सबसे बुरी बात यह थी कि उसके पिता, जो बूढ़े थे, का हृदय टूट चुका था।

इन सब के लिए धूर्त ब्राह्मण तलफी राम जिम्मेदार था। अपने बेटे जसवंत और भतीजे दर्शन सिंह की मौत के लिए, और उसे तथा उसके भाई नवाब सिंह को वर्षों तक जेल में भेजने के लिए भी।

हाँ; इन सब का कारण तलफी राम ही था। तलफी राम और वह दूसरा गद्दार कुत्ता, खेम सिंह, जो दुगना गद्दार था क्योंकि वह बूढ़े बिहारी सिंह के परिवार से था।

मान सिंह ने तय कर लिया था कि रिहा होने पर वह क्या करेगा।

अंततः वर्ष 1938 आ गया। दस लंबे वर्ष जेल में बीत चुके थे। इन दस वर्षों के दौरान, मान सिंह एक अनुकरणीय कैदी और सबसे अच्छे व्यवहार वाले कैदियों में से एक था। उसका जीवन केवल प्रतिशोध के लिए ही जिया जाता था।

उनके उत्कृष्ट आचरण के कारण उन्हें उसी वर्ष रिहा कर दिया गया था।

जेल से छूटते ही वह तलफी राम और खेम सिंह के परिवारों के साथ विवादों और झगड़ों में उलझ गया। एक बार फिर पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। उन्होंने उसे चेतावनी दी कि उसे दोबारा जेल भेज दिया जाएगा। उसे दो साल तक (मई 1940 तक) अच्छे व्यवहार के लिए जमानत पर रिहा कर दिया गया। लेकिन खेम सिंह को छूट मिल गई और वह बिना किसी सजा के छूट गया।

इससे जले पर नमक छिड़कने जैसा हुआ, और मान सिंह का गुस्सा और भी बढ़ गया। लेकिन अब उन्हें सावधानी का महत्व समझ आ चुका था, और उन्होंने मई 1940 तक एक सुधरे हुए नागरिक की तरह व्यवहार करते हुए धैर्य बनाए रखा, क्योंकि मई 1940 वह समय था जिसके लिए उन्हें अच्छे व्यवहार के लिए बाध्य किया गया था।

अंततः 31 मई, 1940 के उस सुखद दिन का सूरज डूब गया। मान सिंह एक बार फिर स्वतंत्र व्यक्ति बन गए थे।

उसने अपना बदला लेने के लिए सिर्फ एक महीने का इंतजार किया।

4 जुलाई, 1940 की रात को, अपने शेष तीन बेटों, वफादार रूपा और अन्य रिश्तेदारों और दोस्तों की सहायता से, मान सिंह ने अपने दो दुश्मनों के घरों पर अचानक हमला कर दिया।

दो महिलाओं को छोड़कर, तलफी राम और उनके परिवार, या उनमें से जो भी घर पर थे, उनका बेरहमी से कत्ल कर दिया गया; जबकि मान सिंह के सबसे छोटे बेटे, धूमन सिंह ने खुद खेम सिंह के दो करीबी रिश्तेदारों के सिर काट दिए।

अब निर्णायक मोड़ आ चुका था। मान सिंह और उसके अनुयायियों तथा कानून और समाज के बीच खून और अपराधबोध की एक ऐसी दीवार खड़ी हो गई थी जिसे न तो भुलाया जा सकता था, न पार किया जा सकता था और न ही उससे बचा जा सकता था। अब से वे हमेशा के लिए अपराधी बन गए थे और मानवता के विरुद्ध शुरू हुए इस द्वेष का प्रायश्चित केवल इस अपराधी गिरोह के सभी सदस्यों की मृत्यु से ही संभव था।

कम चरित्र वाला व्यक्ति इस अटल भाग्य के सामने कांप उठता। सबकी निगाहें उसके खिलाफ थीं, सब उसके खून के प्यासे थे। सब उससे डरते थे और नफरत करते थे। चारों राज्यों की पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। वह एक भटके हुए शरीर में भटकी हुई आत्मा था। वह कहाँ जाए, कहाँ छिपे? वह कैसे खाए-पिए और जिए? उसे कहीं रोजगार नहीं मिल रहा था; कहीं ईमानदारी से रोजी-रोटी नहीं कमा पा रहा था। उसके प्यारे खेत, उसका प्यारा घर, पिता और पत्नी हमेशा के लिए उससे छिन गए थे। वह एक बहिष्कृत था; चोर, लुटेरा, हत्यारा, डाकू!

सच कहें तो, अधिकांश पुरुष भय, हताशा और लाचारी के कारण, उसके सामने आने वाले ऐसे भाग्य के आगे घुटने टेक देते।

लेकिन मान सिंह जरा भी विचलित नहीं हुए। वे उससे कहीं अधिक दृढ़ निश्चयी थे। वास्तव में, उनमें साहस था और वे सच्चे मर्द थे।

उसने स्थिति को उसके वास्तविक स्वरूप में स्वीकार किया और उससे सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने का प्रयास किया।

और वह सबसे अच्छा सौदा वास्तव में बहुत ही शानदार था।

एक साधारण से बहिष्कृत व्यक्ति से, वह 15 वर्षों में भारत का सबसे महान डाकू बन गया। इस उपलब्धि को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए, उसे पूरे प्रायद्वीप में भारतीय डाकुओं का राजा कहा जाने लगा। उसने एक साधारण डाकू के रूप में अपना जीवन शुरू किया; हर कोई उससे नफरत करता था, डरता था और उसे तुच्छ समझता था। लेकिन अंत में, वह पूरे देश में लाखों लोगों द्वारा सम्मानित, प्रिय और पूजनीय बन गया। वह निर्धन होकर भाग गया; लेकिन उसने धन और मंदिर की घंटियाँ दान कीं, और स्वयं स्कूल और मंदिर बनवाए। वह अपने व्यर्थ प्रतिशोध के कृत्यों के स्थल से भाग गया; लेकिन उसने उन अनेक लोगों को बचाया और उनकी सहायता की जो स्वयं प्रतिशोध के शिकार हो गए थे। उसने बहुत नुकसान किया था और करता भी रहा; लेकिन उसने बहुत भलाई भी की।

नश्वर और पापी मनुष्यों के लिए मान सिंह और उनके कुकर्मों का न्याय करना उचित नहीं है। यह सर्वोच्च न्याय केवल सर्वज्ञानी सृष्टिकर्ता को दिया गया है, जिन्होंने मान सिंह को बनाया और यह जानते थे कि उन्होंने उन्हें क्यों बनाया और उन्हें पाप करने की अनुमति क्यों दी। लेकिन संपूर्ण भारत यह स्वीकार करता है और घोषणा करता है कि मान सिंह वास्तव में हर मायने में एक 'मनुष्य' थे—असीम साहस और अदम्य साहस वाले व्यक्ति।

हो सकता है कि जो लोग उनके कारनामों को पढ़ें, वे भी यही राय रखने लगें।

जिस समय मान सिंह ने डाकू के रूप में अपना करियर शुरू किया, उस समय भारत के चार राज्य तीन नदियों से सिंचित एक क्षेत्र में स्थित थे। ये राज्य थे मध्य भारत, विंध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश; और नदियाँ थीं चंबल, कुंवारी और यमुना।

देश बेहद उबड़-खाबड़ था और ज़मीन का कटाव होता रहता था। इन घाटियों के बीच से ऊपर बताई गई तीनों नदियाँ और उनकी सहायक नदियाँ बहती थीं; गर्मियों में ये ज़्यादातर सूखी नालियाँ होती थीं, लेकिन बारिश आने पर ये उग्र, दुर्गम जलधाराओं में बदल जाती थीं। यह एक जंगली इलाका था; झाड़ियों से भरा हुआ और जलधाराओं, गहरी घाटियों और गुफाओं से घिरा हुआ, जो 8000 वर्ग मील से भी अधिक क्षेत्र में फैला हुआ था।

खेती के लिहाज से यह ज़मीन और मिट्टी किसी काम की नहीं थी। लेकिन

डाकुओं के एक गिरोह को पनाह देने के लिए, जो गुफाओं में छिप सकते थे, खाइयों में रेंग सकते थे, अपने शिकारों पर हमला कर सकते थे और फिर हवा में गायब हो सकते थे, यह इलाका आदर्श था।

मान सिंह जन्मजात सेनापति थे। उन्हें तुरंत पता चल गया कि उन गहरी खाइयों, गुफाओं, सूखे जलमार्गों और कंटीली झाड़ियों के जाल में वे और उनके साथी अचानक हमले से सुरक्षित रहेंगे। रास्ते कम थे और वे भी टेढ़े-मेढ़े थे। हर जगह ऊंची घास उगी हुई थी। उस इलाके के पास शायद ही कोई आता था। वह जगह मानो मृतकों की भूमि थी, जहाँ भूत-प्रेतों और विशाल सींग वाले उल्लुओं के अलावा और कुछ नहीं रहता था, जो रात में शिकार के लिए चूहों या खरगोशों की तलाश में नालों में चुपचाप तैरते रहते थे।

लेकिन मान सिंह ने इसे अपना साम्राज्य बना लिया; एक विशाल, दुर्गम और कठोर साम्राज्य। यहीं उसने अपना गढ़ और मुख्यालय स्थापित किया, जहाँ से वह अपने डाकुओं के गिरोहों को लगातार छापे मारने के लिए भेजता था और जहाँ पुलिस के लिए उसे पकड़ने का सपना देखना भी बहुत मुश्किल था।

जैसे-जैसे उसकी प्रसिद्धि और दबदबा बढ़ता गया, वैसे-वैसे अधिक से अधिक अपराधी और आवारा लोग उसके झंडे तले जुड़ने लगे। जो डाकू अब तक अपने दम पर काम करते थे, उन्होंने भी अब उसका साथ देने का फैसला किया। उनमें से कुछ ने तो पहले ही ऐसी प्रतिष्ठा हासिल कर ली थी कि लोग उनके नाम सुनते ही कांप उठते थे। वे सभी अनुभवी थे। एक-एक करके और समूहों में, वे इस नए नेता के झंडे तले इकट्ठा होते गए; जिसे वे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानते थे जिसमें इतने क्रूर और निर्दयी अपराधियों के इस बेमेल गिरोह को एकजुट रखने के लिए आवश्यक मजबूत व्यक्तित्व और संगठनात्मक क्षमता दोनों मौजूद थीं।

उनके अनुयायियों में निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं: सूबेदार सिंह, तहसीलदार सिंह (जो बाद में 'भयंकर' के नाम से प्रसिद्ध हुए) और धूमन सिंह, उनके शेष तीन पुत्र; चरना (भयंकर), जो आगे चलकर उनके सबसे सक्षम सेनापति बने, और श्यामा, ये दोनों डाकू अब तक संयुक्त प्रांत में सक्रिय थे; पृथ्वी, शंकर और धवन, राजस्थान के डाकू; सुल्तान, लखन सिंह (शेर) और अमृत लाल, मध्य भारत से; प्रताप और देवी सिंह, विंध्य प्रदेश से; और उनके पुराने मित्र, दूर के रिश्तेदार और विश्वसनीय अनुयायी रूपा (वफादार), जो उनसे अधिक समय तक जीवित रहे और आज भी डाकू के रूप में

सक्रिय हैं।

जिस प्रकार इंग्लैंड के रॉबिन हुड ने शेरवुड वन के दुर्गों में अपने साथियों को इकट्ठा किया, जहाँ से वे अपने हमले शुरू करते और फिर उन कम ज्ञात भूलभुलैयाओं में गायब हो जाते; उसी प्रकार भारत के मान सिंह ने अपने डाकुओं के गिरोह को इकट्ठा किया, जिससे चंबल की घाटियाँ, जैसा कि वे जानी जाती थीं, शेरवुड वन के समान प्रसिद्ध हो गईं, क्योंकि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को शरण दी जो अमर ख्याति प्राप्त रॉबिन हुड के समान ही बहादुर और वीर था।

उसके शुरुआती हमले उसी पुरानी दुश्मनी को मिटाने के लिए थे जिसने उसे डाकू बना दिया था। ये हमले तलफी राम और खेम सिंह के परिवारों के बचे हुए सदस्यों पर लक्षित थे, जिन्हें उसने बेरहमी से एक-एक करके खत्म करना शुरू कर दिया। बताया जाता है कि खेम सिंह के अंतिम बचे पोते की हत्या के साथ ही उसके सभी रिश्तेदार पूरी तरह से सफाया हो गए। इस बात का कोई रिकॉर्ड नहीं है कि ब्राह्मण के रिश्तेदारों का भी यही हाल हुआ या नहीं, लेकिन उनके बारे में फिर कभी कोई खबर न मिलने से यही लगता है कि शायद ऐसा ही हुआ था। या हो सकता है कि जो कुछ लोग बचे थे वे हमेशा के लिए उस इलाके से भाग गए हों।

इस दौरान, मान सिंह के अनुयायियों और बदमाशों का गिरोह तेजी से बढ़ता गया। और मनुष्य केवल बदला लेकर जीवित नहीं रह सकते। उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। और भोजन के लिए पैसे लगते हैं। इसलिए मान सिंह को अपने हमलों का दायरा बढ़ाना पड़ा, केवल उस वस्तु, यानी पैसे, को प्राप्त करने के लिए, जिसका अर्थ था उन सभी के लिए भोजन और इस प्रकार जीवन।

उसकी शुरुआती योजनाएँ सरल लेकिन बुद्धिमत्तापूर्ण थीं। और उनके पीछे उसके दिमाग की पूरी ताकत थी—एक ऐसा दिमाग जो कभी चतुर और रचनात्मक प्रगति के लिए समर्पित था—अब बुरी तरह विकृत हो चुका था, और अब कानूनविहीन कारनामों और साहसी, जघन्य डकैती में लिप्त था।

शुरू से ही, मान सिंह ने खुद को अपार क्षमता और दूरदर्शिता वाले आयोजक, असाधारण योग्यता और क्षमता वाले रणनीतिकार के रूप में प्रकट किया।

उसने अपने गिरोह को कई समूहों में बाँट दिया। एक समूह में जासूस और मुखबिर थे। वे गाँवों और कस्बों में घूमते और अमीर व धनी लोगों की पहचान करते। बाद में, वे उन्हें, या शायद उनके किसी बेटे या किसी प्रिय रिश्तेदार को अगवा कर लेते

और घाटी के दुर्गम इलाकों में फिरौती के लिए बंधक बना लेते।

अपहृत व्यक्ति, चाहे वह जमींदार हो, व्यापारी हो, जमींदार हो या ऐसे व्यक्ति का वारिस हो, उसे अपने रिश्तेदारों को घर पत्र लिखकर स्पष्ट रूप से बताना होगा कि उसका अपहरण कर लिया गया है और गिरोह ने फिरौती की रकम मांगी है। इसके अलावा, उसे यह भी कहना होगा कि यदि निर्धारित समय सीमा के भीतर रकम नहीं दी गई, तो उसे निश्चित रूप से मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

फिरौती हमेशा अदा कर दी जाती थी। लोग पुलिस को मामला बताने की हिम्मत नहीं करते थे, क्योंकि पुलिस वैसे भी बेबस थी और कुछ नहीं कर सकती थी; वहीं, अगर मान सिंह को पता चल जाता कि पुलिस को बता दिया गया है, तो इस बात का बड़ा खतरा था कि फिरौती के लिए बंधक बनाए गए व्यक्ति को तुरंत मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

एक और टुकड़ी को आक्रमणकारी बल के रूप में गठित किया गया। इस अग्रिम दल का नेता चरना नामक डाकू था। उसे 'क्रूर' की उपाधि प्राप्त थी, और वास्तव में वह मान सिंह के सभी लेफ्टिनेंटों में सबसे निर्दयी था। एक निडर व्यक्ति और जन्मजात कुशल रणनीतिकार, उसने अपने अधीन सेवा करने के लिए सबसे खूंखार और कठोर सदस्यों का चयन किया, जिन्हें उसने जंगल युद्ध और टॉमी गन तथा आधुनिक उपकरणों के उपयोग का प्रशिक्षण दिया। वह स्वयं अपने समय में एक सैनिक रह चुका था और उसे अपने दल के पास मौजूद सर्वोत्तम उपकरणों का चयन करने की छूट दी गई थी, जिनमें हैंड-ग्रेनेड, स्टेन गन, टॉमी गन और .303 सर्विस राइफलें शामिल थीं, जो सभी अवैध रूप से प्राप्त की गई थीं, साथ ही गोला-बारूद का विशाल भंडार भी था।

ये 'जासूस' अग्रिम दस्ते को सूचना देते थे, जो अक्सर वास्तविक अपहरण का काम करते थे।

इतना ही नहीं, चरना के आदमी कई मायनों में कमांडो यूनिट की तरह काम करते थे। उनका कर्तव्य था पुलिस की गतिविधियों पर नज़र रखना, जवाबी हमला करना, घात लगाकर उन्हें परेशान करना और तब तक उन्हें उलझाए रखना जब तक कि डाकुओं का मुख्य दल भाग न निकल जाए, या फिर पुलिस को घेरकर पीछे से उन पर हमला करना।

तहसीलदार सिंह, तीसरा पुत्र, उस टोली का कुशल निशानेबाज था। वह एक

उत्कृष्ट निशानेबाज था। घोर अंधेरे में भी, उसने जरा सी भी आवाज करने वाले पर गोली चलाना सीख लिया था। और हमेशा ऐसा होता था कि वह व्यक्ति फिर कभी इस जीवन में कोई आवाज नहीं करता था।

या फिर तहसीलदार घोर अंधेरी रात में किसी पुलिस चौकी के पास पत्थर फेंक देता। संतरी चुनौती देता या गोली चला देता। तहसीलदार चुनौती देने वाली जगह का पता लगा लेता या पुलिसकर्मी की राइफल से निकली चिंगारी को देख लेता। अगले ही पल संतरी की मौत हो जाती।

लखन सिंह, जिसे 'शेर' कहा जाता था, और देवी सिंह, मान सिंह के उन दो लेफ्टिनेंटों में से थे जिन्होंने अपने लिए सबसे निर्दयी और अतुलनीय रूप से साहसी होने की प्रतिष्ठा अर्जित की थी।

महान नेता कभी अकेले नहीं जाते थे। उनके साथ हमेशा एक अंगरक्षक होता था जिसके पास टॉमी गन होती थी और जिसने अपनी जान की कीमत पर भी उनकी रक्षा करने की शपथ ली होती थी।

गिरोह के सदस्यों में हमेशा सौहार्दपूर्ण भाईचारे की भावना बनी रहती थी; ईमानदारी, निष्ठा और वफादारी की भावना; अपने लोकप्रिय सरदार के प्रति सच्चा प्रेम और बलिदान की भावना, जिसकी रक्षा के लिए या जिसके आदेश पर गिरोह का कोई भी सदस्य पल भर में अपनी जान देने को तैयार रहता था। वास्तव में, पूर्ण आज्ञापालन ही वह मुख्य कारण था जिसके चलते गिरोह इतने लंबे समय तक सफलतापूर्वक काम कर सका।

हथियारों और गोला-बारूद का भंडार भरने के लिए, गिरोह पुलिस चौकियों और चौकियों पर लगातार छापे मारता था, जहाँ के कैदियों को मार डाला जाता था और उनके उपकरण चुरा लिए जाते थे। अन्य एजेंटों को केवल सेना और पुलिस आपूर्ति और स्रोतों से, जहाँ भी और जब भी संभव हो, ऐसे हथियार और गोला-बारूद लूटने या भगोड़ों से प्राप्त करने के लिए नियुक्त किया गया था।

हथियार हासिल करने के एकमात्र उद्देश्य से इस्तेमाल की जाने वाली एक चाल यह थी कि चरना और उसके गिरोह के सदस्य पुलिस गश्ती दल से मुठभेड़ करवाते थे, जिसमें चरना एक या दो डकैतों को दुश्मन से भिड़ाने के लिए भेजता था। गोलीबारी होती थी, और फिर एक डकैत मरने का नाटक करता था। दूसरा, यदि उसका कोई साथी होता, तो भागने का नाटक करता था। पुलिस गश्ती दल उस 'मरे हुए' व्यक्ति

की ओर बढ़ता था ताकि उसके पास से गिरोह के बारे में कोई भी सबूत, जैसे दस्तावेज़ या अन्य जानकारी मिल सके। जब वे खुले में आ जाते थे, तो चरना के बाकी अग्रिम दल के सदस्य चारों ओर से उन पर हमला करते और उन्हें मार गिराते थे। फिर, ज़ाहिर है, उनके पास मौजूद राइफलें और अन्य हथियार, साथ ही उनका सारा गोला-बारूद और उपकरण लूट लिए जाते थे।

मान सिंह और उसके साथियों ने चंबल नदी और उसके आसपास की घाटियों में हिंसा, लूटपाट और हत्या का यह स्वेच्छा से चुना हुआ जीवन वर्षों तक खुले में डेरा डाले या गुफाओं में छिपकर बिताया। लेकिन इस पूरे समय में उसने कभी किसी ग्रामीण, गरीब या उन छोटे व्यापारियों को नुकसान नहीं पहुँचाया जो उसे भोजन की आपूर्ति करते थे। उसका शिकार इलाके के जमींदार, धनी जमींदार और अभिमानी साहूकार थे। उसके कट्टर दुश्मन पुलिस और उसके सभी एजेंट और गुप्त मुखबिर थे।

अपने पूरे शासनकाल के दौरान, उन्होंने और उनके अनुयायियों ने हमेशा मेहनतकश लोगों और गरीब, दबे-कुचले किसानों के साथ निष्पक्ष और उदारतापूर्ण व्यवहार किया। स्वयं एक समय किसान रह चुके होने के कारण, वे विशेष रूप से उन गरीब किसानों के प्रति सहानुभूति रखते थे जिनसे वे मिलते थे।

इस प्रकार, वह उनके सबसे अच्छे मित्र और रक्षक के रूप में देखा जाने लगा। वे उससे प्रेम करते, उसका सम्मान करते और उसकी आज्ञा का पालन करते थे। वे ऐसी कोई जानकारी नहीं देते थे जिससे उसके ठिकाने का पता चल सके। और कई बार, जब पुलिस अचानक हमला करती, तो वे उसे और उसके साथियों को अपनी झोपड़ियों में, अपने अनाज भंडारों में, यहाँ तक कि अपने कुओं में भी छिपा देते थे। यह लगभग एक ऐसा मामला था जिसमें एक तरफ कानून और पुलिस थी, और दूसरी तरफ डाकू और ग्रामीण थे। उसके द्वारा किए गए हत्याओं को जनता ने सराहनीय साहस के कार्यों के रूप में महिमामंडित किया; और उसकी लूटपाट को न्याय का साधन माना, जिसके द्वारा वह अमीरों और अयोग्य लोगों से धन छीनकर गरीबों और असहायों को भोजन कराता था।

जब भारत को 1947 में स्वतंत्रता मिली, तो सरकार ने इस अवसर को मनाने के लिए कई अपराधियों और दोषियों को आम माफी के रूप में रिहा कर दिया। इनमें से एक नवाब सिंह थे, जो मान सिंह के बड़े भाई थे। जेल से बाहर आते ही उन्होंने सबसे पहले अपने पुराने गाँव जाकर एक बंदूक उधार ली, तलफी राम के बचे हुए दो

रिश्तेदारों को मार डाला और फिर अपने छोटे भाई से जा मिले।

ब्राह्मण तलफी राम के कभी विशाल परिवार का, या मान सिंह के दूर के रिश्तेदार खेम सिंह का, जिसने कभी उसे धोखा दिया था, अब कोई भी जीवित नहीं बचा था।

मान सिंह और उसके साथ मौजूद उसके परिवार के सदस्यों ने वास्तव में एक भयानक बदला लिया था।

दोनों परिवारों का सफाया करने से संतुष्ट न होकर, उन्होंने अपने सभी समर्थकों, गवाहों, मुखबिरों और यहां तक कि हमदर्दों का भी निर्दयतापूर्वक कत्लेआम किया।

इसके बाद मान सिंह के मन में प्रतिशोध की तीव्र इच्छा प्रबल हो गई। अपने व्यक्तिगत शत्रुओं और उनके अनुयायियों को नष्ट करने से संतुष्ट न होकर, उसने अपने डकैतों के गिरोह के किसी भी सदस्य के विरुद्ध गवाही देने वाले सभी लोगों पर प्रतिशोध का अभियान चलाया। इनमें पुलिस, उनके गुप्त एजेंट, जासूस और मुखबिर, और इन लोगों के रिश्तेदार भी शामिल थे। उन्हें भी मार डाला गया।

देश के मजिस्ट्रेटों को भी चेतावनी दी गई थी कि यदि उन्होंने गिरोह या गिरफ्तार किए गए और मुकदमे के लिए लाए गए किसी भी सदस्य के खिलाफ कोई सक्रिय कार्रवाई करने का साहस किया तो उन्हें खत्म कर दिया जाएगा।

सेना ने हस्तक्षेप किया

हालात बद से बदतर हो गए थे। मान सिंह और उसके साथियों द्वारा अपनाई गई अंधाधुंध प्रतिशोध की नीति के चलते, जिसमें वे हर पुलिस जासूस या मुखबिर, उनके रिश्तेदारों और यहां तक कि पुलिस की किसी न किसी तरह से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मदद करने के संदेह में निर्दोष लोगों को भी खत्म कर रहे थे, नागरिक अधिकारियों की कार्रवाई बेबुनियाद और निष्फल हो गई। नियमित वेतन पाने वाले पुलिस एजेंट या तो इस्तीफा दे चुके थे, बीमार होने का बहाना बना रहे थे या अपने पदों से भाग रहे थे। उनका आतंक संक्रामक हो गया और दूरदराज और एकांत पुलिस चौकियों में तैनात वर्दीधारी कांस्टेबलों तक फैल गया, जिन्हें लगा कि अधिकारियों से उन्हें कोई मदद नहीं मिलेगी, क्योंकि अधिकारियों ने किसी भी तरह से उनकी सहायता या सुरक्षा करने में अपनी पूरी अक्षमता साबित कर दी थी।

इसलिए उन्होंने भी बदले में साथ छोड़ दिया।

हालात तेजी से अराजक होते जा रहे थे।

नागरिक कानून और व्यवस्था ठप्प हो गई थी और हंसी का पात्र बन गई थी।

इस चरण में, सरकार ने सेना से सहायता लेने का निर्णय लिया, और नियमित सेना की छोटी इकाइयों को रणनीतिक बिंदुओं पर तैनात किया गया।

तेजी से आत्मविश्वासी हो चुके डाकुओं को सेना से भिड़ने में ज्यादा समय नहीं लगा और इसके परिणामस्वरूप कई गोलीबारी और झड़पें हुईं, जिनमें दोनों पक्षों को भारी जानमाल का नुकसान हुआ।

इन सब बातों से मान सिंह की शक्ति बढ़ती ही गई और ग्रामीणों का प्रेम उसके प्रति बढ़ता ही गया। उन्होंने सेना या पुलिस की किसी भी प्रकार से सहायता करने से साफ इनकार कर दिया। अधिकारियों के सामने पहले से कहीं अधिक कठिन परिस्थितियाँ खड़ी हो गईं।

मान सिंह ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी कि उसके और उसके साथियों द्वारा किए गए सीधे अपराधों के अलावा, सैकड़ों मील के दायरे में सक्रिय लुटेरों, डाकुओं और डाकुओं के कई छोटे गिरोह उसके अधीन हो गए थे। उसके नाम और अक्सर उसके गिरोह के सदस्यों द्वारा दी गई सुरक्षा के बदले में, वे गर्व से उसे अपना स्वामी घोषित करते थे और अपने हमलों में लूटी गई संपत्ति का 10% से 25% तक उसे नियमित रूप से देते थे। इस भुगतान को 'नज़राना' (कर) कहा जाता था, जिससे न केवल मान सिंह का खजाना बहुत बढ़ गया, बल्कि उसकी प्रतिष्ठा भी इतनी बढ़ गई कि उसे चोरों के बीच लगभग सम्राट माना जाने लगा। यह क्षेत्र हजारों वर्ग मील में फैला हुआ था, उस क्षेत्र में मिलने वाले चारों राज्यों के सभी प्रभावित क्षेत्रों में।

इस अंतिम स्थिति ने अधिकारियों को हताश कर दिया और चारों संबंधित सरकारों ने अपने संसाधनों को एकजुट करने का निर्णय लिया। उन्होंने मिलकर 1,700 चयनित पुलिसकर्मियों की एक सेना गठित की और उन्हें इस भयानक खतरे को पूरी तरह से खत्म करने के लिए पूर्णकालिक कार्य में लगा दिया। एक अनुभवी पुलिस उप महानिरीक्षक को पूरे अभियान का प्रभार सौंपा गया और भारत के सभी राज्यों की पुलिस बलों की सी.आई.डी. शाखाओं के सैकड़ों जवानों को छोटे-बड़े गांवों में तैनात किया गया ताकि डाकुओं और उनकी गतिविधियों के बारे में जानकारी जुटाई जा सके; विशेष रूप से उनके नेता और उसके घाटी में स्थित गढ़ के बारे में।

इस समन्वित प्रयास का पहला परिणाम प्राप्त करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

एक पुलिस जासूस को पता चला कि क्रूर चर्ना एक निश्चित दिन एक निश्चित

गांव में अपनी पत्नी से मिलने जाने वाला था।

पुलिस ने जाल बिछाया।

बिना किसी शक के, चरना और उसके कुछ आदमी गांव में घुस गए। पुलिस ने तब तक कुछ नहीं किया जब तक वे घर के अंदर तक नहीं पहुंच गए। फिर उनमें से लगभग 60 लोगों ने घर को घेर लिया और दरवाजा तोड़ने की कोशिश की।

चरना ने खुद को फंसा हुआ पाया और अपनी जान की कीमत चुकाने का निश्चय कर लिया। इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल की खिड़कियों से डाकुओं ने गोलीबारी शुरू कर दी और पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की। 24 घंटे तक भीषण गोलीबारी चलती रही, लेकिन 60 पुलिसकर्मी एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाए।

उन्होंने हताशा में मदद के लिए गुहार लगाई।

और अधिक पुलिसकर्मियों ने इस आह्वान पर कार्रवाई की, और पहले से मौजूद 60 पुलिसकर्मियों की सहायता के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित 400 पुलिसकर्मियों को भेजा गया।

घर के अंदर केवल 14 डाकू और उनका सरदार चरना मौजूद थे।

आत्मसमर्पण का तो सवाल ही नहीं था। हमलावरों ने लगातार गोलियों की बौछार की और आंसू गैस के गोले भी दागे।

लेकिन डाकुओं ने भी जवाबी गोलीबारी की और अपनी स्थिति बनाए रखी।

इसलिए 460 पुलिसकर्मियों ने 15 डाकुओं को पूरे 3 दिन और 3 रातों तक घेरने के बाद सैन्य सहायता मांगी।

डोगरा रेजिमेंट की एक सैन्य इकाई और तोपखाने की एक टुकड़ी को घटनास्थल पर भेजा गया।

घर पर बेहद करीब से तोप के दो गोले दागे गए और इमारत ढह गई। ज़ोरदार आवाज़ के साथ, सैनिकों और पुलिसकर्मियों की संयुक्त टुकड़ी मलबे में घुस गई।

वहाँ उन्हें 14 डाकू मृत मिले। लेकिन चार्ना नहीं।

किसी तरह, चमत्कारिक रूप से वह भाग निकलने में कामयाब हो गया, जबकि उसके वफादार अनुयायियों ने उसकी जान बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब इतने कम लोग अपने से 33 गुना अधिक संख्या में बेहतर हथियारों से लैस और प्रशिक्षित नियमित पुलिसकर्मियों से 3

दिनों तक लड़ सके, और केवल तभी रुके जब तोप के गोले से मारे गए, वह भी पूरी तरह से एक छोटे सरदार के प्रति निष्ठा के कारण; तो डाकुओं के मुख्य गिरोह की अपने नेता, अद्वितीय राजा मान सिंह राठौर (जैसा कि अब उन्हें कहा जाता था) के प्रति वफादारी, सम्मान और पूर्ण निस्वार्थ प्रेम कैसा रहा होगा।

यह घटना 1951 में घटी थी।

1953 में, चर्ना ने एक बार फिर अग्रिम दस्ते का नेतृत्व करते हुए पुलिस गश्ती दल पर घात लगाकर हमला किया और उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। दुर्भाग्य से, उस गश्ती दल के पास एक पोर्टेबल वायरलेस ट्रांसमीटर था, और हमले के समय उन्होंने मदद के लिए एक हताश SOS संदेश भेजा था। संदेश मिलने पर सभी दिशाओं से पुलिस बल सहायता के लिए दौड़ा, हालांकि वे समय पर पहुंचकर उसे बचा नहीं सके।

लेकिन चरना को ट्रांसमीटर के बारे में पता नहीं था।

जब अतिरिक्त बल की पहली टुकड़ी मौके पर पहुंची, तो उन्होंने देखा कि डाकू पुलिस गश्ती दल के मृत शरीरों से हथियार, गोला-बारूद और उपकरण लूट रहे थे। उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी, और डाकुओं ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की।

अधिकाधिक पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे, और इस बार डकैतों को पनाह देने के लिए कोई सुरक्षित इमारत नहीं थी। उन्होंने खुले मैदान में पुलिस दस्ते पर घात लगाकर हमला किया था; और अब वे खुद खुले मैदान में घिरे हुए थे।

एक बार फिर भीषण गोलीबारी हुई, जो इस बार 10 घंटे तक चली। लेकिन अपराधियों की स्थिति प्रतिकूल थी क्योंकि उनके पास छिपने की कोई जगह नहीं थी, जबकि घटनास्थल पर पहुंची पुलिस की कई टुकड़ियों ने छोटे से गिरोह पर लगातार गोलियों की बौछार कर दी।

दस घंटे बाद बंदूक और राइफल की गोलियों की आवाजें मंद पड़ गईं और युद्ध का धुआं धीरे-धीरे घटनास्थल से छंट गया।

इससे पता चला कि चर्ना और उसके नौ साथी मैदान पर मृत पड़े थे। इस बार कोई भी नहीं बच पाया था।

मान सिंह का पतन

चरना की मृत्यु मान सिंह और उसके अनुयायियों के लिए एक अपशगुन प्रतीत हुई,

और आने वाली अनेक विपत्तियों का अग्रदूत थी, जिसका अंत मान सिंह की स्वयं की मृत्यु में हुआ। डाकू सरदार ने न केवल एक अत्यंत निष्ठावान और बहादुर समर्थक को खोया, बल्कि अग्रिम पंक्ति एक ऐसे सरदार से भी वंचित हो गई जो जन्मजात कुशल रणनीतिकार था और जानता था कि कब और कहाँ हमला करना है और कब नहीं। उसके उत्तराधिकारी में ये गुण नहीं थे और अग्रिम टुकड़ी जल्द ही गंभीर संकट में फंसने लगी। चरना के नेतृत्व में अब तक की सबसे कुशल आक्रमणकारी शक्ति बने रहने के बजाय, यह मान सिंह के लिए एक अतिरिक्त बोझ बन गई।

कुछ ही समय बाद हुई एक झड़प में कई डाकू गंभीर रूप से घायल हो गए, और सी.आई.डी. के एक एजेंट ने खबर दी कि इन घायलों को रात में उन गुफाओं से, जहाँ उन्हें छिपाकर रखा गया था, चंबल नदी के पार इटावा नामक स्थान पर ले जाया जाएगा, जहाँ उनका इलाज डॉक्टर द्वारा किया जाएगा; और यह भी कि मान सिंह स्वयं भुआ खेर के किनारे एक खाई में छिपा हुआ है।

भारी संख्या में पुलिसकर्मियों ने इलाके को एक विशाल घेरे में घेर लिया और फिर धीरे-धीरे उस खाई की ओर बढ़ने लगे जहाँ मान सिंह के होने की खबर थी। दोपहर तक उन्हें डाकुओं की मौजूदगी की सूचना मिली, तभी एक अकेली राइफल की गोली ने सन्नाटा तोड़ दिया और एक सार्जेंट शहीद हो गया। फिर एक आवाज आई, 'और करीब आए तो तुम्हारा एजेंट कामा, जो हमारे पास कैदी है, उसे गोली मार दी जाएगी।'

इसके जवाब में पुलिस सावधानीपूर्वक आगे बढ़ने लगी। तभी एक और गोली चलने से सन्नाटा टूट गया।

इसके बाद भीषण झड़प हुई। अपराधियों ने हैंडग्रेनेड, स्टेन गन, टॉमी गन और राइफलों का इस्तेमाल किया, और पुलिस ने भी इन्हीं हथियारों का प्रयोग किया।

संख्या बल के बल पर कानून प्रवर्तन बल आगे बढ़ने लगे और अपराधी भागने लगे। मान सिंह और रूपा ने टॉमी गन चलाते हुए एक संकरी खाई में उतरकर भाग निकले। अन्य लोग चट्टानों और किनारों पर चढ़कर सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए। तहसीलदार सिंह, जो डाकू सरदार का तीसरा पुत्र था और जिसे 'भयानक' की उपाधि प्राप्त थी, घोड़े पर सवार होकर भागने का प्रयास किया, लेकिन वह और उसका घोड़ा घायल हो गए। बाद में उसे पकड़ लिया गया और उसके पास से एक बड़ी शिकार राइफल - .500 बोर की दोहरी बैरल वाली काली बारूद एक्सप्रेस - बरामद हुई।

जब पुलिस ने शिविर की तलाशी ली, तो उन्हें उनका एजेंट कामा मिला। अपराधियों ने अपनी धमकी को अंजाम दिया था। 'उसे सिर में गोली मारी गई थी। चेतावनी मिलने के बाद कि वे और करीब न आएं, यह दूसरी गोली थी जो उन्होंने सुनी थी।'

इसी समय डाकुओं के सरदार लखन सिंह पर एक घरेलू त्रासदी आ पड़ी। लखन सिंह, जिसे 'शेर' कहा जाता था, ने मान सिंह की बेटी रानी से विवाह किया था। लेकिन रानी अपने पति के प्रति बेवफा साबित हुई और उसने डाकुओं के गिरोह में से ही एक दूसरे से प्रेम संबंध बना लिया। यह खबर सुनकर मान सिंह क्रोधित हो गया। उसके उच्च आदर्श और न्याय की कठोर भावना को ठेस पहुंची। उसने अपनी बेटी रानी की उपस्थिति में ही उसके प्रेमी को गोली मारकर हत्या कर दी।

उस बूढ़े व्यक्ति ने न्याय के कड़े सिद्धांतों का पालन करते हुए ससुर के रूप में अपना कर्तव्य निभाया था। लेकिन अपनी बेटी के आचरण की शर्मिंदगी उसे अंत तक सताती रही। और इसी शर्मिंदगी ने उसके पति लखन सिंह को, जो मान सिंह के सबसे कुशल लेफ्टिनेंटों में से एक था, गिरोह छोड़कर दूर चले जाने और अकेले ही अपनी जान देने के लिए मजबूर कर दिया।

इन तीन अत्यंत सक्षम समर्थकों को खो देने के बाद, मान सिंह अचानक उस जीवन से ऊब गया और पश्चाताप करने लगा जो वह जी रहा था - एक रक्तपातपूर्ण जीवन, एक ऐसा जीवन जहाँ उसका अपना कोई घर नहीं था, जहाँ वह कभी स्थिर नहीं हो सका और हमेशा भागता रहता था; वह बेचैन जीवन जिसे उसने इतने लंबे समय तक बहुत प्यार किया था लेकिन अब वह उसे जीने से थक गया था।

उसे आराम चाहिए था; उसे शांति चाहिए थी; उसे एक घर चाहिए था।

तो उन्होंने एक उल्लेखनीय काम किया।

उन्होंने सरकार को माफी की पेशकश की।

उन्होंने भारत सरकार को एक पत्र लिखा—जो इस देश के इतिहास में, और वास्तव में विश्व के किसी भी देश के इतिहास में अद्वितीय है। उन्होंने अपने पत्र की शुरुआत यह कहकर की कि वे अपनी मर्ज़ी से चोर या हत्यारा नहीं थे, बल्कि भाग्य और परिस्थितियों ने उन्हें ऐसा बनने पर मजबूर कर दिया था। जब उन्होंने डकैती नहीं की थी और निर्दोष थे, तब भी उन्हें डाकू कहा गया और उन पर ऐसे अपराध का आरोप लगाया गया जो उन्होंने कभी किया ही नहीं था। उन्होंने कहा कि पुलिस ने

बिना किसी कारण के उन्हें अपमानित किया और चेतावनी दी। इसलिए उन्हें झूठे तलफी राम को दंडित करने के लिए विवश होना पड़ा, जिसने उन पर ऐसा आरोप लगाया था। लेकिन अब वे घर वापस आकर एक बार फिर सम्मानजनक जीवन जीना चाहते थे। उन्होंने सरकार को एक ऐसा प्रस्ताव भी दिया जिसे उन्होंने "खेल-खेल में देने वाला प्रस्ताव" कहा। भारत का एक अच्छा और उपयोगी नागरिक बनने की अपनी प्रबल इच्छा के प्रमाण के रूप में, उन्होंने कहा कि वे और उनके डाकुओं का गिरोह गोवा जाएंगे और पुर्तगालियों को बाहर निकालकर, और यदि आवश्यक हो तो उन्हें समुद्र में धकेलकर, उस विदेशी क्षेत्र को मुक्त कराएंगे।

भारत सरकार ने कोई जवाब नहीं दिया। वह एक बहु-हत्यारे के साथ शांति वार्ता नहीं कर सकती थी।

इससे मान सिंह निराश हो गए और उनके अनुयायी हतोत्साहित हो गए। पुलिस ने लगातार उनका पीछा करते हुए एक-एक करके उनके ठिकानों तक उनका पीछा किया। एक-एक करके सभी भगोड़े गिरफ्तार हुए, घायल हुए या मारे गए। अब कई लोग साथ छोड़ने लगे, क्योंकि उनमें लड़ने का जज़्बा और उत्साह खत्म हो चुका था।

अंत में, केवल 18 लोग ही बचे। उनमें नवाब सिंह, उनके वृद्ध भाई; सूबेदार सिंह, उनके दूसरे पुत्र; और रूपा, जो वफादार थीं, शामिल थे।

इस समय तक नवाब सिंह काफी बूढ़े हो चुके थे, और उनकी कमजोर दृष्टि और दुर्बल शरीर के कारण वे अक्सर अपने साथियों पर बोझ बन जाते थे। उन्होंने अपने भाई से उन्हें छोड़ने की विनती की। लेकिन राजा ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो किसी मित्र को, और विशेष रूप से अपने बड़े भाई को छोड़ दें। उन्होंने नवाब सिंह को अंत तक अपने साथ रखा।

संख्या में कम होने के बावजूद, मान सिंह ने यह निश्चय किया कि उनके अनुयायियों की प्रतिष्ठा कभी धूमिल नहीं होनी चाहिए। उन्होंने धनी लोगों पर एक के बाद एक कई डकैतियाँ कीं, जबकि गरीबों के प्रति उनकी उदारता और दयालुता की प्रसिद्धि और भी बढ़ती गई।

अधिकारियों का मनोबल लगभग चरमरा गया था। उसकी तलाश में जुटे 1,700 वर्दीधारी पुलिसकर्मियों और सादे कपड़ों में मौजूद सी.आई.डी. जासूसों की भीड़ ने और भी अधिक प्रयास शुरू कर दिए।

लेकिन मान सिंह और उसके बाकी बचे 18 अपराधियों ने अपनी लूटपाट जारी

रखी।

नवंबर 1954 में एक दिन, मध्य भारत के गृह मंत्री श्री दीक्षित ने यह वचन दिया कि यदि एक वर्ष के भीतर मान सिंह को गिरफ्तार नहीं किया गया तो वे राज्य मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे देंगे। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने भारत के सबसे प्रसिद्ध योद्धाओं, गोरखाओं से सहायता मांगी। उन्होंने इन साहसी पर्वतीय सैनिकों से युक्त एक विशेष कंपनी का गठन किया, जिसका उद्देश्य मान सिंह को समाप्त करना था, जो उन चार राज्यों के लिए अभिशाप बन चुका था जहाँ उसे पकड़ने के सभी प्रयास विफल रहे थे।

अब शिकार के लिए हालात और भी बिगड़ते जा रहे थे, इसलिए मान सिंह ने एक चाल चली। एक गुमनाम गाँव में शव का अंतिम संस्कार किया गया, जिसमें शव को उसी के जैसा सजाया गया था, और यह अफवाह फैलाई गई कि पुराने डाकू की अचानक बीमारी से मृत्यु हो गई है और रीति-रिवाज के अनुसार उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया है।

अधिकारियों और पुलिस का उत्साह चरम पर था। धनी जमींदार, जमींदार और गरीबों पर अत्याचार करने वाले राहत की सांस लेकर चैन से सो रहे थे। निर्धन और पीड़ित लोग इस हानि पर फूट-फूटकर रो रहे थे। पीछा करने में कुछ समय के लिए विराम लग गया।

कुछ समय बाद, मान सिंह ने फिर से हमला किया। दरअसल, वह पूरी तरह से जीवित था और उसने अधिकारियों को पूरी तरह से चकमा दे दिया था।

जिन लोगों का मानना था कि उनकी मृत्यु हो गई है, वे अब आश्वस्त हो गए कि वे पुनर्जीवित हो गए हैं। इससे राजा को अमर होने की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

पुलिस ने एक बार फिर पीछा करना शुरू किया और गोरखाओं की विशेषज्ञ कंपनी हरकत में आ गई।

मान सिंह का पता मोरेना जिले के एक गुप्त ठिकाने से चला, जिसे पुलिस ने तड़के ही घेर लिया। दिनभर भीषण गोलीबारी जारी रही और सूर्यास्त तक चलती रही। अंत में, अपराधी भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद, जिनमें स्टेन गन भी शामिल थीं, छोड़कर पीछे हट गए। माना जा रहा था कि मान सिंह इस लड़ाई में घायल हो गया था, लेकिन वह भागने में सफल रहा।

अधिकारियों ने पहले से कहीं अधिक सख्ती से उसका पीछा किया। उसके बाद

सात महीनों तक, फरवरी से अगस्त 1955 तक, उन्होंने लगातार उसका पीछा किया। अगस्त के मध्य तक उन्होंने उसे चंबल नदी की खाइयों में घेर लिया था। नदी के सभी निकास द्वारों पर पहरा लगा दिया गया था।

अंतिम गौरवशाली लड़ाई

किसी तरह यह अद्भुत व्यक्ति और उसके 18 अनुयायी पुलिस के जाल से बच निकलने में कामयाब रहे। वे भिंड जिले में भाग निकले और कुंवारी नदी पार करने की कोशिश की।

यहां भाग्य ने उनके साथ क्रूर खेल खेला। कुंवारी नदी उफान पर थी और उसे पार करना बिल्कुल असंभव था। मान सिंह और उनके साथी बीजापुर गांव की ओर भाग गए, और चायहाले नामक अधिकारी के नेतृत्व में गोरखाओं की एक विशेष टुकड़ी ने उनका पीछा किया।

मान सिंह ने पहली गोली चलाई; और उसके शानदार, लेकिन आपराधिक करियर की आखिरी लड़ाई लड़ी गई।

अपने ही देश के एक सैनिक, जमादार भंवर सिंह के नेतृत्व में, वीर योद्धा गोरखाओं की एक पलटन ने आक्रमण किया; और लड़ाई तीव्र और भयंकर थी। बंदूकें, राइफलें, टॉमी गन, स्टेन गन और ग्रेनेड का जमकर इस्तेमाल किया गया। स्वयं एक कुशल निशानेबाज मान सिंह ने अपने कई शत्रुओं को मार गिराया और हजारों राउंड गोलियां चलाई गईं।

लेकिन उसका समय आ गया था और जिस मृत्युदेव से वह बार-बार बचता रहा था, उसने अंततः उसे अपने शिकंजे में ले लिया। सर्वकालिक महान डाकू गोलियों से छलनी होकर धरती पर गिर पड़ा।

जीत की खुशी में जयकार करते हुए, बलवान छोटे गोरखा सैनिक उसका शव लेने के लिए आगे बढ़े।

लेकिन इस महान युद्ध के अंततः समाप्त होने से पहले इसमें एक महाकाव्य का मंचन होना बाकी था।

डाकुओं ने अपने प्रिय नेता के पार्थिव शरीर को शत्रु के हाथों में पड़ने से रोकने के लिए जोरदार जवाबी हमला किया। लड़ाई पहले से कहीं अधिक भयंकर हो गई।

फिर डाकुओं की कतारों में से एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ा, जिसका शरीर कई घावों से बहते खून से लाल था, जबकि आंसू उसकी चमचमाती काली गालों

से अनियंत्रित रूप से बहते हुए उसकी दाढ़ी पर गिर रहे थे।

यह सूबेदार सिंह थे, जो घायल नेता के वीर दूसरे पुत्र थे। उन्होंने अपने पिता के शरीर को अपने शरीर से ढकने के लिए तुरंत दौड़ लगाई ताकि उस पर और गोलियां न लगें।

और वह अपने उद्देश्य में सफल रहा।

राइफल, टॉमी गन और स्टेन गन की गोलियों से खुद को छलनी कर लेने के बाद, वह अपने प्रिय पिता के शव पर गिर पड़ा, ताकि मृत्यु में भी उसकी रक्षा कर सके।

युद्ध समाप्त हो गया था। बुरी तरह घायल रूपा, जो वफादार थी, बूढ़े नवाब सिंह को बचे हुए कुछ लोगों के साथ सुरक्षित निकालने में कामयाब रही।

लेकिन उनमें से अधिकांश उस अंतिम और सबसे गौरवशाली लड़ाई के मैदान में मृत पड़े थे।

यहां तक कि छोटे-छोटे गोरखा सैनिक, जो युद्ध और रक्तपात के प्रतीक थे, उन ढेर सारे शवों के सामने मौन सम्मानपूर्वक खड़े रहे। फिर, एक-एक करके, उन्होंने मृतकों को सम्मानपूर्वक सलामी दी; वीर पुरुषों का एक-दूसरे के प्रति आदर!

पुलिस एक बार फिर खुशी से झूम उठी। पूरे भारत में जनता ने जश्न मनाया। अखबारों ने प्रमुख सुर्खियों में जीत की घोषणा की।

गृह मंत्री श्री दीक्षित ने अपना वादा निभाया था, इसलिए उन्हें इस्तीफा नहीं देना पड़ा। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, केंद्र सरकार के गृह मंत्री पंत और कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर को टेलीग्राम द्वारा सूचित किया गया और उन्हें राहत दी गई।

जबकि पूरे देश के गरीब लोग, जिनसे मान सिंह ने प्रेम किया था और जिनकी रक्षा की थी, और जो बदले में उनसे प्रेम करते थे, फूट-फूटकर रो रहे थे।

संयुक्त प्रांत के मुख्यमंत्री डॉ. संपूर्णानंद ने यह घोषणा जारी की:

किसी व्यक्ति की मृत्यु पर खुशी व्यक्त करना कोई अच्छी बात नहीं है। मान सिंह मर गया है, और मान सिंह और उसके गिरोह के अत्याचारों से भयभीत लोगों ने राहत की सांस ली है।

लेकिन विधवाओं और बच्चों की आहें और आंसू, मंदिर के पुजारियों की धूप और प्रार्थनाएं, और मान सिंह द्वारा दान की गई घंटियों की झंकार, पूरे देश में ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर रही थीं।

अंतिम संस्कार

पुलिस भारी सुरक्षा घेरे में महान नेता और उनके निष्ठावान पुत्र के गोलियों से छलनी शवों को भिंड कस्बे में लेकर आई। उनके शवों को चारपाइयों (लकड़ी के ढांचे पर रस्सी से बनी चारपाई) से बांधकर जनता के दर्शन के लिए रख दिया गया। अनुमान है कि 40,000 से अधिक लोग शवों के पास से गुजरे। इनमें से कुछ लोग जिज्ञासावश, कुछ खुशी और राहत के कारण आए थे। लेकिन हजारों लोग, जिन्होंने अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की, बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोए।

वहां से शवों को दाह संस्कार के लिए ग्वालियर नगर ले जाया गया। मान सिंह की विधवा ने सरकार से पत्र लिखकर न्यायसंगत रूप से अपने पति और पुत्र के शव उन्हें सौंपने की गुहार लगाई, ताकि वे अंतिम संस्कार कर सकें। जेल से तीसरे पुत्र तहसीलदार सिंह ने सरकार से अपने पिता की चिता को प्रज्वलित करने और उनके मुख में अग्नि डालने की अनुमति देने का अनुरोध किया। इस रस्म को 'मुखग्नि' कहा जाता है और यह पिता की मृत्यु के बाद जीवित पुत्र का उनके प्रति अंतिम कर्तव्य होता है।

दोनों याचिकाएं खारिज कर दी गईं।

उस आखिरी दिन ग्वालियर नगर में करीब 60,000 लोग शवों के पास से गुजरे और उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की। सन्नाटा पसरा हुआ था, तभी वीर पिता-पुत्र की आत्माओं के लिए प्रार्थनाओं की गुनगुनाहट सुनाई दी और सिसकियों की आवाज गूंज उठी। आंसू लगातार बह रहे थे, जिनमें से कई आंसू प्रिय योद्धा के निर्जीव पार्थिव शरीर पर गिरे। लोग झुककर उन्हें सलाम कर रहे थे। सेना की सभी शाखाओं के पूर्व सैनिक और पेंशनभोगी पूरी वर्दी में, अपने युद्ध पदक पहने हुए आए थे। प्रथम विश्व युद्ध से पहले अंग्रेजों द्वारा भारतीय सैनिकों को दिए गए लाल कोट इन पुराने सैनिकों के गले में साफ दिखाई दे रहे थे। उनमें से कई बहुत बुजुर्ग थे, जिन्होंने अतीत में भारत के युद्धों में वीरतापूर्वक भाग लिया था। वे जानते थे कि वीरता और वफादारी का क्या अर्थ होता है।

चिलचिलाती धूप में वे धीरे-धीरे आगे बढ़ती कतार में शामिल हो गए। जब अंततः वे महान नेता के पार्थिव शरीर के सामने खड़े हुए, तो उनकी कमजोर और झुकी हुई बूढ़ी कमर अब वैसी नहीं रही। वे सीधी खड़ी हो गईं, मानो एक बार फिर परेड में शामिल हों। उनके झुके हुए कंधे सीधे हो गए। सदियों पहले अर्जित पदक एक

बार फिर सूर्य की रोशनी में चमक उठे, जैसे ही उनके वृद्ध पैर एक साथ खटकते हुए सावधान मुद्रा में खड़े हुए। उनकी कमजोर दाहिनी भुजा, शायद थोड़ी कांपती हुई, सलामी के लिए ऊपर उठी और पूरे एक मिनट तक वहीं रही। आँसू जिन्हें वे रोक नहीं सके, उनके होठों पर नमक की तरह लग गए, और वे धीरे से बोले, 'अलविदा, महाराजा साहब! ईश्वर आपकी वीर आत्मा को शांति प्रदान करें।'

फिर वे सूबेदार सिंह के शव की ओर बढ़े। एक बार फिर वृद्ध अंगों का अकड़ना; एक बार फिर एड़ियों की खटखटाहट और सलामी; इस बार ये शब्द, 'सलाम, सूबेदार साहब! अपने पिता के वफ़ादार और वीर पुत्र, हम आपको सलाम करते हैं!'

सशस्त्र पुलिस की कड़ी सुरक्षा में, दोनों शवों का अंतिम संस्कार किया गया। सुरक्षाकर्मी तब तक वहीं तैनात रहे जब तक कि वीर पिता और पुत्र के नश्वर अवशेषों के चारों ओर रखी लकड़ियों को लपटें खाती रहीं; आग की लपटें चटकती रहीं; धुआं पीले रंग के घने गुबारों में उठता रहा; और तब तक तैनात रहे जब तक कि आग पूरी तरह से शांत नहीं हो गई, केवल सुलगते अंगारे और राख ही उस स्थान को चिह्नित करने के लिए रह गए जहां दो आत्मिक आत्माओं के दो प्रसिद्ध शरीर रखे गए थे।

लोगों का कहना था कि ऐसा लग रहा था मानो पुलिस को डर था कि वह क्रूर पिता और उसका उतना ही क्रूर बेटा अचानक फिर से जीवित हो सकते हैं और उनके बीच से एक बार फिर भाग सकते हैं।

और इस तरह भारत के अब तक के सबसे महान डाकू सरदार का जन्म हुआ, उनका जीवन बीता और उनकी मृत्यु हुई।

वह निःसंदेह चोर और हत्यारा था; लेकिन साथ ही साथ एक सच्चा सज्जन भी। उसका शिकार अमीर लोग होते थे। उसके दुश्मन पुलिस और मुखबिर होते थे। देश के हजारों बेहद गरीब लोगों में उसके मित्र थे। उसने कभी किसी स्त्री या बच्चे को हानि नहीं पहुंचाई; उसने कभी किसी का एक आना भी उधार नहीं लिया और न ही उसे चुकाया; उसने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं लूटा जो चुकाने में असमर्थ हो। और अंत तक वह और उसका प्रिय पुत्र सूबेदार वीरता में एकजुट रहे; और वैसे ही मृत्यु को प्राप्त हुए जैसे वे जिए थे, एक नायक की तरह।

हम उसके द्वारा किए गए हत्याओं और डकैती को माफ नहीं करते। हम उन कृत्यों की निंदा करते हैं। उसे कानून अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं था। अपने परिवार के शत्रुओं से बदला लेना और उनकी हत्या करना गलत था। अपने कुकर्मों के

लिए उसे उचित दंड मिला, जिसके तहत उसे अपनी जान गंवानी पड़ी।

लेकिन भारत के सर्वकालिक जीवंत नायक के रूप में; पूरब के सच्चे रॉबिन हुड के समान; उनकी वीरता, उदारता, विशाल स्वभाव, बड़े दिल, साहस और अदम्य साहस के लिए, अथाह कठिनाइयों, खतरों और संकटों का सामना करते हुए, उनकी दृढ़ता और संकल्प के लिए, आइए हम उनका सदा सम्मान करें और उन्हें कभी न भूलें। आइए हम अपनी स्मृतियों में उस निष्ठावान पुत्र के लिए भी एक स्थान रखें जिसने अपने पिता के मृत शरीर को अपने जीवित शरीर से ढकने का प्रयास किया और अपने प्राणों की आहुति देकर सफल हुआ।

आइए, उस दिन युद्ध के मैदान में उन नन्हे गोरखाओं के साथ और ग्वालियर नगर में जुलूस में शामिल हुए उन पूर्व सैनिकों और पेंशनभोगियों के साथ मिलकर कहें, 'सलाम, राजा साहब और सूबेदार साहब! हे महान पिता और पुत्र। हम आप दोनों को सलाम करते हैं और आपको हमेशा याद रखेंगे।'

उपसंहार

इन कहानियों का लेखन समाप्त होने ही वाला है कि खबर मिली है कि राजा का वफादार अनुयायी और रिश्तेदार रूपा अभी भी स्वतंत्र है और डाकू के रूप में अपना धंधा चला रहा है।

अगले पैराग्राफ में 1 जनवरी, 1959 की प्रेस रिपोर्ट की प्रति है।

डकैत रूपा ने 4 लोगों की हत्या की

ग्वालियर, 1 जनवरी, 1959। आज सुबह यहाँ प्राप्त एक रिपोर्ट के अनुसार, कुख्यात डकैत और डकैत मान सिंह के मुख्य सहयोगी रूपा ने कल रात मोरेना जिले के एक गाँव में तीन लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी और एक अन्य को गंभीर रूप से घायल कर दिया। चौथे व्यक्ति ने अस्पताल ले जाने के बाद दम तोड़ दिया।

***** समाप्त *****

sjeet